TEXT PROBLEM WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY
OU_186266
UNIVERSAL LIBRARY

OUP—557—13-7-71—3,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. RH030 N3HN S94B Accession No. P.G. H2785

Author शुक्ल, रामशङ्कर 'रसाल'.

Title भाषा शब्द कोश. 1961.

This book should be returned on or before the date last marked below.

भाषा-शब्द-कोष

सम्पादक

डा० रामशङ्कर शुक्ल 'रसाल' एम० ए०, डी० लिट्०

संशोधक एवं परिवर्द्धक

गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'

Graduate Library
Arts & Commerce, O. U.

प्रकाशक

रामनारायणलाल बेनीप्रसाद

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

इलाहाबाद-२

चतुर्थ संस्करण] १९६१ [मूल्य १२)

प्रकाशक
रामनारायणलाल बेनीप्रसाद
इलाहाबाद-२

प्रथम संस्करण १९३६
द्वितीय संस्करण १९३९
तृतीय संस्करण १९५१
चतुर्थ सस्करण १९६१
१० ६६१

मुद्रक
रामबाबू अग्रवाल
ज्ञानोदय प्रेस
इलाहाबाद-२

स्वर्गीय श्रीयुत् लाला रामनारायण लाल जी

"विमल वैश्य-कुल-कमल, अमल, शुचि जीवन वारे।
कमला के प्रियलाल, सफलता - सिद्धि - दुलारे ॥
सुजन, सरलता - मूर्ति, धन्य ! उन्नत - उदार - उर।
करि हिन्दी हित, अमर सुजस भरि गये अमर-पुर ॥"

समर्पण

श्री० स्वर्गीय लाला जी !

यह कोष आपकी ही अंतिम अपूर्ण इच्छा का साकार रूप है, जिसे दैव-दुर्विपाक से आप अपनी आँखों से पूर्ण हुआ न देख सके और अपने हाथों में न ले सके। यह पूर्ण तो हुआ ही किन्तु आपके निधन पर। फिर भी आपकी पुण्यात्मा आज इसे इस रूप में देख कर, सन्तुष्ट और प्रसन्न होगी। अस्तु, आज आपकी यह अंतिमेच्छा वस्तु आपकी ही शुभात्मा को सस्नेह समर्पित की जाती है; सप्रेम स्वीकार कीजिएगा।

रमेश-भवन,
प्रयाग
१८-१२-३६

आपका
रामशङ्कर शुक्ल 'रसाल'

प्रथम संस्करण का प्राक्कथन

किसी प्रकार की सचित निधि का ही नाम कोष है। मनुष्य के लिए रत्नादि जिस प्रकार निधि कहे जाते है उसी प्रकार मनोगत भावो को व्यक्त करने तथा चिरकाल तक उन्हे रक्षित रखने वाले शब्द भी उसके लिए निधि का कार्य करते है। रत्नादि-सम्बन्धी निधि के बिना तो किसी प्रकार मनुष्य अपना जीवन चला भी सकता है किन्तु शब्द-सम्बन्धी निधि के बिना उसका जीवन अल्पकाल भी नही चल सकता। इस निधि का उपयोग उसके लिए प्रत्येक समय और प्रत्येक स्थान पर अनिवार्य ही होता है। इस निधि का संचित रखना भी उसके लिए अत्यत आवश्यक है। शब्द-निधि अन्य प्रकार की निधियो की अपेक्षा इसीलिए अत्यधिक व्यापक और सर्वसाधारण है। ऐसा होते हुए भी यह किसी देश, समाज या व्यक्ति-विशेष की भी होकर रहती है। यह समस्त समाज और एक व्यक्ति-विशेष दोनों से ही सम्बन्ध रखती है। इसी शब्द-निधि से मनोगत विचारो को व्यक्त करने तथा चिरकाल तक भावी सतति के लिए उन्हे रक्षित रखने वाली भाषा की उत्पत्ति होती है। इसीलिए इस निधि को भी रत्नादि सम्बन्धी सचित निधि के समान कोष की संज्ञा दी गयी है।

शब्दो की उत्पत्ति कब, कहाँ और कैसे हुई ? यह प्रश्न बडा ही कष्टसाध्य (यदि असाध्य नही) और गूढ-गहन या जटिल है। अद्यावधि इसका कोई भी सर्वांग शुद्ध तथा प्रमाण-पुष्ट उपयुक्त उत्तर नही निश्चित किया जा सका। भिन्न-भिन्न विद्वानों के इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मत या विचार है, और यह विषय अब भी वैसा ही विचारणीय, गवेषणीय तथा विवाद-ग्रस्त है, जैसा यह कभी था। यह अवश्यमेव प्रत्यक्ष-पुष्ट तथा अनुमानानुमोदित होकर सही है कि शब्द-निधि का संचय क्रमश तथा शनैः-शनैः अतीतकाल से होता आया है। शब्दो का विकास-प्रकाश धीरे-धीरे किन्तु लगातार होता रहा है और अब भी होता जा रहा है। प्रतिदिन नये-नये शब्द बनते आये है और बनते भी जा रहे है। इसी प्रकार शब्दो के आकार-प्रकारादि में भी क्रमशः धीरे-धीरे रूपान्तर या परिवर्तन होता आ रहा है। यह भी सही है कि विकास के साथ ही और उसके समान ही शब्द-ह्रास या शब्द-विनाश भी होता जा रहा है। यदि अनेक नये शब्द प्रचलित हो गये हैं और होते जाते है, तो साथ ही अनेक पुराने शब्द अप्रचलित होकर विस्मृति के गहन गर्त में विलीन भी होते जाते है। अनेक शब्दो के प्रयोग उठते जा रहे है और वे इस प्रकार प्रयोग से परे होकर दुर्बोध हो गये है और बिना कोष के अवगत ही नहीं होते, वे केवल कुछ बची-बचाई हुई प्राचीन पुस्तको तथा प्राचीन कोषों में ही दबे पड़े है और खोजने पर ही प्राप्त होते हैं। जिन प्राचीन शब्दों का सचय कोषों में किसी कारणवश न हो सकता था, जो उनमें यथोचित स्थान न प्राप्त कर सके थे, वे अब अबोध होते हुए सदा के लिए प्रयोग-वाह्य होकर लुप्त होते जा रहे है। बहुत से ऐसे ही शब्द सर्वथा समाज से परित्यक्त होकर भाषा-कोष से बहिष्कृत या च्युत

भी किये जा चुके हैं। हाँ अत्युपयोगी कुछ प्राचीन शब्द अब तक बचे हुए हैं और प्राचीन ग्रन्थों या काव्यादिकों में छिपे पड़े हैं। इसी प्रकार अनेक नवनिर्मित तथा नव-प्रचलित शब्द कोषों मे लाये जा रहे हैं और बहुत से ऐसे नवोदित शब्द कोषान्तर्गत हो भी चुके हैं, फिर भी बहुत से ऐसे नवजात शब्द है जो अभी पूर्णतया प्रचार-प्रस्तार नहीं प्राप्त कर सके और इसी से कोषो मे भी वे स्थान नही पा सके। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कोष मे भी सदैव रूपान्तर तथा परिवर्तन होता रहता है, उसमे भी सशोधन, सवर्धन तथा परिमार्जन हुआ करता है। कोष इसीलिए कदापि सर्वथा पूर्ण नही हो सकता या नही हो पाता। सदैव उसमे परिवर्तन और परिवर्धन का होना (या किया जाना) अनिवार्य ठहरता है।

शब्द-विनिर्मित भाषा की सहायता से मनोगत सुन्दर, समीचीन तथा सचयनीय विचारों या भावो की सरक्षित या संचित निधि का ही नाम साहित्य है। साहित्य की भाषा तथा उसके आकार-प्रकार तथा उसकी रीति-नीति साधारण बोली (जिसका प्रयोग सर्वसाधारण की बोल-चाल मे होता है) तथा उसकी रीति-नीति से बहुत कुछ भिन्न और पृथक् रहती है। कारण यह है कि साहित्य की रचना इस विचार-विशेष मे की जाती है कि वह न केवल वर्तमान देश-समाज के ही लिए वरन् स्थायी होकर अग्रिम समाज के लिए भी उपयोगी हो सके, उसमे स्वाभाविकता तथा व्यापकता की मात्रा अधिक और प्रबल रहती है। इसलिए उसकी भाषा का आकार-प्रकार भी विशेषता-पूर्ण रक्खा जाता और रहता है। जन-साधारण की भाषा और उसके शब्दो से उसे बहुत कुछ परे रक्खा जाता है, उसमे बोली के समान इसीलिए प्रान्तीयतादि की अनीप्सित कठिनाइयाँ नही आने दी जाती। वह सर्वथा सुसस्कृत, परिष्कृत तथा परिमार्जित रहती है। इसीलिए उसका **शब्द-कोष** भी उत्कृष्ट और सस्कृत रहा है। हिन्दी-साहित्य के सम्बन्ध मे यह नियम पूर्णतया घटित नही होता, क्योकि उसका निर्माण जन-साधारण की बोली या भाषा के ही द्वारा किया गया है। हिन्दी के तीन मुख्य रूपो का प्रयोग इसमे हुआ है, अर्थात् **ब्रजभाषा** (जो ब्रज-प्रान्त की बोली से विकसित हुई है।), **अवधी** (जो अवध-प्रान्त की बोली से विकसित की गई है।) तथा **खड़ी बोली** (जिसे पश्चिमीय हिन्दी का विकसित रूप कह सकते हैं।) इनके अतिरिक्त हिन्दी-साहित्य मे हिन्दी की अन्य प्रान्तीय बोलियों (जैसे बुंदेलखंडी, आदि) फारसी, अरबी तथा अग्रेजी विदेशीय भाषाओ के भी शब्द और प्रयोग सम्पर्क-प्रभाव से आ गये हैं। अन्य भाषाओं के ऐसे शब्द प्राय दो रूपो मे मिलते है, प्रथम तो उन्हे ऐसा रूप दे दिया गया है कि वे अन्य भाषा के शब्द न रह कर देशी शब्द मे ही जान पड़ते हैं, अर्थात् वे शब्द **देशज** रूप मे रूपान्तरित करके रक्खे गये है, किन्तु अनेक शब्द ऐसे भी मिलते हैं जिनमे रूपान्तर नही हुआ और वे अपने उन्ही मूल रूपो मे हैं जिन रूपो मे वे अपनी भाषाओ मे प्रचलित हैं, अर्थात् वे अपने शुद्ध **तत्सम** रूप मे ही हैं।

इनके अतिरिक्त हिन्दी-साहित्य मे कही कही कुछ ठेठ प्रान्तीय या ग्राम्य शब्द-विशेष भी प्रयुक्त किये गये है। हिन्दी भाषा का शब्द-कोष इसीलिए विविध बोलियो तथा भाषाओ के शब्द-रत्नो का अनुपम आगार है।

हिन्दी भाषा का विकास मुख्यतया दो प्रधान कारणो (या आन्दोलनों) से हुआ है। प्रथमत धार्मिक आन्दोलन (कृष्ण-राम-भक्ति, सत-ज्ञान या निर्गुणवाद और सूफी मत सम्बन्धी प्रेमात्मक वेदान्ताभासवाद) से ब्रज भाषा, अवधी तथा अन्य प्रान्तीय बोलियो का

विकास-प्रकाश हुआ, फिर राष्ट्रीय तथा आर्य समाज के आन्दोलनों के कारण खड़ी बोली का विकास हुआ। मुसलमानों के प्रभाव से हिन्दी का एक नया रूप उर्दू के नाम से (जिस पर, फारसी और अरबी का गहरा प्रभाव पड़ा है) निखर और बिखर गया है। अब इधर कुछ समय से हिन्दी (साहित्यिक शुद्ध खडी बोली) और उर्दू (फारसी-प्रभावित पश्चिमीय हिन्दी) को मिला कर **हिन्दुस्तानी** के नाम से एक नया रूप और चल पडा है। संस्कृत के आधार पर विकसित (उससे सर्वथा प्रभावित होकर) उत्कृष्ट साहित्यिक हिन्दी या खडी बोली अपना एक विशेष रूप और स्थान रखती है। हिन्दी पर प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं की भी छाप पडी हुई है।

अतएव प्राचीन और अर्वाचीन हिन्दी के लिए वही कोष उपादेय हो सकता है जिसमें उपर्युक्त सभी बोलियों तथा भाषाओं के वे सब उपयोगी शब्द संग्रहीत हो जो हिन्दी-संसार में सर्वथा व्यापक और प्रचलित हैं। इसी विचार को लक्ष्य में रख कर प्रस्तुत कोष का संग्रह किया गया है। बहुत से शब्द तो ऐसे भी हैं जिनका उपयोग केवल काव्य-भाषा में ही होता है, गद्य या बोलचाल में उनका प्रयोग ही नहीं किया जाता। ऐसे शब्द भी इसमें संकलित किये गये हैं।

इस समय हिन्दी-संसार में कई सुन्दर कोष विद्यमान हैं। ऐसी दशा में इस कोष की क्या आवश्यकता थी? इस सम्बन्ध में निवेदन है कि अन्यान्य कोषों में लोगों और विशेषतया स्कूलों और कालेजों के विद्यार्थियों को कुछ कमी प्रतीत हुई और एक ऐसे व्यापक कोष की आवश्यकता तथा माँग हुई जो जन-साधारण तथा विशेषतया विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो। स्वर्गीय श्री लाला रामनारायण जी बुकसेलर ने यह माँग और आवश्यकता मेरे सामने रख एक कोष तैयार करने को कहा। लाला जी ने कोषों के प्रकाशन से भाषा, साहित्य और विद्यार्थी-वृन्द तथा जन-साधारण का बड़ा हित किया है। उन्होंने (अँग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत और उर्दू के) कई सुन्दर, सरल, सुबोध और सस्ते कोष प्रकाशित किये हैं। मैंने भी यह गुरुतर कार्य उठा लिया केवल इस सहारे से कि विशाल भाषा-क्षेत्र में विद्वानों ने प्रथम से मार्ग बना रखे हैं और भाषा-सदन से शब्द-रत्न चुन कर कोषों में संचित कर लिए हैं, उन्हीं के आधार पर मैं भी इस कार्य का निर्वाह कर सकूँगा। परम पूज्य पिता जी (श्री० पं० कुञ्जबिहारी लाल) ने भी अपनी चिर-संचित कोष-रचना की इच्छा प्रकट कर मुझे और भी उत्साहित किया और महती सहायता भी दी। यदि उनकी सहायता और कृपा न होती तो कदाचित् यह कार्य मुझ जैसे व्यक्ति के द्वारा सम्पन्न न हो पाता। इसका बहुत बड़ा अंश उनकी ही लेखनी से आया है, हाँ मैंने इसका सम्पादन अपने ही विचार से किया है। इसके प्रूफादि को देखने तथा कवियों के उद्धरणादि के एकत्रित करने में मुझे अपने अनुजवर चि० रामचन्द्र शुक्ल, 'सरस' से बड़ी सहायता मिली है।

यद्यपि इस कार्य के बीच-बीच में अनेक बाधाएँ उपस्थित हुईं, फिर भी किसी प्रकार ईश्वर-कृपा से यह कार्य आज इस रूप में समाप्त होकर आप महानुभावों के सम्मुख रक्खा गया है। इसके गुण-दोषों के विवेचन का अधिकार मुझे नहीं, यह अधिकार तो सहृदयोदार विद्वानों का ही है। मैं तो यहाँ इसकी केवल कुछ उन विशेषताओं की ओर आपका ध्यान आकर्षित करता हूँ, जो इस समय के अन्य कोषों में प्रायः नहीं मिलती और जिनको ही लक्ष्य में रख कर इस कोष का संग्रह किया गया है:—

प्रकाशकीय

(चतुर्थ संस्करण)

प्रस्तुत कोष का यह सस्करण संशोधित एव परिवर्द्धित रूप में प्रकाशित हो रहा है। प्रस्तुत सस्करण कई दृष्टियो से महत्त्वपूर्ण है।

इस बार शब्दों के अर्थ को वैज्ञानिकता प्रदान की गई है। विद्यार्थियों के उपयोग के लिये अर्थ को कम से कम शब्दों में व्यक्त करने का प्रयत्न किया गया है। आवश्यकता-वश प्राय: उनके पर्याय भी दे दिए गए है। जहाँ कई तरह के अर्थ है वहाँ क्रम का ध्यान रखा गया है। मूल और गौण अर्थो के साथ शक्तियों पर विचार करते हुए भी अर्थ लिखे गये हैं। जहाँ शास्त्रीय शब्द आये हैं वहां उनकी सक्षिप्त व्याख्या भी दे दी गयी है। अर्थ भी आवश्यकतानुसार बढ़ाये गये है।

मात्र कविताओं मे ही प्रयुक्त शब्दों के भी अर्थ दिए गए हैं, जिससे विद्यार्थियों अथवा विद्वज्जनों को इस कोष से पर्याप्त लाभ हो सके।

इग्लिश के कुछ शब्द हिंदी में अनूदित हुए हैं, ऐसे शब्दो के अर्थ देते समय अत मे उक्त इग्लिश शब्द देवनागरी लिपि मे दे दिये गये है। इसी प्रकार कुछ हिंदी शब्द जिनके निश्चित अर्थ थे, वैज्ञानिक उन्नति एव स्वतत्रता के बाद किसी इग्लिश शब्द के समकक्षी हो गये है, एसे शब्दों के अत में कोष्ठ में उनका इग्लिश समकक्षी शब्द भी दे दिया गया है।

साथ ही बहुत से क्षेत्रों से नये शब्द लाकर कोष को समृद्ध किया गया है। इन नये शब्दो की व्युत्पत्ति भी दे दी गयी है। इससे इन नये शब्दों के ऐतिहासिक विकास एव अर्थ सदर्भ का ज्ञान भी संभव है।

इस प्रकार यह कोष विद्यार्थियों, विद्वानों, शोध-छात्रों एवं कार्यालयों में काम करने वाले लोगों तथा साधारण जनता—सबके लिए उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसी हमें आशा है।

इस सस्करण के पूर्व इस कोष में ब्रजभाषा के कवियों के उदाहरण अधिक थे, किंतु इस सस्करण में खड़ी बोली के प्रसिद्ध कवियों की पक्तियाँ भी यथावसर उद्धृत की गयी हैं। इससे कोष की उपादेयता अधिक बढ़ गयी है।

इस बार शब्दो की सख्या लगभग १५००० और बढ़ा दी गई है पर मूल्य बढने नही दिया गया है। पृष्ठ सख्या कम करने के लिये छोटे टाइप का प्रयोग किया गया है।

अत मे हम डा० रामशकर शुक्ल 'रसाल' एम० ए०, डी० लिट्० के बहुत आभारी है, जिन्होने इतने बड़े कार्य को अपने हाथों मे लिया और उसे पूर्णता दी।

हम हिन्दी के विद्वान लेखक, आलोचक और कवि स्वर्गीय श्री गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' के भी बहुत अनुगृहीत है, जिन्होने अस्वास्थ्य के क्षणों मे भी इस कोष के परिवर्द्धन एवं परिशोधन मे भाग लिया और हमे अपनी ज्ञान-सम्भूति से आलोकित किया।

आशा है, इस सशोधित एवं परिवर्धित सस्करण से भारत की जनता को पूर्ण लाभ होगा।

प्रकाशक

संकेत-सूची

अं०—अंग्रेजी (भाषा)
अ०—अरबी (भाषा)
अनु०—अनुकरणात्मक
अप०—अपभ्रंश
अल्पा०—अल्पार्थक
अव०—अवधी (भाषा)
अव्य०—अव्यय
क्रि० अ०—क्रिया अकर्मक
क्रि० स०—क्रिया सकर्मक
इति०—इतिहास
इब०—इबरानी
उप०—उपसर्ग
ए० व०—एक वचन
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
क्व०—क्वचित (कम) प्रयोग
गुज०—गुजराती (भाषा)
ग्रा०—ग्रामीण
तु०—तुरकी (भाषा)
दे०—देशज
दे०—देखो.
प०—पंजाबी (भाषा)
पा०—पाली (भाषा)
पिं०—पिंगल
पु०—पुलिंग
पू० का० क्रि०—पूर्वकालिक क्रिया
पुर्त०—पुर्तगाली (भाषा)
प्रा० हि०—प्राचीन हिन्दी
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रा०—प्राकृत (भाषा)
प्रान्ती०—प्रान्तीय
प्रे० रूप—प्रेरणार्थक रूप
फ़्रा०—फ़्रासीसी (भाषा)
फ़ा०—फ़ारसी (भाषा)
बँग०—बँगला (भाषा)
ब० व०—बहु वचन
मुहा०—मुहावरा
यू०—यूनानी भाषा
यौ०—यौगिक
लै०—लैटिन (भाषा)
वि०—विशेषण
ब्रज०—ब्रजभाषा
बुंदे०—बुंदेली (भाषा)
व्या०—व्याकरण
सं०—संस्कृत
क्रि० सं०—क्रिया संयुक्त
क्रि० स०—क्रिया सकर्मक
सर्व०—सर्वनाम
सा० भू०—सामान्य भूत
स्त्री०—स्त्रीलिंग
स्पे०—स्पेनी (भाषा)
हि०—हिन्दी
*—केवल कविता में प्रयुक्त
§—प्रांतिक प्रयोग
'—ग्राम्यप्रयोग ।

—०—

विशेष

ज्यो०—ज्योतिष
गणि०—गणित
वैद्य०—वैद्यक
न्या०—न्याय
सा०—सांख्य
बी० ग०—बीजगणित
छं०—छंद-शास्त्र
भू०—भूगोल
इति०—इतिहास
रे० ग०—रेखागणित
पुरा०—पुराण
नाट्य०—नाट्यशास्त्र
पिं०—पिंगल
काव्य०—काव्य-शास्त्र
सा०—साहित्य
ज्या०—ज्यामिति
यो०—योग
ह० यो०—हठयोग
विलो०—विलोम
वैशे०—वैशेषिक

इनके अतिरिक्त कवियों, काव्य ग्रथों तथा अन्य ग्रंथो के नामो के आदि के वर्ण उद्धरणो के अंत मे दिये गये हैं ।—संपादक

॥ ओ३म् ॥

भाषा-शब्द-कोष

अ

अ—संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का प्रथम स्वर अक्षर। कंठ से उच्चारित होने से कंठ्य वर्ण। इसके बिना व्यंजनों का स्वतन्त्र रूप से उच्चारण सम्भव नहीं। क, च, त आदि समस्त व्यंजन इस स्वर के साथ उच्चारित एवं लिखित। (अव्य०) व्यंजनाद्य शब्द के पूर्व आकर विपरीत या निषेधादि अर्थसूचक, जैसे 'अकारण', 'अयोग्य'। नकारार्थ मे 'अन्' होकर स्वर से प्रारम्भ होने वाले शब्दों के पूर्व योजित, जैसे 'अनधिकार', 'अनाचार,, 'अनागत'। (उप०) क्रियाओं या धातुओं के पूर्व प्रयुक्त, जैसे 'अकथ', 'अथक', 'अलख', 'अनदेखी', 'अनजानत' 'छमहु चूक अनजानत केरी'—तुल०। (सं०, संज्ञा, पु०) ब्रह्मा। ब्राह्मण। मस्तक। यश। अमृत। विश्व। इंद्र। वायु। कुबेर। अग्नि। (वि०) शब्द उत्पन्न करने वाला। अल्प। निषिद्ध। अभावमय। अनुकम्पा-योग्य। सादृश्य (अब्राह्मण), भेद (अपट), अप्राशस्त्य (अकाल), अल्पता (अनुदार) तथा १ संख्यावाची। विराट्।

अं—सानुस्वार अ स्वर, इसका लघु रूप है—अ। (संज्ञा, सं०) एक बीजमंत्र।

अंक—(संज्ञा, पु० सं०) चिह्न, निशान, आँक। लेख, अक्षर, लिखावट। संख्या का चिह्न—१, २, ३, आँकड़ा, अदद। भाग्य। काजल का टीका जो बच्चों के माथे पर नजर से बचाने के लिए लगाया जाता है, दिठौना। दाग, धब्बा। नौ की संख्या (संख्या के अंक ९ ही हैं)। गोद, 'निज अंक में कैसे छिपाऊँगा मैं'—दिन०। नाटक का एक अंश या भाग, अध्याय। रूपक या नाटक का एक भेद। मोड़। क्रोड़। शरीर, अंग, देह, बदन। पाप। दुःख। बार, दफा। स्थान। अपराध। समीपत्व। किसी नियतकालिक प्रकाशन का संस्करण अथवा स्वरूप-विशेष।—**करण**—(पु०) निशान लगाने की क्रिया।—**कार**—(पु०) हार-जीत आदि के सम्बन्ध मे निर्णय देने वाला युद्ध का वह नेता जिसकी विजय-पराजय से युद्ध की विजय-पराजय मान्य होती है।—**गणित**—(पु०) संख्याओं पर आधारित शास्त्र, वह विद्या जिसमे जोड़ने, घटाने तथा गुणा-भाग आदि की क्रिया के द्वारा किसी तथ्य को जान-कारी प्राप्त की जाती है, हिसाब।—**गत**—(वि०) वश मे आया हुआ।—**ज** (वि०) अंक से उत्पन्न होने वाला, अंक से सम्बन्धित। (पु०) वह वस्तु जिसका विकास अंक मे या अंक से हो। —**तंत्र**—(पु०) बीजगणित।—**द्योतक**—(वि०) लोक-परिस्थितियाँ बताने वाले आँकड़ो से सम्ब-न्धित [स्टेटिस्टिकल]।—**धारण**—(पु०) अपने सम्प्रदाय-विशेष के अनुसार शरीर पर शंख, चक्र, त्रिशूल आदि की मुद्रा लगवाने की क्रिया-विशेष।—**धारी**—(वि०) अंकधारण करने वाला। —**पत्र**—(पु०) किसी तरह के कर अथवा देय धन को चुकता करने के लिए निर्धारित मूल्य पर मिलने वाला कागज का लघुखंड, जो किसी चीज पर चिपका दिया जाता है; टिकट, स्टाम्प आदि।—**पत्रित**—(वि०) अंकपत्र से संयुक्त; जिस पर टिकट अथवा स्टाम्प लगाया गया हो। —**परिवर्तन**—(पु०) करवट लेने की क्रिया। —**पादव्रत**—(पु०) व्रतविशेष।—**पालक**—(पु०) अंकरक्षक।—**पालि,—पालिका,—पाली**—(स्त्री०) परिचर्या करने वाली, सेविका, धाय, दाई। वेदिका नामक सुगंधित द्रव्य। आलिंगन। —**पाश**—(पु०) हिसाब की क्रिया-विशेष। —**पूरण**—(पु०) गुणा।—**बंध**—(पु०) नत होने का ऐसा ढंग कि गोद की आकृति बन

जाय।—**भाक्**–(वि०) गोद मे स्थित, अत्यन्त समीप।—**माल**–(पु०) आलिंगन, परिरंभण, कंठ से लगाने, भेंटने अथवा गोद में लेने की क्रिया। हार, माला। बार-बार गले लगाने, भेंटने का कार्य।—**मालिका**–(स्त्री०) छोटी माला या हार। भेंट। अंकों का समूह अथवा आलिंगनों की अधिकता। "अंकमालिका, अश्रुमालिका दोनों का था साथ।"—**मुख**–(पु०) नाटक की संक्षिप्त कथा-सूचना से युक्त प्रारम्भिक भाग।—**लोड्य**–(पु०) एक पेड़।—**विद्या**–(स्त्री०) हिसाब का विज्ञान। अंकगणित। "अंकविद्या में विशारद वे रहे।"—**शायिनी**–(स्त्री० वि०) गोद में सोने वाली स्त्री।—**शास्त्र**–(पु०) वह विद्या जिसमे देश के निवासियों की विविध अवस्थाओं की क्रमबद्ध गणना होती है [स्टेटिस्टिक्स]।—**स्थ**–(वि०), अंक में स्थित, जिसको गोद में स्थान मिला हो। 'अंकस्थ-दामिनी दमक रही'—हरिऔध। **मु०**—**मानना** (व्र०) **देना, भरना, लेना, लगाना**—हृदय से लगाना, लिपटाना, आलिंगन करना।—**सूझना**–साधन या उपाय का झलकना। 'सूझ न एकौ **अंक** उपाऊ'—तुल०।—**में आना**—गले लगना।

अंकक—(संज्ञा, पु० सं०) निशान लगाने वाला अथवा हिसाब का लेखा रखने वाला। 'विविध अंकक अंकन में लगे'—गिरीश।

अँकड़ी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अंकुर, अंकुवा दे० नोक] कँटिया, हुक, तीर का टेढ़ा फल। बेल, लम्बी लता। बाँस का डंडा।

अंकन—(संज्ञा, पु० सं०) चिह्न या निशान करने की क्रिया। लेखन। गिनती करने का कार्य। कलम अथवा कूँची से चित्रण। अंक का बहुवचन (ब्रज०, अव० मे) [**अंकना, आँकना**]–(क्रि०)। [**अंकनीय, अंकित, अंक्य**]–(वि०)।

अंकना—(क्रि०, अ० सं०) [अंकन] लिपिबद्ध होना, आँका अथवा कूता जाना। 'सरल था इसका अँकना नहीं'—गिरीश।

अंकनी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) पेंसिल, लेखनी-विशेष जो काष्ठ अथवा किसी धातु के पोले खंड के भीतर लिखने का मसाला जमा कर बनायी जाती है। 'स्वकर में तब लेकर अंकनी'—गिरीश।

अंकनीय—(वि०, सं०) आँकने, लिपिबद्ध करने योग्य। 'अंकनीय प्रभु कलित कीर्त्ति है'—गिरीश।

अंकपलई—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० 'अंकपल्लव'] एक विद्या, जिसमें अंकों को अक्षरों के स्थान पर रख कर उनके समुदाय से वाक्य के समान अर्थ निकाला जाता है। जैसे, १ से 'क' २ से 'ख' आदि।

अंकम—(संज्ञा, पु० सं०) अंक, गोद। 'गिरीन्द्र के अंकम में विराजिता'—गिरीश।

अँकरा—(संज्ञा, पु० दे०) एक प्रकार का खर या घास, जो गेहूँ या जौ के पौधों के पास स्वतः उगती है।

अँकरी—(संज्ञा स्त्री० दे०) अकरा का लघु रूप। देखिए अँकरा।

अँकरोरी—(संज्ञा, स्त्री० दे०), [अंकरौरी, प्रान्ती०] कंकड़ या खपड़े का छोटा टुकड़ा।

अँकवाना—(क्रि०, स० दे०) लेखबद्ध कराना, लिखने की प्रेरणा देना। दाम तय कराना। जाँच कराना।

अंकवार—(संज्ञा, पु०) [सं० अंक] **अँकवार**, अंकोर, काँख, कोख, गोद। **मु०—भरना**–गले लगना। गोद में बच्चा रहना—'अँकवार भरी रहै नित्त तिहारी'—'रसाल'।

अँकाई—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अंक] आंक, कूत, अटकल, अनुमान। फसल मे किसान और जमींदार का हिस्सा-बाँट।

अँकाना—(क्रि०, स० सं०) **अँकाना**, किसी के द्वारा परखना, जाँचना, मोल ठहराना, अंदाजा करना।

अँकाव—(संज्ञा, पु० दे०) कूत, निर्ख अथवा भाव का निर्धारण।

अंकावतार—(संज्ञा, पु० सं०) नाटक मे एक अंक के समाप्त होने पर आगामी अंक मे उन्हीं पात्रों के द्वारा कथा-सूत्र का संचालन (नाट्य०)।

अंकास्य—(संज्ञा, पु० सं०) नाटक का रूपक या एक भेद, जिसमे बाहर जाने वाले पात्रों द्वारा आगे की सूचना दिलायी जाती है।

अंकित—(वि०) [सं० अंक+इत—प्रत्य०] चिह्नित, निशान किया हुआ। लिखा हुआ। खचित। वर्णित। 'छवि यहाँ पर अंकित जो हुई'—हरिऔध।—**क** (संज्ञा, पु० सं०) नाम आदि लिखकर किसी चीज पर चिपकाया जाने वाला कागज का लघुखंड, चिप्पी।—**मूल्य**–(संज्ञा, पु० सं०) किसी वस्तु पर लिखा रहने वाला मूल्य, जो व्यवहार में भिन्न परिस्थितियों की प्रेरणा से घट-बढ़ भी सकता है [फेसवैल्यू]।

अँकुआ—(संज्ञा, पु० दे०) देखिए अंकुर।

अँकुआना—(क्रि०, अ० दे०) अँखुआ फोड़ना।

अंकुड़ा—(संज्ञा, पु०) [सं० अंकुर] लोहे का टेढ़ा काँटा। गाय-भैंस के पेट का दर्द। कुलावा, पायजा। किवाड़ की चूल मे लोहे का गोल पच्चड़।

अँकुड़ी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) हुक, कटिया, झुकी हुई छड़ ।—**दार**-(वि०) कटिया लगा हुआ, गड़ारीदार, हुकदार ।

अंकुर—(संज्ञा, पु० सं०) [**अँकुवा** दे०] गाभ, अँगुसा, नवोद्भिज, डाभ, कल्ला, कनखा, कोंपल, आँख । कली । [प्रान्ती०] नोंक । रुधिर । रोंयाँ । पानी । मांस के लाल दाने जो घाव के भरते समय उठते हैं । अंगूर । [**आँकुर, अंकुरा**] (ग्रा०) ।

अंकुरण—(संज्ञा, पु० सं०) भूमि के गर्भ मे कुछ समय तक पडे रहने के बाद बीज मे से अँखुआ निकलने का कार्य [जर्मिनेशन] ।

अंकुरित—(वि०) [सं० अँकुर+इत—प्रत्य०] फूटा हुआ, निकला हुआ ।—**यौवना**—(वि०, सं०) नवयौवना, उठती हुई युवती, युवावस्था के चिह्नों से युक्त स्त्री ।

*****अंकुरना**—(क्रि०, अ० दे०)—अंकुर निकलना, अँखुआ फूटना ।

अंकुश—(संज्ञा, पु० सं०) हाथी के हाँकने का दोमुहाँ छोटा भाला, आँकुस [ग्रा० अप०] प्रतिबंध, दबाव, रोक, नियंत्रण [कंट्रोल] ।—**धारी** (वि०)-महावत, हाथी चलाने वाला, हस्तिपक ।—**ग्रह**-(पु०) फीलवान, निषाद, हथवान ।—**दन्ता**-(वि०) [अंकुशदंत या दंती] वह हाथी जिसका एक दाँत सीधा हो और दूसरा नीचे की ओर झुका हो, गुंडा ।—**दाता**-(वि०) रोकने वाला । **मु०—न मानना**—ढिठाई करना, रुकावट न होना, न डरना, बेअंकुश होना ।—**रखना**-नियंत्रण मे रखना ।

अकुसी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अंकुशी] टेढी कील, कटिया, हुक, जिसमे कोई चीज अटका दी जाय ।

अंकोट—(संज्ञा, पु० दे०) एक पहाड़ी पेड़ ।

अँकोर—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंकाला—अंकपालि] अंक, गोद, छाती । भेंट, नजर । घूस, रिशवत, कलेवा, खेतिहरों का प्रातः भोजन । छाक । कोर । दुपहरी । (क्रि०, स० **अँकोरा**) 'निज व्यजन पक्ष से तू अँकोर सुध खोती'—मैथिली० । **अँकोरे**-(संज्ञा, दे०) 'ले बैठे फुसलाय अँकोरे' ।

अँकोरना—(क्रि०, अ०) गरम होना, घूस पाक र उत्साहित होना ।

अँकोरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अंकोर+ई] गोद । आलिंगन ।

अंकोल—(संज्ञा, पु० दे०) एक पहाड़ी पेड़, जिसकी छाल औषधि के काम में आती है ।

अंक्य—(वि०, सं०) चिह्न करने के योग्य, अंक लगाने के योग्य, दागने के योग्य । अपराधी । मृदंग, पखावज, तबला, आदि बाजे, जो गोद मे रखकर बजाये जा सकें ।

अँखड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [प्रान्ती०, हिं० आँख] नेत्र, चितवन । 'मुँद गईं जब अँखड़ियाँ तब सोज़ सब आनन्द है ।'

अँखमीचनी—(संज्ञा, स्त्री० यौ० दे०) [सं० अक्षि-निमीलन] आँख मिचौनी या मिचौली का खेल । 'अँखमीचनी साथ तिहारे न खेलिहैं'—पद्मा० । आँख मिहीचनी । 'खेलन आँख-मिहीचनी आजु गई हुती पाछिले द्यौस की नाईं'—मति० ।

अँखिया—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हिं० आँख] आँख, (बहु०) अँखियाँ, 'अँखियाँ भरि आईं'—मति० । 'भर भर कर भीति भरी अँखियाँ'—मैथिली० । नक्काशी करने की कलम, ठप्पा ।

अँखुआ—(संज्ञा, पु० दे०) [**अँकुआ**, सं० अंकुर] अंकुर, बीज मे से फूट कर निकलने वाली टेढी नोंक, जिसमे से आरम्भिक पत्तियाँ उगती हैं । कनखा, कल्ला ।

अँखुआना—(क्रि०, अ०) अंकुर छोड़ना, उगना, जमना ।

अंग—(संज्ञा, पु० सं०) शरीर, गात, देह, तन, गात्र, अवयव । 'मेरे ये अंग आज भी सिहरे'—मैथिली० । भाग, अंश, खंड, हिस्सा, टुकड़ा । भेद, भाँति, उपाय, पक्ष, तरफ, अनुकूल पक्ष, सहायक, तरफदार, मित्र । प्रकृति, प्रत्यय-सहित शब्द का प्रत्ययहीन भाग । जन्मलग्न (ज्यो०), कार्य करने का साधन । एक देश, भागलपुर, बंगाल के चारों ओर के प्रदेश का प्राचीन नाम, जिसकी राजधानी चंपापुरी—चंपारन थी । एक सम्बोधन, प्रिय, प्रियवर । छः की संख्या । पार्श्व, बगल । नाट्य का अप्रधान रस तथा नायक का कार्य-साधक (नाट्य०) । सेना के ४ भाग—हाथी, घोड़े, रथ, पैदल । योग के ८ विधान (—अष्टांग योग) राजनीति के ७ अंग—स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, सेना । वेद के छः अंग—शिक्षा, कल्प, न्याय, ज्योतिष, मीमांसा, व्याकरण या निरुक्त । राजा बलि का क्षेत्रज पुत्र, इसी से इसके देश को भी, जो गंगा और सरयू के संगम पर है, अंग कहते हैं । (दे० वि०) अप्रधान, संलग्न, गौण, अंगों वाला—पार्श्व, पहलूदार । [ऐस्पेक्ट]—**कर्म**-(पु०) देह-मार्जन ।—**ग्रह**-(पु०) शरीर के जकड़ जाने की स्थिति, वात रोग ।—**चारी**-(पु०) मित्र,

संगी, साथी, सखा।—**चालन**–(पु०) हाथ-पाँव चलाने का कार्य।—**च्छेद**–(पु०) किसी अपराधी को शरीर के अंग कटवा देने का दंड [ऐम्प्यूटेशन]।—**ज, जात**–(वि०) देहज। (पु०) पुत्र। पसीना। रोएँ। हाव-भाव और हेला नामक सात्विक भाव (सा०)। व्याधि। कामदेव। मद। —**जा, जाता, जाई**–(स्त्री०) कन्या।—**ज्वर** (वि०) ज्वर उत्पन्न करने वाला। (पु०) क्षय रोग। —**त्राण**–(पु०) [सं० अंग+त्राण] शरीर-रक्षक। अँगरखा, कुरता। कवच। आवरण।—**त्राता**–(वि०) देह-रक्षक [बाडीगार्ड]।—**दान** (पु०) पीठ दिखाने, युद्ध से पीछे भागने का कार्य, आत्मसमर्पण, योद्धा का आत्मसमर्पण। तनुदान, सुरति, रति [स्त्री के हेतु]।—**द्वार** (पु०) देह के मुँह आदि अनेक छेद।—**न्यास** (पु०) मंत्रों को पढ़ते समय हाथ से शरीर के अंगों का स्पर्श (तन्त्रशास्त्र)। —**पाल**–(पु०) अंग-पालक, शरीर-रक्षक, अंगरक्षक [बाडीगार्ड]। अंग देश का राजा।—**पालि, पाली**–(स्त्री०) हृदय से लगाने की क्रिया।—**पालिका**–(स्त्री०) दाई।—**प्रत्यंग**–(पु०) शरीर का हर एक भाग।—**प्रायश्चित्त**–(पु०) शारीरिक अशौच-निवारण के लिए दान के रूप में किया जानेवाला प्रायश्चित्त।—**भंग**–(पु०) शरीर के किसी भाग के खंडित होने की स्थिति। अवयव का नाश, शरीर के किसी अंग की हानि। स्त्रियों को मोहित करने की चेष्टा; स्त्री को मोहित करने वाली कटाक्ष-क्रिया। (वि०) टूटे अंग वाला, अपाहिज, लँगड़ा, लूला, लुंज; जिसका अंग टूट गया हो। 'अंगभंग करि पठवहु बंदर'—तुल०।—**भंगता, भंगिमा, भंगी**–(संज्ञा, स्त्री०) अंगों को चलाकर भाव प्रकट करने की क्रिया। स्त्रियों को वशीभूत या मोहित करने की शारीरिक क्रिया या चेष्टा, पुरुष को आकर्षित करने के लिए स्त्री का हाव-भाव।—**भाव**–(पु०) सङ्गीत या नृत्य में नेत्र, भृकुटि, हाथ, पैर आदि अंगों से मनो-विकारों का प्रकाशन।—**भू**–(पु०) बेटा, सुत, तनुज, पुत्र। —**भूत**–(वि०) अङ्ग से उत्पन्न, अन्तर्गत, भीतरी, अन्तर्भूत। (पु०) पुत्र।—**मर्द**–(पु०) हड्डियों की पीड़ा, दर्द, हड़फूटन। हाथ-पैर दबाने वाला नौकर, सेवक, टहलुआ।—**मर्दन**–(पु०) देह की मालिश।—**मर्ष**–(पु०) गठिया की बीमारी।—**यष्टि**–(स्त्री०) पतली देह।—**रक्त**–(पु०) एक पेड़।—**रखा**–(स्त्री०) यौगिक शब्द होकर एक प्रकार के वस्त्र के अर्थ में रूढ़ि हो गया है। एक प्रकार का सिला हुआ, देह पर पहिनने का वस्त्र या कपड़ा। "अंगरखा था सुशोभित मंजु सुगठित देह पर"—गिरीश। शरीर की रक्षा, देह का बचाव। [अंगरखा] (दे०)।—**रक्षक**–(पु०) राजा-महाराजा या उच्च अधिकारियों की रक्षा के लिए नियुक्त व्यक्ति, अंगपालक [बॉडी गार्ड]।—**रक्षणी, रक्षिणी**–(स्त्री०) लोहे की पोशाक जिसे योद्धा लोग युद्ध में पहनते हैं, कवच।—**राग**–(पु०) तैल चन्दन आदि। शरीर के लिए प्रेम-पूर्ण व्यापार, शरीर को रंगने का कार्य [रँगना रूढ़ि शब्द के रूप में] चन्दन, केसर, कस्तूरी, कपूर आदि का शरीर पर सुगन्धित लेप, उबटन। वस्त्राभूषण। शरीर शोभा के लिए महावर आदि जैसे पदार्थों को रँगने वाली सामग्री। स्त्रियों की पंचांग सजावट की वस्तुएँ — माँग के लिए सिंदूर, मस्तक के लिए रोली, कपोल-तिल की रचना के लिए कस्तूरी आदि काले रंग की वस्तु। केसर आदि सुगन्धित पदार्थों का लेप। हाथ-पैर में लगाने के लिए मेंहदी और महावर या लाक्षारस। एक प्रकार का सुगन्धित चूर्ण जो देह पर लगाया जाता है। 'अंगराग से लिप्त देह का परम मनोहर कर शृंगार'—गिरीश। 'अंगराग पुरागनाओं के धुले'—मैथिली०।—**राज**–(पु०) कर्ण अथवा लोमपाद, अंग देश का अधीश्वर।—**रुह**–(पु०) बाल अथवा ऊन।—**विकल** (वि०) जो अंगों के बेकाम होने की स्थिति में हो, जो बेहोशी में हो। —**विकृति**-(स्त्री०) अपस्मार, मिरगी का रोग। शरीर में किसी प्रकार का विकार-प्रवेश। मूर्च्छा, पक्षाघात, अंगों का टेढ़ामेढ़ापन। (पु०) वैकृत्य।—**विक्षेप**–(पु०) अंगों को मटकाने, चमकाने का कार्य, नाचने, गाने, बोलने आदि के लिए अंगों का संचालन।—**विद्या**–(स्त्री०) व्याकरण आदि विद्या, जो ज्ञान-प्राप्ति में सहायक हो। अंगों की चेष्टा के आधार पर शुभाशुभ-निर्देश करने वाली विद्या, सामुद्रिक शास्त्र।—**विभ्रम**–(पु०) रोग-विशेष।—**शोष**–(पु०) सुखंडी अथवा सूखा नामक रोग।—**संस्कार**–(पु०) शृंगार।—**संस्थान**–(पु०) रूप-विचार। आकृति-विज्ञान [मारफोलजी]।—**संहति**–(स्त्री०) अंगों का उचित सामंजस्य, गठन।—**सख्य**–(पु०) घनी मित्रता।—**सिहरी**–(स्त्री०) जूड़ी।—**हार**–(पु०) अंग-संचालन, नाच।—**हारि**–(स्त्री०) रंग-भूमि।—**हीन**–(वि०) अपूर्ण। (पु०) कामदेव। **मु०—छूना**–सौगन्ध खाना, शपथ करना।—**टूटना**–ज्वर आने के पहले देह में पीड़ा होना।—**तोड़ना**–अँगड़ाई लेना।—**फूले न**

समाना—बहुत आनंदित होना।—**लगना, लगाना**—आलिंगन करना, कराना। [भोजन से] शरीर का पुष्ट होना। काम में आना। हिल जाना। अंगीकार करना, स्वीकार करना।

अंगड़-खंगड़—(वि०, अनु०) बचा-खुचा, गिरा-पड़ा टूटा-फूटा। (संज्ञा) टूटा-फूटा सामान।

अँगड़ाई—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि०, क्रि० अँगड़ाना] देह टूटने की अवस्था, आलस्य से उत्पन्न जंभाई। **मु०—तोड़ना**—आलस्य में रहना, काम न करना। किसी के कंधे पर हाथ रख कर तथा अपने शरीर का भार डाल कर जंभाई लेना।

अँगड़ाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० अंग अटन] आलस्य से अंग ऐंठना, देह तोड़ना।

अंगण—(संज्ञा, पु० सं०) आँगन, सहन।

अंगद—(संज्ञा, पु० सं०) बाहु का गहना, बिजायठ, बाजूबन्द। बालि वानर का पुत्र। लक्ष्मण का एक कुमार। (वि०) **अंगदीय**।

अंगना—(संज्ञा, स्त्री० सं०) सुन्दर देह वाली स्त्री, कामिनी। सार्वभौम नामक उत्तर दिग्वर्ती हाथी की हथिनी।

अगना—(संज्ञा, पु० दे०) आँगन।

अगनाई—(संज्ञा, स्त्री० दे०) **अगनैया**।

अँगनैया—(संज्ञा, स्त्री० दे०) घर का मध्यवर्ती खुला भाग, आँगन। "आवत खिन अँगनैया खिन चलि जात"—हरिऔध।

अगरखा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंग—देह+रक्षक—बचाने वाला] अंगा, चपकन, अचकन, एक प्रकार का वस्त्र जिसमें बाँधने के लिए बंद लगे रहते है। (स्त्री०) [**अँगरखी**]।

अँगरा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंगार] दहकता हुआ कोयला, [**अंगारा, अंगार**]। बैलों के पैर का एक रोग।

अँगराना*—(क्रि०, अ० दे०) [**अँगड़ाना**], देह का टूटना। (संज्ञा, स्त्री०) [**अँगराई, अँगराइबो**, ब्र०]।

अँगरी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अंगरक्षा] कवच, झिलम, बख्तर, सनाह [सं० अंगुलीय] अंगुलित्राण, अँगूठी, मुँदरी।

अँगरेज—(संज्ञा, पु०) [पुर्त० इङ्गलेज] इंगलैण्ड-निवासी, आंगल देशवासी।

अँगरेजियत—(संज्ञा, स्त्री०) [हि०, अँगरेज+इयत प्र०] अँगरेज के स्वभाव और रहन-सहन की सार-भूत विशेषता।

अँगरेजी—(वि०, दे०) अँगरेजों का, उनके देश का, विलायती। (संज्ञा, स्त्री०) अँगरेजों की भाषा या बोली।

अँगलेट—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंग] शरीर का गठन, ढाँचा, काठी, देह की उठान।

अँगवना*—(क्रि०, स० दे०) [सं० अंग] अंगीकार करना, स्वीकार करना, ओढ़ना, सिर पर लेना, सहना, झेलना, उठाना, अँगेजना।

अँगवारा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंग—भाग, साहाय्य+कार] ग्राम के एक लघु भाग का मालिक। खेत की जुताई में एक दूसरे का सहयोग।

अंगा—(संज्ञा, पु० सं०) अँगरखा, चपकन, कोट के बराबर का बन्ददार वस्त्र।

अंगाकरी—(संज्ञा, स्त्री० यौ०) [सं० अंगार+करी, हि०] अंगारों पर सेंकी गई मोटी रोटी, बाटी। (दे०) [सं० अंगारिका] मधुकरी।

अंगांगीभाव—(संज्ञा, पु० सं०) अंग और अंगी अर्थात् गौण और प्रधान का भाव, अवयवों अथवा अंशों का पूर्ण के साथ सम्बन्ध, अंशाशी-स्थिति। संकर अलंकार का एक भेद। [काव्य०]।

अंगार—(संज्ञा, पु० सं०) दहकता या जलता हुआ कोयला, निर्धूम या धुआँ-रहित आग, चिनगारी। मंगल। हितावली नामक पौधा। लाल रंग। (वि०) लाल। 'श्री खंड आज अंगार चंड है मेरा।' 'चाहिए अंगार जैसी वीरता।' 'जल जाऊँगा अपने कर से रख अपने ऊपर अंगारे।'—मैथिली०।—**कारी**—(पु०) बेचने के लिए कोयला तैयार करने वाला। —**कुष्टक**—(पु०) हितावली नाम का पौधा।—**धानिका, धानी**—(स्त्री०) अँगीठी, बोरसी, आतिश-दाना—**पाचित**—(पु०) अंगारों पर पकाया हुआ खाने का पदार्थ। नानखताई। कबाब आदि।—**पुष्प**—(पु०) अंगारे के समान लाल फूल। इंगुदी या हिंगोट का वृक्ष।—**मंजरी, मंजी**—(स्त्री०) लाल करंज का पेड़।—**मणि**—(पु०) मूँगा। लालमणि।—**बल्लरी, बल्ली**—(स्त्री०) करंज, घुँघची, चिरमिटी। —**वेणु**—(पु०) बाँस की एक जाति। **मु०—उगलना**—कड़ी-कड़ी जलाने वाली बात कहना, (**रों**) **पर पैर रखना**—जान-बूझ कर हानिकारक काम करना, अपने को खतरे में डालना। जमीन पर पैर न रखना, गर्व या अति करना।—(**रों**) **पर लोटना**—रोष या क्रोध करना, आग-बबूला होकर ईर्ष्या दाह, से जलना। **(लाल)—होना**—क्रुद्ध होना, बहुत लाल होना, गरम पड़ना। (**रे**) **बरसना**—लू चलना और कड़ी धूप होना

"धरा तप्त थी, जेठ मास मे बरस रहे थे अंगारे"—गिरीश।

अंगारक—(संज्ञा, पु० सं०) अंगारा। मंगल ग्रह। भृङ्गराज, भगरैया, भगरा। कटसरैया। एक असुर। वनस्पतियो तथा खनिज पदार्थों मे पाया जाने वाला एक अधात्वीय मूल तत्व (कार्बन)।

अंगारिणी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अँगीठी, आतिशदान। सूर्यास्त की अरुणिमापूर्ण दिशा।

अंगारी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) चिनगारी। बाटी, अंगाकड़ी, लिट्टी। बोरसी। [सं० अंगारिका] ईख के सिरे की पत्ती। गंडेरी, गन्ने के टुकड़े।

अंगिका—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अँगिया, चोली, कंचुकी, कुरती, जिसे स्त्रियाँ पहिनती है।

अंगिया—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अंगिका] चोली, कंचुकी, [आंगो]।

अंगिरस—(संज्ञा, पु० सं०) दस प्रजापतियों मे से एक। प्राचीन ऋषि बृहस्पति। साठ संवत्सरों में से छठवाँ। कँटीला गोंद का वृक्ष। कतीरा।

अंगिरा—(संज्ञा, पु०) [सं० अंगिरस] ब्रह्मा के मानस पुत्र तारा, जो धर्मशास्त्र-प्रवर्तक ऋषियों मे से है—**'अंगिरा-संहिता'** इनका ग्रन्थ है, ये ज्योतिष के आचार्य थे, देवगुरु बृहस्पति इनके पुत्र है।

अंगिरात्मज—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) बृहस्पति, **आंगिरेय**।

अंगी—(संज्ञा, पु० सं०) शरीरवाला, देहधारी। अवयवी। उपकार्य। समष्टि। अंशी। मुख्य। (संज्ञा, पु०) चौदह विद्याएँ। नाटक का प्रधान नायक। नाटक का मुख्य रस। मुखिया।

अंगीकार—(संज्ञा, पु० सं०) स्वीकार, ग्रहण, सम्मति, मान्यता। (संज्ञा, पु०) [**अंगीकरण**,] (वि०)[**अंगीकरणीय**]।

अंगीकृत—(वि०, सं०) स्वीकृत, मंजूर, ग्रहण किया हुआ, अपनाया हुआ।

अँगीठा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अग्नि+स्था—ठहरना] बड़ी अगीठी, अग्निपात्र।

अँगीठी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) अँगीठा का अल्प रूप, **गोरसी**।

अंगुर*—(संज्ञा, पु०) [दे०, प्रान्ती०] अंगुल, **आँगुर** (दे०) "बलि पै जाँचत ही भये, बावन आँगुर गात"।—रहीम।

अँगुरी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [**आँगुरी**]—उँगली, अँगुली। 'अन्तर अँगुरी चार को, साँच भूठ में होय।' [**अँगुरीन**] (बहु० ब्रज०)।

अंगुल—(संज्ञा, पु० सं०) आठ जौ की इतनी लम्बाई, ग्रास का बारहवाँ भाग (ज्यो०) [**आँगुर**] दे० एक गिरह का तीसरा भाग।—प्रमाण, मान (पु०) अंगुल की लम्बाई। (वि०) अंगुल भर।

अंगुलि—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अंगुली।—**त्राण** (पु०) गोह के चमड़े का दस्ताना, जिसे अंगुलि-रक्षार्थ धनुर्धर बाण चलाते समय पहिनते थे।—**पर्व**—(पु०) अंगुलियो की पोर, अंगुलियो की गाँठो का मध्यवर्ती भाग।—**प्रति मुद्रा**—(स्त्री०) उँगलियो के अगले भाग की छाप [फिंगर प्रिंट]।

अँगुली—(संज्ञा, स्त्री० सं०) उगली, जैसे, 'मंजरी सी अँगुलियो मे यह कला'—मैथिली०। हाथी की सूँड़ का अग्रिम भाग। **मु०—उठाना**—दोष निकालना, लांछित करना।

अंगुलीय—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अँगूठी, मुद्रिका, मुँदरी।

अंगुल्यादेश—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) उगली द्वारा भाव-प्रगटीकरण, इशारा, संकेत।

अंगुल्यानिर्देश—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अंगुली+आनिदेश] लांछन, कलंक, बदनामी। अँगुली से किया जाने वाला संकेत।

अंगुश्त—(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) उँगली। [अँगुली, अंगुष्ठ सं०]—**(श्ते)-नर** (पु०) अंगूठा। प्रधान उंगली।—**नुमा**—(वि०) बदनाम, लांछित, कलंकित, बुरे काम मे कुख्यात।—**नुमाई**—(स्त्री०) दोषारोपण, कलंक, बदनामी। **मु०—करना**—लांछित करना।

अंगुश्तरी—(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) अगूठी, मुद्रिका, मुँदरी, सोने की चार अंगुश्तरी।

अंगुश्ताना—(संज्ञा, पु० फ़ा०) सीने के समय दर्जियो की उगली मे पहिनने की लोहे या पीतल की टोपी। आरसी। अँगूठे पर पहिनने की अँगूठी [**अउँठी**] (दे०)।

अंगुष्ठ—(संज्ञा, पु० सं०) अँगूठा, हाथ या पैर की अंगुली, जो सबसे मोटी हो। [**अउँठा**] (ग्रा०)।

अंगुष्ठय—(संज्ञा, स०) अँगूठे का नख।

अंगुसी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अंकुश] अंकुशी। हल का फाल। सोनारों की बकनाल या टेढ़ी नली, जिससे दीपक की लौ को फूँक कर छोटे और बारीक टाँके जोड़े जाते है।

अंगूठा—(संज्ञा, पु०) [सं० अंगुष्ठ, प्रा० अंगुट्ठ] [**अउँठा**] (दे०) हाथ या पैर की प्रथम छोटी और मोटी अँगुली। **मु०—चूमना**—खुशामद करना, सेवा-सुश्रूषा करना, अधीन रहना।—**चूसना**

–सयाना होकर भी बालकों की सी मूर्खता करना। **—दिखाना**–अवज्ञा के साथ किसी बात को अस्वीकार करना, कुछ देने में 'नहीं' करना, कुछ करने से मुँह मोड़ना। **—(ठे) पर मारना, —(ठे) पर लेना**–परवाह न करना, तुच्छ मानना। **—(ठे) पर होना**–तुच्छ होना।

अँगूठी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अंगूठा+ई] मुँदरी, मुद्रिका, छल्ला। जुलाहों का अँगुली में लिपटाया हुआ तागा।

अंगूर—(संज्ञा, पु० फ़ा०) एक प्रकार का छोटा नरम फल, जो रसीला और मीठा होता है, इसी को सुखाकर किशमिश, दाख या मुनक्का बनाया जाता है, इसको लता होती है, **अँगूर** (दे०)। (संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंकुर] घाव के पुरते समय छोटे लाल दाने। **मु०—का मंड़वा, या—की टट्टी**–बाँस की खपाचों का बना हुआ मंडप, जिस पर अंगूर की बेलें चढ़ती हैं। एक तरह की आतिशबाजी। **—खट्टे होना**–न प्राप्त हो सकने वाली वस्तु की निन्दा और उपेक्षा होना। **—तड़कना या फटना**–घाव भरते समय ऊपर की मांस की झिल्ली का चटक जाना।

अँगूरशेफा—(संज्ञा, पु० फ़ा०) हिमालय पर प्राप्त होने वाली औषधि-विशेष।

अँगूरी—(संज्ञा, स्त्री०) अँगूर की शराब। (वि०) अंगूर का सा रंग, हलका हरा रंग।

अँगेजना॰—(क्रि०, स०) [सं०, अंग=देह+एज—हिलाना] सहना, उठाना, **झेलना**, स्वीकार करना —'जाहि हम नाहि अगेजों'—'**रत्ना०'**।

अँगेठी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) अँगीठी [प्रा०]

अँगेरना॰—(क्रि०, स० दे०) [सं० अंग—शरीर+ईर—जाना] मंजूर करना, स्वीकृत करना। सहना, बरदाश्त करना।

अँगोट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अंगेट] डील-डौल, आकार, आकृति।

अँगोछना—(क्रि०, अ० दे०) [सं० अंग—देह+प्रोक्षण—पोंछना] गीले वस्त्र से शरीर को पोंछना **[अँगौछना]** (ग्रा०)।

अँगोछा—(संज्ञा, पु०) [सं० अंग+प्रोक्षक] शरीर पोछने का वस्त्र, तौलिया, गमछा, उपरना, उत्तरीय, उपवस्त्र, **अँगौछा** (ग्रा०)।

अँगोछी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अँगोछा] देह पोंछने का छोटा वस्त्र, जिसे नहाते समय कमर पर लपेट भी लेते हैं, **अँगौछी** (ग्रा०)।

अँगोजना॰—(क्रि०, स०) देखिए **अँगेजना**।

अँगोरा—(संज्ञा, पु० दे०) मच्छर, मसा, डाँस। मशक, **अँगौरा** (ग्रा०)।

अँगौगा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अग्र—अगला+अंग—भाग] धर्मार्थ बाँटने या देवता पर चढ़ाने के लिए प्रथम निकाला हुआ अन्न या भोजन का पदार्थ, अँगाऊ, पुजौरा, अग्राशन, **अगरासन** (दे०)।

अँगौरिया—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंग—भाग] हलवाहा, जिसे मजदूरी न देकर हल बैल उधार दिया जाता है।

अँघड़ा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंघ्रि] छोटी जाति की स्त्रियों के पैर के अँगूठे पर पहिनने का छल्ला, अनवट, **अनौठा** (दे०)।

अंघस—(संज्ञा, पु० सं०) पातक, पाप, अघ।

अँघिया—(संज्ञा, स्त्री०) [प्रा०] आटा या मैदा चालने की चलनी। आखा, अँगिया।

अंघ्रि—(संज्ञा, पु० सं०) पैर, चरण। "एँड़ी तदपि धूलिसी अंघ्रि-लीन मैं"—**मैथिली०**। वृक्षों की जड़। चौथा भाग।

अंघ्रिप—(संज्ञा, पु० सं०) वृक्ष।

अँचरा—(संज्ञा, पु० दे०) अंचला, **आँचल, साड़ी** का आगे वाला छोर, **आँचर** (ग्रा०)।

अंचल—(संज्ञा, पु० सं०) साड़ी का छोर जो सामने रहता है, पल्ला, आँचल या आँचर। सीमा का समीपवर्ती भाग, किनारा, तट। (यौ०) **दृगंचल** (सं०) नेत्र-पलक। **मु०—बाँधना**–संकल्प करना। **—पकड़ना या थामना**–सहायता या सहारा देना। **—निष्पक्ष**–वह क्षेत्र जो किसी पक्ष की ओर न हो। उदासीन क्षेत्र [न्यूट्रल ज़ोन]।

अँचला—(संज्ञा, पु०) [सं० अंचला] **आँचला**, आँचल (दे०) साधुओं का एक वस्त्र, जिसे वे शरीर पर डाले रहते हैं।

अँचवना—(क्रि०, अ० दे०) आचमन करना। भोजन के बाद कुल्ली करना। हाथ मुँह धोना। पीना।

अंचित—(वि०, सं०) टेढ़ा, घुँघराला (केश)। गुँथा हुआ, सिला हुआ। पूजित, आराधित।

अंछर—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अक्षर] **अच्छर, आखर** (दे०) मुँह में काँटे से उभर आने का रोग, अक्षर, टोना, जादू। **मु०—मारना**–जादू या टोना करना, मंत्र चलाना।

अंज—(संज्ञा, पु० सं०) कंज।

अंजन—(संज्ञा, पु० सं०) सुरमा, काजल। 'सृष्टि-दृष्टि के अंजन रंजन'—**मैथिली०**। रात। स्याही, रोशनाई। पश्चिम दिशा के हाथी का नाम, एक दिग्गज। छपकली। एक प्रकार का बगला। एक प्रकार का

वृक्ष। एक पर्वत। कद्रू से उत्पन्न होने वाले एक सर्प का नाम। लेप। माया। काला या सुरमई रंग। (हि० दे०) रेलगाड़ी के आगे का इंजन।—**सिद्ध** (पु०) वह काजल जिसको नेत्रों में लगाने से पृथ्वी मे गडा हुआ धन दिखलाई देने लगे। **आँजन** (ग्रा०)।—**केश**-(पु०) दीपक, दीया। अंजन जैसा श्यामतापूर्ण केश। (वि०) जिसके केश अत्यन्त श्याम हों।—**केशी**-(स्त्री०) केशों को अत्यन्त काला बनाने वाला 'हट्टविलासिनी' नामक एक सुगन्धित पदार्थ। अंजन से श्याम केशवाली स्त्री।—**शलाका**-(स्त्री०) नेत्रों मे सुरमा लगाने की सलाई, सुरमचू।—**सार**- (वि०) [सं० अंजन + सारण] सुरमा लगा हुआ, अंजन से युक्त। (पु०) अंजन का सार भाग।—**हारी**-(स्त्री०) आख की पलक पर होनेवाली फुंसी या फुडिया, बिलनी, गुहाजनी। "अंजनहारी से व्यथित जिसके होवें नेत्र।" एक प्रकार का पतिंगा या कीड़ा, इसे बिलनी भी कहते है, इसके बिल की मिट्टी लगाने से बिलनी अच्छी हो जाती है। भृङ्गी कीड़ा। (वि०) अंजन को नष्ट करने या चुरानेवाली।

अंजना—(संज्ञा, स्त्री० सं०) केशरी नामक बानर की स्त्री तथा हनुमान जी की माता। "कूद पड़े सागर मे अंजना के लाल।" बिलनी, गुहाजनी। दो रंग की एक छिपकली। (पु०) एक प्रकार का मोटा धान।—**नन्दन**-(पु०) अंजना के पुत्र। हनुमान जी। [**अंजनानंद**]।

अंजनी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) हनुमान जी की माता। माया। कुटकी या एक प्रकार की औषधि। आँख के पलक को फुंसी, बिलनी, [**अंजना**]।

अंजर-पंजर—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० पंजर—ठठरी] शरीर को हड्डियों का ढाँचा, पसली, ठठरी, जोड़। **मु०—ढीला होना**-देह के जोड़ों का उखड़ना, देह के बन्दों का टूट कर हिल जाना, शिथिल या लस्त हो जाना।—**निकलना**-ठठरी या भीतरी चीजें निकलना। (क्रि० वि०) अगल-बगल, पार्श्व में। [**अँजरी-पँजरी**] (दे०) [**आँजर-पाँजर**] (दे०)।

अंजल—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंजलि] **अंजली**। (संज्ञा, पु० यौ० दे०) अन्नजल।

अंजलि—(संज्ञा स्त्री० सं०) **अंजली**—दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ संपुट। हथेलियों से बना हुआ गड्ढा। अँजुली मे आनेवाला परिमाण। सोलह तोले के बराबर का एक नाप। दो पसर। हथेलियो से निकाला हुआ दान या दान का अन्न। **अँजुरी, आँजुरी** (दे० ग्रा०)।—**गत**-(वि०) अंजलि में आया हुआ, प्राप्त, हाथ मे आया हुआ, जो हथेली मे हो, करतल गत। 'अंजलिगत सुभ सुमन जिमि सम सुगंधि कर दोय'—तुल०। "टपक डाल से अंजलिगत था अनायास वह"—गिरीश।—**पुट**-(पु०) कटोरे या दोने के रूप मे बनी अंजलि।—**बद्ध**-[बद्धांजलि] (वि०) हाथ जोड़े हुए, प्रणाम करते हुए, विनीत। "अंजलि-बद्ध, विनीत आपका अनुचर हूँ मै।"

अंजली—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए अंजलि।

अँजवाना—(क्रि०, दे०) सुरमा लगवाना, अंजन लगवाना, अँजाना। 'अंजन अँजाये मधुराधर अभी-के है'—पद्मा०।

अँजवार—(संज्ञा, पु० दे० फ़ा) सरदी और कफ़ मे दिये जाने के योग्य एक विशेष प्रकार के पौधे की जड।

अंजह*—(वि०, दे०) [हि० अनाज + हा] अनाज का, अन्न के मेल से बनाया हुआ। (स्त्री०),—**अंजही**-[हि० अंजहा] अन्न का बाजार, अनाज की मंडी। (वि०) अनाज की, अन्नयुक्त।

अंजाना*—(क्रि०, स० दे०) [हि० अंजन] (प्रेरणा०) [अँजवाना, **अँजावना**]। अंजन लगवाना।

अंजाम—(संज्ञा, पु० फ़ा०) अंत, परिणाम, फल, समाप्ति, पूर्ति। **मु०—देना**-पूरा करना।—**निकालना**-फल निकालना। **बे—**निष्फल। **बा—**(वि०) सफल, परिणामयुक्त।

आंजित—(वि०, सं०) अंजन लगाये हुए, आँजे हुए, अंजनयुक्त।

अंजीर—(संज्ञा, पु० फ़ा०) गूलर के से फल वाला एक वृक्ष।

अंजुमन—(संज्ञा, स्त्री० अ०) महफ़िल, सभा, मजलिस।

अँजुरी§—(संज्ञा, स्त्री० दे०) अंजलि, [**आँजुरी, अँजुली** (ब्र०)]

अँजोरना—(क्रि०, सं०) [हि० अँजुरी] बटोरना, हरण करना, छीन लेना। (क्रि०, स०) [सं० उज्ज्वलन] जलाना, प्रकाशित करना, बालना—जैसे, दीपक अँजोरना।

अँजोरा§—(वि०, दे०) उजाला, [**अँजोर**]।—**पाख**-शुक्ल पक्ष। (स्त्री०)—**रिया**-चंद्रिका, चाँदनी, उजेरिया, चंद्रप्रभा। जैसे अँजोरिया या उजेरिया 'उइ, चढ़ि, निकरि, छिटिक आई'।

अँजोरी*§—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० अँजोर + ई]

प्रकाश, उजाला, चाँदनी, चमक। (वि०, स्त्री०) उजाली, प्रकाशमयी।

अंझा—(संज्ञा पु० दे०) [सं० अनध्याय, प्रा० अनज्झा] नागा, छुट्टी, तातील, खाली, सूना। **मु०—होना**-सूना या नागा होना।**—पड़ना**-खाली जाना।

अँटना—(क्रि०, अ० दे०), [सं० अट्+चलना] समा जाना, पूरा पड़ना, किसी वस्तु के भीतर आना, सटीक बैठ जाना, ठीक-ठीक चिपकना, पर्याप्त या काफ़ी होना, खपना, काम चलना, भर जाना। [**अटना**] (प्रेरणा० रूप) [**अँटाना, अँटवाना, अँटावना**]।

अँटवाना—(क्रि०, स० दे०) गर्म करना, औटाना।

अंटा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंड] बडी गोली, गोला। सूत या रेशम का बड़ा पिंडा। गुल्ली। बडी कौड़ी। बिलियर्ड का अंग्रेज़ी खेल, जो हाथी दाँत की गोलियों से खेला जाता है। अटारी, अट्टालिका। [**अटा**] (व्र०)।**—घर**-(पु०) गोली खेलने का कमरा। अटारी का घर।

अंटागुड़गुड़—(वि०, दे०) [हि० अंटा+गुड़गुड़] नशे मे चूर, बेहोश, बेसुध, अचेत, बेख़बर। **मु०—होना**-बेख़बर सो जाना।

अंटाचित, अंटाचित्त—(क्रि० वि०, दे०) [हि० अंटा +चित] पीठ के बल, सीधे, (औंधे का विपरीत)। **मु०—होना**-सीधे गिर पड़ना। स्तम्भित, अवाक् या सन्न होना, बेकाम या बरबाद होना। **नशे से** बेसुध, अचेत, बेख़बर या चूर होना।**—करना**-पछाड़ देना।

अंटाबधू—(संज्ञा, पु०) [हि० अंटक+सं० बंधक] जुए मे सर्वस्व हार जाने पर आख़िरी दाँव की कौड़ी।

अँटिया—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि० अंटी] घास या पतली लकड़ियों का बँधा हुआ छोटा गट्ठा, पूला। मुर्री, टेंट, कमर पर बंधी हुई धोती के किनारे की तह [**आँटी, अंटी**]।

अँटियाना—(क्रि०, स० दे०) [हि० अंटी] अँगुलियों के बीच मे छिपाना। चारो उँगलियो मे लपेट कर तागे की पिंडी बनाना, घास या पतली लकड़ियो का गट्ठा बाँधना। गायब करना, हज़म करना। टेंट या मुर्री में रखना। शैतानी करना, [**अंटियाना**]।

अंटी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अष्टि, प्रा० अट्ठि+गाँठ] उँगलियो के बीच की जगह, घाई। गाँठ। धोती की कमर के ऊपर की लपेट। कान की छोटी बाली, मुरकी। सूत या रेशम की पिंडी, अंटेरन सूत लपेटने की लकड़ी। विरोध, बिगाड़, लड़ाई। शरारत, बदमाशी। **मु०—करना**-शरारत करना, धोखा देकर किसी की कोई वस्तु ले लेना, आँख बचा कर चुपके से किसी का माल उड़ा देना। **—मारना**-जुए मे उँगलियो के बीच मे कौड़ी रख लेना या छिपाना। कम तौलना, डाँड़ी मारना, तराज़ू की डाँडी में हेर-फेर करना। तर्जनी अथवा अंगूठे के पास की उँगली के ऊपर मध्यमा या बीच की उँगली चढ़ा कर एक मुद्रा बनाना [जब कोई लड़का कोई अपवित्र वस्तु छू लेता है तब और लड़के छूत से बचने के लिए ऐसी मुद्रा बनाते हैं]। **—में रखना**—टेंट या मुर्री मे खोंसना।

अँटौतल—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० अटना] कोल्हू में जोते जाने वाले बैल की आँख का ढकन।

अंठई—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अष्टपदी] किलनी, कुत्ते के शरीर मे चिपटा रहने वाला आठ पैरों का एक छोटा कीड़ा।

अंठली, अंठी, आँठी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अष्टि + गुठली] चियाँ, गुठली, बीज। गिरह, गिलटी। कड़ापन। दही का थक्का। नवोढ़ा स्त्री की उभड़ती हुई छाती।

अंड—(संज्ञा, पु० सं०) अंडा, अंडकोश, फोता। ब्रह्मांड, विश्व। वीर्य, शुक्र, बीज। रेंड या एरंड। कस्तूरी का नाफ़ा, मृगनाभि। पंच आवरण। (दे०) कोश। कामदेव। पिंड, शरीर। मकानों की छाजन पर रखे हुए कलश।**—कटाह**-(पु०) ब्रह्मांड, विश्व। **—कोश**-(पु०) वृषण, अंड, फोता, बैजा, ब्रह्मांड, विश्वमंडल, लोक। सीमा, हद। फल का ऊपरी छिलका।**—ज,—अंडजात**-(पु०) अंडे से पैदा होने वाले जीव, जैसे पक्षी, सर्प आदि।**—वृद्धि**-(स्त्री०) अंडकोश की वृद्धि या सूजन का रोग। **—सू**-(वि०) अंड से उत्पन्न होने वाला।

अंडबंड—(संज्ञा, पु०) असम्बद्ध, ऊटपटांग प्रलाप, अनाप-शनाप, व्यर्थ की बात, बेसिर-पैर की बक-झक। (वि०) इधर-उधर का, अटाँय-सटाँय, अस्त-व्यस्त, अगड़-बगड़, अंट-संट, अटर-सटर।

अंडरना—(क्रि०, अ० दे०) [सं० अन्तरण] बाल निकलते समय घास के पौधे की स्थिति मे आना, गर्भना, रेंडना।

अंडस—(संज्ञा, स्त्री० दे०) कठिनाई, अड़चन, दिक़्क़त।

अंडा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंड] अंड। पक्षी। सफ़ेद गोल पिंड या खोल जिसमें से साँप का बच्चा उत्पन्न होता है। शरीर, देह, पिंड। **मु०—ढीला होना**-नस ढीली होना, थकावट या शिथिलता।

आना। द्रव्यहीन होना, दिवालिया होना।—**सरकना**–हाथ पैर हिलना, अंगों में कंपन उठना। चेष्टा या प्रयत्न होना।—**सरकाना**–हाथ-पैर हिलाना। —**सेना**–पक्षियों का गर्मी पहुचाने के लिए अपने अंडों पर बैठा रहना। घर में बैठा रहना, बाहर न निकलना—**फूट जाना**–भेद या मर्म खुलना।

अंडाकार—(वि०, यौ०) [सं० अंड+आकार] अंडे की शक्ल का, लम्बा और गोला।

अंडाकृति—(संज्ञा, स्त्री० यौ०) [सं० अंड+आकृति] अंडे की शकल। (वि०)–[अंडाकार]।

अंडी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० एरण्ड] रेंडी, रेंड के फल का बीज। रेंड़ या एरंड वृक्ष। एक प्रक... का रेशमी वस्त्र।

अँडुआ—(वि०, दे०) जो बधिया न किया गया हो। (संज्ञा, पु० दे०) साँड़, नया बैल, अंडू बैल। —**बैल**–(पु०) न बधिया किया हुआ बैल। आलसी आदमी।

अँडुआना—(क्रि०, स० दे०) [सं० अंड] बधिया करना, बछड़े के अंडकोशों को कुचलना।

अंडू—(संज्ञा, पु० दे०) बधिया न किया हुआ बैल या साँड़। बड़े अंडकोश का मनुष्य, जो न चल सके। आलसी।

अंडैल—(वि०) [हिं० अंडा+ऐल-प्रत्य०] **अंडे**-वाली, जिसके पेट में अंडे हो।

अंत—(संज्ञा, पु० सं०) समाप्ति, आखीर, पूर्ति, अवसान, इति, पूर्तिकाल।—'अंत नीच को नीच'। (वि०)—[**अंतिम, अंत्य**]–शेष। आखीरी, पिछला, अंत का। (क्रि० वि०)—**में**–निदान, आखिरकार। (क्रि० वि०) [**सं०** अन्यत्र हिं० **अनत**] और जगह, दूर, अलग, पृथक 'अनत निहारे'—तुल०।—**अक्षर लोप**–शब्द के अंतिम अक्षर का अभाव [एपोकोप]।—**अक्षरागम**–शब्द के अन्त में अक्षर का आना। (पु०) अंत करने वाला, नाश करने वाला दैवी तत्व; मृत्यु, जो प्राणी मात्र के जीवन का अन्त करती है, मौत, काल, यमराज। सन्निपात ज्वर का एक भेद या कालज्वर। ईश्वर जो सब का संहार या विनाश करता है, रुद्र, शिव।—**कर,—[कारी]**–(पु०) अंत करने वाला, संहारक, मारने वाला तत्व।—**करण**–(पु०) समाप्ति, विनाश, निवारण, स्वत्वीकरण, छूट जो व्यापारी अपने ग्राहक को कमीशन के तौर पर देता है [एबेटमेंट]।—**कार, कारक**–मृत्यु, रुद्र। (स्त्री० **अंतकरा**)।—**काल**–[फ़ा० इंतक़ाल] मरण काल।—**क्रिया**–(स्त्री०) अंत करने की क्रिया, अन्त्येष्टि कर्म, मृत्यु के पश्चात् का क्रिया कर्म, मृतक संस्कार, दाहादि कृत्य।—**ग**–(पु०) पारगामी, पारंगत, निपुण, पूरा जानकार।—**गमन**–मन की गुप्त बात का ज्ञान।—**गति**–(स्त्री०) –अंतिम दशा, मृत्यु, मरण, मौत। "तेरी भी आ गयी अंतगति"—गिरीश।—**घाई***–(वि०) विश्वासघाती, दगाबाज, धोखा देने वाला।—**स्थ**–(पु०) मध्यवर्ती, भीतर स्थित। स्पर्श और ऊष्म वर्णों के बीच वाले वर्ण—य, र, ल, व।—**सद्**–(पु०) शिष्य, चेला।—**स्नान**–(पु०) यज्ञ की समाप्ति पर किया गया स्नान, अवभृत स्नान। (वि०, **अंतस्नायी**)।—**स्वरलोप**–(पु०) शब्द के अंतिम स्वर का उच्चारण-त्याग [एलीजन आव् एंडिंग वावेल]।—**समय**–मृत्यु काल, प्रलय। **मु०—आना**–नाश या मृत्यु का समय आना, पूर्ति पर पहुचना।—**जानना**–फल जानना।—**जाना**–दूसरे स्थान को जाना। (दे०) **अन्तै**। दूसरी जगह) ***अंता *अन्त्, *अन्ते** (अव० संज्ञा, पु०) (सं० अंतस्) अंतःकरण, हृदय, जी, मन, (जैसे अन्त या अन्तर की बात जानना), भेद, रहस्य, गुप्त बात, मन का भाव। (संज्ञा, पु०) [सं० अंत] आंत, अँतड़ी।—**देखना**–परिणाम देखना।—**बनना**–फल अच्छा होना, जी[व]न-लीला की समाप्ति का अच्छा होना।—**बिगड़ना**–फल बुरा होना। सीमा, हद, अवधि, पराकाष्ठा। निदान, आखीर, परिणाम, फल अच्छा न होना। काल। —**होना**–खतम होना, पूर्ण होना, मर जाना। —**करना**–मार डालना, समाप्त करना, इति-श्री करना।—**पाना**–पार पाना।

अंतड़ी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अंत्र] आंत। **मु०—कुल-बुलाना,—जलना,—सिकुड़ना—सूखना,** —पेट जलना। बहुत भूख लगना।—**गले में पड़ना**–विपत्ति में फंसना।—(**ड़ियों**) **में बल पड़ना**–पेट का ख़ाली होना।—(**ड़ियाँ**) **मिलना** –एक होना।—(**ड़ियों**) **के बल खोलना**–बहुत समय में भोजन मिलने पर खूब भर पेट खाना।— **या आंत उतरना**–एक रोग जिसे हार्निया कहते हैं, अंत्रवृद्धि।

अंतपाल—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) द्वारपाल, ड्योढी-दार, संतरी, पहरू, दरबान, पहरेदार, प्रतिहारी, राज्य की सीमा का रक्षक।

अंतयोगात्मक—ऐसी भाषाएँ जिनमें सम्बन्ध तत्व

केवल अंत में जोड़ा जाता है [सफिक्स ऐग्यु-टिनेटिव]।

अंतरंग—(वि०) [सं० अंतर्+अंग] भीतरी, बहिरंग का विपरीत, अत्यन्त समीप, अभिन्न, घनिष्ठ, गुप्त बातों का जानकार, दिली, जिगरी, मानसिक, अंतःकरण का, अपना, निजी। (संज्ञा, पु०) शरीर के हृदय, मस्तिष्क आदि अंग।—**परिषद्** (पु०)–अंतरंग सभा, ब्रिटिश साम्राज्य का सर्वोच्च न्यायालय [प्रिवी कौंसिल]।—**सचिव** (पु०)–देखिए सचिव, निजी।

अंतर—(संज्ञा, पु० सं०) भेद, विभिन्नता, फर्क, अलगाव या विलगता, दूरी, अवकाश। मध्यवर्ती स्थान या समय। ओट, आड़, व्यवधान, परदा। छिद्र, रंध्र। (क्रि० वि०) दूर, अलग, पृथक्। भीतर, अंदर। जुदा, विलग। जैसे, **कालान्तर**। (संज्ञा, पु०) [सं० अंतस्] हृदय, अंतःकरण। (वि०) [**आंतरिक**]।—**अयन**–(पु०) अन्तर्गृही तीर्थों की एक विशेष परिक्रमा, [**अंतरायन**]।—**अग्नि**–(पु०) पेट की अग्नि, भोजन पचानेवाली जठराग्नि। (वि०) अग्नि में स्थित।—**चक्र**–(पु०) भीतरी परिधि या मंडल। दिशाओं और विदिशाओं के मध्यवर्ती अंतर को चार समान भागों में बाँटने से होने वाले ३२ भाग। दिग्विभागों में पक्षियों के शब्द श्रवण कर शुभाशुभ फल कहने की विद्या। तन्त्रशास्त्रानुसार शरीर के आंतरिक मूलाधारादि कमलाकार छः चक्र। आत्मीय वर्ग, बंधु-बाधव-मंडल।—**छाल** (स्त्री०)–पेड़ की भीतरी छाल, गाभा।—**तम**–(वि०) भीतर का, अंदरूनी [इनरमोस्ट]।—**दशा**–(स्त्री०) मन की हालत। ज्योतिष में ग्रहों की चाल का विधान, जिससे मानव-जीवन प्रभावित होता है।—**दिशा**–(स्त्री०) दो दिशाओं के मध्य की दिशा, कोण, विदिशा।—**धान**, —**हित** (वि०)–गायब, गुप्त, लुप्त। दूसरा, अन्य, और।—**पट**–(पु०) परदा, भीतरी आड, ओट, आड़ करने का कपड़ा। विवाह-मंडप में अग्नि और वर-कन्या के मध्य में डाला हुआ वस्त्र या परदा। छिपाव, दुराव। धातु या औषधि को फूँकने के प्रथम, उसको संपुट कर गीली मिट्टी का लेप करते हुए कपड़ा लपेटने की विधि या क्रिया। कपड़कोट, कपड़-मिट्टी, कपड़ौटी। भीतर (धोती या साड़ी के) पहिनने का वस्त्र।—**यामी** [—**जामी**]§–(पु०) मन की बात जानने वाला, ईश्वर।—(वि०) 'जो अंतरयामी वही इसे जानेगा'—मैथिली०। "अंतरयामी से छिपी नहीं एक भी बात।" (पु०) अधोवस्त्र।—**संचारी**–(पु०) संचारी भाव (काव्य०)।—**सौरभ**–(पु०) 'केवल मानव उर अंतर सौरभ से आज न सुरभित।'—पंत।—**स्थ**–(वि०) अन्दर रहने वाला, भीतरी, अंदर का।—**स्थापन**–बीच में पड़ना [इंटरपोज़]। **मु०—रखना या करना**–भेद-भाव रखना या करना।—**पड़ना**–आना, होना।—वैमनस्य होना, बिगाड़ होना, भेद पड़ना, [आँतर, दे०]।

अंतरा—(क्रि० वि०) [सं० अंतर] मध्य। निकट। सिवाय, अतिरिक्त। पृथक्, बिना। (संज्ञा, पु०)—किसी गीत या गान के स्थायी या टेक पद के अतिरिक्त, अन्य पद या चरण (संगी०)। प्रातः तथा संध्या के मध्य का समय, दिन। एक प्रकार का ज्वर जो एक दिन का व्यवधान देकर आता है, [**अँतरा** दे०]।

अँतरा—(संज्ञा, पु० दे०), [सं० अंतर] अंझा, नागा, बीच, अन्तर, फर्क। एक दिन का नागा देकर आनेवाला ज्वर।

अंतरागम—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) आधिक्य, बढ़ाव [इनफ्लक्स]।

अंतरागार—(संज्ञा, पु० सं०) गृह के मध्य का भाग। 'अमल अन्तरागार में फैला विमल प्रकाश' —गिरीश।

अंतरात्मा—(संज्ञा, स्त्री० यौ०) [सं० अन्तर+आत्मा], जीवात्मा, अंतःकरण। ब्रह्म।

अंतराय—(संज्ञा, पु० सं०) विघ्न, बाधा, योगसिद्धि के नौ विघ्न। ज्ञान का बाधक तत्त्व।

अंतरायण—(संज्ञा, पु० सं०) किसी व्यक्ति का निश्चित स्थान में इस प्रकार रक्खा जाना कि वह उससे बाहर न जा सके, नजरबंदी [इंटर्नमेंट]।

अंतराल—(संज्ञा, पु० सं०) घेरा, मंडल, घिरा हुआ या आवृत स्थान, मध्य, बीच। 'वह देखो वन के अंतराल से निकले'—मैथिली०।—**राज्य**—(पु०) दो देशों की सीमाओं के बीच में पड़ने वाला वह स्वतन्त्र राज्य जिसके कारण उन देशों में प्रत्यक्ष संघर्ष का अवसर नहीं आ पाता [बफर स्टेट]।

अंतरिका—(स्त्री० सं०) दो घरों की मध्यवर्ती गली। 'दो भवनों के मध्य में अंतरिका अभिराम' —गिरीश।

अंतरिक्ष—(संज्ञा, पु० सं०) पृथ्वी और सूर्यादि लोकों के मध्य का स्थान, दो ग्रहों या ताराओं के बीच की शून्य जगह, आकाश। 'ले लेकर यह अंतरिक्ष सखि'!—मैथिली०। अधर, शून्य, स्वर्गलोक, तीन

प्रकार के केतुओं में से एक। (वि०) अन्तर्द्धान, गुप्त, अप्रगट, लुप्त, गायब, [**अंतरीक्ष, अंतरिख**]। **—विज्ञान**–(पु०) ग्रहों से सम्बन्धित या मौसम की विवेचना करने वाला विज्ञान [मीटिअरॉलॉजी]। **[अंतरिछ, अंतरिच्छ]**

अंतरित—(वि०, सं०) भीतर किया या रक्खा हुआ, छिपा हुआ, अन्तर्धान, गुप्त, तिरोहित, आच्छादित, ढका हुआ।

अंतरिम शासन—अंतर्कालीन सरकार, अस्थायी सरकार [इंटरिम गवर्नमेंट]।

अंतरीप—(संज्ञा, पु० सं०) पृथ्वी का वह नुकीला भाग जो सागर में दूर तक चला गया हो, रास।

अँतरौटा—(संज्ञा, पु० ब्र०) [सं० अन्तर+पट] साड़ी के नीचे पहिनने का वस्त्र। (स्त्री०) [**अँतरौटी** सं० अंतरपटो]।

अंतर्—(अव्य०, सं०) मध्य में, भीतर। (उप०) अंतः, अंतस्। **—कथा**–(स्त्री०) किसी कथा, बात या प्रसंग के अन्तर्गत आने वाली कोई दूसरी कथा, बात या प्रसंग [एल्यूजन]। **—गत**–(वि०) भीतर गया हुआ, समाया हुआ, अन्तर्भूत, सम्मिलित। भीतरी, गुप्त, अन्तःकरण में स्थित, दिल या हृदय या मन के भीतर छिपा हुआ। 'जितने हो नागरिक नगर अंतर्गत।' **—गति**–(स्त्री०) मन की भावना, चित्तवृत्ति, अभिलाषा, इच्छा, हार्दिक कामना, आकांक्षा। अंतर में स्थित होने का भाव। **—गरिमा**–(स्त्री०) भीतरी महत्व, आंतरिक गौरव। 'भूल गया वह अंतर्गरिमा'—पंत। **—गूढ़**–(वि०) गुप्त, प्रच्छन्न [अंडर हैंड]। **—ग्रंसन**–(पु०) अपराध, आपत्ति या कठिनाई में पड़ जाने का भाव। **—गृह**–(पु०) भीतरी घर। **—गृही**–(स्त्री०) [सं० अन्तर+गृही] तीर्थस्थान के भीतर पड़ने वाले प्रमुख स्थलों की यात्रा—अन्दर के घर का। **—चेतन**–(वि०) आन्तरिक चैतन्य अथवा बोध से सम्पन्न। 'अन्तर्चेतन तारुण्य फूट गढ़ता अब नव जग का जीवन'—पंत। **—जातिक विवाह**–अन्तर्जातीय विवाह, दूसरी जाति में विवाह [इन्टर कास्ट मैरिज]। **—जानु**–(वि०) हाथों को घुटनों के बीच में रखे हुए। **—जीवन**–(पु०) आंतरिक, अंतर्मुखी जीवन। 'मानव के अंतर्जीवन का गत इतिहास भयानक'—पंत। **—ज्ञान**–(पु०) अंतःकरण में अपने आप उत्पन्न होने वाला ज्ञान। 'ओ अन्तर्ज्ञान नयन वैभव'—पंत। **—ज्वाला**–(स्त्री०) मन के अग्नि की तरह जलने और जलाने वाली पीड़ा। 'अन्तर्ज्वाला लगी जलाने मेरे उर को'—मधुपुरी। **—दशा**–(स्त्री०) अन्तरदशा, फलित ज्योतिष के मतानुसार मानव-जीवन में ग्रहों का नियत भोगकाल। **—दशाह**–(पु०) मरण के पश्चात् १० दिनों के अन्दर तय होने वाला कर्मकांड (स्मृति०)। **—दाह**–(स्त्री०) भीतरी जलन, एक प्रकार का रोग। 'जल उठी छूकर मुझे वे धन्य अंतर्दाह मेरी'—बच्चन। **—देव**–(पु०) मन के भीतर उच्च भावना संचारित करने वाले दिव्य शक्ति के प्रतिनिधि देवता। 'अंतर्देवों से प्रेरित या भूत दैत्य से शासित'।—पंत। **—देशीय**–(वि०) देश के भीतरी भागों से सम्बन्धित, स्वदेशी, आंतरिक [इनलेंड]। **—आय**–(पु०) आन्तरिक आय [इनलेंड रेवन्यू]। **—जल-पथ**–(पु०) देश के भीतर के जल मार्ग [इनलेंड वाटर वेज़]। **—पत्र**–(पु०) डाकखाने में मिलने वाला एक विशेष प्रकार का पत्र लिखने का कागज जिसे मोड़ कर लिफाफा बनाया जाता है तथा जो देश के बाहर नहीं भेजा जा सकता [इनलेंड लेटर]। **—व्यापार** (पु०)--अंतर्वाणिज्य, देश के भीतरी भागों में होने वाला व्यापार [इन लेंड ट्रेड]। **—शुल्क**–(पु०) आन्तरिक कर [इनलेंडटैक्स]। **—०हुंडी**–(स्त्री०) स्वदेशी हुंडी। [इनलेंड बिल]। **—धान**–(संज्ञा, पु० सं०) लोप, अदर्शन, छिपाव, तिरोधान, गुप्तता, अदृष्टता। (वि०) अलक्ष्य, अदृश्य, अंतर्हित, लुप्त, अप्रगट, छिपा हुआ, तिरोहित, ध्यानांतर्गत, अंतर्ध्यान। 'विजयिनी, सहसा हुई तू, हाय अंतर्धान !'—बच्चन। **—नाद**–(पु०) अंतरात्मा की प्रेरक ध्वनि। 'छिपाये रोता अन्तर्नाद कहाँ सीखी यह अद्भुत प्रीति।'—[यामा]। **—नभ**–(पु०) अंतःकरण का आकाश। 'अंतर्नभ के दुग्धामृत से'—पंत। **—निविष्ट**–(वि०) भीतर बैठा हुआ, अंतःकरण में स्थित, मन में जमा हुआ, हृदय में पैठा हुआ। **—निहित शक्ति**–(स्त्री०) स्वाभाविक या पैदाइशी शक्ति [इनहेरेंट पावर]। **—नीति**–(स्त्री०) भेदनीति, दलनीति [अंडर हैंड पालिसी]। **—दृग**–(पु०) भीतरी नेत्र, ज्ञान-चक्षु। 'जिन आँखों से तुलसी ने राघव को देखा, जिस अंतर्दृग से सूरदास ने कान्हा को'—बच्चन। **—दृष्टि**–(स्त्री०) अन्तर्ज्ञान, प्रज्ञा, आत्मचिंतन। (संज्ञा, पु०) **[अन्तर्द्रष्टा]**। **—द्वार**–(पु०) गुप्तद्वार, खिड़की। **—ध्वंस**–(पु०) भीतर ही भीतर विनाश-व्यापार [सैबोटेज]। **—ध्वंसक**–(पु०) जहाजों में छेद करके उन्हें अरक्षित रूप से डुबाने का यंत्र [टारपीडो]। **—गिरा**–(स्त्री०) मन की वाणी

या आवाज, भीतरी शब्द ।—**प्रादेशिक**–(वि०) एक देश के कई प्रांतों से सम्बन्धित [इंटर प्राविंशियल] ।—**बोध**–(पु०) आत्मज्ञान, आत्मा की पहिचान, आन्तरिक अनुभव, अध्यात्म ज्ञान, मानसिक ।—**भाव**–(पु०) भीतर समावेश, मध्य मे प्राप्ति । तिरोभाव, विलीनता, छिपाव, अंतर्गति । नाश । अभाव । आंतरिक भाव, प्रयोजन, मतलब, अभिप्राय, आशय, मंशा । 'प्रभु इच्छा मे मेरी इच्छा का भी अन्तर्भाव'—गिरीश (वि०) [**भावित, भूत**] । —**भावना**–(संज्ञा, स्त्री० यौ० सं०) ध्यान, चिन्ता, सोच-विचार, भीतरी भावना । गुणन-फलान्तर से संख्याओं का शोधन ।—**भावित**–(वि०) अन्तर्भूत, लुप्त, छिपाया, हुआ, अन्तर्गत, शामिल, भीतर किया हुआ ।—**भूत**–(वि०) अन्तर्गत । (पु०) जीवात्मा, प्राण । (विलो०) [**बहिर्भूत**] ।—**भूमि**–नीचे की मिट्टी [सब स्वाएल] ।—**मनस**–(वि० सं०) उदास, घबड़ाया हुआ, व्याकुल, उन्मन, विकल ।—**मानव**–(पु० सं०) आध्यात्मिक भावना-सम्पन्न मनुष्य, बहिर्मुखी भौतिक वृत्ति वाले मनुष्य से विपरीत, अंतर्मुखी प्रवृत्ति से युक्त मानव । 'अंतर्मानव का यह युग संघर्षण'—पंत ।—**मुख**–(वि०) भीतर की ओर देखने वाला, भीतर की तरफ मुँह या छिद्र वाला 'अंतर्मुख करते अवलोकन'—पंत । (क्रि० वि०) भीतर की ओर प्रवृत्त, बाहर से हट कर भीतर ही लगा हुआ । (विलो०)—[**बहिर्मुख**] । —**मुखी श्लिष्ट**–(वि०) व भाषायें जिनमें सम्बन्ध तत्व अर्थतत्व के साथ घुल-मिल जाता है [इंटनल इनफ्लेक्शनल] ।—**यामी**–(संज्ञा, पु०) ईश्वर, भगवान, परमात्मा । भीतर या हृदय का मर्म जानने वाला, मन मे गति रखने वाला, अन्तःकरण मे रह कर प्रेरित करने वाला, मन या चित्त पर अधिकार रखने वाला, देखिए **अंतरयामी** ।—**राष्ट्रीय**–(वि० सं०) अनेक राष्ट्रों से सम्बन्धित ।—**गीत** कम्यूनिस्टों का अंतर्राष्ट्रीय गान [इंटर नेशनल सांग] ।—**मजदूर संगठन**–अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ [इन्टर-नेशनल लेबर आर्गनाइजेशन] **मित्रता**–(सं०) राष्ट्रों के बीच होने वाली संधि [इन्टर नेशनल एलायंस] ।—**मुद्रा कोष**–(पु०) संयुक्त राष्ट्र संघ की संरक्षता मे स्थापित निधि जो सदस्य देशों की मुद्राओं के पारस्परिक विनिमय-मूल्य को स्थिर करती है तथा मुद्राओं की कमी पड़ने पर अधिक मुद्राएँ निकालने की सुविधा देती है [इन्टर नेशनल मानीटरी फंड] ।—**सम्मेलन**–अनेक राष्ट्रों द्वारा आयोजित सम्मेलन [इन्टर नेशनल कान्फरेंस] ।—**सहयोग**–राष्ट्रों का पारस्परिक सहयोग [इन्टरनेशनल कोआपरेशन] ।—**लम्ब**–(पु०) वह त्रिकोण क्षेत्र या त्रिभुज जिसमे भीतर ही लंब गिरे हों । (विलो०)—[**बहिर्लंब**] ।—**लंयन**–(पु०) निषेध, रुकावट [इनहिबिशन] ।

अंतर्लापिका—(संज्ञा स्त्री० यौ० सं०) वह पहेली या प्रहेलिका या प्रश्नोत्तरालंकार युक्त छंद जिसमे प्रश्नों के उत्तर उसी के शब्दों या अक्षरों से निकलते हो । (काव्य०) (विलो०) [**बहिर्लापिका**] । —**लीन**–(वि० यौ० सं०) मन मे ही मग्न या डूबा हुआ, आत्मविलीन, भीतर ही छिपा हुआ । (विलो०)—[**बहिर्लीन**] ।—**लोचन** (पु०) आंतरिक नेत्र । 'जब मुंदे कुमुद अन्तर्लोचन'—पंत । —**वती**—[अन्तरवती] (वि०) गर्भवती, गर्भिणी, द्विजीवा । भीतरी, भीतर रहने वाली ।—**वस्तु**–(स्त्री०) किसी बर्तन, लेख या पुस्तक आदि के भीतर की सामग्री [कंटेंट्स] ।—**वाचन**–(पु०) चुनाव [सेलेक्शन] ।—**बाधा**–(पु०) रुकावट, व्याघात [इन्टरप्शन] ।—**वाणी**–(पु०) शास्त्रज्ञ, विद्वान, पंडित ।—**वासी**–(वि०) अंतःकरण मे निवास करने वाला, अंतर मे स्थित । 'अन्तर्वासी एक पुरुष जो पिंडो से ऊपर है ।' [कुरु०]—**विकार**–(पु०) शरीर के धर्म, जैसे भूख, प्यास, भीतरी दोष । (विलो०)—[**बहिर्विकार**] ।—**विधान**–(पु०) घुल मिल जाना । [एबजार्पशन] —**जातियों का**–जातियों का संविलयन या घुल-मिल जाने की क्रिया [एबजार्पशन आफ नेशनैलिटीज] ।—**वेग**–(पु०) अन्दर के वेग, छींक, पसीना आदि ।—**वेगी**–(पु०) अस्वेद-ज्वर, ज्वर, जिसमे पसीना नहीं आता । (विलो०)—[**बहिर्वेगी**] ।—**वेद**–(पु०) यज्ञों की वेदियो का देश, जो गंगा-यमुना के बीच मे है, ब्रह्मावर्त, द्वाब [दोआब,] । 'और यह अंतर्वेद महान'—हरिऔध ।—**वेद**,—**अंतर्वेदीय**–(वि०) अन्तर्वेद का वासी, गंगा-यमुना के द्वाबा मे रहनेवाला । (पु०) गंगा-यमुना के द्वाबा मे बसने वाला व्यक्ति ।—**वेशिक**–(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अन्तर +वेशिक] अंतःपुर रक्षक, ख्वाजा ।—**वैभव**–(संज्ञा, पु० सं०) मनुष्य के अंतर्जगत का ऐश्वर्य । 'अन्तर्वैभव से तुम निमित करते नव मानवपन' —पंत ।—**वर्ण**–(पु०) अन्तिमवर्ण या चतुर्थ वर्ण का, शूद्र ।—**व्यंजन लोप**–(पु०) अन्तिम व्यंजन का उच्चारण-त्याग [एलीजन आव् एंडिंग कान्सोनेंट] ।—**व्यंजनागम**–(पु०) शब्द के अन्त में व्यंजन

का उच्चारण [कमिंग आव् कांसोनेंट इन दि एंड]।—**व्यथा**-(स्त्री०) मानसिक पीड़ा। 'प्रायः चिन्ताजन्य अन्तर्व्यथाएँ।' [मधुपुरी]।—**व्योम**-'तप्त होता क्षुद्र अन्तर्व्योम पहले व्यक्ति का'—दिन०।—**शैया**-(स्त्री०) मृत्युशैया, मरनखाट, भूमिशैया, श्मशान, मसान, मरघट। [**अंतरसज्जा** दे०]।—**हित**-(वि० सं०) तिरोहित, अदृश्य, अन्तर्द्धान, गुप्त, गायब। 'अस कहि अन्तर्हित प्रभु भयऊ'—तुल०। 'हो गईं कहाँ अन्तर्हित सपने लेकर वे रातें'—महादे०।

अंतश्छद—(संज्ञा, पु० सं०) [**अंतच्छद**]—भीतरी आच्छादन, अन्तस्तल, भीतरी तल।

अंतस्—(संज्ञा, पु० सं०) अन्तःकरण, हृदय, चित्त, मन। 'कोंचि, कोंचि बाँको अँखियन सों अन्तस चलनी कीनो'—ललि०।—**तल**-(पु०) हृदय, शरीर का आंतरिक भाग, मन। 'मैं शोभा-स्रष्टा, ज्ञात मुझे ज्वाला का उसका अन्तस्तल'—पंत। 'सागर के अन्तस्तल में'।—**स्वरागम**-शब्द के अंत में किसी स्वर का उच्चारण [कमिंग आफ वावेल इन दि एंड]।—**ताप**-(पु०) मानसिक वेदना, जलन, भीतरी पीड़ा या दुख, हार्दिक व्यथा या दाह।—**सलिल**-(वि०) जिसके जल का बहाव या प्रवाह बाहर न दिखाई दे, भीतर ही रहे। जैसे, सरस्वती नदी।—**सलिला**-(वि० स्त्री०) भूमि के अंतर मे जिसके जल का अनुमान किया जाय। सरस्वती और फल्गु नदी। 'चर्म चक्षुओं से ओझल हो अन्तस्सलिला जहाँ वहो'—गिरीश।

अंतहपुर—अन्तःपुर—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) घर की स्त्रियों के रहने का भाग, जनानखाना, घर के भीतर का हिस्सा।

अंतावरि—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अन्त्रावलि] अंतावरी, आँतों का समूह, [**अँतौरी**]।

अंतावरी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अंत्रावलि] आँतों या अंतड़ियों का समुदाय, [**अँतावरि**] (दे०) 'अन्तावरि गहि उड़त गीध पिसाच कर गहि धावहीं'—तुल०।

अंतावशायी—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) नाई, हज्जाम। हिंसक। चांडाल। कसाई।

अंति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) बड़ी बहन।

अंतिक—(संज्ञा, पु० सं०) सामीप्य, निकटता, सन्निधान।

अंतिका—(संज्ञा, स्त्री० सं०) बड़ी बहन। चूल्हा, भट्ठी। शीतला नामक पौधा।

अंतिकाश्रय—(संज्ञा, पु० सं०) समीपवर्ती का सहारा।

अंतिम—(वि०) [सं० अन्त+इम्] पिछला, सब से बाद का, शेष, चरम, अन्त वाला, आखीरी, सबसे बढ़कर।—**प्राप्यक**-(पु०) अंतिम लेखापत्र [फाइनल बिल]।—**यात्रा**-(स्त्री०) मृत्यु, महाप्रस्थान, महायात्रा, मरण।

अंतिमेत्थम—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) अंतिम रूप से दी गई चेतावनी [अल्टीमेटम]।

अंती—(संज्ञा, स्त्री० सं०) चूल्ही।

अंतेउर❀**अंतेवर**—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अन्तःपुर] अंतःपुर, जनानखाना।

अँतैवरि—(संज्ञा, पु०) देखिए 'अंतावरी'।

अंतेवासी, अंतेवासी—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) [सं० अन्ते+वस्+णिनि] गुरु के समीप रहने वाला विद्यार्थी, ब्रह्मचारी, ग्राम के बाहर रहने वाला। चांडाल, अंत्यज। शिल्प सीखने वाला, नौकरी पाने की आशा से किसी कार्यालय में काम सीखने वाला [अपरेंटिस]। (वि०) समीप अथवा साथ रहने वाला।

अंतः—(अव्य०, सं०) बीच में, मध्य मे।—**करण**-(पु०) सदसद् विवेचिनी शक्ति का संस्थान, हृदय। अंतरात्मा। संकल्प-विकल्प, सुख-दुख, निश्चय-स्मरणादि का अनुभव करनेवाली भीतरी इंद्रिय, मन। विवेक, नैतिक बुद्धि, भला-बुरा पहिचानने और बताने वाली शक्ति का केन्द्र।—**तरंग**-(पु०) मन के भीतर की लहर। चित्त की उमंग। "अन्तस्तरंगो पर डोलते से"—[मधुपुरी]।—**पट्टी**-(स्त्री०) चित्र मे नदी पर्वतादि का चित्रण, जो चित्र का पृष्ठ-भाग सा रहता है। चित्रपट पर दिखाया हुआ स्वाभाविक दृश्य। नाटक का परदा। छानने के लिए छनने में रखा हुआ सोमरस।—**पुर**—(पु०) जनाना, भीतरी भाग, महल के अंदर का हिस्सा, रनिवास।—**पुरिक**-(पु०) अन्तःपुर-रक्षक, कंचुकी।—**प्रवेशन**-(पु०) अर्थबोध, प्रवेश [पेनीट्रेशन]।—**राष्ट्रीय**—(पु०) सार्वराष्ट्रीय [इंटर नैशनल]।—**शरीर**-(संज्ञा, पु० यौ० सं०) लिंग शरीर, जीव का सूक्ष्म शरीर।—**शाला**-(संज्ञा, स्त्री० यौ० सं०) अंतःपुर [हार्ट चैम्बर]।—**शुल्क**-देश मे बननेवाली वस्तुओं पर लगनेवाली चुंगी [ड्यूटी आफ इक्साइज]।—**मंत्री**-अंतः शुल्क विभाग का मंत्री [इक्साइज मिनिस्टर]।—**शून्य**-(वि०) जो भीतर से शून्य, निस्सार हो। 'दीखता है स्वप्न अन्तः शून्य-सा'

— दिन० ।—**संज्ञा**–(स्त्री०) सुख-दुख-सम्बन्धी अनुभूति अथवा चेतना ।—**सत्वा**–(स्त्री०) गर्भवती, अन्तर्जीवा । **स्वेद**–(पु०) हाथी ।—**स्मित**–(वि०) आंतरिक आनंद से युक्त । 'विचरें मुक्त-हृदय, अंतः स्मित, प्रीतियुक्त नारी नर ।'—पंत ।

अंत्य—(वि०) [स० अंत] शेष का, अंत का, अंतिम । 'जगमग जीवन का अन्त्य भाव'—निराला । सबसे पिछला, अधम, नीच, जघन्य । (संज्ञा, पु०) जिसकी गणना अंत मे हो—लग्नों में मीन, नक्षत्रों मे रेवती, दस सागर की संख्या (१०००, ०००, ०००, ०००, ०००) । यम ।—**कर्म**–(पु०) अंत्येष्टि क्रिया, प्रेतकर्म ।—**ज**—**जन्मा**—**जात**–(पु०) अंतिम वर्ण से उत्पन्न, शूद्र, अछूत, जिसका छुआ हुआ अन्न-जल द्विज लोग न ग्रहण करें—धोबी, चमारादि सप्त जाति । जघन्यज, अवरज । शूद्र ।—**वर्ण**- (पु०) अंतिमवर्ण, शूद्र । अंत का अक्षर, ह, पदान्तवर्ण ।—**विपुला**–(स्त्री०) आर्या छंद का एक भेद (पिं०) ।

अंत्या—(संज्ञा,स्त्री० सं०) चांडालिनी । अंत्यज स्त्री ।

अंत्याक्षर—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अंत्य+अक्षर] शब्द या पद का अंतिमाक्षर, वर्णमाला का आखीरी वर्ण, ह ।

अंत्याक्षरी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० यौ० अंत्य+अक्षरी] किसी कहे हुए श्लोक या पद्य के अंतिमाक्षर से प्रारम्भ होने वाला दूसरा पद्य । उक्त रीत्यनुसार किया गया पद्यपाठ ।

अंत्यानुप्रास—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अंत्य+अनुप्रास] पद्य मे चरणों के अंतिमाक्षरों का साम्य, तुक, तुकान्त, एक प्रकार का अलंकार । (काव्यशा०)

अंत्येष्टि—(संज्ञा, पु०) [सं० अंत्य+इष्टि] प्रेत-कर्म, शवदाह से सपिंडन तक का कृत्य, क्रिया कर्म, मृतक कर्म ।—**क्रिया, कर्म**–अंतिम-संस्कार ।

अंत्र—(संज्ञा, पु० सं०) आँत, अंतड़ी ।—**कूजन**—(पु०) आँतों के शब्द करने या बोलने की क्रिया, गुड़गुड़ाहट ।—**वृद्धि**—(स्त्री०) आँत उतरने की बीमारी [हर्निया] ।

अंत्रांडवृद्धि—(संज्ञा, स्त्री० यौ० सं०) आँत का उतर कर फोते में आने से अंडकोश वृद्धि का रोग ।

अंत्रीꕥ—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अंत्र] अंतड़ी ।

अंदर—(क्रि० वि०, फ़ा०) भीतर । 'सपनों की नौका के अंदर'—बच्च० ।

अँदरसा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंतर रस] एक प्रकार का पकवान या मिठाई ।

अंदरी—(वि०, फ़ा०) [सं० अंतरी], भीतरी, [**आंतरिक**] ।

अंदरूनी—(वि०,फ़ा०) भीतरी, भीतर का, अन्दर का ।

अंदाज, [**अंदाजा**]—(संज्ञा, पु० फ़ा०) अटकल, कूत । तख़मीना, अनुमान । मान, नाप-जोख, ढंग, तर्ज़, ढब, तौर, मटक, हाव, चेष्टा, इंगन (सं०)—**अंदाजी**,–(क्रि० वि०) **अंदाजन** ।—**पट्टी**–(स्त्री०) [फ़ा० अंदाज+पट्टी] खेत में खड़ी फसल को कूत ।

अंदाज़न—(क्रि० वि०, फ़ा०) अटकल से, लगभग, अनुमानतः ।

अंदाजा—(संज्ञा, पु० दे०) [फ़ा० अंदाज] अटकल, कूत, अनुमान, [**अंजाद**] (ग्रा०) ।

अँदाना—(क्रि०, स० दे०) बरकाना, बचाना ।

अंदु, अंदुक—(संज्ञा, पु० सं०) स्त्रियों के पैर का एक गहना, पाजेब, पैजनी, पैरी । हाथी के पैर बाँधने की साँकल, जंजीर ।

अँदुआꕥ—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंदुक] हाथियों के पिछले पैरों में डालने का काँटेदार, लकड़ी का बना हुआ, एक यंत्र, [**अंदुवा**] (दे०) ।

अंदेशा—(संज्ञा, पु० फ़ा०) सोच, चिन्ता, आशंका, फ़िक्र, संशय । अनुमान, संदेह, शंका । खटका, भय, डर । हरज, हानि । दुविधा, असमंजस, आगा-पीछा, [**अँदेसा** (दे०) **अदेस, अदेसा** ।] 'तुमसों यहै अँदेस पियारे'—जायसी ।

अँदोरꕥ—(संज्ञा, पु०) [सं० आंदोलन—हलचल] शोर, हल्ला-गुल्ला, हुल्लड़, कोलाहल, 'बाजन बाजहिं होइ अँदारा'—जायसी ।

अंदोह—(संज्ञा, पु० फ़ा०) शोक, दुख, चिंता, रंज, खेद । खटका ।

अंध—(वि०, सं०) नेत्र-हीन, बिना आँखों वाला, अंधा, जिसकी आँखो में ज्योति या रोशनी न हो, देखने की शक्ति से रहित । अज्ञानी, मूर्ख, बुद्धिहीन, अविवेकी । अचेत, असावधान । उन्मत्त, मत्त, मतवाला, मदान्ध । [संज्ञा, स्त्री० **अंधता**] । (संज्ञा, पु०) नेत्रविहीन प्राणी, अंधा । जल । उल्लू । चमगादड़ । अँधेरा, अंधकार । कवि-परम्परा के विरुद्ध चलने से सम्बन्ध रखने वाला काव्यदोष । सूरदास । एक मुनि । धृतराष्ट्र । श्रवणकुमार के पिता ।—**कार**–(पु०) [सं० अंध+कृ०] अँधेरा, अंधा सा करने वाला ।—**काल**–(पु०) अंधेरे का समय । 'जागिये गोपाल लाल प्रगट भई हंस माल—सूर० । मिट्यो **अंधकाल** उठौ जननी मुख दिखाई' ।—**कूप**–(पु०) अंधा कुआँ, सूखा कूप, जो घास-पात से ढका हो । एक नरक का नाम । "मोहान्ध-कूप कुहरे विनिपातितस्य"—शंकरा० । अँधेरा ।—**खोपड़ी**

-(पु०) बुद्धि-रहित मस्तिष्क वाला, मूर्ख, भोंदू, नासमझ, शून्य-मस्तिष्क व्यक्ति।—**गोलाङ्गूल**-(पु०) अंधे के द्वारा गाय की पूछ के पकड़ने की क्रिया। जो दशा अंधे की सहायता लेने वाले अंधे की होती है, अर्थात् दोनों अंधे गढे में गिर पड़ते है, उसी दशा को यह भी सूचित करता है। एक प्रकार का न्याय।—**तमस**-(पु०) महा घोर अंधकार, गाढ़ा अंधेरा, निविड़ तम। नरक-विशेष। —**तामिस्त्र**-(पु०) घोर अंधकारयुक्त नरक, बड़े नरको मे से दूसरा। सांख्य मे इच्छा-विघात अथवा विपर्यय के पंच प्रकारो मे से एक प्रकार। जीने की इच्छा रहते हुए भी मरण-भय, पंच क्लेशों मे से एक मृत्यु-भय (योग)।—**पवन**-(पु०) अंधानिल, आँधी।—**अंधवायु**।—**परम्परा**-(पु०) बिना समझे बूझे पुरानी चाल का अनुकरण, भेड़ियाधसान, बिना सोच-विचार के पुरानी लीक का अनुगमन।—०**ग्रस्त** (गत) अज्ञानियों का अनुयायी।—**पूतना**-(पु०) बालग्रह, बालकों का एक रोग।—***बाई**-(स्त्री०) आँधी, तूफान। 'धावौ नंद गोहारी लागौ किन तेरो प्रान अधबाई उडायो' —सूर०।—**युग**-अज्ञानयुग, आरम्भिक काल की अज्ञानावस्था। [डार्क एज]—**विश्वास**-(पु०) बिना विचार किये हुए किसी वस्तु या बात मे पूर्ण-विश्वास करके आत्म संतोष की भावना। रूढ़ होन की स्थिति। विवेक-शून्य धारणा।

अंधक—(संज्ञा पु० सं०) नेत्रहीन नर, दृष्टि-विहीन मनुष्य। कश्यप और दिति का एक दैत्य पुत्र। एक देश। युधाजित का पुत्र।

अंधड़—(संज्ञा, पु०) [सं० अन्ध] गर्द मिली हुई तीव्र झोंकेदार हवा, वेगयुक्त पवन, आँधी, तूफान, झंझावात, [**अंधर**] (दे०)।

अंधता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अंधापन, दृष्टि-हीनता।

अंधधुन्ध*—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [**अंधाधुन्ध**] अन्याय, गड़बड़ी। (वि०) बेहिसाब, अत्यधिक।

अंधर—(संज्ञा, पु० हि०) अंधेरा, आँधी। 'नखत चहूँ दिसि रोवहिं अंधर धरत अकास'—जायसी०। (यौ०) [**आँधी-अंधर**]।

अंधरा*§—**आँधर**—(संज्ञा, पु० दे०) अंधा, अंधरो। 'कहे अंध को अंधरो'।

अंधरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० अंधरा+ई] अंधी स्त्री। पहियों की पुट्ठियाँ या गोलाई को पूरा करने वाली धनुषाकृति चूल।

अंधला—(संज्ञा+वि०, पु० दे०) अचक्षु, अंधा, काना, अंधरा, [**अंधला**] दे०।—**सुत**-(पु०) अंधे का पुत्र, **अंध-सूनु**, धृतराष्ट्रात्मज दुर्योधनादि। —**सैन्य**-(पु०) अशिक्षित सेना। (वि०) नेता-विहीन, अशिक्षित।

अंधस—(संज्ञा, पु० सं०) भात, राँधे या पकाये हुए चावल।

अंध्र—(संज्ञा, पु० सं०) बहेलिया, शिकारी, व्याध, एक राजवंश। दक्षिण देश का एक प्रान्त, आंध्र देश।—**भृत्य**-(पु०) अंध्रवंश का परवर्ती मगध देश का एक प्राचीन राजवंश। शिकारी नौकर। **अंधानुचर**।

अंधा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अन्ध] अंधा, दृष्टिहीन प्राणी, नेत्र-विहीन। विचार-रहित अविवेकी, भला-बुरा न समझने वाला, मूर्ख। [स्त्री० **अंधी**] **मु०** —**बनना** (**बनाना**)—जान-बूझ कर किसी बात पर ध्यान न देना (मूर्ख बनना)।—(**धे**) **की लकड़ी या लाठी**—एक मात्र सहारा, आधार, आसरा। एक पुत्र जो कई पुत्रो के बाद बचा हो, इकलौता बेटा।—**दिया**-(पु०) मंद या धुँधले प्रकाश-वाला दीपक, [**अंधदीप**]।—**भैंसा**-(पु०) लड़को का खेल।—**शीशा**, **आइना**-(पु०) धुँधला दर्पण। —(**धों**) **की आँख**-अत्यन्त प्रिय वस्तु।—**जब आँख पावे तब जाने**-जब काम हो जाये तब ठीक है।—(**धे**) **के आगे रोना**,—(**धे**) **के आगे रोवे अपना दीदा खोवे**—व्यर्थ प्रयत्न करना, निस्सार, व्यर्थ हानिकारक प्रयास। 'कहै रतनाकर त्यों अंधहू कै आगे रोइ, खोइ दीठि'।

अंधाकार—(संज्ञा, पु० सं०) अंधेरा, अंधकार। 'किसे ढूँढ़ता अंधाकार'—महादेवी।

अंधाधुन्ध—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० अन्धा+धुन्ध] गर्द के कारण अस्पष्टता, गर्द-गुब्बार। बड़ा अंधेरा। अंधेर, अन्याय, गड़बड़ी, धींगाधींगी। (वि०) विचार-रहित। (अव्य०) अधिकता से, बिना सोच-विचार के, बेधड़क, बहुतायत से, बेतहाशा, बेहिसाब। [**अंधधुन्ध**] (दे०) अंधेर आदि। (संज्ञा, स्त्री०) [**अंधाधुन्धी**]।

अंधापन—(संज्ञा, पु० सं०) देखने की शक्ति का अभाव। विवेकशून्यता। 'अंधापन से दिव को' —हरिऔध।

अंधार*§—(संज्ञा, पु० दे०) अंधेरा। रस्सी का नाल, जिससे घास-भूसा बाँधकर बैल पर लादते है।

अंधाहुली—(संज्ञा, स्त्री० सं०) चोरपुष्पी नामक पेड़ जिसके तना और डालियाँ छोटी होती है।

अँधियार§—(संज्ञा, पु०+वि० दे०) [**अंधकार सं०**] अंधेरा, अन्धेर, [**अँधियर दे०**]।—**मु०**—**अँधियर**

लगना—तिमिर (तिउंर) लगना, धुँधला या कम दीखना।

अँधियारा*§—(संज्ञा, पु० दे०) अँधेरा। (स्त्री०)—[**अँधियारी**]।

अँधियारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अँधेरी] उपद्रवी घोड़ों, शिकारी पक्षियों, चीतों आदि की आँख की पट्टी। (वि०) अन्धकारमयी।

अंधेर—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंधकार] अन्याय, उपद्रव, अत्याचार, गड़बड़ी, कुप्रबन्ध, अंधाधुंध, धींगाधींगी।—**खाता**–(पु०) गड़बड़ हिसाब-किताब, व्यतिक्रम, अन्यथाचार, कुप्रबन्ध, अविचार, अन्याय।—**नगरी** (स्त्री०)–वह स्थान जहाँ किसी बात का नियम न हो। **मु०—नगरी अबूझ राजा। टके सेर भाजी, टके सेर खाजा**। व्यतिक्रम, अविचार और अन्यथाचार का साम्राज्य।—**करना, मचाना, होना**–अन्यथाचार और अनाचार करना।

अंधेरना*—(क्रि०, स०) [हिं० अंधेर] अंधकारपूर्ण या तमाच्छादित करना, अन्यायपूर्ण कार्य करना।

अँधेरा—(संज्ञा, पु०) [सं० अंधकार प्रा० अंधियार, अव० अँधियार, अँधियारा, अँधेरा] अंधकार, तम, धुंध, धुँधलापन, प्रकाशाभाव। (वि०)—अंधकारमय, प्रकाश-रहित।—**उजाला**–(पु०) लड़कों का क़ागज से बना एक खिलौना, धूपछाँह, अंधकार और चाँदनी मे लड़कों का एक खेल। [**अँधेरिया-उजेरिया**] (दे०)।—**गुप**–(पु०) ऐसा घना अंधकार, जिसमें कुछ न सुझे या दिखाई दे, घोर अंधकार। छाया, परछाईं। उदासी, उत्साह-हीनता, शोक। (स्त्री० **अंधेरी**)। **मु०—दीखना**–निराशा, असहायता प्रगट होना, शून्य जान पड़ना, शोक या दुख प्रतीत होना, चक्कर आना—**लगना**–**तिमिर, या तिउँर लगना**—(दे०)–दृष्टि-दोष होना, वृद्धावस्था में नेत्रों की ज्योति के कम होने पर धुँधला दिखना।—**होना**–शून्य हो जाना, घर में सब का अंत हो जाना या अतिप्रिय [पुत्रादि] का न रह जाना, निराशामय होना [जैसे—भविष्य अँधेरा है]—**(रे) घर का उजाला**–अत्यंत कीर्ति या कांतिमान्, अति सुन्दर, सुलक्षण, शुभगुणयुक्त, कुलदीपक, वंश की मर्यादा या मान का बढ़ाने वाला, इकलौता बेटा।—**(रे) मुँह, मुह–(रे)**–बड़े सबेरे।—**पाख**–[सं० अंधकार-पक्ष] कृष्ण पक्ष।

अँधेरिया—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अँधेरी, सं० अंधकारमयी] अँधकार, अँधेरा, अँधेरी रात। काली रात। अँधेरा पक्ष या पाख। कृष्ण पक्ष। (संज्ञा, स्त्री० दे०) ईख की पहिली गोड़ाई।

अँधेरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अंधेर+ई] अंधकार, तम, प्रकाशाभाव, अँधेरी रात, काली रात। आँधी, अंधड़। घोड़ों या बैलों की आँखों पर डालने का परदा। (वि०)–प्रकाश-रहित, तमाच्छादित, जैसे अँधेरी रात।—**कोठरी**–पेट, गर्भ, कोख, गुप्तभेद, रहस्य।—**मु०–डालना या देना**—किसी की आँख बंद कर उसकी कुदशा करना, आँख में धूल छोड़ना, धोखा देना।

अँधौटी—(संज्ञा, स्त्री०) [संज्ञा, अंध+पट, प्रा० अंधवटी हिं० अँधौटी] बैल या घोड़े की आँखें बंद करने का परदा। अनवट।

अँध्यार§—(संज्ञा, पु०) देखिए अँधेरा।

अँध्यारी*§—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए अँधेरी।

अंब—(संज्ञा, पु०) [सं० आम्र, प्रा० अंब] आम का वृक्ष या फल—'फूलन दै सखि टेसू कदंबन, अंबन बौरन छावन दै री।'—पद्मा०। 'तुलसी संत सुअंबतरु फूलि-फरैं पर हेत।' (संज्ञा, स्त्री०) माता।—'जो रह सीय भौन कह अंबा'—तुलसी। जननी, दुर्गा।

अंबक—(संज्ञा, पु० सं०) आँख, नेत्र। ताँबा। पिता।

अंबत—(वि०, सं०) खट्टा, अम्ल। (संज्ञा, पु०) चूक, खटाई।

अंबर—(संज्ञा, पु० सं०) वस्त्र, कपड़ा, पट, स्त्रियों की एक रङ्गीन, किनारेदार साड़ी। आकाश, आसमान। कपास। ह्वेल मछलियों की आँतों से निकली हुई एक सुगंधित वस्तु। एक प्रकार का इत्र (फ़ा०)। अभ्रक, अबरक। राजपूताने का एक प्राचीन नगर। अमृत। उत्तरीय भारत का एक प्राचीन प्रदेश। बादल, मेघ।—**डंबर**–(पु०) [सं० अंबर+आडंबर] सूर्यास्त या संध्या की लालिमा। 'अंबर-डंबर साँझ के बारू की सी भीति।'—**बारी**–(पु०) एक झाड़ी या जड़ जिससे रसवत निकलता है। चित्रा, दारुहल्दी।—**बेलि**–(स्त्री०) आकाश बेलि, अमर बेलि।

अँबराई—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० आम्र—आम+राजी—पंक्ति] आम का बगीचा। [**अमराई, अमरैया** ब्र० दे०] 'एती बस कोबी, यह अंबबौरि दोबी अरु, कहिबो कि अमरैया रामराम कही है'—**दास**। 'देखि अमराई'—तुल०।

अँबराव*—(संज्ञा, पु०) देखिए अँबराई।

अंबरीष—(संज्ञा, पु० सं०) भाड़। मिट्टी का बरतन जिसमें भड़-भूँजा गरम बालू डालकर अनाज भूनते

है। विष्णु। शिव। सूर्य। बालक, जिसकी अवस्था ग्यारह वर्ष से कम हो, किशोर। एक सूर्यवंशीय राजा। नरक-भेद। आमड़े का फल और वृक्ष। अनुताप, पश्चात्ताप। समर, लड़ाई, युद्ध।

अंबरौक—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) एक देवता।

अंबल—(संज्ञा पु० सं०) अमल, नशे की वस्तु, खट्टा रस, मादक पदार्थ।

अंबष्ठ—(संज्ञा, पु०) [सं० अम्ब+थान+ड] पंजाब के मध्य भाग का प्राचीन नाम, वहाँ के निवासी। ब्राह्मण पुरुष और वैश्य जाति की स्त्री से उत्पन्न जाति-विशेष [स्मृति]। महावत, फीलवान। मुनि-विशेष। हस्तिपक। निषाद पिता और शूद्रा स्त्री के गर्भ से उत्पन्न बंगाल की वैद्य जाति।

अंबष्ठा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अंबष्ठ की स्त्री। ब्राह्मणी। ब्राह्मी लता, पाढ़ा लता।

अंबा—(संज्ञा, पु० सं०) (१) माता, जननी अंब, माँ [**अम्मा**], पार्वती, देवी, दुर्गा। काशी-नरेश की बड़ी कन्या, जो बाद को [भीष्मपितामह के विवाह न करने पर जल कर] शिखंडी के रूप में उत्पन्न हुई और भीष्म की मृत्यु का कारण बनी। अंबष्ठा, पाढ़ा। (२) देo आम, **अँबवा** दे०। 'अंबाफल छाँड़ि कहा सेवर को धाऊँ'—सूर।

अँबाड़ा—(संज्ञा, स्त्री०) माता। आमड़ा।

अँबाना—(क्रि०, अ० दे०) समाना, अँटना, पूरा पड़ना। (प्रेरणा०) [**अँबवाना**]।

अंबापोली—(संज्ञा, स्त्री० यौ०) [हि० अंबा+पोलि—रोटी] अमावट, अमरस।

अंबार—(संज्ञा, पु० फ़ा०) ढेर, समूह, अँबार*। (दे०) 'अंबर को लम्बो है अँबार सभा मोंह अरु'।

अंबारी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० अमारी] हाथी की पीठ पर रखने का हौदा, जिसके ऊपर छज्जेदार मंडप भी रहता है। छज्जा।

अंबालिका—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अंबाला+इक—आ] माता, मां। अंबष्ठ, लता, पाढ़ा। काशिराज इंद्रद्युम्न की सब से छोटी कन्या, जिसे भीष्म स्वानुज विचित्रवीर्य के लिए हर लाये थे, राजा पांडु के पीछे यह अपनी सास सत्यवती के साथ बन चली गयी थी।

अंबिका—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अम्बा+इक्+आ] माता, जननी, माँ, दुर्गा, देवी, भगवती, पार्वती। जैनियों की एक देवी। कुटकी का पेड़। पाढ़ा। काशी-नरेश की मध्यमा कन्या जो विचित्रवीर्य से व्याही गई थी, जिसके पुत्र धृतराष्ट्र थे। पांडु के मरने पर, यह सत्यवती के साथ बन में तपस्या करती हुई पंचत्व को प्राप्त हुई थी।

अंबिकेय—(संज्ञा, पु० सं०) अंबिका-पुत्र, धृतराष्ट्र।

अंबिया—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० आम्र, प्रा० अंब] आम का कच्चा फल, छोटा आम जिसमें जाली न पड़ी हो, टिकोरा, केरी, **अमिया**।

अँबिरथा*—(वि०, दे०) [सं० वृथा] वृथा, व्यर्थ [प्रा० **बिरथा**]। 'तेइ यह जनम अँबिरथा कीन्हा'—जायसी।

अंबु—(संज्ञा, पु०) [सं० अम्बु+उ] पानी, जल। जन्मकुंडली के बारह स्थानों में से चतुर्थ स्थान। चार की संख्या।—**कण**-(पु०)-ओस, शीत, तुषार। —**कंटक**-(पु०) मगर।—**ज**-(पु०) जल से उत्पन्न वस्तु, कमल। बेत। शंख। घोंघा। ब्रह्मा। वज्र। (**स्त्री०**)—**जा**-लक्ष्मी, कमलिनी।—**जन्म**,—**जन्मा** -(**पु०**) कमल, पद्म। ब्रह्मा, श्री।

अंबुद—(वि०, पु० सं०) बादल, मेघ, वारिद। नागर मोथा। जल देने वाला।—**धर**-(पु०) बादल, बारिद, मेघ।—**धि**-(पु०) समुद्र, सागर, सिंधु, जलधि, वारिधि, नीरधि, तोयधि।—**निधि**-(पु०) पानी का खजाना, सागर, समुद्र, जलधि, जलनिधि, वरुण। नीरनिधि।—**प**-(पु०) समुद्र। वरुण। शतभिष नक्षत्र। (ज्यो०)।—**पति**-(पु०) सागर, वरुण।—**भृत्**-(पु०) बादल, सागर। नागरमोथा।—**वाह**-(पु०) बादल, बलाहक।—**राशि**-(पु०) सागर। —**रुह**-(पु०) सरोरुह, कमल, पद्म।—**वाहिनी** -(पु०) पानी लाने वाली स्त्री। नाव का पानी निकालने के लिए पात्र-विशेष।—**वेतस**-(पु०) जल में होने वाला एक प्रकार का बेंत।—**शायी** -(पु०) विष्णु।

अंबुजाक्ष—(संज्ञा, पु० सं०) कमल से नेत्रो वाला व्यक्ति। विष्णु। रामचंद्र। कृष्ण। बुद्ध आदि अवतारी पुरुष। 'अंबुजाक्ष ने तब कहा भर अंबुज मे बारि।'

अंबुजासन—(संज्ञा, पु० सं०) ब्रह्म। 'मग्न अंबुजासन रचना में'—गिरीश।—**जासना**-(स्त्री० सं०) लक्ष्मी, 'अंबुजासना की चंचलता'—गिरीश।

अंबुवा—(संज्ञा, पु० दे०) आम। 'मौरे अंबुवा औ द्रुमबल्ली, परिमल फूले'—सूबे०।

अंबोह—(संज्ञा, पु० फ़ा०) भीड़भाड़, झुंड, समूह।

अंभ—(संज्ञा, पु०) [सं० अम्भस्] जल, पानी। देव, या पितृ-लोक। लग्न से चतुर्थ राशि। देव। असुर। पितर। चार की संख्या।

अंभस्—(संज्ञा, पु० सं०) अंभ, पानी आदि।

अंभस्तुष्टि—(संज्ञा, स्त्री० यौ०) [सं० अम्भस्+तुष्टि] चार आध्यात्मिक तुष्टियों में से एक (सांख्य) ।—**निधि, अंभोनिधि**—(संज्ञा, पु० —यौ०) [सं० अंभ+निधि] समुद्र, सागर ।

अंभोज—(संज्ञा, पु०) [सं० अम्भस्+जन्+ड्] कमल । चंद्र । मोती । सारस ।—**नेत्रा**-(स्त्री०) कमल ऐसे नेत्रों वाली । 'यां देना ऐ भगिनि जतला एक अंभोजनेत्रा'—हरिऔध ।

अंभोद—(संज्ञा, पु०) [सं० अम्भस्+द] जलद, अभ्र, मेघ । 'अम्भोदाः बहवोवर्संति गगने'—भर्तृ० ।

अंभोधर—(संज्ञा, पु० सं०) बादल । समुद्र ।

अंभोधि—(संज्ञा, पु० सं०) सागर, समुद्र ।

अंभोनिधि—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) ।समु ।

अंभोराशि—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) समुद्र ।

अंभोरुह—(संज्ञा, पु० सं०) कमल ।

अँवदा—(वि०, प्रान्ती०) औंधा ।

अँवरा—(संज्ञा, पु० दे०) [औंरा, अमरा, अँवला]—आमला, आंवरा ।

अंश—(संज्ञा, पु० सं०) भाग, हिस्सा, बाँट । भाज्य अंक, भिन्न की लकीर के ऊपर का अंक । चौथा भाग, कर्ण । सूर्य कला, सोलहवाँ हिस्सा । वृत्त की परिधि का ३६० वाँ हिस्सा जिसे इकाई मानकर कोण या चाप का प्रमाण कहा जाता है । लाभ का हिस्सा । कंधा बारह आदित्यों मे से एक । चाणक्य ।—**पत्र**—(पु०) पट्टीदारो या साझीदारो का भागसूचक कागज ।—**सुता**—(स्त्री०) यमुना नदी । (संज्ञा०, पु०) [**अंशसुत**]—**काल कर्म**—(पु०) वह काम जो पूरी अवधि का न हो [पार्ट टाइम वर्क] ।—**त: भुगतान**—अंशिक रूप मे चुकाना [पेमेंट इन पार्ट] ।—**धारी**—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) अंश या भाग लेने वाला व्यक्ति, हिस्सेदार [शेयर हॉल्डर] ।—**निष्कृति**—एक भाग की अदायगी [पार्ट पेमेंट] ।—**पूँजी**—(स्त्री०) हिस्से की पूंजी [शेयर कैपिटल] ।—**प्रमाणक**—(पु०) अंश प्रमाण पत्र [शेयर सर्टीफिकेट] ।

अंशक—(संज्ञा, पु० सं०) भाग, टुकड़ा, दिन, दिवस, साझीदार, हिस्सेदार, पट्टीदार, अंशधारी । (वि०)—बाँटने वाला, विभाजक । (स्त्री०) [**अंशिका**] ।

अंशल—(संज्ञा, पु० सं०) चाणक्य ।

अंशावतार—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अंश+अवतार] परमात्मा का वह अवतार जिसमें उसकी शक्ति का कुछ ही अंश हो, जो पूर्णावतार न हो ।

अंशांश—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अंश+अंश] भाग का भाग । (यौ०) [**अंशांशीभाव**] ।

अंशी—(वि०) [सं० अंशिक] अंशधारी, देवशक्ति से युक्त । अवतार । (संज्ञा, पु०)—साझीदार, अवयवी, हिस्सेदार । (स्त्री०) [**अंशिनी**] ।

अंशु—(संज्ञा, पु० सं०) किरण, प्रभा । लता का एक भाग । सूक्ष्म भाग । रश्मि, मयूख, तेज, दीप्ति, ज्योति ।—**जाल**—(पु०) रश्मि-समूह, रश्मिराजि, मयूखमाला । (स्त्री०)—[**अंशुजालिका**] ।—**धर**(पु०)—रश्मिधारी । सूर्य । अग्नि । चंद्र । दीपक । देवता । ब्रह्मा । प्रतापी ।—**नाभि** (स्त्री०)—वह विन्दु जहाँ समानान्तर प्रकाश-किरणें तिरछी और एकत्र होकर मिलें ।—**मान**—(पु०) सूर्य । चन्द्र । अयोध्या के एक सूर्यवंशीय राजा जो सगर नृप के पौत्र और असमंजस के पुत्र थे; यही कपिल मुनि के आश्रम से सगर का यज्ञाश्व अपने ६० हजार चाचाओं के भस्म हो जाने पर लाये थे और इन्होंने यज्ञ पूरा कराया था, साथ ही गरुड़ से पितृव्यों के उद्धार का उपाय जाना था ।—**माली**—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अंशु+माली] अंशुओ या किरणों की माला रखने वाला, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, दीपक, देवतादि । 'धीरे-धीरे सुपवन बहे, स्निग्ध हो अंशुमाली ।'—हरिऔध ।

अंशुक—(संज्ञा, पु०) [सं० अंशु+क] पतला या महीन वस्त्र । रेशमी कपड़ा । उपरना, दुपट्टा या द्विपटा, ओढ़नी । तेजपात ।

अंस—(संज्ञा, पु० दे०) अंश, भाग । कंधा । 'वाम अंस लसत चाप,' 'कबहुंक बैठि अंस भुज धरि कै'—सूर ।

अंसल—(वि०, सं०) बलवान, पराक्रमी ।

अंसु—(संज्ञा, पु०) [सं० अंशु] अंशु, किरणादि । आंसू । 'सुमिरि सुमिरि गरजत जल छांड़त अंसु सलिल के धारे ।'

अँसुआ* **अँसुवा**§—(संज्ञा, पु० दे०) आंसू [सं० अश्रु] **आँसू** । 'रहिमन अँसुवा बाहिर बिथा जनावत हीय ।' [**अँसुवान** बहु०] ।

अँसुवाना*—(क्रि० अ० दे०) [हि० आंसू] अश्रुपूर्ण होना, आंसू से भर जाना ।

अंहु—(संज्ञा, पु०) [सं० अंहस्] पाप, दुष्कर्म । अपराध । विघ्न-बाधा । दुःख-व्याकुलता । अहम् ।

अँहँडा—(संज्ञा, पु० दे०) तौलने का एक बाट ।

अंहति, अंहती—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अंह+ति] दान । त्याग, उत्सर्ग । पीड़ा ।

अंहस्—(संज्ञा, पु० सं०) [अंह+अस्] पाप, स्वधर्म-त्याग, कल्मष, अघ, अपराध, दुष्कृति ।

अंहस्पात—(संज्ञा, पु० सं०) क्षयमास।
अँहुड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) एक लता, बाकला।
अइ—(अव्य०) [सं० अयि] (स्त्री०) अरी, संबोधन या विस्मय के अर्थ में।
अउँठा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंगुष्ठ]।
अउ*—(अव्य०, दे०) और, तथा, अरु का प्रा० और अप० में सूक्ष्मरूप।
अउर—(अव्य०, दे०) और।
अउसना—(क्रि० अ०, दे०) गर्मी के कारण किसी वस्तु का खराब होना।
अऊत*—(वि०) [तद्० सं० अपुत्र, प्रा० अउत] पुत्रहीन, निस्संतान। क्वारा, मूर्ख, निपूता। (स्त्री०) [**अऊती**]।
अऊसना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उल् जलना] जलना, गरम होना। (क्रि०, अ०)-[सं० अश्लन] छिदना, छिलना।
अए—(अव्य०, पु०) सम्बोधनार्थ में, हे, अरे, रे।
अएरना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० अंगकरण, प्रा० अंगिअरण, हिं० अँगेरना] अंगीकार करना, स्वीकार करना, धारण या ग्रहण करना। **अँगेजना** (दे०)।
अइसन—(वि०, दे०) ऐसा, इस प्रकार का।
अकंटक—(वि०) [सं० अ+कंटक] बिना काँटे का, निर्विघ्न, बेखटका, बाधा-रहित, शत्रुहीन, अविरोधी, बेरोक-टोक, निरुपाधि।
अकंठ—(वि०, सं०) कंठहीन। 'यद्यपि अकंठ है तो भी'—हरिऔध।
अकंप—(वि०, सं०) कम्पन-रहित। अचल। "सत्य, भी, शिव सा अकंप, कठोर"—मैथिली०।
अकंपन—(वि०, दे०) [सं० अ+कंपन] कंपन-रहित, दृढ़, स्थिर, **अकंपित अकंप्य**। (संज्ञा) एक राक्षस।
अक—(संज्ञा, पु० सं०) पाप, दुख, पीड़ा।
अकउआ, अकौवा—(संज्ञा, पु० दे०) अर्क, मदार अकवन।
अकच—(वि०) [सं० अ+कच—बाल]—बिना बालों का। (संज्ञा, पु०) केतु नामक ग्रह।
अकच्छ—(वि०) [सं० अ+कच्छ या कक्ष—धोती] नग्न, नंगा। लम्पट। व्यभिचारी, पर स्त्री-गामी। (पु०) जैन साधु, जिन्हें निग्रंथ भी कहते है।
अकछ—(वि०, दे०) अकच्छ।
अकट—(वि०, हि०) जो काटा न जा सके। (सं०) [**अकाट्य**]।
अकटक—(क्रि० वि०, हिं०) स्थिर। विस्मित। अपलक दृष्टि।
अकट्य—(वि०; दे०) [सं० अ+काट्य] न कटने वाला, [**अकाट्य**।] (संज्ञा, स्त्री०) [**अकाट्यता**]।
अकड़—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० आ—भली भाँति+कड़कड़ा होना] ऐंठ, तनाव, मरोड़, बन्ध। घमंड, अहंकार, शेखी। ढिठाई, हठ, अड़, ज़िद। बाँकापन। **—मकड़**-(स्त्री०) ऐंठ की चाल, गर्व।**—बाई**-(स्त्री०) ऐंठन, देह की नसों का पीड़ा के साथ खिचना या तनना।**—बाज़**-(वि०) शेखीबाज, घमंडी, [**अकड़**, आ०]।**—बाज़ी**-(स्त्री०) ऐंठ, शेखी, घमंड। धमकी। **मु०—दिखाना**-ऐंठ, घमंड, शेखी। रोब, धमकी दिखाना।**—रखना**-हठ करना। घमंड रखना।**—निकालना**-घमंड, शेखी, ऐंठ दूर करना।**—जाना**-लड़ना, ऐंठ जाना। **गर्व** चूर होना।**—में आना**-हठ में आना, घमंड में आना।
अकड़ना—(क्रि० अ०) [सं० आ—अच्छी तरह+कड—कड़ापन] सूखकर सिकुड़ना, टेढ़ा होना, कड़ा पड़ जाना, ऐंठना। ठिठुरना, सुन्न होना, शरीर का तनना। शेखी दिखाना, घमंड करना। ढिठाई, हठ, ज़िद करना, अड़ जाना। चिटकना, क्रोध दिखाना, लड़ना, रोब या धमकी दिखाना। (संज्ञा,) [**अकड़, अकड़ाव, अकड़पन**]
अकड़ा—(संज्ञा, पु० हिं०) रोग-विशेष। खिचाव, तनाव, ऐंठन।
अकड़ाव—(संज्ञा, पु०) [हिं० अकड़] ऐंठन, खिंचाव, तनाव।
अकड़ैत—(वि०, दे०) अकड़बाज।
अकत*—(वि०, दे०) [सं० अक्षत] समूचा, पूरा। (क्रि० वि०) सरासर, बिलकुल।
अकत्थ*—(वि०, दे०) अकथ, अकथनीय।
अकथ—(वि०) [सं० अ+कथ] न कहने-योग्य, कथन-शक्ति से परे या बाहर, जो न कहा जा सके, अनिर्वचनीय, अवर्णनीय। 'अकथ, अलौकिक, अमर, अगोचर गाँवों की आधार'—पंत
अकथनीय—(वि०, सं०) अवर्णनीय, अनिर्वचनीय। (संज्ञा, स्त्री०) [**अकथनीयता**]
अकथ्य—(वि०, सं०) न कहा जाने योग्य, अकथनीय।
अकथयितव्य—(संज्ञा, पु० सं०) अवक्तव्य।
अकथा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) कुकथा, मंद कथा। अपभाषा।
अकथित—(वि०) [सं० अ+कथ+इत] न कहा हुआ। 'अकथित अंतर आवेशों का'—पंत। (स्त्री०) [**अकथिता**]

अकद्—(संज्ञा, पु० अ०) प्रतिज्ञा, वचन, वादा, संकल्प, प्रण ।—**बंदी**-(स्त्री०) प्रतिज्ञापत्र, इक़रार-नामा, [**अकद्-पत्र**] । "अकदबंदी पर न हस्ताक्षर किये ।"

अक़दस—(वि०, अ०) अत्यन्त पवित्र, बड़ा पाक ।

अकधक*—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० धक] आशंका, भय, डर । आगा-पीछा, सोच-विचार । 'छिपकर कुछ अकधक किये बिना'—मैथिली० ।

अकनना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आकर्णन] कान लगाकर सुनना, आहट लेना, (दे०) । 'नगर सोर **अकनत** सुनत अति रुचि उपजावत'—सुबे० ।

अकना—(क्रि०, अ०)[सं० आकुल] ऊबना, घबड़ाना । (प्रेरणा०)—[**अकनावना**] ।

अकनि—(वि०, दे०) [सं० आकर्ण्य] सुनकर । 'तुरंग नचावहि कुँवरवर, अकनि मृदंग निसान'—तुल० ।

अकपट—(वि०) [सं० अ+कपट] कपटहीन, सरल, सीधा, छलहीन । निर्मल, अकलुष । [**अकपटता**] । —(संज्ञा, भा० स्त्री०) ।

अकब—(संज्ञा, पु० अ०) पैर की एँड़ी । बेटा । पोता । फौज का पिछला भाग ।

अकबक—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु० दे० अक+बक] निरर्थक वाक्य, व्यर्थ बकवाद, अनाप-शनाप, अटॉय-शटॉय, अंड-बंड, असंबद्ध प्रलाप । धड़क, खटका । छक्का-पंजा, चतुराई । (वि०) (सं० अवाक्) भौचक्का, निस्तब्ध ।

अकबकाना—(क्रि०, अ०) [सं० अवाक्] चकित होना, भौचक्का रह जाना, घबराना । (संज्ञा, स्त्री०) [**अकबकी, अकबकाहट**]

अकबर—(वि०, अ०) महान, बहुत बड़ा। (संज्ञा, पु०) एक प्रसिद्ध मुगल सम्राट् जिसने सन् १५५६ से १६०५ ई० तक भारत मे राज्य किया ।

अकबरी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अ+कबरी—बालों का गुच्छा] बालों से रहित । अकबर की (फा०) एक प्रकार की मिठाई । लकड़ी पर एक प्रकार की नक्काशी ।

अकबाल—(संज्ञा, पु० दे०) [फा० इकबाल] प्रताप, सौभाग्य, ऐश्वर्य । स्वीकार । (वि०) [**अकबाली**]

अकर—(वि०, सं०) न करने योग्य, कठिन । 'कर-अकर दुमाहे पग'—रत्ना० । [अ+कर] बिना हाथ का, हाथ-रहित । बिना कर या महसूल का । आकर, खानि । "हिमकर सोहै तेरे जसके **अकर** सों'—भूषण।

अकरकरा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० आकरकरम] एक जंगली औषधि । [**अकरकरहा**] (दे०) ।

अकरखना*—(क्रि०, स०) [सं० आकर्षण] खींचना, तानना, चढाना, आकर्षण । **आकरखन** (दे०) ।

अकरण—(संज्ञा, पु० सं०) **अकरन**, कर्माभाव, कर्म का फल-रहित होने का भाव, कारणहीनता । अनु-चित या कठिन कार्य । इंद्रिय साधन या कारण-रहित । ईश्वर । निष्कारण । न करने योग्य । (वि०) [सं० **अकारण**] बिना कारण का । (वि०) [**अकरणीय**]

अकरणीय—(वि० सं०) न करने के योग्य, [**अकर-नीय**] (दे०) ।

अकरब—(संज्ञा, स्त्री० अ०) बिच्छू , वृश्चिक राशि ।

अकराऽ—(वि०, दे०)[सं० **अक्रय्य**] महँगा, अमूल्य । खरा, चोखा, श्रेष्ठ, उत्तम । (संज्ञा, पु० हि०) एक प्रकार का मोटा अन्न । छोटा आँवला ।

अकराथ—(वि०, दे०) [सं० अकार्यार्थ] व्यर्थ ।

अकराना—(क्रि०, अ० प्रान्ती०) एक प्रकार का दुःस्वाद अनुभव होना, बिगड़ जाने पर किसी चीज का खाने के योग्य न रहना, [**अकुराना**] ।

अकराल—(वि०) [सं० अ+कराल] जो भयंकर या भयावह न हो । (संज्ञा, स्त्री०) [**अकरालता**]

अकरास—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० अकड़] अँगड़ाई, शैथिल्य, देह टूटने की स्थिति, (प्रान्ती०) कष्टानुभव। (सं० अकर) आलस्य, शिथिलता ।

अकरासू—(वि०, स्त्री०) [हि० अकरास] गर्भवती । (अव०) अकरास, हानि ।

अकरी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० आ—अच्छी तरह+किरण—बिखरना] हल में लगाया जाने वाला बाँस का चोगा, जिसके द्वारा खेत मे बीज बखेरे जाते हैं । (वि०, स्त्री० दे०) बुरी । 'नफा जानिकै ह्यां लै आये सबै बस्तु अकरी', 'नाम प्रताप महा महिमा अकरो किये खोटेउ छोटेउ बाढ़े'—[कविता०] ।

अकरुण—(संज्ञा, पु० सं०) करुणा-रहित, निर्दय, निष्ठुर, क्रूर, कठोर, कृपाहीन, निर्भय । [**अकरुन**] (दे०) । 'मैं अकरुन कोही'—तुलसी० ।

अकर्ण—(वि०, सं०) [सं० अ+कर्ण] कर्णरहित, वधिर, बहिरा । बूचा । (संज्ञा, पु०) साँप ।

अकर्णी—(वि०, सं०) असंगत, अनुचित, अकर्तव्य । [**अकरणीय**] ।

अकर्तव्य—(वि०, सं०) [अ+कर्तव्य] न करने योग्य, अनुचित, अकरणीय ।

अकर्ता—(वि०) [सं० अ+कर्ता] कर्म न करने वाला, [**अकर्मण्य**] जो कर्मों से निर्लिप्त हो (सांख्य) कर्म से पृथक् , [**अकरता**] । (वि०, पु० दे०) निकम्मा ।

अकर्तृक—(संज्ञा, पु० सं०) बिना कर्ता का, कर्ता या रचयिता से रहित, जिसका कर्ता या रचयिता न हो।

अकर्म—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+कर्म] न करने के योग्य कार्य, बुरा काम। कर्म का अभाव। पाप, अपराध, अधर्म, बुराई। (वि०) बेकार, कर्म-रहित। निगोड़ा, चांडाल, अपराधी, [**अकरम**] (दे०)।

अकर्मक—(वि०, पु०) [स० अकर्म+क] जिसे कर्म की आवश्यकता अथवा अपेक्षा न हो, (व्या०), संज्ञा, पु० कर्म से परे तत्व, परमात्मा।

अकर्मण्य—(वि०, सं०) कुछ काम न करने वाला, आलसी, **निकम्मा,** काम के अयोग्य, निठल्ला, अकरता। 'अकर्मण्य पंडित हो जाता...दिन०।'—

अकर्मा—(वि०, सं०) बेकार, अकर्मण्य, शिथिल।

अकर्मी—(सं०, पु०) [सं० अकर्मिन्] बुरा काम करने वाला, पापी, दुष्कर्मी, अपराधी। (स्त्री०) [**अकर्मिणी**]।

अकर्षण—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० आकर्षण] [**अकर्षन**] (दे०) खिंचाव।

अकलंक—(वि०, सं०) निष्कलंक, दोषहीन, बेऐब, बेदाग, निर्दोष, अलांछित। 'इस अकलंक नमन से'—दिन०।

अकलंकता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) निर्दोषता, कलंक-हीनता। 'अकलंकता कि कामी लहई'—तुल०।

अकलंकित—(वि०, सं०) निष्कलंक, निर्दोष।

अकलंकी—(वि०, सं०) [अकलंकिन्] कलंक-रहित। दोषहीन। (संज्ञा, भा०) [अकलंकिता] 'अकलंकिता कि कामी लहई'—तुल०

अकल—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+कला] अंगहीन, निरंग, निरवयव, निराकार, परमात्मा, अखंड सिख संप्रदाय के ईश्वर का एक नाम। (वि०) [अ+कल—चैन—बेचैन] विकल, व्याकुल। (सं०, स्त्री०) [फ़ा० अक्ल] अकिल, अक़िल (दे०), अक्ल, बुद्धि।—**अकलता**—(संज्ञा, स्त्री०) बेचैनी।

अकलखुरा§—(वि०, दे०) [हिं० अकेला+खोर फ़ा०] अकेला खाने वाला, स्वार्थी। रूखा। मनहूस। डाही, ईर्षालु। जो मिलनसार न हो।

अकलबीर—(संज्ञा, पु० दे०) भाँग का सा एक पौधा, जिसकी जड़ का रेशम पर रंग चढ़ाने में उपयोग होता है। करमबीर, वज्र।

अकलुष—(वि०, सं०) निर्मल, पापरहित, अदोष। 'बन अकलुष, उज्ज्वल औ कोमल'—पं०।

अकल्प—(वि०, सं०) अनियमित, नियंत्रण को न मानने वाला। उपमता-शून्य। जिसकी तुलना न की जा सके। 'जो अकल्प कल्पनातीत प्रभु'—हरिऔध।

अकल्पन—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+कल्पना] सत्य, प्रकृत, यथार्थ, वास्तविक। [**अकल्पना**], (वि०) [**अकल्पनीय**]

अकल्पनीय—(वि०, सं०) अचिंतनीय, जो ध्यान में न आ सके। 'है अत्यन्त अकल्पनीय भव की'—हरिऔध।

अकल्पित—(वि०) [सं० अ+कल्पित] कल्पना-रहित, सच्चा। (वि०); [**अकल्प्य**]

अकल्मष—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+कल्मष] निष्पाप, उज्ज्वल, शुभ, शुद्ध।

अकल्याण—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+कल्याण] अमंगल, अशकुन, अशुभ, बुरा।

अकवन—(संज्ञा, पु०) [हिं० आक] आक, मदार, [**अकौन, अकौवा**]।

अकवच—(वि०, सं०) जिसके शरीर पर कवच न हो, जिसने सनाह न धारण किया हो। रक्षा-प्रयत्न से शून्य। 'अकवच ही वे शत्रु दल का करते संहार' —गिरीश।

अकवार—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० **अंकवार**] काँख, कुक्षि, अंकाला। गोद।

अकस—(संज्ञा, पु० दे०) [स० आकर्ष] बैर, डाह, विरोध। 'काम काहे वाइके देखाइयत आँखि मोहिं, एतेमान अकस कीबे कौ आपु आहि को'—तुल०। द्वेष, शत्रुता, बुरी उत्तेजना। [**अक्स**] (फ़ा०) छाया, प्रतिबिम्ब, (दे०) [अकास, आकाश]।

अकसर—(क्रि० वि०, दे०) [अ० अक्सर] प्रायः, बहुधा, अधिकतर। *(क्रि० वि०) [सं० एक+सर] अकेले, बिना किसी के साथ, **एकसर**। 'कवन हेतु मन व्यग्र करि अकसर आएहु तात'—तुल०।

अकसीर—(संज्ञा, स्त्री० अ०) सस्ती धातु को सोना या चाँदी बनाने वाला रस या भस्म, रसायन, कीमिया। प्रत्येक रोग को नष्ट करने वाली औषधि। (वि०) अव्यर्थ, अचूक।

अकस्मात्—(क्रि० वि०, सं०) अचानक, अनायास, सहसा, दैवयोग से, संयोगवश, आप से आप, बलात, अचानक, हठात। 'अकस्मात निःशब्द आये जयों' —मैथिली०।

अकहꣿ—(वि०) [हिं० अ+कह]। अकथ। 'कीन्ही सिवराज वीर अकह कहानियाँ'—भूषण।

अकहुवा*—(वि०, दे०) **अकथ**।

अकांड—(वि०) [सं० अ+कांड] अखंड, बिना

शाखा का। (क्रि० वि०, सं०) अचानक, अकारण अकस्मात [अ+कांड-घटना], घटना-रहित। (संज्ञा,) (स्त्री०) [**अकांडता**]—**तांडव**—पु० व्यर्थ की उछल-कूद, व्यर्थ बकवाद, वितंडावाद।—**पात**—(पु०) जन्म होते ही मृत्यु।

अकांडायास—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अकांड+आयास] व्यर्थ प्रयत्न, वृथा प्रयास।

अका—(वि०, सं०) निर्बोध, जड़, मूढ़। पागल।

अकाज*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अ+कार्य—काज] कार्य-हानि, हानि, क्षति, विघ्न, बिगाड़। बुरा कार्य, [**अकारज**]-(सं०) खोटा काम।* (क्रि० वि०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

अकाजना—(क्रि०, अ०) [हिं० अकाज] हानि होना, गत होना, मरना। (क्रि०, स०) हानि या क्षति करना, हर्ज करना, बिगाड़ना।

अकाजा*—(वि०)] हिं० अकाज] कार्य-हानि करने वाला, बाधक। बेकाम, **अकरता**। (स्त्री०) [**अकाजिन**]—कार्य बिगाड़ने वाली।

अकाट्य—(वि०) [सं० अ+कट्+य] न काटने के योग्य, जो कट या काटा न जा सके, अखंडनीय, सुदृढ, पुष्ट। 'भाई, कहने को तर्क अकाट्य तुम्हारा'—मैथिली०।

अकातर—(वि०) सं० धैर्यवान, धीर, अचंचल। 'रह अकातर कार्य करो सभी'—रामच०।

अकाथ*—(क्रि० वि०, दे०) अकारथ, वृथा, व्यर्थ। 'राखै जो अनाथ नाथ माथ पै तिहारे हाथ, ताकौ न, भजै अकाथ जीवन गवावै है'—रसाल०। (वि०) अकथ, अकथनीय। (वि०) अकथ्य (सं०)।

अकाम—(वि० हिं०, सं०) जितेन्द्रिय, बिना काम, कामना-रहित, इच्छाहीन। 'जोगी जटिल अकाम तन'—तुल०।

अकामी—(वि०) [सं० अ+काम] **अकाम**, बिना कामना का, कामना-रहित, निस्पृह, काम-रहित, जितेन्द्रिय, इच्छा-विहीन। (क्रि० वि०, दे०) [सं० अकर्म] व्यर्थ, बेकाम, निष्काम, निकम्मा। **नाकाम** (दे०) निष्प्रयोजन।

अकाय—(वि०) [सं० अ+काय] काय या देह से रहित, शरीर न धारण करनेवाला, जन्म न लेने वाला, निराकार, ईश्वर। कामदेव, अनंग, अदेह।

अकार—(संज्ञा, पु० सं०) 'अ' वर्ण या उसके उच्चारण की ध्वनि। [सं० आकार] स्वरूप, आकृति, सूरत, शक्ल ([सं० अ+कार्य] बेकार, बेकाम, अकार्य। [हिं० अ+कार—काम] कार्य का अभाव।

अकारज*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अ+कार्य] कार्य की हानि, क्षति, अकाज, हर्ज। 'आयु अकारज आपनो, करत कुसंगति साथ।'

अकारण—(वि०) [सं० अ+कारण] बिना कारण, जिसकी उत्पत्ति का कोई कारण न हो, हेतु-रहित, स्वयंभू। (क्रि० वि०) बेसबब, व्यर्थ, बिना कारण के, [**अकारत**] (दे०)। 'हो रहा अपयश अकारण और अनुचित आप का।'

अकारथ—*§—(क्रि० वि०, यौ० दे०) [सं० अकार्यार्थ] बेकाम, निष्फल, निष्प्रयोजन, व्यर्थ, लाभ-रहित, वृथा, फ़िजूल। 'जनम अकारथ जात।'

अकारन*—(वि०, दे०) बिना कारण।

अकारांत—(वि०, सं०) वे शब्द जिनके अंत में 'अ' हो।

अकार्पण्य—(वि०, सं०) संकीर्णता, अथवा तुच्छता का भाव दिखाये बिना जो मिला हो। (संज्ञा पु०) कृपणता, कंजूसी, दीनता, संकीर्णता अथवा तुच्छता का अभाव। 'अकार्पण्यमय भाव प्रकृति का देख भुलाओ निज कार्पण्य'—हरिऔध।

अकाल—(संज्ञा, पु० सं०) अनुपयुक्त समय, अनवसर। दुर्भिक्ष, दुष्काल, महँगी। घाटा, कमी। 'बिनही ऊगे ससि समुझि, दैहै अरघ अकाल।' 'कलि बारहिं बार अकाल हरै।—तुल०। (वि०) कुसमय, उचित समय से पूर्व।—**कुसुम**—(पु०) बे-ऋतु या बिना ठीक समय के फूला हुआ फूल। अशुभ बात। बे-समय की चीज, [**अकालपुष्प**]—**जलद**-(पु०) असमय के बादल, [**अकालाब्द, अकालाम्बुद**]—**पुरुष** (पु०)-सिक्खों के ग्रन्थों मे ईश्वर का एक नाम।—**पुष्प** (पु०)-अकाल-कुसुम, [**अकाल पुहुप, खपुष्प**]—**प्रसूत** (वि०) समय से पहले जन्म लेने वाला [एबार्टिव]। 'शिशु अकाल प्रसूत हो तो, मरण ही परिणाम।'—**मूर्त्ति**—(पु०) नित्य या अविनाशी पुरुष, ईश्वर।—**मृत्यु**-(स्त्री०) असमय की मृत्यु, असामयिक मृत्यु, अपक्व मरण। [**अकाल कालकवलित**]—**वृष्टि**-(स्त्री०) कुसमय को वर्षा, [**अकाल-वर्षा, अकाल-वर्षण**]।

अकालिक—(वि०) [सं० अकाल+इक] असामयिक, बेमौका, अवसर के अनुपयुक्त।

अकाली—(संज्ञा, पु०, [सं० अकाल+ई-प्रत्य० हिं०] नानकपंथी साधु जो एक चक्र के साथ सिर पर काली पगड़ी बाँधते हैं।

अकालोत्पन्न—(वि०, सं०) जो असमय, बेमौके उत्पन्न हो। 'अधम अकालोत्पन्न बाल यह'—गिरीश।

अकालोदक—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) अकालवृष्टि।

अकाव§—(संज्ञा, पु० दे०) आक, मदार, अकवन, [**अकान**] अकौवा (ग्रा०)।

अकास*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० आकाश] आसमान, शून्य। 'ढील देत महि गिरि परत खेंचत चढ़त अकास'—तुल०।—**गङ्गा**-(स्त्री०) आकाश-गंगा [सं०]।—**दिया**-(पु०) कार्तिक मे जो दीपक बाँस में बाँधकर आकाश मे लटकाया जाता है।—**बानी**-(स्त्री०) देववाणी, गगन-गिरा।—**बेल**-(स्त्री०) अमरबेल, अँवरबेल, आकाश बौर।

अकासी*§—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० आकाशीय] आकाश से सम्बन्ध रखनेवाली। ताली। चील। 'बाएँ अकासी दौरी आई'—जायसी।

अकिंचन—(वि०, सं०) निर्धन, कंगाल, जिसके पास कुछ न हो, दीन, दुखी, तुच्छ, कर्मशून्य। असमर्थ, अकिंचित्कर। (स्त्री०) [**अकिंचना**]—'मैं अकिंचना रक्खूँ उसको मन में'—मैथिली०। (पु०) दरिद्र पुरुष। [संज्ञा, **अकिंचनता**। **अकिंचनक**]—**वाद**-मुफलिसी में दावा [पापर सूट]।

अकिंचित्कर—(वि०) जो कुछ न कर सके। क्षुद्र, तुच्छ। 'मैं सब भाँति अकिंचित्कर हूँ, तुम सब भाँति समर्थ'—गिरीश।

अकिल—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [अक़्ल फ़ा०] बुद्धि, अक़िल, [**अकल**] (दे०)। (वि०, **अकिलमंद**)।—**दाढ़**-(संज्ञा, स्त्री० यौ० हि०) पूर्ण अवस्था पर निकलने वाली डाढ़ या अतिरिक्त दाँत, (**अक़िलडाढ़** ग्रा०)।

अकिल्विष—(वि०, सं०) पाप-शून्य, निर्मल।

अक़ीक़—(संज्ञा, पु० अ०) मुहर खोदने का लाल पत्थर।

अक़ीका—(संज्ञा, पु० अ०) मुसलमानों में बच्चों के नाम रखने तथा बाल उतरवाने का उत्सव जो प्रायः जन्म तिथि के सातवें दिन होता है, मुंडन तथा नामकरण-संस्कार।

अक़ीदत—(संज्ञा, स्त्री० अ०) किसी धर्म का वह सिद्धांत जिसको मान लेने से कोई उस धर्म में प्रवेश कर सके।—**मन्द** (वि०) विश्वास रखने वाला।

अक़ीदा—(संज्ञा, पु० अ०) दृढ़ विश्वास, धर्म।

अक़ीम—(वि०, अ०) बाँझ, बंध्या। [**अक़ीमा**, शु० रू० अक़ीम] (संज्ञा, स्त्री०) बाँझ औरत, बंध्या स्त्री।

अकीर्ति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अयश, अपयश, बद-नामी। [**अकीरति**] (हि०) अपकीर्ति।

अकीर्तिकर—(वि०, सं०) अपयशकारी, अपयशकर। (स्त्री०) **अकीर्तिकारी**।

अक़ील—(संज्ञा, पु० अ०) बुद्धिमान पुरुष।

अक़ीला—(संज्ञा, स्त्री० अ०) बुद्धिमती स्त्री।

अकुंचित—(वि०, सं०) जो टेढ़ा न हो।

अकुंठ—(वि०, सं०) तीक्ष्ण, चोखा, पैना, खुला हुआ। 'जीवत बैकुंठ लोक जो अकुंठ गायो है'—सुन्द०। तीव्र, खरा, उत्तम। 'उसका है अकुंठ पद, इससे है बैकुंठ-निवासी'—'हरिऔध'।

अकुंठित—(वि०, सं०) जो कुंठित न हो, पैना। (संज्ञा, पु० सं०) [**अकुंठन**]।

अकुंठ्य—(वि०, सं०) जो कुंठित न किया जा सके, तीक्ष्ण, [**अकुंठनीय**]।

अकुताना*—(अ० क्रि०, हि० दे०) ऊबना, घबड़ाना, [**उकताना**]।

अकुताही—(संज्ञा, स्त्री० दे०) ऊब, घबड़ाहट। अकूत, अव्यवस्थित, असंतुलित होने का भाव।

अकुतोभय—[वि०, यौ०) [सं० अ+कुतः+भय] जिसे कहीं डर न हो, निडर, निश्शंक, निर्भय, साहसी, निर्भीक।

अकुल—(वि०) [सं० अ+कुल] जिसके कुल में कोई न हो। नीच कुल का, कुलहीन, अकुलीन। (संज्ञा, पु०) नीच कुल का व्यक्ति।

अकूल—(वि०, सं०) कूल-रहित, तटहीन। 'जग के छबि उपवन से अकूल'—पंत।

अकुला—(वि०, सं०) कुलहीना, नीच कुल की। (संज्ञा, स्त्री०) शिवा, पार्वती।—**उठना**-(क्रि०, अ०) व्याकुल हो जाना, अधीर हो जाना।

अकुलाना—(क्रि०, अ० दे०) [सं० आकुलन] उता-वला होना, घबराना, व्याकुल होना, मग्न होना, बेचैन होना। (संज्ञा, स्त्री० **अकुलाहट**)।

अकुलिनी—(वि०, स्त्री० हि०) व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा।

अकुलीन—(वि०, सं०) नीच कुल का, कुजाति, क्षुद्र, संकर, जारज, कमीना, शूद्र। कृतघ्न, क्रोधी। 'अकुलीन दीन का'—[मधुपुरी]। "कहाँ अकुलीन या कुलीन मुझे चिंता नहीं।"—हितैषी।

अकुशल—(वि०, सं०) अमङ्गल, बुरा, जो चतुर न हो, अपटु, अदक्ष।

अकुशलता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अचतुरता। अमं-गलता।

अकुशली—(वि०, सं०) कौशलविहीन। अप्रसन्न।

अकूट—(वि०, सं०) जिससे धोखा या निराशा की आशंका न हो; अस्त्र, जिसमें कोई ऐब या खोट न हो। सिक्का। "किया आक्रमण तब दानव ने लेकर अस्त्र अकूट।"—गिरीश।

अकूत—(वि०, दे०) [अ+कूतना] जो कूता न जा सके, बेअंदाज, अपरिमित। 'सुनिकै दूत अकूत मोद लहि चले तुरत तिरहूता।' 'देखन धाये नारिनर घर घर सोर अकूत।'

अकूहल*—(वि०, दे०) बहुत, अधिक।

अकूपार—(संज्ञा, पु० सं०) सागर। कछुवा। पत्थर, चट्टान।

अकृच्छ्र—(वि०, सं०) सरल, आसान।

अकृत—(वि०, सं०) बिना किया हुआ, बिगड़ा हुआ। जो किसी का रचा न हो, नित्य, स्वयंभू। प्राकृतिक। निकम्मा, बेकाम, बुरा, मन्दा, कर्म-हीन। 'हौं असौच अकृत अपराधी सनमुख होत लजाऊँ'—सूबे०।

अकृति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) बुरी कृति, बुरी करणी। (विलो०) **[सुकृति]**।

अकृतज्ञ—(वि०, सं०) कृतघ्न, किये हुए उपकार को न मानने वाला।

अकृतज्ञता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) कृतघ्नता।

अकृतघ्न—(वि०, सं०) कृतज्ञ, जो उपकार माने, जो कृतघ्न न हो।

अकृतघ्नता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) कृतज्ञता।

अकृत्रिम—(वि०, सं०) प्राकृतिक, जो बनावटी न हो। (संज्ञा, स्त्री० **अकृत्रिमता**)।

अकृषिक—(संज्ञा, पु० सं०) जो व्यक्ति खेतिहर न हो। (वि०) कृषि से जो असम्बंधित हो।

अकृषित—(वि०, सं०) जो जोता न गया हो, जिसमें खेती का काम न किया गया हो।

अकृष्टभूमि—(संज्ञा, स्त्री० सं०) बंजर प्रदेश [फैलोलैंड]

अकेतन—(वि०, सं०) घर-द्वार-हीन, गृह-रहित।

अकेतु—(वि०, सं०) रूपशून्य।

अकेला—(वि०, दे०) [हिं० एक+ला] तनहा, बिना साथी का, एकाकी, अद्वितीय। (संज्ञा, पु०) निर्जन, निराला, जनशून्य, एकान्त स्थान।—**दम** (वि०)—अन्य किसी की सहायता न लेकर स्वयमेव। —**दुकेला** (वि०) एक या दो, अधिक नहीं, इक्का-दुक्का।

अकेले—(क्रि० वि०) [हिं० अकेला] एकाकी, केवल, सिर्फ। (संज्ञा, पु०)—निर्जन स्थान। **मु०—(ले) में कहना**—एकान्त मे बताना।

अकेश—(वि०, सं०) केश-रहित, थोड़े अथवा असुन्दर बालों वाला। 'यौवन मे असमय ही उसका सिर हो गया अकेश'—गिरीश।

अकोठ—(वि०, दे०) [सं० आ+कोटि] करोड़ों, करोड़ तक। (वि०) [सं० अ+कोटि] करोड़ नहीं। बिना किले का।

अकोतरसो*—(वि०, यौ० दे०) [सं० एकोत्तर शत] एक सौ एक।

अकोन—(वि०, दे०) **एकोन**—(सं०) एक कम।

अकोर—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० आक्रोड़] तोहफा, भेंट, घूस, **अँकोर**—(दे०)। (संज्ञा, पु०) **अकवार** गोद, अँकोर।

अकोला—(संज्ञा, दे०) [सं० अंकोल] एक प्रकार का वृक्ष। एक नगर।

अकोविद—(संज्ञा, पु० सं०) मूर्ख, अदक्ष, ईख का सिरा। (स्त्री० **अकोविदा**—मूर्खा)।

अकोसना*—(क्रि०, स० दे०) गाली देना, कोसना, भला-बुरा कहना।

अकौआ§ **अकौवा**—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अर्क] आक, मदार। गले का कौआ, घंटी।

अकौटिल्य—(संज्ञा, पु० सं०) कुटिलता का अभाव, सरलता, ऋजुता, अवक्रता। 'अकौटिल्यही लक्ष्य प्रेम का'—गिरीश।

अकौशल—(संज्ञा, पु० सं०) कौशल का अभाव, अकुशलता, अप्रवीणता, अदक्षता। 'हितकर कभी नहीं हो सकता यह व्यवहार-अकौशल'—हरिऔध।

अक्खड़—(वि०, दे०) [हिं० अड़+खड़ा] उद्धत, किसी का कहना न माननेवाला, उजड्ड, उच्छृङ्खल, झगड़ालू। निर्भय, निडर। असभ्य, अशिष्ट, उद्दंड, जड़, खार। स्पष्टवक्ता। (संज्ञा, पु०)—[**अक्खड़पन, अक्खड़ता**]।

अक्खड़पन, अक्खड़ता—(संज्ञा, पु० हिं०) उद्दंडता, जड़ता, अशिष्टता, उच्छृङ्खलता, असभ्यता, उग्रता।

अक्खर*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अक्षर] वर्ण, अक्षर, [**अच्छर**, अक्खड़ ड़ के स्थान में र हो कर **आखर** दे०]।

अक्खा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अक्ष—संग्रह करना] बैलों पर अनाज आदि लादने का दोहरा थैला, खुरजी, गोनें (दे०)।

अक्खोमक्खो—(संज्ञा, पु० यौ० दे०) [सं० अक्ष+मुख] दीपक की शिखा तक हाथ ले जाकर 'अक्खो

मक्खो दिया बरक्खो जो मेरे बच्चे को तक्के उसकी फूटें दोनों अक्खें' कहते हुए बच्चे के मुँह पर फेरना, जिससे नजर या दृष्टि-दोष दूर हो जावे।

अक्त—(वि०, सं०) व्याप्त, संयुक्त। एक प्रत्यय—जैसे विपाक्त। भीगा, गीला, लिपा।

अक्ता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) रात। 'अक्ता अंधकार-मग्ना थी'—गिरीश।

अक्रक्ष—(वि०) [सं० अक्रिय] अक-बके, अक्रिया।

अक्रम—(वि०, सं०) बिना क्रम के, बेसिलसिले, क्रमहीन, उलटा-पुलटा, अंड-बंड। (संज्ञा, पु०) क्रमाभाव, व्यतिक्रम। (संज्ञा, स्त्री०) [**अक्रमता**]।

अक्रव्याद—(वि०,सं०) मांस न खानेवाला। 'पाणिनि अक्रव्याद हो गये क्रूर व्याघ्र-आहार'—गिरीश।

अक्रमसन्यास—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) क्रम से न लिया जाने वाला संन्यास; ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ के क्रम से रहित संन्यास।

अक्रमातिशयोक्ति—(संज्ञा, स्त्री० यौ० सं०) अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद, जिसमें कारण के साथ हो कार्य सिद्धि कही जाती है। (काव्य०)।

अक्रान्त—(वि०) [सं० अ+क्रान्त] जो ग्रस्त न हो, **अनाक्रान्त**।

अक्रिय—(वि०, सं०) क्रिया-रहित, जो कर्म न करे, जड,निश्चेष्ट, स्तब्ध। 'ज्योंहीं स्तब्ध,सुप्त,अक्रिय हो' —हरिऔध। (संज्ञा, स्त्री०) [**अक्रियता**]-(सं०)।

अक्रियमाण—(वि०, सं०) जो क्रियाशील न हो, निश्चेष्ट। 'अक्रियमाण थके हारे से'—गिरीश।

अक्रीत—(वि०, सं०) जो मोल न लिया गया हो।

अक्रूर—(वि० सं०) क्रूरता-रहित, सरल, दयालु, कोमल स्वभाववाला। (संज्ञा पु०) श्रीकृष्ण के चाचा, एक यादव, जो स्वफल्क और गान्धिनी के पुत्र थे। इनकी ही राय से सत्यभामा के पिता शतधन्वा ने सत्राजित को मार कर स्यमन्तक मणि ले ली थी, कृष्ण के डराने पर वह उसे अक्रूर को देकर भाग गया, किन्तु पकड़ा जाकर मारा गया। 'ऐसे क्रूर करम अक्रूर हैं कराये जो'—रत्ना०।

अक्द—(संज्ञा, पु० अ०) निकाह, विवाह, वैवाहिक बंधन, बाँधने या गाँठ लगाने की क्रिया। इक़रार। विक्रय।—**बंदी**—(स्त्री०) [अ०+फ़ा०] गँठबधन।

अक्ल—(संज्ञा, स्त्री० अ०) बुद्धि, समझ, ज्ञान, प्रज्ञा, अाकिल, **अक्किल** (दे०)।—**मंद**-(वि०, पु०) बुद्धिमान, चतुर, समझदार।—**मंदी**-(स्त्री०) बुद्धिमत्ता, समझदारी। **मु**०—**का दुश्मन**-मूर्ख, बेवकूफ।—**का पूरा** [व्यंग्य]—जड़, मूर्ख।—**के पीछे डंडा लेकर दौड़ना**-बेवकूफी, बेसमझी करना।—**का चरने जाना**-समझ का चला जाना, बुद्धि का लोप या अभाव होना।—**मारी जाना**-बुद्धि का नष्ट हो जाना।—**से काम लेना**—सोच विचार या समझ बूझकर बुद्धि से काम करना।—**खर्च करना**-समझ को काम में लाना।—**खो देना**-समझ का लोप होना।—**गुम होना**-बुद्धि का लोप हो जाना। —**को बालाय ताक या दूर करना**-समझ को हटा कर बेसमझी करना।—**का मोल लाना**-किसी समझदार से राय लेना।—**पर परदा पड़ना** -बुद्धि का लोप होना, समझ का काम न करना, दूर या ग़ायब होना। 'पूछा जो उनसे बी कहो परदा कहाँ गया, कहने लगीं कि अक्ल पै मर्दों के पड़ गया'—अकबर।

अक्लान्त—(वि०) [सं० अ+क्लान्त] जो थका या श्रान्त न हो, अशिथिल। (संज्ञा, स्त्री०) [**अक्लान्ति**]।

अक्लिष्ट—(वि०) [सं० अ+क्लिष्ट] सुगम, सहज, आसान। (संज्ञा, स्त्री०) [**अक्लिष्टता**]।

अक्ली—(वि०, अ०) बुद्धि-संबंधी, मानसिक तर्कसंगत, उचित, तर्कसिद्ध।

अक्लेद—(वि०, सं०) अनार्द्रता, गीलेपन का अभाव, सूखापन।

अक्लेश—(वि०) [सं० अ+क्लेश] क्लेश या कष्ट-रहित।

अक्षंतव्य—(वि०, सं०) न क्षमा करने योग्य। 'अक्षंतव्य तुम्हारे दोष'—गिरीश।

अक्ष—(संज्ञा, पु० सं०) खेलने का पाँसा, पाँसों का खेल, चौसर। छकड़ा, गाड़ी। धुरी। पहिया। गाड़ी का जुआ। रुद्राक्ष,। माशों की तौल। आत्मा, सर्प। गरुड़। तराजू की डाँडी, मामला-मुकदमा। इंद्रिय। आँख। पृथ्वी के भीतर केन्द्र से होती हुई (कल्पित) रेखा जो आरपार जाकर दोनों ध्रुवों तक पहुँचती है और जिस पर पृथ्वी पूरब से पश्चिम को ओर २४ घंटों में एक बार घूमती हुई मानी गई है (भूगोल)। रथ, यान, मंडल। (संज्ञा, स्त्री०) [**अक्षा**]। —**कुमार**-(पु०) रावण-सुत, अक्षयकुमार [**अछकुमार**] दे०—**कूट**-(पु०) आँख की पुतली।—**क्रीड़ा**-(स्त्री०) पाँसे का खेल, चौसर। (संज्ञा, पु०) [अक्षकोणक, **अक्षक**]।

अक्षत—(वि०) अखंडित, समूचा त्रुटि-रहित। (पु०) पूजा के काम में आने वाले चावल जो टूटे न हों, धान का लावा। जौ। [**अच्छत, आखत**] (दे०)।

—योनि—(वि०, स्त्री०) वह स्त्री जिसका सम्बन्ध पति या पुरुष से न हुआ हो, कन्या।

अक्षता—(वि०, स्त्री० सं०) अक्षत-योनि स्त्री, कन्यका।

अक्षपाद—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) एक दार्शनिक ऋषि जिन्हे गौतम भी कहते है; न्यायदर्शन (शास्त्र) के यही प्रणेता हैं, ६०० से २०० वर्ष ईसा के पूर्व इनका होना माना गया है—इनके न्यायदर्शन मे ५२८ सूत्र है, जिनमें न्याय [तर्क] से ईश्वर, जीव और प्रकृति की सत्ता तथा सम्बन्ध दिखलाते हुए दुःख की अत्यन्त निवृत्ति या अत्यन्ताभाव को मुक्ति कहा गया है—इस विद्या को अन्वीक्षिकी या सुनकर अन्वेषण की गई विद्या भी कहते है। तार्किक, नैयायिक।

अक्षम—(वि०, सं०) क्षमा-रहित, असहनशील, असहिष्णु। अशक्त, असमर्थ। (संज्ञा) [**अक्षमता** स्त्री०।] (वि०) [**अक्षम्य**]।

अक्षमता—(संज्ञा, भा० स्त्री० सं०) क्षमा का अभाव। ईर्ष्या, डाह। असहिष्णुता, असामर्थ्य।

अक्षम्य—(वि०, सं०) जो क्षमा योग्य न हो। (संज्ञा, स्त्री०) [**अक्षम्यता**]।

अक्षय—(वि०, सं०) क्षय-हीन, अविनाशी, अनश्वर, कल्पान्तस्थायी, अमर, चिरंजीवी। (संज्ञा, पु०) अक्षयपन। "खो निज आत्मा का अक्षय धन" —पंत।—**कुमार**–(पु०) हनुमान जी से मारा जानेवाला रावण-पुत्र, [**अछयकुमार**] (दे०)। —**तृतीया**–(स्त्री०) वैशाख शुक्ल तृतीया। [**आखातीज-अखतीज**] (दे०)।—**नवमी** (स्त्री०) कार्तिक शुक्ल नवमी। [**आखानौमी**] (दे०)।—**वट**–(पु०) प्रयाग और गया में बरगद के वृक्ष, जिनका नाश पुराणवादी प्रलय में भी नहीं मानते।

अक्षयी—(वि०, सं०) अविनाशी।

अक्षर—(वि०, सं०) नित्य, नाशरहित, सत्य, निर्विकार (संज्ञा, पु०) आकाशादि तत्व। अकारादि वर्ण, हरफ। आत्मा, ब्रह्म। आकाश धर्म। तपस्या। मोक्ष। जल। शिव। अपामार्ग [चिचिरा]।—[**अच्छर, आखर**] (दे०)।—**क्रम**–(संज्ञा, पु० सं०) वर्णमाला में मिलने वाला अक्षरों का क्रम। 'अक्षर क्रम से हो लिखित सकल शब्द-भंडार'—गिरीश।—**न्यास, विन्यास**–(पु०) लेख, लिपि, लिखावट। मंत्र के एक-एक अक्षर का उच्चारण करते हुए आँख, कान, नाक, आदि का स्पर्श करने की क्रिया [तंत्रशास्त्र]।—**माला** –(स्त्री०) वर्णमाला, **अक्षर-श्रेणी**। [**अक्षरराजी, अक्षरावलि**]।

अक्षरावर्तन—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) वे पद्य जो वर्णमाला के अक्षरों को यथाक्रम लेकर प्रारम्भ होते है।

अक्षरशः—(क्रि० वि०, सं०) एक-एक अक्षर, पूरा-पूरा सब। 'अक्षरशः आदेश का पालन करना धर्म'—हरिऔध।

अक्षरानुक्रमणिका—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अक्षर+अनुक्रमणिका] वस्तुओं अथवा व्यक्तियों की सूची, जो वर्णमाला मे अक्षरों के क्रम के अनुसार तैयार की गयी हो।

अक्षरारंभ—(संज्ञा, सं०) अक्षर-परिचय का श्रीगणेश। 'शुभ मुहूर्त मे राम ने किया अक्षरारंभ।'

अक्षरी—(संज्ञा स्त्री० सं०) शब्द के भीतर आने वाले अक्षर, वर्त्तनी, हिज्जे। 'शब्द ज्ञान करते बालक गण खेल अक्षरी खेल'—गिरीश।

अक्षरावृत्ति—(संज्ञा, स्त्री० यौ० सं०) अनुप्रास।

अक्षरौटा—(संज्ञा, स्त्री० हि०) वरतनी, वर्णमाला, स्वर का मेल, [अखरौटी, अखरावट दे०]।

अक्षवार—(संज्ञा, पु० सं०) जुवा खेलने का स्थान, जुवाखाना, [**अक्षालय**]।

अक्षांश—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अक्ष+अंश]—उत्तरीय और दक्षिणीय ध्रुव के अन्तर के ३६० समान भागों मे से प्रत्येक से होती हुई ३६० कल्पित रेखाएँ जो पूर्व से पश्चिम को ओर जाती हुई मानी गई हैं। वह कोण जहां पर क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष से कटता है। भूमध्य रेखा और किसी नियत स्थान के बीच मे याम्योत्तर का पूर्ण झुकाव या अन्तर। किसी नक्षत्र के क्रान्ति वृत्त के उत्तर या दक्षिण की ओर का कोणान्तर। (यौ०) [**अक्षांश-देशान्तर**]।

अक्षि—(संज्ञा, स्त्री० सं०) आँख, नेत्र, **आँखी**।—**गत**–(पु०) आँख पर चढ़ा हुआ, देखा हुआ, दृग्गत। शत्रु।—**गोलक**–(पु०) आँख की पुतली, 'चखपूतरि।'—**तारा**–(स्त्री०) आँख की पुतली।—**पटल** –(पु०) आँख का परदा, **दृगंचल**।—**विक्षेप**–(पु०) कटाक्षपात, वक्र दृष्टि, बंकविलोकन।—**विभ्रम**—आँख के घुमाने की क्रिया।

अक्षुण्ण—(वि०, सं०) बिना टूटा हुआ, अखंडित, अभग्न, समूचा, अविकृत। मनस्ताप-रहित, अनाड़ी। अघूर्णित, अछूता। 'अक्षुण्ण रह सकता मुकुट का मान न इस वंदन में'—दिन०।

अक्षोट—(संज्ञा, पु० सं०) अखरौट।

अक्षोनी*—(संज्ञा, स्त्री० दे०) देखिए, अक्षौहिणी

अक्षोभ—(संज्ञा, पु० सं०) [**अछोभ**] (दे०) क्षोभ का अभाव, शान्ति। खूँटा, जिसमें हाथी बाँधा जाता है। (वि०) क्षोभरहित, गंभीर, शान्त। निडर, निर्भय। मोह-रहित। बुरे काम से न हिचकनेवाला।

अक्षौहिणी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) चतुरंगिणी सेना, जिसमें १०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ, और ११८७० हाथी होते है, [**अच्छौहिनी**] (दे०)।

अक्स—(संज्ञा, पु० अ०) प्रतिविम्ब, छाया, तसवीर, चित्र, [**अकस**](दे०)। (वि०)[**अक्सी**]—अक्सवाला।

अक्सर—(क्रि० वि०, दे०) अकसर, बहुधा।

अक्सीर—(वि०, अ०) अकसीर, अचूक।

अखंग*—(वि०, दे०) [सं० अखंड] न चुकनेवाला, अविनाशी।

अखंड—(वि०, सं०) जिसके टुकड़े न हों, समग्र, सम्पूर्ण, लगातार, बेरोक, निर्विघ्न। 'प्रजा की थाती रहे अखंड'—मैथिली०। (संज्ञा, पु० सं०) ब्रह्मा।

अखंडित—(वि०, सं०) अविच्छिन्न, निर्विघ्न, अटूट, अभग्न, पूर्ण।

अखंडनीय—(वि०, सं०) जो खंडित न हो सके, जिसके विरुद्ध न कहा जा सके, पुष्ट, अकाट्य, युक्ति-युक्त।

अखंडलꙮ—(वि०) [सं० अखंड] अखंड, सम्पूर्ण, अविच्छिन्न। (संज्ञा, पु० दे० सं०) [**आखंडल**]—इन्द्र। आकाश।

अख़ज़—(१) (वि०, दे०) [सं० अखाद्य] न खाने योग्य, बुरा, खराब, अखाद्य। (२) (संज्ञा, पु० अ०) लेने की क्रिया, ग्रहण, उद्धृत करने का काम।

अखड़ैत—(संज्ञा, पु०) [हिं० अखाड़ा+एत] मल्ल, पहलवान। (संज्ञा, स्त्री०) [**अखड़ैती**]।

अख़तर—(संज्ञा, पु० अ०) तारा, सितारा।

अखती, अखतीज—(संज्ञा, स्त्री० दे०) अक्षय तृतीया [सं०]।

अखनी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [अ० यखनी] मांस का रसा, शोरवा।

अख़बार—(संज्ञा, पु० अ०) समाचार-पत्र, खबर का कागज।—नवीस (वि०) सम्पादन करने वाला। (पु०)—संपादक। (स्त्री०) [**अखबार-नवीसी**]।

अखयꙮ—(वि०, दे०) [अक्षय सं०] जिसका नाश न हो।

अखरꙮ—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अक्षर] आखर।

अखरना—(क्रि०, स० दे०)[सं० अ+खरना] खलना, बुरा लगना, कष्टदायी होना।

अखरा—(वि०, दे०) [सं० अ+खरा—सच्चा] झूठा, बनावटी, कृत्रिम, जो खरा न हो। (संज्ञा, पु०) आखर, अक्षर। भूसीयुक्त जौ का आटा।

अखरावट, अखरावटी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) अक्षरौटी [**अक्षरावलि**]।

अखरोट—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अक्षोट] एक प्रकार का फलदार, ऊँचा पेड़ जो भूटान से अफ़ग़ानिस्तान तक पाया जाता है।

अख़लाक़—(संज्ञा, पु० अ०) [ख़ल्क का ब० व०,] अच्छी आदत। सज्जनोचित व्यवहार।

अखाऽ—(संज्ञा, पु० दे०) आखा।

अखाड़ा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अक्षवाट] कुश्ती लड़ने या कसरत करने का चौखूँटा स्थान। साधुओं की साम्प्रदायिक मंडली। तमाशा करने या गानेवालो की मंडली। दल, सभा, दरबार। रंगभूमि, [**अखारा** दे०]। 'सूरदास-स्वामी ए लरिका, इन कब देखे मल्ल अखारे।'—'सो लंकापति केर अखारा'—तुल०।

अखाद्य—(वि०, सं०) न खाने के योग्य, अभक्ष्य।

अखानी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) एक टेढ़ी लकड़ी।

अखिल—(वि०, सं०) निखिल, समस्त, सम्पूर्ण, समग्र, पूरा, सर्वांगपूर्ण, अखंड। (यौ० **अखिलेश**—ईश्वर)।—**भारतीय राजसेवा** (स्त्री०)—वह सरकारी नौकरी जिसमें भारत के किसी भी प्रांत का निवासी आ सकता हो तथा उसकी बदली भी किसी प्रांत को हो सकती हो [आलइंडिया सर्विसेज]।

अखीनꙮ—(वि०, दे०) [सं० अक्षीण] जो क्षीण या दुर्बल न हो।

अख़ीर—(संज्ञा, पु० अ०) अंत, छोर, समाप्ति, आख़ीर। (क्रि० वि०) आख़िर, निदान, अंत मे, आखिरकार। (वि०) [**अख़ीरी**]।

अखूट—(वि०) [सं० अ+नहीं+खूँटना] जो न घटे, अक्षय, बहुत, अखंड, अटूट, अभग्न। "उनकी कीर्त्ति अखूट।"

अखेट—(संज्ञा, पु० दे०) आखेट, (सं०) शिकार।

अखेटक—(संज्ञा, पु०) [सं० आखेटक] शिकारी।

अखै*—(वि०, दे०) [सं० अक्षय] जिसका नाश न हो, **अक्षय**।

अखैवट, अखैवर—(संज्ञा, पु० दे०)—अक्षयवट (सं० यौ०)।

अखोरꙮ—(वि०, दे०) [हिं० अ+खोट—बुरा] भद्र, सज्जन, सुंदर, साधु प्रकृति का, निर्दोष। (वि०, फ़ा०) आखोर, निकम्मा, बुरा, तुच्छ। (संज्ञा, पु०) कूड़ा-करकट, खराब घास, बुरा चारा, बिचाली।

अखोह—(संज्ञा, पु० हि०) खोह। ऊँची-नीची, ऊबड़-खाबड़ भूमि, विषम धरातल।

अखौट, अखौटा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अक्ष+धुरा] जाँते या चक्की के बीच की कील, गड़ारी के घूमने की लकड़ी या लोहे का डंडा। खूँटी।

अख्खाह—[अव्य०] [अ०] उद्वेग या विस्मयादि-सूचक शब्द।

अख्तियार—(संज्ञा, पु० दे०, फ़ा०) इख्तियार, अधिकार, [**अख़्त्यार**, अकूत्यार दे०]।

अख्यान—(संज्ञा, पु० दे०, सं०) आख्यान, कहानी, कथा, [**उपाख्यान, आख्यायिका**]।

अख्याति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अपकीर्ति, अकीर्ति, अपयश, निन्दा, कुनाम, अयश, बदनामी।

अख्यायिका—(संज्ञा, स्त्री० दे०, सं०) आख्यायिका, कहानी, कथा।

अग—(संज्ञा, पु० सं०) न चलनेवाला, स्थावर। नग, पर्वत। वृक्ष। 'छू लेती अग जग का मन'—पंत। सर्प। सूर्य। (वि०) टेढ़ा चलने वाला, मूर्ख, अज्ञ।

अगड—(संज्ञा, पु० सं०) कबंध, रुंड, हाथ-पैर-रहित धड़।

अगज—(वि०, सं०) पर्वतोत्पन्न। (संज्ञा, पु०) हाथी। शिलाजीत [**अगजात**]।

अगटना§—(क्रि०, अ०, दे० हि०) इकट्ठा, जमा या एकत्र होना।

अगड़*—(संज्ञा, पु० दे०, हि०) अकड़, ऐंठ, दर्प। —**बगड़**—(वि०, दे० अनु०) बेसिर-पैर का, व्यर्थ, क्रमहीन। (संज्ञा, पु०) असम्बद्ध प्रलाप, अनुपयोगी कार्य। अंड-बंड, '**अगड़-बगड़** तुम काह पढ़ाओ हम पढ़िबे हरि नाम।'

अगड़धत्त—(वि०, दे० सं०) अग्रोद्धत, लंबा-तड़ंगा, ऊँचा, श्रेष्ठ, बढ़ा-चढ़ा, पूरा, बड़ा।

अगड़ा§—(संज्ञा, पु० दे०) अनाज की दाना निकाली हुई बाल, अखरा।

अगण—(संज्ञा, पु० सं०) छंद-शास्त्र में चार बुरे गण जगण, रगण, सगण और तगण; छंद के आदि में इनका रखना अशुभ माना गया है—'म, न, भ, य शुभ जानिए, ज र, स, त, अशुभ विचार, छंद आदि वे दीजिए, ये न दीजिए चार।'

अगणनीय—(वि०, सं०) न गिनने के योग्य, सामान्य, अगणित, अनगिनती, असंख्य।

अगणित—(वि०, सं०) जिसकी गणना न हो सके, बहुत, असंख्य, अपार, [**अगनित**, दे०]। '**अगणित** कपि-सेना, साथ ले शक्ति-केन्द्र'—मैथिली०; 'अंग-अंग कर अगणित चाहें'—बच्चन।

अगण्य—(वि०, सं०) न गिनने-योग्य, नगण्य, सामान्य, तुच्छ। असंख्य, बेतादाद।

अगत*§—(संज्ञा, स्त्री० दे०, सं०) अगति, दुर्गति, बुरी गति। (वि० दे०) [आगत सं०]-आया हुआ। (वि०, सं०) न गया हुआ।

अगति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) दुर्दशा, खराबी। मृत्यु के बाद की बुरी दशा, नरक, दाहादि क्रिया। गति का अभाव, स्थिरता। 'अफजल-अगति, औ सासता की अपगति, बहलोल-बिपति डरात उमराव हैं'—भूषण। 'मरूँगा तो मैं अगति समान', 'मुझ अगति को भी मिले चिरवास'—मैथिली०।

अगतिक—(वि०) [सं० अगत+इक] जिसका कहीं ठिकाना न हो, अशरण, निराश्रय, असहाय, निरवलंब।

अगती—(वि०, दे०) [सं० अगति] बुरी गति वाला, पापी, दुराचारी। '**अगतिन** को गति दीन्ही'—सूर०।(वि०) पेशगी। (क्रि० वि०) [**सं० अग्रतः**] आगे से, पहिले से, अगाऊ।

अगत्या—(क्रि० वि०, सं०) आगे चल कर, अंत में, सहसा। 'अगत्या हुआ विकट विस्फोट'—गिरीश। अकस्मात, विवश होकर, भविष्य में।

अगद—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+गद+रोग] (वि०) नीरोग, आरोग्य-युक्त, स्वस्थ। दवा, औषधि, उपचार।

अगनि—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अग्नि] आग। [**अगनी, अगिन**] (दे०)।

अगनिउ—(संज्ञा, पु० दे०, सं०) आग्नेय, उत्तर-पूर्व का कोना, **अगनेय**—(दे०)[-अगिनीहू अगनि+उ—हू, भी] आग भी। 'अगनि होय हिमवत कहूँ, अगनिउ सीतल होय।'

अगनित—(वि०, दे०) [**अगणित** सं०] अमित, असंख्य, अकथनीय।

अगनी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अग्नि, [**अगिनी, आग**]। 'अगनी परि तृन रहित थल, आपुहि ते बुझि जाय।'

अगनू—(संज्ञा, स्त्री० दे०, सं०) आग्नेय दिशा, अग्निकोण। (दे०) प्रथम गर्भाधान का सातवें मास पर संस्कार-विशेष।

अगनेउ*—(संज्ञा, पु० दे०, सं०) आग्नेय दिशा, अग्निकोण, दक्षिण-पूर्व का कोना।

अगनेत*—(संज्ञा, पु० दे०, सं०) आग्नेय दिशा, अग्निकोण।

अगम—(वि०) [सं० अ+गम्य] जहाँ कोई जा न सके, दुर्गम। दुर्बोध, कठिन, अवघट। दुर्लभ, विकट, अलभ्य। बहुत गहन, बुद्धि से परे, अथाह, बहुत गहरा। 'है अविदित अगम अगोचर'—हरिऔध। 'अगम सनेह भरत रघुबर को'—तुल०। 'कितना उसमे आवेग अगम।' [**अगम्म**] (दे०) (संज्ञा, स्त्री० **अगमता**)।

अगमन*—(क्रि० वि०, दे०) [सं० अग्रवान्] आगे, प्रथम, आगे से, पहिले से। 'अस्ति पाँच जे अगमन छोय।'—जायसी। 'उठि अकुलाइ अगमनै लीन, मिलत नैन भरि आये नोर'—सूबे०। (संज्ञा, पु० सं०) गमन का अभाव।

अगमनीया—(वि०, स्त्री० सं०) जिस स्त्री के साथ संभोग करने का निषेध हो [**अगम्या**]।

अगमनीय—(वि०, पु० सं०) जहाँ जाने के योग्य न हो। (संज्ञा, स्त्री०) [**अगमनीयता**]।

अगमानी*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अग्रगामी] **अगुआ**—(दे०) नायक, सरदार। (संज्ञा, पु० दे०) [**अगवानी**]-आगे जाकर किया गया स्वागत।

अगमासी—(संज्ञा, स्त्री० दे०), हल की लकड़ी का वह भाग जिसमे फाल लगाया जाता है, अगवाँसी।

अगम्य—(वि०, सं०) जहाँ कोई न जा सके, अगम, अवघट, गहन। कठिन, अत्यन्त अज्ञेय, दुर्बोध। अथाह। (संज्ञा, स्त्री०, **अगम्यता**)।

अगम्या—(वि०, स्त्री० सं०) जिस स्त्री के साथ सम्भोग करना निषिद्ध हो, जैसे गुरुपत्नी, राजपत्नी आदि। 'अगम्या का कर गमन निषिद्ध। हुए क्यो तुम विषधर से विद्ध।'—गिरीश।—**गामी**-वर्जित स्त्री-गमन करनेवाला।

अगर—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अगुरु] एक सुगंधित लकड़ी वाला वृक्ष, एक औषधि। (अव्य०, फ़ा०) यदि, जो। **मु०—मगर करना**-हुज्जत करना, तर्क करना, आगा-पीछा करना।—**मगर न होना**-शंका या संदेह न होना, किन्तु-परन्तु न होना, स्वीकृत होना।

अगरई—(वि०, दे०) [हि० अगर] श्यामता लिए हुए सुनहला संदली रंग।

अगरचे—(अव्य०, फ़ा०) गोकि, यद्यपि, बावजूदे [**अगर्चि**] (दे०)।

अगरना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अग्र] आगे होना, आगे बढ़ना। (प्रेरणा)—[**अगराना**]।

अगरपार—(संज्ञा, पु० दे०) क्षत्रियों की एक जाति।

अगरब*—(वि०, दे०) [सं० अगर्व] गर्वहीन।

अगर-बगर—(क्रि० वि०, दे०) अगल-बगल। '**अगर-बगर** हाथी घोरन को सोर है'—नरो०।

अगरबत्ती—(संज्ञा, स्त्री० यौ०) [सं० अगर-वर्तिका] अगर की बत्ती, जिसे सुगंधि के लिए जलाते हैं, धूपबत्ती।

अगरवाल—(संज्ञा, पु० दे०) दिल्ली से पश्चिम अगरोहा ग्रामवासी वैश्यों की जाति-विशेष, अग्रवाल, [**अगरवाला**]।

अगरसार—(संज्ञा, पु० दे०) अगरु नामक पेड़।

अगरा*—(वि०, दे०) [सं० अग्र, हि० **अगला**] प्रथम, श्रेष्ठ, उत्तम, अधिक गतिशील।

अगरासन—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अग्र+अशन] भोजन के पूर्व निकाला गया अतिथि या गो-ग्रास, [**अगाऊ**] (दे०)।

अगरी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) एक प्रकार की घास [सं० अर्गल] ब्योंडा। अनुचित बात। लकड़ी या लोहे का छोटा डंडा जो किवाड़ के पल्लों को बन्द करने के लिए उनके कोंढ़ों में डाला जाता है। घास-फूस के छाने का एक विधान या रीति। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० अर्गल] ऊटपटाँग बात।

अगरु—(संज्ञा, पु० सं०) अगर की लकड़ी। ऊद। चंदन।

अग़लत—(वि०, अ०) बहुत गलत, अत्यन्त अशुद्ध।

अग़लब—(क्रि० वि०, अ०) स्पष्टतः, बहुत सम्भवतः।

अग़ल-बग़ल—(क्रि० वि०, फ़ा०) इधर-उधर, आस-पास, दोनों ओर।

अगला—(वि०) [सं० अग्र] आगे का, सामने का, प्रथम का, पहिले का, पूर्ववर्ती, प्राचीन, पुराना, आगामी, आनेवाला,। (स्त्री०) [**अगली**]। (संज्ञा, पु०) अगुआ प्रधान, चतुर, पूर्वज, पुरखा [बहु० अगले] **अगरो** दे०। [ब्रज०] निपुण।

अगवना—(क्रि०, अ०) [हि० आगे+ना] आगे बढ़ना। उद्यत होना। झेलना, सहना। 'अगवे कौन, सिंह की झपटै'—छत्र०।

अगवाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० आगा+अवाई] अगवानी, अभ्यर्थना, स्वागत। 'सफ़दर जंग भये **अगवाई**'—सुजा०। 'मुनि आगमन सुनत दोउ भाई, भूपति चले लेन **अगवाई**'—रघुराज। (संज्ञा, पु०) [सं० अग्रगामी] आगे चलने वाला नेता, अगुआ।

अगवाड़ा—(संज्ञा, पु०) [सं० अग्रवाट] घर के आगे का भाग, [**अगवारा, अगवार**]। (विलो०) [पिछवाड़ा], (दे० यौ०) [**अगवारे-पिछवारे**] (दे०) [आगे-पीछे]।

अगवान—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अग्र+यान] अगवानी या स्वागत-अभ्यर्थना करने वाला व्यक्ति। विवाह में कन्या-पक्ष के लोग जो बारात को आगे से लेते हैं। 'अगवानन्ह जब दीख बराता'—तुल०।

अगवानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अग्र+वान] अतिथि के समीप जाकर आदर से मिलने की परिपाटी, अभ्यर्थना, स्वागत, पेशवाई, विवाह में बारात को आगे से लेने की रीति। आगे जाकर स्वागत करने की रीति। बारात के स्वागत के लिए लड़की वाले का अग्र-गमन। (संज्ञा, पु०) अग्रणी, नेता. [**अग्रगामी** सं०]। 'याहीते अनुमान होत है षटपद से **अगवानी**'—सूर०। (पु०) [अगुआ]।

अगवारा§—(संज्ञा, दे०,) [सं० अग्र+वर] हलवाहे आदि के लिए अलग किया हुआ अनाज का भाग, भूसे के साथ उड़ जाने वाला अन्न, [**अगवार**] (दे०) अगवाड़ा। (यौ०) [**अगवार-पिछवार**] (दे०)।

अगवास—(संज्ञा, पु० दे०) बरामदा।

अगवांसी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अग्रवासी] हल मे फाल लगाने की लकड़ी। पैदावार में हलवाहे का भाग।

अगसार※—(क्रि० वि०, दे०) [सं० अग्रसर] आगे. पहिले, [**अगसर**] (दे०)।

अगसारी—(क्रि० वि०, दे०) आगे, सामने। 'हस्तिक जूह आय **अगसारी**'—जायसी।

अगस्त—(संज्ञा, पु० दे०) [**अगस्त्य** सं०]। (संज्ञा, पु० अं०) वर्ष का आठवां मास।

अगस्त्य—(संज्ञा, पु० सं०) एक ऋषि जिन्होंने समुद्र को सोख लिया था, ये मित्रावरुण के पुत्र माने गये हैं, विन्ध्यपर्वत का गर्व खर्व करने के कारण अगस्त्य कहलाये, इनको कुंभज भी कहते है, इनका उल्लेख वेद में भी पाया जाता है, इन्होंने 'अगस्त्य-संहिता' नाम का एक ग्रन्थ भी रचा था। एक तारा जो भादों में सिंह के सूर्य के १७ अंशों पर उदय होता है; इसके उदित होने पर जल निर्मल हो जाता है और वर्षा कम तथा शीत की वृद्धि हो चलती है, मार्गादि का जल सूख चलता है, राजा लोग तभी विजय यात्रा करते हैं, पितृ-तर्पणादि का आरम्भ होता है। 'उदित अगस्त पंथ जल सोखा'—तुल०। अर्धचन्द्राकार लाल या सफेद फूलों वाला एक वृक्ष।—**कूट** (संज्ञा, पु० सं०) दक्षिण में एक पर्वत, जिससे ताम्रपर्णी नामक नदी निकली है।

अगह※—(वि०, दे०) [सं० अग्राह्य] न ग्रहण करने के लायक। चंचल। जो वर्णन और चिंतन से परे हो, कठिन, दुर्बोध। 'निसिवासर यह भरमत इत उत, **अगह** गही नहिं जाई'—सूर।

अगहन—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अग्रहायण] हेमन्त ऋतु का पहिला महीना, मार्गशीर्ष, [**मगसर**] (दे०)।

अगहनिया, अगहनी—(वि०)[दे०, सं० अग्रहायणी] अगहन में होने वाली फसल, धान।

अगहनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० अगहन+ई प्रत्य०] अगहन में काटी जाने वाली फसल।

अगसर—(वि०, दे०) [अग्रसर सं०] आगे गतिशील।

अगहर※§—(क्रि० वि०) [हि० आगे+हर] आगे, प्रथम, पहिले।

अगहुँड—(क्रि० वि०) [सं० हि० अग्र+हुँड] आगे, आगे की ओर।

अगाउनी※—(क्रि० वि०, दे०) आगे। संज्ञा, (स्त्री०) अगौनी, [**अगवानी**] (दे०)।

अगाऊ, अगाऊँ—(क्रि० वि०, दे०) [आगा+आऊ प्रत्य०] अग्रिम, पेशगी, समय से पूर्व। (वि०) अगला, आगे का। (क्रि० वि०) आगे, पहिले, प्रथम। 'कौन-कौन को उत्तर दीजै ताते भयो **अगाऊँ**।'

अगाड़ा§—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० अगाड़] कछार, तरी। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अग्र] पेशखेमा, यात्रा का सामान जो आगे पड़ाव पर भेज दिया जाता है। [**अगवाड़ा**]।

अगाड़ी—(क्रि० वि०, दे०) [सं० अग्र, प्रा० अग्ग+आडी हि० प्रत्य०] आगे, पहिले। भविष्य मे, सामने, समक्ष, पूर्व, (संज्ञा, पु०) आगे या सामने का भाग, घोड़े के गरांव मे बँधी हुई दो रस्सियां जो इधर-उधर दो खूँटो से बँधी रहती हैं। सेना का पहिला धावा, हल्ला। (विलो०)—[**पिछाड़ी**]। यौ० [**अगाड़ी-पिछाड़ी**]। **मु०—मारना**-मोहरा मारना, शत्रु-सेना को आगे से हटाना। (दे०) [आगे]।

अगाड़ू—(क्रि० वि०, दे०) अगाड़ी, आगे।

अगात्यजा—(स्त्री० सं०) पार्वती, गिरिजा। 'अगात्यजे, धोखा मत खाओ'—गिरीश।

अगाध—(वि० सं०) अथाह, बहुत गहरा, अपार। असीम। समझ में न आने के योग्य, दुर्बोध। (संज्ञा, पु०) छेद, गड्ढा।

अगान※—(वि०) [सं० अज्ञान] मूर्ख, अज्ञानी।

अगामैं※—(क्रि० वि०, दे०) [सं० अग्रिम] आगे।

अगार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आगार] समूह। (क्रि० वि०, दे०) [सं० अग्र] आगे, पहिले। [**अगारी**]।—**(री)-पिछार,—(री)—पिछारी** 'ईसुर कहो कि कुंवरजू हूजै आप **अगार**'—सूर।

अगारी—(वि०, सं०) गृही, मकान वाला। (अ०) आगे,पहले, अगाड़ी। (संज्ञा, पु०) किसी वस्तु का अगला भाग।

अगाव—(संज्ञा, पु० सं०) ईख का ऊपरी हिस्सा जो नीरस होता है।

अगासঃ—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अग्र+हिं० आस] द्वार के आगे का चबूतरा। (दे०)[**अकास,** आकास]।

अगाहঃ—(वि०, दे०) [सं० अगाध] अथाह, बहुत गहरा। (क्रि० वि०) आगे, पहिले से। (वि०, फ़ा० आगाह)। विदित। प्रकट। चिन्ताग्रस्त। 'भव-सागर भारी महा, गहिरो अगम **अगाह**'—कबीर।

अगाही§—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अगाह आगाही फ़ा०]प्राथमिक सूचना या संकेत।

अगिन*—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अग्नि] आग। गौरैया या बया के समान एक छोटी चिड़िया। एक तरह की घास। '**अगिन** परौ तृन रहित थल, आपुहि ते बुझि जाय।' (वि०, दे०) [अ+गिन—गिनना] अगणित, बेतादाद। (क्रि०, अ०) अगि-याना।—**बोट**—[हिं० अग्नि+बोट अंग्रे०—नाव] भाप के इंजन से चलने वाली नाव, स्टीमर, धुंआकश, **वाष्पनौका**। "नौका में इंजन लगा, अगिनबोट तब नाम।"

अगिनितঃ—(वि०, दे०) [सं० अगणित] बेशुमार, असंख्य, [**अगतनि**]।

अगिया—(संज्ञा, स्त्री०दे०) [सं० अग्नि, प्रा० **अग्गि**] एक प्रकार की घास। नीली चाय। यज्ञ-कुश। अगिन घास। एक पहाड़ी पौदा, जिसके पत्तों और डंठलों मे विषैले काँटे या रोयें से होते है। घोड़ो-बैलों का एक रोग। अगियासन कीड़ा। एक प्रेत-भेद।—**कोइलिया**-(पु०) [हिं० आग+कोयला] दो कल्पित बैताल जिन्हें विक्रमादित्य ने सिद्ध किया था।—**बैताल**—(पु०) [सं० अग्नि, प्रा० अग्गि+बैताल] विक्रमादित्य के दो बैतालों मे से एक, मुँह से लूक या लपट निकालने वाला भूत, ब्रह्म-राक्षस। बड़ा क्रोधी मनुष्य।

अगियाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० अग्नि] **अंगों** का दाहयुक्त होना, जल उठना, (क्रि० स०) अग्नि में डाल कर पात्र-शुद्धि करना, जलाना।

अगियार, अगियारी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अग्नि+कार्य] आग में सुगंधित पदार्थों के डालने की पूजन-विधि, धूप देने की क्रिया। धूप की सामग्री।

अगियासन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० आग+सन्] एक प्रकार की घास। एक कीड़ा। एक प्रकार का रोग, जिसके कारण चमड़े पर फफोले पड़ जाते हैं।

अगिर—(संज्ञा, पु० सं०) सूर्य। एक राक्षस। अग्नि।

अगिरौक—(वि०, सं०) स्वर्ग-निवासी (देवता)। धमकाने से न दबने वाला।

अगिला§—(वि०, दे०) अगला, [**आगिल**] (दे०)।

अगीठा*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अग्रस्थ] आगे का भाग।

अगीत-पछीत*—(क्रि० वि०, यौ० दे०) [सं० **अग्रतः** +पश्चात] आगे और पीछे **की ओर**। (**संज्ञा, पु०**) आगे-पीछे का **हिस्सा**।

अगुआ,—(संज्ञा, पु० दे०) [हिं० आगा] आगे चलने वाला, नेता, मुखिया, प्रधान, नायक, पथ-प्रदर्शक। विवाह की बातचीत करने वाला। [**अगुवा**]

अगुआई—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हिं० आगा+**आई**] अग्रणी होने की क्रिया, अगवानी, अग्रसरता, प्रधानता, सरदारी, मार्ग-प्रदर्शन। 'लेन चले मुनि की अगुआई'—रघुराज। 'कियेउ निषाद नाथ अगुआई'—तुल०।

अगुआना—(क्रि०, अ० दे०) [हिं० आगा] अगुआ बनना, आगे चलना या जाना। (सं०) बढ़ना। 'संगक सखि अगुआइलिरे'—विद्यापति। 'कहै रतनाकर पछाये पच्छिराजहूकी, बढ़त पुकारहू के पार अगुआये हौ।' नेता नियत करना। **अगुवानी**—(संज्ञा, स्त्री० दे०)-अगवानी, स्वागत, अभ्यर्थना।

अगुण—(वि०, सं०) सत्व, रज, तम, आदि गुणों से रहित, निर्गुण। मूर्ख। गुण-शून्य, निकम्मा। (संज्ञा, पु०) अवगुण, दोष। [**अगुनी, अगुन** दे०] —'खल अघ-अगुन-साधु गुन गाहा'—तुल०।

अगुताना*—(क्रि०, अ० दे०) उकताना, ऊबना, [**अकुताना**]।

अगुमन—(क्रि० वि०) [दे०, सं० अग्र+गमन] आगे, पहिले।

अगुरु—(वि०, सं०) जो भारी न हो, हल्का। गुरु से उपदेश न पाने वाला, **निगुरा**। (दे० संज्ञा, पु०) अगर का वृक्ष। ऊद। शीशम।

अगुवा—(संज्ञा, पु० दे०) अगुआ। एक पक्षी। कोड़ा। देवता। मार्ग दिखाने वाला।

अगुवानी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) अगवानी, स्वागत, अभ्यर्थना।

अगुसरना—(क्रि०, अ०) [दे०, सं० अग्रसर+ना प्रत्य०] आगे बढ़ना, अग्रसर होना।

अगुसारना—(प्रेरणा॰ क्रि॰, दे॰) आगे बढ़ाना। 'बाम चरन अगुसारल रे'—विद्यापति।

अगूठना§—(क्रि॰, स॰) [दे॰, सं॰ अवगुंठन] तोपना, ढाँकना, घेरना, छेकना। 'केहि कारन गढ़ कीन्ह अगूठी'—जायसी।

अगूठा—(संज्ञा, पु॰ दे॰) [सं॰ अगूढ] घेरा, मुहासिरा।

अगूढ़—(वि॰, सं॰) जो छिपा न हो, स्पष्ट, प्रकट, सरल, आसान। (संज्ञा, पु॰) गुणीभूत व्यंग के आठ भेदों मे से एक जो बोध्य के समान ही स्पष्ट रहता है (काव्य॰)। (संज्ञा, स्त्री॰) **अगूढ़ता**—स्पष्टता।

अगूता—(क्रि॰ वि॰ दे॰) [हिं॰ आगे] आगे। सामने, सम्मुख, समक्ष।

अगृह—(वि॰, सं॰) गृहहीन, घरबार से रहित।

अगेन्द्र—(वि॰, यौ॰) [सं॰ अग—पर्वत+इंद्र—राजा] पर्वतराज, सुमेरु, नगेन्द्र, हिमालय।

अगेह—(वि॰, सं॰) गृह-रहित, बे-ठिकाना।

अगोचर—(वि॰, सं॰) इंद्रियों के द्वारा जिसका अनुभव न हो, इंद्रियातीत, अव्यक्त।

अगोट—(संज्ञा, पु॰ दे॰) [सं॰ अग्र+ओट हिं॰] ओट, आड़, आश्रय, आधार। 'रहिमन यहि संसार मे, सब सुख मिलत अगोट।'

अगोटना—(क्रि॰, स॰ दे॰) [सं॰ अग्र+ओट+ना हिं॰ प्रत्य॰] रोकना, छेंदना, कैद करना, पहरे में रखना, छिपाना, घेरना। (क्रि॰ स॰) अंगीकार या स्वीकार करना, पसंद करना, चुनना। (क्रि॰ अ॰) रुकना, ठहरना, फँसना। 'रसखोट भये ते अगोट आगरे में सातौ, चौकी डाँकि आनि घर कीन्हीं हद रेवा है'—भूषण। 'सत्रु कोट जो आइ अगोटी' —जायसी। 'जो गुनही तौ राखिए, आँखिन माँहि अगोटि'—बिहारी।

अगोता*§—(क्रि॰ वि॰, दे॰) [सं॰ अग्रतः] आगे, सामने। (संज्ञा, स्त्री॰)-अगवानी, [अगूता]।

अगोरना—(क्रि॰ स॰, दे॰) [सं॰ अग्र] राह देखना, प्रतीक्षा करना, बाट जोहना, चौकसी या रखवारी करना, रोकना। 'जो मैं कोटि जतन करि राखति घूघट ओटि अगोरि'—सूर।

अगोरिया—(संज्ञा, पु॰ दे॰) [हिं॰ अगोरना] रखवाली करने वाला, पहरेदार। [**अगोरदार, अगोरा**]—रखवाला।

अगौढ़§—(संज्ञा, पु॰) [हिं॰ आगे] पेशगी। **अगाऊ** (दे॰)।

अगौनी*—(क्रि॰ वि॰, दे॰) [सं॰ अग्र] आगे। संज्ञा, स्त्री॰—अगवान। इंदिरा अगौनी, 'इंदु इन्दीवर औनी सुन्दर सलौनी, गजगौनी गुजरात की'—रवि॰।

अगौरविता—(वि॰, स्त्री॰ सं॰) गौरव से रहित। 'होंगी कभी अगौरविता गौरी नहीं'—हरिऔध।

अगौरा—(संज्ञा, पु॰ दे॰) [सं॰ अग्र+ओर] ईख के ऊपर का पतला नीरस भाग। (वि॰) [अ+गौर] जो गौर या गोरा न हो, साँवला।

अगौहैं—(क्रि॰ वि॰, दे॰) [सं॰ अग्रमुख] आगे की ओर।

अग्नि—(संज्ञा, स्त्री॰ सं॰) आग। ताप। प्रकाश। पंच महाभूतों मे से एक। वेद के तीन प्रधान देवताओं मे से एक। जठराग्नि, पाचनशक्ति। पित्त। तीन की संख्या। सोना। चित्रक वृक्ष। अग्निकोण का देवता, **अगिन, अगिनी** (दे॰)—**कर्म**–(पु॰) अग्नि होत्र, हवन, शव-दाह।—**कीट**–(पु॰) समंदर नाम का कीड़ा, जिसका निवास अग्नि में माना जाता है।—**कुंड**–(पु॰) आग जलाने का गढ़ा।—**कुमार**–(पु॰) कार्तिकेय। क्षुधावर्धक दवा-विशेष।—**कुल**–(पु॰) क्षत्रियों का कुल-विशेष।—**कोण**–(पु॰) दक्षिण पूर्व का कोना, [**अगिनकोन**]।—**क्रिया**–(पु॰) शव का दाह-कर्म, मुर्दा जलाने की क्रिया। —**क्रीड़ा**–(पु॰) आतिशबाजी, अग्नि-कौतुक। [फ़ायर वर्क्स]—**गर्भ**–(पु॰) सूर्यकान्तमणि, आतिशी शीशा।—**ज**–(पु॰) अग्नि से उत्पन्न। अग्नि पैदा करने वाला। अग्नि-संदीपक। पाचक।—**जिह्व**–(पु॰) देवता। आग की लपट, अग्निदेव की सात जीभें कही गई हैं—काली, कराली, मनोजवा, लोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी, और विश्वरूपा। लांगली नामक पेड़।—**ज्वाला**–(स्त्री॰) आग की लपट, [**अनलज्वाला**]।—**दाह**–(स्त्री॰) मुर्दा जलाने की क्रिया, शव-दाह की क्रिया।—**दीपक**–(पु॰) जठराग्निवर्धक औषधि।—**दीपन**–(पु॰) पाचन-शक्ति की वृद्धि। तद्वृद्धिकारी औषधि। अग्निदीपक—**परीक्षा**–(स्त्री॰) जलती हुई आग पर चल कर दी हुई परीक्षा। तेल, पानी या लोहा लेकर झूठ सच या दोषादोष की जाँच का प्राचीन विधान; सीता ने यह परीक्षा दी थी। सोने-चाँदी को आग मे तपा कर परखने की क्रिया। —**पुराण**–(पु॰) अठारह पुराणों में से एक। —**बाण**–(पु॰) आग की ज्वाला प्रगट करने वाला बाण, आग्नेयास्त्र।—**बीज**–(पु॰) सोना। "र" वर्ण।—**मणि**–(स्त्री॰) सूर्यकान्तमणि, आतिशी-शीशा।—**मंथ**–(पु॰) अरणी वृक्ष। यज्ञार्थ अग्नि निकालने का अरणी नामक यंत्र।—**मुख**–(पु॰)

देवता। ब्राह्मण। प्रेत। चीते का पेड़। "अग्निमुखाः वै देवाः"—**मांद्य**-(पु०) मंदाग्नि, भूख न लगने की स्थिति।—**यंत्र**-(पु०) बन्दूक। तोप। तमंचा। शतघ्नी।—**लिंग**-(पु०) आग की लपट की रंगत और उसके झुकाव को देख कर शुभाशुभ फल कहने की विद्या।—**वल्लभ**-(पु०) सारक का पेड़ या गोंद।—**वंश**-(पु०) अग्निकुल।—**वायु**-(पु०) पित्ती, रिसपित्ती, रक्तपित्ती का रोग।—**शाला**-(स्त्री०) होत्र का स्थान, यज्ञशाला।—**शाखा**-(स्त्री०) आग की लपट, कलियारी, अग्निश्रृंग।—**शुद्धि**-(स्त्री०) आग छुलाकर किसी वस्तु के संशोधन की क्रिया, अग्नि-परीक्षा।—**ष्टोम**-(पु०) ज्योतिष्टोम यज्ञ का रूपान्तरित वेदोक्त अग्नि-स्तवन, एक यज्ञ।—**ष्वात्त**-(पु०) मरीच पुत्र, देवताओं के पूर्वज।—**संस्कार**-(पु०) तपाना, जलाना, शुद्धि के लिए अग्नि-स्पर्श करने की क्रिया, मृतक-दाह।—**होत्र**-(पु०) वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति देने की क्रिया।—**होत्री**-(पु०) अग्निहोत्र करनेवाला, ब्राह्मणों का एक जाति-भेद।

अग्न्याधान—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) वेदोक्त अग्नि-संस्कार, अग्निहोत्र, अग्नि-रक्षण।

अग्न्यास्त्र—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) आग निकालनेवाला अस्त्र, आग्नेयास्त्र, आग से चलनेवाला अस्त्र, बन्दूक।

अग्न्युत्पात—(संज्ञा०, पु० यौ० सं०) अग्नि का उपद्रव, अग्निकाण्ड, धूमकेतु, उल्कापात।

अग्य—(संज्ञा, पु० दे०) [अज्ञ सं०] मूर्ख।

अग्या—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० आज्ञा] हुक्म, आज्ञा। "अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी"—तुल०। (वि०) [सं० अज्ञा] मूर्खा।

अग्यारी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अग्नि+कार्य] अग्नि में धूपादि सुगंधित द्रव्य डालने की क्रिया, धूपदान, अग्निकुंड। [**अगियारी**] (दे०) धूप, धूपदान।

अग्र—(संज्ञा, पु० सं०) आगे, आगे का भाग, अगला हिस्सा। अगुवा। "चली अग्रकरि प्रिय सखि सोई"—[रामा०] सिर। शिखर। एक राजा का नाम। मुखिया। (क्रि० वि०) आगे, प्रथम। (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।—**गण्य**-(वि०) [सं० अग्र+गण्य] सबसे प्रथम गिना जानेवाला, प्रधान, मुखिया, श्रेष्ठ, उत्तम।—**गामी**-(पु०) आगे जाने या चलने वाला नेता।—**ज**-(पु०) [सं० अग्र+ज] बड़ा भाई। ब्राह्मण। ब्रह्मा। (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ।—**जन्मा**-(पु०) [सं० अग्र+जन्मा] बड़ा भाई, ब्राह्मण, ब्रह्मा, पुरोहित। (वि०) आगे उत्पन्न होने वाला, नेता, **अग्रजात**।—**जाति**-(स्त्री०) ब्राह्मण।—**देय**-(पु०) पहले दिया जाने वाला धन।—**पश्चात्**-(क्रि० वि०) [सं० अग्र+पश्चात्] आगा-पीछा।—**भाग**-(वि०) अगला हिस्सा।—**शोची**—(पु०) [सं० अग्र+शोची] आगे विचार करने वाला, दूरदर्शी, दूरंदेश।

अग्रजाधिकार—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) ज्येष्ठाधिकार, बड़े का अधिकार-विशेष।

अग्रणी—(वि०, सं०) अगुआ, नेता, श्रेष्ठ।

अग्रदाय—(संज्ञा, पु० स०) पेशगी, अग्रिम [इम्प्रेस्ट] —**राशि**-पेशगी मिलने वाली रकम। [इम्प्रेस्ट मनी]।

अग्रवाल—(संज्ञा, पु० हिं०) अगरवाल जाति का व्यक्ति, अगरवाला।

अग्रसर—(संज्ञा, पु० सं०) आगे जानेवाला, मुखिया, नेता, आरम्भ करनवाला, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, प्रथम मु०—**होना**—आगे बढ़ना। —**करना**—आगे बढ़ाना।

अग्रहण—(संज्ञा, पु० सं०) अगहन का महीना। ग्रहण न करने का कार्य। [**अग्रहणीय**] (वि०)।

अग्रहायण—(संज्ञा, पु० सं०) मार्गशीर्ष, अगहन मास।

अग्रहार—(संज्ञा, पु० सं०) राजा की ओर से ब्राह्मण को भूमि-दान। ब्राह्मण को दी हुई भूमि। धान्यपूर्ण खेत, देवस्व, ब्राह्मणस्व, देवार्पित सम्पत्ति।

अग्राशन—संज्ञा, पु० यौ० [सं० अग्र+अशन] देवार्पित भोजन का प्रथम भाग। गो-ग्रास। [**अगरासन**] (दे०)।

अग्राह्य—(वि० सं०) न ग्रहण करने के योग्य, न लेने लायक, त्याज्य, न मानने के लायक, तुच्छ, निस्सार। शिव-निर्माल्य।

अग्राह्या—(वि०, स्त्री० सं०) जो स्त्री ग्रहण करने योग्य न हो। (संज्ञा, स्त्री०) मिट्टी जो शौचादि के काम में न लायी जा सके।

अग्रिम—(वि०, सं०) अगाऊ, पेशगी, आगे आने वाला, आगामी, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम।—**देय**-(पु०) देखिए अग्रदेय।—**अतिदेश**-(पु०) अग्रिम मंजूरी। [प्रायर सैंक्शन]।—**अभियाचना**-प्रथम अधिकार। [प्रायर क्लेम]।—**भुगतान**-पहले से चुकाया हुआ। [पेमेंट इन एडवान्स]।—**सहमति**-अग्रिम स्वीकृति। [प्रायर कन्सेंट]।

अग्रिमा—(वि०, स्त्री० सं०) लोणा नामक लता, ग्रीष्मजा।

अग्रेतर—(वि०, सं०) अधिक। [फरदर]—परीक्षण

(पु०) अधिक जाँच। [फ़रदर इनक्वायरी]। —विचार-(पु०) अधिक विचार। [फ़रदरकंसिड रेशन]

अग्रेसर—(वि०, पु० सं०) आगे वाला, अगुआ।

अग्रेसरिक—(संज्ञा, पु०) प्रधान स्वामी के सामने प्रस्तुत होने वाला कर्मचारी।

अघ—(संज्ञा, पु० सं०) पाप, पातक। दुःख, व्यसन। दोष, अधर्म, अपराध। "लखि अघ नरकहु नाक सिकोरो"—[रामा०]। अघासुर।—**मर्षण**-(पु०) पापनाशक। संध्योपासन में एक प्रयोग।

अघट—(वि०, दे० सं०) [अ+घट—होना] जो घटित न हो, न होने के योग्य, कठिन, दुर्घट, जो ठीक न घटे, अनुपयुक्त। अक्षय, एक रस, बेमेल, जो न चुके। "दीपक दीन्हा तेल भरि, बाती दई अघट्ट"—कबीर

अघटित—(वि०, सं०) जो घटित न हुआ हो, असम्भव, न होने योग्य, अनहोनी।* अमिट, अवश्य होने वाला, अवश्यम्भावी, अनिवार्य, अनुचित। "काल करम गति अघटित जानी"—तुल०। 'पाकर पुत्रों मे अटल प्रेम अघटित सा'—मैथिली०।* (वि०) [हिं० घटना] बहुत अधिक, जो न चुके।—**नाशक** -(वि०) पाप का नाश करने वाला, मंत्रजप, अघात्यय।

अघन—(वि०, सं०) जो घना या ठोस न हो।

अघवाना—(क्रि०, स० दे०) [हिं० अघाना] भर पेट खिलाना, सन्तुष्ट करना।

अघाउ—(क्रि०, अ० हिं०) अघाना, तृप्त होना। "कह कपि नहिं अघाऊँ थोरे जल"—तुल०। (संज्ञा, पु०) तृप्ति। "ता मिस राजकुमार विलोकत, होता अघाउ न चित्त पुनीता"—रघु०।

अघाट—(संज्ञा, पु० दे०) किसी की वह भूमि जिसको बेचने का अधिकार उसको न हो। बुरा घाट।

अघात*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० आघात] चोट, प्रहार। "बुंद अघात सहैं गिरि कैसे"—तुल०। (क्रि०, अ०) [हिं० अघाना] खूब तृप्त होना। "को अघात सुख-सम्पति पाई।"

अघाती—(वि०, सं०) जिससे क्षति सम्भव न हो, जो घातक न हो।

अघात्यय—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) अघ-नाश।

अघाना—(क्रि०,अ० दे०) [सं० अग्रह] भोजन से तृप्त होना, भर पेट खाना या संतुष्ट होना, प्रसन्न होना, थकना। "जासु कृपा नहिं कृपा अघाती"—, "प्रभु बचनामृत सुनि न अघाऊँ—तुल०।

अघाय—(क्रि०, पू०) अघाकर, मन भर कर, यथेष्ट रूप से। [अघाइ]

अघारि—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अघ+अरि] पाप का शत्रु, पापनाशक। अघासुर नामक राक्षस का संहार करने वाले श्रीकृष्ण।

अघासुर—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अघ+असुर] बकासुर और पूतना का छोटा भाई तथा कंस का सेनापति, जो कृष्ण को मारने के लिए गया था, और जिसे कृष्ण ने मारा था।

अघी—(वि०, सं०) पापी, पातकी।

अघोर—(वि०, सं०) सौम्य, जो घोर न हो, सुहावना, [सं० आघोर] अति घोर, बड़ा भयंकर। (संज्ञा, पु०) शिव का एक रूप। एक सम्प्रदाय, जिसके लोग मद्य-मांस आदि भक्ष्याभक्ष्य का सेवन करते हैं और घृणा को जीतना अपना उद्देश्य मानते हैं।—**नाथ**-(पु०) शिव, महादेव।—**पंथ**-(पु०) अघोरियों का मत या सम्प्रदाय।—**पंथी**-(पु०) अघोर मत का अनुयायी, अघोरी, औघड।

अघोरा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) भादों के कृष्णपक्ष की चौदस।

अघोरी—(संज्ञा, पु० सं०) अघोर-पंथी, औघड़, भक्ष्याभक्ष्य का विचार न करनेवाला, अघोर मत का अनुयायी। (वि०) घृणित, घिनौना। "एते पै नहिं तजत अघोरी कपटी कंस कुचाली"—सूर।

अघोष—(संज्ञा, पु० सं०) वर्णमाला के प्रत्येक वर्ग का प्रथम और द्वितीय वर्ण, श, ष, और स। (वि०, सं०) नीरव, निःशब्द, ग्वालों से रहित, [अघोस] (दे०)।

अघौघ—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अघ+ओघ] पापों का समूह।

अघ्रान*—(संज्ञा, पु०) [दे०, सं० आघ्राण] सूँघने की क्रिया। तृप्ति। (वि०) गंधरहित, [सं० अ+घ्राण]। न सूँघा हुआ।

अघ्रानना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० आघ्राण] सूँघना, गंध लेना।

अघ्रेय—(वि० सं०) न सूँघने योग्य। (संज्ञा, पु०) मद्य।

अच्—(संज्ञा, पु० सं०) स्वरवर्ण, संज्ञाविशेष, (व्याकरण)। छिपा कर कार्य-सम्पादन।

अचंचल—(वि०, सं०) जो चंचल या चपल न हो, स्थिर, धीर, 'गंभीर, अचपल।' 'सबसे चंचल दीप का निर्वाण।'—पंत।

अचंड—(वि०, सं०) जिसके स्वभाव में उग्रता न हो, सौम्य।

अचंभव*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० असंभव] अचम्भा, [**अचंभौ**]।

अचंभा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० असंभव] आश्चर्य, अचरज, विस्मय, अचरज की बात। [**अचंभा, अचंभौ**] (दे०)।

अचंभित*—(वि०) [हिं० अचंभा] चकित, विस्मित, आश्चर्यान्वित।

अचक—(संज्ञा, पु० दे०) अचानक, अचानचक, अकस्मात, हठात, बिना जाने-बूझे।

अचकन—(संज्ञा, पु०) [सं० कंचुक, प्रा० अचुक] लम्बा अंगा।

अचकरी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अति+करण] नटखटी, शरारत, छेड़छाड़, बदमाशी, लम्पटता, अत्याचार, अनौचित्य, धींगाधींगी।

अचकाँ*—(क्रि० वि०, दे०) अचानक, [**अचाका**]। "ये अचकां आये नहिं सुरे"—सुजा०।

अचक्का—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+चक्र—भ्रांति] अनजान, अपरिचित।

अचगरा—(वि०) उत्पाती, छेड़छाड़ करनेवाला, नटखट।

अचगरी—देखिए अचकरी। "जो तेरो सुत खरो अचगरो तऊ कोख को जायो"—सूबे०। "लरिकाई तें करत अचगरी मैं जाने गुन तबही"—सूबे०।

अचतुर—(वि०,सं०) जो कुशल न हो, जो दक्ष न हो।

अचना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० आचमन] आचमन करना, पीना। (दे०) [**अँचवना**]—"लै झारी नृप अँचवन कीन्हों"।

अचपल—(वि०, सं०) अचंचल धीर, गंभीर। [सं० आचपल] अति चंचल, शोख़।

अचपलाहट—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अचांचल्य। चुलबुलापन।

अचपली—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अचपल] अठखेली, किलोल, क्रीड़ा।

अचभौन*—(संज्ञा, पु० दे०) [हिं० अचम्भा] आश्चर्य। [**अचभौना**](दे०) विस्मय की बात।

अचमन—(संज्ञा, पु० दे०,) [**आचमन सं०**] पूजन के पूर्व हथेली पर लिये जल को पीकर मुखशुद्धि करने की क्रिया।

अचर—(वि०, सं०) न चलने वाला, जड़, स्थावर। (दे०) अचल, पर्वत।

अचरज—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० आश्चर्य,] आश्चर्य, अचम्भा, आचरज। "आजु हमैं बड़ अचरज लागा"—तुल०।

अचरम—(वि०, सं०) जो अंतिम न हो।

अचल—(वि०, सं०) जो न चले, स्थिर, ठहरा हुआ, चिरस्थायी, ध्रुव, दृढ़, पक्का, जो नष्ट न हो, मज़बूत, पुख्ता। (संज्ञा, पु०) पहाड़, पर्वत। 'चित्रकूट गिरि अचल अहेरी'—तुल०। जैनियों का प्रथम तीर्थंकर।—**धृति**-(संज्ञा, स्त्री० सं०) एक प्रकार का वर्णिक वृत्त (पिं०)।—**सम्पत्ति**-(स्त्री०) वह धन जो इधर से उधर हटाया न जा सके।—**पूँजी**-स्थिर पूँजी। [फ़िक्स्ड कैपिटल]।—**सम्पत्ति**-स्थिर सम्पत्ति। [इम्मूवेबुल प्रापर्टी]।

अचला—(वि०, स्त्री० सं०) जो न चले, स्थिर, ठहरी हुई। (संज्ञा, स्त्री०) पृथ्वी, भूमि। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का ढीला और बिना आस्तीन या बाहों का लम्बा कुरता जो सन्यासी लोग पहिना करते हैं।—**सप्तमी**-(संज्ञा, स्त्री०) माघ शुक्ला सप्तमी, इस दिन के किये कर्म अचल हो जाते है, इसी से इसे अचला कहते हैं। [**अचलासातौं**] (दे०)।

अचलाधिप—(संज्ञा, पु० सं० यौ०) हिमालय, पहाड़ों का राजा।

अचवन—(संज्ञा, पु०) [सं० आचमन] आचमन, पीने, कुल्ला करने की क्रिया। "भोजन करि अचवन कियो"।

अचवना—(क्रि० स०) [दे०, सं० आचमन] आचमन करना, पीना, कुल्ला करना, छोड़ देना, खो बैठना। "दावानल अचयो ब्रज ़ाज ब्रज जन जरत बचाये"—सूबे०।

अचवाई—(वि०, दे०) प्रक्षालित, स्वच्छ, निर्मल।

अचवाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० आचमन] आचमन करना, पिलाना, कुल्ली कराना।

अचांचक—(क्रि० वि०, दे०) [अचानक, अचांचकी दे०]। अकस्मात।

अचाक, अचाका*—(क्रि० वि०, दे०) अचानक, एकाएक। "दिनहि रात अस परी अचाका, भा रवि अस्त, चंद रथ हांका"—प०।

अचातुर्य—(संज्ञा, पु० सं०) चतुरता में कमी, दक्षता का अभाव, अकुशलता।

अचान—(क्रि० वि०, दे०) अचानक।

अचानक—(क्रि० वि०, दे०) [सं० अज्ञानात] एकबारगी, सहसा, अकस्मात, दैवयोग से, हठात। "गयो अचानक आँगुरी..."—बिहारी।

अचापल, अचापल्य—(वि०, सं०) स्थिर, चंचलताशून्य। (संज्ञा, पु०) स्थिरत्व, गंभीरत्व।

अचार—(संज्ञा, पु० फ़ा०) मसालों के साथ तेल में रख कर खट्टा किया हुआ आम आदि फल, कचूमर, अथान, एक फल। (संज्ञा, पु०) [सं० आचार]

आचार-विचार। संज्ञा, पु० [प्रान्ती०] चिरौंजी का फल, पेड़, व्यवहार, चाल-चलन।

अचारज*—(संज्ञा, पु० दे०) [**आचार्य** सं०] [**आचारज**]। गुरु।

अचारी*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० आचारी] आचार-विचार से रहने वाला, विधि-पूर्वक नित्य कर्म करने वाला व्यक्ति। रामानुज सम्प्रदाय का वैष्णव। (संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० अचार] कच्चे आमों की छिली हुई और धूप में सुखाई हुई फाँकें।

अचारु—(वि०, सं०) असुन्दर।

अचाह—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अ+चाह] अरुचि, अनिच्छा। (वि०) निस्पृह, निरीह, इच्छा-रहित।

अचाहाꕥ—(वि०, दे०) जिस पर इच्छा या चाह या रुचि न हो। जो इष्ट न हो। जो प्रेम न करे, निर्मोही। (संज्ञा, पु०) जिस व्यक्ति पर प्रेम न हो।

अचाहीꕥ—(वि०, दे०) [हिं० अ+चाह+ई] न चाही हुई, अनभिलषित, अनचाही।

अचिंतनीय—(वि०, सं०) जो ध्यान में न आ सके, अज्ञेय, दुर्बोध, चिन्ता न करने योग्य। 'लोकातीत अचिन्तनीय पथ में'—हरिऔध।

अचिंतित—(वि०, सं०) जिसका चिंतन न किया गया हो, बिना सोचा-विचारा, आकस्मिक, जिस पर ध्यान न दिया गया हो। "शास्त्र अचिंतित पुनि-पुनि देखिय"। निश्चिंत, बेफ़िक्र।

अचिंत्य—(वि०, सं०) कल्पनातीत, जो चिंतन करने योग्य न हो, अज्ञेय, जिसका अनुमान न किया जा सके। दैवप्रेरित।

अचिंत्यात्मा—(पु० सं०) जिसके स्वरूप की कल्पना न की जा सके।

अचित्—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+चित्] जड़, जो चैतन्य न हो, प्रकृति।

अचिकित्स्य—(वि०, सं०) उपचार के अयोग्य। चिकित्सा के अयोग्य। असाध्य।

अचितवन—(वि०, सं०) अनिमेष, अपलक, एकटक।

अचित्र—(वि०, सं०) जिसमें अनेक रंग न हों; जिसमें भिन्नता न दिखायी पड़े।

अचिर—(वि०) [सं० अ+चिर] अविलम्ब, शीघ्रता-पूर्ण, सवेग।

अचिरांशु—(संज्ञा, पु०) बिजली।

अचिरात्—(क्रि० वि०) [सं० अ+चिरात्] शीघ्र, तत्काल।

अचिराभा—(संज्ञा, स्त्री०) बिजली। "अचिराभा कौंध रही नभ में"—किरीट।

अचीता—(वि०, दे०) [सं० अ+चिन्ता हिं०] जिसका विचार या अनुमान पहिले से न हो, असंभावित, आकस्मिक, अनुमान से अधिक, बहुत, [स्त्री० अचीती] [वि०, सं० अचिन्त] निश्चित, बेफ़िक्र चिन्ता-रहित।

अचीर—(वि०, सं०) वस्त्र से रहित।

अचूक—(वि०, दे०) [सं० अच्युत] जो न चूक सके, जो अवश्य फल दिखलावे, अमोघ, ठीक, पक्का, भ्रम-रहित। (क्रि० वि०) सफ़ाई से, चतुरता से, कौशल से, निश्चय, अवश्य, जरूर।

अचेत—(वि०, सं०) चेतना-रहित, बेसुध, बेहोश, मूर्छित, व्याकुल, विकल, संज्ञा-शून्य, अनजान, अज्ञान, मूर्ख, नासमझ, मूढ़, जड़। (संज्ञा, पु०) [सं० अचित्] जड़, प्रकृत, मायामय, अज्ञानग्रस्त व्यक्ति अथवा तत्व। प्रकृति।

अचेतन—(वि०, सं०) सुख-दुःखानुभव की शक्ति से रहित, चेतना-रहित, जड़, संज्ञाहीन, मूर्छित।

अचेता—(वि०, सं०) चेतना-शून्य, जीवनहीन।

अचेष्ट—(वि०, सं०) चेष्टाशून्य, प्रयत्न-रहित, गति-हीन।

अचैतन्य—(संज्ञा, पु० सं०) जो तत्व ज्ञान-स्वरूप न हो, अनात्मा, जड़ पदार्थ।

अचैन—(संज्ञा, पु०) [अ+चैन] व्याकुलता, विकलता। (वि०) व्याकुल, विकल, विह्वल, बेचैन।

अचोखा—(वि०, हिं०) [**अचोखी** स्त्री०] जो खरा या पक्का न हो, अनुत्तम।

अचोना—(संज्ञा, पु०) [सं० आचमन, अचौना दे०] आचमन करने या पीने का पात्र, कटोरा। (क्रि०, अ०) आचमन करना।

अचोप—(वि०) [हिं० अ+चोप] क्रोध या आवेश-हीन।

अच्छ—(संज्ञा, पु०) [सं० अक्षि] आँख। (वि०) स्वच्छ, निर्मल, अच्छा। "मानहु विधि तनु अच्छ छबि,"—बिहारी। स्फटिक। रावण-पुत्र।

अच्छत—(संज्ञा, पु० दे०) [देखो—अक्षत] बिना टूटे, अखंडित चावल।

अच्छर§—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अक्षर] अक्षर, वर्ण, ब्रह्मा, ईश्वर। "बालरूप अच्छर जब कीनौ"—छत्र०।*—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अप्सरा], [अप्सरा, **अपछरा** दे० ग्रा०] देव-वधूटी।

अच्छा—(वि०) [सं० अच्छ] उत्तम, बढ़िया, श्रेष्ठ, ठीक, भला, चोखा, नीरोग, चंगा। (क्रि० वि०) अच्छी तरह। **मु०—(च्छे) आना**—ठीक या उपयुक्त समय पर आना।—**दिन**—सुख-संपत्ति का

समय ।—**लगना**—सुखद या मनोहर प्रतीत होना, सजना, सोहना, रुचिकर होना, पसंद आना । स्वीकार-सूचक अव्यय ।—**(च्छे)**—हाँ, हाँ, उमदा उमदा ।—**करना**—स्वीकार करना । (क्रि० वि०) खूब । बहुत । अधिक । जैसे—'हम अच्छा सोये' । (संज्ञा, पु०) बड़ा या श्रेष्ठ व्यक्ति, गुरुजन । विस्मयादि-बोधक अव्यय—जैसे, "बहुत अच्छे" —शाबाश, खूब किया, बहुत ठीक, साधुवाद ।

अच्छाई—(संज्ञा, स्त्री० दे०)—सुघराई ।

अच्छापन—(संज्ञा, पु० दे०) [अच्छा+पन] उत्तमता, अच्छा होने का भाव, सौंदर्य ।

अच्छा-बिच्छा—(वि०, हि०) [अच्छा+बीछना, चुनना] चुना हुआ, भला चंगा, नीरोग ।

अच्छिद्र—(वि०, सं०) छिद्र-शून्य, क्षति-रहित, दोषहीन । (संज्ञा, पु०) विकार-रहित अवस्था, दोष-रहित कार्य ।

अच्छिन्न—(वि०, सं०) अखंडित, अविभाजित । अभंग, क्रमपूर्ण । अक्षत । अखंडित, अटूट ।

अच्छेद्य—(वि०, सं०) जो काटा न जा सके, अविभाज्य । "अच्छेद्योऽयमदाह्योयम्"—[गीता]

अच्छोतॐ—(वि०, दे०) [सं० अक्षत] अधिक, बहुत ।

अच्छोहिनी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अक्षौहिणी] अक्षौहिणी सेना ।

अच्युत—(वि०, सं०) जो गिरा न हो, अटल, स्थिर, नित्य, अविनाशी, अमर, अचल । (संज्ञा, पु०) विष्णु का एक नाम ।

अच्युताग्रज—(संज्ञा, पु० सं०) इन्द्र । बलराम ।

अच्युतानंद—(संज्ञा, पु०) [सं० यौ० अच्युत+आनंद] ईश्वर, ब्रह्म । (वि०) जिसका आनंद नित्य अनश्वर हो ।

अछकॐ—(वि०, दे०) [सं० अ+चक्] अतृप्त, भूखा, जो छका न हो, जिसको तृप्ति न हुई हो । "तेग या तिहारी मतवारी है अछक तौलों, जौलों गजराजन की गजक करै नहीं"—भूषण

अछकना—(क्रि० अ०) तृप्ति न होना, न अघाना ।

अछतॐ—(क्रि० वि०, दे०) [कृदंत-आछना से] रहते हुए, विद्यमानता में, सामने, सम्मुख, सिवाय, अतिरिक्त, "तुमहिं अछत को बरनै पारा" 'तौर अछत दसकंधर मोर कि अस गति होय"—तुल० । "गनती गनिबे तै रहे छत हू अछत समान"—बिहारी । [सं० अ—नहीं+अस्ति—है] न रहता हुआ, अविद्यमान, अनुपस्थित । (वि०) [अ+क्षत] घाव-रहित ।

अछताना-पछताना—(क्रि०, अ०) [हि० पछताना] पश्चात्ताप करना, बार-बार खेद प्रगट करना ।

अछनॐ—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अ+क्षण] बहुत दिन, दीर्घ-काल, चिरकाल । (क्रि० वि०) धीरे-धीरे, ठहर-ठहर कर ।

अछनाॐ—(क्रि० अ०, दे०) [सं० अस्] विद्यमान रहना, उपस्थित रहना ।

अछपॐ—(वि०) [अ+छप—छिपना] न छिपने योग्य, प्रगट ।

अछयॐ—(वि०) [सं० अक्षय] नाश-रहित, अखंड ।

अछराॐ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अप्सरा], [स्त्री० **अछरी**, **अछरन** बहुवचन] स्वर्ग को वेश्या, देवांगना, "मोहहिं सब अछरन के रूपा", "जनु अछरीन्ह भरा कैलासू"—[पद०] । (संज्ञा, पु०) [सं० अक्षर, दे० अच्छर, आछर, अछरा, आखर] अक्षर, वर्ण ।

अछरीॐ—(संज्ञा, स्त्री० दे०) देखिए अछरा ।

अछरौटी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अक्षर+औटी] वर्ण-माला ।

अछवाई—(संज्ञा, स्त्री० दे०) सफाई, शुद्धता, "भोजन बहुत बहुत रुचिवाऊ, अछवाई नहिं थोर बनाऊ"—[पद०] ।

अछवानाॐ—(क्रि० स०, दे०) [सं० अच्छा—साफ] साफ करना, सँवारना, सजाना, अच्छा बनाना ।

अछवानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० अजवाइन] अजवाइन, सोंठ तथा मेवों के चूर्ण का घी में पकाया हुआ, प्रसूता स्त्री के खाने-योग्य मसाला । अवलेह-विशेष ।

अछामॐ—(वि०) [सं० अक्षाम] मोटा, भारी, बड़ा, हृष्टपुष्ट, बलवान ।

अछूत—(वि०, दे०) [सं० अ+क्षुप्त] जो छुआ न गया हो, अस्पृष्ट, जो काम में न आया हो, नवीन, ताजा । अपवित्र माना जाकर जो न छुआ गया हो, अस्पृश्य । कोरा, पवित्र । (संज्ञा, पु०) अन्त्यज ।

अछूता—(वि०, दे०, स्त्री०) जो छुआ न गया हो, अस्पृष्ट । नया । कोरा । ताजा । जो जूठा न हो ।

अछेदॐ—(वि०, दे०) [सं० अछेद्य] जिसे छेद न सकें, अभेद्य, अखंड्य । (संज्ञा, पु०) अभेद । निष्कपटता । अभिन्नता । "चेला सिद्धि सो पाये गुरु सों करै अछेद"—[पद०] ।

अछेद्य—(वि० सं०) जिसका छेद न हो सके । अभेद्य । अविनाशी ।

अछेवꕥ—(वि०, दे०) [सं० अच्छिद्र] बिना छिद्र या दूषण के, निर्दोष, बेदाग । "सुरु सुरनरहू के आनँद अछेव जू"—सुन्द० ।

अछेहꕥ—(वि०, दे०)[सं० अच्छेद्य] निरंतर, लगातार, ज्यादा, बहुत अधिक । "धरे रूप गुन को गरब, फिरै अछेह उछाह" "आठौ जाम अछेह, दृग जु बरत, बरसत रहत"—बिहारी ।

अछोपꕥ—(वि०, दे०) [सं० अ+छुप्] आच्छादन-रहित, नंगा, तुच्छ, दीन ।

अछोभ—(वि०, दे०) [सं० अक्षोभ] क्षोभ-रहित निर्भीक, मोह-रहित, स्थिर, शान्त, गंभीर ।

अछोर—(वि०, दे०) जिसका अंत या किनारा न मिले "छा दिया यौवन शिखर अछोर"—पंत

अछोह—(संशा, पु० दे०) [सं० अक्षोभ] क्षोभाभाव, शान्ति, स्थिरता, निर्दयता, निष्ठुरता ।

अछोही—(वि०, दे०) निर्दय, निष्ठुर, निर्मोही ।

अज—(वि०, सं०) जिसका जन्म न हो, अजन्मा स्वयंभू । (संज्ञा, पु०)—ब्रह्मा । विष्णु । शिव । कामदेव । सूर्यवंशीय एक राजा, जो दशरथ के पिता थे, इन्हें गंधर्वराज पुत्र से सम्मोहनास्त्र मिला था । बकरा । मेषराशि । माया, शक्ति, अविद्या, प्रकृति । (क्रि० वि०) [सं० अद्य] अब, आज । [अजहुँ अजहूँ] अभी, आज भी ।

अजगंधा—(संज्ञा, स्त्री० यौ० सं०) अजमोदा ।

अजगम—(संज्ञा, पु० सं०) छप्पय का भेद ।

अजगर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का बहुत मोटा सर्प ।"अजगर करै न चाकरी"—मलूकदास ।

अजगरी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अजगरीय] अजगर के समान बिना परिश्रम की जीविका; बिना श्रम की वृत्ति (वि०) बिनाश्रम, अजगर की सी ।

अजगव—(संज्ञा, पु० सं०) शिव जी का धनुष, पिनाक, "अजगव खंडेउ ऊख जिमि"—तुल० ।

अजगुत—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अयुक्त, पु० हि० अजुगुति] असाधारण बात । अनुचित या अनुगत बात । "कुंदनपुर एक होत अजगुत बाघ हेरो जाय" —सूबे० । (वि०) विस्मयकारी, असंगत ।

अजगैबꕥ—(संज्ञा, पु० दे०) [फ़ा० अज+अगैब] अलक्षित स्थान, अदृष्ट या परोक्ष स्थान ।

अजड़—(वि०, सं०) जो जड़ न हो, चेतन । (संज्ञा, पु०) ब्रह्म, जीव । अजड़ क्यों जड़ से विलग दिखाया —हरिऔध ।

अज़दहा—(संज्ञा, पु० फ़ा) अजगर ।

अजन—(वि०, सं०) जन्म-बंधन-मुक्त, अनादि, स्वयंभू , अजन्मा । निर्जन, सुनसान ।

अजनबी—(वि०, अ०) अनजान, अज्ञात, अपरिचित, परदेशी, बिना जान-पहिचान का, अपरिचित ।

अजन्म—(वि०, सं०) जन्म-रहित, अजन्मा ।

अजन्मा—(वि०, सं०) जन्म-बंधन में न आनेवाला। अनादि, ब्रह्म, नित्य ।

अजपा—(वि०, सं०) जो न जपा जा सके, जिसका जप न हो, जिसका उच्चारण न हो, ऐसा मंत्र । तांत्रिक । (संज्ञा, पु०) गड़रिया ।

अजपाल—(संज्ञा, पु० सं०) गड़रिया, [अज—बकरी +पाल—पालक] ।

अजब—(वि०, अ०) अनोखा, अद्भुत, विचित्र, विलक्षण ।

अजम—(संज्ञा, पु० अ०) अरब के अतिरिक्त अन्य प्रदेश, विशेष कर ईरान व तूरान ।

अजमत—(संज्ञा, स्त्री० अ०) प्रताप । महत्व । चमत्कार ।

अजमाना—(क्रि० स०, अ०) आजमाना, तजर्बा करना, अनुभव करना ।

अजमोदा—(संज्ञा, पु० सं०) अजमोद, अजवायन का सा एक पेड़ ।

अजय—(संज्ञा, पु०)[सं० अ+जय] पराजय, हार । छप्पय छंद का एक भेद । (वि०) जो न जीता जाये, अजय । "जीति को सकै अजय रघुराई"—तुल० ।

अजया—(संज्ञा, स्त्री० सं०) विजया, भाँग । [सं० अजा] बकरी ।

"अजया भख अनुसारत नाहीं"—सूर० ।

"अजया गजमस्तक चढ़ो, निर्भय कोपल खाय" —कबीर ।

अजय्य—(वि०, सं०) जो जीता न जा सके, अजीत, अजेय ।

अजर—(वि० सं०) [अ+जर] जरा-रहित, जो वृद्ध न हो, जो सदा एक सा या युवा रहे । [सं० अ+ जॄ—पचना] जो न पचे, जो हजम न हो । [हि० अ+जर ज्वर] ज्वर-मुक्त । (संज्ञा, पु०) देवता ।

अजरायलꕥ—(वि०) [सं० अजर] बलवान, स्थायी, टिकाऊ । जो जीर्ण न हो । चिरस्थायी ।

अजराल—(वि०) [सं० अ+जरा] बलवान । अमर, स्थायी । (संज्ञा, पु०) [सं० अजर+आलय] सुरलोक ।

अजवायन-अजवाइन—(संज्ञा स्त्री०)[सं० यवनिका] मसाले का एक पेड़, एक औषधि, यवानी । "क्षुद्रा यवानी सहित: कषाय:"—वैद्यजी० ।

अजसꕥ—(संज्ञा, पु०) [सं० अयश] अपयश, अपकीर्ति, बदनामी ।

अजसी—(वि०, दे०) [सं० अयशिन्] अपयशी, बदनाम, निंद्य ।

अजस्र—(क्रि० वि०, सं०) सदा, हमेशा, निरंतर, बार-बार । (वि०) अबाध, अनिवारित । "इसमें अजस्र आँसूजल"—महादेवी ।

अजहत्स्वार्था—(संज्ञा, स्त्री० सं०) एक प्रकार की लक्षणा जिसमें लक्षक शब्द अपने वाच्यार्थ को न छोड़ कर भी कुछ भिन्न या अतिरिक्त अर्थ प्रकट करे, उपादान लक्षणा । (काव्य०) ।

अज़हद—(क्रि० वि०, फ़ा०) हद से ज्यादा, बहुत अधिक ।

अजहुँ-अजहूँ—(क्रि० वि०, ब्र०) [सं० अद्यापि] अभीतक । "प्रभु अजहूँ मैं पातकी अंतकाल गति तोरि"—तुल० ।

अजा—(वि० स्त्री० सं०) जिसका जन्म न हुआ हो । जन्म-रहित (संज्ञा, स्त्री०) बकरी, प्रकृति या माया (सांख्य) । शक्ति, दुर्गा ।

अजाचक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अयाचक,] जो भिखारी न हो, न माँगने वाला । "जाचक सकल अजाचक कीन्हें"—तुल० ।

अजाचा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अयाचित] सम्पन्न, न माँगनेवाला ।

अजाजील—(संज्ञा, पु०, अ०) शैतान का नाम ।

अजाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) सनिआ टाट ।

अजात—(वि०, सं०) जो पैदा न हुआ हो, जन्म-रहित, अजन्मा । [फ़ा० अ+जात, हिं० अ+जाति] बुरी या नीची जाति का । जिसकी जाति-पाँति का पता न हो, कुजाति ।—**शत्रु**–(वि०) [सं० अ+जात +शत्रु] जिसका कोई शत्रु न हो, शत्रु-विहीन । (पु०) राजा युधिष्ठर, शिव, उपनिषद् में आये हुए एक काशीनरेश, जो ब्रह्मज्ञानी थे, और जिनसे महर्षि गार्ग्य ने उपदेश लिया था । राजगृह [मगध] के प्राचीन राजा विंबसार के पुत्र, यह बुद्ध देव के समकालीन थे ।

अजाती—(वि०, दे०) [सं० अ+जाति] जाति-च्युत, जाति-वहिष्कृत, जाति-पाँति-विहीन । अजाति, विजाति । त्याज्य ।

अजान—(वि०, दे०) [सं० अज्ञान] जो न जाने, अज्ञान, अनजान, अबोध, "क्रूर कंटक-कानन में हाय, कहाँ तुम आयीं सजनि ! अजान"—गिरीश । नासमझ, मूर्ख । अविवेकी । अपरिचित । अज्ञात । (संज्ञा, पु०) जानकारी का अभाव । एक पेड़ जिसके नीचे जाने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है । (विलो०)—[सुजान] (संज्ञा, स्त्री०) [अ० अज़ान] मसजिद में नमाज की पुकार, बाँग । (संज्ञा, स्त्री०) अजानता ।

अजानता—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अज्ञानता] मूर्खता, मूढ़ता ।

अजानपन—(संज्ञा, पु०, हिं०) नासमझी, अज्ञानता ।

अजानेय—(संज्ञा, पु०, सं०) अच्छी जाति का घोड़ा ।

अजाप—(वि०, दे०) देखिए अजपा ।

अज़ाब—(संज्ञा, पु०, अ०) पाप, दोष ।

अजामिल—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पापी ब्राह्मण जो मरते समय अपने पुत्र नारायण का नाम लेकर तर गया था (पुराण) ।

अजायॐ—(वि०) [हिं० अ+जा फ़ा०] बेजा, अनुचित ।

अजायब—(संज्ञा, पु०, अ०) अजब का बहुवचन, विचित्र पदार्थ या व्यापार ।—**ख़ाना**,—**घर**—(पु०) अजीब पदार्थों का घर, अद्भुत वस्तुओं का संग्रहालय, [म्यूज़ियम] ।

अजाया—(वि०) [सं० अजात] मृत । "गोलिन वृथा अजाये हैं"—[स्फुट] ।

अजारॐ—(संज्ञा, पु०) देखिए आजार । बीमारी ।

अजिऔरा*§—(संज्ञा, पु० दे०) [हिं० आजी+पुर सं०] आजी या दादी के पिता का घर ।

अजित—(वि०, सं०) जो जीता न गया हो, अजीत । (संज्ञा, पु०) विष्णु । शिव । बुद्ध ।

अजिता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) भादों के कृष्णपक्ष की एकादशी ।

अजितेंद्रिय—(वि०) [सं० अजित+इंद्रिय] जो इंद्रियों के वश में हो, विषयासक्त, इंद्रियलोलुप ।

अजिन—(संज्ञा, पु०, सं०) मृगछाला, चर्म ।

अजिर—(संज्ञा, पु०, सं०) आँगन, सहन "द्रवहु सो दसरथ अजिर विहारी"—[रामा०] वायु, हवा । देह । इंद्रियों का विषय । चबूतरा, चौका । मेढक ।

अजिह्व—(वि०, सं०) जिह्वा-रहित । (संज्ञा, पु०) मेंढक ।

अजी—(अव्य०) [सं० अव्य०, अदि, अय, अयि] सम्बोधन-शब्द, एजी, जी । "उर्मिला बोली, अजी तुम जग गये"—मैथिली० ।

अजीज—(वि०, अ०) प्रिय, प्यारा । (संज्ञा, पु०) सम्बन्धी, सुहृद ।

अजीत—(वि०, हिं०) अजेय । "जीति उठ जाइगो अजीत पांडुपूतन को"—रत्ना० । विलक्षण, विचित्र, अनोखा, अनूठा, अद्भुत ।

अजीति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) दुर्दमनीय सामर्थ्य । "अमल प्रीति में बसी अजीति ।"

अजीरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अजीर्ण] देखिए अजीर्ण ।

अजीर्ण—(संज्ञा,पु०,सं०) अपच, अध्यशन, बदहज़मी, अत्यंत, अधिकता, बहुलता। अरुचि, जैसे, उपन्यास से अजीर्ण हो गया है। (वि०) [सं० अ+जीर्ण] जो पुराना न हो, नया।

अजीव—(संज्ञा, पु०, सं०) अचेतन, जड़, जो जीव न हो। (वि०) बिना जीव का, प्राणरहित, मृत, निर्जीव। "कैसे अजीव अणुओं में"—हरिऔध।

अजीवन—(वि०, सं०) जीविका, शून्य। (संज्ञा, पु०) मौत।

अजीवित—(वि०, सं०) मरा हुआ। (संज्ञा, पु०) मौत।

अजुगत-अजुगुत—(संज्ञा, पु०) [हि०, ब्र०] अन्धेर, उत्पात, अत्याचार। (वि०, सं०) अयुक्त, अनुपयुक्त, अनुचित। अनहोनी, असंभव। "हरि जी अजुगत जुगत करैंगे"—नाग०।

अजुगुप्सित—(वि०, सं०) जो अरुचि की दृष्टि से न देखा गया हो।

अजुर*—(वि०, दे०) जो न जुरे। जो न मिले या प्राप्त हो, अलभ्य, अप्राप्त।

अजू*—(अव्य०) देखिए अजी [ब्र० हि०] जू, एजू।

अजूह*—(संज्ञा, पु०) [सं० युद्ध] युद्ध, लड़ाई, [हि० अ+जूह—जूथ, सं० समूह] समूह, उपसमुदाय।

अजूटा*—(वि०) [सं० अयुक्त; हि० अ+जुटा—विलग] न मिला हुआ। (संज्ञा, पु०) मजदूरी, (दे०) मजूरी।

अजूता‡—(संज्ञा, पु०, दे०) मुर्दा खानेवाला, बिज्जू का सा एक पशु। शव-भक्षक। (वि०) घृणित, नीच।

अजूबा—(वि०, अ०) अनोखा, अद्भुत, अजीब, "प्रेमरूप दर्पन अहो, रचै अजूबा खेल"।

अजेइ-अजेय—(वि०, सं०) जिसे जीता न जा सके, अजीत।

अजोग—(वि०) [सं० अयोग्य] बेजोड़, अनुपयुक्त, अयुक्त। (संज्ञा, पु०) कुयोग, बुरा योग।

अजोता*—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+हि० जोतना] चैत्र की पूर्णिमा, जब बैल जोते या नाधे नहीं जाते।

अजोरना*—(क्रि० स०) हि० बटोरना, हरण करना। "टोना सी पढ़ि नाचत सिर पर जो चाहत सो लेत अजोरी"—सूबे०।

अजोरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ज्योत्स्ना।

अजौं*—(क्रि० वि०, ब्र०) [सं० अद्य] अब भी, अब तक, आज तक। "अजौं न आये सहज रँग बिरह दूबरे गात"—बिहारी।

अज्ञ—(वि०,+संज्ञा, पु० सं०) अज्ञानी, जड़, मूर्ख, नासमझ। (दे० अग्य)।

अज्ञता—(संज्ञा, भा० स्त्री०, सं०) मूर्खता, जड़ता, नादानी। (दे० अग्यता)।

अज्ञा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० आज्ञा] हुक्म।

अज्ञात—(वि०, सं०) अविदित, बिना जाना हुआ। अप्रगट। अपरिचित। जिसे ज्ञात न हो। "अरे वह प्रथम मिलन अज्ञात"—पंत (क्रि० वि०) बिना जाने, अनजान में।—**नामा**-(वि०) जिसका नाम ज्ञात न हो, तुच्छ, अविख्यात।—**यौवना**-(स्त्री०) अपने यौवन के आगमन को न जानने वाली—मुग्धा नायिका [नायिका-भेद]—**वास**-(पु०) ऐसे स्थान मे निवास जहाँ कोई पता न पा सके, गुप्त वास।

अज्ञान—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्ञान का अभाव, अबोधता, जड़ता, मूर्खता। आत्मा को गुण और गुण-कार्य से अलग न जानने का अविवेक। न्याय में एक निग्रह-स्थान। (वि०) मूर्ख, जड़, नासमझ, अज्ञ, निर्बुद्धि, "कहाँ से आया यह अज्ञान ?—किरीट। [**अजान, अयान** दे०]

अज्ञानता—(संज्ञा, भा० स्त्री०, सं०) मूर्खता, जड़ता। अविद्या। अविवेक। नासमझी।

अज्ञानतः—(क्रि० वि०) [सं० अज्ञान+तः] अज्ञान से, अनजाने, मूर्खतावश।

अज्ञानी—(वि०, सं०) मूर्ख, जड़, बेसमझ, अनाड़ी।

अज्ञेय—(वि०, सं०) जो समझ में न आ सके, जो जाना न जा सके, ज्ञानातीत, बोधगम्य, दुरूह।

अज्यौं*—(क्रि० वि०, हि०) "अज्यौं तर्‌यौ ना ही रह्यौ, श्रुति सेवत इक अङ्ग"—बिहारी। देखिए, अजौं।

अझर*—(वि०) [सं० अ+झर] जो न झरे, जो न गिरे, न बरसे। "अझर बारिद सौं जनि जाँचिये"—सरस।

अटंबर—(संज्ञा, पु०) [सं० अट्ट+फ़ा० अम्बार] अटाला, ढेर, राशि, समूह, समुदाय।

अट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० अटक] शर्त, क़ैद, प्रतिबंध।

अटक—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) बन्धन। रोक। विघ्न। रुकावट, अड़चन, बाधा। सङ्कोच, हिचक। सिन्धु-नदी। भारत के पश्चिमोत्तर में एक नगर। उलझन, अकाज, हर्ज, गरज। "सकल भूमि गोपाल की यामैं अटक कहाँ"। "अबलों सकुच

अटक रही अब प्रगट करौ अनुराग री''—पूबे०। मु०—अपनी अटक पर गधे को मामा कहना—अपनी गरज पर मूर्ख और पशु की भी चाटुकारी करना।

अटकन*—(संज्ञा, पु०, हि० दे०) अटक।

अटकनबटकन—(संज्ञा, पु०, दे०) छोटे लड़कों का खेल।

अटकना—(क्रि० अ०) [सं० अ+टिक—चलना] रुकना, ठहरना, उलझना, फंसना, अड़ना, लगा रहना, प्रेम में फँसना, प्रीति करना, विवाद करना, झगड़ना। ''फवि फहरैं अति उच्च निसाना जिन महं **अटकत** विबुध बिमाना।''—[रामा०] ''आज उन्हीं में तो तनिक **अटके** है ये प्राण''—मैथिली०।

अटकनी*§—(संज्ञा, स्त्री० दे०) किवाड़ की आड़, सिटकिनी, अटकानेवाली चीज़।

अटकर*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अन्दाजा। देखिए **अटकल**।

अटकरना*§—(क्रि०) [हि० अटकर] अन्दाज़ा या अनुमान करना, अटकल लगाना।

अटकल—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अट—घूमना+कल—गिरना] अनुमान, कल्पना, अन्दाज, कूत। ''नहीं निरी अटकल थो।''—दिन०।—**पच्चू**—(वि०) मोटा अन्दाजा, स्थूलानुमान। कल्पना। (वि०) ख्याली, अनुमान से, ऊटपटांग। (क्रि० वि०) अनुमान से, अन्दाज़ से।—**बाज़**—(वि०) अटकल लगाने में विशेष दक्ष, अनुमान-प्रवीण।—**बाज़ी**—(स्त्री०) अटकल लगाने की प्रवृत्ति।

अटकलना—(क्रि०, स०) [हि० अटकल] अनुमान करना।

अटका—(संज्ञा, पु०) [सं० अद्—खाना] जगन्नाथजी मे चढ़ाया हुआ भात और धान। मिट्टी का पात्र। (स्त्री०) अटक, रुकावट।

अटकाना—(क्रि० स०, हि०) रोकना, ठहराना, अड़ाना, फँसाना, उलझाना, पूर्ण करने मे बिलम्ब करना। ''युवती गई घरनि सब अपने गृह-कारज जननी **अटकाई**''—पूबे० ''बातनही सगरो कटक **अटकायो** है''—रवि०। ''यहिं आसा **अटक्यौ** रह्यो अलि गुलाब के मूल''—बिहारी।

अटकाव—(संज्ञा, पु०) [हि० अटकना] विघ्न, बाधा, रोक, रुकावट, प्रतिबन्ध।

अटखट*—(वि० अनु०) अट्टसट्ट, अंडबंड, गड़बड़।

अटखेल—(संज्ञा, पु०, फा०) उलझानेवाला खेल, मनबहलाव का कौतुक। (स्त्री० अटखेली) खिलाड़ी, कौतुकी।

अटखेलियाँ—(संज्ञा, स्त्री०) [फा०+हिं०, अटखेली का बहु ब०] नटखटी के खेल, मजाक से भरे तमाशे।

अटखेली—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) खिलवाड़, चंचलता, ढिठाई, कौतुक।

अटन—(संज्ञा, पु०, सं०) घूमने-फिरने का कार्य। **पर्यटन**। [परि+अटन]।

अटना—(क्रि० अ०) [सं० अट्] घूमना, फिरना, यात्रा करना, सफ़र करना, विचरना। [हि० अटना] पर्याप्त होना, काफी होना, [ओट] आड़ करना। रोकना। छेंकना। समाना।

अटपट—(वि०) [सं० अट—चलना+पत—गिरना] विकट, कठिन। टेढ़ा। दुर्गम, दुस्तर। गूढ़, जटिल। ऊटपटाँग, बेठिकाने। अनियमित। निराला, अनूठा। (स्त्री०) **अटपटी***—टेढ़ी। ''सूर प्रेमकी बात **अटपटी** मन तरंग उपजावती।'' जदपि सुनहिं मुनि **अटपट** बानी''—तुल०। ''राखौ यह सब जोग **अटपटो** ऊधो पांइ परौं''—सूर०। ''सुनि केवट के बैन; प्रेम-लपेटे **अटपटे**''—तुल०। लड़खड़ाता हुआ। ''धरत **अटपटे** पांय''—बिहारी।

अटपटा—(वि०, सं०) अनियमित, असाधारण।

अटपटाना—(क्रि० अ०) [हि० अटपट] अटकना। लड़खड़ाना। गड़बड़ाना चूकना। हिचकना। सङ्कोच करना, अकुलाना। '**अटपटात** अलसात पलक पट, मूँदत कबहूँ करत उघार'—सूर।

अटपटी*—(संज्ञा, स्त्री०) नटखटी, शरारत, अनरीति। ''वाही की चित अटपटी''—बिहारी। (वि०) बेढङ्गी। टेढ़ी। बेतुकी। लड़खड़ाती हुई।

अटब्बर—(संज्ञा, पु०) [सं० आडंबर] आडम्बर, दर्प, कुटुम्ब, समूह [पंजा० टब्बर—परिवार] कुनबा, खान्दान।

अटम—(संज्ञा, पु०, दे०) राशि, ढेर, समूह।

अटम्बर—(संज्ञा, पु०) [सं० अटम्+अम्बर] वस्त्र का ढेर।

अटरनी—(संज्ञा, पु०) [अं० एटरनी] कलकत्ता, बम्बई के हाईकोर्टों में एक प्रकार का बैरिस्टर या मुख्तार।

अटर-सटर—(क्रि० वि०, अनु०) अंडबंड, अटाँय-सटाँय।

अटल—(वि०) [सं० अ+हिं० टलना] जो न टले, स्थिर। नित्य। चिरस्थायी। अवश्यम्भावी। धुन का पक्का। दृढ़। (**संज्ञा, पु०, दे०**) गोसाइयों के एक अखाड़े का नाम।

अटवाटी-खटवाटी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खाट—पाटी] खाट, खटोला। साज सामान। **मु०—लेकर पड़ना**—काम-काज छोड़ रूठ कर बैठना।

अटवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वन, जंगल, गहन, भयानक कानन।

अटहर—(संज्ञा, पु०) [सं० अट—अटाला] अटाला, ढेर। फेंटा, पगड़ी। [हिं० अटक] दिक्कत, कठिनाई, अड़चन। (दे०) बिगाड़। हानि। बुराई। इधर-उधर का काम।

अटा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अट्ट—अटारी] घर के ऊपर की अटारी, कोठरी, छत। "चढ़ी अटा देखति घटा, बिज्जु छटासी नारि"—विहारी। (**संज्ञा, पु०**) [सं० अट—अतिशय] ढेर, राशि, समूह।

अटाउ*—(संज्ञा, पु०) [सं० अट्ट—अतिक्रमण] बिगाड, बुराई, नटखटी, शरारत।

अटाटूट—(वि०) [सं० अट्ट—ढेर+हिं० टूटना] नितान्त, बिलकुल। अपरिमित, बेशुमार।

अटारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अट्टाली] घर के ऊपर को छत या कोठरी, कोठा। बहु-वचन [ब्र०]—**अटारिन, अटारियाँ**।

अटाल—(संज्ञा, पु०) [सं० अटाल] बुर्ज, धरहरा।

अटाला—(संज्ञा, पु०) [सं० अट्टाल] ढेर, राशि। असबाब, सामान। कसाइयों की बस्ती।

अटूट—(वि०, दे०) [हिं० अ—टूटना] न टूटने के योग्य, दृढ़, पुष्ट, मजबूत। अजेय। मात्रा में बहुत। लगातार। पूरा। कुल। अखंड।

अटेक—(संज्ञा, पु०) [हिं० अ+टेक] टेक-रहित। निराश्रय। उद्देश्यहीन। भ्रष्टप्रतिज्ञ। हठहीन।

अटेरन—(संज्ञा, पु०) [सं० अट—घूमना] सूत की आँटी बनाने के लिए लकड़ी का एक यंत्र, ओयना। घोड़े के कावा या चक्कर देने की एक विधि। (**अटेरना**—क्रि०, स०)।

अटेरना—(क्रि० स०) [हिं० अटेरन] अटेरन से सूत की आँटी बनाना। मात्रा से अधिक नशीले द्रव्यों का सेवन करना। (हिं० यौ०) [अ+टेरना ब्र० बुलाना]—न बुलाना।

अटोक*—(वि०) [हिं० अ+टोकना] बिना रोक टोक का। "अरु अटोक ड्योढ़ी करी"।

अट्ट—(संज्ञा, पु०, दे०) गृह का दुमहला, तिमहला भाग बर्बर। "देव दम्पति अट्ट देख सराहते" मैथिली०।

अट्टहास—(संज्ञा, पु० सं०) अट्टहास, कहकहा।

अट्टसट्ट—(संज्ञा, पु०, दे० अनु०) व्यर्थ का प्रलाप। अटॉय-सटॉय।

अट्टहास—(संज्ञा, पु० सं०) जोर की हंसी, ठट्ठा, "तो भी सुनता हूँ अट्टहास क्रूर कालका"—दिन०।

अट्टा—(संज्ञा, पु०) [सं० अट्टालिका] अटा। मचान। कोठा। (वि० अंटा)।

अट्टालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अटारी, कोठा। धवलागिरि, हर्म्य।

अट्टी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अट्—घूमना] सूत की लच्छी।

अट्ठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अष्ट] ताश का पत्ता, जिसमे किसी रंग को आठ बूटियाँ हो।

अट्ठाइस, अट्ठाईस—(वि०) बीस और आठ। (संज्ञा, पु०) संख्या जो बीस में आठ जोड़ने से बने।

अट्ठानबे—(वि० दे०) [सं० अष्टानवति] नब्बे और आठ। ९८ की संख्या।

अट्ठावन—(वि०, दे०) [सं० अष्टपंचाशत] पचास और आठ। ५८ की संख्या।

अट्ठासी—(वि० दे०) [सं० अष्टाशीति] अस्सी और आठ। ८८ की संख्या। (**अठासी** दे०)।

अठंग*—(संज्ञा, पु०) [सं० अष्टांग, आठ अंग] अष्टांग योग, योग के आठ अंग।

अठ—(वि०, दे०) [सं० अष्ट] समास में आठ का रूप।

अठइसी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अट्ठाइस] २८ गाहो, या १४० फलों की संख्या, जिसे सैकड़ा मानते हैं।

अठई—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अष्टमी] अष्टमी ८ तिथि। (वि०) आठवीं। (संज्ञा, पु०) **अठएँ**—आठवें, **अठवाँ**—आठवाँ।

अठकौंसल—(संज्ञा, पु०) [हिं० आठ अं० कौंसिल] गोष्ठी, पंचायत, सलाह, मंत्रणा।

अठखेल—(संज्ञा, पु०) [सं० अष्टकेलि] मनोरंजन, खेल। चंचलता, चुलबुलापन "मलयाचल समीर करता था कलियों से अठखेल"—गिरीश।

अठखेली—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अष्ट क्रीड़ा] विनोद, क्रीड़ा, चपलता, मतवाली या मस्तानी चाल। देखिए अठखेल।

अठत्तर—(वि० दे०) अठहत्तर। (संज्ञा, पु०) ७८ को संख्या।

अठन्नी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० आठ+आना] आठ आने का एक चाँदी का सिक्का।

अठपहल—(वि०) [सं० अष्ट+पटल] आठ कोनों वाला, आठ पार्श्वों का, अष्टभुज।

अठपहला—(वि०) [सं० अष्टपटल] आठ पार्श्वों वाला । आठ कोनों वाला ।

अठपहलू—देखिए अठपहल ।

अठपाव—(संज्ञा, पु०) [सं० अष्टपाद] उपद्रव, ऊधम, शरारत, [औटपाय] दे० । "भूषन भ्रौं अफजल बचै अठपात कै सिंह को पाव उनैठो"—भूषण ।

अठमासा—(वि०) [सं० अष्टमास] आठमास वाला, अठवाँसा (दे० अठमासी, स्त्री० अठवाँसी) । (संज्ञा, पु०) आठ महीनों का समूह । आठ महीनों में उत्पन्न होने वाला बालक ।

अठमासी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० आठ+माशा] आठ माशे सोन का सिक्का, सावरन, गिन्नी । (वि०) आठ मास की ।

अठल—(संज्ञा, पु०, दे०) संस्कार-विशेष ।

अठलाना*—(क्रि०, अ०) [हिं० ऐंठ] ऐंठ दिखाना, इतराना, ठसक दिखाना । चोचला करना, नखरा करना, मस्ती दिखाना । अनजान बनना, जानबूझ कर छेड़छाड़ करना । हँसना । उपहास करना । "सुनि अठलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहै कोय"—रहीम । "आवै अठलात नंद महर लईतो लखि"—रत्ना० ।

अठवना*—(क्रि०, अ०) [सं० स्थान]ठमना । ठनना ।

अठवाँस—(वि०) [सं० अष्टपार्श्व] अठपहलू ।

अठवाँसा—(वि०) [सं० अष्टमास] आठ मास में उत्पन्न होने वाला गर्भ । (संज्ञा, पु०) सीमंत संस्कार, असाढ़ से माघ तक समय-समय पर जोता जाने वाला ईख का खेत ।

अठवारा—(संज्ञा, पु०) [हिं० आठ+सं० वार] आठ दिन का समूह, हफ़्ता, सप्ताह ।

अठसिल्या—(संज्ञा, पु०) [सं० अष्टशिला] सिंहासन ।

अठहत्तर—(वि०) [सं० अष्ट सप्तति, प्रा० अट्ठहत्तरि] सत्तर और आठ (संज्ञा, पु०) ७८ संख्या ।

अठाई§—(वि०) [सं० अस्थायी] उत्पाती, नटखट, शरारती, उपद्रवी । [हिं० अ+ठाई—ठानी] अठानी, न ठानी हुई ।

अठान—(संज्ञा, पु०) [अ+ठानना] न ठानने योग्य कार्य । अयोग्य या दुष्कर बैर । शत्रुता, झगड़ा । "**अठान** ठान ठान्यौ है" ।

अठाना§—(क्रि०, स०) [सं० अठ—बध करना] सताना, पीड़ित करना । ठानना । छेड़ना । जमाना ।

अठारह—(वि०) [सं० अष्टादश प्रा० अट्ठदह अप० अठारह] दस और आठ । १८ की संख्या (संज्ञा, पु०) पुराण-सूचक संकेत-शब्द (काव्य में), चौसर का एक दाँव ।

अठासी—(वि०) [सं० अष्टाशीति] अस्सी और आठ, (संज्ञा, पु०) ८८ संख्या । [अट्ठासी दे०] ।

अठिलाना—(क्रि०, अ०) देखिए 'अठलाना' । "बात कहत अठिलात जाति सब हँसत देति करतारी"—सूबे० ।

अठिली—(संज्ञा, स्त्री० दे०) गुठली, बीज ।

अठेल—(वि०) [हिं० अ+ठेलना] जो ठेला न जा सके, अविचलनीय । अपरिहार्य । दृढ़ । यथेष्ट, प्रचुर । स्थिर, बलवान ।

अठोठ—(संज्ञा, पु०) [हिं० ठाठ] ठाठ । आडंबर । पाखंड । खोज ।

अठोठना§—(क्रि० स०, दे०) खोजना, ढूँढ़ना ।

अठोतरसौ—(संज्ञा, पु०) [सं० अष्टोतर+शत] १०८, एक सौ आठ ।

अठोतरी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अष्टोत्तरी] एक सौ आठ दानों की माला । ग्रहों की दशा (ज्यो०) ।

अड़ंग—(संज्ञा, पु०, दे०) मंडी, हाट, बाजार । विघ्न, रुकावट ।

अड़ंगा—(संज्ञा, पु०) [हिं० अड़ान] टाँग अड़ाने, की क्रिया, रुकावट, बाधा, विघ्न, अड़चन ।

अडंड—(वि०, दे०) [सं० अदंड्य] जो दंडनीय न हो, [अ+दंड] दंड से रहित—निर्भय । बिना दंड या सजा के । "पापिन की मंडली अडंड छुटि जायगी"-रत्ना० ।

अड़—(संज्ञा, पु०) [सं० हठ] हठ, जिद । झगड़ा । विरोध । चेष्टा ।

अडकाना§—(क्रि० स०) अड़ाना ।

अडग—(वि०) [हिं० डग, डगना] न डिगने वाला, अचल ।

अड़गड़—(वि०, दे०) अटपट । कठिन, दुस्तर, दुष्कर । (संज्ञा, पु०) कठिनाई ।

अड़गड़ा—(संज्ञा, पु० अनु०) बैलगाड़ियों के ठहरने की जगह । घोड़ों-बैलों की बिक्री का स्थान ।

अड़गोड़ा—(संज्ञा, पु०) [हिं० अड़+गोड़] बदमाश जानवरों के गले मे बाँधा जाने वाला लकड़ी का टुकड़ा, जो पैरों में अड़कर उन्हें भागने से रोकता है ।

अड़चन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कठिनाई, बाधा, रुकावट ।

अड़चल—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अड़ना+चलना] अंडस, दिक्कत, कठिनाई, बाधा, रुकावट, विघ्न ।

अड़तल—(संज्ञा, पु०) [हिं० आड़+सं० तल] ओट, आड़। शरण। बहाना, हीला-हवाला।

अड़तला—(संज्ञा, पु०, दे०) बचाने वाला, रक्षा करने वाला। आश्रयदाता।

अड़तालीस—(वि०) [सं० अष्टचत्वारिंशत] चालीस और आठ। ४८ संख्या, [अड़तालिस दे०]।

अड़तीस—(वि०) [सं० अष्टत्रिंशत] तीस और आठ, ३८ संख्या [अड़तिस दे०]।

अड़दार—(वि०) [हिं० अड़ना+फ़ा० दार प्रत्य०] अड़ियल, रुकने वाला, ऐंड़दार, मस्त, मतवाला। "**अड़दार** बड़े गड्दारन के हाँके सुनि"—भूषण। "ज्यो पतंग अड़दार कौ लिये जात गड़दार"।

अड़ना—(क्रि० अ०) [सं० अल्—वारण करना] रुकना, ठहरना। हठ करना। अटकना। "बेसबब बात बात मे अड़कर' —हरिऔध।

अड़बंग*—(वि०) [हिं० अड़ना+सं० वक्र] टेढ़ा-मेढ़ा, अड़बड़। विचित्र। विकट। कठिन। दुर्गम, अनोखा। ऊँचा-नीचा। विलक्षण।

अड़बंध—(संज्ञा, पु०,दे०) [हिं० अड़ना+सं० बंध] कटिबंध, कोपीन।

अड़बगा—देखिए अड़बंगा।

अड़बड़—(वि०, हिं० दे०) कठिन। अटपट। दुर्गम। अंडबंड। (संज्ञा, पु०) प्रलाप। निरर्थक बात-चीत। ऊँचा-नीचा स्थल।

अड़वल—(वि०, हिं०) रुकने या अड़नेवाला। हठी। जिद्दी, अड़ियल।

अडर*—(वि०) [सं० अ+हिं० डर] निडर, निर्भय, बेख़ौफ़।

अड़सठ—(वि०, दे०) [सं० अष्ट षष्ठि] साठ और आठ। (संज्ञा पु०) ६८ संख्या।

अड़हुल—(संज्ञा, पु०) [सं० ओण+फुल्ल] देवी-पुष्प, जया या जपा कुसुम।

अड़ाड़—(संज्ञा, पु० दे०) [हिं० आड़] पशुओं के रहने का अड्डा, हाता, खरिक, [दे० अड़ार]।

अड़ाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) ढोंग, पाखंड।

अड़ान—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अड़ना] पड़ाव, रुकने का स्थान, अड्डा।

अड़ाना—(क्रि०, स०) [हिं० अड़ना] टिकाना, रोकना, ठहराना। अटकाना। डाट लगाना। टेकना। उलझाना। ठूँसना, भरना। ढरकाना, गिराना। (संज्ञा, पु०) एक राग। गिरती हुई दीवाल या छत को गिरने से रोकनेवाली लकड़ी, डाट, थूनी, चाड़, आड़।

अड़ानी—(संज्ञा, पु०) [हिं० अड़ाना] छाता। बड़ा पंखा। अड़ंगा, रोक। कुश्ती का एक पेच। (स्त्री०) खिड़की, दरवाजों में लगाने के लिए लकड़ी का एक अड़ंगा।

अड़ायता—(वि०) [हिं० आड़] आड़ या ओट करने-वाला। (स्त्री० अड़ायती।)

अड़ार—(संज्ञा, पु०) [सं० अटाल—बुर्ज] समूह, राशि, ढेर। लकड़ी का ढेर, लकड़ी का टाल। (दे०) अड्डा, पशुओं के रहने का स्थान। (वि०) [सं० अटाल] टेढ़ा, तिरछा, आड़ा, नुकीला। "जग ढोलैं डोलत नैनाहाँ, उलटि अड़ार जाँहि पल माँहाँ' —[पद०]

अड़ारना§—(क्रि०, स०) [हिं० डालना] डालना, देना, उड़ेलना।

अडाह—(वि०) [हिं० अ+डाह] डाह या ईर्षा-रहित।

अडिग—(वि०) [अ+डिगना] न डिगने वाला, अचल, अटल।

अड़ियल—(वि०) [हिं० अड़ना] अड़ कर चलने-वाला, चलते-चलते रुक जानेवाला, आलसी, मट्ठर, हठी, जिद्दी।

अड़िया§—(संज्ञा, स्त्री० दे०) अंडे के आकार को लकड़ी, जिस पर साधु टेक लगा कर बैठते हैं। सूत की पिंडी जो लम्बी हो, कुकुरी, फेंटी।

अड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अड़ना] जिद्द, हठ, आग्रह। टेक। रोक। जरूरत का वक्त। मौका। (वि०) हठी।

अडुलना*—(क्रि० स०) [सं० उत्+इल—फेंकना] जल आदि उड़ेलना, गिराना।

अडूसा§—(संज्ञा, पु०) [सं० अष्टरुष] कासश्वास नाशक एक जंगली पौधा, बासा, रूसा।

अड़ेअना—(क्रि० अ०, दे०)—बाधक होना, मार्ग रोकना।

अड़ेयाना—(क्रि० स०) हिं० आश्रय देना, रक्षा करना।

अड़ैंच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शत्रुता, बैरभाव, द्वेष।

अडोल—(वि०) [सं० अ+हिं० डोलना] जो हिले नहीं, अटल, स्थिर। स्तब्ध। अचल। दृढ़। तीक्ष्ण थे लोचन अटल अडोल—मैथिली०।

अड़ोस-पड़ोस—(संज्ञा, पु०, हिं०) पड़ोस आस-पास, परोस, प्रतिवेश।

अड़ोसी-पड़ोसी—(संज्ञा, पु०) [हिं० पड़ोसी] आस-पास का रहने वाला, हमसाया, परोसी (स्त्री० परोसिन)।

अड्डा—(संज्ञा, पु०) [सं० अट्टा—ऊँचा स्थान] टिकने या ठहरने का स्थान। मिलन या एकत्र होने की जगह। प्रधान या केन्द्र-स्थान। चिड़ियों के बैठने की छड़। लकड़ी या लोहे की कबूतरों के बैठने की छतरी। करघा। बैठक का विशेष स्थान। प्रिय स्थल, डेरा।—**मु०**—[**ड्डे**] **पर आना**—अपने स्थान पर पहुँचना—[**ड्डे**] **पर बोलना**—स्थान विशेष पर ही कार्य करना,—[**ड्डे**] **पर चहकना**—अपने स्थान पर रोब दिखाना।—**नौसेना**-समुद्री सेना का केन्द्र स्थान [नैवल बेस]।—**सैनिक**-फौज का केन्द्र स्थान। [मिलिटरी बेस]।—**हवाई**-हवाई सेना का केन्द्र स्थान, [एअर बेस]।

अढ़तिया—(संज्ञा पु०) [हि० आढ़त] वह दूकानदार जो ग्राहकों या व्यापारियो को माल खरीद कर भेजता तथा उनका माल मँगाकर बेचता है, आढ़त करनेवाला, दलाल।

अढ़न—(संज्ञा, पु०, दे०) आज्ञा, मर्यादा।

अढ़वना*—(क्रि०, स०) [दे० सं० आज्ञापन] आज्ञा देना, काम मे लगाना।

अढ़वायक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आज्ञापक] आज्ञा देनवाला, काम लेनवाला।

अढ़ाई—(वि०, दे०) [सं० अर्धद्वय] दो और आधा $2\frac{1}{2}$, ढाई संख्या।

अढ़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काठ, पत्थर या लोहे का बर्तन।

अढ़ुक—(संज्ञा, पु०) [हि० अढ़ुकना] ठोकर, चोट।

अढ़ुकना—(क्रि०, अ०) [सं० आ—भली भाँति + टकं—रोक] ठोकर खाना। सहारा लेना। चोट खाना, उढ़कना। पू० क्रि० अढ़ुकि—उढ़क कर। "अढ़ुकि परहिं फिर हेरहि पाछे"—तुल०।

अढ़ैया—(संज्ञा, पु०) [हि० अढ़वना] आज्ञा देनेवाला। (हि०) अढ़ाई $2\frac{1}{2}$ सेर की तौल का एक बाट $2\frac{1}{2}$ गुने का पहाड़ा।

अणाद—(संज्ञा, पु०, दे०) आनन्द, सुख।

अणि—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अक्षाग्र कीलक, पहिये के आगे का काँटा। नोंक। बाढ़। धार। सीमा या किनारा।

अणिमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अष्ट सिद्धियों में से पहिली सिद्धि, अत्यन्त छोटा रूप धारण करने की शक्ति। (दे० **अनिमा**)

अणिमादिक—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अणिमा आदि सिद्धियाँ जो संख्या में आठ हैं—(१) अणिमा (२) महिमा, (३) लघिमा, (४) गरिमा, (५) प्राप्ति, (६) प्राकाम्य, (७) ईशत्व, (८) वशित्व। जिन योगियों को ये सिद्धियां प्राप्त होती हैं वे स्वयं को अदृश्य कर सकते है।

अणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नोक, धार, सीमा। (हि० अनी।)

अणीय—(वि०) [सं० अणी] अति सूक्ष्म, बारीक।

अणु—(संज्ञा, पु०, सं०) द्विअणुक से सूक्ष्म और परमाणु से बड़ा कण, ६० परमाणुओं का छोटा टुकड़ा, कण, रजकण। अत्यन्त सूक्ष्म मात्रा। नैयायिक अणुओं के ही द्वारा समस्त सृष्टि की उत्पत्ति मानते हैं; इसमें मिलने और पृथक् होने की शक्ति है। सूर्य के प्रकाश मे उड़ते हुए छोटे-छोटे कणों मे से एक का साठवाँ भाग (उ० वि०) अति सूक्ष्म जो दिखाई न दे। अत्यन्त छोटा।—**मात्र**—(वि०) छोटा सा। —**वाद**—(पु०,) वह सिद्धान्त जिसमें जीव या आत्मा अणु माना गया है और अणु से ही सब सृष्टि की उत्पत्ति कही गई है। [रामानुजाचार्य, बल्लभाचार्यादि] वैशेषिक दर्शन का मत। —**वादी**—(पु०,) नैयायिक, वैशेषिक मतानुयायी, रामानुज या बल्लभ-सम्प्रदाय का व्यक्ति, अणुवाद का मानने वाला।—**वीक्षण**—(पु०) सूक्ष्म-दर्शक यंत्र, खुर्दबीन। छिद्रान्वेषण, बाल की खाल निकालने की क्रिया।—**विश्व**—(पु०,) सम्पूर्ण संसार। [मैक्रोकाज्म]—**०यंत्र**—(पु०,) सूक्ष्म दर्शक यंत्र। [माइक्रास्कोप]

अतंक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [आतंक सं०]। भय, दहशत।

अतंत्र—(वि०, सं०) तंत्र या तन्तु से हीन। (संज्ञा, पु०) कार्य जिस पर नियन्त्रण न हो।

अतंद्र—(वि०, सं०) जो तंद्रा अथवा आलस्य से पीड़ित न हो। सावधान, सतर्क। "विद्याध्ययन करो अतंद्र हो"—गिरीश।

अतंद्रिक—(वि०, सं०) आलस्य-रहित, चुस्त, स्फूर्त्तियुक्त। व्याकुल, बेचैन। (**अतंद्रित** वि०)

अतंद्रित, —ल—(वि०, सं०) सावधान, सचेत, सतर्क, जागरूक। चेतन अवस्था को प्राप्त। तंद्रा-हीन। "सकल कर्म अतंद्रित हो करो"—हरिऔध।

अतंद्री—(वि०, सं०) देखिए **'अतंद्र'**।

अतः—(क्रि०, वि०, सं०) इस वजह से, इसलिए, इस वास्ते।

अतऊर्ध्वम्—(अ०, सं०) आगे, भविष्य में। अब से, इसके अनंतर, बाद में। "अतऊर्ध्वम् न प्रमाद करूँगा"—गिरीश।

अतएव—(क्रि० वि०) [सं० अतः+एव] इसलिए, इसहेतु, इस कारण, इससे, इस वजह से। "नगर को छोड़ अतएव बन जाऊँगा"—दिन०

अतट—(वि०, सं०) तट-रहित, खड़ी ढाल वाला। (संज्ञा, पु०) खड़ी ढाल वाला पर्वत अथवा चट्टान। पवत।—**प्रपात**—(पु०) झरना जो पर्वत-शिखर से सीधा गिरता है। "देखो गिरि से निपतित होता चंचल अतट प्रपात"—गिरीश।

अतथ्य—(वि०, सं०) असत्य, जो यथार्थ न हो। 'अतथ्यं तथ्यं वा हरति महिमानं जनरवः!'

अतद्गुण—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+तद्+गुण] एक प्रकार का अलंकार, जिसमे एक वस्तु द्वारा दूसरी अत्यन्त निकटवर्ती वस्तु के गुणों का न ग्रहण करना प्रकट किया जाय।

अतद्वत्—(वि०, सं०) जो उसके सदृश न हो।

अतना—(वि०, दे०) इतना, इतनी मात्रा का।

अतनु—(वि०, सं०) शरीर-रहित, बिना देह का। मोटा, स्थूल। [अ-नहीं+तनु-शरीर, पतला, संकीर्ण] (संज्ञा, पु०, सं०) अनंग, कामदेव।

अतप—(वि०, सं०) शीतल। उत्तेजना-रहित। आडंबर-शून्य। किसी कार्य मे अनियोजित, निठल्ला। आतप आप अतप हो आया—गिरीश।

अतप्त—(वि०, सं०) जो तप्त अथवा उष्ण न हो। —**तनु**—(वि०) जिसने तप्त मुद्रा ग्रहण न की हो। (संज्ञा, पु०) वह मनुष्य जिसने छाप न ली हो। "धन्य न कह सकते उस जन को जो रह गया अतप्त" —गिरीश।

अतमस—(वि० सं०) अंधकार-रहित।

अतमिस्र—(वि०, सं०) जो अँधेरे से, अज्ञान से घिरा न हो। "पावन चरित महर्षि हमारे तपो निरत, अतमिस्र" गिरीश।

अतरंग—(वि०) [सं० अ+तरंग] तरंग-रहित। (संज्ञा, पु०) लंगर को उखाड़ कर रखने की क्रिया।

अतर—(संज्ञा, पु०) [अ० इत्र] फूलों की सुगंधि का सार। निर्यास। पुष्पसार।—**दान**—(पु०) [फ़ा० इत्रदान] इत्र रखने का पात्र।

अतरणीय—(वि०) [सं० अ+तरणीय] जो तरा न जा सके, [अतरनीय] (दे०)।

अतरस—(संज्ञा, पु० दे०) एक अत्यन्त कोमल वस्त्र।

अतरसों—(क्रि० वि०) [सं० इतर+श्वः] परसों के आगे का दिन, अग्रिम तृतीय दिवस, परसों के प्रथम का व्यतीत दिन। अतर+सों [अ०] इत्र से।

अतरिख॥—(संज्ञा, पु०) [सं० अंतरिक्ष] अंतरिक्ष।

अतरे—(वि०, दे०) [सं० इतर] तृतीय दिवस, तीसरे दिन।

अतर्कित—(वि० सं०) जिसका अनुमान न किया गया हो, जो कल्पना में न आया हो, अननुमित। "इन्द्रप्रस्थ पर घुमड़ विपद की घटा अतर्कित छाई" —दिन०।

अतर्क्य—(वि०, सं०) जिस पर तर्क-वितर्क न हो सके, अनिर्वचनीय, अचिंत्य।

अतगुण—(संज्ञा, पु० सं०) एक अर्थालंकार जिसमें संगति आदि कारण होते हुए भी अन्य गुण-ग्रहण-रूप कार्य का अभाव दिखाया जाता है। "कैसा है यह चंद्र मुख, जिसके निकट सरोज, विकसे ही निशि दिन मिले, लिये निराला ओज"—गिरीश।

अतल—(संज्ञा, पु०, सं०) सात पातालों में से द्वितीय पाताल। शिव। (वि०) तल-रहित, अथाह, अगाध। —**स्पर्श,—स्पर्शी**—अतल को छूने वाला, अथाह, अत्यन्त गहरा। अगाध, अतिगंभीर, जिसके तल को कोई छू न सके, जिसके तल तक कोई पहुंच न सके।

अतलस—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

अतवार—(संज्ञा, पु०, दे०) रविवार। ऐतवार, अत्त-वार, [दे०, ग्रा०]—[फ़ा०] एतवार। तौर-तरीका। चाल-चलन। [इतवार]

अतसी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अलसी, पाट, सन, तीसी। "अतसी कुसुम बदन मुरली-मुख, सूरज प्रभु किन लाये"—सूबे०। 'अतसि पुष्प अलंकृत-कारिणी'—हरिऔध।

अता—(संज्ञा, पु०, अ०) दान, अर्पण।

अताई—(वि०, अ०) दक्ष, कुशल, प्रवीण। धूर्त, चालाक। बिना सीखे हुए, काम करने वाला, नक्काल, बहुरूपिया। तमाशा करने वाला, गवैया। "सो तजि कहत और को औरे तुम अति बड़े अताई"—[भ्र०]।

अतार—(संज्ञा, पु०, अ०) दवाओं का बेचनेवाला, पंसारी, अत्तार, गंधी। देखिए अत्तार।

अति—(वि०, सं०) बहुत, अधिक। (संज्ञा, स्त्री०) अधिकता, ज्यादती। [**अती, अत्ति** दे०] "रहिमन अती न कीजिए, गहि रहिए निज कानि"।

अतिकथ—(वि०, सं०) बहुत बढ़ा कर कहा हुआ। विश्वास के अयोग्य। जो कहने के योग्य न हो। समाज के नियमों को न स्वीकार करने वाला। "अतिकथ सारी बात तुम्हारी तनिक न विश्वसनीय" —गिरीश।

अतिकथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बढ़ाकर कही हुई कहानी, निस्सार भाषण। "अतिकथा कब आदरणीय है"—हरिऔध।

अतिकर—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) अतिरिक्त कर। [ओवर टैक्स]

अतिकर्षण—(संज्ञा, पु० सं०) उचित से अधिक परिश्रम। "धनु तनु दोनों ही का होता अतिकर्षण से नाश"—गिरीश।

अतिकांत—(वि०, सं०) अत्यन्त प्रिय। "अतिकांत तुम्हारा स्वर ललाम—हरिऔध।

अतिकाय—(वि०) [सं० अति+काया] स्थूल शरीर का, मोटा। रावण का एक पुत्र।

अतिकाल—(संज्ञा, पु०, सं०) विलंब, देर। कुसमय, बेर।

अतिकृच्छ्—(संज्ञा, पु०, सं०) बहुत कष्ट, छः दिनों का एक व्रत; इसमे भोजन करने के दिनो मे दाहिने हाथ मे जितना आ सके, उतना ही भोजन किया जाता है, यह प्राजापत्य व्रत का एक भेद है, पापनाशक व्रत।

अतिकृत—(वि०, सं०) मर्यादा तोड़ कर सम्पन्न किया जाने वाला।

अतिकृति—(संज्ञा, स्त्री०) मर्यादा का उल्लंघन। पच्चीस वर्णों का वृत्त। "अतिकृति अनर्थही ले आया"—गिरीश।

अतिक्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) नियम या मर्यादा का उल्लंघन। विपरीत व्यवहार। क्रम-भंग। अन्यथाचरण। अवमानना। उल्लंघन।

अतिक्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) उल्लंघन, अन्यथाचार, सीमोल्लंघन।

अतिक्रमी—(संज्ञा, पु०, सं०) अनधिकार प्रवेश करने वाला। [ट्रेसपासर]

अतिक्रांत—(वि०, सं०) सीमा के बाहर गया हुआ। बीता हुआ, व्यतीत।

अतिक्रामक—(वि०, सं०) जो क्रम अथवा मर्यादा का भंग करे। "नहीं अतिक्रामक श्लाघनीय है"—हरिऔध।

अतिगंध—(संज्ञा, पु०, सं०) चंपा का वृक्ष अथवा पुष्प। (वि०) "तीखी महक वाला। "अतिगंध के प्रति ज्यों मधुप"—गिरीश।

अतिगत—(वि०, सं०) बहुत अधिक।

अतिगति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उत्तम गति, मोक्ष।

अतिगुण—(वि०, सं०) श्रेष्ठ गुणों से युक्त। निकम्मा। (संज्ञा, पु०) श्रेष्ठ गुण।

अतिगुरु—(वि०, सं०) अत्यन्त भारी। (संज्ञा, पु०) अत्यन्त आदरणीय जन, पिता, माता आदि।

अतिचर—(वि०, सं०) अत्यन्त अधिक बदलने वाला, अस्थिर।

अतिचार—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रहों की शीघ्र चाल। एक राशि का भोग-काल समाप्त किये बिना किसी ग्रह का दूसरी राशि में चला जाना। विघात। व्यतिक्रम।

अतिचारी—(वि०, सं०) अन्यथाचारी। अतिचर। अति करने वाला।

अतिजन—(वि०, सं०) जन-रहित, जहाँ आबादी न हो।

अतिजव—(संज्ञा, पु०, सं०) अत्यन्त तेज चाल।

अतिजागर—(वि०, सं०) सदैव जागरणशील सावधान, सचेत।

अतितारी—(वि०, सं०) पार जाने वाला। विजेता।

अतितृष्ण—(वि०, सं०) अधिक प्यास वाला, बहुत लोभी।

अतिथि—(संज्ञा, पु०, सं०) घर मे बाहर से आया हुआ व्यक्ति, अभ्यागत, मेहमान, पाहुना। एक स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरने वाला संन्यासी। व्रात्य। अग्नि। यज्ञ में सोमलता लाने वाला व्यक्ति। श्रीरामचंद्र के पौत्र और कुश के पुत्र। 'वार है न तिथि है वे अतिथि विचारे है'—**कक्ष**-(पु०) घर का वह कमरा जिसमें अतिथियों को ठहराया जाता है। [गेस्ट रूम]—**पूजा**-(स्त्री०) [सं० अतिथि+पूजा] अतिथि का आदर-सत्कार, अतिथि-सेवा, मेहमानदारी।—**भक्त**-(पु०) अतिथि पूजक, अतिथि की सेवा सुश्रूषा करने वाला व्यक्ति। —**भक्ति**-(स्त्री०) अतिथि-पूजा।—**यज्ञ**-(पु०) अतिथि का आदर-सत्कार, अतिथि-पूजा।—**शाला**-(स्त्री०,) अतिथि-भवन। [गेस्ट चैम्बर]—**सेवा**-(स्त्री०) अतिथि-सत्कार।

अतिदंतुर—(वि०, सं०) बहुत बड़े दाँतों वाला। जिसके दाँत बाहर निकले हों।

अतिदर्प—(वि०, सं०) घमंडी, अभिमानी।

अतिदेश—(संज्ञा, पु०, सं०) एक स्थान के धर्म का दूसरे स्थान पर आरोपण। और विषयों में भी काम आने वाला नियम।

अतिधृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उन्नीस वर्णों के वृत्तों का नाम।

अतिपंथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बड़ा मार्ग, राजपथ, सड़क।

अतिपतन—[अतिपात] (संज्ञा, पु० सं०) अतिक्रम, बाधा, गड़बड़ी, अतिपात।

अतिपर—(संज्ञा, पु० सं०) महाशत्रु, उदासीन, प्रबल शत्रु। (वि०) अपने शत्रुओं को परास्त करने वाला।

अतिपराक्रम—(संज्ञा, पु० सं०) बड़ा प्रताप, बड़ा तेज।

अतिपरिचय—(संज्ञा, पु०) बहुत अधिक सम्पर्क। 'अति परिचय के कारण उपेक्षणीय समझते हैं'—[क०, सं०]

अतिपात—(संज्ञा, पु० सं०) अतिक्रम, अव्यवस्था, गड़बड़ी, बाधा, विघ्न।

अतिपातक—(संज्ञा, पु० सं०) पुरुष का माता, बेटी, और पतोहू के साथ और स्त्री का पिता, पुत्र, दामाद के साथ गमन, ९ प्रकार के पातकों में से ३ बड़े पाप।

अतिपातित—(वि०, सं०) सर्वथा असम्बन्धित, स्थगित (संज्ञा, पु०) हड्डी की पूर्ण रूप से टूट जाने की स्थिति।

अतिपान—(संज्ञा, पु० सं०) बहुत अधिक मद्य-पान। मत्तता। पीने का व्यसन।

अतिपार्श्व—(क्रि० वि० सं०) सन्निकट, समीप, पास, बगल में।

अतिप्रकाश—(वि०, सं०) कुख्यात, कुप्रसिद्ध।

अतिप्रकृत—(वि०, सं०) जो साधारण से आगे निकल गया हो, बहुत बढ़ गया हो।

अतिप्रश्न—(संज्ञा, पु०, सं०) अनावश्यक प्रश्न। सीमोल्लंघन-सूचक प्रश्न।

अतिप्रसंग—(संज्ञा, पु० सं०) अत्यंत मेल, अतिशय आसक्ति, धृष्टता, "अतिप्रसंग निवारण कीजिए"—हरिऔध। पुनरुक्ति, अति विस्तार, व्यभिचार, क्रम का नाश।

अतिबरवै—(संज्ञा, पु० सं०) एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रथम और तृतीय पदों में १२ मात्रा और द्वितीय तथा चतुर्थ पदों में ९ मात्राएँ होती हैं, विषम पदों में जगण और अंत में गुरु वर्ण नहीं आता। बरवा छंद में २ मात्राओं के और बढ़ाने से अतिबरवै बन जाता है (पिंगल)।

अतिबल—(संज्ञा, पु० सं०) बड़े बलवाला, एक राक्षस। (वि०) प्रबल। "नारी अति बल होत है अपने कुल की नाश"—गिरिधर।

अतिबला—(संज्ञा, स्त्री० सं०) ककई अथवा कंगही नामक पौधा—बरियार। एक प्रकार की प्राचीन युद्ध-विद्या जिसके प्रभाव से श्रम और प्यास-भूख आदि बाधाओं का भय नहीं रहता।
"क्षुत्पिपासे न ते राम ! भविष्येतेनरोत्तम। बला तिबलाम् चैव....."—वाल्मीकि।

अतिभारारोपण—(संज्ञा, पु० सं०) पशुओं पर बहुत अधिक भार रखने की क्रिया।

अतिभी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) बिजली।

अतिमध्यंदिन—(संज्ञा पु० सं०) खड़ी दुपहरी।

अतिमर्श—(संज्ञा, पु० सं०) अत्यन्त अधिक परिचय और सम्पर्क।

अतिमात्र—(वि०, सं०) अत्यन्त अधिक, विशिष्ट मात्रा में।

अतिमानुष—(वि०, सं०) जो मनुष्य की शक्ति से परे हो। अलौकिक।

अतिमाय—(वि०, सं०) माया के प्रभाव से मुक्त, वीतराग।

अतिमुक्त—(वि०, सं०) मुक्तिप्राप्त, विषय-विरक्त। (संज्ञा, पु०) एक लता।

अतिमोदा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) बहुत अधिक सुगंधि। नवारी, नवमल्लिका।

अतिमौलिक—(वि० यौ०, सं०) अतिवादी, अमूल [रेडिकल]

अतियोग—(संज्ञा, पु० सं०) एक वस्तु का दूसरी के साथ निश्चित परिमाण से अधिक मिलाव।

अतिरंजन—(संज्ञा, पु० सं०) बढ़ा-चढ़ा कर कहने का ढंग, अत्युक्ति। अत्यंत प्रसन्नता।

अतिरंजना—(स्त्री० सं०) बहुत बढ़ा चढ़ाकर कथन, अतिशयोक्ति।

अतिरथ,—थी—(संज्ञा, पु० सं०) अनेक योद्धाओं से अकेले युद्ध करने वाला, रथ पर आसीन, वीर।

अतिरथी—(संज्ञा, पु० सं०) जो अकेले बहुतों से लड़े, महारथी, रण-कुशल।

अतिरिक्त—(क्रि० वि०, सं०) सिवाय, अलावा, छोड़ कर। (वि०) [अति+रिच्+क्त] शेष, बचा हुआ, अलग, भिन्न। बढ़ाया हुआ, फाजिल [एडीशनल] (यौ०) [अति+रिक्त] अत्यंत खाली।—**पत्र**—(संज्ञा, पु० सं०) समाचार-पत्र के साथ बँटने वाला विज्ञापन, क्रोड़पत्र।—**लाभकर**—अनुमान से अधिक होने वाले लाभ पर लगने वाला कर [एक्सेस प्राफिट टैक्स]—**समय**—निश्चित समय से अधिक देर तक कार्यकाल [ओवर टाइम]

अतिरेक—(संज्ञा, पु०) [सं० अति+रिच्+घञ्] आधिक्य, अतिशयता।

अतिरोग—(संज्ञा, पु० सं०) यक्ष्मा, क्षयी, महा-व्याधि।

अतिलौल्य—(संज्ञा, पु० सं०) प्रबल अभिलाष।

अतिवाद—(संज्ञा, पु० सं०) खरी बात, डींग, शेखी, सच्ची बात, कटु बात।

अतिवादी—(वि०, सं०) सत्यवक्ता, कटुवादी, डींग मारने वाला।

अतिवार—(संज्ञा, पु० दे०) इतवार, विश्वास।

अतिवाहिक—(संज्ञा, पु० सं०) पातालवासी लिंग शरीर।

अतिविशिष्ट—(वि०, यौ० सं०) असाधारण, विशेषता युक्त [आउटस्टैंडिंग]

अतिविषा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अतीस नामक विषैली औषधि।

अतिवृष्टि—(संज्ञा, स्त्री० यौ० सं०) अत्यंत अधिक वर्षा, एक प्रकार की ईति।

अतिवेगित—(वि०, सं०) जिसमें बहुत अधिक वेग संचारित किया गया हो। वेग से चलने वाला।

अतिवेध—(संज्ञा, पु० सं०) बहुत अधिक समीपता की स्थिति।

अतिवेल—(वि०, सं०) असीम, बेहद।

अतिव्यय—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) अतिरिक्त खर्च [ओवर चार्ज]

अतिव्याप्ति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) न्याय में किसी लक्षण या परिभाषा के कथन के अन्तर्गत लक्ष्यवस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तु के भी आजाने का दोष। एक प्रकार का तर्क-दोष। (तर्कशास्त्र)।

अतिशय—(वि०, सं०) बहुत ज्यादा। [**अतिसै** दे०] "मूढ़ तोहि अतिसै अभिमाना"—तुल०]। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी वस्तु की उत्तरोत्तर सम्भावना प्रकट की जाय।—**पान**-(संज्ञा, सं० पु०) अत्यंत अधिक मद्यपान।

अतिशयोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अतिशय+उक्ति] एक प्रकार का अलंकार जिसमें भेद में अभेद, असंबंध में सम्बन्ध दिखलाते हुए किसी वस्तु के उत्कर्ष को बहुत बढ़ा कर प्रगट करते हैं। अत्यन्त बढ़ा कर चतुराई के साथ कथन। सम्मान के लिए असम्भव या अत्यन्त अधिक प्रशंसा।

अतिशयोपमा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अतिशय+उपमा] देखिए अनन्वय। एक प्रकार का अलंकार; किसी किसी ने इसे उपमा का एक भेद माना है।

अतिश्रम—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) निर्धारित से अधिक आयास,। [ओवर वर्क]

अतिसंध—(संज्ञा, पु० सं०) प्रतिज्ञा या आज्ञा-भंग, अतिक्रमण, धोखा, विश्वासघात।

अतिसंधान—(संज्ञा, पु० सं०) अतिक्रमण, धोखा।

अतिसामान्य—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) सब पर न घटनवाली असामान्य बात, न्याय। (वि०) सामान्य कोटि का [मीडिओकर]

अतिसार—(संज्ञा, पु०) [सं० अति+सृ धञ्] संग्रहणी रोग, पेट की पीड़ा, जठर-व्याधि, पतले दस्त आने की बीमारी, जिसमें खाया हुआ सब पदार्थ निकल जाता है।

अतिहसित—(संज्ञा, पु०) [सं० अति+हसित] हास के छः भेदों में से एक; इसमें हसने-वाला ताली बजाता है और उसकी आँखों से आँसू भी निकलने लगते हैं, शरीर थरीने लगता है, वचन अस्फुट रूप में निकलते हैं।

अतीत—(वि०, यौ०) [सं० अति+इति] गत, अत्यन्त इति, [अति+इ+क्त] भूत, अतिक्रांत, बीता हुआ। जुदा, अलग, मृत, विरक्त, न्यारा। संगीत शास्त्रानुसार परिणाम-विशेष। (संज्ञा, पु०) संन्यासी, यति, साधु, अतिथि, विरक्त। "कविरा भेष अतीत का, करै अधिक अपराध"। (क्रि० वि०) परे, बाहर। (वि०) [अ+तीत—तिक्त सं०] जो तिक्त या कटु न हो।—**काल**-(पु०) बीता हुआ समय, प्राचीन काल।

अतीतना*—(क्रि०, अ०, हि०) बीतना, गुज़रना, छूटना, व्यतीत होना। "औसर अतीते हाय रीते से उपाय होत"। "पुत्र सिख बिताना, छोड़ना, लीन तन जौ लगि अतीत हो"। (क्रि० स० दे० सं०) त्यागना।

अतीथ*—(संज्ञा, पु० दे०) [**अतिथि** सं०] मेहमान।

अतीन्द्रिय—(वि०) [सं० अति+इन्द्रिय] जिसका अनुभव इंद्रियों के द्वारा न हो, अगोचर, अव्यक्त-अप्रत्यक्ष। "अतींद्रिय ज्ञान निधिः"—कालि०। "एक अतींद्रिय स्वप्न लोक का"......महादेवी।

अतीव—(वि०, यौ०) [सं०अति+इव] बहुत, अत्यन्त। "होकर अतीव श्रीहीन"—दिन०।

अतीवाकुल—(वि०, सं०) अत्यन्त अधीर, बहुत चंचल। "बना अतीवाकुल म्लान चित्त को"—हरिऔध।

अतीस—(संज्ञा, पु० सं०) एक पहाड़ी पौधा, जिसकी जड़ दवा के काम में आती है, अतिविषा, विषा।

अतीसार—देखिए अतिसार।

अतुराई*—(संज्ञा स्त्री० दे०) [सं० आतुर] आतुरता, आतुरी, जल्दी, चंचलता, चपलता।

अतुराना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० आतुर] आतुर होना, पराना, जल्दी मचाना, अकुलाना। "इक पल महँ जुग सबनि कौ मिलिबे को **अतुरात**"—सूर०।

अतुल—(वि०, सं०) जिसकी तौल न हो सके, अमित, असीम, बहुत अधिक, अनुपम, बेजोड़। (संज्ञा, पु०) [केशव-मतानुसार] अनुकूल नायक। तिलक का पड़। **अतोल**, अद्वितीय, अतुल्य, असदृश। तिल-पुष्पी। कफ। श्लेष्मा।

अतुलनीय—(वि०, सं०) अपरिमित, अपार, अनुपम, अद्वितीय।

अतुलित—(वि०, सं०) बिना तौला हुआ, अपरिमित, जिसकी तौल या तुलना न हो सके, अपार, अतुल्य, अनुपम, अद्वितीय, असंख्य, श्रेष्ठ। "मेघनाद अतुलित बल योधा"—तुल०। "अपने अतुलित कुल मे"—मैथिली०।

अतुल्य—(वि०) [सं० अ+तुल्य] असमान, असदृश, अनुपम, बेजोड़, अप्रतिम। (संज्ञा, स्त्री० अतुल्यता।)

अतूथ*—(वि०) [सं० अति+उत्थ] अपूर्व, विचित्र। "देख सखि अद्भुत रूप **अतूथ**"—सू०।

अतूल*—(वि०, दे०) अतुल, अतोल, अतुल्य [सं०]।

अतृप्त—(वि०, सं०) जो तृप्त या सन्तुष्ट न हो, भूखा। (संज्ञा, स्त्री०) अतृप्ति।

अतृप्ति—(संज्ञा, स्त्री०) मन न भरने की दशा, असन्तुष्टता, असंतुष्टि।

अतेज—(वि०) [सं० अ+तेज] तेज-रहित; हतप्रभ, हतश्री, क्षीण, प्रभा-हीन।

अतोर*—(वि०, दे०) [सं० अ+तोड़ना] जो न टूटे, दृढ़, अभंग, अटूट।

अतोल—(वि०, सं०) **अतौल**, अतुल, अनन्त, अप्रमाण, इयत्ता-रहित, जो न तुल सके, अनुपम। "पदवी लहत अतौल"—वृन्द०।

अतौल—(वि० दे०) अतोल, अतुल्य।

अत्त*§—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अति] अति, अधिकता, **अत्ति**, **अती** [दे०]।

अत्ता, [**अत्तिका**]—(संज्ञा, स्त्री० सं०) माता, ज्येष्ठ बहिन, बड़ी मौसी, सास, [प्राचीन नाटक]।

अत्तार—(संज्ञा, पु० अ०) इत्र या तेल बेचने वाला, गंधी, यूनानी दवा बेचने वाला। (संज्ञा, स्त्री० **अत्तारी**)

अत्ति*—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अति] अति, ज्यादती, ऊधम, अत्याचार। **अत्ती** [दे०]

अत्यन्त—(वि०, यौ०) [स० अति+अंत] बहुत अधिक, अतिशय, ज्यादा, **अतिअंत** (दे०) (संज्ञा, स्त्री० **अत्यंतता**)। (वि०, सं० **आत्यंतिक**)—"आत्यंतिकं व्याधिहरं जनानां"।—**गामी**-(वि०) शीघ्रगामी, अधिक चलने वाला, **द्रुतगामी**।—**वासी**-(पु०) गुरु के साथ सदैव रहने वाला छात्र। नैष्ठिक ब्रह्मचारी। (अ०) **पूर्णतया**, सम्यक् प्रकारेण, सब भाँति से, सोलहो आने।

अत्यन्ताभाव—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अति+अन्त+अभाव] किसी वस्तु का बिलकुल अभाव, सत्ता की नितान्त शून्यता। पाँच प्रकार के अभावों में से एक, तीनों कालों में असम्भावना, बिलकुल कमी, नितांत नाश, **अत्यभाव**।

अत्यन्तिक—(वि०, सं०) समीपी, निकटवर्ती, बहुत घूमनवाला।

अत्यम्ल—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अति+अम्ल] इमली। (वि०) बहुत खट्टा, अति खट्टा।

अत्यय—(संज्ञा, पु० सं०) मृत्यु, नाश। दंड, सजा। हद से बाहर जाना। कष्ट। दोष, राजाज्ञा का उल्लंघन, विनाश, अपराध, अतिक्रमण, दुख, **अत्यभाव**।

अत्यर्थ—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) विस्तार, आधिक्य।

अत्यष्टि—(संज्ञा. पु० यौ० सं०) १७ वर्णों के वृत्तों की संज्ञा, अष्टादशवर्णवृत्त (पिंगल)।

अत्यागणन—(संज्ञा, पु० वि० यौ० सं०) अधिक आंकने की क्रिया। [ओवर इस्टीमेट]

अत्याचार—(संज्ञा, पु० यौ० सं०]) आचार का अतिक्रमण, अन्याय, जुल्म, दुराचार, पाप. पाखंड, ढोंग, आडम्बर, दौरात्म्य, अनीति, अनाचार, निषिद्धाचरण।

अत्याचारी—(वि०, यौ० सं०) अन्यायी, पाखंडी, ढोंगी। (संज्ञा, स्त्री० **अत्याचारिता**।)

अत्यासक्ति—(संज्ञा,स्त्री० यौ० सं०) प्रबल आसक्ति। [मेनिया]

अत्याज्य—(वि०, सं०) न छोड़ने के योग्य, जो न छोड़ा जा सके।

अत्यावश्यक—(वि०, यौ० स०) अति प्रयोजनीय, बहुत जरूरी। (संज्ञा, स्त्री० **अत्यावश्यकता**।)

अत्युक्त—(वि०, यौ०) [सं० अति+उक्त] बहुत बढ़ा चढ़ाकर कहा हुआ।

अत्युक्ता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) बारह अक्षरों का एक चतुष्पाद छंद (पिं०)। [अत्युकथा]

अत्युक्ति—(संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ सं॰) बढ़ा-चढ़ा कर किया गया वर्णन। एक प्रकार का अलंकार जिसमें उदारता, शूरता आदि गुणों का अधिक, विचित्र और अतथ्य वर्णन किया जाता है।

अत्युज्वला—(वि॰, यौ॰) बहुत उज्वल, निर्मल। "अत्युज्वला पहन तारक मुक्त-माला"—[प्रि॰ प्र॰]।

अत्युत्कंठा—(संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ सं॰) अत्यन्त अधिक चिन्ता, मनस्ताप, अति अभिलाषा।

अत्युत्कट—(वि॰, यौ॰ सं॰) अति कठिन, तीव्र।

अत्युत्कर्ष—(संज्ञा, पु॰ यौ॰ सं॰) अभ्युदय, वृद्धि।

अत्युत्कृष्ट—(वि॰, यौ॰ सं॰) अत्युत्तम, श्रेष्ठ।

अत्युत्तम—(वि॰, यौ॰ सं॰) बहुत अच्छा, श्रेष्ठ। "प्रबन्ध अत्युत्तम था नरेश का"—[मधुपुरी]

अत्युत्तर—(संज्ञा, पु॰ यौ॰ सं॰) सिद्धान्त, मीमांसा का निर्धारण, पाश्चात्य।

अत्र—(क्रि॰ वि॰, सं॰) यहाँ, इस जगह। (**संज्ञा**, पु॰ दे॰) अस्त्र का अपभ्रंश। "चले अत्र लै कृष्ण मुरारी"।

अत्रक—(वि॰, सं॰) यहाँ का, इस लोक का, ऐहिक, लौकिक, सांसारिक।

अत्रत्य—(अ॰, सं॰) यहीं का, इसी स्थान का।

अत्रप—(वि॰, सं॰) निर्लज्ज, बेशर्म।

अत्रभवती—(संज्ञा, स्त्री॰ सं॰) पूज्या, श्लाघ्या, माननीया।

अत्रभवान्—(संज्ञा, पु॰ सं॰) माननीय, पूज्य, श्रेष्ठ, श्लाघ्य [नाटक में]।

अत्रस्थ—(संज्ञा, पु॰ सं॰) इसी स्थान का निवासी, इसी जगह पर रहने वाला।

अत्रि—(संज्ञा, पु॰ सं॰) ब्रह्मा के पुत्र, जो सप्तर्षियों में गिने जाते हैं। कर्दम प्रजापति की कन्या अनसुया इन्हें व्याही थी। महर्षि दुर्वासा, दत्तात्रेय और चन्द्र इनके पुत्र हैं। मनु के दस प्रजापति पुत्रों में से एक ये भी हैं। सप्तर्षि-मंडल का एक तारा।—**जात**—(संज्ञा, पु॰) चन्द्र, दिग्गज, नेत्रज, नेत्रभू, निशाकर, सुधांशु, **अत्र्यात्मज**।

अत्रैगुण्य—(संज्ञा, पु॰ सं॰) सत, रज, तम, तीनों गुणों का अभाव।

अथ—(अव्य॰, सं॰) ग्रन्थारम्भ में प्रयुक्त होने वाला शब्द, अनन्तर, प्रश्न, अधिकार, संशय, अकल्प, समुच्चय; पश्चात, तदनन्तर, अब, तदुपरि, अनन्तर। "**अथ समुत्तरमुत्तर कोसलानाम्**" —[रघु॰]। **मु॰—अथ से इति तक**—आदि से अंत तक।

अथऊ§—(संज्ञा, पु॰) [क्रि॰ अथवना] जैनियों का सूर्यास्त के पूर्व भोजन।

अथक—(वि॰) [अ+थक—थकना क्रि॰] जो न थके, अश्रान्त, धीर, अक्लान्त।

अथकचा—(संज्ञा, पु॰ दे॰) बेठन, वेष्टन। लपटन का वस्त्र।

अथच—(अव्य॰, सं॰) संयोजक अव्यय, और, और भी।

अथना*—(क्रि॰, अ॰ दे॰) [सं॰ अस्त] अस्त होना, डूबना, अस्तमित होना, बूड़ना, नष्ट होना, मरना, **अथवना**।

अथमना§—(संज्ञा, पु॰ दे॰) [सं॰ अस्तमन] पश्चिम दिशा, उगमना का उलटा।

अथरा—(संज्ञा, पु॰) [सं॰ स्थाल] मिट्टी का खुले मुँह वाला चौड़ा बरतन, नाँद। (**स्त्री॰ अथरी**)।

अथर्व—(संज्ञा, पु॰ सं॰) एक वेद का नाम, चौथा वेद, इसके मन्त्र-द्रष्टा या ऋषि भृगु तथा अंगिरा गोत्र वाले थे। यह वेद ब्रह्मा के उत्तर वाले मुख से निकला है, इसमें ९ शाखा ५ कल्प और २० कांड हैं, इसका प्रधान ब्राह्मण गोपथ है, इसके सम्बन्धी उपनिषद् ३१ या ५८ हैं, इसमें प्रायः अभिचार-प्रयोगों का वर्णन है।—**शिख**—(पु॰) एक उपनिषद्।—**शिखामणि**—(पु॰) एक उपनिषद्।—**शिर**—(पु॰) अथर्ववेद का ७ वाँ उपनिषद्।—**शिरा**—(पु॰) ब्रह्मा का ज्येष्ठ पुत्र, जिन्हें ब्रह्मा जी ने ब्रह्म-विद्या सिखलाई थी और जिन्होंने सर्वप्रथम अग्नि उत्पन्न कर आर्य जाति में यज्ञ का प्रचार किया था।

अथर्वण—(संज्ञा, पु॰ सं॰) अथर्ववेद। शिव, महादेव। [अथर्वन दे॰]

अथर्वणी—[संज्ञा, पु॰ सं॰] कर्मकांडी, यज्ञ कराने-वाला पुरोहित, अथर्व वेदज्ञ ब्राह्मण, [**अथर्वनी** दे॰।]

अथल—(संज्ञा, पु॰ दे॰) लगान लेकर दूसरे को जोतने-बोने को दी गई भूमि। [सं॰ स्थल, अस्थल] स्थान, बुरा स्थान।

अथवना—(क्रि॰, अ॰ दे॰) [सं॰ अस्तमन] सूर्य चन्द्रादि का अस्त होना, डूबना, लुप्त होना, चला जाना, तिरोहित होना। "उदित सदा अथइहि कबहूँ ना"—[रामा॰।]

अथवा—(अव्य॰, सं॰) एक वियोजक अव्यय। पक्षांतर या प्रकरण में, किम्बा, जहाँ कई शब्दों या पदों में से किसी एक का ग्रहण करना अभीष्ट होता है वहाँ इसका प्रयोग करते है, वा, या, कै [ब्र॰]।

अथाई—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० स्थायी] बैठने की जगह, बैठक, चौबारा। पंचायत करने का स्थान। घर के सामने का चबूतरा। मंडली, सभा, जमाव। "हाट बाट, घर गली अथाई" [रामा०।] "जनु उडगण मंडल वारिदवर नव ग्रह रची अथाई"—विना०। (वि०, दे०) [सं० अ+स्थायी, अस्थायी] अस्थायी, जो स्थायी न हो।

अथान—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० स्थाणु] अचर, [हिं० अ+थान—स्थान] बुरी जगह, स्थान, अ० क्रि० अस्त होना।

अथाना*—(क्रि० अ० दे०) अथवना, डूबना, थाह लेना, ढूँढना। (क्रि०, स०) थाह लेना। (संज्ञा, पु० दे०) अचार, खटाई। (वि०, दे०) बिना स्थान, बे-ठिकाना।

अथावत—(वि०) [हिं० अथवना] डूबा हुआ, डूबते हुए। (प्रेरणा० क्रि०—**अथावना**।)

अथाह—(वि०) [दे०, हिं० अ+थाह] जिसकी थाह न हो, बहुत गहरा। गम्भीर, अपरिमित, गूढ़, अगाध। बहुत अधिक। (संज्ञा, पु०) गहराई, जलाशय, समुद्र।

अथिर—(वि०, दे०) [सं० अस्थिर] अस्थिर, चंचल, क्षणस्थायी।

अथीर—(वि०, दे०) [सं० स्थिर] जो थिर अथवा स्थायी न हो। अशान्त [क्रि० थिराना]।

अथूल—(वि०, दे०) [सं० स्थूल, अस्थूल] स्थूल, या जो स्थूल न हो।

अथोर*—(वि०) [हिं० अ+थोर] थोड़ा नहीं, अधिक। (स्त्री० अथोरी)। [वि० दे० **अथोरा**]

अदंक*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० आतङ्क] डर, भय, आतङ्क।

अदंग—(वि०, दे०) [सं० अदग्ध] बेदाग, शुद्ध, निर्दोष, अछूता, अस्पृष्ट, साफ़, निरपराध, अदाग, अदागी। [अदग्ग दे०]

अदंड—(वि०, सं०) जो दंड के योग्य न हो, जिस पर कर या महसूल न लगे। निर्भय, स्वेच्छाचार उद्दंड, बली। [**अडंड** दे०] (संज्ञा, पु०) बिना मालगुजारी की मुआफ़ी भूमि। (वि०) [अ+दंड–डंडा] दंड या डंड के बिना।

अदंडनीय—(वि०, सं०) जो दंड पाने के योग्य न हो।

अदंडमान—(वि०, सं०) दंड के अयोग्य, दंड से मुक्त, जो दंडित न हो। सदाचारी।

अदंड्य—(वि०, सं०) जिसे दंड न दिया जा सके, अदंडनीय।

अदंत—(वि०, सं०) दंत-विहीन, जिसके दाँत न हों। बहुत थोड़े दिनों का, दूधमुख, दुधमुहा।

अदंद—(वि०, दे०) [सं० अद्वन्द प्रा० अद्दुन्द] द्वंद्व-रहित, निर्द्वन्द्व, बाधा-रहित, शांत, निश्चित, बेजोड़, अद्वितीय। (संज्ञा, स्त्री० अदंदता)

अदंभ—(वि०, सं०) दंभ-रहित, पाखंडविहीन, सच्चा, निश्छल, स्वाभाविक, प्राकृतिक, स्वच्छ, शुद्ध, निष्कपट। (संज्ञा, पु०) शिव, महादेव।

अदंश—(वि०, सं०) जो डसा न गया हो, बिना काटा हुआ, घाव-रहित, अद्वेष।

अदक्ष—(वि०, सं०) अचतुर, अपटु।

अदग्ध—(वि०) [सं० अ+दग्ध] न जला हुआ, जो दुखी न हो, सुखी, (**अदाध** दे०।)

अदत्त—(वि०, सं०) न दिया हुआ, असमर्पित, अप्रतिपादित। (संज्ञा, पु०) वह वस्तु जिसके दिये जाने पर भी लेनवाले को लेने और रखने का अधिकार न हो (स्मृति)। पूर्वा (वि०, स्त्री०) कन्या, जिसकी मंगनी न हुई हो।

अदत्ता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अविवाहिता कन्या, कुमारी, अनूढ़ा।

अदद—(संज्ञा, स्त्री० अ०) संख्या, गिनती, संख्या का चिन्ह या संकेत, जैसे ३ अदद। किता। [**अदत** दे०]

अदन—(संज्ञा, पु० अ०) अरब के किनारे पर एक बन्दरगाह, नगर, जहाँ ईश्वर ने आदम को रक्खा था, यह स्वर्ग का उपवन भी माना जाता है (पैगम्बरी मतानुयायियों के अनुसार)। (संज्ञा, पु०) [सं० अद्–भक्षण] भक्षण, भोजन, जेवनार, आहार, खाना।

अदना—(वि०, अ०) तुच्छ, छोटा, क्षुद्र, मामूली, नीच। (यौ० **अदना-आला**।)

अदनीय—(वि०, सं०) भक्षणीय, भोज्य, खाद्य वस्तु।

अदब—(संज्ञा, पु० अ०) शिष्टाचार, क़ायदा, आदर-सम्मान, गुरुजनों का सत्कार, लिहाज। साहित्य। (वि०)—बाअदब, बेअदब। "जिससे मिलती थी कभी दिल में बुजुर्गों के जगह, वह **अदब** बच्चो के दिल से आज कल जाता रहा।"—अक०।

अदबदाकर—(क्रि०, वि० दे०) [सं० अधि+वद] टेक बाँध कर, बलात, हठात, अवश्य, जरूर, [**अद-बदाय** दे०।]

अदभ्र—(वि०, सं०) बहुत, अधिक, अपार, अनन्त। (संज्ञा, स्त्री० **अदभ्रता**।)

अदम—(वि०, सं०) दमन-रहित, इंद्रियनिग्रह-शून्य। (संज्ञा, पु० अ०) अनस्तित्व, अभाव, परलोक।—

पैरवी–(स्त्री०) किसी मुक़दमे के पक्ष मे आवश्यक कार्यवाही का अभाव।—**सबूत**–(पु०) प्रमाणाभाव, सबूत का न होना।—**हाज़िरी**–(स्त्री०) गैरहाजिरी, अनुपस्थिति।

अदमनीय–(वि०, सं०) [सं० अ+दमनीय] दमन न करने योग्य।

अदम्य—(वि०, सं०) जिसका दमन न हो सके, प्रचंड, प्रबल।

अदय—(वि०, सं०) दया-रहित, निर्दय, निष्ठुर। (विलो०-**सदय**।)

अदयनीय—(वि०, सं०) जो दयनीय न हो, दया के योग्य जो न हो।

अदरक—(संज्ञा, पु०) [सं० आर्द्रक, फा० अदरक] एक प्रकार का पौधा, जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ मसाले और दवा के काम में आती है।

अदरकी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० आर्द्रक] सोंठौरा, सोंठ और गुड़ की टिकिया। (वि०) [हिं० अ+दरकना] जो दरकी या चिटकी न हो।

अदरना—(क्रि०, अ० दे०) उठ जाना, व्यवहार से परे हो जाना। जैसे, 'यह रीति **अदरिगै**'। अप्रचलित हो जाना। (प्रेरणा० रूप) अदराना, अदरवाना।

अदरसा—(संज्ञा, पु० दे०) अनरसा, एक प्रकार का पकवान, पक्वान्न, या मिठाई।

अदरा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० आर्द्रा] एक नक्षत्र। [**आद्दरा, अद्रा**।]

अदराना—(क्रि०, अ०) [सं० आदर] आदर पाकर शेखी में चढ़ना, इतराना। (क्रि०, स०) आदर देकर घमंडी बनाना।

अदर्शन—(संज्ञा, पु० सं०) अविद्यमानता, असाक्षात्कार लोप, विनाश, दर्शनाभाव।

अदर्शनीय—(वि०, सं०) जो दर्शन या देखने के योग्य न हो, बुरा, कुरूप, भद्दा।

अदल—(संज्ञा, पु०) निर्दल, पक्षपात शून्य, न्याय, इंसाफ। [सं० अद+ल] सेना-रहित पत्रविहीन।

अदल-बदल—(संज्ञा, पु० अनु०) उलट-पुलट, हेरफेर, परिवर्तन।

अदला—(स्त्री०) घृतकुमारी नामक एक पौधा।

अदला-बदला—(संज्ञा, पु० दे०) परिवर्तन।

अदली*—(संज्ञा, पु० अ०) न्यायी। (वि०) [हिं० अ+दल+ई] बिना पत्ते का।

अदवान-अदवायन—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अधः—नीचे+हिं० वान—रस्सी] खाट या चारपाई की बिनावट को खींचे रख कर कड़ा रखने के लिए पैताने पर छेदों में पड़ी हुई रस्सी। [**ओरचाइन** दे० **अदवाइन**] (प्र०) ओनचन [प्रान्ती०]।

अदवार—(संज्ञा, पु० फ़ा०) एक कार्य-नाशक योग [ज्यो०] दे० विश्वास, एतबार।

अदहन—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+दहन] दाल-चावल पकाने के लिए आग पर चढ़ा कर गरम किया हुआ पानी। [सं० अ+दहन] न जलाने का भाव। (वि० **अदह्य**।)

अदाँत—(वि०, दे०) [सं० अदंत] जिसके दाँत न हों, (पशुओं के लिए) जिसके दाँत न आये हो।

अदांत—(वि०, सं०) जो इंद्रियों का दमन न कर सके, विषयासक्त। उद्दंड, अक्खड।

अदाँव—(संज्ञा, पु० दे०) [हिं० अ+दाँव] बुरी दाँव-पेंच, असमंजस, कठिनाई।

अदा—(वि०, अ०) चुकता, बेबाक। (संज्ञा, स्त्री०) हाव-भाव, नखरा, ढंग, तर्ज। **मु० करना**—पालना, पूरा करना, व्यक्त करना, चुकता करना। **दिखाना**—नाज-नखरा करना।

अदाई*—(वि०, दे०) [अ० अदा] ढंगी, चालबाज, चालाक। सो तजि कहत और को औरै अलि! तुम बड़े अदाई"—सूबे।

अदाग*—(वि०) [हिं० अ+दाग अ०] बेदाग, साफ, निर्दोष, पवित्र।

अदागी*§—(वि०, दे०) निष्कलंक, पुनीत, बेदाग।

अदाता (**अदात**)—(संज्ञा, पु० सं०) कृपण, कंजूस। "पूरब जनम अदात जानिकै"—सूबे।

अदान*—(वि०) [सं० अ+दाना फ़ा०] अनजान, नादान, नासमझ। [हिं० अ+दान] दान-रहित, कंजूस। [अ+दान] (वि०) **अदानी**—कृपण।

अदायगी—(संज्ञा, स्त्री० अ०) बेबाक़ी, चुक्ता।

अदायाँ*—(वि०, दे०) [हिं० अ+दायाँ] वाम, प्रतिकूल, बुरा।

अदाया—(वि०, दे०) [हिं० अ+दया] दयाहीनता कठोरता, निर्दयता, निष्ठुरता। 'भय, अविवेक, अशौच अदाया"—[रामा०।]

अदारा—(वि०) [सं० अ+दारा] स्त्रीरहित।

अदालत—(संज्ञा, स्त्री० अ०) न्यायालय, कचहरी। न्यायाधीश।—**ख़फ़ीफ़ा**–(स्त्री०) छोटे मुकदमों की दीवानी कचहरी।—**दीवानी**–(स्त्री०) संपत्ति या स्वत्व सम्बन्धी मामलों के निर्णय की कचहरी।—**माल**–(स्त्री०) लगान या मालगुजारी-सम्बन्धी मामलों

का निर्णय करने वाली कचहरी। (वि० **अदालती**)—(संज्ञा, स्त्री०) [अदा+लत] हाव-भाव दिखाने की टेव या आदतें।

अदालती—(वि०, अ०) अदालत-सम्बन्धी। अदालत करनेवाला, मुकद्दमा लड़नेवाला, मुकदमेबाज।

अदावत—(संज्ञा, स्त्री० अ०) शत्रुता, दुश्मनी, बैर, विरोध।

अदावती—(वि०) [अ० अदावत] अदावत रखनेवाला, विरोधी, द्वेषी। शत्रुतापूर्ण, द्वेषमूलक, विरोधजन्य, रिपु अथवा अरि के भाव से युक्त।

अदाह*—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० अदा] हाव-भाव नखरा। (संज्ञा, पु०) [सं० अ+दाह] दाह या जलन रहित।

अदित—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० आदित्य] सूर्य, रविवार। आदित्य, रविवार। '**अदित** लूक पच्छिउँ दिसि राहू, बीफै दखिन **लंक** दिसि दाहू'—[पद०]

अदिति*—(संज्ञा, पु० सं०) प्रकृति, पृथ्वी, दक्षप्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी जो देवताओं की माता है। 'कश्यप **अदिति** महा तप कीन्हा'—[रामा०] इन्हीं से वामन भगवान भी उत्पन्न हुए थे, नरकासुरबध पर कृष्ण को प्राप्त होने वाले कुंडल इन्हीं को समर्पित किये गये थे। अलोक, अंतरिक्ष। माता, वाणी।—**ज**-(सं०) सूर्य, देवता।—**नंदन**-(पु०) देवता, सुर, सूर्य, अदिति का आत्मज। —**सूनु, सुत**-(पु०) सुर, सूर्य, **आदितेय, आदित्य**।

अदिन—(संज्ञा, पु० सं०) बुरा दिन, सङ्कटकाल, अभाग्य, बुरा समय। 'दोष न काहू कर कछू, यह सब अदिन हमार''।

अदिव्य—(वि०, सं०) लौकिक, साधारण, बुरा। —**नायक**-(पु०) मनुष्य-नायक। जो नायक देवता न हो, बुरा नायक। साहित्य। (स्त्री० **नायिका**।)

अदिव्या—(संज्ञा, स्त्री०) लौकिक नारी।

अदिष्ट*—(वि०) [सं० अदृष्ट], (संज्ञा, पु०) अदृष्ट भाग्य, अलख।

अदिष्टी*—(वि०, दे०) [सं० अ+दृष्टि] अदूरदर्शी, मूर्ख, अभागा, बदकिस्मत। बुरी दृष्टि वाला, दृष्टि-हीन।

अदीक्षित—(वि०, सं०) जिसे दीक्षा नहीं प्राप्त हो।

अदीठ*—(वि०, दे०) [सं० अदृष्ट] बिना देखा हुआ, गुप्त, छिपा। दृष्टि-विहीन, **अदीठा**।

अदीठि—(संज्ञा, स्त्री०) [दे०, सं० अ+दृष्टि] बुरी दृष्टि, दृष्टि का अभाव।

अदीन—(वि०, सं०) दीनता-रहित, उग्र, प्रचंड, निडर अनम्र, ऊँची तबियत का, उदार। (वि०) [अ+दीन अ०] मजहब-विहीन, धर्म-रहित, बेदीन। (संज्ञा, स्त्री० **अदैन्य**।)

अदीब—(संज्ञा, पु० अ०) साहित्य का जानने वाला, साहित्यज्ञ।

अदीयमान—(वि०, सं०) जो न दिया जाये, जिसके दिये जाने की संभावना न हो।

अदीर—(वि०, दे०) सूक्ष्म, महीन, छोटा।

अदीह—(वि०, दे०) [सं० अदीर्घ] जो दीर्घ या बढ़ा न हो, छोटा, लघु, अल्प, ह्रस्व, खर्व।

अदुतिय—(वि०, दे०) [सं० अद्वितीय] बेजोड़, अद्वितीय, अप्रतिम।

अदू—(संज्ञा, पु० अ०) शत्रु, दुश्मन।

अदूखा—(वि०, दे०) अदुखित।

अदूजा—(वि०, दे०) [सं० अद्वितीय, हिं० अ+दूजा] बेजोड़, दूसरा नहीं। (स्त्री० अदूजी) 'देव' अब आस पूजी तू जो मैं **अदूजी** बसी, दूजी तिया भूलै हू न देखत गोपाल हैं,—**देव**।

अदूर—(क्रि० वि०) [सं० अ+दूर] पास, समीप। —**दर्शिता**-(स्त्री०) नासमझी।—**दर्शी**-(वि०) जो दूर तक न सोचे, स्थूल-बुद्धि, अनग्रसोची, जो दूरंदेश न हो, नासमझ, निर्बुद्ध।

अदूषण—(वि०, सं०) निर्दोष, दूषण या दोष-रहित, शुद्ध, निष्पाप, [**अदूखन**]। (वि० **अदूषणीय**)।

अदूषित—(वि०, सं०) निर्दोष, शुद्ध, स्वच्छ. [**अदूखित** दे०]।

अदृढ़—(वि०) दुर्बल, स्थिरता-रहित, चपल। "अदृढ़ता सब गौरव नाशिनी"—हरिऔध।

अदृप्त—(वि०) गर्वहीन, नम्र। "अदृप्तता में महिमा मिली सदा"—हरिऔध।

अदृश्य—(वि०, सं०) जो दिखाई न दे, अलख, इन्द्रियों से जिसका ज्ञान न हो सके, अगोचर, लुप्त, गायब, अलक्षित। "सब अदृश्य हुए सुख-साज वे"—हरिऔध।

अदृष्ट—(वि०, सं०) न देखा हुआ, अन्तर्द्धान, लुप्त, अगोचर, अलक्ष। (संज्ञा, पु०) भाग्य, किस्मत। पूर्व जन्म मे किये गये पाप और पुण्य, जिनसे इस जन्म के सुख-दुख उत्पन्न होते हैं। विषैला पदार्थ अथवा कीड़ा। परोक्षसत्ता, दैवा उ०+ इ अग्नि और जल आदि से उत्पन्न होने वाली आपत्ति प्रकृति-जन्य—दुर्भाग्य उत्पात—**पुरुष**-(पु०) किसी

कार्य में स्वयमेव कूद पड़ने वाला, बिना बनाये बनने वाला—**पूर्व**-(वि०) जो पहिले न देखा गया हो, अद्भुत, विलक्षण धर्माधर्म की संज्ञा नैयायिक अदृष्ट आत्मा का धर्मवैशेषिक बुद्धि धर्म।—**पूर्वफल**-(पु०) पूर्व कृत कर्मों के फल, सुख, दुख आदि, अज्ञात परिणाम।—**वाद**-(पु०) परलोकादि परोक्ष बातों का निरूपण करने वाला सिद्धान्त, **भाग्यवाद—वादी**-(पु०) अदृष्टवाद का मानने वाला। **विधि-विधानवादी।**

अदृष्टा—(संज्ञा, पु० सं०) जो देख न सके।

अदृष्टार्थ—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) वह शब्दप्रमाण जिसके वाच्य या अर्थ का इस संसार में साक्षात न हो सके, जैसे स्वर्ग, ईश्वर। "यही इष्ट था क्या तुझे है अदृष्ट"—मैथिली०।

अदृष्टि—(स्त्री०) दृष्टि का अभाव, दिखाई न पड़ने की स्थिति, क्रोध सूचक दृष्टि। ["अदृष्टि यों ही यदि आप की रही"—हरिऔध।

अदेख*—(वि०, दे० सं०) [अ+देखना] जो देखा न गया हो, जो न देखा जाय, जो न देखे अथवा न समझे। छिपा हुआ, अदेख, अदृश्य, गुप्त, अदृष्ट। 'ऊधौ तुम देखि हू अदेख रहियो करौ' —रत्ना०।

अदेखी—(वि०, दे० हि०) [अ+देखी] न देखी गई। जो न देख सके, डाही, द्वेषी, ईर्षालु। [बहु० व०] अदेखे, अदेखो [ब्र०]।

अदेय—(वि०, सं०) न देने के योग्य, जो न दिया जा सके '**अदेय**मासीत् त्रयमेव भूपतेः'—[रघु०]। किसी का न्यास या धरोहर। 'तुम कहँ कछु अदेय जग नाहीं"—तुल०। "होगा तुझे अदेय"—मैथिली०। —**दान**-(पु०) अयोग्य पात्र को दिया गया दान।

अदेव—(संज्ञा, पु० सं०) असुर, राक्षस, दैत्य। (स्त्री० **अदेवी**)

अदेवक—(वि०, सं०) जो देवता के लिए न हो।

अदेवता—(संज्ञा, पु० सं०) वह जो देवता न हो, राक्षस, दैत्य। (संज्ञा, पु०) जैनियों के मतानुसार तीर्थंकरों अथवा जैन देवताओं से भिन्न अन्य देवता। (वि०) जो देवता से संबंधित न हो। अधार्मिक, पवित्रता-रहित।

अदेश—(पु०) अयोग्य स्थान, अनुपयुक्त देश, निकृष्ट अथवा निंदनीय देश। "निवास के योग्य नहीं अदेश यह"—गिरीश।

अदेस*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० आदेश] आज्ञा, आदेश। प्रणाम, दंडवत साधु। 'औ महेस कहँ करौं **अदेसू**'—[पद]। **अँदेस, अँदेशा**, अंदेशा, आशंका। [हि० अ+देश] विदेश, जो अपना देश न हो, परदेश।

अदेह—(वि०, सं०) बिना देह का, शरीर-रहित। (संज्ञा, पु०) कामदेव, अनंग, अतनु, विदेह।

अदैन्य—(वि०, सं०) दीनता की भावना से रहित। 'अदैन्य है भूषण धीर-वीर का'—हरिऔध।

अदोख*—(वि०, दे०) अदोष, दोष-हीन।

अदोखिल*(वि०, दे०) [सं० अदोष] निर्दोष। 'सुते ऐंचि पिय आप त्यों, करी अदोखिल आय'—विहारी।

अदोखी—(वि०, दे०,) [सं०अदोषी] निर्दोषी।

अदोष*(वि०, सं०) निर्दोष, निष्कलंक, बेऐब, निरपराध, निर्विकार। (दे०) **अदोस**। (विलो०) [**सदोष**]।

अदौरी§—(संज्ञा, स्त्री० हि०) [उड़द+सं० बटी, हि० बरी] उर्द की दाल को सुखाकर बनाई हुई बरी, कुम्हड़ौरी, मिथौरी।

अद्ध*—(वि०, दे०) [सं०:अर्द्ध] आधा।

अद्धरज—(संज्ञा, पु० दे०, सं०) [अध्वर्यु] एक प्रकार का यज्ञ कराने वाला पुरोहित, होम-कर्त्ता, [**अधुरज**] (दे०)।

अद्धा—(संज्ञा, पु० दे०) [अर्द्ध] किसी वस्तु का आधा मान। पूरी बोतल की आधी नापवाली बोतल। (स्त्री०) **अद्धी**।

अद्धी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) [अर्द्ध] दमड़ी का आधा. एक पैसे का सोलहवाँ भाग। एक बारीक और चिकना कपड़ा, तनजेब।

अद्भुत—(वि०, सं०) आश्चर्यजनक, विलक्षण, विचित्र, अनोखा, अनूठा। (संज्ञा, पु०) काव्य के नव रसों में से एक, जिसमें विस्मय की अभिव्यक्ति की जाती है। (काव्य०)।

अद्भुतालय—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अद्भुत+आलय] आश्चर्यजनक वस्तुओं का घर, अजायबघर। **अद्भुतायण, अद्भुतावास, अद्भुतागार।**

अद्भुतोपमा—(संज्ञा, स्त्री० यौ०) [सं० अद्भुत +उपमा] उपमालंकार का एक भेद, जिसमे उपमेय के उन गुणों को दिखलाया जाता है जिनका होना उपमान में सम्भव नहीं होता।

अद्मनि—(संज्ञा, पु० सं०) अग्नि।

अद्मर—(वि०, सं०) पेटार्थी, लोभी, लालची, पेटू, स्वार्थी।

अद्य—(क्रि०, वि० सं०) अब, आज, अभी।

अद्यतन—(वि०, सं०) अद्यजात, आज का। गत अर्द्धरात्रि और आनेवाली अर्द्धरात्रि के बीच की अवधि से सम्बन्धित। (संज्ञा, पु०) गत अर्द्धरात्रि और आनेवाली अर्द्धरात्रि के बीच का समय। (विलो०) (**अनद्यतन**)।

अद्यापि—(क्रि० वि०, यौ०) [सं० अद्य+अपि] आज भी, अभी तक, आज तक।

अद्यावधि—(क्रि० वि०, यौ०) [सं० अद्य+अवधि] अब तक, आज तक, समय परिच्छेदार्थक अव्यय।

अद्याश्व—(संज्ञा, पु०) आज का और कल का दिन। 'अद्याश्व पीड़कर मानिए महा'—हरिऔध।

अद्रक—(संज्ञा, स्त्री० सं०) आर्द्रक, आदी, कच्ची सोंठ, अदरख।

अद्रव्य—(संज्ञा, पु० सं०) सत्ताहीन, अवस्तु, असत्, शून्य, अभाव। (वि०) द्रव्य या धनरहित, दरिद्र।

अद्रा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० आर्द्रा] एक नक्षत्र।

अद्रि—(संज्ञा, पु० सं०) पर्वत, पहाड़, अचल। वृक्ष। शैल। सूर्य। परिमाण-विशेष। ७ की संख्या।—**कील**-(पु०) विष्कंभ नामक पहाड़।—**कीला**-(स्त्री०) भूमि, पृथ्वी, मेदिनी, अवनि, रसा।—**ज**-(पु०) शिलाजीत, गेरू। पर्वतजात वस्तु,—**जात**-(वि०) पहाड़ से उत्पन्न।—**जा**-(स्त्री०) अद्रितनया, पार्वती। पहाड़ पर उत्पन्न होने वाली लता गंगा **शैलजा**, **अद्रिजाता**।—**तनया**-(स्त्री०) पार्वती। गंगा।—**नंदिनी**,—**सुता**, शैलजा, २३ वर्णों का एक वृत्त (पिं०)।—**पति**-(पु०) अद्रिराज, पर्वतराज, हिमालय, नगराज।—**वह्नि**-(स्त्री०) पर्वतोत्पन्न अग्नि, ज्वालामुखी की आग।—**शृङ्ग**-(पु०) पर्वत के ऊपर का भाग, चोटी, शैल-शिखर।

अद्रीन्द्र—(संज्ञा, सं०) पहाड़ों का राजा, हिमालय। "अद्रीन्द्र मानो कह व्योम से रहा"—हरिऔध।

अद्रोह—(पु०) द्वेष-शून्यता। 'अद्रोह मे ही शुभशान्ति राजती'—हरिऔध।

अद्रोही—(वि०) जो द्रोही न हो, जिसमे द्रोह-भावना न हो। 'अद्रोहियों से वह थी पुरी भरी' —हरिऔध।

अद्वन्द—(वि०) बैर भाव से रहित। 'अद्वन्दता-भाव दिखा समस्त में'—हरिऔध।

अद्वितीय—(वि०, सं०) अकेला, एकाकी, जिसके समान दूसरा न हो, बेजोड़, अनुपम, प्रधान, मुख्य, विलक्षण, अतुल्य, अप्रतिम।

अद्वेष—(वि०, सं०) द्वेषशून्य, वैर-रहित। (पु०) द्वेषहीनता का भाव। 'अद्वेष से जो मन शुद्ध हो चला'—हरिऔध।

अद्वैत—(वि०, सं०) एकाकी, अकेला, अनुपम, बेजोड़, एक, द्वैतरहित, भेद-रहित, अद्वितीय। शंकराचार्य का मत जो वेदान्त के आधार पर है और जिसके अनुसार जीव और ब्रह्म में भेद नहीं, दोनों एक है, संसार मिथ्या है, ब्रह्म ही सत्य है। (संज्ञा पु०) ब्रह्म, ईश्वर। (संज्ञा, स्त्री०) **अद्वैतता**।—**वाद**-(पु०) एक दार्शनिक सिद्धान्त, जिसमें एक चैतन्य ब्रह्म की सत्ता को छोड़ कर और किसी भी वस्तु या तत्व की सत्ता नहीं मानी जाती और आत्मा और परमात्मा मे भी अभेद माना जाता है। इसे **ब्रह्मवाद** या **वेदान्तवाद** भी कहते हैं।—**वादी**-(पु०) अद्वैत मत का मानने वाला, वेदान्ती, एकेश्वर वादी, ब्रह्मवादी।

अधः—(अव्य०) नीचे, तले। (संज्ञा, स्त्री०) पैर के नीचे की दिशा। (पु०) तल, पाताल।—**कृत**-(वि०) नीचे किया हुआ, **अधोकृत**।—**क्षिप्त**-(वि०) अधस्त्यक्त, निंदित। (पु०) यायति त्रिशंकु।—**पतन**-(पु०) अवनति, अधःपात, दुर्दशा, दुर्गति, **अधोगति**, विनाश स्खलन।—**पात**-(पु०) नीचे स्खलन, दुर्दशा, अवनति, ध्वंस, विनाश, दुर्गति, अधोगति।—**स्तरण**-(पु०) कुशासन, तृणशय्या।—**शिरा**—(पु०) अधोमुख, सूर्यवंशीय त्रिशंकु राजा।

अध—(अव्य०, दे०)[सं० अधः] नीचा, तले, आधा। 'जाकौ अध ऊरध अधिक मुरझायो है'—रत्ना०। (वि०) [सं०अर्द्ध, प्राकृ० अद्ध] आधा-शब्द का सूक्ष्म रूप, यौगिक संज्ञाओं मे **आधाआध**। जैसे—अधकचरा, अधखुला। **आधे**—(क्रि० वि०) आधे-आधे।—**कचरा**-(वि०) [सं० अर्ध+कच्चा हिं०] अपरिपक्व, अधूरा, अपूर्ण, अकुशल, अदक्ष।—**कचरी**-(वि०) [सं० अर्ध + कचरना हिं०] अधूरी, आदि। आधा कूटा-पीसा, दरदरा, आधा कुचला हुआ।—**कच्चा**-(वि०) आधा कच्चा, अपरिपक्व।—**कछार**-(पु०) पहाड़ी हरी भरी उपजाऊ भूमि।—**कपारी**,—**कपाली**-(स्त्री०) [सं० अर्ध+कपाल—सिर] आधे सिर का दर्द, **आधाशीशी**। (दे०) [सं० अर्ध +शीश] सूर्यावर्त्त।—**करी**-(स्त्री०) [हिं० आधा+कर] मालगुजारी, महसूल या किराये की आधी रकम जो एक नियत समय पर अदा की जाय, किस्त।—**कहा**-(वि०) अस्पष्ट रूप में कहा हुआ, अर्धस्फुटित, आधा कहा हुआ, अर्धकथित।—**कही**,—(धि)**कही**-(वि०) आधी कही हुई।—**खाया**-

(वि०) आधा खाया हुआ, आधे पेट, जिसने पूरा नहीं खाया। **—खिला**-(वि०) आधा खिला हुआ, अर्धविकसित। (स्त्री० **अधखिली**) 'मधुप, अभी अधखिली कली है, परिमल नहीं, पराग नहीं।' अधखिले अंगों का मधुमास—पंत। **—खुला**-(वि०) आधा खुला हुआ, अर्धस्फुटित। (स्त्री० **अधखुली**)। 'अधखुले लोचन औ अधखुली पलकें'—पद्मा०। **—गति**-(स्त्री०) [दे०, सं० अधोगति] पतन, अधोगति, दुर्दशा, दुर्गति, अवनति। **—गम**-(स्त्री०) नीचे की इन्द्रियाँ, गुदा आदि। **—घट**ꣳ-(वि०) [हि० आधा+घटना] जिससे ठीक अर्थ न निकले, अटपट, कठिन। [यौ० अध—आधा+घट—घड़ा] आधा घड़ा। **—चरा**-(वि०) आधा चरा या खाया हुआ, अधखाया। **—जरा**-(वि०) आधा जला हुआ। **—पई**-(स्त्री०) [हि० आधा +पाव] एक सेर के आठवें भाग या पाव के आधे भाग की तौल या नाप, २ छटांक का बाट। **—फर**-(पु०) [सं० अधर] अधर, अंतरिक्ष, बीच। (क्रि० वि०) बीच में, [**अध पर** दे०] आधी दूर पर, बीच मे। **—बर**ꣳ-(पु०) [हि० आधा+बाट] आधा मार्ग, आधा रास्ता, बीच, मध्य मे, आधी दूर, **अधियर**। [**अधियार** दे०]। **—बुध**-(वि०) [सं० अर्ध+बुध] अध-शिक्षित, कम पढा, बालक, मंद बुद्धि। **—बैसू** *-(वि०) [सं० अर्ध+वयस] अधेड़, प्रौढ़, मध्यम अवस्था का। (पु०) अधेड व्यक्ति। (स्त्री०-**बैसी**)। **—मरा**-(वि०) [हि० आधा+मरा] आधा मरा हुआ, मृतप्राय, **अधमुआ** (दे०)। (स्त्री०-**मरी**) **—मुआ**-(वि०) अधमरा। (स्त्री०-**मुई**)— **मुख**-(पु०) [सं० अधोमुख] मुँह के बल, औंधा, उलटा, नीचे मुख किये। (स्त्री०-**मुखी**—नमितानना, अधोमुखी)—**सेरा, —सेरवा**-(पु०) दो पाव का मान, आधे सेर का बाट, अस्सेरा, (प्रा०)।

अधड़-अधड़ाꣳ—(वि०) [दे० सं० अधर] न ऊपर न नीचे, निराधार, ऊटपटांग, असंबद्ध, बेसिर-पैर। (स्त्री० **अधड़ी**—आधार-रहित।)

अधनꣳ—(वि०, पु०) [सं० अ+धन] निर्धन, कंगाल, दीन, धन-हीन, गरीब, दरिद्र, निर्धनी, निधन, **अधनी**।

अधनिया—(वि०, दे०)[हि० आध+आना] आध आने या दो पैसे का, एक ताँबे का सिक्का।

अधन्ना—(संज्ञा, पु० दे० यौ०) [हि० आधा+आना] आध आने का एक सिक्का, टका। (स्त्री० **अधन्नी**।)

अधम—(वि०, सं०) नीच, निकृष्ट, बुरा, पापी, दुष्ट, अपकृष्ट, निंदित। (संज्ञा, पु०) **अधम नायक** [काव्य] अशुभ ग्रहयोग।

अधमईꣳ—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि० अधम+ई], नीचता, तुच्छता, अधमता, [**अधमाई**]

अधमऋण-अधमर्ण—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) ऋणी, धर्ता, देनदार। बुरा ऋण।

अधमता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अधम का भाव, नीचता, खोटाई, खोटापन, तुच्छता।

अधमभृतक—(संज्ञा, पु० सं०) छोटा भृत्य, नीच नौकर, छोटा पहरेदार, कुली, मोटिया।

अधमर्ण—(संज्ञा पु० यौ० सं०) ऋणी।

अधमांग—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) नीचे का अंग, पैर, निकृष्ट अवयव।

अधमा—(संज्ञा स्त्री० सं०) नायक या नायिका को कड़ी या कटु बातें कह कर संदेशा पहुँचाने वाली दूती। प्रिय या हितकारी नायक के प्रति भी अहित या बुरा व्यवहार करनेवाली स्त्री या नायिका, (नायिका-भेद)।

अधमाईꣳ—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० अधम+आई-प्रत्य०] अधमता। 'पर निंदा सम नहिं अधमाई'—[रामा०।]

अधमाधम—(वि०, यौ० सं०) नीचातिनीच, अधमात्यधम। 'वैद्य-विद्याधमाधमा'।

अधर—(संज्ञा, पु० सं०) नीचे का ओठ, ओठ। (संज्ञा पु०) [हि० अ+धरना] बिना आधार का स्थान, निराधार, अंतरिक्ष। पाताल, अधस्तल। योनि, स्मरागार। (वि०) जो पकड़ में न आवे। [अ+धरना—पकड़ना] चंचल, नीच, बुरा। (क्रि० वि०) अंतरिक्ष में, बीच में, मध्य मे। 'गूढ़ कपट प्रिय वचन सुनि, तीय अधर बुधि रानि'—तुल०। 'अधर धरत हरि के परत'—विहारी। पद्म रागों से अधर मानो बन—मैथिली०। **—पान**-(पु०) ओष्ठ का चुम्बन। **—बुद्धि**-(वि०) नासमझ, अबूझ। **—बुधि** (दे०) 'तीय अधर बुधि रानि'—[रामा०] **—मधु**-(पु०) अधररस, अधरामृत। "प्रेयसी के अधरमधु में"—बच्चन०—**रस**-(पु०) अधरामृत, ओठों की मिठास, (अधरारस दे०) 'है मुरली अधरारस पीजै'—रसखान। "अधरों पर प्रवाल की मदिरा बनी मधुर अधरामृत"—पंत। **मु०—काटना**-बेबसी, लाचारी, निरुत्तरता का भाव प्रकट करना। "अधर ही काट कर बस रह गयी वह"—मैथिली०। **—में झूलना, पड़ना, लटकना**—अधूरा रहना, पूरा न होना, पशोपेश में पड़ना, दुविधा में

पड़ना। —में छोड़ना, डालना—बीच में या आधी दूर पर छोड़ना, मँझधार में डाल देना, पूरा साथ न देना। —का त्रिशंकु होना, करना या बनाना—मध्य मे अटक जाना, बीच में अटका देना, कहीं का न रखना। 'तैसे सक्ति दोन्हीं काटि आवति अधर मैं'।

अधरज—(संज्ञा पु० यौ० सं० अधर+रज) ओठों की ललाई, सुर्खी, ओठों पर की पान या मिस्सी की रेखा।

अधरधी—(वि०, सं०) तुच्छ बुद्धि।

अधरम*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अधर्म] अधर्म, पाप, दुष्कर्म। (वि०—**अधरमी**)।

अधरांबुधि—(पु० स०) अधर रूपी समुद्र। "तब कढे अधरांबुधि से कई" [प्रिय०]

अधरा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अधर] ओठ, अधोदिक्। (वि०) नीचा, अधीर, अंधा।

अधरात—(संज्ञा, स्त्री० यौ० दे०) [सं० अर्ध+रात्रि] आधी रात।

अधराधर—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) दोनों ओठ।

अधरामृत—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अधर+अमृत] बदनामृत, अधर-सुधा, ओठो का रस, 'पीवै सदा अधरामृत पै'—'सन०'।

अधरावलीय—(संज्ञा, पु० सं०) ओठ चबाने का काय।

अधरीकृत—(क्रि० वि०, सं०) **अधोकृत**, अपवादित, पराहत, तिरस्कृत, निन्दित।

अधरीण—(वि०, सं०) उपेक्षित, असम्मानित।

अधरीभूत—(वि०, सं०) विप्रकृत, अधरीकृत, पराहत, **अधोभूत, अधोकृत**।

अधरेद्य—(संज्ञा, पु० सं०) बीते हुए कल के पहले का दिन। "जगद्विजेता अधरेद्य आ गये"—हरिऔध।

अधरोत्तर—(वि०, यौ० सं०) ऊंचा-नीचा, अच्छा-बुरा, कम-ज्यादा। (क्रि० वि०) ऊंचे-नीचे।

अधरोष्ठ—(संज्ञा, पु० सं०) ओंठ का निचला तथा ऊपरी भाग। "मुख विकृत, अधरोष्ठ कंपित"—निराला।

अधर्म—(संज्ञा पु० सं०) धर्म विरुद्ध काय, कुकर्म, दुराचार, पाप, दुष्कर्म, अन्धेर, अन्याय, विधर्म, धर्मापराध, (**अधरम** दे०) पुराणानुसार ब्रह्मा की पीठ से इसकी उत्पत्ति हुई, इसके वाम भाग मे अलक्ष्मी या दरिद्रता है, जो इसी से व्याही गई है।

अधर्ममयी—(वि० स्त्री० सं०) अधर्म से युक्त। "इनके अतिरिक्त अधर्ममयी"—[मधुपुरी]

अधर्मरत—अनुचित कार्यों को करने में लीन। "रावण अधर्मरत भी अपना मैं हुआ अपर।" निराला।

अधर्माचरण—(सं०, पु० सं०) धर्म से असम्मत व्यवहार। 'हो जाय अधर्माचरण नहीं'—हरिऔध।

अधर्माचारी—(वि०, पु० यौ० सं०) नीच आचार-वाला, दुष्कर्मी, दुराचारी, कुकर्मी।

अधर्मात्मा—(वि०, पु० यौ० सं०) अधर्मी, पापी, अन्यायी।

अधर्मिष्ठ—(वि०, पु० सं०) अति दुराचारी, पापिष्ठ, अनाचारी, कुमार्गी, अघी, कुकर्मी।

अधर्मी—(वि०, पु० सं०) पापी, दोषी, दुराचारी, कुकर्मी, कुमार्गी, दुष्कृती।

अधर्म्य—(वि०, सं०) धर्म के विपरीत, जो नियमित, अथवा न्याय-सम्मत न हो। "जो है अधर्म्य वह धर्म नहीं—हरिऔध।

अधवन—(वि०, दे०) आधा, अर्द्ध, समभाग। (क्रि० स० **अधवना**—अधियाना।)

अधवा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) [सं० अ+धव—पति] विधवा, बिनापति की स्त्री, रॉड़।

अधवार, [**अधवाड़**]—(संज्ञा, स्त्री० दे०) आधा थान, **अधाई**, आधे घर के आदमी, आधे हिस्सेदार, **अधियार, अधियारी**।

अधवारी—(सं०, स्त्री० दे०) एक पेड़, जिसकी लकड़ी का उपयोग घर बनाने मे होता है।

अधस्तल—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) नीचे की कोठरी, नीचे की तह, तहखाना।

अधस्तात—(अव्य० सं०) नीचे की ओर, नीचे।

अधाक—(संज्ञा, स्त्री० दे०) धाक-रहित, आतङ्क-विहीन।

अधाधुंध—(क्रि० वि०, दे०) अंधाधुंध, अन्धेरखाते के ढंग पर, अनाचारपूर्वक, अन्यायपूर्वक, अत्यधिक।

अधान—(संज्ञा, पु० दे०) तेल आदि।

अधान्य—(संज्ञा, पु० सं०) जो धान्य न हो, अखाद्य वस्तु, कुअन्न, बुरा धान्य, न खाने योग्य अन्न, **अधान**।

अधार—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० आधार] तल, आधार, अवलंब, सहारा, आश्रय, आहार, सहारा, **अधारा** (दे०)। 'तासु तात तुम प्रान अधारा'—तुल०।

अधारी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० आधार] आश्रयी, सहारा, आधार। डंड मे लगा हुआ पीढ़ा जिसे साधुजन सहारे के लिए रखते हैं। सामान रखने का झोला या थैला [यात्रा में]। [वि०, स्त्री०] जो को

सहारा देने वाली, प्रिया। 'अधारी डारि काँधे मों, यहँ दौर्‌यों वहँ दौर्‌यो'।

अधार्मिक—(वि०) [सं० अ+धार्मिक] धर्महीन, पापी।

अधार्य—(वि०, सं०) अग्राह्य, न रखने योग्य।

अधावट—(वि०, पु० दे०) [हिं० आधा+औटना] आधा औटा हुआ [**अधौटा** दे०] दूध।

अधि—(उप०, सं०) शब्दों के पूर्व लगाया जाने वाला-शब्द खंड। ऊर्ध्वता अथवा उच्चता-सूचक, जैसे—अधिराज, अधिकरण। प्रधानता, मुख्यता-सूचक, जैसे—अधिपति। अधिकता, ज्यादता-सूचक, जैसे—अधिमास। सम्बन्ध-सूचक जैसे—आध्यात्मिक। ऊपरी भाग, ईश्वर, सामन, वश मे, समीप।

अधिक—(वि०, सं०) बहुत, ज्यादा, विशेष, अतिरिक्त, बचा हुआ, फालतू। (संज्ञा, पु०) एक अलंकार जिसमे आधेय को आधार की अपेक्षा अधिक प्रगट किया जाता है। आचार्य दंडी इसे अतिशयोक्ति अलंकार का एक रूप मानते हैं। 'तेरे उर मे वह बसा, जिसमे बसा त्रिलोक'—गिरीश। न्याय मे एक निग्रह-स्थान। (विलो०)—[न्यून]। **—मास**-(पु०) मलमास, (प्रति तीसरे वर्ष) लौंद का महीना शुक्ल प्रतिपदा से अमावस्या तक ऐसा काल जिसमे संक्रान्ति न पड़े—(ज्यो०)।

अधिकतम— (वि०, सं०) [अधिक+तम-प्रत्यय०] अत्यन्त अधिक, बहुतों की अपेक्षा अधिक। महत्तम, सबसे अधिक। [मैक्सिमम]

अधिकतर—(वि०, सं०) [अधिक+तर-प्रत्य०] दूसरे की अपेक्षा अधिक, अति अधिक, (क्रि० वि०) प्रायः।

अधिकता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) बहुतायत, ज्यादती, विशेषता, बढ़ती, वृद्धि, **आधिक्य**।

अधिकर्द्धि—(वि०, सं०) समृद्धि-शाली, सम्पन्न।

अधिकन्तु—(अव्य०, सं०) और, दूसरा, अपर, विशेषतः।

अधिकरण—(संज्ञा, पु० सं०) आधार, आसरा, सहारा। व्याकरण में क्रिया का आधार। सातवाँ कारक। प्रकरण, शीर्षक। दर्शन शास्त्र में आधार विषय। अधिष्ठान, आधिपत्य, अधिकारकरण।

अधिकरणिक—(संज्ञा, पु० सं०) न्यायाधिपति, न्यायाधिकारी।

अधिकरणी—(वि०) निरीक्षण करनेवाला, अधिपति।

अधिकरण्य—(पु० सं०) विशेष अधिकार प्राप्त संस्था। [एथारिटी]

अधिकर्म—(संज्ञा, पु०) देख-रेख, निरीक्षण।—**कर,—कृत**-(पु०) श्रमिकों के कार्य का निरीक्षक, अध्यक्ष।

अधिकर्मिक—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) प्रधान कर्मचारी, ज्येष्ठक। [फोरमैन]

अधिकाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० अधिक+आई] अधिकता, बढ़ती, महिमा, बड़प्पन, ज्यादती, **अधिकई** (दे०) "उमा न कछु कपि की अधिकाई"—तुल०।

अधिकाधिक—(वि०, सं०) अधिक से अधिक मात्रा। "मै रहा दीप वह अधिकाधिक जाग्रत करना"—बच्चन।

अधिकाना*—(क्रि०, अ० दे०) [सं० अधिक] अधिक होना, बढ़ना। "देखत सुनत आगि अधिकानी, नभ लौं पहुचो-झार"। (प्रेरणा०) बढ़ाना, उभाड़ना, अधिक करना। "नैन न समान अधिकाने आँस एते अरी"—रसाल।

अधिकार—(संज्ञा, पु० सं०) [अधिक+कृ+घञ्] कार्य-भार, प्रभुत्व, आधिपत्य, हक, दावा, स्वत्व, प्रधानता, प्रकरण, अख्तियार, कब्जा, प्राप्ति। सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता, जानकारी, लिखाक्रम। शीर्षक। रूपक के प्रधान फल की प्राप्ति की योग्यता (नाट्य-शास्त्र)।***—पत्र**-(पु०) राजपत्र, शासन-पत्र। [चार्टर]।**—०व्यवस्था**-अधिकार देने वाला कानून। [चार्टर ऐक्ट]।**—विसर्जन**-स्वत्व छोड़ देने का कार्य [रेमिशन]।**—व्याप्ति**-अधिकार-क्षेत्र। [स्फियर आव् अथारिटी]**—स्थ**-(वि०) वश मे रहने वाला, जमींदारी में बसने वाला। अधिकार-प्राप्त।**—अधिकारिक**-(पु०) पदाधिकारी।—**अधिकारिक, निर्वाचन**—(पु०) निर्वाचन-सम्बन्धी अधिकारी।**—वर्ग**-(पु०) कार्याधिकारियों का मंडल। [आफिशलडम]

अधिकारी—(संज्ञा, पु०) [सं०अधिकारिन्] प्रभु, स्वामी, स्वत्वधारी, हक़दार, योग्यता या क्षमता रखने वाला, उपयुक्त पात्र जिसका मानव अधिकारी है। वह पात्र जिसे प्रधान फल प्राप्त हो (नाट्य०)। पुजारी, पंडा, स्थान या मठाधीशों के उत्तराधिकारी। एक जाति।**—शिक्षण-शिविर**-विद्यालयों के अध्यापकों और विद्यार्थियों को सैनिक शिक्षा देने का शिविर [आफीसर्स ट्रेनिंग कोर] (स्त्री० **अधिकारिणी**)।

अधिकाव—(संज्ञा, पु० हिं०) आधिक्य, अधिकता।

अधिकृत—(वि०, सं०) अधिकार में आया हुआ, उपलब्ध, प्राप्त, प्रामाणिक। (वि०, सं०) अधिकार-प्राप्त। [चार्टर्ड] संज्ञा पु० अधिकारी, अध्यक्ष,

निरीक्षक, जाँच करने वाला, नियोजित, आय-संलग्न, आय-व्यय निरीक्षक।—गणक— (पु०) अधिकार प्राप्त गाणनिक। [चारटर्ड एकाउन्टेन्ट]।

अधिकोश—(संज्ञा, पु० सं०) धन-सुरक्षा के निमित्त स्थापित संस्था जो आवश्यकतानुसार माँगने पर ब्याज-सहित लौटा दे। [बैंक]

अधिकोष—(संज्ञा, पु० सं०) बैंक जहाँ रुपया आदि जमा किया जाता है। [बैंक]

अधिक्रम, क्रमण—(संज्ञा पु० सं०) चढ़ाव, चढ़ाई, आरोहण।

अधिक्षिप्त—(वि०, सं०) जिस पर आरोप लगाये जाय। "मैं निंदित, लांछित, अधिक्षिप्त"—गिरीश।

अधिक्षेत्र—(संज्ञा, पु० सं०) न्याय—अधिकार का सीमा-क्षेत्र, प्रभाव क्षेत्र, कर्म-क्षेत्र। [जूरिसडिक्शन]

अधिक्षेप, अधिक्षेपण—(संज्ञा, पु० सं०) निंदा, तिरस्कार, आरोप, दोषारोपण। "मेरे अधिकारों के ऊपर, यह अधिक्षेप तो उचित नहीं"—गिरीश। प्राभियोग [इम्पीचमेंट] प्रलेख—पत्र। [टाइटिल]

अधिगत—(वि०, सं०) प्राप्त, पाया हुआ, जाना हुआ, ज्ञात, अवगत। जानकार। स्वर्गीय, मुक्त।

अधिगम—(संज्ञा, पु० सं०) पहुँच, ज्ञान, गति, परोपदेश से प्राप्त ज्ञान, ऐश्वर्य, बड़प्पन, गौरव।

अधिज्य—(वि०, सं०) धनुष पर ज्या चढ़ाये हुए, धनुर्गुण-नियोजित, युद्धार्थी, मुक्त। **'केशैरधिज्य** धन्वा विचचार दावम्'—[रघु०।] (यौ० **अधिज्य-धन्वा**।)

अधित्यका—(संज्ञा, स्त्री० सं०) पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि, ऊँचा पहाड़ी मैदान, [टेबुल-लैंड] प्लेटो, तराई, कोह। **'अधित्यका**यामिव धातु-मय्यां'—[रघु०]

अधिदिन वर्ष—३६५ दिन का साल [लीप इयर]

अधिदूत—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) उपराज दूत [चार्ज डी अफेयर]

अधिदेय—(संज्ञा, पु० सं०) भत्ता [एलाउंस]

अधिदेव, देवता—(संज्ञा, पु० सं०) इष्टदेव, कुलदेव। (स्त्री० **अधिदेवी**।)

अधिदेवी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) इष्टदेवी, कुल-देवी।

अधिदैव—(वि०, सं०) दैविक, आकस्मिक।

अधिदैवत—(संज्ञा, पु० सं०) वह प्रकरण या मंत्र जिसमें अग्नि, वायु सूर्यादि देवताओं के नाम-कीर्तन से ब्रह्म-विभूति की शिक्षा मिले, मुख्य या इष्ट देवता। सूर्य-मंडलस्थ, चिन्ता करने योग्य पुरुष। ब्रह्म विद्या, दैवबल। (वि०) देवता-सम्बन्धी।

अधिनायक—(संज्ञा, पु० सं०) सरदार, मुखिया, प्रधान व्यक्ति। (स्त्री० **अधिनायिका**)

अधिनिष्कासन—(संज्ञा, पु०) कानूनी प्रतिबन्ध द्वारा भूमि, मकान आदि-सम्बन्धी अधिकार-हरण।

अधिप—(संज्ञा, पु० सं०) स्वामी, मालिक, राजा, प्रभु, सरदार। (संज्ञा, पु० **आधिपत्य**)

अधिपति—(संज्ञा, पु० सं०) नायक, नेता, राजा, सरदार, मालिक, प्रभु, स्वामी, अफ़सर, मुखिया। (स्त्री० **अधिपत्नी**—रानी, नायिका, मालकिन)। (संज्ञा, पु० **आधिपत्य**।)

अधिपत्र—(पु०) गिरफ़्तारी आदि का आज्ञा-पत्र, अधिकार-पत्र, आदेश-पत्र। [वारंट] अधिरक्षित बैंक रक्षित अधिकोष [रिजर्व बैंक] अधिरोप-पत्र अभियोग-पत्र, अपराध-पत्र [चार्जशीट]

अधिपुरुष—(पु०) अधिकारी व्यक्ति, किसी संस्था का प्रधान अधिकारी अधिरोप रचना अपराध लगाना (फ्रेम आफ चार्ज)

अधिभूतवादी—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) प्राकृतिक विधानवादी, इस सिद्धांत को मानने वाला कि भूमिकर ही सरकार की आय है। [फिजियोक्रेट]

अधिभौतिक—(वि०) [सं० आधिभौतिक] सांसारिक, ऐहिक, इस लोक से सबन्धित।

अधिमान—(संज्ञा, पु० सं०) अपेक्षाकृत किसी वस्तु, देश, व्यक्ति आदि को अधिक महत्व-प्रदान, तरजीह। [प्रिफरन्स] अधिलाभांश, लाभ से दिया जानेवाला पारितोषिक, जो कर्मचारियों को मिलता है। [बोनस]

अधिमानस—(संज्ञा, पु० सं०) उच्चवृत्तियों से सम्पन्न मन का एक विशेष, प्रगतिमयी स्वरूप। "अधिमानस से भी ऊपर विज्ञान भूमिपर"—पंत।

अधिमान्य—(वि०) पसन्द करने योग्य, ग्राह्य। [प्रेफेरेबिल]

अधिमास—(संज्ञा पु० सं०) अधिकमास।

अधिया—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हिं० आधा] अर्द्ध भाग, आधा हिस्सा, गाँव में आधी पट्टी की जमींदारी। खेती की एक रीति जिसके अनुसार उपज का आधा तो खेत के मालिक को और आधा श्रम करने वाले को मिलता है, ऐसे ही गाय के बच्चों के मूल्य का आधा या बच्चा गाय के मालिक को और आधा या बच्चा उसे चराने तथा रखने वाले को दिया जाता है। (संज्ञा, पु०) आधी पट्टी का मालिक, आधे का हिस्सेदार, **अधियारी**।—मु०—**पर उठाना**—खेत या गया आदि के बच्चों का आधे साझे पर देना।—**परदेना**—देहातों में बेचने की

रीति, जिसके अनुसार अनाज के आधे के बराबर बेचने वाला अपनी चीज देता है।

अधियाचन—(संज्ञा, पु० सं०) लिखित माँग या अधिकारपूर्ण दावा। [रिक्विजिशन]

अधियाना—(क्रि०, स० दे०) [हिं० आधा] आधा करना, दो समान भागों में बाँटना, **अधियावना**।

अधियार—(संज्ञा, पु० दे०) [हिं० आधा] जायदाद का आधे का हिस्सेदार, वह जमींदार या आसामी जो गाँव या जमीन के आधे का मालिक हो, आधा बँटाने वाला। (स्त्री० **अधियारिन**)

अधियारी—(संज्ञा, पु०) [हिं० अधियार] आधे की हिस्सेदारी, मध्यभाग, जायदाद की आधी हिस्सेदारी। सम्पत्ति के आधे भाग का स्वामित्व।

अधियुक्त—(वि०) वेतन के आधार पर किसी कार्य के निमित्त नियुक्त, (संज्ञा, पु०) नियुक्त व्यक्ति, नौकर [इम्प्लायड]

अधियोग—(सं०, पु० सं०) सवेतन कार्य।

अधियोजन—(संज्ञा, पु० सं०) वेतन पर चाकरी या नौकरी में लगाना या लगना। [एम्प्लॉयमेंट]

अधियोजनालय—(संज्ञा, पु०) रोजगार-दफ्तर, वह कार्यालय जो नौकरी दिलाने में सहायक हो, नियोजनालय। [एम्प्लायमेंट एक्सचेंज]

अधिरथ—(संज्ञा, पु० सं०) रथ हाँकने वाला, सारथी, रथवान, गाड़ीवान, बड़ा रथ, कर्ण का पिता।—**सुत**-(पु०) **अधिरथात्मज** (संज्ञा, पु० सं०) कर्ण।

अधिराज—(संज्ञा, पु० सं०) राजा, बादशाह, महाराज। (स्त्री० **अधिराजी**)

अधिराज्य—(संज्ञा, पु० सं०) राज्य, साम्राज्य।

अधिरोपण—(संज्ञा, पु० सं०) किसी के कार्य को सदोष बतलाने, अपराधी घोषित करने का कार्य। [चार्जिंग]

अधिरोह—(संज्ञा, पु० सं०) हाथी पर सवारी करने वाला। ऊपर उठना, चढ़ना। (वि०) चढ़ा हुआ, आरूढ़।

अधिरोहण—(संज्ञा, पु० सं०) चढ़ना, सवार होना, ऊपर उठना। (वि० **अधिरोही**।)

अधिरोहणी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) सीढ़ी, नसेनी, सोपान, जीना।

अधिलाभांश—(संज्ञा, पु० सं०) साधारण लाभ का अंश, ऊपरी लाभ या आमदनी का भाग जो किसी कम्पनी अथवा कारखाने के नौकरों को वेतन के अतिरिक्त दिया जाता है। [बोनस]

अधिलोक—(संज्ञा, पु० सं०) विश्व, ब्रह्माण्ड।

अधिवक्ता—पु० वकील, समर्थक, पैरवी करने वाला [एडवोकेट]

अधिवर्ष—(संज्ञा, पु० स०) हर चौथा वर्ष जब फरवरी २९ दिन की होती है। [लीप-इयर]

अधिवाचन—(संज्ञा, पु० सं०) चुनाव, निर्वाचन-कार्य।

अधिवास—(संज्ञा पु० सं०) रहने का स्थान, निवास-स्थल, शुभ अनुष्ठान की प्रथम क्रिया, निरयता देर तक का ठहराव। सुगंधि, खुशबू, विवाह से पूर्व तेल-हलदी चढ़ाने की रस्म, उबटन। प्रतिवासी, पड़ोसी, धरना।

अधिवासन—(संज्ञा, पु० सं०) निवास-स्थान, स्वदेश के अतिरिक्त किसी अन्यदेश में नागरिक अधिकार-प्राप्ति। सुगंधि से वासना। विवाह के पूर्व तेल-हल्दी चढ़ाने की प्रथा। उपटन। धोती के रूप में धारण करने के लिए वस्त्र।

अधिवासित—(क्रि० वि०, सं०) बसा हुआ, नागरिक बना हुआ। [डोमिसाइल्ड]

अधिवासी—(संज्ञा, पु०) [सं० अधिवासिन्] निवासी, रहने वाला, बसने वाला, प्रतिवासी, पड़ोसी। (स्त्री० **अधिवासिनी**।)

अधिवेदन—(संज्ञा,पु० सं०) संस्कार-विशेष। विवाह

अधिवेशन—(संज्ञा, पु० सं०) बैठक, संघ, जलसा, विचारार्थ कहीं पर सभा या जमाव।

—**न्यायालय**-(पु०) दौरा अदालत [सेशन कोर्ट]

—**समिति**-(स्त्री०) अधिवेशन काल की समिति [सेशनल कमिटी]

अधिशिक्षक—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) मुख्य अधिष्ठाता। [रेक्टर]

अधिशुल्क—(संज्ञा, पु० यौ०) परिभाग [प्रीमियम]

अधिश्रवण—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) बाद की सुनवाई [हियरिंग आफ ए केस]

अधिष्ठाता—(संज्ञा, पु० सं०) अध्यक्ष, मुखिया प्रधान, जिसके हाथ में कार्य-भार हो, ईश्वर, रक्षक-पालने वाला। (स्त्री० **अधिष्ठात्री**)

अधिष्ठान—(संज्ञा, पु०) [सं० अधि+स्था+अनट्] वासस्थान, नगर, शहर, स्थिति, कयाम, पड़ाव, आधार, सहारा, प्रभाव-चक्र, व्यवहार-चक्र, अध्यशन, अवस्थान, स्थायी, वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो, जैसे—रज्जु में सर्प का। भोक्ता और भोग का संयोग (सांख्य), अधिकार, शासन, राज-सत्ता।—**शरीर**-(पु०) मरणोपरान्त पितृ-लोक में आत्मा के निवास का सूक्ष्म शरीर।

अधिष्ठित—(वि०, सं०) ठहरा हुआ, स्थापित, निर्वाचित, नियुक्त। अभिषेक अस्तु हो कहाँ अधिष्ठित का हेए—मैथिली०।

अधिसामान्य—(वि० यौ० सं०) मध्यम श्रेणी से ऊपर का [एबव एवरेज]

अधिसूचना—(स्त्री०) सरकारी घोषणा, गजट मे प्रकाशित सूचना। प्रज्ञापन, विज्ञापन।

अधीक्षक—(संज्ञा, पु० सं०) निरीक्षक, उच्चपदाधिकारीजो अधीन कर्मचारियों की निगरानी करें। [सुपरिन्टेन्डन्ट]

अधीत—(वि०, सं०) पढ़ा हुआ, पठित, शिक्षित। "अधीतमध्यापितमर्जितं यथा"।—**पुरुष**-साहित्यिक, विद्वान [मैन आफ लेटर्स]

अधीति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अध्ययन, पठन।

अधीती—(वि०, सं०) कृताध्ययन, अध्ययन विशिष्ट। (संज्ञा, पु०) छात्र, विद्यार्थी।

अधीन—(वि०, सं०) आश्रित मातहत, वशीभूत, सेवक, आज्ञाकारी, ताबेदार, वशतापन्न, लाचार, विवश, अवलंबित,। (संज्ञा, पु०) दास, सेवक।
—न्यायालय-आश्रित या मातहत न्यायालय [सबार्डीनेट कोर्ट]

अधीनता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) परवशता, परतंत्रता, मातहती, लाचारी, बेबसी, दीनता, गरीबी, दासत्व, **अधीनताई**।

अधीर—(वि०, सं०) धैर्य-रहित, घबराया हुआ, उद्विग्न, बेचैन, व्याकुल, चंचल, विह्वल, उतावला, विकल, आतुर, कातर, असंतोषी। चीख उठे धर्मराज व्याकुल अधीर से—दिन०। अपंडित, उतावला, मोह को प्राप्त। (संज्ञा, स्त्री० **अधीरताई** दे०)

अधीरज—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अधैर्य] अधीरता घबराहट, अधैर्य।

अधीरता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) धैर्य-विहीनता, घबराहट, उतावली, आतुरता, बकली।

अधीरा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) नायक मे अन्य नारी-विलास-सूचक चिन्ह देख कर अधीर हो प्रत्यक्ष कोप करने वाली नायिका, धैर्य-रहित स्त्री, चंचला, विद्युत, चपला।

अधीश—(संज्ञा. पु० सं०) स्वामी, मालिक, अध्यक्ष। भूपति, राजा, अधीश्वर, चक्रवर्ती, मंडलेश्वर। [**अधीस** दे०]

अधीश्वर—(संज्ञा, पु० सं०) अधिपति, राजा, स्वामी, पति, अध्यक्ष, ईश्वर, [**अधीसुर** दे०]

अधुना—(क्रि० वि०, सं०) अब, साम्प्रतम्, संप्रति, आज-कल, इदानीम्, अभी (वि० **आधुनिक**)। (वि०) वर्तमान काल या समय का, साम्प्रतिक, हाल का (विलो)—[**सनातन**]

अधूत—(संज्ञा, पु० सं०) अकंपित, निर्भय, निडर, ढीठ, उचक्का। (संज्ञा, स्त्री० **अधूताई**)

अधूरा—(वि०) [हि० अध+पूरा] अपूर्ण, असमाप्त, आधा, जो पूरा न हो। (स्त्री० **अधूरी**)।

अधेड़—(वि०) [हि० आधा+एड़—प्रत्य०] ढलती जवानी वाला, बुढ़ापे और जवानी के बीच को अवस्था वाला, अधबैसा, प्रौढ़।

अधेन—(संज्ञा, पु० दे०) अध्ययन [सं०] पढ़न का कार्य।

अधेनु—(संज्ञा, स्त्री० सं०) ठांठ गाय।

अधेय—(वि०) [सं० अ+धेय] न ध्यान करने के योग्य। (दे०) पढ़ने के योग्य, अध्येय।

अधेला—(संज्ञा, पु०)[हि० आधा+एला—प्रत्य०]। **धेला**, आधा पैसा, एक सिक्का। 'सान करै, बड़ी साहिबी की पर दान में देत न एक **अधेला**'। (स्त्री०, **अधेली**)।

अधेली—(संज्ञा, स्त्री० दे०) रुपये का आधा सिक्का, अठन्नी, **धेली** (दे०)।

अधैर्य—(संज्ञा, पु० सं०) अधीरत्व, उतावलापन, अकुलाता का भाव, अस्थिरत्त्व, **अधीरज**।

अधैर्यवान—(वि०, सं०) आतुर, व्यग्र, अधीर।

अधो—(अव्य०) [सं० अधः] नीचे, तले। (संज्ञा, पु०) नरक।—**गत**-(वि०) अवनत, पतित।—**गति**-(स्त्री०) पतन, अवनति, दुर्गति, दुर्दशा, अधःपतन।—**गमन**-(पु०) नीचे जाने की क्रिया, पतन।—**गामिनी**—(वि०) पतिता, कुमार्ग गामिनी।
—गामी—(वि०) [सं० अधोगामिन्] नीचे जाने वाला, अवनति या पतन की ओर जाने वाला।
—तर§-(पु०) [सं० अधः उ+तर] दोहरी बुनावट का एक देशी मोटा कपड़ा।—**धम**-(पु०) [सं० अधः+अधम] अति नीच, नीचातिनीच।—**भुवन**-(पु०) पाताल, राजा बलि के रहने का स्थान।
—मस्तक—(पु०) सूर्यवंशीय त्रिशंकु राजा। (वि०) नीचे मुख किये हुए, नीचा सिर, अधोभाल।—**मार्ग**—(पु०) नीचे का रास्ता, सुरंग का मार्ग, गुदा।
—मुख-(वि०) नीचे मुँह किये हुये, औंधा, उलटा। +२० (क्रि० वि०) औंधा, मुँह के बल। (स्त्री०) **अधोमुखी**।—**रध**, **अधोर्द्ध**—(क्रि०, वि०) [सं० अध+उर्द्ध] ऊपर-नीचे, **अधऊरध** (दे०) 'जाकी **अधऊरध** अधिक मुरझायो है'—रत्ना०।
—लंब—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) लंब, वह सोधी

रेखा जो दूसरी सीधी रेखा पर इस प्रकार आकर गिरे कि उसके पार्श्ववर्ती दोनों कोण बराबर और समकोण हों [रेखा०] ।—**लिखित**-(वि०) निम्नांकित ।—**वायु**-(संज्ञा, पु० यौ० सं०) अपान वायु, गुदा की वायु, पाद, गोज ।

अधोक्षज—(संज्ञा, पु० सं०) विष्णु, कृष्ण ।

अधौड़ी—(संज्ञा, दे० स्त्री०) मोटा चमड़ा । **मु०—तनना**—इतना भोजन करना कि अफर जायें, डट कर खाना ।

अध्यक्ष—(संज्ञा, पु० सं०) स्वामी, मालिक, नायक, सरदार, मुखिया, अधिकारी, अधिष्ठाता, **अध्यच्छ** (दे०)) [प्रेसिडेंट]

अध्यक्षता—(संज्ञा, पु० सं०) तत्वधारकता, नायकत्व, देख-रेख, प्रधानता ।

अध्यक्षर—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) प्रणव, ओंकार, ओं, ॐ, ओ३म् ।

अध्यग्नि—(संज्ञा, पु० सं०) विवाह के अवसर पर जो धन अग्नि को साक्षी बना कर कन्या को दिया जाता है । (अव्य०)—विवाह की अग्नि के समीप । —**धन**-(पु०) विशेष धन जिस पर स्त्री का एकाधिकार मान्य हो ।

अध्यच्छ॰—(संज्ञा, पु० दे०) प्रभु, प्रधान ।

अध्ययन—(संज्ञा, पु० सं०) पठन-पाठन, पढ़ाई, अभ्यास ।

अध्ययनीय—(वि०, सं०) अध्ययन के योग्य ।

अध्यवसान—(संज्ञा, पु० सं०) आशय, तात्पर्य, मतलब, अभिप्राय । चेष्टा । निश्चय । यत्न । प्रकृत और अप्रकृत का परस्पर विलयन एवं एक रूपत्व-ग्रहण ।

अध्यवसाय—(संज्ञा, पु० सं०) लगातार उद्योग, सतत उद्यम, उपाय. यत्न, परिश्रम, उत्साह, आस्था, निश्चय, दृढ़तापूर्वक किसी कार्य मे संलग्न होने का भाव, उत्तम काम करने की उत्कण्ठा, कर्म-दृढ़ता, **संलग्नता** ।

अध्यवसायी—(वि०) [सं० अध्यवसायिन्] । लगातार उद्योग करने वाला, उद्यमी, उत्साही, उद्योगी, परिश्रमी, कर्मण्य ।

अध्यशन—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) भोजन कर चुकने के बाद ही फिर भोजन-ग्रहण, अधिक मात्रा में खाना, अत्यशन ।

अध्यशनी—(वि०, सं०) अधिक खाने वाला ।

अध्यस्त—(वि०, सं०) किसी अधिष्ठान मे भ्रम रखने वाला, जैसे—रस्सी में सर्प का (वेदा०) भ्रांत ।

अध्यात्म—(संज्ञा, पु० सं०) ब्रह्म-विचार, ज्ञानतत्व, आत्मज्ञान । (वि०) आत्म-विषयक, आत्म सम्बन्धी । (यौ०) अध्यात्म-विचार, अध्यात्म-तत्व । "घनीभूत अध्यात्म तत्व से"—पंत ।—**दृश**-(पु०) ऋषि, मुनि, आत्म-दर्शक । **अध्यात्मदर्शी, द्रष्टा** ।—**रत**-(पु०) ब्रह्मज्ञान मे लगे हुए । (स्त्री० **अध्यात्मरता**) —**रति**-(स्त्री०) आत्म या ब्रह्म-विद्या विषय मे अनुरक्ति । अध्यात्मनिष्ठा, जीवात्मा, परमात्मा, परमार्थिकता अध्यात्मानुरक्ति, अध्यात्मानुराग ।—**रामायण**-(पु०) एक राम-काव्य ग्रंथ ।—**वाद**-(पु०) आत्मा-परमात्मा-सम्बन्धी विवेचन या सिद्धान्त वेदान्तवाद ।—**वादी**-(पु०) अध्यात्म सिद्धान्त का मानने वाला, वेदान्ती, दार्शनिक ।—**विद्या**-(स्त्री०) ब्रह्मविद्या, आत्म-तत्व-विषयक शास्त्र ।

अध्यात्मिक—(वि०, दे०) [सं० आध्यात्मिक] आत्मा-सम्बन्धी । (संज्ञा, स्त्री० दे० **अध्यात्मिकता**) [**आध्यात्मिकता**]

अध्यादेश—(संज्ञा, पु० सं०) विशेष आदेश जो किसी समय निश्चित अवधि तक लागू हो, फरमान । [आर्डिनेन्स]

अध्यापक—(संज्ञा, पु० सं०) शिक्षक, गुरु, पढ़ाने वाला, पाठक, उपाध्याय, उस्ताद । (स्त्री० **अध्यापिका**—शिक्षिका)

अध्यापकी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) पढ़ाने का काम, मुदर्रिसी, शिक्षण-कार्य ।

अध्यापन—(संज्ञा, पु० सं०) शिक्षण, पढ़ाने का कार्य । (वि० **अध्यापित**)

अध्यापिका—(संज्ञा, स्त्री० सं०) पढ़ाने वाली ।

अध्याय—(संज्ञा, पु० सं०) ग्रंथ-विभाग, पाठ, प्रकरण, परिच्छेद, सर्ग, पर्व, अङ्क ।

अध्यायी—(वि०, सं०) अध्याय वाली, अध्याय-युक्त । जैसे—अष्टाध्यायी ।

अध्यारूढ़—(वि०, सं०) जो सवार हो, चढ़ा हुआ । उच्च आसन पर प्रतिष्ठित ।

अध्यारोप—(संज्ञा, पु० सं०) एक व्यापार को दूसरे मे लगाना, मिथ्या आग्रह, अधिक्षेप, आक्षेप, लांछन, कलंक, दोष, अध्यास, मिथ्या कल्पना । अन्य में अन्य का भ्रम और आरोपण । [इम्पुटेशन] ।

अध्यारोपण—(संज्ञा, पु० सं०) दोषारोपण । (वि० **अध्यारोपणीय, अध्यारोपित** ।)

अध्यारोपित—(वि०, सं०) किसी एक वस्तु के गुण, धर्म को, भ्रम में पड़कर, जब किसी दूसरी वस्तु में माना जाता है तब उसे अध्यारोपित कहते है ।

अध्यारोहण—(संज्ञा, पु० सं०) आरोहण, ऊपर चढ़ना । (वि० **अध्यारोहणीय**)

अध्यारोही—(संज्ञा, पु० सं०) आरोहणकर्ता, चढ़नवाला, अध्यारोहक ।

अध्यावाहनिक—(संज्ञा, पु० सं०) धन-विशेष जो कन्या के बिदा होने के अवसर पर दिया जाता है ।

अध्यास—(संज्ञा, पु० सं०) अध्यारोप, भ्रम, भूल, एक वस्तु में दूसरे की कल्पना, निवास, मिथ्या ज्ञान, आक्षेप, मिथ्याग्रह ।

अध्यासत्ति—(वि०, सं०) कृतारोप, उपविष्ट ।

अध्यासन—(संज्ञा, पु० सं०) उपवेशन, बैठना, आरोपण । [वि० **अध्यासित**] ।

अध्यासी—(वि०, सं०) कृतनिवास ।

अध्यासित—(वि०) उपविष्ट, बैठा हुआ ।

अध्यासीन—(वि०, सं०) आसनस्थ, कृताधिवेशन, उपविष्ट, बैठा हुआ, आसीन ।

अध्याहरण—(संज्ञा, पु० सं०) कल्पना या वितर्क करना, विचार या बहस करना, वाक्यपूर्ति के लिए उसमें ऊपर से कुछ अन्य शब्द जोड़ना, अस्पष्ट वाक्य को दूसरे शब्दों में स्पष्ट करना । [वि० **अध्याहरणीय**]

अध्याहार—(संज्ञा, पु० सं०) आकांक्षा, वाक्यपूर्ति के लिए शब्द-खोज तथा शब्द-योजना, वाक्य के लुप्त शब्दों को खोज कर रखते हुए उसका पूरा स्पष्टीकरण, वाक्य-पूर्ति के लिए शब्दयोजना ।

अध्यूढ़ा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले, ज्येष्ठा पत्नी, विवाहिता या परिणीता स्त्री ।

अध्येय—(वि०, स्त्री० सं०) [सं० अध्ययन] पढ़ने के योग्य । **अध्ययनीय**—[अ+ध्येय] लक्ष्य के अयोग्य, लक्ष्य-रहित ।

अध्येता—(संज्ञा, पु० सं०) छात्र, शिष्य, विद्यार्थी, पढ़नेवाला, पाठक ।

अध्येषण—(संज्ञा, पु० सं०) सम्मान के साथ किसी काम में आयोजित करना ।

अध्येषणा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) याचना, माँग, सादर प्रार्थना । प्रश्न । अध्ययनेच्छा ।

अध्रुव—(वि०, सं०) चंचल, अस्थिर, डवाडोल, अनिश्चित, बेठौर-ठिकाने का, क्षणिक ।

अध्वंस—(संज्ञा, पु० सं०) ध्वंस या नाश-रहित ।

अध्व—(संज्ञा, पु० सं०) मार्ग, पंथ, रास्ता, बाट, पथ ।—**ग**-(पु०) पथिक, यात्री, बटोही, मुसाफिर । उष्ट्र । सूर्य । खेचर । एक वृक्ष ।—**गमन**-(पु०) यात्रा ।—**गा**-(स्त्री०) गंगा, भागीरथी, जाह्नवी, सुरसरि ।—**गामी**-(पु०) पथिक, यात्री, पंथी, मुसाफिर, बटोही ।—**ज**-(वि०, सं०) ध्वज-रहित । (संज्ञा, पु०) मार्ग से उत्पन्न रज ।

अध्वजा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) वृक्ष-विशेष । (वि०) [अ+ध्वजा] ध्वजा या पताका से रहित ।

अध्वनि—(वि०, सं०) ध्वनि या शब्द-विहीन ।

अध्वनीन—(संज्ञा, पु० सं०) पथिक, पर्यटन या भ्रमण करने वाला, यात्री, मुसाफिर ।

अध्वन्य—(संज्ञा, पु० सं०) पथिक, यात्री ।

अध्वर—(संज्ञा, पु० सं०) यज्ञ "ठौर-ठौर अनेक अध्वर भूप हैं"—मैथिली० ।—**वसुभेद**-(वि०) आकाश । सावधान, सचेत, सजग ।—**कांड**-शतपथ ब्राह्मण का एक भाग ।

अध्वर्यु—(संज्ञा, पु० सं०) यज्ञ में यजुर्वेद के मन्त्रों का पढ़नेवाला ब्राह्मण, होमकर्ता, इसका मुख्य कार्य है यज्ञ-मंडप में यज्ञ-कुंड-रचना, यज्ञीयपात्र, समिध, जलादि का एकत्र करना, अग्नि प्रदीप्त करना और यज्ञ में यजुर्वेद के मन्त्र पढ़ना । (अधुरज, अधरज) (दे०) ।

अध्वान्त—(संज्ञा, पु० सं०) ईषत् अंधकार, सन्ध्याकाल, तमोरहित । [स्त्री० **अध्वान्ता**] ।

अन्—(अव्य०, सं०) अभाव या निषेध-सूचक, ना, नहीं, बिना, रहित, जैसे—अनधिकार । यह प्रायः स्वर से प्रारम्भ होने वाले शब्दों के पूर्व आता है, जैसे—[अन्+आचार=अनाचार] । व्यंजनाद्य हिन्दी शब्दों में भी यथा—अनजान, अनपढ़ ।

अनंग—(वि०, सं०) बिना शरीर का, अंगरहित, विदेह । (संज्ञा, पु०) आकाश । मन । कामदेव, मदन, मनसिज, मनोज, मनोभव, प्रद्युम्न, रति-पति, कंदर्प, स्मर । "एक ही अनङ्ग साधि साध सब पूरी अब"—रत्ना० ।—**क्रीड़ा**-(स्त्री० यौ०) [सं० अनङ्ग+क्रीड़ा] रति, सम्भोग, मुक्तक नामक विषम वृत्त का एक भेद (पि०) । दचिकामोत्तेजक ।—**रंग**-(पु०) काम-शास्त्र-विषयक एक संस्कृत ग्रंथ—**लेख**-(पु०) प्रेम-पत्र ।—**शत्रु**-(पु०) महादेव ।—**शेखर**-(पु०) दंडक छंद का एक रूप । [क्रि० **अनंगना**] ।

अनंगक—(संज्ञा, पु० स०) मन, चित्त ।

अनंगना*—(क्रि०, अ० सं०) देह की सुधि न रहना, विदेह होना, सुधि-बुधि भुलाना ।

अनंगभीम—(संज्ञा, पु० सं०) ११०४ ई० में उड़ीसा पर राज्य करने वाले तथा जगन्नाथ जी का मन्दिर बनवाने वाले एक राजा ।

अनंगा—(वि०) [हिं० अ+नङ्गा—सं० नग्न] जो नग्न न हो, जो बदमाश या बेशर्म न हो ।

(वि०, यौ० सं०) [अन्+अङ्गी] **अंग**-रहित, बिना देह का, विदेह। (संज्ञा, पु०) "[सं० अनङ्गिन्] ईश्वर, कामदेव। [स्त्री० **अनंगिनी**]।

अनंगारि—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अनङ्ग+अरि] कामदेव के शत्रु, कामारि, मदन-रिपु, शिव, महादेव, त्र्यंबक, कंदर्प-दर्प-दलन।

अनंगासुहृद—शिव, शंकर।

अनंगी—(वि०) [सं० अन्+अंग+ई] जो अंगी या देही न हो।

अनंगीकार—(संज्ञा, पु० सं०) इनकार, नकार [डिनायल]।

अनंत—(**वि०**) [सं० अन्+अन्त] अन्त या पार-रहित, असीम, **बेहद**, बहुत विस्तृत, **अपार**, अविनाशी, अशेष, अपरिमेय, अनवधि। (संज्ञा, **पु०**) विष्णु। 'अस्तुति तोरी केहि विधि करों अनन्ता'—तुल०। शेषनाग। लक्ष्मण। बलराम। आकाश। बाहु का एक भूषण अनन्ता। सूत का एक गंडा जिसे भादों सुदी चतुर्दशी [अनन्त चतुर्दशी] के व्रत के दिन बाहु पर बाँधते हैं। अभ्रक, अबरख। सिंदुवार वृक्ष, अनन्तजिन नाम के जैनाचार्य। काश्मीर देश का एक राजा। (संज्ञा, पु०) ब्रह्म। (संज्ञा, स्त्री० **अनंतता**) 'संतत अनन्तता बखान जब छूटेंगो '—रत्ना०। **—क्षमता**—(स्त्री०) असीम शक्ति। [इनफिनिट पोटेन्शलिटी]। **—रज**-(पु०) क्षत्रिया से उत्पन्न ब्राह्मण का पुत्र, या क्षत्रिय पुरुष एवं वेश्या स्त्री के गर्भ से उत्पन्न सन्तान। **—लोचन** -(वि०) अनेक नेत्रों वाला। अपरिमित प्रकाश-सम्पन्न। "वह प्रभु अनंत लोचन है"—हरिऔध। **—चतुर्दशी**-(स्त्री०) भादों शुक्ल चतुर्दशी, जिस दिन लोग अनन्त देव का व्रत रहते हैं और अनन्त बाँधते हैं। इस व्रत को अनन्त व्रत कहते हैं।—**मूल**-(पु०) सारिवा नामक एक पौधा जो रक्त-शोधक होता है।—**विजय**-(पु०) युधिष्ठिर के शंख का नाम। **—वीर्य**-(वि०) अपार पौरुष वाला, असीम बल युक्त। (पु०) ईश्वर।

अनन्तगीर—(संज्ञा, पु० सं०) स्वरभेद, सङ्गीत-शास्त्र।

अनंतर—(क्रि० वि०, सं०) पीछे, उपरांत, बाद। निरंतर, लगातार, अनवकाश, अव्यवहित। समीप, पास। पश्चात्।

अनंतरित—(वि०, सं०) अविच्छिन्न, अखंडित, जो टूटा न हो।

अनंता—(वि०, स्त्री० सं०) जिसका अंत न हो। (संज्ञा, स्त्री०) पृथ्वी। पार्वती। कलियारी। अनंत-मूल। दूब। पीपर। अनन्त सूत्र। (वि०, पु० दे०) अनन्त।

अनंतात्मा—(संज्ञा, पु० सं०) परमेश्वर।

अनंतानुबंधी—(संज्ञा, पु० सं०) जैन धर्म के अनुसार प्रकृति का वह दूषण जो कभी न मिटे।

अनन्ताभिधेय—(वि०, सं०) जिसके अगणित नाम हों। अनेक नामों वाला, परमात्मा।

अनंती—(संज्ञा, स्त्री० सं०) गंडा जो स्त्रियाँ बाईं भुजा में बाँधती हैं।

अनंत्य—(वि०, सं०) असीम, निस्सीम, सीमाहीन, अंतरहित। (संज्ञा, पु०) नित्य, अमर होने का गुण।

अनंद—(संज्ञा, पु० सं०) चौदह वर्णों का एक वृत्त। (संज्ञा, पु० दे०) [सं० आनन्द] आनन्द। 'गइ पति-लोक अनंद भरो'—तुल०। (दे०) **अनंदा**। (वि०) [अ+नन्द—पुत्र] बिना पुत्र का। चौदह वर्णों का एक वृत्त।

अनंदन—(वि०) [सं० अ+नन्दन] निपुत्रा, पुत्र-हीन, निपूता, अनपत्य, अनात्मज।

अनंदना%—(क्रि०, अ० दे०) [सं० आनन्द] आनन्दित या प्रसन्न होना, खुश होना। 'तब मेना-हिमवत अनन्दे'—तुल०।

अनंदी—(संज्ञा, पु० सं०) एक प्रकार का धान। (वि०, दे०) [सं० आनन्दी] आनन्दयुक्त। [स्त्री० **अनंदिनी, आनंदिनी**]।

अनंबर—(वि०, सं०) वस्त्रहीन, नंगा। (संज्ञा, पु०)-जैन साधु-विशेष।

अनंभ—(वि०) [सं० अन्+अम्भ] बिना पानी का। *(वि०, दे०) [सं० अन+अह—विघ्न] निर्विघ्न, अबाध।

अनंश—(वि०, सं०) पिता के धन पर अधिकार न पाने वाला। विष्णु।

अन—(संज्ञा, पु० सं०) शकट। अन्न। जननी। जन्म, अत्यल्प काल।

अन*—(क्रि० वि०) [सं० अन्] बिना बगैर। (वि०, दे०) [सं० अन्य] दूसरा। 'कहि जु चली अनहीं चितै, ओठनि ही मैं बात'—बिहारी।

अनअहिवात—(संज्ञा, पु० यौ०) [हि० अन+अहिवात—सौभाग्य] वैधव्य, विधवापन, रँडापा। "अन अहिवात सूच जनु भावी"—तुल०। [वि०, स्त्री० **अनअहिवाती**]

अनइच्छा, अनिच्छा—(संज्ञा, स्त्री० दे० सं०)

अरुचि, इच्छा का अभाव, इच्छा-हीनता। निष्प्रयोजनता, अनीहा। **अनइच्छित**—(वि०)अनिच्छित, अनभीष्ट।

अनइस—(वि०, दे०) **अनैस**, अनैसा, अनिष्ट, बुरा, **अनीठ** (दे०) व्यर्थ, निकम्मा। [स्त्री० **अनइसी, अनैसी** (ब्र०)]

अनइसा—देखिए—अनइस। अनैसो (ब्र०) 'अहित अनैसो ऐसो कौन उपहास अरी'—पद्मा०।

अनऋतु—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अन्+ऋतु =अनृतु) ऋतु के विरुद्ध, बेऋतु, बेमौसिम, अकाल, ऋतु-विपर्यय, ऋतु-विरुद्ध व्यापार।

अनकंप—(वि०, सं०) जिसमे कम्पन न हो। **अकंपन**, स्पन्दनहीन, कम्पनहीन।

अनक*—(संज्ञा, पु० दे०) [**आनक** सं०] नगाड़ा, मृदंग। (वि०) नीच, तुच्छ।

अनकना*—(क्रि०, स० दे०) [सं० **आकर्णन**] सुनना, छिप कर या चुपचाप सुनना। [**अकनना**]

अनक़रीब—(क्रि० वि०, फा०) लगभग, निकटतः, प्रायः। [**अनकरीबन्**]।

अनक्षर—(वि०, दे०) निरक्षर, अक्षरहीन, मूर्ख।

अनक्ष—(वि०, सं०) जो नेत्रहीन हो।

अनकहा—(वि०, दे०) [हि० अन+कहना] बिना कहा हुआ, अकथित, अनुक्त। न कहने के योग्य। अनकही।

अनकही, [**अनकहनी**]—(वि०, स्त्री०) न कहने योग्य, बुरी बात। **मु०—देना**—कुछ न कहना, चुप रहना या होना। 'तुम तो कहा औ अनकही लीनो सबै'—रत्ना०।

अनकाढ़ा—(वि०, दे०) जो निकाला न गया हो।

अनख—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अन+अक्ष—आंख] क्रोध, रोष, नाराजी, दुःख, ग्लानि, खिन्नता, ईर्ष्या, द्वेष, डाह। झंझट। अनरीति। डिठौना, काजल की बिन्दी जिसे नज़र से बचाने के लिए बच्चों के माथे पर लगाते हैं। कुढ़न, द्रोह। 'भाव-कुभाव अनख - आलसहू'—तुल०।—'सुनि अनख भूप उर आवे'—छत्र०। (वि०) [सं० अ+नख) बिना नख या नाखून का।

अनखना*—(क्रि०, अ०) [दे०, हि० अनख] क्रोध करना, गुस्सा होना, रिसाना, रुष्ट होना, रोष करना, अप्रसन्न होना।

अनखाना—(क्रि०, स० दे०) अप्रसन्न या नाराज़ करना।

अनखाये—(क्रि० वि०) [दे०, हि० अन+खाना] बिना खाना खाये, भोजन बिना। 'जो तू अनखाये रहे, कस कोउ अनखाय'—रहीम।

अनखाहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० अनखाना+हट प्रत्य०] अनख का भाव, नाराज़ी, क्रोध, रोष अप्रसन्नता।

अनखी*§—(वि०) [हि० अनख] क्रोधी, जो शीघ्र नाराज़ हो जावे, गुस्सावर। (वि०) [अ+नखी] बिना नखवाला, नख-विहीन।

अनखुला—(वि०, सं०) जो प्रगट न हो, जिसके कारण का पता न हो।

अनखौंहा*§—(वि०) [हि० अनख] क्रोध से भरा, कुपित, रुष्ट, चिड़चिड़ा, जल्द गुस्सा करने वाला, क्रोध दिखाने वाला, अनुचित, बुरा, (बुंदे०) क्रोधी। दोषक (कवि०)। [स्त्री० **अनखौंही**। (क्रि० वि०) **अनखौंहैं**]—'हरि अनखौंहैं सौंहैं फेरि बंक भौंहैं फेरि'—'रसाल'।

अनगढ़—(वि०) [अन+गढ़ना हि०] जिसका निर्माण पूरा न हुआ हो, अपूर्ण, प्रारम्भिक स्थिति वाला। जैसे, बिना गढ़ा हुआ। जिसे किसी ने बनाया या गढ़ा न हो। स्वयंभू। बेडौल, भद्दा। बेरंगा। उजड्ड, अक्खड़। बेतुका, अंडबंड, कुडौल। अनारी।

अनगढ़ा—(वि० पु० दे०) टेढ़ा, अशिक्षित, वक्र, भद्दा।

अनगढ़ी—(वि०, स्त्री० दे०) बेडौल, बेढंगी, भद्दी।

अनगणित—(क्रि० दे०) [हि० अन्+गणित सं०) अगणित, बहुसंख्यक, अपार, असंख्यात, **अनगनित**, **अनगिनती** (दे०)।

अनगन*—(वि०, दे०) [सं० अन्+गणन] अगणित, बहुत, बेशुमार। 'अनगन भाँति करी बहु लीला जसुदानन्द-निवासी'—सूर०। गर्भवती स्त्री का आठवाँ मास। [स्त्री० **अनगनी**]

अनगना—(वि०, दे०) [हि० अन्+गिनना] न गिना हुआ, अगणित, बहुत। (संज्ञा, पु०) गर्भ का आठवाँ महीना।

अनगनिया—(वि०, दे०) अगणित, बेतादाद। 'बरावरी बेसन बहु भातिन व्यंजन अति अनगनिया' —सूर०।

अनगवना—(क्रि०, अ० दे०) [हि० अन्+गवन—सं० गमन] रुक कर देर करना, जान-बूझ कर बिलम्ब करना। आगे न बढ़ना। न जाना। 'मुह धोवति एँड़ी घसति, हँसति अनगवति तीर'—बिहारी।

अनगाना—(क्रि०, अ० दे०) देखिए, **अनगवना**।

अनगार—(वि०, सं०) गृहहीन (सं०, पु०) रमतायोगी ।

अनगारिका—(संज्ञा, स्त्री० सं०) रमते योगी की जीवन-धारा ।

अनगिन—(वि०, दे०) [हि० अन+गिनना] असंख्य, बेशुमार, बहुत, अगणित ।

अनगिनत—(वि०, दे०) [हि० अन्+गिनना] बे-तादाद, बहुत । अनगिनती ।

अनगिना—(वि०, दे०) [हि० अन्+गिनना] न गिना हुआ, असंख्य, अपार, अगणित । [स्त्री० **अनगिनी**]

अनगैया—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० आँगण], अँगनाई, आँगन [अँनगैया (हि०)] ।

अनगैरी*—(वि०) [दे०, अन+गैर] .गैर, पराया, अपरिचित । (वि०, दे०) अनजबी, जो अपना न हो, सगा न हो । (संज्ञा, पु०) अनजान व्यक्ति, बेजान-पहिचान का आदमी ।

अनग्नि—(वि०) [सं० अन्+अग्नि] श्रुति-स्मृति-विहित अग्नि-होत्र कर्म से हीन, निरग्नि, अग्नि-चयन-रहित । (संज्ञा, स्त्री०) अग्नि का अभाव, अग्नि-राहित्य ।

अनघ—(वि०) [सं० अन्+अघ] निष्पाप । निर्मल । सुकृतिमय, पुण्यवान, पवित्र, शुद्ध । (संज्ञा, पु०) पुण्य, पाप से रहित भाव । विष्णु । शिव । सफेद सरसों । (वि०—**अनघी**)

अनघरी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि० सं० अन्+घरी] बुरी सायत, कुसमय, बुरी घड़ी ।

अनघा—(वि०, दे०) अत्यधिक, बहुत ।

अनघेरी*—(वि०, दे०) [हि० अन्+घेरना] बिना बुलाया हुआ, अनाहूत, अनिमंत्रित ।

अनघोर*—(संज्ञा, पु०) [सं० घोर] अंधेर, अत्याचार, ज्यादती, अन्याय, अनाचार । (वि०) जो घोर न हो ।

अनघोरी—(वि०) [हि० अनघोर] अन्यायी । (क्रि० वि०) चुपचाप, अचानक । 'जाति पाइ अनघोरी मायें'—छत्र० ।

अनचहा—(वि०, दे०) [अन्+चाहना] अवांछित, अनभीष्ट, जिसकी चाह न हो । [स्त्री० **अनचही**]

अनचाहत—(वि०, दे० हि०) जो प्रेम न करे, न चाहनेवाला, निर्मोही । (संज्ञा,पु०) प्रेम न करनेवाला । (क्रि० वि०) न चाहते हुए ।

अनचाहा—(वि०, दे० हि०) अनभीष्ट । [स्त्री० **अनचाही**]

अनचीता—(वि०) [दे०, अन्+चीतना] अविचारित । अचिंतित, जिसका विचार न रहा हो । जिसका अनुमान भी न किया गया हो । (क्रि० वि०, दे०) अकस्मात, अचानक, धोखे मे । (स्त्री० **अनचीती**—न सोची हुई. अचिंतिता)

अनचीन्हा*§—(वि०) [दे०, हि० अन्+चीन्हना] अपरिचित, अज्ञात, बेपहिचान, अनजान ।

अनचैन—(संज्ञा, पु० दे०) व्याकुलता, मानसिक अस्थिरता का भाव ।

अनच्छ—(वि०, सं०) जो निर्मल न हो, गन्दा ।

अनछत—(वि०, दे०) [सं० अ+क्षत] क्षत या घावरहित, अक्षत ।

अनछता*—(वि०, दे०) बिना इच्छा का, अनिच्छित ।

अनछीला—(वि०, दे० हि०) **अनछिला,** बिना छिला, छिलका-समेत, अनारी ।

अनजका,—जिका—(संज्ञा, स्त्री० दे०) छोटी बकरी, मेमना ।

अनजान—(वि०) [दे०, हि० अन्+जानना] अज्ञानी, नादान, अपरिचित, अज्ञात, नासमझ, अज्ञातकुलशील । "खो गया मेरा खग अनजान"—पंत । व्याकरण की दृष्टि से **अजान** शब्द ठीक है, जानने के पूर्व अन प्रत्यय न आना चाहिए, क्योंकि यह शब्द व्यंजन से प्रारम्भ होता है । (क्रि वि०) अनजान, बिना जाने-बूझे, बिना जाने-माने । [वि०, स्त्री० **अनजानी**] । [स० क्रि० **अनजानना**] ।

अनजानत—(वि०, दे०) अज्ञानी मूर्ख 'छमहु चूक अनजानत केरी'—तुल० ।

अनजानना—(क्रि०, सं० हि०) न जानना, किसी बात से परिचित न होना ।

अनजामा—(वि०, दे०) बंजर, ऊसर, मरु । बाँझ । बिना उगा । उत्पत्ति-शक्ति-विहीन, निष्फल ।

अनजीवत, अनजीवित—(वि०, दे०) प्राणहीन, मृत, मुर्दा, शव की स्थिति वाला । 'अनजीवत सम चौदह प्राणी'—तुल० । (वि० दे०) [सं० अन्य जीवित] अन्याश्रित, अन्योपजीवी, अन्यजीवी ।

अनजीवी—(वि०, दे०) (सं० अजीवी) जीवहीन, [सं० अन्य+जीवी] अन्योपजीवी, अन्याश्रित ।

अनजोखा—(वि०) जो तौला न गया हो ।

अनट*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अनृत] उपद्रव, अन्याय, अनीति, अनाचार, अत्याचार । (दे०) गाँठ, गिरह, ऐंठ । 'सो सिर धरि-धरि करहिं सब, मिटिहि अनट अवरेव'—तुल० ।

अनडीठ*, अनडीठा—(वि०, दे०) [सं० अन्+दृष्ट] बिना देखा, न देखा हुआ ।

अनड्वान—(संज्ञा, पु० सं०) बैल, साँड, वृषभ, (**अनडु** सं० **अंडु**; दे०) ।

अनत—वि० [सं० अ+नत] न झुका हुआ, सीधा । अनंक [सं० अनंत] (क्रि० वि०, दे०) [सं० अन्यत्र] और स्थान, दूसरी जगह, अन्यत्र, और कहीं। (अन्तै, अन्ते दे०) "मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै"—सूर० । सुनत बचन फिर अनत निहारे"—तुल० ।

अनति—(वि०. सं०) कम, थोड़ा । अति का उलटा, थोड़ा । (संज्ञा, स्त्री०) नम्रता का अभाव, अहंकार, गर्व, मद ।

अनदेखा—(वि०, पु०) [दे० हिं० अन+देखना] बिना देखा हुआ, अदेखा, न देखा हुआ । अदृष्ट, गुप्त ।

अनदेखी—(वि०, स्त्री० दे०) "देखो अनदेखी अनदेखी भई देखी सी"—रस० ।

अनद्य—(संज्ञा, पु० सं०) सफेद सरसों । (वि०) जो खाने लायक न हो। निषिद्ध, अननुमत, विधिविरुद्ध । [इल्लिसिट]

अनद्यतन—(संज्ञा, पु० सं०) जो आज न हो, जो अद्यतन न हो ।—**भविष्य**-(पु०) संस्कृत मे भविष्य काल का एक भेद [व्या०]—**भूत**—(पु०) भूत काल का एक भेद [व्या०] ।

अनधन—(संज्ञा, पु० यौ० दे०) अन्न-धन, धन-धान्य, सम्पत्ति, ऐश्वर्य । अन्यधन । विना धन ।

अनधिकार—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) अधिकार का अभाव, बेबसी, लाचारी । अयोग्यता । अक्षमता । (वि०) अधिकार-रहित । अयोग्य ।—प्रामाणिकता-रहित ।—**चर्चा**—(स्त्री०) जिस विषय मे गति न हो उसमें टाँग अड़ाने का कार्य ।—**चेष्टा**—(स्त्री०) नाजायज इरादा, अनुचित विचार ।

अनधिकारी—(वि०) [सं० अनधिकारिन्] जिसे अधिकार न हो, अयोग्य, अपात्र । अप्रामाणिक (स्त्री० **अनधिकारिणी** ।) (संज्ञा, स्त्री० **अनधिकारिता** ।)

अनध्यवसाय—(संज्ञा, पु० सं०) अध्यवसाय का अभाव, अतत्परता, ढीलाई, किसी वस्तु के सम्बन्ध मे साधारण अनिश्चयपूर्ण प्रवृत्ति ।

अनध्याय—(संज्ञा, पु० सं०) वह दिन जिसमे शास्त्रानुसार पढने-पढाने की मनाही रहती है, जिस दिन पढ़ने का नागा हो, ऐसे दिन हैं—अमावस्या, परिवा, अष्टमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा ।

अनन—(संज्ञा, पु० दे०) आनंद, हर्ष ।

अनधिगत—(वि०) जो जाना ना गया हो, अज्ञात अनुपलब्ध ।—**मनोरथ**—(वि०) जिसकी इच्छा पूर्ण न हुई हो ।—**शास्त्र**—(वि०) जो शास्त्रों से अपरिचित हो ।

अनधिगम्य—(वि०) जहाँ पहुँच न सकें, जिसे जान न सकें, अज्ञेय ।

अनधिष्ठान—(संज्ञा, पु० सं०) निरीक्षण की अपूर्णता अथवा कमी ।

अनधीन—(वि०, सं०) जो किसी के अधीन न हो, स्वतंत्र ।

अनध्यक्ष—(वि०, सं०) अप्रत्यक्ष, जो इन्द्रियगोचर न हो ।

अनध्ययन—(संज्ञा, पु० सं०) पढ़ाई में विराम ।

अनध्यास—(वि०, सं०) जो विस्मृत हो गया हो, भूला हुआ ।

अननुभूत—(वि०, सं०) अज्ञात, जो अनुभूत न हो ।

अनन्नास—(संज्ञा, पु० दे०) [पुर्त० अनानास] रामबाँस का सा एक छोटा पौधा, जिसके ऊपरी भाग के अंकुरों की गाँठे खटमीठी और खाने योग्य होती है ।

अननुमत—(वि०, सं०) जिसे स्वीकृति न प्राप्त हो । —**प्रसंग**-(पु०) अनुचित संबंध, व्यभिचार (इल्लिसिट इंटर कोर्स) —**संबंध**-(पु०) अनुचित संबंध, [इल्लिसिट कनेक्शन]—**सहवास**-(पु०) प्रतिषिद्ध मैथुन (इल्लिसिट को-हैबीटेशन)

अनन्याश्रित—(वि०, सं०) स्वाधीन, स्वतंत्र, जो किसी अन्य के भरोसे पर अथवा संरक्षण में न हो ।

अनन्य—(वि०, सं०) अन्य से सम्बन्ध न रखनेवाला, अद्वितीय, अप्रतिम, एकनिष्ठ, एक ही में लीन जैसे—अनन्य भक्त । (संज्ञा, पु० सं०) विष्णु का एक नाम, जिसके समान दूसरा न हो । [स्त्री० **अनन्या**] ।

अनन्यता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) एकनिष्ठा, अन्य से सम्बन्ध का अभाव, अद्वितीयता, आत्मीयता ।

अनन्वय—(संज्ञा, पु० सं०) एक प्रकार का अलंकार, जिसमें एक ही वस्तु उपमान और उपमेय दोनों रूपों में आती है । [काव्य०] । (वि०) अन्वय-रहित [अन्—नहीं+अन्वय—वंश] वंशहीन ।

अनन्वित—(वि०, सं०) असम्बद्ध, पृथक्, अयुक्त, अंडबंड, जिस पद्य का अन्वय न हो।

अनपकर्ष—(संज्ञा, पु० सं०) उन्नति, अपकर्ष का अभाव, प्रगति।

अनपच—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० अन्+पचना] अजीर्ण, बदहजमी, अफरा, अपच, अरुचि, वमन।

मु०—या अजीर्ण होना—अरुचि, अथवा घृणा होना, आवश्यकता से अधिक उपलब्ध होना, अति तृप्ति के कारण चित्त हट जाना। **बात का—रहना** बात को गुप्त न रखपाना। (वि०, दे०) [हि० अन्+पढ़ना] अनपढ़, बेपढ़ा, अपठित, मूर्ख, निरक्षर। **अपढ़, अनपढ़ा**-(वि०) अशिक्षित। [स्त्री० **अनपढ़ी**]

अनपत्य—(वि०) [सं० अन्+अपत्य निस्सन्तान, निर्वंश] पुत्र-हीन, अपुत्र, निपूता (दे०)। [संज्ञा, स्त्री० **अनपत्यता, अनपत्या**]

अनपत्रप—(वि०, सं०) निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया, लज्जा-रहित, फूहड़।

अनपदेश—(संज्ञा, पु० सं०) कमजोर दलील, दुर्बल तर्क।

अनपभ्रंश—(संज्ञा, पु० सं०) जो शब्द व्याकरण के नियम से शुद्ध हो।

अनपराध—(वि०, सं०) निर्दोष, निरपराध। शुद्ध, दोष-हीन। सच्चरित्र।

अनपराधी—(वि०) [सं० अनपराधिन्] निर्दोष, निरपराधी।

अनपसर—(वि०, सं०) जिसमें से निकलने का कोई रास्ता न हो, जो न्यायानुकूल न हो, अकर्त्तव्य।

अनपाय—(वि०, सं०) अनश्वर, अक्षय, अनाश्वर, चिरस्थायी। (संज्ञा, पु०) अनश्वरत्त्व, चिरस्थायित्व।

अनपायी*—(वि०, सं०) अचल, स्थिर, अपाय-रहित, अविनश्वर, दुर्लभ। दृढ़। नित्य। [स्त्री० **अनपायिनी**]। "पद-सरोज अनपायिनी-भक्ति सदा सतसंग"—

अनपाश्रय—(वि०, सं०) स्वतंत्र अस्तित्व वाला, आत्म-निर्भर।

अनपेक्ष—(वि०, सं०) बेपरवा, लापरवा। स्वाधीन, निरपेक्ष। [वि० **अनपेक्षणीय**]।

अनपेक्षित—(वि०, सं०) जिसकी परवा न हो, जिसकी चाह न हो, अभिच्छित, अननुरुद्ध, अजित। [संज्ञा, स्त्री० **अनपेक्षा**]।

अनपेक्ष्य—(वि०, सं०) जिसकी अपेक्षा या चाह न की जाय। जिसकी परवा न हो।

अनफाँस*—(संज्ञा, स्त्री०) [दे० अन+फाँस] मोक्ष, मुक्ति, अबंधन।

अनफा—(संज्ञा, पु० यू०) फलित ज्योतिष के १६ योगों में से एक योग।

अनबन—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० अन+बनना] बिगाड़, विरोध, खटपट, वैमनस्य, फूट। (वि०) भिन्न-भिन्न, नाना, विविध। "पुनि अभरन बहु काढ़ि अनबन भाँति जराव"।

अनबनाव—(संज्ञा, पु० हि०) मनोमालिन्य, बिगाव, फूट, वैमनस्य। (अनरस दे०)।

अनबिध—(वि०, दे०) [सं० अन+बिद्ध] बिना बेधा, या छेद किया हुआ। **अनबिधा**, (अनबेधे बहुव०; स्त्री० **अनबेधी, अनबेधा**—मोती)।

अनबूझ—(वि०, दे०) [हि० अन+बूझना], अबूझ, नासमझ, अनजान, अजान, जो बूझा न जा सके। [स्त्री० **अनबूझी**]।

अनबेधा—(वि०, हि०) बिना छेद किया हुआ, (अनबेध ब्र०)।

अनबोल—(वि०, दे०) [हि० अन+बोलना] न बोलनेवाला, चुप्पा, मौन, गूँगा, जो अपने सुख-दुख को भी न कह सके (पशु आदि)। अवाक्, अबोल। अस्पष्टवक्ता। "जो तुम हमैं जिवायो चाहत अनबोलै ह्वै रहिए"—सूबे०।—**अनबोलता, अनबोला**-(वि०) न बोलने वाला, गूँगा, बेज़बान, (पशु)। [स्त्री० **अनबोली**]।

अनब्याहा—(वि०, दे०) [हि० अन+ब्याहा] अविवाहित, क्वारा।—**अनब्याही**-(स्त्री०) क्वारी, अविवाहिता।

अनभल*—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० अन+भला] बुराई, हानि, क्षति, अहित। "अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा"। "अनभल देखि न जाइ तुम्हारा" —तुल०।

अनभला—(वि०, दे०) [हि० अन+भला] बुरा, निंद्य, कुत्सित। (संज्ञा, पु०) अहित।

अनभाय—(वि०, दे०) अरुचिकर, अप्रिय।

अनभावन, अनभावता, अनभावतो—(वि० दे०) [ब्र०] अप्रिय, अरोचक।

अनभिगमन—(संज्ञा, पु० सं०) अस्थान में जाना। बुरी या खराब जगह में जाना।

अनभिज्ञ—(वि०, सं०) अज्ञ, अनजान, मूर्ख अज्ञान, अबोध, अपरिचित।—**अनभिज्ञता**-(स्त्री०) बेसमझ, मूर्खता।

अनभिज्ञता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अज्ञता, मूर्खता, अनाड़ीपन, अनजानता।

अनभिप्रेत—(वि०, सं०) अभिप्राय-विरुद्ध, अनभिमत, अनाकांक्षित, अवांछित।

अनभिमत—(वि०, सं०) असम्मत, मतविरुद्ध, अनिष्ट।

अनभिव्यक्त—(वि०, सं०) अस्पष्ट, अव्यक्त, अप्रकट। [संज्ञा, स्त्री० **अनभिव्यक्तता**]

अनभी*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अन+भव—होना] अचम्भा, अचरज, अनहोनी बात, आश्चर्य, अचरज। (वि०) अपूर्व, असम्भव, अलौकिक, अद्भुत।

अनभेदी—(वि०) [हि०] भेद न जानने वाला, जो भेदा न जा सके।

अनभोरी⊗—(संज्ञा, स्त्री० दे०) भुलावा, धोखा, चकमा। (वि०) [अन+भोरी—भोली] जो भोली-भोली न हो, चतुर, चालाक।

अनभोली—देखिए अनभोरी। "प्रिय की श्वास सुरभि दक्षिण से आती है अनभोली"—मैथिली०।

अनभ्यस्त—(वि०, सं०) जिसका अभ्यास न किया गया हो। जिसने अभ्यास न किया हो, अपरिपक्व, अनधीत।

अनभ्यास—(संज्ञा, पु० सं०) अभ्यास का अभाव, मश्क न होने की स्थिति, अव्यवहार, अप्रयोग।—'अनभ्यासे विषं विद्या'।

अनभ्र—(वि०, सं०) बादल-रहित।—**वृष्टि**-(स्त्री०) अचानक किसी घटना का संघटन।

अनमन, अनमना—(वि०, दे०) [सं० अन्यमनस्क] जिसका जी न लगता हो, उदास, खिन्न, शिथिल, बीमार, अस्वस्थ, उन्मन। [स्त्री० **अनमनी**, (संज्ञा, स्त्री० **अनमनता**]

अनम्य—(वि०, सं०) जो नत न हो सके, जो लचीला न हो।—**संविधान**—(पु०) अपरिवर्तनशील शासन-पद्धति [रिजिड कान्स्टीट्यूशन]

अनम्र—(वि०, सं०) अविनयी, उद्दंड, शोख, ढीठ, धृष्ट, अविनीत।

अनमापा⊗—(वि०, दे०) [हि० अन+मापना] न नापे जाने के योग्य।

अनमारग⊗—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० अन—बुरा+मारग—मार्ग] कुमार्ग, कुपथ।—**अनमारगी**—(वि०) कुमार्गी।

अनमिख*—(वि०, दे०) [सं० अनिमेष] निमेष-रहित। (क्रि० वि०) एकटक, टकटकी लगाकर। (संज्ञा, पु०) देवता। मछली। सर्प।

अनमिल⊗—(वि०, दे०) [हि० अन+मिलना] बेमेल, न मिलने के योग्य, बेजोड़, असम्बद्ध, बेतुका। अलग। निर्लिप्त। अप्राप्य। 'अनमिल आखर अरथ न जापू'—[रामा०]। 'प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिल ते न मिलाय'—वृन्द। 'ऊपर दरसै सुमिल सी, अंतर अनमिल आंक'—बिहारी।—**अनमिलित, अनमिलत**—(दे०) न मिलने वाले।

अनमिलता—(वि०, दे०) [हि० अन+मिलना] अप्राप्य, अलभ्य, अदृश्य। (संज्ञा, पु०) अनमेल का भाव, असंयुक्तता, असंबद्धता।

अनमीलना*—(क्रि० स० दे०) [सं० उन्मीलन] आँख खोलना।

अनमूल§—(वि०, दे०) [सं० अमूल्य] अमूल्य, बेश-कीमती। [हि० अन+मूल] बेजड़, मूल-रहित। बेबुनियाद।

अनमेल—(वि०, दे०) [हि० अन+मेल] बेजोड़, जिसका मेल न मिले, असंबद्ध, बिना मिलावट का, विशुद्ध, मित्रता-रहित।

अनमोल—(वि०, दे०) [हि० अन+मोल—मूल्य] अमूल्य, मूल्यवान, बहुमूल्य, अमोल-(दे०) कीमती। सुन्दर, बढ़िया, उत्तम।

अनय—(संज्ञा, पु० सं०) व्यसन। विपद। अशुभ अभाग्य, कुनीति, पाप। अनीति, अन्याय, अमंगल।

अनयन—(वि०, सं०) नेत्र-रहित, अंधा, 'गिरा अनयन नयन बिनु बानी'—तुल०। [अनैन दे०]

अनयमय—(वि०, सं०) अनीतियुक्त, अन्यायपूर्ण "वही मनुज के श्रम का शोषण वही अनयमय दोहन"—[कुरु०]

अनयस, [अनइस]—(वि०, दे०) बुरा, अनैस (दे०) अनैसो, (स्त्री०) अनैसी।

अनयास⊗—(क्रि० वि०, दे०) [सं० अनायास] अकस्मात, सहसा, बेश्रम।

अनरथ⊗—(संज्ञा, पु० दे०) [सं०, प्रा० अनरत्थ] अनिष्ट, बिगाड़, उपद्रव, 'मैं सठ सब अनरथ कर हेतू'—तुल०। [वि० **अनर्थी**]

अनरना*—(क्रि०, सं० दे०) [सं० अनादर] अनादर करना, अपमान करना। 'क्यों तू कोकनद बनहिं सरै औरै सबै अनरै'—भ्र०। [प्रेर०, रूप—**अनराना**]।

अनरसे—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० अन+रस] रस-हीनता, शुष्कता, रुखाई का भाव, कोप, मान,

मनोमालिन्य, मनमोटाव, अनबन, दुःख, खेद, रंज, रसहीनत्व (काव्य)। फूट, दुष्टता, शैतानी, अनइस, अनिष्ट, बिगाड़, उदासी, ।—**अनरसी**-(वि०) दुष्ट, बुराई करनेवाला

अनरसना—(क्रि०, अ० दे०) उदास होना, खिन्न होना। 'हँसे हसत अनरसे अनरसत प्रतिबिंबित ज्यों-झाँई'—तुल०।

अनरसाꕥ—(वि०) [हिं० अन+रस] अनमना, उदास, अस्वस्थ, शिथिल, माँदा, बीमार। (संज्ञा, पु० दे०) एक प्रकार का पकान्न, (अँदरसा प्रान्ती०)।

अनराता*—(वि०, दे०) [हिं० अन+राता] बिना रँगा हुआ, सादा, प्रेम में न पड़ा हुआ, विरक्त। [स्त्री० **अनराती**]

अनरीति—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हिं० अन+रीति] कुरीति, कुचाल, बुरी रस्म, अनुचित व्यवहार, अन्याय, अनीति। "देख तेरी उग्र यह अनरीति" —मैथिली०। ढहाती हो कितनी अनरीति, करूँ तो करूँ तुम्हीं से प्रीति—गिरीश।

अनरीती—(वि०, दे०) [हिं० अन+रीती] अरिक्त, जो रिक्त या खाली न हो। (संज्ञा, स्त्री०) बुरी रीति।

अनरुचिꕥ—(वि०, दे० स्त्री०) [सं० अरुचि] अनिच्छा, मंदाग्नि, अरुचि।

अनरूपꕥ—(वि०) [हिं० अन+रूप] कुरूप, भद्दा, बदसूरत, असमान, असदृश। [संज्ञा, स्त्री० **अनरूपता**]

अनर्गल—(वि०, सं०) बेरोक, बेधड़क, व्यर्थ, अंड-बंड, अबाध, अप्रतिहत, प्रतिबंधरहित, लगातार। [संज्ञा, स्त्री० **अनर्गलता**]

अनघं—(वि०, सं०) बहुमूल्य, कीमती, कम मूल्य का, सस्ता।

अनर्घ्य—(वि०, सं०) अपूज्य, अप्रशस्त। बहुमूल्य, अमूल्य, सबसे अधिक सम्मान के योग्य।

अनर्जित—(वि०, सं०) अनुपार्जित, बिना श्रम के प्राप्त, बिना कमाया हुआ। जिसके लिए परिश्रम न करना पड़ा हो।—**आय**-(पु०) वह धन जो अनायास मिल जाय। [अनअर्न्ड इनकम्]

अनर्थ—(संज्ञा, पु० सं०) विरुद्ध अर्थ, उलटा मतलब, कार्य-हानि, अनिष्ट, हानि, विपद्, अधर्म से प्राप्त धन, अकाज, बुराई, बिगाड़, दुष्परिणाम। [**अनरथ** दे०]—**कर**,—**कारक**,—**कारी**—(वि०, पु०) [सं० अनर्थकारिन्] उलटा मतलब निकालने वाला, अनिष्टकारी, हानिकारी, उपद्रवी, उत्पाती, अनर्थ करने वाला। [स्त्री० **अनर्थकारिणी**]

अनर्थक—(वि०, पु० सं०) निरर्थक, अर्थ-रहित, व्यर्थ, बेमतलब, बेफायदा, निष्प्रयोजन, निष्फल, अनर्थ करने वाला, अनर्थकारक।

अनर्ह—(वि०, सं०) अनुपयुक्त, अयोग्य, कुपात्र।

अनल—(संज्ञा, पु० सं०) अग्नि, आग। चीता। भिलावाँ। पित्त। वायु। पाँचवें वसु। तीन की संख्या। कृत्तिका नक्षत्र। ५० वाँ संवत्सर। विष्णु। एक मुनि। एक वानर। राक्षस-विशेष। दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य और आहवनीय नामक तीन अग्नियाँ (स्मृति)। "अनल मे जल कर न यह जग राख हो"—गिरीश।—**गिरि**-(पु०) ज्वालामुखी पर्वत। "अनलगिरि है फूटता जब ताप होता है अवनि में"—दिन०।—**जिह्वा**-(स्त्री०) आग की लपट, ज्वाला, अग्निशिखा।—**पक्ष**-(पु०) एक चिड़िया, जो सदा आकाश ही मे उड़ती रहती है, पृथ्वी पर नही आती, और अपना अंडा आकाश से गिरा देती है, वह पृथ्वी पर आने से पूर्व ही फूट जाता है और बच्चा उसी समय से उड़ने लगता है।—**पच्छ**-(पु०)। अनलपक्ष। 'अनलपच्छ को चेटुआ गिर्यौ धरनि अरराय'—बिहारी०।—**प्रभा**-(स्त्री०) ज्योतिष्मती नामक एक लता-विशेष। अग्निशिखा, दीप्ति, अग्नि-कांति।—**प्रिया**-(स्त्री०) अग्निभार्या, स्वाहा।—**मुख**-(वि०) जो अग्नि के द्वारा पदार्थों को ले। (पु०) देवता, ब्राह्मण। अनलानन—'अग्निमुखाः व देवाः'—श्रुति।

अनलस—(वि०, सं०) आलस्य-रहित, फुर्तीला, चैतन्य, परिश्रमी, उद्योगी, अनालस्य।

अनल्प—(वि०, सं०) बहुत, अल्प नहीं, अधिक। [संज्ञा, स्त्री० **अनल्पता**]।

अनलायकꕥ—(वि०, दे०) [हिं० अन+लायक अ०] नालायक, अयोग्य, मूर्ख।

अनलेख—(वि०, दे०) [हिं० अन+लेख] अगोचर, अदृश्य, अलख। 'आदि पुरुष अनलेख है'—दादू। अकल्पित।

अनवकाश—(वि०, सं०) अवकाश-रहित, निरवसर।

अनवगत—(वि० सं०) जो न जाना गया हो, जो न परिचित हो, अज्ञात। "है क्रिया-विहीन अनवगत"—हरिऔध।

अनवच्छिन्न—(वि०, सं०) अखंडित, अटूट, जुड़ा हुआ, संयुक्त, अविच्छिन्न, अभग्न।

अनवट—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अंगुष्ठ] पैर के अंगूठे में पहिनने का छल्ला। 'अनवट बिछिया नखत, तराई'—[पद्०]। (संज्ञा, पु०) [हिं० अयन + ओट] कोल्हू के बैल की आँखों का ढक्कन, ढोका। [अनउट, अनौटा दे०]।

अनवद्य—(वि०, सं०) निर्दोष, बेऐब, अनिंद्य, सुन्दर, स्वच्छ, मान्य, संभ्रान्त।

अनवद्यांग—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) सुन्दर अंग, सुडौल शरीर। [स्त्री० अनवद्यांगी]।

अनवधान—(संज्ञा, पु० सं०) असावधानी, बेपरवाही, अमनोयोग, अप्रणिधान, चित्त का अनावेश, ध्यानाभाव (वि०) प्रमाद-ग्रस्त, बेपरवाह, अनाविष्ट।

अनवधानता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) मनोयोग-शून्यता, प्रमाद, अनवहितता, असावधानता।

अनवधि—(वि०, सं०) अपार, असीम, बेहद, अवधि-रहित। (क्रि० वि०) सदैव, निरंतर, हमेशा, सतत।

अनवय—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अन्वय] वंश, कुल। छंद के पदों का गद्य के रूप में व्यवस्थापन।

अनवरत—(क्रि० वि०, सं०) निरंतर, सतत, लगातार, हमेशा, अजस्र, अविरल, नित्य, सर्वदा, सदैव, सदा। "अनवरत लोचन सिहरते"—बच्चन।

अनवसर—(संज्ञा, पु० सं०) अवसर की कमी। कुसमय।

अनवस्था—(संज्ञा, स्त्री० सं०) स्थितिहीनता, अव्यवस्था, आतुरता, अधीरता, तर्क में एक प्रकार का दोष (न्याय), दुर्दशा अवस्था, शून्यता, दरिद्रता या अस्थिरता।

अनवस्थान—(संज्ञा, पु० सं०) वायु, अस्थायित्व, कुव्यवहार, (वि०) अस्थिर, अवस्थितिशून्य।

अनवस्थित—(वि०, सं०) अधीर, चंचल, निरवलंब, अशांत, अस्थिर, निराधार। —**चित्त**—(वि०) उन्मत्त, पागल, चंचल, अनभिनिविष्ट, अस्थिरचित्त।

अनवस्थिति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) चंचलता, अधीरता, आधारहीनता, अवस्थानाभाव, वास-रहित होने का भाव। समाधि के प्राप्त हो जाने पर भी चित्त की अस्थिरता (योग०)।

अनवाँसा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अणुवंश] कटी हुई फ़सल का एक बड़ा पूल, आँसा, पुट्ठा। [क्रि० वि०, दे०] प्रथम बार प्रयोग में लाया हुआ।

अनवांसी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अणुवंश] एक बिस्वे का भाग, बिस्वांसी का बीसवाँ हिस्सा। (वि०, स्त्री०) [दे० अनवासना] प्रथम बार प्रयुक्त की हुई।

अनवाद*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अन + वाद] बुरा वचन, कटु भाषण (दे०)। शरारत, बुराई, नटखटी।

अनवादी—(वि०, दे०) शरारती, नटखट, दुष्ट।

अनवासना—(क्रि०, स०) [दे०, सं० नव + हिं० बसन] नये बरतन अथवा अन्य किसी वस्तु को प्रथम बार प्रयोग में लाना। (वि०, दे०) [अन + वासना] वासना-विहीन। [सं० अ + नव + आसना] पुराने आसनवाली।

अनशन—(संज्ञा, पु० सं०) उपवास, निराहार व्रत, अन्न-त्याग। (अनसन दे०)।

अनश्वर—(वि०, सं०) अभंगुर, नष्ट न होनेवाला, अविनाशी, अटल, नित्य, सनातन, स्थिर, शाश्वत, सतत, स्थायी।

अनसखरी—(संज्ञा, स्त्री०) [दे० अन + सखरी] पक्की रसोई, घी में पका हुआ भोजन, निखरी रसोई।

अनसत्त—(वि०, दे०) [सं० असत्य] असत्य, झूठ, अनृत, मिथ्या।

अनसमझ*—(वि०, दे०) [हिं० अन + समझ] नासमझ, अज्ञान, बिना समझ का।—**अनसमझा**—(वि०),—**अनसमझी**-(स्त्री०) न समझी हुई।

अनसहत*—(वि०, दे०) [हिं० अन + सहना] जो सहा न जा सके, असह्य, असहनीय।

अनसाना—(क्रि०, अ०) [हिं० अनखाना] क्रोधित होना। [हिं० अ + नसाना] न बिगाड़ना।

अनसिखा—(वि०, दे०) अशिक्षित, अपढ़, मूर्ख, अजान। [स्त्री० अनसिखी]।

अनसुन—(संज्ञा, पु० दे०) शून्य, निरर्थक।

अनसुना—(वि०, दे०) [हिं० अन + सुना] अश्रुत, बेसुना, बिना सुना हुआ।

अनसुनी—(वि०, स्त्री० दे०) न सुनी हुई। **मु०** —**करना**—आनाकानी करना, ध्यान न देना, न सुनना।

अनसूया—(संज्ञा, स्त्री० सं०) असूया-रहित, दूसरे के गुणों में दोष-दृष्टि का अभाव। टीका-टिप्पणी के भाव से मुक्त, ईर्ष्या का अभाव। अत्रिमुनि की पत्नी, ये दक्ष प्रजापति की कन्या थीं, इनकी माता का नाम प्रसूति था, 'अनसुइया के पद गहि सीता'

—तुल०। कालिदासकृत शकुन्तला की एक सखी या सहेली [अनसूया दे०]।

अनस्तमित—(वि०) जो अस्त न हुआ हो, अक्षीण, अपतित।

अनस्तित्व—(संज्ञा, पु० सं०) अस्तित्व-शून्यता, अविद्यमानता, सत्ता का अभाव। "धू-धू करता नाच रहा था, अनस्तित्व का ताडव नृत्य"।—**वाद** (पु०) ईश्वर के अस्तित्व निषेध का सिद्धान्त।—[निहलिज़्म]।

अनहद—(वि०, दे०) [हि० अन + हद फा] असीम, अपार, अनन्त, बेहद।—**नाद**—(पु०) [सं० अनाहत नाद]. बिना बजाए कान में भी योगियों को भीतर सुनाई पड़नेवाला शब्द [कबी०]। योग का एक साधन।

अनहित*—(संज्ञा, पु० सं०) [हि० अन + हित] अहित, अपकार। बुराई या हानि करनेवाला, द्वेषी, बैरी, अहित-चिंतक, शत्रु। 'आपन जानि न आजु लगि, अनहित काहुक कौन', 'हित अनहित नहिं कोय'—तुल०।

अनहितू—(वि०, दे०) अशुभ चाहनेवाला, अपकारी, अहितकारी।

अनहेत—(संज्ञा, पु० दे०) वैर, अहित, अहेत।

अनहोता—(वि०, दे०) [अन + होना] दरिद्र, निर्धन, गरीब। असंभव, अलौकिक। [स्त्री० **अनहोती**]।

अनहोना—(वि०) [हि० अन + होना] न होने वाला, असम्भव, अलौकिक। (संज्ञा, पु०) असम्भव बात।—**अनहोनी**—(स्त्री०) असम्भव, न होनेवाली। 'अनहोनी होइ जाय'।

अनाकनी, [अनाकानी, आनाकानी]—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० अनाकर्णन] सुनी अनसुनी करने, बहलाने, बहटियाने, का भाव, टालमटोल, बहराना। [ब्र०] 'सुनि दोउन के मृदु बचन, अनाकनी कै राम'।

अनाकार—(वि०, सं०) निराकार, आकाररहित, अनाकृति।

अनाक्रमण—(संज्ञा, पु० सं०) आक्रमण न करना। [नान-ऐग्रेशन]।—**संधि**, एक दूसरे पर आक्रमण न करने का समझौता। [नान ऐग्रेशन पैक्ट]।

अनाक्रान्त—(वि०, सं०) जिस पर आक्रमण न किया गया हो, जिसे पीड़ा न पहुंचायी गयी हो।

अनाखर—(वि०, दे०) [सं० अनक्षर] निरक्षर, मूर्ख, बेडौल, बेढंगा, बेपढ़ा-लिखा।

अनागत—(वि०, सं०) न आया हुआ, अनुपस्थित, अविद्यमान, भावी, होनहार, अनायात, अज्ञात, अनादि, अजन्मा, अपूर्व, अद्भुत, अपरिचित, विलक्षण, भविष्यत। 'हेयं दुःखमनागतम्' (दर्शन शास्त्र)। 'नीके करि हम सबको जानति बातें कहत अनागत'—सूर०। "निकट मनुष्य के अनागत रहा पुकार"—दिन०। (क्रि० वि०) अचानक, सहसा, अकस्मात।

अनागम—(संज्ञा, पु० सं०) आगमन का अभाव, न आने का भाव, अनागमन।

अनागरिकता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) स्वदेश-प्रेम का अभाव। [इनसिविसिज़्म]

अनागस—(वि०) निरपराध, दोष-रहित, पाप-शून्य। 'सुहा भक्त वह मुक्त, अनागस'—पंत।

अनाघात—(वि०, सं०) आघात या चोट से रहित। (संज्ञा, पु० सं०) एक प्रकार का ताल या स्वर (संगीत)। 'उपजावत गावत गति सुन्दर, अनाघात के ताल'—सूर०।

अनाघ्रात—(वि०, सं०) बिना सूँघा, घ्राणरहित, अस्पृष्ट, अभिनव, कोरा, नया। 'अनाघ्रात पुष्प'—कालि०।

अनाचार—(संज्ञा, पु० सं०) दुर्व्यवहार, कदाचार, दुराचार। कुरीति, अशुद्धाचार, कुप्रथा, कुचाल। अंधेर, श्रुति-स्मृति-विरुद्ध कर्माचार।—**अनाचारी**—(वि०) कुचाली।

अनाचारिता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) दुराचारिता, कुरीति, कुचाल, बुरा आचरण, अत्याचारिता।

अनाज—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अन्नाद्य] अन्न, धान्य, दाना, गल्ला, शस्य।

अनाड़ी, [अनारी]—(वि०, दे०) [सं० अनार्य] नासमझ, नादान, अनजान, अदक्ष, अजान, अपटु, जो निपुण न हो, मूर्ख, गंवार। अनकुशल (दे०) [अ + नारी] नारीहीन। 'वह तो अनारी बेद मिपट अनारी है'। (संज्ञा, पु०) मूर्ख व्यक्ति।

अनाड़ीपन—(संज्ञा, पु० दे०) मूर्खता, नासमझी। (अनारीपना दे०)।

अनाढ्य—(वि०, सं०) दरिद्र, दुखी, गरीब, दीन, निर्धन, कंगाल।

अनातप—(संज्ञा, पु०, सं०) छाया, घर्माभाव, ताप-रहित होने का भाव, गर्मी का अभाव, ग्रीष्म ऋतु का अभाव। (वि०) आतप-रहित, छायायुक्त।

अनातपत्र—(वि०) [सं० अन् + आतपत्र—छाता] छत्र-रहित, छत्राभाव-पीड़ित, बिना छाते का।

अनात्म—(वि०, सं०) अचैतन्य, आत्मारहित, जड़। (संज्ञा, पु०) आत्मा का विरोधी पदार्थ, अचित्, जड़। [वि० **अनात्मीय**]।

अनात्मवान्—(वि०, सं०) अवशीभूतात्मा, आत्म-निग्रह-हीन, आत्माविहीन।

अनात्मीय—(वि०, सं०) जो आत्मा से भिन्न हो, पर, दूसरा, जो अपना न हो। स्वजनों के प्रति प्रेम का अभाव।

अनाथ—(वि०, सं०) नाथ-हीन, बिना मालिक का, जिसके कोई पालन-पोषण करने वाला न हो, असहाय, अशरण, दीन, दुखी। (**अनाथा**, **अनाथू** दे०) "जो पै हैं अनाथ तब तुमा हो बताओ नाथ—रला० + "अनाथ कौन है कि जो अनाथ-नाथ साथ है"—मैथिली०।

अनाथा—(वि०, दे०) [हिं० अ + नाथना] जो नाथा न गया हो, बिना नाथा हुआ। अनाथा। (स्त्री०)—अनाथा, अनाथिनी, पति-हीना, विधवा, असहाया। अनाश्रिता।

अनाथालय—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० अनाथ + आलय] दीन-दुखियों या असहायों के पालन-पोषण का स्थान, मुहताजखाना, यतीमखाना, लंगर-खाना, लावारिस बच्चों की रक्षा का स्थान, अनाथाश्रम।

अनाथाश्रम—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) अनाथालय, अनाथावास।

अनादर—(संज्ञा,पु० सं०) आदर का अभाव, निरादर, अवज्ञा, अपमान, अप्रतिष्ठा, अवहेलना, तिरस्कार, असम्मान, बेइज्जती। एक प्रकार का अलंकार, जिसमें प्राप्त वस्तु के तुल्य दूसरी अप्राप्त वस्तु की इच्छा के द्वारा, प्राप्त वस्तु का अनादर सा सूचित किया जाय (काव्यशास्त्र)।

अनादरणीय—(वि०, सं०) जो आदर के योग्य न हो। [स्त्री० **अनादरणीया**]।

अनादरित—(वि०, सं०) जिसका आदर न किया गया हो, अपमानित, तिरस्कृत।

अनादि—(वि०, सं०) आदि-रहित, उत्पत्ति-हीन, जिसका आदि या प्रारम्भ न हो, स्वयंभू, नित्य, ब्रह्मरूप, बहुत दिनों से जो शिष्ट परम्परा से चला आया हो, ईश्वर।

अनादिष्ट—(वि०, सं०) अननुज्ञात, बिना आज्ञा का, जिसके लिए आदेश न दिया गया हो।

अनादृत—(वि०, सं०) अपमानित, तिरस्कृत, [स्त्री० **अनादृता**]। उपेक्षित, असम्मानित।

अनाद्यन्त—(वि०, यौ०) [सं० अन् + आदि + अन्त] जिसका आदि और अन्त न हो, अनन्त, नित्य, शाश्वत, सनातन, अनादि, ब्रह्मरूप। "अनाद्यन्त-मावं परं तत्वमर्थम्"।

अनाना—(क्रि०, स० दे०) [सं० आनयन] मँगाना, आनना, ले आना।

अनाप-शनाप—(संज्ञा, पु० दे० यौ०) [हिं० अनाप] ऊटपटांग, अटाय-सटाय, आँय-बाँय, अंड-बंड, व्यर्थ का, निरर्थक, अंट-संट, असम्बद्ध। (क्रि०, वि०) अति, अधिक, बेतादाद, परिमाण से अधिक।

अनाप्त—(वि०, सं०) अपारंग, अविश्वासी। अ-निपुण। जो आप्त प्रमाण न हो, साधारण जन की। अप्राप्त, अलब्ध। अविश्वस्त। असत्य, अनात्मीय, बंधुभावरहित। अनाड़ी। (संज्ञा, पु०) अज्ञात कुलशील व्यक्ति।

अनापा—(वि०, दे०) [हिं० नापना) बिना नापा हुआ, सीमा-रहित। [हिं० अन् आपा—घमंड] —आपा या घमंड से रहित।

अनाम—(वि०, सं०) बिना नाम का, अप्रसिद्ध, नाम-रहित। (स्त्री० **अनामा**—ख्याति-विहीना) (संज्ञा, पु० सं०) अर्श, बवासीर।

अनामक—(संज्ञा, पु० सं०) बवासीर, अर्श रोग। (वि०) नाम न करने वाला, नाम-रहित।

अनामय—(वि०, सं०) रोग-रहित, नीरोग, तंदु-रुस्त, निर्दोष, बेऐब। (संज्ञा, पु०) आरोग्य, तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य। कुशल-क्षेम।

अनामा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अनामिका] मध्यमा के बाद की अँगुली। (वि०) अप्रसिद्ध, बिना नाम का।

अनामिका—(संज्ञा, स्त्री० सं०) कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की अँगुली, अनामा।

अनामिल—(वि०, सं०) निर्मल, नवकांतियुक्त। "ओस के धोये अनामिल पुष्प ज्यों"—महादेवी।

अनामी—(वि०, सं०) देखिए अनाम।

अनायक—(वि०, सं०) नायक-रहित, रक्षक-रहित, बिना स्वामी का।

अनायत—(वि०, सं०) लम्बाई से रहित, अविस्तृत। अप्रसिद्ध। [संज्ञा, स्त्री० **अनायता**]

अनायत्त—(वि०, सं०) अनाधीन, उच्छृंखल, अवशीभूत, उद्दंड।

अनायास—(क्रि० वि०, सं०) बिना प्रयास का,

बिना श्रम। अकस्मात्, अचानक। सहज, अयत्न, सुकर।—'अनायासहि हिय धरकन'—रत्ना०।

अनार—(संज्ञा, पु० फ़ा०) एक पेड़ और उसके फल का नाम, दाड़िम। [बुन्दे०] अन्याय, ऊधम। [सं० अन्याय] अन्याय, अनीति।—**दाना**-(पु०) खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना, रामदाना।

अनारी*—(वि०, दे०) [हिं० अनार] अनार के रंग का, लाल।

अनारी—(वि०, दे०)—अनाड़ी, नाड़ी-रहित, जिसके शरीर में नाड़ी की गति बंद हो गई हो। स्त्री से रहित।

अनारोग्य—(संज्ञा, पु० सं०) अस्वस्थता, स्वाथ्य-भंग।

अनार्य—(संज्ञा, पु० सं०) जो व्यक्ति आर्य न हो, आर्येतर, अश्रेष्ठ व्यक्ति, म्लेच्छ। जिनके आचार-व्यवहार, नीति-रीति, धर्म-कर्म आर्यों के से न थे, वे अनाय कहलाये; दस्यु या दास। (वि०) नीच, अनुत्तम। 'अनार्य जुष्टमस्वर्ग्यम-कीर्तिकरमर्जुन'—[गीता]।—**कर्मा**-(वि०) आर्यों से विरुद्ध कर्म करने वाला, निन्दिताचारी, गर्हित व्यवहारवाला, अशिष्टाचारी।—**जुष्ट**-(वि०) अनार्य-सेवित। (दे०)—**देश**-(पु०) अनार्यों का स्थान।

अनार्या—(वि०, स्त्री० सं०) पतिता, अधमा, दुश्चरित्रा। "अनार्या को जनी हतभागिनी तू।"

अनार्याचार—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) अनार्यों का व्यवहार।

अनार्याचारी—(वि०, यौ० सं०) नीच कर्म या आचार-व्यवहार वाला।

अनावश्यक—(वि०, सं०) जिसकी आवश्यकता न हो, अप्रयोजनीय, अनुपयोगी, गैरजरूरी।

अनावश्यकता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) आवश्यकता का अभाव।

अनाविल—(वि०, सं०) निर्मल, परिष्कृत, स्वच्छ, साफ़-सुथरा, मैल-रहित। **अनाविलता**—(संज्ञा, स्त्री० सं०) निर्मलता, स्वच्छता।

अनावृत—(वि०, सं०) जो ढका न हो, खुला, जो घेरा हुआ न हो। "अनावृत कपाट द्वार देहि"—कालि०।

अनावृष्टि—(संज्ञा, स्त्री० सं०) वर्षा का अभाव, अवर्षण, जल-कष्ट, सूखा। (दे०) अवर्षा, एक प्रकार की ईति-बाधा।

अनाश्रमी—(वि०, सं०) गार्हस्थ्य आदि आश्रमों से रहित, आश्रमभ्रष्ट, पतित, नष्ट।

अनाश्रय—(वि०, सं०) निराश्रय, निरवलंब, दीन, अनाथ, असहाय, अशरण।

अनाश्रयी—(वि०, सं०) आश्रय न रखने वाला, जो किसी का सहारा न ले।

अनाश्रित—(वि०, सं०) आश्रय-हीन, बेठिकाना, बेसहारा, असहाय, निरवलंब। [स्त्री० **अनाश्रिता**] (संज्ञा, स्त्री० अनाश्रयता) 'यों अनाश्रित रह सका कब कौन ?'—मैथिली०।

अनासक्त—(वि०, सं०) जो मोहमग्न न हो। "सुजो अनासक्त गेही"—मैथिली०।

अनासिर—(संज्ञा, पु० अ०) उन्सुर का ब० व० मूल तत्व अर्थात् आग, पानी, मिट्टी और हवा।

अनास्था—(संज्ञा, स्त्री० सं०) आस्था का अभाव, अश्रद्धा, अनादर, अप्रतिष्ठा।

अनाह—(संज्ञा, पु० सं०) अफरा, पेट फूलने की स्थिति। (वि०, दे०) [ब्र० अ+नाह—नाथ] अनाथ।

अनाहक*—(क्रि० वि०, दे०) नाहक, व्यर्थ, निरर्थ। "जरि जैहो पतंग सो नाह अनाहक।"

अनाहत—(वि०, सं०) आघात-रहित, जो आहत न हुआ हो। (संज्ञा, पु० सं०) दोनो हाथों के अँगूठों से दोनो कानों के बंद करने पर सुनाई पड़ने वाला एक प्रकार का शब्द, अनहद, शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक (योग)।

अनाहार—(संज्ञा, पु० सं०) भोजनाभाव, भोजन-त्याग। (वि०) निराहार, जिसने कुछ न खाया हो, वह व्रत जिसमे कुछ न खाया जाय, उपवास, लघन, अनशन।

अनाहारी—(वि०, सं०) अभुक्त, उपवासी, अभोजन, लघन करनेवाला।

अनाहूत—(वि०, सं०) बिना बुलाया हुआ, अनिमंत्रित, अकृताह्वान। "अनाहूत पावन अपमाना"—कुंजवि०।

अनाह्वान—(संज्ञा, पु० सं०) आमंत्रण का अभाव।

अनिंद*—(वि०, दे०) [सं० अनिंद्य] जो निंदनीय न हो, न निंदनीय, अगर्हित।

अनिंदक—(वि०, सं०) जो निंदा करने वाला न हो।

अनिंदनीय—(वि०, सं०) जो निंदा के योग्य न हो। [स्त्री० **अनिंदनीया**]

अनिंदित—(वि० सं०) अगर्हित, अलांछित, उत्तम, प्रशस्त। [स्त्री० **अनिंदिता**]।

अनिंद्य—(वि०, सं०) जो निंदा के योग्य न हो, निर्दोष, उत्तम, अच्छा, प्रशस्त ।

अनिआई—(वि०, दे०) [सं० अन्यायी] शैतान, अनाचारी । बदमाश, अन्यायी । अनियायी, अनियारी (दे०) "अरे मधुप लपट अनियाई" —सूबे० ।

अनिकेत, अनिकेतन—(वि०, सं०) निरालय, गृहशून्य, निर्वास, बिना घर का ।

अनिगीर्ण—(वि०, सं०) अनुक्त, अकथित, न निकला हुआ, न कहा हुआ ।

अनिच्छा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) इच्छा का अभाव, अरुचि । (वि० **अनिच्छित, अनिच्छुक**)

अनिच्छित—(वि०, सं०) जिसके लिए इच्छा न हो । (अनचाहा दे०) अरुचिकर ।

अनिच्छुक—(वि०, सं०) इच्छा न रखने वाला, अनभिलाषी, निराकांक्षी ।

अनित्य—(वि०, सं०) विनाशी, भूठा, क्षणिक, अस्थायी, नश्वर, ध्वंसशाली, नाशवान, जो स्वयं कारण-रूप हो, कार्य-रूप न हो, अनियमित, असाधारण अस्थिर असत्य, अनित (दे०)—**सम**—(पु०) न्याय-शास्त्र के अंतर्गत जाति अथवा असत् उत्तर के चौबीस रूपों में से एक ।

अनित्यता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अचिरस्थायिता, नश्वरता, अस्थिरता । "किन्तु रहे पलपल अनित्यता" ।—**वाद**-(पु०) प्रत्येक पदार्थ को क्षणिक और नश्वर मानने तथा किसी पदार्थ को शाश्वत और नित्य न माननेवाला सिद्धान्त । —**वादी**—(पु०) जो किसी पदार्थ को स्थायी या नित्य नहीं मानता, बौद्ध-विशेष ।

अनिद्र—(वि०, सं०) निद्रा-रहित, जिसे नींद न आवे । (संज्ञा, पु० सं०) नींद न आने का रोग-विशेष, उन्निद्र ।

अनिप⊛—(संज्ञा, पु०) [हि० अनी—सेन+प—स्वामी] सेनापति, सेनाध्यक्ष ।

अनिपुण—(वि०, पु०) अकुशल, अपटु, जो निपुण न हो, अदक्ष । [**अनिपुन** दे०, वि० **अनिपुणा स्त्री०**] ।

अनिपुणता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अपटुता, अदक्षता ।

अनिमा⊛—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अणिमा] योग से प्राप्त एक प्रकार की सिद्धि या शक्ति, छोटे होने की शक्ति ।

अनिमित्त, अनिमित्तक—(वि०, सं०) निमित्त या हेतु-रहित, निष्कारण, कारण-निरपेक्ष, अहेतुक, निष्प्रयोजन ।

अनिमिष—(वि०, सं०), स्थिरदृष्टि, निमिष-रहित, टकटकी लगाये हुए । (क्रि० वि०) बिना पलक लगाये हुए, एकटक, निरंतर । (संज्ञा, पु०) देवता । मत्स्य, मछली । सर्प ।

अनिमिषाचार्य—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) देव-गुरु बृहस्पति ।

अनिमेष—(वि०, सं०) "अनिमिष हुए दम्पती फिर अनिमेष"—मैथिली० ।

अनिमेषित—(वि०, सं०) अपलक, स्थिरदृष्टि, निमेषहीन । (क्रि० वि०)—लगातार, एकटक । "अपनी ही शोभा विलोक, मानो अनिमेषित" —पंत ।

अनियंत्रित—(वि०, सं०) प्रतिबंध-रहित, बिना-रोक-टोक का, मनमाना, उच्छृङ्खल, अनिवारित, अशासित, उद्दंड, स्वेच्छाचारी । [संज्ञा, पु० **अनियंत्रण**]

अनियत—(वि०, सं०) जो नियत या निश्चित न हो, अनिश्चित, अस्थिर, अदृढ़, अपरिमित, असीम, अस्थायी, अनित्य ।

अनियम—(संज्ञा, पु० सं०) नियमाभाव, व्यतिक्रम, अव्यवस्था, विधान-हीनता, अनिश्चय, (अनेम दे०) ।

अनियमित—(वि०,सं०) नियम-रहित, अव्यवस्थित बेक़ायदा, अनिश्चित, अनिर्दिष्ट, अनिर्धारित, जो नियम-बद्ध न हो, जो नियमानुकूल न हो ।—**बंधक**-नियमों-विरुद्ध रहन या गिरवी । (एनामलस मार्गेज)

अनियाई—(वि०, दे०) [सं० अन्यायी] अन्यायी, बदमाश । [**अनियारी** प्रान्ती०] ।

अनियाउ—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अन्याय) अन्याय, अनीति, अनाचार । (अन्याय, अनियाय दे०) ।

अनियायी—(वि०, दे०) [सं० अन्यायी] शरारती, बदमाश, अन्यायी ।—**अनियाव**-(संज्ञा, पु० दे०) अन्याय ।

अनियारा*—(वि०) [सं० अणि+आर—प्रत्य० हि०] नुकीला, पैना, नोकदार, धारवाला, तीक्ष्ण, तीखा । 'ये अनियारे अरे 'बलदेवजू'—" "अनियारे दीरघदृगनि"—, "बेधक अनियारे नयन, बेधत करि न निषेध"—बिहारी । "जाहि

लगै साँई पै जामे, प्रेमबाने अनियारो"—मु०। बाँका, बहादुर, "चंगन राय बड़े अनियारे"। [दे०, सं० अ+न्यारा] जो न्यारा या पृथक् न हो। [स्त्री० अनियारी वि०, दे०] बदमाश, बुरा, कुचाली। "कैसहु पूत होय अनियारो" —तुल०।

अनिरीति—(वि०, सं०) अनिर्धारित, अनिश्चित, अरीति, अनरीति (दे०)।

अनिरुद्ध—(वि०, सं०) जो रोका न गया हो, अबाध, बेरोक, जो रुका हुआ न हो। (संज्ञा, पु०) श्रीकृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के पुत्र जिन्हें ऊषा ब्याही थी।

अनिर्णय—(संज्ञा० पु० सं०) द्विविधा, संदेह, संशय, अनिश्चय, अनवधारण, दो बातों में से किसी का भी निश्चय न होना।

अनिर्दिष्ट—(वि०, सं०) अनिश्चित, अनुद्देशित, जो बताया न गया हो, अनिर्धारित। असीम, अपार।

अनिर्देश्य—(वि०, सं०) जिसके संबंध में ठीक न कहा जा सके। अनिर्वचनीय, अकथनीय।

अनिर्धारित—(वि०, सं०) जो निर्धारित या निश्चित न हो।—**दंड**—अनिश्चित दंड (जिसमें कैदी अपने अच्छे आचरण के आधार पर मुक्ति पा सके) [डिटर्मिनेट सेंटेंस]

अनिर्लोचि—(वि०, सं०) अपरिपक्व बुद्धि, अनालोचित, अविवेचित, अविचारित, ऊहापोहज्ञान-शून्य।

अनिर्वच—(वि०, सं०) काव्य के अयोग्य। जिसके लक्षणों का वर्णन न किया जा सके, अकथनीय, जिसकी व्याख्या न की जा सके। 'वह नहीं अनिर्वच' —पंत।

अनिर्वचनीय—(वि०, सं०) जिसका वर्णन न हो सके, जिसके विषय में कुछ कहा न जा सके, अकथनीय, अवाच्य, अवर्णनीय में वचनातीत।

अनिर्वाच्य—(वि०, सं०) जो बताया न जा सके। जो चुनाव के योग्य न हो, न निर्वाचनीय।

अनिल—(संज्ञा, पु० सं०) वायु, हवा, पवन, वसुविशेष, बतास (दे०) एक देवता, कश्यप और अदिति के पुत्र तथा इंद्र के भाई हैं, भीम और हनुमान इनके पुत्र थे। वायु ४६ हैं, इनका रथ कभी तो १०० और कभी १००० घोड़ों से खींचा जाता है, यज्ञ में अन्यान्य देवताओं के समान इन्हें भी भाग दिया जाता है, दमयन्ती के सतीत्व का साक्ष्य इन्हींने दिया था, त्वष्टा के ये जामाता हैं। देह में ५ प्रकार की वायु होती हैं, प्राण, अपान, समान, उदान, और व्यान। 'सोइ जल अनल अनिल संघाता।' तुल०।—**कुमार**—(पु०) हनुमान, भीम।—**घ्नक**—(पु०) विभीतक, बहेड़े का वृक्ष।—**पथ**—(पु०) वायुपथ, शून्य, निराधार। 'मत अनिलपथ में डोलरी' [मद्दा०]—**सखा**—(पु०) मरुत्-सखा, अनल, आग।

अनिलातप—(संज्ञा, पु० सं०) हवा और धूप अथवा सूर्य की रश्मि।

अनिलात्मज—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) वायु-पुत्र, हनूमान, मारुति। भीम।

अनिलामय—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) बात रोग। अजीर्ण।

अनिलाशन—(संज्ञा, पु० यौ० सं०) वायु भक्षण से जीवन धारण करने वाला, तपस्वी। सर्प। व्रत विशेष। बातभक्षी, पवनसेवी।

अनिवर्तन—(वि०, सं०) टिकाऊ; जिसका त्याग न किया जा सके।

अनिवार—(वि०, सं०) दुर्निवार, जो कठिनाई से रोका जा सके, अवारणीय। "दिशा गति बदल चुका अनिवार"—पंत।

अनिवारित—(वि०, सं०) अप्रतिषेधित, अवारित, वारण न किया हुआ, निवारण न करने योग्य।

अनिवार्य—(वि० सं०) जिसका निवारण न हो सके, जो न हटे, जो अवश्य हो, जिसके बिना काम न चल सके, अवश्यम्भावी, अवाध्य, कठिन, दुर्जय, अजेय, न टलने वाला, अवारणीय, दुरत्यय।—**मतदान**—चुनाव में मत-प्रकाशन की अनिवार्यता। [कम्पलसरी वोटिंग]।—**शिक्षा**—प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक शिक्षा। [कम्पलसरी एजुकेशन]।—**सैन्य सेवा**—ऐसी सैनिक सेवा जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक हो। [कम्पल्सरी मिलिटरी सर्विस]

अनिश—(अव्य०) [सं०] निरंतर, सतत, सर्वदा। (वि०, सं०) रात्रि से रहित।

अनिश्चित—(वि०, सं०) जिसका निश्चय न हो, अनियत, अनिर्दिष्ट।

अनिष्ट—(वि०, सं०) जो इष्ट न हो, अनभिलषित, अवाञ्छित। (संज्ञा, पु०) अमंगल, अहित, बुराई, खराबी, हानि, अनीठ (दे०)।—**कर**,—**कारक**,—**कारी**—(वि०, सं०) अपकारक, अहितकर, हानिकर।

अनिष्ठुर—(वि०, सं०) अनिर्दय, सरल-चित्त, दयावान्, जो निष्ठुर या क्रूर न हो, (**अनिठुर** दे०)।—**अनिष्ठुरता**—(संज्ञा, स्त्री०) सदयता।

अनिष्णात—(वि०, सं०) अप्रवीण, अकुशल, अपकारी, अपटु, अदक्ष।

अनिर्व्यक्ति—(संज्ञा, स्त्री०) पूर्णता का अभाव, असम्पन्नता।

अनिस्तीर्ण—(वि०, सं०) जिससे पीछा न छूटा हो, जिससे मुक्ति न मिली हो, जिसका जवाब न दिया गया हो।

अनी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अणि—अग्रभाग, नोक] पैना नोक। सिरा; कोर, किसी वस्तु का अगला भाग। "श्री प्रिय विशिख अनी"—मैथिली०। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० अनीक—समूह] समूह, झुंड। दल, सेना, फौज। [हि० आन—मर्यादा] दृढ़ संकल्प वाला, मान-मर्यादा वाला। टेकवाला।

अनीक—(संज्ञा, पु० सं०) सेना, फौज। समूह, झुंड। सैन्य। युद्ध, लड़ाई। कटक, योद्धा। (वि०) [हि० अ+नीक—अच्छा] जो अच्छा न हो, बुरा, खराब। [स्त्री०—**अनीकी, अनीके, अनीको** ब्र० दे०]।

अनीकस्थ—(संज्ञा, पु० सं०) सेना-रक्षक, हस्तिपक, राज-रक्षक चिह्न, **अनीपति**।

अनीकिनी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अक्षौहिणी सेना का दशांश, पद्मिनी, वरूथिनी।

अनीठ*—(वि०, दे०) [सं० अनिष्ट] जो इष्ट न हो, अप्रिय, बुरा, खराब। (स्त्री०) अनीठी, बुरी। "कोऊ अनीठी कहो तौ कहौ, हमैं मीठी लगै"।

अनीड—(वि०, सं०) नीड़ या घोंसले से रहित; बेघरबार।

अनीत-अनीति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अन्याय, बेइंसाफी। शरारत। अंधेर, अत्याचार, दुराचार, दुर्नीति।

अनीदृश—(वि०, सं०) अतुल्य, असमान, बेजोड़।

अनीपति—(संज्ञा, पु० सं०) सेना-नायक, सैन्य संचालक।

अनीश—(वि०, सं०) बिना मालिक या स्वामी का, अनाथ, असमर्थ, असहाय सर्वश्रेष्ठ,। (संज्ञा, पु०) विष्णु, जीव, माया (अनीस—दे०)। 'ईस अनीसहि अंतर तैसे'—तुल०। [अनी+ईश] सेनापति।

अनीश्वर—(वि०, सं०) ईश्वर से भिन्न, नास्तिक, ईश्वर या स्वामी से रहित, चार्वाक [अनी+ईश्वर] सेनापति।—**वाद**—(पु०) ईश्वर के अस्तित्व पर अविश्वास, नास्तिकता, मीमांसावाद, चार्वाक ऋषि का मत, जिसमें ईश्वर की सत्ता नहीं मानी जाती।—**वादी**—(वि०) ईश्वर को न माननेवाला, नास्तिक, मीमांसक, अभक्त, देव-निंदक, चार्वाक मतानुयायी।

अनीसॐ—(संज्ञा, पु०) [सं० अनीश] अरक्षक, असहाय, अनाथ, [अनी+ईश] सेनापति, सैन्य-रक्षक, एक हिन्दी कवि। (संज्ञा, पु० अ०) मित्र, दोस्त, सहानुभूति रखने वाला।

अनीह—(वि०, सं०) इच्छा-विहीन, इच्छा न रखने वाला। निश्चेष्ट। निर्लोभ। आलसी। बोदा, ढीला, निष्काम।

अनीहा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अनिच्छा, उदासीनता।

अनु—(उप०, सं०) एक उपसर्ग। किसी शब्द के पूर्व लग कर यह प्रायः (१) पीछे, जैसे—अनुगामी, अनुचर, (२) सदृश, जैसे—अनुकूल, अनुसार, अनुरूप (३) साथ, जैसे—अनुपान (४) प्रत्येक, जैसे—अनुक्षण, (५) बारंबार, जैसे अनुशीलन आदि का अर्थ देता है; साथ। हीनता, आयास, समीपत्व, अपरिपाटी, अधीनत्व आदि का भी सूचक है। (अव्य०)* हाँ, ठीक। (क्रि०, वि०) अब, आगे, अथ। "अनुरागी तुम गुरु वह चेला"—जायसी। "अनु पाँड पुरुषहि का हानी"—जायसी। [सं० अणु] (वि०) अत्यन्त छोटा, महीन, लघुतम, कम, थोड़ा। (संज्ञा, पु०) कण, परमाणु। ययाति का एक पुत्र।

अनुकंपा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) दया, कृपा, अनुग्रह, सहानुभूति, हमदर्दी, करुणा, स्नेह।

अनुकंपित—(वि०, सं०) जिस पर दया की गई हो, अनुगृहीत, अनुग्राह्य, कारुणिक, बेगवान।

अनुकम्प्य—(वि०, सं०) अनुग्राह्य, कृपापात्र।

अनुकथन—(संज्ञा, पु० सं०) कहने के बाद कहना, पश्चात् कथन, बारम्बार कथन, पारस्परिक वार्तालाप, अनुकूल कथन, पुनरुक्ति।

अनुकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) देखादेखी कार्य, नकल। वह जो पीछे उत्पन्न हो या आवे। प्रतिरूपकरण, अनुरूप या सदृशकरण। "अनुकरण करता उसी का कीर है—मैथिली०।—**मूलक सिद्धांत**—वह सिद्धान्त, जिसके अनुसार मनुष्य ने पशु-पक्षियों के अनुकरण पर अपने शब्द बनाए।

अनुकरणात्मक—(वि०, सं०) अनुकरण युक्त, नकल उतारने की प्रवृत्ति से पूर्ण।

अनुकरणीय—(वि०; सं०) अनुकरण करने के योग्य।

अनुकर्ता—(संज्ञा, पु० सं०) अनुकरण या नकल करनेवाला, आज्ञाकारी, नक़लची। [स्त्री० **अनुकर्त्री**]।

अनुकर्षण—(संज्ञा, पु० सं०) आकर्षण, खींचतान।

अनुकार—(संज्ञा, पु० सं०) अनुकरण।

अनुकारी—(वि०) [सं० अनुकारिन्] अनुकरण करनेवाला, नक़ल करनवाला, आज्ञाकारी। [स्त्री० **अनुकारिणी**]।

अनुकूल—(वि०, सं०) मुआफ़िक़, पक्ष मे रहनेवाला, अनुसार, सहायक, प्रसन्न। "सदा रहै अनकूल"। **—सम्मति**-मुआफिक राय। [फ़ेवरेबुल ओपिनियन] ।(संज्ञा, पु०) वह नायक जो एक ही विवाहिता स्त्री मे अनुरक्त हो। एक प्रकार का अलंकार जिसमें प्रतिकूल से अनुकूल वस्तु की सिद्धि दिखलायी जाती है (काव्य-शास्त्र) (क्रि० वि०) तरफ़, ओर। "चली विपति वारिधि अनकूला"-तुल०।

अनुकूलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अप्रतिकूलता, अविरुद्धता, पक्षपात, सहायता, प्रसन्नता। [**अनुकूल्य**- सज्ञा, भा०]।

अनुकूलनाॐ—(क्रि० सं०) [सं० अनुकूलन] मुआफ़िक़ होना, हितकर होना, प्रसन्न होना, पक्ष मे होना। "मध्यबरात बिराजत अति अनकूल्यों" —जाम०। "दैव, अनुकूले और फूले तौ कहा सरो"—देव०। **मु०—होना या रहना**-प्रसन्न या पक्ष मे होना। **—पड़ना**-मुआफ़िक होना। **—जाना** -पक्ष मे हो जाना। **—चलना**-इच्छानुसार या आज्ञानुसार चलना। **—पाना या देखना**-पक्ष मे या प्रसन्न पाना।

अनुकृत—(वि०, सं०) अनुकरण या नकल किया हुआ।

अनुकृति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) देखादेखी कार्य, नकल, एक प्रकार का काव्यालंकार, जिसमे एक वस्तु का कारणान्तर से दूसरी वस्तु के अनुसार हो जान का कथन किया जाय।

अनुकृष्ट—(वि०, सं०) आकर्षित, आकृष्ट, खिचाव-युक्त।

अनुक्त—(वि०, सं०) अकथित, बिना कहा हुआ। (स्त्री०—**अनुक्ता**-न कही हुई)।

अनुक्रम—(संज्ञा, पु० सं०) क्रमानुसरण, सिलसिला, परिपाटी, रीति-भाँति, यथाक्रमत्व, आनुपूर्वी पद्धति।

अनुक्रमणिका—(संज्ञा, स्त्री० सं०) क्रम, सिलसिला, सूची। निघंटु। भूमिका। ग्रन्थों का मुखबंध। आभास। तालिका। क्रमानुसार सूची।

अनुक्रिया—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अनुक्रमण।

अनुक्रोश—(संज्ञा, पु० सं०) कृपा, दया, अनुकम्पा, स्नेह। अधिप ने अनुक्रुष्ण मान के-मैथिली०।

अनुक्षण—(क्रि० वि०, सं०) प्रतिक्षण, लगातार, निरंतर, सदा-सर्वदा नित्य, सब घड़ी, सर्वक्षण।

अनुख्याता—(संज्ञा, पु० सं०) अनुसन्धान करने वाला, अन्वेषक, पता लगाने वाला।

अनुग—(वि०, सं०) अनुगामी, अनुयायी, अनुकूल, मुआफ़िक। (संज्ञा, पु०) सेवक, दास, नौकर, भृत्य, अनुचर, पीछे चलन वाला, आज्ञाकारी, अनुसार चलनवाला।

अनुगत—(वि०, सं०) अनुगामी, अनुकूल। (संज्ञा, पु०) सेवक, आश्रित, शरणागत, पीछे चलन वाला, खुशामदी। "कत अनुनय—अनुगत-अनुबंधि" —वियो०।

अनुगति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अनुगमन, अनुसरण, अनुकरण, नक़ल, मरण।

अनुगमन—(संज्ञा, पु० सं०) पीछे चलने का कार्य। अनुसरण। समान आचरण। विधवा का सती होना। सदृश आचरण। सहवास। सहगमन।

अनुगामिता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अनुगमन, अनुवर्त्तन, अनुसरण। "कर अनुगामिता तुम्हारी" —हरिऔध।

अनुगामी—(वि०, सं०) पीछे चलनेवाला, समान आचरण करन वाला, आज्ञाकारी, अनुयायी, साथी, सहचर, सहकारी, अनुवर्ती। "फल अनुगामी महिपमनि"—तुल०। **—राज्य**-(पु०) अनुयायी या साथी राज्य [क्रांफ़ेटस्टेट]।

अनुगुण—(संज्ञा, पु० सं०) एक प्रकार का अलंकार जिममे किसी वस्तु के पूर्व गुण का दूसरी वस्तु के संसर्ग से बढ़ना प्रगट किया जाय।

अनुग्रह—(संज्ञा, पु० सं०) कृपा, दया, अनिष्ट-निवारण, रियायत, प्रसन्नता, करुणा।

अनुग्रही—(वि०, सं०) बाजीगरी में निपुण।

अनुग्रहीत—(वि०, सं०) जिसपर अनुग्रह किया गया हो, उपकृत, कृतज्ञ, प्रतिपालित, आश्वासित। [स्त्री० **अनुगृहीता**]।

अनुग्राहक—(वि० सं०) अनुग्रह करने-वाला, कृपालु, उपकारी, दयालु, करुणा-युक्त। [स्त्री० **अनुग्राहिका**]।

अनुग्राही—(वि०, सं०) अनुग्राहक, कृपालु। [वि० **—अनुग्राह्य**]।

अनुग्राह्य—(वि०, सं०) कृपा-पात्र, अनुग्रह-भाजन।

अनुचर—(संज्ञा, पु० सं०) दास, नौकर, सहचर, साथी, अनुयायी, अनुगामी, भृत्य। [स्त्री० **अनुचरी**]।

अनुचय—(संज्ञा, पु० सं०) सारांश [एक्सट्रैक्ट]। (वि०) अमूर्त्त।

अनुचयनिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोशवारा बही [ऐबस्ट्रैक्ट बुक] ।

अनुचारक—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुचर, सेवक, किंकर [स्त्री० अनुचारिका] ।

अनुचित—(वि०, सं०) अयुक्त, नामुनासिब, बुरा, खराब, अयोग्य, अनुपयुक्त, नीति-विरुद्ध, रीति के विपरीत ।

अनुचिन्हित—(वि०, सं०) जिस पर मुहर लगी हो।—**टिकट**-(संज्ञा, पु०, सं०+अं०) [इम्प्रेस्ड स्टैम्प] ।

अनुच्छ्रित—(वि०, सं०) उन्नति रहित, जो बहुत ऊँचा न हो ।

अनुज—(वि०, सं०) पीछे उत्पन्न होने-वाला । (संज्ञा, पु०) छोटा भाई । "अनुज सखा सग भोजन करहीं" तुल० । [स्त्री० **अनुजा**] ।

अनुजा—(वि०, स्त्री०, सं०) पीछे उत्पन्न होने वाली । (संज्ञा, स्त्री०) छोटी बहिन । "नहिं मानै कोऊ अनुजा-तनुजा" तुल० ।

अनुजीवी—(वि०, सं०) पराधीन, आश्रित, परतंत्र । (संज्ञा, पु०) दास, सेवक, नौकर ।

अनुज्झित—(वि०, सं०) अविचत, अत्यक्त, न छोड़ा हुआ ।

अनुज्ञा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आज्ञा, हुक्म, इजाजत, आदेश । एक प्रकार का अलंकार, जिसमें किसी दूषित वस्तु में कोई गुण देखकर उसके पाने की इच्छा प्रगट की जाती है ।

अनुज्ञात—(संज्ञा, पु०, सं०) आज्ञा-प्राप्त ।

अनुज्ञापन—(संज्ञा, पु०, सं०) आज्ञा-प्रदान, अनुमति वा अधिकार-दान ।—**पत्र**-(पु०) [लाइसेंस] —**पदाधिकारी**-(पु०) अनुज्ञापत्र प्रदान करने वाला अधिकारी [लाइसेंसिंग अफिसर]

अनुतप्त—(वि०, सं०) अनुशोची, पश्चात्तापविशिष्ट, पछतानेवाला ।

अनुताप—(संज्ञा, पु०, सं०) तपन, दाह, जलन, दुःख, रंज, पछतावा, अफसोस, अनुशोचन, पश्चात्ताप ।

अनुतापित—(वि०, सं०) पछतानेवाला, जलन से भरा, दुःखित, अनुशोचक । [स्त्री० **अनुतापिता**] ।

अनुतारा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपग्रह, उपतारा, जैसे चंद्रमा ।

अनुत्कंठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निरुद्वेगता, उत्कंठा-रहित ।

अनुत्तम—(वि०, सं०) विशिष्ट, निकृष्ट । (संज्ञा, पु०) विष्णु, शिव ।

अनुत्तर—(वि०, सं०) निरुत्तर, क़ायल, बे उत्तर या लाजवाब । (संज्ञा, पु०) दक्षिण दिशा का स्वामी । स्थिर । तुच्छ ।—**दायी शासन**-(पु०) प्रजातन्त्रात्मक सरकार [नानरिसपांसिबुलगवर्न्मेंट] ।

अनुत्पादक—(वि०, सं०) अनुपजाऊ [अनप्रोडक्टिव] ।

अनुत्फुल्ल—(वि०, सं०) कुम्हलाया हुआ, म्लान । "अवलोकेगी अनुत्फुल्ल वह क्यों उसे"—**हरिऔध** ।

अनुत्साह—(संज्ञा, पु० सं०) प्रयास का अभाव, संकल्प की कमी । (वि०) उत्साह-रहित, संकल्पाभाव-पीडित ।

अनुदर्शन—(संज्ञा, पु०,सं०) पदार्थ-आदि को किसी विशेष कोण से अवलोकना । [**पर्सपेक्टिव**] ।

अनुदात्त—(वि०, सं०) छोटा, तुच्छ, नीचा (स्वर) अनुदार, लघु (उच्चारण) । (संज्ञा, पु०) स्वर के तीन भेदों में से एक ।

अनुदार—(वि०, सं०) अदाता, कृपण, स्त्री वशवर्ती, अनुत्तम ।—**दल**-(पु०) टोरीदल इंगलैण्ड में [टोरीपार्टी] (भा० संज्ञा, स्त्री०) (**अनुदारता**—कृपणता) ।

अनुदिन—(क्रि०, वि०, सं०) नित्यप्रति, प्रतिदिन, रोजाना, रोजमर्रा, प्रत्यह, नित्य, सदा, सर्वदा, हमेशा ।

अनुदेश—(संज्ञा, पु०, सं०) [परेम्प्टरी आर्डर] ।

अनुद्यम—(संज्ञा, पु०, सं०) उद्यम-रहित, यत्नहीन ।

अनुद्यमी—(वि०, सं०) उद्यम न करने वाला, निरुद्यमी, अनुद्योगी ।

अनुद्योग—(संज्ञा, पु०, सं०) उद्योग-रहित ।

अनुद्योगी—(वि०, सं०) उद्योग न करने वाला, निरुद्यमी ।

अनुद्वाह—(संज्ञा, पु०, सं०) अविवाह, अनूढावस्था कुमारता, कुँआरपन (दे०) ।

अनुद्विग्न—(वि०, सं०) निश्चिन्त, उद्वेगरहित, स्वस्थ, स्थिर, शान्त, अखिन्न ।

अनुद्वेग—(वि०, सं०) उद्वेग-हीन, अव्याकुल, अविकल, निश्चिन्त, स्वस्थ ।

अनुधावक—(वि०, सं०) अनुसरण करने वाला ।

अनुधावन—(संज्ञा०,पु०,सं०) अनुसरण, अनुकरण, नकल, अनुसंधान । [परसुएंस] ।

अनुधावित—(वि०, सं०) पीछे चलता हुआ ।

अनुनय—(संज्ञा, पु०,सं०) विनय, विनती, प्रार्थना, विनम्र कथन । "बैठे पढ़ते रहे छंद अनुनय के"—दिन० ।

अनुनयी—(वि०, सं०) नत, विनीत, नम्र।

अनुनाद—(संज्ञा, पु० सं०) प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द, गज। "निरंतर करना था अनुनाद"—मैथिली०।

अनुनादक—(वि०, सं०) प्रतिध्वनि करने वाला।

अनुनादित—(वि०, सं०) प्रतिध्वनित, गूंजित, गुंजित।

अनुनायिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नायिका की सहचरी, सखी, सेविका।

अनुनासिक—(वि०, सं०) मुख और नाक से बोला जाने वाला स्वर या वर्ण-जैसे ङ, ञ, ण, न, म नासिका-सम्बन्धी, सानुनासिक। (विलो०) [**अननुनासिक**] जो अनुनासिक न हो।

अनुनीत—(वि०, सं०) अनुशासित, सुसंस्कृत, स्थिरीकृत।

अनुप—(वि०, सं०) अनुपम, अतुल्य, अपूर्व।

अनुपकारी—(वि०, सं०) अहितकारी, अनुपकारक। [भा०, संज्ञा, स्त्री० **अनुपकारिता**] अहितकारिता।

अनुपनीय—(वि०) [हिं० अनुरूपना] अनुरूप किये जाने के योग्य, नकल उतारने के योग्य।

अनुपपत्र—(वि०, सं०) अप्रतिपादित, अप्रमाणित, अयुक्त, दुर्बल, क्षीण।

अनुपम—(वि०, सं०) उपमा-रहित, बेजोड़, उत्तम, श्रेष्ठ, अद्वितीय, जिसकी समानता न हो सके। [भा० संज्ञा, स्त्री०, सं० **अनुपमता**]।

अनुपमेय—(वि०, सं०) असदृश, असम, अतुल्य, अनुपम, विषम, अद्वितीय, बेजोड़।

अनुपयुक्त—(वि०, सं०) अयोग्य, बेठीक, अनुचित, अयुक्त, असंगत, जो उपयुक्त न हो।

अनुपयुक्तता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अयोग्यता, अयुक्तता, उपयुक्तता की कमी।

अनुपयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यवहार का अभाव, दुर्व्यवहार।

अनुपयोगिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपयोगिता का अभाव, निरर्थकता।

अनुपयोगी—(वि०, सं०) बेकाम, व्यर्थ का, निरर्थक।

अनुपल—(संज्ञा, पु०, सं०) पल का साठवाँ भाग।

अनुपलक्षित—(वि०, सं०) जो पहचाना न गया हो, अचिह्नित।

अनुपलब्ध—(वि०, सं०) अप्राप्त, जो न मिल सके।

अनुपस्थित—(वि०, सं०) अविद्यमान, गैरहाज़िर, जो सामने मौजूद न हो।

अनुपस्थिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अविद्यमानता, गैरहाज़िरी।

अनुपात—(संज्ञा, पु०, सं०) गणित की त्रैराशिक क्रिया, सम, समान, समता-भाव, समानता के साथ बराबर सम्बन्ध।

अनुपातक—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्महत्या के समान पाप, महापातक, बड़े पापों के बराबर पाप। [वि० **अनुपातकी**—महापापी]।

अनुपान—(संज्ञा, पु०, सं०) औषधि के साथ या उसके ऊपर से खायी जानेवाली वस्तु, पथ्य।

अनुपाय—(वि०, सं०) उपाय-हीन, निरवलंब, निराश्रय, निरुपाय। "दे सकूंगा आप को अनुपाय" —मैथिली०। [संज्ञा, स्त्री० **अनुपायता**]।

अनुपालन—(संज्ञा, पु०, सं०) आदेश के अनुसार व्यवहार।

अनुपूरक—(वि०, सं०) पूर्ति करने के लिए समाविष्ट। न्यूनतापूर्तिकारक, परिशिष्टात्मक [सप्लीमेंटरी] —**आयव्ययक** [सप्लीमेंटरी बजट]।

अनुपूर्वतः—(वि०, सं०) यथाक्रम, क्रमानुसार [सक्सेसिवली]।

अनुप्राणित—(वि०, सं०) प्रेरणा-संचार का पात्र, प्रेषित, समर्पित। "श्रान्त इन्द्रियाँ अनुप्राणित हों" —पंत।

अनुप्रार्थी—(संज्ञा, पु०, सं०) कानूनी सलाह देने वाला एक प्रकार का वकील [सालिसिटर]।

अनुप्राशन—(संज्ञा, पु०, सं०) खाने का कार्य, खाना। (क्रि०, सं०) भक्षण करना, खाना, भोजन करना। (वि०) [**अनुप्राशित**]—खाया हुआ, भोजन किया हुआ।

अनुप्रास—(संज्ञा, पु०, सं०) वह शब्दालंकार जिसमें किसी पद का एक ही अक्षर बराबर आता है, वर्णावृत्ति, वर्णमैत्री, पद-मैत्री, यमक, पदविन्यास, मित्राक्षर-योजना, इसमें स्वरसाम्य हो या न हो केवल वर्ण-समानता ही मुख्य है, इसके भेद हैं :— छेक, वृत्यनुप्रास, श्रुत्यनुप्रास, लाटा, अंत्यानुप्रास, वर्ण-साम्य।

अनुप्रेक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ध्यान से अवलोकन, मनन, चिन्तन।

अनुबंध—(संज्ञा, पु०, सं०) बंधन, लगाव। आगा-पीछा। आरंभ। मित्र, सुहृद, सन्बन्ध, अनुवर्तन। अनुगमनकारी, मुख्यानुयायी, ठेका या करार [कांट्रैक्ट]।

अनुबंधन—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रमपूर्वक संस्थापन।

अनुबंधी—(संज्ञा, पु०, सं०) ठेकेदार [कंट्रैक्टर]।

अनुबद्ध—(वि०, सं०) सम्बन्धित।

अनुभव—(संज्ञा, पु०, सं०) साक्षात करने से प्राप्त ज्ञान, परीक्षा से प्राप्त ज्ञान, तजरबा, यथार्थज्ञान की उपलब्धि, अनुमान, बोध, समझ, ज्ञान।

अनुभवति—(वि०, सं०) अनुभव किया हुआ। "उर-अनुभवति न कहि सक कोऊ"—तुल०।

अनुभवना*—(क्रि०, सं०) [सं० अनुभव] अनुभव करना। "पुन्यफल अनुभवत सुतहिं बिलोकि कै नन्द घरनि"—सूर०।

अनुभवी—(वि०, सं०) अनुभव रखने वाला, तजरबेकार, जानकर।

अनुभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) महिमा, बड़ाई, दृढ़ अनुमान, निश्चय, भाव सूचक, प्रभाव। काव्य में रस के चार योजकों में से एक, चित्त के भाव भावनाओं को प्रगट करने वाले चिन्ह या लक्षण, जैसे कटाक्ष, रोमांच आदि आंगिक या शारीरिक क्रियायें या चेष्टायें।

अनुभावक—(वि०, सं०) अनुभव करने वाला, अनुभूतिशील बनाने वाला।

अनुभावी—(वि०) [सं० अनुभाविन्] अनुभवयुक्त, समवेदना-सहित, स्वयमेव सब बातों का देखने-सुनने वाला साक्षी, चश्मदीद गवाह। [स्त्री० **अनुभाविनी**]।

अनुभाषण—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रधान कथन के अनंतर उसकी व्यवस्था के लिए पुनः कथन, उपकथन।

अनुभूत—(वि०, सं०) जिसका अनुभव या साक्षात ज्ञान हो चुका हो, तजरबा की हुई, परीक्षित, निश्चित, बीती, ज्ञात।

अनुभूति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनुभव, परिज्ञान, बोध। "हिमशीत-भावना में आग अनुभूति की दो"—दिन०।

अनुभूयमान—(वि०, सं०) जो अनुभव हो रहा हो, जिसका अनुभव किया जाता हो।

अनुमत—(वि०, सं०) सम्मत, स्वीकृत, अंगीकृत, सहमत, अँगेजा (दे०)।—**धातृका**-(स्त्री०) अनुमत दाई [लाइसेंस्ड मिडवाइफ]।

अनुमति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) आज्ञा, हुक्म, सम्मति, राय, अनुज्ञा।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) अनुज्ञा या अनुज्ञा-पत्र [लाइसेंस]।—**पत्र-प्राप्त**-(वि०) [लाइसेंस्ड]।—**०दाता**-(संज्ञा, पु०, सं०) अनुमति देने वाला [लाइसेंसर]।—**०धर**—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुमति-पत्रधारी [लाइसेंस होल्डर]।

अनुमती—(वि०, स्त्री०, सं०) सहमता, अनुगामिनी।

अनुमनन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वीकृति-दान।

अनुमरण—(संज्ञा, पु०, सं०) एक साथ मरना, सहमरण, पश्चातमरण, सती होना।

अनुमान—(संज्ञा, पु०, सं०) अटकल, अंदाजा, क़यास। न्याय के चार प्रमाण-भेदों में से एक, जिससे प्रत्यक्ष साधन के द्वारा अप्रत्यक्ष साध्य की भावना हो। तर्क अनुभव, बोध, हेतु के द्वारा निर्णय, विचार, कल्पना। एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें किसी साधन रूपी ज्ञात वस्तु के आधार पर तत्सदृश या तत्सम्बन्धी अन्य वस्तु को भावना प्रकट की जावे (काव्य-शास्त्र)।

अनुमानना*—(क्रि०, अ०, सं०) [सं० अनुमान] अनुमान करना, अंदाजा करना, समझना, सोचना, विचारना, कल्पना करना, अटकल लगाना। "हम तौ न जानै अनुमानै एक मानै यहै"—रत्ना०। "जाकी जितनी बुद्धि हिये मैं सो तितनी अनुमानै"—सूबे०।

अनुमानित—(वि०, सं०) अनुमान किया हुआ, कूता हुआ।—**मूल्य**-(संज्ञा, पु०, सं०) अनुमान से निर्धारित मूल्य [ऐप्राक्सिमेट वैल्यू]।

अनुमापक—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्णायक, अनुमान का हेतु, निश्चय का कारण।

अनुमित—(वि०, सं०) अनुमान किया हुआ।

अनुमिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनुमान, अंदाज।

अनुमुद्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) टाइप करनेवाला [टाइपिस्ट]।

अनुमेय—(वि०, सं०) अनुमान के योग्य।

अनुमोद—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रसन्नता जो सहानुभूति और समर्थन से प्राप्त हो।

अनुमोदक—(वि०, सं०) अनुमोदन करनेवाला, समर्थक, सम्मति-प्रकाशक।

अनुमोदन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रसन्नता का प्रकाशन, खुश होना, समर्थन, सन्तोष-प्रकाश, सामोद सम्मति, प्रवृत्ति प्रदान, प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार, आमोदकरण।

अनुमोदित—(वि०, सं०) अनुमत, आमोदित, आह्लादित, प्रसन्न, सन्तुष्ट, समर्थित, स्वीकृत, सम्मत।

अनुयायी—(वि०) [सं० अनुयायिन्] अनुगामी, पीछे चलनेवाला, अनुकरण करनेवाला। (संज्ञा, पु०) सेवक, शिष्य, अनुवर्ती, अनुसारी, दास।

अनुयुक्त—(वि०, सं०) जिसके सम्बन्ध में जाँच-पड़ताल की जाय, जिसकी परीक्षा ली जाय। निंदा का पात्र, आलोचना का पात्र।

अनुयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) ताड़ना, धमकी, घुड़की, तिरस्कार, आक्षेप, प्रश्न, जिज्ञासा, निंदा, शिक्षा, उपदेश, प्रबोध, अनुशासन।

अनुयोगकारी—(वि०, पु०, सं०) तिरस्कारक, आक्षेपक, प्रश्नकर्ता।

अनुयोगी—(वि०, सं०) प्रश्नकर्ता, परीक्षक।

अनुयोजक—(संज्ञा, पु०, सं०) उपदेशक, अनुयोगकारी।

अनुयोजन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रश्न, जिज्ञासा, पूछपाछ।

अनुयोज्य—(वि०, सं०) अनुयोगार्ह, आज्ञाप्य, निंदनीय, आक्षेप के योग्य।

अनुरंजक—(वि०, सं०) प्रसन्न करने-वाला, मनोरंजक।

अनुरंजन—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुराग, प्रीति, दिल-बहलाव, मनोरंजन।

अनुरंजनीय—(वि०, सं०) अनुरंजन के योग्य।

अनुरंजित—(वि०, सं०) अनुरक्त, अनुरंजनयुक्त, प्रसन्न, सानुराग, रँगा हुआ। "दश दिशा अनुरंजित हो गयीं"—हरिऔध।

अनुरक्त—(वि०, सं०) अनुराग-युक्त, आसक्त, लीन, रत, प्रेमी, प्रेमाभिभूत।

अनुरणन—(संज्ञा, पु०, सं०) घंटा, नूपुर आदि की गूँज।—**मूलकतावाद**—(संज्ञा, पु०, सं०) यह सिद्धान्त कि निर्जीव पदार्थों के अनुरणन पर मनुष्य ने अपने शब्द बनाये, जैसे कल-कल, छल-छल।

अनुरत—(वि० सं०) आसक्त, लीन।

अनुराग—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रीति, प्रेम, स्नेह, ममता आसक्ति, रति, प्रशंसा। थोड़ी लालिमा।

अनुरागना*—(क्रि०, स०) [सं० अनुराग] प्रीति करना, प्रेम में मग्न होना, प्रेम करना, प्रसन्न होना, लीन या रत होना। "गारिगान सुनि अति अनुरागे वचन सुनत पुरजन अनुरागे"—तुल०।

अनुरागी—(वि०) [सं० अनुरागिन्] अनुराग रखने-वाला, प्रेमी, अनुरक्त। [स्त्री० **अनुरागिन**] "या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय"—बिहारी।

अनुराध—(संज्ञा, पु०, सं०) बिनती, विनय, प्रार्थना।

अनुराधना—(क्रि०, स०) [सं० अनुराध] विनय करना, मनाना, प्रार्थना करना। [वि० **अनुराधित**, **अनुराधक**]।

अनुराधनीय-अनुराध्य—(वि०, सं०) प्रार्थनीय, विनय के योग्य।

अनुराधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २७ नक्षत्रों में से १७वाँ नक्षत्र, इसकी तीन तारायें हैं; इसका स्थान वृश्चिक राशि का मुख है।

अनुरूप—(वि०, सं०) तुल्य या समान रूप का, सदृश, समान, योग्य, उपयुक्त, तुल्य, एकसा, अनुसारी, अनुकूल।

अनुरूपक—(संज्ञा, पु०, सं०) सदृश वस्तु, प्रतिमूर्ति।

अनुरूपता—(संज्ञा, स्त्री०, मा०, सं०) समानता, सदृशता, अनुकूलता, उपयुक्तता।

अनुरूपना*—(क्रि०, स०) [सं० अनुरूप] सदृश बनाना, अनुसार बनाना, समान रूप बनाना, नकल उतारना। "अंग अंग अनुरूपियत, जहँ रूपक को रूप"।

अनुरूपित—(वि०, सं०) अनुकूल बनाया हुआ, अनुरूप किया गया, सदृश बनाया हुआ।

अनुरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) रुकावट, बाधा, प्रेरणा, उत्तेजना, विनयपूर्ण आग्रह, दबाव, उपरोध, अनुवर्तन, अपेक्षा।

अनुलाप—(संज्ञा, पु०, सं०) पुनः पुनः कथन, निरंतर निवेदन, मुहुः मुहुः आलाप। [वि० **अनुलापित** **अनलापनीय, अनुलापक**]।

अनुलिप्त—(वि०, सं०) अभिषिक्त, लिप्त, विदग्ध।

अनुलेप—(संज्ञा, पु०, सं०) अंगलेप, उबटन।

अनुलेपन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी तरल वस्तु की तह चढ़ाने, लेप, उबटन लगाने लीपने का कार्य।

अनुलेपित—(वि०, सं०) अनुलिप्त, लीपा हुआ, उबटन या अंगराग लगाया हुआ। "अंगराग अनुलेपित अंग"—

अनुलेपी—(संज्ञा, पु०, सं०) अंगलेपक, उबटन आदि लगानेवाला।

अनुलोम—(सं०, पु०, सं०) ऊँचे से नीचे आने का काम, उतार का सिलसिला, स्वरों का उतार, क्रमशः अवरोहण (सङ्गीत)। (वि०) सीधा, क्रम से, अविलोम, यथाक्रम, सिलसिलेवार। (संज्ञा, पु०) जाति-विशेष।—**ज**—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्राह्मण के औरस और क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न सन्तान।—**विवाह**—(पु०) उच्च वर्ण के पुरुष का अपने से नीचे वर्ण की स्त्री से विवाह।

अनुलोमन—(संज्ञा, पु०, सं०) पेट की मल वाली

कड़ी गाँठों को गिरानेवाली औषधि, कब्जियत को दूर करने वाली रेचक या दस्तावर दवा।

अनुल्लंघनीय—(वि०, सं०) जिसका उल्लंघन न किया जा सके [परेम्टरी]।—**आदेश**-(पु०) [परम्टरी आर्डर्]।

अनुवर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुकरण, अनुगमन, समान आचरण, अनुसरण, किसी नियम का कई स्थानों पर बार-बार प्रयोजन।

अनुवर्ती—(वि०) [सं० अनुवर्तिन्] अनुसरण करने वाला, अनुयायी, अनुगामी। [स्त्री० **अनुवर्तिनी**]।

अनुवाक—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रंथ-विभाग, अध्याय या प्रकरण का एक भाग, वेद के अध्याय का एक अंश; स्कंध, ग्रंथावयव।

अनुवाद—(संज्ञा, पु०, सं०) पुनरुक्ति, भाषान्तर, उल्था, तर्जुमा, वाक्य का वह भेद जिसमें कही हुई बात का फिर-फिर कथन हो, (न्याय०) निंदा, अपवाद।

अनुवादक—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुवाद या उल्था करनेवाला, भाषान्तरकार, तर्जुमा करनेवाला।

अनुवादित—(वि०, सं०) अनुवाद या उल्था किया हुआ।

अनुविहित—(वि०, सं०) कानून-सम्मत [स्टेच्यूटरी] —**बंधान**-(पु०) कानूनी गुंजाइश। [स्टेट्यूटरी प्राविजन] ।—**बैठक**-(पु०) कानून द्वारा निर्धारित की हुई बैठक। [स्टेट्यूटरी मीटिंग]।—**समितक**-(पु०) राजकीय आयोग, शाही कमीशन [स्टेट्यूटरी कमीशन]।

अनुवृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी पद के पहिले अंश से कुछ वाक्य या शब्द अर्थ को स्पष्ट करने के लिए लाकर मिलाना। उपजीविका, सेवामार्ग।

अनुवेदन—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षमा-याचना [एपालीजी]—**पत्र**-(पु०) [लिटर आव् एपालोजी]।

अनुवेदना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समवेदना, सहानुभूति।

अनुवेश—(संज्ञा, पु०, सं०)अग्रज के विवाह के पहले अनुज का विवाह, अनुसरण।

अनुशय—(संज्ञा, पु०, सं०) पश्चात्ताप, अनुताप, जिघांसा, द्वेष।

अनुशयाना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह परकीया नायिका, जो अपने प्रिय-मिलन-स्थान के नष्ट हो जाने से दुखी हो, सहेट-नाश से दुखी परकीया।

अनुशयी—(संज्ञा, पु०, सं०) पश्चात्ताप करने वाला, दुखी। रोग-विशेष। शत्रु, बैरी।

अनुशासक—(संज्ञा, पु० सं०) आज्ञा या आदेश देने वाला, हुक्म देने वाला, हाकिम, उपदेष्टा, शिक्षक, देश या राज्य का प्रबंधकर्ता, शासनकर्ता।

अनुशासन—(संज्ञा, पु०, सं०) आदेश, आज्ञा, हुक्म। "अनुशासन ही था मुझे अभी तक आता"—मैथिली०। उपदेश, शिक्षा, व्याख्यान। विवरण, महाभारत का एक पर्व। "अर्थ शब्दानुशासनम्"—महाभाष्य०। [वि० **अनुशासनीय**]।

अनुशासित—(वि०, पु०, सं०) जिस पर शासन किया जाय, शिक्षा-प्राप्त, उपदेशप्राप्त।

अनुशास्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) शिक्षक, उपदेष्टा, अनुशासक।

अनुशिष्ट—(वि०, सं०) अनुशासित।

अनुशीलन—(संज्ञा, पु०, सं०) चिंतन, मनन, विचार, बारम्बार अभ्यास, आन्दोलन।

अनुशीलित—(वि०, सं०) सुचिंतित, मनन किया हुआ, अभ्यास किया हुआ।

अनुशोक—(संज्ञा, पु०, सं०) पश्चात्ताप, खेद, पछतावा।

अनुशोच—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुताप, पश्चात्ताप, पछतावा, खेद। [रिग्रेट]।

अनुशोचक,—शोची-(वि०, सं०) पश्चात्ताप करने वाला।

अनुशोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) पश्चात्ताप करना, पछताना। [वि० **अनुशोचनीय**]।

अनुषंग—(संज्ञा, पु०, सं०) करुणा, दया, सम्बन्ध, लगाव, प्रसंग से एक वाक्य के आगे वाक्य-संयोजन, प्रणय, मिलाप, मिलन [वि० **अनुषंगिक**]।

अनुषंगिक—(वि०, सं०) प्रसंगवशात्, अन्य जोड़ा हुआ वाक्य, सम्बन्धी, कारुणिक, मिला हुआ।

अनुषद्भवन—(संज्ञा०, पु०, सं०) व्यवस्थापक सभागृह [सिनेट हाउस]।

अनुष्टुप—(संज्ञा, पु०, सं०) ३२ अक्षरों का वर्णिक वृत्त या छंद, अनुष्टुप्, आठ वर्णों के चार समपाद वाला छंद—सरस्वती नामक छंद-विशेष (पिं०)।

अनुष्ठान—(संज्ञा, पु०) [सं० अनु+स्था+अनट्-प्रत्य०] कार्यारंभ, उपक्रम, नियमानुकूल कोई काम करने का विधान, शास्त्र-विहित-कार्य, किसी अभीष्ट-फल के लिए किसी देवता का आराधन, प्रयोग, पुरश्चरण, सूचना, आचरण,।—**शरीर**-(संज्ञा, पु०) लिंगदेह, आद्य शरीर।

अनुष्ठापन—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुष्ठान-समारंभ।

अनुष्ठित—(वि०) [सं० अनु+स्था+क्त] आरब्ध,

आचरित, जिसका आरम्भ हो चुका हो, आराध्य, प्रयुक्त।

अनुष्ठेय—(वि०) [सं० अनु+स्था+य] उपक्रान्त, कर्मारब्ध, किया जाने वाला, करने के योग्य।

अनुसंधान—(संज्ञा, पु०) [सं० अनु+सं+धा+अनट्] पीछे लगने, खोजने, ढूढ़ने, सोचने, गवेषणा करने का कार्य, अन्वेषण, चेष्टा, संधानकरण, जाँच-पड़ताल, कोशिश तहक़ीक़ात।

अनुसंधानना*—(क्रि०, सं०) [सं० अनुसंधान्] खोजना, ढूँढ़ना, सोचना, विचारना, (रामा० ८८)। [वि० **अनुसंधेय**]।

अनुसंधानी—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुसन्धान या खोज या अन्वेषण करने वाला।

अनुसंधेय—(वि०, सं०) खोज के योग्य।—**अपराध**—(पु०) जाँच के योग्य अपराध [**काग्निजेबुल आफेंस**]।

अनुसयाना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अनुशयाना]। देखिए अनुशयाना।

अनुसये—(संज्ञा, पु०, दे०) आशंका।—"विधि अनुसये मेलि साजि"—विद्या०।

अनुसर—(वि०, सं०) अनुसार, समान।

अनुसरण—(संज्ञा, पु०) (सं० अनु+सृ+अनट्) पीछे या साथ गमन, अनुहार, अनुकरण, नक़ल, अनुकूल आचरण, अनुगमन।

अनुसरन—(संज्ञा, पु०, दे०) देखिए अनुसरण।

अनुसरना*—(क्रि०, स०) [सं० अनुसरण] पीछे या साथ चलना, अनुकरण करना, नक़ल करना, अनुगमन करना। "सिर धरि गुरु आयसु अनुसरहू"—तुल०।

अनुसार—(वि०) [सं०अनु+सृ+घञ्] अनुकूल, सदृश, समान, मुआफ़िक़, अनुरूप।

अनुसारना*—(क्रि०, स०) [सं० अनुसरण] अनुसरण करना, आचरण करना, कोई कार्य करना, चलना, कहना। "पुलकित तनु अस्तुति अनुसारी'—"ताते कछुक बात अनुसारो"—तुल०।

अनुसारी*—(वि०, दे०) [सं० अनुसार] अनुसरण करने वाला।

अनुसाल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु+हि० सालना] पीड़ा, वेदना, दुःख, पीर (दे०)। [क्रि०, स०, दे० **अनुसालना**]।

अनुसासन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अनुशासन] अनुशासन।

अनुसूचन—(संज्ञा, पु०) [सं० अनु+सूच+अनट्] विचार, ध्यान। [स्त्री० **अनुसूचना**—आन्दोलन, सुचिन्ता, अनुष्ठान]।

अनुस्मरण—(संज्ञा, पु०, सं०) याद आने की क्रिया—**पत्र**—(पु०) वह पत्र जिससे कोई बात याद आवे [रिमाइंडर]।

अनुस्मृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह याद जो प्रिय हो, मधुर स्मृति।

अनुस्वार—(संज्ञा, पु०) (सं० अनु+स्वृ+घञ्) स्वर के पीछे उच्चरित होने वाला अनुनासिक वर्ण या स्वर जिसे इस प्रकार लिखते है (ं) स्वर के ऊपर की बिन्दी, इसके आधे रूप को चंद्रबिन्दु (ँ) कहते है, यह अर्ध अनुस्वार है—निगृहीत।

अनुहरत*—(वि०) [हि० अनुहरता] अनुसार, अनुरूप, समान, उपयुक्त, योग्य, अनुकूल। "मोहि अनुहरत-सिखावन देहू"—तुल०।

अनुहरना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० अनुहरण] अनुकरण या नकल करना, समान होना, देखा, देखी कोई काम करना, बराबरी करना।

अनुहरिया*—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० अनुहार] आकृति, मुखानी (दे०)।

अनुहार—(वि०) [सं० अनु+हृ+घञ्] सदृश, तुल्य, समान, अनुसार, अनुकूल, उपयुक्त। (संज्ञा, स्त्री०) रूप, भेद, प्रकार, मुखानी, आकृति, सादृश्य, (दे०, स्त्री०) [**अनुहारि**]-"वर अनुहारि बरात न भाई"—"देखी सासु आनि अनुहारी" तुल०। "यह **अनुहारि** कौ निहारि अनुमानै हम"—'सरस'।

अनुहारना*—(क्रि०, स०) [सं० अनुहारण] तुल्य करना, सदृश करना, समान करना, उपमा देना। "खंजनहू न जान अनुहारे"—सूर।

अनुहारी—(वि०) [सं० अनुहारिन] अनुकरण या नकल करने वाला। (स्त्री०) [**अनुहारिणी**] (दे०) [**अनुहारिनी**]।

अनुहार्य—(संज्ञा, पु०) [सं० अनु+हृ+ध्यण्] मासिक श्राद्ध। (वि०) अनुहार के योग्य।

अनूजरा*—(वि०, दे०) [सं० अनुज्वल] मैला, मलीन, मलिन, **अनूजरो** (ब्र०)।

अनूठा—(वि०) [सं० अनुत्थ] अनोखा, विचित्र, विलक्षण, निराला, अद्भुत, अच्छा, बढ़िया। [स्त्री० **अनूठी, अनूठो** ब्र०]।

अनूठापन—(संज्ञा, पु०) [हि० अनूठा+पन—प्रत्य०] विचित्रता, विलक्षणता, अपूर्वता, अनोखापन, सुन्दरता, अच्छाई।

अनूढ़ा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी पुरुष से प्रेम

रखने वाली अविवाहिता स्त्री, एक प्रकार की नायिका (नायिका-भेद) [विलोम—ऊढ़ा]।—गामी-(पु०) व्यभिचारी, लंपट, वेश्यागामी।

अनूतन—(वि०, सं०) जो नूतन या नया न हो, पुराना, अनवीन।

अनूतर*—(वि०,दे०) [सं० अनुत्तर] निरुत्तर, मौन, उत्तर-रहित।

अनूदित—(वि०, सं०) कहा हुआ, भाषान्तरित, उल्था किया हुआ, अनुवादित, तर्जुमा किया हुआ।

अनून*—(वि०, दे०) [सं० अन्यून] न्यून, जो कम न हो, पूर्ण, बहुत (भाव०)।

अनूप—(संज्ञा, पु०, सं०) जल प्रदेश, वह स्थान जहाँ जल बहुत हो, जल-प्लावित या सजल प्रान्त। (वि०, दे०) [सं० अनुपम] जिसकी उपमा न दी जा सके, निरुपम, बेजोड़, सुन्दर, अच्छा, अद्वितीय, [**अनूपा**] (दे०)। "इनके नाम अनेक अनूपा"—तुल०। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० अनुपज] उपज या पैदावार का अभाव, फ़सल के न पैदा होने, न जमने की स्थिति।

अनूपज—(संज्ञा, पु०, सं०) आर्द्रक, अदरक, आदी। [वि० **अनुपजाऊ**]।

अनूपम—(वि०, सं०) अनुपम, निरुपम, अनुपमेय, उपमा-रहित, अद्वितोय, बेजोड़। (संज्ञा, भा०, स्त्री०) [**अनूपमता**]—अद्वितीयता, विचित्रता, अनुपमता। "देख्यौ एक अनूपम बाग"—सूर०। (वि०) [**अनुपमेय**]।

अनृत—(संज्ञा, पु०, सं०) मिथ्या, असत्य, झूठ, अन्यथा, विपरीत। (वि०) अतथ्य, झूठ, असत्य। —**वाद**-(पु०) असत्य-वाद, झूठ कथन।—**वादी**-(पु०) असत्य-वादी, मिथ्या-वादी।

अनेक—(वि०) [सं० अन्+एक] एक से अधिक, बहुत, बहु, भूरि, कई, अगणित, ढेर। (दे०) अनेग। (व० व० ब्र०)।—**ज**-(पु०) द्विज, पक्षी, बहुजात। (वि०) वेश्या पुत्र, जारज।

अनेकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भेद, विभेद, विरोध, मताधिक्य, आधिक्य, अधिकता, बहुलता। [पु० **अनेकत्व**]।—**धा**-(अव्य०) अनेक बार, बारंबार। —**वाद**-(पु०) बहुलवाद [प्लूरलिज्म]।

अनेकशः—(अव्य०, सं०) अनेक प्रकार, बहु प्रकार, बहुत भाँति।—**संख्यक**-(वि०) एक से अधिक संख्यावाले, बहुल [प्लूरल]।—०**कार्यकारिणी**-(स्त्री०) बहुसंख्यक प्रबंध-कारिणी [प्लूरल इक्ज़ीक्यूटिव]।—**मत**-(पु०) बहुलमत [प्लूरल वोट]।

अनेकार्थ—(वि०, यौ०) [सं० अनेक+अर्थ] जिसके बहुत से अर्थ हों।

अनेकार्थक—(वि०, सं०) अनेक अर्थवान्। (संज्ञा, पु०) अनेक अर्थों वाला।

अनेगॐ—(वि०, दे०) [सं० अनेक] देखिए अनेक।

अनेड़—(वि०, दे०, प्रान्ती०) निकम्मा, टेढ़ा, ख़राब, बुरा। "पिय को मारग सुगम है, तेरा चलन अनेड़"—कबीर।

अनेम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अ+नियम] नियम-रहित बेकायदा। (वि०)—[**अनेमी**]।

अनेरा—(वि०, दे०) [सं० अनृत] झूठ, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, झूठा, अन्यायी, दुष्ट, निकम्मा, टेढ़ा, ऊधमी। (वि०) (अ+नेरा) जो पास न हो, दूर। "छोटे और बड़ेरे मेरे पूतऊ अनेरे सब"—[कविता०]। "रेरे चपल-स्वरूप ढीठ तू बोलत बचन अनेरे"—सूर०। "अजहूँ जिय जानि मानि कान्ह है अनेरो"—सूर। (क्रि०, वि०) व्यर्थ, फ़िज़ूल। "चरन सरोज बिसारि तिहारे निसि-दिन फिरत अनेरो"—[विन०]। (वि०, दे० अनेरे प्रान्ती०) (**अनियरे**) जो नेरे, पास या समीप न हो, दूर।

अनेह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अस्नेह] प्रेम या स्नेह का अभाव, विरक्ति। (वि०) [**अनेही**]—**स्नेह-हीन**, विरक्त। (विलोम)—[**सनेही**]।

अनै—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अनय] अनीति, अन्याय।

अनैक—(संज्ञा, पु०, दे०) अनैक्य।

अनैक्य—(संज्ञा, पु०) [सं० अन्+ऐक्य] एका की कमी, मत-भेद, फूट, विरोध, वैमनस्य।

अनैठ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अन्+पण्यस्थ] बाजार के बंद रहने का दिन, बाजार की छुट्टी का दिन, पैठ का उलटा।

अनैश्वर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वैभव का अभाव।

अनैस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अनिष्ट] बुराई, अहित, **अनइस** (दे०)। (वि०, दे०) बुरा, ख़राब।

अनैसना*—(क्रि०, अ०) [हि० अनैस] बुरा मानना, रूठना, अनिष्ट होना या करना।

अनैसर्गिक—(वि०, सं०) अप्राकृतिक "अनैसर्गिक घटा सी छा रही थी"—मैथिली०।

अनैसा*—(वि०, पु०, दे०) [हि० अनैस] अप्रिय, बुरा, खराब, अन्याय। (स्त्री०) [**अनैसी**]। "सुन मातु भई यह बात अनैसी"—[रामा०]। "तरुनिन की यह प्रकृति अनैसी"।

अनैसे*—(वि०, बहु०) [हि० अनैस] बुरे। (क्रि० वि०) बुरे भाव से। "अजहुं अनुज तव चितव अनैसे"—[रामा०]।

अनैसो—(वि०, दे०) [वि० अनैस] अप्रिय, बुरा, अनिष्ट। "अहित अनैसो ऐसो कौन उपहास अरी"—पद्मा०।

अनैहा*—(संज्ञा, पु०) [हि० अनैस] उत्पात, मचलने का भाव। "जा कारन सुन सुत सुन्दरवर कीन्हो इतौ अनैहो"—सूबे०।

अनोकहा—(संज्ञा, पु० सं०) अपना स्थान न छोड़ने वाला, स्थावर, वृक्ष। "अनोकहा कंपित पुष्प-गंधी"—[रघु०]।

अनोखा—(वि०, दे०) [सं० अन्+ईक्ष] अनूठा, निराला, विलक्षण, विचित्र, नया, सुन्दर, अपूर्व, अद्भुत, दुर्लभ। (स्त्री०) [**अनोखी**]।

अनोखापन—(संज्ञा, पु०) [हि० अनोखा+पन—प्रत्य०] अनूठापन, निरालापन, विचित्रता, नवीनता, सुन्दरता, विलक्षणता।

अनोद—(संज्ञा, पु०, दे०) अँधेरा।

अनोना-अलोना—(वि०, दे०) [सं० अलवण] लवण-रहित, नमक-हीन, जो नमकीन न हो, अलोन। (दे०, स्त्री०) [**अलोनी**, सलोनी का विलोम] लावण्य-रहित।

अनौचित्य—(संज्ञा, पु०) [सं० अन्+औचित्य] अनुचित का भाव, उचित बात का अभाव, अनुपयुक्तता।

अनौट*—(संज्ञा, पु०, दे०, हि०) देखिए 'अनवट'। पैर के अँगूठे में पहिनने का छल्ला, [**अनउट, अनौठ** प्रान्ती०]।

अन्न—(वि०, सं०, अन्य) दूसरा, विरुद्ध। (संज्ञा, पु०, सं०) खाद्य पदार्थ, अनाज, धान्य, दाना, गल्ला, पकाया हुआ अनाज, भात। सूर्य। पृथ्वी। प्राण। जल।—**कष्ट**-(पु०) दुर्भिक्ष, अकाल।—**कीट**-अन्न में पड़ने वाला कीड़ा।—**कूट**-(पु०) एक पर्व-दिवस जो प्रायः दिवाली के दूसरे दिन माना जाता है, इसमें विविध प्रकार के अन्नों के भोजन बनते हैं और उनका भोग भगवान को लगाकर खाते हैं। यह कार्तिक शुक्ल-प्रतिपदा से पूर्णिमा तक के अन्दर किसीभी तिथि को माना जा सकता है।—**क्षेत्र**-(पु०) [सं० अन्न-क्षेत्र] भूखों को जहाँ अन्न दिया जाय, अन्नसत्र।—**जल**-(पु०) दाना-पानी, खाना-पीना, खान-पान, **आबदाना** (अ०) जीविका, रोज़ी।—**दाता**-(पु०) अन्न-दान करने वाला, पोषक, प्रतिपालक, मालिक, स्वामी। [स्त्री० **अन्न-दात्री**]।—**दान**-(पु०) अन्न या भोजन देना।—**दास**-(पु०) पेट के ही लिए दास होने वाला, पेटू, खुदगर्ज़, मतलबी।—**देव**-(पु०) देवता की भाँति पूज्य अन्य।—**पानी**-(पु०) [सं० अन्न+पानी—हि०] देखिए—अन्न जल।—**पूर्णा**-(स्त्री०) अन्न की अधिष्ठात्री देवी, दुर्गा का एक रूप, काशीश्वरी, विश्वेश्वरी। [**अन्नपूरना**] (दे०)।—**प्राशन**-(पु०) बच्चों को पहिले पहल अन्न खिलाने का संस्कार, जो विशेषतः ६वें या ७ वें मास में किया जाता है, पसनी।—**ब्रह्म**-(पु०) अन्नस्वरूप ब्रह्म।—**भाजन**-(पु०) अन्न या भोजन का पात्र।—**भिक्षा**-(स्त्री०) अन्न की भीख, अन्न या भोजन के लिये प्रार्थना।—**भोक्ता**-(पु०) खाने-पीने वाला, जिसके साथ खान-पान हो। (यौ०)—[**अन्न-भोजी**]।—**मय**-(वि०) अन्न-स्वरूप, अन्न-प्रवर्धित। "कलौ अन्यमयाः प्राणाः"।—०**कोश**-(पु०) पंच कोशों मे से प्रथम, त्वचा से लेकर वीर्य तक का अन्न से बना हुआ समुदाय, स्थूल शरीर (वेदान्त)।—**रस**-(पु०) अन्न का सार भाग, अन्न से उत्पन्न होने वाला रस, माँड़।—**लिप्सा**-(स्त्री०) क्षुधा, भूख, बुभुक्षा, अन्न की उत्कट इच्छा।—**वस्त्र**-(पु०) खाना-कपड़ा, वस्त्र-भोजन, ग्रासाच्छादन, जीवन के आवश्यक पदार्थ।—**विकार**-(पु०) शुक्र, वीर्य, विष्ठा, मल।—**सत्र**-(पु०) भूखों को मुफ्त भोजन जहाँ दिया जाय, अन्न-क्षेत्र। **मु०—जल उठना**-निवास छूटना।—**जल बदा होना**—कहीं का जाना और रहना अनिवार्य हो जाना।—**जल रूठना**-किसी स्थान का त्याग बलात् आवश्यक हो जाना।—**जल त्यागना या छोड़ना**-उपवास करना, निराहार, निर्जल व्रत करना।—**जल ग्रहण करना**—खाना पीना।—**जल ग्रहण न करना**—(संकल्प) कार्य कर के ही खाना-पीना, कार्य का पूरा करना या मर जाना (बिना खाये-पिये)।

अन्ना—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अम्ब] दाई, धाय, उपमाता। (वि०, दे०) [सं० अनाथ] जिसका कोई मालिक न हो, स्वतंत्र, अनाथ, स्वच्छंद, जैसे—अन्ना साँड़।

अन्नाभाव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अन्न की अविद्यमानता, दुर्भिक्ष, अकाल, मँहगी।

अन्नार्थी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अन्न चाहने वाला, भोजनेच्छु।

अन्नाहारी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) केवल अन्न खाने वाला।

अन्नी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धात्री, उपमाता। (वि०) [हिं० आना] आने (४ पैसे) वाली, जैसे—**एकन्नी**, दुअन्नी (दुअन्नी) आदि।

अन्दाम—(संज्ञा, पु०, अ०) शरीर, बदन।

अन्मोल—(वि०, सं०) अमूल्य, बेश-क़ीमती, **अनमोल**, अमोल (दे०)।

अन्य—(वि०, सं०) दूसरा, और, भिन्न, गैर, पराया, पर, अपर, पृथक्। (स्त्री० **अन्या**) ।—**कृत**-(वि०) दूसरे का किया हुआ।—**गामी**-(पु०) व्यभिचारी, लम्पट, परदारिक, परस्त्रीगामी।—**चाली**-(पु०) स्वधर्म-त्यागी, कुपथगामी, **अन्याचारी**।—**ज**-(पु०) कुयोनि, हीन जात का, **अन्यजात**। (स्त्री०) [**अन्यजा, अन्यजाता**] ।—**जाया**-(स्त्री०) पर स्त्री०।—**तः**-(क्रि०, वि०) और जगह, दूसरे स्थान।—**तम**-(वि०) सर्वोत्कृष्ट, अनेक मे से एक।—**तर**-(वि०) श्रेष्ठ दो में से एक, द्वितीय।—**त्र**-(वि०) और जगह, स्थानान्तर, दूसरा स्थान, "इसी क्षण कौशल्या अन्यत्र"—मैथिली०। [**अनत**] (दे०)।—**देशी** (**अन्यदेशीय**)-(पु०) परदेशीय, परदेशी, (दे०) दूसरे देश का निवासी, परदेसी (दे०)।—**पुरुष**-(पु०) दूसरा आदमी, गैर, पुरुषवाची सर्वनाम का एक भेद—वह पुरुष सूचक सर्वनाम, जिसके विषय में कुछ कहा जाये, जैसे—वह, यह, कोई (व्या०) पर-पुरुष।—**पुष्ट**-(पु०) दूसरे के हाथों से प्रतिपालित, अन्य से पोषित, कोकिल, पिक, परभृत, पर-पालित कोयल। (स्त्री०)—[**अन्यपुष्टा**] ।—**पूर्वा**-(स्त्री०) परपूर्वा, द्विरूढ़ा, जिस कन्या का एक बार विवाह हो जाने पर भी पति के मर जाने से द्वितीय बार फिर व्याह होता है, दो बार विवाही हुई।—**भृत**-(पु०) काक, परभृत, कोकिल, परपालित, पिक।—**मनस, —मनस्क**-(वि०) जिस का चित्त न लगता हो, उदास, चिंतित, उनमन, अनमन, अनमना (दे०)। "चलतहिं आदिहि ते अनमन होन लाग्यौ"।—द्विजेश।—०**ता**-(स्त्री०) उदासीनता, अनमनी, अनमनता, चित्त न लगना।—०**संभोग-दुःखिता**-(स्त्री०) वह नायिका जो अपने प्रिय नायक में अन्य स्त्री के साथ के संभोग-चिन्ह देख कर दुखी हो (नायिका भेद)।—**सुरति-दुःखिता**-(स्त्री०) अन्य-संभोग दुःखिता (नायिका-भेद)।

अन्यथा-(वि०, सं०) विपरीत, उलटा, विरुद्ध, असत्य, विपर्यय, झूठ। (अव्य०) नहीं तो। **मु०—करना**—उलटा करना, झूठ बनाना।—**होना**-विपरीत होना, असत्य होना।—**ख्याति**-(स्त्री०) अपकीर्ति, अख्याति, अपयश, अकीर्ति, आत्मविषयक मिथ्या ज्ञान (दर्शन०) आत्मा का अयथार्थ ज्ञान।—**चरण**-(पु०) विपरीत आचरण, दुराचरण, विपर्ययकरण।—**चार**-(पु०) झूठ या विपरीत व्यवहार, दुष्टाचार, अनाचार।—**चारी**-(वि०) मिथ्याचारी, अनाचारी। (स्त्री०)—[**अन्यथा चारिणी**] ।—०**सिद्ध**-(पु०) यथार्थ कारण न दिखा कर जब असत्य युक्तियों के द्वारा किसी बात को सिद्ध किया जाय, एक प्रकार का हेत्वाभास तर्क (न्याय०) अभावनीय कर्मों की उत्पत्ति।

अन्यादृश—(वि०, सं०) अन्य प्रकार, विसदृश, भिन्न रूप वाला।

अन्यान्य—(वि०, सं०) अपरापर, और-और, भिन्न-भिन्न, पृथक्-पृथक्, दूसरे-दूसरे।

अन्यापदेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देखिए "अन्योक्ति"।

अन्याय—(संज्ञा, पु०, सं०) न्याय-विरुद्ध आचरण, अनीति, बे इंसाफी, अंधेर, जुल्म, अनुचित, अविचार, अनरीति। [दे०—**अन्याव, अनियाव**]।

अन्यायार्जित—(वि०, सं०) निंदनीय साधनों द्वारा कमाया हुआ। [इल गाटेन]।

अन्यायी—(वि०) [सं० अन्यायिन्] अन्याय करने वाला, जालिम, दुराचारी, अधर्मी, दुर्वृत्त, दुष्ट, न्याय-रहित, अनीति करने वाला, [**अनियायी अनियारी**] (दे०)।

अन्यारी*—(वि०, दे०) [सं० अ+हिं० न्यारा] जो पृथक् न हो, जो जुदा या विलग न हो, अनोखा, निराला, खूब, बहुत। "बढ़ै बस जग माँहि अन्यारो"—छत्र०। (वि०, दे०) अनियारा, नुकीला, वाँल "त्यौ पंचम को भाट अन्यारे"। (बहु ब०) [**अन्यारे**] (ब्र०) [**अन्यारो**], (स्त्री०) [**अन्यारी**]। "न भावै हमै भावना अन्यारो को"—रला०।

अन्याश्रित—(वि०, सं०) अन्य पर निर्भर "अन्याश्रित जीवन से बढ़ कर नहीं क्लेशकर अन्य"—गिरीश।

अन्यास—(क्रि०, वि०, सं०) अनायास, बिना प्रयत्न किये, अकस्मात्। "मोको तुम अपराध लगावत कृपा भई अन्यास"—सूबे०।

अन्यून—(वि०, सं०) न्यून जो न हो, बहुत, पर्याप्त, अधिक।

अन्योक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह कथन, जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से कथित वस्तु के

अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर घटाया जाय। एक प्रकार का अलंकार (काव्य०), अन्य के प्रति कहे हुए कथन को अन्य पर घटित करना, ताना, **अन्योपदेश**।

अन्योदर्य—(वि०, यौ०, सं०) दूसरे के पेट से पैदा, सहोदर का विलोम।

अन्योन्य—(सर्व० यौ०, सं०) परस्पर, आपस मे, उभयतः, एक दूसरे से, मिथः, (संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का अलंकार जिसमे दो वस्तुओं की किसी क्रिया या उनके किसी गुण का एक दूसरे के कारण उत्पन्न होना सूचित किया जाता है।—**भेद**–(पु०) पारस्परिक विरोध, आपस का भेद-भाव।—**संहारी**–(वि०) परस्पर विनाशन [इन्टर नेसाइन]।

अन्योन्याभाव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी एक वस्तु का दूसरी न होना।

अन्योन्याश्रय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परस्पर का सहारा, एक दूसरे की अपेक्षा, एक वस्तु के ज्ञान के लिए दूसरी वस्तु के ज्ञान की अपेक्षा, सापेक्ष ज्ञान, परस्पर ज्ञान, ज्ञानाश्रय, अपने ज्ञान से अन्य वस्तु का ज्ञान और अन्य वस्तु के ज्ञान से अपना ज्ञान। (वि०) [**अन्योन्याश्रयी**]।

अन्योन्याश्रयी—(वि०, सं०) एक दूसरे पर आधारित, अन्योन्य-निर्भर।

अन्योन्याश्रित—(वि० यौ०, सं०) एक दूसरे के सहारे, एक दूसरे के आधार पर, परस्पर आधारित।

अन्वय—(संज्ञा, पु०, सं०) परस्पर सम्बन्ध, तारतम्य, संयोग, मेल। पद्यों के शब्दों या पदों को गद्य की वाक्य रचना के नियमानुसार यथास्थान या यथाक्रम रखने का कार्य, पदच्छेद। अवकाश। शून्य-स्थान। कार्य-कारण-सम्बन्ध। वंश, परिवार, खानदान एक बात की सिद्धि से दूसरी की सिद्धि का सम्बन्ध। "तदन्वये शुद्धमति प्रसूतः"—कालि०।

अन्वयज्ञ—(संज्ञा, पु०, सं०) वंशावली का जानने वाला, बंदी, भाट।

अन्वयागत—(वि०, सं०) पीढ़ी दर पीढ़ी चला आने वाला, परम्परागत।

अन्वयी—(वि०, सं०) संबंध-विशिष्ट, सम्पर्की, पश्चाद्वर्ती, वंशवाला।

अन्वह—संज्ञा, पु०, सं०) नित्य, प्रत्यह, प्रतिदिन। "अन्वषिणी बुद्धि वह तम में भी टटोलने वाली" दिन०।

अन्वादेश—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी को एक कार्य के कर चुकने पर दूसरे के लिए प्रेरित करना (व्या०)।

अन्वावय—(वि०, सं०) संयोजित, संयुक्त, द्वन्द्व समास का एक भेद (व्याकरण)।

अन्वित—(वि०, सं०) युक्त, शामिल, सम्बंधित, मिला हुआ।

अन्विति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संगठित, सम्बन्धित, अथवा सम्मिलित होने की स्थिति।

अन्वीक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) गौर, विचार, खोज, तलाश, गवेषण, अनुसंधान। (संज्ञा, पु० सं०) [**अन्वीक्षक**]—खोजनेवाला। (स्त्री०) [**अन्वीक्षिका**]।

अन्वीक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ध्यानपूर्वक देखना, खोज, तलाश, अनुसंधान। (वि०) [**अन्वीक्षित**]।

अन्वेषक—(वि०, सं०) खोज करनेवाला, पता लगाने वाला, गवेषक।—**कर्म**–(संज्ञा, पु०, सं०) खोज कार्य, अनुसंधान [रिसर्च वर्क]—**प्रकाश**–(संज्ञा, पु०, सं०) तेज रोशनी का बिजली का लैम्प जिससे दूर की वस्तु देखी जा सकती है [सर्चलाइट] स्त्री० **अन्वेषिका**। (वि०) [**अन्वेषित, अन्वेषणीय**]।

अन्वेषण—(संज्ञा, पु०, सं०) खोज, तलाश, अनुसंधान। (स्त्री०) [**अन्वेषणा**]।

अन्वेषिणी—(वि०, स्त्री०, सं०) खोजने वाली। "अन्वेषिणी बुद्धि यह तम में भी टटोलने वाली" —दिन०।

अन्वेषित—(वि०, सं०) जिसकी खोज की गयी हो।

अन्वेषी—(वि०) [सं० अन्वेषिन्] खोजने वाला, ढूँढ़ने वाला, तलाश करनेवाला। (स्त्री०) [**अन्वेषिणी**]।

अन्हरा—(संज्ञा, पु०, दे०) अंधा। "अन्हरा के आगे रोवै, आपन दोदा खोवै—[लो०]।

अन्हवाए*—(क्रि०, अ०,दे०) [सं० स्नान] नहलाये, नहवाए, स्नान कराये।

अन्हवाना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० नहाना] स्नान कराना, नहलाना, धुलाना। "प्रथम सखन अन्हवावहु जाई"—"प्रथम है जदू सखा अन्हवाये"—तुलसी।

अन्हाये—(क्रि० अ०, सा०, भू०, दे०) नहाये। "उतरि अन्हाये जमुन-जल"—तुल०।

अन्हाना*—**न्हाना**§—(क्रि० स०, दे०, प्रान्ती०) [हि० नहाना] नहाना, स्नान करना। "उतरि अन्हाये जमुना-जल, जो सरीर सम स्याम"—तुल०। "कान्ह गये जमुना नहान पै नये सिरसों, नाके तहाँ नेह की नदी मैं न्हाइ आये है"—"न्हात जमुना मैं जलजात एक देख्यौ जात" —रत्ना०। "सकल सौच करि जाइ अन्हाये"—

तुल० । (संज्ञा, पु०, दे०) [**अन्हान—न्हान अस्नान** हि० नहान, सं० स्नान] ।

अन्हार—(संज्ञा, पु०, दे०) अंधकार, अँधेरा ।

अन्हियारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अँधेरी ।

अन्होना (अनहोना)—संज्ञा, पु०, दे०) [हि० अन +होना] न होने वाला, असाध्य, असम्भव, जो न हो सके । [स्त्री० **अनहोनी**] ।

अन्होरी, अन्हौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गर्मी के दिनों में गर्मी के कारण उठने वाली नन्हीं नन्हीं फुंसियाँ, **अलाई** ।

अपंग—(वि०) [सं० अपांग] अंग-हीन, लँगड़ा, लूला, अशक्त, असमर्थ, असहाय, बेबस । (संज्ञा, भा०, स्त्री०) [**अपंगता**] ।

अप—(संज्ञा, पु०, सं०) जल, पानी, वारि, तोय, अम्बु, पय, नीर, सलिल । उप० (सं०) उलटा, विरुद्ध, बुरा, अधिक, नीच, अधम, भ्रंस, असम्पूर्णता, विकृत, त्याग, वियोग, वर्जन, यह शब्दों के आगे आकर शब्दों के अर्थों में इस प्रकार विशेषता उत्पन्न कर देता है—निषेध—अपमाल—अपकृष्ट (दूषण) अपकर्म—विकृति—अपांग—विशेषता—अपाहरण, विपर्यय । (संज्ञा, पु०, सं०) चौथ-निर्देश, यश कर्म, हर्ष, अनिर्देश्य, प्रज्ञा । सर्व० आप का संक्षिप्त रूप (यौगिक में) जैसे—अपस्वार्थी, अपकाजी ।

अपंडित—(वि०, सं०) अपंडित, अविद्वान् , मूर्ख, अज्ञानी, निरक्षर ।

अपकरुण—(वि०, सं०) निष्ठुर, निष्करुण, करुणा-हीन, दयाहीन ।

अपकर्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) हानि पहुँचानेवाला. पापी । (स्त्री०) [**अपकर्त्री**] ।

अपकर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा काम, कुकर्म, पाप, दुष्कर्म, **अपकार्य** ।—"अपकर्म किये जिसके हित अंक मे......"—दिन० ।

अपकर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) नीचे को खिंचाव, गिरावट, घटाव, उतार, निरादर, अपमान, पतन, बेक़दरी, मुख्य काल के रहते अमुख्य काल में कर्म-चालन जघन्यता । (वि०) [**अपकृष्ट**] ।

अपकर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) खिंचाव, तनाव । (वि०)—[**अपकर्षित अपकर्षणीय**] ।

अपकलंक—(संज्ञा, पु०, सं०) अपयश, कलंक, मिथ्यावाद, कुनाम, दुर्नाम ।

अपकल्मष—(वि०, सं०) निष्पाप, पवित्र, कलंक-शून्य ।

अपकाजी—(वि०, दे०) [हि० आप+काज] स्वार्थी, मतलबी । (संज्ञा, पु०) [हि०—**अपकाज**] —स्वार्थ, मतलब ।

अपकार—(संज्ञा, पु०, सं०) बुराई, अनुपकार, हानि, क्षति, नुक़सान, अहित, अनिष्ट, निरादर, बुरा व्यवहार, अनादर ।

अपकारक—(वि०, सं०) अपकार करने वाला, हानिकारक, विरोधी, द्वेषी, अनिष्टकारी ।

अपकारी—(वि०) [सं० अपकारिन्] हानिकारक, बुराई करने वाला, विरोधी, द्वेषी ।

अपकाराचार*—(वि०, यौ०) [सं० अपकार+आचार] हानिकारक, विघ्नकारी, [**अपकारीचार** दे०] । "जे अपकारीचार, तिन्ह कहँ गौरव मान बहु—" तुल० ।

अपकीरति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अपकीर्ति] अपयश, अपकीर्ति ।

अपकीर्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपयश, अयश, बदनामी, निंदा, आकीर्ति, अख्याति, कुनाम । (वि०) [**अपकीर्तिकर**] ।

अपकृत्—(वि०, सं०) अपमानित, जिसका अपकार किया गया हो, जिसका विरोध किया गया हो, (विलोम)—[**उपकृत**] ।

अपकृति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अपकार, अयश, हानि ।

अपकृष्ट—(वि०, सं०) गिरा हुआ, पतित, भ्रष्ट, अधम, नीच, बुरा खराब , निकृष्ट ।

अपकृष्टता—(संज्ञा, भा०, स्त्री०, सं०) पतन, नीचे गिरना, निकृष्टता, अधमाई (दे०) जघन्यता, नीचता ।

अपक्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यतिक्रम, क्रमभंग, गड़बड़, उलट-पलट, क्रम-विपर्यय, भागना, छूटना, पलायन, [**अपक्रमण**] ।

अपक्रोश—(संज्ञा, पु०, सं०) निंदा, भर्त्सना ।

अपक्व—(वि०, सं०) बिना पका हुआ, कच्चा, अनभ्यस्त, असिद्ध । (संज्ञा, स्त्री०)—[**अपक्वता**] —कचाई ।

अपगत—(वि०, सं०) दूर गया हुआ, मृत, मरा हुआ । नष्ट । भागा हुआ ।

अपगा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी, सरिता ।

अपघन—(संज्ञा, पु०) शरीर । (वि०) मेघ-रहित ।

अपघात—(संज्ञा, पु०, सं०) हत्या, हिंसा, विश्वास-घात, धोखा, आत्मघात—"कर गया क्या काल यह अपघात"—मैथिली० । **अपघातक**—हत्यारा, हिंसक, विश्वासघाती, आत्मघातक । (वि०)—[**अपघाती**]—हिंसक, विश्वासघाती । (संज्ञा, पु०)

[हिं० अप—अपना+घात—मार] आत्महत्या, आत्मघात।

अपच—(संज्ञा, पु०, सं०) अजीर्ण, अनपच (दे०) कुपच, बदहज़मी।

अपचय—(संज्ञा, पु०, सं०) हानि, कमी, नाश, पूजा, उबकाई, अजीर्ण।

अपचार—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुचित बर्ताव, बुरा आचरण, दुराचरण, अनिष्ट, बुराई, निंदा, अपयश, कुपथ्य, स्वास्थ्यनाशक व्यवहार, टोटा घाटा, क्षति क्षीणता, भ्रम।

अपचारी—(वि०, सं०) दुराचारी, कुपथगामी, कुमार्गी।

अपचाल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० अप+चाल] कुचाल, नटखटी, शरारत, खोटाई, बुराई।

अपचिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपचेतना, कुसंस्कार। "हे वह अपचिति-रतन अतः निर्दोष रहेगा"—हरिऔध।

अपची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंडमाल रोग का एक भेद।

अपच्छी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अपक्षीय] विपची, विरोधी। (वि०) पक्ष-हीन, (दे०) अपच्छ अपक्ष (सं०)। (विलोम)—[सपक्षी, सपक्ष]।

अपछरा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अप्सरा] देव-वधूटी। "बरसि प्रसून अपछरा गाईं"—तुल०।

अपछाया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रेत, उपदेवता।

अपजय—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पराजय, हार।

अपजस*§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अपयश] अकीर्ति अयश।

अपञ्चीकृत—(वि०, सं०) सूक्ष्मभूत, आकाश आदि पंच महाभूतों के पृथक्-पृथक् भाव।

अपट, अपटक—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+पटक—वस्त्र] अर्धाङ्गी, पक्षपाती, दिगंबर, वस्त्रहीन।

अपटन§—(संज्ञा पु०, दे०) उबटन, बटना।

अपटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वस्त्र-प्रावरण, कनात, तम्बू, शामियाना। वि०—अवस्त्र।

अपटु—(वि०, सं०) जो पटु या दक्ष न हो, अकुशल, अचतुर, अनिपुण, निर्बुद्धि, व्याधित, रोगी, सुस्त, आलसी। (संज्ञा, स्त्री०) [**अपटुता**]।

अपट्टमान—(वि०, दे०) [सं० अपठ्यमान] जो पढ़ा न जाय, न पढ़ने के योग्य।

अपठ—(वि०, सं०) **अपढ़**, (दे०) जो पढ़ा न हो, मूर्ख, अनपढ़ा, बेपढ़ा, अशिक्षित, अपढ़, निरक्षर, भट्टाचार्य।

अपठित—(वि०, सं०) अशिक्षित बेपढ़ा, अपढ़, मूर्ख। (स्त्री०) [**अपठिता**]।

अपडर*—(संज्ञा, पु०) [सं० अप+डर] भय, शंका, डर, भीति।

अपडर—(संज्ञा, पु०) [सं० अप+डर] भय, शंका, डर, भीति।

अपडरना*—(क्रि० अ० दे०) [हिं० अपडर] भयभीत होना, डरना, सशंकित होना।

अपड़ाना*—(क्रि०, अ०) [सं० अपर] खींचा-तानी करना, रार या झगड़ा करना, लड़ना, झगड़ना। (संज्ञा) [**अपड़ाव**]।

अपड़ाव*—(संज्ञा, भा०, पु०) [सं० अपर] झगड़ा, तक़रार, टंटा, रार, लड़ाई। (क्रि०) [**अपड़ाना**]। "जनमहि ते अपड़ाय करत है गुनि गुनि हियो कहे"—सूबे०।

अपढ़—(वि०, दे०) [सं० अपठ] बिना पढ़ा-लिखा, मूर्ख, अनपढ़। (दे०) अनाड़ी, अज्ञानी। (स्त्री०) [**अपढ़ी**]।

अपर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) पत्ते का अभाव।—**अशना**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भोजन के रूप में पत्ते को भी न ग्रहण करने वाली स्त्री०, पार्वती। "हीरक सी समीर माला जप शैलसुता अपर्ण अशना"—निराला।

अपत*—[वि०, दे०) [सं० अ+पत्र] पत्र या पत्तों से हीन, बिना पत्ते का, आच्छादन-रहित, नग्न "अब अलि रही गुलाब मैं, अपत कँटीली डार"—बिहारी। (सं० अपात्र) अधम, नीच, अप्रतिष्ठित। (वि०) [अ+पत=लज्जा] निर्लज्ज, पापी।

अपतई—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० अपत] निर्लज्जता, बेशर्मी, बेहयाई, ऊधम, उत्पात, चपलता, धृष्टता।

अपताना*—(संज्ञा, पु०) [हिं० अप—अपना+तानना] जंजाल, झंझट, झमेला, प्रपंच।

अपति*—(वि०, स्त्री०) [सं० अ+पति] बिना पति की, विधवा, पति-विहीना। (वि०) [सं० अ+पत्ति—गति] पापी, दुष्ट। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० आपत्ति] दुर्गति, दुर्दशा, अनादर, अपमान, अप्रतिष्ठा, कुदशा।

अपतित—(वि०. पु०,सं०) जो पतित न हो। (स्त्री०) [**अपतिता**]।

अपतिनी-अपतिनीक—(वि०, पु०) [सं० अपत्नी] पत्नी-रहित, जिसके स्त्री न हो।

अपतियाना—(क्रि० सं०, दे०) न पतियाना, या विश्वास न करना।

अपतियारा—(वि०, दे०) विश्वास घातक, कपटी, छली ।

अपतोसॐ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अपतोष फ़ा० अफ़सोस] दुख, पश्चात्ताप, पछितावा, खेद, असं-तोष । "ए सखि काहि करब अपतोस"—विद्या० ।

अपत्य—(संज्ञा, पु०, म०) संतान, औलाद, पुत्र-पुत्र, बेटा-बेटी । "भरत था मेरा कभी अपत्य"। "तुम रहो उनके यथार्थ अपत्य"—मैथिली० ।—**वाचक**—(संज्ञा, पु०) संतान-सूचक, (संज्ञा व्या०) किसी को संतान को प्रगट करने के लिए उसके नाम से प्रत्यय विशेष लगा कर दूसरी (संज्ञा) बनाने का विधान, जैसे दशरथ से दाशरथि ।—**शत्रु**—(संज्ञा, पु०) कर्कट, केकड़ा ।—**स्नेह**—(संज्ञा, पु०) संतति के प्रति स्वभाविक अनुराग, प्रेम । (वि०)—**स्नेही**—सन्तति प्रेमी, [**अपत्यानुरागी, अपत्या-नुरक्त**] । (वि०) [**अपत्यैषी**]—संतानेच्छु ।

अपत्र—(वि०, सं०) पत्र-रहित, करील । (दे०) अपूत ।

अपत्रप—(वि०, सं०) लज्जा-हीन, निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया । [स्त्री० **अपत्रपा**] ।

अपथ—(संज्ञा, पु० सं०) पथ-विहीन, कुमार्ग, विकट मार्ग, कुपथ, बीहड़-रास्ता, अनीति । (वि०) [**अपथगामी**] ।

अपथ—(वि०, दे०) [सं० अपथ्य] जो पथ्य न हो, कुपथ कुपथ्य । (संज्ञा, पु०) रोगकारी आहार-विहार, अहितकर आहार-विहार, मिथ्याहार-विहार । "कुपथ माँग जिमि"—तुल० ।

अपथगामी—(वि०, सं०) कुपथ-गामी, दुराचारी, कुमार्ग गामी । "कहा करौं अब अपथ भई मिलि बड़ी व्यथा दुख दुहरानी"—सूबे० ।

अपथ्य—(वि०, सं०) जो पथ्य न हो, अहितकारक भोजन, रोग-वर्धक पदार्थ, स्वास्थ्य-नाशक, अहित-कर, हानिकारक वस्तु ।

अपथाचारी—(वि० यौ०, सं०) कुमार्गी ।

अपथ्याशी—(संज्ञा,पु०,सं०) कुपथ्य-भोक्ता, कुपथ्या-भिलाषी ।

अपद—(संज्ञा, पु०, सं०) बिना पैर के रेंगने वाले जीव-जन्तु, साँप, केचुआ आदि । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आपद] आपदा । (वि०) पद रहित, पंगु, कर्मच्युत, आपत्ति । (क्रि०, वि०) अनुचित, अनुपयुक्त रूप से । "सजनी अपद न मोहि परबोध" —विद्या० । अनधिकार, अयुक्त ।

अपदस्थ—(वि०, सं०) पद या स्थान से च्युत, स्थान-भ्रष्ट, कर्म-च्युत, पद-च्युत, अपन पद से हटाया हुआ ।

अपदार्थ—(वि०, सं०) क्षुद्र, निस्सार वस्तु । "अपदार्थ गिरूँ गामैं क्या ।"

अपदार्थ—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+पदार्थ] अयोग्य वस्तु, कुवस्तु, पदार्थ-विहीन, अनुपम पदार्थ, पदार्थ भिन्न । (वि०, यौ०) [सं० अ+पद+अर्थ] जो पद का अर्थ न हो ।

अपदेखाॐ—(वि०, दे०) [हि० आप+देखना] अपने को देखने या बड़ा मानने वाला, आत्मश्लाघी, घमंडी, स्वार्थी । (क्रि०, दे०) [**अपदेखना**] ।

अपदेवता-अपदेव—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रेत, पिशाच आदि निकृष्ट देवता ।

अपदेश—(संज्ञा, पु०, सं०) छल, कपट, बहाना, कैतव ।

अपद्रव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) निकृष्ट वस्तु, बुराधन ।

अपध्वंसक—(वि०, पु०, सं०) घिनौना, खंडन-कारी । (संज्ञा) [**अपध्वंस**] ।

अपध्वस्त—(वि०, पु०, सं०) अपमानित, परास्त, हारा हुआ, तिरस्कृत ।

अपन—(सर्व० दे०) [हि० **अपना**] अपना, **अपान** (दे०) (प्रान्ती०) हम लोग, अपन लोग, अपना हम ।

अपनत्व—(संज्ञा, भा०, दे०, हि०) अपनापन आत्मी-यता, ममत्व, अपनपौ (दे०)

अपनपौ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० अपना+पौ प्रत्य०] आत्मीयता, अपनत्व, आत्मभाव, आत्म-गौरव, आत्मस्वरूप, गर्व, सम्बन्ध, संज्ञा, सुधि, होश, ज्ञान, अहंकार, मर्यादा, [**आपुनपौ** दे०] । "आपन सों आपुनपौ आपुही नसावै कौन"—रत्ना० ।

अपनयन—(संज्ञा, पु०) [सं० अप+नी+अनट्] अपनय, खंडन, पूरीकरण, मारण, निष्कृति, एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना, किसी राशि या संख्या या परिमाण को समीकरण में एक पक्ष से दूसरे में ले जाना (गणित) । (वि०) [**अपनेय**] ।

अपना—(सर्व०) [सं० आत्मन्] तिनका, (तीनों पुरुष मे) स्वीय, स्वकीय, स्व । (ब्र० भा०) **अपनो, आपनो** । (संज्ञा, पु०) आत्मीय, स्वजन, सगा । (ब्र० भा०) [**अपुनो, आपुनो, अपनो**] । (स्त्री०) [**अपनी**] (दे०) [**आपनी,** आपुनी] । **मु०—करना**—अपनाना, अपना बनाना, बश में कर लेना ।—**सा करना**—अपने सामर्थ्य या विचार के अनुसार करना, भरसक करना, अपने समान या उपयुक्त करना ।—**सा मुँह लेकर रह**

जाना—किसी कार्य में सफल न होने पर लज्जित होना, हार जाना।—(नी)—नी पड़ना—अपनी अपनी चिंता में व्यग्र होना। (ने) तक (में) रखना—किसी से न कहना।—(ने) में आना—तैश, आवेश या जोश में आना, क्रोध में आना, सँभलना, अपनी मर्यादा के अन्दर रहना।—देखना-स्वार्थ देखना, अपना पक्ष खो जाना।—पराया देखना सोचना—मेरा-तेरा सोचना, भेदभाव देखना, रखना या सोचना। लो—नी—नी डफली—राग—प्रत्येक व्यक्ति का मनमाना कार्य करना।—नी खिचड़ी अलग पकाना—समाज से पृथक होकर चलना, मनमानी करना, सब से खिलाफ जाना।—ने को मरना—अपने या अपने आत्मीय जनों के लिये यत्न करना।—(ने) में रहना—अपनी मर्यादा में रहना।—(नी) हाँकना-चलाना आत्मश्लाघा, आपही करना, अपनी करना।—(ने)—(ने) खाये लक्ष्मी-नारायन है—(दे०) अपना स्वार्थ सिद्ध होना ही प्रधान और उपयुक्त है, अपने स्वार्थ की पूर्ति करना ही प्रमुख बात है।—अपना पेट हाऊ मैं न देहौं काऊ—स्वार्थ प्रधान है अन्य पदार्थ की चिन्ता नहीं, स्वार्थी अपनी ही आवश्यकता की पूर्ति करता है, परार्थ को नहीं देखता।—काम, महा काम—अपना अभीष्ट सर्वोपरि है।—(ने) मरे बिना स्वर्ग नहीं दीखता—बिना स्वयमेव परिश्रम किये अपने अभीष्ट की सिद्धि नहीं होती।—रोना रोना—अपना ही दुख कहना, दूसरे की चिन्ता न करना, प्रधानतया अपनी ही बात करना, अपने ही विषय में बात करना।—(नी) ही गाथा गाना—अपने ही सम्बन्ध में बात करना, अपनी ही कथा कहना।—(ने) आप—स्वयं, स्वतः, खुद आपही आप।

अपनाना—(क्रि०, सं०) [हिं० अपना] अपने अनुकूल करना, अपनी ओर करना, अपना बनाना, अपनी शरण में लेना, अपने अधिकार में करना, ग्रहण करना, वश में करना, अपने पक्ष में करना, सहारा देना, सम्बन्ध जोड़ना। "किस हेतु अपनाया हमें"—"कौन नहीं इसको अपनाता"—पंत।

अपनापन—(संज्ञा, पु०,) [हिं० अपना] अपनायत, आत्मीयता, आत्माभिमान, स्वजनता अपनत्व। "कुशलतो अपनापन खो सकूँ—मैथिली०।

अपनाम—(संज्ञा, पु०) [हिं० सं] अपयश, शिकायत, बदनामी।

अपनायत—(संज्ञा, स्त्री०,दे०) [हिं० अपना] अपनापन, आत्मीयता, आत्माभिमान, भाई-चारा, नाता, गोत, [**अपनैत** दे०]।

अपनाव—(संज्ञा, पु० दे०) अपनापन, प्रेम। "रश्मियों से करकर अपनाव"—महादेवी।

अपनी—(सर्व०, हिं०) अपना का स्त्रीलिंग रूप, (दे०) आपनी, अपुनी, आपुनि, आपनि। [पु० **अपना**]।

अपनीत—(वि०, सं०) हटाया गया, दूरीकृत, अपसारित, बहिष्कृत।

अपबश—(वि०, सं०) स्वाधीन स्वतंत्र, अपने वश, स्वच्छन्द। "विधिना जो अपबस करि पाऊँ"।

अपभय—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्भयता, निर्भीकता, व्यर्थ भय, बेडर, निर्भय, भीति, विगतभय, निडरता। (वि०, सं०) निर्भय, निडर, निर्भीक। "अपभय कुटिल महीप डराने"—तुल०।

अपभाषण—(संज्ञा, पु०, सं०) निंदा, बुराई, अपमान—वचन [स्लैडर]।

अपभाषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गँवारी बोली, बुरी भाषा, अशुद्ध भाषा, असाधु शब्द, कुवाक्य, अशिष्ट भाषा।

अपभोग—(संज्ञा, पु०, सं०) सरकारी धन का हरण [एम्बेजेलमेंट]।

अपभ्रंश—(संज्ञा, पु०, सं०) पतन, गिराव, बिगाड़, विकृति, बिगड़ा हुआ शब्द, अशुद्ध शब्द, ग्राम्य प्रयोग, अपशब्द, एक प्रकार की विकृत भाषा। (वि०) विकृत, बिगड़ा हुआ।—**अपभ्रंशित**-(वि०) बिगाड़ा हुआ।

अपभ्रष्ट—(वि०, सं०) पतित, विकृत।

अपमान—(संज्ञा, पु०, सं०) अनादर, अवज्ञा, तिरस्कार, बेइज्जती असम्मान, निरादर, मान या मूल्यांकन में कमी, पलायन। "मेरा कुछ सोच समझ अपमान करो—बच्चन।—**लेख**-(संज्ञा,पु०, सं०) निंदात्मक लेख [लाइबेल]।

अपमानना*—(क्रि०, स०) [सं० अपमान] अपमान करना, निरादर करना, तिरस्कार करना, अनादर करना।

अपमानित—(वि०, सं०) निंदित, असम्मानित, बेइज्जत, अनादृत।

अपमानी—(वि०) [सं० अपमानिन्] निरादर करने वाला, तिरस्कार करनेवाला (स्त्री०) [**अपमानिनी**]।

अपमार्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) कुमार्ग, कुपथ, कुपंथ।

अपमार्गी—(वि०, सं०) कुपथगामी, पापी, दुष्कर्मी।

अपमार्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) शुद्धि, शोधन। चौर कर्म।

अपमृत्यु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुमृत्यु, कुसमय मृत्यु, अपघात-मरण, अस्वाभाविक कारणों से अकाल मृत्यु। "वनस्थली में अपमूर्ति-मूर्तिसा—हरिऔध।

अपयश—(संज्ञा, पु०) [सं० अपकीर्ति] बदनामी, बुराई, कलंक, लाँछन, अख्याति, अप्रतिष्ठा, अकीर्ति [**अपजस**] (दे०)।

अपयशी—(वि०) बदनाम। [**अपजसी**] (दे०)।

अपयान—(संज्ञा, पु० सं०) पलायन।

अपयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) कुयोग, कुचाल, कुरीति। "जिनके संग स्याम सुन्दर सखि सीखे सब अपयोग"—सुबे०।

अपरंच—(अव्य०, यौ०, सं०) और भी, फिर भी, पुनः, आगे, और दूसरा।

अपरंपारꣳ—(वि०) [सं० अपरं+पार—हि०] जिसका वारापार न हो, अपार, असीम, अनन्त, बेहद, अपरिमित।

अपर—(वि०, सं०) इतर, अन्य, दूसरा, पर, भिन्न "बादलों में घिर अपर दिनकररहे"—निराला। पूर्व का, पहिला, पिछला। [हि० अ+पर] जो दूसरा न हो, [अपर] (दे०)।—**अधिकरणिक**—(पु०) अतिरिक्त नगर शासक [ऐडिशनल मैजिस्ट्रेट]—**कर**—(पु०) अतिरिक्त रूप से लगने वाला कर [ऐडिशनल टैक्स]—**न्यायधीश**—(पु०) अतिरिक्त न्यायकर्त्ता [ऐडीशनल जज]—**सचिव**—(पु०) अतिरिक्त कर्मसचिव [ऐडीशनल सेक्रेटरी]—**सदस्य**—(पु०)अतिरिक्त सदस्य [ऐडीशनल मेम्बर]

अपरक्ति—(स्त्री०) सौहार्द की कमी, घृणा [डिस-एफेक्शन]

अपरग—(वि०, दे०, पु०) [सं० अपर+ग] अन्य मार्ग गामी, अन्यगामी, व्यभिचारी, अन्यमार्गी, अन्यांगनागामी।

अपरछन*—(वि०) [सं० अप्रच्छन्न, अपरिच्छन्न] आवरण रहित, जो ढका न हो, आवृत, छिपा हुआ गुप्त।

अपरत*§—(वि०, दे०) [हि० अप—अपना+रत] स्वार्थ-रत, स्वार्थी। [स्त्री० **अपरता**]।

अपरता—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) परायापन परता, का अभाव, अपनापन। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० अ+परता—परायापन] भेद-भाव-शून्यता। (वि०) स्वार्थी।

अपरती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० अप+रति सं०] स्वार्थ, बेईमानी।

अपरतीति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अप्रतीति।

अपरत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) परायापन, इतरता, अन्यत्व, बेगानगी, [अ+परत्व] परता-रहित, अपनत्व।

अपरनाꣳ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अपर्णा] पार्बती, उमा। "उमा नाम तब भयउ अपरना"—तुल०। (वि०) [सं० अ+पर] पर्ण या पत्र से रहिता, पत्र-विहीना। (यौ०) [अपर+ना] दूसरा नहीं।

अपरबल—(वि०, दे०) [सं० अपार+बल, अपर+बल] बलवान, उद्धत, प्रचंड,—दूसरे का बल, पराये बल पर आश्रित, जिसे अन्य का बल या सहारा हो। "दसो दिसा ते क्रोध की, उठी अपरबल आगि"—कबीर।

अपरलोक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) परलोक, स्वर्ग, दूसरा लोक।

अपरस—(वि०) [सं० अ+स्पर्श] जिसे किसी ने छुआ न हो, न छूने योग्य, अलग, अस्पृश्य, बुरा रस। (संज्ञा, पु०) हथेली और तलवे का एक चर्म रोग। "अपरस रहत सनेह तगा तें, नाहिन मन अनुरागी"—सूर०।

अपरांत—(संज्ञा, पु०, सं०) पश्चिम का देश, दूसरा अंत या छोर।

अपरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अध्यात्म या ब्रह्म विद्या से अतिरिक्त अन्य प्रकार की विद्या, लौकिक विद्या, पदार्थ विद्या। पश्चिम दिशा। एकादशी-विशेष का नाम। (वि०, स्त्री०)—दूसरी। जो दूसरी न हो। [अ+परा] अपनी।

अपराजय—(संज्ञा, पु०, सं०) अपराभव, अजीत, जीत, पराभव-हीनता, विजय।—**अपराजयी**—(वि०) अजीत।

अपराजित—(वि०, सं०) जो जीता न जाय, अजेय, अनर्जित, अनिर्जीत। (संज्ञा, पु०) ऋषि विशेष, शिव।

अपराजिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विष्णुकान्ता लता, कौवाटोटी, कोयल, दुर्गा, अयोध्या का नाम, चौदह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त, जयन्ती वृत्त, अशनवर्णा, स्वल्पफला, शोफाली, शमी-भेद, शंखिनी, स्वनाम-ख्यात लता विशेष। (वि०, स्त्री०) अजेया, अजीता, अनिर्जिता।

अपराजेय—(वि०, सं०) अजेय, अवश्य, अदम-नीया। "रह गया सान रावण का अपराजेय समर"—निराला।

अपराध—(संज्ञा, पु०, सं०) दोष, त्रुटि, पाप, कसूर, जुर्म, भूल, चूक, गलती, अन्याय, अनीति।—

अन्वेषणविभाग–(पु०) गुप्तचर विभाग, खुफिया पुलिस का विभाग [सी० आई० डी०]—**दायित्व**–(पु०) अपराध-सम्बन्धी जिम्मेदारी [क्रिमिनल लायबिलिटी]—**निवारण**–(पु०) अपराध का दमन [प्रीवेंशन आव् क्राइम]—**लेखा**–(पु०, सं०) पापपत्रक, अनुचित कार्यों का लिखित विवरण [हिस्ट्री शीट]—**विज्ञान**–(पु०, सं०) दंडनीय कर्म-सम्बन्धी शास्त्र [क्रिमिनालजी]—**अपराधा, अपराधू** (दे०) ।

अपराशीकरण—(पु०, सं०) गुप्त रूप से धनराशि का संचय [होर्डिंग] ।

अपराधी—(वि०, पु०, सं०) दोषी, पापी, मुलजिम । (स्त्री०)—[**अपराधिनी**]—दोषयुक्ता । (वि०, सं०, यौ०) अद्वितीय बुद्धि वाला ।

अपराधीन—(वि०, सं०) स्वाधीन, जो परतंत्र न हो, स्वतंत्र ।

अपरार्जित—(वि०, सं०) अन्योपार्जित ।

अपरार्द्ध—(पु०) द्वितीय, आधा भाग, उत्तरार्द्ध । "पूर्वार्द्ध मे बढ कर सदा अपरार्द्ध में घटती चली । यह दुर्जनों की मित्रता फलती कुफल न कभी भली ।" —गिरीश ।

अपरावर्त्तनीय—(वि०, सं०) अपरिवर्त्तनशील । [नान ट्रांसफरेबुल]

अपराह्न—(संज्ञा, पु०, सं०) दोपहर के पीछे का समय, दिन का शेष भाग, तीसरा पहर, दोपहर के पश्चात् का काल ।

अपरिगृहीता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुल-स्त्री, विवाहिता स्त्री, जो पर गृहीता न हो ।

अपरिग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) दान का न लेना, दान-त्याग, आवश्यक धन से अधिक धन का त्याग, विराग, पाँचवाँ यम (योग शास्त्र) संग त्याग, अप्रतिग्रह, अस्वीकार ।

अपरिचय—(संज्ञा, पु०, सं०) परिचय का अभाव, अज्ञात, अज्ञानता, पहिचान न होना ।

अपरिचित—(वि०, सं०) जिसे परिचय न हो, जो जानता न हो, अनजान, जो जाना बूझा न हो, अज्ञात, बिना जान-पहचान का । (स्त्री०) [**अपरिचिता**] ।

अपरिच्छद—(वि०, सं०) हीन वस्त्र, मलिन वस्त्र, अनुपयुक्त वेश, मलीन वसन ।

अपरिच्छिन्न—(वि०, सं०) जिसका विभाग न हो सके, अभेद्य, मिला हुआ, असीम, सीमा-रहित, खुला, जो ढका हुआ न हो । (स्त्री०) [**अपरिच्छिन्ना**] ।

अपरिणत—(वि०, सं०) अपरिपक्व, कच्चा, ज्यों का त्यों, अपरिवर्तित, परिवर्तन-रहित ।

अपरिणामी—(वि०) [सं० अपरिणामिन्] परिणाम-रहित, विकार शून्य, जिसकी दशा या रूप में परिवर्तन न हो, निष्फल, व्यर्थ । (स्त्री०) [**अपरिणामिनी**] (संज्ञा, पु०) अपरिणाम ।

अपरिणीत—(संज्ञा, पु०, सं०) अविवाहित, कुमार, क्वाँरा । (स्त्री०) [**अपरिणीता**]—अविवाहिता कन्या, कुमारी, अनूढा, कुँवारी (दे०) । (वि०) अपरिवर्तित ।

अपरितुष्ट—(वि०, सं०) असन्तुष्ट, अतृप्त, तृप्ति-रहित, संतोष-विहीन, निरानन्द । (स्त्री०)—**अपरितुष्टा** । (संज्ञा, पु०, सं०) **अपरितोष** ।—**अपरितोष**–(संज्ञा, पु०, सं०) असन्तोष, अतृप्ति । (वि०) [**अपरितोष्य**] ।

अपरिपक्व—(वि०, सं०) जो पक्का न हो, कच्चा, अधकच्चा, अधकचरा (दे०) परिपाक-हीन, अपटु, अप्रौढ़, अपक्व ।

अपरिपाटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनरीति, जो परिपाटी या प्रणाली न हो, कुरीति, अनीति, अप्रणाली ।

अपरिपुष्ट—(वि०, सं०) जो परिपुष्ट न हो, अपुष्ट । (संज्ञा, स्त्री०) [**अपरिपुष्टता**] ।

अपरिपूर्णता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) असम्पन्नता, अभाव । 'ओ अपरिपूर्णता की पुकार'—बच्चन ।

अपरिलुप्त—(वि०, सं०) जो आर्द्र न हो, सूखा, शुष्क ।

अपरिमाण—(वि०, सं०) उचित से अधिक, हद से बाहर । "अपरिमाण अनुग्रह आपका"—गिरीश ।

अपरिमित—(वि०, सं०) असीम, बेहद, परिमाण-रहित, अधिक, प्रचुर, बहुल, असंख्य, अगणित, अनगनित (दे०) । (दे०) असीमित, असीव (दे०) । —**दायित्व**–(पु०) असीमित उत्तरदायित्व [अन-लिमिटेड लायबिलिटी] ।

अपरिमेय—(वि०, सं०) जिसकी नाप-तौल न हो सके, । अनुमान से परे । "अपरिमेय पराक्रम आपका"—गिरीश "वह अपरिमेय ओकों मे"—हरिऔध ।

अपरिम्लान—(वि०, सं०) ग्लानता-रहित, अम्लान, अमलीन, खिला हुआ, जो मुरझाया न हो ।

अपरिवर्त्तनीय—(वि०, सं०) जो बदला न जा सके । जो बदले में दिया न जा सके ।

अपरिवर्त्तित—(वि०, सं०) जिसके स्वरूप में कोई विकार न आया हो । "अपरिवर्त्तित भाव मदीय है" —हरिऔध ।

अपरिशेष—(वि०, सं०) जो इतना व्यापक हो कि कोई अंश शेष न रह जाय। (संज्ञा,पु०) शेष का अनस्तित्व।

अपरिष्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) परिष्काररहीन, मलिन, मैला कुचैला, अनिर्मल, अशुद्ध, अस्पष्ट।

अपरिष्कृत—(वि०, सं०) जिसका परिष्कार न हुआ हो, अमार्जित, अपरिमार्जित, अशुद्ध, म्लान। (वि०) [**अपरिष्करणीय**—परिष्कार न करने योग्य]।

अपरिसर—(वि०, सं०) संकीर्ण, संकुचित, संकोचित।

अपरिहार्य—(वि०, सं०) जो किसी उपाय से दूर न किया जा सके, अनिवार्य, अत्याज्य, न छोड़ने के योग्य, आदरणीय, जिसके बिना काम न चले। जिसका खंडन न किया जा सके, अखंडनीय [इनडिफ़ीजिबुल]—**अधिकार**–(पु०) अनिवार्य अधिकार [इनडिफ़ीजिबुल राइट]।

अपरीक्षित—(वि०, सं०) अनजाँचा हुआ, जिसकी जाँच न हुई हो, जिसका मूल्यांकन न किया गया हो, अननुभवित।

अपरुद्ध—(वि०, सं०) पश्चात्तापी, क्षुब्ध, अप्रस्तुत, खेद-युक्त, पछताने वाला।

अपरूप—(वि०, सं०) बदशकल, भद्दा, बेडौल, अद्भुत, अपूर्व, कुरूप, विकृत-रूप। "अपरूप रूप से बहुविधि रूप सँजो कर"—दिन०।—(स्त्री०)—**अपरूपा**—कुरूपा। (वि०, स्त्री०) [**अपरूपिणी**]–अरूपिणी। (संज्ञा, स्त्री०) [**अपरूपता**]।

अपरोक्ष—(वि०, सं०) प्रत्यक्ष, समक्ष, आँखों के सामने। (विलो०) [**परोक्ष**]।

अपरोक्षानुभूति—(संज्ञा, स्त्री०) इन्द्रियगोचर विषय का ज्ञान। वेदान्त का एक अध्याय।

अपर्णा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती, दुर्गा, देवी, उमा, अपरणा, **अपर्ना** (दे०)।

अपर्याप्त—(वि०, सं०) जो काफी न हो, स्वल्प, थोड़ा, न्यून।

अपलक—(अव्य०, सं०) पलक न गिराते हुये, अनिमेष, एकटक। "मेरे अपलक युग नयनों में"—बच्चन।

अपलज्ज—(वि०, सं०) बेहया, निर्लज्ज।

अपलक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) कुलक्षण, बुरा चिह्न, अपशकुन। (वि०, पु०, स्त्री०) [**अपलक्षणी**]—कुलक्षणी।

अपलाप—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्य का संगोपन। पसलियों और कंधे के बीच का हिस्सा। प्रेम। आदर।

अपलोक—(संज्ञा, पु०, सं०) अपना लोक, निजलोक। अपयश, बदनामी, अपवाद। "लोक मैं लोक बड़ो अपलोक सुकेसवदास जु होउ सु होऊ"।

अपवरण—(संज्ञा, पु०, सं०) वेष-भूषा, आवरण।

अपवर्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति, त्याग, दान, परमगति, क्रिया-प्राप्ति, क्रिया की समाप्ति, निर्जन। ["दुःख जन्म प्रवृत्ति दोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरो तदाराये तदनंतरापायादपवर्गः"]—

अपवर्जित—(वि०, सं०) त्यागा हुआ, मुक्त, दिया हुआ, छोड़ा हुआ।

अपवर्त—(संज्ञा, पु०, सं०) संक्षेप, एक विन्दु-रूपी चिह्न जो उस दशमलव अंश के ऊपर रखा जाता है जो बार बार आता है, अर्थात् जो किसी दशमलव अंक की आवृत्ति को सूचित करता है यथा ४ ३ ५ २ १ ३ (गणित) अपवर्त दशमलव को भिन्न में रूपान्तरित करने के लिए अपवर्त अंकों के लिए ६ और केवल दशमलव अंकों के लिए शून्य रखकर हर बनाते हैं, दशमलव संख्या अंश के रूप में रहती है (गणित)।

अपवर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) अपवर्त, संक्षेपकरण, अल्पीकरण, लेन-देन, अंक हरण। (वि०) [**अपवर्तित**]।

अपवर्त्य—(वि०, सं०) जिसमें सामान्य विभाजक द्वारा विभाजन किये जाने पर शेष शून्य बचे।

अपवश*—(वि०, दे०) [हिं० अप—आप+वश सं०] अपने आधीन, स्वाधीन, अपने वश का, परवश का उलटा, या विलोम। (दे०) **अपबस**—स्वतंत्र।

अपवाद—(संज्ञा, पु०, सं०) विरोध, अतिवाद, खंडन, निंदा, अपकीर्ति, दोष, पाप, साधारण या व्यापक नियम से विरुद्ध। आवरण की आलोचना, नियम-विशेष की प्राप्ति को सीमित बनाने वाला ग्रन्थ सिद्धान्त अथवा नियम। बदनामी, आज्ञा, कुत्सा, उत्सर्ग का विरोधी, सम्मति, राय, आदेश। "सब करें मेरा महा अपवाद"—मैथिली०। **मुहा०**—**होना**—विरुद्ध या पृथक् होना।

अपवादक—(वि०, सं०) निंदक, विरोधी, बाधक, अपवादकारक।

अपवादित—(वि०, सं०) परिवाद युक्त, निंदित, खंडित, बदनाम।

अपवादी—(वि०, सं०) खंडन करने वाला, दोषी, निंदक, अपवाद या बदनामी करने वाला।

अपवारण—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यवधान, रोक, आड़, हटाने या दूर करने का कार्य, अंतर्द्धान, ओट, रोक।

अपवारित—(वि०, सं०) रोका हुआ, हटाया हुआ, निवारित। (वि०, सं०) **अपवारणीय**—रोकने के योग्य।

अपवाहन—(संज्ञा, पु०, सं०) दुष्ट वाहन, फुसला के लाना, भगा देना, एक राज्य से भाग कर दूसरे में जा बसना। (वि०) **अपवाहक**—भगाने वाला। (वि०) **अपवाहित**—भगाया हुआ। (स्त्री०) **अपवाहिता**—भगाई हुई। (वि०) **अपवाहनीय**।

अपवित्र—(वि०, सं०) जो पवित्र या पुनीत न हो, अशुद्ध, नापाक, मलिन, छूत, अपावन, अपूत, मलीन।

अपवित्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अशुद्धि, अशौच, नापाकी, अपावनता, मैलापन।

अपविद्ध—(वि०, सं०) त्यागा, हुआ, परित्यक्त, छोड़ा हुआ, बेधा हुआ, विद्ध, प्रत्याख्यात, निराकृत, चूर्णित।—**पुत्र—आत्म**-(संज्ञा, पु०) बारह प्रकार के गौण पुत्रों में से एक मातृ-पितृ विहीन पुत्र, माता-पिता से त्यक्त पुत्र। (यौ०)—[**अपविद्धात्मज**]।

अपवीण—(वि०, सं०) जिसकी वीणा निकृष्ट हो।

अपवृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समाप्ति, पूर्त्ति।

अपव्यय—(संज्ञा, पु०, सं०) निरर्थक व्यय, फजूल-खर्ची, बुरे कार्यों में खर्च, व्यर्थ व्यय। (विलोम) [**मितव्यय**]।

अपव्ययिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) फजूलखर्ची।

अपव्ययी—(वि०) [सं० **अपव्ययिन्**] व्यर्थ ही अधिक खर्च करने वाला, फजूल-खर्च, अधिक व्यय अधिक करने वाला।

अपशकुन—(संज्ञा०, पु०, सं०) कुशकुन, **असकुन, असगुन** (दे०) बुरा शकुन, अशुभ-सूचक चिह्न, अमंगल-लक्षण, अशकुन। "भये एक ही संग सगुन-असगुन संघाती"—हरि०।

अपशद—(संज्ञा, पु०, सं०) अपसद, नीच, यह शब्द जिस शब्द के अन्त मे आता है उसका अर्थ नीच कर देता है, यथा—**ब्राह्मणाशपद**—नीच ब्राह्मण।

अपशब्द—(संज्ञा, पु०, सं०) अशुद्ध शब्द, बिना अर्थ का शब्द, गाली, कुवाच्य, पाद, गोज, अपानवायु, निंदित शब्द, कुत्सित शब्द, अशिष्ट या असभ्य शब्द।

अपशोक—(वि०, सं०) जिसे शोक न हो। शोक शून्य। (संज्ञा, पु०) अशोक-नामक वृक्ष, जिसकी पत्तियों के बंदन वार बनते हैं।

अपसगुनॐ—(संज्ञा, पु० दे०) अपशकुन।

अपसना-अपसवना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अपसरण] खिसकाना, सरकना, भागना, चल देना। "पौन बाँधि अपसवहिं अकासा" (प०)। (प्रे०)—[**अपसावना**]।

अपसर—(वि०) [हि० अप—अपना+सर—प्रत्य०] आप ही आप, मनमाना, अपने मन का। (क्रि०, अ०) सरकना, खसकना।

अपसरण—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रस्थान, चला जाना। (दे०) [**अपसरन**]।

अपसर्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) विसर्जन, त्याग, समाप्ति। (वि०) [**अपसर्जित**]—विसर्जित, समाप्त। (वि०) [**अपसर्जनीय**]।

अपसर्पण—(संज्ञा, पु०, सं०) जासूसी का काम। परावर्त्तन, लौटने की क्रिया।

अपसव्य—(वि०, सं०) सव्य का उलटा, दाहिना, दक्षिण, उलटा, विरुद्ध, जनेऊ को दाहिने कंधे पर रक्खे हुये वाम भाग, बाया हाथ, वाम पार्श्व। (संज्ञा, स्त्री०) [**अपसव्यता**]।

अपसर्प—(संज्ञा, पु०, सं०) चर, दूत, हरकारा, प्रति-निधि, गूढ़ पुरुष, भेदिया।

अपसाधारण—(वि०, सं०) जो सहज ही सुलभ न हो अथवा साधारणतया देखने में न आता हो। जो असाधारण के विरोध मे हो [ऐबनार्मल] "अपसाधारण चरित्र के चित्रण में"—[कल्पना, सम्पा०]।

अपसारित—(वि०, सं०) पृथक किया हुआ। दूर हटाया हुआ। "हृदय से अपसारित हो सकी"—हरिऔध।

अपसास*—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० अफसोस] दुःख, चिंता, खेद, पश्चात्ताप। "काहे को अपसोस मरति हौ नैन तुम्हारे नहीं"—सूर। (दे०) [**अपसोच**]।

अपसोसनाॐ—(क्रि०, अ०) [हि० अपसोस] सोच करना, अफसोस या पश्चात्ताप करना।

अपसौन§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अपशकुन] अस-गुन, बुरा सगुन, अशकुन, असगुन।

अपसौनाॐ—(क्रि०, अ०, हि०) आना, पहुँचना।

अपस्नात—(वि०, सं०) मृतकस्नान किया हुआ। (स्त्री०) [**अपस्नाता**]।

अपस्नान—(संज्ञा, पु०, सं०) वह स्थान जो प्राणी के कुटुम्बी उसके मरने पर करते हैं, मृतकस्नान। (वि०) [**अपस्नात**]। (स्त्री०) [**अपस्नाता**]।

अपस्मार—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का रोग, जिसमें रोगी काँप कर पृथ्वी पर मूर्छित हो कर गिर पड़ता है, मृगी रोग, मूर्छा, वायु-रोग।

अपस्वार्थी—(वि०) [हि० अप+स्वार्थी सं०] स्वार्थ साधने वाला, मतलबी, खुदगर्ज। (संज्ञा, पु०) [**अपस्वार्थ**]।

अपह—(वि०, सं०) नाश करने वाला, बिना-शक जैसे क्लेशापह।

अपहत—(वि०, सं०) नष्ट किया हुआ, मारा हुआ, दूर किया हुआ।

अपहनन—(संज्ञा, पु०, सं०) हत्या, वध, घात। (वि०) [**अपहन्य**]।

अपहरई—(क्रि०, स०) [सं० अपहरण] चुराता है, नाश करता है, चुरा ले, विनष्ट कर ले। "सरद ताप निसि ससि अपहरई"—तुल०।

अपहरण—(संज्ञा, पु०, सं०) हर लेना, लूटना, चोरी, चौर्य, छीनना, ले लेना, (बलात) लूट, छिपाव, संगोपन।

अपहरना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० अपहरण] छीनना, लूटना, चुराना, कम करना, घटाना, क्षय करना।

अपहरित—(वि०, सं०) छीन लिया गया, हर लिया गया, अपहृत।

अपहर्ता—(संज्ञा, पु०) [सं० अप+हृ+तृच्] छीनने या रहने वाला, चोर, लूटने वाला, लुटेरा, छिपाने वाला। तस्कर, अपहारक, चोट्टा (दे०) [**अपहरता**]।

अपहसित—(वि०, सं०) उपहसित, जिसका मजाक बनाया गया हो।

अपहा—(वि०) [सं० अप्+हन्+आ] हन्ता, हत्या, हिंसक, बधिक।

अपहार—(संज्ञा, पु०) [सं० अप्+हृ+घञ्] अपचय, हानि, धन का निरर्थक व्यय। जब्ती [फार फीचर]।

अपहारक—(वि०, सं०) अपहरण कर्ता, तस्कर, चोर, लुटेरा।

अपहारी—(संज्ञा, पु०,सं०) अपहारक, छीनने वाला, चोर, लुटेरा। "भाजि पताल गयो अपहारी"—सूर०।

अपहास—(संज्ञा, पु०, सं०) उपहास, अकारण हँसी, मजाक, दिल्लगी।

अपहेला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपेक्षा, अवहेलना, अवमानना, निरादर।

अपहृत—(वि०, सं०) छीना हुआ, हरा हुआ, चुराया, लूटा हुआ। [स्त्री० **अपहृता**]।

अपह्नव—(संज्ञा, पु०, सं०) छिपाव, दुराव, मिस, बहाना, टाल-मटूल, कपट, कैतव, गोपन, अपलाप। एक प्रकार का अलंकार जिसमें उत्प्रेक्षा के साथ अपह्नुति भी रहती है (काव्य०)।

अपह्नुति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुराव, छिपाव, गोपन, बहाना, मिस, टाल-मटूल, व्याज, अपलाप एक प्रकार का अलंकार जिसमें उपमेय का निषेध कर के उपमान का स्थापन किया जाये (काव्य) र०।

अपांग—(संज्ञा, पु० सं०) आँख का कोना, आँख की कोर, कटाक्ष। (वि०) **अंग-हीन**, **अंग-भंग**, लूला, लगड़ा, असमर्थ। 'एक तीक्ष्ण अपांग ही उसने दिया'—मैथली०।—**दर्शन**—(यौ०) टेढ़ा देखना, कटाक्ष पात, वक्र दृष्टि से देखना, वक्रावलोकन। 'मुग्धांगनापांगविलोकनानि' (सं०)।

अपा—(संज्ञा, स्त्री०, हि०, दे०) गर्व, आत्मभाव, आपा, (दे०) घमंड।

अपाक—(वि०, सं०) अपचार, अजीर्णता। (संज्ञा, पु० सं०) उदरामय। अपक्व। आम। असिद्ध, अप्रौढ़।

अपाकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) पृथक् करना, अलगाना, हटाना, दूर करना। चुकता करना। "पापमपाकरोरित" भर्तृ०।

अपाच्य—(वि०, सं०) जिसे पकाना सम्भव न हो, जो पचाया न जा सके।

अपाटव—(संज्ञा, पु०, सं०) अपटुता, अनिपुणता, अचतुरता, बोदापन, मूर्खता।

अपात्र—(वि०, सं०) अयोग्य, कुपात्र, मूर्ख, श्राद्धादि में निमंत्रण के अयोग्य (ब्राह्मण)। पात्र-रहित। [**संज्ञा, भा० स्त्री० अपात्रता**]।

अपात्रीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) नवविधि पापों में से पाप-विशेष का निर्णय। जाति भ्रष्ट करना, कुपात्र करना।

अपाथ—(संज्ञा, पु०, सं०) कुपंथ, कुमार्ग, कुपथ। मार्ग-भ्रष्ट व्यक्ति।

अपाथेय—(संज्ञा, पु०, सं०) पाथेय या मार्ग के भोजन से रहित।

अपादान—(संज्ञा, पु०, सं०) हटाना, अलगाव। विभाग] स्थानान्तरीकरण। ग्रहण। एक प्रकार का कारक जिससे एक वस्तु से दूसरी वस्तु की क्रिया का आरंभ सूचित हो, जिससे किसी वस्तु की किसी दूसरी वस्तु से पृथकता प्रगट की जाये, इसका चिह्न "से" है—जैसे वृक्ष से पत्ते गिरते हैं, पंचम कारक, पंचमी। 'अपादान जहँ से विभाग हो'—कुंजवि०।

अपान—(संज्ञा, पु०, स०) दस या पाँच प्राणों में से एक। गुदास्थ वायु जो मल मूत्र को बाहर निकालता

है। तालु से पीठ तथा गुदा से उपस्थ तक व्याप्त वायु। गुदा से निकलने वाली वायु। गुदा। गुह्य-स्थान।—**वायु**—(पु०) मलद्वारस्थ वायु, पाद।

अपान॥—(संज्ञा, पु० दे०) [हिं० अपना] आत्म-भाव। आत्मतत्व। आत्मज्ञान। आपा। आत्म-गौरव। भ्रम। सुधि, होश-हवास। अभिमान, घमंड। अपनत्व, अपनापन। "देखि भानु कुल-भूषनहि, बिसरा सखिन अपान"—तुल०। (वि०) पान करने योग्य। (सर्व०, दे०) अपना।

अपाना§—(सर्व०, दे०) अपना।

अपांनिधि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समुद्र, सागर, जलनिधि, अंबुनिधि।

अपाप—(वि०, सं०) निष्पाप, पाप-रहित। निर्दोष। धर्मी। [वि० **अपापी**]।

अपामार्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) औषधि विशेष, चिचिड़ा, अजाझारा, लटजीरा, चिचड़ी। "गुड़ीच्यपामार्गं बिडंग शंखिनी"—वै० जो०।

अपामार्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) शुद्धि, सफाई, रोगादि का निवारण।

अपाय—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्लेषण। अलगाव, अपगमन, पीछे हटना। नाश, क्षय, हानि, अपचय। पलायन।* (दे०) अन्यथा-चार, अनरीति, उत्पात। (वि०) [सं० अ+पाय हिं०—पैर] बिना पैर का, लँगड़ा, अपाहिज, निरुपाय, असमर्थ।

अपायी—(वि०, सं०) पलायित, मृत, चलित, निरुपाय।

अपार—(वि०, सं०) सीमा-रहित, अनंत, असीम, बेहद, असंख्य, अतिशय, अत्यधिक।

अपारक—(संज्ञा, पु०, सं०) अक्षम, क्षमता-रहित।

अपारा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) भूमि, पृथ्वी।

अपार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) वाक्यार्थ के स्पष्ट न होने का दोष-विशेष (काव्यशास्त्र)।

अपार्थक्य—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+पृथक्] पृथक्, अभिन्नता, अभेद, एकत्व, बिलगाव-विहीनता।

अपार्थिव—(वि०, स०) जो पदार्थ पृथ्वी या मिट्टी से पैदा न हुई हो, जो पृथ्वी-सम्बन्धी न हो।

अपाव॥—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अपाय—नाश] अन्यथाचार, अन्याय, उपद्रव, अनरीति।

अपावन—(वि०, पु०, सं०) अपवित्र, अशुद्ध, मलिन, अपुनीत, अशुचि। [स्त्री० **अपावनी**]।

अपावनतामय—(वि०, सं०) अपवित्रतापूर्ण, कल्म-षमयी, मलयुक्त, अशुद्धिपूर्ण। "अति अपावनतामय पूतना"—हरिऔध।

अपावर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) पीछे की ओर जाना, परावर्तित होना, अस्वीकृति।

अपावृत—(वि०, सं०) खुला हुआ, नियंत्रित रहित, युक्त।

अपाश्रय—(वि०, पु०, सं०) अनाथ, दीन, निराश्रय, असहाय, अरक्षित।

अपाश्रित—(वि०, सं०) त्यागी, एकान्तसेवी, एकान्त-वासी, उदासी, विरक्त। [स्त्री० **अपाश्रिता**]।

अपासरण—(संज्ञा, पु०, सं०) पलायन, दूर पहुँचाना।

अपाहिज-अपाहज—(वि०, दे०) [सं० अपभंज, प्रा० अपहंज] अंग-भंग, खंज, लूला, लंगड़ा, अस-मर्थ, अशक्त, आलसी, सुस्त, काम करने के योग्य जो न हो।

अपिंडी—(वि०, सं०) अशरीरी, देह-रहित।

अपि—(अव्य०, सं०) भी, ही निश्चय, ठीक।

अपिच—(अव्य०, सं०) और, अरु, अउर (दे०) औ, संयोजक शब्द।

अपितु—(अव्य०, सं०) किन्तु, परन्तु, बल्कि।

अपितृक—(वि०, सं०) अपैतृक। बिना पिता का।

अपिधान—(संज्ञा, पु०, सं०) आच्छादन, आवरण, ढक्कन।

अपीच॥—(वि०) [सं० अपीच्य] सुन्दर, अच्छा, छविमान, शोभायुक्त।

अपीड़न—(संज्ञा, पु०, सं०) पीड़ा या कष्ट न देने वाला।

अपीन—(वि०, सं०) हलका, क्षीण, कृश।

अपीनस—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का नासिका रोग, पीनस।

अपील—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) निवेदन, विचारार्थ प्रार्थना, मातहत अदालत के फैसले के विरुद्ध ऊँची अदालत में फिर से विचार करने के लिये मामला या मुक़दमा उपस्थित करना। अयोग्य—अपील के नाक़ाबिल, जिसके लिए उच्चतर अधिकारी से पुन-र्विचार प्रार्थना न की जा सके। [नान अपीलेबुल]।

अपीलाँट—(संज्ञा, पु०, अं०) अपील करने वाला, प्रार्थी, निवेदक, मुद्दई।

अपुण्य—(वि०, सं०) अधार्मिक, अपवित्र।

अपुत्र—(वि०, सं०) निस्सन्तान, पुत्र-हीन। **निपूता** (दे० ब्र०)। **निपुत्री** (दे०) सन्तान-रहित। (संज्ञा, पु०, दे०) कुपूत।

अपुन—(सर्व०, दे०) (हिं० अपना) आपुन, अपना, अपने आप का। "अपुन भरोसे लरिहौं"—सूर०।

अपुनपो⊛अपुनपौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० अपना + पन—प्रत्य०] अपनापन, अपनत्व। **'अपुनपौ'** (दे०) आत्म-भाव। अपनाइत (दे०) **अपौती** (दे० प्रान्ती०)।

अपुनर्भव—(संज्ञा, पु०, सं०) जन्म न लेना, मोक्ष, मुक्ति।

अपुनीत—(वि०, सं०) अपवित्र, अशुद्ध, अशुचि, दूषित, अपावन, दोषयुक्त। [संज्ञा, स्त्री०, भा० **अपुनीतता**]।

अपुरब—(वि०, दे०) अपूर्व, विलक्षण, विचित्र, अनुपम, जैसा कभी देखा न गया हो।

अपुष्ट—(वि०, सं०) अपरिपुष्ठ, अप्रमाणित।

अपूठना⊛—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० अ + पुष्ट] विध्वंस या नाश करना, उलटना, चौपट या विदीर्ण करना। "रावन हित लै चलो साथ ही लंका धरौं अपूठी"—सूबे०।

अपूठा⊛—(वि०, दे०) [सं० अपुष्ट] **अपूठ**, अपरिपक्व, अजानकार, अनभिज्ञ, अस्फुट, अविकसित, बेखिला, अप्रौढ़। "निकट रहत पुनि दूरि बतावत हौ रस नाहिं अपूठे"—सूर०।

अपूत—(वि०, सं०) अपवित्र, अशुद्ध, अपावन, अपुनीत।* (वि०) [हिं० अ + पूत] पुत्र-हीन। **निपूता** (दे०)।* (संज्ञा, पु०) [अ + पुत्र] कुपूत, बुरा लड़का।

अपूप—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञीय हविष्यान्न-विशेष, पुआ।

अपूर*—(वि०) [सं० आपूर्ण] **आपूर्ण**, पूरा, भरा-पूरा, भरपूर। (वि०) (सं० अ + पूर्ण) अपूर्ण **अपूरन** (दे०)।

अपूरन*—(क्रि०, स०) [सं० आपूर्णन] भरना, आपूरित करना, फूँकना, बजाना (शंख)। (वि०, दे०) [सं० अ + पूर्ण] जो पूर्ण न हो, अपूर्ण।

अपूरब*—(वि०, दे०) [सं० अपूर्व] अनोखा, उत्तम, पश्चिम, अपूर्व।

अपूरा*—(संज्ञा, पु०) [सं० आ + पूर्ण] भरा हुआ, फैला हुआ, व्याप्त। (वि०, दे०) जो पूरा न हो, अपूर्ण। [स्त्री० **अपूरी**]।

अपुराण—(वि०, सं०) नवीन, नया।

अपुरुष—(वि०, सं०) अमानुषिक, पशु की तरह।

अपूज्य—(वि०, सं०) जो पूज्य न हो, असम्माननीय।

अपूर्ण—(वि०, सं०) जो पूर्ण न हो, जो भरा न हो, अधूरा, असमाप्त, कम, अपूरण।—**अपूरन**—(दे०)।—**अधिकार**—अधूरा हक। [इम्परफेक्ट राइट]।—**भूत**—वह भूत काल जिसमें क्रिया की समाप्ति न पाई जाये, जैसे—खाता था (व्या०)। (विलो०) [**पूर्णभूत**]। (वि०)—जो पूरा न हुआ हो।—**वर्तमान**—(पु०, यौ०) वह वर्तमान काल जिसमे क्रिया हो रही हो और पूरी न हुई हो जैसे—खा रहा है, खाता है (व्या०)—**भविष्य**—वह भविष्य जिसमे क्रिया भविष्य काल में अपूर्णता के साथ होती रहे। जैसे—लिखता रहेगा (व्या०)।—**विभाजन**—अधूरा बँटवारा [इम्परफेक्ट पार्टीशन]।

अपूर्णता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अधूरापन, न्यूनता, कमी, ऊनता। 'मेरी अपूर्णता मे आयी'—वचन—[**अपूरनता**-दे०]।

अपूर्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपूर्णता, पूर्ति या पूर्णता-रहित, असमाप्ति। [वि०—**अपूर्त**]।

अपूर्व—(वि०, सं०) जो प्रथम न रहा हो, अद्भुत, अनोखा, विचित्र, उत्तम, श्रेष्ठ।—**रूप**—(पु०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें पूर्व गुण की प्राप्ति का किसी वस्तु में निषेध किया जाय। विचित्र रूप अनुपम-रूप, सौंदर्य।—**अपूरब**—(दे०) अनुपम, पूर्व नहीं पश्चिम।

अपूर्वता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विलक्षणता, विचित्रता, अनोखापन। [दे० **अपूरबता**]।

अपेक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आकांक्षा, इच्छा, अभिलाषा, चाह, आवश्यकता, आश्रय, जरूरत, आशा, भरोसा, आसरा, अनुरोध, कार्य-कारण का अन्योन्य सम्बन्ध, तुलना, मुकाबिला "अपेक्षा कुछ नहीं है नाम इसकी"—मैथिली०। (अव्य०)—बनिस्बत [वि०—**अपेक्षणीय**]।—**कृत**—(अव्य०) मुकाबिले में, तुलना में। (वि०) अन्य के द्वारा तुलित, अन्य से विवेचित।—**बुद्धि**—(स्त्री०) अनेक विषयों को एक करने वाली बुद्धि।

अपेक्षित—(वि०, सं०) जिसकी अपेक्षा हो, आवश्यक, अभीष्ट, ईप्सित, अभिलषित, वांछित, इच्छित, चितचाही, प्रतीक्षित। [स्त्री०—**अपेक्षिता**] [वि० **अपेक्ष्य**]।

अपेख—(वि०, दे०) [सं० अ + प्र + ईक्ष] **अदृष्ट**, अलेख, अलक्ष, अदृश्य, जो न दिखाई दे।

अपेम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अप्रेम] प्रेम-रहित। [वि० **अप्रेमी**]।

अपेय—(वि०, सं०) न पीने योग्य, जो न पिया जा सके, जिसके पान करने का निषेध किया गया है। [संज्ञा, स्त्री०—**अपेयता**]।

अपेल*—(वि०, दे०) [सं० अ + पीड़—दबाना] जो न हटे, न टाला जा सकने वाला, अटल, दृढ़,

स्थिर, अखंड, अचल, निश्चल, पक्का, मान्य, अनुल्लंघनीय—"यह सिद्धान्त अपेल"—तुल० ।

अपैठ—(वि०, दे०) [हि० पैठना—प्रविष्ट करना] जहाँ पैठ (प्रवेश) न हो सके, अगम, दुर्गम, जहाँ कोई प्रविष्ट न हो सके । अप्रवेश्य ।

अपोगंड—(वि०, सं०) सोलह वर्ष से ऊपर की अवस्था वाला जो बालिग हो ।

अपोच—(वि०, दे०) [हि० अ+पोच] जो नीच न हो, जो पोच या ओछा या पतित न हो, श्रेष्ठ ।

अपोढ—(वि०, दे०) अप्रौढ (सं०) ।

अपोहन—(संज्ञा, पु०, सं०) तर्क के द्वारा बुद्धि का परिमार्जन ।—**अपोहित**—(वि०) परिमार्जित, परिष्कृत ।

अपौत्र—(वि०) [सं० अ+पौत्र] पौत्र विहीन, जिसके नाती (नप्ता) या पोता न हो, जिसके लड़के का लड़का न हो । [**संज्ञा, अपौत्रता**] ।

अपौरुष—(संज्ञा, पु०, सं०) कापुरुषत्व, असाहस, पुरुषार्थहीनता, नपुंसकता ।—**अपौरुषी**—(वि०) कापुरुष, नपुंसक ।

अपौरुषेय—(वि०, सं०) जो पौरुषेय या पुरुषकृत न हो, दैविक, ईश्वरीय ।

अप्—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी । हवा, वायु—**चर**—(पु०) पानी में रहने वाले जानवर ।—**पति**—(पु०) वरुण ।—**पित्त**—(पु०) आग, एक प्रकार का पौधा ।

अप्रकंप—(वि०, सं०) स्थिर, अखंडनीय ।

अप्रकरण—(पु०, सं०) अप्रधान विषय ।

अप्रकांड—(वि०, सं०) शाखाहीन, मंद । (पु०)—झाड़ी ।

अप्रकाम—(वि०, सं०) अल्प ।

अप्रकारणीय—(वि०, सं०) जिसमें चलते हुए प्रसंग से लगाव न हो, प्रस्तुत विषय से असम्बद्ध ।

अप्रकाश—(संज्ञा, पु०, सं०) अंधकार, तम, अँधेरा, प्रकाश-हीनता, अज्ञान । (वि०) अप्रगट, अप्रसिद्ध, गुप्त, छिपा हुआ ।

अप्रकाशित—(वि०, सं०) जिसमें उजाला या कान्ति न हो, अँधेरा, जो चमक न सके, जो प्रगट न हुआ हो, गुप्त, अप्रगट, छिपा हुआ, जो सर्वसाधारण के सामने न रक्खा गया हो, जो बाहर न आया हो, जो छप कर प्रचलित न हुआ हो ।

अप्रकाश्य—(वि०, सं०) गोपनीय, प्रकाशित करने योग्य । [स्त्री० **अप्रकाश्या**] ।—**बैठक**—बंद कमरे में होने वाली बैठक । [कैमरा मीटिंग] ।

अप्रकृत—(वि०, सं०) अस्वाभाविक, बनावटी, कृत्रिम, झूठा ।—**अप्रकृति**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रकृति का अभाव ।—**वाद**—(पु०) प्रकृति की सत्ता को न माननेवाला सिद्धान्त ।—**वादी**—(पु०) ब्रह्मवादी, अद्वैतवादी, प्रकृति की सत्ता को न मानने वाला, (विलो०) [**प्रकृतिवादी**] ।

अप्रकृष्ट—(वि०, सं०) नीच, निकृष्ट, पतित । (पु०) कौआ ।

अप्रखर—(वि०, सं०) जो तीखा न हो, कोमल, शिथिल ।

अप्रख्यात—(वि०, सं०) अप्रसिद्ध ।

अप्रगट, अप्रकट—(वि०, सं०) अप्रकाशित, गुप्त, छिपा हुआ ।

अप्रगटनीय—(वि०, सं०) प्रगट न करने योग्य, गोपनीय, छिपाने योग्य, प्रकाशित न करने योग्य । —**अप्रगटित, अप्रकटित**—(वि०) प्रगट न किया हुआ, गुप्त ।

अप्रगल्भ—(वि०, सं०) अप्रौढ़, कच्चा, निरुत्साहित, शान्त, जो बकवादी न हो । [**संज्ञा**, स्त्री०, भा०, सं० **अप्रगल्भता**] ।

अप्रचलित—(वि०, सं०) जो प्रचलित न हो, अव्यवहृत, अप्रयुक्त, जिसका चलन न हो ।

अप्रचार—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रचाराभाव, प्रयोग का अभाव, जिसका चलन न हो, उपयोग रहित, अव्यवहार, जिसकी चाल न हो, अप्रचलित ।

अप्रचारित—(वि०, सं०) जिसका प्रचार न किया गया हो, जिसे ललकारा या बुलाया न गया हो । (हि० प्रचारना-ललकारना, बुलाना) ।

अप्रचालित—(वि०) [सं० अ+प्र+चालन] जो चलाया न जा सके, असंचालित ।

अप्रच्छन्न—(वि०, सं०) अनावृत, खुला हुआ ।

अप्रणय—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रीतिच्छेद, विषाद, भेद, अमेल, प्रकरण-भिन्न, अप्रेम, अप्रीति । (वि०) **अप्रणयी**—अमित्र, जो प्रेमी न हो ।

अप्रतप्त—(वि०, सं०) जो तप्त या दग्ध न हो, न तपाया हुआ । (स्त्री०) **अप्रतप्ता** ।

अप्रताड़ित—(वि०, सं०) अताडित ।

अप्रताप—(वि०, सं०) तेज-हीन, अप्रबल, अनैश्वर्य, अप्रचंड, ऐश्वर्य-विहीन । [वि० **अप्रतापी**] ।

अप्रति—(वि०, सं०) अद्वितीय, जिसकी समता न की जा सके ।

अप्रतिग्राह्य—(वि०, सं०) ग्रहण के अयोग्य ।

अप्रतिबंध—(वि०, सं०) बिना रोक-टोक का [फ्री] ।

अप्रतिभ—(वि०, सं०) प्रतिभा शून्य, चेष्टा-हीन,

उदास, स्फूर्ति-शून्य, सुस्त, मंद, मतिहीन, निर्बुद्धि, लजीला ।

अप्रतिभा—(संज्ञा, स्त्री०, स०) प्रतिभा का अभाव, एक प्रकार का निग्रह-स्थान (न्याय०) ।

अप्रतिभाव्य—(पु०, संज्ञा, सं०) जमानत के अयोग्य । [नानबेलेबुल] ।

अप्रतिम—(वि०, सं०) अद्वितीय, अनुपम, अतुल्य, बेजोड़, असमान ।

अप्रतिरथ—(संज्ञा, पु०, सं०) यात्रा, गमन । सैनिक-गमन । सामवेद, अद्वितीय ।

अप्रतिरुद्ध—(वि०, सं०) जो प्रतिरुद्ध या घिरा हुआ न हो, स्वतंत्र, स्वच्छंद, अटोक, अरोक । [संज्ञा—**अप्रतिरुद्धता**] ।

अप्रतिरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिरोधविहीन, बेरोक, स्वातंत्र्य । **अप्रतिरोधित**—(वि०) स्वच्छंद, न रोका हुआ ।

अप्रतिष्ठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनादर, अपमान, अयश, अपकीर्ति, बेइज्जती ।

अप्रतिष्ठित—(वि०, सं०) अपमानित, अनादृत, तिरस्कृत । [स्त्री० **अप्रतिष्ठिता**] ।

अप्रतिह—(वि०, सं०) अनाघात, अवंचित, अव्यतिक्रम ।

अप्रतिहत—(वि०, सं०) जो प्रतिहत न हो, अपराजित, अजीत ।—**अनिवार्य**-जिसका प्रतिशोधन किया जा सके । [इंटेंजिस्टिबिल]—**उद्वेग**-(पु०) आंतरिक उद्वेग, अंतर्वेग । [इंटेंजिस्टिबिल इम्पल्स] (वि०) [स्त्री० **अप्रतिहता**] । "साबुद्धिरप्रतिहता" —भर्तृ० ।

अप्रतीक—(वि०, सं०) अंगरहित, अदेह ।

अप्रतीकार—(संज्ञा, सं०) जो प्रतीकार न हो ।

अप्रतीकाश—(संज्ञा, सं०) अनुपमा ।

अप्रतीत—(वि०, सं०) जो प्रसन्न न हो, जो बोधगम्य न हो, अज्ञेय ।

अप्रतीति—(वि०, सं०) विश्वास के अयोग्य, अज्ञान, अश्रद्धेय, अविश्वस्त । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रतीति या विश्वास का अभाव । **अपरतीति** (दे०) एक दोष (काव्य०) ।

अप्रतीयमान—(वि०, सं०) जिसका निश्चय न हो सके, संदिग्ध ।

अप्रतुल—(संज्ञा, पु०, सं०) अभाव, असंगति ।

अप्रत्यक्ष—(वि०, सं०) जो प्रत्यक्ष न हो, परोक्ष, छिपा, गुप्त, अप्रगट, अलक्षित, अगोचर । (संज्ञा, पु०, सं०) जो प्रत्यक्ष न हो ।—**कर**-कह कर जिसको उसे चुकाने वाले दूसरों पर डाल देते हैं यथा, व्यापारी माल का कर प्रायः खरीदकारों से लेते है । परोक्षकर । [इण्डाइरेक्ट टैक्स]—**निर्वाचन**-मूल मतदाताओं द्वारा चुने सदस्यों द्वारा चुनाव । [इण्डइरेक्ट एलेक्शन]—**मानहानि**-परोक्ष रूप से किया जाने वाला अपमान । [इण्डाइरेक्ट कंटेम्प्ट] ।

अप्रत्यय—(संज्ञा, पु०, सं०) अविश्वास, संदेह, शंका, प्रत्यय रहित ।

अप्रत्याशित—(वि०) जिसकी आशा न रही हो, अचानक, जो सोचा न गया हो । 'अप्रत्याशित बाधा-विघ्नों के बच जाती है'—दिनकर ।

अप्रथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अव्यवहार, छिपाव, अप्रणाली ।

अप्रथुल—(वि०, सं०) जो विस्तृत न हो, संकीर्ण, अविस्तृत ।

अप्रणाली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जिसकी प्रणाली न हो, अपरिपाटी ।

अप्रधान—(वि०, सं०) गौण, जो प्रधान या मुख्य न हो, जघन्य, क्षुद्र, नीच, साधारण । [संज्ञा, भा, पु०, सं० **अप्राधान्य, अप्रधानता**] ।

अप्रबल—(वि०, सं०) जो प्रबल या बलवान न हो । [संज्ञा—**अप्राबल्य**] ।

अप्रमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्ञान, जो भ्रांति से मुक्त न हो ।

अप्रमाण—(संज्ञा, पु०, सं०) अनिदर्शन, अदृष्टान्त, अशास्त्र, जो प्रमाण न हो, प्रमाणाभाव । [संज्ञा, भा० पु०, सं० **अप्रामाण्य**] । "प्रत्यक्षादीनामप्रामाण्यं त्रैकालासिद्धे"—द० शा० ।

अप्रमित—देखिए अप्रमेय ।

अप्रमेय—(वि०, सं०) जो नापा न जा सके, अपरिमित, अपार, अनंत, जो प्रमाण से सिद्ध न हो सके ।

अप्रयुक्त—(वि०, सं०) जो प्रयोग में न लाया गया हो, अव्यवहृत, जो काम में न आया हो । [संज्ञा, स्त्री० **अप्रयुक्तता**] ।

अप्रयोग—(वि०, सं०) जिसका प्रयोग न हुआ हो ।

अप्रवृत्ति—(वि०, सं०) जिसका झुकाव न हो । —**वृत्ति**-(पु०) प्रवृत्ति हीन ।

अप्रशस्त—(वि०, सं०) जो प्रशंसा के योग्य न हों, बुरा, निन्दनीय ।

अप्रसंग—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रसंगाभाव ।

अप्रसन्न—(वि०, सं०) असंतुष्ट, नाराज, खिन्न, दुखी, उदास, मलिन ।

अप्रसन्नता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाराजगी, असंतोष, रोष, कोप, खिन्नता ।

अप्रसाद—(संज्ञा, पु०, सं०) निग्रह, अप्रसन्नता, असम्मति ।

अप्रसार—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+प्रसार—प्रसारण] अविस्तार, प्रसार हीनता, अप्रस्तार । [वि० **अप्रसारित**] ।

अप्रसिद्ध—(वि०, सं०) जो प्रसिद्ध न हो, अविख्यात, गुप्त, छिपा हुआ, अप्रख्यात ।

अप्रसिद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अख्याति, अप्रतिष्ठा ।

अप्रसूता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बांझ, जिस स्त्री को संतान न होती हो ।

अप्रस्तावित—(वि०) [सं० अ+प्रस्ताव+इत] जिसका प्रस्ताव न किया गया हो ।

अप्रस्तुत—(वि०, सं०) जो प्रस्तुत या विद्यमान न हो, अनुपस्थित, जिसकी चर्चा न आई हो । (संज्ञा, पु०, सं०) उपमान (काव्य) ।—**प्रशंसा**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) एक अलंकार जिसमें अप्रस्तुत के कथन से प्रस्तुत का बोध कराया जाय ।

अप्रहत—(वि०, सं०) अछूत, जो खेत जोता बोया न गया हो । जो कपड़ा पहना न गया हो ।

अप्राकृत—(वि०, सं०) जो प्राकृत न हो, अस्वाभाविक, असाधारण । [वि० **अप्राकृतिक**] [अन—नैचुरल] ।

अप्राचीन—(वि०, सं०) जो पुराना न हो, नया ।

अप्राण—(वि०, सं०) प्राणशून्य मुर्दा, मृत । (पु०) परमेश्वर ।

अप्राप्त—(वि०, सं०) जो प्राप्त न हो, दुर्लभ, अलभ्य, जिसे प्राप्त न हुआ हो, परोक्ष, अनागत, अप्रत्यक्ष, अप्रस्तुत, जो न मिला हो । (संज्ञा, स्त्री०, **अप्राप्ति**—प्राप्त न होना) ।—**ऋण**-बकाया कर्जा, अवशिष्ट ऋण [आउटस्टैंडिंग डेट] ।—**व्यवहार**—(वि०, यौ०) सोलह वर्ष से कम का बालक, नाबालिग ।

अप्राप्य—(वि०, सं०) जो प्राप्त न हो सके, अलभ्य, जो न मिल सके, दुर्लभ ।

अप्रामाणिक—(वि०, सं०) जो प्रमाण-पुष्ट न हो, जो प्रमाण-युक्त न हो, प्रमाण से न सिद्ध हो सकनेवाला, प्रमाण-शून्य, ऊटपटॉग, जिस पर विश्वास न किया जा सके । [वि०—**अप्रमाणित**]।

अप्रामाण्य—(वि०, सं०) जो प्रमाण के योग्य न हो ।

अप्राशन—(संज्ञा, पु०, सं०) निराहार, अनशन ।

अप्रासंगिक—(वि०, सं०) प्रसंग-विरुद्ध जिसकी कोई चर्चा न हो, विषयान्तर ।

अप्रिय—(वि०, सं०) अहित, अप्रिय अरुचिकर, अनभीष्ट, अरोचक । [**अनचाहा** दे०] । (संज्ञा, पु०, सं०) शत्रु । [संज्ञा, स्त्री०, **अप्रियता**] ।—**वक्ता**—(पु०) निष्ठुर भाषी, उग्रवक्ता, अप्रियवादी । —**वचन**-(पु०) कुवाक्य, निष्ठुर वाणी, अप्रियवाणी ।

अप्रीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अप्रणय, असद्भाव, अप्रेम, अरुचि, वैर ।—**कर**-(वि०) अरुचिकर, निठुर, कठोर, जो प्रेमकारक न हो । [वि० **अप्रीतिकारक, अप्रीतिकारी, अप्रीतिकरी**] ।

अप्रेम—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रेमाभाव, प्रीति-रहित, अप्रीति । **अप्रेमी**—(वि०) प्रेमी जो न हो ।

अप्रैल—(संज्ञा, पु०, अं०) वर्ष का चौथा महीना, जिसमें ३० दिन होते हैं—इसका प्रथम दिवस हासोपहास का दिन माना जाता है और उसे अप्रैल-फूल कहते है । [हिं० दे० **अपरैल**] ।

अप्रौढ़—(वि०, सं०) कमजोर, सामर्थ्यहीन, अवयस्क, नम्र, विनीत ।

अप्रौढ़ा—(स्त्री०, सं०) अविवाहित कन्या ।

अप्लावित—(वि०) [विलो० **आप्लावित**] (सं०) जो जल-सिक्त या भीगा न हो ।

अप्सर—(पु०) पानी मे रहने वाला जीव ।

अप्सरा—(संज्ञा, स्त्री०, स०) **अंबुकण**, वाष्पकण, स्वर्ग की नर्तकी, स्वर्ग-वेश्या, जैसे—तिलोत्तमा, घृताची, रम्भा, उर्वशी, मेनका आदि जो देवराज इंद्र की सभा मे नाचा करती हैं । ये कामदेव की सहायिकायें भी हैं, देवांगना, परी, हूर [उ० फा०] । **अपछरा**—(दे०) अपसरा, अत्यंत रूपवती स्त्री । देववधूटी ।......"करहि अपसरा गान"—तुल० ।

अप्सरी—(स्त्री०, सं०) स्वर्ग-लोक की परी । "तुम छवि-हीन अप्सरी सी अज्ञात"—पंत ।

अफ़ग़ान—(संज्ञा, पु०, अ०) अफ़गानिस्तान का निवासी, काबुली, आग़ा । [संज्ञा, वि० **अफ़ग़ाना**] ।

अफ़जल—(वि०, अ०) श्रेष्ठ ।

अफयून—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अफ़ीम । (दे०) अफ़ीम ।

अफरना—(क्रि० अ०) [सं० स्फार] पेट भर खाना, भोजन से तृप्त होना, पेट फूलना, ऊबना, और अधिक की इच्छा न रखना । [**अघाना** दे०] । [प्रे० क्रि०—**अफराना**] ।

अफरा—(संज्ञा, पु०) [सं० स्फार] पेट फूलना, अजीर्ण या वायु विकार से पेट फूलने का रोग-विशेष। (वि०) खूब खाये हुए, सन्तुष्ट।

अफराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अघाना, परितृप्ति, अफरना, अफरा।

अफरानाꙮ—(क्रि०, अ०) [हि० अफरना] भोजन से तृप्त या संतुष्ट करना, अघवाना।

अफल—(वि०, सं०) फल-रहित, निष्फल, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, बन्ध्या, बाँझ। (संज्ञा, पु०, दे०) झाबू का वृक्ष। [वि० **अफलीभूत**]।

अफला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आमलकी वृक्ष, घृत-कुमारी, घीकुँवार (दे०)।

अफलातून—(संज्ञा, पु०, दे०) अरस्तू नामक एक यूनानी दार्शनिक विद्वान, [प्लेटो]।

अफवाह—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) उड़ती हुई ख़बर, बाजारू ख़बर, किंवदंती, गप्प, जनश्रुति। **मुहा०**—**अफवाह गर्म होना**—खबर का फैलना।

अफ़सर—(संज्ञा, पु०, अ०) हाकिम, बड़े ओहदे का, नायक, सरदार, प्रधान, अधिकारी, मुखिया।

अफ़सरी—(संज्ञा, स्त्री०) [अं० अफ़सर] अधिकार, प्रधानता, हुकूमत, शासन, ठकुराई (दे०)।

अफ़साना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कहानी, क़िस्सा, कथा, दास्तान (उ०)।

अफ़सोस—(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) शोक, रंज, दुख, पश्चात्ताप, पछतावा, खेद।

अफीडेविट—(संज्ञा, पु०, अं०) हलफ़नामा। शपथ-पूर्वक दिया हुआ लिखित बयान।

अफ़ीम—(संज्ञा, स्त्री०) [यु० ओपियन, अ० अफ़यून अं० ओपियम] पोस्ता के ढोंढ़े का कड़ुआ, मादक और विषैला गोंद।—**ची**—(पु०) [हि० अफ़ीम + ची—प्रत्य०] अफ़ीम खाने का स्वभाव वाला, अफ़ीमी।

अफ़ीमी—(वि०, हि०) अफ़ीमची।

अफुल्ल—(वि०, सं०) बिना फूला हुआ, अविकसित, उदास, पुष्प-रहित, जो खिला न हो। [वि० **अफुल्लित**—अविकसित]।

अफड़ा—(वि०, दे०) मनमौजी, अहंकारी, अपमानी, रंगी।

अफेन—(वि०, सं०) फेन-रहित, झाग-विहीन, बिना फेन या झाग का, बर्फ-रहित। **अफेनिल**—(वि०) जिसमे फेन न हो।

अफैलाव—(संज्ञा, पु०,दे०) फैलावट-रहित। संकीर्ण, विस्तार-विहीन।

अबंद—(वि०, सं०) सीमाहीन, जो बंद न हो, खुला।

अबंध—(वि०, सं०) बन्धन-रहित, प्रतिबंध-हीन। [वि०—**अबंध्य**]।

अब—(क्रि०, वि०) [सं० अथ, अद्य] इस समय, इस क्षण, आजकल, इस घड़ी, अभी। (अव्य०)—तदुपरान्त, तत्पश्चात्।—**की**—इस बार।—**जाकर**—इतनी देर पीछे, इतने समय के उपरान्त। **मुहा०**—**तब लगना या होना**—मारने का समय निकट आना।—**तब करना**—आज कल का वादा करना, हीला-हवाला या टाल-मटूल करना।—**की—और तब की तब**—जो वर्तमान है उसे देखो, आगे-पीछे या भूत-भविष्य की बात क्या।

अबकर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) सूत्र-यन्त्र, चरखा।

अबखरा—(संज्ञा, पु० अ०) भाप, वाष्प।

अबचन—(वि०, दे०) (सं० अवचन) वचन-विहीन, अवाक्, बिना कथन के।

अबटन§—(संज्ञा, पु०, दे०) उबटन।

अबतर—(वि०, फ़ा०) बुरा, ख़राब, बिगड़ा हुआ।

अबतरी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) खराबी, बुराई।

अबद्ध—(वि०) बन्धन रहित, अनियंत्रित जो बद्ध या बँधा न हो, स्वच्छंद।—**मुख**—(वि०) अप्रिय-वादी, दुर्मुख, मुखर, बकवादी, कुत्सित भाषी।—**परिकर**—(वि०) कमर खोले हुए, जो तैयार न हो, असन्नद्ध, अकटिबद्ध। मुक्त, स्वतंत्र, निरंकुश। [संज्ञा **अबद्धता**]।

अबध—(वि०) [सं० अबाध] अचूक, जो ख़ाली न जाय, जो रोका न जा सके, बाधा रहित। (वि०) [हि० अ + बध] जो अधनीय न हो, न मारने योग्य, अबध्य।

अबधन—(वि०, सं०) बंधन-विहीन, स्वच्छन्द, स्वतंत्र।

अबधिक—(वि०, सं०) जो बध करने वाला न हो, जो बधिक न हो।

अबधित—(वि०, सं०) बन्धन-रहित, स्वेच्छाचारी। [**अबधनीय**—(वि०) जो बंधन के योग्य न हो]।

अबधूꙮ—(वि०, दे०) [सं० अबोध] अज्ञानी, अबोध, अल्पज्ञ, मूर्ख, बधू-विहीन।

अबधूत—(संज्ञा, पु०,दे०) [सं० अवधूत] संन्यासी, साधु, योगी, महात्मा, जीवनमुक्त, पाप-रहित।

अबध्य—(वि०, सं०) जिसे मारना उचित न हो, शास्त्रानुसार जिसे प्राण-दंड न दिया जा सके, जैसे—स्त्री, गुरु, ब्राह्मण। [स्त्री० **अबध्या**]।

अबनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अवनी] पृथ्वी, धरती।

अबर॥—(वि०, दे०) [सं० अबल] निर्बल, कमजोर, बलहीन। (वि०) [दे० अ+वर] अश्रेष्ठ, अनुत्तम। (दे०) बादल, अभ्र (फ़ा०)।

अबरक—(सं०, पु०) [सं० अभ्रक] कांच की सी चमकीली तहो वाली एक धातु विशेष, भोडर, भोडल (दे०) एक प्रकार का पत्थर, इसको फूँक कर एक प्रकार का रस बनाया जाता है जो सन्निपात आदि रोगों मे दिया जाता है, अभ्रक। [**अबरख**—दे०]। [वि०—**अबरकी**]।

अबरन॥—(वि०) [सं० अवर्ण्य] जिसका वर्णन न हो सके, अवर्णनीय, अकथनीय। (वि०) [सं० अ+वर्ण] बिना रूप-रंग का, वर्ण-शून्य, एक रंग का जो न हो, भिन्न भिन्न वर्णों वाला। जो किसी एक जाति का न हो। जाति-च्युत, जाति-रहित। (यौ०) [हि० अब+रन]। (वि०) [दे० अ+बरन—जलन]। जलन जिसमें न हो। लपट-रहित अग्नि। (संज्ञा, पु०) [सं० आवरण] ढकना, आच्छादित करने वाला, ऊपर का ढक्कन, आबरन।

अबरस—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सब्ज रंग से कुछ खुलता हुआ, घोड़े का एक सफेद रंग, इसी रंग का घोड़ा।

अबरा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) 'अस्तर' ऊपरी पल्ला उलटा, दोहरे वस्त्र के ऊपर का पल्ला, [**उपल्ला** (दे०), **उपल्ली** (दे०)]। ऊपर को न खुलने वाली गाँठ, उलझन। (वि०, स्त्री०) [सं० अ+वर—श्रेष्ठ] अश्रेष्ठा, जो उत्तम न हो, [हि० अ+बर] बर या पति-विहीन।

अबरी—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० अब्र] एक प्रकार का धारीदार चिकना कागज, पच्चीकारी के काम मे आने वाला एक प्रकार का पीला पत्थर, एक प्रकार की लाह की रँगाई। (यौ०) [हि० अबन+री] (वि०, दे०) [अ+बरी—जली] विवाही हुई।

अबरू—(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) भौंह, भ्रू (दे०), [फ़ा० आबरू] इज्जत, मान-मर्यादा।

अबल—(वि०, सं०) निर्बल, कमजोर, दुर्बल, कृष, बल-रहित। [स्त्री० **अबला**]। [संज्ञा, स्त्री० **अबलता**]।

अबलक़—(वि०, अ०) चितकबरा।

अबलख़—(वि०, दे०) [सं० अवलक्ष] सफेद और काले, या सफेद और लाल रंग का, कबरा, दोरङ्गा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अवलक्ष] एक प्रकार का काला पक्षी।

अबला—(संज्ञा, स्त्री० सं०) स्त्री, औरत, नारी, बल हीना। [(संज्ञा, भा०, स्त्री०) **अबलता**।

अबली—(वि०,दे०, हि०) जो बली या बलवान न हो, पंक्ति]।

अबवाब—(संज्ञा, पु०, अ०) मालगुजारी पर लगने वाला सरकारी कर विशेष, अधिक कर, अतिरिक्त कर।

अबस—(क्रि० वि०, अ०) बेकार, व्यर्थ।

अबा—(संज्ञा, पु०, अ०) अंगे से नीचा एक ढीला-ढाला वस्त्र-विशेष, अचला, चोगा, चुगा।

अबाक॥—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० अवाक्] स्तब्ध, बिना बोले, हक्का-बक्का, (दे०) शून्य, वाणी-शून्य।

अबाउ॥—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० आवाज] आवाज, शब्द, रव, ध्वनि।

अबात—(दे०) [हि० अबाना] समात, समाना, अटना, अमाना।

अबात—(वि०, सं०) निर्वात, वायु-हीन, [दे० अ+बात] वार्तालाप-रहित, बिना बात के।

अबाती॥—(वि०, दे०) [सं० अ+बात] बिना वायु का, जिसे वायु हिला न सके, भीतर ही भीतर सुलगने वाला। (वि०, दे०) [हि० अ+बाती] बाती या बत्ती-रहित (दीपक)।

अबातुल—(वि०, सं०) जो बकवादी न हो।

अबादान—(वि०) [अ० आबाद] बसा हुआ। पूर्ण, भरा-पुरा, गुलजार।

अबादानी—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० अबादानी] पूर्णता। बस्ती, शुभचिंतकता। चहल-पहल, रौनक़।

अबादी॥—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० आबादी] आबादी, बस्ती। जन संख्या, गांव, निवास। (वि०, दे०), जो बादी या वायु (बात) कारक न हो।

अबाध—(वि०, सं०) बाधा-रहित, बेरोक, निर्विघ्न, अपार, अपरिमित, बेहद। जो असङ्गत न हो "संग खेलत दोउ झगरन लागे, सोभा बड़ी अबाध"—सूर०।—**प्रदान**—बिना किसी बाधा के माल आदि दे देना, अबाध भुगतना (फ्री डिलीवरी)

अबाधा—(वि०) [हि०, स० अबाध] बाधा विहीन, अबाध, निर्विघ्न। [दे० **अबाधू**]।

अबाधित—(वि०, सं०) बाधा-रहित, बेरोक, स्वच्छन्द, स्वतंत्र, निर्विघ्न।

अबाध्य—(वि०, सं०) जो बाध्य न हो, बेरोक, जो रोका न जा सके, अनिवार्य।

अबान॥—(वि०, दे०) [सं० अ+बाना-हि०], शस्त्रहीन, बिना हथियार के, निहत्था। (दे०), निरस्त्र, बिना टेंव या स्वभाव के।

अबानक—(वि०, दे०) बिना बनाव के, बनावट रहित ।

अबानी—(वि०, दे०) [सं० अ+वाणी] बिना वाणी के, वाणी-रहित, बुरी वाणी, बदज़बान ।

अबाबील—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) काले रंग की एक चिड़िया, कृष्णा, कन्हैया ।

अबाय—(वि०) [ब्र० भा०]—स्तब्ध, भौचक । "ऊधव अबाय रहे ज्ञान ध्यान सरके"—रत्ना० ।

अबार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अ+बेला] देर, बेर, बिलम्ब । "आई छाक अबार भई है"—सूबे० । (क्रि० वि०)—शीघ्र । "तुमकौ दिखावहिं जहं स्वयंबर होनहार अबार" । (वि०) [हिं० अ+बाल, आबाल] बाल रहित, बाल-बच्चों के साथ ।

अबास—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० आवास] रहने का स्थान, घर, मकान, भवन । [**अबासित** (वि०) [हिं० अ+बास] निवास हीन, बास या रहना न होना, सुगंधित-रहित, बुरा गंध] ।

अबासना—(वि०, दे०) वासना-विहीन ।

अबाह्य—(वि०, सं०) आन्तरिक, सुपरिचिता ।

अबिंधर्न—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़वानल ।

अबिंध्य—(संज्ञा, पु०, सं०) रावण का एक सचिव ।

अबिद्ध—(वि० सं०) न बेधा हुआ ।

अबिरल—(वि०) [सं० अविरल] घना, जो विरल न हो । (क्रि० वि०) लगातार, बराबर ।

अबीर—(संज्ञा, पु०, अ०) रंगीन बुकनी, गुलाल या अबरक का चूर जिसे होली मे लोग एक दूसरे के ऊपर डालते हैं । (वि०) [अ+वीर] जो वीर न हो । "कढिगो अबीर पै अहीर तो कढ़े नहीं"—पद्माकर । "तौलों तकि बीर लै अबीर मूठ मारी है ।"—स० ।

अबीरी—(वि०, अ०) अबीर के रंग का, कुछ श्यामता लिये हुए लाल रंग । संज्ञा, पु० अबीरी रंग । "रुख पै अबीरो आब महताब मोहै है"—रसा० ।

अबुद्धि—(संज्ञा, पु०, सं०) बुद्धि-हीन, निबुद्धि, मूढ, मूर्ख । (वि०) अबोध, नासमझ । [**अबुद्ध**—(वि०) अचैतन्य] । [संज्ञा **अबुद्धता**] ।

अबुध—(वि०, सं०) मूर्ख, अज्ञानी, अनारी, अपंडित, अबोध, बुद्धिहीन, असमझ, अविवेकी । (पु०) बुद्धिहीन व्यक्ति । "निपट निरंकुश अबुध असंक"—तु० ।

अबूझ—(वि०, दे०) [संज्ञा अबुद्ध] अबोध, नासमझ, नादान, अज्ञानी, जो बूझा या जाना न जा सके । "अजगव खंड्यौ ऊख जिमि, अजों न बूझ अबूझ"—तु० ।

अबूत—(क्रि०, वि०, दे०) वृथा, व्यर्थ, फ़जूल । (वि० दे०) [अ+बूत] बिना बल के, असमर्थ, अशक्त । "नाम सुमिरि निरभय भया, अरु सब भया अबूत "—कबीर ।

अबे—(अव्य०) [सं० अयि] अरे, हे, (छोटे या नीच के लिये संबोधन) ।—**मुहा०—अबे-तबे करना**—निरादर-सूचक बचन कहना, कुत्सित शब्दों का प्रयोग करना ।

अबेग—(वि०, दे०) वेग रहित, शीघ्र नहीं । [**अबेगि**-ब्र०] ।

अबेध—(वि०, दे०) अबिद्ध, अनबिधा, जो छिदा न हो, बिना बेधा हुआ । [वि०—**अबेधित**, **अबेधक**] ।

अबेपथु—(वि०, सं०) अकंपित ।

अबेर—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अबेला] विलंब, देर, अबार, बेर । (संज्ञा, स्त्री०) [दे० अ+बेर] देर नहीं, अविलम्ब । यौ०—**अबर-सबेर**] ।

अबेला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) असमय, विलम्ब, देर । [**अबेरा**-(दे०), **अबेरी**] ।

अबेश—(वि०, दे०) [फ़ा० वेश] अधिक, बहुत, अत्यन्त । (संज्ञा, पु०) [सं० आवेश] जोश ।

अबै—(क्रि०, वि०, दे०) [हिं० अब] अब ही, अभी, इसके उपरान्त । [**अबलौं**, **अबैलौं**-(दे०, ब्र०)] । (क्रि०, वि०) अब तक, अभी तक ।—**अबहिं-अबहीं**-(दे०, ब्र०) अबही, अभी । [**अबहुँ-अबहूँ**-(दे०, ब्र०) अब भी, अभी भी] । [**अबतें**, **अबतेंहिं**-(दे०, ब्र०) अब के, अब से ही] ।

अबैन—(वि०, दे०, हिं०) [सं० अवचन] बुरे बचन, मौन, मूक, बचन-रहित । [**अबयन**-(दे०)] । "लिये सुचाल बिसालवर, समद सुरंग अबैन"—पद्माभ० । (अव्य० यौ०) [अबै+न] अभी नहीं । "बोलत बैन अबैन" ।

अबैर—(संज्ञा, पु०, दे०) बेर भाव शून्य, शत्रुता-हीन व्यक्ति ।—**अबैरी**-(वि०) जो बैरी या शत्रु न हो, शत्रु-हीन ।

अबोध—(संज्ञा, पु०, सं०) अज्ञान, मूर्ख, अज्ञानता । **अबोधनीय**-(वि०) जो समझाने के योग्य न हो, जो न समझा जा सके ।—**अबोधित**-(वि०) बोध रहित, न समझाया हुआ, न समझा हुआ । (वि०, सं०) अनजान, नादान, मूर्ख । [**अबोधता**—संज्ञा, भा०, स्त्री०] मूर्खता, **अबुद्धता**] ।

अबोल—(वि०, दे०) [हिं० अ+बोल] मौन, मूक, अवाक्, जिसके विषय में बोल या कह न सकें, अनिर्वचनीय, चुपचाप । (संज्ञा, पु०) कटु वाणी, कुबोल, बुरा बोल । (क्रि० वि०) बिना बोले हुए,

चुपचाप। "बोलत बोल अबोल"। "कत अबोल तुम श्रोटन जात"—ल० माधुरी।

अबोला—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+बोलना—हि०] रंज से न बोलना, रूठने के कारण मौन या चुप रहना।

अबौं—(क्रि०, वि०, दे०) [हि० अब] अबहुं, अबभी, अब तक, अबहूँ।—**अभूँ**-(दे०, प्रान्ती०) अभो। —**अबताली, अबताडी**-(दे०, प्रान्ती०)—अब-ताईं, अब तक।

अब्ज—(संज्ञा, पु०, सं०) नीरज, जल से उत्पन्न वस्तु, कमल, शंख, हिज्जल, ईजड़, चन्द्रमा, धन्वंतरि, कपूर, सौ करोड़, अरब।

अब्जद—(संज्ञा, पु०, अ०) अरबी वर्णमाला के पच्चीस वर्ण।

अब्जा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्ष्मी, कमला।

अब्जेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रमेश, विष्णु, हरि, कमलेश, सिन्धु-सुता-पति।

अब्द—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्ष, साल, मेघ, बादल, आकाश, संवत्सर, चार की संख्या।

अब्दप—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्षेश (ज्यो०) अब्देश, अब्द-पति, वरुण, इन्द्र, अब्दाधिपति।

अब्धि—(संज्ञा, पु०, सं०) अर्णव, समुद्र, सागर, सरोवर, ताल, सिंधु, सात की संख्या।

अब्धिज—(संज्ञा, पु०, सं०) सागरोत्पन्न वस्तु, शंख चंद्रमा, चौदह रत्न, अश्विनी-कुमार, मोती आदि। —**अब्धिजा**-(स्त्री०) रमा।

अब्बा—(संज्ञा, पु०, अ०) बाप, पिता।

अब्बास—(संज्ञा, पु०, अ०) एक निर्गंध फूल वाला पौधा, गुलाबास, गुले अब्बास।

अब्बासी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मिस्र देश की एक प्रकार की कपास, एक प्रकार का लाल रंग। [वि० **अब्बासिया**]।

अब्र—(संज्ञा, पु०) [फ़ा०, सं० अभ्र] बादल, मेघ, जलद, अम्बुद।

अब्रह्मण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वह कर्म जो ब्राह्मणो-चित न हो, हिंसादि कर्म, जिसकी श्रद्धा ब्राह्मण में न हो।

अब्रू—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) भौंह, भृकुटी।

अभंग—(वि०, सं०) अखंड, अटूट, पूर्ण, अनाश-वान, न मिटने वाला, लगातार, समूचा। "चौदह चक्कर खायगी जब यह भूमि अभंग।"—मैथिली०। —**पद**-(पु०) यमक और श्लेषालंकार का एक भेद जिसमें शब्द के वर्णों को इधर-उधर न करना पड़े, बिना तोड़े ही शब्द दूसरा अर्थ दे। [विलो०—**सभंग**]।

अभंगीॐ—(वि०, दे०) [सं० अभंगिन्] अभंग, पूर्ण, अखंड, जिसका कोई कुछ ले न सके।

अभंगुर—(वि०, सं०) अविनाशी।

अभंजन—(वि०, सं०) अटूट, अखंड, जिसका भंजन न किया जा सके। [वि०—**अभंजनीय**]

अभक्त—(वि०, सं०) भक्ति-शून्य, श्रद्धाहीन। भगव-द्विमुख। जो बाँटा या विभक्त न किया गया हो, समूचा, पूरा, अविभक्त।—**अभक्ति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अश्रद्धा।

अभक्ष—(वि०, सं०) अखाद्य, अभोज्य, जो खाने के योग्य न हो, धर्म-शास्त्र मे जिसके खाने का निषेध हो। [(संज्ञा, पु०)—**अभक्षण**-(वि०, सं०) **अभक्षित, अभक्षणीय**। यौ० **भक्षाभक्ष**]।

अभक्ष्य—(वि०, सं०) अखाद्य, अभोज्य।

अभगत—(वि०, दे०) [सं० अभक्त] भक्तिविहीन, जो भक्त न हो। [संज्ञा, स्त्री०. दे० **अभगति**] [सं० अभक्ति]।

अभग्न—(वि०, सं०) जो भग्न या टूटा न हो, अखंड, पूर्ण। [संज्ञा, स्त्री० **अभग्नता**]।

अभद्र—(वि०, सं०) अमांगलिक, अशुभ, अशिष्ट, बेहूदा, अकल्याणकारी, कमीना।

अभद्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अमांगलिकता, अशुभ, अशिष्टता, बेहूदगी, असाधुता।

अभय—(वि०, सं०) निर्भय, बेडर, बेख़ौफ, निभीक, अभयभीत। "सुनतहि आरत वचन प्रभु, अभय करैगे तोहिं"—तु०। "अभय छोड़ मुझे तुम दीजियो"—मैथली०। (संज्ञा पु०) भय-विहीनता, शरण। "ब्रह्मारुद्र-लोकहू गयो तिनहू ताहि अभय नहिं दयो"—सूर०।—**दान**-(संज्ञा, पु०, यौ० सं०) भय से बचने का वचन देना, शरण देना, रक्षा करना. क्षमा-दान, मुआफ़ी।—**वचन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भय से बचन की प्रतिज्ञा; रक्षा का वचन, "माभैः" आदि वाक्य, निर्भीक वाक्य। —**मुहा०—देना,—बाँह देना**-भय से बचने का वचन देना, मुक्त करना, शरण देना। "अभयंदा-तुमर्हसि"—**करना**-मुक्त करना, निर्भय कर देना।

अभयंकर—(वि०, सं०) जो भयंकर या भयकारक न हो।

अभया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, भगवती, हर्र, या हरीतकी, हरड़। "बचाभया सुंठि सतावरी समा।"

अभयानक—(वि०, सं०) जो भयङ्कर न हो। [वि० **अभयावन, अभयापना**]।

अभयावह—(हिं०, सं०) जो भयावह या भयकारी न हो।

अभर*—(वि०) [सं० अ+भार] दुर्वह न ढोने योग्य, वहन न करने के योग्य।

अभरनꕥ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आभरण] आभूषण, गहना, जेवर। (वि० दे०) [सं० अवर्ण] अपमानित, दुर्दशा-प्राप्त, जलील।

अभरमꕥ—(वि०) [सं० अ+भ्रम] भ्रमरहित, अभ्रात, निश्शंक, निडर, अचूक, मतिहीन, अमर्यादित। (क्रि०, वि०) निस्संदेह, निश्चय।

अभलꕥ—(वि०) [सं० अ+भला—हिं०] अनभल, अश्रेष्ठ, बुरा, खराब। [वि० **अभला**। स्त्री० **अभली**]।

अभव्य—(वि०, सं०) न होने योग्य, विलक्षण, अद्भुत, असुन्दर, भद्दा, बुरा, अशुभ। [संज्ञा, स्त्री० **अभव्यता**]।

अभाऊꕥ—(वि०, दे०) [अ+भाव] जो न भावे, जो अच्छा न लगे, अशोभित, अरोचक, अरुचिर, अभद्र, अशिष्ट [**अभाउ** (दे०) **अभावन**]। "भई आज्ञा को भोर अभाऊ"—प०। (संज्ञा, पु०) [सं० अभाव] अविद्यमानता, सत्ताहीनता, विचार शून्यता।

अभाए—(क्रि०, वि०, दे०) न अच्छे लगने वाले, [**अभाये** दे०]। (वि०) अरोचक, अशिष्ट, अरुचिर।

अभाग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अभाग्य] दुर्भाग्य, मंदभाग्य। [संज्ञा, स्त्री० **अभागता**]

अभागा—(वि०, दे०) [सं० अभाग्य] भाग्य हीन, सौभाग्य-विहीन, बदकिस्मत। जो जायदाद के हिस्से का अधिकारी न हो।

अभागी—(वि०, दे०) [सं० अभागिन] भाग्य हीन, बदकिस्मत, जो जायदाद के हिस्से का अधिकारी न हो। [स्त्री० **अभागिनी, अभागिन** दे०]।

अभाग्य—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रारब्ध-हीनता, दुर्दैव, दुष्टभाग्य, मन्दभाग्य, बुरा दिन, बदकिस्मती, दुर्भाग्य। (वि०) भाग्यहीन, दुर्दैव-ग्रस्त।

अभाजन—(वि०, सं०) पात्र-रहित, कुपात्र, अपात्र, अयोग्य, अविश्वासी, बुरा व्यक्ति।

अभाज्य—(वि०, सं०) जो विभक्त न किया जाये, न बाँटने योग्य, अविभाजनीय।

अभाय*—(संज्ञा, पु०) [सं० अभाव] बुरे भाव, दुष्ट-भाव। (क्रि०, वि०) मूर्छित, भावनारहित। "पाँय परे उखरि अभाय मुख छायो है" रत्ना०।

मु०—**अभायपक्ष**—[सं० अभावपक्ष] असम्भव रूप से, अकस्मात, अचानक, एकाएक।

अभार—(वि०, सं०) भार-रहित, हलका। लघु। अगुरु, हरुआ (दे० ब्र०)

अभावꕥ—(सं०, पु०, सं०) अविद्यमानता, न होना, असत्ता। त्रुटि, कमी, घाटा, टोटा। कुभाव, दुर्भाव। विरोध, बुरा भाव।

अभावन—(वि०, हिं०) अरोचक, असुन्दर, अरुचिकर, अप्रिय। [वि० **अभावना**। **अभावनी**]।

अभावनीय—(वि०, सं०) अचिंतनीय, अतर्क्य, अरोचनीय।

अभावित—(वि०, सं०) जिसका विचार चित्त में न आया हो, जिसकी अनुभूति न की गयी हो।

अभावुकता—(स्त्री०, सं०) अभाव। प्रवरणता, असहृदयता। "यह अभावुकता तम पुंज की"—हरिऔध।

अभासꕥ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आभास] आभास। [वि० **अभासित**]।

अभाषण—(संज्ञा, पु०, सं०) मौनालम्बन, नीरवता।

अभाषित—(वि०, सं०) न कहा हुआ अनुक्त।

अभि—(उप०, सं०) एक उपसर्ग जो शब्दों के आगे लगाकर उनमे अर्थान्तर उपस्थित करता है, सामने, बुरा, इच्छा, समीप, बारंबार, अच्छी तरह, दूर, ऊपर, उभयार्थ, वीप्सा, आगे, समन्तात, अभिमुख, इत्थं भाव, अभिलाष, औत्सुक्य, चिन्ह, धर्षण।

अभिक—(संज्ञा, पु०, सं०) कामुक, लम्पट, लुच्चा, व्यभिचारी।

अभिक्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) चढ़ाई, धावा। [वि० **अभिक्रमणीय**]।

अभिक्रामक—(संज्ञा, पु०, सं०) आक्रमण करने वाला। [एसेलेंट]।

अभिख्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाम। शोभा। उपाधि।

अभिगमन—(संज्ञा, पु०, सं०) पास जाना। सहवास, संभोग। [वि० **अभिगमनीय**]।

अभिगामी—(वि०, सं०) पास जाने वाला, सम्भोग या सहवास करने वाला। [स्त्री० **अभिगामिनी**]।

अभिग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिक्रमण। अभियोग, आक्रम, गौरव, सुकीर्ति, अपहार। चोरी। युद्धाह्वान, प्रोत्साहक कथन।

अभिघात—(संज्ञा, पु०, सं०) चोट पहुँचाना, प्रहार, मार, आघात। दाँत से काटना। "कोन्हो अभिघात घात पाय वा विसासी इहाँ"—।

अभिघातक—(वि०, सं०) प्रहार-कर्ता, आघात या चोट पहुँचाने वाला।

अभिघाती—(वि०, यौ०, वि०) आक्रमक। [आफेन्सिव]—**अस्त्र**–आक्रमण अस्त्र। [आफेन्सिव वीपन] —**युद्ध**–आक्रमक युद्ध। [आफेन्सिव वार]।

अभिचार—(संज्ञा, पु०, सं०) मंत्र-मन्त्र द्वारा मारण और उच्चाटन आदि हिंसाकर्म, पुरश्चरण।

अभिचारी—(वि०) [सं० अभिचारिन्] यन्त्र-मन्त्रादि का प्रयोग करने वाला। [स्त्री० **अभिचारिणी**]। [**अभिचारक**—(वि०) अनिष्टकारक]।

अभिजन—(संज्ञा, पु०, सं०) कुल, वंश, परिवार। जन्मभूमि। घर में सब से बड़ा। प्रख्यात। पालक। रक्षक। पूर्वजों का निवास स्थान।

अभिजात—(वि०, सं०) अच्छे कुल में उत्पन्न, कुलीन, बुद्धिमान, पंडित, योग्य, उपयुक्त, मान्य, पूज्य। सुन्दर, रूपवान, मनोरम, मनोज्ञ।—**भवन**–राजसभा, लार्डभवन [हाउस आफ लार्ड्स]।

अभिजित्—(वि०, सं०) जीतने वाला, पराक्रमी। अभिजित् नक्षत्र में जन्म लेने वाला।

अभिजित—(वि०, सं०) विजयी। (संज्ञा, पु०) सिंघाड़े के आकार का एक तीन तारों वाला नक्षत्र-विशेष। मुहूर्त-विशेष। दिवस का अष्टम मुहूर्त। 'शुक्लपक्ष अभिजित हरि प्रीता'—तु०।

अभिज्ञ—(वि०, सं०) जानकार, विज्ञ, निपुण, कुशल।

अभिज्ञता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विज्ञता। पांडित्य। नैपुण्य, पटुत्व, कौशल।

अभिज्ञान—(संज्ञा, पु० सं०) स्मृति, ख्याल, स्मरण, लक्षण, पहचान, निशानी, सहिदानी। परिचायक चिन्ह, स्मारक चिन्ह।

अभिताप—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षोभ, कष्ट, भावमग्नता। ताप।

अभिदर्शन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश में आना। देखना।

अभिधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शब्दों के नियत अर्थों से निकलने वाले अर्थों ही को प्रगट करने वाली शब्द-शक्ति, नाम। (संज्ञा) वाच्यार्थ देने वाली क्षमता (काव्य०)।

अभिधान—(संज्ञा, पु०, सं०) नाम। (संज्ञा) कोश, शब्दार्थ-प्रकाशक कोष। कथन। लक़ब। उपनाम, वाचक।

अभिधायक—(वि०, सं०) नाम रखने वाला। कहने वाला। सूचक, वाचक।

अभिधर्म—(वि०, सं०) प्रतिपाद्य। वाच्य। जिसका नाम लेते ही बोध हो जाये। (संज्ञा, पु०, सं०) नाम, अभिधान।

अभिधावक—(संज्ञा, पु०, सं०) आक्रमण करने वाला, आक्रमक। [एग्रेसर]।—**राष्ट्र**–आक्रमण करने वाला राष्ट्र [एग्रेसर नेशन]।

अभिधावन—(संज्ञा, यौ०, सं०) शत्रु की ओर से पहला आक्रमण [एग्रेसन]।—**शीलराष्ट्र**–आक्रमण करने वाला राष्ट्र [एग्रेसिव नेशन]।—**अभिधावनात्मक-कार्यवाही**–आक्रमणात्मक कार्यवाही। [एग्रेसिव ऐक्शन]—**नीति**–आक्रमणात्मक नीति। [एग्रेसिव पालिसी]।

अभिधेय—(वि०, सं०) अभिधाशक्ति से अर्थ देने वाला पद।

अभिनंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) आनन्द। सन्तोष। प्रशंसा, उत्तेजना, प्रोत्साहन, विनय, प्रार्थना, विनम्र बिनती।—**पत्र**–आदर या प्रतिष्ठा-सूचक पत्र जो किसी बड़े आदमी के आगमन पर हर्ष और संतोष प्रगट करने के लिये उसे सुनाया और अर्पित किया जाता है। [ऐड्रेस]।—**ग्रंथ**–सम्मान-सूचक लेखों, कविताओं, संस्मरणों, परिचायक लेखों तथा स्फुट सुन्दर लेखों का संग्रह जो किसी विद्यावयोवृद्ध बड़े साहित्यिक या महापुरुष को सादर समर्पित किया जाता है।

अभिनंदनीय—(वि०, सं०) प्रशंसनीय, वंदनीय, आदरणीय, प्रशंसा के योग्य।

अभिनंदित—(वि०, सं०) वंदित, प्रशंसित, सम्मानित, उत्तेजित, प्रोत्साहित।

अभिनय—(संज्ञा, पु०, सं०) कुछ समय के लिए दूसरे व्यक्तियों के कथन, वस्त्राभरण तथा लक्षणों को धारण करना, नक़ल करना, स्वाँग बनाना, नाटक का खेल, नाट्य-कौतुक।

अभिनव—(वि०, सं०) नया, नवीन, नव्य, नूतन। —**जाँच**–फिर से या नये सिरे से जाँच करना। [फ्रेश इंक्वायरी]।

अभिनवगुप्त—(संज्ञा, पु०, सं०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध अलंकार वेत्ता; ये शैव थे, इनके ८ प्रधान ग्रन्थ है, इनका जन्म समय ९९३ ई० से १०१५ ई० के बीच में अनुमानित।

अभिनिविष्ट—(वि०, सं०) धँसा हुआ, गड़ा हुआ, बैठा हुआ। अनन्य मन से अनुरक्त। लिप्त, मग्न। मनोयोगी, प्रणिहित, तल्लीन।

अभिनिवेश—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रवेश, पैठ, गति। मनोयोग, लीनता, एकाग्र चिंतन, दृढ़ सङ्कल्प,

तत्परता। मरण-भय से उत्पन्न क्लेश, मृत्यु-शंका, प्रणिधान। विचार, आग्रह।

अभिनिर्णय—(संज्ञा, पु०, सं०) मुकदमें का फैसला, अभियोग का निर्णय [एड्जुडिकेशन]।

अभिनिषेध—(संज्ञा, पु०, सं०) रद्द कर देना, तोड़ देना, विलुप्त कर देना [एब्रोग्रेशन]।

अभिनीत—(वि०, सं०) निकट लाया हुआ। सुकृत, सुसज्जित, अलंकृत, उचित, सम्मत अभिनय किया हुआ, खेला हुआ। (नाटक)।

अभिनेता—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिनय करने वाला व्यक्ति, स्वांग दिखाने वाला, नट, [ऐक्टर]। [स्त्री० **अभिनेत्री**]।

अभिनेय—(वि०, सं०) अभिनय करने योग्य, खेलने योग्य (नाटक)। [संज्ञा, **अभिनेयता**]।

अभिन्न—(वि०, सं०) जो भिन्न या पृथक् न हो, एकमय, मिला हुआ, सम्बद्ध, संयुक्त, मिश्रित, मिलित, अपृथक। [स्त्री० **अभिन्ना**]।—**पद**-(संज्ञा, पु०) श्लेषालंकार का एक भेद जिसमे शब्द बिना विभक्त किये ही अन्य अर्थ देता है; अभंग-श्लेष।—**हृदय**-(सं०, पु०) प्रगाढ़ मित्र, सुहृद, एक हृदय वाले।

अभिपक्षसाक्षी—(पु०, सं०) अभियोग या सबूत साक्षी (प्राजीक्यूशन विटनस)।

अभिप्रश्न—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रश्न [इंटरोगेशन]।

अभिप्राय—(संज्ञा, पु०, सं०) आशय, मतलब, अर्थ, तात्पर्य, मंतव्य।

अभिप्रेत—(वि०, सं०) इष्ट, अभिलषित, अभीष्ट, वांछित, मनोऽनुकूल।

अभिभव—(संज्ञा, पु०, सं०) पराजय, हार, पराभव, नीचा देखना।

अभिभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) पराजय।

अभिभावक—(वि०, सं०) अभिभूत या पराजित करने वाला, स्तंभित करने वाला, वशीभूत करने वाला, रक्षक, सरपरस्त, तत्वावधायक, सहायक, परिपालक।

अभिभावकता-अभिभावकत्व—(संज्ञा, भा०, सं०) तत्वावधायकत्व, सरपरस्ती, सहायता, रक्षण, परिपालन।

अभिभाषण—(संज्ञा, पु०, सं०) व्याख्यान, बोलना, भाषण।

अभिभूत—(वि०, सं०) पराजित, हराया हुआ, पीड़ित, वशीभूत, जिसे वश में किया गया हो, विचलित, पराभूत, विह्वल, विकल, व्याकुल, वशीकृत। "तब पिता क्या थे अधिक अभिभूत"—मैथली०।

अभिभूति—(संज्ञा, वि०, सं०) प्रभाव से आक्रान्त प्रभावित, पीड़ित, पराजित।

अभिमंता—(वि०, सं०) अभिमानी, अहंकारी, घमण्डी।

अभिमंत्रण—(संज्ञा, पु०, सं०) मंत्र द्वारा संस्कार, आवाहन। [स्त्री० **अभिमंत्रणा**]।

अभिमंत्रित—(वि०, सं०) मंत्र-द्वारा पवित्र किया हुआ, मन्त्र-प्रभावित, आवाहन किया हुआ, मंत्र से संस्कृत। "अभिमंत्रित कर जिसे सुलाती"—महा०।

अभिमत—(वि०, सं०) मनोनीत। वांछित, अभीष्ट, सम्मत, राय के मुताबिक़, अनुमत। [विलो० **अनभिमत**]। (संज्ञा, पु०) अभिलषित वस्तु, इष्टपदार्थ। मत, राय, सम्मति, विचार, चितचाही बात, मनोनीत। "राजन राउर नाम-जस, सब अभिमत दातार"—तु०।

अभिमति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अभिमान, गर्व, अहंकार, यह मेरी है—ऐसी भावना, (वेदान्त)। अभिलाषा, इच्छा, स्पृहा, चाह, मति, राय, विचार, आकांक्षा, वांछा।

अभिमन्यु—(संज्ञा, पु०, सं०) अर्जुन और सुभद्रा के पुत्र, श्रीकृष्ण के भांजे, विराट-सुता उत्तरा के पति और राजा परीक्षित के पिता थे, महाभारत में चक्रव्यूह तोड़ते हुए अन्याय से सप्त महारथियों के द्वारा निःशस्त्र होने पर मारे गये थे। २००० पू० ई० मे होने वाले एक काश्मीर-नरेश जिन्होंने बौद्ध धर्म का खूब प्रचार किया था, इनका बसाया हुआ। 'अभिमन्यु नगर' काश्मीर में है (इति०)।

अभिमर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) मनन, चिंतन, पर-स्त्रीगमन। [वि० **अभिमर्षणीय**]।

अभिमान—(संज्ञा, पु०, सं०) अहंकार, गर्व, घमंड, मद, आक्षेप, अहंभाव। "दीप्त हो अभिमान उठता बोल है"—दिनकर।—**जनक**-(वि०) गर्वोत्पादक, अहंकार-युक्त, अहमंन्यतायुक्त।

अभिमानी—(वि०, सं०) अहंकारी, घमंडी, आक्षेपान्वित। [स्त्री०—**अभिमानिनी**]।

अभिमुख—(क्रि०, वि०, सं०) सामने, सम्मुख, समक्ष, आगे। (वि०) सामने मुख किये हुये। "अपलक ऊपर को ही अभिमुख"-पंत। [वि० **अभिमुखी**]।

अभियान—(संज्ञा, पु०, सं०) युद्ध के लिये प्रयास, समर-यात्रा, चढाई।

अभियुक्त—(वि०, सं०) जिस पर अभियोग चलाया गया हो, मुलजिम, प्रतिवादी, अपराधी। [स्त्री०—**अभियुक्ता**]।

अभियोक्ता—(वि०, सं०) अभियोग उपस्थित करने वाला, वादी, मुद्दई, फ़रियादी, प्रार्थी ।—**जन**–देखिए —'जन अभियोक्ता' । [स्त्री० **अभियोक्त्री**] ।

अभियोग—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी के किये हुए अपराध या हानि के विरुद्ध न्यायालय में निवेदन, आवेदन । अपराधादियोजन, नालिश, मुकदमा, चढ़ाई, आक्रमण । उद्योग । **मुहा०—लगाना**— अपराध लगाना, अभियोग लाना या चलाना ।

अभियोगी—(वि०, सं०) अभियोग चलाने वाला, नालिश करने वाला, फ़रियादी, प्रार्थी, निवेदक ।

अभिरत—(वि०, सं०) अनुरक्त, सहित । [क्रि० दे० अभिरना] ।

अभिरना৪—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अभि+रण] लड़ना, टेकना, भिड़ना, झगड़ना, उलझना । (क्रि०, सं०) संलग्न होना, मिलाना, टकराना, अवलम्बित होना । "भोतिन सो अभिरैं भहराइ गिरै फिरि धाइ भिरैं मुख काढ़े"—भा० ।

अभिराम—(वि०, सं०) मनोहर, सुन्दर, रम्य, प्रिय, मनोरम, रुचिर । [स्त्री०—**अभिरामा**] "लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा"—तु० । (संज्ञा, पु०) आनन्द, प्रमोद । [संज्ञा, स्त्री० **अभिरामता**] ।

अभिरुचि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अत्यन्त, रुचि, चाह, पसन्दगी, प्रवृत्ति, तुष्टि, रसज्ञान, आस्वाद, अभिलाष ।

अभिरूप—(वि०, सं०) योग्य, उपयुक्त, उचित, अनुकूल, अनुरूप । (वि०, पु०, सं०) विद्वान्, कामदेव, चंद्रमा, शिव, विष्णु, सदृश ।

अभिलषणीय—(वि०, सं०) वांछनीय, मनोहर, सुन्दर, अभिलाषा के योग्य, जिसकी इच्छा की जाये । [स्त्री०—**अभिलषणीया**] ।

अभिलषित—(वि०, सं०) वांछित, इच्छित, इष्ट, चाहा हुआ, मनभाया, ईप्सित ।

अभिलाखना৪—(क्रि०, स०) [सं० अभिलषण] इच्छा करना, चाहना, अभिलाषा करना । "सुनि पन सकल भूप अभिलाषे", "सब के हृदय मदन अभिलाखा"—तु०

अभिलाष—(संज्ञा, पु०, सं०) इच्छा, मनोरथ, कामना, चाह, वियोग । शृङ्गार के अन्दर दस दशाओं में से एक । पिय के मिलने की इच्छा, अकांक्षा, स्पृहा, कामना, आशा । [दे०—**अभिलाख-अभिलाखा, अभिलास**] "मड़रायँगी अभिलाषायें"—मह० ।

अभिलाषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इच्छा, कामना, चाह, अकांक्षा । [दे०—**अभिलाखा-अभिलासा**] ।

अभिलाषी—(वि०) [सं० अभिलाषिन्] अकांक्षी, अभिलाष रखने वाला, इच्छुक, सस्पृह, वांछान्वित । [स्त्री०—**अभिलाषिणी**] आकांक्षिणी ।

अभिलाषुक—(वि०, सं०) इच्छान्वित, स्पृहा या वांछा रखने वाला, इच्छुक । [स्त्री०—**अभिलाषुका**] ।

अभिलास, अभिलासा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अभिलाष, अभिलाषा] इच्छा, अकांक्षा । "सब के उर अभिलास अस"—तु० ।

अभिवंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रणाम, नमस्कार, स्तुति । प्रशंसा । स्तवन ।

अभिवंदना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अभिवंदन ।

अभिवंदनीय—(वि०, पु०, सं०) श्लाघ्य, प्रशंसनीय, प्रणाम करने योग्य, पूज्य । [वि०, स्त्री०—**अभिवंदनीया**] ।

अभिवंदित—(वि०, पु०, सं०) प्रशंसित, पूजित, सम्मानित, नमस्कृत ।—**अभिवंदिता**—(स्त्री०) सपूजिता, प्रशस्ता ।

अभिवंद्य—(वि०, पु०, सं०) प्रणाम करने योग्य, श्लाघ्य, प्रशस्त, पूज्य ।—**अभिवंद्या**–(स्त्री०) पूज्या, मान्या ।

अभिवाद—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्वचन, गाली, कुवचन ।

अभिवादक—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिवादन करने वाला । [स्त्री०—**अभिवादिका, अभिवादिनी**] ।

अभिवादन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रणाम, नमस्कार, वंदना, स्तुति ।

अभिवादनीय—(वि०, पु०, सं०) प्रणम्य, प्रणाम करने योग्य, प्रशंसनीय, श्लाघ्य । [स्त्री०—**अभिवादनीया**] ।

अभिवादित—(वि०, पु०, सं०) नमस्कृत, पूजित, वंदित । [स्त्री०—**अभिवादिता**] ।

अभिव्यंजक—(वि०, सं०) प्रगट करने वाला, प्रकाशक । सूचक, बोधक ।

अभिव्यंजन—(संज्ञा, पु०, सं०] प्रगट करना, प्रकाशित करना, सूचित करना, व्यक्त करना । (यौ०) अभिव्यंजन-शक्ति ।

अभिव्यंजना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मनोभावों को प्रगट करने की शक्ति, भावना ।—**स्वातंत्र्य**–विचार प्रगट करने की स्वतंत्रता । [फ्रीडम आफ एक्सप्रेशन]

अभिव्यंजित—(वि०, सं०) प्रकाशित, प्रगटित, व्यक्त, सूचित ।

अभिव्यंज्य—(वि०, सं०) प्रकाशित करने योग्य, व्यक्त करने के लायक ।

अभिव्यंजनीय—(वि०, सं०) प्रकाशनीय, प्रकट करने योग्य।

अभिव्यक्त—(वि०, सं०) प्रकाशित। विज्ञापित, स्पष्ट किया हुआ, जाहिर किया हुआ।

अभिव्यक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रकाशन, स्पष्टीकरण, साक्षात्कार, सूक्ष्म और अप्रत्यक्ष कारण का कार्य में प्रत्यक्ष आविर्भाव, जैसे बीज से अंकुर निकलना (न्याय)। विज्ञापन, घोषणा, सूचना, प्राकट्य। "अभिव्यक्ति-मूठियों मे भर"—हरिऔध।

अभिशप्त—(वि०, सं०) शापित, जिसे शाप दिया गया हो। जिस पर मिथ्या दोष लगाया गया हो। "अभिशप्त रही जाती है"—प्रसाद

अभिशाप—(संज्ञा, पु०, सं०) शाप, बददुआ, मिथ्या दोषारोपण। क्रोध। दूषणारोप। बुरा मानना। अनिष्ट-प्रार्थना।

अभिशापित—(वि०, सं०) अभिशप्त, शाप दिया हुआ। [वि०—**अभिशापक**]।

अभिषंग—(संज्ञा, पु०, सं०) पराजय, निन्दा, आक्रोश, पराभव, कोसना, मिथ्यापवाद, झूठा दोषारोपण, दृढ़ मिलाप, आलिंगन। शपथ, कसम। भूत-प्रेत का आवेश। शोक।

अभिषव—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ-स्नान, मद्योत्पादक वस्तु, सोमलता-पान।

अभिषिक्त—(वि०, सं०) जिसका अभिषेक किया गया हो, कृताभिषेक। बाधा-शान्ति के लिये जिस पर मंत्र पढ़कर दूर्वा और कुश से जल छिड़का गया हो। राज-पद पर निर्वाचित।—**अभिषिक्ता**—(स्त्री०) जल-सिंचिता।

अभिषेक—(संज्ञा, पु०, सं०) जल से सिंचन, छिड़काव, ऊपर से जल डाल कर स्नान। बाधा शान्ति के लिये मंत्र पढ़ कर दूर्वा और कुश से जल छिड़कना। मार्जन। विधिपूर्वक मंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल छिड़क कर राज-पद पर निर्वाचन। "कल प्रिये निज आर्य का अभिषेक है"—मैथिली०। यज्ञादि के पश्चात् शान्ति के लिए स्नान। शिवलिंग पर छेददार घड़े को रख कर पानी टपकाना। [यौ०—**राज्याभिषेक**—राजतिलक]।

अभिषेचन—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंचन, मार्जन। [वि०—**अभिषेचित**, **अभिषेचक**, **अभिषेचनीय**]।

अभिष्यंद—(संज्ञा, पु०, सं०) बहाव, स्राव, आँख आना।

अभिसंधि—(संज्ञा, स्त्री०,सं०) वंचना। धोखा, कई आदमियों का मिलकर चुपचाप किसी काम के लिये परस्पर सलाह, कुचक्र, षड्यंत्र। "भरत में अभिसन्धि का ही गंध"—मैथिली०।

अभिसंधिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कलहांतरिता नायिका (काव्य०)।

अभिसंपात—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिशाप। संग्राम। क्रोध, मन्यु, रोष, रिस (दे०)। [वि० **अभिसंपाती**]।

अभिसंस्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) मत, विचार-धारा।

अभिसंश्रय—(संज्ञा, पु० सं०) बचाव, रक्षा, शरण।

अभिसम्मत—(वि०, सं०) समर्थित, पोषित, सन्मानित।

अभिसर—(संज्ञा, पु०, सं०) साथी, संगी, सहचर, अनुचर। सहायक, मित्र, हितैषी।—**अभिसरन**—(संज्ञा, पु०) सहारा।

अभिसरण—(संज्ञा, पु० सं०) आगे जाना, समीप गमन, प्रिय से मिलन के लिए प्रयाण।—**अभिसरन**—(दे०) निकट जाना।

अभिसरनाॐ—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अभिसरण] संचरण करना, जाना। किसी वांछित या इष्ट स्थान को जाना। संकेत स्थान पर प्रिय से मिलन के लिये जाना।

अभिसर्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्माण, सृष्टि, सर्जना।

अभिसर्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) हत्या। दान। देन।

अभिसार—(संज्ञा, पु०,सं०) सहाय, सहारा। युद्ध। नायिका या नायक का संकेत-स्थान को मिलने के लिए जाना। "विरह-संग अभिसार भी"—मैथिली०।

अभिसारना—(क्रि०, अ०, दे०) अभिसार करना, अपने प्रिय के निकट जाना। (क्रि०, प्रे०) [सं० अभिसरण] अभिसार कराना। [दे० **अभिसरना**]।

अभिसारणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अभिसारिका।

अभिसारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह स्त्री जो प्रिय से मिलने के लिए संकेत-स्थान पर जाती है या प्रिय को ही बुलाती है, यह दो प्रकार की होती है—कृष्णाभिसारिका और शुक्लाभिसारिका—प्रथम तो श्याम वस्त्राभूषणों के साथ कृष्ण पक्ष की निशा में और द्वितीय सफेद वस्त्राभूषणों के साथ शुक्ल पक्ष की रात में चलती है। दिवाभिसारिका का भी उल्लेख मिलता है। "निकल गयी चुपचाप निशा अभिसारिका"—मैथिली०।

अभिसारी—(वि०) [सं० अभिसारिन्] साधक।

सहायक। प्रिया से मिलने के लिए संकेत-स्थान को जाने वाला।

अभिसेक-अभिसेख—(संज्ञा, पुं० दे०) [सं० अभिषेक] अभिषेक।

अभिहार—(संज्ञा, पु०, सं०) आक्रमण, हमला, लूट-मार। जादू करना। चमत्कारपूर्ण माया करना। डकैती। "करि अभिहार कै सभा को ज्ञान लूट्यौ है"—रसा०।—**अभिहारी**—(संज्ञा, भा०, स्त्री०) माया। जादू। लूट-मार। डकैती। "चोखी अभिहारी करैं खंजन खिलाड़ी ये"—रसाल०।

अभिहित—(वि०, सं०) कथित, कहा हुआ, उक्त। व्यक्त, प्रकाशित, प्रकटित।

अभी—(क्रि०, वि०) [हिं० अब+ही] इसी क्षण, इसी समय, इसी वक्त। [अबै दे०]। (वि०) [सं० अ+भीः] अभय, भय-रहित।

अभीक—(वि०, सं०) निर्भय, निडर, निष्ठुर, कठोर। उत्सुक, कठिन-हृदय।

अभीक्ष्ण—(अव्य०, सं०) पुनः पुनः, बार बार, भूयोभूयः।

अभीत—(वि०, सं०) निर्भय, निडर, साहसी, भीति-रहित। "सूत, मागध, वन्दि आदि अभीत"—मैथिली०।

अभीप्सा—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिलाषा, इच्छा, कामना।

अभीप्सित—(वि०, सं०) अभीष्ट, वांछित। प्रिय। मनोभिलषित, इच्छित। "हे भरत भद्र अब कहो अभीप्सित अपना"—मैथिली०। [स्त्री० अभीप्सिता]।

अभीम—(वि०, सं०) जो भीम या भीषण न हो। जो भारी न हो। जो बहुत बड़ा न हो। छोटा, लघु, खर्व, अल्प।

अभीर—(संज्ञा, पु०, दे०,सं०) गोप, अहीर, ग्वाला, एक छंद (पिं०)। (वि०) [अ+भीर] निडर, निर्भय। भीति-रहित।—**अभीरी**—(वि०) अहीरी, अहीर की।

अभीरु—(वि०, सं०) निर्दोष, निर्भय, निर्भीक। (संज्ञा, पु०, सं०) महादेव, भैरव, शतावरि।—**अभीरुता**—(संज्ञा, स्त्री०) अकादरता।

अभीषण—(वि०, सं०) जो भीषण या भयानक न हो, अभयावह।

अभीष्ट—(वि०, सं०) वांछित, चित-चाहा, मनोनीत, पसन्द, अभिप्रेत, आशयानुकूल, अभिलषित, ईप्सित, इच्छित, इष्ट। (संज्ञा, पु०, सं०) मनोरथ, कामना।

अभीहा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अभिलाषा, इच्छा, कामना।

अभीष्म—(वि०, सं०) जो भीष्म या भीषण न हो, अभयंकर।

अभीसार—(संज्ञा, पु०, सं०) चढ़ाई, धावा, हमला।

अभुआना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० आह्वान] हाथ-पैर पटकना और जोर जोर से हिलाना, भूत-प्रेतादि से आविष्ट होना। [दे० प्रान्ती० अबुहाना] "एक होय तेहि उत्तर दीजै सूर उठी अभुआनी"

अभुक्त—(वि०, सं०) न खाया हुआ। बिना बर्ता हुआ, अव्यवहृत, अप्रयुक्त, उपभोग न किया हुआ।—**मूल**—(पु०) मूल नामक एक दशा; यह बड़ा कड़ा मूल होता है, इसमें पैदा होने वाले लड़के को लोग घर में नहीं रखते। कहते हैं तुलसीदास इसी मूल में पैदा हुए थे। ज्येष्ठा नक्षत्र के अंत की दो घड़ियाँ तथा मूल नक्षत्र के आदि की दो घड़ियाँ—गंडान्त मूल (ज्यो०)।

अभुज—(वि०, सं०) बाहों से रहित, पंगु।

अभू॥§—(क्रि० वि०, दे०) अभी, अब ही, आज ही। (वि०) [सं० अ+भू—होना] जो उत्पन्न न हो, अकारण, अजन्मा। (संज्ञा, पु० सं०) ब्रह्मा, विष्णु, ईश्वर।

अभूखन॥§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आभूषण] गहना, जेवर, भूषन। (भूषण—सं०) [आभूषन, आभूषण]।

अभूत—(वि०, सं०) जो न हुआ हो। अवर्तमान। अपूर्व, विलक्षण, अनोखा।

अभूतपूर्व—(वि०, सं०, यौ०) जो प्रथम न हुआ हो, अपूर्व, अनोखा, विलक्षण।

अभेद—(संज्ञा, पु० सं०) भेद का अभाव, अभिन्नता, एकत्व, एकरूपता, सदृशता। जिसका विभाग न हो सके। अखंड रूपक अलंकार के दो भेदों में से एक (काव्य०)।—**अभेद्य**—(वि०) जो भेदा न जा सके। (वि०, दे०) भेद-रहित, एकरूप, समान। [संज्ञा अभेदन]।—**वाद**—(पु०) अद्वैतवाद, जीव-ब्रह्म को एक मानने वाला सिद्धान्त।—**वादी**—(पु०) जीव और ब्रह्म मे भेद न मानने वाला सम्प्रदाय, अद्वैत-वादी। "ईश्वर-जीवहि नहिं कछु भेदा"—तुल०।

अभेदनीय—(वि०, सं०) जिसका भेदन या छेदन न हो सके, न छेदने योग्य। जिसका विभाग न हो सके। (संज्ञा, पु०) हीरा मणि। [संज्ञा, स्त्री० अभेदनीयता]

अभेद्य—(वि०, सं०) जिसका विभाग न हो सके। जो भेदा या छेदा न जा सके। जो टूट न सके,

अखंडनीय, अभेदनीय।

अभेय॰—(वि०, दे०) [सं० अभेद्य] अभेद्य, अभेदनीय, अभिन्न। (संज्ञा, पु०) अभेद। एकता, अखंडता, सादृश्य।

अभेरना—(क्रि०, स० दे०) [सं० अभि+रण] रगड़ना, भिड़ना-भिड़ाना, मिलाकर रखना, सटाना, मिलाना, मिश्रित करना, टकराना, धक्का देना।

अभेरा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अभि+रण] रगड़, टक्कर, मुठभेड़, धक्का। "उठै आगि दोउ डारि अभेरा"—पं०।

अभेव—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अभेद] अभेद, समानता, सादृश्य, एकता। (वि०) [सं० अभेद्य] अभिन्न, एक, भेदरहित।

अभै—(वि०, दे०) अभय (सं०)। (अव्य०, दे०) अबै, अभी।

अभोक्तव्य—(वि०, सं०) जो उपयोग अथवा उपभोग में न लाया जाय।

अभोक्ता—(वि०, सं०) उपयोग न करने वाला, संयमी, विरक्त।

अभोग—(वि०, सं०) जिसका भोग न किया गया हो, अनुपभुक्त। (संज्ञा, पु०) भोगविलास-रहित होने की स्थिति।

अभोगी—(वि०, सं०) अविषयी, विरक्त, विरागी, भोग न करने वाला, अविषयासक्त, अनुपभोगी।

अभोज—(वि०, सं०) अभक्षणीय, अखाद्य, न खाने योग्य, अभोज्य।

अभोजन—(संज्ञा, पु०, सं०) भोजनाभाव, अनाहार, उपवास, व्रत, अनशन। (वि०) बिना भोजन का।

अभोजी—(संज्ञा, पु०, सं०) न खाने वाला, अखादक, अभोगी, उपभोग न करने वाला।

अभोज्य—(वि०, सं०) न खाने योग्य पदार्थ।

अभौतिक—(वि०, सं०) जो भौतिक या सांसारिक न हो, जो पंचतत्वों से न बना हो, जो भूमि से सम्बन्ध न रखे, अगोचर, अलौकिक। [संज्ञा, स्त्री० **अभौतिकता**]।

अभौम—(संज्ञा, पु०, सं०) भूमि-सम्बन्धी जो न हो।

अभ्यंतर—(संज्ञा, पु०, सं०) मध्य, बीच, हृदय, अन्तर। (क्रि०, वि०) भीतर, अन्दर, बीच। [वि० **आभ्यंतरिक**]।

अभ्यंतरवर्ती—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्तरवासी, मध्यवासी।

अभ्यंतरिक—(वि०, सं०) अन्दर का, हृदय का, भीतरी, अंतरंग।

अभ्यंग—(संज्ञा, पु०, सं०) लेपन, चारों ओर पोतना, शरीर में तेल लगाना, तैलमर्दन। [यौ० **तैलाभ्यंग**]।

अभ्यंजन—(संज्ञा, पु०, सं०) तेल-लेपन, तैल, उबटन, बटना।

अभ्यर्थना—(संज्ञा, वि०, सं०) सम्मुख प्रार्थना, विनय, आदर के लिये आगे बढ़कर लेना, दरख्वास्त, स्वागत, अगवानी, प्रार्थना, सादर संभाषण।

अभ्यर्थी—(संज्ञा, पु०, सं०) आवेदक, उम्मीदवार [कैण्डीडेट]।

अभ्यसन—(संज्ञा, पु०, सं०) अभ्यास करने, अनुशीलन करने का कार्य।

अभ्यसित—(वि०, सं०) अभ्यस्त, अभ्यास किया हुआ।

अभ्यस्त—(वि०, सं०) जिसका अभ्यास किया गया हो; बार-बार किया हुआ। जिसने अभ्यास किया हो। दक्ष, निपुण, पटु, कुशल।—**अपराधी**-स्वाभाविक अपराधी, सतत अपराध करने वाला। [हैबिचुअल आफेन्डर]।—**चोर**-जिसको चोरी करने की आदत पड़ गयी हो। [हैबिचुअल थीफ]।—**मद्यप**-शराब का आदी व्यक्ति [हैबुचुअल ड्रंकर्ड]।

अभ्याकर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) छाती पर हाथ मारकर कुश्ती लड़ने के लिए चुनौती देना।

अभ्यागत—(वि०, सं०) सामने आया हुआ, अतिथि, पाहुना, मेहमान।

अभ्यागम—(संज्ञा, पु०, सं०) समीप आना, पड़ोस, किसी निष्कर्ष पर पहुचना। अगवानी, हत्या करना, हमला।

अभ्यान्त—(वि०, सं०) रुग्ण, आहत, क्षतिग्रस्त।

अभ्यास—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्णता या दक्षता प्राप्त करने के लिये बार बार किसी काम का करना, आदत, टेंव। साधन। आवृत्ति, मश्क, बान।

अभ्यासी—(वि०, सं०) अभ्यस्त, अभ्यास करने वाला जिसने अभ्यास किया हो, दक्ष, निपुण, किसी काम को टेंव वाला। साधक। [स्त्री० **अभ्यासिनी**]।

अभ्युत्थान—(संज्ञा, पु०, सं०) उठना, किसी बड़े या गुरुजन के आने पर उसके सम्मान के लिये उठ कर खड़ा हो जाना, प्रत्युद्गम, बढ़ती, समृद्धि, उन्नति, उठान, आरम्भ, उदय, उत्पत्ति। "अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्"—गीता। "देकर अभ्युत्थान यथा विधि"—'गिरीश'।

अभ्युदय—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्यादि ग्रहों का उदय, प्रादुर्भाव, उत्पत्ति, मनोरथ की सिद्धि। विवाहादि

शुभ अवसर। वृद्धि, बढ़ती, उन्नति, ऐश्वर्य। "यतोऽभ्युदयनिश्रेयसि सिद्धि सः धर्मः"।

अभ्युदयिक—(वि०, सं०) अभ्युदय-सम्बन्धी, उन्नत, वृद्धि सम्बन्धी।—**श्राद्ध**–(संज्ञा. पु०, सं०, यौ०)–नान्दीमुख श्राद्ध।

अभ्युपगम—(संज्ञा, पु०, सं०) सामने आना या जाना, प्राप्ति, स्वीकार, अंगीकार, मंजूरी। खंडन की जाने वाली बात को बिना परीक्षा के मान कर उसका विशेष परीक्षण (न्या०)।

अभ्र—(संज्ञा, पु०, सं०) मेघ, बादल, आकाश। अभ्रक, धातु, स्वर्ण, सोना। नागर-मोथा। [**अब्र** फ़ा०] "शुभ्राभ्र-विभ्रमधरे शशांककर सुन्दरे"—वैद्य जीवन।—**भेदी**–(वि०) गगनचुंबी। "बहु अभ्रभेदी स्तूप अब भी उच्च होकर कह रहे"—मैथिली।

अभ्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) अबरक, भोडर। एक रस जो सन्निपातादि रोगों पर दिया जाता है। (वैद्य जीवन)।

अभ्रम—(वि०, सं०) भ्रम-रहित, भ्रान्ति-विहीन।

अभ्रमात्मक—(वि०, सं०) भ्रम न पैदा करने वाला, अभ्रांतिकारी।

अभ्रान्त—(वि०, सं०) भ्रांति-शून्य, भ्रम-रहित, स्थिर, शान्त।

अभ्रान्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भ्रांति का न होना। स्थिरता। भ्रम-शून्यता, शान्ति।

अभ्रामक—(वि०, सं०) भ्रमात्मक जो न हो, असंदिग्ध।

अमंगल—(वि०, सं०) मंगल-शून्य, अशुभ, अनिष्ट। (संज्ञा, पु०, सं०) अकल्याण, दुःख, अशुभ, अनिष्ट। "काक-मंडली कहूँ अमंगल मंत्र उचारैं"—हरिं०। —**जनक**–(वि०) दुःख-जनक। अनिष्टकारक। [अमंगलात्मक]।

अमंगलकारी—(वि०, सं०) अकल्याणकारी, अनिष्ट-कारी। [अमंगलकारक]।

अमंद—(वि०, सं०) जो धीमा या हल्का न हो, तेज, उत्तम, श्रेष्ठ, उद्योगी। जो मंद-बुद्धि न हो। चतुर। "चंद सो दुचंद है अमंद मुख चंद एक"... "गृहों में कुसुमित, मुदित, अमंद"—पंत।

अमंजु, अमंजुल—(वि०, सं०) जो मंजुल या सुन्दर न हो। [संज्ञा, स्त्री० **अमंजुलता**]।

अम—(अव्य०, सं०) शीघ्रता, अल्प। (संज्ञा, पु०, सं०) आँव का रोग विशेष।

अमकली—(संज्ञा, स्त्री०) [दे० हिं० आम+कली] कच्चे आम की सुखाई हुई फाँकें, थोड़े मसाले के साथ कच्चे आम की सूखी फाँकें। [अमचूर]।

अमका—(सं०, पु०, दे०) [सं० अमुक] ऐसा-ऐसा, अमुक, फलाँ।—**ढमका**–(दे०, अनु०) फलाना, अमुक, अज्ञात, गोपनीय नाम के व्यक्ति की सूचक या बोधक संज्ञा।

अमचुर, अमचूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० आम+चूर—चूर्ण] सुखाये हुए कच्चे आमों का चूर्ण, पिसी हुई कच्चे सूखे आम की फाँकें, कच्चे आम की सूखी फाँकें।

अमड़ा—(संज्ञा, पु०) [सं० आमात] आम के से छोटे-छोटे खट्टे फलों वाला एक प्रकार का वृक्ष, अमारी, आमड़ा।

अमत—(संज्ञा, पु०, सं०) मत का अभाव, असम्मति, रोग, मृत्यु, अनभिप्रेत, काल।

अमति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूरदर्शिता का अभाव, अज्ञान, बुद्धिहीनता।

अमत्त—(वि०, सं०) मद-रहित, बिना घमंड का, जो मतवाला न हो, शान्त, बिना मस्ती का।

अमत्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) बिना मात्रा का छंद, जिसमें सिवा ह्रस्व अकार वाले वर्ण के और कोई भी स्वर वाले वर्ण नहीं रहते।

अमत्सर—(वि०, सं०) द्वेषहीन, मत्सर-रहित। [संज्ञा, स्त्री० **अमत्सरता**]।

अमद—(वि०, सं०) बिना मद या गर्व के, मद-रहित, निरभिमानी।

अमदन—(संज्ञा, पु०, सं०) शंकर, महादेव। (अव्य)—संकल्पपूर्वक।

अमधुर—(वि०, सं०) कड़वा, जो रुचिपूर्ण या मीठा न हो।

अमन—(संज्ञा, पु०, अ०) शान्ति, चैन, आराम, रक्षा, बचाव।—**चैन**–सुख, सुविधा। (वि०) [हिं० अ+मन] बिना मन के, बिना ध्यान के।—**आमान**–शांति।

अमनस्क—(वि०, सं०) मन या इच्छा-रहित, उदासीन, अनमन, उन्मन।

अमनिया*—(वि०, दे०) शुद्ध, पवित्र, अछूता। (संज्ञा, स्त्री०) रसोई पकाने की क्रिया। (साधु०) —**करना**–अनाज बीनना, शाकभाजी छीलना, बनाना।

अमनैक—(संज्ञा, पु०, दे०) हक़दार, अधिकारी, सरदार, दावेदार, अवध प्रान्त के वे काश्तकार जिन्हें पुश्तैनी लगान के सम्बन्ध में कुछ खास अधिकार हैं। (वि०, दे०) अरोक, जिसे मना न किया

जा सके, उच्छृंखल, उद्दंड । [संज्ञा, स्त्री० **अमनैकता**] ।

अमनोज्ञ—(वि०, सं०) कुरूप, घिनौना, असुन्दर, अमनोरम, अमनोहर, अमनोभिराम, अरोचक ।

अमनोभिराम—(वि०, सं०) मन को सुन्दर न लगने वाला, अरोचक, अप्रिय ।

अमनोयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) अनवधानता, असावधानी ।

अमनोरम—(वि०, सं०) अरुचिकर, अरोचक, असुन्दर, अमनोहर, अप्रिय ।

अमनोहर—(वि०, सं०) अप्रिय, अरुचिकर, कुरूप, अरोचक ।

अमया—(वि०, दे०) माया-मोह-रहित, निर्दय, निर्मोही ।

अमर—(वि०, सं०) जो न मरे, चिरजीवी, नित्य । चिरस्थायी, मृत्यु-रहित । (संज्ञा, पु०, सं०) देवता । पारा, हड़जोड़ का पेड़, कुलिश वृक्ष, अमर कोश, लिंगानुशासन नामक प्रसिद्ध कोश के रचयिता अमर सिंह, ये विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में थे । उनचास पवनों मे से एक । [संज्ञा, भा० **अमरता**, **अमरत्व**] ।—**ज**–(वि०, सं०) देवजात, देवता से उत्पन्न, देवभाव । (स्त्री०)—**अमरजा** ।—**द्विज**–(पु०, सं०) देवपूजक ब्राह्मण, पुजारी, देवल-विप्र ।—**नाथ**–(पु०, यौ०) देवराज, एक तीर्थ, शंकर, देवनाथ ।—**पख**ꣳ–(पु०, यौ०) [सं० अमर +पक्ष] पितृ-पक्ष, पितर-पक्ष (दे०) ।—**पति**–(पु० यौ०) इन्द्र, देवताओं का राजा, देवराज, शचीश, [अमरेश, अमराधिपति, अमरेन्द्र] ।—**पद**–(पु०, यौ०) देवपद, देवत्व । मुक्ति, मोक्ष ।—**पुर**–(पु०) अमरावती, देवलोक, सुरपुर, देवताओं का नगर ।—**वधूटी**–(स्त्री०, यौ०) अप्सरा, देवताओं की वेश्या, देववधूटी ।—**बेल**–(स्त्री०) बिना जड़ों और पत्तों वाली एक पीली लता या बौर, आकाश-बौर ।—**वल्ली**—यह पेड़ों पर फैलती है । [**अमर-बौर** दे०] ।—**लोक**–(पु०, यौ०) इन्द्रपुरी, देव-लोक, स्व , अमरपुरी, अमरायण ।—**वल्ली**–(पु०, यौ०) अमरबेल, आकाशबेल [अमरबौरिया] । [दे०—**अमरलता**] ।—**वाटिका**–(स्त्री०, यौ०) देव-कानन, देवोद्यान, अमरोद्यान, अमरोपवन, नन्दन, कानन, नन्दनवन, देव-वाटिका ।

अमरखꣳ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अमर्ष-क्रोध] क्रोध, कोप, गुस्सा, रिस, क्षोभ, दुःख, रंज । (संज्ञा, पु०, दे०) एक वृक्ष और उसके फल जो खटमिट्ठे होते हैं, इसे कमरख भी कहते हैं ।

अमरखीꣳ—(वि०, स्त्री०) [हि० अमरख] क्रोधी, बुरा मानने वाला, दुखी होने वाला ।

अमरता—(संज्ञा, भा०, स्त्री०, सं०) मृत्यु का अभाव, चिरजीवन, देवत्व, स्थायित्व ।

अमरत्व—(संज्ञा, भा०, पु०, सं०) अमरता । देवत्व, अक्षयजीवन ।

अमरस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आम्र+रस] अमा-वट, आम का सूखा रस ।

अमरसी—(वि०) [हि० अमरस] आम के रस के समान पीला, सुनहला, अमरस के स्वाद वाला, खट्टा-मिट्ठा । (वि०) बिना अमर्ष का ।

अमरा—(वि०) [हि० अ+मरा] अमृत । जो मरा न हो । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूब, गुरिच । सेहुँड़, थूहर, काली कोयल । गर्भ के बालक पर लिपटी रहने वाली झिल्ली । (संज्ञा, पु०, दे०) आमलक, अमला, आँरा आँवला । (वि०) [हि० सं० अमला] मल-रहित ।

अमराईꣳ§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आम्रराजि] आम का बाग, आम की बारी । [अमराउ, अमरैया दे०] । "देखि अनूप तहाँ अमराई"—तुल० । "धनु अमराउ लागि चहु पासा"—जायसी ।

अमराचार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बृहस्पति, देवगुरु ।

अमराधिप—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र ।

अमरारि—(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस, असुर ।

अमरालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्वर्ग, देवालय, सुरपुर । [अमरावास, अमरौक] ।

अमरावꣳ§—(संज्ञा, पु०, दे०) अमराई, अमराउ, अमरैया ।

अमरावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवपुरी, देव-नगरी, इन्द्रपुरी, सुरपुरी । "है अयोध्या अवनि की अमरा-वती"—मैथिली० ।

अमरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवता की स्त्री । देव-कन्या । देव-पत्नी । एक पेड़ । रुग । आसन । पियासल ।

अमरीका—(संज्ञा, पु०) एक महान देश जो पश्चिमी गोलार्द्ध में स्थित है ।

अमरू—(संज्ञा, पु०) [अ० अहमर, लाल] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र । एक राजा और कवि का नाम; कहते हैं कि मंडन मिश्र की स्त्री के प्रश्नों का उत्तर देने के लिये श्री शंकराचार्य इसी राजा के मृत शरीर में प्रवृष्ट हो गये थे और "अमरूशतक" नामक एक काव्यग्रन्थ (शृङ्गार रस का) बनाया था ।

अमरूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अमृतफल] एक प्रकार का मीठा फल और उसका वृक्ष । [**अमरूद**, **बिही** प्रान्ती०] ।

अमरूत्—(वि०, सं०) सुस्थिर, शान्त, अचंचल, निर्वात। (संज्ञा, पु०) एक फल विशेष।

अमरूद—(संज्ञा, पु०, दे०) सफरी, बिही, एक फल।

अमरेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवराज, इन्द्र, देवेश, अमरपति।

अमरेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवेश, इन्द्र, अमरेन्द्र।

अमरैय्या—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आम्रराजि] अमराई, आम का बगीचा। "कहिबी कि अमरैय्या राम राम कही है"—दास।

अमर्त्य—(वि०, सं०) अनश्वर, अमर, मृत्युहीन। "दो सुहृदों से मर्त्य अमर्त्य संयोनिल होकर" —पंत।

अमर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) मर्माभाव, बिना मर्म के। [वि० **अमार्मिक**—जो मर्म-सम्बन्धी न हो]।

अमर्याद—(वि०, सं०) मर्यादा के विरुद्ध, बेकायदा, अप्रतिष्ठित, अनीति।

अमर्यादा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अप्रतिष्ठिता, मान-हानि, असम्मान, मर्यादा-विहीन।

अमर्यादित—(वि०, सं०) मर्यादा के बाहर, अमर्याद, असीम।

अमर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रोध, रिस, रोष, कोप, अक्षमा, अपना तिरस्कार करने वाले का कोई अपकार न कर सकने के कारण तिरस्कृत व्यक्ति में उत्पन्न होने वाला द्वेष या दुःख, असहिष्णुता। एक प्रकार का संचारी भाव (काव्य)।

अमर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रोध, रिस, रोष, द्वेष, दूर न करना।

अमर्षित—(वि०, सं०) अमर्षयुक्त, रोषयुक्त।

अमर्षी—(वि०) [सं० अमर्षिन्] क्रोधी, असहन-शील, जल्दी बुरा मानने वाला। [स्त्री० **अमर्षिणी**]।

अमल—(वि०, सं०) निर्मल, स्वच्छ, निर्दोष, पाप-रहित, निष्कलंक, कालिमा-शून्य, कलुष-विहीन। (संज्ञा, पु०, अ०) व्यवहार, कार्य, आचरण, साधन, प्रयोग, अधिकार, शासन, हुकूमत। नशा। आदत। बान, टेंव, लत, प्रभाव, असर। भोग-काल, समय, वक्त। "हरिदरसन अमल पर्यो लाजन लजानी" —सुबे०। "अमल चलायो आपुनो, मुदली गरजि गुमान"—नागरीदा०।—**दारामद**-(पु०) नियमा-नुसार कार्यवाही।—**दखल**-(पु०) अधिकार-भोग। —**दारी**-(स्त्री०) शासन।—**पट्टा**-(पु०) कार्य-कर्ताओं को दिया जाने वाला अधिकार-पत्र।— **मुहा०—में आना,—में लाना,—करना।**

अमलता—(संज्ञा, भा०, स्त्री, सं०) निर्मलता, स्वच्छता, निष्कलंकता, निर्दोषता, विमलता।

अमलतास—(संज्ञा, पु०) [सं० अम्ल] एक लम्बी गोल फलियों वाला पेड़। एक प्रकार की औषधि। वह पुंजीकृत वन-वन उपवन, हेमहार पहने अमल-तास"।—निराला।

अमलदारी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अधिकार, दखल, "एक ऐसी काश्तकारी जिसमें पैदावार के अनुसार असामी को लगान देना पड़ता है। कनकूत। शासन।

अमलपट्टा—(संज्ञा, पु०) [अ० अमल+पट्टा हिं०] दस्तावेज या अधिकार-पत्र जो किसी कारिंदे या प्रतिनिधि को किसी कार्य में नियुक्त करने के लिये दिया जाता है।

अमलबेत—(संज्ञा, पु०) [सं० अम्लवेतस] एक प्रकार की लता जिसकी सूखी ठहनियां खट्टी होती और चूरणों में डाली जाती है। एक पेड़ जिसके फल बड़े खट्टे होते हैं।

अमला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्ष्मी, साल का वृक्ष, पाताल। (संज्ञा, पु०) [सं० आमलक] आँवला। [**औंरा** दे०]। (वि०, स्त्री०, सं०) मल-रहित, स्वच्छ, शुद्ध, विमल। (संज्ञा, पु०, अ०) कार्या-धिकारी। कर्मचारी, कचहरी में काम करने वाला। "बड़ा जुलुम मचावै ये अदालत के अमला"।— **फैला**-कचहरी के कर्मचारी।

अमली—(वि०, अ०) अमल या प्रयोग में आने वाला, व्यावहारिक, अमल या अभ्यास करने वाला, कर्मण्य, नशेबाज़। [**तलबी** दे०]। (संज्ञा, स्त्री० दे०) इमली।

अमलोनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अम्ललोणी] नोनिया घास, नोनी। लोनिया।

अमहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० आम] छिले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फाँकें, अमचुर।

अमहल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अ+महल अ०] बिना घर-द्वार का, जिसके रहने का कोई स्थान न हो। व्यापक।

अमांगलीक—(वि०, सं०) मंगल न करने वाला, अकल्याणकारक, अमंगलकारी।

अमांगल्य—(वि०, सं०) अशुभकारक। मांगल्य-रहित। अनिष्ट।

अमांस—(वि०, सं०) मांसहीन। निर्बल, दुर्बल।

अमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अमावस्या की कला। घर। मर्त्य लोक। अमावस। "अमा का तम चतुर्दिक देख त्यों ही"—मैथिली०।

अमातनाॐ—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० आमंत्रण] आमंत्रित करना, निमंत्रण या न्योता देना।

अमाता—(वि०, दे०) [अ+माता—मत्त] अप्रमत्त, जो मस्त या मतवाला न हो, (अ+माता) बिना माता का, माता-रहित, (क्रि०, सं०) [अमाना दे०] समाता।

अमातृक—(वि०, सं०) बिना माता का, माता से हीन।

अमात्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मंत्री, वज़ीर, दीवान, फर्जी। 'सदानुकूलेष्विह कुर्वतेरति नृपेष्वमात्येषु च सर्व संपदा"—किराविन०।

अमात्र—(वि०, सं०) मात्राहीन। नापतौल-रहित। असन्तुलित।

अमान—(वि०, सं०) जिसका मान या अंदाज न हो, गर्व-रहित अपरिमित, बेहद, बहुत, निरभिमान, सीधा-सादा। अप्रतिष्ठित। अनादृत। "आस-पास भूपतिन के बैठे तनय अमान"—सुजा०। "दुहुँ दिसि दीसत दीप अमाना"—तुल०। "कविगन को दारिद-द्विरद, याही दाल्यो अमान"—भूषण। (संज्ञा, पु०, अ०) रक्षा, बचाव, शरण, पनाह। [यौ० **अमन अमान**]।

अमानत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अपनी वस्तु किसी दूसरे के यहाँ कुछ काल के लिए रखना, धरोहर, थाती। "तौलौं तव द्वार पै अमानत परो रहौं"—रत्ना०।—**दार**–(संज्ञा, पु०, अ०) जिसके पास अमानत रखी जावे, अमानत रखने वाला। [संज्ञा, स्त्री० **अमानतदारी**]।

अमानतन—(क्रि०, वि०, अ०) धरोहर या अमानत के तौर पर, थाती के समान या रूप में। (यौ०, सं०) असीम देहवाला।

अमाना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अ+मान] पूरा-पूरा भरना। समाना, अटना। फूलना, इतराना, गर्व करना। [**अँमाना** दे०]। (दे०, अ०, क्रि०) समाना। [वि० **अमान** सं०] "मायागुन ज्ञानातीत अमाना"—तुल०।

अमानी—(वि०) [सं० अमानिन्] निरभिमानी, निरहंकारी, घमंड-रहित। (**संज्ञा, स्त्री०**) [सं० आत्मन्] वह भूमि जिसका जमींदार सरकार या गवर्नमेंट हो। खास। वह भूमि या कार्य जिसका प्रबंध अपने ही हाथ में हो। फ़सल के विचार से रिआयत किए हुए लगान की वसूली। (संज्ञा, स्त्री०) [अ+मानना] अपने मन की कारवाई। अंधेर, मनमानी। "बालकसुत सम दास अमानी"—तुल०।

अमानुष—(वि०, सं०) मनुष्य के सामर्थ्य के बाहर। मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध। पाशव, पैशाचिक, अलौकिक। (संज्ञा, पु०) मनुष्य से भिन्न प्राणी। देवता। राक्षस। जो मनुष्य न हो। पशु। असुर।

अमानुषिक व्यवहार—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्दयता-पूर्ण व्यवहार (इनह्यूमन ट्रीटमेण्ट)।

अमानुषी—(वि०) [सं० अमानुषीय] मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध, पाशव, पैशाचिक, मानव-शक्ति से परे या बाहर।

अमान्य—(वि०, सं०) मान-रहित, त्याज्य अनावृत्य, अस्वीकार, न मानने के योग्य। सम्मान के योग्य नहीं, जो माननीय न हो।—**करण**–(सं०, पु०) अमान्य ठहराना (इनवैलिडेशन)।

अमाप—(वि०) [सं० अ+माप] जिसकी माप या तौल न हो सके, अपरिमाण, अतुल, अतोल। [वि० **अमापित**]। (वि०) **अमापनीय**—अतुलनीय।

अमामा—(संज्ञा, पु०, अ०) [शु० रू० अमामः] पगड़ी, साफा।

अमायॐ—(वि०, दे०) [सं० अ+माया] माया-रहित। (वि०, सं०) [ह्रि० अमाना] समाय। "आध सेर के पात्र में, कैसे सेर अमाय"। (वि०, दे०) [ह्रि० अ+माय—मात] मातृ-विहीन।

अमाया—(वि०, सं०) माया-रहित, निर्लिप्त, निष्कपट, निश्छल, यथार्थ। "मन वच क्रम मम भगति अमाया"—तु०। [वि० **अमायावी**]।

अमारक—(वि०, सं०) जो मारक या मार डालने वाला न हो, अमृत्युकारक।

अमारग—(वि०, दे०) [सं० अमार्ग] कुमार्ग, विपथ, मार्ग-विहीन। [वि० **अमारगी**]।

अमार्ग—(संज्ञा, पु० सं०) कुमार्ग, मार्ग या पथ-विहीन, बेरास्ता, कुपथ, विपथा। [**अमारग दे०**]। कुपंथ, बुरा रास्ता।

अमार्गण—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुसंधान का अभाव, अनान्वेषण।

अमार्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) मार्जन का अभाव, अशोधन।

अमार्जित—(वि०, सं०) अशोधित, जिसका मार्जन न किया गया हो। [**अमार्जनीय**—(वि०, सं०) अशोधनीय]।

अमार्ज्य—(वि०, सं०) जिसकी सफाई न की जा सके, अपरिष्कृत।

अमार्तंड—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य-रहित, सूर्य के बिना। ज्योतिष का एक योग।

अमार्दव—(संज्ञा, पु०, सं०) मृदुता-रहित, कठोर, कठिन, अमृदुलता।

अमाल—(संज्ञा, पु०, अ०) अधिकारी, आमिल, शासक। "लख्यौ मार तलबखां मानहु अमाल है" —भूषण। (वि०, सं०) माला-रहित, बिना माला के।

अमावट—(संज्ञा, पु०) [हिं० आम+आवर्त सं०] आम के रस की सुखायी हुई पर्त या तह, अमरस, पहिना जाति की एक मछली।

अमावना—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० अमाना] अमाना, अटाना, भीतर पैठाना। [प्रे०— **अमवाना**]।

अमावस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अमावस्या] अंधेरी रात।

अमावस्या, अमावास्या—(संज्ञा, स्त्री० सं०) कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि, कुहू निशि, अमा।

अमास—(संज्ञा, पु०, दे०) [आमास फ़ा०] सूजन।

अमाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अमांस] आँख की पुतली से निकला हुआ लाल मांस, नाखून।

अमिउ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अमृत] अमृत, सुधा, पीयूष। "कीन्हेसि अमिउ जियै जेहि पाई" —जायसी।

अमिट—(वि०, दे०) [हिं० अ+मिटना] जो न हो। स्थायी, अटल, निश्चित, अवश्यंभावी, दृढ़, नित्य। अमेट। "मानव की अमिट बुभुक्षा में" —न०।

अमित—(वि०, सं०) अपरिमित, बेहद, असीम, बहुत अधिक, सीमा-रहित, अत्यधिक। "अमित दानि भरता वैदेही"—तुल०। "गूढ़ संसृति के अमित गुरु अर्थ"—दिनकर।

अमिताभ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बुद्धदेव। असीम आभा वाला।

अमिताशन—(वि०, सं०) पेटू, अधिक खाने वाला, भोजन-भट्ट।

अमितौजा—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) असीम-शक्ति-शाली, सर्वशक्तिमान, ईश्वर।

अमित्र—(वि०, सं०) शत्रु, बैरी, रिपु, अरि। "हो गए वे भी आज अमित्र"—मैथिली०। साथी-रहित। [**अमीत** दे०]। [संज्ञा, स्त्री० **अमित्रता**]।—**भूत** —(वि०, सं०) विपक्षी, बैरी, अहितकारी।

अमिय॰—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अमृत] अमृत, सुधा, पीयूष।—[**अमी**—दे०]।—**मूरि**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० अमृत+मूल] अमृत बूटी, संजीवनी। "अमिय-मूरि-सम जुगवति रहहूँ"— तुल०। "अमिय मूरिमय चूरन चारू"—तुल०।

अमिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अम्बा] आम का कच्चा छोटा फल, कच्चा छोटा आम। [**अंबिया** दे०]।

अमिरिती§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) इमरती, एक प्रकार की जलेबी की सी मिठाई।

अमिल*—(वि०, दे०) [अ+मिलना] न मिलने योग्य, अप्राप्य, बेमेल, बेजोड़, जिससे मेल न हो, ऊबड़-खाबड़ ऊंचा-नीचा, अनमिल। "निरखि अमिल संग साधु"—बिहारी। न मिली हुई, अमिश्रित, पृथक्, विलग। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) इमली। विरोध, मनमुटाव। प्रतिकूलता, वैमनस्य, विद्रोह।

अमिश्र—(वि०, सं०) न मिला हुआ, पृथक्, विलग। शुद्ध। जुदा।

अमिश्रराशि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) इकाई से लेकर नौ तक के अंक, इकाई से प्रगट की जाने वाली राशि (गणि०)।

अमिश्रित—(वि०, सं०) जो मिलाया न गया हो, न मिला हुआ, बे मिलावट, खालिस। [संज्ञा, पु०, सं० **अमिश्रण**—न मिलाना, अमेल]।

अमिष—(संज्ञा, पु०, सं०) छल का अभाव, बहाने का न होना, [**अमिस**—दे०]। (वि०) निश्छल, जो हीले-हवालेबाज़ न हो। (संज्ञा, पु०) [सं० आमिष] मांस।

अमी॰—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अमृत] अमृत, [**अमिय**—दे०] सुधा। "अमी-हलाहल-मद-भरे, स्वेत-स्याम-रतनार"—(वि०)। "अमी पियावत मान बिन, 'रहिमन' हमें न सुहाय"।

अमीक॰—(वि०, अ०) गहरा, गंभीर।

अमीकर—(संज्ञा, पु०) [सं० अमृत+कर] चंद्रमा, सुधाकर, पीयूषपाणि।

अमीत*—(संज्ञा, पु०) [सं० अमित्र] शत्रु, रिपु, अहितकारी, अमित्र। "पावक तुल्य अमीतन को भयौ"—रसलीन।

अमीन—(संज्ञा, पु०, अ०) बाहर का काम करने वाला। कचहरी या अदालत का एक कर्मचारी या अहलकार। [संज्ञा, स्त्री०, वि० **अमीनी**]। [सं० अ+मीन] बिना मछली का। (यौ०) [अमी +न] अमृतहीन।

अमीमांसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मीमांसा या विवेचना का अभाव।

अमीर—(संज्ञा, पु०, अ०) कर्माधिकार रखने वाला, सरदार। धनाढ्य, दौलतमंद, उदार। अफ़गानिस्तान के राजा की उपाधि।—[दे०—**मीर**]। "फरजी मीर न ह्वै सकै, टेढ़े की तासीर"—रही०।

अमीराना—(वि०, अ०) अमीरों का सा, अमीरी प्रगट करने वाला।

अमीरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) रईसी, धनाढ्यता, उदारता। (वि०) अमीर का सा, रईस का सा।

अमुक—(वि०, सं०) फलां, ऐसा-ऐसा, कोई व्यक्ति (इसका प्रयोग किसी नाम के स्थान पर करते हैं), सम्मुखागत।

अमुग्ध—(वि०, सं०) होशियार। आसक्तिरहित। चतुर।

अमुत्र—(अव्य०, सं०) परकाल, परलोक।

अमुद्रित—(वि०, सं०) कोरा, न छपा हुआ, बिना मोहर की।

अमूद—(संज्ञा, पु०, अ०) (रेखागणित) सीधी खड़ी लकीर, लम्ब।

अमूर्त—(वि०, सं०) मूर्ति-रहित, निराकार। (संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर, आत्मा, जीव। काल, दिशा। आकाश। वायु। [विलो० **समूर्त**]।

अमूर्ति—(वि०, सं०) मूर्ति-रहित, निराकार, अनाकृति। [विलो०—**समूर्ति**]।

अमूर्तिमान—(वि०) [सं०—अमूर्तिमत्] अप्रत्यक्ष, निराकार, अगोचर। [स्त्री०—**अमूर्तिमती**]।

अमूल—(वि०, सं०) बेजड़ का, निर्मूल। (संज्ञा, पु०, सं०) प्रकृति (सांख्य)। (वि०) [सं० अमूल्य] अनमोल।

अमूलक—(वि०, सं०) बे जड़, निर्मूल। असत्य, मिथ्या, असार। जड़, शून्य, अनमोल, मूल्य-रहित, जिसका मूल्य न हो सके, अमूल्य, क़ीमती। "पाय अमूलक देह यहै नर"—सुन्दर०।

अमूला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अग्निशिखा नामक पौधा।

अमूल्य—(वि०, सं०) जिसका मूल्य न निर्धारित किया जा सके, अनमोल।—[**अमोल**—दे०] बहुमूल्य, बेश-क़ीमती।

अमृणाल—(संज्ञा, पु०, सं०) एक सुगंधित पौधे की जड़, खस, गर्मी में यह ठंडक पहुँचाने में विशेष उपयोगी है।

अमृत—(संज्ञा, पु०, सं०) वह पदार्थ जिसके पान करने से जीव अमर हो जाता है, सुधा, पीयूष। जल। घी। यज्ञ के पीछे बची हुई सामग्री। अन्न। मुक्ति, दूध, औषधि, विष, वच्छनाग, पारा, सोना। मीठी वस्तु। (वि०) [सं० अ+मृत] जो मरा न हो, मृत्यु-रहित। (संज्ञा, पु०) धन्वन्तरि। बाराहीकन्द, बनमूँग, देवता। "अधर में अमृत, हृदय में प्यार"—पंत।—**कर**-(पु०) चन्द्रमा, निशाकर, सुधाकर, अमृतांशु।—**कुंड**-(पु०) अमृतपात्र, अमृत-भांड।—**कुंडली**-(स्त्री०, यौ०) एक प्रकार का छंद। एक प्रकार का बाजा।—**गति**-(स्त्री०) एक प्रकार का छंद (पिं०)।—**जटा**-(स्त्री०) जटामासी।—**तरंगिणी**-(स्त्री०) ज्योत्स्ना, प्रकाशमयी या चंद्रिकायुक्त रात्रि, सुधा-सरिता।—**दीधिति**-(पु०) चन्द्रमा, शशांक, सुधाकर, सुधांशु, निशाकर।—**धारा**—(स्त्री०, यौ०) एक प्रकार का वर्णिक वृत्त, इसके प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ चरण में क्रमशः २०, १२, १६ और ८ वर्ण होते हैं (पिं०)।—**ध्वनि**-(स्त्री०, यौ०) २४ मात्राओं का एक यौगिक छन्द; इसके आदि में एक दोहा रहता है उसी के अंतिम चरण को लेकर आगे चार चरण रोला के दिये जाते हैं, इनमें निरर्थक वर्णावृत्ति ही प्रायः प्रधान रहती है, प्रायः संयुक्त वर्णों के साथ चार चरणों में से प्रत्येक में तीन बार यमक रहता है (पिं०)।—**फल**-(पु०, यौ०) पटोल, परवर, अमृत का सा फल।—**फला**-(स्त्री०, यौ०) दाख, अंगूर, आमलकी।—**बल्ली**-(स्त्री०, यौ०) गुरिच की लता, अमृतवल्लरी, अमृत। [दे०—**अमरबेल, अमरबौर**]।—**विन्दु**-(पु०, यौ०) एक उपनिषद का नाम। सुधा का विन्दु।—**मूरि**-(स्त्री०, यौ०) अमियमूरि, अमरमूरि, संजीवनी-बूटी।—**योग**-(पु०, यौ०) फलित ज्योतिष का एक शुभ फलप्रद योग।—**रस**-(पु०, यौ०) सुधा, पीयूष, सुधा का रस।—**लता**-(पु०, स्त्री०, यौ०) अमरबेल। अंगूर या गुडूची की लता।—**संजीवनी**-(वि०, स्त्री०, यौ०) मृतसंजीवनी, एक प्रकार की रसादिक औषधि, संजीवनी (वैद्य जीवन)।—**संभवा**-(स्त्री०, यौ०) गिलोय, गुडीची, अमृता।—**स्रवा**-(स्त्री०, यौ०) कदलीवृक्ष, एक प्रकार की लता।—**सार**-(पु०, यौ०) अंगूर। घी, मक्खन, नवनीत, नैनू।

अमृतत्व—(संज्ञा, भा०, पु०, सं०) मरण का अभाव, न मरना, अमरता, मोक्ष, अमरत्व।

अमृतदान—(संज्ञा, पु०) [सं० अमृत+आधान] भोजन की चीजें रखने का ढकनेदार बर्तन।

अमृतबान—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० अमृत+

बान] लाह के रोगन या पलिश वाला मिट्टी का बर्तन, जिसमें अचार आदि रखते हैं।

अमृतांशु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुधांशु, सुधाकर, चन्द्रमा, निशाकर, सुधादीधित।

अमृता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुड़ूची, गिलोय, गुरिच, दूर्वा, तुलसी, मदिरा। आमलकी, हरीतकी, पिप्पली। "अमृतातिविषा सुरराजयवः"—वैद्य-जीवन। (वि०, स्त्री०, सं०) जो मरी न हो, न मरने वाली।

अमृताक्षर—(वि०, सं०) अविनिश्वर। "फूटी तर अमृताक्षर निर्झर"—निराला

अमृती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लुटिया। मिठाई-विशेष, एक प्रकार की जलेबी, अमिरती।

अमृषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) असत्य जो न हो, सत्य। "यत्सत्वादमृषैवभाति"—तुल०।

अमृष्य—(वि०, सं०) असह्य, अक्षंतव्य।

अमेजना*—(क्रि०, सं०, दे०) [फ़ा० आमेजन] मिलाना, मिलावट करना। [**अमेसना**—प्रान्ती०]।

अमेठना*-**अमैठना**—(क्रि०, सं० दे०) मरोड़ना, उमेठना, घुमाना।

अमेधा—(वि०, सं०) मूर्ख, मूढ़, अबोध।

अमेधावी—(वि०, सं०) मूर्ख।

अमेध्य—(वि०, सं०) अपवित्र, अशुद्ध। दुष्ट। जो वस्तु यज्ञ में काम न दे सके, जैसे मसूर, उर्द, कुत्ता आदि, जो यज्ञ कराने योग्य न हो, अपवित्र। (संज्ञा, पु०, सं०) विष्ठा, मलमूत्रादि। अशुचि पदार्थ।

अमेय—(वि०, सं०) अपरिमाण, असीम, बेहद, जो जाना न जा सके, अज्ञेय। "कथा अजस्र, अमेय"—दिनकर।

अमेयात्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जिसकी आत्मा अज्ञेय हो, परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म।

अमेल—(संज्ञा, पु०, दे०) मेल या मैत्री से रहित, मनमुटाव, विरोध, अनमेल, बेमेल।

अमेली—(वि०, दे०) मेल न करने या रखने वाला, असम्बद्ध, अनाप-सनाप, बेमेल।

अमेव*—(वि०, दे०) अमेय, असीम, अज्ञेय, जो जाना न जा सके, अभेव।

अमोक्ष—(वि०, सं०) मुक्तिरहित, बन्धनग्रस्त।

अमोघ—(वि०, सं०) निष्फल न जाने या होने वाला, अव्यर्थ, अचूक। "अति अमोघ रघुपति के बाना"—तुल०।—**वीर्य**—(पु०) अखंड-तेज, अव्यर्थ-प्रताप, अव्यर्थ-वीर्य।

अमोचन—(वि०, सं०) जो न छूटे, न छूटने वाला। [वि०—**अमोचनीय**]।

अमोघास्त्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अचूक अस्त्र, वज्र, यम-दंड, वरुण-पाश, त्रिशूल, पाशुपत, सुदर्शन चक्र, ब्रह्मास्त्र।

अमोद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आमोद] आनंद, प्रसन्नता। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अ+मोद] अप्रसन्नता, दुःख। [वि०, दे०—**अमोदक**] [सं० आमोदक] आनन्दकारी। [वि०, दे०—**अमोदित** सं० आमोदित, आनन्दित]। [वि०—**अमोदी**]।

अमोरी—*§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा आम, अंबिया, आमड़ा।

अमोल*—**अमोलक**—(वि०, दे०) [अ+मोल] अमूल्य, कीमती, बहुमूल्य, अनमोल। "लै अमोल मन मानिक मेरो, प्यार बिन ही मोल"—रसाल। "लछिमन राम मिले अब मोकों दोउ अमोलक मोती"—सूर।

अमोला—(संज्ञा, पु०) [सं० आम्र, हिं० आम] आम का नया निकला हुआ पौधा। [वि०, दे० **अमोल**]।

अमोही—(वि०, दे०) [सं० अमोह] निर्मोही, कठोर, निष्ठुर, विरक्त, निठुर।

अमौआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० आम+औआ प्रत्य०] आम के सूखे रस का सा रंग, जो कई प्रकार का होता है—पीला, सुनहरा, मूँगिया आदि, इसी रंग का एक कपड़ा। "कतकी का मेला किया, लिया अमौआ छींट"—सरस।

अम्बरपुष्प—(संज्ञा, पु०, सं०) आकाश का फूल। "मेरी इच्छापूर्ति को मानो अम्बरपुष्प"—गिरीश।

अम्मा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अम्बा] माता, माँ, जननी, मातु, महतारी।

अम्मामा—(संज्ञा, पु०, अ०) एक तरह का बड़ा साफ़ा।

अम्मारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखो, 'अम्बारी'।

अम्र—(संज्ञा, पु०, अ०) काम, हुक्म। [ब० व० **अवामिर व उमूर**]।

अम्ल—(संज्ञा, पु०, सं०) खटाई, तेजाब। (वि०) खट्टा, तुर्श। [**संज्ञा**, स्त्री० **अम्लता**]।—**केशर**—(पु०) बिजौरा नीबू।—**खनिज**—खनिज पदार्थों का तेजाब। (मिनरल एसिड)।—**जन**—(पु०) [अ० आक्सिजन] एक प्रकार की प्राणप्रद गैस या वायु, ओषजन।—**निशा**—(स्त्री०) 'शठी' नाम का पौधा।—**पंचक**—(पु०) खट्टा अनार, नारंगी, अमल-

वेत, जंबीरी नीबू, इमली—ये पाँच खट्टे फल।—**पत्र**–(पु०) अश्मंतक नामक पौधा।—**पत्री**–(स्त्री०) क्षुद्राम्लिका और पलाशी नामक पौधा।—**पनस**–(पु०) बड़हर।—**तीव्र**–अधिक तेज अम्ल या तेजाब (स्ट्रांग एसिड)।—**पित्त**–(पु०, यौ०) पित्त प्रकोप तथा उसके कारण भोजन को खट्टा कर देने और अनपच उत्पन्न करने वाला रोग विशेष (वैद्य जीवन) —**फल,**—बीजक—(पु०) इमली।—**विनाशक**–नाश करने वाला तेजाब (कोरेसिव एसिड)।—**वेत**–(पु०) अमलवेत, एक प्रकार की कुछ खट्टी औषधि। —**सार**–(पु० यौ०) नीबू, काँजी, चूक, अम्लवेत, हिंताला, आमलामार गंधक, [अंबारासार दे०]।

अम्लान—(वि०, सं०) जो मलिन न हो, निर्मल, स्वच्छ, साफ, शुद्ध, जो उदास या अनमन न हो, प्रसन्न, मलिनता-रहित, अकल्मष। "स्वप्न सा-विस्मय सा अम्लान"—पंत।—**अम्लानता**—(संज्ञा, भा०, स्त्री०) प्रसन्नता, निर्मलता।

अम्ली—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अम्ल+ई—हि० प्रत्य०] अमिली, इमली, (दे०) तितिड़ी, एक प्रकार का पेड़ और फल।

अम्हौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अम्भसर+औरी —हि प्रत्य०] गर्मी की ऋतु में पसीने के कारण निकलने वाली छोटी-छोटी फुंसियाँ, अन्हौरी। [**अँभौरी** दे०, **घमौरी** प्रान्ती०]।

अय—(संज्ञा, पु०, सं०) लोहा, अस्त्र-शस्त्र हथियार, अग्नि, वाहे।

अयथा—(वि०, सं०) मिथ्या, झूठ, असत्य, अयोग्य, असत्य। **मुहा०—करना या होना**।

अयथार्थ—(वि०, यौ०, सं०) मिथ्या, असत्य।

अयथोचित—(वि०, सं०) निकम्मा, जो योग्य न हो, जैसा चाहिये वैसा न हो।

अयन—(संज्ञा, पु०, सं०) गति, चाल। सूर्य या चन्द्रमा की उत्तर-दक्षिण की ओर गति या प्रवृत्ति जिसे उत्तरायण और दक्षिणायण कहते हैं। बारह राशियों के चक्र का आधा। राशि-चक्र की गति, ज्योतिष शास्त्र। एक प्रकार का सेना-निवेश (क़वायद)। आश्रम, स्थान, घर, काल, समय, अंश, अयन के प्रारम्भ में किया जाने वाला एक प्रकार का यज्ञ। दूध वाली गाय या भैंस के थन का ऊपरी भाग। [**आयन** दे०]। मार्ग, रास्ता, घर, स्थान। [**अयण** सं०] [**ऐन** दे०]।—**काल**–(पु०, यौ०) एक अयन में लगने वाला समय, छः महीने का काल, अयनावधि।—**संक्रान्ति**–(पु०, यौ०) मकर और कर्क की संक्रान्ति, अयन-संक्रान्ति। —**संपत**–(स्त्री०, यौ०) कर्क और मकर की संक्रान्ति, अयन-संक्रमण।—**संपात**–(पु०, यौ०, अयनांशों का योग।

अयनांश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्य के उत्तरायण और दक्षिणायण होने पर उनके अंश।

अयत्न—(संज्ञा, पु०, सं०) कोशिश या चेष्टा का अभाव।

अयश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपयश, अपकीर्ति, निन्दा, बदनामी। [**अजस** दे०]।—**कारक,— कारी**–(वि०, सं०) अकीर्ति-कारक, अपयश-कारी, जिससे बदनामी हो, निंद्य।

अयशस्कर—(वि०, सं०) अपयशकारी, अकीर्तिकर, निंद्य।

अयशी—(संज्ञा, पु०, सं०) बदनाम, अपयशी। [**अजसी** दे०]।

अयस्कान्त—(संज्ञा, पु०, सं०) चुम्बक पत्थर, जो लोहे को अपनी आकर्षण शक्ति से खींच लेता है।

अयाँ—(वि०, अ०) प्रकट, स्पष्ट, जाहिर।

अयाचक—(वि०, सं०) न माँगने वाला, संतुष्ट। पूर्णकाम। जो किसी वस्तु की याचना न करे। [विलो०—**याचक**]। [**अजाचक** दे०]। "जाचक सकल अजाचक कीन्हे"—तुल०। [संज्ञा, स्त्री० **अयाचना**]।

अयाचित—(वि०, सं०) बिना माँगा हुआ, जो माँगा न गया हो। [**अजाचित** दे०]। [वि० **अयाचनीय**]।

अयाची—(वि०) [सं० अयाचिन्] अयाचक, याचना न करने वाला, न माँगने वाला। सम्पन्न, धनी, सन्तुष्ट। [**अजाची** दे०]।

अयाच्य—(वि०, सं०) जिसे माँगने की आवश्यकता न हो।

अयान—(वि०, दे०) [सं० अज्ञान]। [**अजान**–दे०] नासमझ, मूर्ख। [संज्ञा, स्त्री० **अयानता**]। [विलो० **सयान** दे०] [सज्ञान सं०]। [स्त्री० **अयानी**]। (वि०) [सं० अ+यान] बिना सवारी का, पैदल। (संज्ञा, पु०, सं०) स्वभाव, स्थिरता।

अयानता—(संज्ञा, भा०, स्त्री०, हि०) अज्ञानता। [**अजानता** दे०] मूर्खता, नासमझी। "अजहूँ नाहिं अयानता छूटी"—नागरी०।

अयानप*—(संज्ञा, पु०, दे०) अज्ञानता, अनजानता, अनजानपन। (हि०) भोलापन, सिधाई, लड़कपन। [दे० **लरिकाई**]। [विलो० **सयानप**]।

अयानी॥—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० अजानी] अजान, बुद्धिहीना, मूर्खा, नासमझ, भोलीभाली, अज्ञानी, [विलो० सयानी]—"कहु को तेहि मेटि सकैगो अयानी"—नरो०। [वि०, पु०, **अयाना**—अयान, अजान]।

अयाल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) घोड़े और सिंह आदि की गरदन के बालों का समूह, केसर। (संज्ञा, पु०, अ०) स्त्री, बच्चे, नातेदार।—**दानी**-(संज्ञा, स्त्री०) [अ०+फ़ा०] घर-गृहस्थ।

अयि—(अव्य०, सं०) सम्बोधन का शब्द, हे, अरे, अय, अरी, री।

अयुक्त—(वि०, सं०) अयोग्य, अनुचित, बेठीक, असंयुक्त, अलग, पृथक। आपद्ग्रस्त, अनमन, असम्बद्ध, युक्ति-रहित, अनुपयुक्त, असङ्गत, असमीचीन।

अयुक्तता—(संज्ञा, भा० स्त्री०, सं०) अनौचित्य, अयोग्यता, असमीचीनता।

अयुक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) युक्ति का अभाव, असम्बद्धता, गड़बड़ी, योग न देना, अप्रवृत्ति, असङ्गति।

अयुग, अयुग्म—(वि०, सं०) विषम, ताक, अकेला, जोड़ा नहीं, एकाकी, अमिथुन, जो दो एक साथ न हों। [**अजुग** दे०]।

अयुग—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा युग, असमय।

अयुगुल—(वि०, सं०) विषम, ताक, अकेला, दो या जोड़ा नहीं।

अयुत्—(वि०, सं०) **अयुक्त**, अमिश्रित, जो संयुक्त या मिला हुआ न हो।

अयुत—(संज्ञा, पु०, सं०) दस हजार की संख्या का स्थान, उस स्थान की संख्या। "अयुत करों से लुटा रही जनहित, जनबल, जनमंगल"—पंत।—**दृगी**-(वि०) अगणित नेत्रों वाली। बन अयुत दृगी तो वे उसे देखती थीं—हरिऔध।

अयुध—(संज्ञा, पु०, सं०) आयुध, अस्त्र-शस्त्र, हथियार।

अये—(अव्य०, सं०) सम्बोधन पद। विषादसूचक, स्मरणार्थक, कोपार्थक, विस्मयार्थक शब्द।

अयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) योग का अभाव, बुरा योग। दुष्ट या पाप-ग्रह-नक्षत्रादि का जन्म-कुण्डली के स्थानों में पड़ना, या पाप ग्रहों का बुरे नक्षत्रों के साथ एकत्रित होना (फलित ज्योतिष)। कुसमय, दुष्काल। कठिनाई, सङ्कट, सुगमता से स्पष्ट अर्थ न देने वाला वाक्य-विन्यास, कूट, अप्राप्ति असम्भव, अनैक्य, विच्छेद, विश्लेषण। (वि०, सं०) अप्रशस्त, बुरा।

अयोगव—(संज्ञा, पु०, सं०) वैश्य कन्या के गर्भ से शूद्र की औरस सन्तान, जाति-विशेष। (वि०, दे०) [सं० अयोग्य] अयोग्य, अनुचित, अनुपयुक्त।

अयोगिक—(वि०, सं०) योगिक जो न हो, अमिश्रित, असंयुक्त, रूढ़ि, संज्ञा।

अयोगी—(वि०, सं०) जो योगी न हो, गृहस्थ, [**अजोगी**—दे०]।

अयोग्य—(वि०, सं०) जो योग्य न हो, अनुपयुक्त, नालायक, निकम्मा, अपात्र, अकुशल, निकाम। (दे०) बेकाम, अनुचित, नामुनासिब, अक्षम, असमर्थ।

अयोग्यता—(संज्ञा, भा०, स्त्री०, सं०) अक्षमता, अनुपयुक्तता, अपात्रता। [**अजोग्यता** दे०]।

अयोधन—(संज्ञा, पु०) [सं० अयस+घन] एकत्री भूत। लौह पुञ्ज। निहाली, हथौड़ा, निहाई। (वि०) न लड़ने वाला।

अयोधा—(वि०, सं०) जो योधा या वीर न हो, कायर, कादर। "चित्र में मानों अयोध्या है लिखी" —मैथिली०।

अयोध्या—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अ+युध्य+आ] कोशलपुरी, अवधपुरी, सूर्यवंशीय राजाओं की राजधानी, राम-जन्म भूमि, सरयू तट पर एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ नगर। "अयोध्या नाम नगरी तत्रासीत लोक विश्रुता"—वाल्मीकि। "है अयोध्या अवनि की अमरावती"—मैथिली०।

अयोनि—(वि०, सं०) जो उत्पन्न न हुआ हो, अजन्मा, नित्य।

अयोनिज—(संज्ञा, पु०, सं०) जो योनि से उत्पन्न न हो। जीव। जाति-विशेष। वृक्ष आदि। [स्त्री० **अयोनिजा**—सीता]।

अय्याम—(संज्ञा, पु०, अ०) यौम का ब० (वि०) दिन, समय।

अय्यार—(वि०, अ०) चतुर, बहुरूपिया। [संज्ञा, स्त्री० **अय्यारी**]।

अरंक—(वि०, सं०) जो रंक न हो, अदीन, धनी, सम्पन्न, समृद्ध।

अरंकता—(संज्ञा, भा० स्त्री०, सं०) अदीनता, सम्पन्नता।

अरंग—(संज्ञा, पु०, दे०) सुगन्ध का झोंका। (वि०) बिना रंग का, रंग का अभाव।

अरंच, अरंचक—(वि०, सं०) रंच नहीं। बहुत, अधिक।

अरंज—(वि०, दे०) [हिं० अ+रंज फ़ा०] बिना रंज या दुःख के।

अरंजन—(संज्ञा, सं०) अप्रसन्नता, विनोदाभाव।

अरंजित—(वि०, सं०) रंजित या रँगा हुआ जो न हो।

अरंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० एरंड] रेंड, तेल वाला वृक्ष विशेष, एरंड।

अरंध्र—(वि०, सं०) रंध्र या छेद-रहित, अछिद्र, संयुक्त, खूब मिला हुआ, बिना विलगाव के। [वि० **अरांध्रा**] अविलग, अछिद्र।

अरंभ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आरम्भ] प्रारम्भ, शुरू। [संज्ञा, पु० **अरंभन**]।

अरंभना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० आरम्भ] प्रारम्भ होना, या आरम्भ होना। (क्रि०, सं०) आरम्भ करना। "कथा अरंभ कीन्ह सोइ चाहा", "अनरथ अवध अरंभेउ जबते"—तुल०। (क्रि०, अ०) [सं० आ+रंभ—शब्द करना] बोलना, नाद करना, शोर करना। [**राँभना** दे०]।

अरंभिक—(वि०, दे०) [सं० आरंभक] प्रारंभिक, शुरू का, आदि का।

अरंभित—(वि०, दे०) [सं० आरंभित] प्रारंभित, आरंभ या शुरू किया हुआ।

अर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० आड़] जिद, अड़, हठ, दुराग्रह। [**आर** दे०]।

अरइल—(वि०, दे०) अड़ने वाला, अरई के लगाने पर चलने वाला, अड़ीला, अरियल।

अरई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक नुकीली छड़ी जिसे बदमाश बैलों को चलाने के लिए उनके पुट्ठों पर चुभाते हैं। **मु०—लगाना**—बलात् या हठात्, आगे चलने को वाध्य करना, आग्रह करके चलाना। **—देना**—उसकाना, उत्तेजित करना। (संज्ञा, स्त्री०, प्रान्ती०) मथानी, [**रई** दे०]।

अरक—(संज्ञा, पु०, अ०) भभके से खींचा जाने वाला किसी पदार्थ का रस। आसव, रस, पसीना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्क] सूर्य। एक प्रकार का वृक्ष, मदार। "अरकजवास पात बिन भयऊ"—तुल०।

अरकना*—(क्रि०, अ०, अनु०) अरराकर गिरना। टकराना, फटना, दरकना। (दे०) मना करना। [**हरकाना** प्रान्ती०]। "कहैं बनवारी बादसाहि के तखत पास, करठि-दरकि लोथ-लोथनि सों अरकी"।

अरकना-बरकना—(क्रि०, अ०, अनु०) इधर-उधर करना, खींचातानी करना।

अरकनाना—(संज्ञा, पु०, अ०) पुदीना और सिरका को मिला कर खींचा हुआ एक प्रकार का आसव।

अरकला—(संज्ञा, पु०, दे०) मर्यादा, मान।

अरकाटी—(संज्ञा, पु०, दे०) [अरकाट देश] कुलियों को भरती करा के बाहर टापुओं में भेजने वाला।

अरकान—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रमुख राजकर्मचारी, सरदार, मुखिया, नेता। "नेगी गये मिले अरकाना" —जायसी०।

अरक्षक—(वि०, सं०) रक्षक-रहित, असहाय, अनाथ।

अरक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्षा का अभाव, रक्षा-शून्य। [संज्ञा, स्त्री० **अरक्षणता**]।

अरक्षणीय—(वि०, सं०) रक्षा न करने योग्य।

अरक्षित—(वि०, सं०) जो रक्षित न हो, रक्षा-रहित। असुरक्षित, जिसका बचाव न किया गया हो। [स्त्री० **अरक्षिता**—रक्षा होना]।

अरक्ष्य—(वि०, सं०) अरक्षणीय, रक्षा के अयोग्य।

अरगजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० अरग+जा] केसर, चंदन, कपूर आदि सुगंधित पदार्थों के मिलाने से बना हुआ एक प्रकार का सौरभीला पदार्थ। 'खर को कहा अरगजा लेपन स्वान नहाये गंग" —सूर।

अरगजी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० अरगजा] अरगजे का सा एक प्रकार का रंग। (वि०) अरगजे की सी सुगन्धि वाला।

अरगट*—(वि०) [हिं० अलग] पृथक्, अलग, निराला, भिन्न, विलग। "अरगट ही फानूस सो, परगट होति लखाय"—बिहारी।

अरगनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अलगनी, कपड़ों आदि के लटकाने के लिए बाँस या रस्सी जो घर में रहती है।

अरगल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्गल] ब्योंड़ा, किवाड़ बंद करने की लकड़ी, गज।

अरगला—(संज्ञा, पु०) [सं० अर्गल] अर्गल, रोक, संयम। प्रतिबंध।

अरगवानी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लाल रंग। (वि०) लाल, या बैंगनी, अरुण रंग का।

अरगाना*—(क्रि०, अ० दे०) [हिं० अलगाना] अलग करना या होना, पृथक् करना, सन्नाटा खींचना, चुपचाप बैठना, चुप्पी साधना, मौन होना। (क्रि०, सं०) अलग करना, छाँटना, चुनना। "सुनें सदन मथनिया के ढिग बैठि रहे अरगाई" —सूबे०। "भुकी रानि अब रहु अरगानी"—

तु० ।—मु० प्राण अरगाना—चकित होना । "देस देस के नृपति देखि यह प्राण रहे अरगाई"—सूबे० ।

अरघ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्घ] अर्घ्य, षोडशोपचारों में से पूजन का एक उपचार । हाथ धोने के लिए जल, सम्मान-प्रदर्शनार्थ गिराया जाने वाला जल । "अरघ देइ आसन बैठारे" । "अरघ देइ परिकरमा कीन्हा" ।

अरघा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्घ] एक गावदुम पात्र जिसमे रखकर अर्घ का जल दिया जाता है, शिव-लिंग के स्थापित करने का आकार । जलधरी, जलहरी । कुएँ की जगत पर पानी के लिए बनाया हुआ मार्ग, चँवना । [अल्पा० स्त्री० **अरघी**] ।

अरघान॰, **अरघानि**—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) [सं० आघ्राण] गंध, महक, सुगंधि, आघ्राण । "तेहि अरघानि भौंर सब लुबुधे"—जायसी ।—मुहा०—उठाना ।

अरचन॰—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्चन] पूजन । सम्मान । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० अड़चन] कठिनाई, रुकावट ।

अरचना॰—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० अर्चन] पूजा करना, सम्मान करना ।

अरचा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अर्चन] पूजा, सम्मान, उपासना ।

अरचि॰—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अर्चि] ज्योति, प्रकाश, किरण । (पू०, का० क्रि०, दे०) पूजि, पूजा करके । (पू०, का०, क्रि०) [अ+रचि] न रचकर ।

अरचित—(वि०, दे०) [सं० अर्चित] पूजित, सम्मानित । (वि०) [अ+रचित] अविरचित, न बनाया हुआ ।

अरज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० अर्ज] विनय, प्रार्थना, विनती, निवेदन । चौड़ाई । (वि०) [अ+रज] रज-रहित, धूल-विहीन, विमल, स्वच्छ, निर्मल, साफ़ । "अरज कीन्ह अनुसासन पाई" ।

अरजना—(क्रि०, सं०, दे०) [अ० अर्ज] प्रार्थना करना, अर्ज करना, विनय करना ।

अरजम—(संज्ञा, पु०, सं०) कुंबी नामक पेड़ ।

अरजल—(संज्ञा,पु०,अ०) वह घोड़ा जिसके तीन पैर एक रंग के और एक एक रंग का हो, ऐसा घोड़ा खराब होता है, ऐबी । (वि०) बदमाश, बुरा, सदोष, नीच जाति का, वर्णसंकर । "तीन पांय तौ एक रंग हैं, एक पांय एक रंग । अरजल घोड़ा ताहि कहत हैं, ताहि न लीजे संग"—शा० हो० ।

अरजित—(वि०) [सं० अर्जित] उपार्जित, पैदा की हुई, कमाई हुई, प्राप्त की हुई । [वि० **अरजनीय**—उपार्जनीय] । [संज्ञा, पु०, दे०, **अरजन**—[सं० अर्जन] उपार्जन] ।

अरजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० अर्जी] आवेदन-पत्र, प्रार्थना । *§ [अ० अर्ज] प्रार्थी, अर्ज करने वाला । "गरजी ह्वै अरजी करी, टुक मरजी करि देहु"—रसाल० । "अरजी हमारी आगे मरजी तिहारी है" । (वि०)—रज-विहीन ।

अरझन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [**अरुझनि**—दे०] उलझन, फंदा, जटिलता । [**अरझट** प्रान्ती०] ।

अरझना—(क्रि०, अ०, दे०) उलझना, फंसना, उरझना, बझना, अटकना ।

अरझा—(वि०, पु०, दे०) उलझा । [स्त्री० **अरझी**] । (संज्ञा, पु०) उलझन ।

अरझाना—(क्रि०, सं०, दे०) उलझाना, फँसाना, उरझाना । [प्रे०, क्रि० **अरझवाना** प्रान्ती०] ।

अरणा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जंगली भैंस, अन्ना ।

अरणि, अरणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काष्ठ विशेष, जिसे घिस कर आग निकालते हैं, अग्नि धारक काष्ठ, एक वृक्ष, शमी, गनियार, अँगेथू, सूर्य । यज्ञ मे आग निकालने का एक काठ का यंत्र । अग्निमंथ । [**अरनी**—दे०] ।

अरण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वन, जंगल । कायफल । कानन । संन्यासियों के १० भेदों मे से भेद-विशेष । —**रोदन**-(संज्ञा, पु०) निष्फल रोना, ऐसा क्रंदन या पुकार जिसका सुनने वाला कोई न हो, वह बात जिस पर कोई ध्यान न दे ।—**वासी**-(पु०) वनवासी, तपस्वी, मुनि, जंगली लोग, वनमानुष ।

अरण्यक—(संज्ञा, पु०) वानप्रस्थाश्रम में पठनीय वैराग्य योगादि विषयक ग्रन्थ । वन, जंगल ।

अरण्यानी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बड़ा वन ।

अरत—(वि०, सं०) विरक्त, जो लीन न हो, उदासीन । (क्रि०, अ०) [हि० अड़ना] अड़ता है ।

अरति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विरति, विराग, वैराग्य, चित्त का न लगना, अप्रीति ।

अरथ॰—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्थ] अर्थ, मतलब, धन, अभिप्राय, हेतु, तात्पर्य, मंतव्य, प्रयोजन। (वि०) [अ+रथ] रथ-रहित, बिना रथ के । "अरथ न धरम, न काम रुचि"—[रामा०] । मु०—लगाना या बैठाना—मतलब निकालना ।—निकालना—तात्पर्य निकालना ।

अरथाना॰—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० अर्थ] समझाना, आशय का स्पष्ट करना । बताना, व्याख्या

करना, विवेचना करना, विवरण देना। "दसरथ-वचन राम वन गवनें यह कहियो अरथाई"—सूर०।

अरथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रथ] सीढ़ी के आकार का एक बाँस का बना हुआ ढाँचा, जिस पर रखकर मुर्दे को ले जाते हैं, टिखटी। [सं० अ+रथी] जो रथी न हो, पैदल। (वि० दे०) [अर्थी] अर्थयुक्त, धनी, मतलबी। "अर्थी दोषान्न पश्यति"।

अरद—(वि०, सं०) दंतहीन, दाँत से रहित। (पु०) क्लेश देना, ध्वंस।

अरदन—(वि०, सं०) बिना दाँत का, दंत-विहीन। [स्त्री० **अरदना**]। (संज्ञा, पु०) कष्ट पहुँचाना। विनाश, माँगना।

अरदना—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० अर्दन] रौंदना, कुचलना, ध्वंस करना, वध या नाश करना, मर्दन करना। (वि०) [अ+रदना] बिना दाँत वाली स्त्री।

अरदली—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० आर्डरली] दरवाजे पर रहने वाला चपरासी, साथ रहने वाला नौकर।

अरदावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्दित] कुचला हुआ अन्न। मोटा आटा, भरता, चोखा। "नख ते बघारि कीन्ह अरदावा"—प०।

अरदास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० अर्जदाश्त] निवेदन के साथ भेंट, नज़र, देवता के निमित्त भेंट, विनय, प्रार्थना, प्रार्थना-पत्र। "सुना साह अरदासै चढ़ी"—जायसी। "यह अरदास दास की सुनियै"—कबीर०।

अरदित—(वि०, दे०) [सं० अर्दित] कुचला हुआ, रौंदा हुआ, मर्दित, चूर्णित। [स्त्री० **अरदिता**]।

अरधंगॐ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्धांग] आधा अंग, शिव, महादेव, अगर्धांदेव। [दे० **अरधंगा**]।

अरधंगी, अरधंगीॐ—[सं० अर्धांगी] अर्द्धांगी, शिव, महादेव।

अरधॐ—(वि०, दे०) [सं० अर्ध] अर्ध, आधा। (दे०) आधो। (क्रि०, वि०) [सं० अधः] नीचे, अंदर, भीतर।

अरनॐ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अरण्य] बन, जंगल। (क्रि०, अ०, दे०) अड़ना। (संज्ञा, पु०, अ+रण) रण के बिना। बुरा युद्ध। (वि०) विविध। [प्रान्ती० यौ० **अरन-बरन**]।

अरनाॐ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अरण्य] जंगली भैंसा। (क्रि०, अ०, दे०) अड़ना, रुकना, हठ करना। "नवरंग बिमल जलद पर मानौ द्वै ससि आनि अरे"—सूर०।

अरनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अड़नि, अड़ना, हठ, जिद, दुराग्रह।

अरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अरणी] हिमालय पर होने वाला एक अग्निधारी वृक्ष, शमी। यज्ञ का अग्नि-मंथन काष्ठ। "कहाकहौं कपि कहत न आवै, सुमिरत प्रीति होइ उर अरनी"—सूर०। (वि०, दे०) [सं० अरणि] जो रणी या लड़ाई लड़ने वाला न हो। (वि०)—अड़नेवाला।

अरपन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्पण] समर्पण।

अरपनाॐ—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० अर्पण] अर्पण करना, भेंट देना, आरोपित करना, (ब्रज०)। "अरपन कीन्हें दरपन सों दिखाति देह, नरपन जात तो मैं तरपन कीन्हे ते"—द्विजेश।

अरपित—(वि०, दे०) [सं० अर्पित] समर्पित, भेंट दिया हुआ।

अरब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्बुद] सौ करोड़, सौ करोड़ की संख्या, अर्ब। "अरब-खरब लौं द्रव्य है"—तुल०। (संज्ञा, पु०) [सं० अर्वन्] घोड़ा। इंद्र। (संज्ञा, पु०, दे०, अ०) एशिया महाद्वीप के दक्षिण-पश्चिम भाग मे मरु देश, इसी देश का घोड़ा और मनुष्य।

अरबरॐ—(वि०, दे०) अड़बड़ (हि०) ऊटपटांग, विकट, कठिन।

अरबरानाॐ—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० अरबर] घबराना, व्याकुल होना, विचलित होना, चलने में लड़खड़ाना।

अरबरीॐ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घबड़ाहट, हरबरी, आकुलता, आतुरता [**खरभर दे०**]।

अरबी—(हि०, फ़ा०) अरब देश का। (संज्ञा, पु०) अरबी घोड़ा, ताजी, ऐराकी। अरबी ऊँट। अरबी बाजा, ताशा। (संज्ञा, स्त्री०) अरब देश की भाषा।

अरबीला*—(वि०, दे०) [अनु०] ऊटपटाँग। भोला-भाला। लड़खड़ान वाला।

अरभकॐ—(वि०, दे०) [सं० अर्भक] बच्चा, जो पेट मे हो। "गरभन के अरभक-दलन, परसु मोर अति घोर"—तुल०।

अरभस—(वि०) [सं० अ+रभस] अक्रोध, अरोष, अवेग, बिना दुख, अनौत्सुक्य।

अरमण, अरमणीक—(वि०, सं०) जो रमणीक या मनोरम न हो, अमनोहर, अरुचिर।

अरम्य—(वि०, सं०) न रमण करने योग्य। अरोचक, अमनोरम, अरुचिर, असुन्दर।

अरमान—(संज्ञा, पु०, स०) इच्छा, लालसा, चाह, साध। (दे०) हौंसला, इरादा। "मुझ पर मेरा अरमान हँसा"—बच्चन।

अरर—(अव्य०, अनु०) अत्यंत व्यग्रता या विस्मय-सूचक शब्द।

अररना, दररना—(सं०, वि०) पीसना, दलना।

अरराना—(क्रि०, अ०, अनु०) अरर शब्द करना, टूटने या गिरने का शब्द करना, भहराना, सहसा शब्द के साथ टूटना या गिरना।

अरव—(संज्ञा, पु०, सं०) निश्शब्द, नीरव, शब्द-रहित। (वि०) शब्द-विहीन।

अरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ+लावना] कच्चे या बिना उबाले हुए धानों से निकाले हुए चावल। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आलय] आला, ताक, ताखा।

अरवाती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छप्पर का किनारा, जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता है, ओरौनी, उरिया, ओरवातीं, ओरौती, उलती। [**ओरिया** दे०]।

अरविंद—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल, जलज, पंकज, उत्पल। सारस। ताँबा। "राम-पदारविंद-अनुरागी" —तुल०।—**दलप्रभ**-(पु०) ताँबा।—**नयन,—लोचन**-(पु०) विष्णु।—**नाभ,—नाभि**-(पु०) विष्णु।—**बंधु**-(पु०) विष्णु।—**योनि**-(पु०) ब्रह्मा। "तुम्हारा मुख अरविंद सकाम"—पंत।

अरविंदनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमलिनी, नलिनी। कमल-वन।

अरविंदाक्ष—(पु०) विष्णु।

अरविंदानन—(वि०, सं०) कमल ऐसे मुखवाला। "देख तुम्हारा अरविंदानन"।—हरिऔध।

अरवी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आलु] एक प्रकार का कंद या जड़, जिसे तरकारी के रूप मे खाते हैं, [**अरुई** प्रान्ती०] घुइयाँ, बंडा।

अरस—(वि०) [सं० अ+रस] नीरस, फीका, विरस, शुष्क, गँवार, अनारी, अरसिक, निष्ठुर, असभ्य। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अलस] आलस्य। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्श] छत, पटाव, धरहरा, महल, आकाश। "जाकी तेज, अरस में डोलै"—छत्र०। "अकिल अरस ते उतरी विधिना दीन्हीं बाँटि"—कबीर।

अरस- परस—(संज्ञा, पु०, दे०) [स० स्पर्श] लड़कों का एक खेल, छुआ-छुई, आँख-मिचौली, आँख-मिचौनी (दे०)। (संज्ञा, पु०, यौ०) [संदर्श-स्पर्श] भेंट। देखना। मिलाप।

अरसट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) निरख, परख, अंकाव, अड़चन, चूक, भूल, अलच्छ, सहसा। [प्रान्ती० **अलसेट, अरसेट,** उलझन]।

अरसन-परसन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दर्शस्पर्श] भेंट, मिलाप, आलिंगन।

अरसना※—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अलस] शिथिल पड़ना, ढीला पड़ना, मंद होना, आलस करना। (क्रि०, सं०) [हि० अ+रसना] न चूना, न टपकना। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० अ+रसना] बिना जीभ के, बिना रसना वाला, रसना-रहित, बद-ज़बान।

अरसना-परसना—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० स्पर्शन] आलिंगन करना, भेंट करना, मिलना, भेंटना। छूना।

अरसा—(संज्ञा, पु०, अ०) समय, काल, देर, अति-काल, विलंब, बेर। (वि०, स्त्री०) [सं० अ+रसा] अरसिका, विरसा। रसशून्य, सूखा, नीरस। "सींचे सुधा बरस के अरसा रसा को"—हरिऔध।

अरसात—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अलस] एक प्रकार का वर्णिक वृत्त जिसमें २४ वर्ण होते है, जिसमे ७ भगण और १ रगण रहता है। (पिं०) (क्रि०, अ०) (दे०) आलस करना, मंद पड़ना। [(पू०, का०, क्रि०)—**अरसाइ**—(क्रि०, वि०) **अरसाई, अर-साये** (ब्र०)]।

अरसाना※—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० आलस] अल-साना, तंद्रित होना, निद्राग्रस्त होना, सुस्ती चढ़ना। "आरस गात भरे अरसात है"—दास।

अरसाश—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वादहीन, रूखा सूखा भोजन।

अरसिक—(वि०, सं०) जो रसिक या भावुक न हो। "अरसिकेषु कवित्व निवेदनम्"। [स्त्री० **अर-सिका**]।

अरसी※—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अलसी, तीसी, आरसी।

अरसीला※—(वि०, दे०) [सं० अलस] आलस्यपूर्ण, आलसी, अलसाने वाला, अलसाया हुआ। [स्त्री० **अरसीली**]।

अरसौहा※**अलसौहा**—(वि०, पु०, दे०) आलस्य-पूर्ण, अलसाया। [स्त्री० **अरसौंही**]।

अरहट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अरघट्ट] कुएं से निकालने का रहँट नामक यंत्र, चरसा, पुर (दे०)।

अरहन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रंधन] आटा या बेसन जो तरकारी या सागादि के पकाते समय मिलाया जाता है, रेहन।

अरहनाॐ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अर्हणा] पूजा, अर्चना।

अरहर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आढकी, प्रा० अड्ढकी] दो दल के दाने का एक अनाज जिसकी दाल बनती है, तुअर। [प्रान्ती० **तूर, तुवरी, अरहरी, रहरी**।

अरा—(संज्ञा, पु०, दे०) लकड़ी चीरने का एक औजार, आरा। झगड़ा। पहिये के बीच की खड़ी लकड़ियाँ, केन्द्र का गोला।

अराअरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) होड़, अड़ा-अड़ी। बदाबदी।

अराक—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० इराक़] एक देश जो अरब में है, वहाँ का घोड़ा। [वि०—**अराकी**]।

अराकान—(संज्ञा, पु०) भारत की पूर्वी सीमा के समीप पड़ने वाला बर्मा का एक प्रान्त।

अराग—(वि०, सं०) राग या प्रेम-रहित, विराग। बेराग, बेताल। [वि० **अरागी**]।

अराज—(वि०) [सं० अ+राजन्] बिना राजा का, बिना क्षत्रिय का, राजा-रहित। (संज्ञा, पु०) [सं० अ+राजन्] अराजकता, शासन-विप्लव, हलचल, राज्याभाव।

अराजक—(वि०) [सं० अ+राज+वुञ्] राजा-रहित, जहाँ राजा न हो, बिना शासक के, राज्य-शून्य। "हा! अराजक भाव जो था पाप"—मैथिली०।

अराजकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा का न होना, शासनाभाव। अशांति। अंधेर। हलचल, विप्लव, क्रांति।

अरात, अराति—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रु। काम-क्रोधादि मनोविकार, छः की संख्या। [**अराती**—दे०]। "मृदु को रहै न कोउ अराता"। (संज्ञा, पु०) [सं० अ+रात्रि] रात्रि का अभाव। [वि० **अराता**-(दे०) असीन, अननुरक्त। (स्त्री०) **अराती**]।

अराधक—(वि०, दे०) [सं० आराधक] पूजा करने वाला। [स्त्री० **अराधिका**]।

अराधन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आराधन] आराधन, ध्यान।

अराधना—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० आराधन] पूजा करना, ध्यान करना।

अराधनीय—(वि०, दे०) [सं० आराधनीय] पूजा के योग्य। [स्त्री० **अराधनीया**]।

अराधित—(वि०, दे०) [सं० आराधित] जिसकी आराधना की जाय। जिसकी पूजा की गई हो। [स्त्री० **अराधिता**]।

अराधी—(वि०, पु०, दे०) पूजा या ध्यान करने वाला। [वि०, दे० **अराध्य-अराध**]।

अराना—(क्रि०, सं०, दे०) [हिं० अड़ाना] अड़ाना, अटकाना, फैला देना, बिखराना।

अराबा—(संज्ञा, पु०, अ०) गाड़ी, रथ। तोप लादने की गाड़ी। चरख। "चामिलघाट अराबो रोप्यो"—छत्र०।

अराम—*§(सं०, पु०, दे०) [सं० आराम] बाग़ वाटिका। "बिनु घनस्याम आराम मैं, लागी दुसह दवारि"—पद्मा०। (संज्ञा, पु०) [अ० आराम] सुख-चैन, भला, चंगा, रोग-मुक्त होना।

अरारा—(संज्ञा, पु०, दे०) दरदरा। ददोरा, अरराने का शब्द।

अरारूट—(संज्ञा, पु०) [अ० एरारोट] तीखुर की तरह काम मे आने वाली एक प्रकार का कंद और उसका पौधा।

अरारोट—(संज्ञा, पु०, दे०) अरारूट।

अराल—(वि०, सं०) कुटिल, टेढ़ा। एक समुद्र। "जाल दंत-नख नैन तन, प्रथु कुप लेस अराल"—रवि०। (संज्ञा, पु०) राल, मस्त हाथी।

अरावल—(संज्ञा, पु०, दे०) हरावल। आगे चलने वाली सेना।

अरावली—(संज्ञा, पु०, हिं०) भारत के अन्तर्गत राजस्थान में तीन सौ मील तक फैली हुई पर्वत-श्रेणी।

अराष्ट्र—(पु०, सं०) राज्य-सत्ता का रूप-समाप्ति राष्ट्र नहीं।

अरिंदय—(वि०, सं०) शत्रुओं को जीतने वाला, शत्रुंजय, परंतप।

अरि—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रु बैरी, रिपु, काम-क्रोधादि शत्रु। चार और छः की संख्या। चक्र। लग्न से जन्म कुंडली में छठा स्थान। (ज्यो०) विट्। खदिर दुर्गंध, खैर।—**मंडल**-(पु०) शत्रु-समूह। शत्रु-राज्य। अरि कंद।—**यल**-(वि०, दे०) [हिं० अड़ियल—अड़ना] अड़ने वाला, अड़ियल। —**याना***-(क्रि०, सं०, दे०) [सं० अरे] अरे कह कर बोलना, तिरस्कार करना, अपमान करना। (क्रि०, सं०)]हिं० **अड़ियाना**] अड़ाना आड़ या

टेक देना ।—छ्न-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अरिला] १६ मात्राओं का एक छंद विशेष (पि०) ।—षट्-वर्ग-(पु०, यौ०, सं०) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर नामक मनोविकारों का समूह ।—ष्ट-(संज्ञा, पु०, सं०) दुःख, पीड़ा, आपत्ति, अपशकुन, विपत्ति, दुर्भाग्य, अमंगल। पाप-ग्रहों का योग, मृत्यु-योग्य, धूप में औषधियों का खमीर उठा कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का आसव या मद्य, यथा द्राक्षारिष्ट । काढ़ा। वृषभासुर (कंस-द्वारा कृष्ण वध के लिये भेजा गया तथा कृष्ण से मारा गया था, इसकी देह तथा इसका शब्द बड़ा भयानक था), उत्पात, उपद्रव, अनिष्ट-सूचक चिह्न । सौरी, सूतिका-गृह । "सूर्य कुल का ही आज अरिष्ट" । —मैथिली० । "अरिष्ट-शय्यां परितोविसारिया" —कालि० । (वि०) दृढ़ । अविनाशी । शुभ । बुरा, अशुभ, अनिष्ट, अमांगलीक ।—नेमि-(पु०) कश्यप प्रजापति का एक नाम । कश्यप का पुत्र जो विनता से उत्पन्न हुआ था । राजा सगर के ससुर । सोलहवां प्रजापति ।

अरिहन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अरिघ्न] शत्रुघ्न। (संज्ञा, पु०, दे०) अरहर ।

अरिहा—(वि०, सं०) शत्रु का नाश करने वाला, **अरिहंता**। (संज्ञा, पु० सं०) लक्ष्मणानुज, शत्रुघ्न । "लच्छ करौं अरिहा समरत्थहिं"—रामचं० ।

अरी—(अव्य०) [सं० अयि] स्त्रियों के लिए संबोधन पद, री, एरी, ओरी (व्र०) ऐरी । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अरि] शत्रु ।

अरीठा—(संज्ञा, पु०, दे०) रीठा, एक प्रकार का फल ।

अरीता—(वि०, दे०) [सं० अरिक्त] जो खाली न हो पूर्ण, भरा-पुरा ।

अरीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनरीति, कुरीति, बुरी रस्म । [**अरीती** दे०] ।

अरीला—(वि०, दे०) [हिं० अड़ना] अड़नेवला, हठी, जिद्दी, दुराग्रही ।

अरुंतुद—(वि०) [सं० अरुं + तुद + ख] मर्म-स्पृक, मर्मपीड़क, पीड़ाकारी, नाशक, अपथ्य ।

अरुंधती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वशिष्ठ मुनि की स्त्री । धर्म से ब्याही गई दक्ष की एक कन्या । सप्तर्षि-मंडल में वशिष्ठ तारे के समीप रहने वाला एक छोटा तारा । कहते हैं कि मृत्यु के ६ मास पूर्व यह तारा नहीं दीखता । नासिका का अग्र भाग ।

अरु—(संयो०, अव्य०, दे०, व्र०) और, औ, पुनः, फिर ।

अरुआ—(संज्ञा, पु०) बंगाल, मद्रास आदि में पाया जानेवाला वृक्ष विशेष, जिसकी लकड़ी से तलवार को म्यान, ढोल आदि बनती है । कंद विशेष ।

अरुई§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अरवी, घुइयाँ, गर्भिणी स्त्री का चिह्न, उसकी अरुचि ।

अरुग्ण—(वि०, सं०) रोग-रहित, जो रोगी या बीमार न हो । [संज्ञा, स्त्री० **अरुग्णता**] ।

अरुचि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रुचि का अभाव, अनिच्छा अग्नि मांद्य का रोग, मंदाग्नि, जिसमें भोजन की इच्छा नहीं होती, घृणा, नफरत, वितृष्णा, जो मचलाना ।—कर-(वि०) जो रुचिकर न हो, जो अच्छा न लगे, अप्रिय । [**अरुचिकारी, कारक** । (वि०) **अरुचिर**, असुन्दर] ।

अरुज—(वि०, सं०) नीरोग, रोग-रहित ।

अरुझना—(क्रि० अ०, दे०) उलझना—"उत अरुझे है पितु मातुल हमारे"—सरस । "कछु अरुझानी है करीरनि की झार मैं"—रत्ना० । "छूट न अधिक-अधिक अरुझाई"—तुल० ।

अरुझाना—(क्रि०, सं०, दे०) उलझाना, फँसना, फाँसना, फँसाना ।

अरुण—(वि०, सं०) लाल, रक्त । [स्त्री० **अरुणा**] । (संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, सूर्य का सारथी, जो गरुड़ के ज्येष्ठ भ्राता थे, महर्षि कश्यप के औरस और विनिता के गर्भ से उत्पन्न हुये थे, इनके पैर न थे, क्योंकि विनिता ने इनके शरीर के पूर्ण होने के पूर्व ही अंडे फोड़ दिये थे, इनकी स्त्री का नाम श्येनी है, संपाति और जटायु इनके पुत्र थे । गुड़ । अर्कवृक्ष । संध्याराग । शब्द-रहित । अव्यक्त राग । ईषद्रक्त, कुष्टभेद । कुमकुम, गहरा लालरंग, सिंदूर, एक देश, माघ मास का सूर्य । "अरुणपट पहने हुए आह्लाद में"—मैथिली० । अरुन (दे०) ।—कमल-(पु०) **अरुणाब्ज**, रक्त या लाल कंज । **अरुणोत्पल**, **अरुणांबुज** ।—नयन, लोचन-(पु०) लाल नेत्र । कपोत, कबूतर । कोकिल । अरुणाक्ष ।—सारथि-(पु०) भानु, सूर्य, दिवाकर ।—चूड़-(पु०) अग्नि । कुक्कुट, मुर्गा, अरुण शिखा, ताम्रचूड़ ।—प्रिया-(स्त्री०) अप्सरा । छाया और संज्ञा नामक सूर्य की स्त्रियाँ ।—शिखा-(पु०) मुर्गा, कुक्कुट । अग्नि, [**अरुन-सिखा** दे०] । "उठे लषन निसि-विगत, सुनि, अरुनशिखा-धुनि कान"—तुल० ।

अरुणाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अरुण] ललाई,

रक्तता, लाली, लालिमा। [**अरुनाई** अ० दे०] "अरुणाई प्रखरशिशिर से डर"—पंत।

अरुणाग्रज—(संज्ञा, पु०, सं०) पक्षियों का राजा गरुड़ जो विष्णु का वाहन कहा जाता है।

अरुणाचल—(संज्ञा, पु०) [सं० अरुण+अचल] वह पहाड़ जिस पर अरुणोदय की ज्योति तथा सूर्य की किरणें सब से पहले पहुँचती हैं। "उगे अरुणाचल मे रवि"—निराला।

अरुणानुज—(संज्ञा, पु०, सं०) गरुड़।

अरुणाब्ज, अरुणाम्बुज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) लाल कमल।

अरुणाभ—(वि०) [सं० अरुण+आभा] अरुण आभा सा युक्त, युवाकालीन उत्साह और उमंग से पूर्ण। "जीवन के अरुणाभ प्रहर में"—दिनकर।

अरुणाभा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अरुणकांति।

अरुणारे-अरुनारे—(वि०, दे०) [सं० अरुण] लाल, अरुण रंग वाले, रतनारे।

अरुणार्क—(पु०) [सं० अरुण+अर्क] अरुण सूर्य, पूर्ण प्रखरता से युक्त प्रभाकर। "किंतु अरुणार्क, प्रिय झुलसाते ही रहे"—निराला।

अरुणिमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ललाई, लालिमा, सुर्खी। "अरुणिमा-विनिमज्जित हो गई"—हरिऔध।

अरुणोत्पल—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० अरुण+उत्पल] लाल या रक्त कमल।

अरुणोदय—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० अरुण+उदय] उषाकाल, ब्रह्म मुहूर्त, तड़का, भोर, सूर्योदय। [**अरुनोदय** दे०]। "अरुनोदय सकुचे कुमुद"—तुल०।

अरुणोपल—(संज्ञा, पु०, सं०) पद्मराग मणि, लाल, लाल रंग का एक हीरा।

अरुन*—(वि०, दे०) [सं० अरुण] लाल।

अरुनई, अरुनाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अरुणाई] ललाई।

अरुनाना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अरुण] लाल होना, रक्त वर्ण का करना। (स०, क्रि०) लाल करना।

अरुरना*§—(क्रि०, अ०, दे०) लचकना, बल खाना, मुड़ना, सिकुड़ना, संकुचित होना।

अरुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अरू] एक प्रकार की लता जिसका कंद खाया जाता है। [हि० रुरुआ] उल्लू पक्षी। "अरुवा (सरुआ) चहुँदिसि ररत"—।

अरुष्ट—(वि०, सं०) जो रुष्ट या नाराज न हो, प्रसन्न। [संज्ञा, स्त्री० **अरुष्टता**]।

अरूक्ष—(वि०, सं०) जो रूखा न हो, सरस, चिकना। [**अरुखा** दे०]।

अरूझना—(क्रि०, अ०, दे०) भिड़ना, लड़ना, झगड़ना। "रन राजकुमार अरूझहिंगे जू"—तु०। "मोंसों कहा अरूझति"—सूबे०।

अरूठा—(वि०, दे०) [सं० आरुष्ट] रुष्ट, रूठा हुआ। [अ+रुष्ट] जो रूठा या रुष्ट न हो। **अरुष्ट**।

अरूढ़*—(वि०, दे०) [सं० आरूढ़] चढ़ा हुआ, ऊपर बैठा हुआ, तत्पर। तैयार।

अरूढ़ि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जो रूढ़ि न हो।

अरूप—(वि०, सं०) रूप रहित, निराकार। कुरूप। "अलख-अरूप ब्रह्म, हम न कहैंगी तुम लाख कहिबो करौ"—रत्ना०। [संज्ञा, स्त्री० **अरूपता**]।

अरूपक—(वि०, सं०) जिसकी आकृति सुन्दर न हो। अपार्थिव। रूपकालंकार से हीन। शाब्दिक।

अरूरना—(क्रि०, अ०, दे०) व्यथित होना, दुखी होना, खिन्न होना।

अरूरा—(वि०, दे०) असुन्दर, अरूरी। [स्त्री० **अरूरी**]।

अरूलना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अरूस+क्षत=घाव] छिदना, चुभना, पीड़ित होना, घाव होना, छिल जाना।

अरूसा—(संज्ञा, पु०, दे०) अडूसा, रूस, बासा। (वि०) [दे० अ+रूसा] अरुष्ट। [सं० स्त्री० **अरूसी**]।

अरे—(अव्य०, सं०) संबोधन-शब्द, ऐ, ए, ओ, रे, एरे, आश्चर्य-सूचक अव्यय, सकोपतिरस्कृत, आह्वान-शब्द। "कह अरे क्या चाहिए तुमको भला?" —मैथिली०।

अरेचक—(वि०, सं०) जो रेचक या दस्तावर न हो। [संज्ञा, पु० **अरेचन**]।

अरेणु—(वि०, सं०) रेणु या धूलि से रहित, गर्द के बिना। [स्त्री० **अरेणुका**]।

अरेफ—(वि०, सं०) रेफ या रकार-रहित।

अरेब—(संज्ञा, पु०, दे०) पाप, अपराध, दोष, ऐब (दे०)।

अरेरना*—(क्रि०, अ०, अनु०) रगड़ना, मलना, मसलना। टकराना। दरेरना।

अरेरा—(संज्ञा, पु०) [हि० **अरेरना**] दरेरा, दबाव। रगड़। टक्कर, संघर्ष।

अरोक—(वि०, दे०) [हि० अ+रोकना] जो रुक न

सके, जो रोका न जा सके। "रोकि भरि रंचक अरोक वर बाननि को"—रत्ना०। (क्रि० वि०) बिना रोक-टोक के।

अरोग—(वि०, सं०) रोग-रहित, निरोग, भला, चंगा। [**आरोग्य** वि०, सं०]। [**अरोगी**—निरोगी]।

अरोगना*—(क्रि०, अ०) [दे० मेवाड़ी] खाना, भोजन करना।

अरोच*—(संज्ञा, पु०, दे०) अरुचि, अनिच्छा। अरुचिर, अप्रिय।

अरोचक—(संज्ञा, पु०, सं०) अरुचि का रोग, जिसमें भोजनादि नहीं रुचता, अनिच्छा, अरुचिर, अप्रिय। (वि०) जो न रुचै, अरुचिकर।

अरोड़ा, अरोरा—(वि०, संज्ञा, अ०, दे०) पंजाबी खत्रियों की जाति-विशेष।

अरोदन—(वि०, सं०) रोदन-रहित, रोदनाभाव। [वि० **अरोदित**—न रोया हुआ]।

अरोपन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आरोपण] ऊपर रखना। [क्रि०, स० **अरोपना**]। [वि० **अरोपनीय**]।

अरोपित—(वि०, दे०) [सं० आरोपित] आरोपण की हुई। जिस पर या जिसका आरोपण किया गया हो।

अरोम—(वि०, सं०) रोम या खाल रहित, निर्लोम, अलोम।

अरोर—(वि०) शब्द से शून्य, शांत। शून्य वातावरण।

अरोष—(वि०, सं०) रोष-रहित।

अरोस—(वि०, दे०) [सं० अरोष] रोष या क्रोध-रहित। [यौ० **अरोस-परोस**—अड़ोस-पड़ोस]।

अरोह, अरोहनꙮ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आरोहण] चढ़ना।

अरोहनाꙮ—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० आरोहण] चढ़ना। [वि०—**अरोहनीय**]।

अरोही—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आरोही] सवार।

अर्क—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य। इन्द्र। ताम्र। ताँबा। स्फटिक। पंडित। ज्येष्ठ भ्राता। रविवार। आकवृक्ष। मंदार। विष्णु। बारह की संख्या। "अर्क-जवास पात बिन भयऊ"—तुल०। (सं०, पु०, अ०) भभके से उतारा या निचोड़ा हुआ रस, अरक। (दे०) आसव, अरिष्ट।—**ज**—(पु०) सूर्य-पुत्र, यम। शनि। अश्विनीकुमार। सुग्रीव। कर्ण। सावर्णि। मनु। अर्कात्मज।—**जा**—(स्त्री०) सूर्य-कन्या। यमुना, तापती। रवितनया, तरनि-तनूजा, रविनंदिनी, भानुजा, **अर्कात्मजा**।—**तनय**—(पु०) सूर्य-पुत्र, यमादि। [स्त्री० **अर्कतनया**]।—**तनुज**—(पु०) सूर्य-पुत्र। [स्त्री० **अर्कतनुजा**]।—**द्युति**—(स्त्री०) सूर्य-प्रभा, घाम, अर्कालोक, अर्काभा।—**मण्डल**—(पु०) सूर्य-मण्डल, रविमंडल, सूर्य का घेरा।—**व्रत**—(पु०) प्रजा की वृद्धि के लिये प्रजा से राजा का कर लेना, आरोग्य सप्तमी का व्रत।—**त्विषि**—(पु०) सूर्य किरण, सूर्य-प्रभा, रवि रश्मि।—**भा**—(स्त्री०) सूर्य-प्रभा, रवि-प्रकाश। अर्कालोक, अर्क-द्युति, सूर्य-प्रतिभा।—**पल**—(पु०) सूर्यकान्त-मणि। लाल, पद्मराग। आतिशी शीशा।

अर्कट—(स्त्री०) सतर्कता, सावधानी, सचेतता।

अर्कनाना—(संज्ञा, पु०, अ०) सिरके के साथ भभके से उतारा हुआ पुदीने का अर्क।

अर्गजा—(संज्ञा, पु०, दे०) अरगजा।

अर्गनी—(संज्ञा, पु०, दे०) अरगनी।

अर्गल—(संज्ञा, पु०, सं०) किवाड़ बंद करने पर लगाई जाने वाली आड़ी लकड़ी, अरगल, अगरी, ब्योंड़ा। किवाड़। अवरोध। कल्लोल। सूर्योदय या सूर्यास्त पर पूर्व या पश्चिम के आकाश में दिखाई देने वाले रंग-विरंगे बादल, अंबर-डंबर। मांस। हुड़का। (दे०) खोल। [**आगल** दे०]।

अर्गला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अरगल, अगरी, बेंवड़ा, बिल्ली, सिटकिनी, किल्ली। हाथी के बाँधने की जञ्जीर। दुर्गासप्तशती के पूर्व पाठ किया जाने वाला एक स्तोत्र। मत्स्य सूक्त। अवरोध, बाधक, अरगला।

अर्गली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मिस्र, स्यामादि देशों में पाई जाने वाली एक भेड़ की जाति।

अर्घ—(संज्ञा, पु०, सं०) षोडशोपचार में से एक जल, दूध, कुशाग्र, दही, सरसों, तंदुल, और जौ को मिला कर देवता के प्रति अर्पण। अर्घ देने का पदार्थ। जलदान, सामने जल गिराना। हाथ धोने के लिये जल देना। मूल्य, भाव। भेंट। सम्मान के लिए जल से सींचना। घोड़ा। मधु। शहद। [दे० **अरघौती** या **रघौती**—भाव-दर, बाजार-भाव, बाजार दर]।—**पात्र**—(पु०) शंख के आकार का ताँबे का एक पात्र जिससे सूर्यादि देवों को अर्घ दिया जाता है। अर्घा।

अर्घा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्घ] अर्घपात्र, जलहरी।

अर्घ्य—(वि०, सं०) पूजनीय। बहुमूल्य। पूजा में देने के योग्य (जल, फल, फूल, मूल)। भेंट या उपहार में देने के योग्य। दर्शनी। नजराना। प्रणति।

अर्चक—(वि०, सं०) पूजा करने वाला, पुजारी, पूजक।

अर्चन, अर्चना—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, सं०) पूजा, पूजन। आदर, सत्कार, सम्मान। आराधना। सेवा-सुश्रूषा।

अर्चनीय—(वि०, सं०) पूजनीय, पूजा करने योग्य, आदरणीय, श्रद्धास्पद, पूज्य, अर्चनार्ह।

अर्चमान—(वि०, सं०) अर्चनीय, पूजनीय, अर्च्य, अर्चनार्ह, पूज्य।

अर्चा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूजा। प्रतिमा, देव-मूर्ति।

अर्चि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अग्निशिखा, ज्वाला। "अग्नि अर्चियाँ हुई समृद्ध"—प्रसाद

अर्चित—(वि०, सं०) पूजित, आदृत, सम्मानित, समर्चित।

अर्चिमान—(वि०, सं०) प्रकाशमान। (संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य। अग्नि। चन्द्र।

अर्चिराजमार्ग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवयान, उत्तरमार्ग, भगवान के समीप मुक्त जीवों के जाने का मार्ग।

अर्चिष्मान—(संज्ञा, पु०, सं०) अग्नि। सूर्य। (वि०) दीप्तिमान, प्रकाशमान।

अर्च्य—(वि०, सं०) मान्य, पूजनीय, पूज्य, सेवनीय, वंदनीय, समादरणीय, सेव्य, आराध्य।

अर्ज—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) विनय, प्रार्थना, विनती। (संज्ञा, पु०, अ०) चौड़ाई, आयत।

अर्जक—(संज्ञा, पु०, सं०) उपार्जन करने वाला, अर्जयिता, कमाने या पैदा करने वाला, उपार्जक।

अर्ज़दाश्त—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्रार्थना-पत्र, निवेदन-पत्र, अर्जी।

अर्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) उपार्जन, अर्थोत्पादन। अर्थ-संग्रह। संचय, संचयन।

अर्जनीय—(वि०, सं०) उपार्जनीय।

अर्जमा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्यमा] मदार। सूर्य। उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र।

अर्जयिता—(संज्ञा, पु०, सं०) कमाने वाला, अर्जक, उपार्जन करने वाला।

अर्जित—(वि०,सं०) संग्रह किया हुआ। कमाया हुआ। प्राप्त। संग्रहीत। सञ्चित, लब्ध। एकत्रीकृत।—**छुट्टी**-(स्त्री०) निश्चित अवधि तक काम करने के बाद मिलने वाली सवेतन छुट्टी [अर्न्ड लीव]।

अर्ज़ी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रार्थना-पत्र, निवेदन-पत्र।—**दावा**-(पु०) अदालत में दादरसी के लिए दिया जाने वाला प्रार्थना-पत्र।

अर्जुन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक बड़ा वृक्ष, काहू। पाँच पांडवों में से मँझले का नाम, देवराज इंद्र के औरस (पांडु के क्षेत्रज) और कुन्ती के गर्भज पुत्र थे, श्रीकृष्ण के ये बहनोई और मित्र थे, कृष्ण महाभारत में इनके सारथी थे। इनकी तीन प्रधान स्त्रियाँ थीं—द्रौपदी, सुभद्रा और चित्रांगदा, कौरव्य नाग की कन्या उलूपी भी इनकी स्त्री थी। इंद्र से इन्होंने देव-युद्ध एवं देवास्त्र-प्रयोग सीखा था, वहीं उर्वशी के कारण इनको नपुंसकत्व प्राप्त हुआ, जिसका प्रभाव अज्ञात वनवास में रहा। शिव जी की आराधना करके इन्होंने पाशुपत अस्त्र पाया था, द्रोणाचार्य से इन्होंने धनुर्विद्या प्राप्त की थी। हयहय वंशीय एक क्षत्रिय राजा सहस्रार्जुन या सहस्रबाहु सफेद कनैर। मोर। आँख की फूली। एकलौता बेटा। (वि०) शुभ्र, उज्वल, स्वच्छ।

अर्जुनात्मज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अभिमन्यु।

अर्जुनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सफेद रंग की गाय। कुटनी। उषा। (संज्ञा,पु०, सं०) अभिमन्यु, अर्जुन-सुत, आर्जुनेय।

अर्जुनोपम—(संज्ञा, पु०, सं०) सागौन का पेड़।

अर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्ण, अक्षर, जैसे पञ्चार्ण-पंचाक्षर। जल, पानी। एक प्रकार का दंडक वृत्त। शाल वृक्ष।

अर्णव—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र, सागर। सूर्य। इन्द्र। अंत रत्न। दंडक वृत्त का भेद विशेष (पिं०)। चार की संख्या। "अवधि का अर्णव तरूँ"—मैथिली०।—**पोत**-(पु०) जहाज, बृहद् नौका, बृहत्तरणी।—**यान**-(पु०) समुद्रयान, जहाज, पोत, बृहद्वनवाहन।—**मंदिर**-(पु०) वरुण।

अर्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द का अभिप्राय, शब्द-शक्ति, मानी, मतलब, भाव। तात्पर्य, प्रयोजन, अभिप्राय। काम। इष्ट। हेतु, निमित्त, इंद्रियों के विषय। धन, संपत्ति। (च०, वि०) के लिये। अर्थ के ६ प्रकारः—व्युत्पत्यर्थ, प्रवृत्यर्थ (प्रयोगार्थ) रूढार्थ, लक्ष्यार्थ, वाच्यार्थ और व्यंग्यार्थ। व्यवहार-बाहुल्य शब्दार्थ प्रयोग प्रसिद्धि का कारण तथा व्यवहार-विरलता या प्रयोगाल्पता संकेतार्थ या शब्दार्थ शक्ति की विस्मृति का हेतु है।—**अन्तर** (**अर्थान्तर**)-(पु०) अन्य विषय। अन्य अर्थ।—०**न्यास**-(पु०) एक अलंकार भेद।—**आकांक्षा** (**अर्थाकांक्षा**)-(स्त्री०) धनेच्छा।—**आपत्ति** (**अर्थापत्ति**)-(स्त्री०) अर्थालंकार विशेष।—**कर**,—**कारक**-(वि०) धन देने वाला, जिससे धन उपार्जित किया जाये। लाभकारी। [स्त्री० **अर्थकरी, अर्थकारिणी** लाभकारी]। "अर्थकरी च विद्या"—हितो०।—**गर्भित**-(वि०) अर्थ संयुक्त, सारमय, भाव अथवा विचार से पूर्ण।—**कर्म**-(पु०) प्रधान

कार्य ।—**किल्बिषी**–(पु०) आर्थिक मामले में असत्य व्यवहार करने वाला ।—**कृच्छ्र**–(पु०) पैसे के सम्बन्ध में कठिनाई ।—**गत**–(पु०) पैसे पर अवलम्बित ।—**गृह**–(पु०) कोष, धनागार ।—**गौरव**–(पु०) अर्थ-गाम्भीर्य नाम का एक काव्य-गुण । "किरातेत्वर्थ-गौरवम्" ।—**घ्न**–(पु०) व्यर्थ व्यय करने वाला ।—**चर**–(पु०) वेतन भोगी कर्मचारी । —**चिंतन**–(पु०) धन-प्राप्ति-साधन-सम्बन्धी विचार । —**चिंता**–(स्त्री०) धन-सम्बन्धी सोच-विचार । —**ज्ञ**–(वि०) भाव-मर्मज्ञ, अर्थज्ञाता, अर्थ-विद् ।—**ज्ञान**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तात्पर्यबोध । [वि० **अर्थज्ञाता**] ।—**दंड**–(पु०) जुर्माना, किसी अपराध के दंड मे अपराधी से लिया जाने वाला धन ।—**द**–(पु०) कुबेर । शिष्य जो विद्या-लाभ के बदले में धन दे । (वि०) धन देने वाला ।—**दूषण,—दोष**–(संज्ञा, पु०) अर्थगत दोष, जैसे अविवक्षितार्थ दोष । अपरिमित व्यय, अपव्यय । धन दोष ।—**नाश**–(पु०) धन नाश । निराशा । अर्थ-हानि, धन-हानि ।—**न्यायालय**–(पु०) दीवानी अदालत, धन सम्बन्धी मामलों को तय करने वाली अदालत (सिविल कोर्ट) ।—**प**, **पति,—(1)धिपति**–(पु०) कुबेर । राजा । अति धनी ।—**पर**–(वि०) कृपण, कंजूस, व्यग्र, शंकित । —**परामर्शक**–(पु०) आर्थिक विषयों मे परामर्श देनेवाला, आर्थिक सलाहकार । [फाइनैंसियल एडवाइज़र] ।—**मंत्रालय**–(पु०) अर्थ सचिवालय । [फाइनैंसमिनिस्ट्री] । शब्दों के अर्थ से सम्बन्धित भाषा विज्ञान का विभाग [सेमैंटिक्स] ।—**विधान**–(पु०) राज नियम, दीवानी कानून [सिविल ला] । —**विधानिक कार्यवाही**–(स्त्री०) दीवानी कार्यवाही [सिविल ऐक्शन] ।—**विधानिक क्षेत्र**–(पु०) दीवानी का अधिकार क्षेत्र [सिविल ज्यूरिस्डिक्शन] ।—**विधि-संहिता**–(स्त्री०) दीवानी व्यवहार विधि, जाब्ता दीवानी [सिविल प्रोसीजर कोड] ।—**विस्तार**–(पु०) शब्द का अनेकार्थी होना [एक्सपैन्शन आफ मीनिंग] ।—**विहीन**–(वि०) अर्थशून्य, निकृष्ट, निस्सार । जिससे किसी उद्देश्य की सिद्धि न हो । "रुदन में शिशु के अर्थ विहीन"—महा० ।—**श्लेष**–(पु०) एक अलंकार जो अनेकार्थ बोधक शब्दों की योजना को जाने पर अपने चमत्कार के लिए उक्त शब्दों के अपरिवर्तन पर आश्रित नहीं होता । उदा०—सगुन सभूषण, सुभ सरस सुबरन, सुखद, सुराग । इमि कविता अस कामिनी लहै जो सो बड़ भाग ।—**संकोच**–(पु०) शब्दों की कमी [कॉण्ट्रैक्शन आफ मीनिंग] ।—(1) **गमोपाय**–(संज्ञा, पु०, सं०) अर्थ प्राप्ति का साधन । "जाना तो अर्थागमोपाय"—निराला ।—(1) **देश**–(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द के अर्थ का बदल जाना । [ट्रांसफरेंस आफ मीनिंग] ।—(1) **धिकार-क्षेत्र**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दीवानी न्याय क्षेत्र, व्यवहार न्याय क्षेत्र । [सिविल ज्यूरिसडिक्शन]। —**परायण**-(वि०) स्वार्थी, मतलबी । [संज्ञा, स्त्री० **अर्थपरायणता**] ।—**पिशाच**–(वि०) बड़ा कंजूस, धन-लोलुप ।—**प्रयोग**–(पु०) वृद्धि, निमित्त धन-दान ।—**प्राप्ति**–(स्त्री०) धन-लाभ, अर्थोपलब्धि । —**मंत्री**–(पु०, यौ०) अर्थ-सचिव, खजांजी, आर्थिक विषयो की देख-रेख करने वाला राज्य-मंत्री, कोषाध्यक्ष । (फाइनैंसमिनिस्टर) ।—**वाद**–(पु०) किसी विधि के करने की उत्तेजना को सूचित करने वाला वाक्य, वह वाक्य जो सिद्धान्त के रूप मे नहीं वरन् केवल चित्त को किसी ओर प्रवृत्त करने वाला हो, काल्पनिक, फल-श्रुति, स्तुति, प्रशंसा, प्ररोचक वाक्य ।—**विज्ञान**–(पु०) शब्दार्थ-ज्ञान शास्त्र, सम्पत्ति शास्त्र ।—**विद**—(वि०, सं०) अर्थ ज्ञाता ।—**विद्या**–(स्त्री०) अर्थ-शास्त्र ।—**वृद्धि**–(स्त्री०) धन-वृद्धि, समृद्धि, कोष की वृद्धि ।—**वेत्ता**–(वि०) अर्थ-ज्ञाता । —**वेद**–(पु०) शिल्प-शास्त्र । अर्थ-शास्त्र, अर्थ-विद्या । —**व्यवहार**–(पु०) धन का व्यवहार, लेन-देन ।—**शास्त्र**–(पु०, यौ०) अर्थ की प्राप्ति, रक्षा, और वृद्धि के विधान बताने वाला शास्त्र, राज-प्रबंध, वृद्धि और रक्षादि की विद्या । नीति शास्त्र । धनोपार्जन का विज्ञान । राज या दंड-नीति । [इकनामिक्स] [वि० **अर्थशास्त्री**—अर्थशास्त्र-ज्ञाता] ।—**शास्त्रज्ञ**–(वि०, यौ०) अर्थ-शास्त्री ।—**सचिव**–(पु०) अर्थ-मंत्री, राज्य के अर्थ सम्बन्धी विषयों को देख-रेख करने वाला मंत्री, कोषाध्यक्ष ।—**साधन**–(पु०) स्वार्थ का सिद्ध करना, अपना मतलब पूरा करना । प्रयोजन-सिद्धि का उपाय या ज़रिया ।—**साधक**–(पु०) स्वार्थ सिद्ध करने वाला, मतलबी, स्वार्थी ।—**सिद्धि**–(स्त्री०) मतलब का पूरा हो जाना, प्रयोजन-पूर्ति ।—**स्पृहा**–(स्त्री०) धनेच्छा ।

अर्थतः—(अव्य०) वास्तव मे, वस्तुतः ।

अर्थना—(क्रि०, सं०, दे०] [सं०, अर्थ] माँगना, याचना । [**अरथना** दे०] । (स्त्री०) प्रार्थना, निवेदन ।

अर्थवत्त्व—(वि०, सं०) प्रयोजनार्हता, प्रयोजनीयता । [संज्ञा, स्त्री० **अर्थवत्ता**] ।—**न्तरन्यास**–(संज्ञा, पु०)

एक प्रकार का अलंकार जिसमें सामान्य से विशेष का और विशेष से सामान्य का साधर्म्य या वैधर्म्य से समर्थन किया जाय (अ० पी०)।

अर्थवान—(वि०, सं०) अर्थ युक्त, मतलबी।

अर्थागम—(पु०) धन प्राप्ति, आमदनी।

अर्थात्—(अव्य०, सं०) यानी, मतलब यह है कि अर्थतः, फलतः, विवरण सूचक शब्द।

अर्थातिक्रम—(पु०) हाथ में आयी हुई अच्छी वस्तु का परित्याग।

अर्थाधिकारी—(पु०) कोषाध्यक्ष, अर्थमंत्री।

अर्थानर्थ—(पु०) अर्थ और अनर्थ, शुभ और अशुभ। "समझ जो सके न अर्थानर्थ"—मैथिली०।

अर्थानाॐ—(क्रि०, सं०, दे०) [सं०, अर्थ] अर्थ लगाना, मतलब समझना। "कबिरा गुरु ने गम करी, भेद दिया अर्थाय"।

अर्थानुवाद—(पु०) प्रस्तुत विषय का पुनर्विवेचन अथवा अनुवचन।

अर्थान्तर—(पु०) अन्य विषय, नवीन तात्पर्य।—**न्यास**-(पु०) एक अर्थालंकार।

अर्थान्वित—(वि०) तत्त्वयुक्त, सारगर्भित, महत्त्व-मय।

अर्थापत्ति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ऐसा प्रमाण जिसमें एक बात से दूसरी बात की सिद्धि आप ही आप हो जाये। (मीमांसा०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक बात के कथन से दूसरी की सिद्धि दिखलाई जाये, इसे काव्यार्थापत्ति भी कहते हैं। (संज्ञा, स्त्री०, यौ०) अर्थ पर आपत्ति।—**सम**-(पु०) न्याय शास्त्रान्तर्गत जाति के चौबीस रूपों में से एक।

अर्थाभियोग—(पु०, यौ०, सं०) धन सम्बंधी दावा। (मनी सूट)।

अर्थालंकार—(संज्ञा, पु०, सं०) वह अलंकार जिसमे अर्थगत चमत्कार प्रगट किया जाय।

अर्थित—(वि०) अभिलषित, इच्छित।

अर्थावृत्ति—(स्त्री०) [सं० अर्थ+आवृत्ति] अर्थ का दुहराया जाना। एक अलंकार जिसमें एकार्थवाची शब्दों का प्रयोग अधिकता से किया जाता है और वे शब्द या तो एक ही अर्थ को अथवा सदृश अर्थ को व्यक्त करते हैं। उ०-"दिसि दिसि विकसे कुंजवन फूले रुचिर रसाल"।

अर्थी—(वि०) [सं० अर्थिन्] इच्छा रखने वाला, चाह रखने वाला, कार्यार्थी, प्रयोजन वाला, गर्जी। (संज्ञा, पु०) वादी, प्रार्थी, मुद्दई, सेवक, याचक, धनी, प्रार्थी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखो "अरथी"। [स्त्री० **अर्थिनी**]।

अर्थेच्छा, अर्थेहा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अर्थ की कांक्षा।

अर्दन—(संज्ञा, पु०, सं०) पीड़न। हिंसा। जाना। माँगना, [**अरदना** (दे०)]।

अर्दनाॐ—(क्रि०, सं०) [सं० अर्दन] पीड़ित करना, दुःख देना, त्रसित करना।

अर्दली—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० आर्डरली] चपरासी, अरदली।

अर्दावा—(वि०, दे०) मोटा आटा, दलिया।

अर्दित—(वि०, सं०) पीड़ित। हिंसित। याचित। गत। यंत्रणायुक्त, दुखित। [स्त्री० **अर्दिता**]।

अर्धंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्धांग] अर्धांग। [स्त्री० **अर्धंगिनी**—स्त्री]।

अर्धंगीॐ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्धांगी] शिव, अर्धनारीश्वर।

अर्द्ध—(वि०, सं०) आधा। तुल्य, या सम भाग। मध्य। अद्धा, आध (दे०)।—**चंद्र**-(पु०) आधा चाँद, अष्टमी का चंद्रमा, चंद्रिका। मोरपंख पर बनी हुई आँख। नखक्षत। एक प्रकार का बाण, सानुनासिक का एक चिह्न (˘) चंद्र-विन्दु। एक प्रकार का त्रिपुंड (˘) गरदनिया निकाल बाहर करने के लिए गले में हाथ लगाने की मुद्रा-विशेष। "अर्द्धचंद्र ही तो पावेगी"—मैथिली०।—**जल**-(पु०) श्मशान में शव को स्नान करा के आधा जल में और आधा बाहर रखने की क्रिया।—**झंपित**-(वि०) आधा छिपा हुआ।—**नयन**-(पु०) देवताओं की तीसरी आँख जो ललाट में होती है। अर्धाक्षि।—**नारीश**, —**नारीश्वर**-(पु०) शिव और पार्वती का सम्मिलित रूप (तंत्र०) उमाशंकर, हरगौरि, गौरी-शंकर, दुर्गा-शंकर।—**निमेष**-(पु०) आधा क्षण। "अर्ध निमेष कल्प सम बीता"—तुल०।—**प्रफुल्ल**-(वि०) अध-खिला, आधा फूला। [वि० **अर्द्धप्रफुल्लित**]। —**मागधी**-(स्त्री०) प्राकृत भाषा का एक भेद, काशी और मथुरा के मध्यवर्ती प्रान्त की प्राचीन भाषा। —**रथ**,—**रथी**-(पु०) एक रथी से न्यून योधा, आधा रथी।—**रात्रि**-(स्त्री०) रात्रि का अर्ध भाग, मध्य रात्रि, अधरात (दे०), महानिशा, आधीरात। "अर्धरात्रि गइ कपि नहिं आवा"—तुल०।— **विवृत**-(वि०) वे स्वर जिनके उच्चारण में मुखद्वार कम खुलता है, जैसे ओं [हाफ़ ओपेन]।—**वृत्त**-(पु०) वृत्त या गोले का आधा भाग, गोलार्ध, वृत्तार्ध।—**सभ्य**-(वि०) अर्धशिक्षित। [सेमी सिविलाइज्ड]।—**समवृत्त**-(पु०) वह छंद जिसका प्रथम चरण तो तीसरे के और दूसरा चतुर्थ के

बराबर होता है, जैसे दोहा-सोरठा। (स० पिं०)। **—सरकारी**–(वि०) जो पूर्ण रूप से सरकारी न हो। (सेमी आफिशल)। **—स्फुटित**–(वि०) अध-खिला। आधा खुला हुआ। **—अर्द्धस्फुट**–(वि०) अर्धविकसित। [**संज्ञा अर्धस्फुटन**]। **—स्वतंत्र**–(वि०) अर्ध स्वाधीन। [सेमी इंडिपेण्डेण्ट]। **—स्वर**–(पु०) व्यंजन और स्वर के बीच की ध्वनि जैसे य् [सेमी वावेल]।

अर्द्धांग—(पु०, यौ०) आधा अंग। पक्षाघात या एक विशेष प्रकार का लकवा या वायु रोग जिसमें आधा शरीर बेकाम और शून्य होकर जड़ीकृत सा हो जाता है, फालिज, पक्षाघात।

अर्द्धांगिनी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) स्त्री, पत्नी सह-धर्मिणी, [**अर्द्धांगी** दे०]।

अर्द्धांगी—(संज्ञा, पु०) [सं० अर्धांगिन्] शिव, शंकर। अर्ध शरीर-धारी। (वि०, सं०) अर्द्धांग रोग-ग्रस्त, पक्षाघात-पीड़ित।

अर्द्धांश—(संज्ञा, पु०, यौ०) अर्धभाग, आधा हिस्सा।

अर्द्धाली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अर्द्धालि, आधी चौपाई, चौपाई की दो पंक्तियाँ।

अर्द्धोदय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक ऐसा पर्व-दिन जब माघ की अमावस्या रविवार को पड़ती है और श्रवण नक्षत्र तथा व्यतीपात योग होता है।

अर्पण—(संज्ञा, पु०, सं०) देना। दान। नजर, भेंट। स्थापन। [**अरपन** दे० समर्पण]।

अर्पणीय—(वि०, सं०) देने या भेंट करने के योग्य।

अर्पन, अरपना*—(क्रि०, स०, दे०,) [सं० अर्पण] अर्पण करना, भेंट देना, नजर करना। [वि०— **अर्पित, अरपनीय** दे०]।

अर्पित—(वि०, सं०) दी हुई, दिया हुआ, समर्पित। [**अरपित** दे०]। "अर्पित है यह देह"—मैथिली०।

अर्ब—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अर्बुद] दश कोटि, दस करोड़ की संख्या, अरब (दे०, यौ०)। **अर्ब-खर्ब**—असंख्यात। "अर्ब-खर्ब लौं द्रव्य है, उदय-अस्त लौं राज"—तु०।

अर्ब-दर्ब*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० अर्बुद द्रव्य] धन-दौलत, सम्पत्ति।

अर्बाक—(वि०, सं०) प्राक्, पूर्व। आदि। अग्र। अवर। निकट, समीप। पश्चात्, बाद।

अर्बुद—(संज्ञा, पु०, सं०) गणित में ६ वें स्थान की संख्या, दश कोटि, दस करोड़ की संख्या। अरावली पहाड़। एक असुर। कद्रु का पुत्र। ५क सर्प। मेघ, बादल। दो महीने का गर्भ। शरीर में एक प्रकार की गाँठ पड़ने वाला रोग, बतौरी रोग।

अर्भ—(संज्ञा, पु०, सं०) बालक। शिष्य। शिशिर। साग-पात। **—दर्भ**–(यौ०) घास-फूस।

अर्भक—(वि०, पु०, सं०) छोटा, अल्प। मूर्ख। दुबला, पतला, कृश। नासमझ। स्वल्प। सकृश। कुशतृण। (संज्ञा. पु०, सं०) बालक, शिशु, शावक, [**अरभक** दे०]। "गर्भन के अर्भक-दलन, परसु मोर अति घोर"—तुल०।

अर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वामी, ईश्वर, वैश्य। [**स्त्री० अर्या, अर्याणी**]। (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, आर्य।

अर्यमा—(संज्ञा, पु०) [सं० अर्यमन्] सूर्य, बारह आदित्यों में से एक। उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र। मदार। नित्य।

अर्राना—(क्रि०, अ०, दे०) एक बेर में भहरा पड़ना, अरराना।

अर्रारा—(संज्ञा, पु०, दे०) अकस्मात् एक ही समय में पतन।

अर्वाक्—(अव्य, सं०) पीछे। इधर। निपट। समीप, पास, निकट।

अर्वाग्बिल—(वि०, सं०) अधोमुखो, नीचे की ओर मुँह करने वाला।

अर्वाचीन—(वि०, सं०) पीछे का, आधुनिक, नवीन, नया, नूतन। विरुद्ध।

अर्श—(संज्ञा, पु०, सं०) पीड़ा, वेदना, दर्द। बवासीर, रोग-विशेष। (अ०) आकाश, स्वर्ग। **मुहा०—**(दिमाग)**—पर होना**–अतिशय अहंकारी होना। **—से फर्श तक**–आकाश से भूमि तक।

अर्शपर्श—(संज्ञा, पु०, सं०) छुआछूत, अशुद्धि, अपवित्रता, अशुचिता।

अर्हत—(संज्ञा, पु०, सं०) जैनियों के पूज्य देवता का नाम जिन। बुद्ध। पूज्य या समर्थ व्यक्ति। "नमो नमो अर्हंत को"—मुद्रा०।

अर्ह—(वि०, सं०) पूज्य। योग्य। उपयुक्त। श्रेष्ठ, उत्तम, जैसे—'पूजार्ह' में। (संज्ञा, पु०, सं०) ईश्वर। इंद्र।

अर्हणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूजा, आराधना, उपासना, अर्चना।

अर्हणीय—(वि०, सं०) पूजनीय, पूज्य, सेव्य, अर्च्य। [वि० **अर्हित**]—पूजित, आराधित।

अर्हत, अर्हन्—(वि०, सं०) पूजा, सम्मान। (संज्ञा,

पु०) जिन, देव, ईश्वर (जैनियों के)। "अर्हन्नित्यथ जैन-शासन-भूताः" ह० ना०।

अर्ह्य—(वि०, सं०) पूज्य, मान्य, पूजनीय।

अलं—(अव्य०, सं०) अलम्, काफी। 'अलमिति पर्याप्त ग्रहणम्'' "अलं महीपाल तवश्रमेण'—रघु०।

अलंकार—(संज्ञा, पु०, सं०) जेवर, गहना, आभूषण, भूषण, विभूषण, किसी बात को चारु चमत्कार चातुर्य के साथ कहने का ढंग, या रुचिर रोचकता-पूर्ण भाव-प्रकाशन-रीति (काव्य)। नायिका के सौंदर्य के बढ़ाने वाले हाव-भाव या आंगिक चेष्टाएँ (साहि०)।

अलंकारिक—(वि०, सं०) अलंकार-सम्बन्धी। अलंकार से युक्त, विभूषित। चमत्कृत। आभूषित।

अलंकित—(वि०, दे०) [सं० **अलंकृत**] आभूषित, सजाया हुआ, विभूषित। चमत्कृत। सुसज्जित।

अलंकृत—(वि०, सं०) विभूषित, अच्छी तरह सजाया हुआ। चारु चमत्कृत, समाभूषित। काव्यालंकार-युक्त। सँवारा हुआ। "तत्र चली ब्रजभूषण को लिये वह अलंकृत गोकुल ग्राम को"—हरिऔध। [स्त्री० **अलंकृता**]।—**काल**-(पु०) हिन्दी साहित्य का वह मध्य काल (लगभग १६०० ई० से १८०० ई० तक) जिसमें अलंकार-ग्रन्थों तथा काव्यालंकार युक्त काव्य की विशेष रचना हुई है।—**शैली**-(स्त्री०) हिन्दी-गद्य लिखने का वह ढंग या तरीका जिसमें शब्द-संगठन और वाक्य-विन्यास काव्यालंकार से सजा हुआ रहता है, गद्य-काव्य की एक विशेष रचना-रीति।

अलंग—(संज्ञा, पु०) [सं० अलं—पूर्ण+अंग] ओर, तरफ, दिशा।—**लंग**-(दे०),—**अलग**-[प्रान्ती०]। "लेन आयो कान्ह कोऊ मथुरा अलंग ते"—दास०। (स्त्री०) बाजू। सेना का पक्ष। (वि०) [हि० अ+लंग—लँगड़ा] जो लँगड़ाता न हो। **मुहा०—पर आना या होना**—घोड़ी का मस्ताना।

अलंघन—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+लंघन] न लाँघना, न फाँदना। अनुल्लंघन, अनुपवास, उपवास का अभाव। [वि० **अलंघित**]।

अलंघनीय—(वि०, सं०) जो लाँघने योग्य न हो, अलंघ्य।

अलंघ्य—(वि०, सं०) जो लाँघने योग्य न हो, जिसे न फाँद सकें। जिसे टाल न सकें, अटल, अनिवार्य, आवश्यक। "वह महाकाल सारे अलंघ्य"—पंत।

अलंपट—(वि०, सं०) चरित्रवाला। (संज्ञा, पु०) अंतःपुर।

अलंब—(संज्ञा, पु०, दे०) आलंब, सहारा, सहाय, आसरा। (दे०) आश्रय, आधार।

अलंबन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आलंबन] सहारा, आधार, आश्रय, आसरा।

अलंबित—(वि०, दे०) [सं० आलंबित] आश्रित, आधारित।

अलंबुष—(संज्ञा, पु०, सं०) रावण का सचिव, वमन, एक राक्षस जिसे घटोत्कच ने मारा था।

अल—(संज्ञा, पु०, सं०) भूषण। पर्याप्ति। वारण। वृथा। शक्ति। निरर्थक। (संज्ञा, पु०, दे०) बिच्छू का डंक, विष।

अलक—(संज्ञा, पु०, सं०) मस्तक के इधर-उधर लटकने वाले बाल, केश, लट। घुँघराले बाल, छल्लेदार बाल। हरताल। मदार, महावर। "प्रथमहि अलक तिलक लेव साजि"—विद्या०।—**नंदा**-(स्त्री०) ८ से १० वर्ष की लड़की। एक नदी।—**प्रभा**-(स्त्री०) अलकापुरी।—**प्रिय**-(पु०) 'पीतसाल' नामक पेड़।—**संहति**-(स्त्री०) जुल्फों की पंक्ति। [गौ० **अलकावली**]।

अलकतरा—(संज्ञा, पु०, अ०) पत्थर के कोयले को आग पर गला कर निकाला हुआ एक काले रंग का गाढ़ा द्रव पदार्थ।—**डामर**-(प्रान्ती०) धूना, कोलतार।

अलक लड़ैता*—(वि०, दे०,यौ०) [हि० अलक—बाल+लाड़—दुलार] दुलारा। [स्त्री०—**अलक लड़ैती**]। "अब मेरे अलक लड़ैते लालन ह्वै हैं करत सँकोच"—सूर०।

अलक-सलोरा*—(वि०, दे०) [सं० अलक+सलोना हि०] लाड़ला, दुलारा। [स्त्री०—**अलक-सलोरी**]।

अलका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुबेर की पुरी, आठ और दस वर्ष के बीच की लड़की।—**पति**-(पु०, यौ०) कुबेर, अलकेश, अलकेश्वर, अलकाधिपति।

अलकावलि, अलकाली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) केशों का समूह, बालों का गुच्छा, लटों की राशि। "प्रियालकाली धवलत्वशंकया"।

अलकेश, अलकेश्वर—(संज्ञा,पु०, सं०) कुबेर, धनपति, अलकेन्द्र।

अलकोहल—(संज्ञा, पु०, अं०) सुरासार, स्पिरिट।

अलक्त, अलक्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) लाख, चपड़ा, लाह का बना हुआ एक प्रकार का रंग, जिसे स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं, महावर, लाक्षारस, [**आलता**—प्रान्ती०]।

अलक्ष—(वि०, सं०) जो लक्ष या लाख के बराबर न

हो। जिसका लक्ष्य न किया गया हो, न देखा हुआ, [**अलच्छ**—दे०]।

अलक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरे लक्षण, कुलक्षण, बुरे चिन्ह, [**अलच्छन**—दे०]।

अलक्षणी—(वि०, सं०) बुरे लक्षणों वाला, कुलक्षणी। [वि०—**अलक्षणीय**]।

अलक्ष्मी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धनाभाव, दरिद्रता।

अलक्ष्य—(वि०, सं०) अदृश्य, जो न देख पड़े, दृष्टि से ओझल, गायब। जिसका लक्षण न कहा जा सके। जो लक्ष के योग्य न हो।

अलक्षित—(वि०, सं०) अप्रगट। अज्ञात। अदृश्य। गायब, न देखा हुआ। अविचारित। "मधुरता भरता अलक्षित"—महा०—[स्त्री० **अलक्षिता**-अदृश्या]। [दे०—**अलच्छिता**]।

अलख—(वि०) [सं० अलक्ष्य] जो दिखाई न पड़े, अदृश्य। अगोचर, अप्रत्यक्ष, परोक्ष। इंद्रियातीत। न देखा हुआ, अदृष्ट, गुप्त, लुप्त। ईश्वर। **मुहा०**—**अलख जगाना**—पुकार कर भगवान का स्मरण करना या कराना, परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना। "लखि ब्रज-भूप-रूप अलख अरूप ब्रह्म" —रत्ना०।—**धारी**—(पु०, यौ०) अलख अलख पुकारते हुये भिक्षा माँगने वाले एक प्रकार के साधू। —**नामी**—(पु०, यौ०) [सं० अलक्ष+नाम] अलखोपासक साधु विशेष, जो अलख कहकर भिक्षा माँगते है।

अलखनीय—(वि०, दे०) जो लखने या देखने के योग्य न हो। जो देखने या विचारने या पढ़ने के अयोग्य हो।

अलखित—(वि०, दे०) [सं० अलक्षित] अप्रगट, गुप्त, अज्ञात, अदृष्ट, न देखा हुआ। [स्त्री०—**अलखिता**]।

अलग—(वि०, दे०) [सं० अलग्न] पृथक्, विलग, जुदा, अलाहिदा। न्यारा, भिन्न, बेलाग। दूर, परे। **मुहा०**—**करना**—दूर करना, हटाना, छुड़ाना, बरखास्त करना। बेलाग, बचा हुआ, रक्षित करना। —**होना**—हिस्सा बाँट कर पृथक हो जाना।

अलगनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आलग्न] घर में कपड़े के टाँगन या लटकान के लिये बाँधी हुई रस्सी या आड़ा टँगा हुआ बाँस, डारा, [**अरगनी**—दे०, प्रान्ती]।

अलगरज—(वि०, दे०) [अ० अलगरज] बेपरवाह, बेगरज। [**अलगरजू**—दे०]।

अलगरजी—(वि०, दे०, अ०) बेगरज, लापरवाह, बेपरवाह। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) लापरवाही, बेपरवाही, बेगरजी।

अलगाना—(क्रि०, सं०, दे०) [हि० अलग] अलग करना, छाँटना, चुनना, जुदा करना, दूर करना, हटाना, पृथक् करना, बिलगाना। (क्रि०, अ०) अलग होना। [**अलगानी**—(वि०, स्त्री०) पृथक् हुई]।

अलगाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० अलग] बिलगता, पृथकता, जुदापन, बिलगाव, पृथकत्व, भिन्नता, लगाव का अभाव।

अलगैबो, अलगाइबो*—(संज्ञा, पु०, ब०) अलगाना, अलग करना, बिलगाना।

अलगोजा—(संज्ञा, पु०, अ०) एक प्रकार की बाँसुरी।

अलगौझा—(संज्ञा, पु०, दे०) पृथकता, बँटवारा।

अलच्छ*—(वि०, दे०) [सं० अलक्ष] अलक्ष्य। (वि०, दे०) [सं० अ+लक्ष] लाख नहीं। लक्षण रहित। अलख। "जानत न ब्रह्महूँ प्रमानत अलच्छ ताहि"—रत्ना०।

अलच्छन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अ+लक्षण] कुलक्षण, बुरे लक्षण या गुण, अशुभ चिन्ह। अपशकुन, असगुन (दे०)। **मुहा०**—**आना**—बुरा समय आना।

अलच्छना—(वि०, दे०) [सं० अलक्षणी] बुरे लक्षण वाला, कुलक्षणी, दुर्गुणी। [स्त्री०—**अलच्छिनी** बुरे लक्षणों वाली]।

अलच्छित—(वि०, दे०) [सं० अलक्षित] अलक्षित, अप्रगट, अप्रदृष्ट। गुप्त, लुप्त।

अलज, अलज्ज—(वि०, सं०) निर्लज्ज, बेहया, बेशर्म, लज्जा-रहित। [विलोम **सलज्ज**]। अलाज, (दे०)। [वि०—**अलज्जित**]।

अलजी—(संज्ञा, स्त्री०) नेत्रों में दाह अथवा शोथ।

अलड़-बलड़—(वि०, स्त्री०, सं०) जड़, बकवादी। मूर्ख, निबुद्धि। अव्यवस्थित।

अलतनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हाथी की बागडोर।

अलता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अलक्तक प्रा० अलत्तअ अप० अलत्ता] स्त्रियों के पैरों में लगाने का एक लाल रंग, जावक, महावर। खसी की मूत्रेन्द्रिय। आलता, लाख का रंग, लाक्षारस, आलता।

अलप—(वि०, दे०) [सं० अल्प] छोटा, थोड़ा, कम, न्यून। (संज्ञा, पु०, दे०) असामयिक मृत्यु का योग (भड्डर)। "तू अति चपल अलप की संगी"—सु०।

अलपना—(स०, क्रि०, दे०) अलाप करना।

अलपाका—(संज्ञा, पु०, दे०) [स्पे० एलपका] दक्षिणी अमेरिका में होने वाला एक ऊँट की तरह का

जानवर। इसी जानवर का ऊन। उससे बना हुआ कपड़ा।

अलपी—(वि०,दे०) अल्पकालीन। मृत्यु-योग वाला।

अलफ—(संज्ञा, पु०) घोड़े का पिछली टाँगों के सहारे खड़ा होना।

अलफा—(संज्ञा, पु०, दे०, अ०) एक प्रकार का बिना बाँहों वाला लम्बा कुरता। [स्त्री०—**अलफ़ी**] कुरती, सलूका, बंडी।

अलफ़ाज़—(संज्ञा, पु०, अ०) लफ्ज का ब० व०; शब्दों का समूह।

अलबत्ता—(अव्य० अ०) निस्सन्देह, बेशक। हाँ। बहुत ठीक। निस्संशय। लेकिन। दुरुस्त। किन्तु, परन्तु। "फैशन का लत्ता अलबत्ता फहराता है"—'सरस०'।

अलबी-तलबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अरबी+अनु०] अरबी, फ़ारसी या कठिन उर्दू (उपेक्षा भाव में)। **मुहा०—छाँटना**—कठिन और बामुहावरा (अरबी, फारसी मिश्रित) उर्दू बोलना। योग्यता दिखाना, रोब जमाना, क्रोध दिखाना, पक्की बूकना (दे० मुहा०)।—**भुलाना**—रोब या आतंक का नष्ट कर देना।—**भूल जाना**—रोब या क्रोध का दूर हो जाना।—**धरी रहना**—रोब सब पड़ा रह जाना, रोष का अलग पड़ा रहना, निष्फल कोप होना।

अलबेला—(वि०, दे०) [सं० अलभ्य+ला हि० प्रत्य०] बाँका, छैला, छैलछबीला, बनाठना, गुंडा। अनूठा, अनोखा, सुन्दर। अल्हड़, मनमौजी, तरंगी, लापरवाह। [स्त्री० **अलबेली**—छबीली, बनीठनी, सुन्दर]। "नायिका नबेली अलबेली खेली नैहर सों।"—**पन**-(पु०) बाँकापन, सजधज, छैलापन। सुन्दरता। अनोखापन। अल्हड़पन, बेपरवाही।

अलब्ध—(वि०) अप्राप्त।—**नाथ**-(वि०) जिसे संरक्षक न प्राप्त हो।—**निद्र**-(वि०) जिसे नींद न आती हो।—**भूमिकत्त्व**—(पु०) समाधि विघ्न।—**व्यायाम भूमि**-(स्त्री०) वह भूमि जहाँ सैन्य-संग्रह न हो सके।

अलभ्य—(वि०, सं०) न मिलने के योग्य, अप्राप्य। जो कठिनता से मिल सके। दुष्प्राप्य, दुर्लभ, अमूल्य, अनमोल। [संज्ञा, स्त्री०—**अलभ्यता**]। "अब अलभ्य वहाँ विष हो गया"—मैथिली०।

अलम्—(अव्य०, सं०) यथेष्ट, पर्याप्त, पूर्ण। व्यर्थ, निरर्थक, बहुत, बस, समूह, भीड़, सामर्थ्य, निषेध। "अलम् महीपाल तवश्रमेण"—रघु०।

अलम—(संज्ञा, पु०, अ०) रंज, दुःख। झंडा, पताका।

अलमस्त—(वि०, फ़ा०) मतवाला। प्रमत्त, मस्त, बदहोश, बेहोश, बेसुध, बेफिक्र, बेगम, लापरवाह। [संज्ञा, स्त्री० **अलमस्ती**—प्रमत्तता]।

अलमारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [पुर्त्त० अलमारियो, अं० अलमिरा] चीजों के रखने के लिये खाने या दर वाली बड़ी सन्दूक, बड़ी भँडरिया।

अलमास—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हीरा।

अलय—(वि०) जिसका लय न हो। विश्रामहीन। गृहहीन।

अलर्क—(संज्ञा,पु०, स०) पागल कुत्ता। सफेद मदार या आक। एक अंधे ब्राह्मण के माँगने पर अपनी दोनों आँखों को निकाल कर दान देने वाले एक प्राचीन राजा का नाम।

अललटप्पू—(वि०, दे०) अटकलपच्चू, बेठौर-ठिकाने का। बेअंदाज का, अंड-बंड, बेहिसाब।

अललबछेड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० अल्हड़+बछेड़ा] घोड़े का जवान बच्चा। अल्हड़ आदमी।

अललहिसाब—(अव्य०, अ०) हिसाब किये बिना ही।—**देना**—हिसाब-किताब देखे बिना ही कुछ धन दे देना।

अललानाऽ—(क्रि०, अ० दे०) [सं० अर—बोलना] चिल्लाना, गला फाड़ कर बोलना। बकना, व्यर्थ बकना।

अलवाँती—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० बालवती] स्त्री, जिसके बच्चा हुआ हो, प्रसूता, जच्चा।

अलवाई—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० बालवती] जिसे बच्चा जने एक या दो माह या कम समय हुआ हो (गाय या भैंस)। "बाखरी" का उलटा।

अलवान—(संज्ञा, पु०, अ०) ऊनी चादर, जो जाड़े में ओढ़ी जाती है, दुशाला।

अलविदा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) विदाई, प्रयाण।

अलस—(वि०, दे०, सं०) आलसी, सुस्त, [हिं० अ+लस—चिपकाहट] लस या चिपकने की शक्ति से रहित। निस्सार, असार, तत्व-रहित। "अलस कमलिनी ने कलरव सुन"—मैथिली०।

अलसान, अलसानिॐ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० आलस] आलस्य, सुस्ती, शैथिल्य, शिथिलता, [**अरसान**—ब्र० प्रान्ती]। "अलसानि लखें इन नैननि कों"। "सजनी रजनी अवसान भये चख सानपगे अलसान लगे"।

अलसाना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अलस] आलस्य करना, सुस्ती में पड़ना, शिथिलता का अनुभव करना, सुस्त होना, [**अरसाना**—दे० ब्र०]। "सयन करब अब उचित लाल इत मम अँखयाँ

अलसानी"—रघु०। [वि० **अलसाया, अलसाने**; (स्त्री०) **अलसायी, अलसानी**]।

अलसानी—(वि०, स्त्री०, हि०) अलसाई हुई, सुस्त, आलस्य-युक्त, शिथिल, अरसाई (ब्र०)।

अलसित—(वि०, हि०) [सं० आलस्य] आलस्ययुक्त, सुस्ती से भरा हुआ, सुस्त, शिथिल। (वि०) [हि० अ+लसना] जो शोभा न दे, अशोभित, जो न लसे या सजे।

अलसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अतसी] एक प्रकार का पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है। इसी पौधे के बीज, तीसी। (वि०, स्त्री०) [अ+लसना] जो न छजती हो, अशोभित।

अलसेटꕥ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०)[सं० अलस] ढिलाई। व्यर्थ का विलम्ब, निरर्थक देर। टाल-मटूल, भुलावा, चकमा। बाधा, अड़चन। झगड़ा, तकरार, झमेला, कठिनाई, रोक। [**अरसेट**—दे०]।

अलसेटियाꕥ—(वि०, पु०) [हि० अलसेट] व्यर्थ के लिये देर या विलम्ब करने वाला। बाधक, टाल-मटूल करने वाला। झगड़ालू, रारी। [**अरसेटिया**—दे० **अलसेटी**—वि०]।

अलसेटी—(वि०, हि०, दे०) बाधा उपस्थित करने वाला, रोकने वाला। [स्त्री०—**अलसेटिन**]।

अलसौंहा—(वि०, दे०) [सं० अलस] आलस्ययुक्त। क्लांत, शिथिल, श्रान्त। नींद से भरा हुआ, उनींदा। [ब० व० **अलसौंहें अरसौंहे** स्त्री० **अलसौंही, अरसौंहीं** ब्र०]।

अलहदा—(वि०, अ०) जुदा, पृथक्, अलग, विलग, अलाहदा।

अलहदी—(वि०, अ०) देखो '**अहदी**'।

अलहनियाँ—(वि०, सं०) निकम्मा, अकर्मण्य।

अलहिया—(संज्ञा, स्त्री०) एक रागिनी का प्रकार।

अलाई—(वि०, दे०) [सं० अलस] आलसी, काहिल, सुस्त। (संज्ञा, स्त्री०) सुस्ती, आलस्य। अन्हौरी। (संज्ञा, पु०) घोड़े की जाति-विशेष।

अलाग—(वि०, दे०) [सं० अ+लगाव] बिना लगाव के। निर्दोष।

अलाज—(वि०, दे०) [हि० अ+लाज—लज्जा] बिना लज्जा के। निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया।

अलात—(वि०, सं०) अधजला, जलता हुआ काठ या लकड़ी। (संज्ञा, पु०) जलता हुआ पदार्थ।—**चक्र**—(पु०) किसी जलती हुई लकड़ी आदि के चारों ओर घुमाने से बनने वाला आग का एक चक्र या चक्कर। आग का घेरा, गोला या वृत्त।

अलान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आलान] हाथी के बाँधने का खूटा या सिक्कड़। बंधन, बेड़ी। हस्ति-बंधन। बैल चराने के लिये गाड़ी हुई लकड़ी। "नव-गयन्द रघुबीर-मन, राज अलान समान"—तुल०। (संज्ञा, पु०, दे०) [उ० एलान] घोषणा, मुनादी।

अलानिया—(क्रि०, वि०, दे०) [अ० एलान] खुल्लम खुल्ला, (दे०) प्रगट में, जाहिर में, सब की जानकारी मे, डंके की चोट पर, स्पष्ट रूप से कह कर, चिल्ला कर।

अलाप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अलाप] स्वर, राग, तान। बातचीत, वार्तालाप। [संज्ञा, पु० अलापन सं० **आलापन**]।—**अलापनहार**—(वि०) अलापने वाला, गाने वाला। [**अलापनहारो** ब्र०]। "अहि कराल केकी भषै, मधुर अलापनहार"—वृं०। [वि०, स्त्री० **अलापनहारी**]।

अलापना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० आलापन] बोलना। बातचीत करना। तान लगाना, गाना। स्वर देना या उठाना, स्वर का चढ़ाना (संगीत)। [**अलापनो, अलापबा**—ब्र०]।

अलापित—(वि०, दे०) [सं० आलापित] बात चीत किया हुआ। गाया हुआ, स्वर दिया हुआ। [वि० **अलापनीय**—अलापने के योग्य]।

अलापीꕥ—(वि०, दे०) [सं० आलापी] बोलने वाला, शब्द निकालने वाला। स्वर या राग उठाने वाला। "कोकिल कलापी ये अलापी पीर जानै नहीं"।

अलाब—(संज्ञा, पु०, दे०) आग का ढेर, अग्नि-राशि, अलाव।

अलाबु, अलाबू—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लौवा, कद्दू, तूँबा, तूमड़ी, तूमड़ी का बना हुआ बरतन।

अलाभ—(संज्ञा, पु०, सं०) लाभ का अभाव, हानि, क्षति।—**कारी**—(वि०) लाभ न करने वाला, हानि-कर।—**प्रद**—(वि०) जो लाभप्रद या लाभ करने वाला न हो, हानि कारक, फायदा न करने वाला, क्षतिकारी।

अलामꕥ—(वि०, दे०) [अ० अल्लामा] बात बताने वाला, बात गढ़ने वाला, मिथ्यावादी, गप्पी, गपो-ड़िया।

अलामत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लक्षण, चिह्न, आसार। "बारिश की अलामत है जो होती है हवा बंद"।

अलायकꕥ—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+लायक] नालायक, अयोग्य, असमर्थ, मूर्ख।

अलाय-बलाय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बलाय, फ़ा० बला—आपत्ति] आपत्ति, विपत्ति। खराबी, बुराई, विकार।

अलार—(संज्ञा, पु०, सं०) कपाट, किवाड़।* (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अलात] अलाव, आग का ढेर, आँवाँ, भट्ठी। (वि०, दे०) [हिं० अ+लार—राल] लार या राल (जो बच्चों के मुँह से बहती है) से रहित।

अलारम—(संज्ञा, पु०) संकट की घड़ी।—**घड़ी**—(स्त्री०) निर्धारित समय पर जिस घड़ी में घंटी बजती है।

अलाल—(वि०, दे०) [सं० आलस] आलसी, काहिल, सुस्त, अकर्मण्य, निकम्मा, निकाम (दे०) निरुद्यमी, जो उद्योग न करे, बेकाम। (वि०, दे०) [हिं० अ+लाल] जो लाल न हो।

अलाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अलस] अकर्मण्यता, आलस्य, निकम्मापन। [वि० अ+लाली—लालिमा] लालिमा-रहित, जिसमे लाली या ललाई न हो।—**मु०—आना, चढ़ना या सवार होना, — सूझना** — अकर्मण्यता आना, सुस्ती आना, निकम्मा हो जाना।

अलाव*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अलात] तापने के लिए जलाया हुआ अग्नि का ढेर, कौड़ा, अग्नि-राशि, भट्ठी।

अलावा—(क्रि०, वि०, अ०) सिवाय, अतिरिक्त।

अलास्य—(वि०, सं०) आलसी। नृत्य न करने वाला। अकर्मण्य।

अलाहदा—(वि०, अ०) पृथक्, बिलग, जुदा।

अलिंग—(वि०, सं०) लिंग-रहित, बिना चिह्न के, बिना लक्षण का, जिसकी कोई पहिचान न हो, या न बताई जा सके। (**संज्ञा, पु०**) ऐसा शब्द जो दोनों लिंगों में व्यवहृत या प्रयुक्त होता हो जैसे—हम, तुम, मै, वह, मित्र, ब्रह्म (व्याकरण)। [वि० **अलिंगी**—जिसमे लिंग या लक्षण न हो]।

अलिंगन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आलिंगन] आलिंगन, भेंटना, हृदय से लगाना।

अलिंगना*—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० आलिंगन] आलिंगन करना, भेंटना।

अलिंजर—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी रखने का बरतन या मिट्टी का घड़ा, झज्झर, घड़ा, मृत्पात्र, भांड।

अलिंद—(संज्ञा, पु०, सं०) मकान के बाहिरी द्वार के आगे का चबूतरा या छज्जा। (**संज्ञा, पु०, दे०**) [सं० अलींद्र] भ्रमर, भौंरा, मधुप, मलिंद, द्विरेफ। "मैं निज अलिंद में खड़ी थी सखि"—मैथिली०।

अलि—(संज्ञा, पु०, सं०) भौंरा, भ्रमर, द्विरेफ, मधुप। कोयल। [**क्वैलिया** ब्र०]। कौवा। बिच्छू। वृश्चिक राशि। कुत्ता। मदिरा। **अली** (ब्र० दे०)। "अली कलीही मैं रम्यौ"—बिहारी। "इहिं आसा अटके रहौ, अलि गुलाब के मूल"—बिहारी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) अली, आली, सखी। [स्त्री० **अलिनी**]। "राधा-माधव भूलिबो, अलि को अलि प्रति बैन"—दीन०।—**कुल**—(पु०) भौंरों का झुंड।—०**संकुल**—(पु०) कुब्ज नामक पौधा। —**जिह्वा,—जिह्विका**—(स्त्री०) घाँटी, गले के अंदर का कौआ।—**प्रिय,—वल्लभ**—(पु०) लाल कमल। —**विराव,—विरुत**—(पु०) भौंरे का गुंजन।

अलिक—(संज्ञा, पु०, दे०) ललाट, माथा, मस्तक। "लटकै अलिक, अलक चौकनी"।

अलिनि, अलिनी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अलि] भ्रमरी, मधुकरी, भौंरी। "गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी"—तुल०।

अलिपक—(संज्ञा, पु०, सं०) कोमल। शहद की मक्खी। कुत्ता। स्वान।

अलिप्त—(वि०, सं०) आसक्ति-रहित, जो लिप्त न हो, लगाव से शून्य। "रहकर भी जल-जाल में तू अलिप्त अरविन्द"—मैथली०।

अली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आली] सखी, सहेली। पंक्ति या कतार, अवली, अवलि, जैसे—पिकाली। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अलि] भौंरा।

अलीक—(वि०, सं०) मिथ्या, झूठ। मर्यादा-रहित। अप्रतिष्ठित। अरुचिकर। असार। [**अलीका** दे०]। "अलीक था जो अपना हुआ है"—मैथिली०। "लीन्ही मैं अलीक लीक, लोकनि तै न्यारी हौं"—देव०। "वचन तुम्हार न होइ अलीका"—तुल०। (संज्ञा, पु०, दे०) [अ+लीक] लीक या रास्ता से रहित, मार्ग-विहीन, कुमार्ग। अप्रतिष्ठा, अमर्यादा। [संज्ञा, स्त्री० **अलीकता**]।

अलीजा—(वि०, दे०) बहुत सा, प्रचुर, अधिक, पुष्कल।

अलीन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अलीन] द्वार के चौखट की खड़ी लंबी लकड़ी, साह, बाजू। दालान, या बरामदे के किनारे का खंभा जो दीवाल से सटा होता है। (संज्ञा, पु०) [अलीका ब० व०] (वि०) [सं० अ—नहीं+लीन—रत] अग्राह्य। अनुपयुक्त, अनुचित, बेजा। जो लीन न हो, विरत। [स्त्री० **अलीना**]।

अलीपित—(वि०, दे०) [सं० अलिप्त] जो लिप्त न हो। जो लोपा न गया हो। "रहत अलीपित तोय तैं, जैसे पंकज-पात"—दीन०।

अलीम—(वि०, अ०) जाननेवाला, ज्ञाता।

अलील—(वि०, अ०) बीमार, रुग्ण, रोगी, अस्वस्थ ।

अलीह—(वि०, दे०) [सं० अलीक] मिथ्या, असत्य, झूठ । अनुचित, अनुपयुक्त, अनृत । "एक कहहिं यह बात अलीहा"—तुल० । [संज्ञा, स्त्री० **अलीहता**] ।

अलुंज—(वि०, दे०) जो लुंज न हो, जो लंगड़ा न हो ।

अलुक्—(संज्ञा, पु०, सं०) समास का वह भेद जिसमें दो शब्दों के बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता, (व्याक०) जैसे, सरसिज, मनसिज ।

अलुझना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० अरुझना] अरुझना, उलझना, फँसना । भिड़ना, लड़ना । अटकना ।

अलुटना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अ + लुट—लोटना] लड़खड़ाना । लोटना । गिरना-पड़ना । (क्रि०, स०, दे०) उलटना, उलटा करना । [क्रि०, अ०, दे० **अलुठना** सं० **आलुंठन**] ।

अलुन—(वि०,दे०) [सं० अलौन, अलवण] अलौन, बिना नमक का, नमक-रहित, अलोन । लावण्य रहित, [सं० अ+लावण्य] । (वि०) [सं० अ+लून्—छेदन] बिना छेदा हुआ, बिना काटा हुआ, [अलून] ।

अलुप्त—(वि०) [सं० अ+लुप्त] जो लोप न हो, प्रगट, व्यक्ति, प्रकाशित, जो छिपा न हो, अलोप ।

अलुमीनम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० एलुमीनियम] एक प्रकार की हलकी धातु जो नीलापन लिए हुए सफेद होती है, और जिसके बरतन बनाये जाते हैं । [अलमोनम] ।

अलूप—(वि०, दे०) [सं० लुप्त] लुप्त, लोप, छिपा हुआ ।

अलूपी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक नाग-कन्या जो अर्जुन को व्याही थी (म० भा०) ।

अलूम—(वि०, दे०) पूँछ-रहित ।

अलूल-जलूल—(क्रि०, वि०) [अनु०] ऊट-पटांग, अंड-बंड, अटाँय-सटाँय ।

अलूला*—(संज्ञा, पु०,दे०)[हिं० बुलबुला] बबूला । भभूका, लपट । बुलबुला ।

अलेख—(वि०, सं०) जिसके सम्बन्ध में कोई भावना या विचार न हो सके, दुर्बोध, अज्ञेय, जो लिखने के योग्य न हो । जिसका लेखा न लगाया जा सके । अगणित, अपरिमित, बेहिसाब । बिना सोचा-विचारा । (वि०, दे०) [सं० अलक्ष्य] अदृष्ट, अदृश्य, जो न देखा जा सके । बिना देखा हुआ । (संज्ञा, पु०) [सं० अ+लेख] बुरा लेख । लेखरहित ।—**मुहा०—करना**-लिखे हुए को मिटा देना । बिना देखा करना, अदेख करना । [यौ० **लेख-अलेख**] ।

अलेखा*—(वि०, दे०) [सं० अलेख] बेहिसाब । व्यर्थ । निष्फल । अगणित । "उपजावत ब्रह्मांड अलेखे"—छत्र० ।

अलेखी*—(वि०, दे०) [सं० अलेख] बेहिसाब काम करने वाला । ऊटपटाँग काम करनेवाला, गड़बड़ मचाने वाला । अंधेर करने वाला, अन्यायी, अत्याचारी, अंधाधुंध मचाने वाला । (वि०, स्त्री०) बेहिसाब, जिसका लेखा न लगाया जा सके । बिना सोची-बिचारी हुई । न देखी हुई ।

अलेपक—( ) निर्लिप्त, निष्कलंक (पु०) परब्रह्म ।

अलेपित—(वि०, दे०) [सं० आलेपित] लेप किया हुआ, ऊपर चढ़ाया हुआ, लीपा हुआ, आलिप्त । [अ + लेपत] अलिप्त, लेपन न किया हुआ, न लीपा हुआ ।

अलेश, अलेस—(दे०,वि०) [सं० अ+लेश] अशेष, अरंचक ।

अलेस-कलेस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कलेश+अनु०] क्लेश, कष्ट, कठिनाई आदि । (यौ०)—क्लेश का लेश नहीं ।

अलैकपलवा—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) अलीक प्रलाप, बकवाद, झूठ कथन, मिथ्यावाद ।

अलैया-बलैया—(संज्ञा,स्त्री०,सं०) निछावर होना । खेल विशेष । (यौ०)—अलाय बलाय ।

अलोक—(वि०,सं०) जो देखने में न आवे, अदृश्य । निर्जन, एकान्त । पुण्यहीन । (संज्ञा,पु०) पातालादि लोक । परलोक । कलंक, अपयश, निंदा । मिथ्या दोषारोपण । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आलोक] प्रकाश, प्रभा, कांति, दीप्ति, प्रतिभा । "लीन्ह्यों है अलोक लोक-लोकन तै न्यारी हौ"—देव० । "लोक लोकन मे अलोक न लीजिए रघुराय' —केश० । (वि०)—लोकाभाव, बुरा लोक ।

अलोकना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आलोकन] देखना, ताकना, अवलोकन या विचार करना । [संज्ञा, पु० **अलोकन**] ।

अलोकनीय—(वि०, दे०)[सं० आलोकनीय] प्रकाशनीय । देखने योग्य ।

अलोकित—(वि०, दे०) [सं० आलोकित] प्रकाशित, प्रभायुक्त, कांतियुक्त, चमकीला, प्रदीप्त ।

अलोक्य—(वि०) असामान्य । जिसे स्वर्ग न मिल सके ।

अलोचन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आलोचन]

देखना, विवेचन करना, आलोचन, नुक्ताचीनी। (संज्ञा, स्त्री०) [दे० अलोचना] [सं० आलोचना] गुण दोष-प्रकाशन, दोषा-दोष विवेचना। (वि०) [अ+लोचन] बिना नेत्र के, नेत्रहीन।

अलोचनीय—(वि०, दे०) [सं० आलोचनीय] विवेचनीय, देखने योग्य।

अलोचित—(वि०, दे०) [सं० आलोचित] विवेचित, नुक्ता-चीनी किया हुआ।

अलोन—(वि०,दे०) [सं० अ+लवण] बिना नमक के, बिना लवण के, लवण-रहित। लावण्य-हीन [**अलोना** दे०]।

अलोना—(वि०, दे०) [सं० अलवण] नमकरहित, जिसमें नमक न पड़ा हो, जिसमें नमक न खाया जाय (एक प्रकार का व्रत)। फीका, स्वाद-रहित, बेमजा, बेजायका "खिलाऊं किसे मै अलोना.सलोना" —मैथिली०। [विलो० **सलोना**] लावण्य-विहीन। जहाँ लोना न लगा हो। [स्त्री० **अलोनी**]।

अलोप—(वि०, दे०) [सं० लोप] लोप, छिपा हुआ, लुप्त, अदृश्य। "भा अलोप पुनि दिस्टि न आवा" —जायसी। (वि०) [अ+लोप] प्रगट, अलुप्त, न छिपा हुआ। [वि० **अलोपित**]।

अलोपी—(वि०, दे०) अलुप्ता, लोप न होने वाला।

अलोभ—(वि०, सं०) लोभ-रहित, निर्लोभ, लालच-विहीन, जो लालची न हो, अलोभी। (**संज्ञा, पु०** लोभाभाव)।

अलोभी—(वि०, सं०) लोभ-रहित, संतोषी, जिसमें लालच न हो। "शंका थी तुझमे यही अपूर्व अलोभी"—मैथिली०।

अलोम, अलोमक—(वि०, सं०) लोम-रहित, निर्लोम, बाल से विहीन, बिना बालों का।

अलोय—(वि०, दे०) बिना आँख के, लोचन-रहित, अंधा।

अलोल—(वि०, सं०) अचंचल, स्थिर, दृढ़।

अलोलिक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अलोल] अचंचलता, स्थिरता, धरीता, स्थैर्य, अचांचल्य। [वि० **अलोलित**]।

अलोलित, अलोड़ित—(वि०, दे०) [सं० अलोल, अलोड़न] जो मथा न गया हो, बिना बिलोड़ा हुआ, अचंचलीकृत।

अलोलु—(वि०, सं०) विषयों से तटस्थ। विरक्त।

अलोहित—(वि०, सं०) जो लाल न हो।

अलौकिक—(वि०,सं०) जो इस लोक से संबंध न रक्खे, इस लोक में न प्राप्त होने वाला, लोकोत्तर, अनोखा, अद्भुत, अपूर्व। अमानवीय, अमानुषी। सर्व श्रेष्ठ, दिव्य। "मन बिहँसे रघुवंसमनि, प्रीति अलौकिक जानि"—तुल०।—**वाद**-(संज्ञा, पु०) लोकोत्तर-वाद, दैवीशक्ति में विश्वास। [सुपरनेचुरलिज्म]। —**वादी**-(पु०, यौ०) दैवी शक्ति में विश्वास करने वाला [सुपरनेचुरलिस्ट]।

अल्टिमेटम—(संज्ञा, पु०, अं०) एक देश या राज्य का अन्य देश या राज्य से अंतिम प्रस्ताव, जिसके स्वीकृति न होने पर संग्राम अनिवार्य हो जाता है।

अल्ताफ़—(संज्ञा, पु०, अ०) लुत्फ़ का ब० व० मेहरबानियाँ, कृपाएँ।

अल्प—(वि०, सं०) थोड़ा, कम। छोटा। कुछ, किंचित, लघु। "अल्प काल विद्या सब आई"—तुल०। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें आधेय की अपेक्षा। आधार की अल्पता या छोटाई दिखलाई जाती है। [दे० **अलप**—अकाल-मृत्यु-भय]।—**कालीन**-(वि०) थोड़े समय की, थोड़े समय तक रहने वाली।—**जनतंत्र**-(पु०) कुलीन-तंत्र, अल्प-जन संचालित राज्य। (ऑलीगार्की)। —**जीवी**-(वि०) कम आयु वाला, अल्प समय तक जीने वाला, अल्पायु। "जीवै अल्पजीवी तो मैं"—द्विजेश।—**ज्ञ**-(वि०) थोड़ा ज्ञान रखने वाला, ना समझ। [वि० **अल्पज्ञानी, अल्पज्ञाता, अल्पविद्**]।—**धी**-(वि०) मंद बुद्धि।—**प्राण**-(पु०) व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण या अक्षर, तथा य, र, ल, व, जिन वर्णों के उच्चारण मे प्राणवायु का उपयोग कम किया जाय।—**बुद्धि**-(स्त्री०) मन्दबुद्धि, निर्बुद्धि, कम-समझ, असमझ, मन्द मति। (वि०) मूर्ख, अबोध, नासमझ, मूढ़।—**वयस्क**-(वि०) थोड़ी या छोटी अवस्था वाला, कम उम्र, कमसिन।—**वयस**-(दे०) —**वयस्का**-(वि०) थोड़ी वयस वाली।—**विषया**-(वि०) अल्प विषयों को समझने वाली, साधारण बातो या विषयों का बोध करने वाली बुद्धि। "क चाल्पविषया मतिः"—कालि०।—**संग**-(संज्ञा, पु०) थोड़ा संग करने वाला।—**संगी**-(संज्ञा) थोड़े समय का साथी।—**संतोषी**-(वि०) कम में ही संतुष्ट हो जाने वाला।—**सार**-(वि०) कम दाम का।—**स्वाप**-(पु०) विश्राम के लिए अपर्याप्त स्थान अथवा अवसर।

अल्पक—(वि०) स्वल्प, थोड़ा, लघु।

अल्पज्ञता—(संज्ञा, स्त्री०) नासमझी, मूर्खता।

अल्पता—(संज्ञा, पु०) कमी, न्यूनता, छोटाई, ऊनता। [संज्ञा, दे० **अल्पताई**]।

अल्पत्व—(संज्ञा, पु०) अल्पता, कमी, संकीर्णता।

अल्पशः—(क्रि०, वि०) थोड़ा-थोड़ा करके, धीरे-धीरे, क्रमशः, शनैः शनैः ।

अल्पांश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) थोड़ा या छोटा टुकड़ा, अति लघु अंश या भाग ।

अल्पारम्भ—(संज्ञा, पु०, सं०) लघु स्तर पर श्री-गणेश ।

अल्पाहार—(वि०) जिसका भोजन स्वल्प हो ।

अल्पित—(वि०) लघु रूप में गृहीत, तिरस्कृत, निरादृत ।

अल्पेतर—(वि०) जो लघु न हो, अधिक, बहुत ।

अल्पात्यल्प—(वि०, यौ०) [सं० अल्प+अति+अल्प] बहुत थोड़ा, बहुत कम । अति छोटा, अत्यन्त न्यून, अल्पाल्प ।

अल्पायु—(वि०, यौ०, सं०) थोड़ी आयु वाला, जो छोटी अवस्था में मर जाये, अल्पावस्था वाला ।

अल्ल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आल] वंश का नाम, उपगोत्र का नाम, जैसे, पांडे, शुक्ल, दुबे, (द्विवेदी) त्रिपाठी ।

अल्ल-बल्ल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु०] अटॉय-सटॉय, अंडबंड ।

अल्लम-गल्लम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु०] अनाप-शनाप, व्यर्थ का बकवाद, प्रलाप, अंडबंड (भोजन) अंट-संट । [**अगड़म-बगड़म** दे०] ।

अल्ला, अल्लाह—(संज्ञा, पु०, अ०) ईश्वर, खुदा, भगवान ।

अल्लाना, अललानाॐ§—(क्रि०, अ०, सं०) जोर से चिल्लाना, गला फाड़कर बोलना ।

अल्लामा§—(वि०, स्त्री०) [अ० अल्लामा] लड़की, कर्कशा स्त्री ।

अल्लाह—(संज्ञा, पु०, अ०) परमात्मा, ईश्वर ।—**ताला**-(पु०) भगवान् ।—**मियां की गाय**-सरल स्वभाव वाला ।—**अल्ला हो अकबर**-(अव्य०) ईश्वर महिमामय है । इस्लाम का प्रधान उद्घोष ।

अल्हजाॐ—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० अलहज़ल] इधर-उधर की बात-चीत, गप्प, ऊटपटांग बातें ।

अल्हड़—(वि०, दे०) [सं०—बहुत+लल—चाह] मनमौजी, लापरवाह, अनुभव-रहित, उजड्ड, असावधान, व्यवहार ज्ञान-शून्य । उद्धत । अनारी, गॅवार, रीति-नीति न जानने वाला, तौर-तरीका न जानने वाला । भोला-भाला । (संज्ञा, पु०) नया बैल या बछड़ा जो हल में निकाला न गया हो । [सं० **अलहण**] ।

अल्हड़पन—(संज्ञा, पु०) [हिं० अल्हड़+पन—प्रत्य०] बेपरवाही, मनमौजीपन, भोलापन । अक्खड़ता, उद्दंडता, उद्धतपन, उजड्डता, व्यवहार-ज्ञान-शून्यता । "क्या खूब तेरी साक़ी अल्हड़पने की चाल ।"

अल्हर—(वि०, दे०) कोमल, मुलायम ।

अवंतिका—(संज्ञा, स्त्री०) प्राचीन उज्जयिनी ।

अवंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उज्जैन, उज्जयिनी, (यह सात प्रधान पुरियों में से एक है) ।

अवंद्य—(वि०, सं०) अवंदनीय, अपूज्य, वंदना के अयोग्य, असेवनीय, अनभिनंदनीय ।

अवंध्य—(वि०, सं०) सुकुल, कुलवान ।

अवंश—(संज्ञा, पु०, सं०) वंश-हीन, निस्संतान । बॉस-विहीन । जिसके वंश का ठीक पता न हो । [संज्ञा, स्त्री० **अवंशता**] ।

अव—(उप०, सं०) एक उपसर्ग, जिस शब्द के पूर्व यह लगता है उसके अर्थ में यह इस प्रकार के अन्यार्थों की योजना कर देता है । १—**निश्चय—जैसे-अवधारण, २—अनादर—जैसे—अवज्ञा, ३—न्यूनता या कमी—जैसे—अवघात, ४—निचाई या गहराई—जैसे—अवतार, अवक्षेप, ५—व्याप्ति— जैसे — अवकाश, अवगाहन ।** इसका प्रयोग उक्त तथा इन अर्थों में विशेष होता है—आलम्बन विशेष, विज्ञान, शुद्धि, अल्प, परिभव, नियोग, पालन, भेद, अभाव । [अव्य०* दे०, **अउ, अउर, और औ, अवर** प्रान्ती०] ।

अवकथन—(संज्ञा, पु०, सं०) [अव+कथ्+अनट्] स्तुति, उपासना, प्रसादक वाक्य, प्रसन्न करने वाला कथन । [वि०—**अवकथित, अवकथनीय**] ।

अवकर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) सूत बनाने का एक यंत्र, चरखा । खंडीकरण, विभाजन ।

अवकर्षण—(संज्ञा, पु०) [सं० अव+कृष्+अनट्] उद्धार, निष्कर्षण, बाहर खींचना ।

अवकलन—(संज्ञा, पु०, सं०) इकट्ठा करके मिलाना । देखना, जानना । ज्ञान । ग्रहण ।

अवकलनाॐ—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अवकलन] ज्ञान होना, समझ पड़ना, सूझना । "मोहिं अवकलत उपाय न एकू"—तुल० ।

अवकलित—(वि०, सं०) समझा या सूझा हुआ, ज्ञात, विदित । [वि० **अवकलनीय**] ।

अवकाश—(संज्ञा, पु०) [सं० अव+काश+अल्] अवसर, समय । विश्राम-काल, सुभीता, छुट्टी का समय । रिक्त स्थान । आकाश, अंतरिक्ष, शून्य-स्थान । अंतर, फ़ासिला, दूरी । फ़ुर्सत का वक्त, खाली वक्त । [**अवकास** दे०] ।—**ग्रहण**-(पु०) काम या नौकरी

से अलग होना, पेंशन लेना, रिटायर होना।—**प्राप्त**—(वि०) जो काम या नौकरी से अलग हो चुका हो [रिटायर्ड]। **मुहा०—ग्रहण करना**—छुट्टी लेना, विश्राम करना, या लेना।—**वेतन**—छुट्टी की अवधि का वेतन [लीव सैलरी]।—**होना (या न होना)**—समय का खाली होना, फुर्सत रहना।—**मिलना**—छुट्टी मिलना, वक्त का खाली बचना, समय रहना।—**रहना**—छुट्टी रहना, खाली वक्त रहना, फुर्सत होना। "कोउ अवकास कि नभ बिनु पावै"—तुल०।—**सवेतन**—वेतन सहित छुट्टी, वैतनिक अवकाश [लीव आन एवरेज पे]।—

अवकिरण—(संज्ञा, पु०, सं०) बखेरना, बिखराना, फैलाना, छितराना, बिखेरना।

अवकीर्ण—(वि०) [सं० अव + कृ + क्त] फैलाया या बखेरा हुआ, छितराया हुआ। नाश किया हुआ, नष्ट। चूर-चूर किया हुआ। विक्षिप्त। अनादृत। [वि० **अवकीर्णित, अवकीर्णक**]।

अवकीर्णी—(वि०) [सं० अव + कृ + क्त + इन्] क्षतव्रत, नियम-भ्रष्ट व्रत, निषिद्ध वस्तुओं के संसर्ग से जिसका व्रत भ्रष्ट हो गया हो, अयोग्य वस्तु-सेवी मनुष्य।

अवकुंचन—(संज्ञा, पु०) [सं० अव + कुच + अनट्] वक्रीकरण, टेढ़ा करना, मोड़ना, मरोड़ना। (वि०) **अवकुंचित**—मोड़ा हुआ। [वि०—**अवकुंचनीय**]।

अवकुंठन—(संज्ञा, पु०) [सं० अव + कुंठ + अनट्] साहस-परित्याग, भीरु होना, असाहसी होना। कायरता।

अवकुंठित—(वि०, सं०) असाहसी, कापुरुष, कायर, भीरु, कादर।

अवकुठार—(पु०) रूप-विकार, वैरूप्य। (वि०) बहुत गहराई वाला।

अवकुत्सित—(वि०) निन्दा-योग्य। (पु०) निन्दित व्यक्ति।

अवकृष्ट—(वि०) [सं० अव + कृष्] खींचा हुआ, समाकृष्ट, अवकर्षित।

अवकेशी—(वि०, सं०) बाँझ, बन्ध्या, पुत्रहीन, निस्संतान, निष्पुत्र।

अवक्खन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अवेक्षण] देखना, अवलोकन।

अवक्तव्य—(वि०) [सं० अ + वच् + तव्य] अकथ्य, न कहने योग्य, जो वक्तव्य या कथनीय न हो।

अवक्रंदन—(संज्ञा, पु०) [सं० अव + क्रंद + अनट्] जोर से क्रन्दन करना या चिल्लाना, चिल्ला कर रोना।

अवक्रंदक—(वि०) क्रन्दन करने वाला। [वि०—**अवक्रंदनीय**]।

अवक्रम—(पु०) पतन, स्खलन, अधोगमन।

अवक्रमण—(पु०) गर्भ में आगमन (जैनियों और बौद्धों के मत से)।

अवक्रय—(पु०) दाम, भाड़ा, पारिश्रमिक, महसूल।

अवक्रान्ति—(स्त्री०) देखो 'अवक्रम'।

अवक्रीतक—(वि०) मँगनी प्राप्त।

अवक्रुष्ट—(वि०) [सं० अव + क्रुश + क्त] भर्त्सित, निंदित। मंदध्वनित। कुशब्द-युक्त, गाली दिया हुआ।

अवक्रोष—(संज्ञा, पु०, सं०) भर्त्सना, निन्दा, गाली, आक्रोशन। [वि०—**अवक्रोषित**]।

अवक्लिन्त—(वि०) जल-संसर्ग-प्राप्त, गीला, तर, भीगा।

अवक्लेद—(पु०) स्राव।

अवक्षय—(पु०) नाश। तबाही।

अवक्षिप्त—(वि०) निंदित, कलंकित।

अवक्षुत—(वि०) जिस पर छींक पड़े।

अवक्षेप—(पु०) निंदा, लांछन, कलंक।

अवक्षेपण—(पु०) दोषारोपण। किसी वस्तु से प्रसार प्राप्त करते समय प्रकाश-किरणों का वक्रता-धारण।

अवक्षेपणी—(स्त्री०) लगाम।

अवखंडन—(संज्ञा, पु०, सं०) खनना, खोदना। (वि०) अपखंडित।

अवगत—(वि०, सं०) विदित, ज्ञात, जाना हुआ, मालूम। नीचे गया हुआ, गिरा हुआ। परिचित, जाना-बूझा।

अवगतना*—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० अवगत + ना —हि० प्रत्य०] समझना, विचारना, सोचना, जानना, ताड़ना।

अवगति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुद्धि, धारणा, समझ, बुरी गति, दुर्गति, विज्ञता, ज्ञान, बोध, गमन।

अवगणना—(संज्ञा, पु०, सं०) निंदा, अप्रतिष्ठा, अनादर।

अवगथ—(वि०) सवेरे जिसने स्नान किया हो।

अवगम, न—(पु०) पक्का ज्ञान।

अवगलित—(वि०) पतित।

अवगाढ़—(वि०) [सं० अव + गाह + क्त] निमज्जित, कृत स्नान। प्रविष्ट। छिपा हुआ। गाढ़ा, घना, निविड़।

अवगारना*—(क्रि०, सं०, हि०) [सं० अव + गृ] समझाना, बुझाना, जताना।

अवगाह*—(वि०, दे०) [सं० अवगाध] अथाह,

बहुत, गहरा। "तिमि खुपति महिमा अवगाहा"—तुल०। *अनहोना, कठिन। "तोरेहु धनुष ब्याह अवगाहा"—तुल०। (संज्ञा, पु०) गहरा स्थान। संकट का स्थान। कठिनाई, कठिनता, कष्ट। प्रवेश। जल-प्रवेश। हिलना। जल में हल कर स्नान करना। [वि०—**अवगाहित**]।

अवगाहन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्नान करण, निमज्जन, जल-प्रवेश, जल में पैठ कर नहाना। मंथन। विलोड़न। डुबकी, गोता। खोज, छान-बीन। चित्त लगाना, लीन होकर विचार करना। (संज्ञा, पु०) अथाह जल, गहरा स्थान। अनन्त जिसके तल का पता न हो। [वि० **अवगाहनीय**]।

अवगाहना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अवगाहन] हल कर या पैठ कर जल में नहाना, निमज्जन करना। जल में पैठना, धँसना, मग्न होना, स्नान करना। हलचल मचाना, चलाना, हिलाना, देखना, सोचना-विचारना। धारण करना, ग्रहण करना। "दिसि विदिसन अवगाहि कै, सुख हो केसव दास"—रा० चं०।

अवगाहित—(वि०) जिसने स्नान किया हो। जिसमें स्नान किया जाय (नदी, जलाशय आदि)।

अवगाह्य—(वि०) स्नान, मज्जन करने योग्य।

अवगीत—(संज्ञा, पु०, सं०) निंदा, दोष-दुष्ट, अति निंदित, लांछित, सदोष।

अवगुंठन—(संज्ञा, पु०, सं०) ढकना, छिपाना। रेखा से घेरना। घूँघट, बुर्का।

अवगुंठनवती—(वि०, स्त्री०, सं०) घूँघटवाली।

अवगुंठित—(वि०, सं०) ढँकी, छिपी, घिरी हुई।—**अवगुंठनीय**—छिपाने के लायक। [स्त्री०—**अवगुंठिता, अवगुंठनीया**]।

अवगुंडित—(वि०) चूर-चूर किया हुआ।

अवगुंफन—(संज्ञा, पु०) गूँथना। बुनना।

अवगुंफित—(वि०) ग्रन्थित, गुँथा हुआ, बुना हुआ।

अवगुण—(संज्ञा, पु०, सं०) दोष, ऐब, बुराई खोटाई, दुर्गुण [**औगुन**—दे०, ब्र०]।—**अवगुणी**—(वि०) दुर्गुणी, सदोष, बुरा। [**औगुनी**—दे०]।

अवगुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अवगुण] दोष, कुलक्षण। अपराध, औगुन। **मुहा०**—**अवगुन, औगुन करना**—हानि करना।

अवगूहन—(संज्ञा, पु०, सं०) आलिंगन, आश्लेप। सप्रेम परस्पर अंग-स्पर्शन। भेंटना, अंक भरना।

अवगूहनीय—(वि०, सं०) आलिंगन के योग्य, भेंटने के लायक, परिरंभणीय।

अवगूहित—(वि०, सं०) आलिंगित आश्लेषित, परिरंभित।

अवग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) रुकावट, अड़चन, बाधा। वर्षा का अभाव, अनावृष्टि। बाँध, बंद। संधि-विच्छेद (व्याक०)। अनुग्रह का उलटा। स्वभाव, प्रकृति। कोसना, शाप। ग्रहण। अपहरण। हाथी का मस्तक। हस्तिवृन्द, प्रतिबन्धक।

अवग्रहण—(पु०) रोक, तिरस्कार।

अवघट—(वि०, दे०) [सं० अव+घट्ट—घाट] विकट, दुर्गम, कठिन। "अवघट घाट बाट गिरि कंदर"—तुल०। (वि०,दे०) अड़बड़, ऊँचा-नीचा। टूटा-फूटा, [**औघट**—दे०]।

अवघट्ट—(पु०) गुफा, बिल, माँद, चक्की।

अवघर्षण—(पु०) रगड़, पिसाई। मार्जन।

अवघात—(संज्ञा, पु०) [सं० अव+हन्+घञ्] अपघात, अपमृत्यु।

अवघोटित—(वि०, सं०) सब ओर ढका हुआ।

अवघोषक—(संज्ञा, पु०, सं०) असत्य समाचार या अफवाह फैलाने वाला।

अवचट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अव+चट—जल्दी हि०] अनजान, अचक्का। कठिनाई, अंडस। औचक, अचानक। संकट। [**औचट** दे०]। (क्रि०, वि०) अकस्मात, एकाएक, अनजान मे, अचानक।

अवचनीय—(वि०, सं०) अश्लील। अनिन्दनीय। कहने के योग्य नहीं।

अवचर—(वि०, सं०) एक दृष्टि। औचक, अचानक, एक बारगी। [**औचर**—दे०]।

अवचेतना—(स्त्री०, सं०) अन्तर की चेतना।

अवचेष्टा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मंद चेष्टा। अनारीपन।

अवच्छिन्न—(वि०, सं०) अलग किया हुआ, पृथक्। विशेषण-युक्त। सीमाबद्ध, अवधि-सहित।

अवच्छेद—(संज्ञा, पु०, सं०) अलगाव, भेद। हद, सीमा। अवधारण। छान बीन। परिच्छेद, विभाग [सीवरेन्स]।

अवच्छेदक—(वि०, सं०) भेदकारी, अलग करने वाला, हद या सीमा बाँधने वाला, अवधारक, निश्चय करने वाला। (संज्ञा, पु०) विशेषण।

अवच्छेदन—(संज्ञा, पु०, सं०) विभाजन। काट कर विभाजित करने की क्रिया।

अवच्छेद्य—(वि०, सं०) अवच्छेद के योग्य, विभाजनीय। छानबीन करने के योग्य। सीमा के लायक। [**अवच्छेदनीय**—दे०]।

अवछंग*—(संज्ञा, पु०, दे०) उछंग। उमंग, उत्साह, गोद। "सो लीनों अवछंग जसोदा अपने भरि भुज-दंड"—सूर०।

अवज्ञा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपमान, अनादर। आज्ञा न मानना। अवहेलना। पराजय, हार। उपेक्षा, अमान्य करण। "साधु अवज्ञा कर फल ऐसा"—तुल०। (संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु के गुण-दोष से दूसरी वस्तु को गुण-दोष का न प्राप्त होना सूचित किया जाय।

अवज्ञात—(वि०, सं०) अपमानित, अनादृत, अवहेलित, तिरस्कृत।

अवज्ञान—(संज्ञा, पु०, सं०) तिरस्कार। आज्ञा न मानने का भाव।

अवज्ञेय—(वि०, सं०) अपमान के योग्य, तिरस्कार के योग्य, अनादरार्ह।

अवट—(संज्ञा, पु०, दे०) छिद्र। नटवृत्ति से जीवन बिताने वाला। गर्व, गरूर। [**अवँट**—दे०]।

अवटना—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० आवर्तन] मथना, आलोड़ित करना। किसी द्रव पदार्थ को आग पर चढ़ाकर गाढ़ा करना। [**औटना** दे०]। "धौंरी धेनु दुहाइ छानि पय मधुर आँच मैं अवटि सिरायौ"—सूबे०। **मुहा०—अवट मरना**—मारे मारे फिरना। "जो आचरन बिचारहु मेरो कल्प कोटि लगि अवटि मरौं"—विन०। **अवट डालना**—खूब मथ डालना, छान-बीन कर डालना। (क्रि०, अ०) घूमना, फिरना, चक्कर लगाना। [**पु०, का० अवटि, औटि** दे० अ०]।

अवडर—(संज्ञा, पु०, दे०) बुरा डर। बदनामी का भय।

अवडेर—(संज्ञा, पु०, दे०) फेर, चक्कर। झंझट। धोखा, कपट, छल, बहकाव। बखेड़ा। **रंग मे भंग**।

अवडेरना*—(क्रि०, सं०, दे०) [हिं० अवडेर] फेर में डालना, झंझट, झमेले मे फँसना। शान्ति-भंग करना, तंग करना। त्याग करना। बसने न देना। "पुनि अवडेरि मरायेन्हि ताही"—तुल०। "पोषितोषि आपने न थापि अवडेरिए"—कविता०।

अवडेरा—(वि०, दे०)[हिं० अवडेर] चक्करदार। फेरफार वाला, झंझट वाला, बेढब, बेढङ्गा, बेतुका।

अवढर—(वि०, सं०) नीच पर भी ढलने या दया करनवाला। बिना बिचारे दया करनेवाला, परम दयालु। और (दे० अ०)। "महादेव तुम अवढर दानी"—तुल०।

अवतंस—(संज्ञा, पु०, सं०) भूषण, अलंकार। शिरोभूषण, टीका, मुकुट। कर्ण-भूषण। शिरपेंच, चूड़ामणि। माला। श्रेष्ठ-व्यक्ति सब से उत्तम हार। बाली, मुरकी, कर्णफूल। दूल्हा। "कसन राम तुम कहहु अस हंस बंस अवतंस।"

अवतंसित—(वि०, सं०) आभूषित, अलंकृत, विभूषित।

अवतक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी वस्तु को काट कर खंड-खंड करना।

अवतमस—(संज्ञा, पु०, सं०) अस्पष्टता। थोड़ा अँधेरा।

अवतरण—(संज्ञा, पु०, सं०) उतरना। पार होना। जन्म ग्रहण करना। अवरोहण। नमूना, नकल, प्रतिकृति। अनुकृति, प्रादुर्भाव। सीढ़ी, घाट। [**संज्ञा, पु० अवतार, अवतरन** दे०। वि० **अवतरणीय**]।

अवतरणिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रस्तावना, भूमिका, उपोद्घात। परिपाटी। आभास। वक्तव्य। विषय की पूर्व सूचना, अनुवाद, भाषान्तर, प्राक्कथन।

अवतरणी—(स्त्री०, सं०) प्रस्तावना। परम्परा।

अवतरना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अवतरण] प्रगट होना, उत्पन्न होना, जन्म लेना। प्रकाशित होना। अवतार लेना। "धर्म-हेतु अवतरेउ गोसाईं"—तुल०।

अवतरित—(वि०, सं०) अवतार लिया। नीचे आया हुआ, उतरा हुआ। जन्म लिया हुआ। [वि० **अवतीर्ण**]। अवतरित हुआ मैं—मैथिली०।

अवताड़न—(संज्ञा, पु०, सं०) ताड़ना देना। कुचलना, दबाना।

अवतान—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रसार। धनुष की डोरी। आवरण।

अवतर्पण—(संज्ञा, पु०, सं०) शान्तिप्राप्ति के उपचार।

अवतार—(संज्ञा, पु०, सं०) अधः पतन। उतरना। नीचे आना। जन्म। शरीर ग्रहण। देवताओं का मनुष्यादि सांसारिक प्राणियों के शरीर को धारण करके संसार मे आना। देहान्तर-धारण। *सृष्टि करण। धर्म-स्थापनार्थ भगवान ने २४ बार भिन्न-भिन्न रूप में अवतार ग्रहण करके पृथ्वी पर लीलाएँ की हैं। इन २४ अवतारों मे से दस अवतार प्रमुख माने जाते हैं—मत्स्य, कच्छप, बराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, रामचन्द्र, श्रीकृष्ण, बुद्ध और कल्की।

अवतारण—(संज्ञा, पु०, सं०) उतारना, नीचे लाना। नकल करना, उदाहृत करना। [स्त्री० **अवतारणा**]।

अवतारना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० अवतारण] उत्पन्न करना, प्रगटाना। रचना। जन्म देना। प्रका-

शित करना। उत्पादित करना। "धन्य घरी जेहि तुम अवतारी"—सुबे०।

अवतारित—(वि०, सं०) प्रगटाया हुआ, उत्पन्न किया हुआ। जन्म दिया हुआ, उत्पादित।

अवतारी—(वि०, दे०) [सं० अवतार] उतरने वाला। देवांशधारी, अलौकिक, दिव्य शक्ति-सम्पन्न, ईश्वरीय गुणधारी।

अवतीर्ण—(वि०, सं०) अविमूढ़। आविर्भूत। उपस्थित। उत्तीर्ण। उत्पन्न, प्रगट, प्रादुर्भूत। "तुम हुए जहाँ अवतीर्ण देव !"।

अवदशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्दशा। कुदशा, बुरी हालत, दुरवस्था।

अवदात—(वि०, सं०) उज्ज्वल, श्वेत। शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल। गौर, शुक्ल वर्ण का। पीत, पीला। शुभ्र। "निखर भो जस अवदात" "कहियो हमसों जस अवदात"—के०।

अवदान—(संज्ञा, पु०, सं०) जलन, ताप। गर्मी की ऋतु।

अवदान—(संज्ञा, पु०, सं०) शुद्धाचरण। अच्छा कार्य। खंडन, तोड़ना। त्याग, उत्सर्ग। निवेदन। कुत्सित दान। वध, मार डालना। पराक्रम, शक्ति, बल। अतिक्रम, उल्लंघन। पवित्र करना, स्वच्छ या निर्मल बनाना, विमलीकरण।

अवदान्य—(वि०, सं०) पराक्रमी, बली। अतिक्रमण-कारी, उल्लंघन करने वाला। सीमा से बाहर जाने वाला। कंजूस, जो बदान्य या दानी न हो, अनुदार।

अवदारण—(संज्ञा, पु०, सं०) विदीर्ण करना। तोड़ना, चूर करना। फाड़ना, मिट्टी खोदने का रम्भा, खंता। [वि० **अवदारणीय**]।

अवदारित—(वि०, पु०, सं०) विदीर्ण किया हुआ। तोड़ा हुआ। चूर किया हुआ। फाड़ा हुआ।

अवदीच्य—(वि०, दे०) गुजराती ब्राह्मणों की एक विशेष शाखा, उत्तर भारत मे रहने वाले ब्राह्मण जो गुजरात में रहने लगे वे औदीच्य या अवदीच कहलाते हैं। [**औदीच** दे०]।

अवदीर्ण—(वि०, सं०) व्याकुल। खंडित। विभाजित।

अवद्य—(वि०, सं०) अधम, पापी, त्याज्य। कुत्सित, निकृष्ट, दोष-युक्त। अतथ्य। अनिष्ट। निंदित। [स्त्री० **अवद्या**]।

अवद्योत—(वि०) [सं० अव+द्युत+घञ्] ईषदुज्वल, किंचिद्दीप्त, अल्पप्रकाश। (संज्ञा, पु०) संस्कृत के व्याकरण का एक विशेष ग्रंथ। [वि० **अवद्योतित**]।

अवध—(संज्ञा, पु०) [सं० अयोध्या] कोशल देश, जिसकी प्रधान नगरी अयोध्या थी, अयोध्या पुरी। "घर घर बाजत अवध बधावा"—तुल०। [वि० अ+वध] न मारने योग्य, अवध्य।

अवधान—(संज्ञा, पु०, सं०) मनोयोग, चित्त का लगना। चित्त की वृत्तियों का निरोध कर चित्त को एक ओर लगाना, समाधि। सावधानी, चौकसी। *(संज्ञा, पु०) [सं० आधान] गर्भ, पट, [**औधान** दे०]। **मु०—से होना**—गर्भवती होन।

अवधानी—(वि०, सं०) मनोयोगी, ध्यान देने वाला।

अवधारण—(संज्ञा, पु०, सं०) निश्चय। विचार-पूर्वक। निर्धारण करना, निर्णय, स्थिरीकरण।

अवधारणीय—(वि०, सं०) विचारणीय, निर्णय के योग्य, स्थिर करने के योग्य। [वि० **अवधारित**, **अवधार्य**]।

अवधारना—(क्रि० स० दे०) [सं० अवधारण] धारण करना, ग्रहण करना, मानना, समझना, विचारना। "उपजेउ जहँ जिय दुष्टता, सुअस याहि अवधारु" —भाव०।

अवधारि—(संज्ञा, पु०, दे०) निश्चय, बिना संशय के। 'गुन पायोल अवधारि'—विद्या०।

अवधारी—(क्रि०, वि०, सं०) निश्चय किया गया। शोधा या विचारा हुआ।

अवधार्य—(वि०, सं०) विचार्य, चिंत्य, निर्णय के योग्य। "परिणितरवधार्या यत्नतः पंडितेन"। "शीश पर आदेश कर अवधार्य"।—दिन०। [वि० **अवधारित**]।

अवधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीमा, हद। निर्धारित समय, मियाद, अंत समय, अंतिम काल। (अव्य०, सं०) तक, पर्यन्त, लौं। "राखिय अवध जो अवधि लगि"—तुल०। "मंदिर-अरध अवधि हरि बदिगे" —सूर०।—**मुहा०—बदना** (**करना**)—समय या मियाद निश्चित करना।—**देना**—समय निर्धारित कर देना।—**व्यवस्था**—अवधि-नियम। (लिमिटेशन ऐक्ट)।

अवधिमान※—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र, सागर, सिन्धु, जलधि।

अवधी—(वि०, दे०) [सं० अयोध्या] अवध सम्बन्धी, अवध का, अवध विषयक। (संज्ञा, स्त्री०) अवध प्रान्त की बोली। (संज्ञा, पु०) अवध का रहने वाला, अवधवासी, [**औधी** दे०]।

अवधीरण—(संज्ञा, पु०, सं०) अपमानपूर्ण व्यवहार करना।

अवधीरित—(वि०, सं०) अपमानित, निरादृत, तिरस्कृत।

अवधीर्य—(वि०, पू०, का०, क्रि०, सं०) विचार कर, सोच कर। अपमानित कर।

अवधूत—(संज्ञा, पु०, सं०) [अव+धू+क्त] कंपित, कम्पायमान, परिवर्जित, परिष्कृत, उदासीन। योगी, संन्यासी। गुरु दत्तात्रेय के समान, (तन्मतानुयायी) साधु विशेष। वर्ण और आश्रमोचित धर्मों को छोड़ कर केवल आत्मा को ही देखन वाले योगी अवधूत कहलाते हैं, यती। [स्त्री० **अवधूतनी**]। "कोउ अवधूत कह्यौ कोउ पुनि धूत कह्यौ"—कुंजवि०।—**वृत्ति**-(स्त्री०) अवधूतों की वृत्ति या प्रवृत्ति, उनका आचार-विचार, [अवधूताचार, अवधूत-कर्म या रीति नीति]। [संज्ञा, स्त्री० **अवधूतता**]।

अवधेश—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा दशरथ।

अवध्य—(वि०, सं०) वध के अयोग्य जिसे प्राणदंड न दिया जा सके, न मारने के लायक़। "नाततायि बधे दोषोऽवध्यो भवति कश्चन्"—मनु०।

अवन—(संज्ञा, पु०, दे०) रक्षण। प्रमोदककार्य।

अवनत—(वि०, सं०) नीचा, झुका हुआ, गिरा हुआ, पतित। कम। नम्र, विनीत। दुर्दशाग्रस्त। [यौ० **लज्जावनत**]।

अवनति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घटती, न्यूनता, कमी। अधोगति, पतन, हीन दशा, दुर्दशा, दुर्गति, विनय, नम्रता। [**अवन्नति** दे०]। [वि० **अवनतिकारी**]।

अवनाॐ—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० आना] आना, आवना। [दे० **आवनो** ब्र०]।

अवनि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी, भूमि, धरा, ज़मीन। रक्षण, पालन, [**अवनी** दे०]।—**कुमारी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सीता, जानकी, अवनि-तनया, अवनिसुता।—**गर्भगेह**-(संज्ञा, पु०) तहखाना, तलगृह। "ठेल मुझे न अकेली अंध-अवनि गर्भ गेह में आली"—मैथली।—**ज**-(पु०) मंगल ग्रह।—**जा**-(स्त्री०) पृथ्वी से उत्पन्न होने वाली, भूमि-सुता, जानकी, अवनि-नंदिनी।—**दान**-(पु०) भूमि-दान।—**देव**-(पु०) ब्राह्मण।—**नाथ**-(पु०) पृथ्वी-पति, राजा, भूपाल, नृपाल।—**प**-(पु०) राजा, नृप, भूपति। "अवनपि रहैं सदा वश जाके"—के०।—**पति**-(संज्ञा, पु०) राजा। अवनियति उठे अचानक कांप—मैथिली०।—**पाल**-(पु०) राजा, भूपाल, अवनिपालक।—**भू**-(पु०) मङ्गलग्रह, भौम, मंगल तारा, कुज।

अवनिजेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सीतापति, रामचन्द्र, जानकी-जीवन, सीतानाथ, अवनिजा-पति।

अवनिस्थ, कर्मचारी—(संज्ञा, पु०, सं०) हवाई अड्डे के कर्मचारी [ग्राउंड स्टाफ़]।

अवनी—(संज्ञा, स्त्री०) पृथ्वी, मेदिनी, वसुन्धरा। रस। क्षिति, वसुधा।—**तल**-(पु०) पृथ्वी का तल। धरातल। "अवनीतल ही नश्वर है"—दिन०। "कौन बली अवनीतल मैं, हमसों करि द्रोह सबै कुल बोरो"।—**देव**-(पु०) भूदेव, भूसुर, ब्राह्मण।—**पति**-(पु०) राजा, भूपति, अवनीप, क्षितीश।—**परवनी**-(संज्ञा, स्त्री०) रानी, राज-पत्नी।

अवनीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा, अवनीस। [दे० **अवनीश्वर, अवनींद्र**]।

अवनजन—(संज्ञा, पु०, सं०) धौतकरण, मार्जन, धवलो करण, परिमार्जन।

अवपात—(संज्ञा, पु०, सं०) गिराव, पतन। गड्ढा, कुंड। हाथियों के फँसाने का गड्ढा। खाँड़ा। माला। नाटक में :—भयादि से भागना, व्याकुल होना आदि दिखा कर अंक को समाप्त करना। [संज्ञा **अवपातन**]।

अवभास—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाशकरण। माया। प्रपञ्च-प्रकाशन।

अवभासक—(वि०, सं०) प्रकाश देने वाला।

अवभासित—(वि०,सं०) प्रकाशित, प्रकटित। प्रपञ्च-पूर्ण, मायामय।

अवभासिनी—(स्त्री०, सं०) ऊपर का चमड़ा।

अवभृथ—(संज्ञा, पु०, सं०) मुख्य यज्ञ के समाप्त होने पर वह शेष कर्म जिसके करने का विधान किया गया है, यज्ञान्त स्नान, यज्ञ-शेष औषधि आदि से लिप्त होकर कुटुम्बादि के साथ स्नान।

अवम—(संज्ञा, पु०, सं०) पितरों का एक गण। मलमास, अधिमास। तिथि-क्षय। नीच। जिस दिन तीन तिथियाँ हों।

अवमत—(वि०, सं०) अवज्ञात, अपमानित, तिरस्कृत, अवहेलित, अनादृत।

अवमति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, **तिरस्कार**) अवज्ञा, अपमान। (पु०) स्वामी।

अवमतिथि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) जिस तिथि का क्षय हो गया हो, जिस दिन तीन तिथियाँ हों, (ज्यो०)।

अवमर्द—(संज्ञा, पु०) उत्पीड़न। उल्लू।

अवमर्दन—(संज्ञा, पु०, सं०) मालिश करना। कुच-लना, दबाना।

अवमर्श-सन्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाँच प्रकार की सन्धियों में से एक (नाट्य०)।

अवमर्ष, अवमर्षण—(संज्ञा, पु०) [सं० अव+मृष+अनट्] अपक्षय, परिक्षय, लोप। [वि० **अवमर्षित**—लुप्त, परिक्षय-प्राप्त; **अवमर्षणीय**—लोप करने योग्य]।

अवमान—(संज्ञा, पु०, सं०) तिरस्कार, अपमान। अपयश, दुर्नाम, अमर्यादा। अवज्ञा। मानहानि [कण्टेम्प्ट]।

अवमानना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनादर। अपमान, असम्मान।

अवमानित—(वि०, सं०) असम्मानित, तिरस्कृत। [वि०, **अवमानार्ह, अवमाननीय, अवमान्य**)।

अवमानी—(वि०, सं०) तिरस्कृत, अपमानित।

अवमूर्द्ध—(संज्ञा, पु०, सं०) अधः शिर, अधोमुख, नत-मस्तक।

अवयव—(संज्ञा, पु०, सं०) अंश, भाग, हिस्सा, शरीर का अंग, हाथ, पैर आदि देहांग। तर्क पूर्ण वाक्य का एक अंश या भेद (न्याय)।

अवयवी—(वि०, सं०) अवयव वाला, अंगी, अंग-वाला। कुल, सम्पूर्ण अंगधारी। (संज्ञा, पु०) वह वस्तु जिसके अनेक अवयव या अंग हों, देह, शरीर।

अवयान—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रायश्चित्त। निराकरण।

अवर—(वि०) [सं० अपर] अन्य, दूसरा, और। अधम, मन्द, क्षुद्र। चरम, कनिष्ठ, नीच, अनुत्तम, अश्रेष्ठ। निर्बल, अबल। (**अव्य०**, दे०) और, [**अउर** दे०]।—**विषय**-अंग विषय। [सबार्डिनेट मैटर]।—**शाला**-(संज्ञा, वि०, सं०) साधारण या निचली सभा [लोअर चैम्बर]।—**शासक**-(संज्ञा, पु०) उपदंड नायक [सबार्डिनट मजिस्ट्रेट]।

अवरज—(संज्ञा, पु०, सं०) कनिष्ठ भ्राता, छोटा भाई, अनुज। शूद्र। "यवीयोऽवरजानुजः"—अमर०।

अवरजा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कनिष्ठा, अनुजा, भगिनी, छोटी बहिन।

अवरत—(वि०, सं०) जो रत न हो, विरत, निवृत्त। स्थिर, ठहरा हुआ। पृथक्, विलग, अलग। [विलो० **अनवरत**]। [संज्ञा,* पु०, दे०**आवर्त**]।

अवराधक—(वि०) [सं० आराधक] आराधना या पूजा करने वाला, जप या भजन करने वाला, उपासक, सेवक, भक्त। ध्यानी।

अवराधन—(संज्ञा, पु०, सं०) आराधन, उपासन, पूजा, सेवा। ध्यान। जप, भजन।

अवराधना※—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० आराधन] उपासना करना, पूजन सेवा करना। ध्यान करना।' "एक हुतो सो गयो स्याम-सँग को अवराधै ईस" —सूर०।

अवराधी※—(वि०, दे०) [सं० आराधन] आराधना करने वाला, उपासक, पुजारी।

अवराध्यो—(ब्र०) आराध्यो, पूजा की।

अवरुद्ध—(वि०, सं०) रूँधा हुआ, घिरा या ढका हुआ, रुका हुआ। गुप्त, छिपा हुआ।

अवरूढ़—(वि०, सं०) ऊपर से नीचे आया हुआ, उतरा हुआ। [विलो० **आरूढ़**]।

अवरेख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लेख, लकीर। प्रतिज्ञा, संकल्प।

अवरेखना*—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० अवलेखन] उरेहना, लिखना, चित्रित करना। देखना। अनुमान करना। सोचना, कल्पना करना, जानना, मानना। "चंपक-पुहुप-बरन तन सुन्दर मनोचित्र अवरेखी" —सूर। "रहि जनु कुँवरि चित्र अवरेखी"—तुल०। "अपनी दिसि प्राननाथ प्यारे अवरेखौ हरि"।

अवरेब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अव—विरुद्ध+रेब—गति] वक्रगति, तिरछी या टेढ़ी चाल, कुटिल गति, कपड़े की तिरछी काट। [**औरेब** दे०]। —**दार**-(यौ०) तिरछी काट का घेरदार कपड़ा। (संज्ञा, पु०) पेंच, उलझन। कठिनाई, बुराई, खराबी, झगड़ा, विवाद, झंझट। खींचतान। "कुल-गुरु सचिव निपुन नेवनि अवरेब न समुझि सुधारी"—गीता०। "ध्वनि अवरेब कवित गुन जाती"।—तुल०।

अवरोक्त—(वि०, सं०) जिसकी चर्चा सबसे पीछे हो।

अवरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) रुकावट, रोक। अड़चन। घेर लेना। घेरा, मुहासिरा, निरोध। बन्द करना। अनुरोध, दबाव। अंतःपुर, रनिवास। अटक। राज-गृह। राजदारा। जनाना। "कंठावरोधन विधौ स्मरणंकुतस्ते"।

अवरोधक—(वि०, सं०) रोकने वाला, घेरने वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) अंतःपुर।

अवरोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) रोकना, छेंकना, घेरना। अंतःपुर, जनाना।

अवरोधन*—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० अवरोधन] निषेध करना, मना करना।

अवरोधित—(वि०, सं०) रोका हुआ, घेरा हुआ,

मना किया हुआ। [स्त्री०—**अवरोधिता**। वि०—**अवरोधनीय**]।

अवरोधी—(वि०, दे०) [सं० अवरोध] अवरोध करने वाला, रोकने वाला। [स्त्री०—**अवरोधिनी**]।

अवरोपण—(संज्ञा; पु०, सं०) उन्मूलन, उखाड़ना।

अवरोह—(संज्ञा, पु०, सं०) उतार, गिराव, पतन, अवनति, अधःपतन।

अवरोहक—(वि०, सं०) नीचे या ऊपर जाने, आने वाला।

अवरोहण—(संज्ञा, पु०, सं०) नीचे की ओर आना, उतार। उतरना, पतन, गिराव। ढाल। [वि० **अवरोहणीय**]।

अवरोहना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अवरोहण] उतरना, नीचे आना, गिरना। (क्रि०, अ०) [सं० आरोहण] चढ़ना। "तुलसी गलिन भरि दरसन लगि लोग अटनि अवरोहै"। *(क्रि०, सं०) [सं० अवरोधन] रोकना, मना करना। *(क्रि० सं०) [हि० उरेहना] खींचना, चित्रित करना। अंकित करना, लिखना।

अवरोहित—(वि०, सं०) गिरा हुआ, उतरा हुआ, पतित।

अवरोही—(संज्ञा, पु०) [सं० अवरोहिन्] वह स्वर-साधन जिसमें प्रथम षड्ज का उच्चारण किया जाय, फिर निषाद से षड्ज तक क्रमानुसार उतारते हुए स्वर निकाले जायें, (स्वर सङ्गीत)। [विलो०—**आरोही**]। (वि०) उतरने वाला, नीचे उतरा हुआ।

अवर्ग—(वि०, सं०) श्रेणीहीन।

अवर्ण—(वि०,सं०) वर्ण-रहित। बिना रङ्ग का। बदरंग, बुरे रंग वाला, वर्णाधम। धर्म-रहित, कुजाति, अक्षर-हीन। [अ+वर्ण] (संज्ञा, पु०, सं०) अकाराक्षर, अकार। निंदा, परिवाद, अपकीर्ति।

अवर्णनीय—(वि०, सं०) जो वर्णनीय न हो, जिसका वर्णन न किया जा सके, अकथनीय। [दे० **अवर्ननीय**]। [स्त्री०—**अवर्णनीया** दे०—**अवर्ननीया**]।

अवर्णित—(वि०, सं०) जिसका वर्णन न किया गया हो, अकथित, अविवेचित।

अवर्ण्य—(वि०, सं०) जो वर्णन के योग्य न हो। (संज्ञा, पु०) [सं० अ+वर्ण्य] जो वर्ण्य या उपमेय (प्रस्तुत) न हो, उपमान या अप्रस्तुत, (काव्य०)।

अवर्त्त—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आवर्त] पानी का चक्कर, भँवर, नाँद।

अवर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) न बरतना, प्रयोग न करना, या न होना, अप्रयोग। [दे० **अबरतन**]।

अवर्तमान—(वि०, सं०) जो मौजूद न हो, अविद्यमान, अनुपस्थिति। अभाव। मृत।

अवर्तित—(वि०, सं०) अप्रयुक्त, अव्यवहृत। अभाव, अनुपस्थिति।

अवर्तुल—(वि०, सं०) जो गोल न हो, जो गोलाकार न हो।

अवर्त्मन—(वि०, सं०) बिना मार्ग का, पथ-रहित। [सं०—**अवर्त्मनि**]।

वर्धक—वि०, सं०) न बढ़ने या बढ़ाने वाला।

अवर्धन—(संज्ञा, पु०, सं०) वृद्धि न होना, न बढना, वृद्धि रहित होना। [वि० **अवर्धनीय**, स्त्री० **अवर्धनीया**]।

अवर्धमान—(वि०, सं०) जो न बढ़े, वृद्धि-रहित। [स्त्री० **अवर्धमाना**]।

अवर्धित—(वि०, सं०) न बढ़ा हुआ, न बढ़ाया हुआ, वृद्धि रहित।

अवर्म—(वि०) [सं० अवर्मन्] कवच रहित। ढालहीन। [स्त्री०—**अवर्मा**]।

अवर्मित—(वि०, सं०) जो कवच न धारण किये हो।

अवर्य—(वि०, सं०) अश्रेष्ठ, अनुत्तम, अप्रधान। [**अवर्या**-(स्त्री०) अश्रेष्ठा, जो कन्या न हो]।

अवर्बर—(संज्ञा, पु०, सं०) जो जंगली या मूर्ख न हो। पतित। [संज्ञा, स्त्री०—**अवर्बरता**]।

अवर्षक—(वि०, सं०) न बरसने वाला।

अवर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्षा का न होना, न बरसना, वर्षाभाव।

अवर्ष्म—(संज्ञा, पु०, सं०) शरीराभाव, देह-हीनता, देहाभाव।

अवलंघन—(संज्ञा, पु०, सं०) उल्लंघन। [वि० **अवलंघनीय**]।

अवलंघना—(क्रि०, स०, सं०) लाँघना, उलाँघना। [वि० **अवलंघित**, **अवलंघनीय**]।

अवलंब—(संज्ञा, पु०, सं०) आश्रय, आसरा। (दे०) सहारा, आधार, शरण, आलंब।—**अनुदान**—सहायतार्थ दान [ग्रांट-इन-एड]।—**दायिका**-(वि०) सहारा देने वाली। "आशा अवलम्बदायिका है"—मैथिली०।

अवलंबन—(संज्ञा, पु०, सं०) आश्रय, आधार, सहारा। धारण अथवा ग्रहण करना। शरण।

अवलंबना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० अवलम्बन] अवलंबन करना, आश्रय लेना टिकना। धारण करना, शरण लेना। "परम अनाथ देखियत तुम बिनु केहि अवलंबिय प्रात"—सूबे०।

अवलंबित—(वि०, सं०) आश्रित, आधारित, सहारे पर स्थिर, निर्भर, टिका हुआ। मुनहसर, किसी बात के होने पर निश्चित किया हुआ।

अवलंबी—(वि०, पु०) [सं० अवलंबिन] अवलंबन करने वाला, सहारा लेने वाला, आश्रय देने वाला। शरणागत। [स्त्री०—**अवलंबिनी**]।

अवलक्ष—(वि०, सं०) सफेद रंग का।

अवलन्—(संज्ञा, पु०, सं०) घुमाव-रहित, अविचलन।

अवलित—(वि०, सं०) अगतिशील। न लपेटा हुआ, न घिरा हुआ। न घूमा हुआ, घुमाव-हीन।

अवलिप्त—(वि०, सं०) पोता या लीपा हुआ, सना हुआ। लीन। घमंडी।

अवलिर—(वि०, सं०) जो ऐंचाताना न हो, जो भेंड़ा न हो।

अवलीॐ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आवलि] पंक्ति, पाँति, पाँती। समूह, झुण्ड। नवान्न करने के लिए खेत से पहिले-पहल काटी गई अन्न की गाँठ। [दे० **आवलि, अवलि**]। "कवरी भार न रचें आनि अवली;गंजनि की"—दीन।

अवलीकॐ—(वि०, दे०) [सं० अव्यलीक] पाप-शून्य। निष्कलंक। शुद्ध, निर्दोष।

अवलुंठित—(वि०, सं०) लोटा या लूटा हुआ।

अवलेखना—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० अवलेखन] खोदना, खुचरना। चिह्न करना। लकीर खींचना। [**अवरेखना** दे०] चित्रित करना, अंकित करना, सोचना। [वि० **अवलेखक; संज्ञा, पु० अवलेखन**]।

अवलेखनीय—(वि०, सं०) चित्रित करने के योग्य, चिन्हित करने योग्य। विचारणीय।

अवलेखा—(स्त्री०, सं०) चित्रकारी। सजाना।

अवलेखित—(वि०, सं०) चिह्नित। चित्रित। विचारित। अंकित।

अवलेखी—(वि०, सं०) चिह्नित। अंकित।

अवलेप—(संज्ञा, पु०)[सं० अवलेपन] उबटन, लेप। घमंड, गर्व, अहंकार।

अवलेपन—(संज्ञा, पु०, सं०) लगाना, पोतना। लगाई जाने वाली वस्तु, लेप। घमंड, गर्व। दूषण। अभिमान, अहंकार। [वि० **अवलेपित**—लीपा या पोता हुआ, दूषित। वि० **अवलेपनीय**]।

अवलेह—(संज्ञा, पु०, सं०) न अधिक गाढ़ी और न अधिक पतली लेई। चाटने के लायक चटनी। माजूम, चाटी जाने वाली औषधियों की चटनी, किवाम, जैसे—वासावलेह। [वि० **अवलेह्य**]।

अवलेहन—(संज्ञा, पु०, सं०) चाटना। चीखना, आस्वादन करना, स्वाद लेना। [वि० **अवलेहनीय**]।

अवलोकन—(संज्ञा, पु०, सं०) देख-रेख, देख-भाल। जाँच पड़ताल। दर्शन, दृष्टि-पात। चिंतन। पठन।

अवलोकनाॐ—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० अवलोकन] देखना। जाँचना। अनुसंधान करना, खोजना। विचारना।

अवलोकनिॐ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अवलोकन] चितवन। दृष्टि, आँख। देखना। नज़र।

अवलोकनीय—(वि०, सं०) देखने के योग्य, दर्शनीय। विचारणीय। पठनीय। खोजने के योग्य।

अवलोकय—(वि०, क्रि०, सं०) देख, देखो, देखिये, दृष्टि दीजिये। विचारिये, (यद्यपि यह शुद्ध तत्सम या संस्कृत-रूप है तथापि हिन्दी में प्रायः प्रयुक्त हुआ है)। [**अवलोकिय, अवलोकिये, अवलोकहु** ब्र० भा०; **अवलोकि**—पू०, का०, क्रि०, ब्र०]। "गावहिं छवि अवलोकि सहेली"—तुल०।

अवलोकित—(वि०,सं०) देखा हुआ। विचारा हुआ। खोजा हुआ। पढ़ा हुआ।

अवलोक्य—(वि०, सं०) देखने योग्य।

अवलोचनाॐ—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० आलोचन] दूर करना, हटाना, अलग करना। [वि०**अवलोचित, अवलोचनीय, अवलोचक**]।

अवश—(वि०, सं०) विवश, लाचार। अनायत। पराधीन। अबाध्य, असमर्थ। "हे आर्य तुम्हारा भारत अतीव अवश है"—मैथिली०। [दे० **अबस**। स्त्री० **अवशा**]। (क्रि०,वि०, दे०) [सं० अवश्य] अवश्य, जरूर।

अवशि—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० अवश्य] अवश्य, जरूर। [**अवसि, अवस** दे०]।

अवशिष्ट—(वि०, सं०) शेष, बाक़ी, बचा हुआ। उच्छिष्ठ। उद्वर्त, अवशेष। "मन में अनुरक्ति दिखा अवशिष्ट"—दिनकर। [एरियर]।—**दाय**—बचा हुआ। उत्तरदान, अवशिष्ट रिक्त। [रेसीडुअरी लिगैसी]।

अवशेष—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्त, शेष, बाक़ी। समाप्ति। (वि०) बचा हुआ।

अवशेषित—(वि०, सं०) बचा हुआ, बाक़ी।

अवश्यंभावी—(वि०) [सं० **अवश्यंभाविन**] जो अवश्य हो, अटल, जो टल न सके, ध्रुव, जरूर होने वाला।

अवश्य—(क्रि०, वि०, सं०) निश्चय-पूर्वक, निस्संदेह, निश्चित, निश्चय रूप से। जरूर। उचित कर्तव्य। सर्वथा सम्भव। (वि०) जो वश में न किया जा सके।

अवश्यमेव—(क्रि०, वि०, सं०) अवश्य ही, निस्सन्देह, जरूर, निश्चय ही। "है भारत धन्य अवश्यमेव"—मैथिली०।

अवश्या—(वि०, सं०) जो वश में न आ सके, जो वश में न हो।

अवश्याय—(संज्ञा, पु०) पाला। ओस। दर्प।

अवस—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० अवश्य, अवश] अवश्य, जो वश में न हो। [**अवसि** दे० ब्र०] जरूर। (वि०) लाचार, विवश। जिसमें अपना वश न हो।

अवसक्त—(वि०) लगा हुआ, संलग्न। (संज्ञा, पु०) संसर्ग, सम्पर्क।

अवसथ—(संज्ञा, पु०) निवास स्थान। छात्रालय।

अवसन्न—(वि०, सं०) विषाद-प्राप्त, दुखी। नष्ट होने वाला। सुस्त, आलसी, निकम्मा। श्रान्त, क्लान्त। गिरा हुआ। जड़ीभूत। उदास। "शीतसूर्य अवसन्न डालता सहम सहम कर ताप"—दिनकर।

अवसन्नता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुस्ती, उदासी। दुख। श्रान्ति, थकावट। "अवसन्नता तुम्हारी कैसे भला समर्थन-योग्य"—गिरीश।

अवसर—(संज्ञा, पु०, सं०) समय, मौक़ा, काल। अवकाश। विराम, विश्राम। प्रस्ताव। मंत्र विशेष, वर्षण। वत्सर। क्षण। फ़ुरसत। इत्तफ़ाक़। [**औसर** दे०, ब्र०]। "औसर मिलै औ सिरताज कछू पूछहि तौ"—ऊ० श०।—**प्राप्त**-(वि०) कार्यमुक्त, लब्ध-विश्राम।—**वाद**-अवसर के अनुकूल आचरण-पद्धति। **मु०—चूकना**—मौक़ा हाथ से जाने देना। "औसर चूके बरसिबो घन को कौने काम"।—**खोजना,—ढूँढ़ना**—मौक़ा ढूंढ़ना।—**ताकना**—मौके की इंतिजारी करना।—**पड़ना**—बुरा मौक़ा पड़ना। "परे अवसर के साइ"—गिरिधर।—**देखना**—मौक़ा या उपयुक्त समय की प्रतीक्षा करना या देखना, समय देखना। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का अलंकार, जिसमें किसी घटना या बात का ठीक या अपेक्षित समय पर होना या घटना दिखलाया जाय। "अवसर न खो निठल्ली"—मैथिली०।

अवसर वृत्ति—(संज्ञा, वि०, सं०) अवकाशवेतन या वृत्ति, [पेन्शन]।

अवसर्ग—(संज्ञा, पु०) मुक्तिदान। बंधन अथवा रोक न लगाना।

अवसर्जन—(संज्ञा, पु०) छोड़ना, बंधन से मुक्त करना।

अवसर्प—(संज्ञा, पु०) गुप्तचर, भेदिया। रहस्य-वाहक।

अवसर्पण—(संज्ञा, पु०, सं०) अधोगमन, अधः-पतन। अवरोहण, नीचे की ओर गति।

अवसर्पिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पतन का वह समय जिसमें ह्रास होते-होते रूपादि का क्रमशः पूर्ण नाश हो जाता है (जैन—शास्त्र)।

अवसर्पित—(वि०, सं०) गिरा हुआ, उतरा हुआ। पतित, अधोगामी।

अवसाद—(संज्ञा, पु०, सं०) नाश, क्षय। विषाद दीनता। थकावट, शैथिल्य। कमजोरी। क्षीणता। दैन्य, दौर्बल्य, कार्श्य।

अवसादित—(वि०, सं०) शिथिल, दुःखी, दीन। नष्ट। कमजोर। थका हुआ। दुर्बल, क्षीण।

अवसान—(संज्ञा, पु०, सं०) विराम, ठहराव, समाप्ति, अन्त। सीमा। सायंकाल। मरण। शेष। "दिवस का अवसान समीप था"—हरिऔध। (संज्ञा,* पु०, दे०)* होश, हवास। (संज्ञा) चैतन्यता। "छूटे अवसान-मान सकल धनंजय के"—रत्ना०। [दे० **औसान**] चेतनता। **मु०—छूटना**—होश-हवास न रहना।—**जाना या उड़ना**—होश न रहना, सुधि-बुधि न रहना, चैतन्यता या संज्ञा-शून्य होना।

अवसि—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० अवश्य] अवश्य, जरूर। [**अवस** दे०] "अवसि देखिये देखन जोगू"—तुल०।

अवसेखꣳ—(वि०, दे०) [सं० अवशेष] शेष, बचा हुआ, अवशिष्ट।

अवसेचन—(संज्ञा, पु०, सं०) सींचना, पानी देना, पसीजने, रोगी के शरीर से पसीना निकलने की क्रिया। देह से रक्त-निस्सारण। [वि० **अवसेचित, अवसिंचित**—सींचा, या पसीजा हुआ]। **अवसेचक**—सींचने वाला। पसीना निकालने वाला। पसीजने वाला। [**अवसेचनीय**—(वि०) सींचने या पसीना निकालने के योग्य]।

अवसेर, अवसेरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अवसर] असबेर। अटकाव, उलझन। देर, विलम्ब, बेर। चिंता, व्यग्रता, उचाट। हैरानी, क्लेश, व्याकुलता। "गई रही दधि बेचन मथुरा तहाँ आजु अवसेर लगाई"—सूबे०। "गाइन के अवसेर मिटावहु"

—सूर०। "भये बहुत दिन अति अवसेरी"—तुल०। (असबेर से उलटकर कदाचित अवसेर हुआ है)। (संज्ञा, स्त्री०) चाह, आशा, चाव।

अवसेरना—(क्रि०, सं०,) [दे० अवसेसर] तंग करना, दुःख देना। हैरान करना, उलझाना, परेशान करना, व्याकुल या विकल। करना देर लगाना।

अवस्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का यज्ञ।

अवस्थांतर—(संज्ञा, पु०, सं०) परिवर्तित दशा, बदली हुई अवस्था, दूसरी गति।

अवस्थान्तर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दूसरी अवस्था, अन्य दशा, दूसरी गति। [वि० **अवस्थान्तरित**]।

अवस्था—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दशा, हालत। समय, काल। आयु, उम्र। स्थिति, मनुष्य की चार दशायें या अवस्थायें—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय। मनुष्य-जीवन की आठ अवस्थायें—कौमार, पौगंड, कैशोर, यौवन, बाल, वृद्ध, वर्षीयान्, गति। चार या ८ या ३ की संख्या। मनुष्य की ३ या ४ अवस्थायें—बाल, युवा या प्रौढ़, वृद्ध। संसार की ३ दशायें—उत्पत्ति (उद्भव), स्थिति (विकास), संहार (नाश) या प्रलय।

अवस्थाता—(संज्ञा, पु०, सं०) अवस्थानकारी, अधिष्ठाता, प्रधान, प्रमुख, मुखिया।

अवस्थान—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थान, जगह, ठहराव, टिकाव, स्थिति। वास, आश्रय।

अवस्थापन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थापित करना, स्थापना। [वि० **अवस्थापित, अवस्थापनीय, अवस्थाप्य**]।

अवस्थित—(वि०,सं०) उपस्थित, विद्यमान, मौजूद। ठहरा हुआ, स्थिरीभूत, कृतावस्थान। [स्त्री० **अवस्थिता**]।

अवस्थिति—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्तमानता। स्थिति। सत्ता, विद्यमानता।

अवस्थी—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्राह्मणों में एक प्रकार की जाति विशेष। (सं० आवस्थी) अवस्थ नामक एक विशेष प्रकार का यज्ञ करने वाला।

अवहरण—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्य स्थान ले जाना। चुरा लेना। युद्ध-विराम।

अवहस्त—(संज्ञा, पु०, सं०) हथेली की पीठ।

अवहार (संज्ञा, पु०, सं०) छूट, कमी, कमीशन। नियंत्रण। आहरण। धर्म-त्याग। [रिबेट]।

अवहास—(पु०, सं०) तिरस्कार, अवहेलना। [स्कान]

अवहित—(वि०, सं०) विज्ञात। सावधान। विदित, अवगत। (संज्ञा, पु०, सं०) सावधान, एकाग्रचित।

अवहित्था—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छिपाव, भावगोपन। छद्मवेश, चालाकी से अपने को छिपाने की क्रिया, संगोपन। एक प्रकार का संचारी-भाव (काव्य०)।

अवही—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का बबूर।

अवहेला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अवज्ञा, अनादर, तिरस्कार। अश्रद्धा, असम्मान। "अवहेला कर सत्य न्याय के"—दिनकर।

अवहेलना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अवज्ञा, तिरस्कार। ध्यान न देना, लापरवाही, उपेक्षा। *(क्रि०, स० दे०), [सं० अवहेलन] अवज्ञा करना, तिरस्कार करना, अनादर या अप्रतिष्ठा करना, उपेक्षा करना।

अवहेलनीय—(वि०, सं०) तिरस्करणीय, उपेक्षणीय, आदरणीय।

अवहेलित—(वि०, सं०) तिरस्कृत, उपेक्षित, जिसकी अवहेलना हुई हो। [स्त्री० **अवहेलिता**]।

अवाँ, अवा—(संज्ञा,पु०, दे०) आँवाँ, भट्ठी। "तपइ अवाँ इव उर अधिकाई"—तुल०। "याद किये तिनकौ अवाँ सौ घिरिबौ करै"—रत्ना०। (स० क्रि०, दे०) तिरस्कार करना।

अवांछनीय—(वि०, सं०) अनावश्यक, अनिच्छित, अप्रिय।

अवांतर—(वि०, सं०) अन्तर्गत। मध्यवर्ती। (संज्ञा, पु०) मध्य, बीच।—**दिशा**–(स्त्री०) बीच की दिशा, विदिशा, दिशाओं के मध्यवर्ती कोण।—**भेद**–(पु०) अन्तर्गत भेद। भाग का भाग, उपभेद।—**घटना**–(स्त्री०) मध्यवर्ती घटना।—**कथा**–(स्त्री०) भीतरी, मध्यवर्ती, अन्य कथा, कथा के भीतर कथा।—**कथन**–(पु०) अन्य कथन, बीच का कथन।—**कारण**–(पु०) कारणान्तर्गत कारण, अवांतरहेतु। अवांतर विचार।

अवाँर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देर, बेर, विलम्ब, अवार, वेर। अत्याचार।

अवाँसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० **अवासित**] फसल में से नवान्न के लिये पहिले ही पहल काटा गया अन्न का बोझ, कवला, अवली। (यौ०) [अवाँ+सी], आँवा के समान।

अवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० आना] आगमन, आना। गहिरी जोताई, 'सेव' का उलटा। "धाईं धाम-धाम ते अवाई सुनि ऊधव की"—रत्ना०। [विलो० **जवाई**] [यौ० **अवाई-जवाई**]।

अवाक्—(वि०) [सं० अ+वच्+णिच-अषाच्] चुप, मौन। स्तंभित। चकित, विस्मित, स्तब्ध।

"ऊधव अवाक रहे"—रत्ना०। "अवसाद अवाक् कणों का"—पंत।

अवागी—(वि०, सं०) जो न बोले। चुप, मौन, मूक।

अवाग्मी—(वि०, सं०) न बोलने वाला।

अवाङ्मनसगोचर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वाणी और मन आदि इंद्रियों के द्वारा जो जाना या कहा न जा सके। ब्रह्म, ईश्वर। [संज्ञा, स्त्री०—**अवाङ्मनसगोचरता**]।

अवाङ्मुख—(वि०, सं०) अधोमुख, नतमुख, नमितमुख, नीचे मुँह किये हुए। लज्जित। बिना वाणी के, चुप, मौन, मूक।

अवाचा—(वि०, सं०) वाचा या वाणी-रहित। [दे० **अवाच**]।

अवाची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्षिण दिशा। (वि०) न बोलने वाली।

अवाच्य—(वि०, सं०) जो कहने योग्य न हो। आनंदित। विशुद्ध। अकथ्य। मौन, चुप। जिससे बात-चीत करना उचित न हो, नीच, अधम। (संज्ञा, पु०, सं०) कुवाच्य, गाली।

अवाज*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० आवाज] शब्द, आवाज, ध्वनि। [दे० **अवाजा**]—ताना या व्यंग्य। [यौ० **अवाजा-तवाजा**]। **मुहा०—कसना** व्यंग्य कहना। उत्तेजक वाक्य कहना।

अवाध्य—(वि०, सं०) अतर्क्य। बिना विधा। अबाध, बाधा-रहित। अकाट्य। "साधिका मैं भी किन्तु अवाध्य"।—मैथिली०।

अवाधा—(वि०, दे०) बाधा हीन। दुःख रहित।

अवाम—(संज्ञा, पु०, अ०) आम का ब० व०, जन साधारण, आम लोग।

अवाय—(वि०, दे०) [सं० अनिवार्य] अनिवार्य, उद्धत। (ब्र० दे०) अवाक्। "ऊधव अवाय रहे ज्ञान ध्यान सरके"—रत्ना०।

अवार—(संज्ञा, पु०, सं०) नदी के इस पार का किनारा, पार का विलोम। (वि०) बिना विलंब। "उठ अवार न पार जाकर भी गयी"—मैथिली०।

अवारजा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वही, जिसमें हर एक असामी की जोत आदि लिखी जाय। जमा-ख़र्च की बही, ख़ाता, खतौनी।—**जमाबंदी**-(दे०) संक्षिप्त लेखा। [**अवारिजा**-दे०]। "करि अवारजा प्रेम-प्रीति को असल तहाँ खतियावै"—सूर०।

अवारणीय—(वि०, सं०) लाइलाज, जिसकी कोई दवा न हो। जो रोका न जा सके।

अवारना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० अवारण] रोकना। मना करना। निवारण करना। वारना, हरकना (दे०)। (संज्ञा, स्त्री० दे०) [स० अवार] किनारा। मोड़। मुख, विवर, मुँह का छेद।

अवारित—(वि०) जिस पर रोक न लगायी जा सके।

अवास*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आवास] वास, घर, निवास-स्थान, भवन, वास-स्थान। (वि०) [अ+वास] वास-रहित।

अवास्तव—(वि०, सं०) मिथ्या, निराधार। जो सत्य न हो।

अवाहन—(वि०) जो किसी वाहन या सवारी पर न हो।

अवि—(संज्ञा,पु०, सं०) सूर्य। मंदार, आक, मदार। (दे०) भेड़। बकरी। पर्वत।

अविकच—(वि०, सं०) जो प्रफुल्ल न हो, जो खिला न हो। अविकसित। "अविकच रंग चपल अंगों से"—पंत।

अविकल, अविकलित—(वि०, सं०) ज्यों का त्यों, बिना हेर-फेर या परिवर्तन के। पूर्ण, पूरा, निश्चल। शांत। जो व्याकुल या विकल न हो। यथार्थ। [संज्ञा, **अविकलता, अवैकल्य, अविकलत्व**]।

अविकल्प—(वि०, सं०) निश्चित, निस्संदेह, असंदिग्ध, असंशय। [संज्ञा **अविकल्पता, अविकल्पत्व**]।

अविकल्पित—(वि०, सं०) संदेह रहित, असंशय, बिना विकल्प के, निश्चित।

अविकार—(वि०, सं०) विकार-रहित, निर्विकार, निर्दोष। जिसके रूप-रंग मे परिवर्तन न हो, परिवर्तन-रहित। विकृति-विहीन। अविकलज। जन्म-मरणादि विकार से रहित। अज, अविनाशी, ईश्वर, ब्रह्म, जिसमें किसी भी प्रकार अंतर न पड़े। (संज्ञा, पु०, सं०) विकाराभाव।

अविकारता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विकारता-रहित, निर्दोषता, विकृति-विहीनता। [**अविकारत्व संज्ञा**, पु०]।

अविकारी—(वि०) [सं० अविकारिन्] जिसमें विकार या परिवर्तन न हो, जो सदैव एक सा हो रहे, निर्विकार। जो किसी का विकार न हो। ब्रह्म, ईश्वर। [वि०, स्त्री० **अविकारिणी**]।

अविकार्य—(वि०, सं०) अपरिवर्त्तनशील।

अविकृत—(वि०, पु०, सं०) जो विकृत न हो, जो न बिगड़े या न बदले। अपरिवर्तित, अविकारी। [स्त्री० **अविकृता**]।

अविक्रम—(वि०, सं०) कमजोर, शक्तिरहित।

अविक्षिप्त—(वि०, सं०) एकाग्रचित्त, जो विक्षिप्त न हो।

अविगत—(वि०, सं०) जो जाना न जाय। अज्ञात, अज्ञेय, अनावगत, अनिर्वचनीय, अकथनीय। नाश रहित, अविनाशी, नित्य, शाश्वत। जो विगत न हो, जो कभी समाप्त या गत न हो। ब्रह्म, ईश्वर।

अविघ्न—(पु०, सं०) करमर्दक नाम का पेड़ अथवा फल। करौंदा।

अविचर—(वि०,सं०) जो न विचरे, न चले। स्थिर, अचल, अटल। "जुग जुग अविचर जोरी"—सूबे०। चिरस्थायी, चिरंजीवी, चिरजीवी। [संज्ञा, **अविचरण**]।

अविचरणीय—(वि०, सं०) जोविचरण के योग्य न हो।

अविचरता—(संज्ञा, स्त्री०,सं०) स्थिरता, अचलता। चिरस्थायित्व। विचरण-शीलता-रहित होने का भाव, स्थैर्य।

अविचरित—(वि०, सं०) बिना विचरण किया हुआ।

अविचल—(वि०, सं०) जो विचलित न हो, अचल, स्थिर, अटल, न विचलने वाला। स्थावर, निष्कम्प। निर्भीक। निष्ठुर। दृढ़, धीर। [संज्ञा, **अवैचल्य, अविचलत्व**]।

अविचलित—(वि०, सं०) स्थिर, अचल। धीर। दृढ़। निश्चित। जो विचलित न हो [स्त्री० **अविचलिता**]।

अविचलिता—(संज्ञा, स्त्री०, भा०, सं०) अचलता, स्थिरता। दृढ़ता। धीरता। निर्भयता।

अविचारी—(वि०, सं०) विवेकशून्य, उचित अनुचित को न समझ कर चलने वाला।

अविच्छिन्न—(वि०,सं०) अटूट, लगातार। अभंग, बराबर। चलने वाला, अविरत, अविरल [**अविछीन** दे०]।

अविच्छेद—(वि०, सं०) जिसका विच्छेद न हो। अटूट, लगातार, अभंग।

अविजन—(वि०, सं०) जो जन-शून्य न हो, जनपूर्ण। (संज्ञा, पु०) बस्ती, जो जंगल न हो। (दे०) बिजन या पंखे का अभाव।

अविजित—(वि०, सं०) जो जीता न गया हो, अजेय।

अविज्ञ—(वि०, सं०) जो विज्ञ। या भिज्ञ न हो, अप्रवीण, अपटु, अज्ञ, अनभिज्ञ।

अविज्ञता—(संज्ञा, स्त्री०,सं०) अनैपुण्य, अप्रवीणता। अबोधता। अपटुता। अनभिज्ञता, अज्ञता, अज्ञान।

अविज्ञात—(वि०, सं०) अनजाना, अज्ञात, जो ज्ञात या विदित न हो। बेसमझा, अर्थनिश्चय-शून्य। न जाना हुआ।

अविज्ञान—(संज्ञा, पु०, सं०) जो विज्ञान न हो। विज्ञानाभाव। कला-कौशल। [वि० **अविज्ञानी**]।

अविज्ञेय—(वि०, सं०) जो जाना न जा सके, न जानने योग्य। [स्त्री० **अविज्ञेया**]। [संज्ञा, स्त्री० **अविज्ञेयता**]।

अवितत—(वि०, सं०) विरुद्ध, उलटा, विलोम, प्रतिलोम।

अवितथ—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्य, यथार्थ। (वि०) सत्यवान। यथार्थ, विशिष्ट।

अवितरण—(संज्ञा, पु०, सं०) वितरणाभाव, न बाँटने, न फैलाने का कार्य। [वि०, **अवितरणीय**—न बाँटने के योग्य]।

अवितरित—(वि०, सं०) न बाँटा हुआ, वितरण न किया हुआ।

अवितर्क—(संज्ञा, पु०, सं०) वितर्क का अभाव, जो वितर्क न हो, निश्चित।

अवितर्कित—(वि०, सं०) जो वितर्क-युक्त न हो, निस्संदेह, निश्चित [वि० **अवितर्क्य**]।

अवित्त—(संज्ञा, पु०, सं०) वित्त या धन का अभाव, धन-रहित, संपत्ति-विहीन। (वि०) धनहीन, निर्धनी।

अविथा—(वि०, दे०) [सं० अव्यथा] बिना व्यथा या पीड़ा के, व्यथाहीन।

अविदग्ध—(वि०, सं०) [अ+वि+दह+क्त] अपंडित, अचतुर, अनभिज्ञ, अविज्ञ, अपटु, [संज्ञा, **अवैदग्ध्य**]।

अविदग्धता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपांडित्य, अचातुर्य, अनभिज्ञता, अविज्ञता।

अविदित—(वि०, सं०) जो विदित या ज्ञात न हो, अज्ञात, न जाना हुआ, अनवगत, अनविहित।

अविदुषी—(वि०, स्त्री०, सं०) अपंडिता, मूर्खा, अशिक्षिता। विद्या-विहीनता।

अविदूषण—(वि०, सं०) निर्दोष, दूषण-रहित, अदोष। (संज्ञा, पु०) दूषण का अभाव। [वि० **अविदूषणीय**]।

अविदूषित—(वि०, सं०) जो दूषित या दोष-युक्त न हो, दोष-विहीन [स्त्री० **अविदूषिता**]।

अविदेह—(वि०, सं०) जिसके विशेष देह न हो। विदेह जो न हो।

अविद्य—(वि०, सं०) मूर्ख, अनभिज्ञ, विद्या विहीन।

अविद्यमान—(वि०, सं०) जो विद्यमान न हो, अनुपस्थित। असत्। मिथ्या, असत्य। अवर्तमान, अभाव, असत्ता।

अविद्यमानता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनुपस्थिति, अवर्तमानता, अभावता।

अविद्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विपरीत ज्ञान, मिथ्या ज्ञान, अज्ञान, मोह। माया का एक रूप या भेद (दर्शन०)। मूर्खता। कर्म-कांड। प्रकृति (शास्त्रानुसार),जड़, अचेतन। ज्ञान या विद्या का अभाव। भ्रांति, माया। "भौतिक ज्ञान अविद्या, बहुमुख एक सत्य का परिचय"—पंत।—**कृत,—जन्य**-जिसकी उत्पत्ति अविद्या से हो।

अविद्युत्—(वि०, सं०) विद्युत्-विहीन, बिना बिजली की शक्ति के, विद्युत् शक्ति-विहीन।

अविद्वता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपांडित्य, अनभिज्ञता का अभाव।

अविद्वान—(वि०, सं०) जो विद्वान या पंडित न हो, मूर्ख, अपंडित, मूढ।

अविद्रोह—(संज्ञा, पु०, सं०) विद्रोह का उलटा, विद्रोहाभाव, द्रोह-रहित।

अविद्रोही—(वि०, सं०) जो विद्रोही न हो, जो विरोधी न हो। भिन्न। विद्रोह न करने वाला, बैर-भाव न रखने वाला, जो झगड़ालू न हो।

अविधान—(संज्ञा, पु०, सं०) विधान का अभाव, विधि का उलटा, विधान के विपरीत। अरीति, कुरीति। [वि० **अवैधानिक**]।

अविधानता—(संज्ञा,स्त्री०, सं०) बेतरतीबी। बेकायदगी। कुरीति।

अविधि—(वि०, सं०) विधि-विरुद्ध, अनियमित, जो नियमानुकूल न हो, नियम के विपरीत। विधि अथवा विधान-शून्यता।

अविधु—(वि०, सं०) विधु या चन्द्रमा-रहित, चंद्र-विहीन, अचंद्र।

अविधेय—(वि०, सं०) विधेय-रहित, विधेय-विहीन, अकर्तव्य, विधान न करने योग्य।

अविनम्र—(वि०, सं०) अनम्र। [संज्ञा, **अविनम्रता**]।

अविनय—(संज्ञा, पु०, सं०) विनयाभाव, धृष्टता, ढिठाई। [**अबिनै** दे०] नम्रता-रहित, अविनम्र, उद्दंडता।

अविनश्वर—(वि०, सं०) जिसका विनाश न हो, अविनाशी, अनाशवान, चिरस्थायी। जो न बिगड़े, नाश-रहित, नष्ट न होने वाला। (संज्ञा, पु०) ब्रह्म, ईश्वर। [स्त्री० **अविनश्वरता**]। "अविनश्वर वही ज्ञान भीतर"—निराला।

अविनाभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) व्याप्त-व्यापक भाव या सम्बन्ध, जैसे अग्नि और धूम में (न्याय०)।

अविनाश—(संज्ञा, पु०, सं०) विनाश का अभाव, नाश न होना, अक्षयता, नाश-रहित होने का भाव। [वि० **अविनाश्य**]।

अविनाशी—(वि०, पु०) [सं० अविनाशिन्] जिसका नाश न हो, अनाशवान्, अविनश्वर, अक्षय। अक्षर, नित्य, शाश्वत, सततस्थायी। चिरजीवी, जिसका कभी विनाश न हो, सदा रहने वाला। परमात्मा। ब्रह्म। जीव। प्रकृति। [दे० **अबिनासी**]।

अविनीत—(वि०, दे०) जो विनीत या बिनम्र न हो, उद्धत, अदांत, उद्दंड, दुर्दांत। दुष्ट, सरकश, ढीठ, उच्छृंखल। [स्त्री० **अविनीता**]।

अविपक्व—(वि०, सं०) अधपका। मूलरूप से पूर्ण नहीं।

अविपक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) जो विरोधी पक्ष न हो। [**अविपक्षी**-(वि०) मित्र, अपने पक्ष का]।

अविपन्न—(वि०, सं०) निष्कलुष, पवित्र।

अविपरीत—(वि०, सं०) जो विपरीत। या उलटा न हो।

अविपाक—(वि०, सं०) विपाक या फल से रहित। निष्फल। परिणाम-शून्य। फल विहीन, अफल। अपरिणत।

अविपुल—(वि०, सं०) अविस्तृत, अप्रचुर। [संज्ञा, स्त्री० **अविपुलता**]।

अविप्र—(वि०, सं०) जो विप्र या ब्राह्मण न हो, अब्राह्मण। [संज्ञा, स्त्री० **अविप्रता**]।

अविप्रलब्ध—(वि०, सं०) अवंचित, अप्रतारित, धोखा न खाया हुआ, न ठगा हुआ।

अविप्लव—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुपद्रव, विप्लवशून्य। [वि० **अविप्लवी**]।

अविफल—(वि०, सं०) जो विफल या निष्फल न हो। [संज्ञा, स्त्री०—**अविफलता**]।

अविभक्त—(वि०, सं०) मिला हुआ, अपृथक। अखड, अभंग, अभिन्न। एक, शामिलाती, जो बाँटा न गया हो। जिसका विभाग न किया गया हो, अविभाजित।

अविभाजन—(संज्ञा, पु०, सं०) न बाँटना। [वि० **अविभाजक**]।

अविभाज्य—(वि०, सं०) जो विभाग के योग्य न

हो। [**अविभाग**-(वि०) भाग रहित। वि० **अविभाजनीय**]।

अविभावन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्पष्ट ज्ञान या बोध न होना। अभाव, लोप।

अविभिन्न—(वि०, सं०) जो विभिन्न न हो, संगठित। चलो अविभिन्न आर्य की मूर्त्ति"—मैथिली०।

अविभु—(वि०, सं०) जो सर्वत्र व्यापक न हो, अव्याप्त।

अविभूषित—(वि०, सं०) अनलंकृत, न सजा हुआ, अभूषित।

अविमुक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) जो मुक्त न हो, न छोड़ा हुआ। बद्ध। अव्यक्त, अमुक्त। [संज्ञा, पु०, सं०—**कनपटी**]।—**क्षेत्र**-(पु०) काशी, बनारस।

अविमुक्तेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) काशी का सुप्रसिद्ध शिव-लिङ्ग।

अवियोग—(वि०, सं०) सम्बद्ध, मिला हुआ।

अविरक्त—(वि०, सं०) जो विरक्त या अलग न हो, अनुरक्त। [संज्ञा, स्त्री० **अविरक्तता**]।

अविरत—(वि०,सं०) विराम-विहीन। निरंतर। लगा हुआ। बिना ठहराव के, लीन, अनुरत। (क्रि०,वि०, सं०) निरन्तर, लगातार। नित्य। सर्वदा, हमेशा, बराबर। विरामशून्य, अविरल, अनवरत। "अविरत इच्छा ही मे नर्तन"—पंत।

अविरति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निवृत्ति का अभाव, लीनता, अनुरति। विषयासक्ति। अशांति।

अविरथा—(क्रि०, वि०, दे०) व्यर्थ, वृथा। (वि०, दे०) अव्यर्थ।

अविरद—(संज्ञा, पु०, सं०) अयश। असंकल्प। अकीर्ति। (वि०) विरद-रहित, प्रणहीन। **मुहा०**—**करना**—प्रण छुटाना।

अविरल—(वि०, सं०) मिला हुआ, अपृथक्, अभिन्न, घना, सघन, निविड़। निरंतर, लगातार। (**संज्ञा, स्त्री०**—**अविरलता**]। "अविरल भगति माँगि वर"—तुल०।

अविरहित—(वि०, सं०) अवियुक्त, जो अलग न हो।

अविराग—(संज्ञा, पु०, सं०) विराग विहीन, अनुराग।

अविरागी—(वि०) जो विरागी न हो।

अविराम—(वि०, सं०) बिना विश्राम के, बिना ठहराव के, लगातार, निरंतर।

अविरुद्ध—(वि०, सं०) जो विरुद्ध या खिलाफ न हो। [संज्ञा **अविरुद्धता**]।

अविरेचन—(संज्ञा, पु०, सं०) कब्ज करने वाली वस्तु।

अविरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) समानता, साम्य, सादृश्य। मैत्री। विरोधाभाव, अनुकूलता। मल। संगति। एकता। प्रीति।

अविरोधी—(वि०) [सं० अविरोधिन्] जो विरोधी या शत्रु न हो, मित्र। अनुकूल। शान्त। [स्त्री० **अविरोधिनी**]।

अविलक्ष्य—(वि०, सं०) लक्ष्यहीन, जिसका कोई उद्देश्य न हो। जिसका उपचार संभव न हो।

अविलम्ब—(संज्ञा, पु०, सं०) शीघ्र, तुरन्त, बिना देर के।

अविलोकन—(संज्ञा, पु०, सं०) अवलोकन का अभाव, न देखना, अनवलोकन।

अविलोकनीय—(वि०, सं०) न देखने लायक।

अविलोकित—(वि०, सं०) न देखा हुआ। न पढ़ा हुआ।

अविलोचन—(वि०, सं०) नेत्र-हीन, अंधा। मूर्ख, अज्ञानी, विमूढ़।

अविलोम—(वि०, सं०) अविरुद्ध, अविपरीत, जो उलटा न हो।

अविलोल—(वि०, सं०) जो विलोल या चंचल न हो, अचंचल।

अविवक्षित—(वि०, सं०) अनुदृष्टि, जिसके बारे में कोई कथन आवश्यक न हो।

अविवाद—(वि०, सं०) विवाद-विहीन, निर्विवाद।

अविवादी—(वि०, सं०) विवाद न करने वाला। शान्त, धीर, गंभीर। जो झगड़ालु न हो, मेली।

अविवाहित—(वि०, पु०, सं०) जिसका ब्याह न हुआ हो, कुमारा, कुवाँरा, (क्वाँरा)। [स्त्री० **अविवाहिता**]।

अविविक्त—(वि०, सं०) भेदरहित, जिसकी विवेचना न हुई हो। विवेकशून्य।

अविविध—(वि०, सं०) विविध नहीं, एक।

अविवेक—(संज्ञा, पु०, सं०) विवेकाभाव, अविचार। अज्ञान। नासमझी, नादानी। अन्याय।

अविवेकिता—(संज्ञा, भा०, स्त्री०, सं०) अज्ञानता, मूर्खता। विवेक-हीनता। विचार-शून्यता।

अविवेकी—(वि०) [सं० अविवेकिन्] अज्ञानी, मूर्ख। अविचारी। मूढ़। अन्यायी। विवेकहीन।

अविशिष्ट—(वि०) जो विशेषता-हीन हो, साधारण, सामान्य।

अविशुद्ध—(वि०, सं०) अपवित्र। मिला हुआ, जो शुद्ध न हो।

अविशेष—(वि०,सं०) भेदक । धर्म-रहित । तुल्य । विशेषता-रहित, साधारण, समान । (संज्ञा, पु०) भेदक धर्माभाव, सामान्य, सांतत्व, धीरत्व और मूढत्व आदि विशेषताओं से रहित, सूक्ष्म-भूत (सांख्य) । [संज्ञा, स्त्री० **अविशेषता**] ।

अविश्वसनीय—(वि०, सं०) जिस पर विश्वास न किया जा सके ।

अविश्वस्त—(वि०) न विश्वसनीय, विश्वास करने के अयोग्य, अविश्वसनीय ।

अविश्वास—(वि०, सं०) विश्वास-शून्य, अप्रतीति । अनिश्चय । अप्रत्यय । (संज्ञा, पु०) विश्वासाभाव, प्रतीति-विहीनता ।—**मतदान**—अविश्वास का प्रस्ताव । [वोट आफ नो कानफिडेंस]

अविश्वासी—(वि०) [सं० अविश्वासिन्] जो किसी पर विश्वास न करे । जिस पर विश्वास न किया जाय ।

अविश्रब्ध—(वि०, सं०) बिना विश्वास के, जिसे विश्वास या प्रतीति न हो ।

अविश्रान्त—(वि०,सं०) जो न रुके । जो न थके । अशिथिल, अक्लान्त, अश्रान्त ।

अविश्राम—(वि०,सं०) विश्राम-रहित । अविराम । आराम का न होना । बेचैन ।

अविषम—(वि०, सं०) जो विषम न हो, सम । [संज्ञा **अवैषम्य**] ।

अविषय—(वि०, सं०) जो मन या इंद्रिय का विषय न हो, अगोचर, अनिर्वचनीय ।

अविषयी—(वि०, सं०) जो विषय-वासनाओं में लिप्त न हो, विषय-भोग-विहीन ।

अविषैला—(वि०, सं०) जो विषैला या विषयुक्त न हो । [वि० **अविषाक्त**] ।

अविस्तृत—(वि०, सं०) घना, ठसा हुआ ।

अविहड़*—(वि०, दे०) [सं० अ + विघट] जो खंडित न हो, अखंड । अनश्वर । बीहड़, ऊँचा-नीचा ।

अविहित—(वि०, सं०) विधि-विरुद्ध । अनुचित । न कहा हुआ । [**संज्ञा अवैहित्य**] ।

अवीरा—(वि०, स्त्री०, सं०) पुत्र और पति । रहित स्त्री । स्वच्छंद या स्वतंत्र (स्त्री) ।

अवेक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) अवलोकन, देखना । जाँच-पड़ताल करना । देख-भाल ।

अवेक्षणीय—(वि०, सं०) अवलोकनीय, देखने के लायक़ । [वि० **अवेक्षित**—अवलोकित] ।

अवेग—(संज्ञा, पु०, सं०) वेग-रहित । मंदगति, मंथर गति, बिना तेजी के ।

अवेजक्ष—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० एवज] बदला, प्रतीकार ।

अवेतन—(वि०, सं०) बिना वेतन का (विदाउट पे) । —**अवकाश**—बिना वेतन की छुट्टी (लीव विदाउट पे) ।

अवेपथु—(वि०, सं०) अकंपित, कंपन-रहित, अविकंपित ।

अवेर—(क्रि०, वि०, सं०) विलम्ब, अबेर, देरी । (वि०, दे०) [अ + बेर] देरी नहीं, शीघ्र ।

अवेश—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आवेश] जोश, चैतन्य । भूत लगना । तैश, अवेस, [**आवेस** दे०] ।

अवेष्टित—(वि०, सं०) लपेटा हुआ, (आवेष्टित) । (वि०) [अ + वेष्टित] न लपेटा हुआ ।

अवेस्ता—(संज्ञा, स्त्री०) पारसियों की धार्मिक पुस्तक जिसका पूरा नाम जेंद अवेस्ता है ।

अवैज्ञानिक—(वि०, सं०) जो अवैज्ञानिक या विज्ञान सम्बन्धी न हो । अशास्त्रीय ।

अवैतनिक—(वि०) [सं० अ + वेतन] बिना वेतन या तनख्वाह के काम करने वाला, निश्शुल्क [आनरेरी]।—**अधिकरणिक**—बिना वेतन का न्यायाधिकारी [आनरेरी मजिस्ट्रेट]।

अवैदिक—(वि०, सं०) वेद-विरुद्ध, वेद के विपरीत । —**धर्म**—(पु०) वेद-विरुद्ध धर्म ।

अवैद्य—(वि०, सं०) बुरा वैद्य । वैद्याभाव ।

अवैध—(वि०) [सं० अ + विधि] विधि के प्रतिकूल, अनियमित, बेक़ायदा ।—**अनुबंध**—(पु०) अवैध या नियम विरुद्ध ठेका [इल्लीगल कॉन्ट्रैक्ट] ।—**अभिप्रवेश**—(पु०) अधिकार प्रवेश [इल्लीगल ट्रेसपास] ।—**आराधन**—(पु०) नाजायज तरीके से प्रसन्न करना [इल्लीगल ग्रेटीफिकेशन] ।—**कारावास**—(पु०) अनुचित कैद [रॉगफुल कनफाइनमेंट] ।—**गिरफ्तारी**—(स्त्री०) अनुचित गिरफ्तारी, नाजायज गिरफ्तारी [रांगफुल अरेस्ट] ।—**निरोध**—(पु०) अनुचित रोक [रांगफुल रेस्ट्रैंट] ।—**निर्वाचन**—(पु०) गैरकानूनी चुनाव [इनवैलिड एलेक्शन] । —**निष्कासन**—(पु०) अनुचित या अपकारी बेदखली [रांगफुल इजेक्टमेंट] ।—**परितोषण**—(पु०) घूस, रिश्वत [इललीगल ग्रैटीफिकेशन] ।—**लाभ**—(पु०) अनुचित फायदा [रांगफुल गेन] ।—**व्यापार**—(पु०) नियम विरुद्ध किया जाने वाला व्यापार [इल्लीगल ट्रेड] ।—**संव्यवहार**—(पु०) गैर कानूनी व्यापार या कार्य [इल्लीगल ट्रान्जैक्शन] ।—**सभा**—(स्त्री०) गैरकानूनी सभा [अन ला फुल मीटिंग] ।—**साक्ष्य**—(पु०) गैरकानूनी गवाही [इनलीगल एवीडेंस] ।

अवैधानिक—(वि०, सं०) बिना विधान के।
अवैयक्तिक—(वि०, सं०) जो व्यक्तिगत या व्यक्ति सम्बन्धी न हो। व्यापक। सर्वसाधारण। सामूहिक, सामुदायिक।
अवैराग्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वैराग्य का अभाव, विराग-विहीनता, अविराग।
अवैलक्षण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अविलक्षणता, अविचित्रता। साधारणता, विशेषताभाव।
अवैवाहिक—(वि०, सं०) जो वैवाहिक या विवाह-सम्बन्धी न हो, विवाह-विषयक नहीं। [यौ० **अवैवाहिक-जीवन**]।
अव्यक्त—(वि०, सं०) अप्रत्यक्ष, अप्रगट, अगोचर, जो जाहिर न हो, अज्ञात, अदृष्ट। अनिर्वचनीय, अकथनीय। जिसमें रूप-गुण न हो। अस्फुट, अस्पष्ट। अप्रकाशित। (संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु। कामदेव। शिव। प्रधान। प्रकृति (सांख्य) आत्मा। परमात्मा। क्रिया-रहित ब्रह्म। जीव। सूक्ष्म-शरीर। सुषुप्ति अवस्था। वह राशि जिसका नाम अनिश्चित हो। (बीजगणित)। "अव्यक्त राशि ततो मूलम् संकलेत्-मूलमानयेत्"—लीला०। "अव्यक्त मूलमनादि तरुत्वच्चारु निगमागम भन"—तुल०। "अव्यक्त प्रकृति उन्मीलन के"—प्रसाद। [संज्ञा, **अव्यक्तता**]। **—गणित**–(स्त्री०) बीजगणित। **—राग**–(पु०) ईषत् लोहित, हलका लाल रंग। गौर, श्वेत। (वि०) जिसके रागादि प्रगट न हों। **—राशि**–(स्त्री०) अनिश्चित नाम वाली राशि (बीजगणित)। **—लिंग**–(पु०) महत्तत्वादि (सांख्य)। संन्यासी, साधु। न पहिचाना जाने वाला रोग (वैद्य०)। अस्पष्ट चिन्ह वाला।
अव्यग्र—(वि०, सं०) घबराहट-रहित, धीर, अनाकुल।
अव्यग्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धीरता, अनाकुलता।
अव्यय—(वि०, सं०) जो विकार को न प्राप्त हो। सर्वदा एक सा या एक रस रहने वाला। अक्षय, निर्विकार। नित्य, आद्यंतहीन, अनश्वर। कृपण। (संज्ञा, पु०, सं०) वे शब्द जिनके रूप लिंग, वचन और कारकों के प्रभाव से नहीं बदलते और जो सदैव एक ही या समान रूप से प्रयुक्त होते हैं जैसे— और, अथवा, किन्तु, फिर, आदि। विष्णु, परमेश्वर। ब्रह्म। शिव। (वि०) [सं० अ+व्यय] व्यय रहित। "हे चिर अव्यय चिर नूतन"—पंत। [वि० **अव्यर्थ**]।
अव्ययीभाव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक अव्यय पद के साथ शब्द-संयोजन का विधान, समास का एक भेद, जैसे प्रतिरूप, अतिकाल (व्या०)।
अव्यर्थ—(वि०, सं०) जो व्यर्थ न हो। सफल। सार्थक। अमोघ, न चूकने वाला, अचूक।
अव्यवधान—(वि०, सं०) अनावृत। निकट। (संज्ञा, पु०, सं०) व्यवधानाभाव, दो वस्तुओं को न मिलने देने वाले या पृथक् करने वाले बाधक का अभाव। लापरवाह। अन्तर्हित।
अव्यवसाय—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यवसाय या उद्यम का अभाव। (वि०) उद्यमरहित। बेकार। आलसी।
अव्यवस्था—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विधि या विधान का न होना, बेक़ायदगी, अनियमितता, अविधि। स्थिति या मर्यादा का न होना। शास्त्रादि के विरुद्ध व्यवस्था। बदइंतज़ामी, गड़बड़ी।
अव्यवस्थित—(वि०, सं०) शास्त्रादि विधि के अनुकूल जो न हो। मर्यादा-रहित। बेठिकाने का। चंचल, अस्थिर। सिद्धान्त-रहित। असंगठित, व्यतिक्रम-युक्त।
अव्यवहार—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्व्यवहार।
अव्यवहार्य—(वि०, सं०) जो व्यवहार में न लाया जा सके। व्यवहार या प्रयोग के जो अनुपयुक्त, या अयोग्य हो। पतित। जाति-भ्रष्ट।
अव्यवहित—(वि०, सं०) व्यवधान-रहित। संस्कृत। सन्निकट, समीप, पास।
अव्यवहृत—(वि०, सं०) जिसका सर्वथा प्रयोग न किया गया हो।
अव्यसन—(वि०, सं०) जिसे कोई बुरी लत या आदत न हो। व्यसनहीन।
अव्याकृत—(वि०, सं०) जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो। अप्रकट, गुप्त। कारण-रूप। प्रकृत (सांख्य शास्त्र)। छिपा हुआ। निर्विकार।
अव्याघात—(वि०, सं०) बेरोक, बिना रुकावट के। लगातार।
अव्याज—(वि०, सं०) ब्याज या बहाना से रहित। सूद से रहित, बेसूद, बिना ब्याज के।
अव्यापक—(वि०, सं०) जो व्यापक न हो, अविभु। [संज्ञा, स्त्री० **अव्यापकता**]।
अव्यापार—(वि०, सं०) बिना व्यापार या काम के, व्यापाराभाव, बिना काम के, कार्याभाव, बेकाम, अव्यवसाय। (संज्ञा, पु०) बुरा व्यापार या बुरा काम।
अव्याप्त—(वि०, सं०) जो व्याप्त या व्यापक न हो।

अव्याप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी परिभाषा के सर्वत्र या सर्वथा घटित न होने का दोष (न्याय०)। किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का मिला हुआ न होना। अनुमान का कारण न होना (न्याय०)। अविस्तार। सम्पूर्ण लक्ष्य पर लक्षण का न घटित होना (तर्क०)। असम्बंध। जहाँ सम्बन्ध रहना चाहिये वहां न होना। [विलो० **अतिव्याप्ति, व्याप्ति**] [संज्ञा, स्त्री०, सं० **अव्यापकता**]।

अव्यावृत—(वि०, सं०) निरंतर, लगातार, अटूट। ज्यों का त्यों। यथास्यात तथा। बराबर। अविरल, अविरत।

अव्याहत—(वि०, सं०) अप्रतिरुद्ध, बेरोक। सत्य, ठीक। युक्ति-युक्त। अवरोध-रहित। "अव्याहतैः स्वैरगतैः स तस्या"—रघु०।

अव्याहृत—(वि०, सं०) अनापहृत।

अव्युत्पन्न—(वि०,सं०) अनभिज्ञ, अनारी। वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति या सिद्धि न हो सके (व्याक०)।

अव्यूढ—(वि०, सं०) अविपुल, अविशाल।

अव्वल—(वि०, अ०) पहिला, आदि, प्रथम। उत्तम, श्रेष्ठ। (संज्ञा, पु०) आदि, प्रारम्भ।

अशंक—(वि०, सं०) बेडर, निडर, निर्भय, निश्शंक, निर्भीक।

अशंकर—(वि०, सं०) अमंगलकारी, अकल्याण-कारक।

अशंका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शंका का न होना। संदेह-विहीनता।

अशंकित—(वि०, सं०) निर्भीक, शंकारहित। [स्त्री० **अशंकिता**]।

अशंभु—(वि०, सं०) अमंगल, अशिव। अहितकर।

अशआर—(संज्ञा, पु०, अ०) [शेर का ब० व०] कविताएँ, छंद, पद्य।

अशकुन—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा शकुन, बुरा लक्षण, अपशकुन। [**असगुन** दे०] बुरे चिन्ह, अशुभ सूचक बातें।

अशक्त—(वि०, सं०) निर्बल, असमर्थ, कमजोर, [**असक्त** दे०] शक्ति-रहित।

अशक्तता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अक्षमता, अयोग्यता, असमर्थता, निर्बलता।

अशक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निर्बलता। इन्द्रियों और बुद्धि का बेकाम होना (सांख्य)। क्षीणता, शक्ति हीनता।

अशक्य—(वि०, सं०) असाध्य, न होने योग्य। असम्भव। शक्ति से परे।

अशक्यता—(संज्ञा, भा०, स्त्री०, सं०) असाध्य, साध्यातिरिक्त, असम्भवता।

अशत्रु—(वि०) शत्रुहीन, जिसे शत्रु की ओर से भय न हो।

अशन—(संज्ञा, पु०, सं०) भोजन, आहार, अन्न, खाना। चित्रक। भिलावाँ। [**असन** दे०]। "असन कंद-फल-मूल"—तुल०। [यौ० **अशन-वसन**]।

अशनाच्छादन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अन्न-वस्त्र, रोटी-कपड़ा, खाना-कपड़ा।

अशनि—(संज्ञा, पु०, सं०) विद्युत। बज्र। इन्द्रास्त्र, [**असनि** दे०]। बज्र, बिजली। इन्द्र। अग्नि। "लूक न असनि केतु नहिं राहू"—तुल०। (यौ०)—**पात**–(पु०) वज्रपात, विद्युत्-पतन। "अशनिपात-सभा यह सूचना"—हरिऔध। (वि०) [सं० अ + शनि] शनि-रहित। [यौ० **अशनीश**—इन्द्र]।

अशम—(संज्ञा, पु०, सं०) लुब्धता। विप्लव, अशान्ति। शमनाभाव।

अशम्बल—(वि०, सं०) अर्थ-हीन, मार्ग व्यय-शून्य, पाथेय रहित। [**असम्बल** दे०]।

अशम्य—(वि०, सं०) विराम-योग्य, अविश्रान्त, विश्रामाभाव।

अशयन—(वि०, सं०) बिना शयन या सोने के, न सोना, अनिद्रा। [**असयन** दे०]।

अशरण—(वि०, सं०) निराश्रय। रक्षा-हीन। निरालंब, अनाथ, जिसे कहीं शरण न हो। [**असरन** दे०]। —**शरण**–(वि०, यौ०) निराश्रयाश्रय, अनाथ-नाथ, भगवान, ईश्वर। [**असरन-सरन** दे०]।

अशरण्य—(वि०, सं०) जो शरण न दे सके, शरण न दे सकने वाला, [शरणे साधुः=शरण्यः, अ + शरण्य]।

अशरफ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सोलह से पचीस रुपये तक का सोने का एक सिक्का, मोहर (दे०)। पीले रंग का एक फूल। स्वर्ण-मुद्रा। [**असरफी** दे०]।

अशराफ़—(वि०, अ०)[शरीफ का ब०, व०] शरीफ़, भद्र, सज्जन, भलामानुष, अच्छा आदमी।

अशराफ़त—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) भलमनसाहत, सज्जनता।

अशरीर—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव, अनंग, कन्दर्प, अतनु, अदेह। (वि०) शरीर-रहित।

अशरीरी—(वि०) जो शरीरधारी न हो, निराकर।

अशांत—(वि०, सं०) अशिष्ट। जो शान्त न हो, अस्थिर, अधीर, दुरन्त, चंचल। असंतुष्ट। भावित।

अशांतता—(संज्ञा, स्त्री०, भा०, सं०) अशिष्टता । दौरात्म्य । अधीरता ।

अशांति—(संज्ञा,स्त्री०, सं०) अस्थिरता, चंचलता । क्षोभ, असंतोष । उत्पात, खलबली, गड़बड़ी, उथल-पुथल ।

अशांश—(पु०, यौ०, सं०) क्रमशः, भाग, क़िश्त । [इन्सटालमेंट] ।

अशापित—(वि०, सं०) जिसे शाप न दिया गया हो, शाप-रहित ।

अशारीरिक—(वि०, सं०) जो शरीर-सम्बन्धी न हो, जो देह-विषयक न हो । मानसिक, अदैहिक ।

अशालीन—(वि०, सं०) धृष्ट, ढीठ ।

अशालीनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धृष्टता, ढिठाई ।

अशावरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार की रागिनी का नाम, [**असावरी** दे०] ।

अशासकीय—(वि०, सं०) गैर सरकारी । [अन आफ़िशल] ।

अशासन—(पु०) व्यवस्था का अभाव, अराजकता ।

अशासनीय—(वि०, यौ०, सं०) गैर सरकारी । [नान आफिशल] ।

अशासित—(वि०, सं०) शासन-रहित, अकृत-शासन ।

अशास्त्र—(वि०,सं०) शास्त्र-विरुद्ध । अवैध, विधि-हीन ।

अशास्त्रीय—(वि०,सं०) शास्त्र-विरुद्ध । जो शास्त्र-सम्बन्धी न हो । अवैज्ञानिक ।

अशिक्षित—(वि०, सं०) जिसे शिक्षा न दी गई हो, जिसने शिक्षा न पाई हो, अपढ़, अनपढ़, बेपढ़ा-लिखा, मूर्ख, अपंडित । असभ्य, अनभिज्ञ ।

अशित—(वि०, सं०) [अश्+क्त] भुक्त, खादित । (वि०) [अ+शित] श्याम ।

अशिर—(संज्ञा, पु०) [सं० अश+इर] हीरक, हीरा, अग्नि । राक्षस । सूर्य ।

अशिरस्क—(वि०, सं०) मस्तक-हीन, कबंध, धड़, रुंड ।

अशिव—(वि०, सं०) अमंगल, अशुभ ।

अशिशिर—(वि०, सं०) अशीतल, उष्ण, गर्म । (वि०) शिशिराभाव ।

अशिश्विका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनपत्या, पुत्र-कन्या-हीन स्त्री, निपूती ।

अशिष्ट—(वि०, सं०) उजड्ड, बेहूदा, असभ्य । मूर्ख । प्रगल्भ, दुरन्त, असाधु ।—**प्रकाशन**-(पु०) अश्लील प्रकाशन [इनडीसेंट पब्लिकेशन] ।

अशिष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) असाधुता । ढिठाई, असभ्यता, बेहूदगी, उजड्डपन ।

अशुचि—(वि०, सं०) अशुद्ध, अपवित्र, अपुनीत । गंदा, मैला, मलीन, अस्वच्छ, अशौच ।

अशुद्ध—(वि०, सं०) अपवित्र, नापाक । बिना शोधा हुआ, असंस्कृत । गलत । अपरिष्कृत । अशुचि । जो ठीक या सही न हो । "लोहूसनी जीत मुझे दीखती अशुद्ध है"—दिनकर ।

अशुद्धता—(संज्ञा, स्त्री०,सं०) भूल । अपवित्रता । गंदगी । गलती, त्रुटि । अशोधन ।

अशुद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अशुद्धता ।

अशुन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अश्विनी] अश्विनी नामक एक नक्षत्र, [**असुनी** दे०] ।

अशुभ—(संज्ञा, पु०, सं०) अमंगल । अहित । पाप । अपराध । (वि०, सं०) बुरा, ख़राब, अमंगलकारी । —**चिन्ता**—(स्त्री०) बुरा चिन्तन, अनिष्ट विचार, या सोचना । [वि० **अशुभचिन्तक** । संज्ञा **अशुभ-चिन्तन**] ।—**दर्शक**-(वि०) अशुभदर्शी, बुराई या पाप या अपशकुन देखने वाला । **मुहा०—मनाना या चेतना**—बुरा चेतना, किसी के लिये अमंगल कामना करना, शाप देना ।—**होना**—अपशकुन या बुरा होना ।—**दर्शन**-(पु०) जिसका देखना अमंगलकारी हो । बुरे रूप का । अपशकुन । पापी । बुरे लक्षण या चिन्ह ।

अशुभेच्छु—(वि०, यौ०, सं०) अशुभैषी, बुरा चाहने वाला । [संज्ञा, यौ० **अशुभेच्छा**] ।

अशून्य—(वि०, सं०) जो शून्य न हो । "मेरा अम्बर अशून्य है आली"—मैथिली० ।—**शयनव्रत** -(पु०) श्रावण कृष्ण द्वितीया को किया जाने वाला एक व्रत विशेष ।

अशेष—(वि०, सं०) पूरा, समूचा । समाप्त, अनंत । बहुत । निश्शेष । जो शेष न रहे ।—**ज्ञ**-(वि०) सर्वज्ञ, सर्ववित, सब जानने वाला [संज्ञा, स्त्री० **अशेषज्ञता**] ।—**विशेष**-(अव्य०) अनेक प्रकार से, बहुत रूप से, अनेक भाँति, विविध प्रकार, सम्पूर्णतया ।

अशेषतः—(अव्य०, अशेष+तस्) सब प्रकार से । अनेक रूप से, बहुत भाँति । पूर्णतया ।

अशोक—(वि०,सं०) शोक-रहित । दुख-शून्य, सुख । (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का पेड़ जिसकी पत्तियाँ आम की तरह लम्बी लम्बी और किनारे पर लहरदार होती हैं । "सुनहु विनय मम विटप अशोका"—"जनु अशोक-अंगार"—तुल० । पारा । एक राजा जो मौर्य वंशीय सम्राट् बिन्दुसार के पुत्र और चन्द्र-

गुप्त के पौत्र थे, ये २५ वर्ष की आयु में शत्रुओं को हरा कर सिंहासनारूढ़ हुए। इनका दूसरा नाम शिलालेखों में प्रियदर्शी पाया जाता है, इनका राज्य-काल ईसा के २५७ वर्ष पूर्व से चलता है। प्रथम ये सनातन धर्मावलम्बी थे, राजा होने के ७ वर्ष बाद बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गये, आधा भारत इनके राज्य मे था, इन्ही के समय में बौद्ध-महासभा का द्वितीय अधिवेशन हुआ। इनके राज्य का प्रबंध बड़ा ही नीति-नय-पूर्ण और सुन्दर था (इति०)। [वि० **अशोकित**—शोक-रहित, दुःख-हीन]। "निज अशोक से माधवी मिली"—मैथिली०।—**पुष्पमंजरी**—(स्त्री०, यौ०) दंडक वृत्त का भेद विशेष (पिं०)। —**वाटिका**-(स्त्री०) शोक नाशक रम्य उद्यान या उपवन, रावण की उस प्रसिद्ध वाटिका का नाम जिसमें उसने सीता जी को रक्खा था और जिसे हनुमान जी ने उजाड़ डाला था, अशोकवन, यह परम रमणीक वन था (रामा०)।

अशोच—(संज्ञा, पु०) [सं० अशोक] शोक-रहित, शोकाभाव, सोच-रहित, शोच-हीन। [**असोच** दे०]

अशोचनीय—(वि०, सं०) जो शोच करने योग्य न हो।

अशोच्य—(वि०, सं०) शोक के अयोग्य। [वि० **अशोचनीय**]। "अशोच्यानन्वशोचस्त्वम्"—[गीता०]।

अशोध—(संज्ञा, पु०, सं०) शोध या खोज का अभाव। (वि०) जिसका शोध या खोज न हो।

अशोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) न शुद्ध करना। [वि० **अशोधनीय**—न खोजने लायक, शुद्ध न करने योग्य]।

अशोधित—(वि०, सं०) जो शुद्ध न किया गया हो, असंस्कृत, असंशोधित।

अशोध्य—(वि०, सं०) जिसका संतोषजनक निवाह न किया जा सके। जिसका संशोधन सम्भव न हो। —**ऋण**-न चुकाया जाने वाला कर्ज [इरिंडीमेबुल डेट]।

अशोभन—(वि०, सं०) असुन्दर, अश्री, जो रम्य न हो, अरमणीक, कुरूप, असौम्य।

अशोभनीय—(वि०, सं०) जो शोभा के योग्य न हो, भद्दा, कुत्सित, अरमणीय।

अशोभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शोभा या सौंदर्य का अभाव, छटा-रहित, छवि-विहीन। (वि०) कुरूप, बुरा, अनगढ़, भद्दा।

अशोभित—(वि०, सं०) जो शोभित या सुन्दर न हो, अरम्य, अरुचिर, अरोचक।

अशौच—(संज्ञा, पु०, सं०) अपवित्रता, अशुद्धता। किसी प्राणी के मरने या किसी बच्चे के पैदा होने पर घर में मानी जानी वाली एक प्रकार की अशुद्धि। मल-त्याग से सम्बन्ध रखने वाली अशुचिता।—**निवृत्ति**-(स्त्री०) अशुद्धि से निवृत्त होना, अशुचिता का नाश।

अशौचान्त—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अशौच का अन्तिम दिवस, सूतक का आखीरी दिन, अशौ-चावसान।

अशौर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) शूरता का अभाव, भीरुता, कायरता, अशूरत्व, अविक्रम, अपराक्रम।

अश्क—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) आँसू, अश्रु (सं०)।

अश्मंतक—(संज्ञा, पु०, सं०) मूँज की तरह की एक घास, जिससे प्राचीन काल में मेखला बनाते थे, आच्छादन, ढकना।

अश्म—(संज्ञा, पु०) [सं० अश् + मन्] पाहन, पत्थर। पहाड़, पर्वत। मेघ, बादल।

अश्मक—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण के एक प्रान्त का प्राचीन नाम, त्रावनकोर।—**ईश** (**अश्मकेश**)—(पु०) अश्मक देश का राजा, जो महाभारत में लड़ा था।—**कुट्ट**-(पु०) पत्थर से अन्न को कूट कर खाने वाले वानप्रस्थ विशिष्ट जन।—**ज**-(पु०) शिलाजीत, लोह, पत्थर से उत्पन्न वस्तु, अश्मजात।—**दारण**-(पु०) पत्थर काटने वाला अस्त्र, अश्मविदारण।

अश्मरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पथरी नामक रोग, मूत्रकृच्छ रोग (वैद्य०)।

अश्रद्धा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्रद्धा का अभाव, अभक्ति। घृणा। अविश्वास।

अश्रद्धेय—(वि०, सं०) अनादरणीय, भक्ति के योग्य जो न हो, अपूज्य, असेव्य। घृण्य, घृणा के योग्य, असेवनीय।

अश्रप—(संज्ञा, पु०) [सं० अश्र + पा + ड] राक्षस, निशाचर।

अश्रवण—(वि०, सं०) कर्णाभाव, बिना कान के। न सुनना [वि०**अश्रवणीय**]।

अश्रांत—(वि०, सं०) जो थका-माँदा न हो, अशि-थिल। (क्रि०, वि०) लगातार, निरंतर, अनवरत, अविरल। "माधवी रजनी में अश्रांत"—प्रसाद।

अश्रांति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अशैथिल्य। विश्राम। अक्लांति।

अश्राद्ध—(वि०, सं०) प्रेत-कर्म रहित, श्राद्धविहीन।

अश्राव्य—(वि०, सं०) न सुनने के योग्य, अश्रोतव्य। नाटक में वह कथन जिसे कोई न सुने (नाट्य०)।

अश्रि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अ+श्रि+क्विप्] धार। (वि०) पैना, तीखा, तीक्ष्ण।

अश्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्री-विहीनता, अकांति। (वि०) श्री-विहीन, हतश्री, कांति-रहित, अशोभित, हताभ, हतप्रभ।

अश्रु—(संज्ञा, पु०, सं०) आँसू (दे०)। आँस (ब्र०) अँसुवा [प्रान्ती०] नेत्र-जल, नयनाम्बु, नयन-नीर। **—विनिर्मित**-(वि०) आँसू से जिसका निर्माण हुआ हो। "तरल अश्रु-विनिर्मित गति लें"—महा०। **—हास**-(पु०) आँसू और हंसी, विषाद और विनोद। दुख और सुख। निराशा और आशा। "अश्रु-हास ने विश्व सजाया"—महा०।**—पात**-(पु०) आँसू गिराना, रोना, अश्रुपतन-अश्रुप्रवाह, अश्रु-विमोचन।**—पूर्ण**-(वि०) आँसुओं से भरा हुआ। [यौ० **अश्रु-सिक्त**—आँसुओं से सिंचा]।

अश्रुत—(वि०, सं०) जो न सुना गया हो, न सुना हुआ, अनाकर्णित। जिससे कुछ सुना न हो।।बिना सनदो [अनकवनेंटेड]।**—जनसेवा**-बिना सनद की असैनिक नौकरी [अनकवनेंटेड सिविल सर्विस]। **—पूर्व**-(वि०) जो पहिले न सुना गया हो, अद्भुत, विलक्षण, अपूर्व, अभूतपूर्व।

अश्रुति—(वि०, सं०) जो वैदिक, या वेदविहित न हो। (वि०) कान-रहित, कर्ण-विहीन। [यौ० **अश्रुतिकर्म**]।

अश्रेयस्—(वि०, सं०) निर्गुण। अधम। अमंगल, अकल्याण [वि० **अश्रेयस्कर**]।

अश्रेष्ठ—(वि०, सं०) बुरा। साधारण, उत्तम नहीं, अनुत्तम, सामान्य। [स्त्री० **अश्रेष्ठा**। **संज्ञा,** स्त्री० **अश्रेष्ठता**]।

अश्लाघ्य—(वि०, सं०) जो प्रशंसा के योग्य न हो, निन्दायोग्य।

अश्लिष्ट—(वि०, सं०) श्लेष शून्य, जो जुड़ा या मिला न हो, असंबद्ध। श्लेष-रहित।

अश्लील—(वि०,सं०) फूहड़, भद्दा। लज्जाजनक। नीच, अधम, असभ्य।**—चित्र**-गंदा चित्र [ऑबसीन पिक्चर]।**—पुस्तक**-कुरुचिपूर्ण या गंदी पुस्तक [आबसीनबुक]।**—प्रदर्शन**-गंदा प्रदर्शन। [आबसीन इक्जीबिशन]।

अश्लीलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) फूहड़पन, भद्दापन, लज्जास्पदता, घृणा, लज्जा। असभ्यता-सूचक बातों या शब्दों का काव्य में प्रयोग करने का दोष विशेष (काव्य शा०)। इसके भेद हैं :—घृणाव्यञ्जक, लज्जा-व्यञ्जक और अमंगलव्यञ्जक (असभ्यता, अभद्रतात्मक या अशिष्टता-सूचक), यह शब्दगत दोष है।

अश्लेष—(संज्ञा,पु०, सं०) श्लेषाभाव। अप्रणय। असंख्य। अप्रीति, अपरिहास। श्लेष-भिन्न।

अश्लेषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २७ नक्षत्रों में से ६ वाँ नक्षत्र, इस नक्षत्र में ६ तारे है। [**असलेखा** दे०]।**—भव**-(संज्ञा, पु०, सं०) केतु नामक एक ग्रह, पुच्छ, तमग्रह।

अश्लेष्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) कफ-विकार-रहित।

अश्लोक—(संज्ञा, पु०, सं०) अयश, अकीर्ति। (वि०) कीर्ति-रहित, अविख्यात।

अश्वंत—(वि०) अभागा, शुभ से रहित। (पु०) मृत्यु। क्षेत्र। अग्नि रखने का स्थान। सीमा।

अश्व—(संज्ञा, पु०,सं०) घोड़ा, घोटक, तुरंग, हय। "साथ जिसके अश्व-गोशाला न हो"—मैथिली०। **—कर्ण**-(पु०) एक प्रकार का शाल वृक्ष। एक लता। शाल।**—गंधा**-(स्त्री०) असगंध एक औषधि।**—गति**-(स्त्री०) घोड़े की चाल। एकार का छंद। चित्र काव्य में एक प्रकार का छंद (पिं०)।**—तर**-(पु०) नागराज। खच्चर। अश्व विशेष।**—पति**-(पु०) घोड़े का स्वामी। सवार। रिसालदार। भरत के मामा। कैकय देश के राजकुमारों की उपाधि।**—पाल,—पालक**-(पु०) साईस, घोड़ों का नौकर।**—मेध**-(पु०) एक प्रकार का वह बड़ा यज्ञ जो चक्रवर्ती राजा करते थे और जिसमें घोड़े के मस्तक पर जय-पत्र बाँध कर उसे भूमंडल में स्वेच्छा से घूमने के लिए छोड़ते थे, जो उसे पकड़ता था, उससे युद्ध कर उसे हरा कर घोड़े को ले जाते और उसे मार कर उसकी चर्बी से हवन करते थे।**—वार**-(पु०) [**असवार** दे०]। सवार, अश्वारोही, घुड़सवार।**—वैद्य**-(पु०) घोड़ों को चिकित्सा करने वाला वैद्य, अश्वचिकित्सक, हय-भिषग।**—शक्ति**-(स्त्री०) शक्ति की इकाई जिसके द्वारा एक सेकेण्ड में ५५० पौंड का भार एक फुट तक उठ सकता है। [हार्स पावर]।**—शाल, —शाला**-(पु०) घोड़ों के रहने का स्थान, अस्तबल, तबेला।**—शिक्षक**-(पु०) सवार। चाबुक, कषा। **—सेवक**-(पु०) साईस, घोड़ों का नौकर, अश्वानुचर।

अश्वत्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) पीपल का वृक्ष, चल-दल।

अश्वत्थामा—(संज्ञा, पु०, सं०) द्रोणाचार्य के पुत्र, पृथ्वी पर आते ही इन्होंने उच्चैःश्रवा नामक घोड़े के समान शब्द किया था, अतएव आकाशवाणी हुई कि इसने जन्म लेते ही ऐसा शब्द किया है इससे अश्वत्थामा नाम से यह संसार में प्रसिद्ध होगा। पांडव-पक्षीय मालवराज इंद्रवर्मा का हाथी—इसी के

मारे जाने पर द्रोणाचार्य ने धोखे में आकर अस्त्र-शस्त्र रख दिये और योग द्वारा प्राण विसर्जित किये, तभी धृष्टद्युम्न ने उनको मारा (महा०)।

अश्वारूढ़—(संज्ञा, यौ०, पु०, सं०) घोड़े पर सवार, घुड़चढ़ा।

अश्वारोहण—(संज्ञा, यौ०, पु०, सं०) घोड़े की सवारी।

अश्वारोही—(वि०, यौ०, सं०) घोड़े का सवार, घुड़सवार। घोड़े पर चढ़ा हुआ।

अश्वसेन—(संज्ञा, पु०, सं०) तक्षक का पुत्र, नाग-विशेष। सनत्कुमार, ब्रह्मा जी के पुत्र।

अश्विनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घोड़ी। २७ नक्षत्रों में से पहिला नक्षत्र, इसमें ३ तारे हैं, मेष राशि के सिर पर इसका स्थान है। यह दक्ष प्रजापति की कन्या और चन्द्रमा की स्त्री है, इस नक्षत्र का आकार घोड़े के मुख सदृश है, [**असुनी** दे०]। —**कुमार**-(पु०, यौ०) त्वष्टा की पुत्री प्रभा नामक स्त्री से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्र, जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं, अश्व रूपी सूर्य के औरस तथा अश्व-रूप धारिणी संज्ञा के गर्भ से इन दोनों की उत्पत्ति हुई था (हरिवंश)।

अश्वेत—(वि०, सं०) जो श्वेत या सफेद न हो। काला, श्याम, मेचक, कृष्ण।

अषाढ़*—(संज्ञा, पु०, दे०) वर्षा ऋतु का प्रथम मास आषाढ़। (सं०) व्रतपलाश-दंड, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र इस मास की पूर्णिमा को होता है और उसी दिन चंद्रमा भी उसी के साथ रहता है। "आषाढस्य प्रथम दिवसे"—[मेघ०]।

अषाढ़ी—(स्त्री०, दे०) अषाढ़ की पूर्णिमा का दिवस जो त्यौहार की तरह माना जाता है। [**असाढ़ी** दे०]।

अष्ट—(वि०, सं०) आठ, संख्या ८। —**कमल**-(पु०) मूलाधार से ललाट तक के आठ चक्र विशेष जो देह में रहते हैं (हठ योग)। —**कर्ण**-(पु०) आठ कान वाला, ब्रह्मा, प्रजापति, विधि, विरंचि, विधाता। —**कुल**—(पु०) सर्पों के आठ कुल—शेष, वासुकी, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख, और कुलिक (पुराण)। —**कृष्ण**-(पु०) श्रीकृष्ण की आठ मूर्तियां या दर्शन—श्रीनाथ, नवनीत-प्रिया, मथुरा-नाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुल-चन्द्र और मदनमोहन (वल्लभीय संप्र०)। —**छाप**-(पु०) [सं० अष्ट + छाप—हि०] वल्लभ स्वामी और विट्ठलनाथ के चार-चार शिष्य। कवि, जिन्होंने ब्रजभाषा में कृष्णकाव्य की बड़ी सुन्दर रचनाएँ की हैं—सूरदास, कृष्णदास, परमानंददास, कुंभनदास ये चार वल्लभ-शिष्य हैं और नन्ददास, चतुर्भुजदास, गोविंदस्वामी, छीतस्वामी, ये चार विट्ठलनाथ के शिष्य हैं। —**द्रव्य**-(पु०) हवन के काम में आने वाले आठ सुगंधित पदार्थ—अश्वत्थ, गूलर, पाकर, वट, तिल, सरसों, पायस और घी, या **अष्टगंध**—धूप के आठ पदार्थ—सुगंधवाला, गूगुल, चंदन, कपूर, अगर, देवदारु, जटामासी, घी। —**धाती**-(वि०) [सं० अष्टधातु] आठ धातुओं से बना हुआ। दृढ़, मजबूत। उत्पाती, उपद्रवी। वर्णसंकर। **अठ-धाती** दे०]। —**धातु**-(स्त्री०, यौ०) आठ धातुएँ—सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा, पारा। —**पदी**-(स्त्री०) आठ पदों या चरणों का एक छंद या गीत, मकड़ी। [**अठपदी**—दे०]। —**पाद**-(पु०) शरभ। शारदूल। लूता, मकड़ी। —**प्रकृति**-(स्त्री०) राज्य के आठ प्रमुख कार्यकर्ता या कर्मचारी—सुमंत्र, पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक, और प्रतिनिधि (राजनी०)। —**प्रहर**-(पु०) आठ पहर (दे०), अष्टयाम, आठयाम, रात दिन के आठ भाग, [**अठपहरी**—वि०, दे०]। —**भुजक्षेत्र**-(पु०) वह क्षेत्र जिसमें आठ किनारे और कोण हों। —**भुजा**-(स्त्री०) अष्टबाहु वाली देवी, दुर्गा देवी, पार्वती। [संज्ञा, स्त्री०, **अष्टभुजी अठभुजी** दे०]। —**मंगल**-(पु०) आठ मांगलिक द्रव्य या पदार्थ—सिंह, वृष, नाग, कलश, पंखा, वैजयंती, भेरी और दीपक। —**मूर्ति**-(पु०) शिव। शिव की आठ मूर्तियाँ—सर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान, और महादेव। —**योग**, —**यज्ञ**-(पु०) आठ प्रकार के यज्ञ। —**याम**-(पु०) आठ पहर, रात-दिन, आठो याम दृष्ट्योपासना की विधियाँ (क० का०)। —**वर्ग**-(पु०) आठ औषधियों का समाहार, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, ऋद्धि, और वृद्धि (वैद्य०)। ज्योतिष का एक गोचर योग। राज्य के आठ अंग—ऋषि, वस्ति, दुर्ग, सोना, हस्तिबंधन, खान, कर-ग्रहण, और सैन्य-संस्थापन, इनका समूह (राजनी०)। —**वसु**-(पु०, यौ०) देश विशेष, आप ध्रुव, सोम, धव, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास। —**सिद्धि**—(स्त्री०) योग की आठ सिद्धियाँ यथा—अणिमा, महिमा, लघिमा गरिमा प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व। "अष्टसिद्धि नव निधि के दाता"—तुल०। "आठौ सिद्धि नवौ निधि को सुख"—रसखान।

अष्टक—(पु०) आठ वस्तुओं का संग्रह, आठ की

पूर्ति, वह स्तोत्र या काव्य जिसमे आठ श्लोक या छंद हों।

अष्टका—(स्त्री०) अष्टमी, अष्टमी के दिन का कृत्य। अष्टका योग। अगहन, पूस, माघ, तथा फागुन मासों की अष्टमी (कृष्णपक्ष) इन तिथियों मे पितृश्राद्ध करने से पितरो को विशेष तृप्ति होती है।

अष्टम—(वि०, पु०) आठवां।

अष्टमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शुक्ल या कृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि, जब चंद्रमा की आठवीं कला की क्रिया हो। [**अट्टमी**—दे०]।

अष्टांग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) योग की क्रिया के आठ भेद—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि (यौ०)। आयुर्वेद के आठ विभाग—शल्य, शालाक्य. कार्यचिकित्सा, भूत-विद्या, कौमार-भृत्य, अगद-तंत्र, रसायनतंत्र, और बाजीकरण। शरीर के आठ **अंग**—जानु, पाद, हाथ, उर, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि, जिनसे प्रणाम करने का विधान है।—**प्रणाम**—(वि०) आठ अवयव वाला प्रणाम, दंडवत।

अष्टांगार्घ्य,—अष्टार्घ्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पूजन की आठ प्रकार की सामग्री का समाहार, अर्घ्य, पाद्य, चंदन, धूप, दीप, नैवेद्य, पुंगीफल, द्रव्य।

अष्टांगी—(वि०, सं०) आठ अंगों या अवयवों वाला।

अष्टाक्षर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आठ अक्षरों का मन्त्र विशेष (मंत्र०)। (वि०, सं०) आठ अक्षरों का एक छंद (पिं०)।

अष्टादश—(वि०, यौ०, सं०) संख्या विशेष, अठारह (दे०) (सं०) अष्टादश, प्रा० अट्ठादह (अ०) अट्ठारह। [यौ० **अष्टादशाह**—मृत्यु के बाद १८ वें दिन का कृत्य]।—**धान्य**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अठारह प्रकार के अन्न—यव (जौ), गोधूम (गेहूँ), धान्य (धान), तिल, गंगु, कुलत्थ, माष (उरद), मुद्ग (मूँग), मसूर, निष्पाव, श्याम (सांवा), सर्षप (सरसों), गवधुक, नीवार, अरहर, तीना, चना, चीना।—**पुराण**-(पु०, यौ०) १८ पुराण—ब्राह्म, पद्म, विष्णु, शैव, भागवत, नारदीय, मार्कंडेय, आग्नेय, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वाराह, स्कंद, वामन, कौर्म, मात्स्य, गारुड़ और ब्रह्मांड।—**विद्या**-(स्त्री०) अठारह प्रकार की विद्यायें—चार वेद षडंग (६ वेदांग) मीमांसा, न्याय, पुराण, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व-वेद और अर्थशास्त्र।—**स्मृतिकार**-(संज्ञा,पु०) अष्टादश स्मृतियों के बनाने वाले धर्मशास्त्रकार, विष्णु, पराशर, दक्ष, संवर्त, व्यास, हारीत, शातातप, वशिष्ट, यम, आपस्तम्ब, गौतम, देवल, शंख, लिखित, भारद्वाज, उशना, अत्रि, याज्ञवल्क, मनु।

अष्टादशांग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अठारह औषधियों के संयोग से बनी हुई औषधि विशेष (वैद्य०)।

अष्टादशोपचार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पूजा के अठारह-विधान—आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, उपवीत, भूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, अन्न (नैवेद्य), तर्पण, अनुलेपन, नमस्कार, विसर्जन (द्रव्य)।

अष्टादशोपपुराण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गौण या साधारण पुराण। (१) सनत्कुमार, (२) नारसिंह, (३) नारदीय, (४) शिव, (५) दुर्वासा, (६) कपिल, (७) मानव, (८) औशनस (९) वरुण, (१०) कालिक, (११) शांब, (१२) नन्दा, (१३) सौर (१४) पराशर (१५) आदित्य (१६) माहेश्वर (१७) भार्गव, (१८) वशिष्ट।

अष्टाध्यायी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पाणिनि ऋषि-कृत व्याकरण (संस्कृत) का आठ अध्यायों वाला प्रधान सूत्र-ग्रन्थ। (वि०) आठ अध्याय वाली।

अष्टापद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सोना। मकड़ी। धतूरा। कृमि। कैलाश। सिंह। "जनु अष्टापद शिवा मानि"—तुल०।

अष्टावक्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक ऋषि, टेढ़े-मेढ़े अंगों वाला मनुष्य।

अष्टास्रि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अष्टकोण, अठकोना।

अष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुठली, बीज। अठुली (दे०)।

अष्ठीला—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक प्रकार का रोग जिसमें पेशाब नहीं होता और गाँठ पड़ जाती है, पथरी।

अष्टोत्तरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीवन मे ग्रहों का प्राधान्य-सूचक एक विधान जो दक्षिण में प्रचलित है (ज्यो०), जैसे यहाँ विंशोत्तरी है।

असंक—(वि०, दे०) [सं० अशंक] निडर, निर्भय, शंका-रहित, असंका (दे०)।

असंक्रांति (मास)—(संज्ञा, पु०, सं०) अधिकमास, मलमास।

असंख्य—(वि०, सं०) अनगिनत, अगनित, अपार, बेशुमार, अगणित, अपरिमित [**असंख** दे०]।

असंख्यात—(वि०, सं०) असंख्य, अगणित, अपार।
असंख्येय—(वि०, सं०) अगणनीय, जिसकी संख्या न हो या जिसे गिन न सकें, बहुत अधिक, बेशुमार।
असंग*—(वि०, सं०) अकेला, एकाकी, किसी से सम्बन्ध या वास्ता न रखने वाला, निर्लिप्त, जुदा, अलग, न्यारा, पृथक्, विरक्त। (संज्ञा, पु०) बुरा संग, कुसंग, संग-रहित।
असंगठन—(संज्ञा, पु०, सं०) असंबद्धता, अनमेल।
असंगठित—(वि०, सं०) असम्बद्ध, पृथक्, अलग, विभिन्न, विलग।
असंगत—(वि०, सं०) अयुक्त, अनुपयुक्त, बेठीक, अनुचित, नामुनासिब, अयोग्य, मिथ्या, असमीचीन। **—प्रश्न**-व्यर्थ के प्रश्न [इर्रेलेवेंट क्वेश्चन]।
असंगति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बेसिल सिलापन, बेमेल होने का भाव, अनुपयुक्तता, नामुनासिबत, कुसंगति, क्रमताभाव, असम्बद्धता। संगति का अभाव, मेल का न होना, असामंजस्य। एक अलंकार, जिसमें कार्य-कारण के सम्बन्ध मे देश-काल-जन्य विरोध प्रगट हो, जिसमें कारण तो कहीं बताया जाय और कार्य कहीं दिखाया जाय। (उ०) "दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति। परति गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीति"—बिहारी।
असंगम—(संज्ञा, पु०, सं०) सामंजस्य का अभाव। मेल या सम्बन्ध का न होना, पृथक्ता।
असंग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) संचय-हीनता, एकत्रित नहीं। [वि० **असंग्रहीत**]।
असंघ—(संज्ञा, पु०, सं०) संघ या समूह का अभाव, पार्थक्य।
असंचय—(संज्ञा, पु०, सं०) असंग्रह, न एकत्रित करना।
असंचित—(वि०, सं०) असंग्रहीत, न इकट्ठा किया हुआ।
असंज्ञा—(वि०, सं०) संज्ञा या चेतना-शून्य, बेहोश, मूर्छित।
असंत—(वि०, सं०) खल, दुष्ट, असाधु, नीच। "सुनहु असंतन केर सुभाऊ"—तुल०।
असंतति—(वि०, सं०) सन्तानाभाव। बुरी सन्तान।
असंतुष्ट—(वि०, सं०) जो सन्तुष्ट न हो, अतृप्त, जिसका मन न भरा हो, अप्रसन्न, नाराज।
असंतुष्टि—(संज्ञा,स्त्री०,सं०) असन्तोष। अप्रसन्नता। अतृप्ति।
असंतोष—(संज्ञा, पु०, सं०) सन्तोषाभाव, अतृप्ति। अप्रसन्नता, नाराजगी।

असंदिग्ध—(वि०, सं०) संदेह मुक्त। निश्चित। पक्का।
असंपर्क—(संज्ञा, पु०, सं०) लगाव का अभाव। (वि०) संपर्क रहित।
असंपत्ति—(संज्ञा,स्त्री०,सं०) संपत्याभाव। विपत्ति। निर्धनता, दरिद्रता।
असंपन्न—(वि०, सं०) जो सम्पन्न या धनी न हो, असम्पत्तिवान, असमर्थ, अयोग्य।
असंपूर्ण—(वि०, सं०) अपूर्ण, असमाप्त, सब या समस्त नहीं। कुछ, थोड़ा, न्यून।
असंपूर्णता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) न्यूनता, अपूर्णता।
असंप्रज्ञात—(वि०, सं०) जो पूर्ण रूप से ज्ञात न हो—समाधि०। (संज्ञा, स्त्री०) अविकल्प समाधि जिसमें ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान का अंतर नहीं शेष रहता।
असंबद्ध—(वि०, सं०) जो सम्बद्ध या मिला हुआ न हो, पृथक्, विलग। अनमिल। बेमेल, अंडबंड। असङ्गठित, असङ्गत। [संज्ञा, भा०, स्त्री० **असंबद्धता**]।
असंबाधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सम्बाधाभाव, बाधा का न होना, एक प्रकार का वर्णिक वृत्त (पिं०)। [वि० **असंबाधित**—अबाधित, बाधा-रहित]।
असंबोधित—(वि०) [सं० अ+संबोधन+इत] जिसे सम्बोधित न किया गया हो, जो न बुलाया गया हो। [वि० **असंबोधनीय**]।
असंभव—(वि०, सं०) जो सम्भव न हो, जो न हो सके, नामुमकिन, असाध्य। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का अलंकार जिसमे किसी हो गई हुई बात का होना असम्भव कहा जाता है (उ०) "कौन जानता था बालक हरि नाग नाथ ले आवेगा"। [वि० **असंभाव्य, असंभावित**]।
असंभार—(वि०) [सं० अ+संभार] जो संभालने योग्य न हो। अपार, बहुत।
असंभावना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सम्भावना का अभाव, अनहोनापन। एक प्रकार का अलंकार देखिए असंभव। [वि० **असंभावनीय**]।
असंभावित—(वि०, सं०) जिसके होने का अनुमान न किया गया हो। अनुमान-विरुद्ध, असम्भव किया हुआ।
असंभाव्य—(वि०, सं०) जिसकी सम्भावना न हो, अनहोना। [संज्ञा, स्त्री० **असंभाव्यता**]।
असंभाषित—(वि०,सं०) जिससे बात-चीत न की

गई हो। अकथित। जिसके सम्बन्ध में बात चीत न की गयी हो।

असंभाव्य—(वि०, सं०) न कहे जाने के योग्य। जिससे वार्तालाप करना उचित न हो। बुरा। न बोलने के लायक़। [संज्ञा, पु० **असंभाषण**—चुप, मौनता]।

असंभूत—(वि०, सं०) जो पैदा न हो, अभूत, अनुत्पन्न, उत्पत्ति रहित, अज, अजन्मा, अनुद्भूत, अजात।

असंभ्रम—(वि०, सं०) धीर, शांत। (पु०) व्याकुलता का अभाव।

असंभ्रित—(वि०, सं०) स्वाभाविक, जो कृत्रिम न हो।

असंयत—(वि०, सं०) संयम-रहित, जो नियम-बद्ध न हो, असङ्गत। अनियंत्रित। "अनि असंयत अश्रु प्रवाह से"—हरिऔध।

असंयम—(संज्ञा,पु०, सं०) संमम की कमी। इंद्रियों का वश में न होना। विलासिता।

असंयुक्त—(वि०) [सं० अ+सं+युज+क्त] असंलग्न, अमिलित, पृथक्, अलग, न मिला हुआ। [संज्ञा, स्त्री० **असंयुक्तता**]।

असंयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) अनमेल, भिन्नता, पृथक्त्व। मौके का अभाव, अनवसर। बुरा मौक़ा।

असंयोजन—(संज्ञा, पु०, सं०) न मिलाना, असंयुक्त करना। [वि० **असंयोजित**—न मिलाया या एकत्रित किया हुआ। वि० **असंयोजनीय**]।

असंलग्न—(वि०, सं०) न लगा हुआ, न मिला हुआ। असङ्गत, जो लीन न हो। [संज्ञा, स्त्री० **असंलग्नता**]।

असंविधान—(संज्ञा, पु०, सं०) अविधान, अव्यवस्था, विधानाभाव।

असंलक्ष्य—(वि०, सं०) जिस पर दृष्टि न जाय। जो बोधगम्य न हो।

असंवृत—(वि०, सं०) जो गुप्त न हो, प्रगट। (संज्ञा, पु०) नरक-विशेष।

असंवैधानिक—(वि०, सं०) विधान-विरुद्ध, नियम-विरुद्ध। [अनकान्स्टिट्यूशनल]।

असंशय—(वि०, सं०) निश्चय, निस्सन्देह, संशय-रहित, [**असंसय** दे०]। "असंशय क्षत्र-परिग्रहक्षमा" —[शकुं०]।

असंस्कार—(वि०, सं०) जिसका संस्कार या सुधार न किया गया हो। (संज्ञा, पु०) संस्काराभाव, बुरा संस्कार, सम्पर्क सम्बन्धाभाव।

असंस्कृत—(वि०, सं०) बिना सुधारा हुआ, अपरिमार्जित, असंशोधित, जिसका उपनयन-संस्कार न हुआ हो, व्रात्य, संस्कार-विहीन। जो संस्कृत भाषा का न हो।

असंस्थागारिक शासन—(संज्ञा, पु०, यौ०) बिना पार्लियामेंट का चलने वाला शासन। [नान पार्लियामेंटरी रूल]।

असंहार—(संज्ञा, पु०, सं०) संहार या नाश का अभाव, अविनाश, विनाश-रहित तत्त्व।

असंहारक—(वि०) जो विनाशक न हो।

असऽऽ—(वि०, दे०) [सं० ईदृश] ऐसा, इस प्रकार का। तुल्य, समान। इस तरह, इस भाँति। [**इस, अइस, ऐस** (दे०) (ग्रा०)]। "कस न राम तुम कहहु अस"—तुल०।

असकत—(वि०, दे०) [सं० अशक्त] अशक्त, अक्षम, असमर्थ, अयोग्य, निर्बल, अबल। (संज्ञा, पु०) आलस्य, उर्वास।

असकताना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० असकत] आलस्य मे पड़ना, आलसी होना। [**अलसाना** दे०]।

असकति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अशक्ति] शक्ति का अभाव, निर्बलता, कमजोरी, असमर्थता, अक्षमता। [वि० **असकती**—शिथिल, आलसी, निर्बल, असमर्थ]।

असकन्ना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० असि+करण] लोहे का एक औजार, जिससे तलवार की म्यान के भीतर की लकड़ी साफ़ की जाती है।

असकृत—(अव्य०, सं०) पुनः पुनः बारंबार, भूयः भूयः, फिर फिर।

असक्त—(वि०, दे०) [सं० आसक्त, अशक्त] लीन, आसक्त, संलग्न। "विषय-अशक्त रहत निसि-बासर" —सूर०। (वि०, दे०) अशक्त, असमर्थ, अक्षम, निर्बल।

असगंध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अश्वगंधा] एक प्रकार का झाड़ीदार पौधा, जिसकी जड़ पौष्टिक होती है और दवा के काम मे आती है, अश्वगंधा। (दे० यौ०) ऐसी गंध।

असगुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अशकुन] अपशकुन, अशकुन। "असगुन होंहिं विविध मग जाता" —तुल०। (दे०, यौ०) ऐसा गुण। [वि० **असगुनी** —अशकुन-सम्बन्धी, मनहूस।

असगोत्र—(वि०, सं०) जो अपने गोत्र का न हो। "तुम तो हो असगोत्र"—गिरीश।

असच्छास्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०) असत् शास्त्र। अविद्या की ओर ले चलने वाला शास्त्र। "असच्छास्त्र-सम्पर्क महाविष"—'गिरीश'।

असजात्य—(वि०, सं०) जो अपनी जाति अथवा रक्त सम्बन्ध का न हो। "जो जन है असजात्य हमारे"—गिरीश ।

असज्जन—(वि०, सं०) खल, दुष्ट, बुरा, असाधु। अभद्र, अशिष्ट । [संज्ञा, स्त्री०, भा० **असज्जनता**—असाधुता, दुष्टता] ।

असज्जित—(वि०, सं०) न सजाया हुआ, अनलंकृत, अनाभूषित । [स्त्री० **असज्जिता**] ।

असढ़िया—(संज्ञा, पु०, सं०) सर्प की जाति विशेष जो असाढ़ मास मे पाया जाता है और उसमें विष नहीं होता उसके काटने का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता ।

असत्—(संज्ञा, पु०, सं०) असत्य, झूठ, मिथ्या, जड़, प्रकृति । (वि०) मिथ्या । असाधु । अन्यायी । अधम। सत्ता-हीन । "असत तमस औ मृत्यु सलिल मे हम पार कर"—पंत ।

असती—(वि०, सं०) जो सती न हो, कुलटा, पुंश्चली। "लखण छिप न सके असती के"—गिरीश। [वि०, पु०, दे० **असत्ता**—लालची] ।

असत्कार—(संज्ञा पु०, सं०) आदर का अभाव, आवभगत मे कमी ।

असत्कृत—(वि०, सं०) अनादृत, जिसके प्रति अच्छा व्यवहार न किया जाय ।

असत्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सत्ता का अभाव, अस्थिति, अविद्यमानता, अनुपस्थितता । अस्तित्व-हीनता ।

असत्ती—(वि०, दे०) सत्ता-रहित । संतोषहीन, लालची । झूठा । सत्व गुण-हीन ।

असत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मिथ्या, झूठ, अनृत, अयथार्थ ।—**भाषण**-(पु०, सं०) झूठ बोलना । —**भाषी**-(पु०, सं०) मृषावादी ।—**वादन**-(पु०, सं०) झूठ बोलना ।—**वादी**-(वि०, सं०) झूठ बोलने वाला । झूठा । मिथ्यावादी । [संज्ञा, स्त्री० **असत्यवादिता**] ।

असत्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) झूठाई । (यौ०) असत्याचार, असत्याचरण ।

असत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्व-विहीनता, सत्वाभाव ।

असद—(संज्ञा,पु०, अ०) शेर, सिंह । सिंह राशि ।

असज्जीविका—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुचित साधनों द्वारा जीवन-निर्वाह, अपजीविका । [बेड लिवलीहुड] ।

असद्गति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) बुरी गति, दुर्दशा, दुर्गति ।

असद्भाव—(संज्ञा, पु०, सं०) अनिष्ट भावना । सुन्दर भाव का अभाव, बुरे विचार, दुर्भाव । [बेड फेथ] ।

असद्वाद—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्ता को अस्वीकार करने वाला सिद्धान्त ।

असद्व्यवहार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बुरा व्यवहार, जो साधु व्यवहार न हो, असाधु व्यवहार, असज्जनता ।

असद्व्यापार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) झूठा व्यापार या काम । दिखावा, असत्यप्रदर्शन ।

असद्वृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) बुरी वृत्ति, दुष्ट प्रवृत्ति । बुरी रोज़ी ।

असद्बुद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) बुरी बुद्धि, असाधु या दुष्ट बुद्धि, असद्धी ।

असद्बोध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मिथ्या ज्ञान, अयथार्थज्ञान । [वि० **असद्बोधक**] ।

असन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अशन] भोजन, खाना । "मुदित सुअसन पाइ जिमि भूखा", "असन कंद-फल-मूल"—तुल० । (यौ०, दे०) ऐसा नहीं ।

असनान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्नान] नहाना, स्नान । (यौ०, दे०) ऐसा बारीक ।

असनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अशनि] वज्र, विद्युत । "लूक न असनि केतु नहिं राहू"—तुल० ।

असन्नद्ध—(वि०, सं०) जो तैयार न हो, अहंकारी ।

असन्निकर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) समीप न होना ।

असन्निहिता—दूरवर्त्ती, जो ठीक ढंग से व्यवस्थित न हो ।

असपर्स—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्पर्श] छूना, स्पर्श करना, परस (दे०)। [वि० **असपर्सित**—छुआ हुआ । भेंटा हुआ] ।

असबर्ग—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) खुरासान देश की एक लम्बी घास जिसके फूलो से रेशम रँगा जाता है ।

असबाब—(संज्ञा, पु०, अ०) सामान, सामग्री, चीज़, वस्तु, प्रयोजनीय पदार्थ । (सबब का ब० व०) कारण ।

असभई&—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० असभ्यता] अशिष्टता, असभ्यता, बेहूदगी । (यौ०, दे०) ऐसी हुई ।

असभ्य—(वि०, सं०) अशिष्ट, अनार्य, गँवार, बेहूदा ।

असभ्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अशिष्टता, अभद्रता, गवारपन, बेहूदगी।

असमंजस—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) द्विविधा, दुविधा (दे०)। आगा-पीछा, अड़चन, कठिनाई। असङ्गति, अनुपयुक्तता। (वि०) असंगतिपूर्ण, द्विविधापूर्ण, कठिनाई से युक्त। "दूसर बर असमंजस मांगा"—तुल०।

असमंत—(संज्ञा, पु०,दे०) [सं० अश्मंत] चूल्हा।

असम—(वि०, सं०) जो सम या समान न हो, जो तुल्य या सदृश न हो, जो बराबर न हो, ना बराबर, असदृश, अतुल्य। विषम, ताक़। ऊंचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें उपमान का मिलना असम्भव कहा जाय (काव्य०)। **—शर**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव, कंदर्प मन्मथ, मार, स्मर, अनंग, अतन, अदेह, रतिपति, मदन, मनोज। [**असमसर** दे०]। सकल असमसर कला-प्रवीणा—तुल०।**—साहस**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दुस्साहस। अतुल्य साहस। सामर्थ्य से बाहर उत्साह। असमान साहस। [वि० **असमसाहसी**]।

असमक्ष—(वि०, सं०) परोक्ष, अगोचर, सामने नहीं, असम्मुख। [संज्ञा, स्त्री० **असमक्षता**]।

असमझ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) समझ का अभाव, नासमझी, मूर्खता, अबोधता। (वि०) नासमझ, न समझने वाला, मूर्ख। बालक। [वि० **असमझवार**—न समझने वाला, मूर्ख। "असमझवार सराहिबो, समझवार को मौन"]।

असमता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) असाम्य, समता का अभाव। विषमता, नाबराबरी। असादृश्य। भेद-भाव। ऊंचाई-निचाई।

असमन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अ+शमन] शमनाभाव, शमन या दमन न करना। (दे०, यौ०) ऐसा मन।

असमय—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा समय, कुसमय। उचित से पूर्व का समय। विपत्ति-काल। अकाल। कुबेला। (क्रि०, वि०) कुअवसर, बेमौका। (दे०, यौ०) ऐसी मदिरा।

असमर्थ—(वि०, सं०) सामर्थ्यहीन, दुर्बल, अशक्त, अयोग्य, अक्षम, क्षीण। [संज्ञा, स्त्री०, भा०, सं०, **असमर्थता**, पु० **असामर्थ्य**]।

असमर्थक—(वि०, सं०) जो समर्थन करने वाला न हो, विरोधी, विरोधक, प्रतिवादक, अननुमोदक।

असमर्थन—(संज्ञा, पु०, सं०) समर्थन या पुष्टि न करना, अनुमोदन का अभाव, असम्मति। (वि० **असमर्थनीय**—जो अनुमोदनीय न हो)।

असमर्थित—(वि०, सं०) जो समर्थित न किया गया हो, जिसका समर्थन या अनुमोदन न किया गया हो, अननुमोदित। अप्रमाणित, अपुष्ट।

असमवायिकारण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अद्रव्य-कारण, गुण या कर्म-रूप का कारण (न्याय०), वह कारण जिसका कर्म से नित्य सम्बन्ध न हो, वरन् आकस्मिक सम्बन्ध हो (वैशेषिक)।

असमाधेय—(वि०, सं०) समझाने के अयोग्य। [नान कम्पाउण्डेबुल]

असमान—(वि०, सं०) जो समान या तुल्य न हो, नाबराबर, असदृश, विषम, समान नहीं। [सं० अ +सह+मान] जो मानयुक्त न हो। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० आसमान] आसमान, आकाश, अंतरिक्ष, नभ। [संज्ञा, स्त्री० **असमानता**]। (दे०, यौ०) ऐसा आदर या माप।

असमापिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जिस क्रिया से वाक्य पूर्ण न हो, कालबोधक कृदन्त, (व्या०)।

असमाप्त—(वि०, सं०) अपूर्ण, अधूरा। [संज्ञा, स्त्री०, सं० **असमाप्ति**—अपूर्ति, अपूर्णता]।

असमेध*—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) अश्वमेध नामक यज्ञ, असुमेध।

असम्मत—(वि०, सं०) जो राजी न हो, विरुद्ध। जिस पर किसी की राय न हो। असहमत।

असम्मति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सम्मति का अभाव, विरुद्ध या विपरीत मत या राय।

असम्मान—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्मानाभाव, अनादर, तिरस्कार। [वि० **असम्मानित, असम्माननीय**—अनादृत, तिरस्कृत। स्त्री० **असम्मानिता, असम्माननीया**]।

असम्मुख—(वि०, सं०) असमक्ष, परोक्ष, ओट में स्थित, अप्रत्यक्ष।

असम्यक्—(वि०, सं०) असंपूर्ण। सब प्रकार नहीं। अपूर्ण, न्यून।

असयान-असयाना*—(वि०, दे०) [हि० अ+सयान—सं० अ+सज्ञान] सीधा-सादा, अनाड़ी, मूर्ख, मूढ़, भोला-भाला। स्त्री० **असयानी**। संज्ञा, भा०, पु० **असयानप-असयानता**]—(दे०, यौ०) ऐसा यान।

असर—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रभाव, दबाव। (वि०, दे०) [सं० अ+शर] बाण-विहीन, शर-रहित। [वि०, फ़ा० **बाअसर बेअसर**]।

असरल—(वि०, सं०) जो सरल या सीधा न हो, टेढ़ा, वक्र। कठिन। कुटिल।

असरार*—(क्रि०, वि०, दे०) [हि० सरसर] निरंतर,

लगातार, बराबर। (संज्ञा, दे०) [फ़ा० इसरार] आग्रह, हठ।

असरीर—(वि०, दे०) [सं० अ+शरीर] शरीर-रहित। [वि०, दे० **असरीरी**—देह-रहित]।

असरीरिनीगिरा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० अशरीरिणी गिरा] गगनगिरा, आकाशवाणी, नभ-गिरा, व्योमवाणी, अदेहवाणी।

असल—(वि०, अ०) सच्चा, खरा। उच्च, श्रेष्ठ। बिना मिलावट का। स्वाभाविक। शुद्ध, खालिस। जो झूठ या बनावटी न हो। (संज्ञा, पु०) जड़, मूल, बुनि-याद, मूलधन। एक वृक्ष जिसकी छाल चमड़ा सिझाने के काम में आती है। लोहा। हथियार। **मुहा०—असल में**—वस्तुतः।

असलहा—(शु० रू० असलहः) (संज्ञा, पु०, अ०) हथियार, शस्त्र।—**खाना**—(पु०) [अ०+फ़ा०] अस्त्रागार।

असला—(संज्ञा, पु०, अ०) हरगिज, कदापि।

असलियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) तथ्यता, वास्त-विकता। जड़, मूल। सार, तत्व।

असली—(वि०) [अ०+असल] सच्चा, खरा। मूल। प्रधान। बिना मिलावट का। अकृत्रिम, शुद्ध। यथार्थ, वास्तविक।

असलील—(वि०,दे०) [सं० अश्लील] भद्दा। असभ्य, अशिष्ट। भोंडा, कुत्सित।

असलीलता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक दोष जो काव्य में अशिष्ट शब्द-प्रयोग से होता है (काव्य०)।

असलेउॐ—(वि०, दे०) [सं० असह्य] असहनीय। "एक न चलै अब प्रान सूर प्रभु असलेउ साल सले" —सूर०।

असलेख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्लेष] जो श्लेष न हो। श्लेष।

असलेखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अश्लेषा] एक नक्षत्र। (हि० यौ०) [अस—ऐसा+लेखा] ऐसा साँचा, ऐसा हिसाब-किताब।

असवार*—(संज्ञा, पु०, दे०, फ़ा०) सवार, चढ़ने वाला, सवार होने वाला। [संज्ञा, स्त्री० **असवारी**]।

असह*—(वि०, दे०) [सं० असह्य] असह्य, दुस्सह, न सहन किया जा सकने वाला।

असहन*—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रु, बैरी। (वि०) असह्य। उग्र, अधीर, असहिष्णु। "असहन निंदा करत पराई"—चाचाहित०। (यौ० दे०) जो असह्य न हो।—**शील**—(वि०) जिसमें सहन करने की क्षमता या शक्ति न हो, असहिष्णु। चिड़चिड़ा, तुनुक-मिजाज। [संज्ञा, स्त्री० **असहनशीलता**]।

असहनीय—(वि०, सं०) न सहने योग्य, जो सहन न किया जा सके, असह्य, दुस्सह।

असहयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) मिल कर काम न करना। अनमेल, अमैत्री। आधुनिक राजनीति में प्रजा या उसके किसी वर्ग का राज्य से असंतोष प्रगट करने के लिए उसके कामों से सर्वथा अलग रहना, सरकार से अलग रहना। (राजनी०)। [नान कोआपरेशन]

असहयोगी—(संज्ञा, पु०, सं०) असहयोग करने वाला। साथ काम न करने वाला।

असहाय—(वि०, सं०) जिसका कोई सहायक न हो, जिसे कोई सहारा न हो, निःसहाय, निराश्रय, अनाथ, दीन। [संज्ञा, पु०, **असाहाय्य**]।

असहिष्णु—(वि०, सं०) असहनशील, चिड़चिड़ा, जो सहन न कर सके, तुनुक-मिजाज। [संज्ञा, स्त्री०, भा०, **असहिष्णुता**—असहनशीलता]।

असही—(वि०, दे०) [सं० असह] दूसरे को देख कर जलने वाला, ईर्ष्यालु। (वि०, दे०) [अ+सही] जो सही या ठीक न हो। "असही-दुसही मरहु मनहिं मन, बैरिन बढ़हु विषाद"—गीता०।

असह्य—(वि०, सं०) जो सहन न किया जा सके, दुस्सह, असहनीय, जो बरदाश्त न हो सके। [संज्ञा, स्त्री०, **असह्यता**]।

असाँचॐ—(वि०, दे०) [सं० असत्य] असत्य, झूठा, मृषा, अनृत। [**असाँचो, असाँचे** ब्र०। स्त्री० **असाँची** ब्र०]। "हँसेउ जानि विधि गिरा असाँचो" —तुल०।

असांप्रत—(वि०, सं०) जो वर्तमानकालीन न हो, असामयिक।

असांप्रदायिक—(वि०, सं०) जो किसी सम्प्रदाय से सम्बद्ध न हो, परिपाटी विरुद्ध। [नान कम्युनल]

असा—(संज्ञा, पु०, अ०) सोटा, डंडा, चाँदी या सोने से मढ़ा हुआ सोंटा, आसार (दे०)। [यौ० **आसा-बल्लम**]।

असाईॐ—(वि०, दे०) [सं० अशालीन] अशिष्ट, बेहूदा, बदतमीज।

असाक्षात्—(वि०, सं०) अप्रत्यक्ष, अदृष्ट।

असाक्षात्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) दर्शनाभाव। अप्रत्यक्षता।

असाक्षी—(वि०, सं०) जो गवाह न हो। गवाही का अभाव, बिना गवाह के।

असाढ़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आषाढ़] वर्षा ऋतु का प्रथम मास, अषाढ़। "आवत असाढ़ परोग़ाढ़ विरहीन को"—सेना०।

असाढ़ा—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार की कच्ची चीनी। रेशम का बटा हुआ तागा।

असाढ़ी—(वि०, दे०) [सं० आसाढी] असाढ़ का, असाढ़ सम्बन्धी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) असाढ़ मे बोई जाने वाली फसल, खरीफ। आषाढ़ मास की पूर्णिमा [**असाढ़ी** दे०]।

असाध—(वि०, दे०) [सं० अ+साधु] असाधु, असज्जन, बुरा आदमी। (वि०, दे०) [सं० अ+साध्य] असाध्य, कठिन, दुष्कर। अशक्त, निर्बल। आलसी, निकम्मा। "देखो व्याधि असाध नृप"—तुल०। (वि०, दे०) [अ+साध—इच्छा] इच्छा-रहित।

असाधन—(वि०, सं०) साधन-रहित। साधन का अभाव।

असाधारण—(वि०, सं०) जो साधारण या सामान्य न हो, असामान्य, गैरमामूली। [संज्ञा, स्त्री० **असाधारणता**]।—**बैठक**-किसी सभा की विशेष बैठक। [एक्स्ट्रा आर्डिनरी मीटिंग]

असाधु—(वि०, सं०) दुष्ट, दुर्जन, अविनीत, अशिष्ट, असज्जन। [**असाधू** दे०। स्त्री० **असाध्वी**। संज्ञा, भा०, स्त्री० **असाधुता**—नीचता, दुष्टता]।

असाध्य—(वि०, सं०) न होने के योग्य, जो न हो सके, दुष्कर, कठिन, असम्भव। न आरोग्य होने योग्य। जो साधा या सिद्ध न किया जा सके। [**असाध** दे०। संज्ञा, भा० स्त्री० **असाध्यता**]।

असापित—(वि०, दे०) [सं० अशापित] जिसे शाप न दिया गया हो।

असामयिक—(वि०, सं०) जो नियत समय के पूर्व या पश्चात् हो, बिना समय का, समयोपयुक्त जो न हो, अकालीन। [संज्ञा, भा०, स्त्री०, **असामयिकता**]।

असामर्थ्य—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सामर्थ्य या शक्ति का अभाव, अक्षमता, अशक्तता, निर्बलता, कमजोरी।

असामान्य—(वि०, सं०) असाधारण, गैरमामूली, विशेष, विशिष्ट।

असामी—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० असामी] व्यक्ति, प्राणी। जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो, जमीदार से लगान पर जोतन-बोने के लिये खेत लेनेवाला। जिससे किसी प्रकार का मतलब निकालना हो। (संज्ञा, स्त्री०) नौकरी, जगह। (यौ०) मोटा असामी।

असाम्य—(संज्ञा, पु०, सं०) विषमता, असमानता, अननुकूलता।

असार—(वि०, सं०) सार-रहित, निःसार। शून्य, खाली। तुच्छ, तत्व-रहित। बेमतलब। (यौ०) जो लोहा न हो। [भा० संज्ञा, स्त्री०, **असारता**—निःसारता]।

असारथ—(वि०, दे०) [सं० अ+सार्थ] जो सार्थक न हो, निष्फल। निष्प्रयोजन, व्यर्थ। [वि० **असारथक**—असार्थक)।

असारथि, असारथी—(वि०, सं०) सारथी-रहित, बिना सारथी के।

असालत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कुलीनता। सचाई। तत्व।

असालतन्—(क्रि०, वि०, अ०) स्वयं, खुद, स्वयमेव।

असावधान—(वि०, सं०) जो सतर्क न हो, जो सावधान या सचेत न हो, गाफिल, अचेत, जो सजग न हो। लापरवाह।

असावधानता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बेखबरी, गफलत।

असावधानी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बेखबरी, लापरवाही, असतर्कता।

असावरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आशावरी] ३६ रागिनियों में से एक।

असासन—(संज्ञा, पु०, दे०) अशासन, बुरा राज्य। शासनाभाव।

असासा—(संज्ञा, पु०, अ०) माल-असबाब। संपत्ति, साज-सामान, सामग्री।

असासित—(वि०, दे०) [सं० अशासित] उद्दंड, अनियंत्रित, उच्छृङ्खल, स्वच्छन्द, स्वतंत्र। [स्त्री०, **असासिता**; वि० **असासनीय**]।

असाहस—(संज्ञा, पु०, सं०) सहसाभाव, अनुत्साह।

असाहसी—(वि०, सं०) साहस जिसके न हो, कायर, पस्त हिम्मत, कादर।

असिंचन—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंचन या सींचने का अभाव, बिना सींचे।

असिंचित—(वि०) न सींचा हुआ।

असि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तलवार, खड्ग।—**पात्र**—(पु०) तलवार की म्यान।

असिच्छित—(वि०, दे०, सं०) अशिक्षित, बेपढ़ा-लिखा, मूर्ख, मूढ़।

असित—(वि०, सं०) काला। दुष्ट। बुरा। अनुज्वल, टेढ़ा, कुटिल। शनि। अशुभ।

असिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यमुना। दक्ष की पत्नी। पंजाब की एक नदी।

असिद्ध—(वि०, सं०) जो सिद्ध न हो। अपूर्ण।

विकल। अधूरा। कच्चा, अपक्व। व्यर्थ। अप्रमाणित। असम्भव।

असिद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अप्राप्ति, अनिष्पत्ति। कच्चापन, कचाई। अपूर्णता। सिद्धिहीन, सिद्धियों का अभाव। [**असिद्धी** दे०] मनहूस।

असिधर—(वि०, सं०) तलवार धारण करने वाला। "जब तक नर-समाज से असिधर...."—दिनकर।

असिपत्रवन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक नरक का नाम।

असिव—(वि०, दे०) [सं० अशिव] अकल्याणकारी, अशुभ। "असिव वेष सिवधाम कृपाला"—तुल०।

असीव—(वि०, दे०) [सं० असीम] असीम, सीमा-रहित, अपार, अनन्त।

असी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० असि] एक नदी का नाम जो काशी के दक्षिण में गंगा से मिली है। (संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं० अशीत) अस्सी, ८० की संख्या। "असी घाट के तीर"। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० असि] तलवार।

असीख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अशिक्षा] बुरी शिक्षा, बुरा उपदेश। (वि०, दे०) असीखा [हि० अ + सीखना] अशिक्षित, जिसने कुछ नहीं सीखा। [यौ० **सीख-असीख**]।

असीझा—(वि०, दे०) [हि० अ + सीझना] जो सीझा या रस-पूर्ण या रस-सिक्त न हो।

असीत—(वि०, दे०) [सं० अशीत] शीताभाव, जो ठंडा न हो, गर्म, उष्ण।

असीतल—(वि०, दे०) [सं० अशीतल] जो शीतल या ठंढा न हो, उष्ण, गर्म। (यौ०, दे०) असी नदी का तल।

असीम—(वि०, सं०) सीमा-रहित, बेहद, अपरिमित, अनंत, अपार। [**असींव** (दे० ब्र०)। संज्ञा, स्त्री० **असीमता**]।

असीमित—(वि०) जिसकी सीमा निर्धारित न हो, अपरिमित। [अनलिमिटेड]।

असीर—(वि०, फ़ा०) कैदी, बंदी। "होकर असीर इसकी तमन्ना फ़जूल है"।

असीरी—(संज्ञा, स्त्री०) कैद।

असील*—(वि०, दे०) [सं० अशील] शील-रहित। (वि०, फ़ा०) असल, खरा, सच्चा।

असीस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आशिष] आशीर्वाद, आसिख। "सुनु सिय सत्य असीस हमारी" —तुल०। [दे० ब्र० **आसिख**, दे० **आसिष**]।

असीसना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आशिष] आशीर्वाद देना, दुआ देना। "भूषन असीसै"।

असु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अश्व] घोड़ा, चित्त। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अस् + उ] प्राण वायु, जीवन।—**शक्ति**—(स्त्री०) प्राण-शक्ति। "विभा विभा में असुशक्ति वायु में"—हरिऔध। "मो असु है बरु अस्व न दीजै"—केशव। (क्रि०, वि०, दे०) [सं० आशु] शीघ्र, जल्दी। "असु तियन भ्रमनि लखि सुमति धीर"—केशव।

असुख—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) सुखाभाव, दुख।

असुखी—(वि०) अप्रसन्न, दुखी, खिन्न, बेचैन।

असुखोदय—(वि०) दुःखमय, कष्टमय। "सुना सब वृत्त असुखोदय"—गिरीश।

असुग—(वि०, दे०) [सं० आशुग] शीघ्र-गामी, जल्द गमन करने वाला। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आशुग] वायु। बाण। असुगामी।

असुगम—(वि०, सं०) जो सुगम न हो, असरल, दुर्गम, कठिन।

असुगामी—(संज्ञा, पु०, दे०) आशुगामी, अश्वगामी।

असुगासन—(वि०, संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० आशुगासन] धनुष, शरासन।

असुचि—(वि०, दे०) [सं० अशुचि] अपवित्र, मैला, अपुनीत, अपावन।

असुचित—(वि०, दे०) [सं० अ + सुचित्त] अनिश्चित। चितायुक्त। बुरे चित्त वाला।

असुठि—(वि०, दे०) अशुष्ठ (सं०), असुन्दर।

असुत—(वि०, सं०) सुत या लड़के से रहित, निस्संतान, अपुत्र, निपूता। [स्त्री० **असुता**—कन्या-हीन, पुत्र-रहिता। **असुतनी** दे०]।

असुधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कठिनाई, व अड़चन, दिक्क़त, तक़लीफ़, कष्ट।

असुनी—(वि०, दे०) [हि० अ + सुनना] न सुनी हुई, अनसुनी। "ताकौ कै सुनी औ असुनी सो उत्तरेस तौलो"—सरस।

असुन्दर—(वि०) कुरूप, भद्दा।

असुर—(संज्ञा,पु०, सं०) दैत्य, राक्षस। रात्रि, नीच वृत्ति का पुरुष। पृथ्वी। सूर्य। बादल। राहु। एक प्रकार का उन्माद। दानव। [यौ० **असुराधिप**, **असुराधिपति**]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अ + स्वर] स्वराभाव, बुरा स्वर। [**असुरी**—दे०, सं० असुर-सम्बन्धी। बेसुर-ताल के]।

असुरभि—(वि०) अमनोज्ञ, असुन्दर, सुगंधाभाव।

असुरसेन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राक्षस (कहते हैं कि इसके शरीर पर गया नामक नगर बसा हुआ है)। (संज्ञा, यौ०) असुरों की सेना।

असुरा—(संज्ञा,स्त्री०, सं०) रात्रि। वेश्या। "गयी असुरा उषा आयी"—गिरीश।

असुराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नीच कर्म, खोटापन, असुर-कर्म, असुरता। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं०—अ + सुराई —शूरता—सं०] अशूरता, कायरता, कापुरुषत्व।

असुराचार्य—(संज्ञा, पु०) शुक्राचार्य। "लगे खीझने असुराचार्य"—गिरीश।

असुराधिप—(संज्ञा, पु०) राजाबलि। "स्वर्ग चाहते थे असुराधिप"—गिरीश।

असुरारि—(संज्ञा,पु०, सं०) देवता। विष्णु, हरि। [दे० **असुरारी**]।

असुरालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) असुरों का स्थान। दैत्यों का घर या नगर।

असुरावास—(संज्ञा, पु०, सं०) असुरों का निवास-स्थान।

असुरेस—(वि०, दे०) असुरेश, (सं०) दैत्याधिपति, राक्षस-पति, निशाचरेश, दानवेन्द्र, असुरेन्द्र।

असुस्थ—(वि०, सं०) सुख-स्थिति-रहित, अस्वस्थ, रोगी। [संज्ञा, स्त्री० **असुस्थता**]।

असुहाग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० असौभाग्य] अभाग्य, असौभाग्य, विधवापन, वैधव्य। [वि० **असुहागिन, असुहागिनी**]।

असुहाता—(वि०, दे०) [हिं० अ + सुहाना] जो न अच्छा लगे, अशोभित। बुरा। अप्रिय। अरोचक। "नागरिदास बिसारिये नहीं, यह गति अति असुहाती"। [स्त्री० **असुहाती, असुहाई**]।

असुहाना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अशोभन] न अच्छा लगना। अप्रिय। अरोचक होना। अशोभित होना।

असूचित—(वि०, सं०) जिसकी सूचना न दी गई हो। [वि० **असूचक**—सूचना न देन वाला]।

असूच्य—(वि०,सं०) जो सूचित करने योग्य न हो। अप्रकाशनीय। अकथनीय।

असूझ—(वि०, दे०) [हिं० अ + सूझना] अँधेरा, अंधकारमय। जिसका वारापार न दिखाई दे, अपार, विस्तृत। जिसके करने का उपाय न सूझ पड़े, विकट, कठिन। अदृश्य। भूल, गलती। जिसमें सूझ या दूरदर्शिता न हो। [वि०, स्त्री० **असूझी**—न सूझी हुई]।

असूत*—(वि०, दे०) [सं० अस्यूत] विरुद्ध, असंबद्ध। (वि०,दे०) [सं० असूत्र] बे सूत का। जिसका सूत्र-पात न हुआ हो। जिसका रंच मात्र भी ज्ञान न हो। न सोया [सूतना—सोना] हुआ। "मिथ्या हैं ये बातें सकल असूत"—गिरीश।

असूद्र—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अशूद्र] जो शूद्र न हो।

असूधा—(वि०, पु०, दे०) [वि० अ + सीधा] न सीधा, असरल। टेढ़ा, वक्र। दुष्ट। [स्त्री० **असूधी**]।

असूना—(वि०, पु०, दे०) [सं० अशून्य] जो सूना न हो। अकेला नहीं। शून्यता-रहित। [स्त्री० **असूनी**]।

असूया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूसरे के गुण में दोष लगाना, ईर्ष्या, डाह, परिवाद, निन्दावाद, द्वेष। एक प्रकार का संचारीभाव (रसान्तर्गत)।

असूरता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अशूरता] कायरता, अवीरता, अशौर्य।

असूर्यग—(वि०, सं०) बिना सूर्य के, कुण्डली के घरों में ग्रहों की बिना सूर्य के स्थिति। "ग्रहैस्ततः पंचभिरुच्चसंस्थितैरसूर्यगैः"—[रघु०]।

असूर्यपश्या—(वि०, स्त्री०, सं०) जिसे सूर्य भी न देखे, परदे मे रहने वाली, पर्देनशीन, गुप्त, अप्रगट।

असूल—(वि०, दे०) [सं० अ + शूल] शूल या दर्द-रहित, पीड़ा-विहीन, दुःख-हीन, क्लेशाभाव, व्यथा-विहीन, अकष्ट। (संज्ञा, पु०, दे०) वसूल, उसूल, नियम। उगाही, एकत्रीकरण।

असूलना—(क्रि०, सं०, दे०) वसूल करना।

असेग*—(वि०, दे०) [सं० असह्य] न सहन योग्य, असह्य, कठिन।

असेचन—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) न सींचना, असिंचन।

असेद—(वि०, दे०) [सं० अस्वेद] अस्वेद, पसीना-रहित।

असेव—(वि०, दे०) [सं० असेव्य] असेव्य, सेवन योग्य। [वि० **असेवनीय, असेवित**]।

असेवन—(वि०) उपेक्षाकारी, न प्रयोग करने वाला। (पु०) उपेक्षा, त्याग।

असेवा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सेवा का अभाव। "हुई असेवा हो यदि कोई"—गिरीश।

असेस—(वि०, दे०) [सं० अशेष] अशेष, शेष-रहित।

असेसर—(संज्ञा, पु०, अं०) वह व्यक्ति जो जज को फौजदारी के मुक़द्दमे में राय देने के लिए चुना जाता है। [संज्ञा, सं० **असेसरी**]।

असैन्य—(वि०, सं०) सैन्य या सेना का अभाव, बिना सेना के। [दे० **असेन, असैन**]।

असैला—(वि०, दे०) [सं० अ + शैली] रीति-नीति

के विरुद्ध कर्म करने वाला, कुमार्गी। शैली के विपरीत, अनुचित, कुमार्गगामी। [स्त्री० **असैली**]।

असैसव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अशैशव] शैशव या शिशुता का अभाव, शिशुता-रहित।

असोक—(वि०, दे०) [सं० अशोक] शोक-रहित, दुःखहीन। (संज्ञा, पु०, दे०) (सं० अशोक) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ लहरदार होती हैं। [वि० **असोकी, असोकित** सं० अशोकित]।—**बाटिका**—(स्त्री०) रावण का उपवन, अशोक वन, अशोक-वटिका।

असोच—(वि०, दे०) [सं० अशोच] शोच-रहित, निश्चिन्त, चिंता-हीन, अपवित्र, पापी।

असोचित—(वि०)बिना विचारा हुआ, शोच-रहित।

असोची—न सोचने वाला। शोच-रहित। निर्मोही। प्रमादी। सुस्थिर। निश्चित।

असोभा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अशोभा] शोभा या छटा का अभाव, असुन्दरता, असौंदर्य।

असोभित—(वि०, दे०, सं०) अशोभित, शोभा न देने वाला, असुन्दर, अरुचिर। बुरा, भद्दा, अरम्य।

असोस—(वि०, दे०) [सं० अ+शोष] जो न सूखे, न सूखने वाला। "गोपिन के असुवनि भरी, सदा असोस अपार"—बिहारी।

असौंध*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अ+सुगंध—सौंध] दुर्गंधि, बदबू, कुबास। (वि०, दे०) [हि० अ+सौंधा] जो सोंधा न हो। [स्त्री० **असौंधी**]।

असौगंध—(संज्ञा, पु०, सं०) सुगंधाभाव, दुर्गंध। (वि०) सुगंध-रहित। (संज्ञा, पु०, दे०) शपथ-रहित।

असौच—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अशौच] अपवित्रता, अशुद्ध। मलीनता।

असौजঞ§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अश्वयुज] आश्विन, क्वारमास।

असौजन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) असुजनता। (दे०), असज्जनता।

असौम्य—(वि०, सं०) जो सौम्य या सुन्दर न हो।

असौष्ठव—(वि०, सं०) सौन्दर्य-रहित, कुरूप। (पु०) भद्दापन, सौन्दर्य का अभाव। "नहीं अनुमान था मुझको असौष्ठ का"—गिरीश।

अस्तंगत—(वि०, सं०) अस्त को प्राप्त, अस्त हो गया हुआ। विनष्ट। अवनत। अन्तर्हित, तिरोहित, डूबा हुआ।

अस्त—(वि०, सं०) छिपा हुआ, तिरोहित, अंतर्हित, जो न दिखाई पड़े, अदृष्ट। ध्वस्त। निक्षिप्त। त्यक्त। अवसान। प्रेरित। क्षिप्त। मृत। (संज्ञा,पु०, सं०) लोप, अदर्शन। अवसान। [यौ० **सूर्यास्त, चंद्रास्त, शुक्रास्त** आदि]।

अस्तन—(पु०, दे०) [सं० स्तन] स्तन, चूचिका. थन, चूची।

अस्तबल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० स्टेबुल] घुड़साल, तबेला। (संज्ञा, पु०, यौ०, सं० अस्तबल) वह ग्रह जो सूर्य के साथ पड़कर अस्त और निष्प्रभ हो गया हो, हतप्रभ।

अस्तब्ध—(वि०, सं०) चंचल, अस्थिकर, घबराया हुआ।

अस्तमित—(वि०, सं०) तिरोहित, अन्तर्हित, छिपा हुआ, डूबा हुआ। नष्ट। मृत। निक्षिप्त। "प्रयुक्तमप्यस्तमितो वृथास्यात्"—[रघु०]।

अस्मन—(संज्ञा, पु०, सं०) अस्त होना, डूब जाना, (सूर्यादि ग्रहों का) छिपाना, अन्तर्हित होना। (यौ०) मन का गिरना, साहसाभाव, प्रसन्नता-भाव।

अस्तर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नीचे की तह या पल्ला, भितल्ला, दोहरे कपड़े के नीचे का कपड़ा। चंदन का तेल जिसे आधार बना कर इत्र बनाये जाते हैं, ज़मीन। आधार। स्त्रियों की बारीक साड़ी के नीचे लगा कर पहना जाने वाला वस्त्र।

अस्तरकारी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चूने की लिपाई, सफेदी, क़लई। गचकारी, पलस्तर।

अस्तव्यस्त—(वि०, यौ०, सं०) उलटा-पुलटा, छिन्न-भिन्न, तितर-बितर। विक्षिप्त, आकुल। संकीर्ण। अव्यवस्थित। "उसे कर डाला अस्तव्यस्त"—मैथिली०।

अस्ताचल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्य जाकर अस्त या छिप जाता है, पश्चिमाचल। [विलो० **उदयाचल**]।

अस्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भाव, सत्ता, विद्यमानता, वर्तमानता, उपस्थित रहना। [यौ०—**नास्ति**—हाँ और नहीं]। **मु०—अस्ति करना**—हाँ हाँ या वाह वाह करना।—"अस्ति अस्ति बो ले सब लोगू"—जायसी।—**नास्ति कहना (करना)**—हाँ-नहीं करना, स्पष्ट उत्तर न देना, सदिग्ध बात कहना, अनिश्चित उत्तर देना।—**नास्ति में डालना**—सदेह मे छोड़ना, द्विविधा मे डालना।—**नास्ति में पड़ना**—द्विविधा मे पड़ना।—**नास्ति दिखाना**—पक्षापक्ष समझाना।—**नास्ति न होना**—सन्देह या दुविधा न होना।—**नास्ति में कुछ कहना**—हाँ या नहीं करना।—(वि०) **आस्तिक**—वेद और ईश्वर की सत्ता को मानने वाला। [संज्ञा, पु०, यौ०

आस्तिक-वाद; वि० **आस्तिकवादी**; संज्ञा, भा०, स्त्री० **आस्तिकता**; संज्ञा, पु० **आस्तिक्य**]।

अस्तित्व—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्ता का भाव, विद्यमानता, होना, उपस्थिति, सत्ता, भाव, मौजूदगी। "खो रहे हैं आज निज अस्तित्व उडगण चांदनी में"—बच्चन।

अस्तिमान—(वि०) सम्पन्न।

अस्तु—(अव्य०, सं०) जो हो, चाहे जो हो, खैर, भला, अच्छा, ऐसा ही हो। [यौ० **तथास्तु**—ऐसा ही हो, **एवमस्तु**—ऐसा हो, **शुभमस्तु**, कल्याण हो]।

अस्तुति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निंदा, बुराई, अप्रशंसा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्तुति, प्रशंसा। [दे० **अस-तुति**]। "कह दुइ कर जोरी...अस्तुति तोरी केहि विधि करों अनन्ता"—तुल०। [संज्ञा, पु०, सं० **स्तवन**]।

अस्तुरा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बाल बनाने का छुरा, उस्तरा।

अस्तेय—(संज्ञा, पु०, सं०) चोरी का त्याग, चोरी न करना, दश धर्मों मे से एक।

अस्तोदय—(संज्ञा, पु०, सं०) अस्त अथवा उदय होना। पतन या उत्कर्ष।

अस्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०) फेंक कर शत्रु पर चलाया जाने वाला हथियार, जैसे—बाण, शक्ति। शत्रु के फेंके हुए हथियारों को रोकने वाले अस्त्र, जैसे—ढाल। मंत्र-द्वारा चलाये जाने वाले हथियार। चिकित्सकों के चीड़-फाड़ करने वाले हथियार। शस्त्र, हथियार, आयुध, प्रहरण। (संज्ञा, पु०, अ०) काल, समय, जमाना।—**चिकित्सा**-(स्त्री०) वैद्यक-शास्त्र या आयुर्वेद का वह अंश या भाग जिसमे चीड़-फाड़ का विधान है। शल्य-चिकित्सा। —**चिकित्सक**-(पु०) शस्त्र वैद्य, अस्त्रों के द्वारा चिकित्सा करने वाला वैद्य, जर्राह।—**ज्ञ**-(वि०) अस्त्र-प्रयोग जानने वाला, अस्त्रज्ञाता।—**धारी**-(वि०) अस्त्र धारण करने वाला, सैनिक, योधा। —**विद्या**-(स्त्री०) अस्त्र-चलाने की विद्या, धनुर्वेद। —**वेद**-(पु०) धनुर्वेद, अस्त्रविद्या।—**शाला**-(स्त्री०) अस्त्र-शस्त्र रखने का स्थान, हथियारों के रखने की जगह, अस्त्रागार।

अस्त्रागार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अस्त्र-शाला, अस्त्रालय।

अस्त्रालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अस्त्र-शस्त्र रखने की जगह।

अस्त्रविद्—(वि०, सं०) अस्त्र-प्रयोगज्ञाता, अस्त्र-वेत्ता।

अस्त्रागार—(संज्ञा, पु०, सं०) देखिए 'अस्त्र'।

अस्त्री—(संज्ञा, पु०) [सं० अस्त्रिन्] अस्त्रधारी, हथियार बन्द, सैनिक। (वि०) [सं० अ+स्त्री] स्त्री-रहित। जो स्त्री न हो।

अस्थल—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+स्थल] स्थानाभाव। बुरा स्थान, बुरी जगह। (दे०) स्थल, जगह।

अस्थान—(संज्ञा, पु०) [सं० अ + स्थान] बुरा स्थान। स्थानाभाव। (दे०) स्थान, जगह।

अस्थापन—(संज्ञा, पु०) [सं० अ + स्थापन] न स्थापित करना, न बिठाना, (दे०) स्थापन [सं० **स्थापना**]।

अस्थापित—(वि०)[सं० अ+स्थापित] जो स्थापित न किया गया हो, (दे०) स्थापित। [वि० **अस्थापनीय; अस्थापक**]।

अस्थायी—(वि०, सं०) स्थिति-रहित, जो स्थायी या ठहरने वाला न हो। अस्थिर। अगाध। अतल-स्पर्श। [टेम्पोरेरी]। [संज्ञा, पु०, सं० **अस्थायित्व**। अस्थाई दे०]।—**उपलेख**-कच्चा मसविदा। [प्राविजनल ड्राफ्ट]।—**निर्णय**-काम चलाऊ या कार्य निर्वाही निर्णय। [प्राविजनल जजमेंट]।—**परिषद्**-अल्पकालीन परिषद्। [प्राविज़नल कौंसिल]। —**शासन**-सामयिक सरकार, थोड़े काल तक चलने वाली सरकार। [प्राविजनल गवर्नमेंट]।

अस्थि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हड्डी, शरीरस्थ धातु विशेष। "कुलिस अस्थि तें उपल तें"—तुल०।—**चय**-(संज्ञा, पु०) हड्डियों की राशि, अस्थियों का समूह। "है विपुल अस्थिचय उसके"—हरिऔध। —**पंजर**-हड्डियों का ढाँचा, कंकाल।—**भंग**-(पु०) हड्डी का अपने स्थान से हट जाना। [फ्रैक्चर]।—**संचय**-(पु०) अंत्येष्टि संस्कार के अनन्तर जलने से बची हुई हड्डियों के एकत्रित करने की क्रिया।

अस्थिर—(वि०, सं०) चञ्चल, चलायमान, डाँवाडोल, जिसका कुछ ठीक न हो, अस्थायी, अनिश्चित।* (दे०) स्थिर, निश्चित। "असथिर रहे न कतहूँ जाई"—कबीर०। (संज्ञा, भा०, स्त्री० **अस्थिरता**—चंचलता, अनिश्चितता)।—**चित्त**-(वि०) चंचलचित्त।—**मतदाता**-वह मतदाता जो निश्चित न हो कि किस व्यक्ति को मतदान देगा। [शेकी वोटर]।—**मति**-(वि०) अधीर बुद्धि, अस्थिरधी।—**मना**-(पु०) चंचल चित्त

या मति वाला, अधीर, जिसका अंतःकरण चलायमान हो।

अस्थूल—(वि०, सं०) जो स्थूल या मोटा न हो। सूक्ष्म। कृश, दुर्बल, दुबला-पतला। (वि०, दे०) स्थूल। [संज्ञा, स्त्री० **अस्थूलता**]।—**धी**-सूक्ष्म बुद्धि वाला।

अस्थैर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अस्थिरता, चंचलता। (दे०, संज्ञा, पु०) स्थैर्य, स्थिरता।

अस्नानॐ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्नान] स्नान, नहाना। [**असनाने** दे०। वि० **अस्नात**]।

अस्पताल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० हास्पिटल] औषधालय, चिकित्सालय, दवाखाना।

अस्पर्श—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अ+स्पर्श] स्पर्श का अभाव। (दे०) स्पर्श। [वि० **अस्पर्शित**—न छुआ हुआ। स्पर्शित, स्पर्श किया हुआ]।

अस्पष्ट—(वि०) [सं० अ+स्पष्ट] जो स्पष्ट या सुव्यक्त न हो, गूढ़, अस्फुट। (दे०) स्पष्ट, स्फुट। [संज्ञा, स्त्री० **अस्पष्टता**]।

अस्पृश्य—(वि०, सं०) जो छूने योग्य न हो। नीच या अंत्यज।—**जाति**-नीच जाति, अछूत। "तुम अदृश्य, अस्पृश्य अप्सरा"—पंत।

अस्पृह—(वि०, सं०) लोभरहित।

अस्फटिक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अस्फटिक] एक प्रकार का उज्ज्वल पत्थर।

अस्फुट—(वि०) [सं० अ+स्फुट] जो स्पष्ट न हो, अस्पष्ट, गूढ़, जटिल, (दे०) स्पष्ट, अगूढ़। "प्रथम कलिका सी अस्फुटगति"—पंत।

अस्फुटित—(वि०, दे०) [सं० स्फुटित] फुटा हुआ। [सं० अ+स्फुटित] न फूटा हुआ।

अस्मत—(संज्ञा, स्त्री०) [शु० रू० इस्मत अ०] सतीत्व, पातिव्रत।

अस्मरण—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+स्मरण] अस्मृति, याद न रहना, भूल, विस्मृति। (दे०) स्मरण, याद, स्मृति। [संज्ञा, स्त्री० **अस्मृति** [सं० अ+स्मृति] स्मृति का अभाव, विस्मृति (दे०) स्मृति, याद। **असमरण** दे०। वि० **अस्मरणीय**]।

अस्मारक—(संज्ञा, पु०) [सं० अ+स्मारक] जो स्मारक या स्मरण कराने वाला न हो। (दे०) स्मारक या स्मरण कराने वाला चिह्न।

अस्मि—(क्रि०, अ०, सं०) हूँ।

अस्मिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दृश्य, दृष्टा, और दर्शन-शक्ति को एक मानना या पुरुष (आत्मा) और बुद्धि में अभेद मानने की भ्रांति (योग०)। अहंकार, मोह। (वि०) [सं० अ+स्मिता] न मुसकुराई हुई। (दे०) स्मिता या मुसकुराती हुई।

अस्र—(संज्ञा, पु०, सं०) कोना। रुधिर। जल। आँसू। केसर। नोक। "प्रकृत विधवा थी भरे हिम अस्र"—मैथिली०।

अस्रजित—(वि०) [सं० अ+स्रजित] न सिरजी या रची या पैदा की हुई, न बनाई हुई। [संज्ञा, पु० **अस्रजन**; वि० **अस्रजनीय**]।

अस्रप—(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस। मूल नक्षत्र। जोंक। (वि०) रक्त पीने वाला।

अस्रु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अश्रु] आँसू, अँसुवा (दे०, ब्र०)।

अस्व—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्धन, कंगाल, दरिद्र। (दे०) [सं० अश्व] घोड़ा।

अस्वकीय—(वि०, सं०) पराया, अपना नहीं, जो निज न हो।

अस्वन—(वि०, सं०) शब्द-रहित, नीरव, स्वर-रहित, निश्शब्द।

अस्वपित—(वि०, सं०) न सोया हुआ, असुप्त।

अस्वप्न—(वि०, सं०) निद्राहीन। (पु०) निद्रा अभाव।

अस्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यंजन। बुरा-स्वर, निंदितस्वर। स्वराभाव। [वि० **अस्वरित**—अशब्दायमान, अशब्दित]।

अस्वर—(वि०, सं०) मंद स्वर वाला। (पु०) मंदस्वर, व्यंजनवर्ण।

अस्वर्ग्य—(वि०, सं०) स्वर्ग के अयोग्य। अधर्म। "अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन"—[गीता]।

अस्वभाव—(वि०, सं०) विभिन्न स्वभाव वाला। (पु०) अस्वाभाविक चिह्न।

अस्वस्थ—(वि०, सं०) रोगी, बीमार, अनमना।

अस्वाद—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा स्वाद।

अस्वादिष्ट—(वि०, सं०) जो स्वादिष्ट या खाने में अच्छा या रुचिकर न हो, बदमजा, बदजायका।

अस्वाधीन—(वि०, सं०) जो स्वतंत्र न हो। पराधीन। "अस्वाधीन कहाँ सुख पावै"—गिरीश।

अस्वाध्यय—(वि०, सं०) वेदों का स्वाध्याय न करने वाला। सद् ग्रन्थों के पाठ में रुकावट। "अस्वाध्याय साधना का बलहारक"—गिरीश।

अस्वाभाविक—(वि०,सं०) जो स्वाभाविक न हो। प्रकृति-विरुद्ध। कृत्रिम, बनावटी, अप्राकृतिक, अनैसर्गिक। [अननेचुरल]।

अस्वास्थ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) रोग, बीमारी।

—कर-(वि०) रोगकारक, हानिकारी, स्वास्थ्य-नाशक।

अस्वीकार—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वीकार का विलोम, इन्कार, नामंजूरी, नाहीं। [संज्ञा, पु० **अस्वीकरण**; (वि०) **अस्वीकरणीय**—स्वीकार न करने योग्य]। **—सूचक**-(पु०) एक प्रकार के सर्वनाम का भेद, जिससे अस्वीकृति प्रगट हो।

अस्वीकृत—(वि०, सं०) अस्वीकार या नामंजूर किया हुआ, इनकार किया हुआ, नामंजूर। [संज्ञा, स्त्री०, **अस्वीकृति**]।

अस्वेद—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वेद का अभाव, पसीने का न होना।

अस्सी—(वि०, दे०) [सं० अशीति] सत्तर और दस की संख्या, दस का आठ गुना, ८०, संख्या-विशेष। [दे० **असी**]।

अहं (अहम्)—सर्व० (सं०) मैं। "परम् अहम् औ द्रष्टा भोक्ता"—पंत। **—काम**-(वि०, सं०) व्यक्ति-वादी कामना से पीड़ित। जिसको सब इच्छाएँ अपने भोग के लिए हों। "वे सामाजिक जन नहीं, व्यक्ति हैं अहंकाम्।"

अहंकार—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिमान, गर्व, घमंड, मैं हूँ या मैं करता हूँ, ऐसी भावना, दम्भ, अहंकृति, हृदय-चतुष्टय में से एक या अहंकार अपहृत नृप का जलता है—दिनकर।

अहंकारी—(वि०) [सं० अहंकारिन्] अहंकार करने वाला, घमंडी, गुमानी, गर्वीला। [स्त्री० **अहंकारिणी**]।

अहंकृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घमंड, अहंकार, मद, गर्व, अभिमान, दर्प, गुमान।

अहंता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अहंकार, घमंड, मद। (वि०, सं०) न मारने वाला।

अहंपद—(संज्ञा, पु०, सं०) घमंड, गर्व। "जिय माँझ अहंपद जो दमिये"—केशव।

अहंभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) अहंकार, घमंड, गर्व, अभिमान, दर्प।

अहंमन्य—(वि०, सं०) अपने को बड़ा मानने वाला, अहंमानी। [स्त्री० **अहंमन्या**]।

अहंमन्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अहंकार, अपने को बड़ा मानने का भाव, गर्व, मद, घमंड।

अहम्मय—(वि०, सं०) अहम्भाव से पीड़ित। "और हम भोगें अहम्मय राज्य यह"—दिनकर।

अहंवाद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) डींग, शेखी, लम्बी लम्बी बात करना, डींग मारना। [वि० **अहंवादी**]।

अह—(संज्ञा, पु०) [सं० अहन्] दिन। विष्णु। सूर्य। दिन का देवता, दिनेश। (अव्य०) [सं० अहह] आश्चर्य, खेद, या क्लेशादि को सूचित करने वाला शब्द। पशुओं से भी हीन, "रेंगता कृमि सा अह, मानव"—पंत।

अहक॥—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ईहा] इच्छा, लालसा। गर्व।

अहकना—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० अहक] लालसा करना, प्रबल इच्छा करना।

अहटना, अहटाना—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० आहट] आहट सुनना, खटकना, पता चलना। (सं०, क्रि०, दे०) आहट लगाना, टोह लेना। (अ०, क्रि०) [सं० आहट] दुखना, चोट पहुचना। "भरम गये उर फारि पिछौहैं पाछे पै अहटाने"—[भ्रमर०]। "चलत न पग पैजनियाँ मग अहटात"—"रंच किरकिरी के परे, पल पल मे अहटाय"—रतन०।

अहथिर§—(वि०, दे०) [सं० स्थिर] स्थिर, "जो पै नाहीं अहथिर दसा"—जायसी।

अहद—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रतिज्ञा, वादा। संकल्प। **—नामा**-(पु०) एकरारनामा। प्रतिज्ञापत्र। सुलह-नामा।

अहदी—(वि०, पु०, अ०) आलसी, आसकती, अकर्मण्य, निठल्ला। (वि०) प्रतिज्ञा का दृढ़। (संज्ञा, पु०, अ०) सब दिन बैठे खाने वाले किन्तु बड़ी आवश्यकता पर काम देने वाले एक प्रकार के सैनिक या सिपाही (अकबर-काल इति०)।

अहन्—(संज्ञा, पु०, सं०) दिन, दिवस।

अहना*§—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अस—होना] (इसका प्रयोग अब केवल वर्तमान काल के ही रूप में होता है, यथा—अहे) तुलसीदास ने इसके कई रूपों का प्रयोग किया है—**अहहूँ, अहैं, अहई, अहऊँ, अहौं**।

अहनिसि—(अव्य०, दे०) [सं० अहर्निशि] रात-दिन, या दिन रात।

अहबाब—(संज्ञा, पु०, अ०) [हबीब का ब० व०] दोस्त, यार लोग, मित्र गण।

अहमक—(वि०, अ०) बेवकूफ, मूर्ख, मूढ़, उजड्ड। [संज्ञा, पु०, **अहमकपन, हिमाकत** अ०]।

अहमिति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अहम्मति] घमंड, गर्व। "जीति काम अहमिति मन माँही"—तुल०। (सर्व०) [सं० अहम्+इति] मैं ही हूँ, यह भाव।

अहमेव—(संज्ञा, पु०, सं०) गर्व, घमंड, मद, अभि-

मान, अहंकार। [हमेव ब्र० दे०] "और धराधरन को मेरुयों अहमेव है"—भूषण।

अहम्मति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अहम्+मति] मनमौजी। घमंडी, अपने को बड़ा मानने वाली धारणा। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) अविद्या, अहंकार, बुद्धि।

अहर—(संज्ञा, पु०, दे०) पोखरा। पानी का गड्ढा।

अहरन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आ+धारण] निहाई। "ज्यों अहरन सिर घाव"—कबीर। [दि० **अहरनि**]।

अहरना§—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आहरण] लकड़ी को चीर कर सुडौल करना, डौलाना। (दे०) अहारना, मारना, पीटना। मार-मार कर सुधारना।

अहरह—(अव्य०, यौ०) [सं० अहः+अहः] दिन-दिन, प्रतिदिन, रोज-रोज। "अहरह अशान्त औ उद्वेलित"—पंत।

अहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आहरण] कंडों का ढेर। कंडों का ढेर (जलता हुआ) जिसमें भोजन बनाया जाय। [प्रान्ती० **अदहरा**]।

अहर्निशि—(अव्य०, सं०) दिन-रात। "अहर्निशि एक मात्र आराध्य"—मैथिली०।

अहर्मुख—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रातःकाल, भोर, सबेरा, प्रत्यूष, प्रभात-समय, भिनसार, सकार, विहान, भिहान (दे०)।

अहर्षण—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आहर्षण] प्रसन्नता, प्रमोद। हर्षाभाव। [वि० **अहर्षित**—प्रसन्न, मुदित। अप्रसन्न। **अहर्षणीय**]।

अहल—(संज्ञा, पु०, अ०) साहब।

अहलकार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कर्मचारी, कारिंदा। [संज्ञा, स्त्री०, **अहलकारी**]।

अहलना—(क्रि०, अ०, दे०) हिलना। दहलना।

अहलमद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुकद्दमों की मिसिलों को रखने और अदालत को आज्ञानुसार हुक्मनामे जारी करने का काम करने वाला, कचहरी या अदालत का एक कर्मचारी। [संज्ञा, स्त्री० **अहलमदी**]।

अहलाद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अह्लाद] आनंद, प्रसन्नता, प्रमोद, आमोद।

अहलादित—(वि०, दे०) [सं० आह्लादित] आनंदित, प्रमुदित, उल्लसित, प्रसन्न।

अहल्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गौतम ऋषि की पत्नी, गौतमी। इनके सौंदर्य पर मुग्ध होकर इन्द्र ने चन्द्रमा को मुर्गा बना कर और गौतम को प्रातःकाल हो जाने के भ्रम द्वारा स्नान-ध्यान को भिजवा कर आप गौतम-रूप मे आकर इनके चरित्र को दूषित किया था। गौतम को यह रहस्य योग-ध्यान में ज्ञात हो गया। उन्होंने इन्द्र और चन्द्र को तथा असत्य बोलने पर इनको शाप दिया, जिससे इन्द्र के शरीर मे सहस्र योनि-चिह्न उत्पन्न हुए, चंद्रांक में कलंक हो गये, इन्हे उन्होंने वायु-सेवन करने, निराहार रहने तथा तपस्या करने की आज्ञा दी। कौशिक की आज्ञा से राम ने इनका आतिथ्य स्वीकार कर इन्हे पवित्र किया और तब ये गौतम को प्राप्त हो सकीं। तुलसीकृत रामायण मे शाप से इनका पत्थर होना और राम-पद-स्पर्श से फिर स्त्री होकर गौतम को प्राप्त करना लिखा है।

अहवान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आह्वान] आह्वान, आवाहन, बुलाना।

अहवाल—(संज्ञा, पु०, अ०)[हाल का ब० व०]। वृत्त, समाचार।

अहसान—(संज्ञा, पु०, अ०) किसी के साथ भलाई करना, अच्छा सलूक, उपकार, कृपा, नेकी, अनुग्रह। कृतज्ञता।—**मंद**—(वि०, अ०) कृतज्ञ, अनुग्रहीत, उपकृत, आभारी।

अहस्कर—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य। "अहस्कर रहे तो न तस्कर रहेगा।"—गिरीश।

अहह—(अव्य, सं०) व्यथा, विषाद, क्लेश की अभिव्यक्ति के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है। आश्चर्य, खेद, क्लेश या शोक-सूचक एक शब्द। "अहह प्रलयकारी दुःखदायी नितांत"—मैथिली०।

अहा—(अव्य, दे०) [सं० अहह] आल्हाद और प्रसन्नता-सूचक एक शब्द। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) प्रशंसा, प्रसन्नता। "भरी अहा सगरी दुनियाई"—जायसी। (क्रि०, अ०, दे०) था, हो। [स्त्री० **अही**]—थी, है। "खेलत अही सहेली सेंती"—जायसी।

अहाता—(संज्ञा, पु०, अ०) घेरा, हाता, बाड़ा, प्राकार, चहार-दीवारी, चारदीवारी।

अहान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आह्वान] बुलावा, पुकार, चिल्लाहट, आवाहन।

अहार*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आहार] भोजन, आहार। "नर-अहार रजनीचर करहीं"—तुल०।

अहारना§—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आहरण] खाना, भक्षण करना। चपकाना। कपड़े मे माँड़ी देना। (दे०) अहरना, लकड़ी काटना।

अहारे-ब्यौहारे—(यौ०, दे०) [सं० आहारे-व्यवहारे] भोजन-व्यवहार मे।

अहारी—(वि०, दे०) [सं० आहारी] खाने वाला।

अहाहा—(अव्य, दे०) [सं० अहह] हर्ष-सूचक शब्द।

अहिंसक—(वि०, सं०) हिंसा न करने वाला। [विलो० **हिंसक**]।

अहिंसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी को दुःख न देना, किसी जीव को न सताना, या न मारना। "अहिंसा परमो धर्मः। [नॉन वायलेंस]

अहिंस्र—(वि०, सं०) जो हिंसा न करे, अहिंसक। अवध्य।

अहि—(संज्ञा, पु०, सं०) साँप, सर्प, फणी। राहु। वृत्रासुर। खल। वंचक। पृथिवी। सूर्य। २१ अक्षरों के वृत्तों का एक भेद (पिं०)। [स्त्री० **अहिनी**—सर्पिणी, साँपिन]।—**गण**–(पु०) वृत्त विशेष। ठगण का सातवाँ भेद (पिं०) सर्प-गण।—**गति**–(स्त्री०) सर्पगति, टेढ़ी चाल।—**छत्र**–(पु०) प्राचीन दक्षिण पांचाल, जिसे अधिकृत करके अर्जुन ने द्रोणाचार्य को गुरु दक्षिणा के रूप मे दिया था। (इति०)।—**छर**–(पु०) विष, सर्प-विष।—**तुण्डिक**–(पु०) सपेरा, ब्यालग्राही, कंजर।—**धर**–(पु०) शंकर, महादेव, अहिधारी।—**नाथ**–(पु०, सं०) शेषनाग, वासुकी। [दे० **अहिनाह**—शेषनाग, अहिराज]।—**नकुल**–(स्त्री०, सं०) सहज बैरी, स्वाभाविक शत्रु।—०**न्याय**—पारस्परिक-विरोध (न्याय०)।—**पति**–(संज्ञा, पु०, सं०) शेषनाग, नागराज, फणीश, फणीन्द्र।—**फेन**–(पु०) सर्प के मुख की लार या फेन, अफीम।—**वल्ली**,—**बल्लरी**–(स्त्री०) नाग-बेल, अहि-लता, पान-बेल। "अहिबल्ली-रिपु की सुता ताके पति को हार"—सूर।—**बेल***–(स्त्री०) [सं० अहिबल्ली] नाग-बेल, पान की बेल। [अहिबल्ल, अहिबल्लरी]।—**भुक**, **भोजी**–(पु०) मोर, मयूर। गरुड़।—**मंत्र**–(पु०) सर्प-विष के दूर करने का मंत्र।—**मणि**–(स्त्री०) सर्प-मणि।—**मुख**–(पु०) विषैले मुख वाला। कुभाषी। शेषनाग।—**याग**–(पु०) नाग यज्ञ।—**रिपु**–(पु०) नकुल। गरुड़।—**लोक**–(पु०) पाताल।—**वर**–(पु०) सर्पों मे श्रेष्ठ, शेषनाग।—**शत्रु**–(पु०) गरुड़। नकुल, न्यौला, अहिरिपु।—**शायी**–(पु०) विष्णु, सर्प या शेषनाग पर सोने वाला, हरि, शेषशायी।—**सत्र**–(पु०) सर्प यज्ञ, जिसे राजा परीक्षित ने किया था, अहियाग।

अहित—(वि०,सं०) शत्रु, बैरी। हानिकारक। (संज्ञा, पु०, सं०) बुराई, अकल्याण। हानि। अनभल।

अहिमांशु—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य। "आये जब अहिमांशु गगन में"—'गिरीश'।

अहिवर—(संज्ञा, पु०, सं०) दोहे का एक भेद। (दे०) 'अहि'।

अहिवात—(पु०) [सं० अहिवाद] स्त्री का सौभाग्य, स्त्रियों का सुहाग, सधवापन—[**अहिवाता**–दे०]। "अचल होय अहिवात तुम्हारा"। "सदा अचल यहि कर अहिवाता"—तुल०।—**वातिन**–(वि०, स्त्री०, सं०) सौभाग्यवती, पतियुक्त स्त्री। "अहिवातिन तुम रहो निरंतर"—गिरीश।

अहिवाती—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० अहिवात] सौभाग्यवती, सोहागिन, सधवा।

अही—(क्रि०, अ०, दे०) है, हूँ। (संज्ञा, पु०, दे०) अहि।

अहीन—(वि०, सं०) जो हीन या कमजोर न हो, अक्षीण। (संज्ञा, पु०) [अहि का ब०, व०] सर्पों, नागों। [**अहिन** दे०। स्त्री० **अहिनि**। "सुरसानाम अहिन की माता"—तुल०।]

अहीन्द्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शेषनाग, वासुकी, अहिपति।

अहीर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आभीर] गाय-भैंस रखने और दूध-दही आदि का रोजगार करने वाले ग्वाले, एक जाति विशेष, ग्वाला, अहिर (दे०)। "ताहि अहीर की छोहरियाँ"—रस०।

अहीरिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अहीरिनि, अहीरिनी, ग्वाले या अहीर की स्त्री, ग्वालिनि, अहिरिन (दे०)।

अहीरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अहीर का काम।

अहीश, **अहीश्वर**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शेषनाग, शेषावतार, लक्ष्मण और बलराम आदि।

अहुटना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० हटना] हटना। दूर होना, अलग होना, पृथक् होना, विलग होना।

अहुटाना*—(क्रि०, सं०, दे०) हटाना, दूर करना, भगाना, विलगाना।

अहुठ*—(वि०, दे०) [सं० अध्युष्ठ] साढ़े तीन, तीन और आधा, हूंठा। "अहुठ हाथ तन जइस सुमेरू"—जायसी।

अहुर-बहुर—[दे०, प्रान्ती०] हिर-फिर कर। (क्रि०, अ०) **अहोरना-बहोरना**—हेर-फेर या बदला करना, परिवर्तन करना।

अहे—(अव्य०, दे०) [सं० हे, रे] संबोधन-सूचक शब्द, हे, अरे, रे, विस्मयादिसूचक शब्द।

अहेत—(संज्ञा, पु०, दे०) अहित, अप्रेम, द्वैष। "नैना देत बताय सब हिय कौ हेत अहेत"—वृन्द।

अहेतु—(वि०, सं०) बिना कारण का, निमित्त रहित, व्यर्थ, फजूल, अकारण।

अहेतुक—(वि०, सं०) निष्कारण, बिना हेतु के, अकारण।

अहेर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आखेट] शिकार,

मृगया, वह जन्तु जिसका शिकार किया जाय। "जहँ तहँ तुमहिं अहेर खिलाउब"—तुल०।

अहेरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अहेर] शिकारी आदमी, आखेटक, व्याध। किरात। [**अहेरिया**—दे०]। "चित्रकूट-गिरि अचल अहेरी"—तुल०। "चतुर अहेरी मार"—विहारी।

अहै—(अ०, क्रि०, दे०) है। "कोउ कह जो भल अहै विधाता"—तुल०।

अहो—(अव्य, सं०) संबोधन-सूचक या विस्मय, हर्ष, करुणा, खेद, प्रशंसा आदि मनोविकारों का द्योतक शब्द। "अहो रूप महोध्वनिः।"

अहोनिसि—(अ०, दे०) [सं०—अहर्निश] दिन-रात। "अहोनिसि कोट अगोरि"—विद्या०।

अहोभाग्य—(संज्ञा, पु०, सं०) धन्यभाग्य, सौभाग्य।

अहोरात्र—(संज्ञा, पु०, सं०) दिन-रात।

अहोरी-बहोरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अहः + बहुरना हिं०] विवाह की एक रीति जिसमें दुलहिन ससुराल में जाकर उसी दिन मायके लौट जाती है, हेरा-फेरी। भाँवरी। (क्रि०, वि०) बार-बार, पुनः पुनः।

अहोरे-बहोरे—(क्रि०. वि०, दे०) [हिं० बहुरना] बार-बार, फिर-फिर।

अह्यधिपति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सर्पराज।

अह्यरि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गरुड़। नकुल।

अह्ल—(संज्ञा, पु०. अ०) आदमी लोग।

आ

आ—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला का द्वितीय अक्षर, जो 'अ' का दीर्घ या वृद्धि-रूप है। (अव्य०) (आङ्, आ) शब्दों आदि में आकर मर्यादा, अभिविधि, अवधि, पर्यन्त, सब प्रकार न्यून और विपरीत का अर्थ देता है। "आङ् मर्यादा-भिविधौ"—पाणिनि। (संज्ञा,पु०,सं०) पितामह वाक्य, महेश्वर। (अव्य०,सं०) स्मृति। ईषदर्थ। अभिव्याप्ति। सीमा। पर्यन्त, या तक। वाक्य। अनुकम्पा। समुच्चय-निषिद्ध। संधिवर्ण। स्वीकार। कोप। पीड़ा। स्पर्धा। तर्जन। (१) सीमा—**आसमुद्र**—समुद्र तक, (२) पर्यन्त—**आजन्म**—जन्म पर्यंत, (३) अभिव्याप्ति—**आपाताल**—पाताल के अंतर्भाव तक, (४) ईषत (थोड़ा, कुछ)—**आपिंगल**—कुछ कुछ पीला, (५) अतिक्रमण — **आकालिक**— असामयिक, बेमौसिम का। (उप०, सं०) एक उपसर्ग जो प्रायः गत्यर्थक-धातुओं के पहले लगाया जाता है और उनके अर्थों में कुछ विशेषता पैदा कर देता है—जैसे आरोहण, **आकंपन**। जब यह **गम्** (जाना) **या** (गाना), **दा** (देना) तथा **नी** (ले जाना) धातुओं के प्रथम लगाया जाता है तब उनके अर्थों को उलट देता है—जैसे गमन (जाना) से आगमन (आना), दान (देना) से आदान नयन से आनयन आदि।

आँक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अंक] अंक, चिह्न, निशान। संख्या का चिह्न, अदद। अक्षर, हरफ। गढ़ी हुई बात। हिस्सा, अंश, भाग। लकीर। अर्क, मदार, अकवन। "आँक बिहूनियौ सुचित, सुनै बाँचति जाइ"—विहारी। **मु०—एक (ही)**—दृढ बात, पक्का विचार, निश्चित मत। "एकहि आँक इहै मन माँही"—तुल०। (क्रि०, वि०) एक—निश्चय ही। "जद प लोग ललितौ तऊ, तू न पहिर इक आँक"—विहारी। "इहाँ एक ते दूसरी आँक नहीं"—घनानंद।

आँकड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) (हिं० आँक) अंक, अदद, संख्या का चिह्न। पेंच। संख्या-सूचक हिसाब की तालिका।

आँकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आँकुशी] अँकुशी, काँटा। जंजीर।

आँकना—(क्रि०, स०, दे०) [स० अंकन] चिह्नित करना, अंकित करना, निशान लगाना, दागना। कूदना। अनुमान करना। अंदाज लगाना। मूल्य लगाना। जाँचना। ठहराना। निरखना। परखना।

आँकर—(वि०, दे०) [सं० आकर] गहरा। बहुत अधिक। [स्त्री० **आँकरी** (वि०, सं०) अक्र] महँगा। "बिसरि बेद-लोक-लाज आँकरो अचेतु है"—कविता०।

आँकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाण का कण या नाक, अंकुश।

आँकुवे—(संज्ञा, पु०, दे०) अंकुरित हुए। जन्मे। उगे हुए। पौदे, अँकुवे, अँखुवे।

आँकुस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अंकुश] अंकुश। **मु०—न मानना**—दाब न मानना, उद्दंड या उच्छृङ्खल होना। **बे—होना**—स्वच्छंद होना, मनमानी करना, उद्दंड या उच्छृङ्खल होना।—**(अंकुश) न होना**—दबाव न होना।—**(अंकुश) रखना**—दबाव रखना।

आँकू—(संज्ञा, पु०, दे०) (हिं० आँक + ऊ प्रत्य०) आँकने या कूतने वाला। अँकैया (दे०)। अंक, आँक।

आँख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अक्षि] प्राणियों के शरीर में रूप, वर्ण, विस्तार, आकारादि को

देखने या अनुभव करके ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय विशेष, नेत्र, नयन, लोचन, विलोचन, दृक्, दृष्टि, नज़र, ध्यान। परख। मोर-पंख। चक्षु, अम्बक। [ब० व० **आँखें, अँखियाँ, अँखियान** अँखड़ियाँ दे०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अक्षि] विचार, विवेक। परख। शिनाख्त। पहिचान। कृपा-दृष्टि। संतति। आँख के आकार का चिह्न, (सुई का छिद्र)। अँखुवा, (पेड़ का) । **—मुँदाई,—मुचाई—मिचौनी**—आँख मीचनी, आँख मुदव्वल। **मु०—आना या उठना**—आँख में लाली, पीडा और सूजन होना।—**उठाना**—ताकना, देखना। क्रोध करना। ध्यान हटाना। हानि पहुचाना, नुकसान या अनिष्ट करने की चेष्टा करना, अहित करने का विचार करना।—**(से) उठाना**—सादर स्वीकार करना।—**ओझल (आँख से ओझल) होना**—दूर जाकर दृष्टि से परे और आट में होकर छिप जाना।—**उलटना (उलट जाना)** पुतलियों का ऊपर चढ जाना (जैसे मरते समय)।—**और होना**—नज़र बदल जाना, आँख फिर जाना, विचार या भाव मे अन्तर आ जाना।—**का काजल (अंजन) करके रखना**—आँखों में बसाना या रखना, अत्यंत प्रिय बनाकर समीप रखना। "नैननि मैं कजरा करि राख्यो"।—**का काजल चुराना**—सामने से देखते देखते उड़ा देना (यौ०)।—**का काजल (अंजन) होना**—प्रिय, हितकर और सुखद होना।—**का तारा**—आँख का काला तिल, अति प्रिय व्यक्ति, परम प्रिय।—**का उजाला**—अति प्रिय व्यक्ति। (क्रि०)—**का तारा होना**—प्रिय होना।—**करकना**—आँख दुखना या पीड़ा करना।—**का खिलना (खिल उठना)**—प्रसन्नता आना, मुदित हो उठना।—**का पलटना**—आँखों का उलट जाना (मृत्यु कापूर्व रूप)।—**की पुतली**—आँख के भीतर रंगीन भूरी झिल्ली का वह भाग जो सफेदी पर की गोल काट से झाँकर दिखाई पड़ता है, अति प्रिय व्यक्ति, प्यारा मनुष्य।—**की पुतली करना (बनाना)**—अत्यंत प्रिय करना, या बनाना। "करहुँ तोहि चखपूतरि आली"—तुल०।—**के डोरे**—आँखों पर लाल रंग की बारीक नसें। **—खुलना (खोलना)**—पलक खुलना या खोलना, नींद टूटना, जागना। ज्ञान होना, प्रबुद्ध या सचेत होना। सावधान या सतर्क होना, भ्रम का दूर होना। चित्त स्वस्थ होना, तबियत ठिकाने आना। आश्चर्य होना।—**न खुलना (खोलना)**—अभक दशा को न त्यागना, शैशव में ही रहना। अप्रबुद्ध दशा में होना, सचेत न होना (चिड़िये के बच्चे के लिए)।—**खोलकर देखना**—सध्यान, विचार पूर्वक देखना, पूर्णतया, भलीभाँति देखना। **—खोलना**—पलक उठाना, ताकना। चैतन्य होना या करना, होश मे आना या लाना। स्वस्थ होना। ज्ञान आना या करना, बोध करना या कराना।—**का खोना (खो जाना, खो बैठना, खो देना)**—आँख की दृष्टि या नज़र का चला जाना, आँख का फूट जाना, खराब हो जाना, रोशनी का न रहना, अंधा हो जाना।—**गड़ना**—(किसी वस्तु या व्यक्ति पर) ताक लगना, ध्यान लगना। लेने, पाने या अपनानाने की इच्छा (प्रबल इच्छा) या लालसा होना। प्रेम या अनुराग होना। आँख का दुखना या किरकिराना। दृष्टि जमना, टकटकी लगना। **—गड़ना (गड़ाना)**—दृष्टि जमाना, टकटकी बाँधना या लगाना, ध्यानपूर्वक देखना, ताकना। ताक लगाना, लेने की प्रबल इच्छा करना। **—गिरना**—(मृत्यु के समय) आँखों का अन्दर धुस जाना और मुँद जाना। आँख का नीचा होना, लज्जित होना।—**गिरा लेना (गिराना)**—मरने के निकट होना। लज्जित होना। शर्म खाना।—**से गिरना**—मन से उतरना, अप्रिय, अरोचक और अश्रद्धास्पद होना, नजरों से गिरना, घृणित हो जाना, त्याज्य हो जाना।—**गुरेरना**—आँखो को टेढ़ा करना। नाराज होना। रोकना, दबाना, मना करना। अप्रसन्न होना।—**(में) घर करना**—मन में बसना, प्रिय हो जाना।—**घूरना**—मना करना, रोकना, डाँटना, नाराज होना।—**(खों में) घूमना**—ध्यान में रहना, याद रहना, या नाचना (फिरना)। **—चढ़ाना**—नशे या नींद से पलकों का तन जाना और नियमित रूप से न गिरना। नाराज होना। मना करना, रोकना। अप्रसन्न होना।—**(में) चढ़ना (चढ़ाना)**—चित्त या ध्यान मे रहना। अति प्रिय होना। शिकार बनना।—**चलाना**—आँखों का इधर-उधर घुमाना, मटकाना। खोजना, ढूँढना।—**(खें) चार होना (करना), चार—(खें) होना (करना)**—देखा-देखी होना (करना), सामने आना, परस्पर देखना, बुद्धि होना, ज्ञान होना।—**चुराना, —छिपाना ,—बचाना**—कतराना, सामने न होना, लज्जा से बराबर सामने न देखना, छिपना। **—छिपाना**—आँख चुराना।—**जमाना**—टकटकी बाँधना, एकाग्र होना, सध्यान देखना, दृष्टि गाड़ना, या जमाना।—**जाना**—फूट जाना, बेकाम होना, दृष्टि-हीन होना।—**झपकना**—आँख बंद होना,

नींद आना, पलक लगना।—**झपना**—आँख चुराना। नींद बुलाना।—**टेढ़ी करना**—वक्र दृष्टि से देखना। नाराज होना। अहित करना।—**ठंडा होना**—आँखों का देख कर प्रसन्न होना।—(**खें**) **डबडबाना**—(अ०, क्रि०) आँखों में आँसू भर आना। आँखों मे आँसू भर लाना (सं०,क्रि०)।—**ठंडी करना**—देखना (प्रिय वस्तु का) देखकर सुख प्राप्त करना, दर्शन से प्रसन्नता प्राप्त करना।—**डालना**—देखना, बुरी निगाह से देखना, बुरे विचार से ताकना।—**तरेरना**—कुपित दृष्टि से देखना, सरोष देखना।—**तिरछाना**—टेढ़ी आँख से देखना, वक्र दृष्टि से देखना।—**तिलमिलाना**—बार-बार पलक लगाना और इधर-उधर आँख चलाना, चकाचौंध लगना।—**दिखाना**—सकोप देखना, नाराज होना। डराना, भयभीत करना, डाँटना, रोकना, मना करना। धमकाना।—**दुराना**—आँख छिपाना, चुराना या बचाना, अप्रिय समझ कर न देखना।—**देखना**—धमकी या दबाव मानना, डरना, कोप सहन करना। मन की बात जानना, इरादा या विचार ताड़ना, मनोविकार या भावना का अनुभव या अनुमान करना, तबीयत पहिचानना।—**दौड़ाना**—दृष्टि डालना। खोजना, ढूँढ़ना।—**नचाना**—मटकाना, चारों ओर देखना, इशारा करना।—**न ठहरना (जमना)**—चमक या द्रुत गति के कारण दृष्टि का न जमना, निगाह न ठहरना (रुकना)।—**निकलना**—पीड़ित होना, कृश या दुर्बल होना, विस्मय को प्राप्त होना, लज्जित होना।—**निकालना**—सकोप देखना, नाराज या विस्मित होना। आँख के ढेले को काट कर अलग करना।—**नीची होना (करना)**—लज्जित होना, शर्मा जाना, सिर नीचा होना।—**पथराना**—पलकों का नियमित रूप से न लगना और पुतलियों की गति का मारा जाना (मरने का पूर्व रूप)।—**(खों) पर परदा डालना**—धोखा देना, भ्रम मे डालना।—**पर परदा पड़ना**—अज्ञान का अंधकार छा जाना, भ्रम होना, धोखा होना या खाना, मूर्खता आ जाना।—**फड़कना**—आँख की पलक का बार-बार हिलना (शुभ या अशुभ सूचक लक्षण, मनुष्य की दाहिनी आँख फड़कना शुभ, किन्तु बाईं का फड़कना अशुभ है, स्त्रियों के सम्बन्ध में इसका उलटा ठीक है)।—**फाड़ कर देखना**—खूब ध्यान से (गौर से) देखना। विस्मय करना, खूब आँख खोल कर ध्यान या बारीकी से देखना। आश्चर्य करना।—**फिरना (फिर जाना)**—पहिले की सी कृपा या प्रीति का भाव न रहना, बेमुरौअती आ जाना, मन में बुराई आ जाना, नाराजगी या उदासीनता आ जाना, विमुख हो जाना, अप्रसन्नता आ जाना। आँख उलट जाना (बेहोशी में)। मर जाना। प्रेम तोड़ना।—**फूटी—न सुहाना**—अति अप्रिय लगना।—**फूटना**—आँख की ज्योति का नष्ट हो जाना। बुरा लगना, कुढ़न होना। भूल करना। देखते हुए भी न देखना और गलती करना।—**फूटी पीर गई**—किसी दुखद वस्तु के मूल कारण के नष्ट होने पर प्रयुक्त होता है, एक अनिष्ट (अधिक दुखद) के द्वारा तदाधारित दूसरे अनिष्ट का दूर होना, विवादग्रस्त पदार्थ का नष्ट होना, समूल किसी चीज का नष्ट होना। (**फूटी)—से भी न देखना**—सर्वथा अप्रिय जान वैमुख्य दृष्टि रखना, अवहेलना करना।—**(खें) फेरना**—पूर्ववत् प्रेम या कृपा-दृष्टि न रखना, प्रीति तोड़ना। उदासीन होना, विमुख होना, विरुद्ध या प्रतिकूल होना। मर जाना।—**फैलाना**—दूर तक देखना।—**फोड़ना**—आँखों की ज्योति का नष्ट करना, आँखों पर जोर डालने वाला कोई काम करना। बड़े गौर से किसी अनुपयोगी वस्तु को देखना, व्यर्थ आँखों को श्रमित करना।—**बंद करना (मूँदना)**—किसी बात पर दृष्टि न डालना। उसकी उपेक्षा करना। ध्यान न देना। मर जाना।—**बंद कर या मूँद कर**—बिना सब बात देखे सुने, या विचार किये, बिना सोचे बिचारे।—**बंद होना**—आँख लगना, निद्रा आना। पलक गिरना। मृत्यु होना।—**बचाना**—सामना न करना, कतराना। बिना देख रेख में करना। लज्जित होना। छिपना।—**बदल जाना**—पूर्ववत् व्यवहार या भाव का न रह जाना।—**बिछाना**—सप्रेम स्वागत करना, प्रेमपूर्वक प्रतीक्षा करना, बाट जोहना।—**(खें) भर आना**—आँखों में आँसू आ जाना (प्रेम, करुणा, दुःख से)।—**भर देखना**—खूब अच्छी तरह मन भर कर देखना, आतृप्ति देखना, इच्छा भर कर देखना।—**भर लाना**—रोने लगना, साश्रु नयन हो जाना, दया, करुणा, दुःख, प्रेम से द्रवीभूत होना।—**भारी होना**—नींद आ जाना, निद्रालु नेत्र होना।—**भौं (चढ़ाना),—टेढ़ी करना**—क्रुद्ध होना।—**भौं मटकाना**—मुँह बिराना। मूर्ख बनाना। इशारा करना।—**मारना**—इशारा करना, सनकारना। आँख के इशारे से मना करना, सैन या कनेखी चलाना।—**मिलाना**—आँखें सामने करना, बराबर देखना, ताकना, सामने आना, मुँह दिखाना,

प्रेम या प्रीति करना।—**मिचौनी,—मीचनी,—मिहीचनी**—(दे०),—**मीचनी**—आँख मिचौली। लड़कों का एक खेल जिसमें एक लड़का अपनी आँखें बंद करता है और सब लड़के छिप जाते हैं, जिन्हें वह ढूँढ़ता और छूता है। जिसे वह ढूँढ़ कर छू लेता है, फिर वह आँख बंद करता है। "खेलन आँख मिहीचनी आजु"—मति०। "आँख मीचनी संग तिहारे न खेलिहै"।—**में करकना**—बुरा लगना, आँख में गड़ना।—**में—गड़ना**—प्रेमपाश में बँधना, प्रेमी-प्रेमिका का परस्पर देखकर, मुग्ध या प्रेमासक्त या वशीभूत होना।—**में गड़ना (खटकना)**—मन में बसना। पसंद आना। बुरा लगना। किरकिराना, अप्रिय होना।—**में चरबी छाना**—मदांध या प्रमत्त हो जाना, गर्व से किसी की ओर ध्यान न देना।—**में धूल डालना (झोंकना)**—प्रत्यक्ष धोखा देना, सामने दगा करना।—**में फिरना**—ध्यान मे रहना, चित्त मे चढ़ना, स्मृति में बना रहना। "नैनिन मैं अब सोई कुंज फिरबो करै" (ऊ० श०)।—**में रात कटना**—कष्ट, चिन्ता या व्यग्रता से सारी रात जागते बीतना।—**में समाना (बसना)**—प्रिय हो जाना, पसंद आना, चित्त मे बसना, मन में स्मरण बना रहना।—**में दुखना,—में पीड़ा होना,—आना,—में चुभना**—दुःख पहुँचाना या देना, पीड़ा करना या पीड़ा पहुचाना।—**में बसना**—अति प्रिय होना।—**में रखना**—ध्यान या चित्त में या ख्याल मे रखना। अत्यन्त प्रेम करना, प्रेमपूर्वक रखना।—"आँखिन मै सखि राखि बेजोग"—तुल०।—(**खों**) **में रहना**—ध्यान मे रहना। "नननि मे जो सदा रहते"—घना०।—**रखना** (**किसी पर निगाह रखना**)—ताकना, निगरानी करना, चौकसी करना। चाह रखना, इच्छा रखना।—**लगना**—नींद लगना, झपकी लगना, सोना, टकटकी लगना, दृष्टि जमना। (किसी से) प्रीति होना, प्रेम होना। "आँखिन आँखि लगी रहै, आँखी लागत नाहि" विहारी।—**लगाना**—ताक लगाना, चाहना, इच्छा करना, देखना, सो जाना।—**लड़ना**—देखी-देखी होना, आँख मिलाना, प्रेम होना, प्रीति होना।—**लड़ाना**—देखा देखी (सप्रेम) करना।—**लाल (पीली) करना, (लाल-पीली दिखाना)**—क्रोध करना, सकोप दृष्टि से देखना, डराना, धमकाना।—**सेंकना**—दर्शन सुख उठाना, नेत्रानंद लेना।—**से बचना**—छिपा रहना, सामने न आना।—**से—मिलाना**—साहस करना। बराबरी करना, प्रतिद्वंद्विता करना, विरोध करना।—**से दूर या परे हो जाना**—दूर होना।—**से लगाकर रखना**—अत्यंत प्यार या प्रेम से रखना, बड़े आदर-सत्कार या भक्ति-भाव से रखना।—**से लगाना**—प्यार करना।—**होना**—परख, पहिचान, शक्ति, योग्यता, बुद्धि का होना।

आँखड़ी§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आँख।

आँखफोड़ा (टिड्डा)—(संज्ञा, पु०, दे०) हरे रंग का एक कीड़ा या पतिंगा। अकृतज्ञ, बेमुरौअत, कृतघ्न।

आँखा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार की चलनी, खुरजी।

आँखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आँख, अक्षि। [ब०, व० **आँखें**—**अखों**। **अँखिया** दे०।]

आँखू-माखू—(अव्य०, यौ०, दे०) अक्खो-मक्खो, झूठ-मूठ।

आँग*§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० **अंग**] अंग, अवयव, देह, स्तन। "आँग मोरि अँगराइ"—विहारी।

आँगन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अंगण] घर के भीतर का सहन, चौक, अजिर। [**अँगनाई—अँगनैया, अँगना** दे०]।

आंगिक—(वि०, सं०) अंग-सम्बन्धी, अंग का। (संज्ञा, पु०, सं०) चित्त के भावों को प्रगट करने वाली चेष्टा—जैसे भ्रू-विक्षेप, हाव आदि, रस के कायिक अनुभाव, नाटक के अभिनय के चार भेदों में से एक (नाट्य०)।

आंगिरस—(संज्ञा, पु०, सं०) अंगिरा-पुत्र, बृहस्पति, उतथ्य और संवर्त। अंगिरा के गोत्र का पुरुष। (वि०) अंगिरा-सम्बन्धी, अंगिरा का।

आँगी*§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अगिया, चोली।

आँगुर* (**आँगुल**)—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० अंगुल, अंगुर। "बावन आँगुर गात"—रही०।

आँगुरि, आँगुरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० अंगुली] अँगुली, उंगली। [**अँगुरी आँगुरिया, अँगुरिया** दे०]। "गयो अचानक आँगुरी"—विहारी। "काहू उठायों न आँगुर हू द्वै"—तुल०।

आँच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अर्चि] गरमी, ताप। लौ, आग की लपट। आग। प्रताप। चोट। हानि। **मुहा०—खाना**—गरमी पाना, आग पर चढ़ना, तपना।—**दिखाना**—आग के सामने रख कर गरम करना।—**देना**—गरम करना।—**पहुँचाना**—गरमी देना, चोट या हानि पहुँचाना।

एक बार पहुँचा हुआ ताप। तेज, प्रताप। आघात। अहित, अनिष्ट। विपत्ति, संकट, आफत। प्रेम, मुहब्बत। काम-ताप। दुख। "अजहूँ हृदय जरत तेहि आँचा"—तुल०।

आँचना*—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० आँच] जलाना तपाना, गरम करना।

आँचमन—(संज्ञा, पु०, दे०) आचमन। (यौ०) मन की आँच, हृदय-ताप। "होत आँचमन समन आँचमन जाये कीन्हे"—रसाल०।

आँचर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अंचल] अंचल, साड़ी का छोर, किनारा, दामन। [दे० **अंचरा**—**आँचल**]।—**बाँधना**-स्मरण के लिए अंचल में गाँठ बाँधना।

आँचल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अञ्चल] धोती-दुपट्टे आदि के दोनों छोरों का एक भाग या कोना। पल्ला, छोर। साधुओं का अंचला। सामने छाती पर रहने वाला स्त्रियों की साड़ी या ओढ़नी का छोर या पल्ला। **मुहा०**—**देना**—बच्चे को दूध पिलाना, विवाह की एक रीति।—**पकड़ना**—आग्रह करना। —**फाड़ना**—बच्चे के जीने के लिए टोटका करना। —**में बाँधना**—हर समय साथ रखना, प्रतिक्षण पास रखना और ध्यान रखना, (किसी कही बात को याद रखना) कभी न भूलना।—**लेना**—आँचल छू कर आदर या सत्कार करना, अभिवादन करना।

आँछी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धृ—धारण] महीन कपड़े से मढ़ी हुई चलनी।

आँजन*§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अंजन] आँख में लगाने का काजल विशेष, अंजन।

आँजना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० अंजन] अंजन लगाना। "खंजन-मद, गंजन करे, अंजन आँजे नैन"—सरस।

आँजनेय—(संज्ञा, पु०, सं०) अंजना के पुत्र, हनुमान, मारुति।

आँजर-पाँजर—(संज्ञा, यौ०, पु०, दे०) अंजर-पंजर।

आँजुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अंजली, अँजुरी (दे०)।

आँट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० अंटी] हथेली में तर्जनी और अँगूठे के बीच का स्थान। दाँव। वश। गाँठ। बैर। लागडाट। गिरह। ऐंठन। पूला। गट्ठा। विरोध, दुश्मनी। प्रति-द्वंद्विता।

आँटना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं०] अड़ाना, अटकाना। अँटना, सामना। पूरा पड़ना। "छर कोजे बर जहाँ न आँटा"—[पद०]। पार पाना। "जहँ बर किये न आँट"—[पद०] मिलना, पहुँचना, बराबरी कर सकना, अँटना। "निधि है कला सी विधि हूँ न तेहि आँटिहै"—दीन।

आँट-साँट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० आँट+सटना] गुप्त अभिसंधि, साज़िश। बंदिश, मेल-जोल। साझा।

आँटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० आँटना] लम्बे तृणों का छोटा गट्ठा, पूला। लड़कों के खेलने की गुल्ली। (अंटी) सूत का लच्छा (पिंडी)। धोती की गिरह, टेंट, मुर्री। ऐंठन। शरारत।

आँठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अष्ठि, प्रा० अट्ठि] दही, मलाई आदि पदार्थों का लच्छा। गाँठ, गिरह, गुठली, बीज।

आँड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अण्ड] अंडकोश।

आँडू—(वि०, दे०) [सं० अण्ड] अंडकोश-युक्त, अंडू, जो बधिया न हो (बैल)।

आँत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अंत्र] प्राणियों के भीतर की लम्बी नली जिससे होकर मल या व्यर्थ पदार्थ बाहर निकलता है और जो गुदा तक रहती है, अंत्र, अँतड़ी (दे०), लाद। **मुहा०**—**उतरना**—एक रोग विशेष जिसमे आँत ढीली होकर नाभि के नीचे आ जाती है और अंडकोश मे पीड़ा होती है।—(**ें**) **के बल खुलना**—पेट भरना, भोजन से तृप्ति होना।—(**ें**) **कुलकुलाना (सूखना)**—बड़ी भूख लगना।—(**ें**) **बोलना**—भूख से पेट कुलकुलाना, पेट बोलना।—**गले आना**—तंग होना, झगड़े मे पड़ना। (यौ०) **अँतड़ी-पँतड़ी**—(ढीली होना) शैथिल्य आना।

आँतर§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अंतर] अंतर, बीच, भेद।

आंतरिक—(वि०, सं०) भीतरी, अन्दरूनी, अंतःकरण सम्बन्धी, मनोगत [इण्टर्नल]। "बाह्य योगी आंतरिक योगी"—मैथिली०।—**अशांति**-देश के भीतर की अव्यवस्था। [इण्टर्नल डिसआर्डर]।—**नियम**-घरेलू नियम। [इंटर्नल रेगुलेशन]—**युद्ध**—गृहयुद्ध। [इंटर्नल वार]।—**विनिमय**—भीतरी नियम। [इंटर्नल एक्सचेंज]।—**विभाग**—आंतरिक या घरेलू बातों से सम्बन्धित विभाग। [इण्टर्नल अफेयर]।

आँदू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अंदू] लोहे का कड़ा। बेड़ी बाँधने की सीकड़। बंधन।

आँदोलन—(संज्ञा, पु०, सं०) बार-बार हिलना, डोलना। उथल-पुथल करने वाला प्रयत्न, हलचल। धूम-धाम।

आंदोलित—(वि०, सं०) प्रकंपित, संचालित।

[आंदोलिता—(स्त्री०) हिलाई हुई, कंपिता। (वि०) आन्दोलक आन्दोलनकारी, आन्दोलनकारक। आन्दोलनीय—(वि०) आन्दोलन के योग्य।]

आँध*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अंध] अँधेरा, धुंध, रतौंधी। आफ़त। क्लेश, कष्ट। विपत्ति, आपत्ति।

आँधना*§—(क्रि०, अ०, दे०) [गौ० आँधी] वेग के साथ धावा मारना, टूटना, ज़ोर से झपटना।

आँधरा*—(वि०, दे०) [सं० अंध] अंधा। [**अँधरा** दे०, **आँधर, आँधरो** दे०, ब्र०। स्त्री० **अँधरी, आंधरी**]। "कहैं अंध को आंधरो मानि बुरो सतरात"—वृंद।

आंधारम्भ*—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० अन्ध+आरम्भ] अंधेर-खाता, बिना देखे-सुने प्रारम्भ करना, बिना समझा-बूझा कार्य या आचरण, अंधेर, मन माना (बिना-सोचा-विचारा) काम, अंधारम्भ।

आँधी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [स० अंध—अंधेरा] प्रखर वायु, जिससे इतनी गर्द या धूल उड़ती है कि चारों ओर अंधेरा छा जाता है, तूफ़ान, अधड़, अंधवायु, आंधार, झंझा बात। [**आँधै, अधबाव** दे०]। "आंधी उठी प्रचंड"—गिरि०। (वि०) आंधी की सी तेज़ हवा। प्रचंड, तेज़। चुस्त। चालाक। मु० –(**उठना) उठाना**—अंधेर (होना) मचाना, प्रबल या वेगवान आन्दोलन उठाना (होना)। —**आना (चलना)**—विपत्ति आना, अंधेर होना, आन्दोलन होना। (यौ०)—**के आम**—अकस्मात, बिना प्रयास के कभी प्राप्त होने वाला पदार्थ, अनिश्चित समय मे नष्ट होने वाला, जिसके जीवन का निश्चय न हो, जिसके रहने का भरोसा न हो।

आँध्र—(संज्ञा, पु०, सं०) तापी नदी के किनारे का प्रदेश।

आँब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अम्ब] आम। [**अंबवा** दे०। स्त्री० **आँबी**]।

आँबा-हलदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आमा-हल्दी, एक ओषधि।

आँय-बाँय—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु०] अनाप-शनाप, अटाय सटाय, अंड बंड, व्यर्थ की बात, अर्र-बर्र।

आँव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आम—कच्चा] एक प्रकार का चिकना, सफेद, लसदार, मल जो अन्न के ठीक न पचने पर पैदा होता है। मु०—**पड़ना (गिरना)**—पेचिश होना।

आँवठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ओष्ठ] किनारा, धोती का छोर। [**औंठ** दे०]।

आँवड़ना*—(क्रि०, अ०, दे०) उमड़ना।

आँवड़ा*§—(वि०, दे०) [सं० आकुंड] गहरा। "सोभा रूप-सागर अपार गुन आँवड़े"—रवि०। (संज्ञा, पु०, दे०) आमड़ा।

आँवरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आमलक] एक वृक्ष, जिसके फल गोल और खट्टे होते हैं, इनका आचार, मुरब्बा, चटनी आदि बनती है और ये दवा के काम में भी आते है। [**आँवला, अँवरा, औंरा** दे०]।

आँवल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उल्वम्] गर्भ में बच्चों के लिपटे रहने की झिल्ली, खेड़ी, जेरी, साभ। [**अँवरि** दे०]।

आँवला—(संज्ञा पु०, दे०) [सं० आमलक] देखिए आंवरा।—**सार-गंधक**–(पु०) [हि० आंवला+सार गंधक—सं०] खूब साफ़ किया हुआ गंधक जो पारदर्शक हो। [**औंरासार** दे०]।

आँवाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आपाक] कुम्हारों के मिट्टी के बरतन पकाने का गड्ढा। मु०—**का —बिगड़ना**—किसी समाज या वंश के सभी व्यक्तियों का ख़राब हो जाना। —**का——**सारा का सारा।

आंशिक—(वि०, सं०) अंश-सम्बन्धी, अंश-विषयक, कुछ थोड़ा, रंचक (आंशिक पूर्ति, या सफलता)। —**प्रभुता**–आंशिक प्रभुत्व, आंशिक सत्ता। [पार्ट सावरेण्टी]।—**प्रभुत्व**–आंशिक राजसत्ता। [पार्ट सावरेण्टी]।

आंशुक जल—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० अंशुरश्मि, आंशुक-रश्मि सम्बंधी+जल] दिन भर धूप में और रात भर चांदनी और ओस मे रखकर छान लिया जाने वाला जल (वैद्यक), राश्मिक वारि।

आँस✲—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० काश] संवेदना, दर्द। [सं० पाश] सुतली, डोरी, रेशा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अश्रु] आंसु। "आँसु रोकि सांस रोकि ऊरध उसांस रोकि"—रला०।

आँसी✲§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अंश] भाजी। बैना, मित्रादि के यहां भेजी जाने वाली मिठाई आदि।

आँसू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अश्रु] शोक, प्रेम, सुख या करुणादि के कारण नत्रों से निकलने वाला जल, आँसु, अँसुवा। मुहा०—**गिराना (ढालना)** —रोना, क्रंदन करना। "नारि चरित कारि ढारइ आँसु"—तुल०।—**पी कर (घूँट पी) रह जाना** —भीतर ही भीतर रोकर या कुढ़ कर रह जाना। —(सुओं) **से मुँह धोना**—खूब रोना।—**पोंछना**

—दया करना, समवेदना या सहानुभूति दिखाना, सान्त्वना देना। दुख दूर करना। दिलासा देना, ढाढस बँधाना।—**पुछना**—आश्वासन मिलना, ढाढस बँधना।—**रक्त (लोहू) के रोना (बहाना)**—रक्त शोषक दुःख से रोना।

आँहड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भांड़] बरतन।

आँहाँ—(अव्य०, दे०) [हि० ना+हाँ] अस्वीकार या निषेध-सूचक शब्द, नहीं।

आइंदा—(वि०, फ़ा०) फिर कभी, भविष्य, में आने वाला, आगंतुक। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) भविष्य काल। (क्रि०, वि०) आगे भविष्य में, फिर कभी।

आइ*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सं० आयु] आयु, जीवन। (अव्य, दे०) [हि० आह] आह, हा, हाय, अयि। [**आय** दे०]। (पू० का० क्रि० दे० ब्र) आकर, (हि० आना) आके, आय। "आइ पाँय पुनि देखिहौं"। "आइ गये हनुमान"—तुल०।

आइना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) आईना, शीशा, दर्पण। (यौ०, दे०) न आकर।

आई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० आना] मृत्यु, मौत, मीच (दे०)। (दे०) आयु। (क्रि०, अ०, स्त्री०) [हि० आना] आ गई।

आईन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नियम, क़ायदा, जाबता, क़ानून। (यौ०, दे०) न आई।

आईना—(संज्ञा,पु०, फ़ा०) आरसी, दर्पण, शीशा। किवाड़ का दिलहा। [**ऐना** दे०]। **मुहा०—होना**—स्पष्ट, या स्वच्छ होना।—(**में**) **में मुँह देखना**—अपनी योग्यता या क्षमता को जाँचना या परखना।—**बंदी**—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) झाड़-फ़ानूस आदि की सजावट, फ़र्श मे पत्थर या ईंट की जुडाई।—**साज़**-(पु०) आईना बनाने वाला। —**साज़ी**-(स्त्री०) काँच के टुकड़ो पर कलई करन का काम।

आईनी—(वि०, फ़ा०) क़ानूनी, राज-नियम के अनुकूल, नियमानुसार।

आउॐ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आयु] जीवन, उम्र, अवस्था। (वि०, क्रि०, दे०) [हि० आना] आ, आव। "आउ विभीषन तू कुलदूषन"—के०। "कहाँ लहैगो स्वाद तू, एक स्वांस की आउ"—दीन०।

आउजॐ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाद्य] ताशा, बाजा। [**आउझ** दे०]।

आउब—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० आना] आवेंगे। [**आइबै, अइहैं, ऐहैं** ब्र०]।

आउबाउ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वायु] आँय-बाँय, अंड-बंड।

आउस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आशु, बंग० आउश] धान का एक भेद, भदई धान, ओसहन।

आए—(क्रि०, अ०) [हि० आना] आये, आगये।

आओ—(वि०, क्रि०) [आज्ञा०—हि० आना] आओ, आवौ (ब्र०)।

आकंठ—(वि०, सं०) कंठ-पर्यंत।

आकंध—(वि०, सं०) स्कंध तक।

आकंप—(पु०) कंपन, काँपना। (यौ०) कंप-विहीन।

आकंपन—(संज्ञा, पु०, सं०) काँपना, हिलना।

आकंपित—(वि०) काँपता हुआ, हिलता हुआ।

आक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्क] मदार, अकौआ, अकवन। "धीर आक-छीरहूँ न धारै धसकत है" —रत्ना०।

आकच—(वि०, सं०) केश तक।

आकबा§—(संज्ञा, पु०, दे०) आक।

आक़बत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मृत्यु के पश्चात की दशा, परलोक।

आकबाक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाक्य] अक-बक, अंडबंड।

आकर—(संज्ञा, पु०, सं०) खान। उत्पत्ति। स्थान। ख़ज़ाना, भंडार। भेद। मूल। समूह। दक्ष। किस्म, जाति। तलवार चलाने का एक गुण या ढंग। श्रेष्ठ। "आकर चारि लाख चौरासी"—तुल०। "आकरं पद्मरागाणाम् जन्म कांचमणेः कुतः"। (पू० का० क्रि०) [हि० आना] आके, आइ। (वि०, सं०) कर या हाथ तक।

आकरकरहा—(संज्ञा, पु०, अ०) अकरकरहा, अकर-करा।

आकरखनाॐ—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आकर्षण] खींचना।

आकरज—(संज्ञा, पु०, सं०) खनिज। (यौ०) मदार-भस्म। मदार के फूल का पराग।

आकरिक—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) खान खोदने वाला।

आकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आकर] खान खोदने का काम।

आकर्ण—(वि०, सं०) कान तक फैला हुआ, कान तक।—**चक्षु**-(पु०) कान तक फैले नेत्र।

आकर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) खिंचाव, कशिश। बल-पूर्वक हटाना। पाँसे का खेल। बिसात। चौपड़।

पाशा (पाँसा)। अक्षक्रीड़ा। इन्द्रिय। धनुष चलाने का अभ्यास। कसौटी। चुम्बक।

आकर्षक—(वि०, सं०) खींचने वाला, आकर्षित करने वाला।

आकर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी वस्तु का दूसरी वस्तु के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा से खिंच जाना, खिंचाव। एक तांत्रिक प्रयोग या विधान जिसके द्वारा दूर देशस्थ मनुष्य या पदार्थ पास आ जाता है (तन्त्र०)। "मंत्राकर्षण जप दश माला"—तुल०।—**शक्ति**-(स्त्री०) भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जिससे ये अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींचते हैं।

आकर्षणी—(वि०, सं०) आकर्षण करने वाली, आँकुसी।

आकर्षणीय—(वि०, सं०) खींचे जाने के योग्य।

आकर्षना—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० आकर्षण] खींचना।

आकर्षित—(वि०, सं०) खिंचा हुआ।

आकलन—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रहण, लेना। संग्रह, सञ्चय, इकट्ठा या एकत्रित करना। गिनती करना। अनुष्ठान। सम्पादन। अनुसंधान। बन्धन। आकांक्षा। परिसंख्या। बटोरना, जुहाना। (दे०) जोड़ना। [वि० **व्यवकलन**] "आकलनं तु बन्धे स्यादाकांक्षा परिसंख्ययोः"—विश्वः।

आकला—(वि०, दे०) [सं० आकुल] उतावला, आकुल। उच्छृंखल।

आकलित—(वि०, सं०) एकत्रीकृत, संग्रहीत। सम्पादित। (संज्ञा, पु०, सं०) अनुष्ठित, कृत। सम्बन्ध। परिसंख्यात। (वि०) पूर्णतया विकसित।

आकली§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आकुल] व्याकुलता, बेचैनी, बेकली।

आकस्मिक—(वि०, सं०) जो अकारण या बिना किसी कारण हो, जो अचानक हो, सहसा या एकाएक होने वाला।—**अधिकार**-(पु०) संकटावस्था के अनुरूप अधिकार, प्रासंगिक अधिकार। [इमरजेंसी राइट]—**आदेश**-(पु०) संकट काल में दी जाने वाली आज्ञा। [इमरजेंसी आर्डर]—**छुट्टी**-(स्त्री०) वह छुट्टी जिसके लिए पहले से मंजूरी नहीं लेनी पड़ती [कैजुअल लीव]।—**मृत्यु**-(स्त्री०) किसी दुर्घटना के कारण होने वाली मृत्यु। [एक्सीडेंटल डथ]—**समितक**-(पु०) प्रासंगिक विचार-समिति। [इमरजेंसी कमीशन]।

आकांक्षक—(वि०, सं०) आकांक्षी, इच्छुक।

आकांक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इच्छा, अभिलाषा, वांछा, चाह। अपेक्षा। अनुसंधान। वाक्यार्थ के ठीकज्ञान के लिए एक शब्द का दूसरे पर आश्रित होना (न्याय०)।

आकांक्षित—(वि०, सं०) इच्छित, अभिलषित, वांछित, अपेक्षित, ईप्सित।

आकांक्षी—(वि०) [सं० आकांक्षिन्] इच्छुक, अभिलाषी। [स्त्री० **आकांक्षिणी**—अभिलाषिणी। वि० **आकांक्षणीय**—वांछनीय]।

आक़ा—(संज्ञा,पु०, अ०) मालिक, स्वामी। ईश्वर।

आकार—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वरूप, आकृति, सूरत, मूर्ति। डील-डौल, क़द, बनावट। संघटन। निशान, चिन्ह। चेष्टा। "आ" वर्ण। बुलावा। इशारा, सङ्केत। [यौ० **आकार-प्रकार**]।—**गुप्ति**-(स्त्री०) हर्षादि कृत अंग-विकारों को छिपाना, मनोविकारों का संगोपन, आकारगोपन।

आकारक—(वि०, सं०) चित्रकार। बहुरूपिया।

आकारतः—(अव्य०, सं०) स्वरूपतः, सदृश, आकृति से।

आकारांत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शब्द या वर्ण जिसके अंत में 'आ' हो।

आकारादि—(वि०, सं०) जिस शब्द वा वर्ण के आदि में 'आ' हो, आ इत्यादि।

आकारी*—(वि०, सं०) आह्वान करने वाला, बुलाने वाला। आकारवाली। "मृतक एक तहँ लघु-आकार"—हरिऔध।

आकालिक—(वि०, सं०) अकाल-सम्भव। असामयिक।

आकाश—(संज्ञा, पु०) [सं० आङ् + चकाशृदीप्तौ] अंतरिक्ष, आसमान, जहाँ वायु के अतिरिक्त और कुछ न हो, शून्य, गगन, व्योम, दिव, नभ, अम्बर, पंचभूतों (पंचतत्वों) में से एक। अभ्रक, अबरक। [**आकास, अकास** दे०]।—**उपवीत** (**आकाशोपवीत**)—(पु०) आकाश-जनेऊ, स्वर्ग-गंगा, मंदाकिनी, आकाश-गामिनी गंगा (पुराण) गगन-गंगा।—**कुसुम**-(पु०) आकाश का फूल, ख-पुष्प, अनहोनी या असम्भव बात, आकाश-सुमन, व्योम-प्रसून।—**गंगा**-(स्त्री०) उत्तर से दक्षिण की ओर एक नदी के समान दीखने वाला छोटे छोटे बहुत से तारों का एक विस्तृत समूह।—**गामी**-(वि०) आकाश में चलने वाला, खेचर। खग। ग्रह।—**चारी**-(वि०) आकाश में चलने या उड़ने वाला, व्योमगामी। (पु०) सूर्यादि ग्रह। नक्षत्र। वायु। पक्षी। देवता। खेचर। [स्त्री० **आकाशचारिणी**]।—**दीप**-(पु०) कार्तिक में बाँस के सहारे कंडील में

रख कर ऊपर लटकाया जानेवाला दीपक ।**—दीप्ति**-(स्त्री०) बिजली, नीलिमा ।**—धुरी**-आकाश-ध्रुव, खगोल का ध्रुव ।**—नीम**-(स्त्री०) नीम का बाँदा, बाँडा ।**—पुष्प**-(पु०) असम्भव बात, आकाश-कुसुम, नभप्रसून ।**—बेल**-(स्त्री०) अमर बेल, एक प्रकार की लता, व्योम बल्ली ।**—भाषित**-(पु०) नाटक के अभिनय मे वक्ता का ऊपर की ओर देख कर आप ही आप प्रश्न करना, और उत्तर देना, नभ-भाषित (नाट्य०) ।**—मंडल**-(पु०) खगोल, व्योम-मंडल, ख-मंडल ।**—मुखी**-(पु०) आकाश की ओर मुँह कर के तप करने वाले साधु ।**—रंध्र**-(पु०) आकाश के छिद्र । "आकाश रंध्र है पूरित से" प्रसाद ।**—लोचन**-(पु०) वह स्थान जहाँ ग्रहों एवं नक्षत्रों की गति आदि देखी जाती है, मान-मन्दिर, वेधशाला, आबजरवेटरी ।**—वाणी**—(स्त्री०) आकाश से देवताओं के द्वारा कहे गये शब्द, देव-वाणी, गगन-गिरा, नभ वाणी, व्योम वाणी, रेडिओ ।**—०कार्यक्रम**-(पु०) रेडिओ के कार्य-क्रम । [रेडिओ प्रोग्रैम] ।**—विद्या**-(स्त्री०) आकाश, ग्रहादि तथा वायु सम्बन्धी विद्या, खगोल विज्ञान, व्योम-विद्या ।**—वृत्ति**-(स्त्री०) अनिश्चित जीविका, ऐसी आमदनी जो नियमित या बधी न हो ।—**मु०—छूना या चूमना**-अत्यन्त ऊंचा होना । **—में चढ़ना (उड़ना)**—अति करना, कल्पना-क्षेत्र मे घूमना, बेपर की उड़ाना, असंभव कार्य करना, "तुलसी चढ़न अकास" ।**—पाताल एक करना (बांधना)**—भारी उद्योग या अन्दोलन करना, हल-चल मचाना, उपद्रव करना ।**—पाताल का अन्तर**—गड़ा अन्तर या फर्क ।**—से बातें करना**—बहुत ऊँचा होना । (सिर पर)**—उठाना**—बड़ा उपद्रव करना ।

आकाशी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धूप आदि से बचन के लिए तानी जान वाली चाँदनी ।**—वृत्ति**-(पु०) अनिश्चित जीवका ।

आकाशीय—(वि०, सं०) आकाश-सम्बन्धी. आकाश का, आकाश में रहने या होन वाला, दैवागत, आकस्मिक ।

आकासी दिया—(दे०) कार्तिक का दीपदान । (यौ०) चंद्रमा ।

आकिंचन—(संज्ञा, पु०, सं०) दरिद्रता, कंगालपन ।

आकिल—(वि०, अ०) बुद्धिमान, अक्लमंद ।

आकिलखानी—(संज्ञा, पु०, अ०, फ़ा०) कालिमा लिये हुए लाल रंग, कत्थई रंग का एक भेद ।

आकीर्ण—(वि०,सं०) व्याप्त, पूर्ण । सङ्कीर्ण । समाकुल । सङ्कुल । व्याप्त । विस्तारित । प्लुत । फैलाया हुआ, [संज्ञा, पु०—**आकीर्णन**] ।

आकुंचन—(संज्ञा, पु०, सं०) सिकुड़ना, सिमिटना । पाँच प्रकार के कर्मों मे से एक (न्याय०) । संकोचन, वक्रता ।

आकुंचित—(दे०,सं०) सिकुड़ा हुआ, सिमटा हुआ । टेढ़ा, वक्र, तिरछा, कुटिल, बाँका, तिरश्चीन ।

आकुंठन—(संज्ञा, पु०, सं०) गुठलाना या कुंद होना । लज्जा, शर्म । [वि० **आकुंठनीय**] ।

आकुंठित—(वि०, सं०) गुठलाया हुआ, कुंद । लज्जित, अवाक् ।

आकुंतल—(वि०, सं०) केशों तक ।

आकुल—(वि०, सं०) व्यग्र, घबराया हुआ, उद्विग्न, विह्वल, कातर । व्याप्त । सङ्कुल । क्षुब्ध । आर्त, व्यस्त । आकीर्ण, पूर्ण ।

आकुलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्याकुलता, घबराहट, व्याप्ति, कातरता । [संज्ञा, पु० **आकुलन**] ।

आकुलित—(वि०, सं०) घबराया हुआ । व्याप्त । कातर, विह्वल, विकल । [वि० **आकुलनीय**] ।

आकूत—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिप्राय, मतलब, आशय, तात्पर्य ।

आकूति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मनु की तीन कन्याओं मे से एक, जो रुचि नाम के प्रजापति को ब्याही थी । आशय । शुभाचरण । उत्साह । सदाचार ।

आकृति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० आङ्+कृ+क्तिन्] बनावट, गढ़न, ढाँचा, मूर्ति, आकार, रूप । मुख का भाव, चेष्टा । २२ अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०) ।**—मूलक**-(वि०) गढन सम्बन्धी [माफोलॉजिकल] ।

आकृष्ट—(वि०, सं०) खींचा हुआ, आकर्षित ।

आक्रंद—(संज्ञा, पु०, सं०) रोदन, रोना । आह्वान । भयंकर युद्ध ।

आक्रंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) रोना, चिल्लाना । आह्वान ।

आक्रम*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पराक्रम] प्रताप, शक्ति, बल । चढ़ाई, अतिक्रम । क्रान्ति । क्रमयुक्त ।

आक्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) बलात सीमा या मर्यादा का उल्लंघन करना, हमला, चढ़ाई, आघात पहुँचाने के लिए किसी पर झपटना । घेरना, छेंकना । मुहासिरा । आक्षेप । निंदा । मापना । फैलाना ।

आक्रमित—(वि०, सं०) जिस पर आक्रमण किया गया हो । [वि० **आक्रमणीय**] ।

आक्रमिता (नायिका)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मनसा-वाचा-कर्मणा अपने प्रिय (मित्र) को वश मे करने वाली प्रौढ़ा नायिका (काव्य०) ।

आक्रांत—(वि०, सं०) जिस पर आक्रमण हो। घिरा हुआ, आवृत्त। वशीभूत, पराजित, विवश। व्याप्त। आकीर्ण। ग्रस्त, त्रस्त।

आक्रीड़—(संज्ञा, पु०, सं०) राजोपवन, राजमहल के समीप का बाग, राज-वाटिका।

आक्रीड़न—(संज्ञा, पु०, सं०) मृगया, आखेट, शिकार।

आक्रोश—(संज्ञा, पु०, सं०) कोसना। शाप देना। गाली देना। आक्षेप करना, क्रोध-पूर्वक कटूक्ति कहना।

आक्रोशन—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिशाप, कटूक्ति। भर्त्सना। अभिसम्पात। [वि० **आक्रोशनीय**]।

आक्रोशित—(वि०, सं०) शापित, कृताक्षेप, भर्त्सित, अभिशप्त।

आक्षिप्त—(वि०, सं०) फेंका हुआ। गिराया हुआ। दूषित, निंदित। कृताक्षेप।

आक्षेप—(संज्ञा, पु०, सं०) फेंकना, गिराना। दोषारोपण, अपवाद या इलजाम लगाना, कटूक्ति, ताना। अंग में कँपकँपी होने वाला एक प्रकार का वात रोग, (वैद्यजो०)। ध्वनि, व्यंग्य।

आक्षेपक—(वि०, सं०) फेंकने वाला। खींचने वाला। आक्षेप करने वाला, निंदक।

आक्षेपणीय—(वि०, सं०) आक्षेप करने योग्य।

आखंड—(वि०, सं०) समुदाय, खंड-रहित, सम्पूर्ण।

आखंडल—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र, सहस्राक्ष, शचीश, देवराज, अमरेश, पाकशासन, सुरेश, वज्री, बिडौजा।—**सूनु**—(पु०) अर्जुन, आखंडलात्मज, आखंडलसुत—सुरपतिसुत। जयंत।

आखत§*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अक्षत] बिना टूटे चावल, अच्छत (दे०)। चंदन या केशर में रंगे चावल, जो पूजा में या मूर्ति या दूल्हा-दुलहिन के ऊपर चढ़ाये जाते हैं। नेग विशेष (अन्न रूप में) जो काम करने वाले नाई आदि को दिया जाता है। "याही हेतु आखत कौ राखत विधान नाहिं"—**रत्ना०**।

आखता—(वि०, फ़ा०) जिसके अंडकोश चीड़ कर निकाल लिये गये हों (घोड़ा)।

आखन*—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० आक्षण] प्रतिक्षण, प्रतिपल, हर घड़ी।

आखना*—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० आख्यान] कहना। उल्लंघन करना। (स०, क्रि०) [सं० आकांक्षा] चाहना, इच्छा करना। (स०, क्रि०, दे०) [हिं० आँख] देखना, ताकना। चलनी से छानना। "सब दुख आखौं रोय"—कबीर।

आखर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अक्षर] अक्षर, वर्ण, हरफ। [**अच्छर, अखरा दे०**] "आखर मधुर मनोहर दोऊ"—तुल०। "ढाई आखर प्रेम के पढ़ै सो पंडित होय"।

आखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आक्षरण] भीने या बारीक कपड़े से मढ़ी हुई मैदा चालने की चलनी। बोरा, गेठिया। (वि०) [सं० अक्षय] कुल, पूरा, समूचा, सारा, सम्पूर्ण, समस्त।

आखात—(संज्ञा, पु०, दे०) देवखात, देव-निर्मित जलाशय या झील। उत्खनन, खेती, कुदाल।

आखातीज—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० अक्षय तृतीया] बैसाख सुदी तीज। (स्त्रियाँ इस दिन बट का पूजन कर दान देती है और व्रत रहती हैं)।

आखान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आख्यान] कथा, कहानी। (वि०, दे०) पूर्ण नहीं।

आख़िर—(वि०, फ़ा०) अंतिम, पिछला, पीछे का। (संज्ञा, पु०) अंत, परिणाम, फल, समाप्ति, आखीर। (क्रि०, वि०) अंत में, निदान, अंततोगत्वा।—**कार**—(क्रि०, वि०) अंत में, निदान, खैर। अच्छा, अवश्य, आख़िरस।

आख़िरी—(वि०, फ़ा०) अंतिम, पिछला। [**आख़ीरी** फ़ा०]।

आखु—(संज्ञा, पु०, सं०) मूसा। चूहा। देवताल, देवताड़। सुअर। चोर।

आखुपाषाण—(संज्ञा, पु०, सं०) चुम्बक पत्थर। संखिया।

आखेट—(संज्ञा, पु०, सं०) अहेर, शिकार, मृगया।

आखेटक—(संज्ञा, पु०, सं०) शिकार, अहेर। अहेरी, शिकारी, व्याध, बहेलिया। (वि०) अन्वेषक। भयानक।

आखेटी—(संज्ञा, पु०, सं०) शिकारी, अहेरी।

आखोट—(संज्ञा, पु०, दे०) अखरोट नामक एक मेवा, फल।

आखोर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जानवरों के खाने से बचा हुआ घास, चारा। कूड़ा-करकट, बेकाम वस्तु। (वि०, फ़ा०) निकम्मा, सड़ा-गला, बेकाम, रद्दी, मैला-कुचैला।

आख्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाम, कीर्ति, यश। व्याख्या। अभिधान।

आख्यात—(वि०, सं०) प्रसिद्ध, विख्यात। कहा हुआ, कथित, उक्त। व्याकरण का धातु प्रकरण। राज-वंश का वृत्तान्त।

आख्याति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नामवरी, ख्याति, कीर्ति, शुहरत, यश। कथन, उक्ति।

आख्यान—(संज्ञा, पु०, सं०) वृत्तान्त, कथा, गाथा, वर्णन, बयान, कहानी, किस्सा। उपन्यास के ६ भेदों में से एक। स्वयमेव लेखक के ही द्वारा कथित कहानी। उपन्यास। इतिहास।

आख्यानक—(संज्ञा, पु०, सं०) वृत्तान्त, वर्णन, बयान, कहानी, कथानक।

आख्यानिकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दंडक वृत्त का एक भेद।

आख्यायिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कहानी, कथा, गाथा, किस्सा, उपदेशप्रद कल्पित कहानी। ऐसा आख्यान जिसमे पात्र भी स्वयं अपना-अपना चरित्र अपने मुँह से कुछ कुछ कहे। उपकथा। इतिहास। उपलब्धार्थ कथा।

आगंतुक—(वि०, सं०) आने वाला, आगमनशील। जो इधर उधर से घूमता-फिरता आजावे। अस्थायी। अचानक। आया हुआ। अतिथि।—**ज्वर**-(पु०) आकस्मिक ज्वर, धातु प्रकोप के बिना ज्वर।

आग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अग्नि] उष्णता की चरम सीमा तक पहुचों हुई वस्तुओं में दिखाई देने वाला। तेज या प्रकाश का समूह। अग्नि, आगी (दे०)। वसुन्दर, जलन, अनल, ताप, गरमी। वैश्वानर। कामाग्नि, काम का वेग। क्रोध। पाचन-शक्ति। वात्सल्य, प्रेम। डाह, ईर्ष्या। (संज्ञा, पु०) ऊख का अगौरा। "सूरदास प्रभु ऊख छाँड़ि के चतुर विचारत आगि"। (वि०) जलता हुआ। बहुत गर्म। जो उष्ण या तप्त हो। कुपित। **मुहा०—उखाड़ना (गड़ी हुई)**—भूली हुई, जली भुनी बात की याद दिलाना। निपटे हुए झगड़े को फिर उठाना।—**उगलना**—जलाने या दुखाने वाली बुरी बातें कहना।—**उठाना**—झगड़ा करना, कुपित करना।—**उभाड़ना**—पुरानी भूली हुई बुरी और क्रोध या झगड़ा उत्पन्न करने वाली बात छेड़ना।—**खाना अंगार निकालना**—बुरी संगति और बुरा कर्म।—**दबाना**—क्रोध, या झगड़ा दबा देना।—**देना**—चिता मे आग छुलाना, फूकना।—**निकालना (आँखों से)**—अत्यन्त क्रोध मे आँखो का अधिक चमकना, अति कुपित होना।—**पर पानी डालना**—क्रोध के समय शीतल वचन कहना, झगड़ा दबाना, शान्त करना।—**पानी-सम्बन्ध**—स्वाभाविक शत्रुता।—**पानी साथ रखना**—सहज बैर-भाव वालों को साथ रखना, क्षमा-क्रोध दोनों साथ रखना, असम्भव कार्य करना। अनमिल वस्तुओं को मिलाना। परस्पर विरोधी बातें करना।—**पेट की**—भूख, बुभुक्षा, क्षुधा।—**फाँकना**—झूठी डींग हाँकना, मिथ्या आत्मश्लाघा करना। —**फैलना**—बुराई या वावेला फैलना।—**बबूला होना (बनना)**—कोपावेश में होना, अत्यन्त क्रोधित होना।—**बरसना**—बड़ी कड़ी गर्मी पड़ना।—**बरसाना**—शत्रुओं पर गोलियाँ बरसाना।—**लगना**—वावेला मच जाना। क्रोध आ जाना। बुरा लगना।—**लगाना**—झगड़ा कराना। क्रोध दिलाना। बुराई पैदा करना। गरमी करना, जलन पैदा करना। जोश या उद्वेग बढाना। भड़काना। चुगली करना। बिगाड़ना, नष्ट करना। जलाना। कुढ़न पैदा करना। मँहगी या गिरानी लाना।—**लगाना (पानी में)**—अनहोनी बातें होना वा कहना। असम्भव कार्य करना। जहाँ लड़ाई की कोई भी बात न हो वहाँ भी लड़ाई लगा देना।—**लगाकर तमाशा देखना**—लड़ाई लगवा कर प्रसन्न होना।—**लगा के दूर होना**—झगड़ा-बखेड़ा कराके अलग हो जाना (लो०—आग लगा के जमालो दूर खड़ी)। **लगे**—बुरा हो। नाश हो। [**(ो) लगै,—बरै** दे०]।—**लगे कुआँ खोदना**—अनिष्ट आने पर देर मे होने या फल देने वाला प्रतीकार करना। "आग लगे खोदे कुवाँ कैसे आग बुझाय"—वृंद।—**लगे और धुआँ न हो**—कारण रहे और कार्य न हो। "गैर मुमकिन कि लगे आग धुआँ फिर भी न हो"।—**होना**—बहुत गर्म होना, कुपित होना, सरोष होना। प्रेम की जलन होना, प्रबल इच्छा-ताप होना। "मुमकिन नहीं कि आग इधर हो उधर न हो"।

आगणक—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुमान करने वाला। [इस्टीमेटर]।

आगणन—(पु०, सं०) अनुमान, प्राक्कलन। [इस्टीमेट]।

आगणित-राशि—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुमान की गई राशि, प्राक्कलित राशि [इस्टीमेटेड एकाउंट]।

आगत—(वि०, सं०) आया हुआ। प्राप्त। उपस्थित। [**सु** उपसर्ग के साथ **स्वागत**—शुभागमन, आदर-सत्कार]। [**स्त्री० आगता**]।—**पतिका**-(स्त्री०) वह नायिका, जिसका पति परदेश से लौटा हो।—**स्वागत**-(पु०) आये हुए व्यक्ति का सत्कार, आदर-सत्कार, आव-भगत।

आगम—(संज्ञा, पु०, सं०) अवाई, आना, आगमन, आमद। भविष्य या आने वाला समय, होनहार।—**जानी, ज्ञानी**-(वि०, दे०) [आगम ज्ञानी सं०] होनहार या भावी का जानने वाला।—**ज्ञ**-

(वि०) भावी का जानने वाला।—ज्ञाता—(वि०) दैवज्ञ, ज्योतिषी।—ज्ञान—(संज्ञा,पु०) भविष्य ज्ञान। —वक्ता—(वि०) भविष्यवक्ता, भावी कहने वाला। —वाणी—(स्त्री०) भविष्य वाणी।—विद्या—(स्त्री०) वेद या ज्योतिष विद्या।—वेत्ता—(वि०) भविष्य का ज्ञाता।—शुल्क—(पु०) आयात-निर्यात कर, चुंगी [कस्टम्स]।—सोची—(वि०) [सं० आगम + सोचना हि०] दूरदर्शी, अग्रसोची, दूरंदेश (फा०)। मुहा०—करना—ठिकाना करना। उपक्रम बाँधना। लाभ का डौल करना। उपाय रचना।—कहना—(संज्ञा, पु०) समागम, संगम। आमदनी, आय। व्याकरणानुसार प्रकृति और प्रत्यय के बीच मे होने वाले कार्य या शब्द साधन मे बाहर से आया हुआ वर्ण, उत्पत्ति, शब्द प्रमाण, वेद, शास्त्र, तंत्र शास्त्र, नीति या नीति शास्त्र, भावी, शिव दुर्गा और विष्णु के द्वारा प्रस्तुत किये गये शास्त्र। (वि०, सं०) आने वाला। अनागत। आगामी।—चेतना—भविष्य की कल्पना करना, आने वाली बातों का अनुमान लगाना।—जनना—होनहार की सूचना देना। —जानाना—भविष्य की बातों को जानना। —देखना (दीखना)—होनहार का प्रथम ही सोच लेना या जान लेना, दिखाई पड़ना।—बताना—भविष्य या भावी बात बताना या कहना। —बाँधना—आने वाली बातें का ब्योंत बनाना, उसका विधान करना, निश्चय करना।—सोचना —भविष्य का विचार करना।

आगमन—(संज्ञा, पु०,सं०) अवाई, आना, आमद। प्राप्ति। आय। लाभ।

आगमी—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्योतिषी, भविष्य का विचारने वाला।

आगमोक्त—(वि०, सं०) तंत्र शास्त्र विहित कर्म, वैदिक रीति के अनुसार कार्य। शास्त्रोक्त तांत्रिक उपासना।

आगर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आकर] खान, आकर, समूह, ढेर। कोष, निधि, खजाना। नमक जमाने का गड्ढा। "पानिप के आगर सराहैं सब नागर"—दास०।[सं० आगार] घर, गृह। छाजन, छप्पर। स्थान। ब्योंड़ा। (वि०,दे०, सं० अग्र) श्रेष्ठ, कुशल, पटु। उत्तम। बढ़कर, अधिक। दक्ष, चतुर। "हमनें कोउ न आगरि रूपा"—पद०। "संवत सत्रह सै लिखे, आठ आगरे बीस"—छत्र०। [स्त्री० आगरी—कुशला, दक्षा]।

आगरि—(वि०, दे०) अग्रगण्या। आगे जाने वाली। "आगरि सुबुधि सेयाने"—विद्या०।

आगरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० आगर] नमक बनाने वाला व्यक्ति, लोनिया। (वि०, स्त्री०) कुशला, चतुरा।

आगल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्गल] आगर, ब्योंड़ा, बेंवड़ा। (वि०) आगे का, अगला, आगिल।

आगलांत—(वि०, सं०) गले तक, कंठपर्यन्त।

आगला*—(क्रि०, वि०, दे०) अगला, सामने, आगे।

आगलि—(क्रि०, वि०, दे०) [हि० अगला] सामने, आगे।

आगवन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आगमन] आना। "मुनि आगवन सुना जब राजा"—तुल०।

आगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अग्र] किसी चीज का आगे का हिस्सा, अगाड़ी। देह का अगला भाग, छाती, वक्षस्थल। मुख, मुँह। ललाट, माथा। लिंगेंद्रिय। अँगरखे या कुरते आदि की काट में आगे का टुकड़ा। सेना का अगला भाग, हरावल। घर के सामने का मैदान। पेश-खेमा। आगड़ा। भविष्य। आने वाला समय, भावी। अंचल। परिणाम, फल। (संज्ञा, पु०, दे०) [तु० आग़ा] मालिक, सरदार। काबुली, अफगानी।

आग़ाज़—(संज्ञा, पु०, अ०) शुरू, आरंभ।

आगाध—(वि०, सं०) अत्यन्त गहरा, अथाह।

आगान*—(संज्ञा, पु०) [सं० आ + गान] बात, प्रसंग, हाल, आख्यान, वृत्तांत, वर्णन।

आगा-पीछा—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० आगा पीछा] हिचक, सोच-विचार, दुविधा। परिणाम, नतीजा, फल। शरीर या वस्तु के आगे पीछे का भाग। मुहा०—करना—दुविधा में पड़ना, हिचकिचाना, संदेह में रहना।—विचारना (सोचना, देखना)—कार्य के कारण और फल को समझने का प्रयत्न करना, अनागत परिणाम का अनुमान करना। भूत-भविष्य का सोच-विचार करना।—पीछा होना—दुविधा, शंका, संदेह होना, कारण और फल के सम्बन्ध में स्पष्ट धारणा न होना।

आगामि, आगामी—(वि०) [सं० आगामिन्] भावी, आने वाला, होनहार, भविष्यगत। [स्त्री०—आगामिनी]।

आगार—(संज्ञा, पु०, सं०) घर, मकान। धाम, स्थान, स्थल, जगह। खजाना।

आगाह—(वि०, फ़ा०) जानकार, वाक़िफ। (संज्ञा, पु०) [हि० आगा + आह प्रत्य०] आगम, होनहार, भावी।

आगाही—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जानकारी, सूचना।

आगि§ॐ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० आग] अग्नि (सं०)। [**आगी** दे०]।

आगिल*—(वि०, दे०) [सं० अग्रिम] अगला, अगलो। [विलोम—**पाछिल**]। "आगिल चरित सुनहु जस भयऊ"। "आगिल बात समुझि डर मोहीं"—तुल०।

आगिवर्त—(संज्ञा, पु० सं०) मेघ का एक भेद। लुहार।

आगीॐ—(**संज्ञा**, स्त्री०, दे०) [सं० अग्नि] आग।

आगुल्फ—(वि०, सं०) गुल्फ-पर्यन्त, एड़ी के ऊपर की गाँठ तक, टखने पर्यन्त।

आगू§—(क्रि०, वि०, दे०) [हिं० आगे] आगे, अनुसार, सामने। "वासर चौथे जाय, सतानंद आगू दिये"—[रामा०]। "नैं रिसि भरो न देखसि आगू"—[पद०]। [**अगाऊ** प्रान्ती० संज्ञा, पु०, परिणाम]।

आगे—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० अग्र] दूर पर, सामने, सम्मुख। पहिले, प्रथम। तब, फिर, और बढ़कर। पीछे का उलटा। समक्ष, जीवनकाल में। भावी जीवन में। जीते जी। इसके पीछे या बाद। आगे को। अनंतर। पूर्व। अतिरिक्त। अधिक। गोद में। लालन-पालन में। जैसे उसके आगे एक बच्चा है। **मुहा०—आना**—घटित होना, घटना। सामने आना, संमुख पड़ना, मिलना, सामना या विरोध करना, रोकना, भिड़ना।—**आना (लेने के लिए)**—स्वागत करना, अगवानी करना। "आगे आयउ लेन"—[रामा०]।—**करना**—किसी को अपनी आड़ या अगुआ, या ओट बनाना। बढ़ाना। उन्नत करना।—**का पैर रखकर पीछे का उठाना**—भावी स्थिति दृढ़ करके वर्तमान स्थिति को छोड़ना या बदलना।—**का पैर पीछे पड़ना**—अवनति होना। पीछे हटना, भयभीत होना, व्याकुल होना, विपरीत गति या दशा होना।—**की**—भविष्य की, भूत की (पु० आगे का)।—**को**—आगे, भविष्य में, आगे के लिए।—**को देख कर पीछे का पैर उठाना**—भविष्य का विचार या निश्चय करके वर्तमान दशा को छोड़ आगे बढ़ना, सोच-विचार कर अपनी दशा में परिवर्तन करना।—**खड़ा करना (होना)**—अपना प्रतिनिधि या मुखिया बनाना (होना)।—**गिना जाना**—सर्वश्रेष्ठ होना, प्रमुख होना, अग्रगण्य होना।—**चल कर (आगे जाकर)**—भविष्य में, इसके बाद, पश्चात्। भावी जीवन में।—**चलना**—पथ दिखाना, नेता बनना। सबसे प्रथम करना। मुखिया होना।—**देखकर चलना**—सावधानी या सतर्कता से, (सचेत होकर) चलना, भविष्य या परिणाम का विचार करके कार्य करना।—**देखना (दिखाना)**—भविष्य का अनुमान या विचार करना (कराना)।—**न होना**—असहाय या अकेला होना, किसी के वंश में किसी प्राणी का होना।—**निकलना**—बढ़ जाना, सर्वश्रेष्ठ हो जाना, सर्वाधिक उन्नति कर जाना।—**पड़ना**—आगे आना, रोकना।—**पीछे**—एक के पीछे एक, एक के बाद दूसरा। पहिले या बाद को। क्रम से, आस-पास।—**पीछे देख कर चलना**—सावधानी से चलना या कार्य करना, पूर्वापर दशा का विचार कर आचरण करना, गतागत का विचार कर कार्य करना।—**०होना**—अपने से बड़ों और छोटों का घर में होना। सहायकों या देख-रेख करने वालों का होना।—**रखना**—भेंट करना, उपहार-रूप में देना।—**से**—सामने से। आइंदा से। भविष्य में। पहिले या पूर्व से। बहुत दिन पीछे से।—**से लेना**—अभ्यर्थना या स्वागत करना।—**होना**—आगे बढ़ना, अग्रसर होना, उन्नति करना। श्रेष्ठ या उत्तम होना, बढ़ जाना। सामने आना, मुक़ाबिला करना, रोकना, रक्षा करना, बचाना। भिड़ना, विरोध करना। मुखिया होना।

आगैं*—(क्रि०, वि०, दे०, ब्र०) आगे।

आगौन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आगमन] आगमन, आना।

आग्नेय—(वि०, सं०) अग्नि-सम्बन्धी, अग्नि का। जिसका देवता अग्नि हो। अग्नि से उत्पन्न। जिससे अग्नि निकले। जलाने वाला। (**संज्ञा**, पु०, सं०) सुवर्ण, सोना। रक्त, रुधिर। कृत्तिका नक्षत्र। अग्निपुत्र कार्तिकेय। दीपन औषधि। ज्वालामुखी पर्वत। प्रतिपदा। दक्षिण का एक प्रान्त विशेष जिसकी प्रधान नगरी महिष्मती थी। दक्षिण-पूर्व के बीच का दिक्कोण। घृत। अगस्त्यमुनि। पाचक। ब्राह्मण। आग को भड़काने वाला बारूद जैसा पदार्थ।—**गिरि**-(पु०) ज्वालामुखी।—**स्नान**-(पु०) भस्म पोतना।

आग्नेयास्त्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्राचीनकाल के अग्नि सम्बन्धी अस्त्र, जिनसे आग निकलती थी या जिनके चलाने पर आग बरसती थी, बन्दूक अग्निबाण।

आग्नेयी—(वि०, स्त्री०, सं०) अग्नि-दीपन-कारक औषधि। पूर्व और दक्षिण दिशा के बीच की दिशा। अग्निदेव की स्त्री स्वाहा।

आग्नीध्र—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ के १६ ऋत्विजों में से एक, साग्निक या अग्निहोत्र करने वाला, यजमान। यज्ञ-मंडप, होतागृह। धन से वरण किया गया, ऋत्विज।

आग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुरोध, हठ, जिद। तत्परता। परायणता। बल। जोर। आवेश। जोश, अतिशय प्रयत्न। आसक्ति। ग्रहण। उपकार। अनुग्रह। साहस। आक्रमण।

आग्रहायण—(संज्ञा, पु०, सं०) अगहन, मार्गशीर्ष मास। मृगशिरा नक्षत्र।

आग्रहायणेष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नवान्न भोजन, नये अन्न का प्रारम्भ।

आग्रही—(वि०, सं०) हठी, जिद्दी, आग्रह करने वाला।

आघ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्घ] मूल्य, कीमत।

आघात—(संज्ञा, पु०, सं०) धक्का, ठोकर। मार, प्रहार, चोट, आक्रमण, हनन, वध। कोप। अपचय, वध-स्थान, बूचड़खाना। [**आघातक**- वि० चोट पहुँचाने वाला, घातक]।—**दारुण**—कड़ी चोट, भारी चोट। [ग्रीवियस इन्जरी]।—**सामान्य**—साधारण चोट। [सिम्पुल इन्जरी]।

आघातन—(संज्ञा, पु०, सं०) आघात या चोट करने का काय। वधस्थान।

आघार—(संज्ञा, पु०, सं०) धूप। घृत। छिड़काव। हवि। मंत्र-विशेष से किसी देव विशेष को घृत देना।

आघूर्ण—(वि०, सं०) घूमता हुआ। फिरता या हिलता हुआ।

आघूर्णन—(संज्ञा, पु०, सं०) चक्र के सदृश घूमना, चक्कर खाना।

आघूर्णित—(वि०, सं०) इधर-उधर फिरता हुआ, चकराया हुआ। घुमाया हुआ।

आघोष—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द, निनाद, उच्च-स्वर।

आघोषण—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रचारण, प्रकाश-करण, घोषणा करना, मुनादी करना। [स्त्री० **आघोषणा**]।

आघोषणीय—(वि०, सं०) प्रचारणीय, प्रकाश-नीय।

आघोषित—(वि०, सं०) प्रचारित, प्रकाशित, प्रगटित, घोषित, विज्ञापित, ऐलान किया हुआ।

आघ्राण—(संज्ञा, पु०, सं०) सूंघना, वास लेना, गंध-ग्रहण, तृप्ति, संतोष, अघाना।

आघ्रात—(वि०, सं०) सूँघा हुआ। [विलोम—**अनाघ्रात**]।

आघ्रेय—(वि०, सं०) सूँघने के योग्य, महक लेने लायक।

आचंभित—(वि०, दे०) [**हि०** अचम्भा] आश्चर्य-युक्त। दैवात, हठात, आकस्मिक। अद्भुत। अचंभित।

आचका—(वि०, दे०, हि०) अगणित। अकस्मात। हठात। [**अचाका** दे०] अचानक।

आचमन—(संज्ञा, पु०, सं०) जल पीना, पूजा या धार्मिक कार्य के प्रारम्भ मे दाहिने हाथ से थोड़ा जल लेकर पीना। "आचमन कीन्हे आँच मन की समन होत"—द्विजेश०।

आचमनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आचमनीय] आचमन करने का एक छोटा चम्मच, चमची। [**आचमनीय** वि० आचमन के योग्य। **आचमित** वि० आचमन किया हुआ]।

आचरज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आश्चर्य] अचरज। "सुनि आचरज करै जनि कोई"—तुल०।

आचरण—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुष्ठान। व्यवहार, बर्ताव। चाल-चलन। आचार-विचार। आचार-शुद्धि। सफाई। रथ। रीति-नीति। चिन्ह, लक्षण।

आचरणीय—(वि०, सं०) व्यवहार करने लायक, व्यवहार्य, बर्तने लायक।

आचरन—(संज्ञा, पु०, दे०) देखिए आचरण।

आचरना*(क्रि०, अ०, दे०) [सं० आचरण] आचरण करना, व्यवहार करना। प्रयोग करना। "ऐसी विधि आचरहु"—हरिऔध। "जो आचरत मोर हित होई" "जे आचरहिं ते नर न घनेरे"—तुल०।

आचरित—(वि०, सं०) किया हुआ, व्यवहृत।

आचर्य—(वि०, सं०) आचरणीय, कर्त्तव्य, करणीय।

आचाट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आघात, क्षति-विक्षति, घाव। अनाकृष्ट, बिना जोती हुई भूमि।

आचान, आचानक—(क्रि०, वि०, दे०) अचानक, अकस्मात।

आचार—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यवहार, चलन। रहन-सहन। चरित्र। चाल-ढाल। शील। शुद्धि, सफाई, वृत्त। रीति-रस्म। स्नान। आचमन।—**विचार**—(पु०) आचार और विचार, चरित्र और मन के सद्भाव, चाल-ढाल, रहने की सफाई, शौच, व्यवहार भाव।—**वर्जित**—(वि०) अनाचार, आचाररहित। —**विरुद्ध**—(वि०) कुरीति प्रेरित, व्यवहार-विरुद्ध।

आचारज*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आचार्य] आचार्य, विद्या कला-पटु शिक्षक। पुरोहित।

आचारजी॥—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आचार्य] पुरोहिताई। आचार्य होने का भाव। आचार्य-वृत्ति।

आचारवान—(वि०, सं०) पवित्रता से रहनेवाला, सदाचारी, शुद्धाचरण या शुभाचार वाला।

आचारी—(वि०) [सं० आचारिन्] आचारवान्। शास्त्रानुगामी। चरित्रवान्, सच्चरित्र, सदाचारी। (संज्ञा, पु०) रामानुजाचार्य के सम्प्रदाय का वैष्णव।

आचार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वेदाध्यापक, वेदोपदेष्टा। उपनयन के समय गायत्री मंत्र का उपदेश करने वाला। गुरु। शिक्षक। आचार और धर्म का बताने वाला। यज्ञ-समय मे कर्मोपदेशक, पुरोहित। ब्रह्म-सूत्र के प्रधान भाष्यकार, श्रीशंकर, रामानुज, मध्व और वल्लभाचार्य। वेद का भाष्यकार। धनुर्वेद का पंडित (जैसे द्रोणाचार्य) किसी शास्त्र का पूर्ण पंडित। (वि०) (किसी विषय का) विशेषज्ञ। शास्त्रपारंगत।

आचार्यता—(संज्ञा, भा०, सं०) पांडित्य, विशेषज्ञता।

आचार्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मंत्रोपदेशदात्री, भाष्यकारिणी। आचार्य कर्म करने वाली स्त्री। पंडिता। अध्यापिका।

आचार्याणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आचार्य की पत्नी।

आचिंत्य—(वि०, सं०) जो चिंतन में न आ सके, ईश्वर, ब्रह्म। [वि० **आचिंतनीय, आचिंतित**]।

आच्छन्न—(वि०, सं०) ढका हुआ, आवृत, छिपा हुआ। व्याप्त। वेष्टित। रक्षित। [दे० **आछन्न**]।

आच्छा, अच्छा—(अव्य०, दे०) भला, उत्तम। स्वीकारार्थक शब्द, हां।

आच्छादक—(संज्ञा, पु०, सं०) ढाँकने या छिपाने वाला। आवरण। गोपनकारी।

आच्छादन—(संज्ञा, पु०, सं०) ढकना, छिपाना। वस्त्र, कपड़ा, परिधान। छाजन। आवरण। खोल, ठाट।

आच्छादनीय—(वि०, सं०) ढाकने या छिपाने के योग्य, संगोपनीय।

आच्छादित—(वि०, सं०) ढका हुआ, आवृत्त, छिपा हुआ, तिरोहित।

आच्छाद्य—(वि०, सं०) आच्छादनीय, आवृत्त करने के योग्य, ढकने के योग्य।

आच्छिन्न—(वि०, सं०) छेदना, काटना, कर्तन।

आछत—॥§—(क्रि०, वि०, दे०) [हि० क्रि० अ० **आछना का कृदंत रूप**]—होते हुए, रहते हुए, विद्यमानता में, मौजूदगी में। सामने, समक्ष। अतिरिक्त, सिवा, छोड़ कर। [**अछत** दे०]। "तुमहिं अछत को बरनै पारा"—तुल०।

आछना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अस्—होना] होना, रहना, विद्यमान रहना। उपस्थित होना।

आछा*—(वि०, दे०) अच्छा। [ब० व० **आछे**। स्त्री० **आछी**]।

आछातवा—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) अक्षत, पूजा के काम में आने वाले बिना टूटे चावल।

आछी—(वि०, स्त्री०, दे०) अच्छी, भली। सुघर। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार का वृक्ष, इसका पुष्प बहुत मधुर सुगंधित देता है। (वि०, दे०) खाने वाला।

आछे—(क्रि०, वि०, दे०) अच्छी तरह, भली भाँति। (वि०, ब० व०) अच्छे।

आछेप॥—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आक्षेप] आक्षेप, विरोध, नुक्ता-चीनी, आपत्ति।

आज—(क्रि०, वि०, दे०, सं० अद्य) वर्तमान दिन मे जो दिन बीत रहा है, उसमें, इन दिनों, वर्तमान समय में, इस वक्त, अब, (**आजु** दे०)। "काल करै सो आज कर, आज करै सो अब"—कबीर। **—कल**–(क्रि०, वि०) [हि० आज+कल] इन दिनों, इस समय, वर्तमान समय में।—**०करना (लगाना)**–टाल-मटोल करना, हीला-हवाला करना। **—०का मेहमान होना**–अति लघु समय मे मरना, मरण-काल निकट होना।—**दिन**–(क्रि०, वि०) [हि० आज+दिन] आज-कल के दिन, आज, इस दिन, इस समय।—**०में**–कुछ दिनों में या कुछ समय में।—**०लगना**–अबतब लगना, मरण-काल समीप आना।

आजन-आँजन—(संज्ञा, पु०, दे०) अंजन।

आजन्म—(क्रि०, वि०, सं०) जीवन भर, जिंदगी भर या आजीवन।

आजमाइश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) परीक्षा, जाँच, परख।

आजमाना—(क्रि०, स०) [फ़ा० आजमाइश] परीक्षा करना, जाँच करना, परखना।

आजमूदा—(वि०, फ़ा०) आजमाया हुआ, परीक्षित।

आजला—(संज्ञा, पु०, दे०, प्रान्ती०) अंजलि, अंजुली, पसर, अँजुरी, आँजुरी।

आजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आर्य] पितामह, दादा, बाप का बाप। [स्त्री० **आजी**]।

(विधि० अ० क्रि०)—आ, आव, आओ ।—**गुरु**-(पु०) गुरु का गुरु ।

आज़ाद—(वि०, फ़ा०) जो बद्ध, परतंत्र न हो । छूटा हुआ । मुक्त । बरी । बेफ़िक्र । बेपरवाह, निश्चिंत । स्वतंत्र, स्वाधीन, स्वच्छंद । निर्भय, निडर । स्पष्टवक्ता । हाजिर-जवाब । उद्धत । स्वतन्त्र विचार के के सूफ़ी फ़क़ीर ।

आज़ादगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) स्वच्छंदाता । उद्धतपन । निर्भीकता । निश्चितता ।

आज़ादी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) स्वतन्त्रता, स्वाधीनता । रिहाई, छुटकारा ।

आजानु—(वि०, सं०) जाँघ या घुटनों तक लम्बा । —**बाहु**-(वि०) जिसके बाहु या हाथ जानु तक लम्बे हों, जिसके हाथ घुटनों तक पहुँचें । वीर, शूर, विशालबाहु, दीर्घ बाहु (शूरता का चिह्न, सामुद्रिक) ।

आज़ार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) रोग, बीमारी, दुःख, तकलीफ । [**अजार** दे०] रोग । संक्रामक बीमारी ।

आजि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लड़ाई, समर, युद्ध, रण, संग्राम । आक्षेप । आक्रोश । गमन, गति । समान भूमि ।

आजिज—(वि०, अ०) दीन, विनीत । हैरान, तंग ।

आजिज़ी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दीनता । विनम्रता ।

आजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पितामही, दादी, पिता की माता ।

आजीव—(संज्ञा, पु०, सं०) जीविका, जीवनोपाय, वृत्ति-बन्धान ।

आजीवन—(क्रि०, वि०, सं०) जीवन-पर्यन्त, ज़िंदगी भर, यावज्जीवन, तमाम उम्र, आयु भर । —**कारा**-(पु०) जीवन भर का कारावास । [लाइफ इम्प्रिज़नमेंट] ।—**कारावास**-(पु०) जीवन भर के लिए कारावास का दण्ड । [इम्प्रिज़नमेंट फार लाइफ] ।—**पट्टा**-(पु०) जीवन काल तक का पट्टा या अधिकार पत्र । [लीज फार लाइफ] । —**वार्षिकी**-(स्त्री०) आजीवन मिलनेवाली वार्षिक वृत्ति । [लाइफ एनुइटी] ।

आजीविका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वृत्ति । रोजी । बंधान ।

आजीवी—(वि०, सं०) उपजीवी , उप-जीविक ।

आजु—(क्रि०, वि०, दे०) आज, अद्य ।

आजुर्दा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [शु० रू० आजुर्दः] परेशान । फ़िक्रमंद । दुखी ।

आजू—(क्रि०, वि०) [प्रान्ती०] आजु, आज, अद्य । "तुम पायेहु सुधि मोसन आजू"—तु० । (संज्ञा, पु०, सं०) बिना वेतन के काम करने वाला, बेगारी । अवैतनिक, अवेतन ।

आज्ञप्त अधिकारी—(संज्ञा, पु०, सं०) अधिकृत पदाधिकारी, कार्यभार प्राप्त अधिकारी । [कमिशण्ड आफिसर] ।

आज्ञा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बड़ों का छोटों को किसी काम के लिए कहना । आदेश, हुक्म, अनुमति, निदेश । शासन ।—**अतिक्रम** (**आज्ञातिक्रम**)-(पु०) आज्ञोल्लंघन, आदेशावहेलन, अवज्ञा, हुक्म अदूली ।—**अनुवर्तन** (**आज्ञानुवर्तन**)-(पु०) आज्ञानुसार आचरण । [वि० **आज्ञानुवर्ती**] ।—**कारी**-(वि०) [सं० आज्ञाकारिन्] आज्ञा मानने वाला, हुक्म या आदेश मानने वाला । सेवक । दास । आज्ञानुवर्ती । निदेश-पालक । [स्त्री० **आज्ञाकारिणी**] ।—**चक्र**-(पु०) षट्चक्रों में से एक या छठवां चक्र ।—**दायक**-(पु०) आज्ञा देने वाला । राय देने वाला ।—**पत्र**-(पु०) आदेश-लिपि, निदेश-पत्र, हुक्मनामा, वह लेख जिसके अनुसार किसी आज्ञा का प्रचार किया जाय । —**पालक**-(पु०) आज्ञा का पालन करने वाला, आज्ञाकारी । नौकर, दास, सेवक—(टहलुव, दे०) । [स्त्री० **आज्ञापालिका**] ।—**पालन**-(पु०) आज्ञा के अनुसार कार्य करना, फरमांबरदारी ।—**प्रतिघात**-(पु०) स्वामिद्रोह, राज-शासन त्याग ।—**भंग**-(पु०) आज्ञा न मानना, आज्ञोल्लंघन करना, आदेशोच्छेदन ।—**वर्ती**-(वि०) आज्ञा के वश, आज्ञावह, आज्ञाधीन ।

आज्ञापक—(वि०, सं०) आज्ञा देने वाला । स्वामी, मालिक, प्रभु ।

आज्ञापन—(संज्ञा, पु०, सं०) सूचित करना, जताना । आज्ञा प्रदान करना । [वि० **आज्ञापक, आज्ञापित**] ।

आज्ञापित—(वि०, सं०) सूचित किया हुआ, जताया हुआ, आदेश दिया हुआ ।

आज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) घी, घृत, हवि ।

आज्यप—(संज्ञा, पु०, सं०) पितृलोक विशेष । घृतभोजी ।

आटना—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० अट्ट] तोपना, दबाना, अड़ाना ।

आटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अटन—घूमना] किसी अन्न का चूर्ण । पिसान । चूर्ण । चून (दे०) । किसी वस्तु का चूर्ण । बुकनी । **मुहा०—(टे) दाल**

का भाव मालूम होना—संसार के व्यवहार या दुनियादारी का ज्ञान होना।—(टे) दाल की चिन्ता (फ़िक्र) होना—जीविका की चिन्ता होना। —(टे) दाल भर को होना—अति साधारण जीवन या जीवन की केवल अति आवश्यक वस्तुओं के लिए काफ़ी होना (आय के लिए)।

आटोप—(संज्ञा, पु०, सं०) आच्छादन। फैलाव। आडंबर। विभव। दर्प, अहंकार। वायुजन्य उदर-शब्द।

आटोपित—(वि०) आच्छादित।

आठ—(वि०, दे०) [सं० अष्ट] चार का दूना, दो कम दस।—पहर-(पु०) रात-दिन, आठ याम। मुहा०——आँसू रोना—अत्यंत रोना, बहुत विलाप करना।—(ठो) गाँठ कुम्मैत-सर्व गुण-सम्पन्न, चतुर, चंट, चाईं, छँटा हुआ, धूर्त। —(ठौ) पहर (आठौ याम)-रात-दिन। "ओछी संगत कूर की, आठौ पहर उपाधि"—कबीर। "रैन-दिन आठौ याम······"—पद्मा०।

आडंबर—(संज्ञा, पु०, सं०) गंभीर शब्द। तुरही की आवाज। हाथी की चिग्घाड़। ऊपरी बनावट, दिखावा। तड़क-भड़क, टीम-टाम। चटक-मटक, ढोंग। आच्छादन, तंबू। युद्ध मे बजाने का बड़ा ढोल, पटह।

आडंबरी—(वि०, सं०) आडंबर करने वाला। ऊपरी। बनावट या दिखावा रखने वाला, ढोंगी।

आड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ओट, परदा। रोक। आसरा। ओझल। सहायता, सहारा। व्याज। बहाना। लम्बी टिकली टीका, स्त्रियों का एक भूषण। [सं० आलि—रेखा] आड़ा तिलक (स्त्रियों के माथे का) रक्षा, शरण, थूनी, टेक, अड़ान। [सं० अल—रोक] आश्रय, आधार। (संज्ञा, पु०) [सं० अल—डंक] बिच्छू या भिड़ का डंक।

आड़न—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० आड़ना] ढाल, आड़।

आड़ना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० अलू—करण करना] रोकना, छेंकना। बाँधना। मना करना, न करने देना। ओड़ना, बचाना। गिरवो या रेहन रखना, गहने रखना।

आड़बंद—(संज्ञा, पु०, दे०) लंगोटी।

आड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अलि] एक धारीदार कपड़ा, लट्ठा, शहतीर। (वि०) आँखों के समानान्तर दाहिनी ओर से बाईं ओर को और बाईं से दाहिनी को गया हुआ, वार से पार तक रक्खा हुआ, बेंड़ा। मुहा०—(ड़े) आना—रुकावट डालना, बाधक होना। कठिन समय में सहायक होना। शत्रुता करना, वाम होना, विरोध करना।—(ड़े) दिन काम आना-विपत्ति के दिनों मे सहायता करना।—(ड़े) पड़ना—विघ्न डालना, वा होना।—(ड़े) हाथों लेना—किसी को व्यंग्योक्तियों के द्वारा लज्जित करना, खरी-खोटी सुनाना। डाँटना, फटकारना।—होना—बाधक होना, रुकावट होना, बीच-बचाव करना। "तुरत आनि आड़ा भयो हाड़ा श्री-छत्र-साल"—छत्र०।

आड़ि—(संज्ञा, पु०, दे०) हठ, ज़िद, आग्रह। "इनको यही सुभाव है, पूरी लागी आड़ि"—कबीर०।

आड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० आडा] तबला, मृदंग आदि के बजाने की एक रीति या ढंग। चमारों की छुट्टी। ओर, तरफ।—आरी-(दे०) सहायक, अपने पक्ष का, रक्षक, स्वर विशेष। (वि०) बेंड़ी, तिरछी।

आड़ू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आलु] एक प्रकार का फल, जो खटमिट्ठे स्वाद का होता है।

आढ़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आढक] चार प्रस्थ या चार सेर की एक तौल, चार सेर का एक तौलने का बाट। * (संज्ञा, स्त्री०) [हि० आड] ओट, पनाह, परदा, सहारा। §* (संज्ञा, स्त्री०, दे०) अन्तर, बीच, नागा। माथे का भूषण। (वि०, दे०) [सं० आढ्य—संपन्न] कुशल, दक्ष, पटु। संपन्न, जैसे धनाढ (धनाढ्य)। मुहा०—करना—टाल-मटूल करना।

आढ़क—(संज्ञा, पु०, सं०) चार सेर की एक तौल, इतने ही तौल का एक काठ का बरतन, जिससे अन्न नापा या तौला जाता है। अरहर। [संज्ञा, स्त्री० आढ़की—अरहर की दाल]।

आढ़त—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० आड़ना—जमानत देना], किसी अन्य व्यापारी के माल को रखना और उसके कहने पर उसकी बिक्री कर देने का व्यवसाय, आढ़त का माल जहाँ रक्खा जाय, माल की बिक्री कराने पर मिलने वाला धन, कमीशन, दस्तूरी।

आढ़तिया—(संज्ञा, पु०, दे०) अढ़तिया, आढ़त करने वाला, कमीशन लेकर किसी व्यापारी के माल की बिक्री कराने वाला, कमीशन एजंट, दस्तूरी लेकर व्यापारियों का माल खरिदवाने या बिकवाने वाला।

आढ्य—(वि०, सं०) सम्पन्न, पूर्ण। युक्त। विशिष्ट। अन्वित, जैसे गुणाढ्य, धनाढ्य।

आणक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक रुपये का सोलहवाँ भाग। आना, चार पैसा।

आणि — (संज्ञा, पु०, सं०) कोण, अस्त्रि, सीमा।

आतंक—(संज्ञा, पु०, सं०) रोब, दबदबा, प्रताप, भय, शंका। रोग, पीड़ा। आशंका।—**वाद**–भय त्रस्त करने का सिद्धान्त (टेररिज्म)।—**वादी**–आतंकवाद में विश्वास करने वाला [टेररिस्ट]।

आतत—(वि०, सं०) आरोपित, विस्तारित।

आततायी—(वि०, सं०) वधोद्यत, अनिष्टकारी। पातकी। आग लगाने वाला। विष देने वाला। शास्त्रोन्मादी। धनापहारी, भूमि, परदार अपहारक ये छः आततायी कहे जाते हैं। (शुक्र० नी०) हत्यारा, डाकू। बदमाश, दुष्ट, खल, अत्याचारी। "नाततायी वधे दोषः"—मनु०।

आतप—(संज्ञा, पु०, सं०) धूप, घाम। गर्मी, उष्णता। सूर्य-प्रकाश। ज्वर।

आतपता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उष्णता, ताप की विशेषता। "दानवता आतपता जिसकी शांति से" —हरिऔध।

आतपत्र, आतपत्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) छत्र, छाता।

आतपन—(संज्ञा, पु०, सं०) तपन या ताप-पूर्ण। शिव जी का एक नाम।

आतपहर—(वि०, सं०) ताप को शमन करने वाला। "शीतल कर दो आतपहर"—पंत।

आतपात्यय—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य-किरण-नाश, धूप या घाम का अभाव, अनातप। आतपाभाव, गर्मी का न होना।

आतापित—(वि०, सं०) सब प्रकार तपा या तपाया हुआ, गर्म, उष्ण, जलता हुआ।

आतपी—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य। (वि०) उष्णता वाला।

आतप्त—(वि०, सं०) तप्त, उष्ण, गर्म। दग्ध। दुखी।

आतम—(वि०, दे०) आत्मा। (संज्ञा, पु०, सं०) अंधकार। अज्ञान।

आतमा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पु० आत्मा] आत्मा, जीव।

आतर, आतार—(संज्ञा, पु०, दे०) उतराई। अन्तर, बीच। [**आँतर** दे०]।

आतर्पण—(संज्ञा, पु०) [सं० आ + तृप + अनट्] प्रीणन। तृप्ति। मंगलालेपन, संतोष। [वि० **आतर्पणीय, आतर्पित**। स्त्री० **आतर्पिता**]।

आतश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आग, अग्नि, आगी (दे०)।—**खाना**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कमरा गर्म करने के लिए आग रखने की जगह, पारसियों के अग्नि-स्थापन का स्थान, आग रखने की जगह, चूल्हा।—**दान**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अँगीठी।—**परस्त**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अग्नि की पूजा करने वाला, अग्नि पूजक, पारसी। [संज्ञा, स्त्री० **आतश-परस्ती**]।—**बाज़ी**–(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बारूद के बने हुए खिलौने, अग्नि-क्रीड़न, बारूद के खिलौने जो जलाने से कई रंग की चिनगारियाँ छोड़ते हैं।

आतशक—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) फिरंग रोग, उपदंश, गर्मी।

आतशी—(वि०, फ़ा) अग्नि-सम्बन्धी। अग्नि-उत्पादक, जो आग में तपाने से न फूटे, न तड़के। (यौ०) **आतशी शीशा**। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) सूर्यकान्त मणि, ऐसा शीशा जो सूर्य के सामने रखने से आग पैदा करता है और छोटी चीज़ को बड़ा दिखाता है।

आता—(संज्ञा, पु०, दे०) अत्ता। फल। सीता-फल, शरीफ़ा।

आतापी—(संज्ञा, पु०, सं०) एक असुर जिसे अगस्त्य मुनि ने अपने पेट में पचा डाला था, चील पक्षी। "आतापी भक्षितो येन………।

आतायी, अताई—(वि०, दे०) धूर्त। शठ। तमाशा करने वाला। बहुरूपिया। (संज्ञा, पु०, दे०) अताव। (दे०) पक्षी विशेष, चील। (दे०) धूर्तता। शठता। नोचना।

आतिथेय—(वि०, सं०) अतिथि सेवा करने वाला, अतिथि-पूजक, अभ्यागत का सत्कार करने वाला। अतिथि सेवा की सामग्री।

आतिथ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अतिथि सत्कार, पहुनाई, मेहमानदारी, अतिथि-सेवा।

आतिदेशिक—(वि०, सं०) अतिदेश-प्राप्त, दूसरे प्रकार से आने वाला या उपस्थित।

आतिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आतश, आग।

आतिशय्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अतिशय होने का भाव, आधिक्य, बहुतायत, ज्यादती, अतिरेक।

आतुर—(वि०, सं०) व्याकुल, व्यग्र, घबराया हुआ। उतावला, अधीर, उद्विग्न, बेचैन। उत्सुक। दुःखी। रोगी। कातर। अस्थिर। (क्रि०, वि०) शीघ्र, जल्दी। —**सन्यास**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मरने के कुछ ही पहिले धारण कराया जाने वाला संन्यास।

आतुरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घबराहट, बेचैनी,

व्याकुलता, विह्वलता, व्यग्रता। जल्दी, शीघ्रता। उतावलापन।

आतुरताई॥—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आतुर +ता+आई—हिं० प्रत्य०] आतुरता, शीघ्रता। बेचैनी।

आतुराना—(क्रि०, अं०, दे०) उतावला होना, उत्सुक होना, घबराना। "इंद्रीगन अतुराय ज्यों तुरंग धायो है"—दीन०

आतुरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आतुर+ई—प्रत्य०] घबराहट, व्याकुलता। शीघ्रता। "देखि देखि आतुरी विकल व्रजबारिनि की"—रत्ना०

आतू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गुरुआइन, पंडिताइन।

आतोद्य—(वि०) [सं०, आ+तुद्+य] वाद्य। वीणा। मुरज। वश का शब्द। चतुर्विध वाद्य।

आत्त—(वि०) [सं० अ+दा+क्त] गृहीत, प्राप्त, पकड़ लिया गया। "आत्तकार्मुकः"—रघु०। [यौ० **आत्तगंध**—वि०, यौ०, सं० गृहीत गंध। हतदर्प। अभिभूत, पराजित]।

आत्तगर्व—(वि०, यौ०, सं०) खंडितगर्व, भग्न-दर्प, नष्टाभिमान, जिसका अहंकार चूर्ण हो गया हो।

आत्म—(वि०) [सं० आत्मन्] अपना, निज, स्वीय। (संज्ञा, पु०, सं०) आत्मा, जीव।—**कलह**–(पु०, दे०) मित्रों या अपने आदमियों के साथ वाद-विवाद, गृह कलह।—**कार्य**–(पु०) अपना काम। गोपनीय कार्य, आत्म कर्म। आत्मा का काम।—**गरिमा**–(स्त्री०) आत्मश्लाघा, अपनी बड़ाई। दर्प, अहंकार, आत्म-मान।—**गौरव**–(पु०) अपनी बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान, आत्मश्लाघा।—**ग्राही**–(वि०) [ग्रह + णिन्] आत्मम्भरी, स्वार्थपर, स्वार्थी, मतलबी।—**घात**–(पु०) अपने ही हाथ से अपने को मार डालने का काम, अपने ही आप या स्वयमेव अपने को मारना, खुदकुशी।—**घातक**–(वि०, सं०) अपने ही हाथों से अपने को मारने वाला, आत्म-हत्या करने वाला, पापी।—**घाती**–(वि०, यौ०, सं०) आत्म-घातक।—**ज**–(संज्ञा, पु०, सं०) पुत्र, लड़का। कामदेव। रुधिर।—**जन्मा**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुत्र, लड़का, तनय।—**जा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पुत्री, कन्या।—**जाया**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपनी स्त्री।—**जित**–(वि०, सं०) अपने मन को जीतने वाला।—**ज्ञ**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपने को जानने वाला, निज स्वरूप का जिसे ज्ञान हो, आत्मा का ज्ञान रखने वाला, स्वानुभवी।—**ज्ञान**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जीवात्मा और परमात्मा के विषय मे जानकारी। अपने को जानना, आत्म-बोध। ब्रह्म या आत्मा का साक्षात्कार, स्वानुभव, निज स्वरूप-ज्ञान।—**ज्ञानी**–(संज्ञा, पु०, सं०) आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध में जानकारी रखने वाला।—**तुष्टि**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) आत्मज्ञान से उत्पन्न सन्तोष या आनन्द। [**आत्मसन्तोष**, **आत्मतोष**—वि०, सं०, **आत्मतुष्ट**]।—**त्याग**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परहित के लिये अपने स्वार्थ का त्याग करना या छोड़ देना।—**त्यागी**—(वि०) आत्मत्याग करने वाला।—**दर्शन**–(संज्ञा, पु०, सं०) समाधि के द्वारा आत्मा और ब्रह्म को देखना।—**दान**–(संज्ञा, पु०) स्वार्थ त्याग। "मुस्लिम के पथ मे बिछा रहा था आत्मदान"—बच्चन।—**दृष्टि**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्ञान-दृष्टि। [वि० **आत्मद्रष्टा**—आत्म-दर्शक]।—**निंदा**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपनी बुराई, अपनी निंदा, अपनी अवहेलना।—**निदेश**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आत्माज्ञा, आत्मादेश, अपनी आत्मा का हुक्म या आज्ञा, ईश्वराज्ञा।—**निर्णय**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपना निर्णय, अपना निश्चय, अपने आप किसी प्रश्न का निर्णय करना, आत्म-निश्चय।—**निवेदन**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपने आपको या अपना सवस्व अपने इष्ट देव पर चढ़ाना, आत्म-समर्पण। (नवधाभक्ति में से एक) आत्म विनय, अपने सम्बन्ध मे आप ही कहना।—**बल**–(पु०) आंतरिक शक्ति जो आत्मानुभूति से प्राप्त होती है। "चिर पुराण को बना आत्मबल से चिर अभिनव।"—पंत।—**बोध**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आत्मज्ञान, ईश्वर-ज्ञान।—**भाव**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपनी आत्मा का सा सब पर भाव रखना, समदृष्टि।—**भू**–(वि०, यौ०, सं०) अपने शरीर से उत्पन्न, आप ही आप उत्पन्न होने वाला।—**मंत्रणा**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अंतःकरण की अनुमति, सलाह। —**महिमा**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपनी बड़ाई। —**मोह**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ममता, अज्ञान। —**मौग्ध्य**–(पु०) अपनी ही विशेषता पर मुग्ध होने का भाव।—**म्भरि**–(वि०, सं०) अपना ही पेट पालने वाला, स्वार्थी, खुदगर्ज, मतलबी।—**योनि**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव।—**रक्षक**–(वि०) अपनी रक्षा करने वाला। [संज्ञा, पु०, सं० **आत्मरक्षण**]।—**रक्षा**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपनी रक्षा या बचाव।—**रत**–(वि०, यौ०, सं०) आत्मा में लीन, आत्मज्ञान मे लगा हुआ, ब्रह्मज्ञान मे लीन, ब्रह्मज्ञान-प्राप्त।

—रति–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) आत्मा या ब्रह्म में लीनता, आत्मज्ञान में अनुराग । —लय–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्रह्म में लय हो जाना, मुक्त, मोक्ष ।—लाभ–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) उत्पत्ति, स्वलाभ, स्वार्थ ।—लीन–(वि०, यौ०, सं०) आत्म-दर्शन या ब्रह्म-दर्शन में लगा हुआ, अपने में जो लीन हो ।—वंचक–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कृपण, पापी, नास्तिक, अपने को आप ही धोखा देने या ठगने वाला ।—वंचना–(संज्ञा, पु०) अपने को ठगना ।—वत्–(वि०, यौ०, सं०) अपने सदृश, आत्म समान । "आत्मवत् सर्व भूतेषु" ।—वश–(वि०, यौ०, सं०) स्वाधीन, स्व-वश, स्वप्रधान, जिसने अपने को आप ही वश किया हो ।—वाणी–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) आत्मा का कथन, आत्मगिरा, अंतःकरण का शब्द, ब्रह्म-वाणी । —विक्रय–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपने को आप बेचना (जैसे हरिश्चन्द्र ने किया था) ।—विक्रयी–(वि०, यौ०, सं०) अपने को आप बेचने वाला ।—विक्रेता–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जो अपने को आप ही बेच कर दास बना हो ।—विजय –(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपनी आत्मा या अपने मन पर विजय प्राप्त करना । [वि०—आत्म-विजयी] ।—वित्–(वि०, सं०) अपनी आत्मा को जानने वाला, आत्मज्ञानी ।—विद्या–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) आत्मा और परमात्मा का ज्ञान कराने वाली विद्या, ब्रह्मविद्या, अध्यात्मविद्या, मिस्मरिज़म ।—विश्वास–(संज्ञा,पु०, यौ०, सं०) अपने पर विश्वास ।—विस्तार–(पु०) अपना ही प्रसार, अपने आप का बाहुल्य । "कर सके नहीं आत्म विस्तार" ।—प्रसाद ।—विस्मृति–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपने को आप ही भूल जाना, अपना ध्यान न रहना ।—शांति–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपने आत्मा की शान्ति, मुक्ति ।—शुद्धि– (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपनी शुद्धि, अपने मन या अपनी आत्मा को शुद्ध और स्वच्छ करना ।—श्लाघा–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपनी तारीफ़ आप करने वाला,आत्मगर्व ।—श्लाघी–(वि०, सं०) अपनी प्रशंसा आप करने वाला, आत्मप्रशंसक, आत्माभिमानी ।—श्लाघी–(संज्ञा, स्त्री०) आत्म-प्रशस्ति, अपनी बड़ाई ।—संभव–(संज्ञा, पु०, सं०) पुत्र, लड़का, तनय, आत्मज । [स्त्री०—आत्म-सम्भवा] कन्या, पुत्री आत्मजा ।—संयम–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपने मन को रोकना, अपनी इच्छाओं या चित्त की वृत्तियों को वश में करना । [वि०—आत्मसंयमी—योगी, अपनी चित्तवृत्तियों को निरोधित करने वाला] ।—सात्–(वि०, सं०) अपने अधीन, स्वहस्तगत।—सात् करना–(क्रि०, स०, हिं०) हजम कर जाना, हड़प जाना ।—सुख– (पु०) वह सुख जिसके लिये प्रत्येक व्यक्ति व्याकुल रहता है । "आत्म सुख भँवर दुर्निवार है" ।—हरि-औध ।—स्वयंभू–(संज्ञा, पु०, सं०) पुत्र, कामदेव, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, स्वयंभू ।—हन्ता–(संज्ञा, पु०, सं०) आत्मघाती, अपने को आपही मारने वाला । —हत्या–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपने को आपही मार डालना, खुदकुशी । आत्मघात, स्ववध ।—हा– (संज्ञा, पु०, सं०) अपने को आपही मारने वाला, आत्महत्या करने वाला, आत्मघाती ।—हिंसा– (संज्ञा, स्त्री०, सं०) आत्महत्या, आत्मघात । [वि० —आत्महिंसक। आत्मघाती] ।

आत्मक—(वि०, सं०) मय, युक्त, अन्वित, सहित (यौगिक मे जैसे **रसात्मक**) । [संज्ञा, **आत्मिका**] ।

आत्मता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बन्धुता, प्रणय, सद्-भाव, प्रेम, प्रीति, आत्मीयता ।

आत्मनीय—(संज्ञा, पु०, सं०) पुत्र, तनय, सुत, आत्मज । शाला (साला—दे०) । विदूषक ।

आत्मनेपद—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रिया का चिन्ह या भेद विशेष ।

आत्म-प्रतीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपना विश्वास, आत्म-विश्वास, अपना भरोसा ।

आत्मप्रभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) अपना या अपनी आत्मा का प्रभाव ।

आत्मप्रशंसा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपने मुँह अपनी बड़ाई । [वि०—**आत्मप्रशंसक**] अपने मुख अपनी प्रशंसा करने वाला ।

आत्म-प्रीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपना प्रेम, स्वार्थ । [वि०—**आत्मप्रेमी**] स्वार्थी, मतलबी ।

आत्मप्रेम—(संज्ञा, पु०, सं०) अपने पर प्रेम, अपनी आत्मा पर प्रेम, आत्मप्रणति ।

आत्मा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मन या अंतःकरण से परे उसके व्यापारों का ज्ञान करने वाली एक विशेष सत्ता । द्रष्टा । रूह, जीव, जीवात्मा, चैतन्य, ज्ञानाधिकरण ("ज्ञानाधिकरणमात्मा") देह । धृति । स्वभाव । परमात्मा । मन । हृदय । दिल । चित्त । इसके लक्षण है—प्राण, अपान, निमेष, उन्मेष, जीवन, मनोगत इन्द्रियान्तर विकार ("प्राणापान-निमेषान्मेष-जीवन- मनोगतेन्द्रियान्तविकारासुखदुःखे-च्छाद्वेषप्रयत्नाश्चात्मनो लिंगानिवैशे०) । ("आत्मा देहे धृतौ जीवे स्वभावे परमात्मनि") धर्म । यत्न ।

वृद्धि। पुत्र। अर्क। अग्नि। वायु। **मुहा०—ठंढी (शीतल) करना या होना**—तुष्टि करना या होना, तृप्ति करना या होना, प्रसन्न करना या होना, पेट भरना, भूख मिटाना या मिटना।—**का असीसना**—हृदय से प्रसन्न होकर मंगल-कामना करना। हार्दिक आशीष देना।—**जीवी**—(वि०) आत्मानुभूति-पूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला। "वे आत्मजीवी थे काया से कहीं परे"।—बच्चन

आत्मानंद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आत्मा का ज्ञान, आत्मा मे लीन होने का अलौकिक सुख।

आत्माभिमत—(वि०, सं०) आत्मसम्मत, अपने मत का अनुयायी, अपनी आत्मा के विचार का वशवर्ती।

आत्माभिमान—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपनी मान-मर्यादा का ध्यान। अपने ऊपर गर्व, अपने मान-सम्मान का विचार, अपनी सत्ता का ज्ञान। [वि०—**आत्माभिमानी**। स्त्री०—**आत्माभिमानिनी**]।

आत्माभिव्यक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं को प्रगट करने का भाव। "आत्माभिव्यक्ति के लिये चुनता है"।—(कल्पना, सम्पादक)

आत्माराम—(संज्ञा, पु०, सं०) आत्मज्ञान से तृप्त योगी। जीव। ब्रह्म। तोता, सुग्गा (प्यार का शब्द)।

आत्मार्थी—(वि०, सं०) आत्मसुख का लोभी। "आत्मार्थी है, न कह सकते है उसे आत्मत्यागी"—हरिऔध।

आत्मार्पण—(पु०, सं०) अपने आप का समर्पण। "प्रिय, तुम्हे करंगी आत्मार्पण"।—पंत।

आत्मावलंबी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सब काम अपने ही बल पर करने वाला, अपने ही ऊपर आधारित रहने वाला, आत्माश्रित। [संज्ञा, पु०, सं० **आत्मावलंब**। स्त्री० **आत्मावलंबिनी**। संज्ञा, पु० **आत्मावलंबन**]।

आत्मिक—(वि०, सं०) आत्मा-सम्बन्धी। अपना। मानसिक।

आत्मीय—(वि०, सं०) अपना, निज का, स्वकीय, अंतरंग, स्वजन, आत्मजन। (संज्ञा, पु०) रिश्तेदार, सम्बन्धी।

आत्मीयता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपनायत, स्नेह-सम्बन्ध, मैत्री, अंतरंगता, अपनापन। मैत्री, बंधुता, प्रणय-भाव, सद्भाव।

आत्मोत्कर्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपनी श्रेष्ठता, अपनी प्रभुता, अपनी बड़ाई, अपनी उन्नति, या वृद्धि।

आत्मोत्पीड़न—(संज्ञा, पु०, सं०) अपने आप को उत्पीड़ित करना।

आत्मोत्सर्ग—(संज्ञा पु०, यौ०, सं०) दूसरे की भलाई के लिए अपने हिताहित का ध्यान छोड़ना।

आत्मोत्सर्गी—(वि०, सं०) अपने आपका, अपने सुखों का उत्सर्ग करने वाला। आत्मसुखों का त्याग करने वाला। "आत्मोत्सर्गी, हृदयतल की सात्विकी वृत्ति ही है।"—हरिऔध।

आत्मोद्धार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपनी आत्मा को संसार के दुःख से छुड़ाना, या ब्रह्म मे मिलाना। मोक्ष। अपना छुटकारा। [वि० **आत्मोद्धारक**]।

आत्मोद्भव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आत्मा से उत्पन्न, पुत्र, लड़का, तनय। आत्मोत्पन्न। [स्त्री० **आत्मोद्भवा**—कन्या, आत्मजा]।

आत्मोन्नत—(वि० सं०) जिसकी आत्मा उन्नत हो, अपनी उन्नति को प्राप्त।

आत्मोन्नति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपनी बढ़ती, अपनी वृद्धि।

आत्यंतिक—(वि०, सं०) आतिशय्य, विस्तार, प्रचुर, अधिक, बहुतायत से होने वाला। [स्त्री० **आत्यंतिकी**]।

आत्रेय—(वि०, सं०) अत्रि सम्बन्धी, अत्र गोत्रवाला। (संज्ञा, पु०, सं०) अत्रि के पुत्र दत्त, दुर्वासा। चन्द्रमा। आत्रेय नदी के तट का देश जो दीनाजपुर जिले मे है। शरीर-गत रस या धातु।

आत्रेयी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेदान्त-विद्या-स्नाता एक तपस्विनी। एक नदी विशेष।

आथना—*(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अस्ति] होना, आछना।

आथर्वण—(संज्ञा, पु० सं०) अथर्ववेद का जानने वाला ब्राह्मण, अथर्व वेदज्ञ, अथर्ववेदविहित कर्म।

आथि, आथी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अस्ति] स्थिरता। पूँजी, जमा।

आदत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) स्वभाव, प्रकृति। अभ्यास, टेव, बान।

आदम—(संज्ञा पु०, अ०) मनुष्य जाति का सब से प्रथम मनुष्य, जिससे मानव सृष्टि चली। प्रथम प्रजापति, इनकी स्त्री का नाम हव्वा था—इन्हीं के कारण मनुष्य आदमी कहलाते है—(इबरानी और अरबी मत)।—**खोर**—(वि०, अ०) नर-पिशाच, नर मांस-भक्षक।—**जाद**—(संज्ञा, पु०, अ० आदम + फ़ा० जाद) आदम से उत्पन्न, उनकी संतति, मनुष्य, आदमी।

आदमियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मनुष्यत्व, इन्सानियत, सभ्यता, शिष्टता ।

आदमी—(संज्ञा, पु०, अ०) आदम की संतान, मनुष्य या मानव जाति । **मुहा०—करना**—पति बनाना, खसम करना ।—**कसना**—मनुष्य या नौकर की परीक्षा करना ।—**देखना**—भले-बुरे, बड़े-छोटे, का विचार करना ।—**परखना** (**पहिचानना**)—मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव का अनुभव करना, जांच करना ।—**बनना** (**होना**) —सभ्यता सीखना, अच्छा व्यवहार सीखना, सभ्य होना ।—**बनाना**—तमीज या सभ्यता सिखाना, पढ़ाना, सदाचारी एवं शिष्ट बनाना ।—**रखना**—नौकर रखना, सेवक रखना ।—**विशेष**—नौकर, पति, मजदूर ।

आदर—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+दृ+अल] सम्मान सत्कार, प्रतिष्ठा, इज्जत, खातिर । आस्था ।

आदरणीय—(वि०, सं०) आदर के योग्य, सम्मान करने के योग्य, मान्य, माननीय ।

आदरना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आदर] आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना । "आक आदरै नाहिं किन, दुर्लभ या कौ संग"—दीन० ।

आदर-भाव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सत्कार, सम्मान, प्रतिष्ठा, कद्र ।

आदरस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आदर्श] नमूना, आदर्श । "गौर-स्याम रूप आदरस है दरस जाको" —घनानंद ।

आदर्श—(संज्ञा, पु०, सं०) दर्पण, शीशा, आइना । टीका, व्याख्या । अनुकरणीय, वह जिसके रूप, गुण आदि का अनुकरण किया जाय । नमूना । चिह्न । वि० अनुपम, अनुकरणीय, अनुपमेय ।—**वाद**—(पु०) आदर्शमूलक भावना को प्रश्रय देनेवाला मत । [आइडियलिज्म] ।

आदा—(संज्ञा, पु०, दे०) मूल विशेष अदरक, अद्रक ।

आदान—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना, रोग-लक्षण ।—**प्रदान**—(पु०) लेना-देना, लेन-देन, त्याग-ग्रहण । परिवर्तन ।

आदाब—(संज्ञा, पु०, अ०) नियम, कायदा, लिहाज, शान । नमस्कार, सलाम, प्रणाम । **मुहा०—अर्ज है**—नमस्कार, प्रणाम, सलाम ।

आदि—(वि०, सं०) प्रथम, पहला, शुरू का, आरम्भ का । बिलकुल । नितांत । मूल । अग्र । उत्तरीय स्थान । (संज्ञा, पु०, सं०) आरम्भ, बुनियाद । मूल कारण । परमेश्वर । अव्य० । (सं०) वगैरह, आदिक (यह शब्द सूचित करता है कि इसी प्रकार और समझो) इत्यादि । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) अदरख, अद्रक ।—**कवि**-(संज्ञा, पु०, सं०) वाल्मीकि मुनि, जिन्होंने सब से प्रथम छंदोबद्ध काव्य को जन्म दिया था, क्रौंच-युग्म में से एक को निषाद-द्वारा आहत और दूसरे को दुखी देख निषाद को शाप देते हुए इनकी छंदोमयी वाणी प्रकाशित हुई तब इन्होंने उसी छंद मे "रामायण" की रचना की, अतएवं ये ही आदि कवि माने जाते हैं ।—**कारण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मूल या प्रथम कारण । पूर्व निमित्त । आदि का हेतु, निदान । सृष्टि का मूल जिससे ही सब संसार की उत्पत्ति हुई है—ब्रह्म, ईश्वर, प्रकृति, हरि, ।—**तः**-(अव्य०, से) आदि से, आरम्भ से, प्रारम्भतः ।—**देव**-(संज्ञा, पु०, सं०) नारायण, विष्णु ।—**पुरुष**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परमेश्वर, ब्रह्म ।—**राज**—(संज्ञा, पु०, सं०) सर्व प्रथम राजा पृथुराज ।—**वराह**-(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु का वराहावतार ।—**वासी**-(संज्ञा, पु०) आदिम निवासी, मूल निवासी, [एबारिजिनल] ।—**शूर** —(संज्ञा, पु०, सं०) सेनवंशीय सर्व प्रथम राजा वीरसेन जिसने पुत्रेष्टि यज्ञ के लिये कन्नौज से पांच वेदज्ञ ब्राह्मण बुलवाये थे (क्योंकि बौद्ध धर्म के प्रचुर प्रचार से बंगाल मे वेदज्ञ ब्राह्मण न रह गये थे) इन्हीं कान्यकुब्ज ब्राह्मणों से मुखोपाध्याय (मुकर्जी) वंद्योपाध्याय (बनर्जी) आदि ब्राह्मण हुए हैं ।

आदिक—अव्य० (सं०) आदि, वगैरह ।

आदितꣳ—(संज्ञा, पु०, दे०) आदित्य (सं०) सूर्य । अदिति के पुत्र । देवता । इन्द्र । वामन । मदार ।

आदित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अदिति के पुत्र, देवता । सूर्य । इन्द्र । वामन । वसु । विश्वेदेवा । बारह मात्राओं का एक छंद विशेष । मदार या अकौआ ।—**मंडल** -(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्यमंडल, सूर्यलोक ।—**वार**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रविवार, एतवार, सूर्य का दिन, सप्ताह का अंतिम दिन ।—**सूनु**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुग्रीव । यम । शनैश्चर । सावर्णि मनु । ववस्वत मनु । कर्ण ।

आदितेय—(वि०, सं०) अदिति के पुत्र, देवगण ।

आदिम —(वि०, सं०) पहले का । पहला । आद्य, प्राथमिक । प्रथमोत्पन्न ।—**जति**-मूल जाति । [प्रिमिटिव रेस]—**समाज**-आदिमकाल का मानव समाज [प्रिमिटिव सोसाइटी] ।

आदिल—(वि० फा०) न्यायी, न्यायवान, इंसाफ करने वाला ।

आदिविपुला—(संज्ञा, स्त्री०, यौ० (सं०) आर्या-छंद का एक भेद ।

आदिष्ट—(वि०) [सं० आ + दिश् + क्त] आदेशित, आज्ञप्त, अनुमत । कथित । प्राप्तो-पदेश ।—धनादेश–नाम जोग चेक [आर्डर चेक] ।

आदी—(वि०, अ०) अभ्यस्त । (वि०, दे०) [सं० आदि] आदि । नितांत । बिलकुल । (क्रि०, वि०) इत्यादि । "मातु न जानसि बालक आदी"—जायसी । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) अदरक, अद्रक ।

आदृत—(वि०) [सं० आ + दृ + क्त] सम्मानित, पूजित, अर्चित, जिसका आदर किया गया हो ।

आदेय—(वि०, सं०) लेने के योग्य ।

आदेश—(संज्ञा, पु०, सं०) आज्ञा, उपदेश, प्रणाम, नमस्कार, (साधु) ज्योतिषशास्त्र में ग्रहों का फल, एक अक्षर का दूसरे के स्थान पर आना (व्याक०) अक्षरपरिवर्तन । प्रकृति और प्रत्यय को मिलाने वाले कार्य ।—**अंतिम**–अंतिम आज्ञा [फाइनल आर्डर] । —**दोषमुक्ति**–अपराध से छूटने की आज्ञा [आर्डर आफ ऐक्विटल] ।—**पत्र**–आज्ञापत्र [आर्डरशीट] । —**पूरक**–आज्ञानुसार सामान देने वाला [आर्डर सप्लायर] ।—**विमुक्ति**–नौकरी से अलग किये जाने की आज्ञा [आर्डर आफ डिसचार्ज] ।—**सामान्य**–साधारण आज्ञा, सब को दी जाने वाली आज्ञा [जेनरल आर्डर] ।

आदेष्टा—(संज्ञा, पु०) [सं० आ + दिश् + तृण्] पुरोहित । याजक । आदेशकर्ता, आज्ञा-कारक ।

आदेशी—(संज्ञा, पु०, सं०) आज्ञापक । गणक । दैवज्ञ । आज्ञाकारक ।

आदेस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आदेश] आदेश, आज्ञा ।

आद्य—(वि०, सं०) पहिला, प्रथम, भोजनीय द्रव्य । [यौ० **आद्यकवि**—संज्ञा, पु०, यौ० (सं०) वाल्मीकि । ईश्वर । विधि । ब्रह्मा ।

आद्यन्त—(क्रि०, वि०, यौ०, सं०) आदि से अन्त तक, शुरू से आखीर तक, आद्योपान्त । (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आदि और अन्त ।—**हीन**–(वि०, यौ०) आदि-अन्त-रहित, अनन्त (सं०, पु०) ब्रह्म, ईश्वर ।

आद्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, दस महा विद्याओं में से एक ।

आद्योपान्त — (क्रि०, वि०, यौ०, सं०) आदि से अंत तक, शुरू से आखीर तक । सम्पूर्ण । समाप्ति तक ।

आद्रा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० आर्द्र] छठवें नक्षत्र का नाम । (वि०, स्त्री०) [पु० आर्द्र] गीली ।

आध—(वि०, दे०) [हि० आधा, सं० अर्द्ध] दो बराबर भागों में से एक, निस्फ, अर्धक, अर्द्ध (यौगिक में) । (यौ०)—**एक-आध**–थोड़े से, चंद, कुछ । मुहा०—**आधो-आधा**–दो बराबर भागों में ।—**कपारी**-(स्त्री०) [सं० अर्ध + कपाली] आधे सिर का दर्द, आधा सीसी ।

आधा—(वि०, दे०) [सं० अर्द्ध] दो बराबर भागों में से एक, निस्फ, अर्धक, अर्द्ध । [स्त्री० **आधी** । वि० **आधो** ब०] । **मु०—तीतर—बटेर**—कुछ एक प्रकार का और कुछ दूसरे प्रकार का । बेजोड़, बेमेल । अंडबंड ।—**अध**–[दे० यौगिक में] अधखुली ।—**तिहाई**–(वि०, यौ०, दे०) अपूर्ण, अधूरा, कुछ, थोड़ा ।—**परधा**–(वि०, यौ०, दे०) [सं० अर्ध] आधा । अपूर्ण, कुछ थोड़ा ।—**होना**–दुबला होना ।—(**धी**) **बात**–जरा सी भी अपमान सूचक बात ।—(**धे**) **आध**–दो बराबर भागों में विभक्त हुआ ।—(धे) **कान (सुनना)** –तनिक भी सुनना ।—(धी) **जान (सूखना)**–अत्यन्त भय लगना । (संज्ञा, पु०, दे०) अर्द्ध शिरोवेदना, अर्ध-कपाली, आधा सीसी । (यौ०)

आधान—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थापन, रखना, गिरवी या बंधक रखना । धारण करना, गर्भ धारण करना । द्रव्य । अग्न्याधान गर्भाधान ।

आधानिक—(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भाधान संस्कार ।

आधार—(संज्ञा, पु०, सं०) आश्रय, सहारा, अवलंब । अधिकरण कारक (व्याक०)। शाला । आलबाल पात्र । नींव, बुनियाद । मूल । एक देह-चक्र (योग०) मूलाधार । आश्रय देने वाला । पालन करने वाला । आहार । [यौ० **प्राणाधार**—जिसके आधार पर प्राण हो, पुत्र, अत्यन्त प्रिया पति ।—**उद्योग**–मुख्य उद्योग [की इंडस्ट्री] । — **कर्त्ता**-(पु०) बंधक या गिरवी रखने वाला [पानर] ।

आधारय—(संज्ञा, पु०, सं०) आधार पर रहने वाला, आधार पर ठहरने वाला, आधार के योग्य ।

आधारित—(वि०, सं०) अवलंबित, ठहरा हुआ, सहारे या आसरे पर टिका हुआ, आश्रित । [स्त्री० **आधारिता**] ।

आधारी—(वि०) [सं० आधारिन्] सहारा रखने वाला, आश्रय पर रहने वाला । टेक या अड्डे के आकार की लकड़ी (साधुओं की) ।

आधासीसी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० अर्ध + शीर्ष] अधकपाली, आधे सिर की पीड़ा।

आधि—(संज्ञा, स्त्री०,सं०) मानसिक व्यथा, चिन्ता। रेहन, बंधक। प्रत्याशा। आधार।—**ग्राही**-(पु०) जिसके पास बंधक रक्खा जाता है [पानी]।

आधिक*—(वि०, दे०) [हिं० आधा + एक] आधा, या आधे के लगभग। (क्रि०, वि०) आधे के लगभग, थोड़ा, किंचित।

आधिकरणिक—(पु०, सं०) न्यायाधिकारी, राज्य पदाधिकारी [कोर्टसेल]।

आधिकारिक—(संज्ञा, पु०, सं०) मूल कथा-वस्तु (नाटक या दृश्य काव्य) अधिकारयुक्त [ऑथॉरिटेटिव]।—**उच्च**-बड़ा अधिकारी [सुपीरियर आफिसर]।—**उत्तरदायी**-जिम्मेदार अफसर [रिसपांसिबुल आफिसर]।—**सैनिक**-फौजी अफसर। [मिलिटरी आफिसर]।

आधिक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अधिकता, ज्यादती, बहुतायत, आतिशय्य।

आधदैविक—(वि०, सं०) देवता तथा भूतादि के द्वारा होने वाला, देवकृत (दुख) बौद्ध पदार्थ, दे। धीन, देवप्रयुक्त, बुद्धि सम्बन्ध, दैवकृत [सुपर नेचुरल]।

आधीन❀—(वि०, सं०) आज्ञाकारी। वश। नम्र। स्वाधिकार युक्त वशवर्ती। [**अधीन** दे० आश्रित। दीन]।

आधीनता — (संज्ञा, स्त्री०, सं०) वशवर्तित्व, नम्रता, ताबेदारी, आज्ञाकारिता। [**अधीनता** दे०]।

आधिपत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रभुत्व, स्वामित्व, ऐश्वर्य, अधिकार।

आधिभौतिक—(वि०, सं०) व्याघ्र सर्पादि जीवों कृत, जो भूतों या तत्वों के सम्बन्ध से उत्पन्न हो, जीवों या शरीर-धारियों के द्वारा प्राप्त (दुःख)।

आधिराज्य—(पु०, सं०) सर्वोच्च, प्रभुता, अधिराज का पद-विशेष।

आधिवेदनिक—(वि०, सं०) द्वितीय विवाह के लिए प्रथम स्त्री को दिया हुआ धन।

आधुनिक—(वि०, सं०) वर्तमान समय का, हाल का, आजकल का, साम्प्रतिक, अधुनातन। नवीन, नव्य, अभी का, नया, इदानींतन (मार्डन)।

आधुनिकाकरण—(पु०, सं०) नवीन बनाना, नवीकरण [मार्डनाइजेशन]।

आधूत—(वि०,सं०) ईषत्कंपित। चालित। व्याकुल। कंपित।

आधेआध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं० अर्धार्ध) आधे का आधा, चौथाई, आधा-आधा (वीप्सा)।

आधेक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्ध + एक] दो समान भागों में से एक, आधा।

आधेय—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी सहारे पर ठहरी हुई वस्तु। ठहरने योग्य। रखने के लायक। गिरो रखने योग्य।

आधोरण—(संज्ञा, पु०, सं०) हस्तिपक, महावत, हाथीवान, हाथी चलाने वाला।

आध्मात—(वि०, सं०) शब्दित। दग्ध, जला हुआ। (संज्ञा, पु०) बात रोग। युद्ध। संयत।

आध्मान्—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का वायु रोग, वायु से पेट फूलना।

आध्यात्मिक—(वि०. सं०) आत्मा-सम्बन्धी, ब्रह्म और जीव-सम्बन्धी, आत्माश्रित।—**स्वामी**-धर्माध्यक्ष [स्पिरिचुअल लार्ड]।

आध्यान—(संज्ञा, पु०, सं०) ध्यान या चिंता। स्मरण। दुर्भावना। अनुशोचन। उत्कंठा-पूर्वक स्मरण।

आध्वनीन—(संज्ञा, पु०, सं०) पथिक। पन्थ। पाथेय। मार्ग-व्यय।

आनंद—(संज्ञा, पु०, सं०) हर्ष, प्रसन्नता, खुशी। सुख, उल्लास। (यौ०) **आनंद-मंगल**—कुशल-क्षेम, मुदमंगल।—**कर**-(वि०, सं०) सुख कर, हर्ष-प्रद। [**आनन्दकारक, आनन्दकारी**। वि०, स्त्री० आनन्दकारिणी]।—**कानन**-(पु०) सुखदायक वन। काशीपुरी का नाम। "आनंदकाननेह्यस्मिन् तुलसीजंगमस्तरुः"।—**चित्त**-(वि०) प्रसन्न चित्त, हर्षोत्फुल्ल मन।—**जनक**-(वि०, यौ०) सुखप्रद। हर्षदायक।—**दायक**-(वि०) सुखदायक। हर्षप्रद।—**पट**-(पु०) नव-विवाहिता वधू का वस्त्र, नवोढा का कपड़ा।—**पूर्ण**-(वि०) सुखमय मोदमय, हर्षयुक्त।—**प्रभव**-(पु०) रेत वीर्य, शुक्र — **मत्ता**-(वि०) आनन्द-संमोहिता स्त्री।—**मय**-प्रसन्न।—**०कोष**-(पु०) पंचकोष के भीतर कोष विशेष। सत्व। प्रधान ज्ञान। कारण शरीर। सुषुप्ति। —**विभोर**-(वि०) आनन्द निमग्न। "दुमदल में आनन्द विभोर"-प्रसाद।—**शय्या**-(स्त्री०) नवोढा-शयन, नवनायिका की सेज।—**संमोहिता**-(स्त्री०) रति के आनन्द मे निमग्न होने पर मुग्धता या प्रसन्नता (मोह) को प्राप्त हुई प्रौढा नायिका।

आनंदगिरि—(संज्ञा, पु०, सं०) ईसवी ६वीं शताब्दी में एक प्रधान कवि और स्वामी शंकराचार्य के शिष्य थे, इन्होंने "शंकर दिग्विजय" नामक काव्य संस्कृत में रचा, गीता की टीका और कई उपनिषदों पर भाष्य लिखे।

आनंदना—(क्रि०, अ०, दे०) आनन्दित या प्रसन्न होना या करना। [**अनंदना** दे०]। "खरभर परी देव आनन्दे जीत्यो पहिलो रारि"—सूर।

आनंदवर्धन—(संज्ञा, पु०, सं०) सन् ८५५ से ८८० के बीच मे काश्मीर-नरेश अवन्ति वर्मा के राज्य-काल में थे, ये संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि एवं अलंकार-लेखक थे, इन्होंने काव्यालोक, ध्वन्यालोक और सुहृदया लोक नामक प्रमुख ग्रन्थ संस्कृत मे रचे।

आनंदार्णव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुख-सागर, हर्ष-समुद्र।

आनंदाश्रु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुख से उत्पन्न होने वाले आँसू, प्रमोदाश्रु।

आनंदि—(संज्ञा, पु०, सं०) आह्लाद, सुख, प्रमोद।

आनंदित—(वि०, सं०) हर्षित, सुखी, प्रसन्न।

आनंदी—(वि०, सं०) हर्षित, प्रसन्न, सुखी या मुदित रहने वाला। आनन्द देने वाला।

आन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आणि—मर्यादा, सीमा] मर्यादा। शपथ, सौगन्द, क़सम। विनय। घोषणा। दुहाई। ढंग, तर्ज़। क्षण, लमहा। शान। शर्म। दबाव। भय। "फिरी आन ऋतु बाजन बाजे"—जायसी। "देहौं मिलाय तुम्है हौं तिहारियै आन करौं वृषभानु लली सों"—रवि। "कोऊ मानत न आन है"—[सुन्दर०]। हठ, अकड़, ऐंठ, ठसक। अदब, लिहाज। प्रण, प्रतिज्ञा, टेक। **मुहा०—आन की—में**—शीघ्र ही, तत्काल, फ़ौरन, चटपट। (वि०, दे०) दूसरा, और। "आन भाँति जिय जनि कछु गुनहू"—[रामा०]। (क्रि०, अ०) [हि० आना] आकर, (आनि) लाकर। "आनि धरं प्रभु पास"—[रामा०]।

आनक—(संज्ञा, पु०, सं०) डंका, भेरी, दुन्दुभी। गरजता हुआ बादल।—**दुन्दुभी**—(पु०, यौ०) बड़ा नगाड़ा। कृष्ण के पिता वसुदेव जी। "बालक आनकदुन्दुभी के भयो बाजत दुन्दुभी आनके द्वार"।

आनत—(वि०, सं०) नम्रीभूत, विनम्र, विनीत, अवनत। [संज्ञा, पु० **आनतन**। क्रि०, स०, दे० लाता है, लाते हुए]।

आनतान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) असम्बद्ध बात, दूसरी दूसरी, और से और। (अव्य०) अन्य प्रकार। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० आन—दूसरी + तान—गाना] दूसरी तान या रागिनी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) टेक। मर्यादा।

आनद्ध — (वि०, सं०) कसा हुआ। मढ़ा हुआ। आवृत। जोड़ा हुआ। बद्ध। मिलित। (संज्ञा, पु०) चमड़े से ढका हुआ बाजा, जैसे ढोल, मृदंग, ताशा।

आनन—(संज्ञा, पु०, सं०) मुख, मुँह, चेहरा, मुखड़ा, वदन।

आनन-फ़ानन—(क्रि०, वि०, अ०) अति शीघ्र, तत्काल, फ़ौरन, झटपट।

आननाॐ—(क्रि०, सं०, दे०) लाना। "आनहु चर्म कहा वैदेही"—तुल०।

आनन्तर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पश्चाद्भाव, अनन्तर का भाव। शेष। नैकट्य, संनिकर्ष। व्यवधान से रहित होने का गुण।

आनन्त्य—(संज्ञा, पु०, सं०) असीमता, असंख्यता, अत्याधिक्य, अनन्त का भाव।

आनबान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सजधज, शान, ठसक, सजावट, शान शौकत:, धूम-धाम, ठाठबाट, तड़क-भड़क। अदा, हाव-भाव।

आनयन—(संज्ञा, पु०, सं०) लाना। उपनयन संस्कार। स्थानान्तर-नयन, आँखों तक।

आनर्त—(संज्ञा, पु०, सं०) द्वारका, आनर्त देश का निवासी। नृत्यशाला, नाच-घर। युद्ध।

आनर्तक—(वि०, सं०) नाचने वाला। [स्त्री० **आनर्तकी**]।

आनर्तित—(वि०, सं०) कम्पित। नृत्य विशिष्ट। नाचा हुआ।

आनबी—(क्रि०, सं०, विधि दे०) लाइयो, लेआओ, लाओ, लाना। [दे० प्रेरणा० **आनहु**—लाओ]।

आना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आणक] एक रुपये का सोलहवां भाग, सोलहवां हिस्सा (किसी वस्तु का), चार पैसा। (क्रि०, अ०, दे०) [सं० आगमन] आगमन करना। वक्ता के स्थान की ओर चलना या उस पर प्राप्त होना, पहुँचना, उपस्थित होना। जाकर लौटना। समय प्रारम्भ होना। फलना। फूलना। फल-फूल लगना। किसी भाव का उत्पन्न होना (जैसे दया आना), ठीक होना। समाना। दाम पर मिलना। **मुहा०—आए दिन**—प्रति दिन, रोज-रोज। **आता-जाता**—आने जाने वाला। पथिक, बटोही। **—जाना**—आवागमन, आमदरफ़्त। **आ धमकना**—एक बारगी आ पहुंचना। **आ पड़ना**—सहसा आ गिरना, एक बारगी गिरना या होना। आक्रमण करना। घटित होना (अनिष्ट बात का)। टूट पड़ना। **आया-गया**—अतिथि, अभ्यागत, मेहमान। समाप्त हुआ। **आ रहना**—गिर पड़ना। **आ लेना**—पास पहुँच जाना, पकड़ लेना। आक्रमण करना,

टूट पड़ना। **आ बनना**—(किसी की) लाभ का अच्छा अवसर आना। **किसी को कुछ आना**—किसी को कुछ ज्ञान होना। **किसी वस्तु में**—समाना, अटना। जमकर बैठना। पूरा पड़ना। **आई-गई**—समाप्त हो जाना, बीत जाना। भूल जाना। **आइब जाब**—(दे०) आना-जाना, आइबो-जाइबो, ऐबो-जैबो, आउब-जाब। **आवत-जात**—आते-जाते।

आनाकानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अना-कर्णन] सुनी-अनसुनी करना, न ध्यान देना, टाल मटूल, हीला-हवाला। काना-फूसी। आगा-पीछा।

आनाह—(संज्ञा, पु०, सं०) मल-मूत्र रुकने से पेट फूलना।

आनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आन, शपथ। मार्यादा। (पूर्व० का० क्रि०, दे०) लाकर, ले आ कर, "आनि धरे प्रभु पास"—[रामा०]।

आनिहौं—(क्रि०, सं०, भा०, का०, दे०) लाऊँगा।

आनीजानी—(वि०, स्त्री०, दे०) आने-जाने वाली, अस्थिर।

आनीत—(वि०) [सं० आ+नी+क्त]

आनुकूल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुकूलता। सहायता, कृपा।

आनुगतिक—(वि०, सं०) अनुचर या अनुयायी से सम्बन्ध रखनेवाला।

आनुतोषिक—(संज्ञा, पु०, सं०) वह धन जो किसी की प्रसन्नता या संतोष के लिए दिया जाय। [ग्रेचुइटी]

आनुपातिक—(वि०, सं०) अनुपात या सामंजस्य की दृष्टि से उचित [प्रोपोरशनल]।

आनुपूर्व—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रमिक, अनुक्रम, क्रमागत। पर्याय। ढब।

अनुपूर्वी—(वि०, सं०) क्रमानुसार, एक के बाद दूसरा, क्रमानुगत, अनुक्रम, आनुपूर्वीय (सं०)।

आनुमानिक—(वि०, सं०) अनुमान सम्बन्धी, काल्पनिक।

आनुवंशिक—(वि०, सं०) जो किसी वंश में बराबर होता आया हो, वंशानुक्रमिक, वंशपरम्परागत। [हेरिडिटरी]।

आनुश्राविक—(वि०, सं०) परम्परा से सुना हुआ, जिसे बराबर सुनते चले आये हों।

आनुषंगिक—(वि०, सं०) जिसका साधन किसी दूसरे प्रधान कार्य के करते समय थोड़े प्रयास से ही हो जाये। गौण, अप्रधान, प्रासंगिक, प्रसंगाधीन। आनुसंगिक [इन्सिडण्टल]।—**विषय**—नैमित्तिक विषय [इन्सिडण्टल मैटर]।

आनृशंस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अनिष्ठुरता, दया। स्नेह।

आन्वीक्षिकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आत्मविद्या, तर्क विद्या, न्याय।

आनेता—(संज्ञा, पु०, सं०) आनयनकर्ता, आहरणकर्ता।

आन्न—(क्रि०, स०) [दे० आनना] ले जाना, आनना।

आप—(सर्व, दे०) [सं० आत्मन्] स्व, खुद (तीनों पुरुषों में)। (यौ०)—**काज**—अपना काम, जैसे "आपकाज महाकाज"।—**काजी**—(वि०) स्वार्थी, मतलबी।—**बीती**—अपने ऊपर घटी हुई घटना।—**रूप**—स्वयं, आप।—**मुहा०**—**की पड़ना**—अपनी-अपनी लगाना, अपने-अपने काम या स्वार्थ मे लगना, अपनी-अपनी रक्षा या लाभ का ध्यान रहना।—**को**—अलग-अलग न्यारे-न्यारे। —**को जानना**—अपनी आत्मा का ज्ञान होना, अपने गुण कर्मादि का बोध होना।—**को भूलना**—किसी मनोवेग के कारण बेसुध हो जाना, मदांध होना, घमंड मे चूर होना, अज्ञानता मे रहना।—**से**—स्वयं, खुद, स्वतः आप ही।—**से**—स्वयंमेव, खुद, अकारण।—**ही**—**(आप ही)**—बिना किसी और को प्रेरणा के, आप से आप, स्वगत, मन ही मन मे, किसी को संबोधित न करके। अकारण। सर्व० तुम और वे के स्थान में आदरार्थक प्रयोग। (व्यंग्य में) छोटे के लिए, तू के स्थान पर। ईश्वर, भगवान। "जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।"—कबीर०। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आप—जल] पानी, वारि।

आपगा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी, सरिता। "शैलापगा शीघ्रतरं वहन्ति"—बाल्मी०।

आपगोपम—(वि०,सं०) नदी से जिसकी उपमा दी जा सके। "अबाधिता पावस आपगोपमा"—हरिऔध।

आपज्जनक—(वि०, यौ०,सं०) विपत्तिजनक। अनिष्ट-कारक, आपत्तिकारी।

आपण—(संज्ञा, पु०, सं०) पण्य, विक्रय-शाला, दूकान। हाट, बाजार।

आपणिक—(संज्ञा, पु०, सं०) वणिक, व्यवसायी, दूकानदार।

आपत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आपत्ति, विपत्ति।

आपत्काल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विपत्ति। दुर्दिन, दुष्काल, कुसमय [दे० **आपतकाल**]। "आपतकाल परखिये चारी"।

आपत्ति—(संज्ञा,स्त्री०, सं०) दुःख, क्लेश, विपत्ति। संकट विघ्न, बाधा। आफत, कष्ट-काल। जीविका-कष्ट। कठिनाई, दोषारोपण। उज्र, एतराज।

आपद—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विपत्ति, आपत्ति, दुःख, कष्ट, विघ्न। (वि०, यौ०, सं०) आपदग्रस्त आपत्ति में फसा हुआ।—**स्थल**—खतरे का स्थान [डेन्जर जोन]।

आपदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुःख, विपत्ति, क्लेश, आफत, कष्ट-काल।

आपद्धर्म—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) केवल आपत्काल के ही लिये जिसका विधान हो, ऐसा धर्म या कर्तव्य विशेष, किसी वर्ण के व्यक्ति के लिये वह व्यवसाय या काम जिसकी आज्ञा और कोई जीवनोपाय के न होने पर ही हो—जैसे ब्राह्मण के लिये वाणिज्य (स्मृति०)।

आपन, आपनाछ—(सर्व०, दे०) [हि० अपना] अपना। आप। आत्मा। [ब्र० भा० **आपुनो, अपुनो, आपुन**]।—(संज्ञा, पु०, दे०) आत्मा, जीव, ब्रह्म। [स्त्री० **आपनी**]। "आपुन खात नंद-मुख नावै"—[रामा०]। "एहिते जानहु मोर हित, कै आपन बड़ काज"—।—**पो,—पौ**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० अपना+पराया] अपनपौ, आत्मभाव, अपना पराया, सुध।

आपनिक—(संज्ञा, पु०, दे०) पन्नग, पन्ना, मरकत। इन्द्र। नीलमणि। देशविशेष।

आपन्न—(वि०, सं०) आपद्ग्रस्त। दुखी। प्राप्त, जैसे सकटापन्न। "प्रायः समापन्न विपत्ति-काले"—हितो०।—**सत्वा**-(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भवती, गर्भिणी।—**नाश**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आपत्ति-नाश, विपत्ति-विनाश, क्लेशान्त।

आपमित्यक—(संज्ञा, पु०, सं०) विनियम-प्राप्त, बदला किया हुआ। ग्रहीत द्रव्य।

आपयाछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आपगा] नदी, सरिता।

आप रूप—(वि०) [हि० आप+रूप सं०] अपने रूप से युक्त, मूर्तिमान, साक्षात (महापुरुषों के लिए) आप, ईश्वर। सर्व० साक्षात आप, आप, महापुरुष, हजरत (व्यंग्य)।

आपस—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० आप+से] सम्बन्ध, नाता, भाई-चारा (जैसे आपस के लोग) एक दूसरे का साथ, पारस्परिक का सम्बन्ध (केवल सम्बन्ध और अधिकरण कारकों में) परस्पर, निज। [वि० **आपसाना**]। **मुहा०—का**—इष्टमित्र या भाई बंधु के बीच का, परस्परिक, एक दूसरे का, परस्पर का।—**दारी**—परस्पर का व्यवहार, भाई-चारा।—**में**—परस्पर, एक दूसरे के साथ।

आपसा—(संज्ञा, पु०, दे०) आप के समान, आप जैसा।

आपसी—(वि०) [हि० आपस] निजी, सगे, घरेलू, अपने।

आपस्तंब—(संज्ञा, पु०, सं०) कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक ऋषि, आपस्तम्ब शाखा के कल्प सूत्रकार जिनके रचे हुए तीन सूत्र-ग्रन्थ हैं, एक स्मृतिकार।

आपस्तंबीय—(वि०, सं०) आपस्तम्ब-सम्बन्धी, आपस्तम्बक।

आपा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० आप] अपनी सत्ता, अस्तित्व, अपनी असलियत। अहंकार, घमंड, गर्व। होश-हवास, सुधि-बुधि। "आपा मारे गुरु भजे, तब पावे करतार"—कबीर०। "ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय"—कबीर। **मुहा०—खोना**—अहंकार छोड़ना, नम्र होना। मर्यादा नष्ट करना। अपना गौरव छोड़ना, अपनी सत्ता का अभिमान हटाना।—**जाना**-अपना अस्तित्व या मर्यादा का नष्ट होना।—**तजना (छोड़ना)** अपनी सत्ता को छोड़ना, आत्मभाव का त्याग, घमंड हटाना, निरभिमान होना, प्राण छोड़ना।—**भूलना**—अपने अस्तित्व या अपनी असलियत को भूल जाना।—(**पे**) **में आना**—होश में आना, होश-हवास में होना, चेत करना।—(**पे**) **में न रहना**—बेकाबू होना, अपने ऊपर अपना वश न रखना, घबराना, बदहवास होना, अत्यन्त क्रोध में आ जाना।—(**पे**) **में रहना**—अपनी मर्यादा के अन्दर रहना, अपने को अपने वश या काबू में रखना।—**रखना**-अपने अस्तित्व को रक्षित रखना, अपनी मान-मर्यादा या आत्म-गौरव बनाये रखना। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० आप] बड़ी बहिन (मुसल०)।—(**पे**) **से बाहर होना**-क्रोध तथा हर्षादि मनोवेगों के आवेश में होश-हवास खो देना, सुधि-बुधि न रखना, क्षुब्ध होना, घबराना, उद्विग्न होना। अपनी मर्यादा से बाहर चला जाना।

आपाक—(संज्ञा, पु०, दे०) आँवा, पजावा, कुम्हारों के मिट्टी के बरतनों के पकाने का स्थान।

आपात—(संज्ञा, पु०, सं०) गिराव, पतन। किसी घटना या बात का अकस्मात ही हो जाना। आरम्भ। अंत।

आपाततः—(क्रि०,वि०, सं०) अकस्मात, अचानक। अंत का, आखिरकार, निदान, अंततः। सम्प्रति। काम चलाने के लिये। अन्ततोगत्वा।

आपातलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार का छंद।

आपाद—(अव्य०, सं०) चरण से।—**पर्यंत**—(अव्य०, सं०) चरणों से मस्तक पर्यंत, पैर से लेकर सिर तक, सिर से पैर तक।—**मस्तक**—(संज्ञा, पु० सं०) सिर से पैर तक।

आपाधापी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० आप+धाप] अपनी-अपनी चिन्ता, अपनी-अपनी धुन, खींचतान, लाग-डाट, खेंचातानी।

आपान—(संज्ञा, पु०, सं०) मद्यपानार्थं गोष्ठी, मतवालों का झुंड। मद्यप। मदोन्मत्त।

आपापंथी—(वि०) [हिं० आप + पंथिन् सं०] मनमाने मार्ग पर चलने वाला, कुमार्गी, कुपंथी।

आपामरसाधारण—(अव्य०, यौ०, सं०) अन्य मनुष्यों से लेकर सभी मनुष्य, सर्वसाधारण, सब छोटे-बड़े, राव रंक।

आपिंजर—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ण, हेम, कनक, कंचन, सोना।

आपी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आप्य] पूर्वाषाढ़ नक्षत्र। (सर्व०, दे०) [हिं० आप ही] आप ही, स्वतः, स्वयमेव।

आपीड़—(संज्ञा, पु०, सं०) सिर पर पहिनने की चीज, जैसे पगड़ी, सिरपेंच। शेखर। शिरोमाला। शिरोभूषण। मुकुट। कलँगी। एक प्रकार का विषम वृत्त (पिंग०)।

आपीन—(संज्ञा, पु०, सं०) गोस्तन। ईषत् स्थूल, कठोर। मोटा। बड़ा। "आपीनभारोद्वहन प्रयत्नात्" —रघु०।

आपु*—(सर्व०, दे०) [हिं० आप] आप, स्वयम्। "आपु आपु कहँ सब भलो"—तुल०।

आपुनऽ*—(सर्व०, दे०) [हिं० अपना] अपना, आप, आपुनो (ब्र०)।

आपुस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० आपस] आपस, परस्पर।

आपूरण—(वि०, सं०) भरा हुआ, पूर्ण, भरा-पूरा।

आपूरना*—(क्रि० अ० दे०) [सं० आपूरण] भरना, परिपूर्ण करना। (संज्ञा, पु०) आपूरन।

आपूरित—(वि०, सं०) परिपूर्ण, भरा हुआ। संतुष्ट।

आपूरिता—(वि०, सं०) पूर्णयुक्त। "नाना-भाव विभाव हाव-कुशला आमोद आपूरिता"।—हरिऔध।

आपूर्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ईषत् पूर्ण, सम्यक् पूरण। पूर्ति तक, समाप्ति तक।

आपृच्छा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आभाषण, आलाप। जिज्ञासा, प्रश्न।

आपेक्षिक—(वि०, सं०) सापेक्ष, अपेक्षा रखने वाला, दूसरी वस्तु के सहारे पर रहने वाला, निर्भर रहने वाला [रिलेटिव]।

आपेक्षित—(वि०, सं०) जिसकी अपेक्षा या परवाह की जाये, इष्ट, अभीष्ट [विलोम—**उपेक्षित**]।

आपोक्लिम—(संज्ञा, नं०, सं०) कुंडली में ३, ६, ९, १२ घरों का नाम।

आपोशन—(संज्ञा, पु०, दे०) भोजन के पूर्व का आचमन।

आप्त—(वि०, सं०) प्राप्त, लब्ध (**यौगिक में**)—कुशल, दक्ष, किसी विषय को ठीक तरह से जानने वाला, साक्षात्कृतधर्मा। प्रामाणिक। पूर्ण तत्वज्ञ या मर्मज्ञ का कहा हुआ। विश्वस्त। सत्य। बंधु। अभ्रान्त, विश्वसनीय। (संज्ञा, पु० सं०) ऋषि, शब्दप्रमाण, भाग का लब्ध।—**काम**—(वि०, सं०) जिसकी समस्त कामनाएँ पूरी हो गई हों, पूर्ण काम।—**कारी**—(वि०, सं०) प्राप्त करने वाला, विश्वस्त।—**गर्व**—(वि०) आत्माहंकार, दम्भ।—**ग्राही**—(पु०) स्वार्थपर, आत्मम्भरि, लोभी, लालची।—**प्रमाण**—(पु०) आर्ष प्रमाण, शब्द-प्रमाण।—**वर्ग**—(संज्ञा, पु०) आत्मीयजन, स्वजन, बंधु-बांधव। माननीय मित्र।—**वाक्य**—(पु०) आर्ष वाक्य, किसी विषय के मर्मज्ञ का कथन।—**सार**—(पु०) आत्म-रक्षण, स्व-शरीर-गोपन, स्वायत्त।

आप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्राप्ति, लाभ।

आप्तोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सिद्धान्त वाक्य, आप्तवचन, विश्वस्त व्यक्ति का कथन।

आप्यायन—(संज्ञा, पु०, सं०) तृप्ति। वृद्धि। संतोष। जीवित। जगाना। रूपान्तर।

आप्यायित—(वि०) [सं० आ+प्याय+क्त] तृप्त। प्रीत। संतुष्ट। आनंदित। तर। वृद्धि, वर्धन। तर्पित, एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त, मृत धातु को जमाना या जीवित करना, दूसरे रूप मे बदला हुआ।

आप्रच्छन—(संज्ञा, पु०, सं०) आते-जाते समय मित्रों में परस्पर कुशल-प्रश्न-जनित आनन्द, कुशल-प्रश्नोत्तर। [वि० **आप्रच्छित**]।

आप्लव—(संज्ञा, पु०, सं०) स्नान, अवगाहन, जल मय, डूबा हुआ जल-निमग्न।—**व्रती**—(पु०)

स्नातक ब्राह्मण, आप्लुतव्रती, स्नान का व्रत रखने वाला।

आप्लावन—(संज्ञा, पु०, सं०) डुबाना, बोरना।

आप्लावित—(वि०, सं०) डुबोया हुआ, जलमग्न।

आप्लुत—(संज्ञा, पु०, सं०) स्नान, नहाना। स्नातक। (वि०) कृतस्नान, विहितावगाहन, सिक्त, भीगा, डूबा, जलमग्न, गीला।—**व्रती**-(पु०) ब्रह्मचर्य पूर्ण कर गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट होने वाला, समाप्त वेदाध्ययन, स्नातक। स्नान। शील।

आफ़त—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आपत्ति, विपत्ति, ऊधम। कष्ट, दुःख, मुसीबत, बला। काल। **मुहा०**—**उठाना**—दुःख सहना, विपत्ति भोगना। ऊधम मचाना, हलचल मचाना।—**उठना**—गड़बड़ी मचना, विपत्ति का पैदा हो जाना, मुसीबत आ जाना।—**करना**—शरारत या ऊधम करना, हलचल मचाना।—**का परकाला**—(वि०, यौ०, फ़ा०) किसी काम को तेज़ी या फुर्ती से करने वाला। पटु, कुशल, दक्ष। घोर उद्योगी, आकाश-पाताल एक करने वाला। हलचल मचाने वाला, उपद्रवी, ऊधमी।—**खड़ी करना**—विपत्ति उपस्थित करना, मुसीबत का पैदा करना, कठिनाई उत्पन्न करना।—**खड़ी होना**—मुसीबत आना, कठिनाई का सामने उपस्थित होना।—**गिरना**—अकस्मात् विपत्ति का आ पड़ना।—**झेलना**—मुसीबत उठाना और दुख सहना, कठिनाई को पार करना।—**डालना**—जल्दी करना, उतावली करना, जल्दियाना। (दे०) पवड़ाना।—**ढाना**—ऊधम, उपद्रव या हलचल मचाना, गड़बड़ी करना, दुख देना, कष्ट या तकलीफ़ पहुँचाना, अनहोनी बात कहना।—**पड़ना**—उतावली या जल्दी होना, विपत्ति पड़ना।—**मचना**—दंगा या झगड़ा होना। उतावली होना, गुलशोर होना। ऊधम होना।—**मचाना**—ऊधम मचाना, दंगा करना, गुल-गपाड़ा करना। जल्दी मचाना, उतावली करना। हलचल मचाना।—**मोल लेना (अपने सिर)**—अपने ऊपर या अपने मत्थे व्यर्थ के लिए बखेड़ा उठाना, झंझट करना, विपत्ति का उपस्थित करना, झमेला बढ़ाना, उपद्रव पैदा करना, कठिनाई उठाना।—**लाना**—विपत्ति का उपस्थित करना, बखेड़ा खड़ा करना, झंझट पैदा करना।

आफताब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सूर्य, सूरज (दे०)। "आवै दिव्य दाम अभिराम आफताब आब"।—'सरस'।

आफ़ताबा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हाथ-मुँह धुलाने का एक प्रकार का गेडुआ।

आफताबी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पान के आकार का पंखा जिस पर सूर्य का चिह्न बना रहता है और जो राजाओं या बरात के साथ चलता है। एक प्रकार की आतिशबाजी। दरवाजे या खिड़की के सामने का छोटा सायबान, या ओसारी। (वि०) आफताब के समान चमकीला, कांतिमान। पीतवर्ण का। गोलाकार, सूर्य-सम्बन्धी।—**गुलकन्द**-(यौ०) धूप में तैयार किया हुआ गुलकंद।

आफरी—(अव्य०, फ़ा०) शाबास, वाहवाह।

आफू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० अफीम, भि० मरा० अफू] अफ़यून, अफीम, अमल, अहिफेन।

आब—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चमक, तड़क-भड़क। आभा, कांति। पानी। शोभा, रौनक, लावण्य, छबि। प्रतिष्ठा, उत्कर्ष। (संज्ञा, पु०) पानी, जल। **लो०—आब आब कर मर गये सिरहाने रक्खा पानी।** **मुहा०—आना**—रौनक या छबि आ जाना।—**उठना**—जीविका न रहना, रहने का संयोग न रहना।—**उतरना**—पानी या कान्ति का फीका पड़ना, शोभा या छबि का न रहना, रौनक या चमक का मलीन हो जाना।—**उतारना**—प्रतिष्ठा या उत्कर्ष का नष्ट करना, अनादृत करना।—**कारी**—(संज्ञा, स्त्री०) जहाँ शराब चुआई या बेची जाती है, हौली। शराबखाना, मयखाना, कलवरिया, भट्टी। मादक वस्तुओं से सम्बन्ध रखने वाला एक सरकारी विभाग या मुहकमा।—**के हाथ होना**—जीविका के वश में होना, रहने के संयोग के वश में होना।—**खोरा**—(पु०) पानी पीने का बरतन, गिलास, कटोरा, प्याला।—**चढ़ाना**—कलई करना, पानी चढ़ाना, उत्साह देना, उत्तेजित करना, रंग चढ़ाना, मुलम्मा करना।—**जाना**—शोभा या (कान्ति, पानी) का नष्ट होना, प्रतिष्ठा न रहना।—**जोश**—(पु०) गरम पानी में उबाला हुआ मुनक्का।—**ताब**—(स्त्री०) तड़क, भड़क, चमक-दमक। द्युति, कांति।—**दस्त**—(पु०) मल-त्याग के पश्चात् गुदेंद्रिय को जल से धोना, सौंचना, पानी छूना। सौचा, जलस्पर्श करना।—**दाना**—(पु०) अन्न-पानी, दाना-पानी, अन्न-जल। जीविका, रहने का संयोग।—**दार**—(वि०) चमकीला, कांतिमान, द्युतिमान। (संज्ञा, पु०) पुरानी तोपों में सुम्बा और पानी का पुचारा देने वाला आदमी।—**दारी**—(संज्ञा, स्त्री०) चमक, कांति। शोभा,

छवि ।—**पाशी**—(स्त्री०, फ़ा०) सिचाई ।—**बदा होना**—जहाँ के रहने या पहुँचने का संयोग होता है। जहाँ जाना ही पड़े ।—**रखना**—शोभा या कांति रखना, पानी रखना, लज्जा रखना, प्रतिष्ठा या मर्यादा रखना। आत्मसम्मान बनाये रखना। शील रखना ।—**रूठना**—जीविका न रह जाना, रहने का संयोग टल जाना ।—**लाना**—रौनक या शोभा बढ़ाना। छबि-छटा पैदा करना। कांति आना, युवावस्था को प्राप्त होना ।—**हवा**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, फ़ा०) सरदी-गरमी, स्वास्थ्य आदि के विचार से किसी देश की प्राकृतिक स्थिति या दशा, जलवायु।

आबद्ध—(वि०, सं०) बँधा हुआ, कैद, बंदी। सीमित। [यौ०—**आबद्धांजलि** बद्धांजलि, हाथ जोड़ कर]।

आबनूस—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक जंगली वृक्ष जिसके भीतर की लकड़ी बहुत काली होती है। **मुहा०—का कुन्दा**—अति कृष्णवर्ण का मनुष्य।

आबनूसी—(वि०, फ़ा०) आबनूस का सा रंग, गहरा काला। आबनूस का बना हुआ।

आबरवाँ—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) एक प्रकार की बहुत महीन मलमल।

आबरू—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) इज्जत, प्रतिष्ठा, मान, बड़ाई, बड़प्पन। **मुहा०—उतारना (लेना)**—बेइज्जती करना ।—**के लिए (पीछे) मरना**—मान और प्रतिष्ठा के हेतु सर्वस्व त्यागना, एवं बहुत प्रयत्न करना ।—**जाना**—इज्जत जाना, अप्रतिष्ठा होना ।—**रखना या बनाना**—मान-प्रतिष्ठा को घटने न देना, इनका बढ़ाना या उपार्जन करना।

आबला—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) छाला, फफोला फुटका।

आबाद—(वि०, फ़ा०) बसा हुआ। प्रसन्न, कुशल-पूर्वक। उपजाऊ, जोतने-बोने योग्य (भूमि)। "उनको इससे क्या गरज आबाद हूँ बरबाद हूँ"—नूह ।—**कार**—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जंगल काट कर आबाद होने वाले काश्तकार।

आबादानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) देखो "आबदानी"।

आबादी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बस्ती, जनसंख्या, मर्दुमशुमारी। खेती की भूमि। जन-स्थान। कुशलता। गाँव।

आबिद—(संज्ञा, पु०, अ०) पूजा करने वाला, उपासक।

आबी—(वि०, फ़ा०) पानी-सम्बन्धी, पानी का, पानी में रहने वाला। हलके रंग का, फीका। पानी के रंग का। हलका नीला या आसमानी। जलतट-वासी। (संज्ञा, पु०) समुद्र-लवण, साँभर नमक। (संज्ञा, स्त्री०) किसी प्रकार की खेती की भूमि जिसमें आबपाशी होती हो। (विलोम—**खाकी**)।

आबेहयात—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अमृत।

आब्दिक—(वि०, सं०) वार्षिक, सालाना।

आभ—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शोभा, कांति। पानी। छबि। (संज्ञा, पु०, सं०) पानी। आकाश। "अति प्रिय जिसको है वस्त्र पीताभ शोभी"—हरिऔध।

आभरण—(संज्ञा, पु०, सं०) गहना, आभूषण, जेवर, अलंकार, भूषण—ये मुख्यतः १२ हैं :—नूपुर, किंकिणी, चूड़ी, अँगूठी, कंकण, बिजायठ, हार, कंठश्री, बेसर, बिरिया, टीका, सीसफूल। पोषण, परवरिश ,पालन, पालन-पोषण।

आभरनछ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आभरण] भूषण, जेवर, गहना।

आभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चमक-दमक, कांति, दीप्ति, झलक। प्रतिबिम्ब, छाया। द्युति, ज्योति, प्रकाश, आलोक, प्रभा।

आभाग—(संज्ञा, पु०, सं०) रूप में कोई कसर न रहना, किसी वस्तु को लक्षित कराने वाली अथवा उसका परिचय देने वाली। सब बातों की विद्यमानता, पूर्ण लक्षण। किसी पद्य के बीच में कवि के नाम का उल्लेख।

आभार—(संज्ञा, पु०, सं०) बोझ। गृहस्थी का भार, गृह-प्रबन्ध की देख-भाल का उत्तर-दायित्व या जिम्मेदारी। एहसान। उपकार। एक प्रकार का वर्णिक वृत्त।

आभारी—(वि०, सं०) उपकार मानने वाला, उपकृत। **मुहा०—होना**—कृतज्ञ या उपकृत होना, एहसानमंद होना। ऋणी होना।

आभाष—(संज्ञा, पु०, सं०) भूमिका। अनुष्ठान। उपक्रमणिका, प्रबन्ध, सम्भाष।

आभाषण—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+भाष+अनट्] आलापन, कथन, संभाषण, बातचीत, वार्तालाप। [वि० **आभाषित, आभाषणीय**]।

आभास—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिबिम्ब, छाया, झलक। पता। संकेत। मिथ्या ज्ञान (जैसे रस्सी में सर्प का), जो ठीक या असल न हो, जिसमें सत्य की कुछ झलक मात्र हो, जैसे रसाभास। हेत्वाभास। दीप्ति-दोष। अभिप्राय। अवतरणिका।

आभासित—(वि०, सं०) झलकता हुआ प्रतिबिम्बित।

आभासीन—(वि०, सं०) [आभा+आसीन]

आभा से मंडित, दीप्तिमान । "चारु चित्रा सी आभासीन"—पंत ।

आभास्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) चौसठ संख्यकगण, देवता-विशेष ।

आभिचारक—(संज्ञा, पु०) [सं० + अभि + चर + एक] अभिचारकर्ता, हिंसाकर्म करनेवाला, हिंसक ।

आभिजात्य—(संज्ञा,पु०,सं०) वंश-सम्बन्धी शिष्टता न कौलीन्य, कुलीनता । सौन्दर्य । पांडित्य ।

आभिधानिक—(संज्ञा, पु०, सं०) कोशवेत्ता । अभिमुखकरण, सम्मुखीनत्व, सन्मुखता, सामना । (वि०) अभिधान-सन्बन्धी, कोश-सम्बन्धी ।

आभीर—(संज्ञा, पु०, सं०) अहीर, ग्वाला, गोप । एक देश विदेश । ११ मात्राओं का एक छंद । एक प्रकार का राग । यौ०—**पल्ली**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोपग्राम, गोष्ठ, घोष ।

आभीरी—(संज्ञा स्त्री०, सं०) एक संकररागिनी । अबीरी, प्राकृत भाषा का एक भेद विशेष । अहीरी । ग्वालिनी ।

आभूषण—(संज्ञा, पु०, सं०) गहना, जेवर, आभरण, अलंकार ।

आभूषणीय—(वि०) सजाने योग्य ।

आभूषन—(संज्ञा,पु०,दे०) आभूषण (सं०), गहना ।

आभूषित—(वि०, सं०) अलंकृत, सजा हुआ, सुसज्जित, सेवारा हुआ, कृतशृङ्गार ।

आभ्यंतर—(वि०,सं०) भीतरी, आन्तरिक, अंदरूनी । [इण्टर्नल]

आभ्यंतरिक—(वि०, सं०) भीतरी, अन्दर का ।

आभ्युदायिक—(वि०,सं०) आभ्युदय, आंगलिक । सम्पन्न, कल्याण-सम्बन्धी । सौभाग्यवान, शुभान्वित ।

आमंत्रण—(संज्ञा, पु०, सं०) बुलाना, आह्वान, निमंत्रण, न्योता, नेउता (दे०) । [इन्विटेशन]

आमंत्रणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सलाह, मशविरा ।

आमंत्रणीय—(वि०) निमंत्रित होने के योग्य ।

आमंत्रित—(वि०, सं०) बुलाया हुआ, निमंत्रित, न्योता हुआ, आहूत ।

आम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं०, आम्र] भारत का एक प्रधान रसीला मीठा, और परम स्वादिष्ट फल तथा उसका वृक्ष, रसाल । [**अम्बा, अमवा** । दे०] आमाशय रोग । [अम—यौगिक में जैसे—यौ० **अमचूर**—आम्रचूर्ण (सं०) ।—**खास (खास-आम)** राजा या बादशाह के बैठने का महलों के भीतर का हिस्सा, दरबार—वह राज-सभा जिसमें सब आदमी जा सकें । [**विलोम—दरबार खास**]

—**तौर से (पर)**—साधारणतः, साधारणतया । वि० (अ०) प्रसिद्ध, विख्यात (वस्तु या बात) ।

—**रस**—(सं०—आम्र + रस) **अमहर**] । (वि०, सं०) कच्चा, अपक्व, असिद्ध । (संज्ञा, पु०) खाये हुए अन्न के कच्चा रहने से अपचकृत सफेद और लसीला मल, आंव । आंव गिरने का रोग । वि० (अ०) साधारण, मामूली, जनसाधारण । जनता ।

लोको०—के गुठली के दाम—दो प्रकार का लाभ देने वाला कार्य ।—**खाना है या पेड़ गिनना**—अपने मुख्य उद्देश्य की सिद्धि से अभिप्राय है, या व्यर्थ का काम करने से ।

आमड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [पु० आम्रात] बड़े बेर के समान आम के से खट्टे फलों वाला एक वृक्ष विशेष । [**आमरा** दे०] ।

आमद—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अवाई, आना, आगमन । आय, आमदनी ।—**रफ़्त**—आना-जाना आवागमन ।

आमदनी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आय, प्राप्ति, आने वाला धन, अन्य देशों से अपने देश में आने वाली व्यापार की वस्तुयें [विलोम—**रफ़्तनी**] आयात ।

आमनाय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आम्नाय] अभ्यास । परम्परा ।

आमना-सामना—(क्रि०, वि०, दे०) [हि० सामना] मुकाबला, भेंट, समक्ष । सामने, मुलाकात ।

आमने सामने—(क्रि०, वि०, दे०) [हि० सामने] एक दूसरे के समक्ष या मुकाबिले में, सामने, सम्मुख ।

आमय—(संज्ञा, पु०, सं०) रोग, बीमारी, पीड़ा, व्याधि ।

आमयावी—(वि०, सं०) रोगी, पीड़ित ।

आमरक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) उदर-रोग, लाल मल निकलना और पीड़ा होना । अतिसार ।

आमरक्तातिसार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आंव और रक्त के साथ दस्त होने का रोग ।

आमरख*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आमर्ष] क्रोध ।

आमरखना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० आमर्ष] क्रुद्ध होना, दुःख-पूर्वक रोष करना ।

आमरखी—(वि०) क्रोध करने वाला ।

आमरण—(क्रि०, वि०, सं०) मरण काल पर्यंत, जिंदगी या जीवन-पर्यंत । [**आमरन** दे०] ।

आमरस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आम्र + रस] अमरस, अमावट । (**संज्ञा**, पु०,दे०) [सं० आमर्ष] क्रोध ।

आमर्दन—(संज्ञा, पु०, सं०) जोर से मलना। पीसना। रगड़ना। [वि० **आमर्दनीय**]।

आमर्दित—(वि०) कुचला हुआ। मला हुआ। पीसा हुआ। [स्त्री० **अमर्दिता**]।

आमर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रोध, गुस्सा, रोष। राग। असहनशीलता। एक प्रकार का संचारी भाव।

आमर्षित—(वि०) क्रोधित।

आमलक—(संज्ञा, पु०, सं०) आमला, आँवला। [**औंरा** दे० **अमरा** (दे०) **अँवरा** दे०] धात्री फल। [स्त्री० अल्प०—**आमलकी**]। [यौ० **हस्तामलकवत्**—हाथ मे आँवले के समान]।

आमलकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटी जाति का आँवला, आँवली।

आमला§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आमलक] आँवला। कार्तिक मास में इस वृक्ष की पूजा होती है और लोग इसके नीचे भोजन करते हैं।

आमवात—(संज्ञा, पु०, सं०) आँव गिरने का एक रोग, इसमें कभी-कभी शरीर सूज कर पीला भी हो जाता है। पित्त से उत्पन्न चर्म-रोग।

आमशूल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आँव के कारण पेट मे मरोड़ होने का रोग। वायुगोला, वायुशूल, उदर-पीड़ा।

आमातिसार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आँव के कारण अधिक दस्तों के होने का रोग विशेष।

आमात्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अमात्य, प्रधान मंत्री। पात्र।

आमादगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तैयारी, मुस्तैदी, तत्परता, सन्नद्धता।

आमादा—(वि०, फ़ा०) उद्यत, तत्पर, उतारू, तैयार, सन्नद्ध, कटिबद्ध।

आमान्न—(संज्ञा, पु०) [सं० आन+अद्+क्त] अपक्वान्न। तण्डुल। कच्चा अन्न।

आमाल—(संज्ञा, पु०, अ०) कर्म, करणी, करनी (दे०)।—**नामा**—(संज्ञा, पु० अ०) कर्माकर्म का लेखा। चरित्र-विवरण। वह रजिस्टर जिसमे नौकरो के चाल-चलन तथा उनकी योग्यता आदि का विशेष विवरण रहता है। **मु०—खराब करना**—रजिस्टर में किसी नौकर की बुराइयों को दर्ज करना।

आमाशय—(संज्ञा, पु०, सं०) पेट के अन्दर की वह थैली जिसमें भोजन किये हुए पदार्थ एकत्रित होते और पचते हैं, आमस्थली। अतिसार, आम रोग।

आमाहल्दी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आम्र+हरिद्रा] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ रंग में हल्दी के समान और महक में कचूर के समान होती है। [**आमाहरदी** दे०]।

आमिख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आमिष] गोश्त।

आमिल—(संज्ञा, पु०, अ०) काम करने वाला, अमल करने वाला, कर्तव्य परायण। अमला, कर्मचारी। हाकिम, अधिकारी। ओझा। सयाना। सिद्ध साधु, पहुंचा हुआ फकीर। (वि०) [सं० अम्ल] खट्टा, अम्ल। (वि०) [सं० आ+मिल] सब प्रकार मिला हुआ। "नवनागरि तन मुलक लहि, जोवन आमिल जोर"—विहारी।

आमिष—(संज्ञा, पु०, सं०) मांस, गोश्त। योग्य-वस्तु। लोभ, लालच। सम्भोग। घूस, रिश्वत। संचय। लाभ। काम के गुण। रूप। भोजन।—**प्रिय**—(वि०) जिसे मांस प्यारा हो, कंक और बाज़ नाम के पक्षी। हिंसक जंतु।—**भुक्**—(पु०) मांसाहारी, मांस-भक्षक, मांसाशी, गोश्तखोर।

आमिषाशी—(वि०) [सं० आमिषाशिन्] मांस-भक्षक, मांस खानवाला, मांसाहारी।

आमी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० आम] छोटा कच्चा आम। [**अंबिया, आमया** दे०]। एक पहाड़ी वृक्ष। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० आम—कच्चा] जौ और गेहूँ की भूनी हुई हरी या कच्ची बाल।

आमुख—(संज्ञा, पु०, सं०) नाटक की प्रस्तावना (नाट्य शास्त्र) [प्रिफेस]।

आमूल—(वि०, सं०) मूल पर्यंत। कारणावधि, पहिले से, आदितः, मूल से।—**सुधार**—जड़ से, मूल सुधार। [रैडिकल रिफार्म]।

आमेजना*—(क्रि०, स०, दे०) [फ़ा० आमेज] मिलाना, सानना। "आमेज सुगंध सेजैं तजो सुभ्र सीतरें"—देव।

आमेज़िश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मिलावट, मिश्रण।

आमोद—(संज्ञा, पु०, सं०) आनंद, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता। दिलबहलाव। तफ़रीह। सौरभ, गंध।—**कर**—जनरंजन करनेवाली संस्थाओं पर लगनेवाला टैक्स। [इंटरटेनमेण्ट टैक्स]—**प्रमोद**—(संज्ञा, पु०, सं०) भोग-विलास, हँसी-खुशी [इन्टरटेनमेण्ट]।—**यात्रा**—मन बहलाव के लिए की जाने वाली यात्रा। [ट्रिप]।

आमोदित—(वि०, सं०) प्रसन्न, खुश, हर्षित, जी बहला हुआ—**मुदित**—(दे०) प्रमुदित। सुगंधित।

आमोदी—(वि०, सं०) प्रसन्न रहनेवाला, खुश रहनेवाला। मुख को सुगंधित करने वाला।

आम्नाय—(संज्ञा, पु०, सं०) अभ्यास । परंपरा । वेद । निगम । उपदेश । प्राचीन परिपाटी । सम्प्रदाय-वेद-पाठ और अभ्यास । [यौ० **अक्षराम्नाय**—वर्णमालाभ्यास । **कुलाम्नाय**—वंश या कुल की परंपरा, कुल की रीति या परिपाटी] । "तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्" ।

आम्बर—(संज्ञा, पु०, दे०) कहरुवा, बनावटी मूँसा ।

आम्र—(संज्ञा, पु०, सं०) आम का पेड़ और फल । **—कूट**-(संज्ञा, पु०, सं०) अमरकंटक नाम का एक पर्वत जो दक्षिण (मध्यप्रान्त) में है ।

आम्राई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आम्र] आम का बाग । अमराई, अमरैया ।

आम्रेडन—(संज्ञा, पु०, सं०) पुनरुक्ति, द्विवार या त्रिवार कथन, एक ही बात को बार-बार कहना ।

आम्रेडित—(वि०, सं०) पुनरुक्ति किया हुआ, बारम्बार किया हुआ ।

आयँती-पाँयती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अंगस्थ +पायताना फ़ा०] सिरहाना-पायताना ।

आय—(संज्ञा, स्त्री०,सं०) आमदनी, आमद । लाभ, प्राप्ति, धनागम [इन्कम] । (क्रि०, अ०, आना) (पू० का० आइ) आकर, आके । (अव्य०) खेद या दुख-सूचक शब्द, [दे० हि०—हाय] "रे" के साथ **आयरे** (हायरे) ।**—कर**-आमदनी पर लगाया जाने वाला कर । [इनकम् टैक्स] ।**—कर-अधिकारी** आयकर पदाधिकारी । [इनकम टैक्स आफिसर]।**—कुल**-कुल आय ।**—कृषि**-कृषि आय ।**—राष्ट्रीय**-देश की आमदनी । [नेशनल इनकम्] ।**—व्यय**-आमदनी और खर्च ।**—व्ययक**-(पु०) आमदनी और खर्च का लेखा ।**—निरीक्षक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जमा-खर्च के हिसाब को जाँच करने वाला । [आडीटर] ।

आयत—(वि०, सं०) विस्तृत, लंबा-चौड़ा, दीर्घ, विशाल, बहुत बड़ा । (संज्ञा, स्त्री०, अ०) इंजील या कुरान का वाक्य । (संज्ञा, पु०, सं०) वह समानान्तर चतुर्भुज क्षेत्र जिसका एक कोण समकोण हो और लम्बाई, चौड़ाई की अपेक्षा अधिक हो । "पार्थोदगात सरोज मुख राजीव आयत लोचनम्"—[राम०] ।

आयतन—(संज्ञा, पु०, सं०) मकान, घर । मंदिर । ठहरने की जगह । देव-वंदना का स्थान । ज्ञान-संचार का स्थान । यज्ञ-स्थान । लम्बाई-चौड़ाई, विस्तार । [कैपेसिटी] ।

आयति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उत्तर काल, भविष्य-काल ।

आयत्त—(वि०, सं०) आधीन, परवश ।

आयत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अधीनता, वशता ।

आयद—(वि०, अ०) आरोपित, लगाया हुआ । घटित, घटता हुआ ।

आयदा—(वि०, सं०) आगन्तुक । आगामी, भविष्य ।

आयस—(संज्ञा, पु०, सं०) लोहा, लोहे का कवच ।

आयसी—(वि०, सं० आयसीय) लोहे का । (संज्ञा, पु०, सं०) कवच, जिरह-बख्तर ।

आयसु—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आदेश] आज्ञा, हुक्म, प्रेरणा । "सतानन्द तब आयसु दीन्हा"—[रामा०] ।

आया—(क्रि०, अ०) [हि० आना] आना का भूतकालिक रूप । (संज्ञा, स्त्री० पुर्त०) अंग्रेजों के बच्चों को दूध पिलाने तथा उनकी रक्षा करने वाली स्त्री, धाय, धात्री, उपमाता । (अव्य०, फ़ा०) क्या, कि, (व्रज० कैधों के समान) यथा—आया तुमने किया या नहीं ।

आयात—(संज्ञा, पु०, सं०) देश में बाहर से आया हुआ माल, आगत उपस्थित, आया हुआ ।**—कर्ता**-(पु०) विदेश से माल मँगाने वाला [इम्पोर्टर] ।**—पदार्थ**-(पु०) विदेश से आने वाला माल [इम्पोर्ट्स] ।**—वाणिज्य-नियामक**-(पु०) बाहर से आने वाली व्यापारिक वस्तुओं का नियंत्रक [इम्पोर्ट ट्रेड कण्ट्रोलर] ।

आयाम—(संज्ञा, पु०, सं०) लम्बाई, विस्तार । नियमन, नियमित रूप से करने की क्रिया, नियंत्रित करने का भाव, जैसे प्राणायाम ।

आयास—(संज्ञा,पु०, सं०) परिश्रम, मेहनत । श्रान्ति, श्रम । क्लेश । व्यायाम । प्रयास, यत्न ।**—प्रदर्शन** (पु०) प्रयास का प्रकटीकरण, उद्योग-विकास ।

आयासी—(वि०) परिश्रमी ।

आयु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वय, उम्र, जिन्दगी, अवस्था, जीवन-काल । **मुहा०—की रेख मिटाना**—मृत्यु का आह्वान करना, मृत्यु बुलाना, मरण की इच्छा करना । "आयु की की रेख मिटावति मानौ" —मति० ।**—खुटना**—आयु कम होना । "सो जानै जनु आयु खुटानी"—तुल० ।**—मताधिकार**-(पु०) वह आयु जिसे प्राप्त करने के बाद व्यक्ति मत देने का अधिकार प्राप्त कर लेता है [एज फार सफरेज] । **—सीमा**-(पु०, सं०) नौकरियों के लिए निश्चित की हुई उम्र जिससे छोटे या बड़े व्यक्ति उसे पाने के अधिकारी नहीं रहते [एज लिमिट] ।

आयुक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थानापन्न, कार्यवाहक [इन-चार्ज] । किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त [कमिश्नड] । **—अधिकारिक**-(पु०) नियुक्त

पदाधिकारी [आफिसर इन-चार्ज] ।—**सदस्य**–(पु०) कार्यवाहक या स्थानापन्न सदस्य [मेम्बर इन-चार्ज] ।

आयुदीय—(संज्ञा, पु०, दे०) अवस्था, उम्र, आयु ।

आयुध—(संज्ञा, पु०, सं०) हथियार, शस्त्र, अस्त्र (आर्म्स) ।—**विभाग**–(पु०) युद्ध-सामग्री का विभाग [आर्डनेंस डिपार्टमेंट] ।—**व्यवस्था**–(स्त्री०) हथियार विषयक कानून [आर्म्स ऐक्ट] ।—**शूर**–(पु०) हथियार प्रयोग मे दक्ष [मास्टर ऐट आर्म्स] ।

आयुधागार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अस्त्रागार, शस्त्रालय ।

आयुधिक—(वि०, सं०) अस्त्रजीवी । शस्त्रधारी ।

आयुधित वाणिज्यपोत—(पु०) शस्त्र सज्जित व्यापारी जहाज [आर्म्ड मर्चेंट मैन] ।

आयुधीय—(वि०, सं०) अस्त्रधारी, शस्त्राजीव ।

आयुर्बल—(संज्ञा, पु०, सं०) आयुष्य, उम्र, अवस्था ।

आयुर्वेद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आयु-सम्बन्धी शास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र, धन्वन्तरि-प्रणीत आयु-विद्या अथर्ववेद का उपवेद, वैद्यक विद्या, निदान शास्त्र, आयु-विज्ञान, वैद्य-विद्या ।

आयुर्वेदीय—(वि०, यौ०, सं०) आयुर्वेदज्ञ, चिकित्सक, वैद्य । आयुर्वेद सम्बन्धी ।

आयुष्कर—(वि०, सं०) परमायु-जनक, आयुवर्धक, दीर्घायु करने वाला ।

आयुष्काम—(वि०, सं०) दीर्घजीवनाभिलाषी परमायुप्रार्थी । दीर्घजीवी । चिरजीवनैषी ।

आयुष्टोम—(संज्ञा, पु०, सं०) आयु वृद्धि-कारक एक प्रकार का यज्ञ, चिरंजीवन-प्रद यज्ञ ।

आयुष्मान् — (वि०, सं०) दीर्घजीवी, दीर्घायु, ज्योतिष के २७ योगों में से तीसरा । [स्त्री० **आयुष्मती**—चिरजीविनी] ।

आयुष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) आयु, उम्र, अवस्था । (वि०, सं०) आयु का हितकारक, आयुवर्धक ।

आयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) नियुक्ति के सम्बन्ध में राज्य की ओर से बैठन वाले अधिकारियों का समूह [कमीशन] नियुक्ति ।

आयोगव—(संज्ञा, पु०, सं०) वैश्य स्त्री और शूद्र पुरुष से उत्पन्न एक संकर जाति । बढ़ई (स्मृति०) ।

आयोजन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी कार्य में लगना, नियुक्त । प्रबंध, इंतिजाम । तैयारी उद्योग, सामग्री, सामान । साज-सामान । [संज्ञा , स्त्री० , **आयोजना**] ।

आयोजित—(वि०, सं०) कृतोद्योग, नियुक्त किया हुआ । सुव्यवस्थित, विधानित ।

आयोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) युद्ध. रण, संग्राम, लड़ाई । युद्ध करना । [वि० **आयोधित**–कृत युद्ध । **आयोधनीय**—युद्ध के योग्य] ।

आरंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी कार्य को प्रथमावस्था का सम्पादन, अनुष्ठान । उत्थान उपक्रम, शुरू । किसी वस्तु का आदि । शुरू का हिस्सा । उत्पत्ति । आदि, श्रीगणेश, प्रारम्भ ।

आरंभना§*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० आरंभण] शुरू होना । (क्रि०, स०) आरम्भ करना, प्रारम्भ करना, शुरू करना । "अवध अरंभउ जबते"—[रामा०] ।

आरंभिक—(वि०, सं०) आरम्भ या शुरू का । पहले का । कोई कार्य करने से पहले व्यवस्था आदि से सम्बन्ध रखने वाला [प्रिलिमिनरी] ।

आर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का बिना साफ़ किया हुआ, निकृष्ट लोहा । पीतल । किनारा, कोना जैसे द्वादशार चक्र, पहिये का आरा । हरताल । काँटा । पैना अंकुश । मंगल । शनि । ताँबा । लोहार । चमार । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अल—डंक] साँटे या पैने में लगी हुई लोहे की पतली कील, अनी, पैनी, नरमुर्ग के पंजे के ऊपर का काँटा । बिच्छू । भिड़ (बर्रे) या मधुमक्खी का डंक । (संज्ञा,* स्त्री०, दे०) [सं० आरा] चमड़ा छेदने का सुआ या टेकुआ, सुतारी । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० अड़] जिद, हठ, टेक । "अँखियाँ करति है अति आर"—सूर० । (संज्ञा, पु०, अ०) तिरस्कार, घृणा, अदावत, शत्रुता । शर्म । बैर, लज्जा मे । "आर औ प्यार तौ रारि रचै चितचाह अरी अनुसारि न पावै"—रसाल ।

आरक्त—(वि०, सं०) लालिमा लिये हुए कुछ लाल । लाल, रक्त वर्ण का ।

आरक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रहरी, पहरेदार ।

आरक्षिक—(पु०, दे०) आरक्षक ।—**प्रशासन**–(पु०) पुलिस शासन [पोलिस एडमिनिस्ट्रेशन] ।

आरग्वध—(संज्ञा, पु०, सं०) अमिलतास ।

आरचा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मूर्ति, प्रतिमा । अर्चा, पूजा ।

आरज*—(वि०, दे०) [सं० आर्य] श्रेष्ठ, उत्तम, पूज्य । "टूटि गयो घर को सब बंधन छूटिगो आरज लाज बड़ाई"—रस० ।

आरजा—(संज्ञा, पु०, अ०) रोग, बीमारी, व्याधि । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आर्या] एक छंद विशेष ।

आरजू—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) इच्छा, वांछा। अनुनय, विनय, प्रार्थना, बिनती। "तजि आर जू आरजू मेरी सुनौ"—स०।

आरण्य—(वि०, सं०) जंगली, वन का, वन्य।

आरण्यक—(वि०, सं०) वन का, जंगली। (संज्ञा, पु०, सं०) वेदों की शाखा का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कृत्यों या कर्तव्यों का विवरण और उनके हेतु उपयुक्त उपदेश है। जैसे वृहदारण्यक उपनिषद्।

आरत*—(वि०, दे०) [सं० आर्त] पीड़ित, दुखी, व्याकुल, कातर। "आरत काह न करै कुकर्मा" "सुनतहि आरत-वचन प्रभु"—[रामा०]।

आरता—(संज्ञा, पु०, दे०) दूल्हे की आरती, विवाह की एक रस्म या रीति विशेष।

आरति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विरक्ति। निवृत्ति। दुख। "चंदहिं देखि करी अति आरति"—सूर०। "मो समान आरत नहिं आरतिहर तोसों"—तुल०।

आरती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आरात्रिक] किसी मूर्ति के चारो ओर सामन दीपक घुमाना, देवता को दीप दिखाना। दीप-दर्शन, नीराजन, (षोडशोपचार पूजन मे) वह पात्र जिसमें कपूर या घी की बत्ती रख कर आरती की जाती है, आरती के समय पढ़ा जाने वाला स्तवन या स्तोत्र।

आरन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आरण्य] जंगल, वन। "कीन्हेसि सावन आरन रहै"—जायसी।

आर-पार—(संज्ञा, पु०) [सं० आर—किनारा+पार—दूसरा किनारा] यह किनारा और वह किनारा, यह छोर और वह छोर, इधर-उधर। (क्रि०, वि०, सं०) एक किनारे या छोर से दूसरे किनारे या छोर तक, एक तल से दूसरे तल तक, जैसे आर-पार जाना, आर-पार छेद होना।

आरबल (आरबला)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आयुर्बल] आयु, अवस्था, उम्र।

आरब्ध—(वि०, सं०) उपक्रान्त, प्रारम्भ किया हुआ।

आरभटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्रोधादिक उग्र भावों की चेष्टा, नाटक मे एक वृत्ति का नाम, जिसमें यमक का प्रयोग अधिक होता है, और जिसका प्रयोग इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध, आघात, प्रतिघात, रौद्र, भयानक और वीभत्स आदि रसों में किया जाता है। "झूठो मन झूठी यह काया झूठी आरभटी"—सूर।

आरव—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द, आवाज, आहट। "घुरघुरात हय आरव पाये"—तु०।

आरषी*—(वि०, स्त्री०) [सं० आर्ष] आर्ष, ऋषियों की।

आरस*—(संज्ञा, पु०, दे०) आलस्य। "अति ही नींदर नैन उनीदे आरस रंग भर्यो है"—अ० अ०।

आरसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आदर्श] शीशा, दर्पण, आईना, शीशा जड़ा हुआ कटोरी के आकार का एक आभूषण जो अँगूठे में पहना जाता है (दाहिने हाथ में)। (वि०, दे०, आरस) आलसी, काहिल, अरसीला।

आरा—(संज्ञा, पु०, सं०) लोहा की दाँतीदार पटरी जिससे लकड़ी (रेतकर) चीरी जाती है। चमड़ा सीने का टेकुआ, सुतारी। सुजा। करौंत, दराँच, क्रकच। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आर] लकड़ी की चौड़ी पटरी, जो पहिये की गड़ारी और पुट्ठी के बीच में जड़ी रहती है, आला, ताक। [अरवा—दे०]। "आरे मनि खचित खरे"—केशव।

आराकस—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) आरा चलाने वाला, लकड़ी चीरने वाला। बढ़ई।

आराजी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) भूमि, जमीन, खेत।

आराति—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रु, बैरी, विपक्षी, रिपु, दुश्मन, विरोधी। [आराती दे०]। 'सुधि नहिं तव सिर पर आराती"—[रामा०]।

आरात्—(अव्य, सं०) दूर। निकट, समीप।

आरात्रिक—(संज्ञा, पु०, सं०) आरती, नीराजन, नीराजन-पात्र, आरति प्रदीप।

आराधक—(वि०, सं०) उपासक, पूजा करने वाला सेवक, पुजारी, अर्चक। [स्त्री०—आराधिका]।

आराधन—(संज्ञा, पु०, सं०) सेवा, पूजा, उपासना, तोषण, प्रसन्न करना।

आराधना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूजा, उपासना, सेवा। (क्रि०, सं०) [सं० आराधन] उपासना करना, पूजना, संतुष्ट करना, प्रसन्न करना।—**आराधनीय**-(वि०) आराधना के योग्य।

आराधित—(वि०, सं०) उपासित, सेवित, पूजित।

आराध्य—(वि०) [सं० आ+राध्+य] उपास्य, सेवनीय, सेव्य, पूज्य, आराधना के योग्य।—**मय**-(वि०, सं०) अपन आराध्य में निमग्न। "हो गयी आराध्यमय मैं"—महादेवी।

आराम—(संज्ञा, पु०, सं०) बाग, उपवन, वाटिका। "परम रम्य आराम यह, जो रामहिं सुख देत"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) चैन, चंगापन। सेहत, स्वास्थ्य। विश्राम। थकावट मिटाना। दम लेना। सुविधा, शांति।—**कुरसी**-(स्त्री०) [फ़ा०+अ०]

एक प्रकार की लम्बी कुरसी जिस पर लेट भी सकते हैं।—गाह-(पु०) आराम करने का स्थान, शयनागार, सोने की जगह।—तलब-(वि०) सुख चाहने वाला, सुकुमार। सुस्त, आलसी। मुहा०—करना—सोना, अच्छा करना।—में होना—सुख में होना, सोना।—लेना—विश्राम करना।—से—फ़ुरसत में, धीरे धीरे।—होना—चंगा या भला होना।

आरास्ता—(वि०, फ़ा०) सजा हुआ, अलंकृत।

आरि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० अड़] जिद, हठ। मर्यादा, सीमा। "कान्ह बलि जाऊँ ऐसी आरि न कीजै"—सू०। "उनइ आये साँवरे तेज सनी देखि रूप की आरि"—सू०।

आरिज—(संज्ञा, पु०, अ०) गाल, कपोल।

आरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बरसात में होने वाली एक प्रकार की ककड़ी। (वि०) जिद्दी, हठी, हठ करने वाला।

आरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० आरा का अल्प०] लकड़ी चीरने का एक औजार, छोटा आरा। बैलों के हाँकने के पैने की नोक पर लगाई जाने वाली लोहे की एक पतली नुकीली कील। जूता सीने की सुतारी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) और [सं० आर—किनारा] तरफ, कोर, छोर, अवठ। (वि०) [आरि—हिं०] हठी, जिद्दी।

आरुंधन—(संज्ञा, पु०, सं०) रूँधना, दबाना, श्वासावरोध। वेड़ा, घेरा।—आरुंधित-(वि०) रूँधा या घेरा हुआ। कंठावरोध। [वि० आरुंधक, आरुंधनीय]।

आरूढ—(वि०, सं०) चढ़ा हुआ, सवार। दृढ़, स्थिर, किसी बात पर जमा हुआ, सन्नद्ध, तत्पर, उतारू, कटिबद्ध, तैयार।—यौवना-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) मध्या नायिका के चार भेदों में से एक।

आरेस*—(संज्ञा, पु०, दे०) ईर्ष्या, डाह। "कबहुँ न करेहु सवति आरेसु"—[रामा०]।

आरो*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आरव] शब्द, आवाज।

आरोग—(वि०, दे०) [सं० आरोग्य] स्वास्थ्य, निरोग।

आरोगना*—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० आ+रोगना—रुज—हिंसा] भोजन करना, खाना। "नीके पुल आरोगे रघुपति पूरन भक्ति प्रकासी"—सूर।

आरोग्य—(वि०, सं०) रोग-रहित, स्वस्थ, रोगाभाव, अनामय, आराम, तंदुरुस्त।—आश्रम-(पु०, सं०) आरोग्यशाला, स्वास्थ्य-स्थान। (प्रायः तपेदिक के मरीजों के लिए) [सेनेटोरियम]।—पत्र-विज्ञान-(पु०, सं०) स्वास्थ्य विज्ञान। [हाइजीन]।

आरोधक—(वि०) रोकने वाला, घेरने वाला।

आरोधना*—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० आ+रूधन] रोकना, छेकना, आड़ना। [आरोधन—संज्ञा, पु०, सं० रोक, बाधा, आड़]।

आरोधनीय—(वि०) आरोधन-योग्य, घेरने लायक।

आरोधित—(वि०) रुँधा हुआ, घेरा हुआ, रोका हुआ।

आरोप—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थापित करना, लगाना, मढ़ना (जैसे—दोषारोप) किसी वृक्ष को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगाना या जमाना, रोपना, बैठाना। झूठी कल्पना। एक पदार्थ में दूसरे के धर्मादि की कल्पना करना। एक वस्तु में दूसरी वस्तु के लक्षणों या गुणों का मढ़ना (काव्य)। मिथ्या रचना। बनावट। कल्पना, भ्रम।—पत्र-(पु०, सं०) अभियोग पत्र [चार्ज शीट]।

आरोपण—(संज्ञा, पु०, सं०) लगाना, स्थापित करना, मढ़ना, पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर बैठाना या लगाना, रोपना, जमाना। किसी वस्तु में दूसरी वस्तु के गुणों की कल्पना करना। मिथ्या ज्ञान-स्थापन।

आरोपणीय—(वि०, सं०) आरोपित करने के योग्य स्थापित करने योग्य।

आरोपना※—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आरोपण] लगाना, जमाना, बैठाना, स्थापित करना, रोपना (दे०)।

आरोपनीय—(वि०, सं०) देखिए 'आरोपणीय'।

आरोपानंगीकार—(संज्ञा, पु०, सं०) आरोप को न मानने का कार्य। [डिनायल आफ एलीगेशन]।

आरोपित※—(वि०, सं०) स्थापित किया हुआ, बैठाया हुआ, लगाया हुआ, रोपा हुआ। जमाया हुआ। मढ़ा हुआ। [वि० आरोपक]।

आरोह—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊपर की ओर गमन, चढ़ाव, आक्रमण, चढ़ाई। घोड़े-हाथी आदि पर चढ़ना। सवारी। जीवात्मा की ऊर्ध्वगति (क्रमानुसार) या जीव का क्रमशः उत्तमोत्तम योनियों को प्राप्त करना (वेदा०) कारण से कार्य का प्रादुर्भाव। पदार्थों की एक अवस्था से दूसरी की प्राप्ति, जैसे बीज के अंकुर होना। क्षुद्र और अल्पचेतना वाले जीवों से क्रमानुसार उन्नत प्राणियों की उत्पत्ति। आविर्भाव, विकास, उत्थान (आधुनिक)। नितंब। स्वरों का चढ़ाव या नीचे स्वर के पश्चात् क्रमशः ऊँचे स्वर निकालना (संगीत)।

आरोहण—(संज्ञा, पु०, सं०) चढ़ना, सवार होना। चढ़ाव। सीढ़ी, सोपान। अंकुर का प्रादुर्भाव।

आरोहित—(वि०, सं०) चढ़ा हुआ, सवार। उन्नत। "ध्वनि अवरोहित आरोहित कर"—हितैषी।

आरोही—(वि०, सं० आरोहिन्) चढ़ने वाला। ऊपर जाने वाला। सवार। (संज्ञा, पु०, सं०) षड्ज से निषाध तक क्रमशः या उत्तरोत्तर चढ़ने वाला, स्वरसाधन।

आर्कि—(संज्ञा, पु०, सं०) शनि, सौरी, अर्की, अरकी। [**आर्की** दे०]।

आर्जव—(संज्ञा, पु०, सं०) सीधापन ऋजुता, सरलता। सुगमता। व्यवहार का सारल्य। नम्रता, विनय, सिधाई।

आर्त—(वि०, सं०) पीड़ित, व्यथित। चोट खाया हुआ। दुखी, कातर। अस्वस्थ [**आरत** दे०]।—**नाद**-(संज्ञा, पु०, सं०) दुःख-सूचक शब्द। पीड़ा से निकली हुई ध्वनि, आह, कराह, चीत्कार, कातर स्वर। करुण चीत्कार। "आता कभी आर्त्तनाद पितृहीन बाल का"—दिनकर।—**स्वर**-(संज्ञा, पु०, सं०) दुःख-सूचक ध्वनि, आर्तनाद, कातर गिरा। कराह, चीत्कार।

आर्तता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पीड़ा, दर्द, दुख, क्लेश, व्यथा, विकलता, कातरता।

आर्तव—(वि०, सं०) ऋतु से उत्पन्न, मौसिमी, सामयिक। (संज्ञा, पु०, सं०) स्त्री का रज, स्त्रियों का ऋतु-काल, मासिक पुष्प।

आर्त्विज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) ऋत्विज का कर्म, पौरोहित्य, पुरोहिती, पुरोहित-कर्म।

आर्थिक—(वि०, सं०) धन-सम्बन्धी, द्रव्य-सम्बन्धी, रुपये पैसे का, माली। [इकनामिक]।—**उपदेश**-धन सम्बन्धी मामलों में सलाह देने वाला। [फाइनैंशियल एडवाइज]।—**उपरोध**-आर्थिक नाकेबंदी, आर्थिक योजनाओं द्वारा घेरा डालना। [इकनामिक ब्लाकेड]।—**कष्ट (कठिनाई)**-धनाभाव से कष्ट, दैन्य-दुख, गरीबी के क्लेश।—**घटक**-धन सम्बन्धी प्रश्न जो परिणामोत्पादक हो। [इकनामिक फैक्टर]।—**चिंता**-धन की फ़िक्र, धन-चिंता।—**दशा**-माली हालत, धन-धान्य की अवस्था।—**न्याय-क्षेत्र**-आर्थिक अधिकार क्षेत्र, वह सीमा जहाँ तक अर्थ-गत तत्वों का प्रभाव पहुंचे। [पेकूनियरी ज्यूरसडिक्शन]।—**प्रश्न**-धन या रुपये-पैसे का सवाल या बात।—**युद्ध**-आर्थिक संघर्ष, अर्थ-सम्बन्धी प्रयोगों और योजनाओं द्वारा संघर्ष। [इकनामिक वारफेयर]।—**योजना**-देश की आर्थिक उन्नति के लिए बनाया जाने वाला निश्चित कार्यक्रम। [इकनामिक प्लैन]।—**वर्ष**-वित्तीय वर्ष अप्रैल से आरम्भ होने वाला। [फाइनेंशियल इयर]।—**विवरण**-आय-व्यय का विवरण पत्र। [फाइनेंशियल स्टेटमेंट]।—**शक्ति**-अर्थ सम्बन्धी शक्ति। [फाइनेंशियल पावर]।—**शोषण**-धन की लूट, अनुचित ढंग से लाभ उठाना। [इकनामिक एक्सप्लाएटेशन]।—**संकट**-धन-सम्बन्धी कठिनाई या संकट। दीनता के दुख या कष्ट।—**समस्या**-धन सम्बन्धी बातें :—**सुस्थिरता**-आर्थिक सुदृढ़ स्थिति, सम्पन्नता। [फाइनेंशियल स्टेबिलिटी]।—**स्थिति**-माली हालत, अर्थ सम्बन्धी स्थिति मे। [इकनामिक कंडीशन]।—**स्वतंत्रता**-आर्थिक स्वाधीनता, व्यक्तित्व-विकास के निमित्त आर्थिक विषमताओं से मुक्त। [इकनामिक फ्रीडम]।

आर्थी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपमा एवं अन्य कतिपय अलंकारों के भेद, जिसका सम्बन्ध अर्थ से हो। (वि०, सं०) प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी।

आर्द्र—(वि०, सं०) गीला, भीगा हुआ। सरस, सजल।

आर्द्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) अदरक़, आदी।

आर्द्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सत्ताईस नक्षत्रों मे से छठवाँ नक्षत्र। वह समय जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में होता है। आषाढ़ का आरम्भ-काल। ग्यारह वर्णों का एक वर्णिक वृत्त। अदरक, आर्दा—[**अद्रा** दे०]।—**लुब्धक**-(संज्ञा, पु०, सं०) केतु ग्रह।—**वीर**-(संज्ञा, पु०, सं०) वाम मार्गी।—**शनि**-(संज्ञा, पु०, सं०) बिजली। एक प्रकार का अग्नि सम्बन्धी अस्त्र।

आर्य—(वि०, सं०) श्रेष्ठ, उत्तम। बड़ा। पूज्य। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न। मान्य। सेव्य। (संज्ञा, पु०, सं०) श्रेष्ठ पुरुष, सत्कुलोत्पन्न। एक मानव जाति जिसने सबसे प्रथम संसार मे सभ्यता प्राप्त कर प्रचारित की थी। [स्त्री०—**आर्या**]।—**पुत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पति के पुकारने का एक संबोधन शब्द (प्राचीन), भर्ता, स्वामी, गुरु-पुत्र, पति।—**मिश्र**-(वि०, यौ०, सं०) मान्य, पूज्य, श्रेष्ठ।—**समाज**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक धार्मिक समाज या समिति जिसके संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती थे।

आर्य क्षेमेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) [समय १०२६-१०४० ई० के लगभग] बंगाल के पाल वंशीय राजा कवि इन्होंने नृपाज्ञा से चंड कौशिक नामक महीपाल के राज का एक सुन्दर नाटक संस्कृत मे रचा।

आर्य भट्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) सुविख्यात भारतीय ज्योतिर्वेत्ता एवं गणित विद्या-विशारद, जो ४७५ ई० मे कुसुमपुर नामक स्थान में हुए थे। इन्होंने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ, आर्य-सिद्धान्त की रचना की और सप्रमाण सिद्ध करके सौर केन्द्रीय मत का प्रचार किया और पृथ्वी आदि ग्रहों को सौर जगत मे अवस्थित होकर सूर्य को प्रदक्षिणा करता हुआ सिद्ध किया। इन्होंने बीजगणित का भी एक ग्रन्थ रचा।

आर्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती। सास। दादी, पितामही। एक प्रकार का अर्थ मात्रिक छंद।—**—गीत**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) आर्या छन्द का एक भेद।—**सप्तशती**-संस्कृत का एक प्रधान काव्य-ग्रन्थ जिसमें ७०० आर्या छंद हैं।

आर्यावर्त—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तरीय भारत। विन्ध्य और हिमालय पर्वत का मध्यवर्ती देश। पुण्यभूमि आर्यों का निवास-स्थान।

आर्ष—(वि०, सं०) ऋषि-सम्बन्धी। ऋषि-प्रणीत। ऋषिकृत। वैदिक। ऋषि-सेवित।—**प्रयोग**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शब्दों का वह व्यवहार या प्रयोग जो व्याकरण के नियमाकूल न हो, परन्तु प्राचीन ऋषि-प्रणीत ग्रन्थों मे प्राप्त हो। ऐसे प्रयोगों का अनुकरण नही किया जाता, यद्यपि इन्हे अशुद्ध भी नहीं माना जाता।—**विवाह**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आठ प्रकार के विवाहों में से तीसरे प्रकार का विवाह, जिसमे वर के पिता से या वर से कन्या का पिता दो बैल शुल्क मे लेकर कन्या देता है। अब इस प्रकार के विवाह का प्रचार नहीं रहा।

आलंकारिक—(वि०, सं०) अलंकार-सम्बन्धी। अलंकार-युक्त। अलंकार जानने वाला।

आलंग—(संज्ञा, पु०, सं०) घोड़ियों की मस्ती।

आलंब—(संज्ञा, पु०, सं०) अवलंब। आश्रय। सहारा। गति। शरण। उपजीव। (वि०) जिसे आश्रय प्राप्त हो, जो सहारे से लटका हुआ हो।

आलंबन—(संज्ञा, पु०, सं०) सहारा, आश्रय, अवलंब। वह वस्तु जिसके अवलंब से रस की उत्पत्ति होती है। जिसके प्रति किसी भाव का होना कहा जाय। जिसमें किसी स्थायी भाव की जागृत हुई हो। जो रस का आधार हो, जैसे नायक-नायिका (श्रृङ्गार), शत्रु (रौद्र,)। किसी वस्तु का ध्यान-जनित ज्ञान (बौद्ध मत)। साधन। कारण।

आलंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) छूना। मिलना। पकड़ना। मारण, वध।

आल—(संज्ञा, पु०, सं०) हरताल, पीत वर्ण। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० अल—भूषित करना] एक प्रकार का पौधा जिसको जड़ और छाल से लाल रंग बनता है, इस पौधे से बनाया हुआ रंग। (संज्ञा, पु० अनु०) झंझट, बखेड़ा, झमेला। (संज्ञा, पु०) [सं० आर्द्र] गीलापन, तरी। आँसू "भरि पलकन मैं आल"। (संज्ञा, स्त्री०, अ०) बेटी की संतति। यौ०—**औलाद**—बालबच्चे। एक कीड़ा। वंश, खानदान, कुल, परिवार।

आलकसऽ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आलस्य] आलस्य। [**आलस** दे० **आरस** दे०]।

आलकसी—(वि०) आलसी।

आलथी-पालथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पालथी] बैठने का एक आसन जिसमें दाहिनी एड़ी बाईं जाँघ पर और बाईं ऍड़ी दाहिनी जाँघ पर रखते है।

आलन—(संज्ञा, पु०, दे०) पाक विशेष। अलोना, लवण-रहित।—**सालन**-दाल-तरकारी आदि। रोटी आदि के साथ खाने की वस्तुएँ।

आलना—(संज्ञा, पु०, दे०) घोंसला, खुंता, खोंता। यौ०—**पालना**—पलँग या खाट आदि।

आलपीन—(संज्ञा, स्त्री०) [पुर्त० आलफिनेट] बिना छेद की एक घुंडीदार सुई, जिससे कागज आदि के टुकड़े नत्थी किये जाते है।

आलबाल—(संज्ञा, पु०, सं०) कियारी, थाला। आँवला। पौधों के नीचे पानी भरने के लिए बनाया जाने वाला गड्ढा। जलाधार। गमला।

आलम—(संज्ञा, पु०, अं०) दुनिया, संसार। अवस्था, दशा। जन-समूह, जनता। हिंदी के एक कवि का नाम।

आलमारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० अलमरा] अलमारी।

आलय—(संज्ञा, पु०, सं०) घर, मकान, स्थान, गृह, वास-स्थान।

आलस—(वि०, सं०) आलसी, सुस्त। *(संज्ञा, पु०, दे०) आलस्य, सुस्ती। [**आरस** दे०]

आलसी—(वि०, दे०) [हि० आलस] शिथिल, मंद, काहिल, अकर्मण्य।

आलस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्य करने में अनुत्साह उत्साहाभाव, ढिलाई, शिथिलता, काहिली। अलसता, तन्द्रा। यौ०—**त्याग**—(सं०) जृम्भण, जँभाई, गात्रभंग।

आला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आलय] ताक, ताखा, अरवा। (वि० अ०) सब से बढ़िया, श्रेष्ठ, उत्तम। हरा, ताजा। (संज्ञा, पु० अ०) औजार,

हथियार । ⊛§(वि० दे०) [सं० आर्द्र] ओदा, गीला, सरस ।

आलाइश, अलाइस—(संज्ञा,स्त्री०, दे०, फ़ा०) गंदी वस्तु । मल, गलीज । कूड़ा-करकट ।

आलात—(संज्ञा, पु०, सं०) जलती हुई लकड़ी । यौ०—**चक्र**—जलती हुई लकड़ी आदि के चारो ओर घुमाने से बना हुआ एक प्रकार का घेरा या वृत्त ।

आलान—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी के बाँधने का खूँटा । रस्सा या जंजीर । बेड़ी । भंभट ।

आलाप—(संज्ञा, पु०, सं०) कथोपकथन, संभाषण, बातचीत । सात स्वरो का साधन (संगीत), तान । [**वार्तालाप**-(यौ०) बातचीत, संभाषण] ।—**चारी** -(संज्ञा, स्त्री०) [सं० आलाप+चारी] स्वरों के साधने की क्रिया ।—**प्रलाप**-क्रंदन, रोना-पीटना ।

आलापक—(वि०, सं०) बातचीत करनवाला । गाने-वाला । वार्तालाप करन वाला ।

आलापन—(संज्ञा, पु०, सं०) वार्तालाप, गाना स्वस्तिवाचन । [वि०—**आलापनीय**-गान योग्य] । "पास के क्यों अलाप आलापन जब कि होवे न कंठ ही आला"।—हरिऔध ।

आलापना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आलापन] गाना, सुर खींचना, तान लगाना ।

आलापित—(वि०, सं०) कथन किया हुआ, गाया हुआ ।

आलापिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वंशी, बाँसुरी, मुरली ।

आलापी—(वि०,सं०) बोलनेवाला, आलाप लेनेवाला, तान लगानेवाला, गानेवाला ।

आलाबु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लौकी, तुम्बी, कद्दू ।

आलाय-बलाय—(अलाय-बलाय) (संज्ञा, पु०, दे०) बुराई । अपवित्रता, मल, अशुद्धि । आपदा, अनिष्ट । अशुभ बातें ।

आलारासी—(वि०, दे०) लापरवाह, बेफिक्र, निश्चिंत ।

आलिंगन—(संज्ञा, पु०, सं०) गले से लगाना, परिरंभण, सप्रीति परस्पर मिलन, भेंटना, अंग लगाने की क्रिया ।

आलिंगना⊛—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आलिंगन] भेंटना, लिपटाना, गले या अंक लगाना ।

आलिंगित—(वि०, सं०) गले या अंग से लगाया हुआ, भेंटा हुआ, लिपटाया हुआ ।

आलि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सखी, सजनी, सह-चारिणी, सहेली । बिच्छू । भ्रमरी । पंक्ति, अवली । रेखा, बाँध, सेतु ।

आलिखित—(वि०) [सं० आ+लिख+क्त] चित्रित, लिखित, लिखा हुआ, अंकित ।

आलिप्त—(वि०, सं०) लिपा या पुता हुआ ।

आलिम—(वि०, अ०) विद्वान्, पंडित ।

आली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आलि] सखी, सहेली, सजनी, सहचरी । "अस कहि मन बिहँसी एक आली"—तु० । "बरनै दीन दयाल बैठि हंसनि की आली') । पंक्ति, रेखा । मधुपी । (वि०, स्त्री०, दे०)§ [सं० आर्द्र] भीगी हुई, गीली । (वि०, अ०) बड़ा, उच्च, श्रेष्ठ, उत्तम ।

आलीशान—(वि०, अ०) भव्य भड़कीला, शानदार, विशाल, उच्च, श्रेष्ठ, उत्तम । [यौ०—**जनाब** (**जनाब आली**) श्रीमान्] ।

आलीढ़—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+लिह+क्त] बाण छोड़ने के समय का आसन, बायें पैर को पीछे करके और दाहिने को सामने टेक कर बैठना । (वि०, सं०) भक्षित, खादित, अशित, भक्त, लेहित ।

आलुंठन—(संज्ञा, पु०, सं०) लोटना [**आलुंठित** वि०] ।

आलुलायित—(वि०, दे०) बंधन-रहित, न बँधा हुआ ।

आलू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आलु] एक प्रकार का गोल कंद या मूल जो तरकारी आदि के काम मे आता और खाया जाता है ।

आलूचा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रकार का वृक्ष जिसका फल पंजाब मे खाया जाता है । इसी पेड़ का फल, भोटिया बादाम, जर्दालू ।

आलू-बुखारा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) आलूचा नामक वृक्ष का सुखाया हुआ फल, जो कुछ खटमिट्ठा सा होता है ।

आलेख—(संज्ञा, पु०, सं०) लिखावट, लिपि ।

आलेखन—(संज्ञा, पु०, सं०) लिखना, चित्रांकन ।

आलेखनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ब्रश, पेंसिल, कूची ।

आलेख्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चित्र, तसवीर, लिपि । [यौ० **विद्या**-चित्रकारी, चित्रकला] । (वि०, सं०) लिखने या चित्रित करने योग्य ।

आलेप—(संज्ञा, पु०) [सं०+आ+लिप+घञ्] मलहम, लेप, । लेप करने का पदार्थ, उबटन आदि ।

आलेपन—(संज्ञा, पु०) [सं०] लेपन करना, मरहम लगाना ।

आलेपित—(वि०, सं०) लेप किया हुआ, लोपा हुआ ।

आलोक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश, चाँदनी,

उजाला, रोशनी, चमक, ज्योति, द्युति, दीप्ति, दर्शन। "तिमिर हट, आया आलोक"—गिरीश।

आलोकन—(संज्ञा, पु०, सं०) दिखलाने, चमकाने, प्रकाशयुक्त बनाने का कार्य। दर्शन, अवलोकन।

आलोकनीय—(वि०) प्रकाशनीय, दर्शनीय।

आलोकित—(वि०, सं०) प्रकाशित, द्युतिमान। अवलोकित, निरीक्षित। "है आलोकित लोक-लोक किसकी"—हरिऔध।

आलोचक—(वि०, सं०) देखने वाला, आलोचना करने वाला, गुणागुण-निरीक्षक। [क्रिटिक]

आलोचन—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+लुच्+अनट्] दर्शन, देखना, गुण-दोष-विवेचन।

आलोचना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी वस्तु के गुण-दोष पर निष्पक्ष विचार कर उसके मूल्य, महत्वादि का निर्णय करना, विचार-पूर्वक उसकी विशेषताओं या रुचिर रोचकताओं की स्पष्ट विवेचना तथा तदाधार पर अपनी सम्मति देने का काय। [कमेंट्स]।

आलोचनीय—(वि०) आलोचना के योग्य, विवेचनीय, विचारणीय।

आलोचित—(वि०, सं०) जिसकी आलोचना की जाय, निरीक्षित, विवेचित, अनुशीलित।

आलोच्य—(वि०, सं०) आलोचनीय, विवेचनीय, आलोचना करने के योग्य अथवा जिसकी आलोचना का कार्य हाथ में लिया गया हो।

आलोड़न—(संज्ञा, पु०, सं०) मथना, विलोड़ना, हिलोरना, खूब सोचना-विचारना, ऊहापोह करना, विमंथन।

आलोड़ना*—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० आलोड़न] मथना, हिलोरना, विलोड़ना, सोचना-विचारना।

आलोड़ित—(वि०, सं०) मथा हुआ, बिलोड़ा हुआ, विमंथित, सुविचारित।

आलोल—(वि०, सं०) चंचल, चपल, अस्थिर।

आल्हा—(संज्ञा, पु०, दे०) ३१ मात्राओं का एक छंद, जिसे वीर छंद भी कहते हैं। महोबे के एक वीर का नाम, जो पृथ्वीराज के समय मे था। बहुत लम्बा-चौड़ा वर्णन। ग्रन्थ-विशेष जिसमें वीर छंद मे युद्ध का वर्णन किया गया है। सैरा (दे०)। —**पवाँरा**-(यौ०) अति विस्तृत वर्णन। **मुहा०**—**गाना**—किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहना, अपने हाल को विस्तार से सुनाना।

आल्हैत (आल्हइत)—(वि०) आल्हा गाने वाला।

आव*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आयु] आयु, अवस्था, उम्र। (क्रि०, अ०, विधि) आ, आओ। [**आउ**-दे० (वर्त०) आता है। **आवइ, आवति** आवै]।

आवक—(संज्ञा, पु०, सं०) झोंकी सहना, उत्तरदायित्व वहन, जवाब देही झेलना।

आवज (आवझ)*—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का बाजा, ताशा। "तूर तार जनु आवज बाजे"—रामा०।

आवटना*—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० आवर्त] हलचल, उथल-पुथल, अस्थिरता, संकल्प-विकल्प, ऊहापोह।

आवदार—(वि०, दे०) आबदार (फ़ा०)। मनोहर, चमकीला, शोभायुक्त, छबिमान।

आवन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आगमन] आगमन, आना। [**आवनि**-स्त्री० अवाई, आना]। [क्रि० अ०, **आवना** दे०] आना, पहुँचना]। [संज्ञा, पु० **आवनो** दे०]। [वि० **आवनेहारा, आवनहारा, आवनोहारो**-(दे०) अवैया, आने वाला।—**आवनहार**-दे०]।

आवभगत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० आवना+भक्ति सं०] आदर-सत्कार, खातिर-तवाजा, सेवा-सुश्रूषा।

आवभाव—(संज्ञा, पु०, दे०) आदर-सत्कार, मान-सम्मान।

आवरण—(संज्ञा, पु०, सं०) आच्छादन, ढकना, किसी वस्तु पर ऊपर से लपेटा हुआ वस्त्र, बेठन। परदा [कटेन]। ढाल। दीवार आदि का घेरा। चलाये हुए अस्त्र-शस्त्र को निष्फल करने वाला अस्त्र। अज्ञान।—**पत्र**-(पु०) किसी पुस्तक के ऊपर रक्षा के लिए लगाया जाने वाला कागज [टाइटिल]।

आवरिता—(वि०, सं०) ढकने वाला, आच्छादित करने वाला, आवरण करने वाला। आच्छादित, आवृत्त "आवर्त-जाल-आवरिता"—हरिऔध।

आवर्जन—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+वृज+अनट्] फेंकना। मना करना, रोकना। हरकना (दे०)।

आवर्त—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी की भँवर। चक्र, फेर, घुमाव। न बरसने वाला बादल। एक प्रकार का रत्न। राजावर्त। लाजवर्द। सोच-विचार, चिंता। संसार। दशमूल अंक के ऊपर एक लघु बिन्दु जो उसकी पुनरावृत्ति सूचित करता है।—**दशमलव**-(वि०, यौ०) पुनरावृत्ति वाला दशमूल। (वि०) घूमा हुआ अंक।

आवर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) चक्कर देना। फिराव, घुमाव। मथना, हिलाना। किसी बात को बार-बार दुहराना [रिपिटीशन]। छाया का फिरना। तीसरा पहर।

आवर्तनीय—(वि०) मंथनीय, घुमाने योग्य ।

आवर्तित—(वि०) मथित, घुमावदार, भँवरयुक्त ।

आवर्दा—(वि०, फ़ा०) लाया हुआ । कृपा-पात्र । [**अउरदा** दे०] ।

आवलि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पंक्ति, श्रेणी । पाँति (दे०) ।

आवली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पंक्ति, श्रेणी । शृंखला । विस्वे की उपज का अनुमान लगाने या अंदाज करने की एक विधि या युक्ति । आवलि ।

आवश्यक—(वि०, सं०) अवश्य होने योग्य । जरूरी । सापेक्ष्य । अनिवार्य । प्रयोजनीय । जिसके बिना काम न चले । उचित [नेसेसरी] ।

आवश्यकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जरूरत । अपेक्षा । प्रयोजन, मतलब ।

आवश्यकीय—(वि०, सं०) जरूरी, अपेक्षणीय, आवश्यक । प्रयोजनीय । अवश्य करने योग्य ।

आवसथ—(वि०, सं०) गृह, भवन, गेह । व्रत । एक प्रकार का यज्ञ; इस यज्ञ के करने वाले अवस्थी कहलाते हैं ।

आवह—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+वह+अल्] सप्त-वायु के अन्तर्गत एक विशेष प्रकार की वायु । भूवायु ।

आवहमान्—(वि०, सं०) क्रमागत, पूर्वापर, क्रमिक ।

आवाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आपाक] कुम्हारों के मिट्टी के बर्तन आदि पकाने का गड्ढा । भट्टी ।

आवा—(क्रि०, अ०, सा० भू० दे०) [हिं० आना] आया, आ गया । "इक दिन एक सलूका आवा"—तुल० ।

आवागमन—(संज्ञा, पु०, यौ०) [आवा+गमन सं०] आना-जाना, आमद-रफ्त, बार-बार जन्म लेना और मरना । **मुहा०—से रहित होना**—मुक्त होना, मोक्ष प्राप्त करना ।—**छूटना**—जन्म-मरण न होना ।

आवागवन§*—(संज्ञा, पु०, दे०) आवागमन, आना-जाना । [**आवागौन**—दे०] ।

आवाज—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० मिलाओ सं० आवाद्य] शब्द, ध्वनि, नाद, बोली, वाणी, स्वर, शोर । **मुहा०—उठाना**—विरोध करना, विरुद्ध कहना । —**(ज़ा) कसना**—(दे०) व्यंग बात कहना । ललकारना, चुनौती देना ।—**बैठना**—कफ के कारण स्वर का स्पष्ट न निकलना । गला बैठना ।—**भारी होना**—कफ के कारण कंठ-स्वर का विकृत हो जाना ।—**लगाना (देना)**—बुलाना । जोर से पुकारना ।

आवाज़ा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बोली, ठोली, ठिठोली, ताना, व्यंग । **मुहा०—करना**—ताना मारना । —**तवाज़ा**-(यौ०) व्यंग, ताना ।

आवाजानी—(स्त्री०,दे०) जन्म-मरण । "मिट गई आवाजानी" —ध० द० ।

आवाजाही (आव-जाई) §—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हिं० आना+जाना] आना-जाना, आमद-रफ़्त । जन्म-मरण । **मु०—लगाना**—बारबार आना-जाना ।

आवारगी—(संज्ञा,स्त्री०, फ़ा०) आवारापन । शुहदापन । लुच्चापन । घुमक्कड़ी । [**आवारागरदी** दे०] ।

आवारजा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जमा-खर्च की किताब । रोकड़ बही । [**अवारजा** दे०] ।

आवारा—(वि०, फ़ा०) व्यर्थ इधर-उधर फिरने वाला, निकम्मा, बेठौर-ठिकाने का, उठल्लू, बदमाश, लुच्चा, गुण्डा (दे०) ।

आवारागर्द—(वि० ,फ़ा०) व्यर्थ इधर-उधर घूमने वाला, उठल्लू , निकम्मा । गुण्डा । [संज्ञा, स्त्री०, फा० **आवारागर्दी** आवारगी] ।

आवाल—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पंक्ति, श्रेणी । (संज्ञा, पु०) थाल ।

आवास—(संज्ञा, पु०, सं०) रहने की जगह, निवास-स्थान, मकान, घर, धाम । "इस पीड़ा का जहाँ-जहाँ होता आवास"—'गिरीश' ।

आवाहन—(संज्ञा, पु०, सं०) मंत्र-द्वारा किसी देवता के बुलाने का कार्य । निमन्त्रित करना, बुलाना, आह्वान । षोडशोपचार पूजा का एक अंग । [वि० **आवाहनीय**] । "प्रियतम के नीरव आवाहन मे तब किया प्रवेश"—गिरीश ।

आविद्ध—(वि०, सं०) छिदा हुआ, भेदा हुआ । फेंका हुआ । (संज्ञा, पु०) तलवार के ३२ हाथों मे से एक ।

आविर्भाव—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश । प्राकट्य, उत्पत्ति । आवेश, संचार [एडवेण्ट] ।

आविर्भूत—(वि०, सं०) प्रकाशित, प्रकटित, उत्पन्न, उद्भूत, प्रादुर्भूत ।

आविर्भूता—(वि०, स्त्री०, सं०) जो प्रगट हुई हो । जो व्यक्त अथवा अवतीर्ण हो । "आविर्भूता गगन-तल मे हो रही है निराशा"—हरिऔध ।

आविल—(वि०, सं०) कलुषपूर्ण, मलिन, स्पष्टता-रहित, धुँधला । 'दुख से आविल, सुख से पंकिल' —महा० ।

आविष्कर्त्ता—(वि०, सं०) आविष्कार करनेवाला ।

आविष्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राकट्य, प्रकाश ।

कोई ऐसी वस्तु तैयार करना जिसके बनाने की विधि पहिले किसी को न ज्ञात रही हो, ईजाद। किसी बात का पहिले-पहल पता लगाना। [डिस्कवरी]।

आविष्कारक—(वि०, सं०) आविष्कर्ता, आविष्कार करनेवाला, ईजाद करनेवाला।

आविष्कृत—(वि०) [सं० आविस्+कृ + क्त] प्रकाशित, प्रगटित, जिसका पता लगाया गया हो, ईजाद किया हुआ, जाना हुआ।

आविष्क्रिया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आविष्कार, गवेषणा, अन्वेषण।

आविष्ट—(वि०) [सं० आ+विश्+क्त] आवेश-युक्त। मनोयोगी। लीन। किसी की धुन में लगा हुआ।

आवृत—(वि०, सं०) छिपा हुआ, ढका हुआ, लपेटा या घिरा हुआ, वेष्टित, आच्छादित।

आवृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० आ + वृत + क्ति] बारबार किसी बात का अभ्यास, पाठ, उद्धरणी, बारबार किसी वस्तु का आना।

आवेग—(संज्ञा, पु०, सं०) चित्त की प्रबल वृत्ति। मन की झोंक। जोर, जोश। रस के संचारी भावों में से एक। अकस्मात् इष्ट या अनिष्ट के प्राप्त होने से चित्त की आतुरता, घबराहट, उमंग [वि० **आवेगपूर्ण**]।

आवेदक—(वि०, सं०) निवेदन करने वाला, प्रार्थी।

आवेदन—(संज्ञा, पु०, सं०) अपनी दशा का बताना, या प्रगट करना। निवेदन या प्रार्थना करना, अर्ज करना।—**पत्र**-(पु०) अपनी दशा लिख कर सूचित करने का कागज या पत्र। प्रार्थना-पत्र, निवेदन-पत्र, अर्जी।

आवेदनीय—(वि०, सं०) निवेदन करने के योग्य, प्रार्थनीय।

आवेदित—(वि०, सं०) निवेदित, प्रार्थित, कहा हुआ। निवेदक, प्रार्थी। [वि० **आवेदी**]

आवेद्य—(वि०, सं०) आवेदन करने के योग्य, प्रार्थनीय, निवेदनीय, कथनीय।

आवेश—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+विश्+घञ्] व्याप्ति। संचार। दौरा। प्रवेश। चित्त की प्रेरणा। झोंक, वेग, जोश। भूत-प्रेत। बाधा। मृगीरोग। उदय। अहंकार। अपस्मार।

आवेशन—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+विश्+अनट्] प्रवेश। शिल्पशाला। कारखाना।

आवेष्टन—(संज्ञा, पु०, सं०) छिपाने या ढकने का कार्य। लपेटने या ढकने की वस्तु [लिगेचर]। खोल, घेरा, चहारदीवारी।

आवेष्टित—(वि०, सं०) लपेटा या छिपा हुआ, ढका हुआ।

आवो—(क्रि०, अ०, दे०) आओ।

आँश—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रेशा, सूत। अंश (सं०)।

आशंकनीय—(वि०) [सं० आ+शंक+अनीयर्] भयावह। भय का स्थान। शंका करने-योग्य।

आशंका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डर, भय, शक, शंका, संदेह। अनिष्ट की भावना। त्रास, संशय, आतंक, भीति।

आशंकित—(वि०, सं०) भयभीत, शंकित, त्रसित, सशंक।

आशना—(वि०,फ़ा०) परिचित, जिससे पहचान हो। चाहनेवाला। (संज्ञा, उभ०) प्रेमी, यार, रखेल।

आशनाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जान-पहिचान। प्रेम, प्रीति, दोस्ती। अनुचित प्रेम।

आशय—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिप्राय, मतलब, तात्पर्य। वासना, इच्छा। उद्देश्य, नीयत। आश्रय। गड्ढा। खात।

आशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अप्राप्त वस्तु के प्राप्त करने की भावना या इच्छा और थोड़ा-बहुत निश्चय, उम्मीद। अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति के थोड़े-बहुत निश्चय से उत्पन्न संतोष। आसरा, भरोसा। दिशा, दक्ष प्रजापति की एक कन्या। १० की संख्या। [**आसा, आस** दे०]। [यौ० **आशा भंग**—आशा का टूटना, निराशा, नाउम्मेदी]।—**दायी**-(वि०, सं०) भरोसा या आशा देनेवाला।—**वाद**-(पु०, सं०) सदा अच्छी बातों की आशा रखने वाला सिद्धान्त [ऑप्टमिज़्म]।

आशातीत—(वि०) [सं० आशा+अतीत] आशा से अधिक। चाह से अधिक।

आशिक—(संज्ञा, पु०,) प्रेम करने वाला मनुष्य, अनुरक्त पुरुष, आसक्त।

आशियाँ—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) देखो आशियाना।

आशियाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [शु० रू० आशियान] घोंसला।

आशिष—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आशीर्वाद, आसीस, दुआ। एक प्रकार का अलंकार जिसमें अप्राप्त वस्तु के लिये प्रार्थना होती है।

आशिषाक्षेप—(संज्ञा. पु०, यौ०, सं०) एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें दूसरे का हित दिखलाते हुए, ऐसी बातों के करने की शिक्षा दी जाती है जिनसे वास्तव में अपने ही दुःख की निवृत्ति हो। (केशव)।

आशी—(वि०) [सं० आशिन्] खानेवाला, भक्षक ।

आशीर्वचन—(संज्ञा, पु०, सं०) शुभवाक्य, कल्याण-वचन, मंगलकारी गिरा ।

आशीर्वाद—(संज्ञा, पु०, सं०) कल्याण या मंगल-कामना-सूचक वाक्य । आशिष, दुआ, मंगल-प्रार्थना । [**आसीस, आसिरवाद** दे०] । [वि० **आशीर्वादक**—मंगलप्रार्थी, आशीष देने वाला, कल्याण-प्रार्थक । (वि०) **आशीर्वादी**—आशीर्वाद-प्राप्त] ।

आशीविष—(संज्ञा, पु०) [सं० आशी + विष + अल्] सर्प, साँप, अहि, भुजंग । "आशीविष दोषन को दरी"—[केशव] ।

आशीस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आशिष] आशीर्वाद, वर, शुभाकांक्षा । [**असीस** दे०] ।

आशीः—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का काव्यालंकार, जिसमे किसी प्रिय व्यक्ति की मंगल-कामना की जाय ।

आशु—(क्रि०, वि०, सं०) शीघ्र, जल्द, तत्काल, द्रुत, तुरन्त, झटपट, । (संज्ञा, पु०) वर्षाकाल में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का धान्य ।—**कवि**—(संज्ञा, पु०, सं०) तत्काल कविता रचन वाला कवि ।—**ग**—(संज्ञा, पु०, सं०) द्रुतगामी । शर । वायु । मन ।—**०(गा)सन**—(संज्ञा, पु०, सं०) धनुष ।—**तोष**—(वि०, सं०) शीघ्र संतुष्ट होने वाला, जल्द प्रसन्न होने वाला । (पु०) शिव, महादेव, शंकर ।

आशुफ़्ता—(शु०, रू०, आशुफ्तः) (वि०, फ़ा०) परेशान, घबराया हुआ, विकल ।

आश्चर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी नई अभूतपूर्व या साधारण बात के देखने या सुनने या ध्यान में आने से उत्पन्न होन वाला एक प्रकार का मनोविकार, अचंभा, ताअज्जुब, विस्मय । रसों के नौ स्थायी भावों मे से एक; इसका रस अद्भुत है ।

आश्चर्यित—(वि०, सं०) चकित, विस्मित ।

आश्चर्यान्वित—(वि०, सं०) आश्चर्य और विस्मय से युक्त, चकित, अचम्भे में पड़ा हुआ ।"आश्चर्यान्वित किन्तु थे कुछ सुधी"—मधुपरी ।

आश्रम—(संज्ञा, पु०) [सं० आ + श्रम + अल्] ऋषियों और मुनियों का निवास-स्थान । तपोवन, साधु-संत के रहने की जगह । विश्राम-स्थान । टिकने या ठहरने की जगह । हिन्दुओं के जीवन की चार अवस्थाएँ (स्मृति०) ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ, वान-प्रस्थ और सन्यास । मठ, स्थान, कुटी ।—**गुरु**—(पु०, यौ०) कुलपति, कुलाचार्य ।—**धर्म**—(पु०, यौ०) आश्रम के लिये शास्त्रोक्त आचार या नियम ।—**भ्रष्ट**—(वि०, यौ०, सं०) आश्रम से विरुद्ध आचार-व्यवहार करनवाला । पतित ।

आश्रमी—(वि०, सं०) आश्रम-सम्बन्धी, आश्रम में रहनवाला । ब्रह्मचर्यादि चार आश्रमों मे से किसी को धारण करनेवाला । "जिमि हरि-भक्तिहिं पाइ जन, तजहिं आश्रमी चारि"—तुल० ।

आश्रय—(संज्ञा, पु०, सं०) आधार, सहारा, अवलंब, आधार-वस्तु । वह वस्तु जिसके सहारे पर कोई वस्तु ठहरी हो । शरण, पनाह, जीवन-निर्वाह का हेतु, भरोसा, सहारा । घर, रक्षा का स्थान ।—**दाता**—(संज्ञा, पु०, सं०) आश्रय या शरण देनेवाला, सहायक, सहारा देनेवाला, जीविका देनेवाला ।—**भूत**—(वि०, सं०) शरण्य, भरोसागीर ।—**स्थान**—(संज्ञा, पु०, सं०) ठहरने या रक्षा का स्थान, शरण की जगह ।—**युक्त**—(वि०, सं०) जिसे आश्रय अथवा ठिकाना प्राप्त हो । "बनीं सभी आश्रययुक्त बोलियाँ" —मधुपुरी ।—**हीन**—(वि०) जिसे शरण न प्राप्त हो, बेठिकाना, संरक्षणहीन, घरबार से रहित । "आश्रय-हीन अनंतकाल का ठीक ठिकाना"—हितैषी ।

आश्रयण—(संज्ञा, पु०) [सं० आ० + श्रि + अनट्] आश्रय, शरण, अवस्थान ।

आश्रयणीय—(वि०) [सं० आ + श्रि + अनीयर्] आश्रय देने योग्य, आश्रयोपयुक्त ।

आश्रयी—(वि०, सं०) आश्रय लेने या पानेवाला, सहारा या शरण लेन या पानेवाला ।

आश्रित—(वि०, सं०) सहारे पर टिका हुआ, ठहरा हुआ, भरोसे पर रहनेवाला, आधीन, सेवक, नौकर । अवलम्बित, शरणागत, वश्य, कृताश्रय । [स्त्री० **आश्रिता**] ।—**स्वत्व**—(संज्ञा, पु०, सं०) सेवक का अधिकार, शरणागत का हक ।

आश्लिष्ट—(वि०)[सं० आ + श्लिष् + क्त] आलिंगित लिपटा हुआ, चिपटा हुआ, मिला हुआ ।

आश्लेष—(संज्ञा, पु०) [सं० आ + श्लिष + घञ्] आलिंगन, मिलन, लगाव, संयोग, सम्बन्ध ।

आश्लेषण—(संज्ञा, पु०, सं०) मिलावट । आलिंगन ।

आश्लेषा—(संज्ञा, पु०, सं०) श्लेषा नक्षत्र ।

आश्वस्त—(वि०) [सं० आ + श्वास् + क्त] सांत्वना-प्राप्त । आशायुक्त, दिलासा मिला हो। जिसने ढाढ़स पाया हो ।

आश्वास, आश्वासन—(संज्ञा, पु०, सं०) दिलासा, तसल्ली, सांत्वना, ढाढ़स । (वि०)

आश्वासनीय—तसल्ली देने योग्य ।

आश्वासित—(वि०) [सं० आ+श्वस्+णिच +क्त] अनुनीत, आश्वस्त, जिसे दिलासा दिया गया हो।

आश्वास्य—(वि०, सं०) सांत्वना देने के योग्य, तसल्ली देने लायक।

आश्विन्—(संज्ञा, पु०, सं०) अश्विनी नक्षत्र मे पड़ने वाली पूर्णिमा का महीना। क्वार का महीना, कुआँर (दे०)। शरद ऋतु का पहला मास।

आषाढ—(संज्ञा, पु०, सं०) वह चांद्रमास जिसकी पूर्णिमा को पूर्वाषाढ नक्षत्र हो। ढाक का दंड जो यतियों द्वारा धारण किया जाता है।

आषाढभू , आषाढभव—(संज्ञा, पु०, सं०) मंगल-ग्रह। उत्तराषाढ नक्षत्र।

आषाढा—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+सह्+क्त+आ] पूर्वाषाढ और उत्तराषाढ नक्षत्र।

आषाढ़ी—(संज्ञा, पु०, सं०) आषाढ मास की पूर्णिमा। गुरु-पूजा।

आसंग—(संज्ञा, पु०, सं०) साथ, संग, लगाव, सम्बन्ध। आसक्ति। संसर्ग। संसृष्टि। अनुराग।

आसंगी—(पु० सं०) सलाहकार, सम्बद्ध [अटैच]। **—नौसेनीय**-जल-सेना का सलाहकार या परामर्श-दाता। (नेवल अटैच)। **—सैनिक**-राजदूत का फौजी सलाहकार। [मिलिटरी अटैच]

आस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आशा] आशा, उम्मेद। लालसा, कामना। सहारा, भरोसा, आधार। दिशा। "होत उजागर अनबगर, मधुप मलिन तव आस"। "आई बहुरि बंसत ऋतु विमल, भई दस आस"—रघु०। (संज्ञा, पु०, दे०) धनुष, शरासन। "आस है अब और पान को नहीं"—हरिऔध।

आसकत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अशक्ति] शिथिलता। आलस्य, काहिली, आलस। [**आस-कताना** क्रि०]।

आसकति, असकती—(वि०, दे०) [सं० अशक्ति] आलसी। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० आसक्ति] अनुरक्ति, प्रेम।

आसक्त—(वि०,सं०) अनुरक्त, लीन, लिप्त। आशिक, मोहित, मग्न, प्रेमग्रस्त, लुब्ध, मुग्ध, [**आसकत** दे०]।

आसक्ति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० आ+सद्+क्ति] अनुरक्ति, लिप्तता, लगन, चाह, प्रेम, मोह, इश्क, [**आसकति** दे०]। संगम, मिलन। लाभ। पदों का अत्यन्त संनिधान (न्याय०)। अव्यवहिति, समीपता। पदोच्चारण (शब्दार्थ-बोध का एक हेतु)। "प्रगति मात्र से प्रीति निरन्तर नहीं किसी से भी आसक्ति"—गिरीश।

आसति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सत्य। आसत्ति। समीपता। मुक्ति। "सुर तुरत यह जाय कहौ तुम ब्रह्म बिना नहिं आसति"।

आसते*—(क्रि०, वि०, दे०) [फ़ा० आहिस्ता] धीरे-धीरे।

आसतोष—(वि०, दे०) [सं० आशुतोष] जल्द प्रसन्न होने वाला। (संज्ञा, पु०) महादेव, शिव।

आसत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सामीप्य, निकटता। अर्थ-बोध के लिए बिना व्यवधान के एक दूसरे से सम्बन्ध रखनेवाला दो पदों या शब्दों का पास-पास रहना और पारस्परिक अर्थों का स्पष्ट रूप से व्यक्त करना।

आसथान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थान] आस्थान, बैठने की जगह। सभा, समाज।

आसन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थिति, बैठक। बैठने की विधि, या ढब (तरीका)। वह वस्तु जिस पर बैठा जाय। बिछावन, बिछौना। पीठ, पीढ़ा, चौकी। ठिकाना, निवास, डेरा। चूतड़। हाथी का कंधा, जिस पर महावत बैठता है। सेना का शत्रु के सम्मुख डटा रहना। जिगीषु का अवसर प्रतीक्षार्थं अवस्थान। कुश या ऊन का बना हुआ आसन जिस पर बैठकर पूजा की जाती है। योगियों के बैठने की ८४ भिन्न-भिन्न विधियाँ या रीतियाँ, यथा—पद्मासन, स्वस्तिकासन, बद्धपद्मासन, मयूरासन, शीर्षासन, आदि। (यौ०) सुरति (संभोग) की विविध रीतियाँ (कोक०)। "छोड़ि दे आसन बासन को"—राम०। **मुहा०—उखड़ना**—अपने स्थान से हिल जाना, घोड़े की पीठ पर रान न जमना। **—कसना—**अंगों को तोड़-मरोड़ कर बैठना। **—गाँठना**—आसन बनाना। संभोग मे आसन कसना। **—छोड़ना**—उठ जाना (आदरार्थ)। **—जमना**—बैठने में स्थिर भाव आना। **—जमाना**—जिस स्थान पर जिस रीति से बैठे उसी स्थान पर उसी रीति से बराबर स्थिर रहना, स्थिर भाव से बैठना। अड्डा जमाना, डेरा जमाना, स्थायी रूप से रहना। **—डिगना (डोलना)**—बैठने में स्थिर भाव न रहना। चित्त चलायमान होना, मन डोलना। करुणा या दया आना (देवताओं आदि का) घबड़ाना, भयभीत होना। जैसे—कौशिक का तप देख इंद्र का आसन डोल उठा। **—डिगाना—**स्थान से विचलित करना। चित्त को चलायमान करना। लोभ या इच्छा उत्पन्न करना। सचेत या

सावधान करना। घबरा देना, भयभीत कर देना। **—तले आना**—अधीन होना, अनुगत होना। **—देना**—सम्मानार्थ बैठने के लिये कोई वस्तु रख कर या बता कर बैठने की प्रार्थना करना। **—मारना**—जम कर या स्थिर भाव से बैठना। "बैठो हुतासन आसन मारे"—देव०। **—लगाना**—स्थिर भाव से आसन जमा कर बैठना। संध्योपासना करना। योग करना। योग के आसनों का अभ्यास करना। (आसन करना) पद्मासनादि का अभ्यास करना।

आसना§*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अस्—होना] होना। बैठना।

आसनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आसन] छोटा आसन। छोटा बिछौना। कुश या ऊन का छोटा आसन जिस पर बैठ कर पूजा की जाती है।

आसन्दी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चारपाई। कुर्सी। मचिया।

आसन्न—(वि०) [सं० आ+सद+क्त] निकट आया हुआ, समीपस्थ, निकटवर्ती, समीपवर्ती। उपस्थित, प्राप्त, पास बैठा हुआ। शेष। जिसका अंत निकट हो। (संज्ञा, पु०) अंत, मृत्यु, अस्तोन्मुख सूर्य। [इमीनेंट]। **—काल**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अन्तिमकाल, मृत्यु का समय, अवसान। **—भूत**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भूतकालिक क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता और वर्तमान काल से समीपता प्रगट हो, जैसे—मैं जा रहा हूँ। **—संकट**—समुपस्थित विपत्ति। [इमीनेंट डैंजर)।

आस-पास—(क्रि०, वि०, दे०) (अनु० आस+पार्श्व—सं०] चारों ओर। निकट, समीप, पास, इधर-उधर। "जिसके वह आस-पास थी"—मैथिली०।

आसमान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) आकाश, गगन। स्वर्ग, देवलोक। नभ, व्योम। **मुहा०—का चूमना**—बहुत ऊँचा होना (किसी मकान या पर्वत का)। **—के तारे तोड़ना**—कठिन या असम्भव कार्य करना। **—गिराना**—अत्यन्त उच्च स्वर से चिल्लाना। उत्पात मचाना। **—टूट पड़ना**—आकस्मिक विपत्ति का आ पड़ना, अचानक अनिष्ट होना। **—ताकना**—गर्व से तनना, इतराना, भूलना, विस्मित होकर ऊपर देखना। **—पर चढ़ना**—गरूर या घमंड करना। अति उच्च संकल्प बाँधना। असम्भव कार्य करना। "चाहत बारिद बुंद गहि, तुलसी चढ़न अकास"। **—पर चढ़ाना**—अत्यन्त प्रशंसा करना। बढ़ावा देना। अति श्लाघा करके मिजाज बिगाड़ देना। **—पर दिमाग होना**—अत्यन्त अधिक अभिमान होना, अति उच्च विचार या घमंड होना। **—में (पर) उड़ना**—इतराना, घमंड करना। ऊँचे-ऊँचे संकल्प बाँधना। असम्भव कार्य करने का विचार करना। **—में छेद करना**—आश्चर्यजनक काम करना, अति करना। **—में थिगरी लगाना**—विकट कार्य करना, घमंड करना, असम्भव बात करना। **—सिर पर उठाना**—ऊधम मचाना, उपद्रव करना, हलचल मचाना, अति प्रबल आन्दोलन करना, उत्पात मचाना। **—से बातें करना**—अति उच्च होना (किसी मकान या इमारत, पर्वत या अन्य किसी ऊँची चीज का)।

आसमानी—(वि०, फ़ा०) आकाश-संबन्धी, आकाशीय, आसमान का। आकाश के रंग का। हल्का नीला रंग वाला। दैवी, ईश्वरीय। (संज्ञा, स्त्री०) ताड़ के पेड़ से निकला हुआ मद्य, ताड़ी।

आसमुद्र—(क्रि०, वि०, सं०) समुद्र-पर्यंत। समुद्र के तट या किनारे तक। "आसमुद्र क्षितीशानाम्"—रघु०।

आसय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आशय] आशय। इच्छा। मतलब, प्रयोजन, अर्थ, तात्पर्य। आधार।

आसर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० असुर] राक्षस, असुर। "काहू कहुँ सर आसर मार्यौ"—राम०।

आसरना*—(क्रि०, सं०, दे०) [हि० आसरा] आश्रय लेना, सहारा लेना, शरण लेना।

आसरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आश्रय] सहारा, आधार, आश्रय, अवलंब, भरण-पोषण की आशा, भरोसा, आस, किसी से सहायता पाने का निश्चय, जीवन या कार्य-निर्वाह का हेतु। आश्रयदाता, सहायक, शरण, पनाह। प्रतीक्षा। प्रत्याशा। इंतजार। आशा, उम्मीद।

आसव—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+सु+अल्] भभके से चुवाया गया मद्य। केवल फलों के खमीर को निचोड़ कर बनाई जाने वाली मदिरा। औषधियों के खमीर को छान कर बनाई गई औषधि। मद्य, मदिरा, मधु, मद। अर्क जैसे द्राक्षासव। **—वृक्ष**—(संज्ञा, पु०, सं०) तालवृक्ष।

आसवी—(वि०, सं०) मद्यपी, शराबी, आसव-सम्बन्धी।

आसा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आशा] आशा। (संज्ञा, पु०) [अ० असा] सोने या चाँदी का डंडा, जिसे केवल शोभा या शानशौकत के लिए राजा-महाराजाओं अथवा बारात या जलूस के आगे चोबदार लेकर चलते हैं, राजदंड। [यौ० **आसा-बल्लम, आसा-सोटा**]।

आसाइस—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आराम, सुख, चैन।

आसाढ़—(संज्ञा, पु०, दे०) आषाढ़ माह। (सं०) अषाढ़, आषाढ़ी।

आसादन—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+सद्+णिच्+अनट्] तेजी के साथ चलकर पकड़ लेना। आक्रांत करना।

आसादित—(वि०) [सं० आ+सद्+णिच्+क्त] प्राप्त, लब्ध, मिलित, भक्षित।

आसान—(वि०, फ़ा०) सहज, सरल, सुगम।

आसानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सरलता, सुगमता, सुभीता, सुविधा।

आसाम—(संज्ञा, पु०, दे०) भारत के उत्तर-पूर्व में बंगाल का एक भाग। एक पूर्वीय प्रान्त। कामरूप (प्राचीन)।

आसामी—(वि०, दे०) आसाम-निवासी। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) अभियुक्त, देनदार। काश्तकार। धनवान व्यक्ति, जैसे—२ लाख के आसामी।

आसार—(संज्ञा, पु०, सं०) मूसलधार जलवृष्टि। शत्रु पर आक्रमण। मित्र राजा की सेना। सेना के लिये खाद्य पदार्थ। (अ०) चिह्न, लक्षण। चौड़ाई। दीवार की खँडहर। नींव।

आसावरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्री नामक राग की एक रागिनी। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का कबूतर।

आसावसन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आशा वसन] नग्न, दिगंबर, नंगा। महादेव, शिव।

आसिखॐ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आशिष] आशीर्वाद। "तुलसी सुतहिं सिख देइ आयसु देइ पुनि आसिख दई"।—**वचन**-(संज्ञा, पु०, दे०) आशीर्वचन, आशीष, आसिर्वाद (दे०)।

आसिद्ध—(वि०) [सं० आ+सिध्+क्त] अवरुद्ध, वंदीभूत, बँधुआ, बंदी।

आसिधार—(संज्ञा, पु०) [सं० आस+धृ+घञ्] युवा और युवती का एक स्थान में अविकृत चित्त से अवस्थान-रूप व्रत।

आसिन—(संज्ञा, पु०, दे०) [**आश्विन्** सं०] कुँवार।

आसिया—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चक्की।

आसीॐ—(वि०, दे०) आशीः (सं०)।

आसीन—(वि०) [सं० आस्+ईन] बैठा हुआ, विराजमान, उपस्थित, स्थित, आसीन (दे०) "एक बार प्रभु सुख आसीना"—"प्रभु आसन आसीन" —रामा०।

आसीस§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [आशिष, सं०] आशीर्वाद। (संज्ञा, पु०, दे०) उसीस, तकिया।

आसुॐ—(क्रि०, वि०, दे०) आशु (सं०), जल्दी, शीघ्र। (सर्व०) इसका।

आसुग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आशुग] वायु। बाण। मन।

आसुतोस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आशुतोष] महादेव, शिव। (वि०, दे०) जल्द प्रसन्न होने वाला।

आसुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आश्विन्] क्वार मास। निधि। मुनि। वसु। शशि।

आसुर—(वि०, सं०) असुर-सम्बन्धी। विवाह की एक विशेष रीति (स्मृति)।—**विवाह**-कन्या के माता-पिता को द्रव्य देकर किया जाने वाला विवाह (स्मृति०)। (संज्ञा, पु०, दे०) असुर, राक्षस।

आसुरी—(वि०, सं०) असुर-सम्बन्धी, असुरों का, राक्षसी।—**चिकित्सा**-शल्य-चिकित्सा, चीड़-फाड़ कर के रोग अच्छा करना।—**माया**-चक्कर में डालने वाली राक्षसी चाल, धूर्तता, छलछद्म। (संज्ञा, स्त्री०) असुर की स्त्री, राक्षसी।

आसूदगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तृप्ति, संतोष।

आसूदा—(वि०, फ़ा०) संतुष्ट, तृप्त, संपन्न, भरा-पूरा।

आसेचनक—(वि०) [सं० आ+सिच्+अनट्+क] प्रिय दर्शन, जिसे देखने से तृप्ति न हो, अति-प्रिय।

आसेब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भूत-प्रेत की बाधा। [वि० **आसेबी**—भूत-प्रेत-बाधा-युक्त]।

आसोज§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अश्वयुज] आश्विन मास, क्वार या कुँवार (दे०) का महीना। "आसोजा का मेह ज्यों, बहुत करै उपकार"—कबीर।

आसौंॐ—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० इह+संवत] इस वर्ष, इस साल।

आसौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आसव] आसव, मदिरा।

आस्कंदित—(वि०) [सं० आ+स्कंद+क्त] बोझिल, भार-ग्रस्त। (संज्ञा, पु०) घोड़ों की सरपट चाल। घोड़ों की पाँचवीं गति। आक्रान्त, आरोहित, तिरस्कृत।

आस्कत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आलस्य, शिथिलता, ढीलापन। [वि० **आस्कती** — आलसी, सुस्त, ढीला]।

आस्तर—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+स्तृ+अनट्] हाथी की झूल। उत्तम आसन, शय्या, (दे०) अस्तर, भितल्ला।

आस्तरण—(पु०, सं०) गद्दा, दरी, बिछौना,

कालीन । " कुसुम-सेज की दुग्ध-फेन-निभ आस्तरण"—हरिऔध ।

आस्तिक—(वि०, सं०) वेद, ईश्वर और परलोकादि पर विश्वास करने वाला । ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाला । ईश्वर-सत्ता वादी ।—**वाद**-(संज्ञा, पु०, सं०) ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने वाला सिद्धान्त । वेद । ईश्वरादि पर विश्वास करने वालों का मत । [वि० **आस्तिकवादी**—आस्तिकवाद के सिद्धान्त का अनुयायी । (**विलोम नास्तिक, नास्तिकता**)]।

आस्तिकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेद, ईश्वर और परलोक पर विश्वास, ईश्वर-सत्ता की धारणा ।

आस्तीक—(संज्ञा, पु०, सं०) जनमेजय के सर्प-यज्ञ में तक्षक के प्राण बचाने वाले एक ऋषि । ये एक सर्प थे और जरत्कारु मुनि के पुत्र थे, इनकी माता सर्पराज वासुकी की बहिन, जरत्कारी थीं, इसी से इन्होंने अपने मातुल तथा भाई तक्षक आदि को सर्प-सत्र से बचाया था ।

आस्तीन—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पहिनने के कपड़े का वह भाग जिससे बाँह ढँकी रहती है । बाँही, बाँह । **मुहा०—का साँप**—मित्र होकर शत्रुता करने वाला । विश्वास-घाती ।—**में साँप पालना**—शत्रु को अपने पास मित्र-रूप में रखना । धोखा खाना ।

आस्थगन—(पु०, सं०) क्षणिक विराम, रोक । [एबेयेन्स] ।

आस्था—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूज्य बुद्धि, श्रद्धा । सभा । बैठक । आलंबन । अपेक्षा । आदर ।

आस्थान—(संज्ञा, पु०, सं०) बैठने की जगह, बैठक, सभा, दरबार, स्थान ।

आस्पद—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थान, कार्य, कृत्य, अल्ल (दे०), कुल, जाति, प्रतिष्ठा । "आस्पद प्रतिष्ठायाम्" पा०—वंश, गोत्र । (वि०) योग्य, उपयुक्त, युक्त—जैसे लज्जास्पद ।

आस्फालन—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+स्फाल्+अनट्] गर्व, घमंड, अहंकार । फैलाव ।

आस्फालित—(वि०) [सं० आ+स्फाल्+क्त] ताडित, गर्वित, कम्पित, फैलाया हुआ ।

आस्फोट—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+स्फोट] ताली बजाने अथवा ताल ठोंकने से होने वाला शब्द । फटने, प्रफुल्ल होने, विकसित होने, प्रकाशित होने की आवाज ।

आस्फोटन—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+स्फुट्+अनट्] प्रफुल्लित होना, फटना, खिलना, विकसना, ताल ठोंकना । [वि० **आस्फोटित**—विकसित] ।

आस्माकीन—(वि०) [सं० आस्मक+ईन] हमारे पक्ष का, हमारा, हमारी ओर का ।

आस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मुख, चेहरा ।—**देश**-(पु०) मुख का विवर । मुँह का स्थान ।

आस्रव—(संज्ञा, पु०, सं०) उबलते हुए चावलों का फेन, माँड़ । पनाला । इंद्रियद्वार ।

आस्वाद—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+स्वद्+घञ्] स्वाद, जायका, मजा, सवाद (दे०), रस, रुचि, चस्का, रसानुभव ।

आस्वादक—(वि०, सं०) स्वाद लेने वाला, चखने वाला, मजा लेने वाला, रसानुभवी, जायका लेने वाला ।

आस्वादन—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+ स्वद्+अनट्] स्वाद लेना, चखना, रसानुभव करना, जायका लेना ।

आस्वादनीय—(वि०, सं०) स्वाद लेने या चखने योग्य ।

आस्वादित—(वि०, सं०) चखा हुआ, स्वाद लिया हुआ, भोगा हुआ, बरता हुआ, अनुभव किया हुआ । [स्त्री० **आस्वादिता**] ।

आस्वादु—(वि०, सं०) सुरस, स्वादिष्ट, सुस्वाद, मजेदार, जायकेदार ।

आस्वाद्य—(वि०, सं०) चखने के योग्य ।

आह—(अव्य०, दे०) [सं० अहह] पीड़ा, शोक, दुःख, खेद, और ग्लानि आदि का सूचक शब्द । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) कराहना, उसाँस भरना, ठंढी साँस, दुःख-क्लेश-सूचक शब्द । शाप । हाय हाय, हा हा । **मुहा०—पड़ना**—शाप पड़ना । किसी को दुःख पहुँचाने का बुरा फल मिलना ।—**भरना**-ठंडी साँस खींचना या लेना । पीड़ा या ग्लानि आदि से उसाँस भरना ।—**लगना**-शाप का सत्य होना । कोसने का सार्थक होना । किसी को दुःख देने का बुरा फल मिलना ।—**लेना**-सताना और शाप लेना, दुःख देना या कलपाना और उसका कोसना, साँस खींचना । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साहस] साहस । हियाव (दे०) बल, जोर । "बलहद भीम-कद काहू के न आह के"—भूषण ।—**क्रोध**-ललकार, [**आहु** दे०] "गह्यो राहु अति आहुकरि"—(वि०) ।

आहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० आ—आना+हट प्रत्य०] पैर तथा अन्यांगों से चलते समय होनेवाला शब्द, आने का शब्द, पाँव की चाप । खटका, वह शब्द जिससे किसी के किसी जगह पर रहने का अनुमान हो । पता, सुराग, टोह । **मुहा०—मिलना**—किसी के आने का शब्द सुनाई पड़ना और उसके

आने का अनुमान करना। पता लगना, टोह मिलना। —लेना—पता या टोह लेना, सुराग लगाना। ढूढ़ना, किसी के आने के शब्द को सुनना।

आहत—(वि०, सं०) चोट खाया हुआ, घायल, जखमी। जिस संख्या को गुणित किया जाये, गुण्य। "चतुराहत वर्गं समै रूपं पक्षद्वयंच गुणयेत्" व्याघात-दोष-युक्त वाक्य। पुराना। कंपित। गर्हित। ताडित, मारा हुआ। लुढ़काया हुआ। धुला हुआ अथवा नवीन वस्त्र। [संज्ञा, स्त्री० **आहति**। यौ० **हताहत**—मारे हुए और जखमी]। (संज्ञा, पु०) घायल व्यक्ति, मारा हुआ।—**चारी (पोत)**–घायलों को ले जानेवाला जहाज [ऐम्बुलैंस शिप]।—**यान**–घायल को ले जाने वाली मोटर [ऐम्बुलैंस कार]। —**रेलगाड़ी**–घायलों को ले जानेवाली रेलगाड़ी। [ऐम्बुलैंस ट्रेन]।—**सूची**–किसी दुर्घटना आदि में घायल होनेवाले व्यक्तियों की सूची। [कैजुअल्टी लिस्ट]।

आहतोपचारिका—(स्त्री०, सं०) घायलों का उपचार करनेवाली [ऐम्बुलैंस]।

आहन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लोहा, सार।

आहर॰—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अहः] समय, वक्त, काल, दिन। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आहव] युद्ध, लड़ाई, रण, संग्राम।

आहर-जाहर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आना-जाना।

आहरण—(संज्ञा, पु०, सं०) छीनना, हर लेना, किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। ग्रहण, लेना, लूटना, खसोटना।

आहरणीय—(वि०, सं०) हरण करने योग्य।

आहरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [दे० आहनन] लोहारों और सोनारों की निहाई।

आहर्तव्य—(वि०, सं०) ग्रहणीय, ले लेने लायक।

आहर्ता—(वि०) [सं० आ+हृ+क्त] आनयन या उपार्जन करनेवाला। ले लेनेवाला, छीननेवाला।

आहव—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+हू+अल] रण, युद्ध। यज्ञ, याग।

आहवन—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ करना। होम करना।

आहवनीय—(वि०, सं०) यज्ञ करने योग्य। कर्मकांड की तीन अग्नियों में से एक। यज्ञाग्नि।

आहाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आह्वान] हाँक, दुहाई, घोषणा, पुकार, बुलावा। (अव्य०) नहीं। हाँ, (स्वीकारार्थ मे भी)।

आहा—(अव्य०, दे०) [सं० अहह] आश्चर्य, हर्षादिसूचक शब्द, खेद या आक्षेपार्थक शब्द। धन्य-धन्य, साधु-साधु, वाह-वाह। "भै आहा पद्मावति चली"—जायसी।

आहार—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+हृ+घञ्] भोजन, खाना, खाने की वस्तु।—**विहार**–(संज्ञा, पु०, सं०) खाना-पीना। सोना आदि शारीरिक परिचर्या। रहन-सहन। "मिथ्याहार-विहाराभ्यां दोषोह्यामाशयाश्रितः"—मा० नि०।

आहारक—(संज्ञा, पु०, सं०) आहरणकारी, संग्राहक।

आहारी—(वि०) [सं० आहारिन्] खानेवाला, भक्षक, जैसे मांसाहारी (बुरे अर्थ में) शाकाहारी (अच्छे अर्थ में)। [स्त्री० **आहारिणी आहारि** दे०]।

आहार्य—(वि०, सं०) ग्रहण करने योग्य। खाने के योग्य। बनावटी। पकड़ा हुआ। कल्पित। पूजा के योग्य। (संज्ञा, पु०, सं०) चार प्रकार के अनुभावों में से चौथा। नायक और नायिका का परस्पर एक दूसरे का वेश बनाना। नेपथ्य में भूषणादि के द्वारा निर्मित। नाटकोक्ति में व्यंजक विशेष अंग-संस्कार।—**शोभा**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) कृत्रिम या बनावटी सुन्दरता। भूषणादि के द्वारा सजाई हुई सुन्दरता।

आहार्याभिनय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बिना बोले और कुछ चेष्टादि किये हुए केवल रूप और वेश द्वारा नाटक का अभिनय करना।

आहाव—(संज्ञा, पु०) [सं० आ+ह्वा+घञ्] क्षुद्र जलाशय। चहबच्चा। युद्धाह्वान। आमंत्रण।

आहासी—(वि०, सं०) घटती हुई, ह्रासमान [डिमिनिशिंग]।—**उपयोगिता**–घटती या कम होती हुई उपयोगिता। [डिमिनिशिंग यूटिलिटी]।—**प्रत्याय**–क्रमागत ह्रास, क्रमशः पतन। [डिमिनिशिंग रिटर्नस]।

आहि—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अस्] "आसना" का वर्तमान कालिक रूप है। [**आही अहै** दे०]।

आहित—(वि०) [सं० आ+धा+क्त] रक्खा हुआ। स्थापित। धरोहर या गिरों रक्खा हुआ, न्यस्त, अर्पित। (संज्ञा, पु०, सं०) पंद्रह प्रकार के दोषों में से एक। जो अपने स्वामी से इकट्ठा धन लेकर सेवा करे और उसे पाटता जाय। गिरवी रक्खा हुआ माल, न्यास, धरोहर।

आहितक—(संज्ञा, पु०, सं०) बंधक रखा हुआ सामान।

आहितांक—(वि०)चिह्नित।

आहिताग्नि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) साग्निक, अग्निहोत्री।

आहितुण्डिक—(संज्ञा, पु०) [सं० अहि+तुण्ड +ठिक्] व्यालग्राही, साँप पकड़नेवाला, सँपेरा।

आहिस्ता—(क्रि०, वि०, फ़ा०) धीरे से, धीरे-धीरे, शनैः शनैः, चुपचाप। [संज्ञा, स्त्री० **आहिस्तगी**]।

आहुक—(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्तिकावत नगर के राजा भोज के वंशज अभिजित नरेश के युग्म संतति में से एक, इनकी स्त्री का नाम काश्या था, इनसे ही देवक और उग्रसेन हुए, देवक श्रीकृष्ण के पितामह और उग्रसेन कंस के पिता थे।

आहुत—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ जो अतिथि-सत्कार के रूप मे किया जाता है। भूत-यज्ञ, बलिवैश्य देव।

आहुति—(संज्ञा, स्त्री०) (सं० आ + हु + क्ति] मंत्र पढ़ कर देवता के लिए अग्नि में होम के पदार्थ डालना। होम, हवन। हवन की सामग्री। एक बार में यज्ञ-कुंड में डाली जाने वाली हवन-सामग्री की मात्रा। शाकल्य।

आहू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हिरन।

आहूत—(वि०) [सं० आ + हू + क्त] बुलाया हुआ, आह्वान किया हुआ, निमंत्रित, न्योता हुआ।

आहृत—(वि०) [सं० आ + हृ + क्त] अर्जित। आनीत, लाया हुआ। हरण किया हुआ, छीना या लूटा हुआ, अपहृत। [स्त्री० **आहृता**]।

आहै*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अस] आसना का वर्तमान कालिक रूप है। [**अहै** दे०]

आहो—(अव्य०, सं०) विकल्प, खेद, विस्मय, संदेह, प्रश्नादि-सूचक शब्द।

आहो पुरुषिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आत्मश्लाघा, अहमिका, आत्मप्रशंसा।

आहोश्वित—(अव्य०, सं०) विकल्प। प्रश्न, जिज्ञासादि सूचक शब्द।

आह्निक—(वि०, सं०) रोजाना, दैनिक। दिवाकृत्य, दिन-साध्य, दिन-सम्बन्धी। (**संज्ञा, पु०, सं०**) भोजन-प्रकरण। ग्रन्थविभाग। नित्य क्रिया। नित्य का पाठादि। दैनिक इष्टदेवाराधन।

आह्ला—(संज्ञा, पु०, सं०) जलार्णव, जलाशय।

आह्लाद—(संज्ञा, पु०) [सं० आ + ह्लद् + घञ्] आनंद, हर्ष, खुशी, तुष्टि, प्रसन्नता।—**जनक**—(वि०, सं०) हर्षकारक, सुखद, तुष्टिकर। [वि० **आह्लादकारक, आह्लादकारी**]।

आह्लादित—(वि०) [सं० आ + ह्लद् + णिच् + क्त] आनन्दित, प्रसन्न, हर्षित, सुखी। [वि० **आह्लादनीय**]।

आह्लादिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आनंदित करनेवाली, उत्फुल्लकारिणी। "आह्लादिनी शक्तिनारी की"—गिरीश।

आह्वय—(संज्ञा, पु०) [सं० आ + ह्वे + अल] नाम, संज्ञा। तीतर, बटेर, भेड़े आदि जीवों की लड़ाई की बाजी। प्राणिद्यूत।

आह्वान—(संज्ञा, पु०) [सं० आ + ह्वा + अनट्] बुलाना, बुलावा। पुकार, सम्बोधन। आवाहन, निमंत्रण, न्योता। राजा की ओर से बुलावे का पत्र। समन। तलबनामा। यज्ञ में मंत्र के द्वारा देवताओं को बुलाना। "उसको प्रातः वेला में अनिवार्य मिला आह्वान"—गिरीश।

इ

इ—वर्णमाला में स्वरों के अंतर्गत तीसरा स्वर या वर्ण इसके बोलने का स्थान तालु है और प्रयत्न विवृत है, ई इसका दीर्घ रूप है। "इचुयशानाम् तालुः"। (अव्यय, सं०) भेद। कुपित। अपाकरण। अनुकंपा। खेद। कोप। संताप। दुःख। भावना। (संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव। गणेश।

इंग—(संज्ञा, पु०, सं०) हिलना, कंपन। चिह्न, संकेत। हाथी-दाँत।

इंगन—(संज्ञा, पु०, सं०) संकेत, इशारा।

इंगला—(संज्ञा, स्त्री०,दे०) [सं० इड़ा] इडा की एक नाड़ी जो शरीर के वाम भाग में रहती है (हठ-योग)।

इंगिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० मैगनीज] एक प्रकार का धातु का मोर्चा जो काँच या शीशे के हरेपन को दूर करने के काम में आता है।

इंगलिश—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) अंग्रेजी भाषा। (वि०) इंगलैंड का, अंग्रेजों की, इंगलैंड-सम्बन्धी।

इंगलिस्तान—(संज्ञा, पु०) [अं० इंगलिश + स्तान फ़ा, सं० स्थान] अंगरेजों का देश, इंगलैंड।

इंगलैंड—(संज्ञा, पु०, अं०) अंग्रेजों का देश, फ्रांस के उत्तर में एक टापू या द्वीप का दक्षिणी भाग। [वि० **इंगलैंडीय**—इंगलैंड देश-सम्बन्धी]।

इंगित—(संज्ञा, पु०, सं०) मन के अभिप्राय को किसी चेष्टा या इशारे के द्वारा प्रगट करना। इशारा, चेष्टा, सङ्केत। (वि०) हिलता हुआ, चलित, इशारा या सङ्केत किया हुआ। "बंक भृकुटियों के इंगित पर"—रा० न० त्रि०।

इंगुदी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हिंगोट का वृक्ष। ज्योतिष्मती वृक्ष। इसके फल तेलमय होते हैं और घाव या व्रण के लिए अति लाभकारी हैं। मालकँगनी। [संज्ञा, पु० **इंगुद**] हिंगोट वृक्ष।

इंगुर*—(संज्ञा, पु०, दे०) ईंगुर, सिंदूर का एक भेद।

इंगुरौटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ईंगुर + औटी—

प्रत्य०] सौभाग्यवती स्त्रियों की ईंगुर या सिंदूर की डिबिया।

इंच—(संज्ञा, स्त्री० अं०) एक फुट का बारहवाँ हिस्सा। तस्सू।

इंचना—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० खींचना] खिंचना, ईंचना।

इंजन—(संज्ञा, पु०) [अं० एंजिन] कल, पेंच, भाप या बिजली से चलनेवाला एक यंत्र, रेलवे ट्रेन का वह डिब्बा या अगली गाड़ी जो भाप के जोर से और सब गाड़ियों को खींचता और चलाता है। [दे० **अंजन**]।

इंजीनियर—(संज्ञा, पु०) [अं० एंजीनियर] यंत्र की विद्या जाननेवाला। कलों का बनाने, सुधारने और चलानेवाला व्यक्ति, शिल्प विद्या में दक्ष। विश्व-कर्मा। सड़कों, इमारतों, और पुलों आदि को बनवाने, सुधारने और उनकी देख-भाल करने वाला एक सरकारी अफ़सर। [संज्ञा, स्त्री० **इंजीनियरी**]।

इंजील—(संज्ञा, स्त्री०, यू०) ईसाइयों की धर्म-पुस्तक।

इंजोर—(संज्ञा, पु०, सं०) उजाला, प्रकाश। "जानि खानि मेल चाँद इंजोर"—विद्या०।

इँडहर—(संज्ञा, पु०, दे०) उर्द की दाल से बनाया हुआ एक प्रकार का भोजन या खाना।

इँडुरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गेंडुरी, इँडुवा।

इँडुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंडल] कपड़े की बनी हुई छोटी गोल गद्दी जिसे बोझ उठाते समय सिर पर रक्खा जाता है। गेंडुरी, विड़ई (प्रान्ती०)।

इंतकाल—(संज्ञा, पु०, अ०) मृत्यु, मौत। एक के अधिकार से दूसरे के अधिकार में किसी माल या वस्तु का जाना।

इंतजाम—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रबंध, बंदोबस्त, व्यवस्था। "ऐसो इंतजाम चेते हैं"—द्विजेश।

इंतज़ार—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रतीक्षा, रास्ता देखना, बाट जोहना, परखना। [संज्ञा, स्त्री० **इंतज़ारी**]।

इंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० इंद्र] सुरपति, इंद्र, देवराज।

इंदर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० इंद्र] इन्द्र, सुरेश।

इंदव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऐंदव] एक प्रकार का छंद, मत्तगयंद।

इंदारुन—(संज्ञा पु०, दे०) [सं० इन्द्रायन] एक प्रकार की औषधि।

इंदिरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्ष्मी, रमा, शोभा, छवि।—**मंदिर**—(संज्ञा, पु०, सं०) नीलोत्पल, नीलकमल।—**लय**—(संज्ञा, पु०) नील पद्म, पंकज।—**वर**—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्दिरेश, रमेश, विष्णु।

इंदीवर—(संज्ञा, पु०, सं०) नीलकमल, नीलोत्पल, नीलपद्म, जलज। "इन्दीवरदल-श्याममिन्दिरानंद कंदलम्"—म०—"कुमुद इंदु कौशिक इंदीवर"—रा० न० त्रि०।

इंदु—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा, शशि। कपूर। एक की संख्या। "सरद इन्दु कर निंदक हासा"—तुल०।—**कला**-इन्दुलेखा, चन्द्रलेखा, चन्द्रकला।—**कान्ता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात्रि, निशा।—**दह**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा का कुंड। चन्द्र का श्याम भाग। "सुधासर जनु मकर क्रीड़त, इन्दुदह दहडोल"—सूर।—**बदना**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चंद्रमुखी, चंद्रमा के से मुख वाली, मयंकमुखी, विधुवदनी। (संज्ञा, स्त्री० सं०) एक प्रकार का वर्णिक वृत्त।—**भृत्**-(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, शंकर।—**मती**-(संज्ञा स्त्री०, सं०) चन्द्रयुक्तारात्रि, पूर्णमासी। अयोध्या-नरेश अज की रानी, इन्हीं से महाराज दशरथ हुए थे। यह विदर्भराज की कन्या थीं।—**व्रत**-(संज्ञा, पु०, सं०) चान्द्रायणव्रत।

इंदुर—(संज्ञा, पु०, सं०) मूसा। चूहा। मूषिका। "कीन्हेसि लोवा इन्दुर चींटी"—जायसी।

इंद्र—(वि०, सं०) ऐश्वर्यवान, विभूतिसम्पन्न, श्रेष्ठ, बड़ा, उत्तम, प्रतापी। (संज्ञा, पु०) एक वेदोक्त देवता, जिसका स्थान अंतरिक्ष है और जो पानी बरसाता है। पौराणिक देवता जो अन्य सब देवताओं के राजा माने जाते है, अतः ये देवराज या सुरेश कहे जाते है। पुलोम दानव की कन्या शची इनको ब्याही थीं, अतः ये शचीश भी कहलाते है, इनके पुत्र का नाम जयंत था।—**का अखाड़ा**-इन्द्र की सभा जिसमें अप्सराएँ नाचती हैं, बहुत सजी हुई सभा, जिसमें खूब नाचरंग होता हो।—**कानन**-(संज्ञा, पु०, सं०) नन्दन वन।—**की परी**-अप्सरा। बहुत सुन्दर स्त्री। (संज्ञा, पु०, सं०) बारह आदित्यों में से एक, सूर्य। बिजली। मालिक। स्वामी। ज्येष्ठा नक्षत्र। बादल। चौदह की संख्या। छप्पय छंद के भेदों में से एक। जीव, प्राण। एक मन्वन्तर के १४ भाग (क्योंकि एक मन्वन्तर में १४ इन्द्र होते हैं)। कुटजवृक्ष। रात्रि।—**कील**-(संज्ञा, पु०, सं०) मंदराचल, मंदर पर्वत।—**कुंजर**-(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र का हाथी, ऐरावत।—**गोप**-(संज्ञा, पु०, सं०) बीर बहूटी नाम का एक बरसाती कीड़ा जो लाल रंग का होता है। खद्योत, जुगनू।—**जव**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० इन्द्रयव] कुड़ा,

कौरैय्या के बीज ।—**जाल**–(संज्ञा, पु०, सं०) माया-कर्म, जादूगरी, तिलस्म, नटविद्या । धोखा, छल-छद्म । मंत्र-तंत्र-द्वारा अजीब बातें दिखाना ।—**जालक**–(वि०, सं०) मायावी, मायिक, बाजीगर ।—**जाली**–(वि०) [सं० इंद्रजालिन्] इन्द्रजाल करने वाला, जादूगर, मायावी । [स्त्री० **इंद्रजालिनी**]।—**जित**–(वि०, सं०) इन्द्र को जीतने वाला । (संज्ञा,पु०, सं०) रावण का पुत्र, मेघनाद ।—**जीत**–(दे०) चौराई का पौधा ।—**दमन**–(संज्ञा,पु०,सं०, रूढ़ि) बाढ़ के समय नदी के जल का किसी दूरवर्ती निश्चित कुंड, ताल, वट या पीपल के वृक्ष तक पहुँच जाना, यह एक पर्व या योग समझा जाता है । मेघनाद का एक नाम या विशेषण ।—**धनु**,—**धनुष**–(संज्ञा, पु०, सं०) सात रंगों से बना हुआ, एक अर्धवृत्त जो वर्षा-काल में सूर्य के विरुद्ध दिशा को ओर आकाश पर छाये हुये बादलों में दिखाई देता है, यह बादलों या वाष्प कणों पर सूर्य-प्रकाश के प्रतिबिम्ब का फल है । "हरित बाँस की बाँसुरी, इन्द्र धनुष छवि होति"—बिहारी ।—**नील**,—**नीलक**–(संज्ञा, पु०) [सं० इंद्र—बादल + नील] नीलम रत्न, नीलमणि । पन्नग, मरकत, पन्ना ।—**पुरी**–(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ग का नगर । अमरावती ।—**प्रस्थ**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जला कर बसाया था, हरिप्रस्थ, शक्रप्रस्थ (वर्तमान दिल्ली—यद्यपि यह यमुना के वाम तट पर है) । और इन्द्रप्रस्थ दक्षिण तट पर था ।—**यव**–(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्रजव, कुडा नाम की औषधि, इसे इंद्रफल भी कहते हैं ।—**लोक**—(संज्ञा, पु० सं०) स्वर्ग, देव-लोक, सुरलोक ।—**वंशा**–(संज्ञा, पु०, सं०) १२ वर्णों का एक वृत्त ।—**वज्रा**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का वर्णिक वृत्त, जिसमें दो तगण, एक जगण और दो गुरु वर्ण होते हैं । "स्यादिन्दवज्रा यदि तौ जगौ गः" ।—**वधू**–(संज्ञा, पु०, सं०) बीरबहूटी । भृंगकीट ।—**सुत**–(संज्ञा, पु०, सं०) जयंत । अर्जुन । सुग्रीव ।

इंद्रत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र का कर्म । स्वर्ग का असाधारण कार्य । राजत्व । प्राधान्य । इन्द्र-पद ।

इंद्राणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इन्द्र की पत्नी, शची । बड़ी इलायची । इन्द्रायन । दुर्गादेवी । वाम नेत्र की पुतली ।

इंद्रानुज—(संज्ञा, पु०,सं०) विष्णु, नारायण, हरि । श्रीकृष्ण ।

इंद्रायन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार की लता, जिसका लाल फल देखने में तो अति सुन्दर किन्तु खाने में अति कटु लगता है । इनारू, औषधि-विशेष । [**इँदोरन** दे०] ।

इंद्रायुध—(संज्ञा, पु०, सं०) वज्र, इन्द्रधनुष ।

इंद्रासन—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र का सिंहासन, इन्द्र का आसन, ऐरावत हाथी । (वि०) राजसिंहासन, सिंहासन, शाहीतख्त ।

इंद्रिय (**इंद्री**)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है । शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा यह शक्ति बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है । पदार्थों के रूप, रस, गंध, स्पर्श, आदि के अनुभव में सहायक होने वाले पाँच अंग—चक्षु (आँख) । श्रोत्र (कान), रसना (जीभ) नासिका (नाक) और त्वचा (शरीर के ऊपर का चर्म) इन्हे ज्ञानेन्द्रिय कहते हैं । वे अंग या अवयव जिनसे भिन्न-भिन्न प्रकार के बाहरी कार्य किये जाते हैं । ये भी पाँच है वाणी, हाथ, पैर, गुदा, उपस्थ, इन्हें कर्मेन्द्रियाँ कहते हैं । लिंगेन्द्रिय, अंतरेंद्रिय या मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार । पाँच की संख्या ।—**गण**–(संज्ञा, पु०, सं०) इंद्रियों का समूह ।—**गोचर**–(वि०, सं०) इन्द्रियों का विषय, ज्ञान-गम्य, बोधगम्य ।—**ग्राह्य**–(वि०, सं०) शब्द, रस, रूप, गंध, आदि विषय, इन्द्रियों के विषय ।—**जित**–(वि०, सं०) इन्द्रियों को जीत लेने वाला, जो विषयासक्त न हो, जितेन्द्रिय । "वे रहस्य-रक्षक इंद्रियजित"—रा० न० त्रि० ।—**दोष**–(संज्ञा, पु०, सं०) कामादि दोष, कामुकता, लंपटता ।—**निग्रह**–(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्रियों के वेग को रोकना, इन्द्रियों को अपने वश में करना ।—**विषय**–(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्रियग्राह्य, नेत्रादि, इन्द्रियों के पथ-स्थित, इन्द्रियों के कर्म ।

इंद्रियागोचर—(वि०) [सं० इंद्रिय + अगोचर] जो इन्द्रियों से न जाना जा सके ।

इंद्रियातीत—(वि०, सं०) जो इंद्रीयगोचर न हो, इन्द्रियों की सीमा से परे । "है ज्ञाता की न गति जिसमें इंद्रियातीत जो है" ।—हरिऔध ।

इंद्रियार्थ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्रियजन्य ज्ञान का विषय, रूप, रस, शब्द, गंध आदि ।

इंद्री*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० इन्द्रिय] लिंग । (दे०) ।

इंद्रीजुलाब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० इन्द्रिय—जुलाब—फ़ा०] पेशाब अधिक लाने वाली औषधि ।

इंधन—(संज्ञा, पु०, सं०) जलाने की लकड़ी, ईंधन (दे०) ।

इंसाफ—(संज्ञा, पु०, अ०) न्याय, अदल, फैसला,

निर्णय। (वि०) [मुंसिफ]। (संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव।

इहैं—(क्रि०, वि०, दे०) यहाँ ही।

इहै—(वि०, दे०) यही।

इआनत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मदद, सहायता।

इकंक*—(क्रि०, वि०, दे०) [इक+अंक] निश्चय ही। "बाल बरन सम हैं नहीं, रंक मयंक इकंक" —दास०।

इकंग*—(वि०, दे०) [सं० एकांग] एक ओर का। (संज्ञा, पु०) शिव।

इकंत*—(वि०, दे०) [सं० एकान्त] अकेले मे, नितांत। (संज्ञा, पु०, दे०) निर्जनस्थान।

इक*—(वि०, दे०) एक (सं०)। "इक बाहर इक भीतरै"—वृन्द०।

इकइस—(वि०, दे०) इक्कीस (दे०) [एक विंशति सं०] बीस और एक, सात का तिगुना। (संज्ञा, पु०, दे०) इक्कीस का अंक।

इकछतराज—(संज्ञा, पु०, दे०) एक छत्र राज्य। (सं०) चक्रवर्ती राज्य, प्रतिद्वंद्वी-रहित राज्य।

इकजोर*—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० एक+जोर—हि०] इकट्ठा, एक साथ, सब मिल कर एक।

इकटक—(क्रि०, वि०) [दे० एक टक—हि०] निस्पंद नेत्र से देखना, टकटकी लगाकर ताकना। "इकटक पहरों तो मैं उन्हें देखती हूँ"—हरिऔध।

इकट्ठा—(वि०, दे०) [सं० एकस्थ] एकत्र, जमा, एक ठौर। "लंबे, सीधे, सुघर इकट्ठे"—रा० न० त्रि०।

इकठौर, इकठौरी—(वि०,दे०) [एक+ठौर] एक स्थान पर उपस्थित, एकत्र, इकट्ठा।

इक़तदार—(संज्ञा, पु०, अ०) शक्ति, अधिकार, सामर्थ्य, प्रभाव।

इकतर*—(वि०, दे०) [सं० एकत्र] एकत्र, इकट्ठा।

इकतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [एकतरा सं०] एक दिन का नागा करके आने वाला ज्वर, अँतरा (दे०), एकाहिक।

इकता*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० एकता] ऐक्य, मेल।

इकताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०] [फ़ा० एकता] एक होन का भाव, एकत्व। अकेले रहने की इच्छा। स्वभाव या बान। एकांत-सेविता। अद्वितीयता। एकता, ऐक्य, अभेद। "एक से जब दो हुए तब लुत्फ़ इकताई नहीं"।

इकतान*—(वि०, दे०) [हि० एक+तान] एक रस, एक सदृश, एकसा, [**इकताना** दे०] स्थिर, अनन्य।

इकतार—(वि०, दे०) [हि० एक+तार] बराबर, एक रस, समान। (क्रि०, वि०) लगातार, निरंतर।

इकतारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० एक+तार] सितार के ढंग का एक बाजा, जिसमें केवल एक ही तार लगा रहता है, एक प्रकार का हाथ से बुना जाने वाला कपड़ा, जिसमें सूत एकहरा ही रहता है।

इकतीस—(वि०, दे०) [सं० एकत्रिंशत, या एकतीस] तीस और एक। (संज्ञा, पु०) तीस और एक की संख्या, इकतीस का अंक, ३१। [यौ० **इकतीसासौ** एक सौ इकतीस]।

इकत्र*—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० एकत्र] एक जगह।

इकबारगी—(क्रि०, वि०, दे०) सहसा, एक दम से, एक साथ। अचानक।

इकबाल—(संज्ञा, पु०, दे०) एकबाल, प्रताप। सौभाग्य। वर्ष-कुंडली में एक शुभयोग—"चेत्कंटके पणफरे चरणा समस्ता, स्यादिक्कबाल इति राज्य सुखास्ति हेतुः"—नीलकंठी।—**मंद**—(वि०) [अ० + फ़ा०] भाग्यवान, प्रतापी, प्रतापशील।

इकरस—(वि०, दे०) एक रंग, बराबर, एक समान।

इकराम—(संज्ञा, पु०, अ०) पारितोषिक, इनाम। इज्जत, आदर। (यौ०) [इक+राम] एक राम। [यौ० **इनाम इकराम**—इनाम, बख्शिस, पुरस्कार, सम्मान, उपहार]।

इकरार—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रतिज्ञा, वादा। किसी काम के करने की स्वीकृति। ठहराव।—**नामा**—(संज्ञा, पु०, अ०) अनुबन्ध पत्र, शर्त की लिखा पढ़ी का कागज, [एग्रिमेण्ट]।

इकला*—(वि०, दे०) अकेला, एकाकी।—**दुकला**—(वि०) इक्का-दुक्का, एक-दो, अकेला-दुकेला।

इकलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [एक+लाई—लोई—पर्त] एक पाट का महीन दुपट्टा या चद्दर। अकेलापन।

इकलौता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० इकला+पु० हि० उत, सं० पुत्र] अपने माँ-बाप का अकेला लड़का। लाडिला बेटा।

इकल्ला—(वि०, दे०) [हि० एक+ला—प्रत्य०] एकहरा, एक पर्त का, *अकेला।

इकसंग—(क्रि०, वि०, दे०) एक संग, एक साथ, एक बारगी।

इकसठ—(वि०, दे०) [सं० एकषष्ठि] साठ और एक। (संज्ञा, पु०) साठ और एक को सूचित करने वाला संख्यांक, ६१। एकसठ (दे०)।

इकसर*—(वि०, दे०) [हि० एक+सर—प्रत्य०] अकेला, एकहरा, एकाकी। (सं०) एक पर्त का।

इकसार—(वि०, दे०) बराबर, लगातार, सरीखा, समान, सदृश, एक समान।

इकसूत*—(वि०, दे०) [सं० एक+सूत्र] एक साथ, इकट्ठा, एकत्र। सीधा, समतल, बराबर, हमवार (जैसे दीवार इकसूत है) एक से, समान, सदृश।

इकहरा—(वि०, दे०) एकहरा, एक पर्त का।

इकहाई*—(क्रि०, वि०, दे०) [हिं० एक+हाई—प्रत्य०] एक साथ। फौरन, अचानक, तुरन्त।

इकांत*—(वि०, दे०) एकान्त। (सं०) निर्जन स्थान।

इकाई—(संज्ञा, स्त्री०) गिनती मे जो अंक पहले आवे। यौगिक पदार्थ के मूल अवयवों में से एक। "ग्राम विश्व की एक इकाई"—गिरीश।

इकेला—(वि०, दे०) अकेला (हिं०), एकाकी (सं०)।

इकैठ*—(वि०, दे०) [सं० एकस्थ] इकट्ठा, एकत्र।

इकोतर—(वि०, दे०) [सं० एकोत्तर] एक अधिक, जैसे इकोतर सौ।

इकौंज—(संज्ञा, स्त्री०, प्रान्ती०) एक ही संतान वाली स्त्री, काक वंध्या (सं०)।

इकौनी—(वि०, स्त्री०, दे०) एक कम। एक। बेजोड़। "छिति कीसी छौनी, रूप रासि सी इकौनी"—रवि०। [वि०, पु० **इकौना**—अनुपम, बेजोड़]।

इकौसौ*—(वि०, दे०) [सं० एक+आवास] एकान्त, बिलकुल अलग।

इक्का—(वि०, दे०) [सं० एक] एकाकी, अकेला। अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय, अनूठा, उत्तम। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार की कान की बाली, जिसमें एक मोती पड़ा रहता है। अकेला ही लड़ाई में लड़ने वाला योधा। अपने झुंड को छोड़कर अलग हो जाने वाला पशु। एक प्रकार की दो पहियेदार घोड़ा-गाड़ी, जिसमें एक ही घोड़ा जोता जाता है। किसी रंग की एक ही बूटी वाला खेलने के ताश का पत्ता। [**इक्की** स्त्री०]।—**दुक्का**-(वि०) [हिं० एक दो] अकेला-दुकेला, एक या दो।

इक्कीस—(वि०, दे०) [सं० एक विंशत] बीस और एक। (संज्ञा, पु०) बीस और एक की संख्या या अंक, २१।

इक्यावन—(वि०, दे०) [सं० एक पंचाशत, प्रा० इक्कावन] पचास और एक। (संज्ञा, पु०) पचास और एक की संख्या या अंक, ५१। इक्कावन (दे०)।

इक्यासी—(वि०, दे०) [सं० एकाशीति, प्रा० एक्कासी] अस्सी और एक। (संज्ञा, पु०) अस्सी और एक की संख्या या अंक, ८१, एक्यासी।

इक्षु—(संज्ञा, पु०, सं०) ईख, गन्ना, ऊख।—**कांड**-(पु०) ईख के पोर, या भाग। मूज, रामशर, रामबाण।—**प्रमेह**-(पु०) मधु-प्रमेह। मूत्र सम्बन्धी एक प्रकार का रोग।—**रस**-(पु०) राब, खँडरस, ईख का रस।—**रसोद**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ईख के रस का समुद्र।—**विकार**-(पु०) माधुर्य, चीनी आदि पदार्थ।—**सार**-(पु०) गुड़, खाँड़ आदि पदार्थ।

इक्षुमती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुरुक्षेत्र के पास एक नदी।

इक्ष्वाकु—(संज्ञा, पु०, सं०) वैवस्वत मनु के पुत्र और सूर्य-वंश के प्रथम राजा, इन्होंने अयोध्या को राजधानी बनाया था, इनके पुत्र का नाम कुक्षि था। सुबन्धुसुत काशीनरेश, जो इक्षु-दंड फोड़ कर निकला था। कड़ुई लौकी।

इक्ष्वालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नरकट, नरकुल। सरपत, मूँज। कास।

इखद*—(वि०, दे०) [ईषत् सं०] थोड़ा, कम।

इखराज—(संज्ञा, पु०, अ०) निकास, खर्च।

इखराजात—(संज्ञा, पु०, अ०) खर्च का ब० व०, भिन्न-भिन्न प्रकार के अनेक व्ययों की राशि।

इखलास—(संज्ञा, पु०, अ०) मेल-मिलाप, मित्रता, प्रेम भक्ति, प्रीति, एख़लाक।

इखु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० इषु] बाण।

इख़्तलाफ़—(संज्ञा, पु०, अ०) विरोध, अन-बन, दुश्मनी, फ़र्क़।

इख़्तसार—(संज्ञा, पु०, अ०) संक्षेप। खुलासा।

इख़्तियार—(संज्ञा, पु०, अ०) अधिकार। अधिकार-क्षेत्र। सामर्थ्य। क़ाबू। प्रभुत्व, स्वत्व। [**अख़्तयार** दे०]।

इग़माज़—(संज्ञा, पु०, अ०) उपेक्षा, अवहेलना।

इग़वा—(संज्ञा, पु०, अ०) बहकाने की क्रिया। भुलावा।

इच्छना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० इच्छन] इच्छा करना, चाहना, लालसा रखना।

इच्छा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी सुखद वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान को ले जाने वाली एक मनोवृत्ति। लालसा, अभिलाषा, चाह, रुचि।—**चारी**-(वि०, पु०, सं०) मनमौजी, मन के अनुसार घूमने, फिरने या काम करने वाला, स्वतंत्र, स्वच्छंद, निरंकुश, स्वेच्छाचारी। [स्त्री० **इच्छाचारिणी**]।—**भेदी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विरेचन-वटी, साधारण दस्तावर दवा।—**भोजन**-(संज्ञा, पु०, सं०) इच्छा के अनुसार खाना। अभीष्ट भोजन, रुचिकर भोजन।—**लाभ**-(संज्ञा, पु०, सं०) अभीष्ट-प्राप्ति।

इच्छित—(वि०, सं०) चाहा हुआ, वांछित, ईप्सित।

इच्छुꕥ—(संज्ञा, पु०, दे०) ईख, ऊख, इक्षु (सं०)।

इच्छुक—(वि०, सं०) चाहने वाला, इच्छा रखने वाला, अभिलाषी, आकांक्षी।

इजमाल—(संज्ञा, पु०, अ०) कुल, समष्टि, किसी वस्तु पर कई व्यक्तियों का संयुक्त स्वत्व, साझा। (वि०) इजमाली (अ०), शिरकत का, मुश्तरका, संयुक्त, साझे का।

इजराय—(संज्ञा, पु०, अ०) जारी करना, प्रचार करना। व्यवहार, अमल, प्रयोग। [एक्जीक्यूशन]। **—डिगरी**–डिगरी का अमल-दरामद होने, डिगरी जारी कराने का कार्य।

इजलास—(संज्ञा, पु०, अ०) बैठक। हाकिम की बैठक, मुकद्दमों के फैसल करने का स्थान, कचहरी, न्यायालय। [कोर्ट]।

इजहार—(संज्ञा, पु०, अ०) जाहिर करना, प्रकाशन, प्रकट करना। अदालत के सामने बयान, गवाही, साक्षी।

इजाज़त—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आज्ञा, हुक्म, स्वीकृति, परवानगी, मंजूरी, सम्मति।

इजाफा—(संज्ञा, पु०, अ०) बढ़ती, वृद्धि, तरक्की। खर्च के बाद बचा हुआ धन, बचत।

इजार—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पायजामा, सूथन।**—बंद**–(पु०) सूत या रेशम का जालीदार बँधना जो पायजामे या लँहगे के नेफे में उसे कमर से बाँधने के लिए पड़ा रहता है, नारा।

इजारदार, इजारेदार—(वि०, फ़ा) किसी पदार्थ को इजारे या ठेके पर लेने वाला। ठेकेदार, अधिकारी।

इजारा—(संज्ञा, पु०, अ०) किसी पदार्थ को उजरत या किराये पर देना। ठेका। अधिकार, इख्तियार, स्वत्व।

इज़्ज़त—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा, आदर। **मुहा०—उतारना**— मर्यादा नष्ट करना।**—लेना**—मर्यादा या प्रतिष्ठा न करना। **—देना**—प्रतिष्ठा गँवाना, मर्यादा खोना, सम्मान या आदर करना या देना।**—बिगाड़ना (स्त्री के लिए)**—सतीत्व नष्ट करना, बलात्कार करना। **(साधारणतया)** मान-मर्यादा या प्रतिष्ठा को नष्ट करना।**—मिट्टी में मिलाना**—प्रतिष्ठा नष्ट करना, मर्यादा का बिगाड़ना।**—रखना**—मान-मर्यादा या प्रतिष्ठा की रक्षा करना, नष्ट न होने देना।

इज़्ज़तदार—(वि०, फ़ा०) प्रतिष्ठित, सम्मानित।

इज्य—(वि०) [सं० यज्+य] बृहस्पति, देवाचार्य, गुरु, शिक्षक, पूज्य। [स्त्री० इज्या]।

इज्या—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० यङ्+य+आ] दान। याग, यज्ञ। पूजा, अर्चा। आठ प्रकार के धर्मों में से प्रथम। [वि० **इज्याशील**—बार-बार यज्ञ करने वाला। याजक। यज्ञकारी]।

इठलाना—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० ऐंठ+लाना] इतराना। गर्व या घमंड दिखाना। अहंकार-सूचक चेष्टा करना। मटकना। नखरा करना। ऐंठ दिखाना। अनजान बनना। काम में विलम्ब करना। ठसक दिखाना। [**अठिलाना** ब्र० भा०]।

इठलाहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० इठलाना] इठलाने का भाव, ठसक, इतराना, घमंड, ऐंठ।

इठाईꕥ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० इष्ट+आई प्रत्य०] अभिरुचि, चाह। मित्रता, प्रीति, इष्टता। "नेकहूँ उमैठे गये नेह की इठाई सों।"—रवि०।

इड़ा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी, भूमि। गाय। वाणी। स्तुति। अन्न। हवि। नभदेवता। दुर्गा, अंबिका, पार्वती। कश्यप ऋषि की पत्नी जो दक्ष-प्रजापति की पुत्री थीं। स्वर्ग। हठयोग की साधना के लिए मानी गई वामांग ओर की एक कल्पित नाड़ी। सरस्वती। वैवस्वत मनु की पुत्री जो चंद्र-पुत्र बुध से ब्याही थीं और जिनसे प्रसिद्ध नृप पुरुरवा पैदा हुए थे।

इड़ुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ऐंडुरी, गेंड़री, बीड़ा।

इतꕥ§—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० इतः] इधर, इस ओर, यहाँ, इतै (ब्र०)। [**इत्त** दे०]।**—उत**–(क्रि०, वि०) [सं० इतः+ततः] इधर-उधर। [**इत्त उत्त** दे०]।

इतक़ाद—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० एतक़ाद] विश्वास, दिलजमई।

इतना—(वि०, दे०) [सं० एतावत—या पु० हिं० ई —यह+तना प्रत्य०] इस मात्रा का, इस क़दर, [**इतनो** ब्र०, **एतो** ब्र० **इत्ता** प्रान्ती० **इत्तो** दे०]। **मुहा०—(ने) में**—इसी बीच में, ऐसा होने पर। [स्त्री० **इतनी, एती** ब्र०, **इत्ती** प्रान्ती०]।

इतमामꕥ—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० इहतिमाम] इन्तजाम, बंदोबस्त, प्रबंध, व्यवस्था।

इतमीनान—(संज्ञा, पु०, अ०) विश्वास, दिल-जमई, संतोष। भरोसा। [वि० **इतमीनानी**—भरोसे का]।

इतर—(वि०,सं०) दूसरा, अपर, और, अन्य। नीच,

पामर। साधारण, सामान्य। (पु०) अतर, फुलेल, इत्र, पुष्पसार।—**विशेष**-(वि०) आप से भिन्न। प्रभेदयुक्त।—**लोक**-(पु०) दूसरा लोक। छोटे लोग। —**जाति**-(स्त्री०),—**जन**-(पु०, सं०) दूसरी जाति, नीच जाति, सामान्य लोग। अन्य जन। नीच मनुष्य।

इतराज॰—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० एतराज़] विरोध, बिगाड़, नाराजी। आपत्ति, इतराज [दे०, वि० **इतराजी**]।

इतराना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्तरण] घमंड करना, इठलाना, ऐंठ या ठसक दिखाना। [**इतराइबो** ब्र०]।

इतराहट॰—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० इतराना] दर्प, घमंड, गर्व।

इतरेतर—(क्रि०, वि०) [सं० इतर+इतर] अन्यान्य, परस्पर, आपस में।

इतरेतराभाव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक के गुणों का दूसरे में न होना। अन्योन्याभाव (न्याय०)।

इतरेतराश्रय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक प्रकार का दोष जो वहाँ होता है जहाँ दो वस्तुओं में से प्रत्येक की सिद्धि दूसरी पर निर्भर रहती है—अर्थात् एक की दूसरी पर और दूसरी की सिद्धि प्रथम की सिद्धि पर आधारित होती है (तर्क न्याय०)।

इतरेद्यु:—(अव्य०, सं०) दूसरे दिन। अन्यदिन।

इतरौहाँ—(वि०) [हि० इतराना+औहाँ प्रत्य०] इतराना सूचित करने वाला। इतराने का भाव प्रगट करने वाला।

इतवार, इत्तवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आदित्यवार] शनि और सोमवार के बीच का दिन, रविवार। [**एतवार** दे०]।

इतस्ततः—(क्रि०, वि०, सं०) इधर-उधर। इत उत, इतै उतै (दे०)।

इताअत-इतात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आज्ञा-पालन, ताबेदारी, इताति (दे०)। "निसि-बासर ताकहँ भले, मानै राम इतात"—तु०।

इति—(अव्य०, सं०) समाप्ति-सूचक शब्द। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) समाप्ति, पूर्ति, पूर्णता।—**श्री**-समाप्ति, अंत। पूर्ति।—**शुभम्**-समाप्त, पूर्ण।—**कथा**-(स्त्री०) अर्थ-शून्य वाक्य। अनुपयुक्त बात।—**कर्तव्य**-(स्त्री०) उचित कर्तव्य। कर्मांग।—**कर्तव्यता**-(स्त्री०) किसी काम के करने की विधि, परिपाटी, प्रणाली।—**वृत्त**-(पु०) पुरावृत्त। पुरानी कथा। कहानी। जीवनी। ऐतिहासिक वृत्तांत।

इतिहास—(संज्ञा, पु०) [सं० इति+ह+आस्] पूर्व वृत्तान्त। बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और उनसे सम्बन्ध रखने वाले पुरुषों, स्थानों आदि का कालक्रम से वर्णन, तारीख़, तवारीख़, पुरावृत्त, उपाख्यान। प्राचीन कथा, अतीत काल की घटनाओं का विवरण। [वि० **इतिहासज्ञ**—इतिहास मे दक्ष]।

इती॰—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० इतनी] इतनी, [**एती** ब्र०, **इत्ती** दे०]।

इतेक॰—(वि०, दे०) [हि० इत+एक] इतना, इतना ही।

इतो॰—(वि०, दे०)[सं० इयत्+इतना] इतना। [**एतो** ब्र०, **इत्तो** दे०]।

इत्तफ़ाक—(संज्ञा, पु०, अ०) मेल, मिलाप, एका, सहमति, सहयोग। मौक़ा, अवसर। [वि० **इत्तफ़ाकिया**—आकस्मिक, मौके का]। [क्रि०, वि० **इत्तफ़ाकन**-संयोगवश, मौके से]। **मुहा०—पड़ना**—संयोग उपस्थित होना। मौक़ा पड़ना।—**से**—संयोगवश, अकस्मात्।

इत्तला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० इत्तलाअ] सूचना, खबर।—**नामा**-सूचना-पत्र।

इत्तहाद—(संज्ञा, पु०, अ०) मेलजोल, एकता, मित्रता।

इत्ता, इत्तो—(वि०, दे०) इतो, एता, इतना। [ब०, व० **इत्ते**। स्त्री० **इत्ती**]।

इत्थं—(क्रि०, वि०, सं०) ऐसे, यों, इस प्रकार, इस तरह।

इत्थंभूत—(अव्य०, सं०) ऐसी स्थिति में, यह परिस्थिति उत्पन्न होने पर। (वि०) ऐसा, इस प्रकार का।

इत्थमेव—(वि०, सं०) ऐसा ही, इस प्रकार का ही।

इत्थशाल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मिला हुआ, संयोग, मेल, मिलाप, मैत्री। एक प्रकार का वर्ष कुंडली में ग्रहों का मेल (ज्यो०)।

इत्यादि—(अव्य०, सं०) इसी प्रकार, अन्य, प्रभृति, आदि। इसी तरह और दूसरे। वगैरह।

इत्यादिक—(अव्य०) [सं० इत्यादि+क] इसी प्रकार के अन्य और। वगैरह, प्रभृति, आदि।

इत्र—(संज्ञा, पु०, उ०) अतर, इतर, पुष्पसार।—**दान**-(संज्ञा, पु०) इतर रखने का पात्र।—**फ़रोश**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) इतर बेचने वाला।

इत्रीफल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रिफला] शहद में बनाया हुआ त्रिफला का अवलेह।

इदबार—(संज्ञा, पु०, अ०) बदकिस्मती, दुर्भाग्य ।

इदम्—(सर्व० सं०) यह ।

इदमित्थं—(अव्य०, सं०) यह ऐसा ही है, ठीक यही है।

इदराक—(संज्ञा, पु०, अ०) समझ, बुद्धि ।

इदानीं—(क्रि०, वि०, सं०) इस समय मे । (अव्य०) सम्प्रति, अधुना ।

इदानीन्तन—(वि०, सं०) आधुनिक, साम्प्रतिक, इस समय का।

इधर—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० इतर] इस ओर, यहाँ, इस तरफ, इस स्थान पर, अत्र। "पुरजन परिजन लगे इधर अभिषेकोत्सव मे"—मैथली० । **मुहा० —उधर**—यहाँ-वहाँ, इतस्ततः आस-पास, इनारे-किनारे, चारों ओर, सब ओर, जहाँ-तहाँ ।**—उधर करना**– टाल-मटूल करना, हीला-हवाला करना । उलट पलट करना, क्रम भंग करना । तितर-बितर करना, हटाना, भिन्न-भिन्न स्थानों पर कर देना ।**—उधर की (बात)**-अफ़वाह, सुनी-सुनाई बात, बेठिकाने की वात, असंबद्ध या बेसिर-पैर की बात, गप्प-सप्प ।**—उधर के काम**–व्यर्थ के कार्य, अनुपयोगी, अनावश्यक कार्य ।**—उधर की उड़ाना**–भूठ-सच और व्यर्थ की बातें करना, अनुपयोगी बातें या गपशप करना ।**—उधर में रहना**—व्यर्थ के कामों में समय खोना । झगड़ा कराते रहना, चुगली करते रहना । समय बरबाद करना ।**—उधर होना**—तितर-बितर होना, उलट-पलट होना, बिगड़ना, भाग जाना, एक स्थान या मनुष्य से दूसरे स्थान या मनुष्य के पास हो जाना, खो जाना ।**—का उधर होना**–उलट-पलट होना, व्यतिक्रम होना, अव्यव स्थित, या तितर-बितर होना, नष्ट होना । **—का (की) उधर करना**—व्यर्थ का काम करना, बेठिकाने का काम करना । चुगली करना, इसकी बात उससे और उसकी बात इससे कहना ।**—की उधर लगाना**—चुगली खाना या करना । झगड़ा लगाना, लड़ाई या विरोध कराना, परस्पर वैमनस्य पैदा करना ।**—की दुनिया उधर होना**—अनहोनी या असम्भव बात होना, प्राकृतिक नियमों का परिवर्तित होना या बदल जाना । **न—की कहना न उधर की**–पक्ष-पक्ष में किसी के भी सम्बन्ध में कुछ न कहना । **न—होना न उधर**—न पक्ष में होना न विपक्ष में, तटस्थ रहना । **न—का होना न उधर का**—दो उद्देश्यों में से किसी का भी सफल न होना । **न—के रहे न उधर के रहे**—न तो इस लोक की ही सार्थक क्रिया और न उस लोक को ही, भुक्ति और मुक्ति दोनों न मिली, दो पक्षों में (पक्षापक्ष) से किसी ओर भी न रहना, किसी काम का न रहना, असफल और व्यर्थ-प्रयास होना ।

इध्न—(संज्ञा, पु०, सं०) आग सुलगाने की लकड़ी, ईंधन ।

इन—(सर्व०) [हिं० इस] इसका बहुवचन । (संज्ञा, पु०, दे०) सूर्य । समर्थ । राजा । प्रभु । ईश्वर । हस्त नक्षत्र । १२ की संख्या ।

इनकार—(संज्ञा, पु०, अ०) अस्वीकृत, नामंजूरी । इक़रार का विलोम ।

इनसान—(संज्ञा, पु०, अ०) मनुष्य ।

इनसानियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मनुष्यता, मनुष्यत्व, आदमियत । बुद्धि, शऊर । भलमनसी, सौजन्य ।

इनाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० इनआम] पुरस्कार, उपहार, बख़शिश, पारितोषिक ।**—इकराम**–कृपा-पूर्वक दिया गया पुरस्कार, पारितोषिक । "मेहनत करो इनआम लो इनआम पर इकराम लो" ।

इनायत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कृपा, दया, अनुग्रह, एहसान । **मु०—करना**–दया करके देना । [यौ० **इनायतनामा**—कृपापत्र]।

इनारा§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० इन्दारा] कूप, पक्का कुआँ ।

इनारुन—(संज्ञा, पु०, दे०) इंद्रायण का फल (सं०) । "अमृत खाइ अब देखि इनारुन, को भूखा जो भूलै"—हरि० ।

इनेगिने—(वि०, दे०) [अनु० इन + गिनना] कतिपय, कुछ थोड़े से, चुने चुनाए, चुनिंदा ।

इन्कसार—(संज्ञा, पु०, अ०) नम्रता, आजिज़ी ।

इन्किलाब—(संज्ञा, पु०, अ०) भारी परिवर्तन, क्रांति ।**—जिंदाबाद**–क्रान्ति की जय हो, क्रान्ति जीती रहो ।

इन्तकाम—(संज्ञा, पु०, अ०) बदला, प्रतिशोध ।

इन्तखाब—(संज्ञा, पु०, अ०) छाँटने की क्रिया, चुनाव, निर्वाचन ।

इन्तहा—(संज्ञा, पु०, अ०) अंत, अख़ीर । हद दरजा । नतीजा ।

इन्फ़िसाल—(संज्ञा, पु०, अ०) फैसला, निर्णय ।

इन्शा—(संज्ञा, पु०, अ०) लेखन-क्रिया ।

इन्हॐ—(सर्व० दे०) इन, इन्होंने । (हि०) ।

इन्हकर—(सर्व०, दे०) इनका ।

इप्सु—(वि०, सं०) इच्छुक, लोभी ।

इफ़रात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अधिकता, बाहुल्य ।

इफ़लास—(संज्ञा, पु०, अ०) गरीबी, निर्धनता ।

इफ़लाह—(संज्ञा, पु०, अ०) उपकार, हित, भलाई।

इबरानी—(वि०, अ०) यहूदी । (संज्ञा, स्त्री०) पैलिस्तान देश की प्राचीन भाषा।

इबादत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पूजा, अर्चा, उपासना।

इबारत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लेख, लेखशैली, लिखा हुआ। [वि० **इबारती**—गद्यात्मक]।

इब्तदा—(संज्ञा, वि०, अ०) आरंभ, शुरू। [**इब्तदाई** वि०,फ़ा० प्रारंभिक, आरंभ का]। "इब्तदाई इश्क है रोता है क्या।"

इब्न—(संज्ञा, पु०, अ०) लड़का, बेटा।

इब्नत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लड़की, बेटी।

इभ—संज्ञा, पु०, सं०) गज, कुंजर, हाथी। समान, सदृश, नाईं, तरह।—**पालक**-(संज्ञा, पु०, सं०) महावत।

इभेश—(संज्ञा, पु०, सं०) ऐरावत, गजेन्द्र, इभेंद्र।

इभ्य—(वि०, सं०) धनवान, हाथीवान्।

इमकान—(संज्ञा, पु०, अ०) शक्ति, सामर्थ्य। संभावना।

इमदाद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मदद, सहायता। [वि० **इमदादी**—मदद दिया हुआ, सहायता-प्राप्त]।

इमन—(संज्ञा, पु०, दे०) स्वर का मिलान। एक रागिनी।—**कल्पान**-एक रागिनी।

इमरती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अमृत] एक प्रकार की जलेबी जैसी मिठाई। अमिरती, अमरती।

इमलाक—(संज्ञा, पु०, अ०) मिल्क का ब० व० जायदाद, धन दौलत, मकानात।

इमली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अम्ल+ई० हिं० प्रत्य०] एक बड़ा वृक्ष जिसके लम्बे फल खट्टे होते हैं और खटाई के काम में आते हैं। इसी वृक्ष के फल। [**अमली, इम्ली** दे०]।

इमाम—(संज्ञा, पु०, अ०) अगुआ, मुसलमानों को धार्मिक कृत्य कराने वाला मनुष्य। अली के बेटों की उपाधि। पुरोहित।—**दस्ता**-(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० हावन दस्ता] लोहे या पीतल का खल, बट्टा। —**बाड़ा**-(संज्ञा, पु०) [अ० इमाम+बाड़ा हिं०] मुसलमानों के ताजिया रखने की जगह।

इमारत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बड़ा और पक्का मकान। विशाल भवन [बिल्डिंग]।

इमि*—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० एवम्] ऐसे, यों, इस प्रकार, इस तरह, इस भाँति, इस विधि।

इम्तना—(संज्ञा, पु०, अ०) रोक, मनाही। [**इम्तनाई**—वि० रोक-सम्बन्धी]।

इम्तहान—(संज्ञा, पु०, अ०) परीक्षा, जाँच।

इयत्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीमा, हद।

इरम—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शद्दाद बादशाह का बनाया हुआ स्वर्ग।

इरशाद—(संज्ञा, पु०, अ०) हुक्म, आज्ञा।

इरषा, इरिषा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ईर्ष्या (सं०) डाह। "तुम्हरे इरिषा-कपट विसेखी"—तुल०। [वि० **इरषित**—डाह किया हुआ। वि० **इरषालू**—ईर्ष्या करनेवाला]।

इरसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चक्के की धुरी।

इरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कश्यप की स्त्री, जिससे बृहस्पति और उद्भिज उत्पन्न हुए थे। भूमि, पृथ्वी। वाणी, भाषा। जल।

इरावान—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र। मेघ। राजा। अर्जुन-पुत्र, जो दुर्योधन-पक्षीय आर्यशृंग राक्षस के द्वारा मारा गया था।

इराकी—(वि०, अ०) अरब के ईराक प्रदेश का निवासी। (संज्ञा, पु०) घोड़ों की एक जाति। ईराक का घोड़ा।

इरादा—(संज्ञा, पु०, अ०) विचार। संकल्प। मंशा।

इर्तिबात—(संज्ञा, पु०, अ०) हेल-मेल, दोस्ती।

इर्दगिर्द—(क्रि०, वि०) [अनु० इर्द+गिर्द फ़ा०] चारों ओर, आस-पास, चहूँधा (ब्र०)।

इर्शाद—(संज्ञा, पु०, अ०) हुक्म, आज्ञा।

इर्षना*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० एषणा] प्रबल इच्छा।

इलज़ाम—(संज्ञा, पु०, अ०) दोष, अपराध, अभियोग, दोषारोपण, इल्ज़ाम (अ०)।

इलतिजा—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रार्थना, विनती।

इलतिफ़ात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मेहरबानी, दया। प्रेम, रुझान।

इलमास—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हीरा।

इलविला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विश्वश्रवा की स्त्री और कुबेर की माता।

इलहान—(संज्ञा, पु०, अ०) संगीत।

इलहाम—(संज्ञा, पु०, अ०) ईश्वरीय संदेश, दैवी प्रेरणा।

इलसा—(संज्ञा, पु०, दे०) हिलसा नामक मत्स्य।

इला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी। पार्वती। सरस्वती, वाणी। गो। वैवस्वत मनु की कन्या, जो बुध से ब्याही गई थी और पुरूरवा राजा की माता थी। इक्ष्वाकु की पुत्री, बुद्धिमती स्त्री।

इलाका—(संज्ञा, पु०, अ०) सम्बन्ध, लगाव। कई गाँवों की ज़मींदारी। रियासत।

इलाज—(संज्ञा, पु०, अ०) दवा, औषध। चिकित्सा। उपाय, युक्ति, तदबीर।

इलामॐ—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० ऐलान] हुक्म, आज्ञा। इत्तलानामा, सूचना-पत्र। "ठान्यो न सलाम मान्यो साह को इलाम"—भू०।

इलायची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० एला+ची—फ़ा० प्रत्य०] एक सदाबहार वृत्त जिसके फल के बीजों में बड़ी तीव्र सुगंध होती है, ये बीज पान के साथ या यों ही या मसाले मे डालकर खाये जाते हैं, एला।—**दाना**-(संज्ञा, पु०) इलायची का बीज, चीनी में पगा हुआ, इलायची या पोस्ता का दाना।

इलावर्त—(संज्ञा, पु०, सं०) जम्बूद्वीप के नववर्षान्तर्गत वर्ष-विशेष, इलावृत्त, भरतखंड, भारतवर्ष।

इलावृत—(संज्ञा, पु०, सं०) जम्बूद्वीप के नौ खंडों मे से एक।

इलाही—(संज्ञा, पु०, अ०) ईश्वर, ख़ुदा (वि०) दैवी।—**गज**-अकबर का चलाया हुआ एक प्रकार का गज जो ४१ अंगुल (३०$\frac{3}{4}$ इंच) का होता है और इमारतों के नापने के काम में आता है।

इल्तिजा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) निवेदन, प्रार्थना।

इल्म—(संज्ञा, पु०, अ०) विद्या, ज्ञान, [वि० **इल्मी**। संज्ञा, स्त्री० **इल्मियत**—विद्वता]।

इल्लत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) रोग, बीमारी। झंझट, बखेड़ा। दोष, अपराध। कारण। बुरी बान। त्रुटि। **मुहा०—पालना**—कठिनाई रखना। बखेड़ा बनाये रहना।

इल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कील] छोटी कड़ी फुंसी, मस्सा, मांस-वृद्धि। (अव्य०, अ०) मगर, लेकिन, सिवा, अलावा।

इल्लिल्लाह—(अ०) ऐ ख़ुदा मदद कर।

इल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अंडे से निकलते ही चींटी या ऐसे ही कीड़ों का रूप।—**बिल्ली भूलना**-होश-हवास ठीक न रहना।

इल्वल—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य। एक मछली।

इल्वला—(संज्ञा, पु०, सं०) मृगशिरा नक्षत्र के ऊपर रहनेवाले पाँच तारों के झुंड।

इव—(अव्य०, सं०) उपमावाचक शब्द। समान, सदृश, नाईं, तरह, सरीखा (दे०)।

इशरत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आराम, सुख, विलास।

इशारा—(संज्ञा, पु०, अ०) सैन, संकेत। संक्षिप्त कथन। बारीक सहारा, सूक्ष्म आधार। गुप्त प्रेरणा। [संज्ञा, स्त्री० **इशारेबाज़ी**]। **मुहा०—(रे) पर चलना**—आज्ञानुसार करना। "उनके इशारे से ही आज यह दशा हो यह"—हितैषी।—**(रे) पर नाचना**—संकेत पाते ही आज्ञा पालन करना।

इश्क—(संज्ञा, पु०, अ०) मुहब्बत, प्रेम, चाह। (वि०) आशिक, माशूक़।

इश्तबाह—(संज्ञा, पु०, अ०) संदेह, शक।

इश्तराक—(संज्ञा, पु०, अ०) हिस्सा, साझा।

इश्तहार—(संज्ञा, पु०, अ०) विज्ञापन, सूचना।

इश्तियालक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बढ़ावा उत्तेजना।

इषणाॐ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० एषणा] कामना।

इषु—(संज्ञा, पु०, सं०) बाण, शर, तीर, कांड। पाँच की संख्या।

इषुधि, इषुधी—(संज्ञा, पु०, सं०) तूण, तरकस, तूणीर।

इषुपल—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्ग के द्वार की कंकड़-पत्थर फेंकनेवाली तोप।

इषुमान—(वि०, सं०) तीर चलानेवाला, तीरंदाज।

इष्ट—(वि०, सं०) अभिलषित, चाहा हुआ, वांछित, अभिप्रेत। पूज्य, पूजित। (संज्ञा, पु०) यज्ञादि कर्म। अग्नि-होत्रादि शुभ कर्म। संस्कार। यज्ञस्वामी। इष्टदेव। कुलदेव। अधिकार। वश। देवता की छाया या कृपा। मित्र। प्रिय। "ये इष्ट न कभी हमारे देवि"—जगदीश।—**काल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी के जन्म का ठीक समय अथवा वर्ष प्रवेश का ठीक समय (ज्यो०), इष्टकालावधि।—**गंध**-(वि०, यौ०, सं०) सुगंधित द्रव्य, सौरभ।—**देव,—देवता**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आराध्य देव, पूज्य देवता, कुल देव, उपास्य देव, प्रिय देवता।—**मित्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) प्रिय मित्र, मित्रवर्ग। "इष्ट-मित्र अरु बंधुजन, जानि परत सब कोय"—वृन्द।

इष्टका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ईंट, ईंटा (दे०)।

इष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इष्ट का भाव, मित्रता।

इष्टापत्ति—(संज्ञा, पु०, सं०) वादी के कथन में दिखाई गई ऐसी आपत्ति जिसे वह स्वीकार कर ले।

इष्टापूत—(संज्ञा, पु०, सं०) लोकोपकारार्थ यज्ञ, कूप आदि की रचना।

इष्टालाप—(संज्ञा, पु०, सं०) अभीष्ट या प्रिय कथोपकथन।

इष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इच्छा, अभिलाषा। यज्ञ।

इष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वसन्त ऋतु।

इष्वास—(संज्ञा, पु० सं०) धनुष, कार्मुक, धनु।

इस—(सर्व० दे०) [सं० एषः] यह शब्द का विभक्ति के पूर्व आदिष्ट रूप, जैसे इसको।

इसपंज—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० स्पंज] समुद्र में एक प्रकार के अति सूक्ष्म कीड़ों के योग से बना हुआ मुलायम रुई सा सजीव पिंड जो पानी खूब सोखता है, और जिसमें बहुत से छेद होते हैं, मुर्दा बादल ।

इसपात—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० अयस्पत्र, पुर्त० स्पेडा] एक प्रकार का कड़ा लोहा ।

इसबगोल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) फारस की एक झाड़ी या पौधा जिसके गोल बीज हकीमी दवा के काम में आते हैं ।

इसराफ़—(संज्ञा, पु०, अ०) फ़िज़ूलखर्ची, अपव्यय, उड़ाऊपन । ज्योतिष का एक अशुभ योग ।

इसरार—(संज्ञा, पु०, अ०) हठ, अनुरोध ।

इसरी—(वि०, दे०) ईश्वरी, दैवी ।

इसलाम—(संज्ञा, पु०, अ०) मुसलमानी धर्म । [वि० **इसलामिया**] ।

इसलाह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) संशोधन ।—(संज्ञा, पु०, अ०) अतिसार, दस्त ।

इसाई—(वि०, अ०) ईसा के अनुयायी ।

इसारतꕥ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० इशारा] संकेत, इशारा ।

इसियाँ—(संज्ञा, पु०, अ०) पाप, गुनाह ।

इस्तक़बाल—(संज्ञा, पु०, अ०) स्वागत । पेशवाई । अगवानी ।

इस्तक़लाल—(संज्ञा, पु०, अ०) स्थिरता, दृढ़ता, संकल्प, धीरज, धैर्य ।

इस्तग़ासा—(संज्ञा, पु०, अ०) [शु० रू० इस्तगासः] अभियोग-पत्र, दावा, फरियाद, अर्ज़ी ।

इस्तदलाल—(संज्ञा, पु०, अ०) तर्क, युक्ति, दलील ।

इस्तदुआ—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रार्थना, विनती ।

इस्तमरारी—(वि० अ०) सब दिन रहने वाला, स्थायी, नित्य, अविच्छिन्न ।—**वंदोबस्त**—(यौ०) जमीन का वह बन्दोबस्त, जिसमें मालगुजारी सदा के लिए नियत कर दी जाती है और फिर घटती-बढ़ती नहीं, यह बंगाल बिहार के प्रान्तों में जारी है ।

इस्तहक़ाक—(संज्ञा, पु०, अ०) हक़, अधिकार, योग्यता ।

इस्तिंजा—(संज्ञा, पु०, अ०) पेशाब कर चुकने पर मिट्टी के ढेले से मूत्रेन्द्रिय की शुद्धि ।

इस्तिरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्तरी—तह करने वाला] कपड़ों की तह बैठाने वाला धोबियों या दर्जियों का औजार जो लोहे या पीतल का होता है और जिसके भीतर जलते कोयले डालकर कपड़े कड़े किये जाते हैं । तह बैठना । [**इस्त्री** दे०] स्त्री ।

इस्तीफ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० इस्तैफा] नौकरी छोड़ने की दरख्वास्त, त्याग-पत्र ।

इस्तीसाल—(संज्ञा, पु०, अ०) मूलोच्छेदन, विनाश ।

इस्तेदाद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) योग्यता, लियाकत, कुशलता, शक्ति, सामर्थ्य ।

इस्तेमाल—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रयोग, उपयोग । [वि० **इस्तेमाली**] ।

इस्त्री, इस्त्रि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) स्त्री, इस्तिरी ।

इस्थिति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थिति] दशा, अवस्था ।

इस्थिर—(वि०, दे०) [सं० स्थिर] निश्चल, अचल, ठहरा हुआ ।

इस्म—(संज्ञा, पु०, अ०) नाम, संज्ञा, (व्याकरण) संज्ञा ।

इस्से—(सर्व०, दे०) [सं० एषाः] यह का कर्म एवं सम्प्रदान कारक का रूप ।

इह—(क्रि०, वि०, सं०) इस जगह, इस लोक में, इस काल मे, यहाँ, इस [सर्व० वि०] "तब इह नीति की प्रतीति गहि जायगी"—रत्ना० (ऊ० श०) ।

इहसान—(संज्ञा, पु०, अ०) एहसान, कृतज्ञता, निहोरा (दे०) ।

इहाँꕥ—(क्रि०, वि०, दे०,) यहाँ (हि०) अत्र । [**इहवाँ** दे०] ।

इहै—(वि०, दे०) यही ।

इहि—(क्रि०, वि०, दे०) यह ।

ई

ई—हिन्दी वर्णमाला का चौथा स्वर या अक्षर । [इ + इ] संयुक्त स्वर, जो 'इ' का दीर्घ रूप है और जिसके उच्चारण का स्थान तालु है । अव्य० (सं०) विषाद । अनुकम्पा । क्रोध । दुख । भावना । प्रत्यक्ष, सन्निधि । (संज्ञा, पु०, सं०) कन्दर्प, कामदेव । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्ष्मी, रमा ।

ईंगुर—(संज्ञा, पु०, दे०) सिंदूर के समान एक लाल वर्ण का पदार्थ या पत्थर, जिसमें पारा भी मिला रहता है ।

ईंचना—(क्रि०, सं०, दे०) [हि० खींचना] खींचना ।

ईंट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० इष्टका] साँचे में ढला हुआ मिट्टी का लम्बा चौकोर मोटा टुकड़ा जिसे जोड़ कर दीवार बनाई जाती है । [**ईंटा** दे०] । (संज्ञा, स्त्री०) किसी धातु का चौखूटा ढला टुकड़ा । ताश के पत्तों में एक रंग । **मुहा०—चुनना—**

दीवार बनाने के लिए ईंट पर ईंट बैठाना, जोड़ाई करना। **डेढ़ या ढाई—की मसजिद अलग बनाना**—जो सब लोग कहते या करते हों, उसके विरुद्ध कहना या करना।—**पत्थर**—कुछ नहीं।—**से—बजना**—किसी नगर या घर का ढह जाना या ध्वंस होना।—**से—बजाना**—किसी नगर या घर को ढहाना या नष्ट करना।

ईंटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० इष्टका] ईंट, ईंट का टुकड़ा।

ईंडरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुंडली] कपड़े की कुंडलाकार गद्दी जिसे बोझ रखते समय सिर पर रखते हैं, गेंडुरी। [**ईंदुरी** दे०]।

ईंधन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ईंधन] जलाने की लड़की या कंडा, जलावन, जरनी।

ई—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्ष्मी। (सर्व० दे०, सं०) ई—निकट संकेत, यह। (अव्य०, दे०, सं०, हिं०) जोर देने का शब्द, ही।

ईकार—(संज्ञा, पु०, सं०) 'ई' स्वर।

ईक्ष—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दर्शन, ईक्षण, देखना।

ईक्षक—(संज्ञा, पु०) [सं० ईक्ष+अक] दर्शक, देखनेवाला, अवलोकन-कर्ता।

ईक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) दर्शन, देखना, जाँच, विचार, विवेचन। आँख।

ईक्षित—(वि०, सं०) दृष्ट, अवलोकित, देखा हुआ।

ईख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० इक्षु] शर जाति की एक घास जिनके डंठलों में मीठा रस रहता है, जिससे गुड़ और चीनी आदि पदार्थ बनाये जाते हैं, गन्ना, ऊख।

ईखना॥—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० ईक्षण] देखना। (संज्ञा, स्त्री०,) इच्छा।

ईछन॥—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ईक्षण] आँख, देखना।

ईछना॥—(क्रि०, स०, दे०) [सं० इच्छा, ईक्षण] इच्छा करना, चाहना, देखना।

ईछा॥—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) इच्छा, (सं०) ईहा।

ईजति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० इज्जत] मान, सम्मान, मर्यादा।

ईज़ा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) तकलीफ़, कष्ट।

ईजाद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) किसी नई चीज का बनना, नया निर्माण, आविष्कार।

ईज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पूजनीय, पूज्य। बृहस्पति।

ईठ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० इष्ट] मित्र, सखा, प्रिय। चाहा हुआ, वांछित।

ईठना—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० इष्ट] इच्छा करना, चाहना।

ईठा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्तुति, स्तवन, प्रशंसा। नाड़ी विशेष। प्रतिष्ठा, मर्यादा।—**दाडू**—(संज्ञा, पु०, दे०) चौगान खेलने का डंडा।

ईठि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० इष्टि, प्रा० इट्ठि] मित्रता, दोस्ती। प्रीति। चेष्टा। यत्न। चाह। "बोलिये न झूठ ईठि मूढ़ पै न कीजिये"—के०।

ईठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भाला, बरछा। सखी, प्रिया। "है दधिते अधिकै उर ईठी"—देव०।

ईडा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्तुति, प्रशंसा। इडा नाम की एक नाड़ी (योग०)।

ईडित—(वि०) [सं० इडि+क्त] प्रशंसित, कृतस्तवन।

ईढ़॥—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० इष्ट, पा० इट्ठ] ज़िद, हठ, [वि० **ईढ़ी**—ज़िद्दी, हठी]।

ईतर॥—(वि०, दे०) [हिं० इतराना] इतरानेवाला, शोख़, गुस्ताख़, ढीठ। (वि०, दे०) [सं० इतर] निम्न श्रेणी का, नीच। (संज्ञा, पु०) [अ० इत्र] इतर, अतर, इत्र।

ईति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खेती को हानि पहुँचानेवाले उपद्रव, जो छः प्रकार के कहे गये हैं: १—अतिवृष्टि, २—अनावृष्टि, ३—टिड्डी पड़ना, ४—चूहे लगना, ५—पक्षियों की अधिकता। ६—दूसरे राजा की चढ़ाई। बाधा। पीड़ा, दुख, विपत्ति, विघ्न। अंडा। प्रवास। "टारी अरि-ईति-भीति सारी बाहु-बल तै" स०, (अ०, ब०)।

ईथर—(संज्ञा, पु०, अं०) एक प्रकार का अति सूक्ष्म और लचीला द्रव्य या पदार्थ जो समस्त शून्य स्थल में व्याप्त है। आकाश-द्रव्य। एक प्रकार का रासायनिक द्रव पदार्थ जो अलकोहाल और गंधक के तेजाब से बनता है।

ईद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मुसलमानों का रोजा खतम होने पर एक त्यौहार, यह प्रायः द्वितीया या परिवा को होता है।—**गाह**-ईद के दिन मुसलमानों के एकत्र होकर नमाज पढ़ने का स्थान। **मुहा०—के चाँद होना**—बहुत कम दिखाई पड़ना या मिलना। अति प्रिय होना।

ईदुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) उढ़कना, टेकना। आड़, टेक।

ईदृक्—(वि०, सं०) ईदृश, एतत्सदृश, ऐसा, इसके समान, इस प्रकार का। [स्त्री० **ईदृसी**]।

ईदृश—(क्रि०, वि०, सं०) इस प्रकार, ऐसे ढंग से, इस तरह।

ईदृश्—(क्रि०, वि०, सं०) इस भाँति, इस तरह, ऐसे। (वि०) इस प्रकार का, ऐसा।

ईप्सा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इच्छा, वांछा, अभिलाषा, चाह।

ईप्सित—(वि०, सं०) चाहा हुआ, इष्ट, अभिलषित, वांछित, अभीष्ट। "ईप्सिततमं कर्म"—पा०।

ईप्सु—(वि०) इच्छुक, अभिलाषी "तुम सुर-नर-मुनि ईप्सित अप्सरि—पंत।

ईफाय डिगरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) डिगरी का रुपया अदा करना।

ईबी-सीबी—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु०] सिसकारी का शब्द, सी सी का शब्द जो आनन्द या पीड़ा के समय मुख से निकलता है। सीत्कार।

ईमा—(संज्ञा, पु०, अ०) इशारा, संकेत।

ईमान—(संज्ञा, पु०, अ०) धर्म। विश्वास। आस्तिक्य-बुद्धि। चित्त की सद्‌वृत्ति। अच्छी नियत। धर्म। सत्य।

ईमानदार—(वि०, फ़ा०) विश्वास रखने वाला। विश्वास-पात्र, सच्चा, दियानतदार, जो लेन-देन या व्यवहार में सच्चा और पक्का हो, सत्य का पक्षपाती, सद्‌वृत्ति वाला। [(विलोम) बेईमान] [(संज्ञा, स्त्री०) **ईमानदारी**]।

ईरखा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) **ईर्षा** सं०।

ईरमद्—(संज्ञा, पु०, दे०) [**इरम्मद** दे०]। वज्राग्नि, बिजली।

ईरान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) फ़ारस नामक देश।

ईरानी—(संज्ञा, स्त्री०) फ़ारस देश वासी, फ़ारस की भाषा फ़ारसी।

ईर्षणा॥—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ईर्ष्यण] ईर्षा, डाह।

ईर्षा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ईर्ष्या] दूसरे के उत्कर्ष को न देख सकने या न सहने की वृत्ति। डाह, हसद, जलन। अक्षमा। परश्री-कातरता। कुढ़न, डाह।

ईर्षालु, ईर्षालू—(वि०, सं०) ईर्ष्या करने वाला। डाही। दूसरे की बढ़ती देख कर जलनेवाला। द्वेषी।

ईर्षित—(वि०, सं०) जिससे ईर्ष्या की गयी हो, ईर्ष्या का पात्र।

ईर्षी—(वि०, सं०) द्रोही द्वेषी, डाही, दूसरे की अभिवृद्धि में जलने या कुढ़ने वाला।

ईर्ष्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ईर्षा, डाह, परश्रीकातर्य। [वि० **ईर्ष्यावान, ईर्ष्यालु**]।

ईर्ष्यु—(वि०, दे०) 'ईर्षी'।

ईश—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वामी, मालिक। राजा। ईश्वर, परमेश्वर। महादेव, शिव। रुद्र। ग्यारह की संख्या। ईशान कोण के अधिपति। आर्द्रा नक्षत्र। एक उपनिषद्। पारा। [**ईस** दे०] [**ईसा** दे०]। **—सखा**-(संज्ञा, पु०) कुबेर, धनपति।

ईशता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वामित्व, प्रभुत्व, प्रभुता। (संज्ञा, पु०, सं०) **ईशत्व**—एक प्रकार की सिद्धि। प्रभुत्व।

ईशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवी, ईश्वरी, दुर्गा। (संज्ञा, पु०, सं०) ऐश्वर्य, प्रताप। [**ईसा** दे०]।

ईशान—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वामी, अधिपति। शिव, महादेव, रुद्र। ग्यारह की संख्या। ग्यारह रुद्रों में से एक। पूर्व और उत्तर के बीच का कोना। शिव की अष्ट विधि मूर्तियों में से सूर्य मूर्ति। शमी वृक्ष। (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०)**—कोण**-पूर्वोत्तर कोण। पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा।

ईशानी—(संज्ञा, स्त्री०, पु०) दुर्गा, भगवती, ईश्वरी, देवी। शमी वृक्ष।

ईशिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक। जिससे साधक सब पर शासन या प्रभुत्व कर सकता है। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रधानता, प्रभुता, महत्त्व।

ईशित्व—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रभुत्व, आधिपत्य, महत्त्व, ईशिता, एक प्रकार की योग-सिद्धि।

ईशी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ईश्वरी, देवी, दुर्गा, भगवती।

ईश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) मालिक, स्वामी। क्लेश, कर्म, विपाक और आशय से पृथक् पुरुष विशेष। परमेश्वर, भगवान, महादेव, शिव, समर्थ।**—निषेध**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नास्तिकता।**—निष्ठ**-(वि०, सं०) ईश्वर-भक्त, ईश्वर-परायण, आस्तिक।**—प्रणिधान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) योग के पाँच नियमों में से अंतिम (योगशा०), ईश्वर में अत्यन्त श्रद्धा और भक्ति रखना।**—साधन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मुक्ति या योग-साधन।

ईश्वरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रभुता, **ईश्वरत्व**।

ईश्वरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, शक्ति।

ईश्वराराधन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परमेश्वरोपासना।

ईश्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, भगवती, आदि शक्ति, आद्याशक्ति, महामाया।

ईश्वरीय—(वि०, सं०) ईश्वर-सम्बन्धी, ईश्वर का दैवी।

ईषण—(संज्ञा, पु०, सं०) देखना, नेत्र, ईक्षण।

ईषणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लालसा, चाह, इच्छा।

ईषत्—(वि०, सं०) थोड़ा, कुछ, कम, अल्प, किंचित, लेश।—**कर**-(वि०, सं०) अत्यल्प, किंचित। **ईषत्पांडु**-(यौ०) धूसर वर्ण। **ईषद्रक्त**-कुछ लाल।—**स्पष्ट**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०)वर्णों के उच्चारण मे एक प्रकार का आभ्यंतर प्रयत्न जिसमें जिह्वा, तालु, मूर्धा और दाँत को और दाँत ओष्ठ को कम छूते है, य, र, ल, व, ये वर्ण ईषत्स्पष्ट माने गये हैं।—**हास**-(यौ०) किंचित हास, मुसकान।

ईषद्—(वि०, सं०,) ईषत, कम, थोड़ा।

ईषन्—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० ईक्षण] देखना, ईक्षण।

ईषनाꕥ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [स० एषण] प्रबल इच्छा।

ईषल्लघु—(वि०, सं०) थोड़ा कम, कुछ कुछ, स्वल्प परिमाण में। भुज से दुख का विषम भार ईषल्लघु कर देने में।—दिनकर

ईषु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० इषु] बाण। "नस्यो हर्ष द्वौ ईषु बसै बिनासी"—के०।

ईसꕥ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ईश] ईश्वर, प्रभु। [**ईसु** दे०]।

ईसनꕥ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ईशान] ईशान कोण।

ईसबगोल—(संज्ञा, पु०, दे०) दे० "इसबगोल"।

ईसरꕥ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऐश्वर्य] ऐश्वर्य।

ईसरगोल—(संज्ञा, पु०, दे०) ईसबगोल।

ईसराफ़—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दे० "इसराफ़"।

ईसवी—(वि०, फ़ा०) ईसा से सम्बन्ध रखने वाला।

ईसवी सन्—(यौ०) ईसा मसीह के जन्म-काल से चला हुआ संवत। अंग्रेजी वर्ष या संवत।

ईसा—(संज्ञा, पु०, अ०) ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा-मसीह।

ईसाई—(वि० फ़ा०) ईसा का अनुयायी। ईसा को मानने वाला। ईसा के बताये धर्म का अनुयायी।

ईसान—(संज्ञा, पु०, दे०) ईशान।

ईसुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ईश्वर] ईश्वर, प्रभु। [वि० **ईसुरी**]।

ईहा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चेष्टा, यत्न। उपाय। उद्योग। इच्छा। लोभ। वांछा।

ईहामृग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रूपक का एक भेद, जिसमें चार अंक होते हैं। कुत्ते के समान छोटा धूसर वर्ण का एक जन्तु। मृग, तृष्णामृग, (कुसुम-शिखर-विजय-नामक संस्कृत-रूपक ईहा मृग है)।

ईहावृक—(संज्ञा, पु०, सं०) लकड़बग्घा।

ईहित—(वि०, सं०) ईप्सित, वांछित। कृतोद्योग।

उ

उ—हिन्दी की वर्णमाला का पाँचवाँ अक्षर जिसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है। "उपूपध्मानीयानामोष्ठौ" —पा०। (संज्ञा, पु०, सं०) शिव। ब्रह्मा, प्रजापति। (अव्य०, सं०) संबोधन-सूचक शब्द। रोष-सूचक शब्द। इसका उपयोग अनुकम्पा, नियोग, पाद-पूरण, प्रश्न और स्वीकृति मे होता है। [सर्व० दे०] वह। अव्य० (दे० हि, हू या हु का सूक्ष्म रूप) भी, जैसे—रामउ=राम भी, तउ=तौ भी।

उँ—(अव्य०, दे०) प्राय: अव्यक्त शब्द के रूप में प्रश्न, अवज्ञा, क्रोध, स्वीकृति आदि को सूचित करने के लिए प्रयुक्त होता है। हु का सूक्ष्मरूप है।

उंगल—(संज्ञा, पु०, दे०) अंगुल, आंगुर।

उँगली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अंगुलि] हथेलियों के छोरों से निकले हुए पाँच अवयव जो चीजों के पकड़न का काम करते हैं और जिनके छोरों पर स्पर्शज्ञान की शक्ति अधिक होती है। अँगुली। [**अँगुरी, आँगुरी** (दे०)]। **मुहा०**—**उठना—(किसी की ओर)** निन्दा होना, बदनामी होना, बुराई दिखाई जाना।—**उठाना (किसी की ओर)**—किसी की निन्दा का लक्ष्य बनाना। निन्दा करना। बदनामी करना। बुराई दिखाना। नुक्ताचीनी करना। दोषी बताना। हानि करना। वक्र दृष्टि से देखना। लांछित करना।—**कानी**—(यौ०)कनिष्ठिका या सब से छोटी अंगुली। **(पाँचों)—(लियाँ) घी में होना**—सब प्रकार से लाभ ही लाभ होना।—**(लियाँ) चमकाना (नचाना)**—मटक मटक कर या हाथ मटका कर बातचीत करना।—**दबाना (दाँतों तले)**—आश्चर्य करना अचंभित होना।—**दिखाना**—धमकाना, डराना, ताड़ना दिखाना। मना करना, रोकना।—**देना (कानों में)**—किसी बात से विरक्त या उदासीन होकर उसे न सुनना या उसकी चर्चा बचाना।

—देना (साँप के मुँह में) हानिप्रद कार्य में हाथ डालना। विनाश का प्रयत्न करना। "साँपहु के मुख आंगुरि दीजै"।**—पकड़ते पहुँचा पकड़ना—** थोड़ा सा सहारा पाकर विशेष की प्राप्ति के लिए उत्साहित होना। तनिक आपत्ति-जनक बात पाकर अधिक बातों का अनुमान करना। तनिक बुराई पाकर अधिक बुराई देखना।**—(लियों) पर नचाना—**जैसा चाहना वैसा कराना। स्वेच्छानुसार ही चलाना। "बड़े घाघ को उँगलियों पर नचायें"—अ० सि० उ०।**—(लियों) पर नाचना** —किसी की इच्छानुसार उचितानुचित सब प्रकार का काय करना। जैसा कोई चाहे वैसा ही करना।

—रखना (मुंह पर)—चुप रहने का इशारा करना।

ऊँघाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ऊघना, निद्रालु होना, अलसाना, तद्रावश होना। [(संज्ञा, पु०, दे०) **ऊँघ, औंघाई** (दे०)।]

ऊंघाना—(क्रि०, अ०, दे०) औंघाना, निद्रालु होना, [**ऊंघना** दे०] तंद्रित होना।

ऊँचन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उदञ्चन—ऊपर खींचना या उठाना] अदवायन, अदवान, ओरचाइन (दे०)।

ऊंचना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उदंचन] अदवान कसना या तातना, अदवायन खींचना।

उंचाना*—(क्रि०, स०, दे०) [हि० ऊंचा] ऊँचा करना, उठाना, [**उचाना—**दे०] उठाना, ऊपर करना। "हौं बुधि-बल छल करि पचि हारी लख्यो न सीस उँचाय"—सूर०।

ऊंचाव***—**(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उच्च] ऊँचाई, ऊचापन, ऊचास (दे०)।

ऊंचास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उच्च] ऊँचाई।

उंचास—(वि०, दे०) [सं० ऊन पंचाशत्] एक कम पचास, चालीस और नौ की संख्या, ४९।

उंछ—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मालिक के ले जाने पर खेत में पड़े हुए अन्न के एक एक दाने को जीविका के लिए बिनने का काम। सीला बीनना (दे०)।

उंछवृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खेत मे गिरे हुए दानों को बिन कर जीवन-निर्वाह करने का काम।

उँजरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उज्ज्वल] चाँदनी, रोशनी, उज्यारी, उजेरिया (दे०)। [(वि०, स्त्री०) **उँजेरी, उजाली** (हि०)]।**—अँधेरिया** [—चाँदनी और अँधेरे में खेला जानेवाला बालकों का एक खेल।

उँजियार (उजियार)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उज्ज्वल] उजाला (हि०), प्रकाश, रोशनी, कुल-दीपक, वंश-भूषण (घर का उजाला)। (वि०) प्रकाशमान, उज्ज्वल। "ताहू चाहि रूप उँजियारा" —जायसी।

उँजियारी, उँज्यारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [उजियारी हि० उजाली] उजारी (दे०), चाँदनी, प्रकाश, [**उजेरी** दे०]। "उँजियारी मुख इंदु की परी उरोजनि आनि"—ल० वि०। (वि०) प्रकाशयुक्त।

उँजेरा (उंजेरी)—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० उजेला] उजाला, प्रकाश, रोशनी, उजेरो [(दे०) **उजियर, उजियार**।] "करै उजेरो दीप, पै"—वृन्द।

उँदुर—(संज्ञा, पु०, सं०) चूहा, मूसा, इंदुर।

उँह—(अव्य०, अनु०) अस्वीकार, घृणा या बेपरवाही आदि का सूचक शब्द। वेदना-सूचक शब्द। कराहने का शब्द।

उँहूँ—(अव्य० अनु०) हाँ या हूँ का विलोम, नहीं। "......करति उहूँ उहूँ"।

उ—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्म। नर, मनुष्य। अव्य०* भी—"अउरउ एक गुपुत मत,"—तुल०।

उअना*—(क्रि०, स०, दे०) उगना, उदय होना। "उआ सूक जस नखतन माँहा"—जायसी।

उआना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उदय] उगाना, मारने को हथियार तैयार करना, उठाना, उदित करना। [सं० उदगुरण] मारने के लिए हाथ तानना।

उइ—(वि०, दे०) [हि० उस] उस, वे। [क्रि० स०, दे०) [सं० उदय, उअना, दे०] उठी, उगी।

उई—(क्रि०, स०, दे०) उअना का सामान्य भूतकाल (स्त्री०)। [सर्व० दे०] वे ही, वे भी ,वेई (ब्र०)।

उऋण—(वि०) [सं० उत्+ऋण-मुक्त, ऋण से उद्धार-प्राप्त।

उए—(क्रि०, स०, दे०) उगे, निकले, उदय हुए, देख पड़े। उअना का सामान्य भूतकाल में ब० व० का रूप।

उओ (उवो)—(क्रि०, स०, दे०) उगा, उदित हुआ, [सा० भूतकाल **उआ** (दे०) विधि० **उऔ —उवौ** (दे०) **उयो**]।

उकचना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्कर्ष] उखड़ना। अलग होना। उचड़ना। उठ भागना।

पर्त से अलग होना, हट जाना। उठ जाना। "सिंह सों डराय याहू ठौर सों उकचिहौं"—भूषण।

उकतारना—(क्रि०, स०, दे०) सँभालना, पक्ष करना।

उकति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उक्ति] कथन, उक्ति, चमत्कृत कथन, विचित्र वाक्य। [यौ० **लोकोकति**—(दे०) [सं० लोकोक्ति] मसल, कहावत, एक प्रकार का अलंकार।]

उकटा—(वि०, दे०) [हिं० उकटना] उकटने वाला। एहसान जताने वाला। [स्त्री० **उकटी**।] (संज्ञा, पु०) किसी के किये हुए अपराध या अपने उपकार को बार बार जताने का कार्य। (यौ०, दे०)—**पुरान**-गई-बीती और दबी-दबाई बातों का फिर से सविस्तर कथन।

उकठना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अव—बुरा + काष्ठ] सूखना, सूख कर कड़ा होना और टेढ़ा हो जाना, ऐंठ जाना। "जिमि न नवै पुनि उकठि कुकाठू"—तुल०। "दीठि परी उकठि सब बारी" —जायसी।

उकठा—(वि०, दे०) [हिं० उकठना] शुष्क, सूखा, ऐंठा। [स्त्री० **उकठी**]। "उकठे बिटप लागे फूलन फरन"—विन०। "उकठी ककरी बिन पात बढ़ी"।

उकड़ूँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्कुतोरु] घुटने मोड़ कर बैठने की एक मुद्रा, जिसमें दोनों तलवे जमीन। पर पूरे पूरे बैठते हैं और चूतड़ एँड़ियों से लगे रहते हैं [**उटकयन** दे०]।

उकत—(वि०, दे०) [सं० उक्त] कहा हुआ, ऊपर का, कथित, प्रथम बताया हुआ, पूर्वकथित।

उकताना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० आकल] ऊबना, जल्दी मचाना, खिझाना, अधीर होना।

उकरना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० उघटना] उखाड़ना। भेदन करना। गुणवान को प्रकाशित करना। बार बार कहना। गड़ी वस्तु निकालना।

उकलना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्कलन—खुलना] तह से अलग होना, खुलना, उचड़ना, लिपटी हुई चीज का खुलना, उधड़ना। उबलना, खलबलाना, ऊपर उठना। कै करना, वमन करना। अकुलाना।

उकलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० उगलना] वमन, मिचली, कै, उलटी, मचली। **मुहा०—आना**—जो मिचलाना, कै होना।

उकलाना—(क्रि०, अ०, दे०) उलटी करना, वमन करना, कै करना। अकुलाना। "बँधे प्रीति-गुन सों उठैं, पल पल मैं उकलाइ"।

उकवत (उकवथ)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्क्वाथ] एक प्रकार का चर्म-रोग जिसमे दाने निकलते हैं, खुजली होती है और कुछ चेप या मवाद सा बहता है।

उकसना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्कर्षण या उत्सुक] उभरना, ऊपर को उठना। निकलना। अंकुरित होना। उधड़ना। "पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं"—तुल० "ताफनि की फनि फाँसिनु पै फदि जाय फँसै, उकसै न कहूँ दिन" —भाव०।

उकसनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० उकसना] उठान, उभाड़, उभड़न, उठाव। उठान का भाव।

उकसाना (उसकाना)—(क्रि०, स०, दे०) [हि० उकसाना का प्रेर० रूप] ऊपर को उठाना। उभाड़ना, उत्तेजित करना। उठा देना। हटा देना। बढ़ाना (दिए की बत्ती) या खसकाना। "हाथिन के हौदा उकसाने"—भूषण।

उकसावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० उकसाना] उत्साह, बढ़ावा।

उकसौंहा—(वि०, दे०) [हि० उकसना + औंहा—प्रत्य०] उभड़ता हुआ, उठता हुआ। [स्त्री० **उकसौंही**, ब० व० **उकसौंहे**]। "आज कालि मैं देखियत उर उकसौंही भाँति"—बि०।

उकाब—(संज्ञा, पु०, अ०) बड़ी जाति का गिद्ध। गरुड़।

उकालना*—(क्रि०, स०, दे०) उकेलना [दे० **उकेलना**] (दे०) उचाड़ना, अलग करना।

उकासना*—(क्रि०, स०, दे०) [हि० उकसाना] उभाड़ना, खोद कर ऊपर फेंकना, उघारना, खोलना। "वृषभ शृङ्ग सो धरनि उकासत"—सूबे०।

उकासी—(वि०, स्त्री०, दे०) खुली हुई। (संज्ञा, स्त्री०) उसाँसी। छुट्टी। उत्सव।

उकुति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [**उक्ति** सं० **उकति** दे०]।—**जुगुति**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [दे० अनु०] सलाह, उपाय।

उकुसना*—(क्रि०, स०, दे०) [हि० उकसना] उजाड़ना, उधेड़ना, उचाड़ना।

उकेलना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० उकलना] तह या पर्त से अलग करना। उचाड़ना। लिपटी हुई चीज़ को छुड़ाना। उधेड़ना। उचालना। खोलना।

उकौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ओकाई] गर्भवती स्त्री की भिन्न-भिन्न पदार्थों के लिए इच्छा, दोहद।

उक्त—(वि०, सं०) कथित, कहा हुआ, [**उकत** दे०]।

उक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कथन, वचन। अनूठा वाक्य। चमत्कार-पूर्ण कथन। विलक्षण वचन।

उक़्बा—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रलय, क़यामत। परलोक।

उक्षा—(संज्ञा, पु०, सं०) बैल, वृषराशि (ज्यो०)।

उखड़ना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्खिदन या उत्कर्षण] किसी जमी या गड़ी हुई वस्तु का अपने स्थान से अलग हो जाना। जड़-सहित अलग होना। खुदना, जमना का विलोम। किसी सुदृढ़ स्थिति से अलग होना। जमा या सटा न रहना। जोड़ से हट जाना (हाथ आदि), चाल मे भेद पड़ना (घोड़े के लिए), गति का समान न रहना, बेताल और बेसुर हो जाना (संगीत में), एकत्र या जमा न रहना, तितर-बितर होना। हटना, अलग होना। टूट जाना। साँस का यथोचित रूप से न चल कर अधिक वेग से और ऊपर-नीचे चलना। च्युत होना, स्खलित होना। चिह्न पड़ जाना। "कोमल हृदय उखडि गेलि हार"—विद्या०। **मुहा०—, तबियत**—उचाट होना, दिल न लगना, ध्यान न लगना, अरुचि का हो जाना, (किसी की ओर से) पूर्ववत भाव न रहना, प्रेम न रहना।—**,दम**—साँस फूलना, हिम्मत छूटना।—**, पैर**—जमा या दृढ़ न रहना, हिम्मत छोड़ कर भागना, ठहर न सकना, एक स्थान पर जमा न रहना, लड़न के लिए सामने न खड़ा रहना।—**,साँस**—साँस फूलना, स्वास रोग होना।

उखड़वाना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० उखड़ना का प्रेर० रूप] किसी को उखाड़ने मे प्रवृत्त करना।

उखड़ा—(वि०, पु०, दे०) उजड़ा, अलग हुआ, नष्ट हुआ। 'हो खड़े गाना बहुत उखड़ा सुना।'—हरिऔध।

उखड़ी—(वि०, स्त्री०, दे०) अलग हुई, उजड़ी हुई। **मु०—बात करना**—उदासीनता दिखाते हुए या बेमन बात करना, विरक्ति-सूचक बात करना, बिलगाव की बातें करना।—**जबान से**—अस्पष्ट वाणी से।

उखम*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऊष्म] गरमी, ताप। [**ऊखम, उखमा** (दे०)]

उखमज*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऊष्मज] क्षुद्र-कीट, ऊष्मज जीव।

उखर—(संज्ञा, पु०, दे०) ऊख बोने के बाद हल की पूजा।

उखरना*—(क्रि०, अ०, दे०, हिं०) उखड़ना। चूकना। ठोकर खाना।

उखल (उखली)—(**संज्ञा**, पु०, स्त्री०, दे०) [सं० उत्खल] पत्थर या लकड़ी का पृथ्वी में गड़ा हुआ या अलग पात्र जिसमे डाल कर भूसी वाले अनाजों की भूसी मूसल से कूट कूट कर अलग की जाती है, कांड़ी (दे०), ऊखल, ओखली, उखरा (दे०)।

उखा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उषा] तड़का। पूर्व प्रभात। डेगची।

उखाड़—(संज्ञा, पु०) [हिं० उखड़ना] उखाड़ने की क्रिया, उत्पाटन, पेंच रद्द करने की विधि या युक्ति। तोड़। **मु०—पछाड़ करना**—डाँटना, डपटना. उल्टी-सीधी बातें कहकर डाँट बताना। नुक्ताचीनी करना, त्रुटियाँ दिखला कर उन पर कटूक्तियाँ करना। कड़ी आलोचना करना।

उखाड़ना—(क्रि० स०) [हिं० उखड़ना का स० रूप] किसी जमी, गड़ी या बैठी हुई वस्तु को स्थान से अलग करना, जमा न रहने देना। अंग को जोड से पृथक् करना। भड़काना, बिचकाना। तितर-बितर करना, हटाना, टालना। नष्ट करना, ध्वस्त करना, उखारना, उपारना (दे०)। **मु०—, गड़े मुर्दे**—पुरानी बातों को फिर से छेड़ना, गई-बीती बात को उभाड़ना।—**, पैर**—स्थान से विचलित करना, हटाना, भगाना।

उखारना*—(क्रि०, स०, दे०) उखाड़ना।

उखारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ऊख] ईख का खेत। (वि०, दे०) [हिं० उखाड़ना] उखाड़ी हुई।

उखेरना—(क्रि०. स०, दे०) [हिं० उखाड़ना] उखाड़ना, अलग करना।

उखेलना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उल्लेखन] उरेहना, लिखना, खींचना (चित्र) [**उलेखना** दे०]।

उगटना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्घाटन या उत्कथन] उघटना, बार बार कहना। ताना मारना, बोली बोलना।

उगत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० उगना] उद्भव, उत्पत्ति, जन्म। **मु०—(ते) ही जलना**—आरम्भ मे ही कार्य का नाश होना।

उगना—(क्रि०, अ०, दे०) उदय होना, (सं० उद्-गमन) निकलना, प्रगट होना, (सूर्य-चंद्रादि ग्रहों का)। जमना, अंकुरित होना, उपजना, उत्पन्न होना। "उग्यो अरुन अवलोकहु ताता..."—तुल०।

उगरना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्गरण] भरे हुए पानी आदि का निकालना। भरे हुए पानी आदि के निकालने मे खाली होना।

उगलना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्गिलन] प्रा० (उग्गिलन) पेट में गई हुई वस्तु को मुँह से निकालना, कै या वमन करना। मुँह में गई हुई वस्तु को बाहर थूक देना। लिये हुए माल को विवश होकर वापस करना। छिपाने के लिए कही गई बात को प्रगट कर देना। [संज्ञा, पु० उगलन]। **मु०—उगल देना (किसी बात को)**—गुप्त बात को प्रगट कर देना।—**उगल पड़ना**—तलवार का म्यान से बाहर निकल पड़ना, बाहर आना।—, **जहर**—दूसरे को बुरी लगने वाली या हानि करने वाली बात कहना, या मुँह से निकालना।

उगलवाना—(क्रि०, स०, दे०) उगलना का प्रे० रूप।

उगलाना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० उगलना का प्रे० रूप] मुख से निकलवाना, इकबाल कराना, दोष को स्वीकार कराना। पचे या हड़प किये हुए माल को निकलवाना। [**उगिलाना** (दे०)]। "मातु जसोमति साँटी लिये उगलावति माँटी"—**सूर०**।

उगवना*—(क्रि०, सं०, दे०) उगाना (हि०)।

उगसाना*—(क्रि०, स०, दे०) उकसाना (हि०)। उभाड़ना।

उगसारना*—(क्रि०, स०, दे०) उकसाना (हि०)। बयान करना, कहना, प्रकट करना।

उगाना—(क्रि०, स०) [हि० उगना का स० रूप] जमाना। अंकुरित करना। उत्पन्न करना। (पौधा या अन्न आदि) उदय करना। प्रगट करना। तानना।

उगार (उगाल)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्गार प्रा० उगाल] पीक, थूक, खखार। कै। निचोड़ा हुआ पानी। सोठी। पाहर (दे०)।

उगालदान—(संज्ञा, पु०) [हि० उगाल+दान फ़ा० प्रत्य०] थूक या खखार आदि के गिराने का बरतन। पीकदान।

उगाहना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्ग्रहण] वसूल करना। नियमानुसार अलग अलग अन्न, धन आदि ले कर इकट्ठा करना। "अब तुम आये प्रान-ब्याज उगहन कौ"—रला० (ऊ० श०)।

उगाही—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० उगाहना] रुपया-पैसा वसूल करने का काम, वसूली। वसूल किया हुआ रुपया पैसा। वसूलयाबी।

उगिलना*—(क्रि०, स०, दे०) उगलना (हि०)।

उगिलवाना, उगिलाना—(क्रि०, स०, दे०) उगलाना, उगलवाना। दोष स्वीकार करना। पंजे से छुड़ाना। "गिल्यो बुँदेल खंड उगिलायौ"—छत्र०।

उग्गाहा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उद्गार या प्रा० उग्गाही] आर्या छंद के भेदों मे से एक।

उग्र—(वि०, सं०) प्रचंड, उत्कट, तेज़, घोर। रौद्र। तीक्ष्ण। क्रोधी। कठिन। कठोर। भयानक। (संज्ञा, पु०) महादेव। वत्सनाग। विष। सूर्य। बच्छनाग (वत्सनाभ) नामक विष। क्षत्रिय पिता और शूद्र माता से उत्पन्न एक संकर जाति। शिव को वायु-मूर्ति। केरल प्रदेश।—**गंध**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) लहसुन। कायफल। हींग। तीक्ष्ण गंधवाला।—**गंधा**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अजवायन। अजमोदा। बच। नक छिकनी।—**चंडा**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भगवती देवी की एक मूर्ति विशेष, जिसके अष्टादश भुजाएँ है और जो कोटि योगिनी-परिवेष्ठित है, जिसकी पूजा आश्विन कृष्णा नवमी को होती है।—**वादी**—(वि०) उग्रपंथी, गरमदल वाला। (पु०) उग्रविचारो वाला व्यक्ति। [इक्सट्रीमिस्ट]।

उग्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तेज़ी, प्रचंडता, कठोरता।

उग्रतारा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवी की एक मूर्ति जिसका दूसरा नाम मातंगिनी है।

उग्रसेन—(संज्ञा, पु०, सं०) मथुरा का यदुवंशी राजा जो आहुक का पुत्र और कंस का पिता था।

उग्रह—(संज्ञा, पु०) मुक्ति। ग्रहण से मोक्ष मिलना। छुटकारा।

उग्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा। कर्कशा स्त्री। अजवाइन। बच। धनियाँ।

उघटना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्कथन] ताल देना। सम पर तान तोड़ना। दबी हुई बात को उभाड़ना, कभी के किये हुए किसी के अपराध और

अपने उपकार को बार-बार कह कर ताना देना। किसी को भला-बुरा कहते कहते उसके बाप दादे को भी भला-बुरा कहने लगना। प्रगटना। "उघटाह छंद, प्रबंध, गीत, पद, राग, तान, बंधान"—

उघट-पेंची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उलाहना। एह-सान।

उघटा—(वि०) [हिं० उघटना] किए हुए उपकार को बार-बार कहने वाला। एहसान जताने वाला। (संज्ञा, पु०, दे०) उघटने का कार्य।

उघटाना, उघटवाना—(क्रि०, स०) [हिं० उघटना का प्रे० रूप] ताना दिलाना। एहसान जतवाना। प्रगट करना।

उघड़ना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्घाटन] खुलना। आवरण का हट जाना। नग्न होना। प्रकट होना। प्रकाशित होना। भंडा फूटना।

उघरना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्घाटन] उघ-ड़ना। [वि० **उघरा**। स्त्री० **उघरी**]। "उघरे अंत न होइ निबाहू"—तुल०।

उघरि—(पू० का०, क्रि०) खुलकर, खुल्लम खुल्ला। "उघरे फिर क्यों नेत्र ये अरे' —मैथिली०।

उघराटा§৷—(वि०, दे०) [हिं० उघरना] खुला हुआ। [स्त्री० **उघराटी**]

उघराटी—(संज्ञा, पु०, दे०) खुला स्थान।

उघाड़ना*—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० उघड़ना का स० रूप] खोलना, आवरण हटाना। (आवरण के विषय में)। खोलना या आवरण रहित करना। (आकृति के सम्बन्ध में)। नग्न या नंगा करना। प्रकट करना, गुप्त बात को प्रकाशित करना या खोल देना। भंडा फोड़ना।

उघारना*—(क्रि०, स०, दे०) उघाड़ना (हिं०) "सखी वचन सुनि सकुचि सिय, दीन्हें दृगनि उघारि"—रघु०। "नीके जाति उघारि आपनी" —सुबे०। "आये हैं तिलोचन तै लोचन उघारि दै"—स०। [वि० **उघार-उघारा**—नग्न, खुला हुआ। स्त्री० वि० **उघारी**—नङ्गी, खुली हुई।] "हाय दुरजोधन की जंघ पै उघारी बैठि..."—रत्ना०। [वि० **उघारू**—प्रकाशक, उघारने वाला]

उघेलना*—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० उघारना] खोलना। "को उजियार करै जग झाँपा चंद उघेलि" —जायसी।

उचंग, उछंग—(संज्ञा, पु०, दे०) उमंग।

उच—(अव्य०, दे०) उच्च (सं०), ऊँचा।

उचकन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उच्च+करण] ईंट, पत्थर आदि का टुकड़ा जिसे नीचे रख कर किसी चीज को ऊँचा करते हैं। (संज्ञा, पु०) [हिं० उचकना] उचकना।

उचकना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उच्च+करण] ऊँचा होने के लिए पैरों के पंजों के बल एँड़ी उठा कर खड़ा होना। ऊपर उठना। उछलना, कूदना, स्थान से हटना। (क्रि०, स०) उछल कर लेना, लपक कर छीनना।

उचका৷—(क्रि०, वि०, दे०) [हिं० अचाका] अचा-नक, सहसा।

उचकाना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० उचकना का स० रूप] उठाना, ऊपर करना। "केतिक लंक उपारि वाम कर लै आवै उचकाय"—सूर०।

उचक्का—(संज्ञा, पु०) [हिं० उचकना] उचक कर चीज़ ले भागने वाला। चाईं, ठग, बदमाश, छली, पाखंडी। [स्त्री० **उचक्किन**]

उचटना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उच्चाटन] जमी हुई वस्तु का उखड़ना। उचड़ना। चिपका या जमा न रहना। अलग होना। पृथक् होना। छूटना। भड़कना। बिचकना। विरक्त होना। उदास होना। मन न लगना। भूलना। "उचटत फिर अंगार गगन लौं सूर निरखि ब्रज जन बेहाल" —सूर०।

उचटाना৷—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उच्चाटन] उचाड़ना, नोचना, अलग करना, छुड़ाना। उदा-सीन करना, विरक्त करना। भड़काना, बिचकाना, भुलाना। "जब ब्रज की बातै यह कहियत तबहिं तबहिं उचटावत"—सूर०।

उचड़ना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उच्चाटन] सटी या लगी हुई चीज़ का अलग होना, पृथक् होना। किसी स्थान से हटना। जाना, भागना।

उचना—(क्रि०, अ०, दे०) ऊँचा होना, ऊपर उठाना। (क्रि०, अ०) [स० रूप] उचाना, उठाना। (क्रि०, स०) ऊँचा करना, "भौंह उचै आँचरु उलटि, मोरि मोरि मुँह मोरि"। [(वि०, संज्ञा, स्त्री०) **उचनि**—उठान, उभाड़।]

उचरंग§—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० उछलना+अंग] उड़ने वाला। कीड़ा। पतंग। पतिंगा।

उचरना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उच्चारण] उच्चारण करना, बोलना। "चढ़ि गिरि-सिख शब्द इक उच्चरयौ"—सूर०। (क्रि०, अ०) मुँह से शब्द निकलना। धीरे-धीरे चलना। काक का एक विशेष

प्रकार से बोलना और चलना (शकुन विशेष)। "उचरहु काक प्रिय मम आवत"। [क्रि०, अ०, दे० **उचड़ना, उचलना**]।

उचाकना—(क्रि०, अ०, दे०) बिलगाना, अलग करना। (क्रि०, स०, प्रे०) उचालना, उखाड़ना, ऊपर उठाना।

उचाट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उच्चाट] मन का न लगना। विरक्ति, उदासीनता, उदासी। "भा उचाट बस मन थिर नाहीं"—तु० (रा०)

उचाटन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उच्चाटन] उच्चाटन, विरक्ति।

उचाटना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उच्चाटन] उच्चाटन करना, जी हटाना। विरक्त या उदासीन करना। "लोग उचाटे अमरपति, कुटिल कुअवसर पाइ"—तुल०। [(प्रे०, क्रि०) **उचटवाना**—उचाट कराना।]

उचाटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उच्चाट] उदासीनता, अनमनापन, विरक्ति, उदासी।

उचाटू—(वि०, दे०) [हिं० उचाट] व्यग्रचित्त, उखड़ा हुआ, उदासीन, विरक्त।

उचाड़ना—(क्रि०, स०) [हिं० उचड़ना] लगी या सटी हुई चीज को अलग करना। नोचना, उखाड़ना।

उचाना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उच्च+करण] ऊँचा करना, ऊपर उठाना, उठाना। "चंदचूड़ चेत्यौ चित चखन उचाय कै"—रघु०।

उचायत—(संज्ञा, पु०, दे०) किसी दूकान से बराबर उधार लेते रहना।

उचार*—(संज्ञा, पु०, दे०) उच्चार (सं०) उच्चारण।

उचारन—(संज्ञा, पु०, दे०) उच्चारण (सं०), उच्चारन (दे०)।

उचारना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उच्चारण] उच्चारण करना, मुँह से शब्द निकालना, बोलना। "आँसु पोंछि मृदु बचन उचारे"—तुल०। "भई पुष्प वर्षा सब जयजय शब्द उचारे"—हरि०। [सा० भू० **उचारयो**—"ज्ञात होत कुलगुरु सुरज हय मंत्र उचारयौ" सा० व० **उचारै**।] (क्रि०, स० दे०) उचाड़ना, उखाड़ना।

उचित—(वि०, सं०) योग्य, ठीक, मुनासिब, वाजिब, उपयुक्त, समीचीन, न्यस्त। विदित। न्याय-युक्त। [संज्ञा, भा० **औचित्य**]। "देवि बात यह उचित बतायी"-गिरीश।—**आसन (उचितासन)**-(संज्ञा, पु०, सं०) बैठने के लिए योग्यतानुसार स्थान। तदुपरान्त आदर से उचितासन दिया—हरिऔध।—**क्रमानुसार**-यथोचित प्रणाली से। स्वीकृत पद्धति द्वारा। [थ्रू प्रापर चैनल]।—**भाटक**-न्याय-संगत किराया या लगान (फेयर रेंट)।—**मूल्य**-समुचित कीमत, मूल्य जिस पर आपत्ति न की जा सके। [फेयर प्राइस]—**व्यापार**-छल-रहित व्यापार। निर्धारित नियमों पर आधारित व्यवसाय। [फेयर ट्रेड]

उचेलना§—(क्रि०, स०, दे०) उकेलना, छीलना, उखाड़ना।

उचोर—(संज्ञा, पु०, दे०) ठोकर, ठेस, चोट।

उचौंहाँ*—(वि०) [हिं० ऊँचा+औंहा—प्रत्य०] [उचौंहा (दे०)] ऊँचा उठा हुआ। उभड़ा हुआ। [स्त्री० **उचौंही**]।

उच्च—(वि०, सं०) ऊँचा, श्रेष्ठ, बड़ा, उत्तम, महान, उन्नत, उत्तुंग, ऊर्ध्व। कैसी हीं हीं उच्चभावना। रा० न० त्रि०।—**न्यायालय**-प्रांत का या राज्य का प्रधान न्यायालय (हाईकोर्ट)।—**भवन**-विशेष सदस्यों की व्यवस्थापिका सभा। (अपर हाउस)।—**भाषी**-(वि०) कटुवक्ता।—**मना**-(वि०) ऊँचे या उन्नत मन वाला, उदार हृदयी, महामना।

उच्चतम—(वि०, सं०) सब से ऊँचा, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

उच्चतर—(वि०, सं०) दो मे से अधिक ऊँचा। उत्तम या अच्छा।

उच्चता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऊँचाई, श्रेष्ठता, बड़ाई, उत्तमता, बड़प्पन, श्रेष्ठता।—**मापक**-ऊँचाई नापने वाला यंत्र। [हाइट फाउंडर]

उच्चरण—(संज्ञा, पु०, सं०) कंठ, तालु, जिह्वा आदि से शब्द निकालना, मुँह से शब्द फूटना।

उच्चरना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उच्चारण] उच्चारण करना, बोलना। [वि० **उच्चरित**—उच्चारण किया हुआ, कथित।]

उच्चाट—(संज्ञा, पु०, सं०) उखाड़ने या नोचने की क्रिया। अनमनापन, उचटना, उदासी। "भई वृत्ति उच्चाट भरि भभरि आई छाती"—हरि०।

उच्चाटन—(संज्ञा, पु०, सं०) लगी या सटी हुई चीज को अलग करना। उचालना, उखाड़ना। विश्लेषण। नोचना। किसी के चित्त को कहीं से हटाना (तंत्र के छः अभिचारों या प्रयोगों में से एक), अनमनापन, विरक्ति, उदासीनता। [वि० **उच्चाटित**

—उच्चाट किया हुआ, **उच्चाटनीय**—उच्चाट करने योग्य ।]

उच्चादर्श—(संज्ञा, पु०, सं०) [उच्च+आदर्श] ऊँचा आदर्श, ऊँचे दर्जे का नमूना । "मै प्रेमी उच्चादर्शों का"—पंत ।

उच्चाभिलाष—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊँची इच्छा उच्चकोटि की कामना । "संकल्प महत उच्चाभिलाष" —पंत ।

उच्चार—(संज्ञा, पु०) [सं० उत+चर्+घञ्] मुँह से शब्द निकालना, बोलना, कथन । (संज्ञा, पु०) विष्ठा, मल-मूत्र, पुरीष ।

उच्चारण—(संज्ञा, पु०) [सं० उत+चर्+णि+अनट्] कंठ, ओष्ठ, जिह्वा आदि के द्वारा मनुष्यों का व्यक्त और विभक्त ध्वनि निकालना । मुख से सस्वर व्यंजन बोलना । वर्णों या शब्दों के बोलने का ढंग । तलफ्फुज । उल्लेख । कथन ।—**स्थान** —वह स्थान जहाँ से शब्द उच्चारित होते हैं । [प्लेस आफ आर्टिकुलेशन]

उच्चारणीय—(वि०) [सं० उत+चर्+णिच्+अनीयर] उच्चारण करने के योग्य, बोलने के लायक ।

उच्चारना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उच्चारण] मुँह से शब्द निकालना, बोलना ।

उच्चारित—(वि०) [सं० उत+चर्+णिच्+क्त] कथित, उक्त, अभिहित, कहा हुआ ।

उच्चार्य—(वि०, सं०) उच्चारण के योग्य, [वि० **उच्चार्यमाण**—उच्चारण के योग्य ।]

उच्चैः—(अव्य०, सं०) ऊर्ध्व, ऊपर, ऊँचा, बड़ा ।

उच्चैःश्रवा—(संज्ञा, पु०) [सं० उच्चैः+श्रवस्] खड़े कान और सात मुँह वाला इन्द्र या सूर्य का सफेद घोड़ा, जो समुद्र-मंथन के समय निकला था । (वि०) ऊंचा सुनने वाला, बहरा ।

उच्छन्न—(वि०, सं०) दबा हुआ । लुप्त ।

उच्छरना*—(क्रि०, अ०, दे०) नीचे-ऊपर उठना । उछलना ।

उच्छल—(वि०, सं०) तरंगित, क्षुब्ध । "यौवन के उच्छल प्रवाह को"—दिनकर ।

उच्छलना—(क्रि०, अ०, दे०) उछलना । छलकना, द्रुत गति से ऊपर उठना और नीचे गिरना ।

उच्छव—(संज्ञा, पु०, दे०) उत्सव (सं०), उछव (दे०) उछाह ।

उच्छाय—(संज्ञा, पु०) [सं० उत+श्रि+अक्त्] पर्वत, वृक्षादि की उच्चता, उच्चपरिमाण ।

उच्छाव*—(संज्ञा, पु०, दे०) उत्साह (सं०), ऊछाव (दे०), धूमधाम ।

उच्छास*—(संज्ञा, पु०, दे०) उच्छ्वास, उसाँस, साँस ।

उच्छाह*—(संज्ञा, पु०, दे०) उत्साह (सं०) उछाह (दे०), हर्ष ।

उच्छ्रित—(वि०) [सं० उत+श्रि+क्त] उन्नत, उच्च, ऊँचा ।

उच्छिन्न—(वि०) [सं० उत+छिद्+क्त] कटा हुआ । खंडित । उखड़ा हुआ । नष्ट । छिन्न-भिन्न । निर्मूल । [संज्ञा, स्त्री० **उच्छिन्नता**—नाश] "थे जिस ओर पड़े उच्छिन्न"]—मैथिली० ।

उच्छिष्ट—(वि०) [सं० उत+शिष्+क्त] किसी के खाने से बचा हुआ, जूठा । दूसरे का बर्ता हुआ । त्यक्त, भुक्तावशिष्ट । (संज्ञा, पु०) जूठी वस्तु । शहद । "यह उच्छिष्ट, प्रलय का, अहि-दंशित मुमूर्ष यह देश"—दिनकर ।

उच्छू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उत्थान, पं० उत्थू] एक प्रकार की खाँसी जो गले में पानी आदि के फँसने से आने लगती है । सुरसुरी ।

उच्छृंखल—(वि०, सं०) जो शृंखला बद्ध न हो । क्रम-विहीन, अंडबंड, निरंकुश, स्वेच्छाचारी, मनमानी करने वाला । उद्दंड, अक्खड़, अनियंत्रित, विशृंखल, अनर्गल । [संज्ञा, स्त्री०, सं० **उच्छृंखलता**] ।

उच्छेद (उच्छेदन)—(संज्ञा, पु०) [सं० उत+छिद्+अल्] उखाड़ना, खंडन, नाश, उन्मूलन, उत्पाटन, विध्वंस । [वि० **उच्छेदनीय** । वि० **उच्छेदक** —विनाशक । वि० **उच्छेदित**—उन्मूलित, खंडित ।]

उच्छेदक—(वि०, सं०) विध्वंस कारी, तोड़-फोड करने वाली । विनाशकारी पद्धति पर काम करने वाला । [सबवर्सिव] ।—**कार्य**—विध्वंस या तोड़-फोड़ के कार्य । [सबवर्सिव ऐक्टिविटीज] ।

उच्छ्वास—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊपर को खींची हुई साँस, उसाँस । साँस, श्वास । ग्रन्थ का विभाग । प्रकरण । परिच्छेद । "हर्ष विषादों के उठते हैं जो अगणित अच्छ्वास यहाँ पर ।"

उच्छ्वसित—(वि०, सं०) प्रसन्न, आनंदित, उत्साहित, उत्फुल, निश्चिंत । "उच्छ्वसित हृदय है"—मैथिली० । [वि० **उच्छ्वासी**—उसाँस भरने वाला । वि० **उच्छ्वासित**—उसाँस लिया हुआ] ।

उच्छौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्सव] समारोह ।

उछंग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्संग] गोद, क्रोड़, कोरा, अँकोरा। हृदय, छाती। अंक। उर। कनिया। "लेइ उछंगकबहुं हलरावै"—तुल०।

उछकना—(क्रि०, अ०) [हि० छकना] नशा हटाना, चेत मे आना, चौंक पड़ना।

उछरना*—(क्रि०, अ०, दे०) उछलना (हि०) कूदना। "मृग उछरत आकास कों, भूमि खनत बाराह"—रहीं०। कै या वमन करना। उपटना, उभड़ना। उतराना।

उछल-कूद—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० उछलना + कूदना] खेल-कूद। हलचल। अधीरता। चंचलता। गड़बड़ी।

उछलना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उच्छलन] वेग से ऊपर उठना और गिरना। झटके के साथ एकबारगी देह को इस प्रकार क्षण भर के लिए ऊपर उठा लेना, जिससे पृथ्वी का लगाव छूट जाय। कूदना। अत्यंत प्रसन्न होना, खुशी से फूलना। रेखा या चिह्न का स्पष्ट दिखाई पड़ना। उपटना, चिह्न पड़ना, उभड़ना। उतराना, तरना।

उछलवाना—(क्रि०, स०) [हि० उछलना का प्रे० रूप] उछालने में प्रवृत्त करना।

उछलाना—(क्रि०, स०) [हि० उछालना का प्रे० रूप] उछालने में प्रवृत्त करना।

उछाँटना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० उचाटना] उचाटना, उदासीन करना, विरक्त करना। (स०, क्रि०) [हि० छाँटना] छाँटना, चुनना।

उछारना*—(क्रि०, स०, दे०) उछालना (हि०)।

उछाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उच्छालन] सहसा ऊपर उठने की क्रिया। छलांग, चौकड़ी, कुदान। ऊंचाई जहाँ तक कोई वस्तु उछल सकती है। आकस्मिक उन्नति। §उलटी, क़ै, वमन, पानी का छींटा।

उछालना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उच्छालन] ऊपर की ओर फेंकना। उचकाना। प्रगट करना, प्रकाशित करना। शीघ्रता के साथ उन्नत बनाना।

उछाला*—(संज्ञा, पु०) [हि० उछाल] जोश, उबाल। वमन, क़ै, उलटी। आकस्मिक पदोन्नति।

उछाह*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्साह] उत्साह, उमंग, हर्ष, उत्सव, आनंद की धूम, जैन लोगों की रथ-यात्रा, इच्छा, उत्कंठा। "...मन अति उठ्यौ उछाह"—सूर०। "भुवन चारि दस भर्‍यौ उछाहू" —तुल०।

उछाही§*—(वि०) [दे० उछाल] उत्साह करने वाला, उत्साही। हर्ष या आनंद मनाने वाला। "तब सुकाल महिपाल राम के ह्वै है प्रजा उछाही" —रघु०।

उछिन्न—(वि०, दे०) [सं० उच्छिन्न] खंडित, निर्मूल।

उछिष्ट—(वि०, दे०) [सं० उच्छिष्ट] भोजनावशिष्ट, जूठा। दूसरे का बर्ता हुआ।

उछीनना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उच्छिन्न] उच्छिन्न करना, उखाड़ना, नष्ट करना।

उछीर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० छोर—किनारा] अवकाश। जगह। छेद। रिक्त स्थान।

उछेद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उच्छेद] खंडन, नाश।

उज—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश, शिव सुत।

उजट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उटज] उटज नामक एक प्रकार की घास से बनी कुटी। पर्णकुटी।

उजड्ड—(वि०, दे०) उतावला। उच्छृंखल। चौगान। शून्य। जनशून्य स्थान। अप्रवीण।

उजड़ना—(क्रि० अ०) [सं० अव—उ—नहीं + जड़ना—हि०] उखड़ना, उचड़ना, उच्छिन्न होना। ध्वस्त होना, गिर पड़ना। तितर-बितर होना, बरबाद होना, नष्ट होना। वीरान होना। बिखरना।

उजड़वाना—(क्रि०, स०) [हि० उजाड़ना का प्रे० रूप] किसी को उजाड़ने में प्रवृत्त करना।

उजड़ा—(वि०, दे०) उखड़ा हुआ। विनष्ट। वीरान। [उजटा—दे० निर्जन, बरबाद]।

उजड्डु—(वि०, दे०) [सं० उद्दंड] वज्र मूर्ख। असभ्य, अशिष्ट, उद्दंड। निरंकुश। [संज्ञा, स्त्री० उजड्डुता]

उजड्डुपन—(संज्ञा, पु०, दे०) उद्दंडता, असभ्यता, कुसंस्कार पूर्ण व्यवहार।

उजबक—(संज्ञा, पु०, तु०) तातारियों की एक जाति। (वि०) उजड्डु, बेवकूफ़, मूर्ख, अनाड़ी। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार की घास।—**पन**—उजड्डुपन, जड़ता। "देख उजबकपन जले तन की जलन।"—हरिऔध।

उजरत—(संज्ञा. स्त्री०, अ०) मजदूरी। किराया, भाड़ा। पारिश्रमिक, परिश्रम के बदले में प्राप्त धन। (क्रि०, अ०) [हि० उजड़ना] उजड़ते हुए।

उजरना*—(क्रि०, अ०, दे०) उजड़ना [हि०] नष्ट होना।

उजरा*—(वि०, दे०) [हि० उजड़ना] उजड़ा, बीरान, नष्ट। (वि०, दे०) [हि० उजला] सफेद, स्वच्छ। दिव्य। [स्त्री० **उजरी**]

उजराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उजाली, सफेदी, उज्ज्वलता (सं०) कांति। स्वच्छता। (क्रि०, स०) [प्रे० रूप—**उजराना**] उजाड़ा, उजड़ाया, धवलीकृत।

उजराना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उज्ज्वल] उज्वल करना, साफ करना, स्वच्छ करना। (क्रि०, अ०) सफेद या साफ़ होना, (क्रि०, स०, दे०) [हि० उजड़ाना] उजाड़ना का प्रे० रूप, किसी को उजाड़ने में प्रवृत्त करना।

उजरे—(वि०, दे०) [हि० उजड़] वीरान, नष्ट हुए, उजड़े हुए। "उजरे हरष, विषाद बसेरे"—तुल०। (वि०) ब० व० (दे०) उजले (हि०) स्वच्छ, सफेद।

उजलत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) जल्दी, उतावली। (वि०) [हि० उजला] उज्वलित, प्रकाशमान। "हंसन अबीर हीर अति सुंदर उजलत परम उजेरी"—श्री गुणय।

उजलवाना—(क्रि०, स०) [उजालना का प्रे० रूप] गहने या वस्त्रादि का साफ़ कराना, उजराना दे०।

उजला—(वि०, दे०) [सं० उज्वल] श्वेत, सफेद, स्वच्छ, धवल, साफ, निर्मल, झक। उजरा, ऊजरा, ऊजरो [(दे० स्त्री०) **उजली**]।

उजवाना—(क्रि०, स०, दे०) ढलवाना, उभालना।

उजागर—(वि०, दे०) [सं० उद्—उपर—भली भाँति + जागर—जागना, प्रकाशित होना] प्रकाशित, जाज्वल्यमान, जगमगाता हुआ। प्रसिद्ध, विख्यात। "राम-जनम जग कीन्ह उजागर"—तुल०।

उजाड़—(संज्ञा, पु०) [हि० उजड़ना] उजड़ा हुआ स्थान, गिरी पड़ी जगह। निर्जन स्थान, बस्ती-हीन स्थान, जंगल, बीरान स्थल। (वि०) ध्वस्त, उच्छिन्न, गिरा पड़ा, जो आबाद न हो, वीरान, निर्जन। "यह उजाड़ फिर शुभ्र सदन हो"—हितैषी [**ऊजड़** दे०]

उजाड़ना—(क्रि०, स०) [हि० उजाड़ना] ध्वस्त करना, बीरान करना। नष्ट करना। उधेड़ना, बिगाड़ना। उच्छिन्न करना। तितर-बितर करना, चौपट करना। निर्जन करना, उजारना (दे०)। "मैं नारद कर काह बिगारा, बसत भवन जिन मोर उजारा"—तुल०।

उजान—(संज्ञा, पु०, दे०) नदी का चढ़ाव। बाढ़। ज्वार (भाटे का विलोम)।

उजार*—(संज्ञा, पु०, दे०) उजाड़ (हि०) (वि० दे०) वीरान। "जग उजार का कीजिये बसिकै"—जायसी।

उजारा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० उजाला] उजाला, प्रकाश। (वि०) प्रकाशमान्, कांतिमान। "कंचन के मंदिरन दीठि ठहराति नाहिं, दीपमाल लाल सदा मानिक उजारे सों"—रस०। "जो न होत अस पुन्य उजारा"—जायसी। (क्रि०, स०, सा० भूत०) उजाड़ा (हि०)।

उजारि—(पू० का०) [क्रि० उजारना दे०] उजाड़ कर। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) नवान्न-राशि से देवार्थ अन्न निकालना।

उजारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० उजाली] चाँदनी, चंद्रिका। प्रकाश, प्रभा। कांति। [उजियारी, उज्यारी (दे०)। "आरसी से अंबर में आभासी उजारी ठाढ़ी"—रवि०।

उजालना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उज्वलन] गहने या हथियार आदि का साफ़ करना। चमकाना। निखारना। प्रकाशित करना। बालना, जलाना।

उजाला—(संज्ञा, पु०) [सं० उज्वल] प्रकाश, चाँदनी, रोशनी, अपने कुल और जाति में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति। [स्त्री० **उजाली**—चाँदनी]। (वि०) [सं० उज्वल] प्रकाशवान्, अँधेरा का उलटा। [स्त्री० **उजली**]। (यौ०) **मुहा०—आँखों का**—दृष्टि, अत्यंत प्रिय। —,**घर का**—अत्यंत प्रिय, भाग्यवान् और रूप-गुणादियुक्त लड़का। इकलौता बेटा।—, **अँधेरे घर का**—वह लड़का जो अपने घर का अकेला हो। अत्यंत प्रिय। इकलौता बेटा। "उसके घर का मै उजाला हुआ"—हितैषी।

उजाली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० उजाला] चाँदनी, रोशनी, चंद्रिका। [**उज्यारी, उजियारी** दे०]

उजास—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० उजाला + स—प्रत्य०] चमक, प्रकाश, उजाला। [वि० **उजासित**]। "नित प्रति पूनो ही रहत, आनन-ओप-उजास"—वि०। बगरावती अंग उजास नवीना—हितैषी।

उजासना—(क्रि०, अ०, दे०) प्रकाशित होना। चमकना। "......चंद के तेज तें चंद उजासै"—सुन्द०।

उजियर*—(वि०, दे०) [सं० उज्वल] उजाला (हि०), प्रकाश। सफेद, साफ। [**उज्यर** (दे०)]

उजियरिया§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उजाली, चाँदनी, प्रभा, चंद्रिका—[**उजेरिया** दे०]।—(यौ०)—**अँधेरिया**—लड़कों का चाँदनी और अँधेरे का एक खेल।

उजियाना—(क्रि०, स०, दे०) उत्पन्न करना। प्रगट करना। चमकाना, प्रकाशित करना। "पलटि चली मुसकाय, दुति रहीम उजियाय अति"।

उजियार*—(संज्ञा, पु०, दे०) उजाला, प्रकाश। [**उजेरो** दे०]।

उजियारना*—(क्रि०, स०, दे०) प्रकाशित करना, जलाना, रोशन करना।

उजियारा*—(संज्ञा, पु०, दे०) उजाला। (वि०) उज्ज्वल, प्रकाशयुक्त। "विहँसत जगत होय उजियारा"—प०।

उजियारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उजाली (हिं०), चाँदनी, चंद्रिका, रोशनी। "रही छिटिक पूनो उजियारी"। ज्योति, कुलकांति-वर्धिनी रूप-गुण-सौभाग्यवती स्त्री। [**उज्यारी** दे०] (वि०) प्रकाशयुक्त।

उजियाला—(संज्ञा, पु०, दे०) उजाला, उजियारा। [(स्त्री०) **उजियाली, उजियारी**।]

उजीता—(वि०, दे०) प्रकाशमान्, **रोशन**।

उजीर§*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० वजीर] मंत्री। "मुनि सुउजीरन यों कह्यौ, सरजासिव महराज"—भूषण। "रहिमन सूधी चाल सों, प्यादा होत उजीर"।

उजुर꙳—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० उज्र] आपत्ति, विरोध। "चाकर है उजुर कियो न जाय नेक पै,......"—भूषण

उजृंभण—(संज्ञा, पु०, सं०) विकास। प्रस्फुटन। अन्वेषण।

उजृंभित—(वि०) [सं० उत् + जृम्भ + क्त] प्रफुल्ल, विकसित, प्रस्फुटित। फैला हुआ, खिला हुआ।

उजेर*—(संज्ञा, पु०, दे०) उजाला, प्रकाश। [**उजेरा** दे०]।

उजेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) उजाला (हिं०) प्रकाश।

उजेरी—(वि०) प्रकाशयुक्त (ब्र०)।

उजेला—(संज्ञा, पु०) [सं० उज्ज्वल] प्रकाश। चाँदनी। रोशनी।(वि०) प्रकाशमान्।

उज्जर*§—(वि०, दे०) उज्ज्वल (सं०) उजला। सफेद। (संज्ञा, **पु०**) उजाला, प्रकाश।

उज्जल—(क्रि०, वि०) [सं० उत्—ऊपर+जल] बहाव से उलटी ओर। नदी के चढ़ाव की ओर। उजान (दे०)। (वि०, दे०, सं० उज्ज्वल) सफेद, उजला [**उज्जर** दे०]।

उज्जयिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मालवा देश की प्राचीन राजधानी जो सिप्रा नदी के तट पर है (सप्त पुरियों में से एक।)

उज्जैन—(संज्ञा, पु०, दे०) उज्जयिनी (सं०)।

उज्जैनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उज्जयिनी नामक नगरी।

उज्यारा*—(संज्ञा, पु०, दे०) उजाला, उजियारा। [**उज्यारो, उजेरो** (ब्र०)। (संज्ञा, स्त्री०) **उज्यारी, उजियारी** दे०]

उज्र—(संज्ञा, पु०, अ०) विरोध, आपत्ति, विरुद्ध वक्तव्य, किसी बात के विरुद्ध सविनय कुछ कथन करना। दे० 'उजुर'।—**दारी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) किसी ऐसे मामले में उज्र पेश करना जिसके विषय में किसी ने अदालत से कोई आज्ञा प्राप्त कर ली हो या करना चाहता हो।

उज्यास—(संज्ञा, पु०) [दे० उजास] उजाला।

उज्ज्वल—(वि०, सं०) दीप्तिमान, प्रकाशमान्। श्वेत, शुभ्र, स्वच्छ, निर्मल, सफेद। बेदाग।—**कारी**-(वि०, सं०) निर्मल बनानेवाला, चमकानेवाला। "हे रघुकुलमुख उज्ज्वलकारी"—हरिऔध। —**तर**-(वि०, सं०) दो में से जो अधिक निर्मल हो। "अज्ञात पुलिन से उज्ज्वलतर"—महा०।

उज्वलती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कांति, दीप्ति, चमक। सफेदी, स्वच्छता। निर्मलता।

उज्वलना—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश, दीप्ति, जलना। स्वच्छ करन का कार्य। ज्वाला का ऊर्ध्व-गमन। [वि० **उज्वलनीय, उज्वलित**]

उज्वला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बारह अक्षरों का एक वृत्त। (वि०, स्त्री०) निर्मला, शुभ्रा।

उज्वालन—(क्रि०, स०, दे०) जलाना, प्रदीप्त करना। "उज्वालि लाखन दीपिका निज नयन सब कहँ देखि"—रघु०।

उझकना—(क्रि०, अ०, दे०,) [हिं० उचकना] उचकना, उछलना, कूदना, ऊपर उठना। उभड़ना, उदड़ना। ताकने या देखने के लिए ऊपर उठना या सिर उठाना। चौंकना। [(संज्ञा, **पु०**) **उझकन**। पू० का० क्रि० **उझकि**।] "उझकि उझकि पदकंजनि के पंजनिपै"—रत्ना०।

उझपना*—(क्रि०, अ०, दे०) खुलना (विलोम **झपना**) "बरुनी मैं फिरैं न झपैं उझपैं पलमै न सनाइबो जानती है"—हरि०।

उभरना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्सरण, प्रा० उच्छरण] ऊपर की ओर उठना, उचकना ।

उभलना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उन्भरण] किसी द्रव पदार्थ को ऊपर से नीचे गिराना, ढालना, उँडलना, रिक्त या खाली करना । (क्रि०, अ०, दे०) उमड़ना, बढ़ना । [**उम्भिलना** दे०] "······मनु सावन की सरिता उभली"—सुन० ।

उभाँकना—(क्रि०, स०, दे०) झाँकना, ऊपर से झाँकना, ऊपर सिर उठाकर देखना ।

उभिला—(संज्ञा स्त्री०) [प्रान्ती०] उबाली हुई सरसों, जो उबटन के काम में आती है । खाद्य पदार्थ जो पोस्ते और महुए को मिलाकर तैयार किया जाता है । ऊँचे स्थल से निकाली हुई मिट्टी जिससे खेतों के गड्ढे पाटे जाते हैं ।

उभलित—(वि०, दे०) छोड़ा हुआ, डाला हुआ ।

उट—(संज्ञा, पु०, सं०) तृण, तिनका । ऊर्ण, पत्ता, घास ।—**ज**-(पु०) पर्णकुटी, झोपड़ी पत्तों से बना छोटा घर ।

उटंग—(वि०, दे०) [सं० उत्तुंग] ऊंचा । ओछा-छोटा कपड़ा ।

उटंगन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उट=घास] एक प्रकार की घास जिसका साग खाया जाता है, चौपतिया । गुठुवा । सुसना ।

उटकना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उत्कलन] अनुमान करना, अटकल लगाना, अंदाज करना ।

उटक-नाटक—(वि०) अंडबंड । अव्यवस्थित । ऊँचा-नीचा ।

उटक्करलस—(वि०, दे०) उतावला । अविवेकी ।

उट्टङ्कन—(वि०, सं०) संकेत, इंगित । प्रसंग । प्रस्ताव । [वि० **उटङ्कित**—सांकेतिक चिह्नों द्वारा व्यक्त, चिह्नित, उल्लिखित ।]

उट्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खेल या लाग-डाट में बुरी तरह हार मानना [हिं० उठना] [क्रि०, अ०, सा० भू० स्त्री० उठी, पु० उट्ठा] ।

उठँगन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्थ+अंग] आड़, टेक, आधार, आश्रय ।

उठँगना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्थ+अंग] टेक लगाना । लेटना, पड़ रहना । सहारा लेना ।

उठँगाना—(क्रि०, सं०, दे०) [हिं० उठंगना] खड़ा करने में किसी वस्तु को लगाना । भिड़ाना । बंद करना (किवाड़) ।

उठना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्थान] किसी वस्तु के विस्तार के पहिले की अपेक्षा अधिक ऊँचाई तक पहुँचने की स्थिति या दशा । ऊँचा होना, खड़ी स्थिति में होना । हटना । जगना । उदय होना । ऊँचाई तक ऊपर बढ़ना या चढ़ना—जैसे लहर का उठना । ऊपर जाना या चढ़ना । आकाश में छा जाना । कूदना, उछलना । बिस्तर छोड़ना । जागना । निकलना । उत्पन्न होना, पैदा होना, जैसे —विचार उठना, भाव उठना । सहसा आरम्भ होना, जैसे—दर्द उठना । उन्नति करना । तैयार होना, उद्यत होना । किसी अंक या चिह्न का स्पष्ट होना, उभड़ना, उपटना । पांस बनना, खमीर आना । सड़ कर उफनाना । किसी दूकान या कार्यालय का कार्य-समय पूरा होना, या उसका बंद होना । टूट जाना । चल पड़ना, प्रस्थान करना । किसी प्रथा का दूर होना । खर्च होना, काम में आना—जैसे —रुपया उठ गया । बिकना या भाड़े पर जाना । याद आना । ध्यान पर चढ़ना । किसी वस्तु (घर आदि) का क्रमशः जुड़जुड़ कर पूरी ऊंचाई तक पहुंचना, बनना (इमारत) । गाय, भैंस या घोड़ी आदि का मस्ताना या अलँग पर आना । खतम या समाप्त होना । चलन या प्रयोग बंद होना । **मुहा० उठ जाना (दुनिया से)**—मर जाना, संसार से चला जाना । **उठती जवानी**—युवावस्था का आरम्भ । **उठते-बैठते**-प्रत्येक अवस्था में, हर एक समय, प्रतिक्षण, हर घड़ी ।—**बैठना**—आना जाना । संग-साथ, मेल-जोल, रहन-सहन । **उठा-बैठा**—लड़कों का एक खेल । **उठा-बैठी लगाना**—चिलबिली करना, चंचलता करना, शांत न रहना । विकल होना, बेचैन रहना । **ध्यान से**—भूलना ।

उठल्लू—(वि०) [हिं० उठना+लू प्रत्य०] एक स्थान पर न रहने वाला, आसन-कोपी । आवारा, बेठौर-ठिकाने का । **मुहा०—चूल्हा (उठल्लू का चूल्हा)**—बेकाम इधर-उधर फिरने वाला, निकम्मा ।

उठवाना—(क्रि०, स०) [हिं० उठना क्रिया का प्रे० रूप] किसी से उठाने का काम कराना ।

उठवैय्या—(संज्ञा, पु०, दे०) उठानेवाला, हटाने वाला ।

उठाईगीर, उठाईगीरा—(वि०) [हिं० उठाना+गीर फ़ा०] आँख बचा कर चीजों का चुराने वाला । उचक्का, चाई, बदमाश, लुचा, ठग, चोर । [**उठाई-गीरी**-(संज्ञा, स्त्री०) आँख बचा कर चीज उठाने का काम ।]

उठान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उत्थान] उठना, उठने की क्रिया। बाढ़, बढ़ने का ढंग, वृद्धि-क्रम। गति की प्रारम्भिक दशा। आरंभ। खर्च, व्यय, खपत।

उठाना—(क्रि०, स०) [हि० उठाना का स० रूप] खड़ा करना, बेंड़ी स्थिति से खड़ी स्थिति मे करना। नीचे से ऊपर करना। धारण करना। जगाना। सचेत करना, सावधान करना। कुछ समय तक ऊपर ताने या लिये रहना। निकालना। उत्पन्न करना। बढाना, चढाना। उन्नत कर आगे बढाना। आरम्भ करना, शुरू करना। छेड़ना, जैसे बात उठाना। तैयार करना, उद्यत करना, बनाना (घर या मकान उठाना)। उत्तेजित या उत्साहित करना। नियमित समय पर किसी दूकान या कार्यालय का बंद करना, समाप्त करना, खतम करना, बंद करना। दूर करना (किसी प्रथा या रीति आदि का उठाना)। खर्च करना। लगाना। भाड़े या किराये पर देना। भोग करना। अनुभव करना। शिरोधार्य करना। मानना। किसी वस्तु (जैसे गंगा-जल, पुस्तक आदि) को हाथ मे लेकर शपथ करना। उधार देना। लगान पर देना (खेत आदि)। जिम्मेदारी लेना, अपने ऊपर उत्तरदायित्व लेना। सहना, बरदाश्त करना, स्वीकार करना (किसी कार्य का उठाना)। प्राप्त करना। **मुहा०—उठा रखना**—बाकी रखना, कसर छोड़ना।—**, आँख**—हानि पहुँचाने को चेष्टा करना।—**, आवाज**—विरोध करना।—**,(पृथ्वी) आसमान सर पर**—उपद्रव करना, अत्याचार करना, ज्यादती करना।—**, उँगली**—इशारा करना, ऐब निकालना, नुकता-चीनी करना।—**बैठाना**—उठने बैठने की सजा देना। बढ़ाना-घटाना, उन्नतावनत करना। **सिर**—घमंड करना। —**, हाथ**—मारना, हानि पहुचाना।

उठाव—(संज्ञा, पु०, दे०) उठान, वृद्धि।

उठावा—(वि०, दे०) [हि० उठाना] जिसका कोई स्थान नियत न हो, जो नियत स्थान पर न रहता हो, जो उठाया जाता हो, [**उठौआ** दे०]।

उठौआ—(वि०, दे०) उठावा, उठौवा (दे०)।

उठौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० उठाना] उठाने की क्रिया, उठाने की मजदूरी या पुरस्कार। किसी फसल की पैदावार या किसी वस्तु के लिये दिया गया पेशगी रुपया, अगौढ़ा, दाहती। मजदूरी, बयाना। बनियों या दूकानदारों के साथ उधार का लेन-देन। वर की ओर से कन्या के घर विवाह पक्का करने के लिये भेजा जाने वाला धन (छोटी जाति में लगन धरौआ)। संकट समय किसी देवार्चना के लिए अलग किया गया धन या अन्न। एक रीति जिसमें किसी के मरन के दूसरे या तीसरे दिन बिरादरी के लोग इकट्ठे होकर उस मृतक के परिवार के लोगों को कुछ रुपया देते और पुरुषों के पगड़ी बाँधते हैं।

उड़ंकू—(वि०, दे०) [हि० उड़ना + अंकू—प्रत्य०] उड़न वाला, जो उड़ सके। चलने-फिरन वाला, डोलन वाला।

उडु—(संज्ञा, पु०, दे०) [उडु सं०] तारा, नक्षत्र। **—गण**—(संज्ञा, पु०, दे०) नक्षत्रगण, तारागण। "नीचे उडगण उच्च गिराये"—हितैषी।

उड़न—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० उड़ना] उडन की क्रिया, उड़ान।—**खटोला**—(संज्ञा, पु०) [हि० उड़ना + खटोला] उड़न वाला खटोला। विमान। —**छू**—(वि०, दे०) [हि० उड़ना] चंपत, गायब।—**झाँई**—(संज्ञा, स्त्री०, ग्रौ०) [हि० उड़ना झाईं] चकमा, बुत्ता, बहाली, धोखा।—**पोत**—(पु०) उड़ने वाले जहाज। [फ्लाइंग बोट]।—**फल**—(पु०) उड़न की शक्ति देने वाला फल।

उड़ना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उड्डयन] चिड़ियों का आकाश या हवा में होकर एक जगह से दूसरी जगह जाना। हवा मे या आकाश मे ऊपर उठना (जैसे पतंग या गुड्डी उड़ रही है)। हवा मे फैलाना, इधर उधर हो जाना, छितराना, फैलाना, फहराना, फरफराना (पताका उड़ना)। तेज चलना, भागना। झटके के साथ अलग होना। कट कर दूर जा पड़ना, अलग या पृथक् होना। उधड़ना। जाता रहना, गायब होना, खो जाना या लापता होना। खर्च होना। भोग वस्तु का भोगा जाना। आमोद-प्रमोद की वस्तु का प्रयोग या व्यवहार होना। रंग आदि का फीका पड़ना, धीमा पड़ना। मार पड़ना, लगना, बातों में बहलाना, भुलावा देना। धोखा या चकमा देना। घोड़े का तेज चलना (भागना) या चौफाल कूदना, फलांग मारना, कूदना। (क्रि०, स०) फलाँग मार कर किसी वस्तु को लाँघना, कूद कर पार करना। **मुहा०—उड़ चलना**—तेज दौड़ना, सरपट भागना। शोभित होना, फबना। मजेदार होना, स्वादिष्ट होना (बनना)। कुमार्ग स्वीकार करना, बदराह बनना। इतराना, गर्व करना। सबल या सशक्त होना, अपना कार्य करने योग्य होना।—**(ने) लगना**—चकमा देने लगना, असली बात छिपाते हुए चालाकी से दूसरी बातें सामने

रखना। सशक्त और सबल होना, अपना कार्य करने के योग्य हो चलना। **उड़ कर खाना**—उड़ उड़ कर काटना। अप्रिय लगना, बुरा लगना। **उड़ती खबर**—(यौ०) बाजारू खबर, गप्प, किंवदंती। **उड़ाई उड़ाई (बात)**-बे मतलब की बात।

उड़नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बच्चों की सूखा की बीमारी, जिसमें बच्चे सूख जाते हैं। फैल कर होने वाली या छूत की बीमारी जैसे—हैजा, चेचक।

उड़प—(संज्ञा, पु०) [हि० उड़ना] नृत्य का एक भेद। (संज्ञा, पु०, दे०, सं० उडुप) नक्षत्रेश, चंद्र।

उड़पति—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० उडुपति] चंद्रमा, उड़राज।

उड़व—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ओड़व] रागों की एक जाति। वह राग जिसमें पाँच स्वर लगें और कोई दो स्वर न लगें।

उड़वाना—(क्रि०, स०) [हि० उड़ाने का प्रे० रूप] उड़ाने में प्रवृत्त करना।

उड़सना—(क्रि०, अ०) [उप० उ + आसन—बिछौना] बिस्तर या चारपाई का उठाया जाना। भंग या नष्ट होना। [**उदसना, उदासना** दे०]।

उड़ाऊ—(वि०, दे०) [हि० उड़ना] उड़ाने वाला, खर्च करने वाला, खर्चीला, अपव्ययी।

उड़ाका, उड़ाकू—(वि०) [हि० उड़ना] उड़ने वाला, जो उड़ सकता हो। उड़ैया (दे०), अपहरण-कर्त्ता, वायुयान आदि पर उड़ने वाला।

उड़ान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उड्डयन] उड़ने की क्रिया, छलाँग, कुदान। एक दौड़ में तय की जाने वाली दूरी। *कलाई, गट्टा, पहुँचा।

उड़ाना—(क्रि०, स०) [हि० उड़ना] किसी उड़ने वाली वस्तु को उड़ने में प्रवृत्त करना। हवा में फैलाना (जैसे धूल उड़ाना)। उड़ने वाले जीवों का भगाना या हटाना। झटके के साथ अलग करना। काट कर दूर फेंकना। हटाना। चुराना। दूर करना, हजम करना, नष्ट या खर्च करना। मिटाना, बरबाद करना, खाने पीने की चीज को खूब खाना-पीना, चट करना, भोग्य वस्तु को खूब भोगना, आमोद-प्रमोद की वस्तु का व्यवहार करना। प्रहार करना, मारना। लगाना। बात टालना। धोखा देना, चकमा देना, भुलावा देना, झूठ ही दोष लगाना। किसी विद्या या कला को, उसके शिक्षक या आचार्य के न जानते हुए सीख लेना। किसी की निन्दा करना, बुराई फैलाना। भगाना, गायब करना। लापता करना। लुटाना। अपव्यय करना। नष्ट करना। वेग से दौड़ाना। (क्रि०, अ०) उड़ना, छितर जाना। "ये मधुकर रुचि पंकज लोभी ताही ते न उड़ाने"—सूर। "जीव-जंतु जे गगन उड़ाहीं" —तुल०। —**खाना**-प्रस्तुत सम्पत्ति का उपभोग करना।

उड़ायक*—(वि०, दे०) [हि० उड़ान + क—प्रत्य०] उड़ाने वाला। "उड़ी जात कितहूँ तऊ, गुड़ी उड़ायक हाथ"—बिहारी।

उड़ास*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उद्वास] रहने का स्थान, वास-स्थान। महल। उड़ने की इच्छा।

उड़ासना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्वासन] बिछौना समेटना, बिस्तर उठाना। उदासना (दे०)। *किसी वस्तु को तहस नहस या नष्ट करना। उजाड़ना। बैठने या सोने में विघ्न डालना। दूर करना, हटाना।

उड़िया—(वि०) [हि० उड़िसा] उड़ीसा वासी।

उड़ियाना—(संज्ञा, पु०, दे०) २२ मात्राओं का एक छंद।

उड़िस—(संज्ञा, पु०, दे०) खटमल, खटकीरा।

उड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उलाँट, कलाबाजी।

उड़ीसा—(संज्ञा, पु०, दे०) उत्कल देश, बिहार का दक्षिणी भाग जो बिहार से अलग प्रांत कर दिया गया है।

उडुंवर—(संज्ञा, पु०, सं०) गूलर, ऊमर।

उडुस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्दंश] खटमल।

उडु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नक्षत्र, तारा। पक्षी, चिड़िया। केवट, मल्लाह। जल, पानी। (संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा। नाव, घरनई, डोंगी, घड़नाई, (दे०)। बिलावाँ, बड़ा गरुड़। (संज्ञा, पु०) [हि० उड़प] एक प्रकार का नृत्य। —**पति**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चन्द्रमा।

उडुपथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आकाश, गगन। —**राज**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चन्द्रमा।

उड़ेरना (**उड़ेलना**)—(क्रि०, स०, दे०) ढालना डालना, गिराना, उझलना। रिक्त या खाली करना।

उड़ैनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० उड़ना] जुगनू। "साम रैन जनु चलें उड़ैनी"—प०।

उड़ौहाँ§—(वि०, दे०) [हि० उड़ना + औहाँ—प्रत्य०] उड़ने वाला।

उड्डयन—(संज्ञा, पु०, सं०) उड़ना, उड्डीन।

उड्डीयमान—(वि०) [सं० उड्डीयमत] उड़ने वाला, उड़ता हुआ। आकाशगामी। [स्त्री० **उड्डीयमती**]।

उड़कना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० अड़ना] अड़ना। ठोकर खाना। रुकना, ठहरना। सहारा लेना, टेक लगाना। भिड़ाना। अँघाना।

उड़काना—(क्रि०, स०) [हि० उड़कना] किसी के सहारे खड़ा करना। भिड़ाना। टेक देकर रखना। आश्रित करना।

उढ़ना—(क्रि०, स०, दे० ?) बाहर निकालना "...रोवत जीभ उढ़ै"—सू०। (**संज्ञा**, पु०, दे०) कपड़ा, लत्ता, ओढ़ना (हि०)।

उढ़रना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० ऊढ़ा] विवाहिता स्त्री का पर पुरुष के साथ चली जाना। "घाघ कहै ये तीनौ भकुआ, उढ़रि जायँ औ रोवें"—घाघ।

उढ़री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उढ़ा] जो स्त्री विवाहित पुरुष को त्याग कर दूसरे के साथ स्त्री होकर रहन लगे, उपपत्नी, रखैली, रखुई (दे०), सुरैतिन। [**ओढ़री**-(दे०)। (पु०) **उढ़रा, ओढ़रा** (दे०)]।

उढ़ाना—(क्रि०, स०, दे०) ओढ़ाना। (हि०) ढाँकना, आच्छादित करना, कपड़े से ढाँकना।

उढ़ारना—(क्रि०, स०) [हि० उढ़रना] दूसरे की स्त्री को दूसरे के साथ भगाना, उढ़रन के लिए प्रवृत्त करना, परस्त्री को ले भागना।

उढ़ावनी, उढ़ौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ओढ़नी (हि०), चादर।

उतंक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्तंक] वेदमुनि के शिष्य, एक ऋषि। गौतम-शिष्य, एक ऋषि। *(वि०, दे०) [सं० उत्तुंग] ऊचा।

उतंग—(वि०, दे०) [सं० उत्तुंग] ऊँचा, बुलंद। श्रेष्ठ, उच्च। "ताको तदगुन कहत हैं, भूषन बुद्धि उतंग"—भूषण। ओछा, ऊंचा (कपड़ा)।

उतत—(वि०, दे०) [सं० उत्पन्न] उत्पन्न, पैदा, वयप्राप्त, वयस्क, जवान।

उतऽ*—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० उत्तर] वहाँ, उधर, उस ओर। [**उत्त, उत्तै** (दे०)]। "उत अरुझे हैं, पितु-मातुल, हमारे दोउ"।

उतथ्य—(संज्ञा, पु०) [सं० उतथ+य] मुनि विशेष, अंगिरा-पुत्र, बृहस्पति का ज्येष्ठ सहोदर। [(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) **उतथ्यानुज**—बृहस्पति।]

उतन*—(क्रि०, वि०, दे०) [हि० उ+तनु] उस तरफ, उस ओर।

उतना—(वि०) [हि० उस+तन प्रत्य० सं० तावान् से] उस मात्रा का, उस कदर।

उतपात—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्पात] उपद्रव, अशान्ति, आफ़त। शरारत।

उतपानन*—(क्रि०, स०) [सं० उत्पन्न] उत्पन्न करना, उपजाना, पैदा करना। (क्रि०, अ०) उत्पन्न होना, पैदा होना।

उतमंग*—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० उत्तम+अंग] सिर।

उतर*—(संज्ञा, पु०, दे०) उत्तर, जवाब। बदला। दक्षिण के सामने की दिशा। "उतर देत छाँड़हु बिन मारे"—तुल०।

उतरन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० उतरना] पहिने हुए पुराने कपड़े, उतारा हुआ वस्त्र। (संज्ञा, पु०) उतरने का काम।

उतरना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अवतरण] ऊँचे स्थान से सँभल कर नीचे आना, ढलना। अवनति पर होना, ऊपर से नीचे आना। देह की किसी हड्डी या उसके किसी जोड़ का नीचे (या अपने स्थान से) हट जाना। कांति या स्वर का फीका पड़ना। घट जाना। "छोटे छोटे मेघ उतर कर"—रा० न० त्रि०। उग्र प्रभाव या उद्वेग का दूर होना, बाढ़ का घट जाना। वर्ष, मास या नक्षत्र विशेष का समाप्त होना। थोड़े थोड़े अंश में बैठ कर किये जाने वाले काम का पूर्ण होना। पहिनने का विलोम, शरीर से वस्त्रादि का पृथक् करना, (वस्त्र उतारना)। खराद या साँचे पर चढ़ाई जाकर बनाई जाने वाली वस्तु का तैयार होना। भाव का कम होना। डेरा करना, बसना, टिकना, ठहरना। नकल होना। खिंचना। अंकित होना। बच्चों का मरना। भर आना। संचारित होना (थन में दूध उतरना), भभके में खिंचकर तैयार होना। सफाई के साथ करना। उचड़ना, उघड़ना। धारण की हुई वस्तु का अलग होना। तौल में पूरा ठहरना। किसी बाजे की कसन का ढीला होना, जिससे उसका स्वर विकृत हो जाता है। जन्म लेना, अवतार लेना। आदर या शकुन के लिये किसी वस्तु को शरीर या शिर के चारों ओर घुमाना। वसूल होना। एकत्र होना। (क्रि०, स०) पार करना, (सं० उत्तरण) नदी, नाले या पुल के एक ओर से दूसरी ओर जाना। कम होना। बंद होना। अप्रिय होना। **मुहा०**—**उतर कर**-निम्न श्रेणी का, घट कर, नीचे दरजे का, आगे या बाद का। **चित्त ध्यान से**—विस्मृत होना, भूल जाना, नीचा जँचना, अप्रिय लगना।—, **चेहरा**—मुख का मलिन होना, रंग फीका पड़ना, मुख पर उदासी छा जाना। खेद, सोच या शोक होना। **आँखों में खून**—क्रोध आ

जाना।—, पानी—(मोती का) आब या कांति जाना, (अंड कोश में) अंड वृद्धि का रोग होना।

उतरवाना—(क्रि०, स०) [हिं० उतरना] उतरने का काम कराना।

उतरहा—(वि०, दे०) उत्तर दिशा के देश का निवासी।

उत्तरा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उत्तराषाढ़ नक्षत्र का समय, उत्तरा नक्षत्र।

उतराई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० उतरना] ऊपर से नीचे आने की क्रिया। नदी के पार उतरने का कर या महसूल। नीचे की ओर ढालू भूमि, ढाल (नीचाई)। "पद पद्म धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं" —तुल०।

उतराना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्तरण] पानी के ऊपर तैरना, पानी की सतह पर आना। उफान या उबाल आना। देख पड़ना। प्रगट होना। सर्वत्र दिखाई पड़ना। (क्रि०, अ०, दे०) [हिं० इतराना] घमंड करना।

उतरायल—(वि०, दे०) [हिं० उतरना] उतारा हुआ। काम में लाया हुआ। छोड़ा हुआ, त्यक्त।

उतरारा—(वि०, स्त्री०, दे०) [हिं० उत्तर] उत्तरीय, उत्तर दिशा की (वायु), उतरहरी, उतराही (दे०) "जो उतरा उतरारी पावै ओरी का पानी बड़ेरी धावै" —घाघ।

उतराव—(संज्ञा, पु०, दे०) उतार, ढाल, ढालू भूमि।

उतरावना—(क्रि०, स०, दे०) किसी को सहायता से नीचे लाना। उतारने को प्रेरित या प्रवृत्त करना।

उतराहा§—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० उत्तर+हा—प्रत्य०] उत्तर की ओर। [स्त्री० उतराही]

उतराहा—(क्रि०, वि०, दे०) उत्तरीय (सं०)। उत्तर की ओर की। (वि०) उत्तर की वायु। "उठी वायु आँधी उतराही"—प०।

उतरिन—(वि०, दे०) [हिं० उऋण] ऋण-मुक्त, उऋण।

उतला—(वि०, दे०) [हिं० उतावला] व्यस्त, आतुर, व्यग्र, उतावला। [संज्ञा, स्त्री० उताला]

उतलाना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० आतुर] उतावली या जल्दी करना, आतुरता करना।

उतवंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्तमांग] मस्तक, सिर।

उतसाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्साह] उत्साह। [यौ०, संज्ञा, स्त्री०, दे० उतसह कंठा—उत्कंठा]।

उताइल*—(वि०, दे०) [हिं० उतायल] आतुर, शीघ्रतायुक्त। [संज्ञा, स्त्री०, उताइली दे०—आतुरता]।

उतान—(वि०, दे०) [सं० उत्तान] पीठ को पृथ्वी पर रख कर ऊपर सीधा लेटना। चित्त। सीधा।

उतायल*—(वि०, दे०) [सं० उत्+त्वरा] आतुर जल्दबाज। [संज्ञा, स्त्री०, दे० उतायली (हिं०) उतावली—आतुरता]।

उतार—(संज्ञा, पु०) [हिं० उतरना] उतरने की क्रिया। क्रमशः नीचे को ओर प्रवृत्ति। उतरने योग्य स्थान। किसी वस्तु की मोटाई या घेरे का क्रमशः कम होना। घटाव, कमी। नदी में हिल कर पार करने योग्य स्थान, हिलान। समुद्र का भाटा (ज्वार का उलटा) ढाल, ढालू या नीची भूमि। उतारन, निकृष्ट। त्यक्त। उतरायल, उतारा, न्योछावर, सदका, वह वस्तु या प्रयोग जिससे नशे या विष आदि का बल कम हो या दोष दूर हो। परिहार। नदी के बहाव की ओर (विलोम चढ़ाव) अवनति, पतन।

उतारन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० उतरना] वह पहनावा, जो पहिनने से पुराना हो गया हो और जिसे पहनने वाला अलग कर दे। निछावर। उतारा हुआ, त्यक्त। निकृष्ट वस्तु।—**पुतारन**—उतारा हुआ, त्यक्त।

उतारना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० अवतरण] ऊँचे स्थान में लाना। प्रति-रूप बनाना, (चित्र) खींचना, नक़ल करना। चित्र पर एक पतला कागज रख कर नक़ल करना। लगी या चिपटी हुई वस्तु को अलग करना, उचाड़ना, उखाड़ना, किसी धारण की हुई वस्तु को अलग करना। पहिने हुए वस्त्र को छोड़ना, पृथक् करना। ठहराना, टिकाना, डेरा देना, आश्रय देना। उतारा करना, किसी वस्तु को मनुष्य के चारों ओर घुमा कर भूत प्रेत की भेंट के रूप में चौराहे आदि पर रखना। निछावर करना, वारना। वसूल करना। किसी उग्र प्रभाव को दूर करना। पीना, घूँटना। मशीन, खराद, साँचे आदि पर चढ़ाकर बनाई जाने वाली वस्तु को तैयार करना। बाजे आदि को कसन को ढीला करना। भभके से खींच कर तैयार करना, या खौलते पानी में किसी वस्तु का सार निकालना। निंदित करना, बदनाम करना लोगों की नज़रों से गिराना। काटना। तोड़ना (फूल-फल)। निगलना। वज़न में पूरा करना, घी

में सेंकना और निकालना (पूरी) । उत्पन्न करना । हटाना, दूर करना । संसार से मुक्त करना, तारना । [पू० का० क्रि० उतारि] "अवनि उतारन भार को, हरि लीन्हों अवतार" "आये इतै हम बंधु समेत उतारें प्रसून जो होई न वारन"—रघु० । "मनि मुँदरी मन मुदित उतारी"—तुल० । (क्रि०, स०, दे०, सं० उत्तरण) पार ले जाना, नदी नाले के पार पहुँचना । "होत बिलम्ब उतारहु पारू"—तुल० । राई नोन इत्यादि चारों ओर घुमाकर आग में डालना । "ताहि प्रेत-बाधा वारनहित राई-नोन उतार्यो" ।

उतारा—(संज्ञा, पु०) [हिं० उतरना] डेरा डालने या टिकने का कार्य । उतरने का स्थान, पड़ाव । नदी का पार करना । (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० उतारना] प्रेत बाधा या रोग की शांति के लिए किसी व्यक्ति की देह के चारों ओर कुछ (खाने-पीने की) सामग्री घुमा-फिरा कर चौराहे आदि पर रखना, उतार की सामग्री या वस्तु । (क्रि०, स०, सा०, भू०)—पार किया, किनारे पर पहुँचाया ।

उतारू—(वि०) [हिं० उतारना] उद्यत, तत्पर, तैयार ।

उताल*—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० उद्+त्वर] जल्दी, शीघ्र । "निज निज देसन चले उताला" —रघु० । (संज्ञा, स्त्री०) शीघ्रता, जल्दी । ढीठ, ऊँचा ।

उताली&—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० उताल] शीघ्रता, जल्दी उतावली, आतुरता । (क्रि०, वि०) शीघ्रता-पूर्वक, जल्दी से, फुर्ती से ।

उतावल&—(क्रि०, वि०) [सं० उद्+त्वर] जल्दी-जल्दी, शीघ्रता से । "……कोउ उतावल धावत" —सूर० ।

उतावला—(वि०, दे०) [सं० उद्+त्वर] जल्दी मचाने वाला । जल्दबाज़, व्यग्र, आतुर । चंचल, अधीर ।

उतावली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उद्+त्वर] जल्दी, शीघ्रता । अधीरता, चंचलता, व्यग्रता, जल्द-बाज़ी, आतुरता । (वि०, स्त्री०)—जो शीघ्रता में हो, आतुरा ।

उताइल, उताहिल—(क्रि०, वि०, दे०) शीघ्रता से ।

उतोपिया—(संज्ञा, पु०, अं०) स्वप्नलोक, अवास्त-विक जगत् । [युटोपिया]

उतृण—(वि०, दे०) [सं० उद्+ऋण] ऋण-मुक्त, उऋण । उपकार का जिसने बदला चुका दिया हो ।

उतै—(क्रि०, वि०, दे०) वहाँ, उधर उस ओर ।

उतैला—(वि०, दे०) उतावला, आतुर ।

उत्—(उप०) [सं० उद्] एक उपसर्ग ।

उत्कंठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लालसा, प्रबल इच्छा, तीव्र अभिलाषा । एक प्रकार का संचारी भाव, बिना विलंब के किसी कार्य को करने की अभिलाषा, उत्सु-कता, औत्सुक्य ।

उत्कंठित—(वि०, सं०) उत्कंठायुक्त, चाव से भरा हुआ । "उत्कंठित द्रुत गति मतिमान '—'गिरीश' ।

उत्कंठिता—(वि०, स्त्री०, सं०) संकेत-स्थान में प्रिय के न आने पर तर्क-वितर्क करने-वाली नायिका । उत्सुका । उत्का ।

उत्कट—(वि०, सं०) तीव्र, विकट, उग्र । "सुख की अभिलाषा है उत्कट"—रा० न० त्रि० ।

उत्कलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उत्कंठा, तरंग । फूल की कली । बड़े-बड़े समास वाली गद्य शैली । कामकेलि, हेला ।

उत्कर्ष, उत्कर्षता—(संज्ञा, पु०, सं०) उन्नत बनाना, ऊपर की ओर खींचना । बड़ाई, प्रशंसा । श्रेष्ठता, उत्तमता, समृद्धि, दर्प ।

उत्कर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्कर्ष करना ।

उत्कल—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्तमान उड़ीसा राज्य बहेलिया, भारवाही ।

उत्कलित—(वि०, सं०) प्रगतिशील, उन्नति वाला, विपन्न । बंधन से मुक्त ।

उत्का—(वि०, स्त्री०, सं०) उत्कंठिता नायिका, संकेत-स्थान में नायक के न आने पर अनुतप्ता ।

उत्कीर्ण—(वि०, सं०) लिखा हुआ । खुदा हुआ । छिदा हुआ । उत्क्षिप्त । क्षत ।

उत्कुण—(संज्ञा, पु०, सं०) मत्कुण, खटमल । बालों का कीड़ा, जूँ, जुआँ ।

उत्कृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २६ वर्णों के वृत्तों का नाम । छब्बीस की संख्या ।

उत्कृष्ट—(वि०, सं०) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा ।

उत्कृष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्रेष्ठता, बड़प्पन ।

उत्कोच—(संज्ञा, पु०, सं०) घूँस, रिश्वत ।

उत्कोश—(संज्ञा, पु०, सं०) पक्षी-विशेष, कुररी, टिट्टिभ, राजपक्षी । [क्रि०, अ० **उत्कोशना**—चिल्लाना ।]

उत्क्रान्त—(वि०) [सं० उत्+क्रम+क्त] निर्गत, ऊपर गया हुआ, उल्लंघित ।

उत्क्रांति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्रमशः उत्तमता और पूर्णता की ओर प्रवृत्ति । मृत्यु, मरण ।

उत्खात—(वि०) [सं० उत्+खत्+क्त] उन्मूलित, विदारित, उखड़ा हुआ। (संज्ञा, पु०) छिद्र, बिल, गढ़ा। विषम भूमि।

उत्तंग*—(वि०, दे०) [सं० उत्तुंग] ऊँचा, उतंग (दे०)।

उत्तंस*—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्णपूर, कर्णाभरण, शेखर, करनफूल, शिरोभूषण मुकुट। (वि०, पु०) अवतंस, श्रेष्ठ।

उत्त*—(संज्ञा, पु०) [सं० उत्] आश्चर्य। संदेह। (क्रि०, वि०, दे०) उत, उधर, उस ओर।

उत्तप्त—(वि०, सं०) खूब तपा हुआ, दुःखी। दग्ध, पीड़ित, संतप्त। उष्ण। परिप्लुत। चिंतित। [संज्ञा, स्त्री०, सं० **उत्तप्तता**—उष्णता, संताप।]

उत्तम—(वि०, सं०) श्रेष्ठ अच्छा, सबसे भला। मुख्य, प्रधान। (संज्ञा, पु०) श्रेष्ठ नायक, राजा उत्तानपाद का, रानी सुरुचि से उत्पन्न पुत्र, जिसे वन में एक यक्ष ने मार डाला था।

उत्तमतया—(क्रि०, वि०, सं०) भली भाँति, अच्छी तरह से।

उत्तमता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्रेष्ठता, खूबी, भलाई, उत्कृष्टता। [दे० **उत्तमताई**—बड़ाई।]

उत्तमत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) अच्छाई, श्रेष्ठता।

उत्तमपद—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रेष्ठ पद, मोक्ष, अपवर्ग।

उत्तम पुरुष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बोलने वाले पुरुष को सूचित करने वाला सर्वनाम (व्या०) जैसे —मैं, हम।

उत्तमर्ण—(संज्ञा, पु०) [सं० उत्तम+ऋण] ऋण-दाता, महाजन, ब्यौहार (दे०)।

उत्तमसंग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्यक्संग्रह, एकान्त में पर-स्त्री से आलिंगन। [वि० **उत्तमसंग्रही**]।

उत्तमसाहस—(संज्ञा, पु०, सं०) दंड विशेष, (८०००० पण)। अति साहस, दुस्साहस।

उत्तमांग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मस्तक, सिर।

उत्तमा—(वि०, स्त्री०, सं०) भली, नेक। (स्त्री०) भली स्त्री, एक प्रकार का फोड़ा। इंदीवर।

उत्तमादूती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नायक या नायिका को मधुरालाप से मना लेने-वाली श्रेष्ठ दूती।

उत्तमानायिका—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पति के प्रतिकूल होने पर भी स्वयं अनुकूल बनी रहने वाली स्वकीया नायिका।

उत्तमोत्तम—(वि०, यौ०, सं०) अच्छे से अच्छा, श्रेष्ठातिश्रेष्ठ, परमोत्कृष्ट।

उत्तमोजा—(वि०) [सं० उत्तम+ओजस्] उत्तम तेज या पराक्रम वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) युधामन्यु का भाई। मनु के दस पुत्रों में से एक।

उत्तर—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। उदीची। किसी प्रश्न या बात को सुनकर तत्समाधानार्थ कही हुई बात, जवाब। बहाना, मिस, व्याज, हीला। प्रतिकार, बदला। एक प्रकार का अलंकार जिसमें उत्तर के सुनते ही प्रश्न का अनुमान किया जाता है या प्रश्नों का अप्रसिद्ध उत्तर दिया जाता है। एक प्रकार का दूसरा अलंकार (चित्रोत्तर) जिसमें प्रश्न के वाक्यों ही में उत्तर रहता है अथवा बहुत से प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है। प्रति वचन। (संज्ञा, पु०, सं०) विराट महाराज का पुत्र; यह अभिमन्यु का साला था, इसकी बहिन उत्तरा थी। (वि०) पिछला, बाद का। ऊपर का। बढ़कर, श्रेष्ठ। (क्रि०, वि०) पीछे, बाद, अनन्तर, पश्चात।—**काल**-(पु०) पश्चात काल, भविष्य, आगामी काल।—**काशी**-(स्त्री०) हरिद्वार के उत्तर में एक तीर्थ।—**कुरु**-(पु०) जम्बूद्वीप के नव वर्षों में एक, एक जनपद या देश।—**कोशल**-(पु०) अयोध्या के आस-पास का देश, अवध प्रान्त।—**क्रिया**-(स्त्री०) अन्त्येष्टि क्रिया, पितृकर्म, श्राद्ध आदि।—**च्छद**-(पु०) आच्छादन-वस्त्र, पलँग-पोश। "शय्योत्तरच्छद विमर्द कृशांगरागम्"—कालि०।—**दाता**-(पु०) जवाबदेह, जिससे किसी कार्य के बनने या बिगड़ने की पूछताछ की जाय, जिम्मेदार।—**दायित्व**-(पु०) जवाबदेही, जिम्मेदारी।—०, **वैधानिक**-कानूनी जिम्मेदारी। [लीगल रिसपान्सिबिल्टी]।—०, **संयुक्त**-संयुक्त जिम्मेदारी। [ज्वाइंट रिसपांसिबिल्टी]।—**दायी**-(वि०) [सं० उत्तरदायिन्] जवाबदेह, जिम्मेदार।—**पक्ष**-(पु०) पूर्व पक्ष या प्रथम किये हुए निरूपण या प्रश्न का खंडन अथवा समाधान करने वाला सिद्धान्त (न्याय०), जवाब की दलील।—०**पत्र-समाचार**-(पु०) पत्र जो किसी प्रभाव के प्रति सत्वर प्रवृत्त हो। [रेसपान्सिव प्रेस]।—०**शासन**-(पु०) जिम्मेदार सरकार [रिसपोंसिबिल गवर्नमेंट]।—**पथ**-(संज्ञा, पु०, सं०) देवयान।—**पद**-(पु०) किसी यौगिक शब्द का अंतिम शब्द।—**प्रत्युत्तर**-(पु०) वादानुवाद, तर्क, वाद-विवाद।—**प्रार्थी**-(पु०) उत्तर चाहने वाला व्यक्ति। "एक मास तक प्रश्न खड़ा था यह उत्तर प्रार्थी निःशंक।"—**फल्गुनी**-(स्त्री०) बारहवाँ नक्षत्र, उत्तरा फाल्गुनी।—

उत्सर्जित—(वि०, सं०) व्यक्त, वितरित, दत्त। [वि० **उत्सर्जनीय, उत्सृष्ट**]

उत्सर्पण—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊपर चढ़ना, चढ़ाव, उल्लंघन, लाँघना।

उत्सर्पिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काल की वह गति या अवस्था जिसमें रूप, रस, गंध, स्पर्श इन चारों की क्रम-क्रम से वृद्धि होती है (जैन)।

उत्सव—(संज्ञा, पु०) [सं० उत्+सु+अल] उछाह, ऊछौ, उच्छव (दे०)। मंगल कार्य, धूम-धाम, प्रमोद-विधान, मंगल-समय, त्यौहार, पर्व, आनन्द, विहार, यज्ञ, पूजा, आनन्द-प्रकाश।

उत्सादक—(वि०, सं०) पीड़क, कष्ट देने वाला। "समाज-उत्सादक दण्ड योग्य है।"—**हरिऔध**

उत्सादन—(संज्ञा, पु०) [सं० उत्+सद+णिच्+अनट्] उच्छेदकरण, विनाश। छिन्न-भिन्न करना। समाप्त कर देना। हटा देना [एबॉलिशन]।

उत्सादित—(वि०, सं०) विनाशित, निर्मलीकृत, छिन्न-भिन्न किया हुआ। [वि० **उत्सादनीय**]

उत्सारक—(संज्ञा, पु०, सं०) द्वारपाल, चोबदार।

उत्सारण—(संज्ञा, पु०) [सं० उत्+सृ+अनट्] दूरीकरण। दूसरे स्थान को भेजना।

उत्साह—(संज्ञा, पु०) [सं० उत्+सह+घञ्] उमंग, उछाह, जोश, हिम्मत। साहस की उमंग। वीर रस का स्थायी भाव। [**उत्साहन**-(संज्ञा, पु०) अध्यवसाय, उत्तेजना या उत्साह बढ़ाना। [(वि०) **उत्साहित**—कृतोत्साह।] 'उमंगित देती थी उत्साह अपार'—गिरीश।

उत्साही—(वि०) [सं० उत्+सह+णिन्] उत्साह-युक्त, हौसले वाला, उमंगी, साहसी। [**उत्साहिल** दे०]

उत्सुक—(वि०) [सं० उत्+सु+कन्] उत्कंठित। अत्यन्त इच्छुक। चित-चाही बात में विलम्ब होना न सह कर तदुद्योग में तत्पर।

उत्सुकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आकुलता। इच्छा। उत्कण्ठा। इष्ट बात की प्राप्ति में विलम्ब होना न सह कर तत्प्राप्ति के लिए सद्यः तत्पर होने का भाव। एक संचारी भाव। [संज्ञा, भा० **औत्सुक्य**]

उत्सूर—(संज्ञा, पु०, सं०) संध्याकाल, शाम।

उत्सृष्ट—(वि०, सं०) त्यागा हुआ, परित्यक्त।

उत्सेध—(संज्ञा, पु०, सं०) बढ़ती, उन्नति, ऊँचाई, मोटाई। श्रेष्ठता, सुजना। (वि०, सं०) श्रेष्ठ, ऊँचा।

उथपना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उत्थापन] उठाना। उखाड़ना। नष्ट करना।

उथलना—(क्रि०, फ़ा०, दे०) [सं० उत्+स्थल] डगमगाना, डाँवाडोल होना, चलायमान होना, उलटना, उलट-पुलट होना। पानी का उथला या कम होना। तले ऊपर करना। औंधाना, उलटा देना। उलथना (दे०)। (क्रि०, स०) नीचे ऊपर करना। इधर-उधर करना।]

उथल-पुथल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [क्रि० उथलना] उलट-पुलट, विपर्यय, क्रम-भंग, इधर का उधर होना। गड़बड़ी, हलचल। (वि०) उलटा पलटा, अंड का बंड, गड़बड़, व्यतिक्रम। **मुहा०—होना (मचना)**—गड़बड़ी होना।

उथला—(वि०, दे०) [सं० उत्+स्थल] कम गहरा, छिछला। [**उथल** दे०]

उदंत—(वि०, दे०) [सं० अ+दंत] जिसके दाँत न जमें हों, अदंत, दाँतों से रहित (पशुओं के लिए)। (संज्ञा, पु०, दे०) वृत्तान्त, विवरण। "तब उदंत छाला लिखि दीन्हा"—जायसी।

उदउ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उदय] सूर्यादि ग्रहों का प्रगट होना। निकलना, उदय। [**उदै** दे०]

उदक—(संज्ञा, पु०, सं०) जल, पानी, सलिल।—**क्रिया**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) मरे हुए मनुष्य का लक्ष्य करके जल देना। जल-तर्पण की क्रिया। तिलांजलि, "नष्ट पुण्योदक-क्रिया"—गीता०।—**परीक्षा**—(स्त्री०) शपथ देने की एक क्रिया विशेष, जिसमें शपथ करने वाले को अपनी सत्यता को प्रमाणित करने के लिये पानी में डूबना पड़ता था, अब केवल गंगा जैसी पवित्र नदियों के जल को हाथ में लेना ही पड़ता है।

उदकना*—(क्रि०, अ०, दे०) उछलना, कूदना।

उदकाद्रि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हिमालय पर्वत।

उदगगल—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी स्थान पर कितने हाथ की दूरी पर जल है, यह जानने का शास्त्र।

उदगरना§—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्गरण] निकलना, प्रकट होना। बाहर होना। उभड़ना, प्रकाशित होना।

उदगार*—(संज्ञा, पु०, दे०), [सं० उद्गार] उबाल। वमन। आधिक्य। मन में रक्खी हुई बात को एक बारगी प्रकट करना।

उदगारना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्गार] बाहर निकालना, बाहर फेंकना, उभाड़ना, उत्तेजित

करना, भड़काना। डकार लेना। कै करना। "ज्यों कछु भच्छ किये उदगारत"—सुन्द०।

उदगारी—(वि०, दे०) बाहर निकालने वाला। वमन करने वाला। मन की बातों को प्रगट करने वाला।

उदग्ग*—(वि०, दे०) [सं० उदग्र] ऊँचा। उद्यत। उग्र। उद्धत। प्रचंड।

उदग्र—(वि०, सं०) ऊँचा। उद्दंड। तीखा। अत्यन्त प्रबल। विकट। "छीन लो हलाहल उदग्र अभिमान से"—दिनकर।

उदघटन—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्घटन] प्रगट होना, उदय होना, निकलना।

उदघाटना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्घाटन] प्रकट करना, प्रकाशित करना, खोलना।

उदघाटी—(क्रि०, स० सा०, भू०, स्त्री०, दे०) खोली, प्रकटी, प्रकाशित की। (संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) "तव भुज बल महिमा उदघाटी"—रामा०।

उदतीर्थाधिकारी—(संज्ञा, पु०, सं०) बंदरगाह का मुख्य अधिकारी। [हारबर मास्टर]

उदथ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्गीथ] सूर्य, सूरज। "होत बिसराम जहाँ इन्दु औ उदथ के"—भू०।

उदधि—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र, सागर, घड़ा, मेघ। "उदधि रहै मरजाद मैं, बहैं उमड़ि नद नीर"—वृन्द। **—मेखला**-(स्त्री०) पृथ्वी, भूमि। **—सुत**-(पु०) सागर से उत्पन्न वस्तु। चंद्रमा। अमृत। शंख। धन्वन्तरि। ऐरावत। कमल। कल्पवृक्ष। धनुष आदि। **—सुता**-(स्त्री०) श्री, लक्ष्मी, रंभा, कामधेनु, मणि (कौस्तुभ), वारुणी, सीप।

उदन्वान—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र, सागर, पयोधि।

उदपान—(संज्ञा, पु०, सं०) कुएँ के समीप का गड्ढा। कमंडलु। कूल। "कर उदपान काँध मृग-छाला"—प०।

उदबसॐ—(वि०) [सं० उद्वासन] उजाड़, सूना। एक स्थान पर न रहने वाला, खानाबदोश, स्थान-च्युत, किसी जगह से अलग किया हुआ।

उदबासना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्वासन] तंग करके स्थान से हटाना। रहने में विघ्न डालना। भगा देना। उजाड़ना। "ऊधौ अब लाइकै बिसास उदवासैं हम"—रत्ना० (उ० श०)। [(वि०) **उद-बासित**-हटाया या भगाया हुआ। [(संज्ञा, पु०, दे०) **उदबासन**—हटाने का काम।]

उदवर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी वस्तु को शरीर में लगाना, लेप करना, उबटना। व्यवहार। "सखी हेत उदवर्त्तन लावै"—ध्रु०व०।

उदवेग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्वेग] घबराहट, भय, क्लेश। सूचना, पता। "मुनि उदवेग न पावई कोई"—तुल०।

उदवेगल—(वि०) [दे०] उद्विग्न, व्याकुल, चिंतित।

उदभट—(वि०, दे०) [सं० उद्भट] प्रबल, श्रेष्ठ। "भूषन भनत भौंसला के भट उद्भट"—भूषण।

उदभव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्भव] उत्पत्ति, बढ़ती, उन्नति।

उदभौत—(संज्ञा, पु०, दे०) आश्चर्य की वस्तु, अद्भुत बात, घटना।

उदमदना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्+मद] पागल होना। आपे को भूल जाना। उन्मत्त होना। उमदना (दे०)।

उदमाद*—(संज्ञा, पु०, दे०) उन्माद (सं०)। पागलपन, उन्मत्तता। (वि०, दे०) पागल, उन्मत्त। [वि० **उदमादी**—मतवाला, पागल।]

उदमान—(वि०, दे०) मतवाला, उन्मत्त, पागल।

उदमानना—(क्रि०, अ०, दे०) मतवाला होना; उन्मत्त होना।

उदय—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊपर आना। निकलना, प्रगट होना (विशेषतः ग्रहों के लिए आता है)। **मुहा०—से अस्त तक,—अस्त लौं**—पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक। सम्पूर्ण भूमंडल में। "अर्ब-खर्ब लौं द्रव्य है, उदय अस्त लौं राज"—तुल०। (संज्ञा, पु०) वृद्धि, उन्नति, बढ़ती। उदगम स्थान। उदयाचल। प्राची। उत्पत्ति। दीप्ति। मंगल। उपज। **—काल**-(पु०) प्रभात, प्रातःकाल, सर्प विशेष। **—गिरि**-(पु०) पूर्व की ओर एक कल्पित पर्वत जिस पर पर सूर्य प्रथम उदित होते हैं। उदयगढ़। "उदित उदयगिरि मंच पर"—रामा०।

उदयन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश होना। ऊर्ध्व-गमन। अगस्त मुनि। शतानीक के पुत्र वत्सराज। इनकी राजधानी प्रयाग के पास कौशाम्बी थी। वासवदत्ता इनकी रानी थीं। विख्यात दार्शनिक उदयनाचार्य (१२ वीं शताब्दी के मध्य में) जो मिथिला में पैदा हुए थे। बौद्धमत का खंडन इन्होंने किया है। इनका ग्रन्थ 'कुसुमांजलि' है। वाचस्पति मिश्र के कई ग्रन्थों पर इनकी टीकायें हैं, इनकी कन्या प्रसिद्ध पंडिता लीलावती थीं।

के निकलने का स्थान, प्रगट होने की जगह, प्रारम्भ आदि।

उद्गमन—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊपर जाना, उर्ध्व-गमन।

उद्गाता—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ के चार प्रधान ऋत्विजों में से एक जो सामवेद के मंत्रों का गान करता है, सामवेदज्ञ, सामवेत्ता।

उद्गाथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आर्या छंद का एक भेद, इसमें विषय पदों में तो १२ और सम पदों में १८ मात्राएँ होती है और विषम गणों में जगण नहीं रहता।

उद्गार—(संज्ञा, पु०, सं०) उबाल, उफान, बमन, कै कफ, डकार, थूक। बाढ़, आधिक्य। घोर शब्द, गर्जन। किसी के विरुद्ध बहुत दिनों से मन में रक्खी हुई बात का एकबारगी निकालना। मन की बातों को प्रगट करना। गर्जन।

उद्गारित—(वि०, सं०) वमन किया हुआ। प्रकटित, निकाला हुआ।

उद्गारी—(वि०, सं०) उगलने वाला। बाहर निकालने वाला। प्रगट करने वाला। गर्जन करने-वाला।

उद्गीरण—(संज्ञा, पु०, सं०) वमन करना, उग-लना, थूकना, बाहर फेंकना। लार निकालना। "अन्धकार उद्गीरण करता"—निराला।

उद्गीत—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आर्या छंद का एक भेद। (वि०, सं०) उच्च स्वर में गाया हुआ।

उद्गीथ—(संज्ञा, पु०, सं०) सामवेद का अंग विशेष, प्रणव। ओंकार। सामवेद। "पुलकित हो पावन उद्गीथ"—प्रसाद।

उद्ग्रीव—(वि०, सं०) जिसकी गरदन उठी हो। उत्कंठा के भाव से युक्त। "कुछ समय तक हो हो उद्ग्रीव"—हरिऔध।

उद्घाट—(संज्ञा, पु०, सं०) राज्य की ओर से माल को देख कर (जाँच कर के) चुंगी लेने की चौकी। चुंगीघर।

उद्घाटक—(वि०, सं०) प्रकाशक, खोलने वाला।

उद्घाटन—(संज्ञा, पु०, सं०) खोलना, उघारना। प्रकाशित करना, प्रगट करना। रस्सी-युक्त घड़ा (कुएँ से पानी निकालने के लिए)।

उद्घाटनीय—(वि०, सं०) प्रकाशनीय, प्रकट करने योग्य।

उद्घाटित—(वि०, सं०) प्रकाशित, प्रगट किया हुआ। खोला हुआ।

उद्घात—(संज्ञा, पु०, सं०) ठोकर, धक्का, आघात। आरंभ, उपक्रम।

उद्घातक—(वि०, सं०) धक्का मारने वाला, ठोकर लगानेवाले। आरंभ करनेवाला। (संज्ञा, पु०) नाटक में प्रस्तावना का एक भेद जिसमें सूत्रधार और नटी आदि की कोई बात सुन कर उसका और अर्थ लगाता हुआ कोई पात्र प्रवेश करता है या नेपथ्य से कुछ कहता है।

उद्घोष—(संज्ञा, पु०, सं०) हर्षध्वनि, जयघोष। [एक्लेमेशन]।

उद्घोषित (अपराधी)—(संज्ञा, पु०, सं०) विख्यात अपराधी, कुख्यात अपराधी। [प्रोक्लेम्ड आफेंडर]।

उद्दंड—(वि०, सं०) जिसे दंड आदि का कुछ भी भय न हो। अक्खड़, निडर, निर्भीक। प्रचंड, उद्धत, उजड्ड। [संज्ञा, स्त्री०, सं० **उद्दंडता**—निर्भीक]

उद्दंत—(वि०, सं०) वृहद्दन्त, दतुला, बड़दंता, निकले हुए दाँतों वाला।

उद्दंश—(संज्ञा, पु०, सं०) मसा, मशक। डांस, मच्छर।

उद्दाम—(वि०, सं०) बंधन-रहित। निरंकुश, उग्र, उद्दंड। स्वतंत्र। गंभीर। महान। प्रबल। बेकहा। (संज्ञा, पु०, सं०) वरुण, दंडकवृत्त का एक भेद। "दीख पड़ी लहरें उद्दाम"—गिरीश।

उद्दालक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राचीन आर्य ऋषि। इनका प्रकृत नाम आरुणि है, इनके गुरु आयोद्-धौम्य ने इनका यह नाम रक्खा था, इनके पुत्र, श्वेतकेतु थे। व्रत-विशेष।

उद्दित—(वि०, दे०) उदित (सं०)। उद्यत, उद्धत।

उद्दिमॐ—(संज्ञा, पु०, दे०) उद्यम (सं०)। प्रयत्न, पुरुषार्थ। "श्री को उद्दिम के बिना, कोऊ पावत नाहिं"—वृंद०।

उद्दिष्ट—(वि०, सं०) दिखलाया हुआ, इंगित किया हुआ। लक्ष्य, अभिप्रेत सम्मत, मनस्थ। (संज्ञा, पु०) कोई दिया हुआ छंद मात्रा-प्रस्तार का कौन सा भेद है, यह बतलाने की एक क्रिया विशेष (पिंग०)।

उद्दीपक—(वि०, सं०) उत्तेजित करनेवाला, उभा-डनेवाला, प्रकाशकर्त्ता। [स्त्री० **उद्दीपिका**]

उद्दीपन—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तेजित करने की क्रिया। उभाड़ना। बढ़ाना। जगाना। प्रकाशन।

उद्दीपन या उत्तेजन करने वाला पदार्थ। रसों को उद्दीप्त या उत्तेजित करने वाला विभाव, जैसे—ऋतु, पवन, चंद्रिका, सौरभ, वाटिका (काव्य०)। [वि० **उद्दीपनीय**—उत्तेजनीय]

उद्दीपित—(वि०, सं०) उत्तेजित, उभाड़ा हुआ। प्रज्वलित।

उद्दीप्त—(वि०, सं०) उत्तेजित। बढ़ाया हुआ। जागा हुआ।

उद्दीप्य—(वि०, सं०) उद्दीपनीय। उत्तेजनीय।

उद्देश—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिलाषा, चाह, मंशा। हेतु, कारण, अभिप्राय। अन्वेषण, अनुसंधान। नाम-निर्देश पूर्वक-वस्तु-निरूपण। इष्ट, मतलब, प्रयोजन, प्रतिज्ञा (न्याय०) किसी विषय का उच्चारण।

उद्देशित—(वि०, सं०) अन्वेषित, अभिलषित।

उद्देश्य—(वि०, सं०) लक्ष्य, इष्ट। प्रयोजन, इरादा। (संज्ञा, पु०, सं०) वह वस्तु जिसके विषय में कुछ कहा जाय। अभिप्रेतार्थ। वह वस्तु जिस पर ध्यान रख कर कुछ कहा जाय या किया जाय। विशेष्य, विधेय का उलटा। (काव्य०) मतलब, तात्पर्य, मंशा, इरादा।

उद्दोत—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश। उदय। वृद्धि। (वि०) प्रकाशित। उदित, प्रकटित। "पुर पैठत श्री राम के, भयो मित्र उद्दोत"—केशव।

उद्दोतिताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) प्रकाश। "···मिथुन तड़ितघन नील उद्दोतिताई"।

उद्ध॥—(वि०, वि०, दे०) ऊर्ध्व (सं०), ऊपर। "कलजुग जलधि अपार उद्ध अधरम्भ उर्मिमय"—भूषण।

उद्धत—(वि०, सं०) उग्र, प्रचंड। अक्खड़, प्रगल्भ, उजड्ड। निडर। धृष्ट, दुरन्त। अभिमानी। (संज्ञा, पु०, सं०) चार मात्राओं का एक छंद।

उद्धतपन—(संज्ञा, पु०) [सं० उद्धत+पन—हिं० प्रत्य०] उजड्डपन, उग्रता, प्रचंडता।

उद्धना—(क्रि०, अ०, दे०) ऊपर उठना। फैल जाना।

उद्धरण—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊपर उठना। मुक्त होने की क्रिया। बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था या दशा में आना। त्राण। फँसे हुए को निकालना। पढे हुए पिछले पाठ को अभ्यासार्थ फिर से पढ़ना या दोहराना। किसी लेख या किताब के किसी अंश को किसी दूसरे लेख या पुस्तक में ज्यों का त्यों रखना या दोहरा देना, अविकल रूप से नकल कर देना।

उद्धरणी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उद्धरण+ई—हिं० प्रत्य०] पढ़े हुए पाठ को अभ्यासार्थ बार बार पढ़ना, आवृत्ति, दोहराना।

उद्धरणीय—(वि०, सं०) उल्लेखनीय। दोहराने योग्य।

उद्धरना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्धरण] उद्धार करना, उबारना। अलग करना। काटना। "तब कोपि राघव सत्रु को सिर तीक्ष्ण बाणन उद्धर्यौ"—केशव। (अ०, क्रि०) बचना, छूटना, मुक्त होना। "बूझियत बात वह कौन विधि उद्धरे"—केशव।

उद्धव—(संज्ञा, पु०, सं०) आमोद-प्रमोद, उत्सव। यज्ञ की अग्नि। श्रीकृष्णजी के एक मित्र, ऊधव, ऊधौ (दे०)।

उद्धार—(संज्ञा, पु०, सं०) मुक्ति, छुटकारा। निस्तार, सुधार। बचाव, रक्षण। मोचन। उन्नति, दुरुस्ती। ऋण से मुक्ति, बिना ब्याज के दिया हुआ ऋण। "हो जाये सत्वर उद्धार"—गिरीश।

उद्धारना॥—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्धार] उद्धार करना, छुटकारा देना, मुक्त करना, उधारना (दे०) अलग करना। काढ़ना, उबारना।

उद्ध्वस्त—(वि०, सं०) टूटा-फूटा, ध्वस्त, नष्ट।

उद्धृत—(वि०, सं०) उद्धारित, रक्षित। उगला हुआ, ऊपर उठाया हुआ। किसी ग्रन्थ से ज्यों का त्यों लिया हुआ। किसी स्थान से अविकल रूप से नक़ल किया हुआ। (संज्ञा, पु०) भाग लिया गया।

उद्बंधन—(संज्ञा, पु०) ऊपर बाँधना। गले में रस्सी लगाना। फाँसी देना। टाँगना। —**मृत**—(वि०) फाँसी पाया हुआ, गले में रस्सी डाल कर मारा हुआ।

उद्वाह—(संज्ञा, पु०) [सं० उद्+वह्+घञ्] विवाह, परिणय, दार-क्रिया। (यौ०) —**उद्वाहोपयुक्त**—(वि०) परिणय-योग्य, वयस्क।

उद्बुद्ध—(वि०, सं०) विकसित, फूला हुआ। प्रबुद्ध, चैतन्य। जिसे ज्ञान हो गया हो। जागा हुआ।

उद्बुद्धा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपनी ही इच्छा से उपपति या पर पुरुष से प्रेम करने वाली परकीया नायिका।

उद्बोध—(संज्ञा, पु०, सं०) थोड़ा ज्ञान, अल्प बोध।

उद्बोधक—(वि०, सं०) बोध कराने वाला, चेताने वाला। प्रकाशित, प्रगट या सूचित करने वाला। जगाने वाला। उत्तेजित करने वाला।

उब्दोधन—(संज्ञा, पु०) [सं० उत+बुध्+अनट्] स्मरण, चेत। ज्ञापन, ज्ञान। जगाना। समझना। उत्तेजित करना। बोध कराना। चेताना। [वि० **उद्बोधनीय**]

उब्दोधित—(वि०, सं०) जिसे बोध कराया गया हो। जो सचेत किया गया हो।

उब्दोधिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपपति या पर पुरुष के चतुराई द्वारा प्रगट किये गये प्रेम को जान कर प्रेम करने वाली परकीया नायिका।

उद्भट—(वि०, सं०) प्रबल। उदार। श्रेष्ठ। प्रचंड। उच्चाशय। (संज्ञा, पु०, सं०) एक विद्वान् आचार्य और कवि जिन्होंने काव्य-शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा।

उद्भव—(संज्ञा, पु०) [सं० उत+भू + अल्] उत्पत्ति, जन्म, प्रादुर्भाव, वृद्धि, बढ़ती, पैदाइश, उन्नति। "उद्भव-स्थिति-संसार-कारिणीम्"—तुल०।

उद्भावना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कल्पना, मन की उपज, उत्पत्ति, धारण, प्रकाश। [वि० **उद्भावनीय**। वि० **उद्भावित**]

उद्भास—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश, दीप्ति, आभा। मन में किसी बात का उदय। प्रतीति।

उद्भासित—(वि०) [सं० उत्+भास+क्त] उत्तेजित। उद्दीप्त, प्रकाशित। प्रकट, विदित। प्रदीप्त।

उद्भिज—(संज्ञा, पु०, सं०) उद्भिज्ज। वृक्ष। लतादि।

उद्भिज्ज—(संज्ञा, पु०, सं०) वृक्ष। लता। गुल्म। वनस्पति, आदि जो भूमि को फोड़ कर निकलते हैं, पेड़-पौधे।—**शास्त्र**-(पु०) वनस्पति शास्त्र।

उद्भिद—(संज्ञा, पु०) [सं० उत+भिद्+क्विप्] वृक्ष, लता, वनस्पति आदि। (वि०) अंकुरित, विकसित।—**विद्या**-(संज्ञा, स्त्री०) वृक्षादि लगाने की कला।

उद्भिन्न—(वि०) [सं० उत+भिद्+क्त] भेदित, बिद्ध, फोड़ा हुआ, उत्पन्न। (संज्ञा, पु०) अँखुआ। झरना।

उद्भूत—(वि०) [सं० उत+भू+क्त] उत्पन्न, निकला हुआ।—**रूप**-(वि०, सं०) प्रत्यक्ष रूप, दृग्गोचर होने योग्य रूप।

उद्भेद—(संज्ञा, पु०, सं०) फोड़कर निकलना (पौधों के समान), प्रकाशन, प्रगट होना। उद्घाटन। एक प्रकार का अलंकार जिसमें कौशल या चतुराई से छिपाई हुई किसी बात का किसी हेतु से प्रकाशित या लक्षित होना कहा जाय। (प्राचीन०)।

उद्भेदन—(संज्ञा, पु०, सं०) तोड़ना। फोड़ना। छेद कर पार जाना या निकलना। उगना। प्रकाश में आना। [वि० **उद्भेदनीय, उद्भिन्न**]

उद्भेदित—(वि०, सं०) किसी अवरोध को फोड़कर निकला हुआ। उद्घाटित। छेद करके पार जाने वाला। "प्रवाह उद्भेदित अंत में हुआ।"—हरिऔध।

उद्भ्रान्त—(वि०, सं०) घूमता या चक्कर लगाता हुआ। भूला या भटका हुआ। चकित, भौंचका, भ्रांति-युक्त, भ्रमित। "उर में धक धक धक जलता है जाने कौन अनल उद्भ्रान्त"—हितैषी।

उद्यत—(वि०) [सं० उत+यम्+क्त] तत्पर, प्रस्तुत, उतारू। मुस्तैद, तैयार। उठाया हुआ, ताना हुआ।

उद्यम—(संज्ञा, पु०) [सं० उत+यम् +अल्] उद्योग, उत्साह, प्रयास, प्रयत्न, अध्यवसाय, मेहनत। काम-धन्धा, रोजगार। [**उद्दिम** दे०] व्यापार।

उद्यमी—(वि०, सं०) उद्यम करने वाला, उद्योगी, प्रयत्नशील। चलता-पुरजा। "पुरुष सिंह जो उद्यमी, लक्ष्मी ताकी चेरि।" [पुल्लिंग]।

उद्यान—(संज्ञा, पु०) [सं० उत+या+अनट्] बाग, बागीचा। क्रीडावन। उपवन। आराम।

उद्यानपाल—(संज्ञा, पु०, सं०) माली, बागवान। "मानहीन हो के न उद्यान से कढ़ेंगे हम—हितैषी।—**भोज**-(संज्ञा, पु०, सं०) प्रीति भोज। [गार्डेन-पार्टी]

उद्यापन—(संज्ञा, पु०,) [सं० उत+या+णिच्+अनट्] किसी व्रत की समाप्ति पर किया जाने वाला कृत्य, जैसे हवन, गोदान आदि, समापन-क्रिया।

उद्युक्त—(वि०) [सं० उत+युज्+क्त] उद्यमयुक्त, उद्योग में लीन, तत्पर। बलवान।

उद्योग—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं० उत+युज्+घञ्] प्रयत्न, चेष्टा, प्रयास। अध्यवसाय। परिश्रम। आयोजन। उपाय। मेहनत। उद्यम। काम-धंधा। उत्साह। "पर उद्योग विना हे प्रियवर"—रामन०।—**आयुध**-(संज्ञा, पु०, सं०) युद्ध-सामग्री का व्यवसाय। [आर्मामेंट इंडस्ट्री]।—,**आहार**-(पु०) खाद्य पदार्थों का व्यवसाय। [फ़ुडइंडस्ट्री]।—, **कोयला**-(पु०) कोयले का व्यवसाय। [कोल-इंडस्ट्री]।—,**तैल**-(पु०) तेलों तथा पेट्रोल का व्यवसाय [आयल इंडस्ट्री]।—,**निर्माण**-(संज्ञा, पु०) भवन आदि की रचना से सम्बन्धित व्यवसाय [कंस्ट्रक्शनइंडस्ट्री]।—**पति**-(पु०) समर्थ व्यवसायी। [इंडस्ट्रियलिस्ट]।—,**पत्र-निर्माण**-(संज्ञा,

पु०) कागज बनाने का धंधा । [पेपर इंडस्ट्री] ।—, **पोत-निर्माण**-(संज्ञा, पु०) जहाज बनाने का धंधा । [शिप बिल्डिंग इंडस्ट्री] ।—,**मत्स्य**-(संज्ञा, पु०) मछली का व्यवसाय । [फिश इंडस्ट्री]—,**मूल**-(पु०) आधारभूत व्यवसाय [की इंडस्ट्रीज़] ।—, **रसायन**-(पु०) रासायनिक पदार्थों का व्यवसाय । [केमिकल इंडस्ट्री] ।—,**वस्त्र-निर्माण**-(पु०) कपड़ा बनाने का व्यवसाय । [टेक्स्टाइल इंडस्ट्री] **—वाद**-(पु०) उद्योग-धंधों को विस्तृत करने का समर्थनकारी सिद्धांत । [इंडस्ट्रियलिज्म] —,**विद्य त्**-(पु०) बिजली तथा उसके सामान का व्यवसाय । [इलेक्ट्रिकल इंडस्ट्री] ।—,**विमान**-(पु०) वायुयान बनाने का व्यवसाय । [एवियेशन इंडस्ट्री] ।—**संचालक**-(पु०) गृह-उद्योगों का अधिदेष्टा । [डाइरेक्टर आव् इंडस्ट्रीज़] ।—**संभरण-मंत्रालय**-(पु०) सचिवालय, जिसमें उद्योग और संभरण, पूर्ति-सम्बन्धी कार्य का संचालन होता हो । [मिनिस्ट्री आव् इंडस्ट्रीज़ एंड सप्लाइज़] ।—, **सामान्य**-(संज्ञा, पु०) साधारण वस्तुओं का व्यवसाय । [जेनरल इंडस्ट्री] ।

उद्योगी—(वि०, सं०) उद्योग करने वाला, मेहनती । यत्नवान् । उत्साही । परिश्रमी ।

उद्योत—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश, उजाला, चमक, झलक, आभा, आलोक । उदोत (दे०) । [वि० **उद्योतित**—प्रकाशित, प्रदीप्त ।]

उद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊदबिलाव । जल की बिल्ली । (संज्ञा, पु०, दे०) उदर (सं०), पेट ।

उद्रिक्त—(वि०, सं०) स्फुट, स्पष्ट, व्यक्त, परिवृद्ध । [स्त्री० **उद्रिक्ता**]

उद्रेक—(संज्ञा, पु०, सं०) बढ़ती, अधिकता, वृद्धि, ज्यादती । उपक्रम । उत्थान । प्रकाश । आरंभ । एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें वस्तु के कई गुणों या दोषों का किसी एक गुण या दोष के आगे मंद पड़ जाना कहा जाता है (प्राचीन०) ।

उद्वर्धमान-व्यय—(संज्ञा, पु०, सं०) फैसले के बाद होने वाला खर्चा । [एक्रूइंग कास्ट्स] ।

उद्वह—(संज्ञा, पु०, सं०) पुत्र, बेटा, लड़का । "एक वीराच कौशल्या तस्या पुत्रो रघूद्वहः"— । तृतीय-स्कंध पर रहने वाली वायु । सात वायुओं मे से एक । उदान वायु । विवाह । अग्नि की सात जीभों में से एक । [स्त्री० **उद्वहा**] ।

उद्वहन—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊपर खींचना । उठा कर ले जाना । सँभालना उठाना । विवाह करना ।

उद्वासक—(वि०, सं०) उजाड़ने वाला । भगाने वाला ।

उद्वासन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थान छुड़ाना, भगाना, उजाड़ना । मारना, बध । वास-स्थान नष्ट करना, खदेड़ना । [वि० **उद्वासनीय**]

उद्वासित—(वि०, सं०) उजाड़ा हुआ । खदेड़ा हुआ ।

उद्वास्य—(वि०, सं०) उद्वासनीय, उजाड़ने योग्य ।

उद्वाह—(संज्ञा, पु०, सं०) विवाह । उठाना । सँभालना ।

उद्वाहन—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊपर ले जाना । उठाना, ले जाना, हटाना । विवाह । जोते हुए खेत को दुबारा जोतना । [वि० **उद्वाहनीय**]

उद्वाहा—(वि०, सं०) ऊपर ले जाने वाला । विवाह करने वाला ।

उद्वाहित—(वि०, सं०) विवाहित । उठाया हुआ ।

उद्वाह्य—(वि०, सं०) उठाने योग्य । उद्वाहनीय । विवाह करने योग्य ।

उद्विकास—(संज्ञा, पु०, सं०) अनवरत विकास-क्रम [इवोल्यूशन] ।—**सिद्धान्त**-(संज्ञा, पु०, सं०) विकास-सम्बन्धी मत । [इवोल्यूशन थ्योरी] ।

उद्विग्न—(वि०, सं०) उद्वेगयुक्त, आकुल, व्यग्र ।

उद्विग्नता—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उत् + विज् + क्त + ता] आकुलता, व्यग्रता, घबराहट ।—**मना**-(वि०, सं०) व्यग्रचित्त, घबराया हुआ ।

उद्वृद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) लाभ, वृद्धि [एक्रुअल] ।

उद्वेग—(संज्ञा, पु०, सं०) मन की आकुलता, घबराहट । मनोवेग, चिन्ता । आवेश, जोश, झोंक । चित्त की तीव्र वृत्ति । संचारी भावों में से एक ।

उद्वेगांबुधि—(संज्ञा, पु०, सं०) व्याकुलता का समुद्र । बहुत अधिक अधीरता । "उद्वेगांबुधि में पैठो"—हरिऔध ।

उद्वेगी—(वि०, सं०) उद्विग्न, उत्कंठित, घबड़ाने वाला, भावनायुक्त, जोशीला ।

उद्वेलित—(वि०, सं०) अतिक्रान्त, उग्रतापूर्वक प्रभावित अथवा पीड़ित । "करते अंतर उद्वेलित आहों के झोंके"—बच्चन ।

उधड़ना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्धरण] सिले हुए का खुलना । जमा या लगा न रहना । खुलना, उखड़ना । उजड़ना, उचड़ना ।

उधम—(संज्ञा, पु०, दे०) ऊधम, उपद्रव ।

उधर—(क्रि० वि०, दे०) [सं० उत्तर या पु०, हि० वह+धर—प्रत्य०] उस ओर, उस तरफ़, दूसरी ओर, वालँग (दे०)।

उधरना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्धरण] मुक्त होना, उधड़ना, उखड़ना, निकल जाना। उद्धार पाना। (स०, क्रि०) उद्धार या मुक्त करना। "सूर-दास भगवंत-भजन की सरन गहे उधरे", "तुम मीन ह्वै वेदन को उधरो जू"—केशव।

उधराना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्धरण] हवा के कारण छितरा जाना, तितर बितर होना। ऊधम मचाना। उन्मत्त होना, बिखरना। [(वि०, दे०) **उधरा**—मुक्त, छूटा, उखड़ा हुआ।]

उधार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्धार] उद्धार, मुक्ति, ऋण, कर्ज। "झूठा मीठे बचन कहि, ऋण उधार लै जाय"—गिरि०। **मुहा०—खाना और भुस आग लगाना**—ऋण का प्रति दिन बढ़ना और धीरे-धीरे बढ़ कर बहुत होना, या नाश-कारक होना। प्रत्येक समय तैयार रहना। किसी की कुछ चीज का दूसरे के यहाँ केवल कुछ समय के लिए मँगनो के तौर पर व्यवहार में जाना। मँगनी। उद्धार, छुटकारा।—**खाये बैठना**—किसी भारी आसरे पर दिन काटते रहना। उधार लिये रहना।

उधारकꣳ—(वि०, दे०) [सं० उद्धारक] उद्धार करने वाला।

उधारनꣳ—(वि०, दे०) मुक्त करने या छुडाने वाला। "सूर पतित तुम पतित-उधारन गहौ बिरद की लाज"।

उधारनाꣳ—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्धरण] उद्धार करना। मुक्त करना, छुड़ाना, उबारना।

उधारीꣳ—(वि०, दे०) [सं० उद्धारिन्] उद्धार करने वाला। [स्त्री० **उद्धारिनि, उद्धारिणी**]।

उधेड़ना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्धरण] पर्त या तह को अलग करना, उचाड़ना। टाँका खोलना। सिलाई खोलना। छितराना। बिखराना। भंग करना। सुलझाना, [**उधेरना** दे०] "जरासंध को जोर उधेर्यो फारि कियो द्वै फाँको"—सूर।

उधेड़बुन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० उधेड़ना+बुनना] सोच-विचार, ऊहा-पोह। युक्ति बाँधना। उलझन को सुलझाने में लीन होना।

उनंतꣳ—(वि०, दे०) [सं० अवनते] झुका हुआ। अवनत। मुरझाया हुआ। "भई उनंत-प्रेम कै साखा"—जायसी।

उन—(सर्व०, दे०) 'उस' का बहुवचन।

उनइस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० एकोन विंशति] उन्नीस। [**वनइस** (दे०)]

उनका—(संज्ञा, पु०, अ०) एक कल्पित पक्षी, जिसे आज तक किसी ने नहीं देखा। (वि०) अप्राप्य, अलभ्य। (सर्व० दे०) [हि० उन+का—प्रत्य०] सम्बन्ध कारक में। [(स्त्री०) उनकी, ब० व० उनके आदि]।

उनचास—(वि०, दे०) [सं० एकोन पंचाशत] चालीस और नौ, ४९। (संज्ञा, पु०, दे०) उन्चास की संख्या। [**वन्चास** दे०]

उनतालिस—(वि०, दे०) उन्तालीस [सं० एकोन-चत्वारिंशत] ३० और ९। (संज्ञा, पु०) तीस और नौ की संख्या। एक कम चालीस की अदद, ३९। [**वन्तालिस** दे०]

उनतीस—(वि०, दे०) [सं० एकोनत्रिंशत] एक कम तीस, बीस और नौ। (संज्ञा, पु०, दे०) उन्तीस की संख्या, २९।

उनदाꣳ—(वि०, दे०) [**उनींदा** हि०, सं० उन्निद्र] नींद का सताया हुआ। औंधासा (दे०)। [**उनींदा** दे०]

उनदौहाँ—(वि०, दे०) उनींदा, उनदहा (हि०)।

उतपत—(वि०) [सं० उत्तप्त] गर्म, उष्ण। "घन-घन उतपत साँस"—विद्यापति।

उनमत—(वि०, दे०) [सं० उन्मत्त] मतवाला, पागल, प्रमत्त। (संज्ञा, पु०) पागल पुरुष। [स्त्री० **उनमाती** दे०, **उन्मत्ता** सं०]

उनमदꣳ—(वि०, दे०) [सं० उत+मद्—उन्मद] उन्मत्त।

उनमन-उनमना—(वि०, दे०) [सं० उत्+मना] अनमन, अनमना, उन्मना, उदास, शिथिल।

उनमाथनाꣳ—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उन्मथन] मथना, विलोड़ना।

उनमाथीꣳ—(वि०, दे०) [हि० उनमाथना] मथने-वाला, बिलोड़ने वाला, मथन करने वाला।

उनमाद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उन्माद] पागल-पन, चित्त-विभ्रम।

उनमानꣳ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अनुमान] अन्दाज, अनुमान, अटकल, विचार। "साँई समय न चूकिये, जथा सक्ति उनमान"—गिरि०। (संज्ञा, पु०) [सं० उद्+मान] परिणाम, थाह। 'लेन उन-मान फतेअली ने पठाये दूत"—सुजा०। नाप, तौल। शक्ति, सामर्थ्य। योग्यता। (वि०) तुल्य,

समान, सदृश। "कमलदल नैननि की उनमान" —रही०।

उनमाननाꕥ—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० उनमान] अनुमान करना, विचार करना, ख्याल करना। "कटि कछनी कर लकुट मनोहर गो-चारन चले मन उनमानि"—सूर०।

उनमुना—(वि०, दे०) [हिं० अनमना] मौन, चुपचाप। [स्त्री० उनमुनी]—"हँसै न बोलै उनमुनी" —कबीर।

उनमुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हठयोग की एक मुद्रा। (वि०) मौना।

उनमूलन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्+मूलन] उखाड़ना।

उनमूलना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उन्मूलन] उखाड़ना, नष्ट करना।

उनमेख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उन्मेष] आँख का खुलना। फूल का खिलना। प्रकाश। विकास।

उनमेखना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उन्मेष] आँख का खुलना। उन्मीलित होना। विकसित होना। खिलना।

उनमेद—(संज्ञा, पु०, दे०) माँजा, प्रथम वर्षा से उत्पन्न विषैला फेन। "जल उनमेद मीन ज्यों बपुरो" —सूर०।

उनयना—(क्रि०, अ०, दे०) झुकना, उनवना (दे०) टूटना। उठना। घिर आना।

उनरनाꕥ—(क्रि०, अ०, दे०) [उन्नरण=ऊपर जाना] उठना, उभड़ना, उमड़ना, उछलना—"उनरत जोवन देखि नृपति मन भावइँ"-तुल०। "बचन-पास बाँधे माधव-मृग उनरत घालि लये"—[अ०]।

उनवना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उन्नमन] झुकना, लटकना। घिर आना। टूटना। छाना, घिर जाना। ऊपर पड़ना।

उनवर—(वि०, दे०) न्यून, क्षुद्र, तुच्छ, नीच।

उनवान—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनुमान सं०] ख्याल, अटकल।

उनसठꕥ—(वि०, दे०) [सं० एकोनषष्टि] पचास और नौ। साठ में एक न्यून। (संज्ञा, पु०) पचास और नौ की संख्या या अंक। उन्सठ, ५९। [उनसठि दे०] एक कम साठ।

उनहत्तर—(वि०, दे०) [सं० एकोनसप्तति] साठ और नौ। सत्तर में एक कम। (संज्ञा, पु०) साठ और नौ की संख्या या अंक, [उनहत्तरि दे०]। एक कम सत्तर की संख्या, ६९।

उनहानिꕥ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० अनुहारि] समता, बराबरी।

उनहार—(वि०) [सं० अनुसार] समान, सदृश।

उनहारि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अनुसार] समानता, सादृश्य, एकरूपता।

उनानाꕥ—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उन्नमन] झुकाना। लगाना। प्रवृत्त करना। सुनाना। आज्ञा मानना। (क्रि०, अ०) आज्ञा पालन करना।

उनारना—(क्रि०, स०, दे०) उकसाना, खसकाना, बढ़ाना। "ज्योति कढ़ावत दसा उनारि"—केशव।

उनासी—(वि०, दे०) [सं० एकोनाशीति] एक कम अस्सी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) उन्नासी की संख्या, ७९।

उनींदा—(वि०, दे०) [सं० उन्निद्र] ऊँघाया हुआ, अलसाया हुआ, नींद से भरा हुआ। (संज्ञा, पु०, दे०) उनीद—(सं० उन्निद्र) अर्धनिद्रा, नींद-भरा। "लरिका स्रमित उनीद-बस, सयन करावहु जाइ" —तुल०। "नैन उनींदे भे रँगराते"—सूर०।

उन्नइसꕥ—(वि०) [हिं० उन्नीस] उनइस (दे०) उन्नीस।

उन्नतꕥ—(वि०) [सं० उत्+नम्+क्त] ऊँचा, ऊपर उठा हुआ, बढ़ा हुआ, समृद्ध, श्रेष्ठ, उच्च, उत्तुंग। —**नाभि**-(वि०) ऊँची नाभिवाला।

उन्नतानत—(वि०, यौ०, सं०) ऊँच-नीच स्थान, ऊबड़-खाबड़।

उन्नति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उत्+नम्+क्ति] ऊँचाई, चढ़ाव, वृद्धि, समृद्धि, उच्चता, बढ़ती, तरक्की, उदय। गरुड़ भार्या। "अपनी उन्नति का आधार"—गिरीश।

उन्नतोदर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चाप या वृत्त के खंड के ऊपर का तल, ऊपर को उठा हुआ, वृत्त खंड वाली वस्तु।

उन्नमित—(वि०) [सं० उत्+नम्+क्त] उत्तोलित, ऊपर उठाया गया, ऊर्ध्वीकृत।

उन्नयन—(वि०, सं०) ऊर्ध्व प्रयाण। उत्तोलन। ऊपर ले जाना।

उन्नाब—(संज्ञा, पु०, अ०) हकीमी दवाओं में डाला जाने वाला एक प्रकार का बेर।

उन्नाबी—(वि०) [अ० उन्नाब] उन्नाब के रंग का। कालापन लिये हुए लाल।

उन्नायक—(वि०, सं०) ऊँचा करने वाला। उन्नत करने वाला। बढ़ाने वाला। [स्त्री० उन्नायिका]

उन्नासी—(वि०, दे०) [सं० ऊनाशीति] सत्तर और नौ। एक कम अस्सी। (संज्ञा, पु०) सत्तर और नौ की संख्या, ७६।

उन्निद्र—(वि०, सं०) निद्रा रहित, जैसे—उन्निद्र रोग। जिसे नींद न आई हो। विकसित, खिला हुआ।

उन्निद्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नींद न आने की बीमारी। [इनसोम्निया]

उन्नीस—(वि०) [सं० एकोनविंशति] एक कम बीस, दस और नौ। (संज्ञा, पु०) दस और नौ की संख्या, १६, उनइस (दे०)। **मुहा०—(उनइस) विस्वा** —अधिकतर, अधिकांश में, बहुत कर के।—**होना** —मात्रा में कुछ कम होना, थोड़ा घटना, गुण में घटकर होना (दो वस्तुओं की तुलना में)।—**बीस होना**—एक का दूसरी से कुछ अच्छा या अधिक होना, दो वस्तुओं में कुछ थोड़ा अन्तर होना।

उन्मत्त—(वि०) [सं० उत+मद+क्त] मतवाला, मदांध जो आपे में न हो, बेसुध। पागल, बावला, उन्मादी, बौराह। [संज्ञा, स्त्री० **उन्मत्तता**]।

उन्मत्तता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पागलपन, प्रमत्तता।

उन्मथित—(वि०, सं०) क्षुब्ध, मथित। प्रभावित। "उन्मथित धरा-चेतना सिंधु"—पंत।

उन्मद—(वि०) [सं० उत+मद्+अल्] उन्माद-युक्त, प्रमादी, सिड़ी, उन्मत्त। "आज मधुवन की उन्मद वात"—पंत।

उन्मना—(वि०) [सं० उत+मनस्] चिंतित, व्याकुल। चंचल। अनमना। उन्मन। [(संज्ञा, स्त्री०) **उनमनता**—अनमनापन। "···उन्मना राधिका थी"—प्रि० प्र०।

उन्माद—(संज्ञा, पु०, सं०) वह रोग जिसमें मन और बुद्धि का कार्य-क्रम बिगड़ जाता है। पागलपन, विक्षिप्तता, चित्त-विभ्रम। ३३ संचारी भावों में से एक जिसमें वियोगादि के कारण चित्त ठिकाने नहीं रहता। "भर देती उर में उन्माद"—गिरीश।

उन्मादक—(वि०, सं०) पागल करने वाला, नशीला।

उन्मादन—(संज्ञा, पु०, सं०) उन्मत्त या मतवाला करने की क्रिया, कामदेव के पाँच बाणों में से एक। "प्राणों में सहसा उन्मादन सौरभ रहस समायो" —पंत।

उन्मादी—(वि०) [सं० उन्मादिन] उन्मत्त, पागल, बावला। [(स्त्री०)—**उन्मादिनी**] "···थी मानसोन्मादिनी"—प्रि० प्र०।

उन्मान—(संज्ञा, पु०, सं०) तौल, परिमाण, नाप, उनमान (दे०)।

उन्मार्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) कुमार्ग, बुरा रास्ता, बुरा ढंग। [वि० **उन्मार्गी**—कुमार्गी, कुढंगी।]

उन्मिषित—(वि०) [सं० उत+मिष+क्त] प्रफुल्लित, विकसित, फूला हुआ, खिला हुआ।

उन्मीलन—(संज्ञा, पु०, सं०) खुलना (नेत्रों का) उन्मेष, विकसित होना, खिलना। [(वि०) **उन्मीलनीय**। (वि०) **उन्मीलक**—विकासक, खोलने वाला।]

उन्मीलना॥—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उन्मीलन] खोलना।

उन्मीलित—(वि०, सं०) खुला हुआ, प्रस्फुटित। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं (उपमेय, उपमान) के इतने अधिक सादृश्य का वर्णन किया जाय कि केवल एक ही बात के कारण उनमें भेद दिखलाई पड़े।

उन्मुक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वच्छंद। [फ्री लैन्स]। **—व्यापार**—(संज्ञा, पु०, सं०) जिस पर किसी प्रकार का कर न लगे। [फ्री ट्रेड]।

उन्मुख—(वि०, सं०) मुँह किये हुये। उत्कंठित, उत्सुक। उद्यत, तैयार। ऊर्ध्वमुख। [वि०, स्त्री० **उन्मुखा, उन्मुखी**]

उन्मूलक—(वि०, सं०) समूल नष्ट करने वाला। बरबाद करने वाला। उखाड़ने वाला।

उन्मूलन—(संज्ञा, पु०) [सं० उत+मूल+अनट्] जड़ से उखाड़ना। समूल नष्ट करना, उत्पाटन, ऊपर खींचना।—**,ज़मींदारी**—(संज्ञा, पु०, सं०+फ़ा०) जमींदारी प्रथा का अंत। [जमींदारी अबालिशन] [वि० **उन्मूलनीय**]

उन्मूलित—(वि०) उखाड़ा हुआ। विनष्ट। [अबालिश्ड]

उन्मेष—(संज्ञा, पु०, सं०) खुलना (आँखों का) विकास, खिलना। उन्मीलन। प्रकाश, ज्ञान, बुद्धि की प्राप्ति। [वि० **उन्मिषित**]

उन्मोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) परित्याग, मुक्तकरण। [(वि०) **उन्मोचनीय**—मुक्त करने योग्य, त्याज्य। (वि०) **उन्मोचित**—मुक्त, त्यक्त। (वि०) **उन्मोचक**—छुड़ाने वाला। मुक्त करने वाला।]

उन्स—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रेम, मुहब्बत।

उन्हानि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बराबरी, समता।

उन्हारा—(संज्ञा, पु०, दे०) डील-डौल, रूप। अनुहारि, उनहारि।

उन्हारि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रूप, आकार, शकल, प्रकार। "ज्यों एकै उन्हारि कुम्हार के भांडे"—दे०।

उपंग—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का बाजा। ऊधव के पिता। "चंग उपंग नाद सुर तूरा"—जायसी।

उपंत—(वि०, दे०) [सं० उत्पन्न] उत्पन्न, प्रकट।

उप—(उप०, सं०) एक उपसर्ग, यह जिन शब्दों के पूर्व आता है उनमे इस प्रकार अर्थान्तर या विशेषता कर देता है—(१) **समीपता**—उपकूल, उपनयन, (२) **सामर्थ्य**—(आधिक्य) उपकार, (३) **गौणता—(न्यूनता)** उपमंत्री, उपसभापति, (४) **व्याप्ति**, उपकीर्ण। उपकंठ—(वि०) निकट, समीप। (संज्ञा, पु०) ग्राम के समीप का भाग। घोड़े की सरपट चाल।

उपआहार—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वल्पाहार, जलपान, [रिफ्रेशमेन्ट]

उपकथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आख्यायिका, कहानी, कल्पित कथा।

उपकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) सामग्री। राजाओं के छत्र चँवर आदि राज-चिह्न। परिच्छेद। भोजन में चटनी आदि बाहिरी पदार्थ। पुष्प, धूप, दीप आदि पूजन की सामग्री। अप्रधान द्रव्य या वस्तु। शोधक वस्तु।

उपकरनाꣳ—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उपकार] उपकार करना, भलाई करना, हित करना।

उपकर्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) उपकारक।

उपकार—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+कृ+घञ्] भलाई, हित, नेकी, सलूक, हितसाधन, लाभ, फायदा।

उपकारक—(वि०, सं०) उपकार करने वाला, उपकारी। भलाई करने वाला, हितकारक। [स्त्री० **उपकारिका, उपकर्त्री**]।

उपकारिका—(वि०, स्त्री०) [सं० उप+कृ+इक्+आ] उपकार करने वाली। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजभवन, तंबू।

उपकारिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भलाई, हित, नेकी।

उपकारी—(वि०) [सं० उपकारिन्] उपकार करने वाला। भलाई करने वाला। उपकर्ता। लाभ पहुँचाने वाला। हितकारक। "ज्यों रहीम, सुख होत है, उपकारी के अंग—"। [(स्त्री०) **उपकारिणी**]

उपकार्य—(वि०) [सं० उप+कृ+ध्यण्] उपकारोचित। जिसका उपकार किया जाय। [स्त्री० **उपकार्या**]

उपकार्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजकीय खेमा। राज-सदन। अन्न रखने का स्थान, गोला।

उपकुर्वाण—(संज्ञा, पु०, सं०) विद्याध्ययनार्थ ब्रह्मचारी। कुछ काल के लिए ब्रह्मचारी। ब्रह्मचर्य समाप्त कर गृहस्थ होने वाला।

उपकूप—(संज्ञा, पु०, सं०) कूप के समीप बनाया हुआ पशुओं के जल पीने का जलाशय।

उपकूल—(संज्ञा, पु०, सं०) नदी-ताल के तट का तीर।

उपकृत—(वि०, सं०) जिसके साथ उपकार किया गया हो। कृतोपकार।

उपकृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपकार। भलाई।

उपकृषक—(संज्ञा, पु०, सं०) शिकमी काश्तकार। [सबटेनेंट]

उपकोषागार—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा खजाना। [सबट्रेजरी]

उपकोषाध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) सहायक कोषाध्यक्ष। [सबट्रेजरर]

उपक्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्यारम्भ की प्रथम-अवस्था। अनुष्ठान। उठान। कार्यारम्भ के पूर्व का आयोजन। तैयारी। भूमिका, आद्यकृति।

उपक्रमणिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी पुस्तक के आदि में दी गई विषय-सूची।

उपक्रान्त—(वि०, सं०) समारब्ध, अनुष्ठित, प्रस्तुत, आरम्भ किया हुआ, कृतारम्भ।

उपक्रोश—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+क्रुश+अल्] निंदा, कुत्सा, भर्त्सना, गर्हणा। [(वि०) **उपक्रोशित**—निंदित, गर्हित।]

उपक्षेप—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिनय के प्रारम्भ में नाटक के सम्पूर्ण वृत्तान्त का संक्षिप्त कथन, आक्षेप।

उपखंड—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुखंड, खंड के भी छोटे टुकड़े। [सबक्लासेज]

उपखानꣳ—(संज्ञा, पु०, दे०) उपाख्यान (सं०) कथा। "एक उपखान चलत त्रिभुवन मे तुमसों आज उघारि"—सूर।

उपगत—(वि०) [सं० उप+गम्+क्त] प्राप्त। स्वीकृत। उपस्थित। ज्ञात, जाना हुआ। अंगीकृत।

उपगति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्राप्ति, स्वीकृति। ज्ञान।

उपगमन—(संज्ञा, पु०, स०) आगमन। योग। प्रीति। अंगीकार। निकट-गमन।

उपगीत—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आर्या छंद का एक भेद।

उपगुरु—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा अध्यापक। अप्रधान गुरु। उपदेशक। शिक्षागुरु।

उपगूहन—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+गूह+अनट्] गोपन, छिपाव। आलिंगन, भेंट, अंक भरना। विस्मयोत्पादक घटना का घटित होना। [वि० **उपगूहनीय**]

उपगूहित—(वि०, सं०) आलिंगित, भेंटा हुआ, अंक लगाया हुआ। [स्त्री० **उपगूहिता**]

उपग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) गिरफ्तारी, कैद। बँधुआ, कैदी। अप्रधान ग्रह, छोटा ग्रह। राहु, केतु। वह छोटा ग्रह जो अपने बड़े ग्रह के चारों ओर घूमता है, जैसे पृथ्वी के साथ चंद्रमा (नवीन)।

उपघात—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+हन्+घञ्] नाश करने की क्रिया। इन्द्रियों का अपने अपने कार्य करने में असमर्थ होना। अशक्ति। रोग, पीड़ा। आघात, व्याधि। उपपातक, जाति-भ्रंशीकरण, जाति-च्युतकरण, संकरीकरण, अपात्रीकरण, मलिनीकरण, इन पाँच पातकों का समूह (स्मृति)।

उपचय—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+चि+अल्] वृद्धि, उन्नति, सञ्चय, बढ़ती, आधिक्य।

उपचरित—(संज्ञा, वि०) [सं० उप+चर्+क्त] उपासित, सेवित, आराधित। लक्षणा से जाना हुआ (सा०)।

उपचर्या—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उप+चर्+क्यप्] चिकित्सा, रोगों का उपशम, प्रतिकार, शुश्रूषा, उपचार, सेवा।

उपचार—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+चर्+घञ्) व्यवहार, प्रयोग। विधान, उपाय। चिकित्सा, दवा, इलाज। सेवा, तीमारदारी। धर्मानुष्ठान, उपकरण। पूजन के अंग या विधान जो मुख्यतः सोलह माने गये हैं (षोडशोपचार)। खुशामद। घूस, रिश्वत। दिखावा। उपक्रम। उत्कोच। विसर्ग के स्थान पर स या श हो जाने वाली सन्धि विशेष, जैसे—निश्छल, निःछल। "जेते उपचारु चारु मंजु सुखदाई हैं"—रत्ना०। "उपचारः कैतवं भवति"—**छल**-(पु०) वादी के कहे हुए वाक्य में जान-बूझ कर अभिप्रेत अर्थ से भिन्न अर्थ की कल्पना करके दूषण निकालना।

उपचारक—(वि०, सं०) उपचार या सेवा करने वाला। विधान करने वाला। चिकित्सा करने वाला।

उपचारित—(वि०, सं०) उपचार किया हुआ, जिसका उपचार किया गया हो।

उपचारना*—(क्रि०, स०, दे०) व्यवहार में लाना। विधान करना। काम में लाना। प्रयोग करना।

उपचारी—(वि०) [सं० उपचारिन्] उपचार करने वाला। चिकित्सा करने वाला। [स्त्री० **उपचारिणी**]

उपचित—(वि०) [सं० उप+चि+क्त] समृद्ध, वर्धित, संचित, इकट्ठा। [क्यूम्यूलेटिव] मतदान एकत्रित मत प्रदान (जिसमें मतदाता को प्रतिनिधियों की संख्या के बराबर मत देने का अधिकार हो और वह उन्हें एक ही उम्मीदवार को दे सके)। [क्यूमुलेटिव वोटिंग] [(संज्ञा, पु०, सं०) **उपचयन** —वि० **उपचयनीय**]

उपचित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्णार्द्ध समवृत्त।

उपचित्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १६ मात्राओं का एक छंद।

उपचेतन—(वि०, सं०) अंतः संज्ञा युक्त। (संज्ञा, पु०) अंतः संज्ञा। [सब कांशस, सबकांशस स्टेट]

उपज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० उपजना] उत्पत्ति। उद्भव। पैदावार (खेत की उपज)। नई उक्ति। उद्भावना, सूझ। मनगढ़न्त बात। गाने में राग की सुन्दरता के लिए उसमें बँधी हुई तानों के सिवा अपनी ओर से कुछ तानों का मिला देना। स्फूर्ति, स्फुरण।

उपजना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्पद्यते, प्रा० उप्पज्जते] उत्पन्न होना, पैदा होना। उगना, अंकुरित होना।

उपजाऊ—(वि०, दे०) [हि० उपज+आऊ—प्रत्य०] जिसमें अच्छी और अधिक उपज हो, उर्वर (भूमि), जरखेज।

उपजाति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इंद्रवज्रा और उपेन्द्र-वज्रा, तथा इंद्रवंशा और वंशस्थ के मेल से बनने वाले वर्णिक (गणात्मक) वृत्त। ["स्यादिन्द्रवज्रा यदितौ जगौगः, उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततोगौ। अनन्त-रोदीरित लक्ष्मभाजौ पादौ यदीयाउपजातयस्ताः"]।

उपजाना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० उपजना का सं० रूप] उत्पन्न करना, पैदा करना, उगाना। "भलेहु पोच विधि जग उपजाये"—तुल०। "रह रह उप-जाते थे शूल"—गिरीश।

उपजित—(वि०, दे०) उत्पन्न हुआ, उपजा हुआ ।

उपजिह्वा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्षुद्र जीभ, छोटी जीभ ।

उपजीवन—(संज्ञा, पु०, सं०) जीविका, रोजी, निर्वाह के लिए किसी अन्य व्यक्ति का अवलम्बन । [वि० **उपजीवक** सं०]

उपजीविका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीविका वृत्ति, जीवनोपाय, अवलम्ब ।

उपजीवी—(वि०, सं०) दूसरे के सहारे पर गुजर करने वाला । [यौ० **परभाग्योपजीवी**—अन्याश्रित व्यक्ति] ।

उपज्ञा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रथम ज्ञान, उपदेश के बिना ईश्वरदत्त पूर्वज्ञान, आद्यज्ञान ।

उपटन—(संज्ञा, पु०, दे०) उबटन, बटना । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्पतन=ऊपर उठना] आघात, दबाने या लिखने से पड़े हुए चिह्न या निशान, साँट ।

उपटना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्पट=पट के ऊपर] आघात, दबाव या लिखने से पड़ने वाले चिह्न, या निशानों का आ जाना । निशान पड़ना । उखड़ना । उछल आना । "वई गड़ि गाड़ै परी, उपट्यो हार हियै न"—(वि०) । "बिन गुन पिय हिय हरवा, उपटेउ हेरि"—रहीम ।

उपटाना*—(क्रि०, स०, दे०) [हि० उपटना का प्रे० रूप] उबटन लगवाना, उबटन लगाना । "कंचुकी छोरो उतै उबटैबो को···"—देव० [सं० उत्पाटन] उखड़वाना, उखाड़ना, उचाटना । हटाना ।

उपटारना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उत्पटन] उच्चाटन करना । उठाना । हटाना । उपटारना (दे०) । "मधुबन तै उपटभरि स्याम कहँ या ब्रज लैकै आव"

उपड़ना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्पटन] उखड़ना, उपटना, अंकित होना, निशान पड़ना ।

उपढौकन—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+ढौक+अनट्] पारितोषिक, उपहार, भेंट, इनाम । "सकल को उपढौकन आदि ले उचित है चलना मथुरा पुरी" —हरिऔध ।

उपतंत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) यामल आदि शास्त्र । सूक्ष्म सूत्र ।

उपतप्त—(वि०) [सं० उप्+तप्+क्त] संतापित, दुखित, संतप्त, दग्ध, जला हुआ ।

उपतारा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्षुद्र नक्षत्र । नेत्र-गोलक ।

उपत्यका—(संज्ञा, स्त्री० सं०) पर्वत के पास की भूमि, तराई । "उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिः"—[अमर] ।

उपदंश—(संज्ञा, पु०, सं०) दाँत या नाखून लगने से लिंगेंद्रिय पर घाव हो जाने वाला रोग । गरमी, आतशक । फिरंगरोग । सुजाक । मेदरोग । सर्पदंश । गजक, चाट ।

उपदल—(संज्ञा, पु०, सं०) मुकुल । पत्ता । पान । दल । पुष्पदल ।

उपदर्शक—(संज्ञा, पु०, सं०) द्वारपाल, प्रहरी ।

उपदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भेंट, उपायन, दर्शन ।

उपदिशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दो दिशाओं के बीच की दिशा । कोण । विदिशा, चार कोनों की चार दिशाएँ, ईशान, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य ।

उपदिष्ट—(वि०) [सं० उप+दिश्+क्त] जिसे उपदेश दिया गया हो । जिसके विषय में उपदेश दिया गया हो । ज्ञापिता । कृतोपदेश । [स्त्री० **उपदिष्टा**]

उपदेवता—(संज्ञा, पु०, सं०) भूत प्रेतादि छोटे देवता ।

उपदेश—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+दिश्+अल्] हितकारी बात, शिक्षा, नसीहत, सीख (दे०) । दीक्षा, हितकथन । गुरुमंत्र, सिखावन (दे०) । [**उपदेस** दे०] "जो मूरख उपदेस के, होते जोग जहान"—वृन्द । "दें उपदेश मंद मति हूँ मैं"—गिरीश । [**उपदेशकारी**-(वि०) उपदेशकर्त्ता, उपदेशप्रद, उपदेष्टा ।]

उपदेशक—(संज्ञा, पु०, सं०) उपदेश करने वाला । शिक्षा देने वाला ।

उपदेश्य—(वि०) [सं० उप+दिश्+य्] उपदेष्टव्य । उपदेश के योग्य । उपदेशाधिकारी । सिखाने योग्य (बात) ।

उपदेष्टा—(संज्ञा, पु०) [सं० उपदेष्ट उप+दिश्+तृण्] उपदेशकर्ता । आचार्य । शिक्षक । शिक्षागुरु । उपदेश देने या करने वाला । [ऐडवाइजर] [स्त्री० **उपदेष्ट्री**]

उपदेसना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उपदेश+ना —प्रत्य०] उपदेश करना या देना । सिखाना । "उपदेसिबो, जगाइबो, तुलसी उचित न होय" ।

उपद्रव—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्पात, हलचल, उपाधि, ऊधम, (दे०) गड़बड़ विप्लव । दंगा-फसाद, झगड़ा-बखेड़ा । किसी प्रधान रोग के बीच में होने वाले अन्य प्रकार के विकार । विद्रोह । अत्याचार । अन्धेर ।

उपद्रवी—(वि०) [सं० उपद्रविन्] उपद्रव या ऊधम मचाने वाला। नटखट, उत्पाती।

उपद्वीप—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा द्वीप। जल मध्य-वर्ती स्थान।

उपधरना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उपधरण] अंगीकार करना, अपनाना। सहारा देना।

उपधर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) पाखंड। पाप। नास्तिकता।

उपधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छल, कपट, किसी शब्द के अंतिमाक्षर के पूर्व का अक्षर (व्या०) उपाधि। "अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा"—[अष्टा०]।

उपधातु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लोहे ताँबे आदि धातुओं के योग से बनी हुई या खान से निकली हुई अप्रधानधातु, जैसे काँसा, सोनामक्खी, तूतिया। शरीर के अन्दर रस से बना पसीना, चर्बी आदि।

उपधान—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+धा+अनट्] ऊपर रखना या ठहराना। सहारे की चीज। तकिया। गेडुआ। विशेषता। उसीसा, सिरहना। आधार। मंत्र जो यज्ञ की ईंट स्थापित करते समय पढ़ा जाता है। विष। एक व्रत।

उपधायक—(वि०) [सं०, उप+धा+एवुल्] जन्मदाता, स्थापनकर्ता।

उपनगर—(संज्ञा, पु०, सं०) नगर से मिली हुई आस-पास की बस्ती। [सबर्ब]

उपनना*—(क्रि०, अ०) उत्पन्न होना, पैदा होना। "आगि जो उपनी ओहि समुन्दा"—जायसी।

उपनय—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+नी+अल्] समीप ले जाना। बालक को गुरु के पास ले जाना। उपनयन-संस्कार। एक उदाहरण दे कर उसके धर्म को उपसंहार के रूप से साध्य पर घटित करना (तर्क)। व्याप्ति विशिष्ट हेतु में पक्षगत धर्मों का प्रतिपादक वाक्य।

उपनयन—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+नी+अनट्] द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) या त्रिवर्ग का यज्ञसूत्र को धारण करने का संस्कार, उपवीत संस्कार, यज्ञोपवीत, जनेऊ, बरुआ (दे०)।

उपनागरिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शब्दालंकार गत, वृत्यनुप्रास का एक भेद जिसमें श्रुतिमधुर वर्णों की आवृत्ति की जाती है। मंजुल एवं मृदुमधुर वर्णों की संगठन-रीति। एक प्रकार की रचना रीति।

उपनाना—(क्रि०, स०, दे०) पैदा करना, उत्पन्न करना।

उपनाम—(संज्ञा, पु०, सं०) दूसरा नाम। प्रचलित नाम। पदवी, उपाधि, तखल्लुस। पद्धति।

उपनायक—(संज्ञा, पु०, सं०) नाटकों में प्रधान नायक का मित्र या सहकारी।

उपनिधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धरोहर, थाती। न्यस्त वस्तु, स्थापित द्रव्य, अमानत।

उपनियम—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रमुख नियम के अति रिक्त अन्य नियम, अवर नियम। [सबरूल]

उपनिर्वाचन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी स्थान के एकाएक खाली होने पर होने वाला अप्रधान निर्वाचन। [बाई एलेक्शन]

उपनिविष्ट—(वि०, सं०) दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ।

उपनिवेश—(संज्ञा, पु०, सं०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा बसना। अन्य स्थान से आये हुए लोगों की बस्ती, [कालोनी]। —**सचिव**—(पु०) औपनिवेशिक कर्म-संचालक मंत्री। [कोलोनियल सेक्रेटरी]

उपनिषद्—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उप+नि+षद्+क्विप्] पास बैठना। ब्रह्म विद्या की प्राप्ति के लिए गुरु के समीप बैठना। वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा आदि का निरूपण किया गया है। निर्जन स्थान। ब्रह्मविद्या, वेद रहस्य। तत्वज्ञान। वेदान्त विषय।

उपनीत—(वि०, पु०, सं०) लाया हुआ। जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो, कृतोपनयन। उपवीती। निकटप्राप्त, उपस्थित, समीपागत।

उपनेता—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं० उप+नी+तृण्] आनयनकारी। उपस्थापक। लाने वाला। गुरु, आचार्य। पहुँचाने वाला। उपनयन कराने वाला। [स्त्री० उपनेत्री]

उपनेत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) नेत्रों का सहायक। चश्मा।

उपनौसेनापति—(संज्ञा, पु०, सं०) सहकारी जल सेनाध्यक्ष। [रियर ऐडमिरल]

उपन्यायाधीश—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा न्यायाधीश। [सब जज]

उपन्ना—(संज्ञा, पु०, दे०) उपरना, ओढ़ने का दुपट्टा।

उपन्यस्त—(वि०, सं०) निक्षिप्त, न्यासीकृत, धरोहर रखा हुआ।

उपन्यास—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+नी+अस्+घञ्] वाक्य का उपक्रम, बंधान। कल्पित आख्या-

यिका, कथा। प्रस्तावना। उपकथा, कहानी। गद्य-काव्य का एक भेद। [(वि०) उपन्यासी दे०]

उपपट्टा—(संज्ञा, पु०) [उप+पट्टा दे०] शिकमी या दर पट्टा। [सबलीज]

उपपति—(संज्ञा, पु०, सं०) वह पुरुष जिससे किसी दूसरे व्यक्ति की स्त्री प्रेम करे, जार, यार, आशना। "जो पर-नारी को रसिक, उपपति ताहि बखान"—रस०।

उपपत्ति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उप+पद्+क्ति] संगति, समाधान। हेतु के द्वारा किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय। चरितार्थ होना। मेल मिलाना। युक्ति। हेतु। सिद्धि। प्राप्ति।

उपपत्तिसम—(संज्ञा, पु०, सं०) बिना वादी के कारण और निगमन आदि का खंडन किये हुए प्रतिवादी द्वारा, अन्य कारण उपस्थित करके, विरुद्ध विषय का प्रतिपादन।

उपपत्नी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेश्या, रखुई, पर स्त्री।

उपपन्न—(वि०, सं०) पास या शरण में आया हुआ। प्राप्त, मिला हुआ। युक्त। संपन्न। उपयुक्त। लब्ध। मुनासिब।

उपपरिदर्शक—(संज्ञा, पु०, सं०) सहायक, निरीक्षक [सबइंस्पेक्टर]।—,**पुलिस**-(पु०, सं०, +अं०) थानेदार, दरोगा। [पुलिस सबइंस्पक्टर]।

उपपातक—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा पाप, जैसे—पर स्त्री गमन। गुरु-सेवा-त्याग। आत्म-विक्रय। गोवध आदि (स्मृति)।

उपपादन—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+पद्+णिच्+अनट्] साधन। सिद्ध करना, साबित करना, स्थापित करना। कार्य को पूरा करना। संपादन। युक्ति देकर समाधान करना।—[वि० **उपपादनीय**—साध्य, संपादनीय।]

उपपादित—(वि०, सं०) सिद्ध किया हुआ, संपादित।

उपपाद्य—(वि०, सं०) उपपादनीय, साध्य।

उपपुराण—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटे और गौण पुराण, ये भी १८ हैं—सनत्कुमार, नारसिंह, नारदीय, शिव, दुर्वासा, कपिल, मानव, औशनस, वारुण, कालिका, शांव, नन्दा, सौर, पाराशर, आदित्य, माहेश्वर, भार्गव, वाशिष्ट।

उपप्रदूत—(संज्ञा, पु०, सं०) उपराजदूत। [प्रोकांउसल]

उपप्रधानमंत्री—(संज्ञा, पु०, सं०) सहायक प्रधान सचिव। [डिप्टी प्राइमनिस्टर]

उपबंधक—(सं० पु०, सं०) उप बंधन। [सब मार्गेज]

उपबरहन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपवर्हण] तकिया, उपवर्ह। "उपबरहन बर बरनि न जाई"—तुल०।

उपभाषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गौण भाषा, बोली।

उपभुक्त—(वि०) [सं० उप+भुज्+क्त] काम में लाया हुआ। जूठा, उच्छिष्ट, भक्षित। अधिकृत।

उपभेद—(पु०, सं०) उपविभाग, गौड़ भेद।

उपभोक्ता—(वि०) [सं० उप+भुज्+तृण] उपभोग करन वाला। स्वत्वाधिकारी। [स्त्री० **उपभोक्त्री**]

उपभोक्ताधिक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उपभोक्ता की बचत का अंश। [कंज्यूमर्स सरप्लस]

उपभोग—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+भुज+घञ्] किसी वस्तु के व्यवहार का सुख। मजा लेना। काम मे लाना। बर्तना। सुख की सामग्री। निर्वेश। आस्वादन। विलास।

उपमंत्री—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रधान मंत्री के नीचे कार्य करन वाला मंत्री। सहायक सचिव, उप-सचिव। [डिप्टी मिनिस्टर]

उपमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी वस्तु, व्यापार या गुण को किसी दूसरी वस्तु, व्यापार या गुण के समान प्रकट करने की क्रिया। तुलना, मिलान। बराबरी, समानता। जोड़, सादृश्य। एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं के बीच भेद रखते हुए भी उन्हे समान कहा जाता है। "सब उपमा कबि रहे जुठारी"—तुल०।

उपमाता—(संज्ञा, पु०) [सं० उपमातृ] उपमा देने वाला। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० उप+माता] दूध पिलाने वाली दाई, धाय, धात्री।

उपमान—(संज्ञा, पु०, सं०) वह वस्तु जिससे किसी दूसरी वस्तु की उपमा दी जाय, जिसके समान या सदृश कोई वस्तु कही जाय। प्रतिमूर्ति, चार प्रकार के प्रमाणों में से एक (न्या०) किसी प्रसिद्ध पदार्थ के साधर्म्य के साध्य का साधन। २३ मात्राओं का एक छंद।

उपमाना—(क्रि०, स०, दे०) उपमा देना। समानता दिखाना। "चारु कुंडल सुभग स्रौननि को सकै उपमाइ"—सूर।

उपमिति—(वि०, सं०) तुल्यकृत। उपमा दिया हुआ। सम्भावित। जिसको उपमा दी गई हो। उत्प्रेक्षित। "इच्छाओं से उपमित, किरणों में प्राणों

में ओझल"—पंत। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपमा सादृश्य से होने वाला ज्ञान। सादृश्य का ज्ञान।

उपमेय—(वि०, सं०) जिसकी उपमा दी जाय। वर्ण्य, वर्णनीय, उपमा के योग्य।

उपमेयोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह अर्थालंकार जिसमें उपमेय की उपमा उपमान से और उपमान को उपमेय से दी जाती है।

उपमोदन—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुमोदन, स्वीकरण। [एप्रूवल]

उपयना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्प्रयाण] चला जाना। न रह जाना। उड़ जाना।

उपयम—(संज्ञा, पु०, सं०) विवाह। संयम।

उपयुक्त—(वि०, सं०) योग्य, उचित, वाजिब, मुनासिब।

उपयुक्तता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यथार्थता, ठीक होने या ठीक उतरने का भाव। औचित्य।

उपयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) काम, व्यवहार। प्रयोग, इस्तेमाल। योग्यता। फ़ायदा, लाभ। प्रयोजन, आवश्यकता।

उपयोगिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काम में आने की योग्यता या क्षमता। लाभकारिता।—**वाद**—(संज्ञा, पु०, सं०) वह सिद्धांत जिसके अनुसार सामाजिक कार्यों का लक्ष्य अधिक से अधिक प्राणियों का सुख होना चाहिए। [यूटिलिटेरियनिज्म]—**वादी**—(संज्ञा, पु०, सं०) उपयोगितावाद को मानने वाला। [यूटिलिटेरियन]

उपयोगी—(वि०) [सं० उपयोगिन्] काम में आने वाला, प्रयोजनीय, लाभकारी। अनुकूल। फ़ायदेमंद, मुआफ़िक़। मसरफ का।

उपयोजित—(वि०, सं०) व्यवहार में लाया हुआ। —**राजनीति-विज्ञान**—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यावहारिक राजनीति शास्त्र। [अप्लाइड पोटिकल सायंस]

उपर—(वि०, सं०) ऊर्ध्व, ऊंचा।

उपरक्त—(वि०, सं०) विपन्न। पीड़ा-ग्रस्त। (संज्ञा, पु०, सं०) राहु-ग्रस्त चंद्र या सूर्य।

उपरत—(वि०, सं०) विरक्त, उदासीन। मरा हुआ। शान्त। हटा हुआ।

उपरति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विषय से विराग, विरति, त्याग। उदासीनता, उदासी। मृत्यु, मौत। निवृत्ति, परित्याग।

उपरत्न—(संज्ञा, पु०, सं०) कम दाम के रत्न, घटिया रत्न, जैसे सीप, मरकत, मणि।

उपरना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ऊपर+ना—प्रत्य०] दुपट्टा, चद्दर, उत्तरीय। (अ०, क्रि०, दे०) [सं० उत्पटन] उखड़ना।

उपरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखिए उपरना। "गर्मी के दिन, धरे उपरनी सिर पर"—पंत।

उपरफट, उपरफट्टू—(वि०, दे०)[सं० उपरि+स्फुट] ऊपरी, बालाई, नियमित के अतिरिक्त। बेठिकाने का, बाहिरी, व्यर्थ का। "मेरी बाँह छोड़ि दे राधा करति उपरफट बातें"—सूबे०।

उपरवार—(संज्ञा, पु०, दे०) नदी के किनारे के ऊपर की भूमि। बाँगर जमीन।

उपरस—(संज्ञा, पु०, सं०) पारे के समान गुण करने वाले पदार्थ, जैसे गंधक (वैद्यक)।

उपरहित—(संज्ञा, पु०, दे०) पुरोहित (सं०) "प्रभु उपरहित-कर्म अति मंदा"—तुल०। [(संज्ञा, स्त्री०, दे०) **उपरहिती**—पुरोहिती, पुरोहित का कर्म।]

उपरांत—(क्रि०, वि०, सं०) अनंतर, बाद को, पश्चात्, पीछे, परे।

उपराग—(संज्ञा, पु०, सं०) रंग। किसी वस्तु पर उसके पास की वस्तु का आभास। (सांख्य)। विषय में अनुरक्ति, वासना। चंद्र या सूर्य-ग्रहण परिवाद। यंत्रणा। निंदा। राहु। "बिनु घर वह उपराग गह्यो"—(अ०)।

उपराचढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [दे० ऊपर+चढ़ना] चढ़ा ऊपरी, प्रतिद्वंद्विता, स्पर्द्धा।

उपराज—(संज्ञा, पु०, सं०) राज-प्रतिनिधि। वाइसराय। गवर्नर जनरल। *(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उपज, पैदावार।

उपराजना§—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उपार्जन] पैदा करना, रचना, उत्पन्न करना। कमाना,। बनाना, उपार्जन करना। "करि मनुहार सुधा धार उपराज हम"—रत्ना०।

उपराजा—(संज्ञा, पु०, सं०) युवराज, छोटा राजा। [(वि०) **उपराजना**]—(हि०) उपजाया हुआ, उगाया हुआ। उत्पन्न किया हुआ। विरचा या बनाया हुआ।

उपराज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अधीन राज्य। [सब्जेक्ट किंगडम]

उपराना§—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उपरि] ऊपर करना। उठाना, ऊपर लाना, ऊँचा करना। (क्रि०, अ०, दे०) ऊपर आना, प्रकट होना, उतराना।

उपराम—(संज्ञा, पु०, सं०) निवृत्ति, विरति, विराम। आराम।

उपराला*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ऊपर+ला—प्रत्य०] पक्ष-ग्रहण। सहायता। रक्षा, बचाव। "उपराला करि सक्यो न कोऊ"—छत्र०।

उपरावटा*—(वि०, दे०) [सं० उपरि+आवर्त] गर्व से सिर ऊँचा करने वाला। अकड़ा हुआ, ऐंठा हुआ। जिसका सिर ऊपर तना हो।

उपराहना‌—(क्रि०, अ०, दे०) प्रशंसा करना, सराहना।

उपराही—(क्रि०, वि०, दे०) ऊपर। "बरनौं माँग सीस उपराही"—प०। (वि०) श्रेष्ठ, बढ़कर, उत्तम। "धावहिं बोहित मन उपराही"—जायसी।

उपरि—(क्रि०, वि०, सं०) ऊपर, ऊर्ध्व। [(यौ०) **उपरिदृष्टि**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तुच्छ देवता की दृष्टि। वायु का प्रकोप।]

उपरिष्ठात—(क्रि०, वि०, सं०) ऊपर, ऊर्ध्व।

उपरिस्थ—(वि०, सं०) ऊपर स्थित। ऊपर का।

उपरी—(वि०, दे०) ऊपर का, ऊपरी। जोते खेत के ऊपर की मिट्टी। भूमि से उखाड़ी हुई मिट्टी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) उपली, कंडी, छाता।

उपरी, उपरा—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रतिद्वंद्विता, चढ़ा-ऊपरी, स्पर्धा। (क्रि०, वि०, दे०) ऊपर ही से।

उपरुद्ध—(वि०, सं०) रक्षित। प्रतिरुद्ध।

उपरूपक—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा नाटक, जिसके १८ भेद है।

उपरैना*—(संज्ञा, पु०, दे०) उपरना दुपट्टा। ""कंचन बरन पीत उपरैना सोभित साँवर अंग री"—सूर।

उपरैनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० उपरना] ओढ़नी।

उपरोक्त—(वि०) [हि० ऊपर+उक्त—सं०] ऊपर कहा हुआ, पूर्व कथित। उल्लिखित, पहिले कहा हुआ [शुद्ध रूप—**उपर्युक्त**—सं० उपरि+उक्त]।

उपरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) अटकाव, रुकावट। आच्छादन, ढकना। आड़। [ब्लाकेड]

उपरोधक—(वि०, सं०) रोकने या बाधा डालने वाला। भीतर का कमरा। [(वि०) **उपरोधित**—आच्छादित।]

उपरोहित—(संज्ञा, पु०, सं०) कुल गुरु, पुरोधा, पुरोहित। [(संज्ञा, स्त्री०) **उपरोहिती**—पुरोहित का कर्म, **उपरहिती** दे०]

उपरौटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ऊपर+पट] ऊपर का पल्ला (किसी वस्तु के)।

उपरौना—(संज्ञा, पु०, दे०) उपरना, (हि०) दुपट्टा।

उपर्ना—(संज्ञा, पु०, दे०) उपरना, (हि०) चद्दर, चादर।

उपर्युक्त—(वि०) [सं० उपरि+उक्त] उपरोक्त, ऊपर कहा हुआ।

उपर्युपरि—(अव्य०, यौ०, सं०) ऊपर-ऊपर, ऊपर के ऊपर।

उपर्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) उपल्ला (हि०)।

उपल—(संज्ञा, पु०, सं०) पत्थर, ओला। रत्न। मेघ। चीनी। बालू। "...उपलदेह धरि धीर"—तुल०। "होकर उपल बरसते हो अब"—हितैषी।

उपलक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) संकेत, चिह्न। दृष्टि, उद्देश्य।

उपलक्षक—(वि०, सं०) अनुमान करने वाला, ताड़ने वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) उपादान लक्षणा से अपने वाच्यार्थ के द्वारा निर्दिष्ट होने वाली वस्तु के अति-रिक्त प्राय: उसी कोटि की अन्यान्य वस्तुओं का भी बोध कराने वाला शब्द।

उपलक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) बोध कराने वाला चिह्न, संकेत। शब्द की वह शक्ति जिससे उसके अर्थ से निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्राय: उसी प्रकार की अन्यान्य वस्तुओं का भी बोध होता है। अन्यार्थ-बोधक, दृष्टान्त।

उपलक्षित—(वि०, सं०) सूचक चिह्न-युक्त। सूचित। जुड़ा हुआ।

उपलक्ष्य—(वि०, संज्ञा, पु०, सं०) संकेत। चिह्न। दृष्टि। उद्देश्य।—**में**—दृष्टि से। विचार से।

उपलब्ध—(वि०, सं०) पाया हुआ, प्राप्त। जाना हुआ।

उपलब्धार्थी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आख्यायिका। उपकथा।

उपलब्धि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उप+लभ+क्ति] प्राप्ति। ज्ञान, बुद्धि, मति। अनुभव।

उपला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्पल] ईंधन के लिए गोबर का सुखाया हुआ टुकड़ा। कंडा, गोहरा। [स्त्री० **उपली, उपरी** दे०]

उपलेख—(संज्ञा, पु०, सं०) मसविदा, आलेख, प्रारूप। [ड्राफ्ट]

उपलेखक—(संज्ञा, पु०, सं०) मसविदा बनावे वाला, आलेखक, प्रारूपकार। [ड्रा ·मैन]

उपलेप—(संज्ञा, पु०, सं०) लेप लगाना, लीपना। वह पदार्थ जिससे (जिसका) लेप करें।

उपलेपन—(संज्ञा, पु०, सं०) लीपने या लेप लगाने का कार्य। [**उपलेपित**-(वि०) लेप लगाया हुआ। **उपलिप्त**-(वि०) लीपा या लेप लगा हुआ। **उपलेप्य**-(वि०) लेपनीय, लेप के योग्य।]

उपल्ला—(संज्ञा, पु०) [दे० ऊपर+ला—प्रत्य०] किसी वस्तु का ऊपर वाला भाग, पर्त या तह। [**उपल्ली**-(स्त्री०) ऊपर बिछाने की चादर। जाजिम।] चाँदनी। (विलोम—भितल्ला)। "साँस लेत उड़िगो उपल्ला औ भितल्ला सबै"—बेनी०।

उपवन—(संज्ञा, पु०, सं०) बाग, बगीचा, फुलवारी, उद्यान। आराम। छोटा जंगल। कृत्रिम वन। "उपवन में ज्यों कलियाँ, नभ में तारकगण त्यों विकसे"—गिरीश।

उपवना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत्प्रयण] गायब होना। उदय होना। उड़ जाना। "मोद भरी गोद लिये लालित सुमित्रा देखि देव कहैं सब को सुकृति उपवियो है"।

उपवर्णना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दृष्टांत, उदाहरण। [इलस्ट्रेशन]

उपवर्ह, उपवर्हण—(संज्ञा, पु०, सं०) तकिया, उपधान। [**उपवहन** दे०]।

उपवसथ—(संज्ञा, पु०, सं०) गाँव, बस्ती। यज्ञ करने के पहिले का दिन जिसमें व्रत आदि के करने का विधान है।

उपवास—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+वस्+घञ्] भोजन-त्याग, फ़ाका, लंघन, अनाहार, अनशन, निराहार (बिना भोजन का) व्रत। [**उपास** दे०]

उपवासी—(वि०) [सं० उपवासिन, उप+वस्+णिन्] उपवासयुक्त, उपवास करने वाला, व्रती, उपोषी। [**उपासी** स्त्री०, दे०] [**उपासा** पु०, दे०]

उपविद्य—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+विद्+क्यप्] नाटक-चेटक आदि। शिल्पकारादि। शिल्पी।

उपविद्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शिल्पादि विज्ञान। कला, कौशल।

उपविधान—(संज्ञा, पु०, सं०) उपनियम। [बाई लॉ]

उपविभाग—(संज्ञा, पु०, सं०) अवर विभाग। ताल्लुका, जनपद के अंतर्गत छोटा विभाग। [सबडिवीजन]

उपविभागीय—(वि०, सं०) उपविभाग से सम्बन्ध रखने वाला। देखिए उपविभाग।—**करणिक**-(संज्ञा, पु०) उपविभाग का लिपिक [सबडिविजनल क्लर्क]।

उपविष—(संज्ञा, पु०, सं०) हलका विष, कम तेज जहर, जैसे अफीम, धतूरा, कुचला।

उपविषय—(संज्ञा, पु०, सं०) गौण विषय या कार्य। वह कार्य जो मुख्य रूप से विचारणीय न हो। [बाई मैटर]

उपविषयाधिकारिक—(संज्ञा, पु०, सं०) उपविषय का अधिकारी। [सब डिविजनल आफिसर]

उपविष्ट—(वि०) [सं० उप+विश्+क्त] आसीन, बैठा हुआ, आसनस्थ, कृतोपवेशन।

उपवीत—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ-सूत्र, जनेऊ। उपनयन।

उपवेद—(संज्ञा, पु०, सं०) वेदों से निकली हुई विद्याओं के शास्त्र। प्रत्येक वेद के उपवेद हैं,—**आयुर्वेद** (ऋग्वेद), **धनुर्वेद** (यजुर्वेद), **गान्धर्ववेद** (सामवेद), **स्थापत्यवेद** (अथर्वणवेद) इनके आचार्य एवं प्रचारक क्रमशः ब्रह्मा, (इन्द्र, धन्वन्तरि) भरत-मुनि, विश्वामित्र, और विश्वकर्मा है।

उपवेशन—(संज्ञा, पु०, सं०) बैठना, स्थित होना, जमना, आसीन होना। [वि० **उपवेशनीय**]

उपवेशित—(वि०, सं०) बैठा हुआ, आसीन।

उपवेशी—(वि०, सं०) बैठने या स्थित होने वाला।

उपवेश्य—(वि०, सं०) बैठान के योग्य। आसीन करने के योग्य।

उपशम—(संज्ञा, पु०, सं०) वासनाओं को दबाना। इन्द्रिय-निग्रह। निवृत्ति, शांन्ति। निवारण का उपाय, इलाज। प्रतीकार। ब्रह्मा।

उपशमन—(संज्ञा, पु०, सं०) शांत रखना। शमन, दमन, दबाना। उपाय से दूर करना, निवारण। [**उपशमनीय**-(वि०) निवारणीय, शमनीय। **उपशाम्य**-(वि०) उपशमन करने योग्य।—**उपशमित**-(वि०) निवारित, शांत।]

उपशमिता—(वि०, सं०) शान्त की हुई। "भवातुर पृथु उर की छलकें उपशमिता"—निराला।

उपशय—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+शी+अल्] निदान-पंचक के अंतर्गत रोगज्ञापक अनुमान।

उपशल्य—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+शाल+य] ग्रामान्त, ग्राम की सीमा। भाला।

उपशिष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) शिष्य का शिष्य। [स्त्री० **उपशिष्या**]

उपश्रुत—(वि०) [सं० उप+श्रु+क्त] प्रतिश्रुति। अंगीकृत, स्वीकृत। वाग्दत्त, प्रतिज्ञात।

उपसंपादक—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी कार्य में मुख्य कर्त्ता का सहायक या उसकी अनुपस्थिति में उसका काम करने वाला व्यक्ति। सहायक। सहकारी सम्पादक।

उपसंहार—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+सं+हृ+घञ्] हरण। परिहार, समाप्ति, खातमा। निराकरण, शेष, नाश। निष्कर्ष। मीमांसा-आक्रम। संग्रह। संक्षेप। व्यतीत। किसी पुस्तक का अंतिमाध्याय या भाग जिसमें उनके उद्देश्य या परिणाम का संक्षेप में कथन किया गया हो, सारांश।

उपस§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उप+वास—महक] दुर्गंध, बदबू।

उपसचिव—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रति सचिव, उपकर्म-सचिव। [डिप्टी सेक्रेटरी]।

उपसत्ति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उप+सद्+क्ति] उपासना, सेवा। सविनय गुरु-समीप गमन।

उपसना§—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उप+वास—महक] दुर्गंधित होना, सड़ना, बदबू करना।

उपसमिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपसभा, अवर-समिति। [सब कमिटी]

उपसंपादक—(संज्ञा, पु०, सं०) सहकारी सम्पादक, सहायक सम्पादक। [सब एडीटर]

उपसर्ग—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+सृज+घञ्] वह शब्द या अव्यय जो किसी शब्द के पूर्व लगाया जाता है और उसमे किसी अर्थ की विशेषता पैदा करता है, जसे, अन, अव, उप्, उत्, निर्, प्र, सम् आदि। रोग-भेद। उत्पात, उपद्रव। अशकुन। दैवी आपत्ति।

उपसर्जन—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+सृज+अनट्] ढालना। उपद्रव। गौणवस्तु अथवा व्यक्ति। त्याग। [वि० **उपसर्जनीय**]

उपसर्जित—(वि०, सं०) त्यागा हुआ। ढाला हुआ।

उपसर्पण—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+सृप्+अनट्] उपासना। अवगमन, अनुवृत्ति। [(वि०) **उपसर्पणीय**। **उपसर्पित**-(वि०) कृतानुवृत्ति। उपासित।]

उपसागर—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा समुद्र। समुद्र का एक भाग। खाड़ी।

उपसाना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० उपसना] बासी करना। सड़ाना।

उपसिद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपसिद्धान्त, परिणाम [कोरोलरी]।

उपसुन्द—(संज्ञा, पु०, सं०) सुन्द नामक दैत्य का छोटा भाई।

उपसैनिक—(संज्ञा, पु०, सं०) सैनिक शिक्षा पाने वाला व्यक्ति, भावी सैनिक [कैडेट]।

उपसेचन—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी से सींचना, या भिगोना, पानी छिड़कना। गीली चीज। रसा, शोरवा। [वि० **उपसेचनीय, उपसेचित**]

उपसेथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपवसथ, प्रा० उपसेथ] निराहार व्रत, उपवास, (जैन, बौद्ध)।

उपस्कर—(संज्ञा, पु०, सं०) अलंकार। घर की शोभा के सामान। जीवन की आवश्यक सामग्री। "तरु अनेक उपस्कर सज्जिता···"—हरिऔध।

उपस्त्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपपत्नी, रखेली।

उपस्थ—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+स्था+ड] नीचे या मध्य का भाग, पेड़ू। पुरुष-चिह्न। लिङ्ग। स्त्री-चिह्न, भग। गोद। (वि०) निकट बैठा हुआ।—**निग्रह**-(यौ०) जितेन्द्रियत्व। काम-दमन।

उपस्थगन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थगित करना, कुछ काल के लिये टाल देना, तत्काल सक्रिय न होना। [पोस्टपोनमेंट]

उपस्थल—(संज्ञा, पु०, सं०) चूतड़। कूल्हा। पेड़ू।

उपस्थाता—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+स्था+तृण्] भृत्य, सेवक, नौकर, दास।

उपस्थान—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+स्था+अनट्] निकट आना, सामने आना। अभ्यर्थना या पूजा के लिए समीप आना। खड़े होकर स्तुति करना। पूजा का स्थान। सभा। समाज।

उपस्थापक—(वि०, सं०) पास उपस्थित करने वाला, स्मरण दिलाने वाला। न्याय-सम्बन्धी कागज न्यायाधीश के समक्ष प्रस्तुत करने वाला।

उपस्थापन—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+स्था+णिच+अनट्] उपस्थितकरण। निकट आनयन (प्रेजंटेशन)। [वि० **उपस्थापनीय, उपस्थापित**]

उपस्नेह—(संज्ञा, पु०, सं०) छूना, सम्पर्क। नहाना, मुँह धोना।

उपस्वत्व—(संज्ञा, , सं०) जमीन या किसी जायदाद की आमदनी का अधिकार या हक।

उपस्थित—(वि०) [सं० उप+स्था+क्त] समीप-स्थित, निकट बैठा हुआ। आगत-आनीत। उपनीत, उपसन्न, सामने या पास आया हुआ। विद्यमान, हाजिर, मौजूद, वर्तमान। याद या ध्यान मे आया हुआ। **—वक्ता**-(संज्ञा, पु०) सद्वक्ता। वचन-पटु।**—कवि**-(वि०) आशुकवि।**—उत्तर**-(उपस्थितोत्तर) (वि०) हाजिर जवाब।

उपस्थिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार की वर्ण-वृत्ति ।

उपस्थिति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उप+स्था+क्ति] विद्यमानता, मौजूदगी, हाजिरी, प्राप्ति । [प्रजेन्स] **—पत्र**-नामावली जिसमें प्रतिदिन की हाजिरी लगाई जाये (मजदूरों आदि की) [मस्टर रोल] ।**—रजिस्टर**-हाजिरी का रजिस्टर । [अटेंडेंस रजिस्टर]

उपहत—(वि०) [सं० उप+हन्+क्त] नष्ट या बरबाद किया हुआ, बिगड़ा हुआ, दूषित । संकटापन्न, आघात-प्राप्त, क्षत । अशुद्ध । उत्पात-ग्रस्त । (संज्ञा, पु०, दे०) उपद्रव, उपाधि, ऊधम । [वि० **उपहती** दे० उत्पाती ।]

उपहसित—(वि०) [सं० उप+हस्+क्त] कृतोपहास, उपहास-प्राप्त । (संज्ञा, पु०) (उपहास) हास के छः भेदों में से चौथा । नाक फुलाकर आँखें टेढ़ी कर गर्दन हिलाते हुए हँसना ।

उपहार—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+हृ+घञ्] भेंट, नजर, नजराना । [प्रजेण्टेशन] सौगात, उपढौकन । शैवों की उपासना के छः नियम, हसित, गीत, नृत्य, डुडुकार, नमस्कार और जप । "तब क्या उपहार दूँ कहो—मैथिली० ।

उपहारी—(वि०, सं०) भेंट करने वाला, समर्पित करने वाला ।

उपहास—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+हस्+घञ्] परिहास, हँसी, दिल्लगी । निंदा, बुराई, ठट्ठा, निंदार्थ वाक्य । "खल-उपहास होय हित मोरा"—तुल० । (यौ०) **उपहासास्पद**-(वि०, सं०) उपहास के योग्य, निंदनीय । खराब, बुरा, हँसी उड़ाने योग्य ।

उपहासी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उपहास] हँसी, ठट्ठा, निंदा । "सो मम उर बासी यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहै"—तु० (रा०)

उपहास्य—(वि०) [सं० उप+हस्+ध्यन्] उपहास के योग्य, निन्दनीय, हँसने के योग्य ।

उपहास्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्हण, कुत्सा, निंदा, उपहास के योग्य होने का भाव ।

उपहित—(वि०) [सं० उप+धा+क्त] स्थापित ।

उपही*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ऊपर+हा प्रत्य०] अपरिचित व्यक्ति । बाहरी या विदेशीय, अनजान, परदेसी (दे०) । "ये उपही कोउ कुँवर अहेरो"—गो० ।

उपहूति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चुनौती ।

उपहृत—(हि०) [सं० उप+हृ+क्त] आनीत, दत्त ।

उपांग—(संज्ञा, पु०, सं०) अंग का भाग । अवयव । अप्रधान भाग । किसी वस्तु के अंगों की पूर्ति करने वाली वस्तु । क्षुद्र भाग । तिलक, टीका ।

उपांजन—(संज्ञा, पु०, सं०) लीपना, सफेदी चढ़ाना ।

उपांत—(संज्ञा, पु०, सं०) अंत के समीप का भाग । आस-पास का हिस्सा । प्रांत, भाग । छोटा किनारा । (वि०) निकट । अंतिक ।

उपांत्य—(वि०, सं०) अंत वाले के समीप का । अंतिम से पूर्व का ।

उपाइ (उपाउ)—(संज्ञा, पु०, दे०) उपाय (सं०) । तदबीर, साधन, युक्ति । "सूझ न एकौ अंक उपाऊ" —तु० (रा०) ।

उपाई—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उत्पन्न] उत्पन्न की, रची, उपजाई, बनाई । "जेहि सृष्टि उपाई"—तु० । [संज्ञा, स्त्री०, दे० **उपाइ (उपाय—**सं०)] ।

उपाऊ—संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपाय] यत्न, उपाय । इलाज ।

उपाकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्य-प्रारम्भ करने के सुअवसर पर निमंत्रण, बलिप्रदान, काय आरम्भ के अवसर पर वेद आदि का अध्ययन ।

उपाकर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) आरम्भ, वर्षाकालोपरान्त वेदारम्भ का समय । एक संस्कार ।

उपाकृत—(वि०, सं०) पास लाया हुआ । आहूत ।

उपाख्यान—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+आ+ख्या+अनट्] प्राचीन कथा, पुराना वृत्तान्त । किसी कथा के अंतर्गत कोई अन्य कथा । आख्यान, वृत्तान्त । [**उपखान**-(दे०) कहानी, लोकोक्ति ।] "यह उपखान लोक सब गावै"—स्फुट० ।

उपागम—(संज्ञा, पु०, सं०) निकट आना, पास आना । स्वीकृति ।

उपाग्रहण—(संज्ञा, पु०) शुद्ध संस्कारों के पश्चात् वेदाध्ययन शुरू करना ।

उपाटना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उत्पाटन] उखाड़ना ।

उपाड़ना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उत्पाटन] उखाड़ना ।

उपात—(वि०, सं०) गृहीत, प्राप्त ।

उपाति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उत्पत्ति (सं०) ।

उपादान—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+आ+दा+अनट्] प्राप्ति । ग्रहण । स्वीकार । ज्ञान, बोध, परिचय । अपने अपने विषयों की ओर इन्द्रियों का जाना । प्रत्याहार । प्रवृत्ति-जनक ज्ञान । स्वयंमेव

कार्य रूप में परिणत होने वाला कारण। किसी वस्तु के तैयार होने की सामग्री। चार आध्यात्मिक तुष्टियों में से एक, जिसमें मनुष्य एक ही बात से पूरे फल की आशा करके प्रयत्न छोड़ देता है (सांख्य)।

उपादेय—(वि०) [सं० उप+आ+दा—य] ग्रहण करने के योग्य, लेने लायक। उत्तम, श्रेष्ठ। ग्राह्य। उत्कृष्ट। विधेय, उपयोगी।

उपादेयता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०] उत्तमता, उत्कृष्टता।

उपाध—(संज्ञा, पु०, दे०) उपद्रव, अन्याय।

उपाधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) और वस्तु को और बतलाने का छल, कपट। वह व्यवधान जिसके संयोग से कोई वस्तु और की और अथवा किसी विशेष रूप में दिखाई दे। उपद्रव, उत्पात। कर्तव्य का विचार, धर्म-चिंता। प्रतिष्ठा या योग्यता-सूचक पद, खिताब। विघ्न, बाधा, अत्याचार। "मोहि कारन भै सकल उपाधी"—तु०। [**उपाधी**-(वि०, दे०) उपद्रवी, ऊधमी।]

उपाध्याय—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+अधि+इङ्+घञ्] वेद-वेदांग का पढ़ाने वाला, अध्यापक, शिक्षक, गुरु। ब्राह्मणों का एक भेद। [**उपध्या** दे०]

उपाध्याया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अध्यापिका।

उपाध्यायानी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपाध्याय की स्त्री, गुरु-पत्नी।

उपाध्यायी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अध्यापक-भार्या, गुरु-पत्नी। पढाने वाली, अध्यापिका।

उपान*—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० उत्पन्न] उत्पन्न करना। सोचना। उपार्जन करना, कमाना, करना, रचना, पैदा करना। "हौं मनते विधि पुत्र उपायों"—के०।

उपानत्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपानह (दे०)। पादुका, जूता।

उपानह—(संज्ञा, पु०, सं०) पादुका, जूता, पनही, पदत्राण। "…अरु पायँ उपानह की नहिं सामा"—नरो० दा०।

उपानुच्छेद—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा अनुच्छेद, अनुच्छेद का लघु रूप। [पैराग्राफ]

उपाय—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+आ+इ+अल्] पास पहुंचना, निकट आना। अभीष्ट तक पहुँचाने वाला साधन। युक्ति, तदबीर। उपचार, प्रयत्न।—**चतुष्टय**—शत्रु पर विजय पाने की चार युक्तियाँ—"साम, दाम, अरु दंड, विभेदा"—(राजनीति) शृङ्गार के दो साधन, साम और दाम।—**कुशल**—साधन सम्पन्न, कुशल व्यक्ति। [रिसोर्सफुल]—**चिंता**-(स्त्री०) कार्य-सम्पन्नता के लिए साधन की चिन्ता करना।—**तुरीय**-(पु०) हिंसात्मक साधन।

उपायन—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+यप्+अनट्] भेंट, उपहार, सौगात, नजर। व्रत की प्रतिष्ठा। समीप-गमन। ब० व० (उपाय) उपायों या प्रयत्नों। "…तोरत फूल उपायन मै"—रघु०।

उपाया—(क्रि०, सं०, दे०) उपराग (सं०)।

उपायी—(वि०, सं०) उपाय करने वाला। उपार्जक। खोजी। पास जाने वाला। स्त्री-प्रसंग के लिए जाने वाला। प्रयत्न-कुशल।

उपारनाꣳ—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उत्पाटना] उखाड़ना। "खायेसि फल अरु विटप उपारे"—तु० (रा०)।

उपार्जन—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+अर्ज+अनट्] लाभ करना, कमाना, पैदा करना, अर्जन। संचय, एकत्र करना। [**उपार्जनीय**-(वि०) प्राप्त करने योग्य।]

उपार्जित—(वि०) [सं० उप+अर्ज+क्त] संचित, कमाया हुआ, प्राप्त किया हुआ। संगृहीत, एकत्रित।

उपार्थ—(वि०, सं०) बहुत कम महत्त्व का।

उपालंभ—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+आ+लभ्+अल्] उलाहना, उराहनी (ब्र०), शिकायत, निंदा। [वि० **उपालब्ध**]

उपालंभन—(संज्ञा, पु०, सं०) उलाहना देना, निंदा करना। [**उपालंभनीय**-(वि०) उलाहने के योग्य। वि० **उपालंभित**, **उपालंभ्य**]।

उपावऽ—(संज्ञा, पु०, दे०) उपाय (सं०)। उपाउ (दे०)।

उपावर्त्तन—(पु०, सं०) वापस लौटना, चक्कर देना। निकट आना।

उपाश्रित—(वि०, सं०) अधीनस्थ, आधीन रहने वाला। [सबर्डिनेट]

उपासंग—(संज्ञा, पु०, सं०) निकट, सामीप्य, तुणीर।

उपास*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपवास] अनशन, लंघन। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपास्य] इष्टदेव, उपासना के योग्य।

उपासक—(वि०) [सं० उप+आस+ण्वुल्] पूजा या आराधना करने वाला, भक्त।

उपासन—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+आस+अनट्] सुश्रूषा, सेवा। आराधना। धनुर्विद्या। आनुगत्य।

उपासना—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उप+आस+अन्+आ] पास बैठने की क्रिया। आराधना, पूजा। टहल, परिचर्या, सेवा, सुश्रूषा। भक्ति। [वरशिप] (क्रि०, स०, दे०) उपासना या पूजा करना। सेवा करना। भजन करना, आराधना करना। "संध्याहि उपासत भूमिदेव"—के०।—**स्वातंत्र्य**—ईश्वर-पूजा करने की स्वतंत्रता। [फ्रीडम आफ वर्शिप] (अ०, दे०) [सं० उपवास] उपवास करना, व्रत रहना, निराहार या अनशन रहना।

उपासनीय—(वि०, सं०) सेवा करने योग्य, सेव्य, आराधनीय, पूजनीय। [स्त्री० **उपासनीया**]

उपासित—(वि०) [सं० उप+आस+क्त] आराधित, सेवित, पूजित। [स्त्री० **उपासिता**]

उपासी—(वि०) [सं० उपासिन्] उपासना करने वाला सेवक, भक्त, आराधक। "हम ब्रजवासी, प्रेम-पद्धति-उपासी ऊधौ"—रत्ना०। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) उपासना, पूजा, स्तुति। "संध्यासी तिहुं लोक के किहिनि उपासी आनि"—के०। (वि०, स्त्री०, दे०) (उपवास) कृतोपवास, निराहार व्रत करने वाली। [(पु०, वि०, दे०) **उपासा**।]

उपास्य—(वि०) [सं० उप+आस+य] उपासना या पूजा के योग्य, आराध्य, सेव्य, पूजनीय। "उसको ही उपास्य हम जाने"—गिरीश।

उपाहार—(संज्ञा, पु०, सं०) जलपान। स्वल्पाहार, संक्षिप्त भोजन।

उपेन्द्र—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र के छोटे भाई, वामन या विष्णु।

उपेन्द्रवज्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ग्यारह वर्णों का एक वृत्त "······उपेन्द्रवज्रा जतजस्ततो गौ"।

उपेक्षक—(वि०, सं०) उपेक्षा या अवहेलना करने वाला, उदासीन।

उपेक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) विरक्त होना, उदासीन होना, किनारा खींचना। घृणा करना, तिरस्कार करना। [**उपेक्षणीय**–(वि०) उदासीन होने योग्य।]

उपेक्षा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उप+ईक्ष्+ङ्] अस्वीकार, त्याग। उदासीनता, लापरवाही। विरक्ति, घृणा, तिरस्कार। [डिस रिगार्ड]

उपेक्षित—(वि०) [सं० उप+ईक्ष्+क्त] जिसकी उपेक्षा की गई हो, तिरस्कृत, निंदित, त्यक्त। [(स्त्री०) **उपेक्षिता**]

उपेक्ष्य—(वि०, सं०) उपेक्षा के योग्य।

उपेत—(वि०) [सं० उप+इ+क्त] युक्त, मिलित, आसन्न, एकत्र, समागत।

उपैना*—(वि०, दे०) [सं० उ+पल्लव] खुला हुआ, नङ्गा, नग्न। [**उपैनी**–(स्त्री०)] (क्रि०, अ०) (?) लुप्त हो जाना। उड़ जाना।

उपोत्पाद—(संज्ञा, पु०, सं०) फालतू पैदावार, अतिरिक्त उत्पत्ति। [बाई प्रॉडक्ट]

उपोद्घात—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+उत+हन्+घञ्] ग्रन्थ के प्रारम्भ का वक्तव्य, प्रस्तावना, भूमिका, प्राक्कथन। सामान्य कथन से भिन्न विशेष वस्तु के विषय में कथन। न्याय की छः संगतियों मे से एक। [प्रिलिमिनरी]

उपोषण—(संज्ञा, पु०) [सं० उप+वस+अनट्] अनाहर, उपवास, निराहार व्रत। [(वि०) **उपोषणीय**। **उपोषित**–(वि०) कृतोपवास। (वि०) **उपोष्य**—व्रत करने योग्य, उपवास के योग्य।]

उपोसथ—(संज्ञा, पु०, सं०) व्रत, बिना आहार का (बौद्ध)।

उफ—(अव्य०, अ०) आह, ओह, अफसोस।

उफड़ना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० उफनना] उबलना, उफान खाना, जोश खाना, टूट पड़ना। [**उफरना**–(दे०) टूट पड़ना।]

उफनना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत+फेन] उबलना, उभड़ना, उफान आना, उब्ल कर उठना। "उफनत तक चहूँ दिसि चितवति"—सूर०। जोश खाना (दूध आदि), उमड़ना।

उफनाना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उत+फेन] उबलना, उमड़ना, उफान आना, फेन आना। "······सारी छीर-फेन कैसी आभा उफनाति है"—रस०। *फेनयुक्त हो हाँफना। [**अफनाना**–(दे०)] "द्रौपदी कहति अफनाय राजपूती सबै"—रत्ना०।

उफान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत+फेन] गरमी पा कर फेन के साथ ऊपर उठना, (दूध आदि) उबाल। "तनक सीत जल सों मिटै, जैसे दूध उफान"।

उफाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० उफान] उबाल, उफान। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उत+फाल] लम्बी डग। "जल जाल काल कराल माल उफाल पार धरा धरी"—के०।

उफुक—(संज्ञा, पु०, अ०) आकाश का वह भाग जहाँ पृथ्वी और आकाश मिले हुए दिखाई देते हैं। क्षितिज। [(ब० व०) **आफाक**]

उबकना—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० उबाक] कै करना।

उबकाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ओकाई] मिचली, जी मचलाना, वमन, कै, मचलाई।

उबट*—(**संज्ञा**, पु०, दे०) [सं० उद्वार] अटपट या बुरा रास्ता। विकट मार्ग। (वि०) ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा।

उबटन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्वर्तन] शरीर पर मलने के लिए तिल, सरसों, चिरौंजी आदि का लेप। अभ्यंग, उपटन, बटना।

उबटना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्वर्तन] उबटन लगाना, बटना, मलना। "जेहि मुख मृगमद मलय उबटति"—भ्र०।

उबना*—(क्रि०, अ०, दे०) उगना, ऊपर उठना। [**ऊबना** दे०]

उबरण—(**संज्ञा**, पु०, दे०) उद्वर्तन। बचाव। आड़।

उबरना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्धारण] उद्धार पाना, निस्तार पाना, मुक्त होना, छूटना। शेष रहना, बाकी बचना, बचना, "कुछ दिन उबरते तौ घन काज करतै"—भू०। "उबरा सो जनवासहिं आवा"—तुल०। (क्रि०, अ०, दे०) उबलना। ऊपर उठना।—[**उबरा**-(वि०) बचा हुआ, शेष। स्त्री० **उबरी**]

उबलना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद—ऊपर+बलन—जाना] आँच या गरमी पाकर तरल वा द्रव पदार्थों का फेन के साथ ऊपर उठना, उफनना, उमड़ना, वेग से निकलना। खौलना।

उबलाना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० उबलना का प्रे० रूप] उबलने के लिए प्रेरित करना।

उबसना—(क्रि०, अ०, दे०) सड़ना, गलना।

उबहन—(**संज्ञा**, पु०, दे०) [सं० उद्वहन] कुएँ से पानी खीचने की रस्सी। [(स्त्री०) **उबहनी**]

उबहना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्वहन, प्रा० उब्बहन] ऊपर उठाना। हथियार खींचना। म्यान से निकालना। शस्त्र उठाना। पानी फेंकना, उलीचना। ऊपर की ओर उठाना, उभारना। जोतना। "दादू ऊसर उबहिकै"। (वि०, दे०) [सं० उपानह] बिना जूते का, नङ्गा।

उबहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उबहन, पानी खीचने की रस्सी (कूएँ की)। "खीचता उबहनो वह, बरबस"—पंत।

उबांतꣳ—(**संज्ञा**, स्त्री०, दे०) [सं० उद्वांत] उलटी, वमन, कै। (वि०) नंगे पैर, बिना जूतों के, उपानह-विहीन। (**संज्ञा**, पु०, दे०) कपड़ा बुनने में राछ के बाहर रह जाने वाला सूत। बह।

उबाना-(क्रि०, अ०, दे०) बोना, रोपना, लगाना। तंग करना, ऊबना, किसी के लिए आकुल होना। "भोर ही भुखात हैं हैं, घर कौ उबात हैं हैं—"।

उबार—(**संज्ञा**, पु०, दे०) [सं० उद्धारण] विस्तार, छुटकारा, उद्धार। ओहार, रक्षा, पर्दा। "नहिं निसिचर-कुल केर उबारा"—तुल०।

उबारना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्धारण] उद्धार करना, छुड़ाना, मुक्त करना, बचाना, रक्षा करना। "लाखागृह ते जात पांडु-सुत बुधि-बल नाथ उबारे"—सू०।

उबाल—(**संज्ञा**' पु०) [हिं० उबलना] आँच पाकर फेन सहित ऊपर उठना, उफान, उफाल। उद्वेग, क्षोभ, जोश।

उबालना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्वालन] तरल या द्रव पदार्थ को आँच पर रख कर इतना गरम करना कि वह फेन के साथ ऊपर उठने लगे। खौलाना, चुराना। जोश देना, पानी के साथ आग पर चढ़ा कर गरम करना, उसेना, पकाना। [(वि०) **उबला**, (स्त्री०) **उबली**।]

उबासी—(**संज्ञा**, स्त्री०, दे०) [सं० उश्वास] जमाई।

उबाहनाꣳ—(क्रि०, स०, दे०) उबहना।

उबिठना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० अव+इष्ट] जी भर जाने पर अच्छा न लगना।

उबीठना—(क्रि०, अ०, दे०) ऊबना, घबराना। "···दिन राति नहीं रतिरंग उबीठे"—देव।

उबीधना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्विद्ध] फसना, उलझना, धंसना, गड़ना, विद्ध हो जाना।

उबीधा—(वि०, दे०) [सं० उद्विद्ध] धंसा हुआ, गड़ा हुआ। काँटों से भरा हुआ। झाड़-झंखाड़ वाला।

उबेना*—(वि०, दे०) [हिं० उ—नहीं+उपानह सं०] नंगे पैर, बिना जूते के। "तबलौं उबेने पाँय फिरत पेटै खलाय"—कवि।

उबेरना*—(क्रि०, स०, दे०) उबारना, उद्धार करना, बचाना।

उबेहना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्वेधन] जड़ना, बैठाना, पिरोना।

उभ—(**संज्ञा**, पु०, सं०) ऊर्ध्व, ऊपर, द्वि, दो।

उभइ—(वि०, दे०) [सं० उभय] दोनों। [**उभै** दे०]

उभक—(**संज्ञा**, पु०, दे०) (प्रान्ती०) रीछ, भालू।

उभड़ना—(क्रि०, अ०, दे०) ऊपर उठना, उकसना, प्रगट होना, बढ़ना। [**उभरना**-(दे०)] किसी तल या सतह का आस-पास की सतह से ऊँचा होना। उकसना। फूलना। ऊपर निकलना। उत्पन्न होना, पैदा होना। खुलना, प्रकाशित होना। अधिक या प्रबल होना। चल देना, हट जाना। जवानी पर आना। गाय, भैंस आदि का मस्त होना।

उभना—(क्रि०, अ०, दे०) उठना, उभड़ना।

उभय—(वि०, सं०) दोनों, दो, युग्म, युगुल। [**उभै** (दे०)]। "उभय भाँति देखसि निज मरना"—तुल०।

उभयतः—(क्रि०, वि०, सं०) दोनों ओर से, पाश्वतः।

उभयतोमुखी—(वि०, सं०) दोनों ओर मुँह वाला। **—गो**-व्याती हुई गाय जिसके गभ से बच्चे का मुँह बाहर आ गया हो (इसके दान का बड़ा माहात्म्य कहा गया है)। **—विपुला**-(संज्ञा, स्त्री०) आर्या छंद का एक भेद। "सामान्य प्रतिपादन उभयपक्षी तर्क। [कामन प्लो]

उभयत्र—(क्रि०, वि०, सं०) दोनों ओर, दोनों तरफ।

उभरनाꣳ§—(क्रि०, अ०) [हि० उभरना] अहंकार करना, शेखी करना, उभड़ना। उतरना, बढ़ना, उठना।

उभराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) इतराना, उभड़ाव।

उभराना—(क्रि०, स०) [हि० उभरना का प्रे० रूप] बढ़ाना, उठाना।

उभरौंहा*—(वि०, दे०) [हि० उभरना+औंहाँ प्रत्य०] उभार पर आया हुआ, उभड़ा हुआ, ऊपर उठा हुआ।

उभा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०] चिंता, [सं० उभय—दोनों] द्विविधा। "सबहिं उभा मैं लगि रहा"—कबी०।

उभाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्भिदना] उठान। ऊँचापन। ऊँचाई। ओज, वृद्धि।

उभाड़दार—(वि०) [हि० उभाड़+दार फ़ा० प्रत्य०] उठा या उभरा हुआ। भड़कीला। ऊँचाई लिये हुए।

उभाड़ना—(क्रि०, सं०, दे०) [हि० उभड़ना का प्रे० रूप] भारी वस्तु को धीरे धीरे ऊपर उठाना। उकसाना। उत्तेजित करना। बहकाना।

उभानाꣳ—(क्रि०, अ०, दे०) सिर हिलाना। हाथ पैर पटकना, अभुआना। उठाना, उत्तेजित होना, आवेश मे आना। "एक होय तौ उत्तर दीजै सूर सु उठी उभानी"—सू०।

उभार—(संज्ञा, पु०, दे०) उभाड़, उठान।

उभारना—(क्रि०, स०, दे०) उभाड़ना, उठाना, उत्तेजित करना।

उभिरना*—(क्रि०, अ०, देश०) ठिठकना, हिचकना। [**अभिरना**-(दे०)] टकराना, ठोकर खाना। अटकना।

उभै*—(वि०, दे०) उभय (सं०) दोनों। [**उभौ** दे०]

उमंग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उद्+मंग—चलना] चित्त का उभाड़, सुखद मनोवेग। मौज, लहर। उल्लास, जोश, आनंद। हृष्टता। मग्नता, मगनता (दे०)। उमंग (दे०)। उभाड़, अधिकता, पूर्णता, हुलास।

उमंगना, उमँगनाꣳ—(क्रि०, अ०, दे०) उमंग-युक्त होना, प्रसन्न होना। उमँगना (दे०)। आवेश में आना, उल्लास में होना। उठना। "प्रेम उमँगि लोचन जल छाये"—तुल०। उमड़ना, उठना, उभरना। "गोपी ग्वाल बालन के उमँगा आँसु देखि" —रत्ना० (ऊ० श०)। "उमगत सिंधु दौरि द्वारका बचाई दिव्य"—रत्ना०। हुलास या उत्साह से आगे आना। [पू० का० क्रि० '**उमँगि**']

उमंगित—(वि०, दे०) उमंग-युक्त, हुलासित, उत्साहित, उल्लासित। आवेश-युक्त।

उमंगी—(वि०, दे०) उमंगवाला, हुलास वाला, उल्लासपूर्ण। आनंदी, तरंगी, जोशीला।

उमंडना—(क्रि०, अ०, दे०) उमड़ना, पानी, आदि का ऊपर उठना। खौलना। छाना। आवेश में आना, बढ़ना, उभड़ना। "उमंड़ि बहैं नद नीर" —वृ०।

उमक—(संज्ञा, पु०, अ०) गहराई।

उमग*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उमंग (हि०)।

उमगन, उमगनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उमंग।

उमगना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० उमंगना] उभड़ना, उमड़ना, भरकर ऊपर उठना। उल्लास में होना, हुलसना।

उमगाना—(क्रि०, स०, दे०) उभाड़ना, उत्तेजित करना, उमंगित करना, प्रसन्न करना, हुलसाना। (अ०, क्रि०, दे०) उमगना। "मति कष्ट सों दुखित माँहि रनहित उमगावत"—मुद्रा०। "हिय हिम सैल तै हमारे उमगानी है"—रसा०।

उमचना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उमंच] किसी वस्तु पर तलवों से अधिक दाब पहुँचाने के लिए कूदना। हुमचना, हुमकना, हुमसना, शरीर को झटके के साथ ऊपर उठाकर नीचे गिराना। चौंकना, चौकन्ना होना, सजग होना, सावधान या सतर्क होना।

उमड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उन्मंडन उमंड दे०] बाढ़, बढ़ाव, भराव, घिराव, धावा, आवेश। **—उठना**-रह रह कर वेद ग्रहण करना। "हो

उमड़ उमड़ उठते घन''—पंत ।—**पड़ना**—तरल पदार्थ का वेग से आना। आवेश युक्त होना। 'पीड़ा उमड़ पड़ी मानस में''—गिरीश।

उमड़ना—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० उमंग] द्रव वस्तु का आधिक्य के कारण ऊपर उठना। उतराकर बह चलना। उठकर फैलना। छाना, घेरना। आवेश में आना, जोश में होना। (क्रि०, अ०, दे०) [सं० उन्मंडन, उमेंड़ना दे०] उमड़ना, उभड़ना। ''···उमंडि ठोंकि लरिहौं''—पद्मा०।—**घुमड़ना** (**उमरना-घुमरना** दे०)—घूम घूम कर चारों ओर से फैलकर खूब घिर जाना या छा जाना (बादल) ''उमरि-घुमरि घन घोर घहरान लागे···''—रसा०।

उमड़ाना—(क्रि०, अ०, दे०) उमड़ना (हिं०, क्रि०, स०, दे०) उमड़ना (हिं०) का प्रेरणार्थक रूप। उभाड़ना, उत्तेजित करना। ऊपर उठाना।

उमदनाꣳ—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उन्मद] उमंग मे भरना, मस्त होना। उमगना, उमड़ना, प्रमत्त होना।

उमदा—(वि०, दे०) उम्दा [फ़ा०] अच्छा, बढ़िया।

उमदानाꣳ(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उन्मद] मतवाला होना, मद मे भरना, मस्त या प्रमत्त होना, उमंग या आवेश में आना, उन्मत्त होना।

उमर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० उम्र] अवस्था, वय, आयु, जीवनकाल, [**उमरिया** दे०, **उमिरि** दे०]

उमरा—(संज्ञा, पु०, अ०) अमीर का बहुवचन। प्रतिष्ठित लोग। सरदार, बड़े आदमी, रईस, अमीर।

उमराय, (उमराव)*—(संज्ञा, पु०, दे०) उमरा (अ०), सरदार, रईस।

उमरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) वह पौधा जिसे जलाकर सज्जीखार तैयार किया जाता है।

उमस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ऊष्म] हवा न चलने पर होने वाली गरमी, जिसमें पसीना खूब आता है और इसी से जी भी घबड़ाने लगता है।

उमसना*—(अ०, क्रि०, दे०) [हिं० उमस] उमस होना।

उमहना*—(क्रि०, अ०, दे०) उमड़ना (हिं०) छा जाना। उमंग में आना, प्रसन्न होना। उठना, उचकना या उछलना। ''कहै 'रतनाकर' उमहि गहि स्याम ताहि''—(ऊ० श०)।

उमहाना*—(क्रि०, स०, दे०) उमड़ाना, उमाहना, (उमहना का स० रूप) छा देना, उमंग में लाना।

उमा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उ+मा+आ] शिव की स्त्री, पार्वती। दुर्गा। हरिद्रा, हलदी। (दे०) अलसी (अतसी दे०)। कीर्ति। कांति। शान्ति। भगवती मैना और हिमांचल की कन्या थीं, इन्होंने शिवजी के लिए उग्र तप किया, जिसे देख माता मैना ने कहा ''उमा'' तपस्या मत करो, अतएव इनका नाम उमा पड़ गया। ''···अगनित उमा रमा ब्रह्माणी''—तुल०। **पति**-(संज्ञा, पु०) शंकर जी, महादेव।

उमाकनाꣳ—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उ=नहीं+मंक] खोद कर फेंक देना, नष्ट करना, उपाटना, उखाड़ना। (स०, क्रि०, दे०) उन्मूलन करना।

उमाकिनी§ꣳ—(वि०, स्त्री०, दे०) उखाड़न वाली, खोद कर फेंक देने वाली, उन्मूलित करने वाली, नष्ट करन वाली।

उमाचना*—(क्रि० स० दे०) [सं० उन्मंचन] उभाड़ना, ऊपर उडाना, निकालना। ''कहूँ नैननि तै नहिं लाज उमाची''—रवि०।

उमाद*—(संज्ञा, पु०, दे०) उन्माद (सं०), पागलपन। [वि०, **उमादी** दे० उन्मादी, पागल।]

उमाधा—(संज्ञा, पु०, दे०) उमापति, शंकरजी।

उमाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० उमहना] उत्साह, उमंग, जोश, आवेश, हुलास।

उमाहना—(क्रि०, अ०, दे०) उमड़ना, उमहना, मौज या आवेश में आना। (क्रि०, स०) उमड़ाना, उमगाना। ''साहस कै कछुक उमाहि पूछिबे को चाहि''—रत्ना० (ऊ० श०)।

उमाहल*—(वि०, दे०) [हिं० उमाह] उमंगित, उमंग से भरा हुआ, उत्साहित।

उमूर—(संज्ञा, पु०, अ०) अमु का ब० व०। बहुत से काम।

उमेठन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उद्वेष्टन] ऐंठन, मरोड़, पेंच, बल।

उमेठना, उमैठना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उद्वेष्टन] ऐंठना, मरोड़ना। ···''उमंग मैं उमैठो है''—रसा०।

उमेठवाँ—(वि०, दे०) [हिं० उमेठना] ऐंठदार, घुमावदार, ऐंठनदार, पेंचदार।

उमेड़ना—(क्रि०, स०, दे०) उमेठना, उमैठना, ऐंठना।

उमेलनाꣳ—(क्रि०, स० दे०) [सं० उन्मीलन] खोलना, प्रगट करना, वर्णन करना, बयान करना।

उमेश—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, ईश्वर, महादेव। —**सुत**-(संज्ञा, पु०, सं०) कार्तिकेय, गणेश।

उम्दगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अच्छाई, भलापन, खूबी ।

उम्दा—(वि०, अ०) अच्छा, भला, बढ़िया ।

उम्म—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) माँ, जननी ।

उम्मत—(संज्ञा, स्त्री०. अ०) किसी मत के अनुयायियों की मंडली, जमाअत, समिति, समाज । औलाद, संतान (परिहास) । पैरोकार, अनुयायी । साम्प्रदायिक दल ।

उम्मस—(संज्ञा, स्त्री०) पीड़ा, कष्ट ।

उम्मीद, उम्मेद—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आशा, भरोसा, आसरा । "ऐ मेरी उम्मीद मेरी जाँ निवाज़"—

उम्मेदवार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) आशा या भरोसा रखने वाला, काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से किसी दफ़्तर में बिना वेतन के काम करने वाला, किसी पद पर चुने जाने या लिये जाने के लिये खड़ा होने वाला आदमी, [कण्डिडेट] किसी परीक्षा में बैठने के लिए प्रार्थना पत्र भेजने वाला, प्रार्थी । [**उम्मेदवारी** (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) किसी दफ़्तर में नौकरी पाने की आशा से बिना वेतन ही काम करना, आसरा, भरोसा ।]

उम्र—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अवस्था, आयु, वयस, जीवन-काल । **मुहा०—एक—में**-अधिक समय में "वह भी एक उम्र में हुआ मालूम" ।**—का पैमाना या प्याला भर जाना**—जीवन काल का अवसान या अंत आना ।**—हेरना**-किसी प्रकार जीवन के दिन काटना । [**उमर, उमिर, उमिरिया** दे०] ।

उरंग, उरंगम—(संज्ञा, पु०, सं०) सर्प, साँप, उरग ।

उर—(संज्ञा, पु०) [सं० उरस] वक्षःस्थल, छाती, हृदय, मन, चित्त । (वि०, सं०) श्रेष्ठ, अच्छा, उत्तम ।**—क्षत**—हृदय का घाव, उर-पीड़ा, हृदय-रोग । "उर उर से आसक्ति अतोल" ।—'गिरीश' ।

उरकना*—(क्रि०, अ०, दे०) रुकना, ठहरना ।

उरग—(संज्ञा, पु०) [सं० उरस्+गम्+ड] साँप, सर्प, नाग । "नाक उरग झष व्याकुल मरता" ।

उरगना*—(क्रि० स० दे०) [सं० उरगीकरण] स्वीकार करना, सहना, ग्रहण करना, जोगवना । "जो दुःख देय तौ लै उरगौ सब बात सुनौ"—तु० (क्रि०, अ०) ग्रहण (चंद्र या सूर्य) से मुक्त होना ।

उरगाद—(संज्ञा, पु०, सं०) सर्प-भक्षक, गरुड़, विष्णु-वाहन ।

उरगाय—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, सूर्य । प्रशंसा । "दासतुलसी कहत मुनिगन जयति जय उरगाय" —तुल० (विन०) । (वि०) प्रशंसित, फैला हुआ । (क्रि०, अ०) ग्रहण-मुक्त होना ।

उरगारि—(संज्ञा, पु०) [सं० उरग+अरि] गरुड़, पन्नगारि, वैनतेय । सर्पों का खाने वाला । नकुल ।

उरगाशन—(संज्ञा, पु०, सं०) गरुड़, मोर ।

उरगिनीꕤ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उरगी] सर्पिणी, नागिन ।

उरभ्र—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भेड़ी ।

उरज, उरजात*—(संज्ञा, पु०) [सं० उरोज] उरोज, कुच, स्तन । "ये नैना सैना करैं, उरज उमैठे जाँहि"—रहो० ।

उरझना*—(क्रि०, अ०, दे०) उलझना, (हि०) फसना, लिपटना, लिप्त होना, अटकना, आसक्त होना । "जिन महँ उरझत विबुध विमाना"—तुल० (रा०) ।

उरझाना—(क्रि०, स०, दे०) [उरझना का स० रूप] उलझाना, फँसाना, अटकाना, लिप्त रखना । (क्रि०, अ०) फँसना । "उर उरझाही"—तुल० (रा) ।

उरझेर—(संज्ञा, पु०, दे०) झकोरा । "पानी की सो घेर किधौं, पौन उरझेर किधौं"—सुन्द० ।

उरण—(संज्ञा, पु०, सं०) भेड़ा, मेढ़ा यूरनस नामक ग्रह ।

उरणक—(संज्ञा, पु०, सं०) भेड़ा, बादल, मेघ ।

उरद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऋद्ध, प्रा० उद्ध] एक प्रकार का पौधा जिसके दानों की दाल होती है, माष । **मुहा०—के आटे की तरह एंठना**—क्रोध करना, अभिमान करना ।**—पर सफेदी**—बहुत स्वल्प परिमाण, अत्यन्त कम मात्रा ।

उरधꕤ—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० ऊर्ध्व] ऊपर, ऊर्ध्व । [**ऊरध** दे०]

उरधारना—(क्रि०, स०, दे०) उधेड़ना, फैलाना।, बिखराना । [उर+धारना] हृदय में रखना ।

उरप-तरप—(संज्ञा, पु०) नृत्य का एक भाग ।

उरबसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उर्वशी] एक अप्सरा, एक भूषण । [उर+बसी हि०] दिल मे बसी हुई । "तू मोहन के उर बसी, ह्वै उरबसी समान"—वि० ।

उरबीꕤ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उर्वी] पृथ्वी, धरती ।

उरमना§—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० **अवलंबन**, प्रा० ओलंबन] लटकना। "तहँ कलसन पै उरमत। सुठार"—के० (राम०)

उरमाना*—(क्रि०, स०, दे०) [हि० उरमना] लटकाना।

उरमाल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० रूमाल] रूमाल। [यौ० उर+माल] हृदय पर पड़ी हुई माला।

उरमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पीड़ा, दुःख। "तू तौ षट उरमी-रहित"—सुन्द०।

उरी—(अव्य०, सं०) स्वीकार। [(वि०) **उरीकृत** स्वीकृत।]

उरला—(वि०, दे०) [सं० आपर, अवर+हि० ला प्रत्य०] पिछला, बिरला, निराला।

उरविज*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उर्वी+ज—उत्पन्न] भौम, मंगल।

उरस—(वि०) [सं० कुरस] फीका, नीरस। (संज्ञा, पु०, सं०, उरस्) छाती, वक्षःस्थल, हृदय।

उरसना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० उड़सना] ऊपर-नीचे करना, उथल-पुथल करना, चलाना। "स्वास उदर उरसति यों मानौ दुग्ध-सिंधु छवि पावै"—सूर०।

उरसि—(संज्ञा, पु०, सं०) हृदय मे। उरसि कामना लहरायी—'गिरीश'।

उरसिज—(संज्ञा, पु०, सं०) स्तन, उरोज।

उरसिरुह—(संज्ञा, सं०) उरोज, स्तन, उरसिज।

उरसिल—(वि०, सं०) चौड़े वक्ष वाला।

उरस्क—(संज्ञा, पु०, सं०) वक्ष स्थल, छाती।

उरस्त्राण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कवच, बख्तर।

उरहन*—[उरहना] (संज्ञा, पु०, दे०) उलाहना, उराहनो, ओरहन (दे०)।

उरा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उर्वी] पृथ्वी।

उराना, उरा जाना—(क्रि०, अ०, दे०) चुकना, खतम होना, समाप्त। "भूरि भरे हिय के हुलास न उरात है"—(ऊ० श०)।

उरारा*—(वि०, दे०) [सं० उरु] विस्तृत, विशाल, बड़ा।

उराव (उराय)—[उराउ, उराऊ] (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उरस्+आव प्रत्य०] चाव, उमंग, हौसला, उत्साह, चाह, खुशी। "तुलसी उराव होत राम को सुभाव सुनि"—(कवि०)।

उराहना—(संज्ञा, पु०, दे०) उलाहना।

उरिण (उरिन)—(वि०, दे०) उऋण, ऋण से मुक्त।

उरु—(वि०, सं०) विस्तीर्ण, विशाल, बड़ा। **विशेष** मूल्य वाला, श्रेष्ठ। *(संज्ञा, पु०, सं० ऊरु) जाँघ, जंघा।—**पथ**—राजमार्ग।—**व्यची**—(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस।

उरूज—(संज्ञा, पु०, अ०) बढ़ती, वृद्धि।

उरुजना—(क्रि०, अ०, दे०) उरझना फँसना।

उरुवा§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उलूक, प्रा० उलूअ] रूरूआ, उल्लू।

उरूस—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दुलहिन, बधू।

उरे§—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० अवर] परे, आगे, दूर।

उरेखना*—(क्रि०, सं०, दे० **अवरेखना** सं०) उरेहना चित्र खींचना। देखना। चिंता करना।

उरेब—(वि०, फ़ा०) टेढ़ा, वक्र, तिरछा, छलपूर्ण।

उरेव—(संज्ञा, पु०, दे०) उलझन, वंचना।

उरेह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उल्लेख] चित्रकारी।

उरेहना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उल्लेखन] खींचना, लिखना, रचना, रँगना, लगाना, (चित्र)।

उरोगम—(संज्ञा, पु०, सं०) साँप।

उरोग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) पार्श्व पीड़ा (प्ल्यूरिसी)।

उरोज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उरस्+जन+ड] स्तन, कुच। 'उमड़ी पड़ती थीं उरोज उठाये'—'हितैषी'।

उरोजनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) युवती। 'उतफुल्ल उरोजिनी जैसी सरोजिनी।—'हितैषी'।

उरोरुह—(संज्ञा, पु०, सं०) उरोज, स्तन, कुच।

उरोविबंध—(पु०, सं०) दमा।

उर्जित—(वि०) [सं० उर्ज+क्त] वर्धित, उन्नत, उत्सृष्ट।

उर्णा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऊन (भेड़ आदि का)।

उर्द—(संज्ञा, पु०, दे०) अन्न विशेष जिससे दाल बनती है, उरद, माष।

उर्दपर्णी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० उर्द+पर्णी सं०] बनउरदी।

उर्दू—(संज्ञा, स्त्री०, तु०) फ़ारसी लिपि में लिखी जाने वाली अरबी फ़ारसी के शब्दों से युक्त हिन्दी। —**एमुअल्ला**-(स्त्री०) अरबी फ़ारसी शब्दों से बोझिल उर्दू।—**बाजार**-(संज्ञा, पु०) [हिं० उर्दू+बाजार] लश्कर का बाजार, बड़ा बाजार।

उर्ध*—(वि०, दे०) ऊर्ध्व (सं०) ऊरध (ब्र०) ऊपर।

उर्फ़—(संज्ञा, पु०, अ०) उपनाम, चलतू नाम।

उर्मि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ऊर्मि (सं०) लहर।

उर्मिल-गान—(संज्ञा, पु०, सं०) लहर युक्त गीत। 'स्पृहाएँ उर्मिल गान'—पंत।

उर्मिला—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० ऊर्मिला] सीता जी की छोटी बहिन जो लक्ष्मण को ब्याही थी। सीरध्वज जनक की पुत्री। [(दे०) **ऊरमिला**।]

उर्वरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपजाऊ भूमि, पृथ्वी। एक अप्सरा। (वि०, स्त्री०) [उर्वर] उपजाऊ, जरखेज (भूमि)।—**भूमि**-उपजाऊ भूमि। [फर्टाइल लैंड]।

उर्वशी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अप्सरा जो नारायण की जाँघ से उत्पन्न हुई थी। इसे देख नर-नारायण का तपोभंग करने वाली इंद्र को अप्सरायें लौट गई थीं।

उर्वी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उरु+ई] पृथ्वी, धरती।

उर्वीजा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीता, उर्विजा, जानकी।

उर्वीधर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पर्वत, शेषनाग।

उलंग*—(वि०, दे०) [सं० उलग्न] नग्न, नंगा, विवस्त्र, दिगंबर।

उलंघन—(संज्ञा, पु०, दे०) उल्लंघन। (दे०) उलँगना, उलँघना।

उलंघना*—[उलाँघना] (क्रि०, स०, दे०) [सं० उल्लंघन] लाँघना, डाँकना, फाँदना, न मानना, अवज्ञा करना, उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना।

उलका*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उल्का (सं०) अग्नि-पिंड, मसाल।

उलचना—(उलछना) (क्रि०, स०, दे०) छितराना, फैलाना, फेंकना, बखेरना। छानना, पसाना। उलीचना।

उलछारना—(क्रि०, स०, दे०) उछालना (हि०)। प्रगट करना। ऊपर फेंकना।

उलझन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अवरुन्धन] अटकाव, फसाव। गिरह, गाँठ। बाधा। पेंच। फेर, चक्कर। समस्या। व्यग्रता, चिंता। तरद्दुद। [वि० **उलझा**। स्त्री० **उलझी**]।

उलझना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अवरुन्धन] फँसना, अटकना, लपेट में पड़ना, घुमावों में फँस जाना, लिपटना, काम में लीन होना। तकरार करना, लड़ना, कठिनाई में पड़ना, अटकना, रुकना, बल खाना, टेढ़ा होना, (विलोम-सुलझना)। [**उरझना** दे०]।

उलझाना—(क्रि०, स०) [हि० उलझना] फँसाना, अटकाना, लिप्त रखना। *(अ०, क्रि०) उलझना, फँसना।

उलझाव—(संज्ञा, पु०) [हि० उलझना] अटकाव, झगड़ा, झंझट, चक्कर, फेर, कठिनाई। [**उलझेड़ा** दे०]।

उलझौहाँ—(वि०) [हि० उलझना] फँसाने या अटकाने वाला, मुग्ध करने या लुभाने वाला।

उलटकंबल—(संज्ञा, पु०) रस्सी बनाने और दवा के काम आने वाला एक पौधा।

उलटना—(क्रि०, अ०, दे०) [उल्लोठन] ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर होना। औंधा होना, पलटना। पीछे मुड़ना, घूमना। उमड़ना, टूट पड़ना। अस्त व्यस्त होना, विपरीत होना, विरुद्ध और क्रुद्ध होना, चिढ़ना। नष्ट होना, बेहोश या बेसुध होना, गिरना। गाय भैंस आदि का जोड़ा खाकर गर्भ न धारण करना और फिर जोड़ा खाना। इतराना, घमंड करना। (क्रि०, सं०) ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर करना, औंधाना, उलटना, फेरना, औंधा गिराना, पटकना, लटकी हुई चीज को समेट कर ऊपर चढ़ाना। अंड-बंड करना, और का और, विपरीत या विरुद्ध करना। उत्तर-प्रत्युत्तर देना, बात दोहराना। खोदना, उखाड़ना। बीज मारे जाने पर फिर से बोने के लिए जोतना। बेसुध या बेहोश करना। कै या वमन करना। उँड़ेलना, नष्ट करना। रटना, जपना, दोहराना। [**उलठना** दे०]।

उलट-पलट (**पुलट**)—(संज्ञा, स्त्री०) [हि०] अदल-बदल, अव्यवस्था, गड़बड़ी, अस्त-व्यस्त। (वि०) गड़बड़, व्यवस्थाहीन।

उलट-फेर—(संज्ञा, पु०) [हि०] अदल-बदल, हेर-फेर, परिवर्तन, भली-बुरी दशा।

उलटा—(वि०) [हि० उलटना] औंधा, विपरीत, क्रम-विरुद्ध। [(स्त्री०) **उलटी**] (संज्ञा, स्त्री०) वमन, कै, कलाबाजी। **मुहा०**—(**टी**) **साँस चलना**—दम उखड़ना (मृत्यु लक्षण)।—(**टी**) **साँस लेना**—विपरीत रूप से साँस खींचना, मरने के निकट होना।—(**टे**) **मुँह गिरना**—दूसरे को नीचा दिखाने के बदले स्वयं नीचा देखना।—**फिरना** (**लौटना**)—बिना ठहरे तुरंत लौटना।—(**टे**) **पैर जाना**—लौटना, फिर जाना।—(**टी**) **गंगा बहाना**—अनहोनी बात होना, उलटे काम करना, विपरीत कार्य करना।—(**टी**) **माला फेरना**—बुरा मनाना, अहित चाहना।—(**टे**) **छूरे से मूँड़ना**—उल्लू बना कर काम निकालना। (वि०) काल-क्रम में आगे का पीछे और पीछे का आगे, बे ठिकाने, अनुचित, अंड-बंड, अयुक्त, इधर का

उधर।—जमाना—अंधेर का समय, वह समय जब भली बात बुरी समझी जाय।—सीधा—अव्यवस्थित, अंडबंड।—(टी) सीधी सुनाना—खरी खोटी कहना, भला-बुरा सुनाना, फटकारना।—(टी) खोपड़ी—मूर्ख, जड़। (संज्ञा, पु०) बेसन से बना हुआ एक प्रकार का पक्वान्न।

उलटाना᳁(क्रि०, स०) [हिं० उलटना] पलटाना, लौटाना, अन्यथा करना या कहना, पीछे फेरना, उलटा करना।

उलटा-पलटा (पुलटा)—(वि०) [हिं०] अंडबंड, बेतरतीब, इधर का उधर।

उलटा-पलटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फेर का हेर-फेर। [उलटी पलटी-(वि०) विरुद्ध, अंडबंड।]

उलटाव—(संज्ञा, पु०) [हिं०] घुमाव, चक्कर, पलटाव, फेर।

उलटी सरसों—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं०] नीचे मुँह वाली कलियों की सरसों जो जादू टोन में काम आती है।

उलटे—(क्रि०, वि०) [हिं०] बे ठिकाने, विरुद्ध, न्याय से विपरीत।

उलथना᳁—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्+स्थल—जमना] उथल-पुथल होना, उलटना, ऊपर नीचे होना, उछलना। (क्रि०, स०) उलट-पलट करना। "लहरें उठीं समुद उलथाना"—प०।

उलथा—(संज्ञा, पु०, हिं०) नाचते समय ताल से उछलना, कलाबाजी, कूला से कूदना। उलटी, उडी। अनुवाद, करवट बदलना (पशुओं के लिए)।

उलद᳁—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) झड़ी, वर्षण।

उलदना᳁—(क्रि०, स०, दे०) उलटना, उँडेलना, गिराना। (क्रि०, अ०) खूब बरसना। "बारिधारा उँलदै जलद ज्यों न सावानों"—कविता०।

उलफत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मुहब्बत, प्रेम।

उलमना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अवलंबन] लटकना, झुकना।

उलरना᳁—(क्रि०, अ०, दे०) उछलना, कूदना। लेटना, झपटना, नीचे ऊपर होना।

उलरुआ—(संज्ञा, पु०) वह लकड़ी जो गाड़ी को उलार होने से रोकती है।

उललना᳁—(क्रि०, अ०) [दे० उड़ेलना] ढरकना, ढलना, उलटना।

उलवी—(वि०, अ०) स्वर्गिक, स्वर्गीय।

उलसना᳁—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उल्लसन] शोभित होना, सोहना।

उलहना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उल्लंसन] उभड़ना, उमड़ना। हुलसना। फूलना। निकलना। खिलना। "बालतन यौवन रसाल उलहत लखि"—रस०। (संज्ञा, पु०, हिं०) उराहना, शिकायत।

उलाँघना—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० उल्लंघन] लाँघना, फाँदना, अवज्ञा करना, न मानना, अवहेलना करना। घोड़े पर पहले पहल चढ़ना (चाबुक सवार)।

उलार—(वि०, दे०) [हिं० ओलरना—लेटना] पीछे की ओर झुका हुआ (गाड़ी, बोझ से)।

उलारना§—(क्रि०, स०) [हिं० उलरना] उछालना, नीचे ऊपर फेंकना। (क्रि०, स०, दे०) ओलरना। लेटना।

उलाहना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपालम्भ] किसी की हानिप्रद भूल या चूक को दुःख पूर्वक कहना, गिला। किसी के अपराध या दोष को उससे या उसके किसी सम्बन्धी व्यक्ति से सखेद कहना। [(दे०) **उराहना**] (क्रि०, स०) उलाहना देना, दोष रखना। निन्दा करना।

उलिचना, उलीचना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उल्लुंचन] हाथ या बरतन से पानी उछाल कर फेंकना, खाली करना। "सागर सीप कि जाँहि उलीचे"—तु० (रा०)।

उलूक—(संज्ञा, पु०, सं०) उल्लू चिड़िया। इन्द्र। दुर्योधन का दूत। वैशेषिककार कणादि मुनि का एक नाम (पू० ई० ५००)।—**दर्शन**-(यौ०) वैशेषिक दर्शन। [(वि०) **औलूक्य**] (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उल्का] लुक, लौ।

उलूखल—(संज्ञा, पु०, सं०) ओखली, खल, गुग्गुल, खरल।

उलेड़ना᳁—(क्रि०, सं०, दे०) [हिं० उड़ेलना] ढरकाना, उँडेलना, ढालना।

उलेल᳁—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० कुलेल] उमंग, जोश, उछल-कूद, बाढ़। (वि०) बेपरवाह, अलहड़।

उल्का—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रकाश, तेज, लुक, लुआठा, मशाल, चिराग, दीया, रात्रि में आकाश के एक ओर से दूसरी ओर वेग से जाते और गिरते हुए दिखाई देने वाले एक प्रकार के चमकीले प्रकाश पिंड, इनके गिरने को "तारा टूटना" कहते हैं।—**पात**-(संज्ञा, पु०, सं०) तारा टूटना, लुक गिरना, उत्पात, विघ्न।—**पाती**-(वि०, सं०) दंगा करने वाला, उत्पाती।—**मुख**-(संज्ञा, पु०, सं०) गीदड़। एक प्रकार का प्रेत जिसके मुँह से आग निकलता है, अगिया बैताल। शिव का नाम।

उल्था—(संज्ञा, पु०) [हिं० उलथना] भाषांतर, अनुवाद, तरजुमा।

उल्मुख—(संज्ञा, पु०, सं०) अंगारा, कोयला।

उल्लंघन—(संज्ञा, पु०, सं०) लाँघना, अतिक्रमण। न मानना, अवहेलना करना, डाँकना।

उल्लंघना*—(क्रि०, स०, दे०) उलाँघना (दे०)।

उल्लकसन—(संज्ञा, पु०, सं०) रोमांच, कम्पन।

उल्लसन—(संज्ञा, पु०, सं०) हर्षण, रोमांच, आनन्द, प्रमोद। [**उल्लसित**-(वि०) प्रसन्न। **उल्लासी**-(वि०) आनंदी।]

उल्लाप्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उपरूपक का एक भेद, एक गीत।

उल्लाल—(संज्ञा, पु०, सं०) एक मात्रिक अर्धसम छन्द (१५+१३ मात्राओं का)।

उल्लाला—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का मात्रिक छंद (१५+१३ मात्राओं का)।

उल्लास—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश, हर्ष, आनन्द। ग्रन्थ का एक भाग, पर्व। एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक के गुण दोष से दूसरे में गुण दोष का होना दिखलाया जाता है। [**उल्लसित**-(वि०) उल्लास युक्त] "अनासक्ति सी मुक्त सरलता कितना रस, कितना उल्लास"—गिरीश। "यही उल्लसित चपल तरंग"—गिरीश। [**उल्लासक**-(वि०) [सं०] आनन्दी, प्रसन्न करने वाला।]

उल्लासन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकट या प्रकाशित करना, हर्षित या प्रसन्न होना।—**उल्लासना**-(क्रि०, स०)।—**उल्लासी**-(वि०) आनन्दी, सुखी। [स्त्री० **उल्लासिनी**]।

उल्लिखित—(वि०, सं०) खोदा हुआ, उत्कीर्ण। छीला या खरादा हुआ। चित्रित, ऊपर लिखा हुआ, लिखित, खींचा हुआ।

उल्लू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उलूक] एक पक्षी जो दिन में नहीं देखता। खूसट। (वि०) बेवकूफ, मूर्ख। लक्ष्मी वाहन। **मुहा०—बनाना**—मूर्ख बनाना। **कहीं—बोलना**—उजाड़ होना, मूर्खता या जड़ता का प्रसार होना।—**सीधा करना**—बेवकूफ बनाकर काम निकालना।

उल्लेख—(संज्ञा, पु०, सं०) लिखना, वर्णन, लेख चर्चा, जिक्र, चित्रण, खींचना। एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक ही वस्तु को अनेक रूपों में (एक ही या भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के द्वारा) दिखाया जाता है।

उल्लेखन—(संज्ञा०, पु०, सं०) लिखना, चित्रण। [**उल्लेखनीय**—(वि०, सं०) लिखने के योग्य प्रसिद्ध, वर्णनीय।]

उल्लोच—(सं०, पु०) [सं० उत्+लुच्+अल्] चाँदनी, चंद्रिका।

उल्लोल—(सं०, पु०, सं०) कल्लोल, हिलोर, लहर।

उल्व (उल्वण)—(सं०, पु० सं०) आँवर, गर्भाशय, जरायु गर्भवेष्टन, वशिष्ट पुत्र।

उवना*—(क्रि० अ० दे०) उगना, उदय होना, निकलना।

उशना—(संज्ञा, पु०, सं०) शुक्राचार्य, भार्गव। "कवीनाम् उशना कविः"—गीता। (स्त्री०) उवनि।

उशबा—(संज्ञा, पु०, अ०) रक्त शोधक एक तरु मूल।

उशीर—(संज्ञा, पु०, सं०) गाँडर की जड़, खस।

उषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रभात, तड़का, ब्राह्म वेला, अरुणोदय की अरुणिमा, अनरुद्ध को ब्याही गई वाणासुर की कन्या। "निशि संगिनी रंगिनि सी उषा को"—हितैषी।—**काल**-(यौ०) भोर, प्रभात। —**पति**-(यौ०) अनिरुद्ध, कामदेव का पुत्र।

उषित—(वि०) [सं० वस+क्त] दग्ध, स्वा.त, आश्रित, स्थित।

उषेश—(संज्ञा, पु०, सं०) अनिरुद्ध, चंद्रमा।

उष्ट्र—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊँट।

उष्ण—(वि०, सं०) तप्त, गर्म, फुरतीला, तेज। (सं०, पु०) प्याज, एक नरक का नाम, ग्रीष्म ऋतु। —**नदी**-(यौ०) वैतरणी।—**वाष्प**—पसीना, स्वेद।—**रश्मि**—सूर्य, दिनकर।—**कटिबंध**-(संज्ञा, पु०, सं०) कर्क और मकर रेखाओं का मध्यवर्ती भू-भाग विलोम **शीतकटिबंध**।

उष्णता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गरमी, ताप। [संज्ञा, पु० **उष्णत्व**]।

उष्णिक्—(संज्ञा, पु०, सं०) सात वर्णों का एक वैदिक छंद।

उष्णिक—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रीष्मकाल। ज्वर। सूर्य। (वि०) गरम, तप्त। ज्वर-युक्त। तेज, फुर्तीला।

उष्णीष—(संज्ञा, पु०, सं०) पगड़ी, साफा, मुकुट, ताज।

उष्म (उष्मा)—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, सं०) गरमी, ताप, धूप। क्रोध। उमस (दे०)। गुस्सा, रोष।—**ज**-(संज्ञा, पु०, सं०) पसीने और मैल से पैदा होने

वाले कीड़े। खटमल। चीलर।—प-(पु०) पितर। —स्वेद-(पु०) भाप-स्नान।

उस—(सर्व०, उभ०) [हिं० वह] विभक्ति लगने से पूर्व का रूप, यथा—उसने, उसका।

उसकन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्कर्षण] उकसन, बरतन माँजने का घास पात का पोटा।

उसकना—(क्रि०, अ०, दे०) उभड़ना।—**उसकाना**-(क्रि०, स०) उभाड़ना, चढ़ाना, चलाना, [**उस्काना** दे०]।

उसकारना—(क्रि०, सं०, दे०) उसकाना।

उसता—(संज्ञा, पु०, दे०) नाई। (वि०) पकता हुआ।

उसनना—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० उष्ण] उबालना, पकाना, उसेना (दे०) ।—**उसनाना**-(प्रे०, क्रि०) पकवाना, उसवाना, [**उसिनना** दे०]।

उसनीसꕥ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उष्णीष] पगड़ी, मुकुट।

उसमा—(संज्ञा, पु०) [अ० बसना] उबटन।

उसमान—(संज्ञा, पु०, अ०) मुहम्मद के चार सहयोगियों में से एक जो तीसरे खलीफा हुये थे।

उसमानिया—(संज्ञा, पु०, अ०) उसमान वंश से उत्पन्न राजवंश जिसका अंत १८ वीं सदी में हुआ।

उसरना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्+सरण] हटना, टलना, बीतना, गुजरना, भूलना, बिसरना, पूरा होना, बन कर खड़ा होना। उसलना, पानी मे उतरना।

उसरबगेरी—(पु०) ऊसर में छिपा रहने वाला भूरे रंग का लघु पक्षी विशेष जो सैकड़ों के समूह मे रहता है। यह भादूल की जाति का होता है। "खेहर गुडरू उसरबगेरी"—जा०।

उससना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उत्+सरण] खिसकना, टलना। (क्रि०, स०) [हिं० उसास] उसाँस लेना।

उसांस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उच्छ्वास] दुःख की लम्बी साँस। "...ऊरध उसाँस सों झकोर पुरवा की है"—रत्ना० (ऊ० श०)।

उसारनाꕥ—(क्रि०, स०, दे०) उखाड़ना, हटाना, छिन्न-भिन्न करना, भगाना, दूर करना। [दे० **उसालना**]।

उसारा§—(संज्ञा, पु०, दे०) ओसारा, दालान। [**स्त्री० उसारी** दे०]।

उसास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उत्+श्वास] साँस, श्वास, उसाँस, शोक-सूचक ठंडी या लम्बी ऊपर को खींची हुई साँस।

उसासीꕥ (**उसाँसी**)—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० उसास] अवकाश, दम लेने की फुरसत। "...मैं सेस के सीसन दीन्हीं उसाँसी"—के०।

उसीर—(संज्ञा, पु०, दे०) उशीर। (सं०) खस।

उसीला—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वसीला, सहायक।

उसीसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्+शीर्ष] सिरहना, तकिया।

उसूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ०] सिद्धान्त, उगाहना।

उस्तरा—(संज्ञा, पु०, दे०) उस्तुरा, छूरा।

उस्तवार—(वि०, फ़ा०) मजबूत, पक्का, हमवार, बराबर, सीधा, सरल।

उस्ताद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गुरु, शिक्षक, अध्यापक। (वि०, दे०) चालाक, धूर्त। निपुण, दक्ष, चाई। [**उस्तादी**—(संज्ञा, स्त्री०) गुरुआई, चतुराई, चालाकी, धूर्तता, विज्ञता, निपुणता। (स्त्री०) **उस्तानी**। (वि०) **उस्तादाना**—उस्ताद का सा।]

उस्ताना—(क्रि०, स०, दे०) सुलगाना, जलाना।

उस्र—(संज्ञा, पु०, सं०) वृष, साँड़, किरण। (स्त्री०) उस्र-धेनु।—**धन्वा**—इंद्र।

उहदा§—(संज्ञा, पु०, दे०) ओहदा, पद, स्थान। [उहद्दा (दे०)]।—**दार**-(पु०) अफ़सर, पदाधिकारी।

उहवाँ, उहाँ—(क्रि०, वि०, दे०) वहाँ (हिं०), उतै (ब्र०)।

उहार—(संज्ञा, पु०, दे०) ओहार (दे०) परदा, खोल, पट। "सिविका सुभग उहार उघारी"—तु० (रा)।

उहिया—(संज्ञा, पु०, दे०) कनफटों या योगियों का धातु का कड़ा। "कर उहिया काँधे मृग छाला" —प०।

उही—(सर्व०, दे०) वही (हिं०)। उहै (ब्र०) वहै (ब्र०)।

ऊ

ऊ—संस्कृत या हिन्दी की वर्णमाला का छठवाँ अक्षर, इसका उच्चारण ओष्ठ से होता हैं—"उपूपध्मानीयानामोष्ठौ"। (अव्य०, सं०) भी। (संज्ञा, पु०) रक्षा, शिव, ब्रह्मा, मोक्ष, चंद्र, प्रधान। (सर्व, दे०) वह।

ऊँख—(संज्ञा, पु०, दे०) ऊख। [सं० इक्षु] ईख, गन्ना, पौंडा (दे०)।

ऊँगना—(संज्ञा, पु०, दे०) पशुओं का रोग जिसमें कान बहता और शरीर ठंढा हो जाता है। (क्रि०, स०) [दे० ओंगना] गाड़ी की धुरी में तेल आदि देना।

ऊँगा—(संज्ञा, पु०, दे०) अपामार्ग (सं०) चिचड़ा।

ऊँघ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अवाच्—नीचे + मुँह] उँघाई, झपकी, औंघाई।

ऊँघना—(क्रि०, अ०, दे०) झपकी लेना, नींद में झूमना, निद्रालु होना। [**उँघाना** (दे०, वि०) **उँघैया**। (संज्ञा, स्त्री०) **ऊँघन** (दे०) **ऊँघ**, झपकी, **उँघाई** (दे०)]

ऊँटनी—(संज्ञा, स्त्री०) मादा ऊँट।

ऊँच, ऊँचा—(वि०, दे०) उच्च (सं०) ऊपर उठा हुआ, बड़ा, उन्नत, बलंद, श्रेष्ठ, कुलीन, तीव्र, अच्छा। [(स्त्री०) **ऊँची**।]—**नीच**—छोटा-बड़ा। छोटी-बड़ी जाति का। हानि-लाभ। भला-बुरा। ऊँचा-नीचा। **मुहा०—(चा)—नीचा (ऊँच-नीच)** ऊबड़-खाबड़, भला-बुरा, हानि-लाभ।—**(चा) नीचा (ऊँची-नीची) सुनाना (कहना)**—खरी खोटी या भला-बुरा सुनाना (कहना)। (वि०) जोर का या तीव्र (स्वर)। **मुहा०—(चा) सुनना**—कम सुनना, तीव्र स्वर ही सुनना।—**(चे) बोल बोलना**—घमंड की बातें करना।

ऊँचाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उच्चता] (हिं० ऊँचा + ई प्रत्य०) उठान, उच्चता। गौरव। बड़ाई। श्रेष्ठता। [**उँचाई** (दे०)।]

ऊँचे*—(क्रि०, वि०) [हिं० ऊँचा] ऊँचे पर, ऊपर की ओर। जोर से शब्द। **मुहा०—नीचे पैर पड़ना**—बुरे काम में फँसना।—**बोल का बोल नीचा**—घमंडी का सिर नीचा।

ऊँछ—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का रोग।

ऊँछना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उच्छन्न = बीनना] कंघी करना, बाल ऐंछना।

ऊँट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उष्ट्र] एक ऊंचा पशु जो सवारी और बोझ लादने के काम मे आता है। [स्त्री० **ऊँटनी**]।—**कटारा**—(पु०) [सं० उष्ट्रकंठ] एक कटीली झाड़ी। उटकटाई (दे०)।—**वान**—(पु०) [हिं० ऊट + वान प्रत्य०] ऊँट हाँकने वाला। **मुहा०—किस करवट बैठता है**—देखना है कि परिस्थिति क्या स्वरूप ग्रहण करती है।—**की चोरी और नीचे नीचे, निहुरे-निहुरे**—जो बात छिप नहीं सकती उसको छिपाने की चेष्टा।—**के मुँह में जीरा**—जिसकी माँग बहुत अधिक है, उसे बहुत थोड़ा देना।—**निगल जायँ और दुम से हिचकें**—अत्यंत आपत्ति जनक बातों को स्वीकार करलें और साधारणतर बातों में झक झक करें।—**मक्के को ही भागता है**—अपने मूल स्थान की ओर सभी प्रेम से दौड़ते है।

ऊँड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंड] चहबच्चा, धन गाड़ने का बरतन, तहखाना। (वि०) गहरा, गंभीर।

ऊँदर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उदुर] चूहा।

ऊँहूँ—(अव्यय०) [अनु०] नहीं, कभी नहीं।

ऊअना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उदयन] उगना, निकलना, उदय होना।

ऊआबाई, ऊवाबाई—(वि०) [हिं० आउबाव] अंड बंड, निरर्थक।

ऊक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उल्का] उल्का, टूटता तारा, लूक, दाह, ताप। (**संज्ञा, स्त्री०**) [हिं० चूक का अनु०] भूल, चूक।

ऊकना—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० चूकना] चूकना, भूल करना। (क्रि०, स०) उचेका करना, छोड़ देना, भूलना। (क्रि०, स० दे०) जलाना, भस्म करना।

ऊख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऊष्म] उमस, गरमी। (वि०) तप्त, गरमी से व्याकुल। ऊखम (दे०)।

ऊखल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उलखल] ओखली, कांडी (दे०), हावन।

ऊज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्यन] उपद्रव, ऊधम, अँधेर।

ऊजड़—(वि०, दे०) [हिं० उजाड़] उजाड, वीरान। [**उजार-ऊजर** (दे०)।]

ऊजर, ऊजरा (ऊजा)—(वि०, दे०) [सं० उज्वल] उजला, सफेद, गोरा, [**उज्जर** (दे०)] (वि०) उजाड़, ऊजरा। [(स्त्री०) **ऊजरी**] 'लसत गूजरी ऊजरी…" (स०)।

ऊटक-नाटक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत्कट + नाटक] व्यर्थ का काम, उटपटांग या निरर्थक कार्य।

ऊटना—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० औटना, ओटना] उत्साहित होना, हौसला करना, तर्कवितर्क या सोच-विचार करना। [**ओटना, उटना** (दे०)]

ऊटपटांग—(वि०) [हिं० अटपट + अंग] अटपट, टेढ़ामेढ़ा, बेढंगा, बेमेल, व्यर्थ, असम्बद्ध, वाहियात।

ऊड़ना*—(क्रि०, स०, दे०) ऊठना, तर्क-वितर्क करना।

ऊड़ा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ऊन] कमी, घाटा। अकाल, नाश, लोप।

ऊड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बूड़ना] डुब्बी, गोता। गोताखोर चिड़िया, पनडुब्बी पक्षी।

ऊढ़ (ऊढ़ा)—(वि०, संज्ञा, स्त्री०) [सं०] विवाहिता, ब्याही किन्तु पर पति से प्रेम करने वाली नायिका।

ऊढ़ना❀—(क्रि०, अ०) [सं० ऊह] सोच-विचार करना। (क्रि०, अ०) [सं० ऊढ़] विवाह करना, ब्याहना।

ऊत—(वि०, दे०) [सं० अपुत्र] निस्संतान, निपूता (दे०) मूर्ख, उजड्ड। (संज्ञा, पु०) निस्सन्तान मर कर पिंडादि न पाने से भूत होने वाला।

ऊतर*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उत्तर (सं०), उतर (दे०) जवाब, बहाना।

ऊतला—(वि०) [हि० उतावला] वेगवान, उतावला।

ऊतिम—(वि०, दे०) उत्तम (सं०) श्रेष्ठ।

ऊद (ऊदबिलाव)—(संज्ञा, पु०, दे०) बिल्ली का सा एक जल-जन्तु। (संज्ञा, पु०, अ०) एक सुगंधित लकड़ी, अगर।—**बत्ती**—अगर-बत्ती, धूप बत्ती। —**सोज**—(पु०) [अ०+फ़ा०] वह पात्र जिसमें अगर जलाते है।

ऊदल—(संज्ञा, पु०, दे०) [उदयसिंह का संक्षिप्त रूप] महोबा नरेश परमाल के एक वीर सामन्त।

ऊदा—(वि०) [अ०, ऊद, फ़ा०, क़बूद] ललाई लिए काला रंग, बैगनी।

ऊदी—(वि०, अ०) अगर का, अगर-संबंधी।

ऊधम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्धम] उपद्रव, उत्पात, धूम, हुल्लड़, शोरगुल। [(वि०) **ऊधमी**—उत्पाती। (स्त्री०) **ऊधमिन**]

ऊधव (ऊधौ)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्धव] कृष्ण-सखा।

ऊन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऊर्ण] भेड़-बकरी आदि के रोयें। (वि०, सं० ऊन) कम, थोड़ा, छोटा, तुच्छ, न्यून। (संज्ञा, पु०) स्त्रियों के लिए एक छोटी तलवार।

ऊनता—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० ऊन] न्यूनता।

ऊना—(वि०, सं०) कम, न्यून, तुच्छ, हीन, जो पूरा न हो, विषम। (संज्ञा, पु०) खेद, दुःख, रंज।

ऊनी—(वि०, स्त्री०) [सं० ऊन] न्यून, कम। (संज्ञा, स्त्री०) उदासी, खेद। (वि०, हि० ऊन+ई प्रत्य०) ऊन का वस्त्र। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) ओप।

ऊपना—(क्रि०, अ०, दे०) पैदा होना। [(क्रि०, स०) **ऊपाना**—पैदा करना।]

ऊपर—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० उपरि] ऊँचे स्थान पर, उँचाई पर, आकाश की ओर। आधार पर, सहारे पर, उच्च श्रेणी पर, (लेख में) प्रथम, पहिले, अधिक, ज्यादा। प्रकट में, देखने में। तट पर, अतिरिक्त, परे, प्रतिकूल। **मुहा०—ऊपर**—चुपके से, बिना किसी के जताये।—**की आमदनी**—इधर-उधर से फटकारी हुई रक़म, बाहिरी आय, नियत आय के अतिरिक्त, अन्य साधनों (द्वारों) से प्राप्त।—**तले**—आगे-पीछे, एक के बाद एक, क्रमशः।—**तले के**—वे दो बच्चे (लड़के या लड़कियाँ) जिनके बीच में और कोई बच्चा न हो। —**लेना (अपने)**—जिम्मे लेना, हाथ में लेना।—**से**—आकाश या ऊंचे से, इसके अतिरिक्त, वेतन से अधिक, बाहर से घूस के रूप में, प्रत्यक्ष में, दिखाने के लिए, प्रगट रूप में।

ऊपरी—(वि०, हि०) ऊपर का। बाहिरी, बँधे हुए के सिवा। नुमाइशी, दिखावटी, विदेशी, पराया।

ऊब—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० ऊबना] कुछ समय तक एक ही दशा में रहने से चित्त की खिन्नता, उद्वेग, घबराहट, आकुलता, उद्विग्नता। (हि० ऊभ) उत्साह, उमंग।

ऊबट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उत—बुरा+वर्त्म—बट्ट=प्रा० मार्ग] कठिन मार्ग, अटपट रास्ता।

ऊबड़-खाबड़—(वि०, अनु०) ऊँचा-नीचा, अटपट, विषम।

ऊबना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्वेजन] उकताना, घबराना, अकुलाना।

ऊभ*—(वि० दे०) [हि० उभना=खड़ा होना] ऊँचा। उभड़ा हुआ, उठा हुआ। (संज्ञा, स्त्री० हि० ऊब) व्याकुलता, उमस, हौसला, उमंग। [(क्रि०, अ०) **ऊभना**—(सं० ऊद्भवन) उठना, ऊबना, खड़ा होना] "ऊभी चाम चटाय"—क०।

ऊमक*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उमंग] झोंक, उठान, वेग।

ऊमर (ऊमरि)—(संज्ञा, पु०, दे०) [उडुम्बर] गूलर।

ऊमस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उमस, गरमी।

ऊरज*—(वि०, पु०) [सं० ऊर्ज] बल, शक्ति।

ऊरध*—(वि०, दे०) [सं० ऊर्ध्व] ऊर्ध्व, ऊपर, उच्च।

ऊरु—(संज्ञा, पु०, सं०) जानु, जंघा।—**स्तंभ**—एक बात रोग जिसमें पैर जकड़ जाता है।

ऊर्ज—(वि०, सं०) बलवान, शक्तिमान । (संज्ञा, पु०) बल, शक्ति । कार्तिक मास । एक प्रकार का अलंकार जिसमें सहायकों के घटने पर भी गर्व के न छोड़ने का कथन किया जाय । [(वि०) **ऊर्जस्वी**]

ऊर्जस्वल—(वि०) [सं० ऊर्जस+वल्] अति शक्तिशाली ।

ऊर्जस्वी—(वि०) [सं० ऊर्जस्+विन्] उग्र, अतिबली, प्रतापी, तेजस्वी । (संज्ञा, पु०) एक अलंकार जो वहाँ होता है जहाँ भाव या स्थायी भाव का रसाभास या भावाभास अंग हो (काव्य०) ।

ऊर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) भेड़ या बकरी के बाल, ऊन ।—**नाभ**—(पु०) मकड़ी, रेशम-कीट ।

ऊर्णायु—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊनीवस्त्र, कंबल ।

ऊर्ध्व—(क्रि०, वि०, सं०) ऊपर, ऊर । (दे०, वि०) ऊपरी, ऊर्ध, ऊँचा, खड़ा । (संज्ञा, पु०) ऊपर का भाग ।—**गति**—(स्त्री०) मुक्ति । ऊपर की ओर गति ।—**गामी**—(वि०) ऊपर को जाने वाला, मुक्त, निर्वाण प्राप्त ।—**चरण**—(पु०) शीर्षासन । शीर्षासन किये हुए तपस्या करने वाले साधु ।—**तित्त**—(पु०) चिरायता ।—**द्वार**—(पु०) ब्रह्मरंध्र ।—**पाद**—(पु०) एक प्रकार का आसन, एक कीड़ा, शरभ ।—**पुंड्र**—(पु०) वैष्णवी खड़ा तिलक ।—**बाहु**—(पु०) अपनी एक बाहु ऊपर उठाकर तपस्या करने वाले तपस्वी ।—**रेखा**—(स्त्री०) हाथ में भाग्य रेखा, पैर के तलवे पर खड़ी रेखा, ये दोनों सौभाग्य सूचक मानी गई हैं (सामु०) ।—**रेता**—(वि०) जो अपने वीर्य को न गिरने दे, ब्रह्मचारी । (पु०) भीष्म, महादेव, हनुमान सनकादि, सन्यासी ।—**लोक**—(पु०) आकाश, वैकुण्ठ, स्वर्ग ।—**श्वास**—(पु०) ऊपर को चढ़ती स्वास । साँस की कमी या तंगी । दमा । उच्च श्वास ।

ऊर्मि, ऊर्मी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लहर, तरंग । पीड़ा, दुःख । छः की संख्या । शिकन, कपड़े की सलवट ।—**माली**—(पु०) सागर, सिंधु ।

ऊलजलूल—(वि०, दे०) असंबद्ध, अंडबंड । नासमझ, बे अदब, अशिष्ट, अनारी ।

ऊलना—(क्रि०, अ०, दे०) उछलना, कूदना ।

ऊषण—(संज्ञा, पु०, दे०) काली मिर्च ।

ऊषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सबेरा, अरुणोदय, उषा ।—**काल**—(पु०) सबेरा ।

ऊष्म, ऊष्मा—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, सं०) गरमी, भाप, तपन, उमस, ग्रीष्म ऋतु । (वि०) गरम, तप्त ।—**वर्ण**—(पु०) श, ष, स, ह ये अक्षर ।

ऊसट—(वि०, दे०) फीका, मीठा ।

ऊसन—(संज्ञा, पु०, दे०) सरसों का सा एक तेल देने वाला पौधा ।

ऊसर—(संज्ञा, पु०, दे०) ऊषर (सं०) अनुपजाऊ भूमि, रेतीली और लोनी भूमि । "ऊसर बरसै तृण नहिं जामा"—तु० ।

ऊह—(अव्य, सं०) क्लेश या कष्ट-सूचक शब्द, ओह, विस्मय सूचक शब्द । (संज्ञा, पु०, सं०) अनुमान, विचार, तर्क, दलील, किंवदंती, अफ़वाह । [(संज्ञा, स्त्री०) **ऊहा**—कल्पना, अनुमान ।

ऊहापोह—(संज्ञा, पु०) [सं० ऊह+अपोह] तर्क-वितर्क, सोच-विचार ।]

ऋ

ऋ—हिन्दी और संस्कृत की वर्णमाला का सातवाँ वर्ण इसका उच्चारण मूर्धा से होता है—"ऋटुरषाणाम् मूर्धा" (संज्ञा, स्त्री०, सं०) देव-माता, अदिति, निन्दा, बुराई । (संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, गणेश ।

ऋक्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऋचा । वेदमन्त्र । (संज्ञा, पु०) ऋग्वेद ।—**तंत्र**—(पु०) सामवेद का परिशिष्टांश ।—**संहिता**—(स्त्री०) ऋग्वेद के मंत्रों का संकलन ।

ऋक्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) धन, सम्पत्ति । सुवर्ण । पितृधन, बपौती ।—**ग्राह,—भागी,—हारी**—(संज्ञा, पु०) उत्तराधिकार पाने वाला व्यक्ति ।

ऋक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) रीछ, भालू । तारा, नक्षत्र । मेष, वृष, आदि राशियाँ ।—**ऋच्छ (रिच्छ)**—(दे०) भिलावाँ । रैवतक पर्वत । शौनक वृक्ष ।—**जिह्वा**—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का कुष्ठ ।—**पति**—(संज्ञा, पु०, सं०) जाम्बवान । चन्द्रमा ।—**नक्षत्रेश** ।—**वान**—(संज्ञा, पु०, सं०) नर्मदा से गुजरात तक फैला हुआ एक पर्वत ।

ऋग्वेद—(संज्ञा, पु०, सं०) चार वेदों में से प्रथम, वेदाग्रणी । [(वि०) **ऋग्वेदी**—ऋग्वेद का जानने वाला । (वि०) **ऋग्वेदीय**]

ऋचा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पद्यात्मक वेद-मंत्र, कांडिका, स्तोत्र ।

ऋच्छरा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) वेश्या ।

ऋजीष—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सोमलता । कोक । लोहे का तसला ।

ऋजु—(वि०, सं०) सीधा, सरल, सुगम । सहज, सज्जनोचित । प्रसन्न, अनुकूल ।—**काय**—(संज्ञा, पु०, सं०) कश्यप मुनि । (वि०) सीधी देह ।—

भुज—(संज्ञा, पु०, सं०) सीधी रेखा।—क्षेत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) सीधी रेखाओं से घिरा हुआ क्षेत्र।—क्रतु—(वि०) सदाचारवान्।—ग—(संज्ञा, पु०) सीधा जाने वाला, सत्पुरुष। बाण।—नीति—(स्त्री०) निर्मल आचार।

ऋजुता—(संज्ञा, पु०, सं०) सरलता, सीधापन, सिधाई (दे०), सज्जनता, सुगमता।

ऋण—(संज्ञा, पु०, सं०) कुछ काल के लिए किसी से कुछ धन लेना। उधार, कर्ज, ऋन, रिन (दे०)।—पत्र—तमस्सुक पत्र।—पत्र—प्रतिज्ञा-पत्र, प्रतिज्ञा लेख, दीर्घकालीन देयपत्र। [डिबेन्चर]।—पत्रबंध—कर्जनामा। [डिबेंचरबांड]।—परिशोध कोष—ऋण विमोचक या कर्ज अदाई कोष। वह धन जो ऋण चुकता करने की व्यवस्था के लिए निर्दिष्ट हो। [सिंकिंग फंड]।—पुस्तक—वह पुस्तक जिसमे कर्ज लिखा जाता है। [डेट बुक]।—भार—कर्ज, ऋण-सम्बन्धी दबाव। [इनकम्ब्रेंस]।—मुक्त—(वि०, सं०) उऋण, ऋण-रहित।—०पत्र—फारिगखती।—मार—(वि०, सं०) जो कर्ज लेकर उसे न दे।—मत्कुण,—मार्गण—(संज्ञा, पु०, सं०) जमानत। जमानतदार, प्रतिभू, ज़ामिन।—भुगतान—कर्ज चुकाना, ऋण अदा करना। [पेमेंट ऑफ डेट]।—युद्ध—युद्ध के लिए लिया जाने वाला कर्ज। [वार लोन]।—शोधन-क्षमता ऋण चुकाने की शक्ति, सम्पन्नता। [सालवेन्सी] मुहा०—उतरना—कर्ज अदा होना।—उतारना—ऋण चुकता करना।—चढ़ना—जिम्मे रुपये निकलना, ब्याज से कर्ज बढ़ना, नियत समय से ऋण-मुक्ति मे देर होना।—पटना (पटाना)—कर्ज चुकना या चुकाना।

ऋणापनयन—(संज्ञा, पु०, सं०) ऋण-शोधन, कर्ज चुकाना।

ऋणार्ण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कर्ज चुकाने के लिए लिया हुआ कर्ज।

ऋणार्थ कारावास—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्ज न चुकाने पर होने वाली कैद। [इम्प्रिजनमेंट फारडेंट]।

ऋणी—(वि०) [सं० ऋणिन्] ऋण लेने वाला। कर्जदार। ऋणिक, ऋणिया (दे०) देनदार। अनुगृहीत, कृतज्ञ।

ऋत—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्य। उञ्छवृत्ति से निर्वाह। जल। मोक्ष। (वि०) दीप्त, पूजित।—धामा—(वि०) सत्य में निवास करने वाला। (संज्ञा, पु०) विष्णु।—पेय—(संज्ञा, पु०) साधारण पापों के प्रायश्चित्त के लिए किया जाने वाला एकाह यज्ञ।

ऋति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निन्दा, स्पर्धा, गति, मंगल, मार्ग।

ऋतु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्राकृतिक दशाओं के अनुसार वर्ष के दो दो मास वाले छः विभाग—वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर। रजोदर्शनोपरान्त स्त्रियों की गर्भ-धारण योग्यता का समय।—पर्ण—(पु०) एक अयोध्या-नरेश।—राज—(पु०) वसंत।—चर्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऋतुओं के अनुकूल आहार-व्यवहार की व्यवस्था।—स्नान—(पु०) स्त्रियों का रजोदर्शन से चौथे दिन का स्नान।—स्नाता—(वि०, स्त्री०) रजोदर्शनानन्तर कृत स्नान।

ऋतुमती—(वि०, स्त्री०, सं०) रजस्वला, पुष्पवती, मासिकधर्म-युक्ता, जिस स्त्री के रजोदर्शन के बाद १६ दिन न बीते हों और जो गर्भधारण के योग्य हो, ऋतुवती।

ऋत्विज—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञकर्ता। यज्ञ मे वरण किया हुआ। ऋत्विज १६ है, चार मुख्य है, १ होता, २ अध्वर्यु, ३ उद्गाता, ४ ब्रह्मा, पुरोहित, याजक। [स्त्री० आर्त्विजी]।

ऋद्ध—(वि०, सं०) सम्पन्न, समृद्ध, धनाढ्य। (संज्ञा, पु०) विष्णु। बढती। समक्ष प्रस्तुत फल।

ऋद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक औषधि (कंद)। समृद्धि, बढती, विभव। पार्वती। आर्याछन्द का एक भेद।—सिद्धि—(स्त्री०) समृद्धि और सफलता जो गणेश जी की दासियाँ है।

ऋनिया—(संज्ञा, पु०, दे०) ऋणी, कर्जदार।

ऋभु—(संज्ञा, पु०, सं०) एक गण देवता।

ऋभुक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) इंद्र। वज्र। स्वर्ग।

ऋषभ—(संज्ञा, पु०, सं०) बैल। श्रेष्ठता वाचक शब्द। राम सेना का एक कपि। बैल के आकार का एक दक्षिणी पर्वत। सात स्वरों मे से दूसरा (संगी०)। एक जड़ी (हिमालय की)। (वि०) श्रेष्ठ।—कूट—(पु०) एक पहाड़।—देव—नाभि-नृप-पुत्र, विष्णु के एक अवतार।—ध्वज—(पु०) शिव, महादेव।—[ऋषभी (स्त्री०) पुरुष के से गुणों वाली स्त्री।]

ऋषि—(संज्ञा, पु०, सं०) वेदमन्त्र प्रकाशक, मंत्र-द्रष्टा, आध्यात्मिक और भौतिक तत्वो का साक्षात्कार करने वाला, तपस्वी।—मित्र—(पु०) विश्वामित्र (राम०)।—ऋण—ऋषियों के प्रति

कर्तव्य, जो वेद के पठन-पाठन से पूर्ण होता है। **—कल्प**—(वि०) ऋषि के समान। **—कुल्या**—(संज्ञा, स्त्री०) नदी।

ऋषिक—(संज्ञा, पु०, सं०) साधारण श्रेणी का ऋषि। दक्षिण का एक देश (वाल्मी), ऋष्टिक।

ऋषीक—(संज्ञा, पु०, सं०) ऋषि पुत्र।

ऋष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मृग-विशेष, चितकबरा मृग। **केतु**—(पु०) अनिरुद्ध। **—प्रोक्ता**—(स्त्री०) सतावर। **—मूक**—(पु०) दक्षिण का एक पर्वत। [**रीखमूख** (दे०)]। **—श्रृंग**—(पु०) विभांडक ऋषि के पुत्र शृंगी ऋषि जिन्हे लोमपादनृप को कन्या शान्ता व्याही थी, इन्हीं के पुत्रेष्टी यज्ञ कराने से रामादि का जन्म हुआ था

ए

ए—हिन्दी-संस्कृत की वर्णमाला का ११ वाँ अक्षर जो संयुक्त स्वर (अ+इ) है, और कंठतालव्य है। (संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु। (अव्य० सं०) सम्बोधन-सूचक शब्द। *(सर्व०, दे०, सं०) (एष्) यह। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनसूया, आमन्त्रण, अनु-कम्पा।

एँच-पेंच—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० पेंच] उलझन, घुमाव, टेढ़ी चाल, घात।

एंजिन—(संज्ञा, पु०, अ०) इंजन।

ऐंड़ा-बेंड़ा—(वि०) [हि० बेंड़ा+ऐंड़ा—अनु०] उल्टा-सोधा, टेढ़ा-मेढ़ा।

एँड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० एरंड] अंडी के पत्ते खाने वाला एक रेशम का कीड़ा, इसका रेशम, अंडी, मूँगा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) एड़ी, पैर के तलवों का अंतिम भाग।

एँडुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) गेंडुरी, सिर पर बोझ के लिए कपड़े की गद्दी।

एकंग—(वि०, दे०) [सं० एक+अंग] एकांग, अकेला, एक ओर का, एक तरफ़ा। [**एकांगा** (दे०)। (स्त्री०) **एकांगी**—अकेली, एक ओर की।]

एकंत*—(वि०, दे०) [एकान्त, निराला, अकेला।

एक—(वि०, सं०) इकाइयों में सबसे छोटी और प्रथम संख्या। अद्वितीय, अनुपम, कोई, अनिश्चित, एक ही प्रकार का, समान, तुल्य, अकेला, रीति। **मुहा० —अंक (आँक)**—ध्रुव (एक ही) बात पक्की या निश्चित बात, एक बार। "एकहि आँक इहै मन माँही"—तु० (रा०)**—(रीति) न आना**—ढंग न आना। **—आँख से देखना**—समान भाव या दृष्टि रखना। **—आँख न आना**—तनिक भी न सुहाना। **—आध**—थोड़ा, कम, इक्का-दुक्का। **—एक**—प्रत्येक। सब। अलग-अलग, पृथक्-पृथक्। **—एक करके**—धीरे-धीरे, क्रमशः, एक के बाद एक। **—क़लम**—बिल्कुल, सब। **(अपनी और किसी की जान)—करना**— मारना और मर जाना, दोनों की दशा समान करना। **—टक**—अनिमेष, नज़र या दृष्टि गड़ाकर, लगातार देखते हुए। **—तरह**—समान, तुल्य। **—तार**—एक ही रंग रूप का, समान, लगातार, बराबर, समभाव से। **—तो**—पहले तो। **—दम**—लगातार, अकस्मात्। **—(ा)एक**—फ़ौरन। **—बारगी**—एक साथ। **—दिल**—खूब मिला-जुला, एक ही विचार का, अभिन्न हृदय। **—दूसरे का, को, पर, में, से**—परस्पर। **—न चलना**—कोई युक्ति सफल न होना। **—न लगना**—कोई उपाय न लगना। **—पेट के**—एक ही माँ के, सहोदर (भाई)। **—ब एक**—अकस्मात्, एकबारगी। **—बात (सौ बात की)**—ठीक या पक्की बात, दृढ या ध्रुव, सच्ची बात (प्रतिज्ञा)। **—सा**—समान, तुल्य। **—स्वर से (कहना-बोलना)**—एक मत हो कर कहना। **—होना**—मेल करना। तद्रूप होना। **—चाल से**—एक रूप या ढंग से, लगातार। **—करना (आकाश-पाताल)**—समस्त, सम्भवासम्भव उपाय कर डालना। (संज्ञा, पु०) ब्रह्म, ईश्वर, परमात्मा। **—चक्र**—(वि०) एक पहिये वाला। एक ही राजा के शासन के अधीन। चक्रवर्ती। (संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य का रथ, सूर्य। **—छत्र**—(वि०, सं०) किसी दूसरे के आधिपत्य से रहित (राज्य) जिसमें कहीं किसी और का राज्य या अधिकार न हो। (क्रि०, वि०) एका-धिपत्य के साथ। राजतंत्र। (संज्ञा, पु०) अथवा वह राज्य—प्रणाली जिसमें देश-शासन का सारा अधिकार अकेले एक ही व्यक्ति को प्राप्त होता है। **—ज**—(संज्ञा, पु०, सं०) अद्विज, शूद्र, राजा। (वि०) एकमात्र। **—जन्मा**—(संज्ञा, पु०, सं०) शूद्र। राजा। **—जाई**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पहि-लौठी। (वि०) एकत्र, इकट्ठा, समूहीकृत। **—टक**(वि०) पलक को बिना गिराये हुए। **—तंत्र**—(वि०) वह व्यवस्था जिसमें सब अधिकार एक व्यक्ति के हाथों में न्यस्त हो। **—शासन प्रणाली**—(संज्ञा, स्त्री०) वह शासन-पद्धति जिसमें समस्त कार्यों का संचालन एक व्यक्ति के द्वारा हो। **—तान**—(वि०, सं०) तन्मय, लीन, एकाग्रचित्त, मिल कर एक। **—तारा**—(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) एक तार का

सितार ।—ताल-(संज्ञा, पु०, सं०) सम ताल, एक स्वर ।—तीर्थी-(संज्ञा, पु०, सं०) गुरुभाई, सतीर्थ ।—दंत-(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश ।—देशीय-(वि०, पु०) जो एक ही अवसर या स्थल के लिए, सर्वत्र न घटित होने वाला, एक दिक् ।—देह-(संज्ञा, पु०, सं०) बुधग्रह । अभिन्न, सगोत्र । —नयन-(वि०, सं०) काना, एकाक्ष । (संज्ञा, पु०) कौवा । कुबेर । सूर्य । शुक्राचार्य ।—निष्ठ-(वि०, सं०) एक ही पर श्रद्धा रखने वाला । —पक्षीय-(वि०, सं०) एक तरफ़ा, एक ओर की [एक्सपार्टी] ।—वक्तव्य-एक तरफा कथन । वादी और प्रतिवादी मे से केवल एक ही का कथन । [एक्सपार्टी स्टेटमेंट]—पत्नीत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) एक स्त्री रखना ।—पत्नीव्रत-(वि०, सं०) केवल एक ही स्त्री से सम्बन्ध रखने वाला ।—बारगी-(क्रि०, वि०, फा०) एक ही बार मे, अकस्मात्, सारा, बिलकुल ।—मत-(वि०, सं०) एक राय के, एक सम्मति वाले एक परामर्श को स्वीकार करने वाले । —मात्र न्यायक्षेत्र-(संज्ञा, पु०, सं०) एक मात्र अधिकार क्षेत्र, जिस क्षेत्र में अन्य किसी को न्याय करने की कानूनी मान्यता न हो । [एक्सक्लूसिव ज्यूरिसडिक्शन] ।—मात्रिक-(वि०, सं०) एक मात्रा का ।—मुखी-(वि०, सं०) एक ओर लगी हुई, एक मुँही, एक मुख वाला ।—०रुद्राक्ष-फाँक वाला, एक ही लकीर वाला रुद्राक्ष ।—योनि-(वि०, सं०) सहोदर, एक माँ के ।—रंग-(वि०, हि०) समान, तुल्य, कपट-शून्य, सब ओर से एक सा ।—रदन-(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश, एकदंत । "एकरदन सिंधुरवदन......" ।—रस-(वि०, सं०) एक ढंग का, समान, बराबर, लगातार ।—रूप-(वि०, सं०) समान आकृति का, ज्यों का त्यों, वैसा ही, कोरा । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) समानता, एकता, सायुज्य मुक्ति ।—लिंग-(संज्ञा, पु०, सं०) गहलौत राजपूतों (मेवाड़) के कुलदेव, शिव का एक नाम ।—वचन-(संज्ञा, पु०, सं०) एक का वाचक वचन (व्या०) । —वस्त्रा-(वि०, सं०) जिस स्त्री के शरीर पर एक ही वस्त्र हो । "निर्दोषा, कुल-वधू । एक वस्त्र को खींच पहल से"—दिनकर ।—वाक्यता-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एकमत, मतों का मिल जाना ।—वेणी-(वि०, सं०) वियोगिनी, विधवा, एक ही बेनी (चोटी) बनाकर बालों को समेट रखने वाली । —संग-(संज्ञा, पु०) [सं० एक+सञ्ज्+अच्] विष्णु । सहवास ।—संगी-(संज्ञा, पु०, सं०) संगी, साथी, सहवासी । मुहा०—(ला) दुकला-अकेला-दुकेला ।

एकड़—(संज्ञा, पु०, अ०) १३ बीघे या ४८४० व० ग० के बराबर का एक भू-माप ।

एकडाल—(वि०, हि०) एक ही खंड से निर्मित, एक ही ढंग का (संज्ञा, पु०)एक ही लोहे का बना पूरा कटार ।

एकत—(क्रि०, वि०, सं०) एक ओर से ।

एकत—(क्रि०, वि०, दे०) एकत्र, एक जगह पर । "कहलात एकत बसत अहि-मयूर मृग-बाघ"—(वि०) ।

एकतरफ़ा—(वि०, फ़ा०) एक पक्ष का, पक्षपात-ग्रस्त, एक रुख वाला । मुहा०—डिगरी—प्रतिवादी की अनुपस्थिति में वादी को प्राप्त होने वाली डिगरी । पक्षपात ।

एकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऐक्य, मेल, समानता । (वि०, फ़ा०) अद्वितीय, अनुपम । [(संज्ञा, स्त्री०) एकताई]

एकतालीस—(वि०, सं०) [सं० एकचत्वारिंशत] चालीस और एक (संज्ञा, पु०, हि०) ४१ की संख्या या अंक ।

एकतीस—(वि०, दे०) [सं० एकत्रिंश] तीस और एक । (संज्ञा, पु०) ३१ की संख्या ।

एकत्र—(क्रि०, वि०, सं०) इकट्ठा, एक स्थान पर । [(वि०) एकत्रित] "मेरी बिखरी वीणा के एकत्रित कर तारों को"—महा० ।

एकत्व—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) 'एकता ।'

एकदा—(क्रि०. वि०, सं०) एक बार ।

एकधा—(अव्य०, क्रि०, वि० सं०) केवल एक बार, एकशः ।

एकन्नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० एक+आना] एक आने के मूल्य का निकिल धातु का एक सिक्का ।

एकबाल—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रताप, ऐश्वर्य, सौभाग्य । स्वीकार ।

एकरार—(संज्ञा, पु०, अ०) स्वीकार, प्रतिज्ञा, वादा । —नामा—प्रतिज्ञापत्र ।

एकवाँझ—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० एक+बाँझ] वह स्त्री जिसके एक ही लड़के को छोड़ कर दूसरा न हुआ हो, काक बंध्या ।

एकशफ—(संज्ञा, पु०, सं०) घोड़ा, एक खुर के पशु ।

एकसठ—(वि०, दे०) [सं० एक षष्ठि] साठ और एक । (संज्ञा, पु०) एकसठ की संख्या ।

एकल-एकला*—(वि०, दे०) अकेला, एकाकी, निराला । (संज्ञा, पु०, दे०) ओढ़नी, चादर, उत्तरीयपट ।

एकलौता—(वि०) [हि० एकला + पुत्र] अपने माँ-बाप का एक ही लड़का । लाड़ला । [स्त्री० **एकलौती**] ।

एकसर*—(वि०) [हि० एक + सर प्रत्यय०] अकेला, एकहरा, एक पल्ले का । (वि०, फा०) बिल्कुल, तमाम ।

एकसां—(वि०, फा०) बराबर, समान।

एकसार—(वि०, दे०) समान, एकरस, एकसा ।

एकहत्तर—(वि०, दे०) [सं० एकसप्तति, प्रा० एकहत्तर] सत्तर और एक । (संज्ञा, पु०) सत्तर और एक की संख्या या अंक ।

एकहत्था—(वि०, दे०) [सं० एकहस्त, हि० एक हाथ] एक ही व्यक्ति । अकेला । एक ही की देख-रेख का काम ।

एकहरा—(वि०) [हि० एक+हरा प्रत्य०] एक परत का । एक लड़का । [(स्त्री०) **एकहरी**] ।—**बदन**-दुबली-पतली देह ।

एकहायन—(वि०, सं०) एक वर्ष का (बच्चा) ।

एकांकी—(वि०, सं०) एक अंक वाला नाटक (दृश्य-काव्य) । [वन ऐक्ट प्ले]

एकांग—(वि०, सं०) एक ही अंग का, एक पक्ष का । [**एकांगी**-(वि०, पु०, स्त्री०) एक तरफ का, हठी ।]

एकांत—(वि०, सं०) अत्यंत । बिल्कुल अलग । अकेला । शून्य, निर्जन, सूना । [(संज्ञा, स्त्री०) **एकान्तता**-निराला या सूना स्थान ।]—**कारावास**-(संज्ञा, पु०) वह कैद जिसमे कैदी किसी से मिलजुल न सके । [सालिटरी इम्प्रिजनमेंट] ।—**सेवी**-एकान्त में रहने वाला ।—**कैवल्य**-(संज्ञा, पु०) जीवन-मुक्ति ।—**वास**-(संज्ञा, पु०, सं०) निर्जन स्थान मे अकेले रहना । 'गयेनृपति एकांत-वासहित'—हरिऔध ।—**स्वरूप**-(वि०, सं०) निर्लिप्त, असंग ।

एकांतर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ओर, अलग ।—**कोण**-(संज्ञा, पु०) एक ओर का कोना ।

एकांतिक—(वि०, सं०) एक देशीय, एक ही स्थान पर घटित ।

एकांती—(संज्ञा, पु०, सं०) अपने भगवत्प्रेम को अपने ही मे रखने और प्रगट न करने वाला भक्त ।

एका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, भगवती । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) ऐक्य, एकता, मेल । अभिसंधि । सह-मति । एकोद्देश्य ।

एकाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० एक+आई प्रत्य०] एक का भाव, एक का मान, वह मात्रा, जिसके गुणन या विभाग से दूसरी मात्राओं का मान ठहराया जाय, अंक-गणना मे प्रथमांक या प्रथम स्थान । इकाई (दे०) ।

एकाएक—(क्रि०, वि०) [हि० एक + एक] अकस्मात्, सहसा । "कठिन समस्या एक एकाएक आई है ।" (क्रि०, वि०)—**एकाएक**-एकाएक । (वि०, सं० —सं० एकाकी) अकेला ।

एकाकिनि—(वि०, सं०) अकेली । चिन्ता मे मग्न नारी । "मृदु करतल पर शशि मुख धर, नीरव, अनिमिष, एकाकिनि"—पंत ।

एकाकी—(वि०) [सं० एकाकिन्] अकेला, तनहा । [(स्त्री०) **एकाकिनी**] "सहज एकाकिन्ह के भवन" —तुल० (रा०) ।—**पन**-(पु०) [एकाकी + पन] अकेलापन । 'एकाकीपन का अनुभव, पर, करते हैं ये बेचारे भी'—बच्चन ।

एकाक्ष—(वि०, सं०) काना (करण सं०) (संज्ञा, पु०) कौवा, शुक्राचार्य । [(यौ०)—**एकाक्षरुद्राक्ष**-एक मुखी रुद्राक्ष ।]

एकाक्षरा (एकाक्षरी)—(वि०, सं०) एक ही अक्षर का । एक वृत्त जिसमें एक ही अक्षर का प्रयोग होता है । इस प्रकार का वृत्त केवल संस्कृत साहित्य में ही पाया जाता है ।—**कोश***-प्रत्येक अक्षर के अलग-अलग अर्थ देने वाला कोश ।

एकाग्र—(वि०) [सं० एक+अग+र] एक ओर स्थिर, अचंचल, एक ही ओर ध्यान लगा हुआ । —**चित्त**-(वि०) स्थिर चित्त ।

एकाग्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चित्त की स्थिरता, मनोयोग, अचांचल्य, ध्यानस्थैर्य ।

एकातपत्र—(वि०, सं०) सार्वभौम, एकच्छत्र चक्र-वर्ती ।

एकात्मक—(वि०, सं०) एक में केन्द्रीभूत, अभिन्न —**राज्य**-एकहरा राज्य । [युनिटरी स्टेट]—**वाद**-(संज्ञा, पु०) अद्वैतवाद आत्मा की एकता से सम्बन्धित दर्शन ।—**शासन**-एकात्मक सरकार जिसमें स्थानीय या प्रांतीय सरकारें केंद्रीय सरकार के आधीन होती हैं । [यूनिटरी गवर्नमेंट]

एकात्मता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एकता, अभेद, अभिन्नता। मिल कर एक होना, एकरूपता। (संज्ञा, पु०)—एकात्मा एक प्राण, एक देह। अभिन्न।

एकादश—(वि०, सं०) ग्यारह (एक+दशन्+डट्) ग्यारह का अंक।

एकादशाह—(संज्ञा, पु०, सं०) मरने के दिन से ग्यारहवें दिन का संस्कार या कृत्य (हिन्दू)।

एकादशी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रत्येक चांद्र मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवी तिथि, जो व्रत का दिन है, हरि-वासर।

एकादिक्रम—(वि०) [स० एक+आदि+क्रम+अल्] आनुपूर्विक, अनुक्रम, क्रमिक।

एकाधिक—(वि०, सं०) अनेक, एक से ज्यादा।

एकाधिकार—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी वस्तु के क्रय-विक्रय का एक छत्र अधिकार। [मोनोपली]

एकाधिपति—(संज्ञा, पु०, सं०) चक्रवर्ती, सम्राट।

एकाधिपत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्णप्रभुत्व।

एकायन—(वि०, सं०) एक मति। एक मार्ग। एक विषयासक्त।

एकार—(संज्ञा, पु०, सं०) मिल कर एक होने की दशा। एक मय होना। अभेद। (वि०) एक समान, एक आकार का। एकाचार, भेद भाव रहित।

एकार्णव—(संज्ञा, पु०, सं०) एकाकार समुद्र।

एकार्थ—(वि०, सं०) एक अर्थ वाला, समानार्थ। [(वि०, सं०) **एकार्थक, एकार्थी**]

एकावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अलंकार जिसमें पूर्व और पूर्व के प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओं का विशेषण भाव से स्थापन अथवा निषेध प्रगट किया जाय। एक प्रकार का छंद पंकज वाटिका। एक लड़ी की माला या एकलरा हार।

एकाश्रित—(वि०, सं०) एक ही पर आधारित रहने वाला।

एकाह—(वि०, सं०) एक दिन में पूर्ण होने वाला, एकाह पाठ।

एकाहिक—(वि०, सं० एक+अह+इक) एक साध्य। प्रति दिन। उत्पत्तिशील। जैसे एकाहिक ज्वर।

एकीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) मिला कर एक करना। [(वि०) **एकीकृत**] 'एकीकरण विभक्त राष्ट्र का'—हितैषी।

एकीभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) मिलाना, एकत्र करण।

एकीभूत—(वि०, सं०) मिला हुआ, मिश्रित, मिलकर एक हुआ।

एकेंद्रिय—(संज्ञा, पु०, सं०) उचितानुचित, दोनों प्रकार के विषयों से इंद्रियों को हटाकर अपने मन में ही लीन करने वाला (सांख्य)।

एकेश्वरवाद—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्पूर्ण जगत् को 'परिचालिता करने वाली सत्ता केवल एक ही है' यह सिद्धान्त।

एकैक—(वि०) [सं० एक+एक] प्रत्येक।

एकोतरसौ—(वि०) [सं० एकोत्तरशत] एक सौ एक।

एकोतरा—(वि०, दे०) एक दिन छोड़ कर आने वाला। इकतरा, अंतरा (दे०)। (संज्ञा, पु०, दे०) रुपये सैकड़े ब्याज।

एकोदिष्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पितृ के लिये वर्ष मे। एक ही बार किया जाने वाला श्राद्ध कर्म।

एकौ—(वि०, दे०) एक भी, कोई भी, अनिश्चित व्यक्ति।

एकौझा*—(वि०, दे०) अकेला, एकाकी।

एकौतना—(क्रि०, स०, दे०) धान-गेहूँ में बाल निकलना। (दे०)। (क्रि०, वि०) एक प्रकार भी।

एक्का—(वि०) [हि० एक+का प्रत्य०] एक से सम्बन्ध रखन वाला, अकेला। (यौ०)—**दुक्का**-अकेला दुकेला। (संज्ञा, पु०, दे०) झुंड छोड़ कर अकेला फिरने वाला पशु या पक्षी। एक दो पहियों की घोड़ा-गाड़ी। बड़े बड़े काम अकेले ही करने वाला सिपाही। ताश या गंजीफ़े मे एक ही बूटी का पत्ता, एक्की।

एक्कावान—(संज्ञा, पु०) [सं० एक्का+वान प्रत्य०] एक्का हाँकने वाला।

एक्की—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० एक] देखो "एक्का"।

एक्यानबे—(वि०) [सं० एकनवति, प्रा० एक्कावन] नब्बे और एक, ९१। (संज्ञा, पु०) ९० और १ की बोधक संख्या या अंक।

एक्यावन—(वि०, दे०) [सं० एक पंचाशत, प्रा० एक्कावन्न] पचास और एक, ५१। (संज्ञा, पु०) ५० और १ का बोधक अंक।

एक्यासी—(वि०, दे०) [सं० एकाशीति, प्रा० एक्कासि] अस्सी और एक, ८१। (संज्ञा, पु०) ८० और १ का सूचक अंक।

एखनी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मांस का रसा, शोरबा।

एडिसन—(पु०, अं०) अंगरेजी के प्रमुख साहित्यकार का नाम जिसका जन्म १६७२ और मृत्यु १७१९ को हुआ था।

एड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० एड्डुक] एड़ी, घोड़ा चलाने का काँटा। **मुहा०—लगाना (करना)** हाँकना, रवाना होना।—**देना**—लात मारना। उकसाना, उत्तेजित करना। बाधा डालना, घोड़े को ऍड़ी से मारना।

एड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० एड्डुक—हड्डी] टखने के नीचे पैर के पीछे का गद्दीदार भाग, एड़। **मुहा०—घिसना (रगड़ना)**—बहुत दिनों से रोग या क्लेश में पड़े रहना, बेकली में रहना। "शब कटती है ऍडियाँ, रगड़ते"—हाली।—**से चोटी तक**—सिर से पैर तक।

एढ़ा—(वि०, दे०)—वाली, बलवान। टेढ़ा, तिरछा।

एण—(संज्ञा, पु०, सं०) हरिण, मृग। [(स्त्री०) **एणी** मृगी]।—**मद**—(संज्ञा, पु०, सं०) मृगमद, कस्तूरी।

एणाजिन—(संज्ञा, पु०, सं०) मृगचर्म।

एतक़ाद—(संज्ञा, पु०, अ०) दृढ़ विश्वास, पूरा यक़ीन।

एतत् (एतद्)—(सर्व०, सं०) वह।—**कालीन**—(वि०) आधुनिक।—**देशीय**—(वि०, सं०) इस देश का, इस स्थान का।

एतदर्थ—(अव्य, सं०)इसलिए इस कारण।

एतदाव—(संज्ञा, पु०, अ०) हमवारी। बराबरी। संयम। बीच का रास्ता।

एतनाई—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सहानुभूति।

एतबार—(संज्ञा, पु०, अ०) विश्वास, प्रतीति। [(वि०) **एतबारी**।]

एतमाद—(संज्ञा, पु०, अ०) भरोसा, विश्वास।

एतराज—(संज्ञा, पु०, अ०) विरोध, आपत्ति।

एतवार—(संज्ञा, पु०, दे०) इत्तवार, इतवार, रविवार।

एता (एतो)*—(वि०, दे०) [सं० इयत्] इतना। (स्त्री० एती)।

एतादृक् (एतादृश्)—(वि०, सं०) ऐसा, इस प्रकार का।

एतावत् (एतावता)—(अव्य०, सं०) इतना ही, यहाँ तक। इस कारण, इस लिए।

एतावन्मात्र—(अव्य०) इतना ही।

एतिक*—(वि०, स्त्री०, दे०) [एती+इक] इतनी, इतनी ही।

एनस—(संज्ञा, पु०, दे०) पाप, अपराध। [वि० **एनसी**]

एमन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यवन, फ़ा० यमन] एक राग।

एरंड—(संज्ञा, पु०, सं०) रेंड, रेंडी, अंडी।—**खरबूज़ा**-(संज्ञा, पु०, दे०) पपीता। [(संज्ञा, स्त्री०, दे०) **एरंडी**—एक प्रकार की झाड़ी, तुंगा।]

एराक—(संज्ञा, पु०, अ०) अरब का एक प्रदेश।

एराकी—एराक का। (संज्ञा, पु०) एराक देश का घोड़ा।

एरी—(अव्य०, स्त्री०, दे०) संबोधन-सूचक शब्द। [पु० **एरे**]

एलक—(संज्ञा, पु०, दे०) चलनी।

एलची—(संज्ञा, पु०, तु०) राज-दूत, जो एक राज्य से दूसरे राज्य मे संदेश ले जाता है।

एला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इलायची। "एलात्वक् पत्रकंद्राक्षा"—वैद्य०।

एलान—(संज्ञा, पु०, अ०) घोषणा, मुनादी।

एलुवा—(संज्ञा, पु०) [अ० एली] मुसब्बर, एक दवा।

एवं (एवम्)—(क्रि०, वि०, सं०) ऐसा ही, इसी प्रकार। (यौ०) **एवमस्तु**—ऐसा ही हो। (अव्य०) ऐसी ही और, इसी प्रकार और।

एव—(अव्य, सं०) एक निश्चयार्थक शब्द, ही, भी।

एवज—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रतिफल, प्रतिकार, बदला। स्थानापन्न, दूसरे के स्थान पर कुछ समय के लिए काम करने वाला। [संज्ञा, स्त्री०, अ० **एवज़ी**]।

एशिया—(संज्ञा, पु०) विश्व के पाँच महाद्वीपों में से एक जिसमें भारत, ईरान, चीन, जापान आदि सम्मिलित है। इसकी लम्बाई ७८०० मील चौड़ाई ५२०० मील है।

एसपिरेंतो—(संज्ञा, पु०, लै) कृत्रिमविश्व भाषा। [एसपिरेंटो]

एह*—(सर्व० दे०) [सं० एषः] यह। (वि०) यह। [**एहा** (दे०)] "सब का मत खगनायक एहा"—तुल० (रा०)।

एहतमाम—(संज्ञा, पु०, अ०) यत्न, कोशिश। इंतजाम, व्यवस्था। देख-भाल।

एहतियात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सावधानी। परहेज। चौकसी।

एहतिसाब—(संज्ञा, पु०, अ०) जाँच, परीक्षा, हिसाब-किताब।

एहसान—(संज्ञा, पु०, अ०) उपकार, कृतज्ञता, निहोरा। [(वि०) **एहसानमंद**] कृतज्ञ, निहोरा मानने वाला।

एहि—(सर्व०, दे०) [हिं० एव] विभक्ति के पूर्व एह का रूप, इस, इसको। "सत्य सिंधु प्रभु बध करि एही"—"एहिते अधिक धर्म नहिं दूजा।"—तुल०।

एहु—(एहू)—(सर्व०, दे०) [हिं० यह] यह भी, यही, और भी।

एहो—(अव्य०, दे०) संबोधन शब्द, हे, ऐ।

ऐ

ऐ—संस्कृत की वर्णमाला का बारहवाँ और हिन्दी का नवाँ स्वर (संयुक्त स्वर) जिसका उच्चारण-स्थान कंठ-तालु (एदैतो कंठ-तालुः) है। (अव्य०) संबोधन-शब्द, ए, हे, रे। (संज्ञा, पु०, सं०) शिव, आमंत्रण।

ऐं—(अव्य०, अनु०) भली-भाँति, न सुनी या समझी बात को फिर से कहलाने के लिए प्रयुक्त होता है, आश्चर्य-सूचक।

ऐंचना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० खींचना] खींचना, तानना, पर-ऋण को अपने ऊपर लेना, ओढ़ना। [(संज्ञा, पु०) **ऐंच**] "ऐंच्यां हँसि देवन मोद कियो"—रामा०।

ऐंचाताना—(वि०, यौ०, हिं०) जिसकी आँख की पुतली दूसरी ओर खिच जाती हो, भेंगा। "सवा लाख में ऐंचाताना"।

ऐंचातानी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हिं०) खींचा-खींची, आग्रह। (वि०, स्त्री०) भेंगी स्त्री। "दो संस्कृतियों की यह ऐंचातानी"—हितैषी।

ऐंछना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उञ्छन=चुनना] साफ़ करना, खींचना, कंघी करना, ऊँछना (दे०)। "देह पोंछि पुनि ऐंछि स्याम कच"—रघु०।

ऐंठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ऐंठन] अकड़, ठसक, गर्व। द्वेष। विरोध, दुर्भाव। मरोड़।

ऐंठन—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० आवेष्ठन] मरोड़, लपेट। पेंच। खिंचाव। अकड़, तनाव। लपेट। "रस्सी जली शेष ऐंठन है—हरिऔध।"

ऐंठना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आवेष्ठन] मरोड़ना, बल देना, धोखा देकर या दबाव डाल कर लेना, फँसना। (क्रि०, अ०) बल खाना, तनना, अकड़ना, खिंचना। मरना। टर्राना, टेढ़ी बातें करना, गर्व दिखाना। (प्रे० रूप) **ऐंठवाना**—ऐंठने के लिए प्रेरित करना। [(संज्ञा, पु०) **ऐंठा**—रस्सी बटने का एक पेंच। (वि०) अकड़ा।]

ऐंड़*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ऐंठ] ऐंठ, स्वाभिमान, ठसक, गर्व, पानी की भँवर। (वि०) निकम्मा, नष्ट। "ऐंड़ अपनो छोड़ हम सकते नहीं"—हितैषी।—**दार**-(वि०) गर्वीला, टेढ़ा। "ऐंड़ बुन्देल खंड की राखो"—छत्र०।

ऐंड़ना—(क्रि०, अ० दे०) [हिं० ऐंठना] ऐंठना, अँगड़ाना, इतराना, घमंड करना। (क्रि०, स०) ऐंठना, अँगड़ाना।

ऐंडबैंड (ऐंड़ाबैंड़ा)—(वि०, दे०, अनु०) टेढ़ा, एड़ाबेंड़ा। [(वि०) **ऐंड़ा**—टेढ़ा, ऐंठा हुआ। स्त्री० **ऐंड़ी**]।

ऐंड़ाना—(क्रि०, अ०) [हिं० ऐंड़ना] अँगड़ाना, बदन तोड़ना, अकड़ना, इठलाना। "महा मीचु मूरति मनौ, ऐंड़ानी जमुहाय।"—रघु०।

ऐंद्रजालिक—(वि०, सं०) इंद्रजाल करने वाला, मायावी। (संज्ञा, पु०) बाजीगर, कलबाज़।

ऐंद्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इन्द्राणी, शची, दुर्गा, इलायची।

ऐक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) एक का भाव, एकत्व, एका, मेल। "ऐक्य से सरते जगत के कार्य सब"—हितैषी।—**सृजन**-(संज्ञा, पु०) सौहार्द भाव का संचार, एकता का विकास। "केशव ने था ऐक्य-सृजन का उचित उपाय विचारा"—दिनकर।

ऐकाहिक—(वि०, सं०) एक दिन का, एक दिन के अन्तर से आने वाला ज्वर, अँतरा।

ऐगुन*—(संज्ञा, पु०, दे०) अवगुण (सं०) औगुन (दे०)।

ऐच्छिक—(वि०, सं०) अपनी इच्छा पर निर्भर, स्वेच्छाधीन।

ऐज़न—(अव्य०, अ०) तथा, तथैव। वही।

ऐज़ाज़—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रतिष्ठा, सम्मान।

ऐटमबम—(संज्ञा, पु०, अं०) अणुबम। इस ध्वंसकारी बम का प्रथम प्रयोग अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों पर किया था। "ऐटमबम से अधिक भयंकर होगी व्यथित हृदय की आह"—'गिरीश'।

ऐणिक—(वि०, सं०) मेष नाशक, हरिण का मारने वाला।

ऐतरेय—(संज्ञा, पु०, सं०) ऋग्वेद का एक ब्राह्मण, एक आरण्यक।

ऐतिहासिक—(वि०, सं०) इतिहास सम्बन्धी। इतिहास जानने वाला। इतिहास का, इतिहास-सिद्ध। "ऐतिहासिक तथ्य लें निज देश के हम जान"—'गिरीश'।

ऐतिह्य—(संज्ञा, पु०, सं०) परम्परा-प्रसिद्ध प्रमाण। लोक श्रुति।

ऐन—(संज्ञा, पु०, दे०) **अयन** (सं०) घर, एण (सं०) कस्तूरी। (**वि०**, अ०) ठीक, उपयुक्त, बिलकुल, सटीक। पूरा। "साहितनय सिवराज को, सहज टेव यह ऐन"—भू०। (संज्ञा, **स्त्री०**, अ०) आँख, नेत्र। (ब० व० ऐनन)।

ऐनक—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० ऐन, सं० नयन, आँख] आँख का चश्मा, ऐना।

ऐना—(संज्ञा, पु०) [अ० आइना] दर्पण, शीशा। चश्मा।

ऐनि—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य-पुत्र।

ऐपन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लेपन] हल्दी के साथ गीला पिसा चावल जिससे ब्याह या देवार्चन मे थापा लगाते है।

ऐपनबारी—ब्याह मे ऐपनादिभेजने की रस्म।

ऐब—(संज्ञा, पु०, अ०) दोष, दूषण, कलंक, अवगुण। (वि०) **ऐबी**—खोटा, बुरा, दुष्ट, विकलांग—(काना)।—**जोई**-(स्त्री०) दोष निकालना, त्रुटि ढूंढना, छिद्रान्वेषण करना।—**पोशी**-(स्त्री०) किसी के दोष को प्रगट न होने देना। **मुहा०—करने को हुनर चाहिए**—दोष करने के लिए भी प्रतिभा की आवश्यकता है।

ऐबक—(संज्ञा, पु०, फा०) प्रिय, सेवक, गुलाम, दूत, हरकारा।

ऐबारा—(संज्ञा, पु०, प्रा०) भेड़-बकरियों का बाग।

ऐमालनामा—(संज्ञा, पु०) [अ०+फा०] लोगों के अच्छे व बुरे काम दर्ज करने की बही।

ऐया§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आर्या, प्रा० अज्जा] दादी, बूढ़ी, स्त्री, माता, अइया।

ऐयार—(संज्ञा, पु०, अ०) चालाक, धूर्त, छली, धोखेबाज, मायावी। [स्त्री० **ऐयारा**। (संज्ञा, स्त्री०) **ऐयारी**, चालाकी, धूर्तता]

ऐयाश—(वि०, अ०) ऐश-आराम करने वाला, विलासी, विषयी, लंपट इंद्रिय-लोलुप। [संज्ञा, स्त्री० **ऐयाशी**—विषयासक्ति, भोग-विलास]

ऐरा गैरा—(वि०) [अ० गैर] फ़ालतू, अजनबी, तुच्छ, हीन।—**नत्थूखैरा**-जिसका कोई स्थान न हो, साधारण जन, सामान्य व्यक्ति।—**पंचकल्यानी**-जिसका कोई महत्त्व न हो।

ऐरापति—(संज्ञा, पु०, दे०) ऐरावत हाथी।

ऐराफ—(संज्ञा, पु०) देखो 'एराक'।

ऐरावण—(संज्ञा, पु०, दे०) रावण-सुत।

ऐरावत—(संज्ञा, पु०, सं०) बिजली से चमकता हुआ बादल। इन्द्र-धनुष। बिजली। पूर्व दिशा का दिग्गज। इंद्रवाहन। [(संज्ञा, स्त्री०) **ऐरावती**—बिजली। ऐरावत की हथिनी। रावी नदी।]

ऐरेय—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का मद्य।

ऐल—(संज्ञा, पु०, सं०) इला नृप का पुत्र, पुरूरवा। (संज्ञा)* (हि० अहिला) बाढ, बूड़ा। प्रबल प्रवाह। प्रचुरता, अधिकता। कोलाहल। समूह। "...... आइवे को चढ़ी उर हौसनि की ऐल है"—भू०।

ऐवान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) महल।

ऐश—(संज्ञा, पु०, अ०) आराम, चैन, भोग-विलास। [**ऐस** दे० यौ० **ऐशो-आराम**]।

ऐशानी—(वि०, सं०) ईशान कोण-सम्बन्धी।

ऐशू—(संज्ञा, पु०, दे०) पशुओं का एक रोग जिसमे वे पागुर करना छोड़ देते है।

ऐश्वर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) विभूति, धन-संपत्ति, सिद्धियाँ, प्रभुत्व, महिमा, गौरव। [(वि०) **ऐश्वर्यवान**, ऐश्वर्यशाली। "जानकी पति से अधिक ऐश्वर्यशाली कौन"?—'गिरीश'। (स्त्री०) **ऐश्वर्यशालिनी**]।

ऐषम—(अव्य०, सं०) वर्तमान वर्ष।

ऐषीक—(संज्ञा, पु०, सं०) त्वष्टा देव का मंत्र पढ़ कर चलाया जाने वाला एक अस्त्र।

ऐस (ऐसा)—(वि०, दे०) [सं० ईदृश] इस प्रकार का, इसके समान। (स्त्री०) ऐसी। [(क्रि०, वि०) **ऐसे**—इस भाँति से।] **मुहा०—तैसा (ऐसा वैसा)**—साधारण। तुच्छ। यों ही। न भला न बुरा। **ऐसी-तैसी**—एक प्रकार की गाली।

ऐहलौकिक—(वि०, सं०) इस लोक सम्बन्धी, इस लोक का। "ऐहलौकिक स्वार्थ साधन ही किया बस हाय"—'गिरीश'।

ऐहिक—(वि०) [सं० इह] इस लोक से सम्बन्ध रखने वाला, लौकिक, सांसारिक।

ओ

ओ—संस्कृत वर्णमाला का तेरहवां और हिन्दी-वर्णमाला का दसवाँ स्वर वर्ण, संयुक्त स्वर (अ+उ) जिसका उच्चारण-स्थान कंठ और ओष्ठ है ("ओदौतो-कंठोष्ठौ") (अव्य०)—संबोधन, करुणा, विस्मय या आश्चर्य-सूचक शब्द। (संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा, विष्णु।

ओं—(अव्य०, अनु०) अंगीकार या स्वीकृति-सूचक शब्द, हाँ, अच्छा, तथास्तु। ब्रह्म सूचक शब्द जो प्रणव वाचक है। ओ३म् का सूक्ष्म रूप।

ओंइछना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० अंचन्] वारना, निछावर करना, ओंछना, ऐंछना।

ओंक—(संज्ञा, पु०, सं०) घर, निवास-स्थान, आश्रय, ठिकाना, नक्षत्रों या ग्रहों का समूह। आश्रम। समूह। (संज्ञा, स्त्री०, अनु०) मिचली, कै। (संज्ञा, पु०) [हिं० बूक] अंजलि। [(क्रि०, अ०) **ओंकना**—कै करना।]

ओंकना (ओकना)—(क्रि०, अ०, दे०) कै करना। भैंस के समान चिल्लाना। ऊबना, फिर जाना। "मो सों कहा हरि को मन ओंको"—सुदा०।

ओंकार—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्म-सूचक ओं शब्द। सोहन पक्षी।

ओंगना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० अंजन] गाड़ी की धुरी में चिकनाई लगाना, ताकि पहिया आसानी से घूमे। [(संज्ञा, पु०) **ओंग**। (प्रे०, क्रि०, स०) **ओंगाना**।]

ओंठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ओष्ठ, प्रा० ओट्ठ] लब, होंठ, ओंठ, अधर। **मुहा०—चबाना**—क्रोध और दुख प्रगट करना,—**चाटना**—स्वादिष्ट वस्तु खाकर स्वाद के लिए लालच से ओठों पर जीभ फेरना।—**फड़कना**—क्रोध से ओठो का काँपना।

ओंडा*—(वि०, दे०) [सं० कुण्ड] गहरा, गंभीर। (संज्ञा, पु०) गड्ढा, चोरों की खोदी हुई सेंध।

ओकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) वमन, कै।

ओकेश—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, चन्द्र।

ओखद§—(संज्ञा, पु०, दे०) औषध, दवा।

ओखरी—देखिए 'ओखली'।

ओखली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उलूखल] ऊखल। **मुहा०—में सिर देना**—कष्ट सहने पर उतारू होना।

ओखा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ओख] मिस, बहाना, हीला। (वि०) [सं० ओख—सूखना] सूखा-सूखा। कठिन, विकट, टेढ़ा। खोटा, जो शुद्ध या खालिस न हो, चोखा का विपरीत। झीना। विरल।

ओग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० उगहना] चंदा, कर, महसूल। "सूर हमहिं मारग जनि रोकहु घरते लीजे ओग"—सूर०।

ओगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) खिचड़ी। पथ्य।

ओगसुल—(वि०) [दे०] पृथक, अलग।

ओघ—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, ढेर, घनत्व, बहाव, धारा। 'समय आये सब हो जायगा'—ऐसा संतोष, काल-तुष्टि (सांख्य)। पुंज, प्रवाह, राशि।

ओछा—(वि०, दे०) [सं० तुच्छ] तुच्छ, क्षुद्र, छिछोरा, खोटा। जो गहरा न हो, छिछला। हलका, छोटा। कम। नीच। [(संज्ञा, स्त्री०) **ओछाई**—ओछापन, तुच्छता।]

ओज—(संज्ञा, पु०) [सं० ओजस्] बल, प्रताप, तेज। उजाला, प्रकाश। वीरता आदि का आवेश पैदा करने वाला एक काव्य-गुण। शरीर के भीतर के रसों का सार भाग। कांति।

ओजस्विता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तेज, कांति, दीप्ति। प्रभाव।

ओजस्विनी—(वि०, स्त्री०, सं०) ओज-पूर्ण, आवेश-पूर्ण।

ओजस्वी—(वि०) [सं० ओजस्विन्] शक्ति-शाली, प्रभाव-पूर्ण।

ओझ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उदर हिं० ओझल] पेट की थैली। पेट। आंत (दे०)।

ओझर—(संज्ञा,पु०) [सं० उदर] पेट।

ओझल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अवरुन्धन, प्रा० ओरुज्झन] ओट, आड़, छिपाव, एकांत। (यौ०) —**होना (करना)**—छिपना, ओट मे होना, या करना।

ओझा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपाध्याय] सरयूपारी, गुजराती और मैथिल ब्राह्मणों की एक जाति। भूत-प्रेत झाड़ने वाला। सयाना। [(संज्ञा, स्त्री०) **ओझाई**—ओझा-वृत्ति, भूत-प्रेत के झाड़ने का काम। (वि०) **ओझइत**।]

ओट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उट—घास-फूस] आड़, रोक जिससे सामने की वस्तु न दिखाई दे, व्यवधान। **मुहा०—में**—बहाने या हीले से आड़ करने वाली वस्तु, शरण, रक्षा पनाह।

ओटना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आवर्त्तन] कपास को चरखी मे दबाकर रुई और बिनौलों को अलग करना। अपनी ही बात कहते जाना, पुनरुक्ति करना। पीसना, दलित या चूर्ण करना। कष्ट देना। (क्रि०, अ०) (हिं० ओट) अपने ऊपर सहना (लेना) ओड़ना (ओढ़ना) ओट करना।

ओटनी (ओटी)—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० ओटना] कपास ओटने की चरखी, बेलनी, आड़, रोक, छिपाव।

ओठँगना§—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अवस्थान+अंग] टेक लगाकर बैठना, सहारा लेना, थोड़ा आराम करना, कमर सीधी करना, टेक लगाना।

ओठँगाना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० ओठँगना] सहारे से टिकाना। भिड़ाना। किवाड़ बंद करना या ओटकाना।

ओड़न*—(संज्ञा, पु०) [हिं० ओड़नी] ओड़ने की वस्तु, वार रोकने की चीज़, ढाल, फरी।—**खांडे**—पटेबाज़, ढाल-तलवार।

ओड़ना—(क्रि०, स०) [हिं० ओट] रोकना, वारण करना। ऊपर लेना। (कुछ लेने के लिए) फैलाना, पसारना। "ओड़िय हाथ असनि के धाये"—तु० (रा०) "कर ओड़त कछु देहु"—पद्मा०। धारण करना, "सावधान ह्वै सोक निवारौ ओड़हु दाहिन हाथ'—सूर०।

ओड़व—(संज्ञा, पु०, सं०) रागों की एक जाति, पाँच ही स्वर वाला राग।

ओड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़ा टोकरा, खाँचा। (संज्ञा, पु०) कमी, घाटा, टोटा।

ओड़ू—(संज्ञा, पु०, सं०) उड़ीसा देश। वहाँ का निवासी।

ओढ़न (ओढ़ना)—(संज्ञा, पु०, दे०) चादर, चदरा, दुपट्टा, वस्त्र।

ओढ़ना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० उपवेष्ठन] शरीरांग को वस्त्र आदि से आच्छादित करना, अपने सिर या माथे पर लेना, अपने ऊपर लेना, जिम्मेदारी लेना। पहिनना। रक्षा करना। (संज्ञा, पु०) ओढ़ने का वस्त्र।

ओढ़नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ओढ़नी] स्त्रियों के ओढ़ने की चादर, उपरैनी, फरिया।

ओढ़र*—(संज्ञा, पु०, दे०) ओढना (हिं०), बहाना।

ओढ़रना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अपने पति को छोड़ कर दूसरे पुरुष के यहाँ रहना। "ओढ़र जाय औ रोवै"—घाघ।

ओढ़रा—(संज्ञा, पु०, दे०) वह पुरुष जिसका ब्याह न हुआ हो या जिसकी स्त्री मर गई हो और जो दूसरे की स्त्री को रखे हो।

ओढ़री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अपने पति को छोड़ कर पर पुरुष या दूसरे आदमी के यहाँ रहने वाली स्त्री, रखेली।

ओढ़ाना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० ओढ़ना] ढाँकना, कपड़े से आच्छादित करना।

ओत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अवधि] आराम, चैन। आलस्य। किफ़ायत। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० आवत] प्राप्ति। बचत, लाभ। "मेरू मैं लुकानं ते लहत जाय ओत है"—भू०। (पु०, दे०) ताने का सूत। (वि०) बुना हुआ, गुथा हुआ।

ओत-प्रोत—(वि०, सं०) बहुत मिला जुला, इतना उलझा हुआ कि सुलझाना असंभव हो, जटिल। (संज्ञा, पु०) ताना बाना।

ओता (ओतो-ओत्ता)*—(वि०, दे०) उत्ता, उतना (हिं०)। [(स्त्री०) **ओती**] "दुइज हि जोति कहाँ जग ओती"—प०।

ओतु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिल्ली, बिलारी।

ओतुप्लुत—(वि०, सं०) उलटा, विपरीत।

ओथरा—(वि०, दे०) [हिं० उथला] छिछला, उथला। [स्त्री० **ओथरी**]

ओद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आर्द्र] नमी, तरी, गीलापन। (वि०) नम, तर, गीला। [(वि०) **ओदा**—[सं० उद=जल] गीला। (स्त्री०) **ओदी**। (संज्ञा) **ओदाई**]

ओदक—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी, जल।

ओदन—(संज्ञा, पु०, सं०) पका हुआ चावल, भात।

ओदर—(संज्ञा, पु०, दे०) उदर (सं०), पेट। (वि०) खुदा हुआ।

ओदरना—(क्रि०, अ०) [हिं० औदारना] विदीर्ण होना, फटना, छिन्न-भिन्न होना, नष्ट होना, खुदना। "ओदरहिं बुरुज जाँहि सब पीसा"—प०।

ओदारना§—(क्रि०, स०, दे०) [सं० अवदारण] फाड़ना, खोदना, विदीर्ण करना। छिन्न भिन्न या नष्ट करना।

ओधना—(क्रि०, अ०, दे०) बँधना, उलझना, काम में लगना। "भारत होइ जूझ जौ ओधा"—प०।

ओधान—(वि०, दे०) लड़ने मे व्यस्त होना, तैयार या लगा होना, उलझना।

ओधाना—(क्रि०, स०, दे०) उलझाना, अटकाना, काम मे लगाना, फँसाना।

ओधे—(संज्ञा, पु०, दे०) अधिकारी, भीतरिया, ठाकुरजी का रसोइया (वल्लभ संप्रदाय)। (वि०) उलझा, व्यस्त।

ओनचन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ऐंचना] खाट में पैताने की रस्सी, अदवाइन, ओरचावन। [(क्रि०, स०) **ओनचना**—पैताने की रस्सी खींच कर कड़ा करना।]

ओनवना*—(क्रि०, अ०, दे०) उनवना, गिरना। झुकना, टूटना।

ओना§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्गमन] तालाबों मे पानी निकलने का मार्ग, निकास। (वि०) [सं० ऊन] कम।

ओनामासी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ॐ०] (नमः सिद्धम्) प्रारम्भ, शुरू, अक्षरारम्भ।

ओप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दीप्ति, चमक, कांति, आभा, शोभा, पालिश। मांजा।

ओपची—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ओप] कवच-धारी, योधा, अस्त्रधारी, रक्षक।

ओपना—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० आवपन] चमकाना, साफ करना, प्रकाशित करना, पालिश करना। (क्रि०, अ०, दे०) झलकना, चमकना। [(वि०, स्त्री०) **ओपनिवारी**, ओपवारी।]

ओपनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मांजने या घोटने की वस्तु।

ओफ—(अव्य०, अनु०) पीड़ा, खेद, शोक-सूचक शब्द।

ओबरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तंग कोठरी।

ओम् (ओ३म्)—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रणवमंत्र, ओंकार।

ओर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अवार] नियत स्थान के अतिरिक्त शेष विस्तार। तरफ, दिशा। किनारा, पक्ष, छोर। "दोनों को दो ओरें थीं"—म० (संज्ञा, पु०) आदि, आरंभ। पार्श्व, सिरा, छोर, पक्ष। [(यौ०)—**छोर**।] **मुहा०—निबाहना (निभाना)** अंत तक अपना कर्त्तव्य पूरा करना।

ओरमना—(क्रि०, अ०, दे०) लटकना, सूजना, फूलना। [(संज्ञा, पु०) **ओरम**—सूजन, वरम। (संज्ञा, स्त्री०) **ओरमा**—एकहरी सिलाई।]

ओरा§—(संज्ञा, पु०, दे०) ओला (हि०) वृष्टि-पाषाण। "ओरोसो बिलानो जात।"

ओराना§—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० ओर—अंत+आना] समाप्त होना।

ओराहना§—(संज्ञा, पु०, दे०) ओरहना (दे०) उलाहना, उपालम्भ, शिकायत।

ओरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ओलती, (अव्य०, दे०) ओर। स्त्रियों के लिए सम्बोधन शब्द (ब्र०)।

ओरेहा—(संज्ञा, पु०, दे०) निर्माण, सृष्टि-रचना।

ओरौती (ओरती)—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० उलती] ओलती, ओदी, ओरिया, छप्पर का किनारा।

ओलंदेज—(संज्ञा, पु०) हालैंड देश।

ओलंदेजी—(वि०) हालैंड देश का।

ओलंबा (ओलभा)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपालंभ] उलाहना, शिकायत, उपालंभ, गिला, उराहनो (ब्र०)।

ओल—(संज्ञा, पु०, सं०) सूरन, जिमीकंद। (वि०) गीला, ओदा। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० क्रोड़] गोद। आड़, ओट। शरण, पनाह। वह वस्तु या आदमी जो जमानत में रहे, धरोहर, न्यास, जमानती वस्तु या व्यक्ति। बहाना, मिस। "लखि लाल गये करिकै कछु ओल्यो"—भाव०।

ओलती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छप्पर का किनारा जहाँ से पानी गिरता है, ओरी, ओरौती।

ओलना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० ओल] परदा करना, ओट करना। आड़ना, रोकना। ऊपर लेना, सहना। (क्रि०, स०) [सं० शूल, हि०, हूल] घुसाना।

ओलरना (उलरना)—(क्रि०, अ०, दे०) लेटना।

ओला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपल] वृष्टि के हिम-पाषाण। पत्थर, बिनौला। मिश्री का लड्डू। (वि०) ओले सा ठंडा, बहुत सर्द। (संज्ञा, पु०) (हि० ओल) परदा, ओट। भेद, गुप्त बात।

ओलिक—(संज्ञा, पु०, दे०) परदा, आड़।

ओलियाना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० ओल=गोद] गोद मे भरना, अंचल मे लेना। (क्रि०, स०, दे०) [हि० हूलना] ठूँसना, घुसाना।

ओली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ओल] गोद, अंचल, पल्ला, धोती। **मुहा०—ओड़ना**—अंचल फैलाकर मांगना।

ओलौना—(संज्ञा, पु०, दे०) उदाहरण, तुलना।

ओषधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वनस्पति, जड़ी बूटी, जो दवा के काम मे आवे। तृण, घास। पौधा, दवा।

ओषधीश (ओषधिपति)—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा। कपूर।

ओष्ठ—(संज्ञा, पु०, सं०) होंठ, ओठ, लब, रद, अधर।

ओष्ठ्य—(वि०, सं०) ओष्ठ से सम्बन्धित, ओष्ठों की सहायता से उच्चारित व्यंजन (प् फ् आदि)। —ओंठ-सम्बन्धी, ओठ से उच्चारित।—**वर्ण**—उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।

ओष्ठी—(वि०, सं०) बिंबाफल, कुंदरू।

ओस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अवश्याय] हवा मे मिली हुई भाप जो रात को सरदी से जमकर जल-कण के रूप में पदार्थों पर पड़ी हुई प्रातःकाल

दिखाई देती है, शबनम (फ़ा०)। **मुहा०—पड़ना (पड़जाना)** कुम्हलाना, बेरौनक होना, उमंग बुझ जाना, लज्जित होना।**—धुला**-(वि०) [दे०] ओस की बूँदों से जो गोला हो, ओस की बूँदों से सिक्त। 'ओस-धुले पथ में छिप तेरा'—महा०।

ओसर*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कलोर, जवान गाय या भैंस।

ओसरी* (ओसरा)—(संज्ञा, पु०, दे०) बारी, पाली, दाँव, क्रम, पारी।

ओसाई§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ओसाना] ओसाने का काम, ओसाई की मजदूरी।

ओसाना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आवर्षण] दाँये हुए अनाज को हवा में उड़ाना, जिससे दाना और भूसा अलग अलग हो जाय।

ओसार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अवसार—फैलाव] विस्तार।

ओसारा§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपशाला] दालान, बरामदा, ओसारा का छाजन, सायबान। [स्त्री० **ओसारी**]।

ओसीसा (उसीसा)—(संज्ञा, पु०, दे०) सिरहना, तकिया।

ओह—(अव्य०) [सं० अहह्] आश्चर्य, खेद या उपेक्षा-सूचक शब्द, ओहो, ओहो हो।

ओहट*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ओट, आड़।

ओहदा—(संज्ञा, पु०, अ०) पद, स्थान, हुद्दा (दे०)। [(संज्ञा, पु०, अ०) **ओहदेदार**—पदाधिकारी, हाकिम।]

ओहर—(क्रि०, वि०, दे०) उधर (हि०) (संज्ञा, पु०, दे०) ओट, ओझल।

ओहार—(संज्ञा, पु०, दे०) परदा, आड़। उहार (दे०)। उहर (दे०)।

ओहि—(सर्व०, दे०) विभक्ति के पूर्व का रूप।

ओही—(सर्व०, दे०) उसे, वही। "चातक रटत तृषा अति ओही"—रामा०।

ओहो—(अव्य०, सं०) आश्चर्य या आनन्द-सूचक शब्द, अहो।

औ

औ—संस्कृत वर्णमाला का चौदहवाँ और हिन्दी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण। अ+ओ का संयुक्त वर्ण, जो कंठ और ओष्ठ से बोला जाता है। (अव्य०, दे०, अल्प०) और। आह्वान। सम्बोधन। विरोध। निर्णय-सूचक। (संज्ञा, पु०, सं०) अनन्त। निस्वन। "क्यों कमाये औ करे कुछ काम क्यों"—हरिऔध।

औं—(अव्य०, दे०, सं०) शूद्रों का प्रणव वाचक (ओं)।

औंगना—(क्रि०, स०, दे०) देखो "ओंगना" गाड़ी की धुरी मे तेल देना।

औंगा—(वि०, दे०) [सं० अवाक्] गूँगा, मूक। [(संज्ञा, स्त्री०) **औंगी**—चुप्पी, मौनता, खामोशी, गूँगापन।]

औंघना (औंघाना)—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० अवाङ्] ऊँघना, अलसाना। [(संज्ञा, स्त्री०, दे०) **औंघाई**—झपकी, ऊँघ हलकी नींद।]

औंजना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० आवेजन] ऊबना, व्याकुल होना, अकुलाना। (क्रि०, स०, दे०) उड़ेलना, ढालना।

औंठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ओष्ठ] उठा या उभड़ा हुआ किनारा, बारी, छोर। ओठ।

औंड़*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंड] बेलदार, मिट्टी खोदने या उठाने वाला।

औंड़ा—(वि०, दे०) [सं० कुंड] गहरा, गंभीर। [**औंड़ी**। (वि०, स्त्री०) उमड़ा हुआ।]

औंदना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उन्माद, उद्विग्न] उन्मत्त होना, व्याकुल या बेसुध होना, घबराना।

औंदाना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० उद्विग्न] ऊबना, दम घुटने से घबराना या व्याकुल होना, विकल होना।

औंधना—(क्रि०, अ०) [हि० औंधा] उलट जाना। (क्रि०, स०) उलटा कर देना।

औंधा—(वि०, दे०) [सं० अधोमुख] उलटा, पेट के बल लेटा हुआ, पट, नीचे मुख किये हुए। [(स्त्री०) **औंधी**] **मुहा०—खोपड़ी का**—मूर्ख, जड़।**—(धी) बुद्धि (समझ)** उलटी, या जड़ बुद्धि।**—(धे) मुँह गिरना**—धोखा खाना, नीचा देखना। (संज्ञा, पु०, दे०) उलटा या चिल्ला नामक पकान्न।

औंधाना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० अधः] उलटना। नीचा करना, लटकाना। नीचे को मुँह करना।

औंरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आमलक] आँवला, औंला, धात्री फल।**—सार**—(संज्ञा, पु०) गंधक विशेष।

औकन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) राशि, ढेर।

औक़ात—(संज्ञा, पु०) [बहु० अ० वक़्त] समय, वक़्त। (संज्ञा, स्त्री०) एक० वक़्त, समय। हैसियत, बित्त, बिसात, सामर्थ्य।

औखद (औखध)—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) औषध (सं०) ।

औखा—(संज्ञा, पु०, दे०) गाय का चमड़ा । चरसा ।

औगत*—(सज्ञा, स्त्री०. दे०) [सं० अव+गति] दुर्दशा, दुर्गति । (वि०, दे०) [सं० अवगत] ज्ञात, विदित ।

औगाहना—(क्रि०, अ०, दे०) अवगाहना, पार पाना ।

औंगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बैलों के हाँकने की छड़ी, पैना, कोड़ा । (संज्ञा, स्त्री०) (सं० अवगर्त) घास-फूस से ढका जानवरों के फँसाने का गड्ढा ।

औगुन*—(संज्ञा, पु०, दे०) अवगुण (सं०), दुर्गुण । [(वि०) **औगुनी**] "औगुन चित न धरौ"—सूर० ।

औगुनी—(वि०) दोषी, दुर्गुणी ।

औघ—(पु०, सं०) प्लावन, बाढ़ ।

औघट*—(वि०, दे०) अवघट, अटपट, कठिन, दुर्गम, दुस्तर । (संज्ञा, पु०) दुर्गम पथ । "घाट छाँड़ि औघट धर्‌यौ"—छत्र० ।

औघड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अघोर] अघोरी । सोच विचार न करने वाला । मनमौजी । (वि०) अटपट, अंडबंड, उलटा । [स्त्री० **औघड़िन**]

औघर—(वि०, दे०) [सं० अव+घट] अटपट, अनगढ़ । विचित्र । अंडबंड, अनोखा, विलक्षण । (वि०) सुघर ।

औचक (औचक)—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० अव+चक्र—भ्रांति] अचानक, सहसा, एकाएक । "औचक दृष्टि परे रघुनायक"—के० ।

औचट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आ+उचटना हि०] कठिनाई, विकट स्थिति । संकट, अंडस । (क्रि०, वि०) अचानक, अनचीते मे । भूल से । सहसा ।

औचिती—(संज्ञा, स्त्री०, पु०) उपयुक्तता, उचित का भाव ।

औचित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उचित होना, मुनासिब होने का भाव ।

औचिन्त—(वि०, दे०) [सं० अचिंत] निश्चिंत ।

औछ—(संज्ञा, पु०, दे०) दारू हलदी की जड़ ।

औज*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ओज । (सं०) तेज, बल, प्रताप । (संज्ञा, पु०, अ०) सर्वोच्चपद । ऊँचाई ।

औजड़—(वि०, दे०) अनारी, उजड्ड ।

औजार—(संज्ञा, पु०, अ०) लोहार या बढ़ई आदि के हथियार । राछ ।

औझड़ (औझर)—(क्रि०, वि०, दे०) [हि० अव+झड़ी] लगातार, निरंतर, बराबर । (संज्ञा, पु०, दे०) धक्का, ठेल । खोंच ।

औटना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आवर्तन] दूध आदि को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा करना, खौलाना, उबालना । (क्रि०*) व्यर्थ घूमना, भटकना । खौलाना । आँच पर गाढ़ा होना । [(क्रि०, स०) **औटाना** । (संज्ञा, स्त्री०) **औटन**—उबाल, ताप ।]

औटपाय (औठपाय)—(संज्ञा, पु०, दे०) बुरे उपाय, शरारत, बदमाशी के काम, चालबाजी । [दे० **अठपाव**] ।

औडुलोमि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वेदान्त वेत्ता ऋषि ।

औढर—(वि०, दे०) [हि० अव+ढार (ढाल)] जिधर मन आवे उधर ही ढल जाने वाला, मनमौजी, तनिक मे ही प्रसन्न होने वाला । "आशुतोष सिव औढरदानी"—तुल० (रा०) ।

औतरना*—(क्रि०, अ०, दे०) अवतारना, पैदा होना, अवतीर्ण होना ।

औतार*—(संज्ञा, पु०, दे०) अवतार । (सं०) सृष्टि, देही । "कीन्हेसि बरन बरन औतारू"—प० ।

औत्तमि—(संज्ञा, पु०, सं०) १४ मनुओं मे से तीसरे ।

औत्तानपादी—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तानपाद नृप के पुत्र ध्रुव ।

औत्कंठ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्कंठा, इच्छा, चिंता ।

औत्कर्ष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्कर्षता, उत्तमता, वृद्धि ।

औत्सुक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्सुकता ।

औत्तरेय—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा परीक्षित, उत्तरा से पैदा हुआ ।

औत्सर्गिक—(वि०, सं०) समान रूप से विधि के योग्य । सामान्य ।

औत्सुक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्सुकता ।

औथरा*—(वि०, दे०) उथला, छिछला । "अति अगाह अति औथरी..."—वि० ।

औदनिक—(वि०, सं०) सूपकार, रसोइया ।

औदरिक—(वि०, सं०) उदर-सम्बन्धी, बहुत खाने वाला, पेटू, पेटार्थी ! स्वार्थी ।

औदर्य—(वि०, सं०) पेट सम्बन्धी, पाचन सम्बन्धी ।

औदसा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अवदशा, (सं०) दुर्दशा ।

औदात—(वि०, दे०) [सं० अवदात] श्वेत, गौर।

औदान—(संज्ञा, पु०, दे०) सेंत-मेंत की चीज, मुफ्त को वस्तु। घेलुवा।

औदार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उदारता, सात्विक नायक का एक गुण।

औदास्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उदासीनता, वैराग्य, अनिच्छा। [(यौ०) **औदास्यभाव**—वैराग्य, उपेक्षा भाव]

औदीच्य—(संज्ञा, पु०, सं०) गुजराती ब्राह्मणों की एक उपजाति।

औदुम्बर—(वि०, सं०) गूलर का या तांबे का बना हुआ। (संज्ञा, पु०, सं०) गूलर का यज्ञ-पात्र। एक प्रकार के मुनि।

औद्दालिक—(संज्ञा, पु०, सं०) दीमक आदि के बिलों का कटु अथवा कसैले स्वाद वाला एक पेय या मधु। एक तीर्थ।

औद्धत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अक्खड़पन, उजड्डता, धृष्टता, दौरात्म्य, ढिठाई, उग्रता।

औद्योगिक—(वि०, सं०) उद्योग-सम्बन्धी।—**उपनिवेश**— उद्योगियों की बस्ती। [इण्डस्ट्रियल कालनी]।—**अशांति**–व्यवसाय के क्षेत्र की अव्यवस्था। [इण्डस्ट्रियल अनरेस्ट]।—**क्रांति**–उद्योग के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण उथलपुथल या हलचल [इण्डस्ट्रियल रिवोल्यूशन]।—**क्षेत्र**–व्यवसायिक क्षेत्र। [इंडस्ट्रियल एरिया]।—**मंदी**–व्यवसाय के क्षेत्र में होनेवाली मंदी [इंडस्ट्रियल डिप्रेशन]।—**रसायनज्ञ**–शिल्पी रासायनी। [इण्डस्ट्रियल केमिस्ट]।—**विवाद**—उद्योग-धंधों से सम्बन्धित झगड़े। [इण्डस्ट्रियल डिसप्यूट]।—**विषय**–उद्योग संबंधी मामले। [इण्डस्ट्रियल मैटर]।—**संकट**–उद्योग-धंधों की विपन्नावस्था। [इण्डस्ट्रियल क्राइसिस]।—**समिति**–उद्योग-धंधों से सम्बन्धित समिति। [इण्डस्ट्रियल कमेटी]।—**सम्मेलन**–उद्योग-धंधों से सम्बन्धित बातों पर विचार-विमर्श के लिए होने वाला सम्मेलन। [इंडस्ट्रियल कान्फ्रेंस]।—**संघ**–व्यावसायिकों का मंडल। [इण्डस्ट्रियल सिंडीकेट]।

औद्वाहिक—(वि०, सं०) विवाह-सम्बन्धी धन।

औध*—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, दे०) अवध, अयोध्या। "औध तजी मग जात ज्यों रूख"—तुल०।

औधारना—(क्रि०, स०, दे०) अवधारना।

औधि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अवधि, सीमा, निर्धारित समय।

औनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अवनि, भूमि। [(संज्ञा, पु०) **औनिप**—राजा।]

औना-पौना—(वि०) [हि० ऊन=कम+पौना=¾ भाग] आधा-तिहाई, थोड़ा-बहुत, न्यूनाधिक। (क्रि०, वि०) कमती बढ़ती पर। **मुहा०—औने पौने करना**—जितना ही दाम मिले उतने ही पर बेच डालना।

औन्नत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊँचाई, उत्थान, विकास।

औपग्रस्तिक—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रहण, चंद्रमा अथवा सूर्य का ग्रस्त।

औपचारिक—(वि०, सं०) उपचार-सम्बन्धी, अवास्तविक, जो केवल कहने-सुनने के लिए हो।

औपदेशिक—(वि०, सं०) उपदेश से अथवा पठन-पाठन द्वारा जीवन-निर्वाह करने वाला।

औपनिवेशिक—(वि०, सं०) उपनिवेश-सम्बन्धी।—**नीति**–उपनिवेश के कार्य संचालन के लिए नियत की गई कार्य-पद्धति। [कोलोनियल पालिसी]।—**व्यापार**–उपनिवेशों के बीच होने वाला व्यापार। [कोलोनियल ट्रेड]।—**सरकार**–उपनिवेश शासन। [कोलोनियल गवर्नमेंट]।

औपनिषदिक—(वि०, सं०) उपनिषद् सम्बन्धी।

औपनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ओपनी।

औपन्यासिक — (वि०, सं०) उपन्यास-सम्बन्धी (विषयक), उपन्यास में वर्णनीय। अद्भुत। (संज्ञा, पु०) उपन्यास-लेखक।

औपपत्तिक (शरीर)—(वि०, सं०) उपपत्ति सम्बन्धी। (संज्ञा, पु०)—लिंगशरीर, देव-लोक या नरक के जीवों की सहज देह।

औपम्य— (संज्ञा, पु०, सं०) समता, बराबरी, सादृश्य।

औपयिक—(वि०, सं०) न्याय्य, उपयुक्त।

औपश्लेषिक (आधार)—(वि०, सं०, पु०) अधिकरण कारक के अन्तर्गत वह आधार जिसके किसी अंश ही से दूसरे का लगाव हो (व्याक०)।

औपसर्गिक—(वि०, सं०) उपसर्ग-सम्बन्धी। जो उपसर्ग रूप मे मिला हो। आपत्ति झेलने मे समर्थ।

औपहारिक—(वि०, सं०) वह वस्तु जो उपहार के काम आने वाली हो।

औबट—(वि०, सं०) बुरा, औघट दुर्गम।

औम*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अवम] अवम-तिथि, क्षय प्राप्त तिथि।

और—(अव्य०, दे०) [सं० अपर] संयोजक शब्द, औ, अरु। (वि०) दूसरा, अन्य, भिन्न। अधिक,

ज्यादा। "आप जो और के सहारे हो"—हरिऔध। "होश औरों के उड़ाते है" ।—हितैषी। मुहा०—का और—कुछ का कुछ, अंड-बंड, विपरीत।—क्या—हाँ, ऐसा ही है (उत्तर में) उत्साह-वर्धक वाक्य।—तो और—दूसरों का ऐसा करना तो उतने आश्चर्य का विषय नहीं।—हो (कुछ) होना—विपरीत होना, अचिंतित रूप मे होना।—तो क्या—और बातों की चर्चा ही क्या।—से और—दूसरे से दूसरा, कुछ का कुछ।

औरत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) स्त्री० जोरू। "औरतों की सी कलाई आपकी"—हरिऔध।

औरस (औरस्य)—(संज्ञा, पु०, सं०) १२ प्रकार के पुत्रों में से सर्वश्रेष्ठ, धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र, स्वपुत्र, सवर्णा स्त्री से उत्पन्न। (वि०) विवाहिता स्त्री से उत्पन्न।

औरसना*—(क्रि०, अ०) [हि० अव+रस] विरस होना, अनखाना, रुष्ट होना।

औरासा—(वि०, दे०) विचित्र, विलक्षण, बेढंगा।

औरेब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अव+रेब—गति] वक्र गति, तिरछी चाल, पेंच, कपड़े की तिरछी काट, उलझन। चाल की बात। [वि० **औरेबदार**]

और्ध्वदैहिक—(वि०, सं०) प्रेत क्रिया, अंत्येष्टि क्रिया, श्राद्ध।

और्व—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़वानल, नमक, भृगुवंशीय एक ऋषि, दक्षिण का वह भाग जहाँ सब नरक हैं (पु०)।

और्वशीय—(संज्ञा, पु०, सं०) वशिष्ठ। अगस्त। उर्वशी-पुत्र।

औलना—(क्रि०, अ०, दे०) गरमी पड़ना, खौलना, जलना।

औलाद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) संतान, संतति, नस्ल।

औला-मौला—(वि०, अनु०) मन मौजी, भोला भाला।

औलिया—(संज्ञा, पु०) [अ० वली का बहु० व०] पहुँचे हुए फ़कीर।

औलूक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वैशेषिक-दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणादि।

औवल—(वि०, अ०) पहला, प्रधान, मुख्य, सर्वोत्तम। (संज्ञा, पु०) आरम्भ, आदि।

औशि (औसि)*—(अव्य, दे०) अवसि, अवश्य।

औषध—(संज्ञा, पु०, सं०) अगद, भेषज, दवा। [(स्त्री०) **औषधि**]—**निर्देश**-डाक्टर का नुस्खा। [प्रिसक्रिप्शन]।—**विज्ञान**-भेषज शास्त्र। [थेराप्यूटिक्स]।

औसत—(संज्ञा, पु०, अ०) बराबर का पड़ता, समष्टि का सम विभाग, सामान्यस्तर। (वि०)—माध्यमिक, साधारण।

औसना§—(क्रि०, अ०) [हि० उमस+ना] गरमी पड़ना, ऊमस होना। खाने की वस्तुओं का बासी हो कर सड़ना। व्याकुल होना।

औसर*—(संज्ञा, पु०, दे०) अवसर (सं०), समय, मौक़ा। "......औसर करै ध्यान आन बिबस बनायो है"—स० (अ०, ब०)।

औसान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अवसान] अंत, परिणाम। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) सुधि-बुधि, होश-हवास। "छूटे अवसान मान सकल धनंजय के"—रत्ना०।

औसेर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अवसेर, चिंता, खटका।

औहत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अपमृत्यु। दुर्गति।

औहाती—(वि०, दे०) अहिवाती, सोहागिन, सौभाग्यवती।

क

क—हिन्दी-संस्कृत की वर्णमालाओं का प्रथम व्यंजन, जिसे स्पर्श वर्ण कहते है और जो कंठ से बोला जाता हैं। (संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा। विष्णु। सूर्य। अग्नि। प्रकाश। कामदेव। दक्ष, प्रजापति। वायु। राजा। यम। मन। शरीर। आत्मा। शब्द। धन। काल। जल। मुख। केश। मयूर। सिर। सम्बन्ध कारक की विभक्ति "का" का ह्रस्व रूप (दे०)। "अरिहुँक अनभल कीन्ह न रामा"—तुल० (रा०)।

कं—(संज्ञा, पु०) [सं० कम्] जल। मस्तक। सुख। काम। अग्नि। कंचन। (सर्व०) कौन, किसको।

कँउधा—(संज्ञा, पु०, दे०) विद्युत्प्रभा, बिजली, कौंधा (दे०)।

कंक—(संज्ञा, पु०) [सं० कंक्+अच्] सफेद चील, कॉक (दे०), एक प्रकार का बड़ा आम। बक। यम। क्षत्रिय। युधिष्ठिर का कल्पित नाम (जब वे विराट नृप के यहाँ थे)। कर्कट। [(स्त्री०) **कंका, कंकी**] 'काक कंक लै भुजा उड़ाहीं"—तुल० (रा०)।—**त्रोट**-(संज्ञा, पु०) एक प्रकार की मछली।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०) कंक के पर से युक्त बाण।—**पृष्ठी**-(संज्ञा, स्त्री०) एक प्रकार की मछली।—**मुख**-

(संज्ञा, पु०) चुभा हुआ काँटा निकालने के लिए एक प्रकार की चिमटी।

कंकड़ (**कंकर**)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्कर] चिकनी मिट्टी और चूने के योग से बने रोड़े। पत्थर का छोटा टुकड़ा, काँकर (ब्र०)। सरलता से न पिसने योग्य वस्तु। सूखा या सेंकी तमाखू। "कुस कंटक मग कंकर नाना"—तुल० (रा०) [(स्त्री० अल्पा०) कंकड़ी। (वि०, पु०) **कँकरीला** (**कँकड़ीला**) कंकड़दार। (स्त्री०, वि०) **कँकरीली**]

कंकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) छर्रा, छोटा कंकड़। टुकड़ा, रवा।

कंकण—(संज्ञा, पु०) [सं० कं+कण+अल्] कलाई में पहिनने का एक आभूषण, वलय, कंगन, कड़ा, ककना। दूल्हा-दुलहिन के हाथ में ब्याह के समय पर रक्षार्थ बाँधा जाने वाला तागा। कंकन (दे०)। कंगना (प्रा०)

कंकपत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का बाण। "नखप्रभा भूषित कंकपत्रे"—रघु०।

कंकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [कंकड़ी हि०] कंकड़, कांकरी (ब्र०)।

कंकरीट—(संज्ञा, स्त्री०) [अं० कांक्रीट] चूने, कंकड़, रोड़े आदि से बना हुआ गच बनाने का मसाला। छर्रा, बजरी, छोटी-छोटी कंकड़ियाँ।

कंका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उग्रसेन की कन्या जिसका विवाह वसुदेव के अनुज से हुआ था।

कंकाल—(संज्ञा, पु०, सं०) ठठरी, अस्थि-पंजर। **—माली**-(संज्ञा, पु०) शिव, भैरव। **—मय**-(वि०) जिनका शरीर हड्डियों के एक ढाँचे के रूप में ही रह गया है। "वे दीन, क्षीण कंकाल-मय"—निराला।

कंकाली—(संज्ञा, पु०, हि०) नीच जाति। (वि०, पु०) दुर्बल, शैतान। (वि०, स्त्री०) कर्कशा स्त्री।

कंकालिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डायन, भूतिन।

कंकाली—(संज्ञा, पु०) भिक्षा माँगने वाली एक जाति।

कंकूष—(संज्ञा, पु०, सं०) शरीर का आंतरिक भाग।

कंकोल—(संज्ञा, पु०, सं०) शीतल चीनी का एक भेद। यह शीतल चीनी से कुछ बड़े और कड़े होते हैं, कंकोल मिर्च।

कंखवारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० काँख+वारी प्रत्य०] काँख की फुड़िया। कँखौरी, कौंख।

कंगन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कंकण] कंकण। सिखों (अकाली) के सिर का लोहे का चक्र। कंगना (दे०)। [(स्त्री०) **कँगनी**]

कँगना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कंगन] कंकण, कंकण बाँधते समय का गीत। **लो०** "हाथ कंगन को आरसी क्या—"

कँगनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कंगन] छोटा कंगन, छत या छाजन के नीचे दीवार की उभड़ी लकीर, कार्निस, कगर, दाँते या कंगूरेदार, गोल चक्कर। एक अन्न, (सं० कंगु) काकुन, टाँगुन।

कँगला—(वि०, दे०) [सं० कंकाल] भुक्खड़, अकाल पीड़ित, निर्धन, दरिद्र, (संज्ञा, पु०) धनहीन व्यक्ति। "कँगला जहान के मुसाहिब के बेगला मैं"।

कंगाल—(वि०, दे०) देखिए 'कँगला' [(संज्ञा, स्त्री०, भा०) **कँगाली**—निर्धनता, दरिद्रता. (स्त्री०) **कँगालिन**।]—**गुंडा**-गरीब शौकीन और बदमाश। **—बाँका**-दरिद्र, किन्तु अभिमानी।

कंगुल—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथ, कर।

कँगूर—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० कंगरा] शिखर, चोटी। किले की दीवार पर थोड़ी-थोड़ी दूर पर बने बुर्ज जहाँ से सिपाही लड़ते हैं, बुर्ज। गहनों में छोटा रवा। [वि० **कँगूरेदार**]।

कंगूरा—(संज्ञा, पु०) बुर्ज, बड़ी इमारत का ऊपरी भाग।

कंघा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कंक] लकड़ी, सींग या धातु की दाँतेदार वस्तु जिससे बाल साफ़ किये जाते हैं। करघे में भरनी के तागों को कसने का एक यंत्र, बय, बौला। [(स्त्री०) अल्पा० **कंघी**— अतिबला, एक दवा।] **मुहा०—चोटी (करना)**— बनाव सिंगार करना।

कँघेरा—(संज्ञा, पु०) [हि० कंघा+एरा प्रत्य०] कंघा बनाने वाला। [स्त्री० **कँघेरिन**]

कंच (**काँच**)—(संज्ञा, पु०, दे०) काँच, शीशा।

कंचन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कांचन] सोना, सुवर्ण। **मुहा०—बरसना**—(किसी स्थान का) समृद्धि और शोभायुक्त होना।**—बरसाना**-बहुत कुछ धनादि देना। "तुलसी" तहाँ न जाइए कंचन बरसै मेह" धन, संपत्ति। कचनार, धतूरा। रक्त कांचन। [स्त्री० **कंचनी**—एक जाति जिसकी स्त्रियाँ प्रायः वेश्यावृत्ति की होती हैं।] (वि०) स्वस्थ, स्वच्छ।

कंचनक—(संज्ञा, पु०, सं०) कचनार, मैनफल।

कंचुक—(संज्ञा, पु०, सं०) जामा, चपकन, अचकन। चोली, अँगिया। वस्त्र। बख्तर, कवच। केंचुल।

कंचुकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चोली, अँगिया। (संज्ञा, पु०) [सं० कंचुकिन्] अंतःपुर रक्षक, रनिवास के दास-दासियों का अध्यक्ष। कँचुवाँ (दे०)।

कंचुरि (कँचुलि)†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) केंचुल, केंचुली।

कँचेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० काँच+एरा प्रत्य०] काँच का काम करने वाला। [स्त्री० **कँचेरिन**]

कंज—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा। कमल। अमृत। चरण की एक रेखा। केश, सिर के बाल। पद्म।—**कोष**—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल का भीतरी भाग जहाँ उसका पराग संचित रहता है। "अधखुले दृगों के कंज-कोष"—'महा०'।

कंजई—(वि०) [हिं० कंजा] कंजे के रंग का, खाकी। (संज्ञा, पु०) खाकी रंग, कंजई रंग की आँख वाला घोड़ा।

कंजड़ (कंजर)—(संज्ञा, पु०, दे०) रस्सी, सिरकी आदि बनाने और बेचने वाली जाति। खाना बदोश जाति-विशेष। [(स्त्री०) **कंजड़िन**] (वि०) नीच, तुच्छ।

कंजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करंज] एक वृक्ष जिसके फल दवाओं में पड़ते हैं, करंजुवा। (वि०) कंजे के रंग का, भूरा, गहरे खाकी रंग का। भूरे नेत्र वाला। [(स्त्री०) **कंजी**]

कंजावलि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार का वर्ण-वृत्त। कमल पंक्ति।

कंजिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ब्राह्मणयष्टिका नामक पौधा।

कंजूस—(वि०, दे०) [सं० कण+चूस—हिं०] कृपण, सूम। [**संज्ञा, स्त्री० कंजूसी**]

कंट, कंटक—(संज्ञा, पु०) [सं० कंट्+णक्] काँटा, सुई की नोक, विघ्न, काँट (दे०), बाधा। बखेड़ा। क्षुद्र शत्रु। रोमांच। बाधक तत्त्व। कवच। [(वि०) **कंटकित**—काँटेदार। पुलकित]—**द्रुम**—(संज्ञा, पु०) कँटीला वृक्ष, बेल। शाल्मली। बबूर।—**पुष्प**—(संज्ञा, पु०) गुलाब। केवड़ा।—**प्रावृता**—(संज्ञा, स्त्री०) घृतकुमारी, घीकुवाँर।—**फल**—(संज्ञा, पु०) पनस, कटहर, सिंघाड़ा।—**भुक्**—(संज्ञा, पु०) ऊँट, उष्ट्र।

कंटकलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खीरा।

कंटकारी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भटकटैया, कटेरी। सेमल।

कंटकित—(वि०, सं०) कंटकयुक्त अथवा भावावेश में कंटकयुक्त प्रतीत होने वाला। "कंटकित रसालों पर उठता है"—महा०।

कंटकी—(वि०, सं०) काँटेदार। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) भटकटैया।

कंटर—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० डिकैंटर] शीशे की सुराही। शीशी, जिसमें शराब या इत्र आदि रखते हैं।

कंटाइन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कात्यायिनी] चुड़ैल, डाइन, कर्कशा।

कंटाप—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० काँटा] एक कटीला वृक्ष जिसकी लकड़ी से यज्ञ पात्र बनते हैं।

कंटार—(वि०, दे०) कँटीला, खुरदरा। [(संज्ञा, स्त्री०) **कंटारिका**—भटकटैया।]

कँटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० काँटी] काँटी, छोटी कील। मछली मारने की छोटी अकुसी। कुएँ से चीज़ निकालने का कँटियों का गुच्छा। स्त्रियों के सिर का एक गहना।

कँटीला—(वि०) [हिं० काँटा+ईला प्रत्य०] काँटेदार। [(स्त्री०) **कँटीली**—काँटेवाली, चुभने वाली।] —**आँख**—बाँकी आँख। "अब अलि रही गुलाब की, अपत कटीली डार"।

कंटोप—(संज्ञा, पु०) [हिं० कान+तोपना] सिर और कान ढकने वाली एक प्रकार की टोपी, टोप, टोपा।

कंठ—(संज्ञा, पु०, सं०) गला, टेटुआ, भोजन जाने और आवाज निकालने की कंठगत नलियाँ, घाँटी। (संज्ञा, पु०) स्वर, आवाज़, शब्द। तोते, पंडुक आदि के गले की रेखा, हँसली। किनारा, तट। तीर, कंठा। **मुहा०—फूटना**—वर्णों के स्पष्टोच्चारण का आरंभ होना। घाँटी फूटना। युवावस्था का आगमन तथा तत्समय स्वर-परिवर्तन होना।—**करना (में रखना)**—ज़बानी याद करना। —**होना**—याद होना।—**में होना**—कुछ कम याद होना।

कंठगत—(वि०, सं०) गले में आया या अटका हुआ। **मुहा०—(प्राण) कंठगत होना**—मृत्यु का निकट, होना, प्राण निकलने पर होना।

कंठतालव्य—(वि०, सं०) कंठ-तालु से उच्चरित होने वाले वर्ण, जैसे—ए, ऐ।

कंठपाशक—(संज्ञा, पु०, सं०) गले की फाँसी, हाथी के गले की रस्सी।

कंठभूषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हार, कंठाभरण।

कंठमाला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गले में लगातार छोटी छोटी फुंसियों के निकलने का एक रोग।

कंठला—(संज्ञा, पु०, दे०) कठुला, जो बच्चों के गले मे डाला जाता है।

कंठसिरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कंठश्री] कंठी, गले का एक गहना। "कल हंसनि कंठनि कंठसिरी" —केशव।

कंठस्थ—(वि०, सं०) कंठगत, जबानी, कंठाग्र, मुखाग्र। "कंठस्था या भवेद् विद्या सा प्रकाश्यसदा बुध:"।

कंठा—(संज्ञा, पु०) [हिं० कंठ] तोते आदि पक्षियों के गलों की रंगीन रेखायें। हँसली। सुवर्ण का एक गले का गहना जिसमे बड़े-बड़े दाने रहते हैं। कुर्ते या अँगरखे का अर्ध-चंद्राकार गला। "कुंजर-मनि कंठा कलित, उर तुलसी की माल"।

कंठाग्र—(वि०, सं०) कंठस्थ, जबानी।

कंठी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कंठा का अल्पा०] छोटी गुरियों का कंठा, वैष्णवों के पहिनने की तुलसी आदि की मनियों की छोटी माला।—**धारी**-(संज्ञा, पु०) भक्त, बैरागी। "भूखे भगति न होय गोपाला। लेलो आपन कंठी-माला।" **मुहा०—लेना** (नीच जाति, शूद्रों का) यज्ञोपवीत जैसा संस्कार, भक्त होना, गुरु-भक्त होना।—**देना** गुरु-मंत्र देना, शिष्य करना, गुरु होना। (वि०) कंठवाली—जैसे कोकिल कंठी। (संज्ञा, स्त्री०) तोते आदि के गले की रेखा, हँसली।

कंठीरव—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंह, व्याघ्र, शेर।

कंठौष्ठ्य—(वि०, सं०) कंठ और ओष्ठ (ओंठ) के सहारे से उच्चरित होने वाले वर्ण, जैसे—ओ, औ।

कंठ्य—(वि०, सं०) गले से उत्पन्न। कंठ से उच्चरित। गले या स्वर के लिए हितकर। (संज्ञा, पु०, सं०) कंठ से बोले जाने वाले वर्ण, अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग।

कंडरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रक्त की मोटी नाड़ी।

कंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्कंदन] गोबर का सूखा उपला जो जलाया जाता है। उपला। सुखा-मल। सुद्दा। गोटा। [(स्त्री०) **कंडी**—उपली।] **मुहा०—होना**—सूखना। दुर्बल होना। मर जाना। अकड़ जाना। भूख से व्याकुल होना।

कंडानक—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव का एक अनुचर।

कंडाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करनाल] नरसिंह। तुरही। तुरी। (संज्ञा, पु०, दे०) पानी रखने का लोहे या पीतल का बड़ा और गहरा बरतन।

कंडील, कंदील—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० कंदील] ऊपर के मुँह वाली मिट्टी, अबरक या कागज़ की बनी लालटेन।

कंडु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खुजली, खाज, खर्जन, कंडू (सं०)। [(वि०) कंडूयमान—खुजलाता हुआ।] "कंडूयमानन कंट कदाचित्"—रघु०।

कंडुपुष्पी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शखाहूली, सखौली, एक जड़ी।

कंडुघ्न—(वि०, सं०) कंडू या खुजली की नाशकारक दवा।

कंडू—देखिए 'कंडु'।

कंडूति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खुजलाहट।

कंडेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) लाठी। डंडा बनाने वाली एक जाति।

कंडोल—(संज्ञा, पु०, दे०) बाँस का बना हुआ एक पात्र, बँसोला।

कंडोलक—(संज्ञा, पु०, सं०) टोकरा, भंडार-घर।

कंडौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कंडा + और प्रत्य०] कंडे पाथने की जगह, कंडा रखने का स्थान।

कण्व—(संज्ञा, पु०, सं०) शकुंतला के पालक पिता। एक ऋषि।

कंत*—(संज्ञा, पु०, दे०) कांत (सं०), पति, स्वामी। प्रिय। ईश्वर।

कंथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुदड़ी, कथरी, "क्वचित्कंथाधारी, क्वचिदपिच पर्यंक शयन:"—भर्तृ०। कंथ (दे०)।

कंथी—(संज्ञा, पु०, हिं०) गुदड़ी वाला, जोगी, साधु।

कंद—(संज्ञा, पु०, सं०) बिना रेशे की गूदेदार जड़, जैसे—सूरन, शकरकंद, ओल, गाजर, मूली, लहसुन। बादल, बिदारी कंद। जमी कंद। १३ अक्षरों का एक वर्णिकवृत्त, छप्पय के ७१ भेदों मे से एक। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) जमाई हुई चीनी, मिश्री। मूल, जड़।—**मूल**-(संज्ञा, पु०, सं०) मुनि-भोजन। "कंद-मूल-फल अमिय अहारू"—तुल० (रा०)।—**वर्धन**-(संज्ञा, पु०, सं०) मूल।—**सार**-(पु०) नंदनवन। मृग। मूल का सार।

कंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) नाश, ध्वस्त।

कंदरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुफा, गुहा, कंदर (दे०)। "कंदर खोह नदी नद नारे"—तुल० (रा०)।

कंदराकर—(संज्ञा, पु०, सं०) पर्वत।

कंदरान—(संज्ञा, पु०, सं०) पर्कटी वृक्ष, पाकर या अखरोट का पेड़। (बहु० व०) गुफायें।

कंदराल—(संज्ञा, पु०, सं०) पाकर। हिंगोट वृक्ष।

कंदर्प—(संज्ञा, पु०) [सं० कं + दृप् + अच्] कामदेव, मदन। ११ प्रतालों में से एक ताल (संगीत)। "कंदर्प-दर्प दलने विरला समर्थाः..."—भर्तृ०। "रूपदर्प कंदर्प तुम्हें तो"—मैथिली०।

कंदल—(वि०) [सं० कंद + ला + ड्] उपराग, कोंपल, नवांकुर। विवाद, कलह। सोना।—**कंद**—सूरन।

कंदला—(संज्ञा, पु०) [सं० कंदल—सोना] सोने या चाँदी का तार या तार खींचने का पाँसा, टैनी, गुल्ली। तारकश के तार खींचने की चाँदी की लम्बी छड़।—**कचहरी**-(स्त्री०) जहाँ तार खींचने का काम होता हो।—**कश**-(पु०) तार खींचने का काम करने वाला।

कंदलित—(वि०, सं०) अंकुरित, प्रस्फुटित।

कंदली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नवांकुरित कोंपल।

कंदसार—(संज्ञा, पु०) देखिए 'कंद'।

कंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कंद] मूल, जड़। अरुई, घुइयाँ। शकरकंद।

कंदालु—(संज्ञा, पु०) बन कंद।

कंदासी—(संज्ञा, पु०, दे०) पियावासा नामक औषधि (वै०)।

कंदी—(संज्ञा, पु०, सं०) सूरन।

कंदील, कंडील—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार का लैंप।

कंदु—(संज्ञा, पु०) [सं० कंद + ड्] लोहमय पाकपात्र।

कंदुक—(संज्ञा, पु०, सं०) गेंद। गोल तकिया। गेंदुक, गेंडुआ। सुपारी, पुंगीफल। एक प्रकार का वर्णवृत्त (पिं०)। "कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊँ"—तुल० (रा०)।

कंदूरी—(संज्ञा, स्त्री०) कुँदरू।

कंदैला—(वि०) [हिं० कादौ, पू० हिं० कँदई + ला-प्रत्य०] मलीन, कीचड़ युक्त, गँदला।

कँदोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कटि + डोरा] कमर का तागा, करधनी, कटि-सूत्र।

कंध*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्कंध] डाली। कंधा, काँधा (ग्रा०)। "वृषभ-कंध केहरि ठवनि"—तुल०।

कंधनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कटि-बंधनी] किंकिणी, मेखला, करधनी, तगड़ी (प्रा०)।

कंधर—(संज्ञा, पु०, सं०) गरदन। ग्रीवा। बादल, मुस्ता, मोथा। "केहरि कंधर बाहु बिसाला"—तु०।

कंधा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्कंध] गले और बाहु-मूल के बीच का देह-भाग, बाहुमूल। मोढा।

कंधार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गांधार नगर।

कंधारी—(वि०) [हिं० कंधार—एक देश] गाँधारीय (सं०) कंधार देशोत्पन्न, कंधार का। (संज्ञा, पु०) घोड़े की एक जाति। (सं० कंधार) कंदहार, कहार, मल्लाह। गाँधार। "जाकहँ ऐस होइ कंधारा"—प०।

कँधावर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० कधा + अवर-प्रत्य०] कन्हावर (दे०) बैल के कधे पर रहने वाला जुए का भाग। कंधे का दुपट्टा।

कंधि—(संज्ञा, पु०, दे०) समुद्र, मेघ।

कँधियाना—(क्रि०, स०, दे०) कंधे पर रखना। "बासहू बदलि पट नील कँधियाये हौ"—रत्ना०।

कँधेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कंधा + ऐला प्रत्य०] कंधे पर पड़ने वाला, स्त्रियों की साड़ी का भाग। [(स्त्री०) **कँधेली**—जीन, खोगीर, गठिया।]

कँधैयाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) कन्हैया, कृष्ण। कंधे पर लेना या रखना।

कंप—(संज्ञा, पु०, सं०) कँप-कंपी, काँपना, सात्विक अनुभावों मे से एक (सा०)। (संज्ञा, पु०) [अ० कैंप] पड़ाव, लश्कर।

कँपकंपी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० काँपना] थरथराहट, संचलन।

कंपज्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) जूड़ी का बुखार।

कंपन—(संज्ञा, पु०, सं०) कँपकँपी, स्पंदन। [वि०—**कंपनीय**।]

कँपना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कंपन] हिलना, डोलना, भयभीत होना

कंपनी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कई व्यक्तियों की व्यापारार्थ निर्मित समिति। ईस्ट इंडिया कंपनी (इति०)।

कंपमान—(वि०, सं०) कंपायमान, सकम्प।

कंपमाना—(संज्ञा, स्त्री०) भयभीत। हिलती हुई। "चिता डूबी सरल जनता हो उठी कम्पमाना"।—हरिऔध।

कंपवायु—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का वायु रोग, जिसमें सिर हाथ और शरीर काँपता रहता है (वै०)

कंपा—(संज्ञा, पु०)[हिं० काँपना] बाँस की पतली तीलियाँ जिनमें बहेलिये लासा लगा कर चिड़ियों को फसाते हैं, काँपा (दे०)।

कंपाक—(संज्ञा, पु०, सं०) हवा, वायु ।

कँपाना—(क्रि०, स०) [हिं० काँपना का प्रे० रूप] हिलाना-डुलाना, भय दिखाना ।

कंपायमान—(वि०, सं०) हिलता हुआ, प्रकंपित, कंपमान ।

कंपास—(संज्ञा, पु०, अ०) दिक्-सूचक यंत्र, परकार ।

कंपित—(वि०, सं०) काँपता हुआ, चंचल, भयभीत ।

कंपू (**कैंप**)—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० कैंप] छावनी फ़ौज का स्थान । कानपुर

कंबर—(वि०, सं०) विभिन्न वर्णों का । (पु०) चित्र वर्ण ।

कंबल—(संज्ञा, पु०, सं०)ऊन का बना हुआ ओढ़ने का कपड़ा, एक बरसाती कीड़ा कमला । कमरा । **गल**—गाय-बैल के गरदन के नीचे लटकता हुआ मांस । [(स्त्री० अल्प०) **कमली** कमरी, कामरी (दे०)] "कंबलवन्तं न बाधते शीतम्"— ।

कंबलक—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊनी वस्त्र, कंबल । [(स्त्री०, सं०) **कंबलिका**-कमली, एक प्रकार की हिरनी ।]

कंबु, कंबुक—(संज्ञा, पु०, सं०) शंख, घोंघा। हाथी। "उर मनिमाल कंबु कल ग्रीवा"—तुल० (रा०)

कंबोज—(संज्ञा, पु०, सं०) अफगानिस्तान के एक भाग का प्राचीन नाम जो गांधार के पास था, कांबोज ।

कंभु—(संज्ञा, पु०, सं०) खश ।

कँवल—(संज्ञा, पु०, दे०) कमल एक रोग जिसमें नेत्र और देह पीली हो जाती है । [(संज्ञा, पु०, दे०) **कँवलगट्टा**—कमल के बीज, कमलगट्टा ।]

कंस—(संज्ञा, पु०, सं०) काँसा । प्याला कटोरा । सुराही । मँजीरा । झाँझ । काँसे का पात्र । मथुरा-नरेश उग्रसेन का पुत्र तथा श्री कृष्ण का मामा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।

कंसकार—(संज्ञा, पु०, सं०) एक जाति जो बर्तन बेचती है, कसेरा, बर्तन बेचने वाला, कांसकरा, ठठेरा ।

कंसताल—(संज्ञा, पु०, सं०) झाँझ, मँजीरा ।

कंसवती—(संज्ञा, स्त्री०, (सं) कंस की बहन ।

कंसारि—(संज्ञा, पु०, सं०)कंस का शत्रु, श्रीकृष्ण, कंसान्तक ।

कइन, कइनी—(संज्ञा, स्त्री०) बाँस की पतली टहनी ।

कई—(वि०, दे०) [सं० कति, प्रा० कइ] एक से, अधिक, अनेक, कतिपय, केतिक, केते, किते (ब्र०) ।

कइयक—(दे०, यौ०) [हिं० कई+एक] कितेक (ब्र०), कई एक ।

कंकद—(संज्ञा, पु०, सं०) सोना ।

ककई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कंघी, ककही । (संज्ञा, पु०, दे०) ककवा ।

ककड़ी, ककरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कर्कटी] भूमि पर फैलने वाली एक बेल जिसके फल लम्बे और पतले होते तथा खाये जाते हैं ।

ककना—(संज्ञा, पु०, दे०) कंकण, कंगन, कगना । [स्त्री० **ककनी**]

ककनू—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पक्षी, जिसके गान से उसके घोंसले मे आग लग जाती है और वह जल मरता है। "ककनू पंखि जइस सर साजा"—प०

ककयारी—(संज्ञा, स्त्री०)एक तरह की लता विशेष ।

ककरेजा—(संज्ञा, पु०, दे०) बैजनी रंग ।

ककरौंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक वनस्पति का पौधा । औषधि-विशेष ।

ककहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [क + क+ह+रा प्रत्य०] क से ह तक की वर्णमाला ।

ककही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कंघी । लाल कपास का एक भेद । चौबगला ।

ककार—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क अक्षर की ध्वनि अथवा क अक्षर ।

ककुद—(संज्ञा, पु०, सं०) बैल के कंधे का कूबड़ । डिल्ला । राज-चिन्ह । एक पर्वत-शिखा ।

ककुत्स्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) इक्ष्वाकु नरेश के पौत्र पुरंजय, जिन्होंने देव-प्रार्थना मान इंद्र को वृषभ बना उसी पर चढ़ राक्षसों से युद्ध किया, अतः ककुत्स्थ कहलाये, इनके वंशवाले काकुत्स्थ कहलाते हैं ।

ककुभ—(संज्ञा, पु०, सं०) अर्जुन का पेड़। एक राग । एक प्रकार का छंद (पिं०) । दिशा, वीणा का ऊपरी टेढ़ा भाग । "ककुभ कूजित थे कल नाद से" —हरि० (प्रि०) ।

ककुभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दिशा ।

ककोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) खेखसा ।

ककोरना—(क्रि०, स०, दे०) खरोचना, खोदना, उखाड़ना, खखोलना, खखोरना ।

कक्कड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [कर्कट सं०] सूखी या सेंकी सुरती का भुरभुरा चूर जिसे छोटी चिलम में पीते हैं । खत्रियों की एक जाति, कक्कर [दे०) ।

कक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) केकय (सं०), केकय देश। (संज्ञा, पु०, सं०) नगाड़ा, दुन्दुभी । (संज्ञा, पु०, दे०) काका, चाचा ।

कक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) काँख, बगल । काँछ, कछौटा, लांग । कछार, कच्छ । कास । जंगल । सूखा घास । सुखावन । भूमि । घर । कमरा, कोठरी । दाष, पातक । काँख का फोड़ा । दर्जा, श्रेणी । सेना के अगल बगल का भाग । कमर बंद, पटुका । [यौ० **समकक्ष**—बराबर, समान ।]

कक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परिधि । ग्रहों के भ्रमण करने का मार्ग (ज्यो०) । बराबरी, समता । श्रेणी । तुलना । दर्जा, दफा । देहली, ड्योढी । काँख । काछ । काँखरवार । किसी घर की दीवाल या पाख । दर । काँछ, कछौटा ।

कक्षावेक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) अंतःपुर का निरीक्षण करने वाला, द्वार रक्षक अभिनेता ।

कक्ष्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घोड़े आदि की पटी । कमर की पेटी । हौदा । आँचल । घेरा । उद्योग ।

कखरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काँख, कांख, कुक्षि (सं०), बगल । **लो ०—लरिका गाँव-गोहार**—वस्तु पास है, शोर करके ढूँढ़ते चारों ओर हैं ।

कखौरी‡—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० काँख] काँख । काँख का फोड़ा । काँखवार । काँखवारी ।

कगर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० + क—जल + अग्र] कुछ ऊंचा किनारा, बाढ़, ओंठ । बारी । मेंड-डांड । छत के नीचे दीवाल पर उभड़ी लकीर, कारनिस, कँगनी । (क्रि० वि०) किनारे पर, छोर पर, निकट, अलग । "आई कुटिलाई कछु भौहनि कगर में"—रत्ना० ।

कगार-कगारा—(संज्ञा, पु०) [हि० कगर] ऊँचा किनारा, नदी का कगारा । [स्त्री० **कगारी**]

कच—(संज्ञा, पु०, सं०) बाल । सूखा फोड़ा या जख्म । पपड़ी । झुंड । बादल । अँगरखे का पल्ला, सुगंधवाला । मल्ल विद्या का एक दाँव । बृहस्पति-पुत्र, जो देवादेश से शुक्राचार्य के पास मृतसंजीवनी नामक विद्या सीखने गये और प्राण संहार तक सहकर उसे सीखा और फिर देव-लोक में उसका प्रचार किया । (संज्ञा, पु०, अनु०) चुभने या धँसने का शब्द । कुचलने का शब्द । (वि०) **(कच्चा का अल्प०) कचा (समास में**) जैसे—कचलहू, कचकेला ।—**दिला**—कच्चे दिल का, साहस या सहन-शक्ति-रहित । हीन, दुर्बल हृदयी, कायर ।—**पका**—कच्चापक्का ।

कचक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दबने से लगने वाली चोट, कुचल जाने की चोट, ठेस । (सं०) कचकारक ।

कचकच (चकचक)—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु०] बकवाद, झकझक, किचकिच, कोलाहल, वाग्युद्ध । (यौ०) बाल-बाल, प्रत्येक बाल ।

कचकचाना—(क्रि०, अ०) [अनु०] कचकच का शब्द करना, दाँत पीसना, जोर से लगना, वेग से बाहर आना ।

कचकड़—(संज्ञा, पु०, दे०) कछुए का खोपड़ा ।

कचकना—(क्रि०, अ०, दे०) दबना । ठेस लगना । टुकरना ।

कचका—(संज्ञा, पु०, दे०) कछुए की पीठ, ठेस ।

कचकैय्या—(संज्ञा, पु०, दे०) धक्का, ठोकर ।

कचकोल—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० कशकोल] दरियाई नारियल का भिक्षा-पात्र, कपाल ।

कचंगल—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र, पारावार ।

कचदिला—(वि०, दे०) [हि० कचा + दिल] देखिए 'कच' ।

कचनार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कांचनार] एक प्रकार का फूलदार पेड़ ।

कचपकवा—(वि०, दे०) [हि० कचा + पक्का] कचा-पक्का, कचपका ।

कचपच—(संज्ञा, पु०) [अनु०] थोड़ी जगह में बहुत से पदार्थों या लोगों का भर जाना, कचमच, गुत्थमगुत्था, गिचपिच होना । सघन होना । (वि०) घना । निविड़ । सांध्र ।

कचपची (कचबची)—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कचपच] कृत्तिका नक्षत्र । स्त्रियों के माथे पर लगाने के चमकीले बुंदे । छोटे छोटे तारों का समूह, सितारे, कचपचिया (दे०) । "मनौ भरो कचपचिया सीपी, "औ सो चंद कचपची गरासा"—प० ।

कचपन—(संज्ञा, पु०, दे०) कचापन (हि०) ।

कचपेंदिया—(वि०, दे०) हि० कचा + पेंदी] कमजोर पेंदी का । बात का कचा । ओछा । अस्थिर विचार का ।

कचर-कचर—(संज्ञा, पु०) [अनु०] कचकचा, बकवाद । कच्ची वस्तु (आम आदि के खाने का शब्द ।

कचरकूट—(संज्ञा, पु०) [हि० कचरना + कूटना] पीटना और लतियाना, मार-कूट, मार-पीट । पेट भर खाना, इच्छा भोजन ।

कचरना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० कचरण] पैर से कुचलना, दबाना । रौंदना । खूब खाना । कुचल कर

खाना । "कीच बीच नीच तौ कुटुम्ब कौ कचरिहौं" —पद्मा० ।

कचर-पचर—(संज्ञा, पु०, दे०) गिचपिच ।

कचरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कच्चा] कच्चा खरबूजा या फूट, ककड़ी । कूड़ा-कर्कट, रद्दी चीज, उरद या चने की पीठी । समुद्र का सेवार । (वि०) कुचला हुआ ।

कचरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० कच्चा] ककड़ी की जाति की एक जंगली बेल जिसके छोटे-छोटे फल पकने पर खाये जाते हैं, पेंहटा । कचरिया (दे०) । पेंहटे के कच्चे सुखाये हुये फल । तले हुए वही फल काट कर सुखाये हुए फल-फूल जो तरकारी के लिए रक्खे जाते हैं, छिलकेदार दाल । (वि० स्त्री०) कुचली हुई ।

कचला—(संज्ञा, पु०, दे०) गीली मिट्टी, कीचड़ ।

कचलोन—(संज्ञा, पु०, यौ० दे०) [हिं० कच्चा + लोन] कांच की भट्ठियों में जमे हुए क्षार से बनने-वाला लवण या नमक । बिटूलोन । काला नमक ।

कचलोहिया—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [कच्चा + लोहा] कच्चे लोहे का बना हुआ ।

कचलोहू—(संज्ञा, पु० यौ०) [हिं० कच्चा + लोहू] खुले जखम से थोड़ा-थोड़ा बहने वाला पनछा या पानी । रस, धातु ।

कचलौंदा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० कच्चा + लौंदा] लोई, कच्चे आटे का सना हुआ लौंदा ।

कचवना—(क्रि०, स०, दे०) स्वतन्त्रता से, निश्चिंत होकर खाना ।

कचवाँसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बीघे का आठ हजारवाँ भाग (२० कचवाँसी = १ बिस्वाँसी) । (वि०) —कच्चापन ।

कचहरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कचकच = विवाद + हरी—प्रत्य०] गोष्ठी । जमावड़ा । दरबार, राजसभा । अदालत, न्यायालय । दफ़तर । "लगी कचहरी परि-मालिक को"—आल्हा० । (संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० कच—बाल + हरी—हरने वाली] कैंची ।

कचाई (कच्चाई)—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कच्चा + ई —प्रत्य०] कचापन, अनुभव-शून्यता, अजीर्ण, अनपच ।

कचाना—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० कच्चा] पीछे हटना । हिम्मत हारना । डरना । कच्ची- खाना ।

कचायँध—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कच्च + गंध] कच्चे-पन महक-कचाइँध (दे०) ।

कचार—(पु०) नदी के तट का जमा हुआ और छिछला पानी ।

कचारना§—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० पछारना] कपड़ा धोना, कुचलना ।

कचाल—(संज्ञा, पु०, दे०) विवाद, झगड़ा ।

कचाली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० कच + अवली] केश-कलाप, केश-समूह ।

कचालू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कच्चा + आलू] एक प्रकार की अरुई, बंडा, एक प्रकार की चाट, निमक मिर्च आदि मिले उबले आलू के टुकड़े ।

कचावली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० कच + अवली केश-कलाप ।

कचिया—(संज्ञा, पु०, दे०) काँच । लवण । हँसुवा । दाँती । [(संज्ञा, पु०, दे०) **कचियाहट**—कचापन ।]

कचियाना—(क्रि०, स०, दे०) कच्चा करना, कपड़ों मे यों ही डोरे डलना । (क्रि० अ०, दे०) हिचकि-चाना, सहमना, हिम्मत हारना, झेंपना, डरना ।

कचोची*—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु० कच-कुचलने का शब्द] जबड़ा, डाढ़, कचपची, कृत्तिका नक्षत्र । **मुहा०—बँधना**— दाँत बैठना (मरते समय) ।

कचुल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) कसोरा, प्याला ।

कचूमर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कुचलना] कुचल कर बनाया हुआ अचार, कुचला । कुचली हुई वस्तु । भर्ता । गूदा । **मुहा०—निकालना (करना)**—खूब कूटना । चूर-चूर करना । नष्ट करना, खूब पीटना ।

कचूर—(संज्ञा, पु०, दे०) सं० कर्चुर] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ मे सुगंधि होती है, नरकचूर, कचुल्ला, कटोरा । " नयन कचूर भरे जनु मोती"—प० ।

कचेल—(पु०, सं०) लपेटने और बाँधने की डोरी ।

कचोटना—(अ०, क्रि०) चुभना, गड़ना, किसी प्रिय की याद मे कष्ट का अनुभव करना ।

कचोना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० कच-धँसने का शब्द] चुभाना, धँसना, कोंचना ।

कचोरा*—(संज्ञा, पु०) [हिं० काँसा + ओरा—प्रत्य०] कटोरा, प्याला । [स्त्री० **कचोरी । कटोरी** ।]

कचौरी (कचौड़ी)—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कचरी] उरद की पीठी भरी हुई एक प्रकार की पूरी ।

कच्चा—(वि०, दे०) [सं० कषण] जो पका न हो, हरा और बिना रस का, अपक्व, जो आँच पर न पकाया गया हो । जो पुष्ट न हो, जिसके तैयार होने में कुछ कसर हो । अदृढ़, कमजोर, अप्रौढ़ । [(स्त्री०) **कच्ची**] **मु०—कच्चे जी (दिल) का**—

कमज़ोर दिल का, डरपोक, कमहिम्मती, घबड़ाने वाला।—**करना**—कपड़े में साधारण रूप से तागा डालना। डराना, भयभीत करना। शरमाना। —**काम करना**—अपूर्ण कार्य करना, यथेष्ठ या यथोचित न करना। **कच्ची खाना**—हारना, हतोत्साह होना। **कची जबान बोलना**—अनादर सूचक शब्दों का प्रयोग करना, गाली देना, अशिष्ट शब्द कहना। **कच्ची-पक्की बात कहना**—झूठ सच कहना, इधर उधर की भली-बुरी, खोटी-खरी कहना।—**चिट्ठा रखना**—चरित्र का नग्न रूप रखना, गुप्त रहस्य प्रगट करना।—**खेल खेलना**—गड़बड़, असफल प्रयत्न करना। दिखावटी काम करना।—**गोला चलाना**—व्यर्थ, दिखावटी या असफल काम करना।—**पड़ना**—झूठा ठहराना, संकुचित होना, गलत साबित होना। प्रामाणिक तौल या माप से कम। अपरिपक्व, अपटु, अनाड़ी। (संज्ञा, पु०) कपड़े में दूर दूर पर पड़े हुये तागे या डोभ। ढाँचा, खाका। ढड्ढा। मसविदा। जबड़ा, दाढ़। कचा पैसा।—**रहजाना**—अपूर्ण और अपुष्ट रहना।—**चिट्ठा**–(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) ज्यों का त्यों वर्णित वृत्तान्त, गुप्तभेद, रहस्य।—**माल**–(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) वह द्रव्य जिससे व्यवहार की चीजें बनें, सामग्री, जैसे—रुई, तिल।—**हाथ**–(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) अनभ्यस्त हाथ, काम में न बैठा हुआ हाथ।

कची—(वि०, स्त्री०) [हिं० कचा] कचा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) जल में पकाया भोजन, कची रसोई। —**चीनी**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बिना साफ़ की हुई चीनी। (यौ०)—**शक्कर**—खाँड़।—**जबान**—अशिष्ट गिरा, गाली।—**बही**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जो हिसाब निश्चित नहीं है उसके लिखने की बही। —**बात**–जो बात परिपक्व बुद्धि की प्रेरणा से विचार-पूर्वक न कही गयी हो। "बात कची जब कही मुँह से गयी"।—हरिऔध।—**सड़क**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बिना कंकड़ कुटी सड़क।—**सिलाई**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दूर दूर पर पड़ा हुआ तागा, डोभ, लंगर। **मुहा०**—**खाना**—हार जाना।—**पक्की कहना**—भला बुरा कहना, अशिष्ट भाषण, गाली देना।

कच्चू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कंचु] अरुई, घुइयाँ, बंडा।

कच्चे-पक्के दिन—(संज्ञा, पु०, दे०) चार या पाँच माह का गर्भ-काल, दो ऋतुओं के सधि-दिन।

कच्चे बच्चे—(संज्ञा, पु०, यौ०, हिं०) छोटे छोटे बच्चे, बाल बच्चे।

कच्छ—(संज्ञा, पु०, सं०) जलप्राय देश, अनूप देश, नदी तट की भूमि, कछार। छप्पय का एक भेद (पिं०)। गुजरात के समीप का देश। (संज्ञा, पु०) [सं० कक्ष] धोती की लाँग। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कच्छप] कछुआ।—**मच्छ**। [(वि०) **कच्छी**—कच्छ देश का। (संज्ञा, पु०) कच्छ का घोड़ा।]

कच्छप—(संज्ञा, पु०, सं०) कछुआ। विष्णु के २४ अवतारों मे से एक। कुबेर की नव निधियों मे से एक। दोहे का एक भेद (पिं०)। मदिरा खींचने का एक यंत्र। तालू का एक रोग। विश्वामित्र-सुत, तुन का वृक्ष। कच्छू, कछुवा (दे०)।

कच्छपी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कछुवी, सरस्वती की वीणा। (दे०) कछपी।

कच्छा—(संज्ञा, पु०) [सं० कच्छ] दो पतवारो की बड़ी नाव जिसके छोर चिपटे और बड़े होते हैं, नावों का बेड़ा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कक्षा] दर्जा। [(स्त्री०) **कच्छी**—कच्छदेशोत्पन्न घोड़े की जाति।]

कच्छार—(पु०, सं०) कच्छ, एक प्रदेश।

कछना—(क्रि०, स०, दे०) पहिनना, धारण करना। नाचना।

कछनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० काछना] घुटने के ऊपर चढ़ा कर पहनी हुई धोती, छोटी धोती, काछने की वस्तु। [(दे०)—**काछनी**–घुटने तक का घाँघरा]। "मोर-मुकुट, कटि काछनी"—(वि०)।

कछरा—(संज्ञा, पु०, दे०) चौड़े मुँह का मिट्टी का बरतन।

कछलम्पट—(वि०, दे०) अजितेन्द्रिय, लुच्चा, व्यभिचारी।

कछवाहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कच्छ] राजपूतों की एक जाति, जो रामात्मज कुश के वंशज हैं।

कछान—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० काछना] घुटने के ऊपर चढ़ाकर धोती पहिनना।

कछाना—(क्रि०, स०, दे०) नाच सजाना, धोती पहिनना।

कछार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कच्छ] सागर या नदी के तट की तर और नीची भूमि, खादर।

कछारना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० कचरना] धोना, छाँटना, पछारना।

कछु (कछुक), कछू—(वि०, अ०) कुछ (हिं०), कछूक (दे०) थोड़ा। "कछु दिन भोजन बारि-बतासा"—

रामा०। "आई कुटिलाई कछु भौहनि कगर मैं"—रला०।

कछुआ (कछुवा)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कच्छप] ढाल की सी कड़ी खोपड़ी वाला एक जल-जन्तु, कूर्म, कमठ, कच्छप।

कछोटा-कछौटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० काछ] पीछे खोंसी जाने वाली धोती की लाँग, ऐसी धोती पहिनने का स्त्रियों का ढङ्ग, कछनी। [(स्त्री० अल्पा०) **कछौटी**—कछनी, लगोटी।] "पग पजनी बाजति, पीरी कछौटी"—रस०।

कज—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) टेढ़ापन, कसर, दोष, ऐब। [वि० **कजी**—ऐबी।]

कजक—(संज्ञा, पु०, दे०) हाथी का अंकुश।

कजरा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० काजल] काजर, काजरो (दे०), काजल, कज्जल, काली आँखवाला बैल। "आँखिन मैं कजरा करि राख्यौ"—मति०। [(संज्ञा, स्त्री०) **कजरी**—काली गाय, बरसाती गीत विशेष।] (वि०) काली। **कजर-बन**—घना अंधकार-पूर्ण कालावन, कजरीबन (दे०)।

कजराई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कालापन, कालिमा।

कजरारा—(वि०) [हिं० काजर+भार—प्रत्य०] काजल वाला। काजल लगा हुआ, अंजन अँजाये। काजल सा काला। स्याह। [(ब० व०) **कजरारे**। (स्त्री०) **कजरारी**]

कजरी (कजली)—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक त्यौहार जो बरसात में होता है,। उस समय में गाया जाने वाला एक गीत। कालिख। स्याही। काली गाय। (संज्ञा, पु०, दे०) एक तरह का धान—बासमती आदि।

कजरौटा* (कजलौटा)—(संज्ञा, पु०, दे०) दंडीदार काजल की डिबिया। "कजरौटा बरु होइ, लुकाठन आँजै नैना"—गि०। [स्त्री० **कजरौटी**]

कजलाना—(क्रि०, अ०, दे०) काजल पाड़ना, आग बुझाना। (क्रि०, स०) काजल लगाना, आँजना। काला करना।

कजली—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० काजल] घोंटे हुए पारे और गँधक की बुकनी, रस फूँकने में धातु का वह अंश जो आँच से ऊपर चढ़ कर पात्र में लग जाता है (वैद्य०)। गन्ने की एक जाति, आँखों के किनारों पर काले घेरे वाली गाय, एक बरसाती त्यौहार, बरसाती गीत विशेष, कजरी (दे०)।

कजा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) माँड, काँजी। (संज्ञा, स्त्री०) (अ० क़ज़ा) मौत, मृत्यु, मीच (दे०)।

कज़ाक*—(संज्ञा, पु०, तु०) लुटेरा, डाकू, बटमार, कज्ज़ाक। "जेहि मग दौरत निरदई, तेरे नैन कजाक"—रत०।

कजाकी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) लुटेरापन, लूटमार। छल, छद्म, धोखेबाजी। चालाकी। "तासों कैसे चलै कजाकी"—छत्र०। "करै कजाकी नैन"—(वि०)।

कजावा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ऊँट की काठी।

कज़िया—(संज्ञा, पु०, अ०) झगड़ा, लड़ाई।

कजी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) दोष, ऐब, कसर।

कजेलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कजरी।

कज्जल—(संज्ञा, पु०, सं०) अंजन, सुरमा, काजल, काजर (दे०)। कालिख। बादल, एक प्रकार का छंद (पिं०)। [(वि०) **कज्जलित**]—**गिरि**—काला पर्वत। **कज्जलोपम**—श्याम।

कज्जलित—(वि०, सं०) काजल की तरह काला। अंधकारमय। "निराशपूर्ण। कज्जलित कभी बनता दिन"—हरिऔध।

कज्जली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घोंटे हुए पारे-गंधक की काली बुकनी।

कट—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी का गंडस्थल। कर्ण-पाली। नरकट, नरसल। नरकुल की चटाई। दामा, टट्टी। खस। सरकंडा आदि घास। शव। लाश। हाथी। श्मशान। (संज्ञा, पु०) [हिं० कटना] एक प्रकार का काला रङ्ग। काट का संक्षिप्त रूप, जैसे—कटखना। कुत्ता काटने का शब्द।—**फल**—एक औषधि। "क्वाथः कटफलक त्रिगाब्द धनिका"।

कटक—(संज्ञा, पु०, सं०) सेना, फ़ौज। राज शिविर, कंकण, समुद्री नमक। पहिया। कंकड़ चक्र, मेखला। एक नगर। कड़ा। नितम्ब, चूतड़। घास की कटाई, साथरी गोंदरी। पर्वत का मध्य भाग। हाथी के दाँतों पर जड़े पीतल के बंद या सामी। समूह। "छोटे छोटे भुजन बिजायट, छोट कटक कर माँही।"—रघु०। "आवा निसिचर कटक भयंकर"—रामा०।

कटकई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कटक+ई—प्रत्य०] कटक, लशकर, सेना।

कटकट—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [अनु०] दाँतों के बजने का शब्द, लड़ाई झगड़ा।

कटकटाना—(क्रि०, अ०, हिं०) दाँत पीसना, दाँत बजाना, अन्हौरियों का चुन-चुनाना, चुभना। "कटकटाइ कपि कुंजर भारी"—रामा०।

कटकना—(क्रि०, अ०, दे०) बहुत बोलना। ढाँचा बनाना।

कटकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बहुत बात-चीत करना, कटकना। तेज, चटक। सेना। "जो आवै मरकट-कटकाई"—रामा०।

कटकी—(वि०, दे०) कट या कटक-सम्बन्धी, कटक नगर का। पहाड़ी।

कटखना—(वि०, दे०) [हि० काटना+खाना] काट-खाने वाला, कटहा। (संज्ञा, पु०, दे०) युक्ति। चाल, हथकंडा।

कटघरा—(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०, काट+घर) बड़ा पिंजड़ा, काठ का जंगलेदार घर, कटहरा, कठरा (दे०), कठघरा।

कटड़ा—(संज्ञा, पु०, सं० कटार) भैंस का पड़वा।

कटजीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) काला जीरा।

कटताल—(संज्ञा, पु०, दे०) करताल नामक बाजा।

कटती—(संज्ञा, स्त्री०, हि० काटना) बिक्री, खपत। [(वि०) **कटौती**—जो काट लिया जाय।]

कटन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कटना] काट, कतरन, कटान।

कटना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कर्तन] किसी धार वाली चीज़ से दबाकर दो खंड करना। पिसना। घाव होना (धारदार चीज़ से) दो भाग अलग होना। लड़ाई में मरना। कतर जाना। ब्योंता जाना, छीजना, नष्ट होना। (समय का) बीतना जैसे—चैन से कटना। (मार्ग) समाप्त होना। धोखा देकर साथ छोड़ना। खिसक जाना। लज्जित होना, झेंपना। जलना, डाह करना। मुग्ध या मोहित होना, बिकना। खपना। प्राप्ति होना। गुज़रना (उम्र) आयु होना। जैसे—माल कटता है। कलम की लकीर से किसी लिखी हुई चीज़ का रद होना। मिटना। ख़ारिज होना। एक संख्या में दूसरी का ऐसा भाग लगना कि कुछ शेष न बचे। दूर होना। आसक्त होना, फ़सल कटना (जैसे—चैत कट रहा था)। **मुहा०—कटती कहना**—मर्मभेदी बात कहना। जलीकटी कहना। **कट जाना**—लज्जित होना, झेंपना।

कटनास§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कीट+नाश] नीलकंठ, चाष पक्षी।

कटनि*—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कटना] काट, प्रीति, आसक्ति, रीझ। "फिरत जो अटकत कटनि बिन"—(वि०)।

कटनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काटने का औज़ार। काटने का काम। एक नगर।

कटफल—(संज्ञा, पु०, दे०) कायफल, कैफर (दे०)। "काथः कटफलकत्रिणाब्द धनिका"—लो०।

कटर§—(संज्ञा, पु०, अ०) चरखियों पर चलने वाली बड़ी नाव। पनसुइया, छोटी नाव।

कटरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कटहरा] छोटा चौकोर बाजार, कटार। (संज्ञा, पु०) [सं० कटाह] भैंस का बच्चा, पड़वा। कड़ाह। "कटरा काढ्यो पेट सों, दये घाव पर घाव"—छत्र०।

कटवाँ—(वि०, दे०) [हि० कटना+वां—प्रत्य०] कटा हुआ। काट कर बना। (क्रि०, वि०, दे०) तिरछा काट कर जाना, सूक्ष्म मार्ग।

कटसरैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कटसारिका] अडूसे का सा एक काँटेदार पौधा।

कटहर, कटहल—(संज्ञा, पु०, दे०) कंटकिफल (सं०) एक सदा बहार घना पेड़ जिसमें हाथ सवा हाथ के मोटे और भारी फल लगते हैं, इस पेड़ का फल। (यौ०)—**(री) चंपा**—कटहल की सी सुगंधि वाले फूलों का चंपा वृक्ष।

कटहरा—(संज्ञा, पु०) [हि० काठ+घर] कठघरा।

कटहा*—(वि०, दे०) [हि० काटना+हा—प्रत्य०] काटने वाला। [(स्त्री०) **कटही**—काट खाने वाली।]

कटा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० काटना] मारकाट। बध, हत्या। प्रहार, चोट। "सुकटा-छनि घालि कटा करती हौ"—जग०।—**जला**—रुष्ट।

कटाइक*—(वि०, दे०) [हि० काटना] काटने वाला, कटैया, कटायक।

कटाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० काटना] काटने का काम। फ़सल काटने का काम। फ़सल काटने की मज़दूरी।

कटाऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) काट, काट-छाँट। बेलबूटा। "जावत कहिये चित्रकटाऊ"—प०।

कटाकट—(संज्ञा, पु०) [हि० कट] कटकट शब्द। लड़ाई।

कटाकटी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० काटना] मार-काट, कटाछनी (दे०)।

कटाक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) तिरछी चितवन, वक्र दृष्टि, तिरछी नजर। व्यंग्य, आक्षेप।

कटाग्नि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घास-फूस की अग्नि।

कटाघान—(वि०, दे०) घनी मार-काट। अत्यंत।

कटाच्छ—(संज्ञा, पु०, दे०) भावपूर्ण। दृष्टि, नेत्रों से संकेत, कटाछ (दे०)।

कटाछ—(संज्ञा, पु०, ब्र०) कटाक्ष (सं०), कटाछन।

कटाछनी—(संज्ञा, स्त्री०) मारकाट।

कटाटंक—(संज्ञा, पु०) शिव, शंकर।

कटान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काटने की क्रिया, भाव, ढंग। कटानि।

कटाना—(क्रि०, स०) [हिं० काटना का प्रे० रूप] किसी से काटने का काम प्रेरणा करके कराना, कटावना, कटवाना।

कटार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कट्टार] छोटा तिकोना और दुधारा हथियार। [स्त्री० अल्पा० **कटारी**]

कटाल—(संज्ञा, पु०, दे०) ज्वार, समुद्र का चढ़ाव। "होत कटाल समुद्र मैं"—सूर०।

कटाली—(संज्ञा, स्त्री०) भटकटैया।

कटाव—(संज्ञा, पु०) [हिं० काटना] काट, काट-छाँट, कतर-ब्योंत, काट कर बनाये हुए बेल बूटे। पानी के वेग से गिरता हुआ किनारा।—**दार**—(वि०) [हिं० कटाव+दार—प्रत्य०] जिस पर खोद या काट कर बेल-बूटे बनाये गये हों।

कटावन§—(संज्ञा, पु०, दे०) कटाई करने का काम। कतरन। कटा हुआ।

कटास—(संज्ञा, पु०, दे०) एक बन-बिलाव। कटार, खोखर।

कटाह—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ी कड़ाही, कड़ाह। कछुए की खोपड़ी। कुआँ। नरक। झोंपड़ी, भैंस का बच्चा, दूह, ऊँचा, टीला, धुस। "जटा कटाह सम्भ्र-सम्भ्रमन्निलियं निर्झरी"।

कटि—(संज्ञा स्त्री०, सं०) देह का मध्य भाग, पेट के नीचे का हिस्सा, कमर, करिहांय, करिहां (दे०)। हाथी का गंड-स्थल।—**तट**—नितंब।—**देश**—कमर।—**वस्त्र**—धोती, पाजामा आदि।—**धन**—करधनी।—**जेब**—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कटि+जेब—रस्सी] किंकिणी। कटि सूत्र, करधनी।—**बंध**—(संज्ञा, पु०, यौ०) कमरबंद। नारा। भूमध्य रेखा के ऊपर और नीचे कर्क और मकर रेखाओं वाले भाग। सरदी गरमी के विचार से पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक भाग (भूगो०)। [(यौ०) **उष्ण कटिबंध शीतकटिबंध**।]—**बद्ध**—(वि०, सं०) कमर बाँधे हुए, तैयार, तत्पर, उद्यत, सन्नद्ध। [(संज्ञा, स्त्री०, भा०) **कटिबद्धता**—तत्परता।]—**भूषण**—(संज्ञा, पु०) करधनी। तगड़ी। [(यौ०) **कट्याभूषण कट्यालंकार**]—**सूत्र**—(संज्ञा, पु०, सं०) बच्चों को कमर में बाँधा जाने वाला तागा। मेखला।

कटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सन का वस्त्र। रत्नों को काटने-छाँटने वाला कारीगर। जड़िया। कुट्टी, गाय-बैल का कटा हुआ चारा (जुआर के पौधे)। नुकीला टेढ़ा अंकुस। मछली मारने का काँटा। एक शिरोभूषण।

कटियाना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० काँटा] रोओं का खड़ा होना, कंटकित होना, रोमांच होना। कुट्टी सा काटना।

कटीरा—(संज्ञा, पु०) गोंद का वृक्ष, कतीरा।

कटीला—(वि०) [हिं० काटना] काट करने वाला। तीक्ष्ण, चोखा। तीव्र प्रभाव डालने वाला। मुग्ध या मोहित करने वाला। नोंक-झोंक का। नुकीला, बाँका, पैना। [(स्त्री०) **कटीली**] (वि०) [हिं० काँटा] काँटेदार। नुकीला, पैना, कंटार, काँटों वाला।

कटुआ—(संज्ञा, पु०) धान में लगने वाला एक कीड़ा।

कटु, कटुक—(वि०, सं०) छः रसों मे से एक। चरपरा, कड़ुवा। बुरा लगने वाला। अनिष्ट। रस-विरुद्ध वर्ण-योजना (काव्य०), अप्रिय। चरफरा, तिक्त। [(संज्ञा, स्त्री०) **कटुता, कटुत्व**] "कटुक कुवस्तु कठोर दुराई"—तुल० (रा०)।—**वादी**—अप्रिय वक्ता।

कटुकी (कुटकी)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, कुटकी नामक औषधि। कटु रोहिणी।

कटुग्रंथि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पिपरामूल। सोंठ।

कटुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कड़ुवापन। वैमनस्य। बुराई। कटुत्व।

कटुत्कट, कटुभद्र—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सोंठ।

कटुफल—(संज्ञा, पु०) कायफल।

कटुवादी—(वि०, सं०) कड़ुवी बात कहने वाला। अप्रियवादी, कटु-वक्ता। "कटुवादी बालक बध जोगू"—तुल० (रा०)।

कटुभी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मालकांगुनी।

कटूक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अप्रिय बात। बुरी उक्ति।

कटूसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्वचन, फूहड़पन।

कटेरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० काँटा] भटकटैया। कंटकारी (सं०), कटैया (दे०)।

कटेहर—(संज्ञा, पु०, दे०) खोंपा। हल की लकड़ी, जिसमें फल लगा रहता है।

कटैया—(संज्ञा, पु०) [हिं० काटना] काटनेवाला। (संज्ञा, स्त्री०) भटकटैया।

कटैला—(संज्ञा, पु०, दे०) एक कीमती पत्थर।

कटोर—(संज्ञा, पु०, सं०) मिट्टी का बर्तन।

कटोरदान—(संज्ञा, पु०) [हिं० कटोरा+दान—प्रत्य०] भोजनादि रखने का पीतल का एक ढकनेदार बरतन।

कटोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० काँसा+ओरा—प्रत्य०] कँसोरा—खुले मुँह, छोटी दीवाल और चौड़ी पेंदी का बरतन।

कटोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कटोरा का अल्प०] छोटा कटोरा। थाली। बिलिया। अँगिया का, स्तन ढाँकने वाला, भाग। तलवार की मूठ का ऊपर वाला गोल भाग। फूल के सींके का चौड़ा और दल वाला भाग। [दे० **कटोरिया** अल्प०]

कटोल—(संज्ञा, पु०, दे०) चंडाल। एक फल।

कटौती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० काटना] किसी रक़म के देते समय हक़ या धर्मार्थ काटा जाने वाला हिस्सा। [डिडक्शन]

कट्टर—(वि०) [हि० काटना] काटने वाला, कटहा। अपने विश्वास के प्रतिकूल बात को न सहने वाला। अंध विश्वासी। हठी, दुराग्रही। पक्का। [फ़ैनेटिक]

कट्टहा—(संज्ञा, पु०) [सं० कट—शव+हा—प्रत्य०] महापात्र, महाब्राह्मण, कटहा (दे०), कट्टिया। (दे०) कष्ट-नाशक, कष्टहा (सं०)।

कट्टा—(वि०) [हि० काठ] मोटा-ताजा, हट्टा कट्टा, बली। (संज्ञा, पु०) जबड़ा। कच्चा। **मुहा०—कट्टे लगना**—दूसरे के द्वारा अनधिकृत रूप से अपनी वस्तु का काम मे लाया जाना अथवा नष्ट होना।

कट्टार—(संज्ञा, पु०, सं०) कटार, खंग।

कट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुट्टी, कटिया।

कठ्याना—(क्रि०, अ०, दे०) कंटकित होना, प्रेमानन्द से रोमांच होना।

कट्ठा—(संज्ञा, पु०) [हि० काठ] पाँच हाथ और चार अंगुल के प्रमाण की एक भू-माप, बिस्वा। मोटा या खराब गेहूँ। कठिया (दे०)।

कठंगर—(वि०, दे०) काष्ठ की तरह कठोर। अत्यन्त जड़। स्थूल, मोटा।

कठंदर—(संज्ञा, पु०, दे०) काष्ठोदर (सं०), एक रोग (पेट का)।

कठ—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि। यजुर्वेदीय उपनिषद्। कृष्ण यजुर्वेद की शाखा। (संज्ञा, पु०) [सं० काष्ठ] (सामासिक पदों में) काठ, लकड़ी, जैसे—कठपुतली, (फल आदि के लिए) जंगली। निकृष्ट जाति का, जैसे—कठकेला, कठकोरी।—**केला**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० काठ+केला] सूखे और फीके फलवाला एक प्रकार का केला।—**कोला** (**कठफोड़वा**)-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० काठ+कोलना या फोड़ना] पेड़ों की छाल छेदने वाली एक खाकी रंग की चिड़िया।—**घरा**-(संज्ञा, पु०, यौ०) कटहरा।—**ताल**-(संज्ञा, पु०, यौ०) करताल नामक बाजा।—**नेरा**-(संज्ञा, पु०, दे०) बनियों की जाति-विशेष।—**पुतली**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० काठ+पुतली] तार-द्वारा नचाई जाने वाली काठ की गुड़िया, [हैंड-मेड; पपेट]। काष्ठ-पुत्तलिका।—**पुतला**-दूसरे के कहने पर काम करने वाला व्यक्ति।—**बंधन**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० काठ+बंधन] हाथी के पैर में डाली जाने वाली काठ की बेड़ी। अड़ुआ। कठबँधना (दे०) काष्ठ-बंधन।—**मस्त**-(वि०, यौ०) [हि० काठ+मस्त—फ़ा०] संड-मुसंड, व्यभिचारी। (**संज्ञा**, स्त्री०)—**कठमस्ती**-मुसंडपन, मस्ती।—**मुल्ला**-(पु०) कट्टर, लकीर का फकीर मुल्ला या मौलवी।—**हँसी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अकारण शुष्क (नीरस) हास।

कठड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० काठघरा] कटहरा, कठघरा, काठ का बड़ा सन्दूक या बरतन, कठौता।

कठबल्ली—(संज्ञा, पु०, सं०) कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा का एक उपनिषद्।

कठबाप—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) सौतेला बाप।

कठबिरुकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भेक। ऊसर साँड़ा।

कठमर्द—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, महादेव।

कठमलिया—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० काठ+माला] काठ की माला या कंठी पहनने वाला। वैष्णव। झूठमूठ कंठीवाला, बनावटी साधु, झूठा संत, काष्ठमाली। "रही-सही कठमलिया कहिगा—"।

कठरा—(संज्ञा, पु०) [हि० काठ+रा] कटहरा, कठघरा। काठ का संदूक या बरतन। कठौता, चहबच्चा। [स्त्री० **कठरी**]

कठला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कंठ+ला प्रत्य०] देखिए 'कठुला'।

कठवत, कठवता—(स्त्री०, दे०) भोजन-सामग्री रखने के लिए एक छोटा काष्ठ-पात्र। "पानि कठवता भरि लै आवा"—तुल०।

कठारा—(संज्ञा, पु०, दे०) नदी आदि का किनारा।

कठारी—(संज्ञा, पु०, दे०) काठ का कमंडलु।

कठिन—(वि०) [सं० कठ्+इन्] कड़ा, सख्त, कठोर, निष्ठुर, मुश्किल, दुष्कर, [डिफिकल्ट]। दुःसाध्य। दृढ़। स्तब्ध। "पर्यो कठिन रावन के पाले"—तुल० (रामा०)। [(संज्ञा, स्त्री०) **कठिनाई**।]

कठिनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कठोरता, कड़ाई, सख्ती। असाध्यता। निर्दयता, निष्ठुरता। दृढ़ता, कठिनत्व।

कठिनाई—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कठिन+आई—प्रत्य०] कठोरता, सख्ती, मुश्किल, क्लिष्टता, असाध्यता, दिक्कत, बाधा। [(यौ०) **कठिनपृष्ठक**—(संज्ञा, पु०) कमठ पृष्ठ, कछुआ।]

कठिनिका—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कठ+इक्+आ] खड़िया मिट्टी। लेखनी।

कठिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खड़िया मिट्टी की बर्ती। लेखनी। पेंसिल। छूही (दे०)। "नपतति कठिनी सुसंभ्रमाग्रस्य"।

कठिया—(वि०)[हि०काठ] मोटे और कड़े छिलके वाला, जैसे कठिया बादाम। (संज्ञा, पु०, दे०) गेहूँ की एक जाति। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) कठौती, काठ की माला। एक प्रकार के मूँगे की माला जो नीच जाति की स्त्रियाँ पहिनती हैं।

कठियाना—(क्रि०, अ०, दे०) सूख कर कड़ा हो जाना, कठुवाना।

कठुला—(संज्ञा, पु०, दे०) काठ की एक प्रकार की माला जो बच्चों को पहनायी जाती है "उर बंधन हौं कंठ मै कठुला सीस झँडूलेबार"—सूर०

कठिल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) करेला, एक तरकारी।

कठुला—(संज्ञा, पु०) देखिए कठला।

कठुवाना§—(क्रि०, अ०) सूख कर काठ सा कड़ा होना। शीत से हाथ-पैर ठिठुरना।

कठूमर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० काठ+ऊमर] जंगली गूलर।

कठेठ, कठैठा§—(वि०, दे०) [हि० काठ+एठ—प्रत्य०] कड़ा, कठोर, कठिन, दृढ़। मजबूत। सख्त, कटु। अप्रिय, तगड़ा। अधिक बलवाला। [(स्त्री०) **कठेठी**] "तबलों अरि बध्यौ कटार कठैठो"—कठिन कठेठ चोट दै गयो"—रसा०।

कठैला—(संज्ञा, पु०) कठौता।

कठैली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कठौती।

कठोदर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० काष्ठोदर] एक प्रकार का उदर-रोग।

कठोपनिषद्—(संज्ञा, पु०, यौ० सं०) एक उपनिषद्।

कठोर—(वि०,सं०) कठिन, कड़ा, सख्त। निष्ठुर, निर्दय, निठुर [हार्ड] (दे०) दृढ़। बुरा। अप्रिय (जैसे कठोर बात)। "कमठ पृष्ठ कठोर मिदं धनुः"—हनु०।

कठोरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कड़ाई, सख्ती, निष्ठुरता, दृढ़ता। [(संज्ञा, पु०, भा०, हि०) **कठोरपन, कठोरताई**] (दे०) निर्दयता। कठोरता। [हार्डनेस]

कठोलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काठ का छोटा बरतन।

कठौता, कठवता—(संज्ञा, पु०) [हि० कठौत] काठ का एक बड़ा और चौड़े मुँह का छिछला बरतन। कठौत, कठउता (दे०)। [(संज्ञा, स्त्री०, अल्प०) **कठौती**।] "छोटो सो कठौता भरि आनि पानी गंगाजू को"—कवि०। "या घर ते कबहूँ न गई पिय टूटो तवा अरु फूटी कठौती"—नरो०।

कड़—(संज्ञा, पु०, दे०) कुसुम का बीज। (डिं० भा०) कमर। बर्रे।

कड़क—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) कड़कड़ाहट का कठोर शब्द। तड़प, दपेट। गाज, वज्र। घोड़े की सरपट चाल। कसक (करक) रुक रुककर होनेवाली पीड़ा, रुक रुक कर जलन के साथ पेशाब होना। गर्जन, कड़ाका। क्रोध। गर्व के साथ कड़ा शब्द, करक (दे०)।—**नाल**—(संज्ञा, स्त्री०, हि०, यौ०) चौड़े मुँह की तोप।—**बिजली**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ० हि०) कान का एक गहना। चाँदबाला। तोड़ेदार बंदूक।

कड़कच—(संज्ञा, पु०, दे०) समुद्र-लवण। खार नमक।

कड़कड़—(संज्ञा, पु० अनु०) दो वस्तुओं के आघात का कड़ा या कठोर शब्द। कड़ी वस्तु के टूटने या फूटने का शब्द, घोर शब्द। कड़ाकड़ (दे०)। "कोउ कड़ाकड़ हाड़ चाबि नाचत दै तारी"—हरि०।

कड़कड़ाना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कड] कड़कड़ शब्द होना। ऐसे शब्द के साथ कड़ी वस्तु का टूटना-फूटना। घी, तेल आदि का आँच पर तपकर शब्द करना। (क्रि०, स०) कड़कड़ शब्द के साथ तोड़ना। घी, तेल को खूब तपाना। अँगड़ाई लेकर देह की नसों को शब्दायमान करना। [(पु०, वि०) **कड़कड़ाता**—कड़ाके का, तेज, घोर, प्रचंड। (स्त्री०) **कड़कड़ाती**—बड़बड़ाती। कड़कड़ शब्द करती हुई। (संज्ञा, पु०, भा०, हि०) **कड़कड़ाहट**—कड़कड़ शब्द। गरजन।]

कड़कना—(क्रि०, अ०, हि०) कड़कड़ शब्द होना। चिटखना। टूटना। फूटना (कड़कड़ शब्द कर), डाँटना, दपटना। फटना, दरकना। गरजना (बादल) सरोष या सगर्व जोर से बोलना। [(क्रि० स० प्रे०) **कड़काना, कड़कड़ाना**]

कड़का—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बिजली। गर्जन। घोर शब्द।

कड़काना—(क्रि०।स०) [हि० कड़कना] कड़कड़ शब्द के साथ तोड़ना। घी आदि का गरम करना।

कड़खा—(संज्ञा, पु०) [हि० कड़क] लड़ाई के समय का गीत, जिसमें वीर यश गान होता है तथा जिससे उत्तेजना प्राप्त होती है।

कड़खैत—(संज्ञा पु०, दे०) [हि० कड़खा + ऐत—प्रत्य०) कड़खा गानेवाला, भाट, चारण।

कड़बड़ा—(वि०, दे०) (सं० कर्बुर=कबरा) कुछ सफेद और काले बालों वाला।

कड़बी—(हि०, उ०) कड़ु, कडु। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कांड, हि० कांडा] भुट्टे कट जाने पर चारे के लिए छोड़े हुए जुआर के पेड। करवी (दे०)।

कड़हन—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का धान। चावल की एक जाति-विशेष।

कड़ा—(संज्ञा, पु०) [सं० कटक] हाथ या पैर मे पहिनने का चूड़ा। खड़ुवा (दे०), चुरवा (दे०), लोहे या अन्य धातु का छल्ला या कुंड। एक प्रकार का कबूतर। बलय। कड़ाही के ऊपर उठाने के हत्थे। [वि० सं० कड्ड] कठोर, कठिन, दृढ, ठोस, सख्त। रूखा, निष्ठुर (निठुर), उग्र। क्लिष्ट, मुश्किल। दुःसाध्य। कसा हुआ, चुस्त। जो गीला न हो, सूखा। कम ढीला। हृष्ट-पुष्ट, तगड़ा, दृढ। प्रचंड। ज़ोरदार, तेज। गहरा। अधिक कड़ी चोट सहने वाला, झेलने वाला, धीर। दुष्कर। तीव्र प्रभाव डालने वाला, तेज़। असह्य। अप्रिय। कर्कश, बुरा लगने वाला। [(वि० स्त्री०) **कड़ी**। (संज्ञा, स्त्री०) **कड़ी**—शहतीर धन्नी (मकान की छत पर लगाई जाने वाली) जंजीर का एक छल्ला। गाने की एक पंक्ति।]

कड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, भा०) [हि० कड़ा] कठोरता, कड़ापन, कठिनता, सख्ती, दृढता।

कड़ाकड़—(वि०, यौ०, दे०) कड्कड़ शब्द से युक्त।

कड़ाका—(संज्ञा, पु०) [हि० कड्कड़] किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द। उपवास, निर्जल व्रत, लंघन। **मु०—कड़ाके का (जाड़ा)**-ज़ोर का। तेज।

कड़ाबीन—(संज्ञा, स्त्री०,) [तु० कराबीन] चौड़े मुँह की बंदूक। छोटी बंदूक।

कड़ाहा, कड़ाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कटाह, प्रा० कड़ाह] लोहे का बड़ा गोल बरतन जिसमें पूड़ी आदि चीजें तैयार की जाती हैं। [(स्त्री० अल्प०) **कड़ाही**—छोटा कड़ाह, कढ़ाई, करैहा (ग्रा०)]

कड़ियल§—(वि०, दे०) [हि० कड़ा] कड़ा।

कड़िहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कर्णधार] मल्लाह, केवट। उद्धारक, माँझी। "धरौ नाम कड़िहार" —कबी०।

कड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कूड़ा] किसी वस्तु के लटकाने या अटकाने के लिए लगाया जाने वाला छल्ला। लगाम। गीत का एक पद। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० कांड] छोटी धरन। धन्नी। (हि० कड़ा) अंडस। संकट। (वि०, हि०) कठिन, सख्त।

कड़ीदार—(वि०, दे०) [हि० कड़ी + दार—प्रत्य०] कड़ीयुक्त। छल्लेदार।

कड़ुआ—(वि०, दे०) [सं० कटुक] तिक्त, तीता। (दे०) कटु, तीखा। चरपरा, अप्रिय और उग्र (स्वाद मे) तीखी प्रकृति का, क्रोधी, अक्खड़। अप्रिय, बुरा, करुआ (दे०)। "काहू सों कबहूं नहीं, कहौ न करुए बैन"।—**घूँट**—कठिन बात या काम।—**तेल** सरसों का तेल जो चरपरा होता है।—**मुँह** (**करुआ मुख**)—कटुवादी, अप्रिय और बुरी बात कहने वाला। "रहिमन करुए मुखन को चहियत यही सजाय"। **मुहा०—करना**—बुरा बनाना, दुश्मनी कराना। अनबन करना, अप्रिय करना। —**होना** (**बनना**)—बुरा और अप्रिय होना। —"**करेला नीम चढ़ा**"—दुष्ट और कुसंग में रहने वाला, अत: और भी दुष्ट। (वि०, दे०) विकट, टेढ़ा, कठिन। **मुहा०—कसैले दिन**—बुरे दिन, या कष्ट-प्रद दिन, दोरस के दिन जो रोगकारी होते हैं। [(संज्ञा, स्त्री०) **कड़ुआई**]

कड़ुआना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कड़ुआ] कड़ु-आना, करुआना (दे०)। बिगड़ना, खीझना। आँख मे (न सोने या उठने से) होने वाली एक विशेष प्रकार की पीड़ा का होना। कटु लगना।

कड़ुआहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कड़ुआ + हट—प्रत्य०] कटुता, कड़ुआपन। करुआई (दे०)।

कड़ू, करू—(वि०, दे०) [सं० कटु] कड़ुआ, कटु। तिक्त।

कड़ेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) खरादने वाला, लाठी-डंडा बनाने वाला।

कढ़ना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कर्षण] निकलना। बाहर आना। खिंचना। उदय होना। बढ़ना। आगे निकल जाना (प्रतिद्वंद्विता में)। स्त्री का उपपति के साथ घर छोड़कर चला जाना। लाभ निकलना। बेलबूटे बनना। "कढ़िगो अबीर पै अहीर को कढ़ै नहीं"—पद्मा०। "चलिए जरूर बैठे कहौ का कढ़त है"—हठी०। (क्रि० अ०) [हि० गाढ़ा] औटाने से दूध का गाढ़ा होना। (क्रि०, स०, दे०) [हि० काढ़ना] उपटना, बटना।

कढ़नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मथानी घुमाने की रस्सी ।

कढ़लाना*§, **कढ़राना**—(क्रि०, स०) [हि० काढ़ना + लाना] घसीटना । घसीट कर बाहर करना । कढ़ेरना (दे०) । "सूर तबहूँ न द्वार छाँड़े डारिहौ कढ़राई" ।

कढ़वाना, कढ़ाना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० काढ़ना का प्रे० रूप] निकलवाना, बाहर कराना । बेल-बूटे बनवाना । "तौ धरि जीभ कढ़ावहुँ तोरी"—रामा० ।

कढ़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कड़ाही (हि०) । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० काढ़ना] काढ़ने (बेलबूटे) की क्रिया ।

कढ़ाना—(क्रि०, स०, दे०) निकलवाना, बेल-बूटे बनवाना ।

कढ़ाव—(संज्ञा, पु०) [हि० काढ़ना] बूटे या कशीदे बनाने का काम । बेल-बूटों का उभार ।

कढ़ावना—(क्रि०, स०) [हि० काढ़ना का प्रे० रूप] निकलवाना ।

कढ़िलाना—(क्रि०, स०, दे०) घसीटना ।

कढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० काढ़ना—गाढ़ा होना] बेसन, मट्ठा, (दही) को आँच पर चढ़ा कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का सालन । "पापर भात, कढ़ी सु, खीर चना उरदीदार"—रसा० । (क्रि०, अ०, स्त्री०, सा० भू०) निकली, बाहर आई । **मुहा०—का सा उबाल**—शीघ्र ही घट जाने वाला जोश ।

कढ़ोलना—(क्रि०, अ०, दे०) घसीटना ।

कढ़ुवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० काढ़ना=उधार लेना] ऋण । जाति-च्युत व्यक्ति ।

कढ़ैया—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) करइहा (दे०), कड़ाही । (संज्ञा, पु०) [हि० काढ़ना] उधार या ऋण लेने वाला । निकालने या उद्धार करने वाला । बचाने वाला ।

कढ़ोरना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कर्षण] घसोटना, खीचना ।

कण—(संज्ञा, पु०, सं०) किनका, रवा, जर्रा । अति सूक्ष्म टुकड़ा । चावल का बारीक टुकड़ा । कना, **कन** [पार्टिकल] । (ब्र० दे०) अन्न के दाने । भिक्षान्न । कणक ।

कणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पीतल । औषध-विशेष । "सशिशिरा सधना, समहौषधा, सजलदा सकणा सपयोधरा"—वै० जी० ।

कणादि—(संज्ञा, पु०) [सं० कण+अद्+अच्] सुवर्णकार । वैशेषिक दर्शन कर्त्ता एक मुनि या ऋषि, जो तंडुल-कण खाकर जीवन बिताते थे, (अतः यह नाम) इनका दूसरा नाम उलूक था, ये परमाणुवादी थे, इनका शास्त्र औलूक्य या वैशेषिक है ।

कणिक—(संज्ञा, पु०, सं०) कण । प्रतिपक्षी, बैरी, शत्रु । गेहूँ का आटा । गेहूँ । अनाज की बाली ।

कणिका—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कणिक्+आ] किनका, टुकड़ा, बिन्दु । चावल के छोटे-छोटे टुकड़े, कनका, लेश ।

कणिश—(संज्ञा, पु०, सं०) गेहूँ आदि अनाज की बाल ।

कणिष्ठ—(वि०, सं०) अत्यन्त सूक्ष्म, सूक्ष्मतम, बहुत छोटा ।

कणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) टुकड़ा । कनी (दे०) । अति सूक्ष्म भाग ।

कण्व—(संज्ञा, पु०, सं०) शंकुतला का पालन-पोषण करने वाले ऋषि, यजुर्वेदीय कण्व शाखा का प्रवर्त्तन करने वाले ऋषि का नाम ।

क़त—(संज्ञा, पु०, अ०) देशी कलम की नोक की आड़ी काट । कलम या लेखनी का डंक । *(अव्य० दे०) [सं० कुतः, प्रा० कुतो] क्यों, किस लिए, काहे को । कतक (दे०) । "बिन पूछे ही धर्म कतक कहिए दहिए हिय"—नन्द । "कत सिख देइ हमै कोउ माई"—रामा० ।

क़तई—(अव्य०, अ०) बिलकुल, एकदम [**कत्तई** (दे०)] ।

कतक—(संज्ञा, पु०, सं०) रीठा । निर्मली । (क्रि०, वि०, दे०) कत, क्यों ।

कतनई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सूत कातने की मजूरी । कताई ।

कतना—(क्रि०, अ०) [हि० कातना] काता जाना । (अव्य, दे०) कितना ।

कतनी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० हि० कसना] सूत कातने की टिकरी ।

कतरछाँट—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) काट-छाँट, कतर-ब्योंत ।

कतरन—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कतरना] काटने-छाँटने के बाद बचे हुए कपड़े या कागज के छोटे टुकड़े ।

कतरना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कर्तन] कैंची या किसी औजार से काटना-छाँटना ।

कतरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० कतरना] बाल, कपड़ा, कागज आदि काटने का एक औजार, कैंची। मिकराज। धातुओं की चद्दर आदि काटने का सँड़सी-जैसा एक औजार, काती। कतन्नी (दे०)। "करम कतरनी शान का छूरा, बद्धी टेक लगावै—"।

कतर-ब्योंत—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० कतरना + ब्योंतना] काँट-छाँट, [प्रूनिंग]। उलट-फेर, इधर का उधर करना। उधेड़-बुन, हेर-फेर। सोच-विचार। दूसरे के सौदे में से कुछ रकम अपने लिए निकाल लेना। युक्ति, जोड़-तोड़, ढंग, ढर्रा। सुलझाना।

कतरवाना—(क्रि०, स०) [दे० कतरना का प्रे० रूप] कतराना।

कतरा—(संज्ञा, पु०, अ०) बूँद, बिंदु (दे०)। (संज्ञा, पु०) [हिं० कतरना] कटा हुआ टुकड़ा। टुकड़ा, खंड। (वि०, दे०) कतरा हुआ, काटा हुआ।......"कतरे-कतरे पतरे करिहौं की"—जायसी०।

कतराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० कतराना] कतरने का काम। कतरने की मजदूरी।

कतराना—(संज्ञा, स्त्री०)। [हिं० कतरना] किसी वस्तु या व्यक्ति को बचा कर किनारे से निकल जाना। रास्ता काट कर चला जाना। (क्रि०, स०) [हिं०कतरना का प्रे० रूप] काटना, छँटवाना, कटवाना, अलग करना। (क्रि०, अ०, दे०) बचा कर या काट कर जाना।

कतरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कर्तरी—चक्र] कोल्हू का पाट जिस पर बैठ कर बैल हाँके जाते हैं। हाथ में पहिनने का पीतल का एक गहना। जमी हुई मिठाई का टुकड़ा। वि० (हिं० कतरना) काटी हुई।

कतल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० क़त्ल] बध, हत्या।

कतलबाज—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० क़त्ल + बाज—फ़ा०] बधिक, हत्यारा, जल्लाद। (वि०) क़त्ल करने वाला। जालिम।

कतला—(पु०) किसी खाने की वस्तु का तिकोने या चौकोर कटा हुआ पदार्थ, फाँक।

क़तलाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० कत्लेआम] सर्व साधारण का बध, सर्व-संहार।

कतली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० क़तरा] जमी हुई मिठाई आदि का चौकोर टुकड़ा। (वि०, अ० क़त्ल) कत्ल करने वाला।

कतवाना—(क्रि०, स०) [हिं० कातना का प्रे० रूप] दूसरे से कातने का काम कराना। [(वि०) **कतवैया**]

कतवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [पतवार=पताई] कूड़ा-करकट, बेकाम घास-फूस। (यौ०) **खर—**घास-फूस। (संज्ञा, पु०) [हिं० कातना] कातने वाला (यौ०)—**खाना**—कूड़ा फेंकने की जगह।

कतहुँ, कतहूँ॥—(क्रि०, वि० अव्य०) [दे० कत + हूँ] कहीं, किसी स्थान पर। कभी, किसी समय, किसी जगह। कहुँ, कहुँ (दे०) "कतहुँ सुधाइहु ते बड़ दोषू" रामा०।

क़ता—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० कतआ] बनावट, आकार। ढंग। श्रेणी। वज़ा। कपड़ों की काटछाँट। (यौ०) **वज़ा-क़ता**। (यौ०) **क़ता-कलाम**—(अ० कता=काटना) बात काटना।

कताई—(संज्ञा,स्त्री०, दे०) [हिं० कातना] कातने की क्रिया। कातने की मजदूरी। कतवाई।

कतान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अलसी की छाल का बना हुआ एक बढ़िया चमकीला कपड़ा। बढ़िया बुनावट का एक रेशमी कपड़ा।

कताना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० कातना का प्रे० रूप] किसी से कातने का काम कराना। कतवाना।

कतार—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पंक्ति, श्रेणी, पाँते। समूह, झुंड।

कतारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कांतार] लाल रंग का मोटा गन्ना। [(संज्ञा, स्त्री०) **कतारी**—कतारा जाति की छोटी और पतली ईख।] (संज्ञा, स्त्री०) (अ० क़तार) पंक्ति।

कताव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कातना] कातने का काम।

कति॥—(वि०, सं०) (गिनती में) कितने, किस क़दर (तौल या माप में), कौन। बहुत से, अगणित। [**केतिक** (ब्र०) **किते, कितेक, कितो, केते, केतो** (ब्र०)]

कतिक॥—(वि०, दे०) [सं० कति + एक] कितना, किस क़दर। बहुत, अनेक, कितेक (ब्र०), कैसे, थोड़ा, केतो।

कतिकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कार्तिकी—कार्तिक की पूर्णमासी।

कतिपय—(वि०, सं०) कितने ही, कई एक। कुछ थोड़े से।

कतीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) गुलू नामक वृक्ष का गोंद, जो दवा के काम में आता है। निर्यास।

कतुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) तकुवा, सुवा, तकी, टेकुवा (दे०)।

कतेक*—(वि० दे०) कितने, कितेक (ब्र०) कुछ, थोड़े बहुत, अनेक।

कतौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कताना] कातने का काम या मजदूरी। किसी काम के लिए देर तक बैठे रहना।

कत्त—(अव्य०, दे०) कहाँ। क्यों कर। कित्त।

कत्तल—(संज्ञा, पु०, दे०) कटा हुआ, टुकड़ा। पत्थर के टुकड़े। चट्टान।

कत्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्तरी] बाँस चीरने का औजार, बाँका, बांसा। छोटी टेढ़ी तलवार, छुरी। कत्तान (दे०)।

कत्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कर्तरी] चाकू, छुरी। छोटी तलवार, कटारी। पेशकब्ज, सोनारों की कतरनी। बत्ती के समान बट कर बाँधी जाने वाली पगड़ी।

कत्थई—(वि०) [हि० कत्था] खैर के रंग का, कत्था का सा।

कत्थक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कथक] एक गाने-बजाने और नाचने वाली जाति। कथक। कथिक (दे०)। "नौ कथिक नचावै तीन चोर', —ला० सीता राम।

कत्थन—(संज्ञा, पु०, सं) झूठी बात पर बहकना, डींग मारना। (वि०) डींग मारने वाला।

कत्था—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्वाथ] खैर की लकड़ियों का सुखाया और जमाया हुआ काढ़ा जो पान में खाया जाता है। खैर का वृक्ष। खैर खदिर (सं०)।

कथम्—(अव्य०, सं०) क्यों, कैसे, क्योंकर। (यौ०) **कथमपि**—कैसे ही।]

कथंचन—(अव्य०, सं०) किस प्रकार।

कथंचित्—(क्रि०, वि०, सं०) शायद, किसी प्रकार, कदाचित्।

कथक—(संज्ञा, पु०) [सं० कथ्+णक] कथा या कहानी कहनेवाले, कथा-वाचक, कथग्गर (दे०)।

कथकीकर—(संज्ञा, पु०) [हि० कत्था+कीकर] खैर का पेड़।

कथक्कर, कथक्कड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कथ +कड़—प्रत्य०] बहुत कथा कहने वाला, कथाकार (सं०)। [(स्त्री०) **कथक्कड़ी**]

कथन—(संज्ञा, पु०, सं०) बखान, बात, उक्ति, विवरण, वृत्तांत, बयान, वक्तव्य [स्टेटमेण्ट]। [(स्त्री० दे०) **कथनि**।]

कथना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कथन] कहना, बोलना। निंदा करना, बुराई करना। "ऊधौ कहा कथत विपरीत"—सूर।

कथनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कहने का ढंग या रीति। उक्ति, बात। ब० ब० (कथा) कथानि।

कथनी*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कथन+ई—प्रत्य० हि०] बात, कथन। हुज्जत, बकवाद। कथनि। "जब लगि कथनी हम कथी, दूर रहा जगदीश" —कबीर।

कथनीय—(वि०, सं०) कहने योग्य, वर्णनीय। वक्तव्य। निंदनीय, बुरा। [(संज्ञा, स्त्री०) **कथनीयता**]

कथरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कथा+री—प्रत्य०] पुराने चिथड़ों को जोड़-जोड़ कर बनाया हुआ बिछौना। गुदड़ी।

कथांतर—(संज्ञा, पु०, सं०) दूसरी कथा या कहानी, उपकथा।

कथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जो कहा जाय, बात। धर्म-विषयक व्याख्यान। उपाख्यान। चर्चा, जिक्र। प्रसंग। समाचार, हाल। वाद-विवाद, कहा सुनी, झगड़ा। कहानी, वृत्तांत, इतिहास।—**कहानी**—आख्यायिका।—**प्रबंध**—कहानी क़िस्सा, कथा-वस्तु।—**प्रसंग**—मदारी, विष-वैद्य, सँपेरा। क़िस्सा-कहानी, गल्प, बातचीत।—**वस्तु**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपन्यास या कहानी का ढाँचा। घटना-चक्र, [प्लाट]।—**वार्ता**—पुराण-इतिहास की चर्चा। बातचीत, संभाषण।—**प्राण**—नाटक-वक्ता, कथक। "लगे कहन कछु कथा पुरानी"—तुल० (रा०) —**सचिव**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मंत्री। बातचीत में सहायक।

कथाकार—(संज्ञा, पु०, सं०) कथा कहने या बनाने वाला। पुराण बाँचने वाला, पौराणिक, कत्थक, कथिक।

कथानक—(संज्ञा, पु०, सं०) कथा, छोटी कथा, कहानी, गल्प। कथा-सारांश [प्लाट]

कथामुख—(संज्ञा, पु०, सं०) आख्यान या कथा के ग्रंथ की प्रस्तावना या भूमिका। कथा का प्रारंभ।

कथिक—(संज्ञा, पु०, दे०) कत्थक। कथकों की एक जाति।

कथित—(वि०) [सं० कथ्+क्त] कहा हुआ, उक्त। [अलेज्ड]।—**कथन**—(पु०) कहे हुए को कहना, पुनरुक्ति।

कथितव्य—(वि०) [सं० कथ्+तव्य] कथनीय, कथनार्ह, कहने-योग्य ।

कथीर, कथील—(संज्ञा, पु०, दे०) राँगा । "काँच कथीर अधीर नर, जतन करत ह्वै भंग"—कबीर ।

कथोद्घात—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रस्तावना, कथा का प्रारम्भिक अंश, सूत्र-धार की बात (नाटक) अथवा नाटक के मर्म को लेकर पहले-पहल पात्र का रंग-भूमि में प्रवेश और अभिनयारम्भ ।

कथोपकथन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बात-चीत, संभाषण, वार्तालाप । वाद-विवाद । संवाद । [डाइलाग]

कथ्य—(वि०) [सं० कथ्+य] कथितव्य ।

कदंब—(संज्ञा, पु०) [सं० कद्+अंब] गोले, पीले पुष्पों वाला एक प्रसिद्ध वृक्ष, कदम । समूह, ढेर, झुंड । "फूलन दे सखि टेसू कदम्बन"—पद्मा० । **—कुसुमाकार**-(वि०, सं०) गोलाकार, वर्तुलाकार । कदंब के फूल सा ।

कदंबक—(संज्ञा, पु०, सं०) राशि, समूह, ढेर । कदंब । हल्दी ।

कद्—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० कदा] कब, कदा, किस समय ।

क़द—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० क़द्] द्वेष, शत्रुता । हठ, ज़िद । (संज्ञा, पु०) (अ० कद) ऊँचाई (प्राणियों के लिए) डीलडौल । (यौ०)—**(दे) आदम**-(वि०) मनुष्य-शरीर के बराबर ऊँचा ।

कदक्षर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुत्सित वर्ण, खराब अक्षर ।

कदध्वा, कदधव—(दे०)—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० कद+अध्वन्] बुरा मार्ग, कुपथ, कुत्सित पथ, कुमार्ग ।

कदश्व—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा घोड़ा ।

कदन—(संज्ञा, पु०, सं०) मरण, विनाश । मारना, वध, हिंसा । युद्ध, संग्राम । पाप । दुःख । मर्दन । हत्या । "विरह कदन करि मारत लुंजै"—सूर० । [(यौ०) **कदनार्ह** ।]

कदन्न—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० कद्+अन्+क्त] कुत्सित अन्न, अपवित्र अन्न । मोटा अनाज, बुरा धान्य—जैसे कोदौ । मसूर ।

कदपत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) नालायक संतान, कपूत ।

कदम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कदम्ब] एक सदा बहार पेड़ । समूह । एक घास ।

क़दम—(संज्ञा, पु०, अ०) पैर, पाँव, डग । घोड़े की एक गति । **मुहा०—उठाना**—तेज़ चलना । उन्नति करना ।**—चलना (चलाना)**—घोड़े को एक विशेष गति से चलाना (चलना) ।**—चूमना (छूना)** प्रणाम करना । शपथ खाना ।**—बढ़ाना (आगे बढ़ाना) या बढ़ना**—तेज़ चलना । उन्नति करना । **—बोसी करना**—स्वागत या सत्कार करना । पैर छूना, पैर चूमना ।**—रखना**-प्रवेश करना, दाखिल होना, आना । प्रारम्भ करना ।**—पर—रखना**—ठीक पीछे चलना, अनुकरण या नकल करना । चलने में एक पैर से दूसरे तक का अन्तर, पग, पेंड, फाल, डग । घोड़े की वह चाल या गति जिसमें पैर तो चलते हैं किन्तु बदन नहीं हिलता । "ना कदम रहे जौलों नाक दम रहे तौलों, नाक दम रहे जौलों ना कदम टारेंगे" ।

क़दमबाज़—(वि०, अ०) क़दम की चाल चलने वाला (घोड़ा) । [संज्ञा, स्त्री० **कदमबाजी**]

कदम्बावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [कदम्ब+अवली] कदम्ब वृक्षों की पंक्ति या उनका समूह । "कदम्बावली भानुजातीर में"—मधुपुरी ।

कदर—(संज्ञा, पु०, दे०) सफेद कत्था । गोखरू । अंकुश । आरा । टाँकी ।

क़दर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मान, मात्रा, मिक़दार । प्रतिष्ठा, बड़ाई ।**—दान**-(वि०, फ़ा०) आदर या मान करने वाला, गुणग्राही, कद्रदां ।**—दानी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) गुण-ग्राहकता ।

कदरई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कादर] कायरता, कादरता, डरपोकपन, कदराई (दे०) ।

कदरज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कदर्य] एक प्रसिद्ध पापी । (वि०, दे०) कदर्य, कंजूस । कायर, कादर ।

कदरमस*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कदन+मस—प्रत्य० हि०] मार-पीट, लड़ाई ।

कदराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कादर+ई—प्रत्य०] कायरता, भीरुता, कायरपन । "लागत अगम अपनि कदराई"—रामा० ।

कदराना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कादर] कायर होना, डरना । पीछे हटना । "तुम यहि भाँति तात कदराहू"—रामा० ।

कदरो—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कद—बुरा+रव—शब्द] मैना के बराबर एक पक्षी ।

कदर्थ—(वि०) [सं० कद+अर्थ] निरर्थक, बुरा, कुत्सित । (संज्ञा, पु०, सं०) बेकाम वस्तु, कूड़ाकरकट । [संज्ञा, स्त्री०, भा० **कदर्थता**] ।

कदर्थना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कदर्थन] दुर्गति, दुर्दशा।

कदर्थित—(वि०, सं०) दुर्दशा-प्राप्त। जिसकी दुर्गति की गई हो। [(वि०) **कदर्थनीय**—विडंबनीय।]

कदर्य—(वि०, सं०) कंजूस, सूम। क्षुद्र। कुत्सित, निंदित। [(संज्ञा, स्त्री०) **कदर्यता**]

कदली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) केला। एक पेड़ जिसकी लकड़ी जहाज बनाने के काम में आती हैं। "काटे ते कदली फरै"—रामा०। एक प्रकार का हिरन।

कदा—(क्रि०, वि०) [सं० किम्+दा] कब, किस समय। (यौ०) **यदा-कदा**—कभी-कभी, जब-तब।

कदाकार—(वि०) [सं० कद+आकृ+घञ्] बुरे आकार का, भद्दा, बद-शकल, कुरूप।

कदाकृति—(वि०, सं०) कुरूप, बदशकल।

कदाख्य—(वि०, सं०) बदनाम।

कदाच*—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० कदाचन] शायद, कदाचित्।

कदाचन—(क्रि०, वि०, सं०) किसी समय, कभी, कदा, शायद।

कदाचार—(संज्ञा, पु०, सं०) दुराचरण, बदचलनी, बुरी चाल। [मिसबिहेवियर]। [(वि०, पु०) **कदाचारी**—दुराचारी। (स्त्री०) **कदाचारिणी**। (संज्ञा, स्त्री०)—**कदाचारता**]।

कदाचित्, कदाचि—(क्रि०, वि०, सं०) कभो, शायद, कबौं (दे०) "जो कदाचि मोहि मारिहै तौ पुनि होब सनाथ"—रामा०।

कदापि—(क्रि०, वि०) [सं० कदा+अपि] हर्गिज़। किसी समय भी। (यौ०) कदापिच।

कदाशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी आशा।

कदिच्छा—अनुचित अभिलाषा।

कदी—(वि०) [अ० कद्द] हठी, जिद्दी।

क़दीम—(वि०, अ०) पुराना, प्राचीन। [(वि०, अ०) **क़दीमी**, पुराना, बहुत दिनों से चला आता हुआ।]

कदीमा—(संज्ञा, पु०, दे०) शावल, लोहाँगी।

कदीहा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी इच्छा।

कदुष्ण—(वि०, सं०) थोड़ा गर्म, शीत-गर्म।

क़दूरत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) रंजिश, मन-मोटाव, कीना, मनोमालिन्य।

कदैषणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी इच्छा।

कद्दावर—(वि०, फ़ा०) बड़े डील-डौल या क़द का। [वि० कद्दी]

कद्दू—(संज्ञा, पु०, दे०) लौकी, लौका। (फ़ा०) कद्दू, तुच्छ वस्तु।

कद्दूकश—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लोहे-पीतल आदि की छेददार चौकी जिस पर कद्दू को रगड़ कर उसके महीन महीन टुकड़े किये जाते हैं।

कद्दूदाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उदर के अन्दर छोटे छोटे कीड़े जो मल के साथ निकलते हैं। चुन्ना। उदर-कीट।

कद्रु—(संज्ञा, पु०, सं०) धूम्र-वर्ण। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाग-माता का नाम। दक्ष-प्रजापति की कन्या। इन्हीं से सर्पों की उत्पत्ति हुई है, कश्यप मुनि की स्त्री। "कद्रू बिनतहिं दीन्ह दुख"—रामा०।

कद्रुज—(संज्ञा, पु०, सं०) सर्प, साँप, नाग। कद्रु-सुत, कद्रु-तनय, कद्रु-सुवन।

कधी—(क्रि०, वि०, दे०) कभी (हि०), किसी समय।
(क्रि०, वि०) यदा-कदा।

कनंक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कनक] सोना, सुवर्ण। "पुन्य कालन देत विप्रन तौलि तौलि कनंक" —केशव।

कन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कण] बहुत छोटा टुकड़ा, जर्रा, अणु। अन्न या अनाज का एक दाना या उसका टुकड़ा। प्रसाद। जूठन। बूँद। चावलों के छोटे-छोटे टुकड़े। कना। चावल। भीख। भिक्षान्न। रेत के कण। शारीरिक शक्ति। हीर। ..."कन माँगत बाँभनै लाज नहीं"—नरो०। "कन दैबौ सौंप्यौ ससुर"—बिहारी। "कन कन जोरे मन जुरै" वृन्द। (संज्ञा, पु०, दे०) कान का सूक्ष्म रूप (यौगिक शब्दों में) जैसे—कनपटी, कन-टोप।

कनइल—(संज्ञा, पु०, दे०) कनैल का फूल, कण्डैल। "पहनकर कनइल की माला"—हरिऔध।

कनई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कांड या कंदल] कनखा, नई शाखा, कल्ला, कोंपल। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) काँदव (हि०) गीली मिट्टी, कीचड़, कर्दम। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) किनारा।

कनउड, कनऊँड*—(वि०, दे०) कनौड़ा, कनावड़ा। [(संज्ञा, स्त्री०) **कनउडी, कनावडी**]

कनक—(संज्ञा, पु०, सं०) सोना, कंचन। धतूरा। पलास, टेसू या ढाक। नागकेसर। खजूर। गेहूँ का आटा। कनिक। छप्पय छंद का एक भेद (पिं०)। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कणक] गेहूँ। **—कली**—(संज्ञा, पु०) [सं० कन+कली हि०] करन-फूल, लौंग, कर्ण-शिरीष। **—कशिपु**—(संज्ञा, पु०, सं०) हिरण्य-कशिपु। प्रह्लाद के पिता। "कनक

कशिपु कलिकाल"—तुल० ।—**चंपक**–(संज्ञा, पु०, सं०) कर्णिकार, कनियारी, कनकचंपा (हि०)। —**धारा**–स्वर्ण-प्रवाह, सूर्य की सुनहली रश्मियाँ। धूप । "रश्मियों की कनकधारा में नहीं"—मैथिली० ।—**पुष्प**–(संज्ञा, पु०, सं०) धतूरे का फूल, कनक कुसुम ।—**फल**–(संज्ञा, पु०, सं०) धतूरे का फल । जमाल गोटा ।—**रस**–(संज्ञा, पु०, सं०) हरिताल ।—**लोचन**–(संज्ञा, पु०, सं०) हिरण्याक्ष नामक राक्षस । स्वर्णचक्षु, हेमाक्ष ।—**क्षार**–(संज्ञा, पु०, सं०) सुहागा ।

कनकटा—(वि०, यौ०) [हि० कान+काटना] जिसका कान कटा हो, बूचा, कान काट लेने वाले, कनकटवा (दे०) । [(संज्ञा, स्त्री०) **कनकटी**—(दे०) कान की जड़ में व्रण ।]

कनकना—(वि०, अनु०) रंचकाघात से टूटने वाला । तनिक में ही चिढ़ने वाला । व्यर्थ कुपित हो बकने वाला । (वि०) [हि० कनकनाना] कनकनान, या चुनचुनानेवाला । अरुचिकर । चिड़चिड़ा । बड़बड़ानेवाला । [स्त्री० **कनकनी**]

कनकनाना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कांद, पु० हि० कान] सूरन, अरवी आदि वस्तुओं के छूने से अंगों में उत्पन्न होने वाली चुनचुनाहट । गला काटना । अरुचि लगना । बड़बड़ाना । लड़ना । (क्रि०, अ०) [हि० कना] चौकन्ना होना । रोमांचित होना । ज्वर के पूर्व बदन का कुछ काँपना । [(संज्ञा, पु०) **कनकनाहट** । (संज्ञा, स्त्री०) **कनकनी**]

कनकाचल—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ण पर्वत । सुमेरु । अगस्तगिरि । हेमाद्रि । "है कहाँ कान्त कनकाचल ।" —हरिऔध ।

कनकानी—(संज्ञा, पु०, दे०) घोड़े की एक जाति ।

कनकाभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वर्ण की आभा, सोने की तरह चमकीलापन, स्वर्ण की सी प्रभा । "आंच लगे कनकाभा परमोज्वल बनी"—हरिऔध ।

कनकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कणिक] चावलों के टूटे हुए कण ।

कनकूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कन+कूतना] खेत की खड़ी फ़सल का अनुमान ।

कनकौआ, कनकौवा—(संज्ञा, पु०) [हि० कन्ना+कौवा] बड़ी पतङ्ग, गुड्डी, चंग । **मुहा०—(वे) से दुमछल्ला बढ़ा**—किसी वस्तु के गौण अंश का प्रधानत्व ग्रहण करना ।

कनखजूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कान+खर्ज—सं०] एक विषैला कीड़ा जिसके बहुत से पैर होते हैं । काँतर, गोजर ।

कनखा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कांडक] नवांकुर, कोंपल, कल्ला ।

कनखियाना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० कनखी] तिरछी या टेढ़ी दृष्टि से देखना । आँख से इशारा करना ।

कनखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कोन+आँख] पुतली को कोने में ले जा कर टेढ़ी नजर से देखना, दूसरों की दृष्टि बचा कर देखना, आँख का इशारा । कनैखी (ग्र०) । **मुहा०—चलाना**—कनखी मारना ।—**देना**—रोकना ।—**मारना**—आँख से इशारा करना, मना करना ।—**लगाना**—इशारा करना (आँख से) ।

कनखैया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कनखी ।

कनखोदनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कान+खोदना] कान का मैल निकालने की सलाई ।

कनगर—(संज्ञा, पु०) दे० 'कनिगरा' ।

कनगुरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कानी+अँगुरी] सब से छोटी अँगुली, कनिष्ठिका, छिगुनी (दे०) ।

कनछेदन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कान+छेदना] कर्ण-वेध, कान छेदने का एक संस्कार (हिन्दू) कर्ण-वेधन ।

कनटोप—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कान+टोप—तोपना] कानों को ढाँकने वाली टोपी, टोपा ।

कनतूतुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कान+तू तू शब्द] एक छोटा विषैला मेंढक ।

कनधार*—(संज्ञा, पु०, दे०) कर्णधार (सं०) केवट ।

कनपटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कान+पट—सं०] कान और आँख के बीच का भाग, गंडस्थल । कर्णपाली (सं०) ।

कनपेड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कान+पेड़ा] कान के पास एक गिल्टी के निकलने और पीड़ा करने का रोग, कनछाँही (दे०), कनबुज, कनसुआ (दे०) कर्ण-शोथ, कर्णशोक (सं०) ।

कनफटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कान+फटना] गोरख पंथी योगी जो कानों को फड़वा कर उनमें बिल्लौर की मुद्राएँ पहिनते हैं । साँप-बिच्छू पकड़ने वाले ।

कनफुँका—(वि०, दे०) [हि० कान+फूँकना] कान फूँकने वाला, दीक्षा या गुरु-मंत्र देने वाला, दीक्षा लेने वाला, कनफुँकवा (दे०)। (संज्ञा, पु०) गुरु।

कनफुसकी, कनफुसी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काना-फूसी, धीरे धीरे बात करना।

कनफूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्ण पुष्प] करन फूल (दे०) कान में पहिनने का एक गहना। तरौना (ब्र०), कर्ण-कुसुम, कर्ण-शिरीष।

कनबुज—(संज्ञा, पु०, दे०) कर्णशोथ, कनपेड़ा, श्रुति-शोक।

कनमनाना—(क्रि०, अ०, दे०)[हि० कान+मानना] सोये हुए प्राणी का किसी आहट आदि से हिलना, डुलना, या सचेष्ट होना। किसी बात के विरुद्ध कुछ कहना या चेष्टा करना।

कनमैलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कान+मैल] कान का मैल निकालने वाला।

कनय*—(संज्ञा, पु०, दे०) कनक, सुवर्ण, सोना। "बिजुरी कनय कोट चहु पास"—जायसी०।

कनरस—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कान+रस] गाना-बजाना सुनने का आनन्दकारी व्यसन। श्रवण-सुखद-रस, कर्णरस। कर्णस्वाद।

कनरसिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कान+रसिया] गाना-बजाना सुनने का शौकीन व्यक्ति। मधुर वार्तालाप का सुनने वाला, कर्णरस-प्रेमी, कर्ण-रसिक पुरुष।

कनल—(संज्ञा, पु०, दे०) भिलावाँ, एक औषधि।

कनवई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छटाँक।

कनवा—(वि०, दे०) काण (सं०)। काना, एक आँख वाला। "कानी आँख वाले कौ न कनवाँ बुलावही" —कुंज।

कनवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कर्णवेध, कनछेदन का संस्कार।

कनसगाई (कनसलाई)—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कान+सलाई] कनखजूर का सा एक छोटा पतला लम्बा कीड़ा। [**कनसरैया** दे०]

कनसार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कांस्यकार] ताम्र-पत्र पर लेख खोदन वाला। [संज्ञा, स्त्री० **कनसारी**]

कनसाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कान+सालना] चारपाई के पायों के तिरछे छेद, जिनके कारण वह कनवाया जाय।

कनसुई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कान+सुनना] आहट, टोह। **मुहा०—लेना**—भेद लेना। गोबर को गौर फेंक कर सगुन विचारना। छिप कर किसी की बात सुनना। आहट लेना।

कनस्तर (कनस्टर)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कनिष्टर] टीन का चौखूटा पीपा, जिसमें मिट्टी का तेल आता है, कनसरा।

कनहा—(संज्ञा, पु०, दे०) अन्न की जाँच करने वाला। (वि०) [सं० कणहा] कण-नाशक।

कनहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्णधार] मल्लाह, केवट। "चाहत पार न कोउ कनहारा"—तु० (रा०)। [(संज्ञा, स्त्री०) **कनहारी**]

कना—(संज्ञा, पु०, दे०) कन, कण, तंदुल-खंड।

कनाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कोना (हि०) बचाना, किनारा। **मुहा०—काटना**—किनारा कशी करना, छोड़ना, बचाना।

कनाउड़ा, कनावड़ा—(वि०, दे०) कनौड़ा, उपकृत। "ह्वैजै कनावड़े बार हजार हितू जुपै दीन दयाल सों पाइए"—नरो०।

कनागत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कन्यागत] पितृ-पक्ष, अपर पक्ष, पितर पच्छ (दे०), आश्विन मास का प्रथम पक्ष, श्राद्ध-पक्ष।

कनात—(संज्ञा, स्त्री०, तु०) किसी जगह को घेर कर आड़ करने वाला मोटे कपड़े का पाल। तम्बू। **मुहा०—करना**—बचना, छोड़ना।

कनारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कनार+ई—प्रत्य०] मद्रास प्रान्त के कनारा नामक प्रान्त की भाषा। वहाँ का निवासी।

कनिअर—(वि०, दे०) कानि या मर्यादा रखने वाला, आनवाला।

कनिआरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कर्णिकार] कनक चंपा।

कनिक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कणक (सं०), गेहूँ का आटा।

कनिका*—(संज्ञा, पु०, दे०) कणिका (सं०), कनूका (ब्र०) छोटा टुकड़ा। [स्त्री० **कनिकी**—तंदुल खंड]

कनिगर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कानि+गर फ़ा०] अपनी मर्यादा का ध्यान रखने वाला। नाम की लाज रखने वाला। पानीदार। आनवाला।

कनियाँ§—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० काँध] गोद, उछंग, उत्संग, कोरा, अंकाला। "जेंवत स्याम नंद की कनियाँ"—सू०।

कनियाना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कोना] आँख बचाकर निकल जाना। कतराना। (क्रि०, अ०)

[हि० कन्ना, कन्नी] पतंग का किसी ओर झुकना, कन्नी खाना। (क्रि०, अ०) [हि० कनिया] गोद में लेना या उठाना।

कनियार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्णिकार] कनकचंपा, कनियारी (दे०)।

कनियाहट—(संज्ञा, पु०, दे०) भड़क, संकोच, खींच।

कनिष्ठ—(वि०, सं०) बहुत छोटा, अत्यन्त लघु। जो पीछे उत्पन्न हुआ हो, आयु में छोटा। हीन, निकृष्ट, कनीठ (ब्र०)। [जूनियर]

कनिष्ठा—(वि०, स्त्री०, सं०) सब से छोटी, अत्यन्त लघु। निकृष्ट, नीच। (संज्ञा, स्त्री०) पीछे विवाही हुई, दो या कई स्त्रियों में से वह जिस पर पति का प्रेम कम हो (नायिका-भेद)। छोटी उँगली, छिगुनी।

कनिष्ठिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सब से छोटी अँगुली, छिगुनी।

कनिहा—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रतिहिंसक। धुना।

कनिहार—(संज्ञा, पु०, दे०) मल्लाह, केवट। "ज्यों कनिहार न भेद करै कछु"—सु०।

कनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कण] छोटा टुकड़ा। हीरे का कण। किनकी। चावल के लघु कण। बूँद। "झलकी भरि भाल कनी जल की"—कविता०। मींगी—"कूकस कूटै कनि बिना"—कबी०। **मुहा०—खाना या चाटना**—हीरे की कनी निगल कर प्राण देना।

कनीनिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आँख की पुतली, तारा। कन्या। छिगुनी।

कनीयान्—(वि०, सं०) कनिष्ठ, अनुज, अत्यल्प, छोटा, कनीयसी।

कनीर—(संज्ञा, पु०, दे०) कनेर वृक्ष या फूल।

कनूका—(संज्ञा, पु०, दे०) कणक (सं०) अति लघु कण। "गोकुल के रज के कनूका औ तिनूका सम" —रत्ना।

कनून—(संज्ञा, पु०, दे०) क़ानून।

कने§—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० करणे—स्थान में] पास, निकट। समीप। ओर। अधिकार में।

कनेखी—(संज्ञा, पु०, दे०) कनखी।

कनेठा, कनैठा—(वि०) [हि० काना + एठा—प्रत्य०] काना, ऐंचाताना।

कनेठी, कनैठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कान + ऐंठना] कान मरोड़ने की सजा। गोशमाली।

कनेर (कनैर)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कणेर] एक प्रकार का फूलदार पेड़। [(वि०) **कनेरिया**—कनेर का सा रंग, श्यामतायुक्त लाल]

कनेव§—(संज्ञा, पु०) [हि० कोन + एव] चारपाई का टेढ़ापन।

कनैया—(संज्ञा, पु०, दे०) कर्णवेधन, कनछेदन।

कनोई—(संज्ञा, स्त्री०) कान का मैल, खूंट।

कनौजिया—(वि०, दे०) [हि० कनौज + इया—प्रत्य०] कन्नौज-निवासी, जिनके पूर्वज कन्नौजवासी रहे हों। (संज्ञा, पु०, दे०) कान्यकुब्ज ब्राह्मण। **लोको०**—"आठ कनौजिया नौ चूल्हा"।

कनौजी—(वि०) (हि० कन्नौजी) कन्नौज का। "कन्नौजोदाय"—आल्हा।

कनौड़ा—(वि०, दे०) [हि० काना + औड़ा—प्रत्य०] काना। अपंग। कलंकित, निंदित। लज्जित। (संज्ञा, पु०) [हि० कनिना—मोल लेना + औड़ा —प्रत्य०] मोल लिया दास। कृतज्ञ या तुच्छ मनुष्य, कनवाड़ा। [स्त्री० **कनौड़ी**]

कनौती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कान + औती—प्रत्य०] पशुओं के कान या उनकी नोक। कान उठाने का ढंग। बाली। "चलत कनौती लई दबाई"—राजालक्ष्मणसिंह।

कन्ना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्ण—प्रा० कण्ण] पतंग की डोर जिसका एक सिरा कांप और ठड्डे के मेल पर और दूसरा पुछल्ले के ऊपर बँधा रहता है। किनारा, कोर। (संज्ञा, पु०) [सं० कण] चावल का कन, कीड़े पड़ने का एक रोग जो वनस्पतियों मे होता है। **मुहा०—(से) से कटना (काटना)** मूल से अलग होना या करना।—**खाना**—पतंग का किसी ओर झुकना।

कन्नी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कन्ना] पतंग के किनारे, पतंग को सीधा उड़ाने के लिए उसमें बाँधी जाने वाली धज्जी, किनारा, हाशिया। (संज्ञा, पु०, सं० करण) राजगीरों का एक औज़ार।

कन्यका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्वांरी लड़की, पुत्री, बेटी।

कन्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अविवाहिता लड़की। कुमारी। सुता, पुत्री, बेटी। बारह राशियों में से छठवीं। घी कुवांर। बड़ी इलाइची। एक वर्णवृत्त (४ गुरु वर्णों का) (पि०) बाराही कंद।—**काल**—रजो-दर्शन के पूर्व की अवस्था या बाल्यकाल।—**कुमारी**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) भारत के दक्षिणी नोक पर एक अंतरीप। रासकुमारी (रामेश्वर के निकट)।—**दान**—(संज्ञा, पु०, यौ०) विवाह मे वर को कन्या देने की रीति। (यौ०, पु०)—**दाता**—कन्यादान करने वाला।—**धन**—(संज्ञा,

पु०) अविवाहिता या कन्यावस्था में मिलने वाला धन, स्त्री-धन। **पंचकन्या**—पाँच पवित्र स्त्रियाँ—अहिल्या, द्रौपदी, तारा, कुंती तथा मंदोदरी (पुरा०)—**पति**—(संज्ञा, पु०) जामाता, दामाद। उपपति। व्यभिचारी। सुता-पति।—**भाव**—कुमारीत्व।—**राशि**—कुंडली में छठीं राशि।—**रासी**—(वि०, दे०) [सं० कन्याराशिन्] जिसके जन्म समय में चन्द्रमा कन्या राशि में हो (ज्यो०) चौपट, निकम्मा, निकृष्ट, हीन।

कन्यावानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कन्या + पानी] कन्या के सूर्य के समय की वर्षा।

कन्हरीया—(संज्ञा, पु०, दे०) माँझी, कर्णधार, मल्लाह।

कन्हाई, कन्हैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कृष्ण] श्रीकृष्ण। प्रिय-व्यक्ति। सुन्दर लड़का। कन्हा (दे०) कंधैया (दे०)।

कन्हावर—(संज्ञा, पु०, दे०) कंधे पर डालने की चादर। बैल की गर्दन पर रहने वाला जुए का भाग।

कपट—(संज्ञा, पु०) [सं० क+पट्+अल्] इष्ट के साधनार्थ हृदय की बात छिपाने की वृत्ति, छल, प्रतारण, दंभ, दुराव। [(वि० **कपटी**—छली, धोखेबाज, धूर्त)]।—**वेश**—मिथ्यावेश, छद्मवेश।—**भू**—(संज्ञा, पु०, यौ० सं०) माया-भूमि। छल-जनिता।

कपटना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कल्पन्] काटना, छाँटना, खोंटना।

कपटाचार—(संज्ञा, पु०, सं) छल या कपट का व्यवहार। "कहीं है कलह न कपटाचार।"—हरिऔध

कपड़कोट—(संज्ञा, पु०, दे०) [कपड़ा+कोट] तम्बू, खेमा। मु०—**करना**—चारों ओर कपड़ा लपेटना।

कपड़छान—(संज्ञा, पु०) [हि० कपड़ा+छानना] पिसी हुई बुकनी या चूर्ण को कपड़े से छानना।

कपड़द्वार—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० कपड़ा+द्वार] वस्त्रागार, तोशाखाना।

कपड़धूलि—(संज्ञा, स्त्री०) [वि० कपड़ा+धूलि] एक प्रकार का बारीक रेशमी कपड़ा, करेप।

कपड़मिट्टी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि०] धातु या औषधि फूँकने के संपुट पर मिट्टी (गोली) के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया, कपरौटी, गिल-हिकमत।

कपड़विण—(संज्ञा, पु०, दे०) दरजी। रफूगर।

कपड़ा, कपरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्पट] रूई। रेशम। ऊन या सन के तागों से बुना गया वस्त्र, पट।..."रँगाये जोगी कपरा"—कबी०। मु०—(**कपड़ों से**) **होना**—रजस्वला (मासिक धर्म से) होना। (संज्ञा, पु०) सिला हुआ पहिनाव, पोशाक, परिधान। (यौ०)—**लत्ता**—पहिनने-ओढ़ने के वस्त्रादि।

कपरिया—(संज्ञा, पु०, सं०) एक नीच जाति।

कपरौटी (**कपड़ौटी**)—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कपड़ मिट्टी।

कपर्द, कपर्दक—(संज्ञा, पु०, सं०) जटाजूट (शिवका)। कौड़ी।

कपर्दिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कौड़ी, बराटिका।

कपर्दिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, शिवा।

कपर्दी—(संज्ञा, पु०) [सं० कपर्दिन्] शिव, शंकर ११रुद्रों में से एक।..."कपर्दी कैलाशं करिवरमभौनं कुलिशभृत्"।

कपाट—(संज्ञा, पु०, सं०) किवाड़, पट, द्वार।—**बद्ध**—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसके अक्षरों को विशेष रूप से लिखने पर किवाड़ों का चित्र बन जाता है,। कपाट-बंध (का० शा०)।

कपार—(संज्ञा, पु०, दे०) कपाल (स०)

कपाल—(संज्ञा, पु०) [सं० क+ पल्+अल] ललाट, भाल, माथा, मस्तक। अदृष्ट, भाग्य। खोपड़ी, घड़े आदि के नीचे या ऊपर का भाग। खपड़ा (खर्पर)। मिट्टी का भिक्षापात्र खप्पर, यज्ञों में देवतादि के लिए पुरोडाश पकाने का बर्तन। [(दे० **कपार**]। "फोरइ जोग कपार अभागा"।—**क्रिया**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मृतक संस्कार के अंतर्गत जलते शव की खोपड़ी को बाँस आदि से फोड़ने की क्रिया।—**भाती**—श्वास क्रिया का एक विशेष स्वरूप—**भृत**—(संज्ञा, पु०, सं०) महेश्वर, शिव।—**मोचन**—(संज्ञा, पु०, सं०) एक तीर्थ।

कपालक—(वि०, दे०) कपालिक (सं०)।

कपालिका—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कपाल+इक+आ] खोपड़ी। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० कापालिका] काली-रणचंडी। दंत-रोग।

कपालिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, कपालधारिणी देवी, कपाल-पाणि।

कपाली—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव। भैरव। ठीकरा लेकर भीख माँगने वाला। कपरिया। एक वर्ण-संकर जाति। द्वार के ऊपर का काठ। [(स्त्री०) **कपालिनी**। (वि०) **कपालीय**—भाग्यवान्।

कपास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कर्पास] एक पौधा जिसके ढोंड़ से रुई निकलती है। [**कपासू** (दे०)।] "साधु-चरित सुभ सरिस कपासू"—तुल०

कपासी—(वि०, दे०) कपास के फूल के रंग का, हलके पीले रंग का। (संज्ञा, पु०) हलका पीला रंग।

कपिंजल—(संज्ञा, पु०, सं०) चातक, पपीहा। गौरापक्षी। भरदूल। तीतर। एक मुनि। कादम्बरी के नायक का एक सखा (वि०, सं०) पीले रंग का।

कपि—(संज्ञा, पु०) [सं० कप+इ] बंदर, मर्कट। हाथी। कंजा, करंज। सूर्य। सुगंधित शिलारस नामक औषधि। एक यंत्र।—**कच्छु**—(संज्ञा, स्त्री०) केवाँच, एक औषधि।—**कुंजर**—(संज्ञा, पु०) वानरेंद्र, हनुमान, कपीश। "कटकटान कपि कुंजर भारी"—तुल०।—**केतु**—(संज्ञा, पु०) अर्जुन, कपि-प्रिय।—**ध्वज**—(संज्ञा, पु०) अर्जुन।

कपित्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) कैथे का पेड़ या फल। ..."परिपक्व कपित्थ- सुगंध रसम्"—**भो० प्र०**।

कपिरथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रीराम। अर्जुन।

कपिल—(वि०, सं०) भूरा। मटमैला, तामड़े के रंग का। सफेद। (संज्ञा,पु०) अग्नि। कुत्ता। चूहा। शिलाजीत। शिव। वानर। सूर्य। विष्णु। सांख्यशास्त्र के आदि प्रवर्तक एक मुनि, सगर-सुतों को इन्होंने भस्म किया था, ये कर्दम प्रजापति के औरस और देवव्रती के गर्भज पुत्र थे, इन्हे भगवान् का पाँचवाँ अवतार माना गया है, इनका शास्त्र निरीश्वर दर्शन कहा जाता है। (पु०) बरना पेड़।—**धारा**—गंगा। तीर्थ-विशेष। [**कपिलता**—(संज्ञा, स्त्री०) भूरापन, पीलापन। ललाई। सफेद। (संज्ञा, पु०) कपिलत्व]

कपिलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) केवाँच, कौंछ।

कपिलवस्तु—(संज्ञा, पु०, सं०) गौतम बुद्ध का जन्म-स्थान। "कपिलवस्तु को नृप शुद्धोदन, तासु पुत्र गौतम जानो"—(कु० वि०)।

कपिलांजन—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, शंकर।

कपिला—(वि०, स्त्री०, सं०) भूरे रंग की। मटमैली। सफेद दागवाली। सीधी-सादी, भोली-भाली। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) सफेद रंग की सीधी गाय। पुंडरीक नामक दिग्गज की पत्नी। दक्ष नृप की कन्या। जोंक। चींटी। मध्य प्रदेश की एक नदी। "जिमि कपिलहिं घालै हरहाई"—तु० (रा०)। [(यौ०) **कपिलागम**—सांख्य-शास्त्र]।

कपिलाक्षी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार का हिरन, शिंशपा वृक्ष।

कपिलाचार्य—(पु०, सं०) विष्णु।

कपिश—(वि०, सं०) काला और पीला रंग लिये। भूरे रंग का। मटमैला, बादामी। कृष्णपीत वर्ण कपिस (दे०)।

कपिशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार का मद्य। एक नदी। कसाई। कश्यप की एक स्त्री जिससे पिशाच उत्पन्न हुए थे।

कपिस—(संज्ञा, पु०) रेशमी कपड़ा।

कपीन्द्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कपिराज, सुग्रीव।

कपीश—(संज्ञा, पु०, सं०) वानरों का राजा। हनुमान। सुग्रीव। कपीश्वर।

कपूत (कपुत्र)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुपुत्र] बुरा लड़का, दुराचारी पुत्र।

कपूती—(संज्ञा, पु०, दे०) दुराचार। पुत्र के अयोग्य कार्य।..."कीन्ही है अनैसी कसि कमर कपूती पै"—(स०, अ०, ब०)। (संज्ञा, स्त्री०) कुपुत्र की माता।

कपूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्पूर] दालचीनी की जाति के पेड़ों से निकला हुआ सफेद रंग का एक जमा हुआ सुगंधित पदार्थ। काफूर।—**कंद**—(संज्ञा, पु०, हि०) एक प्रकार की मिठाई।—**कचरी**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) एक सुगंधित जड़ वाली वनौषधि (लता) सितरुती।—**तिलक**—ब्रह्मावर्त (बिठूर) का एक हाथी। **मुहा०**—**खाना**—विष खाना।

कपूरी—(वि०, दे०) [हि० कपूर] कपूर का बना हुआ हलके पीले रंग का। (संज्ञा, पु०, दे०) हलका पीला रंग। एक प्रकार का कड़ुवा पान। एक प्रकार का सुगंधित पौधा—कपूरपत्ती।

कपोत—(संज्ञा, पु०, सं०) कबूतर, परेवा, पारावत (सं०) पक्षी। भूरे रंग का कच्चा सुरमा। [(स्त्री०) **कपोती**]—**पालिका**—कबूतरखाना।—**वर्णी**—(संज्ञा, स्त्री०) छोटी इलायची।—**वका**—(संज्ञा, स्त्री०) ब्राह्मीबूटी।—**वृत्ति**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) आकाशवृत्ति, रोज कमाना रोज खाना।—**व्रत**—(संज्ञा, पु०) चुपचाप दूसरों के अत्याचारों को सहना।—**सार**—(संज्ञा, पु०) भूरे रंग का सुरमा।

कपोताक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) एक नद।

कपोतिका, कपोती—(संज्ञा, स्त्री०, स०) कबूतरी। पेंडुकी। कुमारी। मूली। तरकारी। (वि०) कपोत के रंग का। धूमला।

कपोल—(संज्ञा, पु०, सं०) गाल, गंडस्थल, रुख-सार। "चारुचिबुक नासिका कपोला"—तुल०। **—कल्पना**-(संज्ञा, पु०, यौ०) मन-गढ़ंत। मिथ्या या बनावटी बात। गप्प।**—कल्पित**-(वि०) —मिथ्या, झूठ, असत्य।**—गेंदुआ**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० कपोल + गेंदुआ—हि०] गाल के नीचे रखने का तकिया, गल-तकिया, कपोल-गेंदुक।

कपोसना, कपोहना—(क्रि०, अ०, दे०) जल के कारण चर्म का श्वेत और संकुचित हो जाना।

कप्पर—(संज्ञा, पु०, दे०) कपड़ा (हि०)।

कप्पास—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल। बंदर का चूतड़। (वि०) लाल। कपास (दे०)।

कफ—(संज्ञा, पु०, सं०) खाँसने पर मुख और नाक से भी निकलने वाली गाढ़ी और लसीली अंठेदार वस्तु। श्लेष्मा, बलग़म। शरीर की एक धातु (वैद्यक) [वि० **कफी**]

कफ़—(संज्ञा, पु०, अ०) कमीज या कुर्त्ते की आस्तीन के आगे वाली दोहरी पट्टी, जिसमें बटन लगायी जाती है। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) कफ।

कफघ्न—(संज्ञा, पु०, सं०) कफारि—सोंठ (शुंठी)। झाग, फेन। चकमक से आग निकालने का लोहे का टुकड़ा। कफ-नाशक, कफ-विरोधी — मरिच। [स्त्री० **कफघ्नी**]

कफन, कफ्फन—(संज्ञा, पु०, अ०) मुर्दे पर लपेटा जाने वाला वस्त्र। "हाय चक्रवर्ती कौ सुत बिन कफन फुंकत है"—हरि०। **मुहा०—को कौड़ी न होना (रहना)**—अत्यन्त दरिद्र होना।**—को कौड़ी न रखना**—सारी कमाई खर्च कर देना।**—खसोट** -(वि०) [अ० कफ़न + खसोट हि०] कंजूस, लोभी। **—खसौटी**-(स्त्री०) डोमों का कर जो वे श्मशान पर कफन फाड़ कर लेते है। इधर उधर से भले या बुरे ढंग से धन जमा करने की वृत्ति, कंजूसी। "कफन-खसौटी मोंहि जात यह जनम बितायौ"—हरि०।

कफवर्धक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कफ बढ़ाने वाला। तगर वृक्ष। कफकारक।

कफनाना—(क्रि०, स०, दे०) मुर्दे पर कफन लपेटना। "उतरी हमारी सारी मोंहि कफनायगी"—रत्ना०।

कफनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कफ़न] मुर्दे के गले का वस्त्र। साधुओं की मेखला। कफनियाँ (दे०)।

क़फ़स—(संज्ञा, पु०, अ०) पिंजड़ा। दरबा। बंदी-गृह, कैदखाना। तंग जगह।

कफी—(वि०, दे०) कफयुक्त, कफवाला।

कफैला—(वि०, हि०) कफवाला। कफयुक्त।

कफोणी—(संज्ञा, पु०, सं०) बाँह के नीचे की गाँठ। कोहनी।

कबंध—(संज्ञा, पु०, सं०) पीपा, कंडाल। बादल, मेघ। पेट, उदर। जल। बे सिर का धड़, रुंड। एक राक्षस जिसे राम ने जीता और मारकर भूमि में गाड़ दिया था। राहु।

कब—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० कदा] किस समय, किस वक्त, (प्रश्न वाचक) कबै। **मुहा०—का,—के,—से**—देर से, विलंब से।**—नहीं**—सदा, बराबर। कभी नहीं, नहीं।**—लौं (तक)** (ब्र०) कितने समय तक। [**कबहूँ** (ब्र०) **कबौं, कबहूँ, कबै** (?) —कभी भी] **कब कब (वीप्सा)**—किस किस समय। बहुत कम। "कब को ठाढ़ो द्वार पै"—(कुं०, वि०)।

कबड्डी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दो दल बना कर खेला जाने वाला लड़कों का एक खेल, कबड्डी, कांपा, कंपा।

कबन्धासुर—(संज्ञा, पु०, सं०) [कबन्ध + असुर] दण्डक वन में राम के हाथो मारा जाने वाला एक राक्षस। "आगे किसी कबन्धासुर ने"—मैथिली।

कबरा—(वि०, दे०) [सं० कर्बुर, प्रा० कब्बर] सफेद रंग पर काले, लाल, पीले रंग के दाग वाला, चितला। कोढ़ी। [**चितकबरा** (दे०)] (वि०, स्त्री०) [हि० कबरा] विवर्णता-युक्त। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) चोटी, बेणी। "कबरी-भारनि रचै आनि अवली गुंजन की"—दीन०।

क़ब्रिस्तान—(संज्ञा, पु०, दे०) क़ब्रिस्तान, जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हों। (मुसलमानों या इसाइयों के)।

क़बल—(अव्य०, दे०) [अ० क़ब्ल] कब्ल, पेश्तर, प्रथम, पहिले, पूर्व, प्राक्।

क़बा (क़बाय)—(संज्ञा, पु०, अ०) एक प्रकार का लंबा ढीला पहिनाव, चोगा।

कबाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्पट] बेकाम वस्तु। अंगड़-खंगड़। व्यर्थ का तुच्छ व्यापार। रद्दी चीज, कूड़ा करकट। [(वि०)**—कबाड़ी**]।**—खाना**—(संज्ञा, पु०) जहाँ कूड़ा-करकट रखा जाय। **—कूड़ा**—व्यर्थ की बात, बखेड़ा।

कबाड़िया—(संज्ञा, पु०, हि०) टूटी-फूटी, रद्दी चीजें बेचने वाला। तुच्छ व्यवसाय करने वाला। झगड़ालू। कबाड़ी, कबारी (दे०)।

क़बाब—(संज्ञा, पु०, अ०) सीखों पर भुना हुआ मांस। "क़बाबे-सीख है हम पहलुएँ हरस बदलते

है।"—**चीनी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [अ० कबाब + चीनी—हि०] मिर्च की जाति की एक लिपटने वाली झाड़ी जिसके मिर्च जैसे फल खाने में कुछ कटु और शीतल लगते हैं। शीतल चीनी। इस झाड़ी के फल।

क़बाबी—(वि०) [अ० कबाब] कबाब बेचने वाला। मांसाहारी। कबाब खाने वाला।

कबार—(संज्ञा, पु०) [हि० कबाड़] व्यापार, व्यवसाय, रोज़गार। **कूड़ा**—अव्यवस्थित वस्तुओं का ढेर।

कबारना—(क्रि०, स०, दे०) उखाड़ना।

कबारू—(संज्ञा, पु०, दे०) झंझट।

क़बाला—(संज्ञा, पु०, अ०) वह दस्तावेज़ जिसके द्वारा कोई जायदाद किसी दूसरे के अधिकार में चली जाती है।

क़बाहत (कबाहट दे०**)**—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बुराई, ख़राबी। अड़चन, उलझन। परेशानी, झंझट, झमेला।

कबित—(संज्ञा, पु०, दे०) कवित्त या घनाक्षरी छंद। कविता, काव्य। "कवित-रसिक न राम-पद-नेहू" —तुल०।

कबित्त—(संज्ञा, पु०, दे०) मनहरण छंद। (पिं०) कवित, (दे०) काव्य, कविता 'निज कवित्त केहि लाग न नीका'—तुल० (रा०)।

कबी—(संज्ञा, पु०, दे०) कवि। "कबी कव्य चंद सु माधौ नरिंदम्"—चंद्र०। (अव्य०) कभी।

कबीर—(संज्ञा, पु०) [अ० कबीर श्रेष्ठ] एक भक्त संत कवि जिन्होंने कबीर पंथ चलाया। होली मे गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत। अश्लील गीत। (वि०, अ०) श्रेष्ठ।—**पंथ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) कबीर का चलाया हुआ मत।—**पंथी** (वि०)-कबीर के मतानुयायी।

कबीला—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पत्नी, स्त्री, जोरू। परिवार, कुटुंब। "भाई बंधु अरु कुटँब कबीला..." सूर०।

कबुलाना, कबुलवाना—(क्रि०, स०) [हि० कबूलना का प्रे० रूप] क़बूल या स्वीकार कराना, अंगीकार कराना। सत्य कहना, छिपी या रहस्य की बात बताना।

कबूतर—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० मिलाओ, सं० कपोत झुंड में रहने वाला परेवा जाति का पक्षी। [(स्त्री०) **कबूतरी**] (संज्ञा, पु०, फ़ा०)—**ख़ाना**—पालतू कबूतरों का दरबा।—**बाज़**—(वि०, फ़ा०) कबूतर पालने का शौकीन।

कबूल—(संज्ञा, पु०, अ०) स्वीकार, मंजूर।

कबूलना—(क्रि०, स०) [अ० कबूल + ना—प्रत्य०] स्वीकार या मंजूर करना। सब बातों को स्पष्ट कह देना।

कबूलियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पट्टा देने वालों को पट्टा लेने वाले के द्वारा लिखा गया स्वीकृति-पत्र।

कबूली—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चने की दाल की खिचड़ी।

क़ब्ज़—(संज्ञा, पु०, अ०) ग्रहण। पकड़। मलावरोध, कब्ज (दे०)।

क़ब्ज़ा—(संज्ञा, पु०, अ०) मूठ, दस्ता। किवाड़ या संदूक में जड़े जाने वाले लोहे या पीतल के दो चौखुंटे टुकड़े। पकड़, दख़ल, वश। स्वत्व, अधिकार, कबजा (दे०)।—**दार** (**क़ाबिज़**)-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) क़ब्ज़ा रखने वाला। दखीलकार असामी। (वि०) जिसमे क़ब्ज़ा लगा हो। [भा० संज्ञा, स्त्री० **क़ब्ज़ादारी**] **मुहा०**—(**ब्ज़े) पर हाथ डालना**—तलवार खींचने के लिए मूठ पर हाथ रखना।

क़ब्जियत—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मलावरोध।

कब्य—(संज्ञा, पु०, दे०) पितृश्राद्ध। पितृदान।

क़ब्र—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मुसलमानों या इसाइयों के मुर्दे गाड़ने का गढ़ा तथा उसके ऊपर का चबूतरा। कबर (दे०)। **मुहा०—में पैर (पाँव) रखना (लटकाना)**—मरने के क़रीब होना।—**में जाना**—मरने के निकट होना। मर जाना। **(किसी की)—तैयार होना, बनना (करना, बनाना)**—मार डालने की चिंता करना। मृत्यु को पहुँचाना। क़ब्र में पहुँचना (पहुँचाना) मरना (मार डालना)। (**किसी की)—खोदना**—(उसके) मारने का प्रबन्ध करना, परेशान करना, चैन न देना।

क़ब्रिस्तान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुर्दे गाड़ने का स्थान।

क़ब्ल—(अव्य०, अ०) पेश्तर, पूर्व, प्रथम।

कभी—(क्रि०, वि०) [हि० कब + ही] किसी भी समय पर, कदापि, कबहूँ (दे०)। **मुहा०—का (के, से)**—देर से।—**न**—किसी समय आगे। [**कभूँ** दे०, **कबौं** ब्र०]

कमंगर—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० कमानगर] कमान बनाने वाला। उखड़ी हड्डी बैठाने वाला। चितेरा। कमानगर। (वि०) दक्ष, निपुण। [(संज्ञा, स्त्री०) **कमंगरी**—कमंगर का पेशा या काम।]

कमंचा—(संज्ञा, पु०) एक औज़ार जो बढ़इयों के काम आता है।

कमंडल—(संज्ञा, पु०, दे०) कमंडलु (सं०)। [(वि०) **कमंडली** [सं० कमंडलु+ई—प्रत्य०]—साधु। पाखंडी।]

कमंडलु—(संज्ञा, पु०, सं०) संन्यासियों का जल-पात्र, जो धातु, मिट्टी, तूमड़ी या दरिआई नारियल का होता है।

कमंद*—(संज्ञा, पु०, दे०) कबंध। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) फंदेदार रस्सी जिससे बनैले पशु फँसाये जाते या चोर मकानों पर फेंक कर चढ़ते हैं, फंदा। "देखो तो बद नसीबी, कहाँ टूटी है कमंद"।

कम—(वि०, फ़ा०) थोड़ा, न्यून, अल्प।—**असल**-(वि०) वर्णसंकर, दोगला।—**खाब**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कलाबत्तू के बूटेदार रेशमी वस्त्र। मीनखाब (दे०)। **मुहा०—से**—अधिक नहीं तो इतना अवश्य। (यौ० में) बुरा, जैसे कमबख्त। (क्रि०, वि०) प्रायः नहीं।

कमची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [तु० मि०, कमाच] पतली लचीली टहनी जिससे टोकरी आदि बनती है। तीली, खपाँच, खपची, कमाच (दे०)।

कमच्छ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कामाख्या] देवी का एक अभिग्रह। कामरूप। गोहाटी की एक देवी, कमच्छा (दे०)।

कमज़ोर—(वि०, फ़ा०) असमर्थ, दुर्बल, अशक्त, निर्बल, हीन। [(भा०, संज्ञा, स्त्री०)—**कमजोरी**—नाताक़ती, निर्बलता, हीनता।]

कमठ—(संज्ञा, पु०, सं०) कच्छप, कछुवा। साधुओं का तुंबा, बाँस। "कमठ पृष्ठ-कठोर मिदं धनुः" —ह० ना०। एक दैत्य। बाजा। सलई वृक्ष।

कमठा—(संज्ञा, पु०, दे०) धनुष, कमान।

कमठी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कछुई। (संज्ञा, पु०) [सं० कमठ] बाँस की पतली लचीली खपाची। धनुही।

कमताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कमी।

कमती—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० कम+ती प्रत्य०] कमी, घटती, न्यूनता। (वि०, दे०) कम, थोड़ा।

कमन—(वि०, सं०) कामी, भोगी, सुन्दर।

कमना*—(क्रि०, अ०, दे०) कम होना, घटना, न्यून होना।

कमनीय (**कमनी** दे०)—(वि०, सं०) कामना करने योग्य, सुन्दर। "कीरति अति कमनीय"—तुल० (रा०)।

कमनैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० कमान+ऐत —प्रत्य० हि०] धन्वी, कमान चलाने वाला, तीरन्दाज। [(भा०, संज्ञा, स्त्री०)—**कमनैती**—तीरंदाजी, तीर चलाने का हुनर। "तिय कित कमनैती सिखी......"—(वि०)]

कमबख्त—(वि०, फ़ा०) भाग्यहीन, अभागा।

कमबख्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बदनसीबी, अभाग्य, दुर्भाग्य। **मुहा०—आना—सवार होना** (**चढ़ना**)—बुरा समय आना, अभाग्योदय होना। **—सूझना**—शैतानी या नटखटी सूझना।

कमर—(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) पेट और पीठ के नीचे, पेड़ू तथा चूतड़ के ऊपर का हिस्सा। देह का मध्य भाग, कटि, लंक, करिहा (दे०)। **मुहा०—कसना** (**बाँधना**)—तैयार या उद्यत होना, चलने को तत्पर होना।—**टूटना**—निराश होना। हतोत्साह या असमर्थ होना।—**सीधी करना**-लेट कर आराम करना।—**खोलना**—यात्रा-समाप्ति पर विश्राम करना। किसी लंबी चीज़ का मध्य भाग (पतला), अँगरखे आदि का कमर के ऊपर रहने वाला भाग, लपेट, कम्मर (दे०)। "छोरि पितंबर कम्मर ते..." —पद्मा०। "कमर बाँधे हुए देखो सभी तैयार बैठे हैं"। ...कसि कमर कपूती पै"—(स०, अ०, व०)।—**कस**—(संज्ञा, पु०, दे०) ढाक का गोंद। चिनिया गोंद। —**कोट** (**कमरकोटा**)—(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० कमर+कोट हि०] किलों या चार दीवारियों के ऊपर छेद या कँगूरेदार छोटी दीवाल। रक्षार्थ घेरी हुई दीवार। —**बंद**—(संज्ञा, पु०, यौ०, कमर बाँधने का लम्बा कपड़ा। पटुका, पेटी, नाड़ा, इजारबंद, कटि-बंधन। (वि०) मुस्तैद, तैयार। —**बल्ला**—(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० कमर+बल्ला हि०] खपड़े की छाजन मे तड़फ के ऊपर और कोटों के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी। कमरबस्ता कमर-कोट। कमरबल्ली।

कमरख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्म रंग, प्रा० कम्मरंग] एक पेड़ और उसके फाँकदार लंबे खट्टे फल। [(वि०) **कमरखी**—कमरख की सी फाँकों वाला।] (यौ०) न्यून रखने वाला।

कमरा—(संज्ञा, पु०) [लैं० कैमरा] कोठरी। फोटोग्राफ़ी का वह यंत्र जिसके मुख पर लैंस या प्रतिबिंब उतारने का गोल शीशा लगा रहता है। (संज्ञा पु०, दे०) कम्बल।

कमरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० कमर] छोटे डील का एक प्रकार का ज़बरदस्त हाथी। (**संज्ञा**, स्त्री०, दे०) कमर। कमली, कमरी। (ऊन का) कम्बल,। "या लकुटी अरु कामरिया पर"—**रस०**।

कमरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०), [सं० कंबल] छोटा कंबल, कामरि (दे०), रोग । चरखी की लकड़ी । "सूर स्याम की काली कमरी—सूर० ।

कमल—(संज्ञा, पु०, सं०) जल का एक सुन्दर फूल वाला पौदा तथा उसका फूल । सरसिज, सरोज, सरोरुह, पद्म, उत्पल, पंकज, वारिज, अरविंद, तोयज, नीरज, अंबुज, बनज, अब्ज, कमल के आकार का एक मांस पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है । क्लोम । जला, ताँबा । एक प्रकार का मृग । सारस । आँख का कोया, डेला । योनि के भीतर एक कमलाकार गांठ । गर्भाशय-मुख । फूल । धरन । छः मात्राओं का एक छंद । छप्पय के भेदों मे से एक, (पिं०) । मोमबत्ती रखने का एक काँच का पात्र । एक प्रकार का पित्त रोग जिसमें आँखें पीली पड़ जाती है । कँवल (ग्रा०) ।—**गट्टा**—(संज्ञा, पु०) [सं० कमल + गट्टा—हिं०] कमल के बीज, कमलगट्टा ।—**ज**—(संज्ञा, पु०) ब्रह्मा, कमलयोनि, कमलेय, कमल-जन्मा ।—**नयन**—(वि०, कमल की पंखड़ियों को सी आँख वाला । बड़ी सुन्दर आँख (कुछ रक्त) वाला, कमलाक्ष । (संज्ञा, पु०) विष्णु, राम, कृष्ण । [(वि०, स्त्री०) **कमलनयनी**]—**नाभ**—(संज्ञा, पु०) विष्णु । —**नाल**—(संज्ञा, पु०, यौ०) कमल की डंडी । मृणाल । "कमल-नाल इव चाप चढ़ाऊँ"—तुल० (राम०)—**बंध**—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का चित्र काव्य (पिं०) ।—**बाई**,—**बाय**—(संज्ञा, स्त्री०) (हिं०) कामलक या कांवर का रोग जिसमें शरीर और आँख पीली हो जाती है ।—**मूल**—(संज्ञा, पु०) भसीड़ा, मुरार, कमलकंद ।

कमला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रमा, लक्ष्मी, धन, ऐश्वर्य । "कमला थिर न रहीम कह" । एक प्रकार की बड़ी नारंगी, संतरा । एक वर्णिक-वृत्त (पिं०) रतिपद, एक नदी । (संज्ञा, पु०) (सं० कवल) छू जाने से खुजली पैदा करने वाला एक रोयेंदार कीड़ा, सुड़ी, ढोला, सड़े पदार्थ का एक लम्बा सफेद कीड़ा ।—**कान्त**—(संज्ञा, पु०, यौ०) कमल की सी कांति से युक्त । विष्णु ।—**पति**—(संज्ञा, पु०, यौ०) विष्णु । कमलेश ।

कमलाकर—(संज्ञा, पु०, सं०) कमलवाला तालाब, कमल-पुंज ।

कमलाकार—(संज्ञा, पु०, सं०) छप्पय का एक भेद (पिं०) । (वि०) कमल के से आकार वाला ।

कमलाक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल का बीज । कमल-नयन । कमलगट्टा ।

कमलारि—(संज्ञा, पु०, यौ०,) चन्द्रमा, हाथी ।

कमलालया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्ष्मी, रमा ।

कमलावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पद्मावती नामक एक छंद (पिं०) ।

कमलासन—(संज्ञा, पु०, स०, सं०) ब्रह्मा, योग का एक आसन, पद्मासन । "सोचत सबै सकाइ कहा करिहै कमलासन" —रत्ना० (गं०) ।

कमलासना—(संज्ञा,स्त्री०, सं०) लक्ष्मी, रमा । सरस्वती । "लसित श्री दल पै कमलासना" ।—हरिऔध

कमलिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा कमल, कुमोदिनी । कुहिरी (दे०) कमल-युक्त तालाब । कमल-राशि । "कमलिनीकुल-वल्लभ की प्रभा"—हरि० (प्रि०) ।

कमली—(संज्ञा, पु०) [सं० कमलिन्] ब्रह्मा । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा कम्बल, कमरी (दे०) ।

कमलेक्षण—(वि०, सं०) कमल की तरह नेत्रों वाला ।

कमलेश—(संज्ञा, पु०, सं०) रमेश, विष्णु । (यौ०) [कमल + ईश] सूर्य । कमलेश्वर ।

कमवाना—(क्रि०, स०) [हिं० कमाना का प्रे० रूप] कमाने का काम कराना ।

कमसिन—(वि०, फ़ा०) अल्पावस्था । [(संज्ञा, स्त्री०) **कमसिनी**—लड़कपन ।]

कमाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कमाना) कमाया हुआ धन । कमाने का काम । अर्जित धन या द्रव्य । व्यवसाय, धंधा । "जनम को कमाई चपरघटे में गवाई" ।

कमाऊ—(वि० हिं० कमाना) कमाने वाला, उद्यमी, अध्यवसायी, श्रमी ।

कमाच—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, कमची, छाते की तीली ।

कमाची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कमची, [फ़ा० कमानचा] कमान की सी झुकी हुई तीली, खपाँच ।

कमान—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) धनुष । **मुह०—चढ़ना**—दौरदौरा होना, त्यौरी चढ़ना, क्रोध में होना । इन्द्र-धनुष । मेहराब । तोप । बन्दूक । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) आज्ञा [अ० कमांड] फौजी काम का हुक्म । फौजी नौकरी । **मुहा०—पर जाना**—लड़ाई पर जाना ।—**बोलना**—कवायद की आज्ञा देना । लड़ाई पर भेजना ।

कमानचा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) छोटी कमान । सारंगी बजाने की कमानी । मेहराब । डाट ।

कमाना—(क्रि०, स०) [हि० काम] काम काज करके रुपया पैदा करना। सुधारना या काम के लायक बनाना। **मुहा०—(ई) हुई हड्डी या देह**—व्यायाम से बलिष्ठ देह।—**(या) साँप**—वह साँप जिसके विषैले दाँत उखाड़ लिये गये हों। सेवा सम्बन्धी छोटे-छोटे काम करना (जैसे पाखाना कमाना या उठाना)। कर्म संचय करना (पाप कमाना) (क्रि०, अ०) मेहनत मज़दूरी करना। क़सब और कमखर्ची करना। (क्रि०, स०, दे०) [हि० कम] कम करना, घटाना।

कमानिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० कमान] कमान चलाने वाला, धन्वी, तीरंदाज। (वि०) धनुषाकार। मेहराबदार।

कमानी—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० कमान] लोहे की पतली लचीली तीली या तार आदि जो ऐसा बैठाया गया हो कि दबाव पड़ने पर दब जाये और हटने पर फिर ज्यों का त्यों हो जाय। [(वि०)—**कमानीदार**। (यौ०) **बाल**—घड़ी की पतली मरोड़ी हुई कमानी, जिसके खुलने से चक्कर घूमता है।] झुकी हुई लोहे की पतली तीली। एक चमड़े की पेटी जिसे आँत उतरने के रोगी कमर में लगाते हैं। छोटी कमान, जिसके दोनों झुके हुए सिरो पर बाल, तार या रस्सी बँधी हो।

कमाल—(संज्ञा, पु०, अ०) परिपूर्णता, कुशलता, दक्षता। अद्भुत कार्य। विशेष विचित्रता, कारीगरी। "कमी नहीं क़द्रदां की अकबर, करै तो कोई कमाल पैदा"। कबीरदास का पुत्र। "बूड़ा बंस कबीर का, उपजा पूत कमाल"। (वि०) पूरा, सम्पूर्ण। सर्वोत्तम। [(संज्ञा, स्त्री०) **कमालियत**—पूर्णता, निपुणता।] "ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सुहबत हो"।

कमासुत—(वि०, यौ०) [हि० कमाना+सुत] कमाई करने वाला, उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी।

कमिता—(संज्ञा, पु०, सं०) कामी, भोगी, व्यभिचारी।

कमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० कम] न्यूनता, कोताही। हानि। [रिडक्शन]

कमीज़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० कमीस] कली और चौबगला से रहित कुर्ता-विशेष।

कमीना—(वि०, फ़ा०) ओछा, नीच, क्षुद्र। [(स्त्री०) **कमीनी**।] (संज्ञा, पु०, दे०) **कमीन**—नीच जाति का। [संज्ञा, पु० **कमीनपन, कमीनापन**]

कमीला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कम्पिल्ल] एक छोटा पेड़ जिसके फलों पर की लाल धूल से रेशम रँगते हैं।

कमीशन—(संज्ञा, पु०, अं०) कार्यभार-प्राप्त सभा या व्यक्तिवर्ग। दस्तूरी, दलाली। आयोग।

कमुकंदर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कार्मुक+दर] धनुष तोड़ने वाले राम। कामुकंदर।

कमेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० काम+एरा—प्रत्य०] काम करने वाला, दास, नौकर। [(स्त्री०) **कमेरी**।] "साँचो कहै ऊधौ हम कान्ह की कमेरी है"—रत्ना० (ऊ० श०)।

कमेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० काम+एला—प्रत्य०] पशु-वध-स्थान।

कमोदिक—(संज्ञा, पु०) कामोद राग का गायक, गवैया।

कमोदिनि, कमोदिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुमुदिनी (सं०) कुमुद, कमोद। "कमोदिनी जल मे बसै, चन्दा बसै अकास"—कबीर।

कमोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुम्भ+ओरा—प्रत्य० हि०] मटका, चौड़े मुँह का मिट्टी का बरतन, घड़ा, कछरा (दे०)। [(स्त्री०) **कमोरी**। (अल्प०) **कमोरिया**—मटकी, गगरी।] "माखन भरी कमोरी देखी..."—सूबे।

कम्युनिज़्म—(संज्ञा, पु०, अं०) साम्यवाद, तुल्याधिकारवाद, वह वाद जिसमें सम्पत्ति का सम्पूर्ण अधिकार हो। व्यक्ति-विशेष के स्वत्व के विपरीत समाज के अधीन हो। कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित अर्थ-साम्य का सिद्धान्त।

कम्युनिस्ट—(संज्ञा, पु०, अं०) वह जो साम्यवाद के सिद्धान्त में आस्था रखता हो और उसके नियमों का पालन करता हो। साम्यवादी।

कयपूती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [मला० कयु—पेड़+पूती—सफेद] एक सदा बहार पेड़ जिसकी पत्तियों से कपूर का सा उड़ने वाला तेल निकलता है।

कया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काया (सं०), देह। "कया दहत चंदन जनु लावा"—प०।

कयाम—(संज्ञा, पु०, अ०) विश्राम-स्थान, ठहराव, टिकान। निश्चय, स्थिरता।

क़यामत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सृष्टि के नाश का अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठ कर ईश्वर के सामने अपने कर्मों का लेखा देखेंगे और तदनुसार फल पायेंगे (मुस०) प्रलय, हलचल। **मुहा०—बरपा करना**—अति आपत्ति या उपद्रव करना।

कयास—(संज्ञा, पु०, अ०) अनुमान, ध्यान, सोच-विचार। [वि० **कयासी**]

करंक—(संज्ञा, पु०, सं०) मस्तक। ठठरी, पंजर। कमंडल। खोपड़ी (नारियल की)। "काग करंक ठठोलिया"—कबी०।

करंगण—(संज्ञा, पु०, सं०) मेला, बाजार।

करंज—(संज्ञा, पु०, सं०) कंजा, एक बनैला पौधा। एक प्रकार की आतिशबाजी। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० कुभिग सं० कलिंग] मुर्गा। (दे०) करंजा।

करंजुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करंज] कंजा। (संज्ञा, पु०, दे०) बाँस या ऊख के हानिप्रद अंकुर, घमोई। (वि०) [सं० करंज] कंजे के रंग का, खाकी। (संज्ञा, पु०) खाकी रंग।

करंड—(संज्ञा, पु०, सं०) शहद का छत्ता। तलवार। कारंडव नामक हंस। बाँस की टोकरी या पिटारी, डला, डलिया। काक। डिब्बा। (संज्ञा, पु०) [सं० कुरविंद] अस्त्रादि को घिस कर पैना करने के लिए कुरुल पत्थर।

करंतीना—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० क्वारंटाइन] छूत की बीमारियों के स्थान से आये हुए लोगों के रखने का पृथक् स्थान।

करंबित—(वि०, सं०) कूजित, गुंजित। "मधुकर-निकर-करंबित कोकिल कूजित कुंज-कुटीरे"—गी०।

कर—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथ। हाथी की सूँड़। सूर्य या चन्द्र की किरण। ओला। महसूल। छल। युक्ति महसूल। [टैक्स]। *(प्रत्य०) [सं० कृत] करने वाला (सुखकर), सम्बन्ध कारक की विभक्ति, पूर्व कालिक क्रिया का प्रत्यय।—**गत**—(वि०, यौ०, सं०) हाथ में आया हुआ, प्राप्त, लब्ध। तत्त्व वह करगत हुआ या उड़ गया।—**दिनकर**। (संज्ञा, पु०, दे०) हस्ति नक्षत्रगत चन्द्रमा (ज्यो०)। —**गता**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कटि+गता] सोने चाँदी या सूत की करधनी। (वि०, स्त्री०) प्राप्ता। —**ज**-(संज्ञा, स्त्री०) नाखून, उँगली, नख नामक सुगंधित वस्तु, करंज। (वि०) करोत्पन्न।— —**दायी**-(वि०) [सं० कर+दा+णिन्] कर देने वाला, कर-दाता।—**धर**-(संज्ञा, पु०) [सं० कर—वर्षोपल+धर] हाथी। बादल, मेघ। चन्द्र। सूर्य। करधारी।—**धृत**-(वि०, सं०) हस्तगत, गृहीत।—**निर्धारण**-(संज्ञा, पु०) लागत, लाभ, मुनाफा आदि के आधार पर यह तय करना कि उसके स्वामी पर कितना कर (टैक्स) लगाया जाय। [असेसमेंट]।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०) करौंत, आरा, क्रकच। करतब।—(संज्ञा, पु०) पट्टा, महसूल का कागज, शुल्क-पत्र। —**पल्लवी**-(संज्ञा, स्त्री०) उँगलियों के संकेत से शब्द प्रगट करने की क्रिया, [**करपलई** दे०]—**पात्री**-(वि०, यौ०) जिसका भोजन-पात्र हाथ ही हो।—**पिचकी**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कर+पिचकी हि०] जल-क्रीडा मे पिचकारी की तरह पानी छींटने के लिए हथेलियों का संपुट।—**पीड़न**-(संज्ञा, पु०) विवाह, पाणि-ग्रहण, पाणिपीड़न।—**पुट**-(संज्ञा, पु०) बद्धांजलि, अँजुरी (दे०) अंजली।—**पृष्ठ**-(संज्ञा, पु०) हथेली के पीछे का भाग।—**भूषण**-(संज्ञा, पु०) कंकण, पहुंची, कड़ा, हाथ का गहना।

करई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मिट्टी का एक छोटा बर-तन, चुकट्टा, मटकन्ना। (क्रि०, स०, अ०) करता है।

करक—(संज्ञा, पु०, सं०) कमंडल, करवा। दाड़िम। कचनार। पलस। ठठरी। मौलसिरी। करील। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कड़क] रुक रुक कर होने वाली पीड़ा, कसक, चिलक, चमक और गरजन (बादल-बिजली की)। पेशाब का रुक रुक कर जलन के साथ होना। दबाव, रगड़ और आघात से देह पर पड़ा हुआ चिह्न। (संज्ञा, पु०) कर, हाथ।

करकच—(संज्ञा, पु०, दे०) समुद्री नमक।

करकचि—(संज्ञा, पु०, दे०) हल्ला गुल्ला। अपुष्ट, कोमल। किचकिच।

करकट—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० खर+कट सं०] कूड़ा, कतवार, झाड़न। [(यौ०) **कूड़ा-करकट**] (संज्ञा, पु०, दे०) कर्कट (सं०), केकड़ा।

करकना—(क्रि०, अ०, दे०) रह रह कर पीड़ा करना (आँख का)। तड़कना, टूटना, चिटकना। उड़ना, कसकना। (वि०, दे०) [सं० कर्कर] जिसके कनके हाथ में गड़ें, खुरखुरा। [(भा०, संज्ञा, स्त्री०) **कर-कराहट** [करकरा+हट—प्रत्य०] खुरखुराहट, आँख की किरकिरी।]

करकट—(संज्ञा, पु०, सं०) कुसुम का पौधा। काक। हाथी की कनपटी।

करकर—(वि०, दे०) कड़ा, मजबूत, (संज्ञा, पु०, दे०) समुद्री नमक। (संज्ञा, पु०, दे०) एक पक्षी। (वि०) खुरखुरा। दृढ़। [स्त्री० **करकरी**]

करकस*—(वि०, दे०) कर्कश (सं०) कड़ा, कठोर। काँटेदार। दृढ़, पुष्ट।

करका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शिला, ओला। [हेल] "करका क्रंदन करती गिरती"—प्रसाद। [(क्रि०, स०, भू०)—कड़का।] (संज्ञा, पु०, हि०) हाथ का।

करकाना—(क्रि०, स०) [हि० करकना] तोड़ना, मरोड़ना। चिटकाना।

करख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्ष] खिंचाव। हठ। एक तौल। अति द्रव्य।

करखना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कर्षण] उत्तेजित होना, क्रोध, आवेश या जोश में आना। "जा दिन शिवाजी गाजी नेक करखत है"—भू०

करखा—(संज्ञा, पु०, दे०) बढ़ावा, जोश , ताव। "दिन दूनी करखा सों"—सू०। (संज्ञा, पु०, दे०) कारिख, काजल। कड़खा। [(स्त्री०) **करखी**—कजली।]

करखाना—(क्रि०, सं०, दे०) कालिख लगाना। "कहूं कोऊ करखायो"—हरि०।

करगह, करघा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० कारगाह] जुलाहों के पैर लटका कर बैठने और कपड़ा बनाने की जगह। कपड़ा बनाने का एक यंत्र। कर्घा (दे०)।

करगहना—(संज्ञा, पु०, यौ०) [कर+गहना ब्र०) दरवाजे या खिड़की की चौखट पर रखने की लकड़ी, भरेठा। हाथ पकड़ना या मोड़ना।

करगही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जड़हन, मोटा धान। (यौ०) (ब्र०) हाथ में ली।

करगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाढ़। चीनी खुरचने का औज़ार।

करग्रह—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्याह, विवाह।

कर-ग्रहण—(संज्ञा, पु० यौ०, सं०) पाणिग्रहण। [(स्त्री०) **करग्रहणा** ' नवकरग्रहणा गृहिणी यथा" —**लो०**]

करचंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर+चंग— हि०] ताल देने का बाजा। डफ।

करचोटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक चिड़िया।

करछा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर+रक्षा] बड़ी कलछी, चमचा। [(स्त्री०) **करछी, कलछी** (दे०)]

करछाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कर+उछाल] उछाल, छलाँग।

करछुल—(संज्ञा, पु०, दे०) दाल आदि निकालने का बड़ा चम्मच, चमचा, करछुला [(दे०, स्त्री०) **करछुली**]

करजोड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कर+जोड़ना] एक वनौषधि। (यौ०) (ब्र०) हाथ जोड़ कर।

करट—(संज्ञा, पु०, सं०) कृकलास, गिरदान। कौवा। हाथी का गाल। नास्तिक, कुत्सितजीवी।

करटी—(संज्ञा, पु०, सं०)। हाथी। राँगा। (स्त्री०) काक-पत्नी।

करण—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्ता का क्रिया के सिद्ध करने के साधन का सूचक एक कारक (व्या०), इसके सूचक चिह्न—से, सों, द्वारा है। हथियार। [इन्स्ट्रूमेंट, टूल] इंद्रिय। देह। क्रिया, कार्य। स्थान, हेतु। तिथियों का एक विभाग (ज्यो०)। वह संख्या जिसका वर्गमूल पूरा पूरा न निकल सके (गणि०), किसी चतुर्भुज क्षेत्र या समकोण त्रिभुज के आमने-समने के दो कोणों को मिलानेवाली सीधी रेखा (ज्यो०)। योगियों का एक आसन (यौ०), ये पाँच है, ७ चल, ८ अचल, दो करण का एक चंद्र-दिन होता है। (संज्ञा, पु०, दे०) कर्ण (सं०, दे०) करन।

करणिक—(संज्ञा, पु०, सं) वह व्यक्ति जो किसी कार्य को करता हो। कार्य करने वाला। किसी दफ़्तर में लिखने-पढ़नेवाला व्यक्ति। [क्लर्क]

करणी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कृ+अनट्+ई] खुर्पी, रांपी। वह राशि जिसका मूल निश्चित न हो (गणि०)।

करणीय—(वि०, सं०) करने के योग्य, कर्त्तव्य।

करतन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्तन] काटना।

करतब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्तव्य] कार्य, काम। कला। उपाय। करामात। जादू। हुनर। "विधि करतब कछु जात न जाना"—तुल० (रा०)। [(वि०) **करतबी**—पुरुषार्थी। निपुण। बाजीगर, करामात दिखानेवाला, कलाकुशल।] (यौ०) तब कर।

करतरी, करतली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कर्तरी (सं०) कैंची, छुरी। "निसि बासर मग करतरी"—भू०।

करतल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हथेली। चार मात्राओं के गण (डगण) का एक रूप (वि०)। "कर-तल गत सुभ सुमन ज्यों"—तुल० (रा०)। [(स्त्री०) **करतली**—हथेली का शब्द। करताली।]

करता—(संज्ञा, पु०, दे०) कर्ता (सं०), एक वृत्त का नाम, (पिं०) बंदूक की गोली के पहुँचने तक की दूरी। (क्रि०, स०) (करना)।

करता-धरता—(पु०, सं) करने-धरनेवाला, सर्वाधिकारी, जिसके आदेश से समस्त कार्य हों ।

करतार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्तार] ईश्वर, विधाता । "हम करतार करतार तुम काहे के—" । (यौ०) करताल, ताली । हाथ में तार या सूत्र होना । (संज्ञा, पु०,) (दे०) करताल, एक बाजा । ..."गावत लै करतार" —ध्रु० ।

करतारी—(संज्ञा,-स्त्री०, भा० दे०) कर्तापन, ईश्वरता । "भूलि गयो सिगरी करतारी । (वि०, सं०, कर्तार) ईश्वरीय । (संज्ञा स्त्री०) करताली, ताली, थपेड़ी । (यौ०) [कर+ तारी] हाथ में ताली । "...दियो करतार दुहूँ करतारी"—के० ।

करताल—(संज्ञा,पु०) [सं० करतल] हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द, ताली, थपेड़ी । लकड़ी, कांसे आदि का एक बाजा जिसका एक जोड़ा, एक एक हाथ मे लेकर बजाया जाता है, झॉंझ । मॅजीरा । [स्त्री० **करताली**-ताली, थपेड़ी ।]

करतूत-करतूति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कर्तृत्व] कर्म, करनी । कला, गुण हुनर, करतूती (दे०) । "करतूती कहि देत आपु कहिए नहिं साईं"—गि० । "धिक धिक ऐसी कुरुराज करतूती पै"—(स० अ०, ब०) ।

करथरा—(पु०, सं०) हाला पहाड़ की शृंखला ।

करद—(वि०, सं०) कर देने वाला । अधीन । आश्रयपात्र ।

करदा—(संज्ञा, पु०, सं०) गर्द (हिं०), माल में मिला कूड़ा, बट्टा, माल के कूड़ा-करकट के लिए की गई दाम में छूट या कमी । कटौती (दे०) ।

करधनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० किंकिणी] कमर का एक सोने या चाँदी का जंजीरदार गहना । कई लड़ों का सूत । कटि-सूत्र । कटि-धन ।

करन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करण, कर्ण] करण, कर्ण, (क्रि०, स०, हि०) करना ।—**धार***—(संज्ञा, पु०, दे०) कर्णधार, मल्लाह ।—**फूल**-(संज्ञा, पु०. दे०) [सं० कर्ण+फूल हिं०] कान मे पहिनने का एक गहना । तरौना । काँप, कर्णपुष्प, कर्ण शिरीष । —**बेध**-(संज्ञा, पु०) [सं० कर्णवेध] बच्चों के कान छेदने का एक संस्कार । कनछेदन, कर्णवेधन ।

करना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्ण] एक सफेद फूलों वाला पौधा । सुदर्शन । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करुण] बिजौरे का सा एक बड़ा नींबू । *(संज्ञा, पु०, सं० करण) करनी, करतूत । (क्रि०, स०) किसी क्रिया को समाप्ति की ओर ले जाना । निबटाना, भुगताना । संपादित करना । पका कर तैयार करना, राँधना । पहुँचाना । पति या पत्नी के रूप में ग्रहण करना । रोजगार, दुकान खोलना । भाड़े पर सवारी ठहरा कर लेना । रोशनी बुझाना, जलाना । रूपान्तर करना । बनाना । कोई पद देना । पोतना । रचना, सुधारना ।

करनाई—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० करनाय] तुरही, बाजा ।

करनाटक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्णाटक] मद्रास राज्य का एक भाग ।

करनाटकी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्णाटकी] करनाटक-वासी । कलाबाज, जादूगर, इंद्रजाली । कसरत दिखाने वाला ।

करनाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० करनाय] नरसिंहा, भोंपा, एक बड़ा ढोल । एक प्रकार की तोप । पंजाब का एक नगर ।

करनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० करना] कार्य, करतूत, करतब । अंत्येष्टि क्रिया, मृतक-संस्कार । राजगीरों का एक औज़ार, कन्नी । हथिनी, करिनी । लो०—अपनी करनी पार उतरनी ।

करपर*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कर्पर] खोपड़ी, (वि०) (सं० कृपण) कंजूस । (यौ०, हिं०) हाथ पर ।

करपरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पीठी (उर्द) की पकौड़ी या बरी ।

करबर, करबरा—(वि०, दे०) खुरखुरा ।

करबरना—(क्रि०, अ०) [अनु०] चहकना ।

करबराना—(दे०) कलरव करना, खरखराना, कुलबुलाना ।

करबला—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हुसेन के मारे जाने का मैदान (अरब), ताजियों के दफनाने की जगह । निर्जन, जल-हीन प्रदेश ।

करबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जुआर के पौधे (सूखे), डांठी, पशु-भक्ष्य तृण ।

करबीर—(संज्ञा, पु०, दे०) एक वन्य वृक्ष ।

करबुर—(संज्ञा, पु०, दे०) सोना । धतूरा । पाप । राक्षस । (वि०) चितकबरा ।

करबूस—(संज्ञा, पु०) (?) हथियार लटकाने की घोड़े की जीन में लगी रस्सी या तस्मा ।

करभ—(संज्ञा, पु०, सं०) कर-पृष्ठ । ऊँट या हाथी का बच्चा । कलभ । 'काम-कलभ-कर भुजबल सींवाँ" —तुल० (रा०) । नख नामक सुगंधित वस्तु । कमर । दोहे का सातवाँ भेद (पिं०) ।

करभीर—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंह, मृगराज ।

करभोरु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हाथी की सूंड सी जंघा । (वि०) ऐसी जंघा वाला । "सुखद करभोरू तोंहि जँचै"—श० ना० ।

करम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्म] काम, भाग्य, कार्य । (यौ०) **—दंड,—भोग** । किए हुए कर्मों का दुखद फल । **मुहा०—फूटना**—भाग्यमंद होना, **—होना**—कष्ट या दुख मिलना, बेइज्जती होना, **(सब)—करना** (होना)—अपमान करना, कार्याकार्य करना (होना) । (यौ०)**—गति,—रेख** भाग्य-विधान, किस्मत में लिखा "करम रेख नहिं मिटत मिटाये" । "करम-गति टारे नाहिं टरे"—सूर० । **—*चंद**—कर्म, भाग्य । (संज्ञा, पु०, अ०) मेहरबानी ।

करमकल्ला—(ंज्ञा, पु०) [अ० करम+कल्ला हि०] बंद-गोभी, पात-गोभी, केवल पत्ते के संपुट वाली गोभी ।

करमनासा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कर्म-नाशा] एक नदी जिसमें स्नान से कर्म का नाश हो ।

करमट्ठा*—(वि०, दे०) [सं० कृपण] कंजूस ।

करमठ*—(वि०, दे०) [सं० कर्म्मठ] कर्मठ, कर्मनिष्ठ, कर्म-कांडी, कर्म-प्रिय । (संज्ञा, पु०) कर्मट, उपाय । **[करमट** (दे०)—चालाकी] ।

करमात—(संज्ञा, पु०, दे०) भाग्य, कर्म । (स्त्री०) करामात (अ०) ।

करमाला—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) माला के अभाव में जप की गिनती करने के लिए उँगलियों के पोरों का प्रयोग । किरण समूह । (संज्ञा, पु०, सं०) अमलतास । (यौ०) हाथ में माला । "कर माला छापा तिलक"—कबीर ।

करमाली—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, चन्द्र ।

करमी—(वि०, दे०) [सं० कर्मी] कर्म करने वाला, कर्म-काण्डी । [यौ०**—धरमी**] ।

करमुखा*, **करमुँहा**—(वि०, दे०) [हि० काला+मुख] काले मुँह वाला । कलंकी । [स्त्री० **करमुखी, करमुँही**]

करर—(संज्ञा, पु०) [देश० प्रान्ती०] गाँठदार विषैला कोड़ा । एक प्रकार का घोड़ा ।

कररना*, **करराना**—(क्रि०, अ०) [अनु०] चरमराकर टूटना । कर्कश शब्द करना । कड़ा होना, कठोर या कड़ा होना । [संज्ञा, पु० **कररान**—धनुटंकार] ।

कररी—(संज्ञा, पु०, दे०) ममरी । वन-तुलसी ।

कररुह—(संज्ञा, पु०, सं०) नाखून ।

करल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कराह] कड़ाही, कराह, कड़ाह ।

करलगुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) स्त्री-वश, स्त्रीजित ।

करला—(संज्ञा, पु०, दे०) कोमल पत्ता, कनखा, कल्ला । [स्त्री० **करली**] ।

करवट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० करवर्त] हाथ के बल लेटने की मुद्रा । पार्श्व पर लेटना । करवटिया (दे०) । (संज्ञा, पु०, सं० करपत्र) करवत, आरा, जिससे शुभ फल की आशा से प्राण दिये जाते थे (प्राचीन) **मुहा०—बदलना (लेना),—पलटना**—और का और होना ।**—खाना (होना)**—पलटना, उलट या फिर जाना ।**—न लेना**—कुछ ध्यान न रखना या देना, सन्नाटा खींचना ।—**(टें) बदलना**—तड़पना, बेचैन पड़ा रहना । (**किस**)**—ऊँट**—न जाने क्या होना ।

करवत—(सज्ञा, पु०, दे०) करपत्र (सं०), आरा, [**करौत** दे०] ।

करवर*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) विपत्ति, संकट । होनहार । (संज्ञा, पु०, दे०) तलवार । "करवर टरी आजु सीता की"—रा० र० "तब पंचम नृप करवर काढ़्यो"—छत्र० । (यौ०) श्रेष्ठ-हाथ ।

करवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करक] धातु या मिट्टी का टोंटीदार लोटा । (यौ०)**—चौथ**—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० करका चतुर्थी] कार्तिक कृष्ण चतुर्थी, जब स्त्रियाँ गौरी का व्रत रखती हैं ।

करवाना—(क्रि०, स०) [हि० करना का प्रे० रूप] करने में प्रवृत्त करना ।

करवार* (**करवाल**)—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) तलवार, नाखून, । [(स्त्री०) (अल्प०) **करवाली**—छोटी तलवार, करौली ।] "करवाल कृपाणवत्"—अमर० ।

करवीर—(संज्ञा, पु०, सं०) कनेर का पेड़ । तलवार । श्मशान । चेदिदेश का एक नगर । "कहुं कुंद मंदार करबीर है"—देव० । करबील (दे०), करील ।

करवैया*—(वि०) [हि० करना+वैया—प्रत्य०] करने वाला ।

करवोटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) करचोटिया चिड़िया ।

करश्मा—(संज्ञा, पु०, फा०) करामात, चमत्कार ।

करष, करख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्ष] खिंचाव, मनमुटाव द्रोह, लड़ाई का जोश, ताव (दे०), क्रोध, करषा । "कंत करष हरिसन परिहरहू"—तुल० (रा०) ।

करषना*—(**करसना**—दे०) (क्रि०, स०, दे०) [सं० कर्षण] खींचना। तानना। घसीटना। सुखाना। सोखना। बुलाना। समेटना। [संज्ञा, पु० **करषन, करखन**]।

कर-संपुट—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०)। बद्धांजलि, कापुट।

करसाइल, करसायल, कारसायर—(संज्ञा, पु०, दे०) सं० कृष्णसार (सं०) कालामृग।

करसान*—(संज्ञा, पु०, दे०) कृपाण, किरपान।

करसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० करीष] कंडों का चूरा, उपली, कंडी। (वि०) करषी (सं०) कर्षी, कर्ष या क्रोधवाला।

करहंत (करहंस)—(संज्ञा, पु०, दे०) (सं०) एक वर्णवृत्त (पिं०)।

करह*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करभ] ऊँट, [सं० कलि०] फूल की कली।

करहाट (करहाटक)—(संज्ञा, पु०, दे०) कमल की जड़ या उसके भीतर की छतरी। मैनफल। "मनहु मंजु करहाट पै, मधुकर सोहत स्याम"—रसा०।

करहार—(संज्ञा, पु०, सं०) मैनफल, शिफाकन्द। "करहार: शिफाकंद:"—अमर०।

करौंकुल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कलाङ्कुर] पानी के किनारे रहने वाली एक चिड़िया, क्रौंच, कंज (दे०)।

करांगण—(संज्ञा, पु०, सं०) बाजार, हाट, चुंगी एकत्र करने का स्थान।

करौंत—(संज्ञा, पु०, दे०) क्रकच, आरा। [वि० **करांती**—लकड़ी चीरने वाला]।

करा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कलार (सं०)। (वि०) [हि० कड़ा] सख्त। [क्रि०, स०, सा०, भू० +**किया**]।

कराइत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० काला] एक प्रकार का विषैला काला साँप।

कराई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० केराना] उर्द, अरहर आदि की भूसी।* (दे०) [हि० काला] श्यामता। (क्रि०) [हि० करना] करने-कराने का भाव।

कराघात—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथ का प्रहार, आघात, धक्का।

करात—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० कीरात] सोना। चाँदी, दवा तौलने की चार जौ की एक तौल। [कैरट]।

कराना—(क्रि०, स०) [हि० करना का प्रे० रूप] करने में लगाना, करवाना।

करापवंचक—(संज्ञा, पु०, सं०) ऐसी होशियारी या चालाकी करना जिससे महसूल या कर [टैक्स] से बच जाना पड़े। [इवेजन आफ टैक्स]

कराबा—(संज्ञा, पु०, अ०) अर्क आदि रखने का शीशे का बड़ा पात्र।

करामलवत्—(क्रि०, वि०, सं०) हाथ में रखे हुए आँवले की तरह सुनिश्चित और सुस्पष्ट। "ले करा-मलकवत् भूत, भविष्यत, वर्त्तमान"।—वचन।

करामात—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० करामत का बहु०] चमत्कार, करश्मा। [मिरैकल]। [(वि०)—**करामाती** [करामात+ई—प्रत्य०] सिद्ध। करामात करने वाला]।

करायिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार का पक्षी जो सारस से छोटा होता है।

करार—(संज्ञा, पु०, अ०) स्थिरता। धैर्य। संतोष। आराम। वादा, प्रतिज्ञा, शर्त। नदी का किनारा (ऊँचा)। "माँगत नाव करार ह्वै ठाढ़े"—(कवि०)। (दे०) भरोसा, विश्वास।

करारना*—(क्रि०, अ०) [अनु०] काँ काँ या कर्कश शब्द करना।

करारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कराल] जल के काटने से बना हुआ नदी का ऊंचा किनारा। कौआ। टीला। (वि०) [हि० कड़ा, कर्रा] कठोर, कड़ा, दृढ़। खूब भुना हुआ जो खाने में कुर-कुर शब्द करे। उग्र, तीक्ष्ण, चोखा, खरा। गहरा, भयानक, घोर। हृष्ट-पुष्ट। [स्त्री० **करारी**]

करारोपण—(संज्ञा, पु०, सं०) महसूल, कर आदि निर्धारित करना अथवा लगाना। [लेवी]

कराल—(वि०, सं०) भीषण, भयानक। बड़े दाँत वाला। "निज अग्नि नेत्र खोलि कराल"—हितैषी। **—काया**-(वि०) जिसका शरीर अथवा बाह्य दर्शन भयंकर हो। "करालकाया बन की बसुन्धरा"—हरिऔध।

कराली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। (वि०) डरावनी, भयावनी। [वि० **करालिका**]

करावकरावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० करना] एक प्रकार का विवाह, सगाई।

कराह—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० करना+आह] कराहने का शब्द। *(संज्ञा, पु०, दे०) कटाह (सं० कड़ाह, कड़ाहा (दे०) कराहा।

कराहत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) घृणा, नफरत।

कराहना—(क्रि०, अ०, दे०) व्यथासूचक शब्द निकालना, आह आह करना।

कराही, कड़ाही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कराह, कड़ाही।

करिंद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करीन्द्र] ऐरावत या सर्वोत्तम हाथी, करीन्द्र।

करिंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० कारिन्दा] जमींदार का नायब। [संज्ञा, स्त्री० **करिंदगीरी**]

करि—(संज्ञा, पु०) [सं० करिन्] हाथी, गज, गयंद। (पू०, का०) [क्रि०, करना] करके। [स्त्री० **करिनी**] (यौ०)—**कुंभ**—हाथी के मस्तक के टीले।—**ज**-(संज्ञा, पु०) कलभ, हाथी का बच्चा।—**वदन**-(संज्ञा, पु०) गणेशजी, करिवर वदन, करिमुख, वारण-वदन।

करिकत—(संज्ञा, पु०) एक पक्षी जो मछलियों का शिकार करता है।

करिखइ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कालिख, कालिमा, [करिखा, करखा, कारिख (दे०)।

करिणी—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी।

करिया*—(वि०, दे०) काला, करियर (दे०) (रा०)केवट। "करिया मुख करि जाहु अभागे"—तुल०। (संज्ञा,पु०, दे०) [सं० कर्ण] पतवार, कलवारी। माँझी। "बहै करिया बिन नाउर"—गि०।

करियाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कारिख, कालिमा।

करियाद—(संज्ञा, पु०, सं०) सूस, जलहस्ति। (यौ०, हि०) याद करके।

करियारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लगाम, बाग। (यौ०, हि०) दोस्ती या यारी करके।

करिल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करीर] कोपल। (वि०) [हि० कारा, काला] काला। "करिल केस विसहर विसभरे"—प०।

करिष्णु—(वि०, सं०) कर्तव्य, करणशील।

करिहाँ, करिहाँय, करिहाँव—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कटिभाग] कमर, कटि। "कर जमाय करिहाँय"—गंगा०। "कतरे कतरे पतर करिहाँ की"—पद्मा०।

करी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करिन्] हाथी, मतंग। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कांड़] छत पाटने की शहतीर, कड़ी। *कली (हि०) पन्द्रह मात्राओं का एक छन्द (पि०)। (क्रि०, स०) करना। (सा०, भू०, स्त्री०) किया। "यों करवीर करी बन राजै"—के०। "सब चन्दन की सुभ सुद्ध करी"—के०। [(यौ०) **करीन्द्र**]—(सं०) ऐरावत।

करीना*—(संज्ञा, पु०, दे०) करोना, टाँकी। मसाला। (संज्ञा, पु०) [अ० करीना] ढङ्ग, तर्ज, तरीका, चाल, क्रम, शऊर। [(यौ०) **कला-करीना**—तौर-तरीका।]

करीजै—(क्रि०, स०) [ब्र० करना] कीजै।

क़रीब—(क्रि०, वि०, अ०) पास, समीप, लगभग। [वि० **करीबी**—समीपी, नजदीकी।]

करीम—(वि०, अ०) कृपालु। (संज्ञा, पु०) ईश्वर।

करीर—(संज्ञा, पु०, सं०) बाँस का नवाङ्कुर। करील वृक्ष। घड़ा।

करीरिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हाथी-दाँतों की जड़।

करील—(संज्ञा, पु०) [सं० करीर] बिना पत्तियों का एक काँटेदार वृक्ष। "...करील के कुंजन ऊपर वारों"—रस०।

करीष—(संज्ञा, पु०, सं०) जङ्गल में मिलने वाला सूखा गोबर, बन-कंडा, अरना।

करीस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करीश] गजराज।

करुअई, करुआई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कटुता।

करुआना—(क्रि०, अ०, दे०) कटु या तिक्त लगना। जलन होना, पीड़ा होना, दुखना। (क्रि०, स०) कड़ुवे लगने पर मुख बनाना।

करुखी—(वि०, दे०) [सं० कलुषी] कलुषयुक्त, (संज्ञा, स्त्री०, दे०) कनखी। [संज्ञा, पु०, दे० **करुख**]

करुण—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का रस (काव्य०)। ..."एको रसः करुणमेव"—भ०। एक वृक्ष।—**विप्रलम्भ**—शृंगार रस का एक भेद, वियोग-शृंगार। (वि०) शोकपूर्ण, करुणा-जनक।—**स्वर**,—**गिरा**—दुख भरा शब्द।

करुणा—(दे०) (संज्ञा, स्त्री०, सं०) परदुख से उत्पन्न एक प्रकार का मनोविकार या दुख जो अन्य के दुख को दूर करने की प्रेरणा देता है। दया, तरस, रहम। प्रिय-जन के वियोग से जनित दुख, शोक।—**दृष्टि**-(संज्ञा, स्त्री०) दयादृष्टि, कृपा-दृष्टि।—**निधान**-(संज्ञा, पु०)—करुणामय, करुणायतन, प्रभु, करुणालय।—**लंबित**-(वि०) करुणा के कारण सहायतार्थ फैली हुई। "करुणालंबित बाहु, वरद कर"—पंत।—**स्नात**-(वि०) जिसने करुणा के कारण बहने वाले आंसुओं मे स्नान किया हो।

करुणाकर—(संज्ञा, पु०, सं०) करुणागार, दयालु भगवान, करुनाकर, करुणासागर, करुणासिन्धु। "करुणा करके करुनाकर रोये"—नरो०।—**गार**-(वि०) [करुणा + आगार] करुणाधाम, दयामय। "कहाँ वह करुणा करुणागार"—पंत।—**निधि**—(संज्ञा, पु०) दयासागर, ईश्वर, कृपासिंधु, करुणा-

राशि।—म्बुधि-(वि०) [करुणा+अम्बुधि] करुणा-सागर, दयासिंधु। "तेरे करुणाम्बुधि का है केवल एक भाग यह नीलाकाश"—पंत।

करुना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० करुणा] दया, शोक, कृपा। **मुहा०—करना**—रोना, बिलखना, दुख करना और रोना "जनि अबला इव करुना करहू"—तुल० (रा०)।

करुबेल—(संज्ञा, स्त्री०) इंद्रायन नामक लता।

करुणार्द्र—(वि०, यौ०, सं०) करुणरससिक्त, दया-मय, करुणा से द्रवित।

करुला§—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कड़ा+ऊल्ज प्रत्य०] हाथ का कड़ा।

करुर, करुवा, करु*—(वि०, दे०) [सं० कटु] कड़ुआ, तीता।

करुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) करवा, मिट्टी का बर्तन। [संज्ञा, स्त्री० **करुवाई**]

करुवार—(संज्ञा, पु०) पतवार।

करुष—(संज्ञा, पु०, सं०) गंगा के तट का एक देश (वा० रा०) कलुष।

करेकर—(अव्य०, दे०) एकत्र, बराबर, साथ-साथ।

करेत—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का साँप। करैत, करैता।

करेजा*—(संज्ञा, पु०, दे०) कलेजा, हृदय। [स्त्री० —**करेजी**—कलेजे का मांस]

करेणु—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी, कर्णिकार वृक्ष। [स्त्री० **करेणुका**—हथिनी।]

करेब—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० क्रेप] एक झीना रेशमी कपड़ा।

करेमू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कलंबु] पानी की एक घास जिसका साग बनता है।

करेर, करेरा—(वि०, दे०) [हि० कड़ा] कड़ा, मजबूत, दृढ़। [(स्त्री०) **करेरी**।] "जैतवार जगत करेरी किर-वान की"—ललि०।

करेला—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का कटु फल जो तरकारी के काम में आता है। माला या हुमेल की लम्बी गुरिया। हरें। [(स्त्री०) **करेली** (अल्प०) जङ्गली छोटा करेला। **लो०**—(कड़वा) "**करेला और नीम चढ़ा**"—कुसंग प्राप्त दुष्ट।

करैल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कारा, काला] ताल के किनारे की काली मिट्टी। (संज्ञा, पु०) [सं० करीर] बांस का नरम कल्ला। डोमकौवा।

करोटन—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० क्रोटन] एक प्रकार के जंगली पौधे जिनके पत्ते रंग-बिरंगे और टेढ़े-मेढ़े आकार के होते हैं।

करोड़, करोर—(वि०, दे०) [सं० कोटि] सौ लाख की संख्या।—**पति**—करोड़ रुपये वाला। धनी।

करोड़ी—(संज्ञा, पु०, दे०) रोकड़िया, तहवीलदार (मुस० राज्य) करोरी (दे०)।

करोदना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० क्षुरण] खुरचना। [संज्ञा, स्त्री० **करोदनी—खुरचनी**]

करोद्दंड—(संज्ञा, पु०) [सं० उद्दंड+कर] प्रचंड किरणों वाला। उद्दंडतापूर्ण कार्य करने के लिए तैयार हाथों वाला। "रिपु के समक्ष जो था प्रचण्ड आतप ज्यों तम पर करोद्दंड"—निराला।

करोनी—(क्रि०, स०, दे०) [सं० क्षुरण] खुरचना। (संज्ञा, स्त्री०)—खुर्चन।

करोला*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० करवा] करवा, गड़ुवा।

करौंछा*—(वि०, दे०) [हि० काला+औंछा—प्रत्य०]कुछ काला। खुरचा हुआ।

करौंजी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कलौंजी। मँगरैल।

करौंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करमर्द] एक कँटीला झाड़ जिसके गोल छोटे फल खटाई के काम में आते है। एक जंगली झाड़ी जिसमें छोटे फल होते हैं। कान के पास की गिलटी।

करौंदिया—(वि०, दे०) [हि० करौंदा] करौंदे का सा स्याही लिये लाल रंग।

करौत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करपुत्र] लकड़ी चीरने का आरा। [स्त्री० **करौती**। संज्ञा, स्त्री० (हि० करना) रखेली स्त्री]।

करौता—(संज्ञा, पु०, दे०) करौत, आरा, [हि० करवा] क़राबा, काँच का बड़ा बरतन। [स्त्री० **करौती**]

करौट—(संज्ञा, पु०, दे०) करवट, **करौंट** (दे०)। "इत कित लेति करौंट"—(वि०)।

करौटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) करवट, करवटिया। खोपड़ी।

करौला*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रौला—शोर] शिकारी। "करौलनि आप अचेत उठायौ"—भू०।

करौली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० करवाली] एक प्रकार की छोटी तलवार, छुरी, भुजाली।

कर्क—(संज्ञा, पु०, सं०) केकड़ा, बारह राशियों में से चौथी राशि (ज्यो०)। ककड़ा-सिंगी। अग्नि। दर्पण। घट, शास्त्र के एक भाष्यकार, कात्यायन। (यौ०)—**रेखा**—विषुवत रेखा से उत्तर की ओर ३० अंशों पर खिंची हुई एक कल्पित रेखा, जहाँ तक उत्तरायण होने पर सूर्य पहुँचता है। [कैंसर]। [विलो०—**मकर रेखा**]।

कर्कट—(संज्ञा, पु०, सं०) केकड़ा। कर्क राशि। एक प्रकार का सारस। करकरा। करकटिया। लौकी। घीआ। कमल की मोटी जड़। सँडसा। भसींडा। तुम्बी। एक नाग। वृत्त की त्रिज्या। नृत्य-विशेष। [स्त्री० **कर्कटी, कर्कटा**]। "प्राप्ते तु कर्कटे लग्ने"—(वा०, रा०)।

कर्कटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कछुई। ककड़ी। साँप। सेमल का फल।

कर्कटू—(संज्ञा, पु०, सं०) बदरी या बेर का पेड़। [(यौ०) **कर्कटू-फल**।]

कर्कर—(संज्ञा, पु०, सं०) कंकड़। कुरंज या सान का पत्थर। (वि०, दे०) कड़ा, करारा, खुरखुरा।

कर्कश—(संज्ञा, पु०, सं०) कमीले का पेड़। ऊख। खड्ग। (वि०) कठोर, कड़ा, खुरखुरा। तेज, तीव्र। प्रचंड, क्रूर। [(संज्ञा, भा०, स्त्री०)—**कर्कशता**—कठोरता, क्रूरता। वि०, स्त्री० **कर्कशा**—झगड़ालू, लड़ाकी स्त्री]।

कर्कोट—(संज्ञा, पु०, सं०) बेल वृक्ष। खेखसा, ककोड़ा।

कचूर, कच्चूर—(दे०)—(संज्ञा ,पु०, सं०) सुवर्ण। कचूर, कपूर।

कछनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खरोंचनी, एक पात्र, करछुल, करछुली दे०।

कर्छा·कर्छुल—(संज्ञा, पु०, दे०) कलछी, करछुला। [स्त्री० **कर्छुली**]

कर्छोल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुलाँच, कचौड़ी।

कर्ज, कर्जा—(संज्ञा, पु०, अ०) ऋण, उधार, करजा (दे०) [डेट]। —**दार**—ऋणी, कर्जी। **मुहा०** —**उतारना**—कर्ज चुकाना। —**खाना**—कर्ज लेना। उपकृत या वश में होना। [(वि०, दे०) **कर्जी, करजी** दे०]

कर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) कान, श्रवणेंद्रिय। कुन्ती-पुत्र, जो पांडवों का बड़ा भाई और सूर्य का औरस पुत्र था; यह बड़ा दानी, परशुराम-शिष्य और धनुर्धारी वीर था। अर्जुन ने महाभारत में इसे मारा था। नाव का पतवार। समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा। समानान्तर चतुर्भुज के संमुख कोणों को मिलाने वाली रेखा। (ज्या०) चारमात्रा वाले गण (डगण—पिं०)। **मुहा०**—**का प्रहर**—प्रभात काल, दान-समय। —**कटु**—(वि०) कान को सुनने में अप्रिय। [विलो०) कर्ण-प्रिय]। —**कंडू**—(पु०) कान की खुजली। —**कुहर**—(पु०) कान का छेद। —**गोचर**—(पु०) कान में पड़ना, सुनना। —**धार**—(पु०) माँझी, मल्लाह, नाविक, पतवार। —**नाद**—(पु०) कान का शब्द, कर्ण-रव। —**पिशाची**—(स्त्री०) एक तांत्रिक सिद्धि या देवी जिसके सिद्ध होने पर कहा जाता है, मनुष्य सब के मन की बात जान जाता है। —**फूल**—(पु०) करनफूल, कर्ण-शिरीष। —**मल**—(पु०) कान का मैल, खूट। —**मूल**—(पु०) कनपेड़ा रोग, कान की जड़ में सूजन। —**बध, —बेधन**—(पु०) कान छेदने का संस्कार, कनछेदन (दे०)। —**शोफ**—(पु०) कान के नीचे सूजने का रोग, श्रुति-शोफ। —**वेष्टन**—(पु०) कुंडल, कर्णाभरण, कान का भूषण, कर्णभूषण। —**(र्णा) कर्णी**—(स्त्री०) काना-कानी, ख्याति।

कर्णक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार की लता, पेड़ के पत्ते, टहनियां।

कर्णादु—(संज्ञा, पु०, सं०) करणफूल।

कर्णाट—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण का एक देश। एक राग।

कर्णाटक—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्णाट-कर्णटक, कर-नाटक (दे०)। [वि० **कर्णाटकी**]।

कर्णाटा—(संज्ञा, स्त्री०, स०) एक रागिनी। कर्नाटक की स्त्री। वहाँ की भाषा। शब्दालंकार में एक वृत्ति, जिसमें केवल कवर्ग के ही वर्ण आते हैं, एक रचना-रीति (नाट०)।

कर्णाधार—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्णधार, माँझी, पतवार सँभालने वाला। "न लाये कोई कर्णाधार"—महा०।

कर्णिक—(वि०, सं०) कानवाला। जो हाथों में पतवार रखता हो। (पु०) माँझी, कर्णधार, नाविक।

कर्णिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) करनफूल। कर्णाभरण, कर्णालंकार। हथेली के बीच की उँगली। सूँड की नोक। कमल का छत्ता। सेवती। डंठल। सफेद गुलाब। कलम, लेखनी।

कर्णिकाचल—(संज्ञा, पु०, सं०) सुमेरु पर्वत, कर्णिकाद्रि।

कर्णिकार—(संज्ञा, पु०, सं०) कनियारी या कनक चंपा का पेड़ ।

कर्णी—(संज्ञा, पु०, सं०) वाण ।

कर्णीरथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) क्रीड़ार्थ छोटा रथ । परदेदार (स्त्रियों का) रथ, एक्का ।

कर्णीजप—(संज्ञा, पु०, सं०) चुगुलखोर । दुर्जन । ठग ।

कर्णीसुत—(संज्ञा, पु०, सं०) कंसराज ।

कर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) काटना, कतरना, कातना (सूत) । [वि० **कर्तनीय, कर्तक**]

कर्तनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कैंची, कतन्नी, कतरनी (दे०) ।

कर्तब, करतब—(संज्ञा, पु०, दे०) कर्तव्य, काम, उपाय, चालाकी ।—"कर्तब करिये दौर"—वृंद ।

कर्तरिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कैंची, कतरनी, कातीं (सुनारों की) । कटारी । ताल देने का एक बाजा ।

कर्तरी—देखिए 'कर्तरिका' ।

कर्तव्य—(वि०, सं०) करणीय, करने के योग्य । [ड्यूटी] । (संज्ञा, पु०) धर्म, फ़र्ज़ । [(यौ०)—**कर्तव्याकर्तव्य**—करने और न करने-योग्य कर्म, उचितानुचित कार्य । **किंकर्तव्य विमूढ़**—जिसे क्या करणीय है, यह न ज्ञात हो ।]

कर्तव्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कर्तव्य का भाव, कर्म-कांड की दक्षिणा ।—**इति**—उद्योग या यत्न की चरम सीमा, प्रयत्न की पराकाष्ठा, दौड़ की हद । [लो० **कर्तव्य-मूढ़, कर्तव्य-विमूढ़**—भौचक्का, जिसे जान न पड़े कि क्या करना चाहिये ।]

कर्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) काम करने वाला, रचने या बनाने वाला । ईश्वर, अधिपति, छः कारकों में से प्रथम, जिससे क्रिया के करने वाले का बोध हो (व्या०) । करता दे० ।

कर्तार—(संज्ञा, पु०) [सं० कर्तृ की प्रथमा का बहु०] करने वाला, ईश्वर, करतार (दे०) [संज्ञा, स्त्री० **कर्तारी**] ।

कर्तित—(वि०, सं०) कतरा या काटा हुआ, काता हुआ ।

कर्तृक—(वि०, सं०) किसी के द्वारा किया हुआ, संपादित । काम करने वाला या काम करने वालों का समूह । [स्टाफ]

कर्तृ-कर्मभाव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कर्ता-कर्म सम्बन्ध ।

कर्तृत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्ता का भाव और धर्म, स्वामित्व ।

कर्तृ-निरीक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) वह जो कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों का निरीक्षण करता हो । [स्टाफ इंस्पेक्टर]

कर्तृप्रधान—(वि०, यौ०, हि०) जिस वाक्य मे कर्ता की प्रधानता हो (व्या०), जिसमें कर्ता क्रियानुसार हो । [विलो० **कर्म-प्रधान**] ।

कर्तृवाचक, कर्तृवाची—(वि०, यौ०, सं०) कर्ता का बोध कराने वाली क्रिया (व्या०) ।

कर्तृ-वाच्य (क्रिया)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह क्रिया जिससे प्रधानतया कर्ता का बोध हो । [ऐक्टिव वायस] (व्या०) ।

कर्द—(संज्ञा, पु०, सं०) कीचड़ ।

कर्दम—(संज्ञा, पु०, सं०) कीचड़, कीच, कांदौ (दे०), चहला (दे०) पंक । पाप । छाया । मांस । स्वायंभुव मन्वन्तर के एक प्रजापति । "चंदन-कर्दम-कलह, मध्यस्थो मडूको यातः ।" [यौ० **दधि-कर्दम**]

कर्धनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कटिबंध, चाँदी या सोने का एक कमर का भूषण ।

कर्नैता—(संज्ञा, पु०, दे०) रंग के अनुसार घोड़े का भेद ।

कर्पट—(संज्ञा, पु०, सं०) कपड़ा-लत्ता, गूदड़ ।

कर्पटी—(संज्ञा, पु०, सं०) चिथड़े-गुदड़े पहिनने वाला, भिखारी ।

कर्पर—(संज्ञा, पु०, सं०) कपाल, खप्पर, कछुए की खोपड़ी । [संज्ञा, स्त्री०, सं० **कर्परी**]

कर्पास—(संज्ञा, पु०, सं०) कपास, रुई । [(संज्ञा, पु०, सं०) **कर्पासी**—सूत, सूती कपड़ा]

कर्पूर, कर्पूर—(संज्ञा, पु०, सं०) कपूर । चन्द्रमा, काफ़ूर (फ़ा०) ।

कर्बुदार—(संज्ञा, पु०, सं०) श्वेत कचनार, लसोढ़ा ।

कर्बुर—(संज्ञा, पु०, सं०) सोना । धतूरा । जल । पाप, राक्षस, जड़हन धान, कचूर । (वि०) **रंग-बिरंगा**, कबरा ।

कर्बुरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बनतुलसी । (वि०) धूमला ।

कर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) वह जो किया जाय, क्रिया, कार्य, काम, करनी (दे०), करम (दे०) भाग्य । छः पदार्थों में से एक (वैशेषिक) यज्ञ, यागादि (मीमांसा) । वह शब्द जिसके वाच्य पर क्रिया का फल या प्रभाव पड़े (व्या०) । कर्तव्य । मृतक-संस्कार । [यौ०—**क्रिया**

—मृतक-संस्कार]—**स्थान**—जन्म-चक्र में दसवाँ खाना (ज्यो०) ।—**कांड**—धार्मिक कार्य-विधान । (पु०) जप-यज्ञ-होमादि धार्मिक कृत्य, यज्ञादि के विधानों का शास्त्र ।—**कर,—कार**-(पु०) एक वर्ण-संकर जाति । लोहे पर सोने का काम करने वाला । बैल । नौकर । बेगार । मजदूर । कर्मार ।—**कांडी**-(यौ०) यज्ञादि धर्म-कर्म या कृत्य कराने वाला ।—**कारक**-(पु०) दूसरा कारक । (वि०) कर्म करने वाला ।—**क्षेत्र**-(पु०) कार्य करने का स्थान, कर्म भूमि, भारतवर्ष, कर्मभू ।—**चारी**-(पु०) [सं० कर्मचारिन्] कार्य-कर्ता, जिसके आधीन राज्य का कोई प्रबंध-कार्य हो, अमला । [मिनिस्टीरियल सर्वेंट] ।—**ज**-(पु०) कर्म से उत्पन्न फल ।—**त्रस्त**-(वि०) कार्यभार से पीड़ित । कार्य की अधिकता से अत्यन्त व्यस्त ।—"कर्म-त्रस्त होने पर मांगा तब उसने अवकाश"-'गिरीश' ।—**धारय (समास)**-(पु०) विशेष्य-विशेषण का समान अधिकरण सूचक एक समास भेद (व्या०) ।—**नाशा**-(स्त्री०) एक नदी जो चौसा के पास गंगा से मिली है, जिसमें स्नान से कर्म का नाश होता है ।—**निष्ठ**-(वि०) संध्या अग्निहोत्रादि करने वाला, क्रियावान ।—**निपुणता, निपुनाई**-(स्त्री०) कर्मनैपुण्य, कार्य-कुशलता, कार्य-पटुता । [वि० **कर्मनिपुण**] ।—**पथ**-(पु०) वेद की रीति । कर्म-मार्ग ।—**प्रधान**-(पु०) जहाँ कर्म की प्रधानता हो । कर्म-वाच्य क्रिया (व्या०) । [ऑब्जेक्टिव] । [विलो०—**कर्तृ प्रधान**] —**फल**-(पु०) कर्म का विपाक, करनी का फल, कर्म-परिणति ।—**भोग**-(पु०) कर्म-फल, सुख दुखादि करनी के फल । पूर्व जन्मकृत कर्मों का परिणाम । (वि०) कर्म-भागी ।—**मास**-(पु०) सावनमास ।—**युग**-(पु०) कलियुग, शेषयुग । [वि० **कर्म-युगीय**] ।—**योग**-(पु०) सिद्धि और असिद्धि में समान भाव रख कर कर्तव्य-कर्म का साधन । शुद्ध चित्त से शास्त्र-विहित कर्म करना । [वि० **कर्मयोगी**] ।—**रंग**-(पु०) कमरख, एक फल विशेष ।—**रेख**-(स्त्री०) कर्म की रेखा, भाग्य-रेखा (सामु०) भाग्य-विधान, तक़दीर, करम-रेख (दे०) । "कर्म रेख नहिं मिटति-मिटाये ।"—**लेख**—(पु०) भाग्य, होन-हार । कर्म-लेखा (दे०) ।—**वाच्य,—वाचक (क्रिया)**-(स्त्री०) वह क्रिया जिसमें कर्म प्रधान (मुख्य) होकर कर्ता के रूप में आया हो, कर्म की प्रधानता-सूचक क्रिया (व्या०) ।—**वाद**-(पु०) कर्म को ही सर्व प्रधान मानने वाला सिद्धान्त, मीमांसा । कर्मयोग ।—**वादी**—(पु०) [सं० कर्म-वादिन्] कर्म को प्रधान मानने वाला मीमांसक, कर्मकांडी, कर्मयोगी ।—**विपाक**-(पु०) पूर्व जन्म-कृत शुभाशुभ कर्मों का भला-बुरा फल । कर्म-फल ज्योतिष का एक ग्रंथ ।—**शील**-(पु०) फल की अभिलाषा छोड़ कर स्वभावतः ही काम या कर्तव्य करने वाला, कर्मवान । यत्नवान । उद्योगी, परिश्रमी । अध्यवसायी । [संज्ञा, स्त्री० **कर्म-शीलता**] ।—**शूर**-(पु०) साहस और दृढ़ता से कर्म करने वाला, उद्योगी, कार्यकुशल । —**वीर** । [स्त्री०,—**शूरता,—शौर्य**] ।—**सचिव**-(पु०) कर्म कर्तव्य की मंत्रणा देने वाला, कर्म-मंत्री । —**संन्यास**-(पु०) कर्म का त्याग, कर्म फल त्याग । —**संन्यासी**—(वि०) निष्काम कर्म करने वाला । —**समाधि**-(स्त्री०) कर्मों का नितान्त त्याग या विरक्ति ।—**साक्षी**-(वि०) कर्म का देखने वाला, जिसके सामने कोई काम हुआ हो । (संज्ञा, पु०) प्राणियों के कर्मों को देखने वाले देवता जो कर्मों की साक्षी देते हैं—सूर्य, चंद्र, अग्नि, यम, काल, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, आत्मा (स्मृ० पुरा०) । —**साधन**-(पु०) कर्म के उपाय, उद्योग, कार्य-संपादन । [वि० **कर्म-साधक**] ।—**सिद्धि**-(स्त्री०) कर्म-सफलता ।—**हीन**-(वि०) जिससे शुभ कर्म न बन पड़े, अभागा । (संज्ञा, स्त्री०) कर्महीनता । "कर्म-हीन नर पावत नाहीं ।"—[रामा०] ।

कर्मठ—(वि०, सं०) कार्य कुशल, धर्म-कृत्य करने वाला, कर्मनिष्ठ । (संज्ञा, पु०, सं०) धार्मिक कृत्य ।

कर्मणा—(क्रि०, सं०) [सं० कर्मन् का तृतीया में रूप] कर्म से, कर्म द्वारा । जैसे—मनसा-वाचा-कर्मणा । कर्मना (दे०) ।

कर्मण्य—(वि०, सं०) खूब काम करने वाला, उद्योगी । (संज्ञा, स्त्री०, स०) **कर्मण्यता**—कार्य-कुशलता, कार्य-तत्परता ।

कर्म-मूल—(पु०) कर्म का कारण ।

कर्मवान्—(वि०, सं०) कर्मनिष्ठ, कर्मवीर ।—

कर्मिष्ठ—(वि०, सं०) कार्य-कुशल, कर्मनिष्ठ ।

कर्मी—(वि०) [सं० कर्मिन्] कर्म करने वाला । फल की इच्छा से यज्ञादि कर्म करने वाला, कर्मनिष्ठ, भाग्यवान् , शुभ कर्मासक्त ।—**धर्मी**—धर्म-कर्म करने वाला ।

कर्मेंद्रिय—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) क्रियायें करने वाले अंग, ये पाँच हैं—हाथ, पैर, वाणी, गुदा, उपस्थ।

कर्रा—(वि०, हि०) कड़ा, कठिन, सख्त। (संज्ञा, पु०) जुलाहे का एक यंत्र, कर्धा। [स्त्री० **कर्री**]

कर्राना*—(क्रि०, अ०) [हि० कर्रा] कड़ा होना, सख्त होना। हठ ठानना।

कर्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा। बाघिन। दानवी। रात्रि। "छाँह छाँह में सोहती कर्वरी चाँदनी"—मधुपुरी।

कर्षित—(वि०, सं०) दुबला-पतला, क्षीण।

कर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) १६ माशे का एक मान। एक पुराना सिक्का। खिंचाव। जोताई। (लकीरादि) खींचना, जोश। विरोध। करष (दे०)। [स्ट्रेन] "बातहि बात कर्ष बढ़ि गयऊ"—[रामा०]।

कर्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) जोतने वाला व्यक्ति, किसान। (वि०) जोतने वाला, खींचने वाला। अपनी ओर खींच ले जाने वाला। "सच्चा राज्य हमारे कर्षक ही करते हैं"—मै०।

कर्षण—(संज्ञा, पु०) [सं० कृष् + अनट्] खींचना। खरोंच कर लकीर डालना। जोतना। कृषि-कर्म। [वि० **कर्षणीय, कर्षित, कर्ष्य**]

कर्षणि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्यभिचारिणी स्त्री, दुराचारिणी स्त्री।

कर्षणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खिरनी का वृक्ष।

कर्षना*—(क्रि०, स०, दे०) खींचना।

कर्षफला—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कर्ष + फल + आ] आमलकी वृक्ष। बहेड़ा।

कर्षा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कर्षण (सं०) उत्साह। क्रोध। जोश। आवेश।

कर्षिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घोड़े की लगाम।

कर्हिचित्—(अव्य०, सं०) किसी समय, कदाचित्।

कलंक—(संज्ञा, पु०, सं०) दाग, धब्बा, चंद्रमा का काला दाग। काजल। लांछन, ऐब, दोष। बदनामी। [(वि०) **कलंकित**—लांछित, दोषयुक्त, दागी]।

कलंकी—(वि०) [सं० कलंकिन्] दोषी, अपराधी, लांछित, बदनाम। [(स्त्री०) **कलंकिनी-कलंकिनि**]। (संज्ञा, पु०) [सं० कल्कि] कलियुग का कल्कि अवतार।—···"रंकिनि कलंकिनि कुनारी हौं"—मीरा०।

कलंकुट—(संज्ञा, पु०, सं०) भँवर, आवर्त।

कलँगा—(संज्ञा, पु०, दे०) शिरोभूषण। [स्त्री० **कलँगी, कलगी** दे०]

कलंज—(संज्ञा, पु०) [सं० कलं + जन् + ड्] तमाखू का पौधा। हिरन। एक पक्षी। पक्षी-मास। १० पल की तौल।

कलंदर—(संज्ञा, पु०, अ०) जग-विरक्त मुसलमान साधु। मदारी। रीछ और बंदर नचाने वाला। "अहो कलंदर लोभ"—दीन०। [संज्ञा, स्त्री० **कलंदरी**]

कलंदरा—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। तंबू का अँकुड़ा। गुदड़।

कलंदिका—(संज्ञा, स्त्री०) बुद्धि, समझने की शक्ति, समझ।

कलंब—(संज्ञा, पु०, सं०) शर, शाक का डंठल, कदंब।

कलंबिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गले के पीछे की नाड़ी, मन्या।

कल—(संज्ञा, पु०, सं०) अव्यक्त मधुर ध्वनि, वीर्य। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० कल्य] आरोग्य, आराम। सुख, चैन; [विलो०—बेकल]। (वि०) प्रिय, सुन्दर, मधुर।—**कंठ**—(संज्ञा, पु०, यौ०) कोकिल, पारावत, हंस, परेवा। (वि०) मधुर, मृदु ध्वनि करने वाला, सुन्दर कंठ वाला। [(स्त्री०) **कलकंठी**]।—**कल**—(संज्ञा, पु०, दे०) झरने आदि से जल गिरने या बहने का शब्द, कोलाहल। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) झगड़ा, वाद-विवाद, खुजली, राल।—**कूजक**—(वि०, पु०, सं०) मधुर ध्वनि करने वाला। [(स्त्री०) **कलकूजिका**। (वि०) **कलकूजित**। (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) **कलकूजन**।] **मुहा०—से**—चैन से, धीरे धीरे। (संज्ञा, पु०) संतोष। (क्रि०, वि०) [सं० कल्य] आगामी या आने वाला (भविष्य, दूसरा दिन काल, काल्ह, गया या बीता हुआ दिन (भूत)। —**का**—थोड़े दिनों का। [लो०—**कभी नहीं आता,**] (संज्ञा, स्त्री०) [सं० कला] ओर, बल, पहलू, अंग, पुरजा, युक्ति, ढंग, पेंचों और पुरजों से बना यंत्र। (वि०)—**दार**—कल या यंत्र से बना हुआ, पेंचदार। (संज्ञा, पु०) रुपया, पेंच, पुरजा।—**ऐंठना (घुमाना)**—किसी के चित्त को किसी ओर फेरना। बंदूक का घोड़ा या चाप। (वि०, हि०) काला का संक्षिप्त रूप (यौगिक में) जैसे—**मुँहा**।

कलई—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) राँगा, राँगे का पतला लेप, जो बरतनों पर चढ़ाया जाता है, मुलम्मा, रंग

चढ़ाने और चमकाने के लिए वस्तुओं पर चढ़ाया जाने वाला लेप। (मसाला) बाहिरी चमक-दमक, तड़क-भड़क, चूना, भेद। —**दार**—(वि०,फा०) कलई या राँगे का लेप चढ़ा हुआ। **मुहा०—करना (चढ़ाना)** असली बात छिपाना और उसे दूसरे चमत्कृत या झूठे रूप में रखना। ताँबे, पीतल के बर्तन पर राँगे का पानी चढ़ाना। दिखावटी काम करना। नकली काम करना। [टिन]—**खुलना**—असली भेद या रूप में प्रकट होना।—**खोलना**—वास्तविक रूप या बात का प्रकट कर देना।—**न लगना (चढ़ना)**—झूठी युक्ति न चलना। चूने का लेप, सफेदी।

कलक—(संज्ञा, पु०) [अ० कलक] बेचैनी, रंज, घबराहट, खेद, पश्चात्ताप, दुख, कलक (दे०) "झलक न पाई यही कलक हमारे है"—रसा०।

कलकन*—(क्रि०, अ०, दे०) कलक होना। चिल्लाना शोर करना। खटकना। चीत्कार करना। पछतावा होना। 'झलकत झूठ हिये कलकत सोई है'—सरस०। [**कलकना**—(अ०, क्रि०) चिघाड़ना, जोरों से चिल्लाना, चीत्कार करना।

कलकान, कलकानि§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० कलक] दिक्कत, हैरानी, कलह, चिंता, परेशानी।] ।..."नितके कलकान से छूटिबो है"—हरिऔध। (संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) सुन्दर मर्यादा।

कलगा—(संज्ञा, पु०, दे०) (तु० कलगी) मरसे की जाति का एक पौधा। जटाधारी। मुगकेश।

कलगी—(संज्ञा, पु०, तु०) शुतुरमुर्ग, मोर आदि चिड़ियों के पगड़ी, ताज आदि पर लगाये जाने वाले पर। मोती, सोने, चाँदी आदि से बना शिरोभूषण। पक्षियों के सिर की चोटी। इमारत का शिखर। कलँगी (दे०) लावनी का एक ढंग (संगी)।

कलघृत—(संज्ञा, पु०, सं०)। चाँदी।

कलचुरि—(संज्ञा, दे०, सं०) दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश।

कलछा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर+रक्षा] बड़ी डांड़ी का चम्मच, करछुल। [(संज्ञा, स्त्री०) **कलछी** (अल्प०) चम्मच, दालादि चलाने या डालने की चमची, करछुली।]

कलजहँवा—(वि०, दे०,) कलूटा, कलछाँह।

कलजिन—(वि०, सं०) द्वेषी, हिंसक, पापी।

कलजिब्भा—(वि०, यौ०) [हि० काला+जीभ] काली जीभ वाला। जिसकी अशुभ बातें प्रायः ठीक उतरें, कलजीहा (दे०)।

कलझाँवा—(वि०, दे०) [हि० काला+झाँई] काले रंग का, साँवला।

कलत्र—(संज्ञा, पु०) [सं० कल+त्र] स्त्री, भार्या। नितम्ब। किला।—**लाभ**—पत्नी लाभ, विवाह पुत्रा।

कलथरा—संज्ञा, पु०) जुलाहों का एक लकड़ी का औजार, चक।

कलधौत—(संज्ञा, पु०, सं०) सोना। चाँदी। कलध्वनि, सुमधुर शब्द। "कोटि करौं कलधौत के धाम"—रस०। (वि०, यौ०)—सुन्दर धुला हुआ।

कलन—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्पन्न करना, बनाना, धारण करना। आचरण। लगाव, सम्बन्ध, गणित की क्रिया—संकलन-व्यवकलन [कैलकुलेशन] (ग०), ग्रास, कौर। शुक्र-शोणित का गर्भ की प्रथम रात्रि का विकार जिससे कलल बनता है (वैद्य०)। [(क्रि०, स०) **कलना**—रचना]। (संज्ञा, स्त्री०) मूल उत्पत्ति।

कलप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कल्प] कलफ़, ख़िज़ाब, कल्पना, दुख, कल्प। **मुहा०—करना**—काट देना। "......करै जो सीस कलप्प"—कबी०

कलपना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कल्पना] बिलखना, विलाप करना। कुढ़ना, कल्पना करना। (क्रि०, स०, स०) काटना, छाँटना। (संज्ञा स्त्री०, दे०) कल्पना। विलाप। रचना। अध्यारोप। अनुमान। कलना। उत्पत्ति।

कलपाना—(क्रि०, स०) [हि० कल्पना] दुखी करना, दुखाना। तड़पाना। तलफाना, कुढ़ाना। तरसाना। "कल देवेगा कल पावेगा, कलपावेगा कलपावेगा" (यौ०) (कल+पाना) आराम पाना।

कलफ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कल्प] चावलों की पतली लेई, जिसे कपड़ों पर उनको तह कड़ी करने और बराबर करने के लिए धोबी लगाते हैं, माँड़ी। चेहरे के दाग, झाँई।

कलब—(संज्ञा, पु०) टेसू के फूल से निर्मित एक प्रकार का रंग।

कलबल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कला+बल] उपाय, दाँव-पेंच, छल, युक्ति। (संज्ञा, पु०, अनु०) शोर-गुल। (वि०) अस्पष्ट स्वर। (यौ०) कल या मशीन का बल।

कलबूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० कालबुद] ढाँचा, साँचा, लकड़ी का ढाँचा जिस पर चढ़ा कर जूता सिया जाता है। फरमा। टोपी या पगड़ी का

गुंबदनुमा ढाँचा। गोलंबर, कालिबा। "पूरे कलबूत से रहेंगे सब ठाढ़े तत्र"—दीन०। (यौ०) मशीन के बल।

कलभ—(संज्ञा, पु०, सं०। करभ, हाथी या ऊंट का बच्चा। "काम-कलभकर भुज-बल सींवाँ" —रामा०।

कलम—(संज्ञा, दे०, अ०, सं०) लेखनी (लिखने की)। किसी पेड़-पौधे की टहनी जो कहीं अन्यत्र बैठान या दूसरे पेड़ मे पेबंद लगाने के लिए काटी जाय। (संज्ञा, पु०) जड़हन धान। कनपटियों के पास के बाल (कान के ऊपर के)। चित्रकारों की रंग भरने वाली बालों की कूँची। झाड़ में लटकाया जाने वाला शीशे का लम्बा टुकड़ा। शोरे-नौसादर का छोटा जमाया लंबा टुकड़ा। काटने-खोदन या नक्काशी करन का महीन औज़ार। **—कसाई**—(संज्ञा, पु०) लिख-पढ़ कर हानि करने वाला। **—कार**—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चित्रकार, नक्काशी या दस्तकारी करने वाला। [(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) **कलमकारी**—चित्रकारी, रंगसाजी, नक्काशी, दस्तकारी।]**—घसीट**—(वि०, दे०) [कलम+घसीट] कलम घसीटने वाला, लिखने वाला।**—छोड़हड़-ताल**—(स्त्री०, दे०) किसी कार्यालय के लिखा-पढ़ी करनेवाले कर्मचारी की हड़ताल जो अपने यथास्थान पर बैठकर भी कार्यालय का कार्य स्थगित किया करते है। [पेन डाउन स्ट्राइक]।**—तराश** (संज्ञा पु०, फ़ा०) क़लम बनाने का चाकू।**—दान**—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कलम दावात आदि रखने का डिब्बा [इंकपाट]**—करना**—काटना, छाँटना। "कलम रुकै तौ कर कलम कराइए।**—चलाना** (**चलना**)—लिखना, लिखाई करना।**—तोड़ना**—लिखने की हद कर देना, अनूठी उक्ति कहना। **—लगाना**—किसी पेड़ की डाल काट कर लगाना।

कलमकल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) घबड़ाहट, दुःख, कसमकस, बेकली। (यौ०) कलम रूपी यंत्र।

कलमनाॐ—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० कलम] काटना, छाँटना, कलम करना।

कलमलना—ॐ(क्रि०, अ०, अनु०) कुलबुलाना, दबाव से अंगों का हिलना। [प्रे० रू० (क्रि० स०) **कलमलाना**—कुलबुलाना। "अहि, कोल, कूरम कलमले" —रामा० (संज्ञा, स्त्री०) **कलमलाहट**]

कलमा—(संज्ञा, पु०, अ०) वाक्य, मुसलमान-धर्म का धार्मिक मूल मंत्र, 'ला इलाह इल्लिल्लाह, मुहम्मद रसूलिल्लाह' (कुरान)। मुह०**—पढ़ना(पढ़ाना)**—मुसलमान होना (करना)। [(यौ०) **कलमा कुरान**।।]

कलमी—(वि०,फ़ा०) लिखा हुआ, लिखित। जो कलम लगाने से पैदा हो (कलमी आम), क़लम या रवावाला (कलमी शोरा)।

कलमुँहा—(वि०, यौ०, दे०) काले मुख वाला। दोषी, कलंकित, अभागा (गाली)।

कलरव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मृदु-मधुर स्वर, जन-समूह का अस्पष्ट शब्द, कूजन, गुंजन। कोकिल। कपोत। "कलरव करते हैं, मोद में यों विहंग"।

कलरवित—(वि०, सं) कलरव से युक्त, मधुरता के साथ नादित। "राजभवन हो गया कलरवित"—हरिऔध।

कलल—(संज्ञा, पु० सं०) गर्भाशय में रज और वीर्य के ंयोग की वह अवस्था जिसमें एक बुलबुला सा बन जता है।

कलवरिया—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कलवार+इया +प्रत्य०] कलवार। कलवार की जति। शराब की दुकान।

कलवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कल्यपाल] शराब बनाने वा बेंचने वाली एक जाति, कलार, शुण्डी, कलाल।

कलविंक—(संज्ञा, पु०, सं०) चटक, गौरैया पक्षी। तरबूज। सफेद चँवर।

कलश, कलस, कलसा—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) घट, घड़ा, गगरा। मंदिर-चैत्यादि का शिखर, मन्दिरों-मकानों आदि के ऊपर के कंगूरे। [(संज्ञा, स्त्री०) (अल्प०) **कलशी (कलसी, कलसिया)**—गगरी, गागरि, गगरिया, घइलिया, घैला (दे०)]।

कलसा—(संज्ञा, पु०) घड़ा, कंगूरा।

कलहंतरिता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कलह+अंतरित+ आ] वह नायिका जो अपने नायक या पति का अपमान करके पछताती है (काव्य)।

कलहंस—(संज्ञा, पु०, सं०) हंस, राजहंस। श्रेष्ठ राजा। परमात्मा। ब्रह्मा। एक वर्णवृत्त। क्षत्रियों की एक शाखा। "अयिरलकले कुरुमा कलहं, कल-हंस कलत्र सलील गते"—लो०।

कलह—(संज्ञा, पु०, सं०) विवाद। म्यान। रास्ता। झगड़ा। [(वि०) **कलही**।] (यौ०)**—प्रिय**—(संज्ञा, पु०, दे०) नारद। (वि०) लड़ाका, झगड़ालू, लड़ाई-पसन्द। "कुटिल, कलह-प्रिय इच्छाचारी"—रामा० [स्त्री० **कलहप्रिया**]**—कारी**—(वि०, सं०) झगड़ा करने वाला। [(स्त्री०) **कलहकारिणी**।]**—मूल**

—(वि०, सं०) कलह की जड़ । झगड़े को उत्पन्न कारने वाली । "कलहमूल यह भूमि लगावे चौदह चक्कर—मै० ।

कलहांतरिता— देखिए 'कलहंतरिता ।

कलहारा*—(वि०, दे०) [सं० कलहकार] लड़ाका, झगड़ालू । [(स्त्री०) **कलहारी**—कलहारिनी, कर्कशा ।]

कलही—(वि०, दे०,) लड़ाका । [(स्त्री०) **कलहिनी** ।]

कलाँ—(वि०, फ़ा०) बड़ा, दीर्घाकार ।

कलाँच—(संज्ञा, पु०, ब्र०) चतुर, कला-कुशल । अंशभूत, खंड ।

कला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अंश, भाग, चन्द्रमा का १६वाँ भाग, [फेज] । सूर्य का १२वाँ भाग । अग्नि-मंडल के दस भागों में से एक । एक समय-विभाग जो ३० काष्ठा का होता है । राशि के ३० वें अंश का ६०वां भाग । वृत्त का १८००वाँ भाग । राशिचक्र के एक अंश का ६०वाँ भाग । (ज्यो०) । मात्रा (पिङ्ग०) । शरीर की ७ विशेष झिल्लियाँ (आयु०) । किसी कार्य के करने में कौशल, फ़न हुनर । काम-शास्त्र की ६४ कलाएँ, मानवदेह के आध्यात्मिक १६ विभाग, ५ ज्ञानेन्द्रियाँ, ५ कर्मेन्द्रियाँ, ५ प्राण, १ मन । बुद्धि । सूद, जिह्वा । स्त्री का रज । विभूति । शोभा । तेज, छटा, प्रभा । कौतुक, खेल, लीला, । छल, धोखा । ढङ्ग, युक्ति । नटों की एक कसरत जिसमें खिलाड़ी सिर नीचेकर उलटता है । करतब, ढेकली, यंत्र, पेंच । एक वर्णवृत्त (पिं०) । ६४ कलाएँ —**१—गान** (स्वरग, पदग, लयग, अवधानग) । २—**वाद्य**, ३—**नृत्य** (नाट्य या अभिनय, अनाट्य या नृत्त) । ४—**आलेख्य**—(चित्रकला) इसके ६ अंग हैं—रूप प्रमाण भाव, सौंदर्य, सादृश्य, चित्रण-वैचित्र्य और रङ्ग- संनिवेश । ५—**विशेषकच्छेद्य**—तिलक के साँचे बनाना । ६—**तंडुल-कुसुमावलि-विकार**—पुष्प चावलों से विविध प्रकार के साँचे भूषणादि बनाना । ७—**पुष्पास्तरण**—पुष्प-शय्यादिरचना । ८—**दशन-वसनाङ्गराग**—सँवारना । ९—**मणि-भूमिका-कर्म**—फर्श सजाना । १०—**शयनरचना**—पाचक शय्या बनाना । ११—**उदकवाद्य**—जल-तरङ्ग बजाना । १२—**उदक-घात**—पानी से चोट पहुंचाना । १३—**चित्रयोग**—रूप बदलना । १४—**माल्य-ग्रन्थ विकल्प**—विविध प्रकार के हार बनाना । १५—**शेखरकपीड़ योजन**—पुष्पकृत शिर-शृंगार । १६—**नेपथ्य-प्रयोग**—देश-कालानुसार वस्त्रादि धारण । १७—**कर्णपत्रभंग**—हाथी दाँत और शंख से गहने आदि बनाना । १८—**गन्ध-युक्त**—सुगंधियों का बनाना । १९—**अलङ्कार-योग**—(संयोग्य-असंयोग्य) आभूषण बनाना । २०—**ऐन्द्रजाल**—बाजीगरी । २१—**कौचुमार योग**—सुन्दरता की कला । २२—**हस्तलाघव** । २३—**पाक विद्या (कला)**—चित्र-शाक पूप भक्ष्य-विकार-क्रिया भक्ष्य-क्रिया, भोजन-कला । २४—**पानस रसासव योग**—आसवादि बनाना । २५—**सूची वानकला**—सुईकारी, सिलाई । २६—**सूत्र (सूची) क्रीड़ा**—एक सूत से अनेक वस्तुयें बनाना । २७—**वीणाडमरूवाद्य** । २८—**प्रहेलिका** । २९—**प्रतिमाल**—(अंताक्षरी विवाद) ३०—(**दुर्वाचक**) **कुर्वाचक या कूट योग**—दृष्टकूट रचना या उलझाना । ३१—**वाचन**—राग से पठन । ३२—**नाटकाख्यायिका दर्शन** । ३३—**समस्या पूर्ति**—(काव्य कला) त्रिपद, मूक आदि समस्यायें बनाना । ३४—**पट्टिकावेत्रवाणि विकल्पा, पट्टिकावान विकल्प**—पलंग-कुरसी आदि बिनना । ३५—(**तर्क**) **तक्ष कर्म**—तक्षण या बढ़ई की कला । ३६—**वास्तु या निर्माण कला**—राजगीरी । ३७—**रूपरत्न-परीक्षा** । ३८—**धातुवाद**— कीमिया गोरी (धातु-शोधन, मिश्रणादि) । ३९—**मणि रागाकरज्ञान**—हीरादि की खान जानना । ४०—**वृक्षायुर्वेद योग**—वृक्षरोपणादि कला । ४१—**सजीव-द्यूत** (मेषकुक्कुट लावक युद्ध-विधि योग) । (मेषादिशिक्षण) पशुओं को सिखाना । ४२—**शुक-सारिका-प्रलापन**—४३—**उत्सादन**देह दबाना, केश-मार्जन-कौशल । ४४—**अक्षर मुष्टिका कथन**—गुप्त बातों के संकेत । ४५—**म्लेच्छित विकल्प** (**कुतर्क**)—सांकेतिक शब्दों का ज्ञान । ४६—**देश-भाषा-विज्ञान**—अन्य देश की भाषायें जानना । ४७—**पुष्प शकटिका**—फूलगाड़ी रचना । ४८—**निमित्त-ज्ञान**—प्राकृतिक बातों या पशुओं आदि की चेष्टा, वाणी से भावी शुभाशुभ कथन । ४९—**यंत्र-मंत्रिका**—गमन, वृष्टि, युद्ध आदि के सजीव निर्जीव यंत्र रचना । ५०—**धारण-मात्रिका** — स्मृति वर्धन कला । ५१—**संपाद्य** (**संवाद्यम्**)—अश्रुत बात कहना । ५२—**मानसी**—मन की बातें बताना । ५३—**काव्य क्रिया** । ५४—**अभिधान कोष**—शब्दार्थ निरूपण । ५५—**छंद-कला** । ५६—

क्रिया कल्प। ५७—छलित—ठगना। ५८—वस्त्रगोपन। ५९—द्यूतक्रीड़ा। ६०—आकर्ष क्रीड़ा—पाँसे का खेल। ६१—बाल क्रीडनक—गुड़ियों का खेल। ६२—वैनयिकी—अश्वादि को गति सिखाना। ६३—व्यायामिकी—वैजयिकी (वैतालिकी)—व्यायाम कला। ६४—शिल्प कला। (संज्ञा, स्त्री०) शिव, नौका, ज्योति, बहाना।—कर-(पु०) कलाधर, चन्द्रमा, एक वृक्ष विशेष।—कार-(वि०) कला-रचयिता, साहित्यकार। [आर्टिस्ट]।—कौशल-(पु०) किसी कला में निपुणता, दस्तकारी, कारीगरी, शिल्प। [(संज्ञा, स्त्री०, यौ०)—कला-कुशलता]।—धर-(संज्ञा, पु०) चंद्रमा, शिव, कलाओं का ज्ञाता, दंडक छंद का एक भेद (पिं०)। कलापूर्ण, कला-धारी।—निधि-(संज्ञा, पु०) चंद्रमा, कलानाथ, कलागार, कलापति, कलाधिप, कलाधि-पति।—बाज़-(वि०) [हि० कला+बाज—फ़ा०] कला करने वाला, नट। [(संज्ञा, स्त्री०) कलाबाज़ी—नट-क्रिया, खेल, कलैया, चालाकी।]—पंजी-(संज्ञा, स्त्री०) सभा संस्थाओं के कार्य-सम्बन्धी विवरण की पुस्तक, विवरण-पुस्तक। [मिनिट बुक]

कलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कलाची] मणिबंध, गट्टा, प्रकोष्ट। (संज्ञा, स्त्री०, सं० कलाप) सूत का लच्छा, कुकरी। कलावा। दाल। (संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० कल] चैन।

कलाकंद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) खोए और मिश्री की बरफ़ी। (यौ०, सं०) कला का मूल।

कलाद*—(संज्ञा, पु०, सं०) सुनार।* (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कलाप] कलादा—हाथी को गर्दन पर महावत का स्थान। किलावा (दे०)।

कलाना—(क्रि०, अ०, दे०) भूनना, अकोरना।

कलाप—(संज्ञा, पु०) [सं० कला+पा+ड] समूह, ढेर, झुंड। मोर की पूँछ। पूला, मुट्ठा। तरकश। बाण। कमरबन्द, पेटी, करधनी। चंद्रमा। व्यापार। वेद की शाखा। एक रागिनी। अर्ध चंद्राकार अस्त्र। भूषण। व्याकरण।

कलापक—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, पूला। हाथी के गले का रस्सा। चार श्लोकों का (जिनका अन्वय साथ हो) समूह। मयूर।

कलापिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात्रि। मोरनी।

कलापी—(संज्ञा, पु०) [सं० कलापिन्] मोर, कोयल। (वि०) तरकशबंद। झुंड में रहने वाला। (संज्ञा, पु०) वटवृक्ष।

कलाबत्तू—(संज्ञा, पु०, दे०) [तु० कलाबतून] सोने-चाँदी आदि का तार जो रेशम के साथ बटा जाय।

कलाम—(संज्ञा, पु०, अ०) वाक्य, वचन, बातचीत, कथन। वादा। उज्र, एतराज़।

कलामक—(संज्ञा, पु०) जाड़े में पैदा होने वाला एक धान।

कलामृत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चंद्रमा। शिव। कलामुख।

कलायिता—(संज्ञा, पु०, सं०) हिसाब करने वाला, गणना करनेवाला। [कलकुलेशन]

कलार, कलाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कल्यपाल] कलवार। [(स्त्री०)—कलारिन, कलाली।] [स्त्री० कलारी—कलार का काम, कलार की स्त्री। "दूध कलारी हाथ लखि"—वृंद०।]

कलावत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कलावान्] संगीतज्ञ, गवैया, कथक, कलाबाज़, नट। (वि०) कलाओं का ज्ञाता। [(वि०) कलावान्—गुणी, कला-कुशल।]

कलावती—(वि०, स्त्री०, सं०) कलावाली, कला जाननेवाली, सुन्दर स्त्री। कलाकुशला, शोभावाली।

कलावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कलापक] सूत का लच्छा, विवाहादि में हाथों या घड़ों पर बाँधने का लाल-पीले सूत का लच्छा, हाथी की गरदन।

कलाविक—(संज्ञा, पु०, सं०) मुर्गा।

कलाविकल—(संज्ञा, पु०, सं०) गौरवा नामक पक्षी।

कलिंग—(संज्ञा, पु०, सं०) मटमैले रंग की एक चिड़िया, कुलंग। कुटज, कुटैया। इंद्रजव। सिरस का पेड़। पाकर वृक्ष। तरबूज। कलिंगड़ा राग। गोदावरी और वैतरणी नदियों के बीच का देश।

कलिंगड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कलिंग] दीपक राग का पुत्र एक राग, रात का राग। कलिंगवासी।

कलिंगा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दरी स्त्री।

कलिंद—(संज्ञा, पु०, सं०) बहेड़ा। सूर्य। एक पर्वत, जिससे यमुना नदी निकली है।—जा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कलिंद+जा] कलिंद नामक पहाड़ से उत्पन्न। सूर्यपुत्री। "कलिन्दजा और अनेक द्वार थे"—मधुपुरी। यमुना नदी। [कालिंदी, कलिंदा स्त्री०]।

कलि—(संज्ञा, पु०, सं०) बहेड़े का फल या बीज। कलह। विवाद। शिव। पाप। पापानीत प्रधान

चौथा युग। ८ गुण का एक भेद। (पिं०)। सूरमा, वीर। क्लेश, दुख। युद्ध। चारयुगों में से अंतिम, वर्तमान युग जिसमें अनाचार, असत्य, अनीति का ही बोलबाला हो। सूर्य सिद्धान्त के अनुसार इसका मान ४३२००० सौरवर्षों का है। "कलि कलेस, कलि सूरमा, कलि निर्षंग, संग्राम। कलि कलिजुग यह आन नहिं, केवल केशव नाम। (वि०, सं०) श्याम, काला।—**काल**—कलियुग।—**मल**—कलि के कुकर्म, पाप।—**वर्ज्य**—(वि०, सं०) जिन कार्यों का करना कलि में निषिद्ध है—जैसे अश्वमेध। —**मलसरि**—कर्मनासा नदी।

कलिक—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रौंच पक्षी।

कलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिना खिला फूल, कली। (**कलि**—दे०) वीणा का मूल। एक प्राचीन बाजा। एक छंद। (पिं०)। मुहूर्त। अंश। मॅगरैल। [बड़]

कलिकान—(वि०, दे०) हैरान, परेशान। (संज्ञा, स्त्री०) 'कलिका' का ब० व० (ब्र०, भा०)।

कलित—(वि०, सं०) विदित, ख्यात। विकसित, खिला हुआ। प्राप्त, गृहीत। सुसज्जित, सुन्दर, रुचिर। युक्त। "कुंजर-मनि कंठाकलित"—तुल०।

कलिया—(संज्ञा, पु०, अ०) रसेदार भूना और पका मांस। (संज्ञा, स्त्री०) कलियाँ—कली का ब०, व०।

कलियाना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कली] कलियों का निकलना, कली-युक्त होना, नये पंख निकलना (पक्षियों के)। फूलना।

कलियारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कलिहारी] एक विषैली जड़ वाला पौधा, कलिहारी। **कलियुग**—दे० 'कलि'।

कलियुगाद्या—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) कलियुगारम्भ का दिन, माघ की पूर्णिमा।

कलियुगी—(वि०, यौ०, सं०) कलियुग का, दुराचारी, पापी, **कलयुगहा** (दे०)।

कलिल—(संज्ञा, पु०, दे०) राशि, कीचड़, दलदल। (वि०) घना, मिश्रित।

कलींदा (**कलिंदा**)—(संज्ञा, पु०, दे०) तरबूज, **हिंद्वाना** (दे०)।

कली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कलिका] बिना खिला फूल, कलिका, बोंड़ी। **कलई**। "अली कली ही मैं रम्यौ"—बिहा०। (संज्ञा, स्त्री०) कुर्ते या अँगरखे आदि में लगाया जाने वाला तिकोना कटा कपड़ा। हुक्के के नीचे का भाग। (अ० कलई) पत्थर, सीपादि का फूँका हुआ भाग, चूना। **मुहा०** —**दिल की—खिलना**—चित्त प्रसन्न होना।

कलीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) कौड़ियों और छुहारों की माला जो विवाह में दी जाती है।

कलीसिया—(संज्ञा, पु०) [० इकलिसिया] ईसाइयों या यहूदियों की धर्म-मंडली।

कलुवावीर—(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) एक टोना-टामर का देवता।

कलुष, कलुख—(दे०)—(संज्ञा, पु०, सं०) मलिनता, पाप, दोष। (वि०, स्त्री० कलुषा, कलुषी) मैला। दोषी, निंदित। [(वि०) **कलुषित**—दुष्कृती, पापी। (स्त्री०) **कलुषिता**]—**मुखी**—(वि०, सं०) कलुष, पाप की ओर जिसका मुख हो, जो नीच कर्म की ओर अग्रसर हो रहा हो। "आज लेखनी को भी मेरी कलुषमुखी"—व०।

कलुषाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कलुष+आई—प्रत्य०] चित्त की मलिनता, अपवित्रता, दोष।

कलुषी—(वि०, स्त्री०, सं०) दोषी, मलिना। (वि०, पु०) गंदा, मैला। पापी। निंदित, दूषित।

कलूटा—(वि०, दे०) [हि० काला+टा—प्रत्य०] काला। [स्त्री० **कलूटी**]

कलेऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) जलपान, प्रातःकाल का सूक्ष्म भोजन, संबल, बासी, विवाह मे वर का ससुराल में भोजन। पाथेय। "करन कलेऊ हेतु पठावौ"—रामकले०। **मुहा०—करना**—खा जाना, मार डालना। (**दिनों का**)—**करना**—अधिक अवस्था का होना। **काल का—होना**—मृत्यु होना।

कलेजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यकृत] शरीर में बाईं ओर का रक्त संचारक एक भीतरी अवयव, दिल, करेजो (ब्र०)। साहस, छाती, जीवट (दे०)। **मुहा०—उलटना**—वमन से जी घबड़ाना, होश न रहना। (**हाथों, बाँसों**)—**उछलना**—उमंग या उत्साह होना।—**काँपना**—जी दहलना, डर लगना।—**टूक टूक होना**—शोक से हृदय विदीर्ण होना।—**ठंढा करना** (**होना**)—संतुष्ट करना (होना)।—**जलाना**—दुख या पीड़ा देना।—**थाम कर रह जाना**—मन मसोस कर या शोक के वेग को रोक कर रह जाना।—**दुखना** (**दुखाना**) —मानसिक कष्ट होना (देना)।—**धक धक करना**—भयभीत होकर काँपना।—**धड़कना**—भय से काँपना, व्याकुल होना, चिंता होना, खटका होना।—**निकाल कर रखना**—अतिप्रिय वस्तु देना, हृदय की बात खोल कर रखना।—**पक**

जाना—दुख सहते सहते तंग आना या ऊबना। पत्थर का—कठोर हृदय, कड़ा दिल।—पत्थर करना—हृदय को कड़ा कर दुख सहने को तैयार करना।—फटना—दुख देख कर मन को अति कष्ट होना।—बैठ जाना—क्षीणता से देह-दिल की शक्ति का मंद पड़ना।—मुँह को (तक) आना—जी घबड़ाना, ऊबना, व्याकुल होना।—हिलना (दहलना)—भयभीत हो कांपना।—(जे) पर साँप लोटना—किसी दुखद बात के याद आन पर एकबारगी शोक छा जाना।—(जे) से लगाना—भेंटना, प्यार करना, आलिंगन करना, गले लगाना। [स्त्री० **कलेजी**—बकरे आदि के कलेजे का मांस।]

कलेवर—(संज्ञा, पु०, सं०) शरीर, ढाँचा, देह, चोला, आकार। मुहा०—**बदलना**—एक शरीर को छोड़ दूसरे में जाना, रूपान्तर करना, पुरानी मूर्ति के स्थान पर नई मूर्ति स्थापित करना (जगन्नाथ जी की)।

कलेवा*—देखिए 'कलेऊ'।

कलेस*—(संज्ञा, पु०, दे०) क्लेश (सं०), दुख। (यौ०) [कला+ईस] कलापति।

कलैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कला] कलाबाजी।

कलोर, कलोरी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० कल्या] बिना बरदाई या ब्याई हुई जवान गाय। "बगरे सुरधेनु के धौल कलोरे"—तुल०।

कलोल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कल्लोल] केलि, क्रीड़ा, किलोल, आमोद-प्रमोद। [क्रि०, अ०, दे० **कलोलना**—क्रीड़ा, केलि करना]।

कलोलिनी—(वि०, दे०) [सं० कल्लोलिनी] कलोल या क्रीड़ा करने वाली। लहराती, प्रवाहित। (संज्ञा, स्त्री०) नदी। "स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा"—रामा०।

कलौंजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कालाजाजी] मसाले के महीन काले दाने की कलियों का एक पौधा, मंगरैल, मरगल। एक प्रकार की तरकारी।

कलौंथी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मुंगरा चावल।

कलौंस—(वि०, दे०) [हिं० काला+औंस—प्रत्य०] जो कालिमा लिये हो, स्याहीमायल। (संज्ञा, पु०, कालापन, कलंक। कालौंस।

कल्क—(संज्ञा, पु०, सं०) चूर्ण, पीठी, गूदा। दंभ, पाखंड, शठता। मैल (कान की), कीट। विष्ठा, पाप। अवलेह। काढ़ा। भोगी। औषधियों को बारीक पीस कर बनाई गई चटनी। बहेड़ा।—**फल**—अनार।

कल्की, कल्कि—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु का १० वाँ अवतार जो संभल (मुरादाबाद) में कुमारी कन्या के गर्भ से होगा। (वि०) पापी, अपराधी, कलंकी।

कल्प—(संज्ञा, पु०, सं०) विधान। विचार। प्रतिज्ञा, संकल्प। विधि, कृत्य (जैसे प्रथम कल्प) यज्ञादि के विधान वाला। वेद के छः अंगों में से एक। प्रातः काल। रोग निवृत्ति की एक युक्ति (जैसे केश कल्प, कायाकल्प)। प्रकरण, विभाग। १४ मन्वंतर या ४३२०००००० वर्षोंवाला ब्रह्मा का एक दिन या समय का एक विभाग। प्रलय। अभिप्राय। "निमिष बिहात कल्प सम तेही"—रामा०। (वि०) तुल्य, समान (जैसे—देव-कल्प)।—**छाया**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कल्पवृक्ष की छाया। सुखप्रद। वह व्यक्ति जिसकी सहायता से शान्ति और सन्तोष का प्रसार हो। "गो-विप्रों के हेतु थे कल्प-छाया"—मधुपुरी।—**तरु**—(संज्ञा, पु०) कल्पवृक्ष, कल्पद्रुम, अभिलषित फल देने वाला एक देव-वृक्ष, जो समुद्र से १४ रत्नों के साथ निकला था। दीर्घ जीवी महान् वृक्ष, अविनश्वर पेड़। गोरख इमली। कल्पशाखी।—**द्रुम**—(संज्ञा, पु०) सुर तरु।—**वास**—(संज्ञा, पु०) माघ मास भर गंगा-तट पर संयम से रहना।—**वृक्ष**—(संज्ञा, पु०) देव-पादप। देवताओं और राक्षसों के सम्मिलित मंथन से निकलने वाले चौदह रत्नों में से एक। वृक्ष-विशेष जो अफ्रीका में तथा भारत के मद्रास आदि प्रदेशों में पाया जाता है बहुत उदार और दानी व्यक्ति। "कल्पवृक्ष पर नीड़ बनाकर, गाना मधुमय फल खा खा कर"—बच्चन।—**सूत्र**—(संज्ञा, पु०) यज्ञादि कर्मों के विधान का सूत्र-ग्रन्थ।

कल्पक—(संज्ञा, पु०, सं०) रचने वाला। नाई। कचूर। (वि०) काटने वाला।

कल्पकार—(संज्ञा, पु०, सं०) काव्यशास्त्र का रचयिता। [वि० **कल्पकारक, कल्पकारी**]।

कल्पनक—(वि०, सं०) जिसमें कल्पना-शक्ति या सोचने की मात्रा अधिक हो, जिस कार्य में कल्पना का सहारा विशेष रूप से लिया गया हो, कल्पनाशील, कल्पनात्मक। [इमेजिनेटिव]

कल्पना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रचना, बनावट, सजावट। इंद्रियों के सम्मुख अनुपस्थित वस्तुओं के स्वरूपादि को उपस्थित करने वाली अन्तःकरण की

एक शक्ति, उद्भावना, अनुमान। [सपोजीशन] किसी वस्तु पर अन्य वस्तु का आरोप अध्यारोप, फ़र्ज़ करना, मनगढ़न्त बात। [इमेजिनेटिव] [(यौ०) [संज्ञा, स्त्री० **कल्पनोपमा**—एक प्रकार की उपमा] ।

कल्पनीय—(वि०, सं०) जिसकी कल्पना करने में कोई असुविधा न हो, कल्पना के योग्य। जो कल्पना में आ सके। [इमेजिनेबुल]

कल्पात—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रलय, संहार या युगान्त काल, ब्रह्मा का दिवसावसान। "कल्पान्तस्थायिनोगुणः" । [यौ०, वि० **कल्पस्थायी**—अक्षय, चिरस्थायी।]

कल्पातीत—(संज्ञा, पु०, सं०) जैनियों के शास्त्रों के अनुसार एक देवता।

कल्पित—(वि०) [सं० क्लिप+क्तिन] रचित, आरोपित। बनावटी, फर्जी, मनगढ़न्त, कल्पना किया हुआ। कृत्रिम, नकली।

कल्पितार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी प्रश्न के निमित्त कुछ देर के लिए किसी सम्भावना को निश्चित रूप में ग्रहण करना और उसके आधार पर स्थापनाएँ करना। [हाइपाथेसिस]

कल्पितोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार का उपमालंकार।

कल्मष—(संज्ञा, पु०, सं०) पाप, अधर्म, मैल, एक नरक, पीब, मवाद, कलमख (दे०)। [(वि०) **कल्मषी**]—**गत**-(वि०, सं०) दोष-सम्बन्धित, दोषपूर्ण।—**गताचार**-(वि०) जिसका आचरण कल्मषयुक्त हो। दोषपूर्ण चाल चलन वाला। "रावण, लम्पट, खल, कल्मष गताचार"—'निराला'।

कल्मषोत्सार—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं० कल्मष+उत्सार] कल्मष पर रोक रखने वाला व्यक्ति अथवा तत्त्व। दोष अथवा पाप के होने पर चौकसी रखने वाला पहरेदार। "कल्मषोत्सार कवि थे दुर्दम"—'निराला'।

कल्माष—(संज्ञा, पु०) [सं० कल्+मष+घञ्] काला। रंग-बिरंगा, चितकबरा, कलमाष (दे०)।

कल्य—(संज्ञा, पु०) [सं० कल्+य] सबेरा, भोर, प्रत्यूष, प्रातःकाल। कल (दे०) अगला या पिछला दिन। मधु। शराब।

कल्यपाल—(संज्ञा, पु०, सं०) कलवार।

कल्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देने योग्य बछिया या कलोर गाय।

कल्याण—(संज्ञा, पु०, सं०) मंगल, शुभ। भलाई। सोना। एक प्रकार का राग (संगी०)। (वि०) अच्छा, भला। [(स्त्री० **कल्याणी**] कल्यान* (दे०)। [(यौ०) **कल्याणभार्य** (पु०) वह जिसकी स्त्री० मर गई हो। **कल्याणवर्मन्**—वराहमिहिर के समकालीन (सन् ५७८ ई०) एक प्रसिद्ध ज्योतिषी, इनका ग्रन्थ सारावली है।]

कल्याणी—(वि०, स्त्री०, सं०) कल्याण करने वाली सुन्दरी।

कल्याश—(संज्ञा, पु०, सं) सबेरे का भोजन, कलेवा, नाश्ता।

कल्ल—(वि०, दे०) बहरा, बधिर (सं०)।

कल्लर—(संज्ञा, पु०, दे०) रेह, नोना मिट्टी, ऊसर, बंजर, कल्हर।

कल्लाँच—(वि०, दे०) [तुल० कल्लाच] लुच्चा। गुंडा, दरिद्र।

कल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करीर] अंकुर, किल्ला, गोंफा, कोंपल, बत्ती रहने वाला लंप का सिरा। [बर्नर]। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) जबड़ा, जबड़े के नीचे गले तक स्थान। (वि०, दे०) [हि० काला] काला। [(स्त्री०)—**कल्ली**]। —**तोड़**—(वि०) मुँहतोड़, प्रबल, जोड़-तोड़ का। —**दराज़**—(वि०, फ़ा०) मुँहज़ोर, बढ़-बढ़ कर बातें करने वाला। [(संज्ञा, स्त्री०) **कल्लादराज़ी** ।]

कल्लाना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कड् या कल्] चमड़े पर जलन, कुछ पीड़ा होना।

कल्लापरवर—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का भुना चबैना।

कल्लू—(वि०) काला, कलूटा।

कल्लोल—(संज्ञा, पु०, सं०) लहर, तरंग। क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद, हर्ष हिलोर, उमंग, कलोल (दे०)। [(वि०, स्त्री०) **कल्लोलिनी**—नदी।]

कल्ह (कल)§—(क्रि०, वि०, दे०) कल, काल्ह, काल्हि (दे०)।

कल्हण—(संज्ञा, पु०, सं०) राजतरंगिणी नामक इतिहास के काश्मीरी लेखक। (सन् ११४८ ई०)

कल्हरना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कड़ाह+ना —प्रत्य०] कड़ाही में तला जाना, भुनना, कराहना (दे०)। (क्रि०, अ०) [सं० कल्ल=शोक करना], दुःख से चिल्लाना।

कल्हार—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पुष्प, कमल।

कल्हारना—(क्रि०, स०) [दे० कल्हरना] कड़ाही में भुनना, तलना। (क्रि०, अ०, दे०) कराहना, क्रन्दन करना।

कवच—(संज्ञा, पु०, वि०) आवरण, छाल। युद्ध में योद्धाओं के पहिनने का लोहे की जाली का एक पहिनावा, जिरह-बक़्तर, सन्नाह वर्म, (सं०) झिलम (दे०)। शरीरांग-रक्षार्थ मन्त्रों के द्वारा प्रार्थना (तंत्र)। ऐसी रक्षा का मंत्र या मन्त्र युक्त ताबीज। युद्ध का बड़ा नगाड़ा, पटह, डंका, कौच (दे०) [(वि०) **कवची**।]

कवन (**कौन**)—(सर्व० दे०) कौन [हि०]। "कवन हेतु, वन विचरहु स्वामी"—रामा०

कवयी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार की मछली। (सर्व०, दे०) कौनसी।

कवर (**कौर**)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कवल] ग्रास, लुकमा, निवाला (फ़ा०)। "पंच कवर करि जेंवन लागे"—रामा०। (संज्ञा, पु०, सं०) केश-पाश, गुच्छा। [(स्त्री०) **कवरी**—चोटी, । जूरा।] (अं०) ढकना, आवरण।

कवरना—(क्रि०, स०, दे०) सेंकना, रंचक भूनना, तलना।

कवरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चोटी। वनतुलसी। 'अलि दे मेरी कबरी सँवार'—महा०।

कवर्ग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कादि पांच वर्ण, क से ङ तक वर्णसमूह।

कवल—(संज्ञा, पु०, स०) मुख में एक बार में रखी जाने वाली खाने की वस्तु। कौर। ग्रास, गस्सा, कुल्ला, लुकमा, निवाला। (संज्ञा, पु०, दे०) एक पक्षी। घोड़े की एक जाति। [(स्त्री०) **कवली**—एक मत्स्य।]

कवलित—(वि०) [सं० कवल + क्त] ग्रसित, भुक्त, खाया हुआ,। [(यौ०) **कवलीकृत**—(वि०) कौर किया हुआ, भक्षित।]

कवाम (**किवाम**)—(संज्ञा, पु०, अ०) चाशनी शीरा, पक्का गाढ़ा रस (तंबाकू का अवलेह)।

क़वायद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) क़ायदे, नियम, व्यवस्था। व्याकरण। सेना के युद्ध-नियम तथा उनकी अभ्यास-क्रिया।

कवि—(संज्ञा, पु०, सं०) काव्यकार, कविता बनाने वाला। ऋषि। बालमीकि। व्यास। शुक्राचार्य। ब्रह्मा। सूर्य। पंडित। ब्रह्म। "कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः"—[वेद]।—**कर्म**—(पु०) काव्य-कौशल।—**माता**—(स्त्री०) शुक्राचार्य की माता। काश्मीर-भूमि।—**राज**,—**राय**—(पु०) श्रेष्ठ कवि, **कविशेखर**, कविन्द। भाट। बंगाली वैद्यों की उपाधि। "राघव-पांडवीय' नामक संस्कृत-काव्य ग्रन्थ के लेखक एक कवि (ई० ११११)।

कविक (**कविका**)—(संज्ञा, पु०, स्त्री०) [सं० कविक +आ] लगाम। केवड़ा। कवई—मछली।

कविता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हृदय पर प्रभाव डालने वाला सरस, रमणीयार्थ प्रतिपादक पद्य, काव्य। [(संज्ञा, पु०) **कवित्व**—कविकाव्य का भाव। काव्य-रचना की शक्ति, काव्य-गुण। कवि-प्रतिभा। [(संज्ञा, स्त्री०) **कविताई**] "बूझहिं केसव की कविताई"।

कवित्त—(संज्ञा, पु०) [सं० कवित्व] काव्य, कविता, दंडकान्तर्गत ३१ वर्णों (१६+१५) का एक वृत्त, मनहरण, घनाक्षरी आदि, कवित (दे०)। "कबित प्रबन्ध एक नहिं मोरे"—रामा०। "लोगन कबित कीबो खेल करि जानो है"—ठा०।

कवित्व—(संज्ञा, पु०, स०) काव्य-रचना की शक्ति। गुण। रस।

कविनासा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कर्मनाशा नदी, करमनासा।

कविलास—(संज्ञा, पु०) (दे०, सं० कैलास) कैलास, स्वर्ग।

कवीन्द्र—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रेष्ठ कवि, उच्चकोटि की कविता करनेवाला।

कवीन्दु—(संज्ञा, पु०, सं०) उच्चकोटि का कवि।

कवैरा—(संज्ञा, पु०, सं०) गँवार, मूर्ख, उजड्ड।

कवेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कौवा+एला —प्रत्य०] कौए का बच्चा।

कव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पितृ-यज्ञादि में पिंड का अन्न। (यौ०)—**वाह**—(संज्ञा, पु०) [सं०] पितृयज्ञ की अग्नि।

कश—(संज्ञा, पु०, अ०) चाबुक। कोड़ा, रस्सी। हुक्के की दम या फूँक। [(स्त्री०) **कशा** (**कषा**)] (संज्ञा, पु०, फ़ा०) खिंचाव।—**मकश**—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) खींचातानी। आगापीछा, द्विविधा। धक्कमधक्का। सोच-विचार। भीड़भाड़।

कशकोल—(संज्ञा, पु०, दे०) कजकोल।

कशाघात—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कोड़े की मार।

कशार्ह—(वि०, यौ०) [कश+अर्ह] चाबुक मारने योग्य, अपराधी।

कशिपु—(संज्ञा, पु०, सं०) तकिया। बिछौना। अन्न। भात। आसन। कपड़ा। प्रह्लाद-पिता, हिरण्यकशिपु।

कशिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आकर्षण, खिंचाव।
कशीदा—(दे० **कसीदा**)—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कपड़े पर सुई तागे से काढ़े हुए बेलबूटे। शेरों (उर्दू शायरी) का एक समूह (काव्य)।
कश्चित्—(वि० सर्व० सं०) कोई एक, कोई व्यक्ति।
कश्ती, किश्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) नौका,नाव, ब.यना या पानादि बाँटने की छिछली तश्तरी। एक मोहरा (शतरंज)।
कश्मीर—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकृति-सौंदर्य-केसर तथा शालों के लिये प्रसिद्ध पञ्जाब के उत्तर में एक पहाड़ी प्रांत। [(वि०) **कश्मीरी** [काश्मीर+ई —प्रत्य०] कश्मीर का। (संज्ञा, स्त्री०) कश्मीर की भाषा। (संज्ञा, पु०) कश्मीर-निवासी, कश्मीर का घोड़ा। [(स्त्री०) **कश्मीरिन** ।]
कश्मीरा—(संज्ञा, पु०, हिं०) एक ऊनी वस्त्र।
कश्य—(वि०, सं०) कशाह। (संज्ञा, पु०) घोड़े का तङ्ग, रकाब।
कश्यप—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वैदिक कालीन ऋषि। एक प्रजापति (महर्षि मरीच के पुत्र), सृष्टि के पिता, इनकी दो स्त्रियाँ थीं—दिति, अदिति। कछुआ। सप्तर्षि मण्डल का एक तारा।—**मेरु**—एक पर्वत, कश्मीर।
कष—(संज्ञा, पु०) [सं० कष+अल्] सान, कसौटी (पत्थर), परीक्षा, जाँच। **कर्षण**—परीक्षा।
कषाय—(वि०, सं०) कसैला बाकठ।—**कसाव**—(दे०) सुगन्धित, गेरू के रंग में रँगा हुआ, गैरिक। मीठे स्वर वाला। मैला। औचित्य-रहित। [एस्ट्रोजेंट] (संज्ञा, वि०) कसैली वस्तु। छः रसों में से एक रस। गोंद। गाढ़ा रस। क्रोध लोभ आदि विकार। कलियुग, काढ़ा, क्वाथ। [(वि०) **काषाय**—गेरुआ।]
कष्ट—(संज्ञा, पु०) [सं० कष+क्त] पीड़ा, क्लेश, संकट, आपत्ति, कृच्छ्र। [वि० **कष्ट-कर (कष्टप्रद) कष्टदायी,(कष्टदायक) कष्टकारक, कष्टकारी** आदि।]—**कल्पना**—(स्त्री०) खींच खाँच और कठिनता से ठीक घटने वाली युक्ति, दुःख की कल्पना, क्लिष्ट कल्पना।—**साध्य**—(वि०) जिसका करना कठिन हो।
कष्टार्जित—(वि०, सं०) कष्ट एवं परिश्रम से अर्जित या कमाया हुआ।
कष्टित—(वि०)[सं० कष्ट+इत] कष्टयुक्त। (वि०) कष्टी—प्रसव पीड़ा युक्ता (स्त्री०) दुःखी।

कस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कष] परीक्षा, कसौटी, तलवार की लचक। (संज्ञा, पु०) बल, वश, काबू। **मुहा०—का**—अपना इख्तियारी।—**में रखना (करना)** आधीन रखना। (संज्ञा, पु०) रोक, अव-रोध, (सं० कषाय) कसाव का संक्षिप्त रूप। सार, तत्व। (*क्रि० वि०) कैसे, क्यों। "कस न राम तुम कहहु अस"—रामा०।
कसक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कषक] हलका दर्द, टीस, पुराना द्वेष, वैर। सहानुभूति, हौसला। **मुहा०—निकालना**—पुराने वैर का बदला लेना। —**रखना**—वैर या द्वेष रखना।
कसकन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कसक, टीस, रहरह कर उठने वाली पीड़ा। "प्राणों में पीड़ा की कस-कन"—महादेवी
कसकना—(क्रि०,अ०, दे०) [हिं० कसक] दर्द-करना, टीसना, सालना। "चतुरन के कसकत रहै..."—रहीम।
कसकसा— (वि०, दे०) कसकने वाला, किरमिरा।
कसकुट—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० काँस+कुट—टुकड़ा) ताँबे और जस्ते के सम मेल से बनी एक धातु, काँसा।
कसगर—(संज्ञा, पु०) मुसलमानों की एक जाति जो मिट्टी के बर्त्तन बनाया करते है।
कसन—संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कसना] कसने की क्रिया, रस्सी। (संज्ञा, स्त्री०, सं०, कष) क्लेश, पीड़ा, कसनि (ब्र०)। लपेट।
कसना—क्रि०, स०, दे०) [सं० कर्षण] बन्धन दृढ़ करने की डोरी को खींचना, बन्धन खींच कर बँधी वस्तु को दबाना, बाँधना। परखना, जाँचना। (क्रि०, अ०) जकड़ जाना, किसी पहिनने की चीज का तंग होना। बँधना। साज रख सवारी तैयार होना। भर जाना। (क्रि०, स०, दे०) [सं० कषण] सोने आदि का कसौटी पर घसना, परखना, तलवार चलाकर जाँचना। खोया बनाना। क्लेश देना। [(ंज्ञा) **कसाव**—पूरा पूरा जकड़ना, घोड़े पर साज लगाना] **मुहा०—कसकर**-जोर से, पूरा पूरा। **कसाकसाया**—चलने को बिलकुल तैयार। ठूँस कर भरा हुआ।
कसनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कसना] बाँधने की रस्सी। बेठन, गिलाफ। कंचुकी, अँगिया। कसौटी, परख। "कह 'कबीर' कसनी सहै, कै हीरा कै हेम"।

कसब—(संज्ञा, पु०, अ०) श्रम। पेशा। व्यवसाय। वेश्यावृत्ति।

कसबल—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० कस + बल] बल, साहस।

क़सबा—(संज्ञा, पु०, अ०) बड़ा गांव। छोटा शहर। [टाउन] [(वि०) **क़सबाती**—क़सबे की।]

क़सबी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) वेश्या, व्यभिचारिणी स्त्री। [प्रास] कसबिन।

क़सम—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शपथ। सौगंध, सौंह (ब्र०)। **मुहा०**—**उतरना**—किसी काम को नाम मात्र को करना।—**खाकर कहना**—सत्य कहना। —**खाने का**—नाम मात्र को।—**दिलाना (देना)** —सत्य कहलाना।—**देना, (दिलाना, रखना)** —शपथ द्वारा बाध्य करना।—**रखना**—प्रतिज्ञा कराना।—**लेना**—प्रतिज्ञा कराना।

कसमसाना—(क्रि०, अ०, अनु०) कुल-बुलाना, बहुत से पदार्थों या लोगों का परस्पर रगड़ खाकर हिलना-डुलना। खल-बलाना, घबड़ाना। आगा-पीछा करना, हिचकिचाना। किसमिसा—[(संज्ञा स्त्री०, भा०)**कसमसाहट**—कुलबुलाहट। (संज्ञा, स्त्री०) **कस-मस,—कसमसी, कसामसी,**— घबड़ाहट, हिलने-डुलने का भाव।]

कसर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कमी, न्यूनता। द्वेष, वैर। **मुहा०—निकालना**—बदला लेना।—**रहना**—कमी रहना, घटी, हानि। दोष, विकार, सूखने या कूड़ा करकट के निकलने से कमी, त्रुटि। (संज्ञा, स्त्री०, अ०) भिन्न (गणि०)। "कसर में कसर अब न बाकी रही"—कुंज **वि०**

कसरत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) व्यायाम, मिहनत। (संज्ञा, स्त्री०, अ०) अधिकता। [वि० **कसरती**]— व्यायाम करने वाला, **हृष्ट-पुष्ट**, बली। (यौ०, हिं०) कैसा लीन।

कसवाना—(क्रि०, स०, दे०) कसना का प्रे० रूप कसाना।

कसाई—(संज्ञा, पु०) [अ० कस्साब] बधिक, बूचड़। (वि०) निर्दय, निष्ठुर। (**संज्ञा, स्त्री०**) बाँधना। खिंचाई।

कसाकसी—(संज्ञा, स्त्री०) तनातनी, दुश्मनी।

कसाना—(क्रि०, अ०) [हिं० कसाव] कसैला होना। कांसे के योग से खट्टी चीज़ का बिगड़ जाना। (क्रि०, स०, दे०) ज़ोर से बँधाना, कसवाना।

कसार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कृसार] चीनी मिला भुना आटा, पंजीरी।

कसाला—(संज्ञा,पु०, दे०) [सं० कष्ट] कष्ट, कठिन श्रम। "सिसिर के पाला को न व्यापत कसाला तिन्हैं"—पद्मा०।

कसाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कषाय] कसैला-पन, कसक, खिंचाव।

कसावट—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कसना] कसने का भाव, तनाव, खिंचावट।

कसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हल की कुसी। भू-माप। एक आला।

कसीदा—(संज्ञा, पु०, अ०) स्तुति-निंदा वाली प्रकार की कविता। वस्त्र पर बेल-बूटे।

कसीस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कासीस] खान में मिलने वाला लोहे का विकार। (संज्ञा, स्त्री०) निर्दयता। "भूपन असीसैं तोहिं करत कसीसैं"।

कसुंभ—(वि०, सं०) कुसुम के रंग का, लाल। [(वि०) कुसुंभी, कुसुंभा (दे०)]

कसून—(संज्ञा, पु०, दे०) कांजो आंख का फोड़ा।

कसूर—(संज्ञा, पु०, अ०) अपराध, दोष। [(वि०) **कसूरी**—दोषी। (वि०) **कसूरमंद, कसूरवार**— अपराधी।]

कसेरा (**कँसेरा**)—(संज्ञा, पु०) [हिं० कांस, +एरा—प्रत्य०] कांसे आदि के बरतन बनाने या बेचने वाला। [(स्त्री०) **कसेरिन**।]

कसेरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कसेरू] तालाबों आदि में होने वाले एक प्रकार के पौधे की जड़ का फल, जो गठीला और मीठा होता है। [(यौ० कसेरू पाक।]

कसैया*—(संज्ञा, पु०) [हिं० कसना + ऐय्या —प्रत्य०] बाँधने वाला, परखने या कसौटी पर कसने वाला।

कसैला—(वि०) [हिं० कसाव + ऐला—प्रत्य] जिसका स्वाद कसैला (कड़ुआ और कुछ खट्टा) हो। [(स्त्री०) **कसैली**—सुपाड़ी।]

कसोरा—(संज्ञा, पु०) [हिं० कांसा + ओरा— प्रत्य०] मिट्टी का प्याला, कटोरा, सकोरा।

कसौंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक जंगली फल।

कसौटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कषवटी प्रा० कसवटी] सोने चांदी को रगड़ कर के जांचने का एक काला पत्थर। परीक्षा, जांच, परख। [क्राइटे-रिया] "सोन को रंग कसौटी लगै, पै कसौटी को रंग लगै नहिं सोने"—पद्मा०।

कस्तुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कस्तूरी) कस्तूरी-मृग।

कस्तुरा—(संज्ञा, पु०,) शंखयुक्त एक कीड़ा। मछली। कस्तूरीवाला मृग।

कस्तूरा—(संज्ञा, पु०, सं०) कस्तूरी मृग। लोमड़ी का सा एक पशु (दे०)। मोती वाला सीप। एक बल-कारक औषधि, जो पोर्ट ब्लेयर की चट्टानों के खुरचने से निकलती है।

कस्तूरिका, कस्तूरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो एक विशेष प्रकार के मृग की नाभि से निकलता है, मृग-मद, मुश्क (फ़ा०)। [(वि०) **कस्तूरिया** (हि० कस्तूरीवाला, कस्तूरी-युक्त, मुश्की, कस्तूरी के रंग का।]

कस्तूरी-मृग—(संज्ञा, पु०, हि०) वह हिरण-विशेष जिसकी नाभि से सुगंधित पदार्थ उत्पन्न होता है।

कहँ—(प्रत्य० दे०) [सं० कक्ष] कर्म और संप्रदान का चिन्ह, को, के लिए। (क्रि०, वि०, दे०) कहाँ। "सुठि सुहाग तुम कहँ दिन दूना" "कहँ गये नृप किसोर मनचीता" —तुल० (राम०)।

कहँरना—(अ०, क्रि०) कराहना, किसी पीड़ा के साथ आह निकलना।

क़हक़हा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ज़ोर की हँसी का शब्द। **मुहा०—लगाना**—ज़ोर से हँसना।

कहगिल—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० काह—घास + गिल—मिट्टी] मिट्टी का गारा।

क़हत—(संज्ञा, पु०, अ०) दुर्भिक्ष, अकाल। [(यौ०)—**क़हतसाली**]

कहन, कहनि—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कहना] कथन (सं०), उक्ति, बात। कहावत। कविता।

कहना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कथन] बोलना, व्यक्त या प्रगट करना। वर्णन करना। उच्चारण करना। **मुहा०—कह-बदकर**—दृढ़ संकल्प या प्रतिज्ञा करके, जता कर, दावे से ललकार कर।—**सुनना, (कहब-सुनब)**—बातचीत करना, वाद-विवाद कर तय करना, समझाना, बहस करना। (संज्ञा, पु०) कथन, आज्ञा, अनुरोध।—**(ने) को**—नाम मात्र को, भविष्य में स्मरण को।—**(ने) की बात**—जो वास्तव में न हो।—**(ते) सुनते**—बात-चीत या व्यवहार में, "जो भयो हमसों कहते-सुनते"। प्रगट करना, खोलना। सूचना या ख़बर देना, नाम रखना। कविता करना। पुकारना। समझाना-बुझाना।

कहनाउत (कहनावत)*—(संज्ञा, स्त्री०) [दे०, कहना + आवत—प्रत्य०] बात, कथन, कहावत। [**कहनावति** (दे०)] लोकोक्ति। "कहनावति जो लोक की, सो लोकोक्ति प्रमान"—भूषण।

कहनूत* (**कहनौत**)—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कहना + ऊत—प्रत्य०] कहावत, मसल, कहानी।

क़हर—(संज्ञा, पु०, अ०) आपत्ति, आफ़त। (वि०) [अ० कह्हार] अपार। घोर, भयंकर। कठिन। **मुहा०—करना (मचाना)**—अनोखा काम या अत्याचार करना "कहर जूह द्वै पहर भो"—**छत्र०** "रूप कहर दरियाव में"—रतन०। —**इलाही**—दैवी आपत्ति। "कलिकाल कौ कहर जमजाल कौ जहर है"।—पद्मा०।

कहरना§—(क्रि०, अ०, दे०) कराहना, कहरना। "कहरत भट घायल तट गिरे"—तुल० (रा०)।

कहरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कहार] पाँच मात्राओं का एक ताल, कहरवा चाल का नाच और दादरा (संगी०)।

कहरी—(वि०) [अ० क़ह्र] आफ़त या आपत्ति लाने वाला।

कहरुबा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रकार का गोंद जिसे कपड़े आदि पर रगड़ कर घास या तिनके के पास रखें तो वह उसे चुंबक सा पकड़ लेता है।

कहल*—(संज्ञा, पु०, दे०) उमस, ताप। कष्ट, क़हर।

कहलना§—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कहल] गरमी या उमस से व्याकुल होना, दहलना। "कहलाने एकत बसत अहि, मयूर, मृग, बाघ"—(वि०, यौ०, क्रि०) कहा जाना।

कहलवाना, कहलाना—(क्रि०, स०) [हि० कहना का प्रे० रूप] दूसरे को कहने के लिए प्रेरित करना, संदेशा भेजना। बुलवाना। जतलाना।

कहवाँ, कहाँ*—(क्रि०, वि०, दे०) कहाँ, कहँ (दे०), किस स्थान पर।

कहवा—(संज्ञा, पु०, अ०) एक पेड़ के बीज जिन्हें चाय की तरह पीते हैं। [कॉफी]

कहवाना—(क्रि०, स०, दे०) कहाना (हि० कहना का प्रे० रूप) कहलाना।

कहवैया, कहैया (वि०, दे०) [हि० कहना + वैया—प्रत्य०] कहने वाला।

कहाँ—(क्रि० वि०, हि०) [वैदिक सं० कुहः] किस जगह, कुत्र, कहँ, कहवाँ (दे०)। **मुहा०—का**—असाधारण। बड़ा भारी। कहीं का नहीं, नहीं है। न जाने किस जगह का।—**का कहाँ**—बहुत दूर, अभीष्ट स्थान, वस्तु या बात से अतिरिक्त, अन्यत्र।

—से कहाँ—अनिश्चित स्थान से, अनिश्चित स्थान में। 'उठि आये कहाँ तै कहाँ धौं कहाँ'—रत्ना०।—की बात—यह बात ठीक नहीं, अनुपयुक्त है।—यह कहाँ वह कहाँ—इनमें बड़ा अंतर है। "कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा"—तुल० —तक (लौं)—किस जगह या कब तक।—(हुँ) लगि—(दे०) "कहाँ लौ कहौं मैं कथा रावन, जजाति की" "कहँ लगि सहिय रहिय मन मारे" —तुल०।—से क्यों, व्यर्थ, नाहक।

कहा*—(संज्ञा, पु०, हि०) [सं० कथन] कथन, बात, आज्ञा, उपदेश। "मैं संकर कर कहा न माना" —तुल० (रा०)। [(स्त्री०) कही विलो०—अनकहा] (क्रि०, म०) सा० भू०। (क्रि०, वि०, दे०) [सं० कथम्] कैसे। सर्व० (ब्र०) (सं० कः) क्या, क्यों। (वि०) कौन। मन मानं नहीं तौ कहा करिये"। (संज्ञा, स्त्री०) कथा। "बचन परगट करन लागे प्रेम-कहा चलाय"—भ्र०। (यौ०) कहा-सुना—(संज्ञा, पु०, हि०) भूल-चूक, अनुचित कथन और व्यवहार, जैसे कहा सुना मुआफ करना। कहा-सुनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कहना + सुनना] वाद-विवाद, झगड़ा। कहा-कही—(संज्ञा, स्त्री०) वाद-विवाद, झगड़ा।

कहाना—(क्रि०, स०, दे०) कहलाना।

कहानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कथानिका] कथा, किस्सा, आख्यायिका, झूठी या गढ़ी बात। (यौ०) राम—लम्बा-चौड़ा वृत्तान्त।

कहार—(संज्ञा, पु०) [सं० क=जल + हार] पानी भरने, और डोली आदि उठाने का काम करने वाली एक जाति, धीवर, कहार (दे०)।

कहारा—(संज्ञा, पु०, दे०) दौरी या टोकरी। कहार।

कहाल—(संज्ञा, पु०, दे०) एक बाजा।

कहावत—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कहना] चमत्कृत ढंग से संक्षेप में अनुभवजन्य बात-सूचक वाक्य। मसल, उक्ति [प्रावर्ब, मैक्सिम] कहनौति (ग्रा०)।

कहिया*—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० कुहः] किस दिन, कब।

कहीं, कहुँ, कहूँ, कतौं—(क्रि०, वि०) [हि० कहाँ] किसी अनिश्चित स्थान में। मुहा०—और—किसी दूसरी जगह, अन्यत्र, बड़ा भारी, कही का।—का न रहना या होना—दो पक्षों में से किसी पक्ष के योग्य न रहना। किसी काम का न रहना।—न कहीं—किसी स्थान पर अवश्य। (प्रश्न रूप और निषेधार्थक) नहीं, कभी नहीं, यदि, (आशंका और इच्छा-पूर्वक) बहुत अधिक। कहीं से (का) कहीं। लो०—"कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा। भानमती ने कुनबा जोड़ा।"

कहुवा—(संज्ञा, पु०) वह घी जो जुकाम में दिया जाता है, अवलेह।

कह्ल—(संज्ञा, पु०, सं०) बकुला, सारस की एक जाति।

काँइया—(वि०, दे०) [अनु० काँव काँव] चालाक, धूर्त, चंट, चाँई (दे०)। (वि०) काँई।

काँई—(अव्य०, दे०) [सं० किम्] क्यों।

काँकर*—(संज्ञा, पु०, दे०) कंकड़। [(स्त्री०) काँकरी —कंकड़ी।] मुहा०—चुनना—चिंता या वियोग दुख से काम में जी न लगना। "ता थल काँकरी बैठि चुन्यो करै"—आल०।

काँकुनी—(संज्ञा, स्त्री०) कँगनी।

कांक्षनीय—(वि०, सं०) इच्छा करने या चाहने योग्य। [वि० कांक्ष्य, कांक्षणीय]

कांक्षी—(वि०) [सं० कांक्षिन्] चाहने या इच्छा करने वाला, आकांक्षी। [(स्त्री०, वि०) कांक्षी, कांक्षिणी। (संज्ञा, स्त्री०) कांक्षा—इच्छा]।

काँख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुक्षि] बगल, बाहु-मूल के नीचे का गड्ढा। कँखरी (दे०)। लो०—"में लड़का गाँव गुहार"। [कँखवार —(संज्ञा, पु०, हि०) काँख का फोड़ा]।

काँखना—(क्रि०, अ०) [अनु०] श्रम पीड़ादि से ऊँह-आह शब्द करना। मल मूत्रादि के लिए पेट की वायु को दबाना।

काँखासोती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० काँख + श्रोत्र—स०] दाहिनो बगल के नीचे से ले जाकर बाँये कंधे पर दुपट्टा डालने का ढंग।

काँगड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) पंजाब का एक प्रान्त, जहाँ ज्वालामुखी पर्वत और देवी का प्रसिद्ध मंदिर है, यहीं एक गुरुकुल भी है।

काँगड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काँगड़ा का। काश्मीरियों के जाड़े मे गले में लटकाने की एक अँगीठी।

काँगन—(संज्ञा, पु०, दे०) कंगन, कंकन। कंकण। [सं०, स्त्री० कोंगनी]

काँगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) धूनी, अँगीठी।

काँग्रेस—(संज्ञा, स्त्री०) सम्मेलन, संघटन, प्रतिनिधियों की वार्षिक बैठक। भारतीय राष्ट्रीय सभा जिसने भारत को स्वतंत्रता दिलाई और इसकी स्थापना १८८५ में हुई। [इंडियन नेशनल काँग्रेस] अमेरिकी पार्लियामेंट।

काँच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [स० कच्छ] काँछ (दे०) जाँघों के बीच से पीछे ले जाकर खोंसा जाने वाला धोती का छोर, लाँग। गुदेंद्रिय के भीतर का भाग, गुदा चक्र। **मुहा०—निकलना**—आघात या श्रम से बुरी दशा होना। (संज्ञा, पु०, दे०) बालू, रेह या खारी मिट्टी के गलाने से बनने वाला एक पार दर्शक पदार्थ, शीशा। "यह जग काँचो काँच सों" —(वि०) कच्चा, अदृढ़, अपक्व। काँचा [(दे०, स्त्री०) **काँची**] "काँची काहू कुसल कुलाल ते कराई तो" —रसि०।

कांचन—(संज्ञा, पु०, सं०) सोना। कचनार, चंपा। धतूरा। नागकेसर। (दे०) **कंचन**। [(वि०) **कांचनीय**।] (संज्ञा, स्त्री०) **कांचनी**—हलदी।]—**पुष्पिका**—मूसली औषधि। **मुहा०—कंचन बरसना (बरसाना)**—सोना बरसना, अति लाभ होना। "कंचन बरसै सोय"—तु०।

कांचनक—(संज्ञा, पु०, सं०) हरताल।

कांचन-कदली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) केला, चंपा।

कांचनचंगा (किंचिनूंचिगा)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कांचन-शृंग] हिमालय की एक चोटी।

कांचनाचल—(संज्ञा, पु०, सं०) हेमाद्रि, हेमकूट, कांचन-बंधु, सुमेरु, स्वर्ण-गिरि, कनकाचल।

कांचनार—(संज्ञा, पु०, सं०) कचनार।

काँचरी, काँचली*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कंचुलिका] काँचुरी, काँचुली (दे०) साँप की केंचुली। अँगिया, चोली, कंचुकी (सं०)। "ज्यों काँचुरी भुअंगम तजहीं"—सूर०।

काँचा—(वि०) कच्चा। अस्थिर। जो शीघ्र ही टूट जाय। अपरिपक्व।

काँची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मेखला, करधनी, क्षुद्र घंटिका। गोटा-पट्टा। घुँघची, गुंजा। एक पुरी, कांजीवरम्, काँची पुरी। (वि०, स्त्री०, दे०) काँची—कच्ची। "काँची पाट भरी धुनि रुई"—प०। [(वि०, यौ०)—**पद**—जघन, नितंब।] "बद्ध नागेन्द्र काँची"—हनु०।

काँछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काँच।

काँछना—(क्रि०, स०, दे०) काछना, सँवारना। पहिनना।

काँछा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काँक्षा, अभिलाषा, आकांक्षा। [वि० **काँछी**]।

काँजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कांजिक] मट्ठा, दही, राई आदि से बनने वाला एक खट्टा पदार्थ, मही या दही का पानी, छाँछ। ······"दूध दही ते जमत है, काँजी ते फटि जाय"—रही०।

काँटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कंटक] बबूलादि वृक्षों के नुकीले अंकुर, कंटक। **मुहा०—निकालना**—बाधा या कष्ट दूर करना, खटका मिटाना। **रास्ते में—(टे) बिछाना**—बाधा या विघ्न डालना।—(टे) **बोना**—बुराई करना, अनिष्ट या हानिप्रद कार्य करना। "जो तोकों काँटा बुवै"—कबी०। (संज्ञा, पु०) मोर, मुर्ग, तीतर आदि पक्षियों के पंजो का काँटा। मैनादि पक्षियों के रोग से निकलने वाला काँटा। जीभ की छोटी नुकीली और खुरखुरी फुंसियाँ, [ब० **काँटो**। (स्त्री०) (अल्प०) **काँटी**] लोहे की बड़ी कील। मछली पकड़ने की झुकी हुई नुकीली अँकुड़ी, कटिया। कुएँ से बरतन निकालने का कंटियों का गुच्छा। नुकीली वस्तु—साही का काँटा। तराजू की डाँड़ी के बीच की सुई, जिससे दोनों पल्लों की बराबरी ज्ञात होती है। काँटेदार तराजू। **मुहा०—(टे) की तौल**—न कम न अधिक, बिलकुल ठीक।—(टे) **में तुलना**—मँहगा होना। (संज्ञा, पु०) नाक में पहिनने की कील, लौंग। अँग्रेजों द्वारा भोजन में प्रयुक्त एक पंजे का सा औजार। घड़ी की सुई। गुणन-फल के शुद्धाशुद्ध की जाँच की क्रिया। [(वि०)—**कँटीला**, (स्त्री०) **कँटीली**।] **मुहा०—(टों) में घसीटना**—अनुपयुक्त या अयोग्य प्रशंसा या आदर करना।—**सा खटकना**—भला या प्रिय न होना, अप्रिय या दुखद होना। "निसि दिन काँटे लौं करेजे कसकत है" —रत्ना० (ऊ० श०)।—**होना (सूख कर)**—बहुत दुबला या हीन होना।—**(टों) पर लोटना**—दुख से तड़पना या बेचैन होना।—(टे) **से काँटा निकालना**—बुराई का बदला बुराई से लेना, बुराई के बुराई से या शत्रु को शत्रु के द्वारा दूर करना, [(सं०) **कंटकेनैव कंटकम्**]।

काँटी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० काँटा—अल्प०] छोटा काँटा। कील। छोटा तराजू। अँकुड़ा, बंड़ी। कंटिया।

काँठा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कंठ] गला। तोते आदि के गले की रेखा। किनारा, बगल। "प्रभु आइ परे सुनि सायर काँठे"—कवि०।

कांड—(संज्ञा, पु०, सं०) दो गाँठों के बीच वाला बाँस या ईख का भाग। गाँड़ा, पोर, शर, सरकंडा, तना, शाखा। डंठल। गुच्छा। किसी कार्य या विषय का विभाग (जैसे—कर्मकांड), एक पूरे प्रसंग वाला

किसी ग्रन्थ का विभाग। समूह, वृंद। घटना। खंड, प्रकरण, दंड, व्यापार। वर्ग, परिच्छेद, अवसर। प्रस्ताव।—**कार**—(संज्ञा, पु०) बाण बनाने वाला।—**ग्रह**—(संज्ञा, पु०) प्रकरणज्ञान।—**पट**—(संज्ञा, पु०) यवनिका, पर्दा। —**पृष्ठ**—(संज्ञा, पु०, सं०) व्याध।—**रुह**—(संज्ञा, स्त्री०) कटुकी वृक्ष।—**वान**—तीरन्दाज।

काँड़ना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कंडन] रौंदना। कुचलना, कूटना। खूब मारना। चावल आदि को ओखली में कूट कर भूसी अलग करना। "भारी भारी रावरे के चाउर सों काँड़िगो"—कवि०। [(प्रे०, क्रि०) **कड़ाना, कँड़वाना**। (संज्ञा, स्त्री०) **कँड़ाई**]।

कांडर्षि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वेद के किसी एक कांड (कर्म, ज्ञान, उपासना) पर विचार करने वाला या उसका अध्यापक, जैसे—जैमिनि।

काँड़ा—(संज्ञा, पु०) दाँतों का कीड़ा, पेड़ों और लकड़ी में लगने वाला कीड़ा।

कांडिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार का अनाज। कुम्हड़ा।

काँड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कांड] लकड़ी का बाड़ा। पोरदार डंडा, बाँस या लकड़ी का पतला सीधा लट्ठा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) ओखली का गड्ढा। लंका का एक नगर।—**कफ़न**—मुर्दे की रथी का सामान।

कांत—(संज्ञा, पु०) [सं० कम्+क्त] पति। श्री कृष्ण। चंद्रमा। विष्णु। शिव। वसंत ऋतु। कुकुम। कार्तिकेय। एक प्रकार का बढ़िया लोहा। कांतसार, अयस्कान्त।

कांता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रिया, सुन्दरी स्त्री, पत्नी "कांताभिचाभिरमयत्यपनीय खेदम्"—भर्तृ०।

कांतार—(संज्ञा, पु०, सं०) महावन। भयानक स्थान, दुर्भेद्य। गहन वन। एक प्रकार की ईख। बाँस। छेद। "कांतारे कुसुमस्फुरतरु वरे"—लो०।

कांतारक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार की ईख, गन्ना।

कांतासक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ईश्वर को पति और अपने को पत्नी मान कर की जाने वाली भक्ति, माधुर्य भक्ति, दाम्पत्य भक्ति।

कान्ताह्व—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रियंगु औषधि।

कांति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दीप्ति, प्रकाश, आभा। शोभा, छवि। चंद्र की १६ कलाओं में से एक। आर्या छंद का एक भेद (पिं०)।—**पाषाण**—चुम्बक पत्थर।—**सार**—एक रसायन।

काँती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बिच्छू का डंक। तीव्र व्यथा। छुरी। कैंची। "कठिन विरह की काँती" —सूर०।

काँथी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कंथा (सं०)। कथरी (दे०), गुदड़ी।

काँदना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० क्रंदन] रोना।

काँदव—(संज्ञा, पु०, सं०) लकड़ी और चूल्हे पर पकाई हुई वस्तु।

काँदविक—(संज्ञा, पु०, सं०) हलवाई। पकाने वाला।

काँदा (कान्दा)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कंद] एक गठीली गुल्म, प्याज़। मूल। (दे०)।

काँदू—(संज्ञा, पु०, सं०) बनिये की एक जाति विशेष, भड़भूजा।

काँदौ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्दम] कीचड़, कीच, कर्दम। **दधि**—एक त्यौहार।

काँध*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्कंध] कंधा, काँधा।

काँधना*—(क्रि०, स०, दे०) [हि० कंधा] कंधे पर उठाना, सँभालना, सिर पर धारण करना, ठानना, मचाना, स्वीकार करना, भार लेना, सहना। "रन-हित आयुध काँधन काँधे"—रघु०।

काँधर—(दे०) 'काँधा'।

काँधा*—(संज्ञा, पु०, दे०) कान्ह, कान्हर, कान्हा (ब्र०)। कृष्ण।

काँधी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कंधा लगाना, स्वीकृति। मुहा०—**काँधी देना**—कंधा देना।

काँप, काँपा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कंपा] बाँस आदि की पतली तीली। पतंग की धनुषाकार तीली। सुअर का खाँग। हाथी दाँत। कान का एक गहना।

काँपना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कंपन] हिलना। थर्राना, डरना। [प्रे०, क्रि० **कँपाना**]

काँपिल्लक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पौधा जिसका नाम कापिल्य है। एक गंध द्रव्य।

काँबलिक—(संज्ञा, पु०, सं०) काँजी।

काँबोज—(संज्ञा, पु०, सं०) कंबोज देश। वहाँ के घोड़े।

काँय-काँय, काँव-काँव—(संज्ञा, पु०) [अनु०] अव्यक्त शब्द, व्यर्थ शोर, कौवे का शब्द। "संपति

मैं कांय-कांय विपति मैं भांय-भांय, कांय-कांय भांय-भांय देखी सब दुनिया"—देव० ।

काँवर, काँवरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० कांध+आवर—प्रत्य०] बाँस की बहँगी, "भरि भरि काँवरि चले कहारा"—तुल० (रा०)। कामला रोग। (वि०) काँवरा [पं० कमला], घबड़ाया हुआ। [(संज्ञा, पु०)—**काँवरिया**—काँवर लेकर यात्रा करने वाला, कामारथी, काँवारथी, कामरी, कामरिया।]

कावरू—(संज्ञा, पु०, दे०) कामरूप (सं०)।

काँस, काँसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० काश] एक प्रकार की घास। "फूले कांस सकल महि छाई"—तुल० (रा०)। "फूल रहे क्यों काँस, वर्षा के जाने से तुम मे इतना क्यों उल्लास"—गिरीश।

काँसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कास्य] ताँबे और जस्ते से बनी एक धातु, कसकुट। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० कासा] भीख माँगने का ठीकरा, खप्पर [(वि०) **काँसी**। (संज्ञा, पु०) [हिं० काँसा+गर —फ़ा०—प्रत्य०] **काँसागर**—काँसे का काम करने वाला।]

कांसी—(संज्ञा, स्त्री०) कांसा, चावल के पेड़ों मे लगन वाला रोग-विशेष।

कांस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) काँसा, कसकुट। [संज्ञा, पु० **कांस्यकार**]

कांस्य युग—(संज्ञा, पु०, सं०) वह युग जो लौह-युग के पहले का माना जाता है और जिसमे हथियार, बर्तन आदि काँसे के बनते थे। इसे ताम्रयुग भी कहते है। [ब्रांज एज]

का—(प्रत्य०, दे०) [सं० क] सम्बन्ध या षष्ठी का चिह्न (व्या०)।

काई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कावार] जल या सीड में होने वाली बारीक घास या वनस्पति-जाल। **मुहा०—छुड़ाना**—मैल हटाना, दुख-दारिद्र्य दूर करना।—**सा फट जाना**—तितर-बितर होना, छँट जाना।—**लगना**—मैला हो जाना। "सरीर लस्यो तजि नीर ज्यों काई"—कवि०। मल, मैल, एक प्रकार का लोहे-ताँबे का मुर्चा।

कांउसिल—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) विशिष्ट व्यक्तियों की सभा या समिति। परिषद्, शासन-सभा।

काऊ* (काहू)—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० कदा] कभी। (सर्व०), [सं० कः] कोई, कोऊ (ब्र०) कुछ। "सपनेहु लखेउ न काऊ"—तुल० (वि०)।

काक—(संज्ञा, पु०, सं०) कौआ, कागा, काग (ब्र०) (संज्ञा, पु०) [अ० कार्क] एक प्रकार की नर्म लकड़ी जिसकी डाट शीशियों में लगाई जाती है।—**गोलक**—(संज्ञा, पु०, सं०) कौवे की आँख की पुतली जो एक ही दोनों आँखों में घूमती है। (यौ०)—**जंघा** (संज्ञा, स्त्री०) गुंजा, घुँघची। मुगवन (मुगौन), लता चकसेनी। **काकाम्ब पुष्पी**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महामुंडी औषधि।—**तालीय**—(वि०) संयोगवश होन वाला, इत्तफ़ाक़िया, अचानक, अकस्मात्। (संज्ञा, पु०)—**तालीय-न्याय**। —**तिक्त**—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० काक जंघा] एक औषधि। [(यौ०)—**काकासुर**।]—**दंत**—(संज्ञा, पु०) असम्भव बात, अद्भुत घटना।—**पक्ष** (**काकपच्छ**)—(संज्ञा, पु०, यौ०) बालों के पट्टे जो दोनों ओर कानो और कनपटियों के ऊपर रहते हैं, जुल्फ, कुल्ला, कौवे के पर। "काक-पच्छ सिर सोहत नीके"—तुल० (रा०)—**पद**—(संज्ञा, पु०, यौ०) छूटे हुए शब्द या वर्ण का स्थान, सूचित करने के लिए लगाया जाने वाला चिन्ह।—**पदी**—(संज्ञा, स्त्री०) एक प्रकार की औषधि।—**बन्ध्या**-(संज्ञा, स्त्री०) सकृत्प्रसूता स्त्री, जिसके एक ही बार संतान होकर रह जाये, फिर दूसरी न हो।—**बलि**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) श्राद्ध-समय कौवों को दिये जान वाले भोजन का भाग, कागौर (दे०)।—**भुशुंडि (कागभुसुंड)**—(संज्ञा, पु०) लोमश ऋषि के शाप से कौवा हो जान वाले एक ब्राह्मण-मुनि जो राम-भक्त और रामायण-वक्ता थे।

काकड़ासिंगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कर्कट-शृंगी] काकड़ा नामक पेड़ मे लगी एक प्रकार की लाह जो दवा के काम मे आती है, ककरासिंघी (दे०)।

काकश्री—(संज्ञा, स्त्री०, स) घुँघची।

काकरीछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ककड़ी, कंकड़ी।

काकरेजा—(संज्ञा, पु०) [हिं० काक-रंजन] एक प्रकार का रंगीन कपड़ा। [(संज्ञा, स्त्री०) **काकरेज़ी** —(फ़ा०) लाल और काला मिला रंग, कोकची। (वि०) काकरेजो रंग का।]

काकल—(संज्ञा, पु०, सं०) कण्ठमणि। कौआ, द्रोणकाक।

काकलक—(संज्ञा, पु०, सं०) कंठमणि, चावल का एक प्रकार।

काकली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मधुर ध्वनि, कल नाद। सेंध लगाने की सवारी। साठी धान। गुंजा। कौवे की स्त्री।

काकलीक—(संज्ञा, पु०, सं०) धीमा, मंद, मधुर स्वर ।

काका—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० **कोका**—बड़ा भाई] बाप का भाई, चाचा । काकोली । घुँघची । मकोय । कौवा । **कागा** । [(स्त्री०) **काकी**—चाची, कौवे की माँदा ।]

काकाकौआ (**काकातूआ**)—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पक्षी विशेष ।

काकाक्षि-गोलक-न्याय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक शब्द या वाक्य को उलट-फेर कर दो भिन्न भिन्न पदार्थों में लगाना ।

काकिणी (**काकिनी**)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, दे०) घुघची, गुंजा । पाँच गंड कौड़ियों के पण का चतुर्थ भाग, । माशा, कौड़ी, छदाम ।

काकु—(संज्ञा, पु०, सं०) छिपी हुई चुटीली बात, व्यङ्ग, ताना । वक्रोक्ति अलंकार के दो भेदों में से एक जिसमे शब्दों की ध्वनि ही से दूसरा अभिप्राय लिया जाता है । (काव्य०) । [(यौ०)—**काकूक्ति** (सं०) व्यङ्ग कथन, कातरोक्ति ।]

काकुत्स्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीराम, **ककुत्स्थ**-वंशज पुरुष ।

काकुद—(संज्ञा, पु०, सं०) तालू, पैर का निचला तल्ला ।

काकुन—(संज्ञा, स्त्री०) एक प्रकार का मोटा अनाज, कँगनी ।

काकुल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कनपटी पर लटकते लंबे बाल, जुल्फ, काकपक्ष ।

काकोदर—(संज्ञा, पु०, सं) साँप ।

काकोल—(संज्ञा, पु०, सं०) नरक-विशेष । एक विषैली धातु ।

काकोली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सतावर की सी एक अप्राप्य औषधि (वैद्य०)

काकोलूकिका—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) काक और उल्लू की सी शत्रुता ।

काक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) कटाक्ष, चढ़ी हुई भौं ।

काग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० काक] कौआ । (संज्ञा, पु०) [अं० कार्क] एक नरम लकड़ी । [(यौ०) **कागासुर**—कृष्ण-द्वारा मारा गया एक दैत्य । **कागावासी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सबेरे कौवा बोलते समय का भाग, एक समय का भाग, एक मोती जो कुछ काला हो ।]

क़ागज़—(संज्ञा, पु०, अ०) सन्, रुई, पटुआ और पेड़ों के गूदे को सड़ाकर बनाया हुआ लिखने का पत्र । [(वि०) **कागज़ी**—कागज का, कागज के से पतले छिलके का, जैसे क़ागज़ी नीबू या बादाम । लिखा हुआ, लिखित ।]—**पत्र**-(अ०, स०) लिखे हुए कागज, प्रामाणिक लेख । दस्तावेज़ । प्रमाण-पत्र । समाचार-पत्र, प्रामिसरीनोट । मृत्यु समय । **मुहा०—काला करना या रंगना**—व्यर्थ कुछ लिखना ।—**की नाव**—अस्थायी वस्तु ।—(**जी**) **फूल—सार**-हीन कृत्रिम (दिखावटी) पदार्थ ।

कागज़ात—(संज्ञा, पु०) [अ० कागज का ब० व०] कागज-पत्र ।

कागज़ी—(वि, अ) कागज का बना हुआ ।—**कार-वाई**—(स्त्री०) लिखा पढ़ी । —**सबूत**—(पु०) लिखित प्रमाण (रिटेन एविडेन्स) । **मुहा०**— (**जी**) **घोड़ा दौड़ाना**—लिखा-पढ़ी करना ।

कागर—(संज्ञा, पु०, दे०) कागज । [हिं० **काग**] चिड़ियों के मुलायम पर जो मुड़ जाते हैं । "कीर के कागर ज्यों नृप-चीर"—तुल० [(वि०) **कागरी**—तुच्छ ।]

कागा—(संज्ञा, पु०, दे०) काग ।

कागारोल—(संज्ञा, पु०) [दे०, काग+रोर—शोर] शोर-गुल, हल्ला-गुल्ला ।

कागौर—(संज्ञा, पु०, दे०) काक-बलि ।

काच—(संज्ञा, पु०) शीश, दर्पण, लेन्स, उपनयन चश्मा । [ग्लास]

काचन—(संज्ञा, पु०, सं०) बेठन या किताब बाँधने की डोरी ।

काचलवण—(संज्ञा, पु०, सं०) कचिया नोन, काला नमक ।

काचाभ—काँच की आभावाला, कांच सदृश । [ग्लासी] ।

काची*—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कच्चा] दूध की हाँडी, दुधहंडी । तीखुर, सिंघाड़े आदि का हलुआ । (वि०, स्त्री०) [सं० काचा—कच्चा] कच्ची । 'काची काहू, कुसल कूलाल ते कराई ती-**रसि०** ।

काछ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कक्ष] पेडू और जाँघ के जोड़ या उसके नीचे तक का स्थान । काँछ या पीछे खोंसने की धोती का छोर, लाँग । अभिनयार्थ नटों का वेश या बनाव । **मुहा०**— **काछना**—वेष बनाना ।

काछना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कक्षा] लाँग या काँछ मारना (खोंसना), वेष बनाना, पहिनना । "तापस भेस बिराजत काछे" तुल० (राम०) । (क्रि०,स०, दे०) [सं० कर्षण] तरल पदार्थ को

हाथ या चम्मच से खींच कर उठाना, काँछना (दे०)। [प्रे० रूप—कँछाना, कँछवाना]

काछनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० काछना] कस कर और रान पर चढ़ा कर पहिनी हुई धोती जिसकी दोनों लाँगें पीछे खोंसी जाती हैं, एक प्रकार का कटि-वस्त्र, काँछनी। [(संज्ञा, पु०, दे०) **काछा, काँछा**]

काछिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काछी की स्त्री।

काछी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कच्छ—जल-प्राय देश] तरकारी बोने और बेचने वाला, मुराई (दे०)।

काछू—(संज्ञा, पु०) [स० कच्छप] कछुवा।

काछे—(संज्ञा, वि०, दे०) [सं० कक्षे] निकट, पास। (क्रि०, स०, दे०) सा० भूत (हि० काछने) पहिने, पहिने हुए।

काज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कार्य] काम, कृत्य, प्रयोजन। अर्थ। व्यवसाय। पेशा। विवाह। कारज (दे०)। "अवसि काज मैं करिहौं तोरा" —तुल० (रामा०)। "सो बिन काज गँवायो"— (वि०)। "**मुहा०—के हेतु, निमित, के** लिये। (संज्ञा, पु०, दे०) [अ० कायजा] बटन फँसाने का छेद या घर।

काजर, काजल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कज्जली] दीपक के धुए की जमी हुई कालिख जो आँखो में लगाई जाती है, अंजन। **मुहा०—धुलाना,—डालना, —देना,—सारना,—लगाना**—(आँखों मे) काजल लगाना।—**पारना**—दीपक के धुएँ को किसी बरतन पर जमाना।—**को कोठरी**—कलंक लगने का स्थान या काम। [(*संज्ञा, स्त्री०, दे०) **काजरी** (काजली) [सं० कजली] वह गाय जिसकी आँखों के चारों ओर काला घेरा हो, काली गाय। कजरी (दे०)।]

क़ाजी—(संज्ञा, पु०, अ०) धर्म- कर्म, रीति-नीति एवं न्याय की व्यवस्था करने वाला (मुसल०)।

काजी—(वि०, दे०) काम-काज करने वाला।

काम—जिससे काम चलता हो, जो उपयोग मे आता हो।

काजू—(संज्ञा, पु०, दे०) [कोंक०—काज्जु] एक पेड़ जिसके फलों की गिरी को भून कर खाते है। इस पेड़ के फलों की गुठली की मींगी या गिरी। —**भाजू**—(वि०, दे०) [हि० काज + भोग] दिखावटी और जो टिकाऊ न हो। (संज्ञा, पु०) काज।

काट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० काटना] काटने की क्रिया या भाव। काटने का ढंग, कटाव, घाव। कपट, चालबाजी। कुश्ती के पेंच का तोड़। (संज्ञा, स्त्री०) मैल, मुर्चा। (यौ०)—**छाँट**—मार काट, कतरन या काटने से बचा हुआ, कमीबेशी, घटाव-बढ़ाव —**मार**—तलवार की लड़ाई।—**कूट**—काटना-छाँटना। "कै गई काट करेजन की"—**मति०**।

काटना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कर्तन] शस्त्रादि से खंड करना, छिन्न-भिन्न करना, कतरना। पीसना। घाव करना। किसी वस्तु का कोई अंश अलग करना। [डिडक्ट] कम करना। वध करना, युद्ध में मारना। ब्योंतना। समय नष्ट करना, रास्ता तय करना। अनुचित प्राप्ति करना। किसी लिखावट को क़लम से काट देना। छेंकना। लकीर से कुछ दूर तक जाने वाले कामों को तैयार करना (सड़क काटना)। लकीरों से विभाग किये जाने वाले काम करना (क्यारी काटना)। बिना शेष बचे एक संख्या का भाग दूसरी में लगाना। कैद भोगना। विषैले जंतु का डंक मारना या डसना। तीक्ष्ण वस्तु का शरीर मे लगकर जलन और छरछराहट होना। एक रेखा का दूसरी के ऊपर ४ कोण बनाते हुए निकल जाना। खंडन करना (किसी मत का), अप्रमाणित करना, बोलते हुए (किसी को) रोककर बीच मे बोलना। दुखद लगना। **मुहा०—(ने) दौड़ना**—चिड़चिड़ाना, खीझना। डरवाना, बुरा लगना।—**(टे) खाना**—बुरा, भयानक और सूना (उजाड़) लगना। चित्त को दुखित करना।—**(टो) तो खून नहीं**—चकित या भयभीत होना।

काटू—(संज्ञा, पु०) [हि० काटना] काटने वाला, डरावना, कटहा। लकड़हारा।

काठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० काष्ठ] पेड़ का स्थूल अंग जो पृथक् हो गया हो, लकड़ी, ईंधन, लक्कड़, शहतीर, लकड़ी की बेनो, कलंदरा। **मुहा०—का उल्लू**—जड़, वज्रमूर्ख।—**होना**—चेतना से रहित होना, स्तब्ध या सूख कर कड़ा होना।—**की हाँड़ी**—एक बार से अधिक न चलने वाली धोखे की दिखावटी वस्तु—"जैसे हाँड़ी काठ की, चढ़ै न दूजी बार"—वृंद०। "जिमि न नवै पुनि उकठा काठू"—तुल० (रा०)।—**मारना,—में पाँव देना (डालना)**—अपराधी को काठ की बेड़ी पहिनाना, जानबूझ कर बंधन में पड़ना या डालना। —**की पुतली होना (कठ-पुतली बनना)**— अशक्त होना।—**चबाना**—दुख से निर्वाह करना।

काठड़ा—(संज्ञा, पु०) [हि० काठ + डा—प्रत्य०] कठौता। [स्त्री० **काठड़ी-कठैली**]

काठिन—(संज्ञा, पु०, सं०) कठोरता, कड़ापन। खजूर।

काठिन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कठिनता, कठिनत्व।

काठियावाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) गुजरात का एक भाग।

काठियावाड़ी—(संज्ञा, पु०) काठियावाड़ का रहने वाला, काठियावाड़ का घोड़ा।

काठी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० काठ] घोड़ों, ऊँटों आदि की पीठ पर कसने की ज़ीन, जिसमें काठ लगा रहता है, शरीर की गठन। तलवार या कटार की म्यान। (वि०) काठियावाड़ का। ईंधन। "हाड़ जराइ दीन्ह जस काठी"—प०।

काड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) अरहर का सूखा डंठल, रहठा।

काढ़ना—(क्रि०, स०, दे०) कर्षण (सं०), किसी वस्तु से कोई वस्तु बाहर करना, निकालना। आवरण हटा कर प्रत्यक्ष करना। अलग करना। लकड़ी-कपड़े आदि पर बेलबूटे बनाना। उरेहना। उधार लेना। कड़ाह से पकाकर निकालना, छानना। "... काम काढ़ि चुप रहै"—गिरि०। "सो जनु हमरे माथे काढ़ा"—"जहँ तहँ मनहुं चित्र लिखि काढ़े" —तुल० (रा०)।

काढ़ा—(संज्ञा, पु०) [हिं० काढ़ना] औषधियों को पानी में उबाल या औटाकर बनाया हुआ शरबत, क्वाथ, जोशाँदा।

काणा—(वि०, सं०) एकाक्ष, एक आँख का, [काना दे०]।

काण्व—(संज्ञा, पु०, सं०) कण्ववंशीय।

कातंत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) कलाप व्याकरण।

कातना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कर्तन] रुई को ऐंठ या बट कर तागा बनाना, चरखा चलाना। [(संज्ञा, पु०) **काता**—तागा, डोरा।] **मुहा०—बुढ़िया का**—(ता)-महीन सूत सी एक मिठाई।

कातर—(वि०, सं०) अधीर, व्याकुल, भयभीत, आर्त, कादर (दे०), चंचल। दुखित। बुज़दिल। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० कर्त] कोल्हू में बैठने का तख्ता। (संज्ञा, पु०, दे०) जबड़ा, एक मछली। [संज्ञा, स्त्री०, अ०, सं० **कातरता**—अधीरता]।

कातिक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कार्तिक] क्वार के बाद का महीना, कार्तिक। शुक-विशेष। [(वि०) **कातिकी** [सं० कार्तिकी] कतकी (दे०) कार्तिक-पूर्णिमा, कार्तिक का]

क़ातिब—(संज्ञा, पु०, अ०) लिखने वाला, लेखक।

क़ातिल—(वि०, अ०) घातक, हत्यारा। (संज्ञा, पु०) घातक व्यक्ति।

काती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कर्त्री] कैंची, कतरनी। चाकू, छुरी, छोटी तलवार, कत्ती।

कातीय—(वि०, सं०) कात्यायन-सम्बन्धी। (पु०) कात्यायन का शिष्य।

कात्यायन—(संज्ञा, पु०, सं०) कत ऋषि के गोत्र में उत्पन्न एक ऋषि। विश्वामित्र के वंशज, गोभिल-पुत्र। सोमदत्त के पुत्र वररुचि। पाली व्याकरण-कार। पाणिनि-सूत्रों पर वार्तिककार एक बौद्ध आचार्य, इनके ग्रन्थ हैं—श्रौत सूत्र और गृह्यसूत्र, कर्मप्रदीप-स्मृति।

कात्यायिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कत गोत्रोत्पन्ना स्त्री, कात्यायन-पत्नी। कषाय वस्त्र-धारिणी अधेड़ विधवा। दुर्गादेवी। कात्यायन ऋषि-पूजित देवी (मार्कं० पु०)। याज्ञवल्क्य जी की पत्नी।

काथरी—(संज्ञा, स्त्री०) गुदड़ी-कथरी, फटा चिथड़ा।

कादम्ब—(संज्ञा, पु०, सं०) कदम्ब वृक्ष। राजहंस। एक प्रकार की मदिरा। ईख। वाण। एक प्राचीन राजवंश।

कादम्बक—(संज्ञा, पु०, सं०) बाण।

कादम्बर—(संज्ञा, पु०) वह मद्य जो कदम्ब के फूलों से बनता है। (संज्ञा, पु०) कदम्ब तरु। गुड़। दही के ऊपर की साढ़ी।

कादम्बरी—(संज्ञा, पु०, सं०) कोकिल। सरस्वती। मदिरा। मैना। वाणभट्टकृत एक आख्यायिका-ग्रन्थ।

कादम्बिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मेघ-माला।

कादर—(वि०, दे०) [सं० कातर] डरपोक, भीरु, अधीर, कायर। [(संज्ञा, स्त्री०) **कादरता**। **कदराई** (दे०)।] "कादर करत मोहिं बादर नये नये।"

कादिरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) एक प्रकार की चोली।

कान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्ण] शब्द-ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय, काना (दे०)। श्रवण, श्रुति, श्रोत्र। **मुहा०—उठाना**-आहट लेना, चौकन्ना होना, सचेत होकर सुनना।—**उमेठना** (ऐंठना)-दण्ड देने के लिये कान मरोड़ना,—**गरम करना, —खींचना,—उखाड़ना**-कान ऐंठना, किसी काम के न करने की प्रतिज्ञा करना।—**करना**-सुनना, ध्यान देना। "बालक बचन करिय नहिं

काना"—तुल० (रा०)। शपथ करना, दाब मानना।—**काटना**-मात करना, बढ़ कर (होना)। —**का कच्चा**-बिना विचारे किसी के कहने पर विश्वास कर लेने वाला।—**खड़े करना**-सचेत या सावधान करना (होना)।—**खाना (खा जाना)** -बहुत शोरगुल या बातें करना।—**खोलना**-सध्यान एवं सावधान होकर सुनना।—**फोड़ना (फाड़ना)** -शोर करना।—**गरम करना**-कान ऐंठना। —**पूँछ दबा कर निकल जाना**-चुपचाप या बिना विरोध किए चला जाना।—**खड़े होना**-भयभीत या सचेत होना।—**देना (किसी बात पर) या धरना**-ध्यान देना, ध्यान से सुनना। "सुर-असुर ऋषि-मुनि कान दीन्हे"—तुल० (रा०)। —**पकड़ना**-कान उमेठना, अपनी भूल या छोटाई स्वीकार करना। (**किसी बात से**)—**पकड़ना**-पछतावे के साथ किसी काम के फिर न करने की प्रतिज्ञा करना।—**पर जूँ न रेंगना**-कुछ भी परवा न होना।—**पर हाथ रखना**-इंकार करना।—**पकड़ना**-दंड के लिये कान मरोड़ना, संकल्प करना, दंड स्वीकार कर क्षमा माँगना।—**फुँकवाना**-गुरु-मंत्र लेना।—**फूँकना**-मंत्र देना, चेला बनाना, दीक्षा देना, उलटी-सीधी बात कहना। —**फूटना**-बहरा होना, किसी की कुछ न सुनना। —**फटना**-तीव्र स्वर से कानों को कष्ट होना। —**भरना**-किसी के विरुद्ध किसी के मन में कोई बात बैठा देना, ख्याल ख़राब करना, कान फूँकना। —**मलना (पकड़ना, ऐंठना)**-दण्डार्थ कान उमेठना, भूल मान कर उसके लिये पछताना।—**में कहना**-केवल उसी व्यक्ति को सुनाने के लिये धीरे से कहना।—**में उँगली देना (डालना)**-उदासीन होकर सुनना।—**में तेल डाले बैठना (सो रहना)**-बात सुन कर भी ध्यान न देना। —**में डाल देना**-सुना देना।—**में रस डालना** -श्रवण-सुखद मधुर बात सुनाना।—**में पड़ना** -सुनाई पड़ जाना, सुनना।—**न हिलाना**-कुछ उत्तर न देना, उपेक्षा भाव रखना।—**लगाना** -सध्यान सुनने के लिये सावधान होना, सचेत हो सुनना। (**अपने ही**)—**तक (में) रखना**-सुन कर किसी और को न सुनाना। **एक—से दूसरे में होना**-किसी बात का फैल जाना।— (**ना**) **कानों करना**-चर्चा करना, अफवाह, उड़ाना।—**तक पहुँचाना (पहुँचना)** किसी को सुना देना या सुन लेना। **कानों—खबर न होना**-सुनने में न आना, जरा भी खबर न होना। **आधे—सुनना (न)**-थोड़ा सुनना (न) ..."राधे कहूँ आधे कान यह सुनि पावै ना।" श्रवण-शक्ति। हल के अगले भाग में बाँधने का एक गहना। चारपाई का टेढ़ापन। कनेव। किसी चीज़ का निकला हुआ कोना जो भद्दा लगे। तराजू का पसंगा। तोप या बन्दूक़ में रंजक रखने और बत्ती देने का स्थान। रंजकदानी, नाव की पतवार। [संज्ञा, स्त्री०, दे० **कानि—**मर्यादा।]

कानक—(वि०, सं०) सोने का। (पु०) जमालगोटा, जयपाल बीज।

कानन—(संज्ञा, पु०, सं०) जंगल, वन, घर। "कानन कठिन भयङ्कर भारी"—तुल०।

काना—(वि०, दे०) [सं० **काण**] एक फूटी आँख वाला, एकाक्ष। (वि०) [सं० **कर्णक**] कीड़ों के द्वारा कुछ खाया हुआ फल। (संज्ञा, पु०) [सं० **कर्ण**] आ की मात्रा (ा), पाँसे की बिंदी, जैसे तीन काने। (वि०) तिरछा, टेढ़ा या निकला हुआ भाग। (संज्ञा, पु०) कान।

कानाकानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कर्ण—कर्ण] कानाफूसी, चर्चा।

कानाफूसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कान + फुस-फुस अनु०] कान के पास धीरे से कही जाने वाली बात, कानाबाती (दे०)।

कानि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लोकलज्जा, मर्यादा। लिहाज, संकोच।

कानिष्ठिक—(संज्ञा, पु०, सं०) छिगुनी।

कानी—(वि०, स्त्री०) [हि० काना] एक फूटी आँख-वाली।—**कौड़ी**—फूटी या झंझी कौड़ी। (वि०, स्त्री०) [सं० **कनीनी**] सबसे छोटी उँगली, (दे०) कानि।

कानीन—(संज्ञा, पु०, सं०) कुमारी कन्या से उत्पन्न, अनूढ़ा-जात। **कर्ण**। व्यास।

कानीहौस—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० काइन-हाउस] हानि करने वाले पशुओं को पकड़ कर बन्द करने का घर, काँदीहौस, काँजीहौस (दे०)।

कानून—(संज्ञा, पु०) [अ० भू० केनान] राज्य के नियम, विधि [ला]। **मुहा०—छाँटना (करना)** -क़ानूनी बहस, कुतर्क या हुज्जत करना।—**बूकना (बघारना)**-तर्क-कुतर्क करना।—**दाँ**-(वि०) हुज्जती, क़ानून जानने वाला। [**कानूनिया**—कुतर्की। **कानूनी**—(वि०, अ०) कानून-सम्बन्धी, नियमानुकूल, अदालती, हुज्जती, तकरार करने वाला।]—**गो**-(पु०) माल का एक कर्मचारी जो पटवारियों के कागजातों की जाँच करता है।

कान्यकुब्ज, कानकुब्ज—(संज्ञा, पु०, सं०) कन्नौज के आस-पास का प्राचीन प्रान्त, इसके निवासी। यहाँ के ब्राह्मण। कनौजिया (दे०)।

कान्ह, कान्हर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कृष्ण] श्रीकृष्ण, कान्हा।

कान्हडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्णाट] एक प्रकार का राग (संगी०)।

कान्हा—(संज्ञा, पु०, दे०) श्रीकृष्ण। रसिया। छैला। "जिस अंतर्दृग से सूरदास ने कान्हा को" —ऊ०।

कापट्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कपटता, शठता, छल।

कापथ—(संज्ञा, पु०, सं०) कुपथ, कुमार्ग।

कापर*, कपरा—(संज्ञा, पु०, दे०) कपड़ा। "कापर रँगे रंग नहिं होई"—प०।

कापाल—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन अस्त्र। वायबिडंग। एक प्रकार की संधि (नाट०)।

कापालिक—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्ण-संकर, वाममार्गी जाति। अघोरी। तांत्रिक साधु जो नर-कपाल रखते और मद्य-मांस का सेवन करते हैं। एक प्रकार का कुष्ट।

कापाली—(संज्ञा, पु०) [सं० कापालिन] शिव। एक प्रकार का वर्ण-संकर। कपाली (दे०)। [स्त्री० **कपालिनी**]

कापिल—(वि०, सं०) कपिल-सम्बन्धी, कपिल का। भूरा। (संज्ञा, पु०, सं०) सांख्य दर्शन। सांख्य का अनुयायी। भूरा रंग।

कापिश—(संज्ञा, पु०, सं०) मदिरा का एक प्रकार।

कापिशायन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक देवता। मदिरा।

कापुरुष—(संज्ञा, पु०, सं०) कायर, डरपोक, निकम्मा। [संज्ञा, भा०, **कापुरुषत्व**]

क़ाफ़िया—(संज्ञा, पु०, अ०) अंत्यानुप्रास, तुक। —**बन्दी**-तुकबन्दी। **मुहा०—तंग पड़ना**-तुक का शिथिल होना, ठीक तुक न मिलना। कार्य-सिद्धि में अड़चन पड़ना।—**तंग करना**-हैरान या परेशान करना, नाकों दम करना।

काफ़िर—(वि०, अ०) मुसलमानों से भिन्न धर्मानुयायी। अनीश्वरवादी। निष्ठुर, दुष्ट। काफिर देशवासी। (संज्ञा, पु०) अफ्रीका की एक हब्शी जाति। [वि० **काफ़िरी**]

काफ़िला—(संज्ञा, पु०, अ०) यात्रियों का समूह। "क़ाफ़िले तुमसे बढ़ गये कोसों"—हाली०।

काफ़ी—(वि०, अ०) यथेष्ट, यथोचित, पर्याप्त, पूरा। कहवा।

काफ़ूर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [सं० कर्पूर] कपूर। [(वि०) **काफ़ूरी**—कपूर-सम्बन्धी, कपूर के रंग का।] **मुहा०—होना**—कपूर या कपूर के रङ्ग का उड़ जाना, चम्पत होना। (संज्ञा पु०) काफ़ूरीरंग—कुछ हरापन लिए सफ़ेद रङ्ग।

काब—(संज्ञा, स्त्री०) (तु०) बड़ी रकाबी।

काबर—(वि०, दे०) [सं० कर्बुर, प्रा० कब्बुर] चितकबरा, एक प्रकार की भूमि (उजाड़)।

काबा—(संज्ञा, पु०, अ०) मक्के (अरब) शहर का एक स्थान जहाँ मुहम्मद साहब रहते थे और जहाँ मुसलमान हज करने जाते हैं। मुसलमानों का तीर्थ।

क़ाबिज़—(वि०, अ०) कब्जा रखने वाला, अधिकारी। दस्त रोकने वाला। मलावरोधक। गरिष्ट।

क़ाबिल—(वि०, अ०) योग्य, विद्वान। [(संज्ञा, स्त्री०) **काबिलीयत**—योग्यता, विद्वत्ता।]

काबिस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कपिश] मिट्टी के बरतनों के रँगने का रंग।

काबुक—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कबूतरों का दरबा।

काबुली—(वि०) [हि० काबुल] काबुल-वासी। काबुल का।

क़ाबू—(संज्ञा, पु०, तु०) वश, अधिकार, जोर।

काम—(संज्ञा, पु०) [सं० कम्+घञ्] अनंग, मदन, कंदर्प, कुसुमायुध। इच्छा, इंद्रियों की स्वविषयों की ओर प्रवृत्ति (कामशा०) मैथुनेच्छा। चार पदार्थों (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) में से एक। वासना, विषय। कर्म, व्यवसाय, धंधा, नौकरी। कारीगरी। (फ़ा०) अभिलाषा, इरादा, मतलब। तालू। **मुहा०—कामना, कामेच्छा**-विषयेच्छा, **—वासना**। (संज्ञा, पु०) [सं० कर्म, प्रा० कम्म] व्यापार, कार्य, काज।—**कला**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०] मैथुन। रति, कामदेव की स्त्री। कामशास्त्र का प्रयोगात्मक रूप। चन्द्रमा की कला।—**काज**-(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) कारबार, ब्याह-शादी आदि।—**काजी**-(वि०) काम या उद्योग-धन्धे वाला, उद्यमी, अध्यवसायी, परिश्रमी।—**कातर**-(वि०, यौ०, सं०) कामातुर।—**कान्ता**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) काम-पत्नी, रति, काम-वल्लभा, काम-कामिनी।—**केलि,—क्रीडा**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) रति, मैथुन, सम्भोग, सहवास।—**चलाऊ**-(वि०, यौ०) [हि० काम+

चलाना] जिससे किसी प्रकार कुछ काम निकल सके, बहुत अंश में काम देने वाला।**—चारी**–(वि०, सं०) कामुक । स्वच्छंद, विचरणशील, उच्छृंखल, स्वेच्छाचारी, मनमाना घूमने या करने वाला। [(संज्ञा, स्त्री०) **कामचारिता**। (स्त्री०) **कामचारिणी**]।**—चोर**–(वि०, यौ०) [हि० काम+चोर] काम से जी चुराने वाला, अकर्मण्य, आलसी। **—ज**–(वि०, सं०) वासनोत्पन्न, कामजन्य।**—जित्**–(वि०, सं०) काम को जीतने वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) शिव, कार्तिकेय, जिन देव, कामविजेता। **—ज्वर**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक प्रकार का ज्वर जो स्त्रियों या पुरुषों को अखंड ब्रह्मचर्य पालने से हो जाता है, काम-ताप।**—तरु**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कल्पवृक्ष।**—द**–(वि०, सं०) मनोरथ पूरा करने वाला, अभीष्टदाता। [स्त्री० **कामदा**]। **—मणि**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) चिंतामणि।**—दहन**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव को जलाने वाले शिव, मदनारि, कामारि।**—दा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कामधेनु, भगवती, १० वर्णों का एक वृत्त (पिं०)।**—बाण**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव के पाँच बाँण—मोहन, उन्मादन, संतापन, शोषण, निश्चेष्टीकरण। पाँच पुष्प बाँण—लाल कमल, अशोक, आम्रमंजरी, चमेली, नील कमल। पंचशर।**—मंदिर**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्त्रियों का गुह्य स्थान, योनि।**—लोल**–(वि०, सं०) चंचल, चलचित्त।**—वल्लभा**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) रति, कामप्रिया। कामकामिनी।**—वासना**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) काम या विषय की इच्छा।**—शर**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामबाण। **—शास्त्र**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०, स्त्री०) पुरुषों के समागम आदि के व्यावहारों या विधानों का एक शास्त्र।**—सखा**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० कामसखा] वसंत, कुसुमाकर, काम-दूत।**—सूत्र**–(संज्ञा, पु०, सं०) महर्षि वात्स्यायन कृत कामशास्त्र का एक प्रमुख ग्रंथ। **मुहा०—अटकना**–आवश्यकता होना, गरज लगना। वास्ता पड़ना।**—आना**–उपयोग में आना, लड़ाई में मारा जाना। उपयोगी या सहायक होना, सहारा देना।**—करना**–प्रभाव वा असर करना, फल उत्पन्न करना।**—चलना**–निर्वाह होना, काम जारी रहना।**—चलाना**–निर्वाह-गुजर करना, कार्य को जारी करना।**—तमाम करना**–काम पूरा करना, मार डालना। "आखिर काम तमाम किया"।**—निकालना**–मतलब पूरा करना, प्रयोजन सिद्ध करना, कार्य-निर्वाह करना, आवश्यकता पूरी करना।**—पड़ना**–काम या स्वार्थ अटकना, उपयोग में आना।**—में आना (लाना)**–प्रयोग मे आना (लाना), अभीष्ट मे सहायता देना।**—लगना**–आवश्यकता पड़ना, नौकरी मिलना।**—सधना (सरना)**–काम निकलना। **—होना**–कार्य सिद्ध होना, थक जाना, अधिक कष्ट अनुभव करना। कठिन शक्ति या कौशल का कार्य।**—रखना**–कठिन होना। प्रयोजन, रखना, वास्ता रखना। **किसी से—पड़ना**–पाला पड़ना, व्यवहार या सम्बन्ध होना, गरज पड़ना।**—से—रखना**–प्रयोजनीय बात पर ध्यान रखना, व्यर्थ की बातों में न पड़ना। उपयोग, व्यवहार।**—का**–उपयोगी, व्यवहार का।**—देना**–उपयोग में आना।**—में लाना**–वर्तना, प्रयोग करना। कार-बार, रोजगार, कारीगरी, रचना, बेल-बूटे या नक्काशी का काम, कला-कौशल। **—धाम**–कार्य। रति-मंदिर।

कामकार—(वि०, सं०) कामी, कामासक्त। सम्भोगी, विषयी, विलासी।

कामगार—(संज्ञा, पु०, दे०) कामदार, कारिंदा। (वि०) बेल-बूटेदार।

कामड़िया—(संज्ञा, पु०, दे०) [वि० कामरी] रा:-देव के मतानुयायी चमार साधु।

कामता*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कामद] चित्रकूट पर्वत। [यौ० **कामता-नाथ**]।

कामदानी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० काम+दानी प्रत्य०]—तार या सलमें-सितारे से बने बेल-बूटे।

कामदार—(संज्ञा, पु०) [हि० काम+दार प्रत्य०] कारिंदा, प्रबंध-कर्ता। (वि०) सलमे-सितारे या कलाबत्तू आदि के बेल-बूटे वाला।

कामदिलाऊ दफ्तर—(संज्ञा, पु०) काम दिलाने वाला कार्यालय, रोजगार दफ्तर। [एम्प्लायमेण्ट एक्सचेंज]।

कामदुहा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कामधेनु, कामद गौ, सुर-गौ। "खेहि मां कामदुहां प्रसन्नाम्"—रघु०।

कामदेव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्त्री-पुरुष को संभोग की प्रेरणा देने वाला एक देवता, स्मर, मार, मदन, कंदर्प, वीर्य, संभोगेच्छा।

काम-धाम—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० काम+धाम अनु०]—काम-काज। (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) काम का स्थान, योनि, स्त्री को गुह्येन्द्रिय।

कामधुक्*—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कामधेनु, सुरभी गाय ।

कामधेनु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इच्छा-फल देने वाली देवताओं की गाय जो सागर से १४ रत्नों के साथ निकली थी, वशिष्ठ की शबला (नंदिनी) जिसके लिये विश्वामित्र से युद्ध हुआ, जिसने दिलीप को पुत्र दिया था (पुरा०, रघु०) ।

कामरिपु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामारि—शिव, मदन-विजेता, मदनारि ।

कामरुचि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक प्रकार का अस्त्र ।

कामना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इच्छा, मनोरथ ।

कामयाब—(वि०, फ़ा०) सफल, कृतकार्य । [(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) **कामयाबी**—सफलता ।]

कामरी, कामरिया, कामरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कंवल] कमली, कमरी, कामली (दे०) ।

कामरू—(संज्ञा, पु०, दे०) कामरूप-प्रदेश ।

कामरूप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामाख्या देवी का प्रदेश (आसाम), कामाचा । शत्रु के अस्त्रों को व्यर्थ करने वाला एक प्राचीन अस्त्र । २६ मात्राओं का एक छंद, (पिं०) । देवता । (वि०) मनमाना या इच्छानुसार रूप बनाने वाला । "काम-रूप केहि कारन आया"—तुल० (रा०) । [वि० **कामरूपी**—(संज्ञा, पु०, सं०) एक विद्याधर ।]

कामल, कामला—(संज्ञा, पु०, सं०) **कामलक**—रोग, कमल या पीलिया रोग ।

कामवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संभोगवासना वाली स्त्री । "कामवती नायिका नवेली अलबेली खेली" —कालि० ।

कामवशायिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) योगियों की आठ सिद्धियों में से एक, जिससे इंद्रियाँ वश में आ जाती है, सत्य-संकल्पता ।

कामवान्—(वि०, सं०) संभोगेच्छा वाला ।

कामा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० काम] दो गुरु वर्ण वाला एक वृत्त (पिं०) । (संज्ञा, पु०, अं०) विराम, (दे०) काम ।

कामाक्ष्या (कामाक्षी)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवी की एक मूर्ति जो आसाम के कामरूप प्रान्त मे है [दे० **कामाख्या, कमच्छा**] ।

कामातुर—(वि०, यौ०, सं०) काम-वेग से व्याकुल, कामासक्त, कामार्त, काम-पीड़ित । [वि० **कामी-कामुक**—भोगी] ।

कामात्मज—(संज्ञा, पु०, सं०) अनिरुद्ध ।

कामात्मा—(वि०, सं०) लम्पट, कामलोलुप, कामुक, व्यभिचारी, विषयभोग-लिप्सु ।

कामाद्रि—(संज्ञा, पु०, सं०) आसाम का एक पहाड़ ।

कामाधिकार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रेमोत्पत्ति, स्वेच्छाधीन । [वि० **कामाधिकारी**] ।

कामाधिष्ठ—(वि०, सं०) कामवशग ।

कामान्ध—(वि०, सं०) काम के वशीभूत तथा हिता-हित-विवेक-शून्य । "कामांधोनैव पश्यति—" ।

कामायनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मनु की स्त्री का नाम, श्रद्धा का एक नाम ।

कामायुध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव के बाण । आमादि पुष्प । सुमनास्त्र ।

कामारण्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मनोहर उप-वन, कामोपवन ।

कामारथी (कामार्थी)—(वि०, दे०, सं०) कामेच्छुक । (संज्ञा, पु०, दे०) काँवाँरथी ।

कामारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामरिपु, शिव, मदनारि, महादेव, मन्मथारि, स्मरारि ।

कामार्त—(वि०, सं०) कामातुर, कामासक्त, काम-वश, काम-विधुर, कामकातर ।

कामाल—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, बलराम ।

कामावशायिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आठ सिद्धियों मे से एक, सत्य-संकल्प ।

कामास्त्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुमन-शर, कुसुमास्त्र ।

कामिक—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्रावण के कृष्ण पक्ष की एकादशी ।

कामिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह शक्ति या गुण जो काम-वासना उत्पन्न करता है, कामी होने का भाव । [सेक्सुएलिटी] ।

कामिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कामवती स्त्री, सुंदरी, युवती, कामयुक्ता । मदिरा । दारुहल्दी । मालकोष राग की एक रागिनी, [**कामिनि** दे०] ।

कामिनी-मोहन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्रग्विणी छंद का एक नाम (पिं०) ।

कामिल—(वि०, अ०) पूरा, समूचा । योग्य । व्युत्पन्न । पूर्ण, निपुण ।

कामी—(वि०) [सं० काम + णिन्] कामना रखने वाला । इच्छुक, विषयी, कामुक । (संज्ञा, पु०, सं०) चकवा । कबूतर । सारस । चंद्रमा । काकड़ासिंगी । चिड़ा । विष्णु ।

कामुक—(वि०) [सं० कम् + उकण्] इच्छावाला, कामी, विषयी, लम्पट । [(वि०, स्त्री०) **कामुका, कामुकी**] ।

कामेश्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक भैरवी (तंत्र) कामाख्या की पाँच मूर्तियों में से एक। [पु० **कामेश्वर**—शिव]।

कामोद—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राग (संगी०)। [स्त्री० **कामोदा**—एक रागिनी]।

कामोद्दीपन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामोत्कर्ष सहवासेच्छा की उत्तेजना, कामोत्तेजन। [(वि०) **कामोद्दीपक**—कामेच्छावर्धक, कामोत्तेजक, कामोत्कर्षक।]

काम्य—(वि०) [सं० कम्+ध्यण्] कामनीय, कामना-योग्य, इच्छित। जिससे कामना की सिद्धि हो, कमनीय। (संज्ञा, पु०, सं०) किसी कामिनी या कामना की सिद्धि के लिए किया जाने वाला यज्ञ या कर्म विशेष [यौ० **काम्यकर्म** । (संज्ञा, पु०, सं०) **काम्यत्व**]—आकांक्षा।—**दान**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामना-सहित या नैमित्तिक दान।

काम्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इच्छा, कामना।

काम्येष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कामना के सिद्ध्यर्थ यज्ञ-विशेष।

काय—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राजापत्यतीर्थ, शरीर, काया (दे०), कनिष्ठा और अनामिका के नीचे का भाग (स्मृति०)। प्रजापति का हवि। मूर्ति। प्राजापत्य विवाह। मूलधन। समुदाय—"मन वच काय मैं हमारे रहिबो करै"—अभि०। (वि०, सं०) प्रजापति-सम्बन्धी। (वि०)—**स्थित**–देहस्थ। [(वि०)—**क**–शरीर-सम्बन्धी, देही, जीव, दैहिक, कायिक।] —**क्लेश**–(संज्ञा, पु०, सं०) देह का कष्ट।—**चिकित्सा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्वर, कुष्ठादि सर्वांग-व्यापी रोगों के उपशमन की व्यवस्था (वैद्य०)। —**जा**–(संज्ञा, पु०) [सं० कायजा] घोड़े की लगाम की डोर जिसे पूँछ में बाँधते हैं। (वि०, स्त्री०) तनुजा, देह से उत्पन्ना। [(पु०)—**ज**–तनुज, देह-जात, कायजन्य।]—**जात**–(संज्ञा, पु०, सं०) आत्मज, देह से उत्पन्न, तनुज, दैहिक [स्त्री० **काय-जाता**—तनुजा]।

कायथ—(संज्ञा, पु०, दे०) कायस्थ।

क़ायदा—(संज्ञा, पु०) [अ० कायदः] नियम, रीति, ढङ्ग, विधि, क्रम, विधान, व्यवस्था।

कायफल (कायफर)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कट्फल] एक वृक्ष जिसकी छाल दवा के काम में आती है।

क़ायम—(वि०, अ०) स्थिर, निर्धारित, निश्चित, मुक़र्रर। [(वि०, यौ०)—**मुक़ाम**–अ० स्थानापन्न, एवज़ी।]

कायमनोवाक्य—(वि०, यौ०) [सं० काय+मनस्+वच्+ध्यण्] मनसा-वाचा-कर्मणा, देह-मन-वचन से।

कायर—(वि०) [सं० कातर] कापुरुष, भीरु, डरपोक। [संज्ञा, स्त्री०, सं० **कायरता (कातरता), कादरता**—भीरुता, कदराई।]

कायल—(वि०, अ०) जो तर्क-पुष्ट या सिद्ध बात को मान ले, कबूल करने वाला, लज्जित। [(संज्ञा, स्त्री०) **कायली**—लज्जा, ग्लानि, मथानी, सुस्ती।

कायव्यूह—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वात, पित्त, कफ, त्वक्, रक्त, मांस आदि के स्थान और विभाग का क्रम (वैद्य०)। स्वकर्म-भोगार्थ योगियों की चित्त में एक-एक इन्द्रिय और अङ्ग की कल्पना (योग०)। सैनिकों का घेरा। देहव्यूह।

कायस्थ—(वि०, सं०) काया या देह में स्थित। (संज्ञा, पु०, सं०) जीवात्मा। परमात्मा। एक जाति। (स्त्री०) **कायस्था**—हरीतकी, आँवला, छोटी बड़ी इलायची, तुलसी, काकोली। "कायस्थेनोदरस्थेन"।

काया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० काय] शरीर।—**कल्प**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) औषधियों से वृद्ध शरीर को पुनः तरुण और सशक्त करने की क्रिया, कायान्तर।—**पलट**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० काया+पलटना] भारी हेर-फेर या परिवर्तन होना। एक शरीर का दूसरे में बदलना। रूपान्तर होना। **मुहा०—काया पलट होना (जाना)**–रूपान्तर, और से और हो जाना।

कायिक—(वि०, सं०) शरीर-सम्बन्धी, देह-कृत या उत्पन्न, दैहिक। संघ-सम्बन्धी (बौद्ध)। एक प्रकार का अनुभव (काव्य०)।

कायोढज—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राजापत्य विवाह से उत्पन्न हुआ पुत्र।

कारंड (कारंडव)—(संज्ञा, पु०, सं०) हंस या बत्तख जाति का पक्षी।

कारंधमी—(संज्ञा, पु०, सं०) रसायनी, कीमियागर, रासायनिक।

कार—(संज्ञा, पु०) [सं० कृ+घञ्] क्रिया, कार्य। "कार करते शिकारियों का"—हि०। करने, बनाने या रचने वाला, जैसे ग्रन्थकार। एक शब्द जो वर्णों के आगे लग कर उनका स्वतंत्र बोध कराता है, जैसे, चकार। एक शब्द जो अनुकृत ध्वनि के

साथ लग कर उसका संज्ञावत् बोध कराता है, जैसे, चीत्कार। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) कार्य, काम। उद्यम, उपाय। (वि०, दे०) काला। (संज्ञा, पु०, अं०) मोटर, गाड़ी।—**बार**-(पु०) काम-धंधा।—**बारी**-(वि०, पु०) काम धंधे वाला।

कारक—(वि०) [कृ+एवुल्] करने वाला, जैसे—हानिकारक। (संज्ञा, पु०, सं०) संज्ञा या सर्वनाम की वह अवस्था जिसके द्वारा वाक्य में क्रिया के साथ उनका सम्बन्ध प्रकट होता है। [ऐक्टिंग, आपरेटर]। (व्याक०), निमित्त।

कारकदीपक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक प्रकार का अर्थालङ्कार जिसमें कई क्रियाओं का अन्वय एक ही कर्ता के साथ प्रकट किया जाता है। (काव्य०)।

कारकुन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) प्रबन्धकर्ता, कारिंदा, कार्यवाहक, प्रबंधक।

कारखाना—(संज्ञा, पु०, फा०) व्यापारिक वस्तुओं के बनाने का स्थान, [फैक्टरी] कार-बार। कार्यालय। व्यवसाय। घटना, दृश्य।

कारगर—(वि०, फ़ा०) प्रभाव-जनक, असर करने वाला। उपयोगी। सफल।

कारगुजार—(वि०, यौ०, फ़ा०) स्वकर्तव्य का पूर्णतया पालन करने वाला। [(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) **कारगुजारी**—कर्तव्य-पालन, होशियारी, कार्य-कुशलता, कर्मण्यता।]

कारचोब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लकड़ी का चौखटा जिस पर कपड़ा तान कर ज़रदोजी या क़सीदे का काम बनाया जाता है। अड्डा। जरदोजी या क़सीदे का काम करनेवाला, ज़रदोज। [(वि०, फ़ा०) **कारचोबी**—जरदोज़ी का। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जरदोज़ी, गुलकारी, क़सीदाकारी।]

कारज*—(संज्ञा, पु०, दे०) कार्य (सं०), काम, काज। "जब लौं कारज होय"—गिर०।

कारटा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० करट] कौवा, काक, काग।

कारटून—(संज्ञा, पु०, अं०) व्यंग्य चित्र, रेखाओं के आधार पर बनाया गया सामयिक चित्र।

कारण, कारन (दे०)—(संज्ञा, पु०) [सं० कृ+णिच+ल्युट] जिससे कार्य की सिद्धि हो। हेतु, सबब। जिसके विचार से कुछ किया जाय या जिसके प्रभाव से कुछ हो, जिससे दूसरे पदार्थ की संप्राप्ति हो, निमित्त, प्रत्यय। आदि, मूल साधन। कर्म। प्रमाण। प्रयोजन। [रीजन] निदान।—**करण**—(संज्ञा, पु०) करण का कारण, ब्रह्मा।—**गुण** (**धर्म**) कारण के लक्षण।—[(सं०, स्त्री०) **कारणता**—हेतुता [कैजुएलिटी]।]—**वादी**-अभियोग उपस्थित करने वाला, फ़रियादी। **कार्य-कारण-संबंध** (**न्या०**)।—**भूत**-(वि०) जो कारण हो गया हो।—**माला**-(स्त्री०) हेतुओं की श्रेणी। एक अर्थालङ्कार, जिससे किसी कारण से उत्पन्न हुआ कार्य पुनः किसी अन्य कार्य का कारण होता हुआ प्रगट किया जाता है। घटना-परम्परा, हेतुमालिका।—**शरीर**-(पु०) सुषुप्त अवस्था में वह कल्पित शरीर, जिसमें इन्द्रियों के विषय-व्यापार का तो अभाव रहता है किन्तु अहङ्कार आदि संस्कार रह जाते हैं (वेदा०)।

कारणात्मक—(वि०,सं०) आकस्मिक कारण से सम्बन्धित। अनियत, दैवी। [कैजुअल]

कारणिक—(वि०, सं०) कारण-सम्बन्धी (पु०) किसी दफ्तर में कार्य करनेवाले कर्मचारी से सम्बन्धित। [मिनिस्टीरियल]।

कारतूस—(संज्ञा, पु०, दे०) [पुर्त० कारटूश] गोली-बारूद भरी एक नली, जिसे बंदूक में भर कर चलाते हैं। [(वि०) **कारतूसी**।]

कारन*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कारण्य] रोने का आर्त स्वर, करुण स्वर। (संज्ञा, पु०, दे०) कारण, हेतु, निमित्त।

कारनिस—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दीवाल की कँगनी या कँगूरे।

कारनी—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० कारण] प्रेरक। (संज्ञा, पु०) [सं० कारिनि] भेदक, बुद्धि पलटने वाला।

कारपरदाज़—(वि०, फ़ा०) काम करनेवाला। कारिन्दा, प्रबन्धक। [(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) **कारपरदाज़ी**—कार्य करने की तत्परता, प्रबन्धकारिता।]

कारबन—(संज्ञा, पु०, अं०) भौतिक पदार्थों में से एक, जो हीरे, कोयले, कारबोनिक गैस आदि से उपलब्ध होता है।—**गैस**-[एसिड] साँस के साथ आने जाने वाली गैस।

कारबार, कारोबार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) काम-काज। व्यापार। पेशा [बिज़िनेस] [(वि०) **कारबारी**—काम काज करने वाला। कामकाजी।

कारमिहिका—(स्त्री०, सं०) कपूर।

कारयिता—(वि०, सं०)। कुछ रचनात्मक अथवा सृजनात्मक कार्य करने वाला। [क्रिएटिव]

काररवाई, कारवाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) काम, कृत्य, करतूत। कार्य-तत्परता। गुप्त-प्रयत्न। चाल। कार्यवाही (आ० हि०)।

कारवाँ—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) यात्रियों का झुण्ड । "उतरा तेरे किनारे जब कारवाँ हमारा"—इक़० ।

कारवल्ली (कारवेल्ल)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कटु-फल । करेला ।

कारवी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कारव+ई] मयूर-शिखा । रुद्र-जटा । अजमोदा । कलौंजी ।

कारसाज—(वि०, फ़ा०) बिगड़े काम को सँभालने वाला, कार्य की युक्ति निकालने वाला । "ऐ मेरी दिल सोज़ मेरी कारसाज़" ।

कारसाज़ी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चालबाजी, छल । प्रयत्न, कार्य-सिद्धि की युक्ति ।

कारस्तानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कारंवाई, चाल-बाज़ी, चालाकी ।

कारा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बन्धन । पीड़ा, क्लेश । कैद । (वि०, दे०) काला, **कारो** (ब्र०) ।—**ध्यक्ष**-(पु०) जेल-निरीक्षक, काराधीक्षक । [जेल-सुपरिंटेंडण्ट] ।—**पाल**-(पु०) जेल का अधि-कारी । [जेलर] ।—**रुद्ध**-(वि०, सं०) जो जेल में किसी अपराध के कारण बन्द किया गया हो । [इम्प्रिजण्ड] ।—**रोध**-(संज्ञा, पु०) अटकाव, कैद, निरोध । [डिटेन्शन]—**वास**-(संज्ञा, पु०, सं०) जेल में रहना, कैद में रहना । [इम्प्रिजनमेण्ट]

कारागार (कारागृह)—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कैदखाना, जेल । (यौ०) कारावास, बन्दीगृह । [(वि०) **कारागृही**—बंदी ।]

कारायिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं) सारसी ।

कारिंदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गुमाश्ता, कर्मचारी । [(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) **कारिंदगीरी** ।]

कारिक—(पु०, अ) कुर्की करानेवाला व्यक्ति ।

कारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी सूत्र की श्लोक-बद्ध व्याख्या । नट की स्त्री, नटी ।

कारिख-कालिख—(.ज्ञा, स्त्री०, दे०) कालिमा । कलङ्क, दोष, लांछन । अपवाद । करिखा (दे०) स्याही । "धूम कुसङ्गति कारिख होई"—रामा० ।

कारित—(वि०, सं०) कराया हुआ ।

कारी—(संज्ञा, पु०, सं०) करनेवाला । (वि०, फ़ा०) घातक, मर्म-भेदी । (वि०, दे०) काली । [(स्त्री०) **कारिणी** ।] (वि०, पु०, दे०) कारो (ब्र०), कारा । "कारी निसि कारी दिसि कारियै करारी घटा"—पद्मा० ।

कारीगर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) धातु, लकड़ी, पत्थर आदि से सुन्दर वस्तुएँ बनाने वाला, शिल्प-कार । (वि०) कला-कुशल, गुणी, हुनरमंद । निपुण, रचना-पटु ।

कारीगरी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अच्छे-अच्छे काम बनाने की कला, निर्माण-कला, मनोहर रचना-कला, कला-कुशलता ।

कारीष—(संज्ञा, पु०, सं) सूखा हुआ गोबर, करसी का समूह ।

कारुकर, करुकर—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्वकर्मा, शिल्पी, निर्माता, कलाकार । **कारुक**—(संज्ञा, पु०, सं०) कारीगर, रचयिता ।

कारुणिक—(वि०, सं०) कृपालु, करुणायुक्त, कारुणीक, करुणोत्पादक ।

कारुण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) करुणा का भाव, दया । "कारुण्यं समपद्यत"—वाल्मी० ।

क़ारूँ—(संज्ञा, पु०, अ०) हज़रत मूसा का भाई (चचेरा) जो बड़ा धनी और कृपण था । **मुहा०**—**का खज़ाना**-अनंत संपत्ति । (वि०) धन-कुबेर, अतिधनी ।

कारूनी—(संज्ञा, स्त्री०) घोड़ों की एक जाति ।

क़ारूरा—(संज्ञा, पु०, अ०) फुँकना शीशा । मूत्र, पेशाब ।

कारौंछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कालौंछ (दे०) कालिमा ।

कारोबार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कारबार ।

कार्क—(संज्ञा, पु०, अं०) शीशी, बोतलों को बंद करने वाली डाट । एक प्रकार की छाल ।

कार्कश्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्कशता, परुषता, क्रूरता, कठोरता ।

कार्ड—(संज्ञा, पु०, अं) मोटे कागज का वह टुकड़ा जिस पर पत्र, सूचना आदि लिखकर भेजा जाता है । ताश ।

कार्तवीर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कृतवीर्य-सुत सह-स्रार्जुन हैहय या सहस्रबाहु । हैहय देश में महिष्मती नगरी इनकी राजधानी थी, इन्होंने रावण को जीत कर बंदी कर लिया था, परशुराम ने इन्हे मारा । इन्होंने कार्तवीर्य-तंत्र नामक एक तंत्र-ग्रंथ रचा । "रामो यथा समर मूर्धनिकार्तिवीर्यम्"—लो० ।

कार्तस्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) सुवर्ण, सोना ।

कार्तान्तिक—(संज्ञा, पु०, सं०) दैवज्ञ, ज्योति-र्वेत्ता, ज्योतिषी, गणक ।

कार्तिक—(संज्ञा, पु०, सं०) क्वार और अगहन के बीच का एक चांद्र मास, कातिक (दे०) । इसकी पूर्णिमा को चंद्रमा कृत्तिका नक्षत्र के पास रहता ।

है। [(वि०) कार्तिकी—कार्तिक की पूर्णिमा, कतिकी ।]

कार्तिकेय—(संज्ञा, पु०, सं०) कृत्तिका नक्षत्र से उत्पन्न होने वाले स्कंद जी, षडानन, शिव के ज्येष्ठात्मज स्वामी-कार्तिक, जिन्हें चंद्र-पत्नी कृत्तिका ने निज पय से पाला था। ये देवताओं के सेनापति थे, इन्होंने तारकासुर को मारा और तारकारि कहलाये, देवसेना (ब्रह्मात्मजा) इनकी स्त्री है (ब्रह्मवै०)।

कार्दम—(वि०, सं०) कीचड़ से युक्त, कीचड़ से सना हुआ।

कार्पण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कृपणता, कंजूसी। "लाते न कार्पण्य कभी मनस्वी"—मधु।

कार्पास—(संज्ञा, पु०, सं०) कपास रुआवृक्ष, सूती कपड़ा। [(वि०) कार्पासिक—कपास का।] "जिसमे कार्पास के पुंज से"—हरिऔध।

कार्बन—(संज्ञा, पु०, अं०) अंगार, (हीरा, कोयला आदि) बिजली-बत्ती के लिए कोयले की पेंसिल।—स्वीकरण-(पु०) कार्बन को अपने मे मिला लेना [कार्बन एसिमिलेशन]

कार्मण—(संज्ञा, पु०, सं०) मंत्र-तंत्रादि का प्रयोग, कर्मदक्ष।* (दे०) कामना—कृत्या, मंत्र-तंत्र मोहनादि प्रयोग।

कार्मार—(संज्ञा, पु०, सं०) शिल्पी, कारीगर। लोहार।

कार्मिक—(पु०, सं०) कारचोबी के वस्त्र, बुनावट में ही बेल-बूटे या शंख-चक्रादि बनाये गये वस्त्र।

कार्मुक—(संज्ञा, पु०, सं०) धनुष, चाप। इन्द्र-धनुष, परिधि का एक भाग। बाँस। सफेद खैर। बकायन। धनु राशि (९ वी) कर्म संपादन करने वाला। "रामः करोति शिव-कार्मुकमाततज्यम्"—ह० न०।

कार्य—(संज्ञा, पु०) [सं० कृ+ण्यत] काम, कृत्य, व्यापार, कारज, काज [ऐक्शन, वर्क] (दे०) धंधा। कारण का विकार या फल। कर्ता का उद्देश्य, फल, परिणाम। विपाक। (वि०)—कुशल-कार्य-पटु, कार्य-निपुण, कार्य-दक्ष।—कर्ता-(संज्ञा, पु०) काम करने वाला, कर्मचारी, कार्यकार।—कलाप-(पु०) कार्य-समूह, कार्यसमुच्चय।—क्षम-(वि०) कार्य करने की योग्यता वाला। कृती, कार्य-कुशल।—कारक-(वि०) कार्य-दक्ष कार्य-चतुर।—कारण-भाव-(संज्ञा, पु०) कार्य-कारण सम्बन्ध (न्या०)।—कारिणी-(स्त्री०) कार्य करने वाली।—परिषद्-प्रबंध करने वाली सभा [इक्जिक्यूटिव कौंसिल]।—कारी-(वि०, सं०) किसी पदाधिकारी के स्थान पर उसके पद पर कार्य करने वाला। कार्य-सम्बन्धी योग्यता, सामर्थ्य। (पु०) कार्यांग। [ऐक्टिंग इक्जिक्यूटिव]।—काल-कार्य-समय, कार्यावधि [ड्यूरेशन]।—शक्तियाँ-कार्य को पूरा करने वाली शक्तियाँ। [इक्जिक्यूटिव पावर्स]।—चातुरी-युक्ति, चाल। कार्य को सम्पन्न करने की कुशलता। [टैक्टिक्स]।—चालक-निर्वाहक जहाज पर यात्रियों की सहायता करने वाला। [स्टिवर्ड]।—क्रम-(संज्ञा, पु०) विचारणीय या संघटित *होने वाले कार्यों की सूची। [प्रोग्राम]—दिवस-(पु०) कार्य का वह निश्चित समय जो पूरे दिन के बराबर गिना जाता है। [वर्किंग डे]—प्रद्वेष-(संज्ञा, पु०, सं०) आलस्य।—वाही-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कारवाई। कार्य-वाहक, कार्य-कर्ता—विघातक-(वि०) कार्य-नाशक।—विमूढ़-किंकर्तव्यविमूढ़।—शालीनता-(स्त्री०) कार्य-दक्षता।—शील-(वि०, सं०) कर्मशील, कर्मण्य।—स्थगन प्रस्ताव-(पु०) [ऐड्जर्नमेंटमोशन] विधान-सभा में जब कोई ऐसा प्रस्ताव रखा जाता है जिस पर विचार करने के लिए अन्य समस्त कार्यों को रोक देने की प्रार्थना की जाती है, तब उसे कार्य-स्थगन प्रस्ताव कहते है।—स्वातंत्र्य-काम करने की स्वतंत्रता। [फ्रीडम आफ़ ऐक्शन]।—हन्ता-(वि०) प्रतिबंधक, कार्य-बाधक, कार्य-नाशक।

कार्यतः—(क्रि०, वि०) कार्यरूप से, यथार्थतः, वस्तुतः।

कार्यसम—(संज्ञा, पु०, सं०) न्याय की चौबीस जातियों मे से एक, इसमें प्रतिवादी किसी कारण से उत्पन्न कार्य के सम्बन्ध मे वादी-द्वारा कही हुई बात के खंडन का प्रयत्न वैसे ही और कार्य बताकर करता है, जिनमें वह बात नही पायी जाती (न्या०)।

कार्याकार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्तव्याकर्तव्य।

कार्यार्थी—(वि०, सं०) कार्य की सिद्धि चाहने वाला, गरज़ रखने वाला। "मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्"। (संज्ञा, पु०, सं०) कार्यार्थ, कार्य-सिद्धि।

कार्याध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) मुख्य कार्य-कर्ता, प्रधान कार्यवाहक। कार्याधीश।

कार्याधिकारी—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्मचारी, कार्य-भार-वाहक [फंक्शनरी]।

कार्यालय—(संज्ञा, पु०, सं०) जहाँ कोई काम होता हो, दफ्तर, कारखाना। [ऑफिस ब्यूरो]—**प्रतिलिपि**—दफ्तर में रखी जाने वाली पत्रों की प्रतिलिपि। [आफिस कापी]।

कार्यावरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्य-प्रतिबंध, कार्य का बंद होना।

कार्यावली—(स्त्री०) कार्य-क्रम की सूची जो समिति मे विचारणीय हो [एजेण्डा]।

कार्श्य—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षीणता, दुर्बलता, कृशता, दौर्बल्य।

कार्षक—(संज्ञा, पु०) [सं० कृष् + णक्] कृषक, किसान।

कार्षापण—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन सिक्का।

काल—(संज्ञा, पु०) [सं० कल् + घञ्] वह संबंध-सत्ता जिसके द्वारा, भूत, भविष्य, वर्तमान की प्रतीति हो, समय, वक्त, अवसर, बेला। [टाइम] "सजे सगर्व काल कंठ-माल में......"—बच्चन। अंतिम समय, मृत्यु, नाश का समय। यमराज, यम-दूत। उपयुक्त समय, मौका, अकाल, शिव का एक नाम, महाकाल। शनि। साँप। नियत समय। (वि०) काला। (क्रि०, वि०, दे०) कल, काल्ह, काल्हि। "काल दसहरा बीति है"। "तुम तौ काल हाँकि जनु लावा"—तुल० रामा० "आ गया अकाल काल रहता हुआ अकाल"—सनेही।—**कंठ**-(संज्ञा, पु०, सं०) महादेव। मोर। नीलकंठ पक्षी। खंजन, खिडरिच।—**कील**-(संज्ञा, पु०, सं०) कोलाहल, हड़बड़ी, गड़बड़ी, खलबली।—**कूट**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक भयंकर विष। काला बच्छ नाग। चित्तीदार सांगिया जाति का एक पौधा। हलाहल, गरल। "कालकूट का हो न विधान"—आनंदी (प्र०)।—**केतु**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक राक्षस।—**कोठरी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अँधेरी छोटी कोठरी, जिसमे तनहाई के कैदी रक्खे जाते है, कलकत्ते के फोर्ट विलियम क़िले की एक तंग कोठरी जिसमे सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों को बंद कर दिया था (इति०)। जेल की वह कोठरी जिसमे फांसी पाने वाले कैदी बंद किये जाते है। [कण्डेम्ड सेल]—**कौर**-(संज्ञा, पु०, दे०) काल-कवल, काल का ग्रास, काल-कवर। "काल-कौर होइ है छन माहीं" रामा०—**क्रम से**-(संज्ञा, पु०, सं०) समयानुसार, समय के मुताबिक़।—**क्षेप**-(संज्ञा, पु०, सं०) दिन काटना, निर्वाह, गुजर-बसर, कालयापन।—**खंड**-(संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर, निश्चित समय तक का अंश [पीरियड]। **मुहा०—पाकर**-कुछ दिनों के पीछे, यथासमय। (दे०) लहसुन, तिल।—**गंडेत**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० काला + गंडा] काली चित्तियों वाला विष-धर साँप।—**चक्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) समय का हेर-फेर, जमाने की गर्दिश, एक अस्त्र, काल-चाल।—**ज्वर**-(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्युकारक ज्वर, सन्निपात ज्वर।—**ज्ञ**-(संज्ञा, पु०, सं०) समय की गति जानने वाला, ज्योतिषी, काल-ज्ञाता, काल-ज्ञानी, कालविद्।—**ज्ञान**-(संज्ञा, पु०, सं०) स्थिति और अवस्था की जानकारी। मृत्यु-काल का ज्ञान। (वि०) कालज्ञानी, कालज्ञाता।—**तुष्टि**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समय आने पर सब ठीक हो जायगा यह विचार रख संतुष्ट रहने का भाव, तुष्टि (सांख्य)।—**दंड**-(संज्ञा, पु०, सं०) यमराज का दंड। "काल-दंड तें काहु न मारा"—रामा०।—**दर्शी**-(वि०, यौ०, सं०) कालज्ञ।—**धर्म**-(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्यु, विनाश, अवसान, समयानुसार धर्म, किसी विशेष समय पर स्वभावतः होने वाला व्यापार। (वि०)—**धर्मज्ञ**।—**नियम**-(संज्ञा, पु०, सं०)—काल रीति, काल-धर्म।—**निर्यास**-(पु०) एक सुगंधित पदार्थ, गूगुल।—**निशा**-(स्त्री०) दिवाली की रात; अँधेरी भया-नक रात। प्रलय-रात्रि। मृत्यु-निशा। काल-शवरी, कालयामिनी, काल-दोषा।—**पलीता**-(संज्ञा, पु०) निश्चित अवधि के बाद विस्फोटक को भड़काने वाला पलीता। [टाइम फ्यूज]—**पालक**-(पु०) समय की अपेक्षा करने वाला, गूढनीतिज्ञ।—**पाश**-(पु०) यमपाश, कुछ समय तक जिस नियम से भूत-प्रेत अनिष्ट न कर सकें।—**पुरुष**-(पु०) ईश्वर का विराट् रूप। काल, (ज्योतिष शास्त्र) यम, जो ब्रह्मा के पौत्र और सूर्य के पुत्र है, इनके ६ मुख, १६ हाथ, २४ आँखें, ६ पैर है, इनका रंग काला और वस्त्र लाल है। शिव। छाया-पुरुष।—**प्रभात**-(पु०) शरतकाल।—**फणि**-कालरूप सर्प। "कालफणी की मणि पर जिसने"...—मैथिली०।—**बंजर**-(पु०) [हि० काल + बंजर] बहुत दिनों से न बोई गई भूमि।—**बेला**-(स्त्री०) अयोग्य काल, निंदित समय।—**यापन**-(संज्ञा पु०, सं०) कालक्षेप, दिन काटना, गुजर करना।—**रात्रि**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दिवाली की रात, ब्रह्मा या प्रलय की रात जिसमें सब सृष्टि लय की दशा में रहती है, विष्णु ही रहते है। मृत्यु-निशा। दुर्गा की एक

मूर्ति। यमराज की बहिन जो प्राणियों का नाश करती है। मनुष्य के ७० वें वर्ष के ७ वें मास की ७वीं रात, जिसके बाद वह नित्य-कर्मादि से मुक्त समझा जाता है। भयावनी अंधेरी रात, कालरात्रि (दे०) कालीरात (दे०)। **—वाचक (कालवाची)**-(वि०, सं०) समय का ज्ञान कराने वाला, काल का सूचक अव्यय (व्या०)। **—शाक**-(पु०) करेमू। सरफोंका। **—सर्प**-(पु०, सं०) वह विषैला सर्प जिसके काटने से कोई नहीं जीता। **—सार**-(पु०) तेंदू का वृक्ष। काला हिरण। **—सूत्र**-(पु०) एक नरक। **—सूर्य**-(पु०) प्रलय काल का सूर्य, प्रलय-भानु।

कालस्कंध—(संज्ञा, पु०, सं०) तमाल तरु।

कालक—(संज्ञा, पु०, सं०) ३३ प्रकार के केतुओं में से एक। आंख की पुतली। दूसरी अव्यक्त राशि (बीजग०) पानी का साँप। यकृत।

कालका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्ष प्रजापति की कन्या जो कश्यप को ब्याही थी।

कालकेय—(संज्ञा, पु०, सं०) वृत्रासुर का मित्र (एक राक्षस)।

कालख—(संज्ञा, पु०, दे०) कालिमा, **कारिख** (दे०) लहसुन, तिल।

कालनेमि (पु०) रावण का मामा, एक राक्षस, एक दानव, जिसने देवताओं को हरा के स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था। "कालनेमि जिमि रावन राहू" —तुल० (रामा०)।

कालपर्णी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काला निसोत।

कालबूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० कालबुद] कच्चा भराव जिस पर मेहराब बनाई जाती है। चमारों का काठ का साँचा जिस पर चढ़ा कर जूते बनाये जाते हैं, कालबूत (दे०)।

कालबेलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) साँप का विष उतारने वाला।

कालभैरव—(पु०) शिव के अंश से उत्पन्न उनके एक मुख्यगण, बटुक भैरव।

कालमा—(संज्ञा, पु०, दे०) सन्देह, दुविधा।

कालमूल—(संज्ञा, स०, सं०) लाल चित्रक औषधि।

कालमेषिका (कालमेषी)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मजीठ। वाकुची। काला निसोत।

कालयवन—(पु०) महर्षि गर्ग द्वारा गोपाली नामक एक अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न तथा यवनराज (जो अपुत्र थे) द्वारा पालित हुआ था, वह जरासन्ध का मित्र था और कृष्ण से लड़ा था।

कालरा—(संज्ञा, पु०, अ०) हैज़ा, विसूचिका, दस्त और कै का रोग।

काला—(वि०, दे०) [सं० काल] काजल या कोयले के रंग का, स्याह, कृष्ण वर्ण। **मुहा०—मुँह करना**-कुकर्म या पाप या कलंककारी कार्य करना, व्यभिचार करना। किसी बुरे आदमी का दूर होना। (किसी की किताब का) काला पृष्ठ खुलना -निंदित कार्य-कलाप का प्रारंभ होना। **(दूसरे का) मुँह—करना**-किसी अरुचिकर या बुरी वस्तु या व्यक्ति को दूर करना। कलंक का कारण होना, बदनाम करना या बदनामी का सबब होना। व्यर्थ की झंझट दूर करना। **—मुँह या मुँह—होना**-कलंकित या बदनाम होना। कलुषित, बुरा, भारी, प्रचंड। **मुहा०—कालेकोसों**-बहुत दूर। (संज्ञा, पु०) [सं० काल] काला साँप। (स्त्री०)**—कलूटा** -(वि०, हि०) बहुत काला (व्यक्ति)। **कागज —करना**-व्यर्थ लिखना या छापना। **—कारनामा**-(संज्ञा, पु०) [हि० + फ़ा०] दूषित, निंद्य कार्य-कलाप, गर्हित कार्य। काली करनी या करतूत। **—चोर**-(संज्ञा, पु०, सं०) बुरे से बुरा या बड़ा चोर। हीन व्यक्ति। **—जीरा**-(संज्ञा, पु०, हि०) स्याह या मीठा जीरा। **—झंडा**-किसी के आगमन पर रोष प्रकट करने के लिए दिखाया जानेवाला काला झंडा [ब्लैक फ़्लैग]।

कालादाना—(संज्ञा, पु०, हि०) एक लता जिसके काले दाने रेचक होते हैं; इसके दाने।

कालानमक—(संज्ञा, पु०, हि०) सज्जी के योग से बना एक प्रकार का पाचक लवण, सोंचर नोन (दे०)।

कालानाग—(संज्ञा, पु०, हि०) काला विषैला साँप, कुटिल व्यक्ति।

काला पहाड़—(संज्ञा, पु०, हि०) भारी, भयानक, दुस्तर वस्तु। बहलोल लोदी का भांजा जो सिकंदर लोदी से लड़ा था, नवाब मुर्शिदाबाद का कट्टर और क्रूर सेनापति।

कालापानी—(संज्ञा, पु०, हि०) बंगाल की खाड़ी का वह भाग जहाँ पानी श्याम दीखता है। देश निकाले का दंड। अंडमानादि द्वीप जहाँ देश निकाले के कैदी भेजे जाते हैं। शराब। [ट्रान्सपोर्टेशन आफ़ लाइफ़]।

कालाभुजंग—(वि०) [हिं० काला+भुजंग सं०] बहुत काला, घोर श्याम वर्ण का, करिया भुजंग । (दे०) (संज्ञा, पु०, यौ०, हिं०) काला साँप ।

कालाक्षरी—(वि०, सं०) काले अक्षर मात्र का अर्थ करने वाला, विद्वान । **लो०—"काला अक्षर भैंस बराबर"**—मूर्ख व्यक्ति ।

कालाग्नि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रलय की आग, प्रलयाग्निपति रुद्र । "कालाग्निरिव संनिभः" ।

कालागुरु—(संज्ञा, पु०, सं०) एक सुगंधित काला काठ ।

कालातीत—(वि०, सं०) जिसका समय बीत गया हो, अतीत काल से परे, गत काल । (संज्ञा, पु०) पाँच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, जिसमें अर्थ एक देश-काल के ध्वंस से युक्त होकर असत् ठहरता हो । साध्य के आधार में साध्य के अभाव का निश्चय वाला एक बाध (आ० न्याय०) ।

कालात्याय—(संज्ञा, पु०, सं०) काल का नाश, ह्रास । [लेटेंस] ।

कालान्तर—(क्रि०, वि०, सं०) नियत काल के अन्तर से, बहुत समय बाद ।

कालानुसारी—(वि०, सं०) समयानुसारी (वि०, यौ०, सं०) समय से वा समयानुसारी ।

कालान्तक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कालानुचर, शिव, काल-नाशक ।

कालायस—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० काल+अयस्] इस्पात नामक लोहा ।

कालावधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नियत समय जिसमें कार्य पूरा होता है । किसी कार्य के लिए समय या काल की दृष्टि से निश्चित की हुई अवधि । [लिमिटेशन]

कालास्त्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक प्रकार का, अमोघ बाण । यम दंड । मृत्युपाश ।

कालिंग—(वि०) [सं० कलिंग] कलिंग देश का (संज्ञा, पु०) कलिंग वासी । हाथी । साँप । तरबूज ।

कालिंजर—(संज्ञा, पु०) [सं० कालंजर] बाँदा प्रान्त का एक पुराण-प्रसिद्ध पवित्र पर्वत एवं तीर्थ-स्थान, कालिंजर (दे०) ।

कालिंदी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कलिन्द पर्वत से निकली यमुना नदी, कलिंदजा । कृष्ण की एक स्त्री । एक वैष्णव-सम्प्रदाय । कलिंदी (दे०) ।

कालि (काल्ह, काल्हि)—(क्रि०, वि०, दे०) कल ।

कालिक—(वि०, सं०) समयसम्बन्धी । अनिश्चित समय । कालोचित ।

कालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवी की एक मूर्ति, चंडिका, काली । कालिख । बिछुवा नामक पौधा । मेघ । स्याही, मसि । शराब । आँख की काली पुतली । रोमराजी । जटामासी । शृंगाली । काकोली । कौवे की मादा । कुहरा । झाड़ी । ४ वर्ष की कन्या । दक्ष की कन्या । काली मिट्टी ।—**पुराण**—(पु०) कालिका देवी के माहात्म्य का एक उप-पुराण ।

कालिकार्चन—(संज्ञा, पु०, सं०)-काली की उपासना या पूजा ।

कालिकाला (कालिकला)*—(क्रि०, वि०, हिं०) कदाचित, कभी ।

कालिख*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कालिका] कालौंछ, कारिख (दे०) स्याही । **मुहा०—मुँह में लगना (लगाना)**-बदनामी के कारण मुँह दिखाने योग्य न रहना (रखना) ।—**पोतना, पुतजाना**-बदनामी करना या होना ।

कालिख्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किन्दवाली वृक्ष ।

कालिजीरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक काली औषधि ।

कालिदास—(संज्ञा, पु०, सं०) ई० ५८८ से पूर्व के संस्कृत के लोकप्रसिद्ध महाकवि और नाटककार, जो विक्रमादित्य की सभा के ९ रत्नों मे से एक थे । दूसरे भवभूति के समकालीन (ई० ७४८) महाकवि थे । तीसरे (११ वीं शताब्दी) राजा भोज के समय के प्रसिद्ध विद्वान ग्रन्थकार थे ।

क़ालिब—(संज्ञा, पु०, अ०) टोपियों को चढ़ा कर दुरुस्त करने का गोल ढाँचा । शरीर, देह । **लो०—एक जान और दो कालिब**-अभिन्न मित्र ।

कालिमा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० काल+इमन्] कालापन । कालिख । अँधेरा । कलंक । दोष, लांछन, निंदा, अपवाद ।

कालियक—(संज्ञा, पु०, दे०) मलय चन्दन ।

कालिया—(वि०, दे०) काली, काला सर्प ।

काली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चण्डी, दुर्गा, पार्वती । १० महाविद्याओं मे से प्रथम । अग्नि की ७ जिह्वाओं मे से प्रथम । एक नदी । आद्या प्रकृति । शान्तनु नृप-पत्नी । (क्रि०, वि०, दे०) कल । "राम तिलक जो साँचेहु काली"—तुल० । (वि०, स्त्री०, हिं० काला) काले वर्ण की । "मेरी काली सघन निशा मे"—सियाराम० । "गिन जा रहे थे मुर्दों में हम कल की काली घड़ियों तक"—बच्चन ।

(संज्ञा, पु०, दे०) शेष, सर्प ।—**घटा**–कादम्बिनी, काले बादल ।—**रात**—अँधेरी रात ।—**जबान** (**गिरा**),–वाणी, जिसकी अशुभ बातें सत्य हो जायें ।—**सूची**–निन्दनीय कार्य करने वाले या अपराध में दंडित व्यक्तियों की सूची [ब्लैक लिस्ट] ।

कालीजीरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कणजीर] एक पेड़ की बोंडी के बीज जो दवा के काम में आते हैं ।

कालीदह—(संज्ञा, पु०, दे०) काली नाग के रहने का कालिन्दी-कुण्ड (वृन्दावन) ।

कालीन—(वि०, सं०) कालसम्बन्धी, जैसे—समकालीन, भूतकालीन । —(संज्ञा, पु०, अ०) मोटे तागों से बुना हुआ बेल-बूटेदार मोटा और भारी बिछावन, गलीचा ।

कालीमिर्च—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) गोल मिर्च ।

कालीय-कालिय-काली—(संज्ञा, पु०, सं०) कृष्ण का वश किया हुआ एक सर्प । यह गरुड़ के भय से समुद्र को छोड़ ब्रज में यमुना के भीतर रहता था, कृष्ण की आज्ञा से फिर समुद्र में रहने लगा ।

काली शीतला—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) एक प्रकार की चेचक जिसमें काले दाने निकलते हैं ।

कालेश्वर—(संज्ञा, यौ०, सं०) महादेव, महाकाल, कालेश, कालपति ।

कालोपरान्त—(अव्य, सं०) काल के अनंतर, पश्चात् "कुछ कालोपरान्त कुछ लाली"... (हरिऔध) ।

कालौंछ—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० काला + औंछ प्रत्य०] कालिख, स्याही, कारौंछ (दे०) ।

काल्पनिक—(संज्ञा, पु०, सं०) कल्पना से उत्पन्न, कल्पित, कल्पना करनेवाला । (वि०) मनगढ़न्त, मिथ्या, कृत्रिम । [इमेजिनरी]

कावा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) घोड़े को वृत्ताकार चक्कर देने की क्रिया । **मुहा०—काटना** (**लगाना**) –वृत्त में दौड़ना, चक्कर खाना, आँख बचा कर दूसरी ओर निकल जाना ।—**देना**–चक्कर देना । "......काटति कावा"—गं० व०... ।

कावेरी—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) एक नदी ।

काव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) रमणीयार्थ प्रति-पादक, अलंकृत, रसात्मक विचित्रता या चमत्कार-चातुर्य से पूर्ण वाक्य या रचना जो अलौकिक आनन्द दे सके । रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् , रसात्मकम् वाक्यम् काव्यम्"—। इसके कई भेद हैं । कविता, काव्य का ग्रन्थ । [पोएम] रोला छन्द का एक भेद (पि०) ।—**चौर**–दूसरे की कविता चुरा कर अपनी कहने वाला ।—**कला**–(काव्य-कौशल) कविता की रचना-कला और उसमें दक्षता ।—**कौशल**–काव्य-कला में चातुर्य ।—**शास्त्र**–काव्य-रचना से सम्बन्ध रखने वाले नियमों या विधानों का सिद्धान्त-ग्रंथ । "काव्यशास्त्र-विनोदेन"—भर्तृ० ।—**लिंग**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी कही हुई बात का कारण वाक्य या पद के अर्थ-द्वारा युक्तिपूर्वक प्रगट किया जाता है । उ० "तिय तो ठोड़ी गाड़ते, मोमन काढ़त कौन ।"

काव्यत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) काव्य का लक्षण या स्वरूप ।

काव्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूतना । बुद्धि ।

काव्यार्थापत्ति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक अलंकार जिसमें कोई चमत्कारिक उपमा कह कर उसकी तुलनायें साधारण उपमानों की हीनता से दिखलायी जाय । उ० "हारी रति तुव रूप लखि, नारिन की का बात ।"

काव्यालोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) काव्य-शास्त्र, काव्य-बोध-कारक साहित्य । "युवकों में प्रमुख रत चेतन, समधीत शास्त्र काव्यलोचन"—निराला ।

काश—(संज्ञा, पु०, सं०) एक घास, काँस । खाँसी, खोंखी (दे०) "फूलेकाश काश उपजावै दुख तारापति"—रसाल । एक प्रकार का चूहा । एक मुनि । (संज्ञा, पु०, सं०) दीप्ति, चमक, प्रकाश ।

काशघ्नी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भारंगी नामक औषधि ।

काशि—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, काशी नगरी । —**राज**–(संज्ञा, यौ०, पु०, सं०) काशी-नरेश । दिवोदास, धन्वन्तरि । "धन्वतरिः दिवोदास काशिराजस्तथाश्विनौ" ।

काशिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काशीपुरी । जयादित्य और वामन-रचित पाणिनीय व्याकरण पर वृत्ति ग्रंथ । (वि०, स्त्री०, सं०) प्रकाश करने वाली, प्रदीप्ति, प्रदीपिका ।

काशी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वाराणसी, शिवपुरी, कासी (दे०) । (वि०, सं०) काश-रोगी, तेजोमय । —**नाथ**,—**पति**–(पु०) शिव । **लो०**—"सर्व लोक सों काशी न्यारी" ।—**करवट**–(पु०) [सं० काशी-करपत्र] काशी का एक तीर्थस्थान

जहाँ प्राचीन काल मे लोग आंर से अपने को चिराया करते थे ।—फल-(पु०) [सं० कोश-फल] कुम्हड़ा, कुष्मांड ।

काश्त—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) खेती, कृषि । सरकार को वार्षिक लगान देकर जमीन पर कृषि करने का स्वत्व ।—**कार**-(पु०, फा०) किसान, खेतिहर, **कासकार** (दे०), लगान पर भूमि लेने वाला [टेनण्ट] । [(स्त्री०)—**कारी**-किसानी, खेती । काश्तकार का हक़ या अधिकार ।]

काश्मरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंभारी का पेड़ ।

काश्मीर—(संज्ञा, पु०, सं०) भारत के उत्तर में एक पहाड़ी प्रान्त । पुष्करमूल । सुहागा । केसर । **कासमीर** (दे०) । (संज्ञा, पु०, सं०)—ज-काश्मीर मे उत्पन्न कूट । कुंकुम । [**काश्मीरी**-(वि०, सं०) काश्मीरसम्बन्धी, काश्मीरवासी] ।

काश्मीरा, कशमीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा, **कसमीरा** (दे०) ।

काश्यप—(वि०, सं०) कश्यप प्रजापति के वंश या गोत्र का । (संज्ञा, पु०, सं०) कणादि मुनि । मृग विशेष ।—**मेरु**-काश्मीर देश । कश्यप मुनि का पर्वत, **काश्यपाद्रि, काश्यपाचल** ।

काश्यपि—(संज्ञा, पु०, सं०) अरुण, सूर्य का सारथी, रवि-रथ-वाहक ।

काश्यपी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी । प्रजा ।

काषाय—(वि०, सं०) हर-बहेड़े आदि कसैले पदार्थों मे रँगा, गेरुआ ।

काष्ठ—(संज्ञा, पु०, सं०) लकड़ी, **काठ** (दे०), ईंधन । (यौ०)—**जिह्वा**-अशुद्ध भाषण के दंड-स्वरूप मुख मे काष्ठ रखने वाला ।

काष्ठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीमा, अवधि । ऊँचाई । ऊँची चोटी । उत्कर्ष । १८ पल या कला । समय । चन्द्रमा की एक कला । दिशा, ओर । दक्ष-कन्या । सड़क, मार्ग ।

काष्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) फिटकिरी । (वि०) काष्ठ वाला ।

कास—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कास या श्वास-खाँसी (दे०) सरपत । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० काश] काँस तृण । "फूले,कास सकल महि छाई" —[रामा०] । "कगरों पर कास थी फैली हुई"—रामचन्द्र शुक्ल

कासनी—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) एक औषधि का पौधा, कासनी के बीज । कासनी के फूलों सा नीला रंग ।

कासबी—(संज्ञा, पु०) कुविंद । (दे०) तंतुवाय, जुलाहा, कोरी (दे०) ।

कासर—(संज्ञा, पु०, सं०) भैंसा ।

कासा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) प्याला, कटोरा । दरियाई नारियल का बर्तन । आहार । (फ़कीरों का) (संज्ञा, पु०, दे०) काश । काँसा ।

कासार—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा ताल । २० रगण का एक दंडक-भेद (पिं०) पँजीरी, कूर (प्रा०) ।

कासालु—(संज्ञा, पु० सं) एक प्रकार का आलू ।

कासिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं) खाँसी ।

क़ासिद—(संज्ञा, पु०, अ०) हरकारा, पत्र-वाहक ।

कासी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) **काशी** ।

कासीस—(संज्ञा, पु०, सं) हीरा कसीस ।

कासु—(सर्व०, दे०) किसका, काको (ब्र०), **केहिकर** (अव०) ।

काह꠸—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० कः] क्यों, क्या, कौन वस्तु का । **कहा** (ब्र०) काहा, (दे०) । "अब मोहि तात जगायेहु काहा"—[रामा०] ।

काहल—(वि०, सं) सूखा, नुकसानदेह, मुरझाया हुआ । (संज्ञा, पु०)—एक प्रकार का बाजा । वाणी जो स्पष्ट न हो ।

काहलि—(संज्ञा, पु०, सं) शिव, शंकर ।

काहली—(संज्ञा, स्त्री०, सं) युवती । जवान ।

काहि꠸—(सर्व०, दे०) [का+हि—प्रत्य०] किसे, किसको, किससे । "कहहु काहि यह लाभ न भावा ।"—[रामा०] ।

काहिण—(संज्ञा, पु०, सं०) १६पण की एक तौल ।

काहिल—(वि०, अ०) आलसी । सुस्त । [(संज्ञा, स्त्री०, अ०) **काहिली**—सुस्ती ।]

काहु*—(सर्व०, दे०) **काहू** (दे०), किसी । "काहु न संकरचाप चढ़ावा"—[रामा०] ।

काहु—(सर्व०, दे०) [हिं० का=क्या+हू—प्रत्य०] किसी, **काहु** (दे०) । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) गोभी सा एक पौधा जिसके बीज दवा के काम मे आते है । "काहू उठायौ न आँगुर हू द्वै"—[रामा०] ।

काहू—(स) किसी (पु० फा०) एक पेड़ जो दवा के उपयोग मे आता है ।

काहे—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० कथं, प्रा० कह] क्यों, किस लिए, **काये** (ब्र०) । सर्व० (दे०) किस, जैसे—काहे से, काहे को, क्यों ।

किं—(अव्य०) [सं० किम्] क्यों । (वि०, सं०, किम्] क्या । (सर्व०, सं०) कौन सा । [(यौ०) **किमपि**—कुछ भी, कोई भी, कैसे ही ।]

किंकर—(संज्ञा, पु०) [सं० किं+कृ+अ] दास, नौकर, अनुचर, परिचारक, भृत्य, सेवक । राक्षसों की एक जाति । [स्त्री० **किंकरी**—दासी) । "तटिनी, यह तुच्छ किंकरी"-मैथिली (संज्ञा, स्त्री०) **किंकरता** (सं०)]

किंकरणीय, किंकर्तव्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) क्या कर्तव्य है । क्या करना चाहिए ।—**विमूढ़**—(वि०, यौ०, सं०) क्या करना चाहिए, यह जिसे न सूझे, भौंचक, घबड़ाया हुआ, व्याकुल, कार्याकार्य-विमूढ़ । [(संज्ञा, स्त्री०) **किंकर्तव्यविमूढ़ा**]

किंकिरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०)) खून, रक्त ।

किंकिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्षुद्र घंटिका । करधनी, कमरकस । "किंकिणी क्षुद्र घंटिका"—अमर० । किंकिनी, किंकिनि—(दे०) "कंकण, किंकिणी, नूपुर धुनि सुनि"—[रामा०] ।

किंगरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) (सं० किन्नरी) छोटा चिकारा, जोगियों की छोटी सारंगी । "किंगरी बीन सितारा हो"—कबी० । किनरी (दे०) ।

किंचन—(संज्ञा, पु०, सं०) अल्प, थोड़ी वस्तु, थोड़ा, क्षुद्र । [**विलो०अकिंचन**—अत्यल्प, अतिदीन जो अल्प भी नहीं ।]

किंचित्—(वि० सं०) कुछ, थोड़ा । किंचित । "किंचित इसका रहस्य"—हितैषी [(यौ०) **किंचिन्मात्र**—थोड़ा ही, कुछ ही] । (क्रि०, वि०)—कुछ, थोड़ा ।

किंजल्क—(संज्ञा, पु०, सं०) पद्म-केसर, कमल, कमल के फूल का पराग । नाग-केसर । (वि०, सं०) पद्म-केसर के रंग का । [(यौ०) "किंजल्क जाल हैं बिखरे"—प्रसाद ।

किंतु—(अव्य०, सं०) पर, लेकिन, परन्तु, वरन्, बल्कि । "किंतु गर्व का झोंका आया"—सुभद्रा कु० **—परंतु (करना) होना**—संदेह करना (होना) **—०वादी**—(वि०, सं०) दूसरों की बात काटने वाला । [(स्त्री०) **किंतुवादिनी** । (संज्ञा, पु०) किन्तुवाद ।]

किंपुरुष—(संज्ञा, पु०, सं०) किन्नर । दोगला, वर्णसंकर । एक प्राचीन मनुष्य जाति, (वि०) निंदित, **कुत्सित पुरुष, कापुरुष** ।

किंवदंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उड़ती खबर, जन-श्रुति, अफ़वाह, दन्तकथा ।

किंवा—(अव्य०, सं०) या, याती, अथवा । किंवा (दे०) । "नृप अभिमान मोह-बस किंवा"—[रामा०] । देखिए 'किम्वा'

किंशुक—(संज्ञा, पु०, सं०) पलास, ढाक, टेसू । "निर्गंधा इव किंशुकाः ।"

कि—(सर्व० दे०) [सं० किम्] क्या, किस प्रकार । (अव्य०) (सं० किम् फ़ा० कि) एक संयोजक शब्द जो कहना आदि क्रियाओं के बाद विषय-वर्णन के लिए आता है, इतने में, तत्क्षण, या, अथवा । "की तन-प्रान कि केवल प्राना"—[रामा०] ।

किकियाना—(क्रि०,अ० अनु०) की-की या कें-कें का शब्द करना, रोना ।

किचकिच—(संज्ञा, स्त्री० अनु०) बकवाद, झगड़ा, दाँत-पीसी । झमेला । गड़बड़ी ।

किचकिचाना—(क्रि०, अ० अनु०) (क्रोध से) दाँत पीसना । दाँत पर दाँत दबाना, । [(संज्ञा,स्त्री०) **किचकिची, किचकिचाहट**—किचकिचाने का भाव ।

किचड़ाना, किचराना—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० कीचड़+आना—क्रि०] आँख का कीचड़ से भरना, कीचड़ फैलना ।

किचपिच—(संज्ञा, पु०, दे०) अव्यक्त शब्द, कीचड़ । [(क्रि०, अ०, दे०) **किचपिचाना**—दुबिधा होना, कीचड़ होना ।]

किचिरपिचिर—(वि०, अनु० दे०) गिचपिच, अस्पष्ट, गन्दा ।

किछु*—(वि०, दे०) कुछ, किछौं (प्रा०), कछु, (ब्र०) किछू, कुछू, कछूक, कछुक (ब्र०) ।

किटकिट—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) किटकिट का शब्द । [(क्रि०, अ०) **किटकिटाना**—[सं० किटकिटाय] क्रोध से दांत पीसना, किटकिट शब्द करना ।

किटकिना, किटकिन्ना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कृतक] वह दस्तावेज, जिसके द्वारा ठेकेदार अपने ठेके की चीज का ठेका दूसरे को देता है । चालाकी । स्वर्णकारों का ठप्पा ।

किटकिनादार—(संज्ञा, पु०, वि०) [हिं० किटकिना+दार प्रत्य फ़ा०] ठेकेदार से ठेके पर लेने वाला । दांतेदार ।

किटिकिरा—(संज्ञा, पु०, दे०) सोनारों का ठप्पा, जो नक्क़ासी के काम आता है ।

किटि—(संज्ञा, पु०, सं०) सुअर, बाराह ।

किटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं) चमड़े या बांस का कवच ।

किटिभ—(संज्ञा, पु०, सं०) जूँ, केश-कीट ।

किट्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) **कीट** (दे०), धातु का मैल । तेल आदि के नीचे का मैल ।

किड़कना—(अ०, क्रि०) चुपके से पलायन कर देना, भाग जाना ।

किण्व—(संज्ञा, पु०, सं०) मदिरा ।

कित*—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० कुत्र] कहाँ, किधर, किस ओर, कितै (ब्र०) ।

कितक*—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० कियत] कितना, कितेक, केतिक, केते, किते, कितो । कितिक (दे०) । "कितक दिन हरि-दरसन-बिनु खोए" —सूर० ।

कितना—(वि०, दे०) [सं० कियत] किस परिमाण, मात्रा या संख्या का, (प्रश्नार्थक)—**अधिक** –(क्रि०, वि०) कहाँ तक, बहुत, कितनो, कितो, केतो, कित्ता, कित्तो (ब्र०) । [(स्त्री०)—**कितनी**—कित्ती, केती, किती (ब्र०) ।]

कितव—(संज्ञा, पु०, स०) जुआड़ी, धूर्त, छली, दुष्ट, बंचक । धतूर । गोरोचन ।

किता—(संज्ञा, पु०, अ०) सिलाई के लिए कपड़ों की काट-छाँट, ब्योंत, ढंग, चाल । संख्या, अदद, यथा—**एक किता**-बिस्तर का भाग । प्रदेश, भू-भाग, प्रान्त ।

किताब—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) पुस्तक, ग्रंथ । बही । रजिस्टर । [**कितेब**—(दे०, वि०) **किताबी**—किताब का, किताब का सा] । **मुहा०—(बी) कीड़ा** –सदैव पुस्तक पढ़ने वाला ।—(**बी**) **चेहरा**–किताब का सा लंबा चेहरा ।

कितिक*—(वि०, दे०) कितक, कितना । **कितीक-केतिक**—(दे०) [(स्त्री०) **किती** । "दूध पियत मोंहि किती बेर भई"—**सूर०** ।]

कितेक*—(वि०, दे०) [सं० कियदेक] कितने ही, असंख्य, बहुत, कितने एक । **केते, किते** । "किते दिन ऐसेहि बीति गये"—**सूर०** । "बारन कितेक करैं"—**रत्नाकर** ।

कितै*—(अव्य०, दे०) कित, कहाँ, कुत्र, किधर । "हरगुन खानि सुजानि कितै गई"—**कुंजवि०** ।

कितो*—(वि०, दे०) [सं० कियत] कितना, **केतो, कित्तो** (ब्र०) [(क्रि०, वि०)—कितना । (स्त्री०) **किती, कित्ती**] ।

कित्ता—(वि०, दे०) [सं० कियत] केतो, कितना, कित्तो । [(स्त्री०) **कित्ती** । **ब० व०**—कित्ते, केतो]

कित्ति*—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० कीर्ति, प्रा० कित्ति] कीर्ति, यश । "अखंड कित्ति लेय देय मान लेखिये"—[रामा०] ।

कित्ते—(क्रि०, वि०, ब०, व०, ब्र०) कितने, केते ।

कित्तो—(क्रि०, वि०, ब्र०) कितना, केतो । [(स्त्री०) **कित्ती**—किती, केती] ।

किदारा, केदारा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गर्मी में आधी रात को गाई जाने वाली एक रागिनी (संगी०) ।

किधर—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० कुत्र] किस ओर, कहाँ, कितै (दे०), केधै (प्रा०) ।

किधौं*—(अव्य०, दे०) [सं० किम्) अथवा, मनु, या तो, न जानें । धौं-कैधौं (दे०) । "किधौं पद्मिनिकौं सुख देत घनो"—[रामा०] ।

किन—(सर्व, द्वि०) किन्होंने, कौन, किसने, किस का ब० व० । (क्रि०, वि०, दे०) [सं० किम्+न] क्यों न चाहे । (संज्ञा, पु०, सं० किण) चिन्ह, दाग । "बिगरी बात बनै नहीं लाख करौ किन कोय"—**रही०** ।

किनका, किनिका, किनुका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कणिक] अन्न का टूटा हुआ टुकड़ा । चावलों का कना । छोटा दाना । बूँदें, **कनूका-किनूका** (ब्र०) । "विद्रुम, हेम, बज्र को किनुका" ।

किनवानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कण+पानी] छोटी-छोटी बूँदों की झड़ी, फुही ।

किनवैया—(वि०, दे०) ग्राहक, गाहक । (क्रि०, स०, दे०) खरीदना ।

किनहा§—(वि०, दे०) [सं० कर्णक, प्रा० कण्णग्र+हा—प्रत्य०] जिसमें कीड़े पड़ गये हों (फल) कन्ना ।

किनार, किनारा*—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कोर, तीर, तट, कूल । छोर । प्रान्त । हाशिया । किसी लंबी-चौड़ी वस्तु की लंबाई या चौड़ाई के अंतिम भाग । लंबाई-चौड़ाई वाली वस्तु के विस्तार के अंतिम भाग । भिन्न रंग या बुनावट वाले कपड़े आदि का छोर । गोट, बिना चौड़ाई को वस्तु का छोर । पार्श्व, बगल । **मुहा०—खींचना (कशीकरना)** –दूर होना, हटना ।—(**रे**) **न जाना**—अलग रहना, बचना । —(**रे**) **लगना**-समाप्त होना, पार होना । —(**रे**) **बैठना** (**रहना, होना**)–अलग या दूर होना । "रही किनारे बैठ"—**कबी०** । —

करना–छोड़ देना। [(**किनारदार**)–(वि०) जिसमें किनारा बना हो। (स्त्री०) **किनारी**। ब० व० **किनारे**]

किनारी—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० किनारा] सुनहरा या रुपहला पतला गोटा जो किनारे पर लगाया जाता है, मगजी, गोट।

किनारे—(क्रि०, वि०) [हिं० किनारा] कोर या बाढ़ पर, तट पर, अलग, पृथक्। किनारा (अ०)। **मुहा०—लगना** (**या लगाना**)–किसी कार्य को समाप्ति पर पहुँचाना, पार लगाना (जीवन या नौका)।

किन्नर—(संज्ञा, पु०) [सं० किं+नर] घोड़े के से मुख वाले एक प्रकार के देवता। गाने-बजाने के पेशे वाले। [**किन्नरी** (स्त्री०)]

किन्नरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किन्नर की स्त्री। अप्सरा। एक प्रकार का तँबूरा; सारंगी। विद्याधरी। देव-वधूटी। "कहूँ किन्नरी किन्नरी लै सुनावैं" —[रामा०]।

किन्नरेश—(संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर।

किफ़ायत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) काफ़ी या अलम् का भाव, कम खर्च। बचत।—**किफ़ायती**–(वि०) कम खर्च करने वाला।—**शारी**–(संज्ञा, स्त्री०) कम खर्ची, मितव्ययिता।

क़िबला—(संज्ञा, पु०, अ०) पश्चिम दिशा। पूज्य, सम्माननीय व्यक्ति। पिता।

क़िबलानुमा—(संज्ञा, पु०, अ०) अरब लोगों का पश्चिम दिशा बतानेवाला यंत्र। [किबिलनुमा (दे०)] "वाहीतन ठहराति यह किबिलनुमा लौं दीठ"—बिहारी।

किम्—(वि०, सर्व०, सं०) क्या, कौन सा। क्यों, कैसे, कहाँ से (यौ०, अं०)। **किमपि**–कुछ भी। **किमर्थ**–(यौ०) किसलिए, क्यों। **किंकृत्वा**–(यौ०) क्या करके।

किम्वा—(अ०, सं०) अथवा, या। "किम्वा मतवाली थी यौवन की मदिरा पिये, कौन कहे"—निराला।

किमाकार—(वि०, यौ०, सं०) कुत्सित आकृति वाला। अनभिज्ञ।

किमागत—(वि०, सं०) क्यों आया हुआ। अभ्यागत।

किमाछ—(संज्ञा, पु०, दे०) केवाँच, किमाच।

किमाम—(संज्ञा, पु०) [अ० किवाम्] गाढ़ा, शहद का शरबत। तंबाकू का खमीर।

किमाश—(संज्ञा, पु०, अ०) तर्ज, ढङ्ग, वजा। ताज। गंजीफ़े का एक रंग।

किमि*—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० किम्] कैसे, किस प्रकार। "स्याम गौर किमि कहौं बखानी"—[रामा०]।

किमुत—(अव्य०, सं०) प्रश्न, वितर्कादि-सूचक अव्यय।

किम्पच—(वि०, सं०) कृपण, सूम, कंजूस।

किम्भूत—(वि०, यौ०) [सं० किं+भू+क्त] को दृश, कैसा।

किम्मत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० हिकमत] युक्ति, होशियारी, कौशल। वीरता। [**किम्मती**–(वि०) करामाती]

कियत्—(वि०, सं०) कितना। [**कियत्काल**–(यौ०) कितना समय]

कियारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० केदार] खेतों-बगीचों में थोड़े-थोड़े अंतर पर पतली मेड़ों के बीच की भूमि, जिसमें पौधे लगाये जाते हैं, क्यारी, सिंचाई के लिए खेतों मे बनाये गये विभाग। समुद्र के खारा पानी के रखने का कड़ाह (नमक जमाने के लिए)।

कियाह—(संज्ञा, पु०, सं०) लाल घोड़ा।

किरंटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० क्रिश्चियन] [केरानी (दे०)] तुच्छ। किरस्तान–क्रिस्तान या ईसाई।

किरका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्कट—कंकड़ी] छोटा टुकड़ा, कंकड़ी, किरकिरी।

किरकिट—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० क्रिकेट] गेंद-बल्ले का खेल, क्रिकेट।

किरकिरा—(वि०, दे०) [सं० कर्कट] कँकरीला, महीन और कड़े रवे वाला। [**किरकिरी** (स्त्री०)] **मुहा०—होना** (**करना**)–रंग में भंग होना, आनंद में विघ्न होना (करना)। (**मन**)—**होना** (**करना**)–विमनता होना (करना)।

किरकिराना—(क्रि०, अ०) [हिं० किरकिरा] किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा होना।

किरकिराहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० किरकिरा+हट प्रत्य०] आँख में किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा। दाँत-तले कँकरीली वस्तु का शब्द। कँकरीलापन।

किरकिरी, किरकिटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कर्कर] धूल या तिनके का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा पैदा करे। अपमान, हेठी। "तनिक किरकिरी

परतही"—[रामा०]। **मुह०—होना**-बदनामी या अपमान होना; हेठी होना।

किरकिल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कृकलास] गिरगिट, गिरगिटान। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) कृकल। **(संज्ञा, पु०, दे०)** किलकिल, झगड़ा।

किरच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कृति=कैंची] नोक के बल सीधी भोंकी जाने वाली एक छोटी तलवार। छोटा नुकीला टुकड़ा। "जनु पीक कुपूरन की किरचै"—तुल०। [किरचक (दे०)]

किरचना—(स०, क्रि०, दे०) फेंकना, बिखेरना।

किरण, किरन—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रश्मि, अंशु, तेज की रेखा। "किरण मूर्त्तियाँ खेल रही थीं गोद में"—मैथिली०।—**माली**-(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य। चंद्र। किरणकर। "गए किरणमाली अस्ताचल" —गिरीश। रश्मिमाली। प्रकाश की अति सूक्ष्म रेखाएँ जो सूर्य, चंद्र, दीपक आदि कांतिमान पदार्थों से निकलकर फैलती हैं। **मुहा०—फूटना**-सूर्य या चंद्र का उदय होना। कलाबतून या बादले की बनी झालर। [किरिन् (दे०)]

किरणोज्ज्वल—(वि०, सं०, यौ०) [किरण+उज्ज्वल] किरण की तरह अथवा किरण के द्वारा जिसे निर्मल कांति प्राप्त हो।

किरपा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कृपा (सं०), दया। [**किरपाल** (वि०)]

किरपानঃ—(संज्ञा, पु०, दे०) कृपाण (सं०), तलवार।

किरम (किरिम)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कृमि] कृमि, कीट, कीड़ा। [किरिमदाना (दे०)]

किरमाल*—(संज्ञा, वि०, दे०) [सं० करवाल] तलवार। [किरवार (दे०)]

किरमिच—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० कैनवस] एक प्रकार का महीन टाट या मोटा विलायती कपड़ा जिसके जूते, बेग आदि बनते हैं।

किरमिज (किमिज़)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कृमिज] हिरमिजी। मटमैलापन लिये करौंदिया रंग का घोड़ा। [**किरमिजी**-(वि०) किरमिज के रंग का, हिरमिजी]

किरराना—(क्रि०, अ०, अनु०) क्रोध से दाँत पीसना, किर्र-किर्र शब्द करना, अतिक्रम करना।

किरवानঃ—(संज्ञा, पु०, दे०) कृपाण (सं०), तलवार, एक प्रकार का दंडक छंद (पिं०)।

किरवाराঃ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कृतमाल] अमलतास, खड्ग, करवाल।

किराँची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० कैरेज] रेल की मालगाड़ी का डिब्बा। भूसा आदि लादने की बैलगाड़ी। कराची नगर।

किरात, किरातक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन जंगली जाति। हिमालय के पूर्वीय भाग के आस-पास का प्रदेश (प्राचीन), भील, निषाद। चिरायता। साईस। "यह सुधि कोल-किरातन पाई"—[रामा०]। [**किरातिनी, किरातिन, किराती** (स्त्री०)]—**किरातपति**-(यौ०) शिव, किरातेश।

किरात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० केरात] ४ जौ के बराबर जवाहिरातों की एक तौल।

किरातार्जुनीय—(संज्ञा, पु०, सं०) भारवि द्वारा रचित संस्कृत का एक महाकाव्य।

किराति—(स्त्री०, सं०) दुर्गा। गंगा।

किरातिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जटामासी। किरात की पत्नी।

किरान—(क्रि०, वि०, दे०) पास, निकट।

किराना—(संज्ञा, पु०, दे०) केराना, मेवा-मसाला आदि। (क्रि०, अ०, दे०) कुंठित या गोठिल होना। टूट कर दाँतेदार होना। सूप से पछोरना। "...काटि न किरानी है"—(रत्ना०)।

किरानी—(संज्ञा, पु०, दे०) क्रिश्चियन (अं०) ईसाई। [केरानी (दे०)]

किराया—(संज्ञा, पु० अ०) दूसरे की किसी वस्तु को काम मे लाने के बदले उसके मालिक को जो दिया जाय, भाड़ा, मुआवजा, केराया। [रेण्ट, फेयर] **मुहा० किराये के**-व्यर्थ के, अयोग्य (लोग)।

किरायेदार—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० किरायादार] कुछ भाड़ा देकर दूसरे की वस्तु को कुछ काल तक काम में लाने वाला।

किरार—(संज्ञा, पु०, दे०) एक नीच जाति। नई ब्यायी गाय-भैंस के दूध की फटी खजली।

किरावल—(संज्ञा, पु०, दे०) [तु० करावल] युद्ध-क्षेत्र को ठीक करने के लिए आगे भेजी गयी सेना। बंदूक से शिकार करने वाला, शिकारी, अहेरी, आखेटक।

किरासन (किरोसिन)—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० किरोसिन] मिट्टी का तेल।

किरिच (किर्च)—(संज्ञा, पु०, दे०) टुकड़ा, खंड। किरच नामक एक अस्त्र।

किरिमदाना—(संज्ञा, पु०, दे०) कृमि (सं०), थूहर का किरमिज नामक कीड़ा (लाख का सा) जो सुखा कर रंगने के काम में आता है।

किरिया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्रिया] शपथ, सौगंध, कसम। कर्तव्य। मृतक-कर्म, श्राद्धादि कृत्य (काम)। सौंह।—**करम**-क्रिया-कर्म (सं०), मृतक-कर्म, श्राद्धादि। **मुहा०**—**धराना**-क़सम देना।

करीट—(संज्ञा, पु०, सं०) [क्रीट (दे०)] मस्तक का एक भूषण, शिरोभूषण, मुकुट, ताज। ८ भगण का एक वर्णिक सवैया (पिं०) "रघु, भगीरथ सगरराज्य-किरीट"—मैथिली०।

किरीटिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मुकुटधारिणी, किरीट वाली। "हिम किरीटिनी मौन आज तुम शीश झुकाए"—पंत।

किरीटी—(संज्ञा, पु०, सं०) इंद्र। अर्जुन। (वि०) किरीट वाला।

किरीरा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्रीड़ा] खेल, कौतुक। "हँसहिं हंस औ करहिं किरीरा"—जायसी।

किर्तनिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कीर्तन] कीर्तन करने वाला।

किर्मीर—(संज्ञा, पु०, सं०) भीम-द्वारा मारा गया एक राक्षस (भा०)।

किल—(अव्य, सं०) निश्चय, सचमुच।

किलक—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० किलकना] हर्षध्वनि करने की क्रिया। प्रभा। किलकार। (संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० किलक] एक प्रकार का नरकट जिसकी क़लम बनती है। [किलिक (दे०)]

किलकन—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शिशुओं, बंदरों आदि का (अथवा) की तरह किलकारी मारना। "जिसका रोदन, जिसकी किलकन"—महादेवी।

किलकना—(वि०, अ०, दे०) [सं० किलकिल] हर्ष-ध्वनि करना। "किलकत, हँसत, दुरत, प्रगटत मनु"—सूर०।

किलकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० किलक] हर्ष-ध्वनि। [**किलकारी** (स्त्री०)]

किलकिंचित्—(संज्ञा, पु०, सं०) संयोग शृंगार के ग्यारह हावों में से एक, जिसमें नायिका एक साथ कई भाव प्रगट करती है (काव्य०)। "हरष, गरब, अभिलाष, श्रम, हास, रोष, अरु भीति। होत एक ही संग सो, किलकिंचित की रीति।"—मति०।

किलकिल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) झगड़ा, वाद-विवाद।

किलकिला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हर्ष-ध्वनि, किलकारी। बानरों का शब्द। (संज्ञा, पु०) [सं० कुकल] मछली खाने वाली चिड़िया। (संज्ञा, पु० अनु०) समुद्र का वह भाग जहाँ तरंगें शब्द करती हों।

किलकिलाना—(क्रि०, अ०, हि०) प्रमोद-ध्वनि करना, चिल्लाना। हल्ला-गुल्ला या झगड़ा करना, वाद-विवाद करना।

किलकिलाहट—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) किलकिलाने का भाव।

किलचिया—(संज्ञा, पु०) बकुले की छोटी जाति-विशेष।

किलना—(क्रि०, अ०) [हि० कील] कीलन होना, कीला जाना, वश में किया जाना, गति का अवरोध होना। "विरह सर्प स्वयं फिर तो किला"—मैथिली०। (संज्ञा, पु०, दे०) एक क्षुद्र जन्तु जो कुत्ते आदि के शरीर में चिपटता है।

किलनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पशुओं की देह में चिपटने वाला एक क्षुद्र कीड़ा।

किलबिलाना—(क्रि०, अ०, दे०) कुलबुलाना, चुलबुलाना।

किलवाँक—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का काबुली घोड़ा।

किलवाना—(क्रि०, सं०) [हि० किलना का प्रे० रूप] कील जड़ाना या लगवाना। यंत्र-मंत्र-द्वारा भूत-प्रेत सर्पादि की बाधा को शान्त कराना।

किलवारी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कर्ण] पतवार, कन्ना, छोटा डाँड़।

किलविष—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० किल्विष] पाप। रोग। दोष। विकार।

किलहँटा—(संज्ञा, पु०, दे०) सिरोही नामक एक प्रकार का पक्षी।

किला—(संज्ञा, पु०, अ०) दुर्ग, गढ़, कोट, सुदृढ़ स्थान (**सेना का**)। [**किलेदार** (संज्ञा, पु०)- दुर्गपति]—**बन्दी**-दुर्गनिर्माण, मोरचाबन्दी, व्यूह-रचना।

किलाना—(क्रि०, स०, दे०) किलवाना।

किलावा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० कलावा] हाथी के गले का रस्सा, जिसमें पैर फँसा कर महावत उसे चलाता है।

किलोल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कलोल] कल्लोल, मौज, आमोद-प्रमोद, कलोल।

किलास—(संज्ञा, पु०, सं०) एक तरह का कोढ़, सिध्म रोग।

किलोमीटर—(पु०, अं०) एक नाप जो क़रीब ५/८ मील की दूरी की होती है।

क़िल्लत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कमी, तङ्गी।

किल्ला—(संज्ञा, पु०,) [हिं० कील] बड़ी कील, खूँटा, कीला ।

किल्ली—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कील] कील, खूँटी, सिटकिनी, किल्ली, किसी कल या पेंच की मुठिया, अर्गल । **मुहा०—(किसी की) किसी के हाथ में होना**-किसी का किसी पर वश होना ।—**घुमाना (ऐंठना)**-दाँव या युक्ति लगाना ।

किल्विष—(संज्ञा, पु०, सं०) पाप । दोष । रोग । अपराध ।

किवाँच—(संज्ञा, पु०, दे०) केवाँच [सं० कच्छु], सेम की सी एक बेल, जिसकी लम्बी फलियों की तरकारी बनती है, कपिकच्छु, कौंछ, [कौंच (दे०)]

किवाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कपाट] द्वार की चौखट पर जड़े हुए लकड़ी के पल्ले, जिनसे द्वार बन्द हो जाता है, पट, कपाट, केवाड़ा, किवाड़ा । (स्त्री० अल्प०) [**किवाड़ी, किवार, केवार** (दे०)]

किशमिश, किसमिस—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सुखा छोटा बेदाना अंगूर । [किसमिस (दे०)] [**किशमिशी**-(वि०) किशमिश-युक्त, किशमिश के से रंग का] (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का अमौआ । किस ब्याज से (बहाने से)। "किसमिस से चिट्ठी लिखूँ" ।

किशलय—(संज्ञा, पु०, सं०) नया कोमल पत्ता, कल्ला, कोंपल । [किसलय (दे०)] "किरण दृक्पात आरक्त किशलय सकल"—निराला ।

किशोर—(संज्ञा, पु०, सं०) ११ से १५ वर्ष तक का बालक, पुत्र, बेटा । बाल और युवा अवस्था के बीच की, ११ से १५ वर्ष तक की अवस्था। "वय किशोर सब भाँत सुहाये ।"—तुल० ।—**किशोरक बन्दी**-बालक जिसे कैद की आज्ञा मिली हो। (जुवेनाइल कनविक्ट)—**वयस्क**-(वि०) ग्यारह से १५ वर्ष की अवस्था वाला। "यक किशोर वयस्क कुमार से"—हरिऔध ।

किशोरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किशोरावस्था प्राप्त स्त्री, कुमारी ।

किशोरी जी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राधिका, सीता जी ।

किश्त—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बादशाह का किसी मोहरे की घात में होना (शतरंज में), शह । किसी रक़म का भाग । [**किश्त ब किश्त, किश्त दर किश्त** (यौ०)]

किश्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० कश्ती] नाव, कश्ती । छिछली थाली या तश्तरी । शतरंज में हाथी का मोहरा ।

किश्तीनुमा—(वि०, फ़ा०) नाव के आकार का, जिसके दोनो किनारे धन्वाकार होकर छोरों पर कोना बनाते हुए मिलें ।

किष्किंधा—(संज्ञा, पु०, सं०) मैसुर के आसपास के देश का प्राचीन नाम ।—**किष्किंधा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक पर्वत उसकी गुफा । बालि वानर की राजधानी । [किकिंधा (दे०)]

किस—(सर्व०, दे०) [सं० कस्य] विभक्ति लगने से पूर्व कौन और क्या का रूप, यथा—किसका । (संज्ञा, पु०, अं०) चुम्बन ।

किसकना, किसकिसाना—(क्रि०, अ०, दे०) दाँतो में धूल के कणों का रगड़ना। [**किसकिसाहट** (संज्ञा, स्त्री०)]

किसनई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) किसानी, खेती, कृषक-धर्म, कृषि ।

किसब*—(संज्ञा, पु०, दे०) कसब, कारीगरी । व्यवसाय ।

किसबत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) उस्तरा, कैंची आदि रखने की नाइयों की पेटी या थैली ।

क़िसम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क़िस्म, प्रकार, जाति, तरह ।

किसमत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० क़िस्मत] भाग्य । कई प्रान्तो या ज़िलों का समूह, कमिश्नरी ।

किसमी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० कसबी] श्रमजीवी, कुली, मजदूर ।

किसलय—(संज्ञा, पु०, दे०) नया पल्लव । "किसे बुलाती हिला-हिला कर किसलय-कर सुकुमार"—गोपालशरण सिंह ।

किसान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कृषाण, प्रा० किसान] कृषि या खेती करने वाला, कृषक ।

किसानी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० किसान] खेती, किसान का काम । [**खेती-किसानी** (यौ०)]

किसी—(सर्व०, वि०) [हिं० किस+ही] विभक्ति लगने से पूर्व कोई का रूप । [किसु (दे०)] काहू, (ब्र०), केहि (अव०) ।

किसे—(सर्व०) [हिं० किस] किसको । ब० व० किन्हें ।

किस्त—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) [फ़ा० क़िस्त] कई बार में ऋण चुकाने का ढंग, निश्चित समय पर दिया जाने वाला ऋण-भाग ।—**बन्दी**-(स्त्री०) थोड़ा-

थोड़ा करके रुपया अदा करने का ढंग।—वार—(क्रि०, वि०) क़िस्त करके, क़िस्त पर, किस्त ब किस्त, किस्त दर किस्त।

किस्म—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रकार, भेद, ढङ्ग, तर्ज़, चाल। तरह, भाँति। [किसिम (दे०)]

किस्मत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) भाग्य, प्रारब्ध, नसीब, तक़दीर, अदृष्ट, नियति। [अं० फेट]। **मुहा०—आजमाना**-किसी काम को उठाकर देखना कि उसमे सफलता होती है या नहीं। [**आजमाइश** (संज्ञा)]—**चमकना या जागना**-भाग्योदय होना, भाग्य का प्रबल होना [**विलो०**—किस्मत सोना-भाग्योदय न होना]—**फूटना**-मन्द-भाग्य होना।—**को (पर) रोना**-अपनी मन्द-भाग्यता पर दुःख करना, किसी काम में असफल होकर पछताना।—**ठोंक कर कुछ करना**-अपने भाग्य पर भरोसा करके करना।—**वर**-(वि०, फ़ा०) भाग्यवान। [**खुशकिस्मत**-(संज्ञा, स्त्री०) **किस्मती** (यौ०)। **विलो० बदकिस्मत** (संज्ञा, स्त्री०) **बदकिस्मती** (वि०)]

क़िस्सा—(संज्ञा, पु०, अ०) [**कहानी** दे०] कथा, आख्यायिका। समाचार। कांड। झगड़ा। वृत्तान्त। हाल। बात। [**कहानी** (यौ०)] **मुहा०—कोता यह**-संक्षेप में यह।

किहानी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) कहानी।

की—(प्रत्य०, हि०) सम्बन्ध कारक की विभक्ति का स्त्रीलिङ्ग रूप। क्रि०, स०, (सं० कृत, प्रा० कि) करना (हि०) के सा० भू० काल का स्त्री० रूप। अव्य (दे०) कि, या, अथवा। "की तुम तीन देव महँ कोऊ। नर नारायन की तुम दोऊ। की तन प्रान कि केवल प्राना"—[रामा०]।

कीक—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) चीख़, चीत्कार।

कीकना—(क्रि०, अ०, अनु०) की-की करके चिल्लाना, चीखना, चिल्लाना।

कीकर—(संज्ञा, पु०, सं०) मगध देश का प्राचीन वैदिक नाम। [**कीकरी** (संज्ञा, स्त्री०)] घोड़ा। कीकरदेश-वासी अनार्य जाति-विशेष (प्राचीन)। (वि०) कृपण। दरिद्र। पापी।

कीकड़, कीकर—(संज्ञा, पु०) [दे०, कंकराल] बबूल। "कीकर-पाकरताल तमाला"—[रामा०]

कीकस—(संज्ञा, पु०, सं०) हाड़, अस्थि।

कीका—(संज्ञा, पु०, दे०) घोड़ा।

कीकान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० केकाण] पश्चिमोत्तर का एक प्रदेश, जो घोड़ों के लिए प्रसिद्ध है, वहाँ का घोड़ा। [**कीकानी कीच** (वि०)] (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कच्छ] कर्दम (सं०) कीचड़, पंक। "अन्तहु कीच तहाँ जहँ पानी"—[रामा०]।

कीचक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का बाँस जिसके छेदों में घुस कर वायु शब्द करता है। केकय-नृप-पुत्र, राजा विराट का साला, द्रौपदी पर इसकी कुदृष्टि देख भीम ने इसे मार डाला था। (भा०) एक दैत्य। "सकीचकैः मारुत-पूर्ण रंध्रैः कूजद्भिरापादित वंशकेतुम्"—[रघुवंश]। "छिद्रों में जा क्वणित करना वेणु सा कीचकों को"—हरिऔध।

कीचड़—(संज्ञा, पु०) [हि० कीच+ड़ प्रत्य०] पानी से गीली मिट्टी, कर्दम, कीच, पंक।

कीचर—(दे०) आँख का सफेद मैल। "आँखिन बरौनिन में कीचर छपानो है"—बेनी०।

कीजिय (कीजै)—(क्रि०, स०) [हि० करना] कीजिये, करिये। [**विधिल० कीजियो, कीजो, कीजौ** ब्र०]

कीट—(संज्ञा, पु०, सं०) रेंगने या उड़ने वाले क्षुद्र जन्तु, कीड़ा-मकोड़ा, कृमि। [कीरा (दे०), किरवा (दे०)] (संज्ञा, स्त्री०) [सं० किट्ट] जमा हुआ मैल, मल। [**कीटघ्न** (संज्ञा, पु०)-गंधक]—**पोषण**-(संज्ञा, पु०, सं०) रेशम के कीड़े पालना। [सेरीकल्चो]—**परिदर्शक**-रेशमी कीड़े के पालन का निरीक्षण करने वाला व्यक्ति। [सेरीकल्चरल इंसपेक्टर]—**भोजी**-(संज्ञा, पु०, सं०) वे जीव-जन्तु जो कीड़े-मकोड़ों का भक्षण करते हैं। [इन्सेक्टिवोरस] (**वि०**) कीड़ों-मकोड़ों को खाने वाला। —**भृंग (न्याय)**-(संज्ञा, पु०, सं०) दो या अधिक वस्तुओं के मिल कर एक रूप हो जाने पर प्रयुक्त होने वाला एक न्याय।—**मणि**-(संज्ञा, पु०, सं०) जुगुनू, खद्योत।—**विज्ञान**-(संज्ञा, पु०, सं०) कीड़े-मकोड़ों-सम्बन्धी विज्ञान। [एण्टामालॉजी]

कीटाणु—(संज्ञा, पु०, सं०) वे सूक्ष्मतम कीड़े जो हवा या खाने-पीने की वस्तुओं मे रहते हैं, जिन्हें केवल दूरबीन से देख सकते हैं [जर्म्स]।

कीड़ा, कीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कीट, प्रा० कीड़] छोटा उड़ने या रेंगने वाला जन्तु, कृमि, कीट। किरवा (दे०)] साँप, जूँ, खटमल आदि। —**मकोड़ा**। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० कीड़ा]—**कीड़ी**-छोटा कीड़ा, चीटी, पिपीलिका, जुआर

के पेड़ों में लगने वाला एक कीड़ा । [कीरी (दे०)] "साँई के सब जीव हैं, कीरी, कुंजर दोय" —कबीर । [**किड़हा (किरहा**)–(वि०) कीड़े वाला, घुना, कीट-युक्त ।] **मुहा०—काटना**–चंचलता होना, जी ऊबना ।**—पड़ना**–(वस्तु में) कीड़े उत्पन्न होना, दोष होना ।**—होना**–किसी बात या कार्य में व्यस्त होना ।

कीतनक—(संज्ञा, पु०, सं०) मुलहटी, जेठी मधु (औषधि) ।

कीदहुँ—(अव्य०, प्रान्ती०) कदाचित, किधौं, शायद, या, अथवा, कैधौं, धौं । "कीदहुं रानि कौसिलहिं परिगा भोर हो"—तुल० ।

कीदृक—वि० (सं०) किस प्रकार का, कैसा, किम्भूत । [कीदृक्ष सं०]

कीधौं—(अव्य०, प्रान्ती०) किधौं (ब्र०) या, अथवा, या तो ।

कीनना§—(क्रि०, स०, दे०) [सं० क्रीणन] खरीदना, मोल लेना ।

कीना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) द्वेष, बैर । [हिं० करना] सा० भू० का रूप । कीन्हा (अव०), किया, कीन्हो, कीनो (ब्र०) ।

कीनिया—(वि०) [फ़ा० कीना] द्वेषी, कपटी, छली, कीना रखने वाला ।

कीप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० कीफ़] द्रव पदार्थ को ठीक तरह से तंग मुँह के बरतन में डालते समय लगाई जाने वाली चोंगी, छुच्छी ।

कीबो—(क्रि०, स०, प्रान्ती०) [हिं० करना] करना, करिबो (ब्र०) । [**कीबी** (स्त्री०)]

क़ीमत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दाम, मूल्य । [**क़ीमती** (वि०)] (अ०) बहुमूल्य, अनमोल, अमूल्य । [**बेशक़ीमत**–(यौ०) बहुमूल्य]

क़ीमा—(संज्ञा, पु०, अ०) बहुत छोटे-छोटे टुकड़ों में कटा गोश्त ।

कीमिया—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) रासायनिक क्रिया, रसायन ।

कीमियागर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) रासायनिक परिवर्तन में दक्ष, रसायन बनाने वाला । [**कीमियागीरी** (संज्ञा, स्त्री०)]

कीमुख्त—(संज्ञा, पु०, अ०) हरे रंग और दानेदार घोड़े या गधे का चमड़ा ।

कीर—(संज्ञा, पु०, सं०) कीरक, शुक, सुग्गा, तोता, सुआ । [सुगना (दे०)] । व्याध, बहेलिया । काश्मीर देश । काश्मीरी व्यक्ति ।

कीरत, कीरति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कीर्ति] यश, बड़ाई, नामवरी, प्रशंसा । कीर्ति । [कीरती (दे०)] कित्ति । "कीरति अति कमनीय"—[रामा०] ।

कीर्ण—(वि०, सं०) बिखरा हुआ । ढँका हुआ । मृत ।

कीर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) कथन, यश या गुण-कथन । कृष्ण-लीला-सम्बन्धी भजन या कथा आदि । **कीर्ति भजन**–किसी के यश का वर्णन ।

कीर्तनिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कीर्तन + इया प्रत्य०] कीर्तन या कृष्ण-लीला सम्बन्धी भजन, कथा कहने वाला, कथक । गाने वाला ।

कीर्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सत्क्रिया । पुण्य, ख्याति । बड़ाई, यश, नेकनामी । "कीर्ति गयी कल्याण गया सब, आयी विडम्बना सारी"—गिरीश । राधा की माता । प्रसाद । कीरत । [कीर्तो (दे०)] आर्या-छंद के भेदों मे से एक, एक दशाक्षरी वृत्त (पिं०) ।**—कर**–(वि०) यशस्कर, ख्याति देने वाला, कीर्तिकारक । **—पताका**–(यौ०) (संज्ञा, पु०, सं०) यश-चिन्ह ।**—प्रिय,—कामी**–(वि०) यश चाहने वाला, कीर्त्याकांक्षी, कीर्ति-प्रार्थी । यश की इच्छा करने वाला । "कोई तुम ऐसा भी कीर्ति कामी वीरवर, समर मे"—निराला । **—मान, वान**–(वि०, सं०) यशस्वी, विख्यात, प्रख्यात, प्रसिद्ध ।**—शेष**–(संज्ञा, पु०, यौ०, स०) मरण, यश की समाप्ति, कीर्त्यावशेष, कीर्त्यावशिष्ट । **—स्तम्भ**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी की कीर्ति को स्मरण कराने के लिए बनाया गया स्तंभ या खंभा, कीर्ति को स्थायी करने वाला कार्य या पदार्थ, यशस्तम्भ ।

कीर्तित—(वि०, सं०) कथित, उक्त । प्रसिद्ध ।

कील—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लोहे या काठ आदि की खूँटी, किल्ली । [कीली (दे०)] मेख । काँटा । योनि मे अटक जाने वाला मूढ़ गर्भ (वैद्य०) । नाक का एक छोटा आभूषण (स्त्रियों का) लौंग । मुहासे या फुड़िया की मांस-कील । जाँते के बीच का खूँटा । कुम्हार के चाक की खूँटी । स्तंभन मंत्र । तृण, पतंग । **—काँटा**–(यौ०) साज-सामान, औज़ार ।

कीलक—(संज्ञा, पु०, सं०) कील, खूँटी । एक देवता (तंत्र) । किसी मंत्र की शक्ति या उसके प्रभाव का नाशक मंत्र । स्तंभित करने वाला । ६० वर्षों में से एक । केतु-विशेष । रोक । किवाड़ की कील । एक स्तोत्र ।

कीलन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिबंध, बंधन, रोक, रुकावट । मंत्रादि से कीलने का काम । [**कीलनीय** (वि०)]

कीलना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कीलन] कील लगाना । कील ठोंककर तोपादि का मुँह बन्द करना । किसी मंत्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना । साँप को ऐसा मुग्ध करना कि वह काट न सके । अाधीन या वशीभूत करना । स्तंभित करना, जड़ीकृत करना । "विधि-लिखित कुअंकों की क्रिया कीलती थी ।" —हरिऔध ।

कीला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कील] बड़ी कील । जाँते का खूँटा । चाक की खूँटी । खीला (प्रा०) ।

कीलाक्षर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) काबुल की एक अति प्राचीन लिपि, जिसके अक्षर कील के आकार के होते थे ।

कीलाल—(संज्ञा, पु०, सं०) अमृत । जल । रक्त । मधु । पशु । [**कीलालाधि**–(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र, सागर]

कीलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धुरे की खूँटी । एक प्रकार का बाण । मनुष्य की एक हड्डी ।

कीलित—(वि०, सं०) कील जड़ा । मंत्र से स्तंभित । कीला हुआ, जड़ीकृत । "क्या यहाँ कीलित हुए उस काल ?"—मैथिली० । [**कीलनीय** (वि०)]

कीलिया—(संज्ञा, पु०, सं०) पुर हाँकने वाला व्यक्ति ।

कीली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कील] चक्र के मध्य की कील, कील, किल्ली । [**कीलित, कीली हुई** (क्रि०, वि०)]

कीश, कीस—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) बंदर, वानर, मर्कट, कपि । चिड़िया । सूर्य । [कीसा (दे०)] (वि०, सं०) नंगा, विवस्त्र । शाखामृग । "मचक मचक वह कीश-मंडली खेलती"—मैथिली० ।—**ध्वज**–अर्जुन, कपिध्वज ।—**कुंजर**–(संज्ञा, पु०, सं०) अंगद । कपि । कुंजर ।—**कोष**–(संज्ञा, पु०, सं०) मर्कट-कोष, बंदर के गालों के नीचे का स्थान ।—**पर्णी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपामार्ग, चिरचिरा ।

कीशेश-कीशेन्द्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुग्रीव, कपीश, कीशपति ।

कीसा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) थैली, खीसा । जरायुज । बन्दर, कीश (सं०) ।

कुँअर-कुँअरेटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुमार] लड़का, पुत्र, बालक । राज-पुत्र । [**कुँआरी, कुँअरि, कुँअरेटी** (संज्ञा, स्त्री०)] "कुँअर कुँआरि कल भाँवरि देहीं", "कुँअरि कुँआरि रहै का करऊँ"—[रामा०] ।—**विलास**–(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का धान ।

कुँआरा—(वि०, दे०) [सं० कुमार] कुँवारा, बिना ब्याहा, कुँवार । [**कुँआरि, कुँआरी** (स्त्री०, दे०)]—**पात्र**–अविवाहित ।

कुँई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कैरव, कुमुदिनी ।

कुंकड़—(वि०, दे०) एकट्ठा, एकत्रित ।

कुंकुम—(संज्ञा, पु०, सं०) केसर, रोली, जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं । कुंकुमा । "कुंकुम-पंक-कलंकितगात्रः" ।

कुंकुमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंकुम] झिल्ली या लाख का बना पोला गोला जिसमें गुलाल भर कर होली में मारते हैं ।

कुंगड़ा—(वि०, दे०) बलवान, स्वस्थ, संड-मुसंड, हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा ।

कुंचन—(संज्ञा, पु०, सं०) सिमटना, सिकुड़ने की क्रिया, आकुंचन, संकुचन । [**कुंचनीय** (वि०)]

कुंचकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कंचुकी] भूला । चोली ।

कुंचि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पसर, अञ्जलि । कुंजी, कुंची ।

कुंचित—(वि०, सं०) सिकुड़ा या घूमा हुआ, टेढ़ा, घुँघरवाले, छल्लेदार (बाल) । [**कुंचित-कुंतल** (यौ०)]

कुंची, कुंजी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ताली, चाभी । कुंचिका (सं०) किसी किताब की टीका, कुंजी । कालाजीरा ।

कुंज—(संज्ञा, पु०, सं०) वृक्ष, लतादि से मंडप सा ढका स्थान, निकुंज । (संज्ञा, पु०) [फ़ा० कुंज —कोना] दुशाले के कोनों के बूटे ।—**कुटीर**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुंज-गृह, लताओं से घिरा घर, कुंज कुटी ।"कुंज-कुटीरे यमुना-तीरे मुदित नटति बनमाली" ।—**गली**–(संज्ञा, स्त्री०, हि०) बगीचों में लताओं से छाया हुआ पथ । पतली तंग गली । "कुंज गलीन मैं संग अलीन के"—कुंज० ।

कुंजक*—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्तःपुर में आने-जाने वाला ड्योढ़ी का चोबदार, कंचुकी ।

कुँजड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंज+ड़ा—प्रत्य०] तरकारी बोने और बेचने वाली एक जाति । [**कुंजड़िन, कूजरी** (स्त्री०)] "कूजरी साग को बेचने-हारी" ।

कुंजर—(संज्ञा, पु०, सं०) गज, हाथी । [**कुंजरा, कुंजरी** (स्त्री०)] **मुहा० कुंजरो वा नरो वा, कुंजरो-नरो**-श्वेत या कृष्ण । अनिश्चित या दुविधा की बात । बाल, केश । अंजना के पिता और हनुमान के नाना । छप्पय का २१ वाँ भेद (पिं०)। पाँच मात्राओं के प्रस्तार में प्रथम रूप । आठ की संख्या । एक नाग । पर्वत । देश । च्यवन ऋषि के उपदेशक । एक शुक । हस्त नक्षत्र । पीपल ।—**मणि**-हाथी के मस्तक से निकलने वाली मणि, गजमुक्ता । "कुंजर-मणि कंठा कलित"—तुलसी० । (वि०) श्रेष्ठ । "कपि-कुंजरहिं बोलि लै आये"—[रामा०] । "कटकटाइ कपि-कुंजर भारी" ।

कुंजबिहारी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रीकृष्ण । कुंज में बिहरने वाला ।

कुंजरेन्द्र, कुंजरेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गजेन्द्र, ऐरावत, दंतीन्द्र ।

कुंजल—(संज्ञा, पु०, दे०) काँजी, कुंजर ।

कुंजा—(संज्ञा, पु०, दे०) कूजा, पुरवा, कुल्हड़ ।

कुंजातिरम्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अति रमणीय कुंज, लता-भवन जिसमें बहुत सुख प्राप्त हो । "कालिन्दी के पुलिन पर थी एक कुंजातिरम्या" ।—हरिऔध ।

कुंजालय—(संज्ञा, पु०, सं०) कुंज-स्थान ।

कुंजिका (कुंचिका)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुंजी । कालाजीरा ।

कुंजित—(वि०) कूजित ।

कुंजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुंचिका] चाभी, ताली । वह पुस्तक जिससे किसी पुस्तक का अर्थ खुले, टीका । [की] **मुहा०—(किसी की)—हाथ में होना**-किसी का भेद जानना, किसी का वश में होना ।—**घुमाना या ऐंठना (किसी की)**-उसके साथ युक्ति से काम करना ।

कुंठ—(वि०, सं०) जो चोखा या तीक्ष्ण न हो, गुठला, कुंद । मूर्ख । [**कुंठन (संज्ञा, पु०)**]

कुंठित—(वि०, सं०) जिसकी धार तीक्ष्ण न हो, गुठला । [गोठिल (दे०)] कुंद । मंद । बेकाम, निकम्मा । "कुंठित ह्वै गो कुठार अनैसो"—[रामा०] ।

कुंड—(संज्ञा, पु०) [सं० कुंड + अल्] चौड़े मुँह का गहरा बर्तन, कुंडा । अन्न नापने का एक प्राचीन मान । छोटा तालाब । अग्निहोत्रादि का एक गड्ढा या धातु का पात्र । बटलोई । थाली । पूला । लोहे का टोप । [कुंड (दे०)] हौदा । खड्ड । पति रहते उपपति से उत्पन्न पुत्र, जारज । यज्ञ-गर्त ।

कुँडरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंड] कुंडा, मटका, बड़ा घड़ा या गगरा ।

कुंडल—(संज्ञा, पु०, सं०) सोने या चाँदी का, मंडलाकार, कान का एक भूषण । "मकराकृत गोपाल के कुंडल सोहत कान"—बिहारी । बाली, मुरकी, (गोरख पंथी) कनफटों के कानों का एक गोल गहना । कड़ा । रस्सी का गोल कुंदा । मोट या चरसे के मुँह का लोहे का गोल मँडरा । मेखला । लम्बी लचीली वस्तु की कई गोल फेरों में सिमटने की स्थिति । फेंटा । मंडल । चंद्र या सूर्य के चारों ओर बदली या कुहरे में दीख पड़ने वाला मंडल । [हैलो] । दो मात्राओं और एक वर्ण का एक मात्रिक गण (पिं०) । २२ मात्राओं का एक छंद (पिं०) । नाभि ।

कुंडलाकार—(वि०, यौ०, सं०) वर्तुलाकार, गोल, मंडलाकार, वृत्ताकार । [कॉयल्ड] [हेलीकोएड] [**कुंडलाकृति** (यौ०, स्त्री०, सं०)]

कुंडलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मंडलाकार रेखा । कुंडलिया छंद (पिं०) ।

कुंडलित—(वि०, सं०) मंडलीकृत, वृत्ताकृत । कुंडल की मुद्रा में स्थित ।

कुंडलिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुषुम्ना नाड़ी के मूल में मूलाधार चक्र के निकट की एक कल्पित वस्तु (तंत्र०) । इमरती । जलेबी ।

कुंडलिया—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कुंडलिका] एक दोहे और एक रोले के संयोग से बना एक मात्रिक छंद, इसके आदि और अंत में एक ही शब्द या वर्ण-समूह रहते है और दोहे के अंतिम पद की आवृत्ति रोले के प्रथम पद के आदि में रहती है (पिं०) ।

कुंडली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जलेबी । कुंडलिनी । गुड़िच (गिलोय) । कचनार । सर्प के बैठने की मुद्रा, गेंडुरी । जन्मकाल के ग्रहों की स्थिति बताने वाला बारह घरों का एक चक्र (ज्यो०) । [हारस्कोप] । (संज्ञा, पु०) [सं० कुंडलिन्] साँप । वरुण । मोर। विष्णु । **जन्म-कुंडली**-जन्मांकचक्र ।—**कृत**-(वि०) साँप, मयूर, कुंडलधारी, वरुण, विष्णु, चित्तलमृग ।

कुंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंड] चौड़े मुँह का गहरा बड़ा बरतन, बड़ा मटका, कोंढा, कछरा । (संज्ञा, पु०) [सं० कुंडल] दरवाजे की चौखट में

लगा हुआ कोंढ़ा जिसमें किवाड बंद करके साँकल फँसाई जाती और ताला लगाया जाता है ।

कुंडिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मटका, मिट्टी का घड़ा । कमंडल । कूँड़ी ।

कुंडिन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक मुनि । विदर्भ नगर, जो दो भागों में विभक्त था, उत्तरीय और दक्षिणीय कुंडिन; इनके स्थान पर अब अमरावती और प्रतिष्ठानपुर हैं ।—**पुर**–विदर्भ का एक प्राचीन नगर ।

कुंडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुंड] दही, चटनी आदि के रखने का पत्थर का कटोरे के आकार का बरतन, कुंडी । [कूँड़ी (दे०)] पथरी । (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कड़ा] जंजीर की कड़ी । किवाड़ की साँकल, [सँकरा (दे०)]

कुंत—(संज्ञा, पु०, सं०) गवेधुक । कौडिल्ला । भाला, बरछा । जूं । अनख । पानी । पवन । कुन्ती-पिता ।

कुंतल—(संज्ञा, पु०, सं०) सिर के बाल, केश । शिखा । प्याला । चुक्कड़ । जौ । हल । कोंकण और बरार के मध्य का एक देश (प्राचीन) । बहुरूपिया, भेष बदलने वाला । सुगंध वाला । श्रीराम की सेना का एक वानर । सूत्रधार । राग-विशेष (संगी०) ।—**वर्धन**–(पु०) भृंगराज, भँगरैया । [**कुंतल-कलाप** (यौ०)]

कुंतिभोज—(संज्ञा, पु०, सं०) शूरसेन के पिता की बहिन के पुत्र जो राजा थे; निस्सन्तान होने से इन्होंने शूरसेन की कन्या पृथा (कुंती) को गोद लिया । इससे पृथा का नाम कुंती हुआ, महाभारत के युद्ध में ये भी रहे थे ।

कुंती (कुंता)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा शूरसेन (वसु) की कन्या, जिसका विवाह पांडु नरेश के साथ हुआ था । नारद जी ने इसे वशीकरण मंत्र बतलाया, जिससे यह देवताओं को बुला लेती थी, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन इसके पुत्र थे, पृथा । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) भाला, बरछी ।

कुँथना—(क्रि०, अ०, दे०) मारा-पीटा जाना ।

कुंद—(संज्ञा, पु०, सं०) जूही का सा सफेद फूलों का एक पौधा । कनेर का पेड़ । कमल, कुंदुर नामक वृक्ष का गोंद । एक पर्वत । कुबेर की ९ निधियों में से एक । ९ की संख्या । विष्णु । खराद । (वि०, फ़ा०) कुंठित, गुठला, स्तब्ध, मंद ।—**जेहन**–मंदबुद्धि । "कुंद की सी भाई बातैं"—कविता० ।

कुंदन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंड] अच्छे और साफ़ सोने का पतला पत्तर जिसे लगाकर जड़िये गहनों पर नगीने जड़ते हैं, बढ़िया या ख़ालिस सोना, कंचन । (वि०) कुंदन सा चोखा, ख़ालिस, स्वच्छ । नीरोग । "कुंदन कौ रंग फीको लगै" ।

कुंद-पति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुबेर ।

कुंदर—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु । एक तिनका या पत्ता जो औषधि के काम आता है ।

कुँदरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंडर—करेला] एक बेल जिसमें ४ या ५ अंगुल लम्बे फल लगते हैं, जो तरकारी के काम में आते हैं । बिम्बाफल ।

कुंदलता—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) २६ वर्णों का एक वृत्त (पिं०) ।

कुंदा—(संज्ञा पु०, दे०) [फ़ा० मिलाओ, सं० स्कंध] लकड़ी का बड़ा मोटा, बिना चीरा हुआ टुकड़ा, लक्कड़ । बढ़इयों के लकड़ी काटने का एक काष्ठ । कुंदीगरों का कपड़ों पर कुंदी करने और किसानों के कटिया काटने का काठ, निहठा (निष्ठा) । बंदूक का चौड़ा पिछला भाग । अपराधियों के पैर ठोंकने की लकड़ी, काठ । दस्ता, मूठ, बेंट । लकड़ी की बड़ी मुँगरी । (संज्ञा, पु०) [हिं० कंधा] चिड़िया का पर । कुश्ती का एक पेंच । (संज्ञा, पु०) [सं० कंदन] खोवा, मावा । **मुहा०—होना**–मोटा या स्थूल होना ।

कुंदी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कुंदा] कपड़ों की सिकुड़न और रुखाई दूर करने तथा तह जमाने के लिए उन्हे मुँगरी से कूटने की क्रिया । खूब मारना, ठोंक-पीट । (संज्ञा, पु०) [हिं० कुंदी + गर प्रत्य०]—**गर**–कुंदी करने वाला । **मुहा०—करना**–ठोंकना-पीटना । रेशमी वस्त्र को धोकर चमकाना ।

कुंदु—(संज्ञा, पु०, सं०) चूहा ।

कुंदुर—(संज्ञा, पु०) [सं० अ०] दवा के काम का एक पीला गोंद ।

कुँदेरना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कुंजल] खुरचना, खरादना, कुरेदना ।

कुँदेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कुंदेरना + एरा—प्रत्य०] खरादने वाला । [कुनेरा (दे०)] [**कुँदेर**, **कुँदेरिन** (स्त्री०)]

कुंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) मिट्टी का घड़ा, घट, कलश । हाथी के सिर के दोनों ओर वाले उभड़े भाग । ज्योतिष में ग्यारहवीं राशि । दो द्रोण या ६४ सेर का एक प्राचीन मान । प्राणायाम के ३ भागों में से एक (कुंभक) । प्रति १२ वें वर्ष में पड़ने वाला

एक पर्व। प्रह्लाद-सुत एक दैत्य। गुठगुल। वेश्या-पति। मेवाड़ के एक राजा (१४१९ ई०)।—**कर्ण**-(संज्ञा, पु०, सं०) रावण का भाई। [कुंभकरन (दे०)] —**कर्णी निद्रा**-(वि०, यौ०) लम्बी गहरी नींद। "यह कुंभकर्णी नींद तूने आज भी त्यागी नहीं"— मैथिली०।—**कार**-(संज्ञा, पु०, सं०) मिट्टी के बर्तन बनाने वाला, कुम्हार। मुर्गा। "हे कुम्भकार, मेरी मिट्टी को और न अब हैरान करो"—वचन। **कुंभकारी**-(स्त्री०) कुम्हारिन। कुलथी। मैनसिल।—**ज**, —**जात**-(संज्ञा, पु०, सं०) घड़े से उत्पन्न पुरुष, कुंभजन्मा। कुंभयोनि, घटयोनि। "कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा"—[रामा०]। अगस्त्य मुनि। वशिष्ठ। द्रोणाचार्य।

कुंभक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राणायाम का एक अंग जिसमे सांस की वायु को भीतर ही रोक रखते है। (वि०) घट बनाने वाला।

कुंभवीर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) रीठा।

कुंभसंभव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुंभसंभूत, अगस्त्य ऋषि।

कुंभा—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा घड़ा। एक राजा। वेश्या।

कुंभिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुंभी, जल-कुंभी। वेश्या। कायफल। आँख की फुंसी, गुहाँजनी, बिलनी। परवल का पेड़। लिंग रोग-विशेष।

कुंभिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पृथ्वी, अवनी, धरा। जमालगोटा।

कुँभिलाना—(क्रि०, अ०, दे०) कुम्हलाना।

कुंभी—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी। मगर। गुग्गुल। एक विषैला कीड़ा। बच्चों को क्लेश देने वाला एक राक्षस। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा घड़ा। कायफल का पेड़, दंती वृक्ष। [दाँती (दे०)], जलकुंभी या जलाशयों की एक वनस्पति। ६ वर्षों पर आने वाला अर्धकुंभपर्व, **अधकुंभी**।—**पाक**-(संज्ञा, पु०, सं०) ज्वर-विशेष। हँड़िया में पकायी हुई वस्तु। एक नरक (पुरा०)। नाक से काला रक्त गिरने वाला सन्निपात (वैद्य०)।—**पुर**-हस्तिनापुर।—**धान्य**-(संज्ञा, पु०, सं०) घड़ा या मटका भर अन्न जिसे कोई व्यक्ति या परिवार ६ दिन या (अन्यमत से) १ साल में खा सके (स्मृति)।—**धान्यक**-(संज्ञा, पु०, सं०) कुंभीधान्य रखने वाला।

कुंभीनस—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रूर सर्प। एक विषैला कीड़ा। रावण। [**कुँभनसा, कुँभनसी** -(स्त्री०) रावणसुता]

कुंभीर—(संज्ञा, पु०, सं०) नक्र या नाक नामक एक जल-जन्तु। एक प्रकार का कीड़ा।

कुंभीरुणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) औषधि-विशेष, निसोत।

कुँवर, कुँवरेटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुमार] लड़का, पुत्र, बेटा। राजपुत्र, कुमार। बच्चा, कुँअर। [**कुँवरि, कुँवाँरी, कुँवरेटी** (स्त्री० दे०)]

कुँवरि, कुँवरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुमारी, पुत्री। राज-कन्या। "रहि जनु कुँवरि चित्र-अवरेखी"— [रामा०]।

कुँवारा—(वि०, दे०) [सं० कुमार] बिना ब्याहा, युवक, कुमार, कुँवार। [**कुँवारी** (स्त्री०)-(सं०) कुमारी] "अहै कुवाँर मोर लघु भ्राता", "ताते अबलगि रही कुँवारी"—[रामा०]।

कुँहू, कुँहू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंकुम] कुंकुम, केसर।

कु—(उप०, सं०) शब्दों के पूर्व लग कर उनके अर्थों में बुरा, नीच, कुत्सित आदि का भाव बढ़ाता है, जैसे—कुमार्ग। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाप, अधर्म, निन्दा। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी, धरा, वसुधा, मेदिनी, सरसा।

कुआँ, कुवाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कूप, प्रा० कूव] पानी के लिए पृथ्वी में खोदा हुआ गहरा गड्ढा, कूप, इँदारा (प्रा०)। **मुहा०—(किसी के लिए)—खोदना**-नाश करने या हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना।—**खोदना**-जीविकार्थ श्रम करना। [**लो० रोज—खोदना रोज़ पानी पीना**]—**में गिरना**-विपत्ति में पड़ना।—**(एँ) में बाँस पड़ना (डालना)**-बहुत खोज होना (करना)।—**(एँ) में भाँग पड़ना**-सब की बुद्धि मारी जाना।

कुआँर, कुवाँर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुमार, प्रा० कुंवार] हिन्दुओं का ७ वाँ महीना, आश्विन्, कार। (वि०) बिना ब्याहा। [**कुवाँरी-कुआँरी**-(वि०) क्वार मास का, क्वाँरी]—**पात्र**-अविवाहित।

कुआड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) एक प्रकार का लय (संगीत)।

कुइयाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कुआँ] छोटा कुआँ। **कठ—(पटकुइयाँ)**-काठ से बँधा छोटा कूप।

कुईं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कुआँ] कुइयाँ। कुमुदिनी [सं० कुव] [कुइरी (दे०)]।

कुकटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुक्कुटी—सेमल] लाल रुई की कपास ।

कुकड़ना—(क्रि०, अ०) [हिं० सिकुड़ना] सिकुड़ना, संकुचित होना ।

कुकड़ी, कुकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुक्कुटी] तकले में कातकर उतारा हुआ कच्चे सूत का लच्छा, मुट्ठा । अंडी । [अँडी (दे०)] खुरखुरी । मुर्गी ।

कुकनू—(संज्ञा, पु०, यू०) एक कल्पित पक्षी जिसके विलक्षण गान से आग निकल पड़ती है और वह जल मरता है । आतशजन ।

कुकभ—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार की मदिरा ।

कुकरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुक्कटी] बनमुर्गी । [कुक्कु- (दे०)] अांडी । कुतिया ।

कुकरौंदा—(संज्ञा, पु०) देखिए कुकरौंधा ।

कुकरौंधा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुक्कुरद्रु] तीव्र गंध वाली पत्तियों का पालक जैसा एक पौधा ।

कुकर्म—(संज्ञा, पु०) [सं० कु + कृ + मन्) बुरा या खोटा काम, पाप, दुष्कर्म, कुक्रिया । [**कुकर्मी** (वि०)-(वि०, सं०) बुरा काम करने वाला, पापी]

कुकुत्संद—(संज्ञा, पु०, सं०) गौतम बुद्ध से पहले हुए बुद्ध ।

कुकुभ—(संज्ञा, पु०, सं०) एक मात्रिक छंद (पिं०) ।

कुकुर—(संज्ञा, पु०, सं०) यदुवंशी क्षत्रियों की एक शाखा । एक प्राचीन प्रदेश । एक साँप । कुत्ता । [कूकुर (दे०)] [**कुकुरी** (स्त्री०)]—**खाँसी**-(संज्ञा, स्त्री०, हिं०) सूखी खाँसी जिसमे कफ न गिरे, ढाँसी । —**दंत**-(संज्ञा, पु०) [हिं० कुक्कुर + दंत] वह दाँत जो किसी-किसी के साधारण दाँतों के अलावा उससे कुछ नीचे आड़ा निकलता है और जिससे ओठ कुछ उठा रहता है । [**कुकुरदंता** (वि०)] [**कुकुरदंती** (स्त्री०)]—**मुत्ता**-(संज्ञा, पु०) [हिं० कुक्कुर + मूत] बुरी गंध वाली एक प्रकार की खुमी, छत्रक । [कुकरौंधा (दे०)]—**माँछी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पशुओं के चिपटने वाली एक प्रकार की लाल मक्खी । [बगई (दे०), कुकरौंछी (दे०)]

कुकुही*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुक्कुम] बनमुर्गी, पक्षी-विशेष ।

कुकूणक—(संज्ञा, पु०, सं०) रोहा, नेत्र-रोग ।

कुक्कुट, कुक्कट—(संज्ञा, पु०, सं०) मुर्गा । चिनगारी, लुक । जटाधारी पौधा । अरुण-शिखा । ताम्रचूड़ ।—**नाड़ी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भरे बरतन से खाली बरतन में पानी पहुँचाने वाली नली । —**मस्तक**-(संज्ञा, पु०, सं०) चव्य, चाब ।—**व्रत**-भाद्र-शुक्ला सप्तमी का व्रत ।—**शिखा**-कुसुम-वृक्ष ।

कुक्कुटक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्णसंकर जाति । बनमुर्गी, मुर्गी ।

कुक्कुर—(संज्ञा, पु०, सं०) कुत्ता । [कूकुर (दे०)], श्वान, कूकर । यदुवंशियों की एक शाखा । एक मुनि । (वि०) गाँठदार ।

कुक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) पेट, उदर । [कोख (दे०)] ।

कुक्षि, कुक्षी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पेट, कोख । किसी वस्तु के मध्य का भाग । गुहा (गुफा) । संतति । (संज्ञा, पु०, सं०) एक दानव । राजा बलि । एक प्राचीन देश ।—**स्थ**-(वि०) पेट का बच्चा ।

कुखेत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुक्षेत्र] बुरा स्थान, कुठाँव, अयोग्य क्षेत्र ।

कुख्याति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निंदा, बदनामी, अपवाद, अयश । [**कुख्यात** (वि०)]

कुगति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गति, दुर्दशा ।

कुगहनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कु + ग्रहण] अनुचित आग्रह, हठ, ज़िद, दुराग्रह ।

कुगात्र—(संज्ञा, पु०, सं०) कुअंक, दूषितांग । [कुगात (दे०)]

कुगुरु—(संज्ञा, पु०, सं०) अशुभ या मंद ग्रह, दुखद ग्रह ।

कुघा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुक्षि] दिशा, ओर, तरफ़ ।

कुघाट—(संज्ञा, पु०, हिं०) बुरा घाट । कुरूप, बेडौल । [**घाट-कुघाट** (यौ०)]

कुघात—(संज्ञा, पु०, हिं०) कुअवसर, छल, कपट । बेमौका । बुरा दाँव । "बड़ कुघात कै पातकिनि"—[रामा०] ।

कुच—(संज्ञा, पु०) (सं०) स्तन, छाती, उरोज । (वि०) कृपण, संकुचित, कंजूस ।

कुचकुचवा—(संज्ञा, पु०, दे०) उल्लू चिड़िया, उलूक ।

कुचकुचा—(पु०, वि०) पिचपिचा । गला हुआ । गीला । कच्चा ।

कुचकुचाना—(क्रि०, सं०, अनु०) लगातार कोंचना, बार-बार नुकीली चीज धँसाना । कुछ कुचलना । [**कुचकुची**-(वि०) मसली हुई, ध्वस्त-विध्वस्त] "काची रोटी कुच-कुची"—गिरिधर ।

कुचना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कुंचन] नुकीली चीज का धँसना। सिकुड़ना। गड़ना। **कुचन**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुचिआना, गड़ना, कुचका ब० व०]

कुचक्र—(संज्ञा, पु०, सं०) हानिप्रद गुप्त प्रयत्न, षड्यंत्र। [**कुचक्रकारी** (वि०)]

कुचक्री—(संज्ञा, पु०, सं०) षड्यंत्र रचने वाला, गुप्त प्रयत्न करके दूसरे को हानि पहुँचाने वाला।

कुचंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) लाल चंदन, बिना सुगंध का चंदन।

कुचर—(संज्ञा, पु०, सं०) आवारा। नीच कर्म करने वाला। परनिंदक। बुरे स्थानों में घूमने वाला। [**कुचारी** (वि०)]

कुचलना (कुचरना)—(क्रि०, स०, दे०) मसलना, रौंदना। दबाना। चूर करना। **मुहा० सिर,**— पराजित करना।

कुचला (कुचिला)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कचीर] दवा के काम में आने वाले विषैले बीजों का एक पौधा, उसके बीज। (सा० भू०) [हि० कुचलना]।

कुचली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कुचलना] डाढ़ों और राज-दंतो के बीच के दाँत। कीला, सीता-दाँत। (स्त्री० सा भू०) [हि० कुचलना]।

कुचाल—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कु+चाल] बुरा आचरण, दुराचार, खराब चाल-चलन। दुष्टता, बदमाशी। बुरी चाल। (वि०, संज्ञा, पु०) [हि० कुचाल] [**कुचाली**–कुमार्गी; दुष्ट] "बिघन मनावहिं देव कुचाली"—[रामा०]।

कुचालक—(वि०, सं०) जो ठीक तौर से संचालन न कर सके।

कुचाह*—(संज्ञा, पु०, हि०) अशुभ बात, बुरी खबर। बुरी इच्छा।

कुचिक—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तर-पूर्व में स्थित एक प्राचीन देश।

कुचित—(वि०, सं०) संकुचित, थोड़ा, सिकुड़ा हुआ।

कुचिल, कुचील*—(वि०, दे०) [सं० कुचैल] मैले वस्त्र वाला, मैला-कुचैला। [कुचीला (दे०)] कुचैला, कुचेल।

कुची, कूँची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कूँची, बुहारी। ब्रुश, झाड़ू।

कुचुमार—(पु०, सं०) कामशास्त्र के एक प्राचीन आचार्य।

कुचेष्टा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी चेष्टा, बुरी चाल। हानिप्रद यत्न। चेहरे का बुरा भाव। [**कुचेष्ट**–(वि०) बुरी चेष्टा वाला।]

कुचैन⊛—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) कष्ट, दुख, व्याकुलता। (वि०) बेचैन, व्याकुल।

कुचैला—(वि०) [सं० कुचैल] मैले वस्त्र वाला, गंदा। [**कुचैली** (स्त्री०)]। **मैला**—, गंदा; मलिन वस्त्रधारी।

कुचोद्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वितंडावाद।

कुच्छित⊛—(वि०, दे०) [सं० कुत्सित] बुरा, अधम, नीच। निंद्य, निंदित।

कुछ—(वि०, दे०) [सं० किंचित्] थोड़ी संख्या या मात्रा का, जरा, तनिक, रंच, थोड़ा।—**एक**–कुछ थोड़ा सा, थोड़े, कुछेक (वि०)।—**कुछ**–थोड़ा-बहुत, थोड़ा।—**ऐसा**–विलक्षण।—**न कुछ**–थोड़ा-बहुत, कम-ज्यादा। सर्व० [सं० कश्चित] कोई (वस्तु)। **मुहा०—का कुछ**–और का और, उलटा।—**कहना**–कड़ी बात कहना, बिगड़ना, विरुद्ध बात कहना, साधारण बात कहना।—**कर देना**–जादू-टोना कर देना, मंत्र प्रयोग करना। **किसी को—हो जाना**–कोई रोग या भूत-प्रेत की बाधा होना।—(**भी**) **हो**–चाहे जो कुछ भी हो। बुरी या अच्छी बात, सार या काम की वस्तु अथवा उसका विपरीत, जो भी हो।—**लगाना** (**अपने को**)–बड़ा या श्रेष्ठ समझना।—**हो जाना**–किसी योग्य या मान्य या बड़ा हो जाना, कुछ अनिष्ट होना।—**न होना**–निष्फल या अयोग्य होना।—**न ठहरना**–अयोग्य या विफल सिद्ध होना। **कछु, कछूक**–कछुक, कछू (ब्र०)। "नहि संतोष तौ पुनि कछु कहहू"—[रामा०]।

कुजंत्र⊛—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुयंत्र] बुरा यंत्र। अभिचार, टोटका, टोना, कुचक्र। "कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रू"—[रामा०]।

कुज—(संज्ञा, पु०, सं०) पृथ्वी से उत्पन्न मंगल ग्रह, भौम। नरकासुर। मंगलवार। वृक्ष। (वि०) लाल।

कुजा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कु—पृथ्वी+जा—जायमान] भूमिजा, जानकी। कात्यायिनी। अवनिजा। अव्य० (उ०) कहाँ।

कुजात—(संज्ञा, पु०, सं०) मंगल, भूजात। [**कुजाता**–(स्त्री०) सीता, भूमिजा]

कुजाति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी जाति, नीच जाति। (संज्ञा, पु०) नीच कुल का मनुष्य, अधम व्यक्ति। [कुजात (दे०)]

कुजोग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुयोग] कुसङ्ग, बुरा मेल, अशुभ योग या अवसर। अनमेल सम्बन्ध। [**कुजोगी**–(वि०) कुयोगी (सं०); असंयमी, बुरा साधू]

कुज्जा—(संज्ञा, पु०, दे०) पुरवा, मिट्टी का पात्र, मिश्री का एक पिंड। [**कुज्जी, खुज्भी** (स्त्री०, दे०)]

कुटंत§—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कूटना+त प्रत्य०] कुटाई, मार, चोट, मारकूट।

कुट—(संज्ञा, पु०, सं०) घर, गृह। कोट, गढ़। कलश। हथौड़ी। शिखर। समूह। पेड़। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुष्ट] एक सुगन्धित जड़वाली झाड़ी। (संज्ञा, पु०) [सं० कुट=कूटना] कूटा हुआ टुकड़ा, जैसे—यवकुट, छोटा टुकड़ा।

कुटक—(संज्ञा, पु०, सं०) वृक्ष-विशेष। दक्षिण का एक पुराना देश। वह डंडा जो मथानी की रस्सी से बाँधा जाता है।

कुटका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० काटना] छोटा टुकड़ा, कणका। [**कुटकी** (स्त्री० अल्पा०)]

कुटकी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कटुका] एक पहाड़ी पोधा जिसकी जड़ों की गोल गाँठें दवा में पड़ती हैं, एक जड़ी। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कुटका] कँगनी, चेना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कटु+कोट] कुत्ते आदि के रोयों में चिपटा रहने वाला एक छोटा कीड़ा जो काटता है, धनकुटनी।

कुटज—(संज्ञा, पु०, सं०) कुटैया। इंद्रयव। कूड़ा। कर्ची। अगस्त्य मुनि। द्रोणाचार्य। एक फूल।

कुटनई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुटनपन, दूती कर्म। कूटने का काम। [**कुटनी** (वि०, स्त्री०)]

कुटनपन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुट्टनी] कुटनी का काम, दूती-कर्म। झगड़ा लगाने का काम। [**कुटनपेशा** (यौ०, दे०)]

कुटनहारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कूटना+हारी प्रत्य०] धान आदि कूटने वाली स्त्री।

कुटना—(संज्ञा, पु०, दे०) स्त्रियों को बहका कर उन्हें पर-पुरुष से मिलाने वाला, दूत। दो व्यक्तियों में लड़ाई लगाने वाला, चुगलखोर। [**कुटनी** (स्त्री०)] (संज्ञा, पु०) (वि० कूटना) कुटाई करने का औजार। हिं० अ० [हिं० कूटना] कूटा जाना, मारा-पीटा जाना। प्रे० रूप—**कुटवाना, कुटाना**।

कुटनाना—(क्रि०, सं०, दे०) [हिं० कुटना] किसी स्त्री को बहका कर कुमार्ग पर ले जाना, फुसलाना।

कुटनापा—(संज्ञा, पु०, दे०) कुटनपन, चुगलखोरी।

कुटनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुटनी] स्त्रियों को फुसला कर पर-पुरुष से मलाने वाली स्त्री, दूती। दो व्यक्तियों में लड़ाई लगाने वाली, चुगल-खोरनी।

कुटवाना—(क्रि०, स०) [हिं० कूटना का प्रे० रूप] कूटने का काम दूसरे से कराना, कुटाना।

कुटाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कूटना] कूटने का काम, कूटने की मजदूरी।

कुटास—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कूटना+आस] मार-पीट। मार खाने की इच्छा, कूटने या कुटने की इच्छा। [**कुटासा** (वि०)]

कुटि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुटी, झोपड़ी। पेड़।

कुटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुटी] झोपड़ी, कुटी। [मँड़ैया (दे०)] [**पर्णकुटी**–(यौ०) पत्तों या घास-फूस की झोपड़ी।] "छोटी सी कुटिया मेरी है कैसे तुम्हें बुलाऊँ मैं"—मयं०। "पर्नकुटी करिहौ कित ह्वै"—तुलसी०।

कुटिल—(वि०) [सं० कुट+इल] वक्र, टेढ़ा। कुंचित, छल्लेदार, घुँघराला। दगाबाज, क्रूर, कपटी, खोटा, दुष्ट। (संज्ञा, पु०, सं०) खल। अति श्वेत वर्ण और लाल नेत्रों वाला। १४ वर्णों का एक वृत्त (पि)। "कपटी कुटिल मोहिं प्रभु चीन्हा"—तुलसी०।

कुटिलता—(संज्ञा, स्त्री०, भा० सं०) छल, कपट, दुष्टता, टेढ़ापन, कुटिलाई, कुटिलपन, खोटाई, वक्रता। [**कुटिलान्तःकरण**–(यौ०) कपटी, छली, क्रूर हृदयी]

कुटिला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुष्टा। सरस्वती नदी। एक प्राचीन लिपि। (वि०, स्त्री०) टेढ़ी।

कुटी, कुटीर—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घास-फूस से बना छोटा घर, पर्णशाला, कुटिया। झोपड़ी। मुरा नामक गंधद्रव्य। श्वेत कुटज।—**उद्योग**–(संज्ञा, पु०, सं०) घर में बैठकर होने वाला उद्योग, जैसे खिलौना, ऊनी कपड़ों का बनाना।

कुटीचक्र, कुटीचर—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) शिखा-सूत्र न त्यागने वाला संन्यासी, (४ प्रकार के

संन्यासियों में से प्रथम) त्रिदंडी ! पुत्र के अन्न से जीने वाला। [**कुटीचरता** (संज्ञा, स्त्री०)]

कुटीचर—(संज्ञा, पु०, सं०) कुटी-चक्र, यति। छली। [सं० कुचर] चुगलखोर।

कुटुम्ब—(संज्ञा, पु०, सं०) परिवार, कुनबा, सन्तति, खानदान। [कुटुम (दे०)] [फैमिली]।

कुटुम्बी (कुटुमी)—(संज्ञा, पु०) [सं० कुटुम्बिन्] परिवार वाला, कुटुम्ब के लोग। सम्बन्धी, नातेदार, जाति-बांधव, बंधु-बांधव, परिजन। सन्ततिवाला। "विविध कुटुम्बी जनु धनहीना"—तुलसी०।

कुटुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) (बैल को) कूटने, बधिया करने वाला।

कुटेक—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कु + टेक—हिं०] अनुचित हठ, बुरी जिद। [**कुटेकी**-(वि०) दुराग्रही] "जैसी कुटेक छई उर मै"।

कुटेव—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कु + टेव] बुरी आदत, बुरीबान, कुबान, बुरा स्वभाव।

कुटौनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कूटना] कुटाई, कूटने की मजदूरी, कुटावनी।

कुट्टक—(संज्ञा, पु०, सं०) काटने, कूटने, पीसने वाला।

कुट्टनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुटनी, दूती (हिं०)। चुगलखोरनी।

कुट्टमित—(संज्ञा, पु०) [सं० कुट्ट + मा + क्त] संयोग-समय में स्त्रियों की सुख-दुख की मिथ्या चेष्टा-सूचक एक हाव। "जहँ संयोग मै करति है, दुख-सुख-चेष्टा बाम। ताको कहत रसाल कवि, हाव कुट्टमित नाम।"

कुट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कटना] परकटा कबूतर। पैर-बँधा जाल में पड़ा पक्षी जिसे देख दूसरे पक्षी आ फसते हैं।

कुट्टाक—(वि०, सं०) काटने, तोड़ने, अलग करने वाला।

कुट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० काटना] छोटे-छोटे टुकड़ों में कटा हुआ चारा या करबी। कूटा और सड़ाया हुआ कागज जिससे टोकरी आदि बनाते हैं। मैत्री-भङ्ग का एक शब्द या क्रिया (जिसे बालक दाँतों से नाखून मिलाकर करते हैं, खुट्टी, खट्टी)। परकटा कबूतर।

कुठला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोष्ठ, प्रा० कोट्ट + ला प्रत्य०] कुठिला, अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन। [अल्पा० **कुठली** (स्त्री०)]।

कुठाउ, कुठाँव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कु + ठाँव] बुरी जगह, कुठाँय, कुठौर। [कुठाम (दे०)] बुरा स्थान। **मुहा०—मारना**—ऐसे स्थान पर मारना जहाँ बहुत कष्ट हो, मर्मस्थल में मारना। "मारेसि मोहिं कुठाँव"—तुलसी०। **ठाँव—**,अच्छे-बुरे स्थान पर।

कुठाट—(संज्ञा, पु०) [हिं० कु + ठाट] बुरा साज-सामान। बुरा प्रबन्ध या आयोजन, बुरे काम की बन्दिश या तैयारी। "मोहिं लगि यह कुठाट तेहि ठाटा"—तुलसी०

कुठार—(संज्ञा, पु० सं०) कुल्हाड़ी, परशु, फरसा। नाश करने वाला। भंडार, कुठला। "न तु याहि काटि कुठार कठोरे"—तुलसी०।

कुठारक—(संज्ञा, पु०, सं०) कुल्हाड़ी (छोटी)।

कुठाराघात—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुल्हाड़ी की चोट। गहरी चोट।

कुठारिक—(संज्ञा, पु०, सं०) लकड़ी काटने वाला।

कुठारी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुल्हाड़ी। टाँगी। नाश करने वाली। (वि०) कुठार धारण करने वाला। [**कुठिला**]। "जनि दिनकर-कुल होसि कुठारी"—[रामा०]।

कुठारू—(संज्ञा, पु०, सं०) पेड़। बंदर। अस्त्र बनाने वाला।

कुठाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कु + स्थाली] सोना-चाँदी गलाने की मिट्टी की घरिया। बुरी स्थली।

कुठाहर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कु + ठाहर] कुठौर, कुठाँव। बेमौका, कुअवसर। बुरा स्थान। "भयउ कुठाहर जेहि विधि बामू"—[रामा०]।

कुठेस—(संज्ञा, पु०, सं०) आग। तुलसी का पेड़।

कुठेरक—(संज्ञा, पु०, सं०) सफेद तुलसी का पेड़।

कुठौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कु + ठौर] कुठाँव, बे मौका। बुरा स्थान। [**ठौर-कुठौर** (यौ०)]

कुड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुष्ठ, प्रा० कुट्ठ] कुट नामक औषधि। खेत में बोने के लिए बनाई गई क्यारी। [**कुड़ी**-(स्त्री०) छोटी क्यारी]

कुड़कना—(क्रि०, अ०, दे०) घूरना, गुर्राना। कुड़कुड़ करना।

कुड़कुड़—(संज्ञा, पु०) वह आवाज जो पक्षियों आदि के उड़ाने के लिए की जाती है।

कुड़कुड़ाना—(क्रि०, अ०, अनु०) मन में कुढ़ना, बड़बड़ाना, बुरा मानना, भुनभुनाना।

कुड़कुड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) भूख या अजीर्ण से होने वाली पेट की गुड़गुड़ाहट। **मुहा०—होना** —किसी बात के जानने के लिए आकुलता होना।

कुड़बुड़ाना—(क्रि०, अ०, अनु०) मन में कुढ़ना, कुड़कुड़ाना, कुलबुलाना।

कुड़री—(संज्ञा, स्त्री०) वह जमीन जो नदी के घुमाव से घिरी रहती है।

कुड़मल—(संज्ञा, पु०) [सं० कुड्मल] कली, कलिका। "कुलिस-कुन्द-कुडमल दामिनि-दुति"—तुलसी०। "वह फूली वेला की वन जिसमे, न नाल, दल, कुड़मल"—पंत।

कुड़ल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुञ्चन] रक्त की कमी या उसके ठंढा पड़ने से शरीर में होने वाली ऐंठन या एक प्रकार की पीड़ा या दर्द।

कुड़व—(संज्ञा, पु०, सं०) ४ अंगुल चौड़ा और उतना ही गहरा अन्न नापने का एक मान, ¼ सेर, सेर का ५ वाँ भाग।

कुड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुटज] इन्द्रयव का वृक्ष।

कुड़ुक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० कुरक] अंडा न देने वाली मुर्गी। (वि०) व्यर्थ। खाली।

कुडौल—(वि०) [हिं० कुडौल] बेढंगा, भद्दा, कुरूप। [**डौल-कुडौल** (यौ०)]

कुढङ्ग—(संज्ञा, पु०, हिं०) बुरा ढङ्ग, कुचाल, कुरीति। (वि०) बेढङ्गा, भद्दा, बुरा, बुरी तरह का। [**कुढङ्गा**-(वि०) बेशऊर, उजड्ड, भद्दा। [**कुढङ्गी, कुढंगिनी** (स्त्री०)]

कुढङ्गी—(वि०) [हिं० कुढङ्ग] कुमार्गी, बदचलन, कुचाली। [**कुढंगिनी** (स्त्री०)]।

कुढ़न—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्रुद्ध] मन ही मन में रहने वाला क्रोध या दुःख, चिढ़, ग्लानि, डाह, जलन।

कुढ़ना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० क्रुद्ध] भीतर ही भीतर क्रोध करना, खीझना, चिढ़ना, डाह करना, जलना, मन ही मन बुरा मानना या दुखी होना, मसोसना। [प्रे० रूप **कुढ़ाना**]

कुढब—(वि०) [हिं० कु+ढब] बुरे ढङ्ग का, बेढब। कठिन। (संज्ञा, पु०) बुरा ढङ्ग, कुरीति। [कुढ़ना (दे०)] [**कुढ़िबो** (ब्र०)]।

कुढ़ाना—(क्रि०, स०) [हिं० कुढ़ना] चिढ़ाना, खिझाना, दुखी करना, कलपाना, जलाना।

कुणप—(संज्ञा, पु०, सं०) शव, मुर्दा।

कुणक—(संज्ञा, पु०, सं०) जानवर का नवजात शिशु।

कुणप—(संज्ञा, पु०, सं०) शव, लाश। इंगुदी वृक्ष। गोंदी। राँगा। बरछा। [कुनप (दे०)]

कुणाशी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मुर्दा खाने वाला एक प्रेत। मुर्दा खाने वाला एक जन्तु।

कुत—(अव्य०, सं०) कहाँ से, क्यों, कुत्र।

कुतका—(संज्ञा, पु०) [हिं० गतका] गतका, सोंटा, मोटा डंडा। भंग-घोंटना। मुट्ठी बंद करके अँगूठा दिखाने की मुद्रा। [कुदका (दे०)]

कुतना—(क्रि०, अ०) [हिं० कूतना] कूतने का कार्य होना, कूता जाना।

कुतनु—(वि०, सं०) बुरे शरीर वाला। (संज्ञा, पु०) बुरी देह। यक्षराज कुबेर। पृथ्वी की देह।

कुतन्द्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आलस्य से उत्पन्न जँभाई, निद्रोन्मुखता। सतत अशुभ—"स्वप्नों की कुतन्द्रा सताती मुझे"—[मधुपुरी]।

कुतप—(संज्ञा, पु०, सं०) दिन का ८ वाँ मुहूर्त (मध्याह्न काल), कुताप। श्राद्ध में आवश्यक वस्तुएँ। मध्याह्न। गैंड़े के चमड़े का पात्र। कुश, तिल आदि। एकोद्दिष्ठ श्राद्ध के आरम्भ का समय + सूर्य। अग्नि। अतिथि। भांजा। द्विज। बुरा तप।—**काल**-गरमी का समय, मध्याह्न। [**कुतपी**-(वि०) बुरी तपस्या वाला]

कुतरन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काटा हुआ टुकड़ा।

कुतरना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कुर्तन] दाँत से छोटा टुकड़ा काटना। बीच ही में से कुछ अंश काट लेना। चोंच से काटना।

कुतरु—(संज्ञा, पु०, सं०) कुवृक्ष, बुरा वृक्ष, कुपादप, बँबूल, बब्बूल। [पिल्ला (दे०)]

कुतर्क, कुतरक—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) कुत्सित तर्क, बेढंगी दलील, वितंडा, दुर्बल युक्तियों का तर्क। [**कुतर्ककारक** (वि०)]

कुतर्की, कुतरकी—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) कुतर्क करने वाला, वितंडावादी, बकवादी, हुज्जती। "मति न कुतरकी"—[रामा०]।

कुतल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भूतल, पृथ्वीतल।

कुतवार, कुतवाल—(संज्ञा, पु०, दे०) कोतवाल। (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कूतना] कूतने वाला, अंदाजा करने वाला।

कुतवाली, कुतवारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कोतवाली, कोतवाल का काम या स्थान।

कुतिया, कुत्तिया—(संज्ञा, स्त्री०)[हि० कुत्ती] कूकरी, [कुकुरिया (दे०)]

कुतुब—(संज्ञा, पु०, अ०) ध्रुव तारा । किताबें, पुस्तकें । एक राजा ।—**खाना**-(संज्ञा, पु०, अ०) पुस्तकालय ।—**नुमा**-(संज्ञा, पु०, अ०) दिग्दर्शक यंत्र, दिशासूचक यंत्र ।—**फ़रोश**-(संज्ञा, पु०, अ०) पुस्तक-विक्रेता । [बुकसेलर] । [**कुतुब-फ़रोशी** (सं०)] ।

कुतू—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चमड़े की कुप्पी जिसमें तेल रखा जाता है।

कुतूहल—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी वस्तु के देखने या किसी बात के सुनने की प्रबल इच्छा, विनोद-पूर्ण उत्कंठा । वह वस्तु जिसके देखने की इच्छा हो, कौतुक, क्रीड़ा, खिलवाड़ । अचंभा, कौतूहल, परिहास । [**कुतूहली**-(वि० सं०) कौतुकी, जिसे देखने सुनने की प्रबल उत्कंठा हो, खिलवाड़ी, अपूर्वता । **कुतूहलता** (संज्ञा, स्त्री०)]

कुतृण—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरी घास ।

कुत्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) भेड़िया, गीदड़, लोमड़ी आदि की जाति का एक पशु जो घर की रक्षा के लिए पाला जाता है, श्वान । [कूकुर (दे०)] ग्राम-मृग । [**कुत्ती** (स्त्री०)]—**(त्ते) खसी**-व्यर्थ और तुच्छ कार्य । **मुहा० क्या—(त्ते) ने काटा** है-क्या पागल हुए हैं ।—**(त्ते) की मौत मरना**-बहुत बुरी तरह मरना ।—**(त्ते) का दिमाग़ होना— (कुत्ते का भेजा खाना)**-अधिक बकवाद करने की शक्ति होना । कपड़ों में लिपटने वाली जाति की घास, [लपटौवां (दे०)] । कल का वह पुरजा जो किसी चक्कर को उलटा या पीछे की ओर घूमने से रोकता है । दरवाजे को बंद करने का एक लकड़ी का छोटा चौकोर टुकड़ा, बिल्ली । बंदूक का घोड़ा । नीच या तुच्छ व्यक्ति ।

कुत्सन—(संज्ञा, पु०) [सं० कुत्स+अनट्] निन्दा, भर्त्सना, निगर्हण, अपवाद । [**कुत्सनीय** (वि०)]

कुत्सा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निंदा, गर्हा, अवज्ञा, अपवाद ।

कुत्सित—(वि०, सं०) नीच, निंद्य, गर्हित, अधम, बुरा । (संज्ञा, पु०) [सं० कुत्स+क्त] कुट । कौरैया औषधि । [**कुत्सिता** (स्त्री०)] ।

कुथ—(संज्ञा, पु०) [सं० कुथ+अल्] हाथी की भूल या बिछावन । रथ का ओहार । प्रातः स्नायी ब्राह्मण । कथरी । एक कीड़ा । "कुथेन नागेन्द्र दिवेन्द्र-वाहनम्"—माघ ।

कुथरी, कुथली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) झोली । [कोथली (दे०)] बुरे स्थान का, कुस्थली ।

कुथल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुस्थल] बुरा स्थान । [**कुथली** (स्त्री०)]

कुदकना—(क्रि०, अ०, दे०) कूदना, फुदकना, फाँदना ।

कुदका, कुदक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कुतका] अँगूठा । (संज्ञा, पु०) [हि० कूदना] उछल-कूद ।

कुदरत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शक्ति, प्रभुत्व । प्रकृति, माया । ईश्वरीय शक्ति । कारीगरी । "यह कुदरत की कारीगरी है" ।

कुदरती—(वि०, अ०) प्राकृतिक, स्वाभाविक, दैवी, नैसर्गिक ।

कुदरना, कुदराना—(क्रि०, अ०, दे०) कूदना, फाँदना, दौड़ना ।

कुदर्शन—(वि०, सं०) कुरूप, बदसूरत, [कुदरसन (दे०)] ।

कुदलाना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कुदराना] कूदते हुए चलना, उछलना ।

कुदशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [कुदसा (दे०)] बुरी दशा, दुर्गति ।

कुदाँउ, कुदाँव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कु+दाँव] बुरा दाँव । कुघात । विश्वासघात । धोखा । औचट । बुरी स्थिति । बुरा स्थान । मर्म-स्थान । बुरा मौका । [कुदाऊँ (दे०)] ।

कुदाई*—(वि०) [हि० कुदॉव] बुरे ढंग से दाँव-पेंच करने वाला, छली, दगाबाज़ ।

कुदाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कूदने का भाव ।

कुदान—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा दान, (लेने वाले के लिये) जैसे शय्या-दान, कुपात्र या अयोग्य को दिया जाने वाला दान । (यौ०) (कु—पृथ्वी+दान) पृथ्वी-दान । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० कूदना] कूदने की क्रिया या भाव । बहुत पहुँच कर कहना । एक बार में कूद कर पार करने की दूरी । [**कुदानी** (वि०)]

कुदाना—(क्रि०, स०) [हि० कूदना प्रे०] कूदने में प्रवृत्त करना । [प्रे० रूप **कुदवाना**] (संज्ञा, पु०, दे०) बुरा दाना, कुधान्य ।

कुदाम*—(संज्ञा, पु०) [हि० कु+दाम] खोटा सिक्का ।

कुदाय—(संज्ञा, पु०, दे०) कुदाँव । (पू० क्रि०) [हि० कूदना] कूद कर, कुदाकर ।

कुदाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुद्दाल] मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का औजार, कुदार । [(स्त्री०)

कुदाली, कुदारी] "मरमी सज्जन सुमति कुदारी" —[रामा०]।

कुदिन—(संज्ञा, पु०, सं०, बुरा दिन, विपत्ति काल। एक सूर्योदय से दूसरे तक का समय। सावन-दिन। ऋतु-विरुद्ध और कष्टप्रद घटनाओं का दिन, दुर्दिन, कुवासर, कुद्यौस, कुदिवस। [विलो० **सुदिन**]।

कुदिष्टि, कुदृष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) बुरी नजर, पाप-दृष्टि, बुरे भाव से देखना। "इनहिं कुदिष्टि बिलोकइ जोई"—तुल०। [**कुदृष्टी (कुदिष्टी)**—(वि०) बुरी दृष्टि वाला]

कुदृश्य—(वि०, सं०) अभव्य, कुरूप, बुरा दृश्य।

कुदेश, कुदेस—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) बुरा देश, भू-प्रान्त, भू-भाग। [**देश-कुदेश** (यौ०)]

कुदेव—(संज्ञा, पु०) [सं० कु=पृथ्वी+देव] भू-देव। ब्राह्मण। (संज्ञा, पु०) [सं० कु=बुरा+देव] बुरा राक्षस।

कुद्रव—(संज्ञा, पु०, सं०) कोदो (अन्न)। तलवार चलाने का एक प्रकार। बुरा रस। पृथ्वी का रस।

कुधर—(संज्ञा, पु०) [सं० कुध्र] पहाड़। शेष-नाग।

कुधातु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी धातु, लोहा। "पारस-परसि कुधातु सुहाई"—[रामा०]।

कुधारा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुरीति, दुर्व्यवहार। बुरी धारा।

कुधारी—(संज्ञा, पु०, सं०) शेष। पर्वत।

कुधी—(संज्ञा, पु०, सं०) मूर्ख, दुर्बुद्धि। [विलो० **सुधी**]

कुध्येय—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा उद्देश्य।

कुनकुना—(वि०) [सं० कदुष्ण] कुछ गरम, गुन-गुना, ईषदुष्ण। [**कुनकुनी** (स्त्री०)]

कुनख—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा नख। [**कुनखी** —(वि०) बुरे नख वाला]

कुनबा—(संज्ञा, पु०, दे०) कुटुम्ब, परिवार।

कुनबी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कुटुंबी] प्रायः खेती करने वाली एक हिन्दू जाति, कुरमी। गृहस्थ।

कुनयना—(वि०, सं०) बुरे नेत्रवाली। [विलो० **सुनयना**]।

कुनवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कुनना] बर्तन आदि खरादने वाला, खरादी।

कुनह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० कोन] द्वेष, पुराना वैर। बुरा नख। [**कुनही**-(वि०) द्वेषी, वैर रखने वाला। कुनखी] (अ०) मर्म-भेद। "कुनह की उसके हमें कब दीद है"—हाली०।

कुनाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कुनना] खुर-चने या खरादने से निकलने वाली बुकनी या किसी वस्तु का चूर, बुरादा। खरादने का भाव या उसकी मजदूरी। (वि०) थोड़ा, कम। [बुरान्यायी, कुन्यायी (वि०, दे०) ।

कुनाम—(संज्ञा, पु०, सं०) बदनामी। "हम ना कुनाम कौ कुलाहल करावैगी"—रत्ना०। [**कुनामी** (वि०)]

कुनारी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुष्टा स्त्री, भ्रष्टच-रित्रा, कुनारि। "रंकिनि, कलंकिनी, कुनारी हौं"।

कुनाल—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रसिद्ध महाराज अशोक का पुत्र, जिसने अपनी सौतेली माँ की पापेच्छा न पूर्ण कर उसके आदेश से अपनी आँखें निकाल दी और अशोक के द्वारा उसका वधादेश सुन अपनी प्रार्थना से उसे बचाया, कुणाल।

कुनालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कोयल।

कुनित*—(वि०, दे०) [सं० क्वणित] शब्दाय-मान।

कुनीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अन्याय। अनुचित रीति, कुरीति। कुन्याय।

कुनेत्र—(वि०, सं०) बुरे नेत्र वाली। [विलो० **सुनेत्रा**। **कुनेत्री** (वि०)]

कुनेरा—(संज्ञा, पु०) बर्तन खरादने वाला।

कुनैन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० क्विनिन] सिन-कोना नामक पेड़ की छाल का ज्वरनाशक सत। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कु=बुरा+नैन] बुरे नेत्र, कुपित नेत्र। [**कुनैना, कुनैनी** (वि०)]

कुपंथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुपथ] बुरा मार्ग, कुमार्ग। कुत्सित सिद्धान्त या संप्रदाय। बुरा मत। कुचाल, निषिद्धाचरण। [**कुपंथी**-(वि०) कुमार्गी।] "मन कुपंथ पग धरहिं न काऊ"—[रामा०]।

कुप—(संज्ञा, पु०,) घास-भूसे का ढेर।

कुपक—(संज्ञा, पु०,) एक मधुर बोलने वाला पक्षी।

कुपद—(वि०) [हि० कु+पद] अनपढ़।

कुपथ—(संज्ञा, पु०, सं०) कुपंथ, बुरा रास्ता। निषिद्ध आचरण, कुचाल।—**गामी**-(यौ०) कुत्सि-ताचरण वाला, पापी। (संज्ञा, पु०) [सं० कुपथ्य] स्वास्थ्य के लिए हानिकर भोजन। "कुपथ निवारि सुपंथ चलावा", "कुपथ माँग रुज व्याकुल रोगी" —[रामा०]। [**कुपथी** (वि०)]

कुपथ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वास्थ्य के लिए हानिकारक आहार-विहार, बदपरहेजी (फ़ा०)। [**कुपथ्यी** (वि०)]

कुपना*—(क्रि०, अ०, दे०) कोपना, नाराज़ होना, कुपित होना।

कुपाठ—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरी सलाह, बुरा पाठ। "कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू"—[रामा०]। [**कुपाठी, कुपाठक** (वि०)]

कुपात्र—(वि०, सं०) अनधिकारी, अपात्र, अयोग्य, शास्त्रों में जिसे दान देना निषिद्ध है। मृत्पात्र, मिट्टी का बरतन। [विलो० **सुपात्र**]

कुपार※—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अकूपार) समुद्र, सागर।

कुपाल, कुपालक—(वि०, सं०) बुरा राजा या पालने वाला। भूपाल।

कुपित—(वि०, सं०) क्रुद्ध, अप्रसन्न, कोपयुक्त, नाराज, क्रोधित। दोषादि का बढ़ना। [**कुपिता** (स्त्री०)]

कुपुत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) भौम, मंगल। कुमार्गी पुत्र, दुष्ट पुत्र। [कुपूत (दे०)] [**कुपुत्री**-(वि०) सीता। (पु०) बुरे पुत्र वाला]

कुपुरुष—(संज्ञा, पु०, हि०) अधम मनुष्य, नीच, कापुरुष (सं०)। "भाग्य भरोसे जो रहै, कुपुरुष भाषहिं टेरि"—कुं० वि०।

कुपूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुपुत्र] [कपूत (दे०)] बुरा लड़का। पृथ्वी का पुत्र, भौम। [**कुपूती** (संज्ञा, स्त्री०)]

कुप्पा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कूपक या कुतुप) घड़े का सा चमड़े का बना हुआ घी, तेल आदि रखने का पात्र। **मुहा०—होना (होजाना)**-फूल जाना सुजना, मोटा होना। हृष्ट-पुष्ट या प्रसन्न होना। रूठना, मुँह फुलाना। **कुप्पी**-(स्त्री० अल्पा०) छोटा कुप्पा।

कुप्रबंध—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रबन्ध का अभाव, बदइंतजामी, कुव्यवस्था। [मिसमैनेजमेंट]।

कुप्रयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी वस्तु, अधिकार का दुरुपयोग या अनुचित प्रयोग। [एब्यूज़]

कुफुर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुफ्र] मुसलमानी मत से विरुद्ध या भिन्न मत, कुफ्र। [**काफिर** (वि०, अ०)]

कुफेन—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काबुल नामक नदी का प्राचीन नाम। बुरा फेन।

कुबंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोदंड] धनुष। *(वि०) (कु+बंड=खज) विकृतांग, खोंडा।

कुब, कूब—(संज्ञा, पु०, दे०) कूबड़ा। [कूबर (दे०)] "सोई करि कूब राधिका पै आनि फाटी है"—रत्ना०।

कुबड़ा, कूबड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुब्ज] कूबड़ वाला, जिसकी पीठ टेढ़ी या झुकी हो। (**वि०**) टेढ़ा, झुका हुआ, कूब वाला। [कुबरा (दे०)] कूबरा। [**कुबड़ी, कुबरी**-(स्त्री०) कूबड़ वाली स्त्री, झुके हुए सिर वाली छड़ी, मंथरा] "कुबरी कुटिल करी कैकेयी"—[रामा०]। कंस की दासी, कुब्जा।

कुबत*—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कु+बात] कुबात, निंदा, बुरी चाल या बात। [सं० कु+बात=वायु] बुरी हवा। शक्ति, कूवत (अ०)।

कुबाक, कुवाक्य—(संज्ञा, स्त्री०, दे० सं०) बुरा वाक्य, कुत्सित शब्द। निंदा, गाली।

कुबानि—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कु+बानि] बुरी आदत, बुरी टेव। [सं० कुवाणी] बुरी वाणी।

कुबानी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुवाणी] बुरी वाणी, गाली। निंदा। (संज्ञा, पु०) [सं० कुवाणिज्य, कुवाणिक] बुरा व्यापार, बुरा बनिया।

कुबुद्धि—(वि०, सं०) दुर्बुद्धि, मूर्ख। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) मूर्खता। कुमंत्रणा, बुरी सलाह। कुबुधि। "जैसी कुबुद्धि ठई चित मैं"—दे०।

कुबूल—(वि०, फ़ा०) स्वीकार। (स०, क्रि०, दे०) कुबूलना।

कुबेर—(संज्ञा, पु०, सं०) धन-संपत्ति के माने जाने वाले देवता जो उत्तर दिशा के स्वामी हैं, यक्षराज।

कुबेला—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कुवेला] बुरा समय, कुसमय।

कुबोल—(संज्ञा, पु०, दे०) बुरे बोल। [**कुबोलनी** (वि०, स्त्री०)]

कुब्ज—(वि०, सं०) कुबड़ा, कुबरो (ब्र०) टेढ़ा, वक्र। (संज्ञा, पु०, सं०) एक वायु-रोग जिससे पीठ टेढ़ी हो जाती है, अपामार्ग। [**कुब्जता**-(संज्ञा, भा०, स्त्री०, सं०) वक्रता]

कुब्जक—(संज्ञा, पु०, सं०) मालती लता।

कुब्जा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कंस की एक कुबड़ी दासी जो कृष्ण पर बहुत प्रेम रखती थी, जिसका कूबड़ उन्होंने दूर किया था। कुबरी, कूबरी, कैकेयी की मंथरा दासी। कुबजा (ब्र०)। "कूर कुबजा पठाये है।"—रत्ना०।

कुब्जिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा का एक नाम। ८ वर्ष की कन्या।

कुब्बा—(संज्ञा, पु०, दे०) कूबड़, कूबर।

कुब्र—(संज्ञा, पु०, सं०) जंगल, वन। अंगूठी, बाली।

कुभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी की छाया। बुरी दीप्ति। काबुल नदी।

कुभाग्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्भाग्य, बुरी किस्मत, बुरी तक़दीर। "तम को कर दूर कुभाग्य के मेरे" —हितैषी।

कुभार्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुलटा या कर्कशा स्त्री। कुपत्नी।

कुभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा भाव, द्वेष। "भाव-कुभाव, अनख-आलस हूँ"—[रामा०]।

कुभृत—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा नौकर। शेषनाग। पर्वत। ७ की संख्या। कुभृत्य।

कुमंठी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कमठ=बाँस] [कमटी (दे०)] बाँस की पतली खपाँच, कमची, लचीली टहनी।

कुमंत्रणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुमंत्र, बुरी सलाह। [**कुमंत्री** (संज्ञा, पु०, सं०)]

कुमक—(संज्ञा, स्त्री०, तु०) सहायता। पक्षपात, तरफ़दारी। प्रसन्नता, उमंग।

कुमकी—(वि०, तु०) कुमक-संबन्धी। (संज्ञा, स्त्री०) हाथियों के पकड़ने में मदद देने वाली सिखाई हुई हथिनी।

कुमकुम—(संज्ञा, पु०) [सं० कुंकुम] केसर, कुमकुमा। "कुकुम चंदन चर्चित गात्रः।"

कुमकुमा—(संज्ञा, पु०) [तु० कुमकुम] भिल्ली या लाख का बना एक पोला गोला जिसमें अबीर या गुलाल भर कर होली में लोग मारते हैं। तंग मुँह का छोटा लोटा। काँच के छोटे पोले गोले।

कुमति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्बुद्धि, दुर्मति। [विलो० सुमति]।

कुमद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुमुद] दुरभिमान। एक कमल। [**कुमदनी**-(स्त्री०) कमलिनी]

कुमरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) हाथियों की एक जाति। (स्त्री०, दे०) कुमारी।

कुमरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पंडुक जाति की एक चिड़िया। [कुररी (दे०)]

कुमाच—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० कुमाश] एक रेशमी कपड़ा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) काँच।

कुमार—(संज्ञा, पु०, सं०) पाँच वर्ष का बालक पुत्र। युवराज। कार्तिकेय। सिंधुनद। तोता। खरा सोना। सनक, सनंदन, सनत् और सुजात आदि सदा बालक रहने वाले ऋषि। युवावस्था से पूर्व की अवस्था वाला। बालकों पर उपद्रव करने वाला एक ग्रह। मंगल ग्रह। जैन विशेष। अग्नि। प्रजापति। अग्नि पुत्र। वृक्ष-विशेष। (वि०, सं०) बिना ब्याहा। [कुआँरा (दे०)] [**कुमार-पाल**-(यौ०, सं०) नृप शालिवाहन] (यौ०) [कु+मार]—पृथ्वी का कामदेव। —**तंत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) बालतंत्र, बच्चों के रोगों का निदान और उनकी चिकित्सा, बाल-वैद्यक-भाग। —**पात्र**-बिना ब्याहा। [**कुआँरपात्र** (दे०)]।—**भृत्य**-(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भिणी को सुख से प्रसव कराने की विद्या। गर्भिणी एवं नव प्रसूत बालकों की चिकित्सा (वैद्य०)।

कुमारबाज—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० किमार+बाज फ़ा०] किमारबाज़, जुआरी।

कुमारललिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ७ वर्णों का एक वृत्त (पिं०)।

कुमारक—(संज्ञा, पु०, सं०) कुमार। आँख की पुतली, नयनतारा।

कुमारग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुमार्ग] कुपथ, बुरा मार्ग। [**कुमारगी, कुमारगगामी** (वि०)]

कुमारयु—(संज्ञा, पु०, स०) युवराज, राजकुमार।

कुमारलसिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ८ वर्णों का एक वृत्त (पिं०)।

कुमारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुमारी, कुआँरी कन्या। राज-पुत्री। पुत्री। भारत के दक्षिण में एक अंतरीप। भरत राजा की कन्या।

कुमारिल (भट्ट)—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण देशीय एक प्रसिद्ध दार्शनिक या मीमांसक (ई० ६५० से ७०० ई०) जो शंकराचार्य के समकालीन थे। उन्होंने वेदों का भाष्य किया, मीमांसा वार्तिक और तंत्र-वार्तिक नामक ग्रंथ रचे। ये ही शबर भाष्य तथा श्रौतसूत्रों के टीकाकार भी थे। इन्होंने बौद्धों के मत का खंडन किया और प्रयाग में तुषानल से शरीर छोड़ा।

कुमारी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १२ वर्ष तक की कन्या। घीकुवाँर। नवमल्लिका। बड़ी इलायची। सीता। पार्वती। दुर्गा। भारत के दक्षिण में एक अंतरीप, कन्या-कुमारी। पृथ्वी का मध्य। श्यामा पक्षी। चमेली। सेवती। शाकद्वीपी। ७ सरिताओं में से एक। (वि०, स्त्री०) बिना ब्याही। अपराजिता।

—**पूजन**—(संज्ञा, पु०, सं०),—**पूजा**—(स्त्री०, यौ०) एक प्रकार की देवी-पूजा, जिसमें बालिकाओं का पूजन किया जाता है (तंत्र)। कुँवारी। [कुआँरी (दे०)]

कुमार्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा मार्ग। अधर्म। [**कुमार्गी**—(वि०) कुचाली, अधर्मी। **कुमार्गगामी**—बदचलन]

कुमुक—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सहायतार्थ भेजी हुई फौज। [रीनफोर्समेण्ट]

कुमुख—(वि०, पु०, सं०) बुरे मुख वाला, दुर्मुख। कटुभाषी। [**कुमुखी** (स्त्री०)]

कुमुद, कुमोद—(संज्ञा, पु०, सं०) [कुईं (दे०)] कोका, लाल कमल। चाँदी। विष्णु। एक वानर (जो राम-सेना में था)। "लंकायाम् उत्तरे कोणे कुमुदो नाम वानरः"। कपूर। दक्षिण-पश्चिम-कोण का दिग्गज। एक द्वीप। दैत्य। नाग। केतुतारा। संगीत की एक ताल या रागिनी।—**वल्लभ**—चंद्रमा।—**बंधु**—(संज्ञा, पु०, दे०) चंद्रमा। "कुमुद-बंधु कर निंदक हासा"—[रामा०]।

कुमुदिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुईं, कोईं। [कमलिनी (दे०)] कुमद-युक्त सरोवर। नीलोफ़र। [कुमोदिनी (दे०)]

कुमुदिनीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुमुदिनी-पति, चंद्रमा, कुमुदेश।

कुमुद्वती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुमुदिनी। "यह कुमुद्वती जल-भिन्न हुई"—मैथिली०।

कुमेढ—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिणी ध्रुव।

कुमेरिया—(पु०) एक प्रकार का हाथी।

कुमोदक—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु।

कुमोदिनी—दे० 'कुमुदिनी'।

कुम्मैत (कुमैत)—(संज्ञा, पु०, दे०, तु०) स्याही लिये लाल रंग, लाखी। [कुम्मैद (दे०)] इसी रंग का घोड़ा। "तुर्की, ताजी और कुमैता घोड़ा अरबी, पचकल्यान"—[आल्हा०]। **मुहा० आठों गाँठ**—, चतुर, चालाक, धूर्त।

कुम्हरौटी—(संज्ञा, स्त्री०) चिकनी काली मिट्टी।

कुम्हड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुष्मांड] एक प्रकार की फैलने वाली बेल जिसके बड़े फल तरकारी के काम मे आते है, पेठा, (कुम्हड़ा दो प्रकार का होता है, सफेद पेठा, हरे पीले रंग का, जिसे काशीफल या कद्दू कहते है)। **मुहा०—(ड़े) की बतिया (कुम्हड़ बतिया)**—कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल, अशक्त मनुष्य। "इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं"—[रामा०]।

कुम्हड़ौरी, कुम्हरौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उर्द की पीठी में कुम्हड़े के टुकड़े मिलाकर बनाई जाने वाली बरी। [कुँहरौरी (दे०)]

कुम्हलाना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कु+म्लान] मुरझाना, सूखने पर होना। प्रभा-हीन होना। प्रसन्नता-रहित होना। [**कुम्हलाया, कुम्हलाई** (वि०, स्त्री०)]

कुम्हार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंभकार] कुलाल, मिट्टी के बरतन बनाने वाला। [कुँभार (दे०)] कहाँर (ग्रा०)। [**कुम्हारिन** (स्त्री०)]।

कुम्ही*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुंभी] जल-कुंभी, पानी पर फैलने वाला एक पौधा।

कुयश—(संज्ञा, पु०, सं०) अपयश, दुर्नाम। [कुजस (दे०)]

कुयोग, कुजोग—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) बुरा योग या काल। दुखद ग्रह।

कुयोगी—(संज्ञा, पु०, सं०) विषयानुरक्त। "पुरुष कुयोगी ज्यों उरगारी"—[रामा०]।

कुरंकर—(संज्ञा, पु०, सं०) सारस।

कुरंग—(संज्ञा, पु०, सं०) बादामी रंग का हिरन, मृग। बरवै छंद (पिं०)। (संज्ञा, पु०) [हि० कु+रंग=ढंग] बुरा लक्षण, बुरा रंग-ढंग। लोह जैसा लोहे का रंग। नीला। कुम्मैत। लाखौरी, इसी रंग का घोड़ा। (वि०) बदरंग, बुरे रंग का।... "कत कुरंग अकुलात"—बिहारी।—**नयना**—(वि०, स्त्री०, यौ०, सं०) मृग के से नेत्र वाली। [मृगनैनी (दे०)] कुरंगनैनी।

कुरंगम—(संज्ञा, पु०, सं०) मृग। "मद कुरंगम शावक से कभी"—हरिऔध।—**सार**—(संज्ञा, पु०, सं०) कस्तूरी, मृग-मद, कुरंग-नाभि।

कुरंगिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हिरनी, मृगी। [कुरंगी (दे०)]

कुरंटक—(संज्ञा, पु०, सं०) पीली कटसरैया, पियाबाँस।

कुरंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुरुविंद] एक खनिज पदार्थ, जिसके चूर्ण को लाख आदि में मिलाकर शान का पत्थर बनाते है।

कुरकी, कुर्की—(संज्ञा, स्त्री०) [तु० कुर्क+ई प्रत्य०] कर्जदार या अपराधी की जायदाद का ऋण या जुरमाने की वसूली के लिये सरकार-द्वारा जब्त किया जाना।

कुरकुंड—(संज्ञा, पु०, दे०) एक घास जिसे रीहा कहते हैं ।

कुरकुट, कुरकुटा—(संज्ञा, पु०, दे०) टुकड़ा, रवा । कड़ा । मोटा अन्न । रोटी का टुकड़ा । [**कौरा-कुरकुटा** (यौ०)] "जूड़ कुरकुरा भीखहि चहा"—जायसी । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुक्कुट] मुर्गा ।

कुरकुर—(संज्ञा, पु०, अनु०) खरी वस्तु के दबकर टूटने का शब्द ।

कुरकुरा—(वि०, पु०) [हि० कुरकुर] खरा, करारा, कुरकुराने वाला । [**कुरकुरी** (वि०, स्त्री०)] (संज्ञा, स्त्री०,) पतली हड्डी ।

कुरकुराना—(क्रि०, अ०, अनु०) कुरकुर शब्द करना, टूटना ।

कुरकुराहट—(संज्ञा, स्त्री०) कुरकुरी वस्तु के टूटने की आवाज ।

कुरकुरी—(संज्ञा, स्त्री०) घोड़े की एक बीमारी । अस्थि ।

कुरखेत—(संज्ञा, पु०) खेत जिसकी जोताई हुई हो पर बोवाई न हुई हो ।

कुरच—(संज्ञा, पु०, दे०) क्रौंच (सं०) टिटिहरी ।

कुरत—(वि०, सं०) बुरा अनुरक्त । [**कुरता** (स्त्री०)]

कुरता, कुर्ता—(संज्ञा, पु०, तु०) एक पहिनने का ढीला वस्त्र । (संज्ञा, स्त्री०) [तु० कुरता] [**कुरती**-स्त्रियों की फतुही]

कुरना§*—(क्रि०, अ०, दे०) कुरलना, [सं० कलरव] मधुर स्वर से पक्षियों का बोलना । ढेर लगाना । [कुरवना (दे०)] "जसुदा की कोरि एक बार ही कुरै परी"—देव० ।

कुरट—(संज्ञा, पु०, सं०) मोची, चमड़े का काम करने वाला ।

कुरबक—(संज्ञा, पु०, सं०) कटसरैया नामक एक औषधि ।

कुरबान—(वि०, अ०) निछावर या बलिदान दिया हुआ । **मुहा०—जाना (होना**)-निछावर या बलि होना ।

कुरबानी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बलिदान ।

कुरमा—(संज्ञा, पु०) परिवार, कुटुम्ब ।

कुरमी—(संज्ञा, पु०, दे०) एक नीच जाति, कुनबी ।

कुरर—(संज्ञा, पु०, सं०) गिद्ध जाति का पक्षी, कराँकुल, क्रौंच, टिटिहिरी । [कुररा (दे०)] । [**कुररी**-(स्त्री०) आर्या छंद का एक भेद (पिं०), टिटिहरी, भेड़, चील्ह, भेषी ।]

कुरलना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कलरव] कुरना, पक्षियों का मधुर स्वर करना । "खूदहिं, कुरलहिं जनु सब हंसा"—जायसी ।

कुरला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्रीड़ा, कुल्ला । "कुरला काम करं मनुहारी"—जायसी ।

कुरव—(वि०, सं०) बुरा शब्द करने वाला । (संज्ञा, पु०) बुरा शब्द ।

कुरवद—(संज्ञा, पु०, दे०) कुरुविंद ।

कुरवना—(क्रि०, स०) [हि० कूरा] राशि लगाना, ढेर करना । [कुरौना (दे०)]

कुरवारना—(क्रि०, स०, दे०) खोदना, खरोंचना । "सुख कुरवारि फरहरी खाना"—जायसी ।

कुरसिक—(वि०, सं०) बुरा रसिक ।

कुरसी, कुर्सी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पीछे टेक या सहारे की पटरी लगी हुई एक प्रकार की ऊँची चौकी । **आराम**—, लेटने की बड़ी कुरसी । वह ऊंचा चबूतरा जिस पर इमारत बनाई जाती है । पीढ़ी, पुश्त । मकान की नींव की ऊंचाई । (वि०) बुरा रसिक । बुरे रस वाला । **मुहा०—पाना**-पद, अधिकार या सम्मान पाना ।—**देना**-आदर करना ।—**नामा**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लिखी हुई वंश-परंपरा, शजरा, पुश्तनामा, वंश-वृक्ष ।

कुरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुरह] पुराने जख़म की गाँठ । (संज्ञा, पु०) [सं० कुरव] कटसरैया ।

कुराइ*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुराय । कुराह । बुरा राजा ।

कुराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बुरा राजा । रास्ते के गड्ढे । कुराय । कुराह, ऊंची-नीची भूमि । "कुस कंटक काँकरी कुराई"—[रामा०] ।

कुराज—(संज्ञा, पु०, दे०) बुरा राज्य, बुरा राज ।

कुरान—(संज्ञा, पु०, अ०) अरबी भाषा में मुसलमानों का एक धर्म ग्रंथ ।

कुराय*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कु+राह] पानी से पोली भूमि का गड्ढा । (पु०) बुरा राजा । बुरी राय या सम्मति ।

कुराह—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कु+राह फ़ा०] कुमार्ग । बुरी चाल, खोटा आचरण । [**कुराही**-(वि०) कुमार्गी, बदचलन । (संज्ञा, स्त्री०) [कुराह +ई—प्रत्य०] बदचलनी, दुराचार]

कुराहर*—(संज्ञा, पु०, दे०) कोलाहल। "काग कुराहर करि सुख पावा"—जायसी ।

कुरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुटी] घास-फूस की झोपड़ी, कुटी । [कुटिया (दे०)] अति छोटा गाँव ।

कुरियाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कल्लोल] चिड़ियों का मौज में बैठकर पंख खुजलाना । **मुहा०—में आना**-(चिड़ियों का) आनन्द या मौज में आना ।

कुरिहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोलाहल] शोर । "को नहि करै केलि-कुरिहारा"—जायसी । (वि०) कुटीवाला ।

कुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कूरा] मिट्टी का छोटा धुस या टीला । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० कुल] वंश, घराना । राशि । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० कूरा] खंड, टुकड़ा । **मुहा०—कुरी होना**-खंड-खंड होना । फूट-फैल जाना । "अस्सी कुरी नाग सब" "तेइसत बोहित कुरी चलाये"—जायसी ।

कुरीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी रीति, कुचाल, कुप्रथा, बुरा रिवाज, बुरी रस्म ।

कुरीर—(संज्ञा, पु०, सं०) मठी, मैथुन ।

कुरु—(संज्ञा, पु०, सं०) वैदिक आर्यों का एक कुल । हिमालय के उत्तर और दक्षिण का एक प्रदेश । एक सोमवंशीय राजा जिससे कौरव (धृतराष्ट्र) और पांडु हुये थे, कुरु-वंशीय पुरुष । भरत । कर्ता । पृथ्वी के ६ खंडों में से एक ।**—केतु**-(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्योधन । युधिष्ठिर । परीक्षित । कुरु-नाथ । कुरुपति । **—क्षेत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) दिल्ली के आसपास (अंबाला और दिल्ली के बीच) का मैदान, जहाँ महाभारत युद्ध हुआ था, यहाँ इसी नाम की एक झील है, जहाँ कुंभ का मेला होता है । एक तीर्थ । सरस्वती के दक्षिण और दृषद्वती नदी के उत्तर का प्रान्त ।**—वंश**-राजा कुरु का कुल ।**—पांचाल**-एक प्रांत ।

कुरुई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुंडव] बाँस और मूँज की एक छोटी डलिया, मौनी । (वि०, स्त्री०) [करुई (दे०)] तिक्त, कटु ।

कुरुख—(वि०, दे०) [हि० कु+रुख फ़ा०] अप्रसन्न चेहरे वाला, नाराज । (संज्ञा, पु०) । बुरा रुख, प्रतिकूल मनोवृत्ति ।

कुरुखेत*—(संज्ञा, पु०, दे०) कुरुक्षेत्र (सं०) ।

कुरुजांगल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पांचाल देश के पश्चिम का देश ।

कुरुचि—(संज्ञा, स्त्री०, स०) बुरी रुचि । [विलो० सुरुचि] ।

कुरुबक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वनस्पति ।

कुरुम*—(संज्ञा, पु०, दे०) कूर्म (सं०) कछुआ, कुरम । [कूरम (दे०)]

कुरुविंद—(संज्ञा, पु०, स०) मोथा । उरद । दर्पण । काच । लवण । माणिक ।

कुरूप—(वि०, सं०) बदसूरत, बेढंगा, भद्दा । [**कुरूपा** (स्त्री०)] [**कुरूपता** (संज्ञा, स्त्री०,)]

कुरूपता—(संज्ञा, स्त्री०, स०) बदसूरती ।

कुरेदना—(क्रि०, सं०, दे०) (सं० कर्तन) खुरचना, खोदना, करोदना । ढेर को इधर-उधर चलाना । फैलाना ।

कुरेर*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुलेल, कल्लोल (स०), क्रीड़ा, कलोल ।

कुरेलना—(क्रि०, स०, दे०) कुरेदना, खोदना । (संज्ञा, पु०, दे०) राशि, ढेर ।

कुरैना—(क्रि०, स०, दे०) डालना, ढेर लगाना । [कुरौना (दे०)]

कुरैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुटज (सं०), इंद्रयव का जंगली पौधा जिसके फूल सुन्दर होते हैं ।

कुरोग—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा रोग । दाद । कुष्ट ।

कुरौना*—(क्रि०, स०, दे०) (हि० कूरा=ढेर) कूरा या ढेर लगाना ।

कुर्क—(वि०, तु० कुर्क) जब्त । [कुरुक (दे०)] **—अमीन**-(संज्ञा, पु०) (तु० कुर्क+अमीन—फ़ा०) अदालत की आज्ञानुसार किसी अपराधी की जायदाद की कुर्की करने वाला सरकारी कर्मचारी । [कुरुकमीन (दे०)]

कुर्की—(संज्ञा, स्त्री०) (तु० कुर्क+ई—प्रत्य०) किसी अपराधी के जुरमाने या कर्जदार के कर्ज़ के लिये उसकी जायदाद का सरकार द्वारा जब्त करने की क्रिया । [कुरकी (दे०)] [एटैचमेण्ट]

कुर्कुट—(संज्ञा, पु०, दे०) कुरकुटा, टुकड़ा । कूड़ा-करकट ।

कुर्कुटी—(संज्ञा, पु०, सं०) सेमर वृक्ष ।

कुर्छाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुलाँच, चौकड़ी, कुदान, उछाल ।

कुर्पर—(संज्ञा, पु०, सं०) घुटना । कुहनी ।

कुर्ब्बा, कुब्बा—(संज्ञा, पु०, दे०) कूब, कूबड़ ।

कुर्मी—(संज्ञा, पु०, दे०) कुरमी । [कुनबी (दे०)]

कुर्मुक—(संज्ञा, पु०, दे०) सुपारी ।

कुर्याला—(संज्ञा, पु०, दे०) आराम, सुख । **मुहा० कुर्याल में गुलेल लगाना**–निराश होना, सुख में दुख होना ।

कुर्रा, कुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हेगा । कोड़ा, चाबुक । [कोरी (दे०)] सुहागा । कुरकुरी हड्डी । [**कुर्री**–(स्त्री०) गोल टिकिया]

कुलंग—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लाल सिर और मटमैले रंग के शरीर का एक पक्षी, मुर्गा ।

कुलंजन—(संज्ञा, पु०, सं०) अदरक का सा एक पौधा जिसकी जड़ गरम, दीपन और स्वर-शोधक होती है, पान की जड़ । [कुलीजन (दे०)]

कुलंधर—(संज्ञा, पु०, सं०) कुल का तारतम्य बाँधने वाला ।

कुलंगर—(संज्ञा, पु०, सं०) चोर, जो सेंध मारकर चोरी करता है ।

कुल—(संज्ञा, पु०, सं०) वंश, घराना, जाति, गोत्र । समूह, झुंड । घर । वाममार्ग, कौल-धर्म । व्यापारियों का संघ । [फैमली] "निज कुल की ही रीति प्रिये, भागीरथी"—मैथिली० । (वि०, अ०) समस्त, सब, सारा (ब्र०) ।—**कंटक**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुपुत्र ।—**कन्या**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) कुलीन या अच्छे घर की लड़की । (द्वंद्व समास) वंश और कन्या । कुलीन-कन्या, कुल कन्या ।—**कर्म**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुलाचार, कुल-क्रिया, वंश-परम्परा, कुल-धर्म, कुल-रीति ।—**कलंक**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुल-कीर्ति में दाग लगाने वाला । "कुल कलंक तेहि पामर जाना" —तुलसी० ।—**कानि**–(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कुल+कानि मर्यादा] कुल या वंश की मर्यादा, कुल की लज्जा या प्रतिष्ठा, कुल-मर्यादा ।—**गली**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) कुल-रीति, कुल-गैल । "कौनै तजी न कुल-गली" ।—**घाती**–(वि०, सं०) कुल-नाशक, कुलघालक, कुलहंता । "हम कुल-घालक सत्य तुम..."—तुल० । [विलो० कुल-पालक]—**ज**–(वि०, सं०) कुलीन, सद्वंशीय ।—**जमा**–सब मिलाकर, केवल, मात्र, समस्त, सम्पूर्ण ।—**तारण (कुलतारन)**–(वि०, सं०, दे०) कुल को तारने वाला । [**कुलतारनी (स्त्री०)**] —**देव**–(संज्ञा, पु०, सं०) किसी कुल की परम्परा से जिस देवता की पूजा होती आई हो, कुलदेवता ।—**द्रोही**–(दे०, सं०) वंश-दूषक, वंशद्वेषी, कुमार्गी, कुलद्वेषी ।—**धर्म**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुल-परम्परा से चला आया कर्तव्य-कर्म, कुलाचार, वंश-व्यवहार, कुल-रीति ।—**नाश**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सन्तान-हीनता, कुल-भ्रष्टता । कुल-नाशक । (वि०) वंश का नाश करने वाला । [**कुलनाशिनी** (स्त्री०)]—**पति**–(संज्ञा, पु०, सं०) घर का मालिक । विद्यार्थियों का भरण-पोषण करता हुआ शिक्षा देने वाला गुरु या अध्यापक, दस हजार विद्यार्थियों को अन्न (भोजन) और विद्या देने वाला ऋषि । विश्वविद्यालय का सर्वोच्च अधिकारी जो चांसलर (गवर्नर) के अधीनस्थ रहता है [वाइसचांसलर] ।—**परम्परा**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वंश-प्रणाली, कुल को बहुत समय से चली आई हुई रीति, कुल-परिपाटी ।—**पालक**–(वि०, सं०) वंश का पालन-पोषण करने वाला, कुल-पति । "कुल पालक दससीस"—[रामा०] । [**कुलपालनी (स्त्री०)**]—**पूजक**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वंश की पूजा करने वाला । वंश का पूज्य, पुरोहित, कुलदेव, कुल-पूजाई ।—**पूज्य**–(वि०, सं०) कुल-परम्परा से जिसका मान या पूजन होता आया हो, कुल-गुरु, कुल-देव, कुल-सेव्य । "गुरु, वसिष्ट कुल पूज्य हमारे"—तुल० ।—**बोरन**–(वि०, यौ०) [हि० कुल+बोरना] कुल को भ्रष्ट या नाश करने वाला, कुलकलङ्क । [**कुलबोरनी (स्त्री०)**] "चली है कुल बोरनी गंगा नहान"—कबी० ।—**रीति**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुल मे चले आए परम्परागत नियम । "जैसी थी कुलरीति वेद-विधि से"—[मधुपुरी] ।—**वधू**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सम्मानित कुटुम्ब की स्त्री ।—**वधू**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुलवती, सच्चरित्रा स्त्री, पतिव्रता, वंश-मर्यादा रखने वाली स्त्री । "अपनी सुध ये कुलस्त्रियाँ लेती नहीं"—मैथिली० ।

कुलकना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० किलकना] प्रसन्न या खुश होना, मोद से उछलना ।

कुल-कुला—(संज्ञा, पु०, दे०) कुल्ला, गंडूष ।

कुलकुलाना—(क्रि०, अ०, अनु०) कुल-कुल शब्द करना । **मुहा० आँतें कुलकलाना**–भूख लगना ।

कुलकुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुल्ली । चुलबुली । खुजली ।

कुलक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा लक्षण, कुचाल । [कुलच्छन (दे०)] (वि०, सं०) दुराचारी, बुरे लक्षण वाला । [**कुलक्षणा, कुलक्षणी, कुलच्छनी** (स्त्री०, दे०)]

कुलच्छन—(संज्ञा, पु०, दे०) कुलक्षण (सं०) ।

कुलचा, कुरचा—(संज्ञा, पु०, दे०) बचत, पूँजी, मूलधन। [कोरचा (दे०)]।

कुलज्ञ—(संज्ञा, पु०, सं०) कुलाचार्य, भाट।

कुलट—(वि०, पु०, सं०) व्यभिचारी, बदचलन, औरस के अतिरिक्त अन्य प्रकार का, जैसे दत्तक पुत्र।

कुलटा—(वि०, स्त्री०, सं०) छिनाल, बहुत पुरुषों से प्रेम रखने वाली स्त्री, परकीया नायिका जो कतिपय पुरुषों में अनुरक्त हो। "कोऊ कहौ कुलटा, कुलीन, अकुलीन कहौ"—मीराँ।

कुलथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुलत्थ्य, कुलंथिका] एक प्रकार का मोटा अन्न।

कुलना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कल्लाना] दर्द करना, टीस होना।

कुलफ, कुलुफ—(संज्ञा, पु०) (देखो अरबी कुफुल) ताला।

कुलफ़त—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मानसिक व्यथा, चिंता।

कुलफ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० खुर्फा] एक साग, बड़ी जाति की अमलौनी।

कुलफ़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कुलफ] पेंच। टीन आदि का चोंगा, जिसमें दूध भर कर बर्फ जमाते हैं। इस प्रकार का जमा दूध, मलाई आदि।

कुलबुल—(संज्ञा, पु०) [अनु०] छोटे-छोटे जीवों के हिलने-डोलने की आहट। [**कुलबुली**—(स्त्री०) चुलबुली। **कुलबुलाहट** (भा० सं०)]

कुलबुलाना—(क्रि०, अ०, अनु०) बहुत से छोटे जीवों का एक साथ मिल कर हिलना-डुलना, इधर उधर रेंगना। चंचल होना। आकुल होना। कलमलाना।

कुलबुलाहट—(संज्ञा, स्त्री०) कुलबुलाने का भाव।

कुबेरा, कबेला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बुरा समय।

कुलवन्त—(वि०, सं०) कुलीन, श्रेष्ठ कुल का। [**कुलवन्ती** (स्त्री०)]

कुलवान—(वि०, सं०) कुलीन, सद्वंश का। [**कुलवती** (स्त्री०)]

कुलह, कुलहा—(संज्ञा, स्त्री०, पु०) [फ़ा० कुलाह] टोपी। शिकारी चिड़ियों की आँखों का ढक्कन। अँधियारी। "कुमति विहंग कुलह जनु खोली"—[रामा०]। (वि०) कुलनाशक।

कुलही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० कुलाह] बच्चों के सिर की टोप, कनटोप। (वि०, स्त्री०) बुरे ढंग से प्राप्त।

कुलाँगना—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) कुलीना, श्रेष्ठ स्त्री, कुल-बधू।

कुलांगार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुलनाशक, सत्यानाशी, कुल को नष्ट करनेवाला व्यक्ति, कुल को कलंकित करने वाला। "ये कान्यकुब्ज-कुल कुलांगार"—निराला।

कुलाँच, कुलाँट*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [तु० कुलाच] चौकड़ी, छलांग, उछाल।

कुलाचार—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) कुल-रीति, वंश-परम्परा।

कुलाचार्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुल-गुरु, पुरोहित।

कुलाधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाप, पातक।

कुलाबा—(संज्ञा, पु०, अ०) लोहे का जमुरका जिसके द्वारा किवाड़ बाजू से जकड़ा रहता है, पायजा।

कुलाय—(संज्ञा, पु०, सं०) पक्षियों का घोंसला। स्थान। खोल।

कुलायिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चिड़ियाघर। पिंजड़ा।

कुलाल—(संज्ञा, पु०, सं०) मिट्टी के बर्तन बनाने वाला कुम्हार। "काँची काहु कुसल कुलाल ते कराई तो"—रसि०। जंगली मुर्गा। उल्लू।

कुलाली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मिट्टी के बर्तन बनाने वाली,कुम्हारिन। वनकुलथी।

कुलाह—(संज्ञा, पु०, सं०) गाँठ से सुमों तक काले पैरों वाला भूरे रङ्ग का घोड़ा। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अफगानों की एक ऊँची टोपी।

कुलाहक—(संज्ञा पु०, सं०) गिरगिट। एक प्रकार का शाक।

कुलाहल*—(संज्ञा, पु०, दे०) कोलाहल (सं०), शोर-गुल। "हम ना कुनाम को कुलाहल करावैगी"—रत्ना०।

कुलिंग—(संज्ञा, पु०, सं०) चिड़ा, गौरा पक्षी।

कुलिंद—(संज्ञा, पु०, सं०) पश्चिम-उत्तर भारत का एक प्राचीन नगर।

कुलिक—(संज्ञा, पु०, सं०) शिल्पकार, दस्तकार, कारीगर। श्रेष्ठ वंशोत्पन्न। कुल का प्रधान पुरुष।

कुलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटी तङ्ग गली, कोलिया (प्रान्ती०)।

कुलिश, कुलिस—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) हीरा। इन्द्र का वज्र, बिजली। राम, कृष्णादि देवताओं के पैर का एक चिह्न (सामु०)। कुठार। "कुलिसहु चाहि

कठोर अति"— [रामा०]।—भृत-इंद्र कुलिश पाणि।

कुलिशोपम—(संज्ञा, पु०,सं०) बुद्ध। (वि०) वज्र ऐसा कठोर, वज्र से जिसकी उपमा दी जा सके। "पकड़ना कुलिशोपम चंचु से"—हरिऔध।

कुली—(संज्ञा पु० तु०) बोझ ढोनेवाला, मजदूर। [**कुली-कबारी**-(यौ०) छोटी जाति के आदमी।]

कुलीन—(वि०) (सं० कुल+ख) उत्तम कुलोत्पन्न। अच्छे वंश या घराने का। पवित्र, शुद्ध। खानदानी। —**तंत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) अमीर-उमराओं-द्वारा चालित शासन, कुलीन वंशों के लोगों का शासन। [एरिस्ट्राक्रसी]

कुलीर—(संज्ञा, पु०, सं०) केंकड़ा। कर्कट राशि।

कुलुफ—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० कुफुल] ताला।

कुलू, कुलूत—(संज्ञा, पु०) [सं० कूलूत] कांगड़े के पास का प्रदेश।

कुलेल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कल्लोल] कल्लोल, क्रीड़ा, किलोल।

कुलेलना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कुलेल] क्रीड़ा या खेल करना, किलोल, आमोद-प्रमोद करना।

कुलोद्भव—(वि०, सं०) कुल में पैदा हुआ। कुलीन।

कुल्मा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृत्रिम नदी, नहर। छोटी नदी। नाला। कुलवती स्त्री।

कुल्माष—(संज्ञा, पु०, सं०) कुलथी। माष, उर्द। द्विदल अन्न। बोरो धान।

कुल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कवल] मुख-शुद्धि के लिये पानी भर कर फेंकने की क्रिया, गरारा। (संज्ञा, पु०) घोड़े का एक रंग जिसमें पीठ पर बराबर काली धारी होती है, इसी रंग का घोड़ा। (संज्ञा, पु०) [फा० काकुल] जुल्फ। [**कुल्ली** (स्त्री०)]

कुल्लूक—(संज्ञा, पु०, सं०) मनुस्मृति के प्रख्यात टीकाकार।

कुल्हड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुल्हर] पुरवा, चुक्कड़। [**कुल्हिया, कुलिया** (स्त्री० दे०)]

कुल्हरा, कुल्हाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुठार] लकड़ी काटने या चीरने का एक औजार, कुठार। [कुल्हार (दे०), कुहाड़ा, कुहारा (दे०)] फरसा।

कुल्हरी, कुल्हाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) (हि० कुल्हाड़ा] कुठारी (सं०)। "ऐसे भारी वृक्ष को कुल्हरी देत गिराय"—गिरि०।

कुल्हिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कुल्हड़] छोटा पुरवा, चुकरिया। **मुहा०—में गुड़ फोड़ना** —चुपचाप, छिपाकर कुछ काम करना।

कुवम—(संज्ञा, पु० सं०) सूर्य।

कुवलय—(संज्ञा, पु०, सं०) नीली कुई, कोक, नील कमल। भूमंडल। एक प्रकार के असुर। "कुवलय विपिन कुंत हिम बरसा।"—[रामा०]। "कुवलय-कुल मे से तो अभी तू कढ़ा है"—हरिऔध

कुवलयानन्द—(संज्ञा, पु०, सं०) अप्पय दीक्षित-प्रणीत अलंकार की पुस्तक जो संस्कृत मे है।

कुवलयापीड़—(संज्ञा, पु०) [सं० कुवलय+आ +पीड़] हाथी (कंस का) या हाथी रूपी एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

कुवलयाश्व—(संज्ञा, पु०, सं०) धुंधमार और ऋतु-ध्वज राजा (गंधर्व-राज-कन्या मदालसा के पति)। एक घोड़ा जिसे ऋषियों के यज्ञ-विध्वंसक पातालकेतु के वधार्थ सूर्य ने भेजा था।

कुवलयिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नीली कुई का छोटा पौधा। कुई के फूलों का समूह।

कुवाच्य, कुवाक्य—(वि०, सं०) न कहने योग्य, गंदा, बुरा। (संज्ञा, पु०, सं०) दुर्वचन, गाली, कुवाचा, कुवाणी।

कुवादी—(वि०, सं०) दुर्वचनवक्ता, मुँहफट।

कुवार (कुवाँर)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आश्विन, कुमार] आश्विन मास। [क्वार (दे०)] असोज। [कुआर (दे०)]। (वि०) बिना ब्याहा।—**कुवाँरी** -(वि०, स्त्री०) कुआर का।

कुवासना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी वासना, कामना जिससे सामूहिक हित न हो। "तुम महा-साधन, जग कुवासना मे विलीन"—बच्चन।

कुविंद—(संज्ञा, पु०, सं०) तन्तुवाय, जुलाहा, कपड़ा बुनने वाला। "गुबिंद सुकुविंद बनि आये हैं"—कुंज०।

कुविंदु—(संज्ञा, पु०, सं०) अधम पुत्र।

कुविक्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) अत्याचार, शठता। [**कुविक्रमी**-(वि०) शठ]

कुविचार—(संज्ञा, पु०, सं०) नीच या अधम विचार, अन्यायपूर्ण विचार। **कुविचारी**-(वि०) बुरे विचार वाला। [**कुविचारिणी** (स्त्री०)] "मिल्यौ दसकंठ सदा कुविचारी"—[रामा०]।

कुविहंग—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा या नीच पक्षी। बाज।

कुवृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नीच वासना । अधम कर्म । "पतित समूह की कुवृत्तियों के सामने"—दिनकर ।

कुबेर—(संज्ञा, पु०, सं०) यक्षों का राजा एक देवता, धनेश, महर्षि पुलस्त्य के पोते और विश्रवा ऋषि के पुत्र है, यह देवताओं के कोषाध्यक्ष है, चतुर्थ लोकपाल होकर अलकापुरी मे राज्य करते है, कुरूप होने से कुबेर कहलाये, इनके ३० पैर और ८ दाँत है, भरद्वाज जी की कन्या देववर्णिनी इनकी माता हैं, इन्हे वैश्रवण भी कहते है, ९ निधियों के ये भंडारी हैं । [**धनकुबेर**–(यौ०) बहुत धनी] (वि०) कुबेला—अबेर ।

कुश—(संज्ञा, पु०) दर्भ, कुशा, एक तृण, जो कांस के समान होता है और यज्ञादि मे प्रयुक्त होता है । एक द्वीप । श्री रामचन्द्र के एक पुत्र, इनकी राजधानी कुशावती थी । जल । कुली । काल । हलकी कील । कुसी, कुस । [कुसा (दे०)]—**कन्या**–केवल कन्या दान ।—**द्वीप**–(संज्ञा, पु०, सं०) घृत-सागर से घिरा हुआ सात द्वीपों मे से एक । [**द्वीपी** (वि०)] ।—**कंडिका**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सब प्रकार के यज्ञो के लिए अग्नि के संस्कार की एक विधि, जिसमे हवन-कर्त्ता कुशासन पर बैठ, दाहिने हाथ से कुश लेकर उसकी नोंक से बेदी पर रेखा खीचता है ।—**केतु**–(संज्ञा, पु०, स०) राजा जनक के एक भाई ।—**ध्वज**–(संज्ञा, पु०, सं०) सीरध्वज, जनक के छोटे भाई (सीता के चचा), इनकी दो कन्यायें मांडवी और श्रुतिकीर्ति यथाक्रम भरत और शत्रुघ्न को ब्याही थी ।—**नाभ**–(संज्ञा, पु०, सं०) महाराज कुश के पुत्र ।—**मुद्रिका**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) [कुशकी पैंती (दे०)] पवित्री । [कुस-मुँदरी (दे०)]

कुशब्द—(संज्ञा, पु०, सं०) अप्रिय, कष्टकारक या उग्र शब्द । "त्योंही पड़े कान कुशब्द ऐसे"—[मधुपुरी] ।

कुशल—(वि०) [सं० कुश+अल्] चतुर, दक्ष, प्रवीण । श्रेष्ठ, पुण्यशील । क्षेम, मंगल, राजी-खुशी । [एफिशिएण्ट] [**कुशला**–(वि० स्त्री०) निपुणा] ।

कुशल-क्षेम, कुसल-छेम—(ब०) राजी-खुशी । "आपनेई ओर सो तू बूझियौ कुशल-छेम"—दास० । "अब कहु कुशल बालि कहँ अहई"—रामा०] । [कुसल (दे०)] । [**कौशल** (संज्ञा, पु०)]

कुशलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्षता, चतुरता, निपुणता । योग्यता । कल्याण । राजी-खुशी, क्षेम । [कुसलता (दे०)] अच्छाई, भलाई ।

कुशलाई, कुसलात—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) कुशल-क्षेम, मंगल, कल्याण । [कुसलई (दे०)] [**कुसलात** (प्रान्ती०)] "दच्छ न पूँछी कछु कुसलाता"—[रामा०] । चतुराई, दक्षता, दुरुस्ती ।

कुशा, कुसा—(संज्ञा, पु०, दे०) कुश (सं०) एक घास । [**कास-कुसा** (यौ०)]

कुशाकर—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ की अग्नि ।

कुशाक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) बंदर ।

कुशाग्र—(वि०, यौ०, सं०) कुश का अग्रभाग जो पैना होता है । कुश की नोक सी तीखो । तेज़, तीव्र, पैना ।—**बुद्धि**–तेज बुद्धि

कुशादा—(वि० फ़ा०) खुला हुआ, विस्तृत, फैला हुआ, लंबा-चौड़ा । [**कुशादगी** (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०)]

कुशारिणी—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्वासा ऋषि ।

कुशावर्त—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि । एक तीर्थ ।

कुशावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राम के आत्मज कुश की राजधानी ।

कुशाश्व—(संज्ञा, पु०, सं०) इक्ष्वाकु-वंशीय एक प्रसिद्ध राजा ।

कुशासन—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० कुश+आसन] कुश का बना हुआ आसन । (सं० कु+शासन) बुरा शासन या प्रबंध । [मालएडमिनिस्ट्रेशन, मिस-गवर्नमेंट] । (यौ०) पृथ्वी का शासन । "बैठि कै कुशसना पै पूरो पाकशासन लौं मेटि कै कुशासन कुशासन चलाई है ।"—सरस ।

कुशिक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन आर्य-वंश । एक राजा जो विश्वामित्र ऋषि के पितामह और गाधि के पिता थे । फाल ।

कुशिक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) असदुपदेश, बुरी सिखावन । [कुसिच्छा, कुसीख (दे०)]

कुशित—(वि०, सं०) जल मे मिला हुआ ।

कुशी—(संज्ञा, पु०, सं०) वाल्मीकि ऋषि । कुश-वाला । घात ।

कुशीद, कुसीद—(संज्ञा, पु०, सं०) सूद, ब्याज । वृद्धि । ब्याज पर दिया गया धन । [**कुशीदक** (वि०)]

कुशीनगर—(संज्ञा, पु०, अ०) बुद्ध के निर्वाण (मृत्यु) का स्थान ।

कुशीनार—(संज्ञा, पु०) [सं० कुशनगर) शाल वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध के निर्वाण का विशेष स्थान।

कुशील—(वि०, सं०) जिसके शील में विकृति आ गयी हो । "कुशील है एक यही कुढंग है"—[मधुपुरी]।

कुशीलव—(संज्ञा, पु०, सं०) कवि । चारण । नट, नाटक खेलने वाला । गवैया । वाल्मीकि ऋषि । कत्थक ।

कुशुंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) साधुओं का जल-पात्र । घड़ा ।

कुशूलधान्यक—(संज्ञा, पु०, सं०) तीन वर्ष के लिए जिस गृहस्थ के पास खाने के लिए धान्य इकट्ठा हो ।

कुशूला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देहरी । कुठिली, धान्य का पात्र ।

कुशेशय—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल । सारस । —**कर**-(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य ।

कुशोदक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुशयुक्त जल-तर्पण ।

कुश्ता—(संज्ञा, पु०, फा०) धातुओं की रासायनिक क्रिया से बनायी हुई भस्म, रस ।

कुश्ती—(संज्ञा, पु०, फा०) मल्लयुद्ध, दो आदमियों का परस्पर बलपूर्वक पटकने का प्रयत्न करना । **मुहा०—मारना**-कुश्ती में किसी को पछाड़ना । —**खाना**-कुश्ती में हार जाना ।—**बाज**-(वि०) कुश्ती लड़ने वाला, पहलवान।

कुषीद, कुशीदक—(संज्ञा, पु०, सं०) वृत्ति, जीविका । ब्याज पर रुपया देना । (वि०) जड़, निर्दय, चेष्टा-रहित ।

कुषुंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) जहरीले कीड़े का विष-कोश ।

कुष्ठ—(संज्ञा, पु०, सं०) कोढ़, इसके १८ भेद है, ७ तो अति दुखद और असाध्य है, शेष कम दुखद और कष्टसाध्य है (वैद्य०)। कुट नामक औषधि, कुड़ा वृक्ष । [**कुष्ठी** (वि०)] ।—**चिकित्सालय**-कोढ़ियों का अस्पताल [लाजारेटो]

कुष्ठकृंतन—(संज्ञा, पु०, सं०) पँवर ।

कुष्ठनाशिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुष्ठ-नाशक, सोमराज-बल्ली नामक औषधि-लता ।

कुष्ठसूदन—(संज्ञा, पु०, सं०) किरण वाली औषधि ।

कुष्ठालय—(संज्ञा, पु०, सं०) कोढ़ीखाना । [लेपर एसाइलम]

कुष्ठाश्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) कोढियों का आश्रम । [लाजार हाउस]

कुष्ठी—(संज्ञा, पु०, सं०) कोढ़ी । [**कुष्ठिनी** (स्त्री०)]

कुष्मांड—(संज्ञा, पु०, सं०,) कुम्हड़ा । शिव के अनुचर ।

कुसंग, कुसंगति—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, सं०) बुरों का साथ, बुरे लोगों के साथ हेल-मेल । "दुख कुसंग के थान"—वृं० । [**कुसंगी, कुसंगती**-(वि०) कुसंग वाला । **कुसंगिनी** (स्त्री०)]

कुसंस्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरी वासना । बुरा संस्कार ।

कुसगुन—(संज्ञा, पु०) [हि० कु+सगुन] [असगुन (दे०)] बुरा लक्षण । अपशकुन, अशकुन (सं०) ।

कुसमद—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरे दिनों में । दुख की सामग्री ।

कुसमय—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा समय, असमय, अनुपयुक्त अवसर । निश्चित समय से आगे-पीछे का समय । संकट-काल, दुख के दिन । [विलो० सुसमय] । "समय कुसमय तकि आवै"—गिरि० ।

कुसलई, कुसलाई, कुसलात—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) कुशलता, मंगल । चतुरता ।

कुसली, कुशली—(वि०, दे०, सं०) सकुशल । §(संज्ञा, पु०) [हि० कसैली] आम की गुठली । पिराक (एक मिष्ठान्न), गुझिया ।

कुसवारी, कुसियारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कोशकार] रेशम का एक जंगली कीड़ा, रेशम का कोया ।

कुसाइत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कु+साइत अ०] बुरी साइत, बुरा मुहूर्त । अयुक्त अवसर, कुसमय, कुघरी ।

कुसाखी, कुशाखी—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) [बुरा वृक्ष (दे०)] बुरा गवाह या साक्षी ।

कुसीद—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्याज । वृद्धि । ब्याज पर दिया धन । [**कुसीदक** (वि०)]

कुसम्ब—(संज्ञा, पु०, सं०) एक बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी से जाठ और गाड़ियाँ बनती हैं।

कुसुभ—(संज्ञा, पु०, सं०) कुसुम, बरैं । केसर कुमकुम ।

कुसुम्भा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुसुंभ] कुसुम का रंग। अफीम और भाँग से बना एक मादक द्रव्य। (स्त्री०) आषाढ़ शुक्ल छठ।

कुसुम्भी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लाल रंग। (वि०) कुसुम के रंग का।

कुसुम—(संज्ञा, पु०, स्त्री०) फूल, पुष्प। छोटे-छोटे वाक्यों वाला गद्य। (सा०) "गिरी कुसुम पर रूप-माधुरी पर हो हांकर मतवाली"—गुरुभक्तसिंह। आँख का एक रोग। मासिक धर्म। एक प्रकार का लाल फूल। रजो-दर्शन। रज। छन्द मे डगण का एक भेद (पिं०)। (संज्ञा, पु०, दे०) कुसुंब। (सज्ञा, पु०) [सं० कुसुंभ] पीले फूलों का एक पौधा, बरें।—**कुल**-(संज्ञा, पु०, सं०) फूलों का समूह। "गाती बुलबुल, भोरु कुसुमकुल"—पंत।—**चय**-फूलों का संग्रह। "तुम ऋतुपति प्रिय सुघर कुसुम-चय"—पंत।—**पुर**-(सज्ञा, पु०, सं०) पटना नगर का एक प्राचीन नाम।—**बाण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव, कुसुमशर, कुसुम-शायक।—**विचित्रा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार का वर्ण-वृत्त (पिं०)।—**स्तवक**-(संज्ञा, पु०, सं०) दंडक छंद का एक भेद (पिं०)। फूलों का गुच्छा।

कुसुमांजलि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) फूलों से भरी अंजुली, पुष्पांजलि। न्याय का एक ग्रंथ।

कुसुमाकर—(संज्ञा, पु०, सं०) वसन्त ऋतु।

कुसुमायुध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव, मदन, मन्मथ, पुष्पायुध।

कुसुमारक—(संज्ञा, पु०, सं०) वसन्त। छप्पय छंद का एक भेद (पिं०)।

कुसुमालि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) फूलों का समूह। "हरी भरी तरुराजि कान्त कुसुमालि से"—हरिऔध।

कुसुमावलि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) फूलों का समूह। पुष्प-पंक्ति, कुसुमाली।

कुसुमित—(वि०, सं०) फूला हुआ, पुष्पित। [**कुसुमिता**-(स्त्री०) पुष्पिता]।

कुसुमोत्सव—(पु०, सं०) फूलों का उत्सव। "ऋतु-पति के घर कुसमोत्सव था"।

कुसुमोपम—(वि०, सं०) फूलों जैसा कोमल। "तब पड़े कुसुमोपम तल्प पै।"—हरिऔध।

कुसूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कु+सूत्र, प्रा०-सुत्त] बुरा सूत, कुप्रबन्ध, कुब्योंत, बुरी व्यवस्था।

कुसूर-(संज्ञा, पु०, अ०) अपराध, दोष।

कुसेस* कुसेसय—(संज्ञा, पु०, दे०) कमल, कुशेशय (सं०)।

कुहुँ कुहुँ, कुहू-कुहू—(संज्ञा, पु०, दे०) कुमकुम, केसर। "कहुँ कहुँ, केसर-बरन सुहावा"—प०।

कुह- (संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर।

कुहक—(संज्ञा, पु०, सं०) माया। धोखा। जाल। धूर्त, मक्कार। कोयल क कूक। इन्द्र-जाल जानने वाला। मेढ़क। कोकिल की बोली।

कुहकना—(क्रि०, अ०, सं०) [सं० कुहुक, कुहू] पक्षी का मधुर स्वर में बोलना, कुहुकना।

कुहुकिनी—(वि०, सं०) अँधेरी, तिमिरपूर्ण। "साथ कुहुकिनी रात रो"—महादेवी।

कुहकुहाना—(क्रि०, अ०, दे०) कोयल का कूकना। कू-कू करना।

कुहना*—(क्रि०, , स० दे०) मारना। "कासी कामधेनु कलि कुहत कसाई है"—कवि०। (संज्ञा, पु०, दे०) गान, अलाप।

कुहनी—(संज्ञा स्त्री०, दे०) [सं० कफोणि] हाथ और बाहु के जोड़ की हड्डी। [कोहनी (दे०)]

कुहप—(संज्ञा, पु०) [सं० कुहू=अमावस्या+प] रजनीचर, राक्षस, कुहूप।

कुहबर, कोहबर—(संज्ञा, पु०, दे०) विवाह के बाद दूलहा-दुलहिन के बैठने का सजा हुआ कमरा, स्थान-विशेष।

कुहर—(संज्ञा, पु०, सं०) गड्ढा, बिल, छेद, गह्वर, कान या गले का छिद्र या रंध्र। (संज्ञा, स्त्री०, दे०)। एक शिकारी पक्षी, गुहा। [गुफा (दे०)] **कर्ण कुहर**-कान का छेद।—**म्लान**-(वि०, सं०) कुहरे की तरह अस्पष्ट। फीका। "जो क्षितिज-रेख थी कुहर-म्लान"—महा०।

कुहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुहेड़ी] जल के सूक्ष्म कणों का समूह जो शीत से वायु की भाप के जमने से पैदा होता है, नीहार। [फाग]"... दोष कुहर को फाट्यो"-सूबे०। कोहिरा (प्रान्ती०)।

कुहराम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० कहर+आम] विलाप, रोना-पीटना, हलचल, खलबली। [कोहराम (दे०)]।

कुहरित—(संज्ञा, पु०, सं०) कोयल का मधुर शब्द, स्वर। (वि०) शब्दायमान। (वि०, सं०) कू-कू स्वर उच्चारित करने वाली। "मग में पिक कुहरित डाल डाल"—निराला।

कुहाना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कोह+ना प्रत्य०] रूठना, रिसाना, नाराज या कुपित होना, कोहाना (प्रान्ती०)। "तुमहिं कुहाब परमप्रिय अहई"—[रामा०]।

कुहारा*—(संज्ञा, पु०, दे०) कुल्हाड़ा ।

कुहासा§—(संज्ञा, पु०, दे०) नीहारिका । कुहरा, कुहेलिका (सं०)। [मिस्ट]

कुही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुधि] एक शिकारी चिड़िया, कुहर, बाज । (संज्ञा, पु०, दे०) [फा० कोही] पहाड़ी घोड़े की जाति, टाँगन, टाँघन ।

कुहुक, कुहूक—(संज्ञा, पु०) [अनु०] कोकिल या पक्षियों का कूजन, कूक, मधुर स्वर । "कोकिल कुहूक हूक हिया उपजावै है"—रस० ।

कुहुकना—(क्रि०, अ०, हि०) कूकना, कोकिल आदि पक्षियों का मधुर स्वर से बोलना । "कोकिल कुहूकै वै न चूकै"—कुंज० ।

कुहुकबान—(संज्ञा, पु०,) [हि० कुहुकना + बाण] एक बाण जिसके चलते समय कुछ शब्द-विशेष होता है ।

कुहुकिनि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कूजन करने वाली, मधुर बोली बोलने वाली । "मोहिनि, कुहुकिनि, दल-विभ्रममयि"—पंत ।

कुहू-कुहु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अमावस्या की चन्द्र-विहीन निशा । मोर, कोयल आदि का मधुर स्वर । इस अर्थ में कंठ, मुख आदि शब्दों के लगा देने से कोकिल वाची शब्द सिद्ध होते है।..."कुहू कुहू क्वैलिया कूकन लागी"—पद्मा० । "...कुहू निसि मे ससि पूरन देखै"—शिव । [**कुहू-कंठ, कुहू-मुख** (यौ०)]

कूँई, कुईं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०,) [सं० कुव + ई० प्रत्य] कुमुदिनी, कमोदिनी ।

कूँख, कोंख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुक्षि, (सं०) कोख, उदर । गर्भ । काँखने का शब्द ।

कूँखना—(क्रि०, अ०, दे०) काँखना, पीड़ा-शब्द ।

कूँच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुचिका= नली] एड़ी के ऊपर या टखने के नीचे एक मोटी नस, घोड़ा-नस ।

कूँचना, कूचना—(क्रि०, स०, दे०) कुचलना । [**कूँचा**-(वि०) कुचला हुआ]

कूँचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कूर्च] झाड़ू । [बोहारी (दे०)] बढ़नी ।

कूँची—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कूँचा] छोटा कूँचा, झाड़ू । कूटी हुई मूँज या बालों का गुच्छा, जिससे चीजों का मैल साफ़ करते या उन पर रंग फेरते हैं । चित्रकार की रंग भरने की क़लम, तूली, तूलिका ।

कूँज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्रौंच] क्रौंच पक्षी । कूजना । [**कूँजना** (क्रि०, अ०)]

कूँड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंड] लड़ाई के समय में पहिनने की लोहे की टोपी । खांद मिट्टी या लोहे का गहरा बरतन, जिससे सिंचाई के लिए कुएँ से पानी निकालते है। खेत मे हल से बनी नाली, कुंड ।

कूँडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंड] पत्थर या मिट्टी का चौड़ा बरतन । छोटे पौधे लगाने का बरतन, गमला । रोशनी की बड़ी हाँडी । डोल । कठौता, मठौता । कुंडा (दे०) ।

कूँड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कूँड़ा] पत्थर की प्याली, पथरी, कुंडी । गेडुरी, छोटी नाँद ।

कूँथना*—(क्रि०, अ०, दे०) [कुंथन] दुख या श्रम से अस्पष्ट शब्द मुँह से निकालना, काँखना । कबूतरों का बोलना । (क्रि०, स०) मारना-पीटना ।

कूँदना—(क्रि०, स०, दे०) खरादना । "कुंदन-बेलि साजि जनु कूँदे"—प० ।

कूक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कूजन] लम्बी सुरीली ध्वनि, मोर या कोयल की बोली । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० कुंजी] घड़ी या बाजे आदि में कुंजी भरने की क्रिया ।

कूकना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कूजन] कोयल या मोर का बोलना, चिल्लाना । (क्रि०, स०) [हि० कुंजी] कमानी कसने के लिये घड़ी आदि में कुंजी लगाना । "जेबी घड़ी है ये इन्हें हर रोज कूकिये"—अक० ।

कूकर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुक्कुर] कुत्ता, श्वान । [**कूकुरी, कूकरी** (दे०, स्त्री०) ।]—**कौर** -(संज्ञा, पु०, हि०) कुत्ते को दिया गया जूठा भोजन, टुकड़ा । तुच्छ वस्तु, कुक्कुर कवल (सं०)। —**लेंड़**-(संज्ञा,पु०, दे०) श्वान-मैथुन । व्यर्थ की भीड़ ।

कूकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुकुरी, सूत की लच्छी । कुतिया । [कुकुरिया (दे०)]

कूकस—(संज्ञा, पु०, दे०) भूसी ।

कुकूर—(संज्ञा, पु०, दे०) देखो कूकर ।—**निंदिया**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) कुत्ते की सी नींद, श्वान निद्रा, कुकुर-निंदिया ।

कूकुरमुत्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) एक बरसाती पौधा, कुकुरमुत्ता ।

कूका—(संज्ञा, पु०) [हिं० कूकना] सिक्खों का एक पंथ ।

कूकी—(संज्ञा, स्त्री०) एक कीड़ा जो जाड़े की फसल में लगता है ।

कूच—(संज्ञा, पु०, तु०) प्रस्थान, रवानगी, प्रयाण । **मुहा०—कर जाना**-मर जाना । (किसी के) **देवता—कर जाना**-होश-हवास चला जाना, भय आदि से स्तब्ध हो जाना ।**—बोलना**-प्रस्थान करना ।

कूचा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) छोटा रास्ता, गली । [कूँचा (दे०)] क्रौंच पक्षी । [**गली-कूचा** (यौ०) । **कूची**-(स्त्री०) कूँची] (वि०) [हिं० कुचना] कुचली हुई ।

कूज—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कूजना] ध्वनि ।

कूजन—(संज्ञा, पु०, सं०) पक्षियों का मधुर स्वर से बोलना । (वि०) कूजित, ध्वनित, गूँजा हुआ, ध्वनि-पूर्ण । "ककुभ कूजित थे कल-नाद से"—हरिऔध ।

कूजना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कूजन] मृदु मधुर स्वर करना । "जल-खग कूजत, गुंजत भृंगा" —[रामा०] ।

कूजा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० कूजा] मिट्टी का पुरवा, कुल्हड़ । अर्ध गोलाकार मिश्री या मिश्री की डली ।

कूट—(संज्ञा, पु०, सं०) पहाड़ की ऊची चोटी, जैसे हेमकूट । जाल । सींग । (अनाजादि की) ऊँची और बड़ी राशि । हथौड़ा । छल, धोखा, फरेब । मिथ्या । गूढ़ भेद, गुप्त रहस्य । निहाई । वह कविता या वाक्य जिसका अर्थ शीघ्र न प्रकट हो । दृष्ट-कूट, (सूर-कृत गूढार्थ-पूर्ण हास्य या व्यंग्य) । विष (काल कूट) "काल-कूट फल कीन्ह अमी के"—[रामा०] । (वि०, सं०) झूठा, छलिया । कृत्रिम । प्रधान । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुष्ट] कुट नामक औषध । (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० काटना, कूटना] काटने, कूटने या पीटने की क्रिया, जैसे: **मार—,—पीट, —काट**–[**कूटायल** (दे०, वि०)–मार खाने वाला] **—कर्म**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कपट, धोखे का काम । [**कूटकर्मा**-(वि०) धोखेबाज, छली]—**कथन,—वाक्य**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) व्यंग्य, ताना ।**—नीति**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) दाँव-पेंच, चाल, घात, छल-नीति, कपट-नीति । [डिप्लोमेसी]**—पत्र**-(संज्ञा, पु०) जाली पत्र या कागज़ ।**—पाश**-(संज्ञा, पु०) पक्षी फँसाने का फंदा। छद्म-पाश ।**—युद्ध**-(संज्ञा, पु०) धोखे या छल की लड़ाई, छद्मयुद्ध ।**—लेख**-(संज्ञा, पु०) जाली या झूठा दस्तावेज ।**—लेखक**-(वि०) जाली लेख या दृष्टकूट लिखने वाला ।**—साक्षी**-(संज्ञा, पु०) झूठा गवाह । [कूटसाखी (दे०)] ।

कूटता—(संज्ञा स्त्री० सं०) कठिनाई, जटिलता । झुठाई, छल, कपट ।—[**कूटत्व**-(संज्ञा, भा०, पु०, सं०) कूटता, मार ।]

कूटना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कुट्टन] किसी वस्तु को तोड़ने आदि के लिए उस पर बारबार किसी चीज से आघात करना, मारना, पीटना, कुचलना । [**कुटाई** (संज्ञा, स्त्री०)] **मुहा० कूट-कूट कर भरना**–ठसाठस या कसकस कर भरना । सिल आदि में टाँकी से छोटे-छोटे गड्ढे करना, दाँते निकालना ।

कूटस्थ—(वि०) सर्वोपरि स्थिति । अटल, अचल । अविनाशी । गुप्त, छिपा हुआ । (संज्ञा, पु०, सं०) आत्मा । परमात्मा । जागृत, स्वप्न, सुषुप्त में समान रहने वाला । परिमाण-रहित आत्मा (सांख्य०) ।

कूटाख्यान—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यंग्यार्थ शब्दों, वाक्यों में रचित कथा या कहानी ।

कूटागार—(संज्ञा, पु०, सं०) तहखाना । ऊपर की कोठरी ।

कूटार्थ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गूढ़ार्थ, क्लिष्टार्थ, व्यंगार्थ, कूटाशय ।

कूटाशय—(वि०, सं०) गुप्ताभिप्राय वाला ।

कूटी—(वि०, हि०) कूट, या व्यङ्ग वचन कहने वाला । (क्रि०, वि०) कुटी हुई । "दरजी सोनरा बनिया कूटी कटक कलार"—कुंज० ।

कूटू—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पौधा जिसके बीजों का आटा व्रत में फलाहार के रूप में खाया जाता है, काफर, कुल्टू, काटू, कोटु (प्रान्ती०) ।

कूड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कूट, प्रा० कूड=ढेर] कतवार, करकट, जमीन की गर्द । घास-फूस आदि गंदी चीजें, निकम्मी वस्तुएँ, करकट ।**—खाना**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० कूड़ा+खाना फ़ा०] कूड़ा फेंकने की जगह, कतवार-खाना, घूर (ग्रा०) ।

कूढ़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुष्टि] कूड़, हल की गाड़ी मे डाल कर बीज बोने की एक रीति [विलो० **छींटा**] । (वि०, दे०) [सं० कु+ऊह=कूह, प्रा० कूध] नासमझ, मूर्ख, मूढ़, अज्ञानी, कूड़ (प्रान्ती०) ।**—मग्ज**-(यौ०, वि०) [हिं० कूढ़ +मग्ज फ़ा०] मंद बुद्धि । "कूढ़न कौ मूढ़न कौ, गुवा वाल बूढ़न कौ"—द्वि० ।

कूणिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वीणा, सितार आदि बाजों की खूँटी, सींग ।

कूत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आकूत=आशय] वस्तु संख्या, मूल्य या परिमाण का अनुमान, अंदाजा। परख । [कूता (दे०)] [**अलकूता**-(यौ०) बेअंदाज]

कूतना—(क्रि०, स०) [हि० कूत] अनुमान या अंदाजा करना । परखना, जाँचना, अटकल लगाना ।

कूथना—(क्रि०, अ०, ०) कराहना ।

कूद—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कूदने की क्रिया या भाव, खेलकूद । [**कूदफाँद**-(यौ०) कूदने-फाँदने की क्रिया । [**उछलकूद** (यौ०)]—**काद**-कूद-फाँद ।

कूदना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० स्कुदन) दोनों पैरों को पृथ्वी से बल-पूर्वक उठा कर देह को किसी ओर फेंकना, उछलना, फाँदना । जान-बूझ कर ऊपर से नीचे गिरना । बीच मे सहसा आ मिलना या दख़ल देना । क्रम भङ्ग कर एक स्थान से दूसरे पर पहुचना । अत्यन्त प्रसन्न होना । बढ़ कर बातें करना, शेखी मारना । **मुहा० किसी की बात पर कूदना**-किसी का सहारा पाकर शेखी मारना । (क्रि०, स०) उल्लंघन कर जाना, लाँघना ।

कूप—(संज्ञा, पु० , सं०) कुआँ, इनारा । कुंड । नदी-मध्य पर्वत या वृक्ष । छेद, गहरा गड्ढा । "कूप छांह जिमि आपनी"—वृं० ।—**मंडूक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुएँ का रहने वाला मेंढक । अपना स्थान छोड़ कर बाहर न जाने वाला, बहुत थोड़ी जानकारी का व्यक्ति, अल्पज्ञ । संकीर्ण विचारोंवाला व्यक्ति । "उसे कूपमण्डूक हैं मानते"—[मधुपुरी] । [**कूपमंडूकता** (संज्ञा, स्त्री०)]

कूपार—(संज्ञा, पु०, सं०) सागर, समुद्र ।

कूबड़, कूबर—(संज्ञा, पु०) [सं० कूबर] पीठ का टेढ़ापन । किसी चीज की टेढ़ाई । (वि०, पु०) कुबड़ा, कुबरा । [**कूबरी, कुबरी, कुबड़ी**-(स्त्री०) मंथरा, कुब्जा, बाँस की टेढ़ी छड़ी । "कूबरी के कूबर सों ऊबर न पावै कान्ह"—रत्ना० ।

कूर—(वि०, दे०) [सं० क्रूर] निर्दय । भयङ्कर । मनहूस, असगुनिया । दुष्ट, बुरा । निकम्मा । मूर्ख, जड़ । कायर, कादर । मिथ्या । कठोर ।

करता, कूरपन—(संज्ञा, स्त्री०, पु०) (सं०) कदर्य, निर्दयता, कठोरता । जड़ता । कायरता, कादरता । अरसिकता । डरपोकपन । बुराई, दुष्टता, क्रूरता (सं०) ।

कूरम—(संज्ञा, पु०, दे०) कूर्म (सं०) कछुआ । पृथ्वी । "कूरम पै कोल कोलहू पै सेस-कुंडली है" —पद्मा ।

कूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कूट] ढेर, राशि । भाग, हिस्सा । कूड़ा । [**कूरी** (स्त्री०)] (वि०) कुटिल ।

कूर्च—(संज्ञा, पु०, सं०) भौंहों के मध्य का भाग । मयूर-पुच्छ । अँगूठे और तर्जनी का मध्य-भाग । मूठ । कूँची । मस्तक ।

कूर्चक—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रश (दाँत साफ करने वाला) ।

कूर्चिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कूँची । कली । कुञ्जी । सुई ।

कूर्दनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चैत्र की पूर्णिमा ।

कूर्प—(संज्ञा, पु०, सं०) भौंह के मध्य का भाग ।

कूर्पर—संज्ञा, पु०, सं०) कुहनी, घुटनी ।

कूर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) कच्छप, कमठ, कछुआ । पृथ्वी । प्रजापति का एक अवतार । एक ऋषि । —**वायु**-वह वायु जिसके प्रभाव से पलकें खुलती और बंद होती हैं । विष्णु का दूसरा अवतार। नाभि-चक्र के पास एक नाड़ी ।—**चक्र**-पूजा का एक यन्त्र । कृषि का एक चक्र ।—**पुराण**-(संज्ञा, पु०) १८ पुराणों में से एक ।—**पृष्ठ**-(संज्ञा, पु०) कमठ-पृष्ठ, कछुए की कठोर पीठ । (वि०) अति कठोर पदार्थ ।—**राज**-(संज्ञा, पु०) विष्णु । वह कमठ जिस पर पृथ्वी आदि के भार के साथ वाराह खड़े है (पुरा०) । "त्वं कूर्मराज सलिले हृदयं दधीयाः" —हनु० ।

कूलंकषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी ।

कूलंज—(संज्ञा, पु०, अं०) अँतड़ियों की पीड़ा ।

कूल—(संज्ञा, पु०, सं०) किनारा, तट । सेना के पीछे का भाग । समीप ही स्थित । बड़ा नाला, नहर । तालाब । कटि के दोनों ओर के भाग ।—**द्रुम**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नदी आदि के किनारे का पेड़ ।

कूलक—(संज्ञा, पु० सं०) कृत्रिम पर्वत ।

कूलवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी ।

कूला—(संज्ञा, पु०) छोटी नहर ।

कूलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वीणा का निचला भाग।

कूलिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी ।

कूल्हा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्रोड़] कमर में पड़ू के दोनों ओर की हड्डियाँ । [कूलकूला (दे०)]

कूवत—(संज्ञा, पु०, अ०) शक्ति, बल ।

कूवर—(संज्ञा, पु०, सं०) युगंधर, रथ में जुआ बाँधने का स्थान । [हरसा (दे०)] रथी के बैठने का स्थान । कूबड़ा, कूबर ।

कूष्मांड—(संज्ञा, पु०, सं०) कुम्हड़ा, पेठा। [कोंहड़ा (दे०)] एक ऋषि (वैदिक काल)। शिव के गण। बाणासुर का मन्त्री।

कूष्मांडा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भगवती, देवी-विशेष।

कूह*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० कूक] चिग्घार, हाथी की चिग्घार। चिल्लाहट, चीख।

कूहा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुहरा।

कृकर, कृकल—(संज्ञा, पु०, सं०) छींक लाने वाली मस्तक की वायु (वैद्य०)। शिव। चबैना। कनेर-वृक्ष। एक पक्षी।

कृकलास—(संज्ञा, पु०, सं०) गिरगिट। [गिरदान (दे०)]

कृकवाक—(संज्ञा, पु०, सं०) मोर, मयूर। कृकवाक-ध्वज–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) कार्तिकेय, षडानन, मयूर-केतु, कृकवाक केतु]

कृकाट, कृकाटक—(संज्ञा, पु०, सं०) गले में रीढ़ का जोड़।

कृच्छ्र—(संज्ञा, पु०, सं०) कष्ट, दुःख। पाप। मूत्रकृच्छ्र रोग। पंचगव्य प्राशन कर दूसरे दिन किया जाने वाला व्रत, तपस्या। (वि०) कष्टसाध्य, कष्टयुक्त। **—गत**–(वि०) पापी। रोगी। दुखी।

कृच्छ्रातिकृच्छ्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) व्रत-विशेष। (वि०) अति कृच्छ्र।

कृत—(वि०, सं०) किया हुआ, संपादित। रचित। (संज्ञा, पु०, सं०) ४ युगों में से प्रथम, सतयुग। ४ की संख्या। किसी नियत काल तक सेवा करने की प्रतिज्ञा करने वाला दास। एक प्रकार का पाँसा। [(वि०) **कृतक**। (सं०) कृत्रिम]—**कर्म,—कर्मा**–(वि०, यौ०, सं०) कार्यक्षम। निपुण। कृतकाम (हिं०) शिक्षित, दक्ष। [**कृतकर्मता** (संज्ञा, स्त्री०)] **—कार्य**–(वि०, सं०) सफल मनोरथ, सिद्ध, प्रयोजन, सिद्धार्थ। (संज्ञा, स्त्री०) कृतकार्यता।—**कृत्य**–(वि०, सं०) जिसका काम पूरा हो चुका हो, कृतार्थ। "प्रभु बोले—कृतकृत्य देव यह दास है"—मैथि०। [**कृतकृत्यता** (संज्ञा, स्त्री०)]—**घ्न**–(वि०, सं०) किए हुए उपकार को न मानने वाला। [कृतघ्नी (दे०)] अकृतज्ञ।—**घ्नता**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अकृतज्ञता, उपकार के न मानने का भाव।—**ज्ञ**–(वि०, सं०) किये हुए उपकार को मानने वाला, एहसानमन्द। [**कृतज्ञता**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एहसानमन्दी। [(विलो०) अकृतज्ञता]—**विद्य**–(वि०, सं०) किसी विद्या में अभ्यास-प्राप्त, पंडित। "शूरोऽसि कृतविद्योऽसि दर्शनीयोऽसि पुत्रक"। "हुआ रूपदर्शन जब कृतविद्य तुम मिले।"—निराला।

कृतयुग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सतयुग जो १७२८००० सौर वर्षों का होता है, युगश्रेष्ठ।

कृतवर्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) यदुवंशी राजा कनक का पुत्र। महाभारत का कौरव-पक्षीय एक वीर राजा [महा०]।

कृतवीर्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक यदुवंशी राजा (पुरा०)।—**हीन**–(वि०, सं०) कृतघ्न। [कृतघ्नी (दे०)] अकृतज्ञ।

कृतांजलि—(वि०, यौ०, सं०) हाथ जोड़े हुए, बद्धांजलि।

कृतांत—(संज्ञा, पु०, सं०) अंत या समाप्त करने वाला, यम, धर्मराज। पूर्व जन्म-कृत शुभाशुभ कर्म-फल। मृत्यु। पाप। देवता। दो की संख्या। शनिवार। भरणी नक्षत्र। "आवत देखि कृतांत समाना" —तुल०।

कृतात्यय—(संज्ञा, पु०, सं०) भोग-द्वारा कर्मों का नाश (सांख्य०)।

कृतार्थ—(वि०, यौ०, सं०) कृतकृत्य, सफल मनोरथ, संतुष्ट। कुशल, निपुण, होशियार। कामयाब, कृतकार्य। [**कृतार्थता** (संज्ञा, स्त्री०)]

कृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) करतूत, करनी, काम। रचना। आघात, क्षति। इंद्रजाल, जादू। दो समान अंकों का घात। वर्ग-संख्या, (गणि०), बीस की संख्या। डाकिनी। कटारी। एक छंद (पिं०)। (वि० सं०) कुशल, चतुर।

कृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मृगचर्म। भोजपत्र। कृत्तिका नक्षत्र (ज्यो०)।

कृत्तिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २७ नक्षत्रों में से तीसरा (ज्यो०)। छकड़ा।

कृत्तिवास—(संज्ञा, पु०, सं०) महादेव। चर्मधारी। एक रामायण ग्रंथ।

कृती—(वि०, सं०) कुशल, पटु, निपुण, दक्ष। साधु, पुण्यात्मा।

कृत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्तव्य-कर्म, कार्य। वेद-विहित। आवश्यक कार्य जैसे यज्ञ। करनी, करतूत। अभिचारार्थ पूजे जाने वाले भूत-प्रेतादि। [ऐक्ट]

कृत्यका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हत्यादि भयानक कार्य करने वाली, राक्षसी, पिशाचिनी।

कृत्यवाह—(संज्ञा, पु०, सं०) वह व्यक्ति जिसको उत्तरदायित्व कार्य रूप में दिया गया हो, पदपर आसीन रह कर कार्य परिणत करने वाला। [फंक्शनरी]

कृत्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक भयंकर राक्षसी जिसे तांत्रिक अपने अनुष्ठान से शत्रु के नष्ट करने को भेजते हैं। अभिचार। दुष्टा या कर्कशा (स्त्री०)।

कृत्रिम—(वि०, सं०) नकली। अस्वाभाविक। १२ प्रकार के पुत्रों मे से एक। दूसरे के द्वारा पाला गया बालक। [आर्टिफिशिल] (संज्ञा, पु०, सं०) रसौत।—**तालु**-(संज्ञा, स्त्री०) बनावटी तालू जिसे तालू के ऊपर रखकर यह देखा जाता है कि ध्वनि के उच्चारण में जीभ तालू को कहाँ स्पर्श करती है। [फ़ाल्स पैलेट]

कृदंत—(संज्ञा, पु०, सं०) धातु में कृत प्रत्यय लगाने से बना शब्द, (व्या०) जैसे—नंदन।

कृपण, कृपिण—(संज्ञा, पु०, सं०) कंजूस, सूम। "जैसे परम कृपण कर सोना"—तुल०। क्षुद्र। [**कृपणता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कंजूसी] [दैन्य (दे०)] कृपिन, कृपनई, कृपिनता। [कृपनाई (दे०)] किरपिन (ग्रा०), [**कार्पण्य** (संज्ञा, भा०, सं०)]।

कृपया—(क्रि०, वि०, सं०) कृपापूर्वक, मिहरबानी करके।

कृपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिना किसी प्रतिकार की आशा के दूसरे का हित करने की इच्छा या वृत्ति, अनुग्रह, दया। [किरपा (दे०) क्षमा।—**दृष्टि**-(स्त्री०) अनुकूलता का भाव।—**पात्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) कृपाकांक्षी, कृपा का अधिकारी। जिस पर कृपा की गयी हो। कृपा के योग्य, कृपाभाजन।

कृपाचार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) द्रोणाचार्य के साले।

कृपाण—(संज्ञा, पु०, सं०) तलवार, कटार। दंडक वृत्त का एक भेद, (पिं०) कृपान। [किरपान (दे०)] [**कृपाणिका**-(स्त्री०) (अल्पा०) कटारी, छोटी तलवार, भुजाली]

कृपायतन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अति कृपालु, कृपानिधि, कृपासिंधु, कृपासागर।

कृपालु—(वि०, सं०, दे०) कृपा करने वाला। [**कृपालुता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दयालुता।]

कृपी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृपाचार्य की बहन। —**सुत**-(पु०) अश्वत्थामा।

कृमि—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा कीट, कीड़ा। हिरमिजी या मिट्टी। लाह, किरवा (प्रान्ती०)। [**कृमिल** -(वि०) कीटयुक्त]

कृमिक—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटी तलवार।

कृमिजंघा—(संज्ञा, पु०, सं०) काला अगर।

कृमिज—(वि०, सं०) कीड़ों से उत्पन्न, कृमिजन्य। (संज्ञा, पु०, सं०) रेशम, अगर, किरमिजी। [**कृमिजा** (स्त्री०)]

कृमिघ्न—(संज्ञा, पु०, सं०) बायबिडंग।

कृमिरोग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आमाशय में कीड़े उत्पन्न होने का एक रोग (वैद्य०)।

कृमिला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बहुत बच्चों वाली औरत।

कृश—(वि०, सं०) दुबला, पतला, क्षीण। अल्प। सूक्ष्म। [**कृशित** (वि० सं०), **कार्श्य** (संज्ञा, पु०)]

कृशता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कार्श्य, दुर्बलता। अल्पता, कमी। [कृसताई (दे०)]

कृशर—(संज्ञा, पु०, सं०) तिल-चावल की खिचड़ी। खिचड़ी। लोबिया मटर। केसरी। दुबिया। कृसर (सं०)।

कृशला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) केश, सिर के बाल।

कृशांगी—(वि०, यौ०, सं०) पतली-दुबली स्त्री, क्षीणांगी, दुर्बलांगी, तन्वंगी।

कृशाक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) मकड़ा।

कृशाक्षि—(वि०, सं०) मंद दृष्टि वाला।

कृशानु, कृसान—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) अग्नि, आग। चित्रक या चीता औषध। "भृगुपति-कोप कृशानु"—[रामा०]। [कृसान (दे०)]

कृशित—(वि०, सं०) दुबला-पतला।

कृशोदरी—(वि०, स्त्री०, यौ०, सं०) पतली कमर वाली स्त्री, कृशमध्यमा, तनुमध्यमा।

कृषक—(संज्ञा, पु०, सं०) किसान, खेतिहर। हल की फाल। [**कृषक-कर्म** (यौ०)]—**वर्ग**-(संज्ञा, पु०, सं०) देहाती जनता। [पीजेण्ट्री]।—**व्यवस्था**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काश्तकारी कानून। [टेनेंसी ऐक्ट] [**कृषकाधिकार**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काश्तकारी हक] [टेनेंटराइट]

कृषकीय—(वि०, सं०) कृषि-सम्बन्धी। [एग्रेरियन]। —**अशांति**-(संज्ञा, भा०, सं०) किसानों का क्षोभ। [एग्रेरियन अनरेस्ट]—**विधान**-(संज्ञा, पु०, सं०) कृषि-सम्बन्धी विधान या कानून। [एग्रेरियन लॉ]

कृषाण—(संज्ञा, पु०, दे०) किसान, कृषिजीवी, खेतिहर, कृषक।

कृषि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खेती, काश्त, किसानी। [एग्रीकल्चर] [**कृष्य**-(वि०) खेती के योग्य भूमि] [**कृषि-कर्म** (यौ०)]—**अधिसम्पत्ति**-(संज्ञा, स्त्री०,

सं०) खेती की सम्पत्ति या मिल्कियत, जोत। [एग्रिकल्चरल होल्डिंग]—**आय**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खेती से होने वाली आमदनी। [एग्रिकल्चरल इनकम] —**उत्पादन**–(संज्ञा, पु०, सं०) खेती की उपज, पैदावार। [एग्रिकल्चरल प्रोड्यूस]—**जीवी**–(संज्ञा, पु०, वि०, सं०) किसान, खेतिहर। खेती की जीविका वाला। [एग्रिकल्चरिस्ट]—**नीति**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि-सम्बन्धित नीति। [एग्रेरियन पालिसी]—**परिषद्**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृषि बोर्ड। [बोर्ड आफ एग्रिकल्चर]—**मंत्रालय**–(संज्ञा, पु०, सं०) कृषि सचिवालय। [मिनिस्ट्री आफ एग्रिकल्चर]—**मंत्री**–(संज्ञा, पु०, सं०) खेती-सम्बन्धी सचिव। [एग्रिकल्चर मिनिस्टर]—**यंत्र**–(संज्ञा, पु०, सं०) खेती के काम में आने वाले यंत्र।—**वर्ष**–(संज्ञा, पु०, सं०) फसली साल। [रेवेन्यू इयर]—**विकास प्रदेष्टा**–(संज्ञा, पु०, सं०) कृषि-वर्धक महाध्यक्ष, खेती के विकास के लिए नियुक्त महाध्यक्ष। [एग्रिकल्चरल डेवलपमेण्ट कमिश्नर]।—**विज्ञान**–(संज्ञा, पु०, सं०) खेती से सम्बन्धित विज्ञान। [एग्रेनोमी]।—**विभाग**–(संज्ञा, पु०, सं०) खेती का मुहकमा या कार्यालय। [एग्रिकल्चरल डिपार्टमेण्ट]

कृषिक—(वि०, सं०) खेती। भूमि। कृषि से सम्बन्धित। [एग्रिकल्चरल]

कृषित—(वि०, सं०) जिस पर जुताई-बोआई हुई हो। [कल्टिवेटेड]

कृष्ण—(वि०, सं०) श्याम, काला। नीला। (संज्ञा, पु०, सं०) यदुवंशीय वसुदेव और कंसानुजा देवकी के पुत्र जो विष्णु के प्रधान अवतारों में हैं। एक असुर, जिसे इन्द्र ने मारा था। एक मंत्र-द्रष्टा ऋषि। अथर्ववेद के अंतर्गत एक उपनिषद्। छप्पय छंद का एक भेद (पिं०)। ४ वर्णों का एक वृत्त (पिं०)। वेदव्यास। अर्जुन। कोयल। कौआ। कदम वृक्ष। अँधेरा पक्ष। कलियुग। चंद्र-कालिमा। सुरमा। करौंदा। कान्ह, कन्हाई, कन्हैया, कान्हा, काँधा (ब्र०) [किशन (दे०)]—**कर्मा**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पापी, अपराधी, दुष्कृत, निंदित कर्म करने वाला।—**गंधा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शोभांजन या सहिजन का वृक्ष।—**चंद्र**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्रीकृष्ण।—**जीरा**–(संज्ञा, पु०, दे०) काला जीरा, कलौंजी, श्याम जीरा।—**ता**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कालिमा। घुँघची। श्यामता।—**द्वैपायन**–(संज्ञा, पु०, सं०) महर्षि पराशर और दासराज की पालित कन्या सत्यवती के पुत्र, जो द्वीप में उत्पन्न होने से द्वैपायन और वेदों का विभाग करने से वेदव्यास कहलाये, इन्हीं महर्षि ने १८ पुराण रचे।—**पक्ष**–(संज्ञा, पु०, सं०) श्यामपक्ष, मास का वह अर्ध भाग जिसमे चंद्रमा की कलाओं का क्रमशः ह्रास होता और पूर्व-निशा में अंधकार बढ़ता जाता है, अँधेरा पाख, बदी।—**पुष्पी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अलसी, तीसी।—**प्रिया**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राधिका।—**फला**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वाकुची। करौंदा।—**भद्रा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुटकी औषधि।—**लौह**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अयस्कांत, चुंबक।—**वक्त्र**–(संज्ञा, पु०, सं०) काले मुँह का बानर, लंगूर, कृष्ण वानर, श्याम मर्कट।—**वर्त्मा**–(संज्ञा, पु०, सं०) अग्नि। चित्रक वृक्ष। वैश्वानर। अरुण शिखा।—**वृन्तिका**–(संज्ञा, पु०, सं०) कम्भारी औषधि। [खंभारी (दे०)]—**सखा**–(संज्ञा, पु०, सं०) कृष्ण के मित्र, अर्जुन, श्याम सखा।—**सार**–(संज्ञा, पु०, सं०) काला हिरन, करसायल। सेंहुड़, थूहर वृक्ष।—**सारंग**–(संज्ञा, पु०, सं०) कृष्णसार, हरिण, अजिन, कृष्णाजिन।—**सूची**–(स्त्री०, सं०) उन लोगों की सूची जिनके निन्दनीय अथवा असामाजिक कार्य करने के कारण उनसे व्यवहार अथवा सम्पर्क रखना मना हो। [ब्लैक लिस्ट]

कृष्णा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) द्रौपदी। यमुना। दक्षिण की एक नदी। पीपल। काली दाख। काली (देवी)। अग्नि की ७ जिह्वाओं में से एक। काली तुलसी (श्यामा या कृष्ण-तुलसी)। काली सरसों।—**कांत**–(संज्ञा, पु०, सं०) श्यामाकांत। कृष्णाप्रिय।

कृष्णागुरु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) काला अगर।

कृष्णाग्रज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बलदेव, बलराम। [बलदाऊ (दे०)]

कृष्णाचल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) काला पहाड़, रैवतक पर्वत, कृष्णाद्रि।

कृष्णाजिन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कृष्ण मृग का चर्म। "विना केन विना नाभ्यां कृष्णाजिनमकल्मषम्"—[सु०, र०, भा०]।

कृष्णापकुल्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पीपर, पिप्पली।

कृष्णार्पण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) फलाकांक्षा-रहित कर्म-संपादन। दान। [कृष्णार्पित (वि०)]

कृष्णाफल—(संज्ञा, पु०, सं०) काली मिर्च।

कृष्णाभिसारिका—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह अभिसारिका नायिका जो श्याम वस्त्रादि पहिन कर अँधेरी रात में अपने प्रेमी के पास संकेत-स्थान को जाती है, श्यामाभिसारिका।

कृष्णाष्टमी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भाद्र-कृष्णपक्ष की अष्टमी, जन्माष्टमी।

कृष्णिमा—(स्त्री०, सं०) कालिमा, कालापन।

कृष्णी—(स्त्री०, सं०) अँधेरी रात्रि।

कृष्यभूमि—खेती करने के योग्य भूमि। [एग्रि-कल्चरल लेंड]

क्लृप्त—(वि०, सं०) रचित, निर्मित।—**केश**-(यौ०, वि०) जटाधारी।

कें-कें—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) चिड़ियों का कष्ट-सूचक शब्द। झगड़ा या असंतोष-सूचक शब्द।

केंचली, केंचुली, केंचुल, केंचुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कंचुक] सर्पादि के शरीर का झिल्लीदार चमड़ा जो प्रति वर्ष गिर जाता है। **मुहा०—बदलना**-साँप का केंचुल छोड़ना। कायाकल्प करना। रंग-ढंग बदलना।

केंचुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० किंचिलिक] डोरे का सा लम्बा-पतला एक बरसाती कीड़ा जो मिट्टी खाता है। ऐसे ही सफेद कीड़े जो मल के साथ पेट से निकलते हैं।—**छंद**-(पु०) वह छंद जिसमें पदों की मात्राएँ कहीं अधिक हों, कहीं कम।

केंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) [यू० केंट्रन] वृत्त के बीच का वह विन्दु जो सब ओर परिधि से बराबर दूरी पर हो या जिससे परिधि तक खींची गई रेखाएँ बराबर हों, ठीक मध्य-विन्दु। नाभि। किसी निश्चित अंश से ९०,१८०, २७०, ३६० अंश के अंतर का स्थान। मुख्य या प्रधान स्थान। रहन का स्थान। बीच का स्थान। लग्न और उससे ४ था, ७वाँ, १०वाँ, स्थान (ज्यो०)। केन्द्र-स्थल, केन्द्र-स्थान। [सेंटर]—**गत**-(वि०, सं०) केन्द्र मे स्थित।

केंद्रानुसारी—(वि०, सं०) केन्द्र की ओर उन्मुख होने वाली प्रवृत्ति। [सेण्ट्रीपीटल]

केंद्रापसारी—(वि०, सं०) केंद्र से दूर जाने की प्रवृत्ति रखने वाला। [सेन्ट्रीफ्यूगल]

केंद्राभिमुख—केन्द्र की ओर उन्मुख होने वाली प्रवृत्ति।

केन्द्रित—(वि०, सं०) बीच में स्थित, केन्द्रीभूत [सेण्ट्रलाइज्ड]

केंद्री—(वि०) [सं० केंद्रिन्] केंद्र मे स्थित, केन्द्र-युक्त, वृत्त।—**करण**-(पु०, सं०) एक स्थान में केंद्रित करना। एक व्यवस्था मे लाना। [सेंट्रलाइ-जेशन]।—**भूत**-(वि०, सं०) एकत्रित। संकुचित, संकीर्ण। मध्यस्थ पुंजीभूत। [**केन्द्रीय**-(वि०, सं०) केन्द्र से सम्बन्धित, केन्द्र मे स्थित। प्रधान] [सेण्ट्रल]।—**कार्यालय**-(संज्ञा, पु०, सं०) प्रमुख या प्रधान कार्यालय। [सेण्ट्रल आफिस]—**गुप्तचर विभाग**-(संज्ञा, पु०, सं०) केन्द्रीय या प्रधान खुफिया विभाग। [सेण्ट्रल इंण्टेली-जेंस]—**बैंक**-(संज्ञा, पु०, सं०, अं०) प्रधान कोष कार्यालय, । [सेण्ट्रल बैंक]।—**राजकोष**-(संज्ञा, पु०, सं०) केन्द्रीय सरकार का धनागार। [सेण्ट्रल इक्सचेकर]—**विषय**-(संज्ञा, पु०, सं०) केन्द्रीय सरकार से सम्बन्धित विषय। [सेण्ट्रल सब्जेक्ट]।—**सरकार**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, फ़ा०) केंद्र का शासन, जिसके निर्देशन पर प्रांतीय सरकार अपना कार्य करती है। [सेण्ट्रल गवर्नमेण्ट]

के—प्रत्य० [हि० का] संबन्धसूचक "का" विभक्ति का बहुवचन रूप, "का" विभक्ति का (एक० वच०) वह रूप जो उसे सबन्धवान के विभक्ति-युक्त होने पर प्राप्त होता है, जैसे राम के घर पर। (सर्व०, हि०) कौन। कोई (सं० कः) (अवधी०)।

केउ§—(सर्व०, दे०) [हि० के+उ] कोई। कोई भी।

केउर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० केयूर] विजायठ, वलय, बाँह का एक आभूषण। [बजुल्ला (दे०)]

केऊ—(सर्व०, दे०) कोई-कोई। कितने ही।

केकड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कर्कट] आठ टाँगों और दो पंजों वाला एक जल-जन्तु या कीड़ा, कर्क, कर्कट।

केकय—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यास और शाल्मली नदी के दूसरी ओर का देश (प्राचीन) जो अब काश्मीर में है और कक्का कहलाता है। केकय देशाधिपति या वहाँ का निवासी। [**केकयेश** (यौ०)]

केकयी, केकई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कैकेयी] राजा दशरथ की रानी और भरत जी की माता, यह केकय राज (पंजाब में विपासा और शतद्रु के बीच का प्रदेश) की कन्या थी, कैकेई, कैकेयी। "सुन-तहि तमकि उठी कैकेई"—[रामा०]।

केका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मोर। मोर की बोली।

केकि, केकी—(संज्ञा, स्त्री०, पु०) [सं० केकिन्] मोर, मयूर। "अहि कराल केकी मखै—", "केकी-कंठाभनीलं"—[रामा०]।

केचन्—(सर्व०, सं०) कितने ही। कोई-कोई।

केचित्—(सर्व०, सं०) कोई-कोई। "केचिद् वृष्टि-भिरार्द्रयंति धरणीम्"—भर्तृ०।

केजा—(संज्ञा, पु०, दे०) किसी वस्तु के बदले में दिया जाने वाला अन्न।

केड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कांड] नया पौधा, अंकुर, कोंपल। नवयुवक।

केत—(संज्ञा, पु०, सं०) घर, निकेत, स्थान, निकेतन। बस्ती। केतु, ध्वजा। क्रीड़ा। कोड़ा, चिह्न।

केतक—(संज्ञा, पु०, सं०) केवड़ा।

केतकर, केतकी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) एक छोटा पौधा, जिसमें तलवार के से लम्बे काँटेदार पत्ते और कोश मे बन्द मंजरी जैसा अति सुगन्धित फूल होता है, केवड़ा। "भौंर न छाँड़ै केतकी"—वृंद०।

केतन—(संज्ञा, पु०, सं०) निमंत्रण। ध्वजा, पताका। चिह्न। "मकर के तन के कल केतु से"—हरिऔध। घर, स्थान, निकेतन यथा—मीनकेतन।

केता, केतो*—(ब्र०) (वि०, दे०) [सं० कियत] कितना, कित्ता, कितो, कित्तो। [**केती, केतिक, कितो, किती** (स्त्री०)]।

केतिक*—(वि०, दे०) [सं० कति+एक] कितना, कितीक, केतिक, कितेक (ब्र०)।

केतु—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्ञान। दीप्ति, प्रकाश। ध्वजा, पताका, निशान। एक राक्षस का कबन्ध (पुरा०), पुच्छलतारा (तारा, जिसके पीछे प्रकाश की एक पूँछ सी दीखती है), इसका उदय अनिष्टसूचक माना गया है। "उदय केतु, समहित सब ही के"—[रामा०]। ६ ग्रहों मे से एक जिसकी दशा ७ वर्ष रहती है, (ज्यो० फ०)। चंद्र-कक्ष और क्रांति रेखा के अधःपात का विन्दु (गणि० ज्यो०) राहु का शरीर, रुंड। (वि०) विनाशक। श्रेष्ठ। [केतू (दे०)] "लूक न असनि, केतु नहिं राहू,"। "कहि जय जय जय भृगु-कुल-केतू"—[रामा०]।—**धूमकेतु**-(यौ०)-पुच्छल या धूमकेतु तारा। **कामकेतु**-(यौ०) मीन, मदनध्वज।

केतुमती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णार्ध समवृत्त (पिं०)। रावण की नानी या सुमाली की पत्नी।

केतुमान—(वि०, सं०) तेजस्वी। ध्वजावाला। बुद्धिमान, धीमान।

केतुमाल—(संज्ञा, पु०, सं०) जम्बुद्वीप के ६ खंडों में से एक (प्रा०)।

केतुवृक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) केतुतरु, मेरु पर्वत के चारों ओर के पर्वतों पर के वृक्ष, ये चार हैं—कदंब, जामुन, पीपल, बरगद। केतु पादप।

केते*—(वि०, दे०) [सं० कियत] कितने [**केतो** ब० व०], [कित्ते (दे०)] किते (ब्र०) "केते मनुअंतर निरंतर बितीत ह्वै है"—रत्ना०।

केतौ*—(वि०) [सं० कति] कितना। [**केती** (स्त्री० ब्र०)] [कित्तो (दे०)]

केथा—(सर्व०, दे०, अ०) किस, क्यों।

केदली—(संज्ञा, पु०, दे०) कदली (सं०), केला।

केदार—(संज्ञा, पु०, सं०) धान बोने या रोपने का खेत। क्यारी। खेत। वृक्ष के नीचे का थाला। शिव।

केदारनाथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हिमालय के अंतर्गत एक पर्वत जिस पर केदारनाथ नामक शिव-लिंग है। शिव।

केन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रसिद्ध उपनिषद्, तवलकार उपनिषद्। बाँदा जनपद की एक नदी। (सर्व०, सं०) किससे, किसके द्वारा, (दे०) कौन नहीं।

केना—(संज्ञा, पु०, दे०) छोटा मोटा सौदा, अन्न से खरीदी वस्तु। तरकारी। [केजा (दे०)]

केप—(संज्ञा, पु०, दे०) अंतरीप।

केम—(संज्ञा, पु०, दे०) कदम्ब। "केम कुसुम की बास"—कु०।

केमद्रुम—(संज्ञा, पु०, सं०) जन्मकाल का ग्रह, चंद्र के दोनों ओर ग्रह न होने का एक दरिद्र-योग (ज्यो०)। (यौ०) कदम्ब वृक्ष।

केयूर—(संज्ञा, पु०, सं०) बाँह का विजायठ, भूषण, बजुल्ला, अगद, भुज-बन्ध। [बहुटा (दे०)] "केयूरा न विभूषयन्ति पुरुष"—भर्तृ०। [**केयूराभरण** (यौ०)]

केयूरी—(वि०, सं०) केयूरधारी, केयूराभूषित।

केर—(प्रत्य०, दे०) [सं० कृत] सम्बन्ध-सूचक विभक्ति, कर, केरा, केरी (अव०)। [**केरी** (स्त्री०)]

केरा-(संज्ञा, पु०, दे०) केला। "बेर केर कर सग"—रहीम।

केरल—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण भारत का एक प्रान्त, कनारा। **केरली**-[(वि०, ब्र०) केरलवासी, **केरली**-(स्त्री०) एक फलित ज्योतिष]

केरा—(संज्ञा, पु०, दे०) केला, कदली। [**केरी** (स्त्री०)]

केराँचा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) किरोंची, डिब्बा।

केराना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्रयण] मसाला, मेवा आदि। (स०, क्रि०, दे०) पछोरना। किराना, कुंठित होना। [**केराई**-(संज्ञा, स्त्री०) पछोरने का काम या दाम]

केरानी—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० क्रिश्चियन] यूरेशियन (जिसके माता-पिता में से कोई हिन्दुस्तानी हो) किरंटा। अंग्रेजी-दफ्तर का मुंशी या क्लर्क। [किरानी (दे०)]

केराव§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कलाप] मटर ।

केरि, केरी—(प्रत्य०, दे०) [सं० कृत] का, केरा, कर । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) केली, केला ।

केरोसिन—(संज्ञा, पु०, अ०) मिट्टी का तेल, किरोसियन, किरोसन ।

केला, केरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कदली, प्रा० कयल] गज सवा गज लम्बे पत्तोंवाला एक कोमल पेड़, जिसके फल गूदेदार, मीठे और लम्बे होते है, यह गर्म स्थानों में होता है । "केला रै कपूर परि"—**अज्ञात** ।

केलास—(संज्ञा, पु०, सं०) स्फटिक । सफेद ।

केलि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्रीड़ा, खेल । रति, स्त्री-प्रसग । हँसी, दिल्लगी । पृथ्वी । (सज्ञा, स्त्री०) [हिं० केला] केला ।—**कला**-(सज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सरस्वती की वीणा । रति, काम-कला । —**गृह**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रंग-शाला, विहार-स्थान, केलिस्थलो ।

केली—(सज्ञा, स्त्री०, दे०) देखिए केलि ।

केवका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कवक=ग्रास] प्रसुता स्त्री को दिया जाने वाला मसाला ।

केवट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कैवर्त] एक जाति जो नाव चलाने का काम करती है, धीवर, मछुवा, मल्लाह । [**केवटिन** (स्त्री०)] "केवट उतरि दडवत कीन्हा"—[रामा०] ।

केवटीदाल—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० केवट= सकर + दाल] दो या अधिक प्रकार की मिली हुई दाल । [केउटीदार (दे०)]

केवटीमोथा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कैवर्त-मुस्तक] सुगंधित मोथा ।

केवड़ई—(वि०, दे०) [हिं० केवड़ा + ई प्रत्य०] हलका पीला और हरा मिला हुआ सफेद रंग, केवड़ई रंग ।

केवड़ा, केवरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० केविका] केतकी से कुछ बड़ा सफेद रंग का पौधा । इसी पौधे का फूल । इसके फूल से उतारा हुआ सुगंधित फूल या आसव, केवड़ा-जल । केवड़े या केतकी का इत्र ।

केवल—(वि०, सं०) एक मात्र, अकेला । शुद्ध, श्रेष्ठ । (क्रि०, वि०) मात्र, सिर्फ । [**केवली** (संज्ञा, पु०, वि०)] भ्रांतिशून्य और विशुद्ध ज्ञान, आत्मा, ब्रह्म । (संज्ञा, पु०) कैवल्य ।—**व्यतिरेकी**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कार्य को प्रत्यक्ष देख कर कारण का अनुमान करने वाला । शेषवत् मानने वाला । [**केवलव्यतिरेक** (संज्ञा, पु०)]

केवलात्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जो पाप-पुण्य से रहित हो । ईश्वर । शुद्ध स्वभाव का पुरुष ।

केवलान्वयी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कारण द्वारा कार्य का अनुमान । पूर्ववत् । [विलो० **केवलव्यतिरेकी**]

केवली—(संज्ञा, पु०) [सं० केवल + ई प्रत्य०] केवल ज्ञानी, ब्रह्मात्म ज्ञानी । मुक्ति का अधिकारी साधु । मुक्ति । जन्म-पत्री ।

केवांच, केवांज—(संज्ञा, पु०, दे०) कौंच, सेम की सी फलो और वृक्ष, केवांच्छ ।

केवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कव=कमल] कमल । केतकी, केवड़ा । (सज्ञा, पु०, सं० किंवा) बहाना, मिस, टाल-मटूल । संकोच । "केवा जनि कीजै मोरि सेवा सब भाँति लीजै"—रघु० । **मुहा० केवा करना** ।

केवाड़, केवाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) केवार, केवारा, किवाड़, कपाट (सं०) । [**केवाड़ी** (स्त्री०)]

केश, केस—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) किरण । वरुण । विश्व । विष्णु । सूर्य । सिर के बाल, कुंतल । [**केशी** (वि०)]—**कर्म**-(सज्ञा, पु०, सं०) बाल झारने और गूँधने की कला, केश-विन्यास । केशान्त नामक संस्कार ।—**कलाप**-(संज्ञा, पु०, सं०) केश समूह । चोटी, जूड़ा । कुंतल-कुंज ।—**कुंज**-(संज्ञा, पु०, सं०) केश गह्वर ।—**ग्रह**-(संज्ञा, पु०, सं०) बाल पकड़ कर खींचना ।—**पाश**-(संज्ञा, पु०, सं०) बालों की लट, काकुल । [केस-पास (दे०)]—**मार्जन**-(सज्ञा, पु०, सं०) बाल धोना ।—**रंजन**-(संज्ञा, पु०, सं०) भँगरैया ।—**विन्यास**-(सज्ञा, पु०, सं०) बालों का सँवारना ।

केशर—(संज्ञा, पु०, दे०) केसर, कुंकुम । नागकेशर । सिंह और घोड़े की गरदन के बाल ।

केशराज—(संज्ञा, पु०, सं०) भुजंगा पक्षी । भृंग-राज (भँगरैया) ।

केशरिया, केसरिया—(वि०, सं०) केसर के रंग का पीला । युद्ध का वस्त्र ।

केशरी, केसरी—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंह । एक वानर, हनुमान जी के पिता । (वि०) वीर ।

केशव—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु । कृष्ण । ब्रह्म । परमेश्वर । विष्णु के २४ मूर्ति-भेदों में से एक । केशवदास कवि । केश या प्रकाश-पूर्ण अंशों या

पदार्थों वाला। [केसव (दे०)] "अंशवो ये प्रकाशंते-लभतेकेशसंज्ञिताः। सर्वज्ञाः केशवंतस्मात्प्राहुर्माद्विज-सत्तम्।"—महा०।

केशांत—(संज्ञा, पु० यौ०, सं०) १६ संस्कारों मे से एक, जिसमें यज्ञोपवीत के बाद बाल मूड़े जाते हैं, मुंडन। गोदान-कर्म।

केशि—(संज्ञा, पु०, सं०) केशी नामक एक राक्षस जो कंस का दास था और उसकी आज्ञा से घोडे का रूप धर कृष्ण को मारने गया किन्तु आप ही कृष्ण से मारा गया। घोड़ा। सिंह। केवाँच। [**केशवाला** (वि०, दे०)] [केसी (दे०)]

केशिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दर बड़े बालों वाली स्त्री। एक अप्सरा। पार्वती की एक सहचरी। दमयंती-सखी। रावण-माता, कैकसी।

केशी—(संज्ञा, पु०, सं०) एक गृहपति (प्राचीन)। कृष्ण-द्वारा मारा गया एक असुर। घोड़ा। सिंह। (वि०) किरण या प्रकाश वाला। सुन्दर बालों वाला। [केसी (दे०)]

केशौ—(संज्ञा, पु०, दे०) केशव, केसौ। [केशो (दे०).]

केस—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) केश। (संज्ञा, पु०, अं०) चीज़ रखने का घर। मुकदमा। दुर्घटना। मामला।

केसर—(संज्ञा, पु०, सं०) फूलों के बीच के, बाल से पतले, सींके। ठंड देशों का एक पौधा, जिसके केसर सुगंधित होते हैं, कुंकुम। घोडे। सिंह आदि की गरदन के बाल, अयाल। नागकेसर। बकुल, मौल-सिरी। स्वर्ग।

केसराल—(संज्ञा, पु०, सं०) मेरुपर्वत।

केसराम्ल—(संज्ञा, पु०, सं०) बिजौरा नीबू।

केसरि—(संज्ञा, पु०, सं०) हनुमान के पिता का नाम।

केसरिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सहदेई लता।

केसरिया—(वि०, दे०) [हि० केसर + इया प्रत्य०] पीला, केसर-युक्त, केसर के रंग का। [**केसरिया बाना**–(यौ०) वीर बाना]

केसरी—(संज्ञा, पु०, सं०) केशरी, सिंह। घोड़ा। नागकेसर। हनुमान के पिता।

केसारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कृसरी] दुबिया मटर।

केसू—(संज्ञा, पु०) टेसू, पलास का फूल।

केहरी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० केसरी] सिंह। घोड़ा। केसरी। [केहरि (दे०)] "भालु बाघ बृक केहरि नागा"—[रामा०]।

केहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० केका] मोर, मयूर, केकी, केका।

केहि*—(वि०) [हि० के + हि प्रत्य०] किसको, काहि (अव०) किस। [किहि (दे०)]

केहूँ—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० कथम्] किसी प्रकार, क्यों हूँ, किसी भाँति। [केहुँ (दे०)]

केहू—(सर्व०, हि०, के) केई, केही, केहि, केऊ, कोई।

कैंकर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) किंकरता, दासता, किंक-रत्व, सेवकत्व।

कैंचली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) साँप का केंचुल, केंचुली।

कैंचा—(वि०, दे०) [हि० काना + ऐंचा कनैचा] ऐंचाताना, भेंगा। (संज्ञा, पु०) (तु० कैंची) बड़ी कैंची।

कैंची—(संज्ञा, स्त्री०) (तु०) बाल, कपड़े आदि काटने या कतरने का औजार, कतरनी। दो सीधी तीलियाँ जो कैंची की तरह एक दूसरे के ऊपर तिरछी रखी जायें। एक कसरत या पेंच। **मुहा०—काटना** –तिरछी दृष्टि बचा कर जाना।

कैंड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कांड] किसी चीज़ के नकशे को ठीक करने का यंत्र, पैमाना, मान, नपना। चाल, ढंग। काट-छाँट। चतुराई, चालाकी। **मुहा०—का**–चालाक। [**कैंड़ाबाज** (वि०)]

कै*—(वि०, दे०) [सं० कति, प्रा० कइ] कितना, कितने, केते, कित्ते। [किते (दे०)] *(अव्य० सं० किम्] या, अथवा, वा। (संज्ञा, स्त्री०) (अ० कै) वमन, उलटी। [**कैधौं**–(यौ०) किधौं, या तो]

कैइक, कैएक—(वि०, दे०) [सं० कति + एक] कई एक, कितने ही, केतिक, कितेक।

कैफ—(संज्ञा, पु०, अ०) नशा, मद। [**कैफी**– (वि०) मतवाला, नशेबाज़, प्रमत्त]

कैकय—(संज्ञा, पु०, सं०) केकय प्रांत का।

कैकयी, कैकेयी (कैकई, केकई)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, दे०) केकय गोत्रोत्पन्ना स्त्री। राम को वन भेजने वाली राजा दशरथ की स्त्री। "सुनतहि तमकि उठी कैकेई"—[रामा०]।

कैकस—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राक्षस।

कैकसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रावण की माता, सुमाली की कन्या।

कैटभ—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था। [**कैटभासुर** (यौ०)]

कैटभारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विष्णु।

कैटभेश्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) दुर्गादेवी।

कैठो—(अव्य०, दे०) कितने।

कैत—(संज्ञा, पु०, दे०) कैथा। (स्त्री०) तरफ़, ओर। [कैती (दे०)]

कैतक—(संज्ञा, पु०, सं०) केवड़े का फूल, केतकी पुष्प। [कैतकी (दे०)]

कैतव—(संज्ञा, पु०, सं०) धोखा, कपट। जुआ। बहाना। वैदूर्यमणि। धतूरा। मूँगा। चिरायता। लहसुनिया। (वि०) छली, धूर्त, शठ, जुआरी। [**कैतववाद** (संज्ञा, पु०) **कैतवी** (वि०)]

कैतवापह्नुति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें वास्तविक विषय या वस्तु का गोपन या निषेध किसी व्याज से किया जाय, स्पष्ट शब्दों में नहीं।

कैतियाना—(क्रि०, अ०, दे०) तिरछे जाना। किनारे होना।

कैतून—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कपड़ों में लगाने की एक बारीक लैस।

कैतौ—(अव्य०, दे०) या तो। "कैतौ प्रीति रीति की सुनीति उठि जायगी"—रत्ना०।

कैथ, कैथा—(संज्ञा, पु०) [सं० कपित्थ] एक कँटीला, कसैले, खट्टे और बेल जैसे फलों वाला पेड़। उसका फल।

कैथवा—(संज्ञा, पु०, दे०) कायस्थ। कैथा।

कैथिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कायस्थ] कायस्थ या [कायथ (दे०)] की स्त्री। [कैथिनिया (दे०)]।

कैथी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कायस्थ] शीर्ष रेखा रहित या मुड़िया हिन्दी-लिपि (पुरानी) जो कुछ शीघ्र लिखी जाती है और जिसे प्रायः कायस्थ लिखते थे। छोटा कैथा।

कैद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बन्धन, अवरोध। कारावास। **मुहा०—करना**—जेल में बन्द करना। **—काटना**—कैद में दिन बिताना। (संज्ञा, स्त्री०, अ०) शर्त। अटक। प्रतिबंध, जिसके होने पर कोई बात हो, रुकावट, रोक। [**बेकैद, बाकैद** (वि०)] **—खाना**—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कारागार, बन्दीगृह, कारागृह, कारावास, जेलखाना। **—तनहाई**—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० फ़ा०] कैदी को तंग कोठरी में अकेले रखना, काल कोठरी की सजा। **—महज़**—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सादी कैद, जिसमें कैदी को काम न करना पड़े। **—सख्त**—(संज्ञा, स्त्री०, अ० फ़ा०) कड़ी कैद, जिसमे कैदी को कठिन श्रम पड़े।

कैदक—(संज्ञा, पु०, अ०) कागज आदि रखने का कागज का बन्द या पट्टी।

कैदी—(संज्ञा, पु०, अ०) कैद की सजा पाया हुआ, बंदी। [बँधुवा (दे०)]।

कैधौं*—(अव्य०) [हि० कै+धौं] या, वा, अथवा, किधौं, कैधौं, कैतौ (ब्र०)।

कैफ़ियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) समाचार, हाल। वर्णन। विवरण, ब्यौरा। **मुहा०—तलब करना**—नियमानुसार विवरण या कारण पूछना, आश्चर्य या हर्षोत्पादक घटना।

कैबर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तीर का फल।

कैबा§—(संज्ञा, स्त्री०) अव्ययवत् [हि० कै+बार] कितने या बहुत बार।

कैबिनेट—(संज्ञा, पु०, अं०) मंत्रिमण्डल, मंत्रणा-गृह।

कैमुत्तिक न्याय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक प्रकार का न्याय या उक्ति जिससे यह दिखलाया जाता है कि जब यह बड़ा हो गया तब यह (छोटा) क्या है। एक की सिद्धि से दूसरे की अनायास सिद्धिसूचक उक्ति।

कैयट—(संज्ञा, पु०, सं०) ११ वीं शताब्दी के व्याकरण ग्रंथ महाभाष्य के टीकाकार प्रसिद्ध संस्कृत-विद्वान्, काश्मीर-वासी, कैय्यट।

कैर—(संज्ञा, पु०, दे०) करील।

कैरव—(संज्ञा, पु०, सं०) कुमुद, श्वेत कमल। शत्रु। कुई।

कैरवि—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रमा।

कैरवी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चन्द्र-मैत्री। चाँदनी।

कैरा—(संज्ञा, पु०) [सं० कैरव] भूरा (रंग) ललाई लिये श्वेत, सोकन। (वि०) कैरे या भूरे रंग का। कंजा, भूरी आँख का। [**कैरी** (स्त्री०)]

कैलास—(संज्ञा, पु०, सं०) तिब्बत मे रावणहृद झील से उत्तर हिमालय की एक चोटी, (शिव का निवास-स्थान) शिव-लोक, कैलाश। **—नाथ, पति, निकेतन**—(यौ०) महादेवजी। **—वास**—मृत्यु, निधन।

कैलेंडर—(संज्ञा, पु०, अं०) अंगरेजी तिथि-सूची।

कैवर्त, कैवर्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) केवट, मल्लाह ।—**मुस्तक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) केवटी मोथा ।

कैवल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) शुद्धता, निर्लिप्तता । एकता । एक मुक्ति-भेद । परित्राण । मोक्ष । ब्रह्म-मयता । एक उपनिषद् ।

कैशिक—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बालों की लट ।(वि०) कड़े केशों वाला ।

कैशिकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाटकीय मुख्य ४ वृत्तियों में से एक जिसमें नृत्य, गीत, भोग-विलास होते हैं । [**वृत्ति** (यौ०)]

कैशोर—(संज्ञा, पु०, सं०) किशोरावस्था ।

कैसर—(संज्ञा, पु०) [लै० सीजर] सम्राट्, बादशाह, राजेश्वर, राजराजेश्वर ।

कैसा—(वि०, दे०) [सं० कीदृश] किस प्रकार का, किस रूप या गुण का । (निषेधार्थक) किसी प्रकार का नहीं, सदृश, ऐसा । [**कैसो** (दे० ब्र०)] [**कैसी** (स्त्री०), ब० व० **कैसे**]

कैसे—(क्रि०, वि०) [हि० कैसा] किस प्रकार से, क्यों, किस लिए । (वि०) किस प्रकार के ।

कोंइछा—(संज्ञा, पु०) स्त्री का आँचल जिसमें कुछ बाँध दिया जाता है और उसे स्त्री अपने कमर में बाँध लेती है ।

कोंई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [कुई (दे०)] कुमुद ।

कोंकण—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण भारत का एक प्रदेश । वहाँ का निवासी ।

कोंचना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कुच] चुभाना, गोदना, गड़ाना । [(प्रे० रूप०) **कोंचाना, कोचवाना**]

कोंचा—(संज्ञा पु०, दे०) कोंच । (संज्ञा, पु०) [हि० कोंचना] बहेलियों की चिड़िया फँसाने की लासा लगी हुई लम्बी छड़ी ।

कोंछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुक्षि] अंचल । [झोली (दे०)] **मुहा०**—**भरी रहना**-पुत्रवती रहना ।—**भरना**-गर्भाधान के बाद ५ वें या ७वें मास में एक संस्कार, जिसमें स्त्री की कोंछ में चावल और गुड़ तथा मिष्ठान्नादि भरे जाते हैं ।

कोंछना—(क्रि०, स०, दे०) कोंछियाना, झोली में लेना ।

कोंछियाना—(क्रि०, स०) [हि० कोंछ] साड़ी का वह भाग जो ऊपर से पहिनने में पेट के नीचे खोंसा जाता है । (क्रि०, स०) (स्त्रियों के) अंचल के कोने में कोई चीज भर कर कमर में खोंस लेना ।

कोंढ़ा—(संज्ञा पु०, दे०) [सं० कुंडल] किसी वस्तु के अटकाने के लिए छल्ला या कड़ा (धातु का) । [कुन्हड़ा (दे०)] सीताफल । [**कोंढ़ी** (स्त्री० अल्प०)]

कोंढ़हा-(वि०) कोंढ़ा, कोंढ़ेदार, जैसे कोंढ़ा रुपया ।

कोंथना—(क्रि०, अ०, दे०) कूँथना, गूँथना ।

कोंथली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्त्री को दी गई सामग्री की थैली ।

कोंपर—(संज्ञा, पु०) [हि० कोंपल] छोटा अधपका या डाल का पका आम । थाल ।

कोंपल, कोंपर, कोंप§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कोमल, कुपल्लव] नई और मुलायम पत्ती, अंकुर, कल्ला । [कनखा (दे०)] "अजया अज मस्तक चढ़ी निरभय कोंपल खाय"—कबीर० ।

कोंवर*—(वि०, दे०) [सं० कोमल] मृदुल, नर्म, मुलायम, कोमल ।

कोंहड़ा*—(संज्ञा, पु०, दे०) कुँहड़ा, कुम्हड़ा, कुष्मांड (सं०) । **कोंहँड़ौरी**-(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कोंहड़ा+बरी] कुम्हड़े या पेठे की बरी, कुम्हरौरी ।

को*—(सर्व०, दे०) [सं० कः] कौन । (प्रत्य०, हि०) कर्म, सम्प्रदान और सम्बन्ध कारक की विभक्ति, कौं (ब्र०) । "को कहि सकत बड़ेन कौ" —बिहारी ।

कोआ, कोवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोश, हि० कोसा] रेशम के कीड़े का घर, कुसियारी । टसर नामक एक रेशम का कीड़ा । महुए का पका फल, कोलैंदा । [गोलैंदा (दे०)] कटहल के गूदेदार पके हुए बीजकोष । आँख का ढेला । "...कोए राते बसन भगोहे भेष रखियाँ"—देव० ।

कोइ—(सर्व०, दे०) कोई, कोय, कोऊ (ब्र०) [**कोइ-कोइ** (यौ०)]

कोइरी—(संज्ञा, पु०) [हि० कोयर] साग, तरकारी आदि बोने और बेचने वाली एक जाति । [काछी (दे०)] मुराई ।

कोइलिया, कोइली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कोकिल (सं०), कोइल, कोयल, कैलिया (ब्र०) । [कैली (दे०)] कोइली ।

कोइली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कोयल] एक विशेष प्रकार का आम पर पका काला और सुगंधित दाग । आम की गुठली । कोकिला, कोयल ।

कोई—(सर्व०, वि०, दे०) [सं० कोऽपि] ऐसा एक जो अज्ञात हो (मनुष्य या पदार्थ), न जाने

कौन एक । **मुहा०—न कोई**-एक नहीं तो दूसरा, यह न सही तो वह । बहुतों में से चाहे जो एक । अविशेष व्यक्ति या वस्तु । एक भी (व्यक्ति) । (क्रि०, वि०) लगभग, करीब ।

कोउ, कोऊ*—(सर्व०, दे०) कोई । "कोउ इक पाव भक्ति जिमि मोरी ।"—[रामा०] ।

कोउक*—(सर्व०, यौ०) [दे० कोउ+एक] कोई एक, कतिपय, कुछ, कोउ इक ।

कोए—(संज्ञा, पु०, दे०) कोआ का ब० व० ।

कोक—(संज्ञा, पु०, सं०) चकवा, चक्रवाक (सं०) । सुरखाब । विष्णु । मेंढक । "कोक सोक-प्रद पंकज द्रोही"—[रामा०] । काश्मीर के एक काम-शास्त्र के पंडित—कोका । उनका रचा काम-शास्त्र । गुप्त दैवी घटना जानने का शास्त्र । **—कला**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) रति या संभोग-विद्या । **—कारिका**—काम-शास्त्र के नियम । **—बंधु**—(पु०) सूर्य । **—शास्त्र**—(संज्ञा, पु०, सं०) कोकका काम या रति-शास्त्र, कोक-विद्या, काम-विज्ञान ।

कोकई—(वि०) [तु० कोक] गुलाबी झलक वाला नीला रंग, कौड़ियाला ।

कोकनद—(संज्ञा, पु०, सं०) लाल कमल या कुमुद । "नयन कोकनद से अरुनारे" ।

कोकनी—(संज्ञा, पु०) [तु० कोक=आसमानी] एक रंग । (वि०, दे०) छोटा, घटिया ।

कोका—(संज्ञा, पु०, अ०) दक्षिणी अमेरिका का एक वृक्ष, जिसकी सूखी पत्तियाँ चाय या कहवे सी होती हैं । (संज्ञा, पु०, स्त्री०, तु०) धाय की संतान, दूध-भाई या बहिन । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) कोकाबेली नामक एक फूल, कोकदेव ।

कोकाबेरी, कोकाबेली—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० कोकनद+बेल हि०] नीली कुमुदिनी ।

कोकाह—(संज्ञा, पु०, सं०) सफेद घोड़ा ।

कोकिल, कोकिला—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, सं०) कोयल । नीलम की एक छाया । छप्पय का १६ वाँ भेद (पिंगल) ।

कोकिलाक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) तालमखाना ।

कोकिलावास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आम्रवृक्ष, कोकिलागार ।

कोकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चक्रवाकी, चकई ।

कोकीन, कोकेन—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से तैयार की हुई एक मादक औषधि या विष जिसके लगाने से शरीर सन्न (शून्य) हो जाता है ।

कोको—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) कौआ, लड़कों को बहकाने का शब्द । (यौ०)**—जेम**—एक प्रकार का वनस्पति घी ।

कोख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुक्षि] उदर, जठर । पेट के दोनों बगल का स्थान । गर्भाशय । **मुहा०—उजड़ जाना**—संतान मर जाना, गर्भ गिर जाना । **—बन्द होना**—बंध्या होना । **—और माँग से ठंढी या भरी-पुरी रहना**—संतान और पति का सुख देखते रहना (आशीष) । **—का धन्य होना**—सुयोग्य पुत्रवती होना । **—का**—पुत्र, सगा लड़का ।

कोगी—(संज्ञा, पु०, दे०) कुत्ते का सा एक शिकारी जंगली पशु जो झुंड में रहता है, सोनहा (प्रान्ती०) ।

कोच—(संज्ञा, पु०, अ०) एक चौपहिया बढ़िया घोड़ा गाड़ी । गद्दार पलँग, बेंच या कुरसी । **—वत**—(यौ०) गाड़ीवान के बैठने का ऊँचा स्थान ।

कोचकी—(संज्ञा, पु०) [?] ललाई लिए हुए भूरा रंग ।

कोचवान—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० कोचमैन] घोड़ा गाड़ी हाँकने वाला । [**कोचवानी**—(संज्ञा, स्त्री०) कोचवान का काम]

कोचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कोंचना] तलवार, कटार आदि का हलका घाव । लगती हुई बात, ताना ।

कोचीन—(संज्ञा, पु०) दक्षिण भारत में स्थित ट्रावंकोर का एक जनपद ।

कोजागर—(संज्ञा, पु०, सं०) आश्विनमास की पूर्णिमा, शरद पूनो (जागरण का उत्सव) ।

कोट, कोट्ट (प्रा०)—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्ग, गढ़, किला । शहर पनाह, प्राचीर, महल । (संज्ञा, पु०) [सं० कोटि] समूह, यूथ । (संज्ञा, पु०, अं०) अँग्रेजी ढंग का एक पहनावा । तह, परत ।

कोटपाल, कोटपालक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किलेदार, दुर्गरक्षक । [कोटवार (दे०)] कोटपति ।

कोटर—(संज्ञा, पु०, सं०) पेड़ का खोखला । दुर्ग के आस-पास रक्षार्थ लगाया गया कृत्रिम वन । [कोठर (दे०)] कोतर ।

कोटवारण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कोट के रक्षार्थ चहारदीवारी, प्राचीर ।

कोटवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नग्न या विवस्त्रा स्त्री ।

कोटाटवी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किले के चारों ओर का वन ।

कोटि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धनुष का सिरा । अस्त्र की नोक या धार । वर्ग, श्रेणी । वादविवाद का पूर्व पक्ष । उत्कृष्टता । समूह । [जत्था (दे०)] ९० अंश के चाप के दो भागों मे से एक । त्रिभुज या चतुर्भुज की भूमि और कर्ण से भिन्न रेखा । अर्धचंद्र का सिरा । (वि०, सं०) सौ लाख, करोड़ । "कोटि कोटि मुनि जतन कराही"—[राम०] । **मुहा०—करना**-करोड़ों उपाय करना ।

कोटिक—(वि०) [सं० कोटि+क] करोड़, अगणित । "कोऊ कोटिक संग्रहै"—तुलसी ।

कोटिर—(संज्ञा, पु०, सं०) जटा । किरीट, मुकुट । नेवला । बीरबहूटी । इन्द्र ।

कोटिशः—(क्रि०, वि०, सं०) अनेक भाँति, बहुत प्रकार से । (वि०) अनेकानेक, बहुत अधिक । "वन विहंग सुनाते, कोटिशः शब्द प्यारे" ।

कोटीश—(वि०, सं०) करोड़पति, महाधनी, कोट्याधीश (सं०) ।

कोठ, गोंठऽ—(वि०, दे०,) [सं० कुंठ] कुंठित, गोंठिल (दाँत) ।

कोठरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कोठ+ड़ी प्रत्य०, अल्पा०] छोटा कमरा या कोठा, घर का वह छोटा भाग जो चारों ओर से ढका या बंद हो ।

कोठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोष्ठक] बड़ी कोठरी, चौड़ा कमरा । भंडार । मकान की छत के ऊपर का कमरा, अटारी । गर्भाशय । धरन । खाना, घर । एक खाने में लिखा हुआ अंक या पहाड़ा । किसी विशेष शक्ति या वृत्ति वाला शरीर या मस्तिष्क का आंतरिक भाग । पेट । पक्वाशय ।—(ठे) **वाली**-(यौ०) वेश्या । **मुहा०—बिगड़ना**-अपच से दस्त आना, बदहजमी होना ।—**साफ होना**-दस्त साफ होना ।

कोठार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कोठा] अन्न, धनादि के रखने का स्थान, भंडार, भांडागार, बखार ।

कोठारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कोठार+ई प्रत्य०) भंडार का अधिकारी या प्रबंधकर्ता, भंडारी, भांडागाराधीश ।

कोठिला—(संज्ञा, पु०, दे०) कठिला ।

कोठी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कोठा] बड़ा पक्का मकान, जिसमें बहुत से कोठे हों, हवेली, बंगला । रुपये के लेन-देन या बड़े कारबार का मकान । बड़ी दूकान । कुठिला, (अन्न रखने का) बखार, गंज । कुएँ की दिवाल या पुल के खंभे में पानी के भीतर जमीन तक होने वाली ईट-पत्थर की जुड़ाई । गर्भाशय । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कोटि=समूह] मंडलाकार एक साथ उगने वाले बाँस ।—**वाल**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कोठी+वाला प्रत्य०] महाजन, साहूकार । महाजनी अक्षर (कई प्रकार के), मुड़िया ।—**वाली**-(स्त्री०) कोठी चलाने का काम । मुड़िया लिपि । कोठी रखने वाली स्त्री ।

कोड़ना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कुंड] खेत की मिट्टी को कुछ गहराई तक खोदकर उलटना । [गोड़ना (दे०)] खोदना ।

कोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कवर] डंडे में बँधी बटे सूत या चमड़े की डोर, जिससे जानवरों को चलाने के लिए मारते हैं, कशा, (सं०) चाबुक, सोंटा । उत्तेजक बात, चेतावनी । मर्मस्पर्शी बात । एक पेंच ।

कोड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० स्कोर] बीस का समूह । [कोरी (दे०)] बीसी ।

कोढ़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुष्ठ] रक्त और त्वचा-सम्बन्धी एक संक्रामक और घिनौना रोग । मैल । दोष । **मुहा०—चूना (टपकना)-कोढ़** (गलित कुष्ठ) से अंगों का गल कर गिरना । अति मलिनता होना ।—**की (में) खाज**-दुख पर दुख । "...तामैं कोढ़ की सी खाज या सनीचरी है मीन की"—तुल० ।

कोढ़ी—(संज्ञा, पु०, हि०) कोढ़ रोग वाला व्यक्ति । [**कोढ़िन** (स्त्री०)] (वि०) अपंग, मलिन, अशक्त, असमर्थ, अकर्मण्य ।

कोण—(संज्ञा, पु०, सं०) कोन । [कोना (दे०)] एक बिंदु पर मिलती या कटती हुई दो रेखाओं के बीच का अन्तर । दीवारों के मिलने का स्थान, गोशा (फ़ा०) दो दिशाओं के बीच की दिशा । विदिशा, जो चार हैं—अग्नि, नैऋती, ईशान, वायव्य । अस्त्रों का अग्रभाग । वीणादि बजाने का साधन । गज । मंगल । शनिग्रह । जन्मचक्र के पाँचवें और नवे स्थान का त्रिकोण ।—**गत**-(वि०) त्रिकोण का, त्रिकोण-सम्बन्धी ।

कोत*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अ०) कुवत, शक्ति । दिशा, ओर । कोट, गढ़ ।

कोतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) कोना । [**कोना कोतरा** (यौ०)]

कोतल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बेसवार सजा-सजाया घोड़ा, जलूसी घोड़ा, राजा की सवारी या जरूरत

के समय का घोड़ा । "कोतल संग जाँहि डोरि-आये"— [रामा०] ।

कोतवार—(संज्ञा, पु०, दे०) कोट-पाल, दुर्ग-रक्षक । "पौरि पौरि कोतवार जो बैठा"—जायसी । [**कोतवारी** (संज्ञा, स्त्री०)]

कोतवाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोटपाल] पुलिस का एक प्रधान कर्मचारी या इंस्पेक्टर । पंडितों की सभा । बिरादरी की पंचायत । साधुओं के अखाड़े की बैठक । भोजादि का निमंत्रण देने या ऊपरी प्रबन्ध करने वाला । गढ़पाल, कोटपालक ।

कोतवाली—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) कोतवाल का दफ्तर या उसका पद या काम ।

कोता*—(वि०, दे०) [फ़ा० कोतह) छोटा, कम, अल्प । [**कोती** (स्त्री०)]

कोताह—(वि०, फ़ा०) अल्प, छोटा, कम, न्यून ।

कोताही—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) त्रुटि, कमी ।

कोति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कोद, दिशा, ओर, तरफ ।

कोथला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गोथल, कोठला] बड़ा थैला । पेट ।

कोथली—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) कमर में बाँधने की रुपयों-पैसों की एक लम्बी थैली, बसनी, हिमायानी थैली ।

कोदंड—(संज्ञा, पु०, सं०) धनुष । धनुराशि । भौंह । "कोदंड खंड्यो राम"—[रामा०] ।

कोद, कोध*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कोण कुत्र] दिशा, ओर, कोना । "चहुं कोदनि कढ़ि मन मोदनि मढ़ि बढ़ै समृद्धी"—रसाल ।

कोदवला—(संज्ञा, स्त्री०) कोदों की तरह की एक घास ।

कोदार—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का अन्न ।

कोदो, कोदव, कोदों—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोद्रव, कोद्रव्य] साँवाँ, काकुन जैसा एक प्रकार का मोटा अनाज, कदन्न, कोदौ । **मुहा०—दंकर पढ़ना (सीखना)**-अधूरी या बेढंगी शिक्षा पाना । **—छाती पर दलना**-किसी को दिखाकर कोई बुरा लगने वाला काम करना ।

कोन, कोना—(संज्ञा पु०, दे०) [सं० कोण] पृथक् रह कर एक बिंदु पर मिलती हुई दो रेखाओं के बीच का अंतर, अंतराल । नुकीला किनारा या सिरा, लम्बाई-चौड़ाई के मिलने का स्थान, खूँट । दो दीवारों के मिलने का स्थान । एकान्त या छिपा हुआ स्थान । **मुहा०—झाँकना**-सर्वत्र ढूँढ़ना । भय या लज्जा से जी चुराना या बचने का उपाय करना । **—में घुसना**-छिपना । **—में रहना (पड़ा रहना, होना)**-थोड़ी जगह में, अलग या एकांत में रहना । **—में होना**-चौथाई का भागी होना (दलालो) । **—(ने) कोतरे (कोथरे)**-कोने में, [कोनौंधे (दे०)]

कोनिया—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कोना] दीवाल के कोने पर चीजें रखने की पटिया, दो छप्परों के मिलने का स्थान । कोण देखने का यंत्र (बढ़ई, राज) ।

कोनियाना—(क्रि०, स०, दे०) कोने में छिपा कर रखना या हो जाना ।

कोप—(संज्ञा,पु०, सं०) क्रोध, रिस, गुस्सा, रोष [**कुपित** (वि०, सं०)]**—भवन**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रूठ कर बैठने का स्थान । "कोप भवन गवनी कैकेयी"—[रामा०] ।

कोपना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कोप] क्रोध करना, नाराज या रुष्ट होना । "कोपेउ जबहिं बारि-चर-केतू"—[रामा०] । [**कोपाना** (प्रे० रूप)]

कोपरी—(संज्ञा, स्त्री०, प्रा०) परात ।

कोपल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोमल पल्लव] नई मुलायम पत्ती, कल्ला, कोंपल ।

कोपि—(सर्व०, यौ०) [सं० कोऽपि] कोई भी । (पू०, का०, क्रि०, हि० कोपना) कुपित होकर ।

कोपी—(वि०) [सं० कोपिन्] कोप करने वाला, क्रोधी । (सा० भू० क्रि०, स्त्री०, दे०) कुपित हुई । [**कोपा** (पु०)]

कोपीन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कौपीन] लँगोटी, कौपीन ।

कोफता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रकार का कबाब । [**कोफता-कबाब** (यौ०)] ।

कोबर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कोंपल] डाल का पका आम, टपका सीकर । [सीकल (दे०)]

कोबिद—(संज्ञा, पु०, दे०) कोविद (सं०) । [**कबि-कोबिद** (यौ०)] ।

कोबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गोभी नामक तरकारी । लंका का एक नगर ।

कोमल—(वि०, सं०) मृदु, मुलायम, नर्म, सुकुमार, नाजुक । अपरिपक्व, कच्चा । सुंदर । एक स्वर-भेद (संगी०) ।**—ता**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मृदुलता, सुकुमारता, नरमी । [**कोमलाई, कोमलताई** (दे०)] "जेती कोमलाई औ ललाई पदुमन की"—रघु० ।

कोमलक—(संज्ञा, पु०, सं०) मृणाल ।

कोमला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कोमल पद वाली वृत्ति या वर्ण-योजना, प्रसाद गुण-युक्त (का०, शा०) कोमला वृत्ति ।

कोमासिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बतिया, फल का प्रारम्भिक रूप ।

कोय*—(सर्व, दे०) कोई, कोई, कोऊ । "अपने कहँ कोइ कोय"—रही० ।

कोयर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोपल] साग-पात, सब्जी । हरा चारा ।

कोयल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कोकिल] सुन्दर बोलने वाली एक काली चिड़िया, कोकिल, कोकिला । "कहते हैं कलेजे हमारे यहाँ, अरी कोयल ! कूकना भाया तुझे"—हितैषी । [कौलिया (दे०), कौखी (दे०)] गुलाब की पत्तियों सी पत्तियों वाली एक लता ।

कोयला, क्वैला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोकिल =अंगारा] जली हुई लकड़ी का बुझा हुआ अंगारा जो बहुत काला होता है । एक खनिज पदार्थ, जो कोयले जैसा जलाया जाता है । "कैला होय न ऊजरो"—वृन्द ।

कोयष्टि—(संज्ञा, पु०, सं०) जलकुक्कुभ पक्षी ।

कोया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोण] आँख का ढेला, लोय (ब्र०) या कोना । [सं० कोश] कटहल का गूदेदार बीज । कोश । कोवा ।

कोरंगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटी इलाइची, एला ।

कोर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कोण] किनारा, सिरा, कोना, कपड़े आदि का छोर । (सं० क्रोड़) गोद, अंकाला । "भरी रहै तव कोर" । —**कसर** –(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० कोर + कसर फ़ा०] दोष । त्रुटि, ऐब । कमी । कमी-बेशी, न्यूनाधिकता । न्यूनता । द्वेष । हथियार की धार, बाढ़ । पंक्ति, कतार, गाँठ, पोर । करोड़ । दृष्टि । "करहु कृपा की कोर" । "कोर कोर कटि गयो हटिकै न पग दयो" । "जतन कीजियत कोर..." । "झलक लोचन कोर"—सू० । **मुहा०—भरी रहना**–पुत्र-वती रहना ।—**दबना**–किसी प्रकार के दबाव या वश में होना ।

कोरक—(संज्ञा, पु०, सं०) कली, मुकुल, फूल या कली की आधारभूता हरी पत्तियाँ । फूल की कटोरी । मृणाल या कमल-नाल । शीतल चीनी । करोड़ । "कोऊ कोरक संग्रहौ" ।

कोरचा—(संज्ञा, पु०, प्रा०) कुलचा, छिपाकर बचाया धन ।

कोरदूष—(संज्ञा, पु०, सं०) कोदो ।

कोरना—(क्रि०, स०, दे०) खोदना । कुतरना । कुरेदना । "जैसे काठ-कोरि तामैं पूतरी बनाइ राखी" —सुन्द० ।

कोरनी—(संज्ञा, स्त्री०) पत्थर पर नक्काशी का काम ।

कोरम—(संज्ञा, पु०, अं०) सभा-समिति के कार्य-सम्पन्न होने के लिए सदस्यों की कम से कम निर्दिष्ट संख्या ।

कोरमा—(संज्ञा, पु०, तु०) बिना शोरबे का भुना मांस । [कूरमा (दे०)] । [**कोरमा कोफ्ता** (यौ०)]

कोरवा—(संज्ञा, पु०, प्रा०) गोद । अंकोर, कोरा ।

कोरहन—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का धान ।

कोरा—(वि०, दे०) [सं० केवल) जो बर्ता न गया हो । नया । अछूता । (कपड़ा या मिट्टी का बरतन) । जो धोया न गया हो । जिस पर लिखा या चित्रित न किया गया हो, सादा "सत्य कहौं लिखि कागद कोरे"—तुल० । **मुहा० कोरीधार** (**बाढ़**)–बिना सान रखे हथियार की धार ।—**जवाब**–साफ इंकार । स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार । खाली । रहित, वंचित । बेदाग, बिना आपत्ति या दोष का । मूर्ख । धनहीन । असत्य, झूठ । केवल, सिर्फ ।—**(री) बात**–केवल (झूठी) बात ।—**(री) शान**–झूठी या केवल शान । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्रोड] गोद । उछंग । अंकाला, अंकोर (ब्र०) । "जसुदा कै कोरे एक बार ही कुरै परी" । (संज्ञा, पु०, दे०) बिना किनारे की रेशमी धोती । एक जल पक्षी । "बैसहू की थोरी एक कोरी अति भोरी बाल ।" [**कोरी** (स्त्री०)]—**घड़ा**–जिस पर कुछ प्रभाव न पड़ा हो ।—**नैनसुख**–एक सूती वस्त्र ।

कोरापन—(संज्ञा, पु०, हिं०) नवीनता ।

कोरि—(वि०, दे०) [सं० कोटि] करोड़ । (क्रि०, पू०, का०, अ०, दे०) खोद कर । "कोरि करै किन कोय"—रही० ।

कोरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुरिया । (संज्ञा, पु०, दे०) साइबेरिया का पूर्वी प्रान्त ।

कोरी—(संज्ञा, पु०, दे०) हिंदू जुलाहा, कुविंद "कोरी जुलाहा जुरे दरजी" ।

कोरौ—(संज्ञा, पु०, प्रा०) लम्बी-पतली लकड़ी ।

कोल—(संज्ञा, पु०, सं०) शूकर। [सुअर (दे०)] गोद, उत्संग। बेर, बदरीफल। एक तोले की तौल। काली मिर्च। दक्षिण का एक प्राचीन प्रदेश (राज्य)। एक जंगली जाति। चित्रक। शनिग्रह। कोरा। "अहि कोल, कूरम कलमले", "यह सुधि कोल किरातन पाई"—[रामा०]।

कोलतार—(संज्ञा, पु०, दे०) चारकोल, एक काला दुर्गन्धयुक्त पदार्थ।

कोलाचल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दक्षिण का एक पर्वत।

कोलाहल—(संज्ञा, पु०, सं०) शोरगुल, हौरा, कुलाहल (ब्र०), कुहराम।

कोलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सँकरी गली। लम्बा खेत। कुलिया।

कोली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्रोड] गोद। कोरी। (संज्ञा, पु०, दे०) कोरी। [**कोलिन** (स्त्री०)]

कोल्हू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कूल्हा ?] तिल आदि से तेल या गन्ने से रस निकालने का यंत्र। **मुहा०—का बैल (तेली का बैल)**–अति कठिन श्रम करने वाला, नासमझ, अंधा।—**में डाल कर पेरना**–अति कष्ट देना।—**चलाना**–एक ही काम मे लगे रहना, व्यर्थ समय बिताना।

कोविद—(वि०, सं०) पंडित, विद्वान। कृतविद्य। प्रवीण। [**कविकोविद** (यौ०)]

कोविदार—(संज्ञा, पु०, सं०) कचनार वृक्ष। "खड़ा हुआ था तरु कोविदार का"—हरिऔध।

कोश—(संज्ञा, पु०, सं०) अंडा। संपुट की बँधी कली। पंचपात्र (पूजा का पात्र—बरतन) तलवार आदि की म्यान। आवरणखोल। प्राणियों के अन्न-मय आदि पाँच आवरण (वेदा०)। थैली, संचितधन। खजाना। अर्थ और पर्याय के साथ एकत्रित किये गये शब्दसमूह का ग्रन्थ, अभिधान-समूह। अंड-कोश। रेशम का कोया। कुसियारी। कटहल आदि फलों का कोया। मद्यपात्र। कमल का मध्य भाग। कोष। [**कोस** (दे०)]—**कार**–(वि०, सं०) कोश बनाने वाला।—**दार**–(संज्ञा, पु०, सं०) म्यान या शब्द-कोश बनाने वाला। शब्द संग्रहकार। रेशम का कीड़ा।—**पाल, पालक**–(संज्ञा, पु०, सं०) खजाने का रक्षक।—**रचना**–शब्द-कोश बनाना। [लेक्सि-कोग्रैफी]

कोशपान—(संज्ञा, पु०, सं०) अभियुक्त को एक दिन उपवास करा कर तथा कुछ प्रतिष्ठित जनों के समक्ष तीन चुल्लू जल पिला कर उसके अपराध की परीक्षा करने का एक प्राचीन विधान या ढंग।

कोशल, कोशला—(संज्ञा, पु०, सं०) सरयू (घाघरा) के दोनों तटों का प्रदेश। वहाँ की रहने वाली एक क्षत्रिय जाति। अयोध्या नगर। [कौसल (दे०)] [**कोशलपुर (कोशलपुरी)**–(यौ०) अयोध्या, कौसल (दे०)]

कोशलाधीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रीराम, कोशलेश, कोशलपति, कोशलेन्द्र।

कोशवृद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अंड-वृद्धि रोग। धन की बढ़ती।

कोशाँबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कोशांबी नगर।

कोशा—(संज्ञा, पु०, दे०) कुसियारी का रेशम।

कोशागार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) खजाना, कोशालय, कोषगृह, कोषागार।

कोशिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्रयत्न, चेष्टा। श्रम। [कोसिस (दे०)]

कोष—(संज्ञा, पु०, सं०) कोश, खजाना। शब्द-संग्रह। अंड-कोष।—**शक्ति**–खजाने का या थैली का अधिकार। [पावर आफ पर्स]

कोषाध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) कोषपालक, खजानची, कोषाधीश, भंडारी, कोषपति, कोषा-धिकारी।

कोष्ठ—(संज्ञा, पु०, सं०) उदर का मध्य भाग, पेट का भीतरी हिस्सा, किसी विशेष शक्ति वाला शरीर का आंतरिक भाग। गर्भाशय। पाकाशय। [कोठा (दे०)] घर का भीतरी भाग जहाँ अन्न रहता हो। गोला। कोश। भंडार। प्राकार, शहरपनाह। चहारदीवारी। लकीर। दीवाल या बाट आदि से घिरी जगह। गणित के चिन्ह-विशेष। कोष्ठक।—**बद्ध**–(संज्ञा, पु०, सं०) पेट मे मल का रुकना, कब्जियत। [**कोष्ठबद्धता** (संज्ञा, स्त्री०)]

कोष्ठक—(संज्ञा, पु० सं०) खाना, कोठा, खाने या घर वाला चक्र, सारिणी। लिखने में एक प्रकार के चिन्हों का जोड़ा जिसके अन्दर कुछ वाक्य या अंक लिखे जाते हैं। जैसे—[ ], $\overline{}$, () (गणित)।

कोष्ठागार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कोष।

कोष्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जन्म-पत्रिका। कोष्ठ या प्रकोष्ठ वाला बड़ा प्रासाद। [कोठी (दे०)।

कोस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्रोश] दूरी की एक नाप जो ४,००० या ८,००० हाथ (प्राचीन) या २ मील (३,५२० गज) के बराबर (वर्तमान समय में) होती है। कास (ग्रा०)। "काफिले

तुमसे बढ़ गये कोसों"—हाली। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोश, कोष] खजाना। **मुहा०—(सों) या काले कोसों**-बहुत दूर।—**(सों) दूर रहना**-अलग रहना।

कोसना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० क्रोशण] शाप के रूप मे गालियां देना। **मुहा० पानी पी-पी कर—**, बहुत अधिक शाप देना, बुरा मानना। **—काटना**-शाप और गाली देना, दुर्वाक्य कह अमंगल चाहना।

कोसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोश] एक प्रकार का रेशम, कोशा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० काश=प्याला] मिट्टी का बड़ा दिया, कसोरा। **—काटो**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० कोसना + काटना] शाप के रूप मे गाली देना, बद-दुआ, अमंगल चाहना।

कोसला, कौसिला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कौशल्या, राम-माता। "जस कौसिला मोर भल ताका" —[रामा०]।

कोसिस—(संज्ञा, पु०, दे०) कोशिश (फ़ा०)।

कोहड़ौरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० कुम्हड़ा+बरी] उद की पीठी और कुम्हड़े से बनी बरी, कुम्हड़ौरी। [कुहरौरी (दे०)]

कोह—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पर्वत, पहाड़। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्रोध] क्रोध, रोष। (संज्ञा, पु०) [सं० ककुभ] अर्जुनवृक्ष। "सुध दूध-मुख करिय न कोहू"—[रामा०]।—**नूर**-(संज्ञा, पु०) [फ़ा० कोह=पर्वत+नूर=रोशनी अ०] भारत के किसी स्थान से प्राप्त एक बहुत बड़ा प्राचीन प्रसिद्ध हीरा जो अब इंगलैंड के सम्राट् के राजमुकुट में लगा है।

कोहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुहनी, बाहु के बीच की गांठ।

कोहबर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोष्ठबर] विवाह में कुल-देवता के स्थापित करने का स्थान (घर में), कौतुक-गृह।

कोहल—(संज्ञा, पु०, सं०) नाट्यशास्त्र के एक ग्रंथ-प्रणेता, एक मुनि।

कोहांर—(संज्ञा, पु०, दे०) कुंभकार, कुम्हार। "जैसे भँवे कोहांर का चाका"—जायसी।

कोहान—(संज्ञा, पु०, दे०, फ़ा०) ऊँट की पीठ का कूबड़।

कोहाना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कोह] कुहाना, रूठना, मान करना, क्रोध करना, नाराज होना। "तुमहिं कोहाब परम प्रिय अहई"—[रामा०] (संज्ञा, पु०) कोहाब।

कोहिरा—(संज्ञा, पु०, दे०) नीहार (सं०) कोहरा। [कुहरा (दे०)]।

कोहिस्तान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पहाड़ी देश।

कोही—(वि०, [हि० क्रोह] क्रोधी। "सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही"—[रामा०]। (वि०, फ़ा०) पहाड़ी।

कोहु-कोहु—(संज्ञा, पु०, दे०) कोह, क्रोध।

कोहू—(सर्व, दे०) किसी ने भी, कोऊ। [काहू (दे०)]

कौं, कौ—(विभक्ति, कर्म कारक) (ब्र०) को।

कौंकिर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हीरे की कनी। कांच की रेत।

कौंच—(संज्ञा , स्त्री०, दे०) [सं० कच्छु] केवाँच। [कोंछ (दे०)] एक पक्षी, क्रौंच (सं०)।

कौंछ—(संज्ञा, पु०, दे०,) केवांच।

कौंता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भाला। बरछी, कुन्ती।

कौंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भाला धारण करने वाला। कुंती, बरछी।

कौंतेय—(संज्ञा, पु०, सं०) कुंती-पुत्र, युधिष्ठिर अर्जुनादि। अर्जुन वृक्ष।

कौंध, कौंधा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कौंधना] बिजली की चमक, चमक। "अंगन तेज मैं ज्योति के कौंधे"—पद्मा०।

कौंधना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० कनन=चमकना + अंध] बिजली का चमकना।

कौंल—(संज्ञा, पु०, दे०) कमल (सं०)। [कँवल (दे०)]। [**कौंलकली** (यौ०)]

कौंला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कमला] एक मीठा नीबू, संगतरा, संतरा।

कौंहर—(संज्ञा, पु०, दे०) इन्द्रायन जैसा एक लाल फल।

कौंहरी, कौंहारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक औषधि।

कौआ, कौवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० काक] काक, काग, कागा। गले के भीतर लटकता हुआ मांस का टुकड़ा। चालाक व्यक्ति।

कौआना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० कौआ] भौचक होना, चकपकाना। बर्राना, सहसा कुछ बड़बड़ाना। चकराना, अकबकाना।

कौआली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कौवाली।

कौकिलेय—(वि०, सं०) कोकिल का।

कौकृत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कुकर्म । पछतावा ।

कौचुमार—(संज्ञा, पु०, सं०) बदसूरत को सुन्दर रूप में लाने की कला ।

कौट—(संज्ञा, पु०, सं०) धोखा, जाल, छल । (वि०) स्वतंत्र । घरेलू ।

कौटभी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा ।

कौटवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नंगी स्त्री ।

कौटिलिक—(संज्ञा, पु०, सं०) बहेलिया । लुहार ।

कौटिल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) टेढ़ापन, कुटिलता, कपट । चाणक्य ।—**शास्त्र**-अर्थ-शास्त्र ।—**नीति**-कूटनीति ।

कौटीर—(वि०, सं०) कुटीर का बना हुआ । कुटीर । पौधा-सम्बन्धी ।

कौटुम्ब—(वि०, सं०) परिवार के लिए आवश्यक (भरण-पोषण के लिए) ।

कौटुम्बिक—(वि०, सं०) कुटुम्ब का, परिवार-सम्बन्धी । [**कौटुम्बिकी** (स्त्री०)] ।

कौड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कपर्दक) बड़ी कौड़ी । [सं० कुण्ड] जाड़े मे तापने के लिए जलाई हुई आग, अलाव ।

कौड़िया—(वि०, दे०) [हिं० कौड़ी] कौड़ी के रंग का, स्याही लिए सफेद । (संज्ञा, पु०, दे०) कौडिल्ला पक्षी, किलकिला ।

कौड़ियाला—(वि०, दे०) [हिं० कौड़ी] कौड़ी के रंग का, कुछ गुलाबी झलक वाला हलका नीला, कोकई । (संज्ञा, पु०, दे०) कोकई रंग । एक विषैला साँप । कृपण । धनी । एक छुच्छी जैसे फूलों वाला वृक्ष । कौडिल्ला पक्षी ।

कौड़ियाही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० कौड़ी] कुछ कौड़ियों की मजदूरी ।

कौडिल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) मछली खाने वाला कौड़िया पक्षी । एक साँप ।

कौड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कपर्दिका] एक घोंघे सा अस्थिकोश में रहने वाला समुद्री कीड़ा । उसका अस्थि-कोश जो सब से कम मूल्य के सिक्के की तरह बर्ता जाता है । वराटिका, धन, रुपया पैसा, द्रव्य । वशवर्ती राजाओं से सम्राट्-द्वारा लिया जाने वाला कर । आँख का डेला । छाती के नीचे बीचोबीच पसलियों के मिलने की छोटी हड्डी । जंघे, काँख और गले की गिल्टी । कटार की नोक । **मुहा०—काम का नहीं**-निकम्मा, निकृष्ट । **—का या दो कौड़ी का**-तुच्छ, निकम्मा, खराब, जिसका कुछ मूल्य न हो ।**—के तीन होना**-बहुत सस्ता होना, तुच्छ या नाचीज होना, बेकदर होना। **—कौड़ी चुकाना (अदा करना, भरना)**-पाई-पाई देना, सब ऋण चुका कर बेबाक कर देना । **—कौड़ी जोड़ना**-बहुत थोड़ा-थोड़ा करके कष्ट से धन इकट्ठा करना । "कौड़ी कौड़ी जोरि बेनी कवि की बिदाई कीन्हीं" ।**—ऊँट बिकना (लगना)**-बहुत सस्ते मूल्य पर बिकना ।**—भर**-बहुत थोड़ा । **—कानी या झंझी (फूटी)**-टूटी कौड़ी, अत्यंत अल्प द्रव्य ।**—चित्त (पट्ट)**-ऊपर मुख किये कौड़ी का पड़ना [विलोम पट्ट] ।**—चित्ती**-पीठ पर उभरी हुई गाँठों वाली कौड़ी (जुए में काम देती है) । "कौड़ी के न काम के ये आये बिना दाम के"—बेनी० ।

कौणप—(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस । पापी, अधर्मी, दुराचारी । [कौनप (दे०)]

कौण्डिन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कुंडिन मुनि का पुत्र, चाणक्य, कौटिल्य ।

कौतुक—(संज्ञा, पु०, सं०) कौतिक । [कौतिग (दे०)] कुतूहल, आश्चर्य, विनोद, दिल्लगी । खेल-तमाशा । **कौतुकी**-(वि०, सं०) कौतुक करने वाला । खेल-तमाशा या विवाह-सम्बन्ध कराने वाला । विनोदशील । [**कला-कौतुक** (यौ०)]

कौतुकिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कौतुक+इया प्रत्य०] कौतुक या विवाह-सम्बन्ध कराने वाला नाऊ, पुरोहित । कौनट, खिलाड़ी । "तौ कौतुकियन्ह आलस नाहीं"—तुल० ।

कौतूहल—(संज्ञा, पु०, सं०) कुतूहल, लीला, कौतुक । [कौतूह (दे०)]

कौत्स—(संज्ञा, पु०, सं०) कुत्स ऋषि के आत्मज । कुत्स-कृत साम । एक ऋषि का नाम ।

कौथ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० कौन+तिथि] कौन सो तिथि । कौन सम्बन्ध ।

कौथा—(वि०, दे०) [हिं० कौन+स्था=स्थान सं०] किस संख्या का, गणना में कौन सा स्थान । [**कौथी** (स्त्री०)] ।

कौद्रविक—(संज्ञा, पु०, सं०) काला नमक ।

कौन—(सव०, दे०) [सं० कः किम्] अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु का जिज्ञासा-सूचक प्रश्न-वाचक सर्वनाम । **मुहा०—सा-कौन** ।**—होना**-क्या अधिकार या मतलब रखना, कौन सम्बंधी या रिश्ते में होना । "कौन दिना कौन घरी कौन समै

कौन ठौर, जानै कौन कौन को कहाधौं होन-हार है।" "कौन-कौन तुम पहिरत-वसना"—पंत।

कौप—(वि०, सं०) कूप-सम्बन्धी जल, कूपोदक। कूपका।

कौपीन—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मचारियों या संन्यासियों आदि के पहिनने की लँगोटी, चीर। कफनी। काछा। कौपीन से ढाँके जाने वाले शारीरिक अंग। पाप, अनुचित कर्म। "कूपे पतितं योग्यं कौपीनम्।"

कौपोदकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विष्णु की गदा।

कौब्ज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कूबड़पन।

कौम—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) वर्ण, जाति।

कौमार—(संज्ञा, पु०, सं०) कुमारावस्था, जन्म से ५ वर्ष तक की या १६ वर्ष तक की अवस्था, (तंत्र-शा०) कुमार। [**कौमारी** (स्त्री०)]—तंत्र,—**भृत्य**—(संज्ञा, पु०, सं०) बालकों की चिकित्सा, लालन-पालनादि की विद्या, धातृ-कला।

कौमारी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी की प्रथम स्त्री। सात मातृकाओं मे से एक, पार्वती। बाराही-कंद। कार्त्तिक-शक्ति। [**कौमार्य** (संज्ञा, पु०)]

कौमार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कुमारता, कुमारावस्था का भाव। कुमारी का भाव।—**भंग**-कुमारी का प्रथम पुरुष-संगम।

कौमी—(वि०, अ०) कौम का, जातीय। [**कौमियत**—(संज्ञा, स्त्री०) जातीयता]

कौमुद—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्तिक मास।

कौमुदिक—(वि०, सं०) कुमुद से सम्बन्ध रखने वाला। कुमदपूर्ण।

कौमुदिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती की एक सहेली। चाँदनी, ज्योत्स्ना।

कौमुदी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्योत्स्ना, चाँदनी, चंद्रिका, जुन्हैया। [जुन्हाई (दे०)] कार्तिकी-पूर्णिमा। आश्विनी-पूर्णिमा। दीपोत्सव तिथि। कुमुदिनी। एक व्याकरणग्रंथ "सिद्धान्त-कौमुदी" (भट्टोजी-कृत)। "कौमुदी यस्य कंठस्था वृथा भाष्ये परिश्रमः"।

कौमोदिकी, कौमोदी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विष्णु-गदा।

कौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कवल] एक बार मुँह में डाला जाने वाला भोजन, ग्रास, गस्सा, निवाला (फा०), [कवर (दे०)] "पंच कौर करि जेंवन लागे"—[रामा०]। **मुहा० मुँह का—छीनना**-देखते देखते किसी का अंश (हक) दबा बैठना, रोजी छुटाना। **मुह का—होना**-आसान या सरल होना। (**काल**)—**होना**-मर जाना, मृत्यु के वश होना। "काल-कौर ह्वै हैं छिन माँहीं"—तुल०। [**कउर** (प्रान्ती०)] चक्की मे एक बार पिसने के लिए डाला जाने वाला अन्न।

कौरना—(क्रि०, स०, दे०) सेंकना, थोड़ा भूनना (हि० कौड़ा) कौलहाना। (प्रा०)।

कौरव—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा कुरु की संतान, कुरु-वंशज। [**कौरवी**-(वि०, स्त्री०, सं०) कुरु-सम्बन्धी] [**कौरवेश, कौरवपति**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दुर्योधन]

कौरव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कुरु-वंश। एक मुनि। एक नगर।

कौरा, कउर—(संज्ञा, पु०, दे०) द्वार के दोनों ओर का वह भाग जिससे खुलने पर किवाड़ सटे रहते हैं। कौड़ा, अलाव। टुकड़ा, कौर।—**कुर**—, **कुटा**-खाने से बचा हुआ भोजनांश। [**कौरी** (स्त्री०)] **मुहा०—लगना**-दरवाजे के पास (किसी घात मे छिप कर खड़ा रहना।—**खाना**-टुकड़े खाना, आश्रित रहना, अतिदीन होना।

कौरियाना—(क्रि०, सं०, दे०) गोद में लेना, भेंटना, आक्रोड़ में रखना।

कौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अँकवार, गोद, अंक। किवाड़ के पीछे की दीवाल। कौड़ी।

कौल—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तम कुल में उत्पन्न, कुलीन व्यक्ति। कुलाचार नामक वाम मार्ग का अनुयायी, वाममार्गी (तांत्रिक)। "नाना रूप-धराः कौलाः"। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कवल] कौर, ग्रास। (सं० कमल) कमल, कँवल, कौल।

क़ौल—(संज्ञा, पु०, अ०) कथन, उक्ति, वाक्य। प्रतिज्ञा, प्रण, वादा।—**करार**-(यौ०) परस्पर दृढ़ प्रतिज्ञा। "बक़ौले हसन किसको भाता नहीं"। [कौल (दे०)] "कीन्यौ कौल अनेक"—दीन०।

कौलव—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्यारह करणं में से तीसरा करण (ज्यो०)।

कौलाचार—(संज्ञा, पु०, सं०) वाममार्ग।

कौलिक—(वि०, सं०) कुल-परम्परा प्राप्त, कुल-परम्परानुयायी। (संज्ञा, पु०, सं०) शाक्त, वाम-मार्गी। तन्तुवाय, ताँती। पाखंडी।

कौलीन—(वि०, सं०) श्रेष्ठ, उत्तम, शिष्ट। "... अच्छा कर्म ही कौलीन है"—का० गु०।

कौलेय—(संज्ञा, पु०, सं०) श्वान, [कूकुर (दे०)] कुत्ता। (वि०) कौल का।

कौलेली—(संज्ञा, पु०, दे०) गंधक, दैतेन्द्र ।

कौल्य—(वि० सं०) कुलीन वंश वाला । शाक्त मत को मानने वाला ।

कौल्हाना—(क्रि०, स०, प्रा०) भूनना, सेंकना ।

कौवा (कौआ)—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० काक] काक, काग, कागा । **मुहा०—गुहार (कौवारोर)**—बहुत बकबक, गहरा शोर-गुल । (वि०) बड़ा धूर्त । चतुर या कोंइयाँ । (संज्ञा, पु०, दे०) बँडेरी के आड़ या सहारे की लकड़ी । कौहा, गले के ऊपर तालू से लटकता हुआ मांस, घाँटी । लंगर, बगले के चोंच जैसे मुँह वाली एक मछली । [(यौ०)—**टोंटी**—(संज्ञा, स्त्री०,दे०) [सं० काकतुंडी] काकनासा, सफेद और नीचे काक-चंचु जैसी आकृति वाले फूलों की एक लता ।]

क़ौवाल—(संज्ञा, पु०, अ०) कौवाली गाने वाला, कौव्वाल । [कव्वाल (दे०)] ।

क़ौवाली—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सूफ़ियों का भगवत्प्रेम-सम्बन्धी गीत, उसी धुनि की ग़ज़ल, क़ौवालों का पेशा ।

कौवेर—(संज्ञा, पु०, सं०) कुवेर का । कूट नामक औषधि । उत्तर दिशा । [**कौवेरी**—(स्त्री०) उत्तर दिशा, कुवेर की शक्ति ।]—**यान**—पुष्पक ।

कौशल—(संज्ञा, पु०, सं०) कुशलता, निपुणता, पटुता । मंगल । कोशल देश-वासी । [**कौसल** (दे०)]—**पुर (पुरी)**—अयोध्या ।

कौशलेय, कौशलेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रामचन्द्र । कोशल का राजा । कौशलाधिपति, कौशलपति । [कौसलेस (दे०)] "कौसलेस दसरथ के जाये"—तुल० । **कौशलेन्द्र**—(यौ०) राम ।

कौशली (कुशली)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुशल-प्रश्न, कुशलता । (वि०) सकुशल ।

कौशल्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कोशल-नृप दशरथ की प्रधान स्त्री, राम-माता, कौसल्या । [कौसिला (दे०)] पुरुराज और सत्यवान की स्त्रियाँ । धृतराष्ट्र-माता । पंचमुखी आरती । [**कौशल्यानन्द**—(यौ०) राम ।]

कौशल्यायनि—(संज्ञा, पु०, सं०) राम, कौशल्या के पुत्र ।

कौशांबी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुश-पुत्र कौशांब की नगरी, वत्सपट्टन (प्रयाग से ३० मील दक्षिण-पश्चिम में) [कोसंबी (दे०) ।]

कौशिक—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र, कुशिक नृप-पुत्र, गाधि, गाधेय, विश्वामित्र । कोषाध्यक्ष । कोशकार । रेशमी वस्त्र । शृंगार रस । एक उप-पुराण । उल्लू । नेवला । मज्जा । छः रोगों में से एक । [कौसिक (दे०)] "कौसिक सुनहु मंद यह बालक"—[रामा०]

कौशिकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चंडिका । कुशिक नृप की पोती और ऋचीक मुनि की स्त्री । करुणा, हास्य और शृंगार के वर्णन वाली सरल वर्ण-युक्त एक वृत्ति (काव्य-नाटक) । एक नदी (कुशी) । एक रागिनी, कौषिकी ।

कौशीलव—(संज्ञा, पु०, सं०) नट, अभिनयकर्त्ता, अभिनेता

कौशेय—(वि०, स०) रेशम का, रेशमी ।

कौषीतकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऋग्वेद की एक शाखा, उसका एक ब्राह्मण और उपनिषद ।

कौसल—(संज्ञा, पु०, दे०) कौशल (सं०) ।

कौसिद—(वि०, सं०) कर्ज़ सम्बन्धी । सूद खाने वाला ।

कौसिला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कौशल्या (सं०) कौसल्या । "जस कौसिला मोर भल ताका"—[रामा०]

कौसुम्भ—(संज्ञा, पु०, सं०) वन कुसुम, एक शाक, कुसुम्भ नामक फूल ।

कौस्तुभ—(संज्ञा, पु० सं०) समुद्र से निकले हुए १४ रत्नों में से एक मणि, जो विष्णु के वक्ष स्थल पर रहती है ।

क्या—(सर्व०, दे०) [सं० किम्] प्रस्तुत या अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा-सूचक एक प्रश्न-वाचक सर्वनाम, कौन वस्तु, या बात । "चाहिए क्या उसे छिपा देना"—हरिऔध । **मुहा०—कहना है,—खूब,—बात है**—प्रशंसासूचक वाक्य, धन्य धन्य, वाह वाह, बहुत अच्छा है ।—**कुछ,—क्या कुछ**—सब या बहुत कुछ ।—**कुछ चीज़ है (बात है)**—नाचीज़ या तुच्छ है ।—**जाता है**—क्या हानि होती है, कुछ नुकसान नहीं ।—**जाने**—ज्ञात नहीं, कुछ नहीं जानता ।—**पड़ी है**—क्या आवश्यकता या जरूरत है, कुछ गरज नहीं । **और**—, हाँ ऐसा ही है, आगे और ।—**क्या नहीं**—सब कुछ । का **(से) क्या—होना**—इष्ट का (से) अनिष्ट होना । (वि०) कितना । बहुत अधिक । अपूर्व, विचित्र, बहुत अच्छा । (क्रि०, वि०) क्यों, किस लिये । अव्य० केवल प्रश्न-सूचक शब्द । [**काह, कहा** (ब्र०), **का** (प्रान्ती०)]

क्याजा—(संज्ञा, पु०, प्रा०) किसी वस्तु के मूल्य में देने का अन्न ।

क्यारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०] कियारी। (यौ०, हि०) अरी क्या है।

क्यों—(क्रि०, वि०) [सं० किम्] किसी कारण की जिज्ञासा का शब्द, किस कारण, किस लिए, "क्यों उसे आँख से गिरा देवें"—हरिऔध। काहे (ब्र०) क्यों (ब्र०)। [**क्योंकि**-(यौ०) इसलिए या इस कारण कि, चूँकि।] **मुहा०**—**कर**-किस प्रकार, कैसे।—**नहीं**-ऐसा ही है, ठीक है, निस्संदेह, बेशक, सही कहते हो, हाँ, जरूर। कभी नहीं। मैं ऐसा नहीं कर सकता। क्योंहूँ (ब्र०), कैसे हो, किसी प्रकार भी। *(क्रि०, वि०) किस भाँति या प्रकार।

क्रंदन—(संज्ञा, पु०, सं०), रुदन, रोना, प्रलाप। विलाप। युद्ध समय वीरों का आह्वान।—**क्रंदित**-(वि०) विलपित, रोदित।

क्रकच—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अशुभ योग (ज्यो०), करील, आरा, करवत। एक नरक। गणित की एक क्रिया। [**क्रकचारण्य** (यौ०)]।

क्रतु—(संज्ञा, पु०, सं०) निश्चय, संकल्प। अभिलाषा। विवेक। प्रज्ञा। इंद्रिय। जीव। अश्वमेध-यज्ञ। विष्णु। याग। आषाढ़। ब्रह्मा के मानस पुत्रों या विश्वदेवों में से एक, कृष्ण के एक पुत्र।—**पति**-विष्णु।—**फल**-यज्ञ फल, स्वर्ग।—**क्रय**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) यज्ञ-फल धन देकर लेना। (वि०) क्रतुक्रयी।—**द्वेषी**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) असुर, दैत्य। नास्तिक। राक्षस, क्रतुद्रोही।—**ध्वंसी**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिव, (दक्ष प्रजापति के यज्ञ को नष्ट करने वाले) महादेव, क्रतु-विध्वंसी।—**पशु**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) घोड़ा।—**पुरुष**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नारायण, विष्णु, क्रतुदेव।—**भुज**-(संज्ञा, पु०, सं०) देवता, सुर।—**माली**-(संज्ञा, स्त्री०,) एक औषधि, किरवाली।—**विक्रय**-(संज्ञा, पु०, यौ०, स०) यज्ञ-फल का बेचना। धन से यज्ञ के फल का बेचने वाला। (वि०) क्रतुविक्रयी, क्रतु, विक्रेता।

क्रथन—(संज्ञा, पु०, सं०) सफेद चंदन। ऊँट।

क्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) पैर रखने या डग भरने की क्रिया, वस्तुओं या कार्यों के परस्पर आगे-पीछे होने का विधान या नियम, पूर्वापर सम्बन्ध। व्यवस्था, शैली, सिलसिला, तरतीब। काय को उचित रूप से धीरे-धीरे करने की प्रणाली, पद्धति, परिपाटी, कल्प-विधि। वेद-पाठ की एक प्रणाली। वैदिक विधान। कल्प। रीति। एक अलंकार जिसमें प्रथमोक्त वस्तुओं का वर्णन क्रम से किया जाय। यथाक्रम (अ० पी०)। (संज्ञा, पु०, दे०) कर्म। "मन, क्रम, बचन चरन रत होई"—[रामा०]। **मुहा०**—**क्रम करके (से)**-धीरे-धीरे, शनैः शनैः।—**से**,—**क्रम से**, (**एक क्रम से**)-धीरे-धीरे, एक सिलसिले से। **यथा**—,—**बाँध कर**-नियम बाँध कर।—**लगाना**-सिलसिला लगाना।—**भंग**-(संज्ञा, पु०, सं०) व्यतिक्रमता, विधि-हीनता, एक प्रकार का दोष (साहित्य०)।—**योग**-(संज्ञा, पु०, सं०) विधि-नियोग।—**संन्यास**-(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ के पश्चात् क्रमानुसार लिया गया संन्यास, परंपरागत।

क्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) पैर, पाँव के १८ संस्कारों में से एक। जाना, चलना।

क्रमनासा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कर्मनाशा नदी। "कासी-मग सुरसरि क्रमनासा"—तुल०

क्रमशः—(क्रि०, वि०, सं०) शनैः शनैः, क्रम से धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके। सिलसिलेवार।

क्रमागत—(वि०, सं०) परंपरागत, क्रम से प्राप्त, क्रमाप्त। [कांजिक्यूटिव]

क्रमानुसरण—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रम का अनुगमन। [**क्रमानुसारी** (वि०)]

क्रमानुकूल, क्रमानुसार—(वि०, क्रि०, वि०) श्रेणी के अनुसार, क्रम से, तरतीब से, क्रमानुगत।

क्रमानुयायी—(वि०, सं०) व्यवस्थित, नियमानुकूल, क्रमानुसारी।

क्रमान्वय—(वि०, सं०) क्रमानुयायी, यथाक्रम, क्रमागत, क्रमानुसार, क्रमानुकूल।

क्रमिक—(वि०, सं०) क्रमशः, यथाक्रम। [एक्सेसिव]

क्रमुक—(संज्ञा, पु०, सं०) सुपारी। नागरमोथा। एक प्राचीन देश। कपास का फल। पठानी लोध।

क्रमेल, क्रमेलक—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रमेलस (यूना०) उष्ट्र, ऊँट, शुतुर।

क्रय—(संज्ञा, पु०, सं०) मोल लेना, खरीदना।—**विक्रय**—व्यापार, खरीदने और बेचने का काम।

क्रयणीय—(वि०, सं०) क्रेय, क्रेतव्य, खरीदने-योग्य, मोल लेने के योग्य।

क्रयी—(**संज्ञा, पु०, सं०** **मोल लेने वाला**। [**क्रयिक**-(वि०) मोल लिया।]

क्रय्य—(वि०, सं०) जो बिक्री के लिए हो।

क्रव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मांस।

क्रव्याद—(संज्ञा, पु०, सं०) हिंसक, मांसभक्षी। चिता की आग।

क्रांत—(वि०, सं०) दबा या ढका हुआ। ग्रस्त, जिस पर आक्रमण हो, आक्रांत। आगे बढ़ा हुआ, जैसे—सीमाक्रान्त।

क्रान्ति—(संज्ञा, पु०, सं०) गति, कदम रखना। वह कल्पित वृत्त जिस पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता जान पड़ता है (खगोल)। अपक्रम, भारी परिवर्तन, फेरफार, उलट-फेर। उपद्रव, अत्याचार। दीप्ति, प्रकाश, कांति।—**वृत्त**-सूर्य-पथ (खगो०)। —**कारी**-(वि०, सं०) क्रांति या परिवर्तन करने वाला। क्रांतिकारक। [**क्रांतिकारिणी** (स्त्री०)] —**मंडल**-(संज्ञा, पु०, सं०) राशि-चक्र, सूर्य का कल्पित पथ।—**वाद**-(संज्ञा, पु०, सं०) परिवर्तनवाद। [**क्रांतिवादी** (वि०)]

क्रिमि—(संज्ञा, पु०, सं०) कीड़ा, कृमि। पेट मे कीड़ों का रोग।

क्रिमिजा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लाह, लाख।

क्रिय—(संज्ञा, पु०, सं०) मेषराशि।

क्रियचन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कृच्छ्रचांद्रायण] चांद्रायण व्रत।

क्रियमाण—(संज्ञा, पु०, सं०) तीन कर्मों में से एक। वर्तमान कर्म, जो किये जा रहे हों, जिनका फल आगे मिलेगा। प्रारब्ध कर्म (मीमां०)।

क्रिया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी काम का होना या किया जाना, कर्म। प्रयत्न, चेष्टा। गति, हरकत, [ऐक्शन]। हिलना-डोलना। अनुष्ठान, आरंभ। शब्द का वह भेद जिससे किसी काम या व्यापार का होना या किया जाना प्रगट हो—जैसे आना, जाना (व्या०)। शौचादि कर्म, नित्य कर्म। "नित्य क्रिया करि गुरु पहँ आये"—तुल० [रामा०]। श्राद्धादि प्रेत-कर्म, प्रेत-कृत्य। उपाय, विधि। शपथ। उपचार, चिकित्सा। रीति। [किरिया (दे०)]—**कर्म**-अंत्येष्टि क्रिया।—**चतुर**-(संज्ञा, पु०, सं०) क्रिया या घात में चतुर नायक। —**कुशल**-(वि०) काम करने में दक्ष।—**निष्ठ**-(वि०, सं०) संध्या-तर्पणादि नित्य कर्म करने वाला।—**पटु**-(वि०) चतुर, दक्ष, प्रवीण।—**पद**-(संज्ञा, पु०) वाक्य मे कार्य-सूचक शब्द (व्या०)।—**पर**-(वि०, सं०) क्रियापटु, सुकर्मा। —**पाद**-(संज्ञा, पु०, सं०) चतुष्पाद, व्यवहार का तीसरा पाद, साक्षियों का शपथ करना।—**भ्रष्ट**-(वि०, सं०) जिसका अनुष्ठान या धर्म-कर्म नष्ट हो।—**योग**-(संज्ञा, पु०, सं०) देव-पूजन, मंदिरादि बनवाना।—**रूप**-(संज्ञा, पु०, सं०) धातुरूप, आख्यात।—**लोप**-(संज्ञा, पु०, सं०) कर्म-निवृत्ति, कर्म-क्षय, क्रियापद का लुप्त होना। —**विदग्ध**-(वि०, सं०) क्रिया-कुशल, क्रिया-विधिज्ञ।—**विहीन**-(वि०, सं०) प्रयत्नहीन, अकर्मण्य, धर्म कर्महीन।—**विदग्धा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह नायिका जो नायक पर किसी क्रिया के द्वारा अपना भाव प्रगट करे।—**विशेषण** -(संज्ञा, पु०, सं०) वह शब्द जिससे क्रिया के किसी विशेष भाव या रीति से होने का बोध हो (आधु० व्या०) जैसे—कैसे, धीरे। **मुहा०— बिगड़ना**-सत्कर्म या चरित्र बिगड़ना तथा बुरा फल मिलना।

क्रियातिपत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अलंकार जिसमे प्रकृति से भिन्न किसी विषय का वर्णन कल्पना करके किया जाये, यह अतिशयोक्ति का एक भेद है।

क्रियान्वित—(वि०, सं०) क्रिया-युक्त।

क्रियार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) वेद में यज्ञादि कर्म-प्रतिपादक विधि-वाक्य।

क्रियावसन्त—(वि०, सं०) पराजित।

क्रियावान—(वि०, सं०) कर्मोद्यत, कर्म में नियुक्त। सच्चरित्र। कर्मनिष्ठ, कर्मठ, कर्मशील। धर्माचारी।

क्रिस्तान—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० क्रिश्चियन] ईसाई।—**क्रिस्तानी**-(वि०) ईसाइयों का।

क्रीट*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० किरीट] मुकुट के ऊपर धारण किया जाने वाला आभूषण।

क्रीडनक—(संज्ञा, पु०, सं०) खेल, खेलने की वस्तु।

क्रीडन—(संज्ञा, पु०, सं०) खेल, खेलना। [**क्रीडनीय**—(वि०)]।

क्रीडना—(क्रि०, अ०, दे०) क्रीड़ा या खेल करना। "प्रभु क्रीडत, मुनि, सिद्ध, सुर व्याकुल देखि कलेस"—तुलसी।

क्रीडा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खेल, कौतुक। रति, केलि।—**कौतुक**-(संज्ञा, पु०, सं०) खेल-तमाशा। —**चक्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) ६ यगणों का एक वृत्त (पिं०), महामोदकारी।—**चारी**-(वि०, सं०) कौतुकी, बाजीगर।—**जीवी**-(वि०, सं०) नट, कौतुकी, बाजीगर, क्रीडा-वृत्ति।—**वन**-प्रमोदवन, केलि-कानन, क्रीड़ा कानन।—**मृग**-खेल के पशु, घोड़ा, वानरादि।

क्रीडान, क्रीडन—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खेल, केलि, कौतुक, आमोद-प्रमोद, खेल-कूद। एक छंद या वृत्त (पिं०)।

क्रीडालय—कौतुकगृह।

क्रीत—(वि०, सं०) खरीदा हुआ।—**दास**—(संज्ञा, पु०, सं०) १५ प्रकार के दासों में से एक मोल लिया हुआ, क्रीतानुचर, क्रीतानुग।—**पुत्र**—(संज्ञा, पु०, सं०) १२ प्रकार के पुत्रों में से एक। खरीदा हुआ पुत्र।

क्रीतक—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रीत पुत्र, धन देकर माता- पिता से लिया गया पुत्र। १२ प्रकार के पुत्रों में से एक।

क्रुद्ध—(वि०, सं०) क्रोध से भरा हुआ, कोप-युक्त, क्रोधित, रुष्ट, सरोष।

क्रुमुक—(संज्ञा, पु०, सं०) सुपारी, पुंगीफल।

क्रुश्वा—(संज्ञा, पु०, सं०) शृगाल, सियार।

क्रूर—(वि०, सं०) पर-पीड़क, निर्दय। कठिन, तीक्ष्ण। "एते क्रूर करम अक्रूर ह्वै कराये जो"—रत्नाकर। (संज्ञा, पु०, सं०) १, ३, ५, ७, ९, ११ राशि। मति। लाल। कनेर। बाज। पक्षी। सफेद चील। रवि। मंगल। शनि। राहु। केतु। (ज्यौ० क्रूरग्रह)। [**क्रूरी** (स्त्री०)] [**क्रूरता, क्रूरत्वा, क्रूरताई,** (दे०) (संज्ञा, स्त्री०)]—**कर्मा**—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रूर काम, करने वाला। (वि०) निष्ठुर, दुरात्मा। (संज्ञा, पु०, सं०) सुरजमुखी। तितलौकी का पेड़।—**गंध**—(संज्ञा, पु०, सं०) उग्रगंध। गंधक, दैतेन्द्र।—**लोचन**—(संज्ञा, पु०, सं०) शनिग्रह।

क्रूरता—(संज्ञा, पु०, सं०) निष्ठुरता, निर्दयता, कठोरता, निठुराई।

क्रूराकार—(संज्ञा, पु०, सं०) रावण। (वि०) भयंकर आकार वाला।

क्रूराक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) शनि। निर्दय व्यक्ति।

क्रूराचार—(संज्ञा, पु०, सं०) निष्ठुर-व्यवहार। [**क्रूराचारी** (वि०)]

क्रूरात्मा—(वि०, सं०) दुष्ट प्रकृति वाला।

क्रेतव्य—(वि०, सं०) क्रेय, क्रयणीय, खरीदने के योग्य। [**क्रेतव्यता**—(संज्ञा, स्त्री०)]

क्रेता—(वि०, सं०) खरीदार, खरीदने वाला।

क्रेय—(वि०, सं०) क्रयणीय, खरीदने-योग्य।

क्रोड—(संज्ञा, पु०, सं०) दोनों बाँहों के बीच का भाग। (आलिंगन में) भुजांतर। वक्षःस्थल। गोद, कोल। अंक। अंकाला।—**क्रोडक**—(वि०, सं०) गोद लेने वाला।—**पत्र**—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी पुस्तक या समाचार-पत्र में उसकी पूर्ति के लिए ऊपरसे लगाया गया पत्र, पूरक, जमीमा, अतिरिक्त।

क्रोडी-पुत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) दत्तक पुत्र, गोद लिया लड़का।

क्रोध—(संज्ञा, पु०, सं०) चित्त का वह उग्रभाव जो कष्ट या हानि पहुँचाने वाले या अनुचित कार्य करने वाले के प्रति होता है, कोह (ब्र०) कोप, रोष, गुस्सा। ६० संवत्सरों में से ५९ वाँ।—**मूर्च्छित**—(संज्ञा, पु०, सं०) एक सुगंधित द्रव्य। (वि०) अत्यंत क्रोध से भरा हुआ।—**कातर**—(वि०, सं०)—क्रोध से कातर।—**विकल**—, **विह्वल**—(वि०, सं०) अतिक्रुद्ध।

क्रोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रोधयुक्त व्यक्ति कौशिक पुत्र। अयुत-पुत्रया देवातिथि के पिता। एक संवत्सर।

क्रोधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्ष प्रजापति की एक पुत्री।

क्रोधित*—(वि०) [हि० क्रोध + इत] कुपित, क्रुद्ध, रोषयुक्त, रुष्ट, सरोष, सक्रोध।

क्रोधी—(वि०, हि०) [सं० क्रोधिन्] क्रोध करने वाला, कोही (ब्र०)। [**क्रोधिनी** (स्त्री०)]

क्रोश—(संज्ञा, पु०, सं०) कोस, दो मील।

क्रौंच—(संज्ञा, पु०, सं०) करांकुल पक्षी, वक। एक पर्वत। ७ द्वीपों में से एक (पुराण०)। एक अस्त्र। एक वर्ण-वृत्त (पिं०)। "यत्क्रौंच-मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्"—वाल्मी०।

क्रौंचादन—(संज्ञा, पु०, सं०) मृणाल।

क्रौंचारुण—(पु०, सं०) व्यूहरचना का एक प्रकार।

क्रौंची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मादी कौंची। कश्यप ऋषि की एक पुत्री।

क्रौर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रूरता।

क्लांत—(वि०, सं०) थका हुआ, श्रान्त।

क्लांति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्रम, थकावट। [(वि०) क्लांतिकर, क्लांतिकारी, क्लांतिकारक]—**च्छिद**—(वि०, सं०) विश्राम। स्वास्थ्य।

क्लिन्न—(वि०, सं०) आर्द्र, भीगा, गीला, क्लेदयुक्त मैला। [**क्लिन्नता** (संज्ञा, स्त्री०)]

क्लिशित—(वि०, दे०) क्लेशित, दुखी।

क्लिश्यमान—(वि०, सं०) संतापित, पीड़ित।

क्लिष्ट—(वि०, सं०) क्लेशयुक्त। बेमेल (बात)। पूर्वापर विरुद्ध। (वाक्य) कठिन, कष्ट-साध्य। [**क्लिष्टता**

(संज्ञा, स्त्री०)] ।—क्लिष्टत्व-(पु०) कठिनता, काव्य में दुर्बोध-भाव-जन्य दोष (काव्य०) ।

क्लीव—(वि०, पु०, सं०) षंढ, नपुंसक । कायर, डरपोक, कादर । [**क्लीवता** (संज्ञा, स्त्री०)] [**क्लीवत्व** (संज्ञा, पु०, सं०)]

क्लेद—(संज्ञा, पु०, सं०) आर्द्रता । स्वेद, पसीना, गीलापन ।—**क्लेद्य**-(संज्ञा, पु०, सं०) "अच्छेद्योयमक्लेद्योयम्"—गीता० । "क्लेदावरोध्ये संताप"—[वैद्य०] ।

क्लेदक—(संज्ञा, पु०, सं०) पसीना लाने वाला, एक प्रकार का स्वेदोत्पादक कफ । देह की दस प्रकार की अग्नियों में से एक ।

क्लेदन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वेद लाने की क्रिया । —**क्लेदित**-(वि०) आर्द्र, गीला, स्वेदयुक्त ।

क्लेश—(संज्ञा, पु०, सं०) दुख, कष्ट, वेदना, पीड़ा । झगड़ा । भय । आयास । [कलेस (दे०)] —**क्लेशित**-(वि०) दुखित ।—**क्लेशापह**-(वि०, यौ०) क्लेशनाशक ।

क्लैय—(संज्ञा, पु०, सं०) क्लीवता ।

क्लोम—(संज्ञा, पु०, सं०) दाहिनी ओर का फेफड़ा, दक्षिण फुप्फुस ।

क्व—(क्रि०, वि०, सं०) कहाँ । "क्व सूर्य प्रभवो वंशः क्वाल्पविषया मतिः"—[रघु०] ।

क्वचित्—(क्रि०, वि०, सं०) कोई ही, शायद ही कोई, बहुत कम, कहीं । "क्वचित्कंथाधारी..."—भर्तृ० । "क्वचिदर्थः क्वचिन्मैत्री" ।

क्वण—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द, ध्वनि, (वीणादि की) ।—**क्वणित**-(वि०) शब्द करता हुआ । "क्वणित था करता कल नाद से"—हरिऔध ।

क्वणक—शब्दकारक ।

क्वाथ—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी में उबाल कर औषधियों का निकाला हुआ गाढ़ा रस, काढ़ा, जोशांदा । "क्वाथः स्याद रविदवंधनथनं"—लो० ।

क्वान—(संज्ञा, पु०, दे०) क्वण, झनकार । "बालयाकिंकिनी क्वान"—गं० भट्ट ।

क्वार—(संज्ञा, पु०, दे०) आश्विनमास, कुवाँर, क्वाँर । [कुआँर (दे०)] [**क्वारी** (वि०)]

क्वारपन, क्वारापन—(संज्ञा, पु०) [हिं० क्वारा + पन] कुमारपन, कौमार्य (सं०) ।

क्वारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुमार] बिना ब्याहा, कुआँरा, क्वाँरा ।—[**क्वारी**-(स्त्री०) कुआँरी]

क्वैला—(संज्ञा, पु०, दे०) कोयला, कोइला । "जरै काम क्वैला मनो"—केशव ।

क्वैली, क्वैलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कोकिल । "सुकुहू कुहू क्वैलिया कूकन लागी"—पद्मा० ।

क्षंतव्य—(वि०, सं०) क्षम्य, क्षमा करने योग्य । [**क्षंतव्यता** (संज्ञा, स्त्री०)]

क्षण, क्षणक—(संज्ञा, पु०, सं०) समय का सब से छोटा भाग ४/१५ पल । [**क्षणिक** (वि०)] **मुहा०**—**मात्र**-थोड़ी देर । काल, अवसर । उत्सव । पर्व का । दिन । [**छन, छिन** (ब्र०)] लक्ष्मा ।—**द**-(संज्ञा, पु०, सं०) जल । ज्योतिषी । रतौंधिया । —**दा**-(स्त्री०, सं०) रात्रि, निशा । बिजली । [छनदा (दे०)]—०**कर**-(संज्ञा, पु०) चन्द्रमा । [छनदाकर (दे०)]—**द्युति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिजली । [छनदुति (दे०)] क्षण-प्रभा ।—**ध्वंसी**-(वि०, सं०) अस्थिर, अस्थायी, क्षणविध्वंसी । "शरीरं-क्षणविध्वंसी" ।—**प्रति**-(अव्य०, सं०) सतत, अनवरत ।—**भंगु,(भंगुर)**-(वि०, यौ०, सं०) शीघ्र या क्षण में ही नष्ट होने वाला, अनित्य, नश्वर । "...कहै पद्माकर' विचारु छन-भङ्गुरै" । "तदपि तत्क्षणभंगु करोति च" ।—**रुचि**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) बिजली, प्रकाश, दीप्ति, क्षीण द्युति ।

क्षणदांध—(वि०) उल्लू की तरह अंधा, रतौंधी से पीड़ित । (संज्ञा, पु०) उल्लू । वह व्यक्ति जिसे रतौंधी हो ।

क्षणिक—(वि०, सं०) क्षण भर रहने वाला, अनित्य ।—**क्षणिका**-(स्त्री०) बिजली ।—**वाद**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) उत्पत्ति से दूसरे क्षण मे ही संसार में प्रत्येक वस्तु के नष्ट हो जाने का सिद्धान्त (बौद्ध) ।—**वादी**-(वि०, संज्ञा, पु०, सं०) बौद्ध, क्षणिकवादानुयायी ।

क्षणिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात, निशा ।

क्षत—(वि०, सं०) क्षत या आघात-युक्त, घाव-युक्त । (संज्ञा, पु०, सं०) घाव, व्रण, फोड़ा । आघात ।—**ज**-(वि०, सं०) क्षत से उत्पन्न, लाल, सुर्ख । (संज्ञा, पु०, सं०) रक्त, रुधिर, खून । घाव के कारण प्यास ।—**योनि**-(वि०, यौ०, सं०) पुरुष-समागम कृता स्त्री । [विलो० **अक्षतयोनि**—पुरुष-समागम-रहिता स्त्री ।] —**व्रत**-(वि०, सं०) नष्ट व्रत ।—**व्रण**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आघात-स्थान के चीरने से उत्पन्न घाव ।—**विक्षत**-(वि०, यौ०, सं०) घायल, लहू-लुहान, चोट खाया हुआ । "क्षत विक्षत होकर शरीर से बहने लगी रुधिर की धार"—मैथिली० ।

क्षतघ्नी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लाख, लाह।

क्षता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विवाह से पूर्व पर-पुरुष से दूषित सम्बन्ध रखने वाली कन्या। [**अक्षता** (विलो०)]

क्षताचार—(वि०, यौ०, सं०) आचार-च्युत, भ्रष्टाचारी।

क्षतारि—(वि०, सं०) विजयी, जीतनेवाला।

क्षताशौच—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) घायल होने से लगने वाला अशौच।

क्षति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हानि, क्षय, नाश। [छति, खति (दे०)] "का छति लाहु जीर्न धनु तोरे"—[रामा०]

क्षत्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) सारथि। दरबान। मछली। दासी-पुत्र। नियोग करने वाला पुरुष। [छत्ता (दे०)]।

क्षत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) बल। राष्ट्र। धन। जल। देह। क्षत्रिय। [छत्र (दे०)] [**क्षात्र्य** (संज्ञा, पु०)—**कर्म**—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षत्रियोचित कर्म, क्षात्र्य-कर्म, क्षत्राचार।—**धर्म**—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षत्रियों का धर्म, अध्ययन (शस्त्रास्त्र-विद्या, वेदादि का), दान, यज्ञ, प्रजापालनादि।—**प**—(संज्ञा, पु०) [सं० या पु०, फ़ा०) ईरान के प्राचीन मांडलिक राजाओं की उपाधि, जिसे भारत के शक राजाओं ने ग्रहण किया था। राष्ट्रपालक [छत्रप (दे०)]—**पति**—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षत्राधिपति। राजा, क्षत्रेश, क्षत्रधारी। [छत्रपति (दे०)] —**बन्धु**—(संज्ञा, पु०, सं०) निन्दित क्षत्रिय। —**योग**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक प्रकार का राज-योग (ज्यो०)।—**वेद**—(संज्ञा, पु०, सं०) धनुर्वेद।

क्षत्रान्तक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परशुराम।

क्षत्राणि—(संज्ञा, स्त्री०) वीर स्त्री, क्षत्रिया।

क्षत्रारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परशुराम।

क्षत्रार्ह—(वि०, यौ०, सं०) क्षत्रियोचित।

क्षत्रिय—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा की बाहु से उत्पन्न वर्ण विशेष, चार वर्णों में से दूसरा, क्षत्री। [छत्री (दे०)] इस वर्ण का मुख्य कार्य देश का शासन, पालन एवं संरक्षण करना है। राजा। [**क्षत्रिया, क्षत्राणी** (स्त्री०)] [(हि०) क्षत्रिन, छत्रिन, छत्रानी, छत्रिनी (दे०)]

क्षत्रियान्तक—(वि०, यौ०, सं०) परशुराम, क्षत्रियारि।

क्षत्रियोचित—(वि०, यौ०, सं०) क्षत्रियार्ह। क्षत्रिय के योग्य।

क्षपणक—(संज्ञा, पु०, सं०) नङ्गा रहने वाला यती (जैन), दिगम्बर। नागा। बौद्ध संन्यासी। राजा विक्रमादित्य की सभा के ९ रत्नों मे से दूसरे (६ वी सदी ई०)। (वि०, सं०) निर्लज्ज, उन्मत्त।

क्षपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात, निशा। [छपा (दे०)] हलदी। "क्षपानाथ लीन्हे रहै क्षत्र जाको"—केशव। "दिन-क्षपा-मध्य गतेव संध्या" —कालि०।—**कर**—(संज्ञा, पु०, सं०) निशाकर, चन्द्रमा। कपूर। क्षपेश, क्षपानाथ, क्षपापति। —**चर**—(संज्ञा, पु०, सं०) निशाचर, राक्षस। [**क्षपाचारी** (स्त्री०)]—**नाथ**—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा।

क्षपान्त—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सबेरा, प्रभात। "क्षपान्तकालीन क्षपेश की प्रभा"—सरस।

क्षपावसान—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ऊषा। प्रभात।

क्षम—(वि०, सं०) सशक्त, योग्य। समर्थ, उपयुक्त। (संज्ञा, पु०, सं०) शक्ति। बल।

क्षमता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) योग्यता, सामर्थ्य।

क्षमणीय—(वि०) [सं० क्षम+अनीयर] क्षमा के योग्य। [छमनीय (दे०)]

क्षमना, छमना*—(क्रि०, स०, दे०) क्षमा करना, मुआफ करना। "छमि सब करिहहिं कृपा विसेखी" —[रामा०]।

क्षमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सहिष्णुता, सहन-शक्ति। क्षांति, मुआफी, अन्यकृत दुख, दोषादि को सह लेने की चित-वृत्ति। पृथ्वी। एक की संख्या। दक्ष की कन्या। दुर्गा। रात्रि। कृपा। १३ वर्णों का एक वर्णवृत्त (पिं०)। राधिका की सखी। छिमा, छमा (ब्र०)।—**क्षमाई***—(संज्ञा, स्त्री०) क्षमा करने की क्रिया, क्षमता। [छमता (दे०)]।

क्षमाना, छमाना—(क्रि०, स०, दे०) मुआफ करना। [छमावना (दे०)] "निज अपराध छमावन करहू"—[रामा०]।

क्षमालु—(वि०, सं०) क्षमाशील।

क्षमावन्त—(वि०, पु०, सं०) क्षमायुक्त।

क्षमावान्—(वि०, पु०, सं०) क्षमा करने वाला, सहनशील। [**क्षमावती** (स्त्री०)]

क्षमाशील—(वि०, पु०, सं०) क्षमावान्, शांत प्रकृति का। [छमावन्त (दे०)]

क्षमित—(वि०, सं०) माफ किया हुआ।

क्षमितव्य—(वि०, सं०) क्षंतव्य, क्षमा करने योग्य।

क्षमित—(वि०, सं०) क्षमा किया हुआ।

क्षमिता—(वि०, सं०) सहिष्णु, क्षमाशील।

क्षमी—(वि०) [सं० क्षमा + ई—प्रत्य०] क्षमाशील। (वि०) [सं० क्षम] सशक्त, समर्थ। [छमी (दे०)] "सुर अति छमी असुर अति कोही"—सूर०।

क्षम्य—(वि०, सं०) क्षमा करने के योग्य।

क्षयंकर—(वि०सं०) नष्ट करने वाला। क्षय करने वाला।

क्षय—(संज्ञा, पु० सं०) धीरे-धीरे घटना, ह्रास। अपचय। कल्पांत, नाश, प्रलय। घर। यक्ष्मा रोग, क्षयी। अंत, समाप्ति। दो संक्रांतियों वाला एक मास जिसके तीन मास पूर्व और पीछे एक-एक अधिक मास पड़ता है (ज्यो०)। ६० संवत्सरों मे से अंतिम।—**काल**-प्रलय।—**कास**-यक्ष्मा रोग।—**पक्ष**-(संज्ञा, पु० सं०) कृष्ण पक्ष। —**मास**-(संज्ञा पु०) मलमास।

क्षयथु—(संज्ञा, पु० सं०) खाँसी।

क्षयिष्णु—(वि०) [सं० क्षय+इष्णुच्] नष्ट होने वाला, क्षयेच्छु, क्षयाकांक्षी।

क्षयी—(वि०, सं०) क्षय या नष्ट होने वाला, यक्ष्मा का रोगी। (संज्ञा, पु० सं०) चन्द्रमा। "क्षयी का यह देखो उल्लास"—गिरीश। (संज्ञा, स्त्री० सं०) तपेदिक, यक्ष्मा का रोग जिसमें कफ से फेफड़ा सड़ जाता, ज्वर रहता और शरीर धीरे-धीरे गलता जाता है।

क्षय्य—(वि०, सं०) क्षय होने के योग्य।

क्षर—(वि०, सं०) नाशवान। (संज्ञा, पु० सं०) जल। मेघ। जीवात्मा। शरीर। अज्ञान।

क्षरण—(संज्ञा, पु० सं०) रस-रस कर चूना, रसना, झरना। नाश होना। छूटना। स्राव होना। [**क्षरणीय, क्षरण्य** (वि०)]

क्षांत—(वि०, सं०) क्षमाशील। सहनशील। [छांत (दे०)] [**क्षांता**-(स्त्री०) धरती, पृथ्वी।]

क्षांति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) क्षमा, सहनशीलता, सहिष्णुता।

क्षात्र—(वि०, सं०) क्षत्रिय-सम्बन्धी, क्षात्र्य। (संज्ञा, पु० सं०) क्षत्रियत्व, क्षत्रियपन।

क्षाम—(वि०, सं०) क्षीण, कृश, दुबला। [**क्षामा** (स्त्री०)]।—**कंठ**-(वि०, यौ०) सूखा कंठ, मंद स्वर।

क्षामोदरी—(वि०, यौ० सं०) पतली कमर वाली स्त्री। अल्प। कमजोर।

क्षार—(संज्ञा, पु०, सं०) दाहक, या विस्फोटक औषधियों को जला कर या खनिज पदार्थों को पानी में घोल कर रासायनिक क्रिया से साफ करके बनाया हुआ नमक। [खार (दे०)] भस्म। नमक। सज्जी। शोरा। सुहागा। राख। समुद्री लवण। काँच। गुड़। (वि० सं०) खारा, क्षरणशील। [**क्षारता** (संज्ञा, स्त्री०)]—**पत्र**-(संज्ञा, पु० सं०) बथुआ का शाक।—**भूमि**-(संज्ञा, स्त्री० सं०) खारी, ऊसर भूमि, लोना मिट्टी की भूमि।—**मृत्तिका**-(संज्ञा, पु० सं०) खारी मिट्टी, लोना मिट्टी।—**लवण**-(संज्ञा, पु० सं०) खारी, नमक, क्षार से प्राप्त नमक।—**श्रेष्ठ**-(संज्ञा, पु० सं०) ढाक, पलास वृक्ष, किंशुक।—**सिंधु**-(संज्ञा, पु०, सं०) लवण समुद्र, क्षारार्णव, क्षाराब्धि।

क्षालन—(संज्ञा, पु० सं०) प्रक्षालन, धोना, स्वच्छ करना [**क्षालनीय, क्षाल्य** (वि०)]

क्षिति—(संज्ञा, स्त्री० सं०) पृथ्वी। वासस्थान। गोरोचन। क्षय। प्रलय काल। [छिति (दे०)]—**मंडल-भूमंडल**।—**ज**,—**जात**-(संज्ञा, पु०) मंगल ग्रह। नरकासुर। केंचुआ। वृक्ष। वह तिर्यग् वृत्त जिसकी दूरी आकाश के मध्य से ९० अंश पर हो (खगोल)। दृष्टि की पहुँच पर वह वृत्ताकार घेरा जहाँ पृथ्वी और आकाश दोनों मिले हुए जान पड़ें। धातु। उपधातु। पृथ्वी से उत्पन्न। पदार्थ। भौमासुर। [छितिज (दे०)] होराइजन (अं०) [**क्षितिजा**-सीता (स्त्री०)]—**पति**-(संज्ञा, पु०) राजा।—**मंडन**-(संज्ञा, पु०) ब्रह्मा, आदर्श पुरुष।—**मंडल**-(संज्ञा, पु० सं०) भूमंडल।

क्षितीश—(संज्ञा, पु० सं०) क्षितिपाल, क्षितिनाथ, राजा।

क्षितीश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) महीश, राजा, क्षितिपति, क्षितीन्द्र।

क्षिप्त—(वि०, सं०) फेंका हुआ, विकीर्ण। त्यक्त, अवज्ञात। अपमानित। पतित। वायु-रोग-ग्रस्त। चंचल। उचटा हुआ। (संज्ञा, पु०, सं०) चित्त की पाँच अवस्थाओं में से एक (योग०)।

क्षिप्र—(क्रि० वि०, सं०) सत्वर, द्रुत, शीघ्र, जल्दी, तुरन्त, तत्काल। (वि० सं०) तेज चलने वाला। [**क्षिप्रता** (संज्ञा, स्त्री०)]—**वाहिनी**-(वि०, सं०) वेग से बहने वाली।—**हस्त**-(वि०, सं०) शीघ्र काम करने वाला।

क्षीजन—(संज्ञा पु० सं०) बाँस। सरकण्डे की आवाज या सरसराहट।

क्षीण—(वि०, सं०) दुबला-पतला। सूक्ष्म। क्षयशील। [खीन, छीन (दे०)] घटा हुआ।—**चन्द्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) कृष्णपक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक का चन्द्रमा।

क्षीणता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) निर्बलता, दुर्बलता। सूक्ष्मता। [छीनता, खीनता (दे०)]

क्षीर—(संज्ञा, पु०, सं०) दूध, पय। [छीर (दे०)] "...धीर आक छीर हू न धारैं धसकत है"—रत्ना०।—**कंठ**-(संज्ञा, पु०, सं०) दुधमुँहा बच्चा। —**पाक**-खूब औटाया दूध या दूध में पकाया हुआ। —**सार**-(संज्ञा, पु०, सं०) मक्खन। द्रव पदार्थ। जल। पेड़ों का रस या दूध। [खीर, छीर (दे०)]—**काकोली**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अष्टवर्ग की काकोली जड़ी।—**घृत**-(संज्ञा, पु०, सं०) मक्खन।—**रज**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा। कमल। शंख। दही।—**क्षीरजा**-(स्त्री०) लक्ष्मी, कमला, रमा।—**धि**-(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र, क्षीर-सागर। क्षीरनिधि, क्षीरसमुद्र।—**व्रत**-(संज्ञा, पु०, सं०) पयाहार, केवल दूध पीकर रहने का व्रत। [**क्षीर-व्रती** (वि०)]—**सागर**-(संज्ञा, पु०, सं०) दूध का समुद्र (पुराण०) क्षीरोदधि, क्षीरसिंधु। क्षीरार्णव।—**सिंधु**-(संज्ञा, पु०, सं०) पयसागर। पयोनिधि।

क्षीरस—(संज्ञा, पु०, सं०) मलाई।

क्षीरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काकोली।

क्षीराब्धि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) क्षीर-सिंधु।

क्षीरिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काकोली। [खीरनी (दे०)]

क्षीरोद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) क्षीरसागर।—**तनया**-लक्ष्मी।

क्षीरोदधि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) क्षीरसिंधु।

क्षुण्ण—(वि०, सं०) अभ्यस्त। दलित। खंडित। संतापित, दुखित।

क्षुत्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूख, क्षुधा। "क्षुत्पिपासा न ते राम"—वाल्मी०।—**पिपासा**-(यौ०) भूख-प्यास।

क्षुताकुल—(वि०, यौ०, सं०) क्षुधा से पीड़ित। क्षुत् व्याकुल, क्षुताकुलित।

क्षुत्क्षाम—(वि०, यौ०, सं०) भूख से कृश।

क्षुद—(संज्ञा, पु०, सं०) आटा, मैदा, पिसान।

क्षुद्र—(वि०, सं०) कृपण, अधम। अल्प। क्रूर, खोटा। दरिद्र। [छुद्र (दे०)] (संज्ञा, पु०, सं०) चावल के कण। [**क्षुद्रता** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**घंटिका**-(संज्ञा, स्त्री०) घुँघरूदार करधनी, घुँघरू, किंकिणी।—**प्रकृति**-(वि०, यौ०, सं०) नीच प्रकृति या स्वभाव का।—**बुद्धि**-(वि०, यौ०, सं०) नीच बुद्धि वाला, मूर्ख।

क्षुद्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नीचता, ओछा-पन, उच्चापन। [छुद्रता (दे०)]

क्षुद्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेश्या। अमलोनी, लोनी। मधुमक्खी। जटामाँसी। बालछड़। कौडि-याला। हिचकी। "क्षुद्रायवानी·सहितो कषायः"—[वै० जी०]।

क्षुद्रावली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) क्षुद्र-घंटिका, घुँघरूदार करधनी, किंकिणी।

क्षुद्राशय—(वि०, यौ०, सं०) नीच प्रकृति, कमीना, महाशय का विलोम।

क्षुद्रिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटी घंटी।

क्षुधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भोजन करने की इच्छा, भूख। [छुधा (दे०)] **क्षुधालु**-(वि०) भुक्खड़।

क्षुधातुर—(वि०, यौ०, सं०) भूखा, क्षुधित, क्षुधावन्त, क्षुधावान।

क्षुधित—(वि०, सं०) भूखा, बुभुक्षित।—"क्षुधित नर क्या नहीं करता"—हितैषी।

क्षुप—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटी डालियों वाला वृक्ष, पौधा। रतिबंध। श्रीकृष्ण-सुत।

क्षुब्ध—(वि०, सं०) चञ्चल, अधीर, व्याकुल, भय-भीत, कुपित, क्रुद्ध। [**क्षुब्धता** (संज्ञा, स्त्री०)]

क्षुभित—(वि०, सं०) क्षुब्ध।

क्षुर—(संज्ञा, पु०, सं०) छुरा, उस्तरा। पशुओं के खुर। मूँज।—**धार**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक नरक। एक वाण। उस्तरे की धार।

क्षुरक—(संज्ञा, पु०, सं०) गोखरू।

क्षुरप्र—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का वाण। खुरपा।

क्षुरिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छुरी, चाकू। एक यजुर्वेदीय उपनिषद। पालकी का शाक।

क्षुरी—(संज्ञा, पु०) [सं० क्षुरिन्] नाई। खुर वाले पशु। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) चाकू, छुरी। [**क्षुरिनी** (स्त्री०)]

क्षुल्लक—(संज्ञा, पु०, सं०) कौड़ी। (वि०) नीच, क्षुद्र, तुच्छ। [**क्षुल्लकता** (संज्ञा, स्त्री०)]

क्षेत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) खेत, समतल भूमि। स्थान। उत्पत्ति-स्थान। प्रदेश। तीर्थ। स्त्री। शरीर।

अंतःकरण। रेखाओं से घिरा हुआ स्थान। द्रव्य। प्रकृति। गृह। नगर। मुफ्त भोजन मिलने का स्थान। **—गणित**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्षेत्रों के नापने, क्षेत्रफलादि निकालने की विधि बताने वाला गणित। **—ज**–(वि०, सं०) खेत से उत्पन्न। (संज्ञा, पु०, सं०) निस्सन्तान विधवा (या असमर्थ पति-युक्ता) के गर्भ से अन्य पुरुष-द्वारा उत्पन्न सन्तान। [**क्षेत्रजा** (स्त्री०)]**—ज्ञ**–(संज्ञा, पु०, सं०) जीवात्मा। परमात्मा। किसान। (वि०, सं०) जानकार, ज्ञाता, विद्वान। [**क्षेत्रज्ञा** (स्त्री०)]**—देव**–(संज्ञा, पु०, सं०) खेत के देवता।**—पाल**–(संज्ञा, पु०, सं०) खेत का रखवाला, एक प्रकार के भैरव। द्वारपाल। प्रधान-प्रबन्ध कर्ता। क्षेत्रपालक। **—पति**–(संज्ञा, पु०, सं०) खेतिहर। जीव। ईश्वर। क्षेत्राधिपति।**—फल**–(संज्ञा, पु०, सं०) किसी खेत का वर्गात्मक परिमाण, रकबा।**—विद्**–(संज्ञा, पु०, सं०) जीवात्मा। कृषि-शास्त्र-विशारद। क्षेत्रवेत्ता।

क्षेत्राजीव—(संज्ञा, पु०, सं०) कृषक, क्षेत्रोपजीवी।

क्षेत्राधिपति—(संज्ञा, पु०, सं०) खेत का देवता। मेघ। बारह राशियों के स्वामी। जमीदार। क्षेत्रपति, क्षेत्रेश।

क्षेत्री—(संज्ञा, पु०, सं०) खेत का मालिक। नियुक्ता स्त्री का विवाहित पति, स्वामी।

क्षेप—(संज्ञा, पु०, सं०) फेंकना। ठोकर। त्याग। घात। अक्षांश। शर। निंदा। दूरी। बिताना। जैसे —काल-क्षेप। [**क्षेपित** (वि०)]

क्षेपक—(वि०, सं०) फेंकने वाला। मिलाया हुआ। निंदनीय। मिश्रित, अशुद्ध भाग। (संज्ञा, पु०, सं०) ऊपर या पीछे से मिलाया हुआ अंश।

क्षेपण—(संज्ञा, पु०, सं०) फेंकना, गिराना। बिताना। निंदा। मिश्रण। [**क्षेपणीय, क्षिप्त** (वि०)]

क्षेपणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाव का डंडा या बल्ली।

क्षेम—(संज्ञा, पु०, सं०) सुरक्षा। प्राप्तवस्तु की रक्षा। [छेम (दे०)] (यौ०, संज्ञा, पु०, सं०) **—योग**–कुशल-मंगल। अभ्युदय। सुख। मुक्ति। धर्मशासन से उत्पन्न पुत्र।**—कृत**–(वि०, सं०) मंगलकर्ता।**—कर,—कारक, कारी**–(संज्ञा, पु०, सं०) मंगलकर।**—कुशल**–(संज्ञा, पु०, सं०) आनंद-मंगल।

क्षेमकरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सफेद गले की एक चील। एक देवी। कुशल करने वाली। [छेमकरी (दे०)] "छेमकरी कह छेम बिसेषी" —[रामा०]।**—मद,—दायक,—दाता**–(वि०, यौ०, सं०) क्षेमप्रद, मंगल प्रद। सुखद।

क्षेमेंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) काश्मीर-निवासी (११ वीं शताब्दी) संस्कृत के एक विद्वान् कवि, इनके २९ या ३० ग्रंथ हैं।

क्षैण्य—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्षीण का भाव, क्षीणता।

क्षोणि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी। एक की संख्या। [छोनी (दे०)] [**क्षोणिग**–(वि०) (सं०) क्षितिग।] (संज्ञा, पु०, सं०) मंगल ग्रह। **—देव**–(सं०) भू-देव, ब्राह्मण।**—प,—पति**–(संज्ञा, पु०, सं०) राजा, भूपति, भूप। [छोनिप (दे०)]

क्षोणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोनी (दे०) पृथ्वी।**—पति**–(सं०) राजा। "...छोनी मे के छोनीपति..."—तुल०।

क्षोणीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा।

क्षोद—(संज्ञा, पु०, सं०) बुकनी, चूर्ण।

क्षोभ—(संज्ञा, पु०, सं०) व्याकुलता, विकलता, घबराहट, भय। रञ्ज। शोक। क्रोध। [छोभ (दे०)] **क्षुब्ध, क्षुभित**–(वि०) "तजिय छोभ जनि छांड़िय छोहू"—[रामा०]

क्षोभण—(वि०, सं०) क्षोभित करने वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) काम के पाँच बाणों में से एक। क्षोभ करने का कार्य।

क्षोभित—(वि०, दे०) [सं० क्षोभ] [छोभित (दे०)] व्याकुल, चलायमान। भयभीत। क्रुद्ध, विचलित, क्षुब्ध।

क्षोभी—(वि०) [सं० क्षोभिन्] व्याकुल, चञ्चल।

क्षौणि, क्षौणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्षोणी, पृथ्वी। एक की संख्या।

क्षौद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षुद्र का भाव, क्षुद्रता। छोटी मक्खी का मधु। जल। धूल। चम्पावृक्ष। वर्णसङ्कर। "...मदासारिवोद्रवा क्षौद्रयुक्ता"—वै० जी। **क्षौद्रग**–(वि०) मधु से उत्पन्न पदार्थ। [**क्षौद्रज** (वि०)]

क्षौम—(संज्ञा, पु०, सं०) सन आदि से बना वस्त्र। अंडी। कपड़ा। अटारी के ऊपर का कोठा।

क्षौमावास—(संज्ञा, पु०, सं०) वस्त्रालय।

क्षौर—(संज्ञा, पु०, सं०) हजामत, मुंडन। बाल बनवाना।**—कर्म,—करण**–बाल बनवाने का कार्य।

क्षौरक, क्षौरिक—(संज्ञा, पु०, सं०) नाई, नापित, हज्जाम, क्षौरकारक ।

क्ष्मा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी । एक की संख्या । **—भुक्**-राजा ।**—भृत**-राजा । पर्वत ।

क्ष्वेड—(संज्ञा, पु०, सं०) अव्यक्त शब्द । विष । ध्वनि । (वि०, सं०) छिछोरा । कपटी ।

ख

ख—हिन्दी और संस्कृत की वर्णमाला में स्पर्श व्यञ्जनों के अंतर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर ।

खं—(संज्ञा, पु०) [सं० खन्] शून्य स्थान । बिल, छिद्र । आकाश, नभ, व्योम । निकलने का मार्ग । इंद्रिय । बिन्दु । शून्य, रिक्त । स्वर्ग । सुख । ब्रह्मा, विरंचि । मोक्ष, मुक्ति ।

खंकर—(संज्ञा, पु०, सं०) बालों की लट, अलक ।

खंख—(वि०, दे०) [सं० कंक] पोला, छूँछा । उजाड़, वीरान । [खंखर (दे०)]

खंखणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घंटी आदि की आवाज ।

खंखर—(वि०, दे०) वीरान, उजड़ा हुआ ।

खँखरा§—(संज्ञा, पु०, दे०) चावल आदि के पकाने का एक ताँबे का डेग । (वि०, दे०) छेददार, झीना, झिन्ना ।

खँखार—(संज्ञा, पु०, दे०) खखार, थूक । कफ ।

खंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खड्ग] तलवार । "राजै कर खंग, त्यौं निखंग परिकर मैं" । गैंडा ।

खंगड़—(संज्ञा, पु०, दे०) रद्दी वस्तु । **अंगड़**—, निकृष्ट वस्तुओं की राशि ।

खंगड़—(वि०) उजड्ड, अक्खड़ । स्पष्ट बात कहने वाला । चालबाज ।

खँगना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० क्षय] कम होना, घट जाना । न्यून होना । खाली या नष्ट होना ।

खंगर—(संज्ञा, पु०, प्रान्ती०) झामा, लोहे का मैल ।

खँगराना—(क्रि०, स०, दे०) जल से धोना ।

खँगहा—(वि०, दे०) [खाँग+हार प्रत्य०) निकले हुए दाँत वाला । (संज्ञा, पु०) गैंडा ।

खँगारना, खँगालना—(क्रि०, स०, दे०) पानी से यों ही साफ करना । खाली करना । [**खँघारना** (दे० प्रान्ती०)] [**खँगरवाना** (प्रे० रू०)]

खंगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० खँगना] कमी, घटी । टोटा, न्यूनता ।

खंगैल—(वि०, दे०) बड़े दाँत वाला ।

खँचना—(क्रि०, अ०) [हि० खाँचना] चिह्नित होना, निशान पड़ना । जड़ना । [**खँचित**-(वि०) रेखांकित, जटित ।]

खँचाना§—(क्रि०, सं०) [हि० खाँचना] अंकित करना । चिह्न बनाना । खीचना । जल्दी-जल्दी लिखना । [खँचवाना (दे०)] । "रख खँचाइ कहौं बल भाषी"—तुल० । [**खँचवाना** (प्रे० रू०)]

खँचिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खाँची, टोकरी, डलिया, [खचिया (दे०) ।]

खंज§—(संज्ञा, पु०, सं०) पैर जकड़ जाने का रोग, लँगड़ा, पंगु । *(संज्ञा, पु०) [सं० खंजन] खंजन पक्षी । (संज्ञा) एक छोटा बाजा । [**खंजता** (स्त्री०)]

खंजड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खंजरी, खंजली ।

खंजन—(संज्ञा, पु०, सं०) शरत से शीत काल तक दिखाई देने वाला एक प्रसिद्ध पक्षी, खंडरिच, ममोला । खञ्जन के रंग का घोड़ा । "खञ्जन मंजु तिरीछे नैननि"—[रामा०] ।

खंजना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खंजन से मिलती-जुलती एक चिड़िया । सरसों ।

खंजनाकृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खंजन की आकृति का एक पक्षी ।

खंजर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कटार, एक अस्त्र ।

खंजरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खंजरीट= एक ताल] डफली-सा एक बाजा । [खंजली (दे०)] (संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० खंजर] धारीदार कपड़ा, लहरियादार धारी ।

खंजरीट—(संज्ञा, पु०, सं०) ममोला, खञ्जन । "खेलत खञ्जरीट चटकारे"—सू० ।

खंजा—(संज्ञा, स्त्री०. सं०) एक वर्णार्ध सम वृत्त, जिसमें अंत लघु-युक्त २८ वर्ण सम चरणों में और अंत गुरु-युक्त ३१ वर्ण विषम में होते हैं (पिं०) (वि०) पंगु, लँगड़ा ।

खंड—(संज्ञा, पु०, सं०) भाग, टुकड़ा । अंश । देश । वर्ष । नौ की संख्या, समीकरण की एक क्रिया (गणि०)। काला नमक । दिशा । खाँड़ । चीनी । अध्याय । मरुभूमि का भाग—"सप्त-द्वीप नव खंड" । (वि०) खंडित । अपूर्ण, लघु, छोटा । (संज्ञा, पु०) [सं० खड्ग) खाँडा ।—**कथा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मंत्री या ब्राह्मण नायक तथा चार प्रकार की विरह के वर्णन से युक्त कथा । जिसमें करुण रस प्रधान रहता है, और

कथा पूरी नहीं रहती ।—**काव्य**–(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा कथात्मक, प्रबन्ध-काव्य, जिसमें काव्य के समस्त लक्षण न हों, जैसे—मेघदूत ।—**गुणा**–(संज्ञा, पु०) गुणक के खंड करके गुण्य को गुणित करने की रीति (गणि०) ।—**परशु**–(संज्ञा, पु०, सं०) महादेव । विष्णु, परशुराम । "खण्डपरशु को सोभिजै सभा-मध्य कोदंड"—[रामा०] ।—**पुरी** (**खँपुरी**)–(संज्ञा, स्त्री०,) [हि० खाँड़+पूरी] एक मेवादि भरी हुई मीठी पूड़ी ।—**प्रलय**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक चतुर्युगी के बाद का प्रलय, छोटा प्रलय ।—**बरा**–(संज्ञा, पु०) [हि० खाँड+बरा] मीठा बरा । —**भाग**–(संज्ञा, पु०) भाग देने की एक रीति (गणि०) ।—**मेरु**–(संज्ञा, पु०) पिंगल में एक क्रिया ।

खंडन—(संज्ञा, पु०, सं०) तोड़ना, भंजन । छेदना । किसी बात को अयथार्थ प्रमाणित करना । [विलो० **मंडन**] । [**खंडन-मंडन** (यौ०) **खंडनीय** (वि०)] ।

खंडना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० खंडन] टुकड़े-टुकड़े करना, तोड़ना । बात काटना, खण्डन करना । "मानौ कहूँ कलहूँ की कीन्हीं काल खंडना"—के० ।

खंडनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खंडन] मालगुजारी की किस्त, कर ।

खंडनीय—(वि०, सं०) खण्डन करने के योग्य, जो अयुक्त ठहराया जा सके ।

खँडरना—(क्रि०, स०, दे०) खण्डित करना । "ताहि सिय-पूत तिल तूल सम खण्डरै"—[रामा०]। [**खँडराना** (प्रे० रूप)] ।

खँडरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खंड+बरा हि०] बेसन का एक चौकोर बरा ।

खँडरिच—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खंजरीट] खञ्जन पक्षी, खँडैचा । [खँडरिचा (दे०)]

खँडवानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० खाँड़+पानी) खाँड का रस, शरबत, कन्या-पक्ष की ओर से बरातियों को जल-पान या शरबत भेजने की क्रिया, मिरचवान (प्रान्ती०) । "पानी देहि खँडवानी कुवहि खाँनु बहु मेलि"—[प०] ।

खँडसाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खंड+शाला] खाँड या शक्कर बनाने का कारखाना । [खँडसार (दे०)]

खँडहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खंड+घर हि०] टूटे-फूटे, या गिरे हुए मकान का बचा हुआ हिस्सा । **मुहा०—करना (होना**)–विनष्ट करना, उजाड़ देना (होना) ।

खंडित—(वि०, सं०) टूटा हुआ, भङ्ग, अपूर्ण, भग्न ।

खंडिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जिसका नायक रात को किसी अन्य नायिका के पास रहकर सबेरे आवे (नायिका०) । "पति तन औरी नारि के, रति के चिन्ह निहारि । दुखित होय सो खण्डिता, बरनत सुकवि बिचारि"—रस० ।

खँडिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खंड] छोटा टुकड़ा ।

खँडौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० खाँड+औरा प्रत्य०] मिश्री का लड्डू या ओला ।

खंतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कोन्तार, हि० अंतरा] दरार । कोना, अंतरा । छोटा गड्ढा ।

खंता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खनित्र] कुदाल, फावड़ा, खोदने का एक अस्त्र । [**खंती** (स्त्री०)] (वि०) खोदनेवाला ।

खंदक—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शहर या किले के चारों ओर की खाँई, बड़ा गड्ढा, खड्ड ।

खंदा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० खनना] खोदने वाला, खंता ।

खँधवाना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० खाली] खाली कराना, रिक्त कराना ।

खंधार*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्कन्धावार] छावनी, तंबू, डेरा, खेमा । कंधार । (संज्ञा, पु०) [सं० खंडपाल] राजा, सामंत, सरदार । (प्रा०) समूह, ढेर ।

खंधारी—(वि०, दे०) कंधार का, कंधारी ।

खँधियाना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० खाली] बाहर निकालना, खाली करना ।

खंभ, खंभा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्कंभ, स्तंभ] स्तम्भ, पत्थर, ईंट या लकड़ी आदि का लम्बा खड़ा टुकड़ा, जिसके आधार पर छत या छाजन रहती है । बड़ी लाट, आश्रय, सहारा । प्रधान, मुख्य । [कालम] [**खँभिया** (स्त्री० अल्पा०)] ।

खंभात—(संज्ञा, पु०) गुजरात का पश्चिम में स्थित एक राज्य । अरब सागर की एक खाड़ी ।

खँभार*—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० क्षोभ, प्रा० खाभ] अंदेशा, घबराहट, डर । शोक । झंझट । "फिरहु तो सब कर मिटइ खँभारू"—[रामा०] ।

खंभावती—(संज्ञा, स्त्री०) एक प्रकार की रागिनी ।
खंभिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा खंभा ।
खँसना—(क्रि०, अ०, दे०) खसकना, गिरना । "सुरपुर तें जनु खँसेउ जजाती"—[रामा०] । [**खँसाना** (प्रे० रूप)]
ख—(संज्ञा, पु०, सं०) गड्ढा, गर्त । निर्गम, निकास । छेद । बिल । इन्द्रिय । गले की प्राण-वायु वाली नली । कुँआ, कूप । आकाश । स्वर्ग । तीर का घाव । मुख । कर्म । विन्दु । ब्रह्म । शब्द । सुख, आनन्द । जन्मांक में १० वाँ घर ।—**मंडल**—व्योम-मंडल, वायु-मंडल ।
खई—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० क्षयी] क्षय । लड़ाई । झगड़ा । "सुत-सनेह तिय सकल कुटुम मिलि निस दिन होति खई"—सूर० ।
खक्खट—(वि०, सं०) कठोर, कड़ा, कर्कश ।
खखरा—(वि०, दे०) झीना (संज्ञा, पु०) बाँस का टोकरा ।
खखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० कहकहा] जोर की हँसी, अट्टहास, अनुभवी पुरुष । बड़ा, ऊँचा हाथी । [खक्खा (दे०)]
खखाना—(क्रि०, अ०, दे०) ठट्ठा मारकर हँसना ।
खखार—(संज्ञा, पु०, अनु०) गाढ़ा थूक या कफ़ के खखारने की क्रिया ।
खखारना—(क्रि०, अ०, अनु०) थूक या कफ बाहर निकालने के लिए शब्द-सहित वायु का गले से बाहर फेंकना ।
खखाअष्टवेदा—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ४८,००० (ज्यो०) ।
खखेटा—(संज्ञा, पु०, दे०) छिद्र । शंका, खटका, चिंता ।
खखेरना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० आखेट] दबाना । भगाना । घायल करना । पीछा करना । छेदना । व्याकुल करना ।
खखोरना—(क्रि०, अ०, दे०) खोदना, टटोलना, कोई वस्तु ढूँढ़ना, खखोलना ।
खखोल—(संज्ञा, पु०, दे०) चोर । **मुहा० चोर के घर में ।**—
खग—(संज्ञा, पु०, सं०) आकाशचारी, पक्षी । गंधर्व । बाण । ग्रह । तारा । बादल । देवता । सूर्य । चन्द्रमा । वायु । "खग जानै खग ही की भाषा" —तुलसी० ।—**केतु**—विष्णु ।—**नाथ**,—**नायक**, —**पति**—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य । गरुड़ । खगराज । खगेश । "सबकर मत खगनायक एहा" —तुलसी० ।
खगना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० खाँग= काँटा] चुभना, धँसना, लग जाना । लिप्त होना । उपट आना, अटक या अड़ जाना । चित्त में बैठना । प्रभाव पड़ना । "न सुगन्ध सनेह के ख्याल खगी" —दास० । "तेहि खेत खगिय सूरज बली"— [**खगाना** (प्रे० रू०)] ।
खगहा—(संज्ञा, पु०, दे०) गेंडा । (वि०) खग को मारने या नाश करने वाला ।
खगाधिपति, खगाधिराज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्य । चन्द्र । गरुड़ ।
खगेंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा ।
खगेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गरुड़ । सूर्य । चन्द्र । खगेन्द्र, खगाधिराज । [खगेश, खगेशा (दे०)]
खगोल—(संज्ञा, पु०, सं०) आकाश-मंडल, खगोल-विद्या ।—**विद्या**—नभ के नक्षत्र-ग्रहादि के ज्ञान प्राप्त करने की विद्या, ज्योतिष । [एस्ट्रानामी]
खगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चिड़िया ।
खग्ग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खड्ग] तलवार ।
खग्रास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्य या चन्द्र के समस्त मंडल के ढक जाने वाला ग्रहण, पूर्ण ग्रहण । [विलो० **खंडग्रास**] ।
खचन—(संज्ञा, पु०, सं०) बाँधने, जड़ने या अंकित करने की क्रिया ।
खचना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० खचन] जड़ा जाना । अंकित होना । रम या अड़ जाना, अटक रहना, फँसना । (क्रि०, स०) जड़ना, अंकित करना, बनाना ।
खचर—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य । मेघ । ग्रह, नक्षत्र । वायु । पक्षी । बाण, खेचर । (वि०) आकाशगामी । (संज्ञा, पु०) राक्षस । कसीस ।
खचरा—(वि०, दे०) [हि० खच्चर] दोगला, वर्णसङ्कर । दुष्ट, पाजी । कूड़ा-करकट ।
खचाखच—(क्रि०, वि०, अनु०) बहुत भरा हुआ, ठसाठस । [**खचाखची** (संज्ञा, स्त्री०)]
खचाना—(क्रि०, स०, दे०) खींचना, अंकित करना, शीघ्र लिखना, खचावना । **मुहा० अपनी**— अपने ही पर जोर देना । [**खचवाना** (प्रे० रू०)]
खचित—(वि०, सं०) चित्रित, लिखित । निर्मित । जड़ा हुआ । जटित ।
खचीना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लकीर, रेखा चिन्ह ।

खच्चर—(संज्ञा, पु०, दे०) गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक पशु। [**खच्चरी** (स्त्री०)]

खज*—(वि०, दे०) [सं० खाद्य, प्रा० खाज्ज] खाने योग्य। भक्ष्य।

खजक—(संज्ञा, पु०, सं०) मथानी, जिससे मट्ठा मथा जाता है।

खजप—(संज्ञा, पु०, सं०) घी।

खजरा—(वि०, दे०) मिलावटी, बेंडरी, मगरा।

खजला—(संज्ञा, पु०, दे०) खाजा।

खजहजा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खाद्याद्य] खाने के योग्य फल या मेवा।

खजहा—(वि०, दे०) खाज रोगी।

खजानची—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) खजाने का मालिक, कोषाध्यक्ष, रोकड़िया।

खजाना, खजीना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) धन या अन्य पदार्थों के संग्रह का स्थान, धनागार, राजस्व, कर, कोश। भंडार, आगार, समूह।

खजुआ, खजुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) खाजा मिठाई। [खाभा (दे०)]

खजुराऽ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० खजूर] सिर की चोटी गूँधने की डोरी (स्त्रियों की)।

खजुरी, खजुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खुजली, खाज। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० खाजा] खाजे की सी एक मिठाई।

खजूर—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) [सं० खर्जूर] ताड़ की जाति का एक पेड़ जिसके छोहारे जैसे फल खाये जाते हैं, एक मिठाई। (स्त्री० अल्पा०) खजूरी। [**खजूरी, खजूरिया** (वि०)]

खजूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) गाजर, एक विषैला कीड़ा। [कानखजूरा (दे०)]

खजूरी—(वि०) [क्रि० खजूर] खजूर का, खजूर सा। तीन लर का गुँथा केश-कलाप या डोरा।

खज्योति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) आकाश का प्रकाश। बिजली, खद्युति।

खट—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) दो कड़ी चीजों के टकराने या कड़ी चीज के टूटने का शब्द, ठोंकने-पीटने की आवाज। (संज्ञा, पु०, दे०) षट् (सं०) छः। कफ। कुल्हाड़ी। (संज्ञा, स्त्री०) खाट। घूसा। अंधकूप। **मुहा०—से**-चट से, तुरंत, शीघ्र, सत्वर।

खटक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खटका, आशंका, चिंता। खटखटाने का शब्द।

खटकना—(क्रि०, अ०, अनु०) खटखट शब्द होना, टकराने या टूटने का शब्द होना। रह-रह कर दर्द होना। बुरा मालूम होना। खलना। विरक्त होना : उचटना। डरना। परस्पर झगड़ा होना। अनिष्ट की आशंका होना। ठीक न जान पड़ना। चिन्ता उत्पन्न करना। गड़ना, चुभना, ध्यान में धँसना। "खटकत है जिय माँहि कियो जो बिना विचारं"—गिर०। (क्रि०, स०, दे०)· [हि० खटकना] खटखट शब्द करना। ठोंकना। हिलाना। बजाना। शंका उत्पन्न करना। [**खटकवाना** (प्रे० क्रि०)]

खटका—(संज्ञा, पु०) [हि० खटकना] खटखट शब्द, टकराने या पीटने का शब्द,। डर, आशंका, चिंता। [खुटका (दे०)] पेंच या कमानी, जिसके दबाने या घुमाने आदि से कोई चीज खुले या बंद हो, सिटकिनी या बिल्ली (किवाड़ की)। चिड़ियों के उड़ाने का पेड़ मे बँधा हुआ काठ का टुकड़ा।

खटकीरा, खटकीड़ा—(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) खटमल, खाट का एक कीड़ा।

खटकुल—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) षटकुल (सं०)। कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के ६ प्रमुख वंश।

खटखट—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) झंझट। ठोंकने-पीटने का शब्द। झमेला, झगड़ा, लड़ाई, खटपट, बखेड़ा। [**खटखटिया** (वि०)]

खटखटाना—(क्रि० स०, अनु०) खड़खड़ाना, खटखट करना। पुकारना, बुलाना। सचेत करना, सूचना देना।

खटना—(क्रि० स०, दे०) धन कमाना। (क्रि०-अ०) काम-धंधे में लगना। चलना।

खटपट—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) अनबन, लड़ाई। ठोंकने-पीटने आदि का शब्द।

खटपटो—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लकड़ी की चप्पल।

खटपद—(संज्ञा, पु०, दे०) षटपद (सं०), भौंरा, भ्रमर, द्विरेफ, मधुप।

खटपाटी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खाट+पाटी] खाट की पाटी। खटवाट, लड़ाई, झगड़ा।

खटबिनवा, खटबुना—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० खाट+बुनना] चारपाई आदि बुनने वाला।

खटमल—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० खाट+मल=मैल] खाट या कुर्सियों में होने वाला एक छोटा लाल कीड़ा, खटकीरा।

खटमिट्ठा—(वि०, यौ०, दे०) [हि० खट्टा+मिट्ठा] कुछ खट्टा कुछ मीठा। [**खटमिट्ठी** (स्त्री०)]

खटमुख—(संज्ञा, पु०, दे०) षट्मुख (सं०)।

खटरस—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) षट्रस (सं०), छः स्वाद। "खटरस व्यंजन आनि बनाये"।

खटराग—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० षट्राग] अनमेल, झंझट, बखेड़ा, व्यर्थ वस्तुएँ। छः राग।

खटला—(संज्ञा, पु०, दे०) खाट आदि वस्तुएँ, खाट, शय्या। व्यर्थ का सामान। [खटोला (दे०)]

खटहट—(वि०, दे०) बिना बिछौं (बिस्तर-बिना) खटिया, खरहर (प्रा०)।

खटाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खट्टा] खट्टापन, तुरशी। खट्टी चीज। रंजिश, अनबन, मन-मुटाव। **मुहा०—में डालना**-द्विविधा में रखना, निर्णय न करना, किसी कार्य के करने में विलंब करना।—**में पड़ना**-द्विविधा में पड़ना, अनिश्चित रहना।

खटाखट—(संज्ञा, पु०, अनु०) ठोकने-पीटने आदि का लगातार शब्द। (क्रि० वि०) खटखट शब्द के साथ। शीघ्र, बिना रुकावट के। बिना डर के, बेधड़क, निर्भीकता से।

खटाना—(क्रि० अ०) [हि० खट्टा] किसी वस्तु में खट्टापन आना, खट्टा होना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० स्कन्ध] निबाह होना, निभना। ठहरना, अधिक समय तक चलना या टिकना। जाँच मे पूरा होना। [**खटाऊ**-(वि०) खटानेवाला, टिकने वाला, टिकाऊ]

खटापटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खटपट, अनबन, झगड़ा, कहा-सुनी।

खटाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० खटाना] निर्वाह, गुज़र, निभाव, ठहराव।

खटास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खट्वास] गंध-विलाव। (स्त्री०) [हि० खट्टा] खट्टापन, तुरशी।

खटिक, खटीक—(संज्ञा, पु०, दे०) [**खट्टिक** (सं०)] एक छोटी तरकारी बेचने वाली हिंदू जाति। [**खटकिन** (स्त्री०)]

खटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० खाट] छोटी चारपाई, खाट, खटोली। "खटहट खटिया बतकट जोय"—घाघ।

खटेट, खटेहट—(वि०, दे०) [हि० खाट + एटी प्रत्य०] बिना बिछौने की। [**खटेटी** (स्त्री०)]

खटोलना, खटोला—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० खाट +ओला—प्रत्य०] छोटी खाट। [खटोलवा (दे०)] खटोली। [**छोटा खटोला** (स्त्री० अल्प०)]

खट्ट—(वि०, सं०) खट्टा।

खट्टा—(वि०, दे०) [सं० कटु] अम्ल, तुर्श, कच्चे आम या इमली के स्वाद सा। [**खट्टी** (स्त्री०)] **मुहा० जी—होना**-अप्रसन्न होना। दिल फिर जाना, ऊब जाना। (संज्ञा, पु०) गलगल नामक फल।—**मीठा**-(वि०) खटमिट्ठा। (संज्ञा, पु०) भला-बुरा। [**खट्टा-मीठी**-(स्त्री० दे०) बुरी-भली। (बात)। [खाटी-मीठी (दे०)] "रहिगे कहत न खाटी मीठो"—तुलसी०।—(**टी**) **कहना**-बुरी, अप्रिय बात कहना।

खट्टाश—(संज्ञा, पु०, सं०) गंधविलाव।

खट्टिक—(संज्ञा, पु०, सं०) खटिक। कसाई। चिड़ी-मार।

खट्टी—(संज्ञा, पु०) [हि० खट्टा] खट्टा नीबू, इमली।

खट्टू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० खाना] कमाने वाला, मजूर, चाकर।

खट्वांग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चारपाई का पाया या पाटी। शिव का एक अस्त्र। प्रायश्चित के समय का भिक्षा-पात्र। एक मुद्रा विशेष (तंत्र०)।

खट्वा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खटिया, खाट।

खडंजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० खड़ा+अंग ईंटों की खड़ी चुनाई, खूब पकी ईंट।

खड़क—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) खटक।

खड़कना—(क्रि० अ०, हि०) खटकना।

खड़खड़ा—(संज्ञा, पु०, अनु०) खटखटा। घोड़ों के सधाने का एक काठ का गाड़ी-जैसा ढाँचा।

खड़खड़ाना—(क्रि० अ०, अनु०) कड़ी वस्तुओं का आपस मे टकराकर शब्द करना, टकराना। (क्रि० वि०, हि०) कड़ी वस्तुओं का टकराना।

खड़खड़िया—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खड़खड़ाना] पालकी, पीनस।

खड्ग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खड्ग] खंग, तलवार, असि। [**खड्गी** (वि०, दे०, स्त्री०)]

खड्गी—(वि०, दे०) [सं० खड्गी] तलवार वाला। (संज्ञा, पु०) [सं० खड्ग] गैंडा।

खड्ज—(संज्ञा, पु०, दे०) षड्ज (सं०)।

खड़बड़—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) खट-खट शब्द। उलट-फेर, हलचल, खलबल।

खड़बड़ाना—(क्रि० अ०, अनु०) घबड़ाना, बेतरतीब होना। (क्रि० स०) वस्तुओं को उलट-पलट कर खड़बड़ शब्द करना, उलटना-पलटना, घबरा देना। [**खड़बड़ाहट-खड़बड़ी** (संज्ञा, स्त्री०)]

खड़बड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) व्यतिक्रम, उलट-फेर, हलचल ।

खड़बिड़ा—(वि०) ऊबड़-खाबड़ ।

खड़बीहड़—(वि०, दे०) खड़बिड़ा, ऊँचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़ ।

खड़मंडल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खंड+मंडल] गड़बड़ [खरमंडल (दे०)]

खड़सान—(संज्ञा, पु०, दे०) अस्त्र तेज करने का पत्थर ।

खड़ा—(वि०) [सं० खड़क=खभा, थूनी] ऊपर को सीधा उठा हुआ, दंडायमान । ठहरा (टिका) हुआ, स्थिर, प्रस्तुत । तैयार । उद्यत, आरंभ । स्थापित, निर्मित । बिना उखाड़ा या काटा हुआ । बिना पका (फसल) असिद्ध, कच्चा । समूचा, पूरा (खड़ा चना) **मुहा० खड़े**—(ड़े)-तुरंत, शीघ्र, जल्दी में ।—**जवाब**-चटपट किया गया इनकार, कोरा उत्तर । —**होना**-(१) सहायता देना, तैयार होना । **मार्ग में**-(२) विरोध करना, रोकना ।—**करना**-कटिबद्ध बनाना, तैयार करना, प्रेरित करना, विरोध के लिये उपस्थित करना ।

खड़ाऊँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [क्रि० काठ+पॉव या खटखट अनु०] पादुका, काठ का खुला जूता । [खराऊँ (दे०)]

खड़ाका—(संज्ञा, पु०) खड़कने की आवाज ।

खड़ानन—(संज्ञा, पु०) कार्त्तिकेय, शंकर के पुत्र ।

खड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खटिका] एक प्रकार की सफेद मिट्टी, खरिया, खड़ी ।

खड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खरी, खड़िया । खड़ा का वि० स्त्रीलिंग ।—**बोली**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हिं०) दिल्ली के आस-पास बोली जाने वाली पश्चिमी हिन्दी, जिसमे उर्दू और वर्तमान हिंदी-गद्य लिखा जाता है । चलतू बोली, ठेठ भाषा, कच्ची (असंस्कृत) बोली, ग्राम्य भाषा, अपरिपक्व भाषा ।

खड़ुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) कड़ा, चूड़ा । [चुरवा (दे०)] बलय (सं०) ।

खड्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) तलवार, खाँड़ा । गैंड़ा । चोट । एक जंतु । तांत्रिक-मुद्रा विशेष । [**खड्गी, खड्गधारी** (वि०)]—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तलवार जैसे पत्तों वाला यमपुरी का एक वृक्ष ।—**पाणि**-(वि०, यौ०, सं०) खड्ग-धारी ।

खड्गी—(संज्ञा, पु०) [सं० खड्गिन्] खड्ग-धारी । गैंडा ।

खड्ड, खड्ढा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खात] गड्ढा । अधिक रगड़ से उत्पन्न दाग । खड्ढा ।

खत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षत] घाव, जखम ।—**खोट**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० क्षत+खड्ड हिं०] घाव के ऊपर की पपड़ी, खुरंड ।

ख़त—(संज्ञा, पु०, अ०) पत्र, लिखावट । रेखा । कान के पास के बाल । दाढ़ी के बाल । कलम की नोक ।

खतना—(संज्ञा, पु०, अ०) सुन्नत, मुसलमानी ।

खतम—(वि०) [अ० खतम] पूर्ण, समाप्त । **मुहा०—करना**-मार डालना ।

खतमी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) गुलखैरू की जाति का एक पौधा ।

खतर, खतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) डर, आशंका, भय ।

खतरी—(संज्ञा, पु०, दे०) एक क्षत्रिय जाति, खत्री । [**खतरानी, खत्रानी** (स्त्री०)]

खतरेटा—(दे०) खत्री, खत्री का लड़का ।

ख़तहा—(संज्ञा, पु०, दे०) खत, खता । फोड़ा, घाव । अपराध, दोष । भूल, धोखा, त्रुटि ।

ख़ता—(संज्ञा, पु०, अ०) क़सूर, अपराध, भूल, गलती । धोखा । [खता (दे०)] "कोउ खता न पावै"—गिरधारी ।

खतावार—(वि०) [अ० खता+वार फ़ा०] दोषी, अपराधी ।

खति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्षति (सं०) ।

खतियाना—(क्रि० स०, हिं०) आय-व्यय-क्रय, विक्रयादि को खाते मे अलग-अलग दर्ज करना, खाता लिखना ।

खतियौनी, खतौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० खतियाना] हिसाब की बही, खाता । पटवारियों का एक रजिस्टर । खतियान का काम ।

खत्ता—(संज्ञा, पु०, दे०)] सं० खात] गड्ढा, अन्न रखने का बड़ा गहरा स्थान । [**खत्ती** (स्त्री०) **खौं** (प्रान्ती०)]

खत्म—(संज्ञा, पु०, अ०) खतम, समाप्त । **मुहा० किसी को (का)—करना (होना)**-मार डालना (मर जाना) ।

खत्री—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षत्रिय] हिंदुओं में एक क्षत्रिय जाति । [**खतरानी, खत्रानी** (स्त्री०)]

खदंग, खदंगी—(संज्ञा, पु०, दे०) बाण । "जंबुर कमानै तीर खदंगी"—जायसी ।

खदबदाना—(क्रि०, अ०, अनु०) उबलने का शब्द । [खुदबुदाना (दे०)]

खदरा—(वि०, दे०) बेकार, रद्दी ।

खदान—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खोदना] आकर, खानि, खान, धातु आदि के निकालने को खोदा गया गड्ढा । उत्पत्ति-स्थान, उद्गम । राशि, समूह ।

खदिर—(संज्ञा, पु०, सं०) खैर का पेड़, कत्था । चन्द्रमा । इन्द्र ।

खदेरना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० खेदना] दूर करना, पीछा करना, खदेड़ना ।

खद्दड़, खद्दर—(संज्ञा, पु०, दे०) हाथ के कते सूत का वस्त्र, खादी । "देसकौ दरिद्दर तौ खद्दर भजावे लेना" । "मूँद हित दर न दें पहन खद्दर" —हरिऔध ।

खद्योत—(संज्ञा, पु०, सं०) जुगनू, पटबीजन । सूर्य । जींगना । " निशि तम-घन खद्योत विराजा" —तुलसी० ।

खन*—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षण (सं०), समय, तुरन्त । वृक्ष । "खन भीतर खन बाहिर आवति" —सुबे० । (संज्ञा, पु०, दे०,) [सं० खंड] खण्ड, टुकड़ा ।

खनक—(संज्ञा, पु०, सं०) खोदने वाला । चूहा । सेंध लगाने वाला । सोना आदि के निकालने का स्थान, खान । .भूतत्व-शास्त्रज्ञ । (संज्ञा, स्त्री० अनु०) धातु-खंडों के टकराने और बजने का शब्द । "तनक तनक तामैं होति खनक चुरीन कौ"—देव ।

खनकना—(क्रि०, अ०, अनु०) खनखनाना, धातु-खण्डों के टकराने का शब्द ।

खनकाना—(क्रि० स०, अनु०) खनखनाना, खन-खन शब्द करना ।

खनखजूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) खजूरा ।

खनखनाना—(क्रि०, अ०, अनु०) खनकना । (क्रि०, स०, अनु०) खनकाना ।

खनन—(संज्ञा, पु०, सं०) खोदना, गोड़ना, विदारना ।

खनना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० खनन] खोदना । (वि०) खननहार । [**खनाना** (क्रि० स०), **खनवाना**-(प्रे० क्रि०) खोदने का काम कराना]

खनि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आकर, खान । (पू० क्रि०) खोदकर । "वह खनि सुखमा की, मंजु हीरा कहाँ है"—हरिऔध ।

खनिज—(वि०, सं०) खान से निकाला हुआ, खानिज, आकरज । [मिनरल] ।—**विज्ञान**—(संज्ञा, पु०, सं०) वह विज्ञान जिसमें खान और खनिज पदार्थों का विवेचन होता है ।

खनिता—(संज्ञा, पु०, सं०) खोदनेवाला ।

खनित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) खोदने का अस्त्र । [खन्ता (दे०)]

खन्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खनित्र] खोदने का अस्त्र । [**खन्ती** (स्त्री०)]

खन्ना—(संज्ञा, पु०) चारा काटने की जगह । खत्रियों की एक जाति ।

खपची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [तु० कमची] बाँस की पतली, लचीली तीली, कमची, खपाची । [**खपांच** (पु०)]

खपटा—(संज्ञा, पु०, दे०) खपरा, ठीकरा ।

खपड़ा, खपरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खर्पर] मकान छाने का मिट्टी का पका हुआ पटरे के आकार का टुकड़ा । मिट्टी का भिक्षा-पात्र, खप्पर, ठीकरा । कछुए की पीठ का कड़ा ढक्कन ।

खपड़ी, खपरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खर्पर] नाँद सा मिट्टी का छोटा बरतन, घड़े का टूटा हिस्सा । खोपड़ी ।

खपड़ैल, खपरैल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० खपड़ा+ऐल प्रत्य०] खपरों से छाई हुई घर की छत ।

खपत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० खपना] समाई, गुंजाइश, माल की कटती या बिक्री । [**खपती** (स्त्री०)]

खपना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० क्षेपण] किसी प्रकार व्यय होना, काम में आना । कटना, चल जाना, निभना । नष्ट होना । तंग होना ।

खपरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खर्परी] एक भूरा खनिज पदार्थ, दर्विका, रसक ।

खपांच—(संज्ञा, पु०, दे०) [तु० कमाच] खपाच, खपची । [**खपाँची** (स्त्री०)]

खपाना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० क्षेपण] काम में लाना, व्यय करना । **मुहा० माथा (सिर)—, खोपड़ी—**; सिर पच्ची करना, सोचते-सोचते हैरान होना । निर्वाह कराना, निभाना, नष्ट या समाप्त करना, तंग करना ।

खपुआ—(वि०, दे०) डरपोक । (संज्ञा, पु०) दरवाजे के काम आने वाली एक लकड़ी ।

खपुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गंधर्व-नगर, आकाश-नगर (पुरा०), राजा हरिश्चन्द्र की नभ-नगरी।

खपुष्प—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आकाश-कुसुम। असभव बात, अनहोनी घटना।

खप्पर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खर्पर] तसले का सा पात्र, भिक्षा-पात्र। खोपड़ी। **मुहा०—भरना (चढ़ाना)**-खप्पर में मदिरादि भर कर देवी पर चढ़ाना।

ख़फ़गी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अप्रसन्नता, क्रोध, रोष, नाराज़गी।

ख़फ़ा—(वि०, फ़ा०) नाराज, अप्रसन्न, रुष्ट।

ख़फ़ीफ़—(वि०, अ०) थोड़ा, हलका। तुच्छ। किंचित, अल्प। लज्जित।

खफीफा (जज)—(संज्ञा, पु०, यौ०, अ०) छोटे माल के मुक़दमे करने वाला न्यायाधीश।

खबर, खबरि, खबरिया—(संज्ञा, स्त्री०, अ०, दे०) समाचार, वृत्तांत, हाल, सूचना। जानकारी। संदेश। चेत, सुधि, संज्ञा। पता, खोज। **मुहा०—उड़ाना, उड़ना**-चर्चा फैलाना (फैलना), अफ़वाह होना।—**लेना**-सहायता करना, सहानुभूति दिखाना। दंड देना।—**करना (देना)**-सूचना देना।—**गीरी**-(संज्ञा, स्त्री०) देख-भाल।—**दार**-(वि०, फ़ा०) होशियार, सजग, सचेत, सतर्क।—**दारी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सावधानी।

खबसा—(संज्ञा, पु०, दे०) पंक, कीचड़।

ख़बीस—(संज्ञा, पु०, अ०) दुष्ट, भयंकर। दानव, दैत्य, असुर, राक्षस। (यौ०) २०० की संख्या।

खबेद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ४० की संख्या।

खबेदास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ४० से भाग देने पर प्राप्त। "खाबदस छटीयुक्ता"—ज्यो०।

ख़ब्त—(संज्ञा, पु०, अ०) पागलपन, सनक, झक्क। [ख़ब्ती-(वि०) सनकी, झक्की]

खब्बा—(वि०, दे०,) बाँया हत्था।

खभ—(संज्ञा, पु०, सं०) ताल, भुजा, खम्भ।

खभरछठ—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) गड़बड़ी, अस्तव्यस्तता, अव्यवस्था।

खभरना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० भरना] मिलाना, उथल-पुथल करना।

खभार, खभारू—(संज्ञा, पु०, दे०) चिंता, दुःख। "किहेहु न नैसुक हिये खभारा"—रघुराज। डर, व्याकुलता, कबार। "...कपि दल भयउ खभार" —तुलसी०। (यौ०) आकाश का बोझा।

खम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) टेढ़ापन, बक्रता, झुकाव। **मुहा०—खाना**-मुड़ना, झुकना। "तीन खम खाता है यों लफ़्जे कमर तहरीर में"। दबाना, हारना।—**ठोंकना**-लड़ने के लिए ताल ठोंकना, दृढ़ता या तत्परता दिखाना।—**ठोंककर**-जोर दे कर, निश्चय-पूर्वक, बलपूर्वक।

खमकना—(क्रि० अ०, दे०) ठमकना, खमखम शब्द करना। [**खमक (संज्ञा, स्त्री०)**]

ख़मदम—(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० खम+दम] पुरुषार्थ, साहस, बल।

ख़मसा—(संज्ञा, पु०) [अ० खमसः=पाँच सम्बन्धी) एक प्रकार की गजल।

ख़मा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्षमा। [छिमा, छमा (दे०)]

ख़मीर—(संज्ञा, पु०, अ०) गूँधे हुए आटे का सड़ाव। कटहल। अनन्नास आदि का सड़ाव जो पीने की तम्बाकू में डाला जाता है। स्वभाव, प्रकृति। माया।

ख़मीरा—(वि०, पु०, अ०) खमीर से बनाया हुआ, शीरे में पका कर बनाई हुई दवा, जैसे खमीर बनफ़सा। [**ख़मीरी (स्त्री०)**] स्तंभ।

खमीलन—(संज्ञा, पु०, दे०) थकावट, क्लांति, शिथिलता।

खम्बा, खम्भा—(संज्ञा, पु०, दे०) खम्भ, स्तंभ (सं०)।

खम्माचि, खमाँच, खमाच—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खंभावती] मालकोस राग की दूसरी रागिनी (संगी०)।

खय*—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षय (सं०)।

खया—(संज्ञा, पु०, दे०) खवा, भुजमूल। अधिक "...करकत नैन खये"।

ख़यानत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) धरोहर, धरी वस्तु का न देना या कम देना, गबन, चोरी, बेईमानी। **मुहा० अमानत में—करना**-किसी की धरोहर बिना अनुमति के खर्च करना।

ख़याल, ख्याल—(संज्ञा, पु०, अ०) ध्यान, स्मृति। राय, अनुमति, विचार। सुधि, चिंता। [ख्याल (दे०)] "काहू बाल खाल हेतु धनुहीं मृणाल की बनाई"—रमि०।

खर—(संज्ञा, पु०, सं०) गधा। खच्चर। बगला। कौवा। रावण का भाई, एक राक्षस। तृण, घास। साठ संवत्सरों में से एक। छप्पय छंद का एक भेद, कङ्क। (वि०, सं०) कड़ा, प्रखर, तेज, तीक्ष्ण। सुदृढ़। हानिकारक, अशुभ। तेज धार वाला। "पशु खर खात सवाद सौ"—र०।—**कतवार**-

घास कूड़ा। मुहा०—करना-खूब याद करके पक्का करना।

खरक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खड़क] चौपायों के रखने का लकड़ियाँ गाड़ कर बनाया गया घेरा, बाड़ा, चरने का स्थान। बाँसों की खपाचों का किवाड़, टट्टर। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) खटक, भय, डर। चिंता, शङ्का। "ब्रज के खरक मेरे हिये खरकत है"—रस०। खड़क, खड़खड़ाहट।

खरकना—(क्रि० अ०, अनु०) पत्तों का रगड़ कर शब्द करना, खड़कना। कसकना, खलना, खटकना। फाँस के चुभने का सा दर्द होना। सरकना, चल देना। "...कौन पातसाह के न हिये खरकत है"—भूषण। "न पात खरकत है" —सेना०। (क्रि० अ०) खरखराना, "...... चौंकि परे तिनके खरकेहूँ—रस०। [**खरकाना** (प्रे० रूप)]।

खरका—(संज्ञा, पु०) [हिं० खर] तिनका। दाँत खोदने का तिनका या चाँदी की पतली, लम्बी तीली। **मुहा०—करना**-भोजनान्त में तिनके से खोद कर दाँत साफ करना। खटका, खरक। (यौ०)-गधे का। तिनके का।

खरखर, खरखरा—(वि०, दे०) खरहरा। दरदरा। शीघ्र, द्रुत। खुरखुरा। खराखरा। [**खरखरी** (यौ०, स्त्री०)]

खरखशा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) झगड़ा। भय, आशंका, झंझट। घना।

खरखौकी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हिं० खर +खाना] खर या तृण आदि खाने वाली, अग्नि।

खरग—(संज्ञा, पु०, दे०) खड्ग (सं०), तलवार, खडग, असि। (वि०)द्रुतगामी।

खरगोश—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [खरहा (दे०)]

खरच, खरचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० खर्च] व्यय, खर्च। [खरिच (दे०)]

खरचना—(क्रि०, स०, दे०) [फ़ा० खर्च] व्यय या खर्च करना, व्यवहार या प्रयोग में लाना, लगाना।

खरछरा—(वि०, दे०) दरदरा। गड़बड़।

खरज, खडज—(संज्ञा, पु०, दे०) षडज (सं०)।

खरतर—(वि०, सं०) प्रखर, उग्र।

खरतल*—(वि०, दे०) खरा, स्पष्टवादी, शुद्ध हृदय वाला। बेमुरौवत। प्रचण्ड, उग्र।

खरता—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खर] तीक्ष्णता, तेजी, प्रखरता।

खरतुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) एक निकम्मी घास। "खेत बिगार्यो खरतुआ"—कबी०।

खरदुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० खुर्दा] एक प्राचीन पहनावा।

खरदूषण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) खर और दूषण नामक राक्षस जो रावण और शूर्पणखा के भाई लगते थे। धतूरा। तृण-विनाशक, सूर्य। "...वृक्ष के खरदूषण ज्यों खर-दूषण"—तुलसी०। (यौ०, सं०)-प्रखर दोष।

खरपत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) मरुवा, सुगंधित पौधा। (यौ०) प्रखर पत्र।

खरपा—(संज्ञा, पु०, दे०) खड़ाऊँ, चौबगला, स्त्रियों का जूता।

खरब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खर्व] सौ अरब की संख्या, खर्व। "अरब खरब लौं द्रव्य है"—तुलसी०। (वि०, दे०) खर्व। रूखा। वामन।

खरबूजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० खर्बुजा] ककड़ी की जाति का एक गोल फल।

खरभर—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) हलचल, गड़बड़, शोरगुल, खलबल। [खलभल (दे०)] "खर-भर देखि सकल नर-नारी"—[रामा०]।

खरभरना, खरभराना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० खरभर] खरभर शब्द करना, गड़बड़ या हलचल मचाना, व्याकुल होना। "तब जलधर खरभरो त्रासलहि..."—सूर०।

खरभरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खरभर। "परी खर-भरी ताहि सरबरी"।

खरमंजरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपामार्ग। ऊंगा नामक एक वनौषधि।

खरमस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) दुष्टता, शरारत, शठता, शैतानी।

खरमास, खरवाँस—(संज्ञा, पु०, यौ०, हिं०) धन और मीन राशि के सूर्य का माह, पूस-चैत, (इनमें मांगलिक कार्य करना वर्जित है—ज्यौ०) [खरमाह (दे०)]

खरमिटाव—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हिं० खर +मिटाना] जलपान, कलेवा।

खरयष्टिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खिरहरी औषधि।

खरल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खल] खल, औषधि कूटने की कूँड़ी । **मुहा०—करना**-चूर या चूर्ण करना ।

खरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) पैर में पानी और मैल से पक कर होने वाला गढ़ा ।

खरवासा—(संज्ञा, पु०, दे०) उग्रगंधा ।

खरसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० षड्रस] एक पकवान ।

खरसान—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) अस्त्र पैना करने की सान । "काम-बान खर सान संवारे" —सूर० ।

खरहर—(संज्ञा, पु०) एक पेड़ जो हिमालय की तराई में पाया जाता है ।

खरहरा—(संज्ञा, पु०) [हि० खरहरना] अरहर के डठलों का झाड़-झंखरा । घोड़े के रोयें साफ़ करने का कॉटेदार कंघा । [**खरहरी** (स्त्री०)]

खरहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार का मेवा । (वि०, दे०) विवस्त्रा, नंगी । खटहटी ।

खरहा—(संज्ञा, पु०) [दे०, खर=घास+हा प्रत्य०] खरगोश (वि०, सं०) प्रखरता-नाशक ।

खरही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) टाल, ढेर । खरगोश की मादा ।

खरांडक—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव का एक अनुयायी ।

खरांशु—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य ।

खरा—(वि०) [सं० खर=तीक्ष्ण] तीखा, तेज । बढ़िया । खूब सेंका हुआ । विशुद्ध । करारा । चीमड़, कड़ा । बिना धोखे के, साफ, छल-छिद्र-शून्य । नगद (दाम) । [**खरी** (स्त्री०)]**मुहा०—करना** (**होना-रुपये**)-(रुपये नगद) मिलना, लेना या निश्चय होना । (वि०, हि०) स्पष्टवक्ता । (बात) यथातथ्य, सचा । बहुत अधिक [विलो० **खोटा**] **लोको०—(री) मजूरी चोखा काम** । "राम सो खरो है कौन, मोंसों कौन खोटो"—तुलसी० । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) खरी । "गली हय हाथिन सों सोहत खरी"—के० । खरो (ब्र०) । **—खोटा**-भला-बुरा । [**खोंटी**-(स्त्री०)] "बिन ताये खोटो-खरो गहनो लखै न कोय"—वृंद । **मुहा० —(री) खोटी कहना (सुनना)**-भला-बुरा कहना (सुनना) ।

खराई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खरा+ई प्रत्य०] खरापन । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) सवेरे देर तक जलपान या भोजन न मिलने से, उग्र पिपासा से जी का खराब होना ।

खरागरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवताड़ का पेड़ ।

खराद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० खर्राद] लकड़ी, धातु आदि की चीज की सतह को चिकना करने के लिये चढ़ाने का एक औजार । (संज्ञा, स्त्री०) खरादने की क्रिया, गढ़न । **मुहा०—पर चढ़ाना**-सुधारना, सँवारना, शान पर रखना, बहकाना ।

खरादना—(क्रि० स०, दे०) खराद पर चढ़ा कर किसी वस्तु को चिकना और सुडौल करना, काट-छाँट करना, बराबर करना, सुधारना ।

खरादी—(संज्ञा, पु०, दे०) खरादने वाला । एक जाति, बढ़ई ।

खराना—(क्रि० स०, दे०) खरा करना या होना ।

खरापन—(संज्ञा, पु०, दे०) खरा का भाव । सत्यता ।

खराब—(वि०, अ०) बुरा, पतित, मर्यादा-भ्रष्ट ।

खराबा—(वि०, अ०) वीरान, उजड़ा हुआ । नष्ट । दुश्चरित्र ।

खराबी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बुराई, दोष । दुर्दशा । अवगुण, त्रुटि, दूषण ।

खरायँध—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षार+गंध] क्षार या मूत्र की सी गंध । [खराइँध (दे०)]

खरारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रामचंद्र । विष्णु । कृष्ण । [खरारी (दे०)] । "जबहिं त्रिबिक्रम रहे खरारी"—तुलसी० ।

खराश—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) खरोंच, छिलन ।

खरिक, खरिका—(संज्ञा, पु०, दे०) खरक, तिनका । गोशाला । [खरीक (दे०)]

खरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० खर+इया प्रत्य०] घास, भूसा बाँधने की पतली रस्सी की जाली । पाँसी । झोली । "घर बात धरे, खुरपा खरिया"—कवि । खड़िया, एक प्रकार की मिट्टी । (वि०, स्त्री०) चोखी ।

खरियाना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० खरिया=झोली] झोली में भरना । खड़िया लगाना ।

खरिहान, खलिहान—(संज्ञा, पु०, दे०) जहाँ खेत से अनाज काट कर जमा किया जाय । [**खेत-खलिहान** (यौ०)]

खरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खड़िया । खली (तिल या सरसों आदि की) । चोखी (वि०, स्त्री०) । [**खरा** (हि०, वि०, पु०)]

खरीता—(संज्ञा, पु०, अ०) थैला । जेब । खाँसा, आज्ञा-पत्रादि के भेजने का बड़ा लिफ़ाफ़ा । [खलीता (दे०)] [**खरीती** (अल्पा०, दे०)]

खरीद—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मोल लेने की क्रिया । क्रय । खरीदी हुई वस्तु ।—**फरोख्त**-क्रय-विक्रय ।

खरीदना—(क्रि० स०) [फ़ा० खरीदना] मोल लेना [**खरीदवाना** (प्रे० रूप)]

खरीदार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०,) ग्राहक, मोल लेने वाला, चाहने वाला । [**खरीदारी** (स्त्री०)]

खरीफ—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आषाढ़ से अगहन तक की फसल ।

खरु—(वि०, सं०) मूर्ख । निषिद्ध वस्तुओं का चाहनेवाला, निष्ठुर । (पु०) घोड़ा । घमंड । कामदेव । शिव । (स्त्री०) स्वयं अपना पति निर्वाचित करनेवाली ।

खरोंच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षुरण] खुरचना, छीलना । [**खरोट** (अ०)]

खरोंचना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० क्षुरण] खुरचना, करोना । खसोटना । नोचना ।

खरोंट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खरोंच (हि०) [खरौंट (दे०)]

खरोष्ट्री, खरोष्टी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दाहिने से बायीं ओर लिखी जाने वाली प्राचीन गांधार लिपि । (वि०, सं०, यौ०) गधे के से ओष्ठ वाली ।

खरौंटना—(क्रि० स०, दे०) गाढ़ा-गाढ़ा लोपना, खरोंचना । [**खरौंटाना** (प्रे० रूप)]

खरौंहा—(वि०, दे०) [हि० खर+औंहा प्रत्य०] कुछ खरा, या नमकीन ।

खर्ग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [**खड्ग** (सं०)] तलवार ।

खर्च—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० खर्ज] व्यय, सर्फ, खपत, किसी काम में लगने वाला धन । खर्चा, खरच । [खरिच (दे०)]—**खानगी**-(स्त्री०) अपना खास खर्च, निजी खर्च ।

खर्चना—(क्रि० स०, दे०) खरचना, व्यय करना ।

खर्चा—(पु०, फ़ा०) खर्च, लागत । [(प्रे० रूप) **खर्चाना**]

खर्चीला—(वि०) [हि० खर्च+ईला प्रत्य०] अति खर्च करने वाला । [**खर्चीलापन** (संज्ञा, पु०)]

खर्ज—(संज्ञा, पु०, दे०) षड्ज (सं०) खरज, खडज, एक राग-स्वर ।

खर्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) खुजली । [**खर्जित** (वि०)]

खर्जिका—(संज्ञा, स्त्री०) (सं०) गरमी का रोग, उपदंश ।

खर्जूर—(संज्ञा, पु०, सं०) खजूर । [छुहारा (दे०)] चाँदी । हरताल । बिच्छू । [**खर्जूरिका**—(स्त्री०, अल्प०) पिंड खजूर]

खर्जूरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मूसली औषधि ।

खर्पर—(संज्ञा, पु०, सं०) तसले जैसा मिट्टी का पात्र । रुधिर-पान करने का काली देवी का पात्र । [खप्पर (दे०)] भिक्षा-पात्र । खोपड़ा । खपरिया ।

खर्ब—(संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर की ६ निधियों में से एक । सौ अरब की संख्या । [खरब (दे०)] (वि०) न्यूनांग, भग्नांग, छोटा, लघु । वामन । [बौना (दे०)] "ह्रस्वः खर्वः तु वामनः"—अमर० ।

खर्बट—(संज्ञा, पु० सं०) पर्वत का गाँव ।

खर्बूजा, खरबूजा—(संज्ञा, पु०, अ०) एक फल ।

खर्रा—(संज्ञा, पु०, दे०) मसविदा । लंबा लिखा कागज, चिट्ठा, खसरा । खाँसी । खरखरा । पीठ पर छोटी फुंसियों का रोग ।

खर्राच—(वि०, दे०) खर्चीला ।

खर्राट—(वि०) चतुर, होशियार । वृद्ध । अनुभवी ।

खर्राटा—(संज्ञा, पु०, अनु०) सोते में नाक का शब्द । [खुर्राटा (दे०)] **मुहा०—मारना (भरना, लेना**)-बेखबर सोना ।

खल—(वि०, सं०) दुष्ट, क्रूर, नीच । (**संज्ञा**, पु०, सं०) सूर्य । तमाल वृक्ष । धतूरा । खलिहान । पृथ्वी, स्थान । खरल, औषधि कूटने का पात्र । पापग्रह । [**खलता** (संज्ञा, स्त्री०)]

खलक—(संज्ञा, पु०, अ०) खल्क, दुनिया, संसार । जग के प्राणी । "खलक चबैना काल का"—कबीर ।

खलकत—(संज्ञा, पु०, अ०) सृष्टि ।

खलखल—(संज्ञा, पु०) वह आवाज जो तरल पदार्थ के उड़ेलने पर होती है । "हँसती खलखल" —पंत ।

खलड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खलरी, खाल ।

खलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० खर=तीक्ष्ण] बुरा, या अप्रिय लगना । चूर्ण करना । घोंटना । "सहित लंक खल खलतो"—तुलसी० ।

खलबल—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) हलचल, शोरगुल, घबराहट, खरभर । "खलबल भारी खल-दल मैं मचैगो जब"—'सरस' ।

खलबलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० खलबल अनु०] खलबल शब्द करना । खौलाना । टहलना, डोलना, ब्याकुल या विचलित होना । (क्रि० अ०) खलबलना । [खलमलाना (दे०)] गड़बड़ी करना, पानी को मथना ।

खलबली—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खलबल] घबराहट, व्याकुलता, हलचल । (यौ०) बलवान खल । "ऐसी कीन्ही खलबली, गये खल बली भाजि"—रसाल ।

खलभल—(संज्ञा, पु०, दे०) उत्तेजना, व्याकुलता, खलबली । [**खलभली** (संज्ञा, स्त्री०)]

खलल—(संज्ञा, पु०, अ०) रुकावट, बाधा । धूम । "दौरि दौरि खोरि खोरि खलल मचाया है"—रघुराज ।

खलसा—(संज्ञा, स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी मछली ।

खलाईऽ—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खल+आई—प्रत्य०] खलता, दुष्टता, शठता ।

खलाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० खाली] खाली करना, रीता करना । पिचकाना, नीचे धँसाना । गड्ढा करना । "···फिरते पेट खलाये"—वि० ।

खलार—(संज्ञा, पु०, दे०) खाली या नीची भूमि । [खलारु (दे०)]

खलारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विष्णु । सज्जन । [खलारी (दे०)]

खलाल—(संज्ञा, पु०, अ०) दाँत-खोदनी ।

खलास—(वि०, अ०) छूटा हुआ, मुक्त । समाप्त । च्युत ।

खलासी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खलास] छुट्टी समाप्ति, मुक्ति । (संज्ञा, पु०, दे०) सईस, नौकर (जहाज का) । [खलासी (दे०)]

खलित*—(वि०, दे०) [सं० खलित] चलायमान, गिरा हुआ, स्खलित ।

खलियान-खलिहान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खल+स्थान] फसल काट कर रखने और मांड़ने आदि का स्थान । राशि, ढेर । [खरिहान (दे०, प्रान्ती०)]

खलियाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० खाल] खाल उतारना । (क्रि० स०, दे०) (हिं० खाली) खाली करना ।

खलिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कसक, पीड़ा, चुभन ।

खली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खल] तेल निकालने पर तिलहन की बची हुई सीठी । (वि०) खलने वाला ।

खलीता—(संज्ञा, पु०, दे०) खरीता, थैला ।

खलीन—(संज्ञा, पु०, सं०) लगाम ।

खलीफा—(संज्ञा, पु०, अ०) अध्यक्ष । बूढ़ा व्यक्ति, खुर्राट । खानसामा । हज्जाम । चालाक । दर्जी । तुर्कों का राजा ।

खलु—(अव्य०, क्रि० वि०, सं०) शब्दालङ्कार । प्रश्न । प्रार्थना । नियम । निषेध । निश्चय आदि-सूचक अव्यय ।

खलेल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० खली=तेल] खली आदि का फुलेल में रह जाने वाला भाग, गाढ़ा तेल । कीट ।

खल्लड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खल्ल] चमड़े की मशक या थैला, औषधि कूटने का खल । चमड़ा । [खल्लर (दे०)]

खल्व—(संज्ञा, पु०, सं०) सिर के बाल झड़ने का गंज रोग ।

खल्वाट—(संज्ञा, पु०, सं०) गंज रोग । (वि०, सं०) गंजा । "क्वचित्खल्वाट निर्धनः"—सामु० ।

खवा, खवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्कंध] कंधा, भुज-मूल ।

खवाना*—(क्रि०, स०, दे०) खिलाना (हिं०) ।

खवास—(संज्ञा, पु०, अ०) राजाओं आदि का खास खिदमतगार [**खवासिन** (स्त्री०)] नाई । मंत्री । "···सुनियत हुते खवास्यो"—सूर० । "कहि खवास को सैन दै"—सुबे० । (**संज्ञा, स्त्री०** दे०) खाने की इच्छा ।

खवासी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० खवास+ई प्रत्य०] चाकरी, खिदमतगारी । हाथी या गाड़ी के पीछे खवास के बैठने का स्थान ।

खवैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० खाना+ वैया प्रत्य०] खाने वाला ।

खश, खस—(संज्ञा, पु०, सं०) गढ़वाल और उसके उत्तरवर्ती प्रदेश का प्राचीन नाम । इसी प्रदेश की एक जाति । (संज्ञा, स्त्री०) (फ़ा० खस) गाँडर घास की सुगंधित जड़, उशीर ।

खसकंतऽ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० खसकना +अंत प्रत्य०] खसकना, खिसकंत ।

खसकना—(क्रि०, अ०, अनु०) सरकना, हटना, चुपके से चला जाना । धीरे-धीरे फिसलना ।

खसकाना—(क्रि०, स०) [हिं० खसकना] हटाना, गुप्त रूप से कोई चीज हटा देना, सरकाना ।

खसखस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खसखस] पोस्ते का दाना । [खसखास (दे०)]

खसखसा—(वि० अनु०) भुरभुरा । (वि०) [हिं० खसखस] अति लघु (बाल) ।

खसखसी—(वि०) [हिं० खसखस] पोस्ते के रंग का, नीलिमा-युक्त श्वेत ।

खसटा—(संज्ञा, पु०, दे०) खाज, खुजली ।

खसना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० खसकना] खसकना, हटना। गिरना।

खसखाना—(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) खस की टट्टियों से घिरा स्थान।

खसम—(संज्ञा, पु०, अ०) पति, खाविंद, स्वामी, भर्ता।

खसरा—(संज्ञा, पु०, अ०) पटवारियों का एक कागज, जिसमें प्रत्येक खेत का नम्बर, रकबा आदि लिखा रहता है, हिसाब-किताब का कच्चा चिट्ठा। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) खारिश, खुजली, खाज।

खसलत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आदत, स्वभाव, टेंव, बान।

खसाना—(क्रि० स०) [हिं० खसना] गिराना, फेंकना, ढकेलना। "मुकुट खसे कत असगुन ताहो" —तुलसी०।

खसिया—(वि०, दे०) [अ० खस्सी] बधिया, नपुंसक, हिंजड़ा। बकरा। (संज्ञा, पु०, दे०) आसाम की एक पहाड़ी।

खसियाना—(क्रि० स०) खसी करना। बधिया करना।

खसी—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० खस्सी] बकरा। (स्त्री०, सा० भू०) [हिं० खसना] गिरी। "खसी माल मूरति मुसकानी"—तुल०।

खसीस—(वि०, अ०) कंजूस, सूम, कृपण। [**खसीसी** (संज्ञा, स्त्री०)]

खसोट—(संज्ञा, स्त्री०, [हिं० खसोटना] बुरी तरह नोचने की क्रिया, उचकने या छीनने की क्रिया। [**नोच-खसोट** (यौ०)]।

खसोटना—(क्रि० स०, दे०) [सं० कृष्ट] उखाड़ना, नोचना, छीनना, लूटना।

खसोटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खसौटी, खसोट। "कफन खसोटी माँहि जात"—हरिऔध।

खस्ता—(वि०, दे०) [फ़ा० खस्त:] भुरभुरा।

खस्फटिक—(संज्ञा, पु०, दे०) काँच, सूर्यमणि।

खस्वस्तिक—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) (आकाश में) कल्पित शीर्ष-विन्दु [**विलो० पदविन्दु**]।

खस्सी—(संज्ञा, पु०, अ०) बकरा। (वि०, अ०) बधिया, हिंजड़ा।

खहर—(संज्ञा, पु०, सं०) शून्य हरवाली राशि (गणि०), पूर्णसंख्या।

खाँ—(संज्ञा, पु०) देखो—खान।

खाँई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खानि] गाँव, महल या किले के चारों ओर खोदी गई गहरी नहर, खंदक। [खाँई (दे०)]।

खाँखर—(वि०, दे०) [हिं० खाँख] छेददार, विरल बुनावट का। खोखला। झीना। [**खांखरी** (स्त्री०)]

खाँग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खड्ग प्रा० खग्ग] काँटा, कंटक। तीतर, मुर्ग आदि के पैर का काँटा। गैंडे के मुँह का सींग। जंगली सुअर का दाँत। (संज्ञा, स्त्री०) (हिं० खगना) त्रुटि, कमी, घटी, न्यूनता। "बरिस बीस लगि खाँग न होई" —जायसी०।

खाँगना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० खंज=खोड़ा] कम होना, घटना, छेदना,। "तन घाव नहीं मन प्रानन खाँगै"—[रामा०]।

खाँगड़, खाँगड़ा—(वि०, दे०) [हिं० खांग+ ड़ प्रत्य०] खाँगवाला, शस्त्रधारी। अक्कड़, उद्दंड, अक्खड़। [**खांगड़ी** (स्त्री०)]

खाँगी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खांगना] कमी, घाटा, त्रुटि, न्यूनता, घटी, ऊनता।

खाँच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० खींचना] संधि, जोड़, गठन, खचन।

खाँचना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० कर्षण] अंकित करना, चिन्ह बनाना, खींचना। जल्द लिखना। "पूछेउ गुनिन्ह रेख तिन खाँची" —तुलसी०। [**खँचैया** (वि०)]

खाँचा—(संज्ञा, पु०, दे०) पतली टहनियों का बड़े छेद वाला टोकरा, झाबा। [**खाँची, खँचिया** (स्त्री०, दे०)]

खाँड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खंड] कच्ची शक्कर। [**खंडरस**-(यौ०) राब, जिससे कच्ची खाँड़ बनती है]

खाँड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० खंडन] तोड़ना। चबाना, कूचना। खंडित करना।

खाँडर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खंड] टुकड़ा।

खाँडव—(संज्ञा, पु०, दे०) पांडव नामक दिल्ली का एक प्राचीन वन।

खाँडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खड्ग] छोटी असि, एक अस्त्र, खड्ग। (संज्ञा, पु०) [सं० खंड] टुकड़ा, भाग। "एक म्यान द्वै खाँड"—अ०।

खाँडिक—(संज्ञा, पु०, सं०) मिठाई बनानेवाला, हलवाई।

खाँधना—(क्रि० स०, दे०) खाना । "चोरी दधि कौन खाँधो"—ब्र० ।

खाँप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) टुकड़ा, फाँक ।

खाँभ*—(संज्ञा, पु०, दे०) खम्भा । लिफाफा ।

खाँभना—(क्रि० स०) बंद करना, ढकना ।

खाँवाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खं] चौड़ी खाँई । एक पौधा ।

खाँसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० कासन] कफादि निकालने के लिए बलपूर्वक वायु को कंठ से बाहर निकालना, तथा शब्द करना ।

खाँसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० काश=कास] कफादि को गले या श्वास-नलियों से बाहर करने के लिए सशब्द वायु फेंकने की क्रिया । कास रोग, खाँसने का शब्द । [**लोको० रोग का घर खाँसी रारि की जड़ हाँसी** ।

खाऊ—(वि०, दे०) [हि० खाना ख+ऊ प्रत्य०] पेटू, बहुत खाने वाला । [**खाऊवीर** (यौ०)]

खाक—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) धूल, मिट्टी ।—**छानना**—किसी वस्तु की खोज में फँसा होना ।—**पत्थर**—(अव्य०) कुछ नहीं ।—**सारी**—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) नम्रता, दीनता । "खाकसारी आलिमों को बेसबब होती नहीं" । "खाकसारी के सिवा बंदे के घर खाक नहीं" । **मुहा० (कहीं)—उड़ाना**—उजाड़ या बरबाद होना ।—**उड़ाना या छानना**—मारा-मारा फिरना ।—**में मिलना (मिलाना)**—बिगड़ना, बरबाद होना (करना) ।—**रहना (न रहना)**—नष्ट हो जाना ।—**करना**—कुछ न करना, नष्ट करना । तुच्छ, कुछ नहीं, वे खाक पढ़ते हैं । [खास (दे०)] ।

खाकसाही—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काली भस्म । "मारिमारि खाकसाही पातसाही कीन्हीं"—भूषण ।

खाकसीर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० खाकशीर] खूबकलाँ औषधि ।

खाका—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० खाक] ढाँचा, नक़शा, मानचित्र । अनुमान-पत्र । चिट्ठा, मसौदा । तखमीना । नमूना । **मुहा०—उड़ाना (खींचना)**—उपहास करना ।—**उतारना**—नकल करना ।

खाकी—(वि०, फ़ा०) खाक या मिट्टी के रंग का, भूरा । बिना सींची भूमि । खाक का । [खाखी (दे०)] राख लगाने वाला साधु । [**खाखीबाबा** (यौ०)] ।

खाखरा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का बाजा ।

खाग—(संज्ञा, पु०, दे०) गैंडे का सींग ।

खागना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० खाँग=काँटा] गड़ना, चुभना ।

खाज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खर्जु] खुजली रोग । **मुहा० कोढ़ की**—, दुःख में दुःख बढ़ाने वाली वस्तु ।

खाजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खाद्य] भक्ष्य वस्तु, एक मिठाई । [खाज्झ (प्रा०)]

खाज़ी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० खाजा] खाद्य पदार्थ, भोजन । **मुहा०—खाना**—मुँह की खाना, बुरी तरह हारना ।

खाट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खट्वा] चारपाई, खटिया, खटोली ।

खाड़*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खात] गड्ढा, गर्त । [**लोक० "खाड़ खनै जो और को ताको कूप तयार"**]

खाडव*—(संज्ञा, पु०, दे०) षाडव (सं०), खांडव, षांडव वन ।

खाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खाड़] तीन ओर स्थल से घिरा समुद्र-भाग, आखात, खलीज (फ़ा०) ।

खात—(संज्ञा, पु०, सं०) खोदाई, तालाब, पुष्करिणी । गड्ढा । कुआँ । कूड़ा या खाद का गड्ढा । शराब के लिए रखी हुई महुए की राशि । खाद, पाँस ।

खातमा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अंत, समाप्ति । मृत्यु । **मुहा०—करना**—अंत करना ।

खाता—(संज्ञा, पु०) [सं० खात] अन्न रखने का गड्ढा, बखार । (संज्ञा, पु०) [हि० खत] मितीवार और ब्यौरेवार हिसाब-किताब की बही । **—खोलना (खुलना)**—नया व्यवहार (लेन-देन) करना (होना) ।—**बंद करना (होना)**—हिसाब-किताब बंद होना ।—**चलना**—लेन-देन के व्यवहार का जारी रहना । (संज्ञा, पु०, हि०) मद, विभाग । "कहै रतनाकर खुल्यो जो पाप-खाता मम" । (क्रि० स०, सा० भू०) खाना ।—**पीता**—साधारण स्थिति का ।

खातिर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आदर । अव्य० (अ०) वास्ते, लिए ।—**खाह** –(अव्य०, क्रि० वि० फ़ा०) यथेच्छ, यथेष्ट, यथेप्सित ।—**जमा**—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सन्तोष, तसल्ली । "घर में जमा रहै तो खातिर जमा रहै"—बेनी० ।—**दारी**—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सम्मान, आव-भगत, आदर-सत्कार ।

खातिरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० खातिर] सम्मान। तसल्ली, सन्तोष। आदर।

खाती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खात] खोदी भूमि। खन्ती, खतिया, बढ़ई की एक जाति।

खाद—(संज्ञा, पु०, दे०) खाद्य (सं०) उपज बढ़ाने वाला पदार्थ, पाँस।

खादक—(संज्ञा, पु०, सं०) ऋणी। (वि०) भक्षक, खाने वाला।

खादन—(संज्ञा, पु०, सं०) भोजन, खाना। [**खादित, खाद्य, खादनीय** (वि०)]

खादर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० खाड़] कछार, नीची भूमि [विलो० **बाँगर**] गोचर-भूमि।

खादित—(वि०, सं०) खाया हुआ।

खादिम—(संज्ञा, पु०, अ०) नौकर, दास।

खादी—(वि०) [सं० खादित] भक्षक। शत्रु-नाशक। रक्षक। कँटीला। (संज्ञा, स्त्री०) (प्रान्ती०) गजी, गाढ़ा या हाथ का कता-बुना कपड़ा, खद्दर। (वि०) (हिं० **खादि**=दोष) छिद्रान्वेषी। दूषित।

खादुक—(वि०, सं०) हिंसालु, हिंसक।

खाद्य—(वि०, सं०) खाने-योग्य। (संज्ञा, पु०) भोजन। [**खाद, खाद्यु,** खाद्युक (दे०)]।—**नियंत्रण-खाद्य** सामग्री में प्रतिबंध लगाना। [फूड कंट्रोल]—**मंत्रालय**-खाद्य सचिवालय [फूड मिनिस्ट्री]।—**मंत्री-खाद्य** सचिव [फूड मिनिस्टर]।—**संकट-खाद्य** सामग्री की कमी पड़ना। [फूड क्राइसिस]।

खाधु, खाधू—(संज्ञा, पु०, दे०) खाद्य वस्तु। (वि०) खाने वाला।

खान—(संज्ञा, पु०) [हिं० खाना] खाने की क्रिया, भोजन, खाने का ढंग। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) (सं० खानि) खानि, आकर, खदान, खजाना। उत्पत्ति-स्थल। (संज्ञा, पु०) (ता०, मंगो०, अफ़० काङ=सरदार) सरदार, पठानों की उपाधि, खाँ। [—**साहब,—बहादुर**]

खानक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खन] खान खोदने वाला, बेलदार, राज।

खानकाह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मुसलमान साधुओं का मठ।

खानखर—(संज्ञा, पु०, प्रान्ती०) सुरंग, खोह, गुफ़ा।

खानखाना—(संज्ञा, पु०, तु०) मुगल सरदारों की एक उपाधि।

खानगी—(वि०, फ़ा०) निज का, घरेलू, आपस का। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तुच्छ। वेश्या, कसबी। **मुहा०—ढंग (तौर) से**-आपसी ढंग से।

खानदान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वंश, कुल। [**खानदानी** (वि०)] अच्छे कुल का, पैतृक, वंशपरंपरागत।

खानदानी—(वि०) कुलीन वंशीय, ऊँचे कुल का, पैतृक।

खान-पान—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अन्न-पानी, आबदाना। खाना-पीना। खाने-पीने का सम्बन्ध या आचार व्यवहार। "खानपान, सनमान, राग-रंग, मनहिं न भावै"—गिरिधर।

खानसामा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अँगरेजों या मुसलमानों का रसोइया।

खाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० खादन) भोजन करना, पेट में डालना। खर्च कर डालना, उड़ा डालना। शिकार कर खा जाना। विषैले कीड़ों का काटना, डसना। तंग करना, कष्ट देना। नष्ट करना। दूर करना। हजम करना, मार या हड़प लेना। बेईमानी से रुपया पैदा करना। रिश्वत लेना। आघात। प्रभावादि सहना या पड़ना। **मुहा०—कमाना**-काम-धंधा करके जीविका-निर्वाह करना। **खाता-कमाता**-खाने-पीने भर को कमाने वाला। **खा पका जाना (डालना)**-खर्च कर या उड़ा डालना।—**न पचना**-चैन न पड़ना। **खा जाना, (कच्चा) या खाना का (डालना)**-मार डालना। **खाने दौड़ना**-चिड़चिड़ाना, क्रुद्ध होना, भयानक लगना।—**हराम करना (होना)**-बहुत कष्ट देना (होना), तंग करना, अवकाश न मिलना।—**कपड़ा**-(यौ०) भोजन और वस्त्र (देना, पर रखना)।—**पीना**-दावत, भोज, भोजन। **मुँह की—,** दबना, हार जाना।

ख़ाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) घर, मकान, जैसे-दवाख़ाना। किसी वस्तु के रखने का घर, [के] विभाग, कोठा, सारणी (चक्र) का विभाग, कोष्टक। **मुहा० चारो—चित्त गिरना (होना)** -सर्वथा असफल होना, पूर्णतया हार जाना।—**जात**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दास (वि०) घर-जाया, गृह-पालित।—**तलाशी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, फ़ा०) किसी खोई हुई चीज के लिए मकान के अंदर छान-बीन करना या खोजना।—**पुरी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [वि० खाना+पूरना हि०] किसी सारिणी या चक्र के कोष्टकों में यथा-स्थान संख्या या शब्द आदि लिखना, नकशा भरना। चलता करना।—

बदोश—(वि०, यौ०, फ़ा०) बिना स्थायी घर-बार वाला, आवारा। [**ख़ाना-बदोशी** (संज्ञा, स्त्री०)]

खानि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खनि] आकर, खान। ओर। प्रकार, ढङ्ग। उत्पत्ति-स्थान, उद्गम, कोष। धाम। किसी वस्तु के बहुत अधिक पाये जाने की जगह। "फिरतो चारौ खानि"। "चारि खानि जग जीव जहाना" —तुलसी०।

खानिक*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खान। (वि०) खानि सम्बन्धी, खानि का, खान। "जहाँ जेहि खानिक"—तुलसी०।

खानिज—(वि०, हिं०) खानि से उत्पन्न होने वाले पदार्थ, धातु।

खाप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) म्यान, कोष।

ख़्वाब—(संज्ञा, पु०, दे०) ख्वाब (अ०), [स्वप्न सपना (दे०)]।—**गाह**—(पु०) शयनागार। [ख़ाब-ख़ाना (दे०)]

खाबड़—(वि०, दे०) ऊँची-नीची।

खाम—(संज्ञा, पु०) [हिं० खामना] लिफाफा। संधि, टाँका। खम्भा। * (वि०) [सं० क्षाम] घटा हुआ, चोख। [**ख़ाम** (फ़ा०)] न्यून, कम। कच्चा, अनुभव-हीन।

खामखाह, खामखाही—(क्रि० वि०, दे०) ख्वाहम-ख्वाह, जान बूझकर।

खामना—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्कंभन] किसी पात्र के मुँह को गीली मिट्टी या आटे से बंद करना। लिफाफे में रखना।

खामी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कमी, न्यूनता, त्रुटि, बाधा, कच्चाई। "कविन के कामन मैं करैं जौन खामी"—कर०। (संज्ञा, पु०, दे०) खम्भा। (वि०) घटने वाला।

खामोश—(वि०, फ़ा०) नीरव, अवाक्, तूष्णीम् (सं०) चुप, मौन। [**खामोशी**—(संज्ञा, स्त्री०) मौनता] **मुहा०** **खामोशी-नीमरजा**—"मौनं स्वीकृति लक्षणम्।" मौनता स्वीकृति-लक्षण है, मौनता अर्ध स्वीकृति है।

खाया—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कुअंग, तुच्छांग।

खार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षार] सज्जी, लोना, कल्लर, रेह। राख। धूल, मैल। खार निकालने का एक पौधा। छोटा तालाब, डबरा। " दई न जात खार उतराई "। "अघ-सिंधु बढ़त है सूर खार किन पाटत"। (प्रान्ती०) क्रोध। **मुहा०—उतारना**—क्रोध उतारना (करना)।

ख़ार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) काँटा, फाँस। [खाँग (दे०)] ईर्षा, डाह। "गुलों से खार अच्छे हैं जो दामन थाम लेते हैं"। **मुहा०—खाना**—डाह करना, जलना, क्रोध करना, चिढ़ना, रुष्ट होना। उबटन आदि से मैल छुड़ाना। विवाह में कन्या को सिन्दूर-दान देना।

खारका—(संज्ञा, पु०, दे०) छुहारा। **खरका-चिरौंजी**—(यौ०) छुहारे-चिरौंजी आदि की खीर। [खारिक, खरिका (दे०)]

खारजा—(वि०, फा०) खारिज करने का काम।

खारा—(वि०, पु०, दे०) [सं० क्षार] क्षार या नमक के स्वाद का, कड़ुआ। अरुचिकर। आम तोड़ने का थैला। (संज्ञा, पु०) खाँचा। घास आदि बाँधने की जाली। झीना कपड़ा। [**खारो** (ब०) "होतो जो न खारो झनिखारो…"—सरस]

खारि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १६ द्रोण की एक माप।

खारिक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षारक] छोहारा, छोहार, छोहरा (प्रा०)।

खारिज—(वि०, अ०) बाहर किया (निकाला) हुआ, अलग। बहिष्कृत, जिस (अभियोग) को सुनाई न हो।

खारिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) खुजली, खाज।

खारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खारा] एक प्रकार का क्षार, लवण। (वि०, हिं०) क्षार-युक्त, जिसमें खार हो, नमकीन।

खारूआ, खारुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षारक] आल से बना एक लाल रंग। इससे रँगा कपड़ा (मोटा)।

खाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षाल] शरीर के ऊपर का चमड़ा, चाम, त्वचा। आवरण। **मुहा०—उधेड़ना (खींचना)**—बहुत मारना या कड़ा दंड देना।—**खींचकर भूसा भरना**—बहुत मारना। आधा चरसा। धौकनी, भाथी। मृत शरीर "मुई खाल की साँस सों"—कबीर। (संज्ञा, स्त्री०) (सं० खात) नीची भूमि, खाली जगह। खाड़ी। "मानुस की खाल कछु काम नहिं आइहै"। **बाल की—निकालना**—बड़ी बारीकी निकालना, व्यर्थ का कारण या दलील दिखाना।

खालसा—(वि०, दे०) [अ० खालिस=शुद्ध] राज्य का, सरकारी, जिस पर एक का अधिकार हो। (संज्ञा, पु०, पं०) सिक्ख-मंडली-विशेष। **मुहा०—करना**—जब्त या नष्ट करना, स्वायत्त करना।

खाला—(वि०,) [हि० खाल] नीचा, निम्न, ढालू [**खाली** (स्त्री०)]

ख़ाला—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) माता की बहिन, मौसी। **मुहा०—(जी) का घर**–सहज काम, अपना घर। "खाला केरी बेटी ब्याहै"—कबीर। "खाला का घर नाहि"—कबीर।

ख़ालिक़—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ईश्वर, "खालिक ने एक एक से बेहतर किया है खल्क"।

खालिस—(वि०, अ०) शुद्ध, बेमेल। [निखालिस (दे०)]

खालिसा—(वि०, अ०) शुद्ध। जो राज्य के निरीक्षण या प्रबन्ध में हो।

खाली—(वि०, अ०) रीता, रिक्त। अन्तर। शून्य। रहित, विहीन, बिना काम के, जो व्यवहार में (काम में) न हो, व्यर्थ, निष्फल, वृथा। (क्रि० वि०) केवल, सिर्फ़। **मुहा०—हाथ आना,—हाथ जाना, हाथ—होना (खाली हाथ)**–हाथ में रुपया-पैसा न होना, निर्धन। असफलता के साथ। प्राप्ति-रहित। "सिकंदर जब चला दुनियाँ से दोनों हाथ खाली था"।**—पेट**–बिना कुछ खाए। **वार (निशाना)—जाना**–ठीक न बैठना, यत्न-सिद्ध न होना, चाल सफल न होना, मौका चूक जाना, लक्ष्य पर न पहुँचना। **बात (जबान)—जाना (करना) (पड़ना)**–वचन निष्फल होना (करना), कथनानुसार कुछ न होना।

खाले—(क्रि० वि०, दे०) नीचे, गहरे में। बुढ़ाई में। अवनति या बुराई में।

खावाँ—(संज्ञा, पु०) गहरी खाँई, खेत या बाग के चारों तरफ खोदा हुआ गढ़ा या बनायी हुई मेड़।

खाविंद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पति, मालिक, स्वामी, भर्ता, भर्तार। [भतार (दे०)]

खाविंदी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कृपा, अनुग्रह, दया।

खास—(वि०, अ०) विशेष, मुख्य, प्रधान, (विलो० **आम**) निज का, स्वयं, आत्मीय, खुद, ठीक, विशुद्ध। (**संज्ञा, स्त्री०**) [अ० कीसा] गाढ़े की थैली। **मुहा०—कर**–विशेषतः, प्रधानतया।**—तौर से**–विशेषतया। (**हर**)—(**सो**) **आम**–(यौ०) सर्व-साधारण।**—कलम**–(संज्ञा, पु०, यौ०, अ०) [प्राइवेट सेक्रेटरी] निजी मुंशी।

खासगी—(वि०) [अ० खास+गी प्रत्य०] मालिक या निज का।

खासदान—(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) पानदान।

खासबरदार—(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) राजा की सवारी के ठीक आगे चलने वाला सिपाही।

खासा—(संज्ञा, पु०, अ०) राज-भोग। राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी। एक पतला सूती कपड़ा। (वि०, पु०, दे०) अच्छा, भला, स्वस्थ। मध्यम श्रेणी का। सुडौल। भरपूर, पूरा। [**खासी (स्त्री०)**]

खासियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) स्वभाव, आदत, टेव। गुण, सिफत, खसलत।

खिंचना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० कर्षण] घसीटा जाना, थैले आदि से बाहर निकालना। एक ओर बढ़ना। तनना। पृथक् होना। किसी की ओर बढ़ना, आकर्षित या प्रवृत्त होना। खपना। अर्क (भभके से) तैयार होना। तत्व या गुण का निकल जाना, चुसना। **मुहा० पीड़ा (दर्द)**—,(दवा से) दर्द दूर होना। चित्रित होना। रुकना। **माल खपना**। प्रेम कम होना। **हाथ—**,देना बन्द होना। **तबीयत (दिल)—**,प्रेम होना, आकर्षित होना, प्रेम न रहना।

खिंचवाना—(क्रि० स०, दे०) [खींचना का प्रे० रूप] खींचने का काम दूसरे से कराना।

खिंचाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खींचना] खींचने की क्रिया या मजूरी।

खिंचाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० खींचना] खिंचवाना।

खिंचाव—(संज्ञा, पु०) [हि० खिंचना] खिंचने का भाव।

खिंडाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० क्षिप्त] बिखराना, फैलाना, छितराना, छिड़काना।

खिखिंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० किष्किंधा] किष्किंधा। "कीन्हेसि मेरु खिखिंद पहारा"—जायसी।

खिचड़वार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० खिचड़ी+वार] मकर संक्रान्ति, खिचड़ी। [खिचराही (दे०)]

खिचड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कसर] एक में पका दाल-चावल। बरातियों को कच्ची रसोई खिलाने की रस्म। दो या अधिक पदार्थों का मिश्रण। मकर-संक्रांति, खिचराही। (वि०) मिला-जुला, गड़बड़। **मुहा०—पकाना**–गुप्त रूप से सलाह करना। **ढाई चावल की—अलग पकाना**—

सब की राय से विरुद्ध या सब से अलग होकर कुछ काम करना।

खिजना, खिझना—(क्रि० अ०, दे०) झुँझला उठना, चिढ़ना। "…तबहिं खिझत बल भैया"—सूबे०। हठ करना। "कहत जननी दूध डारत खिझत कछु अनखाइ"—सूर०।

खिजलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० खीजना] झुँझलाना, चिढ़ना। (क्रि० स०) [हि० खीजना का प्रे० रूप] चिढ़ाना, दुखी करना।

खिजाब—(संज्ञा, पु०, अ०) केश-कल्प, सफेद बालों को काला करने की दवा।

खिझ—(संज्ञा, स्त्री० दे०) खीझ, खीज, चिढ़।

खिझना—(क्रि० अ०, हि०) खीजना, चिढ़ना।

खिझाना, खिझावना—(क्रि० स०, दे०) तंग करना, चिढाना, खिझलाना।

खिड़कना—(क्रि० अ०, दे०) चुपके से चल देना, खिसक जाना, सरक जाना।

खिड़काना—(क्रि० स०, दे०) [हि० खिड़कना] हटाना। बेच डालना। छिड़काना।

खिड़की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खटक्किका] दरीचा, झरोखा। [खिरकी, खिरकिया (दे०)] "खिरकी खिरकीन फिरे फिरको सी"—(दे०)।

खिताब—(संज्ञा, पु०, अ०) पदवी, उपाधि। किसी की ओर मुँह करना।

खित्ता—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रान्त, देश।

खिदमत—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सेवा, टहल।

खिदमतगार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सेवक, टहलुवा, भृत्य, अनुचर, अनुग। [**खिदमतगारी** (संज्ञा, स्त्री०)—सेवा। सेवा-कर्म।]

खिदमती—(वि०) [फ़ा० खिदमत] सेवक। सेवा-सम्बन्धी।

खिदिर—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रमा। इंद्र। दरिद्र।

खिद्र—(पु० सं०) एक प्रकार का रोग। गरीब आदमी।

खिन*—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षण (सं०) खन। "आवत खिन अँगनैया खिन चलि जात" —हरिऔध

खिन्न—(वि०, सं०) उदासीन, चिंतित, अप्रसन्न। दीन-हीन, दुखी। [**खिन्नता**—(संज्ञा, स्त्री०) उदासीनता, उदासी।]

खिन्नमना—(वि०) उदास मन वाला, उदास चित्त। "मलिन आनन खिन्नमना दुखी"—हरिऔध।

खिपना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षिप] खपना। तल्लीन या निमग्न होना।

खियाना§—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षय, हि० खाना] रगड़ से घिस जाना। (क्रि० वि०)[स०, क्रि०, हि० खिलाना] खिलाना।

खियाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० ख्याल] विचार। हँसी-खेल। ख्याल। [**खियाली** (वि०)]

खिरनी, खिन्नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षीरिणी] एक छोटे-मीठे फल वाला वृक्ष। उसके छोटे-मीठे फल।

खिराज—(संज्ञा, पु०, अ०) राजस्व कर, मालगुजारी।

खिरानो—(क्रि० अ०, प्रा०) घिस जाना, खियाना।

खिरिरना—(क्रि० स०, प्रान्ती०) सूप में अनाज चालना। खुरचना।

खिरैंटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खरयष्टिका] बरियारी, बीजबंद।

खिरौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० खीर+औरा] एक लड्डू। [**खिरौरी** (स्त्री०)]—केवड़े से बसी कत्थे की टिकिया।

खिल—(संज्ञा, पु०, दे०) धन्नी। (अव्य० सं०) निश्चयादि सूचक।

खिलअत, खिलात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सम्मानार्थ राजप्रदत्त उपहार, भेंट, बकसीस। [खिलत, खिलति (दे०)]

खिलक़त—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सृष्टि। जन-समूह, भीड़। [खलकत (दे०)]

खिलकौरी§—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खेल+कौरी-प्रत्य०] खेल, क्रीड़ा-कौतुक।

खिलखिलाना—(क्रि० अ०, अनु०) जोर से शब्द कर हँसना।

खिलजी—(संज्ञा, पु०) एक पठान-जाति, मध्ययुगीन भारत का एक राजवंश।

खिलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्खल] विकसित होना, फूलना। प्रसन्न या शोभित होना। ठीक जँचना। बीच से फटना या अलग होना।

खिलवत—(संज्ञा, स्त्री० अ०) एकान्त, शून्य स्थान। —**खाना**–(यौ०) एकान्त मंत्रणा-स्थान।

खिलवाड़—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खेल] खेलवाड़। [खेलवार, खिलवार (दे०)]

खिलवाना—(क्रि० स०) [हि० खाना] दूसरे से भोजन कराना। (क्रि० स०) (खिलाना का प्रे० रूप) प्रफुल्लित कराना। (क्रि० स०) (खेलना का प्रे० रूप) खेलवाना, खेलाना।

खिलाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खाना] खाने या खिलाने का काम । [हि० खेलाना] बच्चे खेलाने वाली दाई ।

खिलाऊ—(वि०, दे०) अपव्ययी । खिलाने वाला । खेलने वाला, खेलाऊ ।

खिलाड़, खिलाड़ी—(संज्ञा, पु०) [हि० खेल+आड़ी—प्रत्य०], खेलाड़ी, खेल करने वाला, कौतुकी, खेलने वाला । पटा-बनेठी या कौतुक करने वाला, नट । जादूगर । [खिलारी, खेलारी (दे०)]

खिलाना—(क्रि० स०) [हि० खेलना] खेल करना, खेल मे किसी को लगाना, खेलाना । (क्रि० स०) (हि० खाना का प्रे० रूप) भोजन कराना । (क्रि० स०) [हि० खिलना] विकसित करना, फुलाना, विकसाना, प्रफुल्लित करना । [**खिलवाना** (प्रे० रूप)]

खिलाफ—(वि०, अ०) विरुद्ध, उलटा, विपरीत, विलोम । [**खिलाफत**-(संज्ञा, पु०) (आधुनिक) एक मुसलिम आन्दोलन]

खिलीसा—(संज्ञा, पु०, प्रा०) जेब । [**खिलीसी** (स्त्री०)]

खिलैय्या—(वि०, दे०) [हि० खेलना+ऐया—प्रत्य०] खेलाड़ी, खेलय्या । [प्रे० रूप (वि०) **खिलवैय्या**]

खिलौना—(संज्ञा, पु०) [हि० खेल+औना—प्रत्य०] बालकों के खेलने की वस्तु ।

खिल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० खिलना] हँसी, हास्य, मजाक ।—**बाज**-दिल्लगीबाज । **मुहा०—उड़ाना (लेना)**-हँसी करना । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० खील] पान का बीड़ा, गिलौरी । कील, काँटा ।

खिसकना—(क्रि० अ०, दे०) खसकना, फिसलना, सरकना, चुपके से चला जाना । [**खिसकाना, खिसकवाना** (क्रि० प्रे०)—खसकाना, फिसलाना]

खिसना—(क्रि० अ०, दे०) नम्र या शरणागत होना ।

खिसखिसाना—(क्रि० अ०, दे०) धीरे-धीरे हँसना ।

खिसयई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लज्जा ।

खिसलना—(क्रि० अ०, दे०) खिसकना । [**खिसलहा** (वि०, दे०), **खिसलाहट**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फिसलना]

खिसाना§*—(क्रि० अ०, दे०) खिसियाना । "हँस्यौ खिसानी गर गह्यौ"—बिहारी ।

खिसारा—(संज्ञा, पु०, फा०) घाटा, हानि ।

खिसियाना—(क्रि० अ०) [हि० खीस=दाँत] लजाना, शरमाना । रिसाना, क्रुद्ध होना । [खिसिआना (दे०)] "सुनि कपि-बचन बहुत खिसियाना"—[रामा०] । [**खिसियाहट** (संज्ञा, पु०), **खिसियई**-(स्त्री०, प्रा०) खिसियाने का भाव]

खिसी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० खिसियाना] लज्जा, व्रीड़ा, ढिठाई, खिसियई ।

खिसौहाँ*—(वि०) [हि० खिसाना] लज्जित या क्रुद्ध या रिसाया सा, शर्मिन्दा ।

खींच—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खींचना] खींचने का काम । [**खींचतान**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) (हि० खींचना+तानना)] दो व्यक्तियों का पारस्परिक विरुद्ध उद्योग, खींचाखींची । क्लिष्ट कल्पना से किसी शब्द या वाक्यादि का अन्यथा अर्थ करना] [खींचातानी (दे०)]

खींचना—(क्रि० स०) [सं० कर्षण] घसीटना । कोष या थैले आदि से बाहर निकालना । छोर या बीच से पकड़ कर अपनी ओर लाना, बलात् अपनी ओर लाना, ऐंचना, तानना । किसी ओर ले जाना । आकर्षित करना । सोखना, चूसना । अर्कादि को भपके से निकालना, किसी वस्तु के गुण या तत्व को निकाल लेना । लिखना, रेखादि अंकित करना । रोक रखना । चित्रित करना । **मुहा० चित्त**—,(ध्यान, दिल, मन या आँख) आकर्षित कर मुग्ध करना । मन को मोहित करना । **पीड़ा या दर्द**—,(औषधि से) दूर करना । **हाथ**—,रोक देना या कोई काम बंद करना ।

खींचाखींची, खींचातानी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) खींच-तान ।

खीज—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खीजना] [खीझ (दे०)] खीझ, झुँझलाहट ।

खीजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० खिद्यते] दुखी (क्रुद्ध) होना, झुँझलाना । [खीझना (दे०)] [**खिजाना, खिझाना** (प्रे० रूप)]

खीन*—(वि० दे०) [सं० क्षीण] क्षीण, हीन । [**खीनता, खीनताई** (संज्ञा, स्त्री०)] "तातें होत जात खीन मो तन घनेरो री"—पद्मा०

खीप—(संज्ञा, पु०, दे०) एक घना पेड़, जिसके रेशों से रस्सी बनती है । लजीली लता, शर्मीला व्यक्ति ।

खीमा—(संज्ञा, पु०, अ०) खेमा, तंबू ।

खीर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षीर] दूध में पकाया चावल । **मुहा०—चटाना**-बालक को

अन्न-प्राशन में अन्न (खीर) खिलाना। (संज्ञा, पु०, दे०) दूध।

खीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चीरक] ककड़ी की जाति का एक फल। "खीरा सिर सों काटिए" —**रहीम**।

खीरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चीर] बाख, गाय-भैंस आदि का आयन (दूध का स्थान या थन का ऊपरी मांस)। पिस्ता (मेवा)। गाय। [सं० चीरी] खिरनी।

खील—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि० खिलाना] भूना धान, लावा। कील, फुड़िया में मवाद की गाँठ।

खीला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कील] काँटा, मेख, कील, खील। [**खीली, कीली** (स्त्री०)]

खीली—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि० खील] पान का बीड़ा। कीली।

खीवन, खीवनि—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० चीवन] मस्ती, मतवालापन।

खीस*—(वि०, दे०) [सं० किष्क] नष्ट, बरबाद। (संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि० खीज] क्रोध, अप्रसन्नता। [हि० खिसियाना] लज्जा, हानि। [सं० कीश] ओठ से बाहर निकले दाँत। "...कछू न ह्वै है खीस"—छत्र०। **मुहा०—काढ़ना, निकालना,** (**बाना**)-ओठ से बाहर दाँत निकालना। डरना। हँसना। आधीन होना। डराना। दीन हो माँगना।

खीसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० कीसा] थैला, जेब, खलीसा, खिलीसा, खलीता। [**खीसी, खिलीसी** (स्त्री० अल्पा०)] [**खिलीसा** (पु० दे०, प्रान्ती०)]

खूँटकढ़वा—(संज्ञा, पु०) कान का मल (खूँट) निकालने वाला।

खुँदाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० क्षुण=रौंदा हुआ] कुदाना (घोड़ा)।

खुँदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खूँद, घोड़े का थोड़ी जगह में कूदना।

खुँबी, खुँभी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कान का एक भूषण, कील।

खुआर*—(वि०, दे०) [फ़ा० ख्वार **खुवारी**—(संज्ञा, स्त्री०) बरबादी] दे० ख्वार।

खुक्ख—(वि०, दे०) [सं० शुष्क या तुच्छ] छूँछा, खाली।

खुखड़ी, खुखरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तकुए पर चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत या ऊन। [कुकरी, कुकड़ी (दे०)] नैपाली छुरी।

खुगीर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नमदा, चारजामे के नीचे का वस्त्र, जीन। **मुहा०—की भरती**-अति अनावश्यक लोगों या वस्तुओं का संग्रह।

खुचर, खुचुर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुचर] ऐबजोई, व्यर्थ या झूठ ही दोष दिखाने का काम।

खुजलाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० खर्जु] नखादि से खुजली मिटाना, सहलाना। [खजुआना (दे०)]। (क्रि० अ०) किसी अंग में सुरसुरी या खुजली लगना। [**खुजलाहट**-(संज्ञा, स्त्री०) खुजली]

खुजली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खुजलाना] खुजलाहट, एक रोग या खजुरी (दे०)। सुरसुरी, खर्जन।

खुजाना—(क्रि० स०, अ०, दे०) खुजलाना। [खजुआना (दे०)]

खुज्जाक—(संज्ञा, पु०, सं०) देवताड़ का पेड़।

खुज्झी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अति छोटा लोटा।

खुझड़—(संज्ञा, पु०) पेड़ की जड़ जो अन्दर न जाकर ऊपर फैलती है।

खुटक*—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खटकना] खटका, चिन्ता, शंका। खुटका। "कह गिरधर कविराय, खुटक जैसे नहिं ताको।"

खुटकना—(क्रि० स०, दे०) [सं० खुड=खुण्ड] किसी वस्तु को ऊपर से तोड़ना, नोंचना।

खुटचाल*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०), [हि० खोटी+चाल] दुष्टता, कुचाल, पाजीपन, उपद्रव। [**खुटचाली**-(वि०) दुराचारी, पाजी, नीच, बदचलन, दुष्ट। **खुटपाई** (प्रा०)]

खुटना*—(क्रि० अ० दे०) [सं० खुड] खुलना, टूटना। समाप्त होना। अलग होना। पूरा होना।

खुटपन, खुटपना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० खोटा +पन प्रत्य०] खोटाई, दोष, ऐब।

खुटाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खोटाई] खोटा पन, दोष, बुराई, खोटाई।

खुटाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० खुड=खोंडा होना। खोट] खुटना, खतम होना, चीण या नष्ट होना। तुल्य करना। "सो जानै जनु आयु खुटानी" —तुलसी०।

खुटिला—(संज्ञा, पु०, दे०) नाक या कान का एक गहना।

खुट्टी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खेड़ी (मिठाई)। मित्रता-भंग (बालकों का)।

खुट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घाव की पपड़ी, खुरंड, खुरट ।

खुडुआ, खुडुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) कम्बल का देहावरण, घोघी ।

खुड्डी, खुड्ढी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गड्ढा] पाखाने का पायदान या गड्ढा ।

खुतवा—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रशंसा । सामयिक राजा की घोषणा । **मुहा०** (किसी के नाम का) **—पढ़ा जाना**–जनता की सूचना के लिए राज्यासीनता की घोषणा करना ।

खुत्थ—(संज्ञा, पु०) कटे हुए वृत्त की जड़ और उसका ऊपरी भाग ।

खुत्था—(संज्ञा, पु०, दे०) लकड़ी का बाहर निकला हुआ भाग । [**खुत्थी** (स्त्री०)]

खुथरा, खोंथरा—(वि०, दे०) मुख पर चेचक के दाग वाला । [**काना, खुथरी** (स्त्री० यौ०)]

खुथी, खूँथी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० खूँटी] फसल कटने पर पौधों की खूँटी, खूँथी । थाती, अमानत, रुपये रख कर कमर में बाँधने की थैली, कोथली, बसनी (प्रान्ती०) हिमयानी, सम्पत्ति ।

खुद—(अव्य०, फ़ा०) स्वयं, आप ।**—काश्त** –(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) वह भूमि जिसे उसका मालिक स्वयं जोते बोवे, पर वह सीर न हो । **—गरज**–(वि० फ़ा०) अपना मतलब साधने वाला, स्वार्थी । " खुदगरज जो दोस्त है वह है अदू"—हाली ।**—ग़रज़ी**–(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) स्वार्थ परता, स्वार्थपरायणता । **मुहा०—बखुद**–अपने आप, आप ही आप, बिना दूसरे की सहायता के ।**—मुख्तार**–(वि०, फ़ा०) स्वतंत्र, स्वच्छंद, जो किसी के आधीन न हो ।**—मुख्तारी**–(संज्ञा, स्त्री०) स्वच्छन्दता, स्वतंत्रता ।

खुदना—(क्रि०, अ०) [हि० खोदना] खोदना, खोदा जाना । [**खुदाना, खुदवाना** (प्रे० रूप)]

खुदरा—(संज्ञा, पु०) [सं० क्षुद्र] छोटी साधारण वस्तु । फुटकर चीज । (अव्य०, फ़ा०) अपनी । [**लो०—"खुदरा फजीहत, दीगरा नसीहत"** (फ़ा०)] ।

खुदवाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खुदवाना] खुदवाने की क्रिया या भाव, मजूरी ।

खुदवाना—(क्रि० स०) [हि० खोदना का प्रे० रूप] खोदने का काम करना, खोदवाना, खोदाना ।

खुदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) स्वयंभू, ईश्वर ।**—परस्त**–(वि०, यौ०, फ़ा०) ईश्वरोपासक, प्रभुभक्त ।**—परस्ती**–(संज्ञा, यौ०, फ़ा०) भगवद्भक्ति ।

खुदाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) ईश्वरता । प्रभुता । सृष्टि । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० खोदना] खोदने का भाव, या मजदूरी । [खोदाई (दे०)]

खुदाव—(संज्ञा, पु०, हिं) खोदाई का काम ।

खुदाविंद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ईश्वर, मालिक, श्रीमान्, हुजूर ।

खुदी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अहंकार, शेखी, घमंड, अहंमन्यता, आत्माभिमान ।

खुद्दी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षुद्र] चावल-दाल आदि के छोटे-छोटे टुकड़े ।

खुनकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हलकी ठंढक, हलकी खाँसी । थोड़ा ज्वर ।

खुनखुना—(संज्ञा, पु०, अनु०) घुनघुना, झुनझुना ।

खुनस, खुनुस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खिन्न-मनस्] क्रोध, कोप, रिस, रोष । [**खुनसी**–(वि०) क्रोधी] । "खेलत खुनस न कबहूँ देखी"—तुलसी० ।

खुनसाना§—(क्रि० अ०, दे०) गुस्सा होना, रिसाना, क्रोधित या कुपित होना ।

खुन्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) घोंसला, नीड़ ।

खुन्था—(संज्ञा, पु०, दे०) घोंसला, खुत्था ।

खुफिया—(वि०, फ़ा०) गुप्त, छिपा हुआ ।**—पुलिस**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [फ़ा०+अं०] जासूस, भेदिया । [सी० आई० डी०]

खुबना, खुभना—(क्रि० स०, अनु०) चुभना, धँसना, पैठना, घुसना ।

खुभराना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षुब्ध] इतराये फिरना, उपद्रवार्थ घूमना ।

खुभाना—(क्रि०, स०) [दे० खुभना] चुभाना, गड़ाना । "मतिराम तहाँ दृग-बान खुभायौ" ।

खुभिया, खुभी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० खुभना] नाक की लौंग, कील । हाथी के दाँत पर चढ़ाया जाने वाला पीतल, चाँदी आदि का पोला । "मनमथ नेजा-नोंकसी, खुभी खुभी जिय माँहि" —बिहारी । "खुभी दन्त झलकावै"—सूर० ।

खुमान—(वि०, दे०) [सं० आयुष्मान] दीर्घजीवी (आशीष)। "ग्रीषम के भानु सों खुमान कौ प्रताप देखि"—भूषण।

खुमार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नशे का अन्तिम प्रभाव, मदोत्तर दशा।

खुमारी, खुम्हारी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०, दे०) मद, नशा। नशे के उतरने पर हलकी शिथिलता, रात भर जागने की थकावट। "राजत सुख सैन नैन मैन की खुमारी"।

खुमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० कुमा] दाँतों की कील। हाथी के दाँत का पोला। कुकुरमुत्ता, भूफोड़, जैसे पत्र पुष्प-हीन उद्भिज।

खुरंड—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० क्षुर+ अंड] सूखे घाव की पपड़ी। [खुरंट (दे०)।]

खुर—(संज्ञा, पु०, सं०) सींग वाले पशुओं (चौपायों) के पैर की कड़ी और बीच से फटी टाप, सुम। पैर (व्यंगार्थ, निंदार्थ)।

खुरक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० खुटक] खटका, अंदेशा, आशंका।

खुरखुर—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) गले का कफ़ से खरखराने का शब्द, घरघर शब्द। खरहरा। (वि० दे०) विषमतल।

खुरखुराहट—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) गले का खरखर शब्द, खुरखुरापन।

खुरखुरा—(वि०, दे०) [सं० क्षुर=खोरचना] जिसे छूने से हाथ में रवे या कण गड़े, खरहरा, विषमतल। [**खुरखुरी** (स्त्री०)]

खुरखुराना—(क्रि० अ०) [हिं० खुरखुर] खरखराना, घरघराना, गले में कफ़ से शब्द होना। (वि०, खुरखुरा) खुरदरा लगना। [खरखराना (दे०)]

खुरचन—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खुरचना] खुरच कर निकाली गई वस्तु, दूध की एक मिठाई (मथुरा०)।

खुरचना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षुरण] करोचना, करोना, कुरेदना, खरोंचना, छीलना। [**खुरचाना, खुरचवाना** (क्रि० स०, प्रे०)।]

खुरचाल—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) खुरचाल, दुष्टता, खोटी चाल। [**खुरचाली**–(वि०) खुराफ़ाती, दुष्ट, शरारती।]

खुरजी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सामान रखने का झोला, बड़ा थैला। खुज्जी (ग्रा०)।

खुरतार§—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० खुर+ ताड़ना] खुर, टाप या सुम की चोट।

खुरट—(संज्ञा, पु०) खुर की बीमारी।

खुरदरा—(वि०, दे०) खुरखुरा, विषमतल।

खुरपका—(संज्ञा, पु०) [हिं० खुर+पकना] चौपायों के खुर और मुँह पकने का रोग।

खुरपा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षुरप्र] घास छीलने का यंत्र। [**खुरपी**–(स्त्री०, अल्प०) छोटा खुरपा।]

खुरमा—(संज्ञा, पु०, अ०) छोहारा, एक पकवान या मिठाई।

खुरा—(संज्ञा, पु०) खुर की बीमारी।

खुराई—(संज्ञा, स्त्री०) पशुओं के आगे के पैर की रस्सी।

खुराक—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) खुराक, भोजन, खाना, अशन, गिजा। दवा की एक मात्रा।

खुराकी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) खुराक के लिए दिया हुआ धन। (वि०) अधिक खाने वाला।

खुराघात—(संज्ञा, पु०, सं०) खुर या टाप का आघात।

खुराफ़ात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बेहूदा, रद्दी बात। झगड़ा। गाली-गलौज। व्यर्थ का बखेड़ा। [**खुराफाती**–(वि०) खुराफात करनेवाला।]

खुरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खुर] टाप का चिन्ह। [खुरहार (दे०)] **मुहा०—करना**–टाप पटकना। चंचल होना।—**खोदना**–खुर से पृथ्वी खोदना। टाप पटक कर गमन। आतुर होना। बारीकी से देखना।

खुरुक*—(संज्ञा, पु०, दे०) खुरक।

खुरुहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) खरहरा।

खुर्द—(वि०, फ़ा०) छोटा, लघु।—**बीन**–(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सूक्ष्मदर्शक यन्त्र, अणु-वीक्षण, छोटी चीज को बड़े रूप में दिखाने वाला यन्त्र। [**खुर्दबीनी** (संज्ञा, स्त्री०)]—**बी**–(वि०) बारीकी से देखने वाला।

खुर्दबुर्द—(क्रि० वि०, फ़ा०) नष्ट-भ्रष्ट।

खुर्दा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) छोटी-मोटी चीज, फुटकर, स्फुट (सं०)।

खुर्राट—(वि०, दे०) बुड्ढा, अनुभवी, चालाक, चाई, चंट।

खुलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० खुड, खुल= भेदन] अवरुद्ध या बंद न रहना। आवरण का दूर होना, छाये या घिरे हुए पदार्थ पर से बन्द हटना। दरार होना, फटना या छेद होना। बाँधने या जोड़ने वाली वस्तु का हटना। जारी

होना। रेल, सड़क, नहर आदि का तैयार होना। कार्यालय, दफ्तर, दूकान आदि का कार्य चलने लगना। सवारी का रवाना हो जाना। गुप्त या गूढ़ बात का प्रगट होना। भेद (मन की बात) का प्रकाश में आना। सजना। शोभा देना। **मुहा० खुलकर**–बिना रुकावट के, बिना सङ्कोच के, बिना डर। **खुले आम, खुले खजाने, खुले मैदान**–सब के सामने, छिपाकर नहीं। **खुलता रंग**–हलका, सोहावना रंग। **ज़बान—**, बोलने लगना, बोलने का साहस होना। **खुलकर खेलना**–निर्भय होकर खेलना। निडर होकर काम करना।

खुलवाना—(क्रि० स०) [हिं० खोलना का प्रे०] दूसरे से खोलाना, खुलाना।

खुला—(वि०, पु०) [हिं० खुलना] बंधन-रहित, बिना रुकावट। स्पष्ट, जाहिर, प्रगट।—**अधिवेशन**–वह अधिवेशन जिसमे सवसाधारण भाग ले सकें। [ओपन सेशन]—**पत्र**–समाचार पत्रों मे प्रकाशित किया जानेवाला विरोधात्मक पत्र। [ओपेन लेटर] [**खुली**–(स्त्री०)]—**सभा**—सार्वजनिक सभा, वह सभा जिसमे जनसाधारण भी भाग ले सकें।

खुलासा—(संज्ञा, पु०, अ०) सारांश। (वि०) [हिं० खुलना] खुला हुआ, स्पष्ट। अवरोध-हीन। (क्रि०, वि०) स्पष्ट रूप से।

खुल्लमखुल्ला—(क्रि० वि०) [हिं० खुलना] प्रकाश्य रूप से, खुले आम। स्पष्ट रूप से।

खुवारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० ख्वारी] खराबी, अपमान, बरबादी, ख्वारी।

खुश—(वि०, फ़ा०) प्रसन्न, आनन्दित, अच्छा [खुस (दे०)]।—**किस्मत**–(वि०, फ़ा०) भाग्यवान्। [**खुशकिस्मती** (संज्ञा, स्त्री०)]—**खबरी**–(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सुखद समाचार, अच्छी खबर।—**गवार**–(वि०, फ़ा०) सुखद, मोदप्रद, अच्छी।—**दिल**–(वि०, फ़ा०) सदा प्रसन्न रहने वाला, हँसोड़, प्रसन्न-चित्त।—**नसीब**–(वि०, फ़ा०) भाग्यवान्। [**खुशनसीबी** (संज्ञा, स्त्री०)]—**नुमा**–(वि०) सुंदर। अच्छा या भला लगने वाला।—**बू**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, फ़ा०) सुगंधि, सौरभ (विलो० **बदबू**)।—**बूदार**–(वि०) सौरभीला, सुगंधयुक्त।—**मिज़ाज**–(वि०, यौ०, फ़ा०) प्रसन्नचित्त। [**खुशमिज़ाजी** (संज्ञा, स्त्री०)]—**हाल**–(वि०, यौ०, फ़ा०) सुखी, सम्पन्न। [**खुशहाली** (संज्ञा, स्त्री०), **खुस्याली** (दे०)]

खुशामद—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, फ़ा०) चापलूसी, प्रसन्नतार्थ झूठी प्रशंसा। **लो०**—"खुशामद से ही आमद है"।

खुशामदी—(वि०) [फ़ा० खुशामद+ई प्रत्य०] खुशामद करने वाला, चापलूस।—**टट्टू**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा०+हिं०] खुशामद करने वाला, निकम्मा।

खुशी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आनन्द, प्रसन्नता। [खुसी (दे०)]।

खुश्क—(वि०) (फ़ा० मि०) [सं० शुष्क] सूखा, रूखे स्वभाव का। नीरस। केवल, मात्र। बिना बाहिरी आमदनी के।

खुश्की—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शुष्कता, नीरसता। स्थल। रुखाई। [विलो० **तरी**]

खुसखुसाना—(क्रि० अ०, दे०) धीरे-धीरे बात करना।

खुसाल, खुस्याल*—(वि०, दे०, फ़ा०) खुशहाल। आनन्दित, खुश। [**खुस्याली** (संज्ञा, स्त्री०)] "खूनी फिरत खुस्याल"—बिहारी।

खुसिया—(संज्ञा, पु०, अ०) अंडकोश।

खुसुर-खुसुर—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) धीरे-धीरे बातें करना।

खुसुर, फुसुर—(संज्ञा, स्त्री०) कानाफूसी।

खुही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) वर्षा से बचने को कम्बल या कपड़े की लपेट।

खूँ—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) खून, रक्त।

खूँखार—(वि०, फ़ा०) खून पीने वाला, भयंकर। क्रूर, निर्दय। [**खूँखारी** (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) क्रूरता, भयङ्करता, रक्तपिपासा।]

खूँच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जानु की नाड़ी।

खूँट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खंड] छोर, कोना। ओर, भाग। (संज्ञा, स्त्री०) (हिं० खोंट) कान का मैल।

खूँटना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० खुंडन] रुकना, बंद या समाप्त होना। टूटना। घट जाना। (क्रि० स०) छेड़-छाड़ या पूछताछ करना। रोकना, टोंकना। तोड़ना। [खुटना, खुटना (दे०)] "तौ गनि विधाता हू की आयु खुटि जायगी"—रत्ना०।

खूँटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षोड] लकड़ी का मेख (पशु बाँधने का)।

खूँटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० खूँटा] छोटी मेख, कील। अरहर, ज्वार आदि के पौधों के निचले

भाग जो काटने पर गड़े रह जाते हैं। अँटी, गुल्ली। बालों के नये कड़े अंकुर। सीमा, हद।

खूँड—(संज्ञा, पु०, दे०) अंक। खाँई। खान।

खूँद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) थोड़ी जगह में घोड़े का कूदना। [खुरी करना (दे०)] **मुहा० खूँद करना**।

खूँदना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० खुडन=तोड़ना] उछल-कूद करना, पैरों से रौंद कर बरबाद करना, कुचलना। [खौंदना (दे०)] रौंदना। टाप, पटकना। [**खँदाना, खुँदवाना, खुँदराना**-(प्रे० रूप) दुलकी चलाना]

खूक, खूख—(संज्ञा, पु०, प्रान्ती०) सुअर।

खूझा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुह्य, प्रा० गुज्झ] फल का भीतरी रेशेदार व्यर्थ का भाग। उलझा हुआ लच्छा। खोझा, कुज्जा, खुज्झा।

खूटना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० खुंडन] रुकना, अंत होना। (क्रि० स०) छेड़ना, रोक-टोक करना। घटना, चुक या बीत जाना। टोकना। "आयुर्बल, खूट्यो धनुष जु टूट्यौ"—[रामा०]। "तऊ अंबर न खूट्यौ है"—रसाल।

खूद, खूदड़, खूदरई—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षुद्र] तलछट, मैल।

खून—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) रक्त, रुधिर। वध, हत्या। **मुहा०—उबलना (खौलना)**-क्रोध से देह (आँख) लाल होना, गुस्सा चढ़ना। **आँखों में—आना, आँखों से—बरसना**-बुरा लगना, क्रोध आना।**—का प्यासा**-वध का इच्छुक।**—सिर पर चढ़ना (सवार होना)**-किसी को मार डालने या ऐसा ही अनिष्ट करने पर उद्यत होना।**—पीना**-मार डालना। सताना, तंग करना।**—के घूँट पीना**-बुरी लगने वाली बात को चुपचाप सह लेना।**—के आँसू (रक्त के आँसू) बहना**-अति (रोना) दुखी होना।**—खच्चर,—खराबी (खराबा)**-मार-काट। **लो०—लगा कर शहीदों में मिलना**-झूठमूठ अगुवा या नेता बनना, किसी ब्याज से आगे बढ़ना, बिना योग्यता के अधिकारी होने का दम भरना। **मुहा०—लगना**-किसी हिंसक पशु का खूँखार हो जाना।**—करना (होना)**-हत्या करना (होना)। [**खूनी**-(वि०) हत्यारा, अत्याचारी]

खूब—(वि०, फ़ा०) अच्छा, भला, उत्तम।**—कलां**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) खाकसीर।**—सूरत**-(वि०, यौ०, फ़ा०) सुन्दर, रूपवान। [**खूबसूरती**-(संज्ञा, स्त्री०) सुन्दरता। (क्रि० वि०, फ़ा०) भली-भाँति]

खूबानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जरदालू नामक एक फल। [खुब्बानी (दे०)]

खूबी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अच्छाई, भलाई। विशेषता, गुण।

खूभना—(क्रि० अ०, दे०) अजीर्ण होना, पुराना होना।

खूसट, खूखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कौशिक] उल्लू। (वि०) मनहूस, मूर्ख। नीरस। [खूसर (दे०)] "सुमिरे कृपालु के मराल होत खूसरो"। [**खूसटी** (स्त्री०)]

खृष्ट—(संज्ञा, पु०, हिं०) क्राइस्ट, ईसामसीह। ईसाई। [**खृष्टाब्द**-(यौ०) ईसा-संवत]

खृष्टीय—(वि०) [हिं० खीष्ट+ई सं० प्रत्य०] ईसा-सम्बन्धी, ईसाई। [**खृष्टीय-संवत्** (यौ०)]

खेकसा, खेखसा—(संज्ञा, पु०, प्रान्ती०) परवल जैसा एक रोएँदार फल (तरकारी), ककोड़ा।

खेचर, खेचरा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० खे+चर] आकाशचारी। सूर्य। चंद्र। ग्रह। तारा। वायु। देवता। पक्षी। विमान। भूत-प्रेत। राक्षस। बादल। पारा। कसीस। शिव। विद्याधर। [**खेचरी गुटिका**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) योग-सिद्ध एक गोली जिसे मुख में रखने से आकाश मे उड़ने की शक्ति आ जाती है। (तंत्र०)] [**खेचरी मुद्रा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) जीभ को उलट कर तालू में लगाने और दृष्टि को मस्तक पर रखने की एक मुद्रा (योग-साधन)]

खेजड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शमी का पेड़।

खेट—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रह। अहेर। नक्षत्र। ढाल। कफ। लाठी। चमड़ा। तृण। घोड़ा। खेरा।

खेटक—(संज्ञा, पु०, सं०) खेड़ा, गाँव। तृण। सितारा। ग्रह। बलदेव की गदा। अहेर। लाठी। ढाल। तारा। नक्षत्र। [**आखेट, आखेटक** (सं०)]

खेटकी—(संज्ञा, पु०, सं०) शिकारी, बधिक (आखेट)। (संज्ञा, पु०, सं०) भड्डरी, भड्डर।

खेटज—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रहोत्पन्न। [**खेटजोत्पात** (यौ०)]

खेटिक—(संज्ञा, पु०, सं०) बधिक, व्याध, बहेलिया, शिकारी, आखेटक।

खेड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खेट] छोटा गाँव, पुरवा। [खेरा (दे०)]

खेड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) झरकटिया, कान्ति-सार या इस्पात लोह। जरायुज जीवों के बच्चों की

नाल के दूसरे छोर का मांस-खंड। [खेढ़ी (दे०)] गर्भावरण।

खेत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षेत्र] अनाज के लिये जोतने-बोने की भूमि। खेत की खड़ी फसल। किसी चीज (पशुओं आदि) के उत्पन्न होने का स्थान। समर-भूमि। तलवार का फल। पावन भूमि। योनि। **मुहा०—करना**-समथल करना। उदय-काल में चंद्रमा का प्रथम प्रकाश फैलना। युद्ध करना। **—आना (रहना)**-युद्ध में मारा जाना। **—रखना**-समर में जीत जाना। **—खेना**-युद्ध छेड़ना। "सानुज निदरि निपातउँ खेता"—तुलसी०। "लीन्यौ खेत भारी कुरुराज सों अकेले आइ"—सरस।

खेतिहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षेत्रधर] कृषक, किसान, खेती करने वाला।

खेती—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खेत+ई प्रत्य०] कृषि, किसानी। खेत की फसल। खेत का काम। "उत्तम खेती मध्यम बान"। [**खेती-किसानी, खेती-बारी, खेती-पाती** (यौ०)]

खेतीबारी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० खेती+बारी] किसानी, कृषि-कर्म। [**खेतीपाती** (यौ०)]

खेद—(संज्ञा, पु०, सं०) दुःख, शिथिलता, अप्रसन्नता। [**खेदित**-(वि०) खिन्न]

खेदना—(क्रि० स०, दे०) [सं० खेद] भगाना। खदेरना। शिकार के पीछे दौड़ना। [**खेदना** (प्रे० रूप)]

खेदा—(संज्ञा, पु०) [हि० खेदना] किसी बनैले पशु को मारने या पकड़ने के लिए घेर कर एक निश्चित स्थान पर लाने का काम। शिकार, अहेर, आखेट।

खेदित—(वि०, सं०) दुखित, शिथिल।

खेदनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०)अशनपर्णी लता।

खेना—(क्रि० स०, दे०) [सं० क्षेपण] डाँड़ों को चलाकर नाव चलाना। कालक्षेप करना। बिताना। काटना। [**खेवाना** (प्रे० रूप)] [**खेवाई** (संज्ञा, स्त्री०)]

खेप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षेप] एक बार में ले जाने योग्य वस्तु, लदान। गाड़ी। पानी आदि की एक बार की यात्रा।

खेपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० क्षेपण] गुजारना, बिताना।

खेम—(संज्ञा, पु०, दे०) छेम, क्षेम (सं०)।

खेमटा—(संज्ञा, पु०, दे०) १२ मात्राओं की एक ताल, इसी ताल का गान या नाच।

खेमा—(संज्ञा, पु०, अ०) तंबू, डेरा, कनात। [**खेमा-डेरा** (यौ०)]

खेय—(वि०, सं०) खनने या खोदने के योग्य। (पु०) खाँई।

खेर—(संज्ञा, पु०, म०) मरहठों की एक जाति।

खेरी—(संज्ञा, स्त्री०, प्रान्ती०) बंगाल का गेहूँ। एक पक्षी।

खेरौरी—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का लड्डू।

खेल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० केलि] व्यायाम या मनोरंजनार्थ उछल-कूद, दौड़-धूप जैसा कृत्य, क्रीड़ा। हारजीत वाले कौतुक। मामला। हलका (तुच्छ) काम। अभिनय। तमाशा। स्वाँग, करतब। अद्भुत बात, लीला। [ख्याल (दे०)] **मुहा०—करना**-व्यर्थ का विनोद या मजाक के लिये छोटे काम करना, किसी कार्य को सुचारु रूप से न करना। **—समझना (जानना)**-तुच्छ या साधारण बात जानना। "लोगन कवित्त कीबो खेल करि जानो है"—सु०। **—खेलाना**-बहुत तंग करना। **—बिगड़ना (बिगाड़ना)**-काम बिगड़ना (बिगाड़ना)। रंग-भंग होना (करना)। **—न होना**-साधारण बात न होना। **हँसी—, बायें हाथ का—**, बहुत साधारण बात या काम। "धँसिकै कढ़िबो हँसी खेल नहीं फिर।" **बड़े-बड़े—करना (खेलना)**-बड़ी विचित्र बातें करना।

खेलक—(संज्ञा, पु०) [हि० खेलना] खिलाड़ी।

खेलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० केलि, केलन] उछलना, कूदना, दौड़ना। क्रीड़ा-कौतुक करना। काम-क्रीड़ा (विहार) करना। भूत-प्रेत-प्रभाव से हाथ-पैर या सिर हिलाना, अभुआना। विचरना। सर्प आदि का सिर हिला कर कौतुक करना। बढ़ना। नाट्क या अभिनय करना। [**खेलना खाना**-(यौ०) आनंद करना। "कहा खेल्यौ अरु खायौ" —हरि०] **मुहा० जान (जी) पर—**, मृत्यु के भय का काम करना। **चाल—(चलना)**-कुछ चालाकी करना। (क्रि० स०) मनोविनोद का काम करना, जैसे गेंद या ताश खेलना।

खेलवाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० खेल+वाड़ प्रत्य०] खेल, क्रीड़ा, तमाशा। हँसी, दिल्लगी। तुच्छ या साधारण काम। मनोरंजक काम। [खेला (दे०), खेलवार (दे०)] [**खेलवाड़ी**-(वि०)

विनोदशील] "मुनि आयसु खेलवार"—तुलसी० ।

खेला—(वि०, दे०) अभ्यस्त । चालाक । दक्ष । [**खेली**–(स्त्री०) काम-क्रीड़ा में अभ्यस्त, काम-कला-पटु । "कामवती नायिक नवेली अलबेली खेली"] । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) खेल, क्रीड़ा ।

खेलाड़ी—(वि०) [हिं० खेल+आड़ी प्रत्य०] विनोदी, कौतुकी । खेलने वाला । (संज्ञा, पु०) खेलने वाला व्यक्ति, कौतुकी, मदारी । ईश्वर । बाजीगर । [खिलाड़ी, खेलारी, खिलारी (दे०)]

खेलाना—(क्रि० स०) [हिं० खेलना का प्रे० रूप] किसी को खेल में लगाना । उलझाए रखना । बह-लाना । खेल में शामिल करना । शत्रु को बढ़ने देना तथा उससे साधारणतया लड़ना । "यहि पापिहिं मैं बहुत खेलावा"—तुलसी० ।

खेलार*—(संज्ञा, पु०, दे०) खेलाड़ी । "चढ़ो चंग जनु खैंच खेलारू"—तुलसी० ।

खेलारी—(वि०, दे०) खेलाड़ी । [खिलारी (दे०)]

खेवक, खेवट*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षेपक] नाव खेने वाला, केवट, मल्लाह, खेवटिया ।

खेवट—(संज्ञा, पु०) [हिं० खेत+बाँट] पटवारी का एक कागज जिसमें गाँव के प्रत्येक पट्टीदार का भाग लिखा रहता है । मल्लाह, केवट ।

खेवटिया—(संज्ञा, पु०) मल्लाह, नाविक ।

खेवनहार—(संज्ञा, पु०) पार लगाने वाला, खेने-वाला, कर्णधार ।

खेवना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० खेना] नाव चलाना, खेना । जीवन-यापन करना ।

खेवा—(संज्ञा, पु०) [हिं० खेना] नाव का किराया । नाव से नदी को पार करना । बार । दफा । समय । नाव का बोझ ।

खेवाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खेना] नाव खेने का काम या किराया । खेने की मजदूरी ।

खेवाना—(क्रि० स०) [हिं० खेन का प्रे० रूप] नाव चलवाना ।

खेस—(संज्ञा, पु०, प्रान्ती०) बहुत मोटे सूत का वस्त्र । [खेसड़ा (दे०)]

खेसर—(पु०, सं०) खच्चर ।

खेसारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कृसर] दुबिया मटर, लतरी ।

खेह—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० क्षार] धूल, राख । "नेह री कहाँ कौ जरि खेह री भई जो देह"—द्विज० । मुहा०—**खाना**–धूल फाँकना । दुर्गति में फँसना । व्यर्थ समय खोना । [खेहर (दे०) । ··· "सोना खेहर खाऊ"—तुलसी ।]

खैंच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खिंचाव । "लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े"—तुलसी ।

खैंचना—(क्रि० स०, दे०) खींचना । [**खैंचना, खैंचवाना** (प्रे० रूप)]

खैबर—(संज्ञा,पु०) पाकिस्तान और अफगानिस्तान के मध्य मे पड़ने वाला एक दर्रा जो उस ओर से पाकि-स्तान का एक मुख्य प्रवेशद्वार है ।

खैर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खदिर] एक प्रकार का बंबूल, कथ या सोनकीकर, इसी की लकड़ी को उबाल कर जमाया हुआ रस, जो पान में खाया जाता है, कत्था । एक पक्षी । (संज्ञा स्त्री०)[फ़ा० खैर] कुशल, क्षेम । (अव्य०) कुछ चिंता नहीं, कुछ परवा नहीं, अस्तु, अच्छा । "जानकी देहु तो जान की खैर··· ।"

खैर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) नेकी, कुशल, क्षेम, (अव्य०) अच्छा ।—**आफियत**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, फ़ा०) क्षेम-कुशल ।—**ख्वाह**–(वि०, फ़ा०) शुभचिंतक, हितेच्छु, हितैषी । [**खैरख्वाही** (संज्ञा, स्त्री०)]—**—भैर, खैल-भैल**–(संज्ञा, पु०, दे०) हलचल, शोर-गुल । "खैर-भैर चहुँ ओर मच्यौ"—रघुराज ।

खैरा—(वि०) [हिं० खैर] खैर के रंग का, कत्थई । एक मछली ।

खैरात—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) दान, पुण्य । [**खैराती** –(वि०) धर्मार्थ, मुफ्त में प्राप्त ।]

खैरियत—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) क्षेम-कुशल, भलाई, राजी-खुशी ।

खैला—(संज्ञा, पु०, दे०) बछड़ा, नया बैल, नया बछड़ा ।

खोंखना—(क्रि० अ०, प्रान्ती०) खाँसना ।

खोंखी—(संज्ञा, स्त्री०, प्रान्ती०) खाँसी ।

खोंखों—(संज्ञा, स्त्री०) खाँसने की आवाज । बन्दर की आवाज ।

खोंगाह—(संज्ञा, पु०, सं०) श्वेत-पीत वर्ण का घोड़ा ।

खोंच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुच] किसी नुकीली चीज से छिलने का आघात, खरोंच, खरोंट । काँटे से वस्त्र का फटना । "तुलसी चातक प्रेम-पट, भरतहु लगी न खोंच" । (संज्ञा, पु०, दे०) मुट्ठी भर अन्न । खोंचा-खोची ।

खोंचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुच] चिड़ियों के फँसाने का लम्बा बाँस। खरोंच, खरोंचा।

खोंचिया—(संज्ञा, पु०, दे०) खोंची लेने वाला भिखारी।

खोंची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भीख, थोड़ा अन्न जो बाजार में दूकानों से निकाल लिया जाता है, करान्न। "खाई खोंचो माँगि मै"—तुलसी।

खोंट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खोंटना] खोंटने या नोचने की क्रिया, खरोंट, खोंच। (वि०) बुरा। [खोंटा (दे०)] [**खरा** (विलो०)]

खोंटना—(क्रि० स०, दे०) [सं० खुण्ड] किसी चीज का ऊपरी हिस्सा तोड़ना, कपटना, उपाटना। [**खोंटाना** (प्रे० रूप)]

खोंडर—(संज्ञा, पु०, दे०) पेड़ का खोखला भाग, गड्ढा। [खोंडरा (दे०)] कोटर (सं०)।

खोंडा—(वि०, दे०) [सं० खुण्ड] खोंढ़ा। अंग-भंग। आगे के टूटे दाँतों वाला। [खोंड़हा (दे०)] [**खोंडी** (स्त्री०)]

खोंता, खोंथा—(संज्ञा, पु०, दे०) चिड़ियों का घोंसला। नोड़ (सं०), खुन्था, खुंता, खोंतल (प्रान्ती०)।

खोंप—(संज्ञा, पु०, दे०) सिलाई के दूर-दूर टाँके। उलझने से वस्त्र का फटना।

खोंपा—(संज्ञा, पु०, प्रान्ती०) फाल लगी लकड़ी। छाजन का कोना। चोटी, जूड़ा। लकड़ी आदि में अटक कर वस्त्र का फटना। [बेणी (दे०)]

खोंसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० कोश+ना प्रत्य०] अटकाना। किसी वस्तु को स्थिर रखने के लिए उसके कुछ अंश को कहीं घुसेड़ देना। प्रविष्ट करना।

खोआ—(संज्ञा, पु०, दे०) खोवा, खोया।

खोइचा—(संज्ञा, पु०) मुड़ा या मोड़ा हुआ अंचल, किनारा।

खोई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षुद्र] छोई, रस निकले गन्ने की लीमी। धान की खील। लाई। कम्बल की घोघी, खुद्दी। (सा० भू०, क्रि० स०, स्त्री०) खोयी।

खोऊ—(वि०, दे०) [हि० खोना] अपव्ययी।

खोखला—(वि०, दे०) [हि० खुक्ख+ला प्रत्य०] पोला, थोथा। (संज्ञा, पु०) बड़ा छिद्र [**खोखली** (स्त्री०)]

खोखा—(संज्ञा, पु०, दे०) चुकती हुई हुंडी। बच्चा (बं०)।

खोज—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खोजना] अन्वेषण, अनुसन्धान, शोध। चिन्ह, पता। गाड़ी की लीक या पद-चिन्ह। "इत उत खोज दुराइ"—तुलसी। **मुहा०—पड़ना**-पीछे पड़ना। "सखी परीं सब खोज"—जायसी। [**खोजक, खोजी**-(वि०) ढूँढ़ने वाला।]

खोजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० खुज=चोराना] ढूँढ़ना, पता लगाना। [**खोजवाना, खोजाना** (प्रे० रूप)]

खोजा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० ख्वाजा] नवाबों का नपुंसक नौकर (हरमों का)। माननीय व्यक्ति। सरदार। ख्वाजा, हिजड़ा।

खोट—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दोष, ऐब, बुराई। किसी अच्छी चीज में खराब चीज की मिलावट। "छोट कुमार खोट अति भारी"—तुलसी। अंगूर। फुड़िया का दिउल। (वि०) दुष्ट, ऐबी। **मुहा०—होना**-मिलावट या दोष होना।—**करना**-बुरा करना।

खोटा—(वि०, दे०) [सं० क्षुद्र] बुरा। [**खरा** (विलो०)] [**खोटी** (स्त्री०), **खोटो** (ब्र०)] **मुहा० खरी—सुनाना** (**सुनना**)-फटकारना, डाँटना, बुरा-भला कहना। "बिना तये खोटी-खरो"—**वृन्द**।

खोटाई, खोटापन—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खोट+ई, पन प्रत्य०] क्षुद्रता। बुराई। मिलावट। दोष। छल। खोटे का भाव। खोटपन। [खोटपना (दे०)]

खोथरा—(वि०, दे०) चेचक के दाग वाला।

खोद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) युद्ध मे पहिनने का टोप। कूँड। शिरस्त्राण।

खोदना—(क्रि० स०, दे०) [सं० खुद=भेदना करना] गड्ढा करना, खनना। मिट्टी आदि उखाड़ना। नक्काशी करना। उँगली, छड़ी आदि से कुरेदना। छेड़-छाड़ करना, छेड़ना। उसकाना, उभाड़ना। [**खोदाना, खोदवाना** (प्रे० रूप)]

खोदविनोद—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि० अनु०) छानबीन, जाँच-पड़ताल। [**खोदखाद** (यौ०)]

खोदर—(वि०, दे०) ऊँचा-नीचा, अड़बड़। [खोंदर (दे०)]

खोदाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० खोदना] खोदने का काम। खोदने की मजदूरी।

खोना—(क्रि० स०, दे०) [सं० क्षेपण] गँवाना, भूल से कोई वस्तु कहीं छोड़ आना। बिगाड़ना, नष्ट करना। कोई वस्तु व्यर्थ जाने देना। (क्रि० अ०) पास की चीज का निकल जाना या भूल से कहीं छूट जाना।

खोनचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० खोन्चा] फेरी वालों के मिठाई आदि रखने का थाल। बड़ी परात। कचालू आदि।

खोपड़ा, खोपरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खर्पर] कपाल, सिर। गरी का गोला, नारियल। सिर की हड्डी। **विष**—, एक विषैला जंतु।

खोपड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खोपड़ा] कपाल, सिर। **मुहा० श्रंधी (श्रौंधी)—का**–मूर्ख, बेवकूफ।—**खा (चाट) जाना**–बहुत बकवाद करके तंग करना।—**गंजी होना**–मार से सिर के बालों का झड़ जाना, खोपड़ी में बाल न रहना।—**खाली होना**–मस्तिष्क में बातें करते-करते शिथिलता आ जाना, अधिक मानसिक श्रम करना।

खोभरा—(संज्ञा, पु०, प्रान्ती०) लकड़ी का उभड़ा भाग, खूँटी।

खोम—(संज्ञा, पु०) [अ० कौम] समूह।

खोय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० खू] आदत।

खोया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षुद्र] खोवा, मावा, औटा कर खूब गाढ़ा किया हुआ दूध, [खवाव (दे०), (सा० भू०, क्रि० स०) खोना, खो डाला]

खोर, खोरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० खुर] सँकरी गली, कूचा। चौपायों के चारे की नांद। (संज्ञा, स्त्री०, हिं०) खोरना स्नान, नहान। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खोट=खोर] दोष, बुराई। "कहां पुकारि खोरि मोहि नाहीं"—तुलसी०। [खोरी (दे०)। "इसिबे जोग हसै नहिं खोरी"]

खोरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षालन] नहाना। [**नहानाखोरना** (यौ०)]

खोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खोलक, फ़ा० आबखोरा] कटोरा, बेला, आबखोरा। [**खोरवा** (ग्रा०)। **खोरिया** (स्त्री०) (अल्प०)] (वि०, दे०) अंग-भंग, लँगड़ा।

खोराक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खुराक (फा०), भोजन। एक मात्रा (दवा)। [खुराक (दे०)]

खोरे—(वि०, दे०) लगड़ा। ऐबी। दुर्गुणी। "कार्ने खोरे, कूबरे"—तुलसी०।

खोल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खोल=कोश आवरण] गिलाफ। कीड़ों का ऊपरी चमड़ा जो समय पर बदलता है। मोटी चादर। ऊपर का ढकना। म्यान। आवरण।

खोलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० खुड=खुल—भेदन] छिपाने (रोकने) की वस्तु को हटाना। दरार या छेद (शिगाफ) करना। बंधन तोड़ना। कोई काम जारी करना या चलाना। सड़क, नहर आदि तैयार करना। दूकान या दफ़्तर आदि शुरू करना। गुप्त (गूढ़) बात को प्रगट (स्पष्ट) करना। [**खोलना, खोलवाना** (प्रे० रूप)]

खोली—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० खोल] आवरण, गिलाफ (तकिया)। झोपड़ी।

खोवा—(संज्ञा, पु०, दे०) खोया, मावा। खवावा (ग्रा०)।

खोशा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गुच्छ, झुंड।

खोसरा—(वि०, दे०) जनखा, नपुंसक। चेचक के दाग वाला। [खोथरा (दे०)]

खोह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गोह] गुहा, गुफा, कंदरा। "कंदर खोह नदी नदनारे"—तुलसी०।

खौं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० खन्] खात, गड्ढा। अन्न रखने का गढ़ा। [**खत्ती** (दे०)]

खौंचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० षट्+च] साढ़े छः का पहाड़ा। [ख्यौंचा (दे०)]

खौफ—(संज्ञा, पु०, अ०) डर, भय।—**नाक**–(वि०)—भयकर, भयावना। **मुहा०—खाना**–भय खाना।

खौर, खौरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चौर =क्षुर] चन्दन का तिलक, टीका। स्त्रियों के सिर का गहना। "मन्द पर्यौ खौर हर-चन्दन-कपूर कौ"—रत्ना०।

खौरना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० खौर] खौर (तिलक) लगाना।

खौरहा—(वि०, दे०) [हिं० खौरा+हा प्रत्य०] जिसके सिर के बाल झर गये हों। खौरा, खुजली वाला। [**खौरही** (स्त्री०)]

खौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चौर] एक प्रकार की बुरी खुजली जिससे बाल तक गिर जाते हैं। (वि०) खौरा रोग वाला। (फ़ा०) बाल खोरा।

खौलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्ष्वेल] (तरल वस्तु का) उबलना, गर्म होना।

खौलाना—(क्रि० स०) [हिं० खौलना] उबालना, गर्म करना (दूध आदि)। [**खौलवाना** (प्रे० रूप०)]

ख्यात—(वि०, सं०) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विख्यात। विदित। [**ख्याति**–(संज्ञा, स्त्री०) प्रसिद्धि] [**ख्यातिमान्** (वि०)]

ख्यातिघ्न—(वि०, सं०) अपवादी। [**ख्यातिमत्व** -(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिष्ठा]

ख्यात्यापन्न—(वि०, सं०) यशस्वी, प्रख्यात। ख्यातिप्राप्त।

ख्यापक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाशक, व्यंजक।

ख्यापन—(संज्ञा, पु०, सं०) विज्ञापन। [**ख्यापनीय** (वि०)]

ख्याल—(संज्ञा, पु०, अ०) ध्यान। मनोवृत्ति। विचार, भाव। सम्मति। आदर। एक प्रकार का गाना। याद, स्मृति, ख्याल। **मुहा०—रखना**-ध्यान रखना, देखरेख रखना। **किसी के—पड़ना**-तंग करने पर उतारू होना।**—से उतरना (जाना)**-भूल जाना। *(संज्ञा, पु०) [हिं० खेल] खेल, क्रीड़ा। "ख्याल हेतु धनुही मृनाल की बनाई सी" —तुलसी०।

ख्याली—(वि०) [अ० ख्याल] कल्पित, फर्जी। (वि०, दे०) [हिं० खेल] कौतुकी, खेल करने वाला। **मुहा०—पुलाव पकाना**-हवाई किले बनाना, कल्पित बातें सोचना, असम्भव बातें विचारना। मनमोदक खाना।

ख्रिष्टान—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ख्रीष्ट, अं० क्रिश्चियन] ईसाई, क्रिश्चियन। [क्रिस्तान (दे०)]

ख्रिष्टाब्द—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ईसासंवत, सन्।

ख्रिष्टीय—(वि०, दे०) [क्राइष्ट] ईसाई, ईसाई धर्म-सम्बन्धी, ईसा-सम्बन्धी।

ख्रीष्ट—(संज्ञा, पु०, दे०) [क्राइष्ट] ईसा-मसीह।

ख्रेष्ट—(संज्ञा, पु०, दे०) [क्राइष्ट] ईसा मसीह।

ख्वाज़ा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मालिक। सरदार। ऊँचा फकीर। नवाबों के रनिवास का नपुंसक नौकर। ख्वाजासरा। [ख़ोजा, खासरा (दे०)]

ख्वाब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नींद। स्वप्न।

ख्वाबगाह—(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) शयनागार।

ख्वार—(वि०, दे०) नष्ट, खराब।

ख्वारी—(संज्ञा, स्त्री०) खराबी, नाश। [खुआरी (दे०)]।

ख्वाह—(अव्य०, फ़ा०) या, अथवा, याती। **—मख्वाह**-(यौ०) चाहे कोई चाहे या नहीं, बलात, हठात, अवश्य। [**खाहमखाह, खामखा** (दे०)] **बद—**, (वि०, फ़ा०, यौ०) अहितेच्छु, बुरा चाहने वाला।

ख्वाहिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) इच्छा, चाह, आकांक्षा, [खाहिश (दे०)] [**ख्वाहिशमंद**-(वि०, फ़ा०) इच्छुक, अभिलाषी]. [**ख्वाहिशमंदी** (संज्ञा, स्त्री०)]

ग

ग—व्यंजनों में कवर्ग का तीसरा अक्षर, जो गले से बोला जाता है। (संज्ञा, पु०, सं०) गीता। गंधर्व। गणेश। गाने वाला। जाने वाला। गुरु मात्रा (पिं०)।

गंग—(संज्ञा, पु०) [सं० गंगा] एक हिन्दी-कवि (१७ वीं सदी)। "तुलसी गंग दुवौ भये सुकविन के सरदार"। एक मात्रिक छंद (पिं०)। (स्त्री०) एक नदी, गंगा, जाह्नवी, भागीरथी। भीष्म-माता। **—बरार**-(संज्ञा, पु०) [हिं० गंगा + फ़ा० बरार], वह जमीन जो किसी नदी की धारा के हट जाने से निकल आती है।**—शिकस्त**-(संज्ञा, पु०) [हिं० गंगा + शिकस्त फ़ा०] वह जमीन जिसको कोई नदी काट ले गयी हो।**—सुत**-भीष्मपितामह। "गंग-सुत आनन कौ कांति बिनसायगी"—रत्ना०।

गंगई—(संज्ञा, स्त्री०) मैना जाति का एक पक्षी।

गंगला—(संज्ञा, पु०) शलजम का एक प्रकार।

गंगांबु—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्षा-जल, गंगा-जल।

गंगा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भारत की एक मुख्य नदी, जाह्नवी। भीष्म की माता।**—जमनी**-(वि०) [हिं० गंगा + जमुना] मिला-जुला, दोरंगा, वर्णसंकर। सोना-चाँदी, तांबा-पीतल आदि दो धातुओं का बना हुआ। काला-उजला, स्याह-कबरा, सफ़ेद-अबलक रंग का। [**गंगा-यमुनी** (सं०)]**—जल**-(संज्ञा, पु०, सं०) गंगा का पानी, गंगोदक। एक महीन सफेद कपड़ा।**—जली**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गंगा-जल] वह शीशी या सुराही जिसमें लोग गंगा-जल भर कर ले जाते है, धातु की सुराही। [गंगाजलिया (दे०)]। **मुहा०—उठाना**-गंगा-जल लेकर शपथ करना। **—जली उठाना**-शपथ (कसम) खाना।**—जली पर (लेकर) कहना**-गंगा की शपथ खाकर कहना। **द्वार—**, (संज्ञा, पु०, सं०) हरिद्वार।**—धर**-(संज्ञा, पु०, सं०) महादेव जी, शिव जी, गंगानाथ।**—नाथ**-(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, गंगापति।

—नन्द-(संज्ञा, पु०) भीष्म, गांगेय। " 'गानन्द आनन पै आई मुसकान"—रत्ना० ।—पुत्र-(संज्ञा, पु०, सं०) भीष्म, गांगेय, एक तरह के ब्राह्मण जो नदियों के किनारों पर दान लेते हैं। एक वर्ण-संकर जाति। [गंगापुत्री (स्त्री०)]—यात्रा-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मरणासन्न पुरुष का मरने के लिए गंगातट पर जाना। मृत्यु।—लाभ-(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्यु, मौत।—प्राप्ति-मृत्यु-समय गंगा जी की प्राप्ति।—सागर-(संज्ञा, पु०) [हिं० गंगा + सागर] एक तीर्थस्थान जहाँ गंगा नदी समुद्र से मिलती है। टोंटीदार बड़ी झारी।

गंगाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गंग + आलय] पानी रखने का बड़ा बर्तन, कंडाल।

गंगावतरण—(संज्ञा, पु०, सं०) गंगा का स्वर्ग से पृथ्वी पर आना, गंगा का आगमन होना।

गंगीभूत—(वि०, सं०) पवित्र, पावन।

गंगेरन—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गांगेर की चार प्रकार की बला नाम की औषधियों में से एक, नागबला (आयु०)।

गंगोत्तरी—(संज्ञा, स्त्री०) गंगा के उद्गम-स्थान का नाम।

गंगोदक—(संज्ञा, पु०) [सं० गंगा + उदक] गंगा-जल। २४ अक्षरों का एक छंद (पिं०)।

गंगोद्भेद—(संज्ञा, पु०, सं०) गंगा नदी का उद्गम स्थान।

गंगोल—(संज्ञा, पु०, सं०) गोमेद मणि।

गंगौटी—(संज्ञा, स्त्री०) गंगा के तट की बालू या मिट्टी।

गंगौलिया—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का खट्टा नीबू।

गंज—(संज्ञा, पु०) [सं० खंज वा कंज] सिर के बालों के उड़ जाने का रोग। सिर में छोटी-छोटी फुंसियों का रोग। चाँई, चँदवा, चँदलाई, खल्वाट (सं०) बालखोरा (फ़ा०)। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०, सं०) खजाना। कोष, ढेर। अंबार। राशि, अटाला, समूह, झुंड। अनाज की मंडी। हाट, बाजार, गोला। वह चीज जिसके भीतर बहुत सी काम की चीजें हों।

गंजन—(संज्ञा, पु०, सं०) अनादर, तिरस्कार, अवज्ञा। कष्ट, दुख, पीड़ा। नाश। (वि०) नाशक। "पाप-तरु-भंजन, विघन-गढ़-गंजन"—भूषण।

गंजना—(क्रि० स०) [सं० गंजन] निरादर करना, अवज्ञा करना। नाश करना। चूर-चूर करना। तोड़ना।

गँजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गंज] ढेर लगाना, राशि करना। आम आदि का पाल लगाना। गाँजना।

गंजा—(संज्ञा, पु०) [सं० खंज वा कंज] गंज रोग। (वि०) जिसके गंज रोग हो, खल्वाट।

गंजिका—(संज्ञा, स्त्री० सं०) मदिरालय।

गंजी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गंज] समूह, ढेर, गाँज। शकरकन्द, कन्दा। (संज्ञा, स्त्री०) [गुएरनेसी—एक द्वीप] बुनी हुई छोटी कुरती या बंडी जो शरीर में चिपकी रहती है। बनियाइन। (संज्ञा, पु०, दे०) गँजेड़ी।

गंजीफा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक खेल, जो आठ रंग के ९६ पत्तों से खेला जाता है।

गँजेड़ी—(वि०, दे०) [हिं० गाँजा + एड़ी प्रत्य०] गाँजा पीने वाला।

गँठकटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्रन्थिकर्तक] गाँठ काटने वाला, चोर। [**गँठकटी** (स्त्री०)]

गँठजोड़ा, गँठबन्धन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गाँठ + बन्धन] विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा-दुल-हिन के कपड़ों में गाँठ बाँधी जाती है। [**गँठ-जोरी** (स्त्री०)]

गंड—(संज्ञा, पु०, सं०) गाल, कपोल। कनपटी। गंडा जो गले में पहिना जाता है। फोड़ा। लकीर। चिन्ह। दाग, गोलाकार चिन्ह या लकीर। गोल। गरारी, गंडी। गाँठ। बीथी नामक नाटक का एक अंग। गज कुम्भ। गुदा।—माला-(संज्ञा, वि०, सं०) एक रोग, जिसमें गले में छोटी-छोटी बहुत सी फुंसियाँ निकलती हैं, कंठमाला, गलगंड।—स्थल-(संज्ञा, पु०, सं०) कनपटी।—स्थली-कर्णपाली।

गंडक—(संज्ञा, पु०, सं०) गले में पहिनने का जंतर। [गांडा, गंडा (दे०)] गंडकी नदी के किनारे का देश तथा वहाँ के निवासी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) गंडकी नदी। "नरबद गंडक नदिन के"—कुंज०।

गंडकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उत्तरी भारत की एक नदी जो गंगा में गिरती है।

गंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गंडक] गाँठ। (संज्ञा, पु०, दे०) मन्त्र पढ़कर गाँठ लगाया हुआ धागा जिसे लोग रोग तथा भूत-प्रेत-बाधा दूर करने को गले में बाँधते हैं।—तावीज-मंत्र-यंत्र, टोटका। (संज्ञा, पु०) पैसों, कौड़ियों के गिनने में चार-चार की संख्या का समूह। (संज्ञा, पु०) [सं० गंड = चिन्ह] आड़ी लकीरों की पंक्ति। तोते आदि पक्षियों के गले की रंगीन धारी। कंठा, हँसली।

गंडान्त—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्योतिष में एक योग। **—मूल**-मूल नक्षत्र का वह योग जिसमें उत्पन्न बालक पितृ-घातक होता है।

गँडासा—(संज्ञा, पु०) [हि० गँडा+असि सं०] चौपायों के चारे या घास के टुकड़े काटने का हथियार। [गँडास (दे०)] [**गंडासी, गंडसिया** (स्त्री०, अल्पा०)]

गंडि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तना, पेड़ का मध्य भाग।

गंडिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक छोटा पत्थर। एक पीने की चीज।

गंडिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा।

गंडीर—(संज्ञा, पु०, सं०) पोई का साग। सेहुँड़।

गंडू—(वि०, दे०) गाँडू। गाली का एक शब्द।

गंडूष—(संज्ञा, पु०, सं०) कुल्ला। चिल्लू। "मानहु भरि गंडूष कमल है डारत अलि आनन्दन"—सुबे०।

गंडेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कांड या गंड] गन्ना या ईख का छोटा सा टुकड़ा।

गंतव्य—(वि०, सं०) जाने लायक, गम्य।

गंतु—(संज्ञा, पु०, सं०) रास्ता, मार्ग। पथिक।

गंदगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मैलापन, मलीनता। अशुद्धता, अपवित्रता, नापाकी। मल, मैला, गलीज।

गंदना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गंधन या फ़ा०] प्याज और लहसुन की तरह का एक मसाला।

गंदला—(वि०, दे०) [हि० गन्दा+ला प्रत्य०] मलिन, गन्दा, मैला-कुचैला, मलीन।

गंदा—(वि०, फ़ा०) मलिन, मैला। अशुद्ध, अपवित्र, नापाक। घृणित, घिनौना। [**गंदी** (स्त्री०)]

गंदुम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गेहूँ। [**गोधूम** (सं०)] "गंदुम है गेहूँ खालिक बारी"।

गंदुमी—(वि०) [फ़ा० गंदुम] गेहूँ के रंग का।

गंध, गंधि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गंध] महक, बास, सुगंध, अच्छी महक। सुगंधित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाय। लेशमात्र, अणुमात्र। संस्कार। संबन्ध। जैसे—उसमें सौजन्य की गंध भी नहीं है। **—प्रिय**-(वि०) गंधग्राही। **—वणिक**-(संज्ञा, पु०) अत्तार, इत्रफरोश। **—गर्भ**-(संज्ञा, पु०, सं०) बेलवृक्ष। **—द्रव्य**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्दन, फूल आदि (पूजा में)। **—द्विप**-(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तम हाथी, गजेन्द्र। **—पत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) सफेद तुलसी। नारंगी। मरुवा। बेल। **—बिलाव**-(संज्ञा, पु०) [हि० गंध+बिलाव] नेवले की भाँति का एक जंतु जिसकी गिलटी से सुगन्धित चेप निकलता है, गंधमृग। **—मादन**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक विख्यात पहाड़। भौंरा। बानर। सेनापति। **—मार्जार**-(संज्ञा, पु०, सं०) गंधबिलाव। **—मृग**-(संज्ञा, पु०, सं०) कस्तूरीमृग। **—वह**-(संज्ञा, पु०, सं०) पवन। नासिका। कस्तूरी-मृग। गंधमृग। **—सार**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्दन, घनसार।

गंधक—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दैतेन्द्र, एक खनिज पदार्थ जो पीले रंग का होता है और आग के छुलाने से शीघ्र जल उठता है, इसके धुएँ से दम घुटने लगता है। [**गंधकी** (वि०)]

गंधकी—(वि०) [हि० गंधक] हलका पीला रंग। गंधक के रंग का।

गंधरब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गंधर्व] एक देव जाति। [गंध्रब (दे०)]

गंधर्व—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं०, स्त्री०, गंधर्वी हि० स्त्री० गंधर्बिन] देव-भेद, एक प्रकार के देवता, ये गाने में बड़े निपुण होते हैं। मृग (कस्तूरी)। घोड़ा। वह आत्मा जिसने एक शरीर छोड़ कर दूसरा ग्रहण किया हो। प्रेत। एक जाति जिसकी कन्याएँ गाती और वेश्या-वृत्ति करती हैं। विधवा स्त्री का दूसरा पति। [गंध्रब (दे०)] [गंधर्वी (वि०, सं०)] **—कला**-(संज्ञा, पु०) संगीत नृत्य-कला। **—नगर**-(संज्ञा, पु०) गाँव या नगर आदि का वह मिथ्या आभास जो आकाश या स्थल में दृष्टि-दोष से दिखलाई पड़ता है। झूठा ज्ञान, भ्रम। चन्द्रमा के किनारे का मंडल जो हलकी बदली में दिखाई पड़ता है। संध्या के समय पश्चिम दिशा में रंग-बिरंगे बादलों के बीच में फैली हुई लाली, अंबर-डंबर। **—विद्या**-(संज्ञा, स्त्री०) गाना, गान-विद्या, संगीत-कला। **—विवाह**-(संज्ञा, पु०) आठ भाँत के विवाहों में से एक, वह सम्बन्ध जो वर और कन्या अपने मन से कर लें। **—वेद**-(संज्ञा, पु०) चार उपवेदों में से (सामवेद का) एक उपवेद। संगीत-शास्त्र। **—शास्त्र**-(संज्ञा, पु०) सङ्गीत-शास्त्र।

गंधाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० गंध] बुरी महक देना। बदबू देना, बदबू करना, बसाना, दुर्गंध करना।

गंधाबिरोजा—(संज्ञा, पु०, दे०)[हि० गंध+बिरोजा] चीड़ नामक पेड़ का गोंद। चन्द्रस।

गंधार—(संज्ञा, पु०, दे०) गांधार (सं०), कंधार, सात स्वरों में से तीसरा स्वर। "षड्ज गंधार मध्यमः"-

गंधारी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गांधारी । कंधार के राजा की पुत्री, दुर्योधन की माता । जवाँसा । गाँजा ।

गंधाला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जियती नामक पेड़ ।

गंधाली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रसारिणी, गंधपसार ।

गंधालु—(वि०, सं०) खुशबूदार, गंध से युक्त ।

गंधाशन—(संज्ञा, पु०, सं०) हवा, वायु ।

गंधाश्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) दैतेन्द्र, गंधक, एक उपधातु ।

गंधाष्टक—(संज्ञा, पु०, सं०) आठ गंधक द्रव्यों का मिश्रण । अष्टगंध ।

गंधिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आहुवेर । गन्धक, दैतेन्द्र ।

गंधिकारणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लाजवंती, लजारू औषधि ।

गंधिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक गंधद्रव्य । शराब, मदिरा ।

गंधिपर्णा—(संज्ञा, पु०, सं०) सुगंधित पत्तों वाला छतिवन वृक्ष ।

गंधिया—(संज्ञा, पु०) एक बदबू फैलाने वाला बरसाती कीड़ा । एक कीड़ा जो धान की फसल को नुकसान पहुँचाता है ।

गंधी—(संज्ञा, पु०) [सं० गधिन] इत्र-फुलेल का बेचने वाला, अत्तार । गँधिया घास । गँधिया कीड़ा [**गंधिनी** (स्त्री०)]

गंधीला—(वि०) मैला, गंदा ।

गँधैला—(वि०, दे०) [गन्ध+एला प्रत्य०] बदबूदार, दुर्गंध-युक्त ।

गंभारी—(वि०, सं०) एक बड़ा पेड़, काश्मरी ।

गंभीर—(वि०, सं०) अथाह । नीचा । गहरा । घना, गहन । गूढ़ार्थ । जटिल । भारी । घोर । सौम्य, शांत । [गभीर (दे०)] [**गम्भीरता** (संज्ञा, स्त्री०)] [**गाम्भीर्य** (पु०, भा०)]—**बेदी**–(संज्ञा, पु०)[सं० गंभीर+विद+णिन्] मस्त हाथी ।

गंभीरा—(स्त्री०, सं०) एक नदी ।

गँव—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गम्य] दाँव, घात । प्रायोजन । मतलब । अवसर । "जिमि गव तकई लेउँ केहि भाँती"—[रामा०] । मौका । उपाय, युक्ति, ढङ्ग । **मुहा०**—**से**–(दे० गँवहो) युक्ति से, ढङ्ग से । मतलब से, धीरे से, चुपके से । [गौं (दे०)] "उठेउ गवहिं जेहि जान न रानी"—[रामा०] । [**गँव-घात** (यौ०)]

गँवई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गाँव] गाँव की बस्ती । "···गँवई गाहक कौन"—वि० । [**गँवइया** (वि०)] ।

गँवरमसला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गँवार+मसल अ०] गवारों की कहावत या उक्ति, ग्राम्योक्ति ।

गँवरदल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गवार+दल सं०] गँवारों का समूह या झुंड । (वि०) गवारों का सा, मूर्खतायुक्त ।

गँवाऊ—(वि०) उड़ाने या गँवानेवाला ।

गँवाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गमन] खो देना, खो डालना, (समय) बिताना या खोना, पास के धन को निकल जान देना ।

गँवार—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० ग्रामीण] गाँव का रहने वाला, देहाती । असभ्य । मूर्ख । अनारी, अजान, अज्ञान । [**गँवारू, गँवारी, गँवारिन** (वि०, स्त्री०)]

गवारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गँवार] देहातीपन, गँवारपन । मूर्खता । बेसमझी । गँवार स्त्री । (वि०, दे०) [हि० गंवार+ई प्रत्य०] गंवार का सा । भद्दा, बदसूरत ।—**भाषा** (**बोली**)–देहाती बोली ।

गँवारू—(वि०, दे०) देखिए "गँवारी" ।

गँस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्रन्थि] गाँठ । द्वेष, बैर । मन में चुभने वाली बात । ताना । कुटकी । गूँधना, फँसना । [गाँस (दे०)] [**गाँस-फाँस** (यौ०)] "जामैं गाँस-फाँस को बिसाल जाल छायो है"—रसाल । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० कषा] बाण की नोंक ।

गँसना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० ग्रन्थन] अच्छी तरह कसना, जकड़ना । गाँठना, गूँधना । बुनावट में सूतों को खूब मिलाना । (क्रि० अ०) बुनने में सूतों को अति घना रखना । ठसाठस भरना ।

गँसीला—(वि०, दे०) [हि० गाँसी] बाण के समान नोंकदार । पैना, चुभने वाला । द्वेष रखने वाला, फाँसदार । [**गँसैला, गँसीली** (दे०, स्त्री०)]

गई—(क्रि० अ०, हि०) गत हुई । वर्त्तमान देश, काल से जिसका सम्बन्ध न रह गया हो ।—**करना***–(क्रि० अ०) [हि० गई+करना] छोड़ देना, क्षमा करना, माफ करना, तरह देना, जाने देना । "···गई करि जाहु दई के निहोरे" । [**आईगई** (दे०, यौ०)]—**गुजरी**–(वि०)[हि० गई+गुजरी फ़ा०] बुरी, निद्य । नष्टप्राय । आई-गई, गई-बीती ।—**बहोर**–(वि०) [हि० गया+बहुरि] खोई हुई वस्तु को फिर देने वाला । बिगड़े काम को फिर से बनाने

वाला। "गई-बहोर गरीब निवाजू"—[रामा०]।—**बीती**-(वि०, हि०) गई-गुजरी।

गऊ—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गो] गायी, गाय, गौ, गय्या (ब्र०)।—**ग्रास**-भोजन का अग्रिमांश जो गाय को दिया जाय, गो-ग्रास (सं०)।

गकरिया—(संज्ञा, स्त्री०) मोटी रोटी, लिट्टी, बाटी।

गक्कर—(संज्ञा, पु०) पंजाब के पश्चिमोत्तर पर स्थित एक जाति।

गगन—(संज्ञा, पु०, सं०) आकाश, आसमान। शून्य-स्थान। छप्पय छन्द का एक भेद (पिं०)। —**गिरा**-आकाशवाणी। "गगन-गिरा गंभीर भै"—[रामा०]।—**चर**-(संज्ञा, पु०, सं०) चिड़िया। पक्षी। बादल। ग्रह। खेचर। वायु। विमान। नभचर।—**चारी**-आकाशचारी।—**धूल**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गगन + धूल हिं०] एक प्रकार का कुकुरमुत्ता। केतकी के फूल की धूल। खुमी का एक भेद। नभ-रज।—**बाटिका**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आकाश को फुलवाड़ी। असंभव बात।—**भेड़**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गगन +भेड़) कराकुल या कूंज नाम की चिड़िया। गीध। नभखग।—**भेदी, स्पर्शी**-(वि०, सं०) आकाश तक पहुँचने वाला, बहुत ऊँचा। खूब जोर का गूँजन वाला (शब्द)।—**मंडल**-(संज्ञा, पु०, सं०) आकाश-मंडल।

गगनांगण—(संज्ञा, पु०, सं०) नभमंडल।

गगनांगना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परी, अप्सरा।

गगनांबु—(संज्ञा, स्त्री०, स०) वर्षा-जल, बरसाती पानी।

गगनाहवग—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य देवता, ग्रह।

गगनानंग—(संज्ञा, पु०, सं०) एक मात्रिक छन्द जो २५ मात्राओं का होता है (पिं०)।

गगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गर्गर] धातु या मिट्टी का बड़ा घड़ा, कलसा। [**गगरी** (स्त्री० अल्पा०), **गागरि** (ब्र०)] गागरो।

गच—(संज्ञा, पु०, अनु०) पक्का फर्श, चून से पिटी हुई भूमि। किसी कड़ी वस्तु में पैनी वस्तु के घुसन का शब्द।

गचकारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० गच+कारी फ़ा०] गच का काम, चून सुर्खी का काम।

गचना*—(क्रि० स०, दे०) (अनु० गच) बहुत अधिक या कस कर मारना। [गाँसना (दे०)]

गचपच—(वि०, दे०) गिचपिच।

गचाका—(संज्ञा, पु०) गच जैसी आवाज। (स्त्री०) युक्ति। [**भरपूर** (वि०)]

गच्छ—(संज्ञा, पु०, सं०) जैनियों का मठ। आश्रम। पेड़, गाछ।

गच्छना—(क्रि० अ०) जाना।

गछना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गच्छ=जाना] जाना। चलना। (क्रि० स०) चलाना। निबाहना। अपने जिम्मे लेना, अपने ऊपर लेना।

गज़—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) तीन फीट या दो हाथ की लम्बाई की नाप। बन्दूक के साफ करने की लोहे या लकड़ी की छड़ी। एक तरह का बाण। —**इलाही**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० गज+ इलाही] अकबरी गज जो ४१ अंगुल का होता है।

गज—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी। एक राक्षस। कपड़े आदि को एक नाप का नाम (दो हाथ)। राम-सेना का एक बन्दर। आठ की संख्या। "गज औ ग्राह लरैं जल भीतर..."। [**गजी, गजनी** (स्त्री०)]—**गति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हाथी की सी चाल। "कछु गजगति के आहटनि छिन-छिन छीजत सेर"। एक वर्ण-वृत्त या छंद (पिं०)।—**गमन**-(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी की सी धीमी चाल। मंद गति या मंद गमन। [**गज-गामी** (वि०)]—**गामिनी**-(वि०, स्त्री०) हाथी के समान धीमी चाल से चलने वाली स्त्री।—**गाह**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गज+ग्रास] हाथी की भूल।—**गौन***-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गज+गमन] हाथी की चाल।—**दन्त**-(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी का दाँत। दाँत के ऊपर निकला हुआ दाँत। वह घोड़ा जिसके दाँत निकले हों। दीवार में गड़ी खूँटी। [**गजदंता** (वि०)]—**दान**-(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी का दान। "हय-दान, गजदान, भूमिदान, अन्नदान"—बेनी०। —**नाल**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बड़ी तोप जिसे हाथी खींचते हैं।—**पिप्पली**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक पौधा, जिसकी मंजरी औषधि के काम में आती है। [गजपीपरी (दे०)]—**पीपल**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गज पिप्पली [**गजपीपर** (सं०, दे०)]—**पुट**-(संज्ञा, पु०, सं०) गड्ढे में धातुओं के फूँकने की एक रीति (वैद्य०)।—**मुक्ता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह मोती जो हाथी के मस्तक से निकाला जाता है, [गजमोती (दे०)]—**मोती**-(संज्ञा, पु०, दे०) गजमुक्ता।—**राज**-(संज्ञा, पु०, सं०) ऐरावत,

बड़ा हाथी। हाथियों का राजा, गजेन्द्र।—**वदन**—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश जी जिनका मुख हाथी के मुख के समान है, गजमुख, गजानन। "सिद्धि के सदन गज-बदन विशाल तनु।" —**वर**—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रेष्ठ हाथी। "जुगुल कमल पर गजवर क्रीडत"—सूर०।—**शाला**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह घर जिसमे हाथी बाँधे जाते है, फीलखाना (फ़ा०), हथसाल। [हथसार (दे०)]—**वान**—(संज्ञा, पु०) [हिं० गज+वान प्रत्य०] हाथी वाला, महावत, फीलवान।

गजक—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० कजक] वे पदार्थ जो शराब पीने के पीछे मुँह का स्वाद बदलने के लिए खाये जाते हैं। कबाब। पापड़, नाश्ता, जलपान। एक प्रकार की मिठाई (आगरा)।

ग़ज़ब—(संज्ञा, पु०) [अ० गजब] कोप, क्रोध, गुस्सा। आपत्ति, आफत। विपत्ति, अंधेर, अन्याय, जुल्म। विलक्षण बात, अनोखी बात, अनहोनी, अपूर्व। [गजब (दे०)] **मुहा०—होना (करना) ख़ुदा का**—दैवी विपत्ति, अनहोनी।

गजबाँक, गजबाग—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गज+बाँक या बाग] हाथी का अंकुश।

गजबुसा—(संज्ञा, पु०, सं०) केले का पेड़। केला।

गजर—(संज्ञा, पु०) [सं० गर्ज, हिं० गरज] पहर-पहर पर घंटा बजने का शब्द। पहरा। सबेरे के समय का घंटा। **मुहा०—दम**-सबेरे, तड़के। चार, आठ और बारह बजने पर उतनी ही बार फिर जल्दी-जल्दी घंटे का बजाना। [गजल (दे०)]

गजरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गंज] फूलों की माला, हार। एक गहना जो कलाई में पहिना जाता है। एक रेशमी कपड़ा मशरू। [गॅजरा (दे०)]

गजल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) एक प्रकार की उर्दू, फारसी की कविता। [गजल (दे०)]

गजा—(संज्ञा, पु०, दे०) खजूर का फल। खुर्मा, एक प्रकार का मिष्ठान्न, गजक।

गजाधर—(संज्ञा, पु०, दे०) गदाधर (सं०)।

गजानन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गजवदन, गणेश, जिनका मुख हाथी का सा है। "गजाननं चारु विशाल नेत्रम्।"

गजाना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गॅजाना। पचाना। सड़ाना। गंध देना। बसाना। राशि करना।

गजारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सिंह, केहरि।

गजाली—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथियों का समूह। "न याचे गजालिं न वा वाजिराजम्"—डि०। "केहि सुहात रथ बाजि गजाली"—[रामा०]।

गजी—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० गज] देशी मोटा कपड़ा, गाढ़ा। [गजी (दे०)] [**गजीगाढ़ा** (यौ०)] (संज्ञा, स्त्री०, सं०) हथिनी।

गजेंद्र—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गज+इन्द्र] ऐरावत। हाथीराज, बड़ा हाथी।

गजेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ऐरावत।

गज्जा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गंज शब्द] पानी और दूध आदि के छोटे-छोटे बुलबुलों का समूह, गाँजी। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गंज] गाँज, ढेर, अम्बार। खजाना, कोष, धन।

गझिन—(वि०, दे०) [हिं० गझना] घना। गाढ़ा। मोटा। घना बिना हुआ।

गट—(संज्ञा, पु०) पेय पदार्थ के निगलने की आवाज।

गटई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गला, गर्दन।

गटकना—(क्रि० स०, दे०) [गट से अनु०] निगलना, खाना, हड़पना, दबा लेना।

गटगट—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०, अनु०) घूँट-घूँट पीने में गले का शब्द। [गटागट (दे०)]

गटपट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) बहुत ज्यादा मेल, घनिष्ठता। साथ रहना। प्रसङ्ग। बातचीत। मिलावट।

गटरमाला—(संज्ञा, स्त्री०) बड़े मनियों (दानों) की माला।

गटागट—(अ०, दे०) गटगट।

गटापारचा—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का गोंद जो रबर की तरह उपयोग में लाया जाता है।

गटी—(संज्ञा, स्त्री०) गाँठ। समूह।

गट्ट—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) किसी पदार्थ के निगलते समय गले का शब्द।

गट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्रन्थ, प्रा० गंठ, हिं० गाँठ] हथेली और पहुंचे के बीच का जोड़, कलाई। पैर की नली और तलुए के बीच का जोड़ या गाँठ। बीज। एक प्रकार की मिठाई।

गट्ठर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गाँठ] बड़ी गठरी। [गठरिया (दे०)] [**गठरी, पोटली** (स्त्री०, अल्पा०)]

गट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गाँठ, स्त्री० अल्पा० गट्टा] गठिया। घास, लकड़ी आदि का बोझ। बड़ी गठरी। बुकचा। [बकुचा (दे०)] प्याज या लहसुन की गाँठ।

गठन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ग्रन्थन] बनावट। संगठन। मिलावट।

गठना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ग्रन्थन] दो पदार्थों का मिल कर एक होना, जुड़ना, सटना। मोटी सिलाई। बनावट का दृढ़ होना। [**गाठना, गठवाना** (प्रेरणा०, क्रि० स०)] **गठाबदन**—(यौ०) हृष्टपुष्ट, कड़ा या सुदृढ़ शरीर। किसी षट-चक्र या षड्यंत्र, या गुप्त विचारों में सहमत होना। सम्मिलित होना। दाँव पर चढ़ना। अनुकूल होना। सधना, भली भाँति निर्मित होना, अच्छी तरह रचा जाना। सम्भोग होना। विषय होना। अधिक मेल-मिलाप होना। पटना।

गठबन्धन—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० ग्रन्थि + बधन] गठजोड़ा, वर-वधू के वस्त्रों के छोरों का मिला कर बाँधना। "चूत-गठबन्धन नहीं कब साथ चोरी के दिखा"—हितैषी।

गठर—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़ी गांठ। [**गठीला** (वि०)]

गठरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गट्ठर] कपड़े में गांठ लगा कर बाँधा हुआ सामान, बड़ी पोटली, मोटरी, गट्ठर, बोझा। भार। [गठरिया (दे०)] **मुहा०—मारना**-ठगना। चोरी करना। धोखा देकर धन ले लेना, अनुचित रूप से किसी का धन ले लेना।

गठरेवाँ—(संज्ञा, पु०) जानवरों की एक बीमारी।

गठवाँसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गट्ठा + अंश] गट्ठे या बिस्वे का बीसवाँ भाग, बिस्वाँसी।

गठवाना—(क्रि० स०) [हिं० गाठना] गठाना, (जूते आदि का)। सिलवाना, जुड़वाना, जोड़ मिलवाना। [**गठवाई** (संज्ञा, स्त्री०)]

गठवैया—(वि०, दे०) गठने वाला।

गठाव—(संज्ञा, पु०, दे०) गठन, मिलावट, जोड़ गठाई।

गठित—(वि०, दे०) [सं० ग्रन्थित] गठा हुआ, जुड़ा हुआ।

गठिबन्ध*—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) गठबन्धन।

गठिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गाँठ] बोरा, थैला। खुरजी। बड़ी गठरी। बात रोग, बाई की बिमारी। [**गठियावात** (यौ०)] **मुहा०—होना**-मोटा होना।

गठियाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० गाँठ] गाँठ बाँधना, गाँठ लगाना, गाँठ में बाँधना।

गठिवन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ग्रन्थिपर्ण] साधारण या मध्यम आकार का एक पेड़ जो औषधि है।

गठिहा—(संज्ञा, पु०, दे०) गाठों वाला। बोरा। गँठीला।

गठीला—(वि०, दे०) [हिं० गाँठ + ईला प्रत्य०] बहुत गाँठों वाला। (वि०, हिं० गठना) गठा हुआ, मिला हुआ। सुडौल। मजबूत, दृढ़। हृष्टपुष्ट, खूब चुस्त या मठा (कसा) हुआ, जैसे—गठीला बदन [**गठीली** (स्त्री०)]

गठैय्या—(वि०, दे०) गाँठने वाला।

गठौत, गठौती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गठना] मेल-मिलाप, मित्रता। मिलकर ठीक की हुई बात, अभिसंधि।

गड़ंग§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गर्व] घमंड, अहंकार, शेखी, डींग। आत्मश्लाघा, बड़ाई, आत्म-प्रशंसा। अहम्मन्यता, अभिमान। [**गड़ंगीया** (वि०)]

गड़त—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गाड़ना] गाड़ने का कार्य। भूतादि का दूर करना।

गड़—(संज्ञा, पु०, सं०) आड़, ओट। घेरा, चहार-दीवारी। गड्ढा।

गड़क—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार की मछली।

गड़गड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) बादल की गरज। गाड़ी के चलने का शब्द। पेट की वायु के बोलने का शब्द। हुक्के का शब्द।

गड़गड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) एक प्रकार का हुक्का। एक प्रकार की गाड़ी।

गड़गड़ाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० गड़गड़] गरजना, कड़कना। हुक्का बजाना। किसी गाड़ी आदि का घसीट कर गड़गड़ शब्द करना।

गड़गड़ाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गड़गड़ाना] गड़गड़ाने का शब्द, गड़गड़।

गड़गड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा नगाड़ा। [नौगड़िया, गड़गड़िया (दे०)]

गड़गूदर—(संज्ञा, पु०, दे०) चिथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा। [**गड़गुदरी** (स्त्री०)]

गड़दार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गंड=गड़ासा+दार] वह नौकर जो भाला लेकर मतवाले हाथी के साथ रहता है, बल्लम-बरदार।

गड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गर्त] घुसना, धँसना, चुभना। शरीर में चुभने की पीड़ा। खुरखुरा लगना। दर्द करना, दुखना। मिट्टी आदि के नीचे दबना। दफन होना। समाना, पैठना। **आँख में—**, अति प्रिय या अप्रिय लगना। **गड़जाना**—झेंपना, लज्जित होना। खड़ा होना, जमना, स्थिर होना। (**दिल मन, चित, जी में**)—, डटना, बुरी बात का दिल में चुभना, अति अभीष्ट वस्तु का दिल में रहना। (**आँख, दृष्टि**)—, ध्यान एकाग्र होना, प्रिय होना। **मुहा० गड़े मुर्दे उखाड़ना**—दबी-दबाई या पुरानी बात को उठाना, अनिष्टकारी पुरानी झगड़े की बात का उठाना।

गड़प—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) पानी या कीचड़ मे किसी के सहसा समाने का शब्द। किसी वस्तु को निगलन या पचा डालने का कार्य। किसी वस्तु या सम्पत्ति को लेकर उड़ा डालने, हजम कर डालन की क्रिया, **हड़प**।

गड़पना—(क्रि० स०, दे०) [अ० गड़प] निगलना, खा लेना। पचाना। अनुचित अधिकार जमाना किसी की चीज को जब्त कर लेना, हड़पना।

गड़प्पा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गाड़] गढ़ा। धोखा खाने की जगह।

गड़बड़—(वि०, यौ०) [हि० गड़=गड्ढा+बड़=बड़ा, ऊंचा] ऊँचा-नीचा। अंड-बंड। अस्त-व्यस्त। अनुचित। जटिल। छिन्न-भिन्न, तितर-बितर। (संज्ञा, पु०) क्रमभंग। कुप्रबंध, अव्यवस्था। [**गड़बड़ी** (संज्ञा, स्त्री०)] हलचल। **—झाला**—गोल-माल, अव्यवस्था। **—घोटाला**—गड़बड़ी। **—(ड़ा) ध्याय**—(दे०) गड़बड़झाला, उपद्रव, झगड़ा, आपत्ति, हलचल, गोल-माल। गड्डी-बड्डा (प्रान्तो०) "पहिल दौंगरा भरिगे गड्डा, घाघ समैया गड्डी बड्डा"—घाघ। [**गड़बड़िया** (वि०)]

गड़बड़ाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० गड़बड़] गड़बड़ी में पड़ना। भूल, चक्कर, और धोखे में पड़ना। क्रम-भ्रष्ट होना। अव्यवस्थित होना। बिगड़ना, अस्तव्यस्त होना। छिन्न-भिन्न होना। (क्रि० स०) गड़बड़ी में डालना। चक्कर, जटिलता, भूल और धोखे में डालना। उलझन या भय में डालना। बिगाड़ना, विपत्ति में फँसाना।

गड़बड़ाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) **गड़बड़ी। भय**, डर। भूल। भ्रम-मग्नता। अनिश्चितता। अनियमितता, अव्यवस्था। व्यतिक्रम।

गड़बड़िया—(वि०) [हि० गड़बड़] गड़बड़ करने वाला। उपद्रव करने वाला। बिगाड़ने वाला।

गड़बड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गड़बड़।

गड़यंत—(संज्ञा, पु०, सं०) बादल।

गड़रिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गड्डरिक] गाड़र या भेड़ पालने वाली एक जाति। [**गड़रिन, गड़ेरिन** (स्त्री०)]

गड़हा—(संज्ञा, पु०, दे०) गड्ढ़ा, गढ़ा। [**गड़ही**—(अल्प०, स्त्री०, हि०) छोटा गड़हा]

गड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गण] ढेर, राशि। (क्रि० वि०) [हि० गड़ना] गड़ा हुआ। [**गड़े-गड़ाये** (यौ०)]

गड़ाकू—(संज्ञा, स्त्री०) एक तरह की मछली।

गड़ाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० गड़ना] भोंकना, चुभाना, धँसाना, गड़ाना। [हि० गाड़ना का प्रे० रूप] गाड़ने का काम कराना। [प्रे० क्रि० हि० गाड़ना] **गड़वाना**—धँसवाना, गाड़ने का कार्य किसी और से करवाना। [**गड़वाई** (संज्ञा, स्त्री०)]

गड़ायत—(वि०, दे०) [हि० गड़ना] गड़ने वाला, चुभने वाला। [गड़ैत (दे०)]

गड़ारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुंडल] गोल लकीर, मंडलाकार रेखा, वृत्त, घेरा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गंड=चिन्ह] पास-पास आड़ी धारियाँ। गंडा। गोल चरखी, घिरनी [गरारी, गलारी (दे०)]

गड़ारीदार—(वि०, दे०) [हि० गड़ारी+दार फ़ा०] जिस पर गड़े या धारियाँ पड़ी हों, घेरेदार, जैसे—गड़ारदार पायजामा।

गड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गडुवा] पानी पीने का टोंटीदार छोटा बर्तन, झारी, गड़ई। गाड़ने का काम या मजदूरी।

गडुर, गंडूल—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) पक्षिराज वैनतेय, गरुड़, विष्णु-वाहन। कुबड़ा मनुष्य।
गाडुरकी—(अ०, संज्ञा) गडुर के सम्बन्ध का।

गडुआ—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० गेरना=गिरना+डुवा प्रत्य०] गेरुवा, टोंटीदार लोटा। [गेडुवा (दे०)]

गड़ेरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) देखिए "गड़रिया"।

गड़ेरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० खंडु] गन्ने या ईख के छोटे-छोटे टुकड़े। [गँडेरी (दे०)]

गड़ोना—(क्रि० स०, दे०) गड़ाना, चुभाना, धँसाना।

गड़ौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गड़ाना] एक प्रकार का पान। (क्रि० स०, दे०) गड़ाना, चुभाना, गड़ोना।

गड्ड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गण] किसी वस्तु का समूह, समुदाय, ढेर, राशि। *(संज्ञा, पु०) (सं० गर्त) गढ़ा। [गड्ढा (दे०)] [**गड्डबड्ड**–मिलावट] [**गड्डी** (स्त्री०)]

गड्डबड्ड, गड्डमड्ड—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गड्ड] बेमेल की गड़बड़ी, मिलावट। घालमेल, घपला, झंड-बंड। [**गड्डी-बड्डा** (ग्रा०)]

गड्डमगोल—(संज्ञा, पु०, दे०) गड़बड़झाला।

गड्डर—(संज्ञा, पु०, सं०) भेड़।

गड्डरिक—(संज्ञा, पु०, सं०) गड़ेरिया, भेड़ पालने वाला। भेड़-सम्बन्धी। भेड़ के समान।

गड्डाम—(वि०, दे०) [अ० गाड+श्याम] नीच, तुच्छ। लुच्चा, पाजी, बदमाश। [**गड्डामपाजी** (यौ०)]

गड्डालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देखा-देखी काम करना। बिना सोचे-विचारे करना। भेड़ियाधसान, अंध-अनुकरण।

गड्डी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गड्ड, अॉटी। दस दस्ता कागज। रुपयों का ढेर।

गड्ढा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गर्त, प्रा० गड्ड] पृथ्वी मे गहरा स्थान, खात, गढ़ा, गड़हा, थोड़े घेर की गहराई। खाड़ (ब्र०)।—(**ढे) में गिरना**–पतित होना। हानि उठाना।—**(ढे) में डालना (गिराना)** –विपत्ति मे फँसना। **मुहा० किसी के लिए—खोदना**–किसी के अनिष्ट का प्रयत्न करना, किसी को हानि पहुंचाने का उपाय करना, किसी की हानि का प्रयत्न करना।

गढ़ंत—(वि०, दे०) [हि० गढ़ना] बनावटी, कल्पित (बात)। **मन—**, (यौ०) कल्पित, कपोल-कल्पित। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बनावट, रचना।

गढ़—(संज्ञा, पु०) [सं० गढ़=खाँई] कोट, किला, खाँई, दुर्ग। राजमहल।—**पति**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० गढ़+पति] किलेदार। राजा। सरदार। दुर्ग-स्वामी। **मुहा०—जीतना या तोड़ना**–किला जीतना। बहुत कठिन कार्य करना, गढ़ लेना। [**गढ़ी** (स्त्री०, अल्पा०)]

गढ़न—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [वि० गढ़ना] बनावट, आकृति, रचना, गठन।

गढ़ना—(क्रि० स०) [सं० घटन] काँट-छाँट कर काम की वस्तु बनाना। सुडौल या सुघटित करना। रचना। ठीक करना, दुरुस्त करना। बात बनाना। कपोल-कल्पना करना। मारना, पीटना, ठोंकना। **मुहा० बातें—**,कल्पित बातें बनाना।

गढ़वई, गढ़वै–(संज्ञा, पु० दे०) गढ़-पति, गढ़नायक, गढ़पाल।

गढ़वाना—(स० क्रि०) गढ़ाना, बनवाना।

गढ़वार, गढ़वाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गढ़+वाला] किले का स्वामी, किलेदार। गढ़-रक्षक, गढ़-पालक। एक नगर या प्रदेश जो उत्तर मे है। [**गढ़वाली**–(वि०) गढ़वाल प्रान्त का निवासी।]

गढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गर्त] गढ़हा, गड्ढा। खंदक, खाँई।

गढ़ाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० गढ़ना] गढ़ने का काम। गढ़न की मजदूरी। [गढ़वाई (दे०)]

गढ़ाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० गढ़ना का प्रे० रूप] गढ़न का काम कराना, गढ़वाना।

गढ़िया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गढ़ना] गढ़ने वाला। भाला, बरछी, कुन्त। प्रास। बर्तन आदि गढ़ने वाला, ठठेरा। [**गढ़ैया** (प्रान्ती०); गढ़इया (दे०)] छोटा गड्ढा। **गढ़ी**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गढ़] छोटा किला। (क्रि० स०, सा० भू०, स्त्री०) गढ़ दी।

गढ़ेला—(संज्ञा, पु०) [हि० गढ़ा] गढ़ा, गड्ढा। (वि०) गढ़ा हुआ।

गढ़ैया—(वि०, दे०) [हि० गढ़ना] गढ़ने वाला, बनाने वाला। रचने वाला। तुक्कड़ कवि।

गढ़ोई—§*(संज्ञा, पु०, दे०) गढ़पति, किलेदार, कोटपति।

गण—(संज्ञा, पु०, सं०) झुण्ड, समूह, जत्था। श्रेणी, जाति, कोटि। तीन गुल्म की सेना। तीन वर्णों का समुदाय। पिंगल में गण, ८ हैं—म, न, भ, य, ज, र, स, त गण। प्रथम चार शुभ और शेष अशुभ हैं। समान साधनिका वाले शब्दों और धातुओं के समूह (सं०, व्या०)। शिव-पारिषद। प्रमथ। दूत, सेवक, पारिषद, परिचारक, अनुचर। (प्रत्य०) बहु-वचन बनाने का एक प्रत्यय, जैसे—तारागण।—**देवता**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समूहचारी देवता, जैसे—विश्वेदेवा, रुद्र, वसु।—**नाथ,—नायक**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गणेश। शिव। गणों के स्वामी। [गननायक (दे०)] "गन-नायक बर-दायक देवा"—[रामा०]।—**पति**–(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश, शिव, गणाधिराज। [गनपति

(दे०)] —**पाठ**—(संज्ञा, पु०, सं०) पुस्तक-विशेष, भू आदि क्रिया-समूहों का पाठ (सं०, व्या०) ।—**पूर्ति**—(संज्ञा, स्त्री०) कार्य सचालन के लिए सदस्यों की निर्धारित संख्या (कोरम) ।—**राऊ**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गणराज] गणेश । [गनराय, गनराउ (दे०)] "नाम-प्रताप जान गनराऊ"—[रामा०] ।—**राज**—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश । शिव । गणाधिपति ।—**राज्य**—(संज्ञा, पु०, सं०) वह राज्य जो चुने हुए मुखियों के द्वारा चलाया जावे, प्रजातन्त्र राज्य का एक रूप ।

गणक—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्योतिषी, हिसाबी । गनक (ब्र०) । "एरे गुनी गनक गनै है कहा"—रसाल ।

गणन—(संज्ञा, पु०, सं०) गिनना । गिनती, गणना । [**गणनीय, गणित, गण्य** (वि०)]

गणना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गिनती, शुमार, हिसाब, संख्या । [गिनना, गनना (दे०)] [एकाउन्ट]

गणनीय—(वि०, संज्ञा, पु०, सं०) गिनने योग्य । विख्यात । "सुमन-मंडल में गणनीय हो"—गिरीश ।

गणाधिप—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश । महन्त । "गणाधिपं गौरि-सुतं नमामि ।"

गणाधीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गणेश, गणपति ।

गणाध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गणेश । शिव । जमादार ।

गणिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेश्या, पतुरिया, रंडी, स्वैरिणी । कुलटा स्त्री, तवायफ । [गनिका (दे०)] एक वेश्या जिसे भगवान ने तारा था । "तर गयी गणिका अजामिल सा पापी तरा"—हितैषी ।

गणित—(संज्ञा, पु०, सं०) हिसाब, अंकविद्या । (वि०) गिना हुआ । [**अंकगणित, बीजगणित** (यौ०)]

गणितज्ञ—(संज्ञा, पु०, सं०) हिसाब लगाने वाला, हिसाबदाँ । ज्योतिषी । हिसाबी, गणित विद्या का ज्ञाता । [**गणितज्ञता** (संज्ञा, स्त्री०)]

गणेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिव-पुत्र गणपति, जिनका शरीर तो मनुष्य का सा और मुख हाथी का सा है, वे मङ्गल-कार्यों में प्रथम पूज्य और विघ्न-नाशक हैं, विद्या-बुद्धि के देने वाले हैं । [गनेश (दे०)]

गण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) गिनने-योग्य । जिसे लोग अति योग्य समझें, प्रतिष्ठित, विख्यात । "सुवधू इस गण्य गेह की"—महादेवी । **अग्र**—, (यौ०) सब से प्रथम गिनने योग्य, प्रधान ।—**मान्य**—प्रतिष्ठित, सम्मानित ।

गत—(वि०, सं०) गया हुआ, बीता हुआ, गुजरा हुआ । मरा हुआ । रहित, हीन । विगत । [**आगत** (विलो०)] (संज्ञा, स्त्री०) [सं० गति] अवस्था, दशा, गति । "गत बुरी अब मानव की हुई"—हरिऔध । **गता**—, आया गया । रूप, रंग, वेष । काम में लाना । सुगति । उपयोग । कुगति । दुर्गति । नाश । बाजों के बोलों का कुछ क्रम-बद्ध मिलना । नाच में शरीर का विशेष सचालन और मुद्रा । नाचने का ठाठ । स्वरों का साम्यपूर्ण प्रवाह । **मुहा०**—**बनाना**—दुर्दशा करना ।

गतक—(संज्ञा, पु०, सं०) गमन, गति ।

गतका—(संज्ञा, पु०) [सं० गत] लकड़ी खेलने का दंडा जिसके ऊपर चमड़े की खोल चढ़ी रहती है ।

गतांक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समाचार-पत्र का पिछला अङ्क । (वि०) गया, बीता, गुजरा । निकम्मा ।

गतांत—(वि०, सं०) जिसका अंत हो गया हो, जो खतम हो गया हो ।

गताक्ष—(वि०, सं०) अंधा, नेत्रहीन ।

गतागति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मरना और जीना ।

गतानुगतिक—(वि०, सं०) अंधानुकरण, आँख मूँद कर अनुसरण करना या पीछे चलना । "कहीं पर गतानुगतिक प्रवृत्ति"—हरिऔध ।

गतायात—(संज्ञा, पु०, सं०) आना और जाना ।

गतायु—(वि०, सं०) जिसकी आयु खतम होने वाली हो । निर्बल, बेदम ।

गतार्थ—(वि०, सं०) अर्थ रहित । गरीब । समझा हुआ ।

गतासु—(वि०, सं०) मृत, मरा हुआ ।

गति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चाल । गमन । हिलने-डोलने की क्रिया, हरकत, स्पन्द । अवस्था, दशा, हालत । रूप, रंग, वेष । पहुँच, प्रवेश, पैठ । प्रयत्न की सीमा । अन्तिम उपाय । दौड़ । तदबीर । सहारा, अवलम्ब । शरण । चेष्टा, प्रयत्न । लीला, माया । ढङ्ग, रीति । मृत्यु के पीछे जीव की दशा, मोक्ष, मुक्ति । लड़ने वालों के पैर की चाल । प्रवेश । पैतरा । सामर्थ्य, शक्ति ।

गतिरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी वार्त्ता या कार्य में किसी जटिलतावश प्रगति की सम्भावना का अभाव । [डेडलाक]

गत्ता—(संज्ञा, पु०, दे०] कागज के कई परतों को मिलाकर बनायी हुई दफ्ती, कूट। [गाता (दे०)]

गत्तालखाता—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० गर्त, प्रा० गत्त+खाता हि०] बट्टा-खाता, खोई हुई या गई-बीती रकम का लेखा।

गत्यवरोध—(संज्ञा, पु०) गतिरोध। [डेडलाक]

गथ, गत्थ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्रन्थ] धन, पूँजी, जमा। माल। झुँड। "माल बिन गथ पाइए" —[रामा०]।

गथना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ग्रंथन] एक में एक जोड़ना, आपस में गूँधना। बात गढ़ना, बात बनाना।

गद—(संज्ञा, पु०, सं०) विष। रोग। श्रीकृष्ण चन्द्र का छोटा भाई। (संज्ञा, पु०, अनु०) वह शब्द जो किसी गुलगुली वस्तु पर या गुलगुली वस्तु का आघात लगने से होता है। [गद् (दे०)]—**बद्**-गद-गद शब्द।

गदका—(संज्ञा, पु०, दे०) देखिए 'गतका'।

गदकारा—(वि०, पु०) [अनु० गद+कारा प्रत्य०] नम्र। मुलायम, गुलगुला। दब जाने वाला पदार्थ, नरम। "गोरी गदकारी परै, हँसत कपोलन गाढ़"। [**गदकारी** (स्त्री०)]

गदगद*—(वि०, दे०) [(सं०) गद्गद] देखिए 'गद्गद्' "गदगद बचन कहति महतारी"—[रामा०]।

गदन—(संज्ञा, पु०, सं०) **कथन**, वर्णन।

गदना*—(क्रि० स०) [सं० गदन] **कहना**, बोलना, "गद्व्यक्तायां वाचि"।

गदबदा—(वि०) कोमल, मुलायम।

ग़दर—(संज्ञा, पु०, अ०) हलचल, बलवा, खलबली, उपद्रव, क्रांति (सं०)। (**संज्ञा**, पु०, दे०) गदगद **शब्द** करके गिरना। चलना। [**गदरबदर** (यौ०)]

गदरा—(वि०) गदराया हुआ, अधपका।

गदराना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० गद] (फल आदि का) पकने पर होना। जवानी में अंगों का भरना। आँखों में कीचड़ आदि का आना। [**गदरा**-(वि०) गदराया हुआ। **गदरी** (स्त्री०, वि०)] "आम पके नीबू गदराने"।

गदला—(वि०) मैला। मटमैला पानी, कीचड़-युक्त पानी।

गदहपचीसी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० गदहा+पचीसी] १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था जिसमें मनुष्य को अनुभव कम रहता है। अनुभव-शून्य बात या काम। "गदहपचीसी में हम भी थे, के नकेल के ऊँट"—गिरीश।

गदहपन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गदहा+पन प्रत्य०] मूर्खता, बेवकूफी।

गदहपूरना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गदह=रोग +पुनर्नवा] पुनर्नवा नामी पौधा। गदापुन्ना (ग्रामी०)।

गदहा—(संज्ञा, पु०, सं०) रोग हरने वाला। वैद्य, चिकित्सक, भिषग, हकीम। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गर्दभ] गधा, गर्धप (सं०)। [**गधी, गदही** (स्त्री०)]. **मुहा०**—(**हे**) **पर चढ़ाना**-बहुत बेइज्जत या बदनाम करना।—(**हे**) **का हल चलना**-बिलकुल उजड़ जाना, बरबाद हो जाना। (वि०) मूर्ख, नासमझ, नादान, बेवकूफ, मूढ़।

गदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्राचीन हथियार जिसमें दंड के सिरे पर एक बड़ा लट्टू रहता है, यह भगवान विष्णु, हनुमान और भीम का मुख्य अस्त्र है। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) फकीर, भीख माँगने वाला, भिखारी, दरिद्र, भिक्षुक।

गदाई—(वि०) [फ़ा० गद=फकीर+ई प्रत्य०] गदा का काम। तुच्छ। नीचता। गरीबी। रद्दी। भीख माँगना। दरिद्रता, दीनता, दैन्य।

गदागद—(संज्ञा, पु०, सं०) अश्विनीकुमार। (अ०) एक पर एक, लगातार।

गदाग्रज—(संज्ञा, पु०, सं०) कृष्ण।

गदाधर—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु भगवान्।

गदाधारी—(वि०, सं०) गदा रखने वाला। विष्णु।

गदाधारिन—(वि०, यौ०, सं०) गदाहस्त। विष्णु। मारुति। भीम।

गदाला—(संज्ञा, पु०) हाथी की पीठ पर का गद्दा।

गदेरी, गदोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हथेली, कर-तल (सं०)।

गदेला—(संज्ञा, पु०, दे०) तोषक। बालक। बच्चा, [**गद्याल** (प्रा०), **गदेली** (स्त्री०)]

गद्गद्—(वि०, सं०) बहुत हर्ष, श्रद्धा आदि के आवेग से पूर्ण अधिक प्रेम। हर्ष आदि के कारण रुका हुआ। अस्पष्ट वा असम्बद्ध। प्रसन्न, खुश। [गद्गद (दे०)] —**गिरा**-गद्गद्वाणी, वाष्पावरुद्ध वाणी। **वाष्प**—,रुदनावरुद्ध। **मुहा०— होना**-प्रसन्नता से प्रपूरित होना।

गद—(संज्ञा, पु०, अनु०) नरम स्थान पर किसी वस्तु के गिरने का शब्द । किसी गरिष्ठ या शीघ्र न पचने वाली वस्तु के कारण पेट का भारीपन ।

गदर—(वि०, दे०) जो भली-भाँति पका न हो, अधपका । मोटा गद्दा । [गदरा (दे०)] [**गदराना**-(क्रि० अ०) अधपका होना ।]

गद्दा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गद से अनु०] रुई आदि से भरा बहुत मोटा और गुलगुल बिछौना, भारी तोषक । गदेला । रुई आदि मुलायम वस्तु से भरा बोझा । किसी मुलायम वस्तु का भार ।

गद्दी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गद्दा का स्त्री० और अल्प०] छोटा गद्दा । वह वस्त्र जो घोड़े, ऊँट आदि की पीठ पर जीन आदि के रखने से पहिले डाला जाता है । व्यापारी आदि के बैठने का स्थान । राजा का सिंहासन । किसी बड़े अधिकारी का पद । महन्त आदि का पद । हाथ या पैर के तल का मांस-भरा भाग । [गदेरी, गदोरी (प्रान्ती०)]—**तकिया**-ठाठबाट ।—**जगना (चलना)**-वंश या शिष्य-परम्परा का चलते जाना । —**जगाना**-परम्परा का कायम रखना ।—**आबाद (बनी) रहना**-वंश वा राजसिंहासन या शिष्य परम्परा का बराबर जारी रहना ।—**लेना (देना)**-सिंहासन, पद वा अधिकार लेना (देना) । —**पर आना**-पद पर आना ।—**नशीन**-(वि०, यौ०) [हि० गद्दी+नशीन फ़ा०] गद्दी या सिंहासन पर बैठना । जिसे राज्याधिकार मिला हो, उत्तराधिकारी, गद्दीधर । [**गद्दी-नशीनी** (हि०, संज्ञा, स्त्री०) ।] **मुहा०—पर बैठना**-सिंहासन पर बैठना या उत्तराधिकारी होना । दूकान पर बैठना । किसी राजवंश की पीढ़ी या आचार्य्य की शिष्य-परम्परा । हाथ व पैर की हथेली ।

गद्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वह लेख जिसमें मात्रा और वर्ण की संख्या, गति, स्थानादि का कोई नियम न हो, परन्तु शब्दों का क्रम व्याकरणानुसार ठीक रहे, वार्तिक, वाचनिका, पद्य का विलोम ।—**काव्य**-काव्य-गुण से पूर्ण गद्य, उपन्यास, कथादि । [**गद्यात्मक, गद्यमय** (वि०)] —**शैली**-गद्य लिखने की रीति । [**गद्यलेखक, गद्यकार** (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०)]

गधा—(संज्ञा, पु०, दे०) गदहा, गर्दभ (सं०) । [**गधी, गधैया** (स्त्री०)]

गन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [गण सं०] (संज्ञा, पु०, अं०) बंदूक । (क्रि० वि०, दे०) गिन ।

गनगन—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) काँपने या रोमांच होने की मुद्रा । किसी वस्तु के तेजी से घूमने का शब्द ।

गनगनाना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० गनगन] शीत आदि से रोमांच या कंप आदि का होना । बड़े वेग से किसी वस्तु का चक्कर लगाना या घूमना ।

गनगौर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गण+गौर] चैत्र शुक्ल तृतीया, इस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं ।

गननाऽ—(क्रि० स०, दे०) गिनना । [सं० गणन]

गनाना*—(क्रि० स०, दे०) गिनाना । अदा कर लेना, ले लेना । (क्रि० अ०) गिना जाना ।

गनियारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गणिकारी] छोटी अरनी, शमी की तरह का एक पौधा ।

ग़नी—(संज्ञा, पु०, अ०) [गनी दे०] धनी, "गनी गरीब-नवाज"—तुलसी० ।

ग़नीम—(संज्ञा, पु०, अ०) लुटेरा, डाकू । बैरी, शत्रु । [गनीम (दे०)]

ग़नीमत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लूट का माल । वह माल जो बिना परिश्रम के मिले, मुफ्त का माल । सन्तोष की बात । [गनीमत (दे०)]

गन्ना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कांड] ईख, ऊख, मोटी ईख ।

गप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गल्प] इधर-उधर की बात जिसकी सत्यता का निश्चय न हो, वह बात जो केवल जी बहलाने के लिये की जाय । काल्पनिक बात, बकवाद, मिथ्यावाद । [गप्प (दे०)]—**शप**-इधर-उधर की बातें । झूठी खबर, मिथ्या सम्वाद, अफवाह । वह झूठी बात जो बड़ाई प्रगट करने के लिए की जाय, डींग, शेखी । **मुहा०—उड़ाना**-झूठी बातें कहना ।—**मारना (लगाना)**-झूठी और विनोदपूर्ण बात करना ।—**हाँकना (लड़ाना)**-काल्पनिक बात करना । [संज्ञा, पु०, अनु०] वह शब्द जो झट से निगलने, किसी नरम वा गली वस्तु में घुसने से होता है । सरलता से निगलने योग्य । —**कर जाना**-हड़प जाना, किसी की किसी वस्तु का हरण करके हजम कर लेना । चुरा लेना । [**गपागप**-(यौ०) जल्दी-जल्दी निगलना, झटपट खाना ।] निगलने या खाने की क्रिया, भक्षण करना ।

गपकना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० गप+हिं० करना] चटपट निगलना । हड़पना । झट से खा लेना । अपहरण करना । गपक जाना ।

गपड़चौथ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गपोड़=बातचीत+चौथ] व्यर्थ की बात-चीत । लीपपोत । अंड-बंड, अव्यवस्था । **मुहा०—करना (लगाना)**-अव्यवस्था उत्पन्न करना ।

गपना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० गप] बकना, बकबाद करना, गप मारना, गप करना ।

गपिहा, गपिया—(वि०, दे०) गप मारने वाला । बकवादी, बातूनी, गपोड़िया, गप्पी ।

गपोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गप] मिथ्या बकवाद, व्यर्थ की बात, कपोल कल्पना । गप मारने वाला । [**गपोड़िया**-(वि०, दे०), **गपोड़पंथी**-(वि०, यौ०, दे०) गप्पी]

गप्प—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गप । [**गप्पी**-(वि०)] गप मारने वाला, हाँकने वाला । छोटी बात को बढ़ा कर कहने वाला ।

गप्पा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० गप] धोखा, छल, कपट । झूठ ।

गप्पूनाथ—(वि०, यौ०, दे०) जड़मूर्ख । लो० "बार बार हड़कावै सो गप्पूनाथ कहावै" ।

ग़फ़—(वि०, फ़ा०) घना, ठस । गाढ़ा, घनी बुनावट का मोटा (वस्त्र) ।

गफ्फा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० गप] बहुत बड़ा कौर, बड़ा ग्रास । लाभ, फायदा । दोनों पंजे फँसाना ।

ग़फ़लत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बेपरवाई, लापरवाही, असावधानी, बेखबरी, बेसुधी । भूल-चूक ।

ग़फ़ूर—(वि०, अ०) क्षमा करने वाला । दयावान ।

ग़फ़्फ़ार—(वि०, अ०) बड़ा क्षमाशील ।

गबड़ना—(क्रि० स०, दे०) मिलाना । अभिसना (ग्रा०) ।

ग़बन—(संज्ञा, पु०, अ०) खयानत, दूसरे के सौंपे हुए माल को खा जाना या उड़ा जाना ।

गबरू—(वि०) [फ़ा० खूबरू] उभड़ती या उठती जवानी का, जिसके रेख उठती हो । पट्ठा । भोलाभाला, सीधा-सादा । (संज्ञा, पु०, दे०) दूल्हा, पति । गबरुआ ।

गबरून—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० गबरून] चारखाने की तरह का एक मोटा कपड़ा । [गबरून (दे०)]

गबाशन—(संज्ञा, पु०, दे०) चमार । चंडाल, म्लेच्छ । नीच, तुच्छ ।

गब्बर—(वि०, दे०) [सं० गर्व, प्रा० गब्ब] अहंकारी, घमंडी, गर्वीला । मट्ठर, मंद, सुस्त । बहुमूल्य, कीमती । मालदार, धनी । जल्दी काम न करने वाला या बात का उत्तर न देने वाला । हठी, जिद्दी ।

गभस्ति—(संज्ञा, पु०, सं०) किरण, रश्मि । प्रकाश । सूर्य्य । हाथ, बाहु । पाताल । (स्त्री०) अग्नि की स्त्री, स्वाहा ।

गभस्तिमान—(संज्ञा, पु०) [सं० गभस्तिमत्] सूर्य्य, रश्मिमाली । एक द्वीप । एक पाताल ।

गभीर*—(वि०, दे०) गँभीर, गंभीर (सं०) । [**गभीरता** (संज्ञा, स्त्री०)]

गभीरका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बड़ा ढोलक ।

गभुआर—(वि०, दे०) [सं० गर्भ+आर प्रत्य०] गर्भ का (बालक) । जन्म के समय का रखा हुआ (बाल) । वह लड़का जिसके सिर के बाल जन्म से लेकर न कटे हों, जिसका मुंडन न हुआ हो । नादान, अनजान, अबोध ।

गभुआरे—(वि०, दे०) [हिं० गभुआर] लड़कों के जन्म के बाल । घूँघर वाले बाल । (संज्ञा, पु०, दे०) गभुआर । "कुंचित कच मेचक गभुआरे", "तोतर बोल केस गभुआरे"—तुलसी ।

गभोलिक—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा गावतकिया । मसूर ।

ग़म—(संज्ञा, पु०, अ०) दुख, रंज, शोक । चिन्ता, फ़िक्र । ध्यान । सोच-विचार । **मुहा०—खाना**-क्षमा करना । ध्यान न देना । जाने देना । ठहरना । सहना । संतोष करना ।

गम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गम्य] (किसी वस्तु या विषय में) प्रवेश, पैठार, पहुँच । गुजर । सामर्थ्य । जाना, जैसे दुर्गम, सुगम, आगम । **मुहा०—करना**-धैर्य धारण करना, ठहरना ।—**खाना**-धैर्य करना, संतोष करना ।

गमक—(संज्ञा, पु०, सं०) जाने वाला । बोधक, सूचक । बतलाने वाला । (संज्ञा, स्त्री० दे०) सुगंधि, महक । तबले की आवाज । संगीत में एक स्वर से दूसरे पर जाने का ढंग । **मुहा०—उठना**-महक उठना । बाजे का बजना ।

गमकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० गमक] महकना । तबला बजना । [**गमकाना** (प्रेरणा० रूप)]

गमकीला—(वि०, दे०) [हिं० गमक] महकने वाला, सुगन्धित, खुशबूदार । सहनशील, गमखोर ।

गमखोर—(वि०, दे०) [फ़ा० ग़मख्वार] सहनशील, सहिष्णु, ग़म खाने वाला। गमख्वार। [**गमखोरी** (स्त्री०)]

गमछा—(संज्ञा, पु०, प्रा०) अँगौछा।

गमत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गर्म] मार्ग, रास्ता। व्यवसाय। गाने-बजाने का समाज। [गम्मत-(दे०), गम्मती (दे०)]

गमन—(संज्ञा, पु०, सं०) जाना, चलना, यात्रा करना। मैथुन, संभोग। "गुरु पत्नी के गमन का किया चंद्र ने पाप"—गिरीश। [**गम्य** (वि०)]

गमना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गमन] जाना, चलना। * (क्रि० अ०) [अ० ग़म] सोच वा रंज करना। ध्यान देना। (यौ०) प्रवेश न होना। दुख न होना।

गमला—(संज्ञा, पु०, हिं०) फूलों के पेड़ और पौधे लगाने का बर्तन। कमोड, पाखाना फिरने का बर्तन।

गमाका—(संज्ञा, पु०, दे०) महक। तबले की ताल।

गमागम—(संज्ञा, पु०, यौ० सं०) आना-जाना।

गमाना*—(क्रि० स०, दे०) गँवाना, खो देना।

गमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० ग़म] शोक की अवस्था वा काल। वह शोक जो किसी के मरने पर उसके सम्बन्धी करते हैं। [सोग (दे०)] मृत्यु, मौत।

गम्मत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) विनोद, हँसी, मौज, बहार। गाना-बजाना। [**गमत, गम्मती** (वि०, दे०)]

गम्य—(वि०, सं०) जाने योग्य, गमन-योग्य। प्राप्य, लभ्य। संभोग या मैथुन करने योग्य। साध्य। [**गम्या, ज्ञानगम्य** (स्त्री०, यौ०)]

गयंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गजेन्द्र] बड़ा हाथी।

गय—(संज्ञा, पु०, सं०) घर, मकान। आकाश। धन। प्राण। पुत्र। एक राजा। एक दैत्य। एक तीर्थ का नाम। हाथी। [**गज** (सं०)]

गयनाल—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) गजनाल (सं०) हथनाल।

गयल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गइल। मार्ग, रास्ता। [**गैल** (ब्र)]। "कुल-गैल गहिबे कौ हठि हटकत आवै है"—रत्ना०।

गयशिर—(संज्ञा, पु०, सं०) आकाश। गया के निकट का एक पहाड़।

गया—(संज्ञा, पु०, सं०) एक तीर्थ का नाम जो बिहार में है, जहाँ पिंड-दान किया जाता है, एक शहर जो बिहार में है। (क्रि० अ०) [हिं० जाना सं० गम] जाना क्रिया का भूतकालिक रूप, प्रस्थानित हुआ। **मुहा०—गुजरा,—बीता**-बुरी दशा को पहुँचा हुआ। नष्ट-भ्रष्ट। निकृष्ट। **हाड़—ले जाना**-मृत व्यक्ति की अस्थियाँ गया में पहुँचा कर उसे तारना।—**करना**-गया में किसी का श्राद्ध कर्म करना।

गयावाल—(संज्ञा, पु०) [हिं० गया + वाला] गया तीर्थ का पंडा। गया वाला।

गर—(संज्ञा, पु०, सं०) रोग, बीमारी। विष, जहर। (अव्य०) [फ़ा० अगर] अगर का सूक्ष्म रूप। *(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गला] गला, गर्दन। [**गरो** (ब्र)। **गरबहियाँ, गरबाहीं, गलबाहीं**-(यौ०, दे०) गले में हाथ डाल कर भेंटना।] (फ़ा० प्रत्य०) किसी काम को बनाने वाला, जैसे—कलईगर, जर-गर, सौदागर।

गरई—(क्रि० अ०) [हिं० गलना] गल जाता है, पिघल जाता है।

गरक—(वि०, दे०) [अ० ग़र्क़] डूबा हुआ, निमग्न। विलुप्त, नष्ट, बरबाद। [गरकना (दे०)] (क्रि० स०) डुबोना, छिड़कना। "...गरके गुबिन्द कै धौं गोरी की गोराई मैं।"

गरकाब—(वि०, यौ०, फ़ा०) पानी में डूबा हुआ। किसी वस्तु में डूबा हुआ। [**ग़र्क़ाब**]

गरकी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) डूबने की क्रिया या भाव। डूबना। बूड़ा, बाढ़। वह भूमि जो पानी के नीचे हो। नीची भूमि, खलार। अति वर्षा।

गरग—(संज्ञा, पु०, दे०) गर्ग जाति (ब्र०), गर्ग ऋषि। गर्ग गोत्र।

गरगज*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गढ़ + गज] किले की दीवालों पर बना हुआ बुर्ज, जिस पर तोपें चढ़ी रहती हैं। वह ढूह या टीला जहाँ से बैरी की सेना का पता चलाया जाता है। तख्तों से बनी हुई नाव की छत। फाँसी की टिकठी। (वि०) बहुत बड़ा, विशाल। (प्रान्ती०) ढेर, समूह, राशि। **मुहा०—लगाना**-ढेर करना।

गरगाना—(संज्ञा, पु०, अनु०) गराड़ो, घिरनो।

गरगराना—(क्रि० अ०, दे०) गरजना, जोर से बोलना, शोर करना, गर-गर शब्द करना, गड़गड़ाना। [**गरगराहट** (संज्ञा, स्त्री०)]

गरगाबछ—(वि०, दे०) गरकाब, पानी में डूबा हुआ। नदी की बाढ़।

गरज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गर्जन] बहुत गम्भीर शब्द। बादल या सिंह का शब्द।

(अ०) मतलब [**गरजी, गरजू** । (वि०, दे०)] [**गर्जन** (संज्ञा, स्त्री०)] "गरजन आये मेरी गरज न आयेहैं—"। **लो०**"गरजमंद बावला" [**गरजी**-(वि०, दे०) गरजमंद]

ग़रज़—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आशय, प्रयोजन, मतलब। "गरजी गरीबन पै गजब गुजारो ना"। "गरजी ह्वै अरजी करी, कछु मरजी करि देहु"। —रस०। आवश्यकता, जरूरत। चाह, इच्छा। "गरज न जानै मेरी, गरजन जानै री।" (अव्य०, अ०) निदान, आखिरकार, अन्ततोगत्वा, अन्त को जाकर। मतलब यह कि, तात्पर्य यह कि, सारांश यह कि। **अल—**, तात्पर्य यह कि। **—मंद**-(वि०, फ़ा०) [गरजी (दे०)] जिसे जरूरत हो, जिसे आवश्यकता हो। चाहने वाला, इच्छुक, स्वार्थी, मतलबी। [**गरजमंदी** (संज्ञा स्त्री०)]

गरजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गर्जन] बहुत गहिरा और भारी शब्द करना, जैसे, बादल का गरजना। क्रोध, आवेशादि से चिल्लाना। जोर से बोलना, आतंक जमाना। मोती का चटकना। तड़कना, फूटना। "घन घमंडनभ गरजहिं घोरा"—[रामा०]।

गरजू—(वि०, दे०) गरजमंद, गरजी।

गरट्ट—(संज्ञा पु०) [सं० ग्रंथ] समूह, झुंड।

गरद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गर्द, धूल, मिट्टी। **—करना**-चूर करना, नष्ट करना। "कमर कौ दरद गरद कर डारै है"। [**गरदगुबार** (यौ०)]

गरदन—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) गला, ग्रीवा (सं०), गर्दन। **मुहा०—उठाना**-विरोध करना। विद्रोह करना। **—काटना**-(मारना) गला काटना, मार डालना। बुराई करना। हानि पहुँचाना। **—उड़ाना**-गला काट कर मार डालना। **—पर**-ऊपर, जिम्मे, (पाप के लिये)। **—डाल देना (बैठना)**-हिम्मत हार कर बैठ जाना। शिथिल हो जाना। **—मारना**-सिर काटना, मार डालना। **—लगाना**-प्राणों की बाजी लगाना। **—में हाथ देना या डालना**-गरदन पकड़ कर निकालना, गरदनियाँ देना। (दे०) बर्तन आदि का ऊपरी हिस्सा। पहिनने के कपड़ों के गले। **—(गले) में हाथ (बाँह) डालना**-भेंटना। **—देना**-प्राण देना। **—झुकाना**-लजाना। अवनत होना। शान्त हो जाना। मरने को तैयार होना। स्वीकार करना। अधीन होना। **—हिलाना**-स्वीकार या अस्वीकार करना।

गरदना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गरदन] मोटी गरदन। गरदन पर लगने वाली धौल।

गरदनियाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गरदन+इयां प्रत्य०] किसी को कहीं से गरदन पकड़ कर निकालने की क्रिया। [**गरदनौ** (बहु० व०)]

गरदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० गर्द] धूलि, मिट्टी, खाक, गर्द, गरद। 'कटि के दरद कौ गरद करि डारती"—**कुं०** वि०।

गरदान—(वि०, फ़ा०) घूम-फिर कर एक ही जगह पर आने वाला, चक्कर लगाने वाला। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) शब्दों के रूप साधना। घूम-फिर कर सदा अपने स्थान पर आने वाला कबूतर।

गरदानना—(क्रि० स०, दे०) [फ़ा० गरदान] शब्दों के रूपों का सिद्ध करना। आवृत्ति करना, उद्धरणी करना। गिनना। समझना। मानना।

गरदुआ—(संज्ञा, पु०) पशुओं को होने वाला बुखार।

गरना*‡—(क्रि० अ०, दे०) गलना, पिघलना। गड़ना। एक क्रम से ऊपर नीचे रखकर ढेर लगाना। [सं० गरण] निचुड़ना। निचोड़ना, गारना।

गरनाल—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० गर+नली] अति चौड़े मुँह वाली तोप, घननाल। घननाद।

गरब*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गर्व] घमंड, गर्व। हाथी का मद। [गरभ, गरब्ब (दे०)] "गरब करहु रघुनन्दन जनि मन माँह"—**तु०**। **—गहेला**-(वि०, दे०) [हि० गर्व+गहना] गर्व धारण करने वाला, गर्वीला, अभिमानी, घमंडी।

गरबई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गर्वीलापन, घमंड, अभिमान, गुमान, अहंकार, मद।

गरबना, गरबाना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गर्व] घमंड मे आना, अभिमान करना।

गरबाँही—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) गलबाँहीं। आपस मे गले में हाथ डाल कर चलना। "दै गर-बाँहीं जु नाहीं करी वह नाँहीं गोपाल कौ भूलति नाहीं"।

गरबित—(वि०, दे०) अभिमान-युक्त, घमंडी, गर्वित, गर्वयुक्त, मदयुक्त।

गरबी, गरबीला—(वि०, दे०) [सं० गर्व, हिं० गरब+ईला प्रत्य०] जिसे गर्व हो, अभिमानी, घमंडी। [**गरबीली** (स्त्री०)]

गरभ—(संज्ञा, पु०, दे०) गर्व (सं०)। गर्भ (सं०)।

गरभाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गर्भ] गर्भिणी होना, गर्भ-युक्त होना। धान, गेहूँ आदि के पौधों में बालों का आना।

गरम—(वि०, दे०) [फ़ा० गर्म] जलता हुआ, तप्त, उष्ण, तत्ता। **गरमा**—,उष्ण, तप्त, तत्ता, तीक्ष्ण, उग्र, खरा। **गरमा—(मी) होना**-परस्पर क्रोध में आना या सरोष विवाद करना, आवेश होना। **मुहा० मिजाज—होना**-क्रोध आना, पागल होना।—**होना (पड़ना)**-तेज पड़ना, आवेश मे आना, क्रुद्ध होना, तातो हना (ब्र०) **बाजार—होना**-भाव तेज होना। चहल-पहल होना। भीड़ होना।—**कपड़ा**-शरीर गरम रखने वाला कपड़ा।—**मसाला**-धनिया, जीरा, लौंग, इलायची आदि उत्तेजक वस्तु या बात। उत्साह-पूर्ण कथा। **गरमा—(मी)**-मुस्तैदी, जोश। क्रोध मे कहा सुनी।—**खबर (चर्चा)**-जोरों की खबर या चर्चा, अतिकथित बात।—**मिजाज का**-क्रोधी।

गरमाना—(क्रि० अ०) [हिं० गरम] गरम पड़ना। तेज पड़ना। उमंग पर आना। मस्ताना। आवेश में आना, क्रोध करना, झल्लाना। कुछ देर दौड़ने या परिश्रम करने पर बदन में गरमी का अनुभव करना। अपने को गरम करना। घोड़े आदि पशुओं का तेजी पर आना। गरमी पड़ना। *(क्रि० स०, दे०) गरम करना। तपाना। औटाना।

गरमाहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० गरम+हट प्रत्य०] गरमी।

गरमी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) उष्णता, ताप, जलन। तेजी, उग्रता, प्रचंडता। **गरमीला**-(वि०) गरम, क्रोधी, गरमी करने वाला। आवेश, क्रोध, उमंग, जोश। ग्रीष्म ऋतु, कड़ी धूप के दिन। एक रोग, आतशक, फिरंग रोग। **मुहा०—निकालना**-घमंड दूर करना।—**चढ़ना या आना (दिमाग में)**-दिमाग बिगड़ना। क्रोध आना। पागल होना।—**दिखाना**-क्रोध प्रगट करना। रोब दिखाना।

गररा*—(संज्ञा, पु०, दे०) गर्रा (दे०)।

गरराना*—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) घोर ध्वनि करना, गंभीर स्वर से गरजना।

गरल—(संज्ञा, पु०, सं०) विष, जहर। "···गरल सुधा रिपु करै मिताई"—[रामा०]।

गरलामृत—(संज्ञा, पु०, सं०) गरल और अमृत, विष तथा अमृत। "गरलामृत शिव आशुतोष-बल विश्व सरल नगी, वसन वासन्ती लेगी"—निराला।

गरली—(वि०, सं०) विष से युक्त, जहरीला।

गरहन*—(संज्ञा, पु०, दे०) ग्रहण (सं०)।

गराँव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गर=गला] चौपायों के गले में बाँधी जाने वाली दोहरी रस्सी, [**गेरवाँ, गेरइयाँ** (प्रान्ती०)।] (संज्ञा, पु० अनु०) ग्राम। [**गाँवगेरों** (यौ० ब्र०)।]

गरा—(संज्ञा, पु०, दे०) गला, गरो (ब्र०)। (सा० भू० क्रि०) गला हुआ। (संज्ञा, स्त्री०) देवदाली लता।

गरागरी—(स्त्री०, सं०) देवताड़।

गराज*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गर्जन] गरज, गर्जन [**गराजना**-(क्रि० अ०, दे०) गरजना]। (संज्ञा, पु०, दे०) [गैरेज] मोटरखाना।

गराड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० गड़ या सं० कुंडली] काठ या लोहे का गोला जिसके मध्यस्थ गड्ढे में रस्सी डाल कुएँ से पानी खींचते हैं, चरखी। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० गण्ड=चिन्ह] रगड़ से पड़ी हुई गहरी लकीर, सॉट। [गरारी (दे०)]

गराना—(क्रि० स०, दे०) गलाना। (क्रि० स०, हिं० गारना] गारने का काम कराना, गारना, निचोड़ना। गाड़ना। काजल का फैटना। रगड़ना। गरने या राशि करने का काम कराना [**गरवाना** (प्रेरणा० रूप)]

गरारा—(वि०, दे०) [सं० गर्व+आर प्रत्य०] गर्व-युक्त। प्रचंड, बलवान। (संज्ञा, पु०) [**गरगरा** अ०] कुल्ली, कुल्ला की औषधि। (संज्ञा, पु०, हिं०) घेरा, पायजामे की ढीली मोहरी। बड़ा थैला। [**गरारी (स्त्री०), गरारीदार** (वि०)]

गरास*—(संज्ञा, पु०, दे०) ग्रास (सं०)।

गरासना*—(क्रि० स०, दे०) ग्रसना (सं०)।

गरिमा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गरिमन्] गुरुत्व। बोझा, भारीपन। महिमा, महत्त्व। गुरुता। गर्व, अहंकार। आत्मश्लाघा, आत्मगौरव। आठ सिद्धियों में से एक जिससे साधक अपने को यथेष्ट रूप से

भारी कर सकता है। [**गुण-गरिमा, ज्ञानगरिमा** (यौ०)]

गरियाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० गारी+आना प्रत्य०] गाली देना ।

गरियार—(वि०, दे०) [हिं० गड़ना=एक जगह रुक जाना] सुस्त, मट्ठर।

गरियालू—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का नीला-काला रंग।

गरिष्ठ—(वि०, सं०) बहुत भारी, अति गुरु। जो जल्दी न पके या पचे। महान्।

गरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुलिका] नारियल के फल के भीतर का मुलायम गूदा, मींगी, जिसे गिरी भी कहते हैं।

गरीब—(वि०, दे०) [अ० गरीब] नम्र। दीनहीन, दरिद्र, कंगाल। मुसाफिर, बापुरा, (अ०) बेसामान। असहाय। "जे गरीब पर हित करहिं"—रही०। **—निवाज**-(वि०, दे०) [फ़ा० गरीब+निवाज] दीनों पर दया करने वाला, दीनदयालु, दीन-प्रतिपालक। "गई-बहोर गरीब-निवाजू"—तुलसी। **—परवर**-(वि०, फ़ा०) गरीबों का पालने वाला, दीन-प्रतिपालक, दीनपालक। [गरीबपरवर (दे०)]

गरीबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० गरीबी] आधीनता। दीनता, विनम्रता। दरिद्रता, निर्धनता, मुहताजी।

गरीयस—(वि०, सं०) अति भारी। गुरु, महान्। [गरु (दे०)]। [**गरीयसी** (स्त्री०)]

गरु, गरुआ—*‡—(वि०, दे०) [सं० गुरु] भारी, वजनी। गौरवशील। **गुरु** (ग्रा०) **गरुओ** (ब्र०) [विलो० **हरुओ**] [**गरुई** (स्त्री०)]

गरुआई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गरुआ] गुरुता, भारीपन। [**गरुआना** (क्रि० अ०, सा० भू०)]

गरुआना—(क्रि० अ०, दे०) भारी या वजनी होना। "अधिक अधिक गरुआई"—[रामा०]।

गरुड़—(संज्ञा, पु०, सं०) पक्षिराज, वैनतेय, विष्णु भगवान के वाहन। उक़ाब (अ०) को भी बहुतेरे गरुड़ कहते हैं। सेना की व्यूह-रचना का एक भेद। छप्पय छंद का एक भेद (पिं०)। **—केतन**-(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु। गरुड़केतु। **—गामी**-(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु। श्रीकृष्ण। **—ध्वज**-(संज्ञा, पु०, सं०) गरुड़केतु। विष्णु भगवान। गरुड़वाहन। **—पुराण**-(संज्ञा, पु०, सं०) १८ पुराणों में से एक पुराण। **—यान**-(संज्ञा, पु०) विष्णु। **—रुत**-(संज्ञा, पु०, सं०) सोलह वर्णों का एक वर्णिक वृत(पिं०)। **—वाहन**-(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु। **—व्यूह**-(संज्ञा, पु०, सं०) लड़ाई के मैदान में सेना के जमाव या स्थापन का एक क्रम।

गरुड़ांक—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु।

गरुड़ाग्रज—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य के सारथि अरुण।

गरुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भारीपन, गुरुत्व।

गरुवाई*—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भारीपन, गुरुता।

गरू—(वि०, दे०)[सं० गुरु] भारी, वजनी।

ग़रूर—(संज्ञा, पु०, अ०) घमंड, अहंकार। [गरुर (दे०)]

गरूरता, गरूरताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०)[अ० गरूर] घमंड, अहंकार, अभिमान, गर्व।

गरुत्मान्—(संज्ञा, पु०, सं०) गरुड़ पक्षी। अग्नि।

गरुल—(संज्ञा, पु०, सं०) गरुड़।

गरूरी, गरूरा—(वि०, दे०) [अ० ग़रूर] [मग़रूर (अ०)] घमंडी, अहंकारी, अभिमानी।

गरेबान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) आगे का भाग। कुरते आदि में गले पर का भाग।

गरेरना—(क्रि० स०, दे०) घेरना (हिं०)।

गरेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) घेरा। (वि०, दे०) घुमावदार।

गरैयाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गला] गराँव, रस्सी। [**गेरवा, गिरैयाँ** (प्रान्ती०)]

गरोह—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) झुंड, जत्था, गिरोह।

ग़र्क़—(संज्ञा, पु०, अ०) निमग्न, डूबा हुआ।

गर्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि। एकगोत्र। बैल। साँड़। एक पहाड़। एक जाति की उपाधि। [गरग (दे०)]

गर्गर—(संज्ञा, पु०, सं०) वैदिककालीन एक बाजा। मटका। एक मछली।

गर्ज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गरज (अ०)। गरज (हिं०) [**गर्जन** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

गर्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) भीषण ध्वनि, नाद, रव, गंभीर नाद। बादल या सिंहादि का नाद। **—तर्जन**-तड़प, डाँट-डपट।

गर्जना—(क्रि० अ०, दे०) गरजना।

गर्जित—(वि०, सं०) बादल के शब्द से युक्त। मतवाले हाथी के शब्द से युक्त।

गर्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०) गड्ढा, गढ़ा। "वरं गर्तावर्त्ते गहन जल मध्ये विलयनम्"।

गर्द—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) धूल, राख । [गरद (दे०)] । "दरद करै है अरी गरद गुलाल की" । [गर्दा (दे०)] [**गर्द-गुबार**—(यौ०)] धूल, मिट्टी, रज-राशि]—**खोर**,—**खोरा**-(वि०) [फ़ा० गर्दखोर] गर्द और धूलि पड़ने से जल्द खराब या बरबाद न होने वाला । (संज्ञा, पु०) पाँव पोंछने का टाट या कपड़ा, पायंदाज । ।

गर्दन—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) [गरदन (दे०)] गला, ग्रीवा (सं०) ।

गर्दभ—(संज्ञा, पु०, सं०) गधा, गदहा ।

गर्दाबाद—(वि०, फ़ा०) धूलयुक्त । वीरान, उजाड़ ।

गर्दिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) घुमाव, चक्कर, विपत्ति, आफत । **मुहा० वक्त की**—,**दिनों की**—, भाग्य-चक्र का उलट-फेर ।—(**शे**) **अय्याम**-दिनों का हेर-फेर ।

गर्द्ध—(संज्ञा, पु०) [सं० गर्द्ध + अल् प्रत्य०] स्पृहा, लिप्सा, चाह, पलखा । पाकर ।

गर्ब—(संज्ञा, पु०, दे०) गर्व (सं०) [गरब (दे०)]

गर्बीला—(वि०, दे०) घमंडी ।

गर्भंड—(संज्ञा, पु०, सं०) नाभि की वृद्धि, अंडे की तरह गोलाकार नाभि ।

गर्भ, गर्भक—(संज्ञा, पु०, सं०) पेट के भीतर का बच्चा । [गरभ (दे०)] हमल । "गर्भक के अर्भक-दलन"—[रामा०] । भीतरी भाग । अदृष्ट स्थान । अज्ञात स्थल । आन्तरिक देश । जैसे, भविष्य के गर्भ में ।—**केसर**-(संज्ञा, पु०, सं०) फूलों में वे पतले सूत जो गर्भ-नाल के भीतर होते हैं ।—**कोष**-(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भ केसर का भाग ।—**खिन्ना**-(वि०, स्त्री०, सं०) गर्भ-भस्ता । "दुर्वहगर्भ खिन्ना सीता विवासन पटे—" भवभूति ।—**गृह**-(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भालय । घर के बीच की कोठरी, बीच का घर । गर्भघर । आँगन । मन्दिर की वह कोठरी जिसमें मूर्तियाँ रखी जाती हैं । गर्भधाय,गर्भायण, गर्भागार । —**ज**-(वि०, सं०) गर्भजात, मनुष्यादि गर्भ से उत्पन्न होने वाले ।—**नाल**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) फूलों के भीतर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भ-केसर रहता है ।—**पात**-(संज्ञा, पु०, सं०) बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले ही पेट से निकल जाना, पेट गिरना, गर्भ गिरना ।—**पुष्टि**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्भ की दृढ़ता ।—**पोषण**-(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भ-पालन, गर्भ का परिपालन । [**गर्भ-पोषक** (वि०)]—**भार**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गर्भ का बोझा ।—**भारा क्रान्ता**-(वि०, स्त्री०, सं०) गर्भ-भार से त्रस्त ।—**मदालसा**-(वि०, स्त्री०, सं०) गर्भ मद से शिथिल ।—**विज्ञान**-(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भ सम्बन्धी विज्ञान [(एम्ब्रायालोजी)] —**सन्धि**-(संज्ञा,स्त्री०, सं०) नाटक की संधियों के पाँच भेदों में से एक (नाट्य०) ।—**स्थ**-(वि०, सं०) जो गर्भ में हो ।—**स्पृहा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्भ की इच्छा, दोहद ।—**स्राव**-(संज्ञा, पु०, सं०) चार महीने के अन्दर होने वाला गर्भपात । गर्भ-स्रवन ।—**स्थापन**-(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भ-स्थिति के लिए मैथुन । **मुहा०**—**गिरना**-गर्भ के बच्चे का पूर्ण वृद्धि के पूर्व ही निकल जाना, गर्भपात होना ।—**गिराना**-बलात् औषधि के प्रयोग से गर्भ का पात कराना ।—**रहना**-गर्भ में बच्चा आना ।

गर्भवती—(वि०, स्त्री०, सं०) वह स्त्री जिसके पेट में लड़का हो, गर्भिणी, गुर्विणी ।

गर्भांक—(संज्ञा, पु०, सं०) नाटक के बीच में किसी घटना-विशेष का सूक्ष्म दृश्य, नाटकांक का एक भाग या दृश्य (नाट्य०) ।

गर्भाधान—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मनुष्य के सोलह संस्कारों में से प्रथम जो गर्भ में बच्चे के आने के समय होता है । गर्भ-स्थिति, गर्भधारण ।

गर्भालस्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गर्भ-शैथिल्य ।

गर्भाशय—(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्रियों के पेट में बच्चा रहने का स्थान, गर्भालय ।

गर्भिणी—(वि०, स्त्री०, सं०) जिसे गर्भ हो वह स्त्री, गर्भवती, हामिला, पेटवाली ।

गर्भित—(वि०, सं०) गर्भयुक्त । भरा हुआ, पूर्ण, पूरा । जैसे—सारगर्भित बात ।

गर्भी—(वि०, सं०) गर्भयुक्त ।

गर्भोपनिषद—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक उपनिषद जो अथर्व वेद से सम्बद्ध है ।

गर्म—(वि०, फ़ा०) गरम ।—**बाजारी**-(स्त्री०) ज्यादा बिक्री का होना, माँग होना । चर्चा ।

गर्रा—(वि०, दे०) [सं० गरहाधिक] लाख के रंग का । (संज्ञा, पु०, दे०) लाखी रंग, घोड़े का एक रंग, जिसमें लाही और सफेद दोनों रंग मिले होते हैं । लाही रंग का कबूतर ।

गर्व—(संज्ञा, पु०, सं०) अहङ्कार, घमंड, मद । [**गर्वित** (वि०, सं०)] [**गर्वीला** (हि०)]

गर्वाना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गर्व] गर्व करना, गुमान या अभिमान करना ।

गर्वित—(वि०, सं०) गर्वयुक्त, घमंडी, अहङ्कारी, गर्वीला। [**गर्वात्मक**—(वि०)गर्व-सम्बंधी]

गर्विता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण या पति-प्रेम का घमंड हो। जैसे—रूपगर्विता।

गर्विष्ट—(संज्ञा, पु०, वि०, सं०) अभिमानी, घमंडी, अहंकारी, अहम्मन्य।

गर्वी—(वि०, पु०) [सं० गर्विन्] घमंडी, अभिमानी, गर्वीला, अहंकारी।

गर्वीला—(वि०, हि०) [सं० गर्व+ईला-प्रत्य०] घमंड से भरा हुआ, अभिमानी, अहङ्कारी। [**गर्वील** (स्त्री०)]

गर्हण—(संज्ञा, पु०, सं०) निन्दा, शिकायत।

गर्हणीय—(संज्ञा, पु०, सं०) निन्दायोग्य, निन्दनीय, तिरस्कार करने योग्य, दुष्ट, बुरा।

गर्हा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गर्ह] तिरस्कार, अपवाद, निन्दा, बुराई, अनादर, गर्हणा।

गर्हित—(वि०,) जिसकी निन्दा की जाय, निन्दित, दूषित। [**गर्हिता** (स्त्री०)]।

गर्ह्य—(वि०, सं०) गर्हणीय, निन्दनीय।

गल—(संज्ञा, पु०, सं०) गला, कंठ। **—बहियाँ, —बाँही**-आपस में कन्धों पर हाथ रख कर चलना, गले में हाथ डालना, बरनाही। **—कँबल**-(संज्ञा, पु०, सं०) गाय के गले के नीचे लटकने वाला हिस्सा। सास्ना। झालर। लहर। "गलकँबल, बरुना विभाति"—बिहारी। **—गंज**-(संज्ञा, पु०) [हि० गाल + गाजना] कोलाहल, शोर-गुल, हल्ला। **—गंजना**-(क्रि० अ०) [हि० गलगंज] शोर करना, हल्ला करना, कोलाहल करना या मचाना। **—गंड**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक रोग जिसमें गला फूल कर लटक आता है, गडमाला, कंठमाला, गलगंडक। **—गाजना**-(क्रि० अ०, यौ०) [हि० गाल+गाजना] गाल बजाना, बहुत बढ़ कर बात करना, गर्जना। "स्वैरिनी सी गलगाजि रही है"—रत्नकार। **—गुच्छ**-(संज्ञा, पु०, दे०) गलगुच्छा, गालों तक की मोछें, [गलमोछ (दे०)]—**गुथना**-(वि०) [हि० गाल] जिसका शरीर बहुत भरा और गाल फूले हों, मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा। **—ग्रह**-(संज्ञा, पु०, सं०) मछली का काँटा, ऐसी विपत्ति जो कठिनाई से दूर हो। **—छुट**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गलफड़ा। **—जंदड़ा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गल+यंत्र, पंजा० जंदरा] कभी पिंड न छोड़ने वाला गले का हार। कपड़े की पट्टी जिसे गले में चोट लगे हुए हाथ के सहारे के लिए बाँधते हैं। **—झंप**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गला+झांपना] हाथी के गले की लोहे की झूल या जंजीरा। **—तकिया**-(संज्ञा, पु०) [हि० गाल+तकिया] गालों के नीचे रखने का एक छोटा, गोल और मुलायम तकिया। **—तनी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गल-बन्धन, गले का बाँधना, गुलूबन्द। **—थन,—थना**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गल+स्तन] वे थन जो बकरियों के गलों में होते है। **—थैली**-(संज्ञा, स्त्री०) [हि० गल+थैली] मर्कटकोष, बन्दरों के गालों के नीचे की थैली जिसमे वे खाने के पदार्थ भर लेते हैं, गलकोष। **—फटाकी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अपने मुख अपनी बड़ाई। घमंड। आत्म-प्रशंसा। **—फड़ा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गाल+फटना] जल-जंतुओं का वह अवयव जिससे वे पानी में भी साँस लेते हैं, गले का चमड़ा। [गलफड़, गलफर (दे०)]—**फाँसी**-(संज्ञा, स्त्री०) [हि० गला+फाँसी] गले की फाँसी। कष्टप्रद वस्तु या काम, जंजाल, आफत। [गरफाँसी, गलफाँस, गरफाँस (दे०)]—**बल**-(संज्ञा, पु०, दे०) कोलाहल, हलचल। "भई भीर गलबल मच्यो"—छत्र०। **—भंग**-बैठा हुआ कंठ। **—मुंदरी**-(संज्ञा, स्त्री०) [हि० गाल+ मुद्रा सं०] शिवजी के पूजन के समय गाल बजने की मुद्रा, गलमुद्रा, गाल बजाना। **—मुच्छा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गाल+मूँछ] गाल पर के बढ़ाये हुए बाल, गलगुच्छा, गलमुच्छ, गलमूँछ। **—मुद्रा**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गल+मुद्रा] गलमुंदरी, गाल बजाना। **—शुंडी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीभ जैसा माँस का एक छोटा टुकड़ा जो जीभ की जड़ के पास रहता है, छोटी जीभ, जीभी, कौआ। एक रोग जिसमें तालू की जड़ सूज आती है। **—सुआ**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गाल+सूजना] वह रोग जिसमे गाल के नीचे सूज जाता है, कर्णशोथ। [कनछाही (दे०)]—**सुई**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गलतकिया। **—स्तन**-(संज्ञा, पु०, सं०) गले के थन (दे०)। "अजागलस्तनस्यैव तस्य जन्म निरर्थकम्"। **—स्तनी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बकरी जिसके गले में थन होते हैं। **—हँड़**-(संज्ञा, पु०, दे०) घेघा रोग, गले का रोग।

गलका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गलना] एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की उँगलियों में होता है। एक प्रकार का कोड़ा या चाबुक।

गलगल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मैना की जाति की एक चिड़िया, सिरगोटी । [गलगलिया (दे०)] (संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का बड़ा नीबू । "गलगल निबुवा औ घिव तात"—घाघ ।

गलगला—(वि०, दे०) भीगा हुआ, तर ।

गलतंस—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) निस्संतान पुरुष या उसका धन ।

गलत—(वि०, अ०) अशुद्ध । भ्रम-मूलक । मिथ्या, झूठ । भूल-चूकयुक्त, त्रुटिपूर्ण । [**गलती** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**फहमी**-(संज्ञा, स्त्री०, अ०) किसी बात को और से और समझना, भ्रम, भूल-चूक ।

गलती—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० गलत + ई] भूल-चूक, अशुद्धि, त्रुटि ।

गलन—(संज्ञा, पु०, सं०) गिरना, पतन । [गलना (दे०)] अत्यंत शीत, तुषार-पात ।

गलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गरण] किसी पदार्थ के घनत्व का कम या नष्ट होना, पिघल कर द्रव या कोमल होना । अति जीर्ण होना, शरीर का दुर्बल होना, देह सूखना । अधिक सरदी से हाथ-पैर का ठिठुरना । व्यर्थ या निष्फल होना । [गरना (दे०)]

गलन्दा—(संज्ञा, पु०, दे०) कटुभाषी, मुखर, दुर्मुख । [**बकवादी** (वि०)]

गलबाँह, गलबाँही—(संज्ञा, स्त्री०,) [हि० गला + बाँह] गले मे हाथ डालना, कंठा-लिंगन । [गरबाहीं, गरबहियाँ (दे०) ।] "दै गलबाहीं जो नहीं करी" ।

गलवाना—(क्रि० स०) [हि० गलना का प्रेरणा० रूप] गलाने का काम दूसर से कराना ।

गला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गल] गर्दन । कंठ । **मुहा०**—**काटना**-सिर काटना, गर्दन काटना । बहुत हानि पहुँचाना । सूरन और बंड आदि से गले में जलन होना । "औ वियोगी ह्वै जाइ मर्यौ गल काटी"—रस० ।—**खुलना**-गले से स्पष्ट स्वर का निकल सकना ।—**घुटना**-दम रुकना, अच्छी तरह साँस न लिया जाना ।—**घोंटना**-गले को ऐसा दबाना कि साँस रुक जाय, टेटुवा दबाना (प्रान्ती० ।) जबरदस्ती करना । मार डालना ।—**छूटना**-पीछा छूटना, छुटकारा मिलना ।—(ले) तक **आना**-बहुत गहरा होना । कुछ स्मरण आना । बहुत अधिक होना ।—**दबाना**-अनुचित दबाव डालना ।—**पड़ना**-कंठ-स्वर का बिगड़ जाना, स्वर न निकलना ।—**बैठना**-कंठ-स्वर रुकना या विकृत होना ।—**फाड़ना**-इतना चिल्लाना कि गला दुखने लगे । **मुहा०**—**भर आना**-शोक, प्रेम इत्यादि से कंठ का वाष्पावरुद्ध हो जाना ।—**भारी होना**-गला पड़ना, स्वर का बिगड़ना ।—**रेतना**-(दे०) गला काटना, बहुत बड़ी हानि (अनिष्ट) करना । दबाव डालना ।—(ले) **का हार**-किसी पुरुष या वस्तु का इतना प्यार होना कि उसे पास से कभी अलग न किया जा सके, बहुत प्यार । पीछा न छोड़ने वाला । "ह्वै गो सोई अब हार गरे को"—रस० । (**बात**)—(**ले**) **के नीचे उतरना** (**ले**) **से उतरना**-मन मे बैठना, जी में जँचना, ध्यान में आना, बात का पेट मे न रहना ।—(**ले**) **पड़ना**-इच्छा के विरुद्ध प्राप्त होना, न चाहने पर भी मिलना । पीछे पड़ जाना ।—**पकड़ना**-गले में अट-कना । रुकना । (**उलटे रोजे**)—(**ले**) **पड़े**-अच्छा काम बुरा हो गया । (**दूसरे के**)—(**ले**) **बाँधना या मढ़ना**-दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना, जबरदस्ती देना, या ऊपर आरोपित करना ।—(**ले**) **लगाना**-भेंटना, मिलना, आलिंगन करना । दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना ।—(**ले**) **बाँध कर डूबना** (**डूब मरना**)-अति लज्जा से डूब मरना । "गर बाँध कै डूबि मरौ"—[राम०] ।—(**ले**) **का स्वर**-कंठ-स्वर । (संज्ञा, पु०, हि०) गरेबान, बर्तन के मुँह के नीचे का पतला भाग । चिमनी का कल्ला ।

गलाना—(क्रि० स०) [हि० गलना का स० रूप] पिघलाना, गीला करना । खर्च कराना । क्षय करना, क्षीण करना ।

गलानि†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ग्लानि (सं०) । "भयउ लाभ बड़, मिटी गलानी"—तुल० ।

गलाव—(संज्ञा, पु०, दे०) पिघलना, द्रव होना, द्रवत्व । [**गलावना** (क्रि० स०)]

गलित—(वि०, सं०) गिरा हुआ । बहुत दिनों का होने के कारण नरम पड़ा हुआ । गला हुआ । पुराना, जीर्ण-शीर्ण । चुवाया हुआ, नष्ट-भ्रष्ट । खूब पका हुआ । "निगम कल्पतरोर्गलितं फलम्"—भाग० ।—**कुष्ठ**-(संज्ञा, पु०, सं०) ऐसा कोढ़ जिसमें शरीरांग गल कर गिरने लगते हैं ।—**यौवन**-(संज्ञा, पु०) [सं० गलित + यौवन] वह पुरुष जिसकी जवानी बीत गयी हो, बूढ़ा, बुड्ढा ।—**यौवना**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बूढ़ी स्त्री ।

गलियाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० गाल] गाली देना, बुरा कहना । अभिशाप देना । भोजन कर

चुकने पर भी और भोजन कराना। गले में ठूँसना। [गरियार (दे०)।]

गलियारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गली] छोटी गली, पैंड, रथ्या (सं०), छोटी राह। [कारिडोर] [गलियार (दे०)।]

गली—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गल] घरों की कतारों के बीच से जाने वाली तंग राह, खोरी। [खोरि (दे०)], कूचा, रास्ता, गैल (ब्र०)। मुहल्ला, मुहाल। **मुहा०—गली मारे फिरना**-इधर-उधर व्यर्थ घूमना। जीविका या किसी कार्य के लिए इधर से उधर भटकना। चारों ओर अधिकता से मिलना, सब जगह दिखाई पड़ना। **—गली में ठोकर खाना**-गली-गली में मारे-मारे फिरना। (**एक एक**)—**छानना**-सब गलियों में ढूँढ़ना। **—गली में भटकना**-सर्वत्र घूमना। (वि०, स्त्री०) [हिं० गलना] गलित। [**गली-कूचा** (यौ०)]

गलीचा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० गलीचा] एक मोटा बुना हुआ बिछौना, जिस पर रंग-बिरंग के बेल-बूटे बने होते हैं, कालीन। "गुलगुली गिलमैं-गलीचा हैं गुनी जन हैं"—पद्मा०।

गलीज—(वि०, अ०) मैला, गँदला। अशुद्ध, अपवित्र, नापाक। (संज्ञा, पु०) कूड़ा, करकट। मैला, मल, पाखाना। गन्दगी। **—खाना**-(संज्ञा, पु०) कूड़ा-घर।

गलीत*—(वि०, दे०) [अ० ग़लीज़] मैला-कुचैला। (वि० दे०) [अ० गलत] अशुद्ध, जैसे—"मीत न नीति गलीत यह"—बिहारी।

गलेफ—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० गलाफ] दोहरा, ओढ़ने का कपड़ा, दोहर।

गलेबाज—(वि०) [हिं० गला+बाज फ़ा०] जिसका गला अच्छा हो, अच्छा गाने वाला।

गलौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्लौ] चन्द्रमा।

गलौआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गाल] गाल, कपोल। बन्दरों के गले की थैली।

गल्प—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जल्प वा कल्प] गप्प, मिथ्या प्रलाप,। डींग मारना, शेखी मारना। छोटी कहानी, उपन्यास या कल्पित कथा।

गल्ला—(संज्ञा, पु०) [अ० गुल] कोलाहल, शोर, हौरा, गुल्ला। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० गल्ला] झुण्ड, दल, (चौपायों के लिए) नार।

गल्ला—(संज्ञा, पु०, अ०) फल-फूल आदि की उपज। फसल, पैदावार। अन्न, अनाज। दुकान में नित्य की बिक्री से प्राप्त रकम। गोलक (प्रान्ती०) समूह (पशु) ढेर। [**गल्लाई** (वि०)।]

गल्लाना—(संज्ञा, पु०, दे०) कुल्ली का काढ़ा।

गवँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गम] प्रयोजन सिद्धि का अवसर। घात, मतलब, दाँव, गरज। "जिमि गवँ तकइ लेउँ केहि भाँती"—[रामा०]। [गौं (दे०)]। **मुहा०—से**-दाँव-घात देख कर, मौका तज-बीज करके। धीरे से, चुपचाप। **—तकना**-मौका देखना। [**गौंघात, गवँघात** (यौ०)]।

गवन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गमन] प्रस्थान, प्रयाण, चलना, कूच, जाना। बधू का पहिले-पहल पति के घर आना या जाना, गौना। भोग। [गमनगौन (दे०)]। "सिंह-गवन, सुपुरुष वचन, कदलि फरै इकबार"—[हमीरहठ]। [**गवनि** (स्त्री०)]। **—चार**—(संज्ञा, पु०) [हिं० गवन+चार] वर के घर में बधू के आने की रस्म। [गौनचार (दे०)] [**गमनाचार** (सं०)।]

गवनना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गमन] जाना।

गवना—(संज्ञा, पु०, दे०) गौना। चाल। द्विरागमन, बहू का वर के घर दुबारा आना। "नैहर सों प्रीतम के भौन गौने आई री"।

गवनि, गवनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गमन] गमन करने या चलने वाली। "हंस-गवनि तुम नहिं बन-जोगू"—[रामा०]। (सा० भू० स्त्री०, दे०,) चली, कूच किया। "गवनी बाल मराल-गति"—[रामा०]। गयी, चली गयी।

गवय—(संज्ञा, पु०, सं०) नीलगाय। एक छन्द (पिं०)। [**गवयी** (स्त्री०)]

गवहिं—(अव्य०, दे०, अव०) मौके की। गवँ से, प्रयोजन से, मतलब से, मौके से, अवसर से। चुपके से। "जहँ तहँ कायर गवहिं पराने"—[रामा०]। (क्रि० अ०) जाते हैं, गमन करते हैं।

गवाक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटी खिड़की, झरोखा। एक औषधि। इन्द्रायण। [गौखा (दे०)] राम-सेना का एक वानर। "मूलंगवाक्ष स्मर-मंदिरस्थं"—वै० जी०।

गवाक्षी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपराजिता। इन्द्र-वारुणी।

गवाख*—(संज्ञा, पु०, दे०) गवाक्ष, गवाक्ष।

गवामयन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक यज्ञ।

गवारा—(वि०, फ़ा०) मन भाया। अनुकूल। पसन्द। सह्य। अङ्गीकार करने के योग्य।

गवाशन—(वि०, सं०) गोभक्षी, गोमाँस [खानेवाला (पु०)] चमार। चांडाल। मुसहर।

गवास, गवसा—(संज्ञा, पु०, दे०) गोभक्षक। गो-वधिक, कसाई। "मरु मालव महिदेव, गवासा" —[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) गाने की इच्छा।

गवाह—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) किसी घटना को साक्षात देखने वाला व्यक्ति जो किसी मामले की जानकारी रखे [विटनेस] [साक्षी (सं०)] [साखी (दे०)]। [**गवाही** (स्त्री०संज्ञा)]।

गवाही—(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) किसी घटना के सम्बन्ध में किसी ऐसे आदमी का बयान जिसने उसे अच्छी तरह देखा हो, जो उसके विषय में जानता हो। साक्षी का प्रमाण, साक्ष्य। प्रमाण, सबूत। [एविडेन्स] **मुहा०—होना (देना)**-प्रमाण देना, प्रगट करना। सिद्ध करना, जैसे—तुम्हारा चेहरा गवाही देता है। [**गवाही-साखी** (यौ०)।]

गविष्ठ—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य।

गवीश-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गो + ईश] गोस्वामी। साँड़। विष्णु भगवान। श्री कृष्ण। शिव।

गवेजा—(संज्ञा, पु० दे०,) [हि० गप,] गव गप, बात-चीत।

गवेधु, गवेधुक—(संज्ञा, पु०, सं०) कसेई, गँगेरुआ, कौडिल्ला। [**गवेधुका** (स्त्री०)]

गवेल, गवेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गाँव] देहाती, ग्रामीण, गँवार, गवैहाँ।

गवेषणा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) खोज, तलाश। अन्वेषण [रिसर्च] [**गवेषक**-(संज्ञा, पु०, सं०) अन्वेषक] [**गवेषणीय** (वि०)]

गवेषी—(वि०) [सं० गवेषिन] खोजने या शोध करने वाला। ढूँढने वाला। तलाश करने वाला, अन्वेषक। [**गवेषणी** (स्त्री०)]।

गवेसना—(क्रि० स०, दे०) खोजना, ढूँढना। "अगम पंथ जो कहै गवेसी"—जायसी।

गवैया—(वि०, पु०, दे०) [हि० गाना] गाने वाला, गायक। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) झगड़ा, लड़ाई, बैर शत्रुता, दुश्मनी। [**गवैयादार** (वि०, दे०)]

गवैयादारी—(संज्ञा, स्त्री०, प्रा०) शत्रुता, बैर।

गवैहा—(वि०, पु०, दे०) [हि० गाँव + ऐहा प्रत्य०] गाँव का रहने वाला, ग्रामीण, गँवार, देहाती।

गव्य—(वि०, सं०) गो से उत्पन्न, गाय से प्राप्त जैसे —दूध, दही, घी आदि। (संज्ञा, पु०) गायों का झुंड। पंचगव्य।

गव्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गायों का झुण्ड या समूह। ४ मील का एक माप।

गव्यूति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० गो + यूति] दो कोस की दूरी, ४ मील।

गश—(संज्ञा, पु०) [अ० गशी से फ़ा०] मूर्च्छा, बेहोशी, असंज्ञा, ताँवर। [ताउर (दे०)] **मु०—खाना (आना)** —बेहोश होना।

गश्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) घूमना, टहलना, फिरना, भ्रमण। दौरा, चक्कर। पहरे के लिए किसी स्थान के चारों ओर या गली-कूचों आदि में घूमना, रौंद, गिरदावरी। [**गश्ती** (वि०, यौ०)]

गश्ती—(वि०, फ़ा०) घूमने वाला, फिरने वाला। **मटर**—, (यौ०) बेकार भ्रमण, बिना मतलब इधर-उधर घूमना।

गसना—(क्रि० स०, दे०) जकड़ना। बाँधना। गाँठना, ठसना।

गसीला—(वि०) [हि० गसना] जकड़ा हुआ। बँधा हुआ। गँठा हुआ, गुथा हुआ, एक दूसरे से खूब मिला हुआ। (कपड़ा आदि) जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों, गफ। [**गसीली** (स्त्री०)]।

गस्तान—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी नारी। [**गस्तानी** (संज्ञा, स्त्री०)]

गस्सा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्रास] ग्रास, कौर।

गह—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० ग्रह] पकड़, पकड़ने की क्रिया या भाव। हथियार आदि के पक-ड़ने का स्थान, मूठ, दस्ता, बेंट, हत्था। **मुहा०— बैठना**-मूठ पर भरपूर हाथ जमाना।

गहई—(क्रि० स०, दे०) [हि० गहना] स्वीकार करते हैं। धरते हैं, पकड़ते हैं। ग्रहण करते हैं। "करि माया नभ के खग गहई"—तुलसी।

गहक—(क्रि० वि०, दे०) [हि० गहकना] चाह से भरना, लालसा-पूर्ण होना, ललकना, लपकना। उमंग-युक्त होना। प्रमत्तता।

गहकना—(क्रि० अ०) [सं० गद्गद] चाह से भरना, गहक। "गहकि गाँस औरै गहै"— बिहारी। [**गहकाना** (प्रेरणा० रूप)।]

गहकियाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० गाहक] गाहक जान कर हठ करना।

गहगज—(वि०, दे०) गरगज, ढेर।

गहगडु—(वि०, यौ०, दे०) [सं० गह=गहिरा + गड्ड=गड्ढा] गहरा, भारी। घोर (नशे के लिए)। (संज्ञा, पु०, प्रा०) ढेर।

गहगह*—(क्रि० वि०) [सं० गद्गद] प्रफुल्लित, प्रसन्नता पूर्ण । उमंग से पूरित । (क्रि० वि०) घमाघम, धूम के साथ (बाजे के लिए) ।

गहगहा—(वि०, दे०) [सं०, गद्गद] उमंग और आनन्द से भरा हुआ, प्रफुल्लित । घमाघम, धूमधाम वाला ।

गहगहाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० गहगहा] आनन्द से फूल जाना, प्रसन्न होना । पौधों का लहलहाना ।

गहगहे—(क्रि० वि०) [हि० गहगहा] बड़ी प्रसन्नता के साथ । धूम-धाम से । "नभ गहगहे बाजने बाजे" —तुलसी ।

गहडोरना—(क्रि० स०, दे०) पानी को मथ या हिला-डुला कर गंदला करना ।

गहन—(वि०, सं०) गंभीर, गहिरा, अथाह । दुर्गम, घना । दुर्भेद्य । कठिन, दुरूह । निबिड़ । जटिल, गूढ़ । (संज्ञा, पु०) गहराई । दुर्गम स्थान । वन मे गुप्त स्थान । [**गहनता** (संज्ञा, स्त्री०)] (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्रहण] ग्रहण । कलक, दोष । दुख, कष्ट, विपत्ति । बंधक, रेहन, गिरों । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गहना=पकड़ना] पकड़ने का भाव, पकड़ । जिद, हठ ।

गहनकर—(क्रि०, पु०, दे०) प्रमत्त होकर, आनन्दित होकर । पकड़ कर । ग्रहण करके ।

गहना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्रहण=धारण करना] आभूषण, आभरण, जेवर । रेहन, बंधक । (क्रि० स०, दे०) [सं० ग्रहण] पकड़ना, धरना । (ब्र०) लेना । [**गहाना** (प्रेरणा० रूप)]

गहनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ग्रहण] टेक, अड़, जिद । पकड़ । "गहनि कबूतर की गहै"—को० ।

गहनी—(संज्ञा, स्त्री०) घास साफ करने का एक औजार । नाव के छेद बद करने की एक क्रिया । जानवर का एक रोग ।

गहने—(क्रि० वि०, दे०) रेहन के तौर पर धरोहर । "कौनौ नग गहने धर दोजै"—स्फुट० । (संज्ञा, ब० व०) आभूषण ।

गहबर—(वि०, दे०) [सं० गह्वर] गह्वर, दुर्गम । विषम । व्याकुल, उद्विग्न, आवेगपरिपूरित, मनोवेग से आकुल । "गहबर आयौ गरौ भभरि अचानक ही" —रत्ना० । [**गहबरना** (संज्ञा, स्त्री०)]

गहबरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० गहबर] आवेग से भरना, मनोवेग से आकुल होना । घबराना, उद्विग्न होना ।

गहर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देर, विलम्ब । [गहरु (दे०)] "भई गहर सब कहहिं सभीता"—तुलसी । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गह्वर] दुर्गम । गूढ़ । गुफा । गुहा ।

गहरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० गहर=देर] देर लगाना, विलम्ब करना । (क्रि० अ०, दे०) [सं० गहर] झगड़ना । उलझना । कुढ़ना, नाराज़ होना, कुपित होना ।

गहरवार—(संज्ञा, पु०, दे०) (गहिरदेव=एक राजा) एक क्षत्रिय-वंश । ठाकुरों की एक जाति ।

गहरा—(वि०, दे०) [सं० गंभीर] अतलस्पर्श, अथाह, जिसकी थाह बहुत नीचे हो । गम्भीर ।

गहरा, गहरो—(ब्र०) । [**गहरी** (स्त्री०)] । "गहरे उथरे थाह लै"—गिरिधर ।—**पेट** (**दिल**)—वह पेट (दिल) जिसमें सब बातें पच जावें, ऐसा हृदय जिसका भेद न मिले । जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो । बहुत अधिक, ज्यादा, घोर ।—**आसामी**—भारी अथवा बड़ा आदमी । —(**रे**) **लोग**—चतुर लोग । भारी उस्ताद । बड़ा धूर्त ।—**हाथ**—हथियार का भरपूर वार या चोट जिससे खूब चोट लगे । दृढ़, मजबूत, भारी, कठिन । हलका या जो पतला न हो, गाढ़ा । **मुहा० कितने—में**—(कितनो) क्षमता या योग्यता रखना ।—**हाथ मारना**—बड़ी लम्बी रकम या अति उत्तम वस्तु का उड़ाना या प्राप्त करना ।—**घुटना या छनना**—खूब गाढ़ी भाँग घुटना, पिसना या पिया जाना । गाढ़ी मित्रता होना, बहुत अधिक हेल-मेल होना ।—**बात**—गूढ़ या दिल में बैठने वाली बात, गम्भीर बात ।

गहराई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० गहरा+ई प्रत्य०] गहरे का भाव, गहरापन ।

गहराना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० गहरा] गहरा होना । गाढ़ा या मोटा करना । अधिक तीव्र बनाना । घना करना या होना । (क्रि० स०) [हि० गहरा] गहरा करना । अति प्रबल करना । (क्रि० अ०, दे०) गहरना । **मुहा० बादल का**—,मेघों का घना होना ।

गहराव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गहरा] गहराई ।

गहरु—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गहर, विलंब, देर ।

गहलौत—(संज्ञा, पु०) (?) राजपूताने के क्षत्रियों का एक वंश । [**गहलौती** (वि०)]

गहवरा—(वि०, हि०) गहवर, उद्विग्नता ।

गहवा—(संज्ञा, पु०, दे०) चिमटा, सनसी ।

गहवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० गहना का प्रेरणा० रूप] पकड़ने का काम करना, पकड़ना। [**गहाना** (ब्र०)]

गहवार—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षत्रियों की जाति-विशेष।

गहवारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गहना] पलना, झूला, हिंडोला।

गहा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गहना] गहने का भाव, पकड़। पकड़ा देना।

गहागड्ड—(वि०, दे०) गहगड्ड, ढेर, गरगज।

गहागह—(क्रि० वि०, दे०) [हिं०] गहगह।

गहाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० गहना का प्रेरणा० रूप] धराना, पकड़ाना। देना। [**गहाई** (पू०, का०)]

गहासना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० गरासना] निगल लेना। "औ चाँदहिं पुनि राहु गहासा"—जायसी।

गहि—(पू० का० क्रि०, ब्र०) पकड़कर।

गहिन—(वि०, दे०) गहन, गूढ़। घना। [गम्भिन (दे०)]

गहिरा, गहिरो—(वि०, दे०) [हिं० गहरा] गंभीर, अथाह। [गहिर (दे०)] [**गहिरी** (स्त्री०)]

गहिला—(वि०, दे०) गर्व, घमंड। [**गहिली** (स्त्री०)] "गहिली गर्व न कीजिए"—

गहीर—(वि०, दे०) गंभीर, गहिरा। "सीतल गहीर छाँह"—देव।

गहीला—(सं०, दे०) [हिं० गहेला] गर्वयुक्त, घमंडी। "भये अब गर्व गहीले"—तुलसी। पागल। पकड़ने वाला। [**गहीली** (स्त्री०)] "परम गहीली वसुदेव-देवकी की यह"—रत्नाकर।

गहेजुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) छछून्दर।

गहेलरा—(वि०, दे०) पागल। मूर्ख, गँवार।

गहेला—(वि०, दे०) [हिं० गहना=पकड़ना+एला प्रत्य०] हठी, जिद्दी। अहंकारी, घमंडी, मानी, गरूरी। पागल। गँवार। अनजान, मूर्ख। [**गहेली** (स्त्री०)]

गहैया—(वि०, दे०) [हिं० गहना+ऐया प्रत्य०] पकड़ने या ग्रहण करने वाला। अंगीकार या स्वीकार करने वाला।

गह्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्धकारमय कोई गूढ़ स्थान। भूमि में छोटा छेद, बिल। विषम स्थल। दुर्भेद्य स्थान। गुफा, कंदरा, गुहा। निकुंज, लता-गृह। झाड़ी। जङ्गल, वन। [गहवर (दे०)] (वि०) दुर्गम। विषम। गुप्त।

गांग—(वि०, सं०) गङ्गा-सम्बन्धी, गङ्गा का।

गांगेय—(संज्ञा, पु०, सं०) गङ्गा का पुत्र, भीष्म। कार्त्तिकेय या षड़ानन। हिल सी मछली। कसेरू।

गांगेरुटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार की लता, कटशर्करा।

गांग्य—(वि०, सं०) गङ्गा सम्बन्धी।

गांज—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० गञ्ज] राशि, ढेर।

गाँजना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० गाँज, फ़ा० गंज] राशि लगाना। ढेर लगाना, फलों को भूसे आदि में रख कर पकाना।

गाँजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गंजा] भाँग की जाति का एक पौधा जिसकी कली का चरस बनता है, एक मादक वस्तु। [**गँजेड़ी** (वि०)]

गाँठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ग्रन्थि] गिरह, ग्रन्थि। रस्सी आदि का जोड़। बाँस आदि का जोड़ या गाँठी। गठरी। बोरा। गट्ठा। अंग का जोड़। [गाँठि (दे०)]। "ज्यों तोरे-जोरे बहुरि, गाँठ परत गुन माँहि"—वृं०। "परति गाँठ दुरजन हिये"—वि०। [**गठीला** (वि०)]—**कटा**-(संज्ञा, पु०) गाँठ काटने वाला।—**गिरह**-(स्त्री०) कपट, बिलगाव। —**गोभी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० गाँठ+गोभी] गोभी की एक जाति जिसकी जड़ मे खरबूजे सी गोल गाँठ रहती है।—**दार** - (वि०) [हिं० गाँठ+दार प्रत्य०] गँठीला, जिसमें बहुत सी गाँठें हों। **मुहा० मन या हृदय की—खोलना**-दिल खोल कर कुछ बात कहना। मन मे पड़ी हुई बात कहना। अपनी भीतरी इच्छा (साध) को प्रगट करना। हौसला निकालना, लालसा पूरी करना। **मन में (आपस में)—पड़ना**-पारस्परिक प्रेम मे भेद पड़ना, मन-मोटाव होना।—**कतरना या काटना (मारना)**-गाँठ काटकर रुपये आदि निकाल लेना, जेब कतरना।—**का**-पास का, पल्ले का।—**से (देना)**-पास से रुपया देना।—**का पूरा**-धनी, मालदार। **लो०** "आँख का अंधा गाँठ का पूरा"।—**जोड़ना**-विवाह आदि के समय स्त्री-पुरुष के कपड़ों के सिरे परस्पर बाँधना, गँठजोड़ा करना। (**कोई बात)—में बाँधना**-भली-भाँति याद या स्मरण रखना, सदा ध्यान मे रखना।—**बाँधना (लगाना)**-याद रखना। **संकल्प करना**।—**में होना**-पास होना।—**से (जाना)**-पास से या पल्ले से (जाना)।

गाँठना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ग्रन्थन, या गठन] गाँठ लगाना। सीना (जूता)। मुरीं लगा कर या बाँध कर मिलाना। साँटना। फटी हुई चीजों को टाँकना या उनमें चकती लगाना। मरम्मत करना। गूँथना, मिलाना, जोड़ना। तरतीब देना। [प्रेरणा० रूप **गँठाना, गठवाना**] **मुहा० मतलब—,** काम निकालना। अपनी ओर मिलाना, स्वानुकूल करना, स्वपक्ष में करना। गहरी पकड़ पकड़ना। वश में करना, वशीभूत करना। वार को रोकना। **रङ्ग—,** रोब जमाना, अपना आतंक जमाना। **रोब —,** आतंक जमाना, प्रभुत्व दिखाना। **चढ़ी—, सवारी—,** रोब से दबा देना, किसी पर हावी होना।

गाँड—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [गंड (दे०)] गंड (सं०) गुदा।

गाँडर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गडाली] मूँज की सी एक घास, गंडदूर्वा (सं०)। गहरा, गढ़ा।

गाँडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० काँड या खंड] किसी पेड़, पौधे या डंठल का कटा हुआ छोटा टुकड़ा, जैसे—ईख का गाँड़ा, ईख का कटा हुआ छोटा खंड, गँड़ेरी। गाँठि लगा हुआ अभिमंत्रित सूत की माला, गंडा। [**गंडा-ताबीज** (यौ०)] [**गेंडी** (स्त्री०)]

गाँडीव—(संज्ञा, पु०, सं०) अर्जुन का धनुष। **—धारी**-(संज्ञा, पु०) अर्जुन।

गाँडू—(वि०, दे०) एक गाली। कापुरुष। कुमार्गी। कायर। गुदा-मैथुन कराने वाला।

गाँती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गाती।

गाँत्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बैलगाड़ी।

गाँथना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ग्रन्थन] गूँथना। मोटी सिलाई करना। गूँधना। गाँठना।

गांदिनी—(संज्ञा, स्त्री०, स०) गङ्गा। अक्रूर की माँ। **—सुत**—भीष्म। कार्त्तिकेय।

गाँधर्व—(वि०, सं०) गन्धर्व-सम्बन्धी। गन्धर्व-देशोत्पन्न। गन्धर्व जाति का। एक अस्त्र भेद। (संज्ञा, पु०, सं०) सामवेद का उपवेद जिसमें साम-गान के ताल-स्वर आदि का वर्णन है। **—विद्या**-गन्धर्व-वेद। गान-विद्या, संगीत-शास्त्र। **—विवाह**-(वि०, मनु०) आठ प्रकार के विवाहों में से एक, जिसमें वर और कन्या स्वेच्छानुसार प्रेम-पूर्वक मिल कर पति-पत्नीवत् रहने लगते हैं। **—वेद**-(संज्ञा, पु०, सं०) सामवेद का उपवेद। संगीत-शास्त्र, गाँधर्व-विद्या, गांधर्व-कला।

गाँधार—(संज्ञा, पु०, सं०) सिन्धु नदी के पश्चिम का देश, वर्तमान कंधार प्रदेश। इस देश का निवासी। संगीत के सात स्वरों में से तीसरा स्वर, (संगी०)। [**गाँधारी** (स्त्री०)]

गाँधारी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गाँधार देश की स्त्री या राजकन्या। धृतराष्ट्र की स्त्री और दुर्योधन की माता। जवासा। गाँजा।

गाँधारेय—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्योधन।

गाँधिक—(संज्ञा, पु०, सं०) गन्धसहित पदार्थ।

गाँधी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक छोटा हरा कीड़ा। हींग। एक घास। (संज्ञा, पु०) गंधीगर, गुजराती वैश्यों की एक जाति। मोहनदास कर्मचंद गाँधी। "बुद्धू मियाँ भी हजरते गाँधी के साथ हैं" —अक०। **—टोपी**-खादी की टोपी।

गाँभीर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) गहराई, गम्भीरता। स्थिरता। हर्ष, क्रोध, भय आदि मनोवेगों से चंचल न होने का एक गुण। शान्ति का भाव। धीरता। गूढ़ता। गहनता।

गाँव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्राम] वह स्थान जहाँ बहुत से किसानों के घर हों, छोटी बस्ती, खेड़ा। [**गँवई-गाँव** (यौ०)]।

गाँस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गाँसना] रोक-टोक, बन्धन। बैर। द्वेष, ईर्ष्या। हृदय की गुप्त या भेद की बात। रहस्य। गाँठ, फंदा गँठनि। बरछी या तीर का फल। वश, अधिकार। शासन। देख-रेख, निगरानी। अड़चन, कठिनाई। संकट। [**गसीला** (वि०)] **मुहा० मन में—रखना**-दिल में बैर और तत्प्रतिशोध का भाव रखना। (**बात का**)**—कर रखना**-मन में बैठा कर रखना, हृदय में जमाना। स्ववश, स्वशासन में रखना, पकड़ में करना। दबोचना। ठूँसना, भरना।

गाँसना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० ग्रंथन] परस्पर मिला कर कसना। गूँथना। सालना। छेदना। चुभोना। तान में कसना जिससे बुनावट ठस हो, ठाँसना।

गाँसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गाँस] तीर या बरछी आदि का फल। हथियार की नोक। गाँठ, गिरह। कपट। छल-छन्द। मनोमालिन्य।

गा—(क्रि० स०, दे०) [हिं० जाना का सा० भू०—गया] गया, चला गया, जाता रहा। [**गयो** (ब्र०)] "जो तुम अबसिं पार गा चहहू"—[रामा०] (क्रि० स०, दे०) [हिं० 'गाना' का एकवचन विधि] गाओ।

गाइ—(पू० का० क्रि०, अ०) गाकर। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) गाय।

गाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गो] गौ, गाय, धेनु। [**गइया, गैया** (अ०)] "सुर, महिसुर, हरि-जन अरु गाई"—[रामा०] (क्रि० स०, सा० भू० हि०, गाना) गाया का स्त्रीलिंग रूप।

गाऊँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्राम] ग्राम, गाँव। नगर। पुर, पुरवा। (क्रि० स०, हि० गाना का सभाव्य०) गाना करूँ, गान करूँ।

गाइ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गो] गाय, [गैया (दे०)]। "सुर, महिसुर हरिजन अरु गाई" [रामा०]। (सा० भू० क्रि०, सं०, स्त्री०) गाया।

गागर, गागरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गगरी। [गागरि (दे०)]। "उन्हैं भूलि गई गइयाँ इन्हैं गागरि उठाइबो"—रसखान।

गाच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० गाज] बहुत महीन जालीदार सूती कपड़ा, जिस पर रेशमी बेल-बूटे बन रहते हैं। [फुलवर (दे०)]

गाछ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गच्छ] छोटा पेड़, पौधा, वृक्ष, पौदा।

गाज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गर्ज] गर्जन, गरज, शोर। बिजली गिरने का शब्द, वज्र-पात-ध्वनि। बिजली, वज्र। **मुहा० किसी पर—पड़ना (गिरना)**—आपत्ति आना। ध्वंस या नाश होना। **लो०**—"जो बात का मारा न मरै सो गाज का मारा क्या मरै"। (संज्ञा, पु०, अनु० गजगज) फेन, झाग।

गाजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गर्जन, प्रा० गज्जन] शब्द या हुंकार करना, गरजना, चिल्लाना। हर्षित होना, प्रसन्न होना। **मुहा० गल—,** हर्षित होना। सदर्प गरजना।

गाजर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गृंजन] एक पौधा जिसका कन्द मीठा होता है। **मुहा०—मूली समझना**—तुच्छ समझना, साधारण जानना। (यौ०, दे०) ज्वर गया।

गाज़ा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुँह पर मलने का एक रोगन।

गाज़ी—(संज्ञा, पु०, अ०) वह मुसलमान वीर जो धर्म के लिए विधर्मियों से युद्ध करे। बहादुर, वीर।

गाटर—(संज्ञा, पु०, दे०) [गर्डर] छत पर लगाने की शहतीर।

गाड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गर्त] गढ़हा, गड्ढा। अन्न रखने का गढ़ा। कुयें का ढाल, भागड़। खाड़ (प्रान्ती०)। "गाड़ खनै जो और को"—कबी०।

गाड़ना—(क्रि० स०, दे०) [हि० गाड़=गड्ढा] गड्ढा खोद कर और उसमे किसी चीज को डालकर ऊपर से मिट्टी डाल देना। जमीन के भीतर दफ़नाना, तोपना। गड्ढा खोद कर उसमें किसी लम्बी चीज के एक सिरे को जमा कर खड़ा करना, जमाना। किसी नुकीली चीज को नोंक के बल किसी चीज पर ठोंक कर जमाना, धँसाना। गुप्त रखना, छिपाना। [**गड़-वाना, गड़ाना** (प्रेरणा० रूप०)]

गाड़र—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गड्डरी] भेंड़ी, भेंड़। "बाज सुराग की गाडर तांती"—तुल०।

गाड़ी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शकट] गाड़ी, छकड़ा, बैल-गाड़ी, लढ़ा (प्रान्ती०)। (संज्ञा, पु०) [सं०, गर्त, प्रा० गड्ड] वह गड्ढा जिसमें आगे लोग छिपकर बैठ रहते थे और शत्रु या डाकू आदि का पता लेते थे।

गाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शकट] एक स्थान से दूसरे स्थान तक माल, असबाब या मनुष्यों के पहुँचाने के लिए एक यंत्र, यान, शकट। "कबहूँ गाड़ी नाव पै"—स्फु०। **किसी की—चलना**—कार्य का चल जाना।

गाड़ीवान—(संज्ञा, पु०) [हि० गाड़ी+वान प्रत्य०] गाड़ी हाँकने वाला। कोचवान।

गाढ़—(वि०, सं०) अधिक, बहुत। दृढ़, मजबूत। घना। गाढ़ा, जो पतला न हो। गहरा, अथाह। विकट, कठिन, दुर्गम। (संज्ञा, पु०) कठिनाई। आपत्ति, सङ्कट। **मुहा०—पड़ना**—सङ्कट पड़ना। हानि होना। "गाढ़ परे ही जानिए, हित अनहित है कोय"।

गाढ़ा—(वि०, दे०) [सं० गाढ़] जिसमें पानी के सिवाय ठोस वस्तु भी मिली हो। जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों, ठस, मोटा (कपड़े आदि के लिए) घनिष्ट। गहरा। गूढ़। बढ़ाचढ़ा। घोर। कठिन, विकट। [**गाढ़ी** (स्त्री०)] **मुहा०—(दे) की कमाई**—बहुत मेहनत से कमाया हुआ धन, गाढ़ी कमाई। **लो०** "गाढ़े की कमाई चपर घंटे में गँवाई"।—**(दे) का साथी या संगी**—संकट-समय का मित्र, विपत्ति के समय में सहारा देने वाला।—**समय, गाढ़े दिन**—संकट के दिन। विपत्ति, कठिनाई का अवसर। (संज्ञा, पु०) [सं० गाढ़] एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा। गजी, मस्त हाथी।

गाढ़े†*—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० गाढ़ा] दृढ़ता से। जोर से। अच्छी तरह। "लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े" [रामा०]।

गाणपत—(वि०, दे०, सं०) गणपति-सम्बन्धी। (संज्ञा, पु०) एक सम्प्रदाय जो गणेश जी की उपासना करता है।

गाणपत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश जी का उपासक। गणेश-सम्बन्धी।

गात—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गात्र] शरीर, अंग, देह। "दरपन से सब गात"—बिहारी।

गातव्य—(वि०, सं०) गाने योग्य।

गाता—(संज्ञा, पु०, सं०) गायक, गवैया।

गाती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गात्री) वह चद्दर जिसे गले में बाँधते हैं। चद्दर या अँगौछे के लपेटने का ढङ्ग। (क्रि० स०) [हिं० गाना] गा रही (स्त्री)।

गात्र—(संज्ञा, पु०, सं०) शरीर, अङ्ग, देह।

गाथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गाथा] यश, प्रशंसा। "मूरख को पोथी दई, बाँचने को गुन-गाथ"—वृं०।

गाथक—(संज्ञा, पु०, सं०) गानेवाला, स्तोत्र गायक।

गाथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्तुति। वह श्लोक जिसमें स्वर का नियम न हो। प्राचीन काल की ऐतिहासिक घटनाएँ, जिनमें किसी के दान पुण्य आदि का वर्णन रहता है। आर्य्या छन्द। एक प्रकार की प्राचीन भाषा। श्लोक। गीत। कथा। वृत्तान्त। पारसियों के धर्म-ग्रन्थ का भेद। जैसे—सप्तशती। [बैलेड] **मुहा०—गाना-कथा** या प्रशंसा करना। सविस्तार कहना। अर्थ बढ़ाकर कहना।

गाद†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गाध] तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढ़ी चीज, तल-छट। तेल की कीट। गाढ़ी चीज। [गोंद (दे०)]

गादड़, गादर†—(वि०, दे०) [सं० कातर या कदर्य्य, फ़ा० कादर] कायर, डरपोक, भीरु। [**गादड़ी (संज्ञा, स्त्री०)**] गीदड़, सियार।

गादा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गाधा=दलदल] खेत का वह अन्न जो भली भाँति पका न हो, अध-पका अन्न, गदर, बे पकी या कच्ची फ़सल। जुआर का कच्चा दाना।

गादी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० गद्दी] एक पक्वान। हथेली। [गदेरी (दे०)]। गद्दा, गद्दी। "गादी पै देख्यौ तौ सीतला-वाहन"।

गादुर—(संज्ञा, पु०, दे०) चमगादर। "गादुर-मुख न सूर-कर देखा"—जायसी।

गाध—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थान, जगह। जल के नीचे का स्थल। थाह। नदी का बहाव। कूल। लोभ। [**गाधा** (वि०, स्त्री०)] जिसे हिलकर पार कर सकें, जो बहुत गहरा न हो, छिछला। थोड़ा, स्वल्प। [विलो० **अगाध**]

गाधि—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्वामित्र के पिता। **—नंदन, —सुवन**—विश्वामित्र। "गाधि-सुवन-मन चिंता व्यापी"—तुलसी०। **—नगर, —पुर**—(पु०) वर्त्तमान कन्नौज।

गाधेय—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्वामित्र मुनि, गाधि-तनुज, गाधि-सुत, गाधि-पुत्र, गाधि-तनय।

गाधेया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गाधि की पुत्री, सत्यवती।

गान—(संज्ञा, पु०, सं०) गाने की क्रिया। संगीत। गाना। गीत। [**गेय, गेतव्य** (वि०)]**—वाद्य**—(पु०) गाना-बजाना। **—विद्या**—(स्त्री०) संगीत-कला।

गाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गान] ताल, स्वर के नियमानुसार शब्दों का उच्चारण करना, अलाप के साथ ध्वनि निकालना। मधुर ध्वनि करना। वर्णन करना। सविस्तार कहना। **मुहा०, —बजाना**—उत्सव-समारोह मनाना। राग-रंग करना। **अपनी ही—**, अपनी ही बात कहते जाना, अपना ही हाल कहना। स्तुति करना, प्रशंसा करना। **लो०** "जिसका खाना उसकी गाना" **किसी की सी—**, किसी के अनुकूल या पक्ष की बात कहना। (संज्ञा, पु०) गाने की क्रिया। गान, गीत।

गान्धिक—(संज्ञा, पु०, सं०) सुगन्धित द्रव्य। व्यवहारी। गँधीगर।

गाफिल—(वि०, अ०) बेसुध, बेखबर, बेहोश, असावधान। [गाफिल (दे०)] [**गफलत** (संज्ञा, पु०)]। "या जग में गाफिल न रहना"।

गाभ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गर्भ, प्रा० गब्भ] पशुओं का गर्भ। [गाभा (दे०)] पेड़ के बीच की छाल।

गाभा—(संज्ञा, पु०) [सं० गर्भ] नया निकलता हुआ मुँहबँधा नरम पत्ता, नया कल्ला, कोंपल। केले आदि के डंठल का भीतरी भाग। लिहाफ, रजाई आदि की निकाली हुई पुरानी रुई। गुदड़। कच्चा अनाज। खड़ी खेती। भीतरी छाल। [**गाभिन** (वि०)]

गाभिन, गाभिनी—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० गर्भिणी] वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो, गर्भिणी (चौपायों के लिए)। [**गभियाना**–(क्रि०, अ०, दे०) गर्भ धारण करना]

गाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्राम] गाँव ।

गामी—(वि०, दे०) [सं० गामिन] चलने वाला। गमन या सम्भोग करने वाला। "रे तिय-चोर कुमारग गामी"—तुलसी०। [**गामिनी** (स्त्री०)] प्राचीन समय की एक प्रकार की नाव। (वि०, दे०) ग्राम का, ग्रामीण।

गामुक—(वि०, सं०) जाने वाला ।

गाय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गो] बैल की मादा, गाइ, गऊ। [गैय्या (दे०)] (पू० का० क्रि०, हि०) गाना गाकर ।—**गोठ**–(स्त्री०) गायों के रहने के लिए बाड़ा या छप्पर । गोगोष्ठी। "गायगोठ, महिसुर पुर जारे"—तुलसी०। **मुहा०—की तरह काँपना**–बहुत डरना।

गायक—(संज्ञा, पु०, सं०) गाने वाला, गवैया । [**गायकी** (स्त्री०)]

गायकवाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़ौदा राजा की उपाधि।

गायकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गाने की उच्च कोटि की कला। गाने का रोज़गार।

ग़ायत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) छोर, सीमा। मतलब, गरज।—**दरजा**–(वि०) हद दरजे का।

गायताल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० गलत] निकम्मा मनुष्य या पशु, बेकाम वस्तु। [गयतल (दे०)] **मुहा०—लिखना**–बट्टे खाते में लिखना।

गायत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) वैदिक स्तोत्र। गायत्री। स्तोत्र।

गायत्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वैदिक छंद, एक वेद मन्त्र जो हिन्दू धर्म में सब से अधिक महत्त्व का माना जाता है। दुर्गा। गंगा। ६ अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त (पिंग०)। एक देवी।

गायन—(संज्ञा, पु०, सं०) गाने वाला, गायक, गवैया। गान, गाना। कार्तिकेय। [**गायनी** (स्त्री०)] **गायनाचार्य**–(यौ०) बड़ा गायक]

ग़ायब—(वि०, अ०) लुप्त, अन्तरध्यान, छिपा हुआ, गुप्त।

गायिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गाने वाली, एक मात्रिक छन्द (पिंग०)।

गार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गाली] गाली, अभिशाप। [गारि (दे०)] "सबको मन हरषित करै ज्यों विवाह मैं गार"—वृन्द०।

ग़ार—(संज्ञा, पु०, अ०) गहरा गड्ढा। गुफा, कन्दरा।

ग़ारत—(वि०; फ़ा०) नाश, नष्ट, बरबाद। [गारत (दे०)]

गारद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० गार्ड] रक्षार्थ सिपाहियों का झुंड। पहरा, चौकी । (वि०) [फ़ा० गारत] विनष्ट ।—**में रखना**–बंधन में रखना, हवालात में बंद करना।

गारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गालना] दबाकर पानी या रस निकालना, निचोड़ना। पानी के साथ घिसना, जैसे, चन्दन गारना।*निकालना। त्यागना। * (क्रि० स०, दे०) [सं० गल] गलाना। **मुहा० तन या शरीर—**,शरीर गलाना, शरीर को कष्ट देना, तप करना । नष्ट करना, बरबाद करना। "सुख संपति सब गार्यो जिनके हेत"।

गारा—(संज्ञा, पु०) [हि० गारना] मिट्टी, चूने या सुर्खी आदि का लसदार लेप जिससे ईंटों की जुड़ाई होती है। "हृदय रक्त का गारा देकर"—गिरीश। (सा० भू० क्रि०) गलाया।

गारित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) चावल। धान। एक अन्न।

गारी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गाली । "मीठी लगें ससुरारि की गारी"। (सा० भू० क्रि०) नष्ट की।

गारुड़—(संज्ञा, पु०, सं०) गरुड़-सम्बन्धी। सर्प-विषनाशक मन्त्र। सेना की एक व्यूह-रचना । सुवर्ण, सोना। [**गारुड़की** (संज्ञा, स्त्री०)]

गारुड़ी—(संज्ञा, पु०) [सं० गारुडिन्] मंत्र से सर्प विष उतारने वाला ।

गारुत्मत—(संज्ञा, पु०, सं०) गरुड़ का अस्त्र। पन्ना, रत्न। (वि०) गरुड़-सम्बन्धी, गरुड़ का।

गारो*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गौरव, प्रा० गारव] गर्व, घमंड, अहंकार। महत्त्व-भाव, बड़प्पन। मान। "भूषण आय तहाँ सिवराज लयो हरि औरंगजेब को गारो।" (संज्ञा, पु०, ब्र०) गारा। (सा० भू० क्रि०, ब्र०) गार दिया।

गार्गि—(संज्ञा, पु०, सं०) गर्ग मुनि का आत्मज ।

गार्गी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्ग गोत्र में उत्पन्न, एक ब्रह्मवादिनी प्रसिद्ध स्त्री ।

गार्गेय—(वि०, सं०) गर्ग गोत्रोत्पन्न, गर्ग का, गर्ग रचित ग्रन्थ ।

गार्गेयी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्ग गोत्र में उत्पन्न स्त्री ।

गार्ग्य—(संज्ञा, पु०, सं०) गर्ग गोत्र में उत्पन्न पुरुष । पाणिनि के पहले का वैयाकरण ।

गार्दभ—(वि०, सं०) गर्दभ, गधे से सम्बन्धित ।

गार्भ—(वि०, सं०) गर्भ-सम्बन्धी, गर्भ-पोषण के लिए कर्त्तव्य ।

गार्हपत्य—(वि०, सं०) गृहपति-सम्बंधी, गृहस्थ विषयक । [**गार्हपत्यशास्त्र** (यौ०)]

गार्हपत्याग्नि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) दो प्रकार की अग्नियों में से पहली और प्रधान अग्नि, जिसकी रक्षा शास्त्रानुसार प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिए ।

गार्हस्थ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) गृहस्थाश्रम । गृहस्थ के मुख्य कृत्य । पंच महा यज्ञ ।

गाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गंड, गल्ल] मुँह के दोनों ओर ठुड्डी और कनपटी के बीच का कोमल भाग, गंड, कपोल । **मुहा०—पिचकना**—गालों का दब जाना, दुर्बल होना ।—**फुलाना**—रूठ कर न बोलना, रूठना, रिसाना, क्रोध करना ।—**बजाना या मारना**—डींग मारना, बढ़-बढ़ कर बातें करना, बकवाद करने की लत । मुँहजोरी । "वृथा मरहु जनि गाल बजाई"—तुल० । "बालि कबहुँ अस गाल न मारा"—तुल० । **काल के—में जाना**—मृत्यु के मुख में पड़ना ।—**करना**—मुँह जोरी करना, मुँह से अंड-बंड निकालना, बढ़-बढ़ कर बातें करना, डींग मारना । "गाल करब केहि कर बल पाई"—तुल० ।

गालगूल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गाल+गूल अनु०] व्यर्थ बात । गपशप । अनाप-शनाप ।

गालन—(संज्ञा, पु०, सं०) गलाना, निचोड़ना ।

गालना—(स० क्रि०) बोलना ।

गालमसूरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक पकवान या मिठाई ।

गालव—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि । एक प्राचीन वैयाकरण । लोध का पेड़ । एक स्मृतिकार । "गालव, नहुष नरेश"—तुल० ।

गाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गाल—ग्रास] धुनी हुई रुई का गोला जो चरखे में कातने के लिए बनाया जाता है, पूनी । **मुहा० रुई का—**, बहुत उज्ज्वल, हलका । (**संज्ञा, पु०**) [हिं० गाल] बड़बड़ाने की आदत, अंड-बंड बकने का स्वभाव । मुँह जोरी । ललादराजी, कल्ले दराजी । ग्रास ।

ग़ालिब—(वि०, अ०) जीतने वाला । बढ़-जाने वाला । विजयी । श्रेष्ठ । (**संज्ञा, पु०**) एक प्रसिद्ध उर्दू कवि मिरजा उसद अल्लाह खाँ का उपनाम । "ऐसा भी कोई है कि जो गालिब को न जाने" ।

गालिम*—(वि०, दे०) ग़ालिब ।

गाली—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गालि] निन्दा या कलंक-सूचक वाक्य, दुर्वचन, कुत्सित कथन । —**गलौज**—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० गाली+गलौज अनु०] परस्पर गाली देना, तू-तू मैं-मैं, दुर्वचन । —**गुफ्ता**—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) गाली-गलौज । **मुहा०—खाना (लेना)**-दुर्वचन सुनना, गाली सहना ।—**देना (बकना)**—दुर्वचन कहना, कलङ्क-सूचक आरोप करना ।—**गाना**—ब्याह में गाली-भरे गीत गाना ।

गालू—(वि०, दे०) [हिं० गाल] गाल बजाने वाला, व्यर्थ डींग मारने वाला । बकवादी, गप्पी । (**संज्ञा, पु०**, दे०) गाल । "हँसब ठठाय फुलाउब गालू" —तुल० ।

गालोडित—(वि०, सं०) नसे में चूर । मूर्ख । (पु०) परीक्षा । निरीक्षण ।

गालोड्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कमलगट्टा ।

गालौ—(संज्ञा, पु०, दे०) गालव ।

गाल्हना—(स० क्रि०) कहना, बोलना ।

गाव—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [सं० गो, फ़ा० गाव] गाइ, गाय, धेनु, गैया ।

गावकुशी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, फ़ा०) गो बध ।

गावघप्पी—(संज्ञा, पु०, दे०) चापलूस, फुसलाऊ । स्वार्थी । (**वि०**, दे०) चुप्पा, मौन । मट्ठर । [गाऊघप्प (दे०)]

गावजबान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) फारस देश की एक बूटी ।

गावतकिया—(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) बड़ा तकिया जिससे टेक लगाकर लोग फर्श पर बैठते हैं, मसनद ।

गावदी—(संज्ञा, दे०) [हिं० गाय+धी सं०] कुंठित बुद्धि वाला, अबोध, नासमझ, बेवकूफ, भोला-भाला, मूर्ख। [गाउदी (दे०)]

गावदुम—(वि०, दे०, फ़ा०) जो ऊपर से बैल की पूँछ की तरह पतला होता आया हो। चढ़ाव-उतार वाला। ढालुवाँ।

गावदू—(वि०, दे०) गावदी, मूर्ख, जड़बुद्धि।

गावल्गणि—(पु०, सं०) धृतराष्ट्र के सचिव संजय।

गास—(संज्ञा, पु०, दे०) संकट, आपत्ति, ग्रास।

गासना—(क्रि० अ०, दे०) कष्ट देना, गाँसना।

गासिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० गाशिया] जीनपोश।

गाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्राह] ग्राहक, गाहक। पकड़, घात। ग्राह, मगर।

गाहक—(संज्ञा, पु०, सं०) अवगाहन करने वाला। *(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्राहक] ग्रहण करने वाला। मोल लेने वाला, खरीदार। "गॅवई गाहक कौन"—वि०। "गुन के गाहक सहस नर" —गिरि०। "गाहक आये बेचिए सचा मोल बताय" —तुल०। "नहीं यह जानकी जान की गाहक"। **मुहा० जी, जान या प्राण का—**, प्राण या जान लेने वाला, मार डालने की ताक में रहने वाला, दिक करने या सताने वाला। कदर करने या चाहने वाला। [**गुनगाहक** (यौ०)]

गाहकताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गाहकता] कदरदानी। चाह। मोल लेना।

गाहकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ग्राहक] बिक्री। ग्राहक होना। "कवि-वृन्द यों चाह सों करत है गाहकी"—सेना०।

गाहन—(संज्ञा, पु०, सं०) गोता लगाना, विलोड़ना, स्नान। [**गाहित** (वि०)]

गाहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० अवगाहन] अवगाहन करना, डूब कर थाह लेना। विलोड़ना, मथना, हलचल मचाना। दाने गिराने को धान आदि के डंठल झाड़ना, ओहना। [**गाहनीय** (वि०)]

गाहा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गाथा] कथा, वृत्तान्त, चरित्र, वर्णन। आर्य्या छंद।

गाहिगाहि—(क्रि० स० पू० का०, दे०) ढूँढ़-ढूँढ़ कर, खोज-खोज कर।

गाही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गहना] फल आदि के गिनने का पाँच-पाँच का एक मान।

गाहू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गाना] उपगीत छंद (पिंग०)।

गाहेबगाहे—(क्रि० वि०, अ०) यदाकदा, जब तब।

गाह्य—(वि०, सं०) गाहनीय।

गिंजना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० गींजना] किसी चीज (विशेष कर कपड़े) का उलटे-पुलटे हो जाने से खराब हो जाना, गींजा जाना।

गिंजाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गृंजन] एक बरसाती कीड़ा। घिनाही, घिनौरी (प्रान्ती०)।

गेंडुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गेंडुरी, बिड़ई।

गिंदौड़ा, गिंदौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गेंद] मोटी रोटी जैसे चीनी का ढाला हुआ कतरा, चीनी का एक गेंद सा पकवान।

गिउ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्रीवा] गला, गरदन। [गीउ (दे०)]

गिचपिच—(वि०, अनु०) जो साफ-साफ या क्रम से न हो, अस्पष्ट, भीड़-भाड़ से पीड़ित। [**गिचपिचाना** (क्रि० अ०, दे०)]

गिचपिचिया—(संज्ञा, पु०, दे०) गिच-पिच करने वाला अथवा भीड़-भाड़ करने वाला व्यक्ति।

गिचिरपिचिर—(वि०, दे०) गिचपिच। "गिचिर पिचिर इन बातों से मेरी बढ़ती है भ्रान्ति"—**गिरीश**।

गिजगिजा—(वि०, अनु०) ऐसा गीला और मुलायम जो खाने में भला न लगे, छूने में जो मांसल ज्ञात हो। गीला। पिलपिला। [**गिजगिजाना** (क्रि० स०, दे०)]

गिज़ा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) भोजन, खाद्य वस्तु। खूराक।

गिटकारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गिड़गिड़ी, गिट्टी।

गिटकिरी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) तान लेने में विशेष रूप से स्वर का कम्पन। गिड़गिड़ी।

गिटकौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पथरी। पत्थर के टुकड़े।

गिटपिट—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) निरर्थक शब्द। **मुहा०—(गिटिर-पिटिर) करना**—टूटी-फूटी या साधारण अंग्रेजी भाषा में बोलना।

गिट्टक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गिट्टा] चिलम में रखने का कंकर, चुगल।

गिट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) कंकड़-पत्थर का टुकड़ा। [**गिट्टी** (स्त्री०)]

गिट्टी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० गिट्टा] पत्थर का छोटा टुकड़ा। मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ छोटा टुकड़ा। ठीकरी। चिलम की गिट्टक।

गिड़गिड़ाना—(क्रि० अ०, अनु०) अत्यंत विनम्र होकर कोई प्रार्थना करना।

गिड़गिड़ाहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० गिड़गिड़ाना] विनती, गिड़गिड़ाने का भाव।

गिद्ध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गृध्र] एक बड़ा मांसाहारी पक्षी। छप्पय छंद का बावनवां भेद (पिंग०)। शकुनि। गीध (ग्रा०)।—**दीठि**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) गृद्ध-दृष्टि, पैनीदृष्टि, तेज निगाह। —**राज**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गिद्ध+राज] जटायु। [गिद्धराय (दे०)] "गिद्ध राज सुनि आरत बानी"—तुल०।

गिनगिनाना—(अ० क्रि०) शरीर का काँपना, रोमांच का होना। (स० क्रि०) झकझोरना।

गिनती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गिनना+ती प्रत्य०] संख्या निश्चित करने की क्रिया। गणनांक। गणना, शुमार। **मुहा०—में आना या होना**-कुछ महत्त्व का समझा जाना।—**गिनाने के लिए**-नाम मात्र के लिए, कहने-सुनने भर को। संख्या, तादाद।—**के**-बहुत थोड़े। **कोई (किसी)—में न होना**-अति तुच्छ या साधारण होना, नगण्य होना।—**न होना**-असंख्य होना। नगण्य होना।—**में न आना**-अगणित होना। असम्मानित होना। उपेक्षित होना।

गिनना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गणन] गणना या शुमार करना, संख्या निश्चित करना। **मुहा० अँगुलियों पर—**,किसी चीज का अति अल्प संख्या में होना। **दिन—**,आशा मे समय बिताना। किसी प्रकार काल-क्षेप करना। मृत्यु का निकट होना। गणित करना, हिसाब लगाना। कुछ महत्त्व का समझना। खातिर में लाना। **कुछ (न)—**,किसी योग्य (न) समझना।

गिनवाना—(क्रि० स०, दे०) गिनना का प्रेरणार्थक रूप, गिनाना। [**गिनवाई** (संज्ञा, स्त्री०)]

गिनाना—(क्रि० स०) [हिं० गिनना का प्रेरणार्थक रूप] गिनने का काम दूसरे से कराना। [**गिनाई** (संज्ञा, स्त्री०)]

गिनी—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) सोने का एक सिक्का। [गिन्नी (दे०)]। एक विलायती घास।—**गोल्ड**-ताँबा मिश्रित सोना। **इनी—**,(वि०, दे०) गिनती में अत्यल्प, इनेगिने।

गिन्नी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गिनी।

गिब्बन—(संज्ञा, पु०, अं०) एक प्रकार का बन्दर।

गिमटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [डिमिटी] एक बूटीदार मजबूत कपड़ा।

गिय*—(संज्ञा, पु०, दे०) गिउ, गला, गर्दन।

गियाह—(संज्ञा, पु० (?)) एक प्रकार का घोड़ा। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक घास।

गिर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गिरि] पहाड़, पर्वत। सन्यासियों के दस भेदों मे से एक।

गिरई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार की मछली।

गिरगट, गिरगिट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कृकलास वा गलगति) छिपकली की जाति का एक जन्तु जो दिन में दो बार अपना रङ्ग बदलता है, [**गिरगिटान, गिदोना, गिरदान** (ग्रा०)] **मुहा०—की तरह (सा) रङ्ग बदलना**-बहुत जल्दी सम्मति या सिद्धांत बदल देना।

गिरगिरी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) लड़कों का एक खिलौना।

गिरजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [पुर्त० इग्रिजिया] ईसाइयों का प्रार्थना-मन्दिर।

गिरदा†—(संज्ञा, पु०, दे०)[फ़ा० गिर्द] घेरा, चक्कर। तकिया। गिडुवा, बालिश। काठ की एक थाली जिसमे हलवाई मिठाई रखते है। ढाल। फरी। (संज्ञा, पु०) [फा० गिर्द] ओर, तरफ। जैसे—चौगिर्दा (ग्रा०) चारों ओर।

गिरदान†—(संज्ञा, पु०, दे०)[हिं० गिरगट] गिरगिट, गिर्दावर।

गिरधर—(संज्ञा, पु०) [सं० गिरिधर] पहाड़ उठाने वाले श्री कृष्ण, गिरधारी, गिरिधर।

गिरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गलत] एक दम ऊपर से नीचे आ जाना, अपने स्थान से नीचे आ जाना। पतित होना। खड़ा न रह सकना। जमीन पर पड़ जाना। अवनति या घटाव पर या बुरी दशा में होना। जल-धारा का बड़े जलाशय में जा मिलना। शक्ति या मूल्य आदि का कम या मन्दा होना। बहुत चाव या तेजी से आगे बढ़ना, टूटना। अपने स्थान से हट, निकल, या झड़ जाना। किसी ऐसे रोग का होना जिसका वेग ऊपर से नीचे को आता हुआ माना जाय, जैसे—फालिज गिरना। सहसा उपस्थित या प्राप्त होना। युद्ध में मारा जाना। **मुहा० मुँह के बल—**,बहुत गरज मन्द होकर कोई बात स्वीकार करना।

गिरनार—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० गिरी+नार =नगर] जैनियों का एक तीर्थ जो गुजरात में जूना-

गढ़ के निकट एक पर्वत पर है। रैवतक पर्वत। (वि०) गिरनार पर्वत का निवासी।

गिरनारी—(वि०, दे०) गिरनार पर्वत का निवासी। गिरनार का।

गिरफ्त—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पकड़ने का भाव, पकड़, दोष के पता लगाने का ढङ्ग।

गिरफ्तार—(वि०, फ़ा०) जो पकड़ा, कैद किया या बाँधा गया हो, ग्रस्त। [एरेस्ट]

गिरफ्तारी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) गिरफ्तार होने का भाव। गिरफ्तार होने की क्रिया।

गिरमिट—(संज्ञा, पु०, दे०) [गिमलेट] लकड़ी में छेद करने का बड़ा बरमा। (संज्ञा, पु०) [अं० एग्रीमेंट=इकरारनामा] इकरारनामा, शर्तनामा। स्वीकृति या प्रतिज्ञा। इकरार।

गिरवर—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) बड़ा पहाड़।

गिरवान*†—(संज्ञा, पु०, दे०) गीर्वाण (सं०)। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० गरेबान] गले के चारों ओर का, कुरते के आगे का गोल भाग, गला। [गिरवाँ (दे०)] पशुओं के गले की रस्सी।

गिरवाना—(क्रि० स०) [हि० गिराना का प्रेरणार्थक रूप] गिराने का काम दूसरे से कराना।

गिरवी—(वि०, फ़ा०) गिरो रखा हुआ, बन्धक, रेहन।—**दार**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वह व्यक्ति जिसके यहाँ कोई वस्तु गिरो रखी हो।

गिरस्त—(वि०, दे०) गृहस्थ।

गिरस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गृहस्थी (सं०)।

गिरह—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) गाँठ, ग्रन्थि (सं०)। जेब, कीसा, खरीता। दो पोरों के जोड़ का स्थान। एक गज का सोलहवाँ भाग। कलैया, उलटी, कलाबाजी। छन्द की पूर्ति। **मुहा०—कटना**–ठगा जाना, जेब कटना।—**खुलना**–कठिनाई का हल होना, वैमनस्य का निवारण होना।—**लगाना**–किसी अन्य कवि (शायर) की किसी छन्द-पंक्ति को लेकर उसके भाव को बढ़ाकर पूरा करना। "नाते की गिरह ताहि नैननि निबेर दै"—द्विज।—**कट**–(वि०, यौ०) [दे० फ़ा० गिरह=गाँठ+काटना हि०] जेब या गाँठ मे बंधे हुए माल को काट लेन वाला। चालाक।—**बाज**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उड़ते हुए उलटी कलैया खान वाला एक कबूतर। [**गिरहबाजी** (संज्ञा, स्त्री०)]

गिरही*†(संज्ञा, पु०, दे०) गृही (सं०), गृहस्थ। गिरस्त (ग्रा०)।

गिराँ—(वि०, दे०) [फ़ा० गराँ] जिसका दाम अधिक हो, महँगा। भारी। जो भला न लगे, अप्रिय। गराँ। [**गिरानी, गरानी** (संज्ञा, स्त्री०)]

गिरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वाणी की शक्ति, बोलने की ताकत। जिह्वा, जबान। वचन, वाणी। सरस्वती देवी। "गिरा मुखर तन", "गूढ़ गिरा सुनि"—तुलसी। (सा० भू० क्रि०) गिर पड़ा।—**पति**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गिरेश, ब्रह्मा, सरस्वती के स्वामी। वाचस्पति। "गेरी गिरापति की गिरी है जो गिरीस सीस"—द्वि०।

गिराना—(क्रि० स०) [हि० गिरना का प्रेरणार्थक रूप] अपने स्थान से नीचे डाल देना। पतन करना। खड़ा न रहने देकर पृथ्वी पर डाल देना। अवनति करना। घटाना। किसी जलधारा के प्रवाह को ढाल की ओर ले जाना। शक्ति या स्थिति आदि में कमी कर देना। किसी वस्तु को उसके स्थान से हटा या निकाल देना। ऐसा रोग उत्पन्न करना जिसका वेग ऊपर से नीचे को आता हो। सहसा उपस्थित करना। लड़ाई में मार डालना।

गिरानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) महँगापन, महँगी, अकाल, कहत, कमी। [**गरानी**]

गिरापितु—(संज्ञा, पु०, यौ०) [दे०, सं० गिरा +पितृ] सरस्वती के पिता, ब्रह्मा।

गिरावट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० गिरना] गिरने की क्रिया, भाव या ढङ्ग।

गिरास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्रास] ग्रास, कौर, कवल। [गरास (दे०), कवर (दे०)]

गिरासना*†—(क्रि० स०, दे०) ग्रसना। [गरासना (दे०)]

गिरि—(संज्ञा, पु०, सं०) अद्रि, भूधर, पर्वत, पहाड़, नग। दश संप्रदायों के अन्तर्गत एक प्रकार के संन्यासी। परिव्राजकों की एक उपाधि।—**जा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नगजा, शैलजा, पार्वती, गौरी। धराधरेन्द्र-नंदिनी, गङ्गा। "सर-समीप गिरिजा गृह सोहा"—तुलसी। [**गिरिजेश** (यौ०)–शिव]—**नंद**–कार्तिकेय, गणेश।—**धर**–(संज्ञा, पु०, सं०) श्री कृष्ण।—**धारन***–(संज्ञा, पु०, दे०) गिरिधर।—**धारी**–(संज्ञा, पु०) [सं० गिरिधारिन] श्री कृष्ण।—**नन्दिनी**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पार्वती, गिरितनया। गङ्गा-नदी। "गिरि नंदिनी-नन्दन चले"—मैथिली०।—**०नंदन**–(संज्ञा, पु०, सं०) षडानन।—

नाथ-(संज्ञा, पु०, सं०) महादेव, शिव, शम्भु, षंडपरशु, त्र्यंबक, धूर्जटि ।—पति-(संज्ञा, पु०, सं०) हिमांचल । गिरीन्द्र । शिव ।—राज-(संज्ञा, पु०, दे०) बड़ा पर्वत, गिरिपति, हिमालय । गोवर्धन । सुमेरु पर्वत । गिरीन्द्र ।—व्रज-(संज्ञा, पु०, सं०) केकय देश की राजधानी । जरासंध की राजधानी जिसे राजगृह कहते हैं ।—सुत-(संज्ञा, पु०, सं०) मैनाक पर्वत, भूधरात्मज, गिरि-सुवन । —सुता-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पार्वती, शैलजा, शैलसुता, गिरितनया, नगात्मजा ।

गिरिक-(वि०, सं०) पर्वत से उत्पन्न । शिव ।

गिरीन्द्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बड़ा पर्वत, हिमालय । सुमेरु । कैलाश । गोवर्धन । शिव ।

गिरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गिरि] बीज के तोड़ने से उसमें से निकला गूदा; जैसे—नारियल की गिरी ।

गिरीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महादेव, शिव । हिमालय । सुमेरु । कैलाश । गोवर्द्धन पर्वत । बड़ा पहाड़ ।

गिरेता—(संज्ञा, पु०, दे०) टीला । छोटी पहाडी । ऊँचा रास्ता ।

गिरैयाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गेराँव] छोटा या पतला गेराँव । [**गिराई** (प्रान्ती०), **गिरवाँ, गेरवाँ** (ग्रा०)]

गिरों—(वि०, फ़ा०) रेहन, बंधक, गिरवी ।

गिर्द—(अव्य०, फ़ा०) आस-पास, चारों ओर । **इर्द**—,(अव्य०, फा०) आस-पास । [**गिर्दा गिर्द** (ग्रा०)] जैसे—चौगिर्दा ।

गिर्दान—(संज्ञा, पु०, दे०) गिरगिट ।

गिर्दावर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) घूमने या दौरा करने वाला, घूम घूम कर काम की जाँच करने वाला । एक प्रकार का कानूनगो । [**गिदावरी** (संज्ञा, स्त्री०)]

गिल—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) मिट्टी, गारा ।

गिलई—(क्रि० स०, दे०) निगल या लील जाय । "तिमिर तरुन तरनिहिं सक गिलई"—तुलसी ।

गिलकार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गारा या पलस्तर करने वाला ।

गिलकारी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) गारा लगाने वा पलस्तर करने का कार्य ।

गिलगिल—(संज्ञा, पु०, सं०) एक जलजंतु । [दे० फ़ा०, गिल] पिलपिला । गीला ।

गिलगिलिया—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) सिरोही चिड़िया । [गलगलिया (दे०)]

गिलगिली—(संज्ञा, पु०, दे०) घोड़े की एक जाति । आर्द्रता, गीलापन ।

गिलट—(संज्ञा, पु०, दे०) [गिल्ड] सोना चढ़ाने का काम । चाँदी सी सफेद बहुत हलकी और कम मूल्य की एक धातु ।

गिलटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ग्रंथ] देह में संधि-स्थान पर चेप की छोटी गोल गाँठ । सूजन का रोग । गिल्टी ।

गिलत—(संज्ञा, पु०, सं०) निगलने, लीलने की क्रिया । गिलट । [**गिलित** (वि०)]

गिलना—(क्रि० स०) [सं० गिरण] बिना दाँतों से तोड़े गले में उतार जाना, निगलना । मन ही में रखना । प्रकट न होने देना ।

गिलबिला—(वि०) पिलपिला ।

गिलबिलाना—(क्रि० अ०, अनु०) अस्पष्ट उच्चारण से कुछ कहना ।

गिलम—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० गलीम=कंबल] नरम और चिकना ऊनी कालीन । मोटा मुलायम गद्दा या बिछौना । "गुलगुले गिलम गलीचे हैं"—पद्मा० । (वि०) कोमल, नरम, मृदुल ।

गिलमिल—(संज्ञा, पु०, दे०) एक तरह का कपड़ा ।

गिलहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा । [बेलहरा (दे०)] पान के रखने का केस या डिब्बा । [**गिलहरी** (स्त्री०)]

गिलहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गिरि=चुहिया] चूहे का सा मोटे रोएँ और लम्बी पूँछ वाला एक मादा जन्तु, जो पेड़ों पर रहता है । गिलाई, चेखुरा । [**गिल्ली** (प्रान्ती०)]

गिला—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उलाहना । शिकायत, निन्दा, बुराई ।

गिलाई—(संज्ञा, स्त्री०) गिलहरी ।

गिलाजत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) गाढ़ापन, गंदगी ।

गिलाफ—(संज्ञा, पु०, अ०) तकिये, रजाई आदि पर चढ़ाने की कपड़े की बड़ी थैली, खोल । रजाई, लिहाफ । म्यान ।

गिलायु—(संज्ञा, पु०, सं०) गले का रोग-विशेष, जिसमें गाँठें हो जाती हैं ।

गिलावा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० गिल+आब] गीली मिट्टी, जिससे ईंट-पत्थर जोड़ते हैं, गारा । "प्रेम गिलावा दीन"—कबीर ।

गिलास—(संज्ञा, पु०, दे०) [ग्लास] पानी पीने का एक गोल लंबा बरतन। आलू-बालू या ओलची का पेड़।

गिलित—(वि०, सं०) खाया या निगला हुआ।

गिलिम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखिए गिलम (फ़ा०)।

गिली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गुल्ली। [गिल्लो (दे०)] गिलहरी।

गिलोय—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) गुरिच या गुरुच नाम की एक ओषधि-लता, जो कभी नहीं सूखती। अमृता (सं०)।

गिलोला—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० गुलेला] मिट्टी का छोटा गोला, जो गुलेल से फेंका जाता है। [गुल्ला (दे०)]

गिलौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पानों का बीरा, बीड़ा। [**गिलौरा** (पु०)]—**दान**—(संज्ञा, पु०) [हिं० गिलौरी+दान फ़ा०] पान रखने का डिब्बा, पानदान।

गिल्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गिलटी।

गिल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दोनों छोरों पर नुकीला और बीच में मोटा लकड़ी का छोटा टुकड़ा। गुल्ली (ग्रा०)। गिलहरी।

गिष्णु—(संज्ञा, पु०, सं०) गायक। सामगायक।

गींजना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० मीजना] किसी कोमल पदार्थ विशेषतया कपड़े आदि को यों मलना कि वह खराब हो जाय।

गींव—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गर्दन।

गी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वाणी, बोलने की शक्ति भारती, गिरा। वीणापाणि, सरस्वती। "गीर्वाक वाणी सरस्वती"—[अमर]।

गीउ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गरदन, गला, गीव, [**ग्रीवा** (सं०)]

गीत—(संज्ञा, पु०, सं०) वह वाक्य, पद या छंद जो गाया जाय, गाने की चीज, गाना।—**काव्य**—गाया जाने वाला काव्य। "गावहिं गीत मनोहर बानी" —[रामा०]। **मुहा०—गाना**—बड़ाई करना, प्रशंसा करना। "···गाना जय के गीत कहीं— हरिऔध। **अपना ही—गाना**—अपनी ही बात कहना, दूसरे की न सुनना, बड़ाई करना, यश गाना, आत्म प्रशंसा करना। [**गीतकार**—(वि०) गीत रचयिता]

गीता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्ञानमय उपदेश, जो किसी महात्मा से माँगने पर मिले। भगवद् गीता। छब्बीस मात्राओं का एक छन्द। कथा, वृत्तान्त, हाल। "भगवद् गीता किंचिदधीता०"—[चर्प०] "सीता गीता पुत्र की"—[रामा०]। नारद, अष्टावक्रादि रचित ज्ञान की पुस्तकें।

गीतायन—(संज्ञा, पु०, सं०) वीणा, वाद्य। गीत का साधन।

गीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कीर्ति-गान। गान। गति। आर्य्या छन्द। एक छन्द-भेद (पिं०)। [लिरिक] "छाई छिति छत्रिन की गीति उठि जायगी"— रत्ना०।

गीतिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २६ मात्राओं का एक मात्रिक छन्द (पिं०)। गीत, गाना। [**हरिगीतिका**—(यौ०) २८ मात्राओं का एक मात्रिक छन्द (पिं०)]

गीतिकाव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वह काव्य की पुस्तक जिसमें गेय कविताएँ हों। [लिरिकल पोएम]

गीतिरूपक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक प्रकार का नाटक या रूपक जिसमें गद्य तो कम किन्तु पद्य अधिक रहता है।

गीती—(वि०, सं०) सस्वर पाठ करने वाला।

गीथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गीत, गेय पद। वाणी।

गीदड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गृध्र, फ़ा० गीदी] सियार, स्यार, शृगाल (सं०)। "सिंह प्रतापहिं देखि सत्रुगन गीदड़ भागे"—प्रता०।—**भबकी**—मन में डरते हुए ऊपर से दिखावटी साहस या क्रोध प्रगट करना। (वि०) डरपोक, कायर। "गीदड़-भबकी देखि तुम्हारी नहीं डरेंगे"—हमी०।

गीदी—(वि०, फ़ा०) डरपोक, कायर।

गीध—(संज्ञा, पु०, दे०) गिद्ध, गृद्ध (सं०)।

गीधना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गृध्र=लुब्ध] एक बार कुछ लाभ उठा कर सदा उसी का इच्छुक रहना। परचना। लहटना। "गीधो गधि आमिख डली, जानत अली सुगन्ध"—दीन०। "गीध मुख गीधे हैं"—पद्मा०।

गीर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गीः] वाक्, वाणी। सरस्वती, गिरा, भारती।

गीरथ—(संज्ञा, पु०, सं०) बृहस्पति।

गीर्ण—(वि०, सं०) निगला हुआ। वर्णित।

गीर्देवी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सरस्वती।

गीर्पति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बृहस्पति। विद्वान्। वाक्पति, वाचस्पति।

गीर्लता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महाज्योतिष्मती।

गीर्वाण—(संज्ञा, पु०, सं०) देवता, सुर।

गीर्वाणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवभाषा, संस्कृत ।

गीला—(वि०) [हिं० गलना] भीगा हुआ, तर, नम, आर्द्र । [**गीली** (स्त्री०)]

गीलापन—(संज्ञा, पु०) [हिं० गील+पन प्रत्य०] गीला होने का भाव, नमी, तरी ।

गीव*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ग्रीवा] गरदन ।

गीवत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अनुपस्थिति, गैरहाजिरी । पिशुनता । चुगुलखोरी ।

गीष्पति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बृहस्पति । विद्वान्, वाचस्पति, वाक्पति ।

गुंग, गुंगा —(संज्ञा, पु०, वि०, दे०) गूँगा, मूक । [**गूँगी** (स्त्री०)]

गुँगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गूँगा] दोमुहाँ साँप, चुकरैल ।

गुँगुआना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) धुआँ देना, भले प्रकार न जलना । गूँ-गूँ शब्द करना, गूँगे की तरह बोलना ।

गुंचा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कली । कोरक । नाचरंग, बिहार, जश्न ।

गुंज—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गुंज] भौंरों के भन-भनाने का शब्द, गुंजार । आनन्द-ध्वनि, कलरव । "जामैं ध्वनि रह गुंज"—रसाल ।

गुंजक—(संज्ञा, पु० सं०) गुंजन, गुंजा । (वि०) गुंजन करने वाला, भ्रमर ।

गुंजन—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भौंरों के गूंजने की क्रिया, भनभनाहट । कोमल मधुर ध्वनि ।

गुंजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गुंज] भौंरों का भन-भनाना । मधुर ध्वनि करना । गुनगुनाना । "गुंजत मधुकर निकर अनूपा"—[रामा०] । [**गुंजित, गुंजनीय** (वि०)]

गुंजनिकेत—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गुंज+निकेतन] भौंरा, मधुकर, भ्रमर ।

गुंजरना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० गुंजार] गुंजार करना, भौंरों का गूँजना, भनभनाना । शब्द करना । गरजना । "प्राणों में भर मधुर गुंजरण"—पंत ।

गुंजा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घुँघची की लता, घुँघची । "गुंजा मानिक एक सम"—वृंद ।

गुंजाइश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सुभीता, सुबीता । अँटने की जगह, सामने भर को स्थान । अवकाश । समाई ।

गुंजान—(वि०, फ़ा०) सघन, घना, अविरल ।

गुंजायमान—(वि०, सं०) गुंजारता हुआ, गूंजता हुआ । [**गुंजायमाना** (स्त्री०)]

गुंजार—(संज्ञा, पु०) [सं० गुंज+आर प्रत्य०] भौंरों की गूंज, भनभनाहट । प्रतिध्वनित शब्द ।

गुंजारना—(क्रि० अ०) गूंजना ।

गुंजिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घुँघची ।

गुंजित—(वि०, सं०) कलरव, गुंजन शब्दों से पूर्ण ।

गुंठन—(संज्ञा, पु०, सं०) गोंठना, गुंफन । [**गुंठित**—(वि०) गुंफित । **गुंठनीय** (वि०)] ।

गुंठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गठना] एक प्रकार का नाटे कद का घोड़ा, टाँघन घोड़ा । छोटे डील का मनुष्य ।

गुंड—(संज्ञा, पु०, सं०) पीसना, कसेरू । मलार राग का एक भेद ।

गुंडई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गुंडा] गुंडापन, बदमाशी ।

गुंडली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुंडली] फेंटा, कुडली, गेंडुरी । [गोंडरी (दे०)] ईंडुरी (प्रान्ती०)

गुंडा—(वि०, दे०) [सं० गुंडक] बदचलन, कुमार्गी, बदमाश । छैल-चिकनियाँ । [**गुंडई, गुंडी** (स्त्री०)]

गुंडापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गुंडा+पन प्रत्य०] बदमाशी, शरारत । [**गुंडेबाजी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०), **गुंडाबाज** (वि०)]

गुंडित—(वि०, सं०) धूल से ढका हुआ । पीसा या चूर्ण किया हुआ ।

गुंथना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गुत्थ=गुच्छा] तागों या बालों आदि का गुच्छेदार लड़ी के रूप मे बाँधना । उलझकर मिलना या बँधना । मोटे तौर पर सिलना । नत्थी होना, गूँथा जाना । [**गुँथाना, गुँथवाना** (प्रेरणार्थक रूप) **गुंथन, गुंथाई** (संज्ञा, पु०, दे०), **गुंथित, गुंथनीय** (वि०)]

गुँदला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुंडाला] नागरमोथा ।

गुँधना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गुध=क्रीड़ा] पानी में सान कर मसला जाना, माँड़ा-जाना (आटे आदि का) । बालों को सँवारना या उलझाना । (क्रि० अ०, दे०) गुँथना ।

गुँधवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० गूँधना का प्रेरणा० रूप] गूँधने का काम दूसरे से कराना । [**गुंधाना** (प्रे० रूप०, दे०)] ।

गुँधाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० गूँधना] गूँधने या माँडने की क्रिया या भाव । गूँधने या माँड़ने की मजदूरी । बालों को सँवारना ।

गुँधाना—(क्रि० दे०) रजाई आदि ओढ़कर शरीर को गर्म करना। [**गुँधवाना** (प्रे० रूप)]

गुँधावट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० गूँधना] गूँधने या गूँथन की क्रिया या ढङ्ग।

गुंफ—(संज्ञा, पु०, सं०) उलझन, फँसाव। [गुत्थमगुत्था (दे०)] गुच्छा, दाढ़ी, गलमुच्छ। कारणमाला नामक एक अलंकार। [**गुंफित** (वि०)]

गुंफन—(संज्ञा, पु०, सं०) उलझाव, फँसाव। [गुत्थमगुत्था (दे०)] गूँथना, गोंछना। [**गुँफनीय** (वि०)। **गुंफित**-(वि०) गूँथा हुआ, सजाया हुआ] "श्वासों मे सपन कर गुम्फित"—[महा०]।

गुंबज—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० गुंबद] ऊपर उठी हुई गोल छत, गुंबद।

गुंबजदार—(वि०) [फ़ा० गुंबद+दार] जिस पर गुँबज हो।

गुंबद—(संज्ञा, पु०, दे०) गुँबज।

गुंबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गोल+अम्ब=आम] चोट से उत्पन्न कड़ी गोल सूजन, गुलमा (ग्रा०)। ईंट।

गुंभी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुंफ] अंकुर। गाभ।

गुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुवाक] चिकनी सुपारी, सुपारी, पुंगीफल।

गुइयाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गोहन] सहचरी। सखी, सहेली। (पु०) साथी, सखा, मित्र। [गवया (दे०)]

गुखरू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गोक्षुर] एक काँटेदार बेल, गोखरू नामक औषधि, गोक्षुर। एक प्रकार का उभड़ा हुआ गोटा।

गुगुलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) मदारी।

गुग्गुर, गुग्गुल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुग्गुल] एक काँटेदार पेड़ जिसका गोंद सुगंधि के लिए जलाते और औषधि के काम मे लाते हैं। गूगुल। [गूगुर (दे०)] सलई का पेड़ जिससे राल या धूप निकलती है। "मदन सैंधव गुग्गुल गैरिकाद्य"—[वैद्य जीवन]।

गुच्ची—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) गोली या गुल्ली-डंडा खेलने का छोटा गड्ढा। (वि०, स्त्री०) बहुत छोटी, नन्हीं। [**गुच्चा, गुच्चू** (वि०, पु०, प्रान्ती०)]

गुच्चीपारा, गुच्चीपाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गुच्ची=गड्ढा+पारना=डालना] एक खेल जिसमे लड़के एक छोटा सा गड्ढा बना कर उसमे कौड़ियाँ फेंकते हैं।

गुच्छ, गुच्छक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक मे बँधे हुए फलों, फूलों या पत्तियों का समूह। गुच्छा। घास की पूरी। पत्तियों या पतली लचीली टहनियों वाला पौधा। झाड़। मोर की पूँछ। स्तवक (सं०)।

गुच्छा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुच्छ] एक में लगे या बँधे हुए कई पत्तों या फूलों-फलों का समूह। गुच्छ। एक मे लगी या बँधी हुई छोटी वस्तुओं का समूह, जैसे—कुंजियों का गुच्छा। सङ्गठित समूह। ढेर, राशि।

गुच्छार्द्ध—(पु०, सं०) १६ या २४ लड़ियों का मुक्ताहार।

गुच्छी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुच्छ] करञ्ज। कञ्जा, रीठा। एक तरकारी। [**गुच्छा** (पु०, अल्प०)]

गुच्छेदार—(वि०) [हि० गुच्छा+दार फा० प्रत्य०] जिसमे गुच्छा हो।

गुज़र—(संज्ञा, पु०, फा०) निकास। गति। पैठ, पहुच, प्रवेश। निर्वाह, कालक्षेप। [गुजर (दे०)] [**गुज़ारा**-(संज्ञा, पु०, फा०) जीवन-निर्वाह की वृत्ति] [**गुजरबसर** (यौ०)]

गुज़रना—(क्रि० अ०) [फा० गुजर+ना प्रत्य०] समय व्यतीत होना, कटना, बीतना, निकल जाना। [गुरना (दे०)] **मुहा० किसी पर—**, किसी पर आपत्ति (सङ्कट या विपत्ति) पड़ना। किसी स्थान से होकर आना या जाना।—**जाना**—मर जाना। निर्वाह होना। निपटना, निभना।

गुजरबसर—(संज्ञा, पु०, यौ०, फा०) निर्वाह, गुजारा, कालक्षेप।

गुजरात—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० गुजर+राष्ट्र] [**गुजराती** (वि०)] भारतवर्ष के दक्षिण-पश्चिम प्रांत का एक देश।

गुजराती—(वि०) [हि० गुजरात] गुजरात का निवासी। गुजरात देश में उत्पन्न। गुजरात का बना हुआ। (संज्ञा, स्त्री०) गुजरात देश की भाषा। छोटी इलायची।

गुजरान—(संज्ञा, पु०, दे०) गुजर।

गुजराना—(क्रि० स०, दे०) गुजारना।

गुजरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गूजर] गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन। गोपी। मिट्टी की बनी स्त्री (खिलौना)।

गुजरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गूजर] कलाई मे पहनने की एक पहुँची। कानकटी भेंड़। [गूजरी (दे०)] (क्रि० सा० भू०, स्त्री०) बीत गई।

गुजरेटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गूजर] गूजर जाति की कन्या, गूजरी। ग्वालिन। [**गुजरेटा** (पु०)]

गुजश्ता—(वि०, फ़ा०) बीता हुआ, विगत, व्यतीत, भूत।

गुजारना—(क्रि० स०, दे०, फ़ा०) बिताना, काटना। पहुचाना। पेश करना।

गुजारा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गुजर, गुजरान, निर्वाह। जीवन निर्वाह के लिए वृत्ति। महसूल लेने का स्थान। (क्रि० स० भू०) बिताया।

गुजारिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) निवेदन, विनय, प्रार्थना।

गुजिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कर्णफूल। कान का भूषण-विशेष। [**गुझिया, गुझी** (ग्रा०)] एक मिष्टान्न।

गुज्जरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुर्जर+ई प्रत्य०] गूर्जरी, एक संगिनी।

गुज्झा—(पु०) बाँस की कील, गोभा। गूदा (रेशेदार) (वि०) गुप्त, छिपा हुआ।

गुझरोट, गुझरौट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुह्य+आवर्त्त] कपड़े की सिकुड़न, शिकन, सिलवट। स्त्रियों की नाभि के आस-पास का भाग। "कर उठाई घूँघट करति उसरत पट गुझरौट"—बिहारी।

गुझिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुह्यक] एक प्रकार का पकवान। कुसली। पिराक। खोये की एक मिठाई। कर्णफूल। [**गुझी** (ग्रा०)]

गुझौट—(संज्ञा, पु०, दे०) गुझरौट।

गुटकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु) कबूतर की भाँति गुटरगूँ करना। (क्रि० स०, दे०) निगलना, खा जाना।

गुटका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुटिका] गोली। टुकड़ा। छोटे आकार की पुस्तक। लट्टू।

गुटकाना—(संज्ञा, पु०) तबला बजाना।

गुटरगूँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) कबूतरों की बोली।

गुटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बटिका, बटी। गोली। एक सिद्धि, जिसके द्वारा एक गोली मुँह में रख लेने से योगी जहाँ चाहे वहीं चला जाय और कोई देख न सके। [**गुटिकासिद्धि** (यौ०)] "घन विश्वशिवा गुड़जा गुटिका"—[वैद्य जीवन]

गुट्ट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गोष्ट] समूह, झुंड, समुदाय, दल। [यूथ]

गुट्टा—(पु०) लाख की बनी चौकोर गुट्टी जो लड़कियाँ खेलती हैं।

गुट्ठल—(वि०, दे०) [हि० गुठली] फल जिसमें बड़ी गुठली हो। जड़, मूर्ख, कूढ़ मगज। गुठली के आकार का। [**गोठिल** (संज्ञा, पु०, दे०)] किसी वस्तु के इकट्ठा होकर जमने से बनी हुई गाँठ, गुलथी, गिलटी।

गुठलाना—(क्रि० अ०, दे०) फलों में गुठली होना। कुंठित होना। दाँतों का खट्टा होना। गोठिल होना (पैनी धार के अस्त्र का)।

गुठली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुटिका] ऐसे फल का बीज जिसमें एक ही बड़ा और कड़ा बीज होता है, जैसे—आम की गुठली।

गुडंबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गुड़+आँब=आम] उबाल कर शीरे में डुबाया हुआ कच्चा आम।

गुड़—(संज्ञा, पु०, सं०) पका कर जमाया हुआ ऊख या खजूर का रस, जो बट्टी या भेली के रूप में होता है। "विषम रुजमजाजो हंति युक्ता गुड़ेन"—[वैद्य जीवन] **मुहा०—गोबर होना**-अच्छा काम बिगड़ जाना, रङ्ग में भङ्ग होना। बरबाद हो जाना। (**बहुत)—में कीड़े पड़ना**-अत्यधिक प्रेम में निदान विमनता पैदा हो जाना। **—में चींटें लगना**-सरस अथवा आकर्षक वस्तु की ओर आकर्षित होना। **कुल्हिया में—फूटना**-गुप्त रीति से कोई कार्य होना, छिपे-छिपे कोई सलाह होना। **लो० गुड़ खाय गुलगुले से छूत**-झूठा ढोंग रचना। **लो० वह गुड़ नहीं जिसे चींटें खायँ**-छल छद्म में न आने वाला, वह व्यक्ति जो अपनी वस्तु औरों के उपयोग में न आने दे। स्वार्थी व्यक्ति। चतुर या चालाक व्यक्ति।

गुड़गुड़—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) वह शब्द जो जल में नली आदि के द्वारा हवा के फूँकने से होता है, जैसा हुक्के में।

गुड़गुड़ाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गुड़-गुड़ शब्द होना। (क्रि० स०, दे०, अनु०) हुक्का पीना। पेट में वायु से दर्द होना।

गुड़गुड़ाहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० गुड़गुड़ाना+हट प्रत्य०] गुड़गुड़ होने का भाव।

गुड़गुड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गुड़गुड़ाना] एक प्रकार का हुक्का, पेंचवान, फरशी।

गुड़धनियाँ, गुड़धानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० गुड़+धान] भुने हुए गेहूँ को गुड़ मे पाग कर बाँधे गये लड्डू ।

गुड़रू—(संज्ञा, पु०, दे०) एक चिड़िया । गड्डुरी (ग्रा०) "खेहा गुड़रू उसर बगेरी"—जायसी ।

गुड़हर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गुड़+हर] अड़हुल का पेड़ या फूल । जवा । छोटा वृक्ष ।

गुड़हल—(संज्ञा, पु०, दे०) गुड़हर ।

गुड़ाकू, गुड़ाखू—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हिं० गुड़+तमाखू] गुड़ मिली पीन की तम्बाकू ।

गुडाकेश—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, महादेव । अर्जुन । "...गुड़ाकेशेन भारत"—[गीं०] । "व्योम और पृथ्वी का राग उदार, मध्यदेश में गुडाकेश गाते हो बारम्बार"—निराला ।

गुड़ाना—(क्रि० स०, दे०) खुदवाना, खनाना, [गोड़ाना (दे०)] गोड़ना । [**गोड़वाना** (प्रे० रू०)]

गुड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, हिं०) कपड़े की पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं, छोटी लड़की । पुतली, पुत्तलिका । [**गुड्डा, गुड़वा**–(संज्ञा, पु०, दे०)] कपड़े का पुतला] । **मुहा०—(यों) का खेल**—सरल या आसान काम ।

गुड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गुड्डी] पतग, चंग, कनकौवा, गुड्डी । "उड़ी जात कितहूँ गुडी"—बिहारी । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुड़ीची, गुरिच । "गुड़ीच्यपामार्ग विडंग शंखिनी"—[वैद्यजीवन] ।

गुड़ीची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) गुरिच, गुरुच, गिलोय ।

गुड्डा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुड=खेलने की गोली] गुडवा, कपड़े का पुतला । (संज्ञा, पु०) [हिं० गुड्डी] बड़ी पतंग । **मुहा०—बाँधना**—अपकीर्ति करते फिरना, निंदा करना ।

गुड्डी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुरु+उड्डीन] पतंग, कनकौवा, चङ्ग । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० गुटिका] घुटने की हड्डी । एक प्रकार का छोटा हुक्का ।

गुढ़ना—(क्रि० अ०, दे०) छिपना । चुपचाप चुगुली या बात करना ।

गुढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गूढ़] छिपने की जगह, गुप्त स्थान, मवास ।

गुण—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी वस्तु मे पायी जाने वाली विशेषता जिसके द्वारा वह वस्तु दूसरी वस्तुओं से पृथक् पहचान ली जाय । धर्म । सिफत । प्रकृति के तीन भाव—सत्व, रज और तम । निपुणता, प्रवीणता । कोई कला या विद्या, हुनर । असर, तासीर, प्रभाव । अच्छा स्वभाव । शील, सद्वृत्ति । लक्षण । [गुन (दे०)] विशेषता, खासियत । तीन की संख्या । प्रकृति । सन्धि में अ+इ, अ+ई, अ+उ का मिलकर अ, ए, और ओ होना (व्या०) । रस्सी । तागा, डोरा, सूत । धनुष की प्रत्यंचा । (प्रत्य०) एक प्रत्यय जो संख्या-वाचक शब्दों में लग कर उतने ही बार और होना सूचित करता है, जैसे—द्विगुण, चतुर्गुण । [**गुणी** (वि०)]—**कारक** (**कारी**)–(वि०, सं०) फायदा करने वाला, लाभदायक, लाभकारी ।—**कीर्ति**–(संज्ञा, पु०, सं०) यशोगान ।—**खानि**–(वि०, सं०) गुण युक्त । "हा गुणखानि सुजानि कितै गई"—द्विजदेव । —**गान**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गुणकीर्तन, यशोगान ।—**गाथा**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) गुणावली, विरुदावली, [गुनगाथा (दे०)] "मूरख को पोथी दई, बाँचन को गुणगाथ" वृंद ।—**ग्राहक**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गुणों या गुणियों का आदर करने वाला, कदरदान । (वि०) गुणों की प्रतिष्ठा करने वाला, [गुन-गाहक (दे०) । **गुणग्राहकता** (संज्ञा, स्त्री०), **गुणग्राही** (वि०)] । "गुन ना हिरानो-गुन-गाहक हिरानो है" ।—**ज्ञ**–(वि०, सं०) गुण को पहचानने या जानने वाला, गुण पारखी । गुणी । [**गुणज्ञता** (संज्ञा, स्त्री०)] " गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति"—[हिं०] । **मुहा०—गाना**–प्रशंसा, तारीफ या बड़ाई करना ।—**मानना**–एहसान मानना, कृतज्ञ होना ।

गुणक—(संज्ञा, पु०, सं०) वह अङ्क, जिससे किसी अंक को गुणा करें । (वि०) गुणा करने वाला ।

गुणन—(संज्ञा, पु०, सं०) गुणा करना, जरब देना । गिनना, तख़मीना या उद्धरण करना । ढूटना । मनन करना, सोचना । विचारना । [गुनना (दे०)], गुण्य, गुणनीय । (वि०) गुण के योग्य । [**गुणित** (वि०)]—**फल**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक अंक को दूसरे अंक के साथ गुणा करने से प्राप्त अंक या संख्या । [गुननफल (दे०)] [प्रॉडक्ट]

गुणना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गुणन] गुणा करना, जरब देना, [गुनना (दे०)]

गुणवन्त—(वि०, दे०) [हिं० गुण+वन्त प्रत्य०] गुणवान, गुणी । "जानत जे गुनवन्त" । [**गुणवन्ती, गुनवन्तिन** (स्त्री०)]

गुणवाचक—(वि०, यौ०, सं०) जो गुण प्रगट करे। [**गुणवाचकसंज्ञा**-(यौ०) वह संज्ञा जिससे पदार्थ का गुण प्रगट हो, विशेषण (व्या०)]

गुणवान्—(वि०) [सं० गुणवत्] गुणवाला, गुणी, हुनर मन्द। [**गुणवती** (स्त्री०)]

गुणांक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह अंक जिसे गुणा करना हो।

गुणा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गुणन] गणित की एक क्रिया, जरब, गुना। [**गुण्य**, **गुणित** (वि०, दे०)]

गुणाकर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गुण+आकर] गुणागार, गुणों की खानि, गुण-सागर गुणनिधि, गुण-निधान। [गुनाकर (दे०)]

गुणागार—(संज्ञा, पु०) [सं० गुण+आगार=घर] गुण-भवन। गुणखानि, गुणधाम। [गुनागर (दे०)] "गुणागार संसार-पारं नतोऽहं" —तुल०।

गुणागुण—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गुण+अगुण गुण-दोष, भलाई-बुराई। [गुनागुन (दे०)] गुणावगुण।

गुणाग्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्वगुण, तीन गुणों मे सर्वोत्तम।

गुणाढ्य—(वि०) [सं० गुण+आढ्य] गुणपूर्ण, गुणी। कात्यायन मुनि के समकालीन एक प्राचीन कवि, जिन्होंने वृहत्कथा नामक ग्रंथ बनाया। [**गुणाढ्यता** (संज्ञा, स्त्री०)]

गुणातीत—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गुण+अतीत] गुणों से परे, निर्गुण। गुणशून्य। परब्रह्म, परमात्मा, "तब यह कैसे मानिए गुणातीत भगवान"—नंद०। [गुनातीत (दे०)]

गुणाधीश—(वि०, यौ०, सं०) गुणेश्वर।

गुणानुरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) अच्छे गुणों के अनुरूप होना।

गुणानुवाद—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गुण+अनुवाद] गुणकथन, प्रशंसा, तारीफ, बड़ाई।

गुणायण—(वि०, यौ०, सं०) गुणधाम।

गुणालय—(वि०, यौ०, सं०) गुण-निधि, सवगुण-सम्पन्न। ईश्वर। प्रकृति।

गुणावगुण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गुणागुण।

गुणिका—(स्त्री०, सं०) सूजन।

गुणित—(वि०, सं०) गुणा किया हुआ।

गुणी—(वि०) [सं० गुणिन] गुणवाला, जिसमें कोई गुण हो। [गुनी (दे०)] (संज्ञा, पु०) कला-कुशल पुरुष, हुनर-मन्द। झाड़-फूंक करने वाला ओझा। [**निर्गुणी** (विलो०)] "मूरख गुण समझै नहीं, तौ न गुणी मैं चूक"—वृं०। "गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणी"।

गुणीभूत—(वि०, पु०, सं०) गौण बनाया हुआ। —**व्यंग्य**-काव्य मे वह व्यंग्य जो प्रधान न हो।

गुणेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गुण+ईश्वर] गुणों का स्वामी। परमेश्वर। चित्रकूट पर्वत।

गुणोपेत—(वि०, यौ०) [सं० गुण+उपेत=युक्त] गुणयुक्त, गुणी। कला-निपुण।

गुणोत्कर्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गुण+उत्कर्ष] गुणों की प्रधानता। गुण की अधिकता। गुण की सुन्दरता। गुण की व्याख्या।

गुणोत्कीर्तन—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गुण+उत्कीर्तन] गुणगान, यश-कथा। स्तुति।

गुणोघ—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गुण+ओघ] गुण समूह, गुणौघ, गुणौक।

गुण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वह अङ्क जिसे गुणा करना हो, गुणनयोग्य। [गुन्य (दे०)]

गुण्यांक—(पु०, सं०) वह अङ्क जिसका गुणा न हो सके।

गुत—(वि०, पु०, दे०) उदासीन। मौन। गम्भीरता। चुपचाप। लापरवाह। [**गुप्त** (सं०)]

गुत्थमगुत्था—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गुथना] उलझाव, फँसाव। [भिड़त (दे०)] हाथापाई।

गुत्थी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गुथना] कई वस्तुओं के एक मे गुथन से पड़ी गाँठ। गाँठ। गिरह। उलझन। **मुहा०—सुलझाना**-किसी काम को निपटाना।

गुत्स—(पु०, सं०) गुच्छा। चँवर। ग्रन्थ-परिच्छेद।

गुथना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गुत्सन] एक लड़ी या गुच्छे में नाथा या बाँधा जाना। टाँकना। भद्दी सिलाई होना। टाँका लगाना। एक का दूसरे से लड़ने को खूब लिपट जाना। [**गुथाना, गुथवाना** (क्रि० स०, प्रेरणा०, हि०)]

गुथवाना—(क्रि० स०, दे०)[हि० गूथना का प्रेरणा०] गूथने का काम दूसरे से करना।

गुथवाँ—(वि०, दे०) [हि० गुथना] जो गूथकर बनाया गया हो।

गुद—(संज्ञा, पु०, सं०) गुदा, मलद्वार। —**कीलक**-(पु०) बवासीर का रोग। —**पाक**-मलद्वार का पक जाना।

गुदकार, गुदकारा—(वि०, यौ०, दे०) [हि० गूदा या गुदार] गूदेदार, जिसमे गूदा हो, गुदगुदा, मोटी, मांसल।

गुदगुदा—(वि०, दे०) [हि० गूदा] गूदेदार, मांस से भरा, मुलायम।

गुदगुदाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० गुदगुदा] हँसाने या छेड़ने के लिए किसी के तलवे, काँख आदि को सहलाना। मन-बहलाव या विनोद के लिए छेड़ना। किसी मे उत्कंठा उत्पन्न करना।

गुदगुदाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुहराहट। चुलबुली।

गुदगुदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गुदगुदाना] वह सुरसुराहट या मीठी खजुली जो मांसल स्थानों पर अँगुली आदि के छू जाने से होती है। उत्कंठा। शौक। आह्लाद। उल्लास।

गुदड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गूथना] फटे पुराने टुकड़ों को जोड़ कर बनाया हुआ कपड़ा। कंथा (सं०), जीर्ण वस्त्र। [कथरी, गुदरी, गूदरी (दे०)] —**बाजार**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० गुदड़ी + बाजार फ़ा०] फटे-पुराने कपड़ों या टूटी-फूटी चीजों का बाजार। **मुहा०**—**में (के) लाल**-तुच्छ स्थान मे उत्तम वस्तु। [**गूदर, गुदरा** (संज्ञा, पु०, दे०)]

गुदना—(संज्ञा, पु०, दे०) गोदना, निशान होना।

गुदभ्रंश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) काँच निकलने का रोग।

गुदर—(संज्ञा, पु०, दे०) गूदर, गूदड़, फटा-पुराना वस्त्र। "चाहे नौ मन गुदर लपेटो"।

गुदरत—(क्रि० स०, दे०) जानता है। जनाता है। जाते हैं। चलते हैं। निवेदन करते हैं। "कहि न जाय नहिं गुदरत बनई"—तुल०।

गुदरना—(क्रि० स०, दे०) [फ़ा० गुजर + ना हि० प्रत्य०] जनाना। जानना। गुजरना, बीतना।

गुदराननाः*†—(क्रि० स०, दे०) [फ़ा० गुजरान + ना हि० प्रत्य०] पेश करना, सामने रखना। निवेदन करना।

गुदरैन*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गुदरना] पढ़े हुए पाठ को शुद्धतापूर्वक सुनाने की क्रिया। परीक्षा इम्तिहान।

गुदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मल-द्वार, मल-मार्ग।

गुदाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० गोदना प्रेरणा० रूप] गोदने की क्रिया कराना, गुदवाना।

गुदाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [गोडाउन] गोला। वस्तुओं का भंडार, जहाँ बहुत सी वस्तुएँ जमा रहें। [गोदाम, बटन (दे०)]

गुदार†—(वि०, दे०) [हि० गूदा] गूदेदार।

गुदारा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० गुजारा] नाव से नदी के पार करने की क्रिया। [उतारा (दे०)] गुजारा।

गुद्दी†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गूद] फल के बीज का गूदा। मगज। गिरी, मीगी। हथेली का मांस। सिर का पिछला हिस्सा।

गुन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) गुण (सं०)।

गुनगुना—(वि०, दे०) कुनकुना, कुछ गर्म।

गुनगुनाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गुनगुन शब्द करना, नाक से बोलना, अस्पष्ट स्वर में गाना।

गुनना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गुणन] गुणा करना, जरब देना। गिनना। तखमीना या उद्धरणी करना, रटना। सोचना, विचारना, चिंतन करना। "गुनन गोबिन्द लागे"—रत्ना०।

गुनहगार—(वि०, फ़ा०) पापी। दोषी, अपराधी। [**गुनहगारी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जुर्माना।] गुनाही।

गुनही†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० गुनाह] गुनाही, गुनहगार, अपराधी, दोषी।

गुनह—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० गुनाह] अपराध, कुसूर, दोष। [**गुण** (विलो०)] "गुनहु लखन कर हम पर रोषू"—[रामा०]। (क्रि० स०, दे०) विचारो, सोचो, समझो। [गुनहु (दे०)] "आन भाँति कछु जिय जनि गुनहू"—[रामा०]।

गुना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुणन] किसी संख्या-वाची शब्द मे लग कर उस संख्या का उतने ही बार और होना, सूचित करने वाला प्रत्यय, जैसे—पँचगुना। गुणा (गणि०)।

गुनावन—(संज्ञा, पु०, दे०) विचार। मनन।

गुनाह—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पाप, दोष, अपराध, कुसूर। [**गुनाही** (वि०)]

गुनाही—(संज्ञा, पु०, दे०) गुनहगार। "हौ तौ साँच ही गुनाही"—पद्मा०।

गुनिया†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गुणी] राज लोगों का एक यंत्र जिससे वे नाप-जोख करते या दीवाल की सिधाई देखते हैं। (वि०, दे०) गुणवान, गुणी।

गुनियाला—(वि०, पु०, दे०) गुणवान, गुणी। "प्रीतिअड़ी है तुझसे बहु गुनियाला कंता"—कबीर।

गुनी—(वि०, पु०, दे०) गुणी। (प्रत्य० स्त्री०) —जैसे, चौगुनी।

गुनीला—(वि०, दे०) गुणी, अनेक गुणों वाला।

गुनोबर—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का देवदार।

गुप—(वि०, दे०) चुप। [सं० गुप्त] बुझना, गुल होना। (संज्ञा, पु०, दे०) सशब्द खाना। **अंधा** —, अति अंधकार।

गुपचुप—(क्रि० वि०, दे०, हि०) गुप्त रीति से, छिपाकर, चुपचाप। (संज्ञा, पु०, दे०) एक मिठाई।

गुपाल—(संज्ञा, पु०, दे०) गोपाल।

गुपुत*—(वि०, दे०) [सं० गुप्त] छिपा हुआ।

गुपुत्र—(संज्ञा, पु०, दे०) गुप्त। "बही चित्र औ गुपुत्र की"।

गुप्त—(वि०, सं०) छिपा हुआ, पोशीदा। गूढ़, कठिनता से जानने योग्य। (संज्ञा, पु०, सं०) वैश्यों का अल्ल। [**गुप्तवंश**-(यौ०) एक प्राचीन राज-वंश (इति०)]—**गुप्तचर**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चुपचाप छिपकर भेद लेने वाला दूत, भेदिया, जासूस। [सी० आई० डी०]—**दान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह दान जिसे देते समय केवल दाता ही जाने और कोई न जाने। [**गुप्तदाता** (वि०)]—**स्नेह**-(वि०) गुप्त रूप से प्रेम करने वाला।

गुप्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वप्रेम के छिपाने का उद्योग करने वाली नायिका (का०)। रखी हुई स्त्री। सुरेतिन। [रखेली (दे०)]

गुप्तार—(संज्ञा, पु०, दे०) छिपा, लुका। अयोध्या में सरयू नदी का एक घाट।

गुप्तासन—(संज्ञा, पु०, सं०) सिद्धासन।

गुप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छिपाने या रक्षा करने की क्रिया। कारागार, कैदखाना। गुफा। अहिंसा आदि योग के अंग। यम।

गुप्ती—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गुप्त] भीतर गुप्त रूप से किरच या पतली तलवार वाली छड़ी।

गुप्तोत्प्रेक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वाचकपद से रहित उत्प्रेक्षा।

गुप्फा—(संज्ञा, पु०) गुच्छा। फुँदना।

गुफना—(संज्ञा, पु०, दे०) घुमाकर पत्थर फेंकने की एक प्रकार की जाली। [**गोफन, गोफना** (ग्रा०)]

गुफा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुहा] भूमि या पहाड़ में बहुत दूर तक चला गया गहरा अँधेरा गढ़ा, कन्दरा, खोह, गुहा।

गुबरैला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गोबर+ऐला प्रत्य०] गोबर का एक छोटा कीड़ा, [गुबरीला (दे०)]

गुबार—(संज्ञा, पु०, अ०) गर्द, धूल। मन मे दबाया हुआ क्रोध। दुख। द्वेष। [गुब्बार (दे०)] [**गर्दगुबार** (यौ०)]

गुबिन्द*—(संज्ञा, पु०, दे०) गोविन्द। "गुबिन्द जू कुबिन्द बनि आये हैं"—सरस।

गुब्बारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कुप्पा] गरम हवा या हलकी गैस से आकाश में उड़ने वाला थैला।

गुम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गुप्त, छिपा हुआ, अप्रसिद्ध। खोया हुआ।

गुमकना—(क्रि० अ०, दे०) भीतर ही भीतर गूँजना, बाहर प्रगट न होना। "धमकि मार्‌यौ घाय आय गुमकि हिये रह्यो"।

गुमजी—(संज्ञा, स्त्री०) छोटा गुम्बद।

गुमटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुवा+टा प्रत्य०] मत्थे या सिर पर चोट से हुई सूजन, गुलमा। गुरमा (ग्रा०)।

गुमटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० गुंवद] मकान के ऊपरी भाग मे सीढ़ी या कमरों आदि की ऊपर उठी हुई छत।

गुमना—(क्रि० अ०, दे०) [फ़ा० गुम] गुम होना, खो जाना। [**गुमाना** (प्रेरणा० रूप)]

गुमनाम—(वि०, यौ०, फ़ा०) अप्रसिद्ध। अज्ञात, जिसमे नाम न दिया हो।

गुमर—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० गुमान] अभिमान, घमंड, शेखी। मन में छिपाया हुआ क्रोध या द्वेष। गुबार। धीरे की बातचीत, कानाफूँसी।

गुमराह—(वि०, यौ०, फ़ा०) बुरे मार्ग में चलने वाला। भूला-भटका हुआ। [**गुमराही**-(संज्ञा, स्त्री०) भुलावा देना]

गुमसना—(क्रि० अ०, दे०) दुर्गंधित होना। उमस से सड़ना।

गुमसा—(वि०, दे०) सड़ा, गला।

गुमान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अनुमान, कयास। घमंड, गर्व। ज्ञान। लोगों की बुरी धारणा। बदगुमानी। "गौर व गुमान गयो"—रसाल।

गुमाना†—(क्रि० स०, दे०) गँवाना, खो देना, [**गुमवाना** (प्रे० रूप)]

गुमानी—(वि०) [हि० गुमान] घमंडी, अहंकारी, गरूर करने वाला, अभिमानी।

गुमाश्ता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बड़े व्यापारी की ओर से खरीदन और बेचन पर नियुक्त मनुष्य । [एजेंट] [**मुनीम-गुमाश्ता** (यौ०)]

गुमिटना—(अ० क्रि०) लिपटना । लपेट उठना ।

गुम्मट—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० गुंबद] गुंबद । (संज्ञा, पु०) गुल्म (सं०) । [गुमटा (दे०)]

गुम्मा—(वि०, दे०) [फ़ा० गुम] चुप्पा, न बोलने वाला । (संज्ञा, पु०) [सं० गुल्म] बड़ी ईंट । सूजना । गुलमा ।

गुर—(संज्ञा, पु०) [सं० गुरु-मंत्र] वह साधन या क्रिया जिसके करने से कोई कार्य तुरंत हो जाय, मूल-मंत्र । भेद । युक्ति । (संज्ञा, पु०, सं०) गुड़ । (संज्ञा, पु०, दे०) गुरु ।

गुरखंडा—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) गुड़ का चूर ।

गुरगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुरुत्व] चेला, शिष्य । टहलुआ । प्रिय । (ग्रा०) नौकर । गुप्तचर, जासूस । [**गुरगी** (स्त्री०)]

गुरगाबी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुंड़ा जूता ।

गुरच—(संज्ञा, पु०, दे०) गिलोय, गुरुचि, गुरिच, गुड़िच ।

गुरचियाना—(अ० क्रि०) सिकुड़कर टेढ़ामेढ़ा हो जाना ।

गुरची†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गुरुग] सिकुड़न, बट, बल ।

गुरचों—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) परस्पर धीरे-धीरे बातें करना, कानाफूँसी ।

गुरजना—(क्रि० स०, दे०) घुरटना, घुड़कना । गरजन ।

गुरदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [सं० गोर्द] रीढ़दार जीवों के देहान्तर में कलेजे के निकट एक अंग । साहस, हिम्मत । एक छोटी तोप ।

गुरमुख—(वि०, यौ०) [हि० गुरु+मुख] गुरु से मंत्र लेने वाला, दीक्षित । शिक्षित । [**गुरमुखी**-(संज्ञा, पु०, दे०) पंजाबी लिपि]

गुरम्मर—(वि०, पु०, दे०) मीठा आम का पेड़ ।

गुरबी—(वि०, पु०, दे०) अभिमानी, घमंडी, गर्वीला गुमानी । [**गुर्वी** (सं०)] भारी ।

गुरसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गो+रस] अंगीठी, आग रखने का बरतन ।

गुराई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गोराई, गौर वर्ण, गौरता । "गात की गुराई देखि" ।

गुराब—(संज्ञा, पु०, दे०) तोप लादने की गाड़ी ।

गुरिदा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० गुर्ज] गदा ।

गुरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुटिका] माला का दाना या मनका । चौकोर या गोल कटा हुआ छोटा टुकड़ा । मछली के मांस की बोटी ।

गुरीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गुड़+ईला प्रत्य०] मीठा । उत्तम ।

गुरु—(वि०, सं०) लम्बे चौड़े आकार वाला, भारी, वजनी । कठिनाई से पकने या पचन वाला (खाद्य) । (संज्ञा, पु०, सं०) देवताओं के आचार्य, बृहस्पति । बृहस्पति ग्रह । पुष्य नक्षत्र । यज्ञोपवीत संस्कार में गायत्री मंत्र का उपदेशक । आचार्य । मंत्र का उपदेष्टा । किसी विद्या या कला का शिक्षक, उस्ताद । दो मात्राओं का वर्ण (पि०) । ब्रह्मा । विष्णु । शिव । "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः" । [**गुरुता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] [**गुरुताई**] [गुरुआई (दे०)] चालाकी । [**गुरुआनी** (स्त्री०)] —**जन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बड़े लोग । माता-पिता, आचार्य आदि । —**मंत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) गुरु से उपदेश विशेष । मंत्र विशेष । गुप्त बात, मंत्रणा, शिक्षा ।—**द्वारा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुरु+द्वार] आचार्य या गुरु का वास स्थान । सिक्ख मन्दिर । (यौ०, सं०) गुरु के द्वारा ।—**भाई**-(संज्ञा, पु०) [सं० गुरु+भाई हि०] एक ही गुरु के शिष्य, गुरुभ्राता ।—**दीक्षा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुरु से दीक्षा लेना ।—**मुख**-(वि०, यौ०) [सं० गुरु+मुख] दीक्षित, गुरु से मंत्र प्राप्त ।—**मुखी**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गुरु+मुखी] गुरु नानक की चलाई एक लिपि । (वि०, स्त्री०) गुरु मंत्र से दीक्षिता स्त्री ।—**वार**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बृहस्पति का दिन । बृहस्पति, बीफै ।—**कुल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गुरु । आचार्य या शिक्षक का वास-स्थान जहाँ वह विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देता हो ।—**केन्द्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) किसी पदार्थ का वह बिन्दु जिस पर उसका बोझा एकत्र हो कार्य करे ।—**दक्षिणा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विद्या पढ़ लेने पर गुरु को दी गई दक्षिणा ।

गुरुतोमर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक छंद (पिं०) ।

गुरुआनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुरु+आनी प्रत्य०] गुरु की स्त्री । वह स्त्री जो शिक्षा देती हो । [गुरुआइन, गुराइन (दे०)]

गुरुआई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुरु+आई प्रत्य०] गुरु का धर्म । गुरु का काम । चालाकी । धूर्तता । [गुरुअई (दे०)]

गुरुच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुडूची] एक मोटी बेल जो पेड़ों पर चढ़ती और दवा मे पड़ती है, गिलोय, गुड़िच। [गुरिच (दे०)]

गुरुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुरुत्व, भारीपन। महत्त्व। बड़प्पन, गुरुपन। गुरुआई।

गुरुताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गुरुता।

गुरुत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) भारीपन। वजन, बोझा। महत्त्व। बड़प्पन। [ग्रेविटी]

गुरुत्वाकर्षण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह आकर्षक शक्ति जिसके कारण वस्तुएँ पृथ्वी पर खिंच आती हैं। [ग्रेविटेशन]

गुरुवाइन—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० गुरु+आइन प्रत्य०] गुरु-पत्नी। गुरु-माता। गुरुआइन [गुराइन (दे०)]

गुरुविनी—(वि०, स्त्री०, हिं०) गर्भवती स्त्री।

गुरू—(संज्ञा, पु०) [सं० गुरु] गुरु, आचार्य, अध्यापक, उस्ताद। (दे०) चाईं, चालाक, उस्ताद।—**घंटाल**-बड़ा भारी चालाक, धूर्त।

गुरूपदिष्ट—(वि०, यौ०, सं०) [सं० गुरु+उपदिष्ट] गुरु से शिक्षा या उपदेश-प्राप्त।

गुरूपदेश—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गुरु+उपदेश] गुरु की शिक्षा।

गुरेरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गुरु=बड़ा हेरना हिं०] आँखें फाड़ कर देखना, घूरना। रस्सी आदि का ऐंठना।

गुरेरा*—(संज्ञा, पु०, दे०) गुलेला।

गुर्गरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कम्पज्वर, जूड़ी।

गुर्ज—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गदा। सोंटा।—**बरदार**—गदाधारी सैनिक। (संज्ञा, पु०, दे०) बुर्ज।

गुर्जर—(संज्ञा, पु०, सं०) गुजरात देश। वहाँ का निवासी। [गूजर (दे०)]

गुर्जरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुजरात देश की स्त्री। भैरव राग की रागिनी।

गुर्दा—(संज्ञा, पु०) दे० गुरदा।

गुर्रा—(संज्ञा, पु०, फा०) मुहर्रम के रवि आदि वारों पर पड़ने से वर्ष का विचार करना।

गुर्राना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) डराने के लिए घुरघुर या गम्भीर शब्द करना। (जैसा—कुत्ते बिल्ली करते हैं) क्रोध या अभिमान से कर्कश स्वर में बोलना।

गुर्री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भूना तथा कूटा हुआ जव। रस्सी या तागे की ऐंठन जो आप से आप बन जाये।

गुर्वंगना—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० गुरु+अंगना] गुरु-पत्नी, माननीय स्त्री।

गुर्वादित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) एक योग, बृहस्पति और सूर्य का एक राशि या एक नक्षत्र पर स्थित होना (ज्यो०)।

गुर्विणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्भवती।

गुर्वी—(वि०, स्त्री०, सं०) गर्भवती। भारी या श्रेष्ठ वस्तु।

गुल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गुलाब का फूल। फूल, पुष्प। पशु-शरीर में फूल जैसा भिन्न रंग का गोला दाग। गालों में हँसने पर पड़ने वाला गड्ढा। शरीर पर गरम धातु से दागने से पड़ा हुआ चिन्ह, दाग, छाप। दीप-बत्ती का जल कर उभरा भाग। पीने की तमाखू का जला हुआ भाग। किसी वस्तु पर भिन्न रंग का गोल निशान। जलता हुआ कोयला। कतरटी। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) शोर, हल्ला।—**अब्बास**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० गुल+अब्बास अ०] एक पौधा जिसमे बरसात मे लाल या पीले फूल लगते है। [गुलाबास (दे०)]—**कन्द**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मिश्री या चीनी मे मिला कर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूलों की पखुरियाँ जिनका व्यवहार प्रायः दस्त को साफ लाने के लिए होता है।—**कारी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बेल-बूटे का काम।—**केश**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० गुल+केश] मुर्गकेश का पौधा या फूल। जटाधारी।—**खैरा**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० गुल+खैर] एक पौधा जिसमें नीले फूल होते हैं।—**गपाड़ा**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [अ० गुल+गप] बहुत अधिक चिल्लाहट, शोरगुल।—**जार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बाग, वाटिका, (वि०) हरा-भरा, आनन्द और शोभा-युक्त, रमणीक। खूब आबाद।—**दस्ता**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सुन्दर फूलों और पत्तियों का बँधा हुआ समूह, गुच्छा। [गुच्छा (अ०)]।—**दाउदी**-(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० गुल+दाउदी] सुन्दर गुच्छेदार फूलों का एक छोटा पौधा।—**दान**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गुलदस्ता रखने का पात्र, फूलदान।—**दार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रकार का सफेद कबूतर। एक प्रकार का कसीदा। (वि०, दे०) फूलदार।—**दुपहरिया**-(संज्ञा, पु०) [फ़ा० गुल+दुपहरिया हिं०] कटोरे जैसे गहरे लाल सुन्दर फूलों का एक छोटा सोधा पौधा।—**नार**-(संज्ञा, पु०) [फ़ा० गुल+नार अ०] अनार का फूल, उसका सा गहरा लाल

रंग ।—**बकावली**-(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० गुल +बकावली सं०] हलदी की जाति का पौधा जिसमें सुन्दर सुगन्धित फूल होते हैं ।—**बदन**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा । (वि०) फूल सी देह या मुख । (वि०) फूल जैसे मुखड़े वाला । —**मेंहदी**-(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० गुल+मेंहदी हि०] एक प्रकार के फूल का पौधा ।—**मेख**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) गोल सिरे की कील । फुड़िया ।—**लाल**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रकार का पौधा । इसका फूल, गुल्लाला ।—**शन**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वाटिका, बाग ।—**शब्बो**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) लहसुन जैसा एक छोटा पौधा जो रात मे फूलता है । रजनीगंधा, सुगंधरा । सुगंधिराज । रात रानी ।—**हजारा**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रकार का फूल व पौधा । **मुहा०**—**खिलना**-विचित्र घटना होना, बखेड़ा खड़ा होना । —**खिलाना**-कोई खास या विचित्र बात करना, उपद्रव खड़ा करना । **चिराग—होना**-(घर का) किसी खास प्रिय व्यक्ति का मरना । (दीपक) घर के सब आदमियों के बाद एक बचे हुए व्यक्ति का भी मर जाना, घर में कोई न रह जाना । **चिराग—करना**-दिया बुझाना या ठंडा करना ।

गुलगुला—(वि०, पु०, दे०) गुलगुल, नरम । (संज्ञा, पु०, दे०) एक पकान्न ।

गुलगुलाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० गुलगुल] गूदेदार चीज को दबाना । मलकर मुलायम करना या होना ।

गुलगोथना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गुलगुल + तन] नाटा और मोटा व्यक्ति जिसके गाल आदि अंग फूले हों ।

गुलचना—(क्रि० स०, दे०) गुलचे का आघात करना, गालों में आघात करना ।

गुलचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गाल] धीरे से प्रेम-पूर्वक गालों पर हाथ का आघात ।

गुलचाना, गुलचियाना†*—(क्रि० स०, दे०) [हि० गुलचना] गुलचा मारना । "...गाल गुलचै गुलाल लै"—पद्मा० ।

गुलछर्रा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गोली+छर्रा] परम स्वच्छंदता और अनुचित रीति का भोग-विलास या चैन । **मुहा०—उड़ाना**-मौज या आनंद करना ।

गुलझटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गाल+झट =जमाव सं०] उलझन की गाँठ, सिकुड़न ।

गुलथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गोल+ अस्थि सं०] पानी ऐसी पतली वस्तुओं के गाढ़े होकर स्थान-स्थान पर जमने से बनी हुई गुठली, या गोली । माँस की गाँठ, गुल्थी ।

गुलाब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सुन्दर सुगंधित फूलों का कटीला झाड़ या पौधा ।—**जल**-(संज्ञा, पु०, दे०) गुलाब का आसव या अर्क ।—**जामुन**-(संज्ञा, पु०) [हि० गुलाब+जामुन हि०] एक मिठाई । नींबू जैसे कुछ चिपटे स्वादिष्ट फलों का पेड़ ।—**पाश**-(संज्ञा, पु०, दे०) [वि० गुलाब+पाश —फ़ा०] झारी के आकार का एक लम्बा पात्र जिसमे गुलाब-जल भर कर छिड़कते है ।—**बाड़ी**-(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० गुलाब+बाड़ी हि०] आमोद या उत्सव का गुलाब के फूलों से सजा स्थान ।

गुलाबास—(संज्ञा पु०) गुलअब्बास ।

गुलाबा—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का बर्तन ।

गुलाबी—(वि०, फ़ा०) गुलाब के रंग का । गुलाब-सम्बन्धी । गुलाब-जल से बसाया हुआ । थोड़ा कम, हलका । (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का हलका लाल रंग ।

गुलाम—(संज्ञा, पु०, अ०) मोल लिया हुआ दास, खरीदा हुआ नौकर । साधारण सेवक ।

गुलामी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० गुलाम+ई प्रत्य०] गुलाम का भाव, काम या दासता । सेवा, नौकरी, पराधीनता । **मुहा०—बजाना**-गुलाम का काम करना ।

गुलाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० गुल्लाल] एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण जिसे हिन्दू होली के दिन चेहरों पर मलते है ।

गुलाला—(संज्ञा, पु०, दे०) गुललाला ।

गुलिक—(संज्ञा, पु०, सं०) गौरवा ।

गुलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा गेंद । [गुली (दे०)]

गुलियाना—(क्रि० स०, दे०) दवा आदि को बाँस के चोंगे में भर कर पिलाना । गोलियाना, गोली बनाना ।

गुलिस्ताँ—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बाग, वाटिका । गुलसिताँ । शेखसादी द्वारा लिखित फारसी का नीति-ग्रंथ ।

गुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाजरे की भूसी ।

गुलू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गला, गरदन ।

गुलूबन्द—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लंबी और प्रायः एक बालिश्त चौड़ी पट्टी, जिसे सरदी से बचने के लिए

सिर, गले या कानों पर बाँधते हैं। गले का एक गहना। गुलाबंद।

गुलेनार—(संज्ञा, पु०, दे०) गुलनार।

गुलेराना—(संज्ञा, पु०) एक सुन्दर फूल जो भीतर से लाल और बाहर से पीले रंग का होता है।

गुलेल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फा० गिलूल] मिट्टी की गोलियाँ चलाने की कमान।

गुलेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० गुलूला] मिट्टी की गोली, जिसे गुलेल से फेंक कर चिड़ियों का शिकार करते हैं।

गुल्फ—(संज्ञा, पु०, सं०) एँड़ी के ऊपर की गाँठ, टखना।

गुल्म—(संज्ञा, पु०, सं०) ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले और जिसमें कड़ी लकड़ी या डंठल न हो। जैसे—ईख, शर आदि। सेना का एक भाग जिसमें ९ हाथी, ९ रथ, २० घोड़े तथा ४५ पैदल रहते है। पेट का रोग।

गुल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मिठास, मीठापन।

गुल्लक—(संज्ञा, पु०, दे०) गोलक, रुपये-पैसे की छोटी संदूक।

गुल्लर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उदम्बर, गूलर] उदम्बर, ऊमर, गूलर।

गुल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गोला] मिट्टी की बनी हुई गोली जिसे गुलेल से फेंकते है, गोली। गुलेल, गुलेला। (संज्ञा, पु०, दे०) [अ० गुल] शोर, हल्ला। [**हल्ला-गुल्ला** (यौ०)]

गुल्लाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० गुलेलाला] एक लाल फूल जिसका पौधा पोस्ते के पौधे सा होता है, गुलाला।

गुल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुलिका=गुठली] महुए या किसी फल की गुठली। किसी वस्तु का लम्बोतरा छोटा गोल टुकड़ा। छत में मधु का स्थान। लड़कों के खेलने की अंटी (प्रान्ती०), गुल्लू।

गुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) सुपारी, पूँगीफल।

गुवाक—(संज्ञा, पु०, सं०) सुपारी का पेड़। सुपारी।

गुवाल—(संज्ञा, पु०, दे०) ग्वाल।

गुवालिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ग्वालिनी। [**गुवा-रिन** (ब्र०)] "कहैं रतनाकर गुवारिन की और और।"

गुविन्द*—(संज्ञा, पु०, दे०) गोविन्द।

गुवैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सखी, सहेली। वयस्या। **ग्वैय्या, गुइयाँ** (ग्रा०)।

गुसाँई*—(संज्ञा, पु०, दे०) गोसाईं, गोस्वामी, एक प्रकार के साधु। प्रभु।

गुसा—*†(संज्ञा, पु०, दे०) गुस्सा। [**गुसैल गुस्सैल** (वि०, दे०)]

गुसैयाँ*—(संज्ञा, पु०, दे०) गोसाँई, ईश्वर। "ऊपर छत्र गुसैयाँ केर"—[आल्हा]।

गुस्ताख—(वि०, फ़ा०) धृष्ट, अशालीन, अशिष्ट, बेअदब। [**गुस्ताखाना** (वि०)]

गुस्ताखी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) धृष्टता, ढिठाई, अशिष्टता, बेअदबी।

गुस्ल—(संज्ञा, पु०, अ०) स्नान, नहाना।—**खाना**-(संज्ञा, पु०) [अ० गुस्ल+खाना फ़ा०] स्नानागार, नहाने का घर।

गुस्सा—(संज्ञा, पु०, अ०) क्रोध, कोप, रिस। [**गुस्सावर, गुस्सैल** (वि०)] **मुहा०—उतरना या निकलना**-क्रोध शांत होना। (**किसी पर**)—**उतारना**-क्रोध में जो इच्छा हो उसे पूर्ण करना, अपने क्रोध का फल चखाना।—**चढ़ना**-क्रोध का आवेश होना।—**पी जाना**-गुस्से को दबा लेना।

गुस्सैल—(वि०, दे०) [अ० गुस्सा+ऐल प्रत्य०] जिसे जल्दी क्रोध आवे, गुस्सावर।

गुह—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्तिकेय, षडानन। अश्व, घोड़ा। विष्णु का एक नाम। राममित्र निषाद-नायक। गुफा। हृदय। †(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुह्य] गूह, मैला।

गुहक—(संज्ञा, पु०, सं०) निषाद या केवट जिसने रामचन्द्र जी को गंगा से पार उतारा था।

गुहना*—†(क्रि० स०, दे०) गूँथना, पिरोना।

गुहर—(संज्ञा, पु०, दे०) गुप्त, छिपा, ढका।

गुहराना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० गुहार] पुकारना। चिल्ला कर सहायता के लिए बुलाना। [गोहराना (दे०)]

गुहवाना, गुहाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० गुहना का प्रेरणा० रूप] गुहने का काम कराना, गुँधवाना।

गुहाँजनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आँख की फुड़िया, गुहेरी। बिलनी।

गुहा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुफा, कंदरा।

गुहाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गुहना] गुहने की क्रिया, ढंग, भाव या मजदूरी।

गुहार, गुहारि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पुकार, दुहाई। गोहार (ग्रा०)। **मुहा०—लगना**-सहायता करना। "कौन जब कातर गुहार लागिबे

के काज"—रत्ना०। "दीन-गुहारि सुनै स्रवननि भरि"—सूर०।

गुहिन—(संज्ञा, पु०, सं०) जंगल, वन।

गुहिल—(संज्ञा, पु०, दे०) धन, वित्त, विभव, निधि। सिसौदिया वंश का प्रथम राजा, इसी से वे गुहिलौत कहाते है।

गुहेर—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिभावक, रक्षक।

गुहेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गुहांजनी।

गुह्य—(वि०, सं०) गुप्त, छिपा हुआ, गोपनीय, छिपाने-योग्य। गूढ़, जिसका तात्पर्य सहज में न खुले। [**गुह्यातिगुह्य** (यौ०)।]

गुह्यक—(संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर-कोष-रक्षक यक्ष। गुझिया।

गुह्यकेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० गुह्यक+ईश्वर] यक्षराज कुबेर, गुह्यकेश। गुह्यकपति।

गूँगा—(वि०) [फ़ा० गूँग जो बोल न सके] जो बोल न सके, वाणी-रहित, मूक। **मुहा०**—(**गे**) **का गुड़**-ऐसी बात जिसका अनुभव तो हो पर वर्णन न हो सके। [**गूँगी** (स्त्री०)]

गूँज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुंज] भौंरों के गूँजने का शब्द। कलध्वनि, गुजार, प्रतिध्वनि, व्याप्त ध्वनि। लट्टू की कील। कान की बालियों का मुड़ा हुआ सिरा। गले का एक भूषण।

गूँजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० गुंजन] भौंरों या मक्खियों का मधुर ध्वनि करना। गुजारना, प्रतिध्वनि होना। "गूंजत मधुकर-निकर अनूपा" —तुल०।

गूँठ—(संज्ञा, पु०, दे०) पहाड़ी टट्टू, घोड़ा।

गूँड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) नाव का आड़ा काठ।

गूँथना—(क्रि० स०, दे०) गूँधना, सीना।

गूँदना—(क्रि० स०, दे०) सानना, माँड़ना। (आटा) एकत्रित करना। गोला बनाना।

गूँदनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गुँदेला, वृक्ष-विशेष, गोंदा।

गूँदा—(संज्ञा, पु०, दे०) अंतःसार।

गूँधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गुध=क्रीड़ा] पानी में सान कर हाथों से दबाना या मलना, माड़ना, मसलना। (क्रि० स०) [सं० गुँफन] गूँथना, पिरोना। बालों को सुलझाना।

गू—(संज्ञा, पु०, दे०) मल, मैला।

गूजर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुर्जर] अहीरों की एक जाति। [**गूजरी, गूजरिया** (स्त्री०)]

गूजरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुर्जरी] गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन। पैर का एक जेवर। एक रागिनी।

गूझा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुह्यक] गोझा, पिरांक। फलों का रेशा। [**गुझिया** (स्त्री०)]

गूढ़—(वि०, सं०) गुप्त, छिपा हुआ। अभिप्राय-गर्भित, गम्भीर, जिसका आशय जल्दी न समझ पड़े, कठिन, गहन, गूढ़तर, गूढ़तम। [**गूढ़ता** (संज्ञा, स्त्री०)]—**गिरा**-(संज्ञा, पु०, सं०) गूढ़ कथन।—**गेह**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गूढ़गृह] गुप्त भवन, यक्षगृह, गूढ़ालय। "प्रौढ़ रूढ़ि को समूह गूढ़ गेह में गयो"—केशव।

गूढ़ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुप्तता, छिपाव, गंभीरता, कठिनता, गहनता।

गूढ़ांग—(संज्ञा, पु०, सं०) कछुआ।

गूढ़ांघ्रि—(संज्ञा, पु०, सं०) साँप।

गूढ़ा—(संज्ञा, पु०, सं०) नाव की लम्बाई को दृष्टि मे रखकर दो हाथ की दूरी पर लगाई जाने वाली लकड़ी-विशेष।

गूढ़ोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अलंकार जिसमे कोई गुप्त बात किसी दूसरे के ऊपर छोड़ किसी तीसरे के प्रति कही जाती है। गंभीर कथन।

गूढ़ोत्तर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह काव्यालङ्कार जिसमें प्रश्न का उत्तर किसी गूढ़ अभिप्राय से दिया जाय।

गूथ—(संज्ञा, पु०, सं०) मल, पाखाना, विष्ठा।

गूथना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ग्रन्थन] कई चीजों को एक गुच्छे या लड़ी मे नाथना, पिरोना, सुई-तागे से टाँकना, गूँधना।

गूदड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गूथना] चिथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा। [गूदर (दे०)] [**गूदड़ी, गूदरी** (स्त्री०)] "बरुनी बघंबर मैं गूदरी पलक दोऊ"—देव०।

गूदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गुप्त] फल का भीतरी भाग। भेजा, मग्ज, खोपड़ी का सार भाग। मींगी, गिरी। [**गूदी** (स्त्री०)]

गूदिया—(संज्ञा, वि०, दे०) लोभी, इच्छुक।

गून—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुण] नाव खींचने की रस्सी।

गूप—(वि०, सं०) गुप्त, छिपा, गोपित ।

गूमड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) फोड़ा । सूजन । गिलटी, व्रण (सं०) ।

गूमड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गाँठ, ग्रन्थि ।

गूमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुम्मा] एक छोटा पौधा, जो दवा के काम में आता है, द्रोण-पुष्पी (सं०) ।

गूरण—(संज्ञा, पु०, सं०) परिश्रम । अध्यवसाय, प्रयत्न ।

गूलर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उदम्बर] एक बड़ा पेड़ जिसमें गोल फल लगते हैं, उदम्बर । [ऊमर (दे०)] "गूलर फल-समान तव लंका"—तुल० । **मुहा०—का फूल**-जो कभी देखने में न आवे, दुर्लभ व्यक्ति या वस्तु । "दीवाने हो गये हैं गूलर का फूल लेंगे"—चकवस्त । [**गुलरी** (स्त्री०)]

गूहड़िया—(संज्ञा, पु०, दे०) घूरा, कूड़ा, कतवार । गोबर । गलीजखाना ।

गूह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुह्य] गलीज, मैला, मलविष्टा, गू, पाखाना ।

गूहन—(संज्ञा, पु०, सं०) छिपाना ।

गूहाछीछी—(संज्ञा, स्त्री०) भद्दी बातों की कहा-सुनी ।

गृंजन—(संज्ञा, पु०, सं०) गाजर । शलजम । लहसुन । (लाल रंग वाला) गाँजा । पशु का मांस ।

गृद्ध—(संज्ञा, पु०, दे०) गीध ।—**राज**-(संज्ञा, पु०) जटायु । "गिद्धराज सुनि आरत बानी ।"

गृध्नु—(वि०, पु०, दे०) लोभी, इच्छुक ।

गृध्नुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लोलुपता, लोभ, लालच, आकांक्षा, अभिलाषा ।

गृध्र—(संज्ञा, पु०, सं०) गिद्ध, गीध, जटायु, सम्पाति आदि पक्षी ।

गृष्टी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक बार की ब्याई गौ । लता विशेष । बाराही कंद । "गृष्टिर्गुरुत्वात् वापुषोनरेन्द्रः"—[रघु०] ।

गृह—(संज्ञा, पु०, सं०) घर, मकान, निवास-स्थान । कुटुम्ब, वंश । [**गृही** (वि०)]—**जात**—(संज्ञा, पु०, सं०) घर की दासी से उत्पन्न दास, घर जाया । [**गृहजाता** (स्त्री०)]—**पति**—(संज्ञा, पु०, सं०) घर का मालिक । अग्नि । [**गृहपत्नी** (स्त्री०)]—**युद्ध**-(संज्ञा, पु०, सं०) घर की कलह । किसी देश के भीतर आपस में होने वाली लड़ाई, घरेलू लड़ाई ।—**सचिव**—(संज्ञा, पु०, सं०) राज्य के भीतरी या आन्तरिक व्यवस्था करने वाला मंत्री । [होममिनिस्टर]

गृहस्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मचर्य के पीछे ब्याह करके घर में रहने वाला व्यक्ति । ज्येष्ठाश्रमी, घर बार वाला, बाल-बच्चों वाला किसान ।

गृहस्थाश्रम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चार आश्रमों में से दूसरा जिसमे लोग विवाह करके रहते और घर का काम-काज करते या देखते हैं । [**गृहस्थाश्रमी** (वि०)]

गृहस्थी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गृहस्थ + ई प्रत्य०] गृहस्थाश्रम । गृहस्थ का कर्तव्य । [गिरिस्ती (ग्रा०, दे०)] घर-बार, गृहव्यवस्था, कुटुम्ब, लड़के-बाले, घर का साज-सामान या खेतीबारी । [**गृहस्थिनी** (संज्ञा, स्त्री०)] [गिहस्थिनी (स्त्री०, दे०)]

गृहिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घर की स्वामिनी, स्त्री, भार्य्या । "गृहिणी सहायः"—[रघु०] ।

गृही—(संज्ञा, पु०) [सं० गृहिन्] गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी, कुटुम्बी । "गृही विरति ज्यों हर्ष-युत" —तुल० ।

गृहीत—(वि०, पु०, सं०) पकड़ा हुआ, स्वीकृत । "ग्रह-गृहीत पुनि बात बस"—तुल० ।

गृहीतार्थ—(वि०, पु०, सं०) जिसने अर्थ समझ या जान लिया हो ।

गृहोपकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) घर का सामान, बर्तन इत्यादि ।

गृह्य—(वि०, पु०, सं०) गृह-सम्बन्धी । गृहस्थों के कर्तव्य-कर्म । ग्रहण करने योग्य । कर्मकांड के ग्रन्थ, धर्म संहिता ।

गृह्यक—(वि०, पु०, सं०) आश्रित । पालतू । पालतू पशु या पक्षी ।—**सूत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) वह वैदिक पद्धति जिसके अनुसार गृहस्थ लोग मुडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कार करते हैं ।

गृह्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नगर के निकट का गाँव ।

गेंगटा—(संज्ञा, पु०, दे०) केकड़ा ।

गेंठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गृष्टि] बाराहीकंद ।

गेंड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कांड] ईख के ऊपर का पत्ता । [अगौरा (दे०)]

गेंड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गंड—चिह्न, हि० गंडा,] लकीर से घेरना । चारों ओर घूमना, परिक्रमा या प्रदक्षिणा करना । (क्रि० स०, दे०)

[हि० गेंड़] खेतों को मेंड़ों से घेर कर हद बाँधना। अन्न रखने के लिए गेंड़ बनाना। घेरना। गोठना।

गेंड़ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुंडली] कुण्डल, फेंटा, जैसे—साँप की गेंड़ली।

गेंड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कांड] ईख के ऊपर के पत्ते, अगौरा, ईख, गन्ना।

गेंडुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गेंडुक] गेंदुआ, उर्सीस, तकिया, गोल तकिया। [गेंदुवा (दे०)] गेंदुक।

गेंडुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गंडुक=तकिया] तकिया। सिरहाना। बड़ा गेंद। [गेंदुक (सं०)]

गेंडुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कुंडली] रस्सी का बना हुआ घड़ा रखने का मेंडरा, इन्डुरी, विड़वा। फेंटा। कुण्डली।

गेंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गेंडुक, कंदुक] कपड़े, रबड़ या चमड़े का गोला, जिससे लड़के खेलते है, कंदुक। कालिब। कलबूत।

गेंदई—(वि०) गेंदे के फूल के रङ्ग जैसा, जर्द। (पु०) गेंदे के फूल की तरह का रङ्ग।

गेंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गेंद] लाल-पीले फूलों का एक पौधा। "गेंदा गुलदाउदी गुलाब"।

गेंदुआ, गेंदुवा—(संज्ञा, पु०) गोली तकिया।

गेंदुक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गेंडुक] तकिया, गेंद। "भू-पर्यंको निज भुजलता गेंदुक खविता-नम्"।

गेंदौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार की मिठाई। चीनी की मोटी रोटी, गेंदौड़ा।

गेगला—(संज्ञा, पु०) गेहूँ के साथ पैदा होने वाला मसूर की जाति का एक पौधा। (वि०) मूर्ख।

गेडना—(क्रि० स०) लकीर बनाकर घेरना। (क्रि० अ०) चारों ओर फिरना।

गेदा—(संज्ञा, पु०) बेपर का चिड़िया का छोटा बच्चा।

गेय—(वि०, सं०) गाने के योग्य। [गेया (स्त्री०)]

गेया—(संज्ञा, पु०, दे०) मिटनी, बोटा, खंड।

गेरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गलन वा गिरण] गिराना, नीचे डालना, उंडेलना।

गेराँव—(संज्ञा, पु०) पशुओं के बंधन का वह हिस्सा जो गले मे रहता है।

गेरुआ—(वि०, दे०)[हि० गेरू+आ प्रत्य०] गेरू। मटमैला। गेरू में रङ्गा। [गैरिक (सं०)] जोगिया, भगवा (प्रान्ती०)।

गेरुई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गेरू] चैत की फसल का एक लाल रङ्ग का रोग, जो बहुधा गेहूँ के पौधों में होता है। "तरे ओद ऊपर बदराई। कहै घाघ अब गेरुई खाई"।

गेरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गवेरुक] एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी जो खानों से निकलती है, गिरिमाटी। [गैरिक (सं०)]

गेह*—(संज्ञा, पु०, ब्र०) [सं० गृह] घर, मकान। "···सुरति रही न रंच देह की न गेह की"।

गेहनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गेह] घर वाली। [गृहिणी (सं०)] गेहिनी।

गेही*—(संज्ञा, पु०) [हि० गेह] गृहस्थ।

गेहुँअन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गेहूँ] मटमैले रङ्ग का अति विषैला साँप।

गेहुँआ—(वि०, दे०) [हि० गेहूँ] गेहूँ के रङ्ग का, बादामी रङ्ग का।

गेहूँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गोधूम] एक प्रसिद्ध अनाज जिसके चूर्ण की रोटी बनती है।

गेहेशूर—(वि०, सं०) कायर, डरपोक, घर में अपनी वीरता का प्रदर्शन करने वाला।

गैडहरा—(संज्ञा, पु०, यौ०, प्रा०) गाँव की डहर या राह।

गैंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गंडक] भैंस के आकार का एक पशु, जो जंगली दलदलों और कछारों मे रहता है।

गैंती, गैती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुदाल, मिट्टी खोदने का अस्त्र विशेष, कुदारी।

गैताल—(संज्ञा, पु०) रद्दी किस्म का बैल, निकृष्ट कोटि का पशु। बेकार।

गैन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गमन] गैल, मार्ग। गमन, गौन। "सुख पइयों तो बिरमियो, नहिं करि जैयो गैन"।

गैना—(संज्ञा, पु०, दे०) नाटा बैल। राह।

गैनी—(वि०, स्त्री०, ब्र०) गामिनी।

गैब—(संज्ञा, पु०, अ०) परोक्ष, जो सामने न हो "त्यों ही आई गैब से ऐसी निदा"—हाली०।

गैबी—(वि०) [अ० गैब] गुप्त, छिपा हुआ। अजनबी, अज्ञात।

गैयर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गजवर] हाथी। "मन-मतङ्ग गैयर हनै"—कबीर।

गैया—(संज्ञा, स्त्री०, ब्र०) [सं० गौ] गायी, गाय, गौ, धेनु। "उन बिन लगत न मोरी गैया" —सूर।

गैर—(वि०, अ०) अन्य, दूसरा । अजनबी, अपने समाज या कुटुम्ब से बाहर का पुरुष, पराया। "गैर से है प्रेम हमसे बैर है"—[स्फु०] । विरुद्ध अर्थवाची या निषेधवाची शब्द जैसे—गैरमुमकिन, गैरहाजिरी । (संज्ञा, स्त्री०, अ०) अत्याचार, अँधेर ।—**मनकूला**-(वि०, अ०) जिसे एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान न ले जा सकें, स्थिर, स्थायी, अचल, जड़ ।—**मामूली**-(वि०, अ०) असाधारण । —**मिसिल**-(क्रि० वि०, अ०) बेतरतीबी से, अनुचित जगह में । "गैरमिसिल ठाढो कियो"—भूषण ।—**मुनासिब**-(वि०, अ०) अनुचित ।—**मुमकिन**-(वि०, अ०) असम्भव ।—**वाजिब**-(वि०, अ०) अयोग्य, अनुचित, अनुपयुक्त, नामुनासिब ।—**हाजिर**-(वि०, अ०) अनुपस्थित, अविद्यमान, नामौजूद ।—**हाजिरी**-(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अनुपस्थिति, अविद्यमानता, नामौजूदगी ।

गैरत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लज्जा, हया । "हमसे मिलने में है गैरत उसे आती लेकिन" ।

गैरा—(संज्ञा, पु०, दे०) घास का पूला, आँटी, मुट्ठा । [**ऐरा-गैरा**-(यौ०) अयर-गैर]

गैरिक—(संज्ञा, पु०, सं०) गेरू । सोना । गिरि का । "नैन भये जोगी लाल गैरिक रङ्ग" ।

गैरिकाक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) जलमधूक ।

गैरेय—(संज्ञा, पु०, सं०) शिलाजीत । गिरिसम्बन्धी ।

गैल—(संज्ञा, स्त्री०, ब्र०)[हि० गली] मार्ग, रास्ता, गली । गइल । "गैल गहिबे को हठि"—रत्ना० । **मुहा०—बताना**-दगाबाजी करना । "घायल कै प्यारे अब गैल बतरावै है"—रत्ना० । [**गैला** (पु०)]

गैस—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) हवा में फैलने वाला एक द्रव्य ।

गैहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दण्ड, रोकने का दंड, अर्गल, बेड़ा ।

गोंइठा—(संज्ञा, पु०, दे०) कंडा, उपला, गोहरा (प्रान्ती०) ।

गोंइँड़, गोंइँड़ा—(संज्ञा, पु०,, दे०) गाँव की तटवर्ती भूमि, सिवान ।

गोंठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गोष्ट] कमर पर धोती की लपेट, मुर्री । [गाँठ (दे०)] "गोंठ में दाम सब काम सिद्ध जानिए" ।

गोंठना—(क्रि० स०, दे०) [सं० कुंठन] किसी वस्तु की कोर या नोक गुठला देना, गोझे या पुवे की कोर को मोड़ कर उभड़ी हुई लड़ी के रूप में करना । [सं० गोष्ट] चारों ओर से घेरना । [**गोंठाना**, **गोंठवाना** (प्रेरणा० रूप)]

गोंठनी—(संज्ञा, स्त्री०) गुझिया बनाने का गाड़ीदार औजार ।

गोंड—(संज्ञा, पु०) [सं० गोंड़] मध्यप्रदेश की एक असभ्य जाति । बंग और भुवनेश्वर के बीच का देश । [**गोंडवाना** (संज्ञा, पु०)]

गोंडरा§—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंडल] लोहे का मँडरा जिस पर मोट का चरसा लटकता है, कुंडल के आकार की वस्तु । मंडल, गोल घेरा । [**गोंडरी** (स्त्री०)]

गोंड़ा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गोष्ट] बाड़ा, घेरा हुआ स्थान (विशेषत:) चौपायों का पुरवा । गाँव, खेड़ा । "निकसि घरते गयीं गोंडे"—सूर ।

गोंड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) मध्य भारत की एक बोली विशेष ।

गोंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुंदरू या हि० गूदा] पेड़ों के तने से निकला हुआ चिपचिपा या लसदार पसेव, लासा । निर्यास, तृण विशेष ।—**दानी**-गोंद भिगो कर रखने का पात्र ।—**पँजीरी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गोंद+पंजीरी] प्रसूता को खिलाने को गोंद मिली हुई पंजीरी ।

गोंदनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तृण विशेष, नरकट, एक पेड़ । लहरगोंदी ।

गोंदरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुंद्रा] पानी की एक घास जिसकी चटाई बड़ी मुलायम होती है, गोंद (ग्रा०) ।

गोंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) पक्षी के खाने और फँसाने की लोई, लभेरा । लसोड़ा ।

गोंदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गोवंदनी=प्रियंगु] मौलसिरी सा एक पेड़ । इँगुदी, हिंगोट ।

गो—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गाय, गौ, गऊ, धेनु । किरण । वृषराशि । इन्द्रिय । वाणी । बोलने की शक्ति, वाक्, सरस्वती । आँख, दृष्टि । बिजली । दिशा । पृथ्वी, जमीन । माता । दूध देने वाले पशु, जैसे बकरी, भेंड़ी, भैंस आदि । जीभ । (संज्ञा, पु०, सं०) बैल । नन्दी नामक शिवगण । सूर्य । चन्द्रमा । घोड़ा । बाण, तीर । आकाश । स्वर्ग । वज्र । जल । नौका । शब्द । अंक । (फ़ा०) यद्यपि ।—**कि**-(अव्य०, फ़ा०) यद्यपि, अगर्चि । (प्रत्य०, फ़ा०) कहने वाला । जैसे, बंदगी । —**कर्ण**-(संज्ञा, पु०, सं०) मलाबार में हिन्दुओं के एक शैव क्षेत्र की शिव-मूर्ति ।

(वि०, सं०) गऊ के से लम्बे कान वाला। शैवों का तीर्थ-विशेष। (संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक लता मूरहरी, चुरनहार (प्रान्ती०) ।—कुल-(संज्ञा, पु०, सं०) गौओं का झुंड, गोसमूह, गोशाला। एक प्राचीन प्रसिद्ध ब्रज-ग्राम। "गोकुल गाँव की ग्वालिनि गोरी" ।—कोस-(संज्ञा, पु०) [सं० गो+कोश] उतनी दूरी जहाँ तक गाय के बोलने का शब्द सुन पड़े, छोटा कोस, दो मील ।—ग्रास-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पके हुए अन्न का भाग, जो भोजन या श्राद्धादिक के आरम्भ में गाय के लिए निकाला जाता है। गौग्रास [गऊग्रास (दे०)]—घात-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोहत्या, गाय मारना। [**गोघाती, गोघातक**-(वि०) गाय मारने वाला]—चर्म-(संज्ञा, पु०, सं०) गाय का चमड़ा।—चारण-(संज्ञा, पु०, सं०) गाय चराना, गोपालन।—चिकित्सा-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गौ की औषधि, गौ की दवा करना।—चिकित्सक-(संज्ञा, पु०, सं०) गायों का वैद्य।—दान-(संज्ञा, पु०, सं०) गौ को सविधि सङ्कल्प कर ब्राह्मण को देने का काम। केशान्त संस्कार ।—दोहन-(क्रि० स०, सं०) गाय दुहना, गाय से दूध निकालना।—दोहनी-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोदोहन पात्र, दुधेय, दुधाड़ी। [दुधहँडी (दे०)]—धन-(संज्ञा, पु०) गायों का समूह या झुण्ड, गोरूपी सम्पत्ति। एक प्रकार का तीर। †*(संज्ञा, पु०) [सं० गोबर्धन] गोवर्धन पर्वत। "गोधन, प्रान सबै लै जइये"—सूर०। दिवाली के दूसरे दिन का त्योहार, जिसमें गोवर्धन पर्वत (उसके गोबर के नमूने) की पूजा होती है।—धूलि,—धूली-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जंगल से चर कर लौटती हुई गायों के खुरों से धूल उड़ने से धुँधुली छा जाने का समय, संध्याकाल। [**गोधौरी** (संज्ञा, पु०, दे०)]—धेनु-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुग्धवती गौ, दुधार गाय ।—पति-(संज्ञा, पु०, सं०) साँड़, वृष, बैलराज। गोरक्षक। अहीर।—पद-(संज्ञा, पु०) [सं० गोष्पद] पृथ्वी पर गाय के खुर का चिह्न, गायों के रहने का स्थान। —पाल,—पालक-(संज्ञा, पु०, सं०) गौ का पालने वाला, अहीर, ग्वाला, गोप, श्रीकृष्ण, एक छंद (पिं०) —पुच्छ-(संज्ञा, पु०, सं०) गौ की पूँछ, एक प्रकार का गावदुमहार।—प्रकांड-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रेष्ठ या उत्तम गौ।—मल-(संज्ञा, पु०) गाय का मल, गोबर।—मिथुन-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दो गायें, गायों की जोड़ी, गोयुग्म।—मुख-(संज्ञा, पु०, सं०) गाय का मुख।—०नाहर, —०व्याघ्र-(संज्ञा, पु०) वह मनुष्य जो देखने में तो बहुत सीधा हो पर वास्तव में बड़ा क्रूर, दुष्ट और अत्याचारी हो। गवानन। गाय के मुँह जैसे आकार वाला, शंख। नरसिंहा बाजा।—मुखी-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार की थैली, जिसमें हाथ डाल कर माला फेरते हैं। जपमाली, जपगुथली। गौ के मुँह के आकार का, गंगोत्री नामक-स्थान जहाँ से गङ्गा निकली है।—मूढ़-(संज्ञा, पु०, सं०, वि०) बैल के समान मूर्ख, अतिशय अज्ञान, अबोध, अजान।—मूत्र-(संज्ञा, पु०, सं०) गाय का मूत्र। [गोमूत (दे०)]—मेध-(संज्ञा, पु०, सं०) एक यज्ञ जिसमें गो से हवन किया जाता था।—रज-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गायों के खुरों से उड़ी हुई धूलि, गोधूलि। "गोरजादि प्रसंगे यत्"—पाणिनि।—रस-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दूध। दही। मट्ठा आदि। इन्द्रियों का सुख। "रस तजि गोरस लेहु तुम, बिरस होत क्यों लाल" —[स्फु०]। "गोरस लेहु तौ लेहु भले तुम जो रस चाहौ न सो रस पैहौ"—रसाल।—लोक-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सब लोकों से ऊपर, श्री कृष्ण जी का निवास-स्थान।[—०वासी-(वि०) स्वर्गीय, मृत, मरा हुआ।]—०पति-(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु।—वध-(संज्ञा, पु०, सं०) गोहत्या, गौ का बध। [**गोवधिक** (संज्ञा, पु०)]—वशा-(संज्ञा, पु०, सं०) बंध्या या बहिला गाय।—शाला-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) गायों के रहने का स्थान, गोष्ठ, गो-स्थान। —स्तन-(संज्ञा, पु०, सं०) गाय का थन, गुच्छा, स्तवक।—हत्या-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोबध, गोहिंसा। [**गोहत्यारा** (वि०)] मुहा०—०वासी होना-मर जाना।

गोकुलेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) [गोकुल+ईश] गोकुल का अधिपति श्रीकृष्ण, गोकुलेन्द्र।

गोआल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ग्वाल] गोपाल, गोप, अहीर, गोवाल, ग्वाल। "नन्दराय के द्वारे आये सकल गोआल"—सूर।

गोइँठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गो+विष्ठा] सुखाया हुआ गोबर, उपला, कंडा।

गोइँदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गुप्त भेदिया, गुप्तचर, जासूस।

गोइ—(संज्ञा, पु०, दे०) गोय, गोप। [छिपा-पूकर (० का० क्रि०)]

गोइयाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गोहनिया] साथ रहने वाला, साथी, सहचर ।

गोई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गोइयाँ । (वि०, दे०) गुप्त की हुई, छिपाई हुई । (संज्ञा, स्त्री०, ग्रा०) युग्म । एक हल ।

गोऊ—(वि०, दे०) [हि० गोना+ऊ प्रत्य०] चुराने वाला, छिपाने वाला ।

गोए—(क्रि० स०, दे०) गुप्त किए हुए, छिपे हुए । "चंचल नैन रहै नहिं गोए"—[स्फु०] ।

गोकर—(संज्ञा, पु०) [सं० गो+कर] सूर्य ।

गोख—(संज्ञा, पु०) जोंक ।

गोक्षुर—(संज्ञा, पु०, सं०) गोखरू (हि०) "उच्चटा मर्कटी गोक्षुरैश्चूर्णितैः"—[वैद्यजीवन] ।

गोखग—(संज्ञा, पु०, सं०) थलचारी पशु ।

गोखरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गोक्षुर] एक प्रकार का क्षुप जो काँटेदार होता है, जिसके पत्ते चने के से होते है । एक वनौषधि । लोहे के गोल कँटोले खंड, जो प्रायः हाथियों के पकड़ने के लिए उनके रास्ते मे फैला दिये जाते है । गोटे और बादले के तारों से गूँथ कर बनाया हुआ एक साज, कड़े का सा आभूषण । [गुखुरू (दे०)]

गोखले—(संज्ञा, पु०) महाराष्ट्र ब्राह्मणों की एक जाति का नाम, जिसमें कांग्रेस नरमदल के नेता स्व० गोपालकृष्ण गोखले हुए थे ।

गोखा—(संज्ञा, पु०, दे०) झरोखा । [गौखा (दे०)] अरवा, ताक, आला ।

गोगापीर—(संज्ञा, पु०) एक मुसलमान पीर की समाधि जिसकी बहुत बड़ी संख्या में भंगी आदि पूजा करते हैं और मेला लगता है ।

गोचना—(क्रि० स०, दे०) धरना, पकड़ लेना । दबाना । धोखा देना । (संज्ञा, पु०) गेहूँ और चना ।

गोचर—(संज्ञा, पु०, सं०) वह विषय जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो सके । ग्रहों की तात्कालिक गति-फल का विचार (ज्यो०) । गायों के चरने का स्थान, चरागाह, चरी (ग्रा०), गोचर-भूमि ।

गोचा, गच्चा—(क्रि० स०, दे०) दबाना । धोखा देना ।

गोची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धोखा पर धोखा । दबाव पर दबाव । बलात्कार से धोखा देना ।

गोछ—(संज्ञा, पु०, दे०) मूँछ, गोंछ, गौंछा ।

गोज—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अपानवायु, पाद ।

गोजई—(संज्ञा, पु०, दे०) गेहूँ और जौ मिला हुआ अन्न ।

गोजर—(संज्ञा, पु०) [सं० खर्ज] कनखजूरा ।

गोजिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वृक्षविशेष ।

गोजिया—(संज्ञा, स्त्री०) बनगोभी, एक प्रकार की घास विशेष ।

गोजिह्वा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोभी, काबी । (प्रान्ती०) गावजवाँ ।

गोजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गवाजन] गौ हाँकने की लकड़ी । बड़ी लाठी, लट्ठ ।

गोझनवट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्त्रियों की साड़ी का अंचल, पल्ला ।

गोझा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुह्यक] गुझिया नामक पक्वान, पिराॅक । एक प्रकार की कटीली घास, गुज्झा । जेब । खलीता । [**गोझिया, गुझिया** (स्त्री०, अल्पा०)]

गोट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गोष्ट] वह पट्टी या फीता, जिसे कपड़े के किनारे पर लगाते है । मगजी, किसी प्रकार का किनारा । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गोष्ठी] मंडली, गोष्ठी । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुटक] चौपड़ का मोहरा । नरद ।

गोटा—(संज्ञा, पु०) [हि० गोट] बादले का बुना हुआ पतला फीता जो कपड़ों के किनारों पर लगाया जाता है । धनिया की सादी या भुनी हुई गिरी । छोटे टुकड़े मे कटी इलायची । सुपारी । खरबूजे और बादाम की गिरी । सूखा हुआ मल, कंडी, सुद्दा ।

गोटियाचाल—(संज्ञा, स्त्री०) पैतरेबाजी, चाल-बाजी, दाँवपेंच वाली चाल ।

गोटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुटिका] कंकड़ । गेरू । पत्थर इत्यादि का छोटा गोल टुकड़ा, जिससे लड़के खेलते हैं । चौपड़ खेलने का मुहरा, नरद । गोटियो से खेलने का खेल । लाभ का आयोजन । **मुहा०—जमना या बैठना**-युक्ति सफल होना । आमदनी की सूरत होना ।—**मरना**-किसी गोटी का मृत मान लिया जाना । निकम्मा होना ।—**लगना**-परिस्थितियों का उत्पन्न होना ।—**लाल होना**-गोटी का सफल होना । जो चौसर पचीसी के खेल में सब घरों में फिर लेने के बाद उठाने पर माना जाता है । काम बन जाना ।

गोठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गोष्ठ] गोशाला, गोस्थान । गोष्ठी । श्राद्ध । सैर ।

गोठा—(संज्ञा, पु०, दे०) सलाह । "सावधान करि लेहि अपन पौ तब हम करि करि गोठो" —[अ०] ।

गोठिल—(वि०) भोथरा ।

गोड—(संज्ञा, पु०, सं०) मांसयुक्त नाभि ।

गोड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गम, गो] पैर ।

गोड़इत—(संज्ञा, पु०) [हिं० गोड़ + ऐत प्रत्य०] गाँव का पहरेदार, चौकीदार ।

गोड़ना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० कोड़ना] खोद कर मिट्टी उलट देना, जिससे वह पोली और भुरभुरी हो जाय । [कोड़ना (दे०)]

गोड़ा—(संज्ञा, पु०) [हिं० गोड़] पलँग आदि का पाया, गोड़िया । [**गोड़ेदार** (वि०)]

गोड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गोड़ना का प्रेरणा० रूप] गोड़ने का काम या उसकी मजदूरी ।

गोड़ाना—(क्रि० स०) [हिं० गोड़ना का प्रेरणा० रूप] गोड़ने का काम दूसरे से कराना । गोड़वाना ।

गोड़ापाई—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० गोड + पाई = जोलाहों का ढाँचा] बारम्बार आना-जाना ।

गोड़ारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गोड़ = पैर + आरी प्रत्य०] पलग आदि के पैतान का भाग । पैताना । जूता । (प्रान्ती०) घास ।

गोड़या—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गोड] छोटा पैर । (संज्ञा, पु०, दे०) केवटों की एक जाति ।

गोड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) प्राप्ति, लाभ । प्राप्ति का आयोजन ।

गोण—(संज्ञा, पु०, दे०) बोरा । थैला । [गोन (दे०)]

गोणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) टाट का दोहरा बोरा । गोत । एक प्राचीन माप ।

गोत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गोत्र] कुल, वंश, खानदान । समूह, गिरोह । "यों 'रहीम' सुख होत है, बढ़त देखि निज गोत" ।

गोतम—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि । गौतम ऋषि ।

गोतमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गौतम ऋषि की स्त्री, अहिल्या ।

गोता—(संज्ञा, पु०, अ०) डूबने की क्रिया । डुब्बी, डुबकी ।—**खोर**–(संज्ञा, पु०, अ०) डुबकी लगाने (मारने) वाला । **मुहा०—खाना**–धोखे में आना । फरेब में आ जाना । चूक जाना ।—**मारना (लगाना)**–डुबकी लगाना, डूबना । बीच में अनुपस्थित रहना ।—**देना**–धोखा देना ।

गोतिया—(वि०, दे०) दे० गोती ।

गोती—(वि०, दे०) [सं० गोत्रीय] अपने गोत्र का, जिसके साथ शौचाशौच का सम्बन्ध हो, गोत्रीय, भाई-बन्धु, सगोत्र ।

गोतीत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्रियों से परे, इन्द्रियों से न जानने योग्य ।

गोत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) संतति, सन्तान । एक क्षेत्र । वत्स । राजा का छत्र । समूह, गिरोह । बन्धु, भाई । एक जाति-विभाग । वंश, कुल, कुल या वंश-संज्ञा, जो उसके किसी मूल पुरुष के नामानुसार होती है । "गोत्रापत्यम्"—पाणिनि । [**गोत्री** (वि०)] स्वगोत्र, अपने गोत्र का, गोत्रीय ।

गोत्रा—(स्त्री०, सं०) धरती । गायों का झुंड ।

गोदन्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गोदन्त] कच्चा या सफेद हरताल । एक रत्न ।

गोद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्रोड] एक या दोनों हाथों का घेरा बनाने से छाती के पास उठने वाला स्थान जिसमें प्रायः बालकों को लेते है, अंचल । उत्सङ्ग, अंक । कोरा (ग्रा०) । "...भूपति बिहँसि गोद बैठारि"—तुल० । **मुहा०—का**–छोटा बालक, बच्चा ।—**बैठाना, लेना**–दत्तक बनाना ।—**पसार कर**–अत्यन्त दीनता से ।—**भरी रहना**–सपुत्र रहना ।—**भरना**–सौभाग्यवती स्त्री के अंचल मे नारियल आदि पदार्थ देना । सन्तान होना ।

गोदनहारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० गोदना + हारी प्रत्य०] कंजर या नट की स्त्री जो गोदना गोदती है ।

गोदना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० खोदना] चुभाना, गड़ाना । किसी कार्य के लिए बार-बार जोर देना, चुभती या लगती हुई बात कहना, ताना देना । (संज्ञा, पु०, दे०) तिल जैसा काला चिह्न जो बदन पर नील या कोयले के पानी में डूबी हुई सुइयों से बनता है ।

गोदनी—(संज्ञा, स्त्री०) गोदनेवाली सुई । टीका लगाने वाली सुई ।

गोदा—(संज्ञा, पु०) [हिं० घौंद] बड, पीपल, या पाकर के पक्के फल । गोदावरी नदी । श्रीरंग जी की पत्नी ।

गोदाम—(संज्ञा, पु०, दे०) बिक्री आदि के माल रखने का बड़ा स्थान, [गोडाउन] [गुदाम (दे०)] बटन, बुताम (प्रान्ती०)।

गोदावरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्षिणी भारत की एक नदी।

गोदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गोद, अँकोरा।

गोधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोह नामक जन्तु। धनुर्धारी लोगों के हाथ में बाँधने की एक चमड़े की पट्टी।

गोधि—(संज्ञा, पु०, सं०) घड़ियाल। मस्तक। ललाट।

गोधिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोह जन्तु।

गोधूम—(संज्ञा, पु०, सं०) गेहूँ (ग्रा०)।

गोन—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गोणी] कम्बल, टाट, चमड़े आदि से बना हुआ दोहरा बोरा, जो बैलों की पीठ पर लादा जाता है। साधारण बोरा, खास। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुण] नाव खींचने को मस्तूल में बाँधने की रस्सी।

गोनर—(संज्ञा, पु०, दे०) पशुओं के खाने का एक प्रकार का तृण, जो चटाई बनाने के काम में भी आता है।

गोनर्द—(संज्ञा, पु०, सं०) नागरमोथा। सारस पक्षी। वह प्राचीन देश जहाँ महर्षि पतंजलि का जन्म हुआ था।

गोनर्दीय—(संज्ञा, पु०, सं०) पतंजलि मुनि। गोनर्द देश का। तद्देश-सम्बन्धी।

गोनस—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का साँप। वैक्रांतिमणि।

गोना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गोपन] छिपाना।

गोनिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कोण] दीवाल या कोण आदि की सीध के नापने का यंत्र। (संज्ञा, पु०) [हि० गोन=डोरा+इया प्रत्य०] अपनी पीठ या बैलों पर लाद कर बोरे ढोने वाला।

गोनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गोणी] टाट का थैला, बोरा। पटुआ, सन, पाट। "राखौ गोइ गोनी गुरु ज्ञान की"।

गोप—(संज्ञा, पु०, सं०) गौ की रक्षा करने वाला। ग्वाला, अहीर। गोशाला का अध्यक्ष या प्रबन्धक। भूपति, राजा। गाँव का मुखिया। (संज्ञा, पु०) [सं० गुंफ] गले में पहनने का एक आभूषण, गोफ। [गुंजगोफ (ग्रा०, यौ०)]

गोपक—(संज्ञा, पु०) [सं० गोप+क प्रत्य०] गोप। बहुत ग्रामों का। (वि०) [सं० गोपन+क] छिपाने वाला।

गोपन—(संज्ञा, पु०, सं०) छिपाव, दुराव, छिपाना। लुकना, रक्षा। [**गोप्य** (वि०)]

गोपना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० गोपन] छिपाना। [**गोना** (ब्र०)]

गोपनीय—(वि०, सं०) छिपाने-योग्य, गोप्य। [**गोपित** (वि०)]

गोपर—(संज्ञा, पु०, सं०) गोतीत, इन्द्रियों से परे।

गोपांगना—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) गोप की स्त्री, गोपी, ग्वालिनी।

गोपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गाय पालने वाली, गोपी, ग्वालिन, अहीरिन। श्यामा लता। महात्मा बुद्ध की स्त्री।

गोपाचल—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्वालियर के निकट का एक पर्वत।

गोपायन—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्षण। गोपन।

गोपालतापन, गोपालतापानीय—(संज्ञा, पु०, सं०) एक उपनिषद्।

गोपालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गोपगृह, ग्वालों या अहीरों का घर, गोपावास। गोपायन।

गोपाष्टमी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) कार्तिक शुक्ला अष्टमी, जब गो की पूजा होती है।

गोपिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोप की स्त्री, गोपी, ग्वालिन, अहीरी।

गोपित—(वि०, सं०) रक्षित। पालित। गुप्त, अप्रकाशित, छिपाया हुआ।

गोपी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोप की स्त्री, ग्वालिनी।

गोपीचन्द—(संज्ञा, पु०) [सं० गोपीचन्द्र] एक प्राचीन राजा।

गोपीचन्दन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार की पीली मिट्टी। पीला चन्दन।

गोपीत—(संज्ञा, पु०, दे०) खंजन पक्षी का एक भेद। "अछरी छपी छपी गोपीता"—जायसी।

गोपीनाथ—(संज्ञा, पु०, सं०) श्री कृष्ण। गोपीश, गोपीन्द्र। "गोकुल बूड़त है बहुरि, राखो गोपीनाथ"—कुंजवि०।

गोपुर—(संज्ञा, पु०, सं०) नगर-द्वार, शहर या किले का फाटक। दरवाजा। स्वर्ग।

गोपेंद्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्री कृष्ण। गोपों में श्रेष्ठ। नन्द जी। "इन्द्र बिनासत है ब्रजै, कृपा करौ गोपेंद्र"—[स्फु०]।

गोप्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्षक, पालक। रक्षाकर्ता-अप्रकाशक। "······गोप्ता गृहिणी सहायः"—[रघु०]।

गोप्य—(वि०, सं०) रक्षणीय। गोपनीय, छिपाने योग्य। [सीक्रेट]

गोफन, गोफना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गोफण] छींके जैसा एक जाल जिससे ढेले आदि फेंकते हैं। ढेलवाँस, फन्नी (प्रान्ती०)।

गोफा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुंफ] नया निकला हुआ मुँह-बँधा पत्ता। मुँह-बँधा कमल।

गोफिया—(संज्ञा, पु०, दे०) गोफन, गोफना, ढेलवाँस।

गोबर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गोमय] गाय का मैला।—**गणेश**–(वि०, यौ०) [हि० गोबर +गणेश] भद्दा, बदसूरत, भोंडा। मूर्ख, बेवकूफ।

गोबराना—(स० क्रि०) गोबर से लीपना। गोबरी करना।

गोबरिया—(संज्ञा, पु०) बछनाग जाति का एक छोटा पौधा।

गोबरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गोबर+ई प्रत्य०] गोबर की लिपाई, गोबर का लेप। कंडा।

गोबरीला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गोबर+ईला प्रत्य०] गुबरैला, गोबर का कीड़ा। **गोबरैला, गोबरौंदा, गुबरीला**।

गोभ, गोभा—(संज्ञा, स्त्री०, प्रान्ती०) लहर, पानी की तरंग। पौधों का एक रोग। "रसिकन हिये बढ़ावती, नवल प्रेम की गोभ"—चाचाहित०। "जेहि देखत उठति सखि आनन्द की गोभा"—गदा०।

गोभिल—(संज्ञा, पु०, सं०) सामवेदीय गृह्यसूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि। [**गोभिलसूत्र** (यौ०)]

गोभी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गोजिह्वा या गुंफ=गुच्छा] एक प्रकार की घास। गोजिया वनगोभी। [एक शाक (दे०)]

गोम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घोड़ों की एक भँवपरी। (संज्ञा, पु०) स्थान। "गहन में गोहन गरूर गहे गोम है"—भूषण।

गोमका—(संज्ञा, पु०, दे०) कुम्हड़ा, कोहँडा, कोहका (प्रान्ती०)।

गोमय—(संज्ञा, पु०, सं०) गाय का मल। गोबर।

गोमर—(संज्ञा, पु०, दे०) गाय मारने वाला। कसाई। गोघाती। "कामधेनु-धरनी कलि-गोमर" —[स्फु०]।

गोमक्षिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वनमक्खी। "धर्म्मवृष गोमक्षिका कलिदेत पीड़ा बेश"—तुल०।

गोमती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक नदी। वाशिष्ठी। एक देवी। ग्यारह मात्राओं का एक छंद (पिं०)।

गोमन्त—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पहाड़।

गोमाय, गोमायु—(संज्ञा, पु०, सं०) गीदड़, स्यार, शृगाल। [सियार (दे०)] उल्कामुखक।

गोमूत्रिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तृण-विशेष, चित्र-काव्य में एक छंद रचना (पिं०)।

गोमेद, गोमेदक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक मणि या रत्न जो कुछ ललाई लिये हुए पीला होता है, शीतल चीनी, कबाब चीनी, राहु-रत्न, गोमेध।

गोय—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गेंद। [हि० गोपना, सं० गोपन] छिपाना, बचाना। "मन ही राखौ गोय"—रहीम।

गोया—(क्रि०, वि०, फ़ा०) मानों, जैसे।

गोर—(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) शरीर के गाड़ने का गढ़ा, कब्र। (वि०, सं०) गौर, गोरा। मदायन, इन्द्र-धनुष। "धनु है यह गोर मदायन ही सर-धार बहै गल-धार वृथा ही"—[स्फु०]।

गोरक्षनाथ—(संज्ञा, पु०) [सं० गोरक्ष+नाथ] दे० गोरखनाथ।

गोरखइमली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० गोरख +इमली] इमली का बहुत बड़ा पेड़। कल्पवृक्ष।

गोरखधंधा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० गोरख+धंधा] कई तारों, कड़ियों या लकड़ी के टुकड़ों इत्यादि का समूह, जिनको विशेष युक्ति से परस्पर जोड़ कर फिर अलग किया जाये। वह पदार्थ या काम जिसमें बहुत झगड़ा या उलझन हो। गूढ़ बात।

गोरखनाथ—(संज्ञा, पु०, हि०) एक प्रसिद्ध अवधूत या हठयोगी। (सं०) गोरक्षनाथ।

गोरखपंथी—(वि०, यौ०, हि०) गोरखनाथ के सम्प्रदाय का अनुयायी। [**गोरखपंथ**–(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) गोरखनाथ का मत, संप्रदाय]

गोरखमुंडी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० मुन्डी] एक प्रकार की घास जिसमें मुंडी के समान गोल और गुलाबी रङ्ग के फूल लगते हैं।

गोरखर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गधे की जाति का एक जंगली पशु।

गोरखा—(संज्ञा, पु०) [हि० गोरख] नैपाल के अन्तर्गत एक प्रदेश। इस देश का वासी।

गोरखाली—(संज्ञा, स्त्री०) नैपाल की एक जाति और उसकी बोली।

गोरटा*—(वि०, पु०) [हिं० गोरा] गोरे रङ्ग वाला। गोरा। [गोरट्टा (दे०)] "छोरटी हैं गोरटी वा चोरटी अहीर की"—बेनी०। [**गोरटी** (स्त्री०)]

गोरसी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० गोरस+ई—प्रत्य०] दूध गरम करने की अगीठी। [गुरोसी (दे०)] "गोरसी पै दूध उफनात देखि दौरी मातु"।

गोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गौर] सफेद और स्वच्छ वर्ण वाला, जिसके शरीर का चमड़ा सफेद और साफ हो (पुरुष), स्वच्छ वर्ण। फिरङ्गी। [**गोरी** (स्त्री०)]

गोराई*†—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० गोरा+ई, आई प्रत्य०] गोरापन, सुन्दरता। [**गुराई, गौरता** (ब्र०)]

गोरिल्ला—(संज्ञा, पु०) (अफ्रीका) बड़े आकार का एक वन-मानुष। [गोरिला(दे०)]—**युद्ध**-अकस्मात शत्रु पर आक्रमण कर भाग जाना।

गोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गौरी] सफेद और स्वच्छ वर्ण वाली (स्त्री), सुन्दरी। [गोरिया, गोरी (दे०)] प्रिय स्त्री। "गोरी की बरन देखे सोनो न सलोनो लागे"।

गोरुत—(संज्ञा, पु०, सं०) दो कोस।

गोरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गो] चौपाया, मवेशी। [**गोरूबछेरू**, (यौ०)] [**गोरुआर** (बहु व०)]

गोरोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) पीले रङ्ग का एक सुगन्धित द्रव्य जो गौ के पित्त या मस्तक मे से निकलता है।

गोर्द—(संज्ञा, पु०, सं०) दिमाग, मस्तिष्क।

गोलंदाज—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) तोप से गोला चलाने वाला, तोपची। [**गोलंदाजी** (स्त्री०)]

गोलंबर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गोल+अम्बर] गुम्बद। गुम्बद के आकार का गोल ऊँचा उठा हुआ पदार्थ। गोलाई, कलबूत, कालिब।

गोल—(वि०, सं०) वृत्ताकार घेरे या परिधि वाला, चक्र के आकार का वृत्ताकार, ऐसे घनात्मक आकार का जिसके पृष्ठ का प्रत्येक बिन्दु उसके भीतर के मध्य विन्दु के समान अन्तर पर हो, सर्व वर्त्तुल, गेंद आदि के आकार का। [**गोलाकार** (यौ०)]—**मटोल**-(वि०) गोला।—**गोल**-(क्रि० वि०) स्थूल रूप से, मोटे हिसाब से। अस्पष्ट रूप से, साफ-साफ नहीं।—**बात**-ऐसी बात जिसका अर्थ स्पष्ट न हो, घुमावदार बात। (संज्ञा, पु०, सं०) मंडलाकार क्षेत्र, वृत्त। गोलाकार पिंड, धरती का गोला, बटक।—**माल**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गोल=योग] गड़बड़, अव्यवस्था। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० गोल] मंडली, झुण्ड।—**यंत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रहों और नक्षत्रों की गति और अयन परिवर्तन आदि के जानने का एक यन्त्र।—**योग**-(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रहों का एक बुरा योग (ज्यो०)। गड़बड़, गोलमाल, अव्यवस्था। **मुहा०—करना**-न करना, चुप रहना।

गोलक—(संज्ञा, पु०, सं०) गोलोक। गोल पिंड। विधवा का जारज पुत्र। मिट्टी का बड़ा कुण्ड। आँख का डला (पुतली)। गुम्बद। धन रखने का सन्दूक या थैली, गल्ला। [गुल्लक (दे०)] किसी विशेष कार्य के लिए संगृहीत धन या फंड।

गोलगप्पा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गोल+गप अनु०] एक प्रकार की महीन और घी मे तली करारी फुलकी।

गोलचला—(संज्ञा, पु०, दे०) गोलन्दाज, तोप चलाने वाला।

गोलमिर्च—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० गोल+मरिच सं०] काली मिर्च।

गोला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० गोल] किसी पदार्थ का बड़ा गोल पिंड। लोहे का वह गोल पिंड जिसे तोपों से शत्रुओं पर फेंकते हैं। वायु गोला (रोग)। जङ्गली कबूतर। नारियल की गिरी का गोल पिंड। अनाज या किराने की बड़ी दुकानो वाली मंडी या बाजार। लकड़ी का लम्बा लट्ठा जो छाजन में लगाने आदि के काम में आता है। कौंडी। बल्ला। रस्सी। सूत आदि की गोल पिंडी। पिंडा। सुदृढ़ मार्ग, सड़क।[**गोली** (स्त्री०, अल्प)]

गोलाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० गोल+आई प्रत्य०] गोल का भाव, गोलापन।

गोलाकार, गोलाकृत—(वि०, यौ०, सं०) जिसका आकार गोल हो, गोल शक्ल वाला।

गोलाधार—(वि०) मूसलाधार।

गोलाध्याय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ज्योतिष विद्या, खगोल विद्या। ज्योतिष का एक ग्रन्थ।

गोलार्द्ध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गोले का आधा भाग, पृथ्वी का आधा भाग जो ध्रुवों के बीचोबीच से काटने पर बने।

गोलास—(संज्ञा, पु०, सं०) कुकुरमुत्ता। छत्रक।

गोलियाना—(क्रि० स०) गोल आकृति का बनाना, गोला बाँधना। इकट्ठा करना।

गोली—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० गोला का अल्पा०] छोटा गोलाकार पिंड, बटिका, बटिया। औषधि की

बटिका, बटी। खेलने की मिट्टी, काँच आदि का छोटा गोला, गोली का खेल। सीसे आदि का ढला हुआ छोटा गोल पिंड जो बन्दूक में भर कर चलाया जाता है, कारतूस, छर्रा। गोल आकार वाली।

गोलोमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) औषधि-विशेष, बच।

गोवना*—(क्रि० स०, दे०) छिपाना, लुकाना, ढाँकना। [**गोना** (ब्र०)]

गोवर्द्धन—(संज्ञा, पु०, सं०) वृन्दावन का एक पवित्र पर्वत, जिसे श्रीकृष्ण जी ने ब्रज (रक्षार्थ) अँगुली पर उठाया था।—**धारी**-श्रीकृष्ण जी, गिरिधर, गिरधारी। [**गोवर्द्धन**-(यौ०) [गो + वर्द्धन] गायों की वृद्धि करना]

गोवर्द्धनाचार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) श्री नीलाम्वरात्मज संस्कृत के कवि जो शृङ्गार रस की कविता में सिद्ध-हस्त थे (१२ वीं शताब्दी)।

गोविद—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण। वेदान्तवेत्ता। तत्वविद्। [गुविन्द (दे०)]

गोश—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सुनने की इन्द्रिय, कान। [**गोश-गुजारी** (स्त्री०)]—**माली**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कान उमेठा का कार्य, ताड़ना। कड़ी चेतावनी देना। **मुहा०—गुजार**-करना। सुनाना।

गोशवारा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) खंजन नामक पेड़ का गोंद। कान का बाला, कुंडल। सीप का अकेला बड़ा मोती। कलाबत्तू से बना हुआ पगड़ी का अंचल। तुर्रा, कलँगी। सिरपेंच। मोजान, जोड़। वह संक्षिप्त लेख जिसमें हर एक मद का आय-व्यय पृथक्-पृथक् लिख गया हो (पटवारी०)।

गोशा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कोना। अन्तराल। एकान्त स्थान। तरफ, दिशा, ओर। कमान की दोनों नोकें। धनुष्कोटि। "पीतम चले कमान, मोंकहँ गोशा सौंपिकै"—[स्फु०]।—**नशीन**-(वि०, फ़ा०) एकांत-सेवी। [**गोशानशीनी** (स्त्री०, संज्ञा)]

गोश्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मांस, गोश (ग्रा०)। —**खोर**-(वि०, फ़ा०) मांस-भक्षी।

गोष्ठ—(संज्ञा, पु०, सं०) गोशाला। परामर्श, सलाह। दल, मंडली।

गोष्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बहुत से लोगों का समूह, सभा, मंडली, समाज। वार्तालाप, बातचीत। एक अङ्क का एक रूपक-भेद (नाट्य०)।

गोस—(संज्ञा, पु०, सं०) भोर, सबेरा। ग्रीष्म। लोबान। मांस (ग्रा०)।

गोसमाबाल—(संज्ञा, पु०, दे०) गोशवारा।

गोसा—(संज्ञा, पु०) कंडा, उपरी।

गोसाईं—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गोस्वामी] गायों का स्वामी या अधिकारी। ईश्वर। संन्यासियों का एक सम्प्रदाय। गोस्वामी। विरक्त। साधु। अतीत। प्रभु। गोसैयां (ग्रा०)। "धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं"—तुल०।

गोस्तनी—(संज्ञा, पु०, सं०) द्राक्षा, दाख। अंगूर।

गोस्वामी—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्रियों को वश मे करने वाला, जितेन्द्रिय। वैष्णव सम्प्रदाय में आचार्यों के वंशधर या उनकी गद्दी के अधिकारी। [गोसाँई (दे०)]

गोह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गोधा] छिपकली की जाति का एक जंगली जंतु। [विषखपरा (दे०)]

गोहन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गोधन] सङ्ग रहने वाला, साथी, सङ्गी। साथ।

गोहर—(संज्ञा, पु०) बिसखोपड़ा।

गोहरा—(संज्ञा, पु०) [सं० गो+ईल्ला या गोहल्ला] सुखाया हुआ गोबर, कंडा, उपला। [**गोहरी** (स्त्री०, अल्पा०)]

गोहराना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० **गोहार**] पुकारना, बुलाना, आवाज देना। चिल्लाना।

गोहरौर—(संज्ञा, पु०) उपलों का सुसज्जित ढेर।

गोहार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०,) [सं० गो+हार हरण] [गुहार (दे०)] पुकार, दुहाई। रक्षा या सहायता के लिए चिल्लाना, हल्ला-गुल्ला, शोर। **मुहा०—मारना (लगाना)** सहायता के लिए पुकारना।—**लगना**-सहायता करना। "कौन जन कातर गोहार लगिबे के काज"······रत्ना०।

गोहारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गोहार। **मुहा०—(गोहार) लगना**—सहायता या रक्षा करना।

गोही*†—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० गोपन] दुराव, छिपाव। गुठली। गाँठ, गिल्टी। गुप्त बात। गोय (ब्र०)।

गोहुवन—(संज्ञा, पु०, दे०) लाल रंग का साँप।

गोहूँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गोधूम] गेहूँ, गोधूम।

गोहेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक विषैला जंतु।

गौं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गम, प्रा० गवँ] प्रयोजन सिद्ध होने का स्थान या अवसर, सुयोग,

मौका, घात।—घात-(संज्ञा, पु०, सं०) उपयुक्त अवस्था या स्थिति, प्रयोजन, मतलब। गरज, अर्थ। [गौंघाती (वि०)] मुहा०—का यार—मतलबी, स्वार्थी।—निकालना-काम निकालना। स्वार्थ साधन होना।—पड़ना—गरज होना। काम अटकना।—तकना (ताकना)-मौका देखना। "जिमि गौं तकइ लेउँ केहि भाँती"—तुल०। [गाँव (दे०)] ढङ्ग, तर्ज, ढब। पार्श्व, पक्ष।

गौ—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गाय, गायी। [गैया, गऊ (ब्र०)]

गौखा†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गवाक्ष) छोटी खिड़की, झरोखा। दालान या बरामदा। [गौखा (ग्रा०)] आला, ताक।

गौखा—(संज्ञा, पु०, दे०) गौख। [यौ० हि० गौ= गाय+खाल] गाय का चमड़ा, गोचर्म।

गौगा—(संज्ञा, पु०, अ०) शोर, गुल। हल्ला, अफवाह, जनश्रुति। किम्बदन्ती।

गौचरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गौ+चरना] गाय चरने का कर या महसूल।

गौछाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अंकुर, कैर, फुनगी।

गौड़—(संज्ञा, पु०, सं०) बंग देश का एक प्राचीन-विभाग। ब्राह्मणों का वर्ग, जिसमे सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल, मैथिल और गौड़ सम्मिलित है। ब्राह्मणों की एक जाति। गौड़ देश का निवासी। कायस्थों का एक भेद। संपूर्ण जाति का एक भाग। [गौड़ेश्वर-(यौ०) चैतन्य स्वामी, गौरांग प्रभु। कृष्ण।

गौड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) उड़ीसा। कहार।

गौड़िया†—(वि०) [सं० गौड़+इया प्रत्य०] गौड़ देश का। गौड़ देश-सम्बन्धी। प्रभुचैतन्य के मतानुयायी, गौड़ीय। [गौड़ीयामठ (यौ०)]

गौड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुड़ से बनी मदिरा। राग-विशेष। काव्यरीति-विशेष। काव्य०।

गौण—(वि०, सं०) जो प्रधान या मुख्य न हो, साधारण, अप्रधान। सहायक, सहचारी। गौणी वृत्ति से बोधित अर्थ।

गौणिक—(वि०, सं०) गुण-विषयक। सत्व, रज, तम से सम्बन्धित। गौण।

गौणी—(वि०, सं०) अप्रधान, साधारण। जो मुख्य न मानी जाय। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक लक्षणा जिसमें किसी एक वस्तु का गुण दूसरी पर आरोपित किया जाता है (काव्य०)।

गौतम—(संज्ञा, पु०, सं०) गौतम ऋषि के वंशज ऋषि। बुद्धदेव। सप्तर्षि-मंडल के तारों में से एक तारा।

गौतमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गौतम ऋषि की स्त्री। अहिल्या। कृपाचार्य्य की स्त्री। गोदावरी नदी। दुर्गा। शकुन्तला की सहेली। [गौतमनारी (यौ०)] "गौतमनारी सापवस"—तुल०।

गौदुमा—(वि०, दे०) गावदुम।

गौन†—(संज्ञा, पु०, दे०) गमन। "गौन रौन रेती सौं कदापि करते नहीं"—रत्ना०।

गौनर्द—(संज्ञा, पु०, सं०) पतंजलि। गोनर्द देश में पैदा हुआ।

गौनहाई†—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० गौना+हाई प्रत्य०] जिस स्त्री का गौना हाल में हुआ हो। "आई गौनहाई बधू सासु के लगति पायँ"।

गौनहार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गौन+हार प्रत्य०] वह स्त्री जो दुलहिन के साथ उसकी ससुराल जाय।

गौनहांरिन, गौनहारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि०, गावन+हार—प्रत्य०] गाने के पेशे वाली स्त्री। गाने वाली। [गावनिहार (ब्र०)]

गौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गमन] विवाह के पीछे की रस्म, जिसमें वर वधू को अपने घर ले जाता है, द्विरागमन। मुकलावा (प्रान्ती०)।

गौपिक—(संज्ञा, पु०, सं०) गोपी-पुत्र।

गौपुच्छ—(वि०, सं०) गाय की पूँछ के समान।

गौप्तेय—(संज्ञा, पु०, सं०) बनिए की स्त्री का पुत्र।

गौर—(वि०, सं०) गोरे चमड़े वाला, गोरा। श्वेत, उज्वल, सफेद। "स्याम गौर किमि कहौं बखानी"—तुल०। (संज्ञा, पु०, सं०) लाल रंग। पीला रंग। चन्द्रमा। सोना। केसर। (संज्ञा, पु०, दे०) गौड़। (संज्ञा, पु०, अ०) सोच-विचार। चिंतन, ध्यान, ख्याल।—तलब-(यौ०, वि०)। विचारणीय, बिचार करने योग्य।

गौरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोराई, गोरापन। सफेदी।

गौरव—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़प्पन, महत्त्व, बड़ाई, गुरुता, भारीपन। इज्जत, आदर। उत्कर्ष, [गौरौ, गौरवता (दे०)] "गौरवता जग में लहै"—वृं०।

गौरवान्वित—(वि०, सं०) गौरव से युक्त।

गौरवित—(वि०, सं०) गौरवयुक्त सम्मानयुक्त।

गौरांग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्वेतवर्ण, गोरे रंग वाला। पीतवर्ण। यूरोपियन। विष्णु। श्रीकृष्ण। चैतन्य महाप्रभु।—**देव**-(यौ०) गौरांग महाप्रभु।

गौरा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गौर] गोरे रंग की स्त्री। पार्वती, गिरिजा। हल्दी।

गौराटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार की मादा कौआ।

गौरास्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बंदर का एक प्रकार।

गौराहिक—(संज्ञा, पु०, सं०) साँप का एक प्रकार-विशेष।

गौरिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती। आठ वर्ष की कन्या।

गौरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) काले रंग का एक पक्षी, गौरैया। मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का छोटा हुक्का।

गौरिला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी, धरणी। [**गोरिल्ला**-(संज्ञा, पु०, अफ्री०) एक प्रकार का बनमानुस वा बनैला वानर]

गौरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोरे रंग की स्त्री। पार्वती, गिरिजा। आठ वर्ष की कन्या। अष्टवर्षाभवेद्गौरी"—[ज्यो०]। हल्दी। तुलसी। गोरोचन। सफेद रंग की गाय। सफेद दूध। पृथ्वी। गंगा नदी। [**गौरि**] "बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू"—[रामा०]।

गौरीशंकर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महादेव जी। शिव-पार्वती। हिमालय पर्वत की सब से ऊँची चोटी।

गौरीश, गौरीस—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महादेव, शिवशंकर, धूर्जटि, त्र्यंबक।

गौरैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गौरिया चिड़िया।

गौलक्षणिक—(संज्ञा, पु०, सं०) गाय-बैलों का पारखी।

गौला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती।

गौलिक—(संज्ञा, पु०, सं०) मुष्वक नाम का एक वृक्ष।

गौल्मिक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक गुल्म का, ३० सिपाहियों का नायक या स्वामी।

गौशाला—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० गोशाला] गायों के रहने का स्थान, गोशाला।

गौहर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मोती। "क़द्र गौहर शाहदानद या बदानद जौहरी"।

ग्यान—(संज्ञा, पु०, दे०) ज्ञान। [गियान (दे०)]

ग्यारस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ग्यारह] एकादशी तिथि।

ग्यारह—(वि०, दे०) [सं० एकादश, प्रा० एगारस] दश और एक। (संज्ञा, पु०, दे०) दस और एक की सूचक संख्या, ११।

ग्रंथ—(संज्ञा, पु०, सं०) पुस्तक।—**क**-(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रंथ रचने वाला।—**कर्त्ता, ग्रंथकार**-(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रंथ बनाने वाला, ग्रंथकारक।—**चुंबक**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० ग्रंथ+चुंबक =चूमने वाला] पुस्तकों या ग्रंथों का केवल पाठ करने वाला, अल्पज्ञ।—**संधि**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) ग्रंथ का विभाग, जैसे—सर्ग, अध्याय। किताब। गाँठ देना या लगाना, ग्रंथन। धन।—**साहब**-(संज्ञा, पु०, सं०+अ०) सिक्खों का धर्म-ग्रंथ।

ग्रंथन—(संज्ञा, पु०, सं०) गोंद लगाकर जोड़ना, जोड़ना, गूँथना, (सं०) गुंफन। [**ग्रंथनीय, ग्रंथित**-(वि०) गूँथा हुआ, गाँठ दिया हुआ] [गुंफित (सं०)]

ग्रंथान्तर—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्य पुस्तक।

ग्रंथालय—(संज्ञा, पु०, सं०) पुस्तकालय।

ग्रंथावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ग्रंथमाला।

ग्रंथि—(संज्ञा, यौ०, सं०) गाँठ। बन्धन, मायाजाल। एक रोग जिसमें गोल गाँठों की भाँति का सूजन हो जाता है।—**बंधन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विवाह के समय वर-कन्या के कपड़ों के कोनों को परस्पर गाँठ लगाकर बाँधने की क्रिया। [गँठबंधन (दे०)] गाँठ-जोड़ा। [**ग्रंथिल**-(वि०) गाँठदार, गठीला]

ग्रंथपर्णी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गाँडर, दूब।

ग्रंथिमान—(संज्ञा, पु०, सं०) हरसिंगार। हड़-जोड़, यव, टूटी हुई हड्डी जोड़ने वाली औषधि।

ग्रथित—(वि०, सं०) गूथा हुआ, सम्बद्ध किया हुआ। रचित, प्रणीत, गृहीत। आक्रांत।

ग्रसन—(संज्ञा, पु०, सं०) भक्षण, निगलना। पकड़। गहन (अ०), बुरी तरह से पकड़ना। ग्रास। ग्रहण। [**ग्रसित, ग्रस्त, ग्रसनीय** (वि०)]

ग्रसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ग्रसन] बुरी तरह पकड़ना, सताना।

ग्रस्त—(वि०, सं०) पकड़ा हुआ। पीड़ित। खाया हुआ।

ग्रस्ताग्रस्त—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ग्रहण लगने पर चन्द्रमा या सूर्य का बिना मोक्ष हुए अस्त होना, ग्रस्तास्त ।

ग्रस्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ग्रास, ग्रसन ।

ग्रस्तोदय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण लगने पर उदय होना ।

ग्रस्य—(वि०, सं०) ग्रास के योग्य ।

ग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) वे तारे जिनकी गति, उदय और अस्तकाल आदि का पता प्राचीन ज्योतिषियों ने लगा लिया था। वह तारा जो अपने सौर जगत में सूर्य की परिक्रमा करे, जैसे पृथ्वी । मंगल, शुक्र आदि । नौ की संख्या। ग्रहण करना, लेना । अनुग्रह, कृपा । चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण। राहु । स्कन्द । शकुनी आदि, छोटे बच्चों के रोग । मुहा०—**अच्छे होना**-अच्छा समय होना, शुभ या अनुकूल ग्रह होना (फ० ज्यो०)—**बुरे होना**-ग्रहों का प्रतिकूल होना (फ० ज्यो०), बुरे दिन होना । (वि०) बुरी तरह से पकड़ने या तंग करने वाला, दिक करने वाला ।—**(हों) का फेर**-ग्रहों की अन्यथा ।—**लगना**-बुरे ग्रह का फल होना, गति ।

ग्रहण—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, चन्द्रमा या किसी दूसरे आकाशचारी पिंड की ज्योति का आवरण जो दृष्टि और उस पिंड के बीच में किसी दूसरे आकाशचारी पिंड के आजाने या छाया पड़ने से होता है ।—**लगना**-उपराग, पकड़ने या लेने की क्रिया, स्वीकार, मंजूर, अंगीकार ।

ग्रहणान्त—(संज्ञा, पु०, सं०) अध्ययन का अन्त ।

ग्रहणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अतिसार रोग । [**संग्रहणी** (सं०)]

ग्रहणीय—(वि०, सं०) ग्रहण करने के योग्य । [**ग्राह्य** (सं०)]

ग्रहदशा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) गोचर ग्रहों की स्थिति, ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य को अच्छी या बुरी अवस्था । अभाग्य, कमबख्ती ।

ग्रहपति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्य, शनि-आकाश का पेड़ ।

ग्रहवेध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ग्रह की स्थिति आदि का जानना ।

ग्रहस्थापन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नवग्रहों की स्थापना, पूजा-विशेष ।

ग्रहाग्रेसर—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रमा ।

ग्रहाचार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रहविप्र ।

ग्रहाधार—(संज्ञा, पु०) ध्रुव नक्षत्र ।

ग्रहाधीश—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य ।

ग्रहावर्त—(संज्ञा, पु०, सं०) जन्मपत्री ।

ग्रहीत—(वि०, सं०) गृहीत, पकड़ा हुआ । "ग्रह ग्रहीत पुनि बात-बस "—तुल० ।

ग्रहीतव्य—(वि०, सं०) ग्रहण के योग्य ।

ग्रहीता—(वि०, सं०) ग्रहण-कर्ता, ग्राहक । (स्त्री०) पकड़ी हुई । ग्रहण की हुई ।

ग्रांडील—(वि०) [ग्रैंडियर] लम्बे और ऊँचे कद का, बहुत बड़ा या ऊँचा ।

ग्राम—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटी बस्ती, गाँव । [गाम (दे०)] मनुष्यों के रहने का स्थान, बस्ती, आबादी, जनपद । समूह, ढेर । शिव । क्रम से सात स्वरों का समूह, स्वर-सप्तक (संगी०) स, र, ग, म, प, ध, नी आदि । " गिरिग्राम लै लै हरिग्राम मारै ।", "स्फुटी भवद् ग्राम विशेष मूर्च्छनाम्"—माघ० ।—**देवता**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी एक गाँव में पूजा जाने वाला देवता, गाँव का रक्षक देवता, डीहराज, ग्राम-देव । [**ग्राम्य, ग्रामीण** (वि०)]

ग्रामणी—(संज्ञा, पु०, सं०) गाँव का स्वामी । [मुखिया (दे०)] प्रधान, अगुवा ।

ग्रामांत—(संज्ञा, पु०, सं०) गाँव की सरहद, गाँव का बाहरी हिस्सा ।

ग्रामान्तर—(संज्ञा, पु०, सं०) दूसरा गाँव ।

ग्रामाचार—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्राम की प्रथा, रीति-रिवाज ।

ग्रामिक—(वि०, सं०) ग्राम का, देहाती, गवईया, ग्रामीण ।

ग्रामीण—(वि०, सं०) देहाती । गँवार, मूर्ख ।

ग्रामीणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गाँव की देहाती स्त्री । पालक का साग । नील का पौधा ।

ग्रामीय—(वि०, सं०) गाँव का । (पु०) ग्रामवासी ।

ग्रामेय—(वि०, सं०) गँवार, गाँव में पैदा होनेवाला । [**ग्रामवासी** (पु०)]

ग्रामेश—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० ग्राम+ईश] गाँव का मालिक, जमीदार, ग्रामपति ।

ग्राम्य—(वि०, सं०) गाँव से सम्बन्ध रखने वाला, ग्रामीण । मूर्ख, बेवकूफ । प्राकृत । असली । "अहा ग्राम्य जीवन भी क्या है "—मैथिली० ।

(संज्ञा, पु०, सं०) काव्य में भद्दे या गँवारू (ग्रामीण) शब्दों के आने का दोष, अश्लील शब्द या वाक्य, जैसे मैथुन, स्त्री-प्रसंग आदि के सूचक शब्द ।—**धर्म**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मैथुन, स्त्री-प्रसंग । [**ग्राम्या** (स्त्री०)]

ग्राव—(संज्ञा, पु०, सं०) पत्थर । पर्वत । ओला ।

ग्रास—(संज्ञा, पु०, सं०) एक बार मुँह में डालने योग्य भोजन, कौर, निवाला । [गस्सा (दे०)] पकड़ने की क्रिया । पकड़ । ग्रहण लगना । "मधुर ग्रास लै तात निहोरे"—[ब्र० वि०]

ग्रासक—(वि०, सं०) पकड़ने या निगलने वाला । छिपाने वा दबाने वाला ।

ग्रासना—(क्रि० स०, दे०) ग्रसना, भक्षण करना । [गरासना (दे०)]

ग्राह—(संज्ञा, पु०, सं०) मगर । घड़ियाल । ग्रहण । उपराग । पकड़ने, लेने की क्रिया ।

ग्राहक—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रहण करने या मोल लेने वाला, खरीदार । लेने या पीने की इच्छा वाला, चाहने वाला । बँधा दस्त लाने की औषधि । [गाहक (दे०)]

ग्राही—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रहण या स्वीकार करने वाला । मलावरोधक पदार्थ । **गुण**—, (यौ०) गुण को ग्रहण करने वाला । [**ग्राहिणी** (स्त्री०)]

ग्राह्य—(वि०, सं०) लेने या स्वीकार करने योग्य । जानने योग्य । [(विलो०) **त्याज्य**]

ग्रीक—(वि०, अ०) यूनान देश का, ग्रीस का । (पु०) ग्रीस देश का रहने वाला, यूनानी । (स्त्री०) ग्रीस देश की भाषा ।

ग्रीखम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ग्रीषम, ग्रीष्म (सं०) । "भीषम सदैव रितु ग्रीखम बनी रहै"—रत्ना० ।

ग्रीवा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्दन, गला । "उर मनि-माल कबु कल ग्रीवा"—तुल० ।

ग्रीष्म—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्मी की ऋतु, जेठ-असाढ़ का समय । उष्ण, गर्म ।

ग्रैवेय—(संज्ञा, पु०, सं०) कंठाभूषण, कंठा, हँसुली आदि ।

ग्रैष्मक—(वि०, सं०) गर्मी मे बोया, चुकाया जाने वाला ।

ग्लपित—(वि०, सं०) अवसन्न, थकित, श्रान्त ।

ग्लह—(संज्ञा, पु०, सं०) जुए की बाजी, पण, दाँव ।

ग्लान—(वि०, सं०) रोग द्वारा दुर्बल शरीर । रोगी । खिन्न । कमजोर । उद्विग्न । लज्जित । "क्यों भर रही है साँस ठंडी क्यों हुई तू ग्लान है" ?—केशवप्रसाद ।

ग्लानि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शारीरिक या मानसिक शिथिलता । अनुत्साह । खेद, लज्जा । कार्य की बुराई या दोषादि से उत्पन्न अनुत्साह, अरुचि और खिन्नता । [गलानि (दे०)] "गहइ गलानि कुटिल कैकेई"—तुल० ।

ग्वार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गोराणी] एक पौधा, जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल होती है । घीकुवार, कौरी । खुरप्पी । **घी**—, —**पाठा**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० कुमारी + पाठा] घीकुवार, घीग्वार । —**फली**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ग्वार + फली] ग्वार की फली जिसकी तरकारी बनती है ।

ग्वारट, ग्वारनेट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [गारनेट] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा । [किरंट (दे०)]

ग्वारिनी—(संज्ञा, स्त्री०, ब्र०) ग्वालिनी । गँवारिनी ।

ग्वारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ग्वार ।

ग्वाल—(संज्ञा, पु०) [सं० गोपाल, प्रा० गोवाल] अहीर । एक छन्द (पिं०) । [ग्वाला (दे०)]

ग्वालिन—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० ग्वाल] ग्वाले की स्त्री । [**ग्वारिन, गुवारिन** (ब्र०, दे०)] [सं० गोपालिका] एक बरसाती कीड़ा । गिजाई । घिनौरी ।

ग्वैंठना†*—(क्रि० स०, दे०) [सं०, **गुंठन** हि० गुमेठना] गोंठना, मरोड़ना, ऐंठना, घुमाना । [उमैठना (दे०)]

ग्वैंड़ा†*—(संज्ञा, पु०, दे०) गोइँड़, गाँव के चतुर्दिक निकटवर्ती स्थान ।

ग्लौ—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा । विष्णु । कपूर ।

घ

घ—हिन्दी और संस्कृत की वर्णमाला के व्यंजनों में से कवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वामूल या कंठ से होता है ।

घँघरा—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़ा लँहगा, घाँघरा । [**घाँघरो** (ब्र०)] "घेर को घाँघरो घूँटनि लौं"—

द्विज० । [घँघरिया, घाँघरी घँघीर (स्त्री०, अल्प०)]

घँघोलना, घघोरना—(क्रि० स०, दे०) [हि० घन+घोलना] हिलाकर घोलना, पानी को हिला कर उसमें कुछ मिलाना या मैला करना ।

घंट—(संज्ञा, पु०) [सं० घट] घड़ा । मृतक की क्रिया में वह जल-पात्र जो पीपल में बाँधा जाता है । "लटकत जामै घंट घने"—रत्ना० । (संज्ञा, पु०, दे०) घंटा ।

घंटा—(संज्ञा, पु०, सं०) धातु का एक बाजा, घड़ियाल जो समय-सूचनार्थ बजाया जाता है । दिन-रात का चौबीसवाँ भाग, साठ मिनट का समय । [**घंटी** (स्त्री०, अल्पा०)]

घंटाघर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० घंटा+घर] वह ऊँचा धौरहरा जिस पर एक ऐसी बड़ी धर्मघड़ी लगी हो जो चारों ओर से दूर तक दिखलाई देती हो और जिसका घंटा दूर तक सुनाई देता हो ।

घंटिक—(संज्ञा, पु०, सं०) मगर । घड़ियाल ।

घंटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक बहुत छोटा घंटा, घुंघुरू । [**क्षुद्र-घंटिका**-(यौ०) किंकिणी] [तगड़ी (दे०)]

घंटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घंटिका] पीतल या फूल की छोटी लोटिया । (संज्ञा, स्त्री०) [सं०, घंटा] बहुत छोटा घंटा । घंटी बजाने का शब्द । घुंघुरू, चौरासी [प्रान्ती०] । गले की निकली हुई हड्डी । गुरिया । गले में जीभ की जड़ के पास लटकती हुई माँस की छोटी पिंडी, कौआ । [प्रान्ती०] घाँटी ।

घंटील—(संज्ञा, स्त्री०) चारे की घास ।

घंटु—(संज्ञा, पु०, सं०) ताप । प्रकाश ।

घई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गंभीर भँवर, पानी का चक्कर । थूनी, टेक । चूल्हे में रोटी सेंकने का स्थान । [**गंभीर** (वि०, सं०)] अथाह, बहुत गहरा ।

घघरावेल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बंदाल ।

घचाघच—(क्रि० वि०, दे०) खचाखच, ठसाठस, अत्यन्त संकीर्णता । लबालब भरा ।

घटंत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ह्रास, हीनता, उतार, अल्पता, न्यूनता, कमी, घटी ।

घट—(संज्ञा, पु०, सं०) घड़ा, जलपात्र, कलसा । पिंडा । शरीर । "जौ लौं घट में प्रान आन करि टेक निबैहैं"—रत्ना० । **मुहा०—में बसना, रमना या बैठना**-मन में बसना, ध्यान पर चढ़ा रहना ।—**घट वासी**-(यौ०) ईश्वर । (वि०) 'हि० घटना] घटा हुआ, कम, हीन । "को न करै घट काम"—गिर० ।

घटक—(संज्ञा, पु०, सं०) बीच में रहने वाला, मध्यस्थ । विवाह तय कराने वाला । बरेखिया, दलाल, [बिचवानी (दे०)] काम पूरा करने वाला । चतुर व्यक्ति । भाट । कुल परम्परा का बतलाने वाला । चारण ।

घटकना—(क्रि० स०) पीना, गले के नीचे उतारना, लीलना ।

घटकर्ण*—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुम्भकर्ण ।

घटकर्पर—(संज्ञा, पु०, सं०) विक्रमादित्य की सभा के एक पंडित जिन्होंने 'यमक प्रधान' नामक काव्य रचा है ।

घटका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घटक=शरीर] कंठावरोध, मरने के पूर्व साँस के रुक-रुक कर घरघराहट के साथ निकलने की दशा, गले की कफ़ रुकने की अवस्था । [**घर्रा** (प्रान्ती०)] **मुहा० —लगना**-मृत्यु से पूर्व कंठावरोध होकर साँस का रुक कर आना ।

घटजात, घटजन्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अगस्त मुनि ।

घटती—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० घटना] कमी, कसर, घटी, न्यूनता, हीनता, अवनति, अप्रतिष्ठा । [(विलो०) **बढ़ती**]

घटन—(संज्ञा, पु०, सं०) गढ़ा जाना । उपस्थित होना । [**घटनीय, घटित** (वि०)]

घटना—(क्रि० अ०) [सं० घटन] उपस्थित या वाकै होना । होना, लगना । सटीक बैठना, ठीक उतरना, चरितार्थ होना । (क्रि० अ०, दे०) [हि० कटना] कम या क्षीण होना, काफ़ी न रह जाना, न्यून होना । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) कोई बात जो हो जाय, वाकया, वारदात ।

घटनाई, घटनई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घट-नौका] घड़ों की नाव । [**घड़नई, घन्नई, घनाइय** (ग्रा०)]

घटनावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घटनाओं का क्रम या सिलसिला, समूह ।

घटनीय—(वि०, पु०, सं०) योजनीय, सम्भाव्य, घटने या होने योग्य ।

घटबढ़—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० घटना+बढ़ना] कमीबेसी, न्यूनाधिकता ।

घटयोनि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अगस्त्य मुनि, कुंभज, कुंभयोनि। "बालमीक नारद घटयोनी"—[रामा०]।

घटवई, घटवाई—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घाट+वाई) घाट का कर लेने वाला।

घटवना—(क्रि० अ०, दे०) कम या न्यून होना, कम करना। [घटवाना (प्रे० रूप)]

घटवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० घटाना का प्रे०] घटाने का काम कराना, कम कराना।

घटवार, घटवारिया, घटवालिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घाट+पाल या वाला] घाट का महसूल लेने वाला। मल्लाह। केवट। घाट पर बैठने और दान लेने वाला ब्राह्मण, घाटिया।

घटसंभव—(संज्ञा, पु०, सं०) अगस्त्य मुनि, घटसंभूत।

घटस्थापन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी मंगल कार्य या पूजन आदि से पूर्व जलपूर्ण घड़ा पूजन के स्थान पर रखना। नवरात्रि का प्रथम दिवस (इस दिन से देवी की पूजा आरम्भ होती है)। कलश स्थापन।

घटहा—(संज्ञा, पु०, दे०) घाट का ठेका लेने वाला। नदी उतरने वाले। नाव। अपराधी। दोषी। [घटहाई (संज्ञा, स्त्री०)]

घटा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बादलों का घना समूह, उमड़े हुए बादल, मेघ-माला। कम।

घटाई*—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० घटना+ई प्रत्य०] हीनता, अप्रतिष्ठा, बेइज्जती।

घटाकाश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आकाश का वह अंश जो घड़े के भीतर आ जाय।

घटाग्र—(संज्ञा, पु०, सं०] वास्तुस्तम्भ का अष्टम भाग जिसमे देवताओं का आह्वान होता है।

घटाटोप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बादलों की घटा जो चारों ओर से घेरे हो। गाड़ी या बहली को ढकने वाला ओहार। पर्दा, जवनिका।

घटाना—(क्रि० स०) [हि० घटना] कम करना, क्षीण या न्यून करना, बाकी निकालना। काटना, अप्रतिष्ठा करना। घटावना (ग्रा०)।

घटाव—(संज्ञा, पु०) [हि० घटना] कम होने का भाव। न्यूनता, कमी, अवनति, तनज्जुली। नदी की बाढ़ की कमी।

घटिक—(संज्ञा, पु०, सं०) घंटा पूरा होने पर घंटा बजाने वाला, घड़ियाली।

घटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा घड़ा या नाँद। घड़ी यंत्र, घड़ी। एक घड़ी या २४ मिनट का समय। —शतक-एक घड़ी में १०० छंदों की रचना करने वाला कवि।

घटित—(वि०, सं०) बनाया, रचा हुआ, रचित, निर्मित। होने वाला, हुआ।

घटिया—(वि०, दे०) [हि० घट+इया प्रत्य०] जो अच्छे मेल का न हो, खराब, सस्ता। अधम। तुच्छ। [घटिहा (ग्रा०)] नीच, बुरा। [(विलो०) बढ़िया]

घटिहा—(वि०, दे०) [हि० घात+हा प्रत्य०] घात पाकर स्वार्थ साधने वाला। चालाक। मक्कार, धोखेबाज। बेईमान। व्यभिचारी। लम्पट, दुष्ट, नीच। [घटिहई (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

घटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २४ मिनट का समय। घड़ी, मुहूर्त्त। समय सूचक यंत्र। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घटना] कमी, न्यूनता। हानि, क्षति, नुकसान, घाटा।

घटूका—(संज्ञा, पु०, दे०) घटोत्कच (सं०), भीम-सुत।

घटोत्कच—(संज्ञा, पु०, सं०) हिडिंबा राक्षसी से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र।

घटोत्कर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव जी का अनुचर, जो शाप-वश उज्जैन में मनुष्य हुआ था और जिसने तपस्या करके विक्रमादित्य के सब रत्नों के (कालि-दास को छोड़कर) जीतने का वरदान पाया था। एक राक्षस।

घटोद्भव—(संज्ञा, पु०, सं०) अगस्त्य मुनि।

घटोर—(संज्ञा, पु०) मेढा।

घट्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) चुंगी, कर लेने का स्थान।

घट्टना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हिलाना। चलाना। पेशा। रगड़ना।

घट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घट्ट] शरीर पर वह उभड़ा हुआ कड़ा चिह्न जो किसी वस्तु की रगड़ लगते-लगते पड़ जाता है। नदी या तालाब का घाट।

घट्टित—(वि०, सं०) रगड़ा हुआ, घिसा हुआ। चला हुआ। दबाया हुआ। निर्मित। (संज्ञा, पु०) नृत्य का एक प्रकार।

घट्ठा—(संज्ञा, पु०) रगड़ का चिह्न।

घड़घड़—(संज्ञा, पु०) बादल-गर्जन। गाड़ी आदि की आवाज।

घड़घड़ाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गड़गड़ या घड़-घड़ शब्द करना, गड़गड़ाना।

घड़घड़ाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० घड़बड़) घड़घड़ शब्द होने का भाव।

घड़नई, घड़नैल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घड़ा + नैया = नाव] छोटी नदियों के पार करने को बाँसों में घड़े बाँध कर बनाया हुआ ढाँचा, घन्नई, घन्नाई, घटनई। [घटनाई (दे०)] [(सं०) घटनौका]

घड़ना—(क्रि० स०, दे०) गढ़ना।

घड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घट] पानी भरने का मिट्टी का बरतन, जलपात्र, कलसा, गगरा। **मुहा०—(डों) पानी पड़ जाना**-अति लज्जित होना, लज्जा के भार से गड़ जाना। "पानी पड़ा घड़ों तब मुझ पर जब तुम पड़े दिखायी"—गिरीश। **कोरा—**,निर्लज्ज, जिस पर किसी बात का असर न हो। "कोरा घड़ा जानिए मुझको मुझे न आती लाज"—गिरीश।

घड़ाना—(क्रि० स०, दे०) गढाना।

घड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घटिका] सोना, चाँदी गलाने का मिट्टी का बरतन, मिट्टी का छोटा प्याला। [घरिया (दे०)]

घड़ियाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घटिकालि= घंटों का समूह] पूजा में या समय बतलाने को बजाया जाने वाला घंटा। **(संज्ञा, पु०, दे०)** [हि० घड़ा + आल = वाला] एक बड़ा हिंसक जल-जन्तु, ग्राह। [घरियार (दे०)] [**घड़ियाली** (स्त्री० अल्प०)]

घड़ियाली—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घड़ियाल] घंटा बजाने वाला।

घड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घटी] ६० पल या २४ मिनट का समय, **घरी** (ग्रा०)। "पाये घरी द्वैक मैं जगाइ लाई ऊधौ तीर"—रत्ना०। **मुहा०—घड़ी**-बार-बार, थोड़ी-थोड़ी देर पर। **घरी-घरी** (ग्रा०), "आवत-जात विलोकि घरी घरी"—ठाकुर। **—गिनना**-किसी बात का बड़ी उत्सुकता से आसरा देखना। मरने के निकट होना। समय, अवसर, उपयुक्त काल। समय-सूचक यंत्र।**—साज**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० घड़ी साज + फ़ा०] घड़ी को मरम्मत करने वाला। [**घड़ीसाजी** (संज्ञा, स्त्री०)] "घड़ी-घड़ी न डालिए नजर घड़ी की तरफ"।**—देखना**-प्रतीक्षा करना। ठीक समय देखना।

घड़ीदिया—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० घड़ी + दिया = दीपक] वह घड़ा और दिया जो घर में किसी के मरने पर रखा जाता है।

घड़ौंची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घट-मंच] पानी से भरे घड़ों के रखने की तिपाई,। [**घनौची** (ग्रा०)]

घतिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घात + इया प्रत्य०] घात करने या धोखा देने वाला।

घतियाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० घात] अपनी घात या दाँव में लाना, मतलब पर चढ़ाना। चुराना। छिपाना। घात लगाना।

घन—(संज्ञा, पु०, सं०) मेघ, बादल। लोहारों का बड़ा हथौड़ा। समूह, झुंड। कपूर। घंटा, घड़ि-याल। वह गुणनफल जो किसी अंक को उसी अङ्क से दो बार गुणा करने से मिलता है। लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) तीनों का विस्तार। ताल देने का बाजा। पिंड। शरीर। (वि०, दे०) घना, गफ, गठा हुआ, ठोस। दृढ़, मजबूत। बहुत अधिक, ज्यादा। [**घनो** (ब्र०)]

घनक—(संज्ञा, स्त्री०) गड़गड़ाहट, गर्जन। प्रहार।

घनकना—(क्रि० अ०) गर्जना, आवाज करना।

घनगरज—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० घन + गर्जन] बादलों के गरजने का शब्द। एक प्रकार की खुमी जो खाई जाती है। [**ढिंगरी** (प्रान्ती०)] एक प्रकार की तोप। घननाद।

घनघनाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) घंटे का सा शब्द होना, घनघन शब्द करना।

घनघनाहट—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) घनघन शब्द होने का भाव या ध्वनि।

घनघोर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० घन + घोर] भीषण ध्वनि। बादल की गरज। बहुत घना। गहरा भीषण या घना बादल।**—घटा**-बड़ी गहरी काली घटा, भयङ्कर बादल।

घनचक्कर—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० घन + चक्र] चंचल बुद्धि वाला। अज्ञान, मूर्ख, बेसमझ, बेवक़ूफ़, मूढ़। व्यर्थ, इधर-उधर फिरने वाला, आवारा।

घनत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) घना होने का भाव, घना-पन, सघनता। लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई तीनों का भाव। गढ़ाव। ठोसपन।

घननाद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बादल की गरज, नीरद रव, मेघनाद।

घनफल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई (गहराई, ऊँचाई) तीनों का गुणनफल। किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त गुणनफल।

घनबान—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० घन + बाण] एक बादल पैदा करने वाला बाण।

घनबेल—(वि०, यौ०) [हि० घन+बेल] बेल-बूटेदार।

घनमूल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी घनराशि का घनमूल अंक, जैसे—२७ का घनमूल ३ है (गणि०)।

घनवल्लभा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) घन-प्रिया, बिजली, घन ज्योति।

घनश्याम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) काला बादल। श्रीकृष्ण। श्रीरामचन्द्र।

घनसार—(संज्ञा, पु०, सं०) कपूर, कर्पूर।

घना—(वि०, दे०) [सं० घन] जिसके अवयव या अंश बहुत सटे हों, सघन। निबिड़। बहुत गफ़, गुंजान। [गझिन (दे०)] घनिष्ठ, नजदीक, अति निकट का। [**घनो** (ब्र०)] [**घनी** (स्त्री०)]

घनाकर, घनागम—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्षा ऋतु।

घनाक्षरी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) १६ और १५ के विराम से ३१ वर्णों का दंडक या मनहर छंद जिसे कवित्त भी कहते हैं (पिं०)। [**रूपघनाक्षरी** (यौ०)]

घनाघन—(संज्ञा, पु०, सं०) इंद्र। पानी बरसाने-वाले काले बादल। मस्त हाथी।

घनात्मक—(वि०, सं०) जिसकी लम्बाई, चौड़ाई, और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों बराबर हों। तीनों का गुणनफल, घनफल।

घनानन्द—(संज्ञा, पु०, सं०) गद्य-काव्य का एक भेद। बहुत प्रसन्नता। अति सुख। एक हिन्दी-कवि।

घनामय—(संज्ञा, पु०, सं०) खजूर।

घनाश्रय—(संज्ञा, पु०, सं०) आकाश, आसमान।

घनाह—(संज्ञा, पु०, सं०) नागरमोथा, दवा।

घनिष्ट—(वि०, सं०) गाढ़ा, घना। निकट का। अतिप्रिय। समीपी।

घनिष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गहरी मित्रता, घनिष्टता का भाव।

घनीभवन, घनीभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) गाढ़ा होना, जमना, गाढ़ापन। केन्द्रीभूत होना।

घनीभूत—(वि०, सं०) गहरा। ठोस बना हुआ। केन्द्रीभूत, गाढ़ा।

घने—(वि०, दे०) [सं० घन] बहुत से, अनेक सघन, घना का ब० व०।

घनेतर—(वि०, सं०) तरल, पतला।

घनेरा, घनेरे*§—(वि०) [हि० घना+एरा प्रत्य०] बहुत अधिक, अतिशय। [**घनेरो** (ब्र०)] "भये भानुकुल भूप घनेरे"—[रामा०]। [**घनेरी** (स्त्री०)]

घनोत्तम—(संज्ञा, पु०, सं०) चेहरा, मुख।

घनोदय—(संज्ञा, पु०, सं०) बरसात का प्रारम्भ होना।

घनोपल—(संज्ञा, पु०, सं०) ओला।

घन्नई, घन्नाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घट+नौ] छोटी नदियों के पार करने को घड़ों को लकड़ियों में बाँध कर बनाया हुआ बेड़ा, घटनौका, घन्नइया।

घपचियाना—(क्रि० अ०) सिटपिटाना, घबराहट में कर्तव्य निश्चित न कर पाना।

घपची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घन+पंच] दोनो हाथों की मजबूत पकड़।

घपला—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) ऐसी मिलावट, जिसमें एक से दूसरे का अलग करना कठिन हो। गड़बड़, गोलमाल।

घबराना, घबड़ाना—(क्रि० अ०) [सं० गह्वर, गह्वर, हि० गड़बड़ाना] व्याकुल, चंचल या उद्विग्न होना, भौंचक्का हो जाना। किंकर्तव्यविमूढ़ या उतावली में होना। जल्दी मचाना। जी न लगना, उचाट होना। (क्रि० स०) व्याकुल, अधीर या भौंचक्का करना, जल्दी (उतावली) में डालना। गड़बड़ी में डालना। हैरान या उचाट करना।

घबराहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घबराना] व्याकुलता, अधीरता, उद्विग्नता। किंकर्तव्य-विमूढ़ता। उतावली, आतुरता।

घमंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गर्व] अभिमान, शेखी, गर्व। जोर। भरोसा। (क्रि० वि०, दे०) घुमड़ते हुए। "घन घमंड नभ गरजत घोरा"—[रामा०]।

घमंडी—(वि०) [हि० घमंड] अहंकारी, अभि-मानी, मग़रूर। [**घमंडिन** (स्त्री०)] **लो०**—घमंडी का सिर नीचा।

घमकना—(वि०, दे०) [अनु० घम०] घम-घम या और किसी प्रकार का गम्भीर शब्द होना। घहराना, गरजना। (क्रि० स०, दे०) घूँसा मारना।

घमुका—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) गदा या घूँसा पड़ने का शब्द, आघात की ध्वनि। (संज्ञा, पु०, ब्र०) घाम की तेजी से उत्पन्न गरमी। "होत घमका विषम ज्यों न पात खरकत है"—सेना०।

घमघमाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) घम-घम शब्द होना। (क्रि० स०, दे०,) प्रहार करना, मारना। **मुहा० घमघमाकर आना**-शीघ्र आना।

घमर—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) नगाड़े, ढोल आदि का भारी शब्द। गम्भीर आघात, ध्वनि।

घमरौल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रौला, कोलाहल। भीड़-भाड़।

घमस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) निर्वात, वायु-रहित उमस, बहुत गरमी। [घमसा (दे०)] घमका।

घमसान, घमासान—(संज्ञा, पु०) [अनु० घम+सान प्रत्य०] भयङ्कर युद्ध, गहरी लड़ाई। अति घना।

घमाका—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० घम] भारी आघात का शब्द।

घमाघम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० घम] घम-घम की ध्वनि। धूमधाम, चहल-पहल। (क्रि० वि०, दे०) घम-घम शब्द के साथ।

घमाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० घाम] घाम लेना, गरम होने के लिए धूप में बैठना।

घमायल—(वि०) धूप खाया हुआ या धूप से पका हुआ।

घमासान—(संज्ञा, पु०, दे०) घमसान।

घमीला—(वि०) धूप से सुखाया हुआ, धूप खाया हुआ।

घमोई, घमोय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कटीले पत्तों का एक पौधा, भँड़भाँड़। सत्यानाशी। "बेनु-बंश सुत भइस घमोई"—[रामा०]।

घमौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अम्भौरी, अँधौरी, अलाई।

घर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गृह] मनुष्यों के रहने का मिट्टी, ईंट आदि की दीवारों से बना मकान, आवास, सदन, सद्म। निकेत। खाना। "घर कीन्हें घर जात है, घर छोड़े घर जाय"—तु०। **मुहा०—करना**-बसना, रहना। निवास करना। समाने या अँटने के लिए स्थान निकालना। घुसना, धँसना, पैठना। घर-बार जोड़ना। संसार के माया-जाल में फँसना। **दिल, चित्त, मन या आँखों में—करना**-इतना पसन्द आना कि उसका ध्यान सदा बना रहे, रुचिर या रोचक जँचना, अति प्रिय होना। "मेरे दिल में घर किये लेती हैं ये"। **—का**-निज का, अपना। आपस का, सम्बन्धियों या आत्मीयजनों के बीच का। **—का न घाट का**-जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो। निकम्मा, बेकाम! **लो०—**"धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का"। **—के बढ़े**-घर ही मे बढ़-बढ़ कर बातें करने वाला। "द्विज-देवता घरहि के बाढ़े"—[रामा०]। **—के घर ही रहना**-न हानि उठाना न लाभ। बराबर रहना। **—घाट**-रङ्ग-ढङ्ग, चाल-ढाल, गति और अवस्था। **—का घर**-घर के सब आदमी, अपना घर। ढङ्ग, ढब, प्रकृति, ठौर, ठिकाना। घर-द्वार, स्थिति। **—घालना (बिगाड़ना)**-घर बिगाड़ना, परिवार मे अशान्ति या दुःख फैलाना। कुल में कलंक लगाना। मोहित करके वश मे करना। किसी को खराब (नष्ट) करना या बिगाड़ना, कुमार्ग में ले जाना। **—फोड़ना**-परिवार मे झगड़ा लगाना, बिगाड़ना। "जो अस कहसि कबहुँ घर फोरी"—[रामा०]। **—बसना (आबाद होना)**-घर आबाद होना। घर मे धन-धान्य होना। घर में स्त्री या बहू आना। ब्याह होना। **—बिगड़ना**-संपत्ति-नाश होना। वंश कलंकित होना। किसी प्रधान व्यक्ति की मृत्यु होना। **—बैठे**-बिना कुछ काम किये। बिना हाथ-पैर डुलाये या हिलाये, बिना परिश्रम। **(किसी स्त्री का किसी पुरुष के)—बैठना**-किसी के घर पत्नी-भाव से जाना, किसी को अपना स्वामी या पति बनाना। **—उजड़ना (स्वाहा होना)**-घर के प्रधान व्यक्ति या अंतिम व्यक्ति का मर जाना, कोई न रहना। **—चौपट होना,—बिगड़ना**-घर मे फूट या कलह पैदा होना। घर के व्यक्तियों मे विरोध होना। घर की संपत्ति का नष्ट होना। **—फूँक तमाशा करना**-व्यर्थ के कामों या शान-शौकत में व्यर्थ धन बरबाद करना, बिना विचारे अत्यधिक व्यय करना। **—बह जाना**-सब नष्ट हो जाना। "खेत मे उपजे सब जग खाय। घर मे होय तो घर बहि जाय"। **—भरा होना**-घर का संतति-संपत्तिमय होना। घर मे बहुत से आदमियों का होना। **(किसी का)—लेना**-सर्वस्व लेना। **—से**-पास से, पल्ले से। (संज्ञा, पु०) पति, स्वामी। (स्त्री०) पत्नी। जन्म-स्थान, जन्मभूमि, स्वदेश। घराना, कुल, वंश, खानदान। कार्यालय, कारखाना। कोठरी, कमरा। आड़ी-खड़ी खींची हुई रेखाओं से घिरा स्थान, कोठा, खाना। वस्तुओं के रखने का डिब्बा, कोष, खान। पटरी आदि से घिरा हुआ स्थान।

किसी वस्तु के अँटकने या समाने का स्थान । छोटा गड्ढा । छेद, बिल । मूल कारण । उत्पन्न करने वाला । गृहस्थी । [**घर-गृहस्थी**, **घर-द्वार** **घर-बाहर**, **घर-बार**, **घर-घराना** (यौ०)] [**घराऊ**, **घरेलू** (वि०)]—**लो०**—"घर के देव ललायँ, बाहर के पूजा माँगे" ।—**फोरी**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० घर+ फोड़ना] परिवार में कलह फैलाने वाली । "धरेउ मोर घर फोरी नाऊँ"—[रामा०] ।—**बसा**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० घर+बसना] उपपति, प्रेमी, यार । पति । [**घरबसी** (स्त्री०)] —**बार**–(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० घर+बार] रहने का स्थान, ठौर, ठिकाना, घर का जंजाल, गृहस्थी, निजी सम्पत्ति या साज-सामान । [**घर-बारी** (वि०)]—**बारी**–(संज्ञा, पु०) [हिं० घर+बार] बाल-बच्चों वाला, गृहस्थ, कुटुम्बी ।

घरघराना—(क्रि० अ०, अनु०) कफ से गले से साँस लेने में शब्द होना, घर-घर शब्द निकालना । (संज्ञा, पु०, दे०) घरघराहट । (संज्ञा, स्त्री०) गले में कफ आदि होने से घर-घर की आवाज ।

घरघायल—(वि०, दे०) घर घालने वाला ।

घरघालन—(वि०, यौ०, दे०) [हिं० घर+ घालन] घर बिगाड़ने वाला । कुल में कलंक लगाने वाला, कुल-घालक । [**घरघालिनी** (स्त्री०)]—**जाया**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० घर +जाया पैदा] गृहजात दास, घर का गुलाम, भवन-भृत्य, सद्मानुचर ।—**दासी**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० घर+दासी] गृहिणी, भार्य्या, पत्नी, दासी ।—**द्वार**–(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) घरबार ।

घरन—(संज्ञा, स्त्री०) पहाड़ी भेंड़ ।

घरनाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० घड़ा +नाली] एक प्रकार की पुरानी तोप ।

घरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गृहिणी, प्रा० घरणी] घरवाली, भार्या, गृहिणी । "गौतम की घरनी ज्यों तरनी तरैगी मोरी"—[कविता०]

घरबात*+—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० घर+ बात प्रत्य०] घर का सामान, गृहस्थी ।

घररना—(क्रि० अ०) घिसना, रगड़ खाना ।

घरवाला—(संज्ञा, पु०) [हिं० घर+वाला प्रत्य०] [**घरवाली** (स्त्री०)] घर का मालिक, पति, स्वामी ।

घरवाहा—(संज्ञा, पु०) छोटा घर, घरौंदा ।

घरसाꕥ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घर्ष] रगड़ा ।

घरहाईꕥ—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० घर+घाती, सं०, हिं० घाई] घर मे विरोध कराने वाली स्त्री । अपकीर्ति फैलाने वाली । घरघाती ।

घराऊ—(वि०, दे०) [हिं० घर+आऊ प्रत्य०] घर से सम्बन्ध रखने वाला, गृहस्थी-सम्बंधी, आपस का, निजी, आत्मीय, घरेलू ।

घराती—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० घर+आती प्रत्य०) विवाह मे कन्या-पक्ष के लोग । [(विलो०) **बराती**)]

घराना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० घर+आना प्रत्य०] खानदान, वंश, कुल, कुटुम्ब ।

घरामी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० घर+आमी प्रत्य०] छवैया, घर छाने वाला ।

घरिक—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० घड़ी+एक] एक घड़ी भर, थोड़ी देर, घरीक ।

घरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घड़िया, मिट्टी की छोटी कटोरी (सोनारों की) ।

घरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० घर=कोठा, खाना] तह, परत, लपेट । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) घड़ी, घरी । " आवत जात विलोकि घरी घरी" —ठाकुर० ।

घरीकꕥ+—(क्रि० वि०) [हिं० घड़ी+एक] एक घड़ी भर, थोड़ी देर । "परखौ पिय छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े"—कवि० । "घरीक गयी करि जादु दई के निहोरे ।"

घरीना—(संज्ञा, पु०, प्रान्ती०) चिह्न, निशान ।

घरू—(वि०, दे०) [हिं० घर+ऊ प्रत्य०] जिसका सम्बन्ध घर-गृहस्थी से हो, घर का, घर वाला पदार्थ । [(विलो०) **बाजारू**]

घरेला—(वि०, दे०) [हिं० घर+एला प्रत्य०] घर का उत्पन्न, घर का पला, घर-सम्बन्धी ।

घरेलू—(वि०, दे०) [हिं० घर+एलू प्रत्य०] जो घर में आदमियों के पास रहे, पालतू, पालू, घर का निजी । घरू, खानगी । घर-सम्बन्धी ।

घरैया+—(वि०, दे०) [हिं० घर+ऐया प्रत्य०] घर या कुटुम्ब का, अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्धी ।

घरौंदा, **घरौंधा**—(संज्ञा, पु०, दे०) [वि० घर+ औंदा प्रत्य०] कागज, मिट्टी आदि का बना हुआ छोटा घर, बच्चों के खेलने का छोटा-मोटा घर ।

घरौना—(संज्ञा, पु०, दे०) घरौंदा । घर ।

घर्घर—(वि०, अनु०) शूकर या चक्की का शब्द, कफपूर्ण गले का शब्द ।

घर्घरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घाघरा नदी, सरयू नदी ।

घर्घरित—(संज्ञा, पु०, सं०) घुरघुराने का, सुअर का शब्द ।

घर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) घाम, धूप ।

घर्मांशु—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य ।

घर्मार्द्र—(वि०, सं०) पसीने से तर, लथपथ ।

घर्मोदक—(संज्ञा, पु०, सं०) पसीना ।

घर्रा—(संज्ञा, पु०, अनु०) एक प्रकार का मंजन । गले की घरघराहट जो कफ के कारण होती है ।

घर्राटा—(संज्ञा, पु०, दे०) खर्राटा ।

घर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) रगड़, घिसन । [**घर्षणीय**-(वि०)]

घर्षित—(वि०, सं०) घृष्ट, घिसा हुआ ।

घलना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० घालना] छूट कर गिर पड़ना । फेंका जाना, चढ़े हुए तीर या भरी हुई गोली का छूट जाना । मार-पीट हो जाना । दाँव लगना ।

घलाघल, घलाघली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० घलना] मारपीट, आघात-प्रतिघात । खूब भरा होना । "अँखियान में नींद घलाघल है"—रत्ना० ।

घलुवा+—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घाल] खरीदार को उचित तौल के अतिरिक्त दी गई वस्तु, [**घिलौना, घेलुवा** (ग्रा०)]

घवरि+*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घौद ।

घसखुदा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० घास+खोदना] घास खोदने वाला । अनाड़ी, मूर्ख ।

घसना+*—(क्रि० अ०, दे०) घिसना ।

घसिटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० घर्षित+ना प्रत्य०] घसीटा जाना ।

घसियारा—(संज्ञा, पु०) [हि० घास+यारा प्रत्य०) घास बेचने या लाने वाला । [**घसियारी, घसियारिन** (स्त्री०)]

घसीट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घसीटना] जल्दी-जल्दी घिसने का भाव, जल्दी लिखा हुआ लेख । घसीटने का भाव ।

घसीटना—(क्रि० स०, दे०) [सं० घृष्ट, प्रा० घिष्ट+ना प्रत्य०] किसी वस्तु को यों खींचना कि वह भूमि से रगड़ खाती जाय, कढ़ोरना । जल्दी-जल्दी लिख कर चलता करना । किसी कार्य में बलात् सम्मिलित करना ।

घसीला—(वि०, दे०) अधिक घास वाला, तृणमय, हरियाली ।

घस्मर—(वि०, सं०) पेटू, खाऊ, पेटार्थी ।

घस्र—(संज्ञा, पु०, सं०) दिन, दिवस । पर ।

घस्रा—(संज्ञा, पु०, सं०) हिंसक, नृशंस, क्रूर, कुटिल, निर्दय ।

घहनाना*†—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) घंटे आदि की ध्वनि निकलना । घहराना ।

घहरना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गरजने का सा शब्द करना । गम्भीर ध्वनि निकालना । "घहरने नभमण्डल में लगे"—हरिऔध ।

घहरात—(क्रि० वि०, दे०) टूटते-पड़ते, टूटते ही, गरजते ही ।

घहराना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गरजने का सा शब्द करना, गम्भीर शब्द करना । [**घहरान, घहरानि** (संज्ञा, स्त्री०)]

घहरानि‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घहराना] गम्भीर ध्वनि, तुमुल शब्द, गरज ।

घहरारा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घहराना] घोर शब्द, गम्भीर ध्वनि, गरज ।

घाँ, घा*†—(संज्ञा, स्त्री०, ब्र०) [सं० खा वा घाट=ओर] दिशा । [घाँई (दे०)] दिक्, ओर, तरफ । जैसे चहुँधा । [**घाँह** (पु०, ग्रा०)]

घाँघरा—(संज्ञा, पु०, दे०) घाघरा, लहँगा । [**घाँघरी, घँघरिया** (स्त्री०, ग्रा०)]

घाँटी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घंटिका] गले के भीतर की घंटी । कौआ । गला ।

घाँटो—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घट] चैत में गाने का एक चलता गाना ।

घाइ*—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षत, घाव, घाय ।

घाई†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घाँ या घा] ओर, तरफ । दो वस्तुओं का मध्य स्थान, संधि । बार, दफा । पानी का भँवर । गिरदाव । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० गभस्ति=उँगली] दो अँगुलियों के बीच की संधि । अांटी । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० घाव] चोट । आघात, प्रहार, वार । धोखा, छल, घाइ (अ०) ।

घाइन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पाला । वार । बेर । ओसरी ।

घाउ, घाव—(संज्ञा, पु०, दे०) घात । चोट । क्षत । व्रण । फोड़ा ।

घाऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) घाउ। "यह मुनि पर्यो निशाननि घाऊ"—[रामा०]। [**घाऊघप्प**-(यौ०) मट्ठर]

घाऊघप—(वि०, दे०) [हि० खाऊ+गप वा घप] चुपचाप। मट्ठर। माल हजम करने वाला। हड़प जाने वाला।

घाएँ—(अव्य, दे०) [हि० घाँ] ओर, तरफ।

घाघ—(संज्ञा, पु०, दे०) गोंड़ा निवासी एक चतुर और अनुभवी पंडित, जिनकी बहुत सी कहावतें उत्तरी भारत मे प्रसिद्ध हैं। एक पक्षी। (वि०) चालाक, खुर्राट, चतुर। अनुभवी। बुद्धिमान।

घाघरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घर्घर=क्षुद्र घंटिका] घेरदार पहनाव (स्त्रियों का), लहंगा। घांघरा। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० घर्घर] सरयू नदी। [**घाघरी** (स्त्री०, अल्पा०)]

घाघस—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार की मुर्गी।

घाट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घट्ट] किसी जलाशय के नहाने, धोने या नाव पर चढ़ने का स्थान। **—वाल**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घाट+वाला प्रत्य०] घाटिया। गंगा-पुत्र। घटवई। "यहि घाटतें थोरिक दूर अहै..."—[रामा०]। **लो०**—"धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का"। निकम्मा। निरर्थक। "धोबी केसो कूकुरो न घर को न घाट को"—तुल०। **मुहा०—का पानी पीना**-चारों ओर, देश-देशान्तर में घूम-फिर कर अनुभव प्राप्त करना। इधर-उधर मारे-मारे फिरना। चढ़ाव-उतार का पहाड़ी मार्ग। पहाड़। ओर। तरफ। दिशा। तलवार की धार। **तलवार के —उतारना**-मार डालना। "इन कायर देश के द्रोहियों को तलवार के घाट उतारना है"—गिरीश। रङ्ग-ढङ्ग। चाल-ढाल। डौल ढब तौर-तरीका। "बोलत ही पहिचानिये, चोर साहु के घाट"—वृंद। † (संज्ञा, स्त्री०) [सं० घात या हि० घट=कम) धोखा। छल। बुराई। † (वि०, दे०) [हि० घट] कम थोड़ा।

घाट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घाट] पर्वतों के बीच का सङ्कीर्ण मार्ग। दर्रा।

घाटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घटना] घटी। हानि, क्षति।

घाटारोह*†—(संज्ञा, पु०) [हि० घाट+रोध सं०] घाट रोकना। घाट से जाने न देना। "बाँस सहित बोरहु तरनि, कीजै घाटारोह"—तुल०।

घाटि*†—(वि०) [हि० घटना] कम, न्यून। घटका। घटी। (संज्ञा, स्त्री०)[सं० घात] नीचता। [**घटियाई, घटिहई** (ग्रा०)] बम्बई में कुलियों की एक जाति।

घाटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्दन का पिछला हिस्सा।

घाटिया—(संज्ञा, पु०) [हि० घट+इया प्रत्य०] घाटवाला। गङ्गापुत्र। [**घटवार** (ग्रा०)]

घात—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रहार, मार, चोट, धक्का। जरब। हत्या, बध। अहित, बुराई। गुणनफल (गणि०)। (संज्ञा, स्त्री०) कार्य की अनुकूल स्थिति। दाँव। सुयोग। दाँव-पेच। चाल, छल। चालबाजी। रङ्ग-ढङ्ग, तौर-तरीका। "ऐसे नर सों बचि रहौ करै न कबहूँ घात"—वृंद। [हि० घाती]। **मुहा०—पर चढ़ना,—में आना**-अभिप्राय-साधन के अनुकूल होना। दाँव पर चढ़ना। हाथ में आना। **—लगना**-मौका मिलना। **—लगाना**-युक्ति भिड़ाना। ताक लगाना। किसी पर आक्रमण करने या किसी के विरुद्ध कुछ करने के लिए अनुकूल अवसर देखना। **—में**-ताक मे।

घातक—(संज्ञा, पु०, सं०) मार डालने वाला। हत्यारा, नाशक, हिंसक। बधिक। [घातकी (दे०)] [**घातुक** (ग्रा०)]

घातनि घातिनी—(वि०, स्त्री०, सं०) मार डालने या बध करने वाली, विनाशिनी।

घाती—(वि०, दे०) [सं० घातिन्] घातक, संहारक, नाश करने वाला। "खोजत रहेउँ तोहि सुत-घाती"—[रामा०]। (वि०) [हि० घात] घात वाला [**घातिनी** (स्त्री०)]

घात्य—(संज्ञा, पु०, सं०) हनन के योग्य, मारने के योग्य।

घान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घन=समूह] एक बार में कोल्हू में पेरी या चक्की में पीसी जाने की मात्रा। एक बार में पकाई जाने की मात्रा। [**घानी** (संज्ञा, स्त्री०)] (संज्ञा, पु०) [हि० घन] प्रहार, चोट।

घाना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० घात] मारना।

घाम†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घर्म] धूप, सूर्य-ताप। "घाम-धूप नीर औ समीरन कौ सेनिपात···" लक्ष्मण०। [**घमाना** (क्रि० अ०)]

घामड़—(वि०, दे०) [हि० घाम] घाम या धूप से व्याकुल। (चौपाया) मूर्ख। सुस्त। घबड़ाने वाला।

घाय*—(संज्ञा, पु०, दे०) घाव, आघात।

घायक—(वि०, दे०) [हिं० घाव] विनाशक। मारने वाला। घाव करने वाला।

घायल—(वि०, दे०) [हिं० घाव] जिसके घाव लगा हो, आहत, चुटैल, जख्मी, [**घाइल** (ग्रा०)] "घायल गिरहिं बान के लागे"—[रामा०]।

घाये—(क्रि० स०, दे०) गहाये, दे दिये।

घाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० घलना] घलुआ। **मुहा०—न गिनना**–तुच्छ समझना।

घालक—(संज्ञा, पु०) [हिं० घालना] मारने या नाश करने वाला। फेंकने वाला। [**घालिका** (स्त्री०)]

घालकता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० घालना] विनाश करने का काम। "वह दुसार राक्षस घालकता"—[रामा०]।

घालन—(संज्ञा, पु०) [हिं० घालना] हनन, बधन, मारना। [**घालिनी, घालिका** (स्त्री०)] [**घालनीय** (वि०)]

घालना—(क्रि० स०, दे०) [सं० घटन] भीतर या ऊपर रखना। डालना। फेंकना। चलाना। छोड़ना। बिगाड़ना। नाश करना। मार डालना। [**घालि** (पू० का० क्रि०)]

घालमेल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० घालना+मेल] भिन्न प्रकार की वस्तुओं की मिलावट, गड्डबड्ड, मेलजोल।

घालित—(वि०, दे०) मारा, नष्ट किया या उजाड़ा हुआ।

घाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घात, प्रा० घाव] देह पर काटा या चिरा स्थान। क्षत। व्रण। [**घाउ** (ग्रा०)]। जख्म।......" घाव करत गम्भीर"। "वैद रोगी, ज्वान जोगी, सूर पीठी घाव"। **—पत्ता**–(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० घाव+पत्ता] एक लता जिसके पान जैसे पत्ते घाव या फोड़े पर बाँधे जाते हैं। **मुहा०—पर नमक (लोन) छिड़कना (लगाना, देना)**–दुःख के समय और दुःख देना, शोक पर और शोक उत्पन्न करना।—**पूरना या भरना**–घाव का अच्छा होना।

घावरिया*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० घाव+वार या वाला प्रत्य०] घावों की दवा करने वाला। जर्राह।

घास—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तृण, चारा।—**भूसा, —पात या फूस**–तृण और वनस्पति, खर-पतवार, कूड़ा-करकट, घास-कूड़ा। **मुहा०—काटना, खोदना या छीलना**–तुच्छ काम करना, व्यर्थ काम करना।

घासी, घासू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घास] घास वाला। घसियारा। घास बेचने या लाने वाला। [**घसियारिन** (स्त्री०)]

घिश्र, घिउ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घृत] [**घी, घिव** (ग्रा०)] " औ घिउ तात "—घाघ०।

घिग्घी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) साँस लेने में रोग से पड़ने वाली रुकावट। हिंचकी, हुचकी। बोलने में रुकावट (भय से पड़ने वाली)। **मुहा०—बँधना**–भयादि से बोल रुक जाना।

घिघियाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० घिग्घी] करुण स्वर से प्रार्थना करना। गिड़गिड़ाना।

घिचपिच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घृष्ट+पिष्ट] जगह की तंगी, सँकरापन। थोड़े स्थान में बहुत सी वस्तुओं का समूह। (वि०) अस्पष्ट, गिचपिच।

घिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घृणा] अरुचि। घृणा। गन्दी वस्तु देख कर जी मचलाने की सी अवस्था। जी बिगड़ना। [घिना (दे०)]

घिनसा—(वि०, पु०, दे०) घृणा-पात्र। घृणा के योग्य। घृणित वस्तुओं से घृणा न करने वाला। [**घिनहिन, घिनही** (स्त्री०)]

घिनाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० घिन] घृणा करना।

घिनावना—(संज्ञा, पु०, दे०) घिनौना।

घिनौना—(वि०, दे०) [हिं० घिन] जिसे देखने से घिन लगे, घृणित, बुरा। [**घिनौनी** (स्त्री०)]

घिनौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० घिन+औरी प्रत्य०] घिनोहरी। एक बरसाती कीड़ा।

घिन्नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गिन्नी। [घिरनी (दे०)]

घिय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घृत] घी, घृत।

घिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० घी] एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है। [**नेनुवा** (प्रान्ती०)] घियातोरी (तरोई)।

घियाकश—(संज्ञा, पु०, दे०) कद्दूकश।

घिरत, घिरित—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० घी] घी, घृत। "घेवर अति घिरत चभोरे "—सूर।

घिरना—(क्रि० अ०) [सं० ग्रहण] सब ओर से छेंका जाना, आवृत्त होना। घेरे में आना। चारों ओर मंडलाकार इकट्ठा होना।

घिरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घूर्णन] गरारी, गराड़ी, चरखी। चक्कर, फेरा। रस्सी बटने की चरखी। [गिर्री (दे०)]

घिराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घेरना] घेरने की क्रिया या भाव। पशु चराने का काम या मजदूरी।

घिराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० घेरना का प्रेरणा० रूप] घेरने का काम कराना। घिरवाना।

घिराव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घेरना] घेरने या घिरने का भाव, घेरा।

घिरावना—(क्रि० स०, दे०) [हि० घेरना] घेरने का काम दूसरे से कराना। "सिगरे ग्वाल घिरावत मोंसों मेरे पाँय पिरात"—सूर।

घिर्राना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० घिर] घसीटना। गिड़गिड़ाना।

घिसकना—(क्रि० अ०) खिसकना (दे०)

घिसघिस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घिसना] कार्य में शिथिलता। अनुचित विलम्ब। अतत्परता। अनिश्चय।

घिसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० घर्षण] एक वस्तु को दूसरी पर खूब दबा कर घुमाना। रगड़ना। **घसना** (ग्रा०)। (क्रि० अ०, दे०) रगड़ खा कर कम होना। धोखा देना।

घिसपिस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) घिसघिस। सटाबटा। मेल-जोल। फुसफुसाना।

घिसवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० घिसना का प्रेरणा०] घिसने का काम कराना। रगड़वाना, घिसाना। [**घिसवाई** (संज्ञा, स्त्री०)]

घिसाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [वि० घिसना] घिसने की क्रिया या मजदूरी।

घिसाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घिसना] रगड़ घर्षण। खियाब। [**घिसन** (ग्रा०)]।

घिसावट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घिसाना + वट प्रत्य०] रगड़। रगराहट, घिसान।

घिसियाना—(क्रि० स०, दे०) घसीटना। घर्षण करना। धक्का देना। रगड़ना।

घिसिरपिसिर—(संज्ञा, दे०, स्त्री०) घिसपिस।

घिस्समघिस्सा—(संज्ञा, पु०) धक्कम-धक्का। लड़कों का एक प्रकार का खेल।

घिस्सा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घिसना] रगड़। धक्का, ठोकर। पहलवानों का कुहनी और कलाई से किया हुआ आघात। कुन्दा। रद्दा। **—पट्टी**—छल-कपट।

घींच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गरदन, ग्रीवा।

घी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घृत, प्रा० घीअ] तपाया हुआ मक्खन, घृत। "सीधी अँगुरी घी जम्यो क्योंहूँ निकसत नाँहि"—**वृंद०**। **मुहा०** **—के दिये जलाना**—कामना या मनोरथ पूरा होने पर उत्साह पूर्ण प्रदर्शन करना। आनन्द-मंगल या उत्सव मनाना। (**किसी की**) **पाँचों अँगुलियाँ—में होना**—खूब आराम-चैन का मौका मिलना। खूब लाभ होना। लाभ का उत्तम योग उपस्थित होना। **लो०**—"कभी घी से घना, कभी मुट्ठा चना।"

घीकुँवार, घीगुवार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घृत कुमारी] ग्वारपाठा औषधि।

घीवर—(संज्ञा, पु०, दे०) एक मिष्ठान्न।

घुइयाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अरवी, कंद।

घुँगची, घुँघची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घुमचिल, रत्ती, गुंजा (सं०)

घुँघनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भिगोकर तला हुआ चना, मटर आदि। **घुघरी** (ग्रा०)।

घुँघरारे, घुँघराले—(वि०) [हि० घुमराना + वाले] घूमे हुए टेढ़े और बलखाये बाल, छल्लेदार केश, कुंचित कुंतल, कुञ्चित केश। घुघुरवारे, घूँघरवाले। "विकट भृकुटि कच घूँघरवारे"—तुल०। "घुँघराली लटैं लटकैं मुख ऊपर"—तुल०। [**घुंघराली** (स्त्री०)]

घुँघरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० घुन, घुन + खया रू सं०] किसी धातु की गोलो पोली गुरिया, जिसमें बजने के लिए कंकड़ भर देते हैं। इनकी लड़ी। चौरासी। मंजीर। ऐसी गुरियों से बना पैर का एक गहना। चने के ऊपर का खोल। मरते समय मे कफावरोधित कंठ का घुर-घुर शब्द। [**घटका, घटुका** (ग्रा०)]—**दार**—(वि०, दे० + फ़ा०) घुँघरू से युक्त।

घुंडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ग्रंथि] कपड़े का गोल बटन। गांयक। हाथ-पैर मे पहनने के कपड़े के दोनों छोरों पर की गाँठ। कोई गोल गाँठ। किसी वस्तु के सिर पर गोल गाँठ।

घुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) घूआ, किवाड़ का चूल।

घुग्घू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घूक] उल्लू पक्षी, [**घुघुआ, घुघुआर** (ग्रा०)] । "सूरज देखि सकै नहिं घुग्घू" ।

घुघुआना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० घुग्घू] उल्लू पक्षी का बोलना । बिल्ली का गुर्राना ।

घुटकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० घूँट+करना] घूँट-घूँट कर पीना । निगल जाना ।

घुटकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घूँट] घूँट-घूँट पीने की नली जो गले में होती है ।

घुटना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घुंटक] पाँव के मध्य या टाँग और जाँघ के बीच की गाँठ । (क्रि० अ०, दे०) [हि० घूटना या घोरना] साँस का भीतर ही दब जाना । बाहर न निकलना, रुकना, फँसना । भंग आदि का घोंटा जाना । **मुहा०—घुट कर मरना**-दम तोड़ते हुए साँसत से मरना ।—**दम**-साँस न ले सकना । उलझ कर कड़ा पड़ जाना । फसना । गाँठ या बंधन का दृढ़ होना । (क्रि० अ०, हि०) **घोटा जाना**-चिकना करना । मूड़ना । बाल बनाना । रगड़ खाकर चिकना होना । घनिष्ठता या मेल होना । पटना । [**घुटा हुआ**-पक्का । चालाक]

घुटन्ना—(संज्ञा, पु०) [सं० घुटना] घुटने तक का पायजामा ।

घुटरूँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घुट] घुटना ।

घुटवाना—(क्रि० स०) [हि० घोटना का प्रेरणा०] घोटने का काम कराना । बाल मुड़वाना । [**घुटाना** (प्रेरणा० रूप)]

घुटाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घुटना । घोटने या रगड़ने का भाव या क्रिया ।

घुटाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० घोटना का] प्रेरणा० रूप] घोटने का काम दूसरे से कराना ।

घुटी, घुट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घुटकना] घूँटी, बच्चों की एक पाचक दवा । "चतुर सिरोमनि सुर नन्द-सुत लीन्ही अधर घुटी "—सूर । (वि०, स्त्री०) चतुर स्त्री, मक्कार । **मुहा०—में पड़ना**-स्वभाव में होना । "घुट्टी पान करत हरि रोवत "—सूर ।

घुटुरुन, घुटुरुवन—(क्रि० वि०, ब्र०) घुटनों के बल । "घुटुरुवन चलत स्याम मनि आँगन "—सूर । "कबहुं उलटि चलै धाम को घुटुरुन करि धावत"—सूर ।

घुड़—(संज्ञा, पु०) समास के प्रयोग में आनेवाला घोड़ा का लघुरूप ।—**चढ़ा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घोड़ा+चढ़ना] घोड़े का सवार, अश्वारोही ।—**चढ़ी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घोड़ा+चढ़ना] विवाह में दूल्हा का घोड़े पर चढ कर दुलहिन के घर जाने की रस्म । एक प्रकार की तोप । घुड़नाल ।—**दौड़**-(संज्ञा, स्त्री०) [हि० घोड़ा+दौड़ा] घोड़ों की दौड़ । एक प्रकार का जुआ । घोड़े दौड़ाने का स्थान या सड़क । [**घोड़-दौड़**] एक प्रकार की नाव । "आप तो घुड़दौड़ मे लाखों को कर लें हार जीत" ।—**नाल**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घोड़ा+नाल] एक प्रकार की तोप जो घोड़े पर चलती है ।—**बहल**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घोडा+बहल] वह रथ जिसमें घोड़े जोते जायें ।—**साल**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घोडा+शाला] घोड़ों के बाँधने का स्थान । [अस्तबल (दे०)] [**घोटक शाला** (ब्र०)]

घुड़की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घुड़कना] क्रोध में डराने के लिए जोर से कही गई बात । डाँट, डपट, फटकार, घुड़कने की क्रिया । **बंदर—**, झूठ मूठ डर दिखाना, आँख चढ़ा कर डराना । **—में न आना**-न डरना ।

घुड़कना—(क्रि० स०, दे०) [सं० घुर] क्रुद्ध हो डराने के लिए जोर से कुछ कहना, कड़क कर बोलना । डाँटना, आखें चढ़ा कर क्रोध दिखाना ।

घुड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घोड़िया, घोड़ी ।

घुड़िला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घोड़ा+इला प्रत्य०] छोटा घोड़ा । टाँघन ।

घुणाक्षरन्याय—(संज्ञा, पु०) [सं० घुण+अक्षर +न्याय] ऐसी कृति या रचना जो अनजान मे उसी प्रकार हो जाय जिस प्रकार घुनों के खाते-खाते लकड़ी में अक्षर से बन जाते हैं । [घुनाछुर, घुनाखर (दे०)] "होय घुणाक्षर न्याय जो, पुनि प्रत्यूह अनेक "—तुल० ।

घुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घुण] अनाज, लकड़ी आदि मे लगने वाला छोटा कीड़ा । **मुहा० —लगना**-घुन का अनाज लकड़ी आदि का खाना, भीतर ही भीतर किसी वस्तु का क्षीण होना । **—जाना**-घुन से नष्ट होना । क्षीण हो जाना ।

घुनघुना—(संज्ञा, पु०, दे०) झुनझुना ।

घुनना—(क्रि० स०, दे०) [हि० घुन] घुन के द्वारा अनाज, लकड़ी आदि का खाया जाना । दोष से भीतर ही से छीजना ।

घुनिया—(वि०, दे०) घुना, छली, कपटी ।

घुन्ना—(वि०, दे०) [अनु० घुनघुनाना] जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भावों को अपने मन ही में रखे, चुप्पा । [**घुन्नी** (स्त्री०)]

घुप—(वि०, दे०) [सं० कूप वा अनु०] गहरा अँधेरा, निविड़ अंधकार । [**अँधा घुप्प** (यौ०, दे०)]

घुमक्कड़—(वि०, दे०) [हि० घूमना+अक्कड़ प्रत्य०] बहुत घूमने वाला ।

घुमघुमा—(संज्ञा, पु०, दे०) घुमाव, टाल । फिर-फिर वही ।

घुमघुमाना—(क्रि० स०, दे०) घुमाना, फिराना । बात फेरना या उलटना ।

घुमटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घूमना+टा प्रत्य०] सिर का चक्कर, जी घूमना । **घुमरी** (ग्रा०) ।

घुमड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घूमअड़ना] बरसने वाले बादलों की घेरघार ।

घुमड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० घूम+अड़ना] बादलों का घूम-घूम कर इकट्ठा होना, मेघों का छा जाना । **घुमरना, घुमराना**-(घुम्मरना) (अनु० घम-घम) घोर शब्द करना, बजना ।

घुमरी, घुमड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तिर्मिरी, चक्कर, घुर्नी । मूर्च्छा रोग । परिक्रमा ।

घुमाना—(क्रि० स०) [हि० घूमना] चक्कर देना, चारों ओर फिराना । इधर-उधर टहलाना, सैर कराना । किसी विषय की ओर लगाना, प्रवृत्त कराना । मोड़ना ।

घुमाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घूमाना] घूमने या घुमाने का भाव । फेर, चक्कर । मोड़ । **मुहा०**—**फिराव की बात**-पेंचीली, हेर-फेर की बात ।—**दार** -(वि०) [हि० घुमाव+दार] चक्करदार ।

घुरकना—(क्रि० स०, दे०) घुड़कना । [**घुरकी** (संज्ञा, स्त्री०)] घुड़की, धमकी ।

घुरघुर—(संज्ञा, पु०) गले में कफ के ज्यादा रहने पर एक प्रकार की बिल्ली, आवाज । सुअर के गले की आवाज ।

घुरघुरा —(संज्ञा, पु०, दे०) झींगुर । एक रोग ।

घुरघुराना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० घुर-घुर] गले से घुर-घुर शब्द निकलना ।

घुरना*—(क्रि० अ०, दे०) घुलना, क्षीण होना । (क्रि० अ०, दे०) [सं० घुर] शब्द करना, बजना ।

घुरबिनिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घूरा+बीनना] घूर से दाना इत्यादि बीन कर या गली-कूचे से टूटी-फूटी चीजें चुन कर एकत्र करने का काम । "तुलसी मन परिहरत नहि घुरबिनिया की बानि" ।

घुरमना—(क्रि० अ०, सं०) घूमना, चक्कर खाना, घुमरना । "घुरमि घुरमि घायल महि परही" —तुल० ।

घुराना—(क्रि० अ०, दे०) भर आना । "बड़ि-बड़ि अँखियन नींद घुरानी"—[स्फु०] ।

घुर्मित—(क्रि० वि०, दे०) [सं० घूर्णित] घूमता हुआ ।

घुलघुलारव—(संज्ञा, पु०, सं०) कबूतर का एक प्रकार ।

घुलना—(क्रि० वि०, दे०) [सं० घूर्णन, प्रा० घुलन] पानी, दूध आदि पतली वस्तुओं में खूब हिल-मिल जाना । हल होना । **घुरना** (ग्रा०) । **मुहा०**—**घुल कर बातें करना**-खूब मिल-जुल कर बातें करना । द्रवित होना । गलना । पक कर पिल-पिला होना । रोग आदि से शरीर का क्षीण या दुर्बल होना ।—**हुआ**-(यौ०) बूढ़ा, वृद्ध ।—**कर काँटा होना**-चिन्ता से बहुत दुर्बल हो जाना ।—**घुल कर मरना**-बहुत दिनों तक कष्ट भोग कर मरना ।

घुलवाना—(क्रि० स०) [हि० घुलना का प्रेरणा० रूप] गलवाना । दूषित कराना । आँख में सुरमा लगवाना । घुलाना । [हि० घोलना का प्रेरणा० रूप] किसी द्रव पदार्थ में मिलाना, हल कराना ।

घुलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० घुलना] गलाना, द्रवित करना । शरीर दुर्बल करना । मुँह में रखकर धीरे-धीरे रस चूसना । गलाना । गरमी या दाब पहुँचा कर नरम करना । सुरमा या काजल लगाना, सारना । समय बिताना ।

घुलावट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० घुलना] घुलने का भाव या क्रिया ।

घुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) किवाड़े की चूल । सेमर या मदार की रुई । भुवा ।

घुसड़ना, घुसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० कुश= आलिंगन करना या घर्षण] भीतर बैठना या जाना, प्रवेश करना, जाना । धँसना । चुभना, गड़ना । अनधिकार चर्चा या कार्य करना । मनोनिवेश

करना। (प्रेरणा० रूप) घुसवाना, घुसाना। घुसलना।

घुसपैठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घुसना+पैठना] पहुँच। गति। प्रवेश। रसाई।

घुसवाना—(क्रि० स०) घुसाने का कार्य कराना।

घुसाना—(क्रि० स०) [हि० घुसना] भीतर घुसेड़ना, पैठाना, धँसाना, चुभाना। [**घुसेड़ना, घुसवाना** (प्रेरणा० रूप)]

घुस्की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुलटा, दुराचारिणी।

घुस्टराज—(संज्ञा, पु०, सं०) गंधद्रव्य विशेष। कुंकुम, कुमकुमा।

घूँघट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० गुंठ] कुल-बधू का मुँह ढकने वाला वस्त्र के सिर पर का भाग, अवगुंठन। बाहिरी दरवाजे के सामने भीतर की ओर वाली दीवाल (परदे की), गुलाम-गर्दिश, ओट।

घूँघर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घुमाना] बालों में पड़े हुए छल्ले या मरोड़।

घूँघरवाले—(वि०) [हि० घूंघर] टेढ़े, छल्लेदार, कुंचित, घुँघराले।

घूँट—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० घुट] एक बार में गले के नीचे उतारी जाने वाली द्रव वस्तु की मात्रा। **मुहा०—बाँधना**-घूँट-घूँट कर पीना। "लहू के घूँट पीजिए"—रत्ना०।

घूँटना—(क्रि० स०) [हि० घूँट] द्रव पदार्थ का गले के नीचे उतारना, पीना। किसी बात या भाव को भीतर ही रख लेना, प्रगट न होने देना।

घूँटा—(संज्ञा, पु०) पैर के बीच का जोड़।

घूँटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घूँट] एक औषधि जो छोटे बच्चों को नित्य पिलायी जाती है। [घूँटी (दे०)] **मुहा० जन्म—**,बच्चे की उदर-शुद्धि के लिए दी जाने वाली औषधि।

घूँसा—(संज्ञा, पु०) [हि० घिस्सा] बँधी हुई मुट्ठी (मारने के लिए) और उनका प्रहार। मुक्का। डुक, घमाका।

घूआ—(संज्ञा, पु०, दे०) काँस, मूँज या सरकंड आदि का फूल। **भुवा** (ग्रा०)। एक कीड़ा जिसे बुलबुल आदि पक्षी खाते हैं। किवाड़ की चूल। घुवा।

घूक—(संज्ञा, पु०, सं०) उल्लू।

घूगस†—(संज्ञा, पु०, दे०) ऊँचा बुर्ज।

घूघ—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० घोघी, फ़ा० खोद] लोहे या पीतल की टोपी।

घूम—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० घूमना] घूमने का भाव या मन।

घूमना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० घूर्णनि] चारों ओर फिरना, चक्कर खाना, सैर करना, टहलना, देशान्तर मे भ्रमण या यात्रा करना। वृत्त की परिधि पर चलना। [कावा काटना (दे०)] मँड़राना, किसी ओर को मुड़ना, लौटना। **मुहा० घूम पड़ना**-सहसा क्रुद्ध हो जाना। *† उन्मत्त या मतवाला होना। [**घूमना-फिरना**]

घूर—(संज्ञा, पु०) [हि० घूरा] घूरा, कूड़े का ढेर। **लो०**—"घूर के लत्ता बिनै, कनातन का बौंत बाधै"।

घूरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० घूर्णनि] बार-बार आँख गड़ा कर बुरे भाव या क्रोध से एक टक देखना।

घूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कूट, हि० कूटा] कूड़े-करकट का ढेर, कतवारखाना।

घूराघारी—(संज्ञा, स्त्री०) घूरना, घूरने का कर्म।

घूर्णन—(संज्ञा, पु०, सं०) भ्रमण, सफर, घूरना।

घूर्णित—(वि०, सं०) भ्रमित, घुमाया गया। "लागत सर घूर्णित महि गिरहीं"—तुल०।

घूस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गुह्याशय] चूहों की जाति का एक बड़ा जन्तु। वह पदार्थ जो किसी को अनुकूल कार्य करने के लिए अनुचित रूप से दिया जाय, रिश्वत, उत्कोच, लाँच। (प्रान्ती०)।—**खोर**-(यौ०) घूस खाने वाला। [**घूसखोरी** (संज्ञा, स्त्री०)]

घृणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जुगुप्सा, घिन, नफरत।

घृणालु—(वि०, सं०) घृणायुक्त। घृणा करने वाला।

घृणास्पद—(वि०, सं०) घृणा करने योग्य।

घृणि—(संज्ञा, पु०, सं०) किरण। ज्वाला। पानी। तरंग। सूरज।

घृणित—(वि०, सं०) घृणा करने योग्य, जिसे देख या सुन कर घृणा उत्पन्न हो।

घृण्य—(वि०, सं०) निन्दनीय, तिरस्कार योग्य, घृणा के योग्य, घृणार्ह, घृणास्पद।

घृत—(संज्ञा, पु०, सं०) घी, पका हुआ मक्खन। [घिरत (दे०)]

घृतकुमारी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) घीकुवार। [घिग्वार (दे०)]

घृताची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अप्सरा।

घृष्ट—(वि०, सं०) घिसा या पिसा हुआ, घर्षित।

घृष्टि—(वि०, सं०) सुवर। विष्णुकान्ता औषधि।

घेघा—(संज्ञा, पु०, दे०) गले की नली जिससे भोजन और पानी पेट में जाता है। गले में सूजन होकर बतौड़ा सा निकल आने का रोग, गलगंड रोग।

घेतल, घेतला—(संज्ञा, पु०, दे०) जूती विशेष।

घेर—(संज्ञा, पु०) [हि० घेरना] चारों ओर का फैलाव, घेर, परिधि, चक्कर, घुमाव।

घेरघार—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० घेरना] चारों ओर से घेरने या छा जाने की क्रिया, फैलाव, विस्तार। खुशामद, विनती।

घेरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ग्रहण] किसी को चारो ओर से छेंकना और बाँधना। रोकना। आक्रांत करना, ग्रसना। चौपायों को चराना। किसी स्थान को अधिकार में रखना। खुशामद करना।

घेरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) पौधे के नीचे का (तुलसी का) थाला।

घेरा—(संज्ञा, पु०) [हि० घेरना] चारों ओर की सीमा, लम्बाई, चौड़ाई आदि का पूरा विस्तार या फैलाव। परिधि या सीमा की माप का जोड़ या मान। किसी स्थान के चारों ओर की वस्तु जैसे—दीवार आदि। घिरा हुआ स्थान, हाता, मंडल। सेना का किले या गढ़ के चारों ओर से छेंकने का काम, मुहासरा। (सा० भू० क्रि० स०) [हि० घेरना] घेर लिया। "रह गयी अब एक घेरे में घिरी"—मैथिली०।

घेराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घिराई।

घेराव—(संज्ञा, पु०, दे०) घिराव।

घेवना—(क्रि० स०, दे०) मिलाना, मिश्रण करना।

घेवर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घी+पूर] एक प्रकार की मिठाई। [घीवर (दे०)]

घैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घी या सं० घात] ताजे और बिना मथे हुए दूध पर तैरते हुए मक्खन के इकट्ठा करने की क्रिया। थन से छूटती हुई दूध की धार जो मुँह लगाकर पी जाय। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० घाई या घां] ओर, तरफ। चोट।

घैर, घैरु, घैरो†*—(संज्ञा, पु०, दे०) चबाव (ब्र०), बदनामी। अपयश। चुगुली।

घोंघा—(संज्ञा, पु०, दे०) शङ्ख जैसा एक कीड़ा। [शम्बुक (सं०)] (वि०) सारहीन। मूर्ख। [घोंघी (स्त्री०)]। "मुक्ता प्रसव कि शम्बुक ताली"—तुल०।

घोंटना—(क्रि० स०) [हि० घूँट, घोंट] घूँट-घूँट करके पीना। हजम करना। घोंटना, रगड़ना। याद करना, रटना।

घोंपना—(क्रि० स०) [अनु० घप] धसाना, चुभाना, गड़ाना। बुरी तरह सीना।

घोंसला, घोसला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कुशालय] पक्षियों के रहने का घास-फूस से बनाया हुआ स्थान, नीड़, खोता। **घोंसुआ** (ग्रा०)।

घोखना—(क्रि० स०, दे०) [सं० घुष] पाठ को बार-बार आवृत्ति करना, रटना, घोंटना, याद करना। [**घोखाई** (संज्ञा, स्त्री०)] [**घोखाना, घोखवाना** (प्रेरणा० रूप)]

घोघी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घुग्घी।

घोट, घोटक—(संज्ञा, पु०) [सं० घोटक] घोड़ा। "विकट घोटक की अपकारिता"—हरिऔध।

घोटना—(क्रि० स०, दे०) [सं० घुट=आवर्त्तन] चिकना या चमकीला करने या बारीक पीसने को बार-बार रगड़ना, बट्टे आदि से रगड़ कर परस्पर मिलाना। छल करना। डाँटना, फटकारना, (गला) इतना दबाना कि साँस रुक जाय। रटना। (संज्ञा, पु०) घोटने का औजार। [**घोटनी** (स्त्री०)]

घोटवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० घोटना का प्रेरणा० रूप] घोटने का काम दूसरे से कराना, घोटाना, रगड़वाना। [**घोटाना** (प्रेरणा० रूप)]

घोटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घोटना] वह वस्तु जिससे घोटा जाय। घुटा हुआ। चमकीला कपड़ा। रगड़ा, घुटाई। **गोट्टा** (ग्रा०)।

घोटाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० घोटना+आई प्रत्य०] घोटने का काम या मजदूरी।

घोटाला—(संज्ञा, पु०, दे०) घपला, गड़बड़।

घोट्टू—(संज्ञा, पु०, दे०) नम्र। मीठा, मधुर।

घोड़दौड़—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) घुड़दौड़।

घोड़साल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घुड़साल।

घोड़ा—(संज्ञा, पु०) [सं० घोटक, प्रा० घोड़ा] सवारी और गाड़ी आदि खींचने के काम का जानवर, अश्व, हय, बाजी, तुरङ्ग। शतरंज का एक मोहरा। **मुहा०—उठाना**-घोड़े को तेज दौड़ाना।—**कसना**-घोड़े पर सवारी के लिए जीन या चारजामा कसना।—**डालना**-वेग से घोड़ा बढ़ाना।—**निकालना**-घोड़े को सिखला कर सवारी के योग्य बनाना, घोड़े को चाल सिखाना।—**फेंकना**-वेग से घोड़ा दौड़ाना।—**बेच कर सोना**-खूब निश्चिन्त होकर सोना। वह पेंच या खटका जिसके दबाने से बन्दूक से गोली चलती है। भार सँभालने के लिए दीवाल में लगा हुआ खूँटा। शतरंज का एक

माहरा। [घोड़ी (स्त्री०)]—**गाड़ी**-(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० घोड़ा+गाड़ी] घोड़े से चलने वाली गाड़ी। —**नस**-(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० घोड़ा+नस] वह बड़ी मोटी नस जो एड़ी के पीछे से ऊपर को जाती है। [घोड़नस (दे०)]—**बच**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० घोड़ा+बच] खुरासानी बच (औषधि), घोड़-बच।

घोड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० घोड़ा+इया प्रत्य०] छोटी घोड़ी। दीवार में गड़ी खूँटी। छज्जे का भार सँभालने वाली टोपी। [घोरा (दे०)]

घोड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० घोड़ा] घोड़े की मादा। पायों पर खड़ी काठ की लम्बी पटरी। पाट। विवाह मे दूल्हा के घोड़ी पर चढ़ कर दुलहिन के घर जाने की रीति। [घोरी (दे०)]

घोर—(वि०, सं०) भयंकर, भयानक, विकराल। घना, दुर्गम। कठिन, कड़ा। गहरा, गाढ़ा। बुरा। बहुत ज्यादा। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० घुर] शब्द। गर्जन। ध्वनि।—**दुराचरण**-कुकर्म। निंद्य आचरण। [ग्रॉस मिसकांडक्ट]—**प्रमाद**-घोर असावधानी। [ग्रॉस नेग्लीजेन्स]

घोरना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० घोर] भारी शब्द करना, गरजना। घोलना। कष्ट देना।

घोरिला*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० घोड़ी] लड़कों के खेलने का घोड़ा (मिट्टी आदि का)।

घोल—(संज्ञा, पु०) [हिं० घोलना] घोल कर बनाया गया पदार्थ।

घोलना—(क्रि० स०) [हिं० घुलना] पानी या किसी द्रव पदार्थ में किसी वस्तु को हिला कर मिलाना, हल करना। [घोरना (दे०)]

घोष—(संज्ञा, पु०, सं०) अहीरों की बस्ती, अहीर। गोशाला। तट, किनारा। आवाज, नाद। गरजन का शब्द। शब्दों के उच्चारण मे एक प्रयत्न।—**विक्रेता**-नीलाम करने वाला। [आक्शनियर] (व्या०) एक जाति। [(विलो०)**अघोष**]

घोषक—(संज्ञा, पु०, सं०) विवरण देने वाला। घोषणा करने वाला। [गजेटियर]

घोषणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उच्च स्वर से किसी बात की सूचना। राजाज्ञा आदि का प्रचार, मुनादी या डुग्गी, ढिंढोरा। **अधिकार**—,(संज्ञा, पु०, यौ०) अधिकारों को स्पष्ट कर देना। [डिक्लेयरेशन आफ राइट्स]—**नीति**-नीति का प्रलापन, नीति को प्रकाश में लाना। [डिक्लेयरेशन आफ दी पालिसी]—**पत्र**-सर्वसाधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा-पत्र। गर्जन। ध्वनि, शब्द, आवाज।

घोषणीय—(वि०, सं०) प्रचारित करने योग्य। प्रकाशनीय। सूचनीय।

घोषाल—(संज्ञा, पु०) बंगाली कायस्थ एव अहीरों की जाति-विशेष का नाम।

घोषित—(वि०, सं०) प्रचारित। सूचित।—**पदाधिकारी**-उच्च सरकारी अधिकारी, राज्य का प्राचीन अधिकारी। [गजेटेड आफ़िसर]—**पर्व**-सरकारी छुट्टियाँ। [गजेटेड हाली डेज]

घोसी—(संज्ञा, पु०) [सं० घोष] अहीर।

घौद—(संज्ञा, पु०, दे०) फलों का गुच्छा। [घौर (दे०)]

घौदा—(संज्ञा, पु०, दे०) चुटैल, आहत।

घ्राण—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० घ्रेय] नाक से सूँघने की शक्ति। सुगन्धि।

घ्राणेन्द्रिय—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० घ्राण+इन्द्रिय] नासिका, नाक, गन्ध लेने की इन्द्रिय।

घ्रात—(वि०, सं०) गृहीत गन्ध। पुष्प आदि का गन्ध लेना। [(विलो०)**अनाघ्रात**]

घ्रातव्य—(वि०, सं०) सूँघने योग्य।

घ्रायक—(वि०, सं०) गन्ध-ग्राहक। सूंघने वाला।

ङ

ङ—संस्कृत और हिन्दी में कवर्ग का अन्तिम स्पर्श वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान कंठ और नासिका है। "अमङणनानाम् नासिका च"।

ङ—(संज्ञा, पु० सं०) सूँघने की शक्ति। गन्ध। सुगन्धित। भैरव।

च

च—संस्कृत या हिन्दी भाषा की वर्णमाला का २२वाँ अक्षर, द्वितीय वर्ग का प्रथम वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान तालु है। "इचुयशानाम् तालु"।

चंक—(वि०) [सं० चक्र] पूरा-पूरा, समूचा, सारा, समस्त, सम्पूर्ण, सर्वस्व।

चंक्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) इधर-उधर घूमना, टहलना।

चंक्रमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) टहलना, घूमना।

चंग—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) डफ के आकार का एक छोटा बाजा। (संज्ञा, पु०) गंजीफा का रङ्ग। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० चं=चन्द्रमा] पतङ्ग। गुड्डी। " नीच चंग सम जानिए "—तुल०

मुहा०—चढ़ना या उमड़ना-बढ़चढ़ कर बात होना। खूब जोर होना।—पर चढ़ाना-इधर-उधर की बात कह कर अनुकूल करना। मिज़ाज बढ़ा देना।

चँगना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चंगा, फ़ा० तंग] तंग करना। कसना। खीचना।

चंगा—(वि०) [सं० चंग] स्वस्थ, नीरोग। अच्छा, भला। सुन्दर, निर्मल, शुद्ध। [**चंगी** (स्त्री०)] [**भला-चंगा** (यौ०)] **लो०** "वैद बैदकी ही करै, चंगा कर भगवान"—[स्फुट०]। "नगा खुदा से चंगा"।

चंगु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चौ=चारि+अंगुल] चंगुल, पंजा। पकड़। वश।

चंगुल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चौ=चारि+अँगुल] चिड़ियों का टेढ़ा पंजा। अँगुलियों से किसी वस्तु के उठाते या लेते समय पंजे की स्थिति। बकोटा (ग्रा०)। **मुहा०—में फँसना (आना, पड़ना, होना)**—वश या पकड़ या काबू में आना।

चँगेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चंगेरिका] बाँस की छिछली डलिया या चौड़ी टोकरी, फूल रखने की डलिया। डगरी। चमड़े का जल-पात्र। मशक। पखाल। पालना। रस्सी में बाँध कर लटकाई हुई टोकरी जिसमे बच्चों को झुला कर सुलाते है।

चँगेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चगेर।

चंच*—(संज्ञा, पु०, दे०)। [**चंचु** (सं०)] चोंच।

चंचनाना—(अ० क्रि०) चुनचुनाना।

चंचरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भ्रमरी, भँवरी। चाँचरि। होली का एक गीत। हरिप्रिया छन्द, एक वर्णवृत्त (पिं०)। चचरा, चंचलो (ग्रा०)। विबुध प्रिया छंद (छब्बीस मात्राओं का) (पिं०)।

चंचरीक—(संज्ञा, पु०, सं०) भ्रमर, भौरा। "गुञ्जत चंचरीक मधु-लोभा"—तुला०। [**चंचरीकी** (स्त्री०)]

चंचरीकावली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) भ्रमर-पंक्ति, भ्रमर-समूह, भौरों का झुंड। १३ अक्षरों का एक वर्णवृत्त (पिं०)।

चंचल—(वि०, स्त्री०) [सं० चंचला] चलायमान, अस्थिर, हिलता, डोलता। अधीर। अव्यवस्थित, जो एकाग्र न हो। उद्विग्न, घबराया हुआ। चुलबुला, नटखट, चपल। "चंचल नयन छिपै न छिपाये"—[स्फु०]।

चंचलता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) अस्थिरता, चपलता, नटखटी, शरारत। [चंचलताई*, चंचलाई (दे०)] "मोहिं तजि पाँव-चंचलता धौं कहाँ गई"—पद्मा०। "खंजन को मीनन की चंचलाई आँखिन मे"—देव०।

चंचला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्ष्मी, बिजली। तड़ित, चपला। पीपर (औषधि)।

चंचलाई—(संज्ञा, स्त्री०) चंचलता।

चंचलारव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सुगंधित द्रव्य।

चंचा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चटाई। बेत की डलिया।

चंचु—(संज्ञा, पु०, सं०) एक शाक। चेंच (ग्रा०), रेंड़ का पेड़। मृग। (संज्ञा, स्त्री०) चिड़ियों की चोंच।—**प्रवेश**-(पु०) किसी विषय का केवल प्रारम्भिक ज्ञान।—**भृत्**-(संज्ञा, पु०, सं०) चिड़िया।—**सूची**-(संज्ञा, पु०, सं०) कारंडव नामक पक्षी।

चंचुका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चोंच।

चंचुमान—(सं०, पु०, सं०) पक्षी।

चंचुर—(वि०, सं०) दक्ष, चतुर।

चँचोरना—(क्रि० स०, दे०) चचोड़ना, चूसना।

चट—(वि०, दे०,) [सं० चड] चालाक, होशियार, धूर्त, सयाना। चाईं (ग्रा०)। [**चंटई**, **चंटी** (संज्ञा, स्त्री०)] [**चाईं-चन्ट** (यौ०)]

चंड—(वि०) [**चंडा** (सं०, स्त्री०)] तीक्ष्ण, उग्र, प्रचंड। प्रखर, बलवान। दुर्दमनीय, कठोर। कठिन, विकट। उद्धत, क्रोधी। (संज्ञा, पु०, सं०) **चंड**। ताप, गरमी। एक यमदूत। एक दैत्य। जिसे दुर्गा ने मारा था।—**कर**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्य्य, रवि।—**नायिका**-(स्त्री०, सं०) दुर्गा।—**मुंड**-शुंभ-निशुंभ के दो सेनापति राक्षस जिन्हे दुर्गा ने मारा था।—**मुंडा**-(स्त्री०) चामुंडा देवी।—**रश्मि**-(पु०) सूर्य।—**विक्रम**-(वि०) प्रतापी, पराक्रमी।—**शक्ति**-(वि०) प्रबल शक्तिवाला। बलि की सेना का एक दैत्य।—**शील**-(वि०) कामी।

चंडता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उग्रता। प्रबलता। घोरता। बल, प्रताप। [चंडताई (दे०)]

चंडरसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णवृत्त (पिं०)।

चंडवृष्टि-प्रताप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दंडक नामक एक वृत्त (पिं०)।

चंडांशु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्य्य, भानु। रवि। अंशुमाली, तीक्ष्णांशु।

चंडाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चंड=तेज] शीघ्रता, उतावली। प्रबलता। जबरदस्ती, अत्याचार। उग्रता। ज्यादती। अनाचार।

चंडाल, चाँडाल—(संज्ञा, पु०, सं०) श्वपच। भंगी, मेहतर। [**चंडालिनी, चंडालिनि** (स्त्री०)]

चंडालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा। एक प्रकार की वीणा।

चंडालिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चंडाल की स्त्री। दुष्ट या पापिनी स्त्री। चांडालिनी एक प्रकार का (दूषित) दोहा (पिं०)।

चंडावल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चंड+अवलि] सेना के पीछे का भाग। हरावल का उलटा। बहादुर सिपाही। संतरी।

चंडिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, गायत्री देवी। लड़ाकी स्त्री। चंडी।

चंडी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महिषासुर के बधार्थ धारण किया हुआ दुर्गा का रूप। कर्कशा और उग्र स्त्री। तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त (पिं०)। "कलौ चंडी विनायकौ"—[स्फु०]।

चंडीश—(संज्ञा, पु०, यौ०) [चंडी+ईश] शिवजी, चंडीपति, महेश। "तब चंडीश दीन्ह बरदाना"—सर०।

चंडू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चंड=तीक्ष्ण] अफ़ीम का किवाम जिसका धुआँ नशे के लिए एक नली के द्वारा पीते हैं।—**खाना**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० चंडू+खाना फ़ा०] चंडू पीने का स्थान। —**बाज**-(संज्ञा, पु०) [हि० चंडू+बाज फ़ा०] चंडू पीने वाला। **मुहा०—खाना (ने) की गप**— मतवालों की झूठी बकवाद। निरी झूठ बात।

चंडूल—(संज्ञा, पु०, दे०) खाकी रङ्ग की एक छोटी चिड़िया जिसे लोग पालते हैं। "भे पंछी चंडूल"—तुल०।

चंडोल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चंद्र+दोल] एक पालकी। डोली। शिविका।

चंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चंद्र] चन्द्र, हिन्दी भाषा के बहुत पुराने कवि जो पृथ्वीराज के मित्र और सामन्त थे, जिन्होंने रासो नाम का ग्रन्थ रचा। "**कवी कव्यचंद सु माधौ नरिंद**।" (वि०, फ़ा०) थोड़े से, कुछ।

चंदक—(संज्ञा, पु०) [सं० चंद्र] चन्द्रमा। चाँदनी। चाँद नाम की मछली। माथे का एक अर्ध चन्द्राकार गहना। नथ में पान-जैसा एक साज। [**केहरि की चन्दक** (यौ०)]

चंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक सुगंधित वृक्ष और उसकी लकड़ी जो देव-पूजन और तिलक आदि में प्रयुक्त होती है। श्रीखंड। संदल। घिसे हुए चन्दन का लेप। छप्पय छन्द का तेरहवाँ भेद (पिं०)। "अनल प्रगट चंदन तें होई" —तुल०। [**चन्दनचर्चित** (यौ०, वि०)] —**गिरि**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मलयाचल। —**हार**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चन्द्रहार।

चंदना—(संज्ञा, पु०, दे०) चन्द्रमा, चाँदना। "रसिक चकोरन हेतु सुप्रगट्यो चंदना"— अलबेली०।

चँदनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चाँदनी, चंद्रिका।

चँदनौता—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का लहँगा।

चँदराना—(अ० क्रि०) जानकर भी अनजान की तरह पूछना।

चँदला—(वि०, दे०) [हि० चाँद=खोपड़ी] गंजा। [चँदुवा, चँदवा (दे०)]

चँदवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चंद्र] एक प्रकार का छोटा मंडप। चँदोवा (ग्रा०)। शामियाना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चंद्रक] गोल चकती। मोर के पंख पर अर्द्ध चन्द्राकार चिह्न। गंजा।

चंदवान—(संज्ञा, पु०, दे०) चन्द्र-बाण।

चँदवाना‡—(क्रि० स०, दे०) [सं० चंद दिखलाना] बहकाना। बहलाना। जान बूझ कर अनजान बनना।

चंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चंद्र या चंद्र] चन्द्रमा। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० चंद=कई एक] कई आदमियों से थोड़ा-थोड़ा लिया जाने वाला धन, बेहरी। उगाही। सामयिक पत्र, पुस्तकादि का वार्षिक मूल्य।

चंदावत—(संज्ञा, पु०) क्षत्रियों की एक शाखा विशेष।

चंदावती—(संज्ञा, स्त्री०) एक रागिनी विशेष।

चंदिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चन्द्रिका।

चंदिनि, चंदिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चंद्र] चाँदनी। चन्द्रिका, चाँदनि। "चोरहिं चाँदनि राति न भावा"—तुल०।

चंदिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चाँद] खोपड़ी, सिर का मध्य भाग। एक मिठाई।

चंदिर—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा।

चँदेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चेदि, हिं० चंदेल] ग्वालियर राज्य का एक प्राचीन नगर। चेदि देश की राजधानी।—**पति**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिशुपाल।

चंदेल—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षत्रियों की एक शाखा, जो पहिले कालिंजर और महोबे में राज्य करती थी।

चँदोया, चँदोवा—(संज्ञा, पु०, दे०) चँदवा, शामियाना। चाँदनी। "रतन दीप सुठि चारु चँदोवा"—पद्मा०।

चंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) कलाधर, विभाकर, चन्द्रमा, मयंक, मृगाँक। एक की संख्या। मोर-पंख की चन्द्रिका। जल। कपूर। सोना। १८ द्वीपों में से एक द्वीप (पुरा०)। अनुनासिक वर्ण के ऊपर की बिन्दी। टगण का दसवाँ भेद (।।ऽ) (पिं०)। हीरा। आनन्ददायी वस्तु। (वि०) आनन्द-दायक, सुन्दर।—**कर**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चंद्ररश्मि।—**कला**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) चन्द्रमंडल का सोलहवाँ अंश। चन्द्रमा की किरण या ज्योति। एक वर्णवृत्त (पिं०)। माथे का गहना।—**कांत**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक मणि या रत्न जो चन्द्रमा के सामने पसीजता है। "चंदकांत आवैं प्रथम जो सबके शृंगार"—मैथिली०। [**सूर्यकान्त** (विलो०)]—**कान्ता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चन्द्रमा की स्त्री, रात्रि। १५ अक्षरों की एक वर्णवृत्त (पिं०)।—**कुल**-(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रवंश।—**गुप्त**-(संज्ञा, पु०, सं०) चित्रगुप्त। मगधदेश का प्रथम मौर्य्य-वंशी राजा। गुप्त-वंश का एक प्रसिद्ध राजा (इति०)।—**ग्रहण**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा का ग्रहण। [**सूर्यग्रहण** (विलो०)]—**चूड़**-(संज्ञा, पु०, सं०) शिवजी।—**जोति**, —**ज्योति**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० चंद्र+ज्योति] चन्द्र-प्रकाश, चाँदनी, चंद्रिका, कौमुदी।—**धनु**-(संज्ञा, पु०, सं०) रात्रि में चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकट इन्द्र-धनुष। चन्द्रमंडल।—**धर**-(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, शशिधर, चंद्रभाल, चंद्रमौलि।—**प्रभा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चन्द्रज्योति, चाँदनी, चन्द्रिका कौमुदी।—**बाण**-(संज्ञा, पु०, सं०) अर्द्ध चन्द्राकार फलवाला बाण, चंद्रशर, चंद्राशुरा।—**बिंब**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा का मंडल।—**भागा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पंजाब की चनाब नामी नदी।—**भाल**-(संज्ञा, पु०, सं०) शिवजी।—**भूषण**-(संज्ञा, पु०, सं०) महादेव जी, चंद्राभरण।—**मणि**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रकांत मणि। उल्लाला छंद (पिं०)।—**माला**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २८ मात्राओं का एक छंद (पिं०)।—**मौलि**-(संज्ञा पु०, सं०) शिवजी।—**रेखा**,—**लेखा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चन्द्रमा की कला या किरण। द्वितीया का चन्द्रमा। एक वर्णवृत्त (पिं०)।—**लोक**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा का लोक।—**वंश**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्र-कुल, क्षत्रियों के दो आदि वंशों में से एक जो पुरूरवा से आरम्भ हुआ था। "सूर्यवंश की वधू चंद कुल की है कन्या"—रत्ना०।—**विंदु**-(संज्ञा, पु०, सं०) अर्द्ध अनुस्वार की बिन्दी (ँ)—**वर्त्म**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्णवृत्त (पिं०)।—**वधू**,—**वधूटी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वीर-बहूटी नामक लाल रंग का कीड़ा। चंद्रमा की स्त्री। "धरती कहँ चन्द्रवधू धरि दीन्ही"—केशव। [चद्रबधू, चदवधूटी (दे०)]—**वार**-(संज्ञा, पु०, सं०) सोमवार।—**शाला**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चाँदनी, सबसे ऊपर की कोठरी।—**शेखर**-(संज्ञा, पु०, सं०) शिवजी। [चन्दशेखर (दे०)]—**हार**-(संज्ञा, पु०, सं०) गले की एक माला, नौलखा हार। चन्दहार। "कानन को कुंडल, उरो-जन को चदहार"—कालि०।—**हास**-(संज्ञा, पु०, सं०) असि, खड्ग, रावण की तलवार। "चन्द्रहास मम हरु परितापा"—तुल०।

चंद्राकित—(संज्ञा, पु०, सं०) महादेव।

चंद्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा विधु, शशांक, शशि, इंदु, द्विजराज, निशाकर, राकेश, नक्षत्रेश, औषधीश, सुधांशु, हिमांशु, शीतांशु [चंदक (दे०)] चन्द्रमा का सा मंडल या घेरा। चन्द्रिका, चाँदनी। मोर-पंख की चन्द्रिका। नाखून। कपूर।

चंद्रमा—(संज्ञा, पु०) [सं० चंद्रमस्] सूर्य से प्रकाशित रात्रि को प्रकाश देने वाला पृथ्वी का उपग्रह, चांद, शशि, विधु, इंदु, मयंक।—**ललाम**-(संज्ञा, पु०) [सं० चंद्रमा+ललाम=भूषण] महादेव जी।

चंद्रा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चंद्र] मरने के समय टकटकी बँध जाने की दशा। **मुहा०**-चंद्रा लगना।

चंद्रातप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चाँदनी, चन्द्रिका, चाँदनी का ताप। चँदोवा, वितान।

चंद्रात्मज—(संज्ञा, पु०, सं०) बुध।

चंद्रानन—(वि०, सं०) चंद्र सा मुखवाला। "कार्त्तिकेय चंद्रानन था दमक रहा"—हरिऔध।

चंद्रापीड़—(संज्ञा, पु०, सं०) उज्जैन के राजा तारापीड़ के पुत्र। राहु।

चंद्रायण—(संज्ञा, पु०) [सं० चांद्रायण] व्रत विशेष, चांद्रायण व्रत।

चंद्रायतन—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रशाला।

चंद्रालोक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चंद्रिका, कौमुदी, चंद्रप्रभा। अलंकारों का एक प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ।

चंद्रावती—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्णवृत्त (पिं०)।

चंद्रावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राधा की सखी।

चंद्रिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चन्द्रमा का प्रकाश, चाँदनी, कौमुदी। मोर-पक्ष का गोल चिह्न। इलायची। जूही या चमेली। एक देवी। एक वर्ण-वृत्त (पिं०)। माथे का एक भूषण, बेंदी। बेंदा, मुकुट के चारों ओर रहने वाला एक गोल आभूषण।

चंद्रोज्वला—(वि०, सं०) चंद्र की तरह उज्वल या निर्मल।

चंद्रोदय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चँदोवा। चंद्रमा का उदय। एक रसायन (वै०)। "मुख चंद्रोदय आखिरी इलाज है उचारे देत"—रत्ना०। "छिपी रहूँ निस्पृह, निर्भय कहूँ-दिखा दे चंद्रोदय"—पंत।

चंद्रोपराग—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रग्रहण।

चंपई—(वि०, दे०) [हि० चंपा] चंपा के फूल के रंग का, पीले रंग का।

चंपक—(संज्ञा, पु०, सं०) चंपा। चंपा के फूल। सांख्य में एक सिद्धि। [**चंपकलता** (यौ०)]

—माला-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्ण वृत्त। (पिं०)।

चंपत—(वि०, दे०) चलता, गायब, अन्तर्धान, अदृष्टिगोचर।

चँपना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चप्] बोझ से दबना। उपकार आदि से दबना।

चंपा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चंपक] हलके पीले रंग और कड़ी महक के फूलों का एक छोटा पेड़। अंग देश की प्राचीन राजधानी। एक मीठा केला। घोड़े की एक जाति। रेशम का कीड़ा। "चंपा तो मैं तीन गुन"।—**कली**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हि०, चंपा + कली] स्त्रियों के गले का एक गहना।

चंपारण्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वर्तमान चंपारन। चंपा का वन।

चंपारन—(संज्ञा, पु०) [सं० चम्पारण्य] विहार का एक जनपद।

चंपू—(संज्ञा, पु०, सं०) गद्य-पद्य युक्त काव्य। "गद्य-पद्यमयी वाणी चंपूरित्यभिधीयते"।

चंबल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०)[सं० चर्मण्वती] एक नदी। नालों के किनारे की एक लकड़ी जिससे सिंचाई के लिए पानी ऊपर चढ़ाते हैं।

चँवर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चामर] डाँड़ी में लगा हुआ सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा, जो राजाओं या देवमूर्तियों पर डुलाया जाता है। [**चँवरी** (स्त्री०, अल्पा०)] **मुहा०—ढलना (ढारना, चलना)**-ऊपर चँवर हिलाया जाना। घोड़ों-हाथियों के सिर पर लगाने की कलँगी, झालर, फुँदना। [चौंर (दे०)]—**ढार**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चँवर + ढारना] चँवर डुलाने वाला सेवक।

चंसुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चंद्रशूर] हालों या हालिम नाम का पौधा।

च—(संज्ञा, पु०, सं०) कच्छप, कछुआ। चंद्रमा। चोर। दुर्जन। (अ०) और।

चउहट्ट*—(संज्ञा, पु०, दे०) चौक, (बाजार का) चौहट्ट। "चउहट्ट हाट, बजार, बीथी चारु पुर बहु बिधि बना"—तुलसी।

चक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र] चकई। खिलौना। चक्रवाक पक्षी। [चकवा (दे०)] चक्र अस्त्र। चक्का, पहिया। बड़ा भूभाग। पट्टी, छोटा गाँव, खेड़ा, पुरवा। किसी बात की निरंतर अधिकता। अधिकार, दखल। (वि०) भरपूर, अधिक। (वि०, सं०) चकपकाया हुआ। "संपति चकई भरत चक"—तुल०।—**चाल**-(संज्ञा, स्त्री०) चक्कर।—**डोर**-(संज्ञा, स्त्री०) चकई की डोरी।—**फेरी**-(स्त्री०) परिक्रमा।—**बंदी**-(संज्ञा, स्त्री०) छोटे-छोटे अनेक भूमि-खंडों को मिलाकर एक बड़ा खंड बनाना।—**बस्त**-(वि०) चकों मे विभक्त। काश्मीरी ब्राह्मणों की एक उपजाति।

चकई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चकवा] मादा चकवा या सुरखाब, चक्रवाकी। "लखि चकई चकवान"—बिहारी। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० चक्र] एक गोल खिलौना। [**चकही** (यौ०)]

चकचक, चखचख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कहासुनी, गर्मागर्मी, सरोष बातचीत।

चकचकाना– (क्रि० अ०, दे०, अनु०) किसी द्रव पदार्थ का सूक्ष्म कणों के रूप में किसी वस्तु के भीतर से निकलना, रस-रस कर ऊपर आना। भीग जाना।

चकचकी—(संज्ञा, स्त्री०) करताल।

चकचाना*†—(क्रि० अ०, अनु०) चौंधियाना, चकचौंध लगना।

चकचाव†*—(संज्ञा, पु०, अनु०) चकाचौंध।

चकचून—(वि०, दे०) [सं० चक्र+चूर्ण] चूर किया या पिसा हुआ, चकनाचूर।

चकचौंध, चकचौंधी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चकाचौंध*। "चख चकचौंध चलेयौं"।

चकचौंधना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चक्षुष+अंध] आँखों का अधिक प्रकाश के सामने ठहर न सकना, चकाचौंध होना। (क्रि० स०) चकाचौंधी उत्पन्न करना।

चकड़वा—(संज्ञा, पु०, दे०) चकल्लस, झगड़ा।

चकती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चक्रवत्] चमड़े, कपड़े आदि का गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा। पट्टा। टूटे-फूटे स्थान के बंद करने के लिए लगी हुई पट्टी या धज्जी। थिगली, थिगरी (ग्रा०)। **मुहा० बादल में—लगाना**-अनहोनी बात या काम के करने का प्रयत्न करना।

चकत्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र+वर्त्त] रक्त-विकार आदि से शरीर पर पड़े गोल दाग। खुजलाने आदि से हुई चमड़े के ऊपर चिपटी सूजन, ददोरा। दाँतों से काटने का चिह्न। (संज्ञा, पु०) [तु० चग़ताई] मुगल या तातार-अमीर चग़ताई खाँ, जिसके वंश में बाबर आदि मुग़ल बादशाह हुए। चकताई वंश का पुरुष। "चौंकै चकत्ता सुने जाकी बड़ी धाक है" — भूषण।

चकना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चक्र+भ्रांत] चकित या भौचक्का होना, चकपकाना, चौकन्ना या आश्चर्यित होना।

चकनाचूर—(वि०, दे०) [हिं० चक=भरपूर+चूर] टूट-फूट कर बहुत से छोटे-छोटे टुकड़े हो गया हुआ। चूर-चूर, खंड-खंड, चूर्णित। बहुत थका हुआ।

चकपकाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चक्र+भ्रांत] आश्चर्य से इधर-उधर ताकना, भौचक्का या चौकन्ना होना।

चकमक—(संज्ञा, पु०, तु०) एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिस पर लोहे की चोट पड़ने से आग निकलती है।

चकमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र+भ्रांत] भुलावा, धोखा। हानि, नुकसान।

चकर†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र] चक्रवाक या चकवा पक्षी। चक्र।

चकरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र-व्यूह] कठिन स्थिति। असमंजस, बखेड़ा। [**चक-रवा**-(यौ०)] चक्रवाक का-सा शब्द वाला।

चकराना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चक्र] दिमाग का चक्कर खाना, सिर घूमना। भ्रांत या चकित होना। आश्चर्य में पड़ना, विस्मित होना। चकपकाना, घबराना। [चकाना (दे०)] (**क्रि० स०**) आश्चर्य्य में डालना, विस्मित करना।

चकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चक्री] चक्की। चकई खिलौना। एक आतशबाजी। (वि०) चक्की सा घूमने वाला। भ्रमित। अस्थिर, चंचल।

चकला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र, हिं० चक+ला प्रत्य०] रोटी बेलने का पत्थर या काठ का गोल पाटा। चौका। चक्की-इलाका। जिला। व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा। [**चकली** (वि०, स्त्री०)] (वि०) चौड़ा।—**खाना**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० चकला+खाना फ़ा०] वेश्याओं या कुलटाओं का स्थान।

चकली, चकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चक्र हिं, चक्र] घिरनी, गड़ारी। छोटा चकला। होरसा (प्रान्ती०)। (वि०, स्त्री०) चौड़ी।

चकलेदार—(संज्ञा, पु०, दे०) किसी प्रदेश का शासक या कर-संग्रह करने वाला।

चकवड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्रमर्द] एक बरसाती पौधा, पमार, पवाँर। चकौड़ा, चकउड़ (ग्रा०)।

चकवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्रवाक]

चकवाना*†—(क्रि० अ०, दे०) चकपकाना।

चकहा†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र] पहिया, चक्र, चक्का। रथ चक्र।

चका†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र] पहिया। चाका, चक्का, चाक। चकवा पक्षी। चकला।

चकाचक—(वि०, अनु०) सराबोर, लथपथ। (क्रि० वि०) खूब, भरपूर।

चकाचकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कहासुनी, सरोष बातचीत।

चकाचौंध—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चक्र=चमकना+चौं=चारों ओर+अंध] अत्यन्त अधिक चमक के सामने आँखों की झपक, तिलमिलाहट, तिलमिली । चकचौंह, चकचौंध (ग्रा०) ।

चकाना*—(क्रि० अ०, दे०) चकपकाना, चकराना, आश्चर्य मे आना, विस्मित होना ।

चकाबू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र-व्यूह] एक के पीछे एक कई मंडलाकार पंक्तियों से सैनिकों की स्थिति, व्यूह । भूलभुलैया । "तीरनि सों काबू कियौ सकल चकाबू कौ"—सरस ।

चकित—(वि०, सं०) चकपकाया हुआ, विस्मित, दंग, हक्का-बक्का, हैरान, घबराया हुआ । चौकन्ना, सशंकित । डरा हुआ । कायर । आकुलित । चकित । "चितवति चकित चहूँ दिसि सीता"—तुल० ।

चकुला†*—(संज्ञा, पु०, दे०) चिड़िया का बच्चा । चेंटुवा ।

चकृत⊗—(वि०, दे०) चकित ।

चकेरा—(वि०, दे०) चखेरा । बड़ी आँख वाला ।

चकोटना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चिकोटी] चुटकी से माँस नोचना, चुटकी काटना ।

चकोतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र=गोला] एक प्रकार का बड़ा नीबू, चकोत्रा ।

चकोर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक बड़ा पहाड़ी तीतर, जो चन्द्रमा का प्रेमी और अंगार खाने वाला प्रसिद्ध है । [**चकोरी** (स्त्री०)] "ज्यों चकोर ससि जोर तें लीलै विषम अँगार"—वृं० । "देखहिं विधु चकोर-समुदाई"—तुल० ।

चकौंड—(संज्ञा, पु०, दे०) एक बरसाती पौधा, जिसकी पत्तियों का रस दाद रोग का नाशक है । चकौंड़ा, चकौदा । चकौंड़ा, चकउँड़ (ग्रा०) ।

चक्क—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र] चक्रवाक, चकवा । चक्र । कुम्हार का चाक, चक्की । पहिया ।

चक्कवा—(संज्ञा, पु०, दे०) चक्रवर्ती राजा । "मानौ काम चक्कवे के विक्रम कवित्त है"—सेना० ।

चक्कर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र] पहिये के आकार की कोई (विशेषतः) घूमने वाली बड़ी गोल चीज । मंडलाकार पटल या गति । चाक । गोला घेरा । मंडल । परिक्रमण, फेरा, पहिये सा भ्रमण । अक्ष पर घूमने की स्थिति । भूल भुलैयाँ । झंझट, उलझन । [**चक्करदार** (वि०)] **मुहा०—काटना (लगाना)**-परिक्रमा करना, मँडराना, चक्कर खाना । पहिये के समान घूमना, भटकना, भ्रांत या हैरान होना । चलने में अधिक घुमाव या दूरी । फेर, हैरानी । असमंजस । पेंच, जटिलता, दुरूहता । (**किसी के)—में आना (पड़ना)**—किसी के धोखे में आना, या पड़ना । सिर घूमना, घुमरी, घुमटा । पानी का भँवर । जंजाल । [**चक्कर-मक्कर** (यौ०)]

चक्का—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चक्र, प्रा० चक्क] पहिया, चाका । पहिये सी गोल वस्तु । बड़ा चिपटा, टुकड़ा या कतरा ।

चक्की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चक्री] आटा पीसने या दाल दलने का यंत्र । जाँता । "घर की चक्की कोई न पूजै"—कबीर । **मुहा०—पीसना**-कड़ा परिश्रम करना । [संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चक्रिका] पैर के घुटने की गोल हड्डी । बिजली । वज्र ।

चक्कू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चाकू, छूरी ।

चक्र—(संज्ञा, पु०, सं०) पहिया, चक्का । [चाका (दे०)] चाक, कुम्हार का चाक । चक्की, जाँता । तेल पेरने का कोल्हू । पहिये सी गोल वस्तु । एक पहिये सा लोहे का अस्त्र । विष्णु (कृष्ण) का अस्त्र । पानी की भँवर । वायु-चक्र, बवडर । समूह, मंडली । एक व्यूह या सेना की स्थिति । मंडल, प्रदेश, राज्य । एक सिन्धु से दूसरे तक फैला हुआ प्रदेश । आसमुद्रांत भूमि । चक्रवाक, चकवा । योग के अनुसार शरीरस्थ पद्म । अँगुलियों के सिरों पर चक्र-चिह्न (सामु०) । फेरा । भ्रमण, घुमाव, चक्कर । दिशा । प्रांत । एक वर्ण वृत्त । [**काल-चक्र, भाग्य-चक्र, आलात-चक्र** (यौ०)] **—तीर्थ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दक्षिण में ऋष्यमूक पर्वत के बीच तुंगभद्रा नदी के घुमाव पर एक तीर्थ । नैमिषारण्य का कुंड ।**—तोप**-(संज्ञा, पु०, यौ०) लगातार गोली छोड़ने वाली बंदूक । [मशीनगन]**—धर**-(वि०, यौ०, सं०) जो चक्र धारण करे । (संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु । श्रीकृष्ण । बाजीगर । इन्द्र-जाल करने वाला । कई ग्रामों या नगरों का स्वामी, चक्रधारी ।**—पाणि**-(संज्ञा, पु० सं०) विष्णु । श्रीकृष्ण । "सर्वान्तटति जलनिधींश्चक्रपाणिर्मुकुंदः ।"**—पूजा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तांत्रिकों की एक पूजा-विधि ।**—भृत्**-(संज्ञा, पु०, सं०) चक्रधर । विष्णु ।**—मर्द**-(संज्ञा, पु०, सं०) [चकवेंड (दे०)]**—मुद्रा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चक्र आदि विष्णु के आयुधों के चिह्न जो वैष्णव अपने बाहु आदि अंगों पर छपवाते है ।**—वर्ती**-(वि०) [सं० चक्रवर्त्तिन्] आसमुद्रांत भूमि

पर राज्य करने वाला, सार्वभौमराजा। [चक्कवई, चक्कवै (दे०)] [**चक्रवर्त्तिनी** (स्त्री०)]—**वाक**—(संज्ञा, पु०, सं०) चकवा पक्षी। [**चक्रवाक-बन्धु**—(यौ०) सूर्य] "देखिय चक्रवाक खग नाहीं"—तुल०। [**चक्रवाकी** (स्त्री०)]—**वात**—(संज्ञा, पु०, सं०) वेग से चक्कर खाती हुई वायु, वात-चक्र, बवंडर। बगूला।—**वृद्धि**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ब्याज पर भी ब्याज लगाने का विधान। सूद दर सूद, ब्याज पर ब्याज।—**व्यूह**—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राचीन युद्ध में किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिए उसके चारों ओर कई घेरों में सेना की चक्करदार या कुंडलाकार स्थिति। [चक्राबू (दे०)] **मुहा०** —**चलाना**—धोखा देना। उलझन पैदा करना। माया रचना, चालाकी का विधान बनाना।

चक्रांकित—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० चक्र+अङ्कित] बाहु पर चक्र-चिह्न छपाये वैष्णव, रामानुजानुयायी।

चक्रांग—(संज्ञा, पु०, सं०) गाड़ी। रथ। चकवा। हंस।

चक्रांगा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुदर्शना नाम की लता, काकड़ासिंगी।

चक्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समूह, गिरोह।

चक्राकार—(वि०, सं०) चक्र की तरह चलने वाला। चक्राकार कलरव। तरङ्गों के मध्य में...—[अपरा]।

चक्रानुवर्तन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चक्कर काटना, फिरना। [रोटेशन]

चक्रायुध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विष्णु। कृष्ण। चक्रधारी।

चक्रित*—(वि०, सं०) चकित।

चक्री—(संज्ञा, पु०) [सं० चक्रिन्] चक्रधारी विष्णु। गाँव का पंडित या पुरोहित। चक्रवाक। कुम्हार। सर्प। जासूस। मुखबिर। चर। तेली। चक्रवर्ती। चक्रमई, चकबंड़।

चक्रीय—(वि०, सं०) चक्र की तरह घूमने वाला। [साइक्लिक]

चक्रेला—(वि०, सं०) चक्राकार, गोल।

चक्षु—(संज्ञा, पु०) [सं० चक्षुस] दर्शनेंद्रिय, आँख, चख। वर्तमान आक्सस या चेहूँ नदी।

चक्षुष्य—(वि०, सं०) नेत्र-हितकारी (औषधि आदि)। सुन्दर। नेत्र-सम्बन्धी, चाक्षुष।

चख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्षुस्] आँख। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) झगड़ा, कलह। [**चख-चख** (यौ०)] तकरार, कहासुनी, [**चखन** (बहु० व०)] "दिये लोभ चसमा चखन"—बिहारी।

चखचौंध—(संज्ञा, स्त्री०) चकाचौंध।

चखना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चष] स्वाद लेना, आस्वादनार्थं मुँह में रखना।

चखाचखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० चख=झगड़ा] लागडाँट, विरोध, वैर।

चखाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चखना का प्रेरणा० रूप] खिलाना, स्वाद दिलाना।

चखैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० चख+ऐया प्रत्य०] चखने या स्वाद लेने वाला।

चखोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चख+ओड़ा प्रत्य०] दिठौना, डिठौना।

चगड़—(वि०, दे०) चतुर, चालाक। चघड़, चाघरी (ग्रा०)।

चग़ताई—(संज्ञा, पु०, तु०) चगताई खाँ का एक तुर्की वंश, मुगल।

चगलाना—(क्रि० स०, दे०) चबाना, चलाना, दाँतों से पीस कर खाना।

चचर—(संज्ञा, स्त्री०) एक साल से जोत में आने वाली परती जमीन।

चचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तात] बाप का भाई, पितृव्य, चाचा। [काका (दे०)] [**चाची, चची** (स्त्री०)]

चचिया—(वि०) [हि० चचा] चाचा के बराबर का सम्बन्ध रखने वाला।—**ससुर**—(संज्ञा, पु०) पति या पत्नी का चाचा।—**सास**—(संज्ञा, स्त्री०) सास की देवरानी।

चचींड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चिचिंड] तोरई की सी एक तरकारी। चिचंडा (ग्रा०)।

चचीर—(संज्ञा, पु०, दे०) रेखा, लकीर। डाँड़ी।

चचुलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चेंचड़ा।

चचेरा—(वि०, दे०) [हि० चचा+एरा प्रत्य०] चाचा से उत्पन्न, चाचाजाद, जैसे चचेरा भाई। [**चचेरी** (स्त्री०)]

चचोड़ना, चचोरना—(क्रि० स०, दे०) दाँतों से खींच-खोंच या दबा-दबा कर चूसना, चिचोरना। "कहूँ स्वान इक अस्थि-खंड लै चाटि चिचोरत"—रत्ना०।

चट—(क्रि० वि०, दे०) ([सं० चटुल=चंचल] झट, तुरन्त, शीघ्र, फौरन। [**चटकई** (संज्ञा, दे०)] शीघ्रता। * (संज्ञा, पु०, दे०) [सं०

चित्र] दाग, धब्बा। घाव का चकता। (संज्ञा, स्त्री०, अनु०) टूटने का शब्द, अँगुलियों को मोड़ कर दबाने का शब्द। (वि०) [हिं० चटना] चाट-पोंछ कर खाया हुआ। **—शाला** –(संज्ञा, स्त्री०) पाठशाला। [**चटसार**(अ०)] **मुहा०—करना (कर जाना)**–सब खा जाना। दूसरे को वस्तु लेकर न देना।

चटक—(संज्ञा, पु०, सं०) गौरा पक्षी, गौरवा, गौरैया, चिड़ा। [**चटका** (स्त्री०)] [**चटकदार** (संज्ञा, स्त्री०)] [सं० चटुल=सुन्दर] चटकी लापन, चमक-दमक, कांति। "जो चाहौ चटक न घटै"—बिहारी। (वि०) [**चटकीला, चमकीला** (संज्ञा, स्त्री०)] [सं० चटुल] तेजी, फुरती। चटकई (ग्रा०)।**—मटक**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० चटक+मटक] बनाव, सिंगार, वेशविंयास, हावभाव, नाज-नखरा।

चटकना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० चट] चट-चट शब्द से टूटना या फूटना, तड़कना, कड़कना। कोयले, गंठीली लकड़ी आदि का जलते समय चटचट करना। चिड़चिड़ाना, झुँझलाना। दरार पड़ना, स्थान-स्थान पर फटना। कलियों का फूटना या खिलना, प्रस्फुटित होना। अनबन होना, खटकना। (संज्ञा, पु०) [अनु० चट] तमाचा, थप्पड़। [चटकन (दे०)]

चटकनी—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु० चट] सिटकिनी।

चटका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चट] फुरती, शीघ्रता। अति तृषा की व्याकुलता।

चटकाना—(क्रि० स०) [अनु० चट] कोई वस्तु चटका देना, तोड़ना। उँगलियों को खींचते या मोड़ते हुए दबा कर चटचट शब्द निकालना। बार-बार टकराना जिससे चटचट शब्द निकले। चटकना का प्रेरणा० रूप। **मुहा० जूतियाँ—**,जूते घसीटते हुए फिरना, मारा-मारा फिरना।

चटकारा—(वि०, दे०) [सं० चटुल] चटकीला, चमकीला। चञ्चल, चपल, तेज। (वि०) [अनु० चट] स्वाद से जीभ चटकाने का शब्द।

चटकारी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) कलियों के चिटखने का शब्द। ......"जगावत गुलाब चटकारी दै" —देव०।

चटकाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चटक+आलि] गौरयों या चिड़ियों की पंक्ति।

चटकाहट—(संज्ञा, स्त्री०) चटकने या बिगड़ने का भाव, चटकना।

चटकीला—(वि०) [हिं० चटक+ईला प्रत्य०] खुलते रंग का, शोख, भड़कीला, चमकीला, चमकदार, आभायुक्त। चरपर, चटपट, मजेदार [**चटकीली** (स्त्री०)]

चटकोरा—(संज्ञा, पु०) छोटे बच्चों का खिलौना।

चटखना—(क्रि० स०, दे०) देखिए 'चटकना'।

चटचट—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) चटकने का शब्द। [चटाचट (दे०)]

चटचटाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चट=भेदन] चटचट करते हुए टूटना या फूटना, कोयले, लकड़ी आदि का चटचट शब्द करते हुए जलना।

चटचटिया—(वि०, दे०) चञ्चल, उतावला। [हरबरिया (दे०)]

चटनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चाटना] चाटने की वस्तु, अवलेह। भोजन का स्वाद बढ़ाने वाली गीली चरपरी वस्तु। **मुहा०—चटाना**–मारना, पीटना।

चटपट, चटापट—(क्रि० वि०, अनु०) शीघ्र, जल्दी। [**चटपटाहट** (संज्ञा, स्त्री०)]

चटपटा—(वि०, दे०) [हिं० चाट] (स्त्री० चटपटी) चरपरा, तीक्ष्ण स्वाद का, मजेदार। (संज्ञा, पु०) चाट, खोंचा।

चटपटाना—(क्रि० अ०, दे०) व्याकुल होना, फड़फड़ाना, तड़फड़ाना।

चटपटाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) व्याकुलता, शीघ्रता, आतुरता।

चटपटिया—(वि०, दे०) फुर्तीला। चतुर।

चटपटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उतावली, घबराहट, चञ्चलता। (वि०) स्वादिष्ट, मजेदार, चरपरी।

चटवाना—(क्रि० स०, दे०) [चाटने का प्रेरणा० रूप] चटाना।

चटाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० कट=चटाई] फूस, सींक, पतली पट्टियों आदि का बिछावन, तृण का डासन, साथरी। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चाटना] चाटने की क्रिया।

चटाक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०] धड़ाका, कड़ाका, घोर नाद।

चटाका—(संज्ञा, पु०, अनु०) लकड़ी या किसी कड़ी वस्तु के जोर से टूटने का शब्द।

चटाचट—(संज्ञा, पु०, दे०) शीघ्र-शीघ्र, लगातार चटाचट शब्द। प्रतिध्वनि।

चटाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चाटना का प्रेरणा० रूप] चाटने का काम कराना। थोड़ा-थोड़ा किसी दूसरे के मुँह में डालना, खिलाना। घूस देना, रिशवत देना। तलवार आदि पर सान रखना।

चटापटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चटपट] शीघ्रता, जल्दी।

चटावन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चटाना] बच्चे को पहले-पहल अन्न चटाना; अन्न-प्राशन।

चटिक*—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० चट] चटपट, शीघ्र।

चटियल—(वि०, दे०) जिसमें पेड़-पौधे न हों, निचाट मैदान। चट्टान वाला।

चटिया, चाटी—(संज्ञा, पु०, दे०) विद्यार्थी, शिष्य, छात्र, चेला। (वि०) चाटने वाला। पत्थर की शिला।

चटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चटसार। चट्टी। ध्यान, स्थिरता। ध्वनि। विचार। "जोगी जतीन की छूटी चटी"—केशव।

चटु—(संज्ञा, पु०, सं०) खुशामद। उदर। यतियों का एक आसन। सुन्दर, मनोहर। बिजली। [**चटुता** (संज्ञा, स्त्री०)]

चटुल—(वि०, सं०) चंचल, चपल। चालाक। सुन्दर, मनोहर। [**चटुलता** (संज्ञा, स्त्री०)] "छाय निजस्त्री चटुलालसानां मदेन किंचिच्चटुलालसानाम्" —माघ०।

चटोरा—(वि०, दे०) [हिं० चाट+ओरा प्रत्य०] अच्छी चीजों के खाने की लत वाला, स्वाद-लोभी, लोलुप। [**चटोरी** (स्त्री०)]—**पन**—(संज्ञा, पु०) [हिं० चटोरा+पन प्रत्य०] स्वाद-लोलुपता।

चट्ट—(वि०, दे०) [हिं० चाटना] चाट-पोंछ कर खाया हुआ। समाप्त, नष्ट। गायब, चट किया हुआ।—**पट्ट**—(क्रि० वि०) चटपट।

चट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) चटियल मैदान। शरीर पर कुष्ट आदि के दाग।

चट्टान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चट्टा] पत्थर का चिपटा बड़ा टुकड़ा, विस्तृत शिला-पटल या खंड।

चट्टाबट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चट्ट+बट्टा गोला] छोटे बच्चों के लिए काठ के खिलौनों का समूह। बाजीगर के गोले और गोलियाँ। **मुहा० एक ही थैली के**—, एक मेल के मनुष्य।—**लड़ाना**—इधर की उधर लगा कर लड़ाई कराना।

चट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) टिकान, पड़ाव। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चपटा व अनु० चट चट] एँड़ी पर खुला जूता। [स्लिपर]

चट्टू—(वि०, दे०) [हिं० चाट] स्वाद-लोलुप, चटोरा। (संज्ञा, पु०, अनु०) पत्थर का बड़ा खरल।

चड्ढी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक खेल जिसमें जीता हुआ लड़का हारे लड़के की पीठ पर चढ़ कर पूर्व निर्दिष्ट स्थान तक जाता है। **मुहा०—गाँठना**—अधिकार जमाना।

चढ़ना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० उच्चलन] नीचे से ऊँचाई पर जाना, ऊपर उठना। ऊपर की ओर सिमिटना। उन्नति करना, बढ़ जाना। उड़ना। **आँखें**—, क्रोध आना। नशा हो जाना। **नस**—, नस का अपने स्थान से हट जाने के कारण तन जाना। **दिमाग**—, घमंड होना। (**दिन**) **सूरज**—, दिन के समय का आगे बढ़ना। देवार्पित होना। सवार होना। वर्ष, मास, नक्षत्र आदि का आरम्भ होना। ऋण होना। बही या कागज आदि पर लिखा जाना, दर्ज होना। किसी वस्तु का बुरा और उद्वेग-जनक प्रभाव होना। पकने या आँच के लिए चूल्हे पर रख जाना। लेप होना, पोता जाना। **मुहा० चढ़ बनना**—सुयोग मिलना। नदी या पानी का बाढ़ पर आना। धावा या चढ़ाई करना। लोगों का एक दल मे किसी काम के लिए जाना। महँगा होना। स्वर ऊँचा होना। धारा या बहाव के विरुद्ध चलना। ढोल, सितार आदि की डोरी या तार का कस जाना। तनना।

चढ़वाना—(क्रि० स०) [हिं० चढ़ना का प्रेरणा० रूप] चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।

चढ़ाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चढ़ना] चढ़ने की क्रिया का भाव। ऊँचाई की ओर ले जाने वाली भूमि। शत्रु से लड़ने के लिए प्रस्थान, धावा, आक्रमण, हमला।

चढ़ा-उतरी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० चढ़ना+उतरना] बारबार चढ़ने-उतरने की क्रिया।

चढ़ा-ऊपरी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हिं० चढ़ना+ऊपर] एक दूसरे के आगे होने या बढ़ने का प्रयत्न, लाग-डाँट, होड़।

चढ़ाचढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) चढ़ा-ऊपरी। परस्पर वृद्धि। "जानै न ऐसी चढ़ा चढ़ी मैं"—पद्मा०।

चढ़ाना—(क्रि० स०) [हि० चढ़ना का प्रेरणा० रूप] चढ़ने मे प्रवृत्त करना या सहायता देना। ऐसा काम करना जिससे मन चढ़े। पी जाना। भेंट करना। उन्नत करना। प्रशंसा करना। बढ़ावा देना, बढाना।

चढ़ानी—(संज्ञा, स्त्री०) उत्तरोत्तर ऊँचा होने वाला स्थान।

चढ़ाव—(संज्ञा, पु०) [हि० चढ़ना] चढ़ने की क्रिया का भाव। देवार्पित वस्तु। चढ़ाई।—**उतार**-(सं०) ऊँचा-नीचा स्थान। बढ़ने का भाव, वृद्धि, बाढ। न्यूनाधिक्य। एक सिरे पर मोटा और दूसरे सिरे की ओर क्रमशः पतले होते जाने का भाव। गावदुम आकृति। चढ़ावा। वह दिशा जिधर से नदी की धारा आई हो (बहाव का उलटा)।

चढ़ावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चढ़ाना] दूल्हे की ओर से दुलहिन को विवाह के दिन पहिनाया गया गहना। किसी देवता पर चढ़ाई गई वस्तु, पुजापा। बढ़ावा, दम। **मुहा०—(बढ़ावा) देना**—उत्साह बढाना, उसकाना, उत्तेजित करना।

चढ़ैत, चढ़ैता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चढ़ना] चढ़ाई करने या धावा मारने वाला। सवार। घोड़ा फेरने वाला।

चण—(संज्ञा, पु०, सं०) चना।

चणक—(संज्ञा, पु०, सं०) चना।

चणका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीसी।

चणकात्मज—(संज्ञा, पु०, सं०) वात्स्यायन। चाणक्य।

चणिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) औषधि के कार्य में आने वाली दवा।

चतुःशाख—(संज्ञा, पु०, सं०) शरीर।

चतुःसन—(संज्ञा, पु०, सं०) सनक, संनदन, सनातन, सनत्कुमार (ब्रह्मा के ये चार पुत्र हैं)। विष्णु।

चतुःसमुद्र—(वि०, सं०) पृथ्वी जो चारों ओर समुद्र से घिरी हुई हो।

चतुरंग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह गाना जिसमें चार प्रकार के बोल गठे हों। सेना के चार अंग, हाथी, घोड़े, रथ, पैदल। [**चतुरंगिणी सेना** (यौ० स्त्री०)]। शतरंज। "राघव की चतुरंग चमू-चयधूरि उठी"—केशव।

चतुरंगिणी—(वि०, स्त्री०, सं०) चार अंगों वाली सेना, चतुरंग चमू।

चतुरंगी—(वि०, सं०) चार अंगों वाला।

चतुर—(वि०, पु०, सं०) टेढ़ी चाल चलने वाला, वक्रगामी। तेज, फुरतीला। प्रवीण, निपुण। धूर्त, चालाक। [**चतुरा (स्त्री०)**] (संज्ञा, पु०) शृंगार रस में नायक का एक भेद। [**चतुरई, चतुराई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

चतुरता—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० चतुर+ता प्रत्य०] चतुराई, प्रवीणता [**चातुरी** (संज्ञा, स्त्री०)] [**चतुरपन**† (संज्ञा, पु०, दे०)]

चतुरसम†—(संज्ञा, पु०, दे०) चतुरसम; जीरा, हड, अजवायन और लौंग के समान भागों को लेकर बनायी जाने वाली औषधि।

चतुरस्त्र—(वि०, सं०) चौकोर।

चतुराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चतुर+आई प्रत्य०] होशियारी, निपुणता, दक्षता। धूर्तता, चालाकी। 'सुन रावण परिहरि चतुराई"—तुल०।

चतुरात्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु। ईश्वर।

चतुरानन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चार मुख वाले ब्रह्मा जी। "चतुरानन बाइ रह्यो मुख चारौं"—केशव।

चतुराश्रम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चार आश्रम —ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास।

चतुरास—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) चारों दिशा, चारों ओर।

चतुरासी—(वि०, दे०) [हि० चतुर+अस्सी] चौरासी लाख योनि।

चतुरिन्द्रिय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चार इन्द्रियों वाले जीव, जैसे मक्खी, आदि।

चतुरुपवेद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चार उपवेद—धनुर्वेद, आयुर्वेद, गंधर्ववेद, शिल्पवेद।

चतुर्गुण—(वि०, यौ०, सं०) चौगुना। चार गुणों वाला। "पूर्ण के मूल को घात चतुर्गुण"—कुंज०।

चतुर्थ—(वि०, सं०) चौथा।

चतुर्थक—(संज्ञा, पु०, सं०) बुखार जो चार-चार दिनों के अंतर में आता है।

चतुर्थांशी—(वि०, सं०) चौथाई भाग पाने वाला हिस्सेदार।

चतुर्थाश्रम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चौथा आश्रम, संन्यास।

चतुर्थी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी पक्ष की चौथी तिथि। [चौथ (दे०)] विवाह के चौथे दिन का संस्कार।

चतुर्दश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चार और दश अर्थात चौदह। १४ विद्या। १४ भुवन।

चतुर्दशी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि। [चौदस (दे०)]

चतुर्दिक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चारों दिशायें। (क्रि० वि०) चारों ओर।

चतुर्भुज—(वि०, यौ०, सं०) चार भुजाओं वाला। [**चतुर्भुजा** (संज्ञा, स्त्री०, पु०)] विष्णु। चार भुजाओं और चार कोण वाला क्षेत्र।

चतुर्भुजा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक देवी। गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति।

चतुर्भुजी—(संज्ञा, पु०) [सं० चतुर्भुज+ई प्रत्य०] एक वैष्णव सम्प्रदाय। (वि०) चार भुजाओं वाला।

चतुर्भोजन—(संज्ञा, पु० यौ०, सं०) चार प्रकार का भोजन—भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य।

चतुर्मास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) [चातुर्मास (दे०)] चौमास (ग्रा०)।

चतुर्मुक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) चार प्रकार की मुक्ति—सायुज्य, सामीप्य, सारूप्य, सालोक्य।

चतुर्मुख—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्रह्मा। (वि०) चार मुख वाला। [**चतुर्मुखी** (स्त्री०)] (क्रि० वि०) चारों ओर।

चतुर्युगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चारों युगों का समय। ४३२०००० वर्ष, चौयुगी। चौकड़ी।

चतुर्योनि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चार प्रकार से उत्पन्न—अंडज, पिंडज, स्वेदज, जरायुज।

चतुर्वर्ग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चार पदार्थ—अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।

चतुर्वर्ण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चार जातियाँ—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

चतुर्विंश—(वि०, यौ०, सं०) चार और बीस। चौबीसवाँ।

चतुर्विंशति—(वि०, यौ०, सं०) चार और बीस। (संज्ञा, पु०) चौबीस की संख्या।

चतुर्विधि—(वि०, यौ०, सं०) चार प्रकार।

चतुर्वेद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चारों वेद—ऋग्, यजु, साम, अथर्व। परमेश्वर।

चतुर्वेदी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० चतुर्वेदवित] चारों वेदों का ठीक-ठीक जानने वाला पुरुष। ब्राह्मणों की एक जाति।

चतुर्व्यूह—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विष्णु। चार मनुष्यों अथवा पदार्थों का समूह। जैसे राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और कृष्ण, बलदेव, प्रद्युम्न, अनरुद्ध।

चतुष्क—(वि०, सं०) चौपहला। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का भवन।

चतुष्कल—(वि०, यौ०, सं०) चार कलाओं या मात्राओं वाला।

चतुष्कोण—(वि०, यौ०, सं०) चार कोने वाला, चौकोर, चौकोना।

चतुष्टय—(संज्ञा, पु०, सं०) चार की संख्या। चार चीजों का समूह।

चतुष्टोम—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का वैदिक यज्ञ।

चतुष्पथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चौराहा।

चतुष्पद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चौपाया, चार पैरों वाला।

चतुष्पदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चौपैया छंद।

चतुष्पदी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) १५ मात्राओं का चौपाई छंद। चार पदों का गीत।

चतुष्पाटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी।

चतुष्पाठी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जिस पाठशाले में चारों वेद की दीक्षा दी जाती हो।

चतुष्पाणि—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु।

चतुष्पार्श्व—(वि०, सं०) चौपहला, चार पार्श्व वाला।

चतुष्फला—(संज्ञा, स्त्री०) औषधि विशेष जिसका नाम नागबला है।

चतुस्तना—(वि०, सं०) चार थनों वाली गाय।

चतुस्सम—(संज्ञा, पु०, सं०) कस्तूरी। चंदन। कुंकुम, कपूर को मिलाकर बनने वाला एक गंधद्रव्य, एक औषधि जिसमें लौंग, जीरा, अजवायन, हर्रे का समान भाग मिला रहता है।

चतुस्सम्प्रदाय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वैष्णवों के चार प्रधान संप्रदाय—श्रीरामानुज, श्रीमाध्व, श्री निंबार्क, श्रीवल्लभीय।—**चत्वर**-(संज्ञा, पु०, सं०) चौमुहानी, चौरास्ता। वेदी, चबूतरा।—**चत्वार**-(संज्ञा पु० सं०) चार।

चदरा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० चादर] चादर। [चद्दर (दे०)] [**चदरिया** (स्त्री०, अल्प०)]

चदिर—(संज्ञा, पु०, सं०) कपूर। चन्द्रमा। हाथी। साँप।

चद्दर—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० चादर] चादर (वस्त्र)। किसी धातु का लम्बा-चौड़ा चौकोर पत्तर। उस नदी की धारा जो बहुत ऊँचाई से गिरती है।

चनकना—(क्रि० अ०, दे०) चटकना।

चनखना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० अनखना] क्रोधित या खफा होना, चिढ़ना, चिटकना।

चना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चणक] चैती फसल का एक प्रधान अन्न, बूट, छोला, लहिला, रहिला (प्रान्ती०)। **मुहा० नाकों—चबवाना (चबाना)**—बहुत तंग करना (होना), बहुत दिक या हैरान करना (होना)। **लोहे का—**,अत्यन्त कठिन काम।

चपकन—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चपकना] एक प्रकार का अंगा, अँगरखा। किवाड़ संदूक आदि में लोहे या पीतल का साज।

चपकना—(क्रि० अ०, दे०) चिपकना।

चपकाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चपकना] सटाना, जुड़ाना, मिलाना, जोड़ाना। लपटाना, चिपकाना।

चपकुलिश—(संज्ञा, स्त्री०, तु०) कठिन स्थिति, अड़चन, फेर, कठिनाई, झंझट, अंडस। भीड़-भाड़।

चपटना—(क्रि० अ०, दे०) चिपकना, चिपटना। [**चपटाना** (प्रेरणा० क्रि० स०)]

चपटा†—(वि०, दे०) चिपटा।

चपड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चपटा] साफ किया हुआ लोहे का पत्तर। लाल रंग का एक कीड़ा या पतिंगा। एक लसदार पदार्थ।

चपत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चर्पट] तमाचा, थप्पड़। धक्का। हानि। [**चपतियाना** (क्रि० अ०, दे०)]

चपना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चपन=कूटना, कुचलना] दबना, कुचल जाना। लज्जा से गड़ जाना।

चपनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चपना] छिछला कटोरा, कटोरी। दरियाई नारियल का कमंडल। हाँडी का ढक्कन।

चपरगट्ट, चपड़गट्टू—(वि०, दे०) [हिं० चौपट+गटपट] सत्यानाशी, चौपटा। आफत का मारा, अभागा। गुत्थमगुत्थ।

चपरना—†*(क्रि० अ०, दे०) [अनु० चपचप] चुपड़ना। परस्पर मिलना।

चपरा—(अव्य०, दे०) [हिं० चपराना] झटपट। (संज्ञा, पु०, दे०) चपड़ा।

चपरास—(ंज्ञा, स्त्री०) [हिं० चपरासी] पीतल आदि की छोटी पट्टी जिसे पेटी या परतले में लगा कर चौकीदार, अरदली आदि पहनते हैं, और जिसमें दफ्तर या मालिक का नाम खुदा रहता है, बिल्ला, बल्ला। [बैज]

चपरासी—(संज्ञा, पु०) [फा० चप=बायाँ+रास्त=दाहिना] चपरास पहनने वाला नौकर, प्यादा। [अरदली (दे०)]

चपरि*—(क्रि० वि०, दे०) [सं० चपल] फुरती से, शीघ्र। "चपरि चढ़ायौ चाप, सुत दशरथ कौ"—[स्फु०]।

चपल—(वि०, सं०) स्थिर न रहने वाला, चंचल, चुलबुला, क्षणिक, उतावला, जल्दबाज। चालाक, धृष्ट। "चपल चखन वाला चाँदनी मे खड़ा था"—रहीम।

चपलक—(वि०, सं०) अस्थिर। विचार न करने वाला।

चपलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चंचलता, तेजी, शीघ्रता, जल्दी। धृष्टता, ढिठाई। "साहस अनृत चपलता माया"—तुल०। [चपलाई (दे०)]

चपलांग—(संज्ञा, पु०, सं०) चंचल अंग।

चपला—(वि०, स्त्री०, सं०) चंचल, फुरतीली, तेज। (संज्ञा, स्त्री०) लक्ष्मी। बिजली। छंदभेद। पुंश्चली (स्त्री०) जीभ। "चपला चपलासी चपल रहति न थिर कहुँ ठाँव"। भाँग। मद्य। पिप्पली।

चपलाई—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चपलता, अस्थिरता।

चपलाना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चपल] चलना, हिलना, डोलना, चंचल होना। (क्रि० स०) चलाना, हिलाना।

चपवाना—(क्रि० स०) दबवाना।

चपली†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चपटा] जूती, जूता, चप्पल।

चपाती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चर्पटी] पतली रोटी जो हाथ से पतली और बड़ी की जाती है।

चपाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चपना] दबाने का काम कराना, दबवाना। लज्जित करना। झिपाना, शर्मिन्दा करना।

चपेट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चपाना] झोंका। रगड, धक्का। आघात। थप्पड़, झापड़, तमाचा। दबाव। संवाद।

चपेटना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चपेट] दबाना, दबोचना। बल-पूर्वक भगाना। फटकार बताना। डाँटना।

चपेटा—(संज्ञा, पु०, दे०) चपेट।

चपेटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तमाचा, थप्पड़।

चपेटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भाद्र शुक्ल षष्ठी।

चप्पड़—(संज्ञा, पु०, दे०) चिप्पड़।

चप्पन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चपना] छिछला कटोरा।

चप्पल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चपटा] एँड़ी पर बिना दोवार का जूता।

चप्पा—(संज्ञा, पु०) [सं० चतु पाद] चतुर्थांश, चौथा या थोड़ा भाग। चार अंगुल या थोड़ी जगह। स्वल्प स्थान।

चप्पा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चपना=दबना] धीरे-धीरे हाथ-पैर दबाने की क्रिया। चरणसेवा।

चप्पू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चाँपना] एक डाँड़ जो पतवार का भी काम देता है, किलवारी।

चफाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दलदल से घिरा द्वीप।

चबवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चबाना का प्रेरणा० रूप] चबाने का काम कराना।

चबाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चर्वण] बात करना। जुगालना, दाँतों से पीस कर खाना या कुचलना। **मुहा० चबा चबा कर बातें करना**—एक-एक शब्द धीरे-धीरे बोलना, मठार-मठार कर बातें करना। **चबे को**—, (सं० चर्वित चर्वणम्) किये हुए काम को फिर करना, पिष्टपेषण करना। † दाँत से काटना, दरदराना।

चबूतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चत्वाल] बैठने के लिए चौरस बनाई हुई ऊँची जगह। [चौतरा (दे०)] कोतवाली। बड़ा थाना।

चबेना—(संज्ञा, पु०) [हिं० चबाना] चबाकर खाने के लिए सूखा भुना हुआ अनाज, चर्वण, भूना अन्न। चबैना (ग्रा०)। "मानहु लेई माँगि चबेना"—तुल०।

चबेनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चबाना] जल-पान का सामान। "चना-चबेनी, गंग जल जो पुरवै करतार"—[स्फु०]।

चबोल—(संज्ञा, पु०, दे०) मजाक, हँसी उड़ाना।

चब्य—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) औषधि-विशेष। [चाभ (दे०)] "बचा चब्य तालीस सुंठी सुहाई"—कुंवि०।

चभक—(संज्ञा, पु०) पानी में किसी वस्तु के डूबने की आवाज।

चभड़-चभड़—(संज्ञा, स्त्री०) कुत्ते-बिल्ली आदि के खाने या पीने की आवाज।

चभाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चभना का प्रेरणा० रूप] खिलाना, भोजन कराना।

चभोरना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चुभकी] डुबोना, गोता देना। तर करना, भिगोना।

चमक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चमत्कृत] प्रकाश, ज्योति, रोशनी, कांति, दीप्ति, आभा। कमर आदि का वह दर्द जो चोट लगने या एकबारगी अधिक बल पड़ने से हो, लचक, चिक। "उठै चित मैं चमक सी चमक चपला की है"—रत्ना०।—**दमक**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हिं० चमक+दमक अनु०] दीप्ति, आभा, तड़क-भड़क।—**दार**-(वि०) [हिं० चमक+दार फा०] जिसमें चमक हो, चमकीला।

चमकना—(क्रि० अ०) [हिं० चमक] प्रकाश या ज्योति से युक्त दिखाई देना, जगमगाना, कांति या आभा से युक्त होना, दमकना। श्री-सम्पन्न होना। उन्नति करना। जोर पर होना, बढ़ना। चौंकना, भड़कना। फुरती से खिसक जाना। एकबारगी दर्द उठना। मटकना, अंगुलियाँ आदि हिला कर भाव बताना। कमर में चिक या लचक जाना।

चमकाना—(क्रि० स०) [हिं० चमकना का प्रेरणा० रूप] चमकीला करना, चमक लाना। झलकाना। उज्ज्वल वा साफ करना। भड़काना, चौंकाना। चिढ़ाना, खिझाना। घोड़े को चंचलता के साथ बढ़ाना। भाव बताने के लिए अंगुली आदि हिलाना, मटकाना।

चमकारी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चमक।

चमकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चमक] कार-चोबी में रुपहले या सुनहले तारों के छोटे-छोटे गोल चिपटे टुकड़े, सितारे, तारे।

चमकीला—(वि०, दे०) [हिं० चमक+ईला प्रत्य०] जिसमें चमक हो, चमकने वाला। भड़कीला, शान-दार। [**चमकीली** (स्त्री०)]

चमकौवल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चमक+औवल प्रत्य०] चमकाना या मटकाना।

चमक्को—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चमकना] चमकने या मटकने वाली स्त्री, चंचल और निर्लज्ज स्त्री, कुलटा या झगड़ालू स्त्री।

चमगादड़, चमगीदड़, चमगीदुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चर्मकटक] रात में उड़ने वाला एक जन्तु, जिसके चारों पैर परदार होते हैं।

चमचम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक बँगला मिठाई। [**चमाचम** (वि०, दे०)] उज्ज्वल, चमकदार।

चमचमाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० चमक] चमकना, दमकना। (क्रि० स०) चमकाना, चमक लाना। [**चमचमाहट** (संज्ञा, स्त्री०)]

चमचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चमस] एक प्रकार की छोटी कलछी, चम्मच। डोइ (ग्रा०), चिमचा। [**चमची, चिमची** (स्त्री०, अल्पा०)]

चमजूई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चर्ममूल] एक किलनी, पीछा न छोड़ने वाली वस्तु।

चमड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चर्म] प्राणियों के सारे शरीर का आवरण, चर्म, त्वचा, खाल। जिल्द। प्राणियों के मृत शरीर पर से उतारा हुआ चर्म जिससे जूते, बेग आदि बनते हैं। खाल, चरसा। चाम (ग्रा०), छाल, छिलका। **मुहा०—उधेड़ना या खींचना**-चमड़े को शरीर से अलग करना। बहुत मार मारना। चमड़ी उखाड़ना।—**सिझाना**-चमड़े, को बबूल की छाल, सज्जी, नमक आदि के पानी में डाल कर मुलायम करना। [**चमड़ी** (संज्ञा, स्त्री०)]

चमत्करण—(संज्ञा, पु०, सं०) विस्मित, चमत्कार से प्रभावित करना। उत्सव।

चमत्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) आश्चर्य, विस्मय। आश्चर्य का विषय या विचित्र घटना, करामात, अनूठापन, विचित्रता। [**चमत्कारी, चमत्कृत** (वि०)]

चमत्कारक—(वि०, सं०) चमत्कारी।

चमत्कारी—(वि०, स्त्री०, सं०) विलक्षण, अद्भुत, चमत्कार या करामात दिखाने वाला। [**चमत्कारिणी** (स्त्री०)]

चमत्कृत—(वि०, सं०) आश्चर्यित, विस्मित।

चमत्कृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आश्चर्य्य।

चमन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हरी क्यारी, फुलवारी, छोटा बगीचा।

चमनिस्तान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) फुलवारी, हरियाली से शोभित स्थान, बाग।

चमर—(संज्ञा, पु०, सं०) सुरा गाय की पूछ का बना चँवर, चामर। [**चमरी** (स्त्री०)]—**शिखा**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० चामर+शिखा] घोड़े की कलँगी।

चमरक—(संज्ञा, पु०, सं०) मधुमक्खी।

चमरख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चाम+रखा] मूँज या चमड़े की बनी हुई चकती जिसमें से होकर चरखे का तकला घूमता है।

चमरखा—(संज्ञा, पु०) उबटन में डाली जाने वाली एक सुगंधित जड़ विशेष।

चमरस—(संज्ञा, पु०) जूते की रगड़ से उत्पन्न घाव।

चमरिक—(संज्ञा, पु०, सं०) कचनार का पेड़।

चमरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चँवरी, सुरा गाय।

चमरौट—(संज्ञा, पु०) फसल आदि का भाग जो चमारों को उनके कार्य के बदले मिलता है।

चमरौटी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) चमारों की बस्ती।

चमरौधा—(संज्ञा, पु०, दे०) चमौवा (ग्रा०)। चमारों का।

चमला—(संज्ञा, पु०, दे०)[**चमली** (स्त्री०, अल्पा०)] भीख माँगने का टोकरा या पात्र।

चमस—(संज्ञा, पु०, सं०) [**चमसी** (स्त्री०, अल्पा०)] सोमपान करने का चम्मच जैसा यज्ञ-पात्र, कलछा, चम्मच।

चमाउ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चामर] चँवर।

चमार—(संज्ञा, पु०) [सं० चर्मकार] [**चमारिन, चमारी** (स्त्री०)] एक नीच जाति जो चमड़े का काम बनाती है। (वि०) नीच, दुष्ट।

चमारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चमार] चमार की स्त्री। चमार का काम। बुरा काम। शरारत।

चमू—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सेना, फौज जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार, ३६४५ पैदल हों।

चमूकन—(संज्ञा, पु०, दे०) किलनी (प्रान्ती०) पशुओं का जुवाँ।

चमेटा—(संज्ञा, पु०, दे०) चमड़े की थैली जिसमें नाई अपने अस्त्र रखता है। अस्तुरों की धार पक्की करने का चमड़े का टुकड़ा।

चमेलिया—(वि०) चमेली का सा रङ्ग।

चमेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चंपकवेलि] श्वेत सुगन्धित फूलों की एक झाड़ी या लता। मालती लता।

चमोटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चम+औटी प्रत्य०] चाबुक, कोड़ा। पतली छड़ी, कमची, बेंत, चमेटा।

चमौवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चाम] चमड़े से सिया भद्दा जूता। चमरौधा (ग्रा०)।

चम्मच—(संज्ञा, पु०) [सं० चमस] एक छोटी हलकी कलछी।

चम्मल—(संज्ञा, पु०) भिक्षापात्र।

चय—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, ढेर, राशि। धुस्स, टीला। ढूह (ग्रा०)। गढ़, किला, चहारदीवारी,

प्राकार। बुनियाद, नींव। चबूतरा। चौकी। ऊँचा आसन।

चयन—(संज्ञा, पु०, सं०) इकट्ठा करने या चुनने का कार्य। संग्रह, संचय, चुनाई। यज्ञार्थ अग्नि-संस्कार। क्रम से लगाना या चुनना। *†(संज्ञा, पु०, दे०) चैन।

चयनिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चुनी हुई प्रमुख कविताओं-कहानियों का संकलन।

चयनीय—(वि०, सं०) चयन या संग्रह के योग्य।

चर—(संज्ञा, पु०, सं०) अपने या पराये राज्यों की भीतरी दशा का, प्रगट या गुप्त रूप से, पता लगाने पर नियुक्त राजदूत। गूढ़ पुरुष, भेदिया, जासूस-विशेष। कार्य्यार्थ भेजा हुआ दूत। कासिद, चलन वाला, अनुचर। खेचर। खंजन पक्षी। कौड़ी। कपर्दिका, मंगल। भौम। नदियों के किनारे या संगम के स्थान की गीली भूमि जो नदी से बहा लाई हुई मिट्टी से बनं है। गीली भूमि, दलदल। नदियों के बीच में बालू का टापू। मेष, कर्क, तुला, मकर राशियाँ। (विलो०) [**अचर** (वि०)] [**चराचर** (यौ०)] स्थावर-जंगम, अस्थिर, खान वाला ("चर गति भक्षणयोः")।

चरई, चरही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जानवर के पानी पीने का कुंड।

चरक—(संज्ञा, पु०, सं०) दूत, चर, कासिद, गुप्तचर, भेदिया, जासूस। वैद्यक विद्या के एक प्रधान आचार्य। बटोही, पथिक, मुसाफिर। वैद्यक-ग्रंथ, चरक संहिता।

चरकटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चारा+काटना] चारा काट कर लाने वाला आदमी।

चरका—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० चरकः] हलका घाव, जख्म। गरम धातु से दागने का चिह्न। हानि। धोखा। छल।

चरकी—(संज्ञा, पु०, दे०) श्वेत कुष्ट रोगी।

चरख—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० चर्ख] घूमने वाला गोल चक्कर। खराद। सूत कातने का चरखा। कुम्हार का चाक, आकाश। आसमान। गोफन, गोफल, ढेलवाँस। तोप की गाड़ी। लकड़बग्घा। एक शिकारी चिड़िया। **—पूजा**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० चरक=एक वैद्य, तांत्रिक-सम्प्रदाय+पूजा] चैत की संक्रांति में शिव की सामूहिक आराधना।

चरखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० चर्ख] घूमने वाला गोल चक्कर, चरखा। लकड़ी का ऊन, कपासादि से सूत कातने का एक यंत्र। "कात चरखा नहीं सके फिर भी लोग हैं बेतरह हुए चरखा"—हरिऔध। कुएँ से पानी निकालने का रहट। सूत लपेटने की गराड़ी, चरखी, रील। [**घिरनी** (प्रान्तो)] बड़ा बेडौल पहिया। नया घोड़ा निकालने की गाड़ी का ढाँचा। खड़खड़िया। झगड़े, बखेड़े या झंझट का काम।

चरखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चरखा का स्त्री० अल्पा०] पहिये सी घूमनेवाली वस्तु। छोटा चरखा। कपास ओटने की चरखी, बेलनी, ओटनी, सूत लपेटने की फिरकी। कुएँ से पानी खींचने की गराड़ी। [घिरनी (दे०)] आतशबाजी का एक खेल।

चरग†—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० चरग] बाज की जाति की एक शिकारी चिड़िया, चरख, लकड़बग्घा।

चरचना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चर्चन] देह में चन्दन आदि लगाना। लेपना, पोतना। भाँपना, अनुमान करना।

चरचराना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० चरचर] चरचर शब्द से टूटना या जलना। घाव आदि का खुश्की से तनना और दर्द करना, चर्राना। (क्रि० स०) चरचर शब्द से लकड़ी आदि तोड़ना।

चरचराहट—(संज्ञा, स्त्री०) चरचराने का शब्द या भाव, क्रिया।

चरचा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चर्चा।

चरचारी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चरचा] चरचा करने वाला। निन्दक।

चरचित—(वि०, पु०, सं०) पोता या लेप लगाया हुआ। "चन्दन चरचित अंग"।

चरचेला—(संज्ञा, पु०, वि०, दे०) [हि० चरचा] गप्पी, बक्की, मुखर, बकवादी।

चरचैत—(संज्ञा, पु०) [हि० चरचा] चर्चा करने वाला व्यक्ति। (वि०) कीर्तिमान।

चरज—(संज्ञा, पु०, दे०) चरख नामक पक्षी।

चरजन*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चर्चन] बहकाना, भुलावा देना। अनुमान करना, अंदाजा लगाना। "चरज गई ती फेरि चरजन लागी री"—पद्मा०।

चरट—(संज्ञा, पु०, सं०) खंजन पक्षी, खजरीट। [खड़रैचा (दे०)]

चरण—(संज्ञा, पु०, सं०) पग, पैर, पाँव, कदम। बड़ों का सान्निध्य या सङ्ग। किसी पद्य आदि का एक पद। किसी वस्तु का चौथाई भाग। मूल, जड़। गोत्र, क्रम। आचार। घूमने की जगह। किरण। अनुष्ठान। गमन, जाना। भक्षण करने का काम। [चरन (दे०)] "चरण भरत चिन्ता

करत" ।—**गुप्त**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का चित्र-काव्य ।—**चिह्न**-(संज्ञा, पु०, सं०) पैर के तलुए की रेखा। पैर का निशान ।—**दास**-(संज्ञा, पु०, सं०) चरण-सेवक, नाई आदि ।—**दासी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्त्री, पत्नी। जूता, पनही ।—**पादुका**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) खड़ाऊँ, पावड़ी, पत्थर आदि पर बना चरणाकार पूजनीय चिह्न। "चरणपादुका पायकै, भरत रहे मनलाय"—तुल०। —**पीठ**-(संज्ञा, पु०, सं०) चरणपादुका, खड़ाऊँ। —**सेवक**-(संज्ञा, पु०, सं०) पैर दबाने वाला, नाई।—**सेवा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पैर दबाना, सेवा करना।

चरणाच—(संज्ञा, पु०, सं०) गौतम।

चरणानति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चरणों पर गिरना।

चरणानुग—(वि०, सं०) अनुगामी, पिछलग्गू, पीछे चलने वाला ।

चरणामृत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महात्मा या बड़ों के पैरों का पानी।

चरणायुध—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० चरण+आयुध] अरुण-शिखा। मुर्गा।

चरणारविन्द—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल रूपी चरण । "बैठे मारुति देखते राम-चरणारविन्द"—निराला।

चरणोदक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चरणामृत ।

चरणार्द्ध—(संज्ञा, पु०, सं०) पद का आधा भाग। किसी वस्तु का आधा हिस्सा ।

चरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चलने का भाव। पृथ्वी, भूमि ।

चरती—(संज्ञा, पु०) [हि० चरना=खाना] व्रत के दिन उपवास न करने वाला, खाने वाला।

चरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चर=चलना] पशुओं का घूम-घूम कर घास, चारा आदि खाना। (क्रि० अ०) [सं० चर] घूमना, फिरना। (संज्ञा, पु०) [सं० चरण=पैर] काछा।

चरनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चर=गमन] चाल, ठवनि (ग्रा०)। चलनि ।

चरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चरना] पशुओं के चरने का स्थान, चरी, चरागाह। पशुओं को चारा देने की नाँद। घास, चारा आदि।

चरपट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चर्पट] चपत, तमाचा, थप्पड़। चाई, उचक्का। एक छंद।

चरपरा—(वि०, दे०, अनु०) [**चरपरी** (स्त्री०)] तीत, तीता। कुछ कड़ुवा।

चरपराना—(अ० क्रि०) चर्राना। घाव में तनाव के कारण पीड़ा।

चरपराहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० चरपटा] तीतापन, झाल। घाव आदि की जलन। द्वेष, डाह, ईर्ष्या।

चरफराना—(क्रि० अ०, दे०) तड़पना।

चरब—(वि०) [फ़ा० चर्ब] तेज, तीखा।

चरबन—(संज्ञा, पु०, दे०) चबैना।

चरबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० चरबः] प्रतिमूर्ति। नकल। खाका।

चरबाक, चारवाक—(वि०, दे०) [सं० चार्वाक] चतुर, चालाक। शोख, निडर।

चरबी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्राणियों के देह का सफेद या कुछ पीले रंग का एक चिकना गाढ़ा पदार्थ। पौधों का गाभा। मेद, वसा। पीब। मुहा०—**चढ़ना**-मोटा होना।—**छाना**-शरीर में मद बढ़ना। मदांध होना।

चरम—(वि०, सं०) अंतिम। चोटी का, आखिरी, अति उत्कृष्ट।—**प्रभुत्व**-अंतिम प्रभुता या राजसत्ता। [अल्टीमेट सावरेण्टी]

चरमर—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) तनी या चीमड़ वस्तु। जूता, चारपाई का दबने या सिकुड़ने का शब्द।

चरमराना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) चरमर शब्द होना। (क्रि० स०) चरमर शब्द करना।

चरमोन्नत—(संज्ञा, पु०, सं०) उन्नति की पराकाष्ठा। "वह कृषि संस्कृति का चरमोन्नत युग था निश्चित"—पंत।

चरवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चराना] चराने का काम या मजदूरी। चरवाही (ग्रा०)।

चरवाना—(क्रि० स०) [हि० चराना का प्रेरणा०] चराने का काम दूसरे से कराना।

चरवाहा—(संज्ञा, पु०) [हि० चरना+वाहा=वाहक] गाय, भैंस आदि का चराने वाला। [चरवैया (दे०)] चराने वाला।

चरस, चरसा—(संज्ञा, पु०) [सं० चर्म] भैंस या बैल आदि के चमड़े का बहुत बड़ा डोल जिसमें सींचने के लिए कुएँ से पानी खींचा जाता है। नरसा, पुर, मोट। भूमि नापने का एक परिमाण, जो २१०० हाथ का होता है। गोचर्म। गाँजे के पेड़ का नशीला गोंद या चेप जिसे चिलम में पीते हैं।

है। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० चर्ज] आसामी पक्षी (आसाम का) वनमोर, चीनी मोर।

चराई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चरना] चरने का काम। मजदूरी।

चरागाह—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पशुओं के चरने की भूमि, चरनी, चरी।

चराचर—(वि०, यौ०, सं०) चर और अचर, जड़ और चेतन, स्थावर और जंगम।

चराचरात्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) आत्मा जिसमें चर-अचर, जड़-चेतन, स्थावर-जंगम आदि समाविष्ट हों। "चराचरात्मा विभु विश्वरूप है।" —हरि०।

चराना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चरना का प्रेरणा० रूप] पशुओं को चारा खिलाना। बातों में बहलाना, चालबाजी करना।

चरावर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) व्यर्थ की बात, बकवाद।

चरावा—(संज्ञा, पु०, दे०) चरवाहा, चराने वाला। एक प्रकार का पक्षी।

चरिंदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चरने वाला जीव, पशु, हैवान।

चरित—(संज्ञा, पु०, सं०) रहन-सहन। आचरण, चरित। काम, करनी, करतूत, कृत्य। किसी के जीवन की घटनाओं या कार्यों का वर्णन, चरित्र। जीवन। "राम-चरित कलि कलुष नसावन।" "साधु-चरित सुभ सरिस कपासू"—तुल०।—**नायक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रधान पुरुष जिसका चरित्र लिखा जाय, चरित्र-नायक (सं०)।

चरितव्य—(वि०, सं०) आचरण या अनुकरण-योग्य। जानने योग्य।

चरितार्थ—(वि०, यौ०, सं०) कृतकृत्य, कृतार्थ। जो ठीक-ठीक घटे।

चरितार्थी—(वि०, सं०) सफलता की इच्छा या कामना करने वाला।

चरितावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनेक जीवन-चरित वाली पुस्तक। चरित-माला।

चरित्तर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चरित्र] धूर्त्तता की चाल, नखरेबाजी, नकल। चरित्र।

चरित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वभाव। वह जो किया जाय, कार्य, करनी, करतूत। चरित (सं०)। [**चरित्रनायक** (यौ०)]

चरित्रवान—(वि०, सं०) अच्छे चरित्र या आचरण वाला। [**चरित्रवती** (स्त्री०)]।

चरी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० चर या हिं० चरा] पशुओं को चराने की जमीन। ज्वार के छोटे हरे पेड़ जो चारे के काम मे आते हैं, कड़बी, करबी (ग्रा०)।

चरु—(संज्ञा, पु०, सं०) हवन या यज्ञ की आहुति के लिए पका अन्न। (वि०) चरव्य, हव्यान्न, हविषान्न। हव्यान्न-पात्र। यज्ञ। पशुओं के चरने की जमीन।—**पात्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हविषान्न-पात्र, यज्ञ का बर्तन।

चरुखला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चरखा] सूत कातने का चरखा।

चरेरा—(वि०, सं०) [चरचर से अनु०] कड़ा और खुरदरा। कर्कश [चरेर (दे०)]। [**चरेरी** (स्त्री०)]।

चरैया—(संज्ञा, पु०) [हिं० चरना] चरने या चराने वाला।

चर्चक—(संज्ञा, पु०, सं०) चर्चा करने वाला।

चर्चन—(संज्ञा, पु०, सं०) चर्चा। लेपन।

चर्चरिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी एक विषय की समाप्ति और यवनिका-पात पर गान (नाटक०)।

चर्चरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वसंत ऋतु का गान, फाग। [चाँचर (दे०)।] होली की धूम-धाम का हुल्लड़। एक वर्ण-वृत्त। करतल-ध्वनि। चर्चरिका। आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा।

चर्चा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जिक्र, वर्णन, ब्यान। वार्त्तालाप, बातचीत। किंवदन्ती, अफवाह। लेपन। गायत्री रूपा महादेवी, [चरचा (दे०)] "चरचा चलिबे की चलाइए ना"।

चर्चिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चर्चा, जिक्र। दुर्गा देवी।

चर्चित—(वि०, सं०) लगा या लगाया हुआ, लेपित। जिसकी चर्चा हो।

चर्पट—(संज्ञा, पु०, सं०) चपत, थप्पड़। हाथ की खुली हथेली।

चर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) चमड़ा, खाल, सिपर। [चाम (दे०)] [**चर्मबुद्धि** (वि०)]—**कशा, कषा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, [चमरख (दे०)]—**कार**-(संज्ञा, पु०, सं०) चमार, [**चर्मकारी** (स्त्री०)]—**कील**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बवासीर। एक रोग, शरीर में नुकीले मस्से निकलने का रोग।—**चक्षु**-(संज्ञा, पु०, सं०) साधारण चक्षु। [(विलो०) **ज्ञान-चक्षु**]—**दंड**-(संज्ञा, पु०, सं०) चमड़े का कोड़ा या चाबुक,

कषा।—दृष्टि-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) साधारण दृष्टि, आँख। [(विलो०) ज्ञान-दृष्टि]—मय-(वि०, सं०) चमड़े का बना हुआ।—वसन-(संज्ञा, पु०, सं०) शिव। चर्माम्बर।

चर्मण्य—(वि०, सं०) चमड़े का बना हुआ।

चर्मण्वती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चंबल नदी। केले का पेड़। "चर्मण्वती वेदिका"।

चर्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव। (वि०) चर्मी या चर्म-धारी।

चर्मान्त—(संज्ञा, पु०, सं०) चर्मखण्ड, चमड़े का टुकड़ा। एक यंत्र।

चर्य्य—(वि०, सं०) जो करने योग्य हो।

चर्य्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह जो किया जाय। आचार। आचरण, चाल-चलन। वृत्ति, जीविका। सेवा। गमन। [**दिनचर्या, रात्रिचर्या** (यौ०)]

चर्राना—(क्रि० अ०, दे० अनु०) लकड़ी आदि का टूटने या तड़कने पर चरचर शब्द करना, चिटखना। घाव पर खजुली या सुरसुरी मिली हलकी पीड़ा होना। रुखाई से किसी अंग में तनाव होना। प्रबल इच्छा होना।

चर्री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [यौ० चर्राना] लगती हुई व्यंगपूर्ण बात, चुटीली बात।

चर्वण—(संज्ञा, पु०, सं०) चबाना। वह वस्तु जो चबाई जाय। भूना हुआ अन्न जो चबाया जाय, चबैना, बहुरी। [**चर्वित**-(वि०) चबाया हुआ] [**चर्व्य** (वि०)] **चर्वित**—,(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी किये हुए काम को फिर से करना। कही बात को फिर से कहना। [**पिष्टपेषण** (सं०)]

चर्व्य—(वि०, सं०) चबाने योग्य। (संज्ञा, पु०) जो चबा कर खाया जाय।

चलंता—(वि०) चालू, चलने वाला।

चल—(वि० सं०) चंचल, अस्थिर, चर। "चल-चित पारे की भसम भुरकाय कै"—रत्ना०। (संज्ञा, पु०, सं०) पारा। लोहा। छंद-भेद। शिव। विष्णु। चंचल [**चलाचल**-(यौ०) जंगम,-स्थावर] —**निक्षेप**-चालू जमा, वह निक्षेप जिसमें जमा करना बंद न हो। [करेंट डिपाजिट]—**लेखा**-प्रचलित या वर्त्तमान लेखा, चालू खाता (जिसमें लेनदेन चालू रहे) [करेंट एकाउंट]—**विचल**-(वि०, यौ०) [सं० चल+विचल] जो ठीक जगह से इधर उधर हो गया हो, उखड़ा-पुखड़ा, बेठिकाने। व्यतिक्रम, अव्यवस्थित। घबड़ाया हुआ। (संज्ञा, स्त्री०,) किसी नियम याक्रम का उल्लंघन।—**सम्पत्ति**-गतिमान या अस्थिर सम्पत्ति, वह धन जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ सके (गहने आदि) [मूवेबुल प्रापर्टी]। **मुहा०—बसना-मर** जाना।

चलकना—(क्रि० अ०, दे०) चमकना।

चलचलाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चलना] प्रस्थान, यात्रा। चलाचली, मृत्यु।

चलचाल—(वि०, यौ०, सं०) चल-विचल, चंचल, चपल। [**चलचलातू** (यौ०) ।]

चलचूक—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० चल= चंचल+चूक] भूल। धोखा, छल, कपट।

चलता—(क्रि० वि०) [हिं० चलना] चलता हुआ। **मुहा०—करना**-हटाना, भगाना, भेजना। किसी प्रकार निपटाना। (संज्ञा, पु०, दे०) बेल के से फलों-वाला एक बड़ा सदाबहार पेड़। कवच, झिलम। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) चल होने का भाव, चञ्चलता, अस्थिरता। [**चलताखाता** (यौ०)]—**पुर्जा** -(वि०) चालाक, चतुर। धूर्त्त।—**फिरते नज़र आना**-चला जाना। अभंगरीति से प्रगतिशील रिवाज या चलन में आना, रहना। प्रचलित। काम करने योग्य, सशक्त होना।—**बनना**-चल देना।—**काम करना**-साधारण रूप से काम करना। जो काम जारी हो उसे करना।

चलती—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० चलना) मान-मर्य्यादा। अधिकार। **लो०**—"चलती का नाम गाड़ी है।"

चलतू, चलातू—(वि०, दे०, यौ०) [हिं० चलना] प्रचलित। टिकाऊ। अस्थिर।

चलदल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पीपल। "तम बढ़े मिटा डाले सब जीवन काँपे चलदल सा।" —महादेवी।

चलद्विष—(संज्ञा, पु०, सं०) कोकिल।

चलन—(संज्ञा, पु०,) [हिं० चलना] चलने का भाव, गति। चाल। रिवाज, रस्म, रीति। [चलनि (दे०)] किसी वस्तु का व्यवहार, उपयोग या प्रचार। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्योतिष में विषुवत् पर समान दिन और रात का समय, भू-विषुवत्-गति (ज्यो०)।—**कलन**-गणित की क्रिया-विशेष जिससे दिनमान के ह्रास एवं वृद्धि के संबंध में जानकारी प्राप्त की जाती है। (संज्ञा, पु०, सं०) भ्रमण।—**सार**-(वि०) [हिं० चलन+सार प्रत्य०] प्रचलित। उपयोग या व्यवहार वाला। [**टिकाऊ** (दे०)]।

चलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चलना] एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना, गमन या प्रस्थान करना। हिलना, डोलना। **मुहा० पेट—**, दस्त आना। अतिसार होना। निर्वाह या गुजर होना। **मन—**, इच्छा या लालसा होना, लालच होना। **जीभ—**, बहुत बकना, बढ़-बढ़ कर बात करना, कुत्सित बकना। **अपने चलते—**, भरसक, यथा-शक्ति। **बात—**, जिक्र होना, चर्चा चलना। **हाथ—**, मारने-पीटने का आरंभ होना। कार्य्य-निर्वाह में समर्थ होना। निभना। प्रवाहित या वृद्धि पर होना, बढ़ना, किसी कार्य्य में अग्रसर होना। किसी युक्ति का काम में आना। आरम्भ होना। छिड़ना। जारी रहना। क्रम या परम्परा का निर्वाह होना। बराबर काम होना। टिकना, ठहरना। लेन-देन में आना। प्रचलित या जारी होना। प्रयुक्त या व्यवहृत होना। तीर, गोली आदि का छूटना। लड़ाई-झगड़ा या विरोध होना। पढ़ा या बाँचा जाना। कारगर होना, उपाय लगना, वश चलना। आचरण या व्यवहार करना। निगला या खाया जाना। **नाम, संवत—**, कीर्ति होना। **सिक्का—**, राजा होना, प्रभाव फैलना। (क्रि० स०) शतरंज या चौसर आदि खेलों में किसी मोहरे या गोटी आदि को अपने स्थान से बढ़ाना या हटाना। ताश और गंजीफे आदि के खेलों में किसी पत्ते को खेलने वालों के सामने रखना। (संज्ञा, पु०) [हि० चलनी] बड़ी चलनी।

चलनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छलनी। **लो०**-"चलनी मे गैया दुहैं कमैं दोस न देयँ"।

चलपत्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पीपल का पेड़। चलदल।

चलपूँजी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) चलधन। एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने योग्य धन। जंगम-संपत्ति, जैसे रुपया-पैसा आदि।

चलफेर—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) घूमघाम। गमन, गति।

चलवंत—(संज्ञा, पु०, हि०) पैदल सैनिक।

चलवाना—(क्रि०, सं०) [हि० चलना का प्रेरणा० रूप] चलाने का कार्य दूसरे से कराना।

चलविधरा—(संज्ञा, वि०, दे०) अड़ियल, मचलने वाला। कालज्ञ, मौका जानने वाला।

चलवैया†—(संज्ञा, पु०) [हि० चलना] चलने या चलाने वाला, चलैया।

चला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिजली। पृथ्वी, भूमि। लक्ष्मी। "लक्ष्मी चला रहीम कह"।

चलाऊ—(वि०, दे०) [हि० चलना] जो बहुत दिनों तक चले, मजबूत, टिकाऊ।

चलाका—†*(संज्ञा, स्त्री०) [सं० चला] बिजली।

चलाचल*—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० चलना] चलाचली। गति, चाल। (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जंगम-स्थावर। (वि०, सं०) चञ्चल, चपल।

चलाचली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० चलना] चलते समय की घबराहट, धूम या तैयारी, रवा-रवी, बहुत से लोगों का प्रस्थान। (वि०, दे०) जो चलने के लिए तैयार हो।

चलातंक—(संज्ञा, पु०, सं०) आमवात, वातरोग।

चलान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चलना] भेजे जाने या चलने की क्रिया। अपराधी का पकड़ा जाकर न्यायार्थ न्यायालय में भेजा जाना। माल का एक स्थान से दूसरे पर भेजा जाना। भेजा या आया हुआ माल। बीजक। सूचनार्थ भेजी हुई वस्तुओं की सूची।

चलाना—(क्रि० स०) [हि० चलना] किसी को चलने में लगाना या प्रेरित करना। गति देना। हिलाना-डुलाना। प्रचलित करना (सिक्का, मुद्रादि)। **मुहा० अपनी ही—**, अपनी ही बात कहना। **किसी की—**, किसी के बारे में कुछ कहना। **आँख—**, आँखें इधर-उधर घुमाना। **मुँह—**, भोजन करना। **जबान—**, बकवाद करना, गाली देना। **हाथ—**, मारने के लिए हाथ उठाना। मारना, पीटना। **काम—**, निर्वाह करना। कार्य सँभालना। निभाना। प्रवाहित करना। बढ़ाना। वृद्धि या उन्नति करना। किसी कार्य को अग्रसर या आरम्भ करना। जारी रखना। बराबर काम में लाना। टिकाना। व्यवहार में लाना। लेन-देन के काम में लाना। प्रचार करना, व्यवहृत या प्रयुक्त करना। तीर-गोली आदि छोड़ना। किसी चीज से मारना। **बात—**, जिक्र करना। (संज्ञा, पु०) **चलावा**†—, यात्रा।

चलायमान—(वि०, सं०) चलने वाला। चञ्चल, विचलित।

चलावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चलना] रीति, रस्म, रिवाज। आचरण, चाल-चलन। द्विरागमन, गौना। मुकलावा (ग्रा०)। गाँवों में

भयंकर बीमारी के समय किया गया। [उतारा (दे०)]

चलित—(वि०, सं०) अस्थिर। चलायमान। चलता हुआ।

चलितव्य—(वि०, सं०) चलने-योग्य, गमन करने के उपयुक्त।

चलित्री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खिलाड़ी। रसिक। चञ्चल, चपल। चरित्री, नारी।

चले—(क्रि० वि०, दे०) चल निकले। प्रचलित हो, जाने लगे, हो सके। **मुहा० तुम्हारी—**, तुमसे हो सके, जैसे—तुम्हारी चले तो ले जाना।

चलेन्द्रिय—(वि०, यौ०, सं०) अजितेन्द्रिय। इन्द्रियाधीन, लम्पट, असदाचारी, इन्द्रियसुखासक्त। "कामासक्तः चलेन्द्रियः"।

चलैया†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चलना] चलने वाला।

चलौना—(संज्ञा, पु०, दे०) चरखे का डंडा।

चवई, चवय—(क्रि० अ०, दे०) चुए। बहे। टपके। "वरु पयोद तें पावक चवई"। तुल०।

चवन्नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि०, चौ—चार का अल्पा० + आना + ई प्रत्य०) चार आने मूल्य का चाँदी या निकल का सिक्का।

चवर्ग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) च से लेकर ञ तक के अक्षरों का समूह। [**चवर्गीय** (वि०)]

चवा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चौवाई] एक साथ सब दिशाओं से बहने वाली वायु। "चवा धूम राखा नभ छाई"।

चवाई—(संज्ञा, पु०,) [हि० चबाव] बदनामी फैलाने वाला, निन्दक। चुगुलखोर। [**चवाइन** (स्त्री०)]

चवाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चौवाई] चारों ओर फैलने वाली चर्चा, प्रवाद। अफवाह। बदनामी। निन्दा।

चव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वच नामक औषधि।

चश्म—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) नेत्र, आँख। **—दीद**–(वि०, यौ०, फ़ा०) जो आँखों से देखा हुआ हो। **—०गवाह**–(संज्ञा, पु०) वह साखी जो अपनी आँखों से देखी घटना कहे।

चश्मा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कमानी में जड़े हुए शीशे या पारदर्शी पत्थर के खंड का जोड़ा, जो आँखों पर दृष्टि-वृद्धि या शीतलता के लिए लगाया जाता है। ऐनक। पानी का सोता।

चष*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्षु] आँख, नेत्र। "शनि, कज्जल चष झख लगनि"—बिहारी।

चषक—(संज्ञा, पु०, सं०) मद्य पीने का पात्र। मधु, मद्य, मदिरा।

चषचोल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि०, चष + चोल = वस्त्र] आँख की पलक।

चषण—(संज्ञा, पु०, सं०) भोजन, खाना। मारण। (संज्ञा, स्त्री०) मूर्च्छा। मदान्धता। क्षय। दुर्बलता। वध, हत्या।

चषाल—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ के खम्भे पर रखा हुआ एक काष्ठ। मधु-स्थान, मधुकोष।

चसक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हलका दर्द।*(संज्ञा, पु०, दे०) चषक।

चसकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चसक] हलकी पीड़ा होना, टीसना, दर्द करना।

चसका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चषण] किसी वस्तु या कार्य से प्राप्त सुख, जो उसको फिर से करने की इच्छा उत्पन्न करता है। शौक, चाट, आदत, लत।

चसना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चाशनी] दो वस्तुओं का एक मे सटना, लगना, चिपकना, चिपटना।

चस्पाँ†—(वि०, फ़ा०) चिपका हुआ।

चस्सी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) अपरस रोग।

चह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चय] नदी के किनारे नाव पर चढ़ने के लिए चबूतरा, पाट। *† (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० चाह] गड्ढा।

चहक—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० चहकना] खग-रव, चिड़ियों का चहचहाना। [चहकार (दे०)]।

चहकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) पक्षियों का आनन्दित होकर मधुर शब्द करना। चहचहाना, उमंग या प्रसन्नता से अधिक बोलना। [चहकारना (दे०) †]

चहका—(संज्ञा, पु०, दे०) जलन, व्यथा। बनैठी।

चहकैट—(वि०, दे०) औदन्त साँड़, बलवान।

चहचहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चहचहाना] चहचहाने का भाव, चहक। हँसी-दिल्लगी, ठट्ठा। (वि०) जिसमें चहचह शब्द हो, उल्लासयुक्त शब्द, आनन्द और उमंग पैदा करने वाला। मनोहर। ताजा।

चहचहाना—(क्रि० अ०, अनु०) पक्षियों का चहचह शब्द करना। चहकना। (संज्ञा, स्त्री०)

चहचहाहट। "पक्षियों की चहचहाहट हो उठी" —मैथिली०।

चहनना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) अच्छी तरह खाना।

चहना*†—(क्रि० स०, दे०) चाहना।

चहनि*†—(संज्ञा, स्त्री, दे०) चाह।

चहबच्चा—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [फ़ा०, चाह=कुआँ+बचा) पानी का छोटा गड्ढा या हौज। धन गाड़ने या छिपाने का छोटा तहखाना।

चहर*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चहल] आनन्द की धूम, रौनक, शोरगुल, हल्ला। [**चहर-पहर** (यौ०)] [चहलपहल]। "चहरपहर चहुँकित सुनि चायन"—रघु०। (वि०) बढ़िया, चुलबुला। "नकहू नहिं सुनति स्रवननि करत है हम चहर"—सूबे०।

चहरना†*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० चहल] आनन्दित या प्रसन्न होना।

चहराना—(क्रि० अ०, दे०) आनन्दित होना। फटना, दरकना।

चहल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) कीचड़, कीच। [हिं० चहचहाना] आनन्दोत्सव, रौनक।—**कदमी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० चहल+कदम फ़ा०] धीरे-धीरे टहलना या घूमना-फिरना।—**पहल**-(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) किसी स्थान पर बहुत से लोगों के आने-जाने की धूम। आमदरफ्त। रौनक, धूमधाम।

चहला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चिकिल] कीचड़।

चहली—(संज्ञा, स्त्री०) कुएँ की गड़ारी जिससे पानी खींचा जाता है।

चहारदीवारी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, फ़ा०) किसी स्थान के चारों ओर की दीवाल, प्राचीर, घेरा।

चहारुम—(संज्ञा, फ़ा०) चतुर्थ, चौथा।

चहुँ, चहूँ—(वि०, दे०) [हिं० चार] चार। चारों ओर, "चहुदिशि चितै पूछि माली गन"। "चितवति चकित चहूँ दिशि सोता"—तुल०।—**दिशि**-(क्रि० वि०, सं०) चारों ओर। "आज छाया चहुँदिशि चुपचाप"।

चहुँक—(वि०, दे०) चौंक, चिहुक।

चहुँवान—(संज्ञा, पु०, दे०) चौहान।

चहूँटना†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० चिमटना] सटना, लगना। मिलना।

चहेटना—(क्रि० स०, ग्रा०) गारना, निचोड़ना। खूब खाना। चपेटना।

चहेता—(वि०, दे०) [हिं० चाहना+एता प्रत्य०] जिसे चाहा जाय, प्यारा, भावता। [**चहेती** स्त्री०]

चहोरना, चहोड़ना—(क्रि० अ०, दे०) पौधे को एक जगह से उखाड़ कर दूसरी जगह लगाना, रोपना। बैठाना। सहेजना, सँभालना। [चभोरना (दे०)]-गीला करना।

चहौं—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चाहूँ] चाहता हूँ। "पद न चहौं निर्वान"—तुल०।

चाँइया, चाँई—(वि०, दे०) ठग, उचक्का, छली। चालाक।—**चंट**-(वि०) धूर्त्त।—**माँई**-घूमने वाला, चक्कर लगाने वाला। (स्त्री०) सिर की एक बीमारी जिसमे छोटी-छोटी फुंसियाँ होती है और बाल झड़ते है।

चाँईचूँई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गंज रोग।

चाँक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चौ=चार+अंक=चिह्न] खलियान में अन्न की राशि पर ठप्पा लगाने की छाप की थापी।

चाँकना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चाँक] खलियान में अन्न-राशि पर मिट्टी, राख या ठप्पे से छापा लगाना, जिससे यदि अनाज निकाला जाय तो मालूम हो जाय। सीमा करना, हद खींचना, बाँधना। पहचान के लिए किसी वस्तु पर चिह्न डालना। गोंठना, अन्न-राशि को गोबर आदि से गोंठना।

चाँगला—(वि०, दे०) [सं० चंग, हिं० चंगा] स्वस्थ, तन्दुरुस्त, हृष्ट-पुष्ट। चतुर। (संज्ञा, पु०) घोड़े का एक रंग।

चाँगला—(वि०, दे०) धूर्त्त, होशियार। तन्दुरुस्त।

चाँचर, चाँचरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चचरी] बसन्त ऋतु का एक राग, चाचर।

चांचल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चपलता, चंचलता।

चाँचु*—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) चोंच, चंचु।—**प्रवेश**-(वि०) थोड़ा ज्ञान, थोड़ी पैठ।

चाँटना—(क्रि० स०, दे०) चापना, दबाना। चिह्न करना।

चाँटा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चिमटना] बड़ी च्यूँटी। चिउँटा, चींटा। [**चाँटी, चींटी** (स्त्री०)] (संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० चट] थप्पड़, तमाचा।

चाँड—(वि०, दे०) [सं० चंड] प्रबल, बलवान। उग्र, उद्धत, शोख। बढ़ा-चढ़ा। श्रेष्ठ। संतुष्ट। घना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चंड=प्रबल] भार सँभालने का खम्भा, टेक, थूनी। किसी अभाव की पूर्ति के लिए आकुलता, बड़ी जरूरत या चाह। **मुहा०**—

सरना-इच्छा पूरी होना। "टूटे धनुष चाँड नहिं सरई"—तुल०। दबाव। संकट। प्रबलता, अधिकता, बढ़ती।

चाँड़ना—(क्रि० स०, दे०) खोदना, खोदकर गिराना, उखाड़ना, उजाड़ना।

चांडाल, चंडाल—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) एक अत्यन्त नीच जाति, डोम, डोमरा, श्वपच। (वि०) पतित। गाली। दुष्ट। बधिक। निर्दयी। [**चांडाली, चांडालिन, चांडालिनी** (स्त्री०)] "बन्यौ चंडाल अघोरी"—रत्ना०।

चाँडिला†*—(वि०, दे०) [सं० चंड] प्रचण्ड, प्रबल, उग्र। उद्धत, नटखट। अधिक। [**चाँडिली** (स्त्री०)]

चाँडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [चंडी] चोंगी, कोप।

चाँद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चन्द्रमा] चन्द्रमा। [चन्द, चन्दा (दे०)] **मुहा०—का टुकड़ा**-अत्यन्त सुन्दर मनुष्य।—**पर थूकना**-किसी महात्मा को कलंक लगाना, जिसके कारण स्वयम् अपमानित होना पड़े। **किधर—निकला है**-आज क्या अनहोनी बात हुई जो आप दिखाई पड़े। **ईद का—**, मुश्किल से दिखाई पड़ने वाली वस्तु। चंद्र-मास, महीना। द्वितीया के चंद्रमा सा एक आभूषण। चाँदमारी में निशाना लगाने का काला दाग। (संज्ञा, स्त्री०) खोपड़ी का मध्य भाग। "चाँद चौथ को देखियो मोहन भादों मास—[प्रेमसा०]।

चाँदतारा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० चाँद+तारा] चमकीला, बूटीदार, बारीक मलमल। एक पतंग।

चाँदना—(संज्ञा, पु०) [हि० चाँद] प्रकाश, उजाला।

चांदनिक—(वि०, सं०) चंदन ा बनाया हुआ, चन्दन का।

चाँदनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० चाँद] चन्द्रमा का प्रकाश, चन्द्रिका। **मुहा०—का खेत**-चन्द्रमा के चारों ओर फैला हुआ प्रकाश। **चार दिन की—(फिर अँधियारा पाख)**-थोड़े दिन का सुख या आनन्द। बिछाने की बड़ी सफेद चादर। ऊपर तानने का सफेद कपड़ा। "छिटिक चाँदनी सी रहति"—बिहारी।—**धुला**-(वि०) चन्द्रमा के प्रकाश में निर्मल बना हुआ। 'चाँदनी-धुला, अंजन सा'—महादेवी।

चाँदबाला—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० चाँद+बाला] कान का एक गहना।

चाँदमारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० चाँद+मारना] दीवाल या कपड़े पर बने चिह्नों को लक्ष्य करके गोली चलाने का अभ्यास।

चाँदा—(संज्ञा, पु०) जमीन को माप-विशेष। दूरबीन का एक निर्धारित स्थान।

चाँदी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० चाँद] एक सफेद और चमकीली धातु, जिसके सिक्के, आभूषण और बरतन आदि बनते हैं, रजत, [सिलवर] **मुहा०—का जूता**-घूस, रिश्वत।—**काटना (होना)**-खूब रुपया पैदा करना (होना)।

चांद्र—(वि०, सं०) चंद्रमा-सम्बन्धी। (संज्ञा, पु०, सं०) चांद्रायण व्रत। चंद्रकांतमणि। अदरख।

चांद्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) सोंठ। (वि०) चंद्र-सम्बन्धी।

चाँद्रमसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बृहस्पति की अर्धांगिनी।

चांद्रमास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) उतना काल जितना चद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगता है, पूर्णिमा से पूर्णिमा या अमावस्या से अमावस्या तक का समय, सोममास।

चांद्रायण—(संज्ञा, पु०, सं०) महीने भर का एक कठिन व्रत जिसमे चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार आहार को भी घटाना-बढ़ाना पड़ता है। एक मात्रिक छंद (पिं०)।

चांद्रायणिक—(वि०, सं०) चन्द्रायण-व्रत रहने वाला।

चांद्रि—(संज्ञा, पु०, सं०) [स्त्री० चांद्री] बुध। चन्द्रमा की स्त्री, चाँदनी।

चाँप*—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० चपना] दब जाने का भाव, दबाव। रेलपेल, धक्का। बलवान को प्रेरणा। बंदूक के कुंदे और नली के जोड़। †*(संज्ञा, पु०) [हि० चंपा] चपा का फूल। चाप।

चाँपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चपन] दबाना, चापना। "चरण कमल चाँपत विधि नाना"—तुल०।

चाँपिला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चंपा नदी।

चांपेय—(संज्ञा, पु०, सं०) चंपक, चंपा का फूल। धतूरा। कनक। नागकेसर।

चाँयचाँय—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) व्यर्थ की बकवाद, बक-बक, झक-झक। चिड़ियों की चहचह।

चा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पौदा-विशेष। उसकी पत्ती, चाय।

चाइ, चाउ*—(संज्ञा, पु०, दे०) चाव। "कर कंकन को आरसी, को देखत है चाइ"—वृं०।

चाउर—(संज्ञा, पु०, दे०) चावर, चावल। "देन को चारि न चाउर मोरे"—नरो०।

चाक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चक्र] एक कील पर घूमता हुआ पत्थर का गोल टुकड़ा, जिस पर मिट्टी का लोंदा रख कुम्हार बरतन बनाता है। कुलाल-चक्र। पहिया, चरखी, गराड़ी, घिरनी। थापा जिससे खलियान की राशि पर छापा लगाते हैं। मंडलाकार रेखा। [चाका (दे०)] [**चाको** (ब्र०)] (संज्ञा, पु०, फ़ा०) दरार, चीड़। काटना। (वि०, तु० चाक) दृढ़, मजबूत, पुष्ट।—**चौबन्द**–(वि०) हृष्ट-पुष्ट। चुस्त। चालाक। फुर्तीला, तत्पर।

चाकचक—(वि०) [तु० चाक+चक अनु०] चारों ओर से सुरक्षित, दृढ़, मजबूत। [चकाचक (दे०)]

चाकचक्य—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चमक, दमक, उज्वलता, शोभा।

चाकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चाक] सीमा बाँधने के लिए किसी वस्तु को रेखा से चारों ओर घेरना, हद खींचना। खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी या राख से छाप लगाना, जिससे यदि अनाज निकाला जाय तो मालूम हो जाय। पहचान के लिए किसी वस्तु पर चिह्न डालना। वृत्त खींचना।

चाकर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दास, भृत्य, सेवक, नौकर। [**चाकरानी** (स्त्री०)] [**नौकर-चाकर** (यौ०)]

चाकरी—(संज्ञा, स्त्री०) नौकरी। "जाको जैसी चाकरी"।

चाकसू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चाक्षुष] वन-कुलथी, निर्मली।

चाका—(संज्ञा, पु०) चक्र, पहिया।

चाकी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चक्की। [सं० चक्र] बिजली, वज्र।

चाकू—(संज्ञा, पु०, तु०) छुरी, चक्कू (ग्रा०)।

चाक्रायण—(संज्ञा, पु०, सं०) चक्र ऋषि के वंशज (छन्दो० उप०)।

चाक्षुष—(वि०, सं०) आँख-सम्बन्धी। जिसका बोध नेत्रों से हो, चक्षुर्ग्राह्य। (संज्ञा, पु०) छठे मनु। —**प्रत्यक्ष**–(यौ०) नेत्रों से देखा हुआ (न्या० प्रमाण)।—**साक्षी**–प्रत्यक्षदर्शी, चश्मदीद गवाह। [आई विटनेस]

चाख—(सं०, पु०, दे०)। नीलकंठ पक्षी। [चाखा (दे०)] "चारा चाख बाम दिसि लेई"—तुल०।

चाखना†—(क्रि० स०, दे०) चखना।

चाचर, चाचरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चर्चरी] चाँचर, होली में गाने का गीत। चर्चरी राग। होली के खेल-तमाशे, धमार, उपद्रव, हल-चल, हल्ला-गुल्ला। "खेल चाचर का नहीं"।

चाचरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चर्चरी] योग की एक मुद्रा।

चाचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तात] पितृव्य, बाप का भाई, चचा, चच्चा, काका (ग्रा०)। [**चाची** (स्त्री०)]

चाट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चाटना] चटपटी वस्तुओं के खाने या चाटने की इच्छा, एक बार किसी वस्तु का आनन्द पाकर फिर उसी को पाने की चाह, चसका, शौक, लालसा, इच्छा, लोलुपता। लत, आदत, बान, टेव। चरपरी और नमकीन खाने की चीजें, चटपटा, गजक। **मुहा०—पड़ना (होना)**–आदत होना।

चाटना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० चटक] स्वाद के लिए किसी वस्तु को जीभ से उठाना या खाना। पोंछ कर खा लेना। चट कर जाना। (प्यार से) किसी वस्तु पर जीभ फेरना। कीड़ों का किसी वस्तु को खा जाना। **चूमना**—,(यौ०) प्यार करना। **मुहा० दिमाग (खोपड़ी)**—, व्यर्थ बकवाद या अधिक बात से उबाना या दिक करना।

चाटु—(संज्ञा, पु०, सं०) मीठी या प्रिय बात, खुशा-मद, चापलूसी। [**चाटुकारिता** (संज्ञा, स्त्री०)]

चाटुक—(संज्ञा, स्त्री० सं०) मधुर या प्रिय वचन।

चाटुकार—(संज्ञा, पु०, सं०) खुशामद करने वाला, चापलूस, खुशामदी।

चाटुकारी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० चाटुकार+ई प्रत्य०] झूठी प्रशंसा या खुशामद।

चाड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सहारा, आश्रय। आवश्य-कता, प्रयोजन। चोंट, ढेकली। दबाव। चाँड़र (ग्रा०)।

चाढ़ा†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चाड़] प्रेम-पात्र, प्यारा। [**चाढ़ी** (स्त्री०)]

चाणक—(संज्ञा, पु०, सं०) मुनि-विशेष। गोत्र-विशेष। उभाड़ने या क्रोध पैदा करने वाली बात। [चानक (दे०)]

चाणक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) राजनीति के आचार्य तथा मौर्य-सम्राट् चन्द्रगुप्त के गुरु और मंत्री, कौटिल्य।—**नीति**–(संज्ञा, स्त्री०) कूटनीति। (संज्ञा, पु०) राजनीति-चतुर व्यक्ति। "इस युग के महान चाणक्य"—गिरीश।

चाणूर—(संज्ञा, पु०, सं०) कंस का पहलवान जो श्रीकृष्ण जी द्वारा मारा गया।

चातक—(संज्ञा, पु०, सं०) पपीहा पक्षी । [**चातकनी, चातकी** (स्त्री०)] मादा चातक । "चातक चाह भरा चिल्लाता"—हितैषी । "चातक रटत तृषा अति ओही"—तुल० ।

चातकानन्दन—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्षा ऋतु । बादल ।

चातर—(वि०, दे०) चातुर । (संज्ञा, पु०, दे०) महाजाल । दुष्टों का जमघट, षड्यंत्र ।

चातुर—(वि०, सं०) नेत्र-गोचर । चतुर । खुशामदी, चापलूस । [**चातुरता** (संज्ञा, स्त्री०)]

चातुरिक—(संज्ञा, पु०, सं०) गाड़ी हाँकने वाला, सारथी, गाड़ीवान ।

चातुरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चतुरता, चतुराई, व्यवहार-दक्षता, चालाकी । "चातुरी विहीन आतुरीन पै"—रत्ना० । **सभा—**, (यौ०) व्यवहार-कुशलता ।

चातुर्भद्र, चातुर्भद्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) चार पदार्थ—अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष । चतुर्वर्ग ।

चातुर्मास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चार महीने । [चौमासा (दे०)]

चातुर्मासिक—(वि०, यौ०, सं०) चार महीने में होने वाला एक यज्ञ कर्म आदि ।

चातुर्मास्य—(वि०, पु०, यौ०, सं०) चार महीने मे होने वाला एक वैदिक यज्ञ । वर्षा के चार महीने का एक पौराणिक व्रत ।

चातुर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चतुराई ।

चातुर्वर्ण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चारों वर्णों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र—की विभिन्न धर्म एवं कर्म-व्यवस्था ।

चातुर्वेद्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चार वेदों के ज्ञाता । चतुर्वेदी ब्राह्मणों का भेद ।

चात्वाल—(संज्ञा, पु०, सं०) गर्त, गढ़ा । अग्निहोत्र ।

चादर, चादरा—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) ओढ़ने-बिछाने का कपड़े का लम्बा-चौड़ा टुकड़ा, ओढ़ना, चौड़ा दुपट्टा, पिछौरी, चदरा । [चादर (दे०)] चद्दर । "हा ! हा ! पती दूर बिना चादर आई हैं"—रत्ना० पानी की चौड़ी धार जो ऊँचे से गिरती हो । किसी धातु का बड़ा चौखटा पत्तर । पूज्य पर चढ़ाने की फूलों की राशि ।

चानक—(क्रि० वि०, दे०) अचानक ।

चाप—(संज्ञा, पु०, सं०) धनुष, कमान । अर्द्धवृत्त क्षेत्र (गणि०) । वृत्त की परिधि का कोई भाग । धनु राशि । "लेत चाप आपुहि चढ़ि गयऊ"—तुल० । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० चाप=धनुष] दबाव । पैर की आहट ।

चापड़—(वि०, दे०) दबा या कुचला हुआ, बरबाद, मटियामेट । समतल । (स्त्री०) चोकर ।

चापन—(संज्ञा, पु०, दे०) दबाने का भाव । "लगे चरन चापन दोउ भाई"—तुल० ।

चापना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चाप] दबाना, चाँपना ।

चापल—(संज्ञा, पु०, सं०) चंचलता, चपलता । उतावली । क्षोभ । (वि०) चपल ।

चापलता*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चपलता ।

चापलूस—(वि०, फ़ा०) खुशामदी । [**चापलूसी**-(संज्ञा, स्त्री०) खुशामद ।]

चाफद—(संज्ञा, पु०, दे०) मछली मारने का जाल ।

चाब—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चव्य] गज-पिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी और जड़ औषधि के काम मे आती है । चव्य । इसका फल । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० चाबना] खाना कुचलने के चौखूँटे दाँत, डाढ़, चौभड़ । चाभ (ग्रा०) । बच्चे के जन्मोत्सव की एक रीति ।

चाबना, चाभना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चर्वण] चबाना, खाना ।

चाबी, चाभी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० चाप] कुंजी, ताली ।

चाबुक—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कोड़ा । [हंटर] **बिना—का घोड़ा**-बिना सिखाया, स्वच्छंद, उद्धत घोड़ा या युवा ।**—सवार**-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) घोड़े का सिखानेवाला ।

चाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चर्म] चमड़ा, खाल । "मुई खाल सों चाम कटावै"—घाघ । "···चाम ही को चोला है"—पद्मा० । **मुहा०** **—के दाम चलाना**-अन्याय करना ।

चामर—(संज्ञा, पु०, सं०) चौर, चँवर, चौरी, मोरछल । एक वर्णवृत्त, (पंचचामर) । "शशि-प्रभं छत्रमुभा च चामरौ"—रघु० । (संज्ञा, पु०, दे०) डाढ़, चौघड़ ।**—पाटन**।-(क्रि० स०, दे०) दाँतो से होठ काटना, दाँत कटकटाना । चभुरो बाँधना ।

चामरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुरागाय । [चौंरी (दे०)]

चामीकर—(संज्ञा, पु०, सं०) सोना, स्वर्ण । धतूरा । (वि०) स्वर्णमय, सुनहरा ।

चामुंडराय—(संज्ञा, पु०, दे०) पृथ्वीराज के एक सामन्त राजा ।

चामुंडा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक देवी, जिन्होंने शुंभनिशुंभ के चंड-मुंड नामक दो दैत्य सेनापतियों का बध किया था ।

चाम्पेय—(संज्ञा, पु०, सं०) चम्पा का फूल । नाग केसर ।

चाय—(संज्ञा, स्त्री०) [चीनी-चा] एक पहाड़ी पौधा जिसकी पत्तियों का काढ़ा पीते हैं । **—पानी**-(यौ०) जल-पान । (संज्ञा, पु०, दे०) चाव, चाह । "चाय ठंडी हो रही है, बुड्ढा पीता ही नहीं ।"

चायक*—(संज्ञा, पु०) [हिं० चाय] चाहने-वाला ।

चार—(वि०, दे०) [सं० चतुर] दो का दूना, तीन से एक अधिक । कई एक, बहुत से, थोड़ा-बहुत, कुछ । (संज्ञा, पु०) चार का अंक, ४ । बन्धन । कारागार, गुप्तदूत, चर, जासूस । दास । चिरौंजी का पेड़, पियार । अचार, आचार । गति, चाल । (वि०) चारित, चारी । **—आइना**-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) एक कवच या बख्तर । **—काने**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० चार+काना= मात्रा] चौसर या पाँसे का एक दाँव । **—खाना**-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) रंगीन धारियों के चौकोर खाने वाला कपड़ा । **—जामा**-(संज्ञा, पु० फ़ा०) जीन, पलान । **—दीवारी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) घेरा, हाता । शहरपनाह, प्राचीर, परिखा, चहारदीवार । **—पाई**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० चार+पाया] छोटा पलङ्ग, खाट, खटिया, मंजी (प्रान्ती०) । **—०चरना, पकड़ना या लेना**-इतना बीमार होना कि चारपाई से उठ न सकना । [खाट सेना (दे०)] **—पाया**-(संज्ञा, पु०, दे०) [चौपाया (दे०)] जानवर, पशु । **—बाग**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चौकोर बगीचा, आयत या वर्ग के आकार का बाग । रूमाल । **—यारी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० चार+यार फ़ा०] चार मित्रों की मंडली । सुन्नी लोगों की मंडली (मुसल०) । खलीफा के नाम या कलमा वाला चाँदी का चौकोर सिक्का । **मुहा०—आँख होना**-नजर से नजर मिलना, देखा-देखी या साक्षात्कार होना । "जब आँखें चार होती है" । बुद्धिमत्ता होना, "विद्या पढ़े आँखें चार" । **—चाँद लगना**-चौगुनी प्रतिष्ठा या शोभा होना, सौंदर्य बढ़ना । **—की कही**-पंचों या लोगों का कहना । **—फूटना**-चारों आँखें (भीतर-बाहर की) फूटना । **—खाने चित्त होना**-पूरा फैल कर चित्त गिरना । **—दिन की चाँदनी (फिर अँधेरा पाख)**-अल्प-कालीन शोभा-वृद्धि और प्रतिष्ठा ।

चारण—(संज्ञा, पु०, सं०) वंश की कीर्ति या यश गाने वाला, बंदीजन, भाट । राजपूताने की एक जाति । भ्रमणकारी । "चंचरी चारण फिरत"—केशव ।

चारना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० चारण] चराना ।

चारा—(संज्ञा, पु०) [हिं० चरना] पशुओं के खाने की घास, पत्ती । पक्षियों का खाना । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) उपाय, तदबीर । [**चारा-दाना** (यौ०)] **—जोई**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) नालिश, फरियाद ।

चारायण—(संज्ञा, पु०, सं०) कामशास्त्र का एक प्राचीन विद्वान ।

चारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सेविका, दासी ।

चारिणी—(वि०, स्त्री०, सं०) आचरण करने वाली । (यौ०) चलने वाली ।

चारित—(वि०, सं०) चलाया हुआ । [**चारिता** (स्त्री०)]

चारित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) कुलक्रमागत आचार । चाल-चलन, व्यवहार, स्वभाव । संन्यास (जैन) ।

चारित्रिक—(वि०) चरित्र-सम्बन्धी ।

चारित्रिन—(वि०, सं०) चरितवान, सदाचारी ।

चारित्र्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चरित्र ।

चारी—(वि०) [सं० चारिन्] चलने वाला, आचरण करने वाला । (संज्ञा, पु०) पदाति सैन्य, पैदल सिपाही । संचारी भाव । [**चारिणी** (स्त्री०)] (वि०) [संख्या] चार । "होइ है सत्य गये दिन चारी"—तुल० ।

चारु—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोहर । [**चारुता**-(संज्ञा, स्त्री०) सुन्दरता] "चितवनि चारु मार मद हरिणी"—तुल० । "हरियाली ने चादर चारु बिछायी"—हितैषी । **—लोचन**-(वि०, पु०) सुन्दर आँखों वाला । **—लोचना**-(वि०, स्त्री०) सुन्दर आँखों वाली, कमलनयनी । **—शील**-सुशील । **—हासिनी**-(वि०, स्त्री०, यौ०, सं०) सुन्दर हँसने वाली । (संज्ञा, स्त्री०) वैताली छन्द का एक भेद ।

चारेक्षण—(वि०, पु०, यौ०, सं०) राज-सचिव, राज-मंत्री। राजनीतिज्ञ।

चार्वंगी—(वि०, स्त्री०, यौ०, सं०) सुन्दर नारी।

चार्वाक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अनीश्वरवादी और नास्तिक तार्किक। (यौ०)—**वाद**-अनीश्वर-वाद।

चार्वी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुद्धि। चाँदनी। कुबेर की स्त्री। सुन्दर स्त्री।

चाल—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चलना] गति, गमन। चलने की क्रिया। ढंग, आचरण, बर्ताव, व्यवहार। आकार-प्रकार, बनावट। रीति, रस्म, प्रथा। मुहूर्त्त, चाला (ग्रा०)। युक्ति, ढंग, ढब। चालाकी, छल, धूर्तता। प्रकार, तरह। शतरंज, ताशादि के खेलों में गोटी को एक घर से दूसरे में ले जाने या पत्ते या पाँसे को दाँव पर डालने की क्रिया। हलचल, धूम। आंदोलन। हिलने-डोलने का शब्द, आहट, खटका।—**चलन**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० चाल+चलन] आचरण, व्यवहार। चरित्र, शील।—**ढाल**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हिं०) व्यवहार, आचरण, तौर-तरीका। **हाल**—,वृत्तान्त। —**बाज**-(वि०) [हिं० चाल+बाज फ़ा०] छली, धूर्त, ठग, चालाक। [**चालबाजी** (संज्ञा, स्त्री०)]—**फेर**-(संज्ञा, फ़ा०) धोखा, छलकपट। **मुहा०**—**चलना**-(क्रि० स०, यौ०, हिं०) छल करना, धोखा देना, ठगना। जाना। खेल में गोट आदि की जगह बदलना। "चाल तुम लाखों चले आखिर नतीजा कुछ नहीं"।—**में आना (पड़ना)**-धोखे में आना (पड़ना)।—**लगाना**-घात में रहना। चालाकी चलना।

चालक—(वि०, सं०) चलाने वाला, संचालक। (संज्ञा, पु०) [हिं० चाल] छली, ठग, धूर्त।

चालकुण्ड—(संज्ञा, पु०, सं०) उड़ीसा की चिलकी झील।

चालन—(संज्ञा, पु०, सं०) चलने या चलाने की क्रिया। गति, संचालन। (संज्ञा, पु०) [हिं० चालन] (आटा) चालने पर बचा भूसी या चोकर आदि।

चालना*‡—(क्रि० स०) [सं० चालन] चलाना, परिचालित करना। एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना। (बहू को) बिदा करा ले आना। हिलाना। कार्य-निर्वाह करना। भुगताना। बात उठाना, प्रसंग छेड़ना। आटे को चलनी में रख कर छानना। (क्रि० अ०) [सं० चालन] चलना।

चालनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चालन] आटा आदि पदार्थों के छानने का यन्त्र। [**छलनी, चलनी**]

चालनीय—(वि०, सं०) चालने या चलाये जाने लायक।

चाला—(संज्ञा, पु०) [हिं० चाल] कूच, प्रस्थान। नयी वधू का पहले पहल मायके से ससुरे जाना। यात्रा का मुहूर्त। "सोम सनीचर पुरुब न चाला" (क्रि० वि०) चलनो से चलाया हुआ।

चालाक—(वि०, फ़ा०) चतुर, दक्ष, धूर्त, चालबाज, ठग।

चालाकी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चतुराई, पटुता, व्यवहार-कुशलता, होशियारी। धूर्तता, चालबाजी, युक्ति।

चालान—(संज्ञा, पु०, दे०) चलान, न्यायार्थ अदालत में अपराधी की रवानगी।

चाली—(वि०, दे०) [हिं० चाल] धूर्त, चालबाज। चञ्चल, नटखट। (क्रि० वि०, स्त्री०) चली हुई।

चालीस, चालिस—(वि०, दे०) [सं० चत्वारिंशत्] बीस का दूना। (संज्ञा, पु०) तीस और दस की संख्या या अंक। "चिल्ला जाड़ा दिन चालीस"।

चालीसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चालीस] चालीस वस्तुओं का समूह। चालीस दिन का समय। [चलीसा (दे०)] [**चालीसी** (स्त्री०)]

चालुक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण का एक प्राचीन प्रसिद्ध राज-वंश।

चालू—(वि०, दे०) [हिं० चालना] प्रचलित, संचलित, गतिशील। **मुहा०**—**करना**-प्रगति देना, चलाना।

चाल्ह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चेल्हवा मछली।

चावँचावँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चायँचायँ, शोरगुल।

चाव—(संज्ञा, पु० दे०) [हिं० चाह] अभिलाषा, लालसा, इच्छा। प्रेम, चाह, उत्कंठा। शौक। दुलार, लाड़-प्यार। नखरा। उमङ्ग, उत्साह, आनन्द। [चाय (दे०)] "चित चैत की चाँदनो चाव भरी"।

चावड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पड़ाव, चट्टी, पथिकों के उतरने का स्थान।

चावण—(संज्ञा, पु०, सं०) गुजरात का एक प्राचीन राजवंश।

चावल—(संज्ञा, पु०) [सं० तंडुल] धान की गुठली, तंदुल। भात। चावल जैसे दाने, एक रत्ती का आठवाँ भाग। चाउर (ग्रा०)। "चाउर चाव सों चाटवे"।

चाशनी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मिश्री, शक्कर या गुड़ को आग पर गाढ़ा और शहद का सा किया हुआ शीरा। चसका, मजा। नमूने का सोना, जो सोनार को गहना बनाने के लिए दिए हुए सोने से लेकर गाहक रख लेता है। **मुहा०—चटाना**-मजा चखाना, चति पहुँचाना।

चाष—(संज्ञा, पु०, सं०) नीलकंठ, चाहा, पक्षी। [चाख (दे०)] "चारा चाष बाम दिसि लेई"—तुल०।

चास—(संज्ञा, पु०, दे०) खेती, कृषि। जुताई।

चासा—(संज्ञा, पु०, दे०) हलवाहा, किसान, खेतिहर।

चाह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० इच्छा या उत्साह] इच्छा, अभिलाषा, प्रेम, प्रीति। पूछ, आदर। माँग, जरूरत, चाहना। (**संज्ञा, स्त्री०**) [हिं० चाल=आहट] खबर, समाचार। "चाह सों सराहि चख चंचल चलैहै को"—रत्ना०।

चाहक*—(संज्ञा, पु०) [हिं० चाहना] चाहने या प्रेम करने वाला।

चाहत—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चाह] चाह, प्रेम।

चाहना—(क्रि० स०) [हिं० चाह] इच्छा या अभिलाषा करना। प्रेम या प्यार करना। माँगना, प्रयत्न करना। "जाकी यहाँ चाहना है ताकी वहाँ चाहना है"।* देखना, ताकना। ढूँढ़ना। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चाहना] चाह, जरूरत।

चाहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चाष] बगुले का सा एक जल-पक्षी। [**चाही (स्त्री०)**]

चाहाचाही—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) परस्पर प्रीति या मैत्री। चाहा का जोड़ा।

चाहि*—(अव्य०) [सं० चैव=और भी] अपेक्षाकृत (अधिक), बनिस्बत। "कुलिसहु चाहि कठोर अति"—तुल०। देखकर। इच्छा से, प्रेम से। (क्रि०) चाहिए। "करकंगन को आरसी को देखत है चाहि"—वृन्द। (पू० का० क्रिया) चाहकर।

चाहिए—(अव्य०) [हिं० चहचहाना] उचित है।* [चाहि (दे०)] उपयुक्त है। पसंद या प्यार कीजिए। "आपको न चाहै ताके बाप को न चाहिए", [यौ० चाहि+ए] यह चाहकर।

चाहित—(वि०, पु०, दे०) इच्छित, अभिलषित, प्रिय [**चाहिता**-(स्त्री०) प्रिया, प्यारी]

चाहि, चाहे, चाहो—(अव्य०) [हिं० चाहना] जी चाहे, जो इच्छा हो, मन में आवे, यदि जी चाहे तो। जैसा जी चाहे। होना चाहता या होने वाला हो। [चाहै, चाहौ (दे०)] "चाहै तो मूल को मूल कहै"।

चाही—(वि०, स्त्री०) [हिं० चाह] चहेती, प्यारी। अभीष्ट। "सरस बखानै नित-चाही करिबै मैं इमि"।

चिआँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चिंचा] इमली का बीज।

चिउँटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चिमटना] एक बहुत छोटा कीड़ा जो मीठे के पास बहुत आता है, चींटा। [**चिउँटी** (स्त्री०)] पिपीलिका। **मुहा०—की चाल**-बहुत सुस्त चाल, मंद गति।**—के पर निकलना**-ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो। मरने या विनाश पर होना। बुरे लक्षण प्रगट होना।

चिंगट—(संज्ञा, पु०, सं०) झींगा मछली।

चिंगना†—(संज्ञा, पु०, दे०) किसी पक्षी या विशेषतः मुर्गी का छोटा बच्चा। छोटा बच्चा। (क्रि० अ०, दे०) चिढ़ना।

चिंगुरना—(क्रि० अ०) नसों का फैलाव न होना। एक जगह स्थित रहने से तनाव होना।

चिंघाड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चीत्कार] चीख। [चिग्घार (दे०)] किसी जंतु का घोर शब्द, चिल्लाहट। हाथी की बोली।

चिंघाड़ना—(क्रि० अ०) [सं० चीत्कार] चीखना, चिल्लाना। हाथी का बोलना। [चिग्घारना (दे०)]

चिंचिनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तितिड़ी] इमली का पेड़ और फल।

चिंजा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चिरंजीव] लड़का, पुत्र, बेटा। [**चिंजी (स्त्री०)**], [**चिंजा-चिंजी** (यौ०)]

चिंत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिन्ता। ख्याल। याद। [(विलो०) **अचिंत**]

चिंतक—(वि०, सं०) चिन्तन या ध्यान करने वाला। सोचने वाला।

चिंतन—(संज्ञा, पु०, सं०) बार-बार स्मरण, ध्यान। विचार, विवेचना। आराधन। "हित-चिन्तन करो करै"—रत्ना०।**—शील**-(वि०) मनोषी, विचारक, चिन्ता करने वाला।

चिंतना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० चिन्तन] सोचना। ध्यान या स्मरण करना। (**संज्ञा, स्त्री०**) [सं० चिन्तन] ध्यान, स्मरण। भावना। चिन्ता, सोच।

चिंतनीय—(वि०, सं०) चिन्तन या ध्यान करने योग्य। भावनीय। चिन्ता या विचार करने योग्य। संदिग्ध। [**चिंत्य** (वि०)]

चिंतवन*—(संज्ञा, पु०, दे०) चिन्तन।

चिंता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ध्यान। स्मरण। सोच। भावना। फिक्र, खटका। "चिन्ता साँपिनि काहि न खाया"। "चिन्ता कौनेउ बात की"—तुल०।

चिंतातुर—(वि०, सं०) चिन्ता से उद्विग्न। "चिन्तातुर सब, कौन गया मर"—पंत।

चिंतामणि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक ऐसा कल्पित रत्न जो अभिलाषा को तुरन्त पूर्ण कर देता है। ब्रह्मा। परमेश्वर। सरस्वती का मंत्र जिसे विद्या प्राप्ति के लिए लड़के की जीभ पर लिखते हैं। [चिन्तामनि (दे०)] "चिन्तामनि मंजुल पवारि धूर धारनि मैं"—रत्ना०। "चिन्तामनिमय सहज सुहावन"—तुल०।

चिंतालीन—(वि०, सं०) चिन्ता मे डूबा हुआ। "मग्न, चिन्तालीन अपने आप मे।"—दिनकर।

चिंतित—(वि०, सं०) चिन्तायुक्त, फिक्रमंद। "चिन्तित रहहिं नगर के लोगू"—तुल०।

चिंतिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चिन्ता।

चिंत्य—(वि०, सं०) विचारणीय, चिन्तनीय, सोचनीय, भावनीय। संदिग्ध। [(विलो०) **अचिंत्य**]

चिंदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) टुकड़ा। [**चिंदी बिंदी** (यौ०)] **मुहा०—की बिन्दी निकालना**-अत्यन्त तुच्छ भूल या गलती निकालना, कुतर्क करना।

चिउड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) चिउड़ा, चिउरा।

चिक—(संज्ञा, स्त्री०) [तु० चिक] बाँस या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झंझरीदार परदा, चिलमन। जवनिका। (संज्ञा, पु०) पशुओं को मार कर उनका माँस बेचने वाला, बूचर, बकर-कसाई। [चिकवा (दे०)] (संज्ञा, स्त्री०, दे०) अकस्मात बल पड़ने से उत्पन्न कमर का दर्द, चमक, चिलक, झटका।

चिकट—(वि०) [सं० चिल्लिक्‍द] चिकना और मैल से गंदा, मैला-कुचैला, लसीला। [चीकट (दे०)]

चिकटना—(क्रि० अ०) [हिं० चिकट या चिक्कट] जमे हुए मैल के कारण चिपचिपा होना।

चिकटा—(संज्ञा, पु०, सं०) मैला वस्त्र। तेली। चिकवा।

चिकन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बूटेदार महीन सूती कपड़ा। (वि०, दे०) [**चीकन** (दे०)] चिकना, चिक्कण।

चिकना—(वि०, दे०) [सं० चिक्कण] जो छूने में खुरदुरा न हो, जो साफ और बराबर हो। जिस पर पैर आदि फिसले। जिसमें तेल, घी आदि पदार्थ लगे हों। [**चिकनाहट** (संज्ञा, स्त्री०)] [चिकनई (दे०)]—**घड़ा**-(संज्ञा, पु०) निर्लज्ज, बेशरम, बेहया। साफ-सुथरा, सँवारा हुआ, सुन्दर। "छोटे-बड़े चीकने अगणित"—रा० न० त्रि०। चाटुकार, खुशामदी। स्नेही, प्रेमी। (संज्ञा, पु०) तेल, घी आदि।

चिकनाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चिकना+ई प्रत्य०] चिकना का भाव, चिकनापन, चिकनाहट, स्निग्धता, सरसता। [चिकनई (दे०)] तेल, घी।

चिकनाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चिकना+ना प्रत्य०] चिकना या स्निग्ध करना। साफ करना। सँवारना। चापलूसी करना। बात बनाना। (क्रि० अ०) चिकना या स्निग्ध होना, चरबी-युक्त या हृष्ट-पुष्ट होना, मोटा होना।

चिकनापन—(संज्ञा, पु०) [हिं० चिकना+पन प्रत्य०] चिकनाई। [**चिकनाहट** (संज्ञा, स्त्री०)]

चिकनिया—(वि०, दे०) [हिं० चिकना] छैला, शौकीन, बाँका, बना ठना। **छैल**—,(यौ०) शौकीन युवक।

चिकनी—(वि०, स्त्री०, दे०) चिकना। **मुहा०—चुपड़ी बातें करना**-बनावटी स्नेह से भरी बातें, कृत्रिम मधुर भाषण। "सपथ खाय बोलैं सदा चिकनी-चुपरी बात"—वृंद०।

चिकनीसुपारी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० चिक्कणा] एक प्रकार की उबाली हुई चिकनी और मीठी सुपारी।

चिकरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चीत्कार] चीत्कार करना, चिंघारना, चीखना।

चिकार—(संज्ञा, पु०, दे०) चिंघाड़। "भूमि पर्‌यो करि घोर चिकारा"—तुल०।

चिकारना—(क्रि० अ०, दे०) चिंघाड़ना।

चिकारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चिकार, अल्पा० चिकारी] सारंगी, एक बाजा। हरिण की जाति का एक जानवर।

चिकित्सक—(संज्ञा, पु०, सं०) रोग-नाश का उपाय करने वाला, वैद्य। "चिकित्सको वेदविदो वदन्ति"।

—**परीक्षा**-डाक्टरी परीक्षा । [मेडिकल इक्जामिनेशन]—**साक्षी**-डाक्टरी साक्षी । [मेडिकल विटनेस]

चिकित्सा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) (वि०) रोगनाशक युक्ति या क्रिया, इलाज । वैद्य का व्यवसाय या काम । "चिकित्सा नास्ति निष्फला"—[भाव प्रा०] ।—**जीवी**-डाक्टरी पेशा करने वाला [मेडिकल प्रैक्टीशनर] ।—**परामर्शक**-डाक्टरी सलाह देने वाला [मेडिकल एडवाजर] ।—**परिदर्शक**-चिकित्सा निरीक्षक [मेडिकल इन्स्पेक्टर] ।—**परिषद्**-डाक्टरों का मंडल [मेडिकल बोर्ड] ।—**विभाग**-डाक्टरी विभाग [मेडिकल डिपार्टमेंट] ।

चिकित्साधिकारी—(संज्ञा, पु०, यौ०) चिकित्सा-पदाधिकारी, चिकित्सा अधिकारी । [मेडिकल आफिसर]

चिकित्सालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शफाखाना, अस्पताल ।

चिकित्सिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महिला डाक्टर [लेडी डाक्टर] ।

चिकित्सित—(वि०, सं०) चिकित्सा किया हुआ । [**चिकित्स्य**-(वि०) चिकित्सा के योग्य ।]

चिकित्सीय—(वि०, सं०) चिकित्सा-सम्बन्धी ।—**प्रमाण-पत्र**-डाक्टर द्वारा दिया जाने वाला प्रमाण-पत्र । [मेडिकल सार्टिफिकेट]

चिकीर्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) करने की इच्छा, अभिलाषा ।

चिकीर्षित—(वि०, सं०) अभिलषित, इच्छित, वांछित, अभिप्रेत, चाहा हुआ ।

चिकीर्षु—(संज्ञा, पु०, सं०) करने का इच्छुक, अभिलाषी ।

चिकुटी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिकोटी, चुटकी ।

चिकुर—(संज्ञा, पु०, सं०) सिर के बाल, केश । पर्वत । सांप आदि रेंगने वाले जन्तु । छछूंदर । गिलहरी ।

चिकोरना—(क्रि० स०, दे०) चोंचियाना, चोंच से बिखेरना ।

चिकोरा—(वि०, दे०) चंचल, चपल, तरल ।

चिक्क—(वि०, दे०) चिपटी नाक वाला । (संज्ञा, स्त्री०) बकरी, अजा, छाग । "पाछी खेत चिक्क-धन अरु बिरियन बढ़वारि" ।

चिक्कट—(संज्ञा, पु०) [हि० चिकना+कीट या काट] जमा हुआ गर्द । तेल आदि का मैल । (वि०) मैला-कुचैला, गन्दा ।

चिक्कण—(वि०, सं०) चिकना ।

चिक्करना—(क्रि० अ०, दे०) चिंघाड़ना । "चिक्करहिं दिग्गज डोल महि"—तुल० ।

चिक्कार—(संज्ञा, पु०, दे०) चिग्घाड़ ।

चिक्की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सड़ी सुपाड़ी ।

चिखुरा—(संज्ञा, पु०, दे०) चूहा ।

चिखुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गिलहरी ।

चिचड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) डेढ़-दो हाथ ऊँचा एक छोटा सा पौधा जो दवा के काम आता है, ओंगा, अपामार्ग, अंझाझार, लटजीरा । [**चिचड़ी, चिचिरा** (स्त्री०)] चिरचिरा, चिरचिटा (ग्रा०) ।

चिचड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [?] चौपायों के शरीर में चिपट कर रक्त पीने वाला छोटा कीड़ा, किलनी । [किल्ली (दे०)]

चिचान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सचान] बाज पक्षी ।

चिचिंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) चचींड़ा, एक साग ।

चिंचियाना—(क्रि० अ०, दे०) चिल्लाना ।

चिचुकना—(क्रि० अ०, दे०) चुचकना ।

चिचोरना—(क्रि० स०, दे०) चचोड़ना ।

चिजारा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० चदिन=चुनना] कारीगर, मेमार, राज ।

चिट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चीड़ना] कागज, कपड़े आदि का टुकड़ा । पुरजा, रुक्का ।

चिटकना—(क्रि० अ०, अनु०) सूख कर जगह-जगह पर फटना । कलियों का खिलना । लकड़ी का जलते समय चिट-चिट शब्द करना । चिढ़ना, चिटखना ।

चिटकाना—(क्रि० स०, अनु०) किसी सूखी हुई चीज को तोड़ना या तड़काना । खिझाना, चिढ़ाना, ताना मारना । उछालना । फैलाना ।

चिटनवीस—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० चिट+नवीस फ़ा०] लेखक, मुहर्रिर, कारिन्दा ।

चिट्ट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिट ।

चिट्टा—(वि०, दे०) [सं० सित] सफेद, श्वेत । (संज्ञा, पु०) झूठा बढ़ावा । (वि०) चिट्टेबाज । [**चिट्टेबाजी** (संज्ञा, स्त्री०)]

चिट्ठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चट] हिसाब की बही, खाता-लेखा, वर्ष भर के नफा-नुकसान के हिसाब का ब्योरा । फर्द । किसी रकम की सिलसिलेवार फिहरिस्त, सूची । वह रुपया जो प्रति दिन, सप्ताह या प्रतिमास मजदूरी या तनख्वाह

के रूप में बाँटा जाय । खर्च की फिहरिस्त । **कच्चा—**,बिना कुछ छिपा, सविस्तार वृत्तान्त, मार्मिक रहस्य ।

चिट्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० चिट] कहीं भेजने के लिए समाचार आदि लिखा कागज, पत्र, खत । कोई छोटा पुरजा या कागज जिस पर कुछ लिखा हो । एक क्रिया, जिससे यह निश्चित किया जाता है कि किसी माल के पाने या काम के करने का अधिकारी कौन हो । किसी बात का आज्ञा-पत्र । [चीठी (दे०)] "राम लखन की करबर चीठी"—तुल० ।**—पत्री**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० चिट्ठी+पत्री] पत्र, खत । पत्र-व्यवहार ।**—रसाँ**-(संज्ञा, पु०) [हि० चिट्ठी+रसा फ़ा०] चिट्ठी बाँटने वाला, डाकिया । [पोस्टमैन]

चिड़चिड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) चिचड़ा । (वि०) [हि० चिड़चिड़ाना] शीघ्र चिढ़ने या अप्रसन्न होने वाला । [**चिड़चिड़ी** (स्त्री०)]

चिड़चिड़ाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) जलने मे चिड़चिड़ शब्द होना । सूख कर जगह-जगह से फटना । खरा होकर दरकना । चिढ़ना, झुँझुलाना ।

चिड़वा—(संज्ञा, पु०) [सं० चिपिट] हरे, भिगोये या कुछ उबले हुए धान को भाड़ में भुना और कूटकर बनाया हुआ चिपटा दाना । [चिउड़ा, चिउरा (दे०)]

चिड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चटक] गौरा पक्षी । पाँसे के खेल की बिसात मे चार-चार घरों पर मध्य का पाँचवाँ घर । [**चिड़ी**-(स्त्री०) चिड़िया]

चिड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चटक] पक्षी, पखेरू, पंछी । चिड़िया के आकार का गढ़ा या काटा हुआ टुकड़ा । ताश का एक रंग । [चिड़ी (दे०)] "तब पछिताने क्या हुआ जब चिड़िया चुग गई खेत"—कबीर ।**—खाना**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० चिड़िया+खाना फ़ा०] वह स्थान या घर जिसमें अनेक प्रकार के पक्षी, पशु तथा जंतु देखने के लिए रखे जाते हैं, चिड़िया-घर । **मुहा०—उड़ जाना**-चिरैया, शिकार का चला जाना ।**—का दूध**-अप्राप्य वस्तु । **सोने की—**, धन देनेवाला असामी ।

चिड़िहार*—(संज्ञा, पु०, दे०) चिड़ीमार ।

चिड़ीमार—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० चिड़ी+मारना] चिड़िया पकड़ने वाला, बहेलिया । [**चिड़ीमारी** (संज्ञा, स्त्री०)]

चिढ़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चिड़चिड़ाना] चिढ़ने का भाव, अप्रसन्नता, कुढ़न, खिजलाहट । नफरत, घृणा ।

चिढ़ना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चिड़चिड़ाना] अप्रसन्न या नाराज होना, बिगड़ना । कुढ़ना, द्वेष रखना । बुरा मानना, चिटकना ।

चिढ़ाना—(क्रि० स०) [हि० चिढ़ना का प्रेरणा० रूप] अप्रसन्न या नाराज करना, खिझाना, कुढ़ाना, कुढ़ने को मुँह बनाना या ऐसी ही अन्य कोई चेष्टा या उपहास करना ।

चित—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चेतना, ज्ञान । (संज्ञा, पु०) [सं० चित्त] चित्त, मन । *(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चितवन] दृष्टि । (वि०) [सं० चित=ढेर किया हुआ] पीठ के बल पड़ा हुआ । [चित्त (दे०)]

चितकबरा—(वि०, दे०, यौ०) [सं० चित्र=दर्बुर] रंगबिरंगा, कबरा, चितला । [**चितकबरी** (स्त्री०)]

चितचाही—(वि०, स्त्री०, दे०) मनमाना, अभीष्ट ।

चितचोर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० चित्त+चोर] चित को चुराने वाला, प्यारा, प्रिय "मो मन मों निसिदिन बसै ऊधौ वह चित-चोर" ।

चितना—(क्रि० स०, दे०) रँगा जाना । ताकना, देखना । "चहुँ दिसि चितै देखि माली गन"—तुल० ।

चितभंग—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० चित+भंग] ध्यान न लगना, उचाट, उदासी । मति-भ्रम ।

चितरना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० चित्र] चित्रित करना, चित्र बनाना । [**चितरनहार** **चितेरा** (वि०)]

चितरोख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० चित्र+रुख फ़ा०] एक प्रकार की चिड़िया, चित-रवा ।

चितला—(वि०, दे०) [सं० चित्रल] कबरा, चितकबरा, रंग-बिरंगा । (संज्ञा, पु०) लखनऊ का एक खरबूजा । एक बड़ी मछली ।

चितवन, चितौन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चेतना] देखने या ताकने का भाव या ढंग, अवलोकनि, दृष्टि, चितवनि, चितौनि । "वह चितवनि औरै कछू"—बिहारी ।

चितवना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० चेतना] देखना, चितौना । "चितवति चकित चहूँ दिसि सीता"—तुल० ।

चितवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चितवना का प्रेरणा० रूप] तकाना, दिखाना । [**चितवाइबो** (ब्र०)]

चितहट—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) अनिच्छा, खिंचाव । घृणा, घिन ।

चिता—(संज्ञा, स्त्री०) [स० चित्य] मुरदा जलाने की लकड़ियों का चुना हुआ ढेरा । श्मशान, मरघट ।

चिताना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चेतना] होशियार या सावधान करना । स्मरण या आत्मबोध कराना, ज्ञानोपदेश देना । (आग) जलाना, सुलगाना । [चेताना, चेतावनी (दे०)]

चितारोहण—(संज्ञा, पु०, सं०) सती होना । प्रतिष्ठापित होना । आसीन होना ।

चितावनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चिताना] चिताने की क्रिया, सतर्क या सावधान करने की क्रिया । सावधान करने को कही गयी बात । [चितावनी (दे०)]

चिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चिता, ढेर चुनने या इकट्ठा करने की क्रिया, चुनाई । चैतन्य । दुर्गा देवी । [**चित्यर्चा** (यौ०)]

चितेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चित्रकार] चित्रकार, मुसौविर । "वैद्य चितेरा बानियाँ हरकारा औ कव्व" । [**चितेरिन** (स्त्री०)] "चित्र तै दीठि चितेरिन पै"—रत्ना० ।

चितै—(क्रि० स०, दे०) [हि० चितवना] देख कर, ताक कर, । "प्रभु तन चितै प्रेमप्रण ठाना"—[रामा०] । (संज्ञा, स्त्री०) चित ही ।

चितौन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चितवन, चितौनि । [चितवनि (दे०)]

चितौना—(क्रि० स०, दे०) चितवना ।

चित्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चेतना, ज्ञान । आत्मा । चित्त ।

चित्त—(संज्ञा, पु०, सं०) अंतःकरण का एक भेद, मन, दिल ।—**भूमि**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) योग मे चित्त की पाँच अवस्थायें—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, निरुद्ध ।—**विक्षेप**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चित्त की चंचलता या अस्थिरता, आकुलता ।—**विभ्रम**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भ्रांति, भ्रम, भौंचक्कापन, उन्माद ।—**वृत्ति**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) चित्त की गति या अवस्था, मनोवृत्ति । [चितवृति (दे०)] । **मुहा०—चढ़ना**-अति प्रिय या अभीष्ट होना ।—**पर चढ़ना**-मन मे बसना, बार-बार ध्यान मे आना, स्मरण होना, याद पड़ना ।—**बटना**-मन का एकाग्र न रहना ।—**में धँसना, जमना, पैठना, बैठना**-हृदय में दृढ़ होना, मन में धँसना या गड़ना, समझ में आना, असर करना ।—**से उतरना, उतारना**-ध्यान में न रहना (रखना), भूल जाना (भुलाना), दृष्टि से गिरना ।—**चुराना**-मन मोहना ।—**देना**-ध्यान देना, मन लगाना ।—**हटाना**-ध्यान या रुचि हटाना ।

चित्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चित्र] एक पौधा (औषधि) । बाघ का सा जन्तु, चीता ।

चित्ताकर्षक—(वि०, सं०) मन को आकर्षित करने वाला, लुभाने वाला । खींचने वाला ।

चित्ताभोग—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्ण चेतनता । मन की किसी विशेष वस्तु पर आसक्ति ।

चित्तामोदी—(वि०, सं०) चित्त को प्रसन्न बनाने वाला । "चित्तामोदी सुरभि जिसने केतकी दी तुझे है ।"—हरिऔध ।

चित्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुद्धि, प्रज्ञा । कर्म । भक्ति । प्रयोजन ।

चित्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) (सं० चित्र] छोटा दाग या चिह्न, छोटा धब्बा, बुँदकी । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० चित] जुआ खेलने की कौड़ी, टैंया (ग्रा०) ।

चित्तोद्वेग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मन का उद्वेग, विरक्ति । व्याकुलता, घबराहट ।

चित्तोन्नति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) गर्व, अहंकार, अभिमान, घमंड ।

चित्तौर—(संज्ञा, पु०, दे०) उदयपुर के महाराणाओं की प्राचीन राजधानी ।

चित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) समाधि का स्थान ।

चित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) आलेख । (वि०) चंदन आदि का माथे पर चिह्न, तिलक । किसी वस्तु का स्वरूप और आकार जो कलम और रंग आदि से बना हो, शबी, तस्वीर । **मुहा०—खींचना, उतारना**-चित्र बनाना, तसवीर खींचना । वर्णन आदि के द्वारा

ठीक-ठीक दृश्य सामने उपस्थित कर देना ।—कला-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) चित्र बनाने की विद्या ।—कार-(संज्ञा, पु०, सं०) चित्र बनाने वाला, चितेरा, मुसौविर ।—कारी-(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चित्रकार+ई० प्रत्य०] चित्रविद्या, चित्र बनाने की कला, चितेरे का काम ।—काव्य-(संज्ञा, श्र०) काव्य के तीन भेदों में से एक, जिसमे व्यंग्य की प्रधानता नही रहती, अलंकार । काव्य मे एक प्रकार की रचना जिसमें पद्यों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते हैं कि खड्ग, कलम आदि के आकार बन जाते हैं। एक वर्णवृत्त । आकाश । देह पर सफेद दागवाला कोढ़ । चित्रगुप्त । चीते का पेड़ । चित्रक । (वि०) अद्भुत, विचित्र । चितकबरा, कबरा ।--गृह-चित्र-शाला [स्टूडिओ] । —पट-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह कपड़ा, कागज या पटरी जिस पर चित्र बनाया जाय । फोटो का सेट । चित्राधार । छींट । सिनेमा (आधु०) । चलचित्र, छाया चित्र नाटक का पर्दा । —पटी-(स्त्री०) वह वस्त्रखण्ड या आधार जिस पर चित्र अंकित किया गया हो। "प्राणों की चित्रपटी मे"—महादेवी ।—लिपि-प्राचीनकाल मे प्रचलित वह लिपि जिसमें किसी वस्तु को उसके चित्र से प्रगट किया जाता था। [हीरोग्लिफिक स्क्रिप्ट] —शाला-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह घर जहाँ चित्र बनाये या रखे जाते हों या जहाँ रंग-विरंग की सजावट हो ।

चित्रकंठ—(संज्ञा, पु०, सं०) कबूतर ।

चित्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) चित्र । तिलक । चीते का पेड़ । चीता, बाघ । चिरायता । चित्रकार । "काजर लै भीति हू पै चित्रक बनायौ है" [**चित्रित** (वि०)]

चित्रकूट—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत, जहाँ वनवास के समय राम, लक्ष्मण और सीता ने निवास किया था । चित्तौर ।

चित्रगुप्त—(संज्ञा, पु०, सं०) १४ यमराजों में से एक जो प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा रखते है । "केती चित्रगुप्त जम औधि कुटि जायगी"—रत्ना० । "बही बही फिरै बही चित्र औ गुपुत्र को"—पद्मा० ।

चित्रना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० चित्रण] चित्रित करना ।

चित्रनेका—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सारिका, मैना ।

चित्रपक्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मोर, मीतल ।

चित्रपदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक छंद । मैना ।

चित्रभानु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्य ।

चित्रमद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी स्त्री का अपने प्रेमी के चित्र को देख विरहभाव प्रदर्शन (नाटक) ।

चित्रमय—(वि०, सं०) सचित्र, चित्रों से पूर्ण ।

चित्रमृग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चित्तीदार हिरन । [चीतल (दे०)]

चित्रयोग—(संज्ञा, पु०, यौ०, अ०) बुड्ढे को जवान और जवान को बुड्ढा या नपुंसक बना देने की विद्या या कला ।

चित्ररथ—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, चित्रभानु ।

चित्रलेखा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक वर्ण-वृत्त । चित्र बनाने की कलम या कूँची ।

चित्रवत्—(वि०, सं०) चित्र की तरह । ज्यों का त्यों । चित्र जैसा । (ला०) स्थिर, गतिशून्य ।

चित्रविचित्र—(वि०, यौ०, सं०) रंगविरंगा, कई रंगों का । बेल-बूटेदार, नक्काशदार ।

चित्रविद्या—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) चित्र बनाने की विद्या, चित्र-कला ।

चित्रसार—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० चित्र+शाला] वह घर जहाँ चित्र टँगे या दीवार पर बने हों । सजा हुआ विलास-भवन, रंगमहल ।

चित्रस्थ—(वि०, सं०) चित्र की भाँति । "सुन रहा निश्चेष्ट वह चित्रस्थ सा "—मधुपुरी ।

चित्रहस्त—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वार, हथियार चलाने का हाथ ।

चित्रांग—(वि०, यौ०, सं०) जिसके शरीर पर चित्तियाँ या धारियाँ आदि हों । (संज्ञा, पु०) चित्रक । [चीता (दे०)] एक सर्प । [चीतल (दे०)] ईंगुर । [**चित्रांगी** (स्त्री०)]

चित्रांगद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा शान्तनु के पुत्र जो सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न हुए और इसी नाम के गंधर्व से युद्ध मे मारे गये (महा०) ।

चित्रांगदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अर्जुन की स्त्री और बभ्रुवाहन की माता ।

चित्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २७ नक्षत्रों मे से १४ वाँ नक्षत्र (ज्यो०) । मूषिकपर्णी । ककड़ी या खीरा । दंती वृक्ष । गंडदूर्वा । मजीठ । वायविडंग । मूसा-कानी । आखुपर्णी । अजवाइन । एक रागिनी । कृष्ण सखी । १५ अक्षरों का एक वर्णवृत्त (पिं०) । चितकबरी गाय ।

चित्राक्ष—(वि०, सं०) सुन्दर आँखों वाला ।

चित्राक्षी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मैना, सारिका ।

चित्राधार—(पु०, सं०) चित्रपट । "गिरता रँगता बारबार कौन जग का चित्राधार"—महादेवी ।

चित्रालय—(संज्ञा, पु०, सं०) चित्रों का संग्रहालय, चित्रशाला ।

चित्राश्व—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्यवान ।

चित्रिक—(संज्ञा, पु०, सं०) चैत मास ।

चित्रिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों मे से एक (काम०) ।

चित्रित—(वि०, सं०) चित्र में खींचा या दिखाया हुआ । बेल-बूटेदार । जिस पर चित्तियाँ या धारियाँ आदि हों ।

चित्रीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) चित्रित करना, सजाना, रंगना ।

चित्रेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मयंक, चंद्र ।

चित्रोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अलकार-युक्त भाषा में कहना । व्योम, आकाश ।

चित्रोत्तर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक काव्यालंकार जिसमे प्रश्न ही के शब्दों मे उत्तर या कई प्रश्नो का एक ही उत्तर होता है ।

चिथड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चीर या चीर्ण] फटा-पुराना कपड़ा, लत्ता, लगुरा, गुदरा, चीथरा (ग्रा०) ।

चिथाड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चीर्ण] चीरना, फाड़ना । अपमानित करना । लिथाड़ना, चिथोड़ना, चित्थारना । [**चित्थाड़** (संज्ञा, स्त्री०)]

चिद्—(संज्ञा, पु०, सं०) चैतन्य, सजीव, जीवधारी ।

चिदाकाश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चैतन्य । आकाश । ब्रह्म, परमात्मा । शिव । "चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं"—[रामा०] ।

चिदात्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्रह्म, ज्ञानरूप ।

चिदानन्द—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आनन्दरूप ब्रह्म, शिव । "चिदानन्द संदोहमोहा-पहारी—[रामा०] ।

चिदाभास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चैतन्यरूप परमात्मा का आभास या प्रतिबिम्ब, जो अंतःकरण पर पड़ता है । जीवात्मा ।

चिद्रूप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ज्ञानरूप, ज्ञानमय, परमात्मा, ब्रह्म, चित्स्वरूप ।

चिद्विलास—(संज्ञा, पु०, सं०) चित्स्वरूप परम ब्रह्म की माया, ब्रह्मरूप मे समाहित होने की रमणीय स्थिति ।

चिन—(संज्ञा, पु०) हिमालय पर प्राप्त होने वाला सदाबहार पेड़ ।

चिनक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चिनगी] जलन लिये हुए पीड़ा, चुनचुनाहट ।

चिनगारी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० चूर्ण, हिं० चून+अंगार] जलती हुई आग का टूटा हुआ छोटा उड़ने वाला कण या टुकड़ा, अग्नि-कण । **मुहा० आँखों से —छूटना, निकलना**—क्रोध से आँखें लाल होना ।

चिनगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चून+अग्नि] अग्नि-कण, चिनगारी । चुस्त चालाक लड़का । नटों का खेलाड़ी लड़का । "चिनगी चुगै चकोर कै" —तुल० ।

चिनचिनाना—(क्रि० अ०, दे०) चिल्लाना, चीखना, आह मारना ।

चिनिया—(वि०, दे०) [हिं० चीनी] चीनी के रंग का, सफेद । चीन देश का ।

चिनियाकेला—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० चिनिया+केला] छोटी जाति का एक केला ।

चिनियाबदाम—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) मूँगफली । चीना-बादाम ।

चिन्मय—(वि०, यौ०, सं०) ज्ञानमय, ज्ञानरूप । (संज्ञा, पु०) परमेश्वर । [**चिन्मयता** (स्त्री०)]

चिन्मात्र—(वि०, यौ०, सं०) ज्ञानमय ब्रह्म ।

चिन्ह*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) चिह्न, निशान ।

चिन्हवाना†—(क्रि० स०, दे०) चिन्हाना ।

चिन्हाना†—(क्रि० स०) [हिं० चीन्हना का प्रेरणा० रूप] पहिचनवाना, परिचित कराना ।

चिन्हानी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चिह्न] चीन्हने की वस्तु । पहिचान, लक्षण, स्मारक, यादगार । रेखा, धारी, लकीर, निशानी । [चिन्हदानी (दे०)]

चिन्हार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चिह्न] परिचित, पहिचाना हुआ । लक्षित । अंकित । जान-पहिचान ।

चिन्हारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चिह्न] जान-पहिचान, परिचय । निशानी, चिन्हानी (ग्रा०) ।

चिन्हित—(वि०, सं०) चिह्न-युक्त, अंकित । मनोनीत । सांकेतिक ।

चिपकना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० चिप] किसी लसीली वस्तु के कारण दो वस्तुओं का परस्पर जुड़ना, सटना, चिमटना ।

चिपकाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चिपकना] लसीली वस्तु को बीच में रखकर दो वस्तुओं को परस्पर जोड़ना, चिमटाना, श्लिष्ट करना, चस्पाँ करना, चिपटाना । [**चिपकवाना** (प्रेरणा० रूप)]

चिपचिपा—(वि०, दे०) [अनु० चिपचिप] जो चिपकता जान पड़े, लसदार, लसीला।

चिपचिपाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चिप] छूने में चिपचिपा जान पड़ना, लसदार मालूम होना।

चिपटना—(क्रि० अ०, दे०) चिपकना। चिपटा होना।

चिपटा—(वि०) [सं० चिपिट] जिसकी सतह दबी और बराबर फैली हुई हो, बैठा या धँसा हुआ। [**चिपटी** (स्त्री०)]

चिपटाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चिपटना] चिपकाना, अंक लगाना। चिपटा करना।

चिपटी—(वि०, स्त्री०, दे०) चिपटा। योनि। एक तरह की बाली।

चिपड़ाहा—(वि०, पु०, दे०) किचड़ाई या किचराई आँख, कीचड़ भरी आँख। चिपरहा (ग्रा०)।

चिपड़ी, चिपरी‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चिप्पड़ी] गोबर के पाथे हुए चिपटे टुकड़े, उपली, चिपटी या किचराई हुई आँख। [**चिपरा** (पु०, वि०)]

चिप्पड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चिपिठ] छोटा चिपटा टुकड़ा, सूखी लकड़ी आदि के ऊपर की छाल का टुकड़ा। किसी वस्तु के ऊपर से छिला हुआ टुकड़ा।

चिप्पी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चिप्पड़] छोटा चिप्पड़ या टुकड़ा। उपली, गोइँटी।

चिबुक—(संज्ञा, पु०, सं०) ठोढ़ी। "चारु चिबुक नासिका कपोला"—[रामा०]।

चिमटना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चिपटना] चिपकना, सटना। आलिंगन करना। लिपटना। हाथ-पैर आदि सब अंगों को लगा कर दृढ़ता से पकड़ना, गुथना। पीछा या पिंड न छोड़ना। [**चिमटाना** (प्रेरणा० रूप)]

चिमटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चिमटना] एक यंत्र जिससे उस स्थान पर की वस्तुओं को पकड़ कर उठाते हैं जहाँ हाथ नहीं ले जा सकते। दस्त-पनाह, पाणित्राण, कर-रक्षक। [**चिमटी** (स्त्री०, अल्पा०)] "चाह चिमटी हूँ सो न खेंचे खसकत है"—रत्ना०।

चिमटाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चिमटना] चिपकाना, सटाना, लिपटाना।

चिमड़ा—(वि०, दे०) चीमड़, कठिनता से टूटने वाला।

चियना—(क्रि० स०, दे०) चुनना, चयन करना।

चिरंजीव—(वि०, यौ०, सं०) बहुत काल तक जीते रहो, आशीर्वाद का शब्द। [**चिरंजीवी-भव, भूयात्** (यौ०)]

चिरंतन—(वि०, सं०) पुराना, प्राचीन, पुरातन।

चिर—(वि०, सं०) बहुत दिनों तक रहने वाला। (क्रि० वि०) बहुत दिनों तक। (संज्ञा, पु०) तीन मात्राओं का ऐसा गण जिसका प्रथम वर्ण लघु हो। (पिं०)।—**काल**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दीर्घ काल, बहुत समय।—**जीवी**—(वि०, यौ०, सं०) बहुत दिनों तक जीने वाला, अमर। (संज्ञा, पु०) विष्णु। कौआ। मार्कंडेय ऋषि, अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य्य और परशुराम चिरंजीवी माने गये हैं [पु०]।—**निद्रा**—(संज्ञा, स्त्री०) चिरकाल तक रहने वाली निद्रा। "तुम चिरनिद्रा बन जाना"—महादेवी।—**यौवन**—(संज्ञा, पु०, सं०) चिरकाल तक रहने वाला यौवन।—**संचित**—(वि०, सं०) बहुत दिनों तक संजोयी हुई, चिरकाल तक सुरक्षित। "फूट-फूट पड़ता किसलय मिस चिरसंचित अनुराग"—महादेवी।—**स्थायी**—(वि०, यौ०) [सं० चिर+स्थायिन्] बहुत दिनों तक रहने वाला, दृढ़। [विलो० **अचिरस्थायी, क्षणभंगुर**]।—**स्मरणीय**—(वि०, यौ०, सं०) बहुत दिनों तक स्मरण रखने योग्य, पूजनीय। [**चिरस्मरण** (संज्ञा, पु०)]

चिरई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिड़िया। [चिरैया (दे०)]। "गगन चिरैय्या उड़त लखावति"—सूर।

चिरकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) थोड़ा-थोड़ा मल निकलना या मल-त्याग करना।

चिरकालिक—(वि०, सं०) लम्बी अवधि का। "होगा चिरकालिक, बरसों तक रहेगा"—हरिऔध।

चिरकालीन—(वि०) बहुत समय का।

चिरकीन—(वि०, फ़ा०) गँदा। (संज्ञा) एक कवि का उपनाम।

चिरकुट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चिर+कुट्ट = काटना] फटा-पुराना कपड़ा, चिथड़ा, गूदड़।

चिरचिटा—(संज्ञा, पु०, दे०) चिचड़ा, अपामार्ग। [चिचिरा (दे०)]

चिरजीवना—(क्रि० अ०, सं०) दीर्घायु का होना, बहुत समय तक जीना। "चिरजीवहु मम लाल।"

चिरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चीर्ण] फटना। सीध में कटना। लकीर के रूप में घाव होना।

चिरमिटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गुंजा, घुंघुची, रत्ती।

चिरवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चिरवाना] चिरवाने का भाव, कार्य या मजदूरी, चिड़वाई।

चिरवाना—(क्रि० स०) [हिं० चिरना का प्रेरणा० रूप] चीरने का काम कराना, फड़वाना, चिड़वाना।

चिरस्थायिता—(संज्ञा, स्त्री०) टिकाऊपन। [परमानेंसी]।

चिरहटा—(संज्ञा, पु०, दे०) चिड़ीमार।

चिराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चीरना] चीरने का भाव, क्रिया या मजदूरी, चिरवाई। (संज्ञा, भाव० हिं०) चिरता, दीर्घकालता।

चिराग—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दीपक, दिया, चिराग। "था वही ले दे के उस घर का चिराग", "चिरागन की माला"—परत०। **घर का—**, गृह-दीपक, कुल-दीपक। **मुहा०—रोशन होना**—किसी घर का सौभाग्य बढ़ना।—**गुल होना**—किसी घर के भाग्यवान व्यक्ति या प्रिय बालक का मर जाना।

चिराना—(क्रि० स०) [हिं० चीरना का प्रेरणा० रूप] चीरने का काम दूसरे से कराना, फड़वाना।

चिरायँध—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चर्म+गंध] चमड़े, बाल, मांस आदि के जलने की दुर्गंधि। [चिरायँधि (दे०)]

चिरायता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चिरतिक्त या चिरात] एक कड़ुआ पौधा (औष०)।

चिरायु—(वि०, यौ०) [सं० चिरायुष] बड़ी उम्र वाला, दीर्घायु। [**चिरायुता** (संज्ञा, स्त्री०)]

चिरारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिरौंजी।

चिराव—(संज्ञा, पु०) चीरा, चीरने का घाव।

चिरि—(संज्ञा, पु०, सं०) तोता।

चिरिया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिड़िया। चिड़ी, चिरी, चिरिया (ग्रा०)।

चिरिहार—(संज्ञा, पु०, दे०) चिड़ीमार।

चिरेता—(संज्ञा, पु०, दे०) एक औषधि, कैफर, कायफल।

चिरैया—(संज्ञा, स्त्री०) चिड़िया। पुष्य नक्षत्र।

चिरौंटा—(संज्ञा, पु०) गौरवा पक्षी।

चिरौंजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चार+बीज] पियाल वृक्ष के फलों के बीजों की गिरी (मेवा)।

चिरौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) विनती, प्रार्थना, विनय, अनुनय, खुशामद। "जसुदा करति चिरौरी"—सूर०।

चिलक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चलकना] कांति, द्युति। रह-रह कर उठने वाला दर्द। [टीस, चमक (दे०)] "मीन मकर जल काल को चल चिलक सुसाध भागा।"

चिलकई—(संज्ञा, स्त्री०) चमक।

चिलकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० चिल्ली =बिजली या अनु०] रह-रह कर चमकना या दर्द उठना। चमचमाना।

चिलकाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चिलक+आई प्रत्य०] चमक, चमचमाहट। उत्तेजना।

चिलकाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० चिलक का प्रेरणा० रूप] चमकाना, झलकाना।

चिलगोजा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चीड़ या सनोवर का फल, मेवा।

चिलचिल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अबरक, अभ्रक। (क्रि० वि०, दे०) चंचलता।

चिलचिलाना—(क्रि० अ०, दे०) शोरगुल मचाना, किकियाना, चिल्लाना। चंचल होना।

चिलड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) घी लगाकर सेंकी रोटी, उल्टा। [चिल्ला (दे०)]

चिलता—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० चिलतः] एक कवच। लोहे का अँगरखा।

चिलबिला, चिलबिल्ला—(वि०, दे०) [सं० चल+बल] चंचल, चपल। (क्रि० अ०) चिलबिलाना। चिलबिली। [**चिलबिल्ली** (स्त्री०)]

चिलम, चिलिम—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कटोरी-सा नलीदार मिट्टी का बरतन जिस पर तम्बाकू जला कर धुआँ पीते हैं।

चिलमची—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) हाथ धोने और कुल्ली करने का देग जैसा पात्र। (वि०) चिलम पीने वाला।

चिलमन—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बाँस की खपाचों का परदा, चिक। चोली। "खूब परदा है कि चिलमन से लगे बैठे हैं"।

चिलवाँस—(संज्ञा, पु०) चील का मांस जिसके भक्षण से विक्षिप्तता आ जाती है। चिड़ियों को फँसाने वाला एक प्रकार का फंदा।

चिलहाड़ा—(वि०, दे०) जुओं या चिल्लरों से भरा हुआ। [चिलहारा (दे०)]

चिलहारा—(वि०, दे०) पंकिल, किचड़हा। चीलर वाला। [चिलरहा (दे०)]

चिलहोरना—(क्रि० स०, दे०) ठुकराना।

चिलिक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मोच । दर्द, चिलक, चमक, टीस ।

चिलिया—(संज्ञा, स्त्री०) एक प्रकार की मछली, चिलहुल ।

चिलुश्रा—(सं०, स्त्री०) चेलहवा मछली ।

चिल्ल—(संज्ञा, पु०, सं०) चील । (वि०) कीचड़ से युक्त आँखों वाला ।

चिल्लका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) झींगुर ।

चिल्लड़—(संज्ञा, पु०) [सं० चिल=वस्त्र] जूँ की तरह का एक बहुत छोटा सफेद कीड़ा । चिल्लर, चीलर (ग्रा०) ।

चिल्लपों—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० चिल्लाना +पी० अनु०] चिल्लाना, शोरगुल ।

चिल्लवाँस—(संज्ञा, पु०) बच्चे का अस्वस्थ होने के कारण चिल्लाना ।

चिल्लवाना—(क्रि० स०) [हिं० चिल्लाना का प्रेरणा० रूप] चिल्लाने मे दूसरे को प्रवृत्त करना या लगाना ।

चिल्ला—(संज्ञा, पु०, सं०) १५ दिन धनु राशि पर तथा २५ दिन मकर राशि पर का चालीस दिन का सूर्य का समय । (संज्ञा, पु०, दे०) एक जंगली पेड़ । उड़द या मूँग आदि की घी लगाकर सेंकी हुई रोटी, चीला, उलटा । धनुष की डोरी, प्रत्यंचा । **मुहा०—(ले) का जाड़ा**-बहुत कड़ी सर्दी । चालीस दिन का बधेज या किसी पुण्य कार्य का नियम । **लो०** "धन के पद्रा मकर पचीस, चिल्ला जाड़ा दिन चालीस" ।

चिल्लाना—(क्रि० अ०, दे०) चीत्कार, जोर से बोलना, शोर मचाना, हल्ला करना ।

चिल्लाहट—(संज्ञा, स्त्री०) शोर, हल्ला ।

चिल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) झिल्ली कीड़ा । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चरिका] बिजली । वज्र । **मुहा०—मारना**-बिजली गिरना ।

चिल्हवाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) पेड़ों पर चढ़ कर खेला जाने वाला बाल-खेल ।

चिहाना—(क्रि० अ०, दे०) तंग होना । विराग उत्पन्न होना ।

चिहिकना—(क्रि० अ०, दे०) पक्षियों या पहियों का बोलना । [चेहेकना (दे०)]

चिहुँकना*—(क्रि० अ०, दे०) चौंकना ।

चिहुँटना*—(क्रि० अ०) [अ० चिमिट, [हिं० चिपटना] चुटकी काटना । **मुहा० चित—**, मर्म स्पर्श करना, चित्त में चुभना, कसकना ।

चिहुँटनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घुँघची, गुंजा ।

चिहुँटी—(संज्ञा, स्त्री०) [?] चुटकी, चिकोटी ।

चिहुर*—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं० चिकुर] शिर के बाल, केश ।

चिहुरी, चिभुरी—(संज्ञा, स्त्री०) चाभ, डाढ़ । [चबुरी, चभुरी (दे०)]

चिह्न—(संज्ञा, पु०, सं०) वह लक्षण जिससे किसी वस्तु की पहचान हो, निशान । पताका, झंडी । दाग, धब्बा [मार्क] ।

चिह्नित—(वि०, सं०) चिह्न दिया हुआ या निशान बनाया हुआ [मार्क्ड] ।

चीं-चीं-चीं—(संज्ञा, स्त्री० अनु०) पक्षियों अथवा छोटे बच्चों का बहुत महीन शब्द ।

चीं-चपड़—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०] विरोध में कुछ बोलना ।

चींटा—(संज्ञा, पु०, दे०) चिउँटा । [**चींटी** (स्त्री०)]

चीकी, चीख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चीत्कार] बहुत जोर से चिल्लाने का शब्द, चिल्लाहट ।

चीकट—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कीचड़] तेल का मैल, तलछट । लसार मिट्टी । (संज्ञा, पु०, दे०) चिकट नामक पहाड़ । (वि०) बहुत मैला या गंदा । चिक्कट ।

चीकन—(वि०, दे०) चिकना, फिसलन, चिक्कन (ग्रा०) । [चीकन (दे०)] "ऐसो नेह सोकोचित चीकनों उमारों है"—[रामा०] ।

चीकना, चीखना—(क्रि० अ०) [सं० चीत्कार] जोर से चिल्लाना । बहुत जोर से बोलना ।

चीखना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चषण] स्वाद जानने के लिए थोड़ी मात्रा मे खाना चखना । शोर करना । [**चीख** (संज्ञा, स्त्री०)]

चीखर, चीखल—(संज्ञा, पु०, दे०) कीचड़ ।

चीखुर—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) गिलहरी, कठ-बिल्ली । चूहा, मूस ।

चीघना—(क्रि० अ०, दे०) चिग्घारना ।

चीज—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) सत्तात्मक वस्तु, पदार्थ, द्रव्य । आभूषण, गहना । गाने की चीज, गीत । विलक्षण या महत्त्व की प्रिय वस्तु ।

चीठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मैल, कीचड़ । "किधुं गूदरी चीठ"—कबीर ।

चीठा—(संज्ञा, पु०, दे०) चिट्ठा । [**चीठी, चिट्ठी** (संज्ञा, स्त्री०)] "राम लखन की करवर चीठी"—[रामा०] ।

चीड़, चीढ़—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० चीड़] एक ऊँचा पेड़ जिसके गोंद से गंधा, बिरोजा और ताड़पीन का तेल निकलता है।

चीत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चित्रा] चित्रा नक्षत्र। "हाथी चीत नखत के घाम"—[आल्हा०]। चित्त। चीतावर, चीता।

चीतना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चेत] (वि०) चीता। सोचना, विचारना, चैतन्य होना, स्मरण करना, चेतना। (क्रि० स०) [सं० चित्र] चित्रित करना या बेलबूटे बनाना। "आपुन चीती होय नहिं"।

चीतल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चित्ती] एक सफेद चित्तीदार हिरन। चीता। अजगर की जाति का एक चित्तीदार साँप।

चीता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चित्रक] बाघ की जाति का एक हिंसक पशु। एक पेड़, जिसकी छाल और जड़ औषधि के काम आती है। [चितावर (दे०)] (संज्ञा, पु०) [सं० चित्त] चित्त, हृदय। होश। (वि०) [हि० चेतना] सोचा या विचारा हुआ। "मन का चीता कठिन है, प्रभु चीता तत-काल।" "कह गये नृप किशोर चित चीता"—[रामा०]।

चीत्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) चिल्लाहट, हल्ला, शोर-गुल, चीख।

चीथड़ा, चीथरा—(संज्ञा, पु०, दे०) चिथड़ा।

चीथना—(क्रि० स०, दे०) [सं० जीर्ण] चिथेड़ना, बकोटना। फाड़ना, नोचना, खरोंचना। टुकड़े करना।

चीन—(संज्ञा, पु०, सं०) झंडी, पताका। सीसा धातु। तागा, सूत। एक रेशमी कपड़ा। एक हिरन। एक साँवाँ। चेना। एक देश।

चीनना—(क्रि० स०, दे०) चीन्हना। "जामे तव रुचि चीनो"—ललित०।

चीनांशुक—(संज्ञा, पु०, सं०) चीन देश का रेशमी कपड़ा या लाल बनात। "हारता रहा मैं स्वार्थ समर शुचिते, पहनाकर चीनांशुक"—निराला।

चीना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चीन] चीन देश-वासी। एक साँवाँ। चना। चीनी। कपूर। (वि०) चीन देश का।

चीनाबदाम—(संज्ञा, पु०, दे०) मूँगफली।

चीनिया—(वि०, दे०) चीन देश का। केले की एक जाति।

चीनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [चीन देश+ई प्रत्य०] मिठाई का सफेद चूर्ण जैसा सार, ईख के रस, चुकंदर, खजूर आदि से बनी शक्कर। (वि०) चीन देश का। जैसे चीनचीनी आदि।

चीनी-मिट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० चीनी+मिट्टी] एक सफेद मिट्टी जिस पर पालिश कर बरतन, खिलौने आदि बनाते हैं।

चीन्ह†—(संज्ञा, पु०, दे०) चिह्न, चीन्हा (ग्रा०)। [चिन्हारी (दे०)] "मातु मोहिं दीजै कछु चीन्हा"—[रामा०]।

चीन्हना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चिह्न] पहचानना।

चीन्हा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चिह्न] पहिचान, चिह्न, निशानी। (क्रि० स०, हि०) चीन्हा, जाना, पहिचाना। "कपटी कुटिल मोहिं प्रभु चीन्हा"—[रामा०]।

चीप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लकड़ी या उपरी का परत।

चीपड़, चीपर—(संज्ञा, पु०, दे०) आँख का मैल या कीचड़। चीप।

चीफ—(वि०, अं०) खास।

चीमड़, चीमर—(वि०, दे०) [हि० चमड़ा] जो खींचने, मोड़ने या झुकाने आदि से न फटे या टूटे।

चीयाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) चियाँ, इमली का बीज।

चीर—(संज्ञा, पु०, सं०) वस्त्र, कपड़ा। वृक्ष की छाल। चिथड़ा, लत्ता। गौ का थन। मुनियों या बौद्ध भिक्षुकों का कपड़ा। धूप का पेड़। छप्पर का ऊपरी भाग। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० चीरना] चीरने का भाव या क्रिया, शिगाफ या दरार।—**घर**-(संज्ञा, पु०) वह स्थान-विशेष जहाँ आकस्मिक दुर्घटनाओं से मरने वालों के मृत शरीर की चीर-फाड़ द्वारा जाँच-पड़-ताल होती है। [मार्च्युअरी]—**चर्म**†-(संज्ञा, पु०, यौ०) बाघाम्बर, मृगछाला, व्याघ्र चर्म। —**फाड़**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० चीर+फाड़] चीरने-फाड़ने का काम या भाव। शल्य-चिकित्सा, जर्राही [आपरेशन]। [**चीरा-फाड़ी** (संज्ञा, स्त्री०)]

चीरक—(संज्ञा, पु०, सं०) विकृत लेख। लिखित प्रमाण का एक प्रकार-विशेष [रोल, स्क्रोल]।

चीरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चीर्ण] विदीर्ण करना, फाड़ना। **मुहा० माल (रुपया आदि)** —,अनुचित रूप से बहुत धन कमाना।

चीरांचल—(संज्ञा, पु०, सं०) वस्त्र का छोर। "एक दृप्त आलोक बन गया था चीरांचल उसका" —'दिनकर'।

चीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चीरना] पगड़ी का एक लहरियादार रंगीन कपड़ा। गाँव की सीमा पर पत्थर का खम्भा। चीर कर बनाया हुआ क्षत या घाव। "चीरा सीस आगरे वाल"—आल्हा०।

चीरी†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिड़िया। (संज्ञा, स्त्री०) झींगुर।

चीरैता—(संज्ञा, पु०, दे०) चिरायता।

चीर्ण—(वि०, सं०) फाड़ा या चीरा हुआ।

चील—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चिल्ल] गीध या गिद्ध की जाति की एक बड़ी चिड़िया। [चील्ह (दे०)] —**झपट्टा**–चील की भाँति झपटकर छीन लेने की प्रवृत्ति या भाव।

चीलड़, चीलर—(संज्ञा, पु०, दे०) चिल्लड़।

चीला—(संज्ञा, पु०, दे०) उलटा नामक पकवान, चिलड़ा।

चील्ही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाल-कल्याणार्थ स्त्रियों का एक तंत्रोपचार। "चील्ही करवाय राई नोन उतारयो है"—रघु०।

चीवर—(संज्ञा, पु०, सं०) संन्यासियों या भिक्षुकों का फटा-पुराना कपड़ा। बौद्ध संन्यासियों के पहनने के वस्त्र का ऊपरी भाग।

चीवरी—(संज्ञा, पु०, सं०) बौद्ध भिक्षुक, भिक्षु।

चीस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) टीस।

चुंगल—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० चौ+अंगुल] चिड़ियों या जानवरों का पंजा, चंगुल। किसी वस्तु को पकड़ने में मनुष्य के पंजे की स्थिति। पंजा। **मुहा०—में फँसना (फाँसना)**–वश में आना। **—में आना (पड़ना)**—वश में होना।

चुंगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चुंगल] चुंगल या चुटकी भर चीज। शहर में आने वाले बाहरी माल पर महसूल। [**चुंगीघर** (यौ०)]

चुंघाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चुसाना] चुसाना, चुगाना।

चुंडा—(संज्ञा, पु०, सं०) कूप, कुआँ (अ०) सिर के आगे के केश। [**चुंडी** (स्त्री० अल्पा०)]

चुंडित*—(वि०) [हि० चुंडी] चुटिया या चुंडी वाला।

चुँदरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चूनरी। [चदरिया (दे०)]।

चुंदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चूड़ा] सिर पर बालों की शिखा, (हिन्दू) चुटैया, चोटी, चोटिया। चोंदई (ग्रा०)।

चुँधलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चौ=चार+अंध] चौंधना, चकाचौंध होना। चुंधियाना। [चौंधियाना (दे०)]

चुंधी—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० चौं=चार+अंध] जिसे सुझाई न पड़े। छोटी-छोटी आँखों वाला, चिमधी (ग्रा०)। [**चुंधा, चुमधा** (पु०)]

चुंबक—(संज्ञा, पु०, सं०) वह जो चुम्बन करे। कामुक, कामी। धूर्त मनुष्य। लोहे को अपनी ओर खींचने वाला एक पत्थर या धातु। **ग्रंथ**—,(संज्ञा, पु०) ग्रन्थों को केवल इधर-उधर उलटने वाला मूर्ख।

चुंबकत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) चुम्बक का गुण। आकर्षित या खींचने का भाव। आकर्षण-शक्ति।

चुंबन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रेम से होठों से किसी के गाल आदि अङ्गों का स्पर्श, चुम्मा, बोसा। [**चुम्बनीय, चुम्बित** (वि०)]

चुंबना—(क्रि० स०, दे०) चूमना।

चुंबित—(वि०, सं०) चूमा या प्यार किया हुआ। स्पर्श किया हुआ। [**चुंबिता** (स्त्री०)] "बाला चिरम् चुंबिता"।

चुंबी—(वि०, सं०) चूमने वाला। **नभ, गगन-**—,आकाश को छूने के लिए तत्पर होने वाला, बहुत ऊँचा। "बहु गगनचुम्बी, विशद छविमय द्वारिका में गेह थे"—गिरीश।

चुअना*—(क्रि० अ०, दे०) चूना, टपकना।

चुआई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चुआना] चुआना या टपकाने की क्रिया या भाव।

चुआन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चूना] खाईं, नहर। गड्ढा। स्राव।

चुआना—(क्रि० स०) [चूना=टपकाना] टपकाना, बूँद-बूँद गिराना। चुपड़ना, चिकनाना, रसमय करना। भबके से अर्क उतारना।

चुकन्दर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गाजर की सी एक जड़ जो तरकारी के काम में आती है।

चुक—(संज्ञा, पु०, दे०) चूक नाम की खटाई, महाम्ल। खट्टा शाक, चूका। [काँजी (दे०)]

चुकचुकाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चूना=टपकना] किसी द्रव पदार्थ का बहुत बारीक छेदों से होकर बाहर आना। पसीजना।

चुकता—(वि०, दे०) [हि० चुकना] बेबाक, निःशेष, ऋण-मुक्त। [**चुकती** (वि०, स्त्री०)]

चुकना—(क्रि० स०, दे०) [सं० च्युत्कृत] समाप्त या खतम होना, बाकी न रहना, बेबाक या अदा

होना, चुकता होना। तै होना, निबटना। *चूकना, भूल करना, त्रुटि करना, *खाली या व्यर्थ जाना, व्यर्थ होना। एक समाप्ति-सूचक संयोज्य क्रिया, चुक जाना।

चुकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चुकता] चुकने या चुकता होने का भाव।

चुकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चुकना] किसी प्रकार का देना साफ करना, अदा या बेवाक करना। तै करना, ठहराना। भूल करना या कराना। "तेउ न पाय अस समय चुकाहीं"—तुलसी०।

चुकाव—(संज्ञा, पु०) [हि० चुकना] चुकने या समाप्त होने का भाव या क्रिया।

चुकिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चूक, भूल।

चुकौता—(संज्ञा, पु०, दे०) निपटारा। नियम। [**चुकौती** (स्त्री०)]

चुक्कड़—(संज्ञा, पु०) [सं० चषक] पानी या शराब पीने का मिट्टी का गोल छोटा बरतन, पुरवा, करई कुल्हड़, सकोरा, कसोरा।

चुक्कार—(संज्ञा, पु०, दे०) गर्जन, गरज।

चुक्की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छली। धूर्तताई, धोखा, चाइपन। निःशेष।

चुक्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नियम। निरूपण। परिमित। परिणाम। समाधान, निष्पत्ति।

चुगद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उल्लू पक्षी। मूर्ख, बेवकूफ। "हुमा का कब चुगद पहचानता है।"

चुगना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चयन] चिड़ियों का चोंच से उठा कर खाना, चुनना। "तब पछितायें होत का जब चिरिया चुग गई खेत।"

चुगल—(पु०, दे०) पीठ पीछे बुराई, चुगुल (फ़ा०)।

चुगलखोर—(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) पीठ पीछे शिकायत करने वाला, लुतरा। [**चुगलखोरी** (संज्ञा, स्त्री०)] "चूकत चुगलखोर न चुगलखोरी ते"—बेनी।

चुखाना—(क्रि० स०, दे०) दुहने से पूर्व बछड़े को दूध पिलाना।

चुगली—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) किसी की अनुपस्थिति में उसकी निन्दा।

चुगा—(संज्ञा, पु०) [हि० चुगना] पक्षियों के चुगने या खाने का चारा।

चुगाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चुगाना+ई प्रत्य०] चुगने या चुगाने का भाव या क्रिया।

चुगाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चुगना] चिड़ियों को दाना या चारा डालना।

चुगुल*†—(संज्ञा, पु०, दे०) चुगली।—**खोर**-चुगली करने वाला।

चुचकारना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) चुमकारना।

चुचकारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) चुचकारने या चुमकारने की क्रिया या भाव, चुचकार, चुमकार।

चुचुकना—(अव्य०) [सं० शुष्क + ना] सूखना। दुबला होना, झुर्री पड़ जाना।

चुचाना*—(क्रि० अ०, ब्र०) [सं० च्यवन] चूना, टपकना, रसना, निचुड़ना। [चुचुआना (दे०)] "प्रेम पर्यो चपल चुचाइ पुतरीनि सों"—रत्ना०।

चुचुक—(संज्ञा, पु०, दे०) चूँची, स्तन का अग्र भाग।

चुचुकना, चुचकना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शुष्क +ना प्रत्य०] ऐसा सूखना जिसमें झुर्रियाँ पड़ जायँ, तुचकना (ग्रा०)।

चुच्चड़—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़ी चूँची, मोटे स्तन।

चुटका†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चोट] एक प्रकार का गलीचा। कोड़ा, चाबुक। [**चुटकी** (संज्ञा, स्त्री० अनु०)] चुटचुट।

चुटकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चोट] कोड़ा या चाबुक मारना। बहुत बोलना। (क्रि० स०, दे०) [हि० चुटकी] चुटकी से तोड़ना। साँप का काटना।

चुटका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चुटकी] बड़ी चुटकी। चुटकी भर अन्न। [**चुटकी** (स्त्री०)]

चुटकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० चुटचुट] किसी वस्तु को पकड़ने, दबाने या लेने आदि के लिए अँगूठे और पास की अँगुली का मेल। चुटकी बजने का शब्द, अँगूठे और तर्जनी के संयोग से किसी प्राणी के चमड़े को दबाने या पीड़ित करने की क्रिया। अँगूठे और अँगुली से मोड़ कर बनाया हुआ गोखुरी, गोटा या लच्छा। बन्दूक के प्याले का ढकना या घोड़ा। **मुहा०—बजाना**-अँगूठे को बीच की अँगुली पर रखकर जोर से चटका कर शब्द निकालना।—**बजाते**-चटपट, देखते-देखते, बात की बात में।—**भर**-बहुत थोड़ा, जरा-सा। —**में (पर) उड़ाना**-अत्यन्त तुच्छ या सहज समझना, गम्भीर न समझना।—**भर आटा**-थोड़ा आटा, दान।—**माँगना**-भिक्षा माँगना।—**भरना, काटना**-चुटकी काटना। चुभती या लगती हुई

बात कहना।—**लेना**-हँसी या दिल्लगी उड़ाना, चुभती या लगती हुई बात कहना। "चाहिए चुटकी नहीं लेना हमें"—हरिऔध।—**न काटना, न बकोटा भराना**-किसी को थोड़ा भी कष्ट देकर उसे उत्तेजना न दीजिए कि उसके बदले में अधिक कष्ट मिले।

चुटकुला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चोट+कला] चमत्कार-पूर्ण उक्ति, मजेदार बात। **मुहा०—छोड़ना**-हँसी या दिल्लगी की बात कहना। कोई ऐसी बात कहना जिससे एक नया मामला खड़ा हो जाय। दवा का कोई छोटा गुणकारी नुसखा, लटका।

चुटफुट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, हि०) स्फुट या फुटकर वस्तु। [चुटपुट (दे०)]

चुटाना—(क्रि० अ०, दे०) चोट लगना, चुटैल होना। [चोटना (दे०)]

चुटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चोटी] बालों की वह लट जो सिर के बीचोंबीच रखी जाती है, शिखा, चोटी (हिन्दू), चोटिया। [चुटइया (दे०)] चोंदई (ग्रा०)।

चुटियाना—(क्रि० स०, दे०) घाव या आक्रमण करना। चोटी पकड़ कर जबरदस्ती ले जाना। [चोटियाना (दे०)]

चुटीला—(वि०, दे०) [हि० चोट] जिसे चोट या घाव लगा हो, चोटीला। (संज्ञा, पु०) [हि० चोटी] अगल-बगल की पतली चोटी, मेंढ़ी, शिखाभरण। (वि०) सिर का, सबसे बढ़िया।

चुटैल, चुटैला—(वि०, दे०) [हि० चोटी] जिसे चोट लगी हो, घायल। चोट या आक्रमण करने वाला।

चुड़िहारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चूड़ी+हारा प्रत्य०] चूड़ी बेचने वाला, चुरिहार, मनिहार। [**चुड़िहारिन** (स्त्री०)]

चुड़ैल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चूड़ा+ऐल प्रत्य०] भूतनी, प्रेतिनी, डाइन, पिशाचिनी। कुरूपा, दुष्टा या क्रूर स्त्री। चुरैल (ग्रा०)।

चुनचुना—(वि०, दे०) [हि० चुनचुनाना] जिसके छूने या खाने से जलन लिए हुए पीड़ा हो। (संज्ञा, पु०) सूत के से महीन सफेद पेट के कीड़े, चुन्ना (ग्रा०)।

चुनचुनाना—(क्रि० अ०, अनु०) कुछ जलन लिए हुए चुभने की सी पीड़ा होना। [**चुनचुनाहट** (संज्ञा, स्त्री०)]

चुनचुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खुजलाहट। कंडू, खुजली, जलन।

चुनट, चुनन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चुनना] दाब पाकर कपड़े, कागज आदि पर पड़ी सिकुड़न, सिलवट, शिकन, चुन्नट।

चुनना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चयन] छोटी वस्तुओं को हाथ, चोंच आदि से एक-एक करके उठाना। छाँट-छाँट कर अलग करना। बहुतों में से कुछ को पसन्द करके लेना। तरतीब से लगाना या सजाना। जुड़ाई करना। दीवार उठाना। **मुहा० दीवार में—**,किसी मनुष्य को खड़ा करके उसके ऊपर ईंटों की जुड़ाई करना। कपड़े में चुनन या सिकुड़न डालना। [**चुनवाना, चुनाना** (प्रेरणा० रूप)]। (संज्ञा, पु०, दे०) चुनाव। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) चुनन, चुन्नट।

चुनरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चुनना] बुँदकीदार रंगीन कपड़ा, याकूत, चुन्नी, चूनरी। "चूनरि बैंजनी पैजनी पांयन"—द्विज०।

चुनांचे—(अव्य०, फ़ा०) इसलिए, इस तरह, अतएव, निदान।

चुनाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चुनना] चुनने की क्रिया या भाव। दीवार की जुड़ाई या उसका ढंग। चुनने की मजदूरी।

चुनाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चुनना का प्रेरणा० रूप] चुनने का काम दूसरे से कराना, चुनवाना।

चुनाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चुनना] चुनने का काम। बहुतों में से कुछ की किसी कार्य के लिए नियुक्ति। निर्वाचन [इलेक्शन]। चुन्नट।—**परिषद्**—उम्मीदवारों का चुनाव करनेवालों का मंडल [सेलेक्शन बोर्ड]।

चुनिंदा—(वि०) [हि० चुनना+इंदा प्रत्य०] चुना या छँटा हुआ, बढ़िया।

चुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चुन्नी। चुन्नटदार, [चुनिया (दे०)]। (क्रि० वि०) [हि० चुनना] छँटी हुई।

चुनौटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चूना+औटी प्रत्य०] चूना रखने की डिबिया। [**चुनौटा** (संज्ञा, पु०)]

चुनौटिया—(संज्ञा, पु०, दे०) काला मिला लाल रंग।

चुनौती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चुनचुनाना वा चूना] उत्तेजना, बढ़ावा। चिट्टा। युद्ध के लिए बुलवाना। ललकार, प्रचार। "मनहु चुनौती दीन्ही"—तुल०। आह्वान [चैलेंज]।

चुन्नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चूर्ण] मानिक, हीरा, याकूत या और किसी रत्न का बहुत छोटा सा टुकड़ा, बहुत छोटा नग। अनाज, अथवा अन्य किसी दाल के छोटे कण जो भूसी से युक्त हों, चूनी का चूर। लकड़ी का बहुत बारीक चूर। कुनाई। चमकी, सितारा।

चुप—(वि०, दे०) [सं० चुप, चोपन=मौन] अवाक्, मौन, तूष्णीम्, खामोश। (संज्ञा, स्त्री०,) मौनावलम्बिता, खामोशी।—**चाप**—(अव्य०) मौनपूर्वक, खामोशी से, शान्त भाव से, बिना चञ्चलता के, धीरे से। छिपे-छिपे। निरुद्योग, प्रयत्नहीन रहकर, विरोध में कुछ कहे बिना, बिना ची-चपड़ के। **मुहा०—लगाना, चुप्पी मारना (साधना)**—चुप रहना या चुप बैठना।

चुपका—(वि०, दे०) [हि० चुप] खामोश, मौन, चुप रहने वाला। **मुहा०—(के) से**—बिना कुछ कहे-सुने, गुप्त रूप से, धीरे से। [**चुपकी** (स्त्री०)] **—साधना**—मौन रहना। तटस्थ, उदासीन रहना, उपेक्षा करना।

चुपड़ना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चिपचिपा] किसी गीली या चिपचिपी वस्तु का लेप करना (जैसे रोटी पर घी चुपड़ना)। किसी दोष को दूर करने के लिए इधर-उधर की बातें करना। चिकनी-चुपड़ी कहना, चापलूसी करना।

चुपाना‡*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चुप] चुप हो रहना, मौन रहना। [**चुपवाना** (प्रेरणा० रूप)]

चुप्पा—(वि०, दे०) [हि० चुप] जो बहुत कम बोले, घुन्ना। [**चुप्पी** (संज्ञा, स्त्री०) मौन।]

चुबलाना, चुभलाना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) स्वाद लेने को मुँह में रख कर इधर-उधर डुलाना।

चुभकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गोता खाना, डूबना।

चुभकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) डुब्बी, गोता, डुबकी।

चुभना—(क्रि० अ०, अनु०) किसी नुकीली वस्तु का दबाव पाकर किसी नरम वस्तु के भीतर घुसना, गड़ना, धँसना। हृदय में खटकना। मन मे व्यथा उत्पन्न करना। मन में बैठना या पैठना। "चुभी, चित्त नहिं चैन।"

चुभाना, चुभोना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चुभना का प्रेरणा० रूप] धँसाना, गड़ाना। [**चुभवाना** (प्रेरणा० रूप)]

चुभीला—(वि०, दे०) चुभने वाला।

चुमकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चूमना+कार] चूमने के शब्द जो प्यार दिखाने के लिए निकलते हैं, पुचकार।

चुमकारना—(क्रि० स०, दे०)[हि० चुमकार] प्यार दिखाने के लिए चूमने का-सा शब्द निकालना, पुचकारना, दुलारना।

चुम्मा—(संज्ञा, पु०, दे०) चुंबन, चूमा।

चुर—(संज्ञा, पु०, दे०) बाघ आदि के रहने का स्थान, माँद, बैठक।&& (वि०) [सं० प्रचुर] बहुत, अधिक। (सं०) चुराना।

चुरकना—(क्रि० अ०, अनु०) चहकना, चीं-चीं करना। (व्यङ्ग या तिरस्कार)‡ चटकना, टूटना।

चुरकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चोटी] चुटिया।

चुरकुट, चुरकुस—(वि०, दे०) [हि० चूर+कूटना] चकनाचूर, चूर-चूर, चूर्णित, बुकनी जैसा।

चुरगाना—(क्रि० स०, दे०) बकना, चिल्लाना, चें-चें करना।

चुरचुरा—(वि०, दे०) चुरचुर शब्द करने वाला।

चुरना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चूर+जलना, पकना] आँच पर खौलते हुए पानी मे किसी वस्तु का पकना, उबलना, सोझना। आपस मे गुप्त मंत्रणा या बातचीत होना।

चुरमुर—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द। [**चुरचुरा** (वि०)] करारा, खरा] [**चुरमुरी** (स्त्री०)]

चुरमुराना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) चुरमुर शब्द करके टूटना। (क्रि० स०, अनु०) चुरमुर शब्द करके तोड़ना। करारी या खरी चीज चबाना।

चुरवाना—(क्रि० अ०) [हि० चुराना का प्रेरणा० रूप] पकाने का काम कराना। [चोरवाना (क्रि० स०, दे०)]

चुरस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सिकुड़न।

चुरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) बुरादा। चूरा, चूर्ण, (क्रि० वि०) पका हुआ।

चुराना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चुर=चोरी करना] गुप्त रूप से परायी वस्तु का हरण करना, चोरी करना। लोगों की दृष्टि से बचाना, छिपना। [चोराना (दे०)]। (क्रि० स०) [हि० चुराना] खौलते पानी मे पकाना, सिझाना। **मुहा० चित्त —**, मनमोहित करना। **आँख मुँह—**, नजर बचाना, सामने मुँह न करना। **काम के करने में कसर करना**।

चुरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चूड़ी, चूरी। (क्रि० वि०) पकी, उबली।

चुरुगना—(क्रि० अ०, दे०) बड़बड़ाना।

चुरुट—(संज्ञा, पु०, अं०) तम्बाकू की पत्ती या चूर की बत्ती जिसका धुँआ लोग पीते हैं। [सिगार]

चुरू*†—(संज्ञा, पु०, दे०) चुल्लू।

चुल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चल=चंचल] किसी अङ्ग के मले या सहलाये जाने की इच्छा, खुजलाहट। किवाड़ का चूल।

चुलचुलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चुल] खुजलाहट होना। चुलबुलाना, चंचलता करना। [**चुलचुलाहट (संज्ञा, स्त्री०)**]

चुलचुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखिए चुल।

चुलबुला—(वि०, दे०) [सं० चल+बल] चंचल, चपल, नटखट, चिलबिल्ला। [**चुलबुली** (संज्ञा, स्त्री०)]

चुलबुलाना—(क्रि० अ०) [हि० चुलबुल] चुलबुल करना, रह-रह कर हिलना। चंचल होना, चपलता करना। [**चुलबुलाहट, चुलबुली** (संज्ञा, स्त्री०)]

चुलबुलापन—(संज्ञा, पु०) [हि० चुलबुला+पन प्रत्य०] चंचलता, शोखी।

चुलबुलिया—(वि०) [हि० चुलबुल+इया प्रत्य०] चुलबुल, चंचल, चिलबिल्ला।

चुलबुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चुलचुलाना] खुजलाहट। चपलता।

चुलहाई—(वि०, दे०) कामातुर, लम्पट, व्यभिचारी, कामुक, कामी।

चुलहारा—(वि०, दे०) कामुक, कामातुर।

चुलाना—(क्रि० स०, दे०) चुवाना, टपकाना।

चुलियाला—(संज्ञा, पु०) (?) एक मात्रिक छन्द।

चुल्ला—(वि०, दे०) चुँधला, चुंधा, तिरमिरा।

चुल्लू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चुलुक] गहरी की हुई हथेली, जिसमें भर कर पानी आदि पी सकें, चिल्लू। **मुहा०—भर पानी में डूब मरना**—मुँह न दिखाना, लज्जा से मरना। "डूब मरो उल्लू तुम चुल्लू भर पानी में"।

चुवना—(क्रि० अ०, दे०) चूना, टपकना। (क्रि० अ०, दे०) चुगना।

चुवा—(संज्ञा, पु०, प्रा०) चौपाया। (क्रि० स०, भू०) टपका।

चुवाना*—(क्रि० स०, दे०)[हि० चूना का प्रेरणा० रूप] बूँद-बूँद करके गिराना, टपकाना।

चुसकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चूसना] होंठ से लगाकर थोड़ा-थोड़ा करके पीने की क्रिया। सुड़क, घूँट।

चुसक्कर—(वि०, दे०) चूसने या पीने वाला।

चुसना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चूसना] चूसा जाना, निचुड़ या रस निकल जाना। सारहीन होना, देते-देते पास में कुछ न रह जाना।

चुसनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चूसना] बच्चों के चूसने का एक खिलौना। दूध पिलाने की शीशी।

चुसवाना—(क्रि० स०) [चूसना का प्रेरणा० रूप] चुसाना।

चुसाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चूसना का प्रेरणा० रूप] चूसने का काम दूसरे से कराना, चुसवाना। [**चुसाई** (संज्ञा, स्त्री०)]

चुस्त—(वि०, फ़ा०) कसा हुआ, जो ढीला न हो। सकुचित, तङ्ग। निरालस्य, तत्पर, फुर्तीला। गठीला। चलता हुआ, दृढ़, मजबूत। **मुहा० मुद्दई सुस्त, गवाह—**, मालिक से ज्यादा नौकर का होशियार होना। [**चुस्तचालाक** (यौ०)]

चुस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) फुर्ती, तेजी। कसावट। तङ्गी। दृढ़ता, मजबूती। [**चुस्तीचालाकी** (यौ०)] बहुत होशियारी।

चुस्सी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फल का रस।

चुहँटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चुटकी।

चुहकना—(क्रि० स०, दे०) चूसना। [**चुहुकना** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

चुहचुहा—(वि०, अनु०) चुहचुहाता हुआ। रसीला, शोख, रँगीला। [**चुहचुही** (स्त्री०)]

चुहचुहाता—(वि०) मुखरित। स्रवित।

चुहचुहाना—(क्रि० अ०, अनु०) रस टपकना। चिड़ियों का बोलना, चहचहाना।

चुहचुही—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) चमकीले काले रंग की एक बहुत छोटी चिड़िया, फुलचुही।

चुहट—(संज्ञा, स्त्री०) कसक, पीड़ा। कुचलने या रौंदने का भाव या क्रिया।

चुहटना—(क्रि० स०, दे०) रौंदना, कुचलना।

चुहड़ा—(संज्ञा, पु०) भङ्गी, मेहतर, जमादार।

चुहल—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) चिड़ियों की बोली। हँसी, ठठोली, मनोरंजन, विनोद, हर्ष।

चुहलबाज—(वि०) [हि० चुहल+बाज फ़ा० प्रत्य०] ठठोल, मसखरा, दिल्लगीबाज। [**चुहला** (वि०,

दे०)] [चुहली (स्त्री०)] [चुहलबाजी (संज्ञा, स्त्री०)]

चुहिया—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चूहा] चूहा का स्त्री और अल्प रूप । **मुहा० खोदा पहाड़ निकली**—अत्यधिक परिश्रम करने पर भी बहुत कम लाभ हुआ ।

चुहुँटना†*—(क्रि० स०, दे०) चिमटना ।

चुहुँटनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिरमिटी, घुँघची, रत्ती ।

चूँ—(संज्ञा, पु०, अनु०) छोटी चिड़ियों के बोलने का चूँ शब्द । **मुहा०—करना**-कुछ कहना, प्रतिवाद करना, विरोध में कुछ कहना ।

चूँकि—(क्रि० वि०, फ़ा०) इस कारण से कि, क्योंकि, इसलिए कि ।

चूच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चोंच ।

चूँची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्तन ।

चूदरी, चुँदरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चुनरी, चूनरी । [चूनरि, चुँदरिया (दे०)]

चूक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चूकना] भूल, गलती । कपट, धोखा, छल । भूल करने की क्रिया या भाव, [स्लिप] । (संज्ञा, पु०) [सं० चुक] नीबू, इमली, अनार आदि खट्टे फलों के रस से बना गाढ़ा, अत्यन्त खट्टा पदार्थ । एक खट्टा शाक । अत्यधिक खट्टा पदार्थ । "चूकत चुगलखोर ना चुगलखोरी तै" "एती हमसों यह चूक परी"—केशव । **मुहा० भूल—लेनी देनी** ।

चूकना—(क्रि० अ०) [सं० च्युत्कृत, प्रा० चूकि] भूल या गलती करना । लक्ष्यभ्रष्ट होना । सुअवसर खो देना । "चौक पर चूक गया सौदागर ।" "समय चूकि पुनि का पछिताने" ।

चूका—(संज्ञा, पु०) [सं० चूक] एक खट्टा शाक । (वि०) [हिं० चूकना] [**चूकी** (स्त्री०)] भूल या गलती करने वाला । "औसर चूकी डोमिनी गावे सारी रैन"—[स्फुट०] ।

चूची—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० चूचुक) स्तन, कुच ।

चूचुक—(संज्ञा, पु०, सं०) स्तन, स्तनाग्र भाग ।

चूजा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुरगी का बच्चा ।

चूड़ांत—(वि०, यौ०, सं०) चरम सीमा तक । सम्पूर्ण । (क्रि० वि०) अत्यन्त, अधिक, बहुत ।

चूड़ा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चोटी, शिखा, चुरकी । मोर के सिर की चोटी । कुआँ । गुंजा, घुँघची । बाँह का एक गहना । चूड़ा कर्म, चूड़ाकरण नामक एक संस्कार । (संज्ञा, पु०) [सं० चूड़ा] कंकन, कड़ा । हाथी दाँत की चूड़ियाँ । [**चिउड़ा** (संज्ञा, पु०, दे०)]

चूड़ाकरण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बच्चे का पहले-पहल सिर मुड़वा कर चोटी रखवाने का संस्कार, मुंडन । "धूमधाम सों नंद महरि ने चूड़ाकरण करायो"—सूर ।

चूड़ाकर्म—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चूड़ाकरण, मुंडन । "चूड़ाकर्म कीन्ह गुरु आई"—तुल० ।

चूड़ामणि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सीसफूल, शीर्षपुष्प । बीज । सर्वोत्कृष्ट, सब से श्रेष्ठ, शिरोमणि । [चूरामनि (दे०)] "चूरामणि उतारि तब दयऊ"—तुल० ।

चूड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चूड़ा] गोलाकार वस्तु, गोल पदार्थ । हाथ का एक वृत्ताकार गहना । [चुरी, चूरी (दे०)] फोनोग्राफ या ग्रामोफोन बाजे के गान भरे रेकार्ड । **मुहा०—ठंढी करना या तोड़ना**-स्वामी के मरने पर स्त्री का अपनी चूड़ियाँ उतारना या तोड़ना ।**—पहनना**-पुरुषार्थ का त्याग कर स्त्रियों का वेष धारण करना (व्यंग और हास्य)। **—टूटना**-वैधव्य-सूचक वेष होना ।

चूड़ीदार—(वि०, दे०) [हिं० चूड़ी+दार फा०] जिसमें चूड़ी या छल्ले अथवा इसी आकार के घेरे पड़े हों ।**—पायजामा**-(संज्ञा, पु०) एक चुस्त पायजामा ।

चूत—(संज्ञा, पु०, सं०) आम का पेड़ । "आम्रश्चूतो रसाल:"—अमर० । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० च्युति] योनि, भग, बुर, भोसड़ी ।

चूतड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चूत+तल] पीछे की ओर, कमर के नीचे और जाँघ के ऊपर गुदा के दोनों ओर का मांसल भाग, नितम्ब । [चूत्तड़, चूतर (दे०)]

चूतिया—(संज्ञा, पु०, दे०) मूर्ख, नासमझ ।**—पंथी**-(संज्ञा, स्त्री०) मूर्खता, नासमझी ।

चून—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चूर्ण] आटा, पिसान । चूना । "मोती मानुस चून"—रहीम ।

चूनर, चुनरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चुनरी । [चूँदरि, चूनरी, चुनरिया (दे०)] । "चूनरी बैजनी पैजनी पायन"—द्विज० ।

चूना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चूर्ण] एक तीक्ष्ण और सफेद क्षारभस्म जो पत्थर, कंकड़, शंख, मोती आदि पदार्थों को भट्टियों में फूँक कर बनाया जाता है । चून । (क्रि० अ०, दे०)[सं० च्यवन] किसी द्रव पदार्थ का बूँद-बूँद होकर नीचे गिरना, टपकना,

[रसना (दे०)] । किसी वस्तु, विशेषतः फल आदि, का अचानक ऊपर से नीचे गिरना । गर्भपात होना । किसी वस्तु के छेद या दराज से होकर द्रव पदार्थ का बूँद-बूँद गिरना† । (वि०) जिसमें किसी वस्तु के चूने योग्य छेद या दराज हो । **मुहा०—लगाना**–ठगना, छलना ।—**देना**–धोखा देना ।

चूनादानी, चूनदानी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० चूना+दान फ़ा०] चूना रखने की डिबिया, चुनौटी, चुनहठी (ग्रा०) ।

चूनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चूर्णिका] अन्न का छोटा टुकड़ा, अन्न-कण, चुन्नी, [**चूनीभूसी** (यौ०)] भूसी, चोकर ।

चूपरी—(वि०, स्त्री०, दे०) चुपड़ी । "देखि पराई चूपरी"—कबीर ।

चूमना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चुंबन] होंठों से (किसी दूसरे के) गाल आदि अंगों या किसी पदार्थ का स्पर्श करना या दबाना, चुम्मा या बोसा लेना, प्यार करना ।—**चाटना,—पुचकारना**–(यौ०) प्यार करना ।

चूमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चुंबन, हि० चूमना] चूमने की क्रिया का भाव, (फ़ा०) बोसा, चुंबन । [चुम्मा (दे०)]

चूमाचाटी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० चूमना+चाटना] चूमचाट कर प्रेम दिखाने की एक क्रिया ।

चूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चूर्ण] किसी पदार्थ के बहुत छोटे या महीन टुकड़े जो उसे तोड़ने, कूटने आदि से हों, बुकनी । [चूरा (दे०)] । (वि०) तन्मय, निमग्न, तल्लीन । मद-विह्वल । [**चिन्ता में चूर** (यौ०)] नशे में बहुत मस्त ।

चूरचूर—(वि०) बेसुध, नशे में मग्न । विदीर्ण । "हो गया चूरचूर दिल मेरा"—हरिऔध ।

चूरन—(संज्ञा, पु०, दे०) चूर्ण । "अमियमूर मय चूरन चारू"—तुल० ।

चूरना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० चूर्णन] चूर-चूर या टुकड़े-टुकड़े करना । तोड़ना । कूटना ।

चूरमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चूर्ण] रोटी या पूरी के चूर और घी-चीनी से बना खाद्य पदार्थ ।

चूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चूर्ण] चूर्ण, बुरादा, चूर, बुकनी । कड़ा । चिउड़ा ।

चूर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) सूखा पिसा हुआ अथवा बहुत ही छोटे-छोटे टुकड़ों में किया हुआ पदार्थ, आटा । चून । बुरादा । सफ़ूफ़ । बुकनी । पाचक औषधों का बारीक चूरन । तोड़ा-फोड़ा या नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ । [चूरन (दे०)]

चूर्णक—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्तू । [सतुआ (दे०)] छोटे-छोटे शब्दों से युक्त तथा लंबे समासों से रहित गद्य-रचना । धान ।

चूर्णा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आर्य्या छंद का दसवाँ भेद ।

चूर्णित—(वि०, सं०) चूर्ण किया हुआ । "कुलिश करों से चूर्णित कर दो"—हितैषी ।

चूल—(संज्ञा, पु०, सं०) शिखा, चोटी । बाल । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) किसी लकड़ी का वह पतला सिरा जो किसी लकड़ी के छेद में उसे जोड़ने के लिए ठोंका जाय । खाट का चूल । **मुहा०—बैठना** (**बैठाना**)–दो भिन्न वस्तुओं या कार्यों आदि का मिलना या मिलाया जाना ।

चूलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाटक में नेपथ्य के पर्दे की ओट से किसी घटना की सूचना (नाट्य०) ।

चूल्हा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चूल्लि] मिट्टी, लोहे आदि का वह पात्र जिसमें नीचे आग जला कर भोजन पकाया जाता है । [चूल्ह (दे०)] ।—**न्यौता**–(यौ०) पूरे घर का निमन्त्रण । **मुहा०—जलना**–भोजन बनना ।—**फूँकना**–भोजन पकाना ।—**में जाना या पड़ना**–नष्ट-भ्रष्ट होना । **घर-घर में मिट्टी का—होना**–किसी बात का व्यापक होना ।

चूषक—(वि०, सं०) चूसने वाला ।

चूषण—(संज्ञा, पु०, सं०) चूसने की क्रिया । [**चूषणीय** (वि०)]

चूष्य—(वि०, सं०) चूसने के योग्य ।

चूसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चूषण] जीभ और होंठ के संयोग से किसी पदार्थ का रस पीना, सार भाग लेना । धीरे-धीरे शक्ति या धन आदि लेना ।

चूहड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) (?) भंगी या मेहतर, चाण्डाल, श्वपच, चूहर (ग्रा०) । [**चूहड़ी** (स्त्री०)]

चूहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० चू+हा प्रत्य०] चूही आदि एक छोटा जंतु जो प्रायः घरों या खेतों में बिल बना कर रहता और अन्न आदि खाता है । [**चूहिया** (स्त्री०, अल्प०)] [मूसा, मूस (दे०)]

चूहादन्ती—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० चूहा+दाँत] स्त्रियों की एक पहुँची ।

चूहादान—(संज्ञा, पु०) [हि० चूहा+दान फ़ा०] चूहों के फँसाने का पिंजड़ा । [**चूहादानी, चूहेदानी** (स्त्री०)]

चें—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) चिड़ियों के बोलने का शब्द, चें-चें, चीं-चीं ।

चेंच—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चंचु] एक प्रकार का शाक ।

चेंचें—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) चिड़ियों या उनके बच्चों का शब्द, चांचां । व्यर्थ की बकवाद, चांय-चांय ।

चेंटुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चिड़िया] चिड़िया का बच्चा ।

चेंबर—(संज्ञा, पु० अं०) सभाभवन । [**काउंसिल चेंबर** (यौ०)]

चेंप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) चिल्लाहट । असन्तोष की पुकार । बकबक ।

चेक—(संज्ञा, पु०, अं०) लिखित आदेशपत्र जो बैंक में किसी को रुपये देने के लिए प्रस्तुत किया जाता है । हुंडी ।—**काटना**-आदेश-पत्र देना ।

चेकितान—(संज्ञा, पु०, सं०) महादेव । एक प्राचीन राजा । "धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्"—[गीता] ।

चेचक—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शीतला रोग ।

चेचकरू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) शीतला के दाग वाला ।

चेजा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) छेद ।

चेट—(संज्ञा, पु०, सं०) दास, नौकर । पति । स्वामी । नायक और नायिका को मिलाने वाला । भड़ुवा । भांड़ । [**चेटी**, **चेटिका** (स्त्री०)]

चेटक—(संज्ञा, पु०, सं०) सेवक, दास । चटक-मटक । दूत । जादू या इन्द्रजाल की विद्या । [**चेट-कनी, चेटकी** (स्त्री०)]

चेटकी—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्रजाली, जादूगर, खिलाड़ी, कौतुकी । (संज्ञा, स्त्री०) चेटक की स्त्री ।

चेटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शिष्या, छात्रा ।

चेटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दासी, चेटिका ।

चेड—(संज्ञा, पु०, दे०) भृत्य, दास ।

चेडक—(संज्ञा, पु०, दे०) दास । चेला ।

चेत—(संज्ञा, पु०) [सं० चेतस्] चित्त की वृत्ति, चेतना, संज्ञा, होश, ज्ञान, बोध । सावधानी, चौकसी । स्मरण, सुधि । "उग्यौ सरद राका ससी, करति न क्यों चित चेत"—बिहारी । [(विलो०) **अचेत**]

चेतक—(वि०, सं०) चेतना, स्फूर्ति प्रदान करने वाला । चैतन्य कराने वाला । (संज्ञा, पु०) सभा-समिति का वह अधिकारी जो कार्य-विशेष के सम्बन्ध में उपस्थिति की सूचना देता है [ह्विप] ।

चेतकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हरड़ ।

चेतन—(वि०, सं०) जिसमें चेतना हो, जीवधारी । परमेश्वर [एनिमेट] ।

चेतनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चेतन का धर्म, चैतन्यता, ज्ञानता ।

चेतना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुद्धि, मनोवृत्ति (ज्ञानात्मक) । स्मृति, सुधि, चेतनता, संज्ञा, होश । (क्रि० अ०, दे०) [हिं० चेत+ना प्रत्य०] संज्ञा में होना, होश में आना, सावधान या चौकस होना । (क्रि० स०) विचारना, समझना । "तब न चेता केवला जब ढिग लागी बेर"—[स्फु०] ।—**वान**-चेतनायुक्त, सजीव, स्फूर्तिमय । "तू मूक बना चेतनावान"—पंत ।

चेतावनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चेतना] किसी को होशियार करने के लिए कही गई बात, सतर्क होने की सूचना ।

चेतिका†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चिति] मुर्दा जलाने की चिता, सरा ।

चेत्—(अव्य०, सं०) यदि, अगर, शायद, कदाचित् ।

चेदि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन देश । इस देश का राजा । इस देश का निवासी, चँदेरी ।

चेदिराज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिशुपाल ।

चेन—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) जंजीर ।

चेना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चणक] कँगनी या साँवाँ की जाति का एक मोटा अन्न । एक साग ।

चेप—(संज्ञा, पु०) [चिपचिप से अनु०] कोई गाढ़ा चिपचिपा या लसदार रस, चिड़ियों के फँसाने का लासा ।

चेपदार—(वि०) [हिं० चेप+दार फ़ा०] जिसमें चेप या लस हो, चिपचिपा ।

चेयर—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) कुर्सी ।—**मैन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, अं०) सभापति ।

चेर, चेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चेटक] नौकर, सेवक । चेला, शिष्य । [**चेरी** (स्त्री०)]

चेराई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चेरा+ई] दासत्व, सेवा, नौकरी ।

चेरि, चेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दासी । "चेरी छाँड़ि कि होउब रानी" । "चेरि केकई केरि"—तुल० ।

चेल—(संज्ञा, पु०, सं०) कपड़ा, वस्त्र ।

चेलकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चेला] चेल-हाई ।

चेलहाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चेला+हाई प्रत्य०] चेलों का समूह, शिष्य-वर्ग ।

चेला—(संज्ञा, पु०) [सं० चेटक] धार्मिक उपदेश लेने वाला शिष्य, शिक्षा-दीक्षा-प्राप्त। शागिर्द, विद्यार्थी। [**चेलिन, चेली** (स्त्री०)]। "आपु कहैं तिनके गुरु हैं किधौं चेला है"—रत्ना०। **—चाटी**-(संज्ञा, पु०) शिष्य वर्ग। **मुहा० —मूड़ना**-किसी को स्ववश करना, आज्ञाकारी बनाना।

चेलिक—(संज्ञा, पु०, दे०) युवा पुरुष।

चेलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वस्त्र-विशेष, चोली, अँगिया।

चेल्हवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चिल+मछली] एक छोटी मछली।

चेवली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रेशमी वस्त्र-विशेष, चोली के लिए बना विशेष-वस्त्र।

चेहल—(वि०, फ़ा०) चालीस।

चेहल्लुम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुहर्रम के बाद का ४० वाँ दिन।

चेष्टा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शरीर के अंगो की गति या अवस्था जिससे मन का भाव प्रगट हो। उद्योग, प्रयत्न। कार्य, श्रम। इच्छा, कामना, आकांक्षा।

चेहरा—(संज्ञा, पु०, फा०) सिर का अगला भाग जिसमे मुख, आंख, नाक आदि रहते हैं। [मुखड़ा (दे०)]**—शाही**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) वह रुपया जिस पर किसी बादशाह का चेहरा बना हो, प्रचलित रुपया। **मुहा०—उतरना**-लज्जा, शोक, चिन्ता या रोग आदि के कारण चेहरे के तेज का जाता रहना। **—होना**-फौज में नाम लिखा जाना। किसी चीज का अगला भाग। [आगा (दे०)] देवता, दानव या पशु आदि की आकृति का वह साँचा जो लीला या स्वाँग आदि में चेहरे के ऊपर पहना या बाँधा जाता है। **—उड़ना**-लज्जा, भयादि से मुख का रंग बदलना। **—फीका (फक) होना**-लज्जित, विस्मित आदि होना। **—(रे) पर हवाई उड़ना (हवा होना)**-आश्चर्य या विस्मय होना। भय, ग्लानि होना।

चै—(संज्ञा, पु०, दे०) चय।

चैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चैत्र] फागुन के बाद और बैसाख के पहले का महीना, चैत्र।

चैतन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चितस्वरूप आत्मा या जीव। ज्ञान, बोध, चेतना। ब्रह्म, परमेश्वर। प्रकृति। एक प्रसिद्ध बंगाली महात्मा, गौरांग प्रभु। [**चेतनता** (संज्ञा, स्त्री०)]

चैती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चैत+ई प्रत्य०] वह फसल जो चैत में काटी जाय, रबी। चैत का गाना। चैत-सम्बन्धी।

चैत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मकान, घर, भवन। मंदिर, देवालय। यज्ञशाला। गाँव में वह पेड़ जिसके नीचे ग्राम-देवता की वेदी या चबूतरा हो। किसी देवी-देवता का चबूतरा। बुद्ध की मूर्ति। अश्वत्थ का पेड़। बौद्ध संन्यासी या भिक्षु। भिक्षु-मठ, विहार। चिता।

चैत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्वत् का प्रथम मास, चैत। बौद्ध भिक्षु, यज्ञ भूमि। देवालय।

चैत्ररथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुबेर के बाग का नाम।

चैत्रिक—(संज्ञा, पु०, सं०) चैत्रमास।

चैद्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चेदि देश का राजा, शिशुपाल।

चैन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शयन] आराम, सुख। "रैन-दिन चैन है न सैन इहि उद्दिम मैं"—रत्ना०। **मुहा०—उड़ाना**-आनन्द करना।**—पड़ना**-शान्ति या सुख मिलना। [**अमन-चैन** (यौ०)]

चैल—(संज्ञा, पु०, सं०) कपड़ा, वस्त्र।

चैला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० छीलना] कुल्हाड़ी से चीरी हुई जलाने की लकड़ी का टुकड़ा। [**चैली** (स्त्री०, अल्प०)]

चैलेंज—(संज्ञा, पु०, अं०) ललकार, आह्वान।

चोंक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चोख] वह चिह्न जो चुम्बन मे दाँत लगने से पड़ता है।

चोंगला—(संज्ञा, पु०, दे०) बाँस, कागज या टीन की नली जिसमें कागज, पुस्तकें आदि रखी जाती हैं।

चोंगा—(संज्ञा, पु०) (?) कोई वस्तु रखने के लिए खोखली नली, कागज, टीन, बाँस आदि की बनी हुई नली। (वि०) खोखला। मूर्ख, मूढ़।

चोंधना*†—(क्रि० स०, दे०) चुगना।

चोंच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चंचु] पक्षियों के मुख का निकला हुआ अग्र भाग, ठोंट, तुंड, (व्यंग०)। **मुहा० दो-दो—होना**-कहा-सुनी या कुछ लड़ाई-झगड़ा होना। (वि०) मूर्ख।

चोंड़ा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चूड़ा] स्त्रियों के सिर के बाल, झोंटा। (संज्ञा, पु०) [सं० चुंच= छोटा कुआँ] सिंचाई के लिए छोटा कुआँ।

चोंथ—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) एक बार के गिरे गोबर का ढेर।

चोंथना†—(क्रि० स०, अनु०) किसी वस्तु में से उसका कुछ भाग बुरी तरह नोंचना।

चोंधर—(वि०, दे०) [हिं० चौंधियाना] जिसकी आँखें बहुत छोटी हों। मूर्ख।

चोंहका—(संज्ञा, पु०) [सं० चूषण] वह दूध जो नाम मात्र के लिए दुहने के पहले जानवरों के बच्चों का चुसाया जाता है।

चोआ, चोवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चुआना] एक सुगंधित द्रव पदार्थ, जो कई गंध-द्रव्यों को मिलाकर उनका रस टपकाने से तैयार होता है। "चोआ चारु चन्दन चढायो"—रत्ना०।

चोकर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चून=आटा, कराई=छिलका] गेहूँ, जौ आदि का छिलका जो आटा छानने के बाद बचे। [**चूनीचोकर** (यौ०)]

चोका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चुहकना] चूसने की क्रिया या भाव या वस्तु।

चोख*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चोखा] तेजी।

चोखरा—(संज्ञा, पु०, दे०) चूहा।

चोखा—(वि०, दे०) [सं० चोक्ष] जिसमें किसी प्रकार का मैल, खोट या मिलावट आदि न हो, शुद्ध। उत्तम। सच्चा। ईमानदार। खरा। तेजधार वाला, पैना। (संज्ञा, पु०) उबाले या भूने हुए बैंगन, आलू आदि मे नमक-मिर्च आदि डालकर बनाया गया सालन, भरता (ग्रा०) [**चोखी** (स्त्री०)]

चोखाना—(संज्ञा, पु०) गाय, भैंस आदि के बच्चों को दुहने के पहले चुसाना।

चोगा—(संज्ञा, पु०, तु०) पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा, लबादा। [**चुगा** (दे०)]

चोचला, चोंचला—(संज्ञा, पु०, अनु०) हृदय को किसी प्रकार की (विशेषतः जवानी की) उमंग में की गई शारीरिक गति या चेष्टा, हावभाव, नखरा, नाज।

चोज—(संज्ञा, पु०) (?) मनोरंजक, चमत्कारपूर्ण उक्ति। सुभाषित। हँसी, ठट्ठा, विशेषतः व्यंग-पूर्ण उपहास।

चोट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चुट=काटना] एक वस्तु का दूसरी पर वेग से गिरना या टक्कर, आघात, प्रहार।—**चपेट**–(संज्ञा, स्त्री०) घाव, जखम। किसी को मारने के लिए हथियार आदि चलाने की क्रिया, वार, आक्रमण, हमला। हृदय पर का आघात, मानसिक व्यथा। किसी के अनिष्टार्थ चली हुई चाल। आवाजा, बौछार, ताना। विश्वासघात, धोखा। बार, दफा, मरतबा। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) सौदा। "बाजार हम गये थे एक चोट मोल लाये।" **मुहा०—करना (मारना)**–हमला या प्रहार करना।—**खाना**–आघात ऊपर लेना। शरीर पर आघात या प्रहार का प्रभाव, व्रण, जखम [इंजरी]।

चोटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चोआ] राब का पसेव जो छानने से निकलता है, चोआ (ग्रा०)।

चोटार†—(वि०, दे०) [हिं० चोट+आर प्रत्य०] चोट खाया हुआ, चुटैल।

चोटारना†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० चोट] चोट करना, आघात करना।

चोटियाना—(संज्ञा, पु०) चोटी पकड़ कर हिलाना। काबू मे करना।

चोटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चूड़ा] सिर के बीच मे थोड़े से बड़े बाल, जिन्हें प्रायः हिन्दू नहीं कटाते, शिखा, चोंदई (ग्रा०)। [चोटैया, चोटिया (दे०)] "मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी"—सूर०। पर्वत का सर्वोच्च स्थान, शिखर, शृंग। एक में गुँथे हुए स्त्रियों के सिर के बाल। सूत या ऊन आदि का डोरा, जिससे स्त्रियाँ बाल बाँधती हैं। स्त्रियों के जूड़े का एक आभूषण। कुछ पक्षियों के सिर के ऊपर उठे पर, कलँगी। **मुहा०—(चुटैया) दबना**–बेबस या लाचार होना। **किसी की—किसी के हाथ में होना**–किसी प्रकार के दबाव में होना।—**(पर) का**–सर्वोत्तम।

चोटी-पोटी†—(वि०, स्त्री०, दे०) खुशामद भरी बात, झूठी या बनावटी बात।

चोट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चोर] चोर। [**चोट्टी** (स्त्री०)]।

चोड—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तरीय वस्त्र। कुरती, अँगिया। चोल नामक प्राचीन देश।

चोदक—(वि०, सं०) प्रेरणा करने वाला।

चोदना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह वाक्य जिसमें किसी काम के करने का विधान हो। विधिवाक्य। प्रेरणा। योग आदि के सम्बन्ध का प्रयत्न। (क्रि० स०, दे०) मैथुन करना।

चोप*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चाव] गहरी चाह, इच्छा, आकांक्षा, चाव, शौक, रुचि। उत्साह, उमंग, बढ़ावा। "चोप करि चन्दन चढ़ायो जिन अंगनि पै"—रत्ना०। [**चोपी** (वि०)]

चोपना†*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० चोप] किसी वस्तु पर मोहित या मुग्ध होना।

चोपी*—(वि०) [हिं० चोप] इच्छा रखने वाला। उत्साही। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) पके आम के सिरे पर का रस।

चोब—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शामियाना खड़ा करने का बड़ा खम्भा। नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी। सोने या चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा, छड़ी, सोटा।

चोबकारी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कलाबत्तू का काम।

चोबचीनी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, फ़ा०) एक काष्ठौषधि जो एक पौधे की जड़ है।

चोबदार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हाथ में चोब या आसा लेने वाला दास।

चोभा—(संज्ञा, पु०, दे०) खोंच। खोल। कीला। [**चोभी** (स्त्री०, अल्पा०)]

चोया—(संज्ञा, पु०, दे०) चोआ। [चोवा (दे०)] मूँग या उरद के ऊपरी छिलके।

चोर—(संज्ञा, पु०, सं०) चुराने या चोरी करने वाला, तस्कर, चोरटा। [चोट्टा (दे०)]। खेल में वह लड़का जिससे दूसरे लड़के दाँव लेते है। चोरक (गंधद्रव्य)। (वि०) जिसके वास्तविक स्वरूप का ऊपर से देखने पर पता न चले। "सुबरन को खोजत फिरै, कवि, व्यभिचारी, चोर।"—**कट**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) चोर, उचक्का। [चोरकट्टा (दे०)]।—**दंत**-(संज्ञा, पु०, यौ०) बत्तीस दाँतों के अतिरिक्त कष्ट से निकलने वाला दाँत। —**दरवाजा**-(संज्ञा, पु०, यौ०) मकान के पीछे की ओर का गुप्त द्वार, चौर-द्वार (सं०)।—**नायक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चोरों का सरदार। कृष्ण। —**पुष्पी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अंधाहुली औषधि।—**महल (प्रासाद)**-(संज्ञा, पु०, यौ०) वह महल, जहाँ राजा और रईस लोग अपनी अविवाहिता प्रिया रखते हैं। चौर-मंदिर।—**मिहीचनी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आँखमिचौली का खेल। "खेलन चोरमिहीचनी आजु "—मति०। **मुहा० मन में—पैठना**-मन में किसी प्रकार का खटका या संदेह होना। ऊपर से अच्छे हुए घाव में वह दूषित या विकृत अंश जो भीतर ही भीतर पकता और बढ़ता है। वह छोटी संधि या छेद जिसमें से होकर कोई पदार्थ बह या निकल जाय या जिसके कारण कोई त्रुटि रह जाय।

चोरटा—(संज्ञा, पु०, दे०) चोट्टा, चोर। [**चोरटी** (स्त्री०)]

चोरा-चोरी*†—(क्रि० वि०, यौ०) [हिं० चोर+चोरी] छिपे-छिपे, चुपके-चुपके।

चोरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० चोर+ई प्रत्य०] छिप कर किसी दूसरे की वस्तु लेने का काम, चुराने की क्रिया या भाव। "चोरी छोड़ कन्हाई" —सूर०।

चोल—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण का एक प्राचीन प्रदेश। उक्त देश का निवासी। स्त्रियों के पहनने की चोली। कुरते के ढंग का एक पहनावा, चोला। कवच, जिरह-बख्तर, मजीठ। "फीको परै न बरु घटै, रँगों चोल रँग चीर"—बिहारी।

चोलक—(संज्ञा, पु०, सं०) चोली। छाला। कवच।

चोलना†—(संज्ञा, पु०, दे०) चोला।

चोला—(संज्ञा, पु०,) [सं० चोल] साधु-फकीरों का एक बहुत लम्बा और ढीला-ढाला कुरता। नये जन्मे हुए बालक को पहले-पहल कपड़े पहनाने की रस्म। शरीर, तन, देह। "...तन चाम ही को चोला है"—पद्मा०। दक्षिण का एक प्राचीन प्रदेश (राज्य)। **मुहा०—छोड़ना**-मरना, प्राण त्यागना।—**बदलना**-एक शरीर परित्याग करके दूसरा ग्रहण करना (साधु)।

चोली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चोल+ई प्रत्य०] अँगिया का सा स्त्रियों का एक पहिनावा, अँगी। **मुहा०—दामन का साथ**-बहुत अधिक साथ या घनिष्ठता। "चोली रतन जड़ाय की, अति सोहै गौरांग।"—सूर०। (वि०) चोला या देह वाला।

चोष—(संज्ञा, पु०, सं०) सूखना। जलन उत्पन्न करने वाला एक रोग। चोषण।

चोषक—(संज्ञा, पु०, सं०) चूसनेवाला।

चोषण—(संज्ञा, पु०, सं०) चूसना। [**चोषणीय, चोषित** (वि०)]

चोष्य—(वि०, सं०) चूसने के योग्य।

चौंक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चौंकना] चौंकने की क्रिया या भाव।

चौंकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० चौंक+ना प्रत्य०] एकाएक डर जाने या पीड़ा आदि के अनुभव करने पर झट से काँप या हिल उठना। झिझकना। चौकन्ना या भौचक्का होना। भय या आशंका से हिचकना, भड़कना। "बैल चौंकना जोत में"—घाघ।

चौंकवाना—(क्रि॰ स॰, दे॰) [हिं॰ चौंकना का प्रेरणा॰ रूप] भड़काने का काम दूसरे से कराना।

चौंकाना—(क्रि॰ स॰) [हिं॰ चौंकना] भड़काना।

चौंध—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ चक=चमकना] चकचौंध, तिलमिलाहट। [**चखचौंध** (यौ॰)]

चौंधा*—(क्रि॰ वि॰, अ॰) [हिं॰ चहुँधा] चारों ओर, चहूँधा, चहूँ, चहुँधा, चहुँधाई।

चौंधियाना—(क्रि॰ अ॰, दे॰) [हिं॰ चौंध] अत्यन्त अधिक चमक या प्रकाश के सामने दृष्टि का स्थिर न रह सकना, चकाचौंध होना, आँखों से दिखाई न पड़ना।

चौंधी—(संज्ञा, स्त्री॰, सं॰) चकाचौंध। [चखचौंधी (दे॰)]

चौंर—(संज्ञा, पु॰, दे॰) चँवर, चामर (सं॰)। "ऋद्धि-सिद्धि चौंर ढरै"। **मुहा॰—ढारना (चलाना)**-चामर चलाना (डुलाना)।

चौंराना*—(क्रि॰ स॰, दे॰) [सं॰ चामर] चँवर डुलाना, या करना। झाड़ देना।

चौंरी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [हिं॰ चौंर] काठ की डंडी में लगा हुआ मक्खियाँ उड़ाने को घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा। चोटी या वेणी बाँधने की डोरी। सफेद पूँछ वाली गाय। विवाह में एक रस्म।

चौ—(वि॰, दे॰) [सं॰ चतुः] चार की संख्या (केवल यौगिक में), जैसे-चौपहल। (संज्ञा, पु॰, दे॰) मोती तौलने का एक मान।

चौआ—(संज्ञा, पु॰, दे॰) चौवा, चोवा।

चौआना†*—(क्रि॰ अ॰, दे॰) [हिं॰ चौंकना] चकपकाना, चकित या चौकन्ना होना।

चौक—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ चतुष्क, प्रा॰ चउक्क] चौकोर भूमि, चौखूँटी खुली जमीन। घर के बीच में कोठरियों और बरामदों से घिरा हुआ चौखूँटा खुला स्थान, आँगन, सहन। चौखूँटा चबूतरा। बड़ी वेदी, मंगल-समय पर पूजन के लिए आटे, अबीर आदि की रेखाओं से बना हुआ चौखूँटा क्षेत्र। [चउक (दे॰)] शहर के बीच का बड़ा बाजार। चौराहा, चौमुहानी। चौसर खेलने का कपड़ा, बिसात। सामने के चार दाँतों की पंक्ति। "चौके चारु सुमित्रा पूरी"—तुल॰। **—बनाना, —पूरना** —(क्रि॰ अ॰, दे॰) विवाह आदि मंगल-कार्यों में गेहूँ के आटे से शुद्ध भूमि पर बेल-बूटे बनाना।

चौकड़ा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [हिं॰ चौ+कड़ा] दो-दो मोतियों वाली कान में पहनने की बालियाँ। चौघड़ा। चार का समूह।

चौकड़ी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [हिं॰ चौ=चार+कला अंग सं॰] हिरन की वह दौड़ जिसमें वह चारों पैर एक साथ फेंकता जाता है, चौफाल, कुदान, फलाँग, कुलाँच। एक प्रकार का गहना। चार युगों का समूह, चतुर्युगी। पलथी। (संज्ञा, स्त्री॰) [हिं॰ चौ=चार+घोड़ी] चार घोड़ों की बग्घी। **मुहा॰—भरना (मारना)**-तेजी से उछलते भागना। **—भूल जाना**-बुद्धि से काम न करना। सिटपिटा जाना, घबरा जाना। **चंडाल—**,(यौ॰) उपद्रवियों की मंडली। चार आदमियों का गुट, मंडली।

चौकन्ना—(वि॰, दे॰) [हिं॰ चौ=चारों ओर+कान] सावधान, चौकस, सजग। चौंका हुआ, आशंकित।

चौकल—(संज्ञा, पु॰, यौ॰, सं॰) चार मात्राओं का समूह (पिं॰)।

चौकस—(वि॰, दे॰) [हिं॰ चौ=चार+कस=कसा हुआ] सावधान, सचेत। ठीक, दुरुस्त। पूरा। "राम भजन में चौकस रहना"—कबीर।

चौकसाई*†चौकसी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [हिं॰ चौकस] सावधानी, होशियारी, खबरदारी, सतर्कता।

चौका—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ चतुष्क] पत्थर का चौकोर टुकड़ा, चौखूँटी शिला। रोटी बेलने का काठ या पत्थर का पाटा, चकला। सामने के चार दाँतों की पंक्ति। सिर का एक गहना, सीसफूल। रसोई बनाने या खाने का लिपा-पुता स्थान। सफाई के लिए मिट्टी या गोबर का लेप। एक ही प्रकार की चार वस्तुओं का समूह, जैसे मोतियों का चौका। चार बूटियों वाला ताश का पत्ता। [चौवा (दे॰)] **[चौका-चूल्हा (यौ॰)] मुहा॰—लगाना**-लीप-पोत कर बराबर करना, सत्यानाश या नष्ट करना।

चौकिया-सोहागा—(संज्ञा, पु॰, यौ॰) [हिं॰ चौकी+सोहागा] छोटे-छोटे चौकोर टुकड़ों में कटा हुआ सोहागा।

चौकी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ चतुष्की] चार पाये वाला चौकोर आसन, छोटा तख्त। कुरसी। मंदिर में मंडप के स्तंभों के बीच का प्रवेश-स्थान। पड़ाव,

ठहरने की जगह, ठिकाना, अड्डा। आस-पास की रक्षा के लिए नियुक्त थोड़े से सिपाहियों का स्थान। पहरा, खबरदारी, रखवाली। किसी देवता या पीर आदि के स्थान पर चढ़ाई गई भेंट या पूजा। गले का एक गहना, पटरी। रोटी बेलने का छोटा चकला। [**चौकी-पहरा** (यौ०)] "सनमुख चौंकी जगदम्बा को"—आल्हा०।—**दार**-(संज्ञा, पु०) [हि० चौक + दार फ़ा०] पहरा देने वाला, गोंड़ैत (ग्रा०)। —**दारी**-(संज्ञा, स्त्री०, हि०) पहरा देने का काम, रखवाली। चौकीदार का पद। चौकीदार रखने के लिए चंदा (कर)।

चौकोन, चौकोना—(वि०, दे०) [सं० चतुष्कोण] चौकोर।

चौकोर—(वि०, दे०, यौ०) [सं० चतुष्कोण] जिसमें चार कोण हों, चौखूँटा, चतुष्कोण।

चौखट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० चौ=चार +काठ] लकड़ियों का वह ढाँचा जिसमे किवाड़ के पल्ले लगे रहते हैं, देहली, डेहरी (ग्रा०)। [**चौखट-बाजू** (यौ०)]

चौखटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चौखट] चार लकड़ियों का ढाँचा जिसमें मुँह देखने का या तसवीर का शीशा जड़ा जाता है। [फ्रेम]

चौखना—(वि०, दे०) [हि० चौ=चार+खंड] चार खंड वाला, चार मंजिला (घर)। चौखंडा।

चौखा—(संज्ञा, पु०, दे०) वह स्थान जहाँ चार गाँवों की सीमा मिले। घोड़े, हिरन आदि का छलाँग भरकर भागना।

चौखानि—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० चौ=चार+खानि =जाति] अंडज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज आदि चार प्रकार के जीव।

चौखूँट—(संज्ञा, पु०, दे०) [चौ+खूँट] चारों दिशाएँ। भू-मंडल। (क्रि० वि०) चारों ओर।

चौखूँटा—(वि०, दे०) चौकोर।

चौगड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) खरहा, खरगोश।

चौगड्डा—(संज्ञा, पु०, दे०) वह स्थान जहाँ पर चार गाँवों की सीमा या सरहद मिले। चौहट्टा, चार वस्तुओं का समूह।

चौगान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक खेल जिसमें लकड़ी के बल्ले से गेंद मारते हैं। चौगान खेलने का मैदान। नगाड़ा बजाने की लकड़ी। "खेलन को निकरे चौगान"—[प्रेमसा०]।

चौगिर्द—(क्रि० वि०, यौ०) [हि० चौ+गिर्द=तरफ फ़ा०] चारों ओर, चारों तरफ। [चौगिर्दा (दे०)]

चौगुना—(वि०, दे०) [सं० चतुर्गुण] चार से गुणित, चतुर्गुण, चौगुन।

चौगोड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० चौ= चार+गोड़=पैर] एक प्रकार की ऊँची चौकी। एक प्रकार का रक्त चूसने वाला कीटाणु जो मनुष्य के शरीर में भी लग जाया करता है।

चौगोशिया—(वि०) [चौ=चार+गोशा=कोण फ़ा०] चार कोने वाला। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक टोपी। (संज्ञा, पु०) तुरकी घोड़ा।

चौघड़—(संज्ञा, पु०) [हि० चौ=चार+दाढ़] आहार कूचने या चबाने का किनारे का चौड़ा चिपटा दाँत, चौभर। चौहर, चौउंहर (ग्रा०)।

चौघड़ा, चौघरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चौ= चार+घर=खाना] पान, इलायची या तरकारी रखने का चार खानों वाला डिब्बा, चार खानों का बरतन। चार बड़े पानों की खोंगी।

चौघड़िया—(वि०, हि०) चार घड़ी के भीतर ही पवित्र-मुहूर्त (ज्यौ०)। चौघरिया (ग्रा०)।

चौघर†—(वि०, दे०) घोड़ों की एक चाल, चौफाल, पोइया, सरपट।

चौघोड़ी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चौ+घोड़ा] चार घोड़ों की गाड़ी, चौकड़ी।

चौचंद*†—(संज्ञा, पु०) [हि० चौथ+चंद या चबाव+चंड] कलंक-सूचक अपवाद, बदनामी की चर्चा, निन्दा, अयश।

चौचँदहाई*—(वि०, स्त्री०) [हि० चौचंद+हाई प्रत्य०] बदनामी करने वाली।

चौड़—(संज्ञा, पु०, दे०) मुंडन, चूड़ाकरण संस्कार। चौपट, सत्यानाश, विनाश।

चौड़ा—(वि०, दे०) [सं० चिपिट=चिपटा] लंबाई की ओर के दोनों किनारों के बीच का विस्तृत या चकला भाग, लम्बा का उल्टा, अर्ज। [**चौड़ी** (स्त्री०)]

चौड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० चौड़ा+ई प्रत्य०] चौड़ापन, फैलाव, अर्ज। [चौड़ान, चौड़ाई (दे०)] [**चौड़ी** (वि०, स्त्री०)]

चौडोल—(संज्ञा, पु०, दे०) पालकी। चौपंक्ति।

चौतगियाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चौतनी।

चौतनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चौ=चार+ तनी=बंद] बच्चों की वह टोपी जिसमें चार बंद लगे रहते हैं। "पीत चौतनी सिरन्ह सुहाई"—[रामा०]।

चौतरफा—(संज्ञा, पु०, दे०) पटमंडप । वस्त्रगृह, तम्बू, कनात, रावटी । (स्त्री०, वि०, दे०) चारों तरफ, चतुर्दिक ।

चौतरा†—(संज्ञा, पु०, दे०) चबूतरा, चउतरा (ग्रा०) । "सम्पत्ति मे ऐंठि बैठे चौतरा अदालत के"—देव० ।

चौतही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चौ+तह] खेस की बुनावट का एक मोटा कपड़ा । [चौपरत (दे०)] चार तह वाली ।

चौतारा—(संज्ञा, पु०, दे०) तंबूरे का सा चार तारों का एक बाजा ।

चौताल—(संज्ञा, पु०) [हि० चौ+ताल] मृदंग का एक ताल । होली का एक गीत ।

चौतुका—(वि०, दे०) [हि० चौ+तुक] जिसमें चार तुक हो । (संज्ञा, पु०, हि०) एक प्रकार का छंद जिसके चारो चरणों के तुक मिलते हों (पिं०) ।

चौथ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चतुर्थी] पक्ष की चौथी तिथि, चतुर्थी । चौथाई भाग के रूप मे लिया गया आमदनी या तहसील का भाग, चतुर्थांश राज-कर (मरहठा०) । **मुहा०—का चाँद**—भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी का चाँद, जिसके विषय मे प्रसिद्ध है कियदि कोई उसे देख ले तो उसे झूठा कलंक लगता है । "चांद चौथ कोदेखियां"—[प्रेमसा०] । चतुर्थांश । *†[**चौथा** (वि०)] **—पन***—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० चौथा+पन] जीवन की चौथी अवस्था, बुढ़ापा, वृद्धावस्था । "मनहुं चौथ- पन अस उपदेसा"—[रामा०] ।

चौथा—(वि०, दे०) [सं० चतुर्थ] क्रम मे चार के स्थान में पड़ने वाला । [**चौथी** (स्त्री०)]

चौथाई—(संज्ञा, पु०) [हि० चौथा+ई प्रत्य०] चौथा भाग, चतुर्थांश, चहारुम (फ़ा०) ।

चौथिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चौथा] वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आवे । चौथाई का हकदार ।

चौथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चौथा] विवाह के चौथे दिन की एक रीति जिसमें वर-कन्या के हाथ के कंकन खोले जाते हैं । चतुर्थी । फसल की बॉट जिसमें जमींदार चौथाई लेता है ।

चौदंत—(वि०, दे०) चार दाँत का बच्चा पशु । बली, हृष्टपुष्ट । [चौदंता (दे०)]

चौदंती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चतुर्दन्त] शूरता, वीरता । अल्हड़पन ।

चौदस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चतुर्दशी] पक्ष का चौदहवाँ दिन, चतुर्दशी ।

चौदह—(वि०, दे०) [सं० चतुर्दश] जो गिनती में दस और चार हो । (संज्ञा) दस और चार के जोड़ की संख्या, १४ ।

चौदाँत†*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० चौ=चार+दाँत] दो हाथियों की लड़ाई या मुठभेड़ ।

चौधर—(वि०, दे०) बलवान, बली । मोटा-ताजा । (संज्ञा, पु०, दे०) मुखियापन ।

चौधराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चौधरी] चौधरी का काम, पद ।

चौधराना—(संज्ञा, पु०) चौधराई । चौधरी का इनाम ।

चौधरानी—(संज्ञा, स्त्री०) चौधरी की स्त्री । गाँव की प्रधान महिला का सम्बोधन इस नाम से भी होता है ।

चौधरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चतुर+धर] किसी समाज या मंडली का मुखिया, जिसका निर्णय उस समाज वाले मानते हैं, प्रधान, मुखिया ।

चौपई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चतुष्पदी] १५ मात्राओं का एक छंद (पिं०) ।

चौपट—(वि०, दे०) [हि० चौ=चार+पट=किवाड़] चारों ओर से खुला हुआ, अरक्षित । (वि०) नष्ट-भ्रष्ट, बर्बाद, तबाह, चौपट्ट (ग्रा०) । "तोहिं पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाँव"—[रामा०] ।

चौपटहा, चौपटा—(वि०, दे०) [हि० चौपट] चौपट या नष्ट-भ्रष्ट करने वाला ।

चौपड़—(संज्ञा, पु०, दे०) चौसर, एक खेल ।

चौपत†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० चौ=चार+परत] कपड़े की तह या घरी ।

चौपताना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चौपत] कपड़े की तह लगाना, चौपरतना (ग्रा०) ।

चौपतिया, चौपत्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चौ+पत्ती] एक घास, एक साग । छोटी पुस्तक या कापी, हाथ-बही । कसीदे में चार पत्तियों वाली बूटी । ताश का एक खेल ।

चौपथ—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० चतुष्पथ] चौराहा, चौक ।

चौपद*†—(वि०, दे०) [हि० चौ=चार+पद=पाँव] चौपाया, चार पाँव के पशु ।

चौपर—(संज्ञा, पु०) देखिए 'चौपड़' ।

चौपरत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखिए 'चौपत' ।

चौपरताना—(अ० क्रि०, दे०) चार तह करना ।

चौपहल, चौपहला, चौपहलू—(वि०, दे०) [हि० चौ+पहलू फ़ा०] जिसके चार पहल या पार्श्व हों, वर्गात्मक, वर्गाकार।

चौपाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चतुष्पदी] १५ मात्राओं का छंद (पिं०)। चारपाई।

चौपाया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चतुष्पदी] चार पैरों वाला पशु, गाय, भैंस आदि।

चौपार, चौपाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चौवार] बैठने-उठने का वह स्थान जो ऊपर से छाया हो, परन्तु चारों ओर खुला हो, बैठक, दालान। एक पालकी।

चौपुरा—(संज्ञा, पु०, दे०) चार पुरों के चलने के लिए चार घाटों वाला कुआँ।

चौपैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चतुष्पदी] एक मात्रिक छंद (पिं०)। †चारपाई, खाट।

चौबंदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चौ+बंद] एक छोटा चुस्त अंगा, बगलबन्दी (ग्रा०)।

चौबँसा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक वर्णवृत्त (पिं०)।

चौबगला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चौ+बगल फ़ा०] कुरते, अंगे इत्यादि में बगल के नीचे और कली के ऊपर का भाग। चारों ओर का। [**चौबगली** (वि०, स्त्री०)]

चौबर—(वि०, दे०) चार परत। "चौवर पचौबर कै चूनरि निचौरै है"—पद्मा०।

चौबरसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चौ+बरसी] चौथे वर्ष का श्राद्ध या उत्सव।

चौबाइन—(संज्ञा, स्त्री०) चौबे की स्त्री।

चौबाई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चौ+बाई=हवा] चारों ओर से बहने वाली हवा। अफवाह, किंवदन्ती, उड़ती खबर।

चौबाछा—(संज्ञा, पु०) मुगलों के समय का एक कर।

चौबारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चौ+बार] कोठे के ऊपर की खुली कोठरी, बँगला, बालाखाना, खुली हुई बैठक। चौपार (ग्रा०)। (क्रि० वि०) [चौ=चार+बार=दफा] चौथी दफा, चौथी या चार बार।

चौबीस—(वि०, दे०) [सं० चतुर्विंशत, हि० चौ=चार+बीस] चार अधिक बीस, चार और बीस, २४।

चौबे—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चतुर्वेदी] ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा। [**चौबाइन** (स्त्री०)]

चौबोला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चौबोल] एक प्रकार का मात्रिक छंद (पिं०)।

चौभड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चौघड़।

चौमंजिला—(वि०, दे०) [हि० चौ=चार+मंजिल फ़ा०] चौखंडा मकान, चार खंडों वाला, चार महला, चौमहला (ग्रा०)।

चौमासा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चतुर्मास] आषाढ से कुवाँर तक के चार महीने, वर्षा ऋतु, चौमास।

चौमासिया, चौमसिया—(वि०, दे०)[हि० चौमास] वर्षा के चार महीनों में होने वाला। (संज्ञा, पु०) [हि० चार+माशा] चार माशे की तौल।

चौमुख—(क्रि० वि०) [हि० चौ=चार+मुख=ओर] चारों ओर, चारों तरफ, चारों ओर मुख। [**चौमुखी** (वि०)]

चौमुखा—(वि०, यौ०) [हि० चौ=चार+मुख] चारों ओर। चार मुखों वाला। [चौमुँहा (दे०)] [**चौमुखी** (स्त्री०)]

चौमुहानी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० चौ=चार+मुहाना फ़ा०] चौराहा, चतुष्पथ।

चौरंग—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० चौ=चार+रंग] तलवार का एक हाथ। (वि०) तलवार के वार से कटा हुआ।

चौरंगा—(वि०, यौ०) [हि० चौ+रंग] चार रंगों का, जिसमे चार रंग हों। [**चौरंगी** (स्त्री०)]

चौर—(संज्ञा, पु०, सं०) दूसरे की वस्तु चुराने वाला, चोर। एक गंध द्रव्य। [**चौर-कर्म** (यौ०)]

चौरस—(वि०, यौ०) [हि० चौ=चार+रस] एक समान जो ऊँचा-नीचा न हो, समतल, बराबर। चौपहल, वर्गात्मक। एक प्रकार का वर्णवृत्त (पिं०)।

चौरस्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) चौराहा, चतुष्पथ।

चौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चतुर] चबूतरा। वेदी, किसी देवता, सती, मृत महात्मा, भूत-प्रेत आदि का स्थान, जहाँ वेदी या चबूतरा बना हो। चौपार, चौवारा। लोबिया, बोड़ा। अरवा। खाँस। परस्पर बातचीत, सलाह। [चउरा (दे०)] [**चौरी** (स्त्री०, अल्पा०)]

चौराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चौलाई, एक साग।

चौरासी—(वि०, दे०) [सं० चतुराशीति] अस्सी से चार अधिक। (संज्ञा, पु०) अस्सी से चार अधिक की संख्या, ८४। चौरासी लक्ष योनि, नर्क। "आकर चार लाख चौरासी"—[रामा०]। **मुहा०—में पड़ना, या भरमना**-निरन्तर बार-बार कई प्रकार के शरीर धारण करना। (संज्ञा, स्त्री०) नाचते समय

पैर में बाँधने का घुँघुरू। (यौ०, दे०) [चौ=चार+रासी=राशि] चार वस्तुओं की राशि।

चौराहा—(संज्ञा, पु०) [हि० चौ=चार+राह=रास्ता] चौरस्ता, चौमुहाना। चौडगरा, चौगैला (ग्रा०)। चतुष्पथ।

चौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चौरा] छोटा चबूतरा। [चवरी (दे०)]

चौरीठा, चौरेठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चाउर+पीठा] पानी मे पिसा चावल।

चौर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चोरी।

चौर्यक—(संज्ञा, पु०, सं०) चोरी।

चौल—(वि०, सं०) चूड़ा-सम्बन्धी। (संज्ञा, पु०) चूड़ाकर्म।

चौलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चौ+राई=दाने] एक पौधा जिसका साग बनता है, चौराई।

चौलुक्य—(संज्ञा, पु०, दे०) चालुक्य।

चौवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चौ=चार] हाथ की चार अँगुलियों का समूह। अँगूठे को छोड़ कर हाथ की बाकी अँगुलियों की पंक्ति मे लपेटा हुआ तागा। चार अंगुल की माप। चार बूटियों वाला ताश का पत्ता, चौका। [**चौपाया** (संज्ञा, पु०, दे०)] चउवा (ग्रा०)।

चौसठ, चौंसठ—(वि०) [सं० चतुर्षष्ठि] साठ और चार की संख्या। नाम। कला। योगिनी। चउसठ (ग्रा०)।

चौसर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चतुस्सारि] एक खेल जो बिसात पर चार रङ्गों की चार-चार गोलियों से खेला जाता है, चौपड़, नर्दबाजी, इस खेल की बिसात। [**चतुरंसक** (संज्ञा, पु०, दे०)] चार लड़ों का हार।

चौहट्ट†*—(संज्ञा, पु०, दे०) चौहट्टा, चौक। "चौहट्ट हाट बजार बीथी चारु पुर बहु विधि बना"—[रामा०]।

चौहट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चौ=चार+हाट] वह स्थान जिसके चारों ओर दुकानें हों, चौक। चौमुहानी, चौरस्ता।

चौहद्दी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० चौ+हद फ़ा०] चारों ओर की सीमा।

चौहरा—(वि०, दे०) [हि० चौ=चार+हरा] जिसमे चार फेरे या तहे हों, चार परत वाला। †चौगुना, जो चार बार हो।

चौहान—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।

चौहैं—(क्रि० वि०, दे०) [हि० चौ] चारों ओर। [**चाह, चउँहै** (संज्ञा, स्त्री०)] [जबड़ा (दे०)]

च्यवन—(संज्ञा, पु०, सं०) चूना, झरना, टपकना। एक ऋषि का नाम।—**प्राश**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक प्रसिद्ध पौष्टिक अवलेह (वैद्य०)।

च्युत—(वि०, सं०) गिरा या झड़ा हुआ, भ्रष्ट, अपने स्थान से हटा हुआ। विमुख, पराङ्मुख। [**च्युतक** (संज्ञा, पु०)] यथा—मात्रा-च्युतक, वर्ण-च्युतक।

च्युतात्मा—(वि०, सं०) कुटिल, बुरे कर्मों वाला।

च्युताधिकार—(वि०, सं०) पद से च्युत किया हुआ।

च्युति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गिरना, झड़ना। गति। उपयुक्त स्थान से हटना। चूक, भूल। कर्तव्य-विमुखता।

छ

छ—हिन्दी या संस्कृत की वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा अक्षर, जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

छंग*—(संज्ञा, पु०, दे०) उछंग।

छंगा, छंगू—(वि०, पु०, दे०) छः अँगुलियों वाला, अतिरिक्त अँगूठे वाला। (संज्ञा, पु०, दे०) कान्य-कुब्जों में एक उच्च कुल (शुक्ल)।

छँगुनिया, छँगुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कनिष्ठिका, हाथ या पाँव की सब से छोटी अंगुली। छिगुनियाँ (ग्रा०)।

छँछौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छाछ+वरी] एक पकवान जो छाँछ मे बनाया जाता है।

छँटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चटन] कट कर अलग होना। दूर या छिन्न होना, पृथक् होना। चुन कर अलग कर लिया जाना। मुहा० **छँटा हुआ**-चुना हुआ, चालाक, चतुर, धूर्त। साफ होना, मैल निकलना। क्षीण या दुबला होना।

छँटनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हटाने की क्रिया। कर्मचारी आदि को हटाने की क्रिया।

छँटवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छाँटना का प्रेरणा० रूप] कटवाना। चुनवाना, छिलवाना।

छँटाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छाँटना] छाँटने का काम, भाव, मजदूरी।

छँटाव—(संज्ञा, पु०) छँटाई।

छँटैल—(वि०) छँटा हुआ, घिसा हुआ, धूर्त। छाँट कर अलग किया हुआ।

छँड़ना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० छोड़ना] छोड़ना, त्यागना। अन्न को ओखली में डालकर कूटना,

काँड़ना, छाँटना, छरना (ग्रा०) । (क्रि० अ०) कै करना ।

छँड़ाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० छुड़ाना] छीनना, छुड़ा ले जाना । [**छँड़वाना** (प्रेरणा० रूप)]

छंदःप्रबन्ध—(संज्ञा, पु०) छंद-रचना ।

छंदःशास्त्र—(संज्ञा, पु०) छन्द सम्बन्धी शास्त्र ।

छंदःस्तुभ्—(संज्ञा, पु०) अरुण, स्तुति किया जाने वाला देवता ।

छंद—(संज्ञा, पु०) [सं० छंदस्] वेदों के वाक्यों का वह भेद, जो अक्षरों की गणना के अनुसार किया गया है । वेद-वाक्य जिसमें वर्णों या मात्राओं की गणना के अनुसार विराम आदि का नियम हो, पद्य, वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार पद या वाक्य के रखने की व्यवस्था, पद्य बन्ध । छंदों के लक्षणादि की विद्या । इच्छा । स्वेच्छाचार । बन्धन, गाँठ । जल । संघात, समूह । कपट । "छन्द-प्रबन्ध अनेक विधाना"—[रामा०] ।—**बद्ध**—(वि०, यौ०, सं०) श्लोक-बद्ध, जो पद्य के रूप में हो । **छल**—,(संज्ञा, पु०, यौ०) कपट, धोखेबाजी, चाल । युक्ति । रङ्ग-ढङ्ग । आकार । चेष्टा । अभिप्राय । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छन्दक] हाथ का एक गहना ।

छंदक—(संज्ञा, पु०) गौतम बुद्ध का सारथी । रक्षक । वासुदेवी ।

छंदन—(संज्ञा, पु०) मुग्ध करना, रिझाना ।

छंदानुवृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०) रिझाना, प्रसन्न करना ।

छंदित—(वि०, सं०) सन्तुष्ट, प्रसन्न ।

छंदी—(संज्ञा, स्त्री०) कलाई पर का आभूषण । (वि०) छलिया ।

छंदोग—(संज्ञा, पु०) साम-गायक ।

छंदोदोष—(संज्ञा, पु०) छन्द में मात्रा आदि के घट-बढ़ जाने से यति-भंग हो जाता है तो उसे छन्द-दोष मानते हैं ।

छंदोभंग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) छन्द-रचना का एक दोष जो मात्रा, वर्णादि के नियम के न पालने से होता है ।

छः—(वि०, दे०) [सं० षट्, प्रा० छ] पाँच से एक अधिक की संख्या, इसका सूचक अंक, छ, ६ ।

छ—(संज्ञा, पु०, सं०) काटना । ढाँकना, आच्छादन । खंड, टुकड़ा । घर ।—**मासी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० छः+मास+ई प्रत्य०] छठे महीने का श्राद्ध कृत्य-विशेष । छःमाही । छमछी (ग्रा०) । —**माही**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) प्रत्येक छः-छः मास का, छमासी ।—**मुख**—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० छः +मुख] षडानन ।—**रस**—(संज्ञा, पु०, दे०) छः रस, षट्रस ।

छक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लालसा, अभिलाषा, नशा । "मेरे छक है गुरुन को, सुनौ खोलि कै कान"—व्रज० ।

छकड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शकट] बोझ लादने की बैल-गाड़ी, सग्गड़, लढ़ी, लढ़िया, लढ़ा (ग्रा०) ।

छकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छः+कड़ी] छः का समूह । वह पालकी जिसे छै कहार उठाते हों । छः घोड़ों या बैलों की गाड़ी । छोटी गाड़ी । छकरिया (ग्रा०) ।

छकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चकन] खा-पी कर अघाना, तृप्त होना । मद्य आदि पीकर नशे में चूर होना । [सं० चक्र=भ्रान्त] अचम्भे में पड़ना । दिक होना । लज्जित होना । [**छोक** (संज्ञा, पु०)] [**छकाना, छकवाना** (प्रेरणा० रूप)]

छक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० षट्] छः का समूह या छः अवयवों से बनी वस्तु । जुए का एक दाँव, जिसमें फेंकने पर छः कौड़ियाँ चित्त पड़ें । **मुहा०**—**पंजा**—चालबाजी, जुआ । छः बुन्दियों वाला ताश का पत्ता । होशहवास, संज्ञा, सुधि । —(**क्के**) **छूटना**—होश-हवास जाता रहना, बुद्धि का काम न करना, हिम्मत हारना, साहस छूटना ।—(**क्के**) **छुड़ाना**—साहस छुड़ाना ।

छगड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छागल] बकरा, खसी ।

छगण—(संज्ञा, पु०) कंडा ।

छगना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छगट] एक छोटी मछली । छोटा प्रिय बालक । बच्चों के लिए एक प्यार का शब्द ।

छगल—(संज्ञा, पु०) बकरा । अत्रि ऋषि ।

छगलक—(संज्ञा, पु०) बकरा ।

छगलांत्री—(संज्ञा, पु०) भेड़िया ।

छगली—(संज्ञा, स्त्री०) बकरी ।

छगुनी, छिगुनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० छोटी+ ऊँगली] कनिष्ठिका, कानी अँगुली ।

छछिआ, छँछिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छाँछ] छाँछ पीने या नापने का छोटा पात्र । "छँछिया भर छाँछ पै नाच नचावै"—रस० ।

छछूँदर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छुछूँदरी] चूहे-सा एक जन्तु। एक यन्त्र या तावीज। एक आतिश-बाजी।

छजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सज्जन] शोभा देना, सजना, अच्छा लगना, उपयुक्त या ठीक जँचना। "छनदा को छवि छजति"। [**छजाना** प्रेरणा० रूप)]

छज्जा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छाजना या छाना] छाजन या छत का दीवार से बाहर निकला हुआ भाग, ओलती, दीवाल से बाहर कोठे या पाटन का निकला हुआ भाग।

छटंकी—(संज्ञा, स्त्री०) छटाँक की तौल। (वि०) नटखट। छोटा।

छटकना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० वा हिं० छूटना] किसी वस्तु का दाब या पकड़ से वेग के साथ निकल जाना, सटकना। दूर-दूर रहना। अलग-अलग फिरना। वश में से निकल जाना। कूदना, छिटकना।

छटका—(संज्ञा, पु०) मछलियों के पकड़ने के लिए खेतों के मध्य का गड्ढा।

छटकाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० छटकना] दाब या पकड़ से बलपूर्वक निकाल लेना। झटका देकर पकड़ या बन्धन से छुड़ाना, पकड़ या दबाव में रखने वाली वस्तु को बलपूर्वक अलग करना, छिटकाना।

छटपट—(वि०) चंचल। फुर्तीला, तेज। (संज्ञा, पु०) छटपटाने की क्रिया या भाव।

छटपटाना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु०] बंधन या पीड़ा के कारण हाथ-पैर फटकारना, तड़फड़ाना, बेचैन या व्याकुल होना। किसी वस्तु के लिए आकुल होना।

छटपटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) घबराहट, बेचैनी, आकुलता। गहरी उत्कंठा।

छटाँक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छः+टंक] सेर के सोलहवें भाग की तौल। (यौ०) (छठा+आँक) छठांश। "मन लेत पै देत छटाँक नहीं"—घना०। "छोटी सी छबीली है छटाँक भर"—जायसी।

छटा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दीप्ति, प्रकाश। शोभा। सौंदर्य। बिजली।

छठ—(वि०,दे०) [सं० षष्ठ] पाँच वस्तुओं के आगे की वस्तु। [छव्वाँ (दे०)] [**छठी, छठवीं** (स्त्री०)]

छठा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० षष्ठी] पक्ष की छठवीं तिथि।

छठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० षष्ठी] जन्म से छठे दिन की पूजा या संस्कार। [छट्ठी (दे०)] **मुहा०—का दूध याद आना**—सब सुख भूल जाना। बहुत हैरानी या परेशानी होना।

छड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शर] धातु या लकड़ी आदि का लंबा पतला बड़ा टुकड़ा।

छड़ना—(क्रि० स०) (अन्नादि का) छाँटना।

छड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छड] स्त्रियों के पैर मे पहनने का एक गहना, छरा (ब्र०)। "टूटे हरा छरा छूटे सबै...।" (वि०) [हिं० छाँड़ना] अकेला, एकाकी।

छड़ाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० छड़ना] चावल साफ कराना, बकला छुड़वाना। [छराना (दे०)] छीनना, छिड़ाना।

छड़िया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छड़ी] दरबान, पहरेदार। "द्वार खड़े छड़िया प्रभु के"—नरो०।

छड़ियाल—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का भाला।

छड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छड़] सीधी पतली लकड़ी या लाठी। [छरी (दे०)] मुसलमान पीरों की मजार पर चढ़ाने की झंडी (मुस०)।

छड़ीला, छरीला—(संज्ञा, पु०, दे०) जटामासी पुष्प-विशेष। एक प्रकार का सुगंधित सिवार, काई। कोहार की मिट्टी। (वि०, दे०) एकाकी, अकेला।

छत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छत्र] घर की दीवारों पर चूने, कंकड़ से बना फर्श, पाटन, ऊपर का खुला कोठा। छत पर तानने की चादर, चाँदनी। *(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षत] घाव, जखम। हानि। (क्रि० वि०, दे०) [सं० सत] होते या रहते हुए, आछत। अछत।

छतगीर, छतगीरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छत +गीर फ़ा०] ऊपर तानी हुई चाँदनी।

छतना*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छाता] पत्तों का बना हुआ छाता, छत्ता (बर्रै आदि का) (यौ०) छतने का। छत-रहित।

छतनार†—(वि०, दे०) [हिं० छाता या छतना] छाते-सा फैला। विस्तृत (पेड़)। [**छतनारी** (स्त्री०)]

छतरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छत्र] छाता। मंडप। समाधि-स्थान पर बना छज्जेदार मंडप। कबूतरों के बैठने की बाँस की पट्टियों का टट्टर। [खुमी, छत्री (दे०)]

छतिया*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छाती। कुच।

छतियाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छाती] छाती के पास ले जाना। बंदूक छोड़ने के समय कुंदे को छाती के पास लगाना। भेंटना।

छतिवन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सप्तपर्णी] सप्तपर्णी (औषधि)।

छतीसा—(वि० दे०) [हि० छत्तीस] चतुर, सयाना। धूर्त्त। [**छत्तीसा**] नाई (ग्रा०)।

छतीसी—(वि०, स्त्री०) ढोंग, नखरे करने वाली।

छतौना—(संज्ञा, पु०) छतरी, कुकुरमुत्ता।

छत्तरा—(संज्ञा, पु०, दे०) छत्र, सत्र।

छत्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छत्र]†छाता, छतरी। पटाव या छत, जिसके नीचे से रास्ता चलता हो, मधुमक्खी, भिड़ आदि का घर। छाते-सी दूर तक फैली वस्तु, छतनार। चकत्ता। कमल का बीज। कोश। छत्र। "ये देखौ छत्ता-पता"—भूषण।

छत्तीस—(वि०, दे०) [सं० षट्त्रिंशत] तीस और छै, ३६। रागिनियों की गिनती। **मुहा०—होना**-विमुखता ग्रहण करना। "जगते रहु छत्तीस ह्वै"—तुल०।

छत्र—(संज्ञा, पु०, दे०) छाता, छतरी। राजाओं का सोने या चाँदी वाला छाता, जो राज-चिह्नों में से एक है।—**छाँह,—छाया**-(संज्ञा, स्त्री०) रक्षा, शरण। खुमी। भूफोड़। कुकुरमुत्ता।—**धारी**-(वि०, यौ०) [सं० छत्रधारिन्] जो छत्र धारण करे, जैसे छत्रधारी राजा।—**पति**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा।—**भंग**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) छत्र-क्षय, राजा का नाश। राजा का नाशक योग (ज्यौ०) अराजकता, छत्रच्युति।

छत्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) खुमी। कुकुरमुत्ता। छाता। तालमखाने सा एक पौधा। मंदिर। मंडप। शहद का छत्ता। "तोरौं छत्रक-दण्ड जिमि"—तुल०। मिश्री का कूजा।

छत्रवती—(संज्ञा, स्त्री०) अहिच्छत्रा।

छत्रांग—(संज्ञा, पु०, सं०) गोदंती हरताल।

छत्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धनियाँ। धरती का फूल। खुमी। सोवा। मजीठ, रासना।

छत्राक—(संज्ञा, पु०, सं०) कुकुरमुत्ता। जल-बबूला।

छत्री—(वि०, दे०) [सं० छात्रिन्] छत्र-युक्त। (संज्ञा, पु०, दे०) राजा। छत्रिय, क्षत्रिय। "छत्री तन धरि समर सकाना"—[रामा०]।

छत्वर—(संज्ञा, पु०,) घर। कुंज, वाटिका।

छद—(संज्ञा, पु०, सं०) ढक लेने वाली वस्तु, आवरण, जैसे रदच्छद, पत्र, पंख। पत्ता।

छदाम—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० छः+दाम] [**दाम** (दे०)] पैसे का चौथाई भाग।

छदि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छप्पर, छानी, गृहाच्छादन, पाटन।

छर्दिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वमन।—**रिपु**-(संज्ञा, यौ०, सं०) छोटी इलायची। वमन रोकने की औषधि।

छद्म—(संज्ञा, पु०) [सं० छद्मन्] छिपाव, गोपन। ब्याज। बहाना, हीला। छल-कपट, जैसे छद्म-वेश। "दुरोदरच्छद्मजितां समीहितुम्"—किरा०।—**वेश**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कपट-वेश, कृत्रिम वेश। [**छद्मवेशी** (स्त्री०)]

छद्मिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुरिच। मजीठ।

छद्मी—(वि०) [सं० छद्मिन्] बनावटी वेश धारण करने वाला, छली, कपटी। [**छद्मिनी** (स्त्री०)]

छन—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षण, छिन (ग्रा०)। [**छनभंगुर** (यौ०)] "कहै, पदमाकर विचारु छन-भगुर रे"।

छनक—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) छन-छन करने का शब्द। झनझनाहट, झनकार। (संज्ञा, स्त्री०, अनु०) आशंका से चौंक कर भागना, भड़क। *(संज्ञा, पु०) [हि० छन+एक] छिनेक। [छनक (दे०)] एक क्षण।

छनकना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० छन-छन] किसी तपती हुई धातु पर से पानी आदि की बूँद का छन करके उड़ जाना। झनकार करना, बजना। चौकन्ना होकर भागना। सशंकित होना।

छनकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छनकना] छन-छन शब्द करना। चौंकाना, चौकन्ना करना, भड़काना।

छनछनाना—(क्रि० अ०, अनु०) किसी तपी हुई धातु पर पानी आदि के पड़ने से छन-छन शब्द होना। खौलते हुए घी, तेल आदि में पानी या गीली वस्तु के पड़ने से छन-छन शब्द होना। झंझनाना, झनकार होना। (क्रि० स०) छन-छन का शब्द उत्पन्न करना, झनकार करना।

छनछबि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षणछवि] बिजली, छनछटा।

छनदा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षणदा] रात्रि। "गावत कविन्द गुन-गन छनदा रहैं"—रत्ना०।

छनन-मनन—(संज्ञा, पु०) कड़ाही में घी तेल आदि की आवाज।

छनना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षरण] किसी पदार्थ को महीन छेदों में से यों नीचे गिराना कि मैल-मिट्टी आदि ऊपर रहे। छलनी से साफ होना। किसी नशे का पिया जाना। **मुहा० गहरी—**, खूब मेल-जोल या गाढ़ी मैत्री होना। लड़ाई होना। गाढ़ा नशा उत्पन्न करने वाले मादक द्रव्य का सेवन करना। बहुत से छेदों से युक्त होना। छलनी हो जाना, विंध जाना, कई स्थानों पर चोट खाना। छानबीन या निर्णय होना। कड़ाह से पूड़ी-पकवान आदि निकलना।

छनाका—(संज्ञा, पु०) झनकार, छन-छन की आवाज।

छनाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छानना] किसी दूसरे से छानने का काम कराना। [**छनवाना** (प्रेरणा० रूप)]

छनिक*—(वि०, दे०) क्षणिक। छिनक (ग्रा०)। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० छन+एक] क्षण भर। [छनेक (दे०)]

छन्दना—(क्रि० स०, दे०) ठगना। बाँधना। उलझाना।

छन्द-पातन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कपटी या धूर्त तपस्वी, छद्म तापस, तापस-वेशधारी धूर्त।

छन्दबंद—(संज्ञा, पु०, दे०) छल-बल, कपट, प्रतारण, मक्कर।

छन्दानुवर्त्ती—(वि०, यौ०) [सं० छन्द+अनुवर्ती] आज्ञानुवर्ती, आज्ञाकारी।

छन्दी—(वि०, दे०) [सं० छन्द] कपटी, धूर्त, प्रतारक, छली, ठग।

छन्न—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) किसी तपी हुई वस्तु पर पानी आदि के पड़ने से उत्पन्न शब्द, झनकार। ठनकार। एक गहना।

छप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) पानी में किसी वस्तु के एकबारगी जोर से गिरने का शब्द। पानी के छींटों का जोर से पड़ने का शब्द।

छपका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० चपकना] सिर का एक गहना। (संज्ञा, पु०, अनु०) पानी का भरपूर छींटा। पानी में हाथ-पैर मारने की क्रिया।

छपछपाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) पानी पर कोई वस्तु पटक कर छपछप शब्द करना। (क्रि० स०) पानी में छपछप शब्द पैदा करना। **छपछपाकर**—(पू० का० क्रि०) छपकर।

छपद—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० षट्पद] भौंरा।

छपन†—(दे०, वि०) [हि० चपना=दबना] गुप्त, गायब। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षपण] नाश, संहार।

छपना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चपना=दबना] छापा जाना। चिह्न या दबाव पड़ना। चिह्नित या अङ्कित होना। यंत्रालय में किसी लेख आदि का मुद्रित होना। शीतला का टीका लगना।

छपाना (क्रि० स०, दे०) [**छपवाना** (प्रेरणा० रूप)]† (क्रि० अ०, दे०)] छिपना।

छपरखट, छपरखाट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० छप्पर+खाट] मसहरीदार पलङ्ग।

छपरछपर—(वि०) तराबोर।

छपरिया—(संज्ञा, स्त्री०) छावनी, छप्पर।

छपरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छप्पर] झोपड़ी। [**छपरा** (संज्ञा, पु०)]

छपवैया—(वि०, पु०) छापने वाला।

छपा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्षपा, निशा। (क्रि० वि०) [हि० छपना] मुद्रित।

छपाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छापना] छापने का काम, मुद्रण, अङ्कन। छापने का ढङ्ग। छापने की मजदूरी।

छपाका—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) पानी पर किसी वस्तु के जोर से गिर पड़ने का शब्द। जोर से उछाले हुए पानी का छींटा।

छपाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छापना का प्रेरणा० रूप] छापने का काम दूसरे से कराना। *(क्रि० स०, दे०) छिपाना।

छपानाथ, छपाकर—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षपानाथ, क्षपाकर, चंद्रमा। "छपानाथ लीन्हे रहैं छत्र जाको"—[रामा०]।

छप्पन—(वि०, दे०) [सं० षट् पंचाशत] पचास और छः। (संज्ञा, पु०) पचास और छः का अङ्क। भोजन-भेद-संख्या।

छप्पय—(संज्ञा, स्त्री०) एक मात्रिक छंद जिसमें ६ चरण होते हैं।

छप्पर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० छोपना] फूस आदि की छाजन (मकान की) छानी। [**छानी-छप्पर** (यौ०)] **मुहा०—पर रखना**—छोड़ देना, चर्चा न करना।—**फाड़ कर देना**—अनायास, अकस्मात देना। छोटा ताल या पोखर, गड्ढा। [छपरा (दे०)]

छबतखती*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छवि+तकती अ०] शरीर की सुन्दर बनावट।

छबि, छवि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छवि, छटा, शोभा, सुन्दरता। "सियमुख-छबि बिधु ब्याज बखानी"—तुलसी०।

छबीला—(वि०, दे०) [हि० छबि+ईला प्रत्य०] शोभायुक्त, सुन्दर। [**छबीली** (स्त्री०)] "छरे छबीले छैल सब"—तुल०। "छीन कटि छोटी ही छबीली है"—जायसी।

छब्बीस—(वि०, दे०) [सं० षट् विंशत्] बीस और छै। (संज्ञा, पु०, दे०) २० और ६ की संख्या, २६।

छमंड—(संज्ञा, पु०, दे०) अनाथ, बिना माता-पिता की, निराधार, निरालंब।

छम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) घुँघुरू बजने का शब्द। पानी बरसने का शब्द। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षम] योग्य। [**छमता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]—**छम**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) पायजेब, घुँघुरू, पायल आदि के बजने का शब्द। पानी बरसने का शब्द। [छमाछम (दे०)]

छमकट—(संज्ञा, पु०, दे०) कपटी। व्यभिचारी, छिनरा, दुराचारी।

छमकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० छम+क] घुँघुरू आदि बजाते हुए हिलना-डोलना, गहनों की झनकार। [**छमकाना** (प्रेरणा० रूप)] [**छमक** (संज्ञा, स्त्री०)]

छमछमाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) छम-छम शब्द करना। छम-छम शब्द के साथ चलना।

छमना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षमन्] क्षमा करना। [**छमि** (पू० का०)] "छमि सब करिहहिं कृपा बिसेखी"—तुल०।

छमा†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षमा] जहाँ क्रोध स्वाभाविक है वहाँ शान्त भाव धारण। **छिमा** (ग्रा०)।

छमाछम—(क्रि० वि०, दे०, अनु०) लगातार छम-छम शब्द के साथ।

छमिच्छत—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इशारा, संकेत। चिह्न। समस्या।

छय—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षय, नाश।

छयना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० छय+ना] क्षय को प्राप्त होना, छीजना, नष्ट होना।

छर—(संज्ञा, पु०, दे०) छल। क्षर। जटामासी। फड़दाडा (प्रान्ती०)।

छरकना*—(क्रि० अ०, दे०) छलकना। छड़कना। बिखरना। दूर हटना।

छरछबि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पाखाना, शौचस्थान।

छरछर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० छर] कणों या छरों के वेग से निकलने और गिरने का शब्द। पतली लचीली छड़ी के लगने का शब्द।

छरछराना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षार] नमक आदि के लगने से शरीर के घाव या छिले हुए स्थान में पीड़ा होना। [**छरछराहट** (संज्ञा, स्त्री०)]

छरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षरण] चूना, टपकना। चकचकाना, चुचुवाना। †*(क्रि० स०, दे०) [हि० छलना] छलना। [कॉडना (दे०)] धोखा देना, ठगना। मोहित करना।

छरभार*†—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० सार+भार] कार्य-भार, झंझट, बखेड़ा।

छरहरा—(वि०, दे०) [छड़+हरा प्रत्य] क्षीणांग। हलका। तेज, फुरतीला। [**छरहरी** (स्त्री०)] "गोरा रंग औ बदन छरहरा"—कुंज वि०।

छरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षार] [छड़ा (दे०)] लर, लड़ी। रस्सी। नारा, इजारबंद, नीबी। (क्रि० वि०, दे०) कॉड़ा या छाना हुआ। छला हुआ।

छरिंदा—(वि०, दे०) एकाकी, असहाय, अकेला। रिक्तहस्त, रीते हाथ।

छरी†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छड़ी। "हरी हरी पुकारती हरी हरी छरी लिये।" (वि०) छली।

छरीला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शैलेय] काई की तरह का एक पौधा। पत्थर-फूल। बुड़ना (प्रान्ती०)। (वि०) अकेला।

छरे—(वि०, दे०) छटे, चुने या बिराये हुए, उत्तम-उत्तम अलग किये या बीने हुए। "छरे छबीले छैल सब शूर सुजान नवीन।" (छरना का क्रि० स०, सा० भू०)।

छर्दन—(संज्ञा, पु०, सं०) वमन, कै करना।

छर्दायन—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० शरद्+आयण] खीरा, ककड़ी।

छर्दि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वमन, कै, उल्टी।

छर्रा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० छरछर] छोटे कंकड़ या कण। लोहे या सीसे के छोटे-छोटे टुकड़े जो बंदूक से चलाए जाते हैं।

छल—(संज्ञा, पु०, सं०) दूसरे को धोखा देने का व्यवहार। ब्याज, मिस, बहाना। धूर्तता, वंचना, ठगपन, कपट।—**छंद**-(संज्ञा, वि०, यौ०) [हि० छल+छंद] कपट का जाल, चालबाजी, धूर्तता, ठगी। "छाई छल-छंद दिकपालनि छलति है"।—**छाया**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) कपट-जाल,

माया, प्रपंच, छल । "पालु बिबुध-बुध करि छल-छाया"—[रामा०] ।—**छिद्र**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कपट-व्यवहार, धूर्तता, धोखेबाजी ।—**बल**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कपट, धोखा, शठता । "छलबल करि हिय हरि"—तुल० ।—**विनय**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कपट से बड़ाई, धोखा देने के लिए प्रशंसा । "तू छल -विनय करसि कर जोरे" —तुल० ।

छलक, छलकन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छलकना] छलकने की क्रिया या भाव ।

छलकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) किसी तरल पदार्थ का बरतन से उछल कर बाहर गिरना । उमड़ना, बाहर होना । मर्यादा से बाहर होना । "ओछे छलकै नीर घट"—वृंद । "छलकती मुख पै छवि पुंजता"—हरिऔध ।

छलकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छलकना का प्रेरणा० रूप] किसी पात्र में भरे हुए जल आदि को हिला-डुला कर बाहर उछालना ।

छलछलाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) छल-छल शब्द होना । पानी आदि का थोड़ा-थोड़ा करके गिरना । जल से पूर्ण होना ।

छलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० छलन] धोखा देना, भुलावे में डालना । प्रतारित करना । "चली छैल को छलन आपु छैल सों छली गई"—सरस० । (संज्ञा, स्त्री०, दे०,) धोखा, चाल ।

छलनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चलाना या सं० चरण] आटा चालने के लिए बरतन, चलनी (ग्रा०) । **मुहा०**—**होजाना**-किसी वस्तु में बहुत से छेद हो जाना । **कलेजा—होना**-दुख सहते-सहते हृदय जर्जर हो जाना ।

छलहाई*†—(वि०, स्त्री०) [सं० छल+हा प्रत्य०] छली, कपटी, चालबाज ।

छलाँग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०)[हि० उछल+अंग] कुदान, फँदान, फलाँग, चौकड़ी ।

छला*†—(संज्ञा, पु०, दे०) छल्ला । "लला छला मेरो गिरो ।"—(स०० भू०, हि० छलना) छल लिया ।

छलाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छल+आई प्रत्य०] छल का भाव, कपट, वंचना ।

छलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छलना का प्रेरणा० रूप] धोखा दिलाना, प्रतारित कराना ।

छलावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० छल] दिखायी देकर अदृश्य होने वाली भूत-प्रेत आदि की छाया । वह प्रकाश जो दलदलों या जंगलों में रह-रह कर दीखता और छिपता है । अगियाबैताल । उल्कामुख प्रेत । जो चपल, चञ्चल, शोख हो । इन्द्रजाल, जादू ।

छलिक—(संज्ञा, पु०) नाटक या नृत्य का एक भेद-विशेष ।

छलित—(वि०) [सं० छल +इत] वंचित, जो ठगा गया हो ।

छलिया, छली—(वि०, दे०) [सं० छलिन्] कपटी, धोखेबाज, छल करनेवाला । "किन-किन की मति नाहिं छली छलिया तू मरू कूप"—दीन० ।

छल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छल्ली=लता] अँगूठी, मुँदरी । गोलाकार वस्तु । [कड़ा (दे०)] वलय, छला (ग्रा०) ।—**दार**—(वि०) [हि० छल्ला+दार फ़ा०] जिसमें गोलाकार चिह्न या घेरे हों ।

छल्ली—(संज्ञा, स्त्री०) मिट्टी की दीवार के सहायतार्थ बनाई गई पक्की दीवार ।

छवना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शावक] बच्चा । सुअर या मृग का बच्चा, छौना (ग्रा०) । [**छावनी, छौनी** (स्त्री०)]

छवा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शावक] किसी पशु का बच्चा, बछवा । एँड़ी । "छूटे छवना लौं केस बिराजत "—रवि० ।

छवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छाना] छाने का काम, भाव या मजदूरी ।

छवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छाना का प्रेरणा० रूप] छाने का काम दूसरे से कराना ।

छवि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शोभा, सौंदर्य । कान्ति, प्रभा । [**छवीला** (वि०)] " कहा कहौं छवि आज की"—तुल० ।

छवैया—(संज्ञा, पु०, दे०) छाने वाला ।

छहरना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चरण] छित-राना, फैलना । शोभा देना । "छटा छहरति आवै है "—रत्ना० ।

छहराना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० चरण] छितराना, बिखराना, चारों ओर फैलाना । "बिच-बिच छहरत बूँद मनों मुक्तामनि पोहति "—हरि० । "टूटा तार मोती छहरानी"—पद्मा० ।

छहरीला—(वि०, दे०) [हि० छरहरा] छितराने या बिखेरने वाला । छबीला । [**छहरीली** (स्त्री०)]

छहियाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छाया, छाँह, छाँहो, साया ।

छही—(संज्ञा, स्त्री०) अपने अड्डे पर बहकाकर लाने वाली चिड़िया। कबूतर।

छाँ—(संज्ञा, स्त्री०) छाया।

छाँगना—(क्रि० स०, दे०) [सं० छिन्न+करण] डाल आदि को काट कर अलग करना।

छाँगुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० छः+अंगुल] छै अँगुलियों वाला। [छंगा (दे०)]

छाँछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मट्ठा, मह्ठा।

छाँट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छाँटना] छाँटने, काटने की क्रिया या ढंग। [**छूँटनी** (स्त्री०)] अलग की हुई। [सं० छर्दि] वमन, कै। निकम्मी वस्तु।

छाँटना—(क्रि० स०, दे०) [सं० खंडन] छिन्न करना, काट कर अलग करना। किसी वस्तु को किसी विशेष आकार में लाने के लिए काटना या कतरना। अनाज में से कन या भूसी कूट-फटकार कर अलग करना। चुनना। पृथक् या दूर करना। हटाना। साफ करना। किसी वस्तु का कुछ अंश निकाल कर छोटा या संक्षिप्त करना। चिन्दी की बिन्दी निकालना। अलग या दूर रखना। **मुहा०** **पकी—(बूकना)**-शुद्ध भाषा बोलना।

छाँड़ना*—(क्रि० स०, दे०) छोड़ना।

छाँद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छंद=बंधन] चौपायों के पैर बाँधने की रस्सी, नोई।

छाँदना—(क्रि० स०, दे०) [सं० छदना] रस्सी आदि से बाँधना, जकड़ना, कसना। घोड़े या गधे के पिछले पैरों को सटा कर बाँध देना। साँदना (ग्रा०)।

छांदस—(वि०, सं०) छंदसम्बन्धी। वेदसम्बन्धी। वेद का जानने वाला। (संज्ञा, पु०) वेदपाठी।

छांदसी—(वि०, सं०) छंद-शास्त्र का ज्ञान रखने वाला।

छांदोग्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सामवेद का एक ब्राह्मण। एक उपनिषद्।

छाँव—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छाँह, छाँउ।

छाँवड़ा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शावक] जानवर का बच्चा। छोटा बच्चा। [**छाँवड़ी** (स्त्री०)]

छाँह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छाया] जहाँ आड़ या रोक के कारण धूप या चाँदनी न पड़े, छाया। ऊपर से छाया हुआ स्थान। बचाव या निर्वाह का स्थान, शरण। संरक्षा। छाया, परछाँहीं, छाँव (ग्रा०)। [छाँही (दे०)] "पाँय पखारि, बैठि तरु छाँहीं"—तुल०। **मुहा०—न छूने देना**—पास न फटकने देना, निकट न आने देना।—**न छू पाना**—न प्राप्त कर पाना।—**पड़ना**—प्रभाव या असर पड़ना।—**बचाना**—दूर-दूर रहना, पास न जाना। प्रतिबिम्ब। भूत-प्रेत आदि का प्रभाव, आसेव-बाधा। "मोही मैं रहत तउ, छुवावत न छाँह मोहि"—देव०।—**गीर**—(संज्ञा, पु०) [हि० छाँह+गीर फ़ा०] राजछत्र। दर्पण, शीशा। "बनो मदन छिति-पाल को, छाँहगीर छबि देत" —बिहारी।

छाँही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छाँह।

छा—(संज्ञा, स्त्री०) छिपाना, ढँकना। शिशु। [प्रतीक]।

छाई—(संज्ञा, स्त्री०) खाद, राख।

छाक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छकना] तृप्ति, इच्छा-पूर्ति। दोपहर का भोजन, दुपहरिया का कलेवा। नशा, मस्ती।

छाकना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० छकना] खा-पीकर तृप्त होना, अघाना। अफरना, नशे में मस्त होना। हैरान होना, छाके (ग्रा०)। "जग जीव मोह मदिरा पिये, छाके फिरत प्रमाद में"—भर०। "प्रेम-मद छाके पद परत कहाँ के कहाँ" —रत्ना०।

छाग—(संज्ञा, दे०, सं०) बकरा। [**छागी** (स्त्री०)]

छागमय—(संज्ञा, पु०) कार्त्तिकेय का छठवाँ मुख।

छागल—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) बकरा। बकरे की खाल की चीज। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० साँकल] पैर का एक गहना, झाँझन, पायल।

छाछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छच्छिका] मक्खन निकाला पनीला दूध या दही। मट्ठा, मह्ठा। [छाँछ, छाँछी (दे०)] "चहिय अमिय जग जुरै ना छाछी"—तुल०। "पीवत छाँछहिं फूँकि"—वृंद०।

छाज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छाद] अनाज फटकने का सींक का बरतन, सूप। छाजन, छप्पर, छज्जा। शोभा। "पूँछ बाँधियो छाज"—वृंद०। "ओढ़ी छाज-छत्र अरु पाटू"—जायसी।

छाजन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छादन] आच्छादन, वस्त्र, कपड़ा। **भोजन**—,(संज्ञा, पु०) खाना, कपड़ा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) छप्पर, छानी, खपरैला। छाने का काम या ढंग। छवाई।

छाजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० छादन] शोभा देना, अच्छा या भला लगना, फबना । (वि०) छाजित । "माथे मोरमुकुट अति छाजत"—[स्फु०] ।

छाजा*—(संज्ञा, पु०, दे०) छज्जा । (क्रि० अ०, दे०) शोभा देता है । "जो कछु करहिं उनहिं सब छाजा"—तुल० ।

छात*—(संज्ञा, पु०, दे०) छाता । छत ।

छाता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छत्र] बड़ी छतरी, छत्र । मेह, धूप आदि से बचने के लिए आच्छादन । खुमी ।

छाती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छादिन] हड्डी या ठठरियों का पल्ला जो पेट के ऊपर गर्दन तक होता है । सीना, वक्षस्थल । **मुहा०—शीतल (ठंढी) होना (करना)**-चित्त प्रसन्न होना (करना)—"तुमहिं देखि सीतल भई छाती"—तुल० ।**—कड़ी या पत्थर की करना**-भारी दुःख सहने के लिए हृदय कठोर करना ।**—पर मूँग या कोदों दलना**-किसी को कठोर बात कहना । दिल दुखाना । उपद्रव करना ।**—पर होला भूनना**-पास ही उपद्रव करना, दुख देना ।**—पर पत्थर रखना**-दुख सहने के लिए हृदय कठोर करना ।**—पर साँप लोटना या फिरना**-दुख से कलेजा दहल जाना । मानसिक व्यथा होना । ईर्ष्या से हृदय व्यथित होना, जलन होना ।**—पीटना**-दुख या शोक से व्याकुल होकर छाती पर हाथ पटकना ।**—फटना (बिदरना)**-दुख से हृदय व्यथित होना । लज्जा या संताप होना । "बल विलोकि विदरति नहिं छाती"—तुल० ।**—से लगाना**-आलिंगन करना, गले लगाना । **वज्र की—**,कठोर हृदय जो दुःख सह सके, सहिष्णु हृदय ।**—जलना**-अजीर्ण आदि के कारण हृदय में जलन होना । शोक से हृदय व्यथित या सन्तप्त होना, डाह या जलन होना । [छाती जुड़ाना (दे०)] छाती ठंढी होना या करना ।**—ठंडी करना (होना)**-चित्त शान्त और प्रफुल्लित करना, मन की अभिलाषा पूर्ण करना ।**—धड़कना (धरकना, धकधकाना)**-खटके या भय से कलेजा जल्दी-जल्दी उछलना, जी दहलना ।**—पसीजना**-मन में करुणा आना । स्तन, कुच । हिम्मत, साहस ।**—ठोंक कर**-साहस करके ।

छात्र—(संज्ञा, पु०, सं०) शिष्य, चेला । [**छात्रधर्म** (यौ०)]**—वृत्ति**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह वृत्ति या धन जो विद्यार्थी को विद्याभ्यास के सहायतार्थ दिया जाय ।

छात्रालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विद्यार्थियों के रहने का स्थान छात्रा-वास । [बोर्डिंग हाउस, हास्टिल]

छाद—(संज्ञा, पु०, सं०) छत, छप्पर ।

छादक—(वि०, पु०, सं०) आच्छादित करने वाला, ढकने वाला । छावनी डालने वाला ।

छादन—(संज्ञा, पु०, सं०) छान या ढंकने का काम । जिससे छाया या ढंका जाय । आवरण, आच्छादन । छिपाव । वस्त्र, छाजन । [**छादित** (वि०)] [**भोजन-छादन** (यौ०)]

छादान—(संज्ञा, पु०, दे०) जल-पात्र, मसक ।

छादित—(वि०) [सं० छादन] ढका हुआ, आच्छादित । [**छादनी** (वि०)]

छाद्मिक—(वि०, सं०) कपटी, धूर्त । तरह-तरह के छद्म वेष धारण करने वाला । (संज्ञा, पु०) बहुरूपिया । ठग ।

छान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छादन] छप्पर, छानी ।

छानना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चालन, क्षरण] चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े या और किसी छेददार वस्तु के पार निकालना, जिससे उसका कूड़ा-करकट निकल जाय । छाँटना, बिलगाना, अलगाना । जाँचना । ढूँढ़ना, अनुसधान करना । भेद कर पार करना । नशा पीना । पूरी आदि स्वादिष्ट पदार्थ खाना । (क्रि० स०, दे०) छादना ।

छानबीन—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० छानना + बीनना] पूर्ण अनुसंधान या अन्वेषण, जाँच-पड़ताल, गहरी खोज । पूर्ण विवेचना । विस्तृत विचार । गहन गवेषणा ।

छाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० छादन] किसी वस्तु पर दूसरी का कोई वस्तु यों फैलाना कि वह पूरी ढंक जाय । आच्छादित करना, पानी, धूप आदि से बचाव के लिए किसी स्थान के ऊपर कोई वस्तु तानना या फैलाना, बिछाना । शरण में लेना । (क्रि० अ०, दे०) फैलना, पसरना, बिछ जाना । घेरना, डेरा डालना, रहना । "रहौ प्रेमपुर छाय"—तुल० ।

छानि, छानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छादन] घास-फूस का छाजन, छप्पर । "कलि में नामा प्रगटियो ताकि छानि छवावै"—सूर । "विधि भाल लिखी जुपै टूटियै छानी"—नरो० ।

छाप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छापना] छापने का चिह्न। मुहर का चिह्न। मुद्रा। शंख-चक्र आदि के चिह्न, जिन्हे वैष्णव अपने अंगों पर गरम धातु से अंकित करते हैं। वह अंगूठी जिसमें अक्षर आदि खुदे हों। कवियों के उपनाम। घनिष्ट प्रभाव। "मेरे ही नाम की छाप लगी अरु अन्तर बीच कहे नहिं कोऊ।" **मुहा०—होना**-प्रभाव होना। **—लगाना**-विशेषता या प्रभाव लाना। **—रखना** प्रभाव या उपनाम रखना।

छापना—(क्रि० स०, दे०) [सं० चापन] स्याही आदि लगी वस्तु को दूसरी पर रखकर उसकी आकृति उतारना। किसी साँचे को दबाकर उसके खुदे या उभरे हुए चिह्नों को चिह्नित करना। ठप्पे से निशान डालना, मुद्रित या अंकित करना। कागज आदि को छापे की कल मे दबाकर उस पर अक्षर या चित्र अंकित करना। गिरी हुई दीवाल पर मिट्टी चढ़ाना। [**छोपना**-(दे०) घेर या दबा लेना]

छापा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छापना] साँचा, जिस पर गीली स्याही आदि पोत कर उस पर खुदे हुए चिह्नों को किसी वस्तु पर उतारते हैं। ठप्पा, मुहर, मुद्रा। ठप्पे या मुहर से उतारे हुए चिह्न या अक्षर। शुभ अवसरों पर हल्दी आदि से छापा गया (दीवार, कपड़े आदि पर) कर-चिह्न। रात मे बेखबर लोगों पर आक्रमण, हमला। **—खाना**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० छापा+खाना फ़ा०] पुस्तकादि छापने का स्थान, मुद्रणालय। [प्रिंटिंग प्रेस] **मुहा०—मारना**-हमला करना।

छाम—(वि०, दे०) क्षाम, पतला।

छामोदरी*—(वि०, स्त्री०, यौ०, दे०) क्षामोदरी। जिस स्त्री का पेट छोटा हो।

छायल—(संज्ञा, पु०, दे०) एक जनाना पहनावा। "छायल बंद लाये गुजराती"—जायसी।

छाया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उजाला रोकने वाली वस्तु के आ पड़ने से उत्पन्न अंधकार या कालिमा। साया, आड़ या आच्छादन के कारण धूप, मेह आदि का अभाव। वह स्थान जहाँ आड़ के कारण किसी आलोकप्रद वस्तु से उजाला न प्राप्त हो। परछाईं, प्रतिबिम्ब, अक्स, तद्रूप वस्तु, प्रतिकृति, अनुहार, पटतर, अनुकरण। सूर्य की एक पत्नी। कीर्ति, दीप्ति। शरण, रक्षा। अंधकार। प्रभाव। आर्या छंद का एक भेद। भूत-प्रेत का प्रभाव। (क्रि० वि०) [हिं० छाना] घिरा। "स्निग्धिच्छाया तरुवसिनि"—[मेघ०]। **—ग्राहिणी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) समुद्र को फाँदते हुए हनुमान जी को छाया पकड़ कर खींचने वाली राक्षसी। **—दान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) घी या तेल से भरे हुए काँसे के कटोरे मे अपनी परछाहीं देखकर दिया जाने वाला दान। **—पथ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आकाश-गंगा, देवपथ। **—पुरुष**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हठयोग के अनुसार मनुष्य की छाया-रूप आकृति, जो आकाश की ओर स्थिर दृष्टि से बहुत देर तक देखते रहने से दिखाई पड़ती है। **—मय**-(वि०, सं०) सायेदार, छाया से शोभित।

छार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षार] जली हुई वनस्पतियों या रासायनिक क्रिया से जलाई हुई धातुओं को राखी। नमक क्षार। खारी नमक, खारी पदार्थ। भस्म राख, खाक। [खार (दे०), जैसे—जवाखार] **—छार करना**-नष्ट-भ्रष्ट करना, जलाकर राख करना। धूलि, गर्द, रेणु। "जारि करै तेहि छार"—वृ०।

छाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छाल] पेड़ों के धड़ आदि के ऊपर का आवरण, वल्कल। [बकला (दे०)] छाली।

छालटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छाल+टी] छाल या सन का बना हुआ वस्त्र।

छालना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षालन] छानना। छलनी सा छिद्रमय करना।

छाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छाल] छाल या चमड़ा। जिल्द, जैसे मृगछाला। "ओढ़े मृगछाला दूरि करत कसाला"। जलने या रगड़ खाने आदि से देह के चमड़े की ऊपरी झिल्ली का उभार, जिसके भीतर पानी सा द्रव रहता है। फफोला। [फलका (दे०)] झलका (ग्रा०)। "मोरे हाथन छाला परे"।

छालित—(वि०, दे०) [सं० प्रक्षालित] प्रक्षालित, धोया हुआ। "रघुबर-भक्ति बारि-छालित चित बिन प्रयास ही सूझै"—तुल०।

छालिया—(संज्ञा, पु०, दे०) छायादान करने की कटोरी।

छाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कटी हुई सुपारी। सुपारी।

छावना—(क्रि० स०, दे०) छाया करना।

छावनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छाना] छप्पर, छान। छवनई (ग्रा०)। डेरा, पड़ाव। सेना के ठहरने का स्थान।

छावर—(संज्ञा, स्त्री०) छोटी-छोटी मछलियाँ जो झुंड में रहती हैं।

छावरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) छौना।

छावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शावक] बच्चा। पुत्र, बेटा। जवान हाथी। (क्रि० स०) [हि० छाना] छाया हुआ।

छाह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मट्ठा, छाँछ, मही, माठा, तक्र (सं०)।

छिउँकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चिउँटी] एक छोटी चींटी। एक छोटा उड़ने वाला कीड़ा। चिकोटी।

छिउल—(संज्ञा, पु०, दे०) ढाक, पलाश, टेसू, छ्यूल (ग्रा०)।

छिकनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छींकना] नकछिकनी नामक घास।

छिकरा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का हिरण।

छिकुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छड़ी, कमची।

छिक्का—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छींक।

छिक्कार—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का हिरन, छिकरा।

छिक्किका—(संज्ञा, स्त्री०) नकछिकनी।

छिगुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षुद्र+अंगुली] सब से छोटी अंगुली, कनिष्ठिका।

छिच्छ*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छिछ।

छिछकारना—(क्रि० स०, दे०) छिड़कना।

छिछड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) छीछड़ा, माँस का बेकार का टुकड़ा।

छिछला—(वि०, दे०) [हि० छूँछा+ला प्रत्य०] उथला। [**छिछली**-(स्त्री०) उथली]

छिछोरपन, छिछोरापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० छिछोरा] छिछोरा होने का भाव, क्षुद्रता, ओछापन, नीचता।

छिछोरा—(वि०, दे०) [हि० छिछला] क्षुद्र, ओछा, तुच्छ। [**छिछोरी (स्त्री०)**]

छिटकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षिप्ति] इधर-उधर पड़ कर फैलना, बिखरना। प्रकाश का चारों ओर फैलना। "चहूँ खंड छिटकी वह आगी"—जायसी। "छिटिकती छिति पै तन की छटा"—हरिऔध।

छिटकनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सिटकनी] किवाड़ बन्द करने की कीली, सिटकनी, चटखनी।

छिटकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छिटकना का प्रेरणा० रूप] चारों ओर फैलाना, बिखराना।

छिटका—(संज्ञा, पु०, दे०) परदा, आड़, पालकी का अगला भाग।

छिटफुट—(वि०, यौ०, दे०) बिखरा, इधर-उधर पड़ा हुआ। [छुटफुट (दे०)]

छिड़कना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छींटा+करना] द्रव पदार्थ को इस प्रकार फेंकना कि उसके महीन-महीन छींटे फैल कर इधर-उधर पड़ें। [छिरकना (दे०)]

छिड़कवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छिड़कना का प्रेरणा० रूप] छिड़कने का काम दूसरे से कराना। छिड़काना।

छिड़काई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छिड़कना] छिड़कने की क्रिया का भार या मजदूरी। छिड़काव।

छिड़काव—(संज्ञा, पु०, दे०)[हि० छिड़कना] पानी आदि के छिड़कने का काम।

छिड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० छेड़ना] आरंभ या शुरू होना। चल पड़ना। झगड़ा प्रारम्भ होना। "बात तक हो बात तो क्या बात है, उनकी बातों से लड़ाई छिड़ गयी।"

छिड़ाना—(क्रि० स०, दे०) छिनाना, छिनवाना। छीनना। छँड़ाना (ग्रा०)।

छिण—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षण] थोड़ा समय, क्षण, छिन (ग्रा०)। खिन (प्रान्ती०)।

छितनिया, छितनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) डलिया, बाँस की दौरी, चंगेली, चगेरी (प्रान्ती०)।

छितरना—(क्रि० अ०, दे०) फैलना या बिखरना।

छितरबितर—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) फैले हुए, तितर-बितर।

छितराना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षिप्त+करण] किसी वस्तु के खंडों या कणों का गिर कर इधर-उधर फैलना, तितर-बितर होना, बिखरना। (क्रि० स०) खंडों या कणों को फैलाना, बिखराना, छींटना, दूर-दूर या विरल करना। [**छितरवाना** (प्रेरणा० रूप)]

छिति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्षिति, पृथ्वी। "छिति जल पावक गगन समीरा"—तुल०। [**छिति-मंडल** (यौ०)]—**कंत (नाथ, पति, स्वामी, पाल)**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षितिकांत] जमीन का मालिक, राजा, भूपति।—**ज**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्षितिज (सं०)।—**रुह**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षितिरुह] पेड़, वृक्ष, पादप।

छितीस—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० क्षितीश] राजा, महिपाल, क्षितीश। [छितीसुर (दे०)]

छित्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रु। छेदन या फोड़ने वाला, धूर्त।

छिदक—(संज्ञा, पु०, सं०) हीरा। पत्थर।

छिदना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० छेदना] छेदयुक्त होना। घायल होना। चुभना, गड़ना। [पकड़ना (दे०)] [**छिदवाना** (प्रेरणा० रूप)]

छिदरा—(वि०) अनेक छेदों वाला। जो घना न हो।

छिदाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० छेदना] छेद कराना। चुभाना, धँसाना। पकड़ाना। देना।

छिदि—(संज्ञा, स्त्री०) कुल्हाड़ी। काटना।

छिद्र—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) छेद, सुराख, बिल। गड्ढा, विवर। अवकाश। [**छिद्रित** (वि०)] जगह। "छिद्रेष्वनर्थाः बहुली भवंति"। "जो सहि दुख पर छिद्र दुरावा"—तुल०।

छिद्रांतर—(संज्ञा, पु०, सं०) सरकंडा, नरकुल।

छिद्रांश—(संज्ञा, पु०, सं०) सरकंडा।

छिद्रात्मा—(वि०, सं०) अपने अवगुण या दोष को स्पष्ट कर देने वाला।

छिद्रानुसन्धानी—(वि०, पु०, दे०) छिद्रान्वेषी।

छिद्रान्वेषण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दोष ढूँढ़ना, खुचुर निकालना। [**छिद्रान्वेषी, छिद्रांवेषक** (वि०)] "छिद्रान्वेषण तत्परः"। "छिद्रान्वेषण ही प्रिय जिनको, पहले उनको कोटि प्रणाम"—गिरीश।

छिद्रांवेषी—(वि०, यौ०) [सं० छिद्रान्वेषिन्] पराया दोष ढूँढ़ने वाला। [**छिद्रांवेषिणी** (स्त्री०)]

छिन*—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षण। [छन (दे०)] "तेहि छिन मध्य राम धनु तोरा"—तुल०।—**छवि**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० क्षण+छवि] बिजली। "छिनछवि छवि नहिं गगन बिराजत"—तुल०।

छिनक*—(क्रि० वि०, दे०, यौ०) [हिं० छिन] एक एक क्षण, दम भर, थोड़ी देर। [**क्षणैक** (सं०)] छिनक। [छनक (दे०)]

छिनकना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० छिड़कना] नाक का मल जोर से साँस-द्वारा निकालना। पानी छिड़कना।

छिनदा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षणदा] रात्रि, निशा, छनदा।

छिनना—(क्रि० अ०, दे०) छीन लिया जाना, हरण होना।

छिनरा—(वि०, पु०) लंपट, चरित्रहीन, परस्त्री-गामी।

छिनवाना—(क्रि० स०) [हिं० छीनना का प्रेरणा० रूप] छीनने का काम दूसरे से कराना।

छिनाना—(क्रि० स०, दे०) [छीनना का प्रेरणा० रूप] हरण कराना।

छिनार, छिनाल—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० छिन्ना+नारी] व्यभिचारिणी, कुलटा, परपुरुष-गामिनी। [**छिनरा** (पु०)]

छिनारा, छिनाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छिनाल] स्त्री-पुरुष का अनुचित सहवास, व्यभिचार।

छिन्न—(वि०, सं०) जो कट कर अलग हो गया हो, खंडित। "छिन्न मूल तरु सम है सोई"—तुल०। [**छिन्ना** (स्त्री०)]—**भिन्न**-(वि०, यौ०, सं०) कटा हुआ, खंडित, टूटा-फूटा, नष्ट-भ्रष्ट। अस्त-व्यस्त, तितर-बितर।—**मस्ता**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) महाविद्याओं में छठी। एक देवी।

छिन्ना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुड़िच, गुड़ीची। व्यभिचारिणी स्त्री। "छिन्ना शिवा पर्पट तोय पानात्"—[वैद्यजी०]।

छिन्नोद्भवा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुरिच, गुड़ीची। [छिन्नरूहः] "छिन्नोद्भवा पर्पट वारिवाहः"—[वैद्यजी०]।

छिप—(संज्ञा, पु०, दे०) बनसी, बड़िया, मछली पकड़ने का यंत्र।

छिपकली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चिपकना] पल्ली, गृहगोधिका, बिस्तुया, बिसतुइया (ग्रा०)। छिपकिली।

छिपना—(क्रि० अ०, [सं० छिप=डालना] ओट में होना, ऐसी स्थिति में होना जहाँ कोई न देखे, गुप्त या ओझल होना।

छिपाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० क्षिप्=डालना] आवरण या ओट में करना, दृष्टि से ओझल करना, प्रगट न करना, गुप्त रखना। [**छिपाव** (संज्ञा, पु०)] [**छिपवाना** (प्रेरणा० रूप)]

छिपारुस्तम—(वि०, पु०) वह व्यक्ति-विशेष जिसके गुण प्रगट न हुए हों, जो देखने में कुछ और कर्म से कुछ हों, असाधारण।

छिपाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छिपना] छिपने का भाव। गोपन, दुराव।

छिपी—(संज्ञा, पु०, दे०) छीपी, दरजी । (स० क्रि० सा० भू०, स्त्री०) छिप गयी। "छिपी कहाँ मूर्त्ति मनोज्ञ श्याम की"—गिरीश० ।

छिप्र*—(क्रि० वि०, दे०) [सं० क्षिप्र] शीघ्र । [**छिप्रवाहनी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) नदी, बिजली]

छिप्रोद्भवा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० क्षिप्र+उद्भवा] गुड़ूची, गुड़िच, गिलोय, अमृता ।

छिमा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्षमा । [छमा (दे०)]

छिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षिम] घृणित वस्तु, घिनौनी चीज, मल, गलीज । "लागै छितिपाल सब ओर छिति मै छिया"—भूषण । **मैला**—, (वि०) मलिन, घृणित । **मुहा०—छरद करना**—छी-छी करना, घृणित समझना ।—**बिया करना**—खराब या बरबाद करना, नष्ट-भ्रष्ट करना । [हि० बचिया] छोकरी, लड़की ।

छिरकना*—(क्रि० स०, दे०) छिड़कना । [**छिरकाना** (प्रेरणा० रूप)]

छिरेटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छिलछिड] एक छोटी बेल, पाताल-गारुड़ी ।

छिलका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० छाल] परत या खोल जो फलों आदि पर हो ।

छिलछिला—(वि०, दे०) छिछला ।

छिलना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० छीलना] छिलके का अलग होना, ऊपरी चमड़े के कुछ भाग का कट कर अलग हो जाना । [**छिलवाना** (प्रेरणा० रूप०)]

छिलवा—(संज्ञा, पु०) छीलनेवाला ।

छिलवाई—(संज्ञा, स्त्री०) छीलने की मजदूरी या मेहनताना ।

छिलवाना—(क्रि० स०) दूसरों से छीलने का काम कराना ।

छिलाई—(संज्ञा, स्त्री०) छीलने का कार्य । छीलने की मजदूरी ।

छिलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छिलना] कटवाना । छिलका अलग कराना ।

छिलौरी—(वि०, पु०, दे०) मोटी अँगुली के पोर पर का घाव ।

छिहना—(क्रि० अ०, दे०) ढेर लगाना, एका करना । क्षीण होना ।

छिहरना—(क्रि० अ०, दे०) छितराना । नष्ट होना, बिखरना । [**छिहरन** (संज्ञा, स्त्री०)]

छिहानी—(संज्ञा, पु०, दे०) श्मशान, मसान, मर्घट ।

छींक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छिक्का] नाक से सहसा शब्द के साथ निकलने वाला वायु का झोंका या स्फोट । "दाहिनी छीक तड़ाक भई"—[स्फु०] ।

छींकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० छीक] नाक से वेग के साथ वायु निकलना ।

छींका—(संज्ञा, पु०) [सं० शिक्य] रस्सियों का जाल जो छत में खाने-पीने की चीजें रखने के लिए लटकाया जाता है, सिकहर । जालीदार खिड़की या झरोखा । बैलों के मुँह पर चढ़ाया जाने वाला रस्सियों का जाल । रस्सियों का झूलनेवाला पुल । झूला । **लो०**—"बिल्ली के भाग से छींका टूटता है ।"

छींट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षिप्त] महीन बूँद, छींट, जलकण, सीकर । रंग-विरंग के बेल बूँटों वाला कपड़ा ।

छींटना—(क्रि० स०, दे०) छितराना ।

छींटा—(संज्ञा, पु०) [सं० क्षिप्त प्रा० छित्त] जलकण, सीकर, बूँद । हलकी वृष्टि । पड़ी हुई बूँद का चिह्न, छोटा दाग । मदक या चंडू की एक मात्रा । व्यंगपूर्ण उक्ति । **मुहा०—कसना (फेंकना)**—कटूक्ति कहना ।

छी—(अव्य०, दे०, अनु०) घृणा-सूचक शब्द । [**छीछी** (यौ०)] **मुहा०—छी करना**-घिनाना, अरुचि या घृणा प्रकट करना ।

छीछड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुच्छ, प्रा० छुच्छ] माँस का तुच्छ और निकम्मा टुकड़ा ।

छीछालेदर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छी-छी] दुर्दशा, दुर्गति, खराबी, छीछाल्यादर (ग्रा०) ।

छीज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छीजना] घाटा, कमी, ह्रास । [**छीजन** (संज्ञा, स्त्री०)]

छीजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षयण] क्षीण या कम होना, घटना । "मनुवाँ राम बिना तन छीजै"—मीराँ० ।

छीटा—(संज्ञा, पु०) बाँस का टोकरा ।

छीतना—(क्रि० स०) बिच्छू, बरैं आदि का ~ मारना । आघात पहुँचाना ।

छीतस्वामी—(संज्ञा, पु०) अष्टछाप के एक कृष्णभक्त कवि का नाम जो वल्लभाचार्य के शिष्य थे ।

छीति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षति] हानि, घाटा । बुराई । क्षति ।

छीतीछान—(वि०, दे०) [सं० क्षति+छिन्न] छिन्न-भिन्न, तितर-बितर, इधर-उधर।

छीन—(वि०, दे०) क्षीण, खीन (ग्रा०)।

छीनना—(क्रि० स०, दे०) [सं० छिन्न+ना प्रत्य०] काट कर अलग करना। दूसरे की वस्तु जबरदस्ती लेना, हरण करना। चक्की आदि को छेनी से खुरदुरा करना। कूटना। रेहना। छिड़ाना। [**छीनछान** (यौ०)]

छीनाछीनी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हिं० छीनना] छीना-झपटी।

छीनाझपटी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हिं० छीनना+झपटना] किसी वस्तु को किसी से छीन कर ले लेना।

छीपी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छाप] कपड़े पर बेलबूटे या छींट छापने वाला। [**छीपिनि, छीपिनी** (स्त्री०)]

छीप्र—(वि०, दे०) [सं० क्षिप्र] तेज, वेगवान, शीघ्र। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छाप] छाप, चिह्न, दाग। सेहुआँ रोग (ग्रा०)।

छीबर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छापना] मोटी छींट।

छीमी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिंबी] फली, छेमी।

छीर—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षीर, दूध। "धीर आक-छीर हू धारै धसकत है"—रत्ना०।—**पाक**—(संज्ञा, पु०) आधा दूध और आधा पानी मिला हुआ।—**सागर**-(संज्ञा, पु०) क्षीरसमुद्र जहाँ विष्णु शयन करते हैं। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छोर] कपड़े का वह किनारा जहाँ लम्बाई समाप्त हो, छोर। "द्रुपद-सुता कौ चीर-छीर तब छूटैगो" —रत्ना०।

छीलक—(संज्ञा, पु०) छिलका।

छीलन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छीलना] काटन, कतरन, ब्योंतन, छाँटन।

छीलना—(क्रि० अ०) [हिं० छाल] छिलका या छाल उतारना। जमी हुई वस्तु को खुरच कर अलग करना। [**छिलाना, छिलवाना** (प्रेरणा० रूप)]

छीलर—(संज्ञा, पु०) [हिं० छिछला] छिछला गड्ढा, तलैया (ग्रा०)।

छुँगली*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छंगुली] एक प्रकार की घुँघुरूदार अँगूठी, छागल (प्रान्ती०) छिगुनी, छोटी अँगुली।

छुआछूत—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हिं० छूना] अछूत को छूने की क्रिया, अस्पृश्यस्पर्श। स्पृश्य-अस्पृश्य का विचार। छूत-छात का विचार। "छुआ-छूत दारुण कुलीनता को अंग मानि"—मिश्र-बंधु०।

छुआना—(क्रि० स०, दे०) छुवाना, छुलाना।

छुईमुई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० छूना +मुवना) लज्जालु, लज्जावन्ती, लजाधुर।

छुगुनू—(संज्ञा, पु०, दे०) घुँघरू।

छुच्छी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छूछा] पतली, पोली नली। नाक की कील, लौंग (प्रान्ती०)। (वि०) खोखली, पोली, छूँछी।

छुछमछली—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० सूक्ष्म+मछली हिं०] मछली के रूप का अंडे से निकला मेढक का बच्चा।

छुट*—(अव्य०) [हिं० छूटना] छोड़कर, सिवाय, अतिरिक्त, छूटने का भाव।

छुटकाना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० छूटना] छोड़ना। अलग करना, साथ न लेना। मुक्त करना, छुटकारा देना।

छुटकारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छुटकाना] बंधन आदि से छूटने का भाव या क्रिया। मुक्ति, रिहाई। आपत्ति या चिंता आदि से रक्षा, निस्तार।

छुटना*—(क्रि० अ०, दे०) छूटना।

छुटपन†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छोटा+पन प्रत्य०] छोटाई, लघुता। बचपन।

छुटाई—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए "छोटाई"।

छुटाना†—(क्रि० स०, दे०) छुड़ाना।

छुटौती—(संज्ञा, स्त्री०) मुक्ति। लगान जो छोड़ दिया जाय।

छुट्टा—(वि०, दे०) [हिं० छूटना] जो बँधा न हो। एकाकी, अकेला, मुक्त, स्वच्छंद। [**छुट्टी** (स्त्री०)]

छुट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०)[हिं० छूट] छुटकारा, मुक्ति। अवकाश।

छुड़वाना—(क्रि० स०, दे०)[हिं० छोड़ना का प्रेरणा० रूप] छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

छुड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०) छोड़ने की क्रिया या भाव। पतंग को कुछ दूर ले जाकर उछाल देना।

छुड़ाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० छोड़ना] बँधी, फँसी, उलझी या लगी हुई वस्तु को पृथक् करना। दूसरे के अधिकार से अलग करना। पुती हुई वस्तु को दूर करना। कार्य या नौकरी से हटाना, बर-खास्त करना। किसी प्रवृत्ति या अभ्यास को दूर

करना। [हि० छोड़ना का प्रेरणा० रूप] छोड़ने का काम कराना।

छुड़ैया—(संज्ञा, पु०) छुड़ाने वाला। बचाने वाला।

छुड़ौती—(संज्ञा, स्त्री०) छोड़ देने के लिए दिया जाने वाला धन।

छुत*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षुत] भूख, क्षुधा, बुभुक्षा। छूत।

छुतहरा—(वि०, दे०) अशुद्ध, अपवित्र।

छुतिहर—(संज्ञा, पु०, दे०) कुपात्र। नीच मनुष्य। अशुचि वस्तु के संसर्ग से अशुद्ध हुआ बरतन या घड़ा।

छुतिहा†—(वि०, दे०) [हि० छूत+हा प्रत्य०] छूत वाला, जो छूने योग्य न हो, अस्पृश्य। कलंकित, दूषित।

छुद्र—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षुद्र] तुच्छ, लघु "छुद्र नदी भरि चलि उतराई"—[रामा०]।

छुद्रा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षुद्रा] नीच स्त्री, वेश्या। एक वनौषधि। "क्षुद्रा यवानी सहितो कषायः"—[वैद्य०]।

छुद्रावल, छुद्रावलि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्षुद्र घंटिका। "कटि छुद्रावलि अभरन पूरा"—प०।

छुधा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्षुधा। [**छुधित** (वि०, दे०)] "छुधित बहुत अघात नाहीं निगमद्रुम दलखाय"—सूर०।

छुपना—(क्रि० अ०, दे०) छिपना। (क्रि० स०) छुपाना। [**छुपवाना** (प्रेरणा० रूप)]

छुभित*—(वि०, दे०) [सं० क्षुभित] विचलित, चंचल चित्त, घबराया हुआ।

छुभिराना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० क्षोभ] क्षुब्ध या चंचल होना।

छुरधार*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० क्षुरधार] छुरे की धार, पतली पैनी धार।

छुरहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छुरा रखने की पेटी।

छुरा, छूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षुर] बेंट में लगा लम्बा धारदार हथियार। नाई के बाल बनाने का हथियार, उस्तुरा। [**छुरी** (स्त्री०, अल्पा०)]

छुरित—(संज्ञा, पु०, दे०) लास्य नृत्य का एक भेद। बिजली की चमक। "छुरितामलाच्छविः" —माघ।

छुरी, छूरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छुरा] चीजें काटने या चीरने-फाड़ने का एक बेंटदार छोटा हथियार। चाकू। आक्रमण करने का एक धारदार हथियार।

छुलकना—(क्रि० अ०, दे०) पानी आदि का छलक कर गिरना। कष्ट से मूतना।

छुलछुलाना—(क्रि० स०, दे०) छलक-छलक कर थम-थम कर गिरना।

छुलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० छूना का प्रेरणा० रूप] स्पर्श करना। [छुवाना† (दे०)] [**छुलवाना** (क्रि० स०, दे०)]

छुवाव—(संज्ञा, पु०, दे०) लगाव, सम्बन्ध। उपमा।

छुवाना—(क्रि० स०, दे०) छुलाना। [**छुवाई** (स्त्री०)]

छुहना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० छुवना] छू जाना। रँगा जाना। लिपना। (क्रि० स०, दे०) छूना। "छुहे पुरट घट सहज सुहाये"—[रामा०]।

छुहाना—(क्रि० स०, दे०) दया या प्रेम करना। चूना पोतना, उज्वल करना। [छोहाना (दे०)]

छुहारा, छोहारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षुत+हार] एक प्रकार का खजूर। खुरमा। पिंड खजूर। [छोहारा (दे०)]

छुहावट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लगाव। स्पर्श, छूत। प्रेम, स्नेह।

छुही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पोतने की सफेद मिट्टी, खड़िया। छूही (ग्रा०)।

छूँछा—(वि०, दे०) [सं० तुच्छ] खाली, रीता, रिक्त, जैसे छूँछा घड़ा। जिसमें कुछ तत्व न हो। निस्सार। निर्धन। छूँछ। [**छूँछी** (स्त्री०)] "तातें परं मनोरथ छूँछे"—[रामा०]।

छू—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) मंत्र पढ़ कर फूँक मारने का शब्द। विधि। (क्रि० स०) [हि० छूना]। **—मंतर**-जादू। **मुहा०—मंतर होना (करना)**-चटपट दूर होना (करना), जाता रहना। गायब होना (करना)। **—बोलना (होना)**-भाग जाना, दूर होना। उड़ जाना।

छूट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छूटना] छूटने का भाव, छुटकारा, मुक्ति। अवकाश, फुरसत। बाकी रुपया छोड़ देना। छुड़ौती। किसी कार्य से संबंध रखने वाली किसी बात पर ध्यान न जाने का भाव। वह रुपया जो देनदार से न लिया जाय। स्वतंत्रता। गाली, गलौज।

छूटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० छुट] बँधी, फँसी या पकड़ी हुई वस्तु का अलग होना। **मुहा० शरीर (प्राण, साँस)—**, मृत्यु होना। किसी बाँधने या पकड़ने वाली वस्तु का ढीला पड़ना या अलग होना, जैसे बंधन छूटना। किसी पुती या लगी हुई वस्तु का

अलग या दूर होना। बंधन से मुक्त होना, छुटकारा पाना। प्रस्थान करना, दूर पड़ जाना, वियुक्त होना बिछुड़ना। पीछे रह जाना। दूर तक जाने वाले अस्त्र का चल पड़ना। बराबर होती रहने वाली बात का बंद होना, न रह जाना। **अवसान—**, होश न रहना। **छक्के—**, चकित होना। **नाड़ी—**, नाड़ी का चलना बंद हो जाना। **जबान—**, गाली देना। **हाथ—**, मारना, पीटना। किसी नियम या परम्परा का भंग होना, जैसे व्रत छूटना। किसी वस्तु में से वेग के साथ निकलना। रस-रस कर (पानी) निकलना। ऐसी वस्तु का अपनी क्रिया में तत्पर होना, जिसमें से कोई वस्तु कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकले। शेष रहना, बाकी रहना। किसी काम या उसके किसी अंग का भूल से न किया जाना। किसी कार्य से हटाया जाना, बरखास्त होना, रोजी या जीविका न रह जाना।

छूत—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० छूना] छूने का भाव, संसर्ग, छुवाव। गंदी, अशुद्ध या रोगकारी वस्तु का स्पर्श। अस्पृश्य का संसर्ग। [**छुआछूत** (यौ०)] **—का रोग**–वह रोग जो किसी रोगी के छू जाने से हो। अशुद्ध या अपवित्र वस्तु के छूने का दोष या दूषण, अशुद्धि के कारण अस्पृश्यता। ऐसी अशुद्धि जिसके छूने से दोष लगे। भूत-प्रेतादि के लगने का बुरा प्रभाव। [**अछूत** (विलो०)]

छूना—(क्रि० अ०) [सं० छुप] एक वस्तु का दूसरी के इतने पास आना कि दोनों सट जायँ, स्पर्श होना। (क्रि० स०) किसी वस्तु तक पहुंच कर उसके किसी अङ्ग को अपने किसी अङ्ग से सटाना या लगाना, स्पर्श करना। **मुहा० आकाश—**, बहुत ऊँचा होना। हाथ बढाकर अँगुलियों के संसर्ग में लाना, हाथ लगाना। **कान†—**, शपथ या प्रतिज्ञा करना। दान के लिए किसी वस्तु को स्पर्श करना। दौड़ की बाजी में किसी को पकड़ना। उन्नति की समान श्रेणी में पहुंचना। बहुत कम काम मे लगना, पोतना।

छेंकना—(क्रि० स०, दे०) [सं० छद] आच्छादित करना, स्थान घेरना, जगह लेना। रोकना। जाने न देना। लकीरों से घेरना। काटना। मिटाना। घेरना।

छेक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छेद] छेद, सूराख, बिल। कटाव। विभाग।

छेकानुप्रास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह अनुप्रास जिसमें वर्णों की आवृत्ति केवल एक ही बार हो।

छेकापह्नुति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अलङ्कार जिसमे वास्तविक बात का अयथार्थ उक्ति से खंडन किया जाता है।

छेकोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अर्थान्तर-गर्भित उक्ति सम्बन्धी अलंकार।

छेटा†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षिप्त] बाधा, रुकावट।

छेड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [क्रि० छेद] छू या खोद-खाद कर तंग करने की क्रिया। हँसी-ठठोली करके कुढाने का काम। चुटकी, चिढ़ाने वाली बात। रगड़ा। झगड़ा। **—खानी, —छाड़**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) छेड़ने वाली बात, हँसी-दिल्लगी।

छेड़ना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० छेदना] खोदना-खादना। दबाना। कोंचना। छू या खोदखाद कर भड़काना या तङ्ग करना। किसी के विरुद्ध ऐसा कार्य करना जिससे वह बदला लेने को तैयार हो। हँसी-ठठोली करके कुढ़ाना, चुटकी लेना। कोई बात या कार्य्य आरम्भ करना। उठाना। बजाने के लिए बाजे मे हाथ लगाना। नश्तर से फोड़ा चीरना। अलापना प्रारम्भ करना।

छेड़वाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० छेड़ना का प्रेरणा० रूप] छेड़ने का काम दूसरे से कराना।

छेत्ता—(वि०, सं०) छेदने वाला। नष्ट करने वाला। भ्रम मिटाने वाला।

छेत्र*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षेत्र]।

छेद—(संज्ञा, पु०, दे०) छेदन। काटने का काम। नाश, ध्वंस। छेदन करने वाला। भाजक (ग्रा०)। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छिद्र] सूराख, छिद्र, रंध्र, बिल, दराज। खोखला। विवर। दोष, दूषण, ऐब। **मुहा० (पत्तल में)—करना**-हानि करना।

छेदक—(वि०, दे०) छेदने या काटने वाला। नाश करने वाला। विभाजक।

छेदन—(संज्ञा, पु०, दे०) काट कर अलग करने का काम। चीर-फाड़। नाश, ध्वंस। करने या छेदने का भाव। कान छेदने का संस्कार, कनछेदन। छेदना (ग्रा०)।

छेदना—(क्रि० स०, दे०) [सं० छेदन] कुछ चुभा कर किसी वस्तु को छेद-युक्त करना, बेधना, भेदना। क्षत या घाव करना। काटना, छिन्न करना। [**छेदाना** (प्रेरणा० रूप)] [**छेदवाना, छेदाई** (संज्ञा, स्त्री०)]

छेदनीय—(वि०, सं०) छेदने के लायक।

छेदा—(संज्ञा पु०) छिद्र। घुन लगने के कारण अन्न का खोखला होना।

छेदि—(वि०, सं०) छेदने वाला। (संज्ञा, पु०) बढ़ई।

छेना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छेदन] खटाई से फाड़ा हुआ पानी निचोड़ा दूध, फटे दूध का खोया, पनीर।

छेनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छेना] लोहे का वह हथियार जिससे लोहा, पत्थर आदि काटे या नकाशे जाते है। [टाँकी (दे०)]

छेमंड—(संज्ञा, पु०, सं०) अनाथ, माता-पिता से विहीन बालक।

छेम*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षेम]। [**छेम-कुसल** (यौ०)]

छेमकरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षेमकरी] मंगल-दायक, कल्याणकारी। चील पक्षी। "छेम-करी कह क्षेम विशेषी"—[रामा०]।

छेरना—(क्रि० अ०, दे०) अपच रोग या दस्त होना।

छेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छेलिका] बकरी। "छेरी चढ़ी बँबूर पै"—[स्फु०]।

छेव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छेद] जखम, घाव। **मुहा० छल**—,कपट-व्यवहार। †आने वाली आपत्ति, होनहार दुःख। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) टेंव।

छेवन—(संज्ञा, पु०) चाक पर का बना हुआ मिट्टी के बर्तन काटने वाला तागा।

छेवना*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छेना] ताड़ी। (क्रि० स०, दे०) [सं० छेदना] काटना, छिन्न करना। चिह्न लगाना। *(क्रि० स०, दे०) [सं० क्षेपण] फेंकना। डालना, ऊपर डालना। **मुहा० जी पर**—, जी पर खेलना, संकट में जान डालना।

छेह*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छेव] छेव, खंडन। नाश। परम्परा-भङ्ग। (वि०, दे०) टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। न्यून, कम। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) खेह, धूल।

छेहर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छाया] छाया, छयाहर (ग्रा०)।

छै†—(वि०, दे०) छः। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्षय, नाश। [छय (दे०)]

छैया†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छवना] बच्चा।

छैल*—(संज्ञा, पु०, दे०) छैला। "छरे छबीले छैल सब"—[रामा०]।—**चिकनिया**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) शौकीन, बना-ठना आदमी।—**छबीला**-(संज्ञा, पु०, दे०) सजाबजा और जवान आदमी। बाँका। छरीला पौधा।

छैला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छवि+इल प्रत्य०] सुन्दर और बना-ठना पुरुष, सजीला, बाँका, शौकीन।

छोंड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्रवे] दही मथने की मथानी। लड़का, छोरा। [**छोंड़ि**-(स्त्री०) छोड़ी, छोरी]

छोई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नीरस गँडेरी। निस्सार वस्तु। "श्रीभट अटकि रहे स्वामी वन आन वृतै मानै सब छोई"।

छोकड़ा, छोकरा—(संज्ञा, पु०) [सं० शावक] लड़का, बालक, लौंडा। [**छोकड़ापन** (संज्ञा, पु०)] [**छोकड़ी, छोकरी** (स्त्री०)]

छोकला—(संज्ञा, पु०, दे०) छिलका, बक्कल, छाल।

छोछ—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोदी, क्रोड़, अंकाला, उत्सङ्ग।

छोटा—(वि०, दे०)[सं० क्षुद्र] जो बड़ाई और विस्तार में कम हो। डील-डौल में कम। नीच। [**छोटी** (स्त्री०)]—**मोटा**-(यौ०) साधारण अवस्था में। कम। तुच्छ। सामान्य। ओछा, क्षुद्र। [**छोटी-मोटी** (स्त्री०)]

छोटाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० छोटा+ई प्रत्य०] छोटापन, लघुता। नीचता। बचपन। [**छोटापन** (संज्ञा, पु०)]

छोटी—(वि०, स्त्री०, दे०) लघु आकार वाली।—**इलायची**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हिं० छोटी इलायची] सफेद या गुजराती इलायची, एला।—**हाजिरी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० छोटी+हाजिरी] यूरोपियनों का प्रातःकाल का कलेवा, प्रातराशन।

छोड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० छोरण] पकड़ी हुई वस्तु को पकड़ से अलग करना। किसी लगी या चपकी हुई वस्तु का अलग हो जाना। बन्धन आदि से मुक्त करना। छुटकारा देना। अपराध क्षमा करना। न ग्रहण करना। प्राप्य धन न लेना। देना। परित्याग करना। पास न रखना। पड़ा रहने देना, न उठाना या लेना। प्रस्थान करना। चलाना। **मुहा० किसी पर किसी को**—,किसी को पकड़ने या चोट पहुंचाने के लिए उसके पीछे किसी को लगा देना। चलाना या फेंकना, क्षेपण करना। किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान से आगे बढ़ जाना। हाथ में लिए हुए कार्य्य को त्याग देना। किसी रोग वा

व्याधि का दूर करना। वेग के साथ बाहर निकलना। ऐसी वस्तु को चलाना जिसमें कोई वस्तु कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकले। बचाना, शेष रखना। **मुहा० छोड़ कर**-अतिरिक्त, सिवाय। किसी कार्य या उसके किसी अङ्ग को भूल से न करना। ऊपर से गिराना।

छोड़वाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० छोड़ना का प्रेरणा० रूप] छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

छोड़ाना—(क्रि० स०, दे०) छुड़ाना।

छोनिप*—(संज्ञा, पु०, दे०) चोणिप, राजा।

छोनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चोणी। "छोनी में न छाँड़ो कोऊ छोनिप को छौना छोटो"—[कविता०] [**छोनीपति** (यौ०)]

छोप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० क्षेप] मोटा लेप। लेप चढ़ाने का कार्य्य। आघात, प्रहार, वार। छिपाव, बचाव।

छोपना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० छुपाना] गीली वस्तु मिट्टी आदि को दूसरी वस्तु पर फैलाना। गाढ़ा लेप करना। मिलाव लगाना, थोपना। दबा कर चढ़ बैठना, धर दबाना। ग्रसना, आच्छादित करना, ढकना। छेकना। किसी बुरी बात को छिपाना, परदा डालना। वार या आघात से बचाना। आरोप करना। "छोपत अपनो दोष आन पै"।

छोपा—(संज्ञा, पु०) पाल को ऊपर चढ़ाने वाली रस्सियाँ जो कोने में रहती हैं।

छोपाई—(संज्ञा, स्त्री०) छोपने की क्रिया या भाव।

छोभ—(संज्ञा, पु०, दे०) चोभ (सं०)। "तिनके तिलक छोभ कस तोरे"—[रामा०]।

छोभना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० छोभ+ना प्रत्य०] करुणा, शंका, लोभ आदि के कारण चित्त का चंचल होना, क्षुब्ध होना। [**छोभित** (वि०)] "सहज पुनीत मोर मन छोभा"—[रामा०]।

छोम*—(वि०, दे०) [सं० चोम] चिकना, कोमल।

छोर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छोड़ना] आयत। विस्तार की सीमा। चौड़ाई का हाशिया। [**ओर-छोर**-(यौ०) आदि-अन्त] (क्रि० स०, दे०) छोरना, छीनना। छोड़ना, खोलना। विस्तार। सीमा, हद। नोक, कोर। [किनारा (दे०)]

छोराना—(क्रि० स०, दे०) [सं० छोरण] बन्धन आदि से अलग या मुक्त करना, खोलना। हरण करना, छीनना। [**छोड़ाना** (हिं०)]

छोरा†—(संज्ञा, पु०) [सं० शावक] छोकड़ा, लड़का। [**छोरी, छोकरी** (स्त्री०)]

छोरा-छोरी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० छोरना] छीन-खसोट, छीना-छीनी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शावक] लड़का और लड़की।

छोलग—(संज्ञा, पु०) नीबू।

छोलदारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खेमा, तम्बू, छौलदारी (ग्रा०)।

छोलना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० छाल] छीलना।

छोह, छोहू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० चोभ] ममता, प्रेम। स्नेह। दया, अनुग्रह, कृपा। "तजहु छोभ जनि छाँड़हु छोहू"—[रामा०]।

छोहना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० छोह+ना—प्रत्य०] विचलित, चंचल या क्षुब्ध होना। प्रेम या दया करना।

छोहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) छोरा। छोटे छोहरा पै दयावान न भयो"—रघुराज०।

छोहरिया, छोहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० छोह] लड़की, छोरटी (प्रान्ती०)। "नौवा केरि छोहरिया मोहिं संग कूर"—र०।

छोहाना*—(क्रि० अ०) [हिं० छोह] मुहब्बत करना, प्रेम दिखाना। अनुग्रह या दया करना। "कैसो पिता न हिये छोहाना"—जायसी०।

छोहारा—(संज्ञा, पु०) देखिए "छुहारा"।

छोहिनी§—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अक्षौहिणी।

छोही*—(वि०) [हिं० छोह] ममता रखने वाला, प्रेमी, स्नेही, अनुरागी।

छोहू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छोह] प्यार, प्रेम, स्नेह। "तजब छोभ जनि छाँड़ब छोहू"—[रामा०]

छौंक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) बघार, तड़का।

छौंकना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० छायँ-छायँ] बासने के लिए हींग, मिरच आदि से मिले कड़कड़ाते घी को दाल आदि मे डालना, बघारना। मसाले मिले हुए कड़कड़ाते घी मे कच्ची तरकारी आदि भूनने के लिए डालना, तड़का देना। [**छौंकाना, छौंकवाना** (प्रेरणा० रूप)] (क्रि० अ०, दे०) [सं० चतुष्क] जानवर का कूदना या झपटना।

छौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शावक] पशु का बचा, जैसे मृग-छौना। लड़का। [**छौनी** (स्त्री०)] "छोनी में न छाँड़ो कोऊ छोनिप को छौना छोटो"—तुल०।

छौवाना—(क्रि० स०, दे०) छुआना, छुलाना।

ञ

ञ—हिन्दी या संस्कृत की वर्ण-माला के चवर्ग का तीसरा व्यञ्जन।

जंग—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) लड़ाई, युद्ध, संग्राम। [**जंगी** (वि०)] (संज्ञा, पु०, फ़ा०) लोहे आदि का मुरचा।

जंगम—(वि०, सं०) चलने-फिरने वाला, चर, जो एक स्थल से दूसरे पर लाया जा सके, जैसे मनुष्य, पशु, पक्षी आदि जीव और चल सम्पत्ति।

जँगरैत—(वि०) परिश्रमी, मेहनती, जाँगर वाला।

जंगल—(संज्ञा, पु०, सं०) जल-शून्य देश, मरुभूमि, रेगिस्तान। वन। [**जंगली** (वि०)]

जँगला—(संज्ञा, पु०, दे०) [पुर्त्त० जेंगिला] खिड़की, दरवाजे, बरामदे आदि में लगी हुई लोहे की छड़ों की पंक्ति। कटहरा। बाड़ा। लोहे की छड़दार चौखट या खिड़की।

जंगली—(वि०, दे०) [हि० जंगल] जंगल में मिलने या होने वाला। जंगल-सम्बन्धी। बिना बोये या लगाये ही उगने वाला पौधा। जंगल में रहने वाला। वनैला। ग्रामीण, असभ्य, उजड्ड।

जंगा—(संज्ञा, पु०) घूँघरू का दाना।

जंगार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ताँबे का कसाव। तूतिया। कसाव का रंग। [**जंगारी** (वि०)]

जंगारी—(वि०, दे०) [फ़ा० जंगार] नीले रंग का।

जंगाल—(संज्ञा, पु०, दे०) जंगार। बड़ा बरतन।

जंगी—(वि०, फ़ा०) लड़ाई से सम्बन्ध रखने वाला, जैसे—जंगी जहाज। फौजी, सैनिक, सेना-सम्बन्धी। बड़ा, बहुत बड़ा, दीर्घकाय। वीर। लड़ाका।

जंघा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जंघ] पिंडुली, जाँघ, रान, ऊरू (सं०)।

जंघार—(संज्ञा, पु०) जाँघ का फ़ोड़ा।

जंघारा—(संज्ञा, पु०) राजपूतों की जाति-विशेष।

जंघाल—(संज्ञा, पु०, सं०) दूत। हिरन। (वि०) तेज चलने वाला, द्रुतगामी।

जंघिल—(वि०, सं०) फुर्तीला। तेज दौड़ सकने वाला।

जँचना, जाँचना—(क्रि० अ०) [हि० जाँचना] जाँचा जाना, देखा-भाला जाना। जाँच में पूरा उतरना, उचित या अच्छा ठहरना या जान पड़ना। प्रतीत होना। माँगना। "मैं जाँचन आयउँ नृप तोहीं" —[रामा०]।

जँचा—(वि०, दे०) [हि० जाँचना] जाँचा हुआ, सुपरीक्षित। अव्यर्थ। अचूक।

जंजल*—(वि०, दे०) [सं० जर्जर] पुराना। कमजोर। बेकाम, निकम्मा।

जंजाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जग+जाल] प्रपञ्च, झंझट, बखेड़ा। बन्धन, फँसाव। उलझन। पानी का भँवर। एक बड़ी पलीतेदार बंदूक। बड़े मुँह की तोप। बड़ा जाल। "संसारी जंजाल-जाल दृढ़, निकरि सकै काउ कैसे"—[स्फु०]।

जंजाली—(वि०) [हि० जंजाल] झगड़ालू, बखेड़िया, फसादी। "मनुवाँ जंजाली, तू कौन चिरैया पाली"—क०।

जंजीर—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) साँकल, सिकड़ी। कड़ियों की लड़ी।

जंजीरा—(संज्ञा, पु०) लहरिया, जंजीर के ढंग पर बटा हुआ डोरा विशेष जो कशीदे की सिलाई से बनता है।

जंतर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यंत्र] कल, औजार, यंत्र। तांत्रिक यंत्र, चौकोर या लम्बी ताबीज जिसमें यंत्र या कोई टोटके की वस्तु रहती है। गले का एक गहना, कठुला। [जंत्र (दे०)] **—मंतर**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० यंत्र+मंत्र] यंत्र-मंत्र, टोना-टोटका, जादू-टोना। मान-मंदिर जहाँ ज्योतिषी नक्षत्रों की गति आदि का निरीक्षण करते है। आकाश-लोचन, वेधशाला।

जंतरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० यंत्र] तार बढ़ाने का छोटा जाँता (सुनार)। पत्रा, तिथि-पत्र। जादूगर। भानमती। बाजा बजाने वाला। [जंत्री (दे०)]

जँतसर—(संज्ञा, पु०) लोकगीत जो चक्की पीसते समय स्त्रियाँ गाती है।

जँतसार—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० यंत्र +शाला] जाँता गाड़ने का स्थान, कलघर, जाँता-घर, यंत्रशाला।

जंता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यंत्र] यंत्र, कल। तार खींचने का औजार। [**जंत्री** (स्त्री०)] जंतरी। (वि०) [सं० यंतृ-यंता] दंड देने या शासन करने वाला।

जँताना—(अ० क्रि०) जाँत से पिसना, पिस जाना, कुचल जाना।

जंती—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० जंता] छोटा जाँता, जँतरी। ‡(संज्ञा, स्त्री०) [हि० जननी] माता।

जंतु—(संज्ञा, पु०, सं०) जीव, प्राणी । जानवर, बड़ा या हिंसक पशु । "जीव-जन्तु जो गगन उड़ाहीं"—[रामा०] । **जीव**—,(संज्ञा, पु०) प्राणी, जानवर ।—**घ्न**-(वि०, सं०) जंतुनाशक, कृमिघ्न ।

जंतुका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लाख ।

जंतुमती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धरती, पृथ्वी ।

जंत्र—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यंत्र] कल, औजार। तांत्रिक । यत्र । ताला । [जंतर (दे०)]—**मत्र**—(संज्ञा, पु०, दे०) जंतर-मंतर, यंत्र-मंत्र । "जंत्र, मत्र, टोना आदि झूठ ही लखात आज"—[रघु०] ।

जंत्रना—(क्रि० स०, दे०) [हि० जंत्र] ताले के भीतर बंद करना । जकड़ना । कष्ट देना ।

जंत्रित—(वि०, दे०) [सं० यन्त्रित] यंत्रित । बंद । बँधा हुआ ।

जंत्री—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यन्त्र] बाजा । तिथि-पत्र, जंतरी, पत्रा ।

जंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० जंद] फारस का अत्यंत प्राचीन धर्म-ग्रंथ और उसकी भाषा ।

जंदरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यन्त्र] यंत्र, कल । जाँता । ताला ।

जंपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० जल्पन] बोलना, कहना । "यों कवि 'भूषण' जंपत है" ।

जंबाल—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कीचड़ । सेवार । काई

जंबालिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी ।

जंबीर—(संज्ञा, पु०, सं०) जंबीर नींबू । मरुवा, वन-तुलसी ।

जंबीरीनींबू—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० जंबीर] एक खट्टा नीबू जिसमें सुई चुभने से गल जाती है, जँभीरी नींबू ।

जंबु—(संज्ञा, पु०, सं०) जामुन (फल) ।

जंबुक—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ा जामुन, फलेंदा (प्रान्ती०), फरेंदा । केवड़ा । शृगाल, स्यार । "जूथ जंबुकन ते कहूँ"—वृंद० ।

जंबुद्वीप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सात द्वीपों में से एक जिसमें भारत है (पुरा०) ।

जंबुमत्—(संज्ञा, पु०, दे०) जांबवान् ।

जंबू—(संज्ञा, पु०, सं०) जामुन । काश्मीर का एक प्रसिद्ध नगर । [**जम्बूद्वीप** (यौ०)]

जंबूर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जंबूरा । जमुरका । तोप की चरख । पुरानी छोटी तोप, जो प्रायः ऊँटों पर लादी जाती थी । जंबूरक ।

जंबूरक—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) छोटी तोप । तोप का चर्ख । भंवर, कली ।

जंबूरची—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) तोपची, तुपकची, बर्कन्दाज सिपाही ।

जंबूरा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० जंमूर+भौंरा] तोप चढ़ाने का चर्ख । भँवर-कड़ी, भँवर-कली । सुनारों का बारीक काम का एक औजार । [जँबूरा (दे०)]

जंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) दाढ़, चौभड़ (प्रान्ती०), जबड़ा । एक दैत्य । जँबीरी नीबू। जँभाई ।

जंभक—(वि०, सं०) जमुँहाई लेने वाला । हिंसक । (संज्ञा, पु०) शिव ।

जंभका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जम्हाई ।

जंभन—(संज्ञा, पु०, सं०) जमुहाना । मैथुन । भक्षण ।

जँभाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जंभा] निद्रा या आलस्य से मुँह के खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया । जमुहाई (ग्रा०) । उवासी ।

जँभाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० जृंभण] जँभाई लेना । जमुहाना, जम्हाना (ग्रा०) ।

जंभारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्र । अग्नि । वज्र । विष्णु ।

ज—(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्युंजय । जन्म । पिता । विष्णु । आदि-अंत मे लघु और मध्य में गुरु वर्ण वाला एक गण, जगण (पिं० ।S।) । (वि०) वेगवान्, तेज । जीतने वाला । (प्रत्य०) उत्पन्न, जात, जैसे—जलज ।

जई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जौ] जौ की जाति का एक अन्न । जौ का छोटा अंकुर जो मंगल द्रव्य के रूप मे ब्राह्मण या पुरोहित भेंट करते हैं । अंकुर, फलों की फूल-युक्त बतियाँ, जैसे कुम्हड़े की जई* (वि०, दे०) जयी, विजयी ।

जईफ—(वि०, अ०) बुड्ढा, वृद्ध, बूढ़ा । [**ज़ईफी**—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बुढ़ापा]

जकंद*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० जगंद] छलाँग, चौकड़ी, उछाल ।

जकंदना*—(क्रि० अ०, दे०) [क्रि० जकंद] कूदना, उछलना । टूट पड़ना ।

जक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यक्ष] धन-रक्षक । भूत-प्रेत । यक्ष । कंजूस, सूम । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० झक] जिद, जिद, हठ, धुनि, रट । "छोड़ि सबै जग तोहि लगी जक"—नरो० । (क्रि० अ०, दे०) **जकना**-रटना, बड़बड़ाना । "जोग जोग

कब हूँ न जानै कहा जोइ जकौ "—[ऊ० श०] । जक्की (वि०) ।

ज़क—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) हार, पराजय । हानि । पराभव । लज्जा । "सिवा तें औरंगजेब पाई जक भारी है "—भू० ।

जकड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जकड़ना] जकड़ने का भाव । कसकर बाँधना । **मुहा०—बंद करना**–खूब कसकर बाँधना । पूरी तरह स्ववश करना ।

जकाँ—(वि०, दे०) ऐसा, समान । "हस्ति गयन जकाँ चलइत सजनिगें"—विद्या० ।

जकड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० युक्त+करण] कसकर या सुदृढ़ बाँधना । ‡(क्रि० अ०, दे०) तनाव आदि से अंगों को हिलने योग्य न रहने देना । [**जकड़ाना** (प्रेरणा० रूप)] [**जकड़न** (संज्ञा, स्त्री०)]

जकना—(क्रि० अ०) [हिचक या जक] भौचक्का होना, चकपकाना । झक में बोलना, बकना ।

ज़कात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दान, खैरात । कर, महसूल ।

जकित—(वि०, दे०) [हि० चकित] चकित, विस्मृत, स्तम्भित । जके । [जकी (दे०)]

जक्की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बुलबुल की एक जाति । (वि०) बक्की, झक्की ।

जक्त—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जगत] जगत, संसार, दुनिया ।

जक्ष—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यक्ष] यक्ष ।

जक्ष्मा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० यक्ष्मा] यक्ष्मा, तपेदिक (रोग), जच्छमा ।

जखम—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० जख्म] क्षत, घाव । मानसिक दुःख का आघात । जखन (ग्रा०) । **मुहा०— ताजा या हरा हो जाना**–बीते हुए कष्ट का फिर लौटना या याद आना ।

जखमी—(वि०) [फ़ा० जख्मी] जिसे जखम लगा हो, घायल ।

ज़खीरा—(संज्ञा, पु०, अ०) एक ही सी चीजों का संग्रह-स्थान, कोष, खजाना, ढेर, समूह । विविध पौधों और बीजों के बिकने का स्थान । बाटिका ।

जग—(संज्ञा, पु०) [सं० जगत] संसार । संसार के लोग । †* (संज्ञा, पु०, दे०) यज्ञ, जग्य ।

जगच्चक्षु—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य ।

जगजगा†—(वि०, दे०) [हि० जगजगाना] चमकीला । प्रकाशित, जगमगाने वाला ।

जगजगाना†—(क्रि० अ०, अनु०) चमकना, जगमगाना ।

जगजगाहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० जगजगाना] चमक, प्रकाश ।

जगजगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जग+जागी] प्रसिद्ध, विख्यात, संसार में विदित । "जगाजगी प्रभु कीर्त्ति तिहारी"—[स्फु०] ।

जगजीवन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) संसार का प्राण, दुनिया की जिन्दगी । ईश्वर । वायु । जल । "जगजीवन जीवन की गति देखी" ।

जगजोनि—(संज्ञा, पु०, दे०) जगद्योनि (सं०) ।

जगज्जननी—(संज्ञा, पु०, सं०) जगदम्बा, परमेश्वरी, जगत्-माता । "जग जननी अतुलित छबि भारी"—[रामा०] ।

जगड्वाल—(संज्ञा, पु०, सं०) आडम्बर, मिथ्या दिखावा, प्रपंच, व्यर्थ का आयोजन ।

जगझंप—(संज्ञा, पु०) प्राचीन समय का वाद्य-विशेष ।

जगण—(संज्ञा, पु०, सं०) आद्यन्त लघु और मध्य गुरु वर्ण वाला एक गण (पिं०) ।

जगत—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जगति=घर की कुरसी] कुयें के चारों ओर का चबूतरा । (संज्ञा, पु०, दे०) जगत् । (क्रि० अ०, दे०) जगना, जलना ।**—सेठ**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० जगत्+श्रेष्ठ] महाधनी, महाजन । विश्व-श्रेष्ठ ।

जगती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संसार, विश्व, दुनिया, जहान । पृथ्वी, भूमि । एक वैदिक छन्द । "मान-गुमान हरो जगती को"—[रामा०] ।

जगत्—(संज्ञा, पु०, सं०) संसार, विश्व । जंगम-जीव । महादेव । वायु । "जगत् तपोवन सों कियो" ।**—पिता**–(संज्ञा, पु०, सं०) संसार के पिता (जनक),‡ ईश्वर, ब्रह्मा, जगज्जनक । "जगत्-पिता रघुपतिहि निहारी"—[रामा०] ।

जगदंतक—(संज्ञा, पु०, सं०) काल ।

जगदंबा, जगदंबिका—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) दुर्गा देवी । सरस्वती । लक्ष्मी । "जगदम्बिका रूप-गुन-खानी ।" "जगदम्बा जानहु जिय सीता" —[रामा०] ।

जगद्—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिभावक, संरक्षक, परिचारक ।

जगदात्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा । वायु, हवा ।

जगदादि—(संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर, ब्रह्मा।
जगदाधार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ईश्वर। शेष।
जगदानंद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ईश्वर।
जगदायु—(संज्ञा, पु०, सं०) वायु।
जगदीश—(संज्ञा, पु०, सं०) जगन्नाथ। परमेश्वर। "जगदीश अब रक्षा करौ"—के०।
जगदीश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परमेश्वर, भगवान, जगन्नायक।
जगदीश्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) भगवती, दुर्गा जी। महादेवी।
जगद्गुरु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परमेश्वर। शिव। नारद। अत्यन्त पूज्य या प्रतिष्ठित पुरुष। लोक-शिक्षक।
जगज्जनक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विश्वपिता, ब्रह्मा, ईश्वर।
जगद्दीप—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य। परमात्मा।
जगद्धाता—(संज्ञा, पु०, यौ०) [जगद्धातृ] विष्णु। शिव। ब्रह्मा। [**जगद्धात्री** (स्त्री०)]
जगद्धात्री—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) दुर्गा। लक्ष्मी। सरस्वती।
जगद्बल—(संज्ञा, पु०, सं०) वायु।
जगद्बीज—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव।
जगद्योनि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिव। विष्णु। ब्रह्मा। पृथ्वी। जल। [जगजोनि (दे०)]
जगद्वंद्य—(वि०, यौ०, सं०) जिसकी वंदना संसार करे, विश्व पूज्य। ईश्वर।
जगद्विख्यात—(वि०, यौ०, सं०) संसार में प्रसिद्ध।
जगद्विनाश—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रलय।
जगना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० जागरण] नींद से उठना, निद्रा त्याग करना। सचेत या सावधान होना। देवी-देवता या भूत-प्रेत आदि का अधिक प्रभाव दिखाना। उत्तेजित होना। उभड़ना या उमड़ना। (आग का) जलना। दहकना। जागना। [**जगाना, जगवाना** (प्रेरणा० रूप)]
जगनाथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विश्वपति ईश्वर। "जगन्नाथ गौरीशनाथं"।
जगन्नाथ—(संज्ञा, पु०, सं०) ईश्वर। विष्णु। उड़ीसा के पुरी नामक स्थान में प्रसिद्ध विष्णु-मूर्ति।
जगन्नियंता—(संज्ञा, पु०) [सं० जगन्नियंतृ] परमात्मा, ईश्वर।
जगन्निवास—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु। "जगन्निवासो, वसुदेव सद्मनि"—माघ०।
जगन्मङ्गल—(संज्ञा, पु०, सं०) काली का एक कवच।
जगन्मय—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु।
जगन्मयी—(संज्ञा, स्त्री०) लक्ष्मी।
जगन्माता—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) संसार की माता। दुर्गा। सरस्वती। लक्ष्मी। जगज्जननी, जगदम्बा।
जगन्मोहिनी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) दुर्गा, महामाया, विश्व-विमोहिनी।
जगबंद*—(वि०, दे०) जगद्वन्द्य।
जगमग, जगमगा—(वि०) [अनु०] प्रकाशित, जिस पर प्रकाश पड़ता हो। चमकीला, चमकदार, जगा-मग। [**जगमगी** (स्त्री०)]
जगमगाना—(क्रि० अ०, अनु०) खूब चमकना, झलकना, दमकना।
जगमगाहट—(संज्ञा, स्त्री०) जगमाने का भाव, चमक। [जगमगी (दे०)]
जगरमगर—(वि०, दे०) जगमग।
जगवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० जगना] जगाने का काम दूसरे से कराना, जगाना।
जगह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० जायगाह] स्थान, स्थल। मौका, अवसर। पद, ओहदा। नौकरी। [जागह, जग्गाह (दे०)]
जगाजोति—(संज्ञा, स्त्री०) जगमगाहट।
जगात†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० ज़कात] दान, खैरात। महसूल, कर।
जगाती—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जगात] वह जो कर वसूल करे। कर उगाहने का काम। "बैठि जगाती चौतरा, सब सों लेत जगात"।
जगाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० जागना, जागने या जगाने का प्रेरणा० रूप] नींद त्यागने की प्रेरणा करना। चेत में लाना, होश दिलाना। बोध कराना। फिर से ठीक स्थिति मे लाना। आग को तेज करना, सुलगाना। यंत्र-मंत्र आदि का साधन करना, जैसे मंत्र जगाना। जगावना (ब्र०)। "कान्ह दिवारी को रैन चले बरसाने मनोज को मंत्र जगा-वन।"
जगार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जागना] जागरण। सब का जाग उठना। जगहर (ग्रा०)।
जगी—(संज्ञा, स्त्री०) मोर के ढङ्ग का एक प्रकार का पक्षी।

जगीला—(वि०, दे०) [हिं० जागना] जागने के कारण अलसाया हुआ, उनींदा। जगने वाला। सतर्क। जलने वाला। [**जगीली** (स्त्री०)]

जग्ध—(वि०, सं०) भुक्त, खाया-पीया हुआ। (संज्ञा, पु०) आहार, भोजन। भोजन-स्थान।

जग्मि—(वि०, सं०) जंगम।

जघन—(संज्ञा, पु०, सं०) कटि के नीचे आगे का भाग, पेड़ू, जंघा। नितंब, चूतड़। "सुविपुल जघना बद्ध नागेंद्र काँची"—[हनु०]।

जघनचपला—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) आर्य्या छंद का एक भेद।

जघन्य—(वि०, सं०) अंतिम, चरम। गर्हित। त्याज्य। अत्यन्त बुरा, नीच, निकृष्ट। (संज्ञा, पु०) शूद्र, नीच जाति।

जघ्नु—(वि०, सं०) हनन करने वाला, घातक।

जघ्नि—(संज्ञा, पु०, सं०) अस्त्र, मारने का साधन।

जघ्रि—(संज्ञा, पु०, सं०) सूँघने वाला।

जचना—(क्रि० अ०, दे०) जँचना, पसन्द आना।

जच्चा—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० जच्चः] प्रसूता स्त्री, वह स्त्री जिसके हाल में बच्चा हुआ हो।—**खाना**—(संज्ञा, पु०) सूतिका-गृह। [सौरी (दे०)]

जच्छ†—(संज्ञा, पु०, दे०) यक्ष। "कारज सों उनमत्त भयो इक जच्छ नै खोइ"—[हिं० मेघ०]।

जजमान—(संज्ञा, पु०, दे०) यजमान।

जजमानी—(संज्ञा, स्त्री०) पुरोहिती, पण्डिताई।

जजिया—(संज्ञा, पु०, अ०) दंड। एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य-काल में अन्य धर्म वालों पर लगता था (इति०)।

जजीरा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) टापू, द्वीप।

जटना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० जाट] धोका देकर कुछ लेना, ठगना।*(क्रि० स०, दे०) [सं० जटन] जड़ना।

जटल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जटिल] व्यर्थ और झूठ बात, गप्प, बकवाद।

जटा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक में उलझे हुए सिर के बहुत से बड़े-बड़े बाल। पेड़ की जड़ के पतले-पतले सूत। झकरा। एक साथ बहुत से रेशे आदि। शाखा। जटामासी। जूट, पाट, कौंछ, केवाँच। वेदपाठ का एक भेद। "जटा कटाह संभ्रमभ्रिलिंप निर्झरी"—[शिव०]।—**जूट**—(संज्ञा, पु०, सं०) बहुत से लंबे बालों का समूह। शिव की जटा।—**धर**—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, महादेव।—**धारी**—(वि०, सं०) जो जटा रखे हो। (संज्ञा, पु०) शिव, महादेव। मरसे की जाति का एक पौधा। मुर्गकेश। साधु।

जटाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० जटना] जटने का काम दूसरे से कराना। (क्रि० अ०) ठगा जाना। ठगवाना।

जटामासी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जटामाँसी] एक सुगंधित पदार्थ जो एक वनस्पति की जड़ है, बालछड़, बालूचर।

जटायु—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रसिद्ध गिद्ध जिसने सीता-हरण के समय रावण से युद्ध किया था। [जटायू, जटाई (दे०)] "जाना जरठ जटायू एहा"—[रामा०]। गुग्गुल।

जटाला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जटामासी।

जटावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जटामासी।

जटासुर—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भीम द्वारा मारा गया राक्षस।

जटित—(वि०, सं०) जड़ा हुआ।

जटिल—(वि०, सं०) जटावाला, जटाधारी। अति कठिन, दुरुह, दुर्बोध। क्रूर, दुष्ट। उलझा हुआ। [**जटिलता** (संज्ञा, स्त्री०)]

जटिला—(संज्ञा, स्त्री०) सास, पति की माँ। "एत सुनि जटिला धर दोहे ले..."—विद्या०।

जठर—(संज्ञा, पु०, सं०) पेट। कुक्षि। एक उदर-रोग। शरीर। (वि०) वृद्ध, बूढ़ा। कठिन।

जठराग्नि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पेट की वह गरमी जिससे अन्न पचता है।

जठरामय—(संज्ञा, पु०, सं०) अतीसार की बीमारी। जलोदर रोग।

जड़—(वि०, दे०, सं०) जिसमें चेतनता न हो, अचेतन। चेष्टा-हीन। स्तब्ध। नासमझ, मूर्ख। ठिठुरा हुआ। शीतल, ठंडा। गूंगा, मूक। बहिरा। जिसके मन में मोह हो। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० जटा] वृक्षों और पौधों का पृथ्वी के भीतर दबा भाग, जिससे उन्हें जल और आहार पहुँचता है, मूल, सोर। नींव, बुनियाद। हेतु, कारण, सबब। आधार। (यौ०)—**जंगम**—स्थावर-जंगम। **मुहा०—उखाड़ना या खोदना, काटना**—किसी की सत्ता को सकारण नष्ट करना। अहित करना। ऐसा नष्ट करना कि फिर पूर्व स्थिति को न पहुँचे। बुराई या अहित करना।—**जमना** (**जमाना**)—स्थिति का दृढ़ या स्थायी होना (करना)।—**पकड़ना**—जमना, दृढ़ होना।—**भरत**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अंगिरस गोत्रीय एक ब्राह्मण जो जड़वत् रहते थे।

जड़ता—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जड़ का भाव] अचेतनता। मूर्खता। स्तब्धता, चेष्टा न करने का भाव। एक संचारी भाव (काव्य)। "जड़ता विषय तमतोम दहिबो करै"—रत्ना०।

जड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० जटन] एक वस्तु को दूसरी वस्तु मे बैठाना। पच्ची करना, ठोंक कर बैठाना, जैसे नाल जड़ना। प्रहार करना। चुगली खाना। [जड़ाऊ (वि०)]

जड़पेड़—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) मूल-सहित वृक्ष, सम्पूर्ण या समूचा पेड़। **मुहा०—(मूल) से उखाड़ना**-समूल नष्ट करना।

जड़वट—(संज्ञा, पु०, दे०) बरगद का ठूँठ।

जड़वाना—(क्रि० स०) [हि० जड़ना का प्रेरणा० रूप] जड़ने का काम दूसरे से कराना। [जड़ाना (दे०)] [**जड़वाई** (संज्ञा, स्त्री०)]

जड़हन—(संज्ञा, पु०) [हि० जड़+हनन=गाड़ना] वह धान जिसके पौधे एक ठौर से उखाड़ कर दूसरे ठौर पर बैठाये जाते हैं, शालि।

जड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जड़ना] जड़ने का काम या भाव या मजदूरी।

जड़ाऊ—(वि०) [हि० जड़ना] जिस पर नग या रत्न आदि जड़े हों, जड़ुआ (ग्रा०)।

जड़ाना—(क्रि० स०, दे०) जड़वाना। ‡(क्रि० अ०, दे०) [हि० जाड़ा] सरदी या शीत लगना, ठंढ खाना।

जड़ाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जड़ना] जड़ने का काम या भाव। जड़ाऊ काम। (संज्ञा, पु०, सं०) अचेतन, स्वयं हिलने-डोलने या कोई चेष्टा कर सकने का अभाव। अज्ञानता, मूर्खता।

जड़ावर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जाड़ा] जाड़े के गरम कपड़े।

जड़ित*—(वि०, दे०) [सं० जटित] जड़ा हुआ। नग-जटित।

जड़िया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जड़ना] नगों के जड़ने का काम करने वाला, कुंदन-साज।

जड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० जड़] एक वनस्पति (औषधि), बिरई।—**बूटी**-(संज्ञा, स्त्री०) जंगली औषधि। (क्रि० स०) जड़ना। (क्रि० वि०) जड़ी हुई।

जड़ीकृत, जड़ीभूत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्तम्भित, चकित।

जड़ीला—(संज्ञा, पु०) जड़ खाया जाने वाला पौधा, मूलकंद।

जड़ोन्माद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पागलपन, उन्मत्तता। [हिबफेनिया]

जड़ुआ†—(वि०, दे०) जड़ाऊ।

जड़ैया†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जाड़ा+ऐया प्रत्य०] जूड़ी का बुखार। (संज्ञा, पु०, दे०) [जड़ना+ऐया] जड़ने वाला, जड़िया।

जत†*—(वि०, दे०) [सं० यत्] जितना, जिस मात्रा का। [**जेता, जित्ता, जेतो** (ब्र०)]

जतन, जत्न*†—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रयास, यत्न। "कोटि जतन कोऊ करै"—वृं०।

जतनी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यत्न] यत्न करने वाला। चतुर, चालाक।

जतलाना—(क्रि० स०, दे०) जताना।

जताना—(क्रि० स०, दे०) [हि० जानना] ज्ञात कराना, बतलाना। पहले से सूचना देना, आगाह करना। "...देत हम सबहिं जताये"—रत्ना०।

जती—(संज्ञा, पु०, दे०) यती। "जोगी जतीन की छूटी तटी"—केशव०।

जतु—(संज्ञा, पु०, सं०) वृक्ष का गोंद। लाख, लाह। शिलाजीत।—**गृह**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) लाह या लाख का बना घर। घास-फूस का बना घर, कुटी। "राति माहिं जतु-गृह जरवायो दुरजोधन अस पापी"—[महा०]।

जतुक—(संज्ञा, पु०, सं०) हींग। लाह, लाख। लच्छना।

जतुका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पहाड़ी नमक। लता। चिमगादड़।

जतेक†*—(क्रि० वि०, दे०) [हि० जितना+एक] जितना, जिस मात्रा का। [**जेतिक, जिते, जितेक, जेते** (ब्र०)]

जत्था—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यूथ] बहुत से जीवों का समूह, झुंड, गिरोह, वर्ग, फिरका।

जथा*—(क्रि० वि०, दे०) यथा। (यौ०) जथा-तथा, जथाजोग। (संज्ञा, पु०, दे०) जत्था। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ग्रथ] पूँजी।

जद—(क्रि० वि०, दे०) [सं० यदा] जब। जब कभी। **जदा**-(अव्य०, दे०) [सं० यदि] जब, जब कभी। [जदि (दे०)] यदि, अगर।

जदपि—(क्रि० वि०, दे०,) यद्यपि।

जदवार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) निर्विषी, नीच।

जदुनाथ—(संज्ञा, पु०, दे०) यदुनाथ, यदुपति, जदुपति, कृष्ण।

जदुनायक—(संज्ञा, पु०, दे०) यदुनायक, कृष्ण।

जदुपति—(संज्ञा, पु०, दे०) यदुपति, कृष्ण ।
जदुबंसी—(संज्ञा, पु०, दे०) यदुवंशी, यादव ।
जदुराय, जदुराई—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) यदुराज, श्रीकृष्ण ।
जदुवर, जदुवीर—(संज्ञा, पु०, दे०) यदुवर, यदुवीर, श्रीकृष्ण ।
जद्द*—(वि०, दे०) [अ० ज्यादा] अधिक, ज्यादा । (वि०) प्रचंड, प्रबल ।
जद्दपि—(क्रि० वि०, दे०) यद्यपि, जद्यपि ।
जद्दबद्द—(संज्ञा, पु०, दे०) अकथनीय बात । दुर्वचन, बुरा-भला ।
जनंगम—(संज्ञा, पु०) चांडाल ।
जन—(संज्ञा, पु०, दे०) लोक, लोग, प्रजा । गंवार । अनुयायी । दास । मानव-समूह । मजदूर । सात लोकों में से पाँचवाँ लोक । **—अभियोक्ता**—(संज्ञा, पु०, सं०) पुलिस का न्यायाधिकारी । सरकारी अभियोक्ता । [पब्लिक प्रासीक्यूटर]
जनक—(संज्ञा, पु०, सं०) जन्मदाता । उत्पादक, पिता । मिथिला के प्राचीन राजवंश की उपाधि । सीता के पिता ।
जनकनंदिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीता जी । जनक-सुता, जनकात्मजा, जनकजा ।
जनकपुर—(संज्ञा, पु०, सं०) मिथिला की प्राचीन राजधानी ।
जनकल्याण—(संज्ञा, पु०, सं०) लोककल्याण । [पब्लिक वेलफेयर]
जनकल्याण-केंद्र—(संज्ञा, पु०) जनता के हित खोले गये केंद्र । [वेलफेयर सेंटर्स]
जनकार्य-कलाप—(संज्ञा, पु०) जनता का कार्य-व्यापार । [पब्लिक ऐक्टिविटी]
जनकार्य-मंत्री—(संज्ञा, पु०) लोककार्य-विभाग का सचिव । [पब्लिक वर्क्स मिनिस्टर]
जनकौर, जनकौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जनक+पुर] जनकपुर । जनक-राजा के कुटुम्बी, या भाई-बन्धु ।
जनक्रांति—(संज्ञा, स्त्री०) सामूहिक विप्लव । [मास रिवोल्यूशन]
ज़नख़ा—(वि०) [फ़ा० जनक] स्त्रियों के से हाव-भाव वाला, हिंजड़ा, नपुंसक ।
जनगणना—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) जनसंख्या का हिसाब लगाना । [सेंसस आफ पापुलेशन]
जनचैतन्य—(संज्ञा, पु०) जनता की चेतनता । [मास कांशनेस]
जन-जागृति—(संज्ञा, स्त्री०) जन-जागरण । [मास अवेकनिंग]
जनतंत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) लोकतंत्र, प्रजातंत्र । [डिमाक्रेसी]
जनतंत्रात्मक—(वि०, सं०) प्रजातंत्रीय, लोकतंत्र का ।
जनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जनन का भाव । जन-समूह, सर्वसाधारण ।
जनन—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्पत्ति, उद्भव, जन्म, आविर्भाव । मन्त्रों के दस संस्कारों में पहला (तंत्र०), यज्ञ आदि में दीक्षित व्यक्ति का एक संस्कार । वंश, कुल । पिता । परमेश्वर ।
जनना—(क्रि० स०, दे०) [सं० जनन] जन्म देना, पैदा करना, ब्याना । [**जनवाना, जनाना** (प्रेरणा० रूप)]
जननि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जननी, माता । "जगत जननि अतुलित छबि भारी"—तुल० ।
जननी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संतति उत्पन्न करने वाली नारी, माता । कुटकी । अलता । दया, कृपा । जनी नामक गंधद्रव्य । " जननी तू जननी भई, बिधि सों कहा बसाय"—[रामा०] ।
जननेंद्रिय—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) भग, योनि, गुह्येन्द्रिय । प्रजनन-कार्य से सम्बन्धित इंद्रिय ।
जनपद, जानपद—(संज्ञा, पु०, सं०) आबाद देश, बस्ती ।
जनप्रवाद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) निन्दा, लोक-निन्दा, लोकापवाद ।
जनप्रिय—(वि०, यौ०, सं०) सर्वप्रिय ।
जनम—(संज्ञा, पु०, दे०) जन्म । **—घूँटी**-(संज्ञा स्त्री०, यौ०, दे०) [हिं० जनम+घूँटी] बच्चों को, जनम-काल में दी जाने वाली घूँटी । **मुहा०— (किसी बात का) में पड़ना**—जन्म से ही किस बात की आदत पड़ना ।
जनमत—(संज्ञा, पु०) लोकमत [पब्लिक ओपिनियन]
जनमना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० जन्म] पैदा होना, उत्पन्न होना, जन्म लेना, जन्मना ।
जन-मनोभाव—(संज्ञा, पु०) जन-प्रकृति, लोक-प्रकृति । [मास मेंटेलिटी]
जन-मनोविज्ञान—(संज्ञा, पु०) जन-समूह की मानसिक वृत्ति । [मास सॉइकॉलजी]

जनमसँगाती, जनमसँघाती*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० जन्म + सँघाती] वह जिसका साथ जन्म से ही हो या जन्म भर रहे।

जनमाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० जनम] जनमने का काम कराना, प्रसव कराना।

जनमेजय—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु। राजा परीक्षित के पुत्र जिन्होंने सर्प-यज्ञ किया था।

जनयिता—(संज्ञा, पु०) [सं० जनयितृ] पिता।

जनयित्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) माता।

जनरक्षा—(संज्ञा, स्त्री०) जनता की सुरक्षा। [पब्लिक डिफेंस]

जनरव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किंवदन्ती, अफवाह। लोक-निन्दा, बदनामी। कोलाहल, शोर, हल्ला।

जनराज्य—लोकतंत्रात्मक या जनसत्तात्मक राज्य। [डिमाक्रेटिक स्टेट]

जनलोक—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊपर से सात लोकों मे से एक लोक।

जनवाई—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) जनाई।

जनवाद—(संज्ञा, पु०, सं०) किंवदन्ती, जनश्रुति, अफवाह। समाचार, खबर।

जनवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० जनना का प्रेरणा० रूप] प्रसव कराना, लड़का पैदा कराना। (क्रि० स०)] हिं० जानना] समाचार दिलवाना, सूचित कराना, जनाना।

जनवास, जनवासा—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० जन + वास] बारात या सर्वसाधारण के ठहरने वा टिकने का स्थान। सभा, समाज।

जनश्रुति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) किंवदन्ती, अफवाह।

जनसंख्या—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) बसने वाले मनुष्यों की गिनती या तादाद, आबादी।

जनसंविधान—प्रजातंत्र देश का विधान, नियम। [डिमाक्रेटिक कांस्टिट्यूशन]

जनस्थान—(संज्ञा, पु०, सं०) दण्डकारण्य के समीप खरदूषण का स्थान।

जनहरण—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दण्डक वृत्त।

जनहाई—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रति मनुष्य, हर एक व्यक्ति। जनासी (ग्रा०)।

जनांत—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रदेश, जनपद। यमराज। (वि०) मनुष्यों को समाप्त करने वाला।

जनांतिक—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिनेता का कुछ गुप्त बात कान में निकट जाकर कहना।

जना—(संज्ञा, पु०, दे०) जन, मनुष्य, लोग। (क्रि० स०) पैदा किया, उत्पन्न किया।

जनाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जनना] जनाने वाली दाई। जनाने की मजदूरी। (क्रि० स०) [हिं० जनाना] जताना। "सो जानै जेहि देहु जनाई"—[रामा०]।

जनाउर—(संज्ञा, पु०) भेड़िया। जड़ाउर (ग्रा०)।

जनाऊ*—(संज्ञा, पु०, दे०) जनाब।

जनाकीर्ण—(वि०, सं०) आदमियों से भरा हुआ, घनी आबादीवाला।

जनाचार—(संज्ञा, पु०, सं०) सामाजिक आचार-व्यवहार, नियम, लोकाचार।

जनाजा—(संज्ञा, पु०, अ०) शव, लाश। अरथी। लाश रख कर गाड़ने या जलाने की संदूक।

जनातिग—(संज्ञा, पु०, सं०) अतिमानुष। मनुष्य की शक्ति से बाहर।

जनाधिनाथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा। विष्णु।

जनाधिप—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु। नरेश, राजा।

ज़नानखाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) स्त्रियों के रहने का स्थान, अंतःपुर, निशान्त।

जनाना—(क्रि० स०, दे०) जताना। (क्रि० स०) [हिं० जनना] उत्पन्न (प्रसव) कराना।

ज़नाना—(वि०, अ०) स्त्रियों का, स्त्री-सम्बन्धी। हिजड़ा। निर्बल, डरपोक। (संज्ञा, पु०, दे०) जनखा, मेहरा। अन्तःपुर, जनान-खाना। पत्नी, जोरू। (संज्ञा, पु०) जनानापन। [**जनानी** (स्त्री०)] "द्वारे द्वारपालक हैं साहब जनाने हैं"।

जनान्तिक—(संज्ञा, यौ०, सं०) अप्रकाश, गोपन। छिपा सम्वाद, नाटक में आपस में बात करने की एक मुद्रा। कर-संकेत से एक व्यक्ति को बुलाकर धीरे-धीरे बात करना।

जनान्दोलन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सामूहिक उथलपुथल [मास मूवमेंट]

जनाब—(संज्ञा, पु०, अ०) आदर-सूचक शब्द। महाशय, श्रीमान।

जनार्दन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विष्णु।

जनाव†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० जनाना] जनाने की क्रिया या भाव। सूचना, इत्तला। "भीतर करहु जनाव"—तुल०।

जनावर—(वि०, दे०) पशु, जानवर। मूर्ख। "कहि हरिदास पिंजरा के जनावर लौं"।

जनाशन—(संज्ञा, पु०, सं०) मनुष्य-भक्षी पशु, भेड़िया।

जनाश्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) सराय, धर्मशाला।

जनाश्रय—(संज्ञा, पु०) धर्मशाला, सराय। मकान, मंडप।

जनि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उत्पत्ति, जन्म, पैदाइश। नारी। स्त्री। माता। एक गंध द्रव्य। पत्नी। जन्म-भूमि। *†(अव्य०, ब्र०) मत, नहीं। "कह प्रभु हँसि जनि हृदय डराहू"—तुल०।

जनिक—(वि०, सं०) पैदा करने वाला, जन्म देने वाला, उत्पादक।

जनिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लोकोक्ति, पहेली। दो अर्थ वाले शब्द।

जनित—(वि०, सं०) उत्पन्न, जन्मा हुआ। "मोह-जनित ससय दुख हरना"—तुल०।

जनिता—(वि०, सं०) पिता, बाप।

जनित्रि, जनित्री—(वि०, सं०) माता, माँ।

जनियाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० जान] प्रियतमा, प्रेयसी, प्यारी। जानी (ग्रा०)।

जनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जन] दासी, अनु-चरी। माता। पुत्री। एक गंध द्रव्य। (वि०, स्त्री०) उत्पन्न या पैदा की हुई।

जनु—(क्रि० वि०, दे०)[हिं० जानना] मानो, गोया। [**मनो, मनु** (ब्र०)] (उत्प्रेक्षा वाचक) "सोई जनु दामिनी दमंका"—तुल०।

जनेऊ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यज्ञ] यज्ञोपवीत-संस्कार। यज्ञोपवीत। [जनेव (दे०)] "दीन्ह जनेउ मुदित पितु माता"—तुल०।

जनेत—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जन+एत प्रत्य०] बारात, वर-यात्रा।

जनैया—(वि०, दे०) [हिं० जानना+ऐया प्रत्य०] जानने वाला, जानकार।

जनोदाहरण—(वि०, पु०, यौ०, सं०) यश, गौरव, कीर्ति, मान।

जनोपद्रव—(संज्ञा, पु०, सं०) सार्वजनिक बाधा, लोक कंटक। [पब्लिक न्यूसेंस]

जनौं‡—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० जानना] जानो, जनु, मानो, गोया। "जनौं घनश्याम रैन आये मोरे भौन माहिं"।

जन्नत—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) स्वर्ग, बैकुंठ।

जन्म—(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भ से निकल कर जीवन धारण करना, उत्पत्ति, पैदाइश। आयु, जीवन-काल, जैसे—जन्म भर। **—काल**—(संज्ञा, पु०, वि०, सं०) उत्पत्ति का समय। **—कुण्डली**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) जन्म-समय में ग्रह-स्थिति का चक्र (फलित ज्यो०)। **—तिथि**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) जन्म का दिन, जयंती। **—दिन**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जन्मदिवस, उत्पत्ति का दिन। वर्ष गाँठ। **—पत्र**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जन्म-पत्र, (स्त्री०) जन्म-कुण्डली। **—भूमि**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो। "जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि-गरीयसी"। "जन्म-भूमि मम पुरी सुहावनि"—तुल०। **—सिद्ध अधिकार**—जन्मजात अधिकार। [बर्थराइट] **—स्थान**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जन्म-भूमि। राम-जन्म-स्थल (अयो०)। **मुहा०—लेना**—उत्पन्न या पैदा होना, अस्तित्व में आना। आविर्भाव। जीवन, जिन्दगी। **—हारना**—व्यर्थ जन्म लेना। दूसरे का दास होकर रहना।

जन्मना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० जन्म+ना प्रत्य०] उत्पन्न होना, अस्तित्व में आना।

जन्मांतर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दूसरा जन्म। "जनमांतरे भवति कुष्टी"—[भाव प्र०]।

जन्मांध—(वि०, यौ०) [सं० जन्म+अंध] जन्म से अन्धा, आजन्म नेत्र-हीन।

जन्माना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० जन्मना] उत्पन्न (प्रसव) कराना, जन्म देना।

जन्मानुपात—(संज्ञा, पु०, सं०) बच्चों की जन्म-संख्या का औसत।

जन्माष्टमी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) भादों की कृष्णाष्टमी, कृष्ण की जन्म-तिथि।

जन्मेजय—(संज्ञा, पु०, सं०) जनमेजय।

जन्मोत्सव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी महा-पुरुष के जन्म का उत्सव तथा पूजन।

जन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) साधारण मनुष्य, जन-साधारण। किंवदन्ती। अफवाह। राष्ट्र। किसी एक देश के वासी। लड़ाई, युद्ध। पुत्र, बेटा। पिता। जन्म। [**जन्या (स्त्री०)**] (वि०) जन-सम्बन्धी। किसी

जाति, देश या राष्ट्र से सम्बन्ध रखने वाला, राष्ट्रीय, जातीय। जो उत्पन्न हुआ हो, उद्भूत।

जन्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) माता की संगिनी। बधू की सखी।

जन्यु—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा। अग्नि। प्राणी। जन्म। सप्त ऋषियों में से एक।

जप—(सज्ञा, पु०, सं०) किसी मन्त्र या वाक्य का बार-बार धीरे-धीरे पाठ करना। पूजा आदि मे मंत्र का सख्या-पूर्वक पाठ।—**तप**—(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) संध्या-पूजा, जप और पाठ आदि, पूजा-पाठ। "जपतप कछु न होय यहि काला" —तुल०।

जपजी—(संज्ञा, पु०) सिखों का धार्मिक ग्रन्थ-विशेष।

जपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० जपन] किसी वाक्य या शब्द को धीरे-धीरे देर तक कहना या दोहराना। संध्या, यज्ञ या पूजा आदि के समय संख्यानुसार बार-बार मंत्रोच्चारण करना। खा जाना। ले लेना।

जपनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जपना] माला। गोमुखी। गुप्ती।

जपनीय—(वि०, सं०) जप करने योग्य।

जपमाला—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) जप करने की माला। "जपमाला छापा तिलक"—बिहारी।

जपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जवा, अड़हुल। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जापक] जपने वाला।

जपीतपी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पूजक, अर्चक, जपतप-परायण, तपस्वी।

ज़फा—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सख्ती, जुलम।

जफील—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० जफीर] सीटी का शब्द, सीटी।

जब—(क्रि० वि०, दे०) [सं० यावत्] जिस समय, जिस वक्त। **मुहा०**—**जब**—जब कभी, जिस-जिस समय।—**तब**—कभी-कभी।—**देखो तब**—सदा, सर्वदा।

जबड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जृंभ] मुँह में दोनों ओर ऊपर-नीचे की वे हड्डियाँ जिनमें दाढ़ें जमी रहती हैं।

जबर—(वि०, दे०) [फ़ा० जबर] बलवान, मजबूत, दृढ़। अधिक।

जबरई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जबर] अन्याय-युक्त। अत्याचार, सख्ती, ज्यादती।

ज़बरदस्त—(वि०, फ़ा०) बलवान, मजबूत, दृढ़।

जबरदस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अत्याचार, सीना-जोरी, जियादती। (क्रि० वि०) बलात्।

ज़बरन—(क्रि० वि०) [फ़ा० जब्रन] बलात, जबर-दस्ती, बलपूर्वक, हठात्।

जबरा—(वि०, दे०) [हि० जबर] बलवान, बली। **लो०**—"जबरा मारै रोवै न देय"। (संज्ञा, पु०) [जेबरा] गदहे से कुछ बड़ा एक सुन्दर जंगली जानवर।

ज़बह—(संज्ञा, पु०, अ०) गला काट कर प्राण लेने की क्रिया। हिंसा।

जबहा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जीव] जीवट, साहस।

ज़बान—संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जीभ, जिह्वा। बात, बोल। प्रतिज्ञा, वादा, कौल। भाषा, बोली। **मादरी**—,(यौ०) मातृभाषा।—**दराज**–(वि०, यौ०, फ़ा०) धृष्टतापूर्वक अनुचित बातें करने वाला।—**दराजी**–(सज्ञा, स्त्री०) अशिष्टतापूर्ण बातें कहना। **मुहा०**—**खींचना**–धृष्टतापूर्ण बातें करने के लिए कठोर दण्ड देना।—**खुलना**–बोलने मे लिहाज न रहना, धृष्ट हो जाना।—**पकड़ना**–बोलने न देना, कहने से रोकना।—**बंद रखना**,—**पर ताला लगाना**–कुत्सित-व्यर्थ न बोलना।—**चलना (चलाना)**–बढ़-बढ़ कर बोलना, कुत्सित बोलना, गाली बकना।—**पर आना**–मुँह से निकलना।—**बन्द होना (करना)**–बोल न सकना, बोलने न देना।—**पर लगाम न होना**–सोच-समझ कर बोलने के अयोग्य होना, बिना सोचे मनमाना बकना।—**दो होना**–झूठ-सच सब बोलना।—**हिलाना**–मुँह से शब्द निकालना।—**का ठीक न होना**–ठीक, विश्वास-योग्य वक्ता न होना। **दबी**—**से बोलना (कहना)**–अस्पष्ट रूप से बोलना, भय से साफ-साफ न कहना। अधीनता-सूचक स्वर मे बोलना।—**साफ (ठीक, दुरुस्त) न होना**–शुद्ध और स्पष्ट न बोल सकना। **बर—होना**–कंठस्थ, उपस्थित होना। **लम्बी—रखना,—गिरना**–खाने का लालची होना। **बे—**, बहुत सीधा। बेउज्र।—**को अपने काबू में रखना**–सोच कर बोलना, कुत्सित न बकना। कुपथ्य न खाना।—**खोलना**–कुछ (बुरा-भला) कहना।

जबानी—(वि०) [हि० जबान] जो केवल जबान से कहा जाय, किया न जाय। मौखिक। जो लिखित न हो, मुँह से कहा हुआ। स्मरण, कंठस्थ।

जबाला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जबाल ऋषि की माता, जो एक दासी थी।

जबून—(वि०, तु०) बुरा, खराब।

जब्त—(संज्ञा, पु०, अ०) किसी अपराध में राज्य द्वारा हरण किया हुआ, सरकार द्वारा छीना या अपनाया हुआ। [**जब्ती** (संज्ञा, स्त्री०)]

जब्र—(संज्ञा, पु०, अ०) ज्यादती, सख्ती। [**जब्रन** (क्रि० वि०, अ०)]

जभाँना—(क्रि० अ०, दे०) जमुहाना, निद्रालु होना। [**जभाँई, जम्हाई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

जभी—(क्रि० वि०) [हिं० जब+ही] जिस किसी समय।

जम—(संज्ञा, पु०, दे०) यमराज, जमराज।

जमकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० जमना] जम जाना, बैठना। सख्त होना। [**जमकाना, जमकवाना** (प्रेरणा० रूप)]

जमकात, जमकातर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यम+कातर हिं०] पानी का भँवर। (संज्ञा, स्त्री०, पु०) [सं० यम+कर्त्तरी] यम का छुरा या खाड़ा, खाँड़।

जमघंट—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) यमघंट।

जमघट, जमघटा, जमघट्ट—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० जमना+घट्ट] मनुष्यों की भीड़, ठट्ठ, जमावड़ा, जमाव।

जमज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यमज] एक साथ जन्मे बच्चों का जोड़ा, जुड़वाँ।

जमजम—(अव्य०, दे०) सदा, निरंतर। ठहर-ठहर या रह-रह कर।

जमडाढ़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० यम+डाढ़ हिं०] कटारी जैसा एक हथियार।

जमदग्नि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन ऋषि, परशुराम के पिता (अ०, वा०, संज्ञा) जामदग्नि।

जमदिया, जमदीया—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० यमदीपक] यम-दीपक, कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को जो दीप यम के नाम से घर के बाहर जलाया जाता है।

जमदुतीया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० यमद्वितीया] यमद्वितीया। [भैया दूज (दे०)]

जमदूत—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० यमदूत] यमदूत, मृत्यु के दूत।

जमधर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यम+धर] कटारी सा एक हथियार, तलवार। "जम धर यम ले जायगा, पड़ा रहेगा म्यान"—कबीर।

जमन*—(संज्ञा, पु०, दे०) यमन।

जमना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० यमन] तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना, जैसे बरफ जमना। दृढ़तापूर्वक बैठना, अच्छी तरह स्थित या स्थिर होना। एकत्र या इकट्ठा होना। हाथ से होने वाले काम में पूरा-पूरा अभ्यास होना। बहुत से आदमियों के सामने होने वाले किसी काम का उत्तमता से होना, जैसे गाना जमना। किसी व्यवस्था या काम का अच्छी तरह चलने के योग्य हो जाना, जैसे दूकान जमना। पैठना, बैठना। प्रभावी होना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० जन्म+ना प्रत्य०] उगना, उपजना, उत्पन्न होना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) यमुना।

जमनिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० यवनिका] परदा। "हृदय जमनिका बहु विधि लागी"—तुल०।

जमनोत्तरी—(संज्ञा, स्त्री०) हिमालय का वह शिखर जहाँ से यमुना निकली है।

जमवट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जमना] काष्ठ-चक्र जिस पर पक्के कुएँ की जोड़ाई की जाती है।

जमशेद—(संज्ञा, पु०) ईरान का प्राचीन सम्राट, जिसके पास संसार में भविष्य की घटनाओं को दिखाने वाला एक प्याला था।

जमा—(वि०, दे०) संग्रह किया हुआ, एकत्र, इकट्ठा, सब मिल कर। जो अमानत के तौर पर या किसी खाते में रखा गया हो। (संज्ञा, स्त्री०, अ०) मूलधन, पूंजी। धन, रुपया-पैसा। भूमिकर, मालगुजारी, लगान। जोड़ (गणि०)। "घर में जमा रहै तो खातिर जमा रहै"—बेनी०।—**खर्च**—(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० जमा+खर्च] आय और व्यय।—**दार**—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सिपाहियों या पहरेदारों का प्रधान। [**जमादारी** (संज्ञा)] [**जमादारिन** (स्त्री०)]—**बंदी**—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) असामियों के लगान की रकमों की बही (पट०)।—**मार**—(वि०, दे०, यौ०) [हिं० जमा+मारना] दूसरों का धन दबा रखने या लेने वाला।

जमाई—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जमातृ] दामाद, जँवाई (ग्रा०)। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० जमना] जमावट।

जमात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० जमाअत] मनुष्यों का समूह। कक्षा, श्रेणी, दरजा।

जमानत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) वह जिम्मेदारी जो जबानी, कोई कागज लिख या कुछ रुपया जमा कर ली जाये। [जामिनी (दे०)]

जमाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० जमना का प्रेरणा० रूप] जमने में सहायक होना, उगाना। स्थिर करना। [**जमवाना** (प्रेरणा० रूप)] (संज्ञा, पु०, फ़ा०) समय, काल, वक्त। बहुत अधिक समय, मुद्दत। प्रताप या सौभाग्य का समय। दुनिया, संसार, जगत्। "जमाना नाम है मेरा कि मैं सब को दिखा दूँगा"।—**साज**-(वि०, फ़ा०) जो वक्त या लोगों का रंग-ढंग देख-कर व्यवहार करता हो।—**साजी**-(संज्ञा, स्त्री०) दुनियादारी।

जमालगोटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जयपाल] एक पौधे का रेचक बीज, जयपाल, दंतीफल।

जमाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जमाना] जमने या जमाने का भाव। समूह, झुंड।

जमावट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जमाना] जमने का भाव।

जमावड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जमना=एकत्र होना] बहुत से लोगों का समूह, भीड़।

ज़मीं, जमीन—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पृथ्वी (ग्रह), भूमि। [धरती (दे०)] कपड़े आदि की वह सतह जिस पर बेल-बूटे आदि बने हों। वह सामग्री जिसका व्यवहार किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने में आधार-रूप से किया जाय। डौल। भूमिका। आयोजन।—**कंद**-(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० जमीन+**कंद**] सूरन, ओल (प्रान्ती०)। —**दार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नम्बरदार। जमीन का मालिक, भूमि का स्वामी। [**जमींदारिन** (स्त्री०)]—**दारी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जमींदार की जमीन। जमींदार का पद। **मुहा०**— (**पैरों तले से**) **खिसकना**-आश्चर्य या भय लगना।—**आसमान एक करना,—आसमान के कुलाबे मिलाना**-बहुत बड़े-बड़े उपाय करना।—**आसमान का फ़रक़**-बहुत अधिक अंतर।—**देखना** (**दिखाना**)-गिरना (गिराना, पटकना) नीचा देखना (दिखाना)।—**पर आना**-गिर जाना। **अभी—से उठना**-अल्पवयस्क होना।

जमुआ—(संज्ञा, स्त्री०) बच्चों का एक रोग-विशेष।

जमुकना—(क्रि० अ०, दे०) (?) पास-पास होना, सटना। [जमकना (दे०)] चिपकना। दृढ़ होना।

जमुना—(संज्ञा, स्त्री०) उत्तर भारत की एक महत्त्व-पूर्ण नदी, जो प्रयाग में गंगा से मिलती है। यमुना।

जमुनियाँ—(वि०) जामुन के रंग की तरह। काला।

जमुरी—(संज्ञा, स्त्री०) नालबंदों का एक औजार-विशेष।

जमूरक, जमूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० जंबूरक] एक छोटी तोप।

ज़मुर्रद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पन्ना (रत्न)।

जमुहाना—(क्रि० अ०, दे०) जँभाना। [जम्हाना (दे०)] [**जमुहाई** (संज्ञा, स्त्री०)]

जमोगना—(क्रि० स०, दे०) [फ़ा० जमा+योग] हिसाब-किताब की जाँच करना। स्वयं उत्तरदायित्व से मुक्त होने के लिए दूसरे को भार सौंपना। सरेखना। तसदीक करना। बात की जाँच करना।

जमोगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जमोगना] जमोगने अर्थात् स्वीकार करने की क्रिया।

जमौआ—(वि०) जमाया हुआ।

जम्हाई—(संज्ञा, स्त्री०) ऊँघ। आलस्य-युक्त साँस खींचकर बाहर निकालना।

जम्हाना—(अ० क्रि०) जम्हाई लेना।

जयँ—(अव्य, दे०) यदि। "विमति बुभिअ जायँ न जाएब पास"—विद्या०।

जयंत—(वि०, सं०) बहुरूपिया। (संज्ञा, पु०, सं०) रुद्र। इन्द्र के पुत्र, उपेंद्र का नाम। स्कंद। कार्तिकेय। जयंता। " नारद देखा विकल जयंता" —[रामा०]।

जयंतिका-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हल्दी। [जयंती (दे०)]

जयंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विजय करने वाली, विजयिनी। ध्वजा, पताका। हलदी। दुर्गा। पार्वती। किसी महात्मा की जन्मतिथि पर उत्सव। वर्षगाँठ का उत्सव। एक बड़ा पेड़, जैत या जैता। बैजंती का पौधा। जौ के छोटे पौधे, जिन्हें विजया दशमी के दिन ब्राह्मण यजमानों को देते हैं। [जई (दे०)] **रजत**—,(दे०) रजक जयंती। [सिलवर जुबली] **स्वर्ण**—, (दे०) स्वर्ण जयंती। [गोल्डेन जुबली] **हीरक**—,(दे०) हीरक जयंती। [हीरक जयंती]

जय—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) युद्ध, विवाद आदि में विपक्षियों का पराभव। जीत।—**करी**-(संज्ञा, स्त्री० सं०) चौपाई छंद। (वि०) विजय कराने वाली।

—कार–विजय की घोषणा करना। सम्मानार्थं उद्‌घोष करना।—जीव*–(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० जाय+जी] एक प्रकार का अभिवादन या प्रणाम जिसका अर्थ है जय हो और जिओ। "कपि जयजीव सीस तिन नावा"—[रामा०]।—जयति–जय हो (आशीष)। विष्णु के एक पार्षद महाभारत का पूर्व नाम। जयंती। जैत का पेड़। लाभ। अयन।—काव्य (गीत)–(यौ०) वीर-विजय-काव्य।—पत्र–(संज्ञा, पु०, सं०) वह पत्र जो पराजित पुरुष अपने पराजय के प्रमाण में विजयी को लिख देता है, विजय-पत्र।—पाल–(संज्ञा, पु०, सं०) जमालगोटा (औषध०)। विष्णु। राजा, भूपाल।—मंगल–(संज्ञा, पु०, सं०) राजा की सवारी का हाथी।—माल–(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जयमाला] विजयी को विजय पान पर पहनाने की माला। वह माला जो स्वयंवर के समय कन्या अपने वरे हुए पुरुष को पहनाती है। "पहिरावहु जयमाल सुहाई"। "ससिहि सभीत देत जयमाला"—[रामा०]।—स्तंभ–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विजय का स्मारक स्तंभ या धरहरा। [विजय-स्तंभ, जयखंभ (दे०)] मुहा०—मनाना–विजय की कामना करना। समृद्धि चाहना।

जयदेव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गीत-गोविंदकार, संस्कृत-कवि।

जयद्रथ—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंधु सौवीर का राजा जो दुर्योधन का बहनोई था।

जयन—(संज्ञा, पु०) जीतना, विजय। (वि०) विजयी।

जयना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० जयन्] जीतना, विजय प्राप्त करना।

जया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा। पार्वती। हरी दूब। अरणी या जैत का पेड़। हरीतकी। हरपताका, ध्वजा। गुड़हल का फूल। (वि०) जय दिलाने वाली, जयकारिणी।

जयामीड—(संज्ञा, पु०, सं०) काश्मीर का एक वीर राजा जिसका प्रादुर्भाव आठवीं शताब्दी में हुआ था।

जयावती—(संज्ञा, स्त्री०) कार्तिकेय की माता।

जयावहा—(संज्ञा, स्त्री०) भद्रदंती नामक पेड़।

जयष्णु—(वि०, सं०) हमेशा विजयी होने वाला।

जयी—(वि०) [सं० जयिन्] विजयी, जयशील।

जयोल्लास—(संज्ञा, पु०, सं०) विजय-प्राप्ति पर आनन्द या उल्लास। जीतने का हर्ष।

जर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जरा] वृद्धावस्था, बुढ़ापा। ज्वर। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) सोना, स्वर्ण। धन-दौलत, रुपया-पैसा।—गर–(यौ०) सोनार। [जरगरी (संज्ञा, स्त्री०)]

जरकटी—(संज्ञा, पु०, दे०) एक शिकारी पक्षी।

जरकस, जरकसी*—(वि०, दे०) [फ़ा० जरकश] जिस पर सोने के तार आदि लगे हों।

ज़रखेज़—(वि०, फ़ा०) उपजाऊ, उर्वरा भूमि।

जरठ—(वि०, सं०) कर्कश, कठिन। वृद्ध, बुड्ढा। जीर्ण, पुराना। "जाना जरठ जटायू एहा"—[रामा०]।

जरतार*—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० जर+तार हिं०] सोने या चाँदी आदि का तार, जरी।

ज़रतुश्त—(संज्ञा, पु०, दे०) जरदुश्त।

जरत्—(वि०, सं०) वृद्ध, पुराना, बुड्ढा। [जरती (स्त्री०)]

जरत्कारु—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि।

जरद—(वि०, दे०) [फ़ा० जर्द] पीला, पीत। [जरदी (संज्ञा, स्त्री०)]

जरदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चावलों का एक व्यंजन। पान मे खाने को सुगंधित सुरती। पीले रंग का घोड़ा।

जरदालू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) खूबानी (मेवा)।

जरदी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पीलाई, पीलापन, अंडे के भीतर का पीला चेप।

जरदुश्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) फारस देश। पारसी धर्म का प्रतिष्ठाता, आचार्य्य।

जरदोज—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जरदोजी का काम करने वाला।

जरदोजी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कपड़ों पर सलमें-सितारों आदि की दस्तकारी।

जरन‡*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जलन, जरनि।

जरना*—(क्रि० अ०, दे०) जलना। (क्रि० स०, दे०) जड़ना। जराना।

जरनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखिए "जरन"। "जिय की जरनि न जाय"—[रामा०]।

जरब—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आघात, चोट। मुहा० —देना–चुटैल करना, पीटना। गुणा करना (गणित)।

जरबक्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कलाबत्तू के बेल-बूटे का रेशमी वस्त्र।

जरबाफी—(वि०, फ़ा०) जिस पर जरबाफ का काम बना हो। (संज्ञा, स्त्री०) जरदोजी।

जरबीला*—(वि०) [फ़ा० जबर + ईला प्रत्य०] भड़कीला और सुन्दर ।

जरर—(संज्ञा, पु०, अ०) हानि, क्षति । आघात, चोट ।

जरांकुश—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यज्ञकुश, ज्वरांकुश] मूँज जैसी एक सुगंधित घास । ज्वर की दवा ।

जरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुढ़ापा ।—**ग्रस्त**–(वि०, यौ०, सं०) बुड्ढा, वृद्ध ।—**जीर्ण**–(वि०, सं०) बुढ़ाई से गलित ।

ज़रा—(वि०, क्रि० वि०) [अ० जर्रा] थोड़ा, कम, न्यून ।

जरातुर—(वि०, यौ०, सं०) जीर्ण, दुर्बल, बूढ़ा ।

जरायु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह झिल्ली जिसमे बँधा हुआ बच्चा उत्पन्न होता है । गर्भवेष्टन, गर्भाशय, आँवल (प्रान्ती०) ।—**ज**–(संज्ञा, पु०, सं०) वह प्राणी जो जरायु सहित उत्पन्न हो, पिंडज-भेद ।

जराव*†—(वि०, दे०) जड़ाऊ, जड़ाव ।

जरावस्था—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वृद्धावस्था, जीर्णावस्था, बुढ़ाई, बुढ़ापा ।

जरासंध—(संज्ञा, पु०) [सं० जरा=राक्षस + संध =जोड़] मगध देश का एक प्राचीन प्रसिद्ध राजा ।

जरिणी—(वि०, स्त्री०) बुढ़िया ।

जरित—(वि०, सं०) जर्जरित, बुड्ढा ।

जरिया*—संज्ञा, पु०, दे०) जड़िया ।

ज़रिया—(संज्ञा, पु०, अ०) सम्बन्ध, लगाव । द्वारा, हेतु, कारण, सबब ।

ज़री—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बादले से बुना ताश, कपड़ा । सोने के तारों आदि से बना हुआ काम ।

ज़रीब—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) भूमि नापने की जंजीर ।

जरीबाना—(संज्ञा, पु०, दे०) जुरमाना ।

ज़रूर—(क्रि० वि०, अ०) अवश्य, निःसंदेह । [जरूर (दे०)]

ज़रूरत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आवश्यकता । प्रयोजन ।

ज़रूरी—(वि०, फ़ा०) जिसके बिना काम न चले, प्रयोजनीय, आवश्यक ।

जरौट†*—(वि०, दे०) [हि० जड़ना] जड़ाऊ ।

ज़र्कबर्क—(वि०, यौ०, फ़ा०) तड़क-भड़क वाला । भड़कीला, चमकीला । उज्ज्वल, स्वच्छ ।

जर्जर—(वि०, सं०) जीर्ण, पुराना होने के कारण बेकाम । टूटा-फूटा, खंडित । वृद्ध, बूढ़ा ।

जर्जरित—(वि०, सं०) जो जीर्ण, कमजोर, अशक्त हो गया हो ।

जर्जरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीर्ण, बेकाम । "देहे जर्जरीभूते रोगग्रस्ते कलेवरे"—[स्फु०] ।

जर्जरीक—(वि०, सं०) क्षीण, छेदयुक्त ।

जर्ण—(वि०, सं०) जीर्ण, क्षीण, अशक्त ।

जर्द—(वि०, फ़ा०) पीला, पीत । [ज़र्दी (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०)] पीलापन ।

ज़र्रा—(संज्ञा, पु०, अ०) अणु । परमाणु । बहुत छोटा टुकड़ा या खंड, कण ।

जर्राह—(संज्ञा, पु०, अ०) फोड़ों आदि को चीरकर चिकित्सा करने वाला, शस्त्रचिकित्सक । [जर्राही (संज्ञा)]

जलंधर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राक्षस जिसकी स्त्री तुलसी अति पतिव्रता और सुन्दरी थी । भगवान ने इसे मारा और तुलसी को अपनी भक्ति दी । [जलोदर (संज्ञा, पु०, दे०)]

जल—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी । उशीर । खस । एक नक्षत्र ।—**अलि**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० जल + अलि] एक काला कीड़ा जो पानी पर तैरा करता है, पैरौवा, भौंतुका (प्रान्ती०) ।—**कर**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० जल + कर] जलाशयों या तालाबों में होने वाले पदार्थ, जैसे मछली, सिंघाड़ा आदि । उन पर महसुल या लगान । पानी को बनाने वाली वायु । [हाइड्रोजन] शहरों में लगने वाला नल के पानी का टैक्स । [वाटर टैक्स]—**क्रीड़ा**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह क्रीड़ा जो जलाशय मे की जाय, जल-विहार ।—**खावा**†–(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) जलपान । किलों के चारों ओर की खाँई ।—**घड़ी**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० जल + घड़ी] समय जानने का प्राचीन यंत्र, जिसमें नाँद में भरे जल के ऊपर एक महीन छेद की कटोरी पड़ी रहती थी जो घंटे भर में जल से भर कर डूबती थी । [जलघरिया (दे०)]—**चर**–(संज्ञा, पु०, सं०) पानी में रहने वाले जंतु, जैसे मछली आदि । [जलचरी, जलचारी (स्त्री०, सं०)] "जल चर थलचर नभचर नाना"—[रामा०] ।—**चादर**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० जल + चादर] जल का फैला हुआ पतला प्रवाह ।—**चिकित्सा**–ठंडे जल से रोग हटाने की विधि । [हाइड्रोपैथी]—**ज**–(वि०, सं०) जो जल में उत्पन्न हो । (संज्ञा, पु०, सं०) कमल । शंख । मोती । मछली । जलजंतु । "जलज नयन जलजानन जटा है सिर "—तुल० ।

—जात–(संज्ञा, पु०, वि०, दे०) जलज, कमल । "लखि जलजात लजात"—बिहारी ।—जीव–(संज्ञा, पु०, यौ०) जलजंतु, जल के प्राणी ।—डमरूमध्य–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दो बड़े समुद्रों को जोड़ने वाला समुद्र का पतला भाग (भूगोल) । [(विलो०) स्थलडमरूमध्य]—तरंग–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जल से भरे प्यालों को क्रम से रखकर बजाने का बाजा । पानी की लहरी ।—त्रास–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुत्ते, शृगालादि के काटने पर जल देखने से उत्पन्न भय, जलातंक ।—थंभ–(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) जल-स्तंभ, जलथंभन । "कछु जानत जलथंभ विधि, दुर्योधन लौं लाल"—बिहारी ।—द–(वि०, सं०) जल देने वाला, जल के पर्यायवाची शब्दों के आगे द लगाने से इसके पर्यायवाची शब्द बनते हैं । (संज्ञा, पु०, सं०) मेघ, बादल, मोथा, कपूर ।—धर–(संज्ञा, पु०, सं०) बादल । मोथा । समुद्र । जल के पर्याय शब्दों के आगे धि (धर) लगाने से इसके पर्याय शब्द बनते हैं ।—धरी–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शिवलिंग का अर्घा । [जलहरी (दे०)]—धारा–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पानी का प्रवाह या धारा । जलधारा के नीचे बैठे रहने की तपस्या । (संज्ञा, पु०) बादल, मेघ । "भूमि तें प्रगट होहि जलधारा"—[रामा०] ।—धि–(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र । दसशंख की संख्या ।—निधि–(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र । "जलनिधि रघुपति दूत विचारी"—[रामा०] ।—पति–(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र, वरुण । [जलेश, जलाधिपति (यौ०)]—पक्षी–(संज्ञा, पु०) [सं० जल+पक्षिन्] जल के आस-पास या समीप रहने वाले पक्षी, जल-खग ।—पाटल–(संज्ञा, पु०) [हि० जल+पटल] काजल ।—पान–(संज्ञा, पु०, सं०) थोड़ा और हलका भोजन, कलेवा, नाश्ता । —पीपल–(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जल+पिप्पली] पीपल जैसी एक औषधि ।—प्रपात–(संज्ञा, पु०, सं०) नदी आदि का ऊँचे पहाड़ से गिरना, झरना । —प्रवाह–(संज्ञा, पु०, सं०) पानी का बहाव । नदी में बहा देने की क्रिया ।—प्लावन–(संज्ञा, पु०, सं०) पानी की बाढ़, एक प्रकार का प्रलय । (वि०) जलप्लावित ।—बेंत–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० जल-वेत्र] जलाशयों के समीप होने वाला बेंत ।—भँवरा–(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) एक काला कीड़ा, जो पानी पर शीघ्रता से दौड़ता है । भौंतुका (प्रान्ती०) ।—भृत–(संज्ञा, पु०, सं०) बादल । —मानुष–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक जलजंतु जिसकी नाभी के ऊपर का भाग मनुष्य का सा और नीचे का मछली का सा होता है ।—मार्ग–समुद्री जहाजों के मार्ग । [सी रूट]—यान–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जल पर की सवारी, नाव, जहाज । —राशि–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समुद्र । जल का समूह ।—वर्त–(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) जलावर्त, भँवर ।—विमान–जल पर दौड़कर हवा में उड़ने वाला विमान । [हाइड्रोप्लेन] —शक्ति–पानी की शक्ति (जिससे यंत्र आदि चलते हों) । [वाटर पावर] —शायी–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० जलशायिन्] विष्णु । जल पर सोने वाला ।—सेना–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) समुद्र में जहाजों पर लड़ने वाली सेना । —स्तम्भ–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दैवयोग से जलाशयों या समुद्र पर दिखाई देने वाला एक स्तंभ । मंत्रादि के द्वारा जल-गति के अवरोध की विद्या (दुर्योधन जानता था) । पानी बाँधना, जलस्तम्भन । —हर–(संज्ञा, पु०, दे०) जलाशय, जलाहल, तालाब । "जीवजंतु जलहर बसैं"—कबीर ।—हरण–(संज्ञा, पु०, यौ० सं०) बत्तीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति या दंडक छंद ।—हरी–(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० जलधरी] शिवलिंग का अर्घा, शिव मूर्ति के ऊपर टाँगने का मिट्टी का सछिद्र जलघट ।

जलजला—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भूकंप, भूडोल ।

जलन—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० जलना] जलने की पीड़ा या दुख, दाह । ईर्ष्या, डाह । [जरन, जरनि (दे०)]

जलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ज्वलन] अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में हो जाना, झुलसना । दग्ध होना, बलना । आँच का भाप आदि के रूप में हो जाना । आँच लगने से किसी अङ्ग का पीड़ित होना । दुखी होना । कुढ़ना, डाह या ईर्ष्या करना । कुपित होना । मुहा० जलाभुना होना (बैठना)–अति कुपित होना (बैठना) । जलकर खाक (राख) या लाल होना–अति-कुपित होना, आगबबूला होना । जले को जलाना –दुखी को दुःख देना । जले पर नमक (माहुर देना) छिड़कना–किसी दुखी या व्यथित मनुष्य को और दुख देना । ईर्ष्या या द्वेष आदि के कारण कुढ़ना । "मनहुँ जरे पर माहुर देई"—[रामा०] । जली-कटी या जली-भुनी बात–खलती या लगती हुई बात । द्वेष, डाह या क्रोधादि

से कही गई कटु बात । [जलाना, जलवाना (प्रेरणा० रूप)]

जलपना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० जल्प] लंबी-चौड़ी बातें करना । "यहि विधि जलपत भा भिन सारा"—[रामा०] । (क्रि० स०, दे०) डींग मार कर कहना । "कटु जलपसि निसिचर अधम" । "जलपहि कलपित बचन अनेका "—[रामा०] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) डींग, व्यर्थ की बकवाद । " जनि जलपना करि सुजस नासहि "—[रामा०] ।

जलबुझना, जलभुनना—(क्रि० अ०, यौ०, हि०) क्रोध से अधीर होना । प्रतिकार न कर सकने से अति दुखी होना ।

जलवाना—(क्रि० स०) [हि० जलाना] जलाने का काम दूसरे से कराना । जलाना ।

जलसा—(संज्ञा, पु०, अ०) आनन्द या उत्सव । समारोह जिसमें खाना-पीना, गाना-बजाना हो । सभा, समिति आदि का बड़ा अधिवेशन । बैठक ।

जलांजलि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) प्रेतादि के लिए अंजुली में भरकर जल देना ।

जलाक—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लू, गर्म हवा । "कहै पद्माकर त्यों जेठ की जलाकै तहाँ ।"

जलाक्षी—(संज्ञा, स्त्री०) जलपिप्पली ।

जलाजल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झल-झल] गोटे आदि की झालर, झलाझल । [जलाहल (दे०)] (वि०) जलमय । "सिंधु ते ह्वै हैं जलाजल सारे" —तोष ।

जलातंक—(संज्ञा, पु०, सं०) जलत्रास ।

जलाटन—(संज्ञा, पु०) कंक चिड़िया ।

जलाटनी—(संज्ञा, स्त्री०) जोंक ।

जलातन—(वि०, दे०, यौ०) [हि० जलना+तन] क्रोधी, बदमिजाज । ईर्ष्यालु, डाही ।

जलात्यय—(संज्ञा, पु०, सं०) शरद् ऋतु ।

जलाधार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुष्करिणी । वापी, तड़ाग, जलाशय ।

जलाधिदैवत—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र । वरुण ।

जलाधिप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वरुण, जलाधिपति, जलेश ।

जलाधीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वरुण ।

जलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० जलना] अग्नि-संयोग से अङ्गारे या लपक के रूप में कर देना । किसी पदार्थ को आँच से भाप या कोयले आदि के रूप में करना । आँच से विकृत या पीड़ित करना । प्रज्वलित या भस्म करना, झुलसाना । संताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना, दुख देना ।

जलापा—(संज्ञा, पु०) [हि० जलना+आपा प्रत्य०] डाह या ईर्ष्या की जलन ।

जलावला—(वि०, हि०) भस्मीभूत, खाक हुआ । क्रोधी, चिड़चिड़ा । दग्ध ।

जलामय—(वि०, सं०) जलभरा, जलमय, जल में डूबा । भीगा, गीला, आर्द्र । [ओदा (दे०)] "ऐसी है जलामय ब्रजभूमि न दिखात कहूँ ।" [जलामयी (संज्ञा, पु०, स्त्री०)]

जलार्णव—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्षा-ऋतु । जल-समूह ।

जलार्द्र—(वि०, सं०) गीला, पानी से भीगा हुआ ।

जलाल—(संज्ञा, पु०, अ०) तेज, प्रताप । प्रकाश । प्रभाव, आतंक । " देखि कै जलाल सिवराज चिहरे को "—भूषण ।

जलावन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जलाना] ईंधन । किसी वस्तु के तपाये या जलाये जाने पर उसका जला भाग । जलता ।

जलावर्त्त—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पानी का भँवर, चक्कर ।

जलाशय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जलभरा स्थान, तालाब । नदी । " जल जलाशय का घटने लगा"—[ऋतु०] ।

जलाहल—(वि०, दे०) [जलाजल] जलमय । (संज्ञा, पु०) सागर । " घूँटिहैं हलाहल कै बूड़िहैं जलाहल मैं "—रत्ना० ।

जलिका—(संज्ञा, पु०, दे०) जोंक, जलौका ।

जलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) धीवर, मछवाहा, केवट । " जलिया छलिया है बड़ौ"—[स्फु०] ।

जलील—(वि०, अ०) तुच्छ । बेकदर, अपमानित । नीच ।

जलुक, जलुका—(संज्ञा. स्त्री०, दे०) जोंक । [जलौका (सं०)]

जलूस—(संज्ञा, पु०, अ०) बहुत से लोगों का सज-धज कर किसी सवारी के साथ प्रस्थान, उत्सव-यात्रा ।

जलेन्धन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बड़वाग्नि, बड़वानल ।

जलेचर—(संज्ञा, पु०, सं०) जल में चलने या चरने वाले जीव, जलजंतु, जलपक्षी ।

जलेतन—(वि०, दे०) अति क्रोधी । [रिसहा (दे०)]

जलेबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जलवा] बड़ी जलेबी (मिठाई) ।

जलेबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जलाव] एक कुंडलाकार मिठाई । एक प्रकार की आतिशबाजी ।

जलेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वरुण, समुद्र । जलेश्वर ।

जलेशय—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु । जलजंतु ।

जलोच्छ्वास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पानी की लहरी या तरंग ।

जलोत्सर्ग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तालाब, कूप और बावली का विवाह (पुराण) ।

जलोदर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी भर जाने से पेट फूलने का रोग, जलंधर ।

जलौका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जोंक ।

जल्द—(क्रि० वि०, अ०) शीघ्र, लटपट, झटपट, तेजी से । [**जल्दी** (संज्ञा, स्त्री०)]

जल्दबाज—(वि०, फ़ा०) काम में बहुत जल्दी करने वाला, उतावला । [**जल्दबाजी** (संज्ञा, स्त्री०)]

जल्दी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शीघ्रता, फुरती । †(क्रि० वि०) देखिए 'जल्द' ।

जल्प—(संज्ञा, पु०, सं०) कथन, कहना । बकवाद, प्रलाप ।

जल्पक—(वि०, सं०) बकवादी, वाचाल ।

जल्पन—(संज्ञा, पु०, सं०) बकवाद, प्रलाप, डींग, व्यर्थ की बातें ।

जल्पना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० जल्पन] व्यर्थ बकवाद करना, डींग मारना ।

जल्पित—(वि०, सं०) कही हुई, डींग या गप्प की कही हुई बात ।

जल्लाद—(संज्ञा, पु०, अ०) प्राण-दंड पाये हुए अपराधियों का बध करने वाला । घातक, हिंसक । क्रूर व्यक्ति ।

जवनिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) यवनिका (सं०) ।

जवाँमर्द—(वि०, फ़ा०) शूरवीर, बहादुर । [**जवाँमर्दी** (संज्ञा, स्त्री०)]

जवा, जव—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जया, एक अन्न । †(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यव) लहसुन का दाना ।

जवाइन—(संज्ञा, स्त्री०) अजवाइन (दे०) ।

जवाई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जाना] जाने की क्रिया का भाव, गमन । **अवाई**—, (यौ०) आना-जाना ।

जवाखार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यवक्षार] जव के क्षार से बना नमक ।

जवान—(वि०, फ़ा०) युवा, तरुण । वीर । (संज्ञा, पु०, दे०) मनुष्य । सिपाही ।

जवानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) अजवाइन । क्षुद्रा । "जवानी सहितो कषायः"—[वैद्यजी०] । (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) यौवन, तरुणाई । मुहा०—**उतरना या ढलना**–बुढापा आना, उमर ढलना । **—चढ़ना**–यौवन का आगमन होना ।

जवाब—(संज्ञा, पु०, अ०) किसी प्रश्न या बात के समाधान में कही हुई बात । किसी बात के बदले में की गई बात । उत्तर । बदला । मुकाबले की चीज । जोड़ । नौकरी छूटने की आज्ञा, मौकूफी । **—दावा**–(संज्ञा, पु०, अ०) वादी के निवेदन-पत्र के संबंध में प्रतिवादी का अदालत में लिखित उत्तर ।**—देह**–(वि०, फ़ा०) उत्तरदायी । जिम्मेदार । **—देही**–(संज्ञा, स्त्री०) उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी ।

जवाबी—(वि०, फ़ा०) जिसका जवाब देना हो ।

जवारा—(संज्ञा, पु०) [हि० जौ] जव के हरे अंकुर, जई (ग्रा०) ।

जवाल—(संज्ञा, पु०) [अ० जवाल] अवनति । उतार । घटाव । जंजाल, आफत । [जवार (दे०)]

जवाला—(संज्ञा, पु०, दे०) गोजई, बेझर, जौ और गेहूँ मिला हुआ अन्न ।

जवास, जवासा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यवासक] एक कँटीला पौधा । "अर्क जवास पात बिन भयऊ" —[रामा०] ।

जवाहर, जवाहिर—(संज्ञा, पु०, अ०) रत्न, मणि । [**जवाहरात, जवाहिरात** (बहु व०)]

जवैया†—(वि०, दे०) [हि० जाना+ऐया प्रत्य०] जाने वाला, गमनशील ।

जशन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उत्सव, जलसा । आनन्द, हर्ष ।

जस*‡—(क्रि० वि०, दे०) [सं० यथा] जैसा । (संज्ञा, पु०, दे०) यश ।

जसुदा, जसुधा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० यशोदा] यशोदा । [जसोदा, जसोवै (दे०)]

जसुमति, जसुमती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) यशोदा, जसोमति (ग्रा०) । "जसुमति अचगर कान्ह तिहारे" —सूर० ।

जस्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जसद] खाकी रंग की एक प्रसिद्ध धातु ।

जहँ—(क्रि॰ वि॰, दे॰) जहाँ। "जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना"—[रामा॰]।

जहँड़ना, जहँड़ाना†—(क्रि॰ अ॰, दे॰) [सं॰ जहन] घाटा उठाना। धोखे में आना। "तासु विमुख जहँड़ाय"—कबीर।

जहतिया†—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [हि॰ जगात] जगात या लगान वसूल करने वाला। "मनमथ करै कैद अपने मा ज्ञान जहतिया लावै"—सूर।

जहत्स्वार्था—(संज्ञा, स्त्री॰, सं॰) वह लक्षणा जिसमें पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को बिलकुल छोड़े हुए हों।

जहदजहल्लक्षणा—(संज्ञा, स्त्री॰, सं॰) लक्षणा का एक भेद जिसमें कुछ अर्थों, विषयों को छोड़ कर किसी एक विशेष को ग्रहण किया जाता है।

जहदना—(क्रि॰ अ॰, दे॰) [हि॰ जहदा] कीचड़ होना। थक जाना।

जहदा—(संज्ञा, दे॰) कीचड़, दलदल।

जहना*†—(क्रि॰ स॰, दे॰) [सं॰ जहन] त्यागना, छोड़ना। नाश करना।

जहन्नुम—(संज्ञा, पु॰, अ॰) नरक, दोजख। **मुहा॰—में जाय**-चूल्हे या भाड़ में जाय; हमसे कोई संबंध नहीं, भले ही नष्ट हो।

जहमत—(संज्ञा, स्त्री॰, अ॰) आपत्ति, आफत। झंझट, बखेड़ा, झगड़ा। **मुहा॰—पालना**-झंझट साथ रखना।

जहर—(संज्ञा, स्त्री॰) [अ॰ जह्र] विष, गरल। **—बाद**-(संज्ञा, पु॰, दे॰,) एक भयंकर और विषैला फोड़ा। **—मोहरा**-(संज्ञा, पु॰, दे॰, यौ॰) [फ़ा॰ जहर+मुहरा] सर्प-विष-नाशक एक काला पत्थर। हरे रंग की एक विषघ्न वस्तु। **मुहा॰—उगलना**-मर्मभेदी या कटु बात कहना। **—करना या कर देना**-बहुत अधिक अप्रिय या असह्य कर देना। **—का घूँट पीना**-किसी अनुचित बात को देखकर क्रोध को मन ही मन दबा रखना। **—का बुझाया हुआ**-बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट। अप्रिय बात या काम। **—लगना**-बहुत अप्रिय जान पड़ना। (वि॰) घातक, मार डालने वाला। **—होना**-हानिकार होना।

जहरीला—(वि॰) [अ॰ जहर+ईला प्रत्य॰] जिसमें जहर हो, विषैला।

जहल्लक्षणा—(संज्ञा, स्त्री॰, यौ॰, सं॰) जहत्स्वार्था।

जहाँ—(क्रि॰ वि॰, दे॰) [सं॰ यत्र] जिस स्थान पर, जिस जगह। "जहाँ सुमति तहँ संपति नाना"—[रामा॰]। (संज्ञा, पु॰, फ़ा॰) जहान, दुनिया, संसार। **—पनाह**-(संज्ञा, पु॰, फ़ा॰) संसार का रक्षक (बादशाह का सम्बोधन)। **मुहा॰—का तहाँ** जिस जगह पर हो उसी जगह पर। **—तहाँ**-इधर-उधर। सब जगह, सब स्थानों पर।

जहाँगीरी—(संज्ञा, स्त्री॰, फ़ा॰) हाथ का एक जड़ाऊ गहना या चूड़ी।

जहाज—(संज्ञा, पु॰, अ॰) समुद्र में चलने वाली बड़ी नाव। पोत। **मुहा॰—का कौआ या काग**-जहाजी कौआ, जो अन्यत्र न जा सके, वहीं फँसा रहे।

जहाजी—(वि॰, अ॰) जहाज से सम्बन्ध रखने वाला। **—कौआ**-वह कौआ जो किसी जहाज के छूटते समय उस पर बैठ जाता है और जहाज के बहुत दूर समुद्र में निकल जाने पर और कहीं शरण न पाकर उड़-उड़ कर फिर उसी जहाज पर आता है। ऐसा मनुष्य जिसे एक को छोड़कर दूसरा ठिकाना न हो। "जैसे काग जहाज को सूझत और न ठौर"।

जहान—(संज्ञा, पु॰, फ़ा॰) संसार, जगत। "मूरख जो धनवान हो, मानै सकल जहान"—[स्फु॰]।

जहानक—(संज्ञा, पु॰, दे॰) लोक।

जहालत—(संज्ञा, स्त्री॰, अ॰) अज्ञान।

जहिया—*†(क्रि॰ वि॰, दे॰) [सं॰ यद्] जिस समय, जब, जहाँ। "भुजबल विश्व जितब तुम जहिया"—[रामा॰]।

जहीं*†—(अव्य॰, दे॰) [सं॰ यत्र] जहाँ ही, जिस स्थान पर, ज्योंही। "जहीं बारुणी की करी रंचक रुचि द्विजराज"—[रामा॰]।

ज़हीन—(वि॰, अ॰) बुद्धिमान, समझदार।

जहेज—(संज्ञा, पु॰, अ॰) विवाह में कन्या-पक्ष द्वारा वर को दी गई सम्पत्ति, दहेज।

जह्नु—(संज्ञा, पु॰, सं॰) विष्णु। एक ऋषि जिन्होंने गंगा को पीकर फिर कान से निकाल दिया था, और जिनके ऐसा करने से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा। **—कन्या**-(संज्ञा, स्त्री॰, सं॰) गंगा जी, जह्नुसुता, जह्नुतनया, जाह्नवी। **—सप्तमी**-(संज्ञा, स्त्री॰) गंगा-सप्तमी। वैशाख शुक्ला सप्तमी।

जाँउनि—(संज्ञा, स्त्री॰) जामुन।

जाँग—(संज्ञा, पु॰) घोड़ों की एक जाति-विशेष।

जाँगड़ा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) भाट। बंदी।

जाँगर—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [हि॰ जान या जाँघ] शरीर का बल, बूता।

जाँगरा—(संज्ञा, पु०) भाट। कैदी।
जाँगल—(संज्ञा, पु०, सं०) तीतर। माँस। देश। (वि०) जंगल-सम्बन्धी, जङ्गली।
जाँगुली—(संज्ञा, स्त्री०) दुर्गा।
जाँगलु—(वि०, दे०) [फ़ा० जङ्गल] गँवार। जङ्गली। असभ्य, उजड्ड।
जाँघ—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जाँघ=पिंडली] जंघा, घुटने और कमर के बीच का अङ्ग, ऊरू।
जाँघिक—(संज्ञा, पु०, सं०) हरकारा। ऊँट। एक हिरन।
जाँघिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जाँघ+इया प्रत्य०] पायजामे सा घुटने तक का एक पहनावा, काछा, घुटना (ग्रा०)।
जाँघिल—(संज्ञा, पु०) एक जलपक्षी जिसका माँस खाने योग्य होता है।(वि०) लँगड़ा बैल।
जाँच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जाँचना] जाँचने की क्रिया या भाव, परीक्षा, परख, गवेषणा, निरीक्षण। [**जाँच-पड़ताल** (यौ०)]
जाँचक*—(संज्ञा, पु०, दे०) जाचक, याचक।
जाँचना—(क्रि० स०, दे०) [सं० याचन] सत्यासत्य का अनुसन्धान करना। परीक्षा या प्रार्थना करना। माँगना। परखना, निरीक्षण करना।
जाँजरा*†—(वि०, दे०) जाजरा।
जाँझ—(संज्ञा, पु०) तूफानी वर्षा, हवा-पानी, आँधी के साथ वर्षा।
जाँत, जाँता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यंत्र] आटा पीसने की बड़ी चक्की।
जांतव—(वि०, सं०) जन्तु से सम्बन्धित। उत्पन्न।
जांब—(संज्ञा, पु०, दे०) जामुन, जम्बू।
जांबवन्त—(संज्ञा, पु०, दे०) जाँबवान, जामवन्त। "जांबवंत मंत्री अति बूढ़ा"—[रामा०]।
जांबवन्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जाँबवती] जाँबवान की कन्या श्रीकृष्ण की स्त्री सत्यभामा।
जांबवान—(संज्ञा, पु०, सं०) सुग्रीव का मंत्री, एक भालू जो राम की सेना में लड़ा था। [जांबुवाँन (दे०)] जामवंत।
जांबवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नागदमनी।
जांबील—(संज्ञा, पु०, सं०) घुटने पर की गोल चिपटी हड्डी। एक प्रकार का नींबू जिसे जँबीरी भी कहते हैं।
जांबुक—(वि०, सं०) सियार-विषयक।
जांबुमाली—(संज्ञा, पु०, सं०) हनुमान के द्वारा मारा गया लंका का एक राक्षस।

जांबूनद—सोना। धतूरा।
जाँवर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जाना] गमन, जाना।
जा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) माता, माँ। देवरानी, देवर की स्त्री। (वि०, स्त्री०) उत्पन्न, संभूत। *†(सर्व०) [हि० जो] जिस। "जा थल कीन्हें विहार अनेकन"—रस०। (वि०, फ़ा०) उचित [(विलो०) **बेजा**] (क्रि० अ०) विधि (जाना)।—**बेजा**-(यौ०) उचितानुचित, भला-बुरा।
जाइ*†—(वि०, दे०) जाय। (क्रि० अ०, पू० का०) [हि० जाना] जाकर।
जाइफर, जाइफल—(संज्ञा, पु०, दे०) जायफल। महकने वाला सुपाड़ी के समान फल जिसको सुखा कर दवा के काम में लाते हैं।
जाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जा] बेटी, पुत्री।
जाउर, जाउरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खीर। "पुनि जाउरि पछियाउरि आई"—जायसी।
जाक—(संज्ञा, पु०, दे०) यक्ष। [जच्छ (दे०)]
जाकड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जाकर] माल इस शर्त पर ले आना कि पसन्द न होने पर फेरा जायगा। [(विलो०) **पक्का**]
जाखिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) यक्षिणी।
जाग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यज्ञ] यज्ञ, मख, याग, ‡(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जगह] जगह, स्थान। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० जगना] जागने की क्रिया या भाव, जागरण। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० जग] कौआ।
जागता—(वि०, हि०) प्रत्यक्ष, साक्षात्। प्रकाशित, भासमान। सचेत। समृद्ध, बढ़ कर या प्रसिद्ध। जोर-शोर से उठा हुआ। प्रज्वलित। **जीता**—, (वि०) सजीव।
जागती—(वि०, हि०) चेतन, प्रबुद्ध, सावधान, सजग। "जागती जो जातियाँ देखी गयीं"—गिरीश।—**जोति**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० जागना+ज्योति] किसी देवता, विशेषतः देवी, की प्रत्यक्ष महिमा या चमत्कार।—**कला**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दिया, दीपक। दीप्ति, ज्योति।
जागना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० जागरण] सोकर उठना, जगना, नींद त्यागना, जाग्रत अवस्था में होना। सजग होना। सचेत या सावधान होना। उदित होना। चमक उठना।
जागर—(संज्ञा, पु०, दे०) जागरण। होश।
जागरक—(वि०, सं०) असुप्त, जागता हुआ। सजग।

जागरण—(संज्ञा, पु०, सं०) निद्रा का अभाव । किसी पर्व के उपलक्ष में सारी रात्रि जागकर भजन-कीर्त्तन में समय-यापन । [जागरन (दे०)]

जागरित—(वि०, सं०) अनिद्रित । सचेत, सावधान, प्रबुद्ध ।

जागरिता—(वि०, सं०) सचेत, सावधान, जागृत ।

जागरूक—(वि०, सं०) वह जो जागृत अवस्था में हो ।

जागरूप—(वि०) जागता हुआ । प्रत्यक्ष, स्पष्ट ।

जागवलिक*†—(संज्ञा, पु०, दे०) याज्ञवल्क्य । [जागबलक (दे०)]

जागा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० जगह] जगह । (संज्ञा, पु०, दे०) भाटों की सी एक जाति । (सा० भू० क्रि० अ०) [हिं० जागना] जगा हुआ ।

जागी*†—(संज्ञा, पु०) [सं० यज्ञ] भाट ।

जागीर—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) राज्य की ओर से मिली भूमि या प्रदेश ।—**दार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जागीर-प्राप्त, जागीर का मालिक । अमीर । रईस ।

जाग्रत—(वि०, सं०) जो जागता हो, जिसमें सब बातों की परिज्ञानावस्था हो ।

जाग्रति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जागृत] जागरण, जागने की क्रिया, चेतनता ।

जाघनी—(संज्ञा, पु०, सं०) पूँछ, जाँघ ।

जाचक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० याचक] माँगने वाला, भिखमङ्गा । "जाचक सबहिं अजाचक कीहें" —[रामा०] ।

जाचकता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० याचकत्व] माँगने का भाव । भीख माँगने की क्रिया । "रहिमन जाचकता गहे"—रहीम ।

जाचना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० याचन] माँगना, याचना करना ।

जाज़म, जाज़िम—(संज्ञा, स्त्री०) [तु० जाजम] छपी हुई चादर, बिछाने का कपड़ा ।

जाजरा*—(वि०, दे०) [सं० जर्ज्जर] जर्जर, जीर्ण, पुराना ।

जाजरूर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० जा+ जरूर अ०] पाखाना, टट्टी । शौचगृह ।

जाजल—(संज्ञा, पु०, सं०) अथर्ववेद की शाखा-विशेष ।

जाजलि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि ।

जाज्वल्य—(वि०, सं०) प्रज्वलित, प्रकाश-युक्त । —**मान**-(वि०, सं०) प्रज्वलित, प्रकाशित । दीप्तिमान, तेजवान, तेजस्वी । "जाज्वल्यमाना जगतः शान्तये"—माघ० ।

जाट—(संज्ञा, पु०) (?) पंजाब, सिन्ध और राजपूताने में पाई जाने वाली एक जाति ।

जाटलि—(संज्ञा, पु०, स्त्री०) पलाश वृक्ष की एक जाति-विशेष ।

जाटू—(संज्ञा, स्त्री०) बाँगड़ू, जटुआ, जाँटों की बोली ।

जाठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यष्टि] वह बड़ा लट्ठा जो कोल्हू की कूँड़ी के बीच में रहता है । तालाब के बीच में गड़ा लट्ठा ।

जाठर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जठर] पेट । भूख । जठराग्नि । (वि०) पेट-सम्बन्धी ।

जाड़, जाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जड़] ठंढक की ऋतु, शीत काल । शरदी, शीत, पाला, ठंढ ।

जाड्य—(संज्ञा, पु०, सं०) जड़ता । कठोरता । मूर्खता, "जाड्यं धियो हरति"—भर्तृ० ।

जात—(संज्ञा, पु०, सं०) जन्म । पुत्र, बेटा । जीव, प्राणी । (वि०) उत्पन्न, पैदा या जन्मा हुआ । "स जातो येन जातेन" । व्यक्त, प्रकट, प्रशस्त । अच्छा । जैसे नवजात । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) जाति ।

जातक—(संज्ञा, पु०, सं०) बच्चा । बत्तख । भिक्षु । फलित ज्योतिष का वह भाग जिससे नवोत्पन्न शिशु के जीवन का शुभाशुभ फलादेश किया जाता है । [(विलो०) ताजक] वह बौद्ध पुस्तक, जिसमें महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएँ वर्णित हैं (बौद्ध) ।

जातकर्म्म—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हिन्दुओं के दस संस्कारों में से चौथा संस्कार (बालक के जन्म समय का) "सजातकर्म्मण्यखिले तपस्विना"—[रघु०] ।

जातना*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) यातना, जातनाई । (ग्रा०) ।

जात-पाँत, जाति-पाँति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० जाति+पंक्ति] जाति बिरादरी । भाई-चारा । "ब्याह ना बरेखी जाति पाँति न चहत हौं"—[कविता०]

जातरूप—(संज्ञा, पु०, सं०) सोना । धतूरा । "जाको सुन्दरता लखे, जातरूप को रूप" ।

जातवेद—(संज्ञा, पु०, सं०) अग्नि । सूर्य ।

जातांध—(वि०, यौ०) [सं० जात+अंध] जन्म से अन्धा, जन्मांध ।

जाता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कन्या, पुत्री । (वि०, स्त्री०) उत्पन्न ।

जातापत्या—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० जाति+अपत्य+आ] प्रसूता स्त्री, जिस स्त्री के पुत्र या कन्या पैदा हुई हो।

जाति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जन्म, पैदाइश। हिन्दुओं में समाज का वह विभाग जो पहले-पहल कर्म्मानुसार किया गया था। निवास-स्थान तथा वंश-परम्परा के विचार से मनुष्य-समाज का विभाग। धर्म्म, आकृति आदि की समानता के विचार से किया गया विभाग। कोटि, वर्ग। सामान्य सत्ता। वर्ण। कुल, वंश, गोत्र। मात्रिक छंद। "जाति न जाति बराति के खाये"—[स्फु०]।—**च्युत**—(वि०, सं०) जाति से गिरा या निकाला हुआ, जाति-बहिष्कृत। जाति से निकाले जाने का भाव। [**जाति-च्युति** (संज्ञा, स्त्री०)]—**मान**—(वि०, सं०) कुलीन, अच्छे कुल में उत्पन्न।

जाती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चमेली की जाति का एक फूल, जाही, जाई, जुही। मालती। छोटा आँवला। (वि०) [अ० जात] व्यक्तिगत, अपना, निज का, निजी।

जातीफल—(संज्ञा, पु०, सं०) जायफल (दे०)।

जातीय—(वि०, सं०) जाति-सम्बन्धी।

जातीयता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जाति का भाव, जाति की ममता, जातित्व।

जातु—(अव्य०, सं०) कदाचित्, कभी, संभावनार्थक। "पिपासुता, शान्तिमुपैति वारिणा। न जातु दुग्धान्मधुनाधिकादपि"—[नैष०]।

जातुक—(संज्ञा, पु०) हींग।

जातुधान—(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस। "जातुधान सुनि रावण बचना"—[रामा०]।

जातुष—(वि०, सं०) लसदार, चिपचिपाने वाला। लाख का बना हुआ।

जातेष्टि—(संज्ञा, पु०, सं०) पुत्र उत्पन्न होने के समय का एक योग। नांदीमुख-श्राद्ध। जातिकर्म का एक अंग।

जात्यंध—(वि०, सं०) जन्म का अंधा।

जात्य—(वि०, सं०) कुलीन। प्रधान। श्रेष्ठ। मनोहर, सुन्दर।

जात्रा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० यात्रा] यात्रा, भ्रमण।

जादव*†—(संज्ञा, पु०, दे०) यादव, जादौ (ग्रा०)। **पति***†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० यादवपति] श्रीकृष्ण, यदुनाथ, जादवराय।

जादसपति*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यादसां+पति] जलजन्तुओं का स्वामी, वरुण।

जादा—(वि०, दे०) अधिक, ज्यादा, जिआदह। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) पुत्र, जैसे शाहजादा।

जादू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वह आश्चर्यजनक कृत्य जिसे लोग अलौकिक और अमानुषी समझते हों, इन्द्रजाल, तिलस्म। वह अद्भुत खेल या कृत्य जो दर्शकों की दृष्टि और बुद्धि को धोखा देकर किया जाय। टोना, टोटका। मोहने की शक्ति, मोहनी। —**गर**—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वह जो जादू करता हो। [**जादूगरनी** (स्त्री०)]—**गरी**—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जादू करने की क्रिया, जादूगर का काम।

जादौराय*†—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० यादव+राज] श्रीकृष्ण चंद्र। [जदुराई (दे०)] "भवन आपने लै गये विप्रै जादौराय"—नरो०।

जान—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० ज्ञान] ज्ञान, जानकारी। खयाल, अनुमान। "लखन कहा हँसि हमरे जाना"—[रामा०]।—**पहचान**—(संज्ञा, पु०) परिचय, पहले से पहिचान। (वि०) सुजान, जानकार, चतुर। (संज्ञा, पु०, दे०) यान। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्राण, जीव। प्राणवायु, दम। शक्ति, बूता, सामर्थ्य। सार, तत्व। अच्छा या सुन्दर करने वाली वस्तु, शोभा बढ़ाने वाली वस्तु। **मुहा०—का गाहक**—प्राणान्तकारी।—**के लाले पड़ना**—प्राण बचना कठिन दिखाई देना, जी पर आ बनना।—**देना**—अधिक श्रम करना।—**को जान न समझना**—अत्यन्त अधिक कष्ट या परिश्रम सहना।—**दार**—(वि०, फ़ा०) जिसमें जान हो, सजीव, जीवधारी।—**खाना**—तंग करना; बार-बार घेर कर दिक करना।—**छुड़ाना या बचाना**—प्राण बचाना। किसी झंझट से छुटकारा करना। संकट टालना। **(किसी पर)—जाना (देना)**—किसी पर अत्यन्त अधिक प्रेम होना।—**जोखों**—प्राण-हानि की आशंका।—**निकलना**—प्राण निकलना, मरना। भय के मारे प्राण सूखना।—**पर खेलना**—प्राणों को भय या जोखों में डालना, मरने को तैयार होना।—**बूझकर**—सोच-समझकर।—**से जाना**—प्राण या दम खोना। मरना।—**आना**—शोभा बढ़ना।—**में जान आना**—धैर्य या ढाढ़स होना, सान्त्वना प्राप्त होना।—**कार**—(क्रि०) [हि० जानना+कार प्रत्य०] जानने वाला, अभिज्ञ, विज्ञ, चतुर। [**जानकारी** (संज्ञा, स्त्री०)]

जानकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जनक-पुत्री सीता। "तब जानकी सासु पग लागी"—[रामा०]।—**जानि**-(संज्ञा, पु०, सं०) रामचन्द्र । "लखन-जानकी-सहित उर, बसहु जानकीजानि"—[रामा०]।—**जीवन**-(संज्ञा, पु०, सं०) रामचन्द्र जी। "जानकी जीवन की बलि जैहौं"—[विनय०]।—**नाथ**—(संज्ञा, पु०, सं०) रामचन्द्र जी। [**जानकीश, जानकीपति**]

जाननहार—(संज्ञा, पु०, दे०) जानने वाला। "जानि लेय जो जाननहारा"—[रामा०]।

जानना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ज्ञान] ज्ञान प्राप्त करना। अभिज्ञ या परिचित होना। मालूम करना, सूचना पाना, खबर रखना। अनुमान करना, सोचना। **मुहा०—जान कर अनजान होना**-अनभिज्ञ-प्रदर्शन, जानते हुए भी न जानने का ढोंग करना।—**बूझना**-समझना, जानना।

जानपद—(संज्ञा, पु०, सं०) जनपद-सम्बन्धी वस्तु। जनपद का निवासी। लोक, मनुष्य। देश। जनपद से मिलने वाला लगान।

जानपदी—(संज्ञा, स्त्री०) एक परी, अप्सरा। वृत्ति।

जानपना*†—(संज्ञा, पु०) [हि० जान+पन प्रत्य०] बुद्धिमत्ता, चतुराई। [**जानपनी** (स्त्री०)] "दम दान दया नहिं जानपनी"—[रामा०]।

जानमनि—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० ज्ञान+मणि] ज्ञानियों में श्रेष्ठ, ज्ञानमणि।

जानराय—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० जान+राय] जानकारों में श्रेष्ठ, बड़ा बुद्धिमान।

जानवर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) प्राणी, जीव। पशु, जन्तु।

जानहार—(वि०, दे०) [हि० जाना+हार प्रत्य०] जाने वाला। [जवैया (दे०)] गमनशील।

जानहु*—(अव्य०, दे०) [हि० जानना] मानो, जानो। जनु। (विधि क्रि० स०)। "जीव चराचर में सब जानहु"—[रामा०]।

जाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० यान] एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्राप्त होने के लिए गति में होना, गमन करना। बढ़ना। हटना, प्रस्थान करना। (क्रि० वि०) जाना हुआ। [हि० जानना] अलग या दूर होना, हाथ या अधिकार से निकलना। हानि होना। खो जाना, गुम हो जाना। बीतना, गुजरना। नष्ट होना। बहना। जारी होना। *(क्रि० स०, दे०) [सं० जनन] उत्पन्न या पैदा करना, जन्म देना। **मुहा० जाने दो**-क्षमा करो, माफ करो, चर्चा या प्रसङ्ग छोड़ो। **किसी बात पर**—,किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना। तदनुकूल चलना या करना।

जानि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्त्री, भार्य्या। (पू० का० क्रि० स०) समझ कर।

जानी—(वि०, फ़ा०) जान से सम्बन्ध रखने वाली। —**दुश्मन**-(संज्ञा, पु०) जान लेने को तैयार दुश्मन।—**दोस्त**-दिली दोस्त, पूर्ण मित्र। (संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० जान] प्राणधारी। (क्रि० स०) [हि० जानना] जान ली, समझ ली। "हम जानी तुम्हारी मनुजाई"—[रामा०]।

जानु—(संज्ञा, पु०, सं०) जाँघ और पिंडुली के मध्य का भाग, घुटना। (विधि० क्रि० स०) [हि० जानना] जानो। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० जान्] जाँघ, रान, जंघा।—**पाणि**-(क्रि० वि०, यौ०, सं०) हाथ-पाँव, पैयाँ-बैयाँ, घुटनों और हाथों से चलना। "जानु-पानि धावत मनि आँगन"—सूर०।—**फलक**-(संज्ञा, पु०, सं०) खूँटी। घुटने की संधि के ऊपर की हड्डी।

जानो—(अव्य०, दे०) [हि० जानना] मानो, जैसे जनु। (विधि० क्रि० स०) [हि० जानना]

जाप—(संज्ञा, पु०, सं०) नाम आदि जपने की क्रिया। नाम जपने की थैली या माला। "जपमाला छापा तिलक"—कबीर।

जापक—(संज्ञा, पु०, सं०) जाप करने वाला। [**जापी** (वि०)] "जापक जन प्रह्लाद जिमि"—[रामा०]।

जापा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जनन] सौरी, प्रसूतिका-गृह।

जापान—(संज्ञा, पु०, दे०) एशिया का एक द्वीप।

जापानी—(वि०) जापान देश का। (संज्ञा, पु०) जापानवासी। (संज्ञा, स्त्री०) जापान की भाषा।

जाफ—(संज्ञा, पु०, दे०) बेहोशी, घूमरी, मूर्च्छा। [अ० जोफ] थकावट।

जाफत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० जियाफत] भोज, दावत।

जाफरान—(संज्ञा, पु०, अ०) केसर।

जाबाल—(संज्ञा, पु०, सं०) जाबाला के पुत्र, एक मुनि।

जाबालि—(संज्ञा, पु०, सं०) दशरथ-गुरु कश्यप वंशीय एक ऋषि।

ज़ाब्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) नियम, क़ायदा, व्यवस्था, क़ानून।—**दीवानी**-(संज्ञा, पु०) सर्वसाधा-

रण के परस्पर आर्थिक व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाला कानून ।—**फौजदारी**-(संज्ञा, पु०) दंडनीय अपराधों से सम्बन्ध रखने वाला कानून ।

जाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० याम] पहर, प्रहर, साढ़े सात या तीन घंटे का समय । "रुचिर रजनि जुग जाम सिरान"—[रामा०] । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) प्याला, कटोरा । (संज्ञा, पु०, दे०) जामुन ।

जामगी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बंदूक का तोड़ा । बंदूक या तोप का पलीता ।

जामदग्न्य—(संज्ञा, पु०, सं०) जमदग्नि का पुत्र, परशुराम ।

जामदानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० जमःदानी] एक कढ़ा हुआ फूलदार कपड़ा ।

जामन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० जमाना] दूध को जमा कर दही बनाने के लिए उसमे डाला जाने वाला दही, मट्ठा या खट्टी वस्तु ।

जामना—(क्रि० अ०, दे०) जमना, उगना ।

जामनी—(वि०, दे०) यावनी । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) यामिनी, रात । जमानतदार ।

जामवंत—(संज्ञा, पु०, दे०) जाँबवान् या जाम्बन्त । "जामवंत कह रहु खल ठाढ़ा"—[रामा०] । [**जामवंती** (स्त्री०)]

जामा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कपड़ा, वस्त्र । चुननदार घेरे का एक पहनावा । (सा० भू०, क्रि० स०, दे०) उगा । "रामजी के सोहै केसरिया जामा"—[स्फु०] । **मुहा०**—**(मे) से बाहर होना**-आपे से बाहर होना, अत्यन्त क्रोध करना ।

जामाता*—(संज्ञा, पु०) [सं० जामातृ] दामाद ।

जामि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बहिन । पुत्रवधू । पुत्री । कुलस्त्री ।

जामिक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यामिक] पहरुआ, पहरा देने वाला, रक्षक ।

जामित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) कुंडली चक्र में लग्न से सातवाँ घर ।

ज़ामिन, ज़ामिनदार—(संज्ञा, पु०, अ०) जमानत करने वाला, जिम्मेदार, प्रतिभू ।

जामिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) यामिनी, रात । [जमानत (दे०)]

जामुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जंबु] बरसात में पकने पर काले रंग का एक खटमिट्ठा फल । बैगनी या बहुत काले फलों का सदाबहार पेड़ ।

जामुनी—(वि०) [हिं० जामुन] जामुन के रंग का, बैगनी या काला ।

जामेय—(संज्ञा, पु०, सं०) भानजा, बहिन का पुत्र, भैने ।

जामेवार—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० जमा+वार] सर्वत्र बूटेदार एक दुशाला । ऐसी ही छींट ।

जाम्बूनद—(संज्ञा, पु०, सं०) सोना, सुवर्ण । धतूरा ।

जायँ—(वि०) मुनासिब, ठीक, उचित ।—**बेजाँय**-गलतसही ।

जाय*—(अव्य०, दे०) [फ़ा० जा] वृथा, निष्फल । (वि०) उचित, वाजिब, ठीक । "जाय कहब करतूत बिन, जाय योग बिन छेम" । (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) स्थान । अवसर । जगह ।

जायका—(संज्ञा, पु०, अ०) खाने-पीने की चीजों का मजा, स्वाद । [**ज़ायकेदार** (वि०)]

ज़ायचा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जन्म-पत्री ।

जायज़—(वि०, अ०) उचित, मुनासिब ।

जायज़ा—(संज्ञा, पु०, अ०) जाँच-पड़ताल । हाजिरी । गिनती ।

जायद—(वि०, अ०) अधिक, अतिरिक्त ।

जायदाद—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) भूमि, धन या सामान आदि जिस पर किसी का अधिकार हो, सम्पत्ति ।

जायनमाज—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, फ़ा०) नमाज के लिए बिछाने की छोटी दरी या बिछौना (मुस०) ।

जायपत्री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जावित्री ।

जायफल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० जातीफल] अखरोट सा एक छोटा सुगंधित फल, जो औषधि के काम आता है तथा मसाले मे भी पड़ता है ।

जाया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विवाहिता स्त्री, पत्नी, जोरू । उपजातिवृत्ति का सातवाँ भेद । (वि०, फ़ा०) खराब, नष्ट ।

जाये—(संज्ञा, पु०) [हिं० जना] उत्पन्न किया हुआ, बेटा, पुत्र । "कौशलेश दसरथ के जाये"—[रामा०] ।

जार—(संज्ञा, पु०, सं०) पर-स्त्री से प्रेम करने वाला पुरुष, उपपति, यार, आशना । (वि०) मारने या नाश करने वाला ।—**कर्म्म**-(संज्ञा, पु०, सं०) व्यभिचार, छिनारा ।—**ज**-(संज्ञा, पु०, सं०) किसी की स्त्री का उपपति से उत्पन्न पुत्र । "जारज जाइ कहावहु दोऊ"—[रामा०] ।—**योग**-(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्री के जार या उपपति से पुत्र की उत्पत्ति के जानने का नियम (फलित ज्यो०) ।

जारक—(वि०, सं०) पाचन-शक्ति बढ़ाने वाला। क्षय-कारक।

जारण—(संज्ञा, पु०, सं०) जलाने, भस्म करने की क्रिया। [जारन (दे०)]

जारन†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० जलाना] ईंधन। जलाने की क्रिया या भाव।

जारना†—(क्रि० स०, दे०) जलाना। [जरना का प्रेरणा० रूप] जराना।

जारल—(संज्ञा, पु०, दे०) काष्ठ-विशेष।

जारिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्यभिचारिणी, दुश्चरित्रा या बदचलन स्त्री।

ज़ारित—(वि०, सं०) पचाया हुआ। शोधित।

जारी—(वि०, अ०) बहता हुआ, प्रवाहित। चलता हुआ, प्रचलित। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० जार+ई प्रत्य०] परस्त्रीगमन, छिनाला, व्यभिचार।

जारूथ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अश्वमेध यज्ञ का भेद-विशेष।

जारोब—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) झाड़ू, बढ़नी।

जालंधर—(संज्ञा, पु०, दे०) जलंधर।—**विद्या**—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जालंधर दैत्य] मायिक विद्या, माया, प्रपंच, इन्द्रजाल।

जालंध्र—(संज्ञा, पु०, सं०) झरोखे की जाली।

जाल—(संज्ञा, पु०, सं०) मछलियों और चिड़ियों आदि के फँसाने का तार या सूत का पट। एक मे ओत-प्रोत बुनेया गुँथे हुए बहुत से तारों या रेशों का समूह। किसी को फँसाने या वश में करने की युक्ति। मकड़ी का जाला। समूह। इन्द्रजाल। एक तोप। (संज्ञा, पु०) [अ० जअल, मि० सं० जाल] फरेब, धोखा। झूठी कार्रवाई।—**गोणिका**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) दधिमंथन भाण्ड। मथेड़ी, मथनी।—**दार**-(वि०) [सं० जाल+दार हिं०] जिसमें जाल की भाँति पास-पास बहुत से छेद हों। —**फरेब**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) धोखाधड़ी।—**रंध्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जाली का झरोखा या छिद्र। —**साज**-(संज्ञा, पु०) [अ० जअल+साज फ़ा०] दूसरों को धोखा देने के लिए झूठी कार्रवाई करने वाला।—**साजी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) फरेब या जाल करने का काम, दगाबाजी।

जालगि—(सर्वं० दे०) जिसके लिए, जिस कारण; जिस हेतु।

जाला—(संज्ञा, पु०) [सं० जाल] मकड़ी का बुना हुआ पतले तारों का वह जाल जिसमें वह मक्खियों और कीड़े-मकोड़ों को फँसाती है। आँख की पुतली के ऊपर सफेद झिल्ली-सी पड़ने का रोग। घास-भूसा बाँधने का जाल। पानी रखने की मिट्टी का बड़ा बरतन, झाला (ग्रा०)।

जालाक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) झरोखा।

जालिक—(संज्ञा, पु०, सं०) मछुवा, केवट, धीवर। मकरी, मकरा। इन्द्रजालिक, मदारी, बाजीगर। (वि०) जाल से जीने वाला।

जालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जाली। समूह, दल।

जालिनी—(संज्ञा, स्त्री०) चित्रशाला। प्रमेह का फोड़ा।

जालिम—(वि०, अ०) जुल्म करने वाला, क्रूरकर्मा, अत्याचारी।

जालिया—(वि०) [हिं० जाल+इया प्रत्य०] जाल-साज, फरेब करने या धोखा देने वाला।

जाली—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० जाल] लकड़ी, पत्थर या धातु की चादर में बना छोटे-छोटे छेदों का समूह। कसीदे का एक काम। छोटे-छोटे छेद वाला महीन कपड़ा। कच्चे आम की गुठली के ऊपर का तंतु-समूह। (वि०) [अ० जअल] नकली, जैसे—जाली सिक्का। फरेबी।

जाल्म—(संज्ञा, पु०, सं०) पामर। क्रूर व्यक्ति। (वि०) कठोर, निकृष्ट।

जाल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव। (वि०) जाल या फँदे में फँसाने योग्य।

जावक*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यावक] लाह से बना पैरों में लगाने का लाल रंग, महावर, अल-क्तक, अलता (प्रान्ती०)। "चरन प्रिय के जावक रचे"—[शकु०]।

जावका—(संज्ञा, पु०, सं०) लौंग। लौंग का फूल।

जावन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) देखिए "जामन"। "जावन लौं को बचत नहिं दधि खावै गोपाल।"

जावा—(संज्ञा, पु०, दे०) भारत के पूर्व में एक उपद्वीप।

जावानी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जवानी] अज-वाइन। "क्षुद्रा जवानी सहितोकषायः"—[वैद्यजी०]

जावित्री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जाति-पत्र] जायफल का सुगंधित छिलका (औषधि)।

जाषनी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) यक्षिणी।

जासु†*—(वि०, दे०) [हिं० जो] जिसका, जिसकी, जिसके। "जासु बिलोकि अलौकिक सोभा"—[रामा०]।

जासूस—(संज्ञा, पु०, अ०) गुप्त रूप से किसी बात या अपराध आदि का पता लगाने वाला, भेदिया। मुखबिर।

जासूसी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० जासूस] गुप्त रूप से किसी बात की खोज, जासूस का काम।

जाहा—(संज्ञा, पु०, दे०) देखा, निरीक्षण किया। "औ फिर मुख महेस का जाहा"—जायसी।

जाहि‡*—(वि०, दे०) [हि० जो] जिसको, जिसे। [जाकहँ (दे०)] "जाहि जोहि वृन्दारक वृन्द मुनि मोहे हैं—रत्ना०।

जाहिर—(वि०, अ०) प्रगट, प्रकाशित, प्रत्यक्ष, खुला या जाना हुआ, विदित।—**दारी**-(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दिखावे की बात या काम। प्रत्यक्षता।

जाहिरा—(क्रि० वि०, अ०) देखने में, प्रगट रूप में, प्रत्यक्ष में। "जाहिरा कावे का जाना और है।"

जाहिल—(वि०, अ०) मूर्ख, अज्ञान, नासमझ। [**जहालत, जाहिली** (संज्ञा, स्त्री०)]

जाही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जाति] चमेली-सा एक सुगंधित फूल। (सर्व०, दे०) जिसको।

जाह्नवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जह्नु ऋषि से उत्पन्न, गङ्गा।

जिगनी, जिंगिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जिंगिन का पेड़।

जिंद—(संज्ञा, पु०, अ०) भूत, प्रेत, जिन।

जिंदगी, जिंदगानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जीवन। जीवन-काल, आयु। **मुहा०—के दिन पूरे करना (भरना)**-दिन काटना, जीवन बिताना। मरने को होना।

जिंदा—(वि०, फ़ा०) जीवित, जीता हुआ।—**दिल**-(वि०, फ़ा०) साहसी, खुश-मिजाज, हँसोड़।—**दिली**-(संज्ञा, स्त्री०) खुशमिजाजी, प्रसन्नचित्तता। "जिंदगी जिंदादिली का नाम है।"

जिँवाना‡—(क्रि० स०, दे०) जिमाना, ज्योंवाना, खिलाना।

जिंस—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्रकार, भाँति। चीज, वस्तु।—**वार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) खेतों में बोये हुए अन्नों की सूची (पटवारी०)।

जिअत—(क्रि० वि०) [हि० जीना] जीते हुए, जीते जो। "जिअत न करब सौति सेवकाई"—[रामा०]।

जिआउ, जिआव—(क्रि० स०) [हि० जिलाना] जिलावे, जीने दे। "ऐसेहु दुख जिआउ बिधि मोहीं"—[रामा०]।

जिआन—(संज्ञा, पु०, दे०) हानि, क्षति।

जिआना—(क्रि० स०, दे०) जिलाना। जिवाना, जेंवाना।

जिआये—(वि०, दे०) पालित, पाला-पोसा। जिलाये हुए।

जिउ—(संज्ञा, पु०, दे०) जीव।

जिउका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जीविका।

जिउकिया—(संज्ञा, पु०) [हि० जीविका] जीविका करने वाला, रोजगारी। जङ्गलों की वस्तुएँ बेंचने वाले लोग।

जिउतिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जिताष्टमी, आश्विन कृष्णा अष्टमी को स्त्रियों का व्रत।

जिक्र—(संज्ञा, पु०, अ०) चर्चा, प्रसंग।

जिगजिगिया—(वि०, दे०) चापलूस।

जिगजिगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिरौरी, खुशामद, अनुनय, चापलूसी, मिथ्या प्रशंसा।

जिगमिष—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गमनेच्छा। जाने की अभिलाषा।

जिगमिषु—(संज्ञा, पु०, दे०) गमनेच्छु, जाने की इच्छा वाला।

जिगर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [मि० सं० यकृत्] कलेजा। चित्त, मन। जीव। साहस, हिम्मत। गूदा, सत्त, सार। [**जिगरी** (वि०)]

जिगरा—(संज्ञा, पु०) [हि० जिगर] साहस, हिम्मत, जीवट।

जिगरी—(वि०, फ़ा०) दिली। भीतरी। अत्यन्त घनिष्ठ, अभिन्न हृदय।

जिगीषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जयेच्छा, जीतने की इच्छा, विजय-लालसा।

जिगीषु—(वि०, सं०) जयेच्छु, जीतने की इच्छा वाला। "होते हैं युधिष्ठिर जिगीषु महाभारत के" —अनू०।

जिघत्सा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भोजनेच्छा।

जिघत्सु—(वि०, सं०) क्षुधित, भूखा, भोजन की इच्छा वाला।

जिघाँसु—(वि०, सं०) बध की इच्छा वाला, घातक, हिंसक, नृशंस, क्रूर, वधोद्यत। [**जिघाँसा** (संज्ञा, पु०, सं०)]

जिघासा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्षुधा, भूख, भोजन की इच्छा।

जिच, जिच्च—(संज्ञा, स्त्री०) (?) बेबसी। तंगी, मजबूरी। शतरंज के खेल में वह अवस्था जिसमें किसी पक्ष को मोहरा चलने की जगह न हो।

जिजिया—(संज्ञा, पु०, दे०) जजिया।

जिजीविषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीने की इच्छा, जीवनेच्छा।

जिजीविषु—(वि०, सं०) जीने की इच्छा वाला। जीवनेच्छुक।

जिज्ञासा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जानने या ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा। पूछताछ, प्रश्न।

जिज्ञासित—(वि०, सं०) जिसकी इच्छा या जिज्ञासा की गई हो।

जिज्ञासु—(वि०, सं०) जानने की इच्छा रखने वाला। खोजी।

जिज्ञास्य—(वि०, सं०) पूछने योग्य।

जिठाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जेठा + ई प्रत्य०] बड़ाई, जेठापन।

जिठानी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० जेठा + नी प्रत्य०] पति के बड़े भाई की स्त्री।

जित्—(वि०, सं०) जीतने वाला, जेता।

जित—(वि०, सं०) जीता हुआ। (संज्ञा, पु०, सं०) जीत, विजय। * (क्रि० वि०, दे०) [सं० यत्र] जिधर, जिस ओर, जितै, जहाँ।

जितना—(वि०, हिं०) जिस मात्रा या परिमाण का। (क्रि० वि०) जिस मात्रा या परिमाण मे, जित्ता, जितो, जेतो (ब्र०)। [**जितनी** (स्त्री०)]

जितवना*—(क्रि० स०, दे०) जिताना।

जितवाना—(क्रि० स०, दे०) जिताना।

जितवार—(वि०, दे०) [हिं० जीतना] जीतने वाला, विजयी।

जितवैया—(वि०, दे०) [हिं० जीतना + वैया प्रत्य०] जीतने वाला।

जितशत्रु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विजयी, जीतने वाला।

जिता—(संज्ञा, पु०, दे०) किसानों की जुताई-बुआई में परस्पर सहायता, हूँड। (क्रि० वि०, अव्य, दे०) जितो, जेतो, जितना।

जिताक्ष—(वि०, सं०) जितेंद्रिय।

जिताक्षर—(वि०, सं०) अच्छा पढ़ने या लिखने वाला।

जितात्मा—(वि०, सं०) जिस व्यक्ति ने इंद्रियों को अपने वश में कर लिया हो, जितेन्द्रिय।

जिताना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० जीतना का प्रेरणा० रूप]। जीतने में सहायता करना, [**जितवाना** (प्रेरणा० रूप)]

जितामित्र—(वि०, यौ०) [सं० जित + अमित्र] विष्णु। विजयी।

जिताष्टमी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) आश्विन कृष्ण अष्टमी के दिन पुत्रवती स्त्रियों का व्रत। (हिन्दू), जिउतिया (ग्रा०)।

जिताहार—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० जित + आहार] अन्न-जयी, अन्न को स्वाधीन करने वाला। आहार पर नियंत्रण करने वाला।

जितेंद्रिय—(वि०, यौ०, सं०) इन्द्रियों को वश में करने वाला, समवृत्ति वाला, शांत, जितेंद्री।

जिते*—(वि०) [हिं० जिस + ते] जितने।

जितै*—(क्रि० वि०, दे०) [सं० यत्र, प्रा० यत्त] जिधर, जिस ओर। "गोला जाय जबै जब जितै" —[रामा०]।

जितैया—(संज्ञा, पु०) जीतने वाला।

जितो, जितौ*†—(वि०, दे०) [हिं० जिस] जितना। [जेतो (दे०)] (परिमाण-सूचक)।

जित्वर—(वि०, सं०) जेता, विजयी। भ्रातृभिर्जित्वरैर्दिशाम्।

जिद, जिद्द—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० जिद्] वैर, शत्रुता। हठ, दुराग्रह। [**जिद्दी** (वि०)]

जिद्दी—(वि०, फ़ा०) जिद करने वाला, हठी, दुराग्रही।

जिधर—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० जिस + धर प्रत्य०] जिस ओर, जहाँ। जँधे (ग्रा०)।

जिन—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु। सूर्य्य। बुद्ध। जैनों के तीर्थंकर। (सर्व०, दे०) [सं० यानि] जिस का बहु०। (अव्य०) मत। (संज्ञा, पु०, अ०) भूत।

जिना—(संज्ञा, पु०, अ०) व्यभिचार।—**कार**—(वि०, फ़ा०) व्यभिचारी, छिनरा। [**जिनाकारी** (संज्ञा, स्त्री०)]—**बिल्जब्र**—(संज्ञा, पु०, यौ०, अ०) किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध बलात् संभोग करना।

जिनि†—(अव्य०) [हिं० जनि] मत, नहीं।

जिनिस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जिस।

जिनेंद्र—(संज्ञा, पु०) एक जैन साधु।

जिन्ह*—(सर्व०, दे०) जिन।

जिब्भा, जिभ्या*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जिह्वा, जीभ।

जिमाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० जीमना] खाना खिलाना, भोजन कराना, जिवाना।

जिमि*—(क्रि० वि०) [हिं० जिस+इमि] जिस प्रकार, जैसे, यथा, ज्यों। "जिमि दसनन मँह जीभ बिचारी"—[रामा०]।

जिमीकंद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सूरन। रस्सी।

जिम्मा—(संज्ञा, पु०, अ०) किसी बात या काम के अवश्य करने और न होने पर दोषभार ग्रहण करने की स्वीकृति, दायित्वपूर्ण प्रतिज्ञा, जवाबदेही। **मुहा० किसी के—रुपया आना, निकलना या होना**-किसी के ऊपर रुपया ऋण-स्वरूप होना, देना ठहरना।

जिम्मादार, जिम्मावार—(वि०, फ़ा०) जो किसी बात के लिए जिम्मा ले, जवाबदेह, उत्तरदायी, जिम्मेदार, जिम्मेवार।

जिम्मावारी—(संज्ञा, स्त्री०) किसी बात के करने या कराने का भार, जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व, जवाबदेही। सुपुर्दगी। संरक्षा।

जिय, जिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जीव] जीव, मन, चित्त। "अस जिय जानि सुनो सिख भाई"—[रामा०]।

जियन—(संज्ञा, पु०) [हिं० जीवन] जीवन। [जियनि (दे०)]

जियबधा—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) जल्लाद।

जियरा*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० जीव] जीव। दिल, मन। होश। साहस। [जिगरा (दे०)]

जियान—(संज्ञा, पु०, अ०) घाटा, टोटा, हानि।

जियाफ़त—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आतिथ्य, मेहमानदारी। भोज, दावत।

जियारत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दर्शन, तीर्थ-दर्शन। **मुहा०—लगना**-भीड़ लगना।

जियारी†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जीना] जीवन, जिंदगी। जीविका। हृदय की दृढ़ता। जीवट, जिगरा।

जिरगा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) झुंड, गिरोह, मंडली, दल।

जिरह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० जुरह] हुज्जत, खुचुर। कथन-सत्यतार्थ पूछ-ताछ, बहस। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच। वर्म, बख्तर।—**पोश**-(वि०) जो बख्तर पहने हो।

जिरही—(वि०) [जिरह फ़ा०] कवचधारी।

जिराफा—(संज्ञा, पु०, दे०) जुराफा पशु।

जिला—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) चमक, दमक। **मुहा० —देना**-माँज या रोगन आदि चढ़ाकर चमकाना, सिकली करना।—**कार, सिकलीगर**-(संज्ञा) माँज कर या रोगन आदि चढ़ा कर चमकाने वाला।—**साज**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अस्त्रादि पर ओप चढ़ाने वाला, सिकलीगर। (संज्ञा, पु०, अ०) प्रांत, प्रदेश। एक कलेक्टर या डिप्टी कमिश्नर के आधीन प्रांत (भारत०)। इलाके का छोटा भाग।—**दार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अपने इलाके के किसी भाग का लगान वसूल करने के लिए नियत जमींदार का नौकर। नहर आदि के किसी हलके का अफसर। (संज्ञा, स्त्री०)—(**ले**) **दारी**-(संज्ञा, स्त्री०) जिलेदार का पद।—**बोर्ड** -(संज्ञा, पु०) जिले के विकास की प्रबंधक समिति। [डिस्ट्रिक्ट बोर्ड]

जिलाना—(क्रि० स०) [हिं० जीना का स० रूप] जीवन देना। जिन्दा या जीवित करना। पालना-पोसना। प्राण-रक्षा करना।

जिल्द—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) खाल, चमड़ा, त्वचा। किसी किताब के ऊपर रक्षार्थ लगी दफ्ती। पुस्तक की एक प्रति। पुस्तक का प्रथम सिला भाग, खंड।—**दार**-(वि०) जिल्द चढ़ी, आवेष्टित।—**बंद**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) किताबों की जिल्द बाँधने वाला। [**जिल्दबंदी** (संज्ञा, स्त्री०)]—**साज**-(संज्ञा, पु०, दे०) जिल्द-बंद। [**जिल्दसाजी (संज्ञा, स्त्री०)**]

जिल्लत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अनादर, अपमान, तिरस्कार। झंझट। दुर्गति, दुर्दशा, हीन दशा। **मुहा०—उठाना या पाना**-अपमानित होना। **—में पड़ना (होना, डालना)**-झंझट या दुर्गति में पड़ना।

जिल्होर—(संज्ञा, पु०) एक स्वादिष्ट धान जो अगहन में पैदा होता है।

जिव†—(संज्ञा, पु०, दे०) जीव, जिउ, (ग्रा०) जीउ। (क्रि० वि०) [हिं० जीना] जिओ।

जिवनमूरि, जिवनमूरी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० जीवन+मूल] सञ्जीवनी औषधि, जिलाने वाली बूटी। "जिवनमूरि सम जुगवति रहऊँ" —[रामा०]।

जिवाजिव—(संज्ञा, पु०, सं०) चकोर नामक पक्षी।

जिवाना—(क्रि० स०, दे०) जिलाना।

जिष्णु—(संज्ञा, पु०, सं०) अर्जुन। इन्द्र। "आजगामाश्रमम् जिष्णोः प्रतीतः पाकशासनः"—[किरा०]।

जिस—(वि०, दे०) [सं० यः, यस्] विभक्तियुक्त विशेष्य के साथ 'जो' का रूप, जैसे—जिस पुरुष ने। (सर्व०) विभक्ति लगने के पहले 'जो' का रूप, जैसे—जिसको ।

जिस्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) जस्ता, दस्ता ।

जिस्म—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) शरीर, देह ।

जिह*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० जद, सं० ज्या] धनुष की प्रत्यंचा (डोर), रोदा, ज्या ।

जिहन, जहन—(संज्ञा, पु०, अ०) समझ, बुद्धि । **मुहा०—खुलना**-बुद्धि का विकास होना ।—**में आना**-समझ में आना ।—**लड़ाना (लगाना)**-खूब सोचना ।

जिहाद—(संज्ञा, पु०, अ०) मजहबी लड़ाई, अन्य धर्मियों से स्वधर्म-प्रचारार्थ युद्ध (मुस०) ।

जिहासा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) त्यागने की इच्छा ।

जिह्म—(वि०, सं०) कपटी, कुटिल, दुष्ट। (संज्ञा, पु०) कपट, तगर का फूल ।

जिह्माक्ष—(वि०, सं०) ऐंचा ।

जिह्व—(संज्ञा, पु०, सं०,) देखिए "जिह्वा" ।

जिह्वक—(संज्ञा, पु०, सं०) सन्निपात की वह स्थिति जिसमें बोलने में जीभ लड़खड़ाये ।

जिह्वल—(वि०, सं०) चटोरा ।

जिह्वा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीभ, जबान ।—**मूल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जीभ की जड़ या पिछला स्थान ।—**मूलीय**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वा-मूल से हो। [क ख के पहले विसर्ग आने से वे जिह्वामूलीय हो जाते हैं ।] "जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलं"—पाणिनि० ।

जिह्वाग्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जीभ की नोक। **मुहा०—करना**-कंठस्थ या जबानी याद करना। "अमुष्य विद्या जिह्वाग्र नर्तकी"—[नैष०] ।

जींगना†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जृगण] जुगुनू ।

जी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जीव] मन, दिल, चित्त। हिम्मत । दम, जीवट। संकल्प, विचार। (अव्य०, दे०)[सं० जित् या श्रीयुत्] । एक सम्मान-सूचक शब्द जो किसी के नाम के आगे लगता है या किसी बड़े के कथन, प्रश्न या सम्बोधन के उत्तर में संक्षिप्त प्रतिसम्बोधन या स्वीकृति के रूप मे प्रयुक्त होता है। **मुहा०—अच्छा होना**-चित्त स्वस्थ होना, नीरोग होना। **किसी पर—आना**-किसी से प्रेम होना ।—**उचटना**-चित्त न लगना, मन हटना ।—**उड़ जाना**-भय, शङ्का आदि से सहसा चित्त व्यग्र हो जाना ।—**करना**-हिम्मत करना, साहस करना । इच्छा होना। स्वीकार करना ।—**का बुखार निकलना**—क्रोध, शोक, दुःखादि के वेग को रो, कलप या बक-झक कर शांत करना । **(किसी के)—को जो समझना**-किसी के विषय में यह समझना कि वह भी जीव है, उसे भी कष्ट होगा ।—**खट्टा होना**-मन फिर जाना या विरक्त होना, घृणा होना ।—**(जिगर) खोलकर**-बिना किसी संकोच के, बेधड़क, जितना जो चाहे, यथेष्ट ।—**चलना**-मन चाहना, इच्छा होना ।—**चुराना**-हीलाहवाली करना, किसी काम से भागना ।—**छोटा करना**-मन उदास करना । उदारता छोड़ना, कंजूसी करना ।—**टँगा रहना या होना**-ध्यान या चिंता रहना, चित्त चिंतित रहना ।—**डूबना**-चित्त स्थिर न रहना, व्याकुल होना ।—(**जिगर**) **थाम बैठना**-धैर्य रखना । —**दुखना**-चित्त को कष्ट पहुंचना ।—**देना**-मरना । अत्यन्त प्रेम करना ।—**धँसा जाना**-दिल बैठा जाना ।—**धड़कना**-भय, आशंका से चित्त स्थिर न रहना, कलेजा धक-धक करना ।—**निढाल होना**-चित्त का स्थिर या ठिकाने न रहना । —**पर आ बनना**-प्राण बचाना कठिन हो जाना ।—**(जान) पर खेलना**—जान को आफत में डालना, मरने को तैयार होना ।—**बहलना**-चित्त का आनन्द में लीन होना, मनोरंजन होना । —**बिगड़ना**-जी मचलाना, कै करने की इच्छा होना । **(किसी की ओर से)—बुरा करना**-किसी के प्रति अच्छा भाव न रखना, घृणा या क्रोध करना ।—**भरना**-(क्रि०, अ०) चित्त सन्तुष्ट होना, तृप्ति होना ।—**भरना**-(क्रि० स०) दूसरे का सन्देह दूर करना, खटका मिटाना ।—**भर कर**-मनमाना, यथेष्ट ।—**भर आना**-चित्त में दुःख या करुणा का उद्रेक होना, दया उमड़ना ।—**मचलाना या मतलाना**-उलटी या कै करने की इच्छा होना ।—**में आना**-चित्त मे विचार उत्पन्न होना । जी चाहना । (**किसी का**)—**रखना**-मन रखना, इच्छा पूर्ण करना, प्रसन्न या सन्तुष्ट करना । —**लगना**-मन का किसी विषय में योग देना । (**किसी से**)—**लगाना**-किसी से प्रेम करना । —**से,—जान से**-जी लगा कर, ध्यान देकर । —**से उतर जाना**-दृष्टि से गिर जाना, भला न जंचना ।—**से जाना**-मर जाना ।

जीश्र, जीउ*—(संज्ञा, पु०, दे०) जी, जीव ।

जीगन—(संज्ञा, पु०, दे०) जुगनू।

जीजा—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़ी बहिन का पति, बड़ा बहनोई।

जीजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बड़ी बहिन। (अव्य०) वीप्सार्थ) हाँ-हाँ।

जीत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जिति] युद्ध या लड़ाई में विपक्षी के विरुद्ध सफलता। जय, विजय। कार्य्य में विपक्षी के रहते उत्कर्ष। लाभ, फायदा।

जीतना—(क्रि० स०, दे०) [हि० जीत+ना प्रत्य०] युद्ध में विपक्षी पर विजय प्राप्त करना। दो या अधिक परस्पर विरुद्ध पक्षों के रहते कार्य में सफल होना। दाँव (जुआ) मे सफल होना।

जीता—(वि०, दे०) [हि० जीना] जीवित। तौल या नाप मे ठीक से कुछ बढ़ा हुआ। विजयी। [**जीती** (स्त्री०)]—**जागता**–जीवित और सचेत। भला-चङ्गा। स्वाभाविक साक्षात, साकार। **मुहा०—(ती) मक्खी निगलना**–जान-बूझ कर कोई अन्याय या अनुचित कर्म करना। हानि-कारक कार्य करना।—**(ते) जी मर जाना**–जीवन में ही मृत्यु से अधिक कष्ट भोगना।

जीन*—(वि०, दे०) [सं० जीर्ण] जर्जर, पुराना। कटाफटा। वृद्ध, बूढ़ा। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) घोड़े पर रखने की गद्दी, चारजामा। काठी, पलान, कजावा (ग्रा०)। एक बहुत मोटा सूती कपड़ा। "जगमति जीन जड़ाउ जोति सों"—[रामा०]।—**पोश**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जीन के ढकने का कपड़ा।—**सवारी**–(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) घोड़े पर जीन रख कर चढ़ने का कार्य्य।

जीना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० जीवन] जीवित या जिंदा रहना। **मुहा०—भारी हो जाना**–जीवन का आनन्द जाता रहना। प्रसन्न, प्रफुल्लित न होना। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० जीनः] सीढ़ी।

जीभ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जिह्वा] मुँह में रहने वाली लम्बे, चिपटे मांस-पिंड की वह इन्द्रिय जिससे रस या स्वाद का अनुभव और शब्दों का उच्चारण हो, जबान, रसना, जिह्वा। "अब कस कहब जीभ करि दूजो"—[रामा०]। **छोटी—,** (संज्ञा, स्त्री०) गलशुंडी। **मुहा० —गिरना**–स्वादिष्ट भोजन को लालायित होना।—**चलना**–भिन्न वस्तुओं का स्वाद लेन के लिए जीभ का हिलना-डोलना, चटोरेपन की इच्छा होना।—**चलाना** अधिक बढ़ कर बोलना।—**निकालना**–जीभ खीचना, जीभ उखाड़ लेना।—**पकड़ना**–बोलने न देना, बोलने से रोकना।—**बन्द करना**–बोलना बन्द करना, चुप रहना।—**हिलाना**–मुँह से कुछ बोलना।—**रोकना**–कुपथ्य या कुत्सित भाषण न करना। (**किसी की)—के नीचे जीभ होना**–किसी का अपनी कही हुई बात को बदल जाना।

जीभा—(संज्ञा, पु०) जीभ का एक रोग जो पशुओं को होता है। बैलों की आँख का एक रोग।

जीभी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जीभ] धातु की एक पतली धनुषाकार वस्तु जिससे जीभ छील कर साफ करते है। निब। छोटी जीभ, गलशुंडी।

जीमट—(संज्ञा, पु०) पौधों की शाखों, टहनियों के अन्दर रहने वाला गूदा।

जीमना—(क्रि० स०, दे०) [सं० जेमन] भोजन करना। [जेंवना (दे०)]

जीमार—(वि०, दे०) घातक, मारने वाला।

जीमूत—(संज्ञा, पु०, सं०) बादल। इन्द्र। सूर्य्य। पर्वत। शाल्मली द्वीप का एक वर्ष। एक दंडक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और ग्यारह रगण होते है।—**वाहन**–(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र।

जीय*—(संज्ञा, पु०, दे०) जी, जीव, हृदय।—**दान**–(संज्ञा, पु०) [सं० जीवनदान] प्राणदान, जीवनदान, प्राण-रक्षा। "जीयदान सम नहिं जग दाना"—[स्फु०]।

जीयट—(संज्ञा, पु०, दे०) जीवट।

जीयत, जीयति†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जीना] जीवन। जीवित, जीता हुआ, जीअत, जियत। "जीयत धरहु तपसी दोऊ भाई"—[रामा०]।

जीर—(संज्ञा, पु०, दे०) जीरा। फूल का जीरा, केसर। खड्ग, तलवार। *(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० जिरह] जिरह, कवच। *(वि०, दे०) [सं० जीर्ण] जीर्ण, पुराना।

जीरक—(संज्ञा, पु०, सं०) जीरा। [जीर (दे०)] "लशुन जीरक सेंधव गंधक"—[वैद्यजी०]।

जीरण*—(वि०, दे०) जीर्ण। [जीरन (दे०)]

जीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जीरक] दो हाथ ऊँचा एक पौधा, जिसके सुगंधित छोटे फूलों के गुच्छों को सुखा कर मसाले के काम में लाते है। इसके दो मुख्य भेद है, सफेद और स्याह। जीरे के आकार के छोटे महीन लम्बे बीज। फूलों का केसर।

जीरिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वंशपत्री, एक घास।

जीरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जीरा] एक प्रकार का अगहनी धान जो कई वर्ष तक रह सकता है। काली जीरी (औष०)।

जीर्ण—(वि०, सं०) बुढ़ापे से जर्जर, टूटाफूटा और पुराना, [जीरन, जीर्न (दे०)] [**जीर्णता** (संज्ञा, स्त्री०)]—**शीर्ण**-(वि०) फटा-पुराना, पेट में अच्छी तरह पचा हुआ। [(विलो०) **अजीर्ण**] "का छति लाहु जीर्न धनु तोरे"—[रामा०] ।—**ज्वर**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बारह दिन से अधिक का ज्वर, पुराना बुखार, "जीर्णज्वरं कफकृतं"—[वैद्यजी०] ।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०) पठानी लोध ।—**वस्त्र**-(संज्ञा, पु०) फटा-पुराना कपड़ा ।—**वाटिका**-(संज्ञा, स्त्री०) खँड़हर।

जीर्णक—(वि०, सं०) प्रायः सूखा हुआ।

जीर्णता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुढ़ापा, बुढ़ाई, पुरानापन। "पश्चाज्जीर्णतां याति"—माघ०।

जीर्णा—(वि०, स्त्री०, सं०) वृद्धा, जर्जरा।

जीर्णि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाचन। जीर्णता।

जीर्णोद्धार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) फटी-पुरानी या टूटी-फूटी वस्तुओं का फिर से सुधार। पुनः संस्कार, मरम्मत।

जील—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) धीमा, स्थिर।

जीला*—(वि०, दे०) [सं० झिल्ली] झीना, पतला, महीन। (संज्ञा, पु०, दे०) जिला। [**जीली** (स्त्री०)]

जीवंजीव—(संज्ञा, पु०, सं०) चकोर। एक पेड़।

जीवत—(वि०, सं०) जीता-जागता।

जीवंतक—(संज्ञा, पु०, सं०) जीवशाक।

जीवंतिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लता-विशेष। गुड़ुच। जीवशाक। पीली हर्रे।

जीवंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक लता जिसकी पत्तियाँ औषधि के काम में आती हैं। मीठे मकरंद वाले फूलों की एक लता। बढ़िया पीली हर्रे। बाँदा। गुड़ूची।

जीव—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राणियों का चेतन तत्व, जीवात्मा, आत्मा, प्राण, जीवन-तत्व, जान। प्राणी, जीवधारी। स्वामी। राजा। बृहस्पति (ज्यो०)। "कहि जय जीव दूत सिर नाये"—[रामा०]।—**खानि**—(संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा।—**जंतु**-(संज्ञा, पु०) जानवर, प्राणी, कीड़ा-मकोड़ा। "जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं"—[रामा०]।—**दान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपने वश में आये हुए शत्रु या अपराधी को न मारने का कार्य, प्राण-दान।—**धारी**-(संज्ञा, पु०, सं०) प्राणी, जानवर।—**मंदिर**-(संज्ञा, पु०, सं०) शरीर।—**योनि**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीव-जन्तु। "लख चौरासी जीवयोनि मे भटकत फिरत अनाहक"।—**लोक**-(संज्ञा, पु०, सं०) जीवों का लोक, भूमि, जमीन।—**हत्या**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जानवरों या जीवों का मारना।—**हिंसा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीवों को सताना। जीवों को मार डालना।

जीवक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राण-धारण करने वाला। क्षपणक। सँपेरा। सेवक। ब्याज से जीविका चलाने वाला, सूदखोर। पीतशाल वृक्ष। अपवर्ग के अंतर्गत एक जड़ी या पौधा। पेड़।

जीवट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जीवथ] हृदय की दृढ़ता, साहस।

जीवत्—(वि०, सं०) जीता हुआ। जिंदा।

जीवथ—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राण। कच्छप। मोर। बादल।

जीवन—(संज्ञा, पु०, सं०) [वि० जीवित] जन्म और मृत्यु के बीच का काल, जिन्दगी। जीवित रहने का भाव। जीवित रखने वाली वस्तु। परमप्रिय। जीविका। पानी। वायु।—**चरित्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) जीवन में किये हुए कार्यों आदि का वर्णन, जिन्दगी का हाल।—**धन**-(संज्ञा, पु०, सं०) सबसे प्रिय व्यक्ति या वस्तु। प्राण-प्रिय।—**बूटी**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जीवन+बूटी हि०] मरे हुए को जिलाने वाला एक पौधा या बूटी, संजीवन मूरि, संजीवनी।—**मूरी**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जीव +मूल] जीवन बूटी। अत्यन्त प्रिय वस्तु। [अमियमूरि (दे०)]—**वृत्त**-(संज्ञा, पु०) किसी के जीवन का विवरण।

जीवनांत—(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्यु, जीवन की समाप्ति।

जीवना—(क्रि० अ०, दे०) जीना।

जीवनी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० जीवन+ई प्रत्य०] जीवन भर का वृत्तान्त, जीवन-चरित्र।

जीवनोपाय—(संज्ञा, पु०, सं०) जीविका, रोजी, रोजगार।

जीवनोषधि—(संज्ञा, पु०, सं०) जिस औषधि से मरे हुए जी जाते हैं। जीवन-रक्षाकारी। जीवनोपाय, उपजीविका।

जीवन्मुक्त—(वि०, यौ०, सं०) जो जीवित दशा में ही आत्म-ज्ञान द्वारा सांसारिक माया-बंधन से छूट गया हो।

जीवन्मुक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीवित दशा में आसक्ति की शून्यता-प्राप्ति, मुक्त की अवस्था।

जीवन्मृत—(वि०, यौ०, सं०) जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो, दुखद जीवन वाला, दुखिया।

जीवरा*—(संज्ञा, पु०) [हिं० जीव] जीव।

जीवरि—(संज्ञा, पु०) [सं० जीव या जीवन] जीवन अथवा प्राण-धारण की शक्ति।

जीवा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धनुष की डोरी। पृथ्वी। जीवन। जल।

जीवाणु—(संज्ञा, पु०, सं०) निम्नतम या क्षुद्रतम जीव।

जीवातु—(संज्ञा, पु०, सं०) अस्तित्व। आहार। जीवन। जीवनदायिनी औषधि।

जीवात्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परमात्मा से भिन्न, जीव।

जीवाधार—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राणों का सहारा, हृदय।

जीवानुज—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० जीव= बृहस्पति + भाई = अनु०] बृहस्पति के छोटे भाई, गर्ग मुनि।

जीवान्तक—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० जीव= प्राणी + अंतक=काल] काल, यम। बधिक, कसाई। राक्षस। (वि०) जीव को मारने वाला।

जीविका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रोजी, उद्यम, रोजगार, धंधा।

जीवित—(वि०, सं०) जिन्दा, सजीव।

जीवितव्य—(वि०, सं०) जिन्दा रखने लायक। (संज्ञा, पु०) जीवन, जीव के रहने की आशा या सम्भावना।

जीविता—(वि०, सं०) जीवधारी, जिन्दा।

जीवितांतक—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव।

जीवितेश—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य। चंद्र। यम। जीवनाधार। जीवन देने योग्य एक दवा। "हे जीवितेश ! उठो, उठो, निद्रा नहीं योग्य है"—मैथिली०।

जीवितेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव।

जीवी—(वि०) [सं० जीविन्] जीव वाला। उद्यमी। रोजगारी। जैसे—शिल्पजीवी।

जीवेंधन—(संज्ञा, पु०, सं०) जलती हुई लकड़ी।

जीवेश—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० जीव+ईश] जीवों का स्वामी, परमेश्वर। स्त्री का पति।

जीवोपाधि—(संज्ञा, स्त्री०) सुषुप्ति, जागृति और स्वप्न की स्थितियाँ।

जीह, जीहा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जी] जिह्वा, जीभ, जबान। "राम नाम मनि दीप धरु, जीह देहरी-द्वार"—तुल०।

जुंबिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) हिलना, डोलना। **मुहा०—खाना**-हिलना। इधर-उधर होना।

जु—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० जो] जो, जिस।

जुआँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यूका] छोटे-छोटे कीड़े जो बालों में हो जाते हैं। एक खेल। हल में बैल जोतने का स्थान।

जुआँरा, जुआँरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० जुआ] जुआँ खेलन वाला, जुआरी। "सूझ जुआँरिहि आपन दाऊँ"—[रामा०]।

जुआचोर—(संज्ञा, पु०, हिं०) धोखा देने वाला, ठग।

जुआड़ी—(संज्ञा, पु०) जुआ खेलने वाला।

जुआरभाटा—(संज्ञा, पु०, दे०) ज्वारभाटा।

जुआरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक अनाज जो अगहन-कार्तिक में होता है, ज्वार।

जुई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जूँ] छोटा जूँ, जुआँ।

जुकाम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक रोग, श्लेष्मा। **मुहा० मेढकी का—**,किसी छोटे आदमी का कोई बड़ा काम करने का स्वप्न देखना। "मेंडकी-रा जुकाम पैदा शुद"।

जुग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० युग] जोड़। दो। समय-विभाग, युग जो चार हैं, सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग।

जुगजुगाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० जगना] कुछ-कुछ उन्नति को प्राप्त होना, तरक्की करना। टिमटिमाना।

जुगजुगी—(संज्ञा, स्त्री०) शकरखोर नामक एक पक्षी।

जुगत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० युक्ति] ढंग, तदबीर, उपाय, हथकंडा, जुगुति (अ०)।

जुगती—(वि०, दे०) उपाय निकालने वाला, चतुर।

जुगनी, जुगनू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० जुग-जुगाना] खद्योत, पटबीजन, चमकदार कीड़ा। गले का एक भूषण।

जुगल, जुगुल—(वि०, दे०) युगल। "सुनत जुगुल कर माल उठाई"—[रामा०]

जुगवना—(क्रि० स०, दे०) [सं० योग+अवना प्रत्य०] रक्षित रखना, बचाये रहना। "अमियमूरि सम जुगवति रहऊँ"—[रामा०]।

जुगाना—(क्रि० स०, दे०) जुगवना।

जुगलाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० उद्गिलन] पागुर करना, पगुराना, जुगाली करना।

जुगाली—(संज्ञा, स्त्री०) चबाना, पगुराना, गाय-बैल आदि के चबाने की क्रिया।

जुगुत, जुगुति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) युक्ति, उपाय।

जुगुप्सक—(वि०) [सं० जुगुप्सा] निष्प्रयोजन निन्दा करने वाला, व्यर्थ निंदक।

जुगुप्सा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निन्दा, तिरस्कार।

जुगुप्सित—(वि०, सं०) निन्दित, तिरस्कृत।

जुगुप्सु—(वि०, सं०) निंदित, घृणित। घृणा या नफरत करनेवाला।

जुज़—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सोलह या आठ सफे, एक फारम। हिस्सा।

जुज़बी—(वि०, फ़ा०) कोई-कोई, बहुतों मे से कोई एक।

जुज्झ*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) युद्ध।

जुझवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० जूझना का प्रेरणा० रूप] औरों को आपस में लड़ा देना। [जुझाना, जुझावना (दे०)]

जुझाऊ—(वि०, दे०) [हि० जूझ+आऊ प्रत्य०] लड़ाई के काम का, संग्राम-सम्बंधी। "कहेसि बजाव जुझाऊ बाजा"—[रामा०]।

जुझार, जुझारा†*—(वि०) [हि० जुज्झ+आर प्रत्य०] बहुत लड़ने वाला, शूरवीर। "वीर सुरासुर जुरहिं जुझारा"—[रामा०]।

जुझावट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लड़ाई, समर। लड़ाई के वास्ते बढ़ावा।

जुट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० युक्त] मिली हुई दो चीजें, [जुट्ट (दे०)]

जुटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० युक्त+ना प्रत्य०] मिलना। एक मे जुड़ जाना, लग जाना, गुथना। इकट्ठा होना। काम में लग जाना। [**जुटवाना** (प्रेरणा० रूप)]

जुटली—(वि०, दे०) [सं० जूट] जटा-जूट वाला, जटाधारी।

जुटाना—(क्रि० स०) [हि० जुटाना] मिलाना। लगाना। गुथाना, जुड़ाना। इकट्ठा करना।

जुटाव—(संज्ञा, पु०, दे०) जमाव। एकत्र, संग्रथित होने का भाव।

जुटैया—(वि०, पु०, दे०) जुट जाने वाला।

जुट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० जुटना]। गड्डी। पूला।

जुठारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० जूठा] जूठा करना।

जुठिहारा—(संज्ञा, पु०) [हि० जूठा+हारा प्रत्य०] जूठा खाने वाला, जुठैला। [**जुठिहारी** (स्त्री०)]

जुठैला—(वि०) [हि० जूठा+ऐला प्रत्य०] जूठा खाने वाला। "मूसा कहै बिलार सों सुन री जूठ जुठैलि"—गिरि०। [**जुठैली** (स्त्री०)]

जुड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० जुटना] मिलना। इकट्ठा होना। जुरना (ग्रा०), अटना।

जुड़पित्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० जूड़+पित्त] सितपिती। शरीर में खाज होने तथा बड़े-बड़े ददोरे निकल आने का रोग-विशेष।

जुड़वाँ—(वि०) [हि० जुड़ना] युग्म बच्चे, एक साथ पैदा हुए दो मिलित बच्चे।

जुड़वाना†—(क्रि० स०, हि०) ठंढा करना। मिलवाना। [जुरवाना (दे०)]

जुड़हा—(संज्ञा, पु०, दे०) जुड़वाँ, दो मिले हुए।

जुड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जोड़ाई।

जुड़ाना†—(क्रि० अ०, हि०) ठढा होना या करना। शीतल या सुखी होना।

जुडिशल—(वि०, अं०) न्याय से सम्बन्धित।

जुत*—(वि०, दे०) युक्त, सहित।

जुतना—(क्रि० अ०, हि०) गाड़ी, हल आदि में बैल आदि का नधना, जुड़ना। किसी काम में जुटना या लगना। खेत जोता जाना।

जुतवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० जोतना] जोतने का काम दूसरे से कराना, जुताना।

जुताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जोताई।

जुतियाना—(क्रि० स०) [हि० जूता+इयाना प्रत्य०] जूते मारना या लगाना।

जुतिऔवल—(संज्ञा, पु०, दे०) आपस में जूते चलाने की क्रिया।

जुत्थ*—(संज्ञा, पु०, दे०) देखिए "यूथ"। "जुत्थ जुत्थ मिलो सुमुखि सुनैनी"—[रामा०]।

जुदा—(वि०, फ़ा०) अलग, भिन्न, न्यारा, पृथक्।

जुदाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अलग होने का भाव, वियोग, भिन्नता, बिलगाव।

जुद्ध*—(संज्ञा, पु०, दे०) युद्ध।

जुधिष्टिर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० युधिष्ठिर] एक राजा, पांडवों में सब से बड़े।

जुन्हरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० यवनाल] ज्वार, जुआर। जोंधरी (ग्रा०)।

जुन्हाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ज्योत्स्ना, प्रा० जोन्ह] चन्द्रमा का प्रकाश, चाँदनी। जुन्हैया, जोंधैया (ग्रा०)।

जुमला—(वि०, फा०) सब के सब, कुल। (संज्ञा, पु०, फा०) पूर्ण वाक्य। "जुमला बताय कर लूटि कमला"—बे०।

जुमा—(संज्ञा, पु०, अ०) शुक्रवार। [सुक्कर (दे०)] **—मस्जिद**-(संज्ञा, स्त्री०) वह मस्जिद जिसमें मुसलमान लोग हर शुक्रवार को मध्याह्न में नमाज पढते हैं।**—(मे)रात**-(संज्ञा, स्त्री०) बृहस्पतिवार।

जुमिल—(संज्ञा, पु०) (?) एक घोड़ा।

जुरअत—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) हिम्मत, साहस।

जुरझुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ज्वर+हि० झरझराना] थोड़ा-सा ज्वर। ज्वर की थोड़ी-सी गरमी।

जुरना*†—(क्रि० स०, दे०) जुड़ना। "साँवा जवा जुरतो भरि पेट"—[सुदा०]।

जुरवाना, जुरमाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अर्थ-दंड, रुपये की सजा, जरीबाना (ग्रा०)।

जुराफा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० जुर्राफा] अफ्रिका का पशु, जुर्राफी।

जुरुआ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्त्री, भार्य्या। [पत्नी, जोरू, जोरुवा (दे०)]

जुरै—(क्रि० अ०, दे०) जुड़ना, एकत्रित होना। मिलना।

जुर्म—(संज्ञा, पु०, अ०) कुसूर, अपराध।**—खफीफ**-(संज्ञा, पु०) साधारण त्रुटि, लघुदोष।**—शदीद**-(संज्ञा, पु०) गुरु अपराध, महान् दोष।

जुर्रा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नर बाज।

जुर्राब—(संज्ञा, स्त्री०, तु०) मोजा, पायताबा।

जुल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० छल] धोखा, छल, चकमा।**—बाज**-(वि०) चकमा देने वाला, छल करने वाला।

जुलफ, जुलुफ—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए "जुल्फ"।

जुलाई—(संज्ञा, स्त्री०) ईसवी सन् का सातवाँ मास।

जुलाब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) रेचन, दस्त, रेचक दवा। [जुल्लाब (दे०)]

जुलाहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० जोलाहा] मुसलमान कोरी। कपड़ा बुनने वाला।

जुल्फ, जुल्फी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पट्टा। कुल्ले। काकुल।**—गिरहगीर**-(संज्ञा, स्त्री०) घूँघर वाले केश।**—परीशां**-(संज्ञा, स्त्री०) बिखरे हुए केश।

जुल्म—(संज्ञा, पु०, अ०) अंधेर, अन्याय, अत्याचार। **मुहा०—टूटना**-आफत का पड़ना।**—ढाना**-अंधेर या अत्याचार करना। अनोखा काम करना।

जुलूस—(संज्ञा, पु०, अ०) तख्त पर बैठने का भाव। किसी उत्सव में धूम की यात्रा। राज्यारोहण।

जुलोक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्युलोक] सुरलोक, देवलोक। "ब्रह्म रंध्र फोरि जीव यों मिल्यो जुलोक जाय"—[रामा०]।

जुवराज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० युवराज] राज्याधिकारी, राजकुमार। "सुदिन सुअवसर सोइ जब, राम होहिं जुवराज"—[रामा०]।

जुस्तजू—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) खोज।

जुहाना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० यूथ+आना प्रत्य०] इकट्ठा करना, जोड़ना।

जुहार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अवहार] सलाम, बंदगी। "आप आपमहं करहिं जुहारा"—जायसी।

जुहारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० अवहार] मदद माँगना, सहायता चाहना। सलाम करना।

जुहावना—(क्रि० स०, दे०) [हि० जुहाना] इकट्ठा करना। (क्रि० अ०) इकट्ठा होना। "महाबीर भूपति के द्वारे लाखन विप्र जुहाने"—रघु०।

जुही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जूही, एक पुष्प।

जूँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० यूका] बालों का छोटा कीड़ा। **मुहा० कानों पर—रेंगना**-अपनी दशा समझ में आना, होश में आना। असर होना।

जू—(अव्य०, दे०) [सं० श्री] युक्त, जी।

जूआ—(संज्ञा, पु०) [सं० युग] हल या गाड़ी का वह काठ जो बैलों के कंधे पर रहता है। जूआ, जूआठ (ग्रा०)। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्यूत, प्रा० जुआ] एक खेल।

जूजू—(संज्ञा, पु०, अनु०) हाऊ, लड़कों को डराने का शब्द।

जूझ*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० युद्ध] लड़ाई।

जूझना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० युद्ध] लड़ मरना। काम में पिस जाना।

जूट—(संज्ञा, पु०, सं०) जूड़ा की गाँठ। बालों की लट। एक प्रकार का सन (बंगाल)।

जूठन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जूठा] भुक्त, छोड़ा भोजन या पदार्थ, जूठनि (ग्रा०)।

जूठा—(वि०, दे०) [सं० जुष्ठ] छोड़ा भोजन, छोड़ी वस्तु, भुक्त। [**जुठारना** (क्रि० स०), **जूठी** (स्त्री०)]

जूड़ा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जूट] बालों का बँधा हुआ समूह, चोटी। गेंडुरी। बच्चों का हलका अथवा हब्बा-डब्बा नामक रोग, जिसमें साँस वेग से चलती है।

जूड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जूड़] जाड़े का ज्वर।

जूता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० युक्त] जोड़ा, पनही, उपानह। **—खोर**-(वि०) [हिं० जूता + खोर फ़ा०] जूता खाने वाला, बेशर्म, निर्लज्ज। **मुहा० किसी का—उठाना**-किसी की दासता करना। झूठी बड़ाई करना। **—उछलना या चलना**-जूतों की मार पड़ना। मार-पीट होना। **—(ते) से खबर लेना या बात करना**-जूता मारना, अपमान करना। **—खाना**-जूते की मार सहना। अपमानित होना। **—(तों) दाल बँटना**-लड़ाई-झगड़ा होना।

जूती—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० जूता] छोटा जूता। **—खोर**-देखिए 'जूताखोर'। **—पैजार**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० जूती + पैजार फ़ा०] जूता चलने वाली लड़ाई। **मुहा०—की नोक पर मारना**-तुच्छ समझना। **मेरी—की नोक से**-मेरी बला से, मैं कुछ परवा नहीं करता, मैं इसे कुछ भी महत्त्व नहीं देता। **—के बराबर न समझना**-अत्यन्त उपेक्षा-योग्य मानना। **—गाँठना**-अत्यन्त नीच श्रेणी का कार्य करना। **—बगल में दबाना**-चुपचाप चल देना। **—सिर पर रखना**-चाटुकारी करना।

जूथ*—(संज्ञा, पु०) [सं० यूथ] झुंड। [जुत्थ (दे०)] "जूथ जंबुकन ते कहूँ"—वृं०।

जूथका, जूथिका—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० जूथ + इका प्रत्य०] एक फूल। "हे मालति हे जाति जूथिके, सुन चित दै टुक मेरी"।

जून†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यवन्] वक्त, समय। (संज्ञा, पु०) [सं० जूर्ण] घास, फूस। (अं०) एक मास।

जूप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्यूत] जुआ, पाँसे का खेल। विवाह के अवसर पर वर-वधू के जुआ खेलने की परम्परा।

जूमना*—(क्रि० अ०, दे०) [अ० जमा] मिलना, भिड़ना। झूमना। जुटना।

जूर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० जुड़ना] योग, जोड़।

जूरना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० जोड़ना] योग, मेल होना।

जूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जूट] बालों का जूड़ा। "खुलि जूरे की गाँठ तरे सरकी"।

जूरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० जुड़ना] घास आदि का पूला। पकवान। (अं०) न्यायालय का पंच, मुखिया।

जूलाई—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) देखिए "जुलाई"।

जूस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जूठा] पकी दाल या चावल आदि का छाना हुआ पानी। [फ़ा० जुल्फ] दो पर बँटने वाली संख्या। **—ताक**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० जूस + ताक फ़ा०] जोड़ा तथा अकेला, ऊना-पूरा।

जूसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जूस] शक्कर की तलछट। [**रसदार** (वि०)]

जूह, जूहा—(संज्ञा, पु०) [सं० यूथ] झुंड, समूह, जूथ। "राम प्रताप प्रबल कपि जूहा"—[रामा०]।

जूहर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० जौहर] जवाहिर, रत्न।

जूही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० यूथी] छोटा, कोमल और मीठी गंधवाला एक फूल। एक आतिशबाजी। एक कीट जो मटर आदि में लग जाता है। [जुही (दे०)]

जृंभ, जृंभण—(संज्ञा, पु०, सं०) जंभुआई। [**जृंभक** (वि०)] [**जृंभा** (स्त्री०)]

जृंभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जँभुआई। [जम्हाई (दे०)]

जृंभिका—(वि०, सं०) जँभुआई लेने वाला। एक बाण।

जेंगना—(संज्ञा, पु०) जुगनू।

जेंटलमैन—(संज्ञा, पु०, अं०) टीमटाम से रहने वाला व्यक्ति। सभ्य पुरुष। शिष्टाचार-सम्पन्न व्यक्ति।

जेंवन—(संज्ञा, पु० दे०) [हिं० जेंवना] भोजन करना। "पंचकौर करि जेंवन लागे"—[रामा०]।

जेंवना—(क्रि० स०, दे०) [सं० जेमन] खाना।

जेंवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० जेंवना का प्रेरणा० रूप] खिलाना, भोजन कराना।

जे*—(सर्व०, दे०) [सं० ये] वे, जो। "जे गंगाजल आनि चढ़ैहैं"—[रामा०]।

जेइ, जेई, जेउ, जेऊ*—(सर्व०, दे०) [सं० ये] जो भी, जे । " जेउ कहावत हितू हमारे"

जेठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ज्येष्ठ] एक महीना। ज्येष्ठ, पति का बड़ा भाई । बड़ा भाई । [**जेठी** (स्त्री०)]

जेठरा‡—(वि०, दे०) [सं० ज्येष्ठ] जेठा, बड़ा।

जेठा—(वि०, दे०) [सं० ज्येष्ठ] बड़ा भाई। पति का बड़ा भाई। [**जेठी** (स्त्री०)]

जेठाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जेठ] बड़ाई ।

जेठानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जेठ] जेठ की पत्नी। [जिठानी (दे०)]

जेठी—(वि०, दे०) [सं० ज्येष्ठीय] जेठ का अथवा जेठ मास से सम्बन्धित । (संज्ञा, स्त्री०) कपास की एक जाति ।—**मधु**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० यष्टिमधु] मौरेठी, मुलहटी (औष०)।

जेठौत, जेठौता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ज्येष्ठ +पुत्र] जेठ का लड़का। [**जेठौती** (स्त्री०)]

जेतव्य—(वि०, सं०) जो जीतने के योग्य हो।

जेता—(संज्ञा, पु०) [सं० जेतृ] जीतने वाला, विजय करने वाला । विष्णु भगवान । *(वि०, ब्र०) जितना । (वि०, स्त्री०, दे०) जेती, जित्ती। (वि०, दे०, ब्र०) जितने, जेते । (वि०) जितना, जित्तो, जित्ता (प्रान्तो०)।

जेतिक—(क्रि० वि०, दे०) [सं० यः] जितना । " जेतिक उपाय हम कीन्हे रिपु जीतबे को " ।

जेतो*—(क्रि० वि०, दे०) [सं० यः] जित्ता । [जित्तो (दे०)] जितना, जितो (ब्र०)। " जेतो गुन दोष सों बताये देत तेतो सबै ।"

जेब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) खीसा, खलीथा ।—**कट**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [फ़ा० जेब+ काटना हिं०] जेब का काटने वाला, चोर ।—**खर्च**-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) निजी खर्च ।—**घड़ी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [फ़ा० जेब+घड़ी हिं०] जेब में रखने की छोटी घड़ी ।

जेबी—(वि०, फ़ा०) जेब में रखने योग्य।

जेय—(वि०, सं०) विजय के योग्य, जीतने योग्य। [(विलो०) **अजेय**]

जेर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बच्चादानी । (वि०) [फ़ा० जेर] हराना। परेशान, तंग। नीचे।—**साया**-छत्रछाया मे, रक्षा में ।—**पाई**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) औरतों के पहनने के जूते।—**बार**-(वि०, फ़ा०) बोझ से दबा, दुखी, परेशान, हैरान। अपमानित।—**बारी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बोझ से दबना, दुखी या परेशान होना ।

जेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बच्चेदानी । छड़ी ।

जेल—(संज्ञा, पु०, अं०) बंदीगृह, कारागार, कैदखाना। कैद, पाबंदी।—**खाना**-(संज्ञा, पु०, यौ०)[अं० जेल+खाना फ़ा०] बंदीगृह।

जेलर—(संज्ञा, पु०) कारावास का अध्यक्ष, जेल का अधिकारी ।

जेवना—(क्रि० स०, दे०) [सं० जेमन] भोजन करना, खाना खाना ।

जेवनार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० जेवना] खाना खाने वालों का जमघट, भोज ।

जेवर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) आभरण, गहना, भूषण ।

जेवरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जीवा] रसरी, रस्सी। " होति अँधेरे मों परी, यथा जेवरी सर्प " —वृं० ।

जेह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० जिह=चिल्ला] कमान का चिल्ला।

जेहन—(संज्ञा, पु०, अ०) ज्ञान, समझ, धारणा-शक्ति।—**दार**-(वि०) कुशाग्र बुद्धिवाला, अच्छी समझवाला ।

जेहर, जेहरि, जेहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पाजेब। जेवर। " जागै जगमगी जाकी जेहरी जराऊ जरी" —दीन० ।

जेहल—(संज्ञा, पु०, दे०) [जेल] बंदीगृह, कैद-खाना। कैद। [जेहलखाना (दे०)]

जेहि, जेही*—(सर्व, दे०) [सं० यस] जिसको, जिसे। "जेहि सुमिरत सिधि होय"—[रामा०]। [(विलो०) **तेहि, तेही**]

जै—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जय] जीत, फतह। †(वि०, दे०) [सं० यावत्] जितने। "जै रघुवीर प्रताप समूहा"—[रामा०]।

जैत†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जयति] जैति (दे०), जीत, फतह। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जयंति] एक पेड़।—**पत्र***-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० जयति+पत्र] विजय-पत्र ।—**वार***-(संज्ञा, पु०, यौ०) जीतने वाला, विजेता, विजयी।

जैती—(संज्ञा, स्त्री०) एक प्रकार की घास ।

जैतू—(संज्ञा, पु०, अ०) जैतून का तेल।

जैतून—(संज्ञा, पु०, अ०) एक पेड़ जिसके पत्ते, फल, फूल औषधि के काम आते हैं।

जैन, जैनी—(संज्ञा, पु०, सं०) जैन मत तथा उसके अनुयायी।

जैनु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जेवना] खाना।

जैन्य—(वि०, सं०) जैन-सम्बन्धी।

जैबो*—(क्रि० अ०, ब्र०) [हि० जाना] जाना, जाइबो (ब्र०)। "जैबो लखो नहिं गोकुल गाँव को"—कु० वि०।

जैमाल, जैमाला—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० जयमाल] विजय या स्वयम्वर की माला। "पहिरावहु जैमाल सुहाई"—[रामा०]।

जैमिनि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि। पूर्व मीमांसा दर्शन के प्रणेता एक प्राचीन ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे।

जैमिनीय—(वि०, सं०) जैमिनि का।

जैयट—(संज्ञा, पु०, सं०) महाभाष्य के टीकाकार कैयट के पिता।

जैयद—(वि०, दे०) [अ० जद=दादा] बहुत बड़ा, भारी।

जैलदार—(संज्ञा, पु०) [अ० जैल+दार फ़ा०] जिलादार, कई गाँवों का प्रबन्ध करने वाला अफ़सर।

जैवात्रिक—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा। कपूर। दीर्घजीवी।

जैसवार—(संज्ञा, पु०) कुरमियों और कलवारों की जाति-विशेष का एक भेद।

जैसा—(वि०, दे०) [सं० यादृश] जिस तरह या प्रकार का, जिस भाँति का। जैसो (ब्र०)। [**जैसी** (स्त्री०)] **मुहा०—(से) का तैसा**—वैसे ही, उसी प्रकार का, उसी के तुल्य।—**चाहिये वैसा**—ठीक-ठीक।

जैसे—(क्रि० वि०) [हि० जैसा] जिस भाँति से। "राजत राम अतुल बल जैसे"—[रामा०]। **मुहा०—तैसे**—किसी भाँति, बड़ी कठिनता से। "जैसे तैसे फिरेउ निषाद।"—[रामा०]।

जैहैं, जैहउँ—(क्रि० अ०, दे०) [हि० जाना] जायँगे, जैहौं, जाइहै। "जैहउँ अवध कवन मुँह लाई"—[रामा०]।

जों†*—(क्रि० वि०, दे०) [हि० ज्यों] जैसे, जिस भाँति, ज्यों।

जोंई—(सर्व०, दे०) जो, जो कोई। (क्रि० स०, दे०) देखी।[जोही (दे०)]

जोंक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जलौका] पानी का एक कीड़ा जो रक्त चूसता है। "पियै रुधिर पय ना पियै, लगी पयोधर जोंक।"

जोंधरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जूर्ण] जुआँर, ज्वार।

जोंधैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० योत्स्ना] चन्द्रमा। चन्द्र का प्रकाश, चाँदनी।

जो—(सर्व०, दे०) [सं० यः] सम्बन्धवाची सर्वनाम। [(विलो०) **सो**] (अव्य०, दे०) अगर, यदि, जोपै, जुपै।

जोअना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० जोवना] देखना। राह देखना, परखना। [जोहना (दे०)]

जोइ, जोई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जाया] स्त्री, पत्नी, जोय, जोरू। (सर्व०, दे०) जो। (पू० का०, दे०) देख कर, जोही।

जोइसी, जोसी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ज्योतिषी] ज्योतिष का जानने वाला।

जोउ—(सर्व०, ब्र०) जो, जेऊ, जौन।

जोख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तौल, वजन।

जोखना—(क्रि० स०, दे०) [सं० जुष=जाँचना] जाँचना। तौलना। परखना।

जोखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जोखना] तौल। लेखा, हिसाब।

जोखिम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झोंका] भारी हानि की शंका। विपत्ति आने का भय। [जोखों (दे०)]—**का काम**—(सं०, पु०) जिस काम को करने में बहुत अधिक हानि की आशंका हो। **मुहा०—उठाना या सहना**—काम जिससे हानि का भय हो, हानि उठाना।—**में डालना**—हानि मे डालना। **जान—होना**—मारे जाने का डर होना।

जोगंधर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० योगधर] बैरी की चोट से बचने की युक्ति।

जोग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० योग] मन की वृत्तियों का रोकना। जोड़ना, मिलाना। (वि०, दे०) [सं० योग्य] लायक, उपयुक्त।

जोगड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० जोग+ड़ा प्रत्य०] पाखंडी, ढोंगी। योगी।

जोगवना, जुगवना—(क्रि० स०, दे०) बचाये रखना। यत्न या आदर से रखना। "अमिय मूरि सम जोगवति रहऊँ"—[रामा०]।

जोगानल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० योगानल] योग से उत्पन्न आग।

जोगाभ्यास—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० योगाभ्यास] योग की क्रियाओं का साधन।

जोगासन—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० योगासन] योग की बैठक।

जोगिंद्र*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० योगींद्र] बड़ा भारी योगिराज। शिवजी।

जोगिन, जोगिनि, जोगिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० योगिनि] योगी की स्त्री। पिशाचिनी ६४ हैं, एक विचार (ज्यो०)। "योगिनी सुखदा वामे"—[फलित०]।

जोगिया—(वि०, दे०) [हिं० जोगी+इया प्रत्य०] गेरू से रँगा वस्त्र। (संज्ञा, पु०, दे०) योगी।

जोगी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० योगी] योगी। "तौ लौं जोगी जगत गुरु, जौ लौं रहै निरास"—वृं०।

जोगीड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० जोगी+ड़ा प्रत्य०] गान-भेद। भिक्षुक-विशेष।

जोगेश्वर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० योग+ईश्वर] बड़ा भारी योगिराज। श्रीकृष्ण।

जोजन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० योजन] चार कोस की दूरी। "सोरा जोजन आनन ठयऊ"—[रामा०]।

जोटा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० योटक] जोड़ा, दो जोड़ी। "दीन्ह असीस जानि भल जोटा"—[रामा०]।

जोटिंग—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) महादेव जी।

जोड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० योग] योग करना। [जोड़ना (दे०)] [**जोड़ती** (स्त्री०)] योग-फल, मीजान [टोटल]। पदार्थों का सन्धिस्थान। आपस का मेल। जोड़ा, समान।—**का**-(वि०) बराबरी का, समान।—**जोड़**-(संज्ञा, पु०) शरीर का प्रत्येक अङ्ग।—**तोड़**-बराबरी में बैठने वाला व्यवहार। छल-कपट, दाँव-पेंच। मुख्य युक्ति। **मुहा०** —**छूटना**-दो पहलवानों का कुश्ती के लिए अखाड़े मे उतरना।—**तोड़ मिलना**-समान होना।

जोड़न—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जोड़] जावन, दूध से दही जमाने की वस्तु।

जोड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० युक्त] दो पदार्थों को मिलाना। इकट्ठा करना, योग करना।

जोड़वाँ, जुड़वाँ—(वि०, दे०) [हिं० जोड़+वाँ प्रत्य०] साथ उत्पन्न दो बच्चे, युग्म।

जोड़वाई—(संज्ञा, स्त्री०) जोड़वाने की क्रिया।

जोड़वाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० जोड़ना का प्रेरणा० रूप] जोड़ने का काम औरों से कराना, जोड़ाना।

जोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० जोड़ना] एक-सी दो चीजें, दो समान वस्तुएँ। [**जोड़ी** (स्त्री०)] पाँव के जूते। धोती का जोड़ा। नरमादा। **मुहा०** —**खाना**-पशु-पक्षियों के नर-मादे का प्रसंग करना।

जोड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जोड़ना+आई प्रत्य०] जोड़ने की क्रिया का भाव। दीवार (ईंटों की) उठाने का कार्य। जोड़ने की मजदूरी।

जोड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जोड़ा] जोड़ा, जैसे बैलों का। मुग्दर। मंजीरों की जोड़ी। दो घोड़ों की गाड़ी।—**दार**-(वि०) बराबरी का, समान।—**वाल**-(संज्ञा, पु०) गाने वालों की मंडली मे मजीरा बजाने वाला व्यक्ति।—**की बैठक** -(संज्ञा, स्त्री०) बैठक वाला व्यायाम जो मुग्दर की जोड़ी पर हाथ रखकर किया जाता है।

जोड़ू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जोड़ा] स्त्री, पत्नी, औरत, जोरू। [**जोड़ू जाँता** (यौ०)]

जोत—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० जोतना] जो रस्सी बैल या घोड़े के गले में गाड़ी जोतते समय बाँधी जाती है। जोतने का मौका। [जोता (दे०)] [सं० ज्योति] प्रकाश।—**दार**-(संज्ञा, पु०) किसान, काश्तकार।

जोतना—(क्रि० स०, दे०) [सं० योजना या युक्त] गाड़ी मे बैल या घोड़े बाँधना। बलपूर्वक किसी से काम लेना। भूमि जोतना।

जोताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जोतना+आई प्रत्य०] जोतने का भाव या काम या मजदूरी।

जोति, जोती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ज्योति] प्रकाश, रोशनी। "मनि मानिक सम पद-नख-जोती"—[रामा०]। *† (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जोतना] जोतने-बोने-योग्य भूमि।

जोतिष, जोतिस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ज्योतिष] ग्रहों-नक्षत्रों की गति आदि का शास्त्र, गणित-शास्त्र।

जोतिषी, जोतिसी—(वि०, दे०) [सं० ज्योतिषी] दैवज्ञ। गणितज्ञ। ज्योतिषज्ञाता।

जोत्स्ना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ज्योत्स्ना] चाँदनी, चंद्रिका।

जोत्स्नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ज्योत्स्नी] उजेली रात, चाँदनी रात ।

जोधन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० योधना] लड़ाई, संग्राम, युद्ध, झगड़ा ।

जोधा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० योद्धा] लड़ने वाला, शूरवीर । "चला इन्द्रजित अतुलित जोधा" —[रामा०] ।

जोनि, जोनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० योनि] भग, उत्पत्ति-स्थान । "वाल्मीकि नारद घट जोनी" —[रामा०] ।

जोन्ह, जोन्हाई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ज्योत्स्ना] चन्द्रमा का प्रकाश, चाँदनी । जुन्हाई, जान्हैया । "ऐसी गयी मिलि जोन्ह की जाति में रूप की राशि न जाति बखानी" ।

जोपै*—(अव्य, यौ०) [हिं० जो+पर प्रत्य०] अगरचे, यद्यपि, कदाचित् । [जुपै (ब्र०)] "जोपै सीय-राम बन जाहीं "—[रामा०] ।

जोफ—(संज्ञा, पु०, अ०) कमजोरी, निर्बलता । बुढ़ाई ।

जोबन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यौवन] जवानी, युवावस्था । कुच, उरोज । सुन्दरता । "सूर श्याम लरिकाई भूलो जोबन भये मुरारी" ।—**पर आना**-विकसित होना, खिल जाना ।—**लूटना**-यौवन जनित सुख का भोग करना ।

जोबना, जोबनवाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यौवन] कुच, उरोज । जवानी ।

जोम—(संज्ञा, पु०, अ०) घमंड, अभिमान । जोश, उमंग, उत्साह ।

जोय*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जाया] औरत, पत्नी, स्त्री । (सर्व० पु०, दे०) जो, जिस । (क्रि० स०) देख । "नन्द जोय धनि भाग तिहारे"—सूर । "रही पंथ नित जोय" ।

जोयना*†—(क्रि० स०, दे०)[हिं० जोड़ना] जलाना । "दीपक है जोयना सों छायो अंधकार है"—[स्फु०] ।

जोयसी*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ज्योतिषी] ज्योतिषी ।

जोर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ताकत, बल, पराक्रम । **मुहा० किसी बात पर—देना**-किसी बात को बहुत जरूरी और बढ़ा कर दृढ़ता से कहना । **किसी बात के लिए—देना**-हठ या आग्रह करना ।—**मारना या लगाना**-बहुत कोशिश करना ।—**जुल्म**-(सं०, पु०, फ़ा०) अन्याय, अत्याचार ।—**(रों) पर होना**-बड़ी बाढ़, वेग या ताकत पर होना ।—**(रों) पर**-भरोसे, सहारे । अत्यन्त उत्साह की स्थिति में । **किसी के—पर कूदना (भूलना)**-सहायक को बली जान कर अपना बल दिखाना ।—**दार**-(वि०, फ़ा०) शक्तिशाली, बलिष्ठ, बली । प्रभावशाली ।—**शोर**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बहुत शक्ति, अधिक बल ।

जोरना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० योग] जोड़ना, इकट्ठा करना ।

जोराजोरी†*—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बलपूर्वक, जबरदस्ती । (क्रि० वि०) जबरदस्ती से ।

जोरावर—(वि०, फ़ा०) शक्तिमान, बली, ताकतवर । [**जोरावरी (संज्ञा)**]

जोरी†*—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० जोड़ी] जोड़ा, जोड़ी । "जोरि जोरि जोरी चरैं"—**शिव०** ।

जोरू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जोड़ी] जोड़, स्त्री, पत्नी, [जोरुवा (दे०)] ।

जोल—(संज्ञा, पु०, दे०) समूह, झुंड । [(यौ०) **मेल-जोल**] । "कहा करौ वारिजमुख ऊपर विथके षटपद जोल"—**सूर** ।

जोला—(संज्ञा, पु०, दे०) कपट, धोखा । ठगी । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० ज्वाला] आग की लपट, जुआला । (संज्ञा, पु०) एक फ्रांसीसी उपन्यास-लेखक ।

जोलाहल*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ज्वाला] आग की लपट या ज्वाला ।

जोलाहा—(संज्ञा, पु०) [हिं० जुलाहा] जुलाहा, जोलहा, जुलहा । मुसलमान कोरी । "पकरि जोलाहा कीन्ह"—**कबीर** ।

जोली†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जोड़ी] बराबर के । तुल्य, जैसे—**हमजोली** ।

जोवत—(क्रि० स०, दे०) [हिं० जोवना] देखते या खोजते हुए । "राधामुख चन्द्र ताहि जोवत कन्हाई है"—[स्फु०] ।

जोवना, जोहना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० जुषण =सेवन] देखना । खोजना । राह देखना, परखना ।

जोश—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उबाल, उफान, आवेश । उत्साह, उमंग । **मुहा०—में आना**-आवेश में आना ।—**खाना**-उफनाना ।—**देना**-पानी में पकाना । **खून का**—,जातीय प्रेम ।

जोशन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भुजा का एक गहना । कवच ।

जोशांदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) काढा, क्वाथ।

जोशीला—(वि०) [फ़ा० जोश+ईला प्रत्य०] जोश से भरा। [**जोशीली** (स्त्री०)]

जोष—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० योषित्] औरत, स्त्री। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जोखना] तौलना।

जोषित्, जोषिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) औरत, स्त्री। "उमा दारु जोषित् की नाईं"—[रामा०]।

जोषी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ज्योतिषी] दैवज्ञ, ज्योतिषी। गणितज्ञ।

जोह, जोहनि†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० जोहना] तलाश। प्रतीक्षा। खोज। देखना। "सूने भवन पैठि सुत तोरो दधिमाखन तहं जोह" —सूर। "मोहन को मुख सोहन जोहन जोग" —वा०।

जोहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० जुषण=सेवन] देखना। खोजना। प्रतीक्षा करना। [**जोहि, जोही** (पू० का० क्रि०, ब्र०)]। "बार बार मृदु मूरति जोही"—[रामा०]।

जोहार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जुषण=सेवन] बंदगी, सलाम।

जोहारना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० जुषण= सेवन] बंदगी या सलाम करना।

जौं†—(अव्य, दे०) [सं० यदि] जो। (क्रि० वि०) [हिं० ज्यों] जैसा, जैसे।

जौंकना—(क्रि० स०, दे०) डाँटना, फटकारना, डौंकना (ग्रा०)।

जौंरा-भौंरा—(संज्ञा, पु०, दे०) बालकों का जोड़ा, दो लड़के।

जौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जव] जव, जवा। (अव्य, ब्र०) यदि। *†(क्रि० वि०, दे०) जब। "जौलगि आवहुं सीतहिं देखी"—[रामा०]।

जौख—(संज्ञा, पु०, दे०) [तु० जूक] समूह। सेना। झुंड।

जौजा—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० जौजः] स्त्री, औरत, जोड़, जोरू।

जौतुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यौतुक] दायज, दहेज, ब्याह में वर के लिए दिया गया धन।

जौन†*—(सर्वं०, दे०) [सं० यः] जो, जवन जउन (ग्रा०)। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यमन] मुसलमान।

जौपै*†—(अव्य०, ब्र०) [हिं० जौ+पै] यदि, जो, जुपै (ब्र०)। "जोपै सीयाराम बन जाहीं" —[रामा०]।

जौहर—(संज्ञा, पु०, अ०) [फ़ा० गौहर] रत्न। तलवार आदि की काट। हुनर, गुण। कट मरने का भाव। (राजपूत०)। युद्ध में हार अनिवार्य होने पर राजपूत-नारियों के धधकती आग मे जल मरने की क्रिया।

जोहरी—(संज्ञा, पु०, अ०) रत्न बेचने या परखने वाला।

ज्ञ—(संज्ञा, पु०, सं०) एक संयुक्ताक्षर [ज्+ञ] ज्ञान, बोध, समझ। ज्ञानी, जैसे—नीतिज्ञ, गुणज्ञ।

ज्ञपित, ज्ञप्त—(वि०, सं०) जाना या समझा हुआ, ज्ञापित।

ज्ञप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समझदारी, बुद्धि।

ज्ञात—(वि०, सं०) जाना, समझा। विदित। प्रगट।—**यौवना**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपनी युवावस्था को जानने वाली एक नायिका, (नायिका-भेद)। [(विलो०) **अज्ञात-यौवना**]

ज्ञातव्य—(वि०, सं०) जानने-योग्य। ज्ञान-गम्य।

ज्ञाता—(वि०) [सं० ज्ञातृ] जानने वाला, ज्ञानी। [**ज्ञात्री** (स्त्री०)]

ज्ञाति—(संज्ञा, पु०, सं०) एक जाति के लोग, जाति।

ज्ञान—(संज्ञा, पु०, सं०) समझ, बोध, यथार्थ ज्ञान, तत्व ज्ञान।—**कांड**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वेद का वह भाग जिसमे ज्ञान का वर्णन है। उपनिषद्।—**गम्य**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जो ज्ञान से जाना जा सके। "ज्ञानगम्य जय रघुराई"—[रामा०]।—**गोचर**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जो ज्ञान से जाना जावे।—**चक्षु**-(संज्ञा, पु०, सं०) ज्ञान का नेत्र, ज्ञान-प्रेरणा देने वाली अंतर्दृष्टि।—**ज्येष्ठ**-(वि०, सं०) जो ज्ञान मे विशिष्ट हो, सज्ञान।—**द**-(संज्ञा, पु०, सं०) गुरु, शिक्षक।—**दग्धदेह**-(संज्ञा, पु०, सं०) संन्यासी।—**दा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सरस्वती।—**दाता**-(वि०, सं०) ज्ञान देने वाला।—**दात्री**-(वि०, सं०) ज्ञान देने वाली। (संज्ञा, स्त्री०) सरस्वती।—**योग**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ज्ञान-लाभ द्वारा मुक्ति-प्राप्ति का साधन।—**वान**-(वि०, सं०) बुद्धिमान, ज्ञानी।—**वृद्ध**-(वि०, यौ०, सं०) ज्ञान में बड़ा।

ज्ञानी—(वि०) [सं० ज्ञानिन्] बुद्धिमान, समझदार। ज्ञाता।

ज्ञानेन्द्रिय—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) विषय-बोधक इन्द्रियाँ—आँख, नाक, त्वचा आदि।

ज्ञापक—(वि०, सं०) समझाने या सूचना देने वाला, ज्ञात कराने वाला।

ज्ञापन—(संज्ञा, पु०, वि०, सं०) समझाने और सूचना देने का काम।

ज्ञापयिता—(वि०, सं०) ज्ञापक।

ज्ञापित—(वि०, सं०) समझाया हुआ, सूचना दिया हुआ। [ज्ञापनीय (वि०)]

ज्ञाप्य—(वि०, सं०) जताने योग्य।

ज्ञेय—(वि०, सं०) जानने योग्य।

ज्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रत्यंचा, कमान की ताँत या डोर। वृत्त के चाप की रेखा। जमीन।

ज्यादती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बहुतायत, अधिकता। अन्याय, अत्याचार।

ज्यादा—(वि०, फ़ा०) बहुत, अधिक।

ज्याफत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) भोज, दावत।

ज्यामिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रेखागणित। क्षेत्रमिति। [ज्यामेटरी]

ज्यायान—(वि०, पु०, सं०) जेठा, ज्येष्ठ, बड़ा।

ज्यारना, ज्यावना*—(क्रि० अ०, स०) [हिं० जिलाना] जिलाना। पालना। [खिलाना (दे०)]

ज्यूँ—(अव्य०, दे०) [हिं० ज्यों] जैसे, ज्यों।

ज्येष्ठ—(वि०, सं०) जेठा, बड़ा। (संज्ञा, पु०, सं०) गरमी का एक महीना।

ज्येष्ठता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बड़ाई, श्रेष्ठता।

ज्येष्ठांबु—(संज्ञा, पु०, सं०) माँड़, चावल का पसावन।

ज्येष्ठांश—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़े भाई का हिस्सा। बड़े भाई का बड़ा हिस्सा पाने का अधिकार।

ज्येष्ठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीन तारों से बना एक नक्षत्र। पति-प्रिया स्त्री। बड़ी अँगुली। छिपकली।

ज्येष्ठाश्रम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रेष्ठ आश्रम। गृहस्थाश्रम।

ज्यों, ज्यौं*—(क्रि० वि०) [सं० यः+इव] जैसे, जिस भाँति। "ज्यों दसनन महँ जाभ बिचारो"—[रामा०]। मुहा०—**त्यों**-जैसे तैसे, किसी न किसी ढंग से।—**ज्यों**-जैसे-जैसे, जिस-जिस तरह से, जितना-जितना। "ज्यों-ज्यों नीचो ह्वै चले"—बिहारी।

ज्योति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० ज्योतिस] प्रकाश, लौ, उजेला। परमेश्वर।—**शिखा**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक विषम वर्णवृत्त (पिं०)।

ज्योतिरिंगण—(संज्ञा, पु०, सं०) खद्योत, जुगनू।

ज्योतिर्मय—(वि०, सं०) प्रकाशयुक्त, चमकता हुआ, तेजोमय, कांतिमान।

ज्योतिर्लिंग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिव या महादेव जी।

ज्योतिर्लोक—(संज्ञा, पु०, सं०) ध्रुवलोक।

ज्योतिर्विद—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्योतिषी।

ज्योतिर्विद्या—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) ज्योतिष विद्या।

ज्योतिश्चक्र—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रहों और राशियों का गोला या मंडल।

ज्योतिष—(संज्ञा, पु०, सं०) खगोल विद्या। [ज्योतिषशास्त्र (यौ०)]

ज्योतिषि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ज्योतिषिन्] ज्योतिष-ज्ञाता।

ज्योतिष्क—(संज्ञा, पु०, सं०) नक्षत्रों, तारागणों और ग्रहों का समूह। मेथी। चितावरी।

ज्योतिष्टोम—(संज्ञा, पु०, सं०) एक यज्ञ।

ज्योतिष्पथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आकाश।

ज्योतिष्पुंज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तारागण।

ज्योतिष्मती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात्रि। माल कँगुनी (औष०)।

ज्योतिष्मान—(वि०, सं०) प्रकाशमान। (संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य।

ज्योतीरथ—(संज्ञा, पु०, सं०) ध्रुवतारा।

ज्योत्स्ना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चन्द्रमा का प्रकाश, या चाँदनी, उजेली रात।

ज्योनार, ज्यौनार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जेमन=खाना] न्योता, ज्याफत, दावत।

ज्योरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० जीवा] रस्सी, डोरी। जौरी, जेवरी (ग्रा०)।

ज्योहत, ज्योहर—(संज्ञा, पु०) [सं० जीव+हत] खुदकुशी, आत्म-हत्या। जौहर।

ज्यौतिष—(वि०, सं०) ज्योतिष-संबंधी।

ज्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) बुखार, ताप।—**घ्न**—(वि० सं०) ज्वर-नाशक। (संज्ञा, पु०) गुड़ुच।

ज्वरांकुश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ज्वर की एक दवा (रसायन)। कुश जैसा तृण-विशेष।

ज्वरांतक—(संज्ञा, पु०, सं०) आरग्वध। एक प्रकार का नीम। (वि०) ज्वरनाशक।

ज्वरार्त—(वि०, यौ०) [सं० ज्वर+आर्त] बुखार से तंग।

ज्वरित—(वि०, सं०) जिसे बुखार हो।

ज्वलंत—(वि०, सं०) दीप्तिमान, प्रकाशित। बहुत प्रगट, स्पष्ट।

ज्वल—(संज्ञा, पु०, सं०) आग की लपट।

ज्वलन—(संज्ञा, पु०, सं०) जलने का भाव या क्रिया, जलन, दाह, लपट। "प्रसिद्ध मूर्धज्वलनं-हविर्भुज: "—माघ०।

ज्वलित—(वि०, सं०) जला हुआ। प्रकाशित।

ज्वान†—(वि०, दे०) [सं० युवा] जवान।

ज्वार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० यवनाल] जुनरी, जुवार, जोन्हरी, जोंधरी (ग्रा०)। अन्न। समुद्र का बढ़ाव। [(विलो०) **भाटा**]

ज्वारभाटा—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समुद्र का बढ़ाव-घटाव।

ज्वाल—(संज्ञा, पु०, सं०) आग की लपट। "सीरी परी जाति है वियोग ज्वाल हू तौ अब "—रत्ना०। [**ज्वाला** (स्त्री०)]

ज्वालादेवी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) काँगड़ा की देवी।

ज्वालामुखी (पर्वत)—(संज्ञा, पु०, सं०) वह पर्वत जिससे धुआँ, आग के गोले, लपट, पिघले पदार्थ निकलते है।

झ

झ—संस्कृत-हिन्दी की वर्णमाला के चवर्ग का चौथा व्यंजन, इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

झंकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झीखना] पछ-ताना, अफसोस करना।

झंकार—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) झनझन का शब्द। छोटे-छोटे जन्तुओं (झींगुर) के बोलने का शब्द।

झंकारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० झंकार] झन-झन शब्द उत्पन्न करना।

झंकारित—(वि०, सं०) झंकार-युक्त। (संज्ञा, पु०) झंकार।

झंकारिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंगा।

झंकारी—(वि०, सं०) झंकार या गुंजार उत्पन्न करने वाला।

झंकृत—(वि०, सं०) झंकारयुक्त।

झंखना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झीखना] पश्चाताप करना, पछताना। "आज खाय औ कल को झंखे "—कबीर।

झंखाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झाड़ का अनु०] काँटेदार झाड़ी, काँटेदार पौधा। बिना पत्तों का पेड़। बेकाम वस्तु-समूह। [**झाड़ी-झंखाड़** (यौ०)]

झंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झगा] छोटे बच्चों का अँगरखा, झगा, झँगवा (ग्रा०)। "सीस पगा न झँगा तन मे"—नरो०।

झंगुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झँगा] छोटा झगवा [झँगुलिया (दे०)]

झंझट—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) व्यर्थ का झगड़ा, लड़ाई, बखेड़ा।

झंझटी—(वि०) झंझटवाला, बखेड़ी।

झंझनाना—(क्रि० अ०, अनु०) झनझन शब्द करना। झंकार होना। अप्रसन्न होना।

झंझर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झज्झर] पानी रखने का मिट्टी का छोटा बरतन।

झँझरा—(वि०, अनु०) जिस पदार्थ में बहुत से छोटे-छोटे छेद हों। [**झँझरी** (स्त्री०)]

झँझरी, झाँझरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झँझरा] जिस वस्तु में बहुत से छोटे-छोटे छेद हों, झरोखे की जाली। "झमकि झरोखे भूमि झाँझरी सों झाँकि झूकि "।

झंझा—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ी वेगवान आँधी या वायु। "झंझा का है अति प्रबलवेग"—हितैषी।

झंझावात—(संज्ञा, पु०) अंधड़, पानी के साथ आनेवाली हवा।

झंझानिल—(संज्ञा, पु०, सं०) देखिए झंझावात। "कुतर्क झंझानिल के प्रसंग में।"

झंझार—(संज्ञा, पु०) लपट, आग की ज्वाला।

झंझी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फूटी हुई कौड़ी।

झँझोड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० झंझा] किसी वस्तु को जोर से हिलाना, झकोरना, झक-झोरना, झटका देना। [झँझोरना (दे०)]

झंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जयन्त] पताका, निशान, बैरख, ध्वजा। [**झंडी** (स्त्री० अल्पा०)] " झंडा ऊंचा रहे हमारा "—[स्फु०]। **मुहा०** —**ऊँचा होना**-प्रताप या आतंक फैलना। विजय होना।—**खड़ा करना**-लोगों को इकट्ठा करना। लड़ने की तैयारी करना। आधिपत्य जमाना।—**गिरना या झुकना**-पराजय या दुखद बात होना। —**गाड़ना या फहराना**-अधिकार या विजय की सूचना देना। अधिकार जमाना।

झँडूला—(वि०, दे०) [हिं० झंड+ऊला प्रत्य०] बिना मुंडन का लड़का । जिस पेड़ में घने पत्ते हों । घने बालों वाला ।

झंप—(संज्ञा, पु०, सं०) छलाँग, उछाल । ढका, छिपा । [**झंपित** (वि०)] । **मुहा०—देना**-उछलना, कूदना । घोड़ों का गहना ।

झँपन—(वि०, दे०, सं०) ढक्कन । " सब को झंपन होत है, जैसे वन का सूत "—[स्फु०] ।

झँपना, झाँपना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० झंप] किसी वस्तु को मूँदना, ढकना, छिपाना । लपकना, एकबारगी कूद पड़ना । झेंपना, शर्मिन्दा होना । [**झँपाना, झँपवाना** (प्रेरणा० रूप)]

झँपरिया—(संज्ञा, स्त्री०) पालकी का उहार !

झँपरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० झाँपना] पालकी का उहार ।

झँपान—(संज्ञा, पु०) [सं० झंप] पहाड़ों की सवारी, झप्पान (प्रान्ती०) ।

झंपारु—(संज्ञा, पु०) बंदर ।

झंपित—(वि०) ढका हुआ । "जलद पटल झंपित तऊ"—वृं० ।

झँपोला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० झाँपा+ओला प्रत्य०] छोटा टोकरा, झाबा । [**झँपोली, झँपोलिया** (स्त्री० अल्पा०)]

झँवराना—(क्रि० अ०, हिं०) [वि० झाँवर] काला होना, श्याम पड़ना । कुम्हिलाना ।

झँवा—(संज्ञा, पु०, म०) [सं० झामक] झाँवाँ । " सकुचति फूल गुलाब के, झँवाँ झँवावत पाँय " —बिहारी ।

झँवाकार—(वि०, दे०) [हिं० झाँवल+काला] काले रंग का, झाँवरे रंग का, झाँवर (ग्रा०) ।

झँवाना—(क्रि० अ०) [सं० झामक] कुछ-कुछ या थोड़ा-थोड़ा काला होना । मुरझाना । झाँवे से पैर आदि को रगड़ना-रगड़ाना ।

झँसना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) तलवे या सिर में धीरे-धीरे तेल मलना । धोखा देकर धन आदि हर लेना । (संज्ञा, पु०, दे०) झाँसा देना ।

झः—(संज्ञा, पु०, सं०) तेज हवा, आँधी । वृहस्पति । शब्द ।

झउआ—(संज्ञा, पु०) [हिं० झाँपना] झाबा, झौवा, टोकरा ।

झक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) धुन, सनक । अफसोस । झक्का (ग्रा०) । (वि०) स्वच्छ ।

झकझक—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) नाहक झगड़ा, व्यर्थ लड़ाई । बकबक ।

झकझका—(वि०, दे०, अनु०) साफ चमकता हुआ ।

झकझकाहट—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) प्रकाश ।

झकझेलना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० झकझोरना] बड़े जोर से हिलाना, झटका देना ।

झकझोर—(संज्ञा, पु०, अनु०) जोर का झटका देना, हिलाना । "दंत करम झकझोर"—वृं० "रही एक झकझोर"—मैथिली० ।

झकझोरना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) बड़े जोर से झटका देकर हिलाना । झकझोरना (ग्रा०)

झकझोरा—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) झटका देना, हिलाना ।

झकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) बकना, व्यर्थ बात करना । क्रोध से कहना ।

झकाझक—(वि०, दे०, अनु०) अति उज्ज्वल, स्वच्छ, चमकता हुआ ।

झकुराना—(क्रि० अ०) [हिं० झकोरा] झूमना । (क्रि० स०, दे०) झूमने में लगाना ।

झकोर—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) वायु का झोंका । [झकोरा (दे०)] बलपूर्वक आगे-पीछे हिलना । " डारति पवन झकोर"—वृं० । " सी झकोर पुरवा की है "—रत्ना० ।

झकोरना—(क्रि० अ०, अनु०) वायु का झोंका मारना, हिलाना ।

झकोरा—(संज्ञा, पु०) हवा का तीव्र झोंका, झटका, वृक्षों का हवा के झोंके से हिलना ।

झकोल—(संज्ञा, पु०, दे०) झकोर ।

झक्कड़—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) वेगवान आँधी ।

झक्की—(वि०, दे०) सनकी, धुन वाला । बकवादी । खब्त-उल-हवास (फ़ा०) ।

झक्खना—(क्रि० अ०) [हिं० झीखना] कुढ़ना, दुखी होना । चिंता करना । " आज खाय औ काल को झक्खै" —गोरख० ।

झख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० झीखना] झीखने की क्रिया या भाव । [सं० झष] छोटी मछली । "मकर नक्र झख नाना व्याला"—[रामा०] । "शनि कज्जल चख झख लगनि "—बिहारी० । **मुहा०—मारना**-व्यर्थ परिश्रम करना । समय नष्ट करना । अपनी खराबी करना ।

झखकेतु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव ।

झखना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० झीखना] पछिताना। [झीखना (दे०)]

झखराज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मगर।

झखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० झष] मछली।

झगड़ना, झगरना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० झक झक] आपस में तकरार करना या लड़ना। वाद-विवाद या बहस करना। [**लड़ना-झगड़ना** (यौ०)]

झगड़ा, झगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० झक-झक] आपस में बहस या विवाद। लड़ाई। कष्ट-प्रद बात। [**लड़ाई-झगड़ा** (यौ०)] **मुहा०—लगाना**-लड़ाई करना, कराना। बाधा खड़ी करना।

झगड़ालिनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० झगड़ा] बहुत झगड़ा करने वाली।

झगड़ालू—(वि०) [हिं० झगड़ा+आलू प्रत्य०] झगड़ा करने वाला, बड़ा लड़ाका, बड़ा तकरारी। [झगराऊ (दे०)]

झगड़ी, झगरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० झगड़ा +ई प्रत्य०] झगड़ा करने वाला। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० झगड़ा+इन् प्रत्य०] झगड़ा करने वाली।

झगर—(संज्ञा, पु०, दे०) एक चिड़िया। झगड़ा। [**झगरो** (ब्र०)]

झगला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० झँगा] अँगरखा, कोट। झंगुला (ग्रा०)

झगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० झँगा] अँगरखा, कोट। " नवस्याम बपू पट पीत झगा "—तुल०।

झगुलिया, झगुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० झगा] छोटे बच्चों का अँगरखा।

झज्झर, झज्झड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अलिंजर] पानी रखने का छोटा-सा मिट्टी का बरतन।

झज्झी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक फूटी कौड़ी।

झझक, झिझक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० झझकना] झझकने की क्रिया या भाव, भड़क, मुँझलाहट। दुर्गन्धि।

झझकन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० झझकना] रुकने का भाव, भय से रुकना, ठिठकना, बिचकना, भड़कना, चौंकना। झिरझिराना।

झझकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) भय से एकबारगी रुक जाना। ठिठकना, बिचकना, भड़कना, चौंकना।

झझकाना, झिझकाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० झझकना का प्रेरणा० रूप] किसी को भड़काना, बिचकाना, चौंकाना।

झझकारना—(क्रि० स०, अनु०) किसी को डाँट-डपट बताना। कुछ न समझना। दुतकार बताना। [**झझकार** (सं०)]

झट—(क्रि० वि०, दे०) [सं० झटिति] शीघ्र, तुरन्त, तुरत, तत्काल। [**झटपट** (यौ०)]

झटकना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० झट] झटका देकर हिलाना, झोंका देना, झटके से खींचना, बलात् छीनना। " झटकत सोऊ पट बिकट दुसासन है "—रला०। **मुहा० झटककर**-झोंके के साथ, जबरदस्ती, चालाकी से, ऐंठ लेने के ढंग से। (क्रि० अ०, दे०) दुबला होना, कमजोर होना।

झटका—(संज्ञा, पु०, अनु०) धक्का, झोंका। तलवार के एक ही वार में बकरे का गला काट देने की क्रिया। भारी शोक या रोग का आघात।

झटकारना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० झट] झटकना। फेंक देना।

झटिति—(क्रि० वि०, सं०) शीघ्र, तुरन्त।

झड़, झर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० झड़ना] लगातार, बराबर बड़ी देर तक पानी की वृष्टि। पतन। [**पतझड़** (यौ०)]

झड़झड़ाना—(क्रि० स०) झटकना, हिलाना, फटकारना।

झड़न—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० झड़ना] झड़ने की क्रिया या भाव, पतन।

झड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षरण] बहुतायत से किसी वस्तु के टुकड़े गिरना।

झड़प—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) क्रोध। झगड़ा। मुठभेड़।

झड़पना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) झगड़ा या धावा करना, लड़ना। किसी से बलपूर्वक कोई वस्तु छीन लेना।

झड़पा-झड़पी—(संज्ञा, स्त्री०) गुत्थमगुत्था।

झड़पाना—(क्रि० स०) चिड़ियों को आपस में लड़ाना।

झड़बेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [झाड़+बेर] वन के या झाड़ के बेर।

झड़वाना—(क्रि० स०, दे०) [झाड़ना का प्रेरणा० रूप] दूसरे से झड़ाना, साफ कराना।

झड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०) झाड़ने की क्रिया।

झड़ाका—(संज्ञा, पु०) झड़प । (अ०) तुरन्त, फौरन, तत्काल ।

झड़ाझड़—(क्रि० वि०, दे०, अनु०) लगातार । खूबी से ।

झड़ी, झरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० झड़ना] लगातार जलवृष्टि । निरंतर बातचीत । **मुहा०—लगना (लगाना)**—अटूट क्रम चलना (चलाना) । **—बाँधना (बातों की)**—कहीं रुके बिना बात करना ।

झन—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) बरतनों का शब्द ।

झनक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) झनझन का शब्द ।

झनकना—(क्रि० अ०, अनु०) झनझन का शब्द होना । क्रोध करना । [**झनकाना** (प्रेरणा० रूप)]

झनकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) झंकार ।

झनझनाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) झनझन का शब्द होना या करना । [**झनझनाहट, झनझनी** (संज्ञा, स्त्री०)]

झनाझन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) झंकार, झनझन शब्द । (क्रि० वि०) झनझन शब्द-युक्त ।

झनिया—(वि०, दे०) झीना ।

झन्ना—(संज्ञा, पु०, दे०) सेव आदि गिराने की करछुल । [**झन्नी** (स्त्री०, अल्पा०)]

झन्नाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) झनकार, झनझनाहट ।

झप—(क्रि० वि०, दे०) [सं० झंप] शीघ्र, जल्दी से, झट ।

झपक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० झपकनी] आँख की पलक बंद होने का भाव । अति अल्प समय का भाव । स्वल्प निद्रा ।

झपकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० झंप] आँखों की पलकों का बन्द होना, झपकी लगना । झेंपना । झपटना ।

झपकाना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) बारंबार पलकें बन्द करना ।

झपकी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) थोड़ी निद्रा । बहका-वट, धोखा, चकमा ।

झपकौंहा—(वि०, दे०) [हिं० झपकना] आँखों में निद्रा भरे हुए । नशे में मस्त । [**झपकौंही** (स्त्री०)]

झपट—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० झंप] झपटने का भाव ।

झपटना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० झंप] वेग से दौड़ना या चलना । टूट पड़ना ।

झपटाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० झपटना का प्रेरणा० रूप] दूसरे को झपटने में लगाना ।

झपट्टा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० झपट] चढ़ाई, धावा या आक्रमण करना ।

झपताल—(संज्ञा, पु०, दे०) गान विद्या की ताल ।

झपना—(क्रि० अ०, अनु०) आँख की पलकें बन्द होना या झुकना, झपकना । झेंपना ।

झपलाना—(क्रि० स०, दे०) बरतन आदि का भलीभाँति धोना ।

झपसना—(क्रि० अ०) फैलना, बढ़ाव पाना । पेड़ की पत्तियों का विस्तार पाना ।

झपसनी—(क्रि० अ०) [हिं० झंपना] लताएँ घनी और फैली होना ।

झपाका—(अ०) झटपट । (संज्ञा, पु०) शीघ्रता ।

झपाझपी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शीघ्रता, जल्दी, हड़बड़ी, हरबरी ।

झपाट, झपाक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शीघ्र, जल्दी, झटपट । " झपाक मन लै गई " ।

झपाटा—(संज्ञा, पु०) झपट, झपट्टा ।

झपाना—(क्रि० अ०, दे०) झपकी लेना, आँखें मूँदना । नींद आना । झेंपाना ।

झपित—(वि०, दे०) [हिं० झंपना] ढँका या मुँदा हुआ । निद्रालु । शर्मिन्दा ।

झपेट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० झपट] झपट, दौड़ । [झपेटा (दे०)]

झपेटना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) धावा कर के दबा लेना, दबोचना, छोप लेना ।

झपेटा†—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) झपट, दपट । चपेट । भूतों की बाधा या आक्रमण ।

झप्पान—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० झंपान] एक प्रकार की पालकी ।

झबकाना—(क्रि० स०, दे०) घबराहट में डालना । अचम्भित या चकित करना ।

झबरा—(वि०, दे०, अनु०) जिसके बाल लम्बे और बिखरे हुए हों । [**झबरी** (स्त्री०)]

झबरीला—(वि०, दे०) [हिं० झबरा+ईला प्रत्य०] जिसके बड़े-बड़े बाल चारों ओर को बिखरे हों । [**झबरैला, झबरीली** (स्त्री०)]

झबा—(संज्ञा, पु०, दे०) देखिए 'झब्बा'। [**झब्बा** (स्त्री०)]

झबिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० झब्बा] छोटा झब्बा, छोटा फुंदना।

झबुवा, झबुआ—(वि०, दे०) झबरा, बहु केश-युक्त।

झबूकना—(क्रि० अ०, अनु०) चौंकना, झिझकना। चमकना।

झब्ब, झब्बा—(संज्ञा, पु०, अनु०) गुच्छा।

झमक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० चमक] उजेला, प्रकाश। मटक कर चलने का ढंग। "झमकि चली कसहनियाँ दै दै सान।"

झमकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० झमक] धीरे-धीरे चमकना, झपकना। छा जाना। अकड़-तकड़ दिखाना।

झमका—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रताप, प्रभाव।

झमकाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० झमकना का प्रेरणा० रूप] दमकाना, चमकाना। गहने आदि बजाना।

झमकारा—(वि०, दे०) [हिं० झमझम] बरसने वाले काले बादल।

झमकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चमक। झलक।

झमकीला—(वि०, दे०) चंचल। चमकीला।

झमझम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) पैर के गहने का शब्द। पानी के बरसने का शब्द। (अ०) बहुत शब्द करता हुआ। चमकता हुआ। [झमाझम (दे०)]

झमझमाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गहनों आदि का बजना। पानी के बरसने का शब्द होना। चमकना।

झमना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) लचना, झुकना, दबना।

झमरझमर—(अव्य०, दे०) अकस्मात बरसना, बूंदें पड़ना।

झमाका—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) गहनों के बजने या पानी बरसने का शब्द, कुएँ में कुछ गिरने का शब्द। [झमाक (दे०)]

झमाझम—(क्रि० वि०, दे०, अनु०) झमझम शब्द के साथ। प्रकाश-युक्त।

झमाट—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) झुरमुट, संध्या, गोधूली।

झमाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) छाना, घेरना। झँवाना।

झमेल, झमेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० झाँवझाँव] बहुत भीड़-भाड़। झंझट, बखेड़ा, झगड़ा। व्यर्थ का कार्य-भार।

झमेलिया, झमेली—(संज्ञा, पु०) [हिं० झमेल + इया, ई प्रत्य०] झमेला करने वाला, झगड़ालू।

झर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पानी गिरने की जगह। झरना, सोता। (सं०) समूह, झुंड। वेग, तेजी। झड़ी।

झरझर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) पानी के बहने, बरसने या हवा के वेग से चलने का शब्द। झर कर गिरने का भाव।

झरन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० झरना] जो झर निकले। झरने की क्रिया।

झरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० क्षरण] झड़ना, गिरना। (संज्ञा, पु०, दे०) सोता। सोते का पानी। छन्ना। झन्ना (ग्रा०)

झरनी—(वि०, स्त्री०) जिससे कुछ झड़े।

झरप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) झोंका, झकोरा। परदा। झड़प।

झरपना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) बौछार होना। झोंका देना। झड़ना।

झरहरना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) झरझर शब्द करना।

झरहरा—(वि०, दे०) झँझरा।

झरहराना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) हवा के कारण पत्तों का शब्द करना। झटकना, झाड़ना।

झरहिल—(संज्ञा, स्त्री०) एक पक्षी-विशेष।

झराझर—(क्रि० वि०, दे०, अनु०) झरझर शब्द के साथ, वेग से एक चाल।

झरायना—(क्रि० स०) हमला या आक्रमण करना, हमला करना।

झरी, झड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० झरना] पानी की झड़ी। बाजारों में सौदे पर कर, महसूल।

झरोखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० झरझर + गौख] जँगलादार छोटी खिड़की, गवाक्ष। "राम झरोखा बैठि कै सब का मुजरा लेय"।

झर्झरक—(संज्ञा, पु०, सं०) कलियुग।

झर्झरा, झर्झरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रंडी, वेश्या। डफली, खंजड़ी।

झर्झरीक—(संज्ञा, पु०, सं०) चित्र। देश। शरीर।

झल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ज्वल=ताप] गर्मी, जलन। भारी इच्छा। क्रोध। समूह।

झलक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० झल्लिका] चमक। प्रतिबिंब। दमक।—**दार**–(वि०, दे०) [हि० झलक+दार फ़ा०] चमकीला।

झलकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० झल्लिका] दमकना, चमकना। प्रतिबिंबित होना। थोड़ा प्रकट होना।

झलकनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० झल्लिका] दमक, आभा, चमक। प्रतिबिंब।

झलका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ज्वल=जलना] फफोला, फुलका। "झलका झलकहि पाँयन कैसे"—[रामा०]।

झलकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झलकना का प्रेरणा० रूप] दमकाना, चमकाना। दरसाना। "श्रुति कुंडलहू झलकावत है"।

झलझल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झलकना] चमक, दमक। झलाझल। (अ०) स्पष्ट, पूर्ण रूप से दृष्टिगोचर।

झलझलाना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) चमकाना, चमचमाना। (क्रि० अ०) छलकना (आँसू), तनिक दिखाई पड़ना।

झलझलाहट—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) दमक, चमक, झलक, आभा।

झलझली—(वि०, दे०, अनु०) चमकदार।

झलना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झलझल= हिलना] पंखा हिलाना। इधर-उधर हिलना। अपनी शेखी बघारना, अपनी बड़ाई करना, डींग हाँकना (मारना)।

झलमल—(संज्ञा, पु०) [सं० ज्वल=दीप्ति] थोड़ा-थोड़ा प्रकाश। चमक, दमक।

झलमला—(वि०) [हि० झलमलाना] चमकीला। [झिलमिला (दे०)]

झलमलान—(क्रि० अ०) [हि० झलमल] थोड़ा-थोड़ा प्रकाश होना। टिमटिमाना, झिलमिलाना।

झलमलाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चमक, झलक। प्रकाश, रोशनी। "झलमलाहट-हीन शिखा लिये"—हरिऔध।

झलरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झालर] एक पकवान। (वि०) झबरीला, झालर या जन्म के बालों वाला बच्चा।

झलराना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झालर] चारों ओर फैलकर छा जाना। बालों का बहुत बढ़ जाना।

झलवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झलना का प्रेरणा० रूप] पंखा चलवाना। हिलवाना।

झला*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झड़] थोड़ी वर्षा। झालर। बंदनवार। पंखा। समूह।

झलाझल—(वि०, दे०, अनु०) चमकता हुआ, झलकता हुआ।

झलाबोर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झलमल] कालाबतू से बना हुआ किसी का किनारा, कार-चोबी। चमकीला।

झलामल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झलझल +चमक] दमक, चमक, झिलमिल।

झल्ल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) पागलपन।

झल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़ा झौआ, टोकरा, झाबा। [हि० झल्लाना] पागल। बक्की। [**झल्लाहट** (संज्ञा, स्त्री०)]

झल्लाना, झल्लना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झल] खीझना, चिढ़ना, क्रोध से बकना। गप्प मारना।

झल्लिका—(संज्ञा, स्त्री०) चमक। रुई अथवा वस्त्र-खंड जो इत्र, रंग आदि के लगाने में काम में लाया जाय।

झल्लो—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हुडुक बाजा।

झष—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटी मछली।—**केतु**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव।—**नाथ**–(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ा मच्छ। मगर। [**झषपति, झषराज, झषनायक** (यौ०)]

झषांक—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव।

झषा—(संज्ञा, स्त्री०) नागबला।

झषाशन—(संज्ञा, पु०, सं०) सूंस।

झषोदरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सत्यवती। मत्स्योदरी, व्यास की माता।

झसना—(क्रि० स०, दे०) झंसना, ठगना।

झहनना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) सन्नाटे में आना। झनझन शब्द होना। रोमांच होना।

झहनाना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) झनकार करना, झनझनाना।

झहरना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) झर-झर शब्द करना। आग की लपट का वायु-वेग से शब्द करना।

झहराना—(क्रि० अ०, अनु०) झर-झर शब्द करना। आग की लपट का शब्द। खीझना, चिढ़ना, क्रोधित होना।

झाँई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छाया] परछाहीं, प्रतिबिंब। झलक। अँधेरा। छल। देह पर काले धब्बे। "जा तन की झाँई परे"—(वि०)। —**माई**–(संज्ञा, स्त्री०) बच्चों का एक खेल-विशेष। **मुहा०—आना**–आँखों के सामने अंधकार घिर आना।—**बताना**–धोखा देना, चालाकी करना।

झाँक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० झाँकन] झाँकने का भाव।

झाँकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० अध्यक्ष] ओट या झरोखे से या इधर-उधर झुक कर देखना। "झाँकती का हौ झरोखे लगी।"—पद्माकर

झाँकनी†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झाँकी] किसी देवता के दर्शन।

झाँका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झाँकना] झरोखा।

झाँकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झाँकना] दर्शन। देखना। दृश्य। झरोखा। "जैसी यह झाँकी तैसी काहू नाहिं झाँकी कहूँ"—पद्मा०।

झाँकीझाँका, झाँकाझूँकी—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) ताका-ताकी, देखा-देखी। आपस मे देखना।

झांकृत—(संज्ञा, पु०, सं०) पैर का एक आभूषण जिसमे घुँघरू लगे रहते है। झरने के प्रपात का स्वर।

झाँख—(संज्ञा, पु०, दे०) हिरन की एक जाति।

झाँखना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झीखना] पश्चाताप करना, पछिताना।

झाँखर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झंखाड़] काँटेदार पेड़ों की सुखी टहनियाँ। दुष्ट। झक्की।

झाँगला—(संज्ञा, पु०, दे०) ढीला अंगरखा। [झँगा, झांगा (दे०)]

झाँझ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० झनझन से] कांसे के गोल-गोल चिपटे ढाले हुए दो टुकड़े जो गाने आदि मे बजाये जाते है। क्रोध। दुष्टता। पैर का एक गहना।

झाँझड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झाँझन] पैर का एक गहना। [झाँझरी (दे०)]

झाँझन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) पैर का गहना।

झाँझर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) झाँझै, पैर का गहना। चलनी। (वि०) छेददार। पुराना।

झाँझरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पैर का गहना। छेददार। झाँझ बाजा। झरोखे की जाली।

झाँझा—(संज्ञा, पु०, दे०) लोहे की छेददार बड़ी करछी। झींगुर कीड़ा, जो ऊनी, रेशमी कपड़े बरसात में खा लेता है।

झाँझिया—(वि०, दे०) क्रोधी, खिज्जू।

झाँझी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खेल-विशेष। (संज्ञा, पु०, वि०) क्रोधी। झगड़ालू।

झाँप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झाँपना] पर्दा। झाप। नींद, झपकी।

झाँपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० झंप] ढकना, छिपाना। छोप लेना।

झाँपी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झाँपना] ढाँकने का पात्र। मूँज की पिटारी।

झाँपो—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छिनाल स्त्री, व्यभिचारिणी। धोबिन। पक्षी।

झाँवना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झाँवाँ] हाथ-पाँव को झाँवाँ से रगड़ना।

झाँवर—(वि०, दे०) [सं० श्यामल] काला। मलिन, धूमिल, थोड़ा काला। मुरझाया या कुम्हिलाया हुआ। ढीला, शिथिल। [**झाँवरी** (स्त्री०)]

झाँवली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० छाँव=छाया] आँख का इशारा, कनखी। झलक।

झाँवाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० झामक] जली ईट का छेददार टुकड़ा, जिससे हाथ-पाँव को रगड़ कर मैल छुटाते है। झँवा (ग्रा०)।

झाँसना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झाँसा] किसी को ठगना, धोखा देना।

झाँसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अध्यास] धोखा, ठगाई, दगाबाजी, बहकावा।—**पट्टी**–(यौ०) धोखा-धड़ी।

झाँसू—(वि०, दे०) [हि० झाँसा] धूर्त, ठग, धोखेबाज। फुसलाऊ। बिगाड़ू।

झा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपाध्याय] गुजराती और मैथिल ब्राह्मणों की पदवी।

झाऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० झबुक] एक झाड़। लो० "जहँ गंगा तहँ झाऊ, जहँ ब्राह्मण तहँ नाऊ।"

झाग—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० गाज] जल का फेन, गाज।

झागड़*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झगड़ा] लड़ाई, फसाद ।

झाझा—(संज्ञा, पु०, दे०) भाँग । गाँजा ।

झाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० झाट] घनी डालियों और पत्तियों वाला पौधा । काँच की झाड़ जिसमें रोशनी की जाती है ।—**फानूस**-(यौ०) काँच की बनी झाड़, हाँडी और गिलास ।—**खड**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० झाड़+खड] वन, जंगल । "झाड़खंड भोनो परो सिंहौं चलौ बराय"—गिरि० ।—**झंखाड़**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०,) काँटेदार झाड़ियाँ । बे काम वस्तुएँ ।—**दार**-(वि०) [हि० झाड़+दार फ़ा०] बहुत ही घना, बहुत कँटीला ।—**पोंछ**-(संज्ञा, स्त्री०) सफाई ।—**बाकी**-(संज्ञा, स्त्री०) बेबाकी, देन की आखिरी किश्त । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) फटकार । मंत्रपाठ ।—**फूँक**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) रोग या प्रेत भगाने के लिए मन्त्र पढ़ कर किसी पर फूँक छोड़ना । "झूठी झाड़-फूँकहू फकीरी परी जाति है"—रत्ना० ।—**बुहार**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) सफाई करना, कूड़ा-कर्कट आदि हटाना ।

झाड़न—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झाड़ना] कूड़ा कर्कट । वस्तुओं के साफ करने का वस्त्र ।

झाड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० शरण या शायन] हटाना, छुड़ाना । भगाना, निकालना । अपनी योग्यता प्रगट करने के लिए बढ़-बढ़कर बातें करना । बिछौने को साफ करने के लिए उठाकर झटकना, फटकारना । किसी से किसी यत्न से धन ले लेना, ऐंठना, झटकना । रोग या प्रेत हटाने को मन्त्र पढ़ कर फूँकना । डाँट या फटकार बताना । झारना (ग्रा०) । बटोरना, झाड़ू से साफ करना । **मुहा०—पछोड़ कर देखना**-परीक्षा लेना, तौलना, किसी वस्तु की सचाई को समझना ।—**पोंछ कर**-किसी वस्तु को सम्पूर्ण रूप में लेकर ।

झाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झाड़ना] झाड़, फूँक । तलाशी । मल, मैला, पाखाना । **मुहा०—(हे) झपटे जाना**-(क्रि० अ०, दे०) शौच या मल त्यागने या पाखाने जाना ।

झाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झाड़] छोटी झाड़, छोटे-छोटे पौधों का समूह । घना वन ।

झाड़ू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झाड़ना] कूँचा-बहोरी, बढ़नी, सोहनी । पुच्छलतारा, केतु । **मुहा०—फिरना**-कुछ न रहना ।—**मारना**-निरादर करना, घिन करना ।—**लगाना**-बटोरना, कूड़ा साफ करना ।

झापड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चपट] तमाचा, थप्पड़, चटकना ।

झाबर—(संज्ञा, पु०, दे०) कीचड़ वाली भूमि, दलदल । खादर भूमि । झाबा ।

झाबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झाँपना] टोकरा, खाँचा, झब्बा । [**झबिया** (स्त्री०, अल्पा०)]

झाम*—(संज्ञा, पु०, दे०) गुच्छा, झब्बा । डाँट-डपट, घुड़की । छल, कपट, धोखा ।

झामी—(संज्ञा, पु०) [हि० झाम] दगाबाज, छली, कपटी ।

झायँझायँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) झनझन शब्द । वायु का शब्द । बकवाद । लड़ाई, कहा-सुनी ।

झावँझावँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) तकरार, झगड़ा, बकबक, झकझक ।

झार—(वि०, दे०) [सं० सर्व] कुल, सब । निःशेष, सब का सब, बिल्कुल । (संज्ञा, स्त्री०) दाह, जलन । आँच, ईर्ष्या, डाह । चरपराहट । (संज्ञा, पु०, अ०) झाड़ी ।—**खंड**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० झाड़-खंड] एक पहाड़ । वन । बीहड़ ।

झारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० झर] बालों में कंघी करना । छाँटना । बहोरना, झाड़ना ।

झारा—(संज्ञा, पु०) झरना । सूप ।

झारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० झरना] गड़ुआ, जल-पात्र ।

झाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० झल्लक] झाँझ-बाजा । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० झाला] चर-पराहट, कटुता । तरंग, लहर ।

झालना—(क्रि० स०) [?] पीतल आदि के बरतन को टाँका लगा कर जोड़ना । गर्म चीजों को ठंढा करने के लिए बरफ पर रखना ।

झालर—(संज्ञा, पु०) [?] एक पकवान । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० झल्लरी] चादर आदि के किनारे पर लटकने वाला किनारा ।

झालरना—(क्रि० अ०, दे०) झलराना ।

झालि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झड़] पानी की झड़ी ।

झिगन—(संज्ञा, पु०) सारस्वत ब्राह्मण की एक जाति-विशेष, एक वृक्ष ।

झिंगवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चिंगट] एक छोटी मछली। लम्बा ढीला अँगरखा।

झिंगुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) झंगा।

झिंझिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) छोटे-छोटे छेदों वाला मिट्टी का छोटा बरतन जिसमें दिया जला कर लड़कियाँ खेलती हैं।

झिंझौटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक रागनी।

झिझकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झझकना] झझकना। सकुचना, हिचकना।

झिझकार—(संज्ञा, स्त्री०) झिझकारने की क्रिया या भाव।

झिझकारना—(क्रि० स०, दे०, हि०) झझकारना, झटकना।

झिड़कना—(क्रि० स०, अनु०) तिरस्कार से बिगड़ कर कोई बात कहना, डाँट बताना।

झिड़का, झिड़की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) झगड़ा, फसाद, बकाझकी।

झिड़की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झिड़कना] झिड़क कर बोलना, डाँट, फटकार।

झिड़झिड़ाना—(क्रि० अ०, दे०) अधिक क्रोधित होना। चिड़चिड़ाना।

झिनवा—(संज्ञा, पु०, दे०) बारीक चावलों वाला धान।

झिपना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झेंपना] लज्जित या शर्मिन्दा होना, झेंपना।

झिपाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झेंपना का स० रूप] शर्मिन्दा या लज्जित करना, झेंपाना।

झिरझिरा—(वि०, दे०) [हि० झरना] झीना, झँझरा, बारीक (कपड़ा)।

झिरझिराना—(क्रि० अ०, दे०) क्रोधित होना। टपकना। बहना।

झिरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झरना] रसना (संज्ञा, पु०, दे०) सोता, झरना।

झिराना—(क्रि० स०, दे०) छन्ने से दो अनाजों को अलग-अलग कराना। धीरे-धीरे रसना। झरना।

झिलँगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढीला+अंग] पुरानी बिनी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो। [झींगा (संज्ञा, पु०)]

झिलना—(क्रि० अ०) [?] घुसना। धँसना। अघाना, तृप्त या मगन होना। झेला या सहा जाना। "झिलता नहीं समीर पर इस जी का जंजाल"—मैथिली०।

झिलम—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० झिलमिला] लोहे की टोपी। "कहै रतनाकर न ढालन पै खालन पै, झिलम झपालन पै क्योंहू कहूँ ठमकी।"

झिलमा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक धान।

झिलमिल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) प्रकाश जो घटता-बढ़ता या हिलता-सा प्रतीत हो। एक कपड़ा। लोहे का कवच।

झिलमिला—(वि०, दे०, अनु०) झीना, महीन। चमकता हुआ। जो अति प्रगट न हो। टिमटिमाता। "झिलमिला सा हो गया था शाम का।"

झिलमिलाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) ठहर-ठहर कर हिलते हुए चमकना। "अगम अगोचर गम नहीं, जहाँ झिलमिलै जोत"—कबीर।

झिलमिली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झिलमिल] चिक, परदा। खड़खड़िया। कर्णभूषण।

झिलवाना—(क्रि० स०) झेलने की क्रिया (दूसरों के द्वारा)।

झिल्लड़—(वि०, दे०) [हि० झिल्ली] बारीक, महीन, झिंझिरा कपड़ा।

झिल्लिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) झींगुर। झिल्ली।

झिल्ली—(संज्ञा, पु०, दे०) झींगुर। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० चैल] बहुत पतली खाल। आँख का जाला। पतली तह। वह मैल जो उबटन लगाने से शरीर से छूटता है।

झींक, झींका—(संज्ञा, पु०, दे०) सिकहर, छींका, सीका। चक्की का एक कौर। पछतावा।

झींकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झीखना] पछिताना, अफसोस करना। [झिंकाना (प्रेरणा० रूप)]

झींखना, झीखना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० खीजना] भारी पश्चाताप करना, पछिताना। कुढ़ना, खीजना। दुख और विपत्ति की कथा सुनाना, रोना रोना।

झींगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० चिंगट] छोटी मछली। एक धान।

झींगुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० झीं+कर] झिल्ली। एक कीड़ा।

झींसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० झीना] फौवारे सी पानी की छोटी-छोटी बूँदें।

झीठा—(वि०, दे०) झूठ। "भारी कहूँ तो बहु डरूँ हलुका कहूँ तो झीठ"—कबीर०।

झीना—(वि०) [सं० क्षीण] बहुत बारीक, महीन, पतला, झँझरा । दुबला । [**झीनी** (स्त्री०)] " सारँग झीनो जानि त्यों, सारँग कीन्हीं घात " ।

झीनासारी—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का चावल ।

झीमर—(संज्ञा, पु०, दे०) मछुआ ।

झीरिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) झींगुर ।

झील—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० क्षीर] बहुत बड़ा भारी ताल, सरोवर ।

झीलर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झील] छोटी झील, छोटा सरोवर ।

झीवर, झीमर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धीवर] मल्लाह, केवट । धीवर (ग्रा०) ।

झुँगुना, झुँगना—(संज्ञा, पु०, दे०) जुगुनू, खद्योत । " सूरज कै आगे जैसे झुँगुना दिखाइबो " —सुन्दर० ।

झुंझना—(संज्ञा, पु०, दे०) घुनघुना, झुनझुना । "कबहूँ चटकोरा चटकावति झुँझना झुनझुन झुलना झूलै"—सूर० ।

झुँझलाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) चिड़चिड़ाना, खीजना, खिझलाना, क्रोधित होना । [**झुँझलाहट** (संज्ञा, स्त्री०)]

झुंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यूथ] समूह, गिरोह । " झुंड-झुंड मिलि सुमुखि सुनैनी "—[रामा०] ।

झुकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० युज्] लचना । निहुरना, नवना । किसी काम में मन लगाना । तत्पर या प्रवृत्त होना । नम्र या विनीत होना । क्रोधित होना । [**झुकाना, झुकवाना** (प्रेरणा० रूप)] **मुहा० झुक झुक पड़ना**—नशा या निद्राधीन हो खड़े या बैठ न सकना । " जियत मरत झुकि झुकि परत "—बिहारी ।

झुकमुख—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० झुटपुटा] संध्या समय । प्रकाश और अंधकार का समय, झुटपुटा । [**झुकामुखी** (स्त्री०)]

झुकराना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झोंका] झोंका खाना । झबरीला होना ।

झुकवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झुकना] दूसरे से किसी पदार्थ के झुकाने को कहना ।

झुकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झुकना] लचाना । नवाना, निहुरान. । किसी चीज के दोनों किनारों को किसी ओर मोड़ना । लगाना । नम्र या विनीत बनाना ।

झुकाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झुकना] झुकने की क्रिया या भाव । उतार, ढाल । किसी ओर मन की प्रवृत्ति ।

झुटपुटा—(संज्ञा, पु०, अनु०) संध्या का समय, सम प्रकाश और अँधेरे का समय । "झुटपुटा सा हो गया है शाम का " ।

झुटुंग—(वि०, दे०) [हि० झोंटा] जिसके खड़े और फैले बाल हों ।

झुठलाना—(क्रि० स०, दे०,) झूठा बनाना या ठहराना, धोखा देना ।

झुठाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झूठ+आई प्रत्य०] झूठ का भाव । असत्यता ।

झुठाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झूठ+आना प्रत्य०] झूठा बनाना, मिथ्या ठहराना ।

झुनक—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) पायजेब का शब्द ।

झुनकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) झुनझुन शब्द करना ।

झुनकार—(वि०) [हि० झीना] बारीक, महीन । पतली झंकार । [**झुनकारी** (स्त्री०)]

झुनझुन—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) पायजेब का शब्द ।

झुनझुना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झुनझुन से अनु०] घुनघुना (खिलौना) ।

झुन झुनाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) झुनझुन शब्द होना । हाथ-पैर में झुनझुनी चढ़ना ।

झुनझुनियाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) झुनझुन शब्दकारी भूषण, पायजेब । बेड़ी । सन की फलियाँ । " बिपति मे पैन्हि बैठे पाँय झुनझुनियाँ "—देव० ।

झुनझुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झुनझुनाना] देर तक एक ही दशा मे रहने से उत्पन्न हाथ-पैर की सनसनी ।

झुपझुपी, झुबझुबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कान का एक गहना ।

झुपड़ी, झुपरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० **झोंपड़ी**] छोटा झोपड़ा, झोपड़ी । [झुपड़िया (दे०)]

झुमका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झूमना] कर्णभूषण, झूमक ।

झुमरि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक रागिनी-विशेष ।

झुमरी—(संज्ञा, स्त्री०) मँगरी, पिटना ।

झुमाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झूमना] किसी को झूमने में लगाना । [**झुमवाना** (प्रेरणा० रूप)]

झुरझुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) कम्पन । थोड़ा सा ज्वर ।

झुरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चूर या धूल] सूखना, झुराना । "झुर झुर पींजर धन भई"—जायसी । दुबला होना, घुल जाना ।

झुरमुट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० झुँट=झाड़ी] मिलित झाड़ या क्षुप-समूह । लोगों का झुंड । थोड़ा-थोड़ा अँधेरा । "दिन इक महँ झुरमुट होइ बीता"—जायसी ।

झुरवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झुरना] सुखाना । दूसरे से सुखाने का काम कराना ।

झुरसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ज्वल+अंश] झुलसना, झौंसना (ग्रा०) । किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का जल कर या गर्मी से काला पड़ना या सूखना । "तर झुरसी ऊपर गयी"—बिहारी । [**झुरसाना, झुरसवाना** (प्रेरणा० रूप)]

झुराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झुरना] सुखाना । (क्रि० अ०) सूखना । डर और दुख से घबरा जाना । दुर्बल होना । "सींचे लागि झुरानी बेली" —जायसी ।

झुरावन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झुरना] किसी पदार्थ का सूखा भाग, सूखन, झुरवन ।

झुरियाना—(क्रि० स०, दे०) झोली में किसी पदार्थ को भर लेना । खेत निराना । झोरियाना, झोलियाना (ग्रा०) ।

झुर्री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झुरना] शिकन, सिकुड़न ।

झुलका—(संज्ञा, पु०) घुनघुना ।

झुलना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झूला] दोला, झूला । (वि०) [हि० झूलना] झूलने वाला । [**झुलवाना, झुलाना** (प्रेरणा० रूप)] । **लो०** "झुलना बैल होय धन नाश"—[स्फु०] ।

झुलनी, झूलनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० झूलना] लटकन, छोटी नथ । "झोंकदार झूलनी झपाक मन लै गई"—ब० ।

झुलझुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कानों मे पहनने के पत्ते । थोड़ा सा बुखार । झुरझुरी ।

झुलमुला—(वि०, अनु०) झिलमिला । महीन, पतला । झिलमिल ।

झुलसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ज्वल+अंश] किसी वस्तु के ऊपरी भाग को सूख या जल कर काला होना । झुरसना, झौंसना, अधजला होना । [**झुलसवाना** (प्रेरणा० रूप)]

झुलसाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झुलसना] किसी पदार्थ को झौंसना, जलाना ।

झुलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झूलना] किसी को झूले में बिठा कर हिलाना । किसी को किसी उम्मीद में बहुत दिनों तक रखना । "जसोदा हरि पालने झुलावै"—सूर० ।

झुलवा, झुलुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झूला] झूला, झुलना । स्त्रियों की कुरती ।

झुलावन*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० झूलना] झुलाना, झुलावना ।

झुलौवा, झुलौआ—(संज्ञा, पु०, दे०) कुरता (स्त्रियों का), ढीली कुरती ।

झुल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) कुरता, चोला । कुरती । झुलिया (ग्रा०) ।

झुहिरना—(क्रि० स०, दे०) लदना, लादा जाना ।

झूँक*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झुकना] वायु का धक्का, झटका, झकोर, झोंका । झोंक । "रंगराती हरी लहराती लता झुकि जाती समीर के झूँकनि सों"—देव० ।

झूँकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झोंक] किसी पदार्थ को आग में फेंकना, झोंकना । झुकना ।

झूँखना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० खीजना] पछिताना । झीखना ।

झूँझल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) झुँझलाहट ।

झूँसना—(क्रि० अ०, स०) [हि० झुलसना] झुलसना, जल जाना ।

झूँकटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झूट+काँटा] छोटी झाड़ी ।

झूँका*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झोकना] झोंका, झकोरा ।

झूँसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फुहार ।

झूझना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० युद्ध] जूझना, लड़ना, युद्ध करना ।

झूठ—(संज्ञा, पु०) [सं० अयुक्त, प्रा० अयुत्त] असत्य । "झूठहि दोष हमहिं जनि देहू"—[रामा०] ।—**का दफ्तर**–असत्य बातों का भंडार । पूर्ण रूप से असत्य व्यवहार ।—**का पुतला**–(संज्ञा, पु०) पक्का झूठा ।—**की पोट**–(संज्ञा,

स्त्री०) पूर्णतया असत्य बात ।—मूठ-(क्रि० वि०, दे०) [हि० झूठ+मूठ अनु०] बे जड़ या व्यर्थ की बात कहना । [झुट्ठी मुट्ठी (दे०)] मुहा०— सच कहना या लगाना-झूठी निन्दा करना, शिकायत करना ।—का पुल बाँधना-निरी असत्य बातें कहना ।

झूठा—(वि०) [हि० झूठ] असत्य, मिथ्या, बनावटी । असत्यभाषी, झूठ बोलने वाला । नकली । जूठा । "झूठा मोठे वचन कहि"—गिरि० । —(ठों) का पीर, बादशाह-(संज्ञा, पु०) नामी झूठा । मुहा०—(ठे) का मुँह काला-अंत में झूठा अपयश ही पाता है ।—(ठे) को घर पहुँचा देना-निरुत्तर कर देना । असत्य-भाषण की बात स्वीकार करा लेना ।—(ठे) की कब्र तक पहुँचना -हर तरह से कायल कर देना ।—(ठे) पर खुदा की मार, लानत-झूठा ईश्वरीय कोप का पात्र हो, झूठे का सर्वनाश हो ।

झूना—(वि०) [हि० झीना] झीना, महीन ।

झूम—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० झूमना] झूमने का भाव, हिलना, डोलना ।

झूमक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झूमना] झूमका, कर्ण-भूषण ।—झुमका-होली मे स्त्रियों का घेरा मा बना कर नाचते हुए गाना । एक पूर्वी गीत । झूमर । स्त्रियों की साड़ी के झब्बे ।—साड़ी -(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) जिस साड़ी में झूमक लगे हों ।

झूमझूम—(संज्ञा, पु०, दे०) घनघोर बादलों का उमड़ना, घुमड़ना । घमंड से झूमते चलना । 'आये घनश्याम झूमि झूमि घन श्याम नहीं" —[स्फु०] ।

झूमड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झूमना] शीश फूल सा एक शिरोभूषण, झूमर ।—झामड़-(संज्ञा, पु०, दे०) व्यर्थ की बात, ढकोसला, झूठा प्रपंच । पाखंड । "दुनिया झूमड़-झामड़ अटकी"—कबीर० ।

झूमना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० झंप] इधर-उधर चलना, ऊपर-नीचे, आगे-पीछे को बार-बार हिलना । नशे या गर्व से शरीर को हिलाना । झोंके खाना, गर्व करना, ऐंठ से चलना । "रंभा झूमत है कहा"—दीन० । मुहा० बादल—, बादलों का इकट्ठा होकर झुकना ।

झूमर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झूमना] सिर का एक भूषण या गहना । होली का एक गीत । नाच । एक ताल । काठ का एक खिलौना ।

झूमरा—(संज्ञा, पु०) एक ताल-विशेष (संगीत सम्बन्धी) ।

झूमरी—(संज्ञा, स्त्री०) शालक राग का एक प्रकार ।

झूर—(वि०, दे०) [हि० चूर] सूखा हुआ, खुश्क । [हि० झूठ] व्यर्थ, खाली । (संज्ञा, स्त्री०) दाह, दुख । [झूरझार (यौ०)]

झूरना—(क्रि० अ०) सूखना ।

झूरा—(वि०, दे०) [वि० झूर] खुश्क, सूखा । खाली । (संज्ञा, पु०, दे०) पानी न बरसना । अकाल, अवर्षण । कमी । "जेठ-वाय पुरवा बहै सावन झूरा होय"—भड्डु० ।

झूरे—(क्रि० वि०, दे०) [हि० झूर] नाहक, झूठमुठ, बेमतलब, व्यर्थ । "किंगिरी गहे बजावै झूरे"—जायसी । (वि०, दे०) [हि० चूर या झूर] सूखा । खाली । व्यर्थ । दुख, दाह ।

झूल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झूलना] हाथी, घोड़े आदि के साज का ऊपरी वस्त्र । भद्दा या बुरा वस्त्र । झूलने का भाव ।

झूलन—(संज्ञा, पु०) [हि० झूलना] सावन में कृष्ण-झूले का एक उत्सव, हिंडोला । [झूलनि (ब्र०), झूलने का ढंग] "कैसी यह झूलनि तिहारी है"—द्विज० ।

झूलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दोलन] झूले पर बैठ या खड़े-खड़े पैग मारना । लेटे या बैठे किसी के द्वारा झुलाया जाना । रस्सी आदि में लटक कर हिलना । किसी आशा में बहुत काल तक पड़े रहना । फाँसी पर लटकना । (संज्ञा, पु०) अंत में गुरु-लघुयुक्त २६ मात्राओं का एक छंद, अन्त में एक लघु दो गुरु या यगण युक्त ३० मात्राओं का छंद । हिंडोला, झूला । "...स्याम झूलै प्यारी की अन्यारी अँखियान मैं"—पद्मा० ।

झूला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दोला] हिंडोला । रस्से या तार आदि से बना पुल, जैसे लक्ष्मण झूला । पलना, पेड़ों की डाली या छत की कड़ियों से बँधी हुई रस्सी के सहारे लटकते हुए पलँग, खटोला या चिपटी लकड़ी का टुकड़ा । झोंका, झटका ।

झूली—(संज्ञा, स्त्री०) अनाज ओसाने वाला कपड़ा-विशेष ।

झेंपना, झेपना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झिपना] लज्जित होना, शरमाना। [**झेंपना, झेंपवाना** (प्रेरणा० रूप)]

झेंपू—(वि०) झेंपने या लजाने वाला ।

झेर, झेरा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० देर] देर, बिलंब। झगड़ा-बखेड़ा।

झेरना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० झेलना] झेलना। [हि० छेड़ना] आरम्भ करना ।

झेल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झेलना] तैरने में हाथों-पावों से पानी हटाने का काम । धीमा धक्का। धमकी। हिलोर। झेलने का भाव । देर, विलंब ।

झेलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० क्ष्वेल] सहना, बरदाश्त करना। हटाना। पैठना। हेलना, ठेलना, ढकेलना। पचाना। ग्रहण या स्वीकार करना।

झोंक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झुकना] झुकाव। बोझ। तेज चाल । धूमधाम से काम उठाना । सजावट । प्रवृत्ति । उमंग । **नोक**—,(यौ०) ठाठबाट, धूमधाम । बैर-विरोध, वाद-विवाद । पानी की हिलोर या लहर। **मुहा०—मारना**—तौलते समय तुला-दंडी को दबाना । डाँड़ी मारना ।

झोंकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झोंक] किसी पदार्थ को अग्नि में फेंकना या डालना। बल-पूर्वक आगे बढ़ाना, ठेलना, ढकेलना । बे सोचे-समझे अंधाधुंध खर्च करना। विपत्ति, दुख और भय से कर देना। बुरे स्थान में फँसाना । अधिक काम देना। दोष लगाना, व्यर्थ बातें या आत्मश्लाघा करना, गप्प मारना । [**झोंकाना, झोंकवाना** (प्रेरणा० रूप)] **मुहा० भाड़—(चूल्हा बुझाना)**—तुच्छ या व्यर्थ काम करना।

झोंकवा—(संज्ञा, पु०) भार झोंकने वाला । भुजवा।

झोंका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झोंक] धक्का, झटका। हवा की झिकोर, झकोरा। पानी की लहर। सजावट, ठाठ।

झोंकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झोंकना] झोंकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

झोंकी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० झोंक] जवाबदेही। बुराई या घटी का डर । जोखों, जोखिम (ग्रा०)।

झोंझ—(संज्ञा, पु०, दे०) घोंसला । गीध आदि पक्षियों के गले की थैली। खुजली।

झोंझर—(संज्ञा, पु०, दे०) पेट, झोझर।

झोंझल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झुँझलाना] क्रोध, झुँझलाहट, रिस।

झोंटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जूट] बड़े-बड़े बालों का समूह। एक हाथ में आने योग्य पतली चीजों का समूह। जूरा, जुट्टा (ग्रा०)। (संज्ञा, पु०) [हि० झोंका] झूले को हिलानेवाला धक्का। झोंका, पेंग। [**झोंटी** (स्त्री०)]

झोंपड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० छोपना] मिट्टी की छोटी-छोटी दीवारों और घास-फूस से बना छोटा घर, कुटी, पर्णशाला। "झोर दिया उर-झोपड़ा पाकर"—हितैषी । [**झोंपड़ी** (स्त्री०, अल्पा०)] **मुहा० अधा—**, पेट।

झोंपा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झब्बा] गुच्छा, झब्बा।

झोंटिंग—(वि०, दे०) [हि० झोंटा] जिसके सिर के बाल खड़े और बड़े-बड़े हों, झोंटे वाला। (संज्ञा, पु०, दे०) भूत-बैताल आदि।

झोंटियाना—(क्रि० स०, दे०) चोटी पकड़ कर खींचना, मारना-घसीटना, ले जाना।

झोरई†—(वि०, दे०) [हि० झोल] रसेदार तरकारी ।

झोरना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० दोलन] किसी चीज को कहीं से तोड़ना। जोर से हिलाना, झटका देकर ऐसा हिलाना कि साथ की चीजें गिर पड़ें। पेड़ आदि पर फलों के लिए ढेले या लाठी फेंकना। [**झोराना, झोरवाना** (प्रेरणा० रूप)]

झोरि, झोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झोली] झोली। पेट, उदर। झोरिया (ग्रा०)।

झोल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झालि] तरकारी आदि का रस, शोरबा। कढ़ी । लेई । माँड़ । मुलम्मा। [हि० झूलना] पहनं या तानं हुए कपड़े का लटका हुआ भाग। परदा। झाँप। ढीला। बेकाम, निकम्मा। बुरा। (संज्ञा, पु०) भूल। धोखेबाजी । [हि० झिल्ली] गर्भाशय, बच्चेदानी । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ज्वाल] राख, भस्म ।—**झाल**—(संज्ञा, पु०, दे०) ढीला-ढाला । चरपरा रस । धोखा, छल । भेद। गड़बड़ी ।—**दार**-(वि०) [हि० झोल+दार फ़ा०] जिसमें रसा हो। मुलम्मे वाला। ढीला-ढाला। झोलवाला।

झोलना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० ज्वलन] जलाना। भूलना।

झोला†—(संज्ञा, पु०) [हि० झूलना] झोंका, झकोरा। [हि० झूलना] कपड़े की बड़ी झोली या थैला। ढीला गिलाफ या कुरता, चोला। बात रोग, लकवा। पेड़ों का रोग जिसमें पत्ते एकबारगी सूख जाते हैं। [**झोली** (स्त्री०, अल्पा०)] झटका, धक्का। बाधा। विपत्ति। संकेत। **मुहा०—मारना**—लकवा मारना।

झोली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० झूलना] छोटा झोला या थैली। घास बाँधने का जाल। पुर, चरसा। अनाज उठाने का वस्त्र। कुश्ती का पेंच। [सं० ज्वाल] राख, खाक, भस्म। **मुहा०—बुझाना**-कार्य करने का समय व्यतीत हो जाने पर फिर उसे करने को चलना।

झौंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झोंझ] पेट, उदर। झोझर (ग्रा०)। झोंझ, घोंसला।

झौंर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० युग्म, जुग्म, हि० झूमर] गिरोह, झुंड। पत्तियों, फूलों, पेड़ों का गुच्छा। एक गहना। झाड़ियों और पेड़ों का घना समूह, कुंज (प्रान्ती०)।

झौंरना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गूँजना। झपट्टे के साथ पकड़ना।

झौंराना—(क्रि० अ०) [हि० झूमना] झूमना। (क्रि० अ०, दे०) [हि० झाँवरा] काले रंग का हो जाना। कुम्हलाना। मुरझाना, झाँरियाना।

झौंसना—(क्रि० अ०, दे०) झुलसना। झउँसना (ग्रा०), झाँरियाना।

झौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० झाँवझाँव] झगड़ा, विवाद, कहासुनी। डाँट-फटकार। झुंड।

झौरना—(क्रि० स०, दे०) [हि० झपटना] छाप लेना, दबा लेना, झपट कर पकड़ लेना।

झौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खेत की घास।

झौरे—(क्रि० वि०, दे०) [हि० धौरे] पास, समीप, साथ, संग।

झौवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० झावा] झावा, टोकरा। झउवा (ग्रा०)।

झौहाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गुर्राना, चिल्लाना, चिड़चिड़ाना।

ञ—हिन्दी या संस्कृत की वर्णमाला के चवर्ग का पाँचवाँ व्यंजन, इसका उच्चारण स्थान नासिका है।

ट

ट—संस्कृत या हिन्दी की वर्णमाला के टवर्ग का पहला व्यंजन, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है।

टंक—(संज्ञा, पु०, सं०) चार माशे की तौल। एक सिक्का। पत्थर गढ़ने की टाँकी, छेनी। कुल्हाड़ी, फरसा, कुदाल। तलवार। टाँग। रिस। घमंड। सुहागा। कोष।

टंकक—(संज्ञा, पु०, सं०) चाँदी का सिक्का।—**पति**—(संज्ञा, पु०) टकसाल का प्रधान।—**शाला**—(संज्ञा, स्त्री०) सिक्का बनाने का कारखाना।

टंकण—(संज्ञा, पु०, सं०) सुहागा, जोड़ लगाने का काम। घोड़े की जाति। दक्षिण देश।—**क्षार**—(संज्ञा, पु०) सुहागा।

टँकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० टंकण] सिया या टाँका जाना, सिलना। लिखा जाना। चक्की आदि में दाँते बनाये जाना। रेता जाना। कुटना।

टँकवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टाँकना का प्रेरणा० रूप] चक्की आदि मे दाँते बनवाना। किसी को टाँकों से सिलवाना या जुड़वाना। लिखवाना। डँकाना।

टँकाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० टाँकना] टाँकना क्रिया का भाव या मजदूरी।

टँकाना—(क्रि० स०, दे०, हि०) किसी चीज को टाँकों द्वारा जुड़वाना या सिलवाना। चक्की आदि में दाँते बनवाना, लिखाना।

टँकार, टंकार—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) टन-टन का शब्द जो धनुष की तांत पर हाथ मारने से होता है। पीतल आदि धातु-खंडों पर चोट लगाने का शब्द, ठनकार, झनकार। "जब कियो धनु टंकार"—[रामा०]।

टंकारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० टंकार] धनुष की डोरी या ताँत बजाना।

टंकिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) टाँकी, छेनी।

टंकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टंक=खड्ड या गड्ढा] पानी भरने का लोहे, पीतल आदि का बड़ा बरतन।

टंकोर—(संज्ञा, पु०) [सं० टंकार] धनुष की ताँत बजाना, टन-टन शब्द करना। "जब प्रभु कीन्ही धनु टंकोरा"—[रामा०]।

टँकोरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० टंकार] धनुष की तांत या डोरी से शब्द करना, कमान के चिल्ले से शब्द करना ।

टँगड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टाँग, सं० टंग] जाँघ से नीचे का भाग ।

टंगण—(संज्ञा, पु०) सोहागा ।

टँगना—(क्रि० अ०, पु०) [सं० टंगण] ऊंचे से नीचे को लटकना, फाँसी पर लटकना या चढ़ना । (संज्ञा, पु०) जिस पर कपड़े आदि लटकाये जाते हैं, अरगनी, अलगनी (प्रान्ती०) ।

टँगारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टंग] कुल्हाड़ी, परशु (सं०) ।

टंच—(वि०, दे०) [सं० चंड] कृपण, कंजूस । निठुर, कठोर-हृदय । (वि०, दे०) [हि० टिचन] तैयार, प्रस्तुत ।

टंटघंट—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० टनटन+घंट] दिखावे के लिए घड़ी-घंटा, बाजा, पूजा का ढोंग या प्रपंच । कूड़ा-कबार ।

टंटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० टनटन] दिखावा, आडम्बर, खटराग (ग्रा०) । झगड़ा-बखेड़ा, उपद्रव । [**टंटाबखेड़ा** (यौ०)]

ट—(संज्ञा, पु०, सं०) नारियल का वृक्ष । चौपाई । हिस्सा । शब्द ।

टक—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० टक या त्राटक] ताक लगा कर निरंतर बिना पलक बन्द किये देखना, अनिमेष, अखडावलोकन । **मुहा०—बाँधना** (**बँधना**)-ठहरी हुई निगाह से देखना । **एक—देखना**-अनिमेष देर तक देखना । **—लगाना**-स्थिर दृष्टि से देखना । आसरा देखते रहना ।

टकटका*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० टक] ठहरी निगाह । [**टकटकी** (स्त्री०)] (वि०) ठहरी या बँधी दृष्टि वाला ।

टकटकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टक] एक टक ठहरी निगाह से देखना । टक-टक शब्द करना । "हाट के टकटकायते" ।

टकटकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टक] निर्निमेष ठहरी या गड़ी हुई दृष्टि । **मुहा०—बाँधना** (**बंधना, लगाना**)-ठहरी निगाह से देखना ।

टकटोना, टकटोरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० त्वक+तोलन] टटोलना, खोजना । "पायो नहि आनन्द लेस मैं सबै देश टकटोये"—[नाग०] "टकटोरि कपि ज्यों नारियरु सिर नाय सब बैठत भये"—उदे० ।

टकटोलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० त्वक+तोलन] टटोलना । स्पर्श करना, छूना या दबाना । जाँचना, परीक्षा लेना, पता लगाना । टकटोहना (ग्रा०) ।

टकतंत्री—(संज्ञा, स्त्री०) सितार की तरह का एक पुराना वाद्य ।

टकराना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० टक्कर] वेग से भिड़ जाना, ठोकर लेना । मारा-मारा फिरना, इधर-उधर व्यर्थ घूमना । (क्रि० स०, दे०) एक चीज को दूसरी पर जोर से पटकना, भिड़ाना, लड़ाना ।

टकसार, टकसाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टंकशाला] रुपये-पैसे आदि बनाने का स्थान । **मुहा०—बाहर**-वह रुपया-पैसा जिसका चलन न हो, अप्रचलित, अप्रमाणीभूत ।

टकसाली—(वि०, दे०) [हि० टकसाल] टकसाल संबंधी । ठीक, खरा, चोखा । अफसरों या ज्ञानियों द्वारा प्रमाणित । सर्वसम्मत । संशोधित । (संज्ञा, पु०, दे०) टकसाल का अधिकारी, स्वामी । टकसाल में काम करने वाला । [टकसालिया (दे०)]—**बोली**-(संज्ञा, स्त्री०) प्रामाणिक जन-भाषा ।

टकहा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टका+आई प्रत्य०] नीच, तुच्छ कुलटा स्त्री, हरजाई । [**टकहा** (संज्ञा, पु०)]

टका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० टंक] दो पैसे, अधन्ना । कभी-कभी दो रुपया । धन । "यस्य गृहे टका नास्ति हा टके टकटकायते"—[स्फु०] । **—वाले**-(वि०, दे०) धनी । **मुहा०—सा जवाब देना**-कोरा (स्पष्ट) उत्तर देना । **—सा मुह लेकर हट जाना**-शर्मिन्दा या लज्जित हो जाना, खिसिया जाना । **—गज की चाल**-धीमी या मीठी चाल । थोड़े खर्च में गुजर । धन, दौलत, रुपया-पैसा । तीन तोले भर । **लो०** "टके की हाँड़ी गई, तो गई, कुत्ते की जाति पहिचानी गयी" ।

टकासी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टका] दो पैसे या आध आना प्रति रुपया मासिक ब्याज की दर ।

टकाही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टका] तुच्छ, नीच, कुलटा, छिनाल, हरजाई । टकही ।

टकुआ, टकुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तर्कुक] चरखे में सूत कातने की नुकीली सलाख, तकुवा (ग्रा०) ।

टकेत, टकैत—(वि०, दे०) [हि० टका] टके वाला, धनवान ।

टकोर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टंकार] थोड़ी चोट । नगाड़े या डंके की महीन आवाज । धनुष की ताँत का शब्द । शरीर मे पोटली से किया जाने वाला सेंक, झाल (प्रान्ती०) ।

टकोरना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टकोर] थोड़ी चोट पहुँचाना । नगाड़े, डंके आदि का बजाना । पोटली से सेंकना ।

टकोरा—(संज्ञा, पु०) [हि० टकोर] नगाड़े या डंके में आघात, जिसका शब्द महीन हो, धौंसा । (संज्ञा, पु०, दे०) अँबिया, छोटा आम ।

टकौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० टका] अधन्नी, दो पैसे । लो० "एक टकौना, एकहु लैगा परे परे तू लेखा" ।

टकौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा काँटा (तौलने का) ।

टक्कर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० ठक] वेग से मुकाबिला, दौड़ने या चलने वाली दो वस्तुओं का सामना, की ठोकर। लड़ाई, मुठभेड़ ।—**का**-समानता का । **मुहा०—खाना**-किसी बड़ी वस्तु से भिड़कर चोट खाना, मारा-मारा फिरना ।—**लेना**-सामना करना, भिड़ना, बराबर होना, चोट सहना, जोर से मस्तक मारने का धक्का ।—**मारना**-वह उपाय जिस का फल जल्द न हो, माथा मारना, परेशान होना ।—**लगाना**-व्यर्थ किसी के यहाँ जाना ।—**लड़ाना**-दूसरे के सिर पर सिर मार कर लड़ाना । घाटा, हानि ।

टखना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० टंक] एँड़ी के ऊपर उभड़ी हड्डी की गाँठ । गुल्फ ।

टगण—(संज्ञा, पु०, सं०) मात्रिक गणों में से एक गण (पिं०) ।

टगर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तगर] सुहागा, तगर ।

टगरना—(क्रि० अ०, दे०) डगरना, लुढ़कना, बहना, गिरना । टघरना, पिघलना ।

टगरा—(वि०, दे०) टेढ़ा, बाँका, तिरछा, सरगपताली (ग्रा०) ।

टगराना—(क्रि० स०, दे०) घुसाना, डगराना, लुढ़काना, फिराना ।

टघरना, टघलना—(क्रि० अ०, दे०) पिघलना, द्रवीभूत होना, घुलना, गलना, टिघलना । टघलना (क्रि० स०, दे०) द्रवित करना, पिघलाना, गलाना । [**टघरवाना, टघलवाना** (प्रेरणा० रूप)]

टचटच—(क्रि० वि०, दे०) [हि० टचना] आग की लपट का शब्द, धक-धक या धाँय-धाँय होना ।

टटका—(वि०, दे०) [सं० तत्काल] हाल का, तुरन्त का, नया, कोरा, ताजा । [**टटकी** (स्त्री०)]

टटड़ी, टटरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घेरा । मेड़ । थाला । खोपड़ी । ठठरी । टट्टी । अरथी ।

टटपूँजिया—(वि०, दे०) थोड़ी पूँजी या थोड़े धन वाला । टुटपुँजिया (ग्रा०) ।

टटलबटल—(वि०, दे०, अनु०) ऊटपटांग ।

टटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टट्टी] अरहर या बाँस आदि की बनी टट्टी या परदा ।

टटीवा—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) घिरनी, चक्कर ।

टटीहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) टिटीहरी ।

टटुआ, टटुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) छोटा घोड़ा, टट्टू । गरदन, गला । [**टटुई, टटुआनी** (स्त्री०)]

टटोरना, टटोलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० त्वक् + तोलन] किसी वस्तु की दशा जानने को उसे अँगुलियों से छूना या दबाना, कुछ ढूँढ़ने को हाथ या पैर इधर-उधर रखना । बातों से दिल का हाल जानना, थाह लेना । अंदाजा या जाँच करना, परीक्षा लेना, परखना ।

टटोल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टटोलना] टटोलने का भाव या उसकी क्रिया, छूना ।

टट्टर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तट या स्थाता] बाँस की खपाचों से बना ढाँचा जो किवाड़ों का काम दे, टट्टी ।

टट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तटी या स्थात्री] टटिया, द्वार के लिए बाँस की खपाँचों से बना ढाँचा । चिक । पतली दीवाल । पाखाना । **मुहा० —की आड़ (ओट) से शिकार खेलना**-छिप कर कोई चाल चलना या बुराई करना । **धोखे की—**, धोखा देने या हानि पहुँचाने वाली बात ।

टट्टू—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) छोटा घोड़ा, टाँगन (ग्रा०) । **मुहा० भाड़े (किराये) का—**, रुपया लेकर दूसरे का काम करने वाला ।

टठिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटी टाठी । थाली । [थरिया (दे०)] टठुलिया (ग्रा०) ।

टन—(संज्ञा, पु०, अनु०) किसी धातु के टुकड़े पर चोट पड़ने का शब्द, टनकार । (अं०) २८ मन की तौल ।

टनकना—(क्रि० अ०) [अनु० टन] टन-टन शब्द होना। गरमी या धूप से सिर में दर्द होना, ठनकना।

टनटन—(संज्ञा, पु०, अनु०) घंटा आदि के बजने का शब्द।

टनटनाना—(क्रि० स०, अ०, अनु०) टनटन शब्द होना। जोर से बोलना, बड़बड़ाना।

टनमना—(वि०, दे०) [सं० तन्मनस्] स्वस्थ, चंगा, प्रसन्न।

टना—(संज्ञा, पु०) भग। भग का एक अंश।

टनाका—(संज्ञा, पु०, अनु०) ठनाका, घंटे या रुपये की आवाज। (वि०) कड़ी (धूप)।

टनाटन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) देर तक होने वाला टन टन शब्द। [ठनाठन (दे०)]

टनाना—(क्रि० स०, दे०) फैलाना, तानना, पसारना, जोर से बाँधना।

टनेल—(संज्ञा, पु०, अं०) नदी के नीचे खोदी हुई सुरंग। चिमनी का चोंगा। भूमि तले रहने वाले पशुओं द्वारा खोदा हुआ मार्ग।

टप—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टोप] फिटन, टमटम आदि का सायवान जो इच्छानुसार चढ़ाया या गिराया जाय। लटकाने वाले लैंप की छतरी। (संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) पानी आदि के टपकने का शब्द। एक बारगी ऊपर से गिरे हुए पदार्थ का शब्द। (संज्ञा, पु०, दे०) [टब] नाँद जैसा बरतन। नवीन कर्ण-भूषण। मुर्गियों के बंद करने का बाँस का टोकरा।—**से**-(क्रि० वि०) तत्काल, अविलम्ब, सत्वर।

टपक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टपकना] टपकने का भाव, बूँद-बूँद गिरने का शब्द। रुक-रुक कर होने वाला दर्द, टीस।—**पड़ना**-किसी वस्तु का सहसा ऊपर से आ जाना, अकस्मात आगमन।

टपकना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० टपटप] पानी आदि का बूँद-बूँद गिरना। आम आदि का पेड़ से गिरना। एकबारगी ऊपर से नीचे आना, किसी भाव का प्रगट होना। झलकना। घाव आदि का ठहर-ठहर कर दर्द करना, चिलकना, टीस मारना। [**टपकाना, टपकवाना** (प्रेरणा० रूप)]

टपका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टपकना] पानी आदि के गिरने का भाव। टपकी वस्तु। आप से आप गिरा हुआ पका फल, आम। ठहर-ठहर कर होने वाला दर्द। चीता। जन्तु।

टपका, टपकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टपकना] फुहार, हलकी झड़ी। पेड़ से पके फलों का लगातार गिरना।

टपकाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० टपकना] पानी आदि का बूँद-बूँद गिराना, चुवाना। भबके से अर्क उतारना।

टपना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० टपना] खाये-पिये बिना पड़े रहना। व्यर्थ के भरोसे पर बैठा रहना।

टपरा—(संज्ञा, पु०, दे०) छप्पर, झोंपड़ा। (क्रि० वि०, दे०) अधिक, पूर्ण।

टपाटप—(क्रि० वि०, अनु०) लगातार पानी आदि का टप-टप शब्द करके या बूँद-बूँद करके गिरना, शीघ्रता से एक-एक कर आना।

टपाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० तपाना] अनुचित रूप से परेशान करना। खिलाये-पिलाये बिना ही पड़ा रहने देना। व्यर्थ भरोसे में रखना। (क्रि० वि०, दे०) [हिं० टपना] फँदाना, कुदाना।

टप्पर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० छप्पर] ठाठ, छप्पर, टट्टर।

टप्पा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टाप] मार्ग में पड़ाव, टिकान। उछाल, कूद, फलाँग। नियत दूरी, दो स्थानो का अन्तर। एक प्रकार का गाना (ग्रा०)।

टब—(संज्ञा, पु०, अं०) नाँद जैसा पानी रखने का बरतन।

टब्बर—(संज्ञा, पु०, दे०) परिवार, गोत्र।

टभक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दर्द, पीड़ा। पानी में पानी गिरने का शब्द।

टभकना—(क्रि० अ०, दे०) चूना, टपकना। घाव में दर्द होना।

टमकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) डुगडुगिया।

टमटम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [टैंडम] एक हलकी खुली दो पहियों की घोड़ा-गाड़ी।

टमटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक बरतन।

टमाटर—(संज्ञा, पु०, दे०) [टोमैटो] विलायती बैगन।

टर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) मेढक की बोली। कड़ी बातें। ऐंठ। हठ। दुखद या कर्कश शब्द, कड़वी बोली। [टर्र (दे०)] **मुहा०—टर करना, (लगाना)**-ढिठाई से बोलते ही जाना। [**टर्राना** (क्रि० अ०, दे०)]

टरकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० टरना] टल जाना, हट या खिसक जाना।

टरकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टरकना] हटाना, खिसकाना, टाल देना, भगा देना, चलता करना, धता बताना।

टरटराना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० टर] बक-बक करना, ढिठाई से बोलना। टर्राना।

टरना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० टर] टलना, हटना। "संत दरस जिमि पातक टरई"—[रामा०]।

टराना—(क्रि० अ०, दे०) हटाना, हटा देना। टाल देना, भगा देना, दूर करना।

टरनि†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टरना] टरने का भाव या क्रिया।

टर्रा—(वि०, दे०, अनु०) टर्राने वाला, ढीठ। कटुवादी, उद्दंडता से लड़ने वाला।

टर्राना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) ढिठाई और कठोरता से उत्तर देना। [**टर्रापन, टर्रपन** (संज्ञा, पु०)]

टलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० टलन] सरकना, खिसकना, हटना, चला जाना। मिटना, रह न जाना। नियत समय का बीत जाना। किसी काम का न होना। किसी आज्ञा का न माना जाना। [**टालना, टलाना** (क्रि० स०, प्रेरणा० रूप)] **मुहा० अपनी बात से—**, प्रण या प्रतिज्ञा पूर्ण न करना।

टलप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छाँट, टुकड़ा, कतरन। भाग, खंड।

टलमल—(वि०) हिलता हुआ। "लौटे युगदल, राक्षस-पद-तल पृथ्वी टलमल"—निराला।

टलमलाना—(क्रि० अ०, दे०) डगमगाना, हिलना। ललचाना। [**टलामली** (संज्ञा, स्त्री०)]

टलहा†—(वि०, दे०) खोटा माल (सोना-चाँदी)। [**टलही** (स्त्री०)]

टलाटली—(सं०, स्त्री०, दे०) टालमटोल। "कै कै सबै टलाटली, अली चली सुख पाय"—बिहारी।

टलामली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हीलेबाजी, बहाना, हीला, हवाला। [टालमटूल (दे०)]

टलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टलना] हटवाना, लुकवा देना।

टल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) झूठ। बे काम।

टल्ली—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का बाँस।

टल्लेनवीसी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) व्यर्थ का काम, निठल्लापन। बहानाबाजी, टालमटूल, हीलेबाजी।

टवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अटना=घूमना] व्यर्थ का घूमना, आवारगी, आवारागर्दी।

टस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) किसी भारी चीज के हटने या खिसकने का शब्द। **मुहा०—से मस न होना**—जरा भी न हिलना। कहने-सुनने का प्रभाव न होना।

टसक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० टसकना] ठहर कर होने वाला दर्द, टीस, कसक।

टसकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० टस+करण) किसी स्थान से हटना, खिसकना, टलना। टीस मारना। कहने-सुनने का प्रभाव पड़ना। कहना मानने को उद्यत होना।

टसकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टसकना] सरकाना, हटाना, टालना।

टसना—(क्रि० अ०, दे०) मसकना, फटना।

टसर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रसर] घटिया, कड़ा और मोटा रेशम।

टसुआ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० अँसुआ] आँसू।

टहना—(संज्ञा, पु०) [सं० तनः] पेड़ की डाली। [**टहनी** (स्त्री०, अल्प०)]

टहल—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० टहलना] सेवा, खिदमत। "नीच टहल गृह की सब करिहौं"—[रामा०]।—**टकोर**—(यौ०) सेवा-सुश्रूषा, काम-धंधा।

टहलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तत+चलना] धीरे-धीरे या मंद-मंद चलना। हवा खाने या जी बहलाने को शाम-सुबह बाहर घूमना, सैर करना। [**टहलाना, टहलवाना** (प्रेरणा० रूप)] **मुहा० टहल जाना**—टल या खिसक जाना।

टहलनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टहल दासी। दिया की बत्ती हटाने की लकड़ी।

टहलुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० टहल] दास, सेवक। [टहलू (दे०)] [**टहलुई, टहलनी** (स्त्री०)]

टही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० घात, घाट] स्वार्थ-साधने का ढंग, प्रयोजन-सिद्धि की घात। जोड़-तोड़। (संज्ञा, पु०, दे०) जन्मते बालक के रोने की ध्वनि।

टहूक, टहूका—(संज्ञा, पु०, दे०) पहेली, चुटकुला।

टहोक, टहोका—(संज्ञा, पु०, दे०) घूँसा, थप्पड़। **मुहा०—देना**–झटक देना, ढकेलना ।**—खाना**–धक्का या ठोकर खाना।

टाँक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टंक] चार माशे की तौल, आँक । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टाँकना] लिखावट । कलम की नोक ।

टाँकना— (क्रि० स०, दे०) (सं० टंकन] दो चीजों को जोड़ना, सी कर जोड़ना । चक्की आदि में दाँते बनाना । रेती पैनी करना । लिखना । मार लेना । अन्याय से छीन लेना ।

टाँका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टाँकना] जोड़ मिलाने वाली चीज जैसे कील, काँटा । डोभ, सीवन । चिप्पी । घाव की सिलाई । धातुओं के जोड़ने का मसाला ।

टाँकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टंक] पत्थर काटने का हथियार, छेनी । धातु आदि का पानी का बड़ा बरतन, टंकी ।

टाँकू—(वि०, दे०) [हिं० टाँका] टाँकने वाला ।

टाँग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टंग] जाँघ के नीचे का भाग, पिंडुली । **मुहा०—अड़ाना**–बिना अधिकार के काम में दखल देना, बाधा डालना । **—तले से (नीचे से) निकलना**–हार मानना । **—पसार कर सोना**–बेखटके सोना ।

टाँगन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुरंगम] छोटा घोड़ा (पहाड़ी देशों, नैपाल, भूटान का) ।

टाँगना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० टँगना] लटकाना ।

टाँगा—(संज्ञा, पु०) [सं० टंग] बड़ी कुल्हाड़ी । [**टाँगी** (स्त्री०)] [हिं० टँगना] एक तरह की गाड़ी ।

टाँच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टाँकी] परकार्य-नाशक बात या वचन, भाँजी मारना । [हिं० टाँका] डोभ, सिलाई, टाँका, पैबंद लगाना, जड़ देना ।

टाँचना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० टाँच] टाँकना, सीना । काटना-छाँटना ।

टाँट—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टट्टी] खोपड़ी । [**टाँट, टाँटा**–(वि०, दे०, अनु०) कड़ा, कठोर]

टाँड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थाणु] परछत्ती, मचान । हाथों का गहना । [टड़िया (दे०)]

टाँडा—(संज्ञा, पु०) [हिं० टाड=समूह] बरदी । बनजारों का झुंड । वंश, कुटुम्ब । झींगुर ।

टाँड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टिट्टिभ] टिड्डी ।

टाँय-टाँय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) टें-टें, टाँव-टाँव, कड़ा शब्द । तोते का शब्द । बकवाद । **मुहा०—फिस**–निष्फल, व्यर्थ ।

टाट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तंतु] सन की सुतली का मोटा कपड़ा । **मुहा०—में की बखिया**–भद्दी और कम मूल्य की वस्तु, किन्तु उसके साज-सामान सुन्दर और बहुमूल्य । बेमेल सामान । बिरादरी या उसका अंग । महाजनी गद्दी ।**—उलटना**–दिवाला निकालना ।**—बाहर होना**–जाति-च्युत होना ।

टाटर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थातृ=जो खड़ा हो] टट्टर, टट्टी । खोपड़ी ।

टाटिक, टाटी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तट्टी] बाँस की खपाँचों का ढाँचा, टट्टी, टटिया ।

टान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तान] तनाव ।

टानना—(क्रि० स०, दे०) [सं० तान] तानना ।

टाप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थापन] घोड़े के पैर का कड़ा नाखूनदार तलवा, सुम । घोड़े के पैरों का शब्द । मछली पकड़ने का झाबा । मुर्गियों के बंद करने का बाँस का टोकरा ।

टापना—(क्रि० अ०) [हिं० टाप+ना प्रत्य०] घोड़ों का पैर पटकना । किसी वस्तु के लिए इधर-उधर फिरना, हैरान होना । उछलना, कूदना, फाँदना । **मुहा०—(ते) रह जाना**–निराश, हाथ मल कर रह जाना ।

टापा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थापन] ऊसर या उजाड़ भूमि । उछाल । ढकने का झाबा, टोकरा ।**—देना**–फलाँग मारना । "आये टापा दीन"—कबीर ।

टापू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टापा, टप्पा] द्वीप ।

टाबर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [पंजाबी टब्बर] लड़का, बालक । कुटुम्ब । [**टोनाटाबर** (यौ०)]

टामक†—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) डिमडिमी ।

टामन—(संज्ञा, पु०, दे०) टोटका । टोना । लटका । मंत्रयंत्र ।

टार—(क्रि० अ०, दे०) टालकर, हटाकर । "सकै को टार टेक जेहि टेकी"—[रामा०] ।

टारना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० टलना] टालना, हटाना । [**टारन** (संज्ञा)]

टारपीडो—(संज्ञा, पु०, अं०) एक विध्वंसक पनडुब्बी जहाज जो टकराते ही फट जाता है ।

टारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टार] दूर, अंतर । (वि०, दे०) [हिं० टलना] टाल-मटोल करने

वाला। (क्रि० स०, दे०) टालना । " जो मम चरन सकहु सठ टारी "—[रामा०]।

टाल—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० अट्टाल] ऊँचा ढेर। लकड़ी या भूसे की दूकान। गंज। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टालना] टालने का भाव। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० टार] कुटना, भँडुआ।

टालटूल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टालना] बहाना, टालमटूल।

टालना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० टलना] हटाना, सरकाना, खिसकाना, दूर करना, भगा देना। मिटाना। दूसरे समय को ठहराना, मुलतवी करना। समय बताना। आज्ञा न मानना। बहाना कर पीछा छुड़ाना, हीला-हवाली या टालमटोल करना। झूठा वादा करना। धता बताना, टरकाना। फेरना, पलटना।

टालमटूल, टालमटोल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टालना] बहाना, टालटूल।

टाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जानवरों के गले में बाँधने की घंटी। चञ्चल गाय या बछिया। [टारी (दे०)]

टाहली—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टहल] सेवक, दास। मजदूर, टहली।

टिंड—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टिंडिश] एक बेल जिसके फलों की तरकारी बनती है।

टिकट—(संज्ञा, पु०, अं०) कर देने वाले को रसीद के तौर पर देने का कागज का टुकड़ा। रोजगारियों पर लगाया गया महसूल। [टिकस, टिक्स (दे०)]

टिकटिक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घड़ी की आवाज। घोड़े के घुमाने या हाँकने का संकेत-विशेष।

टिकटिकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टिकठी] तिपाई। ठठरी।

टिकठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० त्रिकाष्ठ] तिपाई, टिकटी।

टिकड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टिकिया] रोटी, बाटी। अंगाकड़ी। तीन बैलों की गाड़ी। [टिकड़ी (स्त्री०, अल्पा०)]

टिकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्थित] ठहरना, रहना। मिट्टी आदि का पानी आदि के तल में जम जाना। कुछ समय तक काम देना। अड़ना।

टिकरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टिकिया] टिकिया। एक नमकीन पकवान।

टिकली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टिकिया] छोटी टिकिया। छोटी बिंदी। सितारा। टिकुली (ग्रा०)।

टिकस—(संज्ञा, पु०, दे०) [टैक्स] महसूल।

टिकाई—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टीका] युवराज। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टिकना] टिकने का भाव।

टिकाऊ—(वि०, दे०) [हिं० टिकना] मजबूत, दृढ़, कुछ समय तक ठहरने वाला।

टिकान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टिकना] टिकने का भाव। पड़ाव, चट्टी।

टिकाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० टिकना] ठहराना। बोझा उठाने में मदद देना। देना (कम या तुच्छ वस्तु) [टेकाना (दे०)]

टिकाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टिकना] ठहराव, स्थिरता, पड़ाव।

टिकासर—(संज्ञा, पु०, दे०) टिकने की जगह।

टिकासा—(वि०) [हिं० टिकना] टिकने वाला। राही, बटोही।

टिकिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वाटिका] किसी पदार्थ का गोल, चिपटा, छोटा टुकड़ा जैसे औषधि, कोयले या मिठाई का।

टिकुरा—(संज्ञा, पु०, दे०) टीला, भीटा।

टिकुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टिकिया] बेंदी, सितारा, चमकी।

टिकैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टीका+ऐत प्रत्य०] युवराज। अधिष्ठाता, सरदार।

टिकोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाटिका] अम्बिया, छोटा कच्चा आम।

टिक्कड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टिकिया] छोटी मोटी रोटी, बाटी, अंगाकड़ी। अँकरी।

टिक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टिका, सं० तिलक] तिलक, टीका।

टिक्की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टीकिया] टिकिया, बाटी, अंगाकड़ी। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० टीका] टिकुली। बेंदी। ताश की बुंदी।

टिघलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्र+गलन] पिघलना, द्रवीभूत होना, गल या घुल जाना।

टिघलाना—(क्रि० स०, दे०) पिघलाना, द्रवीभूत करना।

टिप्पन—(वि०, दे०) [अटेंशन] दुरुस्त, तैयार, उद्यत, प्रस्तुत।

टिटकारना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) टिकटिक कर पशुओं को हाँकना या चलाना । [**टिटकारी** (संज्ञा, स्त्री०)]

टिटिह, टिटिहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० टिट्टिभ] टिटिहरी (पुरुष) ।

टिटिहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टिट्टिभ, हिं० टिटिह] जलाशयों के तट पर रहने वाली एक छोटी चिड़िया, कुररी ।

टिट्टिभ—(संज्ञा, पु०, सं०) टिटिहरी, कुररी, टिड्डी । [**टिट्टिभी** (स्त्री०)]

टिड्डा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० टिट्टिभ] एक छोटा परदार कीड़ा ।

टिड्डी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टिट्टिभ] टिड्डा का सा उससे बड़ा परदार कीड़ा, टांडी ।

टिढ़बिढ़ंगा—(वि०, दे०) [हिं० टेढ़ा+बंक सं०] टेढ़ा-मेढ़ा । टेढ़बंगा (ग्रा०) ।

टिपका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टिपकना] बूँदी, बूँद ।

टिपटिप—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) पानी आदि की बूँदों के गिरने का शब्द ।

टिपवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० टीपना] टीपन का काम दूसरे से कराना ।

टिपारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० तीन+पार= खंड] मुकुट जैसी एक टोपी । ढक्कनदार डलिया । [टेपारा (दे०)]

टिप्पण—(संज्ञा, पु०, सं०) सरल और संक्षिप्त टीका या तिलक । व्याख्या । जन्म-कुंडली, टिप्पन, टिपना, टीपना (ग्रा०) ।

टिप्पणी, टिप्पनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सरल और संक्षिप्त टीका या तिलक । [**टिप्पण** (पु०)]

टिप्पस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) युक्ति, प्रयोजन-सिद्धि का ढंग या डौल ।

टिप्पी—(संज्ञा, स्त्री०) अंगूठे का निशान ।

टिभाना—(क्रि० स०, दे०) लालच देना, प्रतिदिन थोड़ी-थोड़ी वृत्ति देना ।

टिभाव—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रतिदिन थोड़ी-सी जीविका, लालच मात्र की वृत्ति ।

टिमटिम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तिम=शीतल होना] मन्द वृष्टि, धीमी-ज्योति ।

टिमटिमाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तिम= ठंडा होना] दिया का धीरे जलना, बुझने के समीप होना, झिलमिलाना । मरणासन्न होना । धीमे-धीमे चमकना (तारा) ।

टिर, टिर्र—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) ऐंठ, अकड़, हठ, जिद्द, टर्र ।

टिरफिस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टिर+फिस] आज्ञा न मानना, ढिठाई । चीं-चपड़, विरोध ।

टिर्राना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० टिर] टर्राना, ढिठाई से कड़ा जवाब देना । [**टिर्रा**—(वि०) ढीठ, धृष्ट]

टिलटिलाना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) किसी पुरुष को चिढ़ाना, छेड़ना । दस्त आना ।

टिलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटी मुर्गी, मुर्गी का बच्चा ।

टिलुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) चिरौरी करने या फुसलाने वाला, खुशामदी ।

टिल्ला—(सं०, पु०, दे०) [हिं० टीला, टेलना] टीला, धक्का, बहाना, धोखा ।

टिल्लेनवीसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० टिल्ला+नवीसी फ़ा०] हीला-हवाली, बहानाबाजी, धोखे-बाजी ।

टिसुआ, टिसुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [आँसू (दे०)] टेसू, पलाश, ढाक ।

टिहुकना—(क्रि० अ०, दे०) चौंकना । झझकना, क्रोधित होना ।

टिहुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घुंठ, हिं० घुटना] घुटना, कोहनी ।

टिहुका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चौंकने की क्रिया का भाव, चौंक । झिझक, क्रोध ।

टींट, टींटू—(संज्ञा, पु०, दे०) करील का फल ।

टींड़सी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टिंड] एक बेल जिसके फलों की तरकारी बनती है । [टिंडस (दे०)]

टीक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तिलक] मस्तक और गले का एक गहना । चोटी । टीका ।

टीकना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० टीका] तिलक या टीका लगाना । चिह्न या रेखा बनाना ।

टीका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तिलक] तिलक । फलदान (ब्याह) । भौंहों के बीचोबीच, मस्तक का मध्य भाग । शिरोमणि, श्रेष्ठ । राज्य-तिलक । युवराज, स्वामी या अधिपति होने का चिह्न । "सोई कुल उचित राम कहँ टीका"—[रामा०] । मस्तक का गहना । किसी बीमारी का टीका जैसे चेचक या प्लेग का टीका । (स्त्री०) किसी वाक्य या पुस्तक का पूरा अर्थ, व्याख्या, टिप्पणी ।—**कार**-

(संज्ञा, पु०, सं०) किसी ग्रंथ का विवरण, व्याख्या, अर्थ या तिलक का करने वाला।

टीकैत—(वि०, दे०) तिलक या टीका-विशिष्ट, व्यक्ति, तिलक-युक्त ग्रंथ या राजा आदि। नाथद्वारे के गोस्वामी जी की पदवी।

टीटल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक औषधि।

टीड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टिड्डी] टिड्डी।

टीन—(संज्ञा, पु०, दे०) एक धातु। [टिन]

टीप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टीपना] दबाव, दाब। चूने की छत कूटने का काम। भारी और भयंकर शब्द, टंकार। पंचम स्वर का आलाप (संगी०)। शीघ्र लिखने की क्रिया। टाँक लेने की क्रिया। तमस्सुक। जन्मपत्र। दर्जाबंदी। "कछू देन को नहीं ऋणी हौं मोसों टीप लिखाउ"—[गीता०]।

टीपन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टीपना] जन्म-पत्र। [टिपना (दे०)] टेवा (प्रान्ती०)।

टीपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० टेपन] किसी वस्तु को दबाना या चाँपना, धीरे-धीरे ठोंकना। उड़ा या चुरा लेना। (क्रि० स०) [सं० टिप्पनी] लिखना, टाँकना।

टीबा—(संज्ञा, पु०, दे०) टीला, भीटा।

टीमटाम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) शृंगार, सजावट, बनावट, तड़क-भड़क।

टील—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटी मुर्गी। टिलिया।

टीला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अष्टीला] भीटा, ऊँचा भूखंड, मिट्टी का ऊँचा ढेर, धुस, छोटी पहाड़ी।

टीस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) कसक, चमक, रह-रह कर होने वाली पीड़ा।

टीसना—(क्रि० अ०, दे०)[हिं० टीस] कसकना, चमकना, चिलकना, रह-रह कर दर्द होना।

टुंच—(वि०) कमीना, नीच, छोटे दिल वाला।

टुंटा, टुंडा—(वि०, दे०) [सं० सुंड] ठूँठा पेड़। लूला, लुंजा पुरुष। [**टुंडी** (स्त्री०)]

टुंटुक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पक्षी-विशेष। काला कत्था। श्योण नामक पेड़।

टुँइयाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तोते की एक छोटी जाति, छोटा तोता, तोती।

टुक—(वि०, दे०) [सं० स्तोक] रंच, तनिक, थोड़ा, रंचक, नेसुक। नेक, नैक (ब्र०)।

टुकड़गदा—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हिं० टुकड़ा + गदा फ़ा०] टुकड़े माँगने वाला भिखारी, मँगता। (वि०) तुच्छ, कंगाल। [**टुकड़गदाई, टुकड़-खोरी** (संज्ञा, स्त्री०)]

टुकड़तोड़—(संज्ञा, पु०, दे०) दूसरे पुरुष के टुकड़े खाकर जीवन-निर्वाह करने वाला पुरुष, निकम्मा, टुकड़खोर।

टुकड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तोक] खंड, अंश, भाग, टूका। रोटी का थोड़ा भाग। [**टुकड़ी** (स्त्री०, अल्पा०)] "देबे कौ टुकड़ा भलो"—तुल०। **मुहा० दूसरे का—तोड़ना**-परदत्त भोजन पर जीवन व्यतीत करना।**—माँगना**-भिक्षा माँगना।**—(ड़े) का मोहताज होना**-महा दीन होना।**—सा जवाब देना**-खुल्लमखुल्ला इनकार करना, कोरा जवाब देना।

टुकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टुकड़ा] बहुत छोटा टुकड़ा। झुंड, समुदाय, मंडली।

टुकसा—(वि०, दे०) [हिं० टुक] जरासा, थोड़ा सा, नसुक, रंचक।

टुघलाना—(क्रि० स०) मुँह मे रखकर गलाना।

टुच्चा—(वि०, दे०) [सं० तुच्छ] नीच, तुच्छ, हलका। [**टुच्चापन, टुच्चई** (स्त्री०, पु०)]

टुटका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रोटक] टोटका, तंत्र-मंत्र।

टुटपुंजिया—(वि०, यौ०, दे०) [हिं० टूटी + पूँजी] जिसके पास व्यापार के लिए अल्प धन या पूँजी हो।

टुटरूँ—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) थोड़ी पूँजी या धन। पेंडुकी।

टुटरूँटूँ—(वि०, दे० अनु०) अकेला, कमजोर, दुर्बल, निर्बल। (संज्ञा, स्त्री०) पंडुकी का शब्द।

टुनगा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तनु + अग्र] पतली टहनी का अग्र भाग या खंड, फुनगी। [**टुनगी** (संज्ञा, स्त्री०)]

टुनहाया—(वि०, पु०) जादू या टोना करनेवाला, टोनहा। (स्त्री०) [**टुन (नि) हाई**] टोनहिन।

टुपकना†—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) धीरे से काटना या डंक चुभाना। चुगुली करना।

टुरी—(संज्ञा, पु०, दे०) कण, डली, छोटा-सा खण्ड। जुआर का कड़ा भुना दाना।

टुर्रा—(संज्ञा, पु०) दाना। टुकड़ा, कण।

टुसकना, टुसुकना—(क्रि० अ०, दे०) सिसकना, बिलखना, रोना। क्रोधित होना।

टुसनाना—(क्रि० अ०, दे०) लालच करना, सिहाना ।

टूँगना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० टुनगा] टुगना, चुगना, थोड़ा-थोड़ा, धीरे-धीरे खाना ।

टूँड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुंड] छोटे कीड़ों का डंक, जवा । गेहूँ आदि के सीकुर । सीग, शृंग । [**टूँड़ी** (स्त्री०, अल्पा०)]

टूँड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुंड] छोटा सा तुंड । ढोंढ़ी । लम्बी नोक ।

टूक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तोक] खंड, भाग, टुकड़ा । "घर घर माँगे टूक पुनि"—तुल० । "टूक टूक ह्वै है मन मुकुर हमारो हाय"—[ऊ० श०] ।

टूकर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० टूक] टुकड़ा, भाग, खंड, टुकरा (ग्रा०) ।

टूका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० टूक] टुकड़ा, भाग, खंड । रोटी का भाग । भिक्षा ।

टूट—(संज्ञा स्त्री०, दे०) [हि० टूटना, सं० त्रुटि] टुकड़ा, भाग, खड, टूटने का भाव । भूल से लिखने को रह गया वाक्य, शब्द या अक्षर । भूल, गलती । (संज्ञा, पु०) टोटा, हानि, घटी, क्षति, घाटा ।

टूटना—(क्रि० अ०) [सं० त्रुटि] खंड-खंड या टुकड़े-टुकड़े होना, खंडित या भंग होना । सिलसिला बंद होना । किसी ओर एकाएक वेग से जाना, एकाएक बहुत से लोगों का आ जाना, पिल पड़ना, हमला करना, झपट आना, एकाएक धावा मारना या कहीं से आ जाना । किसी से सम्बन्ध छूटना । दुबला या निर्धन होना । बंद होना । किला खो जाना । घटी पड़ना । देह में ऐंठन या दर्द होना । वेग और आतुरता से जग जाना । **मुहा० टूटटूट कर बरसना**–मूसलाधार बरसना ।

टूटा—(वि०, दे०) [हि० टूटना] भग्न, खंडित । निर्बल, कंगाल । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० टोटा] घटी, हानि । **मुहा०—(टी) फूटी बात या बोली, भाषा**—असंबद्ध या अस्पष्ट वाक्य, बे मुहाविरा भाषा ।

टूठना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तुष्ट, प्रा० तुट्ठ] संतुष्ट होना ।

टूठनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टूठना] संतोष, तुष्टि, संतुष्टि ।

टूम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० टुन-टुन] आभरण, जेवर, गहना । **—टाम**–(यौ०) गहना-गुरिया, गहना-कपड़ा, बनाव, सिंगार । ताना, व्यंग ।

टूमना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) झटका या धक्का देना । ताना मारना ।

टूसा—(संज्ञा, पु०, दे०) मदार का फल । कुशा की जड़ । पेड़ों की कोंपल । फली । अंकुर । [**टूसी** (स्त्री०)]

टें—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) तोते की बोली । **मुहा०—हो जाना या बोलना**–शीघ्र मर जाना । **—टें करना**–व्यर्थ बकबक करना, तकरार करना ।

टेंगना, टेंगरा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुंड] एक मछली । इमली का लंबा फल ।

टेंट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तट+ऐंठ] धोती की मुर्री । [सं० तुंड] कपास का फल या डोंड़ा । आँख का उभरा हुआ मांस-पिंड, टेंटर (ग्रा०) ।

टेंटर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुंड] आँख में उभरा हुआ मांस-पिंड । टेंट, टेंढर (ग्रा०)।

टेंटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टेंट] करील । (संज्ञा, पु०) [अनु० टेंटें] झगड़ालू, तकरारी ।

टेंटुवा, टेटुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) गला ।

टेंडसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक बेल जिसके फूलों की तरकारी बनती है । [**टिंडसर** (ग्रा०)]

टेउकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टेक] थूनी, छोटा काठ का खभा ।

टेउना—(संज्ञा, पु०, ग्रा०) अस्त्रादि टेने की चीज ।

टेक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टिकना] थूनी, थंभ, सहारा । ऊँचा टीला । मन मे बैठी बात । हठ । "सकै को टारि टेक जिहिं टेकी"—[रामा०] । गीत का प्रथम स्थायी पद । **मुहा०—निबाहना**–प्रण पूरा करना ।**—पकड़ना (गहना)**–हठ, या जिद करना ।

टेकना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० टेक] आड़, थंभ, टेक, सहारा । [**टेकनी**–(संज्ञा, स्त्री०) वह वस्तु-विशेष जिसका सहारा लिया जाय या दिया जाय]

टेकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टेक] सहारा लेना, आड़ पकड़ना, थामना, ठहराना, लेना । **मुहा० माथा—**, प्रणाम करना । किसी वस्तु को सहारे के लिए पकड़ना, हाथ आदि का सहारा लेना । हठ करना । बीच में रोकना या पकड़ना ।

टेकरा—(संज्ञा, पु०) [हि० टेक] टीला, पहाड़ी । टिकुरा (ग्रा०) । [**टेकरी** (स्त्री०, अल्पा०)]

टेकला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टेक] हठ, धुनि ।

टेकान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टेकना] द्वार या छत के नीचे आड़ या सहारे के वास्ते खड़ी की हुई लकड़ी आदि, टेक, थूनी, थंभ, सहारा।

टेकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टेकना] किसी पदार्थ से उठने-बैठने में सहारा लेना। किसी पदार्थ को ले जाने में किसी दूसरे को थामना, पकड़ना।

टेकी—(संज्ञा, पु०) [हि० टेक] अपनी प्रतिज्ञा या प्रण पर स्थिर या दृढ़ रहने वाला, हठी।

टेकुआ, टेकुवा—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० तर्कुक] चरखे का तकुला, तकुआ (ग्रा०)।

टेकुरा—(संज्ञा, पु०, दे०) पान, ताम्बूल।

टेकुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [टेकुआ] रस्सी बटने या सूत कातने का तकुला। चमारों के तागा खींचने का सूआ। गले का गहना।

टेघरना—(क्रि० अ०, दे०) पिघलना, टिघलना। द्रव होना, टघरना (ग्रा०)।

टेटका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ताटंक] कर्ण-भूषण, ढारैं। (वि०) टेढ़ा।

टेडा—(संज्ञा, पु०, दे०) पेड़ी। एक चर्खा।

टेढ़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तिरस्] वक्र, टेढ़ा। "टेढ़ जानि संका सब काहू"—[रामा०]।—**बंगा** -(यौ०) टेढ़ा-मेढ़ा।

टेढ़बिडंगा—(वि०) [हि० टेढ़ा+बेढंगा] टेढ़ा-मेढ़ा। [**टेढुक-मेढुक** (यौ०, ग्रा०)]

टेढ़ा—(वि०, दे०) [सं० तिरस्] कुटिल। वक्र। कठिन। पेंचदार। टेढ़, टेढुक (ग्रा०, स्त्री०)। [**टेढ़ी** (स्त्री०)] [**टेढ़ा-मेढ़ा** (यौ०)] [**टेढ़ापन** (संज्ञा, पु०)] [**टेढ़ाई** (स्त्री०)] दुराचार। **मुहा०—पड़ना या होना**-बिगड़ना, टर्राना, अकड़ना। अकड़ जाना।—**(ढ़े) जाना**-इतराना, घमंड करना। "प्यादा तें फरजी भयो, टेढ़े-टेढ़े जाय"—रहीम०।

टेढ़ी—(वि०, स्त्री०) देखिए 'टेढ़ा'। **मुहा०—सीधी सुनाना (सुनना)**-बुरा-भला कहना (सुनना)। —**खीर**-कठिन कार्य। कुशील, मूढ़, उद्धत, उजड्ड। —**चाल**-कुमार्ग, दुष्टता।

टेना—(क्रि० स०, दे०) [टेवना] किसी लोहे के हथियार को पैना करने के लिए पत्थर आदि पर रगड़ना। मूँछों को ऐंठना, मूँछों पर ताव देना। [**टेउना (संज्ञा, पु०, ग्रा०)**] "कपट छुरी जनु पाहन टेई" —[रामा०]।

टेनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटे डील का पुरुष या स्त्री। छोटी छड़ी। छोटी उँगली। **मुहा०—मारना**-कम तौलने के लिए तराजू की डंडी को अँगुली से दबाना, कम तौलना।

टेबुल—(संज्ञा, पु०, अं०) मेज, डेस्क। सूची। [टाइम-टेबुल]

टेम—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० टिमटिमाना] दिया की लौ, ज्योति या चोटी, दीपशिखा। (संज्ञा, पु०, दे०) [टाइम] समय। [टैम (दे०)]

टेर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तार] पुकार, हाँक, जोर से बुलाना, गुहार। "गज की टेर सुनी रघुनन्दन"—[स्फु०]।

टेरना—(क्रि० स०, दे०,) पुकारना, हाँक लगाना, चिल्लाकर पुकारना, बुलाना। [**गुहारना** (ब्र०)]. [गुहराना (दे०)]

टेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पतली डाली।

टेव, टेंव—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टेक] स्वभाव, प्रकृति, बान, आदत। "जाको जैसी टेंव परी री" —सूर०।

टेवना, टेंवना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० टेना] पैना करना, धार निकालना, टेना। हथियार पैना करने का पत्थर। ठेउना (ग्रा०)।

टेवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० टिप्पन] जन्म-कुंडली, जन्म-पत्र। **टिपना** (प्रान्ती०)।

टेवैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० टेना] पैना करने वाला, टेने वाला।

टेसू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० किंशुक] ढाक, पलास। " टेसू फूले देखिकै समुझी लगी दवागि " —[स्फु०]। होली का एक उत्सव, उस समय का गीत।

टेहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) छोटा गाँव, पुरवा।

टैक्स—(संज्ञा, पु०, अं०) कर, महसूल, टिकस, टिक्कस (ग्रा०)।

टैया, टैयाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक तरह की कौड़ी। अक्षिगोलक, आँख का गोल माँस-पिंड।

टोंक, टोंका†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तोक=थोड़ा] किसी वस्तु का किनारा, सिरा, कोना, नोक। (स्त्री०) रोक। [**रोक-टोक** (स्त्री०)]

टोंकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टोंक] किसी को कुछ करने से मना करना, रोकना। पूछ-ताछ करना, छेड़ना।

टोंचना—(क्रि० स०, दे०) [सं० टंकन] चुभोना। उलाहना देना, ताना मारना, उपालम्भ के वाक्य कहना।

टोंटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुंड] लोटे में पानी गिराने की नली। [**टोंटी** (स्त्री०)]

टोक†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्तोक] टोकने का भाव। [**रोक-टोक** (यौ०)] मनाही, रोक-टोक, निषेध।

टोकना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० टोक] मना करना, रोकना, निषेध करना। (संज्ञा, पु०, दे०) झाबा, टोकरा, झौवा (ग्रा०)। डला, बड़ी डलिया, हंडा। [**टोकनी** (स्त्री०)]

टोकरा—(संज्ञा, पु०, दे०) झाबा, टोकना, डला, खाँचा। [**टोकरी**-(स्त्री०) डलिया, टोकनी]।

टोकारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टोक] सावधानी या चितावनी या याददहानी के लिए कथन। "दै टोकरा तोहि राधे हौं जताये देति"।

टोकाटोकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छेड़-छाड़। रोक-टोक, पूछ-ताछ।

टोकियो—(संज्ञा, पु०) जापान की राजधानी।

टोटका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रोटक] तंत्र-मंत्र, टोना-टम्बर।—(**के**) **हाई**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टोटका] टोटका करने वाली, जादूगरनी। [टोटकिहाई]। **मुहा०—करना**-अहितकारी कार्य या अपशकुन करना।—**करने आना**-आकर तत्काल चले जाना।

टोटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुंड] टुकड़ा, भाग। कारतूस। [हिं० टूटना] क्षति, घटी, हानि।

टोडरमल—(संज्ञा, पु०, दे०) अकबर बादशाह के भूमि और लगान-व्यवस्थापक मंत्री ये अपने धर्म के बड़े पक्के थे। ये मुडियालिपि के प्रवर्तक थे।

टोड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० त्रोटक] एक रागिनी। नाभि वा तोंदी।

टोनवा—(संज्ञा, पु०, दे०) बाज पक्षी। टोटका, टोना।

टोनहा—(वि०, दे०) [हिं० टोना] टोना-टोटका करने वाला, जादूगर, टोनहाया। [**टोनही, टोनहाई, टोनहाइन, टोनहिन** (स्त्री०)]

टोना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तंत्र] तंत्र-मंत्र जादू, टोटका। वैवाहिक गीत। (संज्ञा, पु०, दे०) एक शिकारी पक्षी † (क्रि० स०, दे०) [सं० त्वक्+ना] टटोलना, टोहना, खोजना। छूना।

टोप—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० तोपना=ढँकना] बड़ी टोपी। [हैट] लोहे की टोपी (युद्ध में), खोल। कूँड़। गिलाफ। † (संज्ञा, पु०) [अनु० टप] पानी आदि की बूँद।

टोपरा—(संज्ञा, पु०, दे०) टोकरा, दौरा, डलवा। [**टोपरी** (स्त्री०, अल्पा०)] टोकरी, दौरी, खँचिया।

टोपा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टोप] बड़ी टोपी, कनटोप (ग्रा०), कान-सिर आदि ढाँकने की टोपी। † (संज्ञा, पु०) [हिं० तोपना] टोकरा, झाबा।

टोपी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तोपना] छोटा टोपा। राजमुकुट। बन्दूक के घोड़े का खोल या पड़ाका। बाज आदि शिकारी पक्षियों की आँखों का पर्दा।

टोभा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डोभ] टाँका, डोभ (ग्रा०)।

टोर†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कटारी, कटार।

टोरना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० त्रुटि] तोड़ना। **मुहा० आँख—**,शर्म से आँख हटाना।

टोरा, टोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) छप्पर आदि के साधने वाले काठ के टुकड़े। [**टोरी** (स्त्री०)]

टोरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुवर] छिलका सहित अरहर का दाना, रवा। (अं०) जेम्स द्वितीय को पदच्युत करने वाले दल का नाम।

टोल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तोलिका] झुंड, समूह, मंडली। पाठशाला। [**टोली** (स्त्री०)]

टोला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तोलिका=घेरा, बाड़ा] [**टोलिका, टोली** (स्त्री०)] मुहल्ला, पुरा। थोक, टूवाला (ग्रा०)।

टोली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तालिका] छोटा टोला, मुहल्ला। थोक। झुंड, समूह। पत्थर की वर्गाकार चट्टान। सिल। बाँस-भेद।

टोवना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० टोना] मंत्र या तंत्र का प्रयोग करना। टटोलना। छूना।

टोह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खोज, पता, अनुसंधान।

टोहना—(क्रि० स०, दे०) पता लगाना, खोजना, अनुसंधान या अन्वेषण करना, ढूँढ़ना, टटोलना।

टोहाटाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छानबीन, तलाश, जाँच-पड़ताल।

टोहाटार—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) चीजों का इधर-उधर करना। टोहारा, टउहाटार (ग्रा०)।

टोहिया—(संज्ञा, पु०) [हि० टोर] खोजी, अन्वेषक, गवेषक ।

टोही—(वि०) [हि० टोह] खोजी, पता लगाने वाला ।

टौरना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टेरना] जाँच-पड़ताल करना, थाह लेना, पता लगाना ।

ट्रंक—(संज्ञा, पु०, अं०) लोहे या टीन को सन्दूक ।

ट्रेन—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) रेलगाड़ी के सम्मिलित कई डब्बे ।

ठ

ठ—संस्कृत और हिन्दी की वर्ण-माला के टवर्ग का दूसरा वर्ण । (संज्ञा, पु०, सं०) महादेव । भारी शब्द या ध्वनि । चन्द्रमंडल । शून्य स्थान ।

ठंठ—(वि०, दे०) [सं० स्थाणु] ठूँठा, सूखा वृक्ष ।

ठंठनाना—(क्रि० स०) ठं-ठं की आवाज निकालना ।

ठंठार—(वि०, दे०) [हि० ठंठ] खाली, शून्य, रीता ।

ठंढ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठंढा] सर्दी, जाड़ा, शीत ।

ठंढई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठंढा] शरीर में ठंढक लाने वाली औषधियाँ, जैसे धनिया, सौंफ आदि । [**ठढाई**]

ठंढक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठंढा] जाड़ा, सर्दी, शीत । तृप्ति । प्रसन्नता । शान्ति ।

ठंढा—(वि०, दे०) [सं० स्तब्ध] सर्द, शीतल । [**ठंढी** (स्त्री०)] **मुहा०—(ढी) साँस**-दुख और शोक से भरी साँस ।—(ढे) **दिल से**-शान्तिपूर्वक, भावावेश-रहित । बुझा हुआ, शांत ।—**करना**-क्रोध मिटाना या शान्त करना, धैर्य्य देकर शोक मिटाना ।—**करना** (**ताजिया**)-ताजिया दफन करना, गाड़ना । (**किसी पवित्र और प्यारी चीज को)—करना**-उस वस्तु को फेंक देना या तोड़-फोड़ डालना ।—**होना**-मर जाना । दीपक बुझ जाना । (**दिमाग)—होना**-गर्व, गरमी या शेखी दूर होना ।—(ढे) **ठंढे**-धूप के पहले, सुख-शान्ति से, चुपचाप, आराम या प्रसन्नता से ।

ठंढाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठंढा] देह की गर्मी शान्त कर ठंढक देने वाली औषधियाँ ।

ठई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठानना] ठानी, ठहराई । "काह विधाता ने यह ठई"—लल्लू० । "जैसी कुबुद्धि ठई उर मैं"—[रामा०] ।

ठक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) दो पदार्थों के टकराने का शब्द, ठोंकने की आवाज । (वि०) भौचक्का, अचंभित ।—**ठक**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) बखेड़ा, झगड़ा, झमेला, झंझट ।

ठकठकाना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) किसी वस्तु को ठोंकना, पीटना, खटखटाना ।

ठकठकिया—(वि०, दे०) [अनु० ठक-ठक] झगड़ालू, बखेड़िया ।

ठकठेला—(संज्ञा, पु०, दे०) धक्काधक्की, झगड़ा, टंटा-बखेड़ा ।

ठकठौआ, ठकठौवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) डोंगी । पनसुइया (प्रा०) । करताल, भिखारी का एक बाजा ।

ठकुरई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठाकुर] प्रभुत्व, बड़प्पन, अधिकार, ठकुरी, राज्य । [**ठकुराई**-क्षत्रियत्व, आतंक]

ठकुरसुहाती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० ठाकुर+सुहाना] स्वामी को प्रसन्न करने वाली मुँह देखी बात, लल्लोचप्पो (ग्रा०) । "कहहिं सचिव सब ठकुरसुहाती"—[रामा०] ।

ठकुराइत, ठकुरायत—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० ठाकुर+आइत प्रत्य०] प्रभुत्व, राज्य, आधिपत्य । "जेहिकी ठकुराइत तीनों लोकहिं"—[रामा०] । ठकुराइस (ग्रा०) ।

ठकुराइन, ठकुरानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठाकुर+आइन प्रत्य०] ठाकुर की पत्नी, स्त्री, स्वामिनी, रानी । नाइन । "राधा ठकुराइन के पायन पलोटही"—देव ।

ठकुराई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० ठाकुर+आई प्रत्य०] प्रभुत्व, राज्य, अधिकार । महत्त्व । "सब गाँव छ सातक की ठकुराई"—[रामा०] ।

ठकुरानी—(संज्ञा, स्त्री०) क्षत्रिय की स्त्री, क्षत्राणी, जमींदार या ठाकुर की पत्नी ।

ठकुराय—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ठाकुर] ठाकुरों की एक जाति ।

ठकुरायत—(संज्ञा, स्त्री०) प्रभुता, मालिकियत, स्वामित्व । शासन के अधीन प्रदेश ।

ठकुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्षत्रियत्व । प्रभुत्व । आतंक ।

ठकोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टेकना+औरी] सहारा देने वाली लकड़ी, जोगिनी ।

ठक्कर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० ठक] टक्कर ।

ठक्कुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [वि० ठाकुर] ठाकुर, पूज्य मूर्ति, ठाकुर जी ।

ठग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थग] छल और धोखे से लूटने वाला, छली, धूर्त ।—**विद्या**–छल-प्रपंच ।

ठगाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठग+ई प्रत्य०] ठगने का काम या भाव, धूर्तता । चालाकी । [**ठगी** (स्त्री०)] छल, धोखा ।

ठगण—(संज्ञा, पु०, सं०) पाँच मात्राओं का एक गण (पिं०) ।

ठगना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ठग] छल या चालाकी से लूटना, धोखा देना, छल करना । माल बेचने में बेईमानी करना । † (क्रि० अ०, दे०) धोखा खाना । दंग होना । चक्कर में पड़ना । **मुहा० ठगासा**–चकित, भौंचक्का-सा ।

ठगनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठग] ठगने वाली, ठग की पत्नी, कुटनी । "ठगनी का नैना झम कावै"—कबीर ।

ठगपना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ठग+पन] ठगने का काम या भाव, चालाकी, धूर्तता ।

ठगमूरी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हि० ठग+मूरि] एक नशेदार जड़ जिसे ठग, लोगों को खिला कर लूटते हैं । **मुहा०—खाना**–मस्त होना ।

ठगमोदक—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० ठग+मोदक= लड्डू] ठगों के नशीले लड्डू । [ठग-लाड़ू (दे०)] **मुहा०—खाना**–मस्त या बेहोश होना ।

ठगवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ठगना का प्रेरणा० रूप]] दूसरे से किसी को धोखा दिलवाना, ठगाना ।

ठगा, ठगी—(संज्ञा, स्त्री०) छल-कपट ।

ठगाई, ठगाही†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठग +आई प्रत्य०] धूर्तता, छल, धोखा ।

ठगाना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ठगना] छल या धोखे में पड़ कर ठगा जाना या हानि सहना, ठगवाना ।

ठगिन, ठगिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठग] लुटेरिन, ठग की पत्नी ।

ठगिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ठग+ इया प्रत्य०] छली, कपटी, धूर्त ।

ठगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठग] छल से लूटने का भाव या काम, धोखा देना, धूर्तता । (वि०) छली हुई ।

ठगोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठग+बौरी] टोना, जादू, मोहनी । "सुधि बुधि सब मुरली हरी प्रेम ठगोरी लाय"—[भ्रमरगी०] ।

ठचरा—(संज्ञा, पु०, दे०) झगड़ा, बैर-विरोध, टंटा, बखेड़ा ।

ठट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थाता] समूह । रचना । सजावट ।

ठटकीला—(वि०, दे०) [हि० ठाट] सजा-सजाया, ठाटदार ।

ठटना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ठाढ़] सजाना । (क्रि० अ०) खड़ा रहना, सजना । [हि० ठाठ] गाना प्रारम्भ करना ।

ठटनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठटना] बनाव, रचना । सजावट ।

ठटरी, ठठरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठाट] अस्थिपंजर, खरिया, अरथी ।

ठटु—(संज्ञा, पु०) [हि० ठाट] रचना, बनाव, विधि । (क्रि० दे०) ठाट बनाओ ।

ठट्ट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थाता] समूह, ढेर । रचना । सजावट ।

ठट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठाट] ठटरी, अरथी । "जरिगो लोहू मास रहि गई हाड़ की ठट्टी"—गिरि० ।

ठट्ठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अट्टहास] मसखरी, दिल्लगी ।—(ट्ठे) **बाज**–दिल्लगीबाज । [**ठट्ठेबाजी** (संज्ञा, स्त्री०)] **मुहा०—उड़ाना**–उपहास करना ।—**मारना**–उपहास या हँसी करना, खूब हँसना ।

ठठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थाता] समूह । रचना । सजावट ।

ठठई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं०अट्टहास] हँसी, दिल्लगी ।

ठठकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्थेष्ट+कारण] एकाएक रुक या ठहर जाना, ठिठकना । "छिनकु चलति ठठकत छिनकु"—बिहारी ।

ठठना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ठाढ़] ठहरना । सजना ।

ठठाना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० ठकठक] मारना, पीटना । (क्रि० अ०, दे०) [सं० अट्टहास] बड़े जोर से हँसना । [**ठठाइ** (पू० का०)] "हँसब ठठाब फुलाउब गालू"—[रामा०] ।

ठठेर-मंजारिका—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० ठठेरा + मार्जारिका] ठठेरे की बिल्ली जो ठठेरे के गढ़ने का ठक-ठक शब्द सुन कर भी नहीं डरती ।

ठठेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० ठक-ठक] कसेरा, पीतल, फूल के बरतन बनाने वाला । [**ठठेरी, ठठेरिन** (स्त्री०)] **मुहा०—(रे) ठठेरे में बदलाई**—जैसे के साथ तैसा व्यवहार ।—**(रे) की बिल्ली**—निर्भय, निडर मनुष्य ।

ठठेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठठेरा] ठठेरे का काम ।—**बाज़ार**—(संज्ञा, पु०) कसेरों का बाजार, ठठेरहई (ग्रा०) ।

ठठोल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ठट्ठा] दिल्लगी-बाज । हँसी, दिल्लगी । [**ठठोली**-(संज्ञा, स्त्री०) हास, परिहास] "जो मैं कहूँगा तू उसे समझेगा है ठठोल"—ग्रा० ।

ठढ़ा, ठढ़ा†—(वि०, दे०) [सं० स्थातृ] सीधा खड़ा, ठाढ़ा (ग्रा०) ।

ठन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) रुपया आदि या धातु के खड़कने या बजने का शब्द, ठनक, ठनकार ।

ठनक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० ठन-ठन] ढोल आदि बाजे का शब्द । चसक । टीस ।

ठनकना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० ठन-ठन] ठन-ठन की आवाज होना । चसकना, टीस मारना । **मुहा० माथा—**, भारी चिन्ता होना । सन्देह या शंका होना ।

ठनकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ठनकना] ढोल, तबला आदि बजाना ।

ठनकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) ठन-ठन शब्द ।

ठनगन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ठगना] नख़रा (फ़ा०), मान । बहाना, हठ ।

ठनगनगोपाल,ठनठनगोपाल—(संज्ञा, पु०) [अनु० ठन-ठन + गोपाल] सारहीन, बिलकुल छूँछी वस्तु । कंगाल पुरुष ।

ठनठनाना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) घंटा आदि बजाना, ठन-ठन शब्द निकालना । (क्रि० अ०, दे०) बजना ।

ठनना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ठानना] कोई काम सोत्साह प्रारंभ होना, छिड़ना । मन में कुछ पक्का होना, मन में लगना, जमना, ठहरना । छिड़ जाना, ठन जाना, वैमनस्य या लड़ाई-झगड़ा होना ।

ठनाका—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० ठनठन] ठन-ठन शब्द, ठनकार ।

ठनाठन—(क्रि० वि०, दे०) [अनु० ठनठन] ठनठन शब्द-युक्त । (वि०) पक्का, दृढ़ ।

ठप—(वि०, दे०) बंद ।

ठपका†—(संज्ञा, पु०, दे०) धक्का, ठेस ।

ठपना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्थापन] छपना, छपजाना, चिह्नित करना, थापना ।

ठप्पा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थापन] छापा, साँचा । एक गोटा ।

ठमक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठमकना] चाल की ठसक, लचक, मटक, ठुमक ।

ठमकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्तंभ] ठिठकना, रुकना । घमंड से रुक-रुक कर चलना, हाव-भाव दिखाते चलना, ठुमकना (ब्र०) । "सुभट सुभद्रा-सुत ठमकत आवै है"—सरस० ।

ठमकाना, ठमकारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ठमकना] चलते हुए रोकना, ठहराना, ठुमकाना ।

ठयना—(क्रि० स०, दे०) [सं० अनुष्ठान] दृढ़ प्रतिज्ञा से प्रारम्भ करना, ठानना । समाप्त करना । मन में ठहराना या निश्चित करना । (क्रि० अ०, दे०) छिड़ना, आरंभ होना । मन में पक्का होना या ठहरना या जमना । (क्रि० स०, दे०) [सं० स्थापित] बैठाना, ठहराना । योजित करना । स्थित होना, बैठना, जमना ।

ठरन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठरना] अधिक सर्दी, जाड़ा, शीत ।

ठरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्तब्ध] जाड़े या सर्दी से अकड़ जाना । बहुत जाड़ा या ठंडक पड़ना ।

ठरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) मिट्टी का हुक्का ।

ठर्रा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ठड़ा] मोटा सूत । अधपकी ईंट । ख़राब शराब ।

ठवना—(क्रि० स०, दे०) [सं० अनुष्ठान] कोई काम पक्के विचार से प्रारम्भ करना, ठानना, पूर्ण-रूप से करना, मन में ठहराना, निश्चित करना, स्थापित करना, बैठाना ।

ठवनि, ठवनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थापन] बैठक। स्थिति। खड़े होने का ढंग, आसन, मुद्रा। "वृषभ कंध केहरि ठवनि"—[रामा०]।

ठस—(वि०, दे०) [सं० स्थास्तु] कड़ा, ठोस। घना बुना वस्त्र, गफ़, गाढ़ा। दृढ़, घना, भारी। आलसी। ठीक न बजने वाला रुपया। कृपण और धनी।

ठसक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ठस] अहंकारयुत चेष्टा, शान, नखरा, घमंड, शेखी। "मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की"—भूषण। **—दार**—(वि०, दे०) [हिं० ठसक+दार फ़ा०] अभिमानी, शेखीदार, शानदार, घमंडी, तड़क-भड़कदार। "तूने ठसकदार या चकत्ता को ठसक मेटी" —भूषण।

ठसकना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० ठस] पटकना, तोड़ना, दे मारना।

ठसका—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) सूखी खाँसी, जिसमें कफ़ न गिरे। ठोकर, धक्का, ताना। [व्यंग (दे०)]

ठसनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ठस] ठाँसने का सामान, जिससे कोई चीज ठाँसी (गाँसी) जावे, धनी, जैसे बन्दूक का गज।

ठसाठस—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० ठस] ठूँस-ठूँस या ठाँस-ठाँस कर भरा हुआ, खचाखच या अधिकता से भरा हुआ, अति घना।

ठस्सा—(संज्ञा, पु०, दे०) गर्वभरी चेष्टा, घमंड, ठसक, शेखी, शान।

ठहना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) घोड़े का बोलना। घंटा बजाना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० संख्या] बनाना, सवाँरना।

ठहनाना—(क्रि० अ०, दे०) घोड़े का हिनहिनाना। सोच-समझकर आगे बढ़ना।

ठहर, ठाहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थल] स्थान, ठौर, चौका। "ठहर देखि उतरे सब लोगू" —[रामा०]।

ठहरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्थैर्य्य] रुकना, स्थिर होना, टिकना, स्थित रहना, डेरा डालना। **मुहा० मन—**, मन की व्याकुलता मिट जाना, चित्त स्थिर होना। फिसल न पड़ना, खड़ा रहना। नाश न होना, कुछ दिनों तक काम देना या चलना। थिरना। धैर्य्य धरना। आसरा करना या देखना, पक्का, ठीक या निश्चित होना। **किसी बात का—**, किसी बात का संकल्प या निश्चय होना। (क्रि० अ०) जैसे—वह अपना सम्बन्धी ठहरा।

ठहराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ठहरना] ठहराना क्रिया का भाव या मजदूरी। अधिकार, दखल, कब्ज़ा।

ठहराऊ—(वि०, दे०) [हिं० ठहरना] टिकाऊ, दृढ़, मजबूत।

ठहराना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० ठहरना] किसी को चलने से रोकना, टिकाना, कहीं जाने न देना। होते हुए कार्य को रोक देना, ठीक, पक्का या तै करना।

ठहराव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ठहरना] ठहरना क्रिया का भाव, स्थिरता, रुकाव, निश्चय। "हो ठहराव चित्त चंचल का वही योग कहलावे"—[स्फु०]।

ठहरौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ठहराना] दहेज का करार।

ठहाका†—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) जोर की हँसी, अट्टहास। आघात।

ठहियाँ, ठइयाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थान] ठौर, स्थान।

ठाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थान] ठौर, स्थान।

ठाँई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ठाँव] जगह, ठौर, स्थान। तईं। प्रति। निकट।

ठाँउँ, ठाँऊ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थान] ठौर, स्थान। पास, निकट। "पाँड़े जी यहि बात को को बूझै इहि ठाँउँ"—दीन०। (संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) बंदूक का शब्द।

ठाँठ—(वि०, दे०) [अनु० ठन-ठन] सूखने से रस-रहित पदार्थ, नीरस। दूध न देता पशु।

ठाँठर—(संज्ञा, पु०, दे०) ठठरी।

ठाँयँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थान] ठौर, ठाम (ब्र०), स्थान। पास, निकट। (संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) बंदूक का शब्द।

ठाँयँ-ठाँयँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) बंदूक या छींकादि का शब्द। झगड़ा, झाँयँ-झाँयँ।

ठाँव—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) [सं० स्थान] ठौर, स्थान।

ठाँसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्थास्नु] किसी बरतन में कुछ दबा-दबा कर भरना। रोकना, मना करना। घना करना। [**गाँसना** (क्रि० अ०, दे०) ठन-ठन शब्द करके खाँसना।

ठाकुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ठक्कुर] देवता, परमेश्वर, विष्णु । बड़ा आदमी, राजा, सरदार, स्वामी, नायक, जमींदार । क्षत्रियों और नाइयों की पदवी । [**ठकुरानी, ठकुराइन** (स्त्री०)] "ठाकुर तिलोक के कहाइ करिहैं कहा"—[ऊ० श०] ।—**द्वारा**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० ठाकुर+द्वारा] विष्णु-मंदिर, देवस्थान, देवालय । —**बाड़ी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० ठाकुर+बाड़ी] मंदिर, देवालय ।—**सेवा**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० ठाकुर+सेवा] देवपूजन । मंदिर को अर्पित धन या जमींदारी आदि ।

ठाकुरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० ठाकुर+ई प्रत्य०] राजत्व, आधिपत्य । आतंक । जमींदारी ।

ठाट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थातृ] बाँस की खँपाचों का परदा । शरीर, पंजर । खपरों या फूस के नीचे का बाँसों या लकड़ियों का टट्टर । ढाँचा । सजावट । (क्रि० अ०) [ठठना (दे०)] बनाना ।—**बाट**-(संज्ञा, पु०) सजावट । **मुहा०—बदलना**-वेश बदलना । झूठा बड़प्पन या प्रभुत्व, दिखावट, रंग जमाना या बाँधना, दिखावा, आडंबर, बाहरी तड़क-भड़क । ढंग, तर्ज । तैयारी । सामान । युक्ति, उपाय । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ठाट] झुंड, समूह । ज्यादती, अधिकता । [**ठाटी** (स्त्री०)]

ठाटना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० ठाट] बनाना, सजाना, सँवारना । ठानना, रचना ।

ठाटर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ठाट] पंजर, ठाट, टट्टर । ठाटबाट, श्रृङ्गार ।

ठाटी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठाट] झुंड, समूह ।

ठाठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थातृ] टट्टर, पंजर । सजावट, बनावट, ठाट ।

ठाढ़, ठाढ़ा—(वि०, दे०) [सं० स्थातृ] खड़ा । समूचा । पैदा, उत्पन्न । "जामवन्त कह रहु खल ठाढ़ा"—[रामा०] । **मुहा०—देना**-ठहराना, टिकाना । (वि०) हृष्टपुष्ट, दृढ़, हट्टाकट्टा ।

ठादर†—(संज्ञा, पु०, दे०) लड़ाई, झगड़ा, मुठभेड़ । "देव आपनी नहीं सँभारत करत इन्द्र सों ठादर"—सूबे० ।

ठान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अनुष्ठान] कार्यारंभ, प्रारंभिक कार्य । दृढ़ निश्चय या विश्वास । अंदाज । "ठानि जौहर व्रत नारि धर्म कुल धर्म बचायो"—[स्फु०] ।

ठानना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० अनुष्ठान] कोई काम आरंभ करना, छेड़ना । पक्का करना, ठहराना ।

ठाना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० अनुष्ठान] पक्का या स्थापित करना, रखना, ठानना, उठाना । [**ठानी** (स्त्री०)]

ठाम*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थान] ठौर, स्थान । चलने का ढंग । ठवनि । मुद्रा ।

ठार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तब्ध] अधिक जाड़ा या सर्दी, हिम, पाला ।

ठाला—(वि०, दे०) [हि० निठल्ला] उद्यमहीन, बेकार । [**बैठा-ठाला** (यौ०)] (संज्ञा, पु०) आमदनी का अभाव ।

ठाली—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० निठल्ला] बेकार, बेरोजगार, खाली ।

ठावना*—(क्रि० स०) [सं० अनुष्ठान] पक्का या ठीक करना, निश्चित करना ।

ठाहर, ठाहरु†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थान] ठौर, ठाम, स्थान, डेरा । "तन नाही सब ठाहर डोला"—जायसी० । "गिरैं तौ ठाहरु नाहिं"—कबीर ।

ठिंगना, ठिंगिना, ठिंगुना—(वि०, दे०) [हेठ+अंग] नाटा पुरुष, वामन, छोटे डील का । [**ठिंगनी, ठिंगिनी, ठिंगुनी** (स्त्री०)]

ठिक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्थान, अवसर-विशेष । [थिगरी (दे०)] टीप, चकती । [**ठीक** (क्रि० वि०)]

ठिकठैन*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० ठीक+ठयना] ठीक-ठाक, व्यवस्था, प्रबन्ध, आयोजन । "ठये नये ठिकठैन"—बिहारी ।

ठिकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ठहरना] ठहरना, टिकना, रुकना । ठीक होना ।

ठिकरा, ठिकड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० टुकड़ा] मिट्टी के घड़े आदि का खंड, पुराना टूटा-फूटा बर्तन, भिक्षा का बरतन । (वि०) तुच्छ । [**ठिकरी, ठीकरी** (स्त्री०, दे०)]

ठिकान, ठिकाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थान] ठौर, स्थान, रहने की जगह, घर । (क्रि० स०, दे०) ठीक होना । "कहीं भी अब नहीं मेरा ठिकाना"—हरि० । **मुहा०—(ने) आना**-रास्ते पर आना, ठीक-ठीक जगह पर आना, किसी बात का मतलब बड़े सोच-विचार के पीछे समझ में आना, शुद्ध या ठीक होना, यथोचित रूप में होना ।

—(ने) **की बात**–ठीक या प्रामाणिक बात, समझ या अक्ल की बात। **कौन (क्या)—**, क्या निश्चय या विश्वास (पता)।—**(ने) पहुँचाना या लगाना**–ठीक स्थान पर पहुँचाना। मार डालना, हटा देना। **कुछ—है**–कोई निश्चय या सीमा है। दृढ़ स्थिति, ठहराव, बन्दोबस्त। सीमा।

ठिकानी—(वि०, दे०) [हि० ठिकाना] ठीक ठिकाने वाला, जिसका ठिकाना लग गया हो, जो अपने ठिकाने पर हो।

ठिठक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अटकाव, ठहरावा। आश्चर्य या भय-जात संकोच। सिकुड़ना।—**जाना,—रहना**–भय या अचम्भे में सुधि-बुधि भूल जाना।

ठिठकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्थित+कारण] सहसा रुक जाना, ठहर जाना, दबकना, सिकुड़ना, शंक-चित्त होना।

ठिठरना, ठिठुरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्थित] जाड़े से सिकुड़ना या ऐंठ जाना।

ठिठोली—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए 'ठठोली'।

ठिनकना—(क्रि० अ०, अनु०) लड़कों का रुक-रुक कर रोना, मचलना।

ठिर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थिर] कड़ा जाड़ा या सर्दी।

ठिरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ठिर] जाड़े से ठिठुरना। (क्रि० अ०) बहुत सर्दी पड़ना।

ठिलना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ठेलना] ठेला या ढकेला जाना। घुसना, धँसना।

ठिलाठिल†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० ठिलना] एक-एक पर गिरना। धक्कम-धक्का करना। [ठेलम-ठेला (दे०)]

ठिलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थाली] गगरी, छोटा घड़ा।

ठिलुआ, ठिलुवा—(वि०, दे०) [हि० निठल्ला] बेकाम, निठल्ला, निकम्मा।

ठिल्ला†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ठिलिया] छोटा घड़ा।

ठिहारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठहरना] निश्चय। समझौता। ठहराव।

ठीक—(वि०, दे०) [हि० ठिकाना] यथार्थ, सत्य, उचित, सही, शुद्ध, अच्छा। जिसमें कुछ अन्तर न पड़े, निश्चित। (क्रि० वि०, दे०) जैसा चाहिए वैसा। †(संज्ञा, पु०) पक्की बात, निश्चय। **मुहा०—देना**–मन में पक्का करना। जोड़, मीजान।

—**ठाक**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० ठीक] यथार्थ प्रबंध, पक्की व्यवस्था, निश्चय। (वि०, दे०) सुनिश्चित, पक्का।

ठीकरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० टुकड़ा] मिट्टी के घड़े आदि का टुकड़ा, पुराने और टूटे-फूटे बरतन, भिक्षा का पात्र।

ठीकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठीकरा] मिट्टी के घड़े आदि का खंड। तुच्छ वस्तु।

ठीका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ठीक] निश्चित धन लेकर काम करने का वादा, प्रण, जिम्मा, इजारा, पट्टा। [कंट्रैक्ट]

ठीकुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) परदा, पत्थर। "निज आँखिन पै धरे ठीकुरी कितनी और रहोगे"—सत्य०।

ठीकेदार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ठीका+दार फ़ा०] ठीका लेने वाला व्यक्ति। [कंट्रैक्टर]

ठीलना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टलना] किसी को धक्का दे आगे बढ़ाना, ढकेलना, रेल-पेल करना। [ठेलना (दे०)]

ठीवन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ष्ठीवन] थूक, खखार।

ठीह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) घोड़े का हिन-हिनाना।

ठीहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थान] कारीगर के काम करने का पृथ्वी में गड़ा लकड़ी का टुकड़ा। ऊँचा बैठका, अड्डा, गद्दी। सीमा, स्थान।

ठुँट, ठूँठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थाणु] सूखा पेड़। हाथ कटा व्यक्ति।

ठुकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) मार खाना, पिटना, ठोका जाना। हानि या कैद होना, पैर में बेड़ी पहनना। [ठोकाना (दे०)]

ठुकराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ठोकर] ठोकर लगाना, लात मारना, तुच्छ जान कर हटाना।

ठुकवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ठोकना का प्रेरणा० रूप] पिटवाना, लातों से मरवाना।

ठुड्डी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुड] ठोढ़ी, चिबुक। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठुड्डी] ढुर्रीं, टोरीं।

ठुनक, ठुनुक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठुनकना] सिसकना, रुक-रुक कर लड़के का रोना।

ठुनकना, ठुनुकना—(क्रि० अ०, दे०) सिसकना, रुक-रुक कर लड़के का रोना।

ठुनठुन—(संज्ञा, पु०) बच्चों के रोने की आवाज । बरतनों की आवाज ।

ठुमुक, ठुमुकि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ठुमकना] मंद गमन, रुक-रुक कर धीमी चाल । " ठुमुकि चलै रामचन्द्र बाजति पैजनियाँ " ।

ठुमकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) मंद गमन, रुक-रुक या पाँव पटक-पटक कर चलना या नाचना, जिसमे पैजनियाँ शब्द करें । "ठुमकि ठुमकि प्रभु चलहिं पराई"—[रामा०] ।

ठुमका†—(वि०, दे०, अनु०) वामन, नाटा, ठिगिना, ठिगना (ग्रा०) ।

ठुमकारना—(क्रि० स०, दे०) पतंग की डोरी का ठुमकी देना ।

ठुमकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) रुकावट, ठिठकना, खूब पकी छोटी पूरी । (वि०, स्त्री०, दे०) नाटी, छोटे डील वाली ।

ठुमरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक गीत ।

ठुर्री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ठड़ा=खड़ा] भूनने पर लावा न होने वाला दाना, ठुर्री ।

ठुर्स—(संज्ञा, पु०, दे०) हँसी ।

ठुसना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० ठूँसना] बरतन मे दाब-दाब कर कुछ भरना, ठूँसना ।

ठुसवाना—(क्रि० स०, दे०) कम या सकरी जगह में किसी चीज का ठूँसना ।

ठुसाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० ठूसना] दाब-दाब कर भरना, पेट भर कर खिलाना ।

ठुस्सी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक गहना ।

ठूँग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुंड] चोंच । चोंच से मारने का काम ।

ठूँठ, ठूँठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थाणु] पेड़ी मात्र या सूखा पेड़ । कटा हाथ ।

ठूँठा—(वि०, दे०) लूला, लुंज मनुष्य ।

ठूँठिया—(वि०, दे०) [हिं० ठूँठा] पेड़ी मात्र, खड़ा सूखा पेड़ ।

ठूँठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ठूँठा] खूँटा । अनाज की छोटी ठाँठ ।

ठूँसना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० ठूँस] खूब दबा-दबा कर किसी बरतन में कुछ भरना । घुसेड़ना । भर पेट खाना ।

ठेंगना—(वि०, दे०) [हिं० हेठ+अंग] छोटे डील का मनुष्य, वामन । [ठिगना (दे०)] [**ठिगनी** (स्त्री०)]

ठेंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० अंगूठा] डंडा, सोंटा । ठिंगस्सा (ग्रा०) । **मुहा०—दिखाना** –इनकार करना ।—(गे) **से**–बला से ।

ठेंठ—(वि०, दे०) शुद्ध, प्राकृतिक, स्वभाव-सिद्ध । कान का मैल । [ठेठ (दे०)] ठेठ हिन्दी भाषा ।

ठेंठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कान का मैल । कान के छेद मे लगी हुई डाट । ठेठी (ग्रा०) ।

ठेंपी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ठेंठी, कान का मैल, ठेपी (ग्रा०) । किसी चीज के छेद को बंद करने वाली वस्तु ।

ठेक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० टिकना] सहारा, टेक, पच्चड़ । पेंदा । घोड़े की चाल ।

ठेकना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० टिकना, टेक] टेकना, आश्रय लेना, टिकना, ठहरना ।

ठेका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टिकना] आसरे की चीज, ठेक, अड्डा । तबले या ढोलक में केवल ताल देना, बाँयाँ तबला । ठोकर । (संज्ञा, पु०, दे०) ठीका । [**ठेकेदार, ठेकेदारी** (संज्ञा, स्त्री०)]

ठेकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कपड़े में हाशिया की छपाई ।

ठेकी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० टेक] टेक, सहारा । अनाज की बखारी ।

ठेगना*—(क्रि० स०) [हिं० टेकना] टेकना । रोकना । मना करना ।

ठेघना—(क्रि० स०) ठहराना, रोकना । (क्रि० अ०) ठहरना, रुकना ।

ठेघा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टेक] टेक ।

ठेठ—(वि०, दे०) बिलकुल, सबका सब, सारा, निपट । निछला (ग्रा०), शुद्ध । मौलिक । (संज्ञा, स्त्री०) सीधी-सादी या ग्राम्य भाषा ।

ठेपी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पीतल, बर्तन आदि का बद करन वाला काग या ढक्कन ।

ठेलना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० टलना] ढकेलना, धक्का देना । [**ठेलाना, ठेलवाना** (प्रेरणा० रूप)]

ठेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ठेलना] धक्का, टक्कर । भीड़-भाड़, धक्कमधक्का । ठेल कर चलाने की गाड़ी ।

ठेलाठेल—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० ठेलना] धक्के-बाजी । रेलापेल (ग्रा०) ।

ठेवका—(संज्ञा, पु०, दे०) वह स्थान जहाँ खेतो की सिंचाई के लिए पानी गिरे ।

ठेस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठस] चोट ।

ठेसरा—(संज्ञा, पु०, दे०) घमंडी, नकचढ़ा ।

ठेहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) द्वार के पल्लों के नीचे किवाड़ों की चूल घूमने की लकड़ी ।

ठेही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मारी हुई ईख ।

ठेहुना—(संज्ञा, पु०, दे०) घुटना ।

ठैन*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थान] ठौर, स्थान ।

ठैयाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थान] ठाम, स्थान । "कहा कहीं तू न गई वहि ठैयाँ"—रस० ।

ठैरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ठहरना] ठहरना, टिकना ।

ठैल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दबाव । चोट ।

ठोंक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठोंकना] मार, प्रहार, आघात । [**ठोंक-पीट** (यौ०)]

ठोंकना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० ठकठक] चोट मारना, पीटना, आघात या प्रहार करना, मारना-पीटना । किसी कील पर चोट मार कर उसे गाड़ना या धँसाना । दायर करना, प्रस्तुत करना (नालिश, आवेदन पत्र आदि) । कैद करना, हथकड़ी-बेड़ी पहनाना, हथेली से थपथपाना । **मुहा०—बजाना**—परखना, जाँचना । हाथ से मार कर बजाना ।

ठोंग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुंड] चोंच या अँगुली की मार या ठोकर ।

ठोंगना—(क्रि० स०, दे०) [हि० चोंचियाना] (ग्रा०) चोंच से बिखेरना । चोंच मारना । उँगली से चोट पहुँचाना या ठोकर मारना । चिल्होरना (प्रान्ती०) ।

ठोंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) कागज का झोला या पैकेट जिसमें विक्रेता वस्तुएँ रखकर ग्राहक को देता है ।

ठोंठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चोंच । ठोर । ओंठ ।

ठोंठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चने के दाने का कोश या खोल । पोस्ता की ढोंढ़ी या बोंडी ।

ठो†—(अव्य०, दे०) [हि० ठौर] संख्यावाची, पीछे लगाया जाता है, जैसे—छ ठो, चार ठो ।

ठोकर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठोकना] चलते समय पैर में किसी चीज की चोट, ठेस, धक्का । आघात, टक्कर । पहिने हुए जूते के अग्र भाग की चोट । कड़ा धक्का । **मुहा०—खाना**—किसी भूल के कारण दुख सहना । धोखा खाना, चूक जाना । दुर्गति सहना ।—**लेना**—ठोकर खाना, सामना या मुठभेड़ करना, लड़ना ।—(**रों**) **पर पड़ा रहना**—अपमानित होकर भी पड़े रहना ।

ठोकरा—(वि०, दे०) [हि० ठोकर] कड़ा, कठोर । कठिन ।

ठोकराना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ठोकर] आप ही आप या घोड़ा आदि का ठोकर खाना । [**ठुकराना**]

ठोकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ठेकर] कई महीने की ब्यायी गाय ।

ठोकवा—(संज्ञा, पु०) मोटी पूरी ।

ठोठ—(वि०, दे०) जड़, मूर्ख, गावदी (ग्रा०) ।

ठोठरा†—(वि०, दे०) [हि० ठूँठ] दन्त-विहीन । [पोपला (दे०)]

ठोड़ी, ठोढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुंड] ठुड्डी, दाढ़ी, चिबुक ।

ठोप—(संज्ञा, पु०, दे०) बूँद, बिन्दु ।

ठोर—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पकवान । [सं० तुंड] पक्षियों की चोंच ।

ठोल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ठोर । चीनी में पगी छोटी मोटी पूरी ।

ठोला—(संज्ञा, पु०, दे०) पालतू पक्षियों के भोजन और जल का पात्र, कुल्हिया । अँगुलियों की गाँठ ।

ठोली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ठठोली, दिल्लगी ।

ठोस—(वि०, दे०) [हि० ठस] दृढ़, मजबूत, पोला-रहित । (संज्ञा, पु०, दे०) डाह, कुढ़न, जलन ।

ठोसना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ठूँसना] किसी पात्र में कुछ दबा-दबा कर भरना, ठूँसना ।

ठोसा—(संज्ञा, पु०, दे०) अँगूठा, ठेंगा ।—**दिखाना**—स्पष्ट रूप से अस्वीकार करना ।

ठोहना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० ढूँढ़ना] खोजना, ढूँढ़ना, जाँचना ।

ठोहर—(संज्ञा, पु०, दे०) अकाल । महँगी ।

ठौका—(संज्ञा, पु०) सिंचाई के लिए एक छोटा गड्ढा जिसमें दौरी में पानी गिराया जाता है ।

ठौनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थापन] ठवनि (ब०), खड़े होने का ढंग ।

ठौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ठाँव] स्थान, जगह । अवसर । "ठौर देखि कै हूजिए"—वृं० ।—**कुठौर**—बुरा स्थान । उचित-अनुचित जगह ठाँव-कुठाँव (ग्रा०) । **मुहा०—न आना**—पास

न आना ।—देखना-मौका या स्थान देखना । —रखना-मार डालना ।—रहना-जहाँ का तहाँ पड़ा रहना, मर जाना ।

ड

ड—हिन्दी और संस्कृत की वर्णमाला के टवर्ग का तीसरा वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है ।

डंक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंश] बिच्छू, मधु-मक्खी, भिड़ (बर्रें) आदि की पूँछ का विषधर काँटा, डंकमारी जगह । होलडर की जीभी, निब, लेखनी की नोक । "सुखि जाति स्याही लेखनी की नैकु डंक लागे"—[ऊ० श०] ।

डंकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गर्जना या डरवाना । शब्द करना ।

डंका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ढक्का] छोटा नगाड़ा । "डंका दै बिजै को कपि कूदि गयो लंका तै ।"—**निशान**-(संज्ञा, पु०) बजने वाला डंका जो राजकीय सवारी के अवसर पर आगे बजता है । **मुहा०—(के) की चोट पर कहना**-सबको सुना या पुकार या सचेत कर कहना, खुले मैदान या खुल्लमखुल्ला कहना ।

डकिनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० डंका] चुड़ैल, भूतिनी, पिशाची, राक्षसी । [**डाँकिनी**]

डंकी—(संज्ञा, स्त्री०) एक व्यायाम । (वि०) डंक मारने वाला ।

डंकीला—(वि०) डंकवाला, डंक मारने वाला ।

डंकुर—(संज्ञा, पु०) एक प्राचीन बाजा ।

डंगर—(संज्ञा, पु०, दे०) पशु, चौपाया, डाँगर (ग्रा०) । भैंसा ।

डंगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) खरबूजा ।

डंगरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डंगरा] लंबी लकड़ी । [हि० डँगर] डाइन, चुड़ैल, डाकिनि ।

डँगवारा—(संज्ञा, पु०) बैलों के सम्बन्ध में किसानों का पारस्परिक सहयोग ।

डंगू ज्वर—(संज्ञा, पु०, दे०) [डेंगूड] चकते पड़ने वाला ज्वर ।

डटैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डाँटना] डाँटने वाला, घुड़की, धमकी दिखाने वाला । "कौन सुने बहु बार डटैया"—तुल० ।

डँठल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंड] छोटे-छोटे पौधों की पेंड़ी, मोटी डालियाँ ।

डंठी†—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० दंड] डंठल ।

डंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंड] डंडा, सोंटा । बाँह । एक कसरत । सजा, जुर्माना । [डाँड़ (दे०)]—**पेल**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० डंड+पेलना] पहलवान, कसरती, डंडबाज । —**बैठक**-(संज्ञा, स्त्री०) डंड और उठने-बैठने का व्यायाम । **मुहा०—पेलना**-खूब डंड करना ।

डंडवत—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० दंडवत] प्रणाम । [**दंडवत**]

डँडवारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डाँड+वार] सीमा बनाने वाली कम ऊँची दीवार । [**डँडवारी** (स्त्री०, अल्पा०)] [**डँडुवार** (ग्रा०, प्रान्ती०)]

डंडवी†*—(वि०, हि०) दंड अथवा डंडा देने वाला । मालगुजारी या कर देने वाला, करदी, करद । (संज्ञा, पु०) करद व्यक्ति ।

डंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दंड] मोटी छड़ी, सोंटा, डँडवारा ।—**डोली**-(संज्ञा, स्त्री०) बालकों का एक खेल ।—**बजाते फिरना**-मारा-मारा फिरना ।

डंडाकरन, डंडकारन*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० दंडकारण्य] दंडक वन, विन्ध्याचल से गोदावरी नदी तक का देश जो पहले उजाड़ जंगल था ।

डँड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डाँड़ी—रेखा] धारियों के रूप में टँके गोटों वाली एक साड़ी । गेहूँ के बालों की सींक । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डाँड़] कर वसूल करने वाला । डाँडिया (ग्रा०) ।

डंडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, हि०) डंडा । पतली छड़ी । बेंट, दस्ता, मुठिया । तराजू के पल्ले बाँधने की लकड़ी, डाँड़ी । पौधे की पेंड़ी । आरसी का छल्ला । झप्पान सवारी (पहाड़ों पर) । दंड-धारी संन्यासी । (दे०, वि०) [सं० द्वंद्व] चुगुलखोर ।

डँडोरना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) खोजना, ढूँढ़ना, तलाश करना ।

डंबर—(संज्ञा, पु०, सं०) दिखावा, पाखंड, आडम्बर । विस्तार । शामियाना, चँदोवा । "अम्बर-डंबर साँझ के ज्यों बारू की भीत"—वृं० । **मेघ—**,(यौ०) दलबादल । शामियाना । **अम्बर**—, शाम के आकाश की लाली ।

डंबेर—(संज्ञा, पु०, अं०) व्यायाम करने के लिए लकड़ी का एक उपकरण ।

डँवरुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डमरू] गठिया, बात ।

डँवाँडोल—(वि०, दे०) [हि० डोलना] चंचल, अस्थिर ।

डंस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंश] डाँस, वन-मच्छड़, बिच्छू आदि के डंक चुभाने का स्थान । " मसक डंस बीते हिम त्रासा "—[रामा०] ।

डँसना, डसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दंशन] साँप आदि विषैले जंतुओं का काटना । बिच्छू आदि का डंक मारना । "काल, भुजंग, डँसत जब जाही "—[रामा०] ।

डक—(संज्ञा, पु०) जहाजों के पाल का वस्त्र, मोटा कपड़ा । " डक कुडगति सी छ्वै चली " —बिहारी । [डाक]

डकरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० उद्गार] डकार लेना, खाकर तृप्त होना । " डकरी चमुंडा गोल-कुंडा की लड़ाई में "—कालि० ।

डकराना—(क्रि० अ०, अनु०) भैंसे या बैल का बड़े जोर से बोलना, डकराना, डकारना ।

डकनाहा—(संज्ञा, पु०) डाकिया, चिट्ठीरसा, डाक ढोने वाला ।

डकार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्गार] मनुष्य के भोजन से तृप्त होने पर मुँह से वायु का शब्द । " शत्रुन सँघार लई चंडिका डकार है " । सिंह की गरज, दहाड़ । **मुहा०—न लेना**-किसी का रुपया मार बैठना ।**—जाना**-किसी के धनादि का अपहरण करना, हजम करना ।

डकारना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० डकार] पेट भर भोजन के पीछे मुख से वायु का शब्द निकालना, डकार लेना । किसी का धन मार बैठना, पचा डालना । सिंह का दहाड़ना ।

डकैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डाका+ऐत प्रत्य०] डाका डालने वाला, लुटेरा, डाकू । " मन बनजारा लादि चला धन काल डकैता घेरी " —[स्फु०] ।

डकैती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डकैत] लूट या डाका मारने का काम, छापा ।

डकौतिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डाका+औतिया] भड्डरी, ज्योतिषी के वंशज जो दान लेते हैं । डाकू ।

डग—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डाँकना] पग, फाल, कदम । " डग भई बावन की सावन की रतियाँ । " **मुहा०—देना**-आगे को पैर रखकर चलना ।**—भरना या मारना**-तेजी से चलना, लम्बे पैर या कदम बढ़ाना ।

डगडगाना—(क्रि० अ०, अनु०) काँपना, इधर-उधर, आगे-पीछे या दाँयें-बाँयें हिलना । [**डगमगाना**]

डगडोलना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) डगमगाना, हिलना ।

डगडोर—(वि०, दे०) [हि० डोलना] चंचल, चपल, अस्थिर ।

डगण—(संज्ञा, पु०, सं०) चार मात्राओं का गण (पि०) ।

डगना, डिगना†*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० डग] हिलना, चलना, डोलना, स्थान छोड़ना । "डिगै न संभु सरासन कैसे "—[रामा०] ।

डगमग—(वि०, यौ०, दे०) [हि० डग+मग =राह] चंचल, अस्थिर, हिलने या काँपने वाला, डाँवाँडोल, डगामगी [**डगामगी** (संज्ञा, स्त्री०)]

डगमगाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) इधर-उधर डोलना, हिलना । " डगमगानि महि दिग्गज डोले "—[रामा०] । (संज्ञा, पु०) डगमग, कंपन ।

डगर, डगरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डगर] राह, रास्ता, मार्ग, पंथ ।

डगरना†*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० डगर] चलना, राह पकड़ना, रास्ता लेना । [**डगराना, डगरवाना** (प्रेरणा० रूप)]

डगरा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डगर] राह, मार्ग । डहर (ग्रा०) । छाबा, छबरा, डलरा, मार्ग, गली, पंथ । " कहाँ गयो मनमोहन स्याम डगरिया सूझि न परी "—सूर० ।

डगा†—(संज्ञा, पु०) [हि० डागा] नगाड़े बजाने की चोब या डंडा, डागा । " कछु कहि चला तबल देइ डगा "—[पद्मा०] ।

डगाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० डिगना] चंचल होना । टलना, हटना, खिसकना, स्थान त्यागना ।

डगामग—(वि०, दे०) विचलित, कम्पित ।

डग्गर—(संज्ञा, पु०) भेड़िये की तरह का, रात्रि में शिकार करनेवाला एक हिंसक पशु ।

डच—(संज्ञा, पु०) हालैंड-निवासी । (वि०) हालैंड देश का ।

डट—(संज्ञा, पु०, दे०) निशाना । **मुहा०—जाना** –जम कर बैठना, तैयार होना, लग जाना ।

डटना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० ठाढ़] भली-भाँति स्थिर या तैयार होना, अड़ जाना, ठहरा रहना। जम या लग जाना। सजना, पहिनना। "रसिया की डीठि डटि जात"—रत्ना०। *† (क्रि० स०, दे०) [सं० दृष्टि] देखना, ताकना। खूब खाना।

डटाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डटना] डटाने का काम या मजदूरी।

डटाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० डटना] किसी पदार्थ को दूसरे से भिड़ाना, सटाना या मिलाना। जमाना, खड़ा करना। सजाना, पहनाना। [**डट-वाना, डटाना** (प्रेरणा० रूप)]

डटैया—(वि०, दे०) [हिं० डटाना] डाटने या डटाने वाला। उद्यत, प्रस्तुत, तैयार।

डट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डटना] डाट। काग। बड़ी मेख। हुक्के का नैचा। साँचा।

डड़ढ़ार*†—(वि०, दे०) [हिं० डाढ़ी] बड़ी डाढ़ी वाला, शूरवीर, साहसी।

डढ़ना, डढ़नि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दग्ध] जलन, डाह।

डढ़ना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दग्ध] जल जाना। जलना, कुढ़ना।

डढ़मुंडा—(वि०, दे०, यौ०) जिसकी डाढ़ी मूँड़ दी गयी हो।

डढ़ार, डढ़ारा—(वि०, दे०) [हिं० डढ़] डाढ़ों या डाढ़ी वाला।

डढ़ियल—(वि०, दे०) [हिं० डाढ़ी] बड़ी डाढ़ी से युक्त, डाढ़ी वाला।

डढ़ीई, डढ़ुआ, डढ़ुवा—(वि०, दे०) [सं० दग्ध] जला हुआ, दग्ध। (संज्ञा, पु०, दे०) पाताल यन्त्र से निकाला गया तेल।

डढ़ूढ़ना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० दग्ध] जलाना।

डढ़योर, डढ़योरा—(वि०, दे०) [हिं० डाढ़ी] डाढ़ी वाला।

डपट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दर्प] फटकार, घुड़की, झिड़की, डाँट। [**डाँटडपट** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)] [हिं० रपट] घोड़े की वेगवान गति।

डपटना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० डपट] क्रोध में बड़े जोर से बोलना, डाँटना, झिड़कना। वेग से जाना।

डपोरशंख, डफोलशंख, ढपोरशंख—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० डपोर=बड़ा+शंख] जो कहे बहुत किन्तु कर कुछ भी न सके। झूठी डींग मारने वाला। जो डील में तो बड़ा, परन्तु बुद्धि में छोटा हो, मूर्ख।

डप्पू—(वि०, दे०) बड़ा और मोटा मनुष्य।

डफ—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० दफ] छोटा डफला। चंग। "धुनि डफ तालनि की आनि बसी काननि में"—रत्ना०।

डफलना—(क्रि० स०, दे०) व्यर्थ डींग मारना, गप्प उड़ाना, बकवाद करना।

डफला, डफुला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डफ] बड़ा डफ।

डफली, डफुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डफ] छोटा डफ, खँजरी। **मुहा० अपनी अपनी—अपना अपना राग**—जितने पुरुष उतनी ही सम्मतियाँ या रायें।—**बजी राग पहचाना**—सूक्ष्म कारण से स्थूल कार्य का ज्ञान होना।

डफार†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) जोर से रोने-चिल्लाने का शब्द, चिग्घाड़।

डफारना†—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) जोर से रोना या चिल्लाना, चिग्घाड़ना।

डफाली—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डफ] डफ बजाने वाला व्यक्ति। मुसलमान फकीरों की एक जाति। **मुहा०—का राग**—वह बात जिसका ओर-छोर या आदि-अन्त न हो।

डफोरना†—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) हाँक देना, ललकारना।

डब—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डब्बा] थैला, थैली, जेब।

डबकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) दर्द या पीड़ा करना, टीस मारना।

डबका—(संज्ञा, पु०, दे०) कुएँ का ताजा या हाल का पानी। डाभक (ग्रा०)।

डबकौहाँ—(वि०, दे०, अनु०) आँसू भरा या डबडबाया हुआ नेत्र। [**डबकौंही** (स्त्री०)]

डबगर—(संज्ञा, पु०, दे०) चमार, मोची, चमड़े को साफ करने या कमाने वाला व्यक्ति।

डबडबाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) आँखों में आँसू भर आना।

डबरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दभ्र] पानी भरा छोटा गड्ढा, कुण्ड, हौज आदि। डाबर (ग्रा०)। [**डबरी** (स्त्री०)]।

डबरिया—(वि०, दे०) बाँयें हाथ से काम करने वाला, डबरा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा डबरा। [**डबरी** (स्त्री०)]

डबल—(वि०, दे०) दोहरा, दो गुना। (संज्ञा, पु०, दे०) अँगरेजी राज्य का पैसा, डब्बल (ग्रा०)। [डबुल]

डबलरोटी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०)[हि० डबल+रोटी] पावरोटी।

डबस—(संज्ञा, पु०, दे०) चिन्ता। व्यवस्था, तैयारी। रक्षण। समुद्र-यात्रा की उपयोगी वस्तुएं।

डबा—(संज्ञा, पु०, दे०) डब्बा, डबरा, पानी का गढ़ा।

डबिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डिबिया] छोटा डब्बा, डिबिया, डेबिया।

डबी†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) डब्बी, छोटा डब्बा, डिबिया।

डबुलिय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा डबला, कुल्हिया।

डबोना—(क्रि० स०) [हि० डूबना] पानी आदि में बोरना, डुबोना। गोता देना। चौपट या नष्ट करना। **मुहा० नाम—**, अयश करना, कीर्ति को क्षति पहुंचाना।

डब्बा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डिंब] कटोरदान। संपुट। रेलगाड़ी का एक कक्ष।

डब्बी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० डब्बा] छोटा डब्बा।

डब्बू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डब्बा] बड़ा करछा।

डभकना†—(क्रि० अ०) पानी आदि में तैरना, डूबना, उतराना। चुटकी लेना। आँखों में पानी भर आना, आँख डबडबाना। [डभडभ (दे०)]

डभका—(संज्ञा, पु०) अधपका या अधभूना चना या मटर।

डभकौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डभकना] उरद की बरी। [डुभकी (दे०)]

डभाका—(संज्ञा, पु०, दे०) कुएँ का ताजा पानी। डाभक (ग्रा०)। भुना हुआ मटर।

डम—(संज्ञा, पु०, सं०) डोम, एक दोगली जाति।

डमर—(संज्ञा, पु०, दे०) डर या भय से पलायन। एक राजा को दूसरे का भय। लड़ाई, युद्ध।

डमरुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) गठिया, बात व्याधि।

डमरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डमरू] डमरू बाजा। डुड़क। चमत्कार, आश्चर्य्य।—**मध्य**—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० डमरू+मध्य] पृथ्वी के दो बड़े विभागों को मिलाने वाला पतला भू-भाग, स्थल डमरूमध्य। [**जल डमरूमध्य** (विलो०)]—**यंत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० डमरू+यंत्र] पारा आदि के शोधनार्थ एक हाँडी में पारा रख कर उसके ऊपर दूसरी हाँडी का मुँह से मुँह मिलाना और कपड़-मिट्टी करना (वैद्य०)।

डयन—(संज्ञा, पु०, सं०) उड़ना, आकाश-मार्ग में चलना।

डर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दर] भय, त्रास, भीति। आशंका। "जाके उर डर कहँ डर होई" —[रामा०]।

डरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० डर+ना प्रत्य०] आशंका करना। भयभीत होना।

डरपना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० डरना] डरना, भय-भीत होना। "प्रिया हीन डरपत मन मोरा"—[रामा०]। "डरपति फूल गुलाब के"—बिहारी।

डरपाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० डराना] डर, भय या शङ्का दिलाना, डराना, डरवाना।

डरपोक—(वि०, दे०) [हि० डरना+पोंकना] कादर, कायर, भीरु, डरने वाला।

डरवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० डरना का प्रेरणा० रूप] भय या डर दिखाना, डराना।

डरवैया—(वि०, दे०) [हि० डर+वैया प्रत्य०] डरने या डराने वाला।

डराऊ—(वि०, दे०) [हि० डरा+ऊ प्रत्य०] डराने वाला, भयङ्कर, भयानक, भयावना।

डराकू—(वि०) डरपोक।

डराडरी†—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० डर] भय, डर।

डराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० डरना] भय दिखाना, भयभीत करना।

डरालू—(वि०, दे०) [हि० डर+आलू प्रत्य०] डरपोक, भीरु।

डरावना—(क्रि० स०, दे०) [हि० डराना] भयभीत करना, डर दिखाना। (वि०) भयानक।

डरावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डराना] डराने वाली बात, खटका, धड़का। पक्षी आदि के डराने को पेड़ की डाली में बँधा एक मोटा छोटा बाँस या कनस्टर आदि।

डराहुक—(वि०) डरपोक।

डरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) डाल, पेड़ों से निकली छोटी-मोटी शाखा।

डरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) डली, सुपारी। छोटे टुकड़े। (क्रि० अ०, स्त्री०) डर गयी।

डरीला†—(वि०, दे०) [हिं० डाल] डली वाला। [सं० दर] डरावना, भयंकर।

डरौना—(वि०, दे०) [हिं० डरना] भयंकर, भयानक।

डल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डला] खंड, भाग, टुकड़ा। (संज्ञा, स्त्री०) काश्मीर की झील-विशेष।

डलना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० डालना] पड़ना। डाला जाना।

डलवा—(संज्ञा, पु०, दे०) टोकरा, झौवा।

डलवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० डालना का प्रेरणा० रूप] दूसरे से डालने का काम लेना।

डला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दल] किसी वस्तु का टुकड़ा, खंड। [**डली** (स्त्री०)]

डलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डला] छोटा डला, टोकरी, दौरी। बेसेलियाँ (ग्रा०)।

डली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डला] किसी वस्तु का छोटा सा टुकड़ा, भाग। सुपारी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) डलिया।

डवरा—(संज्ञा, पु०) बड़ा कटोरा।

डसन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दंशन] काटने की क्रिया, भाव या ढङ्ग।

डसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दंशन] साँप आदि विषधर कीड़े का काटना या बिच्छू आदि का डंक मारना। "साँप हम कौ डसि लीन्ह्यौ"—रत्ना०।

डसवाना—(क्रि० स०, दे०) डसाना। [हिं० डसना] का प्रेरक शब्द।

डसाना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० डसना का प्रेरणा० रूप] किसी विषैले जन्तु के द्वारा किसी को कटवाना। डसवाना, दसाना (ग्रा०)। (क्रि० अ०, दे०) दसाना, बिछाना।

डसौना—(संज्ञा, पु०, दे०) बिस्तर, बिछौना। [दसना, दसौना (दे०)]

डहक—(संज्ञा, पु०, दे०) कंदरा, गुफा, खोह, छिपने की जगह।

डहकना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० डाकान्त] धोखा देना, छल करना, जट लेना, ठगना। भरोसा या लालच देकर फिर न देना। [**डहकाना** (प्रेरणा० रूप)] (क्रि० अ०, दे०) [हिं० दहाड़, धाड़] विलाप करना, बिलखना। दहाड़ मारना। (क्रि० अ०, दे०) फैलाना, छितराना।

डहकाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० डाका] खोना, गँवाना, नष्ट करना। (क्रि० स०, दे०) धोखा देकर किसी की चीज ले लेना, ठग लेना, देने को कह कर न देना। (क्रि० अ०, दे०) धोखे में आकर अपना धन खो देना, ठगा जाना। (पू० का० स्त्री०) डहकि।

डहडहा†—(वि०, दे०, अनु०) हरा-भरा, ताजा, उसी समय का। [**डहडही** (स्त्री०)]

डहडहाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० डहडहा] पेड़ आदि का भली भाँति हरा-भरा होना, प्रसन्न होना, लहलहाना।

डहडहाव†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डहडहा] हरापन, ताजगी, प्रफुल्लता, आनन्द।

डहन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डयन] पक्षियों के पंख, पर। (क्रि० अ०) जलन।

डहना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दहन] जलना, द्वेष करना। बुरा मानना। (क्रि० स०, दे०) भस्म करना। दुख देना।

डहर†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डगर] मार्ग, पंथ, राह, डहरि (ग्रा०)। "रोकत डहरि महरि तेरो सुत ऐसो है अनियारो"—[सू०]।

डहरना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० डहर] चलना, जाना, राह लेना।

डहराना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० डहरना का प्रेरणा० रूप] चलाना, ले जाना।

डहरि, डहरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डगर] मार्ग, पंथ, राह।

डहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डाहना] तंग करने या दुख देने वाला, डाहने वाला।

डहू—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़हर का पेड़ तथा फल या फूल।

डाँक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दमक] ताँबे आदि का बारीक पत्तर जो बहुधा नगीनों के तले रखा जाता है। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डाँकना] वमन,

कै। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डंका] छोटा नगाड़ा। "दान डाँक बाजे दरबारा"—जायसी। बिच्छू आदि का डंक। "है बीछी के डाँक"—बिहारी।

डाँकना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० तक=चलना] लाँघना, फाँदना। वमन या कै करना।

डाँग—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पहाड़ के ऊपर की जमीन। वन। (संज्ञा, पु०) कूद, छलाँग। लट्ठ।

डाँगर—(वि०, दे०) पशु, चौपाये, भैंसा। मूर्ख। (वि०) दुबला-पतला।

डाँट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दांति] घुड़की, डपट, फटकार।—**डपट**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) डराने या धमकाने के लिए घुड़कना, डपटना। तिरस्कार करना।

डाँटना—(क्रि० स०, दे०) [हि० डाँट] घुड़कना, डपटना। डराने को जोर से चिल्लाना।

डाँठ, डाँठल†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंड] पौधे का डंठल।

डाँठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) डंडा। डाली। डाँठ।

डाँड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दण्ड] डंडा, गदका। नाव खेने का बल्ला। सीधी रेखा। ऊँची मेंड़। छोटा भींटा या टीला। सीमा। जुरमाना, हरजाना, [पेनाल्टी]

डाँड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० डाँड़] दंड लेना। जुरमाना करना।

डाँड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डाँड] डंडा, छड़। नाव खेने का डाँड़। सीमा, मेंड़।—**मेंड़ा**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० डाँड़+मेंड़] अति निकटता। झगड़ा।

डाँड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डाँड़] किसी चाकू आदि का बेंट, हत्था, दस्ता। तराजू की लकड़ी। पेड़ की टहनी। हिंडोले की रस्सियाँ। डाँड़ खेने वाला। सीधी रेखा। लीक, मर्य्यादा। पक्षियों के बैठने का अड्डा। झप्पान (प्रान्ती०)।

डाँढ़री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भूनी हुई मटर की फली।

डाँबू—(संज्ञा, पु०, दे०) दलदल में उत्पन्न होने वाला नरकट या नरकुल।

डाँमाडोल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डोलना] अस्थिर, चंचल। [डाँवाँडोल (दे०)]

डाँवरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डिंव] लड़का, पुत्र। [**डाँवरी** (स्त्री०)]

डाँवरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० डिंव] लड़की, बेटी या बिटिया, पुत्री।

डाँवरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डिंव] बाघ का बच्चा।

डाँवाँडोल—(वि०, दे०, यौ०) [हि० डोलना] इधर-उधर फिरना, स्थिर न रहना, चंचल, अस्थिर। "डाँवाँडोल रहै मन निसदिन"।

डाँस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंश] वन-मच्छड़।

डाइन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० डाँकिनी] भूतिनी, चुड़ैल। टोनहाई स्त्री। कुरूपा और डरावनी स्त्री, डाकिनी।

डाक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डाँकना] बराबर दूरी पर सवारी का ऐसा प्रबन्ध कि तत्काल बदली जा सके। चिट्ठियों के आने-जाने का सरकारी प्रबन्ध, जो कागज-पत्र डाक से आवे। —**खाना**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० डाक+खाना फ़ा०] लेटर बक्स मे चिट्ठियाँ छोड़ने, मनी-आर्डर करने और बाहर से आई हुई चिट्ठियाँ लेने का स्थान। [पोस्ट आफिस]—**गाड़ी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हि० डाक+गाड़ी] डाक ले जाने वाली रेलगाड़ी।—**घर**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [वि० डाक+घर] डाकखाना, पत्र-कार्यालय। [पोस्टआफिस] —(**की**) **चौकी**-रास्ते का वह स्थान जहाँ सवारी के घोड़े या हरकारे बदले जावें। (संज्ञा, स्त्री०, अनु०) वमन, कै। (संज्ञा, पु०) [बंग०] नीलाम की बोली। —**बँगला**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० डाक+बंगला] अफसरों या परदेशियों के टिकने का सरकारी घर। **मुहा०—बैठाना या लगाना**-कोई यात्रा जल्दी पूर्ण करनेके लिए ठौर-ठौर सवारी के बदले जाने का ठीक-ठीक प्रबन्ध करना या चौकी नियत करना।

डाकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० डाँक+ना] लाँघना, फाँदना। (क्रि० अ०, दे०) [हि० डाक] वमन, कै करना।

डाका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डाकना, सं० दस्यु] माल लूटने को जन-समूह का धावा, बटमारी (अ०)।—**जनी**-(संज्ञा, स्त्री०) [हि० डाका+जनी फ़ा०] डाका डालने या मारने का कार्य, बटमारी।

डाकिन, डाकिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० डाकिनी] डाइन, भूतिनी, पिशाचिनी । काली जी की दासी ।

डाकिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डाक] डाकू । डाक ले जाने वाला । [पियून, पोस्टमैन]

डाकी—(वि०, दे०) [हिं० डाक] बहुत खाने या काम करने वाला, खाऊ, पेटू । वमन, कै ।

डाकू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डाकना, सं० दस्यु] डाका डालने या लूटने वाला, लुटेरा ।

डाकोर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ठक्कुर] ठाकुर जी, विष्णु जी (गुज०) ।

डाक्टर—(संज्ञा, पु०, अं०) आचार्य, विद्वान । चिकित्सक ।

डाक्टरी—(संज्ञा, स्त्री०) पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र ।

डाख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आषाढक] ढाख या ढाक, पलाश, छिउल (प्रान्ती०) ।

डागा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंडक] नगाड़ा बजाने की चोब या छड़ी ।

डागुर—(संज्ञा, पु०, दे०) जाटों की एक जाति ।

डाट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दान्ति] टेक, चाँड़ । छेद बंद करने की वस्तु, काँच की शीशी या बोतल आदि के मुख को बंद करने वाला काग । गट्टा, ऐंठी । मेहराबदार दरवाजे या छत को रोकने के लिए ईंट आदि की भरती । (संज्ञा, पु०) [सं० दांति] शासन । दबाव । डपट, फटकार, घुड़की ।

डाटना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० डाट] किसी चीज को कस कर दूसरी पर दबाना । दो वस्तुओं को मिला कर ठेलना । टेकना, टेक या चाँड़ लगाना । छेद बंद करना, ठूँस कर भरना । पेट भर कर खाना । गहने और कपड़े आदि भली-भाँति पहनना । मिलाना ।

डाढ़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दंष्ट्रा] चौड़े दाँत । दाढ़ ।

डाढ़ना†*—(क्रि० स०) [सं० दग्ध] जलाना । "जैसे डाढ्यो दूध कौ"—वृं० ।

डाढ़ा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दग्ध] दावानल, आग । दाह, जलन । छौंक । (वि०) जला हुआ । [**डाढ़ी** (स्त्री०)]

डाढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डाढ़] ठोड़ी, ठुड्डी, चिबुक, दाढ़ी ।

डाब—(संज्ञा, पु०, दे०) कच्चा नारियल । तलवार लटकाने का परतला । डाभ, दर्भ, कुश ।

डाबर, डाबरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दभ्र०] गड़हा, पोखरा, पोखरी, गड़हा, तलैया । " डाबर जोग कि हंस कुमारी " । (वि०) मैला । " भूमि परत भा डाबर पानी "—[रामा०] ।

डाबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डिंब] डब्बा, संपुट, रेलगाड़ी का एक कमरा, डिब्बा ।

डाभ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दर्भ] कुश । कच्चा नारियल । आँबिया, बौर ।

डामर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक तंत्र । तारकोल जैसा एक पदार्थ । (वि०) धूम, हलचल । ठाठ बाट, आडम्बर, चमत्कार ।

डामल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० दायमुल हब्स] जन्म कैद । आजीवन देशनिकाला ।

डामाडोल—(वि०, दे०) चञ्चल, अस्थिर ।

डायँडायँ—(क्रि० वि०, अनु०) व्यर्थ मारे-मारे फिरना, व्यर्थ घूमना ।

डायन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० डाकिनी] राक्षसी, पिशाचिनी, चुड़ैल । कुरूपा स्त्री ।

डार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दारु] पेड़ की शाखा, डाली, डाल । तलवार का फल । फानूस के लिए दिवाल में लगी खूँटी । " ठाढ़े हैं नवद्रुम डार गहे"—[कवि०] ।

डारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० तलन] फेंकना, नीचे गिराना, छोड़ना, डालना ।

डारिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डार+इया प्रत्य०] अनार वृक्ष और फल, दाड़िम ।

डाल—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० दारु] वृक्ष की शाखा, डार, डाली । (क्रि० स०) [हिं० डालना] डालो ।

डालना—(क्रि० स०, दे०) [सं० तलन] किसी वस्तु को नीचे गिराना, फेंकना, छोड़ना, उँड़ेलना । **मुहा० डाल रखना**–रख छोड़ना । देर लगाना, रोक रखना । एक पदार्थ को दूसरे पर गिराना, छोड़ना, रखना, मिलाना, घुसेड़ना, प्रवेश करना । पता या खोज-खबर न लेना, भुला देना । चिह्न बनाना । फैला कर रखना । पहनना । किसी के जिम्मे करना या भार देना । गर्भ गिराना ।

उलटी या कै करना। पर-स्त्री को पत्नी बनाना। काम में लाना, लगाना।

डालर—(संज्ञा, पु०) चार रुपये के बराबर का अमेरिकन सिक्का।

डालिय—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डाल+इय प्रत्य०] दाड़िम, अनार।

डाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डाला] टोकरी, डलिया। भेंट करने के फल, फूल, मेवे आदि रखने की डलिया। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० डाल] पेड़ की शाखा। [डारी (दे०)]

डावरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डिंब] लड़का, बच्चा, बालक, बेटा। [**डावरी** (स्त्री०)]

डावरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डावरा] लड़की, कन्या, पुत्री।

डासन†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डाभ+आसन] बिछौना, बिस्तर, कथरी, दसना। साथरी (ग्रा०)।

डासना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० डासन] बिछाना, फैलाना, डालना। [हिं० डसना] डसना, काटना। [**डासि-डाँसी**—(पू० का० क्रि०) बिछाकर] "तिन किसलय कुस सम महि डाँसी"—[रामा०]।

डासनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डासना] पलँग, खटोली, खाट, चारपाई। बिछौना, तोषकादि, साथरी, दसनी (ग्रा०)।

डाह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दाह] जलन, द्वेष, ईर्ष्या। "तिनके तिलक डाह कस तोहीं"—[रामा०]।

डाहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दहन] किसी को जलाना, तंग करना, सताना, चिढ़ाना।

डाही—(वि०, दे०) [हिं० डाह+इन् प्रत्य०] जलने वाला, द्वेषी, द्रोही, ईर्ष्यालु। क्रोधी। मन्दाग्नि रोगी। (क्रि० स०, सा० भू०, स्त्री०) [सं० दहन] जला दी।

डाहुक—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पक्षी।

डिंगर—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थूल या मोटा आदमी। दुष्ट आदमी। दास। (संज्ञा, पु०, दे०) दुष्ट चौपायों के गले में रस्सी से बाँध कर आगे के पैरों के बीच में लटकाने का काठ, जिससे वे भाग न सकें।

डिंगल—(वि०, दे०) [सं० डिंगर] नीच, बुरा, दूषित। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [राजस्थानी] भाटों की काव्य-भाषा।

डिंड़सी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक बेलि, जिसके पत्तों की तरकारी बनायी जाती है।

डिंडिभ—(संज्ञा, पु०) पानी वाला साँप, ड़ेड़हा।

डिंडिम—(संज्ञा, पु०, सं०) डुगडुगी, डुग्गी, एक प्राचीन ढोल।

डिंब—(संज्ञा, पु०, सं०) शोर-गुल। डर की आवाज। झगड़ा, लड़ाई, दंगा, फसाद। अंडा। केकड़ा। सीहा। तापतिल्ली। कीड़े का बच्चा।

डिंबक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राजा जो श्री कृष्ण जी से लड़ा था।

डिंबाहव—(संज्ञा, पु०, सं०) मामूली संघर्ष, झड़प। राजा के अभाव मे भय-ध्वनि वाली लड़ाई।

डिंबिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कामिनी। कामुकी। बुलबुला।

डिंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा बच्चा। मूर्ख। †(संज्ञा, पु०) [सं० दंभ] पाखण्ड, आडम्बर। अहंकार, घमंड। —**चक्र**—(संज्ञा, पु०) शुभ-अशुभ का सूचक, एक प्रकार का तांत्रिक चक्र।

डिंभक—(संज्ञा, पु०, सं०) बालक, लड़का।

डिंभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गदेला (ग्रा०)। शिशु, दुधमुहाँ बच्चा।

डिंभिया—(वि०) दंभी, पाखंडी।

डिक्करी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) युवती।

डिक्टेटर—(संज्ञा, पु०, अं०) निरंकुश शासक, अनियंत्रित शासक। —**शिप**-अधिनायकवाद।

डिगना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० टिक] अपनी जगह से खिसकना या हटना, स्वस्थान छोड़ना। हिलना, चञ्चल होना। "डिगै न संभु सरासन कैसे"—[रामा०]।

डिगलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० डगमगाना] इधर-उधर हिलना, डोलना, खिसकना। काँपना।

डिगाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० डिगना] किसी भारी चीज को हिलाना, खिसकाना, हटाना, चलाना, सरकाना, विचलित करना।

डिग्गी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दीर्घिका] पक्का तालाब। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) साहस, हिम्मत हियाव (ग्रा०)।

डिठार, डिठियार†—(वि०, दे०) [हि० डीठ= निगाह] कुदृष्टी। देखने वाला, जिसे दिखायी दे। टोना मारने वाला।

डिठोहरी—(संज्ञा, स्त्री०) बच्चों को नजर लगने के बचाव के लिए एक फल का बीज।

डिठौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डीठ] लड़कों के माथे में नजर से बचाने को काजल का टीका, डिठौरा (ग्रा०)। " राजत डिठौरा मुख ससि को कलंक है "—कुंजवि०।

डिढ़ाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दृढ़] पक्का या दृढ़ करना। [**डिढ़ाय, डिढ़ाइ** (पू० का०)] " कहेसि डिढ़ाय बात दशकंधर "—[रामा०]।

डिढ़्या†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) इच्छा, कामना, तृष्णा, लालसा, चाह।

डिबिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डिब्बा] डबिया, छोटा डिब्बा।

डिब्बा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डिंब] डब्बा, बड़ी डिबिया। [**डिब्बी** (स्त्री०)]

डिभगना—(क्रि० स०, दे०) मोहित करना। छलना, डहकना।

डिम—(संज्ञा, पु०, सं०) रूपक का एक भेद, इसमें चार अंक होते हैं और रौद्र रस की प्रधानता होती है, इसमें शांत, शृंगार और हास्य रस वर्जित है। (नाट्य०)। संग्राम।

डिमडिमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० डिंडिम] डुग्गी, बाजा। डमरू का शब्द।

डिल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रति चरण में १६ मात्राओं और अंत में एक भगण युक्त छंद, प्रति चरण में २ सगण वाला छंद। बैलों का ठिठौरा (ग्रा०)।

डींग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० डीन] शेखी, शान वाली बात, अपनी बड़ाई, आत्म-प्रशंसा। मुहा०—**हाँकना (मारना)**-शेखी बघारना, बढ़-बढ़ कर शान वाली बात करना। [**डींगना** (क्रि० अ०)]

डीठ, डीठि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दृष्टि] निगाह, दृष्टि, दीठि, देखने की शक्ति। समझ, ज्ञान। (क्रि० स०, दे०) डीठना। " सो खुसरो हम आँखिन डीठा "।—**बंध**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० दृष्टिबंद] नजरबंदी। इन्द्रजाली, जादूगर। इन्द्रजाल। [डिठबंध (दे०)]—**मूठि**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हि० डीठ+मूठ] जादू, टोटका, टोना, नजर।

डीठना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० डीठ] देख पड़ना, दिखायी देना, निगाह में आना। " संतों राह दोऊ हम डीठा "—कबीर०। (क्रि० स०) दिखाना। नजर लगाना।

डीबुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) पैसा।

डीमडाम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० डिंब] टीमटाम, ठाठबाट, ठसक, ऐंठ, ठाठ।

डील—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० टीला] जीवों के शरीर की ऊंचाई, कद, उठान।—**डौल**-(यौ०) शरीर का विस्तार, लंबाई-चौड़ाई-मोटाई। शरीर का ढाँचा, काठी, आकार। देह। प्राणी। मनुष्य।

डीला—(संज्ञा, पु०, दे०) डेला, ढेला, मिट्टी का टुकड़ा। बैलों का ठिठौरा।

डीह—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० देह] गाँव। आबादी, बस्ती, उजड़े गाँव का टीला। ग्रामदेव, ढीह (ग्रा०)।

डीहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डीह] मिट्टी का ऊँचा ढेर, टीला, पहाड़ी।

डुंगा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुंग] किसी वस्तु का ढेर, टीला, भीटा, पहाड़ी।

डुंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंड] ठूँठ।

डुक—(संज्ञा, पु०, दे०) घूँसा, मुक्का की मार।

डुकर, डुकरा—(संज्ञा, पु०, दे०) बूढ़ा, बुड्ढा। पुराना, जीर्ण, ढोकरा (प्रान्ती)।

डुकरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डुकरा] वृद्धा, बुढ़िया, डोकरी।

डुकियाना—(क्रि० स०, दे०) घूँसे जमाना।

डुगडुगाना—(क्रि० अ०, दे०) डुगडुग करना, डंका या नगाड़ा पीटना या बजाना।

डुगडुगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) डुग्गी, डोंडी (ग्रा०)।

डुग्गी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) डुगडुगी, बाजा। भेजा। सिर के पीछे का भाग (ग्रा०)।

डुण्डु, डुण्डुभ—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) साँप (पनिहाँ)।

डुपटना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दो+पट] कपड़ा चुनना, चुनियाना या तह करना।

डुपट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दो+पट] चादर, चादरा, दुपट्टा, द्विपट, दुपटा।

डुबकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डूबना] पानी में गोता लगाना या डूबना, डुबकी, डुब्बी। बिना तली उर्द की बरी। बुड्डी (ग्रा०) । "डुबकी लै उभकी पर्यो त्यों केस आनन पै मानौ ससि-मंडल पै श्याम घन घिरिगो।"

डुबवाना—(क्रि० स०, दे०) दूसरे के द्वारा डुबाने की क्रिया।

डुबाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० डूबना] पानी आदि में किसी को गोता देना, बोरना। किसी वस्तु को नष्ट या चौपट करना, बिगाड़ देना। अन्त करना, डुबोना, बुड़ाना (ग्रा०)। **मुहा० नाम—**,नाम में ऐब लगाना, मान-मर्यादा खोना, यश या ख्याति को नष्ट करना । **लुटिया—(डूबना)**—बड़ाई या इज्जत मिटाना।

डुबाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डूबना] डूबने योग्य पानी की गहराई।

डुबोना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० डुबाना] डुबाना।

डुब्बा—(संज्ञा, पु०, दे०) पनडुब्बा, पानी में डुबकी लगानेवाला।

डुब्बी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गोता।

डुभकौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डुबकी + बरी] बिना तली हुई उर्द की बरी।

डुरियाना—(क्रि० स०, दे०) चलाना, फिराना, ले चलना। रस्सी में बाँधकर घुमाना । घोड़े को बागडोर के द्वारा ले चलना।

डुलना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० डोलना] हिलना, चलना। काँपना।

डुलाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० डोलना का प्रेरणा० रूप] चलाना । हटाना, हिलाना, भगाना। घुमाना, फिराना। "बिजन डुलाती थी वे बिजन डुलाती हैं"—भूषण।

डुलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खंजन जैसा एक पक्षी।

डुली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक साग, जिसका नाम चिल्ली है।

डूँडर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुंग] मिट्टी आदि का ढेर, पहाड़ी, टीला, भीटा (ग्रा०)। "डूंडर को घर नाम मिटावे"—प्रेम०। एक जाति।

डूंडरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुंग, हि० डूंडर] छोटा टीला या भीटा, छोटी पहाड़ी।

डूँडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुंग] चम्मच । डोंगा। रस्सी का गोल लच्छा।

डूँड़ा—(वि०, दे०) छोटे या बिना सींग या एक सींग का बैल। आभूषण-रहित स्त्री का हाथ। [डूँड़ी (स्त्री०)] लो०—"डूँडी गइया सदा कलोर।"

डूबना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० डुबडुब] पानी आदि द्रव पदार्थों में घुस जाना, समा जाना, मग्न होना, बूड़ना, गोता खाना। ग्रहों का अस्त होना, जैसे सूर्य्य डूबना। चौपट या नष्ट होना, खराब या बरबाद होना, बिगड़ जाना। किसी को उधार दिये या किसी धन्धे में लगाये हुए धन का नष्ट हो जाना। चिन्ता में मग्न होना, लीन या तन्मय या लिप्त होना। **मुहा० डूब मरना**—लज्जा के मारे जीवन समाप्त करना अथवा मुँह न दिखाना । "गर बाँधि कै सागर डूबि मरौ"—[राम०] **—चुल्लू भर पानी में डूब मरना**—बहुत लज्जित होना, किसी को अपना मुख न दिखाना । **(मन में)—उतराना**—चिन्ता-मग्न होना, सोच-विचार में पड़ जाना। **जी—**,चित्त घबराना या व्याकुल होना। बेहोश हो जाना। **नाम—**,बड़ाई या प्रतिष्ठा नष्ट होना, इज्जत मिटना, बदनामी होना।

डूबा—(वि०, दे०) [हि० डूबना] डूबा हुआ, निमग्न। (संज्ञा, पु०, दे०) पानी का अधिक आना, बूड़ा (ग्रा०)। बाढ़। मूर्च्छा। "डूबा बंस कबीर का, उपजे पूत कमाल"—कबीर०।

डेडसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० टिंडिस] टिंड, टिंडसी। ककरी-सी एक तरकारी।

डेउढ़—(संज्ञा, पु०, दे०) बन्दूक की बाढ़। डेवढ़ा, डेढ़। [(सं०) अध्यर्द्ध] आधा और एक, ड्योढ़ा। [**डेउढ़ी, ड्योढ़ी** (स्त्री०)]

डेउढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दरवाजा, फाटक, पौर, ड्योढ़ी (ग्रा०)।

डेठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) डंडी, नाल। (वि०) डेउढ़ी।

डेड़—(संज्ञा, पु०, दे०) देग, पद, पग। दो पैरों के बीच की भूमि जो चलते समय छूटती जाती है।

डेढ़ना—(संज्ञा, पु०, दे०) ठेकुर, डेंगना, अड़-गोड़ा, चौपायों के अगले पैरों के बीच मे लटकाई गई लकड़ी, जिसमें वे भाग न सकें।

डेढ़हा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डुंडुभ] पनिहाँ साँप।

डेढ़—(वि०, दे०) [सं० अध्यर्द्ध] एक पूरा और उसी का आधा, सार्द्ध । **मुहा०—ईंट की मसजिद (दीवाल) बनाना**–मारे शेखी के सब से अलग काम करना ।—(ढाई) **चावल की खिचड़ी पकाना**–अपनी सम्मति या राय सब से पृथक् रखना ।

डेढ़ा—(वि०, दे०) [हिं० डेढ़] डेवढ़ा, डेउढ़ा, ड्योढा । (संज्ञा, पु०) प्रत्येक संख्या का डेढ गुना बताने का पहाड़ा ।

डेना—(संज्ञा, पु०, दे०) परदेश का घर, घर तम्बू । नाचने-गाने वालों की मंडली । (वि०) बायाँ डेबरा । (ग्रा०) ।

डेबरी—(संज्ञा, स्त्री०) टीन या शीशे की डिब्बी जो दीपक का काम देती है ।

डेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ठहरना] पड़ाव, टिकाव । तम्बू । सामान, असबाब, सामग्री । **मुहा०—डालना**–किसी जगह जाकर उतरना, ठहरना, रहना । अपना सामान फैला कर रखना । **—कूच होना**–यात्रारंभ हो जाना ।**—पड़ना**–टिकान या ठहराव होना । ठहरने की जगह, खेमा, झोपड़ा, छोटा घर । *†(वि०) [सं० डहर] बायाँ, सव्य ।

डेराना†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० डरना] भयभीत होना, डरना, डेराना ।

डेरी—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) दूध-मक्खन आदि की दूकान, सामूहिक रूप से जहाँ दूध या मक्खन तैयार किया जाता है ।

डेल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डंडुल] घुग्घू, उल्लू । (संज्ञा, पु०) [सं० दल] ढेला, रोड़ा । पक्षियों के बन्द करने का झाबा ।

डेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दल] आँख का सफेद उभरा हुआ भाग, जिसके बीच में पुतली रहती है, रोड़ा या कोया, ढेला ।

डेली†—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० डला] छोटा झाबा, डलिया, खाँचो, दौरी, टोकरी । छोटा डेला ।

डेवढ़†—(वि०, दे०) [हिं० डेवढ़ा] डेउढ़ा, डेउढ़ी, ड्योढ़, डेढ़ गुना । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) ढङ्ग, क्रम, सिलसिला, तार । [एडजस्टमेंट] **मुहा०—बैठना**–सिलसिला लगना ।

डेवढ़ा—(वि०, पु०) [हिं० डेढ़] ड्यौढ़ा, डेढ़ गुना, आधा और एक ।**—दर्जा**–(संज्ञा, पु०, यौ०) इन्टर-क्लास (रेल०) ।

डेवढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० देहली] द्वार, चौखट, फाटक, पौरी, ड्योढ़ी ।

डेहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देहली ।

डैना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डयन] पक्षियों का पंख, पर, बाजू, पक्ष । मनुष्यों के हाथ ।

डोंगर—(संज्ञा, पु०, दे०) (सं० तुङ्ग) पहाड़ी, टीला ।

डोंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्रोण] छोटी नाव, बिना पाल की नाव । [**डोंगी** (स्त्री०)]

डोंगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डोंगा] छोटा डोंगा, डोंगिया, बहुत छोटी नाव ।

डोंड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुण्ड] टोंटा । कारतूस । बड़ी इलायची । मदार का फल । "आँबन की हौंस कैसे आक-डोंड़े जात है"—सुन्दर० ।

डोंड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुण्ड] पुस्ता का फल । उठा हुआ मुख । टोंटी ।

डोई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डोकी] गरम दूध और शकर की चाशनी चलाने की काठ की डाँड़ी लगी कलछी ।

डोकरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुष्कर] बहुत बूढ़ा पुरुष, वृद्धतम व्यक्ति । [**डोकरी** (स्त्री०)]

डोकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डोकरा] बहुत बूढ़ी स्त्री । डोकरिया, डुकरिया (ग्रा०) ।

डोका—(संज्ञा, पु०, दे०) तेलादि रखने का काठ का छोटा पात्र । बूढ़ा मनुष्य ।

डोकिया, डोकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डोका] तेल, उबटनादि रखने का काठ का एक छोटा बरतन ।

डोडो—(संज्ञा, पु०, अ०) बत्तख जैसा पक्षी (अब अप्राप्य) ।

डोब, डोबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० डूबना] डुबाने का भाव, डुबकी, डुब्बी, गोता ।

डोबना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० डुबना] डुबाना, बोरना । "इत माया अगाध सागर तुम डोबहु भारत नैया"—सत्य० ।

डोम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डम] एक नीच जाति, डुमार, भंगी, धानुक, ढाढ़ी, मोरासी (प्रान्ती०) । [**डोमिनी** (स्त्री०)]

डोमकौआ—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० डोम + कौआ] बड़ा और बहुत काला कौआ ।

डोमड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डोम] डुमार, डोमरा, भंगी, डोमार, मेहतर, ढाढ़ी, मीरासी (प्रान्ती०)।

डोमिन, डोमिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डोम] डुमारिनी, डुमारिन, डोम की स्त्री, ढाढ़िनी, मीरासिनी (प्रान्ती०)। **लो०**—"औसर चूकी डोमिनी गावे सारी रात"।

डोर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० डोरक] एक तागा, डोरा। आँखों की महीन लाल नसें। गर्म घी या तलवार की धार। एक करछी। सुराग, पता। कागज या सुरमे की लकीर।। [**डोरी** (स्त्री०)] **मुहा०**—(रा) **डालना**-स्नेह के तागे में बाँधना, परचाना।

डोरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डोरा] एक डोरादार कपड़ा। एक बँगला।

डोरियाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० डोरी+आना प्रत्य०] घोड़े आदि पशुओं को डोरी से बाँध कर ले जाना। साथ रखना (लिये फिरना)। "कोतल अस्व जाहिं डोरियाये"—[रामा०]।

डोरिहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डोरी+हारा प्रत्य०] पटवा। [**डोरिहारिन, डोरिहारिनी** (स्त्री०)]

डोरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० डोरा] रस्सी, रज्जु। डाँड़ीदार कटोरा या करछा, डोरा। **मुहा०**—**ढीली छोड़ना**—निगरानी न रखना, चौकसी कम करना।

डोरे—(क्रि० वि०, दे०) [हि० डोर] अपने साथ-साथ, सङ्ग-सङ्ग लिये।

डोल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दोल] पानी भरने का लोहे का कड़ादार बरतन। भूला, हिंडोला। डोली, पालकी। हलचल, चंचल स्थिति। "भूलत डोल दुलहिनी दूलह"—**हरि०**।

डोलक—(संज्ञा, पु०) एक पुराना बाजा।

डोलची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डोल] छोटा डोल। [**डोलचिया** (अल्पा०)]

डोलडाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डोलना] घूमना, चलना, फिरना। शौच या टट्टी जाना (साधु०)।

डोलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दोलन] चलना, घूमना, फिरना। हटना, दूर होना। विचलित होना, डिगना, हिलना। "पीपर-पात-सरिस मन डोला"—[रामा०]।

डोला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दोल] भूला। पालकी, मियाना, डोली, पेंग। [**डोली** (स्त्री०)] **मुहा०**—**देना**-अपनी लड़की देना।—**लाना**-किसी की लड़की को वधू के रूप में अपने घर लाना।

डोलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० डोलना] हिलाना। चलाना। हटाना, भगाना, दूर करना। कंपित करना।

डोली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० डोला] छोटा डोला। "आवति है डोली गढ़ लंक सों इहै को प्रभु"—मन्ना०।

डोही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डोकी] डोई, करछी।

डौंडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० डिंडिम] ढिंढोरा, मुनादी, डुगडुगिया, डुग्गी। **मुहा०**—**देना (पीटना)**-मुनादी करना, सबसे कहते फिरना।—**बजाना**-ढिंढोरा पीटना, मुनादी या घोषणा करना। जयजयकार होना।

डौंरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डमरू] ढक्का, डमरू (बाजा)।

डौआ—(संज्ञा, पु०, दे०) काठ का चम्मच।

डौल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डोल] ढङ्ग। ढाँचा। बनावट का ढङ्ग। रचना। प्रकार, ढब, तरह, युक्ति, उपाय। रङ्गढङ्ग, लक्षण। सामान। **डौल**—, आकार-प्रकार।—**डाल**-मतलब। उपयुक्त अवसर या संयोग। डउल (ग्रा०)।—**दार**-(संज्ञा, पु०, [हि० डौल+दार फ़ा०] सुलक्षणयुक्त, सुन्दर। **मुहा०**—**पर लाना**-काँटछाँट कर सुडौल या दुरुस्त करना।—**पर करना**-अपने उपयुक्त ठीक करना।—**बाँधना या लगाना**-उपाय या कोशिश करना, युक्ति बिठाना।—**बैठना**-युक्ति का सफल होना।

डौलियाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० डौल] अपने मतलब के पूरा होने के अनुकूल करना। राह या ढङ्ग पर लाना। गढ़ कर ठीक या उपयुक्त करना।

ड्योढ़ा—(वि०, दे०) [हि० डेढ़] पूरी चीज और उसी का आधा, डेढ़गुना। [**ड्योढ़ा दर्जा** (यौ०, रेल०)]

ड्यौढ़ी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ देहली] चौखट, फाटक, द्वार, दरवाजा, पौरी।—**दार**-(संज्ञा, पु॰, दे॰) [हि॰ ड्यौढ़ी+दार फ़ा॰] द्वार पर पहरे वाला, द्वारपाल, दरबान, प्रतिहार।—**वान**-(संज्ञा, पु॰) [हि॰ ड्यौढ़ी+वान प्रत्य॰] द्वारपाल, प्रतिहार, पहरेदार।

ढ

ढ—हिन्दी-संस्कृत की वर्णमाला के टवर्ग का चौथा वर्ण। (संज्ञा, पु॰, सं॰) बड़ा ढोल। कुत्ता। ध्वनि, शब्द, नाद।

ढँकन—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [हि॰ ढँकना] ढक्कन। मुँदना, ढकना।

ढँकना, ढकना—(क्रि॰ स॰, दे॰) [सं॰ ढक्कन] ढाँकना, मूँदना। छिपाना। (क्रि॰ अ॰) दिखायी न देना। (संज्ञा, पु॰) ढक्कन, मुँदना।

ढंख†—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [हि॰ ढाक, सं॰ आषाढ़क] छिउल, पलाश। [ढाँक (दे॰)]

ढंग—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ तंगन] रीति, प्रकार, ढब। शैली, बनावट, गढ़न। उपाय, तदबीर, युक्ति। चाल, व्यवहार, आचरण। पाखंड, बहाना। लक्षण। **रङ्ग**—,(यौ॰) दशा, स्थिति, अवस्था। लक्षण। अवसर। आभास [**ढंगदार, ढङ्गी, ढँगीला** (वि॰)] "दिनही मैं लला तक ढङ्ग लगायो"—मति॰। **मुहा॰—डालना**-स्वभाव या बान डालना।—**पर चढ़ना**-मतलब पूरा होने के उपयुक्त होना, कार्य-सिद्धि के अनुकूल होना।—**पर लाना**-कार्य-सिद्धि के अनुकूल करना।—**लगना**-उपाय या युक्ति चलना।—**लगाना**-स्वार्थ-सिद्धि का उपाय करना, उपयुक्त साधन करना।—**बैठना** (**बैठालना**)-युक्ति लगना, सफलोपाय होना, सिलसिला लगना।

ढँगलाना—(क्रि॰ स॰, दे॰) [हि॰ ढाल] लुढ़काना, ढनगाना, ढुनगाना (ग्रा॰)। (क्रि॰ अ॰) नखरा या बहाना करना, हीला-हवाला करना।

ढँगियाना—(क्रि॰ स॰, दे॰) [हि॰ ढङ्ग] ढङ्ग पर लाना, उपयुक्त या स्वानुकूल बनाना।

ढंङ्गी—(वि॰, दे॰) [हि॰ ढंग] चतुर, चालाक। मतलबी, स्वार्थी। [ढँगीला (दे॰)]

ढँढार—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [अनु॰ धाँय-धाँय] अग्नि की ज्वाला, आग की लपट या लौ।

ढँढोरची—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [हि॰ ढँढोरा] मुनादी करने या डौंड़ी पीटने वाला, ढिंढोरा फेरने वाला।

ढँढोरना, ढँढोलना—(क्रि॰ स॰, दे॰) [सं॰ ढुंढन] ढूँढ़ना, तलाश करना, खोजना। "तहँ लगि हेरै समुद्र ढँढोरी"—जायसी। छान डालना, मथना, टटोल कर खोजना। "मायर माहिं ढँढोलता हीरै परिगा हत्थ"—कबीर॰। "तुम सूने भवन ढिंढोरे हो"—गदा॰।

ढँढोरा, ढिंढोरा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [अनु॰ ढम+ढोल] मुनादी करने का ढोल, डौंड़ी, डुगडुगी। मुनादी, (ढोल से) घोषणा।

ढँढोरिया—(संज्ञा, पु॰) [हि॰ ढँढोरा] मुनादी और घोषणा करने वाला, डौंड़ी या डुग्गी पीटने वाला। ढँढोरने, खोजने या ढूँढने वाला। "कान्ह सों ढँढोरिया, न मोंसो है छिपैया कोऊ"—[स्फुट]।

ढँपना, ढपना—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ ढक=छिपना] ढक्कन। (क्रि॰ अ॰) छिपना, दिखायी न देना।

ढई—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [हि॰ ढहाना] धरना देना। "आजु मैं लगैहों ढई नन्द जू के द्वार पर" —[स्फुट]।

ढकना—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ ढक=छिपना] ढक्कन, मुँदना। [**ढकनी** (स्त्री॰ अल्पा॰)] (क्रि॰ अ॰) छिपना, दिखायी न देना, ढाँकना।

ढकनिया, ढकनियाँ†—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [हि॰ ढकना] छोटा ढक्कन या मुँदना। "सुभग ढकनिया ढाँपि बाँधि पट जतन राखि छीके समदायो" —सूबे॰।

ढकनी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [हि॰ ढकना] छोटा ढक्कन या मुँदना।

ढका*†—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ ढक्का] बड़ा ढोल। (क्रि॰ वि॰) [हि॰ ढकना] छिपा, अदृश्य। (संज्ञा, पु॰, दे॰, अनु॰) धक्का, टक्कर। तौल।

ढकिल*†—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [हि॰ ढकेलना] चढ़ाई, आक्रमण। (वि॰) समेट कर ढकेला हुआ।

ढकेलना—(क्रि॰ स॰, दे॰) [हि॰ धक्का] किसी को धक्का दे या ठेलकर गिराना, हटाना या सरकाना।

ढकेला-ढकेली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हि० ढकेलना] रेलापेली, ठेलमठेली, धक्कमधक्का ।

ढकेलू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढकेलना] धक्का देने या ठेलने वाला, ढकेलने वाला, हटाने या भगाने वाला ।

ढकोसना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० ढक-ढक] एक साथ बहुत सा पीना ।

ढकोसला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढंग+कौशल सं०] स्वार्थ-सिद्धि की युक्ति, पाखंड, आडम्बर ।

ढक्कन—(संज्ञा, पु०, दे०) किसी पदार्थ के ढाँकने की वस्तु, ढकना, मुँदना ।

ढक्का—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डमरू, डुक्क । ढोल । डुग्गी ।

ढगण—(संज्ञा, पु०, सं०) तीन मात्राओं का एक मात्रिक गण (पिं०) ।

ढचर, ढचरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढाँचा] ढाँचा । ढकोसला, आडम्बर । टंटा, बखेड़ा, झगड़ा । युक्ति, रीति ।

ढटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बागडोर, एक लगाम ।

ढटींगर, ढटींगड़—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़े डील का, मोटा-ताजा ।

ढट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) ज्वार-बाजरे का सूखा डंठल । साफा का एक छोर।।

ढट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) डाढ़ी बाँधने का कपड़ा । शीशी का कार्क ।

ढढकौआ—(संज्ञा, पु०, दे०) जंगली या भयानक कौआ ।

ढडवा—(संज्ञा, पु०, दे०) मैना की जाति का एक पक्षी ।

ढडढा—(वि०, दे०) बेढङ्गा । (संज्ञा, पु०) आडम्बर । ढाँचा ।

ढड्ढा—(वि०, दे०) बहुत बेढङ्गा, बड़ा । (संज्ञा, पु०) झूठा ठाट-बाट, आडम्बर ।

ढनमनाना†—(क्रि० अ०, अनु०) लुढ़कना, फिसिलना, गिर पड़ना । [ढनगनाना, ढनगाना (दे०)]

ढनमनी—(क्रि० स०, अनु०) लुढ़क गयी, फिसल पड़ी । (वि०, स्त्री०) लुढ़कने वाला । "रुधिर वमत धरनी ढनमनी"—[रामा०] ।

ढप, ढफ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डफ] एक बाजा । [**डफ** (ब्र०)] "धुनि डफ तालन की आनिसी प्राननि मैं"—रत्ना० ।

ढपना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढाँपना] ढक्कन, मुँदना । (क्रि० अ०, दे०) [हि० ढकना] ढँका, या छिपा होना, झँपना, लुकना ।

ढपला—(संज्ञा, पु०, दे०) डफला बाजा ।

ढप्पू—(वि०, दे०) बहुत ही बड़ा ।

ढब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धव=गति] तरीका, रीति, ढंग, युक्ति । प्रकार, बनावट, गढ़न । उपाय । स्वभाव, टेंव । **मुहा०—पर चढ़ना**—स्वार्थ-सिद्धि के अनुकूल होना ।—**पर लगाना या लाना**—स्वार्थ-सिद्धि के अनुकूल किसी काम में लगाना ।

ढबरा—(वि०) गन्दा, मटमैला ।

ढबीला—(वि०) होशियार, चालाक ।

ढमढम—(संज्ञा, पु०) ढोलक की आवाज ।

ढयना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ध्वंसन्] दीवार या घर गिरना, ध्वस्त होना ।

ढरकना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ढार या ढाल] पानी आदि का नीचे बहना, ढुलकना, नीचे को गिरना, फैल जाना ।

ढरका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढरकना] पशुओं को गोली दवा पिलाने की बाँस की नली । आँखों से अंजनादि के कारण निकले आँसू ।

ढरकाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० ढरकना] पानी आदि को नीचे गिराना, फेंकना, बहाना, फैलाना । "दधि ढरकायो भाजन फोरी"—सुबे० ।

ढरकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढरकना] कपड़ा बुनने का एक हथियार ।

ढरकीला—(वि०, दे०) लुढ़कने वाला ।

ढरना†*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ढाल] पानी, पारा आदि द्रव पदार्थों का नीचे खिसक या सरक जाना, ढरकना, बहना । द्रवित या कृपालु होना । चाँदी-सोने को गला कर साँचे के द्वारा कोई रूप देना । चेचक का मवाद निकलना । "जापै दीनानाथ ढरै"—सूर० । "नैननि ढरै मोति औ मूँगा"—[पद०] । "सोन ढरै जेहि के टकसारा"—[पद०] ।

ढरनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढरना] गिरना, पड़ना, हिलना, डोलना । मन की प्रवृत्ति, दया,

करुणा, कृपालुता, रीझ, प्रसन्नता । "ढरौ यहि ढरनि रघुवीर निज दास पर"—तुल० ।

ढरहरना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० ढरना] सरकना, हटना, खिसकना, ढलना । झुकना ।

ढरहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पकौड़ी ।

ढराना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० ढालना] ढालना, दूसरों द्वारा ढलाने का काम कराना । [**ढरवाना** (प्रेरणा०रूप)]

ढरारा—(वि०, दे०) [हिं० ढार] गिर कर बहने वाला, लुढ़कने वाला । [**ढरारी** (स्त्री०)]

ढर्रा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० धरना] राह, रास्ता, मार्ग, पंथ । ढंग, बान, रीति, युक्ति, उपाय । चाल-चलन । सिलसिला ।

ढलकना—(क्रि० अ०) [हिं० ढाल] लुढ़कना, फैलना, गिरना ।

ढलका—(संज्ञा, पु०) [हिं० ढलकना] आँख से पानी बहना, द्रवित होना । [ढरका (दे०)]

ढलकाना—(क्रि० स०) [हिं० ढलकना] लुढ़काना ।

ढलना—(क्रि० अ०) [हिं० ढाल] ढरकना, लुढ़कना, व्यतीत होना, बीतना । एक बरतन से दूसरे में द्रव पदार्थ का उडला जाना । डोलना, लहराना । किसी ओर खिंच जाना, रीझना, प्रसन्न होना । साँचे से ढाला जाना । [**ढलाना, ढलवाना** (प्रेरणा० रूप)] । **मुहा० दिन—**, शाम होना, दिन डूबना । **सूर्य्य या चाँद का—**, सूर्य या चाँद का अस्त होना । **साँचे में—**, विशेष सौन्दर्य से मंडित होना ।

ढलमल—(वि०, दे०) शिथिल ।

ढलवा—(वि०, दे०) [हिं० ढालना] जो साँचे में ढाल कर बनाया गया हो ।

ढलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ढालना] ढालने का काम, भाव या मजदूरी ।

ढलाना—(क्रि० स०) [हिं० ढालना] ढालने का काम दूसरे से कराना । [**ढलवाना** (प्रेरणा० रूप)] [**ढलवाई, ढलन** (संज्ञा, स्त्री०)]

ढवरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ढलना] लगन, धुन, लौ, रट, ढोरी (प्रान्ती) ।

ढहना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ध्वंस] घर आदि का गिर पड़ना, ध्वस्त या नष्ट होना ।

ढहरना—(क्रि० अ०) लुढ़कना, गिर पड़ना ।

ढहराना—(क्रि० स०) लुढ़काना, गिरा देना ।

ढहरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देहली, डेहरी । मिट्टी का एक बरतन, डहरी (ग्रा०) । "नकद रुपैया ढहरी तीन, रहै दहेली कुरमी पीन"—[स्फुट] ।

ढहवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० ढहाना का प्रेरणा० रूप] गिरवाना । ध्वस्त कराना, तुड़वाना । "बिन प्रयास रघुवीर ढहाए"—[रामा०] ।

ढहाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ध्वंसन] घर आदि गिराना, ध्वस्त करना, तोड़वाना । "निसिचर सिखर समूह ढहावहिं"—तुल० ।

ढाँकना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ढक=छिपाना] छिपाना, ओट में करना, मूँदना, झाँपना, बंद करना ।

ढाँख—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ढाक] छिउल, पलाश । "जिउ लै उड़ा ताकि बन ढाँखा" ।

ढाँग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कन्दला, शिखर, शृंग, पहाड़ की चोटी ।

ढाँच—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थान] ठाठ, ठहर । मान-चित्र । डौल । प्राक् रूप, प्रथम रूप । देहपंजर, ठठरी । बनावट, गढ़न । भाँति, प्रकार । "नरतन निरा हाड़ कर ढाँचा"—[स्फु०] ।

ढाँचा—(संज्ञा, पु०) [सं० स्थाता] स्थूल रूप, रूपरेखा, पंजर, ठठरी, गढ़न । बनावट । [फ्रेम]

ढाँपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ढक—छिपाना] ढाँकना, छिपाना, ओट में करना । [**ढँपवाना** (प्रेरणा० रूप)]

ढाँसना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० ढाँस] खाँसना, सूखी खाँसी आना । दोष या कलंक लगाना, अपवाद करना ।

ढाँसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ढाँसना] दोष, कलंक, अपवाद । खाँसी की ठसक । "ढाँसा देत सदा सुजनन कौ चूकत कबौं न मौका"—कु० वि० ।

ढाई—(वि०, दे०) [सं० सार्द्ध द्वितीय, हिं० अढ़ाई] दो और आधा । **मुहा०—रत्ती का मिजाज बनाना**—अनोखा ढंग रखना ।—**चावल की खिचड़ी अलग पकाना**—सबसे पृथक् रह कर कार्य करना ।

ढाक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आषाढ़क] छिउल, पलाश । "मलयागिरि की बास में बेधा ढाक,

पलास"-कबीर। मुहा०—के तीन पात-हमेशा एक ही ढंग। [सं० ढक्का] जुझाऊ ढोल।

ढाका—(संज्ञा, पु०) पाकिस्तान के अंतर्गत पूर्वी बंगाल का एक नगर जो सूती कपड़ों (मलमल) के लिए प्रसिद्ध है।

ढाटा, ढाठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दाढ़ी] दाढ़ी बाँधने की पट्टी। दृढ़ बंधन। ठाकुरों की एक पगड़ी (राजपू०)।

ढाठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घोड़े के मुँह पर बाँधने की रस्सी या जाली, मुँह-बँधना।

ढाड़, ढाढ़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) चीत्कार, चीख। चिग्घाड़, दहाड़। चिल्लाहट। " ढाढ़ मारि कै राजा रोवा"—[पद०]। मुहा०—मार कर रोना-चिल्ला कर रोना।

ढाड़ना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० दाहन] जलाना, तपाना। दुख देना, सताना।

ढाढ़स—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दृढ़] दृढ़ता, स्थिरता। भरोसा। साहस, धैर्य।—देना-,बँधाना भरोसा या धैर्य देना, साहस या हिम्मत देना। धैर्य धारणार्थ उपदेश देना, साहस या धीरज देना। "विपत्ति परे जो ढाढ़स देई"—[स्फुट]।

ढाढ़िन, ढाढ़िनि, ढाढ़िनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढाढ़ी] ढाढ़ी की स्त्री०, मीरासिनी, गाने-नाचने वाली।

ढाढ़ी—(संज्ञा, पु०, दे०) नाचने-गाने वाली नीच जाति, मीरासी (प्रान्ती०)। "गावै ढाढ़ी जस चहुँ ओरा"—[स्फुट०]। "होतो तोरे घर को ढाढ़ी सूरदास मों नाऊँ"—सूर।

ढान—(संज्ञा, पु०, दे०) घेरा, बड़ा हाता।

ढाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ढहाना] गिराना, उजाड़ना।

ढाबर—(वि०, दे०) [हि० डाबर] गँदला, मैला। "भूमि परत भा ढाबर पानी"—[रामा०]।

ढाबा—(संज्ञा, पु०, दे०) ओसारा, बरंडा। भोजनालय। [होटल] ओरी, ओलती (ग्रा०)।

ढार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कर्ण-भूषण। प्रकार, भाँति, भेद। भेष। ताटंक, ढाल। " नेजा, भाला, तीर, कोउ कहत अनोखी ढार "—रस०।

ढारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० धार] पानी आदि का गिराना, उड़ेलना। मद्य पीना। ताना मारना, व्यंग्य बोलना। साँचे के द्वारा बनाना। आरोपित करना।

ढारस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दृढ़] ढाढ़स।

ढाल—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गेंड़े की खाल की फरी, चर्म फलक। उतार भूमि, ढार (ग्रा०)। ढंग, तरीका।

ढालना—(क्रि० स०, दे०) [सं० धार] कोई गहना या बरतन आदि साँचे से बनाना। एक से दूसरे बरतन में द्रव-पदार्थ डालना, उड़ेलना। ताना या व्यंग्य बोलना।

ढालवाँ, ढालुवाँ—(वि०, दे०) [हि० ढाल] ढालू जमीन। साँचे में ढाल कर बनी वस्तु।

ढालिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढाल+इया प्रत्य०] साँचे में ढाल कर गहने आदि बनाने वाला, ठठेरा। सुनार। तँबेरा।

ढालू—(वि०, दे०) [हि० ढालना] ढाल-युक्त, ढलवाँ, ढालवाँ, ढलुवाँ (ग्रा०)।

ढास†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दस्यु] डाकू, लुटेरा, बटमार। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) खाँसी। तकिया, उढ़कन।

ढासना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धारण+आसन] कुरसी। मसनद, तकिया। (क्रि० अ०) खाँसना।

ढाहना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ढाना] गिराना। "भवन बनावत दिन लगै, ढाहत लगै न बार "—वृं०।

ढिंढोरना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) खोजना, ढूँढ़ना। मथना, छान मारना। मुनादी करना।

ढिंढोरा—(संज्ञा, पु०, दे०)[अनु० ढम+ढोल] मुनादी, घोषणा।

ढिकाना, ढिकान—(सर्व०, दे०) अमुक।

ढिग*—(क्रि० वि०, ब्र०) [सं० दिक] समीप, निकट, पास। (संज्ञा, पु०) तट, किनारा, कोर।

ढिठाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढीठ] धृष्टता, बेअदबी।

ढिबरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० डिब्बी] काँच या मिट्टी की डिबिया, जिसमें मिट्टी का तेल जला कर दीपक का काम लेते हैं। पेंच के सिरे पर का छल्ला।

ढिमका—(सर्व, दे०) [हिं० अमुक का अनु०] अमुक, फलाँ, फलाना । [**ढिमकी** (स्त्री०)]

ढिलढिला—(वि०) ढीलाढाला, हलका, गाढ़ा नहीं ।

ढिलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ढीला] ढीलापन, सुस्ती, शिथिलता ।

ढिलाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० ढीलना का प्रेरणा० रूप] किसी से ढीलने का काम कराना, ढीला कराना या करना । खोलवाना । छोड़ाना । देर करना । [**ढिलवाना** (प्रेरणा० रूप)]

ढिल्लड़—(वि०, दे०) आलस्य करने वाला, ढिलाई करनेवाला ।

ढिसरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ध्वंस] सरक पड़ना, फिसल जाना । झुकना ।

ढींगर, ढिंगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डिंगर] हृष्टपुष्ट, हट्टाकट्टा । पति या उपपति । गुंडा, दुष्ट, धिंगरा (ग्रा०) ।

ढींढ़ा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ढुंढि=लंबोदर, गणेश] बड़े पेट वाला । गर्भ, हमल ।

ढीट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रेखा, लकीर ।

ढीठ, ढीठ्यो—(वि०, दे०) [सं० धृष्ट] निडर, धृष्ट, साहसी । [**ढीठाई** (संज्ञा, स्त्री०)]

ढीठता*—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० ढीठ+ता प्रत्य०] ढिठाई, धृष्टता ।

ढीठ्यो*—(संज्ञा, पु०, ब्र०) [हिं० ढीठ] ढीठ, धृष्ट । ढिठाई । " प्रभुसों मैं **ढीठ्यो** बहुत करो " —गी० ।

ढीढस—(संज्ञा, पु०, दे०) ढिंढा, एक शाक ।

ढीम, ढीमा†—(संज्ञा, पु०, दे०) पत्थर का बड़ा टुकड़ा । मिट्टी का पिंड, ढिम्मा (ग्रा०) ।

ढील—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ढीला] सुस्ती, शिथिलता । जूं । " ढील देत महि गिरि परत"— तुल० । **मुहा०—देना**-छोड़ना । भुलाना । रियायत करना । (वि०) न्यून, कम । " सील-ढील जब देखिए"—रहीम ।

ढीलना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० ढीला] ढीला करना, छोड़ना, खोलना ।

ढीला—(वि०, दे०) [सं० शिथिल] आलसी, सुस्त । असावधान । जो गाढ़ा न हो, गीला ।

ढीली—(वि०, स्त्री०, दे०) देखिए ढीला । **मुहा०— आँख**-मद-भरी चितवन । **तबियत—होना**- तबियत ठीक न होना ।

ढीलापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ढीला+पन प्रत्य०] ढिलाई, सुस्ती, शिथिलता ।

ढीह—(संज्ञा, पु०, दे०) टीला, छोटा पहाड़ ।

ढुंढ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ढूँढ़ना] ठग, उचक्का, चोर ।

ढुंढपानि, ढुंढपाणि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंडपाणि] दण्डपाणि, भैरव, शिव के एक गण, यम । [ढुंढिपानि (दे०)]

ढुँढवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० ढूँढ़ना का प्रेरणा० रूप] किसी दूसरे से ढुँढ़ाना, तलाश या खोज कराना ।

ढुंढा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हिरण्यकशिपु की बहन ।

ढुंढिराज—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश जी ।

ढुंढी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाँह, मुश्क । [**ढुंढियाँ** (बहु व०)] **मुहा०—चढ़ाना**-मुश्कें बाँधना ।

ढुकना—(क्रि० अ०, दे०) किसी स्थान में घुसना, प्रवेश करना । धावा करना, टूट पड़ना । ताक या लालसा लगाना । कुछ सुनने या देखने को ओट में छिपना । किसी चीज के लिए तत्पर होना ।

ढुकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ढुकने की क्रिया, छिपाव । प्रलोभन ।

ढुकाना—(क्रि० स०, दे०) लालच देना, प्रलोभन ।

ढुकास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तेज प्यास ।

ढुटौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुहितृ=लड़की] लड़का, ढोटा । " तुम जानति मोहिं नन्द ढुटौना नन्द कहाँ तें आये "—सूर० ।

ढुनमुनिया†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ढनमनाना] लुढ़कने की क्रिया का भाव ।

ढुरकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० ढार] फिसल पड़ना, लुढ़क जाना । झुक पड़ना ।

ढुरना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० ढार] गिर कर बहना, ढुरकना, लुढ़कना, इधर-उधर होना, डगमगाना, लहराना, फिसल जाना, हिलना । कृपालु या प्रसन्न होना । " ढुरि ढुरि बूँद परत कंचुकि पर मिलि काजर सों कारो "—सूर । " ग्रीवा ढुरनि मुरनि कल कटि की "—अल० ।

ढुरहुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ढुरना] ढुरकने का भाव । पगडंडी, छोटा रास्ता ।

ढुराना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० ढुरना] ढुरकाना, लुढ़काना, लहराना, हिलाना । प्रसन्न या दया-पूर्ण करना ।

दुरावना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दुराना] ढरकाना, लुढ़काना, लहराना, हिलाना । प्रसन्न करना । "चमर दुरावत श्री ब्रज राज"—सूर० ।

दुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दुरना] छोटी राह, पगडंडी ।

ढुलकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ढाल+कना प्रत्य०] ढुरकना, लुढ़कना । [**ढुलकनि** (संज्ञा, स्त्री०)]

ढुलकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ढुलकना] ढुरकाना, लुढ़काना ।

ढुलढुल—(वि०) लुढ़कनेवाला, ढुलकनेवाला ।

ढुलना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ढुरना] गिर कर बहना, ढुरकना, लुढ़कना, डगमगाना, लहराना, फिसल जाना । प्रसन्न होना । हिलाना । ढोया जाना । (संज्ञा, पु०, ग्रा०) एक गहना ।

ढुलमुल—(वि०) शिथिल, बिना किसी निश्चित विचारों वाला ।

ढुलवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढोना] ढोने का काम, भाव या मजदूरी ।

ढुलवाना—(क्रि० स०, दे०) [ढोना का प्रेरणा० रूप] ढोने का काम दूसरे से कराना ।

ढुलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ढाल] ढरकाना, ढालना, गिराना, लुढ़काना, झुकाना । प्रसन्न करना । हिलाना, फेरना । पोतना । (क्रि० स०, दे०) [हि० ढोना] ढोने का काम लेना ।

ढूँढ़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढूँढ़ना] पता, खोज, तलाश ।—**ढाँढ़**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) पूछताछ, खोज, अनुसंधान ।

ढूँढ़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ढुंढन] खोज करना, पता लगाना ।

ढूँढ़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ढूँढ़ने की क्रिया या भाव । [**ढुँढ़वाई** (प्रेरणा०रूप)]

ढूँढ़ार—(संज्ञा, पु०, दे०) जयपुर राज्य का एक प्रान्त ।

ढूँढ़िया—(संज्ञा, पु०, दे०) जैन संन्यासी । (वि०, दे०) [हि० ढूँढ़ना] ढूँढ़ने वाला, पता लगाने वाला, खोजी ।

ढूँढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आटे को भूँजकर बनाया जानेवाला लड्डू ।

ढूकना—(क्रि० अ०, दे०) घुसना, पैठना । पास आना । बंध कटना । ताक या लालच लगाना ।

ढूक, ढूका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ताक, ढुकी । ढुकाई (ग्रा०) ।

ढूसर—(संज्ञा, पु०, दे०) बनियों की एक जाति, भार्गव ।

ढूह, ढूहा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तूप] मिट्टी आदि का ढेर, अटाला, टीला, भीटा (ग्रा०) ।

ढेंक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ढेक] पानी के समीप रहने वाला एक पक्षी जिसकी चोंच और गर्दन लंबी होती है ।

ढेंकली, ढेंकुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढेंक पक्षी] कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र । धान कूटने का यंत्र, धनकुट्टी, ढेंकी (ग्रा०) ।

ढेंका—(संज्ञा, पु०) बड़ी ढेंकी । कोल्हू के सिरे पर का बाँस ।

ढेंकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढेंक पक्षी] नृत्य का एक प्रकार-विशेष । धान, अनाज आदि कूटने की ढेंकुली ।

ढेंड़—(संज्ञा, पु०, दे०) एक तरकारी ।

ढेंढी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पोस्ता का फूल । कान का भूषण ।

ढेंढ़—(संज्ञा, पु०, दे०) एक नीच जाति । कौवा । मूर्ख । कपास आदि का ढोंढ़ा । ढोंढ (ग्रा०) ।

ढेंढर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढेंढ] टेंटर (ग्रा०), वह आँख जिसका कुछ मांस ऊपर उभड़ा हो ।

ढेंढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) गर्भ । बड़ा पेट, टेंटर ।

ढेंढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कान का भूषण । कपास । सेमर ।

ढेंप—(संज्ञा, स्त्री०) फल, फूल या पत्तों का वह कोमल भाग जहाँ से वह टहनी पर लटका रहता है । ढेपुनी ।

ढेंपनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढेंप] ढेंप, टोंट । कुचाग्र । ढपनी (ग्रा०) ।

ढेबुवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) पैसा ।

ढेर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धरना] राशि, समूह, अंबार, अटाला । [**ढेरी** (स्त्री०)] **मुहा०**—**करना**—मार डालना, राशि लगाना ।—**होना**—मर जाना ।—**हो रहना या जाना**—गिर कर मर जाना । थक कर चूर हो जाना । (वि०) बहुत, अधिक ।

ढेलवाँस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढेल+पाश सं०] गोफना ।

ढेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दल] ईंट, पत्थर, कंकड़ आदि का टुकड़ा, डेला । एक प्रकार का धान ।—**चौथ**-(संज्ञा, स्त्री०, दे० यौ०) [हि० ढेला+चौथ] भादों सुदी चौथ और पौष सुदी चौथ जब लोग दूसरे के घर में ढेले फेंकते हैं। ढेलही-चउथ, डेलही चौथ (ग्रा०)।

ढैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढाई] ढाई सेर का बाट। ढाई गुने का पहाड़ा, अढ़ैया। "बेद के पढ़ैया कौ तो ढैया को न जोग लागै"—[स्फु०]।

ढोंक—(संज्ञा, स्त्री०) राशि; ढेर। मछली का एक प्रकार।

ढोंका—(संज्ञा, पु०, दे०) ढेला, बड़ा ढेला, बड़ा टुकड़ा।

ढोंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढंग] पाखंड, ढकोसला। [**ढोंग-ढाँग** (यौ०)]—**बाजी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढोंग+बाजी फ़ा०] पाखंड, आडम्बर।

ढोंगी—(वि०, दे०) [हि० ढोंग] पाखंडी, ढकोसलेबाज।

ढोंढ़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुंड] कपास, पुस्ते आदि का डोंड़ा, कली। [**ढोंढ़ी** (स्त्री०)]

ढोंढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढोंढ़] नाभि।

ढोट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुहितृ=लड़की] लड़का, बेटा, पुत्र। ढोटौना (ग्रा०)। [**ढोटी** (स्त्री०)] "नन्द के ढोटौना मोरे नैनों भरि भारी हो"—सूर।

ढोना—(क्रि० स०, दे०) बोझा या भार ले जाना। निभाना।

ढोर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दुरन्ना] पशु, चौपाये, गाय, भैंस, बैल आदि।

ढोरना*†—(क्रि० स०, दे०) लुढ़काना, ढरकाना, बहाना।

ढोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ढोरना] ढालने या ढरकाने की क्रिया का भाव। धुन, रट, लगन।

ढोल—(संज्ञा, पु०, दे०) एक तरह का बाजा। कान का परदा। **मुहा०—के भीतर पोल**-बाहर से अच्छा, किन्तु अन्दर से बुरा।—**पीटना या बजाना**-सब से कहते फिरना।

ढोलक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढोल] छोटा ढोल। [**ढोलकिया** (अल्पा०)]

ढोलकिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढोलक+इया प्रत्य० अल्पा०] ढोलक बजाने वाला। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) ढोलक।

ढोलकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा ढोल।

ढोलन—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रीतम, रसिक, रसिया, प्रेमी।

ढोलना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढोल] बड़े ढोल-सा सड़क में कंकर आदि पीटने का बेलन, एक यन्त्र। गहना। (क्रि० स०, दे०) [सं० दोलन] ढालना, लुढ़काना, ढरकाना। डुलाना। डोलना।

ढोला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढोल] छोकड़ा, लड़का, बालक, बच्चा। मारू का प्रसिद्ध प्रेमी। (स्त्री०) एक छोटा कीड़ा। गाने वाली एक जाति। सीमा का चिह्न। लदाव (मेहराब का)। शरीर। पति। मूर्ख।

ढोलिन, ढोलिनि, ढोलिनी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि० ढोलिया] ढोला जाति की स्त्री। ढोल बजाने वाली स्त्री, डफालिन, मीरासिनी।

ढोलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढोल] ढोल बजाने वाला, डफाली, मीरासी, गाने-बजाने वाली जाति।

ढोली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) २०० पानों की एक गड्डी या आँटी।

ढोलैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढोल] ढोलक या ढोल बजाने वाला।

ढोव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढोवना] डाली, भेंट, नजर।

ढोवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ढोवना] लूट। "कस होइहि जब होइहि ढोवा"—जायसी।

ढोहना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ढूँढ़ना] खोजना, ढूँढ़ना। "सूर सुबैद बेगि ढोहौ किन भये मरन के जोग"—सूर।

ढौंचा, ढ्यौंचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अर्द्ध+चार हि०] साढ़े चार, चार और आधा। साढ़े चार गुना। साढ़े चार का पहाड़ा।

ढौंसना, ढौसना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० धौंस] हर्ष या आनन्द से ध्वनि करना। "गोपी गोप ढौसना मचाये दधिकाँदौ करि" —[स्फुट]।

ढौकन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ढौक+अटन्] घूस, अकोर (ग्रा०)। डाली, भेंट, उपहारादि के प्रलोभन द्वारा स्वार्थ-साधन का उपाय।

ढौरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ढंग । रट, धुनि । **—लगाना**-किसी काम में लगाना ।

ण

ण—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला के टवर्ग का पाँचवाँ वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान नासिका है । (संज्ञा, पु०, सं०) बिन्दु । देव । भूषण । निर्णय, ज्ञान, बोध, बुद्धि । हृदय । शिव । दान । अस्त्र । उपाय । विद्वान । जल-स्थान । मोथा । (वि०) गुण-विहीन, निर्गुण ।

णगण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक मात्रिक गण (पि०) ।

त

त—संस्कृत-हिन्दी की वर्णमाला के तवर्ग का पहला वर्ण, इस वर्ग के वर्णों का उच्चारण-स्थान दंत है । "लृतुलसानां दंतः" । (संज्ञा, पु०, सं०) नाव । पुण्य । चोर । दुम । झूठ । गोद । गर्भ । रत्न । (क्रि० वि०) [सं० तद्] तो ।

तं*—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नौका, नाव । पुण्य ।

तंक—(संज्ञा, पु०, सं०) भय । वियोग-कष्ट । कष्टपूर्ण जीवन । पहनने का वस्त्र । छेनी । टाँकी ।

तंकन—(संज्ञा, पु०, सं०) दुःखमय जीवन व्यतीत करना ।

तंग—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कसन, घोड़े को जीन वा पलान कसने का चमड़े का तस्मा । (वि०, दे०) कसा हुआ, कड़ा, दृढ़ । दिक, बीमार । हैरान, विकल । संकुचित, सिकुड़ा, छोटा । चुस्त । **—दस्त**-(वि०, यौ०, फ़ा०) कंगाल, गरीब, कंजूस । [**तंगदस्ती** (संज्ञा, स्त्री०)] **—हाल**-(वि०, यौ०, फ़ा०) कंगाल, निर्धन । विपत्ति-ग्रस्त । **मुहा०—आना या होना**-घबरा जाना, ऊब उठना । **—करना**-सताना, दिक करना ।

तंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पेड़ । अधन्ना, डबल पैसा ।

तंगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कंगाली, निर्धनता । संकोच । कमी । कड़ाई ।

तंजेब—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) महीन और बढ़िया मलमल ।

तंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तांडव] नाच, नृत्य ।

तंडव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तांडव] नाच, नृत्य ।

तंडा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वध ।

तंडुल—(संज्ञा, पु०, सं०) धान, चावल, तंदुल, एक प्रकार का सरसों का तेल । "छाइ जात नैनन में तंदुल सुदामा के"—रत्ना० ।

तंडुली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यवतिक्ता नामक लता, ककड़ी का एक प्रकार ।

तंत*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तन्तु] तागा, डोरा । ताँत । ग्रह । संतान । विस्तार । परम्परा । मकड़ी का जाला । (संज्ञा, पु०, दे०) [तंत्र] वस्त्र । कोरी, जुलाहा । निश्चित सिद्धान्त, प्रमाण-ग्रंथ । दवा । तन्त्र । राजकर्मचारी । फौज । राज-प्रबन्ध । धन । आधीनता । वंश । एक शास्त्र । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तुरंत] शीघ्रता, आतुरता । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तत्व] सारांश, ५ तत्व । (वि०, दे०) तौल । ठीक । सारंगी, सितार ।

तंतमंत—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० तंत्र-मंत्र] तंत्र-मंत्र, जादू, जन्तर-मन्तर ।

तंतरी*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तन्त्री] सारंगी, सितार आदि तार वाले बाजे । उनका बजाने वाला । तन्त्र शास्त्र का ज्ञाता, तन्त्र-मन्त्र करने वाला । जादूगर ।

तंतरीक—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक औषधि ।

तंतु—(संज्ञा, पु०, सं०) सूत । ताँत, तागा । ग्रह । संतान । फैलाव । मकरी का जाला । परम्परा ।**—काष्ट**-(संज्ञा, पु०) एक साधन जिसे जुलाहे ताने की सफ़ाई के लिए काम में लाते है ।**—कीट**-(संज्ञा, पु०) रेशम का कीड़ा । मकड़ी ।**—नाग**-(संज्ञा, पु०) विशाल घड़ियाल । **—नाभ**-(संज्ञा, पु०) मकड़ी ।**—निर्यास**-(संज्ञा, पु०) ताड़ का वृक्ष ।**—पर्व**-(संज्ञा, पु०) श्रावणी पूर्णिमा ।**—वर्द्धन**-(संज्ञा, पु०) विष्णु । शिव । विस्तार करने वाला ।**—वादक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सितार, सारंगी, वीणा आदि तार वाले बाजों का बजाने वाला, तन्त्री । **—वाद्य**-(संज्ञा, पु०) तार वाला बाजा ।**—वाय**-(संज्ञा, पु०, सं०) कोरी, जुलाहा, ताँती, कपड़े बुनने वाला कारीगर ।**—सार**-(संज्ञा, पु०) सुपारी का पेड़ ।

तंतुक—(संज्ञा, पु०, सं०) सरसों । साँप की जाति-विशेष । रस्सी ।

तंत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) डोरा, तागा । ताँत । वस्त्र । वंश का पालन-पोषण । प्रमाण । औषधि । निश्चित सिद्धान्त । मंत्र । कार्य्य । कारण । राजा के नौकर । राज्य-प्रबन्ध । सेना । धन । शासन । आधीनता । वंश । ग्रन्थ । [**तंत्र-मंत्र, तंत्र-शास्त्र, प्रजा-तंत्र** (यौ०)]

तंत्रण—(संज्ञा, पु०, सं०) हुकूमत, शासन । प्रबन्ध का काम ।

तंत्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सितार, वीणा आदि तारों के बाजे और उनके तार । रस्सी । देह की नसें । गुरिच । "वीणागता तंत्री सर्वाणि रागानि प्रकाश्यते"—[स्फुट] ।

तंदरा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तंद्रा] ऊँघ, उँघाई, थोड़ी बेहोशी, तंद्रा ।

तंदुरुस्त—(वि०, फ़ा०) स्वस्थ, नीरोग ।

तंदुरुस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) स्वास्थ्य, नीरोग होने की दशा या उसका भाव । "तंदुरुस्ती हजार न्यामत है ।"

तंदुल*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तंडुल] चावल ।

तंदूर, तंदूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तनूर] रोटी पकाने की भट्ठी ।

तंदूरी—(वि०, दे०) [हि० तंदूर] तंदूर में बना पदार्थ, रोटी आदि ।

तंदेही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० तनदिही] परिश्रम, प्रयत्न । उपाय, युक्ति । चेतावनी ।

तंद्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऊँघ, ऊँघाई, थोड़ी बेहोशी, मूर्छा । [**तंद्रित** (वि०)]

तंद्रालस—(वि०, सं०) तंद्रा की स्थिति को पहुँचाने वाले शैथिल्य-भाव से युक्त । "जब तंद्रालस संस्कृति है"—प्रसाद ।

तंद्रालु—(वि०, सं०) तंद्रारोगी, तंद्रित ।

तंद्रि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तंद्रा ।

तंद्रिक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का बुखार ।

तंद्रिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तंद्रा ।

तंद्रिल—(वि०, सं०) तंद्रावाला । 'आज इन तंद्रिल पलों में'—महा० ।

तंबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तंबान] चौड़ी मोहरी का पायजामा ।

तंबाकू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [पुर्त० टुबैको] एक पौधा जिसके पत्तों को लोग नशे के हेतु खाते, सूँघते और जला कर धुएँ के रूप में पीते हैं । [तमाखू, तमाकू (दे०)] सुरती (प्रान्ती०) ।

तंबिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गाय ।

तंबिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ताँब+इया प्रत्य०] ताँबा या पीतल का तसला ।

तंबियाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ताँबा] ताँबे के रंग या स्वाद का हो जाना ।

तंबीह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) चितावनी । शिक्षा, उपदेश, सिखावन ।

तंबू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तनना] खेमा, डेरा, शिविर, शामियाना ।

तंबूरची—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तंबूर+ची प्रत्य०] तंबूरा बजाने वाला ।

तंबूर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रकार का ढोल । —ची–(संज्ञा, पु०) तंबूर बजाने वाला ।

तंबूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तानपूरा] एक बाजा, तँबूरा ।

तंबूल, तंबोल*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ताम्बूल] पान, पान का बीड़ा ।

तंबोली—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तंबोल] पान बेचने वाला, बरई, तमोली । तँबोली (ग्रा०) । [**तंबोलिन** (स्त्री०)]

तंभ, तंभन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तंभ] रोकने की क्रिया । शृंगार रस में एक संचारी भाव, स्तम्भ (का०) ।

तअज्जुब—(संज्ञा, पु०, अ०) देखिए 'ताज्जुब' आश्चर्य्य, अचंभा । [अचरज (दे०)]

तअल्लुक—(संज्ञा, पु०, अ०) लगाव, संबंध ।

तअल्लुका—(संज्ञा, पु०, अ०) बड़ा इलाका, बहुत गाँवों की जमींदारी ।—**दार**-(संज्ञा, पु०, अ०) बड़ा जमींदार, इलाकेदार, तअल्लुके का स्वामी । [**तअल्लुकेदारी** (संज्ञा, स्त्री०)]

तअस्सुब—(संज्ञा, पु०, अ०) जाति या धर्म्म-सम्बन्धी पक्षपात ।

तइस, तइसा†—(वि०, दे०) [हि० तैसा] वैसा, तैसा । [**तैसो** (ब्र०)] । [(विलो०) **जइस**]

तई, ताई*—(प्रत्य० दे०, हि०) से, समान, प्रति, लिए । (अव्य०) [सं० तावत] हेतु, लिए । (संज्ञा, स्त्री०) सीमा, हद "बात चतुरन के ताई"—गिरि० ।

तई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तवा का स्त्री०] थाली-सी छिछली कड़ाही । (सर्व०, दे०) उतने ही, तितने ।

तउ, तऊ*†—(अव्य, दे०) [हि० तब+ऊ प्रत्यय] तौहू, तिस पर भी, तो भी, तथापि । "भये पुराने बक तऊ सरवर निपट कुचाल"—वृं० ।

तए—(अव्य०, दे०) तब। (वि०, दे०) तपे हुए।

तक—(अव्य०, दे०) [सं० अंत+क] पर्य्यंत, लौं (अ०)। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) ताक या टकटकी।

तक़दमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० तख़मीना] तख़मीना, अंदाजा, आकूत।

तक़दीर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) भाग्य, प्रारब्ध। [**तकदीर आजमाइश** (यौ०)]—**वर**—(वि०) [अ० तकदीर+वर फ़ा०] भाग्यवान्, भाग्यशाली।

तकन, तकनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताकना] अवलोकन, दृष्टि।

तकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० ताकना] निहारना। टकटकी लगाना। मौका देखना। देखना। शरण लेना। दृढ़ निश्चय करना। "श्रास सो तनु तृषित भो हरि तकत आनन तोर"—सूर।

तकमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [तु० तमगा] पदक। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० तुकमा] घुंडी फँसाने का फंदा। [तसमा (दे०)]।

तकमील—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पूर्णता, समाप्ति।

तकरार—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) किसी बात का बार-बार कथन। विवाद। हुज्जत, झगड़ा।

तकरारी—(वि०, दे०) [अ० तकरार+ई फ़ा०] हुज्जती, झगड़ालू।

तक़रीर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बातचीत। भाषण, वक्तृता।

तकला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तर्कु] टेकुआ, तकुला, रस्सी बनाने की टिकुरी। [**तकली** (अल्पा० स्त्री०)]।

तकलीफ—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दुख, क्लेश, कष्ट, विपत्ति। [**तकलीफदेह** (वि०)]

तकल्लुफ़—(संज्ञा, पु०, अ०) सिर्फ दिखाने के लिए दुःख सह कर किसी कार्य को करने की अंगीकृति। शिष्टाचार का अतिरेक। "लखनऊ का यह तकल्लुफ आप ने पाया कहाँ ?"

तकवाहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ताकना] ताकने वाला। रक्षक, चौकीदार। [**तकवाही, तिकवाही**—(संज्ञा, स्त्री०) पहरा।]

तकसीम—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बटाई, विभाजन।

तकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताकना+ई प्रत्य०] ताकने की क्रिया का भाव। रक्षा। [**तकैय्या** (वि०, दे०)]।

तकाजा—(संज्ञा, पु०, अ०) ऋणी से अपने धन को माँगने का कार्य। किसी से अपनी वस्तु माँगना, [तगादा (दे०)]। किसी से उसके स्वीकृत काम के करने को फिर कहना। उत्तेजना, प्रेरणा रूप। "अन्तर्यामी स्वामी तुमतें कहा तकाजा कीजै"—[स्फुट]।

तकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ताकना का प्रेरणा० रूप] किसी को ताकने के काम में लगाना, दिखाना। रक्षा कराना।

तकावी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) किसानों की सहायता के लिए सरकार-द्वारा उधार दिया गया रुपया। "मिली तकावी आधा लैगे कानूगो पटवारी।"

तकिया—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उसीसा, मसनद, गिड्आ। विश्राम-स्थान। आश्रय, सहारा। फकीरों की कुटी। "तकिया कीनखाब की लागि"—[आल्हा०]।—**कलाम**—(संज्ञा, पु०, यौ०, अ०) सखुनतकिया, वे व्यर्थ शब्द जो प्रायः बात करने में बीच-बीच में बोले जाते हैं।

तकुआ, तकुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तकला] चरखे के अग्र भाग में लगाई गई लोहे की पतली नोकीली सलाई, जिसके द्वारा सूत कतता और लिपटता जाता है। [तकला, टेकुआ (दे०)]

तक्र—(संज्ञा, पु०, सं०) मट्ठा, छाँछ। "तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः"। "तक्रं नरोचतेऽस्माकं दुग्धंच मधुरायते"—[स्फुट]।

तक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) भरत-पुत्र, रामचन्द्र के भतीजे।—**शिला**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्राचीन नगर जो भरत जी के पुत्र तक्ष की राजधानी थी, अब भूमि खोद कर निकाला गया है। परीक्षित के पुत्र जन्मेजय ने यहीं पर सर्पयज्ञ किया था।

तक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) आठ नागों में एक जिसने राजा परीक्षित को काटा था। साँप, नाग। एक अनार्य जाति। बढ़ई। विश्वकर्मा। एक नीच जाति। सूत्रधार।

तख़फ़ीफ़—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कमी। संक्षेप।

तख़मीनन्—(क्रि० वि०, अ०) अंदाज या अनुमान से।

तख़मीना—(संज्ञा, पु०, अ०) अनुमान, अटकल, अंदाज।

तखड़ी, तखरी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) पलड़ा, पल्ला। तराजू।

तखान—(संज्ञा, पु॰, दे॰) बढ़ई, लकड़ी काटने वाला। तक्षक।

तख्त, तखत—(संज्ञा, पु॰, फ़ा॰, दे॰) सिंहासन, राजगद्दी। चौकी।—**ताऊस**-(संज्ञा, पु॰) शाहजहाँ बादशाह का राजसिंहासन।—**नशीन**-(वि॰, यौ॰, फ़ा॰) राजगद्दीप्राप्त, राज-सिंहासन पर बैठा हुआ। —**पोश**-(संज्ञा, पु॰, यौ॰, फ़ा॰) तख्त पर का बिछौना।—**बन्दी**-(संज्ञा, स्त्री॰, यौ॰, फ़ा॰) तख्तों से बनी हुई, जैसे दीवाल।

तख्ता—(संज्ञा, पु॰, फ़ा॰) बड़ा पटरा, पल्ला। लकड़ी को बड़ी चौकी। अरथी, टिखटी। कागज का ताव। बाग की कियारी। [तखता (दे॰)]। **मुहा॰—उलटना**-बने बनाये काम को बिगाड़ देना।—**हो जाना**-अकड़ जाना।

तख्ती—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [फ़ा॰ तख्त] छोटा तख्ता। विद्यार्थियों के लिखने को काठ की पट्टी। [पाटी (दे॰)]।

तगड़ा—(वि॰, दे॰) [हि॰ तन+कड़ा] हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, बलवान। [**तगड़ी** (स्त्री॰)]। (संज्ञा, स्त्री॰, प्रान्ती॰) करधनी।

तगण—(संज्ञा, पु॰, सं॰) दो गुरु और एक लघु का एक वार्णिक गण, ऽऽ।।

तगदमा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [अ॰ तखमीना] तखमीना, अंदाज, अनुमान।

तगमा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [तु॰ तमगा] तमगा। [तकमा (दे॰)], पदक।

तगर—(संज्ञा, पु॰, स॰) सुगंधित लकड़ी वाला पेड़ (औष॰)। "लौंग औ उसीर तज-पत्रज तगर सोंठ"—कुंज वि॰।

तगला—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [हि॰ तकला] चरखे का तकुआ।

तगा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [हि॰ तागा] डोर, धागा, तागा।

तगाई—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [हि॰ तागना] तागा डालने या तागने का भाव, काम या मजदूरी।

तगादा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [अ॰ तकाजा] माँग, तकाजा।

तगाना—(क्रि॰ स॰, दे॰) [हि॰ तागना] दूर-दूर पर मोटी सिलाई कराना।

तगार, तगारी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) चूना-गारा के बनाने का स्थान। ढोने का तसला। ओखली गाड़ने का गड्ढा।

तगीर*—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [अ॰ तगय्युर] परिवर्तन, बदल या उलट-फेर।

तगीरी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [हि॰ तगीर] उलट-फेर, हेर-फेर, परिवर्तन।

तचना—(क्रि॰ अ॰, दे॰) [सं॰ तपन] गर्म, तप्त या संतप्त होना। कष्ट सहना। प्रताप दिखाना। जलना। तप या तपस्या करना। कुकर्मों में व्यय करना। कुपित होना। "ज्यौं तचि तचि मध्यान्ह लौं"—वृं॰।

तचा†—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ त्वचा] चमड़ा।

तचाना—(क्रि॰ स॰, दे॰) [हि॰ तपाना] तपाना।

तच्छन, तच्छिन*—(क्रि॰ वि॰, दे॰) [सं॰ तत्क्षण] उसी समय, तत्काल, तत्क्षण। ताछन, ताच्छिन (ग्रा॰)।

तज—(संज्ञा, पु॰) [सं॰ त्वच] उस पेड़ की बारीक छाल जिसका पत्ता तेजपात, मोटी छाल दालचीनी, फूल जावित्री और फल जायफल है।

तजकिरा—(संज्ञा, पु॰, अ॰) बात-चीत, चर्चा।

तजन*†—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ त्यजन] त्याग, अग्रहण। (संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ तर्जन] चाबुक।

तजना—(क्रि॰ स॰, दे॰) [सं॰ त्यजन] छोड़ना, त्यागना। "तजहु तौ कहा बसाय"—[रामा॰]।

तजि—(क्रि॰ स॰, पू॰ का॰, दे॰) [हि॰ तजना] त्याग या छोड़ कर।

तजरबा—(संज्ञा, पु॰, अ॰) अनुभव। ज्ञानार्थ परीक्षा।—**कार**-(संज्ञा, पु॰, यौ॰) [अ॰ तजरबा+कार फ़ा॰] परीक्षक। अनुभवी।

तजबीज—(संज्ञा, स्त्री॰, अ॰) निर्णय। राय, सम्मति। प्रबन्ध।

तज्ञ—(वि॰, सं॰) ज्ञानी, समझदार, तत्वज्ञ।

तज्यो—(क्रि॰ स॰, दे॰, ब्र॰) [हि॰ तजना] त्यागा, छोड़ा। "तज्यो पिता प्रह्लाद"—बिहारी।

तटंक—(संज्ञा, पु॰, सं॰) कान का एक आभूषण, कर्णफूल।

तट—(संज्ञा, पु॰, सं॰) किनारा, कूल, तीर। (क्रि॰ वि॰, दे॰) पास, निकट, समीप।

तटक—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ तटंक] ढार, करनफूल, तरकी, तरौना (प्रान्ती॰) एक मात्रिक छन्द।

तटका—(वि०, दे०) [सं० तत्काल] हाल का, ताजा, तत्काल या तुरंत का, नया, कोरा ।

तटनी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० तटिनी] किनारे वाली नदी । "प्रगटी तटनी जो ह्वै अघ गाढ़े"—कवि० ।

तटस्थ—(वि०, सं०) अलग रहने वाला, पक्षपात-रहित, उदासीन, मध्यस्थ । [न्यूट्रल]

तटस्थता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तटस्थ या अलग होने का भाव । [न्यूट्रैलिटी]

तटस्थीकरण—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तटस्थ + ईकरण] तटस्थ होने या करने का भाव । किसी गुण को अलग करके उसके प्रभाव को नष्ट करने का भाव । [न्यूट्रलाइजेशन] ।

तटाक—(संज्ञा, पु०) [सं० तड़ाग] तालाब, सरोवर, तड़ाग ।

तटिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी, सरिता । "तटिनी तट छोड़ि सुमन्तहि राम"—स्फुट ।

तटी—(सज्ञा, स्त्री०) [हि० तट] नदी । घाटी, तराई । धुनि, हठ, इच्छा । "सब जोगी जतीन को छूटी तटी"—[रामा०] ।

तड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तट] आपस का बाँट, पक्ष । (संज्ञा, पु०, अनु०) थप्पड़ मारने अथवा किसी पदार्थ को बड़े वेग से पटकने का शब्द । आमद की शक्ल ।

तड़क—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तड़कना] चमकने, तड़कने या टूटने का भाव । तड़कने से चिह्नित हो जाना ।—**भड़क**-(यौ०) चमक-दमक, शान-शौकत ।

तड़कना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० तड़] फूटना या टूटना, चटकना । कड़ा शब्द करना । क्रोधित होना, बिगड़ना, झुँझलाना । कूदना, फाँदना, उछलना । चमकना (बिजली) ।

तड़का—(संज्ञा, पु०, दे०) भोर, सबेरा ।

तड़काना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तड़कना] किसी पदार्थ के तोड़ने में तड़ का शब्द उत्पन्न करना । तोड़ना । चटकाना । क्रोधित करना ।

तड़के—(संज्ञा, पु०, दे०) सबेरे, प्रातःकाल, (क्रि० अ०, दे०) चमके । टूटे । छौंक, बघार ।

तड़क्का—(क्रि० वि०, दे०) [हि० तड़ाका] तड़तड़ शब्द । तड़का, सबेरा ।

तड़तड़ाना—(क्रि० अ०, अनु०) तड़-तड़ शब्द होना । (क्रि० स०, दे०) तड़-तड़ शब्द करना । हुक्का पीना ।

तड़प—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तड़पना] तड़पने का भाव । चमक, भड़क । (संज्ञा, पु०) एक टाँगने की लैम्प ।

तड़पना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) छटपटाना । क्रोधित होना । तिलमिलाना, व्याकुल होना । गरजना । "लगी तोप तड़पन तेहि औसर पर्यो निसानन घाऊ"—रघु० ।

तड़पाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तड़पना का प्रेरणा० रूप] दूसरे को तड़पने में लगा देना, कष्ट दे कर व्याकुल करना । चमकाना ।

तड़पीला—(वि०, दे०) [हि० तड़पना] प्रभावशाली । फुर्तीला, चटपटिया ।

तड़फ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तड़प] तड़प, व्याकुलता, घबराहट ।

तड़फड़ाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तड़प] तड़पना, व्याकुल होना, छटपटाना, तरफराना (ग्रा०) ।

तड़फड़ाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तड़पना] व्याकुलता, घबराहट । धड़क, तड़क । [**तड़फड़ी** (संज्ञा, स्त्री०)]

तड़फना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तड़पना] छटपटाना, घबराना ।

तड़फाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तड़पाना] व्याकुल करना ।

तड़बन्दी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० तड़ + बन्दी फ़ा०] स्वजाति या वंश का विभाजन ।

तड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) द्वीप, टापू, दोआब ।

तड़ाक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) तड़ से बोलने का शब्द । (क्रि० वि०, दे०) शीघ्र, तुरन्त, तत्काल, चटपट, झटपट ।—**पड़ाक**-तुरन्त, तत्काल, झटपट ।

तड़ाका—(संज्ञा, पु०, अनु०) तड़-तड़ शब्द होना । (क्रि० वि०) झटपट, चटपट । (संज्ञा, पु०, ग्रा०) कड़ी प्यास । थप्पड़ । "टूटे धनु छायो है तड़ाका सब्द लोकन मैं"—[स्फुट] ।

तड़ाग—(संज्ञा, पु०, सं०) सरोवर, ताल, तालाब । "बाग तड़ाग विलोकि प्रभु"—[रामा०] ।

तड़ाघात—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० तड़ + सं० आघात) ऊपर उठी हाथी की सूँड़ की चोट ।

तड़ाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) पानी की तीव्र धारा, तरेड़ा । तिरखा, कड़ी प्यास ।

तड़ाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ताड़ना का प्रेरणा० रूप] किसी दूसरे को तोड़ने में लगाना ।

तड़ातड़—(क्रि० वि०, दे०, अनु०) तड़तड़ की आवाज के साथ ।**—जवाब देना**-बेधड़क उत्तर देना ।**—पड़ना**-निरन्तर मार पड़ना ।

तड़ाया—(संज्ञा, पु०, दे०) रसिकता, छैलपन, चटक-मटक, तड़क-भड़क ।

तड़ावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ताड़ना] ऊपरी तड़क-भड़क, छल, धोखा । कड़ी प्यास ।

तड़ित, तड़िता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तडित्] बिजली । "घनं घनान्ते तडितां गुणैरिव"—माघ० । "तड़ित की मुस्कान में वह कौन है ?"—मह०

तड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) समुद्र-तट की वायु । हाथ का गहना ।

तड़िल्लता—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० तडित् + लता] बिजली के कौंधते समय दिखायी पड़ने वाली बहुत-सी लहरें ।

तड़िल्लेखा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिजली की लम्बी लकीर ।

तड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० तड़ते] थपेड़ा, चपत, धौल । छल, बहाना, धोखा ।

तत—(संज्ञा, पु०) पवन । पिता । पुत्र । विस्तार । सितार आदि तार वाले बाजे । *†(वि०, दे०) [सं० तप्त] उष्ण । *† (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तत्व] सारांश । तत्व ।

तततायेई—(संज्ञा, स्त्री०, दे० अनु०) नाच के बोल ।

ततबाउ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तंतुवाय] कोरी, जुलाहा । (यौ०) गर्म हवा ।

ततबीर*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० तदबीर] तदबीर, उपाय, युक्ति । "करौ रे जियरा वा दिन की ततबीर ।"

ततसार*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० तप्त शाला] आग में तपाने या आँच देने की जगह, तापशाला ।

तताई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तप्त] गरमी, उष्णता, तत्ता (ग्रा०) ।

ततारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० तप्त] गरम पानी से तरेरा देकर धोना ।

तति, तती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाँति, समूह, श्रेणी । "अलिकदम्बक अम्बुरुहाम् ततिः" । "वृतसीततीश्च"—माघ० ।

ततैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तिक्त] बर्रं, भिड़ ।

तत्—(संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर, ब्रह्म । वायु । (सर्व०, सं०) वह ।**—काल**-(अव्य०) उसी समय, उसी क्षण ।**—०धी**-(वि०, सं०) जिसकी बुद्धि तत्काल क्रियाशील हो सके ।**—कालीन**-(वि०) उसी समय से सम्बन्धित ।**—क्षण**-(अव्य०) तत्काल, उसी समय । "कानों में इस भाँति तत्क्षण वह आकाश-वाणी पड़ी"—मधुपुरी ।**—(द्)देशीय**-(वि०) उस देश से सम्बन्धित ।**—पदार्थ**-(संज्ञा, पु०) ईश्वर ।**—पर**-(वि०) उद्योगशील, कार्य-निमग्न । सन्नद्ध, उद्यत, चतुर, निपुण ।**—परायण**-(वि०) किसी एक के प्रति अनुराग रखने वाला ।**—पुरुष**-(संज्ञा, पु०) परमात्मा । एकरुद्र । समास का एक भेद (व्या०) ।**—(द्) दृश**-(वि०) उससे मिलता-जुलता सा, एक-सा ।**—सम्बन्धी**-(वि०, सं०) उससे सम्बन्धित, उससे सम्बन्ध रखने वाली । [कनेक्टेड देयरविद) ।

तत्त—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तत्व] सारांश । तत्व ।

तत्ता*—(वि०, दे०) [सं० तप्त] उष्ण, गरम ।

तत्ताथंबा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० तत्ता= गरम + थामना] दमदिलासा, बहलावा । बीच-बिचाव, शान्ति-स्थापन ।

तत्थ†—(वि०, दे०) [सं० तत्व] मुख्य, प्रधान । (संज्ञा, पु०) बल, शक्ति । तत्व ।

तत्परता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सन्नद्धता । दक्षता, चतुरता, मुस्तैदी ।

तत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) सार । विश्व का मूल कारण, पाँच तत्व—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश । [एलिमेंट्स] । भगवान, ब्रह्म । सारांश । [मैटर, सबस्टेंस] । "तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा'—[रामा०] ।**—चिंतन**-(संज्ञा, पु०) [सं० तत्व + चिंतन] यथार्थ या वास्तविकता के सम्बन्ध में मनन या चिंतन । "और तब रहता कहाँ, अवकाश है तत्वचिंतन का"—दिनकर ।**—ज्ञ**-(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मज्ञानी, तत्वज्ञानी । दार्शनिक ।**—ज्ञान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान । जीव, ब्रह्म और प्रकृति का ज्ञान या बोध ।**—ज्ञानी**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्रह्मज्ञानी, आत्मज्ञानी । दार्शनिक । जीव, ब्रह्म, प्रकृति का यथार्थ ज्ञाता ।**—दर्शी**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्रह्मज्ञानी, आत्मज्ञानी, जीव, ब्रह्म, प्रकृति का ज्ञाता ।**—दृष्टि**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) ज्ञाननेत्र, दिव्य या सूक्ष्म दृष्टि ।**—वाद**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दर्शन-शास्त्र सम्बंधी विचार ।**—वादी**-(संज्ञा, पु०,

यौ०, सं०) तत्ववाद का ज्ञाता और उसका समर्थक। ठीक-ठीक बात करने वाला।—**विद्**–(संज्ञा, पु०, सं०) तत्वज्ञाता, तत्वज्ञानी, तत्व-वेत्ता।—**विद्या**, —**शास्त्र**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) दर्शन-शास्त्र। —**वेत्ता**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तत्वज्ञानी, दार्शनिक।

तत्वतः—(क्रि० वि०, सं०) तत्व की दृष्टि से, यथार्थरूप में। [सब्स्टैंशली]

तत्वता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ठीक-ठीक होने का भाव, यथार्थता, सारता, सत्यता।

तत्वावधान—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) परीक्षा, जाँच-पड़ताल। देख-रेख, निगरानी।

तत्वान्वेषण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) [सं० तत्व+अन्वेषण] यथार्थ या तत्व की खोज। "जो बुद्धिप्राण, करते चिन्तन, तत्वान्वेषण, सत्यालोचन"—निराला।

तत्र—(क्रि० वि०, हिं०) वहाँ, उस स्थान पर। **यत्र**—,इधर-उधर, यहाँ-वहाँ।

तत्रभवान—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) माननीय, पूज्य, श्रीमान्।

तत्रापि—(अव्य०, सं०, यौ०) तथापि, तिस पर भी। वहाँ भी। तब भी।

तत्सम—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) संस्कृत का वह शब्द जो भाषा में भी शुद्ध ही प्रयुक्त हो।

तथा, तथैव—(अव्य०, सं०) उसी प्रकार, वैसा ही।—**कथित**–(वि०, सं०) नाम भर का, वास्तविकता से दूर। जैसा अन्य लोग कहते हैं, वास्तव में वैसा नहीं। [सो-कॉल्ड]।—**भद्र**–(संज्ञा, पु०) नागार्जुन के एक शिष्य।—**राज**–(संज्ञा, पु०) बुद्ध का एक नाम।—**विध**–(वि०) उस प्रकार की विधि से युक्त।

तथागत—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गौतम बुद्ध।

तथापि—(अव्य०, सं०, यौ०) तो भी, तब भी।

तथास्तु—(अव्य० सं०, यौ०) ऐसा ही हो, एवमस्तु।

तथ्य—(वि०, सं०) यथार्थ, सत्य। [फैक्ट]। [**तथ्यता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)], [**तथ्यातथ्य** (यौ०)]

तद्—(वि०, सं०) वह, जो। † (क्रि० वि०) [सं० तदा] तब, उस वक्त।—**गता**–(वि०, सं०) उसमें गत, समाविष्ट, तल्लीन। "जाना होगा इस विषय को तद्गता हो उसी ने"—हरिऔध।—**गत**–(वि०, यौ०, सं०) उसके बीच में या व्याप्त। उससे सम्बन्ध रखने वाला।—**वत्**–(वि०, सं०) उसी के समान, तत्तुल्य, तत्सदृश, तत्समान।

तदंतर, तदनन्तर—(क्रि० वि०, सं०, यौ०) उसके पीछे या उपरान्त।

तदनुरूप—(वि०, सं०, यौ०) उसी के समान या उसी रूप का।

तदनुसार, तदनुकूल—(वि०, सं०, यौ०) उसके अनुसार या अनुकूल।

तदपि—(अव्य०, सं०, यौ०) तो, तिस पर भी [(विलो०) **यदपि**]। "तदपि दर्शक-लोचन-लालसा"—हरिऔध।

तदबीर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) युक्ति, उपाय।

तदर्थ—(क्रि० वि०, सं०, यौ०) उसके लिए। (वि०) किसी खास काम के लिए बना हुआ।—**समिति**–(संज्ञा, स्त्री०) किसी विशेष कर्म के लिए बनी हुई विशेष समिति। [एड हॉक]

तदा—(क्रि० वि०, सं०) उस वक्त, तब।

तदाकार—(वि०, सं०, यौ०) वैसा ही, उसी आकार का, तन्मय, तद्रूप।

तदानीम—(अव्य, सं०) उस समय, उस काल।

तदारुक—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रबंध, पेशबंदी। सजा, दंड। जाँच।

तदीय—(सर्व०) [सं० तत+इयम्] उसका।

तदुक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) उसकी बात। "तदुक्तिः परिभाव्यच"—[सिद्धान्त०]।

तदुत्तम—(वि०, सं०, यौ०) उससे बढ़ कर।

तदुत्तर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) उसका जवाब।

तदुपरान्त—(क्रि० वि०, सं०, यौ०) उसके बाद, उसके पीछे, तत्पश्चात्।

तदुपरि—(अव्य०, सं०, यौ०) उसके ऊपर।

तदेकचित्त—(वि०, सं०, यौ०) उसके समान स्वभाव का। उसका प्रेमी, अनुरक्त, अनुवर्ती।

तदेव—(अव्य०, सं०, यौ०) वही।

तद्गुण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक अलंकार, जिसमें कोई वस्तु अपनी समीपवर्ती अन्य वस्तु का गुण ग्रहण करती है। उसी का गुण।

तद्धन—(वि०, सं०, यौ०) वही धन, उतना ही धन। कंजूस, सूम।

तद्धित—(संज्ञा, पु०, सं०) संज्ञाओं में प्रत्यय लगाकर संज्ञाएँ बनाने का विधान (व्या०), जैसे—पुत्र से पौत्र। (यौ०) उसका हित।

तद्भव—(संज्ञा, पु०, सं०) वह शब्द जिसके, तत्सम संस्कृत शब्द के स्थान में, अपभ्रंश रूप भाषा में प्रचलित हों, जैसे—कपाट का किवाड़।

तद्यपि—(अव्य, सं०] तथापि, तो भी ।

तद्रूप—(वि०, सं०, यौ०) सदृश, समान । रूपकालंकार का एक भेद ।

तद्रूपता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) सादृश्य, समानता, समरूपता ।

तन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तनु] शरीर, गात, देह । "तन पुलकित मन परम उछाहू"—[रामा०] "पिय तन चितै भौंह करि बाँकी"—[रामा०] । मुहा०—**को लगाना**-शरीर की पूरी शक्ति का काम में लगाना ।—**बल**-(संज्ञा, पु०) शारीरिक बल । "तन-बल छोड़ मैं मनोबल से लड़ता ।"—दिनकर । —**मन मारना**-इन्द्रियों को वश में करना । (क्रि० वि०) ओर, तरफ । (वि०) तनिक, थोड़ा । —**त्राण**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० तनुत्राण] कवच, बख्तर, जिरह ।—**धर,—धारी**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० तनुधारी] शरीरधारी, जीव-जन्तु, देही ।—**पात**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० तनपात] मरना, देह का नाश ।—**मन से**-(अव्य०) पूर्ण रीति से, जी जान से।—**राग**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० तनुराग] शरीर में केसर, चन्दन आदि का लेप ।—**रुह**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तनुरूप] रोवाँ, रोम, तनरूह ।—**सुख**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०, हि०) फूलदार बढ़िया वस्त्र या कपड़ा । शरीर-सुख ।

तनक, तनकौ—(वि०, दे०) [सं० तनु] तनिक, थोड़ा, रंच । "तनक तनक तामैं खनक चुरीनि को"—देव० । "थिर तनक न होता है किसी पुष्प में भी"—हरिऔध ।

तनकऊ—(वि०, दे०) [सं० तनु=छोटा] छोटा, थोड़ा भी, तनिक भी ।

तनक़ीह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) फैसले की जरूरी बातों की जाँच, तहकीकात ।

तनख़ाह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० तनख्वाह] वेतन, तलब (ग्रा०), मासिक मजदूरी ।

तनगना, तिनगना†—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) अप्रसन्न या क्रोधित होना, चिढ़ या रूठ जाना, चिरकना ।

तनज़ेब—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) महीन और बढ़िया मलमल ।

तनज्जुल—(वि०, अ०) अवनत ।

तनज्जुली-(संज्ञा, स्त्री०) अवनति, कमी ।

तनतनाना—(क्रि० अ०, दे०) [अ० तनूतनः] शेखी या शान दिखाना । क्रोध करना ।

तनना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तन या तनु] सीधा खड़ा होना । अकड़ना, ऐंठना, घमंड से रूठना, शेखी दिखाना ।

तनमनस्क—(वि०, सं०) तन्मय, तल्लीन ।

तनय—(संज्ञा, पु०, सं०) लड़का, पुत्र, बेटा । "तनय ययातिहिं यौवन दयऊ"—[रामा०] ।

तनया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लड़की, पुत्री, बेटी । "तात जनक-तनया यह सोई"—[रामा०] ।

तनहा—(वि०, फ़ा०) एकाकी, अकेला । अकेले ।

तनहाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अकेलापन । एकान्त होना । "मयकशी का लुत्फ़ तनहाई में क्या कुछ भी नहीं" ।

तना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पेंड़ी, पेड़ का धड़ । (क्रि० वि०) [हि० तन] तरफ़, ओर । (क्रि० वि०) [हि० तनना] अकड़ा हुआ ।

तनाकु*†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० तनिक] तनिक, थोड़ा, तनिक, तनकु ।

तनाजा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बैर, झगड़ा ।

तनाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तानना का प्रेरणा० रूप] तनवाना ।

तनाव—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० तिनाव] डेरे की रस्सी । खिंचाव, फैलाव । "मानो गगन तम्बू तनो ताको विचित्र तनाव है" —भूषण ।

तनिक—(वि०, दे०) [सं० तन] थोड़ा-सा, कम । (क्रि० वि०) थोड़ा, कम, तनिकौ (ग्रा०) ।

तनिया†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तनो] कौपीन, लँगोटी । जाँघिया ।

तनिष्ठ—(संज्ञा, पु०, सं०) बहुत थोड़ा, अति अल्प, सूक्ष्म ।

तनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तानना] बंद, बंधन । कौपीन, लँगोटी । (क्रि० वि०, ग्रा०) तनिक । **तना—(तनना)**-विवाद, झगड़ा, लड़ाई ।

तनीयान्—(वि०, सं०) सूक्ष्मतर, अल्पतर, बहुत ही कम । थोड़ा या छोटा ।

तनु—(वि०, सं०) दुबला, पतला, क्षीण, सूक्ष्म । थोड़ा, कम । छोटा । सुन्दर । (संज्ञा, पु०) शरीर, देह ।—**ज**-(संज्ञा, पु०, सं०) लड़का, पुत्र, बेटा ।—**जा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लड़की, बेटी, पुत्री । "नहिं मानै कोऊ अनुजा तनुजा"—रामा०] ।—**त्राण**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अँगरखा । कवच ।—**धारी**-(वि०, सं०, यौ०)

शरीर या देहधारी, प्राणी। "कहौ सखी अस को तनुधारी"—[रामा०] ।—**मध्या, मध्यमा**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) वर्ण वृत्त । पतली कमर की स्त्री ।—**राग**—(संज्ञा, पु०, सं० यौ०,) देह पर लगाने का चन्दन, केसर आदि, अंगराग ।

तनुक—(क्रि० वि०, दे०) [सं० तनु] तनिक, थोड़ा। पतला। (संज्ञा, पु०) छोटा शरीर, देह ।

तनुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देह, शरीर। खाल ।

तनू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तनु] शरीर, देह, काया ।—**ज***—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तनुज] लड़का, बेटा, पुत्र ।—**जा**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तनुजा] लड़की, पुत्री, बेटी। "आई तजि हौं तो ताहि तरनि तनूजा-तरी"—पद्मा०। "तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये"।

तनूर—(संज्ञा, पु०) तंदूर।

तनेना—(वि०, दे०) [हिं० तनना+एना प्रत्य०] खिंचा या तना हुआ। टेढ़ा या तिरछा । अप्रसन्न, क्रोधित। [**तनेनी** (स्त्री०)]

तनै—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तनय] पुत्र, लड़का । "तनै जजातिहिं जोबन दयऊ"—[रामा०]

तनैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तनया] लड़की, पुत्री, कन्या।

तनोज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तनूज] रोवाँ, रोम। बेटा, पुत्र।

तनोरुह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तनुरुह] रोवाँ, रोम। "गोरी गोरे तन में तनोरुह सुहात ऐसे"—[स्फु०]।

तनोवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० तनना का प्रेरणा० रूप] तनाना, फैलाना।

तन्त—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तन्तु] संतान । कुटुंब। उपाय। औषधि। व्यवस्था। सुख-सिद्धि। [सं० तंत्र] तंत्र।

तन्तनाना—(क्रि० अ०, दे०) पिनपिनाना । तनना, भन्नाना, तेज पड़ना, क्रोध से बकना ।

तन्तनाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तन्तनाना] पिनपिनाहट। जलने की पीड़ा। तेजी।

तन्ति, तन्ती—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तन्तु] कोरी, जुलाहा। तारवाले बाजे ।

तन्तुना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तंतु] ततुना, तार (ग्रा०)।

तन्नाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० तनना] ऐंठना, खिंचना। अकड़ना, शेखी या शान दिखाना।

तन्नि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चक्रकुल्या, चित्र-पर्णी।

तन्नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तनिका] जोती। जिस रस्सी में तराजू के पल्ले लटकते हैं वह रस्सी। नाव। खोनचा रखने का मोढ़ा।

तन्मय—(वि०, सं०) मग्न, दत्तचित्त । तद्रूप, तदाकार। [तनमय (दे०)]।

तन्मयता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लिप्तता, मग्नता, लीनता, तदाकारता। तद्रूपता।

तन्मयी—(वि०, स्त्री०, सं०) तदाकार, तद्रूप, मग्न। तत्पर।

तन्मात्र—(संज्ञा, पु०, सं०) पंच-भूत ।

तन्मात्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाँच तत्व। (वि०, यौ०) उतना ही।

तन्मूलक—(वि०, सं०, यौ०) उसको उत्पन्न करने वाला, उसका मूल जिसमें है, तज्जनक।

तन्वंग—(वि०, सं०, यौ०) दुबला, कोमल अंग-वाला।

तन्वंगी—(वि०, सं०, यौ०) [सं० तनु+अंगी] सुन्दर देह वाली, कोमलांगी । "तन्वंगी कलहा-सिनी सुरसिका"—हरि०। दुबली। (संज्ञा, स्त्री०) शापिर्णी नामक लता।

तन्वी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्ण वृत्त। (वि०) दुबली-पतली, कोमलांगी स्त्री।

तपःपूत—(वि०, सं०) जो साधना करके पूर्ण-रूप से शुद्ध हो गया हो।

तपःसुत—(संज्ञा, पु०, सं०) युधिष्ठिर।

तपःस्थली—(संज्ञा, पु०, सं०) तप करने का स्थान-विशेष। काशी।

तप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तपस्] गरमी। नियम। ज्ञान। तपस्या। "यद् ज्ञानं तत् तपः"—सत्य०। "तपसोध्यजायत"—[वेद०]। "तपबल ब्रह्मा सृष्टि बनावत"—[रामा०]। [**तपलोक** (यौ०, दे०)], [**तपोलोक** (सं०)]

तपकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० टपकना] व्याकुल होना, तड़पना । धड़कना, उछलना। चूना, टपकना, गिरना।

तपती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सूर्य-पुत्री, यमुना ।

तपन, तपनि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ताप, जलन । सूर्य। सूर्य-कान्तमणि। ग्रीष्म ऋतु । गरमी। धूप। वियोगाग्नि ।

तपनांशु—(संज्ञा, पु०) [सं० तपन+अंशु] सूर्य की किरण। सूर्य।

तपना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तपन] गरमी का फैलना या ज्यादा होना । कष्ट सहन करना । प्रताप या प्रभाव दिखाना । आतंक फैलाना । तप करना । बुरा व्यय । " भीम सो तपत रसोई " —गिरि० ।

तपनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तपन] अलाव, कौड़ा । तपस्या ।

तपनीय—(संज्ञा, पु०, सं०) तपाने योग्य सोना, स्वर्ण । " शुद्धतपनीय संकाश " ।

तपश्चर्या—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तपस्या, तप ।

तपश्चरण—(संज्ञा, पु०, सं०) तप, तपस्या ।

तपस—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य । चंद्र । पक्षी ।

तपसा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तपस्या] तप, तपस्या । तापती नदी ।

तपसाली, तपशाली—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० तपःशालिन्] तपस्वी ।

तपसी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तपस्वी] तपस्वी । " धरि बाँधहु तपसी दोउ भाई "—[रामा०]

तपसोमूर्त्ति—(संज्ञा, पु०, सं०) बारहवें मन्वन्तर के एक तपस्वी ऋषि ।

तपस्क—(संज्ञा, पु०, सं०) तपस्वी, योगी ।

तपस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) फाल्गुन मास । अर्जुन । कुन्द फूल । तप । मनु के पुत्र ।

तपस्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तप, व्रत । " तपी तपस्यानाहिं "—कुंज० वि० । "ग्रीष्म चाहते बड़े तपस्या जग में"—[तारकवध]

तपस्विता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तपस्वी होने की दशा । " ब्राह्मणानां तपस्विता " ।

तपस्विनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तपस्वी की स्त्री । तपस्या करने वाली स्त्री । सती या पतिव्रता । कंगालिनी स्त्री, दीन दशा को प्राप्त स्त्री ।

तपस्वी—(संज्ञा, पु०, सं०) तपसी, तपस्या करने वाला ।

तपा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तप] तपसी, तपस्वी । **दस—**,(संज्ञा, पु०, दे०) जेठ के दस उष्ण दिन ।

तपाक—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जोश, तेजी, फुर्ती, वेग ।

तपात्यय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ग्रीष्मावसान, वर्षा या प्रावृट् काल ।

तपानल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तपस्या का तेज या प्रताप ।

तपाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तपना] गर्म करना । दुःख देना । जलाना ।

तपावंत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तप+वंत प्रत्य०] तपसी, तपस्वी ।

तपास—(संज्ञा, पु०, दे०) खोज, अनुसंधान, अन्वेषण । (स्त्री०, दे०) तापने या सेंकने की इच्छा ।

तपित—(वि०, सं०) तपा हुआ, गरम । दुःखित । दग्ध ।

तपिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तप] तपस्वी, तापसी । " जपिया तपिया बहुत हैं, सीलवंत कोउ एक ।"—कबीर ।

तपिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) गरमी, उष्णता, तपन, जलन ।

तपी—(संज्ञा, पु०, सं०) तपसी, तापस, तपस्वी । " जपी तपी त्यों गपी पुरुष को विद्या कबहुं न आवे "—[स्फुट]

तपेदिक—(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० तप+अ० दिक] क्षय रोग, राजयक्ष्मा । दिक । [टी० बी०]

तपेश्वर—(संज्ञा, पु०, हि०, यौ०) तपी, बड़ा तपस्वी । [**तपेश्वरी** (संज्ञा, स्त्री०)]

तपोधन, तपोधनी—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) बड़ा तपस्वी, जिसका केवल तप ही धन है ।

तपोनिधि—(संज्ञा, पु०, सं०) साधक, तपस्वी, धर्मनिष्ठ व्यक्ति ।

तपोबल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तप का बल । जिसके केवल तप ही का बल हो । [**तपोबली** (वि०)]

तपोभूमि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) तप करने की जगह, तप-स्थान, तपोवन, तपस्थली ।

तपोभ्रष्ट—(वि०, सं०, यौ०) जिसकी तपस्या भ्रष्ट हो गयी हो । "प्रियतमे, तपोभ्रष्ट मैं ? भला !"—मैथिली० ।

तपोमूर्ति—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तपस्या की मूर्ति, महा तपस्वी । परमेश्वर, तपमूर्ति ।

तपोरति—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तप-प्रेमी, तपस्वी, तपस्यानुरागी ।

तपोराशि—(संज्ञा, पु०, स०, यौ०) तपस्वी, बड़ा तपस्वी ।

तपोलोक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पृथ्वी से ऊपर छठवाँ लोक ।

तपोवन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तपस्या करने या तपस्वियों के निवास का जंगल ।

तपोवृद्ध—(वि०, सं०, यौ०) अधिक तपस्या के कारण तपस्वियों में श्रेष्ठ बड़ा तपस्वी ।

तप्त—(वि०, सं०) उष्ण, तपाया हुआ । दुःखी । कंगाल । दग्ध, संतप्त ।—**कुंड**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गरम पानी का कुंड ।—**कृच्छ्र**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पाप-नाशक एक व्रत (पु०) ।—**माष**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सत्यता दिखाने को एक शपथ ।—**मुद्रा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) चक्र, शंख आदि के गर्म छापे जो वैष्णव लोग अपने शरीर में छपवाते हैं ।

तप्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) गरमी पहुँचाने वाला या करने वाला ।

तप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ताप, गरमी ।

तप्प—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तप] तपस्या, "ब्रह्मा तप्पै तप्प सदासिव करै तप्प नित"—[स्फुट] ।

तप्पा—(संज्ञा, पु०, दे०) पुरवा, छोटा गाँव ।

तप्य—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव । (वि०) साधना करने योग्य, तपाने योग्य ।

तफरीह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रसन्नता । हँसी-दिल्लगी । सैर, घूमना, वायु-सेवन ।

तफ़रीहन—(क्रि० वि०, अ०) विनोदार्थ ।

तफ़सील—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) ब्यौरा, टीका, विस्तृत वर्णन ।

तफ़ावत—(संज्ञा, पु०, अ०) अन्तर, दूरी ।

तब—(अव्य, दे०) [सं० तदा] उस समय । इस कारण । (क्रि० वि०, दे०) तबै, तभी ।

तबक़—(संज्ञा, पु०, अ०) परत । लोक । वरक ।—**गर**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [अ० तबक+फ़ा० गर] सोने-चाँदी के वरक बनाने या बेचने वाला ।

तबका—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० तबक] खंड, भाग । परत । लोक । जन-समूह ।

तबकिया—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चाँदी-सोने के वरक बनाने या बेचने वाला ।

तबदील—(वि०, अ०) जो बदला गया हो, परिवर्तित । [**तबदीली** (संज्ञा, स्त्री०)]

तबर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) परसा, कुठार, तब्बर (ग्रा०) । "तेगो तबर तमंचा पाबंद ला के है सब" ।

तबर्रा—(संज्ञा, पु०, अ०) अली से पूर्व के तीन खलीफाओं को कोसने, धिक्कारने का कार्य । किसी के प्रति घृणा-भाव का व्यक्तीकरण ।

तबल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बड़ा ढोल । नगाड़ा, डंका । तबला, एक बाजा ।—**ची**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) तबला बजाने वाला, तबलिया ।

तबला—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) देखिए तबल ।

तबलिया—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) तबला बजाने वाला, तबलची ।

तबाशीर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तवक्षीर] वंशलोचन [औष०] ।

तबाह—(वि०, फ़ा०) नष्ट भ्रष्ट, बरबाद । [**तबाही** (संज्ञा, स्त्री०)]

तबीअत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) समझ । मन, चित्त, दिल, जी ।—**दार**-(वि०, अ०) [तबीअत+फ़ा० दार] उत्साही । रसिया (दे०), रसिक, प्रेमी । समझदार । **मुहा० किसी पर—आना**-प्रेम, स्नेह या आसक्ति होना ।—**फड़क उठना**-मन का उत्साहित या प्रसन्न हो जाना ।—**फिरना**-मन का हट जाना ।—**लगना**-मन लगना । ध्यान जमना ।

तबीब—(संज्ञा, पु०, अ०) हकीम, डाक्टर, वैद्य ।

तभी—(अव्य०, दे०) [हिं० तब+ही] उसी वक्त या समय । इसी कारण ।

तमंचा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पिस्तौल, छोटी बंदूक ।

तमःप्रभ—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक नरक ।

तम—(संज्ञा, पु०) [सं० तमस्] अंधेरा, अंधकार । राहु । बाराह । पाप । क्रोध । अज्ञान । कलंक । नरक । तमोगुण । "सखि जीत सत्व से तम को"—मैथिली० ।—**गुनी**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० तमोगुणी] मलिन प्रकृत वाला ।—**चर**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तमीचर] राक्षस । उल्लू । तमीचर ।—**चुर,—चूर,—चोर**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ताम्रचूड़] कुक्कुट, मुर्गा । "भोर भये बोले पुर तमचुर मुकुलित विपुल बिहंग"—प्राग० ।—**तोम**-(संज्ञा, पु०, सं०) अंधकार का समूह । "टल गया पाप पुंज तम तोम"—हरिऔध ।—**मय**-(वि०, दे०) अंधकारमय ।—**स्तूर्य**-अंधकार रूपी तुरही । "अस्तमित आज तमस्तूर्य"—निराला ।

तमक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० तमकना] जोश, तेजी, उद्वेग, क्रोध । (पू० का० क्रि० तमकि) । "तमकि ताकि तकि सिव-धनु धरहीं"—[रामा०] ।

तमकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) क्रोध दिखाना, त्योरी चढ़ाना, चिढ़ना ।

तमका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तमकना] बहुत गरमी या उष्णता । (सा० भू० अ०, क्रि०) क्रोधित हुआ । "सुनतहि तमकि उठी कैकेयी" —[रामा०] ।

तमगा—(संज्ञा, पु०, तु०) पदक, तकमा, [तगमा (दे०)]

तमतमाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ताम्र] क्रोध या धूप से मुख लाल हो जाना ।

तमता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तम का भाव, अँधेरा ।

तमस—(संज्ञा, पु०, सं०) अँधेरा । अज्ञान । पाप । तमसा नदी ।

तमसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) टौंस नदी । "प्रथम बास तमसा भयो "—[रामा०] ।

तमसावृत—(वि०) [सं० तमस+आवृत] अंधकार से घिरा हुआ ।

तमस्तति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अंधकार का समूह । घोर अंधकार ।

तमस्विनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अँधेरी रात्रि । हलदी ।

तमस्सुक—(संज्ञा, पु०, अ०) टीप । ऋण-पत्र, दस्तावेज ।

तमहीद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) भूमिका ।

तमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तमस्] राहु । (संज्ञा, स्त्री०) रात्रि । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० तमअ] लोभ ।

तमाकू, तमाखू—(संज्ञा, पु०, दे०) [पुर्त० टुबैको] एक नशीला पौधा जिसके पत्ते चूने से खाये, सूँघे, चिलम में पिये जाते और औषधि के काम में आते हैं, तम्बाकू ।

तमाचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तवानूचः] थप्पड़, थापर (ग्रा०) ।

तमादी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) किसी कार्य का निश्चित समय व्यतीत या टल जाने की स्थिति ।

तमाम—(वि०, अ०) सम्पूर्ण । समाप्त, खतम । **मुहा० काम—करना (होना)**—मार डालना (मरना) ।

तमामी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) एक रेशमी कपड़ा ।

तमारि, तमारी—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०). [हि० तम+अरि] सूर्य । "तूल लौं उड़ैहौं ताहि देखत तमारि के"—सरस ।—**जा**-(संज्ञा, स्त्री०) सूर्य की पुत्री, यमुना । "तमारिजा का तट पूर्ण हो गया ।"—हरिऔध ।

तमाल—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) एक पेड़ जिसके पत्ते तेजपात और छाल दालचीनी कहलाती है । 'तरनि-तनूजा-तट तमाल तरुवर बहु छाये"—हरिऔध ।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०) तमाल नामक पेड़ का पत्ता । एक सम्प्रदाय-विशेष का चिह्न ।

तमालक—(संज्ञा, पु०) तमाल, तेजपात । एक प्रकार का साग ।

तमालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ताम्रवल्ली नामक लता ।

तमालिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भू-आँवला । जिस भूमि पर तमाल नामक पेड़ों का बाहुल्य हो ।

तमाशबीन—(संज्ञा, पु०) [अ० तमाशः+फ़ा० बीन] तमाशा देखने वाला । वेश्यागामी । [**तमाशबीनी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

तमाशा, तमासा—(संज्ञा, पु०, अ०) अनोखा दृश्य । मन बहलाने वाली बात । **मुहा०—बनाना**—अनोखा या साधारण या मनोरंजक समझना । **घर फूँक—देखना**—धन की बर्बादी करना ।

तमिल—(संज्ञा, स्त्री०) दक्षिण-पूर्वी मद्रास प्रान्त की बोली-विशेष का नाम जो द्रविड़ भाषा की एक शाखा है ।

तमिस्र—(संज्ञा, पु०, सं०) अँधेरा । क्रोध ।

तमिस्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात्रि ।

तमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात्रि ।—**चर**-(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस । चन्द्रमा ।

तमीज़—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) विवेक, विचार, ज्ञान, बुद्धि, लियाकत, कायदा ।

तमीश—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० तमी+ईश] चन्द्रमा । [तमीस (दे०)]

तमोगुण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तीन गुणों में से एक, इसकी विशेषता है आलस्य, नीच-भावना, चोरी, ठगी, विलासिता आदि ।

तमोगुणी—(वि०, सं०, यौ०) तमोगुण-युक्त, अहंकारी, क्रोधी ।

तमोघ्न—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अंधकार-नाशक तत्व अग्नि । सूर्य । चन्द्रमा । विष्णु । ब्रह्मा । शिव । दीपक । ज्ञान । गुरु । (वि०) जिससे अंधकार का निवारण हो ।

तमोज्योति—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जुगनू, खद्योत ।

तमोनुद—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देखिए तमोघ्न ।
तमोपहा—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देखिए तमोघ्न ।
तमोमय—(वि०, सं०, यौ०) तमोगुणी, अज्ञानी, मूर्ख, क्रोधी । पाप-प्रकृति । अंधकार-युक्त ।
तमोमयी—(वि०, सं०, यौ०) अंधकार से युक्त, अंधकारमय । "तमोमयी सी तनय-तमारि को"—हरिऔध ।
तमोर, तमोल†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ताम्बूल] पान ।
तमोरी, तमोली—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ताम्बोली] तम्बोली, पान बेचने वाला, बरई ।
तमोरिन, तमोलिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ताम्बूलिनी] तम्बोलिन । पान बेचने वाले की स्त्री । पान बेचने वाली ।
तमोहर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देखिए तमोघ्न ।
तय—(वि०, अ०) पूरा, ठीक या समाप्त किया हुआ । निर्णीत, निश्चित ।
तयना*‡—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० तपना] तपना, गर्म या दुखी होना ।
तयार†*—(वि०, दे०) [अ० तैयार] प्रस्तुत, तत्पर, ठीक, दुरुस्त । आमादा, तैयार ।
तरंग—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पानी की लहर, मौज । स्वरों का उतार-चढ़ाव । चित्त की उमंग । [**तरंगी** (वि०)]।—**माला**-(संज्ञा, स्त्री०) लहरों की पंक्ति । "तरंगमाला कुलिता कलिंदजा"—हरिऔध ।—**वती**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी, सरिता ।
तरंगाकुल—(वि०, सं०, यौ०) [तरंग+आकुल] तरंगों से जो चंचल हो । "मध्य तरंगाकुल सागर" —निराला ।
तरंगाघात—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० तरङ्ग+आघात] लहरों की चोट । "उत्ताल-तरङ्गाघात-प्रलयघन-गर्जन जलधि प्रबल में"—निराला ।
तरंगायित—(वि०, सं०) तरङ्गयुक्त ।
तरंगिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी, सरिता ।
तरंगित—(वि०, सं०) लहराता हुआ, हिलोरें भरता या मौजें मारता हुआ । "था बसन्त का हृदय तरंगित—रा० न० त्रि० ।
तरंगी—(वि०, दे०) [सं० तरंगिन] लहर या तरङ्ग-युक्त, हिलोर या मौज वाला । दिलचला, मन का मौजी, उमंगी । [**तरंगिणी** (स्त्री०)] "परम तरङ्गी भूत सब"—[रामा०] ।
तर—(वि०, फ़ा०) आर्द्र, गीला, भीगा । ठंडा । हरा । धनी । (क्रि० वि०, दे०) [सं० तल] तले, नीचे । (प्रत्य० सं०) आधिक्य-वाचक, जैसे, लघु-तर ।
तरई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तार] तरइया (ग्रा०), तारा, छोटा तारा । (क्रि० अ०) [दे० तरना] पार हो । तर जावे, मोक्ष पावे । "राम कहत भव-सागर तरई ।" [स्फुट] । [**तरैया** (वि०, दे०)]
तरक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तड़कना] तड़क । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तर्क] अज्ञात विषय के ज्ञानार्थ किया हुआ प्रश्न । प्रतिपादन-योग्य प्रश्न । सोच-विचार । "तत्व ज्ञानार्थमूहस्तर्कः"—[न्या० द०] ।
तरकऊ—(अव्य, दे०) तर्क, विचार । रोष ।
तरकना†* —(क्रि० अ०, दे०) [हिं० तड़कना] तड़-कना, उछलना, कूदना, फाँदना । (क्रि० अ०) [सं० तर्क] प्रश्न करना, पूछना । सोच-विचार करना । (संज्ञा, स्त्री०) तर्क-शक्ति ।
तरकश, तरकस—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) तूणीर, भाथा, बाण रखने का चोंगा ।
तरकशी, तरकसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० तर्कश] छोटा तूणीर या भाथा ।
तरका—(संज्ञा, पु०, अ०) विरासत, मृतक व्यक्ति का छोड़ा हुआ माल जो उसके वारिस को मिले ।
तरकारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० तरः=सब्जी +कारी] शाक, भाजी । एक वनौषधि । "तर-कारी-सिगु-पंचोषण-गुणदयिता"—[वैद्य जी०] ।
तरकि, तरकी—(वि०, दे०) [सं० तर्किन] तर्क करने वाला, तर्क-शास्त्री । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० ताटंकी] करनफूल, तरौनी, तड़की, तरकी (प्रान्ती०) ।
तरकीब—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बनावट । युक्ति, ढङ्ग, उपाय ।
तरकुल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तड़] ताड़ का पेड़ ।
तरकुली—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० ताटंकी] करनफूल, तरकी, तरौनी । "नील निचोल तरकुली कानन" —हरिऔध ।
तरक्की—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) उन्नति, बढ़ती ।
तरक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) बाघ की एक छोटी जाति ।
तरखा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तरङ्ग] नदी आदि की तीक्ष्ण, वेगवान धारा ।
तरखान—(संज्ञा, पु०) [सं० तक्षण] बढ़ई ।

तरगुलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अन्न आदि भरने का एक बहुत छिछला पात्र।

तरछाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तिरछा] तिरछी आँख से इशारा करना, कनखी (ग्रा०)।

तरजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तर्जन] चमकना। क्रोधित होना। डाँटना, फटकारना, झिड़कना, बिगड़ना, बकना। "तब हनुमान विटप गहि तरजा"—[रामा०]। कूदना, उछलना। "भिरे उभौ बाली अति तरजा"—[रामा०]। "तरजि गई ती फेरि तरजन लागीरी"—पद्मा०।

तरजनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तर्जनी] अँगूठे के समीप वाली अँगुली। "जो तरजनी देखि मरि जाहीं"—[रामा०]।

तरजुमा—(संज्ञा, पु०, अ०) उल्था, भाषांतर, अनुवाद।

तरण—(संज्ञा, पु०, सं०) नदी आदि से तैर कर पार होने का भाव। मोक्ष।

तरणि—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) उद्धार। निर्वाह। निस्तार। सूर्य। "तिमिर तरुण तरणिहि सक गिलई"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०) नाव, नौका। "तरणी में तरुणी को लेकर"—रा० न० त्रि०।—**जा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यमुना, सूर्य-पुत्री, रवितनया। एक वर्णवृत्त। "विमल तरणिजा के नीर की यों छटा है"—मधुपुरी।—**तनया**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) यमुना, तरणिसुता, तरणिजा। —**तनूजा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) सूर्य-तनया, भानुपुत्री, यमुना तरणितनुजा, तरनितनुजा। "तरणितनूजा-तट तमाल तरुवर बहु छाये"—हरिऔध।—**सुत**-(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य का पुत्र, शनिश्चर, यम, कर्ण, तरणितनय।—**सुता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यमुना, सूर्य-पुत्री।

तरणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाव, नौका। सूर्य। "गौतम की घरनी ज्यों तरनी तरैगी मेरी।" "ते सब तियहिं तरनि ते ताते"—तुल०।

तरतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक थाल।

तरतराना‡—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) तड़तड़ का शब्द करना, तड़तड़ाना।

तरतीब—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सिलसिला, क्रम, व्यवस्था।

तरदीद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) रद्द करना, काट देना। मंसूखी। खंडन, प्रत्युत्तर।

तरद्दुद—(संज्ञा, पु०, अ०) फिक्र, चिन्ता। प्रबन्ध। आपत्ति, बाधा।

तरन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तरण] पार होने या तरने वाला, मुक्त।—**तार**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तरण] मुक्ति, निस्तार, मोक्ष।—**तारन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० तरण+हि० तरना] संसार-सागर से पार लगाने वाला ईश्वर। मोक्ष। निस्तार।

तरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० तरण] नदी आदि को तैर कर पार करना, उतरना। मोक्ष पाना या मुक्त होना। (क्रि० स०, दे०) तलना।

तरनि, तरनी—(संज्ञा, स्त्री०, पु०) [सं० तरणि, तरणी] छोटा मोढ़ा। देखिए तरणि, तरणी।

तरपत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तृप्ति] आराम, सुभीता, डौल।

तरपति—(क्रि० अ०, दे० [हि० तड़पना] तड़पती है, तलफती है। "ताकि तकि तारापति तरपति ताती सी" —पद्मा०।

तरपन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तर्पण] पितरों को जल-दान।

तरपना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तड़पना] तड़पना, बेचैन होना, फड़फड़ाना। [तलफना (दे०)], चमकना (बिजली)।

तरपर—(क्रि० वि०, दे०, हि०) ऊपर-नीचे, एक के पीछे दूसरा। [तर-ऊपर (दे०)]

तरपरिया—(वि०, दे०) नीचे-ऊपर का। क्रम के अनुसार पहिले और पीछे का। एक के पीछे दूसरे का।

तरफ़—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दिशा, ओर। किनारे। पक्ष।—**दार**-(वि०, दे०) [अ० तरफ +दार फ़ा०] सहायक, पक्षपाती। सलाही। [तरफ़दारी (संज्ञा, स्त्री०)]

तरफराना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तड़फड़ाना] तड़पना, तड़फड़ाना।

तरबतर—(वि०, यौ०, फ़ा०) गीला, आर्द्र, भीगा। ओदा (ग्रा०)।

तरबूज—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तर्बुज] कलींदा (फल)।

तरभर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तड़ातड़ का शब्द, खलभली। "बजी बँदूकै तरभर माची"—छत्र०।

तरमीम—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दुरुस्ती। घटबढ़। संशोधन।

तरराना—(क्रि० स०, दे०) ऐंठना, मरोड़ना। "मूछन सहित पखा तरराने"—छत्र०।

तरल—(वि०, सं०) चंचल । द्रव । चलायमान, लोल । क्षणभंगुर, नाशवान । [**तरला** (स्त्री०)] "आतुर तरल तरंग एक पै इक इमि आवति"—हरिऔध ।—**प्राण**–(वि०) [सं० तरल+प्राण] जिसके प्राण द्रवित हों । "हिम बिंदु नचाती तरल प्राण"—महा० ।—**नयन**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्ण-वृत्त । वह पुरुष जिसकी आँखें चंचल हों ।

तरलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चंचलता । क्षणभंगुरता । द्रवता । [**तरलत्व** (संज्ञा, पु०)]

तरला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [सं० तरल] जवागू, मधुमक्खी । (वि०, स्त्री०, दे०) चंचला ।

तरलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तरल+आई प्रत्य०] चपलता, लोलता, चंचलता, द्रवत्व ।

तरलायित—(वि०, दे०) [सं० तरल] जिसमें तरलता उत्पन्न हुई हो, जाततारल्य । (संज्ञा, पु०) बड़ी लहर ।

तरलित—(वि०, सं०) चंचलतायुक्त, आन्दोलित । द्रवीभूत । तरलीभूत ।

तरलीकृत—(वि०, सं०) चंचल किया हुआ ।

तरव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तरु] तरु, पेड़ ।

तरवन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ताड़+बनाना] करनफूल, तरकी, तरौना, तरौनी ।

तरवर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० तरुवर] बड़ा पेड़ । "समय पाय तरवर फरै"—वृ० ।

तरवरिया, तरवरिहा—(संज्ञा, पु०, दे०) तलवार चलाने या रखने वाला ।

तरवा,तलवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तलवा] पादतल, पदतल ।

तरवार, तरवारि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तरवा] तलवार, खड्ग, कृपाण, असि । "तरवार वही तरवा के तरे लौं"—आलम ।

तरस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रास] कृपा, दया, रहम । **मुहा० किसी पर—खाना (आना)** –कृपा या दया करना (आना) ।

तरसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तर्षण] किसी वस्तु के पाने को व्याकुल या उत्कंठित होना । "त्यों रघुपति-पदपदुम परस को तनु पातकी न तरस्यो"—[वि०] । (क्रि० स०, दे०) तराशना, काटना । "पट-तंतुन उंदुर ज्यौं तरसै"—[रामा०] ।

तरसाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तरसना] किसी को किसी वस्तु के लिए लालच में डालकर व्यथित करना ।

तरह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) समान, भाँति, प्रकार । ढाँचा, बनावट । रीति, उपाय । हाल, दशा । "इन तेरह सों तरह दिये बनि आवै साँई"—गिरि० ।—**दार**–(वि०, फ़ा०) सुन्दर, शौकीन, अच्छे साज-सामान या रंग-ढंग का, भला-मानुस । [**तरहदारी** (संज्ञा)] । **मुहा०—देना** –गम खाना । टाल देना, विचार न करना ।

तरहटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तर] नदी या पहाड़ की तराई, नीची भूमि । "मनौ मेरु की तरहटी भयौ सितासित संग"—रस० ।

तरहर†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० तर+हर प्रत्य०] निम्न, तले, नीचे । "चरन कमल तरहर धरी"—[रामा०] ।

तरहारि—(क्रि० वि०, दे०) [हि० तर+हारि] नीचे, तले, निम्न । "पाँच चौक मध्यहिं रचे सात लोक तरहारि"—[रामा०]

तरहुँड़—(वि०, दे०) [हि० तर+हुंड] निम्न, नीचे, तले । "दीठि तरहुँड़ी हेर न आगे"—[पद०] ।

तरहेल—(वि०, दे०) [हि० तर+हेल] हारा हुआ, अधीन । "पहुप-बास औ पवनअधारी कँवल मोर तरहेल"—[पद०] ।

तराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तर=नीचे+आई प्रत्य०] पहाड़ या नदी की घाटी, पहाड़ के निचले भाग की सीड़ वाली गीली भूमि । तारा, नक्षत्र । "अनवट बिछिया नखत तराई"—[पद०]

तराजू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) काँटा, तुला, तखड़ी, तखरी (प्रान्ती०) ।

तराटक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रोटक] टोटका । योग-मुद्रा । "त्रिकुटी संग भ्रूभंग तराटक नैन नैन लगि लागो"—सूर० ।

तरान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्राण] उगाहन । वसूल किया गया ।

तराना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बचाना, उद्धार करना । एक प्रकार का गाना ।

तराप*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) बंदूक आदि के छूटने का तड़ाका शब्द ।

तरापा†—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) रोना-पीटना, हाहाकार, कुहराम, त्राहि-त्राहि की पुकार ।

तराबोर—(वि०, दे०, यौ०) [फ़ा० तर+बोरन हि०] भली भाँति भीगा हुआ, शराबोर ।

तराभर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बंदूक के छूटने का तड़ातड़ शब्द । "दुहुँ दिसि तुपक तराभर माची" —छत्र० ।

तरामल—(संज्ञा, पु०, दे०) मूँज के मुट्ठे जो छाजन के नीचे लगाये जाते हैं । जुवे के नीचे की लकड़ी ।

तरामीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पौधा ।

तरायला—(वि०, दे०) चंचल, चपल, तेज, तरल । तलहटी का । "आगे आगे तरुन तरायल चलते चले"—भूषण ।

तरारा—(संज्ञा, पु०, दे०) लगातार पानी की धार । उछाल, कुलाँच । अति प्यास ।

तरावट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० तर+आवट प्रत्य०] भीगापन, आर्द्रता । शीतलता । शारीरिक उष्णता को शान्त करने वाला खाने का पदार्थ ।

तराश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) छिलाई, काट-छाँट, ढंग, बनावट ।

तराशना—(क्रि० स०, फ़ा०) छीलना, काटना, कतरना, काट-छाँट करना । [तरासना (दे०)]

तरास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रास] भय, त्रास । प्यास ।

तरासना—(क्रि० स०, दे०) [सं० त्रास] डराना, धमकाना ।

तराहीं—(क्रि० वि०, दे०) [हि० तर] नीचे ।

तरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तरी] नाव, नौका । पेटारी ।—**रथ**-(संज्ञा, पु०) डाँड़, पतवार ।

तरिक—(संज्ञा, पु०, सं०) नाव, बेड़ा । उतराई वसूल करने वाला माँझी ।

तरिका, तरिकी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ताड़क] तरकी, तरौना, तरौनी । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० तड़ित्] बिजली ।

तरिता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तड़िता] बिजली, तड़ित् ।

तरियाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० तरे=नीचे] किसी वस्तु को तह में नीचे बैठाना, छिपाना । (क्रि० अ०, दे०) तह में या तले बैठ जाना, नीचे जम जाना ।

तरिवन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ताड़] तलवे । तरकी, तरौनी, करनफूल । "आभा तरिवन लाल की परी कपोलनि आन'—ललि० ।

तरिवर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तरुवर] पेड़, वृक्ष । "तरिवर तें इक तिरिया उतरो"—खुसरो ।

तरिहत†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० तर+ हत प्रत्य०] नीचे, तले, तलहटी में ।

तरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नौका, नाव । (संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० तर] आर्द्रता, भीगापन, गीलापन । शीतलता । नीची भूमि जहाँ वर्षा का जल भरा रहता हो, नदी आदि का कछार [तराई (दे०)] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताड़] करनफूल, तरौनी । (सा० भू०, स्त्री०) [हि० तरना] तर गयी या पार हो गयी, मुक्त हो गयी । "गौतम-नारि तरी"—तुल० ।

तरीका—(संज्ञा, पु०, अ०) रीति, व्यवहार, विधि, ढंग, उपाय । [**तौरतरीका** (यौ०)]

तरीष—(संज्ञा, पु०, सं०) कंडा, उपरी, सूखा गोबर । निपुण या कुशल व्यक्ति । समुद्र । व्यापार, व्यवसाय । स्वर्ग । सुन्दर आकृति । नाव-विशेष ।

तरु—(संज्ञा, पु०, सं०) पेड़, वृक्ष । "तरु-पल्लव महँ रहा लुकाई"—[रामा०] ।—**चय**-(संज्ञा, पु०, सं०) वृक्षों का समूह । "सरिता की उज्वलता तरुचय की हरियाली"—हरिऔध ।—**पतिका**-(वि०, सं०) जिसका पति वृक्ष है, लता । (वि०) लता का । "मिली मधुर प्रिय उर तरु-पतिका" —निराला ।—**माला**-(संज्ञा, स्त्री०) पेड़ों की पंक्तियाँ, वृक्ष-समूह । "तरुमाला ने कर फैलाए"—बच्चन ।—**राजि**-(संज्ञा, स्त्री०) वृक्षों की पंक्ति । "तो दोलित तरुराजि कम नहीं छटा दिखाती"—हरिऔध ।

तरुण, तरुन—(वि०, सं०) जवान, नया, युवा । [**तरुणी, तरुनी** (स्त्री०)] "तिमिर तरुण तरणिहि सक गिलई"—[रामा०] । "रसिक पिक से सरस तरुण रसाल थे'—पंत

तरुणता, तरुनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जवानी, युवावस्था ।

तरुणपन, तरुनपन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तरुण+पन प्रत्यय] जवानी, युवावस्था ।

तरुणाई, तरुनाई, तरुनई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तरुण+आई प्रत्य०] जवानी, जवानी की उम्र, युवावस्था, यौवन ।

तरुणाना, तरुनाना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तरुण+आना प्रत्य०] जवान होना, जवानी पर आना ।

तरुणी, तरुनी—(संज्ञा, स्त्री॰, सं॰) युवती, जवान स्त्री। "तरुण भये तरुणी मन मोहे"—[स्फुट]। (ब॰ व॰, संज्ञा, पु॰) [सं॰ तरु] वृक्षों।

तरुनापा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ तरुण] जवानी, युवावस्था, तरुनपन।

तरुबाहीं*—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰, यौ॰) [सं॰ तरु+बाँह हि॰] पेड़ की डाली।

तरेंदा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ तरड] जल में उतराता हुआ काठ। बेड़ा।

तरे†—(क्रि॰ वि॰, दे॰) [सं॰ तल] तले, निम्न, नीचे। (सा॰ भू॰, ब॰ व॰) [हि॰ तरना] तर गये, मुक्त हो गये।

तरेटी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [हि॰ तर=नीचे) तलहटी। तराई, घाटी। नीची जमीन।

तरेड़ा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) गड़ुवा आदि की टोंटी [तरेरा (दे॰)]

तरेरना—(क्रि॰ स॰, दे॰) [सं॰ तर्ज+हेरना हि॰] क्रोध से देखना, आँख गुरेरना। आँख के इशारे से रोकना। "कहत दसानन नयन तरेरी।" "सुनि लछमन बिहँसे बहुरि, नयन तरेरे राम"—[रामा॰]।

तरैया—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ तारा] तारा। "कहा बापुरो भानु है तपै तरैयन खोय"—रहीम। (संज्ञा, पु॰, दे॰) [हि॰ तारना] तारनेवाला।

तरोई—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ तूर] एक फल जिसकी तरकारी बनती है, तुरई।

तरोवर—(संज्ञा, पु॰, दे॰, यौ॰) [सं॰ तरुवर] पेड़, वृक्ष।

तरौंछ—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) तलछट।

तरौंछी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) जुलाहे के हत्थे के नीचे की लकड़ी।

तरौंटा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) चक्की के नीचे वाला पत्थर।

तरौंस—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [हि॰ तर+औंस प्रत्य॰] किनारा, तट, तीर। "अँसुवनि करति तरौंस तिय, खिनक खरौंहो नीर"—बिहारी।

तरौना—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [हि॰ तड़+बनना] कर्ण-फूल, ढार, तरकी। "लसत स्वेत सारी दियो, तरल तरौना कान"—बिहारी।

तर्क—(संज्ञा, पु॰, दे॰) अज्ञात विषय के यथार्थ ज्ञानार्थ ठीक-ठीक किये गये प्रश्न। दलील। व्यंग्य, ताना। (संज्ञा, पु॰, अ॰) परित्याग, सम्बन्ध-विच्छेदन।—**वितर्क**-(संज्ञा, पु॰, यौ॰, सं॰) वाद-विवाद। सोच-विचार।—**शास्त्र**-(संज्ञा, पु॰, सं॰) न्याय-शास्त्र।

तर्कक—(संज्ञा, पु॰, सं॰) मँगता। याचक। तर्क करने वाला [तार्किक, तर्की (दे॰)]।

तर्कण, तर्कन—(संज्ञा, पु॰, सं॰) तर्क करने का कार्य। [**तर्कणा, तर्कना**-(स्त्री॰) तर्क-शक्ति।]

तर्कना*†—(क्रि॰ अ॰, दे॰) [सं॰ तर्क] तर्क करना। सोचना-विचारना।

तर्कश—(संज्ञा, पु॰, फ़ा॰) भाथा, तूणीर, बाण रखने का चोंगा।

तर्काभास—(संज्ञा, पु॰, यौ॰, सं॰) बुरा तर्क, कुतर्क। हेत्वाभास, तर्क के आधार पर गलत बात भी सही जान पड़े। "बुद्धि तुम्हारी छली न जाये भ्रामक तर्काभास से—गिरीश।

तर्कित—(वि॰, सं॰) तर्क-युक्त। शंकित, अनु-मित।

तर्की—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ तर्किन्] तर्क करने वाला। [**तर्किनी** (स्त्री॰)]

तर्कु—(संज्ञा, पु॰, सं॰) सूत कातने का तकला, टकुआ, तकुवा।

तर्कुक—(संज्ञा, पु॰, सं॰) वादी, प्रार्थी।

तर्क्य—(वि॰, सं॰) विचारणीय, चिंत्य।

तर्खा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) तीक्ष्ण, प्रखर, तीव्र-वाहिनी धारा।

तर्ज—(संज्ञा, पु॰, अ॰) रीति, विधि, ढंग, बना-वट, तरीका।

तर्जन—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ तर्जन] डाँट-फटकार, डाँट-डपट, डराना, धमकाना, डपट, क्रोध। चमकना।—**गर्जन**-(यौ॰) क्रोध प्रगट करने का भाव। बादल गरजने बिजली चमकने का भाव। [**तर्जित** (वि॰)]

तर्जना—(क्रि॰ अ॰, दे॰) [सं॰ तर्जन] फटकारना, डपटना, डाँटना, क्रोधित होना। "प्रिय को तत्क्षण योग्य तर्जना।"—मैथिली॰।

तर्जनी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ तर्ज्जनी] अँगूठे के पास की अँगुली। "जो तर्जनी देखि मरि जाहीं"—[रामा॰]।—**मुद्रा**-(संज्ञा, स्त्री॰) तांत्रिकों की पूजा मे हाथ की एक मुद्रा।

तर्जित—(वि॰, सं॰) भर्त्सित, ताड़ित, डाँटा-फट-कारा गया।

तर्जुमा—(संज्ञा, पु॰, अ॰) उलथा, अनुवाद।

तर्णक—(संज्ञा, पु॰, सं॰) नवजात बछवा।

तर्तराता—(वि॰, दे॰) चिकना, स्निग्ध।

तर्तराना—(क्रि० स०, दे०) चंचलता या चपलता करना। गलफटाकी करना। तड़तड़ाना। सन्नाटा भरना।

तर्तराहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सन्नाटा। गीदड़-भभकी, गलफटाकी, श्लाघा। तड़तड़ी।

तर्पण—(संज्ञा, पु०, सं०) पितरों को पानी देना। [तर्पन, तरपन (दे०)]। "तरपन जात तो मै तरपन कीन्हे तै"—द्विज। [**तर्पणीय** (वि०)]

तर्पित—(वि०, सं०) तृप्त या तुष्ट किया हुआ।

तर्ब—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्वर की ध्वनि।

तर्राना—(क्रि० अ०, दे०) बड़बड़ाना, बकबक करना। कुढ़ना, चिढ़ना। आलाप।

तर्वरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) खड्गधारी, तलवार बाँधन या चलाने वाला। "कब तें बेटा तर्वरिया भए"—[आल्हा०]।

तर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिलाषा, इच्छा, तृष्णा। क्रोध। समुद्र। सूर्य। "बातै बात तर्ष बढ़ि आई"—[रामा०]।

तर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) प्यास, तृषा। अभिलाषा, इच्छा।

तर्षित—(वि०, सं०) प्यासा, तृषित।

तर्स—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखिए तरस।

तर्साना—(क्रि० स०, दे०) देखिए तरसाना।

तर्सों—(अव्य, दे०, हि०) वर्तमान दिन से दो दिन पहले अथवा पीछे का दिन। [अतर्सों (दे०)] परसों (ग्रा०)।

तल—(संज्ञा, पु०, सं०) नीचे का भाग या खंड। पानी के नीचे की जमीन। सतह। एक पाताल। किसी वस्तु की ऊपरी सतह। **—कर**-(संज्ञा, पु०, सं०) धरातल का लगान या महसूल। **—घरा**-(संज्ञा, पु०, दे०) जमीन के नीचे की कोठरी, तह-खाना। **—छट**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तल + छटना] पानी आदि द्रव पदार्थों के नीचे बैठी हुई मिट्टी आदि। **—पट**-(वि०, दे०) खराब, नष्ट, चौपट। (सं० तलपट) अंतर्पट।

तलक‡—(अव्य०, दे०) [हि० तक] तक, पर्यन्त, तलुक, तालुक (ग्रा०)।

तलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० तरण=तिराना] घी, तेल आदि में कुछ पकाना।

तलप*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तल्प] पलँग, चारपाई।

तलफ—(वि०, अ०) खराब, बरबाद, नष्ट। (दे०) तड़प, बेचैनी।

तलफना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तड़पना] तड़पना, छटपटाना, तिलमिलाना, चिल्लाना।

तलब—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) चाह, पाने की इच्छा। बुलावा। (दे०) वेतन। **—गार**-(वि०, अ०) चाहने वाला।

तलबाना—(संज्ञा, पु०, फा०) गवाहों को बुलाने का खर्च।

तलबी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बुलाहट, माँग, हाजिरी।

तलबेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तलफना] उत्कंठा, बड़ी बेचैनी, छटपटी, घबराहट, आतुरता। "तनपरी तलबेली महा लायो मैन सरु है"—सुख०।

तलमलाना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तिमिर] आँखों का चौंधियाना, तिलमिलाना।

तलवकार—(संज्ञा, पु०, सं०) एक उपनिषद्।

तलवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तल] पादतल, तरुआ (ग्रा०)। [तलुवा (दे०)]। **मुहा०—खुजलाना**-यात्रा का शकुन। **—(वे)चाटना** (सह लाना)-बहुत खुशामद करना। **—(वे) छलनी होना (घिस जाना)**-बहुत चलना। **—(वे) धो-धो कर पीना**-बहुत सेवा करना। **—(वे) में आग लगना**-बहुत क्रोध करना।

तलवार, तलवारि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तर-वारि] कृपाण, असि, खड्ग, करवाल। **मुहा०—के बल (जोर से)**-युद्ध करके। **—का खेत**-युद्ध क्षेत्र। **—का घाट**-तलवार में टेढ़ेपन के शुरू या आरम्भ होने की जगह। **—के घाट उतारना, उतरना**-काट कर मार डालना, मर जाना। **—का पानी**-तलवार की चमक, पैनापन। **—की छाँह में**-लड़ाई के मैदान में। **—खींचना**-युद्ध या चोट करने के लिए तलवार को म्यान से निकालना। **—बजाना**-युद्ध ठानना। **—सौंतना**-मारने के लिए तलवार उठाना।

तलहटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तल + घट्ट] तराई, पहाड़ों के नीचे की जमीन। नीचे की सतह। "हरित तलहटी मे गिरिवर की"—रा० न० त्रि०।

तलांगुलि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० तल + उँगलि] पैर की उँगली।

तला—(संज्ञा, स्त्री०) तल्ले का बचाव करने वाली वस्तु [तल्ला (दे०)]। (संज्ञा, पु०) पेंदा। (क्रि० वि०) घी या तेल में पका।

तलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तल] तलैया। तलने का भाव।

तलाक़—(संज्ञा, पु०, अ०) पति-पत्नी का परस्पर का त्याग।

तलातल—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० तल+अतल] पाताल का एक खंड। "तलातल में हों छिटक रही चिनगारी"—दिनकर।

तलाब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तल्ल] ताल, तालाब, सरोवर, तड़ाग (सं०)। तलाव (ग्रा०)। "सिमिटि सिमिटि जल भरं तलाबा'—[रामा०]

तलाबेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखिए तलबेली।

तलामली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) प्रयत्न, उत्कंठा, बेचैनी। "तलामली परिजात चट, निरखत स्याम भिकासा"—ललित०।

तलाश—(संज्ञा, स्त्री०, तु०) खोज। जरूरत, आवश्यकता, चाह।

तलाशना‡—(क्रि० स०, दे०) [फ़ा० तलाश] खोजना, ढूँढ़ना।

तलाशी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) झारा लेने की क्रिया, खोज, छान-बीन। मुहा०—**लेना**-झारा लेने की क्रिया, खोजना, छान-बीन करना।

तलित—(वि०, दे०) [हि० तलना] घी आदि से खूब भूनी या तली हुई।

तलिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०)[सं० तल]पलंग, चारपाई। (संज्ञा, पु०, दे०) विरल, दुर्बल। थोड़ा साफ।

तली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तल] पेंदी, सब से नीचे का भाग। [तरी (दे०)]। (क्रि० वि०) [हि० तलना] भूनी हुई।

तले—(क्रि० वि०, दे०) [सं० तल] नीचे, [तरे (दे०)] "अपने ही तले है अँधेरा यहाँ"—हितैषी। मुहा०—**ऊपर**-एक दूसरे के ऊपर, उलट-पलट। —**ऊपर के**-एक साथ होने वाले दो लड़के, जुड़वाँ, एक दूसरे के बाद उत्पन्न।

तलेचण—(संज्ञा, पु०, सं०) सुअर।

तलेटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तल] पेंदी, [तलहटी (दे०)] पहाड़ के नीचे की भूमि।

तलैंचा—(संज्ञा, पु०, दे०) मेहराब के ऊपर का भाग।

तलैया—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० ताल] छोटा ताल, गढ़ैया।

तलौंछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तल=नीचे] तलछट, मैल।

तल्ख़—(वि०, अ०) कड़ुआ। [**तल्ख़ी** (संज्ञा)] कड़ुवाहट।

तल्प—(संज्ञा, पु०, सं०) पलंग, चारपाई। अटारी। —**कीट**-(संज्ञा, पु०) खटमल।

तल्पक—(संज्ञा, पु०, सं०) बिछौना बिछानेवाला नौकर।

तल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तल] भितल्ला, अस्तर। मुहल्ला। जूते का तला।

तल्लिका—(संज्ञा, पु०, दे०) कुंजी, ताली। तालिका।

तल्लीन—(वि०, सं०) उसमें लीन, मग्न, लगा हुआ।

तल्वकार—(संज्ञा, पु०, सं०) सामवेद की शाखा-विशेष।

तव—(सर्व, सं०) तुम्हारा, तिहारी (ब्र०)। "तव भुजबल महिमा उद्घाटी"—[रामा०]। "तव कटि पर जैसी पीत आभा लसी है"—हरिऔध।

तवक्षीर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मि० फ़ा० तवाशीर] तीखुर, तवाशीर।

तवज्जह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) ध्यान। दया।

तवना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तपन] गरम होना, तपना। दुखी होना। तेज या प्रताप फैलाना। क्रोध से लाल हो जाना।

तवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तप=तपना] रोटी सेंकने का लोहे का बरतन। "पिय टूटो तवा अरु फूटी कठौती"—नरो०। मुहा०—**की बूँद**-तत्काल नष्ट होने वाला। **उलटा**—, बहुत काला।

तवाज़ा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मेहमानी, दावत, भोजन का निमंत्रण। [**ख़ातिरतवाज़ा** (यौ०)]

तवायफ़—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) वेश्या, पतुरिया, रंडी, मंगलामुखी।

तवारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ताप, हि० ताव] ताप, गरमी, जलन, दाह।

तवारीख़—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) इतिहास। पुराण। [तारीख (दे०)]। [**तवारीखी, तारीखी**-(वि०) इतिहास-सम्बन्धी।]

तवालत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लम्बाई। अधिकता। झंझट, बखेड़ा। बढ़ावा।

तविष—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ग। समुद्र। व्यवसाय। (वि०) उत्साही, बलवान्।

तविषी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी। शक्ति। नदी। इंद्र की एक कन्या।

तशख़ीस—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) निश्चय, रोग का स्वरूप-निर्धारण । लगान नियत करने की क्रिया ।

तशरीफ़—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) महत्त्व, बड़प्पन । **मुहा०—रखना**-बैठना, विराजना ।—**लाना**-आना ।—**ले जाना**-चले जाना ।

तश्तरी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) रकाबी, सनहकी । जलपान आदि के लिए छोटा पात्र । [तस्तरी (दे०)]

तषना—(क्रि० स०, दे०) बाँटना, भाग देना ।

तषरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अर्घा ।

तष्ट—(वि०, सं०) दला या पिसा हुआ । कटा या छिला हुआ ।

तष्टा—(संज्ञा, पु०, सं०) बढ़ई, विश्वकर्म्मा । (**संज्ञा**, पु०) [फ़ा० तश्त] छोटी रकाबी ।

तस—(वि०, दे०) [सं० तादृश] वैसा, तैसा, तइस (ग्रा०) । "तस मति फिरी रही जस भावी "—[रामा०] ।

तसकीन—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) धैर्य, ढाढ़स, तसल्ली ।

तसदीक—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सत्यता, सचाई । सचाई की परीक्षा, जाँच या निश्चय । प्रमाणीकरण । समर्थन । गवाही ।

तसदीह*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० तसीदीअ] सिर पीड़ा । दुःख ।

तसबीह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सुमिरनी, जपने की माला ।

तसमा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चमड़े अथवा सूत की चौड़ी पट्टी, जिससे कोई वस्तु कसी जाती है । कसना ।

तसला—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तश्त] पीतल आदि का गहरा बरतन । [**तसली** (स्त्री०)]

तसलीम—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सलाम, बंदगी । स्वीकृति ।

तसल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) तसकीन, धैर्य्य, सात्वना, आश्वासन ।

तसवीर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) चित्र, सबिह ।

तसी—(संज्ञा, पु०, दे०) तीन बार जोता हुआ खेत ।

तसू, तस्सू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रि + शूक] १$\frac{1}{2}$ इंच की नाप ।

तस्कर—(संज्ञा, पु०, सं०) चोर । कान । एक दवा का वृक्ष ।—**वृत्ति**-(संज्ञा, पु०) जेब काटने वाला, पाकेटमार [**तस्करी** (संज्ञा, स्त्री०)]

तस्करता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चोरी ।

तस्करी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० तस्कर] चोरी । चोर की स्त्री ।

तस्म—(संज्ञा, पु०, दे०) चमीटा, चिमटा, चिमटी । (संज्ञा, पु०) तस्मा कसने का छल्ला ।

तस्मई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तस्मयी] खीर । जाउर (ग्रा०) ।

तस्मात्—(अव्य, सं०) इस हेतु या वास्ते, इस कारण ।

तस्मिन्—(सर्व०, सं०) उसमें । वहाँ पर ।

तस्मै—(सर्व०, सं०) उसके हेतु या वास्ते ।

तस्य—(सर्व०, सं०) उसका ।

तहँ, तहँवाँ‡—(क्रि० वि०, दे०) [सं० तत + स्थान] वहाँ, उस ठौर, स्थान या जगह पर । [(विलो०) **जहाँ, जहँवाँ**] "जहँ तहँ कायर गवहिं पराने" । " तब हनुमान गयो चलि तहँवाँ "—[रामा०] ।

तह—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) परत । तल, पेंदा । वरक, झिल्ली । **मुहा०—करना या लगाना**-किसी कपड़े आदि को सब ओर से समेटना ।—**कर रखना**-रहने देना । नहीं चाहिए । रक्षित या छिपा रखना ।—**ख़ाना**-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) भुइँधरा, तलगृह, तरघर ।—**तोड़ना**-झगड़ा निपटाना । कुयें का उतरना । **किसी चीज की—देना**-हलका परत चढ़ाना या रंग देना । **मुहा०—की बात**-छिपी या गुप्त या रहस्य की बात, मार्मिक या पते की बात । (**किसी बात की**)—**तक पहुँचना**-ठीक-ठीक भेद या रहस्य या असली बात समझ लेना या मर्म जान लेना ।

तहक़ीक़ात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०)[अ० तहकीक का ब० व०] ठीक-ठीक खोज, जाँच-पड़ताल, अनुसंधान ।

तहज़ीब—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सभ्यता, मनुष्यत्व, भलमंसी ।

तहपेंच—(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) पगड़ी के तले का वस्त्र ।

तहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पेठे की बरी और चावल की खिचड़ी, मटर की खिचड़ी ।

तहरीर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लेख । लिखने की शैली, ढंग, परिपाटी, रीति । लिखी बात । लिखाई, लिखावट ।

तहरीरी—(वि०, फ़ा०) लिखा हुआ ।

तहलका—(संज्ञा, पु०, अ०) खलबली, हलचल, धूम । मृत्यु ।

तहवील—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अमानत, धरोहर। खजाना। सुपुर्दगी।—**दार**—(संज्ञा, पु०) [अ० तहवील+दार फ़ा०] खजानची, कोषाध्यक्ष, पोतदार।

तहसनहस—(वि०, यौ०, दे०) नष्ट-भ्रष्ट। खराब, बरबाद, तबाह।

तहसील—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) उगाही। लगान। तहसीलदार की कचहरी या दफ्तर। [तहसीली (दे०)]। **वसूल**—, (यौ०) लगान (कर) की वसूली।—**दार**—(संज्ञा, पु०) [अ० तहसील+दार फ़ा०] तहसील का हाकिम या अफसर।—**दारी**—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० तहसील+फ़ा० दार+ई प्रत्य०] तहसीलदार का पद या काम। उसकी कचहरी या दफ़्तर।

तहसीलना—(क्रि० स०, दे०) [अ० तहसील] कर आदि उगाहना या वसूल करना।

तहाँ—(क्रि० वि०, दे०) [सं० तत्+स्थान] वहाँ, तत्र (सं०), उस स्थान या जगह पर। "जहाँ तहाँ मारै सब कोय"—[रामा०]।

तहाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तह] लपेटना। तह करना।

तहियाँ†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० तदाहि] तब, उस समय, वहीं।

तहियाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० तह] लपेटना। तह करना।

तहीं, तहँ†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० तहाँ] तत्रैव (सं०), उसी ठौर या स्थान पर, वहीं।

ताँई—(क्रि० वि०, दे०) [हि० ताई] समान। तक, पर्य्यन्त। प्रति, हेतु, लिए, निमित्त। "दूरि गयो दासन के ताँई व्यापक प्रभुता सब बिसरी" —सूर।

ताँगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० टंग] एक घोड़ा-गाड़ी, टाँगा।

तांडव—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव का नाच। "नभ-वाणी द्वारा उत्तेजित तांडव नर्त्तन चला प्रचंड"—गिरीश। उद्धत नाच। पुरुषों का नाच।

ताँत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तंतु] बकरी आदि की आँत, झिल्ली आदि से बनी पतली डोरी, राछ (प्रान्ती०)।

तांतव—(वि०, सं०) तंतुओं से बनाया हुआ। (संज्ञा, पु०) सूत कातना या बुनना।

ताँता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तति=श्रेणी] कतार, पाँति, पंक्ति। **मुहा०**—**लगना (बँधना)**—एक के पीछे एक का मिला हुआ बराबर चलना या आना।

ताँति†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तंतु] ताँत, धनुष की डोरी।

ताँतिया—(वि०, दे०) ताँत की तरह दुबला।

ताँती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताँता] पाँति, पंक्ति। औलाद। (संज्ञा, पु०, दे०) कोरी, जुलाहा।

तांत्रिक—(वि०, सं०) तंत्र-संबंधी। तन्त्रशास्त्र का जानकार या विद्वान, शास्त्रतत्त्वज्ञ। (संज्ञा, पु०, सं०) तन्त्रशास्त्री।

ताँबड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ताम्र] ताँबा-सम्बन्धी पदार्थ या रंग, लाल रंग। झूठी चुन्नी।

ताँबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ताम्र] एक लाल धातु जिससे पैसे और बरतन बनते हैं।

ताँबिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताँबा] ताँबे की बनी वस्तु। ताँबे के रंग का।

ताँबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताँबा] ताँबे से बना पदार्थ।

तांबूल—(संज्ञा, पु०, सं०) पान, पान का बीड़ा। "मृषावदतिलोकोऽयं ताम्बूलं मुख भूषणम्"।

तांबूली—(संज्ञा, पु०, सं०) तमोली, पान बेचनेवाला।

ताँसना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० त्रास] डराना, धमकाना, डाँटना, सताना, घुड़की बताना।

ता—(प्रत्य०, सं०) भाववाचक या समूहवाचक, जैसे चतुरता, जनता। (अव्य०, फ़ा०) पर्य्यन्त, तक। *† (सर्व०, दे०) उस।

ताईं—(अव्य०, दे०) [सं० तावत् या फ़ा० ता] पास या समीप। कारण, लिए, वास्ते। "बात चतुरन के ताईं"—गिरि०।

ताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताऊ] ताऊ की स्त्री, बड़ी चाची। एक छिछली कड़ाही।

ताईद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) नकल। पक्षपात। अनुमोदन, समर्थन।

ताऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तात] पिता का बड़ा भाई, बड़ा चाचा। **मुहा०** **बछिया के—**, बैल। मूर्ख।

ताऊन—(संज्ञा, पु०, दे०, अ०) प्लेग रोग। महामारी ज्वर, काल ज्वर।

ताऊस—(संज्ञा, पु०, अ०) मोर, मयूर, केकी। **तख्त**—,(यौ०) मोर की शक्ल का शाहजहाँ का रत्न-जटित सिंहासन। एक बाजा।

ताक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताकना] ताकना क्रिया का भाव, टकटकी, अवलोकन। अवसर या औसर की प्रतीक्षा, मौके की इन्तजारी, घात। —**झाँक**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताकना+झाँकना] ठहर-ठहर या छिप-छिप कर देखना। **मुहा०—में रहना**-मौका देखते रहना।—**रखना या लगाना**-घात में रहना, मौका देखते रहना। खोज या तलाश रखना, देखभाल रखना। (संज्ञा, पु०, अ०) आला, ताखा। **मुहा० बालाये—या—पर धरना या रखना**-पड़ा रहने देना। काम में न लाना, छोड़ या डाल रखना। (वि०, अ०) विषम। अद्वितीय, अनोखा।

ताकत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बल, पौरुष, शक्ति, जोर, सामर्थ्य। [ताकत (दे०)] (हि० ताकना) देखते। "ताकत रहे ये नैन ताकत गॅवाइकै"—रसाल।—**वर**-(वि०, फ़ा०, यौ०) बली, शक्तिमान।

ताकना—(क्रि० स०, दे०) [सं० तर्कण] ताड़ना, देखना। ध्यान रखना। रक्षा या रखवाली करना, पहरा देना। [**ताकि** (पू० का०)]

ताकरी—(संज्ञा, स्त्री०) नागरी लिपि से मिलती-जुलती एक लिपि।

ताकि—(अव्य०, फ़ा०) जिसमें, इसलिए कि।

ताकीद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बलपूर्वक आज्ञा या अनुरोध, चेतावनी के साथ कही बात।

तागड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताग+कड़ी] तगड़ी (प्रान्ती०) करधनी। कमरबंध, कटि-सूत्र, [करगता (दे०)]।

तागना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तागा] मोटी सिलाई करना। डोभ या लंगर डालना।

तागपाट—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० तागा+पाट] विवाह के समय का आभूषण।

तागा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तार्कक] धागा, डोरा।

ताज—(संज्ञा, पु०, अ०) राजा का मुकुट। तुर्रा, कलँगी। मोर और मुर्गे की कलँगी। मकान का बुर्ज।—**दार**-(वि०) बादशाह, राजा।—**पोशी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, फ़ा०) राज-मुकुट धारण करने या राजी-गद्दी पर बैठने का उत्सव।—**बीबी**-(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शाहजहाँ की पत्नी, मुमताज महल।—**महल**-(संज्ञा, पु०, अ०) मुमताजमहल का समाधि-स्थान (आगरा)।

ताजक—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक ईरानी जाति, देहवार (बिलोचि०)। फलित ज्योतिष का एक भेद।

ताजगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) हरापन, नवीनता, प्रफुल्लता।

ताजन,ताजना—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० ताजियाना] कोड़ा, चाबुक। "चित चेतन ताजी करै लौकी फरै लगाम। सबदगुरू का ताजना पहुँचे संत सुठाम"—कबीर। "ताजनो विचार को कै व्यंजन विचारु है"—[राम०]।

ताजा—(वि०, फ़ा०) हरा-भरा। हाल का। स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट। नया, नवीन, थोड़े ही समय का। [**मोटाताजा** (यौ०)], [**ताजी** (स्त्री०)]

ताजिया—(संज्ञा, पु०, अ०) इमाम हसन-हुसेन के मकबरों की नकल।—**दारी**-(संज्ञा, स्त्री०) ताजिया की पूजा।

ताजी—(वि०, फ़ा०) अरब का, अरबी। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) अरब का घोड़ा। शिकारी कुत्ता। "तुरकी, ताजी और कुमैता, घोड़ा अरबी पचकल्यान"—[आल्हा०]।

ताजीम—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आदर-प्रदर्शन, सम्मान प्रदान। खड़े हो कर अथवा बंदगी करके प्रकट किया जाने वाला सत्कार।

ताजीमी—(वि०, अ०) आदर-प्रदर्शन का अधिकारी।—**सरदार**-(संज्ञा, पु०) [फ़ा० ताजीमी+सरदार अ०] वे सरदार जिनके लिए राजा सम्मान प्रदर्शित करे।

ताटंक—(संज्ञा, पु०, सं०) करनफूल, ढारें। एक छन्द। "मंदोदरी करण ताटंका"—[रामा०]।

ताटस्थ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उदासीनता। अलगाव। सामीप्य, समीपता।

ताड़ंक—(संज्ञा, पु०, सं०) करनफूल, तरकी, तरौनी।

ताड़—(संज्ञा, पु०, सं०) एक शाखाहीन पेड़ जो सीधा ऊपर की ओर बढ़ता है तथा जिसके सिरे पर ही पत्ते निकलते हैं। ताड़न। शब्द। जुही। हाथ का एक गहना। टड़िया। "बाढ़ेहु सो बिन काज ही, जैसे ताड़ खजूर"—रहीम।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) ताड़ का पत्ता।

ताड़का—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) एक राक्षसी।

ताड़कायन—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्वामित्र के एक आत्मज का नाम।

ताड़केय—(संज्ञा, पु०, सं०) ताड़का-पुत्र, मारीच ।

ताड़न, ताड़ना—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, सं०) मार । डाँट-फटकार, शासन, सजा । "ताड़न मे बहु दोष है, ताड़न में गुण भूरि" । (क्रि० स०, दे०) मारना-पीटना । डाँटना-फटकारना । [सं० तर्कण] भाँपना, लक्षण से समझ लेना । हटा या भगा देना ।

ताड़नीय—(वि०) [सं० ताड़न] ताड़ने योग्य, अपराधी ।

ताड़ि, ताडि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक छोटी जाति का ताड़ का पेड़, ताड़ि ।—**तूलिका**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० ताड़ि+तूलिका] ताड़ या खजूर की कूँची । "मैं ताड़ि-तूलिका रचना" —निराला ।

ताड़ित—(वि०, सं०) जिसकी ताड़ना की गयी हो ।

ताड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताड़] ताड़ का नशीला रस । [**ताड़ीखाना** (संज्ञा, पु०, यौ०)]

ताड्यमान—(संज्ञा, पु०, सं०) जिसे ताड़ना दी गई हो, ताड़ित ।

तात—(संज्ञा, पु०, सं०) पिता । गुरु । पुत्र । भाई । "तात मात सब करहिं पुकारा"—[रामा०] ।

ताता†—(वि०, दे०) [सं० तप्त] तत्ता, गरम । [**ताती, तत्ती** (स्त्री०)]

तातार्थेई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) नाच में पैर का अनुकरण शब्द, तार्थेई ।

तातार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मध्य एशिया का एक देश (चीन के उत्तर मे) ।

तातारी—(वि०, फ़ा०) तातार देश-वासी, तातार का । तातार-सम्बन्धी ।

तातील—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) छुट्टी का दिन, अंभा (ग्रा०) ।

तात्कालिक—(वि०, सं०) उसी समय का ।

तात्पर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मतलब, आशय, अभिप्राय, अर्थ ।

तात्त्विक—(वि०, सं०) तत्वज्ञान-युक्त । यथार्थ । तत्व या सारांश-सम्बन्धी ।

तात्स्थ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वस्तु में दूसरी वस्तु के रहन को स्थिति या भाव ।

तादर्थ्य—(संज्ञा, पु०) [सं० तदर्थ] समान अभिप्राय । उसके प्रयोजन, लिए, वास्ते होने का भाव ।

तादवस्थ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) तद्रूप होन, उसी प्रकार या रीति या भाव में मग्न होने की स्थिति ।

तादात्म्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) उसी रूप में या आत्मा में लीन हो जाने का भाव । अभिन्नता ।

तादात्विक—(वि०, सं०) जिसका खजाना खाली रहा करता हो, अभाववाला ।

तादाद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) गिनती, संख्या ।

तादृश—(वि०, सं०) तादृक्, उसके तुल्य, वैसा ही, उसी प्रकार का । [**तादृशी** (स्त्री०)]

ताधा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) तार्थेई, ताताथेई ।

तान—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खींच, खिचाव । अलाप । गान ।—**तरङ्ग**–(संज्ञा, स्त्री०) तान से उत्पन्न होने वाली लहर । **मुहा०—उड़ाना**–गीत गाना । **मुहा०—खींच कर**–बलपूर्वक, जोर से चिपकी और लिपटी वस्तु को खूब खींच कर फैलाना । **लम्बी—कर सोना**–बेखटके या बेफिक्र, आराम से सोना । **किसी पर—तोड़ना**–आक्षेप करना, ताना मारना । ज्ञान का विषय समाप्त करना ।

तानना—(वि०, स०, दे०) [सं० तान] फैलाने के लिए बल-पूर्वक खींचना । ऊपर उठाना । उड़ाना । शामियाना आदि को फैला कर खड़ा करना । बन्दीगृह भेजना । भेजना ।

तानपूरा—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० तान+पूरा हि०] तँबूरा, सितार की तरह का बाजा ।

तान-बान‡*—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० ताना +बाना] कपड़ा बुनते समय लम्बाई और चौड़ाई के बल फैलाये हुए सूत, तानाबाना ।

तानसेन—(संज्ञा, पु०, दे०) अकबर बादशाह के समय का एक प्रसिद्ध गाने वाला ।

ताना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तानना] कपड़े की बुनावट में लम्बाई के सूत । "मेरे कौन तनेगा ताना"—कबीर । दरी और कालीन बुनने का करघा । (क्रि० स०, दे०) [हि० तप+ना प्रत्य०] ताव देना, तपाना, गरम करना, पिघलाना, गलाना, जाँचना । (†क्रि० स०, दे०) [हि० तवा] गीली मिट्टी आदि से किसी बरतन का मुँह बन्द करना । (संज्ञा, पु०, अ०) फबती । चाही बात । व्यंग्य ।—**बाना**–(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० ताना+बाना] ताना और बाना ।

तानारीरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तान+रीरी अनु०] साधारण या सादा गाना । अलाप, राग ।

तानाशाह—(संज्ञा, पु०) एक मुसलमान बादशाह का उपनाम। अपने अधिकार का गलत ढङ्ग से उपयोग करने वाला व्यक्ति। [डिक्टेटर]।

तानाशाही—(संज्ञा, स्त्री०) अधिनायकत्व, स्वेच्छाचारिता, निरंकुशता। [डिक्टेटरशिप]।

तानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताना] कपड़े की बुनावट मे लम्बाई के सूत। (वि०) गायक। [क्रि० स०, सा० भू०, स्त्री०, हि० तानना]।

ताप—(संज्ञा, पु०, सं०) गरमी, उष्णता, आँच, ज्वाला, लपट। ज्वर। कष्ट।—"गात के छुए ते तुम्हे ताप चढ़ि आवेगी"—पद्मा०।—**क्रम**-वायुमंडल की उष्णता का उतरना-चढ़ना।—**त्रय**-(संज्ञा, पु०, सं०) तीन भाँति के दुःख—दैहिक, दैविक, भौतिक।—**मान**-शरीर या वायुमंडल के ताप की स्थिति या मात्रा जो यंत्र के द्वारा मापी जाती है।—**यंत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) उष्णता-मापक यन्त्र। [थर्मामीटर]।—**हीन**-(वि०, सं०) उष्णता-रहित।

तापक—(संज्ञा, पु०, सं०) गरमी पैदा करने वाला। रजोगुण। ज्वर। (वि०) दाहक।

तापतिल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हि० ताप+तिल्ली] प्लीहा या तिल्ली के बढ़ने का रोग।—

तापती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सूर्य-कन्या। एक नदी।

तापन—(संज्ञा, पु०, सं०) गरमी देने वाला, सूर्य। एक काम-वाण। सूर्यकान्तमणि। मदार। शत्रु-पीड़क एक प्रयोग (तंत्र०)।

तापना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तापन] अग्नि के द्वारा शरीर गरम करना। (क्रि० स०, दे०) जलाना, फूँकना। नष्ट कर देना। तपाना, गरम करना। [**फूँकना-तापना** (यौ०)]

तापस—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) तपस्वी। तेजपत्ता। [तापसी (दे०)] [**तपसी, तपसिनी** (स्त्री०)] "तापस-भेस बिसेस उदासी"—[रामा०]।—**तरु (द्रुम)**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हिंगोट, इंगुदी पेड़।

तापसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तपस्विनी, तपसिनी। तप करने वाली वा तपस्वी की स्त्री। (संज्ञा, पु०, सं०) तपसी, तपस्वी। "द्वै तपसी तपसी वन आये। सुन्दर-सुन्दर सुन्दरि ल्याये"।

तापस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) तापस धर्म।

तापा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तोपना] मुरगी का दरबा या निवास-स्थान। ताप। "दैहिक, दैविक, भौतिक तापा।"—[रामा०]

तापिच्छ—(संज्ञा, पु०, सं०) तमाल का पेड़। "प्रफुल्लतापिच्छ-निभैः"—माघ०।

तापित—(वि०, सं०) गरम किया या तपाया गया। दुःखित, पीड़ित।

तापी—(वि०, दे०) [सं० तापिन्] तपाने या गरमी देने वाला, उष्णतायुक्त। तपवाला। (संज्ञा, पु०, दे०) बुद्ध देव। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) सूर्यपुत्री तापती नदी। यमुना नदी।

तापीय—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) सोनामाखी, एक औषधि।

तापूस—(संज्ञा, पु०, दे०) तेजवान व्यक्ति। बगला। तेजपात। (वि०) तपस्या करने वाला, तपस्या-सम्बन्धी।

तापेन्द्र—(संज्ञा, पु०, दे०) सूर्य।

ताप्य—(संज्ञा, पु०) [सं० तप्य] सोनामाखी औषधि।

ताफ्ता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) रेशमी कपड़ा।

ताब—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) गरमी, उष्णता। दीप्ति, कांति, चमक। शक्ति, धैर्य्य। "दबि तम-तोम ताब तमकति आवै है"—सरस।

ताबड़तोड़—(क्रि० वि०, दे०, अनु०) लगातार, बराबर।

ताबा—(वि०, दे०) [अ० ताबअ] आधीन, नीचे, मातहत, वश में।

ताबूत—(वि०, अ०) मुर्दे को रख कर दफन करने या गाड़ने का संदूक, अरथी, ठठरी।

ताबे—(वि०) अधीन, काबूवाला।—**दार**-(वि०) [अ० ताबअ+फ़ा० दार] आज्ञाकारी, सेवक।—**दारी**-(संज्ञा, स्त्री०) दासता।

ताम—(संज्ञा, पु०, सं०) बुराई, दोष, विकार। व्याकुलता, कष्ट। (वि०, दे०) भयङ्कर, डरावना। हैरान। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तामस] रिस, क्रोध। अंधेरा। ताँबा।

तामचीनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक धातु।

तामजान, तामजाम—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० थामना+यान सं०] एक तरह की छोटी पालकी। तामझाम (प्रान्ती०)।

तामड़ा—(वि०, दे०) [हि० ताँबा+ड़ा प्रत्य०] ताँबे के रङ्ग का एक मणि, चुन्नी। देखिए ताँबड़ा।

तामरस—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल । सोना । धतूरा । ताँबा । सारस पक्षी । एक वर्णवृत्त । "श्यामतामरस दाम शरीरं" । "परसत तुहिन तामरस जैसे"—[रामा०] ।

तामरसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमलों वाला तालाब या ताल ।

तामलकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भू-आँवला ।

तामलिप्ती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बंगाल का एक नगर । [**तामलूक, तामलूम** (संज्ञा, पु०)] ।

तामलोट, तामलोटा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [टंबलर] कलईदार टीन या ताँबे का बरतन या लोटा ।

तामस—(वि०, सं०) तमोगुण, क्रोध, अज्ञान, मोह, अंधकार । [**तामसी** (स्त्री०)] । "तामस तन कछु साधन नाहीं"—[रामा०] ।

तामसिक—(वि०, सं०) तमोगुणी, तामसी ।

तामसी—(वि०, स्त्री०, सं०) तमोगुण वाली । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) काली रात । माया । (संज्ञा, पु०, सं०) क्रोधी । मोही । तमोगुणी ।

तामा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ताम्र] ताँबा । [ताम (दे०)] । तमा । क्रोध ।

तामिल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक देश, वहाँ की भाषा और जाति । [तामील (दे०)] ।

तामिस्र—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अँधेरा नरक । क्रोध । मोह । द्वेष । अविद्या ।

तामील—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) हुक्म के अनुसार आचरण, आज्ञापालन । (संज्ञा, पु०, दे०) तामिल देश ।

तामीली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, फ़ा०) आज्ञापालन, आज्ञापूर्ति । (वि०, दे०) तामील का ।

तामेश्वर, ताम्रेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० तामेश्वर] ताँबे की भस्म ।

तामेसरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ताम्र] ताँबे का सा लाल रंग ।

ताम्र—(संज्ञा, पु०, सं०) ताँबा ।—**कर**-(संज्ञा, पु० यौ०, सं०) ठठेरा । ताँबे के बर्तन बनाना जिसकी जीविका हो ।—**कूट**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तम्बाकू का पौधा ।—**गर्भ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तूतिया, नीला थोथा ।—**चूड़**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मुर्गा पक्षी, अरुणशिखा, कुक्कुट ।—**पर्णी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बावली । तालाब । एक नदी (मदरास) । —**पत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ताँबे का बना पत्र, जिस पर प्राचीन काल में राजाज्ञा लिखी या खोदी और प्रमाण-रूप में दी जाती थी ।—**वर्ण**-(वि०, यौ०, सं०) ताँबे के रङ्ग का । (संज्ञा, पु०, सं०) शरीर की खाल । सीलोन, या लंका द्वीप ।—**लिप्त**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तामलूक, तामलूक नगर (बङ्गाल) ।

तायँ—(अव्य०, दे०) से । "कोऊ आयो उत तायँ जितै नँद-सुवन सिधारे"—सूर ।

ताय*†—(संज्ञा, पु०) [सं० ताप] गरमी, ताप । धूप । (सर्व०) [हि० तिस] ताहि, उसे, उसको । (पू० का०) [दे० ताना] तपाकर ।

तायदाद‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० तादाद] गिनती, संख्या, तादाद ।

तायना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० ताव] गरम करना या तपाना, ताना । "नाथ वियोग ताप तन ताये"—[रामा०] ।

तायनि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० ताप] तपन, जलन, गरमी । "सौति के सराप तन तायनि तपी रहै" —देव० ।

तायफ़ा—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, अ०) वेश्याओं के समाजी ।

ताया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तात] पिता का बड़ा भाई, ताऊ, दाऊ । [**ताई** (स्त्री०)] (क्रि० स०, दे०) [सं० ताप] तपाया या गरम किया धातु का तार ।

तार—(संज्ञा, पु०, सं०) शङ्कर । ओंकार । एक वानर । पानीदार मोती । मोती की निर्मलता । नदी का किनारा । विष्णु । चाँदी । अष्ट सिद्धियों में से एक (सांख्य) । तारा । आँख की पुतली । ऊँचा स्वर । एक वर्णवृत्त । संगीत में सातों स्वरों का समाहार । पार जाने का कार्य । चाँदी, रूपा आदि धातुओं को पीटकर बनाया जाने वाला तागा । [टेलीग्राफ] तार द्वारा प्राप्त समाचार ।—**आना,—देना,—भेजना**-ब्योंत, ढङ्ग, व्यवस्था ।—**कर्ण**-(संज्ञा, पु०, सं०) षडानन, शिव ।—**घर**-(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) तार से समाचारों के आने-जाने का स्थान ।—**घाट**-(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) कार्य्य सिद्धि का सुभीता, व्यवस्था ।—**मुहा० —टूटना**-(क्रि० अ०, यौ०, दे०, हि०) कारबार नष्ट हो जाना । टिक्का उड़ाना । प्रवेश बन्द होना । सिलसिला बिगड़ना । वशीभूत का स्वतंत्र हो जाना । **—तार करना**-सूत-सूत अलग-अलग कर देना । लगातार, परम्परा, सिलसिला, क्रम ।—**बँधना (बाँधना)**-किसी काम का लगातार चला

जाना, सिलसिला जारी रहना।—**जमना, बैठना, बँधना**-ब्योंत बनना, कार्य्य-सिद्धि का ढङ्ग या सुभीता होना।—**ढीले पड़ना**-शिथिलता आना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ताल] गाने की ताल, ताड़ पेड़। [सं० तल] तल, सतह। [हि० ताड़] करनफूल, तरौना। (वि०, दे० सं०) स्वच्छ, निर्मल, कान्तिमान्।—**स्वर**-(पु०) ऊंचा स्वर।

तारक—(संज्ञा, पु०, सं०) तारा। आँख। आँख की पुतली। तारकासुर। "तारक में अविराम प्रचारक मदरा राधन-व्रत का—[तारकवध]। "ओं रामाय नमः" यह मंत्र। नदी आदि या संसार-सागर से पार उतारने वाला व्यक्ति। एक वर्णवृत्त। "गिरि वेध खड़मुख जीनि तारक नन्द को जब ज्यों हर्यो" —[रामा०]।—**मंडल**-(यौ०) तारा-मंडल।

तारकश—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० तार+कश फ़ा०] धातु का तार बनाने वाला। [**तारकशी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

तारका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तारागण। आँख की पुतली। अंगद की माँ तारा। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० ताड़की] ताड़का। "तुलयति स्म विलोचन-तारका" —माघ०।

तारकाक्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तारकासुर का ज्येष्ठ पुत्र। "तारकाक्ष वह तरुण विलक्षणमति गतिशाली"—[तारकवध]

तारकामय—(संज्ञा, पु०, सं०) शंकर।

तारकायण—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्वामित्र का एक लड़का।

तारकारि—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्त्तिकेय।

तारकासुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तारक नामक एक दैत्य जिसे षडानन ने मारा था।

तारकिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ताराओं से सुशोभित रात्रि।

तारकित—(वि०, सं०) तारागण से युक्त।

तारकी—(वि०, सं०) तारकमय।

तारकेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिव।

तारण—(संज्ञा, पु०, सं०) [तारन (दे०)] नदी आदि से पार उतारने का कार्य। उद्धार। निर्वाह, निस्तार। तारन या मुक्ति देने वाला, भगवान, विष्णु, शिव। "जगतारण कारण भवभजन धरणीभार"—[रामा०]।—**तरण**-(संज्ञा, पु०, सं०) नाव से उतारने वाला। मुक्ति या मोक्ष देने वाला, विष्णु। शिव। तारने वालों को तारने वाला।

तारतम्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कमीबेशी, कमज्यादा, न्यूनाधिक्य। न्यूनाधिक्यानुसार क्रम। गुणादि का आपस में मुकाबिला। गुण-भेद का रहस्य। [**तारतिक** (वि०)]

तारतोड़—(संज्ञा, पु०, दे०) कारचोबी का काम।

तारन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तारण] पार उतारना। उद्धार। निस्तार, निर्वाह।—**तरन**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तारण-तरण] तारनेवालों का तारने वाला, मुक्तिदाताओं का मुक्तिदाता। "सकृत उर आनत जिन्हे नर होत तारन-तरन" —कुंज वि०।

तारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० तारण] पार लगाना। मुक्ति देना।

तारपतार—(वि०, दे०) तितर-बितर, छिन्न-भिन्न।

तारपीन—(संज्ञा, पु०, दे०) चीड़ का तेल। [टारपेंटाइन]

तारयिता—(संज्ञा, पु०, सं०) तारने वाला, तारक।

तारवर्क़ी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० तार+फ़ा० वर्क़] बिजली का तार।

तारल—(वि०, सं०) अस्थिर, चंचल, लंपट।

तारल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) द्रवत्व, तरलता, चंचलता।

तारा—(संज्ञा, पु०, सं०) सितारा। आँख की पुतली। भाग्य। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) अंगद की माँ। बुध की माँ। (संज्ञा, पु०, दे०) ताल, तालाब। [**तारागण** (यौ०)] "तारा बिकल देखि रघुराया"—[रामा०]।—**कुमार**-(संज्ञा, पु०) अंगद।—**कूट**-(सं०, पु०) फलित ज्योतिषसम्बन्धी एक साधन जिससे विवाह-विषयक शुभाशुभ फल कहे जाते हैं।—**ग्रह**-(संज्ञा, पु०, सं०) मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि ये पाँच ग्रह।—**टूटना**-उल्कापात होना।—**डूबना**-शुक्रास्त रात होना। (**रे**) **गिनना**-चिंता या दुख से रात बिताना।—(**रे**) **तोड़ लाना**—महा कठिन कार्यचतुरता से करना।—(**रों**) **छाँह**-बड़े तड़के या सबेरे।—**पट्टक**-(संज्ञा, पु०) एक प्रकार की तलवार।—**पति**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा। शिव। वृहस्पति। बालि। सुग्रीव। "कास कास देखें होति, जारत अकाश बैठि तारापति, तारापति ध्यान न धरत हैं"।—**पथ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तारों का

मार्ग, आकाश। "भर देता जो स्वप्नों से तारापथ"—पंत।—**मंडल**-नक्षत्र-समूह, तारों का समुदाय। —**शुद्धिकर**-(संज्ञा, पु०) सीसा।

ताराज—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लूटमार, नाश, बरबादी।

ताराधिप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चन्द्रमा। शिव। वृहस्पति। बालि। सुग्रीव।

ताराधीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चन्द्रमा। शिव। वृहस्पति। बालि। सुग्रीव। **ताराधिपति**।

ताराबाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सीसोदिया वीरवर पृथ्वीराज की पत्नी। महाराष्ट्र राजाराम की पत्नी जो औरंगजेब से ३ वर्ष तक लड़ी थी और अंत में जीती।

तारावलि—[सं० तारा + अवलि] तारों का समूह या पंक्ति। "तारावलि मन मे शरमाई"—बच्चन।

तारिक—(संज्ञा, पु०, सं०) मल्लाह। नाव का भाड़ा।

तारिका*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० तारका] नक्षत्र, तारा। आँख की पुतली। "तारिकादिभ्यो इतच्" —पा०।

तारिणी—(वि०, स्त्री०, सं०) तारने या उद्धार करने वाली, मुक्ति देने वाली।

तारित—(वि०, सं०) पार कराया हुआ। जिसे मुक्त किया गया हो

तारी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ताली] कुंजी, कुंचिका, ताली, चाभी, चाबी। *† (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताड़ी] ताड़ का मादक रस। [ताड़ी (दे०)]।

तारीक—(वि०, फ़ा०) अँधेरा, काला। [**तारीकी** (सं०, स्त्री०)]

तारीख़—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) महीने का दिन, तिथि। किसी कार्य के लिए नियत तिथि। इतिहास। **मुहा०—डालना**-तारीख नियत करना।

तारीफ—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) परिभाषा। लक्षण, विवरण। प्रशंसा। गुण। **मुहा०—के पुल बाँधना**-बहुत अधिक प्रशंसा करना।—**करना**-परिचय बताना।

तारु, तारू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तालु] तालू, तालु। "अतिहि सुकंठ दाड़ु प्रीतम को तारु जीभ मन लावत"—सूर०।

तारुण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) जवानी, युवावस्था।

तारेय—(संज्ञा, पु०, सं०) तारा-पुत्र, अंगद। बुध।

तारेश, तारेस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तारेश] चन्द्रमा। वृहस्पति। बालि। सुग्रीव।

तार्किक—(संज्ञा, पु०, सं०) तर्कशास्त्री। दार्शनिक, तत्वज्ञानी। [**तार्किकता** (संज्ञा, स्त्री०)]

तार्क्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) कश्यप मुनि।

तार्क्षी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पातालगरुड़ी नामक लता।

तार्क्ष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) गरुड़। गरुड़ के भाई अरुण। साँप। साखू का वृक्ष। रथ। एक पर्वत। एक पक्षी। तृक्ष मुनि के गोत्र से उत्पन्न।

ताल—(संज्ञा, पु०, सं०) ताली, नाच-गान मे गाने और बाजों की गति। करताल। हरताल, ताड़ का फल या पेड़। तालाब। तलवार की मूँठ। सलाह। जाँघ पर हाथ मारने का शब्द। "धुनि डफ तालन की आनि बसी प्रानन मै"—रत्ना०। **मुहा०—बेताल**-जिसका ताल ठीक न हो। मौके बेमौके।—**ठोंकना**-कुश्ती लड़ने के लिए तैयार होना या ललकारना। "ताल ठोंकि हौं लरिहौं।"—सूर०। —**केतु**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ग्रीष्म, गरमी। बलराम।—**जंघ**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक देश, उस देश का निवासी।—**ध्वज**-(संज्ञा, पु०, सं०) तालकेतु, ग्रीष्म। बलराम।—**पर्णी**-(संज्ञा, स्त्री० सं०) सौंफ। मुसली। कपूर कचरी।—**बैताल**-(संज्ञा, पु०) [सं० ताल + बैताल] दो देवता या यक्ष जो विक्रमादित्य राजा के वशीभूत थे।—**मखाना** -(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० ताल + मक्खन] एक पौधा या फल।—**मूली**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मुसली।—**मेल**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० ताल + मेल] ताल-सुर की मिलावट।—**रस**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ताड़ी।—**वन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ताड़ के पेड़ों का वन या ब्रज का एक वन।

तालक, तालुक*†—(संज्ञा, पु०, दे०) तअल्लुक, सम्बंध। ताला। हरताल। (अव्य०) तक।

तालव्य—(वि०, सं०) तालु-सम्बन्धी। तालु से बोले जाने वाले वर्ण।

तालांक—(संज्ञा, पु०, सं०) बलराम। ताड़ का पत्ता जो लिखने के काम आता है। शिव। सुन्दर लक्षणों वाला मनुष्य।

ताला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तलक] कुलुफ । तालाब । किवाड़, बक्स बंद करने के लिए एक यत्र जो कुंजी से खुलता है । **मुहा० मुँह (जबान) पर—लगाना**-बोलना रोकना ।—**तोड़ना**-चोरी करना ।—**(ले) में बंद रखना**-संदूक में बंद रखना । छिपाकर रखना ।—**कुंजी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० ताल+कुंजी] ताला और ताली या चाभी ।

तालाब—(संज्ञा, पु०) [हि० ताल+आब फ़ा०) सरोवर, ताल, जलाशय, तलाब (ग्रा०) ।

तालाबेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) व्याकुलता । "जाट तालाबेलिया ताको लायों सोधि" —कबीर० ।

तालावचर—(संज्ञा, पु०, सं०) नृत्यकार, नर्तक । अभिनेता ।

तालिक—(संज्ञा, पु०, सं०) चपत, तमाचा । कागज का पुलिंदा या ढेर । हाथ की लिखित पुस्तकों के बाँधन का बेठन, बंधन ।

तालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ताली, कुंजी । सूची, फेहरिस्त ।

तालित—(संज्ञा, पु०, सं०) रंग-बिरंगा कपड़ा । बाजा, डोरी ।

तालिब—(संज्ञा, पु०, अ०) चाहने वाला । खोजने या ढूँढ़ने वाला ।—**इल्म**-(संज्ञा, पु०, यौ०, अ०) विद्यार्थी, इल्म का चाहक ।

तालिम*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तल्प] बिस्तर, सेज, शय्या ।

ताली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुंचिका, कुंजी, चाबी । ताड़ का मद्य, ताड़ी । मुसली । एक छंद । (पिं०) । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ताल) थपेड़ी । **मुहा० —पीटना या बजाना**-दिल्लगीबाजी करना । हँसी उड़ाना । करतल ध्वनि करना । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० ताल] गड़ही, तलैया ।

तालीम—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शिक्षा ।—**याफ्ता** (यौ०)-शिक्षित ।

तालीमी—(वि०, अ०) शिक्षा-सम्बन्धी ।

तालीशपत्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पर्नियाँ आँवला, एक औषधि ।

तालु—(संज्ञा, पु०, सं०) तालू ।

तालुका, ताल्लुका—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० तअल्लुका] बहुत से गाँवों की जमींदारी । बड़ा इलाका । [**तालुकेदार** (संज्ञा, पु०)] [**तालुकेदारी** (स्त्री०)]

तालू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तालु] मुख के भीतर का ऊपरी भाग । **मुहा०—में दाँत जमना**-विपत या बुरा समय आना ।—**से जीभ न लगना**-बके जाना, चुप न रहना ।

तालेवर—(वि०) [अ० ताल:+वर] दौलतमंद, धनी, मालदार । भाग्यवान ।

ताल्लुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० तअल्लुक] लगाव, सम्बन्ध, रिश्तेदारी ।

ताव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ताप] किसी पदार्थ के पकाने या गरम करने के लिए यथोचित ताप । **मुहा० किसी वस्तु में—आना**-यथायोग्य गरम हो जाना ।—**खाना**-आग पर गरम होना । ताप-पीड़ित होना । क्रोध करना ।—**देना**-आग पर रखना, गरम करना । उत्तेजित करना । **मूँछों पर —देना**-बल और प्रताप आदि के अभिमान पर मूँछों पर हाथ फेरना । अधिकार-प्राप्त क्रोध का प्रगट होना ।—**दिखाना**-घमंड से रोष प्रगट करना । —**में आना**-घमंड मिले क्रोध के आवेग में होना । शेखी बघारना । जोश में आना । उतावली । इच्छा ।—**चढ़ाना (चढ़ना, आना)**-जोश आना । बड़ी भारी इच्छा या अभिलाषा होना । उत्तेजना देना या आना । (संज्ञा, पु०) [फ़ा० ताव] कागज का तख्ता ।

तावत्—(क्रि० वि०, सं०) तब तक । [(विलो० **यावत्**] "द्रुतंकुलाऽऽनन्द । ततस्व तावत्"—भट्टि० ।

तावना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० तापन] गरम करना, तपाना । दुःख देना, सताना । "जदपि ज्योति तन तावत"—सूर० । "प्रीतम तन तावति तरुनि, लाइ लगनि की लाइ"—मति० ।

तावभाव—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० ताव+भव] मौका, अवसर । (वि०) जरा सा, थोड़ा सा ।

तावर, तावरा—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) [सं० ताप] जलन, ताप । धूप, घाम । ज्वर । गरमी का चक्कर या मूर्च्छा [**तावरो** (ब०)]

तावरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ताप] दाह, ताप । धूप । ज्वर, मूर्छा ।

तावान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हानि का बदला, जुरमाना, दंड ।

तावीज़—(संज्ञा, पु०) [अ० तअवीज] यंत्र, [जंतर, जंतुर (दे०)] भोज-पत्र पर अंकित मंत्र, सोने चाँदी आदि के संपुट में बंद यंत्र जो गले या बाँह में पहिना जाता है, जंत्र ।

ताश, तास—(संज्ञा, पु०) [अ० तास] जरत्फ खेलने का ताश । सीने का डोरा लपेटने का कागज का टुकड़ा ।

ताशा, तासा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० तास] एक बाजा ।

तासीर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रभाव, असर । "फरजी शाह न ह्वै सके, गति टेढ़ी तासीर" ।

तासु, तासू†*—(सर्व०, ब्र०) [हि० ता] उसका । "तासु बचन सुनि कै सब डरीं"—[रामा०] ।

तासूँ, तासों†*—(सर्व० ब्र०) [हि० ता] उससे, वासौं (ब्र०) "तासों नाथ बैर नहिं कीजै"—[रामा०]

ताहम—(अव्य०, फ़ा०) तो भी, तिस पर भी ।

ताहि, ताही*†—(सर्व०, ब्र०) [हि० ता] उसे, उसको । "ताहि पियाई बारुणी"—[रामा०] ।

ताहिरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) भोजन-विशेष ।

ताहीं†—(अव्य०, ब्र०) [सं० तावत् या फ़ा० ता] तक, समीप । लिए, हेतु, निमित्त । तहाँ, वहीं, तहीं (ब्र०) ।

तिंतिड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इमली ।

तिअहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रिविवाह] तीसरा ब्याह । जिस व्यक्ति का तीसरा ब्याह हुआ हो ।

तिआ, तीया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्त्री, नारी, औरत । "वायस, राहु, भुजंग, हर, लिखति तिआ तत्काल"—[स्फुट०] ।

तिउहार—(संज्ञा, पु०, दे०) त्यौहार, पर्व, उत्सव । [**तिउहारी**-(संज्ञा, पु०, दे०) त्यौहार का इनाम ।]

तिकड़म—(संज्ञा, पु०, दे०) चतुराई, युक्ति, उपाय ।

तिकड़मी—(वि०, दे०) तिकड़म करने वाला । होशियार, चालबाज ।

तिकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हि० तीन + कड़ी] जिसमें तीन कड़ियाँ हों । तीन रस्सियों से चारपाई की बुनावट । तीन बैलों की गाड़ी ।

तिकतिक—(संज्ञा, पु०, अनु०) गाड़ी आदि के बैल हाँकने या चलाने का शब्द, टिकटिक (ग्रा०) ।

तिकोन, तिकोना, तिकोनिया—(वि०, दे०) [सं० त्रिकोण] तीन कोनों का, त्रिभुज क्षेत्र । (संज्ञा, पु०, दे०) समोसा । पकवान ।

तिक्का†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तिकः] मांस की बोटी । ताश में ३ बूटियों का पत्ता ।

तिक्की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तृ] ताश में तीन बूटियों का पत्ता ।

तिक्ख—(वि०, दे०) [सं० तीक्ष्ण] चर्परा, तीखा । बुद्धिमान, तीक्ष्ण या तीव्र बुद्धि ।

तिक्त—(वि०, सं०) कड़ुआ, [तीता (दे०)] चिरायता ।

तिक्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) चिरायता (औष०) ।

तिक्तका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कटुतुम्बी, चिरपीटा ।

तिक्तता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कड़ुआहट, तिताई, करुआई (ग्रा०) ।

तिक्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुटकी । "तिक्ता-कषायो मुख तिक्तताघ्नः"—[वै० जो०]

तिक्तिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तितलौकी ।

तिच्छ—(वि०, दे०) [सं० तीक्ष्ण] तीक्ष्ण, पैना ।

तिच्छता*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० तीक्ष्णता] तेजी ।

तिखटी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० त्रिकाष्ठ] तिपाई, टिखटी (ग्रा०) ।

तिखरा—(वि०, दे०) तिहरा । तीन रस्सियों का । तीन बार का ।

तिखराना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० त्रि + हि० आखर] कोई बात पक्का करने के लिए तीन बार कहना, कहाना, त्रिवाचा बाँधना ।

तिखाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तीखा] कटुता । तीखापन, तेजी ।

तिखुटा, तिखूँटा—(वि०, दे०, यौ०) [हि० तीन + खूँट] तिकोन, त्रिभुज, तीन कोने का ।

तिगुन, तिगुना—(वि०, दे०, यौ०) [सं० त्रिगुण] तीन गुना, तिगुन (ग्रा०) ।

तिग्म—(वि०, सं०) तेज, पैना, तीक्ष्ण ।—**रश्मि** -(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्य, रवि । "अभि तिग्मरश्मि चिरमा विरमात्"—माघ० ।—**राशि** -(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अग्नि । सूर्य । गरमी का ढेर या समूह ।

तिग्मता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तेजी, पैनापन, तीक्ष्णता ।

तिग्मांशु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्य ।

तिच्छ, तिच्छन*—(वि०, दे०) [सं० तीक्ष्ण] तेज, तीव्र, प्रखर, प्रचंड, तीखा, पैना । तिरछा । चरपरा । कर्णकटु, असह्य, [तीछन (दे०)] । "तिच्छ कटाच्छ नराच नवीनो"—[रामा०] ।

तिजरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० तिजार] तीसरे दिन जाड़ा लगकर आने वाला ज्वर, तिजारी ।

तिजारत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) व्यापार, वाणिज्य, सौदागरी । [**तिजारती** (वि०)] ।

तिजारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० तिजार] प्रति तीसरे दिन जाड़ा लगकर आने वाला ज्वर ।

तिजिल—(संज्ञा, पु०, दे०) [तिज+दल] चंद्रमा । राक्षस ।

तिजोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लोहे की संदूक ।

तिड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तृ] तिक्की ।—करना–उड़ा देना, लापता करना ।—**बिड़ी**†–(वि०, यौ०, दे०) इधर-उधर, तितर-बितर, फैला हुआ, छितराया हुआ ।

तित*—(क्रि० वि०, ब्र०) [सं० तत्र] वहाँ, तहाँ, उस ओर । "बातन की रचनानि कों, तित को कहा अकथ्य"—[रामा०] ।

तितना†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० तावत्] उतना, उस प्रमाण या परिमाण का । [(विलो०) **जितना**] ।

तितरबितर—(वि०, दे०, यौ०) [हिं० तिधर+ अनु०] बिखरा हुआ, फैला हुआ । अस्त-व्यस्त, [तितिरबितिर (दे०) ।]

तितली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तीतर] एक पखेरू, कीड़ा । एक घास ।

तितलौकी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० तीता+लौआ] कड़ुई लौकी, कटुतुम्बी ।

तितारा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० त्रि+हिं० तार] तीन तारों का एक बाजा । [**तितारी** (संज्ञा, स्त्री०, अल्पा०)]

तितिंबा—(संज्ञा, पु०, दे०,) [अ० तितिम्म:] ढकोसला । पुस्तक का परिशिष्ट । उपसंहार ।

तितिक्ष—(वि०, सं०) सहनेवाला, सहनशील ।

तितिक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) सहनशील, सहिष्णु, क्षमावान ।

तितिक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्षमता, सहिष्णुता, सहनशीलता, क्षमा ।

तितिक्षु—(वि०, सं०) क्षमावान, क्षमी ।

तितिम्मा—(संज्ञा, पु०, अ०) बचा भाग, परिशिष्ट, उपसंहार ।

तितीर्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तैरने या तरने या पार होने की इच्छा ।

तितीर्षु—(संज्ञा, पु०, सं०) तैरने, तरने या पार होने की इच्छा वाला । "तितीर्षु, दुस्तरं मोहाद"—[रघु०] । "भव तितीर्षु दुस्तर अपार"—पंत ।

तिते, तित्ते*†—(वि० ब्र०) [सं० तति] **तेते** (ब्र०), उतने, तितने [(विलो०) **जिते, जेते, जित्ते**] ।

तितेक*†—(वि०, ब्र०) [हिं० तितो+एक], उतना, तितना ।

तितै*—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० तित+ऐ प्रत्य०] वहाँ, वहीं, तहाँ, तहीं । " होत सबै तब ठाकुर तितै"—[रामा०] ।

तितो, तित्तो*†—(क्रि० वि०, ब्र०) [सं० तति] उतना, जितना । तेतो [(विलो०) **जितो**] "जितो कियो पायो तितो, घट बढ नहीं बराट"—स्फु० ।

तित्तिरि, तित्तर—(संज्ञा, पु०, सं०) तीतर पक्षी, [तीतुर, तीतुल (दे०)] । एक मुनि ।

तिथ—(संज्ञा, पु०, सं०) आग । कामदेव । काल । वर्षा ऋतु ।

तिथि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तारीख । पंद्रह की संख्या ।—**क्षय**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तिथि की हानि ।—**पत्र**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०), पंचांग, जंत्री ।

तिदरा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० त्रिद्वार] तीन द्वारों की दालान । [**तिदरी** (संज्ञा, स्त्री०, अल्पा०)]

तिधर†—(क्रि० वि०, दे०) [ब्र० तितै] उधर, उस ओर । [(विलो०) **जिधर**] ।

तिधारा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० त्रिधार] बिना पत्तों का थूहर । तीन धाराएँ ।

तिन†—(सर्व०, दे०) [सं० तेन] तिस का बहु० व० । उन । "तिन नाहीं कछु काज बिगारा" —[रामा०] । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तृण] तृण, [तिनका, तिनूका (दे०)] फूस, घास । "तिन धरि ओट कहति बैदेही"—[रामा०] ।

तिनउर—(संज्ञा, पु०) तिनकों का ढेर ।

तिनकना—(क्रि० अ०, अनु०) चिढना, झल्लाना ।

तिनका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तृण] तृण, फूस, घास । "राजसभा तिनका करि देखौं"—[रामा०]

मुहा० दाँतों में—पकड़ना या लेना–गिड़गिड़ाना, क्षमा चाहना। "दसन गहहु तिन कंठ कुठारी"—[रामा०] ।—तोड़ना–संबन्ध-तोड़ना। बलैया लेना। (डूबते को)—(के) का सहारा–थोड़ा भरोसा। स्वल्प साहाय्य।—(के) को पहाड़ करना–छोटी बात को बड़ी कर देना। (सर्वं०, दे०) उसका।

तिनगना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) चिढ़ना।

तिनगारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिंगारी। एक पक्वान।

तिनपहला—(वि०, दे०, यौ०) [हि० तीन+पहल] जो तीन पहल का हो।

तिनरंगे—(वि०, दे०) जिसमें तीन रंगों की विशेषता हो, तीन रंगों वाला, विभिन्न रंगों वाला। "उगले जिसने तिनरंगे तार"—मह्रा०।

तिनिश—(संज्ञा, पु०, सं०) तिनास, तिनसुना। एक पेड़।

तिनुका, तिनूका*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तृण] तृण, घास। "होय तिनूका वज्र, वज्र तिनुका होइ टूटे"—[रामा०]।

तिन्ना—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्णवृत्त (पिं०)। रसदार वस्तु। एक धान।

तिन्नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तृण] एक धान। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) नीबी, फुफुंदी।

तिन्ह†—(सर्व, दे०) [हि० तिन] उन्ह, [तिन (दे०)]।

तिपत, तिरपति*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तृप्ति] संतोष, तृप्ति। [**तिपित, तिरपित** (वि०, दे०)।

तिपल्ला—(वि०, दे०, यौ०) [हि० तीन+पल्ला] जिस वस्तु मे तीन पल्ले हों।

तिपाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० तीन+पाया] तिकठी, तीन पायों की चौकी।

तिपाड़—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० तीन+पाड़] तीन पाट से बना, तीन पल्ले वाला।

तिपैरा—(संज्ञा, पु०, दे०) तीन घाटों का कूप।

तिबारा, तीबारा—(वि०, दे०) [हि० तीन+बार] तीसरी बार। (संज्ञा, पु०, दे०) तीन बार खींचा मद्य। [हि० तीन+बार=द्वार] तीन द्वार का दालान या घर।

तिबासी—(वि०, दे०, यौ०) [हि० तीन+बासी] तीन दिन का बासी भोजन आदि। [**बासी-तिबासी** (यौ०)]।

तिब्बत—(संज्ञा, पु०) [सं० त्रि+भोट] एक देश।

तिब्बती—(वि०) तिब्बत का। तिब्बत में उत्पन्न। (संज्ञा, स्त्री०) तिब्बत की भाषा, बोली। (संज्ञा, पु०) तिब्बत-वासी।

तिमंजिला—(वि०, दे०, यौ०) [हि० तीन+मंजिल अ०] तीन खंडों का।

तिमिंगिल—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ी भारी समुद्री मछली।

तिमि—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्री मछली। समुद्र। रतौंधी रोग। *(अव्य० ब०) [सं० तद्+इमि] तैसे, उस प्रकार, वैसे। "तिमि तुम्हार आगमन सुनि"—[रामा०]।

तिमित—(वि०, सं०) भीगा हुआ। गतिशून्य, स्थिर।

तिमिर—(संज्ञा, पु०, सं०) अँधेरा, अंधकार। धुन्धी रोग। "तहाँ तिमिर नहिं होय"—वृन्द०।—हर–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्य।

तिमिरांकित—(वि०, यौ०) [हि० तिमिर+अंकित] अंधकार से ढका हुआ, अंधकारग्रस्त। "चिंतित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित"—पंत।

तिमिरारि, तिमिरारी—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्य, अंधकार का शत्रु।

तिमिराली, तिमिरावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) अंधकार का समूह।

तिमिरावृता—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० तिमिर+आवृता] अन्धकारग्रस्त, अंधकारयुक्त। "मेरी तिमिरावृता न्यूनता"—हरिऔध।

तिमुहानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० तीन+मुहाना फ़ा०] जहाँ से तीन ओर को रास्ते गये हों, त्रिमार्गी, त्रिपथ।

तिय*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्त्री] औरत, स्त्री। "तिय बिसेसि पुनि चेरि कहि"—[रामा०]।

तियला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तिय+ला] एक गहना।

तिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रि] तिक्की, तिड़ी। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० स्त्री] औरत, स्त्री।

तियाग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्याग] त्याग, उत्सर्ग।

तिर—(वि०, दे०) त्रि का बिगड़ा हुआ रूप जो समास के रूप में प्रयुक्त होता है।—कुटा–(संज्ञा,

पु०, दे०) [सं० त्रिकटु] सोंठ, मिर्च, पीपल । **—कोना**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रिकोण] तीन कोने का, त्रिकोण, तिकोना ।**—खूँट**—(वि० दे०, यौ०) [सं० त्रि+हि० खूँट] तिकोना, त्रिकोण । [**तिरखटी, तिखूँटी** (वि०, स्त्री०)] **—पाई**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० त्रिपाद] तिपाई, [स्टूल] । तीन पाँव की चौकी ।**—पाल**—(सं० पु०, दे०) [सं० तृण+ हि० पातना=बिछाना] सरकंडे के पूले । (संज्ञा, पु०, दे०) रोगन चढ़ा टाट । [टारपालिन]**—पित**—(वि०, दे०) [सं० तृप्त] संतुष्ट ।**—पौलिया**—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० त्रि + हि० पोल) हाथी आदि के निकलने योग्य तीन फाटकों वाला स्थान ।**—फला**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रिफला] आंवला, हर्र, बहेरा । (वि०) तीन फल वाला ।**—बेनी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० त्रिवेणी] त्रिवेणी ।

तिरखा*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तृष्णा] प्यास, [पिआस (दे०)] ।

तिरखित*—(वि०, दे०) [सं० तृषित] प्यासा ।

तिरछा—(वि०, दे०) [सं० तिरश्चनि] जो सीधा न होकर इधर-उधर मुड़ा हो, टेढ़ा । [**तिरछी** (स्त्री०)] । **बाँका**—,(यौ०) छबीला, सुन्दर । रेशमी वस्त्र ।

तिरछाई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तिरछा] तिरछापन ।

तिरछाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तिरछा] तिरछा होना । (क्रि० स०, दे०) टेढ़ा करना ।

तिरछापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तिरछा+ पन] तिरछा होने का भाव ।

तिरछी—(वि०, स्त्री०, दे०) टेढ़ी । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) छानी-छप्पर । **मुहा०—चितवन या नजर**—बगल भर देखना, टेढ़ी या वक्र दृष्टि । **—बात या वचन**—कटु वाणी, अप्रिय वचन ।

तिरछौहाँ—(वि०, दे०) [हि० तिरछा+औहाँ प्रत्य०] कुछ तिरछापन लिये । [**तिरछौहीं** (स्त्री०)] ।

तिरछौहैं—(क्रि० वि०, दे०) [हि० तिरछौहाँ] तिरछेपन के साथ । " औचकि दौठि परी तिरछौहै" —कवि० ।

तिरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तरण] उतराना । तैरना, पैरना । पार होना । मुक्ति पाना ।

तिरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नीवी, तिन्नी । घाँघरे या धोती का नाभी के ठीक-ठीक नीचे का भाग ।

तिरप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नाच में एक ताल ।

तिरपट†—(वि०, दे०) कठिन, टेढ़ा ।

तिरपटा—(वि०, दे०) ऐंचा-ताना, भेंगा, भिंगा ।

तिरमिरा—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० तिमिर] चकाचौंध, तिलमिलाहट ।

तिरमिराना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तिरमिरा] चौंधियाना, तिलमिलाना ।

तिरशूल, तिरसूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रिशूल] तीन फल का भाला । "...वाको है तिरसूल "—कबी० ।

तिरस—(वि०, दे०) [सं० तिरस] टेढ़ापन से ।

तिरसठ—(वि०, दे०) साठ और तीन । [**तिरसठवाँ** (वि०)]

तिरस्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) अपमान, अनादर, फटकार ।

तिरस्कृत—(वि०, सं०) अनादृत, अपमानित । परदे की ओट में ।

तिरस्क्रिया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनादर । आच्छादन । अपमान ।

तिरहुत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तीरभुक्ति] मिथिला प्रदेश । "जिन तिरहुत तेहि काल निहारा" —[रामा०] ।

तिरहुतिया—(वि०, दे०) [हि० तिरहुत] तिरहुत का । (संज्ञा, पु०) तिरहुत-वासी । तिरहुत की भाषा ।

तिराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तिराना] तैराना । पार उतारना । उबारना ।

तिराहा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० तीन+ फ़ा० राह] तिरमुहानी, जहाँ से तीन मार्ग तीन दिशाओं को गये हों ।

तिरिया, त्रिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्त्री] औरत, स्त्री । " तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजो बार "—[हमीर हठ] । (यौ०)**—चरित**—स्त्रियों की चालाकी या धूर्तता । **लो०—**" तिरिया-चरित न जानै कोय ।"

तिरीछा*†—(वि०, दे०) [हि० तिरछा] तिरछा, टेढ़ा । [**तिरीछी** (स्त्री०)]

तिरीबिरी—(अव्य०, दे०) तितर-बितर । [तिड़ी-बिड़ी (दे०)] ।

तिरंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तरंड] मछली मारने की वंशी में एक छोटी लकड़ी जो काँटे से थोड़ी दूर पर बँधी रहती है। समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो चट्टानों आदि के प्रगट करने के लिए छोड़ा जाता है।

तिरोधान—(संज्ञा, पु०, सं०) अंतर्द्धान, छिपना।

तिरोधायक—(संज्ञा, पु०, सं०) आड़ करने वाला, छिपाने वाला।

तिरोभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) अंतर्द्धान, छिपाना, गोपना।

तिरोभूत, तिरोहित—(वि०, सं०) छिपा हुआ, अतर्हित। "हाय, हिमालय ही पल में हो गया तिरोहित"—पंत।

तिरौंछा—(वि०, दे०) [हि० तिरछा] तिरछा।

तिर्यक—(वि०, सं०) तिरछा, टेढ़ा। (संज्ञा, पु०) पशु, पत्ती, सर्पादि। "लहरों के घूँघट से झुक झुक दशमी का शशि निज तिर्यक मुख"—पंत।

तिर्यका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तिरछापन।

तिर्यक्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पशु या जानवर की प्रकृति, स्वभाव। चौड़ाई।

तिर्यगयन—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य की वर्ष भर की परिक्रमा।

तिर्यंगति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) टेढ़ी या तिरछी चाल। पशु-योनि की प्राप्ति।

तिर्यग्योनि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) पशु, पत्ती, आदि जीव।

तिर्यंत्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पशु-पत्ती की मादा।

तिलंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तैलंग] अंग्रेजी सेना का देशी सिपाही। कनकौवा। तैलंग-वासी।

तिलंगाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तैलंग] तैलंग देश।

तिलंगी—(वि०, पु०, दे०) [सं० तैलंग] तिलंगाने का निवासी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तीन + लंग] एक तरह का पीतल।

तिल—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) तेल वाला एक पौधा या बीज, तिल दो प्रकार के हैं, काले और सफेद। "तिल भर भूमि न सक्यो छुड़ाई"—[रामा०]। देह पर काले रंग का छोटा-सा चिह्न। "कमरे नाजुके जाना पै कहीं तिल होगा"। काले विन्दु-सा गोदने का चिह्न। आँख की पुतली के बीच का गोल काला विन्दु।—**कुट**—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० तिल] शक्कर की चाशनी में पागे-कुटे तिल।—**चटा**—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० तिल + चाटना] एक तरह का झींगुर। चिवड़ा।—**चूर्ण**—(संज्ञा, पु०) तिल का चूर्ण।—**दानी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० तिल्ला + आधान सं०] दरजियों के सुई-तागा रखने की थैली। (वि०) तिल का दान करने वाला।—**पट्टी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० तिल + पट्टी] चीनी या शक्कर में बना तिलों का कतरा।—**पपड़ी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० तिल + पपड़ी] शक्कर के साथ बना तिलों का कतरा, तिलपपरी (दे०)]।—**पुष्प**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तिल का फूल। बहेड़े का वृत्त। नाक। बघनखा, व्याघ्रनख।—**भुग्गा**—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० तिल + भुग्गा] शक्कर की चाशनी में मिले कुटे तिल।—**शकरी**—(संज्ञा, स्त्री०) मिठाई जो तिल और चीनी को मिलाकर तैयार की जाती है। **मुहा०—का ताड़ करना**—किसी साधारण, उपेक्षणीय मामले को बहुत अधिक महत्त्व दे देना।—**की ओट पहाड़**—अत्यंत साधारण बात के भीतर बहुत असाधारण तत्त्व का उपस्थित होना।—**तिल करके**—थोड़ा-थोड़ा।—**धरने को जगह न होना**—सम्पूर्ण स्थान में विशाल भीड़ का विद्यमान होना। थोड़ी-सी भी जगह शेष न रहना।—**(लों) में तेल न होना**—शील-संकोच का अभाव होना।

तिलक—(संज्ञा, पु०, सं०) टीका, राज्याभिषेक, राजतिलक। टीका (ब्याह का)। माथे का गहना। शिरोमणि, सिरताज, श्रेष्ठ। एक पेड़। एक प्रकार का घोड़ा। तिल्ल खेटकी। किसी पुस्तक की अर्थ-सूचक व्याख्या या टीका। (संज्ञा, पु०, दे०) [(तु०) तिरलोक] औरतों का एक कुरता। खिलत।—**मुद्रा**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) केसर, चंदन आदि का टीका और शंखादि का छापा। (वैष्णव)।—**हार**—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० तिलक + हार] फलदनहा, तिलकहा, वर को तिलक चढ़ाने वाला।

तिलकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तड़कना] गीली मिट्टी का सूखने पर फट जाना। फिस-लना।

तिलका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णवृत्त, वसंत-तिलका (पिं०), तिल्लाना गीत। कन्नौज के राजा जयचन्द की रानी।

तिलछना*—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) छटपटाना, विकल या बेचैन रहना।

तिलड़ा, तिलरा—(वि०, दे०, यौ०) [हि० तीन +लड़] तीन लड़ों की रस्सी । तीन लड़ों का हार ।

तिलड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तीन+लड़] तीन लड़ों का हार (गहना), तीन लड़ों की माला, जिसके बीच में जुगुनी रहती है ।

तिलमिल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तिमिर] तिरमिराहट, चकाचौंध ।

तिलमिलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तिमिर] चौंधियाना, तिरमिराना, झपना ।

तिलमिलाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तिलमिलाने की क्रिया या भाव, बेचैनी की स्थिति ।

तिलवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तिल] तिलों का लड्डू ।

तिलस्म—(संज्ञा, पु०, अ०) [यू० टेलिस्म] जादू, करामात, चमत्कार, करिश्मा ।

तिलस्मी—(वि०, दे०) [हि० तिलिस्म] जादू संबंधी, करामाती, चमत्कारी ।

तिलहन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तेल+धान्य] उन पौधों के बीज जिनसे तेल निकलता है; जैसे तिल, सरसों ।

तिलहा—(वि०, दे०) [हि० तेल] तेल का पका, तेल में बना । तेलयुक्त, चिकना । तेली ।

तिलांजली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) तिल मिले पानी की अंजली । मृत या प्रेत को अंजली में पानी भर तिल देना । **मुहा०—देना**-बिल्कुल छोड़ या त्याग देना, सम्बंध तोड़ देना ।

तिला—(संज्ञा, पु०, दे०) सोना । पगड़ी का छोर जिसमें सोने के तार बुने रहते हैं । नपुंसकता मिटाने वाला एक तेल ।

तिलाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सोनहला । छोटी कड़ाही ।

तिलाक—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० तलाक़] स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध टूटना, त्याग, तलाक ।

तिलान्ना—(संज्ञा, पु०) तिल की खिचड़ी ।

तिलावा—(संज्ञा, पु०, दे०) वह कुआँ जिसमें तीन पुर चलें । रौंद, गश्त ।

तिलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तिल] एक विष, शंखिया । सरपत ।

तिली†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तिल] सफेद तिल, तिल्ली (ग्रा०) ।

तिलुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) तिलों का लड्डू ।

तिलेदानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तिलदानी] दरजियों की थैली जिसमें वे सुई-तागे रखते हैं ।

तिलेगू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तेलंग] तैलंग देश की भाषा, तेलगू ।

तिलेहा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पक्षी, घुग्घू । पडुकी, पंडुक ।

तिलोक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रिलोक] तीनों लोक—पृथ्वी, आकाश, पाताल । "ठाकुर तिलोक के कहाइ करिहै कहा "—[ऊ० श०] । **—नाथ**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० त्रिलोक-नाथ-त्रिलोकपति] तीनों लोकों के स्वामी । विष्णु ।

तिलोकी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रिलोकी] तीनों लोक । उपजाति छंद (पिं०) । [**तिलोकी-नाथ** (यौ०)]

तिलोचन—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० त्रिलो-चन] शिवजी ।

तिलोत्तमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अप्सरा, जिसकी प्राप्ति के लिए सुंद और उपसुंद परस्पर ही झगड़ पड़े थे ।

तिलोदक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तिल और पानी जो प्रेत को दिया जाता है । "आजु तिलो-दक देहुं पिता को "—[रामा०] ।

तिलोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तेलिया । मैना । [हि० तिल+बरी] तिल की बरी या कचौरी ।

तिलौंछना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तेल+ औंछना] थोड़ा तेल लगाकर किसी वस्तु को चिकना करना ।

तिलौंछा—(वि०, दे०) [हि० तेल+औंछा] तेल के से रंग या स्वाद वाला । चिकना, तेलयुक्त, स्नेहयुक्त । "जकित चकित ह्वै तकि रहे, तकित तिलौंछे नैन "—बिहारी ।

तिलौदना—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० तिल+ औदन] तिल और चावल मिली खिचड़ी ।

तिलौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० तिल +बारी] तिल मिली बरी या तिल की कचौरी ।

तिल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० तिला] कला-बत्तू के काम का वस्त्र । (संज्ञा, स्त्री०) एक वर्ण-वृत्त, तिलका (पिं०) ।

तिल्लाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तराना] गाने का एक गीत ।

तिल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तिलक] सीहा, पिलही । [सं० तिल] सफेद तिल, तिली ।

तिवाड़ी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रिपाठी] ब्राह्मणों की एक जाति ।

तिबारा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० तीन+द्वार या बार] तिदरी, तीन द्वार का दालान, तिदुवारी । तीन बार । तीसरी बार, तिबारा ।

तिवारी—देखिए "तिवाड़ी" ।

तिवासर†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० त्रिवासर] तीन दिन, तिबासर ।

तिवासा, तिवासी—(वि०, दे०,) [हि०] तीन दिनों का बासी ।

तिशना*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तृष्णा] प्यास, तृष्णा । चाह । [फ़ा० तशनीय] ताना, व्यंग ।

तिष्ठना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तिष्ठ] ठहरना ।

तिष्ठित—(वि०) [सं० तिष्ठ] ठहरा हुआ ।

तिष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पुष्य नक्षत्र । पूस महीना । कलियुग । (वि०) तिष्य नक्षत्र में जन्म लेने वाला, भाग्यवान, शुभ ।—**रक्षिता**—(संज्ञा, स्त्री०) सम्राट् अशोक की स्त्री का नाम ।

तिष्यक—(संज्ञा, पु०, सं०) पूस का महीना ।

तिष्छन*—(वि०, दे०) [सं० तीक्ष्ण] तेज, पैना, तीखा, तीव्र । प्रचंड । चरपरा । [तीछन (दे०)]

तिस†—(सर्व०, दे०) [सं० तस्मिन्] उस [(विलो०) **जिस**] ।—**पर**-इतना होने पर या ऐसी दशा या अवस्था में ।

तिसना—देखिए 'तिशना' ।

तिसराय—(क्रि० वि०, दे०) [हि० तीसरा] तीसरी बार, तिबारा ।

तिसरायत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तीसरा] तीसरापन । पराया ।

तिसरिहा—(संज्ञा, पु०, दे०) गैर, पराया । तिहाई भाग लेने वाला ।

तिसरैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तीसरा] तीसरा । अलग, तटस्थ । बिचवानी । तिहाई का स्वामी ।

तिसाना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तृषा] प्यासा होना ।

तिसूत—(संज्ञा, पु०, दे०) एक औषधि ।

तिहरा, तेहरा—(वि०, दे०) [हि० तीन+हार] तीन परत का तिगुना, तिहराय ।

तिहराना, तेहराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तेहरा] दो बार कर चुकने पर फिर तीसरी बार करना, तिबारा । तीन परत करना ।

तिहरावट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तेहरा] तिगुनाव, तिगुना करने का भाव या काम ।

तिहरी—(वि०, दे०, स्त्री०) [हि० तेहरा] तीन तह की । तीन रस्सियों की । तिगुनी, तीन परत की ।

तिहरे—(सर्व०, दे०) तिहारे, तुम्हारे । (**वि०**) तिगुने, तीन परत के ।

तिहवार, तेहवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० त्यौहार] त्यौहार, पर्व, उत्सव, तिउहार (ग्रा०) ।

तिहवारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० त्यौहार] त्यौहार के दिन सेवकों का इनाम या पारितोषिक, त्यौहारी । [तेउहारी (दे०)]

तिहाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तृतीयांश] तीसरा भाग या खंड । खेतों की पैदावार, फसल ।

तिहायत, तिहाइत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तीसरा] तीसरा मनुष्य । तीसरा भाग लेने वाला । उदासीन । मध्यस्थ । निष्पक्ष । पक्षपातरहित ।

तिहारा, तिहारे, तिहारो*†—(सर्व०, ब्र०) [हि० तुम] तुम्हारा, तुम्हारे ।

तिहारी*†—(सर्व०, ब्र०) [हि० तुम] तुम्हारा । "नगरी तिहारी तजि जैहों घबरानी सुनि" —[स्फु०] ।

तिहाव, तिहावा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तेह] कोप, तेहा (ग्रा०), क्रोध । बिगाड़, झगड़ा । [सं० तृतीयांश] तिहाई ।

तिहि, तेहि—(सर्व०, ब्र०) [हि० तेहि] उसको, उसे, उस । "तिहि अवसर सुनि सिव-धनु भंगा" —[रामा०] ।

तिहुँ, तिहूँ†—(वि०, ब्र०) [हि० तीन] तीनों । "अस सोभा तिहुँ लोकहुँ नाहीं"—[स्फु०] ।

तिहैया—(संज्ञा, पु०, दे०,) [हि० तिहाई] तिहाई, तीसरा भाग ।

ती*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्त्री] नारी, स्त्री, तिय । "किय भूखन तिय भूखन ती को"—[रामा०] । (क्रि० अ०, ब्र०) थी, हती, हतो ।

तीअन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्त्री+अन्न] भाजी, शाक । स्त्री का अन्न ।

तीकट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्त्री+कटि] नितम्ब, कटि का पिछला भाग ।

तीछन—(वि०, दे०) [सं० तीक्ष्ण] पैना, तेज, उग्र, प्रचंड । चरपरा, तीखा, तीछन (ग्रा०) । "तीछन लगी नयन भरि आये रोवत बाहर दौरे" —सूर ।

तीक्ष्ण—(वि०, सं०) पैना, तीव्र, उग्र, प्रचंड । चरपरा, तीखा । [**तीक्ष्णता** (संज्ञा, स्त्री०)]—**दृष्टि**-(वि०, सं०, यौ०) सूक्ष्मदर्शी, सूक्ष्मदृष्टि । —**धार (धारा)**-(संज्ञा, पु०, सं०) तलवार । नदी । (वि०) तेज या पैनी धारा या धार वाला ।—**बुद्धि** (वि०, सं०, यौ०) बुद्धिमान । जिसकी बुद्धि बहुत तेज या पैनी हो, विज्ञ ।

तीक्ष्णक—(संज्ञा, पु०, सं०) पीली सरसों ।

तीक्ष्णांशु—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य ।

तीक्ष्णा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तारादेवी । जोंक । मिर्च । मालकँगुनी, वच, केवाँच ।

तीक्ष्णाग्नि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपच का रोग ।

तीख, तीखा*†—(वि०, दे०) [सं० तीक्ष्ण] तीखा, तीक्ष्ण । उग्र, प्रचंड । चोखा, चरपरा । [**तीखी** (स्त्री०)]

तीखन*†—(वि०, दे०) [सं० तीक्ष्ण] तीखा, पैना, तीक्ष्ण ।

तीखुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तवक्षीर] एक पेड़, उसकी जड़ का सत ।

तीछन*†—(वि०, दे०) [सं० तीक्ष्ण] पैना, तीक्ष्ण । "तीछन लगी नैन भरि आये ।"

तीछी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तीक्ष्ण, हिं० तीखी] तीखी, तीक्ष्ण, पैनी, चोखी, चरपरी ।

तीछे—(वि०, दे०) [हिं० तीखा] तीखे, पैने, चोखे ।

तीज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तृतीया] प्रति पक्ष की तीसरी तिथि । भादों के शुक्ल पक्ष की तृतीया को विवाहित स्त्रियों का व्रत-विशेष ।

तीजा—(वि०, दे०) [हिं० तीन] तीसरा, मध्यस्थ । दूसरा, गैर । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तृतीया] भादों सुदी तीज, हर-तालिका का त्योहार या पर्व [**तीजी** (स्त्री०)]

तीजिया—(संज्ञा, दे०) [सं० तृतीया] सावन सुदी तीज का व्रत, छोटी हरतालिका या तीज ।

तीजै—(वि०, दे०) [सं० तृतीया, हिं० तीन] तीजा का त्योहार । तीज । तीसरा, तीसरे । [तीजा, तीजे (दे०)] ।

तीत, तीता*‡—(वि०, दे०) [सं० तिक्त] तीता, तीखा, कडु, चरपरा ।

तीतर, तीतुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तित्तिर] एक चिड़िया, तीतुल (ग्रा०) ।

तीतरी, तीतुरी, तीतुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तित्तिर] तीतरी, तीतली, मादा तीतर ।

तीन, तीनि—(वि०, दे०) [सं० त्रीणि] दो और एक=तीन । तीन लोक । तीन गुण व काल । **मुहा० कौड़ी के—**, तुच्छ, नगण्य होना ।—**पाँच करना**-घुमाव-फिराव और तकरार-हुज्जत की बात करना । **न—में न तेरह में**-किसी भी काम के नहीं । किसी पक्ष में नहीं ।—**तेरह करना (होना)** -बाँट देना । पृथक् करना ।

तीनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तिन्नी का चावल ।

तीमार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सेवा-शुश्रूषा ।—**दार**-(वि०, फ़ा०) बीमारों का सेवक ।—**दारी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बीमारों की सेवा-शुश्रूषा ।

तीय, तिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्त्री] औरत, नारी । "तीय बहादुर सों कह सोवै"—भूषण ।

तीयन—(संज्ञा, पु०, दे०) एक तरकारी । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० स्त्री] तीय का बहुवचन ।

तीयल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तीन] स्त्रियों के तीन कपड़े ।

तीया—देखिए 'तिया' ।

तीरंदाज—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बाण चलाने वाला ।

तीरंदाजी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बाण-विद्या । कमनैती (ग्रा०) ।

तीर—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) नदी का तट, कूल, किनारा । (फ़ा०) बाण, [बान (दे०)] । समीप, पास । "चित करिहौं कुरबान, एक तीर जब पायहौं" । तीरे, किनारे । 'अब विरह तरंगिनि तीरे'—प्रसाद ।—**वर्ती**-(वि०, सं०) तटवर्ती, किनारे पर रहने वाला । पड़ोसी, समीपी । **मुहा० लगा तो—नहीं तुक्का**-कार्य सिद्ध हुआ तो उपाय ठीक, नहीं व्यर्थ ।—**चलाना या फेंकना**-युक्ति या उपाय निकालना या भिड़ाना, ढंग लगाना । **एक—से दो शिकार**-एक साधन से दो कार्य करना । "एक पंथ दो काज" ।

तीरथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तीर्थ] तारने वाला, पवित्र स्थान । संन्यासियों की उपाधि ।

तीरभुक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) तिरहुत देश ।

तीरस्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) मरने वाला पुरुष जो नदी-तट पर पहुँचा हो ।

तीरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तीर] नदी, नदी का किनारा। बाण, शर।

तीर्णा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णवृत्त (पिं०)। सती। तरणिजा।

तीर्थंकर—(संज्ञा, पु०, सं०) जैनियों के देवता जो २४ हैं।

तीर्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) तारने या पार लगाने वाला, मुक्तिदाता। पवित्र स्थान। **—पति**-(संज्ञा, पु०, सं०) तीर्थराज, प्रयाग, [तीरथपति (दे०)]। **—पुरोहित**-(संज्ञा, पु०) पंडा। **—यात्रा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीर्थाटन, तीर्थ-भ्रमण। **—राज**-(संज्ञा, पु०, सं०) [तीरथराज (दे०)] तीर्थनाथ, प्रयाग। **—राजी**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीर्थ-रानी, काशी। **—वाक**-(संज्ञा, पु०,) सिर के बाल। **—व्यास**-(संज्ञा, पु०) तीर्थकाक, तीर्थ का कौआ। **—शिला**-(संज्ञा, स्त्री०) घाट तक लगी हुई सीढ़ियाँ। **—सेवी**-(वि०) साधना के उद्देश्य से तीर्थ में निवास करने वाला। (संज्ञा, पु०) बगला।

तीर्थाटन—(संज्ञा, पु०, सं०) तीर्थ-यात्रा।

तीर्थिक—(संज्ञा, पु०, सं०) तीर्थ का ब्राह्मण या पंडा। बौद्ध धर्म का विद्वेषी ब्राह्मण (बौद्ध)। तीर्थंकर (जैन)।

तीर्थोदक—(संज्ञा, पु०, सं०) तीर्थ का पवित्र जल।

तीर्थ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सहपाठी, साथ पढ़नेवाला मित्र, गुरुभाई।

तीली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० तीर] सींक, धातु का पतला और कड़ा तार।

तीवर—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र, सागर। शिकारी।

तीव्र—(वि०, सं०) बहुत ही तेज, तीक्ष्ण। गरम। कड़ुवा। असह्य [तीखा (दे०)] ऊँचा स्वर।

तीव्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीक्ष्णता, तेजी, तीखापन, चोखापन।

तीस—(वि०, दे०) [सं० त्रिंशत] बीस और दस, दस की तिगुनी संख्या, ३०। **—(सों) दिन या —दिन**-सदा, सब दिन। **—मार खाँ**-बड़ा बहादुर (व्यंग)।

तीसर, तीसरा, तिसरा—(वि०, दे०) [हि० तीन] गैर, दूसरा, बाहरी, अपर। प्रति दो के पीछे आने वाला, तृतीय। [**तीसरी (स्त्री०)**]।

तीसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अतसी] अलसी। तीस गाहियों का एक मान (प्रान्ती०)।

तुंग—(वि०, सं०) ऊँचा। मुख्य। (संज्ञा, पु०, सं०) पुन्नाग पेड़। पहाड़ या शृंग। नारियल। कमल-केसर। शिव। एक वर्णवृत (पिं०)। **—नाथ**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक तीर्थ। **—बाहु**-(संज्ञा, पु०, सं०) तलवार का एक हाथ। **—बीज**-(संज्ञा, पु०) पारा। **—भद्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) मस्त या मतवाला हाथी। **—भद्रा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्षिणी भारत की एक नदी। **—मुख**-(संज्ञा, पु०) गैंडा। **—रस**-(संज्ञा, पु०) एक सुगंधित द्रव्य। **—शेखर**-(संज्ञा, पु०) पहाड़। **—शृंग**-(संज्ञा, पु०) ऊँचा पहाड़, पर्वत। "तुंग शृंग ये शैल कि जिनमें हीरक-रत्न भरे हैं"—दिनकर।

तुंगता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऊँचाई।

तुंगारण्य—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) बेतवा नदी के तट पर झाँसी के पास का एक वन। [तुंगारन्न (दे०)]

तुंड—(संज्ञा, पु०, सं०) मुँह। चोंच। सूँड़, थूथुन (ग्रा०)। तलवार का अगला खंड। शिव। "करता दीखै कीरतन, ऊँचा करिकै तुंड"—कबीर।

तुंडि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मुख। चोंच। नाभि।

तुंडी—(वि०, सं०) [सं० तुंडिन्] मुख, चोंच, थूथुन या सूँड़वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) गणेश। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाभि, ढोंढ़ी (ग्रा०)।

तुंद—(संज्ञा, पु०, सं०) उदर, पेट, [तोंद (दे०)]। (वि०, फ़ा०) घोर, तेज, प्रचंड।

तुंदिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नाभि। [तोंदी (दे०)]।

तुंदिल—(वि०, सं०) तोंदवाला, जिसके बड़ा पेट है। "तुंदिल गणेश महा ऊधम मचाते हैं।" [तोंदीला (दे०)]

तुंदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुंद] नाभि। तोंदी।

तुंदैल—(वि०, दे०) [सं० तुंदिल] जिसके तोंद या बड़ा पेट हो [तुँदैला (दे०)]।

तुंबड़ी, तूँबड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तूँबा] तुमड़ी, तोंबी, तुँबी।

तुंबर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुंबुरु] धनिया। एक गन्धर्व।

तुंबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तूँबा] तूँबा, तोंबा।

तुंबी, तुंबरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तूंबा] तोंबी, तुंबी। "ते सिर कटु तुम्बी सम तूला"—[रामा०]। लो०—"कटुक तुंबरी सब तीरथ करि आई।"

तुंबुरु—(संज्ञा, पु०, सं०) एक गंधर्व। धनिया।

तुअ, तुव*‡—(सर्व०, दे०) [सं० तव] तुम्हारा।

तुअना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चूना] टपकना, चूना। गिर पड़ना। गर्भ गिरना।

तुअर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अरहर।

तुई*†—(सर्व०, दे०) [सं० त्वम्] तू, तुही, तुम्हीं।

तुक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टूक] गीत की कड़ी। पद्य के चरणान्त के वर्णों का मिलान, वर्ण-मैत्री, अन्त का अनुप्रास, काफ़िया (फ़ा०)। सामंजस्य, व्यवस्था। **मुहा०—जोड़ना**-निकृष्ट काव्य करना। **—बन्दी**-(संज्ञा, स्त्री०) [हि० तुक+बंदी फ़ा०] केवल तुक मिलाने या साधारण काव्य करने का कार्य। काव्य-गुण-हीन काव्य।

तुकमा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) घुंडी के फँसाने का फंदा, तसमा।

तुकांत—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० तुक+अंत सं०] छंद के चरणों के अंतिम वर्णों का मिलान, काफिया (फ़ा०)। अन्त का अनुप्रास। [(विलो०) **अतुकान्त**]।

तुका—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) घुंडीदार तीर या बान। [तुक्का (दे०)]

तुकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तू+कार सं०] तू कहना (अनादर-सूचक)। बुरा संबोधन।

तुकारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तुकार] तू कहकर बुलाना या संबोधन करना (अपमानार्थ में)।

तुकड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तुक] तुकबंदी करने वाला। साधारण कविता करने की शक्ति रखनेवाला। [**तुकड़ी** (वि०)]

तुक्कल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० तुका] बड़ी पतंग।

तुक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [फा० तुका] घुंडीदार तीर या बान। "है कोई तुक्केबाज खंचकै तुक्का मारै"—गिरि०।

तुख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुष] छिलका, भूसी।

तुखार—(संज्ञा, पु०, सं०) एक देश का पुराना नाम। इस देश के निवासी, या घोड़े। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुषार] पाला, हिम, तुषार।

तुख्म—(संज्ञा, पु०, अ०) बीज, बीया। "तुख्म तासीर सोहबते असर।"

तुचा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० त्वचा] चमड़ा, खाल, त्वचा। "मरी नागिनी तुचा सम।"

तुच्छ—(वि०, सं०) छोटा, नीच, ओछा। थोड़ा, हलका।

तुच्छता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटापन, नीचता, ओछापन। अल्पता। [**तुच्छत्व** (संज्ञा, पु०)]।

तुच्छातितुच्छ—(वि०, सं०, यौ०) छोटे से छोटा, अति नीच या ओछा। बहुत थोड़ा।

तुजुक—(संज्ञा, पु०, अ०) अदब, शान। "तिनको तुजुक देखि नेक हू न लरजा"—भूषण।

तुझ—(सर्व०, दे०) [सं० तुभ्यम्] सम्बन्ध और कर्त्ता कारक को छोड़ शेष कारकों में तू का रूप (अनादर-सूचक), तुज्झ (ग्रा०)।

तुझे—(सर्व०, दे०) [हि० तुझ] तू शब्द के कर्म और संप्रदान कारक में रूप, तुझको, तेरे लिए। [**तोहि, तोकहँ** (ब्र०)]

तुट*—(वि०, दे०) [सं० त्रुट] बहुत ही थोड़ा, लेश मात्र।

तुट्ठना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० तुष्ट] प्रसन्न या संतुष्ट करना। (क्रि० अ०, दे०) संतुष्ट या प्रसन्न होना।

तुड़वाना, तोड़वाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तोड़ना का प्रेरणा० रूप] तोड़ने का काम दूसरे व्यक्ति से कराना, तुड़ाना, तोड़ाना।

तुड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तुड़ाना] तुड़ाने या तोड़ने का भाव, क्रिया या मजदूरी।

तुड़ाना, तोड़ाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तोड़ना] तोड़ने का काम कराना। पृथक् करना, सम्बन्ध न रखना। भुनाना (रुपया)।

तुतरा, तुतला*—(वि०, दे०) [हि० तोतला] तुतला कर बोलने वाला। [तोतला (दे०)] तोतर (ग्रा०)। [**तुतरी, तुतली** (स्त्री०)]

तुतराना, तुतलाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तुतुलाना] तुतला कर बोलना, तोतलाना।

तुतरौहाँ*†—(वि०, दे०) [हि० तोतला] तुतलाने वाला, तोतला, तुतला।

तुतुही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) टोंटीदार छोटी घंटी।

तुत्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) तूतिया ।

तुदन—(संज्ञा, पु०, सं०) पीड़ा देने की क्रिया । व्यथा, पीड़ा ।

तुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुन्न] एक पेड़, तून, जिसके फूलों से पीला रंग बनता है ।

तुनकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक तरह की पतली रोटी । (वि०, दे०) [हि० तुनुक] रंच मात्र में रुष्ट होने वाला । [**तुनुकमिजाजी** (यौ०)]

तुनतुनाना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) महीन स्वर से सितार आदि बजाना, टुनटुनाना ।

तुनीर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तूणीर] तरकश, भाथा, तूणीर, [तूनीर (दे०)] ।

तुपक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [तु० तोप] छोटी तोप या बंदूक । " वीर तुपक चलावै है "—द्विज० ।

तुपकिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [तु० तोप] छोटी बंदूक । (संज्ञा, पु०) [तु० तोप] बंदूक चलाने वाला ।

तुफंग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [तु० तोप] हवाई बंदूक ।

तुफान, तूफान—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० तूफान] जोर की आँधी और पानी, तोफनि (ग्रा०) । उपद्रव ।

तुभना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्तंभन] चकित या अचम्भित रहना, स्तब्ध रहना ।

तुम—(सर्व०, दे०) [सं० त्वम्] तू का बहुवचन (आदरार्थ) । "तुम किन आकाशों में मन को ले जाती हो नीलिमा तरल"—पंत ।

तुमड़ी, तुमरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुंबिनी] तूमड़ी, तोंबी, तुंबी, तोमड़ी, मोहर (बाजा) ।

तुमरा—(सर्व०, दे०) [सं० युष्माकम्] तुम्हारा ।

तुमरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुंबुरु] धनिया । एक गंधर्व ।

तुमल, तुमर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुमुल] फौज की धूम । कोलाहल, शोर । युद्ध की हलचल, कठिन युद्ध । (वि०) घोर ।

तुमाना—(क्रि० स०, दे०) दूसरों द्वारा तूमने का कार्य कराना, उँगलियों द्वारा रुई की सफाई कराना ।

तुमुल—(संज्ञा, पु०, सं०) कोलाहल, शोर । विकट लड़ाई । बहेड़े का वृक्ष । (वि०, सं०) घोर । सुदीर्घ ।

तुम्ह‡—(सर्व०, दे०) [सं० त्वम्] तुम, तुमको ।

तुम्हारा, तुम्हार, तुम्हरा—(सर्व०) [हि० तुम] तुम का संबंध-कारक । [**तुम्हारो, तिहारो** (ब्र०)] [**तोहार, तोर** (अव०)] त्वार (ग्रा०) ।

तुरंग—(संज्ञा, पु०, सं०) घोड़ा । चित्त । सात की संख्या ।

तुरंगक—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ी तोरई (शाक) ।

तुरंगम—(संज्ञा, पु०, सं०) घोड़ा । चित्त । एक वृत्त (पिं०) ।

तुरंगिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवताली लता ।

तुरंगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घोड़ी, असगंध । (संज्ञा, पु०) घुड़सवार ।

तुरंज—(संज्ञा, पु०, फा०) नींबू, चकोतरा या बिजौरा नींबू ।—**बीन**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०, यौ०) नींबू के रस का शरबत ।

तुरंत—(क्रि० वि०, दे०) [सं० तुर] शीघ्र, झटपट । तुरंतै, तुरत, तुरतै (ग्रा०) ।

तुरई, तुरइया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तूर] एक तरकारी [तोरई (दे०)] ।

तुरक, तुर्क—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुरुष्क] तुर्किस्तान का निवासी, तुरुक (ग्रा०) ।

तुरकटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तुर्क + टा हि० प्रत्य०] मुसलमान (अपमान-सूचक) ।

तुरकान, तुरकाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तुर्क] तुरकों के समान, तुरकों जैसा । तुरकों का देश या बस्ती ।

तुरकानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तुर्की औरतों का ढीलाढाला वस्त्र । तुर्की औरत । " हौं तौ तुरकानी हिंदुवानी ह्वै रहौंगी मैं "—ताज० ।

तुरकिन, तुरकिनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० तुर्क] तुर्क जाति की स्त्री, तुरकानी ।

तुरकी—(वि०, पु०, फ़ा०) तुर्क देश का । वहाँ का घोड़ा । तुर्कों का । (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तुरकिस्तान की बोली ।

तुरग—(संज्ञा, पु०, सं०) घोड़ा । चित्त । [**तुरगी** (स्त्री०)]

तुरत—(अव्य०, दे०) [सं० तुर] जल्दी, शीघ्र, तुरंत, झटपट । तुरतै (ग्रा०) ।

तुरपन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तुरपना] एक सिलाई । [**तुरुपना** (क्रि० स०, दे०)]

तुरपवाना—(क्रि० स०)[हि० तुरपना का प्रेरणा० रूप] दूसरों द्वारा तुरपन (सिलाई) कराना ।

तुरमती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाज-सा पक्षी।

तुरय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुरंग] घोड़ा।

तुरशी, तुरसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खट्टापन, खटाई।

तुरसीला—(वि०, दे०) घायल करने वाला। पैना, तीखा। खट्टा। "फूल छरी सी नरम करम करधनी शब्द हैं तुरसीले"—नारा०।

तुरही, तोरही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तूर] [तुरुही (दे०)] एक बाजा, जो मुँह मे लगा कर बजाया जाता है। तूर्य (सं०)।

तुरा, तुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० त्वरा] जल्दी, उतावली। (संज्ञा, पु०) [सं० तुरग] घोड़ा।

तुराई†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तूलिका] गद्दा। [हि० तुरा] शीघ्रता।

तुराना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तुर] घबराना, उतावली करना, आतुर होना। [**तुड़ाना, तोड़ाना** (क्रि० स०, दे०)]

तुरायण—(संज्ञा, पु०, सं०) अनासक्ति, एक प्रकार का यज्ञ।

तुरावती—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० त्वरावती] वेगवती, शीघ्रगामिनी।

तुरिया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुरीय] चौथी या ज्ञान की दशा या अवस्था।

तुरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक काठ का जुलाहों का औजार जो कपड़ा बुनने के काम आता है। तूलिका, कूँची। वसुदेव की एक स्त्री का नाम। घोड़ी। फूलों का समूह या गुच्छा।—**यंत्र**-(संज्ञा, पु०) सूर्य की गतिविधि जानने का यंत्र-विशेष।

तुरीय—(वि०, सं०) चतुर्थ, चौथा, चौथी अवस्था। [**तुरीया** (स्त्री०)]

तुरुष्क—(संज्ञा, पु०, सं०) तुर्क जाति। तुर्किस्तान के निवासी। तुर्की भाषा। तुर्की घोड़ा।

तुरुप—(संज्ञा, पु०, दे०) ताश के खेल में सब को जीतने वाला निश्चित रंग। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [(**तुरुपना** (क्रि० स०, दे०)] सीना, टाँकना।

तुर्क—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुरुष्क] तुर्किस्तान का निवासी। [**तुर्की** (वि०)]—**मान**-(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तुर्क] तुर्क-जाति का मनुष्य। तुर्की घोड़ा।

तुर्किस्तान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) तुर्कों का देश जो रूस और अफगानिस्तान के मध्य में स्थित है।

तुर्की—(वि०) [फ़ा० तुर्की] तुर्किस्तान का। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तुर्किस्तान की भाषा। वहाँ की बनी वस्तु। वहाँ का घोड़ा। अकड़, गर्व, ऐंठ।

तुर्याश्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) संन्यासाश्रम, जीवन की अंतिम अवस्था, चतुर्थ आश्रम।

तुर्रा—(संज्ञा, पु०, अ०) कलँगी। चोटी। कोड़ा। (वि०, फ़ा०) अनोखा, अजीब। **मुहा०—यह कि**-उस पर भी, इतना और, सब के पीछे, इतना और भी।

तुर्वसु—(संज्ञा, पु०, सं०) ययाति का पुत्र।

तुर्श—(वि०, फ़ा०) खट्टा, अम्ल।

तुर्शी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) [तुरसी (दे०)] खटाई, अम्लता। [**तुर्शीला, तुरसीला** (वि०, दे०)]

तुल, तूल*—(वि०, दे०) [सं० तुल्य] समान, बराबर, तुल्य। "कहहि सीय सम तूल"—[रामा०]।

तुलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तुल] समानता। या तुल्यता करना, बराबर करना। तौल होना। समता करना, बराबरी करना, मिलान करना।

तुलनात्मक—(वि०, सं०) तुलनायुक्त, वस्तु-विशेष मे (जिसमें) तुलना की जाय। [कम्पेरेटिव]

तुलवाई, तौलवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तौलना] तौलने की मजदूरी। [तौलाई, तुलाई (दे०)]

तुलवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तौलना का प्रेरणा० रूप] किसी वस्तु को किसी से तौलाना, तौलवाना। गाड़ी को ओंगवाना। [**तुलवाई** (संज्ञा, स्त्री०)]

तुलसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक पवित्र पौधा।—**दल**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तुलसी के पौधे की पत्ती।—**दास**-(संज्ञा, पु०, सं०) रामायण बनाने वाले एक संत कवि, तुलसी।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) तुलसी की पत्ती, तुलसीदल।

तुला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समानता, मिलान। तराजू। मान। एक राशि (ज्यौ०)। "धरिय तुला इक अंग"—[रामा०]।—**दान**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) मनुष्य की तौल के बराबर किसी पदार्थ का दान।—**धार**-(संज्ञा, पु०, सं०) तुला राशि। बनिया। काशी-निवासी एक ज्ञानी बनिया। माता-पिता का अनन्य सेवक। एक व्याध।—**परीक्षा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्राचीन काल में अभियुक्त को दो बार तौलते थे, यदि समान ही रहे तो

निर्दोष माना जाता था।—**यंत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) तराजू, तखरा।

तुलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तूल] दुलाई। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तुलना] तौलने का भाव या काम, तौलने की मजदूरी। [तौलाई, तौलवाई (दे०)]

तुलाना, तौलाना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० तुलना] पूरा उतरना। पहुँचना, आ पहुँचना। मिलाना, जोखाना (ग्रा०)। "नाचहिं राकस आस तुलानी"—[पद०]।

तुलित—(वि०, दे०) [सं० तुल्य] तुला हुआ, बराबर, समान, तुल्य। [**तुलनीय** (वि०)]।

तुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तूलिका, चित्र बनाने की कलम।

तुले—(क्रि० स०, दे०) [हिं० तुलना] जो तौला जा सके, तौला गया।

तुल्य—(वि०, सं०) बराबर, सदृश, समान।—**दर्शन**-(वि०, सं०) समानता पर जोर देने वाला दर्शन, समदृष्टि।—**योगिता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) एक अलंकार जिसमें बहुत से उपमेयों या उपमानों का एक ही धर्म कहा गया हो।

तुल्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समता, बराबरी।

तुव—(सर्व, दे०) [सं० तव] तुम्हारा।

तुवर—(संज्ञा, पु०, सं०) अरहर।

तुष—(संज्ञा, पु०, सं०) छिलका, भूसी। [तुस (दे०)]—**अग्नि**,—**सार**-(संज्ञा, पु०) घास-फूस की अग्नि।

तुषानल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) भूसी, फूस या घास की आग।

तुषार—(संज्ञा, पु०, सं०) पाला, बरफ, हिम। [तुसार, तुखार (दे०)]।—**पर्वत**-(संज्ञा, पु०) हिमालय।—**पाषाण**-(संज्ञा, पु०) ओला, बर्फ, हिम।—**मूर्ति**-(संज्ञा, पु०) चन्द्रमा।—**शैल**-(संज्ञा, पु०) हिमालय।

तुषाराद्रि—(संज्ञा, पु०) हिमालय।

तुषित—(संज्ञा, पु०) एक गणदेवता जिनकी संख्या १२ या ३६ है। विष्णु।

तुष्ट—(वि०, सं०) तृप्त, प्रसन्न।

तुष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सन्तोष, प्रसन्नता।

तुष्टना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तुष्ट] प्रसन्न होना, सन्तुष्ट या तृप्त होना।

तुष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तृप्ति, सन्तोष, प्रसन्नता।

तुस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुष] भूसी, छिलका।

तुसार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुषार] पाला, हिम।

तुसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुष] भूसी, छिलका।

तुहार†—(सर्व०, दे०) [हिं० तुम] तुम्हारा, तुम्हार, तोहार, तोर (ग्रा०)।

तुहिं, तुहीं—(सर्व०, दे०) [हिं० तू] तोही, तुझको, तुझे, तोहिं। "कहु सठ तुहिं न प्रान की बाधा" —[रामा०]।

तुहिन—(संज्ञा, पु०, सं०) तुषार, पाला, हिम। "परसत तुहिन ताम-रस जैसे"—[रामा०]।—**कण**-(संज्ञा, पु०) ओस। हिम-खड।

तुही, तूही—(सर्व०, दे०) [हिं० तू] तुम्हीं, तू। (संज्ञा, स्त्री०, अनु०) पिक-शब्द। कोयल की कूक। "अंगद तुही बालि कर बालक"—[रामा०]।

तूँ—(सर्व० दे०) [हिं० तू]। "जित देखौं तित तूँ"—कबीर।

तूँबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुम्बक] तुम्बा, कमंडल, सितार का तूँबा।

तूँबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तूँबा] छोटा तुम्बा, कमंडल। मोहर बाजा। गोल लौकी। तुम्बी।

तू—(सर्व०, दे०) [सं० त्वम्] मध्यमपुरुष, एकवचन (अनादर-सूचक)। ईश्वर के लिए सम्बोधन का शब्द। "तू ही तू इस विश्व मे"—मैथिली०। —**तड़ाक**-(यौ०) अनादर-सूचक शब्द कहना।

तूख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुष] खरका। तिनका, भूसा, तिनके का टुकड़ा।

तूठना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तुष्ट] प्रसन्न, संतुष्ट या तृप्त होना।

तूठ्यो—(वि०, दे०) [हिं० तूठना] तृप्त, सन्तुष्ट। प्रसन्न।

तूण—(संज्ञा, पु०, सं०) तरकश, भाथा। [तूनीर (दे०)]

तूणक—(संज्ञा, पु०) पंद्रह अक्षरों वाला एक छंद।

तूणव—(संज्ञा, पु०, सं०) बाँसुरी।

तूणीर—(संज्ञा, पु०, सं०) तरकश, भाथा, तूण। "जटामुकुट सिर, कटि तूणीरम्"—[रामा०]।

तूत—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) शहतूत।

तूतन—(संज्ञा, पु०, दे०) कतरन, रेतन । (सर्व०, दे०) तेरी ओर ।

तूतिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नीला थोथा ।

तूती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) छोटा तोता । [तोती (दे०)] एक छोटी चिड़िया । एक छोटा बाजा । **मुहा० किसी की—बोलना**-अच्छा प्रभाव जमना, खूब चलना, आतंक होना । **नक्कार खाने में—की आवाज**-बड़ों के सम्मुख छोटों की बात कौन सुनता है ।

तूतू—(संज्ञा, पु०, दे०) कुत्ते के बुलाने का शब्द । किसी को अनादर से बुलाना या सम्बोधन करना । **मुहा०—मैंमैं होना (करना)**-(क्रि० अ०, दे०) वाद-विवाद या झगड़ा होना ।

तू-तैं करना—(क्रि० अ०, दे०) अपमानित करना या झगड़ा मचाना ।

तूदा—(संज्ञा, पु०,फ़ा०) राशि, ढेर, समूह, टीला । सीमा का चिह्न ।

तून—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुन्तक) तुन का पेड़ । टून वस्त्र । (**संज्ञा, पु०**, दे०) [सं० तूण] तूण, भाथा, तूणीर, तरकश । [**तून** (यौ०)] ।

तूनना—(क्रि० स०, दे०) रुई के रेशों को हाथ से अलग करना, तूमना । धुनना ।

तूना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० चूना] टपकना, चूना ।

तूनीर—(**संज्ञा**, पु०, दे०) [सं० तूणीर] तरकश, भाथा ।

तूफान—(संज्ञा, पु०, अ०) पानी की बाढ़ । बड़ी भारी आँधी जिसमें पानी भी बरसे । महावृष्टि । कोई उत्पात । आँधी । आफत, झगड़ा, हुल्लड़ । झूठा दोष लगाना । (वि०) अति वेगवान । **मुहा० —लाना (उठाना)**-भारी आपत्ति खड़ी करना । आन्दोलन करना । फैला देना ।

तूफानी—(वि०, फ़ा०) उपद्रवी, बखेड़िया । प्रचंड, झूठा कलंक लगाने वाला ।—**दौरा**-अनेक स्थानों में अत्यन्त अल्प समय में भ्रमण ।

तूमड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तूँबा] छोटा तूँबा, तूँबी, मौहर बाजा [तूमरी (दे०)] ।

तूमतड़ाक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शान-शौकत, ठसक, शेखी, तड़क-भड़क ।

तूमना—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्तोम] उधेड़ना, रेशा-रेशा करना, धुनना ।

तूमार—(संज्ञा, पु०, अ०) ढेर । व्यर्थ बातों का फैलाव या विस्तार, बात का बतंगड़ । **मुहा०—बाँधना**-विस्तार बढ़ाना ।

तूमिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तोम] बेहना, रुई धुनने वाला ।

तूर—(संज्ञा, पु०, सं०) नगाड़ा, तुरही [तूरि (दे०)] "बाजत तूर झाँझ चहुँफेरी "—[पद०] । (संज्ञा, पु०, अ०) एक पहाड़ ।

तूरज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तूर] तुरही बाजा । " इत तूरज सुरज कौ बजाइ "—सुजान० ।

तूरण, तूरन—(क्रि० वि०, दे०) [सं० तूर्ण] तूर्ण । शीघ्र, तुरन्त, जल्दी । " इनहीं के तप तेज तेज बढ़िहै तन तूरण "—[रामा०] ।

तूरना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टूटना] तोड़ना । [तोरना (दे०)] "पूजिबे काज प्रसूननि तूरति" —दास० ।

तूरान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक देश ।

तुरानी—(वि०, दे०) तूरान देश का । (संज्ञा, पु०) तूरानदेश-वासी, वहाँ जन्मा हुआ, वहाँ की भाषा ।

तूरी—(वि०, दे०) तुल्य, समान । [**तुरही** (**संज्ञा**, स्त्री०)]

तूर्ण—(क्रि० अ०, सं०) शीघ्र, तुरन्त, जल्दी ।

तूर्णक—(संज्ञा, पु०, सं०) चावल का एक प्रकार ।

तूर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) नगाड़ा, भेरी, दुन्दुभी । (वि०) तुरीय । चतुर्थ ।

तूल—(संज्ञा, पु०, सं०) आकाश । कपास । शहतूत । मदार । सेमर का घुवा । " सबको ढंपन होत है जैसे वन को तूल "—वृंद० । "तूल किहि लेखे याही"—तुल० । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तून] लाल रंग का वस्त्र । लाल रंग (वि०, दे०) [सं० तुल्य] बराबर, तुल्य, समान । " कहहिं सीय सम तूल "—तुल० ।—**कार्मुक,—चाप** (धनुष)-(संज्ञा, पु०) धुनकी ।—**नालिका, नाली**-(संज्ञा, स्त्री०) प्यूनी ।—**पिचु**-(संज्ञा, पु०) रुई ।—**वृक्ष**-(संज्ञा, पु०) सेमर का वृक्ष । —**शर्करा**-(संज्ञा, स्त्री०) बिनौला, कपास का बीज । (संज्ञा, पु०, अ०) अधिक विस्तार ।—**तवील**-(वि०) अधिक विस्तृत, ब्योरेवार । **मुहा० —पकड़ना**-अधिक बढ़ जाना ।

तूलक—(संज्ञा, पु०) रुई ।

तूलना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तुलना] धुरी में तेल देना । तौलना । नापना ।

तूलनीय—(संज्ञा, पु०) [सं० तूल] कदम का पेड़ ।

तूलमतूल—(अ०) समक्ष, सामने, आमने-सामने ।

तूला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कपास । " तूला सब संकट सहति "—सुख० ।

तूलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चित्र या तसवीर बनाने की कलम ।

तूलिनी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तूला] कपास । सेमर ।

तूली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तूला] नील का पेड़ । तसवीर या चित्र बनाने की कलम या बरौंछी ।

तूवर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तोमर] राजपूतों की जाति ।

तूष्णीम्—(वि०, सं०) चुप, मौन । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) चुप्पी, मौनता ।

तूस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुष] छिलका, भूसी । [(तिब्बती) थोश] पशम, पशमीना । कम्बल, नमदा ।

तूसदान—(संज्ञा, पु०, यौ०) [पुर्त्त० कारटूश + दान] तोसदान, कारतूसदान ।

तूसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० तुष्ट] तृप्त, संतुष्ट या प्रसन्न करना । (क्रि० अ०, दे०) तृप्त, संतुष्ट या प्रसन्न होना ।

तृख—(संज्ञा, पु०, दे०) जायफल ।

तृखा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तृषा] प्यास । तिरखा (ग्रा०) । " चातक रटै तृखा अति ओही " —[रामा०] ।

तृजग*—(वि०, दे०) [सं० तिर्य्यक] पशु । पक्षी ।

तृण—(संज्ञा, पु०, सं०) कुश । काँसा । सरपत । बाँस । गाँडर । घास । [तृन, तिन (दे०)] तरुणियाँ तन थीं तृण तोड़ती—हरिऔध । " तृण धरि ओट कहति वैदेही "—[रामा०] । **—धान्य**–(संज्ञा, पु०, सं०) तिन्नी धान का चावल [तिन्नी धान (दे०)] ।**—मय**–(वि०, सं०) घास-फूस का बना हुआ ।**—विन्दु**–(संज्ञा, पु०, सं०) व्यास जी । एक तीर्थ ।**—शय्या**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) साथरी, कास-कुसीं या घास-फूस से बनी चटाई । " तृण-शय्या महि सोवहिं रामा "—[रामा०] ।**—वत्**–(वि०, सं०) तिनके के समान, अत्यन्त छोटी स्थिति का । **मुहा० (दाँतों में)—गहना या पकड़ना**–गिड़गिड़ाना। हीनता दिखाना । "दसन गहहु तृण कंठ कुठारी "—[रामा०] । **किसी चीज पर—टूटना**–नजर से बचाने का उपाय करना ।**—तोड़ना**–नजर से बचाना ।**—सा तोड़ना**–लगाव त्यागना या छोड़ना । " देह गेह सब तृण सम तोरे"—[रामा०] ।

तृणारणिन्याय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) घास फूस और अरणी लकड़ी से आग प्रगट होने की तरह स्वच्छंद या भिन्न-भिन्न कारणों को व्यवस्था (न्याय०) ।

तृणावर्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण को मारने के लिए कंस द्वारा प्रेरित बवंडर रूप धारी राक्षस । बवंडर, वाताचक्र । "तृणावर्त्त मारि कै पछारि छार कीन्हों जिन"—कुंजवि० ।

तृणावरतीय—(वि०, सं०) तृणावर्त्त सम्बन्धी, तृणावर्त्त का । "यह तृणावरतीय बिडम्बना"—हरिऔध ।

तृणोदक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) घास और पानी, पशुओं का भोजन, चारा-पानी ।

तृतीय—(वि०, सं०) तीसरा ।

तृतीयांश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तिहाई, तीसरा भाग ।

तृतीया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीज । करण-कारक (सं०, व्या०) । "कर्तृ करणयोस्तृतीया"—कौ० ।

तृतीयाश्रम—(संज्ञा, पु०) वानप्रस्थ, जीवन की तृतीय स्थिति का आश्रम ।

तृन, तिन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तृण] घास-फूस, तिनका (ग्रा०) ।

तृपति, तृपित‡*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तृप्ति] तृप्ति, सन्तोष । (वि०, दे०) [सं० तृप्त] तृप्त, संतुष्ट ।

तृप्त—(वि०, सं०) प्रसन्न, सन्तुष्ट, अघाया ।

तृप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सन्तोष, खुशी, प्रसन्नता, मानसिक तुष्टि ।

तृषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लोभ । प्यास । इच्छा । [**तृषावत, तृषावान्, तृषावन्त** (वि०, सं०)] प्यासा, अभिलाषी ।

तृषाकुल—(वि०, सं०, यौ०) प्यास से बेचैन [हि० तृषा + आकुल] । "उस जगह जलधार बहता जिस जगह पर है तृषाकुल"—बच्चन ।

तृषालु—(वि०, सं०) पिपासु, प्यासा ।

तृषावान—(वि०, सं०) तृषालु, प्यासा ।

तृषित—(वि०, सं०) प्यासा । अभिलाषी । "तृषित वारि-बिनु जो तनु त्यागा"—[रामा०] ।

तृषिताधर—(वि०, सं०, यौ०) [हि० तृषित+अधर] प्यास से सूखे ओंठ। "तृषिताधर जिसके फड़क रहे।"—हितैषी।

तृष्णा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लोभ, लालच। प्यास। "तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा"—भर्तृ० । [तृस्ना, तिसना (दे०)] "तृस्ना तरल तरंग राग है ग्राह महाबल"—भा० भर्तृ० (कुंज वि०)।

तृष्णालु—(वि०, सं०) प्यासा, लोभी, तृष्णा रखने वाला।

तें*—(प्रत्य०, दे०) [सं० तस् प्रत्य०] से, द्वारा। "तू तो तजि है नाहीं आपही तें तजि जैहै"—भा० भर्तृ० (कुंज वि०)।

तेंदुआ, तेंदुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) चीता जैसा एक हिंसक जन्तु।

तेंदू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तिंदुक] एक पेड़ जिसकी पक्की लकड़ी आबनूस कही जाती है।

ते*—(अव्य०, दे०) [सं० तस् प्रत्य०] से। (सर्व० ब० व०, ब्र०) वे। "तब ते जीव भयउ संसारी" —तुल०।

तेऊ—(सर्व०, ब्र०) [हि० वे] सब के सब, वे भी। "भेष प्रताप पूजियत तेऊ"—[रामा०]।

तेकाला—(संज्ञा, पु०, दे०) त्रिशूलाकार एक हथियार। मछली पकड़ने का यंत्र।

तेखना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तेहा] क्रोधित या रुष्ट होना, बिगड़ना।

तेग—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) तलवार, खड्ग।

तेगबहादुर—(संज्ञा, पु०) सिक्खों के गुरु।

तेगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० तेग] छोटी तलवार।

तेज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तेजस्] प्रताप, आभा। लिंग शरीर। एक तत्व। (वि०, दे०) पैना, तेज। (वि०, फ़ा०) पैना। शीघ्रगामी, फ़ुरतीला। महँगा। प्रभाव। बुद्धिमान।—**मान**-(वि०) [सं० तेजोवान] प्रतापी।—**तर्रोक**-(वि०, फ़ा०, यौ०) खरा, उग्र। चतुर।—**वन्त**-(वि०, सं०) प्रतापी, तेजवान। "तेजवंत लघु गनिय न रानी"—[रामा०]।—**वान**-(वि०, दे०) [सं० तेजोवान्] प्रतापी, तेजस्वी। [**तेजी** (संज्ञा, स्त्री०)]

तेजपत्ता, तेजपात—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तेजपत्र] तमाल पत्र का पत्ता।

तेजबल—(संज्ञा, पु०, सं०) एक औषधि।

तेजस्—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रताप, प्रभाव। एक तत्व।—**वान**-(वि०, सं०) तेजवाला, आभावाला।

तेजसी—(वि०, दे०) [हि० तेजस्वी] प्रतापवान्।

तेजस्विता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रतापी होने का भाव।

तेजस्विनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रतापिनी, महाज्योतिष्मती।

तेजस्वी—(वि०, दे०) [सं० तेजस्विन्] प्रतापी।

तेजाब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) तेजपानी, एक औषधि। [**तेजाबी** (वि०)]।

तेजी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तेज होने का भाव, तीव्रता, महँगी। फ़ुरती।

तेजोज्वल—(वि०, दे०) [सं० तेज+उज्वल] प्रखर, आभापूर्ण, प्रदीप्त, प्रकाशमान। "भारत की किस्मत का टूटा सबसे तेजोज्वल तारा"—बच्चन।

तेजोमंडल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) प्रभामंडल, प्रताप का गोला। देवताओं, सूर्यादि के चारों ओर कांति का गोला।

तेजोमय—(वि०, सं०) अति प्रकाश, प्रताप और ज्योति वाला।

तेजोमूर्त्ति—(संज्ञा, पु०, सं०) जिसमें तेज, प्रतिभा की मात्रा अधिक हो, तेज-स्वरूप।

तेजोरूप—(संज्ञा, पु०, सं०) जिसका रूप प्रकाश-पुंज की तरह हो।

तेजोवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महाज्योतिष्मती। गजपिप्पली। तेज से युक्त।

तेजोवान—(वि०, सं०) तेज से युक्त, तेजवान, प्रतिभाशाली।

तेजोहत—(वि०) [सं० तेज+आहत] जिसका तेज या श्री नष्ट हो गयी हो, श्रीहीन।

तेतना†—(वि०, पु०, दे०) [हि० तितना] उतना, तितना, तेत्ता (ग्रा०)। [**तेतनी, तेती** (स्त्री०)]

तेता†—(वि०, पु०, दे०) [सं० तावत्] तितना, उतना। [**तेतो** (ब्र०)]। "तेते पाँव पसारिये"—वृं०। [(विलो०) **जेतो**]। [**तेते** (ब्र०)]

तेतिक*†—(वि०, दे०) [हि० तेता] उतना, तितने। [तित्ते (दे०)]

तेते—(सर्व, दे०) [हि० वे वे] वे-वे। उतने। जितने।

तेतो*†—(वि०, दे०) [हि० तेता] तितना, उतना। तित्तो (ग्रा०)। [(विलो०) **जेतो**]

तेमन—(वि०, दे०) ओदा, गीला। एक भोजन।

तेरस, त्यारस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० त्रयोदशी] त्रयोदशी। पाख की १३ वीं तिथि।

तेरही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तेरह] मृतक के मरने के तेरहवें दिन पर शांति-कर्म।

तेरा—(सर्व०, दे०) [सं० तव] तुम्हारा, तेरो। तिहारो (ब्र०)। तू का सम्बन्ध कारक में रूप। "तेरा तुझको सौंपते क्या लागे है मोर"—कबीर। (संज्ञा, पु०, दे०) तेरह। [**तेरी** (स्त्री०, दे०)] **मुहा०** **तेरी सी**-तेरे अनुकूल।

तेरुस*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० त्योरुस] पिछला या अगला। तीसरा वर्ष।

तेरे†—(अव्य०, दे०) [हिं० ते] से। (सर्व०, हिं०) तुम्हारे, तिहारे (ब्र०)।

तेरो*—(सर्व०, ब्र०) [हिं० तेरा] तेरा। [**तिहारो** (ब्र०)]।

तेल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तैल] तैल, रोगन। विवाह की एक रीति। [**तेलफुलेल** (यौ०)]। **मुहा०**—**चढ़ना**-वर-वधू के तेल लगाया जाना। "तिरिया-तेल, हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार।"

तेलगू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तैलग] तैलंग देश की बोली या भाषा।

तेलहन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० तेल] सरसों आदि बीज जिनसे तेल निकलता है। [तिलहन (दे०)]।

तेलहा†—(वि०, पु०, दे०) [हिं० तेल] तेल से सम्बंध रखने वाला, तेल-युक्त।

तेला—(संज्ञा, पु०, दे०) तीन दिन-रात का व्रत।

तेलिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तेली] तेली की या तेली जाति की स्त्री। एक बरसाती कीड़ा।

तेलिया—(वि०, दे०) [हिं० तेल] तेल-सा चिकना, चमकीला या तेल के रंग का। (संज्ञा, पु०) काला चिकना तथा चमकीला रंग। तेल जैसे रंग का घोड़ा। एक बबूल। सींगिया विष। तेली।—**कंद**-(संज्ञा, पु०) [सं० तैल+कंद] एक कंद जिसके पास की भूमि तेल से तर दीखती है।—**कुमैत**-(संज्ञा, पु०, हिं०) घोड़े का एक रंग।—**सुरंग**-(संज्ञा, पु०, हिं०) घोड़े का एक रंग।

तेली—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० तेल] तेल बनाने या बेंचने वाला। [**तेलिन** (स्त्री०)] **मुहा०**—**का बैल**-सदा काम में जुता रहने वाला। **लो०**—"तेली का काम तमोली करे, ताकी रोजी माँ बट्टा परै।"

तेवन†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अतेवन] घर के पास का बाग, नजरबाग, क्रीड़ोद्यान।

तेवर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० तेह=क्रोध] रिस भरी चितवन, क्रोधभरी दृष्टि। [**त्यौरी, तेवरी, तेउरी** (स्त्री०)] **मुहा०**—**चढ़ना**-दृष्टि या चितवन से क्रोध प्रगट होना, आँखें और भौंह चढ़ना।—**बदलना या बिगड़ना**-नाराज या बेमुरौवत होना।

तेवराना—(क्रि० अ०, दे०) घूमना, चक्कर लगाना।

तेवरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तेवर] घुड़की, धमकी, त्यौरी, तेउरी (ग्रा०)। **मुहा०**—**चढ़ाना**-घुड़कना, धमकाना, आँखें दिखाना, भौंहे चढ़ाना।

तेवहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० त्योहार] उत्सव दिन, पर्व दिन, तेउहार। [त्यौहार (दे०)]।

तेवाना*†—(क्रि० अ०, दे०) सोचना, चिन्ता करना।

तेवों—(अव्य०, दे०) त्यों, तैसा, उस प्रकार।

तेवोंधा—(वि०, दे०) चूँधला, त्योंधा, रात का अन्धा।

तेह*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० तेखना] रिस, क्रोध, घमंड, ताव, तेजी।

तेहरा—(वि०, पु०, दे०) [हिं० तीन+हरा] तीन परत का कपड़ा आदि। तीन लपेट की डोरी आदि। तिगुना, तिहरा (ग्रा०)।

तेहराना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० तेहरा] किसी काम को फिर-फिर तीन बार करना। तीन परत करना।

तेहवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० त्योहार] पुण्य दिन, उत्सव का दिन, पर्व।

तेहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० तेह] रिस, क्रोध। घमंड, शेखी।

तेहि, तेही—(सर्व०, दे०) [हिं० तिस] उसको, उसे। "मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही"—[रामा०]। (वि०) क्रोधी, घमंडी।

तैं*†—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० ते] से, तें। (विभ०) सो, द्वारा। (सर्व०, दे०) [सं० त्वम्] तू, तव। "कह दशकंध कौन तैं बंदर"—तुल०।

तै†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० तत] उतना, उस तौल या माप का। उतने (संख्या०)। (संज्ञा, पु०, अ०) फैसला, निपटारा, निश्चय।—**तमाम**-(वि०) जिसका फैसला या निपटारा हो चुका हो। जो पूर्ण हो चुका हो।

तैक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) तिताई, तिताई का भाव।

तैजस—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश तत्व। बली व्यक्ति। परमेश्वर। भोजन को रस और रस को धातु

बनाने वाली शक्ति (देह) । राजस गुण की अवस्था में आया हुआ अहंकार । (वि०, सं०) तेजस् से उत्पन्न । तेजस्-सम्बन्धी ।

तैतिक्ष—(वि०, सं०) सहनशील, सहिष्णु, जिसमें सहने की शक्ति प्रचुर मात्रा में हो ।

तैत्तिर—(संज्ञा, पु०, सं०) तीतर । गैंडा ।

तैत्तिरि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि जो कृष्ण यजुर्वेद के प्रचारक थे ।

तैत्तिरीय—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यजुर्वेद की एक शाखा । एक उपनिषद् ।

तैत्तिरीयक—(वि०, सं०) यजुर्वेद की एक शाखा ।

तैत्तिरीयारण्यक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक अरण्यक ग्रंथ ।

तैनात—(वि०, दे०) [अ० तअय्युन] नियुक्त, नियत । [**तैनाती** (संज्ञा)]

तैमिर—(संज्ञा, पु०, सं०) आँख के धुँधलेपन का रोग ।

तैयार—(वि०, अ०) ठीक, प्रस्तुत, दुरुस्त । तत्पर, मुस्तैद, मौजूद । मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट । [**तैयारी** (संज्ञा, स्त्री०)] **मुहा० हाथ—होना** —कारीगरी में खूब अभ्यास होना ।

तैयो†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० तऊ] तथापि, तोभी । (सर्व०, दे०) उतने ही । (क्रि० स०, दे०) [हि० ताना] गरम करना । जलाना ।

तैरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तरण] उतराना, पैरना । [**तैराना** (प्रेरणा० रूप)]

तैराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तैरना+आई प्रत्य०] तैरने का भाव, पैराई ।

तैराक—(वि०, दे०) [हि० तैरना+आक प्रत्य०] पैरने या तैरने वाला ।

तैराना—(क्रि० स०, दे०) दूसरों द्वारा तैरने के कार्य में लगाना । दूसरों को तैराना ।

तैलंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० त्रिकलिंग] दक्षिण देश का एक प्रान्त जहाँ की भाषा तेलगू है ।

तैलंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तैलंग] तैलंग देश-निवासी । अंग्रेजी सेना का सिपाही, तिलंगा ।

तैलंगी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तैलंग+ई प्रत्य०] तैलंग देशवासी । (वि०) तैलंग देश से संबधित ।

तैल—(संज्ञा, पु०, सं०) तेल । चिकनाई, चिकना । **—चित्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) मोटे वस्त्र पर तैलाक्त रंगों के मेल से बना हुआ चित्र । [आयल पेंटिंग] । **—चोरिका**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) तेल का कीड़ा । तिलचटा । तैलया । एक चिड़िया ।**—माली** -(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) बत्ती, पलीता ।

तैलत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) तेल का भाव, गुण ।

तैलया—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पक्षी ।

तैलाक्त—(वि०, सं०) तेल-लगी वस्तु । "उड़ती भीनी तैलाक्त गंध"—पंत ।

तैलाभ्यंग—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देह में तेल की मालिश ।

तैलिनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० तेलिन] तेलिन, तेलिनी ।

तैली—(संज्ञा, पु०) [हि० तेली] तेली । तेल-सम्बन्धी । तेलमय ।

तैश—(संज्ञा, पु०, अ०) क्रोध, रिस, जोश ।

तैष—(संज्ञा, पु०, सं०) पौष या पूस का महीना ।

तैषी —(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पौष मास की पूर्ण-मासी ।

तैसा—(वि०, दे०) [सं० तादृश] उस तरह का, वैसा, तइस (ग्रा०) । [**तैसो** (ब्र०)] [**तैसे** (ब० व०)]

तों*†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० त्यों] त्यों, इस प्रकार ।

तोंअर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तोमर] राज-पूतों की एक जाति ।

तोंद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तुंड] पेट का फूलापन ।

तोंदल—(वि०, दे०) [हि० तोंद+ल प्रत्य०] बड़े पेट या तोंद वाला, [तोंदीला, तोंदैल, तोंदैला (दे०)] ।

तोंदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नाभि] नाभि ।

तोंही—(अव्य०, दे०) उसी समय, वक्त में, त्योंही । (सर्व, दे०) तुझे, तोहि ।

तो*—(सर्व०, दे०) [सं० तव] तेरा, तव । " कहा भयो जो बीछुरे, तो मन मो मन साथ " —बिहारी । (अव्य०, दे०) [सं० तदा] तब, [तो (दे०)] उसकी ऐसी अवस्था या दशा में ।

तोइ, तोय*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तोय] पानी, जल ।

तोक—(संज्ञा, पु०, सं०) सन्तान । पुत्र । कन्या ।

तोकहँ—(सर्व०, दे०) [हि० तुझे] तुमको, तुझे । [तोहि (दे०)] । "कहा कहौं तोकहँ नँदरानी जात न कछू कह्यो "—सूर ।

तोख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तोष] संतोष, प्रसन्नता, तोष।

तोटक—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) १२ वर्णों का एक छंद। [टुटका (दे०)] जादू टोना।

तोटका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० टोटका] टोटका, टुटका, टोना।

तोड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तोड़ना] तोड़ने का भाव। नदी या उसकी धारा का वेग या तीव्र बहाव। दूध या दही का पानी, तोर। तक, लौं, पर्य्यंत। **जोड़—**,(यौ०) दाँव-पेंच, चाल, युक्ति। **मुहा०—डालना**-नष्ट करना, फोड़ना। **—देना**-खींचना। फलफूल तोड़ना। **मुँह—**,तीव्र एवं निरुत्तर बना देने वाला।

तोड़ना—(क्रि० स०, दे०) [हि० टूटना] टुकड़े या भाग करना, वस्तु के विभागों को उससे भिन्न या अलग करना। शरीर का कोई अंग भंग या बेकाम कर देना। नयी भूमि हल से जोतना। सेंध करना, किसी को चीण, दुर्बल या कमजोर करना। किसी संगठन या कारबार को मिटा या नष्ट कर देना। प्रतिज्ञा, प्रण या नियम भंग करना। मिटा देना। फोड़ना। [तोरना (दे०)]

तोड़र, तोड़ल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तोड़ा] तोड़ा, कड़ा, कंकन। "नौ गिरही तोड़ा पहिरावौं" —[पद०]।

तोड़वाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तोड़ना] तोड़ने का भाव। सिक्का भुनाना। तोड़ने की मजदूरी या काम। भुनाने का दाम। [तुड़वाई (दे०)]।

तोड़वाना—(क्रि० स०) [हि० तोड़ने का प्रेरणा० रूप] तुड़वाना, तोड़ने का काम दूसरे से करवाना।

तोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तोड़ना] एक भूषण, गहना। रुपये रखने की थैली। तोप की बत्ती, पलीता। महँगी, घटी, हानि, कमी। नदी-तट। रस्सी का टुकड़ा। (संज्ञा, पु०, दे०) चकमक पत्थर से आग निकालने का लोहा-खंड। **मुहा०—(ड़े) उलटना, या गिनना**-बहुत धन देना। **—(ड़े) दार बंदूक**-(संज्ञा, पु०) पलीता-द्वारा छुड़ाने की बंदूक।

तोड़ाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तोड़ना] तुड़वाना, तुड़ाना।

तोड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सरसों, राई आदि तिलहन। दीपक-स्थान (प्राचीन)। 'तोड़ना' का सामान्य भूत कालीन रूप।

तोण—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तूण] तूण, भाथा, तरकस, तूणीर।

तोत†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तूदा] समूह, ढेर। टीला।

तोतई—(वि०, दे०) [हि० तोता+ई प्रत्य०] तोते के रङ्ग वाला, हरे रङ्ग का।

तोतना—(क्रि० स०, दे०) निवार या दरी आदि बुनना, किसी वस्त्र को गूँथना।

तोतराना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तुतलाना] तुतलाना, तोतलाना। "तनक मुख की तनक बतियाँ माँगते तोतराय"—सूबे०।

तोतरि, तोतरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तुतलाना] छोटे-छोटे बच्चों की बोली, तोतली, [तुतली (दे०)]। "ज्यों बालक कह तोतरि बाता"—[रामा०]। (वि०, स्त्री०) तुतली, तोतली।

तोतला—(वि०, दे०) [हि० तुतलाना] तुतला कर बोलने वाला, तुतला, तुतरा (ग्रा०)।

तोता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सुआ, कीर। बन्दूक का घोड़ा। **मुहा० हाथों के—(ते) उड़ जाना**-सिटपिटा या घबरा जाना। **—(ते) की तरह आँखें फेरना या बदलना**-बहुत बेमुरौवती करना। **—पालना**-किसी ऐब या अवगुण, अथवा रोग या आपत्ति को जान-बूझ कर ग्रहण करना या बढ़ाना। **—चश्म**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बेमुरौवत, दुश्शील। [**तोताचश्मी** (संज्ञा, स्त्री०)] "तोताचश्मी न कर धीरज धरा जा फिर"—हितैषी।

तोती—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० तोता] तोते की मादा। उपपत्नी। बैठारी स्त्री।

तोदन—(संज्ञा, पु०, सं०) कोड़ा, चाबुक। पीड़ा, व्यथा, वेदना।

तोदरी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ईरान देश का एक औषधि-वृक्ष।

तोप—(संज्ञा, स्त्री०, तु०) एक बड़ी बन्दूक। **मुहा० —कीलना**-तोप के प्याले में लोहे की कील ठोंक कर उसे निकम्मा कर देना। **—की सलामी उतारना**-किसी बड़े आदमी के आने पर या किसी विजय आदि के उत्सव में बिना गोले की तोप छुड़ाना। [**तुपक** (ब्र०)]**—खाना**-(संज्ञा, पु०) [तु० तोप+खाना फ़ा०] तोपों और उनके सारे सामान का स्थान। संग्राम-हेतु सजी हुई तोपों का समूह। **—ची**-(संज्ञा, पु०, दे०) [तु० तोप+ची प्रत्य०] गोलंदाज, तोप चलाने वाला।

तोपड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) मक्खी। एक पक्षी।

तोपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० क्षोपन] ढाँकना, छिपाना, लादना, ढेर करना।

तोपा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० तुरपना] एकहरी सिलाई। (क्रि० स०) [हिं० तोपना] छिपाया, ढका, ढाँपा। राशीभूत।

तोपाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० तोपना] गड़वाना, ढँकाना, छिपवाना। [**तोपवाना** (प्रेरणा० रूप)]

तोप्यो—(क्रि० स०, दे०) [हिं० तोपना] तोपा, ढका, छिपाया। "तोप्यो ब्रज आनि घने प्रलय पयोदनि तें"—मन्ना०।

तोफा†—(संज्ञा, दे०) [अ० तोहफा] भेंट, उपहार, नजर, सौगात, तोहफा। (वि०) अच्छा, बढ़िया, उत्तम, श्रेष्ठ।

तोबड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० तोबरा] घोड़ों के दाना खिलाने का थैला, तोबरा। **मुहा०—सा मुँह बनाना**-रुष्ट हो मुँह फुलाना।—**चढ़ाना**-बोलना बंद करना।

तोबा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० तोबः] बुरे कर्म के त्यागने का पक्का प्रण। किसी काम पर लानत भेजने, तोबा करने आदि का भाव। **मुहा०—तिल्ला करना या मचाना**-अपनी दीनता प्रगट करते हुए रो-चिल्ला कर तोबा करना।—**बोलाना**-पूरे तौर से हरा देना।

तोम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तोम] किसी वस्तु का समूह, तूदा, ढेर। "दाबि तमतोम ताब तमकत आवै हैं"—सरस०। "घिर गया इतना तम तोम था"—हरिऔध।

तोमड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तूंबा] तूम्बी, तुम्बी, छोटा तूम्बा या कमंडल, तोंबा। [**तोमड़िया, तुमड़ि, तूमड़ी**]

तोमर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक हथियार। एक छंद। एक देश और उसका वासी, राजपूतों की एक जाति। आग।

तोय—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी, जल। "बूँद-बूँद तें घट भरै, टपकत रीतै तोय"—वृं०।—**धर,—धार**-(संज्ञा, पु०, सं०) बादल, मेघ, तोयद।—**निधि**-(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र, सागर।

तोयदागम—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्षा-ऋतु।

तोयात्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं० तोय+आत्मा] परब्रह्म।

तोयाधार—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) [सं० तोय+आधार] जलाशय।

तोयाधिवासिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) लक्ष्मी। पाटला पेड़।

तोयाशय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तालाब आदि जल के स्थान।

तोर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० तोड़ना] तोड़ना क्रिया का भाव। वेगवान धारा या बहाव। जोड़-तोड़ या दाँव-पेंच। प्रतिकार। मारक। वार, झोंका। *†(सर्व०, ब्र०) [हिं० तेरा] तेरा, तिहारो। [**तोरी** (स्त्री०)]

तोरई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तुरई] तुरई, एक तरकारी।

तोरण, तोरन†*—(संज्ञा, पु०, सं०) मकान या शहर का बाहिरी द्वार या फाटक। बंदनवार। "ध्वज, पताक, तोरण, कलस"—[रामा०]।—**स्फटिका**-(संज्ञा, स्त्री०) दुर्योधन का सभा-भवन।

तोरना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० तोड़ना] तोड़ना।

तोरा—(सर्व, दे०) [सं० तव] तेरा। [**तिहारो** (ब्र०)] "तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा"—[रामा०]। (सा० भू० क्रि० स०, दे०) तोरना, तोड़ डालना।

तोराना*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० तुड़ाना] तुड़ाना, तोड़ना।

तोरावान्*†—(वि०, दे०) [सं० त्वरावत्] जल्दबाज, वेगवान, तेज। [**तोरावती** (स्त्री०)]

तोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तुरई] तुरई, एक तरकारी। (सर्व०, दे०) [हिं० तेरी] तेरी, [**तिहारी** (ब्र०)] "तौ धरि जीभ कढ़ावौं तोरी"—[रामा०]। (सा० स्त्री०, क्रि० दे० 'तोरना')

तोल†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० तौल] तौल।

तोलन—(संज्ञा, पु०, सं०) तौलने का कार्य। उठान का कार्य। [तौलनि (दे०)]।

तोलना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० तौलना] तौलना। [**तौलाना, तौलवाना** (प्रेरणा रूप०)]

तोला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तोलक] बारह माशे।

तोश—(संज्ञा, पु०, सं०) हिंसा। हिंसक।—**दान**-मार्ग-भोजन आदि का पात्र। कारतूस रखने की थैली।

तोशक—(संज्ञा, स्त्री०, तु०) गद्दा, रुईदार बिछौना। [तोसक (दे०)]।

तोशा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मार्ग-भोजन, पाथेय, [तोसा (दे०)]।

तोशाखाना—(संज्ञा, पु०, सं०) [तु० तोशक+खाना फ़ा०] राजाओं के कपड़ों का स्थान।

तोष, तोस—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) तृप्ति, आनन्द, तुष्टि, संतोष ।

तोषक—(वि०, सं०) संतुष्ट या प्रसन्न करने वाला ।

तोषण—(संज्ञा, पु०, सं०) तृप्ति, संतोष ।

तोषना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० तोष] तृप्त या संतुष्ट करना ।

तोषल—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था । मूसल ।

तोषित—(वि०, सं०) तृप्त, तुष्ट ।

तोसल*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तोषल] एक दैत्य । मूसल ।

तोसागार*†—(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० तोशा-खाना] राजाओं का वस्त्रभवन ।

तोहफगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) श्रेष्ठता, उत्तमता, अच्छापन ।

तोहफा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) उपहार, नजराना, सौगात । (वि०) अच्छा, उत्तम, बढ़िया ।

तोहमत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) झूठा कलंक, व्यर्थ दोषारोप ।

तोहरा, तोहार†—(सर्व०, दे०) [हि० तुम्हारा] तुम्हारा । [**तोहर** (पू०)] "तोहरा बदन सम चाँद हो अथिनहिं"—विद्यापति ।

तोहिं, तोहीं—(सर्व०, दे०) [हि० तू] तुझको, तुझे, तेरी । "मृत्यु निकट आई सठ तोहीं" "मैं सब कीन्ह तोहिं बिनु पूछे"—[रामा०] ।

तौंस†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताव+ऊमस] धूप से कठिन प्यास ।

तौंसना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तौंस] गरमी से संतप्त होना या झुलस जाना ।

तौंसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ताव+ऊमस] अधिक गरमी या ताप ।

तौ†*—(क्रि० वि०, दे०) [हि० तो] तो ।

तौक—(संज्ञा, पु०, अ०) हँसुली । सूता, पट्टा ।

तौक्षिक—(संज्ञा, पु०, सं०) धन-राशि ।

तौतातिक—(संज्ञा, पु०, स०) मीमांसाशास्त्र जिसे कुमारिलभट्ट ने लिखा था ।

तौतिक—(संज्ञा, पु०, सं०) मोती, सीप ।

तौन, तउन‡—(सर्व०, दे०) [सं० ते] वह, जो । [(विलो०) **जौन**, **जउन**]

तौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तवा की स्त्री० अल्पा०] छोटा तवा ।

तौर—(संज्ञा, पु०, अ०) तरीका, ढंग । चाल-ढाल, चाल-चलन, बर्ताव ।—**तरीका**-(संज्ञा, पु०) चाल-बर्ताव, अवस्था, हालत, दशा । (अव्य०) तरह, प्रकार ।

तौरात—(संज्ञा, पु०, दे०) [इब्रा० तौरत] यहूदियों की धर्म पुस्तक । [**तौरित**]

तौरि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ताँवरि] घुमरी, चक्कर, ताँवर ।

तौर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मृदंग आदि बाजा ।

तौर्यत्रिक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गाना, बजाना, नाचना—तीनों ।

तौल—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) जोख, तौल । तराजू ।

तौलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० तोलन] जोखना, साधना, किसी बात का अंदाजा करना । जाँचना, परखना । गाड़ी को ठीक कर ओंगना ।

तौलवाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० तौलना का प्रेरणा० रूप] किसी दूसरे पुरुष से तौलाना ।

तौला—(संज्ञा, पु०,दे०) [हि० तौलना] तौलने वाला, तौलैया । बया ।

तौलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० तौल+आई प्रत्य०] तौलना क्रिया का भाव, काम या मजदूरी ।

तौलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० तौलना] किसी दूसरे से तौलने का काम लेना ।

तौलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मोटा अँगौछा । [टावल]

तौली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बटलोई ।

तौलैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० तौल+ऐया प्रत्य०] तौलने वाला । बया ।

तौषार—(संज्ञा, पु०, सं०) पाला, ठंड । (वि०) बर्फीली ।

तौसना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० तौस] गरमी से अति घबरा जाना, व्याकुल होना । (क्रि० स०, दे०) गरमी पहुँचा कर व्याकुल करना ।

तौहीं—(अव्य०, दे०) तब, तौ भी, तथापि । [**तौहूँ**, **तऊ**, **तौहू** (ब्रा०)] ।

तौहीन—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, अ०) बेइज्जती, अनादर, अपमान, अप्रतिष्ठा । [**तौहीनी** (स्त्री०)]

तौहूँ , तौहू—(अव्य०, दे०) तथापि, तिस पर भी, तोभी ।

त्यक्त—(वि०, सं०) त्यागा या छोड़ा हुआ । [**त्यक्तव्य** (वि०)]

त्यक्ता—(वि०, पु०, सं०) त्यागने वाला, छोड़नेवाला। त्यागी हुई ।

त्यक्ताग्नि—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) आग का त्यागी। अग्निहोत्र रहित ब्राह्मण ।

त्यक्तात्मा—(वि०, सं०) हताश, निराश ।

त्यजन—(संज्ञा, पु०, सं०) त्याग, परित्याग। [**त्यजनीय** (वि०)]

त्याग—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्सर्ग, दान । किसी काम या बात के छोड़ने की क्रिया। संबंध तोड़ देना, सांसारिक पदार्थों तथा विषयों को छोड़ना । —**पत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) किसी वस्तु या विषय के त्याग का लेख, इस्तीफा ।—**शील**-(वि०) त्यागी, साधक।

त्यागन—(संज्ञा, पु०, सं०) त्यजन, त्याग, विराग।

त्यागना—(क्रि० स०, दे०) [सं० त्याग] छोड़ना, परित्याग करना, तज देना ।

त्यागी—(वि०, दे०) [सं० त्यागिन्] विरक्त, सांसारिक बातों और स्वार्थ का छोड़ने वाला ।

त्याजित—(वि०, दे०) [सं० त्यजन] त्यक्त, छोड़ा हुआ ।

त्याज्य—(वि०, सं०) त्यागने योग्य ।

त्यार†—(वि०, दे०) [हि० तैयार] तैयार, आमादा, प्रस्तुत । [तैयार (दे०)] ।

त्यूँ†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० त्यों] उस भाँति, उस प्रकार, तैसे, तत्काल, त्यों । [(विलो०) ज्यूँ]

त्यों, त्यौं—(क्रि० वि०, दे०) [सं० तत्+एवम्] उसी भाँति या प्रकार, तैसे, तत्काल ।

त्योंधा—(वि०, दे०) रतौंधिया, रात का अंधा ।

त्योनार, त्यौनार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) निपुणता, दक्षता, चतुरता ।

त्योनारी, त्यौनारी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) निपुणता, प्रवीणता । चतुर स्त्री ।

त्योर, त्योरी, त्यौर, त्यौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० त्रिकुटी] दृष्टि, निगाह, चितवन । तेउरी (ग्रा०) । **मुहा०—चढ़ना या बदलना**-क्रोध में आँखें चढ़ना ।—**में बल पड़ना,—चढ़ाना**-क्रोध से आँख-भौं चढ़ना ।

त्योराना—(क्रि० अ०) सिर चकराना, सिर घूमना ।

त्योरुस, तिउरुस†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ति =तीन+बरस] आगे आने वाला या बीता हुआ तीसरा वर्ष । [त्यौरुस (दे०)]

त्योहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तिथि+वार] पर्व या उत्सव का दिन, आनन्द का दिन, त्यौहार ।

त्योहारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० त्योहार] त्योहार के दिन नौकरों को दिया गया इनाम ।

त्यौनार—(संज्ञा, पु०) [हि० तेवर] ढंग, रीति, तर्ज, प्रकार ।

त्रपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लज्जा, शर्म, लाज । (वि०) लज्जित, शर्मिन्दा । [**त्रपमान** (वि०)]

त्रपित—(वि०, सं०) लज्जित, शर्मिन्दा ।

त्रपिष्ट—(वि०, सं०) अति लज्जित ।

त्रपु—(संज्ञा, पु०, सं०) सीसा, राँगा ।

त्रपुरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुजराती इलायची ।

त्रप्स्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मट्ठा ।

त्रय—(वि०, सं०) तीन । तीसरा ।

त्रयी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीन पदार्थों का समूह, तिगड्डु ।—**मय**-(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, ईश्वर ।

त्रयोदशी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाख की तेरहवीं तिथि । [त्यारस, तेरस (दे०)] ।

त्रष्टा—(संज्ञा, पु०) [दे० तष्टा] बढ़ई, विश्वकर्मा । (संज्ञा, पु०) [फ़ा० तश्त] तश्तरी ।

त्रसन—(संज्ञा, पु०, सं०) डर, भय, उद्वेग ।

त्रसना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० त्रसन] डरना, भय से काँपना । (क्रि० स०, दे०) [सं० त्रसन] धमकाना, डराना, भय दिखाना ।

त्रसरेणु—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) महीन कण ।

त्रसित*—(वि०) [सं० त्रस्त] डरा हुआ, भयभीत, पीड़ित ।

त्रस्त—(वि०, सं०) डरा हुआ, भयभीत, दुखित ।

त्राटक—(संज्ञा, पु०, सं०) हठयोग में एकाग्र होने की क्रिया ।

त्राण—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्षा, बचाव। "दिल की प्रतिपल की तड़पन से त्राण कभी पाती थी"—[तारक वध] । कवच । [**त्रातक** (वि०)]—**कर्त्ता,—कारी**-रक्षक ।

त्राता, त्रातार—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० त्रातृ] रक्षक, बचाने वाला । "राम विमुख त्राता नहिं कोई" —[रामा०] ।

त्रायमाण—(संज्ञा, पु०, सं०) बनफशे-सी एक औषधि । (वि०) रक्षक ।

त्रास—(संज्ञा, पु०, सं०) डर, भय, कष्ट । मणि की त्रुटि-विशेष । "सीतहिं त्रास दिखावही"—[रामा०] । (वि०) भयानक, विचलित करने वाला ।

त्रासक—(संज्ञा, पु०, सं०) डर या भय दिखाने वाला । निवारक, नाशक ।

त्रासन*†—(संज्ञा, पु०, सं०) भयभीत करना, डराने, त्रास देने की क्रिया । डर का कारण ।

त्रासना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० त्रासन] डराना, भयभीत करना ।

त्रासित—(वि०, दे०) [सं० त्रस्त] डराया हुआ ।

त्राह-त्राहि—(अव्य०, सं०) रक्षा करो, बचाओ । "त्राहि-त्राहि गूँजी विधि वाणी"—[तारक वध] । "त्राहि त्राहि अब मोहिं"—[रामा०] ।

त्रि—(वि०, सं०) तीन ।—**कंटक**-(वि०, सं०, यौ०) तीन काँटों वाला । (सं० पु०) सेहुँड़, गोखरू । टेंगरा मछली ।—**क**-(संज्ञा, पु०, सं०) तीन का समूह । कमर ।—**ककुद्**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) त्रिकूट पहाड़ । विष्णु । दस दिनों में पूर्ण होने वाला एक यज्ञ । (वि०) जिसके तीन सींग हों ।—**ककुभ**-(संज्ञा, पु०) इंद्र । नौ दिनों में पूर्ण होने वाला यज्ञ-विशेष । उदान वायु ।—**कच्छक**-(संज्ञा, पु०, सं०) रीति के अनुसार धोती का पहनावा ।—**कट**-(संज्ञा, पु०, सं०) गोखरू औषधि का पेड़ ।—**कटु**,—**कटुक**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सोंठ, मिर्च, पीपल का समूह । "त्रिकटु-रामठ-चूर्णमिदं समम्"—[वैद्यजी०] ।—**कर्म्मा**-(वि०, सं०) तीन कर्म—पठन, दान और यज्ञ करने वाला ब्राह्मण ।—**कल**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तीन मात्राओं का शब्द (पिं०), दोहे का एक भेद जिसमें नौ गुरु तथा तीस लघु अक्षर रहते हैं । (वि०) तीन कलाओं वाला ।—**कांड**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अमर कोष, निरुक्त—ये दोनों त्रिकाण्ड इसलिए कहे जाते हैं कि इनकी पाठ्य-सामग्री तीन कांडों में प्रस्तुत की गयी है । (वि०) तीन कांडोंवाला ।—**काल**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तीनों समय, भूत, भविष्यत, वर्तमान्; प्रातः, सायं, मध्याह्न । "चाल दो त्रिकाल को अहो अकाल देव !"—[तारकवध] ।—**०ज्ञ**-(संज्ञा, पु०, सं०) तीनों कालों की बातों का ज्ञाता, सर्वज्ञ । त्रिकालदर्शी ।—**०दर्शक**-(वि०, सं०) तीनों कालों की बातों का देखने वाला, सर्वज्ञ ।—**०दर्शी**-(संज्ञा, पु०) [सं० त्रिकाल + दर्शिन्] त्रिकालज्ञ, सर्वज्ञ ।—**कुट**-(संज्ञा, पु०, सं०) सिंघाड़ा ।—**कुटा**-(संज्ञा, पु०, सं०) त्रिकटु—सोंठ, मिर्च, पीपर ।—**कुटी**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० त्रिकूट] दोनों भौंहों का मध्यवर्ती स्थान ।—**कूट**-(संज्ञा, पु०, सं०) तीन चोटियों का पहाड़, लंका का पहाड़ । योग के छः चक्रों में से प्रथम । "गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका"—[रामा०] ।—**कोण**-(संज्ञा, पु०, सं०) तीन कोन का क्षेत्र, त्रिभुज क्षेत्र ।—**०मिति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) त्रिभुज के कोनों और भुजाओं के द्वारा उसके अनेक भेदों के वर्णन का गणित-शास्त्र ।—**गण**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) त्रिवर्ग—धर्म, अर्थ, काम ।—**गर्त्त**-(संज्ञा, पु०, सं०) जालंधर और कांगड़ा के आस-पास का देश (प्राचीन) ।—**गुण**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सत्व, रज, तम का समूह । (वि०, सं०) तिगुना ।—**गुणातीत**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तीनों गुणों से परे, ब्रह्म, परमेश्वर । (वि०) ज्ञानी । जीवन-मुक्त, निर्गुण ।—**गुणात्मक**-(वि०, पु०, सं०, यौ०) सत्व, रज, तम इन तीनों गुणों से युक्त । गुणत्रय-विशिष्ट । [**त्रिगुणात्मिका** (स्त्री०)]—**चतुर**-(वि०, यौ०, सं०) तीन या चार ।—**जग***‡-(संज्ञा, पु०) [सं० तिर्यक्] पशु, पक्षी, कीड़े आदि ।—**जगद्**-(संज्ञा, पु०) [सं० त्रिजगत] तीनों लोक (आकाश, पाताल, भूमि), त्रिभुवन ।—**जट**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) शिव जी ।—**जटा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक राक्षसी जो अशोक वाटिका में सीता जी की रक्षा में रहती थी । "त्रिजटा नाम राक्षसी एका"—[रामा०] ।—**जामा***†-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० त्रियामा] रात, तीसरे पहर वाली रात । हल्दी, नील ।—**ज्या**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्यासार्द्ध, व्यास की आधी रेखा ।—**तय**-(वि०, सं०) तीन पूरे, त्रिवर्ग—धर्म, अर्थ, काम ।—**दंड**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) संन्यास-चिह्न, बाँस का डंडा ।—**०धारण**-(संज्ञा, पु०, सं०) संन्यास लेते समय (काय, वाग्, मन) इन तीनों दंडों का लेना ।—**दंडी**-(संज्ञा, पु०, सं०) काय, वाग्, मन इन तीनों दंडों का धारण करने वाला, संन्यासी ।—**दश**-(संज्ञा, पु०, सं०) देवता, सुर । "त्रिदश वदन होइहि हित हानी"—[स्फु०] । "त्रिदशाः विबुधाः सुराः"—[अम०] ।—**०दीर्घिका**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मंदाकिनी, गंगा नदी ।—**दशांकुश**-(संज्ञा, पु०, सं०) वज्र, अशनि ।—

दशाचार्य्य–(संज्ञा, पु०, सं०) देवगुरु बृहस्पति ।—दशायुध–(संज्ञा, पु०, सं०) वज्र, अशनि ।—दशारि–(संज्ञा, पु०, सं०) दैत्य, दानव, दनुज ।—दशालय–(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ग, सुमेरु पर्वत ।—दशाहार–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अमृत ।—दशेश्वर–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) इन्द्र, विष्णु ।—दशेश्वरी–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवी ।—दिनस्पृश–(संज्ञा, पु०, सं०) वह तिथि जो तीन दिन पडे ।—दिव–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) स्वर्ग ।—०वाद–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दार्शनिक सिद्धांत-विशेष ।

—दिवौकस्–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देवता, स्वर्गवासी ।—देव–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ब्रह्मा, शिव, विष्णु ।—दोष–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) वात, पित्त, कफ का विकार, सन्निपात। "त्रिदोषाजगर-ग्रस्तं मोचयेद्यस्तु वैद्यराट्"—[वैद्यजी०]। —०गा†*–(क्रि० अ०, दे०) [सं० त्रिदोष] तीनों दोष—वात, पित्त, कफ (सन्निपात) के, या काम, क्रोध, लोभ के फंदे में पड़ने का भाव ।—०ज–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सन्निपात, या तीनों दोषों से उत्पन्न रोग ।—०नाशक–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सन्निपात को नष्ट करने वाला ।—धा–(क्रि० वि०, सं०) तीन प्रकार से । (वि०) तीन प्रकार का ।

—धातु–(संज्ञा, पु०, सं०) वात, पित्त, कफ । सोना, चाँदी, ताँबा ।—धामा–(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, शिव, ब्रह्मा या अग्नि ।—धारा–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) सेंहुड़ । गंगा नदी ।—ध्वनि–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) तीन प्रकार का शब्द-मधुर, मन्द, गंभीर ।—नयन,—नेत्र–(संज्ञा, पु०, सं०) शिव ।—नयना–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा जी ।—पताक–(संज्ञा, पु०, सं०) तीन रेखाओं वाला मस्तक । तीन झंडों वाला ।—पथ–(संज्ञा, पु०, सं०) तीन मार्ग—कर्म, उपासना, ज्ञान । तीनों मार्गों का समूह ।—०गा,—०गामिनी–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंगा ।—पद–(संज्ञा, पु०, सं०) तिपाई, जिसके तीन पाँव हों ।—पदा,—पदी–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हंसपदी । तिपाई । गायत्री छंद ।—पदिका–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तिपाई ।—पाठी–(संज्ञा, पु०) [सं० त्रिपाठिन्] त्रिवेदी, तिवारी (ब्राह्मण) ।—पिटक–(संज्ञा, पु०, सं०) बौद्धों का धर्म-ग्रन्थ, सूत्र, विनय, अभिधर्म्म—ये तीन है ।—पुंड–(संज्ञा, पु०, [सं० त्रिपुंड] खौर, अर्ध चंद्राकार तीन लकीरों का शैव तिलक ।—पुर–(संज्ञा, पु०, सं०) बाणासुर, तारकासुर के पुत्रों के लिए मय दानव-रचित तीन नगर । एक दैत्य । तीनों लोक । [त्रिपुरासुर (यौ०)] ।—०दहन, त्रिपुरान्तक, त्रिपुरारी–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) शिव ।—पौलिया–(संज्ञा, पु०, दे०) सिंह-द्वार, राजमहल का प्रथम द्वार । तीन द्वार का मकान ।—फला–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हर-बहेडा-आँवला, तीनों मिलकर त्रिफला है ।

—बली, त्रिवली–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्त्री के पेट पर नाभि के ऊपर की तीन सिकुड़नें ।—बेनी,—वेणी–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह स्थान जहाँ तीन नदियाँ आकर मिली हों । प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती का सम्मिलन-स्थल । [तिरबेनी (दे०)] । "तहाँ-तहाँ ताल मैं होति त्रिबेनी"—पद्मा० ।—भंग,—भंगा–(वि०, सं०) जिसमें तीन स्थानों में बल पडे । (संज्ञा, पु०) पेट, कमर और गरदन मे कुछ टेढ़ापन लिए खड़े होने का ढङ्ग ।—भंगी–(वि०, सं०) त्रिभंग । (संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण । एक छंद (पिं०) । "बसत त्रिभंगी लाल"—बिहारी ।—भुज–(संज्ञा, पु०, सं०) सम धरातल जो तीन भुजाओं से घिरा हो, त्रिकोण, तिकोना ।—भुजात्मक–(वि०, सं०) त्रिभुज, त्रिकोण क्षेत्र ।—भुवन–(संज्ञा, पु०, सं०) तीनों लोक, (आकाश, पाताल, पृथ्वी) ।—मधु–(संज्ञा, पु०, सं०) ऋग्वेद का एक भाग ।—मुहानी–(संज्ञा, दे०) वह स्थान जहाँ से तीन मार्ग तीन भिन्न दिशाओं को गये हों । [तिमुहानी (दे०)]—

मूर्ति–(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव ।—यामा–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीन पहर वाली रात्रि ।—युग–(संज्ञा, पु०, सं०) सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, तीनों युगों का समुदाय ।—योनि–(संज्ञा, पु०, सं०) क्रोध, मोह, लोभ आदि से उत्पन्न कलह ।

—लोक–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तीनों लोक । "प्राण दो त्रिलोक को त्रिलोक कालदेव"—[तारकवध] । तिलोक (ग्रा०), पृथ्वी, पाताल, आकाश । "तिलोक के तिलक तीन"—तुल० ।

—०नाथ–(संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर, विष्णु, शिव । त्रिलोकीनाथ ।—०पति–(संज्ञा, पु०, सं०) भगवान, विष्णु, शिव ।—लोकी–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीनों लोकों का समूह, स्वर्ग, पाताल, मृत्यु लोक । एक छंद (पिं०) । तिलोकी (ग्रा०) ।—०नाथ–(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, शिव, ईश्वर ।—लोचन–(संज्ञा, पु०, सं०) शिव जी

जिनके तीन नेत्र है। "आये हैं त्रिलोचन तैं लोचन उघारि दे"—सरस०। तिलोचन (ग्रा०)।—**लोह, —लोहक**-(संज्ञा, पु०, सं०) सोना, चाँदी, ताँबा, तीनों धातु।—**वर्ग**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अर्थ, धर्म, काम—त्रिवर्ग है। त्रिफला (औष०)। त्रिकुटा। स्थिति, वृद्धि, क्षय। सत्व, रज, तम। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य।—**वर्षात्मक**-(वि०, सं०) तीन वर्ष या साल का, त्रैवार्षिक।—**वार्षिका**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीन वर्ष की गौ।—**विक्रम**-(संज्ञा, पु०, सं०) बावनावतार। "जबहिं त्रिविक्रम भये खरारी"—[रामा०]।—**विध**-(वि०, सं०) तीन भाँति का। (क्रि० वि०, सं०) तीन भाँति से।—**विष्टप**-(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ग। तिब्बत देश।—**वृत्करण**-(संज्ञा, पु०, सं०) तत्वों के मिलाने और अलगाने की क्रिया या काम।—**वेणी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीन नदियों का संगम, जैसे प्रयाग में। इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना तीनों नाड़ियों के मिलने का स्थान, जिसे त्रिकुटी कहते हैं (हठ यो०)।—**वेद**-(संज्ञा, पु०, सं०) ऋग्, यजुः, साम तीनों वेद।—**वेदी**-(संज्ञा, पु०) [सं० त्रिवेदिन्] ब्राह्मणों की एक जाति। [तिरवेदी (दे०)]।—**वेनी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० त्रिवेणी] तिरवेनी (ग्रा०)।—**शंकु**-(संज्ञा, पु०, सं०) बिजली। जुगनू। पपीहा। एक पहाड़। एक सूर्य्यवंशी राजा। तीन तारों का समूह।—**शक्ति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इच्छा, ज्ञान और क्रिया तीनों शक्तियाँ। बुद्धि। गायत्री।—**शिर**-(संज्ञा, पु०) [सं० त्रिशिरस] रावण का एक भाई जिसके तीन सिर थे। [त्रिसिरा (दे०)]।—**शूल**-(संज्ञा, पु०, सं०) तीन फल का भाला। [तिरसूल (दे०)] —**शूली**-(संज्ञा, पु०, सं०) शिव।—**संगम**-(संज्ञा, पु०, सं०) त्रिवेणी।—**संध्य,—संध्या**-(संज्ञा, पु०, स्त्री०, सं०) प्रातः, सायं, मध्य, तीनों संध्या।—**स्थली**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रयाग, गया, काशी।—**स्रोता**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० त्रिस्रोतस्] गंगा।

त्रिखा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तृषा] प्यास, [तिरखा (दे०)] "चातक रटत त्रिखा अति ओही" —[रामा०]।

त्रिण*—(संज्ञा, पु०) [सं० तृण] तृण, फूस। [तृन (दे०)] तिनका।

त्रिणता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धनुष, कमान।

त्रिणाचिकेत—(संज्ञा, पु०, सं०) यजुर्वेद का एक भाग या अध्याय।

त्रित—(संज्ञा, पु०, सं०) गौतम ऋषि के बड़े पुत्र।

त्रिन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तृण] तृण, फूस, तिनका, तिन (ग्रा०)।

त्रिपिताना†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तृप्ति + आना प्रत्य०] तृप्त होना, अघाना। (क्रि० स०, दे०) संतुष्ट या तृप्त करना। [तिरपिताना (दे०)]।

त्रिपुंसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) इन्द्र, वरुण।

त्रिपुरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कामाख्या देवी।

त्रिपुस—(संज्ञा, पु०, दे०) खीरा।

त्रिया—(संज्ञा, स्त्री०) स्त्री, औरत। [तिरिया (दे०)] —**चरित्र**-(संज्ञा, पु०) स्त्रियों की लीला जिसे पुरुष सहज ही में नहीं समझ सकते। लो०—"त्रिया-चरित जानै ना कोय।" छल, कपट, धोखेबाजी। "त्रिया-चरित करि ढारति आँसू"—[रामा०]।

त्रिषित—(वि०) [सं० तृषित] प्यासा [तिरषित (दे०)]। "त्रिषित बारि बिनु जो तनु त्यागा।" —[रामा०]।

त्रिष्टुभ—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्यारह अक्षरों वाले चरणों से युक्त एक वैदिक छंद।

त्रुटि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमी, हीनता, कसर। भूल-चूक, कसूर, गलती।

त्रुटित—(वि०, सं०) खंडित, भग्न, टूटा हुआ।

त्रेता—(संज्ञा, पु०, सं०) चार युगों में दूसरा युग, इसका मान १२९६००० वर्ष माना गया है। —**युग**-(संज्ञा, पु०, सं०) महायुग के अंतर्गत चार युगों में द्वतीय युग।

त्रै—(वि०) [सं० त्रय] तीन।—**कालिक**-(संज्ञा, पु०, सं०) तीनों कालों में या सदा होने वाला।—**काल्य**-(संज्ञा, पु०, सं०) तीन कालों की स्थिति, जैसे भूत, वर्तमान, भविष्य; प्रातः, मध्याह्न, सूर्यास्त; वृद्धि, स्थिति, क्षय।—**कोण्य**-(वि०, सं०) तीन कोणों वाला, तिपहला, तिकोना। —**गुण्य**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तीनों गुणों का धर्म वा स्वभाव।—**मासिक**-(वि०, सं०, यौ०) प्रत्येक तीसरे महीने में होने वाला।—**मास्य**-(संज्ञा, पु०, सं०) तीन मास का समय।—**राशिक**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तीन जानी राशियों से चौथी बिना जानी राशि के निकालने की रीति (गणि०) [तिरासिक (दे०)]।—

लोक्य-(संज्ञा, पु०, सं०) तीनों लोक। एक छंद। "थूके मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके"—मैथिली०। —०कर्त्ता-(संज्ञा, पु०) शिव।—०नाथ-(संज्ञा, पु०) राम।—०बंधु-(संज्ञा, पु०) सूर्य।—०विजया -(संज्ञा, स्त्री०) भंग।—वर्गिक-(संज्ञा, पु०, सं०) धर्म, अर्थ, कर्म।—वर्णिक-(वि०, सं०, यौ०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों वर्णों का धर्म्म।—वार्षिक-(वि०, सं०, यौ०) जो प्रति तीसरे वर्ष हो, तीन वर्ष संबंधी कार्य।

त्रैमातुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) लक्ष्मण।

त्रैयंबक—(संज्ञा, पु०, सं०) त्र्यम्बक-सम्बन्धी एक हवन।

त्रैविक्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) वामन भगवान्। विष्णु। त्रिविक्रम।

त्रैशंकव—(संज्ञा, पु०, सं०) हरिश्चंद्र।

त्रोटक—(संज्ञा, पु०, सं०) चार जगण का एक छंद। नाटक का एक भेद (नाट्य)।

त्रोटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चोंच।

त्रोण—(संज्ञा, पु०) [सं० तूण] तूण, भाथा, तरकश, तूणीर।

त्र्यंगुल—(वि०, सं०) तीन अंगुल का, तीन अंगुल वाला।

त्र्यंजन—(संज्ञा, पु०, सं०) तीन प्रकार के अंजन —कालांजन, रसांजन, पुष्पांजन।

त्र्यंबक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) महादेव।

त्र्यबंका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा जी।

त्र्यधीश—(संज्ञा, पु०, सं०) तीनों लोकों का स्वामी। विष्णु। शिव। तीनों कालों का स्वामी। सूर्य। त्रयाधीश।

त्र्याहिक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रति तीसरे दिन होने वाला, तीसरे दिन का।

त्वक्—(संज्ञा, पु०, सं०) खाल, छाल, चमड़ा। दालचीनी।

त्वचा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खाल, छाल, चमड़ा।

त्वचिसुगंधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटी इलायची।

त्वदंघ्रि—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) आपके चरण।

त्वदीय—(सर्व०, सं०) तुम्हारा, आपका। "कृष्ण त्वदीय पद-पंकज पादरेणु"।

त्वम्—(सर्व०, सं०) तुम।

त्वरण—(संज्ञा, स्त्री०) शीघ्रता से करने की क्रिया या भाव।

त्वरणीय—(वि०, सं०) जिसे शीघ्रता से करना हो।

त्वरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जल्दी, शीघ्रता।—वान-(वि०) [सं० त्वरावत्] जल्दी करने वाला, जल्दबाज।

त्वरित—(वि०, सं०) शीघ्रता-युक्त, तेज़। [तुरत (दे०)]। (क्रि०, वि०) जल्दी, तुरंत। "त्वरित आरती ला, उतार लूँ"—मैथिली०।—गति-(संज्ञा, पु०, सं०) शीघ्रगामी। एक छंद (पिं०)।

त्वरिता—(संज्ञा, स्त्री०) तंत्र में एक विशेष देवी।

त्वरितोदित—(वि०, यौ०, सं०) शीघ्रता या जल्दी से कहा हुआ वचन।

त्वष्टा—(संज्ञा, पु०) [सं० त्वष्टृ] विश्वकर्म्मा। शिव। प्रजापति। बढ़ई। सूर्य। देवता।

त्वाष्ट्र—(संज्ञा, पु०, सं०) वृत्रासुर। वज्र।

त्वाष्ट्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चित्रा नक्षत्र। संज्ञा नामक सूर्य-पत्नी।

त्विष, त्विषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शोभा, प्रभा, कांति।

त्विषाम्पति—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्य, रवि, भानु।

त्विषि—(संज्ञा, पु०, सं०) तेज, प्रताप। किरण।

थ

थ—हिन्दी-संस्कृत की वर्णमाला के तवर्ग का दूसरा वर्ण। (संज्ञा, पु०, सं०) मंगल। भय। रक्षण। पहाड़। भोजन।

थंडिल—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ की वेदी, यज्ञ-स्थान।

थंब, थंभ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तंभ] खम्भा, थूनी, टेक। [थंबी (स्त्री०)]

थंभन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तंभन] स्तंभन, रुकावट, ठहराव।

थँभना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्तंभन] रुकना, ठहरना। [थमना (दे०)]।

थंभित*—(वि०, दे०) [सं० स्तंभित] ठहरा या रुका हुआ, स्थिर, अटल, निश्चल।

थकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्था+कृ] मेहनत करते-करते या रास्ता चलते-चलते हार जाना, शिथिल या क्लांत होना या ऊब जाना, शक्ति-हीन हो जाना, ढीला पड़ना। मोहित होना। ठहर जाना। [थाकि, थकि (पू० का० दे०)]। "थके नारि नर प्रेम पियासे"—[रामा०]।

थकान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थकना] शिथिलता, थकावट, थकने का भाव । [तकान, थकी (दे०)] ।

थकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० थकना] क्लांत, शिथिल या अशक्त करना ।

थकामाँदा—(संज्ञा, वि०, दे०, यौ०) [हि० थकना + माँदा] मेहनत करते-करते अशक्त, श्रमित, श्रांत ।

थकावट, थकाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थकना] थकने का भाव, शिथिलता, ढीलापन ।

थकित—(वि०) [हि० थकना] श्रांत, श्रमित, हारा, शिथिल । मोहित । ठहरा हुआ । "थकित नयन रघुपति-छबि देखी ।"—[रामा०] ।

थकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) थकावट । (क्रि० अ०, सामा० भू०) शिथिल हुई ।

थकैनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थकना] श्रांति, थकावट, थकी ।

थकौंहा—(वि०, दे०) [हि० थकना] थकामाँदा, शिथिल, श्रांत । [**थकौंही** (स्त्री०)]

थक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्था + कृ] किसी वस्तु का जमा हुआ कतरा । [**थक्की, थकिया** (स्त्री०)]

थगित—(वि०, दे०) [हि० थकित] ठहरा या रुका हुआ । ढीला, शिथिल, मंद । [**स्थगित** (सं०)] ।

थति†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थाती] धरोहर, जमा । [थाती (दे०)]

थती—(वि०, दे०) यती । वशी, नियतात्मा । थोक, राशि, ढेर ।

थन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तन] स्तन, चूची ।

थनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्तनी] बकरियों के गलथने ।

थनेला, थनेली—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० थन + एला प्रत्य०] स्त्रियों के स्तनों का फोड़ा । एक घास, थनैल, थनइल (ग्रा०) ।

थनैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० थान] गाँव का मुखिया । जमींदार का कारिन्दा ।

थपक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० थपकना] ठोंक, चुमकार ।

थपकना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० थपथप] किसी के शरीर को हाथ से धीरे-धीरे ठोंकना, प्यार करना, चुमकारना । धैर्य देना ।

थपकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थपकना] किसी के शरीर को हथेली से धीरे-धीरे ठोंकना । "मीठी थपकी पाते थे"—मैथिली० ।

थपड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० थपकना] चपत, चपेटा, थप्पड़, थापर, थपरा (ग्रा०) ।

थपड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थपड़ा] करतारी, हाथों की ताली, थपेरी, थपरी (ग्रा०) ।

थपथपी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थपकी] थपकी । [**थपथपाना** (क्रि० स०, दे०)] ।

थपन*—(संज्ञा, पु०) [सं० स्थापन] स्थापन ।

थपना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्थापन] जमाना । बैठाना, ठहराना, स्थापित करना । (क्रि० अ०) ठहरना, जमना, स्थापित होना । [थापन (दे०)] "मारिकै मार थप्यो जग मैं जाकी प्रथम रेख भट माहीं"—[विनय०] ।

थपा—(वि०, दे०) [हि० थपना] स्थापित, प्रतिष्ठित ।

थपाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० थपना] स्थापित कराना । [**थपवाना** (प्रेरणा० रूप)]

थपुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) चौड़ा खपड़ा जिस पर नरिया रक्खी जाती है ।

थपेड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० थपथप] थप्पड़, चपेटा, धौल, थपरा । [**थपेरा, थपेरी, थपेरिया** (स्त्री०, दे०) ताली]

थपोड़ी, थपोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० अनु० थपथप] थपड़ी, ताली । [थपेरी (दे०)]

थप्पड़, थप्पर—(संज्ञा, पु०) [अनु० थपथप] थपेड़ा, तमाचा, धौल ।

थम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तंभ] खम्भा, पाया, थूनी, थमना । थमला (प्रान्ती०) ।

थमकारी—(वि०, दे०) [सं० स्तंभन] रोकने वाला ।

थमड़ा—(वि०, दे०) [हि० थम] बड़े पेट वाला, तुन्दिल, तोंदैल ।

थमना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्तंभन] ठहरना, रुकना । धैर्य्य धरना, ठहर रहना । "जिनके जप तप से थमैं, सात दीप नव खंड"—[चाचाहित०] ।

थर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्तर] परत, तह । (संज्ञा, पु०) [सं० स्थल] थल, ठौर, स्थान, जगह । "जेहि थर आनहिं भाँति की बरनत बात कछूक"—भूषण । सूखी भूमि । राजपूताना के उत्तर में स्थित मरुभूमि । बाघ की माँद ।

थरकना, थिरकना†*—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० थरथर] भय या डर से काँपना या थर्राना। नाचना, मटक कर चलना।

थरकौंहा—(वि०, दे०) [हि० थरकना] काँपता या डोलता हुआ, हिलता हुआ। थिर। "दृग थरकौंहे अधखुले, देह, थकौंहे ढार"—बिहारी।

थरथर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) भय से अथवा जाड़े से जोर का कम्पन। "थरथर काँपहि पुर नर-नारी"—[रामा०]।—"वस्त्र विहीन शीत से थरथर कम्पित नर-नारी"—गिरीश।

थरथराना, थर्राना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० थरथर] काँपना, थर्राना। डोलना, हिलना।

थरथराहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थरथराना] कम्प, कँपकँपी, थर्राहट।

थरथरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० थरथर] कंप, कंपकँपी।

थरमामीटर—(संज्ञा, पु०, अं०) गर्मी नापने का एक यंत्र जो शीशे की नली में थोड़ा-सा पारा भर कर तैयार किया जाता है। पारे के चढ़ने से ताप की मात्रा अधिक और उतरने से कम मानी जाती हैं, तापमापी। [थर्मामीटर]

थरहर, थरहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० कंप] कँपकँपी। "दीप-सिखा सी थरहरी, लगें बयारि झकोर"—मति०।

थरहाई, थराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) निहोरा, एहसान।

थरहराना—(क्रि० अ०, दे०) चिन्ता से काँपना।

थरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थाली] थाली, टाठी, थारी, थलिया।

थरिलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थाली] छोटी थाली, टाठी। थरुलिया, थरुकुलिया (ग्रा०)

थर्राना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० थरथर] काँपना, डोलना, हिलना। सभीत होना।

थल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थल] स्थल, स्थान, ठौर, सूखी भूमि। "जा थल कीन्हें विहार अनेकन"—आलम। [(विलो०) जल]।—**कमल**-(संज्ञा, पु०, हि०, यौ०) गुलाब।—**चर**-(संज्ञा, पु०) [सं० स्थलचर] भूमि पर रहने वाले जीव। "थलचर, जलचर, नभचर नाना"—[रामा०]। —**चारी**-(संज्ञा, पु०) [सं० स्थलचारिन्] भूमि पर चलने वाले जीव।—**ज**-(संज्ञा, पु०) गुलाब। —**रुह***-(वि०, दे०) पेड़, वृक्ष, भूमि पर जमने या उगने वाले।—**बेड़ा**-(संज्ञा, पु०, दे०, हि०) नाव के लगने का घाट या स्थान।

थलकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्थूल] हिलना, डिगना। मोटेपन से मांस का हिलना। "थलकति भूमि हलकत भूधर"—दास०।

थलथल—(वि०, दे०) [सं० स्थूल] ढीले माँस का शरीर होना। थुलथुल।

थलथलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० थूला] देह के मोटा होने से माँस का हिलना या डोलना।

थलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थली] थरिया, छोटी थाली, थारी, टाठी।

थली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थली] ठौर, स्थान। पानी के नीचे की भूमि। बैठक। रेगिस्तान। "दशकंठ की देखि कै केलि-थली"—[रामा०]।

थवई—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थापित] घर या मकान बनाने वाला, राज, कारीगर, मेमार।

थहना—(क्रि० स०, दे०) [हि० थाह] थाह लेना, पानी की गहराई जानना। किसी का आन्तरिक उद्देश्य आदि ज्ञात करना। थाहना।

थहरना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० थरथर] काँपना। "थहरन लागे कलकुण्डल कपोलनि पै"—रत्ना०। "चंचल लोचन चारु विराजत पास लुरी अलकें थहरें"—दास०।

थहराना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० थरथर] काँपना, थर्राना। डोलना, हिलना।

थहरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थल] थली, भूमि। "इहै लालच गाय दस लिय बसति है ब्रजथहरि"—सूर०। (पू० का० क्रि०, थहराना)।

थहाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० थाह] थाह लेना, पानी की गहराई जानना। किसी का धन, पौरुष, शक्ति, विद्या, बुद्धि या इच्छा आदि भीतरी गुप्त बातों का पता लगाना। "प्रबल शत्रु की शक्ति थहाना मेरा पहला कार्य"—गिरीश।

थाँग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थान, हि० थान] डाकुओं या चोरों का गुप्त स्थान। सुराग, खोज, पता।

थाँगी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० थाँग] चोरी का माल मोल लेने या पास रखने वाला। चोरों-डाकुओं के स्थान आदि का पता देने वाला। जासूस। चोरों का मुखिया।

थाँभ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तम्भ] थंभ, खम्भा, थूनी, स्तम्भ, थमला (प्रान्ती०)।

थाँभना—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्तम्भन] रोकना। सहारा देना, सहायता करना। विलम्ब करना। [थामना (दे०)]

थाँम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तम्भ] खम्भा, स्तम्भ, थूनी, टेक।

थाँवला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थल] थाला, आलबाल।

था—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्था] है, रहा का भूत-काल (विभ० प्रान्तीo) लिए, वास्ते।

थाई, थायी—(वि०, दे०) [सं० स्थायी] स्थायी, अटल, ध्रुव। "उगल्यो गाल दूध की थाई"—छत्र०। [**थाईभाव** (यौ०, का०)]

थाक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्था] ग्राम की सीमा। समूह, राशि।

थाकना—(क्रि० अ०, हि०, दे०) [हि० थकना] थकना, ठहरना। "रथ समेत रवि थाकेउ"—[रामा०]।

थाट—(संज्ञा, वि०) वह स्वरों का समूह या राग जो अनेक रागों का आधार हो।

थात*—(वि०, दे०) [सं० स्थाता] स्थित, ठहरा हुआ।

थाता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थाता] त्राता, रक्षक, बचाने वाला। "राम विमुख थाता नहिं कोई"—[रामा०]।

थाति, थाती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थात] धरोहर, अमानत, पूँजी, धन। "थाती राखि न माँगेउ काऊ"—[रामा०]।

थान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थान] घर। जगह, ठौर, स्थान, ठिकाना। देवस्थान। घुड़साल। कपड़े-गोटे आदि का पूर्ण खंड। संख्या। "बड़ो डील लखि पीलको, सबन तज्यो बन-थान"—भूषण।

थानक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० थान] स्थान, जगह, थाला।

थाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थान] बैठने, टिकने आदि का स्थान, अड्डा। पुलिस की चौकी। "नन्द नन्द श्रीकृष्ण चन्द गोकुल किय थानो"—सुबे०। "चोर पुलिस थाना चितै, चित मों जात सुखाय"—मन्ना०।—**(ने) दार**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० थाना+दार फ़ा०] थाने का अफसर, [इन्स्पेक्टर]

थानी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थानी] स्थानी, स्थान का स्वामी, अधिपति, मुखिया, प्रधान। (वि०) संपूर्ण।

थानैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० थाना+ऐत प्रत्य०] थानेदार। ग्राम-देवता।

थाप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थापन] थपकी। थप्पड़, चोट। "लागत थाप मृदङ्ग-मुख-शब्द रहत भरि पूरि"—केशव। प्रतिष्ठा, छाप, धाक, मान। सौगन्ध। प्रमाण।

थापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थापन] स्थापन, स्थापित करने या बैठाने का कर्म, रखना, प्रतिष्ठा करना। "रघुकुल-तिलक सदा तुम उथपन थापन"—[जान०]।

थापना—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्थापन] स्थापित या प्रतिष्ठित करना, धरना, रखना, बैठाना। "असुर मारि थापहिं सुरन्ह, राखहिं निज श्रुति सेतु"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थापना] स्थापन। प्रतिष्ठा। घट-स्थापना।

थापरा—(संज्ञा, पु०, दे०) छोटी नाव, डोंगी। थप्पड़।

थापा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० थाप] हाथ का छापा, छापा। ढेर, राशि।

थापित—(वि०, दे०) [सं० स्थापित] स्थापित, प्रतिष्ठित, बैठाया गया।

थापी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थाप] चूने की छत या कच्चा घड़ा पीटने की मुँगरी।

थाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तम्भ] खम्भा, मस्तूल।

थामना—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्तम्भन] रोकना। साधना। हाथ में लेना, पकड़ना। सहारा या सहायता देना, सँभालना, अपने ऊपर लेना।

थायी*—(वि०, दे०) [सं० स्थायिन्] टिकाऊ, दृढ़, स्थायी भाव।

थार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थाली] बड़ी थाली या टाठी। थाल, थाला। "गजमोतिन-जुत सोभिजै, मरकत मणि के थार।"

थारा—(सर्व, दे०) [हि० तुम्हारा] तुम्हारा। (संज्ञा, पु०, दे०) थाला। "थारा पर पारा पारावार यों हालत है"—भूषण। [**थाली** (संज्ञा, स्त्री०)]

थारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थाली] थाली। (सर्व०) [हि० तुम्हारी] तुम्हारी।

थारू—(संज्ञा, पु०) एक जंगली जाति जो नैपाल की तराई में बसती है।

थाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थल] थावला, आलबाल। पौधे, पेड़ की जड़ के चारों ओर बनाया हुआ घेरा।

थाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थाली] थारी, टाठी। **मुहा०—का बैगन**-कभी इधर कभी उधर होने वाला।

थावर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थावर] स्थावर, पेड़, वृक्ष, अचर। [**थावर जंगम** (यौ०)]।

थाह—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० स्था] पानी की गहराई का अंदाजा। कोई पदार्थ कितना और कहाँ तक है इसका पता लगाना। भेद। "चले थाह सी लेत" —[रामा०]।

थाहना—(क्रि० स०, दे०) [हि० थाह] थाह लेना, पता या अंदाज लगाना।

थाहरा*†—(वि०, दे०) [हि० थाह] छिछला, कम गहरा।

थाहा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थाह] उथली नदी।

थाही—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० थाह] नदी का उथला स्थान।

थिगरी, थिगली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टिकली] पेबंद, चकती, कपड़े के छेद को बंद करने की टीप। **मुहा० बादल (आकाश) में—लगाना**-अति कठिन काम करना। असंभव बात या उपद्रव करना।

थित—(वि०, दे०) [सं० स्थिति] रखा या ठहरा, हुआ, स्थित, स्थापित।

थिति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थिति] ठहराव, ठहरने या रहने का स्थान। अवस्था, रक्षा, स्थिति। "जातें जग को होत हैं, उत्पति, थिति अरु नास"—केशव।

थिर—(वि०, दे०) [सं० स्थिर] स्थिर, अटल, अचल, स्थायी। "**कमला थिर न रहीम कह**।"

थिरक—(संज्ञा, पु०) [हि० थिरकना] नाच में चलते हुए पाँवों की चाल। मटकना।

थिरकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्थिर+करण] नाच में पाँवों का उठाना, रखना, अंग मटका कर नाचना। "पाँखुरी पदुम पै भँवर थिरकत हैं" —आलम। "थिरकि रिझाइबो"—रत्ना०।

थिरकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थिरक] नाच में घूमने की रीति। चमत्कार-विशेष।

थिरकौंहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० थिरकना] थिरकने वाला।

थिरजीह—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० स्थिर+जिह्वा] मीन, मछली।

थिरता, थिरताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थिरता] अचलता, स्थिरता, शांति।

थिरथानी—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० स्थिर+स्थानिन्] स्थिर स्थान वाला।

थिरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्थिर] स्वच्छ या निर्मल होना। शांत रहना। निथरना, थिराना (प्रान्ती०)।

थिरा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थिरा] भूमि।

थिराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० थिरना] चंचल पानी को थिर होने देना, मैल आदि को नीचे बैठा कर पानी को साफ करना, निथारना, स्थिर करना, बैठाना। (क्रि० अ०) ठहरना। "घर थिरात रीती नेह की नयी नयी"—देव०।

थिरु—(क्रि० अ०) [सं० स्थिर] स्थिर हो, ठहरे।

थीता, थीती—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) [सं० स्थित] चैन, शांति, स्थिरता, धैर्य्य। "टकु पियास बाँधु मन थीती"—[पद०]।

थीर, थीरा—(वि०, दे०) [सं० स्थिर] स्थिर, थिर। सुखी, प्रसन्न। "निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा"—[रामा०]।

थुकथुकाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० थूकना] बारबार थूकना।

थुकहाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थूकना] निंदनीय स्त्री।

थुकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) थूकने की क्रिया।

थुकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० थूकना का प्रेरणा० रूप] किसी के मुख से वस्तु बाहर गिरवाना या उगलवाना। निन्दा कराना, थुड़ी-थुड़ी कराना।

थुक्का फजीहत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० थूक+फजीहत] बेइज्जती, तिरस्कार, मैं-मैं, तू-तू, थुड़ी-थुड़ी, धिक्कार, झगड़ा, शर्मिन्दगी की परिस्थिति।

थुड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० थू थू] घृणा, अपमान, तिरस्कार और अनादर-सूचक शब्द। **मुहा०—थुड़ी करना (कराना)**-धिक्कारना या निन्दा करना (कराना)। **—थुड़ी होना**-निंदा होना।

थुतकारना, थुथकारना—(क्रि० स०, दे०) अपमानित कर निकालना, हटाना या भगाना।

थुथना, थुथुना, थूथुन—(संज्ञा, पु०, दे०) निकला हुआ लंबा मुँह। [**थुथनही** (स्त्री०)]

थुथनी, थुथुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शूकर का मुँह ।

थुथाना—(क्रि० अ०, दे०) भौं या त्यौरी चढ़ाना, ओंठ लटकाना ।

थुनी, थूनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थूनी] थूनी, खम्भा, टेक ।

थुपथुपी—(संज्ञा, स्त्री०) थपरी, झोंका ।

थुरना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० थूर्वण] मारना, पीटना । कुचलना, चूर्ण करना, ठूँस-ठूँस कर भरना । "थूरि मद कंटक को दूरी करि यातें भूरि"—दीन० ।

थुरहथा—(वि०, दे०, यौ०) [हि० थोड़ा+हाथ] जिसके हाथ में थोड़ी वस्तु आ सके । "बहू थुरहथी जानि"—वि० । जिसके हाथ छोटे हों । [**थुरहथी** (स्त्री०, दे०)]

थू—(अव्य०, दे०, अनु०) थूकने का शब्द । अपमान, तिरस्कार और घृणा-सूचक शब्द, धिक्कार, छिः छिः । **मुहा०—थू करना**–धिक्कारना ।

थूक—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० थूथू] मुँह का पानी तथा कफ-खकार आदि । **मुहा०—(को) सत्तू सानना**–बहुत थोड़े सामान से बड़ा काम करने चलना ।

थूकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० थूक] मुख से थूक आदि का बाहर फेंकना । **मुहा० किसी पर—**, –बहुत ही तुच्छ जान कर ध्यान न देना । दोष लगाना, तिरस्कार करना । **थूक कर चाटना**–कह कर फिर इंकार करना । दी हुई चीज को वापिस लेना । (क्रि० स०) मुख की चीज को गिराना फेंकना या उगलना । **मुहा०—,थूक देना** (**थूकना**)–तिरस्कार कर देना, बुरा कहना, निन्दा करना, धिक्कारना ।

थूथड़, थूथड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) शूकर आदि पशुओं का मुख ।

थूथन, थूथना—(संज्ञा, पु०, दे०) लम्बा और निकला हुआ मुख ।

थूथुन, थूथुना—(संज्ञा, पु०, दे०) शूकर या ऊँट जेसा लम्बा और निकला हुआ मुख ।

थून, थुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्थूण] खम्भा, स्तंभ, टेक ।

थूरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० थूर्वण] मार, पीट, कूचन ।

थूरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० थूर्वण] मारना, पीटना । कूटना, चूर्ण करना । ठूँस-ठूँस कर भरना ।

थूल, थूला—(वि०, दे०) [सं० स्थूल] मोटा । भद्दा । मोटा-ताजा, भारी । [**थूली** (स्त्री०)]

थूवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्तूप] ढूह, सीमा-सूचक स्तूप । मिट्टी का लोंदा या पिंड ।

थूहड़, थूहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थूण] सेंहुड़, एक पेड़ जिसका दूध औषधि के काम आता है ।

थूहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थूल] ढूह, टीला, अटाला । [**थूही** (स्त्री०)]

थेई थेई—(वि०, दे०, अनु०) थिरक-थिरक कर नाचन और मुख से ताल देने की क्रिया ।

थेगरी, थेगली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० टिकली] पैबंद, थिगरी, थिगली ।

थेचा—(संज्ञा, पु०, दे०) खेत के मचान का छाजन ।

थेथर—(वि०, दे०) थका, श्रमित ।

थेबा—(संज्ञा, पु०, दे०) नग, नगीना ।

थैथै—(अव्य०, दे०) बाजा के अनुसार नाचने मे घुँघुरू का शब्द ।

थैया—(संज्ञा, पु०, दे०) खेत के मचान का छप्पर ।

थैला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थल] बड़ा पाकेट, बड़ा खीसा । रुपयों से भरा तोड़ा । [**थैली** (स्त्री० अल्पा०)], थैलिया (ग्रा०) । **मुहा०—खोलना**–थैलै से निकाल कर रुपया देना । "तुरत देहुँ मै थैली खोली"—[रामा०] ।

थोक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तोमक] राशि, समूह, ढेर, झुंड । गाँव का एक भाग ।—**दार**—(संज्ञा, पु०) थोक माल बेचनेवाला व्यापारी ।

थोड़, थोर—(संज्ञा, पु०, दे०) पके केले का गाभा । (वि०) कम, न्यून, अल्प ।

थोड़ा, थोरा—(संज्ञा, दे०) [सं० स्तोक] कम, अल्प, न्यून, रंच । [**थोड़ी, थोरी** (स्त्री०)] —**बहुत**–किसी कदर, कुछ-कुछ । (क्रि० वि०) तनिक । **मुहा०—भी नहीं**–बिलकुल नहीं ।

थोतरा—(वि०, दे०) भोंथरा, कुंठित, गोठिल ।

थोती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) थूथन, थूथुन ।

थोथ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पेट की मोटाई । [**थोथर** (वि०, दे०)]

थोथरा, थोथला—(वि०, दे०) खोखला, पोला, खाली। कुंठित, गोठिल। निकम्मा।

थोथा—(वि०, दे०) पोला, खाली, खोखला। गोठिल, कुंठित। निकम्मा, निस्सार।

थोथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) निस्सार, व्यर्थ। खाली, पोली। " थोथी-पोथी रह गई "।

थोप—(संज्ञा, पु०, दे०) पालकी के बाँस का मुख। तोप, छाप। मुहर, भूषण।

थोपड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० थोपना] चपत, थप्पड़, धौल, थोपरी।

थोपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्थापन] छोपना, लेशना, मत्थे मढ़ना, लगाना। आक्रमण से बचाना।

थोब, थोभ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गाड़ी या लढ़ी का टेकन।

थोबड़ा, थोबरा—(संज्ञा, पु०, दे०) पशुओं का थूथन, थोभरा (ग्रा०)। [**थोबरी, थोभरी** (स्त्री०)]

थोर, थोरा—(वि०, दे०) [हि० थोड़ा, सं० स्तोक] रंचक, कम, थोड़ा, अल्प, न्यून। [**थोरी** (स्त्री०, अल्पा०)]

थोरिक—(वि०, दे०) [स्त्री० थोड़ा] थोड़ा-सा। "यहि घाट ते थोरिक दूरि अहै—तुल०।

थौना—(संज्ञा, पु०, दे०) गौन के पीछे की बिदाई।

थ्यावस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थेयस] धैर्य्य, धीरता, स्थिरता, ठहराव।

द

द—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला के तवर्ग का तीसरा अक्षर। (संज्ञा, पु०, सं०) पर्वत। दान देने वाला, दानी। (संज्ञा, स्त्री०) औरत। (स्त्री०) रक्षा। खंडन।

दंग—(वि०, फ़ा०) चकित, अचंभित, विस्मित। (संज्ञा, पु०) घबराहट, भय।

दंगई—(वि०, दे०) [हि० दंगा] झगड़ालू, बखेड़िया, उपद्रवी, उग्र, प्रचंड।

दंगल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अखाड़ा, कुश्ती या मल्लयुद्ध की भूमि। जमघट, जमाव। मोटा गद्दा।

दंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दंगल] झंझट, झगड़ा, उपद्रव, बखेड़ा, हुल्लड़, हलचल, हल्ला। [**दंगा-फसाद** (यौ०)]

दंगाई—(संज्ञा, पु०, दे०) बलवा करनेवाला, दगा-फसाद करनेवाला।

दंड—(संज्ञा, पु०, सं०) सोंटा, डंडा, डडा, छोटी लाठी, लाठी। एक व्यायाम। एक प्रणाम। सजा, जुरमाना, डांड़। समय-विभाग (६० पल=१ दंड)। झंड का बांस। डांड़ी या तराजू, चम्मच आदि की डंडी। चार हाथ की लंबाई। घड़ी। "दंड यतिन कर भेद जहं नर्तक नृत्य समाज"—[रामा०]। **मुहा०—भरना (देना)**-जुरमाना या डांड़ देना।—**भोगना या भुगतना**-सजा अपन ऊपर लेना या काटना।—**सहना**-घाटा सहना।—**दास**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जो जुरमाना न देन से दास हुआ हो।—**धर,—धारी**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) यमराज। संन्यासी।—**नायक**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) राजा, शासक। सजा देने वाला। सेनापति। यम।—**नीति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजनीति। कानून। चार विद्याओं मे से एक—'आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्त्ता, दंडनीतिश्च शाश्वती। एताविद्याश्चतस्त्रस्तु लोक संस्थितिहेतवः"—[रघु० टी०]।—**पाणि**-(संज्ञा, पु०, सं०) यमराज, भैरव। जिसके हाथ में डंड रहे।—**प्रणाम**-(संज्ञा, पु०, सं०) आदरार्थ नमस्कार, दंडवत्, अभिवादन।—**वत्**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डंड के समान भूमि पर लेट कर किया गया नमस्कार, साष्टांग प्रणाम [**दंडौत** (दे०)]।—**विधान**-(संज्ञा, पु०) दंड की व्यवस्था।—**विधि**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपराध-सम्बन्धी नियम या व्यवस्था। राजनीति। कानून, दंड-विधान, दंड-व्यवस्था।

दंडक—(संज्ञा, पु०, सं०) डंडा। दंड देने वाला। एक छंद-भेद (पिं०)। एक वन, दंडकारण्य। एक दंड (६० दंड=१ घड़ी) "दंडक मैं कीन्ह्यो काल हू को मान खंड"—[रामा०]।

दंडकला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक छंद।

दंडकारण्य—(संज्ञा, पु०, सं० यौ०,) एक वन, दंडकवन।

दंडन—(संज्ञा, पु०, सं०) दंड देने का कार्य्य। शासन।

दंडना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दंडन] दंड या सजा देना, डाँड़ लेना।

दंडनीय—(वि०, सं०) दंड देने या पाने योग्य। " दंडनीय सोई जो विरुद्ध नीति के करै"—मन्ना०।

दंडान्वय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पूर्ण और सूक्ष्म सीधा अन्वय ।

दंडायमान—(वि०, सं०) डंडे की तरह सीधा खड़ा, खड़ा ।

दंडालय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) न्यायालय, कचहरी, अदालत ।

दंडिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णवृत्त । छोटा डंडा, डंडी (ग्रा०) ।

दंडित—(वि०, दे०) जिसे दंड या सजा दी गई हो ।

दंडिन, दंडी—(संज्ञा, पु०) [सं० दंडिन्] दंड धारण करने वाला । यमराज । राजा । द्वारपाल । संन्यासी । शिव । जिनदेव । संस्कृत में काव्यादर्श और दश-कुमार-रचयिता एक कवि । चरित ।

दंड्य—(वि०, सं०) दंड पाने के योग्य ।

दंत—(संज्ञा, पु०, सं०) दाँत, दशन, रद ।—**कथा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पुष्टि या प्रमाण-रहित बात जो सुनी जाती हो, परंपरागत बात ।—**च्छद**-(संज्ञा, पु०, सं०) ओठ, ओष्ट ।—**छत**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंतक्षत] दाँतों से काटने का घाव । "कंत दंतछत जानि"—मति० ।—**धावन**-(संज्ञा, पु०, सं०) दातौन, दातून, दतून, दतुइन (ग्रा०) ।—**बीज**-(संज्ञा, पु०, सं०) अनार ।—**मंजन**-(संज्ञा, पु०, सं०) दाँत माँजने का चूर्ण ।—**मूलीय**-(वि०, सं०) जो वर्ण दाँतों की जड़ से बोले जायँ, जैसे त वर्ग, ल, स ।

दंतायुध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुवर, सुअर ।

दंतार, दंतारा—(वि०, दे०) [हिं० दंत] बड़े दाँतों वाला । (संज्ञा, पु०, दे०) हाथी ।

दँतिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दंत+इयाँ प्रत्य०] छोटे-छोटे दाँत जो प्रथम जमते हैं । "लोगइ निहारै भई दूइ दूइ दँतियाँ"—दीन० ।

दंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक औषधि (लघु, वृहद् दंती) । (संज्ञा, पु०) [सं० दंतिन्] हाथी ।

दंतुर—(वि०, सं०) ऊबड़-खाबड़ दाँत, जिसके दाँत आगे निकले हों ।

दँतुरिया, दँतुलिया†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दंत+इया प्रत्य०] छोटे-छोटे दाँत जो प्रथम जमते हैं । "लटकै लटुरियाँ त्यों दमकै दँतुरियाँ हू"—मन्ना० ।

दँतुला—(वि०, दे०) [सं० दंतुर] बड़े दाँतों वाला । [दंतुली (स्त्री०)]

दंतुलित—(वि०, दे०) जिसके छोटे-छोटे दाँत हों । "वह दंतुलित मुसकान मृतक में डाल देती जान ।"—नागार्जुन ।

दंतोष्ठ्य—(वि०, सं०, यौ०) वह वर्ण जो दाँत और ओष्ठ से बोले जायँ—जैसे व ।

दंत्य—(वि०, सं०) दाँत से उच्चरित वर्ण—जैसे—त वर्ग, ल, स ।

दंद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दहन] गर्मी, उष्णता । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्वंद] उप-द्रव, लड़ाई, झगड़ा । "को न सहे दुख दंद"—गिरि० ।

दंदाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दाँतों की पंक्ति जैसा पदार्थ, जैसे कंघी या आरी ।

दंदानेदार—(वि०, फ़ा०) दाँतों से ऊपर नीचे किनारे वाली वस्तु ।

दंदी—(वि०, दे०) [हिं० दंद] लड़ाका, उपद्रवी, बखेड़िया, झगड़ालू ।

दंपति, दंपती—(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्री-पुरुष, नर-नारी, पति पत्नी का जोड़ा ।

दंपा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दमकना] बिजली ।

दंभ, दंभान—(संज्ञा, पु०, सं०) पाखंड, घमंड । [**दंभी** (वि०)] "हौं जो कहत लै मिलो जानकिहिं छाँड़ि सबै दंभन"—सूर० ।

दंभक—(वि०, पु०, सं०) घमंडी, दंभी, कपटी, पाखंडी ।

दंभन—(संज्ञा, पु०, सं०) पाखंड या ढोंग करना ।

दंभी—(वि०, दे०) [सं० दंभिन्] पाखंडी, आड-म्बरी, घमंडी । "जनु दंभिन कर जुरा समाजा"—[रामा०] ।

दंभोलि—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र का अस्त्र, वज्र, अशनि ।

दँवरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दमन, हिं० दाँवना] बैलों से अनाज के सूखे पौधे रौंदाना, दाँय चलाना (ग्रा०) ।

दँवारि, दँवारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दावा-ग्नि] दावाग्नि, वन की आग । "फूले देखि पलाश वन-समुहें समुझि दँवारि"—बिहारी ।

दंश—(संज्ञा, पु०, सं०) दाँतों से काटने का घाव, दंतक्षत । विषैले कीड़ों का डंक । डाँस (वन-मक्खी) । "दंशस्तु वन मक्षिका"—अम० । "दंश निवारणौश्च"—[रघु०] ।

दंशक—(संज्ञा, पु०, सं०) काटने वाला। दाँत से काटने वाला, छोटा डाँस।

दंशन—(संज्ञा, पु०, सं०) काटना, डसना। दाँत से काटना। वर्म, कवच। [**दंशित, दंशी** (वि०)]

दंशना—(क्रि० स०, दे०) डंक मारना या दाँत से काट लेना।

दंशित—(वि०, सं०) काटा या डँसा हुआ। खंडित, दाँत काटा। [**दंशनीय** (वि०)]

दंशी—(वि०, सं०) काटने या डँसने वाला। आक्षेप युक्त बोलने वाला। द्वेषी। (संज्ञा, स्त्री०, अल्पा०) छोटा डाँस, डाँसिनी।

दशूक—(वि०, सं०) डँसने या डंक मारने वाला।

दंष्ट्र—(संज्ञा, पु०, सं०) दाँत। "दंष्ट्रा-मयूखै शकलानि कुर्वति"—[रघु०]।

दंष्ट्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दाढ़, बड़े दाँत।—**विष**-(संज्ञा, पु०, सं०) विषैले दाँत वाले जीव-जंतु, जैसे—साँप।

दंष्ट्री—(वि०, सं०) बड़े और हानिप्रद दाँत वाले जीव-जन्तु, हाथी, शूकर, सर्प, बाघ आदि।

दंस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंश] डाँस। [डँस (दे०)]। " मसक-दंस बीते हिम-त्रासा "—[रामा०]।

दइत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दैत्य] दैत्य, दानव, दैत (ग्रा०)।

दई, दइव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० देव] ईश्वर। ब्रह्मा। विष्णु। शिव। (संज्ञा, पु०) [सं० दैव] भाग्य, कर्म, दइया (ग्रा०)। प्रारब्ध, अदृष्ट, संयोग। "दई दई क्यों करत है"—बिहारी। (क्रि० स०, दे०) [हि० देना] दी। " दई दई सु कबूल "—बिहारी। **मुहा०—का घाला**-भाग्य का मारा, अभागा।—**दई**-हे देव! रक्षा करो। —**मारा**-(वि०, दे०) [हि० दई+मारना] अभागा, भाग्य-हीन। [**दईमारी** (स्त्री०)]

दक—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी, जल, उदक।

दक़ियानूस—(संज्ञा, पु०) रोम का एक सम्राट जो ३४६ में सत्तारूढ़ हुआ था।

दक़ियानूसी—(वि०) पुराने ख्यालों वाला, रूढ़िवादी, जिसमें नयापन न हो, पुराना।

दक़ीका—(संज्ञा, पु०, अ०) उपाय, युक्ति। बारीक बात। **मुहा० कोई—बाकी न रखना**-कोई युक्ति या उपाय शेष न रखना, सब कर चुकना।

दक्खिन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दक्षिण] एक दिशा। (क्रि० वि०) दक्षिण दिशा की ओर, दक्षिणी भारत। " दक्खिन जीति लियो दल के बल "—भूषण।

दक्खिनी—(वि०, दे०) [सं० दक्षिणीय] दक्खिन देश-वासी। दक्षिण-संबंधी।

दक्ष—(वि०, सं०) चतुर, प्रवीण, कुशल, निपुण। दाहिना। (संज्ञा, पु०) एक प्रजापति। अत्रिमुनि। महेश्वर शिव-ससुर। [दच्छ (दे०)]।—**कन्या**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सती।

दक्षता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चातुर्य्य, निपुणता, कुशलता, योग्यता।

दक्षिण—(वि०, सं०) दाहिना। अनुकूल। एक दिशा। [**दच्छिन, दक्खिन, दछिन**] चतुर, प्रवीण, निपुण। (संज्ञा, पु०, सं०) चतुर नायक। प्रदक्षिणा। तंत्र का एक मार्ग। [(विलो०) **वाम**]

दक्षिणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्षिण दिशा। दान, पुरस्कार या भेंट। चतुर नायिका, [दछिना, दच्छिना (दे०)]। [**दानदक्षिणा** (यौ०)]—**पथ**-(संज्ञा, पु०, सं०) विन्ध्याचल पहाड़ के दक्षिण का वह भाग जहाँ से दक्षिण भारत को मार्ग जाते हैं।

दक्षिणामूर्त्ति—(संज्ञा, पु०, सं०) तंत्र-शास्त्र के अनुसार शंकर की एक मूर्ति।

दक्षिणायन—(वि०, सं०, यौ०) भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर, जैसे दक्षिणायन सूर्य। छै महीने का समय जब सूर्य की किरणें दक्षिणीय गोलार्द्ध में सीधी पड़ती हैं।

दक्षिणावर्त—(वि०, सं०, यौ०) दक्षिण देश का। दाहिनी ओर को घूमा हुआ। (संज्ञा, पु०) दाहिनी ओर को घूमा हुआ शंख।

दक्षिणी, दक्षिणीय—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्षिण देश की भाषा। (संज्ञा, पु०) दक्षिण देश-वासी। (वि०) दक्षिण देश-सम्बन्धी।

दखन, दखिन, दछिन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दक्षिण] दक्खिन, दक्षिण दिशा। " देखि दखिन दिसि हय हिहिनाहीं "—[रामा०]।

दखनी, दखिनी, दछिनी—(वि०) [सं० दक्षिणी] दक्षिणवासी, दक्षिण देश का।

दखमा—(संज्ञा, पु०, दे०) पारसी लोगों के मृतक के रखने का स्थान।

दखल—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रवेश। अधिकार, पहुँच।

दखिनहा†—(वि०, दे०) [हि० दक्खिन+हा प्रत्य०] दक्षिण का, दक्षिणी । [**दक्खिनिहा**]

दखिना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दक्षिण] दक्षिण से आने वाली वायु । "प्रीतम बिन सुन री सखी, दखिना मोहिं न सुहाय"—मन्ना० ।

दखिल—(वि०, अ०) अधिकारी, दखल, कब्जा वाला ।

दखीलकार—(संज्ञा, पु०) [अ० दखिल+कार] किसी भूमि को कम से कम बारह वर्ष तक अपने आधीन रखने वाला किसान ।

दगड़—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़ा ढोल या नगाड़ा (युद्ध में) ।

दगड़ाना—(क्रि० स०, दे०) डगराना । दौड़ाना ।

दगदगा—(संज्ञा, पु०, अ०) संदेह, चिन्ता, खटका, डर, भय । एक लालटेन या कंडील ।

दगदगाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० दगना] चमकना, प्रकाशित होना, दमदमाना । (क्रि० स०, दे०) चमकाना, दमकाना ।

दगदगाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दगदगाना] चमक, चमत्कार, प्रकाश ।

दगदगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० दगदगा] संदेह, चिन्ता, खटका, डर, भय ।

दगध†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दग्ध] जला हुआ ।

दगधना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० दग्ध] जलना । (क्रि० स०, दे०) जलाना, दुःख देना ।

दगना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दग्ध+ना प्रत्य०] तोप या बंदूक आदि का छूटना, चलना । जलना, झुलसना, दागा जाना । विख्यात होना । (क्रि० स०, दे०) चलाना । छुटाना । जलाना, झुलसाना ।

दगर, दगरा†—(संज्ञा, पु०, दे०) विलंब, देरी । रास्ता, राह, पंथ, मार्ग, डगर (ग्रा०) ।

दगल—(संज्ञा, पु०, दे०) मोटे कपड़े का बना या रुई भरा बड़ा अँगरखा, भारी लबादा, ओवर या बरान कोट [**दगला**] । "राम जी के सोहै केसरिया दगला सिय के पचरँग चीर"—[स्फु०] । **—फसल**-(संज्ञा, पु०, दे०) धोखा, छल, दगा, फरेब ।

दगवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दागना का प्रेरणा० रूप] किसी दूसरे से तोप, बंदूक आदि चलवाना या छुड़वाना । गर्म वस्तु से देह का कोई अंग जलवाना ।

दगहा—(वि०, दे०)] हि० दाग] जिसकी देह में कहीं दाग हो, दाग वाला, दागी । [हि० दाह =मृतक संस्कार+ह प्रत्य०] मृतक संस्कार करने वाला, मुर्दा जलाने वाला । [हि० दगना+हा प्रत्य०] दागा या जलाया हुआ ।

दगा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) धोखा, छल, कपट । **—दार**-(वि०, फ़ा०) दगाबाज, छली, कपटी । "एरे दगादार मेरे पातक अपार तोहिं"—पद्मा० । **—बाज**-(वि०, फ़ा०) दगादार, छली, कपटी । **—बाजी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) धोखा, छल ।

दगैल—(वि०, दे०) [अ० दाग+ऐल प्रत्य०] दागी, दागवाला । दोष, बुराई या खोट-युक्त ।

दग्ध—(वि०, सं०) जला या जलाया हुआ, दुखी, कष्ट-प्राप्त । **—काक**-(संज्ञा, पु०) डोमकौआ । **—जठर**-(संज्ञा, पु०) क्षुधा से पीड़ित पेट । **—योनि**-(वि०) जिसकी योनि में गर्भ-धारण की शक्ति न रह गयी हो । **—रुह**-(संज्ञा, पु०) तिलक का वृक्ष ।

दग्धव्य—(वि०, पु०, सं०) जलाने योग्य ।

दग्धा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जली या जलायी हुई । दुखिया । पश्चिम दिशा । अशुभ तिथियाँ ।

दग्धाक्षर—(संज्ञा, पु०, सं०) झ, ह, र, भ और ष, जिनको छंद के आदि में लाना वर्जित है (पिं०) ।

दग्धिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जला या भूना अन्न या भात ।

दग्धोदर—(वि०, यौ०) [सं० दग्ध+उदर] भूखा पेट या भूख का मारा, क्षुधार्त । (संज्ञा, पु०, सं०) खाने की इच्छा ।

दघ—(संज्ञा, पु०, दे०) त्याग । हिंसा, नाश ।

दचक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) ठोकर, धक्का, दबाव, झटका । ठेस । [**दचका** (दे०)] ।

दचकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) दब जाना । धक्का या झटका खाना, ठोकर लगना । "उचकि चलत कपि दचकनि दचकत मंच ऐसे मचकत भूतल के थल थल"—[रामा०] ।

दचका—(संज्ञा, पु०, दे०) विषम भूमि पर सवारी के ऊपर-नीचे हो जाने से लगने वाला धक्का ।

दचना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गिरना, पड़ना ।

दच्छ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दक्ष] एक प्रजापति । (वि०) प्रवीण, चतुर । **—कन्या (कुमारी, सुता)**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दक्षकन्या, दक्षकुमारी] सती ।

दच्छिन, दछिन—(वि०, दे०) [सं० दक्षिण] एक दिशा। अनुकूल, सीधा। दाहिना, दक्खिन। "दछिन पवन बह धीरे"—विद्या०।

दच्छिना, दछिना—(संज्ञा, स्त्री०)[सं० दक्षिणा] दान, भेंट। [**दानदच्छिना** (यौ०)]

दटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्थातृ] डटना, धीरता से सामना करना, अड़ना, खड़ा रहना, पीछे न हटना। काम मे लगना।

दड़कना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० दरकना] दरकना, फटना, चिरना।

दड़ेरा, दरेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रचंड झड़ी या वृष्टि। धक्का, रगड़, दरेरा (ग्रा०)।

दड़ोकना, दड़ौकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० डौंकना] गरजना, दहाड़ना। डाँटना, फटकारना।

दढ़मुंड़ा—(वि०, दे०) दाढी-रहित, जिसकी दाढ़ी मूँड़ दी गई हो। [**दढ़मुँड़ा**]

दढ़ियल—(वि०, दे०) [हि० दाढ़ी+इयल प्रत्य०] जो दाढ़ी रखे हो, दाढ़ी वाला। [**डढ़ियल**]

दतना—(क्रि० अ०, दे०) डटना, सामना करना। किसी काम में लग जाना।

दतवन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दाँत+वन] दतून, दतुअन, दतौन, [दतुवन (दे०)]। दतुइनि (ग्रा०)। दन्त-धावनी।

दतार—(वि०, दे०) [हि० दाँत+हारा] दाँतों वाला, दतैला (ग्रा०)।

दतिया, दतुलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दाँत का स्त्री अल्पा०] छोटा दाँत।

दतुअन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दाँत+अवन प्रत्य०] दातौन, वह लकड़ी जिसकी कूँची से दाँत साफ किये जाते हैं, दतुवन, दतून, दातौन।

दतूना—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पौधा।

दत्त—(संज्ञा, पु०, सं०) दत्तात्रेय। नौ वासुदेवों में से एक (जैन०)। दान। दत्तक। (वि०, सं०) दिया हुआ, लगाया हुआ।—**चित्त**-(वि०, सं०) किसी काम में पूर्ण रूप से मन लगाना।—**दृष्टि**-(वि०) जिसने एक लक्ष्य पर दृष्टि स्थिर कर दी हो।—**शुल्का**-(वि०) जिस कुमारी के लिए शुल्क दिया जा चुका हो।—**हस्त**-(वि०) जिसे हाथ का सहारा मिला हो।—**विधान**-दत्तक पुत्र लेने, गोद लेने या बैठाने का कार्य।

दत्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) गोद लिया हुआ पुत्र, मुतवन्ना (फ़ा०)।

दत्तात्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० दत्तात्मन्] स्वतः किसी का दत्तक पुत्र होने वाला लड़का।

दत्तात्रेय—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रसिद्ध ऋषि।

दत्तावधान—(वि०, सं०) सावधान।

दत्तेय—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र।

दत्तोपनिषद्—(संज्ञा, पु०, सं०) एक उपनिषद्।

दत्रिन—(संज्ञा, पु०, सं०) दत्तक, गृहीत या दिया हुआ पुत्र।

ददन—(संज्ञा, पु०) [सं० दद्+अनट] दान। त्याग।

ददरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दद्रु, हि० दाद] खुजलाने आदि से देह पर सूजन, दरोरा, चकता, चकत्ता, चकती, दादरा (ग्रा०)। [**ददरी** (स्त्री०)] —**क्षेत्र**-(संज्ञा, पु०) [हि० ददरी+क्षेत्र सं०] भृगुमुनि का स्थान।

ददलाना—(क्रि० स०, दे०) डाँटना, फटकारना, साँसना।

ददा, दादा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तात] बाप का बाप, पितामह, आजा। बड़ा भाई, गुरुजनों का आदर-सूचक शब्द। [**ददी, दादी** (स्त्री०)]

ददिऔरा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० दादा +आलय] ददिहाल या दादी का मायका।

ददियाल—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० दादा +आलय] दादी का घर या वंश, दादी का वंश या मायका। [**ददिहाल**]

ददियाससुर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० दादा+ससुर] स्त्री या पुरुष का दादा, अजिया ससुर, ससुर का बाप। [**ददियासास**-(स्त्री०) ददिया ससुर की स्त्री, अजिया सास]

ददोड़ा, ददोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दद्रु, हि० दाद] खुजलाने आदि से पड़ा देह पर चकता या सूजन।

दद्रु—(संज्ञा, पु०, सं०) दाद रोग। [**दद्रुरोग** (यौ०)]—**घ्न**-(संज्ञा, पु०, सं०) चकवड़ का पौधा।—**नाशक**-(संज्ञा, पु०, सं०) चकवड़ का पौधा।—**नाशिनी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तैलनी कीड़ा।

दध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दधि] दही। समुद्र। वस्त्र।—**सार**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दधिसार] मक्खन, नवनीत, माखन।

दधि—(संज्ञा, पु०, सं०) दही । कपड़ा । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उदधि] समुद्र ।—**काँदो**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक उत्सव, जब हलदी मिला दही लोगों पर डालते हैं ।—**जात**-(संज्ञा, पु०, सं०) मक्खन । (संज्ञा, पु०) [सं० उदधि+जात] चन्द्रमा ।—**मुख**-(संज्ञा, पु०, सं०) लड़का, बालक । राम की सेना का एक वानर ।—**रिपु**-(संज्ञा, पु०) [सं० उदधिरिपु] अगस्त्य मुनि । —**सार**-(संज्ञा, पु०, सं०) मक्खन । (संज्ञा, पु०) [सं० उदधिसार] चन्द्रमा ।—**सुत**-(संज्ञा, पु०) [सं० उदधिसुत] चन्द्रमा । मोती । विष । जालंधर दैत्य । (संज्ञा, पु०, सं०) मक्खन, नवनीत ।—**सुता**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० उदधिसुता] लक्ष्मी । सीप ।—**स्नेह**-(संज्ञा, पु०, सं०) दही की मलाई ।—**स्वेद**-(संज्ञा, पु०, सं०) छाँछ, तक्र, मट्ठा, मही (ग्रा०) ।

दधिबल—(संज्ञा, पु०, सं०) सुग्रीव का पुत्र।

दधीच, दधीचि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि जिनकी हड्डियों से वज्र आदि बने थे ।

दनदनाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) दनदन शब्द करना । खुश करना । गर्माना ।

दनादन—(क्रि० वि०, दे०, अनु०) दनदन शब्द के साथ । खुशी से । लगातार ।

दनु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कश्यप की स्त्री जिसके चालीस पुत्र हुए और सब दानव कहाये ।—**ज**-(संज्ञा, पु०, सं०) दानव, दैत्य । "देव दनुज धरि मनुज-सरीरा "—[रामा०] ।—०**दलनी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गाजी ।—०**द्विष**-(संज्ञा, पु०, सं०) देवता, विष्णु ।—०**राय**-(संज्ञा, पु०) [सं० दनुजराज] दानवों का राजा हिरण्यकशिपु ।—**जात**-(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस । "भिड़ नहीं सकते दनुजात भी"—हरिऔध ।

दनुजारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवता, विष्णु ।

दनुजेन्द्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रावण ।

दन्न—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) तोप, बंदूक आदि के छूटने का शब्द । (संज्ञा, पु०) दन्नाटा । (क्रि० वि०) **दन्नाटे से**-बेधड़क, जल्दी से ।

दपट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दपटना] दौड़, झपट । डाँट, धमकी । घुड़की । [**दपेट**]

दपटना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) झपटना, दौड़ना । डाँटना, घुड़कना, डपटना ।

दपदपाना—(क्रि० अ०, दे०) चमकना, शोभित होना, दमकना ।

दपु, दप्प—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दर्प] दर्प, शेखी, अहंकार । [दाप (दे०)] ।

दपेटना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दपेट] दौड़ना, झपटना, रपेटना ।

दफतर—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० दफ्तर] कचहरी, कार्यालय । [आफिस] । [**दफतरी** (संज्ञा, पु०)]

दफती—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० दफ्तीन] गाँता, वसली ।

दफन—(संज्ञा, पु०, अ०) मृतक को जमीन में गाड़ने की क्रिया ।

दफनाना—(क्रि० स०) [अ० दफन+आना] मृतक को जमीन में गाड़ना, दबाना ।

दफा—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० दफअ] बार, बेर । (अं० क्लास) दरजा, कक्षा, श्रेणी । धारा (कानून की) । **मुहा०—लगाना**-जुर्म लगाना, अपराध स्थिर करना । (वि०, अ०) तिरस्कृत, दूर किया या हटाया हुआ ।—**दार**-(संज्ञा, पु०) [अ० दफअ+दार फ़ा०] सेना के एक भाग का सरदार या अफसर ।

दफीना—(संज्ञा, पु०, अ०) गड़ा हुआ खजाना, कोष या धन ।

दफ्तर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कार्यालय, कचहरी । [आफिस] दफदर (ग्रा०) ।

दफ्तरी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जिल्दसाज, जिल्दबंद । दफ्तर का सिपाही या चौकीदार ।

दबंग—(वि०, दे०) [हि० दबाव या दबाना] प्रभावशाली, प्रतापी, दबाववाला, निडर । [**दबंगी** (संज्ञा, स्त्री०)]

दबक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दबकना] दबने या छिपने की क्रिया या भाव । सिकुड़न ।—**गर**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दबक+गर] दबका या तार बनाने वाला, दबकैया ।

दबकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० दबना] डर से छिपना, लुकना (ग्रा०) । डाँटना । (क्रि० स०) हथौड़े से पीट कर धातु को बढ़ाना । "दबकि दबोरे एक वारिधि में बोरे एक " ।

दबका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दबकना=तार आदि पीटना] सुनहला तार ।

दबकाना—(क्रि० स०) [हि० दबकना] छिपाना, लुकाना, दुराना । (व्र०) ओट में करना ।

दबकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दबकना] दाँव-पेंच । छिपाव । एक मिट्टी का पात्र ।

दबकीला—(वि०, दे०) [हि० दबक+ईला, ऐला प्रत्य०] दबा हुआ, परतंत्र । [**दबकैला**]

दबकैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दबक+ऐया प्रत्य०] तार बनाने वाला, दबकगर । (वि०) डाँटने या छिपने वाला ।

दबगर—(संज्ञा, पु०, दे०) ढाल या कुप्पे बनाने वाला ।

दबदबा—(संज्ञा, पु०) [अ० दबाव] रोब-दाब ।

दबना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दमन] बोझे या भार के नीचे आना या पड़ना । पीछे हटना । विवश होना । तुलना में ठीक न होना । उभड़ न सकना । शांत रहना, धीमा पड़ना । सिकुड़ना ।

दबवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दबना का प्रेरणा० रूप] दबाने का कार्य दूसरे से कराना ।

दबा—(वि०, दे०) बोझ से पीड़ित, भाराक्रान्त । **मुहा० हाथ—होना**-खर्च के लिए रुपये की कमी होना ।**—(बे) हाथ खर्च करना**-कम खर्च करना ।—(**बी) जबान से कहना**-ठीक-ठीक या स्पष्ट न कहना । धीरे-धीरे कहना, झेंपना, संकोच करना ।**—(बे) होना**-किसी के वश या आधीन होना ।**—(बे) पैर**-धीमे तथा चुप-चाप चलना ।**—(बे) पाँव**-(क्रि० वि०, दे०) हौले-हौले, धीरे-धीरे, धीमे-धीमे, शनैः-शनैः, चुपके से । "दबे पाँव मेरे ढिग आया कोई परम निगूढ़"—गिरीश ।

दबाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दबाना] मँड़ाई । दबाने की क्रिया ।

दबाऊ—(वि०, दे०) [हि० दबाना] दब्बू । दबाने वाला । गाड़ी आदि के अगले भाग में अधिक बोझा होना । [(विलो०) **उलार**] ।

दबाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दमन] सब ओर से दबाव डलना, रुई आदि वस्तुओं पर उन्हें सिमटाने या सिकोड़ने को भारी पत्थर रखना या इधर-उधर न हट सकने को किसी वस्तु पर किसी ओर से बहुत बल लगाना । पीछे हटाना । हटाना । पृथ्वी में गाड़ना या दफनाना । किसी पर इतनी धाक जमाना कि वह कुछ बोल न सके । बलपूर्वक विवश करना, दूसरे को हरा देना । किसी बात को उठने और फैलने न देना, दमन या शान्त करना । किसी दूसरे की वस्तु अन्याय से ले लेना । झोंके से चल कर पकड़ लेना । किसी को असहाय, विवश और दीन कर देना । [**दाब, दबाव** (संज्ञा)] । [**दबा मारना, दबा लेना दबा बैठना**]

दबाव—(संज्ञा, पु०) [हि० दबाना] दबाने का कार्य या भाव, चाँप, रोब, प्रभाव, धाक, आतंक । बोझा, भार ।**—डालना**-किसी विशेष उद्देश्य से अपने प्रभाव का प्रयोग करना ।

दबीज—(वि०, फा०) गाढ़ा, मोटा, संगीन, मोटे दल का, [डबीज (दे०)] ।

दबीला—(वि०, दे०) [हि० दबाना] एक औषधि । प्रभाव या आतंक वाला, रोबीला ।

दबैल, दबैला—(वि०, दे०) [हि० दबाना+ऐल या ऐला प्रत्य०] दबा हुआ, आधीन, परतंत्र, विवश । दब्बू ।

दबोचना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दबाना] किसी को एकबारगी अचानक दबा लेना, धर दबाना । छिपाना ।

दबोरना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० दबाना], दबाना, अपने सामने ठहरने या बोलने न देना ।

दबोस—(क्रि० स०, दे०) चकमक पत्थर ।

दबोसना—(क्रि० स०, दे०) घूँट-घूँट मदिरा पीना ।

दभ्र—(वि०, सं०) थोड़ा, अल्प, कम ।

दम—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्रियों और मन का नियंत्रण, कीच । मकान । बुद्ध । विष्णु । दबाव. दमन । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) साँस । एक श्वास-रोग ।**—कल, कला**-(संज्ञा, पु०) [हि० दम+कल] बड़ा पंप, बड़ी पिचकारी ।**—खम**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जीवनी-शक्ति, दृढ़ता, तलवार की धार और उसकी वक्रता ।**—चूल्हा**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) (हि०) एक लोहे की चादर का गोल चूल्हा ।**—दार**-(वि०, फ़ा०) जानदार, दृढ़, साहसी, उदार, मजबूत, चोखा, तीव्र, पैना ।**—बाज**-(वि०, फ़ा०) फ़ुसलाने वाला, धोखा या दम देन वाला । [**—बाजी** (संज्ञा, स्त्री०)] । " दमबाजों की दमबाजी से तो नाक में दम है ।" **मुहा०—में दम होना,—रहना या होना**-श्वास चलना, जीवित रहना, साहस या शक्ति रहना । " दूँगा नहीं जानकी जबलों दम में दम है ।" **नाक में—होना (करना)**-बड़ी आफत या दिक्कत (कठिनाई) होना (करना), हैरान या परेशान होना या करना । **नाक में—रहना**-हैरानी या

दिक्कत रहना, जीवन रहना " नाक दम रहै जौ लौं, नाक दम रहैं तौ लौं ।" **नाक में—आना**–कठिनाई से प्राण ऊबना ।—**अटकना या उखड़ना**–साँस रुकना (विशेषतः मरते समय)। —**खींचना (रोकना)**–चुप रह जाना।—**मार कर रह जाना**–साँस ऊपर को चढ़ाना।—**घुटना**–हवा की कमी से साँस रुकना ।—**घोंट कर मरना**–गला दबा कर मरना, बहुत कष्ट होना।—**तोड़ना (छोड़ना)**–आखिरी साँस लेना।—**भरना (मारना)**–पेट मे दम न समाना, साँस जल्दी-जल्दी चलना, हाँफना, दमे के रोग का दौरा होना ।—**मारना**–विश्राम वा आराम करना, सुस्ताना, बोलना या कुछ कहना, श्वास को प्राणायाम से वश में करना, चीं चू करना ।—**लेना**–विश्राम या आराम करना, सुस्ताना ।—**साधना (रोकना)**–साँस की चाल रोकना, चुप या मौन रहना, नशे के लिए साँस के साथ मादक धुआँ खींचना ।—**लगाना**–चिलम मे चरस आदि रख कर उसका धुआँ खींचना। बाहर जोर से साँस फेंकना या फूँकना। एक बार में साँस लेने का समय, पल, जैसे हरदम। (क्रि० वि०)। **एक—से**–एकबारगी, अकस्मात्, एक बार में ही पूर्ण ।—**के दम में**–थोड़ा देर मे, पल या क्षण भर में ।—**देना**–थोड़ा समय शान्त और तैयार होने को देना। " अरे छांटे कैदों तू दे दम मुझे।"—**दम पर**–थोड़ी-थोड़ी देर मे। प्राण, जीव, जान, जी ।—**सूखना**–मारे डरके साँस तक न लेना, प्राण सूखना।—**निकलना**–मरना, मृत्यु होना।—**सुखाना (सूखना)**–भयभीत करना, डर से साँस रोकना, जान सुखाना, जान सूखना, जीवनी शक्ति, अस्तित्व। **किसी की—गनीमत होना**–उसके जीने से कुछ न कुछ अच्छे कामो का होना ।—**रहना**–जीवन रहना। किसी बर्तन का मुँह बन्द करके कोई वस्तु पकाना। छल, धोखा। —**झाँसा**–छल, कपट।—**दिलासा या पट्टी**–फुसलाना, झूठी आशा देना।—**देना**–बहकाना, धोखा देना। तलवार या चाकू आदि की धार, रक्त, साहस, शक्ति।

दमक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० चमक का अनु०] आभा, कांति, द्युति, चमक, चमचमाहट। [**चमकदमक** (यौ०)]

दमकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० चमकना का अनु०] चमकना, चमचमाना । " दमकत आवै चारु चोखो मुख मंद हास "—सरस०।

दमड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्रविण] धन, दौलत, सम्पत्ति।

दमड़ी, दमरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्रविण] एक पैसे का आठवाँ भाग। "दमड़ी भर विश्वास नहीं है तुझ पर मेरा"—हितैषी।

दमदमा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मोरचा, धुस।

दमदमाना—(क्रि० अ०, दे०) चमकना, प्रकाशित होना।

दमन—(संज्ञा, पु०, सं०) दबाने या रोकने का कार्य । दंड । इन्द्रिय-निग्रह । विष्णु। शिव। एक ऋषि जिनकी कृपा से दमयंती हुई थी। " दमनादमनात् प्रसेदुपस्तनयां तथ्यगिरस्तपोधनता "—[नैष०]।—**शील**–(वि०, सं०) जिसका स्वभाव दमन करने का हो, दमन करने वाला।

दमनक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक छंद (पिं०) एक पौधा, दौना (दे०)।

दमना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) द्रोणपुष्पी लता । " दमना माँस उगल जनि चंदा "—विद्या०। दौना पौधा। (क्रि० स०, दे०) दबाना, दूर करना। " जिय माँझ अहंपद जो दमिये "—[रामा०]।

दमनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लज्जा, संकोच, शर्म।

दमनीय—(वि०, सं०) दमन करने, दबाने, झुकाने, लचाने या तोड़ने योग्य । " रच्यो न धनु दमनीय "—[रामा०]।

दमनू—(संज्ञा, पु०) [सं० दमन] दबाने या दमन करने वाला। " ढारैं चमर भरत रिपुदमनू " —[रामा०]।

दमयंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा भीम की कन्या और राजा नल की पत्नी। " भुवनत्रय सुभ्रु वामसौ दमयन्ती कमनीयतामिदम् " । " दमयन्तीति ततोऽभिधां दधौ"—[नैष०]।

दमयिता—(संज्ञा, पु०, सं०) दमन या दण्ड देने वाला। विष्णु। शिव।

दमा—(संज्ञा, पु०, दे०) श्वास रोग । " दमा रोग दम के सँग जाई "—[स्फु०]।

दमाद—(संज्ञा, पु०) [सं० जामातृ] जामाता, जँवाई (ग्रा०), लड़की का पति।

दमादम—(क्रि० वि०, दे०, फ़ा०) लगातार । चमक से।

दमानक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बन्दूकों या तोपों की बाढ़।

दमाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दम] नवाना, लचाना, झुकाना, निहुराना, नम्र करना ।

दमामा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नगाड़ा, डंका । " मढ़े दमामा जात हैं"—बिहारी ।

दमारि*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० दावानल] वन की आग, दँवरि । " लागी है दमारि कैधौं फूले हैं पलास वन "—मन्ना० ।

दमावति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) दमयंती, राजा नल की पत्नी । " राजा नलकहँ जइस दमावति "—[पद०] ।

दमाह—(संज्ञा, पु०) बैलों को होने वाला रोग-विशेष । (वि०) जिसको दमा का रोग हो ।

दमित—(वि०, सं०) विजित, पराभूत, जिसका नियंत्रण या दमन कर दिया गया हो ।

दमी—(संज्ञा, वि०, सं०) दमन करने वाला । (संज्ञा, वि०, दे०, फ़ा०) दम लगाने वाला, दम-रोगी । नैचा । लो०—"दमी यार किसके, दम लगाई खिसके ।"

दमैया*†—(वि०, दे०) [हिं० दमन+ऐया प्रत्य०] दमन करने वाला ।

दयंत‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दैत्य] दैत्य, दानव, दइत, दैत (ग्रा०) ।

दया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृपा, करुणा, धम्म की पत्नी । "दमदानदया नहिं जानपनी"—[रामा०] । **—दृष्टि**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृपा-कटाक्ष, कृपा-कोर, [दयादीठि (दे०)] ।**—निधान**–(संज्ञा, पु० सं०) दया का खजाना, अति दयालु या कृपालु, कारुणिक । " दयानिधान राम सब जाना "—[रामा०] ।**—निधि**–(संज्ञा, पु०, सं०) अति कृपालु या दयालु, कारुणिक पुरुष । परमेश्वर ।**—पात्र**–(संज्ञा, पु०, सं०) कृपा, दया या करुणा के योग्य ।**—मय**–(संज्ञा, पु०, सं०) कृपा, दया, करुणारूप या परिपूर्ण, अति कृपालु, दयालु, कारुणिक । परमेश्वर ।**—युक्त (युत)**–(वि०, सं०) दयावान्, दयालु, कृपालु ।**—वान्**–(वि०, सं०) कृपायुक्त, दयालु, कारुणिक, दयावन्त । [**दयावती** (स्त्री०)] ।**—शील**–(वि०, सं०) कृपालु, दयालु । **—सागर**–(वि०) कृपा का समुद्र, अति कारुणिक, दयालु, दयासिंधु ।

दयानन्द—(संज्ञा, पु०, सं०) आर्य्यसमाज के प्रवर्तक एक संन्यासी ।

दयानत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) ईमानदारी, धर्म, सत्य-प्रेम ।**—दार**–(वि०) [अ० दयानत+दार फ़ा०] ईमानदार, धर्मात्मा, सच्चा । [**दयानतदारी** (संज्ञा, स्त्री०)]

दयाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [दया+ना प्रत्य०] दया या करुणा करना, कृपालु होना ।

दयार—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रदेश, सूबा, प्रांत ।

दयार्द्र—(वि०, यौ०, सं०) दया या कृपा से द्रवीभूत, कृपा या दया-पूर्ण, कारुणिक ।

दयाल, दयालु—(वि०) [सं० दयालु] अति कृपालु, दयावान ।

दयालुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृपालुता ।

दयावंत—(वि०, सं०) कृपालु, कारुणिक ।

दयावना*—(वि०, पु०, दे०) [हिं० दया+आवना] दुखिया, बेचारा, दीन, कृपा या दया करने योग्य । [**दयावनी** (स्त्री०)]

दयित—(संज्ञा, पु०, सं०) पति, स्वामी, भर्ता । (वि०) प्रिय, स्नेही ।

दयिता—(संज्ञा, पु०, सं०) पत्नी, भार्य्या, प्रिया, प्रियतमा ।

दयिताधीन—(वि०, पु०, सं०, यौ०) स्त्रैण, स्त्री के वशीभूत या अधीन ।

दर—(संज्ञा, पु०, सं०) शंख । गढ़ा, दरार, कंदरा । विदारण । भय । (संज्ञा, पु०) [सं० दल] समूह, झुंड, दल । "कुंद, इंदु, दर गौर शरीरा"—[रामा०] । " दीनबंधु दीनता-दरिद्रदाह-दोष-दुख दारुण दुसह-दर-दरप-हरन हौ "—[वि०] । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) स्थान, द्वार, दरवाजा । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) भाव । गौरव, महिमा । (वि०) स्वल्प, सीमित, थोड़ी मात्रा का ।**—कच**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० दर=गढ़ा+हिं० कचरना] कचर जाने या दब जाने से लगी चोट ।**—कार**–(वि०, फ़ा०) आवश्यक, अपेक्षित, जरूरी । **—किनार**–(क्रि० वि०, फ़ा०] भिन्न, अलग, एक तरफ या ओर, दूर ।**—कूच**–(क्रि० वि०, फ़ा०) मंजिल दर मंजिल । लगातार या बराबर चलता हुआ ।**—खास्त**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० दरख्वास्त] निवेदन, प्रार्थना या आवेदन-पत्र ।**—गह,—गाह**–(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) देहरी, चौखट । दरबार, कचहरी । मकबरा । "धनी सहैगा सासनां, जम की दरगह माहि "—कबीर ।**—गुजर**–(वि०, फ़ा०) भिन्न, अलग,

वंचित। क्षमाप्राप्त।—**गुजरना**–(क्रि० स०, दे०) [फ़ा० दरगुजर+ना प्रत्य०] छोड़ना, क्षमा करना।—**दर**–(क्रि० वि०) [फ़ा० दर] द्वार-द्वार, जगह-जगह। (वि०) मोटा चूर्ण।—**पर्दा**–(क्रि० वि०, फ़ा०) ओट या आड़ में, छिप-छिपकर।—**पेश**–(क्रि० वि०, फ़ा०) सम्मुख, सामने, आगे।—**बान**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार, संतरी।—**बार**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) राजसभा, कचहरी। "गये भूप-दरबार"—[रामा०]।—०**दारी**–(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) किसी के यहाँ बार-बार जाकर बैठना और उसकी खुशामद करना।—०**विलासी***–(संज्ञा, पु०) [फ़ा० दरबार+सं० विलासी] दरबान, द्वारपाल। —**बारी**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सभासद, दरबार में बैठने या जाने वाला। (वि०, दे०) दरबार का, दरबार के योग्य। **मुहा०—दर मारा-मारा फिरना**–बुरी दशा में फँस कर घूमना। "ये रहीम दर दर फिरैं"—रहीम। (संज्ञा, स्त्री०) निर्ख, भाव। प्रमाण, सबूत। ठीक, ठौर। प्रतिष्ठा, मान, कदर। **मुहा०—उठना**–विश्वास या प्रतिष्ठा न रहना।—**न होना**–कदर या विश्वास न होना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दरु] ऊख, गन्ना। "मदन सहाय दुवौ दर गाजे"—[पद०]।

दरकना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दर=फाड़ना] दाब पड़ने से फटना या चिर जाना।

दरका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दरकना] दरार, दराज। वह चोट जिससे कोई वस्तु फट या दरक जाय। (प्रान्ती०) एक रोग।

दरकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दरकना] फाड़ना, चीरना, मसकाना। (क्रि० अ०) फटना, चिरना, मसकना। "चूरी दरकाई मसकाई चारु चोली अरु"—मन्ना०। "जल जरि गयो पंक सूख्यो भूमि दर को"—गंग०।

दरखत*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दरख़्त] पेड़, वृक्ष।

दरख़्त—(संज्ञा, पु०, दे०, फ़ा०) वृक्ष, पेड़।

दरख़्वास्त—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) निवेदन, प्रार्थना या आवेदन-पत्र, [दरखास्त (दे०)]

दरज़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दर=दरार] दराज, दरार, छेद, बिल।—(**दर्ज**) **करना**–लिखना।

दरजन, दर्जन—(संज्ञा, पु०, दे०) बारह वस्तुएँ। [डजन]

दरजा, दर्जा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० दर्जा] कक्षा, श्रेणी, कोटि, वर्ग, पद, ओहदा, खंड। (क्रि० वि०) गुना।

दरजिन, दर्जिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० दर्ज़ी] दरजी की स्त्री, कपड़े सीने वाली।

दरजी, दर्जी—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दर्ज़ी] कपड़ा सीने वाला।

दरण—(संज्ञा, पु०, सं०) ध्वंस, विनाश। दरने या पीसने का कार्य।

दरद—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दर्द] व्यथा, पीड़ा। दया।—**वंत,—वंद**–(वि०, दे०) [फ़ा० दर्द+हि० वंत प्रत्य०] कृपालु, दयावान, सहानुभूति रखने वाला। पीड़ित, दुखी। (संज्ञा, पु०) काश्मीर और हिन्दकुश पहाड़ के बीच का देश (प्राचीन), ईंगुर, सिंगरफ।

दरदरा—(वि०, दे०) [सं० दरण=दलना] जिसके कण मोटे हों। स्थूल। खुरदरा। [**दरदरी** (स्त्री०)]

दरदराना—(वि०, स०, दे०) [सं० दरण] स्थूल या मोटे-मोटे कणों के रूप में पीसना। चबाना।

दरद—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दर्द] पीड़ा, व्यथा, दुःख, दरद, दर्द।

दरन—(वि०, दे०) [हि० दरना] दलने वाला, नाश करने वाला, । "बिप्र-तिय मृग बधिक के दुख दोष दारुन दरन"—[वि०]।

दरना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० दरण] दलना, मोटा या स्थूल पीसना। नष्ट करना। [**दलना**] **मुहा० छाती पर मूँग**—, असहनीय पीड़ा पहुँचाना। अत्याचार करना।

दरप*†—(संज्ञा, पु०) [सं० दर्प] अहंकार, घमंड, अभिमान। [**दरपी** (वि०)]।

दरपन, दर्पन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दर्पण] शीशा, आयना, मुकुर, आरसी। "दुरजन दरपन सम सदा"—वृं०। [**दरपनी** (संज्ञा, स्त्री०, अल्पा०)]

दरपना—(क्रि० अ०, दे०) [स० दर्प] क्रोध करना, घमंड या अभिमान करना, ताव में आना।

दरपनी—(संज्ञा, स्त्री०) छोटा शीशा, दर्पण।

दरब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्रव्य] सम्पत्ति, धन। "दरब गरब करिये नहीं"—मन्ना०। "कीन्हेसि दरब गरब जेहि कोई"—[पद०]।

दरबदलित—(संज्ञा, पु०, दे०) थोड़ा लिखा ।

दरबहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) चावल की मदिरा या शराब ।

दरबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फा० दर] काठ का खानेदार संदूक, कबूतरों या मुर्गियों के रखने का घर ।

दरबी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० दर्वी] दर्वी साँप का फन ।—**कर**-साँप । करछुल, पौना ।

दरभ—(संज्ञा, पु०) [सं० दर्भ] कुशा । (संज्ञा, पु०, दे०) बंदर ।

दरमा—(संज्ञा, पु०, दे०) बाँस की चटाई ।

दरमान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दवा, औषधि । "इलम सुरमा है व दीदा दिल का दरमान" —[स्फु:] ।

दरमाहा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मासिक वेतन ।

दरमियान—(संज्ञा, पु०, दे०) [फा० दर्म्यान] बीच, मध्य । (क्रि० वि०) बीच या मध्य में ।

दरमियानी—(वि०, फ़ा०) बीच का, बिचवानी, मध्यस्थ । (संज्ञा, पु०, दे०) दो मनुष्यों के झगड़े का निपटाने वाला ।

दररना—(क्रि० स०, दे०) धक्का देना, रगड़ना ।

दरराना—(क्रि० अ०, दे०) निर्विघ्न या बेखटक चला आना, वेग से आ पहुँचना ।

दरवाजा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) द्वार, मुहारा, मुहार, दुआर (ग्रा०) ।

दरवेश—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) साधु, फकीर, भिखारी ।

दरश—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दर्श] दर्श, दरस, देखना ।

दरशन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दर्शन] अवलोकन, साक्षात्कार, भेंट । दर्शन शास्त्र । नेत्र । स्वप्न । ज्ञान । धर्म्म । दर्पण । [दरसन (दे०)]

दरशना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दर्शन] दिखाई देना या पड़ना, देखने मे आना । (क्रि० स०, दे०] देखना, लखना । [दरसना (दे०)]

दरशनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दर्शन । शीशा, दर्पण ।—**हुंडी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दर्शन + हि० हुंडी] जिस हुंडी का रुपया उसे दिखाते ही मिल जाय ।

दरस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दर्श] दर्शन, भेंट, देखना । शोभा, छवि । दर्शनेच्छा । "दरस लागि लोचन ललचाने"—[रामा०] । [**दरस-परस** (यौ०)]

दरसन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दर्शन] दर्शन, भेंट करना, देखना ।

दरसना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दर्शन] देखने में आना, दिखलाई पड़ना या देना । (क्रि० स०) देखना, लखना ।

दरसाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दर्शन] दिखाना, दिखलाना, प्रगट या स्पष्ट करना । "अँधेरे को सब कुछ दरसाई"—सूर० । समझाना । *† (क्रि० स०) दिखाई पड़ना ।

दरसावना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दर्शन] दृष्टि-गोचर कराना, दिखलाना, प्रगट या स्पष्ट कराना, समझाना । *† (क्रि० अ०, दे०) दिखलाई पड़ना या देना ।

दरही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक मछली ।

दराँती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हँसिया, हँसुआ, हँसवा (ग्रा०) ।

दराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दरना] दरने का काम या मजदूरी ।

दराज—(वि०, दे०, फ़ा०) बड़ा भारी, दीर्घ । (क्रि० वि०, फ़ा०) बहुत, अधिक । (संज्ञा, स्त्री०) मेज का संदूक । [ड्राअर]

दरार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दर] दराज, शिगाफ । किसी चीज के फट जाने से बनने वाला निशान । "सजन कुम्भ कुम्हार के, एकै धका दरार"—वृंद ।

दरारना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० दरार + ना प्रत्य०] फटना, शिगाफ होना, विदीर्ण होना ।

दरारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दरना] सूजन का चकत्ता, दरेरा, धक्का । दरार ।

दरिंदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०] माँस-भक्षक जंतु, फाड़ खाने वाला वन-जंतु ।

दरित—(वि०, दे०) [सं० दलित] त्रस्त, डरा हुआ, दला या कुचला हुआ ।

दरिद, दरिद्दर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दरिद्र] दलिद्र, कंगाल, निर्धन, गरीब ।

दरिद्र—(वि०, पु०, सं०) कंगाल, निर्धन, गरीब । [**दरिद्रा** (स्त्री०)] ।

दरिद्रता—(संज्ञा, स्त्री०) गरीबी, निर्धनता ।

दरिद्रिन्—(वि०, सं०) दीन, दुखी, कंगाल, निर्धन ।

दरिद्री—(वि०, सं०) दीन, दुखी, निर्धन ।

दरिया—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) समुद्र । नदी ।—**दिल**-(वि०, फ़ा०) उदार, दानी । [**दरिया-दिली** (स्त्री०)] ।—**बरार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नदी की धारा के हट जाने से निकली भूमि ।—**बुर्द**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नदी की धारा से कट कर बह गई भूमि ।

दरियाई—(वि०, फ़ा०) समुद्र या नदी संबंधी । समुद्र या नदी के समीप का । (संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० दाराई] रेशमी वस्त्र, साटन ।—**घोड़ा**-(संज्ञा, पु०) [फ़ा० दरियाई + घोड़ा हिं०] समुद्रीय घोड़ा (अफ्रीका के पास) ।—**नारियल**-(संज्ञा, पु०) [फ़ा० दरियाई + नारियल हिं०] एक बड़ा नारियल, जिसका कमंडल बनता है ।

दरियादासी—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० + हिं०] निर्गुण उपासक साधुओं का मत जिसे दरियादास ने चलाया था ।

दरियाफ्त—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पता लगाने की क्रिया, जाँच-पड़ताल । [इंक्वायरी] (वि०) जिसकी जाँच-पड़ताल की गई हो ।

दरियाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दरिया] नदी । समुद्र । "मोहू पै कीजै दया, कान्ह दया-दरियाव"—मति० ।

दरी, दरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, भं०) गुहा, गुफा, खोह, कंदर, पर्वत के मध्य का नीचा स्थान जहाँ कोई नदी गिरे । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० स्तर] मोटे सूतों का बिस्तर या बिछौना ।

दरीखाना—(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० दर + खाना] बहुत से द्वारों वाला घर, बारादरी ।

दरीचा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) छोटा द्वार, खिड़की, झरोखा । खिड़की के समीप बैठने का स्थान । [**दरीची** (स्त्री०)]

दरीची—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) छोटी खिड़की, छोटा झरोखा । "विज्जु बादर दरीची में ।"

दरीबा—(संज्ञा, पु०, दे०) पानों की मंडी या बाजार ।

दरेग—(संज्ञा, पु०) [अ० दरेग] अफसोस । कसर, कमी, कोताही ।

दरेती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दरना] दाल दलने की छोटी चक्की । हँसिया, हँसुवा, हँसुआ, दरेतिया (ग्रा०) ।

दरेरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दरण] पसीना । रगड़ना, रगड़ते हुए धक्का देना ।

दरेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दरण] धक्का, रगड़, चोट, पानी के बहाव का धक्का, धावा । "देत हैं दरेरे मोहिं खेरे घोलि कै कई"—दीन० ।

दरेस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फूलदार महीन कपड़ा । (वि०, दे०) तैयार, दुरुस्त, ठीक । (संज्ञा, पु०, दे०) पोशाक [ड्रेस] ।

दरेसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दरेस] मरम्मत, दुरुस्ती, व्यवस्था ।

दरैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दरना + ऐया प्रत्य०] दाल आदि का दरने वाला । नाशक, घातक । "दीननाथ दीन-दुख दारिद-दरैया हौ"—रसाल ।

दरोग—(संज्ञा, पु०, अ०) असत्य, झूठ ।—**हलफी**-(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सत्य कहने की शपथ खाकर भी झूठ बोलना ।

दरोदर—(संज्ञा, पु०, सं०) पासा, जुआ । जुआरी ।

दर्ज—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० दरज] दरार, दराज, छेद । (वि०, फ़ा०) कागज पर लिखा हुआ ।

दर्जन—(संज्ञा, पु०, दे०) बारह वस्तुओं का समूह । [डजन]

दर्जा—(संज्ञा, पु०, अ०) कक्षा, कोटि, श्रेणी, वर्ग, पद, ओहदा, खंड । (क्रि० वि०) गुना ।

दर्जिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दर्जी] दर्जी की स्त्री । दरजिन (ग्रा०) ।

दर्जी—(संज्ञा, पु०, दे०, फ़ा०) कपड़ा सीने वाला । कपड़ा सीने वाली एक जाति । [**दर्जिन** (स्त्री०)]

दर्द—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) व्यथा, पीड़ा, दुःख । करुणा, दया । हाथ से निकल जाने का कष्ट या दुःख [दरद (दे०)] ।—**अंगेज़**-(वि०, फ़ा०) पीड़ा उत्पन्न करने वाला ।—**नाक**-(वि०, फ़ा०) पीड़ा से ओतप्रोत ।—**मंद**-(वि०, फ़ा०) पीड़ित, करुणाशील ।—**शरीक**-(वि०, फ़ा०) मित्र । [**दर्द-शरीकी** (संज्ञा, स्त्री०)] । **मुहा०—खाना** (**आना**)-कृपा या दया करना ।

दर्दी—(वि०, दे०, फ़ा०) दुखी, पीड़ित । दयालु ।

दर्दुर—(संज्ञा, पु०, सं०) भेक, मेंढक । बादल । अबरख, अभ्रक । झींगुर, दादुर (दे०) ।

दर्प—(संज्ञा, पु०, सं०) अहंकार, अभिमान, गर्व, मान। उद्दंडता, अक्खड़पन। रोब, आतंक, धाक, [दरप (दे०)]। "कंदर्प-दर्प दलने बिरला समर्थाः"—भर्तृ०। "रावण के दर्प-अर्प दीन्हें लोकपाल लोक"—मन्ना०।—**च्छिद**,—**हर**-(वि०, सं०) दर्प का नाश करने वाला।

दर्पक—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव। घमंडी।

दर्पण—(संज्ञा, पु०, सं०) मुकुर, आरसी, शीशा, [दरपन (दे०)]। "दुर्जन दर्पण सम सदा"—वृंद। दर्पणी, दरपनी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा दर्पण, शीशा।

दर्पणीय—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोहर, दिखनौट। उत्तम, श्रेष्ठ।

दर्पान्ध—(वि०, पु०, दे०, यौ०) [हि० दर्प + अंध] घमंड से चूर, अहंकारी, अभिमानी।

दर्पित—(वि०, सं०) अहंकारी, दर्पवाला, अभिमानी। "दर्पित दर्प उन्मन नद पठान"—निराला।

दर्पी—(वि०, सं०) अभिमानी, क्रोधी, आतंकी।

दर्ब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्रव्य] सम्पत्ति, धन, द्रव्य, रुपया-पैसा, सोना-चाँदी। "अर्ब खर्ब लौं दर्ब है"—तुल०।

दर्भ—(संज्ञा, पु०, सं०) डाभ, कुशा, कुश।—**केतु**-(संज्ञा, पु०) महाराज जनक के बंधु कुशध्वज।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०) काश, काँस।—**पुष्प**-(संज्ञा, पु०) सर्प-विशेष।—**सूची**-(संज्ञा, स्त्री०) डाभ का नुकीला भाग।

दर्भासन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुशासन, डाभासन, कुशों का बिछौना।

दर्मियान—(संज्ञा, पु०, अ०) देखिए दरमियान।

दर्रा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पर्वतों के मध्य का संकीर्ण मार्ग, घाटी। दरार।

दर्राना—(क्रि०, स०, दे०) [अनु० दड़दड़] धड़धड़ाना, बेखटक या बेधड़क चला जाना, दराज होना, फटना।

दर्व—(संज्ञा, पु०, सं०) हिंसक, राक्षस। एक जाति। एक प्रांत।

दर्विका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चमचा, करछी। साँप का फन।

दर्वी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चमचा, करछी। साँप का फन।

दर्वीकर—(संज्ञा, पु०, सं०) जिस साँप के फन हो, काला साँप।

दर्श—(संज्ञा, पु०, सं०) देखना, दर्शन। अमावस, द्वितीया तिथि। एक यज्ञ। दरश, [दरस (दे०)]। [दर्श-स्पर्श (यौ०)]।

दर्शक—(संज्ञा, पु०, सं०) देखने या दर्शन करने वाला। दिखाने वाला।

दर्शन—(संज्ञा, पु० सं०) वह ज्ञान जो देखने से हो, साक्षात्कार, अवलोकन, भेंट। तत्वज्ञान सम्बन्धी शास्त्र या विद्या जिसमें ब्रह्म, जीव, प्रकृति का विवेचन है। [छः आस्तिक—सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा, वेदान्त।] [छः नास्तिक—चार्वाक, जैन, माध्यमिक, योगाचार, सौत्रांतिक, वैभाविक] बुद्धि। स्वप्न। धर्म। यज्ञ। दर्पण।—**प्रतिभू**,—**प्रतिभाव्य**-(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिनिधि, हाजिर जामिन जो किसी को समय पर उपस्थित करने का भार अपने ऊपर ले।

दर्शनीय—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोहर, देखने के योग्य।

दर्शनीहुंडी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० दर्शनी + हुंडी] वह हुंडी जिसे दिखाते ही रुपया मिल जाय।

दर्शनेच्छा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) देखने की इच्छा या आकांक्षा, [दरस (दे०)], दर्शनाभिलाषा।

दर्शनेन्द्रिय—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) आँख, नेत्र, नयन, लोचन।

दर्शयिता—(संज्ञा, पु०, सं०) पथप्रदर्शक, दिखाने वाला। द्वारपाल।

दर्शाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दर्शन] दिखलाना, साक्षात कराना, प्रकट या स्पष्ट करना, भली भाँति समझाना।

दर्शित—(वि०, सं०) दिखाया हुआ, प्रकाशित, प्रकटीकृत।

दर्शी—(वि०) [सं० दर्शिन्] देखने या समझने वाला।

दल—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्न के दाने की दोनों पंखड़ी। समूह। सेना। किसी वस्तु की मोटाई। "लगे लेन दल-फूल मुदित मन"—[रामा०]। [तुलसीदल (यौ०)]।—**कपाट**-(संज्ञा, पु०, सं०) फूल की हरी पत्ती मिली हुई पँखुरियाँ जिनके भीतर कली होती है।—**कोश**-(संज्ञा,

पु०, सं०) कुन्द वृक्ष ।—गंजन–(वि०, सं०) बड़ा वीर या शूर, दल का विनाशक ।—थंभन–(वि०, दे०) [सं० दलस्तम्भन] सेना को युद्ध में अटल रखने या रोकने वाला सेनापति । किमखाब बुनने वालों का एक हथियार ।—दार–(वि०) [हिं० दल + फ़ा० दार] मोटे दल, परत या तह वाली वस्तु । —०,—पति–(संज्ञा, पु०, सं०) सेनापति, अगुआ, अग्रगण्य, सरदार, मुखिया ।—पुष्पा–(संज्ञा, स्त्री०) केतकी ।—बंदी–(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० दल+बंधन] एकता, मेल ।—बल–(संज्ञा, पु०, सं०) सेना, लावलश्कर ।—बादल–(संज्ञा, पु०) [सं० दल+बादल] मेघ-समूह । भारी सेना । बड़ा शामियाना या चँदोवा ।—वाल*†–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दलपाल] सेनापति, दलवाला ।—सूची–(संज्ञा, स्त्री०) काँटा । पौधा जिसके पत्तों में काँटे होते हैं ।

दलक—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० दलक] गुदड़ी । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दुलकना] धमक, कंप, थरथराहट, कँपकँपी । टीस, चमक । "तुलसी कुलिसहु की कठोरता तेहि दिन दलक दली"—[गीता०] ।

दलकन, दलकनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दलक] आघात, चोट, दलकने का भाव, उद्विग्नता, कंप ।

दलकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दलन] चिर या फट जाना, दरार खाना । काँपना, थर्राना, उद्विग्न होना, चौंकना । "दलकि उठेउ सुनि बचन कठोरू"—[रामा०] ।

दलदल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दलाढ्य] कीच, कीचड़, पंक, चहला । पाँव न धरने योग्य गीली भूमि । मुहा०—में फँसना (फँसाना)-विपत्ति या कठिनता में पड़ना, कोई काम शीघ्र पूर्ण या समाप्त न होना, खटाई में पड़ना ।

दलदला—(वि०, दे०) (हिं० दलदल) जहाँ दलदल हो, दलदल वाला । [दलदली (स्त्री०)] ।

दलदलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० दलदल] काँपना, हिलना, थरथराना । मोटाना ।

दलदलाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दलदल] कंप, दलक, धमक । मोटाई ।

दलन—(संज्ञा, पु०, सं०) नाश, संहार । नष्ट-भ्रष्ट । दल कर टुकड़े-टुकड़े कर देना । "दलन मोह-तम सो सुप्रकासू"—रामा० । [दलित, दलनीय (वि०)] ।

दलना, दरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दलन] किसी पदार्थ के टुकड़े करना, चूर्ण कर डालना, कूँचना, रौंदना, दबाना, मसलना, नष्ट-भ्रष्ट या नाश करना, तोड़ना । दाल दलना । [दलाना (प्रेरणा० रूप)] ।

दलनि†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दलना] दलने के कार्य का ढंग, रीति, कायदा ।

दलमलाना—(क्रि० स०, दे०, यौ०) [हिं० दलना + मलना] रौंद या कुचल डालना, नाश या नष्ट करना, मसल या मोड़ देना ।

दलवाना, दरवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० दलना का प्रेरणा० रूप] दलने का कार्य दूसरे से कर-वाना । [दलाना, दराना (दे०)] ।

दलवैया—(संज्ञा, पु०, वि०, दे०) [हिं० दलाना] दाल आदि दलने वाला । नाशक, नष्ट-भ्रष्ट करने वाला, दलैया, दरैया ।

दलहन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दाल+अन्न] दाल बनाने के अनाज, जैसे चना, अरहर आदि ।

दलहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दाल+हार प्रत्य०] दाल बेचने वाला, दालवाला ।

दलादली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दलों की लागडाँट ।

दलान†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दालान] ओसारा, [दल्लान (दे०)] ।

दलाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० दालाना] दाल दलवाना या बनवाना । चूर्ण कराना ।

दलामल—(संज्ञा, पु०, सं०) दौना, मरुआ, मैनफेर का वृक्ष ।

दलाल—(संज्ञा, पु०, अ०) माल मोल लेने या बेचने में मध्यस्थ । कुटना । पारसियों और जाटों की एक जाति । बिचवानी करने वाला ।

दलाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अ०) बिचवानी या दलाल का कार्य्य या मजदूरी । [दल्लाली (दे०)] ।

दलित—(वि०, पु०, सं०) कुचिला या मसला हुआ, दबाया या रौंदा हुआ, मर्दित, नष्ट-भ्रष्ट । दली हुई दाल या अन्न ।—वर्ग—(संज्ञा, पु०) पिछड़ा हुआ वर्ग जैसे हिन्दुओं मे अछूतों या शूद्रों की जाति । उपेक्षित वर्ग ।

दलिद्र—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दरिद्र] दरिद्र, कंगाल, दुखी, दलिद्दर (ग्रा०) । [दलिद्रता (संज्ञा, स्त्री०)], [दलिद्री (वि०)] ।

दलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दलना] दला गया अन्न। दले गेहूँ का भात।

दली—(वि०) [हिं० दलना] दलित, दली गयी। (वि०) [हिं० दल + ई प्रत्य०] दल (सेना या पक्ष) वाला। "पीछे तोहि न दली अली कोउ आदर करिहै।"—दीन०।

दलील—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) युक्ति, तर्क, विवाद, बहस।

दलेंती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दलना] दाल दलने की छोटी चक्की, चकरी, दरती (ग्रा०)।

दलेल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दंड या सजा के बदले ड्रिल या कवायद। [ड्रिल]। **मुहा०—बोलना**—दंड देना।

दलैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दलना+ऐया प्रत्य०] दलने या नाश करने वाला, दरैया।

दल्लभ—(संज्ञा, पु०, दे०) छल, कपट, धोखा, पाप।

दवंगरा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० दव+अंगार] वर्षा ऋतु के आरम्भ में पानी की अच्छी झड़ी।

दव—(संज्ञा, पु०, सं०) वन, जंगल। दावाग्नि, दावानल, दवारि। "मृगी देखि जनु दव चहुँ ओरा"—[रामा०]।

दवन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दमन] दमन, नाश। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दमनक] दौना पौधा।

दवना*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दौना] दौना पौधा।

दवनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दमन] दवरी, मिजाई, दँवाई।

दवरिया‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दावाग्नि] दवारि, दावाग्नि।

दवा—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) औषधि, उपचार, चिकित्सा।*† (संज्ञा, स्त्री०) [सं० दव] दावानल, आग।—**खाना**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) औषधालय।—**दरपन**,—**दारू**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिकित्सा, इलाज, उपचार। "दवा-दारू के बिना वह चल बसा असहाय"—हितैषी।

दवाग, दवागि, दवागिन, दवाग्नि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दवाग्नि] वन की आग, दवारि, [दवागी (दे०)]।

दवात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० दावात] दावात, मसिपात्र, दुवाइत (ग्रा०), [दवायत (दे०)]।

दवानल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) बनागी, दावाग्नि, दवारि। "काम के दवानल में जलते जो रात दिन"—हितैषी।

दवामी—(वि०, अ०) सदा के हेतु, स्थायी।—**बंदोबस्त**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सार्वकालिक प्रबन्ध, स्थायी प्रबन्ध।

दवारि, दवारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दावाग्नि] दावानल, वनाग्नि, बनागी।

दविष्ठ—(वि०, सं०) अति दूर।

दवीयान्—(वि०, सं०) दूरतर, अति दूरवर्ती।

दश—(वि०, सं०) नौ और एक।—**कंठ**-(संज्ञा, पु०, सं०) रावण, दशकंध, दसकंधर। "दसकंठ के कठन कौ कठुला"—[रामा०]।—०ज-(संज्ञा, पु०, सं०) मेघनाद। [**दसकंठजहा**-लक्ष्मण]—०**जित**-(संज्ञा, पु०, सं०) रामचन्द्र।—**कंध**,—**कंधर**-(संज्ञा, पु०) [सं० दश+कं=शिर+ धर] दशभाल वाला, रावण। "कह दसकंध कौन तैं बन्दर। मैं रघुबीर दूत दसकंधर"—तुल०।—**कर्म**-(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भाधान से विवाह तक के १० संस्कार (स्मृति०)।—**कुलवृक्ष**-(संज्ञा, पु०) लसोढ़ा करंज, बेल, पीपल, कदंब, नीम, बरगद, गूलर, आँवला, इमली (तंत्र)।—**कोषी**-(संज्ञा, पु०) संगीत की एक लय।—**क्षीर**-(संज्ञा, पु०) गाय, भैंस, भेंड़, बकरी, ऊँटनी, घोड़ी, हथिनी, हरिणी, गधी और स्त्री का दूध।—**गात्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) मृतक के मरने पर १० दिन तक के कर्म।—**ग्रीव**-(संज्ञा, पु०, सं०) रावण।—**दिक्**,—**दिशा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दश दिशाएँ।—**दिग्पाल**-(संज्ञा, पु०, दे०) दशों दिशाओं के स्वामी वरुण, कुबेर आदि।—**धर्म**-(संज्ञा, पु०) सभी वर्णों के लिए निर्दिष्ट धर्म की दस विधियाँ या दशविध-धर्म।—**धा**-(अव्य०, सं०) दस प्रकार।—**नाम, नामी**-(संज्ञा, पु०, सं०) शङ्कराचार्य के अनुयायी। सन्यासियों के दश भेद—गिरि, सरस्वती, पुरी, तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, पर्वत, सागर, भारती।—**भाल**-(संज्ञा, पु०, दे०) रावण।—**महाविद्या**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दश देवी।—**मुख**-(संज्ञा, पु०, सं०) रावण, दशानन। "दशमुख-सभा दीख कपि जाई"—[रामा०]।—**मुखान्तक**-(संज्ञा, पु०) रामचन्द्र।—**मूल**-(संज्ञा पु० सं०) दस औषधियों की जड़ें—[वैद्यजी०]।—**मौलि**-(संज्ञा, पु०, सं०) रावण [दसमौलि (दे०)]।—**रथ**-(संज्ञा, पु०, सं०) रामचन्द्र जी के पिता,

अयोध्या के राजा, [दसरथ (दे०)] ।—**शीश***—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दशशीर्ष] रावण, [दससीस (दे०)] । "हम कुल-घालक सत्य तुम, कुल-पालक दससीस"—[रामा०] ।—**हरा**-(संज्ञा, पु०, सं०) विजय दशमी । [दसहरा (दे०)] । "काल दशहरा बीति है, धर मूरुख जिय लाज"—बिहारी ।

दशन—(संज्ञा, पु०, सं०) दाँत, [दसन (दे०)] ।

दशम—(वि० सं०) दसवाँ । (संज्ञा, पु०) दसवाँ अंश ।—**भाव**-(संज्ञा, पु०) फलित ज्यौतिष के अनुसार जन्मकुन्डली का दसवाँ घर ।—**लव**-(संज्ञा, पु०) [सं० दशम + लव=खंड] वह भिन्न, जिसका हर दश या दश का कोई घात हो, दशमांश-सूचक चिह्न जैसे २.५ यह अंश-सूचक अंक के बाँऐ ओर रहता है (गणि०) ।

दशमांश—(संज्ञा, पु०, स०) दसवाँ हिस्सा ।

दशमी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) पक्ष की दसवी तिथि ।

दशांग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दस सुगंधित पदार्थों से बनी पूजन की धूप । दशगंध ।

दशांगुल—(वि०, सं०, यौ०) दस अंगुल की नाप । खरबूजा । डेंगरा । हृदय । "तत्तिष्ठति दशांगुलम्"—[यजुर्वे०] ।

दशांश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दसवाँ भाग या खड, दशमांश ।

दशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्थिति, हालत, अवस्था, [दसा (दे०)] । "हो रही है यह हमारी आज कैसी दुर्दशा"—गिरीश ।—**विपाक**-(संज्ञा, पु०, सं०) दुख की अंतिम दशा ।—**हीन**-(वि०, सं०) दुर्भाग्य, दुर्गत, दुरवस्था, दुरवस्थापन्न ।

दशानन—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) रावण, [दसानन (दे०)] । "उहाँ दसानन कहत रिसाई"—[रामा०] ।

दशार्ण—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० दश+ऋण=दुर्ग या किला] मालवा का पश्चिमी भाग, राजधानी विदिशा, जहाँ दशार्णा या धसान नदी है। इस देश का राजा या निवासी । दश अक्षरों का एक मन्त्र [तंत्र०] ।

दशार्णा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धसान नदी (मालवा) ।

दशार्ह—(संज्ञा, पु०, सं०) बुद्ध । यदु-देश । यदु-देशवासी ।

दशावतार—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) विष्णु के दश अवतार, राम, कृष्ण आदि ।

दशाश्व—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) चंद्रमा, शशि ।

दशाश्वमेध—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दश अश्वमेध यज्ञ, एक यज्ञ ।

दशास्य—(संज्ञा, पु०, सं०) रावण ।

दशाह—(संज्ञा, पु०, सं०) मृतक संस्कार के दश दिन । दश दिन साध्य कर्म ।

दशीला—(वि०, दे०) सौभाग्यवान, सुखी ।

दस—(वि०, दे०) [सं० दश] पाँच की दूनी संख्या ।

दसखत‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दस्तखत] हस्ताक्षर ।

दसन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दशन] दाँत । "दसन गहौ तिन कंठ कुठारी"—[रामा०] ।

दसना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० डासना] बिछना, फैलना । (क्रि० स०) बिछाना, फैलाना । (संज्ञा, पु०, ग्रा०) बिस्तर, बिछौना, दसौना (ग्रा०) ।

दसमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० दशम] हरेक पक्ष की दसवीं तिथि ।

दसवाँ—(वि०) नौ के बाद आनेवाली संख्या से सम्बन्धित । (संज्ञा, पु०) मृत्यु की तिथि से दसवाँ दिन ।

दसा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दशा] हालत, अवस्था ।

दसाना—(क्रि० स०, दे०) बिछाना ।

दसारन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दशार्ण] दशार्ण देश (प्राचीन) ।

दसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दशा] कपड़े के छोर का सूत । चमड़ा छीलने का एक यंत्र । चिह्न, पता ।

दसौंखा—(संज्ञा, पु०, दे०) पंखा झलने का कार्य ।

दसौंद्वार—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० दश+द्वार] मनुष्य का दश मार्ग वाला शरीर । "दस द्वारे का पींजरा, ता मैं पंछी पौन"—कबीर । विजया-दशमी के पीछे का समय ।

दसौंधी—(संज्ञा, पु०, यौ०)[सं० दस+बंदी=भाट] बंदियों की एक जाति, ब्रह्मभट्ट, भाट ।

दस्तंदाज—(वि०, फ़ा०) हस्तक्षेप करने वाला, किसी बात में दखल देने वाला ।

दस्तंदाजी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) हस्तक्षेप, दखल ।

दस्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हाथ । पतला पाखाना, विरेचन ।—**कार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) शिल्पकार,

कारीगर ।—कारी-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शिल्प, कारीगरी, कलाकौशल ।—बरदार-(वि०, फ़ा०) जो किसी चीज से अपना अधिकार उठा ले, त्यागी ।—याब-(वि०, फ़ा०) प्राप्त, मिल जाना, हस्तगत ।

दस्तक—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) थप्पड़ मारने, ताकीद करने, कुंडी खटकाने की क्रिया । कर वसूल करने का आज्ञा-पत्र, परवाना ।

दस्तख़त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हस्ताक्षर, [दसखत (दे०)] ।

दस्तरख्वान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भोजन रखने की चादर या बरतन ।

दस्ता—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० दस्त=हाथ] वह वस्तु जो हाथ में आये या रहे । किसी हथियार की मूठ, बेंट, बेंटी । फूलों या फलों का गुच्छा या समूह, जैसे—गुलदस्ता । सिपाहियों का छोटा झुंड, गारद । घास आदि का पूला । चौबीस या पचीस ताव कागज की गड्डी ।

दस्ताना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हाथ का मोजा ।

दस्तावर—(वि०, फ़ा०) विरेचक ।

दस्तावेज—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तमस्सुक ।

दस्ती—(वि०, दे०) [फ़ा० दस्त=हाथ+ई प्रत्य०] हाथ का, हाथ से सम्बन्ध रखने वाला पदार्थ ।

दस्तूर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कायदा, नियम, विधि, रीति । पारसियों का पुरोहित ।

दस्तूरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० दस्तूर] वह धन जो नौकर स्वामी के माल लेने पर दुकानदारों से पाता है, [कमीशन] ।

दस्यु—(संज्ञा, पु०, सं०) चोर, डाकू । अनार्य्य । दास । "नहिं दस्यु भयाल्लोको दैन्यवानहि वर्त्तते"—[वैद्यजी०] ।—वृत्ति-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) चोरी, डकैती । दासता ।

दस्युता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चोरी, डकैती, दुष्टता, लूट-खसोट । दासता ।

दस्र—(संज्ञा, पु०, सं०) शिशिर । गर्दभ, अश्विनी-कुमार । जोड़ा । (वि०, सं०) हिंसक ।—देवता-(संज्ञा, पु०) अश्विनी नक्षत्र ।

दस्रौ—(संज्ञा, पु०, हि०, सं०) देव वैद्य, अश्विनी-कुमार ।

दह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ह्रद] नदी के अधिक जल या गहराई का स्थान । [कालीदह (यौ०)] दहर, दहार (ग्रा०) । कुण्ड, हौज । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० दहन] ज्वाला, लपट ।

दहक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दहन] अग्नि के खूब जलने या दहकने की क्रिया, धधक, दाह, लपट, ज्वाला ।

दहकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दहन] ज्वाला के साथ जलना, धधकना, भड़कना, तपना ।

दहकान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) किसान, देहात का निवासी । (वि०) गँवार, उजड्ड, बेशहूर ।

दहकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दहकना का प्रेरणा० रूप] धधकाना, भड़काना, क्रोध दिलाना । [दहकवाना (प्रेरणा० रूप)] ।

दहड़, दहर—(क्रि० वि०, दे०) [सं० दहन का अनु०] लपटें फेंकते हुए, धाँयँ-धाँयँ ।

दहदल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दलदल ।

दहन—(संज्ञा, पु०, सं०) जलना क्रिया का भाव, दाह, अग्नि । कृत्तिका नक्षत्र । तीन की संख्या । एक रुद्र । चित्रावर । भिलावाँ । कबूतर । [दहनीय, दह्यमान (वि०)] ।—केतन-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धूम, धुआँ ।—प्रिया-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) अग्नि की पत्नी, स्वाहा और स्वधा ।—शील-(वि०, सं०) दग्ध करने वाला, जलाने वाला ।—सारथि-(संज्ञा, पु०) पवन, वायु ।

दहनर्क्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) कृत्तिका नक्षत्र ।

दहना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दहन] जलना, क्रोध से संतप्त होना, कुढ़ना । (क्रि० स०, दे०) जलाना, संतप्त या दुखी या क्रोधित करना । (क्रि० अ०, दे०) [हि० दह] नीचे पैठना, धँसना । (वि०, दे०) [हि० दाहिना] दहिना, दाहिन (ग्रा०) ।

दहनाराति—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० दहन+अराति] अग्निरिपु, अग्निशत्रु, जल ।

दहनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दहना] जलन, संताप, कुढ़न, जरनि ।

दहनीय—(वि०, सं०) जलाने योग्य, दाहार्ह । जलने योग्य ।

दहनोपल—(संज्ञा, पु०, यौ०)[सं० दहन+उपल=पत्थर] अग्निमय पत्थर । सूर्यकांतमणि । आतशी शीशा ।

दहपट—(वि०, यौ०) [हि० दह=दस+पट=मत-लब] नष्ट-भ्रष्ट, चौपट, ध्वस्त, दलित, कुचला या रौंदा हुआ । "सूरदास प्रभुरघुपति आये दहपट होई लंका"—सूर० ।

दहपटना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० दहपट] नष्ट-भ्रष्ट या ध्वस्त करना, चौपट करना, कुचलना या रौंदना।

दहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दह] नदी का गहरा स्थान, कुण्ड, धारा। चूहा। भाई। शिशु। (वि०) अत्यन्त सूक्ष्म, दहार (ग्रा०)।

दहरना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दर=डर+हिं० हिलाना] भय से एकाएक काँप उठना। स्तम्भित होना। [दहलना (दे०)]।

दहराकाश—(संज्ञा, पु०, सं०) [दहर+आकाश] ईश्वर, चिदाकाश।

दहल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दहलना] भय से एकाएक काँप उठने, डरने का भाव।

दहलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दर=डर+हिलना हिं०] भय से एकाएक काँप उठना, शंकित होना।

दहला—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दह=दश] दश बूटियों का ताश या गंजीफे का पत्ता।† (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० थल] थाला, थावला। (क्रि० वि०) भयभीत।

दहलाना—(क्रि० स०, दे०) भय से किसी को कँपाना, भयभीत करना। [**दहलवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

दहलीज—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) देहली, देहरी, डेहरी (ग्रा०)।

दहशत—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) भय, डर। [दहसत (दे०)]। [**दहशतनाक** (वि०, यौ०)]

दहसतियाना—(क्रि० अ०, दे०) डर जाना, भयभीत होना।

दहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दह] महीने की पहली से दस तारीख तक का समय। मुहर्रम का महीना, ताजिया का समय।

दहाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० दह=दस] इकाई का दस गुना।

दहाड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) गरज, आर्तनाद, व्याघ्रादि जंतुओं की घोर ध्वनि। "ऊपर बरसै देव, पीछे सिंह दहाड़ई।"—[प्रेम०]। **मुहा०—मारना,—मार कर रोना**-बड़े जोर से चिल्ला-चिल्ला कर रोना। "ढाड़ मारि बिलखि पुकारि सब रूवै चुकी"—रत्ना०।

दहाड़ना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गरजना, घोर ध्वनि करना। चिल्ला-चिल्ला कर रोना, [**ढाड़ना** (ब्र०)]।

दहाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) घोड़े की बड़ी लगाम, मुहाना, मोरी।

दहिजार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दाढ़ी+जार] दाढ़ीजार (गाली)।

दहिना, दाहिना—(वि०, दे०) [सं० दक्षिण] किसी जीवधारी की वह बगल जिसकी ओर के अवयव अधिक बली हों, अपसव्य, दाँया (ग्रा०)। [(विलो०) **बाँयाँ**]। [**दाहिनी** (स्त्री०)]।

दहिनावर्त्त†—(वि०, दे०, यौ०) [सं० दक्षिणावर्त्त] दाहिनी ओर को घूमना। दाहिनी ओर घूमा शंख (दुर्लभ)।

दहिने, दाहिने—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० दाहिना] दाहिनी ओर को, दायें। **मुहा०—(दक्षिण या दाँये) होना**-प्रसन्न या अनुकूल होना।**—बाँए**-(यौ०) इधर-उधर। "दाहिन बाम न जानौं काऊ।"—[रामा०]।

दही—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दधि] जमाया हुआ दूध, दहिउ (ग्रा०)। (क्रि० अ०, स्त्री०)[हिं० दहना] जली, दुखी। **मुहा०—दही करना**-किसी वस्तु के मोल लेने को लोगों से कहते फिरना। "भोर ही तें द्वार पै पुकारति दही दही"—द्विज०। (क्रि० स०, दे०)[हिं० दहना] जला दिया, जला दी। "मैं नहिं दैहों दही सो सही कुस तै जो रही सो लखी परती हौ"—[स्फु०]। **लो०—ले—और दे—(में अन्तर है)**-गरज और बेगरज में भेद है।

दहुँ—(अव्य०, दे०) [सं० अथवा] किंवा, अथवा, कदाचित्।

दहेड़—(संज्ञा, पु०, दे०) पक्षी-विशेष। [दहेल (दे०)]।

दहेज—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० जहेज] यौतुक, दायज, विवाह में कन्या-पिता के द्वारा वर को दिया धन।

दहेंड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दही+हंडी] दही रखने का मिट्टी का पात्र।

दहेला—(वि०, दे०) [हिं० दहला+एला प्रत्य०] जला हुआ, संतप्त, दग्ध, दुखी।

दहेली—(वि०, स्त्री०) [हिं० दहलना]। गीला, भीगा या ठिठुरा हुआ, तरबतर।

दह्यो—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दधि, हिं० दही] दधि, दही। (क्रि० स०) [हिं० दहना] जलाया, संतापित, दहो (ग्रा०)।

दाँ—(संज्ञा, पु०) [सं० दा + अंच् प्रत्य०] बार, बारी, दफ़ा, मर्तबा। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) जानने वाला, ज्ञाता; जैसे—फारसीदाँ।

दाँक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्राँच] गरज, दहाड़।

दाँकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० दाँक + ना प्रत्य०] दहाड़ना, गरजना।

दाँग—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) छँ रत्ती की तौल। दिशा, ओर, तरफ। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डंका] डंका, नगाड़ा। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डूँगर] टीला, छोटी पहाड़ी।

दाँज†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उदाहार्य्य] समता, बराबरी, तुल्यता, जोड़, तुलना।

दांडक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) छड़ीबरदार या रक्षक, पुलिस का पद।

दांडिक—(वि०, पु०, सं०) दंड देने वाला।

दाँत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंत] दशन, दंत, रदन। "दाँत नहीं तब दूध दियो अब दाँत भये तो का अन्न न देहै"—सुन्द०। **मुहा०—(तों) उँगली काटना,—तले उंगली दबाना**-अचंभित होना। खेद प्रगट करना।**—काटी रोटी**-अत्यन्त घनिष्ठ मित्रता।**—काढ़ना**-दीनता प्रगट करना, गिड़गिड़ाना, चिरौरी करना।**—खट्टे करना**-बहुत दिक या परेशान करना। तुलना या लड़ाई मे हरा देना, नीचा दिखाना।**—गड़ाना**-किसी वस्तु को पाने के लिए बहुत आतुर होना।**—चबाना (पीसना)**-क्रोध से ओठ चबाना।**—पीसना**-क्रोध प्रगट करना, दाँत बजाना या किटकिटाना।**—तोड़ना**-हरा देना, हैरान या दिक करना, पस्त करना।**—निकालना**-गिड़गिड़ाना।**—बजना**-शीत से दाँतों का बोलना।**—बैठ जाना**-दाँती बँध जाना (मृत्यु के समय)।**—(तों) में तिनका दबाना या लेना**-गिड़गिड़ाना, क्षमा माँगना, विनती या हाहा करना। (**किसी वस्तु पर)—रखना या लगाना**-लेने की बड़ी इच्छा या अभिलाषा रखना। बदला लेने का विचार रखना। (**किसी के तालु में)—जमना**-बुरे दिन आना, शामत या विपत्ति आना। दंदाना, दाँता।

दांत—(वि०, सं०) दमन किया हुआ, दबाया हुआ। संयमी, इन्द्रियजित। दाँत का, दाँत-सम्बन्धी। (संज्ञा, पु०) दाता।

दाँता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दाँत] दाँत के आकार का कँगूरा, रवा, दंदाना।**—किटकिट**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दाँत + किटकिट] (अनु०) झगड़ा, कहा-सुनी, गाली-गलौज।**—किलकिल**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० दाँत + किलकिल] झगड़ा, कहा-सुनी, गाली-गुफ्ता।

दाँति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इंद्रिय-दमन, इंद्रिय-निग्रह। विनय, नम्रता, आधीनता।

दाँती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दात्री] हँसिया। काली भिड़। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० दाँत] दंतावली, दंत-पंक्ति। दरी। दो पर्वतों के मध्य की सँकरी जगह।

दाँना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दमन] दाँय चलाना, अनाज माँड़ना।

दांपत्य, दाम्पत्य—(वि०, सं०) पति-पत्नी-सम्बन्धी। (संज्ञा, पु०, सं०) स्त्री-पुरुष का प्रेम या व्यवहार।

दाँभ—(वि०, सं०) ढोंगी, पाखण्डी, कपटी।

दाँभिक—(वि०, सं०) आडम्बरी, पाखंडी, धोखेबाज, अहंकारी।

दाँय—((संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दँवरी] पके अनाज के पौधों के डंठलों को बैलों से रुँदवाना। (**संज्ञा**, स्त्री०, ग्रा०) बार, दफे।

दाँया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दक्षिण] दाहिना, दहिना। (स्त्री०,दे०) दाई [(विलो०) **बायाँ**]।

दांव—(संज्ञा, पु०, दे०) औसर, मौका, घात। बारी, बाजी। अनुकूल समय। जुए में लगा धन या पाँसे की संख्या। "खेलै दाँव विचारि"—**वृंद**। **मुहा०—चलना**-जीतना, विजय होना, आगे बढ़ना, युक्ति या उपाय लगना।**—बचाना**-युक्ति (चाल या पेंच, आक्रमण) बचाना।**—चलाना**-(क्रि० स०) घात करना, चोट पहुँचाना।**—पकड़ना (मारना, चलाना, लगाना)**-(क्रि० स०, दे०) कुश्ती में दाँव-पेंच करना।**—लगाना**-जुए में धन लगाना। युक्ति (पेंच) करना।**—जीतना (मारना)**-जुए में धन जीतना।**—बैठना**-(क्रि० स०, दे०) मौका (उपाय) ठीक होना।

दाँवनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दामिनी] दामिनी, बिजली। सिर का एक गहना।

दाँवरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दाम] डोरी, रस्सी।

दा—(वि०, प्रत्य०, सं०) दाता, दानी, दानकर्त्ता, दान देने वाला, जैसे धनदा। (संज्ञा, पु०, दे०) सितार की मुखताल।

दाइ*—(संज्ञा, पु०, दे०) दाँव, घात, मौका, औवसर, अनुकूल समय। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बराबरी, तुल्यता। (संज्ञा, पु०, दे०)[सं० दाय] दहेज। किसी के देने को धन। दायज, दान में दिया धन।

दाईं—(वि०, स्त्री०, दे०) [हिं० दाँया] दाहिनी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दाच् प्रत्य० हिं० दाँ प्रत्य०] बारी, बार, दफा, दाँय, दारी (ग्रा०)।

दाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धात्री, मि० फ़ा० दायः] धाय, दाया, बच्चे को रखने या बच्चे वाली माँ की सेवा करने वाली, दासी। दादी, बुढ़िया। **मुहा०—से पेट छिपाना**-ज्ञाता से भेद छिपाना। *(वि०, दे०)[सं० दायी] देने वाला, जैसे सुखदाई।

दाउँ, दाऊँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दाँव] मरतबा, बार, दफा, बारी, पारी, मौका, अवसर, अनुकूल समय, दाँव। "सूझ जुआरिहिं आपन दाऊँ"—[रामा०]।

दाउदी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) एक फूल, गुलदाउदी।

दाऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० देव] बड़ा भाई, बलदेव जी।

दाऊद—(पु०, अ०) एक धार्मिक पैगंबर जिन्हें मुसलमान, यहूदी मानते हैं।

दाऊदखानी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उमदा चावल। सफेद गेहूँ।

दाऊदिया—(संज्ञा, पु०, अ०) एक बढ़िया गेहूँ जिसका छिलका सफेद रंग का होता है।

दाऊदी—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० दाऊद] एक तरह का उत्तम गेहूँ।

दाक्षणिक—(वि०, सं०) दक्षिणा-सम्बन्धी।

दाक्षाय—(संज्ञा, पु०, सं०) गीध पक्षी, गृध्र, गृद्ध।

दाक्षायण—(वि०, सं०) दक्ष का पुत्र, दक्ष-सम्बन्धी, दक्ष का। (संज्ञा, पु०, सं०) सोना, सोने के पदार्थ, मोहर आदि। दक्ष का यज्ञ।

दाक्षायणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्ष की कन्या सती। दन्ती पेड़, जमाल गोटे का पेड़। **—पति**-(संज्ञा, पु०, सं०) शिव।

दाक्षिण—(संज्ञा, पु०, सं०) उपाय। कथन। अधिकार। दक्षिण देशीय, दक्षिण-सम्बन्धी। एक होम।

दाक्षिणिक—(संज्ञा, पु०, सं०) जिसमें इच्छावश इष्टापूर्त आदि कर्म करना पड़ता है।

दाक्षिणात्य—(वि०, सं०) दक्षिणी, दक्षिण-सम्बन्धी। (संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण भारत, दक्षिण देशवासी।

दाक्षिण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उदारता, प्रसन्नता, अनुकूलता, सुशीलता। (वि०, सं०) दक्षिणा पाने योग्य। दक्षिण का।

दाक्षी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्ष प्रजापति की पुत्री। महर्षि पाणिनि की माता। "दाक्षी पति शिवशम्भु को बारम्बार प्रणाम।"

दाक्षेय—(संज्ञा, पु०, सं०) पाणिनि मुनि।

दाक्ष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) नैपुण्य, निपुणता, दक्षता, चतुरता।

दाख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्राक्षा] मुनक्का, किशमिश।

दाखिल—(वि०, फ़ा०) पैठा या घुसा हुआ, प्रविष्ट, प्रवेश करने वाला। **—खारिज**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक रजिस्टर, जिसमें किसी का नाम लिखा जाये और किसी का काट दिया जाये। **—दफ़्तर**-(वि०, फ़ा०) किसी कागज को बिना विचार किये दफ़्तर में रख छोड़ना। **मुहा०—करना**-भर देना, उपस्थित या जमा करना। शामिल, मिलित, पहुँचा हुआ।

दाखिला—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पैठार, प्रवेश। नाम दर्ज करने का रजिस्टर।

दाखिली—(वि०, फ़ा०) भीतरी, अंदर का, अंदरूनी।

दाग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दग्ध] दाह, मृतक संस्कार। जलन, दाह, जलने का चिह्न। **मुहा०—देना**-मृतक-संस्कार करना, मुर्दे को जलाना। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) जलने आदि का चिह्न, धब्बा, चित्तिया, चित्ती। **सफेद—**, एक कुष्ठ जिससे देह में सफेद धब्बे पड़ जाते हैं, जिसे फूल भी कहते हैं। चिह्न, अंक। कलंक, ऐब, दोष, लांछन। [**दागी, दगहिल** (वि०, दे०)] **—दार**-(वि०, फ़ा०) जिसमें कोई दाग या धब्बा हो, दागी। **—बेल**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० दाग + बेल हिं०] सड़क बनाने या नींव खोदने को कुदाल आदि से पृथ्वी पर बने चिह्न।

दागना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० दाग] किसी वस्तु को जलाना, भस्म या दग्ध करना। गरम लोहे से किसी के किसी अंग पर चिह्न बनाने को जलाना, किसी धातु के साँचे या मुद्रा से जलाना, दवा से जलाना। तोप, बंदूक आदि को बत्ती देकर छुड़ाना। (क्रि० स०) [फ़ा० दाग] रंग से चिह्न या धब्बे लगाना। लिखना। छापना।

दागी—(वि०, दे०) [फ़ा० दाग] जिस वस्तु पर कोई धब्बा, चित्ती या दाग पड़ा हो या सड़ने का निशान हो। लांछित, कलंकित, दोष-युक्त, दंड-प्राप्त।

दाघ—(संज्ञा, पु०, सं०) उष्णता, गर्मी, ताप। (वि०) दाह, जलन। "दीरघ दाघ निदाघ"—बिहारी।

दाजन†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दहन] जलन, झुलसन।

दाजना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० दग्ध या दाहन] जलना, डाह या ईर्ष्या करना।

दाझन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दाहन] जलन, दाह।

दाझना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दाहन] जलना, गर्म होना।

दाटना—(क्रि० स०, दे०) डपटना, भिड़कना, डाँटना, फटकारना।

दाड़क—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंष्ट्रा] दाढ़, दाँत।

दाड़स—(संज्ञा, पु०, दे०) सर्प विशेष।

दाड़िम—(संज्ञा, पु०, सं०) अनार, बीजपूरक। "धाँखे दाड़िम के सुआ गयो नारियल खान"—गिरि०।—**पत्रक**-(संज्ञा, पु०) रोहितक का पेड़। —**पुष्प**-(संज्ञा, पु०) अनार का फूल, रोहितक का पेड़।—**प्रिय,**—**भक्षण**-(संज्ञा, पु०) तोता।

दाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अनार, बीजपूरक।

दाढ़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दंष्ट्रा] मोटे या बड़े या पिछले दाँत। डाढ़ (ग्रा०)। (संज्ञा, स्त्री०, अनु०) चिल्लाहट, दहाड़, गरज, भीषण शब्द। **मुहा०—मारकर रोना**-जोर से चिल्ला कर रोना।

दादना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० दहन] किसी वस्तु को आग मे जलाना या भस्म करना, डाहना, गरम या उष्ण या दुखी करना।

दाढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दंष्ट्रा] पिछले बड़े दाँत, दाढ़। (वि०, दे०) दग्ध, जला हुआ।

दाढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दाढ़] मुख के दोनों ओर के बाल। ठोढ़ी, चिबुक, डाढ़ी (ग्रा०)। —**जार**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दाढ़ी+जलना] जली दाढ़ी वाला, दढ़िजार, दढ़िजरा (प्रान्ती०) (स्त्रियों की गाली)। "बार बार कह्यो मै पुकारि दाढ़ीजार सों"—[कविता०]।

दात*—(संज्ञा, पु०) [सं० दात, दातव्य] दानी, उदार, देने वाला, दान देने योग्य। "दात धनी जाँचै नहीं, सेव करै दिन रात"—कबीर।

दातव्य—(वि०, सं०) देने योग्य वस्तु, दान से चलने वाला।

दाता—(संज्ञा, पु०, सं०) देने वाला, दानशील, दानी। "कोउ न काहु कर सुख दुख दाता"—[रामा०]। **लो०**—"दाता से सूम भला जो जल्दी देय जवाब।"

दातार—(संज्ञा, पु०) [सं० दाता का बहु०] दानी, दाता, देने वाला। "मंगलमय, कल्यानमय, अभिमत फल दातार"—[रामा०]।

दाती*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दात्री] देने वाली, दात्री।

दातुन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दाँत+अउन प्रत्य०] नीम आदि की पतली टहनी जिससे दाँत साफ करते हैं। दाँत साफ करने का कार्य। मुखारी। [**दातून, दतुइन, दतून, दतौन**]

दातृता, दातृत्व—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वदान्यता, दानशीलता, अकृपणता, दानशक्ति।

दातौन—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० दाँत+अवन प्रत्य०] मुखारी, दातून। [**दात्यून, दात्योन**]।

दात्यूह—(संज्ञा, पु०, सं०) पपीहा। चातक। मेघ, बादल।

दात्र—(संज्ञा, पु०) [सं० दा+त्र] देने वाला। दाँती, हंसिया।

दात्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दान देने या करने वाली।

दाद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दद्रु] चर्म-रोग, एक प्रकार का कुष्ठ। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) न्याय, इंसाफ। प्रशंसा। **मुहा०—चाहना**-किसी अन्याय को रोकने के लिए प्रार्थना करना। प्रशंसा चाहना। —**देना**-न्याय या इंसाफ करना। बड़ाई या प्रशंसा करना।

दादनी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जो धन देना हो। पहले से दिया गया धन, अगता, अग्रिम।

दादरा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक गाना।

दादा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तात] आजा। बाप का बाप, पितामह। बड़ा भाई। बड़े-बूढ़ों का आदर-सूचक शब्द।

दादि*†—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० दाद] न्याय। फरियाद। "सुनहु हमारी दादि गुसाईं"—कबीर।

दादी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दादा] बाप की माँ, दादा की स्त्री, पितामही। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० दाद] फरियादी या न्याय चाहने वाला।

दादु*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दद्रु] दाद रोग, दिनाई।

दादुर*—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० दर्दुर] भेक, मेढ़क। "दादुर धुनि चहुं ओर सुहाई"—[रामा०]।

दादू†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० दादा] दादा, प्यार का शब्द। बड़ा भाई, धुनियाँ जाति का एक पंथ-प्रवर्तक साधु, दादू-दयाल। "सुन्दर के उर है गुरु दादू"।—**पंथी**-(संज्ञा, पु०) [हिं० दादू+पंथी] दादूदयाल के मतानुयायी। [**दादूपंथ** (संज्ञा, पु०)]

दाध*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दग्ध] दाह, जलन, कष्ट, ताप। "सहि न जाय जौवन कै दाधा" —[पद०]।

दाधना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० दग्ध] जलाना, तपाना, भस्म करना। "जैसे दाध्यो दूध को" —वृंद।

दाधा—(वि०, पु०, दे०) [सं० दग्ध] जला या जलाया हुआ। "प्रेम जो दाधा धनि वह जीव" —[पद०]।

दाधिक—(वि०, सं०) दधि-मिथुन, दधि-संस्कृत वस्तु, दही से सम्बन्धित। (संज्ञा, पु०) माठा, दही-बड़े।

दाधी—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० दग्ध] जली या जलायी हुई। "मैं तो दाधी बिरह की रे काहे कूं औषद देय"—मीरा०।

दाधीचि—(संज्ञा, पु०, सं०) दधीचि के वंश या गोत्र का।

दान—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी वस्तु से अपना स्वत्व हटा कर दूसरे का जमा देना। "स्वस्वत्वं निवृत्य परस्वत्वोत्पादनम् दानम्"—माध०। श्रद्धा और भक्ति से किसी को धन देने की क्रिया। खैरात, दान दी गयी वस्तु। कर, महसूल, चुंगी। हाथी का मद। शत्रु के विरुद्ध कार्य सिद्ध करने की विधि, शुद्धि। "बहै दान मदनीर"—बिहारी। —**धर्म्म**-(संज्ञा, पु०, सं०) दान करने का धर्म्म, दान और धर्म। [**दान-पुण्य** (यौ०)]—**पति**-(संज्ञा, पु०, सं०) नित्य या सदा दान देने वाला, दानी।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) वह पत्र जिसके अनुसार किसी को भूमि आदि सदा के लिए दी जाय।—**पात्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) दान पाने योग्य। —**लीला**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक पुस्तक। कृष्ण के दान की लीला।—**वज्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) दान देने में वज्र के समान। वैश्य। एक घोड़ा।—**वीर**-(संज्ञा, पु०, सं०) अति दानी, जो दान में हार न माने, बड़ा दानशील। "दानवीर हरिचन्द सहत दुस्तर अपार दुख"—[स्फु०]।—**शील**-(वि०, सं०) दानी, दान देने या करने वाला। [**दान-शीलता** (संज्ञा, स्त्री०)]

दानव—(संज्ञा, पु०, सं०) कश्यप की स्त्री दनु के पुत्र, असुर, दैत्य। [**दानवी** (स्त्री०)]

दानवारि—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दैत्यों और दानवों के शत्रु, विष्णु भगवान। [दान+वारि] दान का जल। हाथी का मद। "दानवारि हाथी कढ़े दान-वारियुत जोय"—[स्फु०]।

दानवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दानव या दानव जाति की स्त्री, दैत्यनारी, राक्षसी। (वि०) [सं० दानवीय] दानव का या दानव-सम्बन्धी। "चली दानवी सेन धारि उमंग"—मन्ना०।

दानवेन्द्र—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) राजा बलि।

दानांतराय—(संज्ञा, पु०, सं०) दान मे अड़चन डालने वाला कुत्सित कर्म।

दाना—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० दानः] अनाज का एक बीज, अन्न का चबैना, प्रति दिन घोड़े को देने का अन्न।—**चारा**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) खाना-पानी, अन्न-जल।—**पानी**-(संज्ञा, पु०) [अ० दाना+पानी हिं०] अन्न-जल, भोजन-जल, खाना-पानी, आबदाना (उ०)। पालन-पोषण का यत्न, जीविका। रहने का संयोग। **मुहा०—पानी छोड़ना**-उपवास करना, अन्न-जल न ग्रहण करना।—(**ने**) **दार**-(वि०, फ़ा०) जिस वस्तु में दाने या रवे हों, रवादार।—(**ने**) **दाने को तरसना (फिरना)**-अन्न का दुख सहना, खाना न मिलना।—(**ने**) **दाने को मुहताज**-बहुत कंगाल, अति दरिद्र। छोटी गोल वस्तु, जैसे मोती का दाना, माला की गुरिया जीविका। "जाना जरूर जहाँ दाना बिरझाना है।" (वि०) [फ़ा० दाना] अक़्लमन्द, बुद्धिमान, चतुर। "खाक मे मिलता है दाना सब्ज होने के लिए।"

दानाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बुद्धिमानी, चतुराई, अक़्लमन्दी।

दानाध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दान का प्रबन्धक, राज-कर्मचारी।

दानिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दान देने वाली।

दानिया—(वि०) देखिए 'दानी'।

दानी—(वि०, पु०, दे०) [सं० दानिन्] उदार, दाता, दानशील। (संज्ञा, पु०) [सं० दानीय] महसूल या कर लेने वाला। दान लेने वाला। [**दानिनी** (स्त्री०)]

दानीय—(वि०, सं०) दातव्य, दान के योग्य।

दानो, दानौ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दानव] दैत्य, राक्षस, दानव।

दाप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दर्प, प्रा० दप्प] अभिमान, घमंड। शक्ति, बल। उमंग, उत्साह। आतंक, क्रोध। ताप। "भंजेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा"—[रामा०]।

दापक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दर्पक] दबाने वाला। घमंडी।

दापना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० दाप] दबाना, रोकना, मना करना।

दापित—(वि०, सं०) जिस पर जुर्माना किया गया हो। जिसे देने के लिए बाध्य किया गया हो।

दाब—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दाप] दबने या दबाने का भाव। भार, बोझ। धाक, आतंक, आधिपत्य। —**दार**-(वि०) [हि० दाब+दार फ़ा०] रोबदार, आतंक रखने या धाक जमाने वाला। **मुहा०** —**दिखाना**-आतंक जमाना। —**मानना**-अधीनता स्वीकार करना। —**रखना**-(क्रि० स०, यौ०) [हि० दाब+रखना] छिपाना, लुकाना, ढकना। अधिकार या रोब या आतंक रखना।

दाबना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दबाना] ऊपर से भार या बोझा डालना। पीछे हटाना। भूमि के तले गाड़ना, दफनाना। बल डाल कर विवश करना, हरा देना, कुछ करने न देना। दमन या शांत करना, किसी की किसी वस्तु पर अन्याय से अधिकार जमाना, किसी को असहाय, असमर्थ या लाचार कर देना।

दाभ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दर्भ] कुश, कुशा, डाभ (ग्रा०)।

दाम—(संज्ञा, पु०, सं०) रस्सी, रज्जु। माला, हार, लड़ी। राशि। संसार। "काम भूलै उर मैं उरोजन पै दाम भूलै"—पद्मा०। जाल, पाश, फंदा। रुपया, पैसा। मोल। (वि०, दे०) [हि० दमरी] एक पैसे का पचीसवाँ भाग। "बंक बिकारी देत ज्यों, दाम रुपैया होत"—बिहारी। "ताहि ब्याल सम दाम"—[रामा०]। **मुहा०** —**के दाम पर**-मूल्य पर, बिना लाभ के। —**खड़ा करना**-मूल्य भर ले लेना। —**चुकाना**-मूल्य दे देना। मोल ठहराना, मोल-भाव ठीक करना। —**चाम के—चलाना**-मौका पाकर मनमाना अंधेर करना। —**भरना**-डाँड़ या हानि का प्रतिकार भर देना। —**भर देना**-कौड़ी-कौड़ी चुका देना, कुछ उधार या बाकी न रखना। [**दाम-प्रीति** (यौ०)]।

दामन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अँगरखे आदि के नीचे का भाग। पर्वतों के पास की नीची भूमि। "फैलाइए हाथ ना दामन पसारिये"—जौक। —**गीर**—(वि०, फा०) दामन पकड़नेवाला, पीछा न छोड़ने वाला। दावादार। "कहँ दिल्ली को दामनगीर शिवाजी"—भूषण।

दामनी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० दाम] रस्सी, डोरी।

दामरि, दामरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दाम] डोरी, रस्सी, रज्जु। दमड़ी।

दामलिप्त—(संज्ञा, पु०, सं०) ताम्रलिप्त देश।

दामवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) फूलों की माला या हार।

दामाँ*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० दावा] दावाग्नि, दावानल। [दावा (दे०)]

दामाँवन—(संज्ञा, पु०, सं०) घोड़े की पिछाड़ी। घोड़े के पीछे के पैरों मे बाँधने की रस्सी।

दामाद—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा०, सं० जामातृ] जामाता, दमाद, जँवाई।

दामासाह—(संज्ञा, पु०, दे०) जिसका दिवाला निकल गया हो, जिसका माल-टाल व्यवहारों में बँट गया हो।

दामासाही—(संज्ञा, स्त्री० दे०) यथार्थ या उचित भाग के कार्य।

दामिनि, दामिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिजली। स्त्रियों के सिर का एक गहना, बेंदी, टिकुली, दाँवनी (ग्रा०)। "सो जनु प्रभु दामिनी दमंका", "दामिनि दमकि रही घन माहीं"—[रामा०]।

दामी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दाम] महसूल, कर, मालगुजारी। (वि०) बहुमूल्य, कीमती।

दामीयात—(संज्ञा, पु०, दे०) वह वस्तु जिससे रक्त-विकार हो।

दामोदर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) श्रीकृष्ण, भगवान्। एक जैन तीर्थंकर। —**गुप्त**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) काश्मीर-निवासी एक कवि। —**मिश्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) राजा भोज की सभा के एक कवि जिन्होंने "हनुमन्नाष्टक" का संग्रह किया।

दायँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दाँव, बार, दवँ (ग्रा०)।

दाय*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दावँ] दफा, बार, मरतबा, बारी, पारी। अवसर, मौका। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बराबरी, तुल्यता। (संज्ञा, पु०, सं०) किसी के देने का धन, दायजा या दान में दिया धन। मृतक का धन।—**भाग**-(संज्ञा, पु०, सं०) बाप के धन का हिस्सा। पुरुषों के धन की व्यवस्था। (संज्ञा, पु०, सं०) वन। वन की आग। आग।

दायक—(संज्ञा, पु०, सं०) दाता, देने वाला। [**दायिका** (स्त्री०)]

दायज, दायजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दाय] दहेज, यौतुक, दैजा, दइजा (ग्रा०)।

दायर—(वि०, फ़ा०) चलता-फिरता, जारी। **मुहा०—करना**-मुकदमा चलाने के लिए पेश करना।

दायरा—(संज्ञा, पु०, अ०) मंडल, कुंडल, गोल घेरा, वृत्त।

दायाँ, दाँयें—(वि०, दे०) [हि० दाहिना] दाहिना [(विलो०) **बाँयाँ**] [**दायाँबायाँ** (यौ०)] **मुहा०—बायाँ न जानना**-भला-बुरा न जानना। "दाहिन बाम न जानौं काऊ"—[रामा०]।

दाया*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दया] कृपा, करुणा। "जापै राम करहु तुम दाया"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) दाई, धाय।

दायाद—(वि०, पु०, सं०) दायभागी, जिसे किसी के धन मे भाग मिले। (संज्ञा, पु०, सं०) हिस्सेदार, भागी, जैसे पुत्र, भतीजा, पोता नाती, कुटुम्ब-परिवार, उत्तराधिकारी। [**दायादा** (स्त्री०)]

दायादी—(वि०, स्त्री०, सं०) लड़की, कन्या, उत्तराधिकारिणी।

दायार्ह—(वि०, यौ०) [सं० दाय+अर्ह=योग्य] पैतृक धन पाने की वैधानिक योग्यता से सम्पन्न।

दायित—(वि०, सं०) निश्चित अपराधी या दोषी।

दायित्व—(संज्ञा, पु०, सं०) जिम्मेदारी, जवाबदेही, उत्तरदायित्व।

दायी—(संज्ञा, पु०, सं०) दाता, देने वाला। [**दायिका** (स्त्री०)]

दायें—(क्रि० वि०, दे०) [हि० दायाँ] दाहिनी ओर। [(विलो०) **बाँयें**] **मुहा०—लेना (होना)**-अनुकूल या प्रसन्न होना।

दार—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्त्री, भार्य्या, पत्नी, औरत। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दारु] लकड़ी। दाल। देवदारु। बढ़ई। (प्रत्य०, फ़ा०) रखनेवाला, जैसे—मालदार।—**कर्म**-(संज्ञा, पु०, सं०) विवाह, ब्याह। "असपिंडातु या मातुः असगोत्रातु या पितुः। सा प्रशस्ता द्विजातीनाम् दारकर्मणि मैथुने"—[मनु०]।—**परिग्रह**-(संज्ञा, पु०, सं०) ब्याह, विवाह।

दारक—(संज्ञा, पु०, सं०) लड़का, बच्चा, पुत्र बेटा। [**दारिका** (स्त्री०)]

दारचीनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दारु+चीनी दे०] जायफल के पेड़ की छाल, दालचीनी।

दारण—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) चीरफाड़, चीरने-फाड़ने का हथियार या कार्य। [**दारित, दारणी** (वि०)]। [दारन (दे०)]

दारणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा।

दारद—(संज्ञा, पु०, सं०) पारा, हिंगुल, विष।

दारना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० दारण] चीरना, फाड़ना, नष्ट करना।

दारमदार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भरोसा, विश्वास, आश्रय, अवलम्ब, आधार।

दारय—(वि०, दे०) [सं० दारण] चीरे, फाड़े, नष्ट करे।

दारा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्त्री, पत्नी, भार्य्या, नारी।

दाराचार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अध्यापक, पढ़ाने वाला।

दारि, दार*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दालि] दालि, दाल।

दारिऊँ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दाड़िम] अनार। "दारिऊँ, दाख देखि मन राता।"

दारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लड़की, कन्या, पुत्री, बालिका। "यह दारिका परिचारिका करि पालिबी करुनामयी"—[रामा०]।

दारित—(वि०, सं०) कन्या, पुत्री।

दारिद, दारिद्र*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दारिद्रय] कंगाली, निर्धनता, दरिद्रता।

दारिद्रय—(संज्ञा, पु०, सं०) कंगाली, निर्धनता। "प्रणीय दारिद्र्य दरिद्रता नल"—[नैष०]।

दारिम—(संज्ञा, पु०) [सं० दाडिम] अनार।

दारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दारा] दासी, व्यभिचारिणी स्त्री। (संज्ञा, पु०) व्यभिचारी, परदारगामी, लम्पट। क्षुद्र रोग। विवाह। पति। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) गाली (स्त्रियों के लिए)। "यह दारी ऐसों रटै याको सर न सवाद"—गिरि०। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बार; दफा।—**जार**-(संज्ञा, पु०,

यौ०) [हि० दारी + जार सं०] (गाली पुरुष को) दासी-पति, दासी-पुत्र ।

दारु—(संज्ञा, पु०, सं०) देवदारु, लकड़ी, काठ । कारीगर, बढ़ई ।—**कदली**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वन-केला ।—**गंधा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंध द्रव्य विशेष ।—**गर्भा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कठपुतली ।—**चीनी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दालचीनी । —**जोषित**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दारुयोषित] कठपुतली । "उमा दारुजोषित की नाईं"—[रामा०] ।—**नरी,—नारी**-(संज्ञा, स्त्री०) कठपुतली ।—**निशा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हलदी, हरिद्रा, दारु हलदी ।—**पात्र**-(संज्ञा, पु०) काठ का बरतन ।—**पीता**-(संज्ञा, स्त्री०) दारु हल्दी । —**पुत्रिका,—पुत्री**-(संज्ञा, स्त्री०) कठपुतली । —**फल**-(संज्ञा, पु०, सं०) चिलगोजा ।—**मय,—मयी**-(वि०, सं०) काठ-संबंधी, काठ-रूप, काठ का । "यथा दारुमयो हस्ती यथा दारुमयो मृगा"—[मनु०] ।—**योषित**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कठपुतली ।—**वधू**-(संज्ञा, स्त्री०) काठ की गुड़िया ।—**सार**-(संज्ञा, पु०) चंदन ।—**सिता**-(संज्ञा, स्त्री०) दारचीनी ।—**हरदी**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० दारुहरिद्रा] एक औषध, दारु-हलदी ।—**हस्तक**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) काठ की करछी ।

दारुक—(संज्ञा, पु०, सं०) देवदारु । श्रीकृष्ण का सारथी ।

दारुण, दारुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दारुण] कठिन, विकट, घोर, प्रचंड, भीषण, डरावना, भयंकर । "कपि देखा दारुन भट आवा"—[रामा०] । (संज्ञा, पु०) चीता वृक्ष । भयानक रस । विष्णु । शिव । राक्षस । एक नरक ।

दारुणक—(संज्ञा, पु०, सं०) बालों का एक रोग जिसे रूसी कहते है ।

दारुण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कठोरता, निर्दयता ।

दारुमय—(वि० सं०) काठ का बना हुआ, काठ का, काठ-संबंधी ।

दारू—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) औषधि, दवा । शराब, मदिरा । बारूद । [**दवादारू** (यौ०)] "और दारू सब की करौं, पै सुभाव की नाहिं"—**कबीर** ।

दारूड़ा, दारूड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) शराब, मदिरा ।

दारो, दारौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दाडिम] अनार । [दारयौं, दारयो (दे०)] "क्यों धों दारयो ज्यों हियो, दरकत नाहीं लाल"—बिहारी ।

दारोगा—(संज्ञा, पु०, फा०) थानेदार, कोतवाल । प्रबंधकर्ता । [दरोगा (दे०)]—**गरी**-दरोगा का कार्य या पद । "अवशिष्ट दारोगागरी मे सत्व और महत्व है"—मैथिली० ।

दारोमदार—(संज्ञा, पु०) सम्पूर्ण भार । निर्भरता । "दारोमदार सारा बस एक उसी पर है ।"—हरिऔध ।

दार्ढ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दृढ़ता, कठिनता, काठिन्य ।

दार्दुर—(वि०, सं०) मेढक-सम्बन्धी । (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का शंख । पानी ।

दार्दुरिक—(संज्ञा, पु०, सं०) कुम्हार । (वि०) मेढक सम्बन्धी ।

दार्व—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रदेश ।

दार्वा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक औषध, रसौत, रसवत ।

दार्वी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दारुहलदी ।

दार्शनिक—(वि०, सं०) दर्शन शास्त्रज्ञ, दर्शन-सम्बन्धी तत्व-वेत्ता । [फिलासफर]

दार्ष्टान्त—(वि०, सं०) उपमेय, आदर्श, आदर्शित, दृष्टान्त सम्बन्धी ।

दार्ष्टान्तिक—(वि०, सं०) दृष्टान्त-सम्बन्धी ।

दाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दालि] दली हुई अरहर आदि के टुकड़े, पकी हुई दाल ।—**मोठ**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० दाल + मोठा = एक कुअन्न] घी या तेल में तली मसालेदार दाल । —**दलिया**-(यौ०) कंगालों का रूखा-सूखा भोजन ।—**रोटी**-सामान्य या सादा भोजन । **मुहा०—गलना**-मतलब निकलना, प्रयोजन सिद्ध होना ।—**में कुछ काला होना**-संदेह या खटके की बात होना । बुरी बात का चिह्न दिखाई देना । (**जूतियों**)—**बाँटना**-बड़ी भारी लड़ाई या फसाद होना ।

दालचीनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० दारचीनी] दारचीनी ।

दालान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ओसारा, बरामदा ।

दालिद्र—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दारिद्रय] दरिद्रता, दरिद्रपन । [दलिद्दर दरिद्दर (दे०)]

दालिम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दाडिम] अनार ।

दावँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० एकदा] एक बार, एक दफा, बारी, पारी, अवसर, मौका, अनुकूल समय, जुए में लगाया धन। मुहा०—**करना**-घात लगाना या घात मे बैठना।—**लगना**-औसर या मौका मिलना।—**लेना**-बदला लेना, काम ठीक होने का उपाय या चाल, युक्ति। "कबहु न हारे खेल जो खेलै दावँ बिचारि"—वृं०। —**पर चढ़ना**-इस भाँति पराधीन होना कि दूसरा अपना कार्य निकाल ले। पेंच, चाल, छल, कुटिल नीति, खेलने की बारी, आँसरी। —**पर रखना या लगाना**-(जुए में) बाजी लगाना।—**आना (पड़ना)**-जीत का पाँसा पड़ जाना।—**देना**-खेल मे हारने की सजा भोगना। जगह, स्थान, ठौर।

दावँना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दामिनी] दावँ चलाना, अनाज माँड़ना।

दावँनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दामिनी] बिन्दी, भूषण, बिजली।

दावँरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दाम] रज्जु, डोरी, रस्सी।

दाव—(संज्ञा, पु०, सं०) जंगल, वन। दावानल, अग्नि, ताप। "वनश्च वन वन्हिश्च दव दाव इतीर्य्यते"—कोष०। (संज्ञा, पु०, दे०) एक हथियार।

दावत—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० दअवत] भोज, ज्योनार, निमंत्रण। [न्योता (दे०)]

दावन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दमन] दमन, नाश। हँसिया। अनुपान।

दावना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दमन] दावँना, माँड़ना। (क्रि० स०, दे०) [हि० दावन] दबाना, दमन करना।

दावनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दामिनी] बेंदी, भूषण। बिजली।

दावा—(संज्ञा, पु०) [सं० दाव] दावानल, दावाग्नि। (संज्ञा, पु०, अ०) किसी वस्तु पर अपने हक की घोषणा। स्वत्वप्राप्ति का निवेदन-पत्र। मुकदमा, नालिश, अभियोग। दृढ़ता से कथन।—**गीर**-(संज्ञा, पु०) [अ० दावा+गीर फ़ा०] दावा करने वाला, अपना स्वत्व या अधिकार जताने वाला। "दुसमन दावागीर हाथ ताकहँ फटकारै"—गिरि०। —**दार**-(संज्ञा, पु०) [अ० दावा+दार फ़ा०] दावा करने या स्वत्व प्रगट करने वाला।

दावाग्नि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) वन की आग, दावानल, [दवागी (दे०)] "धरित्री मौन हो दावाग्नि सहती आ रही थी"—दिनकर।

दावात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मसि-पात्र, दवाऊत, दवाइत, दवात (ग्रा०)।

दावानल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) वन की आग, दावाग्नि। [दवागी (दे०)]

दावित—(वि०, सं०) व्यथित, पीड़ित।

दाविनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दामिनी] बिजली, विद्युत्। बेंदी (भूषण)।

दाश—(संज्ञा, पु०, सं०) केवट, मल्लाह, मछवाहा, मछुवा, धीवर।

दाशरथ, दाशरथि—(संज्ञा, पु०) [सं० दशरथ+इञ्] दाशरथी, राजा दशरथ के पुत्र रामचन्द्र आदि।

दाशार्ह—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) श्रीकृष्ण। विष्णु। भगवान।

दावृत—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) परविश, भरण-पोषण। कुम्हार का आवाँ।

दाश्व—(संज्ञा, पु० सं०) दाता, दानशील, दानी।

दास—(संज्ञा, पु०, सं०) सेवक, नौकर, चाकर। शूद्र। धीवर। एक उपाधि। दस्यु, वृत्रासुर। [दासी (स्त्री०)] †*(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डासन] बिछौना।—**नन्दिनी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सत्यवती, व्यास जी की माता।—**पन**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दासता] सेवा, सेवकाई, दासत्व।—**वृत्ति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सेवक की जीविका, नौकरी चाकरी।

दासता, दासत्व—(संज्ञा, स्त्री०) सेवकाई, सेवा-वृत्ति।

दासन, दसौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डासन] बिछौना, दसना (ग्रा०)।

दासा—(संज्ञा, पु०, दे०) [दासी=वेदी] आँगन के चारों ओर दीवार से मिला हुआ छोटा चबूतरा।

दासानुदास—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सेवकों का सेवक, तुच्छ दास।

दासायन—(संज्ञा, पु०, सं०) दासी का पुत्र।

दासी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लौंडी, टहलुनी, सेवकिनी। "दीन्हें अमित दास अरु दासी"—[रामा०]।

दासेय—(संज्ञा, पु०, सं०) दास, सेवक, दासी-पुत्र ।

दास्तान—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) वृत्तांत, कथा, क़िस्सा, हाल, बयान ।

दास्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दासत्व, सेवकाई, दासता, भक्ति या उपासना का एक रूप या भाव ।

दाह—(संज्ञा, पु०, सं०) जलाने का काम, मुर्दे का जलाना । एक रोग । जलन, शोक, डाह, ईर्ष्या । "उर उपजावति दारुन दाहा"—[रामा०] । दाहा । [दाहू (दे०)]—**कर्म**-(संज्ञा, पु०, सं०) मृतक के जलाने का काम । "दाहकर्म विधिवत सब कीन्हा"—[रामा०] ।—**क्रिया**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मृतक के जलाने का कर्म, मृतक संस्कार । "यहि विधि दाहक्रिया सब कीन्ही"—[रामा०] । —**जनक**-(वि०, सं०) ज्वालाकर, जलन उत्पन्न करने वाला ।—**देना**-(क्रि० स०, यौ०) [सं० दाह+देना हि०] जलाना, फूँकना, मृतक को जलाना, अन्त्येष्टि संस्कार करना ।—**हरण**-(संज्ञा, पु०, सं०) औषधि-विशेष, वीरणमूल, खसखस । तापनाशन ।

दाहक—(वि०, सं०) जलाने वाला । (संज्ञा, पु०, दे०, सं०) चित्रक पेड़, अग्नि । "सीतल सिख दाहक भइ कैसे"—[रामा०] ।

दाहकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जलाने का भाव या गुण, दाहकत्व ।

दाहन—(संज्ञा, पु०, सं०) जलाने या फूँकने का काम, मृतक संस्कार ।

दाहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दाह] जलाना, फूँकना, भस्म करना । दुख देना । चिढ़ाना । "देखौ गऊ-पुत्र जिन दाहा"—तुल० । (वि०, दे०) [सं० दक्षिण] दाहिना ।

दाहसर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रेतवास, श्मशान, मरघट ।

दाहात्मक—(वि०, सं०, यौ०) दाह-स्वरूप या दाहप्रद ।

दाहिन, दाहिना—(वि०, दे०) [सं० दक्षिण] दक्षिण, दहिना (ग्रा०) । अपसव्य । [(विलो०) **बाँयाँ**] **मुहा०—देना**-दक्षिणावर्त्त परिक्रमा करना ।—(**नी**) **लाना**-प्रदक्षिणा या परिक्रमा करना ।—**हाथ**-भाई, मित्र, बड़ा सहायक, अनुकूल, प्रसन्न व्यक्ति । "आजु भयो विधि दाहिन मोही"—[रामा०] ।—**वर्त्त***-(वि०, दे०, यौ०) [सं० दक्षिणावर्त्त] प्रदक्षिणा या परिक्रमा करता हुआ । दक्षिण या दाहिने को घूमा हुआ ।

दाहिने—(क्रि० वि०, दे०) [हि० दाहिना] दाहिने हाथ की ओर । पक्ष में । "जे बिन काज दाहिने-बाँयें"—[रामा०] ।

दाही—(वि०, दे०) [सं० दाहिन्] भस्म करने या जलाने वाला । [**दाहिनी** (स्त्री०)] "भवति च उरदाही......" ।

दाह्य—(वि०, सं०) जलाने या फूँकने योग्य ।

दिंडी—(संज्ञा, पु०, सं०) एक छंद ।

दिअली, दिआली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दिया का स्त्री० या अल्पा०] बहुत छोटा दीपक या दिया, दिअलिया (ग्रा०) ।

दिआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दीपक] दीपक, दिअना, दिया, दीया ।—**बत्ती**-देखिये 'दीया-बत्ती' ।—**सलाई**-(संज्ञा, स्त्री०) देखिए 'दिया-सलाई' ।

दिआना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दिलाना] दिलाना, दिवाना ।

दिउली†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दिअला] सूखे घाव की पपड़ी । छोटा दिया । दिवालिया (ग्रा०) । मछली के शरीर का छिलका । भूने चनों की दाल ।

दिक्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दिशा, तरफ, ओर ।—**कन्या**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दिशारूपी कन्या । "दिक्कन्या नामव्यजनपवनैर्वीज्यमानोनुकूलैः ।"—**करिका,—करी**-(संज्ञा, स्त्री०) जवान स्त्री । दिग्गज ।—**कुंजर**-(संज्ञा, पु०) दिशाओं के हाथी । —**दाह**-(संज्ञा, पु०) [सं० दिग्दाह] सूर्य्य के अस्त होने पर दिशाओं का लाल और जलता-सा दीखना ।—**पति**-(संज्ञा, पु०) आठ दिशाओं के स्वामी आठ ग्रह (फलित ज्यो०) ।—**पाल**-(संज्ञा, पु०) दश दिशाओं की रक्षा करने वाला, इंद्र, अग्नि, यम आदि । चौबीस मात्राओं का एक छंद (पिं०) । [दिकपाल, दिगपाल (दे०)]—**शूल, दिग्शूल**-(संज्ञा, पु०, सं०) कालवास (ज्यो०) ।—**साधन, दिग्साधन**-(संज्ञा, पु०, सं०) दिशाओं के ज्ञान की रीति या विधि ।—**सुन्दरी, दिग्सुंदरी***-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दिक्कन्या, दिगंगना ।

दिक—(वि०, अ०) कष्ट पाया हुआ, तंग, हैरान, परेशान, व्याकुल, दुखी । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) क्षयी रोग, तपेदिक ।

दिक्क—(वि०, पु०, दे०) [अ० दिक] तंग, परेशान, हैरान। दुखी, बीमार। (क्रि० अ०, दे०) [दिक्कियाना]।

दिक्कत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) परेशानी, हैरानी। बीमारी, तंगी। "दिक्कतें आवें हजारों, झेल लें।"

दिखना†—(क्रि० अ०, दे०) दिखाई देना, देखने में आना, दीखना।

दिखराना, दिखरावना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० दिखलाना] दिखाना, किसी को देखने में लगाना। "दिखरावा मातहि निज"—[रामा०]।

दिखरावनी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दिखलाना] दिखाने का भाव या कर्म।

दिखलवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दिखलाना] दिखलाई, दिखलाने की मजदूरी।

दिखलवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दिखलाना का प्रेरणा० रूप] दिखलाने का काम दूसरे से कराना।

दिखलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दिखलाना] दिखलाने का भाव या काम या मजदूरी।

दिखलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० देखना का प्रेरणा० रूप] दिखाना, जताना, दूसरे को देखने में लगाना, ज्ञात या अनुभव कराना।

दिखवैया—(संज्ञा, पु०) दिखलाने वाला, देखने वाला।

दिखसाध—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० देखना +साध] देखने की इच्छा।

दिखहार*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० देखना +हार प्रत्य०] देखने हारा, देखने वाला, दिखैया, देखनहार (ग्रा०)।

दिखाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दिखाना+ आई प्रत्य०] देखने-दिखाने का कार्य्य।

दिखाऊ†—(वि०, दे०) [हि० देखना+आऊ प्रत्य०] दर्शनीय, देखने-योग्य, बनावटी, दिखौवा। [देखाऊ (दे०)]

दिखादिखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० देखादेखी] देखादेखी, अनुकरण, नकल।

दिखाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दिखलाना] दिखलाना, देखाना (ग्रा०)।

दिखाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० देखना+ आव प्रत्य०] देखने का भाव या कार्य्य। नजारा, दृश्य।

दिखावट—(संज्ञा, स्त्री०) दिखाने का भाव, बाह्याडम्बर।

दिखावटी—(वि०, दे०) [हि० दिखौआ] दिखौआ (ग्रा०), बनावटी, दिखाऊ।

दिखावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० देखना+ आवा प्रत्य०] बनावटी, ऊपरी शान। (सा० भू०, क्रि० स०, दे०) दिखाया।

दिखैया*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० देखना+ ऐया प्रत्य०] देखने या दिखाने वाला, [देखैया (दे०)]।

दिखौआ, दिखौवा—(वि०, दे०) [हि० देखना +औआ, औवा प्रत्य०] बनावटी। (संज्ञा, पु०, दे०) देखने वाला।

दिगंचल—(संज्ञा, पु०) [सं० दिक्+अंचल] दिशा रूपी आँचल।

दिगंत—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिशा का अंत। आँख का कोना। "दिगंत विश्रांतरथोहि तत्सुतः" [रघु०]।

दिगंतर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दो दिशाओं के बीच की दिशा। "संचार पूतानि दिगंतराणि" —[रघु०]। [सं० दृगंतर] नेत्रों का अंतर।

दिगंतराल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) आकाश।

दिगंबर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नङ्गा रहने वाला। जैनों का एक भेद। (वि०) नङ्गा, नग्न। [**दिगंबरी** (संज्ञा, स्त्री०)]

दिगंबरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नङ्गापन।

दिगंश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) क्षितिज। दिशा का भाग।—**यंत्र**–(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रह या नक्षत्रों के दिगंश जानने का एक यंत्र (ख०)।

दिगधिप—(संज्ञा, पु० सं०) आठ ग्रह जो आठ दिशाओं के मालिक माने जाते हैं।

दिगवस्थान—(संज्ञा, पु०, सं०) वायु, हवा।

दिगागत—(वि०, सं०) दूर से आया हुआ।

दिग्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दिशा, तरफ, ओर।—**गज**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिशाओं के हाथी। (वि०, दे०) बहुत बड़ा या भारी।—**दंति**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिग्गज, दिङ्नाग, दिङ्मतंग।—**शंक यंत्र**–(संज्ञा, पु० सं०, यौ०) ध्रुवदर्शक यंत्र, कुतुबनुमा।—**दर्शन**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) बानगी, नमूना, इंगितमात्र दिखाना, जानकारी।—**दाह**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्यास्त होने पर दिशाओं का लाल और जलता हुआ-सा ज्ञात होना (अपशकुन, अशुभ)। "दग्दाहों से धूम उठे, या जलधर उठे, क्षितिज तट के"—प्रसाद।

—देवता—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिग्पाल, दिग्पति, दिग्देव।—देशज्ञान—(संज्ञा, पु०, सं०) दिशाओं के देश का ज्ञान। "है बढ़ा रहे दिग्देशज्ञान, शर-खरतर"—निराला।—पट—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिगंबर, नङ्ग।—पति—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिग्दपाल।—पाल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिक्पाल, दिङ्नाथ, दिक्पति।—भ्रम—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिशा-विषयक अज्ञान। "जाको दिग्भ्रम होइ खगेशा"—[रामा०]।—भ्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिग्पपर्य्यटन, विचरण। —मंडल, दिङ्मंडल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सब दिशाएँ, दिशा-समूह।—राज—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिग्पाल, दिक्पति दिग्राज।—वधू—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) दिशाओं रूपी स्त्री। "सदैव कहती कोई कथा दिग्वधू"—हरिऔध।—वसना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) दिशाओं रूपी वस्त्र से युक्त।—वस्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिगंबर, नङ्गा। शिव। दिग्वसन, दिग्दुकूल।—वास—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिग्वसन, नङ्गा। शिव।—विजय—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) चारों ओर के राजाओं को युद्ध में हरा कर अपने महत्त्व का प्रतिष्ठापन।—विजयी—(वि०, पु०, सं०, यौ०) दिग्विजय प्राप्त पुरुष, दिग्विजेता। [दिग्विजयिनी (स्त्री०)]—विभाग—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तरफ, दिशा, ओर। "उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग्विभागे।"—व्यापी—(वि०, सं०, यौ०) जो सब दिशाओं में फैला हो, दिग्व्याप्त। "दिग्व्यापी है सुजस तुम्हारा"—[रामा०]। [दिग्व्यापिनी (स्त्री०)]—शूल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिक्शूल।

दिग्ध—(वि०, सं०) विषाक्त। (संज्ञा, पु०) विष से बुझा तीर या बाण। तेल। आग आख्यायिका।

दिङ्नाग—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिग्गज। कालिदास का विरोधी एक बौद्ध नैयायिक जो सन् ३४५ से लेकर सन् ४२५ के लगभग हुआ।

दिङ्मण्डल—(संज्ञा, पु०, सं०) दिशाओं का समूह, दिक्चक्र।

दिच्छित, दीच्छित*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दीक्षित] दीक्षित, ब्राह्मणों की पदवी या जाति।

दिजराज*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० द्विजराज] ब्राह्मण। चन्द्रमा।

दिठबंद—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० दृष्टि बंध] नजर बाँधना, (जादू)।

दिठवन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० देवोत्थान] कार्तिक सुदी एकादशी, देउथान (ग्रा०)।

दिठादिठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० देखादेखी] देखादेखी, किसी को कुछ करते देख वही करना।

दिठाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० दीठ] बुरी दीठ या नजर लगाना।

दिठौना†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दीठ+ औना प्रत्य०] लड़कों के मत्थे पर दृष्टि-दोष बचाने को काजल की बिन्दी।

दिढ़*†—(वि०, दे०) [सं० दृढ़] मजबूत, पुख्ता।

दिढ़ता, दिढ़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मजबूती, दृढ़ता।

दिढ़ाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० दिढ़+आना प्रत्य०] पक्का या दृढ़ करना। "कहौं मवै भल मंत्र दिढ़ाई"—[रामा०]।

दिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कश्यप ऋषि की स्त्री जिसके पुत्र दैत्य कहाते हैं।—सुत—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दैत्य, दानव, दितिपुत्र।

दिदार—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० दीदार] दीदार, दर्शन, भेंट। प्यारा।

दिन—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य निकलने से डूबने तक का समय।—अर*†—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० दिनकर] सूर्य, दिनकर।—कंत*†—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० दिनकांत] सूर्य, रवि, भानु। —कर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्य।—०कुल—सूर्य-वंश।—०तनया—(संज्ञा, स्त्री०) यमुना, कालिंदी।—सुत—(संज्ञा, पु०) शनिश्चर। कर्ण। यम। सुग्रीव।—चर्य्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) सारे दिन या दिन भर का काम।—चारी—(संज्ञा, पु०) सूर्य।—दानी—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) प्रतिदिन दान देने वाला।—दीप—(संज्ञा, पु०) सूर्य। —नाथ—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्य।—नाह—(संज्ञा, पु०) सूर्य।—पंजी—(संज्ञा, स्त्री०) वह पुस्तिका, जिसमें प्रतिदिन के कार्यों का विवरण हो। दैनंदिनी।—पति—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्य। —मणि—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्य। "दिव्यता दिनमणि की अवलोक"—हरिऔध।—मान—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिन का प्रमाण, सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय।—राइ,—राई,—राय—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० दिनराज] सूर्य, दिनराज।—रात, रात—,राती—, सदा, सर्वदा।

—विक्रांत विवरण—(संज्ञा, पु०) दिनरात के भीतर ताप, शीत, वर्षा की संभावनाओं का विवरण। [वेदर रिपोर्ट] मुहा०—को तारे दिखाई देना—इतना कष्ट देना कि बुद्धि ठीक न रहे।—को दिन रात को रात न जानना या समझना—अपने आराम और सुख का कुछ विचार न करना।—चढ़ना—सूर्य उदय होना या निकलना। किसी स्त्री का गर्भवती होना। —छिपना या डूबना—शाम या साँझ होना। —ढलना—साँझ का समय पास आना।—दहाड़े या—दिहाड़े—विशेष करके दिन के समय।—दूना रात चौगुना होना या बढ़ना—शीघ्र बहुत बढ़ना, अति उन्नति पर होना।—निकलना—सूर्य-उदय होना।—जाते देर नहीं लगती—समय शीघ्र बीतता है। "दिवस जात नहिं लागै बारा"—[रामा०]।—दिन या—पर दिन—प्रतिदिन, नित्य-प्रति।—काटना,—पूरे करना या गिनना।—समय बिताना। गुज़र-बसर या निर्वाह करना।—फिरना (सुधरना)—अच्छा समय आना।—बिगड़ना—बुरा समय होना।—धरना—दिन निश्चित या ठीक करना।—भरना—बुरा समय काटना। (क्रि० वि०, दे०) हमेशा, सदा, सर्वदा।

दिनमार—(संज्ञा, पु०, दे०) डेन्मार्क देश के निवासी।

दिनांक—(संज्ञा, पु०, सं०,यौ०) वह विशेष दिन जब कोई घटना घटी हो अथवा पत्रादि लिखा गया हो। तिथि, तारीख।

दिनांकित—(वि०, सं०) दिनांक से युक्त।

दिनांत—(संज्ञा, पु०) संध्या समय। "अब दिनांत विलोकत हो बड़ी"—हरिऔध।

दिनांतक—(संज्ञा, पु०, सं०) अंधकार।

दिनांध—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) उल्लू, घुग्घू।

दिनाइ†—(संज्ञा, पु० दे०) दाद रोग।

दिनाई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दिन+आई प्रत्य०] तत्काल मृत्युकारी विषैली वस्तु।

दिनागम—(संज्ञा, पु०) [सं० दिन+आगम] सबेरा, सुबह।

दिनालोक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धूप, सूर्य का प्रकाश या किरण।

दिनार, दीनार—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० दीनार] स्वर्ण-मुद्रा, अशर्फी। (वि०, दे०) पुराना, अधिक आयु का।

दिनास्त—(संज्ञा, पु०) [सं० दिन+अस्त] सूर्यास्त।

दिनियर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दिनकर] सूर्य। (वि०, दे०) पुराना, बहुत दिन का।

दिनी—(वि०, दे०) [हि० दिन+ई प्रत्य०] बहुत दिनों का पुराना, प्राचीन।

दिनेट्—(संज्ञा, पु०, सं०) दिनेश, सूर्य।

दिनेर, दिनैला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दिनकर] सूर्य। (वि०) [हि० दिन+एर, ऐला प्रत्य०] बहुत दिनों का, पुराना।

दिनेश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्य, दिनेस। "सो कह पच्छिम उगेउ दिनेसा"—[रामा०]।

दिनौंधी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० दिन+अंध+ई प्रत्य०] दिन को दिखाई न देने का रोग।

दिपति*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दीप्ति] दीप्ति, प्रकाश, कांति। [दीपति (ब्र०)]

दिपना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दीप्ति] चमकना, प्रकाशित होना। "दीपक दिपैहै ज्यों सनेह सो सुगेह माँहिं"—रसाल।

दिपाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दीप्ति, दिपना का प्रेरणा० रूप] चमकाना।

दिब*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दिव्य] देवताओं के योग्य। बहुत सुन्दर।

दिमाक—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० दिमाग] दिमाग, गर्व। [**दिमाकर** (वि०)]

दिमाग—(संज्ञा, पु०, अ०) सिर का भेजा, मस्तिष्क।—दार-(वि०) [अ० दिमाग+दार फ़ा०] बड़ा बुद्धिमान, या समझदार, अक़्लमंद। मुहा०—खाना या चाटना—व्यर्थ बहुत बकना।—खाली करना—मगज पच्ची करना।—चढ़ना या आसमान पर होना—अति अहंकार होना।—हो जाना—घमंड हो जाना।—ठंडा करना (होना)—क्रोध या घमंड दूर करना (होना)।

दिमागी—(वि०, फ़ा०) गरूरी, घमंडी। दिमाग संबंधी, मस्तिष्क का।

दिमात*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० द्वि+मातृ] जिसकी दो माताएँ हों, द्विमातुर। (वि०, संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० द्विमात्रा] दो मात्राओं वाला।

दिमाना—(वि०, दे०) [फ़ा० दीवाना] पागल, दीवाना, दिवाना।

दियना‡—(संज्ञा, पु०) [सं० दीपक] दिया, दीपक, चिराग, दिया। "उहि के घर का दियना बुझिगा।"

दियरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दीया+रा प्रत्य०] एक प्रकार का पकवान। दिया, दीपक। "जानहु मिरग दियारहिं मोहै"—[पद०]।

दिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दीपक] दीया, दीपक। (सा० भू०, क्रि० स० देना) प्रदान किया।

दियारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दयार=सूबा] कछार, दरियाबरार, खादर, प्रांत। प्रदेश।

दियासलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०, हिं०) दिया जलाने के लिए मसाले से युक्त लकड़ी का छोटा पतला टुकड़ा। [दीयासलाई, दीवासलाई, [दिया-सराई (दे०)]

दिरद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विरद] हाथी।

दिरम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० दरहम] रुपया, दिरहम, एक सिक्का।

दिरमान†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दरमानः] चिकित्सा, इलाज।

दिरमानी—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दरमान+ई प्रत्य०] चिकित्सक, वैद्य।

दिरिस*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दृश्य] तमाशा, दृश्य।

दिल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हृदय, चित्त, जी।—**आजार**-(वि०) मन को व्यथित करने वाला। —**आजारी**-(संज्ञा, स्त्री०) अत्याचार, मन को पीड़ा देने का कार्य। **खुश**—(वि०) चित्त को प्रसन्नता देने वाला।—**गीर**-(वि०, फ़ा०) उदास, दुखी।—**गीरी**-(संज्ञा, स्त्री०) उदासी, दुःख, रंज। —**चला**-(वि०, दे०, यौ०) [फ़ा० दिल+चलना हिं०] साहसी, शूरवीर, बहादुर। शौकीन। [मनचला (दे०)]—**चस्प**-(वि०, फ़ा०, यौ०) सुन्दर, मनोहर, चित्ताकर्षक, जो में चिपक जाने वाला। —**चस्पी**-(संज्ञा, स्त्री०) शौक, रुचि, सुभान। लगन।—**जमई**-(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० दिल+जमअ अ०+ई प्रत्य०] भरोसा, तसल्ली। —**जला**-(वि०, यौ०) [फ़ा० दिल+जलना हिं०] दग्ध हृदय, कष्ट प्राप्त, दुःखी।—**जोई**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) संतोष, तसल्ली। "दिलजोई के बचन सुहाये"—छत्र०।—**दार**-(वि० फ़ा०) उदार। रसिक, प्यारा।—**दारी**-(संज्ञा, स्त्री०) रसिकता। उदारता।—**रुबा**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) प्यारा, प्रिय।—**वर**-(वि०, फ़ा०) प्रिय, प्यारा। "मुशफिक लिखूँ शफीक लिखूँ दिलरुबा लिखूँ"। मुहा०—**उचटना**-चित्त का उदासीन होना, मन न लगना।—**कड़ा करना**-साहस करना या हिम्मत बाँधना।—**का कँवल (कमल) खिलना**-मन प्रसन्न होना।—**गिरना**-हतोत्साह या अरुचि होना, उदास होना।—**का गवाही देना**-मन में निश्चय होना।—**का बादशाह**-बड़ा दानी, अति उदार। मनमौजी।—**के फफोले फोड़ना**-पुराने द्वेष से बकना। बक-झक कर मन प्रसन्न करना।—**जमना**-चित्त या मन लगना।—**ठिकाने होना**-चित्त स्थिर होना।—**में जमना (पैठना, बैठना)**-दृढ़ निश्चय होना। प्रिय होना, पसंद आना।—**देना**-प्रेम करना।—**बुझना**-चित्त का उत्साह या उमंग-रहित हो जाना।—**(मन) मसोसना**-इच्छा पूरी होने के कारण व्यथित होना।—**में फरक आना**-मन मोटा होना।—**फिर जाना**-वैमनस्य या विरोध हो जाना।—**से**-जी लगा कर, मन से।—**दुखाना**-अप्रसन्न या दुखी करना।—**से दूर करना**-भुला देना।—**(कलेजा) निकाल कर रखना**-बड़ा हित करना, मन की सब बात कहना।—**लगाना**-प्रेम करना। ध्यान देना।—**ही दिल में**-मन ही मन मे, चुप चाप।

दिलवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० दिलाना का प्रेरणा० रूप] दिलाने का काम दूसरे से लेना।

दिलवैया—(संज्ञा, पु०) दिलाने वाला।

दिलही—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दिल्ली] दिल्ली। [डिलही]

दिलाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० देना का प्रेरणा० रूप] किसी को देने के काम में लगा देना।

दिलावर—(वि०, फ़ा०) शूरवीर, बहादुर, साहसी, उत्साही। [**दिलावरी** (संज्ञा, स्त्री०)]

दिलासा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दिल+आसा हिं०] ढारस, धैर्य्य, आश्वासन, तसल्ली। [**दम-दिलासा** (यौ०)] धैर्य्य, तसल्ली, धोखा।

दिली—(वि०, दे०) [फ़ा० दिल+ई प्रत्य०] हृदय या चित्त-संबन्धी, हार्दिक, बहुत घना।—**दोस्त**-(वि०) घनिष्ठ मित्र।

दिलीप—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा रघु के पिता। "दिलीप इति राजेन्दुः"—रघु०।

दिलेर—(वि०, फ़ा०) शूरवीर, हिम्मती, साहसी। [**दिलेरी** (संज्ञा, स्त्री०)]

दिल्लगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [फ़ा० दिल + लगना हि०] ठठोली, हँसी, ठट्ठा, उपहास। **—बाज**–(संज्ञा, पु०) [हि० दिल्लगी + बाज फ़ा०] ठट्ठेबाज, ठठोल, हँसी उड़ाने वाला, मसखरा। [**दिल्लगीबाज़ी** (संज्ञा, स्त्री०)] **मुहा०** (**किसी बात की**)—**उड़ाना**–उपहास करना। मिथ्या समझना।

दिल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) शीशी। किवाड़ों में लगाने का शीशा।

दिल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भारत की राजधानी। इन्द्रप्रस्थ।

दिगत—(वि०, सं०) स्वर्गगत, परलोकगत, स्वर्गवासी।

दिवंगत—(सं०, सं०) स्वर्गवासी।

दिवंगम—(वि०, सं०) स्वर्गगामी।

दिव—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आकाश, देवलोक, स्वर्ग दिन। वन। "दिवं मरुत्वान् इव भोक्ष्यते भुवन्" —[रघु०]। **—राज**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) इन्द्र, देवराज।

दिवरानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, हि०) स्वामी के छोटे भाई की पत्नी, देवरानी, दिउरानी (ग्रा०)।

दिवला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दिआ] दिया, दीआ, दीपक। "यहि तन का दिवला करौं, बाती मेलौं जीव"—कबीर। [दिवलिया (दे०)]

दिवस—(संज्ञा, पु०, सं०) दिन। "दिवस रहा भरि जाम"—[रामा०]। दिवस का अवसान समीप था"—हरिऔध। **—अंध***–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० दिवांध] दिवसाँध, दिनौंधी रोगी, जिसे दिन में दिखाई न दे, दिन का अंधा। घुग्घू या उल्लू पक्षी। **—कर, —नाथ**–(संज्ञा, पु०) सूर्य। मदार। **—क्षय**–(संज्ञा, पु०) सूर्यास्त। **—मणि**–(संज्ञा, पु०) सूर्य। **—मुख**–(संज्ञा, पु०) प्रातः काल। **—विगम**–(संज्ञा, पु०) सांध्यकाल। **—संजात**–(संज्ञा, पु०) सम्पूर्ण दिन का कार्य। (वि०) दिन से उत्पन्न। दिन से सम्बन्धित।

दिवसांत—(संज्ञा, पु०) [स० दिवस + अंत] संध्या, दिन के अंत की स्थिति। "दिवसांत देख कर फिर वह"—हरिऔध।

दिवसांतर—(वि०, सं०) जो केवल एक दिन का हो।

दिवसात्यय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिन की समाप्ति, सायंकाल, संध्या, शाम।

दिवस्पति—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्य, रवि, दिनेश।

दिवांध—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जो दिनौंधी रोग से पीड़ित हो, जिसे दिन में दिखाई न देता हो। घुग्घू या उल्लू पक्षी। (संज्ञा, पु०) दिनौंधी रोग। [**दिवांधता** (संज्ञा, स्त्री०)]

दिवांधकी, दिवांधिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) छछूँदर।

दिवा—(संज्ञा, पु०, सं०) दिन, दिवस। मालिनी छंद (पिं०)। **—कर**–(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, रवि। "दीपत दिवाकर कौ दीपक दिखैयै कहा" —रत्ना०। **—मणि**–(संज्ञा, पु०) सूर्य। **—मध्य**–(संज्ञा, पु०) दोपहर। **—रात्रि**–(संज्ञा, स्त्री०) दिन-रात। "अरी आँधियो! ओ बिजली की दिवा-रात्रि तेरा नर्तन"—प्रसाद। **—स्वप्न**–(संज्ञा, पु०) दिन का सपना। "दिवस-स्वप्न सा पड़ा असार"—निराला।

दिवान—(संज्ञा, पु०) [अ० दीवान] मंत्री, वजीर, सलाहकार। (वि०, दे०) पागल।

दिवाना† —(वि० स्त्री०, पु०) [अ० दीवाना] पागल। *† (क्रि० स०, दे०) [हि० दिलाना] दिलाना। [**दिवानी** (स्त्री०)]

दिवाभिसारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) जो नायिका दिन में प्रेमी के यहाँ जाय। [(विलो०) **निशाभिसारिका**]

दिवाल—(वि०, दे०) [हि० देना + वाल प्रत्य०) देने वाला, दाता, दानी, उदार। † (संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० दीवार] भीत, भीती, दीवाल। [दिवार (दे०)]

दिवाला—(संज्ञा, पु०, दे०) ऋण-मुक्ति के लिए पूर्ण धन न होने की दशा। [**देवाला, टाट उलट देना, टाट उलटना** (न्यौ० मु०)] **मुहा०—निकलना**–दिवाला होना। "चार दिना के पूड़ी खाये निकल दिवाला जाय।"—**मारना, —निकालना**–दिवालिया बन जाना।

दिवालिया—(वि०, दे०) [हि० दिवाला + इया प्रत्य०] जिसका दिवाला निकल गया हो, ऋणी, कंगाल। [देवालिया (दे०)]

दिवाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दीपावली] कार्तिक मास की अमावस्या, दीपमालिका। [दिवारी (दे०)] "आवति दिवारी बिलखाइ ब्रज-बासी कहैं"—[ऊ० श०]।

दिविज—(वि०, सं०) स्वर्गीय, दिव्य, अलौकिक, सुन्दर ।

दिविरथ—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक राजा ।

दिविषद्—(संज्ञा, पु०, सं०) देवता, देव ।

दिवेश—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र, देवराज ।

दिवैया—(वि०, दे०) [हिं० देना + वैया प्रत्य०] देने वाला, दाता, दानी । [दिवैय्या (दे०)]

दिवोदास—(संज्ञा, पु०, सं०) काशी के राजा जो धन्वंतरि के अवतार माने जाते हैं । "धन्वतरि दिवोदास काशिराजस्तथाश्विनौ"—[स्फु०] ।

दिवोल्का—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) दिन में टूटने वाला तारा या उल्का ।

दिवौकस, दिवौका—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवता, देव । "सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशः दिवौकसः"— [अम०] ।

दिव्—(वि०, सं०) स्वर्ग, आकाश । स्वर्गीय, अलौकिक ।

दिव्य—(वि०, सं०) स्वर्गीय, स्वर्ग संबंधी, आकाशीय, अलौकिक, प्रकाशमय, सुन्दर । [**दिव्यता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] । "दिव्य बसन भूपन पहिरा के"—[रामा०] । (संज्ञा, पु०, सं०) यव, जौ । तत्वज्ञानी । एक केतु । आकाशीय उत्पात । एक नायक । स्वर्गीय नायक जैसे इन्द्र । न्यायालय की सत्यासत्य परीक्षा या शपथ ।—**कूट**–(संज्ञा, पु०) एक प्राचीन देश जिसकी चर्चा महाभारत में मिलती है ।—**कारा**–(वि०, सं०) कोषग्राही । शपथकर्त्ता ।—**कुंड**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक छोटा ताल जो कामरूप नामक पर्वत के पूर्व की ओर है ।—**गंध**–(संज्ञा, पु०, सं०) लौंग, लवंग, लउंग (ग्रा०) ।—**गायक**–(संज्ञा, पु०, सं०) गन्धर्व, अच्छा गान वाला, देव-गायक ।—**चक्षु**–(संज्ञा, पु०) [सं० दिव्य चक्षुस्] देवताओं की सी आँख, सूक्ष्म दृष्टि, ज्ञान-दृष्टि, अंधा, चश्मा ।—**तम**–(वि०) अत्यन्त अलौकिक । "एक द्रिव्यतम नौका दिलखायी पड़ी"—हरिऔध ।—**दोहद**–(संज्ञा, पु०, सं०) बिना माँगे प्राप्ति ।—**दृष्टि**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवताओं की सी दृष्टि, ज्ञान-दृष्टि ।—**धर्मी**–(वि०) [सं० दिव्यधर्मिन] धार्मिक । मनोहर, सुन्दर ।—**प्रभा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लोकोत्तर प्रकाश । "देख दिव्यप्रभा राधिका श्याम की"—[मधुपुरी] ।—**रत्न**–(संज्ञा, पु०, सं०) चिन्तामणि ।—**रथ**–(संज्ञा, पु०, सं०) देवविमान ।—**रस**–(संज्ञा, पु०, सं०) पारा । अच्छा रस ।—**लता**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूब, अमरबेलि । सुन्दर लता ।—**वस्त्र**–(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्गीय या सुन्दर कपड़े ।—**वाक्य**–(संज्ञा, पु०, सं०) देववाणी, संस्कृत भाषा ।—**सूरि**–(संज्ञा, पु०, सं०) रामानुजानुयायी आचार्य्य ।—**ज्ञान**–(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्म ज्ञान ।—**स्थान**–(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्गीय भवन, सुन्दर घर या स्थान ।

दिव्यांगना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) देवता की पत्नी, अप्सरा । सुन्दर स्त्री ।

दिव्यांशु—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्य ।

दिव्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वर्गीय नायिका, सुन्दर नायिका ।

दिव्याकार—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० दिव्य + आकार] अलौकिक रूप ।

दिव्यात्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० दिव्य + आत्मा] अलौकिक विभूति । लोकोत्तर व्यक्ति । "दिव्यात्मा पहुँची स्वर्गलोक..."—पंत ।

दिव्यादिव्य—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देवताओं के से गुण वाला नायक, जैसे नल ।

दिव्यादिव्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) स्वर्गीय नायिका, स्वर्गीय स्त्रियों के से गुण वाली नायिका, जैसे दमयन्ती ।

दिव्यालोक—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० दिव्य + आलोक] अलौकिक प्रकाश, दिव्यज्योति ।

दिव्यासन—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक प्रकार का आसन (तंत्र) ।

दिव्यास्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देवताओं का हथियार, देव-प्रदत्त अस्त्र । सुन्दर हथियार ।

दिव्योदक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) वर्षा का पानी या जल ।

दिश्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दिशा, दिक्, दिग् ।

दिशांक—(संज्ञा, पु०, यौ०) दिशा का अंक । दिशा-प्रदेश । "रवि प्रदीप्त कर से दिशांक था लिप रहा" —हरिऔध ।

दिशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तरफ, ओर, दिक्, दिग् । १० दिशायें हैं । दश की संख्या ।—**भ्रम**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिशा की भूल । [**दिग्भ्रम** (यौ०, सं०)]—**शूल**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिग्शूल, दिक्शूल ।

दिशि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० दिशा] दिशा ।

दिश्य—(वि०, सं०) दिशा संबंधी; दिग्भव, दिग्जात ।

दिष्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) भाग्य, दैव, नियति। दारु हल्दी। काल। वैवस्वत मनु का एक पुत्र। (वि०) [सं० दिश् + क्त प्रत्य०] उपदिष्ट, शिक्षित। निश्चित।

दिष्टबन्धक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गिरो करने की रीति, जिसमे धनी को ब्याज मिलता है, सूदी रेहन।

दिष्टभुक्, दिष्टभुग—(वि०, सं०, यौ०) भाग्याधीन भाग करने या खाने वाला।

दिष्टांत—(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्यु, मरण।

दिष्टि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दृष्टि] निगाह।

दिष्ट्या—(अव्य, सं०) हर्ष, अति आनन्द।

दिसंत*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० देशान्तर] विदेश, परदेश। दिशाओं की दूरी। (क्रि० वि०, बहुत दूर, परदेश मे।

दिसम्बर—(संज्ञा, पु०, अ०) अंगरेजी साल का अंतिम मास अर्थात् बारहवाँ महीना।

दिस*†—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० दिशा] दिशा। तरफ, ओर।

दिसना, दीसना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० दिखना] दिखाइ देना।

दिसा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दिश] दिशा, तरफ। मलत्याग, पाखाना।—**दाह***†–(संज्ञा, पु०) [सं० दिग्दाह] दिग्दाह, दिशाओं की आग।

दिसावर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० देशांतर] परदेश, विदेश। [देसावर (दे०)]

दिसावरी—(वि०, दे०) [हिं० दिसावर + ई प्रत्य०] विदेश से आया, बाहरी, परदेशी माल। [देसावरी (दे०)]।

दिसि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दिशा] दिशा। "जेहि दिसि बैठे नारद फूली"—[रामा०]।—**दुरद***†—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० दिग् द्विरद] दिग्गराज।—**नायक***†–(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० दिग् + नायक] दिग्पाल।

दिसिटि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दृष्टि] निगाह, नजर।

दिसिप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दिग्पाल] दिग्पाल, दिसिराज।

दिसैया*†—(वि०, दे०) [हिं० दिसना + ऐया प्रत्य०] देखने या दिखाने वाला।

दिस्टी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दृष्टि] निगाह, दृष्टि, नजर।—**बंध** (संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० दृष्टि + बंध] नजरबंद, जादू, इन्द्रजाल। [दिठबंध (दे०)]

दिस्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) दस्ता।

दिहन्दा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) देने वाला, दाता। [देहेन्दा (दे०)]। [(विलो०) **नादिहिन्दा**]

दिहरा, देहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० देवालय] मंदिर, देवालय, देवस्थान। "देहरो न देहरा" —देव०।

दिहाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दिन + हाड़ा प्रत्य०] दुर्गति, दुर्दशा, बुरी दशा।

दिहात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० देहात] देहात, गवइं, गाँव।

दिहाती—(वि०, दे०) [हिं० देहाती] देहाती, गवार, ग्रामीण। देहात-सम्बन्धी।

दीअट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दीया] दीपक रखने की चीज, दियट, दीवट (ग्रा०)।

दीआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दीया] दीपक, दिया, दीवा, दिआ (ग्रा०)।

दीक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) शिक्षक, गुरु, पढ़ाने वाला, दीक्षा या शिक्षा देने वाला।

दीक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) पढ़ाना या शिक्षा देना।

दीक्षांत—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अंतिम शांति की यज्ञ। शिक्षा-समाप्ति।—**भाषण**–(संज्ञा, पु०) स्नातकों को किसी शिष्ट महानुभाव का उपदेश। [कन्वोकेशन ऐड्रेस]

दीक्षा—(संज्ञा, स्त्री० सं०) गुरु-मन्त्र, शिक्षा। भजन, पूजन। उपदेश।—**गुरु**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) मंत्र का उपदेशक गुरु।

दीक्षित—(वि०, सं०) नियमपूर्वक यज्ञ का अनुष्ठान करने या आचार्य्य या गुरु से शिक्षा या दीक्षा लेने या उपदेश या मंत्र ग्रहण करने वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) ब्राह्मणों की एक उपाधि या जाति।

दीखना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० देखना] दृष्टि-गोचर होना, दिखाई देना, देखने में आना।

दीघी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दीर्घिका] बावली, ताल, तलैया, तालाब।

दीच्छा, दीछा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दीक्षा] शिक्षा-दीक्षा, उपदेश, सिखावन।

दीठ, दीठि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दृष्टि] दृष्टि, निगाह, किसी सुन्दर वस्तु पर बुरा असर

डालने वाली नजर। "लगी है दीठ काहू की" [स्फु०]।—**बंदी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० दीठबंद] नजरबंदी, जादू।—**वंत**-(वि०, दे०) [सं० दृष्टिवत] नेत्र वाला। देखने वाला। **मुहा०—उतारना या झाड़ना**—मंत्र से बुरी नजर लगन का प्रभाव मिटाना।—**खा जाना**-बुरी नजर के सम्मुख पड़ जाना।—**पर चढ़ना**-आदरणीय समझा जाना।—**फिरना**-प्रेम अथवा कृपा का भाव न रह जाना।—**मारना**-आँख से इशारा करना।—**मारी जाना**-देखने की शक्ति का न रह जाना।—**लगना**-नजर लगना।—**जलाना**-नजर का प्रभाव मिटाने को राई-नमक या कपड़ा आग में जलाना। देख-भाल, निगरानी। परख, दया या आशा की दृष्टि, विचार।

दीदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दीदः] नेत्र, आँख। **मुहा०—लगना**-जी, मन या चित्त लगना।—(**दे**) **का पानी ढल जाना**-बेशरम या निर्लज्ज हो जाना।—**नवना** (**लचना**)-शर्म खाना। नम्र होना।—(**दे**) **निकालना**-क्रोध भरी आँखों से देखना।—(**दे**) **फाड़ कर देखना**-आँखें फाड़ कर देखना। अनुचित साहस या हिम्मत दिखाना, ढिठाई करना।

दीदार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दर्शन, भेंट।

दीदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पु० दादा] बड़ी बहन।

दीधिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चन्द्र, सूर्य्य की किरण, प्रकाश। अंगुली। "रवि-दीधिति लौं ससि-किरनि, मोंहि बचावति वीर"—मन्ना०।

दीन—(वि०, सं०) कंगाल, दरिद्र, बापुरा (ब्र०) बेचारा, दुखिया, व्याकुल, उदास। नम्र, विनीत।—**दयालु**-(वि०, सं०, यौ०) दीनों पर दया करने वाला। (संज्ञा, पु०) भगवान [**दीन-दयाल** (दे०)]।—**बंधु**-(संज्ञा, पु० सं०) दीनों का सहायक या भाई, परमेश्वर या भगवान्। "जो रहीम दीनहि लखै, दीनबन्धुसम होय"। (**संज्ञा, पु०, अ०**) मत, मार्ग, पंथ, मजहब।—**इलाही**-अकबर द्वारा प्रवर्त्तित एक सम्प्रदाय, जो सफल नहीं हुआ।—**दार**-(वि०) [अ० दीन+दार फ़ा०] धार्मिक, मजहबी। [**दीन-दारी** (संज्ञा, स्त्री०)]—**दुनिया**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, अ०) लोक-परलोक, स्वार्थ-परमार्थ।

दीनता, दीनताई—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कंगाली, दरिद्रता, निर्धनता, विवशता, बेचारगी। नम्रता।

दीनत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दीनता, गरीबी।

दीनानाथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० दीना-नाथ] दीनों का स्वामी या रक्षक। "दीन-बन्धु दीनानाथ मेरी तन हेरिये"—[स्फु०]।

दीनार—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ण-मुद्रा, अशर्फी, मोहर। सोने का एक गहना।

दीपंकर—(संज्ञा, पु०, सं०) भगवान बुद्ध का एक अवतार।

दीप—(संज्ञा, पु०, सं०) दीपक, दिया, चिराग, दीवा (ग्रा०)। एक छंद। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्वीप] द्वीप, टापू। "दीप दीप के भूपति नाना"। "छवि गृह दीप शिखा जनु बरई"—[रामा०]। **कुल**—, वंश को प्रकाशित करने वाला, बड़ा आदमी। "प्रकाशः कुल-दीपकः" —[स्फु०]। एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत और अप्रस्तुत का एक ही धर्म कहा जाये। एक राग (संगी०)। कुमकुम, केसर। (वि०, सं०) उजेला या प्रकाश करने वाला। पाचन-शक्ति बढ़ाने वाला। उत्तेजक, बढ़ाने वाला। [**दीपिका** (स्त्री०)] —**दान**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दीया देना, आरती करना। दिवाली (त्यो०)।—**ध्वज**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिया का झंडा। कज्जल। [**दीपध्वज** (स्त्री०)]—**माला**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) दीपक-समूह।—**मालिका**,—**माली**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) दीपदान। दीपसमूह। दिवाली। "दमकत दिव्य दीपमालिका दिखैहै को"—[ऊ० श०]। "दीपमालिका आज सजाऊँ"—गिरीश।—**शिखा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) दिया या चिराग की लौ या टेम। "छविगृह दीपशिखा जनु बरई"—[रामा०]। [**दीपक** (संज्ञा, पु०, दे०)] —**माला**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) एक वर्णवृत्त, एक अलंकार-माला। दीपक, जिसमें पूर्ववर्ती वस्तुएँ परवर्ती वस्तुओं की उपकारिणी प्रगट की जायँ, दीपक-समूह।—**वृक्ष**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जिस दीवट में कई दीपक रखे जा सकें, झाड़।

दीपकावृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दीपक अलंकार, का एक भेद (आवृत्ति दीपक)। जिसमें एकार्थवाची या भिन्नार्थवाची एक से पद हों।

दीपत, दीपति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दीप्ति] प्रकाश, कांति, प्रभा, शोभा, यश। कीर्ति।

दीपन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाशन । क्षुधावर्द्धन । प्रकाश के लिये दीप जलाना । उत्तेजन । (वि०) आवेग उत्पन्न करने वाला । पाचन-शक्ति को बढ़ाने वाला । (संज्ञा, पु०, सं०) मन्त्र-संस्कार । [**दीपनीय**-(वि०) दीपित, दीप्ति, दीप्य ।]

दीपना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दीपन] प्रकाश करना, प्रकाशित होना, चमकना । (क्रि० स०, दे०) प्रकाशित करना, चमकाना ।

दीपनी, दीपनीया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अजवाइन औषधि । (वि०) उत्तेजिनी, विवर्धिनी, प्रकाशिनी ।

दीपान्वित—(वि० सं०, यौ०) शोभा या प्रकाश-युक्त ।

दीपालोक—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० दीप+आलोक] दिया का प्रकाश । जलता हुआ दीप । "बुझाकर छोटा दीपालोक"—महादेवी ।

दीपावलि, दीपावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) दीपक-समूह, दिवाली, दीपमालिका ।

दीपिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा दीपक । (वि०, स्त्री०, सं०) प्रकाश फैलाने वाली । विवेचनी ।

दीपित—(वि०, सं०) प्रज्वलित, प्रकाशित उत्तेजित ।

दीपोत्सव—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दीवाली, दीपावली ।

दीप्त—(वि०, सं०) प्रकाशित, प्रज्वलित, चमकीला, जलता हुआ, रोशन ।

दीप्तांग—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) मोर, मयूर ।

दीप्तांश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) प्रकाशित अंश, किसी ग्रह का पूर्ण प्रभाव में होने का स्थान (ज्यो०) ।

दीप्ताक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) बिल्ली, बिड़ाल, मार्जार, मोर, मयूर ।

दीप्ताग्नि—(संज्ञा, पु०, सं०) अगस्त्य मुनि । (वि०, सं०, यौ०) तीक्ष्ण जठरानल युक्त, जलती आग ।

दीप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रकाश, उजाला, प्रभा, कांति, छवि, आभा, शोभा, रोशनी ।

दीप्तिमान—(वि०) [सं० दीप्तिमत्] प्रकाशमान, चमकता हुआ, शोभा या कांति-युक्त । [**दीप्तिमत्ता** (स्त्री०)] ।

दीप्तोपल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्य्यकांतमणि, आतशी शीशा ।

दीप्य—(वि०, सं०) जलाने योग्य, प्रकाशनीय ।

दीप्यमान्—(वि०, सं०) प्रकाशमान्, चमकता हुआ, शोभित ।

दीबट—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दीवट] दीवट ।

दीबो†—(संज्ञा, पु०, ब्र०) [हि० देना] देना । "कनदीबो सौंप्यौ ससुर"—बिहारी ।

दीमक—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बल्मीक, दिवाँर, डीमक, दिमाँर (ग्रा०) ।

दीयमान—(वि०) [सं० दीयमत] जो दिया जाता है, दान देने की वस्तु ।

दीया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दीपक] दिया, दीपक, चिराग । "मैं कह दीया उसका नाम"—खुसरो ।—**सलाई**-(संज्ञा, स्त्री०) आग जलाने के लिए छोटी-छोटी लकड़ियों पर एक द्रव्य लगा रहता है, जो रगड़ से जल जाता है । वह छोटी डिब्बी जिसमें सलाइयाँ रहती हैं । **मुहा०**—**ठंढा करना**—दीया बुझाना । (**किसी के घरका**)—**ठंढा होना**—किसी के मरने से कुटुम्ब या परिवार का आगे न चल सकना, वंश डूबना ।—**बढ़ाना**-दीया बुझाना ।—**बत्ती करना**-दीया जलाने का प्रबन्ध करना, दीया जलाना ।—**लेकर ढूँढ़ना**-बड़ी छान-बीन से खोजना । (स्त्री० अल्पा०) दिवली, दियली, दियाली, छोटा दिया ।

दीरघ⊛—(वि०, दे०) [सं० दीर्घ] दीर्घ, बड़ा । "दीरघ साँस न लेइ दुख", "दीरघ दाव निदाघ" —बिहारी ।

दीर्घ—(वि० सं०) बड़ा, लम्बा (संज्ञा, पु० सं०) द्विमात्रिक वर्ण, गुरु अक्षर [(विलो०) **ह्रस्व लघु**] ।—**काय**-(वि०, सं०, यौ०) बड़े डील-डौल वाला, लम्बा-तड़ंगा ।—**काल**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) चिरकाल, बहुत समय, दीर्घ समय ।—**केश**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) भालू । (वि०) लम्बे बालों वाला ।—**ग्रीव**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ऊष्ट्र, ऊँट । (वि०, सं०) लम्बी गर्दन वाला ।—**जंघा**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सारस पक्षी । ऊँट । बगुला पक्षी ।—**जिह्वा**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) साँप, सर्प । (स्त्री०, सं०) राजा विरोचन की कन्या । "सुता विरोचन की हती दीरघजिह्वा नाम"—[रामा०] ।—**जीवन**-(संज्ञा, पु०) अधिक काल तक शारीरिक शक्ति का होना ।—**जीवित**-(क्रि० वि०, सं०) चिरायु, बहुत दिनों तक जीने वाला ।—**जीवी**-(वि०, यौ०) [सं० दीर्घजीविन्] चिरजीवी, बहुत समय या काल या दिनों तक जीने वाला । (संज्ञा,

पु०) व्यास । अश्वत्थामा । बलि । हनुमान । विभीषण ।—तमा-(संज्ञा, पु०, सं०) गुरु-शाप से अंधत्व को प्राप्त उतथ्य के पुत्र, जिन्होंने स्त्रियों का दूसरा ब्याह रोक दिया ।—तरु-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ताड़ या खजूर का वृक्ष ।—दंड-(संज्ञा, पु०, सं०) एरंडवृक्ष, रेंडी का पेड़ ।—दर्शिता-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूरदर्शिता ।—दर्शी-(वि०) [सं० दूर-दर्शिन्] दूरदर्शी, दूर की सोचने वाला, अग्रसोची । गृध्र ।—दृष्टि-(वि०, सं०) दूरदर्शी, दीर्घदर्शी । (संज्ञा, पु०, सं०) बहुत ज्ञानी, गृध्र या गीध पक्षी । —नाद-(संज्ञा, पु०, सं०) शंख ।—निद्रा-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मौत, मृत्यु ।—निःश्वास-(संज्ञा, पु०, सं०) दुख की अधिकता से लम्बी-लम्बी साँस । —पत्रक-(संज्ञा, पु०, सं०) लहसुन ।—पुष्पक-(संज्ञा, पु०, सं०) मदार, आक ।—पृष्ठ-(संज्ञा, पु०, सं०) साँप, सर्प ।—बाहु-(वि०, सं०) जिसके हाथ बड़े हों ।—मूल-(संज्ञा, पु०, सं०) सरवन, शालपर्णी (औषधि), जवासा । मोरटलता, लाय-ज्जक ।—मूलक-(संज्ञा, पु०, सं०) विधारा (औष०) ।—रद-(संज्ञा, पु०, सं०) शूकर, बाराह, दीर्घदंत ।—लोचन-(वि०, सं०) बड़ी-बड़ी आँखों या नेत्रों वाला ।—लोमा-(संज्ञा, पु०, सं०) रीछ, भालू ।—वंश-(संज्ञा, पु०, सं०) नल । तृण । खस । (वि०) बड़े वंश वाला ।—वक्त्र-(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी । (वि०) दीर्घ मुँह वाला । —वर्ण-(संज्ञा, पु०, सं०) द्विमात्रिक वर्ण ।—श्रुत-(वि०, सं०) जो दूर तक सुन पड़े, दूर तक विख्यात ।—सक्थि-(संज्ञा, पु०, सं०) गाड़ी, रथ । —सत्र-(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञविशेष ।—सन्धानी -(वि०, सं०) दूरदर्शी, ज्ञानी ।—सूत्र-(वि०, सं०) प्रत्येक कार्य में विलम्ब करने वाला, आलसी ।—सूत्रता-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रत्येक कार्य में देरी करने का स्वभाव ।—सूत्री-(वि०) [सं० दीर्घ-सूत्री] बड़ी देर करने वाला, आलसी ।—स्वन-(वि०, सं०) बड़े भारी शब्द वाला, दीर्घरव ।—स्वर-(संज्ञा, पु०, सं०) द्विमात्रिक स्वर । (संज्ञा, वि०, पु०, सं०) ऊँचे स्वर वाला ।

दीर्घाकार—(संज्ञा, सं०, यौ०) बड़े डील-डौल का, दीर्घकाय, बृहत्काय ।

दीर्घाध्व—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) लम्बी राह, बड़ा मार्ग ।

दीर्घायु—(वि०, सं०, यौ०) चिरजीवी, दीर्घजीवी ।

दीर्घिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बावली, जलाशय ।

दीवट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दीपस्थ] दीपका-धार, चिरागदान, दियट ।

दीवा†—(संज्ञा, पु०, वि०) [सं० दीपक] दीया, दिया, दीपक ।

दीवान—(संज्ञा, पु०, अ०) राज-सभा, कचहरी । मंत्री, प्रधान, वजीर । गजलों का संग्रह ।—आम (संज्ञा, पु०, अ०) सामान्य सभा ।—खाना-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बैठक, सभा भवन ।—खास-(संज्ञा, पु०, अ०) मुख्य सभा ।

दीवाना—(वि०, फ़ा०) पागल, सिड़ी [दीवानी, दिवानी (स्त्री०)] ।—पन-(संज्ञा, पु०) [फ़ा० दीवाना + पन प्रत्य०] पागलपन, सिड़ी-पन ।

दीवानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) दीवान का पद । वह कचहरी जहाँ धन के मामले निपटाये जाते है । "दीवानी करती दीवानी"—मैथिली० ।

दीवार—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) भीत, भित्ति, दीवाल, [दिवाल (दे०)] ।—गीर-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दीपा-धार जो दीवाल में लगाया जाता है । दीवाल पर लगाने का लैम्प ।

दीवाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दीवार] दीवार, भीति, भित्ति ।

दीवाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दीपावाली] कार्तिक की अमावस्या, दियाली, दिवारी ।

दीसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दृश = देखना] दृष्टि पड़ना, दिखाई देना ।

दीह*—(वि०, दे०) [सं० दीर्घ] बड़ा, लम्बा । "दीह दीह दिग्गज के केशव कुमार मनौ" —[रामा०] ।

दुंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्वन्द्व] झगड़ा, उत्पात, युद्ध, उपद्रव । जोड़ा, दो । (संज्ञा, पु०) [सं० दुंदुभि] नगाड़ा ।

दुंदुभि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डंका, नगाड़ा । "दुंदुभि-अस्थि-ताल दिखराये"—[रामा०] ।

दुंदुभी—(संज्ञा, पु०, सं०) वरुण । एक राक्षस जिसे बालि ने मारा था । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) नगाड़ा ।

दुंदुह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डुंडुभ] पनिहा साँप ।

दुंबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दुम्बालः] बड़ी पूँछ का भेंड़ा ।

दुः—(अव्य०, सं०) बुरा । निन्दा, बुराई । कठिनता का द्योतक, जैसे—दुष्कर, दुर्गम ।

दुःकंत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुष्यन्त] अयोध्या के एक राजा । बुरा स्वामी या पति ।

दुःख—(संज्ञा, पु०, सं०) कष्ट, क्लेश, आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक—ये दुःख के तीन भेद हैं । "अथ त्रिविधि-दुःखात्यन्त निवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः" (सांख्य०) । [दुख (दे०)] । विपत्ति, आपत्ति, संकट, पीड़ा, व्याधि, दर्द । —द,—दाता-(वि०) [सं० दुःखदातृ] कष्ट या दुःख पहुँचाने वाला [दुखद, दुखदाता (दे०)] ।—दायक-(वि०, सं०) कष्ट या दुःख पहुचाने या देने वाला । [दुःखदायिका (स्त्री०)] ।—दायी-(वि०) [सं० दुःखदायिन्] दुःखदायक, दुःख देने वाला । [दुःखदायिनी (स्त्री०)] ।—प्रद-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दुःख देने वाला ।—मय-(वि०, सं०) दुःख से भरा हुआ । मुहा०—उठाना, (पाना, भोगना)-कष्ट सहना ।—देना या पहुँचाना-कष्ट पहुँचाना ।—बटाना-सहानुभूति प्रगट करना या बुरे समय मे साथ देना ।—भरना-बुरा समय काटना ।

दुःखांत—(वि०, दे०, यौ०) जिसके अंत में दुःख का वर्णन हो । (संज्ञा, पु०, सं०) दुःख का जहाँ अन्त हो, क्लेश की समाप्ति, दुःख का अन्त, दुःख की अन्तिम सीमा ।—नाटक-(संज्ञा, पु०) वह नाटक जिसका अंत दुखःपूर्ण हो ।

दुःखित—(वि०, सं०) पीड़ित, क्लेशित । [दुःखिता (स्त्री०)] ।

दुःखिनी—(वि०, स्त्री०, सं०) दुखिया ।

दुःखी—(वि०) [सं० दुःखिन्] क्लेशयुक्त, दुखप्राप्त, दुखी ।

दुःशाला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्योधन की बहिन, जो जयद्रथ को ब्याही थी ।

दुःशासन—(वि०, सं०) जिस पर शासन करना कठिन हो । (संज्ञा, पु०, सं०) दुर्योधन का छोटा भाई ।

दुःशील—(वि०, सं०) बुरे स्वभाव वाला ।

दुःशीलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुष्टता ।

दुःसंग—(संज्ञा, पु०, सं०) कुसंगति, बुरा साथ ।

दुःसंधान—(संज्ञा, पु०, सं०) काव्य का एक रसांग ।

दुःसह—(वि०, सं०) जो कठिनता से सहा जा सके ।

दुःसाध्य—(वि०, सं०) जो कठिनता से सिद्ध हो ।

दुःसाहस—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा या अनुचित साहस, धृष्टता, ढिठाई ।

दुःसाहसी—(वि०, सं०) बुरा या अनुचित साहस करने वाला ।

दुःस्वप्न—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा स्वप्न या सपना ।

दुःस्वभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरी आदत या टव । बदमिजाजी । (वि०, सं०) बुरे स्वभाव वाला ।

दु—(वि०, दे०) [हि० दो] दो का संक्षिप्त रूप है ।—आब,—आबा-(संज्ञा, पु०, सं०) दो नदियों के मध्य का देश, द्वाब, द्वाबा ।—खंडा-(वि०, दे०, यौ०) [हि० दो+खंड] दो मंजिला, दो खण्डों या भागों का ।—गड़ा-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दो+गड़ा=गढ़ा] दुनाली बंदूक, दोहरी गोली ।—गुन,—गुना (दुगना)-(वि०, दे०, यौ०) [सं० द्विगुण] दूना, दोगुना ।—गुनाना-(क्रि० स०, दे०) दो परत या तह करना । दुगुना करना ।—घड़िया-(वि०, दे०) [हि० दो+घड़ी] द्विघटिका (सं०), दो घड़ी का [दुघरिया (दे०)] ।—०मुहूर्त्त-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० द्विघटिका+मुहूर्त्त] द्विघटिका मुहूर्त्त ।—घरी†-(संज्ञा, स्त्री०, दे०)[हि० दो+घड़ी] द्विघटिका, दो घड़ी ।—चंद-(वि०, दे०) [फ़ा० दो चंद] दूना, दुगुना । "चंद सों दुचंद है अमंद मुखचंद एक" —रसाल ।—चित*-(वि०, दे०) [हि० दो+चित्त] चिंतित, चिंता-युक्त, जिसका मन एकाग्र न हो ।—चितई,—चिताई*†-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दुचित] दुविधा, चिन्ता, आशंका, फिक्रमंदी ।—चित्ता-(वि०, दे०, यौ०) [हि० दो+चित्त] जिसका चित्त एकाग्र न हो, दुविधा में पड़ा, चिन्तित । [दुचित्ती (स्त्री०)] ।—ज*-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विज] द्विज, द्विजन्मा, क्षत्री, वैश्य, पक्षी, अंडे से उत्पन्न जीव ।—जन्मा*-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० द्विजन्मा] द्विजन्मा, द्विज, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, अंडज, जीव ब्रह्म । "संस्कारात द्विजोद्भवः"—[स्फु०] ।—०पति*-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० द्विजपति] द्विजपति, द्विजराज, चन्द्रमा, द्विजेश ।—०राज*-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० द्विजराज] द्विजपति, द्विजराज,

चन्द्रमा । "एरे मतिमंद चंद आवति ना तोहि लाज, नाम दुजराज काम करत कसाई को" —पद्मा० ।—**जानू**–(क्रि० वि०, दे०) [हि० दो+फा० जानू] दोनों घुटनों के बल बैठा हुआ ।—**जीह***–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० द्विजिह्वा] दो जीभों वाला सांप, आदि विविध कोड़े । (वि०) सत्यासत्य कहने वाला ।—**टूक**–(वि०, दे०, यौ०) [हि० दो+टूक] भिन्न-भिन्न, दो खंड, समान दो भाग ।—**०बात**–संक्षिप्त, स्पष्ट या खरी बात, सच्ची बात, जिसमें घुमाव और फेरफार न हो ।—**तर्फा**–(वि०, दे०, यौ०) [दे० दो+अ० तरफ] दोनों तरफों का, जो दोनों ओर हो । [**दुतर्फी** (स्त्री०)] ।—**तारा**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० दो+तार] दो तारों का बाजा ।—**दामी**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० दो+दाम] मालवा का एक सूती कपड़ा ।—**दिला**–(वि०, दे०, यौ०) [हि० दो+फ़ा० दिल] दुचित्ता, चिंतित, व्याकुल ।—**धारा**–(वि०, दे०, यौ०) [हि० दो+धार] दो धार वाला अस्त्र, तलवार आदि । "लिन्हे दुधारा दक्खिन वाला चिरवाँ दुइ आँगुर की धार" —[आल्हा०] ।—**धारी**–(वि०, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० दूध+आरी प्रत्य०] दूध देने वाली । (वि०, स्त्री०) [हि० दो+धार] की तलवार आदि ।—**नाली**–(वि०, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० दो+नाली] दो नालों वाली, जैसे—दोनाली बंदूक ।—**पटा***†–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० दो+पाट] दो पाटों से बना चदरा, दुपटा, दुपट्टा (ग्रा०) । [**दुपटी** (स्त्री० अल्पा०)] । "धोती फटी सी लटी दुपटी"—नरो० ।—**पट्टा**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० दो+पाट] दो पाटों से बना चादर । कन्धे पर डालने का कपड़ा । [**दुपट्टी** (स्त्री०)] । **मुहा०—०तान के सोना**–बेखटके हो सोना ।—**पहर**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दोपहर] मध्याह्न, [**दुपहरी, दोपहर** (दे०)] ।—**पहरिया**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दोपहर] दोपहार, दोपहर का वक्त । फूल का एक पौधा ।—**पहरी**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दोपहर] दोपहर, मध्याह्न ।—**फसली**–(वि० दे०, यौ०) [हि० दो+फसल अ०] दोनों फसलों (रबी और खरीफ) की वस्तु । दोनों फसलों के अन्न उत्पन्न होने की भूमि । **मुहा०—०में पड़ना**–दुविधा में पड़ना । (वि०, स्त्री०) अनिश्चित या दुविधापूर्ण ।

दुअन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुर्मनम्] दुष्ट, खल, वैरी । दैत्य । (वि०, दे०) दोनों, दुहुन, दुहुँ (ग्रा०) ।

दुआ—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) विनती, प्रार्थना, याचना । **मुहा०—माँगना**–प्रार्थना करना, असीस, आशीर्वाद चाहना ।—**देना**–शुभाशीष देना ।—**लगना**–असीस फलना, आशीष का फलीभूत होना ।

दुआदस*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० द्वादश] बारह । [**दुआदसी**–(स्त्री०) द्वादशी] ।

दुआर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्वार] द्वार, दरवाजा ।

दुआरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० दुआर] छोटा द्वार, छोटा दरवाजा । (वि०, यौ०) द्वारवाली । जैसे—बारह दुआरी ।

दुआल—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चमड़ा, रकाब, तसमा ।

दुआला—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० दुआल=तसमा] खराद घुमाने वाला चमड़े का तसमा ।

दुइ, दुई†—(वि०, दे०) [हि० दो] दो । "दुइ के चारि माँगि किन लेहू"—[रामा०] !

दुइज†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्वितीय] द्वितीया, द्वीज, दूज (ग्रा०) । (संज्ञा, पु०) [सं० द्विज] द्वितोया का चन्द्रमा, दूज का चाँद ।

दुऊ, दोऊ*—(वि०, दे०) [हि० दोनों] दोनों ।

दुकड़ा, दुकरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विक+ड़ा प्रत्य०] एक साथ दो, जोड़ा, युग्म, छदाम । [**दुकड़ी, दुकरी** (स्त्री०)] ।

दुकड़ी, दुकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दो दो बाधों से चारपाई की बुनावट । दो बूटियों वाला ताश, दुक्की । दो घोड़े जुती बग्घी । जोड़ी । दो का पाँसा, युग्म ।

दुकान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० अ० दुकान] हट्ट, हटिया, हट्टी । **मुहा०—उठना, उठाना**–दुकान बन्द होना या तोड़ना ।—**बढ़ाना**–दुकान बन्द करना ।—**लगाना**–दुकान की सब वस्तुएँ ठीक-ठीक अपनी-अपनी जगह पर रखना, वस्तुएँ फैलाना ।—**दार**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सौदा बेचने वाला । ढोंगी, [दुकन्दार (दे०)] ।—**दारी**–(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) दुकान पर माल बेंचने का काम । ढोंग या पाखण्ड से रुपया कमाने का कार्य्य । [दुकन्दारी (दे०)] ।

दुकाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुष्काल] अकाल, दुर्भिक्ष, सूखा।

दुकूल—(संज्ञा, पु०, सं०) धोती आदि वस्त्र। क्षौम या रेशमी कपड़ा। महीन वस्त्र। नदी के दोनों किनारे। माता-पिता के वंश।

दुकेला—(वि०, दे०) [दुक्का+एला प्रत्य०] जो दो हों, एक न हो। **अकेला—**, एक या दो पुरुष। [**अकेले-दुकेले** (क्रि० वि०)]।

दुकेले—(क्रि० वि०, दे०) [हि० दुकेला] दूसरे पुरुष को साथ लिये हुए। "मिलोगे कहीं तो अकेले-दुकेले"।

दुकड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दो+कूँड] शहनाई के साथ बजाया जाने वाला एक बाजा, जो तबले-सा होता है, नगड़िया। साथ जुड़ी दो नावें।

दुक्का—(वि०, दे०) [सं० द्विक्] जोड़ा, एक साथ दो। दो बूटियों का ताश। [**दुक्की** (स्त्री०)]। [**इक्का-दुक्का, इक्के-दुक्के**-(यौ०) अकेला-दुकेला]।

दुक्की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दुक्का] दो बूटियों वाला ताश का पत्ता।

दुखंत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुष्यन्त] राजा दुष्यन्त।

दुख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुःख] कष्ट, पीड़ा। रंज, शोक।—**द**-(वि०) [सं० दुःख+द] दुख देने वाला, दुखदायी।—**दाई,—दानि***-(वि०, दे०) [सं० दुःख+दातृ] दुखदायी, दुख देने वाला। —**दुंद***-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० दुःख-द्वंद्व] दो प्रकार के दुख, दुख और विपत्ति।

दुखड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दुख+ड़ा प्रत्य०] कष्ट, विपत्ति, कष्ट या शोक का वृत्तांत या कथन। "दुखड़ा कासों कहीं मोरी सजनी"—[स्फु०]। [दुखना (दे०)]। **मुहा०** (**अपना**)—**रोना**-अपने दुख का वृत्तांत कहना।

दुखना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दुःख] दर्द करना, पीड़ित होना।

दुखवना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० दुखाना] दुखाना।

दुखहाया—(वि०, दे०) [सं० दुःखित] दुखित, शोकित।

दुखाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दुःख] कष्ट या पीड़ा देना, दुखी करना, व्यथित करना। **मुहा०** (**दिल**) **जी—**, मन दुखी करना। पके घाव को छूकर पीड़ा पैदा करना।

दुखारा, दुखारी*—(वि०, दे०) [हि० दुख+आर प्रत्य०] दुखी, पीड़ित, शोकाकुल, [दुखारी (दे०)]। "सो मुनि रावन भयो दुखारी।" "फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी"—[रामा०]।

दुखित*—(वि०, दे०) [सं० दुःखित] क्लेशित, पीड़ित, शोकित। [**दुखिता** (स्त्री०)]।

दुखिया—(वि०, दे०) [हि० दुख+इया प्रत्य०] दुखी, क्लेशयुक्त, पीड़ित। "इन दुखिया अँखियान कौं"—बिहारी।

दुखियारा—(वि०, दे०) [हि० दुख+इया+आरा प्रत्य०] दुखिया, दुखी, रोगी। [**दुखियारी** (स्त्री०)]।

दुखी—(वि०, दे०) [सं० दुःखित, दुःखी] दुख-युक्त, शोकाकुल, पीड़ित, बीमार। "परम दुखी भा पवन-सुत देखि जानकी दीन।"

दुखीला†—(वि०, दे०) [हि० दुख+ईला प्रत्य०] दुखपूर्ण, दुखी।

दुखौहाँ*—(वि०, दे०) [हि० दुख+औहाँ प्रत्य०] दुखद, दुखदायी। [**दुखौहीं** (स्त्री०)]।

दुगई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बरामदा, चौपार (प्रान्ती०)।

दुगदुगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० धुक-धुक] धुक-धुकी, गले का एक गहना।

दुगासरा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० दुर्ग+आश्रय] किसी किले या दुर्ग के पास या चारों ओर बसा गाँव।

दुग्ग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुर्ग] किला, कोट। "दक्खिन के सब दुग्ग जित"—भूषण।

दुग्ध—(वि०, सं०) दुहा हुआ। (संज्ञा, दे०, सं०) दूध, दूधू (ग्रा०)।

दुग्धवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूध देने वाली गाय।

दुग्धिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुधिया, दुद्धी घास।

दुग्धिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कद्दू या कड़वी तुंबी।

दुग्धी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुधिया घास, दुद्धी (ग्रा०)। (वि०) [सं० दुग्धिन्] दूध वाला, जिस वस्तु में दूध हो।

दुजेश—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०)[सं० द्विजेश] द्विजेश, द्विजराज, द्विजपति, द्विजनाथ, द्विजस्वामी, चन्द्रमा।

दुत—(अव्य, अनु०) अपमान, घृणा। तिरस्कार-सूचक शब्द, चल, दूर हो या दूर जा, हट।

दुतकार—(संज्ञा, दे०) [अनु० दुत+कार] अपमान, तिरस्कार, फटकार, धिक्कार ।

दुतकारना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० दुतकार] किसी को अनादर के साथ दुत-दुत कह कर पास से हटाना, अपमान से भगाना, धिक्कारना, फटकारना ।

दुति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्युति] द्युति, चमक, दीप्ति, शोभा, छवि । किरण ।

दुतिमान*—(वि० दे०) [सं० द्युतिमान्] द्युतिमान्, दीप्ति या प्रकाश-युक्त, सुन्दर किरण-युक्त ।

दुतिय*—(वि०, दे०) [सं० द्वितीय] दूसरा ।

दुतिया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्वितीया] द्वितीया, दूज, दुइज ।

दुतिवंत*—(वि०, दे०) [हिं० दुति+वंत प्रत्य०] दीप्तिमान्, चमकीला, सुन्दर ।

दुतीय*—(वि० दे०) [सं० द्वितीय] दूसरा, द्वितीय ।

दुतीया*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्वितीया] द्वितीया, दूज तिथि ।

दुदल—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० द्विदल] दाल । करनफूल । वरना पेड़ ।

दुदलाना†—(क्रि० स०) [हिं० दुतकारना] दुतकारना, तिरस्कार या अपमान करना, धिक्कारना ।

दुद्धी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दुग्धी] दुधिया घास, दूधी ।

दुधमुख*†—(वि०, दे०, यौ०) [हिं० दूध+मुख, सं० दुग्धमुख] दुधमुहाँ, दूध पीता बच्चा ।

दुधमुहाँ—(वि०, दे०, यौ०) [सं० दुग्धमुख] दुग्धमुख, दुधमुख, दूध पीता बच्चा ।

दुधहाँड़ी, दुधाँड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० दुग्धहांडका, हिं० दूध+हाँड़ी] दूध रखने का मिट्टी का बरतन, दुधहँड़ी (ग्रा०) ।

दुधार—(वि०, दे०) [सं० दुग्धधारिणी] बहुत दूध देने वाली गाय आदि, दुधारू (ग्रा०) । (संज्ञा, स्त्री०, वि०, दे०, यौ०) दुधारा, जिसमें दो धारें हों, तलवार आदि ।

दुधारू†—(वि०, दे०, यौ०) [सं० दुग्धधारिणी] बहुत दूध देने वाली गाय । "लात खाय पुचकारिए, होय दुधारू धेनु"—वृं० ।

दुधिया—(वि०, दे०) [हिं० दूध+इया प्रत्य०] जिसमें दूध मिला हो, दूधयुक्त, दूध के रंग का, सफेद । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दुग्धिका, हिं० दुधिया] दूधी घास, चरी । खड़िया मिट्टी । एक विष ।—**पत्थर**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० दुधिया+पत्थर] गौरा पत्थर ।—**विष**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० दुधिया+विष] तेलिया विष, मीठा जहर, सिंगिया विष, इसके पेड़ काश्मीर में हैं ।

दुधैल—(वि०, दे०) [हिं० दूध+ऐल प्रत्य०] दुधार, दुधारू ।

दुनवना†*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० दो+नवना] झुककर दोहरा हो जाना । (क्रि० स०) मोड़ कर दोहरा करना ।

दुनिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० दुनिया] जगत, संसार, जहान । [**दीनदुनिया**-(यौ०) लोक-परलोक] ।—**दार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गृहस्थ, लौकिक झगड़ों में फँसा हुआ । प्रपंच या ढोंग से कार्य्य सिद्ध करने वाला, व्यावहारिक बातों में प्रवीण ।—**दारी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) दुनिया के काम काज, गृहस्थी का जंजाल । स्वार्थसाधन, बनावटी कार्य्य, लौकिक व्यवहार ।—**साज**-(वि०, फ़ा०) प्रपंच से कार्य्य सिद्ध करने वाला, चापलूस, स्वार्थ-साधक । [**दुनियासाजी** (संज्ञा, स्त्री०)] । **मुहा०—के परदे पर**-सारे जहान या संसार में । **—की हवा लगना**-जानकारी प्राप्त करना ।**—देखना**-लौकिक बातों का ज्ञान या अनुभव होना । **—भर का**-बहुत ज्यादा, सब से अधिक । संसार के लोग, जनता । जगत का जंजाल या बखेड़ा, प्रपंच ।

दुनियाई—(वि०, दे०) [अ० दुनिया+ई प्रत्य०] लौकिक, सांसारिक । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) जगत, संसार ।

दुनियावी—(वि०, फ़ा०) संसार-सम्बन्धी, लौकिक । व्यावहारिक ।

दुनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० दुनिया] जगत, संसार । "द्वार मैं दिसान मैं दुनी मैं देस-देसन मैं"—पद्मा० ।

दुबकना—(क्रि० अ०, दे०) छिपना, लुकना ।

दुबधा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्विविधा] दो बातों में मन का अनिश्चय, दोहरी बात, सन्देह, संशय, असमंजस, चिंता [दुविधा (दे०)] ।

दुबरा†—(वि०, दे०) [सं० दुर्बल] पतला, दुबला । [**दुबरी, दूबरी, दुबली** (स्त्री०)] । दूबर ।

दुबराना†*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० दुबरा+ना प्रत्य०] दुबला या पतला होना ।

दुबला—(वि०, दे०) [सं० दुर्बल] पतला, दुर्बल। [**दुबली** (स्त्री०)]।

दुबलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दुबला] दुबलापन, दुर्बलता, दुबराई।

दुबलापन—(संज्ञा, पु०) [हिं० दुबला+पन] कृशता, दुर्बलता।

दुबारा—(क्रि० वि०, दे०) [फ़ा० दोबारा] दूसरी बार, दूसरी दफा, दोहरा कर [दुबाला (दे०)]।

दुबिद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विविद] एक बंदर, "लंकाया उत्तरे शिखरे द्विविदो नाम वानरः"। "कहँ नल, नील, दुबिद बलवन्ता"—[रामा०]।

दुबिध, दुबिधा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० दुविधा] सन्देह, संशय, आगा-पीछा, चिन्ता, खटका, अनिश्चय।

दुबे—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विवेदी] द्विवेदी, ब्राह्मणों का एक जाति।

दुम—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पूँछ, लांगूल। पीछे लगी वस्तु, पीछे लगा पुरुष, पिछलगा। किसी कार्य्य का अंतिम अंश, उपाधि (व्यंग्य)। **मुहा०—दबा कर भागना**-डर कर कुत्ते की भाँति भागना। **—हिलाना**—पूँछ हिला कर खुशी जाहिर करना (कुत्ते का काम)।

दुमची—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) वह तसमा जो घोड़े की पूँछ के तले दबा रहता है।

दुमदार—(वि०, फ़ा०) पूँछ वाला। उपाधियुक्त (व्यंग)।

दुमाता—(वि०, दे०, यौ०) [सं० दुर्मातृ] बुरी माँ, सौतेली माँ।

दुरंत—(वि०, सं०) कठिन, दुस्तर, दुर्गम, भयंकर, घोर, प्रचंड, जिसका अंत बुरा हो, अशुभ, दुष्ट। "धरे शृंखला दुःख राहै दुरंतै"—[रामा०]। "पर दुरंत नराधिप कंस ने"—हरिऔध।

दुरंतक*—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव।

दुर्—(अव्य० या उप०, सं०) विषाद अथवा विपत्ति, निषेध, सदोषता, निंदा आदि का सूचक हो कर यह शब्दों के आरम्भ में लगता है। जैसे दुर्दमनीय, दुर्बुद्धि आदि।

दुर—(अव्य० या उप०) [हिं० दूर] अपमान के साथ किसी के हटाने का शब्द, दूर हो, दूर जा। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) मौक्तिक, मुक्ता, मोती। **मुहा०—दुर करना**—अनादर से हटाना, कुत्ते के समान भगाना।

दुरजन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुर्जन] दुष्ट, खल, शत्रु। [**दुरजनता*** (संज्ञा, स्त्री०)]। "सुख सज्जन के मिलन को, दुरजन मिले जनाय।"—वृं०।

दुरजोधन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुर्योधन] धृतराष्ट्र का सब से बड़ा पुत्र। "कछु जानत जल-थम्भ-बिधि, दुरजोधन लौं लाल"—वि०।

दुरतिक्रम—(वि०, सं०) जिसका अतिक्रमण या उल्लंघन न हो सके, जिसको पार करना कठिन हो, अपार।

दुरथल—(संज्ञा, पु०) [सं० दुरस्थल] गंदी और बुरी जगह। "दुरथल जैये भागि वह"—रहीम।

दुरद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विरद] हाथी।

दुरदाम*—(वि०, दे०) [सं० दुर्दम] जो कष्टसाध्य हो।

दुरदाल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विरद] हाथी।

दुरदिन—(संज्ञा, पु०) [सं० दुर्दिन] बुरा समय, बुरा वक्त। "दुरदिन परे रहीम कर"—रहीम।

दुरदुराना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० दुरदुर] अनादर के साथ हटाना या दूर करना। कुत्ते को भगाना।

दुरधीत—(संज्ञा, पु०, सं०) सस्वर वेद पाठ लेकिन अशुद्ध उच्चारण के साथ।

दुरना†*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० दूर] छिपना, लुकना। "दौरि दुरे हम संग दोऊ"—मति०।

दुरन्वय—(वि०, सं०) दुष्प्राप्य, जिसका अनुगमन करना कठिन हो।

दुरपदी†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्रौपदी] द्रौपदी।

दुरपवाद—(संज्ञा, पु०, सं०) निंदा, कुत्सा, लांछन का आरोप।

दुरबल—(वि०, दे०) [सं० दुर्बल] कमजोर, निर्बल।

दुरबार—(वि०, दे०) [सं० दुर्वार] अटल।

दुरभिग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) चिचड़ा, अपामार्ग। (वि०) जो काफी दिक्कत से काबू में आ सके या पकड़ा जा सके।

दुरभिसंधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) बुरे भाव से मेल या एका करना। "दुरभिसंधि नृशस नृपाल की"—हरिऔध।

दुरभेव†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुर्भाव या दुर्भेद] बुरा अभिप्राय या भाव, मनोमालिन्य, मन-मोटाव।

दुरमुख—(वि०, दे०) [सं० दुर्मुख] कटुवादी।

दुरमुट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुर+मुट= कुटना] दुरमुट, जिससे कंकड़ की सड़क कूटी जाती है ।

दुरमुस—(संज्ञा, पु०) सड़क पीटने का एक औजार ।

दुरलभ—(वि०, दे०) [सं० दुर्लभ] अलभ्य, दुष्प्राप्य ।

दुरग्रह—(वि०, सं०) जिसे रोकना या वश में करना कठिन हो ।

दुरवस्था—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी अवस्था या दशा, दुख-दरिद्रता की दशा, हीनावस्था ।

दुरवेश—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० दरवेश] फकीर, साधु, मँगता, दरवेश ।

दुराउ, दुराव†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दूर] छिपाव, लुकाव, भेद, बिलगाव । "तुम सन कौन दुराउ"—[रामा०]।

दुराकृति—(वि०, सं०) बदशकल, बदसूरत ।

दुराक्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) छलपूर्वक आक्रमण । स्थान-विशेष जहाँ पहुँचना कठिन हो ।

दुरागमन—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० द्विरागमन] गौना ।

दुराग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) हठ, बुरी हठ या जिद, अपना पक्ष असिद्ध होने पर भी उसी पर डटे रहना । [**दुराग्रही** (वि०)] ।

दुराचरण—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा चाल-चलन या व्यवहार ।

दुराचार—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा आचरण या चाल-चलन । [**दुराचारी** (वि०)], [**दुराचारिणी** (स्त्री०)] ।

दुराज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुर+राज्य] बुरा राज्य । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दो+राज्य] दो राजों का राज्य । "दुसह दुराज प्रजान को, क्यों न बढ़ै दुख-दंद"—वि० ।

दुराजी—(वि०, दे०) [सं० द्विराज] दो राजाओं का ।

दुरात्मा—(वि०) [सं० दुरात्मन्] दुष्टात्मा, बुरा या खोटा मनुष्य ।

दुरादुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०,यौ०) [हि० दुराना= छिपाना] छिपाव, लुकाव, गोपन । **मुहा०—करके**-छिपे-छिपे ।

दुराधन—(संज्ञा, पु०, सं०) धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

दुराधर्ष—(वि०, सं०) प्रचंड, प्रबल, जिसका दमन कठिन हो, दुर्धर्ष ।

दुराना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० दूर] दूर होना, छिपना, लुकना । (क्रि० स०, दे०) दूर करना, छिपाना, लुकाना ।

दुराराध्य—(वि०, सं०) जिसे प्रसन्न करना या आराधन कठिन हो । "दुराराध्य पै अहहिं महेशू" ।

दुरारुह—(संज्ञा, पु०, सं०) बेल, खजूर, नारियल ।

दुरालभ—(वि०, सं०) जिसे प्राप्त करना कठिन हो ।

दुरालभा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) जवासा, धमासा, कपास । "दुरालाभा कषायस्य सक्रुष्णस्य निषेवणात्"—लो० वै० ।

दुरालाप—(संज्ञा, पु०, सं०) गाली, दुर्वचन ।

दुराव—(संज्ञा, पु०) [हि० दुराना] छिपाव, छल, भेद-भाव ।

दुराशय—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा मतलब, दुष्ट आशय, बुरी नियत । (वि०) खोटा, बुरा ।

दुराशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्यर्थ की आशा ।

दुरासा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दुराशा] बुरी आशा ।

दुरित—(संज्ञा, पु०, सं०) पाप, छोटा पाप, (वि०) पापी, अघी, पातकी ।

दुरिष्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) मोहन, मारण, उच्चाटन ।

दुरियाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दूर] दुतकारना, दूर हटाना ।

दुरुक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) गाली, शाप । दुर्वचन ।

दुरुक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) दुबारा कहना, पुनरुक्ति, द्विरुक्ति ।

दुरुखा—(वि०) [हि० दो+रुख फ़ा०] दो मुख वाला, दोनों तरफ वाला ।

दुरुपयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी पदार्थ का अनुचित व्यवहार ।

दुरुस्त—(वि०, फ़ा०) ठीक, सत्य, उचित ।

दुरुस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सुधार, संशोधन ।

दुरुत्तर—(वि०, सं०) दुरतिक्रम । निरुत्तर ।

दुरूह—(वि०, सं०) गूढ़, कठिन ।

दुरेफ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विरेफ] भ्रमर, भौंरा । "इत्थं विचिंतयति कोषगते द्विरेफे" ।

दुरोदर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जुआ, जुआ का खेल । "दुरोदरच्छद्मजितां समीहते नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः"—[किरा०] ।

दुरौंधा—(संज्ञा, पु०) दरवाजे के ऊपर की लकड़ी, भरेठा ।

दुर्कुल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुष्कुल] दुष्कुल, बुरा वंश या कुटुम्ब।

दुर्गंध, दुर्गंधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बदबू, बुरी महक।

दुर्गंधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पलाण्डु, प्याज।

दुर्ग—(वि०, सं०) जहाँ पहुचना कठिन हो, दुर्गम। (संज्ञा, पु०, सं०) गढ़, किला, कोट।—**पति**-(संज्ञा, पु०) किले का स्वामी।—**पाल**-(संज्ञा, पु०) दुर्ग का बचाव करने वाला, किलेदार, गढ़पाल, दुर्गपति।—**रक्षक**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दुर्गपाल, किलेदार, गढ़पालक।—**संचर, संचार**-(संज्ञा, पु०) दुर्गमनीय स्थलों तक पहुचने का रास्ता, पुल इत्यादि।

दुर्गत—(वि०, सं०) दुर्दशा को प्राप्त, विपत्तिग्रस्त, दरिद्र, कंगाल। [**दुर्गति** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

दुर्गति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्दशा, बुरी गति। नर्क।

दुर्गम—(वि०, सं०) दुस्तर, कठिन, विकट, दुर्जय।

दुर्गा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवी, भवानी।

दुर्गाध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) किलेदार, गढ़पति, दुर्गपति।

दुर्गामी—(वि०, सं०) दुराचारी, कुमार्गी, कुकर्मी। [**दुर्गामिनी** (स्त्री०)]।

दुर्गावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राणा साँगा की पुत्री। महोबे के राजा परिमाल की पुत्री।

दुर्गुण—(संज्ञा, पु०, सं०) ऐब, बुराई। बुरा गुण। [**दुर्गुणी** (वि०, सं०)]।

दुर्गोत्सव—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नवरात्रि में दुर्गा-पूजन का उत्सव। किले में उत्सव।

दुर्ग्राह्य—(वि०, सं०) जिसे पकड़ना या काबू में लाना मुश्किल हो।

दुर्घट—(वि०, सं०) कष्टसाध्य, कठिन।

दुर्घटना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अशुभ या बुरी बात, विपत्ति।

दुर्घोष—(संज्ञा, पु०, सं०) भयंकर आवाज। भालू। (वि०) जो कर्णकटु शब्द उत्पन्न करता है।

दुर्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा मनुष्य, दुष्ट। शत्रु, [दुरजन (दे०)]। "दुर्जन मिले जनाय" वृं०।

दुर्जनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुष्टता, खलपना।

दुर्जय, दुर्जेय—(वि०, सं०) जिसका जीतना कठिन हो, अजीत, अजेय।

दुर्जात—(संज्ञा, पु०, सं०) अनौचित्य, व्यसन, विपत्ति। (वि०) निम्न जाति का।

दुर्जाति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नीच जाति, दुर्भाग्य।

दुर्जीव—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घृणित जीवन, घृणा के योग्य जीवन।

दुर्ज्ञेय—(वि०, सं०) जो कठिनता से जाना जाय, दुर्बोध।

दुर्दम, दुर्दमनीय—(वि०, सं०) प्रचंड, प्रबल, जिसका दमन कठिन हो।

दुर्दम्य—(वि०, सं०) प्रचंड, प्रबल, सामर्थ्य, दमन करने में कठिन।

दुर्दशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी हालत या गति, दुर्गति, दुरवस्था।

दुर्दांत—(वि०, सं०) दुरंत, अशान्त, प्रबल, भयंकर, प्रचंड।

दुर्दिन—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा दिन, मेघाच्छन्न दिवस। दुःख या कष्ट का समय।

दुर्दैव—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्भाग्य, दिनों का फेर, अभाग्य।

दुर्द्धर—(वि०, सं०) प्रबल, प्रचंड, जो कठिनता से पकड़ा या समझा जा सके।

दुर्द्धर्ष—(वि०, सं०) उग्र, प्रचंड, प्रबल, दमन करने में कठिन।

दुर्धर—(संज्ञा, पु०) ऋषभ नामक औषधि। एक प्रकार का नरक। पारा। महिषासुर का सेनापति। परमेश्वर, विष्णु।

दुर्धर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) धृतराष्ट्र का एक पुत्र। रावण की सेना का एक राक्षस।

दुर्नाम—(संज्ञा, पु०) [सं० दुर्नामन्] बुरा नाम, बदनामी। गाली, कुवचन। बवासीर। सीपी, सीप।

दुर्निवार, दुर्निवार्य्य—(वि०, सं०) जिसका रोकना या निवारण करना कठिन हो।

दुर्नीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी नीति, बुरी रीति, अन्याय, कुचाल।

दुर्बल—(वि०, सं०) कमजोर, दुबला-पतला, निर्बल, अशक्त। "दुर्बल को न सताइए"—कबीर। [**दुर्बलता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

दुर्बुद्धि—(वि०, सं०) दुर्बुद्धिवाला, हतबुद्धि, मूर्ख।

दुर्बोध—(वि०, सं०) गूढ़, कठिन, क्लिष्ट। जो शीघ्र न समझा जा सके। [**दुर्बोधता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "निसर्ग दुर्बोधिमबोधविक्लः"—[किरा०]।

दुर्भक्ष—(वि०, सं०) जिसे खाना मुश्किल हो, अस्वादिष्ट।

दुर्भगा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) अभागिन स्त्री, भाग्यहीना, जिस पर स्वामी का प्रेम न हो। [दुर्भग (पु०)]।

दुर्भर—(वि०, सं०) जिसको धारण करना कठिन हो, भारी, असहनीय।

दुर्भाग्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा भाग्य, बुरा अदृष्ट, मंद भाग्य।

दुर्भाव—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा भाव, मनोमालिन्य, मनमुटाव।

दुर्भावना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चिंता, आशङ्का, बुरी भावना।

दुर्भिक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) अकाल, सूखा, कहत (ग्रा०), अवर्षण। [दुरभिच्छ (दे०)]।

दुर्भेद—(वि०, सं०) जिसमें जल्दी छेद न हो, जो शीघ्र पार न हो सके।

दुर्भेद्य—(वि०, सं०) जिसका भेदना या छेदना अथवा पार करना कठिन हो।

दुर्भृत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) ऐसा कर्मचारी या नौकर जो उचित ढंग से आज्ञापालन न करता हो, दुष्ट नौकर।

दुर्मति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खराब अक्ल, बुरी बुद्धि। (वि०) बुरी बुद्धि वाला, कम समझ, दुर्बुद्धि, दुष्ट।

दुर्मद—(वि०, सं०) बुरे नशे मे मस्त, घमंड में मस्त, उन्मत्त, प्रमादी।

दुर्मना—(वि०, सं०) उद्विग्न चित्त, अन्य-मनस्क, चिंतित, उदास।

दुर्मल्लिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चार अंकों का रूपक (नाट्य०)।

दुर्मिल—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक छंद जिसमें दो ह्रस्वाक्षरों के बाद एक गुरु अक्षर रखने का क्रम रहता है (पिं०)। (वि०, दे०) अलभ्य। "हिय मे न बस्यो अस दुर्मिल बालक तौ जग में फल कौन जिए"—तुल०।

दुर्मुख—(संज्ञा, पु०, सं०) राम-सेना के एक गुप्तचर बानर। बुरे मुख वाला, कटुवादी, अप्रियभाषी। [दुर्मुखी (वि०, स्त्री०)]।

दुर्मूल्य—(वि०, सं०) महँगा, बहुमूल्य।

दुर्मेधा—(वि०, सं०) बुरी बुद्धि वाला, अज्ञानी, कुबुद्धि, दुर्बुद्धि।

दुर्योग—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा योग, कुयोग, कुसंग।

दुर्योधन—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा धृतराष्ट्र का सब से बड़ा पुत्र।

दुर्योनि—(वि०, सं०) नीच जाति में नीच वर्ण से उत्पन्न, पतित या अस्पृश्य जाति।

दुर्रा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चाबुक, कोड़ा।

दुर्रानी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुसलमानों की एक जाति।

दुर्लंघ्य—(वि०, सं०) जो फाँदने या लाँघने योग्य न हो, कठिन, दुर्गम।

दुर्लक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) असगुन, अशकुन, कुलक्षण, दुर्गुण।

दुर्लक्ष्य—(वि०, सं०) कठिनता से दिखाई देने वाला, जो अदृश्य-सा हो।

दुर्लभ—(वि०, सं०) दुष्प्राप्य, बढ़िया, अनोखा, प्रिय, कठिनता से प्राप्त, [दुरलभ (दे०)]। "दुरलभ जननी यहि संसारा"—[रामा०]।

दुर्लभ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अप्राप्य, अति कष्ट-प्राप्य।

दुर्लोभ—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरी इच्छा या अभिलाषा, अप्राप्य वस्तु की अनुचित कामना।

दुर्वचन—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरी बात, गाली, कुवचन, दुर्वाक्य।

दुर्वर्त्म—(संज्ञा, पु०, सं०) कुमार्ग, कुपंथ।

दुर्वह—(वि०, सं०) धारण करने में दुस्तर या कठिन। "दुर्वह गर्भ-खिन्न-सीता विवासन पटुः" —भव०। "आया दुर्वह भार कंध पर"—गिरीश।

दुर्वाक्य—(संज्ञा, पु०, अ०) निंद्य या बुरी बात, गाली, दुर्वचन।

दुर्वाद—(संज्ञा, पु०, सं०) निन्दा, गाली, प्रसंशा-युक्त निन्दा। "यहि विधि कहत विविध दुर्वादा" —[रामा०]।

दुर्वार—(वि०, सं०) जिसका निवारण न हो सके, अवश्यम्भावी।

दुर्वासना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी इच्छा या अभिलाषा, बुरा मनोरथ।

दुर्वासा, दुरवासा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुर्वासस्] अत्रि-मुनि के पुत्र जो बड़े क्रोधी थे। "दुर्वासा हरि भक्तहिं त्रास्यो"—[रामा०]।

दुर्विदग्ध—(वि०, सं०) जो अल्प ज्ञान के आधार पर फूला हो, घमंडी, गर्वित।

दुर्विनय—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अविनय, उद्दंडता।

दुर्विनीत—(वि०, सं०) उजड्ड, अशिष्ट, उद्दंड, उद्धत, असभ्य।

दुर्विपाक—(संज्ञा, पु०, सं०) अभाग्य, दुर्दैव। बुरा फल, अशुभ परिणाम, दुर्घटना।

दुर्विभाव्य—(वि०, सं०) जिसकी कल्पना तक न हो सके, अकल्पनीय, जिसके बारे में सोचा तक न जा सके।

दुर्विषह—(वि०, सं०,) असह्य, कठोर, कठिन।

दुर्वृत्त—(वि०) [सं० दुर्जन] दुरात्मा, उपद्रवी, दुराचारी, दुश्चरित्र, दुष्ट, गुंडा।

दुर्वृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूषित वृत्ति, बुरा पेशा, दुराचरण।

दुर्वृष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनावृष्टि, सूखा।

दुर्बोध्य—(संज्ञा, पु०, दे०) कठिनता से समझने या जानने योग्य। (वि०, सं०) अबोध, अज्ञानी।

दुर्व्यवस्था—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुप्रबन्ध, बुरा शासन, दुर्विधान [मिसमैनेजमेंट]।

दुर्व्यवहार—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा बर्त्ताव, दुष्टाचरण, दुष्टाचार [मिसबिहैवियर]।

दुर्व्यसन—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा स्वभाव या टेव, खराब या बुरी आदत।

दुर्व्यसनी—(वि०, सं०) बुरा स्वभाव या टेव वाला।

दुलकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दलना] घोड़े की एक चाल।

दुलखना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दो+लक्षण] बारम्बार कहना या बतलाना।

दुलड़ा, दुलड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) [हि० दो +लड़] दो लड़ी की माला, दुलरी (ग्रा०)।

दुलत्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दो+लात] दोनों पैरों से मारना या फटकारना।

दुलदुल—(संज्ञा, पु०, अ०) एक खच्चरी जो मुहम्मद साहिब को मिस्र के शाह ने भेंट की थी।

दुलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दोलन] हिलना-डुलना, झूलना।

दुलभ*—(वि०, दे०) [सं० दुर्लभ] जो कठिनता से मिले, कठिन, दुष्प्राप्य।

दुलराना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० दुलारना] प्यार या दुलार करना, लाड़ करना। (क्रि० अ०, दे०) प्यारे बच्चों के से कर्म करना। "अंक उठावत औ दुलरावत निज कहँ धनि जग लेखी"—रघु०।

दुलरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दुलड़ी] दो लड़ों की माला। [**दुलरिया**-(वि०, दे०) दो लड़ वाली। प्यारी।]

दुलहन, दुलहिन, दुलहिया, दुलही‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दुलहा] हाल की ब्याही हुई वधू, नवविवाहिता स्त्री। "जेठी पठाई गई दुलही"—मति०। "जेहि मंडप दुलहिन वैदेही"—[रामा०]।

दुलहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुर्लभ] दूलह, [दूल्हा (दे०)], नवविवाहित पुरुष। "दुलहा देखि बरात जुड़ानी"—[रामा०]।

दुलहाई—(संज्ञा, स्त्री०) विवाह के लोकगीत।

दुलहेटा, दुलेहटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [प्रा० दुल्लह +हि० बेटा] प्यारा, दुलारा, लाड़िला पुत्र या लड़का।

दुलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० तूल] थोड़ी रुई भरी हलकी रजाई। "उतरी न उनके रुख से दुलाई तमाम रात।"

दुलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० डुलाना] डुलाना, हिलाना, आगे-पीछे हटाना।

दुलार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दुलारना] प्यार, प्रेम, लाड़, स्नेह।

दुलारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दुर्लालन] प्यार या लाड़ करना, प्रेम करना। फुसलाना।

दुलारा—(वि०, दे०) [हि० दुलार] लाड़िला, प्यारा। [**दुलारी** (स्त्री०)]। "जैहैं नाहिं द्रुपद-दुलारी की उतारी सारी"—रसाल।

दुलोही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दो+लोह] एक भाँति की तलवार।

दुल्लभ*—(वि०, दे०) [सं० दुर्लभ] दुर्लभ।

दुव—(वि०) [सं० द्वि] दो। "तुलसी गंग दुवौ भये।"

दुवन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुर्मनस्] दुष्ट, खल। शत्रु। राक्षस।

दुवाज—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का घोड़ा।

दुवादस*‡—(वि०, दे०, यौ०)[सं० द्वादश] बारह। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) दुवादसी, दुवास (ग्रा०)।

दुवादसबानी*—(वि०, दे०, यौ०) [सं० द्वादश सूर्य्य+वर्ण] सूर्य्य सा चमकता हुआ, कांति या आभायुक्त। खरा सोना, बारहबानी का।

दुवार†—(संज्ञा, पु०) [सं० द्वार] द्वार, दरवाजा।

दुवारा—(संज्ञा, पु०, दे०) द्वार। (अव्य०, दे०) द्वारा। (वि०, दे०) दुवारी।

दुवाल—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पैकड़ों में लगा हुआ चौड़ा फीता।

दुवाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रँगे कपड़ों में चमक लाने वाला घोंटा। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चमड़े की पेटी या कमरबंद [द्वालो (दे०)]।

दुविधा†—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० दुविधा] दुविधा, दुरंगी, दुविधि। लो०—"दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम।" "उभय सनेहु दुविध मति घेरी"—[रामा०]।

दुवै, दुवो*†—(वि०, दे०) [हि० दुव=दो] दोनों, द्वै।

दुशमन, दुसमन—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दुश्मन] वैरी, शत्रु। "दुसमन दावागीर होय"—गिरि०।

दुशवार—(वि०, फ़ा०) मुश्किल, कठिन। [**दुशवारी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

दुशाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विशाट, फ़ा० दोशाला] किनारों पर बेलदार पशमीने की चादरों का जोड़ा, दुसाला। "सुवाला है दुशाला है विशाला चित्रशाला है"—पद्मा०।

दुशासन, दुसासन*—(संज्ञा, पु०) [सं० दुःशासन] दुर्योधन का छोटा भाई दुःशासन। "झटकत सोऊ पट बिकट दुसासन है"—रत्ना०।

दुश्चरित्र—(वि०, सं०) बुरे चरित्र वाला, कुचाली। (संज्ञा, पु०) बुरी चाल, दुराचार, कुकर्म। [**दुश्चरित्रा** (स्त्री०)]।

दुश्चरित्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुचाल, कुव्यवहार, दुराचरण, दुराचार।

दुश्चिंता—(संज्ञा, स्त्री०) घोर चिन्ता।

दुश्चिकित्स्य—(वि०, सं०) असाध्य, जिसका उपचार सफल होने की आशा न हो।

दुश्चिक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्योतिष में लग्न से तीसरा घर।

दुश्चेष्टा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी चेष्टा, कुचेष्टा। [**दुश्चेष्टित, दुश्चेष्ट** (वि०)]।

दुश्मन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वैरी, शत्रु।

दुश्मनी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शत्रुता, बैर।

दुष्कर—(वि०, सं०) दुःसाध्य, जिसका होना या करना कठिन हो, दुष्करणीय। [**दुष्करता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

दुष्कर्म्म—(संज्ञा, पु०) [सं० दुष्कर्म्मन्] पाप, कुकर्म, बुरा काम। [**दुष्कर्म्मा, दुष्कर्म्मी**(वि०)]।

दुष्कर्मा, दुष्कर्मी—(वि०) [सं० दुष्कर्मिन्] कुकर्मी, पापी, दुराचारी। [**दुष्कर्मिणी** (स्त्री०)]

दुष्काल—(संज्ञा, पु०, सं०) कुसमय, अकाल, दुर्भिक्ष, कहत, दुकाल।

दुष्कुलीन—(वि०, सं०) नीच या बुरे वंश या कुल का, नीच जाति का।

दुष्कृत—(संज्ञा, पु०, सं०) पाप, अपराध, कुकर्म, दोष। (वि०) पापी। [**दुष्कृति** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]

दुष्कृती—(वि०, सं०) पापी, दुराचारी।

दुष्ट—(वि०, सं०) दोषी, अपराधी, ऐबी, दुर्जन, खल, दुराचारी। [**दुष्टा** (स्त्री०)]।

दुष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऐब, दोष, बुराई।

दुष्टपना—(संज्ञा, पु०) [सं० दुष्टता] ऐब, बुराई, बदमाशी, गुंडापन। [दुष्टई (दे०)]

दुष्टाचार—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) कुकर्म, ऐब, बुराई, कुचाल।

दुष्टात्मा—(वि०, सं०) बदमाश, कुचाली, बुरे स्वभाव या अंतःकरण वाला।

दुष्परिग्रह—(वि०, सं०) जिसे पकड़ना या काबू में करना कठिन हो।

दुष्परिमेय—(वि०, सं०) जिसका ठीक तौर से कथन संभव न हो। "सयमित करके किसी विध शोक दुष्परिमेय"—दिनकर

दुष्प्रकृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरा स्वभाव, खराब आदत। (वि०) नीच प्रकृति का।

दुष्प्रवेश—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्गम प्रवेश, अति कष्ट या श्रम से साध्य प्रवेश।

दुष्प्रवृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुरी प्रवृत्ति।

दुष्प्राप्य—(वि०, सं०) जिसका मिलना कठिन हो, दुर्लभ।

दुष्यंत—(संज्ञा, पु०, सं०) विख्यात पुरुवंशी एक राजा, जिन्होंने शकुन्तला के साथ गंधर्व विवाह किया था तथा जिनके पुत्र भरत के नाम पर आर्यावर्त का नाम भारत प्रतिष्ठित हुआ।

दुसराना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० दोहराना] दोहराना।

दुसरिहा*†—(वि०, दे०) [हि० दूसर+हा प्रत्य०] संगी, साथी। तुल्य, समान। प्रतिद्वन्द्वी, पराया। "अपन दुसरिहा जिन राखा ना।"—[आल्हा०]।

दुसह*—(वि०, दे०) [हि० दुःसह] कठिन, जो सहा न जाय, असह्य।

दुसही—(वि०, दे०) [हि० दुसह+ई प्रत्य०] डाही, द्वेषी, ईर्ष्यालु।

दुसाखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दो+शाखा] जिसमें दो डालियाँ हों, द्विशाखा। [**दुसाखी** (वि०)]।

दुसाध—(संज्ञा, पु०) [सं० दोषाद] दुमार, डोम, भंगी, नीच जाति। (वि०, दे०) [सं० दुस्साध्य]। जो साध्य न हो।

दुसाल—(संज्ञा, पु०) [हिं० दो+शाल] आर-पार छेद।

दुसाली—(वि०, दे०) दो साल का।

दुसूती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दो+सूत] दो तागों के ताना-बाना का मोटा कपड़ा।

दुसेजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दो+सेज] पलंग, बड़ी चारपाई या खाट।

दुस्तर—(वि०, सं०) जिसे पार करना कठिन हो, विकट, कठिन। [**दुस्तरता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] "तितीर्षुः दुस्तरं मोहादुडुपेनाऽस्मि सागरं"—[रघु०]।

दुस्त्यज—(वि०, सं०) दुख से त्यागने योग्य, जिसका त्याग कठिन हो।

दुस्सह, दुसह—(वि०, दे०) [सं० दुःसह] न सहने योग्य, कठिन। "एतिहि बस उर दुसह दवारी"—[रामा०]।

दुहता, दुहिता—(संज्ञा, दे०) [सं० दौहित्र] नाती, बेटी का बेटा। दुहिता। [**दुहिती, दुहेती** (स्त्री०)]

दुहत्था—(वि०, दे०) [हिं० दो+हाथ] दोनों हाथों का किया हुआ, दोनों हाथों का। [**दुहत्थी** (स्त्री०)]

दुहना, दूहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दोहन] दूध निकालना, निचोड़ना। **मुहा०—लेना**-सार खींच लेना। "बेंचहिं वेद धर्म्म दुहि लेहीं"—[रामा०]। "कर बिनु कैसे गाय दूहिहै हमारी वह"—[ऊ० श०]।

दुहनी, दोहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दोहनी] दुधहंडी, दूध दुहने या रखने का पात्र।

दुहराना, दोहराना—(क्रि० स०, दे०) दूना करना या कराना, दुबारा करना या कराना। दुरुक्ति। दो परत या तह करना। फिर कहना।

दुहाई, दोहाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्वि+आह्वाय] घोषणा, मुनादी। किसी का नाम ले लेकर शोर मचाना। शपथ, सौगंध, जैसे—राम-दुहाई, कसम। रक्षार्थ पुकारना। **मुहा०** (**किसी की**)—**फिरना**-राजतिलक के पीछे राजा के नाम की घोषणा होना। प्रताप का डंका पिटना, वश का ढोल बजना।—**देना**-अपनी रक्षा के हेतु किसी का नाम लेकर जोर-जोर से पुकारना। (**संज्ञा, स्त्री०**) [हिं० दुहना] भैंस, गाय आदि पशुओं के दुहने का कार्य या मजदूरी।

दुहाग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुर्भाग्य] दुर्भाग्य। रँडापा, वैधव्य।

दुहागिनि, दुहागिनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दुहागी] राँड़, विधवा, रंडा। [(विलो०) **सुहागिनी, सुहागिनि**]

दुहागिल—(वि०) [सं० दुर्भागिन्] हत या मंद भाग्य, अभागी, कमबख्त।

दुहागी†—(वि०, दे०) [सं० दुर्भागिन्] अभागी, अभागा। [**दुहागिन, दुहागिनी** (स्त्री०)]।

दुहाना—(क्रि० स०) [हिं० दुहना का प्रेरणा० रूप] दुहने का कार्य किसी दूसरे से कराना, दुहवाना।

दुहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० दुहाना] दूध दुहाने वाला।

दुहावनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० दुहाना] दुहाई, दूध दूहने की मजदूरी या कार्य।

दुहिता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दुहितृ] पुत्री, बेटी, कन्या, लड़की। "दुहिता भली न एक"—[स्फु०]।

दुहिन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्रुहण] ब्रह्मा, विधाता, विधि।

दुहुँ—(अव्य०, दे०) दोनों, उभय। "विनती करौं दुहूँ कर जोरी"—[रामा०]।

दुहेल, दुहेला—(वि०, दे०) [सं० दुहेल] कठिन, दुःसाध्य, दुखी। [**दुहेली** (स्त्री०)] "तिंस बिछोह जल मीन दुहेला"—[पद०]।

दुहोतरा*—(वि०, दे०) [सं० दु, द्वि+उत्तर] दो ज्यादा, दो अधिक, दो ऊपर। (**संज्ञा, पु०**, दे०) [सं० दुहिता] दौहित्र, नाती, बेटी का बेटा। [**दुहोतरी** (स्त्री०)]

दुह्य—(क्रि० स०) दुहने के योग्य। [**दुह्या** (स्त्री०)]

दुह्यमान—(संज्ञा, पु०, सं०) जिसमे दूध दुहा जाय, दोहनी, दुधहँडी (ग्रा०)।

दूँद, दूँदि—(संज्ञा, पु०, स्त्री०) [सं० द्वन्द्व] उत्पात, झगड़ा, उपद्रव, ऊधम, अंधेर। "बेदन मूँदि करी इन दूँदि"—देव०। "तौ काहे को दूँद उठावै"—छत्र०।

दूवा, दूआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्वि, हिं० दो] दो का अंक। ताश का दो बुन्दे वाला पत्ता।

(संज्ञा, स्त्री०) [अ० दुआ] आशीष । [असीस (दे०)] प्रार्थना ।

दूइज, दूज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्वितीया] द्वितीया, दूज ।

दूक*—(वि०, दे०) [सं० द्वैक] कुछ, थोड़े, दो-एक, चन्द ।

दूकान—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० दुकान] दुकान । —**दार**-(संज्ञा, पु०) देखिए 'दुकानदार' ।—**दारी**-(संज्ञा, स्त्री०) देखिए 'दुकानदारी' ।

दूखन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दूषण] एक राक्षस। "खरदूखन विराध अरु बली"—[रामा०] । दोष, बुराई, दूषण ।

दूखना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० दूषण+ना प्रत्य०] दोष या अपराध लगाना, कलंकित करना । "परहिं जे दूखहिं श्रुति करि तरका"—[रामा०] । (क्रि० अ०, दे०) [हि० दुखना] पीड़ा या दर्द करना । "दूखति आँखि, सुहात न नेकहु, आज को नाच तमाच सों लागत"—मन्ना० ।

दूखित—(वि०, दे०) [सं० दूषित] दूषित, दोष-युक्त, बुरा । (वि०] [हि० दूखन] पीड़ित ।

दूजा, दूजी*†—(वि०, दे०, हि०) दूसरा, अन्य, गैर । [**दूजी** (स्त्री०)] "कहु सठ मों समान को दूजा"—[रामा०] ।

दूत—(संज्ञा, पु०, सं०) बसीठ, चर । राष्ट्र का प्रतिनिधि, राजदूत । [एम्बेसेडर] । [**दूती** (**स्त्री०**)] "दूत पठाये बालि-कुमारा"—[रामा०] । दूत के तीन भेद हैं—(१) निसृष्टार्थ, (२) मितार्थ, (३) सन्देश-हारक ।—**कर्म**-(संज्ञा, पु०, सं०) समाचार या संदेश पहुँचाने का कार्य, दूत का कार्य या कर्म, दूतत्व, दूतता ।—**ता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूतत्व, दूत का कर्म । (संज्ञा, पु०, सं०) दूतत्व [**दूतपन** (संज्ञा, पु०, हि०)] ।

दूतर*†—(वि०, दे०) [सं० दुस्तर] दुस्तर, दुर्गम, कठिन ।

दूतावास—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दूसरे राजा के दूत का घर, निवास-स्थान, दूतागार, दूत-भवन । [इम्बेसी] ।

दूतिका, दूती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुटी, सारिका, संचारिका, सन्देश-वाहिनी, समाचारहारिणी, प्रेमी और प्रेमिका या नायक-नायिका को मिलाने वाली, इसके भी उत्तमा, मध्यमा, अधमा तीन भेद हैं । [**स्वयंदूती, स्वयंदूतिका**-(यौ०) अपने ही लिए दूत कर्म करने वाली नायिका ।]

दूत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दूत कर्म, दूत का काम, दौत्य, दूतत्व ।

दूध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुग्ध] दुग्ध, पय, क्षीर, स्तन्य ।—**पिलाई**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दूध+पिलाना] दूध पिलाने वाली दाई या धाई, धाय । ब्याह की एक रीति ।—**पूत**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दूध+पूत] धन-पुत्र । "दूध-पूत हम से लइ लेव"—प्रताप ना० ।—**मुख**-(वि०, दे०, यौ०) [हि० दूध+मुख सं०] दुध-मुहाँ, छोटा बच्चा, दूध पीता हुआ बच्चा । "सुध दूधमुख करिय न कोहू"—[रामा०] । लो०—दूध का जला मठा फूँक-फूँक कर पीता है । "जैसे दाध्यो दूध को, पीवत छाँछहिं फूँकि" —वृंद । मुहा०—**उतरना**-स्तनों में दूध भर जाना ।—**का दूध और पानी का पानी करना**-ठीक-ठीक न्याय करना । "न्याय मैं हंसिनि ज्यों बिलगावहु, दूध के दूध और पानी को पानी" —प्रताप ना० ।—**की मक्खी की तरह निकालना या निकाल कर फेंक देना**-किसी को अपने पास से इकबारगी तुच्छ समझ कर अलग कर देना, निकालना या भगा देना ।—**के दाँत न टूटना**—बचपन बना रहना (होना) ।—(**धों**) **नहाओ पूतों फलो**-धन-पुत्र की बढ़ती हो (आशी०) ।—**फटना**-दूध का सारांश और पानी अलग-अलग हो जाना या दूध का बिगड़ जाना । **माता के—को लजाना**-अकरणीय या कुल की दृष्टि से अशोभन काम करना । **स्तनों में—भर आना**-बच्चे के स्नेह या ममता के कारण स्तनों में दूध भर आना ।

दूधाधारी, दूधाहारी—(वि०, दे०, यौ०) केवल दूध पीकर रहने या जीने या निर्वाह करने वाला । [**दुग्धाहारी, दुग्धभोजी** (सं०)]

दूधाभाती—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हिं० दूध+भात] दूध और भात, ब्याह के चौथे दिन वर-कन्या का भोजन (रीति) ।

दूधिया—(वि०, दे०) [हि० दूध+इया प्रत्य०] दुग्ध-सम्मिलित, दूध से बना हुआ, दूध के रंग का । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक पत्थर । एक घास, दुधिया, दूधी (ग्रा०) ।

दून—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० दूना] दूने का भाव । **मुहा०—की लेना या हाँकना**-डींग मारना, बहुत बढ़-बढ़ (बढ़चढ़) कर बातें करना । (संज्ञा, पु०, दे०) घाटी, तराई ।

दूनर†*—(वि०, दे०) [सं० द्विनम्र] जो झुक कर दुगुना हो गया हो। "दूनर कै चूनर निचोरै है"—रसा०।

दूना—(वि०, दे०) [सं० द्विगुण] दुगुना, दोगुना, दोचन्द, दुचंद, (अ०) [दून (दे०)] दूनो (अ०)।

दूनौ*‡—(वि०, दे०) [हि० दो] दोनों।

दूब—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दूर्वा] एक घास।

दूबदू—(क्रि० वि०, दे०) [हि० दो या फ़ा० रूबरू] सम्मुख, आमने-सामने, समक्ष।

दूबर, दूबरा, दूबरो*†—(वि०, दे०) [सं० दुर्बल] दुबला, पतला, निर्बल। "चन्द दूबरो-कूबरो, तऊ नखत तैं बाढ़"—वृं०।

दूबिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हरा रंग, दूब के से रंगवाला।

दूबे—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विवेदी] द्विवेदी, दुबे।

दूभर—(वि०, दे०) [सं० दुर्भर] कड़ा, कठिन।

दूमना†*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० द्रुम] हिलना, झूमना।

दूरंदेश—(वि०, फ़ा०) अग्रसोची, दूरदर्शी। [दूरंदेशी (संज्ञा, स्त्री०)]।

दूर—(क्रि० वि०, सं०) जो समीप या निकट न हो।—**दर्शक**-(संज्ञा, पु०, सं०) बहुत दूर तक देखने वाला, अग्रसोची, दूरदर्शी।—**०यंत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) दूरबीन।—**दर्शिता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूरंदेशी।—**दर्शी**-(वि०, सं०) अग्रसोची, दूरंदेश।—**बीन**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) दूरदर्शक यंत्र।—**वर्ती**-(वि०, सं०) जो बहुत दूर हो।—**वीक्षण (यंत्र)**-(संज्ञा, पु०, सं०) दूरबीन, दूरदर्शक यंत्र। **लो०**—"दूर की ढोल सुहावन लागत।" **मुहा०**—**करना**-अलग या पृथक् करना, रहने न देना, नाश करना, मिटाना।—**भागना या रहना**-बहुत बचना, समीप न जाना।—**होना**-अलग हो जाना, छूट जाना, मिट जाना या नष्ट हो जाना।—**की बात**-कठिन बात, महीन विषय।—**की कौड़ी उठाना (लाना)**-अल्प फलप्रद कठिन कार्य करना। नई खोज करना।

दूरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूरत्व, दूर का भाव।

दूरत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) दूरता, दूरी।

दूरस्थ—(वि०, सं०) अति दूर रहने वाला।

दूरागत—(वि०, सं०, यौ०) दूर से आया हुआ। "आज किसी के मसले तारों की वह दूरागत झंकार"—महा०।

दूरान्वय—(संज्ञा, पु०, सं०) वाक्य-रचना-सम्बन्धी एक दोष जो कर्त्ता-क्रिया, विशेष्य-विशेषण के एक दूसरे से बहुत दूर होने के कारण उत्पन्न होता है।

दूरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दूर+ई प्रत्य०] दूर, दूरत्व, दूरता, अंतर, फासिला। "यहि विधि प्रभुहिं गयो लै दूरी"—[रामा०]।

दूरीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) दूर करना।

दूरोदय—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य।

दूर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मैला, गंदा।

दूर्वा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक घास, दूब।

दूर्वाष्टमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) भादों सुदी अष्टमी की तिथि जब व्रत आदि हुआ करता है।

दूलन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दोलन] दोलना, डुलना, डोलना, झोंका खाना, झूमना।

दूलभ—(वि०, दे०) [सं० दुर्लभ] कष्टसाध्य।

दूलह, दूल्हा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दुर्लभ] दुलहा, वर। "दूलह राम रूप-गुन-सागर"—[रामा०]।

दूल्हन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दुलहिन, दुलही।

दूषक—(संज्ञा, पु०, सं०) निंदक, कलंक या अपराध लगाने वाला। "गुरु-दूषक बात न कोपि गुनी"—[रामा०]।

दूषण—(संज्ञा, पु०, सं०) बुराई, दोष, अवगुण, ऐब। एक राक्षस। [दूखन (दे०)] "खरदूषण मो सम बलवन्ता" "दोष रहित दूषण सहित"—[रामा०]।

दूषणीय—(वि०, सं०) दोष या कलंक लगाने योग्य। [दूषनीय (दे०)]

दूषना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० दूषण] दोष या ऐब लगाना, कलंकित करना, दूखना।

दूषाना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० दूषण] कलंक या ऐब लगाना, दोषारोपण करना।

दूषित—(वि०, सं०) दोषी, कलंकी, बुरा।

दूषी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आँख का कीचड़।

दूष्य—(वि०, सं०) दोष लगाने योग्य, निन्दनीय, तुच्छ।

दूष्टा—(वि०, सं०) निन्दनीय, तुच्छ, दोष लगाने योग्य।

दूसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दूषण] दोष या कलंक लगाना, निन्दा करना ।

दूसर—(पु०, दे०) [हि० दो] द्वितीय, अन्य, अपर, गैर, दुस्सर, दुसरा । [**दूसरी** (स्त्री०, ग्रा०)] [**दूसर, दूसरो** (ब्र०)] "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई"—मीरा ।

दूहना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दुहना] दुहना । "कर बिन कैसे गाय दूहिहै हमारी वह" —[ऊ० श०] ।

दूहा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दोहा] देखिए दोहा ।

दृक—(संज्ञा, पु०, दे०) छेद, छिद्र, बिल, नेत्र, दृष्टि । [दृग (दे०)]—**क्षेप**–(संज्ञा, पु०, सं०) दृष्टिपात, नजर या निगाह डालना ।—**पथ**–(संज्ञा, पु०, सं०) दृष्टि या नेत्रों का मार्ग, निगाह या नजर की पहुंच ।—**पात**–(संज्ञा, पु०, सं०) दृष्टिपात, निगाह गिरना या डालना ।—**शक्ति**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दृष्टि का बल । प्रकाश-रूप, चैतन्य, आत्मा ।

दृगंचल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पलक, नेत्रांचल । "मनहु सकुचि निमि तज्यो दृगंचल"—[रामा०] ।

दृग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दृश्] आँख, नेत्र । **मुहा०—डालना या देना**—देखना, सोचना । रक्षा करना । दो की गिनती ।—**नीर**–(संज्ञा, पु०) आँसू । "आज पोंछती वे दृगनीर" —निराला ।—**मिचाव**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० दृग+मीचना] आँख-मिचौनी, आँख मिहीचनी । [दिग-मिचाई (दे०)] ।

दृगगोचर—(वि०, सं०, यौ०) जो आँख से देखा जाय, आँखों का विषय, देखने से जिसका ज्ञान प्राप्त हो । [**दृगगोचरित** (वि०)]

दृढ़—(वि०, सं०) प्रगाढ़, पुष्ट, पुख्ता, कड़ा, ठोस, पक्का । बली, हृष्टपुष्ट । स्थायी, टिकाऊ, अटल, निश्चित, ध्रुव, निडर, ढीठ, कड़े हृदय का, निठुर ।—**पद**–(संज्ञा, पु०, सं०) उपमान, तेईस मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०) ।—**प्रतिज्ञ**–(वि०, सं०) अपने प्रण पर अटल रहने वाला ।—**संध**–(वि०) दृढ़प्रतिज्ञ ।

दृढ़ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मजबूती, स्थिरता । (संज्ञा, पु०, सं०) दृढ़त्व, [दृढ़ाई (दे०)]

दृढ़ांग—(वि०, सं०) हृष्ट-पुष्ट, पुष्ट शरीर या अंग का । [**दृढ़ांगिनी** (स्त्री०)]

दृढ़ाई†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दृढ़ता] दृढ़ता, दृढ़त्व, ठीक ।

दृढ़ाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दृढ़+आना प्रत्य०] पक्का या दृढ़ करना । (क्रि० अ०, दे०) कड़ा या पुष्ट होना, पक्का या स्थिर होना ।

दृढ़ार्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धनुष का अग्र-भाग, कोटि ।

दृप्त—(वि०, सं०) अहंकारी, गर्वीला, शेखीबाज, [डींगिया (दे०)] ।

दृश—(संज्ञा, पु०, सं०) दर्शन, देखना । प्रदर्शक, दिखाने या देखने वाला । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) दृष्टि, आँख, ज्ञान । दो की संख्या । [**दृश्य** (वि०)] ।

दृशद्वती, दृषद्वती—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० दृषद्वती] एक नदी, घाघरा (प्राचीन) ।

दृश्य—(वि०, सं०) दृग्गोचर । दर्शनीय, सुन्दर, ज्ञेय । (संज्ञा, पु०, सं०, यौ०)—**काव्य**–नाटक ।—**राशि**–ज्ञात राशि या संख्या (गणि०) ।—**मान**–(वि०, सं०) जो प्रत्यक्ष दिखाई दे । सुन्दर, दर्शनीय ।

दृश्यमाना—(वि०, स्त्री०) जो देखे जाने की स्थिति में है, जो देखा जा रहा है । क्या "सात किरणें दिवाधिपति की हैं दृश्यमाना हुई"—हरिऔध । [**दृश्यमान** (पु०)]

दृष्ट—(वि०, सं०) ज्ञात, देखा या जाना हुआ, प्रगट, प्रत्यक्ष । (संज्ञा, पु०, सं०) दर्शन, भेंट, साक्षात्कार, प्रत्यक्ष, प्रमाण ।—**कूट**–(संज्ञा, पु०, सं०) पहेली, गूढ़ार्थ कविता, जैसे—"ग्रह, नक्षत्र, जुग जोरि अरध कर सोई बनत अब खात" —सूर० ।—**पृष्ठ**–(वि०) रणक्षेत्र से पलायन करने वाला ।—**मान***–(वि० दे०) [सं० दृश्यमान] प्रगट, जो सम्मुख दिखाई दे ।—**वान**–(वि०, सं०) जो प्रत्यक्ष के समान हो, प्रत्यक्ष के बराबर ।—**वाद, दृष्टिवाद**–(संज्ञा, पु०, सं०) केवल प्रत्यक्ष ही को प्रमाण मानने वाला सिद्धांत (दर्शन), प्रत्यक्षवाद ।

दृष्टव्य—(वि०, सं०) दर्शनीय, देखने योग्य ।

दृष्टांत—(संज्ञा, पु०, सं०) मिसाल, उदाहरण, लौकिक और परीक्षक जिसे दोनों एक-सा समझें । "लौकिक परीक्षकाणां यस्मिन्नर्थे बुद्धि-साम्यम् स दृष्टांतः"—(न्याय०) । एक अलंकार, उपमेय और उपमान सम्बन्धी दो पृथक् वाक्यों

में धर्म-भिन्नता होने पर भी बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव से जहाँ समानता-सी दिखाई जाय। शास्त्र। अज्ञात, विशेष, गूढ़ बात के बोधार्थ तत्समान ज्ञात या प्रसिद्ध बात का कथन। जिसका पार या अन्त देखा गया हो।

दृष्टार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जिसके अर्थ से प्रत्यक्ष पदार्थ का ज्ञान हो, ज्ञात अर्थ।

दृष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आँख की ज्योति, देखने की शक्ति, खुली आँख की ज्योति का प्रसार, निगाह, [दीठि (दे०)]।—**गत**—(वि०, सं०) जो दीख रहा हो।—**गोचर**—(वि०, सं०) जिसका ज्ञान नेत्र-द्वारा हो, जो देखा जा सके, दृष्टगोचर।—**पथ**—(संज्ञा, पु०, सं०) निगाह का फैलाव, नजर की पहुँच।—**पात**—(संज्ञा, पु०, सं०) देखना, ताकना, निगाह डालना, विचारना।—**बंध, दिठबंध**—(संज्ञा, पु०, सं०) माया, प्रपंच, जादू। [दीठबंदी (दे०)] हाथ की सफाई, हस्तलाघव।—**वंत**—(वि०) [सं० दृष्टि+वंत प्रत्य०] नेत्र या दृष्टि वाला। ज्ञानी। "दृष्टिवंत रघुपति पद देखी"—[रामा०]। **मुहा०** (**किसी से**)—**जुड़ना,—मिलना**—देखा-देखी या साक्षात्कार होना। (**किसी से**)—**जोड़ना**—आँख मिलाना, साक्षात्कार करना।—**मिलाना**—साक्षात्कार करना।—**रखना**—निगरानी या चौकसी रखना। ध्यान रखना। पहचान। कृपादृष्टि, हित का ध्यान। आशा, अनुमान, उद्देश्य, विचार।—**लगाना**—लगातार एकाग्रचित्त से देखते रहना, प्रीति लगाना।—**से** (**में**)—विचार या रूप से।

दे—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० देवी] देवी। बंगालियों की एक जाति। (क्रि० स०, विधि० देना)।

देआरा—(संज्ञा, पु०, दे०) दीमक का बनाया घर, बाँबी, वल्मीक [दिऔंरा (दे०)]।

देई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० देवी] देवी। (क्रि० स०, दे०) देगा अथवा देगी। देकर (पु० का०)।

देउर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० देवर] देवर, पति का छोटा भाई।

देख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० देखना] देखभाल, देखरेख, निगरानी, (क्रि० स०, विधि)।—**भाल**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० देखना+भालना] निरीक्षण, निगरानी, जाँच-पड़ताल, विचार। [**देखाभाला** (वि०)]—**रेख**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० देखना+प्रेक्षण सं०] देखभाल, निगरानी, निरीक्षण।

देखन*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० देखना] देखने का भाव या क्रिया ढंग। "देखन बाग कुँवर दोउ आये"—[रामा०]।—**हारा**†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० देखन+हारा प्रत्य०] देखने वाला। [**देखनहारी** (स्त्री०)] "जग पेखन तुम देखनहारे"—[रामा०]।

देखना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दृश] अवलोकन करना, नजर डालना, निगाह फेंकना। किसी वस्तु के रूप-रंगादि या सत्ता नेत्रों से जानना। **मुहा०**—**सुनना**—ज्ञान प्राप्त करना, पता या खोज लगाना।—(**ने**) **में**—बाहिरी लक्षणों के अनुसार, साधारण रूप या व्यवहार में, रूपरंग में।—(**ते**) **देखते**—आँखों के सामने, चटपट, तत्काल।—(**ते**) **रह जाना**—चकित हो जाना। **देखा जायगा**—फिर सोचा, समझा या विचारा जायगा। पीछे जो करते बनेगा, किया जायगा। जाँच या निरीक्षण करना, खोजना, परखना, निगरानी रखना, विचारना, अनुभव करना, भोगना, पढ़ना, ठीक करना, ताकना, परीक्षा करना।

देखराना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० दिखलाना] दिखलाना। [दिखराना (दे०)]

देखरावना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० दिखलाना] दिखलाना, दिखरवाना (ग्रा०)।

देखवैया—(वि०, दे०)[हि० दिखवाना] दर्शक, देखने वाला, दिखवैय्या, देखैया (ग्रा०)।

देखाऊ, दिखाऊ—(वि०, दे०) [हि० दिखाना] झूठी तड़क-भड़क वाला, बनावटी। [दिखावटी (दे०)] देखने में सुंदर किन्तु काम का नहीं।

देखादेखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० दिखाना] साक्षात्कार। (क्रि० वि०) किसी को देखकर उसका अनुसरण या नकल करना।

देखाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० दिखाना] दिखाना, दिखराना, दिखलाना।

देखाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० देखना] ठाट-बाट, तड़क-भड़क, निगाह की सीमा। [देखावट, दिखावट (दे०)]

देखावटी—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० दिखाना] बनावट, ठाट-बाट, तड़क-भड़क, कृत्रिम।

देखवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दिखाना] दिखाना, दिखरावना (ग्रा०)।

देखासुनी—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०, बा०) साक्षात्, दर्शन आदि। सम्यक् विचार। "देखे सुने ब्याह बहुतेरे"—[रामा०]।

देखौआ—(वि०) देखिए 'देखाऊ'।

देग, डेग—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक बरतन, बटुवा, चौड़े मुँह और पेट का पात्र।—**चा**–(संज्ञा, पु०, दे०, फ़ा०) छोटा देग। [**देगची** (स्त्री० अल्पा०)]।

देदीप्यमान—(वि०, सं०) अति कांति या प्रकाश-युक्त, दमकता या चमकता हुआ।

देन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० देना] दान। दी हुई वस्तु, देने का भाव। "खुदा की देन का कुछ पूछिये अहवाल मूसा से।"—**दार**–(संज्ञा, पु०) [हि० देना+दार फ़ा०) करजदार, ऋणी, ऋणिया।—**लेन**–(संज्ञा, पु०) ब्याज पर रुपया देने का व्यापार, महाजनी का व्यवसाय।—**हार, हारा***†–(वि०, दे०) [हि० देना+हार प्रत्य०] देने वाला, देनेहारा।

देना—(क्रि० स०, दे०) [सं० दान] अपना स्वत्व छोड़ कर दूसरे का करा देना, सौंपना, हवाले करना, थमाना, रखना, लगाना, डालना। मारना। भोगना। भिड़ना। बंद या पैदा करना, निकालना। (अनेक क्रियाओं के साथ क्रि० स० के समान) जैसे—रख देना। (संज्ञा, पु०, दे०) ऋण, कर्ज, उधार का धन।

देमान*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दीवान] वजीर, मंत्री, दिवान।

दे मारना—(क्रि० स०, दे०, यौ०) [हि० देना+मारना] उठाकर पटकना, पछाड़ना।

देय—(वि०, सं०) दातव्य, देने योग्य।—**धर्म**–(संज्ञा, पु०) दान के रूप में प्रगट होने वाला धर्म।

देर, देरी‡—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अतिकाल, विलंब। [**देर सबेर** (यौ०)]

देव—(संज्ञा, पु०, सं०) देवता, पूज्य, ब्राह्मण, ऋषि या राजादि का आदरार्थ शब्द। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) राक्षस, दैत्य, दानव। [**देवी** (स्त्री०)]। (क्रि० वि०) दो।—**ऋण**–(संज्ञा, पु०, सं०) देवताओं के लिये करणीय कार्य्य, यज्ञादि।—**ऋषि, देवर्षि**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नारद, भरद्वाज, अत्रि, मरीचि, पुलस्त्यादि देवलोकवासी ऋषि। "अवसर जानि देवऋषि आये"—[रामा०]।—**कन्या**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) देवता की लड़की, पुत्री।—**कली**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक रागिनी, [देउकली (दे०)]।—**कार्य**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जो कार्य्य या कर्म देवताओं के लिए किया जाय, यज्ञादि। देवताओं जैसा कार्य, शुभ कर्म।—**कुसुम**–(संज्ञा, पु०, सं०) लौंग।—**खात**–(संज्ञा, पु०, सं०) प्राकृतिक ताल, झील, मानसरोवर।—**गण**–(संज्ञा, पु०, सं०) देव-समूह, अलग-अलग देवताओं के समूह।—**गति**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वर्गप्राप्ति, मरण, मरने पर शुभ गति, स्वर्गलाभ।—**गायक**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गधर्व।—**गिरा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) देववाणी, आकाश-वाणी।—**गिरि**–(संज्ञा, पु०, सं०) सुमेरु या हिमालय पर्वत, रैवतक या गिरनार पहाड़। नगर। [दौलता-बाद (प्राची०)]।—**गुरु**–(संज्ञा, पु०, सं०) वृहस्पति।—**गृह**–(संज्ञा, पु०, सं०) देव-मंदिर, देवालय, देवस्थान।—**चिकित्सक**—(संज्ञा, पु०, सं०) अश्विनीकुमार, सुरवैद्य।—**ठान,—थान**–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० देवोत्थान] दिठवन, देउठान, कार्तिक सुदी एकादशी, जब विष्णु सो कर उठते हैं, दिठौन।—**तरु**–(संज्ञा, पु०, सं०) देव वृक्ष, मंदार, पारिजात, कल्पवृक्ष।—**तर्पण**–(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं को जलदान या पानी देना।—**तुल्य**–(वि०, सं०) देवता के समान।—**दत्त**–(वि०, सं०) देवता का दिया हुआ, देवता के लिये दिया हुआ। (संज्ञा, पु०, सं०) देवता को दी वस्तु। शरीरस्थ पाँच पवनों में से एक, जृंभाकारी अर्जुन का शंख। "पंचजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः"—[गीता०]।—**दार,—दारु**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० देवदारु] एक तेलदार पेड़, औषधि। "देव-दारु धना, विश्वा, वृहती द्वैपाचनम्"—वैद्यजी०।—**दाली**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बंदाल, घघर बेल (प्रान्ती०)। "देवदाली फलरसो नश्यते हंत कामलाम्"—वैद्यजी०।—**दास**–(संज्ञा, पु०) देवालय में कार्य करने वाला दास या नौकर।—**दासी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेश्या, दासी, मंदिरों में रहने वाली नर्तकी, अप्सरा।—**दूत**–(संज्ञा, पु०, सं०) देवताओं का दूत। वायु।—**देव**–(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र। विष्णु। शिव। ब्रह्मा।—**द्वेष्टा**–(संज्ञा, पु०, सं०) देवशत्रु, देवनिन्दक।—**धान्य**–(संज्ञा, पु०, सं०) देवताओं का अन्न, देवान्न।—**धाम**–(संज्ञा, पु०) तीर्थस्थान।—**धुनि**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंगा नदी, भागीरथी

आकाशवाणी, देवध्वनि, देव-गिरा ।—**धूप**–(संज्ञा, पु०, सं०) गुग्गुल ।—**नदी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंगा, सरस्वती, दृषद्वती नदियाँ ।—**नागरी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भारत देश की मुख्य लिपि या भाषा जिसमें संस्कृत, हिंदी, मराठी आदि लिखी जाती है, ब्राह्मी का विकसित रूप ।—**नाथ**–(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र, विष्णु, शिव, देवपति, देवराज । —**निन्दक**–(संज्ञा, पु०, सं०) नास्तिक, पाखंडी । —**निष्ठ**–(संज्ञा, पु०, सं०) ईश्वर-प्रेमी, ईश्वर-भक्त ।—**पति**–(संज्ञा, पु०, सं०) देवराज, इन्द्र, विष्णु ।—**पथ**–(संज्ञा, पु०, सं०) देवमार्ग, आकाश । —**पूजक**–(संज्ञा, पु०, सं०) देवताओं की पूजा, अर्चा या आराधना करने वाला ।—**पूजा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवताओं की पूजा, अर्चा, सुर-पूजन, देवार्चन ।—**प्रतिमा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवता की मूर्ति ।—**प्रयाग**–(संज्ञा, पु०) गंगा और अलख-नन्दा के संगमस्थल पर पड़ने वाला एक तीर्थस्थान जो उत्तर भारत में स्थित है ।—**बधू**,—**बधूटी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवता की स्त्री । सीता । "देवबधू जबही हरि ल्यायो"—[रामा०] ।—**ब्राह्मण**–(संज्ञा, पु०, सं०) नारद, देव-पूजित या देव-पूजक ब्राह्मण ।—**भवन**–(संज्ञा, पु०, सं०) देव-मंदिर, स्वर्ग । पीपल ।—**भाषा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संस्कृत-भाषा, देववाणी ।—**भूमि**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वर्ग ।—**मंदिर**–(संज्ञा, पु०, सं०) देवालय, देवभवन, देवस्थान ।—**मणि**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कौस्तुभ मणि । घोड़े के शरीर की खास भौंरी (शालि०) ।—**माता**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवताओं की माँ, अदिति ।—**मातृक**–(संज्ञा, पु०, सं०) वृष्टि के जल से पालित देश । —**माया**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अविद्या, जो जीवों को बंधन में डालती है ।—**मास**–(संज्ञा, पु०, सं०) मनुष्यों के तीन वर्ष का समय, देवताओं का महीना ।—**मुनि**–(संज्ञा, पु०, सं०) नारद । —**मूर्ति**–(संज्ञा, स्त्री०) देवता की मूर्ति ।—**यजन**–(संज्ञा, पु०) देवता की पूजा । "देव यजन के पशु यज्ञों की···"—प्रसाद ।—**यज्ञ**–(संज्ञा, पु०, सं०) हवन, यज्ञ ।—**यान**–(संज्ञा, पु०, सं०) विमान । मुक्तिमार्ग, आत्मा के ब्रह्मलोक जाने का मार्ग (उप०) ।—**यानी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शुक्राचार्य्य की कन्या, राजा ययाति की स्त्री ।—**योनि**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वर्गवासी, यक्ष, अप्सरा आदि । "भूतोऽमी देव-योनय"—अम० ।

—**रथ**–(संज्ञा, पु०, सं०) देवतों का विमान । —**राज**–(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र, विष्णु, शिव । —**राज्य**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वर्ग, देवतों का राज्य ।—**रात**–(संज्ञा, पु०, सं०) राजा परीक्षित ।—**रानी**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० देवर] देवर की स्त्री । इन्द्राणी । देउरानी (ग्रा०) । —**राय**–(संज्ञा; पु०) [सं० देवराज] इन्द्र; विष्णु; शिव ।—**लोक**–(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ग । —**वधू**, **वधूटी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवता की स्त्री, देवी, अप्सरा । "देवबधू नाचहिं करि गाना"—[रामा०] ।—**वाणी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवता की वाणी, संस्कृत भाषा । आकाश-वाणी ।—**वृक्ष**–(संज्ञा, पु०, सं०) कल्पवृक्ष, मंदार आदि ।—**व्रत**–(संज्ञा, पु०, सं०) भीष्म-पितामह ।—**शुनी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवलोक की कुतिया । सरमा ।—**श्रेणि**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवसभा ।—**सभा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवतों का समाज, राजसभा सुधर्म्मा सभा, जिसे मय ने पांडवों के लिए बनाया था, देव-समाज ।—**सर**–(संज्ञा, पु०, सं०) मानसरोवर ।—**सेना**–(संज्ञा, स्त्री०. सं०) देवताओं की फौज । प्रजापति की कन्या । सावित्री-सुता, षष्ठी ।—**स्त्री**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवी ।—**स्थान**–(संज्ञा, पु०, सं०) देवालय ।—**हूति**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वयंभुव मुनि-कन्या, कर्दम ऋषि की स्त्री, सांख्यकार कपिल-मुनि की माँ ।

देवकांगजा—(संज्ञा, स्त्री०) देवकी । "यथार्थ माँ है यदि देवकांगजा"—हरिऔध ।

देवकाबार—(संज्ञा, पु०, सं०) चनसुर, देवकाष्ठ । (संज्ञा, पु०, सं०) देवदारु ।

देवकी—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण-माता ।—**नन्दन**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) श्रीकृष्ण ।

देवता—(संज्ञा, पु०, सं०) सुर, देव ।

देवतीर्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) एक तीर्थ ।

देवत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) देवता होने का भाव, धर्म या कर्म ।

देवर—(संज्ञा, पु०, सं०) पति का छोटा भाई [**देवरानी** (स्त्री०)]

देवरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० देवर] छोटा देवता । [**देवरी** (स्त्री०)]

देवल—(संज्ञा, पु०, सं०) पुजारी, पंडा । धार्मिक । एक चावल । नारद । (संज्ञा, पु०, दे०)

देवालय। "देवल जाऊँ तो मूरति पूजा तीरथ जाँउ तो पानी"—कबीर।

देवस्व—(संज्ञा, पु०, सं०) देवताओं का धन।

देवांगना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) देवताओं की स्त्री, अप्सरा, देववधूटी।

देवांश—(संज्ञा, पु०, सं०) देवों का भाग या हिस्सा। विष्णु का आंशिक अवतार।

देवा†—(वि०) [हि० देना] देने वाला, ऋणी।

देवागार—(संज्ञा, पु०) [सं० देव+आगार] मंदिर, देवालय।

देवान†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दीवान] दीवान, मंत्री। दरबार, कचहरी। प्रबंधकर्ता।

देवानांप्रिय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देवताओं को प्रिय। मूर्ख। बकरा।

देवापगा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंगा। "देवापगा-सी-सरी"—हरिऔध।

देवापि—(संज्ञा, पु०, सं०) ऋष्टिसेन सुत, शान्तनु राजा के बड़े भाई।

देवारि—नास्तिक। असुर, दानव, दैत्य, राक्षस। धर्म्मात्मा पुरुष। नारद मुनि। चावल-विशेष। (संज्ञा, पु०) [सं० देवालय] देवमन्दिर, देवालय।

देवारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दीपावली] दीवाली, दिवारी (ग्रा०)।

देवार्चन—(संज्ञा, पु०) [सं० देव+अर्चन] देवता का पूजन।

देवार्पण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देवता के हेतु दान। [**देवार्पित** (वि०)]

देवाल, देवार†—(वि०, दे०) [हि० देना] दाता, दानी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) दीवाल।

देवालय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) स्वर्ग। देव-मन्दिर।

देवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवांगना। दुर्गा। पट-रानी। सुशीला स्त्री, ब्राह्मण स्त्री की उपाधि।

देवीपुराण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक पुराण जिसमें देवी के अवतारों, कार्यों और महिमा का वर्णन है।

देवीभागवत—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक पुराण जिसमें १२ स्कंध और १८००० श्लोक हैं (जैसे भाग०)।

देवेन्द्र—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) इन्द्र।

देवेश—(संज्ञा, पु०) [सं० देव+ईश] इन्द्र।

देवेशय—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, परमेश्वर।

देवैया†—(वि०, दे०) [हि० देना+ऐया प्रत्य०] देने वाला, दिवैय्या।

देवोत्तर—(संज्ञा, पु०, सं०) देवताओं को दिया हुआ धन या सम्पत्ति।

देवोत्थान—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) विष्णु का शेष-शय्या से उठना, कार्तिक सुदी एकादशी, दिठवन, देवथान (ग्रा०)।

देवोद्यान—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देवतों के बाग जो चार हैं—नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राज, सर्वतोभद्र। देव-वाटिका।

देवोन्माद—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक प्रकार का उन्माद जिसमें मनुष्य पवित्र रहता है, सुगंधित फूलादि चाहता तथा संस्कृत बोलता है (वैद्य०)।

देवोपासना, देवोपासन—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) देवपूजन, देवाराधन, देवार्चन।

देश—(संज्ञा, पु०, सं०) महाद्वीप का वह भाग जहाँ एक ही जाति के लोग रहते हों। एक शासक एवं शासन-विधान किन्तु कई प्रान्तों और नगरों वाला भूभाग, जनपद, राष्ट्र, जैसे भारत। शरीर का कोई भाग, अंग। "भूषण सकल सुदेश सुहाये"—[रामा०]। [**देशकाल** (यौ०)] स्थान, दिक्।—**ज**–(वि०, सं०) देश में उत्पन्न। (संज्ञा, पु०, सं०) किसी प्रदेश के लोगों की बोल-चाल से उत्पन्न शब्द जो संस्कृत या अपभ्रंश न हो।—**निकाला**–(संज्ञा, पु०, हि०) देश से निकाल देने का दंड।—**भक्त**–(संज्ञा, पु०, सं०) देश-सेवा करने वाला, देश को कष्टों से छुड़ाने वाला।—**भाषा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी देश की बोली या वाणी।—**भिज्ञ**–(संज्ञा, पु०, सं०) देश की अवस्था का जानने वाला, देश-वृत्तान्त-वेत्ता।—**मय**–(संज्ञा, पु०, सं०) देश-रूप, सारे देश में व्याप्त या फैला हुआ।—**रूप**–(संज्ञा, पु०, सं०) देश के अनुसार या योग्य, उचित, देशा-नुरूप।—**स्थ**–(वि०, सं०) देश में स्थित।

देशक—(संज्ञा, पु०, सं०) शासक। शिक्षक। पथप्रदर्शक।

देशांतर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अन्य देश, परदेश, विदेश। किसी नियत मध्याह्न रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी सूचक कल्पित रेखायें (भू०)।

देशांतरी—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) विदेशी।

देशाचार—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देश का आचार-व्यवहार, देश-रस्म, रीति-भाँति।

देशाटन—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देश-भ्रमण, भिन्न-भिन्न देशों की यात्रा।

देशातिथि—(संज्ञा, पु०, सं०) पर्यटन, देशाटन, किसी विशेष देश का भ्रमण।

देशाधिप—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) राजाधिराज, देशाधिपति, महाराजा।

देशाधीश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) राजा।

देशावर—(संज्ञा, पु०) [हि० देश + फ़ा० आवर] विदेश। वहाँ से आया माल। [देसावर (दे०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) परदेश, दूसरा देश।

देशिक—(संज्ञा, पु०, सं०) गुरु, आचार्य। ब्रह्मज्ञान का उपदेशक गुरु।

देशी—(वि०) [सं० देशीय] देश-सम्बन्धी। देश का बना या उत्पन्न। [देसी (दे०)]।

देशोन्नति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) देश की बढ़ती, उन्नति, देशवासियों की सुखादि-वृद्धि।

देश्य—(वि०, सं०) जिसे साबित करना हो। स्थानीय, प्रांतीय। (संज्ञा, पु०) प्रत्यक्षदर्शी।

देस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० देश] देश, मुल्क। [**देसी** (वि०)], [**देसकोस** (यौ०)]

देसावर—(संज्ञा, पु०) विदेश, परदेश।

देसावरी—(वि०) विदेशी, देसावर का।

देसावल—(वि०, दे०) [हि० देश + वाला] अपने देश का, स्वदेश का।

देह—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शरीर, तन, बदन। [**देही** (वि०)] **मुहा०**—**छूटना**-मृत्यु या मौत होना।—**छोड़ना**-मरना।—**धरना**-जन्म लेना, उत्पन्न या पैदा होना, शरीर-धारण करना। "देह धरे कर यह फल भाई"—[रामा०]। जीवन। शरीर का कोई अंग।—**त्याग**-(संज्ञा, पु०, सं०) मौत, मृत्यु।—**धारण**-(संज्ञा, पु०, सं०) जन्म-ग्रहण, जीवन-रक्षा, शरीर-धारण।—**धारी**-(संज्ञा, पु०) [सं० देह + धारिन्] जीवधारी, शरीरधारी, देही। [**देहधारिणी** (स्त्री०)] —**पात**-(संज्ञा, पु०, सं०) मौत, मृत्यु।—**वंत**-(वि०, सं०) शरीरधारी, देहधारी, तनधारी। (संज्ञा, पु०) जीवधारी, प्राणी, व्यक्ति, देही। —**वान्**-(वि०) [सं० देहवंत] तनधारी, शरीरी, देही।

देहरा—(संज्ञा, पु०) [हि० देव + घर] देवालय। (संज्ञा, पु०) [हि० देह] मनुष्य का शरीर।

देहरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डेहरी (ग्रा०), द्वार की चौखट के नीचे की चौकोर लकड़ी। "ताकी देहरी पै गेरि दे"—द्विज०। "जीह देहरी द्वार"—तुल०। [देहली (दे०)]

देहली-दीपक—(संज्ञा, पु०, सं०) देहली पर का दिया जो भीतर-बाहर दोनों ओर प्रकाश करे। एक अलंकार जिसमें कोई शब्द दो वाक्यों में चरितार्थ होता है। [**देहली-दीपक-न्याय**-(यौ०) दो तरफी बात।]

देहांत—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) मृत्यु, मौत।

देहांतर—(संज्ञा, पु०) [सं० देह + अंतर] दूसरा शरीर।—**प्राप्ति**-(संज्ञा, स्त्री०) आत्मा का एक शरीर से दूसरे शरीर में स्थानांतरित होना।

देहात—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गाँव, ग्राम। [**देहाती** (वि०)]।

देहाती—(वि०, फ़ा०) ग्रामीण, गँवार, गाँव का निवासी, गाँव का। असभ्य।

देहात्म—(संज्ञा, पु०) शरीर और आत्मा।—**ज्ञान**-(संज्ञा, पु०) शरीर और आत्मा के अभेद का ज्ञान।—**वादी**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) शरीर ही को आत्मा या जीव मानने वाला। चार्वाक, नास्तिक।

देहावरण—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० देह + आवरण] वस्त्र, वाह्य आवरण (शरीर का)।

देही—(संज्ञा, पु०) [सं० देहिन्] जीव, आत्मा। "देही कर्म्मानुगोऽवशः"—भाग०।

देहेश्वर—(संज्ञा, पु०) [सं० देह + ईश्वर]। देह का स्वामी। आत्मा।

दैउ, दैव*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दैव] भाग्य, तकदीर, क़िस्मत, देश्उ (ग्रा०)। "दैव दैव आलसी पुकारा।"

दैजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दायज] दायज, दहेज, दइजा, दाइजु (ग्रा०)।

दैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दैत्य] दानव।

दैतेय—(संज्ञा, पु०) [सं० दिति] दैत्य, दानव।

दैतेन्द्र—(संज्ञा पु०, सं०) गंधक। दैत्यों के राजा, दैत्यराज। "सिंदूर दैतेन्द्र राजा, मनः शिलानाम्" —[वैद्यजी०]।

दैत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दानव, दैतेय, दइत (ग्रा०)।—**गुरु**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) शुक्राचार्य।—**पति**-(संज्ञा, पु०) हिरण्यकशिपु। —**पूज्य**-(संज्ञा, पु०) शुक्राचार्य।—**माता**-

(संज्ञा, स्त्री०) दिति ।—मेदज-(संज्ञा, पु०) गुग्गुल ।—मेदजा-(संज्ञा, स्त्री०) पृथ्वी ।

दैत्या—(संज्ञा, स्त्री०) राक्षस की स्त्री । मदिरा । देह का मालिक, आत्मा ।

दैत्याचार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) शुक्राचार्य ।

दैत्यारि—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) विष्णु ।

दैत्याधिप, दैत्याधिपति—(संज्ञा, पु०, सं०) दैत्यराज ।

दैनंदिन—(वि०, सं०, यौ०) प्रतिदिन का, नित्य का । (क्रि० वि०, सं०) प्रति दिन, दिनोंदिन । (संज्ञा, पु०) एक तरह का प्रलय (पु०) ।

दैनंदिनी—(वि०, स्त्री०, सं०) डायरी, रोजनामचा ।

दैन—(वि०, दे०) [हि० देना] देने वाला (यौ० में) जैसे, सुखदैन । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दैन्य] कंगाली, निर्धनता, दीनता ।

दैनिक—(वि०, सं०) हर रोज का, रोजाना, प्रतिदिन का ।

दैनिकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रतिदिन का ।

दैन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कंगाली, दीनता । भक्ति या काव्य में आत्मदीनता-सूचक भाव । कादरता, कायरता ।

दैयत†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दैत्य] दैत्य ।

दैया—(संज्ञा, पु०, दे०) दैव । (अ०) एक आश्चर्य या शोक की सूचना देनेवाला शब्द, जैसे हाय दैया । **मुहा०—दैया करके**-बड़ी कठिनता से । "कौन दुख दैया दैया सोचि उर धार्यो मैं" । (अव्य०, दे०) अचरज, दुःख, भय तथा शोक-सूचक शब्द (प्रायः स्त्रियों में प्रयुक्त) ।

दैर्घ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दीर्घता, लम्बाई, बड़ाई, विस्तार ।

दैव—(वि०, सं०) देवता का, देवता-संबंधी । (संज्ञा, पु०, सं०) भाग्य, अदृष्ट । विधाता, परमेश्वर । होतव्यता, होनहार । "दैव दैव आलसी पुकारा"—[रामा०] । [**दैवी** (वि०)]—कृत-(वि०) प्राकृतिक, ईश्वरीय ।—**गति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दैवी घटना, भाग्य, परमेश्वर की बात । "दैवगति जानी नाहिं परै"—वि० ।—**ज्ञ**-(संज्ञा, पु०, सं०) ज्योतिषी, गणक ।—**योग**-(संज्ञा, पु०, सं०) संयोग, दैव-प्रेरणा, भाग्यविधान । —**लोक**-(संज्ञा, पु०, सं०) भूतभक्त, भूत-सेवक ।—**वश,—वशात्**-(क्रि० वि०, सं०) अकस्मात, दैवयोग से, संयोगवशात ।—**वाणी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आकाशवाणी, नभगिरा । संस्कृत भाषा ।—**वादी**-(संज्ञा, पु०, सं०) भाग्यवादी, भाग्य के भरोसे पर रहने वाला, आलसी, निरुद्यमी । [**दैववाद** (संज्ञा, पु०, सं०)] ।—**विवाह**-(संज्ञा, पु०, सं०) आठ भाँति के विवाहों में से एक, जिसमें कन्या का पिता वर को कन्या एवं धन देता है । **मुहा०**— (**का**) **बरसना**-जलवृष्टि होना ।—**(का) फटना**-बहुत जोर से गर्जन-तर्जन के साथ वृष्टि होना ।

दैवत—(वि०, सं०) देवता-सम्बन्धी । देव-समूह । (संज्ञा, पु०, सं०) देवता की मूर्ति आदि "कियच्चिरं दैवत भाषितानि"—[नैष०] ।

दैवागत—(वि०, सं०, यौ०) भाग्य से प्राप्त, दैवी, आकस्मिक, दैवयोग से प्राप्त, दैवात् उपलब्ध ।

दैवात्—(क्रि० वि०, सं०) संयोग से, भाग्य से, दैवयोग से, अकस्मात् ।

दैवाधीन—(वि०, सं०, यौ०) भाग्यवश, ईश्वराधीन ।

दैवानुरागी—(वि०, दे०, यौ०) ईश्वर-प्रेमी या भक्त, भाग्य-प्रेमी, भाग्यानुसारी ।

दैवानुराधी—(वि०, सं०, यौ०) दैव-वशीभूत, भाग्यानुवर्त्ती, भाग्य-भरोसे बैठने वाला, भाग्यवादी ।

दैवायत्त—(वि०, सं०) दैवाधीन, भाग्यानुसार, अकस्मात, हठात ।

दैविक—(वि०, सं०) देवकृत, देव-सम्बन्धी, देवतों का । "दैहिक दैविक भौतिक तापा" —[रामा०] ।

दैवी—(वि०, सं०) देवकृत, देव-सम्बन्धी, प्राकृतिक, भाग्य या प्रारब्ध के योग से होने वाली बात, आकस्मिक, सात्विक ।—**गति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ईश्वरीय बात, होतव्यता, होनहार, भावी, भाग्य ।

दैशिक—(वि०, सं०) देश-संबन्धी । देश में उत्पन्न या प्राप्त ।

दैहिक—(वि०, सं०) देह-सबन्धी । शरीर से उत्पन्न या प्रगट, शारीरिक । "दैहिक दैविक भौतिक तापा" —[रामा०] ।

दैह्य—(वि०, सं०) शारीरिक । (संज्ञा, पु०) आत्मा ।

दैहौं—(क्रि० स०, ब्र०, दे०) [हि० देना] दूँगा । "दैहौं उतर जो रिपु चढ़ि आवा"—[रामा०] ।

दोंचना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० **दोंचन**] दबाव में डालना, दोंचना (ग्रा०) ।

दो—(वि०, दे०) [सं० द्वि] गिनती की दूसरी संख्या ।—**आतशा**—(वि०, फा०) जो अर्क दो बार उतारा गया हो ।—**आब**,—**आबा**—(संज्ञा, पु०, अ०) दो नदियों के मध्य की भूमि, द्वाब, दुआबा। [दुआब (दे०)]—**कला**—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दो०+कल=पेंच] दो कलों वाला ताला या कुलुफ ।—**कोहा**—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दो +कूबर] दो कूबर वाला ऊँट ।—**गला**—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दोगलः] जारज, भिन्न जातीय माता-पिता से उत्पन्न । [**दोगली** (स्त्री०)] ।—**गाड़ा**—(संज्ञा, पु०, दे०) दोनली बन्दूक ।—**गाना**—(वि०, अ०) दोहरा, द्विगुण, दुगुना। दो लड़ वाला ।—**गुना**—(वि०, दे०) [सं० द्विगुणित] द्विगुण, दुगुना ।—**गुनाना**—(क्रि० स०, दे०) भुकाना। द्विगुण करना, दो तह करना ।—**चर**—(वि०, दे०) दोसरा, दूसरा । —**चित्ता**—(वि०, दे०) [हि० दो+चित्त] उद्विग्न, सन्देह-युक्त, जिसका मन दो बातों या कामों में फँसा या लगा हो, दोचिता । [**दोचित्ती** (स्त्री०)] ।—**चित्ती**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० दो+चित्त] मन की उद्विग्नता, दोचित्तापन, उलझन, फँसाव । [**दोचिताना** (क्रि० स०, दे०)] ।—**जा**—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दो+ सं० जाया] जिसके दो ब्याह हुए हों, दोजहा, दोइजहा (ग्रा०) ।—**जिया**,—**जीवा**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दो+जीव] [**द्विजीवा** (सं०)] दो जीव वाली, गर्भवती । **मुहा०—जी से होना**—गर्भवती या गर्भिणी होना ।—**तरफा**—(संज्ञा, यौ०, फ़ा०) दोनों ओर या पक्ष-सम्बन्धी, दोनों तरफ का। (क्रि० वि०, यौ०) दोनों तरफ या ओर ।—**तला**,—**तल्ला**—(वि०, दे०, यौ०) [हि० दो+तल] दो खंड का, दो मंजिला । दो तले का (जूता) ।—**तारा**—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दो+तार] दो तारों का बाजा ।—**दना**†—(क्रि० स०, दे०) [हि० दो+दोहराना] प्रत्यक्ष बात को न मानना, इन्कार करना ।—**धारा**—(वि०, दे०) [हि० दो+धारा] दुधारा । (संज्ञा, पु०, दे०) एक भाँति का थूहर । [**दोधारी** (स्त्री०)] ।—**नला**—(वि०, दे०) [हि० दो+नल] जिस वस्तु में दो नल हों, दोनली बन्दूक। —**नाली**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [क्रि० दो+नल] दो नलों वाली बन्दूक, दोनली, दुनाली। —**पलिया**†—(वि०, संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दो+पल्ला+इया प्रत्य०] दो पल्ले वाली, जैसे दोपलिया टोपी, दुपलिया (ग्रा०) ।—**पल्ली**—(वि०) [हि० दो+पल्ला+ई प्रत्य०] दो पल्ले वाली, जैसे दोपल्ली टोपी, दुपल्ली (ग्रा०) ।—**पहर**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, हि०) मध्याह्न काल, दुपहरी (ग्रा०) ।—**पहरिया**†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दोपहर] दोपहर, मध्याह्नकाल । (संज्ञा, पु०, दे०) दोपहर को फूलने वाला फूल, दुपहरिया (ग्रा०) ।—**पिठा**, —**पीठा**—(वि०) [हि० दो+पीठ।] दोरुखा, दोनों ओर समान रूप-रंग वाला ।—**फसली**—(वि०, यौ०) [हि० दो+फसल अ०] वह प्रदेश जहाँ दोनों फसलें—खरीफ, रबी—होती हों । जो दोनों फसलों में होता हो । दोनों पक्षों में सम्मिलित, जो दोहरी बात कहता हो ।—**बारा**—(क्रि० वि०, फ़ा०) [दुबारा (दे०)] दूसरी दफा, या दो बार ।—**भाखिया**—(संज्ञा, पु०) [हि० दुभाषिया] दो भाषाओं का वक्ता या ज्ञाता, [दुभाषी, दुभाषिया (दे०)] ।—**मंजिला**—(वि०, फ़ा०) दुखंडा, दोखंडा घर ।—**महला**, **दुमहला** —(वि०, दे०, फ़ा०) दोमंजिला, दोखंडा घर । —**मुँहा**—(वि०) [हि० दो+मुँह] दो मुख वाला । दोहरी बात कहने या चाल चलने वाला, कपटी, छली ।—**मुँहा साँप**—(संज्ञा, पु०) [हि० दो+मुँह] साँपों की एक जाति, जिसकी पूँछ मोटी होने से मुख जैसी जान पड़ती है । कुटिल, छली, कपटी ।—**रंगा**, **दुरंगा**—(वि०, दे०) [हि० दो+रंग] जिसमें भिन्न-भिन्न रंग हों, दो रंग वाला । जो दोनों ओर मिल सके ।—**रंगी**, **दुरंगी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दो+रंग+ई प्रत्य०] छल, कपट, धोखेबाजी । दो रंग होने का भाव । [**दुरंगी दुनिया, दुरंगी बात** (यौ०)] ।—**रसा**—(वि०) [हि० दो+रस] वह पदार्थ जिसमें दो भिन्न-भिन्न प्रकार के रस या स्वाद हों । दो रसों या स्वादों वाला, दो भावों या अर्थों वाला । [**दोरसी** (स्त्री० दे०)] । [**दोरसे दिन**—(यौ०) गर्भावस्था के दिन ।] (संज्ञा, पु०, दे०) पीने की एक तरह की तम्बाकू ।—**राहा**—(संज्ञा, पु०) [हि० दो+राह] वह स्थान जहाँ से दो रास्ते गये हों ।—**रुखा**—(वि०, फ़ा०) जिस पदार्थ के दोनों ओर

बराबर काम किया गया हो, जो दोनों ओर समान हो, जिसके दोनों ओर भिन्न-भिन्न रंग हों ।—**शाखा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विशाखा] दीवारगीर लैम्प जिसमें दो बत्तियाँ जलें ।(वि०, दे०, यौ०) दो शाखाओं वाला ।

मुहा०—एक या—चार-कुछ थोड़े, चंद । **—चार होना**-मुठभेड़ होना । **आँखें—चार होना**-सामना होना ।**—दिन का**- चंद रोज का, थोड़े समय का । "दिन द्वैक लौं आँधहु मैं पहुनाई"—तुल० ।

दोइ, दोय†—(संज्ञा, पु०, वि०, दे०) [हि० दो] दो, दोनों ।

दोउ, दोऊ*†—(वि०, दे०) [सं० द्वि०, हि० दो] दोनों । "जियत धरहु तपसी दोउ भाई ।" "धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ"—[रामा०] ।

दोक—(संज्ञा, पु०, दे०) दो दाँत का बछेड़ा ।

दोकना—(क्रि० अ०, दे०) गर्जना, दहाड़ना ।

दोख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दोष] दोष, बुराई, कलंक, अपराध, दोखू (ग्रा०) । "टूटै टूटनहार तरु, वायुहिं दीजै दोख"—[रामा०] ।

दोखना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० दोख+ना प्रत्य०] दोष, अपराध या कलंक लगाना, ऐब लगाना ।

दोखी*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दोषी] अपराधी, ऐबी, शत्रु, दोषयुक्त, दोषी ।

दोगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दुक्का] एक रजाई या लिहाफ । पानी में तर महीन चूना । गले की रस्सी, गेरवाँ (पशु०) ।

दोच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दबोच] असमञ्जस, दुविधा, दुःख, कष्ट, दबाव ।

दोचन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दबोचना] दबाव, कष्ट, दुःख, असमंजस, दुविधा ।

दोचना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दोच] दबाव डालना, बड़ा जोर लगाना या देना ।

दोज‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्वितीया] दुइज ।

दोज़ख़—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नर्क, नरक, नरक-कुण्ड, जहन्नुम ।

दोज़ख़ी—(वि०, फ़ा०) नरक-सम्बन्धी, नारकी, पापी ।

दोझा, दुजहा, दुइजहा—(संज्ञा, पु०, दे०) दूसरा वर, दो विवाह करने वाला, दूसरे ब्याह का वर ।

दोधक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक छंद ।

दोधूयमान—(वि०, सं०) बारम्बार काँपता हुआ । पुनःपुनः कंपनशील, सदा हिलने वाला ।

दोन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दो] दो पर्वतों के मध्य की नीची भूमि । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दो+नद्] दो नदियों की मध्यवर्ती भूमि, दोआब, संगम-स्थान । दो वस्तुओं का मेल या जोड़ ।

दोना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्रोण] पेड़ के पत्तों से बना कटोरा, दोनवा, दोनावा (ग्रा०) [**दोनी, दोनिया** (स्त्री०)]

दोनिया, दोनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दोना का स्त्री० अल्पा०] छोटा दोना, दोनैय्या (ग्रा०) ।

दोनों—(वि०, दे०) [हि० दो+नों प्रत्य०] उभय, दोऊ ।

दोबर—(वि०, दे०) [हि० या सं० दुर्बल] दूबर (ग्रा०) दुबला, पतला । दोलड़, दोबार ।

दोबल—(संज्ञा, पु०, दे०) दोष, अपराध ।

दोबे—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विवेदी] दुबे, द्विवेदी, दुइबे । दो बार ।

दोय*†—(वि०, संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दो] दो, दोनों । "बरन बिराजत दोय"—तुल० ।

दोयम—(वि०, फ़ा०) दूसरी श्रेणी का, दूसरे नंबर का ।

दोरक—(संज्ञा, पु०, सं०) डोरा, सूत, तार ।

दोरदंड*†—(वि०, दे०) [सं० दुर्दंड] बाहुदंड, भुजदंड, हाथ । बली, प्रचंड ।

दोल—(संज्ञा, पु०, सं०) भूला, हिंडोला । डोली ।

दोलन—(संज्ञा, पु०, सं०) झूलन, हिलन, डोलन । (क्रि० अ०, दे०) दोलना ।

दोला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूला, हिंडोला । डोली ।—**यंत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) औषधियों के बनाने का एक यंत्र (वैद्य०) ।

दोलायमान—(वि०, सं०) डोलता या हिलता हुआ । [**दोलित, दोलनीय** (वि०)] ।

दोलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) झूला, हिंडोला ।

दोलित—(वि०, सं०) अस्थिर, झूलता हुआ ।

दोली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डोली, झूला, पालना ।

दोलोत्सव—(संज्ञा, पु०, सं०) फागुन की पूर्णिमा को होने वाला वैष्णव-उत्सव जिसमें कृष्ण की मूर्ति या प्रतिमा को झूलाते हैं ।

दोष—(संज्ञा, पु०, सं०) ऐब, अवगुण, बुराई। लगाया हुआ अपराध, लांछन, कलंक, अभियोग। जुर्म, कसूर, पाप। शरीर के वात, पित्त, कफ तीन दोष। अति व्याप्ति। काव्य में पद दोषादि पाँच दोष (का०)। प्रदोष। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्वेष] शत्रुता, वैर, द्वेष। [**दोषकर्ता** (वि०)]। "दोष लखन कर हम पर रोषू"—[रामा०]। **—कर**-(वि०, सं०) दूषणावह, अनिष्टकारी, निन्दा करने वाला। [**दोषकारी, दोषकारक** (वि०)]। **—खण्डन**-(संज्ञा, पु०, सं०) अपवाद या कलंक छुड़ाना, दोष मिटाना। **—गायक**-(संज्ञा, पु०, सं०) दोष गाने वाला, निन्दक, दोष-सूचक या दोष-प्रकाशक। **—ग्राहक**-(वि०, सं०) दोष ग्रहण करने वाला, निन्दक, खल, छिद्रान्वेषी, बुराई खोजने वाला। **—ज्ञ**-(वि०, सं०) पंडित, चिकित्सक या वैद्य, दोष-वेत्ता। [**दोषज्ञता** (संज्ञा, स्त्री०)]। **—नाश**-(संज्ञा, पु०, सं०) पापमोचन, अपवाद-हरण। [**दोषनाशक** (वि०)]। **—भाक्**-(वि०, सं०) अपराधी, ऐबी, निन्दा के योग्य। **—मार्जन**-(संज्ञा, पु०, सं०) दोष दूर करना, शुद्ध करना। **मुहा०—लगाना**-अपराध या कलंक आरोपित करना।

दोषक—(संज्ञा, पु०, सं०) दोषी, अपराधी, निंदक, ऐबी।

दोषता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दोष का भाव, दोषत्व।

दोषन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दूषण] दूषण, अपराध।

दोषना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० दूषण+ना प्रत्य०] ऐब या अपराध लगाना, कलंक या लांछन देना।

दोषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात्रि, निशा, रजनी। संध्या। प्रदोष, प्रदोषा।

दोषातन—(वि०, सं०) निशाजात, रात्रिभव।

दोषादोष—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) भलाई-बुराई, गुण-दोष।

दोषारोपण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ऐब, अपराध, कलंक, लांछन लगाना।

दोषावह—(वि०, सं०) दोष-उत्पादक, दोषोत्पन्न, दोष का धारण करने वाला।

दोषित—(वि०) दोषयुक्त। लांछित।

दोषिन, दोखिन†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दोषी] अपराधिनी, पापिनी, कलंकिनी।

दोषी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दोषिन्] अपराधी, कलंकी, पापी, अभियुक्त [दोसी (दे०)]।

दोषैकदृक्—(वि०, सं०, यौ०) दोषदर्शी, दोष देखने वाला, छिद्रान्वेषक।

दोस*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दोष] ऐब, अपराध, दोष। (संज्ञा, पु०, दे०) दोस्त।

दोसदारी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० दोस्त-दारी] मित्रता, दोस्ती।

दोसरा—(संज्ञा, पु०, दे०) दूसरा। साथी।

दोसाद—(संज्ञा, पु०, दे०) धानुक, धानुख, डुमार, दुसाद, अछूत जाति-विशेष।

दोसाला†—(वि०, यौ०) [हि० दो+साल =वर्ष] दो वर्ष का। (संज्ञा, पु०, दे०) दुशाला, पशमीना।

दोसूती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० दो+सूत] दो तहो। दो सूत का मोटे कपड़े का बिछौना।

दोस्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मित्र, साथी, स्नेही।

दोस्ताना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मित्रता। मित्रता का व्यवहार। (वि०) मित्रता का।

दोस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) स्नेह, मित्रता, प्रेम।

दोह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्रोह] वैर, शत्रुता।

दोहगा†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दुर्भगा] रखी हुई स्त्री, उपपत्नी, सुरैतिन।

दोहता, दुहेता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दौहित्र] नाती, नवासा। [**दोहती, दोहेती** (स्त्री०)]।

दोहत्थड़—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० दो +हाथ] दोनों हाथों से मारा जाने वाला थप्पड़ आदि।

दोहत्था, दुहत्था—(क्रि० वि०, दे०, यौ०) [हि० दो+हाथ] दोनों हाथों के बल या द्वारा, दोनों हाथों से। (वि०, दे०) जो दोनों हाथों के द्वारा हो। [**दोहत्थी, दुहत्थी** (स्त्री०)]।

दोहद—(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भिणी की इच्छा या अभिलाषा। गर्भावस्था, गर्भचिह्न। सुन्दरी नायिका के छूने से प्रियंगु, पान की पीक डालने से मौलसिरी, लात मारने से अशोक, देखने से तिलक, मीठा गाने से आम, नाचने से कचनार फूलता है, यही उनका दोहद है।

"उपेत्य सा दोहद-दुःख शीलताम्", "सुदक्षिणा दोहदलक्षणं दधौ"—[रघु०]।—**लक्षण**-(संज्ञा, पु०) गर्भ सम्बन्धी लक्षण।—**वती**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्भवती स्त्री।

दोहन—(संज्ञा, पु०, सं०) दुहना, दोहनी।

दोहना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० दूषण] दोष या कलंक अथवा अपराध लगाना, तुच्छ ठहराना, द्रोह करना। दुहना।

दोहनी, दोहिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) दूध दुहने का पात्र। दूध दुहने का कार्य्य या कर्म। "धर्यो गिरवर, दोहनी, धारन बाँह पिराय"—सूर।

दोहर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दो+धरी =तह] दो परत की मगजीदार चादर या दुपट्टा।

दोहरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० दोहरा] दोहरा होना, दुबारा होना। (क्रि० स०, दे०) दोहरा करना।

दोहरा—(वि०, पु०) दो। [हि० दो+हरा प्रत्य०] दो परत या तह वाला, दुगुना, दो लर का। (संज्ञा, पु०) एक पत्ते में लपेटे हुए पान के दो बीड़े। दोहा छंद। "सतसैया को दोहरा, ज्यों नावक को तीर।"

दोहराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दोहरा] दुबारा कहना या करना, पुनरावृत्ति करना, दो तहे या दोहरा करना, दोहरवाना (ग्रा०)।

दोहराव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दोहराना] दोहराया हुआ, दोहराने का काम, तह करना।

दोहरी—(वि०, स्त्री०) दो पर्त वाली, दुगनी, दो तह की।

दोहला, दुहिला—(वि०, दे०) दो बार की बियाई हुई गौ।

दोहली—(संज्ञा, पु०, दे०) मदार, आक।

दोहा—(संज्ञा, पु०) [हि० दो+हा प्रत्य०] १३ और ११ पर विराम वाला २४ मात्राओं का एक छंद (पिं०)।

दोहाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दुहाई] दुहाई, शपथ, सहायता या रक्षा-हेतु पुकार, प्रभावांतक या जय की ध्वनि। "उतरावन इत राम दोहाई" —[रामा०]।

दोहाक*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दौर्भाग्य] अभाग्य, दुर्भाग्य।

दोहाग†—(वि०, पु०, दे०) [सं० दौर्भाग्य] अभागा, दुर्भागी। [**दोहागिनी** (स्त्री०)]।

दोहित†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दौहित्र] नाती, बेटी का बेटा, पुत्री का पुत्र। [**दोहिता** (स्त्री०)]

दोही—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दो] एक छंद (पिं०)। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दोहिन्] ग्वाला, अहीर, दूध दुहने वाला। (वि०, दे०) [सं० द्रोहिन] वैरी, शत्रु।

दोह्य—(वि०, सं०) दुहने योग्य।

दौं—(अव्य, दे०) [सं० अथवा] धौं, या, अथवा, वा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दव] दावानल, वनागि। "उभय अग्र दौं दारु कीट ज्यों शीतल-ताति चहै"—सूर।

दौंकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० दमकना] दमकना, चमकना। (क्रि० स०, दे०) [हि० डौंकना] बड़े जोर से डाँटना या फटकारना।

दौंगड़ा, दौंगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) भारी वर्षा जो वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में होती है। "पहिल दौंगरा भरिगे गड्ढा"—घाघ।

दौंचना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० दबोचना] किसी पर दबाव डाल कर या दबा कर लेना, हठ-पूर्वक लेना।

दौंरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दाँना या दाँवना] दायँ, दँवरी, अनाज माँड़ने का कार्य।

दौ*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दव] दावानल, वन की आग, ताप, जलन, दव। "मृगी देखि जिमि दौ चहुं ओरा"—[रामा०]।

दौड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दौड़ना] दौड़ने का भाव या कार्य्य, शीघ्र गमन या गति। धावा। लंबी यात्रा। वेग के साथ चढ़ाई, धावा या आक्र-मण। इधर-उधर घूमने का कार्य्य, प्रयत्न, उपाय। पहुँच की सीमा, उद्योग की हद, बुद्धि की पहुँच या गति, विस्तार। पुलिस के सिपाहियों का दल जो चोर आदि को घेर लेता है।—**धूप**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० दौड़+धूप] उद्योग, उपाय, प्रयत्न।—० **करना**-(क्रि० अ०, हि०, यौ०) बहुत यत्न, परिश्रम या उद्योग करना। **मुहा० मन की—**, चित्त का विचार।—**मारना**, —**लगाना**-दूर तक जाना, पहुँचना, दूर तक को सफर करना, वेग से जाना।—**दौड़ कर आना**-बार-बार या जल्दी-जल्दी आना।

दौड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० धोरण] तेजी या शीघ्रता से जल्दी-जल्दी चलना। **मुहा०**

चढ़—, आक्रमण या चढ़ाई करना। सहसा पिल पड़ना। उद्योग में घूमना। छा जाना।

दौड़ा—(संज्ञा, पु०) [हि० दौड़ना] घुड़सवार। बटमार। जाँच के लिए स्थान-स्थान पर जाना, दौरा।

दौड़ाक—(संज्ञा, पु०) [हि० दौड़ा+अक प्रत्य०] दौड़ने वाला, धावक, धावन।

दौड़ादौड़—(क्रि० वि०, यौ०) [हि० दौड़] बिना कहीं ठहरे, लगातार, अविश्रांत, बेतहाशा।

दौड़ीदौड़ा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दौड़] आतुरता, त्वरा, शीघ्रता। दौड़-धूप। बहुत से मनुष्यों के साथ चारों ओर दौड़ना।

दौड़ाधूपी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) कोशिश, प्रयत्न, उपाय।

दौड़ान, दौरान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दौड़ना] दौड़ने का भाव, तेज चाल, द्रुत गमन, झोंक, वेग, समय का अंतर।

दौड़ाना, दौराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दौड़ना का प्रेरणा० रूप] शीघ्रता से चलाना। बार-बार आने-जाने को विवश करना। किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे पर पहुँचाना। पोतना, फैलाना। चलाना, परेशान करना।

दौड़ाहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० दौड़ा+हा प्रत्य०] दौड़ने वाला, सँदेसिया, हरकारा।

दौत्य*—(संज्ञा, पु०, दे०) दूत या हरकारा का कार्य्य, दूतत्व।

दौन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दमन] दबाव, दमन।

दौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दमनक] सुगंधित पौधा। †(संज्ञा, पु०) [हि० दोना] पत्तों से बना कटोरा। *(क्रि० स०, दे०) [सं० दमन] दमन करना।

दौनागिरि—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० द्रोणगिरि] द्रोणगिरि नामक पर्वत। "दौनागिरि कौ धौं कहूँ छटक्यौ कनूका एक"—रत्ना०।

दौर—(संज्ञा, पु०, दे०, अ०) चक्कर, भ्रमण, फेरा। दिनों का फेर, कालचक्र। उन्नति, उदय या बढ़ती का समय। [**दौरदौरा**-(यौ०) प्रधानता, प्रबलता, प्रताप, आतंक।] बारी, दौड़, दौड़धूप।—**चलना**-शराब का प्याला बारी-बारी से पहुँचाना।

दौरना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० दौड़ना] दौड़ना। [**दौराना, दौरवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

दौरा—(संज्ञा, पु०) [अ० दौर] भ्रमण, चक्कर, फेरा। (सा० भू०, क्रि० अ०, दे०) दौड़ा।—**करना**-निरीक्षण या जाँच-पड़ताल के लिए भ्रमण करना। समय-समय पर होने वाला रोग। आवर्त्तन। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्रोण] टोकरा, झौवा, झावा। [**दौरी** (स्त्री० अल्पा०)], [**दौराजज** (यौ०)]। **मुहा०—सिपुर्द करना**-(मुकदमा) सेशन जज के यहाँ भेजना।

दौरात्म्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्जनता, दुष्टता।

दौरादौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० दौड़ना] दौड़ा-दौड़ी।

दौरान—(संज्ञा, पु०, अ०, फ़ा०) दौरा, चक्र, बीच में, फेरा, पारी।

दौरी†—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० दौरा] टोकरी, डलिया। (सा० भू०, क्रि० अ०, स्त्री०, दे०) दौड़ी। [**दौरना, दौड़ना** (हि०)]।

दौर्जन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दुष्टता, दुर्जनता।

दौर्बल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्बलता, कमजोरी। "हृदय-दौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप"—[गी०]।

दौर्मनस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दुष्टता, दुर्जनता।

दौर्य्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दूरी, अन्तर, फासिला।

दौर्वृत्त्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दुराचारिता।

दौलत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सम्पत्ति, लक्ष्मी, धन। [**धनदौलत** (यौ०)]।—**खाना**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) घर, निवास-स्थान (शिष्ट प्रयोग)। —**मंद**-(वि०, फ़ा०) धनवान, धनी।

दौवारिक—(संज्ञा, पु०, सं०) द्वारपाल, दरबान।

दौहित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) नाती, नप्ता, लड़की का लड़का। [**दौहित्री** (स्त्री०)]।

द्यु—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ग, आकाश। दिन। अग्नि। सूर्य्य-लोक।—**मणि**-(संज्ञा, पु०, सं०) भानु, रवि, सूर्य।—**लोक**-(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ग लोक।

द्युति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रकाश, कांति, दीप्ति, चमक, दमक, छवि, शोभा। किरण।

द्युतिमंत—(वि०, सं०) द्युतिमान, चमक-दमक वाला, कांति या दीप्ति वाला।

द्युतिमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तेज, कांति, दीप्ति, प्रकाश, आभा।

द्युतिमान—(वि०) (सं० द्युतिमत्) आभा, कांति या दीप्ति वाला। [**द्युतिमती** (स्त्री०)]।

द्युमत्सेन—(संज्ञा, पु०, सं०) सावित्री-पति सत्यवान के पिता, शाल्व देश के राजा ।
द्युवीर्य—(वि०, सं०, यौ०) दिन में बली ।
द्युसद्—(वि०, सं०) स्वर्गवासी । (संज्ञा, पु०, सं०) देवता, देव, सुर ।
द्यूत—(संज्ञा, पु० सं०) जुआ, जुवा । [**द्यूतक्रीड़ा** (यौ०)] ।—**प्रतिपदा**–(संज्ञा, स्त्री०) कार्तिक-शुक्ला प्रतिपदा ।—**भूमि**–(संज्ञा, स्त्री०) जुआ खेलने की जगह ।—**वृत्ति**–(संज्ञा, पु०) जुआड़ी, जुआ खेलने वाला ।
द्यूताधिप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जन्मांक में सातवें घर का स्वामी (फलित ज्यो०) ।
द्योत—(संज्ञा, पु०) प्रकाश, धूप ।
द्योतक—(वि०, सं०) प्रकाशक, बतलाने वाला ।
द्योतन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाशित करने या बताने का काम, दिखाने का कार्य । [**द्योतित, द्योतनीय** (वि०)] ।
द्योस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दिवस] दिन । "गई हुती पाछिले द्योस की नाँई"—मति० ।
द्योसरा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० देवघर] देवस्थान, देवालय, देहरा (ग्रा०) ।
द्रम्म—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मि० फ़ा० दिरम] दिरम, चाँदी का एक सिक्का ।
द्रव—(संज्ञा, पु०, वि०, सं०) पतला, तरल, पानी सा ।—**ज**–(संज्ञा, पु०) गुड़ ।—**शील**–(वि०) पिघलने वाला ।
द्रवण—(संज्ञा, पु०, सं०) रस, पानी सा-पदार्थ । पतला, तरल । बहाव, गमन, गति । चित्त के कोमल होने की दशा । [**द्रवित, द्रवणीय (वि०)**]
द्रवता, द्रवत्व—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) द्रव का भाव, तरलता ।
द्रवना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० द्रवण] पिघलना, द्रवीभूत या दयार्द्र होना, पसीजना ।
द्रवाधार—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा पात्र । अंजलि ।
द्रविड़—(संज्ञा, पु०) [सं० तिरमिक] एक प्रदेश । वहाँ के ब्राह्मण । भारत के प्राचीन वासी ।
द्रविण—(संज्ञा, पु०, सं०) धन, लक्ष्मी, संपत्ति । "त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव ।"
द्रवित—(वि०, सं०) द्रवीभूत, बहता हुआ ।
द्रवीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) गलाना, पिघलाना, कठोर को नरम करना ।
द्रवीभूत—(वि०, सं०) पिघला, गला, नर्म ।
द्रव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पदार्थ, वस्तु, चीज । पृथ्वी आदि नौ द्रव्य (वैशे०) । सामान, सामग्री । धन । "द्रव्येषु सर्वे वशाः"—[स्फु०] ।—**वान्**, —**मान**–(वि०) [सं० द्रव्यमत्] धनी, धनवान । [**द्रव्यवती** (स्त्री०)]
द्रव्यत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) द्रव्य का भाव ।
द्रष्टव्य—(वि०, सं०) देखने योग्य, दर्शनीय ।
द्रष्टा—(वि०, सं०) देखने वाला, दर्शक । पुरुष (सांख्य) और आत्मा (योग०) । "तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्"—(योग०) । "द्रष्टा नित्यशुद्ध-बुद्धमुक्तस्वभावत्वात्" (सांख्य) ।
द्राक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अंगूर । दाख । किसमिस । "एलात्वक् पत्रक द्राक्षा"—[भाव०] ।
द्राघिमा—(संज्ञा, पु०) [सं० द्रघिमन्] अति दीर्घ या बड़ा होने का गुण, दीर्घता ।
द्राण—(संज्ञा, पु०, सं०) निद्रा । पलायन, भागना ।
द्राव—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षरण । चलन, गमन । रस । [**शंखद्राव** (यौ०)]
द्रावक—(वि०, सं०) गलाने या पिघलाने वाला । चित्त पर अपना प्रभाव डालने वाला ।
द्रावड़, द्राविड़—(वि०, सं०) द्रविड़ देश का उत्पन्न या निवासी । वहाँ की भाषा ।
द्रावण—(संज्ञा, पु०, सं०) गलाने और पिघलाने की क्रिया या भाव । [**द्रावणीय (वि०)**] ।
द्राविड़ी—(संज्ञा, वि०) द्रविड़ भाषा । [**द्रविड़ा** (स्त्री०)] **मुहा०—प्राणायाम**–सीधी-सादी बात को पेंचदार बना कर कहना ।
द्रावित—(वि०, सं०) गलाया, पिघलाया हुआ । भगाया हुआ ।
द्रावीड़—(वि०, सं०) द्रविड़-सम्बन्धी ।
द्राव्य—(वि०, सं०) गलाये या पिघलाये जाने योग्य । भगाये जाने लायक ।
द्रुत—(वि०, सं०) शीघ्रगामी, जल्दी-जल्दी चलने वाला । भागा हुआ । ताल की एक मात्रा, दून ।—**गामी**–(वि०) [सं० द्रुतगामिन्] तेज चलने वाला, शीघ्रगामी । [**द्रुतगामिनी** (स्त्री०)] । —**पद**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक छंद (पिं०) । —**मध्या**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अर्धसम छंद (पिं०) ।—**विलंबित**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक छंद । "द्रुत बिलंबित माह नभौ भरौ" —(पिं०) ।

द्रुति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) द्रव । गति । शीघ्रता ।
द्रुपद—(संज्ञा, पु०, सं०) पंजाब देश के राजा, द्रौपदी या कृष्णा के पिता ।
द्रुम—(संज्ञा, पु०, सं०) पेड़, वृक्ष ।
द्रुमालिक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राक्षस ।
द्रुमारि—(संज्ञा, पु०, सं०) वृक्षों का वैरी, हाथी, करि । (वि०, सं०) कुठार, कुल्हाड़ी । आँधी, प्रभंजन ।
द्रुमाश्रय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गिरगिट, कृकलास, शरट ।
द्रुमिला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक छंद, दुर्मिल सवैया (पिं०) [दुरमिल (दे०)] ।
द्रुमेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पीपल या ताड़ का वृक्ष । चन्द्रमा, निशाकर. द्रुमेश ।
द्रुमोत्पल—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्णिकार नामक पेड़ ।
द्रुहिण—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा, विधाता ।
द्रुह्यु—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा ययाति के पुत्र ।
द्रोण—(संज्ञा, पु०, सं०) काष्ठ-पात्र । पत्तों का कटोरा, दोना । १६ सेर की तौल । नाव, डोंगा । अरणी लकड़ी । एक प्रकार का रथ । काला कौआ । द्रोणगिरि । द्रोणाचार्य ।—**काक**-(संज्ञा, पु०, सं०) काला कौआ ।—**गिरि**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक पर्वत ।
द्रोणाचार्य्य—(संज्ञा, पु०, सं०) धनुर्विद्या के अद्वितीय ज्ञाता गुरु, अश्वत्थामा के पिता ।
द्रोणायन—(संज्ञा, पु०, सं०) द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा, द्रौणी ।
द्रोणिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नील का छोटा पौधा । कंडाल ।
द्रोणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डोंगी । छोटा दोना । काठ का प्याला । दून या दर्रा । द्रोण की स्त्री कृपी । १२८ सेर की तौल [द्रोनी (दे०)] ।
द्रोन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्रोण] दोना । द्रोणाचार्य [द्रोनाचारज (दे०)] ।
द्रोह—(संज्ञा, पु०, सं०) द्वेष, वैर, शत्रुता, दूसरे का अहित-चिंतन । "करहिं मोहबस द्रोह परावा" —[रामा०] ।
द्रोहिया—(वि०, दे०) द्रोही, द्वेषी, वैरी, विरोधी ।
द्रोही—(संज्ञा, पु०) [सं० द्रोहिन्] द्रोह करने या बुराई चाहने वाला, वैरी । [**द्रोहिणी** (स्त्री०)] । "सिव-द्रोही मम दास कहावै" —[रामा०] ।
द्रौपदी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृष्णा, राजा द्रुपद की पुत्री, पांडवों की स्त्री ।
द्वंद—(संज्ञा, पु०, सं०) दो, जोड़ा, मिथुन, युग्म । प्रतिद्वन्द्, मल्ल या द्वंद्व युद्ध, झगड़ा । दो विरोधी वस्तुएँ जैसे—सुख-दुख । जंजाल, उलझन, दुःख, कष्ट, संशय, [दुंद (दे०)] । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० दुंदुभी] दुंदुभी, नगाड़ा ।
द्वंदर*—(वि०, दे०) [सं० द्वंद्वालु] झगड़ालू, बखेड़िया, लड़ाका ।
द्वंद्व—(संज्ञा, पु०, सं०) जोड़ा, युग्म, दो । दो विरोधी पदार्थों का जोड़ा । गुप्त बात या रहस्य । दो पुरुषों का युद्ध, झगड़ा । एक समास जिसमें 'और' शब्द का लोप हो (व्या०) ।—**युद्ध**-(संज्ञा, पु०, सं०) दो मनुष्यों की लड़ाई, कुश्ती, मल्ल-युद्ध ।
द्वय—(वि०, सं०) दो, द्वै [दुइ (दे०)] ।
द्वा—(वि०, सं०) द्वि का समासगत स्वरूप ।—**दश**-(वि०, सं०) बारह ।—**दशी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [दुआदसी (दे०)], बारहवीं तिथि, दुआस (ग्रा०) ।—**दसवानी***-(वि०, दे०, यौ०) [हि० बारहवानी] सूर्य सा प्रभावान, खरा, निर्दोष, सच्चा, पक्का, पूरा । सोना के हेतु ।—**पर**-(संज्ञा, पु०, सं०) तीसरा युग, जो ८,६४,००० वर्ष का होता है ।
द्वादशाक्षर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) १२ वर्णों का छंद । बारह अक्षर का विष्णु का मंत्र— "ओ३म् नमो भगवते वासुदेवाय ।"
द्वादशाह—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) बारह दिनों का समूह । मृतक के बारहवें दिन का कर्म या श्राद्ध, द्वादशाहिक ।
द्वार—(संज्ञा, पु०, सं०) दरवाजा, मुहारा, मुहार, दुवार । इन्द्रियों के छेद, दुआर (ग्रा०) ।—**चार**-(संज्ञा, पु०) लड़की वाले के यहाँ होनेवाली एक वैवाहिक रस्म ।—**पाल**-(संज्ञा, पु०) पहरेदार । —**पूजा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) दरवाजा-चार, द्वाराचार, दुवाराचार ।—**वती**, **द्वारावती**, **द्वारिका**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) द्वारका नगर (गुजरात) ।—**समुद्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण का एक प्राचीन प्रसिद्ध नगर ।
द्वारका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुजरात का एक तीर्थ या नगर, द्वारावती, द्वारिका । "द्वारका के

नाथ द्वार काके पठवत हौ।"—नाथ—,पति–(संज्ञा, पु०) श्रीकृष्ण।

द्वारकाधीश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) श्रीकृष्ण। द्वारका मे श्रीकृष्ण की मूर्ति, द्वारकेश।

द्वारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्वार] द्वार, दरवाजा। (अव्य, दे०) [सं० द्वारात] जरिये या साधन से।

द्वारी*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० द्वार+ई प्रत्य०] छोटा द्वार या दरवाजा। (वि०) द्वारयुक्त। [दुवारी (दे०)]।

द्वि—(वि०, सं०) दो, द्वै।—**कर्म**,—**कर्मक**–(वि०, सं०, यौ०) वह सकर्मक क्रिया जिसमें दो कर्म हों (व्या०)।—**कल**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [दे० द्वि+कला] दो मात्रा का (पिं०)—**गु**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक समास जिसका पूर्व पद संख्यावाची हो (व्या०) ।—**गुण**–(वि०, सं०) दूना, दोगुना, दुगना, दुगुन, दूगुन (ग्रा०)।—**गुणित**–(वि०, सं०) दूना, दो गुना।—**जन्मा**–(वि०, यौ०) [सं० द्विजन्मन्] जो दोबार उत्पन्न हुआ हो, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, पक्षी, कीड़े अर्थात् अंडज। दाँत।—**जाति**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अर्थात् जनेऊ पहनने वाले अंडज। दाँत।—**जातीय**–(वि०, सं०, यौ०) ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य तीनों वर्ण सम्बन्धी।—**जिह्व**–(वि०, सं०, यौ०) दो जीभों वाला, दुष्ट, खल, चुगलखोर। सर्प। "द्विजिह्वं पुनः सोऽपि ते कंठभूषा"—श०।—**ज्या**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्योतिष की एक रेखा।—**त्रा**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) दो अथवा तीन, दो-तीन।—**दल**–(वि०, सं०, यौ०) वह वस्तु जिसमें दो दल, पत्ते या परत हों। (संज्ञा, पु०, सं०) वह अनाज जिसमें दो दालें हों, जैसे—चना।—**दैवत्या**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) विशाखा नक्षत्र, जिसके दो देवता हैं।—**प**–(संज्ञा, पु०) [सं० द्वि+पा+ड प्रत्य०] हाथी, गज, द्विरद, करी। [**द्विपेन्द्र**–(यौ०) गजेन्द्र, ऐरावत।]—**पथ**–(संज्ञा, पु०, सं०) दो रास्ते, दो ओर का मार्ग।—**पद**–(वि०, सं०) जिसके दो पाँव हों, मनुष्य, देवता, दैत्य, दानव, राक्षस।—**पदी**,—**पदा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दो पदों का छंद (पिं०)। दोपद का गाना।—**पाद**–(वि०, सं०) मनुष्य, पक्षी आदि दो पैरों के प्राणी।—**पास्य**–(संज्ञा, पु०, सं०) गज-बदन, गजानन, हाथी के से मुख वाले गणेश।—**फालिकुत्थ**–(संज्ञा, पु०, फा०) योग-विशेष (ज्यो०)।—**भाषी**–(संज्ञा, पु०, वि०) [सं० द्विभाषिन्] दो भाषाओं का ज्ञाता पुरुष। दुभाषिया [दुभाषी (दे०)] [**द्विभाषिणी** (स्त्री०)]—**मुख**–(संज्ञा, पु०, सं०) दोमुखी या दुमुँहा साँप।—**मुखी**–(वि०, स्त्री०, सं०) दो मुखवाली। (वि०, पु०, सं०) दो मुखवाला साँप, दुमुँहा साँप।—**मूर्ति**–(संज्ञा, पु०, सं०) दो मूर्तियों वाला।—**रद**–(संज्ञा, पु०, सं०) [दुरद (दे०)] हाथी। (वि०, सं०) दो दाँतों वाला।—**रसना**–(संज्ञा, पु०) [सं० द्वि+रसना=जीभ] दो जीभों वाला, साँप, विषधर जीव। (वि०) झूठ-सच बोलने वाला, छली।—**रुक्त**–(वि०, सं०) दो बार कहा हुआ।—**रुक्ति**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दो बार कहना, काव्य मे एक ही अर्थ वाला शब्द जो दो बार आवे तो पुनरुक्ति दोष माना जाता है। "वीप्सायां द्विरुक्तिः"।—**रूढ़ा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दो बार ब्याही स्त्री।—०**पति**–(संज्ञा, पु०, सं०) विधवा स्त्री का पति या स्वामी।—**रूपी**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० द्विरूपिन्] द्विमूर्त्ति। दूसरा रूप धरने वाला।—**रेफ**–(संज्ञा, पु०, सं०) भौंरा, भ्रमर। "इत्थं विचिंतयति कोपगते द्विरेफे"।—**वचन**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जिस पद से दो अर्थों का ज्ञान हो।—**विद**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक वानर। "द्विविद, मयन्द, नील, नल बीरा"—[रामा०]।—**विध**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दो भाँति या तरह का। (क्रि० वि०) दो भाँति या प्रकार से।—**विधा***–(संज्ञा, पु०) [सं० द्विविध] दुविधा।—**वेदी**–(संज्ञा, पु०) [सं० द्विवेदिन्] दुबे।—**शिर**–(वि०, यौ०) [सं० द्वि+शिर] जिस जीव के दो सिर हों, दो सिर वाला। **मुहा० कौन**—०**है**–किसके अधिक या फालतू सिर है, किसे मरने का डर नहीं है। "केहि दुइ सिर जेहि जम चह लीना"—[रामा०]।—**स्वभाव**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दुफसली। ज्योतिष की एक लग्न। हाँ-नाहीं।—**हायन**,—**हायनी**–(संज्ञा, स्त्री०, पु०, सं०, यौ०) दो वर्ष का बालक और बालिका।

द्विज—(संज्ञा, पु०, सं०) दोबार उत्पन्न। पक्षी, कीड़े अंडे से उत्पन्न जीव। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, जो जनेऊ पहनते हैं। चंद्रमा। दाँत। "निपटहि द्विज करि जानेसि मोही"—[रामा०]।—

पति—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ब्राह्मण। चन्द्रमा। कपूर। गरुड़। द्विजों का स्वामी।—**पाल**, —**पालक**—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा। द्विजाधिप, द्विजाधिपति।—**प्रया**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वृक्षों का थाला या आलबाल।—**प्रिया**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सोमलता या सोमवल्ली।—**बन्धु**—(संज्ञा, पु०, सं०) कुत्सित या निंदित ब्राह्मण, अब्राह्मण। —**राज**—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा। कपूर। ब्राह्मण। गरुड़। द्विजों का राजा। "नाम द्विजराज काज करत कसाई के।"—**वर्य**—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रेष्ठ या उत्तम ब्राह्मण, द्विजश्रेष्ठ।

द्विजाधिप, द्विजाधिपति—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) चन्द्रमा। द्विजेश।

द्विजालय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ब्राह्मण का घर। पक्षियों का घोंसला।

द्विजेंद्र, द्विजेश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) द्विजपति, द्विजराज, ब्राह्मण। चन्द्रमा। गरुड़।

द्विजोत्तम—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) श्रेष्ठ ब्राह्मण। गरुड़। द्विजश्रेष्ठ।

द्वितय—(वि०, सं०) दो, युग्म।

द्वितीय—(वि०, सं०) दूसरा। [**द्वितीया** (स्त्री०)]।

द्वितीया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूज तिथि।

द्वितीयांत—(वि०, सं०, यौ०) जिस शब्द के अंत में कर्मकारक या द्वितीया विभक्ति का प्रत्यय हो (व्या०)।

द्वित्व—(संज्ञा, पु०, सं०) दोहराना, दो बार करना। दो का भाव।

द्वित्थोत्थदिवीर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) योग-विशेष (ज्यो०)।

द्विधा—(क्रि० वि०, स०) दो तरह, भाँति, प्रकार, विधि से। दो भागों या टुकड़ों में।

द्विरदांतक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सिंह, बाघ। श्रीकृष्ण।

द्विरागमन—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गौना, दोंगा (प्रान्ती०)।

द्विर्भोजन—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दोबारा भोजन।

द्वींद्रिय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दो इन्द्रियों वाला जंतु।

द्वीप—(संज्ञा, पु०, सं०) टापू, जजीरा, बड़े द्वीप— जंबू, लंका, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक, पुष्कर। [द्वीप (दे०)]।—**वती**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी, भूमि।—**वान्**—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र, सागर।—**शत्रु**—(संज्ञा, पु०, सं०) सतावरि औषधि।—**संभवा**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) पिंड खजूर।—**स्थ**—(संज्ञा, पु०, सं०) द्वीप-निवासी, द्वीपवासी।

द्वीपिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सतावरि (औष०)।

द्वीपी—(संज्ञा, पु०, सं०) बाघ, चीता। (वि०) द्वीप का।

द्वीप्य—(संज्ञा, पु०, सं०) द्वीप में उत्पन्न, महाभारत, भागवत, पुराणादि के लेखक भगवान व्यास।

द्वेष, द्वैष—(संज्ञा, पु०, सं०) विरोध, शत्रुता, वैर, चिढ़, डाह, ईर्ष्या, जलन, कुढ़न।

द्वेषी—(वि०, सं०) वैरी, शत्रु, विरोधी। [**द्वेषिणी** (स्त्री०)]।

द्वेष्टा—(वि०, सं०) द्वेषकर्त्ता, द्वेषी, विरोधी।

द्वेष्य—(वि०, सं०) द्वेष करने योग्य, द्वेष का विषय, व्यक्ति या वस्तु।

द्वै*†—(वि०) [सं० द्वय] दो, दोनों।

द्वैज*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्वितीया] दुईज, दूज, द्वीज तिथि।

द्वैत—(संज्ञा, पु०, सं०) दो का भाव, दो, युगल, युग्म, निज-पर का भेद-भाव। अन्तर, भेद। भ्रम, दुविधा, अज्ञान। [(विलो०) **अद्वैत**] [**द्वैतता** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**ज्ञान**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) माया-ब्रह्मज्ञान, जीवेश्वरज्ञान। [**द्वैतज्ञानी, द्वैतज्ञाता** (वि०)]।—**वाद**—(संज्ञा, पु०, सं०) माया-ब्रह्मवाद या जीवेश्वरवाद।—**वादी**—(वि०) [सं० द्वैतवादिन्] द्वैतवाद का मानने वाला।— [**द्वैतवादिनी** (स्त्री०)]।—**ज्ञ**—(संज्ञा, पु०) [सं० द्वैत+ज्ञ+क प्रत्य०] द्वैतवादी, माया-ब्रह्मवादी। [**द्वैतज्ञा** (स्त्री०)]

द्वैध—(संज्ञा, पु०, सं०) सन्देह, संशय, द्विप्रकार। व्यंग्योक्ति। दो भाग, साझा।—**शासन-प्रणाली**—(संज्ञा, स्त्री०) वह शासन का प्रबंध जिसमें सत्ता दो वर्गों में विभाजित रहती है।

द्वैधीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) छेदन, भेदन, खंड या टुकड़े करना।

द्वैधीभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्लेषण, अलगाव, पार्थक्य, परस्पर का विरोध।

द्वैपायन—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यास जी। एक ताल, जहाँ अंत में दुर्योधन छिपा था।

द्वैमातुर—(वि०, पु०, सं०) दो माताओं से उत्पन्न। (संज्ञा, पु०) गणेश जी। जरासंध। भगीरथ राजा।

द्वैमातृक—(संज्ञा, पु०, सं०) नदी, ताल और वर्षा के जल द्वारा जहाँ अन्न उत्पन्न हो, उस देश के वासी। दो माताओं का पुत्र। भगीरथ राजा।

द्वैरथ—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दो रथ-सवारों का परस्पर युद्ध।

द्वैराज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दो राजों में विभाजित देश या राज्य।

द्वैष—(संज्ञा, पु०, सं०) बैर, विरोध, द्वेष।

द्वयंगुल—(वि०, सं०, यौ०) दो अंगुल।

द्वयंजलि—(वि०, सं०, यौ०) दो अँजुरी (दे०)।

द्वयक्षर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दो वर्ण या अक्षर। [**द्वयक्षरावृत्त** (यौ०)]।

द्वयणुक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दो परमाणु।

द्वयर्थ—(वि०, सं०) दो अर्थ या प्रयोजन। दो अर्थ वाले शब्द या वाक्य, व्यंग्योक्ति, श्लिष्ट, द्वयर्थक। "एकाक्रिया द्वयर्थकरी प्रसिद्धा"—[स्फु०]।

द्वयात्मक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दो प्रकार का, द्विविधि।

द्वयाह्निक—(वि०, यौ०, सं०) दो-दो दिन के अन्तर से होने वाला ज्वरादि।

द्वौ*—(वि०) [हि० दो+ऊ] दोनों। (वि०) [सं० दव] दावानल, वनाग्नि।

ध

ध—हिन्दी और संस्कृत की वर्णमाला के तवर्ग का चौथा अक्षर या वर्ण।

धंधक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धंधा] काम-धंधे का बखेड़ा, जंजाल। आडंबर। छल, कपट।—**धोरी**-(संज्ञा, पु०) [हि० धंधक+धोरी] सदा-सर्वदा काम में लगा या जुटा रहने वाला। आगे रहने वाला। "धनि धर्म ध्वज धंधक धोरी"—[रामा०]।

धँधरक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धंधा] काम-धंधे का जंजाल। आडंबर। छल।

धँधला, धाँधला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धंधा] झूठा ढोंग, अंधेर, छलछंद, कपट का आडंबर, बहाना। [**धाँधली** (स्त्री०)] [**धाँधलेबाज** (वि०)]।

धंधलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० धँधला] छल-छंद करना, ढोंग रचना।

धंधा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धनधान्य] उद्योग, उद्यम, काम-काज, कारबार।

धंधार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धुआँ] लपट, ज्वाला।

धंधारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धंधा] गोरख-धंधा, उलझन।

धँधोर—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० धायँधायँ] होली, आग की ज्वाला।

धँसन—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० धँसना] पैठने या घुसने का ढंग, धँसने की क्रिया या ढंग। चाल, गति।

धँसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दंशन] घुसना, पैठना, गड़ना। **मुहा० जी या मन में—**, दिल या चित्त में प्रभाव उत्पन्न करना। *†नीचे की ओर धीरे-धीरे जाना या खिसकना, उतरना, बोझ से दब कर नीचे बैठ जाना।* (क्रि० अ०, दे०) [सं० ध्वंसन] नष्ट होना।

धँसान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धँसना] उतार, ढाल। दलदल।

धँसाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० धँसना का प्रेरणा० रूप] घुसाना, गड़ाना, प्रवेश कराना, चुभाना, पैठाना, नीचे की ओर करना। [**धँसवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

धँसाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धँसना] धँसान।

धक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) दिल के शीघ्र-गामी होने का भाव या शब्द। ठोकर का शब्द। **मुहा० (जी)—धक करना**—डर से हृदय धड़कना। **(जी)—हो जाना**-भय से हृदय का दहल जाना, चौंक उठना। उमंग, चोप, उद्वेग। (क्रि० वि०, दे०) एकाएक, अचानक, एकबारगी। [छोटी जूँ (दे०)]।

धकधकाना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० धक] डर या उद्वेग आदि से दिल का वेग, या शीघ्रता से काँपना। अग्नि दहकना, भभकना, धक-धक शब्द करना। [**धकाधक**-(क्रि० वि०) शीघ्र।]

धकधकाहट—(संज्ञा, स्त्री०) धकधकाने की क्रिया, धड़कन।

धकधकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० धक] दिल या हृदय की धड़कन, धुकधुकी। [दुगदुगी (दे०)] **मुहा०—धड़कना**-एकाएक या अकस्मात् भय या खटका होने से छाती धड़कना।

धकपक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) धकधकी। (क्रि० वि०, दे०) डरते या दहलते हुए।

धकपकाना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० धक] मन में डरना, दहलना, हिचकना, हिचकिचाना, [धुकपुकाना (दे०)]।

धकपेल, धकापेल*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [अनु० धक+पेलना] रेलापेल, धक्कमधक्का, धक्कापोश्स (ग्रा०)।

धका†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धम हिं० धमक] टक्कर, रेला, झोंका, चपेट, कसमकस। दुख की चोट या आघात, संताप। विपत्ति, हानि। धक्का। "धका धनी का खाय"—कबीर।

धकाना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० दहकाना] सुलगाना, दहकाना। [धकधकाना (यौ०)]।

धकारा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० धक] खटका, डर, आशंका, भय।

धकियाना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० धक्का] ढकेलना, धक्का देना [धक्कियान]।

धकेलना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० ढकेलना] ढकेलना, धक्का देना।

धकैत—(वि०, दे०) [हिं० धक्का+ऐत प्रत्य०] धक्का देने या लगाने वाला।

धक्कमधक्का—(संज्ञा, पु०) [हिं० धक्का] धकापेल, धक्का-मुक्की।

धक्कमधक्की—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० धक्का] रेलापेल, ठेला-ठेली। [धक्कमधक्का (पु०)]।

धक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धम, हिं० धमक] झोंका, टक्कर, रेला, चपेट, कसमकस। शोक या दुख की चोट या आघात। हानि।—**मुक्की**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धक्का+मुक्का] मुठभेड़, मारपीट, धक्कों और घूँसों की मार। **मुहा०—खाना**-धक्का सहना। क्लेश उठाना।

धक्काड़—(वि०, दे०) जिसकी धाक सब लोग मानते हों।

धगड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धव+पति] उपपति। मित्र, यार, दोस्त।

धगधगाना*†—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) धड़कना, धकधकाना।

धगबरी—(वि०, दे०) [हिं० धगड़ा+मित्र] स्वामिप्रिया, पति की लाड़िली या दुलारी। कुलटा।

धगा, धागा*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० धागा] डोरा, सूत, तागा।

धगोलना—(क्रि० अ०, दे०) लोटना, लोटपोट करना, करवट बदलना। छटपटाना।

धचका—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) धक्का, झटका, दचका।

धज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ध्वज] बनाव, सजाव, सुन्दर रचना। **सज—**,(यौ०) शृङ्गार का साज-सामान, बनाव-चुनाव, तैयारी। मोहनेवाली चाल, सुन्दर ढंग, बैठने-उठने का ढंग, ठवन, नखरा, ठसक। शोभा।—**भंग**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ध्वजभंग] एक प्रकार की नपुंसकता।

धजा—(संज्ञा, स्त्री०, वि०) [सं० ध्वजा] पताका।

धजीला—(वि०, दे०) [हिं० धज+ईला प्रत्य०] सुन्दर, तरहदार, सजीला, धज्जीदार [**धजीली (स्त्री०)**]।

धज्जी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धटी] कागज या कपड़े की लम्बी पट्टी। लोहे की चादर या लकड़ी के तख्ते की पट्टी। [धजी (दे०)]। (बहु व०) धज्जियाँ। **मुहा०—उड़ाना,—करना**-अपमानित या अप्रतिष्ठित करना, बदनामी या अयश करना। दुर्गत करना। टुकड़े-टुकड़े कर देना।

धट—(संज्ञा, पु०, सं०) तुला राशि। तराजू।

धटक—(संज्ञा, पु०, सं०) ४२ रत्तियों की एक प्राचीन तौल।

धटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाँच सेर का एक तौल, पसेरी। कौपीन, चीर।

धड़ंग—(वि०, दे०, यौ०) [हिं० धड़+अंग] नंगा-धड़ंगा। [**नंगधड़ंग, नंगाधड़ंगा** (यौ०)]।

धड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धर] हाथ, पैर और सिर को छोड़ कर शरीर का शेष भाग। डालियाँ और जड़ें छोड़ कर पेड़ का शेष। (संज्ञा, स्त्री० अनु०) किसी चीज के ऊँचे से गिरने का शब्द। [धर (दे०)]। **मुहा०—से, धड़—**,बेधड़क, झट से।

धड़क—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० धड़] दिल के हिलने का शब्द, दिल का हिलना, आशंका या भय के मारे दिल का काँपना, फड़कना। डर, खटका। [धरक (दे०)]। "नरक निकाय की धरक धरिबो कहा"—[क० श०]। **बे—**, निडर, बिना संकोच।

धड़कन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धड़क] दिल का फड़कना, कंपन, [धरकन (दे०)]।

धड़कना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० धड़क] दिल का फड़कना या उछलना या धक-धक करना। **मुहा० छाती, जी, दिल—**, (डर से) दिल का जोर से जल्दी-जल्दी फड़कना, धड़-धड़ शब्द होना।

धड़का—(संज्ञा, पु०) [अनु० धड़] हृदय की धड़कन। आशंका, खटका, धोखा।

धड़काना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० धड़क] हृदय में धड़कन उत्पन्न करना, जी धकधक कराना, दिल दहलाना, डराना। धड़-धड़ शब्द पैदा करना। [**धड़कवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

धड़धड़ाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० धड़क] धड़-धड़ शब्द करना। भारी पदार्थ के गिरने का सा शब्द। **मुहा०—(ता) हुआ**-धड़-धड़ शब्द और अति वेग के साथ, बेखटके, बेसंकोच, बेधड़क।

धड़ल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० धड़] धड़ाका। **मुहा०—(ल्ले) से या—(ल्ले) के साथ**-बिना किसी रुकावट के, झोंक से, भय या संकोच-रहित, बेधड़क या बेखटके।

धड़ा—(संज्ञा, पु०) [सं०, धट] बाट, बटखरा। [धरा (दे०)]। **मुहा०—करना,—बाँधना**-कोई वस्तु रख कर किसी वस्तु के तौलने के पूर्व दोनों पलड़ों को बराबर करना।

धड़ाका—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० धड़] धड़-धड़ शब्द, धमाका या गड़गड़ाहट का शब्द। **मुहा०—(के) से**-शीघ्रता से, बेखटके, मजे से।

धड़ाधड़—(क्रि० वि०, दे०) [अनु० धड़] संलग्न रूप से धड़धड़ शब्द के साथ, लगातार, बराबर, जल्दी-जल्दी, बेधड़क।

धड़ाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० धड़] एक-बारगी ऊपर से फाँदने-कूदने या गिरने का शब्द।

धड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धटिका, हिं० धटी] पाँच या चार सेर की तौल। पानी पीने, खाने आदि से होठों पर बनी लकीर। [**धोकाधड़ी** (यौ०)]।

धत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रत, हिं० लत] बुरा स्वभाव, कुटेव, बुरी लत।

धतकारना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० धत] दुरदुराना, धिक्कारना, दुतकारना, लानत-मलामत करना, धुतकारना।

धता—(वि०, दे०) [अनु० धत] चलता, हटा हुआ, दूर किया गया। **मुहा०—करना या बताना**-भगाना, हटाना, चलता करना, टालना। "चातक कुसुम समान धता है नहीं बताती"—हरिऔध।

धतींगर—(वि०, दे०) कुजाति, अधम, दोगला, जारज, वर्णसंकर।

धतूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० धू+सं० तूर] तुरही, नरसिंहा बाजा [धुतूरा (दे०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धुस्तूर] एक पेड़, जिसके फलों के बीज विषैले होते हैं। "कनक धतूरे सों कहै"—वृं०। **मुहा०—खाये फिरना**-मतवाला-सा घूमना।

धतूरिया—(वि०, दे०) [हिं० धतूरा] छली, कपटी, बहुरूपिया।

धत्—(अव्य०, दे०, अनु०) अपमान या तिरस्कार से हटाने या दुतकारने का शब्द।

धत्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) एक छंद (पिं०)। **—नंद**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक छन्द (पिं०)।

धधक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) आग की लपट, आँच, लौ, भड़क।

धधकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० धधक] दहकना, भड़कना, लपट के साथ जलना।

धधकाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० धधकना] आग जलाना, प्रज्वलित करना, दहकाना, सुलगाना। [**धधकवाना** (प्रेरणा० रूप)]

धधच्छरा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० दग्धाक्षर] कविता के आदि में रगण और झ, ह, र, भ, ष तथा मध्य में र, ज, स, क, ट, ड़—बुरे या दग्धाक्षर माने जाते हैं।

धधाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० धधकाना] आग जलना, सुलगना, धधकना, दहकना।

धनंजय—(संज्ञा, पु०, सं०) अग्नि। चीता। पेड़। अर्जुन (पांडव)। अर्जुन पेड़। विष्णु भगवान। देह में स्थित पाँच वायुओं में से एक। "छूटे अवसान मान सकल धनंजय के"—रत्ना०।

धन—(संज्ञा, पु०, सं०) लक्ष्मी, संपत्ति, सोना-चाँदी, रुपया-पैसा, पूँजी, मूलधन। [**—भाव** (यौ०)]**—स्थान**-(यौ०) जन्मांक में द्वितीय घर। **—कुबेर**-(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ा धनी, कुबेर, धनवान। **—तेरस**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धन+तेरस] कार्तिक बदी तेरस जब रात को लक्ष्मी-पूजा होती है। "होली, गुड़ी, दिवाली, धन तेरस की राति"—हरिऔध। **—द**-(वि०, सं०) धन देने वाला, दानी, दाता। (संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर, धनपति। [**धनदा** (स्त्री०)]**—धान्य**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धन और अनाज, सामग्री और सम्पत्ति। **—धाम**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) घर-बार और सम्पत्ति। "जरै धनिक-धन-

धाम "—वृं०। "हारकर धन-धाम पाण्डव भिक्षु बन जब चल दिए"—दिनकर।—धारी-(संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर, बड़ा धनी।—पति-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुबेर, बड़ा धनी, धनवान।—पिशाचिका-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) धन-तृष्णा, धनाशा, धन-प्राप्ति की व्यर्थ आशा।—बाहुल्य-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धन की अधिकता, अर्थाधिक्य, धनाधिक्य।—मद-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धनी होने का घमंड, धनवान होने की ठसक।—लुब्ध-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धन का लालची, लोभी, अर्थ या धन-लिप्सु।—वंत-(वि०) [सं० धनवत] धनवान्।—वान्-(वि०, सं०) धनी, धनवंत। [**धनवती (स्त्री०)**] —श्री-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) धन की कांति या शोभा।—हीन-(वि०, सं०, यौ०) कंगाल, दरिद्र, निर्धन। "न बन्धुमध्ये धन-हीन जीवनम्"। [भर्तृ० नी० श०]

धनक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धनु] कमान, धनुष। एक ओढ़नी।

धनकुटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार का कपड़ा। धान काटने का समय। एक छोटा कीड़ा। [धनकुट्टी (दे०)]।

धनत्तर—(संज्ञा, पु०, सं०) धनवे, धन्वन्तरि। धनवान, प्रतापी। औषधि।

धनन्तर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धन्वतरि] देववैद्य, धनत्तर (ग्रा०), धनवंतरि, समुद्रीय चौदह रत्नों में से एक रत्न। बहुत भारी या बड़ा।

धनांध—(वि०, संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धन+अंध] धन-गर्वित, धन के घमंड से अंधा। [**धनांधता (संज्ञा, स्त्री०)**]

धना*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धनिका, हि० धनियाँ=युवती] युवती, वधू, स्त्री। एक औषधि। धनिया। (संज्ञा, पु०, दे०) एक भक्त तेली।

धनागम—(संज्ञा, पु०, यौ०)[सं० धन+आगम =आना] धन की आय या प्राप्ति, आमदनी, धन-लाभ।

धनागार—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धन+आगार =स्थान] खजाना, भाण्डार, धन रखने का स्थान, कोषागार।

धनाढ्य—(वि०, यौ०) [सं० धन+आढ्य= भरा] धनी, द्रव्यवान। [**धनाढ्यता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]

धनाधार—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धन+आधार =स्थान] धनागार, भांडार, खजाना, [बैंक]। संदूक, पिटारा, पिटारी।

धनाधिकारी—(संज्ञा, पु०, सं०) कोषाध्यक्ष, खजांची।

धनाधिकृत—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धन+अधिकृत=अधिकारी] खजांची, कोषाध्यक्ष।

धनाधिप—(संज्ञा, पु०) [सं० धन+अधिप =स्वामी] कुबेर, धनाधिपति, धनेश्वर, धनाधिकारी।

धनाधिपति, धनाधीश—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धन+अधिपति, अधीश=स्वामी] कुबेर। बड़ा धनवान, धनराज, कोषाध्यक्ष।

धनाधीश्वर, धनाध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धन+अध्यक्ष=स्वामी] कुबेर। कोषाध्यक्ष, खजांची, भांडारी।

धनार्जन—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धन+अर्जन=कमाना] धनोत्पादन, धन का उपार्जन, धन-लाभ। "द्वितीये नार्जितं धन"—[भर्तृ० नी० श०]।

धनार्थी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धन+अर्थी =चाहने वाला] धन चाहने वाला, लोभी, लालची। कृपण। धन-याचक।

धनाशा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० धन+आशा] धन-प्राप्ति की आशा, तृष्णा या चाह। "भोजने यत्र संदेहो धनाशा तत्र कीदृशो।" —[स्फु०]।

धनाश्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक रागिनी (संगी०) [धनासिरी (दे०)]।

धनासरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक छंद (पिं०)।

धनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धनी] वधू, युवती, स्त्री। (वि०, दे०) धन्य। "धनि-धनि भारत-भूमि हमारी"—[स्फु०]।

धनिक—(वि०, सं०) धनवान, धनी। (संज्ञा, पु०, सं०) धनवान, धनपति।

धनिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बनिया की स्त्री। युवती, वधू।

धनिया—(संज्ञा पु०, दे०) [सं० धन्याक, धनिका] एक औषधि। *(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धनिका] वधू, युवती, स्त्री।

धनिष्ठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक नक्षत्र।

धनी—(वि०, दे०) [सं० धनिन्] धनवान। स्वामी, मालिक। "द्वार धनी के परि रहै, धका धनी को खाय।"—कबीर। [**धनीधोरी**–(यौ०) रक्षक, स्वामी, मालिक।] **मुहा० बात का**—,बात का सच्चा। (संज्ञा, पु०, सं०) धनवान मनुष्य, स्वामी, मालिक। **मैदान का**—शूर, वीर। (संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) वधू, स्त्री, युवती।

धनु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धनुस्] कमान, धनुष। "कहुं पट, कहुं निषंग धनु, तीरा"—[रामा०]।—**धर,—धारी**–(संज्ञा, पु०, सं०) कमनैत, धनुष धारण करने वाला। "देखि कुठार, बान धनुधारी"—[रामा०]।

धनुआ, धनुवा, धनुहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धन्वन, धन्वा] धनुष, [धनुस (दे०)] कमान, रुई धुनने की धुनकी।

धनुई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धनु+ई प्रत्य०] छोटा धनुष या कमान, धनुही। "धनुही-सम त्रिपुरारि-धनु···"—[रामा०]।

धनुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धनुस्] धनुष। इन्द्र-धनुष, धनुख। "भौंह धनुक धनि धानुक, दूसर सरि ना कराय"—[पद०]।—**धारी**–(संज्ञा, पु०) [सं० धनुष+धारी] कमनैत, तीरंदाज, धनुषधारी, धनुर्धारी, धनुधारी।—**बाई**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० धनुक+बाई] लकवे का सा एक वात-रोग।

धनुकार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धनुष्कार] धनुष या कमान बनाने वाला।

धनुकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धनुक] छोटा धनुष, बेहने का धनु। धुनुकी, धनुर्धारी।

धनुर्ज्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धनुष की डोरी। "धनुर्ज्या को चढ़ाकर, म्यान में तलवार लेकर"—दिनकर।

धनुर्यज्ञ—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) वह यज्ञ जिसमें धनुष की पूजा तथा उससे सम्बन्धित और काम होते हैं, धनुष-यज्ञ। "धनुर्यज्ञ सुनि रघुकुल नाथा।" "धनुष-यज्ञ जेहि कारण होई।"—[रामा०]।

धनुर्वात—(संज्ञा, पु०, सं०) धनुकबाई का रोग।

धनुर्विद्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) धनु चलाने का ज्ञान।

धनुर्वेद—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) यजुर्वेद का एक उपवेद जिसमें धनुष चलाने आदि की विधियाँ लिखी हैं।

धनुष—(संज्ञा, पु०, सं०) कमान, धनुक, चाप। "दाएँ कंधे पर तरकस था और धनुष बाएँ पर"—[तारकवध]।—**आकार**–(वि०) धनुष के आकार का, धनुष की तरह का।—**कार**–(संज्ञा, पु०) धनुष बनाने वाला।

धनुषी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा धनुष, छोटी कमान। रुई धुनने की धुनकी।

धनुष्टंकार—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ज्या-शब्द, धनुष के रोदे का शब्द।

धनुष्मान—(संज्ञा, पु०) धनुर्धर। एक पर्वत जो उत्तर दिशा में है।

धनुस—(संज्ञा, पु०, सं०) कमान। एक राशि या लग्न। चार हाथ की माप, [धनुस (दे०)]।

धनुहाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धनु+हाई प्रत्य०] धनुष द्वारा युद्ध।

धनुहिया, धनुही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धनु+ही प्रत्य०] छोटा धनुष। "बहु धनुही तोरेउँ लरिकाई"—[रामा०]।

धनू—(संज्ञा, पु०, दे०) धनु, धनुष।

धनेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) कुबेर, बड़ा धनी, धनाधिप, [धनस (दे०)]।

धनेस—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धनेश] कुबेर। (संज्ञा, पु०, दे०) (सं० धनस) एक पक्षी। "पर अवगुन-धन-धनिक धनेसा"।

धन्ना*—(वि०, दे०) [सं० धन्य] बड़ाई या प्रशंसा के योग्य, सुकृती। एक रामभक्त।

धन्नासेठ—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हिं० धन्ना+सेठ] धनवान। एक भक्त [**धन्नासेठी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

धन्नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० गो० धन] बैलों या गायों की एक जाति। घोड़े की एक जाति। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धरणी] छत में लगाई जाने वाली लकड़ी, शहतीर, धन्नी।

धन्नोटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० धन्नी] धन्नी के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी, थूनी।

धन्यंमन्य—(वि०, सं०) अपने को भाग्यवान एवं धन्य समझने वाला।

धन्य—(वि०, सं०) श्लाघ्य, प्रशंसनीय, सुकर्मी, सुकृती। **मुहा०—मानना**–उपकार मानना, उपकृत होना, सौभाग्य समझना।—**वाद**–(संज्ञा, पु०, सं०) प्रशंसा, शाबाशी। कृतज्ञतासूचक शब्द।—**वादी**–(वि०, सं०) कृतज्ञ, स्तुतिकर्त्ता।

धन्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृतार्था स्त्री, भाग्यवती, श्रेष्ठा। धान्या, धनिया। एक नदी।

धन्याक, धान्याका—(संज्ञा, पु०, सं०) धनिया।

धन्व—(संज्ञा, पु०, सं०) धनुष। आकाश। किनारा, मरुस्थल।—**ज**-(वि०) मरुस्थल में पैदा होने वाला।—**दुर्ग**-(संज्ञा, पु०) वह किला जिसके चतुर्दिक पाँच योजनों तक मरुस्थल हो।

धन्वंग—(संज्ञा, पु०, सं०) धन्वन् पेड़।

धन्वदुर्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्जल या मरुदेश, मारवाड़।

धन्वन्तरि—(संज्ञा, पु०, सं०) देव-वैद्य, समुद्रीय १४ रत्नों से एक, राजा विक्रमादित्य की सभा के ९ रत्नों में से एक रत्न।

धन्ववास—(संज्ञा, पु०, सं०) जवास, जवासा।

धन्वा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धन्वत्] धनुष।

धन्वाकार—(वि०, यौ०, सं०) धनुष के आकार का, टेढ़ा, धनुषाकार।

धन्वी—(वि०) [सं० धन्विन्] धनुर्धारी, कमनैत।

धप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) नरम वस्तु पर भारी वस्तु के गिरने का शब्द। (संज्ञा, पु०, दे०) तमाचा, थप्पड़, धौल।

धपना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० धावन या धाप] दौड़ना, जोर से चलना। मारना, पीटना।

धप्पा—(संज्ञा, पु०, दे०) तमाचा, धौल। घाटा, हानि, क्षति। [**धौलधप्पा** (यौ०)]।

धब-धब—(संज्ञा, स्त्री०) गुलगुल वस्तु (मोटी और नरम) के गिरने की आवाज।

धब्बा—(संज्ञा, पु०, दे०) निशान, दाग, चिह्न। कलंक। **मुहा० नाम में—लगाना**-यश या कीर्ति-नाशक कार्य्य करना।

धम—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) किसी भारी वस्तु के ऊँचे से नीचे गिरने का शब्द।—**धम**-(संज्ञा, स्त्री०) देर तक धम की आवाज का होते रहना।

धमक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० धम] भारी पदार्थ के गिरने का शब्द। चोट करने का शब्द। पाँव की आहट। आघात से प्रगट कंप। चोट, आघात, घूँसा, धमक्का।

धमकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० धमक] धमाका करना या होना। धम शब्द के साथ गिरना। मारना। **मुहा० आ—**, आ पहुँचना। दर्द या पीड़ा करना। (सिर), व्यथित होना।

धमकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० धमक] डराना, भय दिखाना, डाँटना, फटकारना, घुड़कना।

धमकाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धमकाना] धमकाने का भाव या कार्य, घुड़की, झिड़की।

धमकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भय या त्रास दिखाने का कार्य्य, घुड़की, डाँट, फटकार, डाँटडपट। [**धमकीघुड़की** (यौ०)]। **मुहा०—में आना**-डराने से भयभीत होना।

धमधमाना—(क्रि० अ०, दे०, यौ०) [अनु० धम] धम-धम शब्द करना। मारना।

धमधूसड़, धमधूसर—(वि०, दे०) मोटा, सबल। मूर्ख, निर्बुद्धि।

धमनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शरीर के भीतर की नाड़ियाँ, नस। "धमनी जीवसाक्षिणी"—शार्ङ्ग०।

धमाका—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) भारी पदार्थ के गिरने या बन्दूक या बम फटने का शब्द। धक्का या आघात, हाथी पर लादने की तोप।

धमाचौकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [अनु० धम + चौकड़ी हि०] ऊधम, उपद्रव, झगड़ा या फसाद, उछल-कूद, मारपीट, धींगाधींगी।

धमाधम—(क्रि० वि०, अनु०) कई बार लगातार धम धम शब्द के साथ या आघातों के शब्द के साथ।

धमार, धमाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) उपद्रव, उछल-कूद, कलाबाजी। साधुओं की आग पर कूदने की क्रिया। (संज्ञा, पु०) होली का एक गीत। "ध्यानिनि में धमक धमार धसिबै लगी"—रत्ना०।

धमारिया—(वि०) उपद्रव, शरारत करने वाला, कलाबाज।

धमारी, धमाली—(वि०, दे०) उपद्रवी, बखेड़िया, कलाबाज। होली का एक खेल। "फल-फूलन सब करहिं धमारी"—पद्मा०।

धमोका—(संज्ञा, पु०, दे०) एक तरह की खँजरी।

धम्मिल्ल—(संज्ञा, पु०, सं०) बनी हुई बेनी, गुही चोटी।

धयना, धैना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० धाना] दौड़ना, धावा मारना। (संज्ञा, पु०, दे०) दुष्टता, शरारत। "नयना धयना करत हैं, उरज उमैठे जात"—बिहारी।

धरंता*†—(वि०, दे०) [हि० धरना] ग्रहण करने या पकड़ने वाला ।

धर—(वि०, सं०) धारण या ग्रहण करने वाला । (पु०, दे०) पर्वत । कच्छप । विष्णु । धड़ । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० धरना) धरने का भाव ।—**पकड़**–(यौ०) गिरफ्तारी, बन्दी करना ।—**पकड़ कर**–बलात, जबरदस्ती ।

धरक†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धड़क] धड़क ।

धरकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० धड़कना] धड़कना, काँपना, डरना ।

धरण, धरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धारण] धारण, [धन्नी (दे०)] ।

धरणि, धरनि (दे०)—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि, पृथ्वी । " धरहु धरनि धरि धीर न डोला " —[रामा०] ।—**धर**–(संज्ञा, पु०, सं०) धरनि-धर, भूमि का धारण करने वाला । पहाड़ । शेष । विष्णु ।—**सुता**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सीता जी । " विवश करावैं सुधि, धरणि-सुता की जाते हिय हहरत है"—स्फु० ।

धरणी, धरनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि ।

धरता, धर्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धरना, सं० धर्तृ) धरोहर धरने वाला, देनदार, कर्जदार ऋणी, धरने वाला । [**कर्त्ता-धर्ता**–(यौ०) सब कुछ करने वाला ।]

धरती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धरित्री] जमीन ।

धरधर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धराधर] पहाड़ । (संज्ञा, स्त्री०) धड़धड़ ।

धरधरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) धड़कन ।

धरधराना†—(क्रि०, अ०, दे०, अनु०) धरधर शब्द करना ।

धरन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धरन] पाटन का बोझा सँभालने वाली लकड़ी, टेक, थूनी । गर्भाशय का आधार । टेक, हठ । (संज्ञा, पु०, दे०) धरना, पकड़ना । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धरणि] धरनि, पृथ्वी, भूमि ।

धरनहार*—(वि०, दे०) [हि० धरना + हार प्रत्य०] धरने या धारण करने वाला । " मानहु शेष अशेष धर, धरनहार बरबंड " ।—[रामा०] । [**धरनहारी** (स्त्री०)]

धरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० धरण] पकड़ना, लेना, ग्रहण करना, रखना । "निर्गुण ही तो विविध रूपधर आते वाला"—[तारकवध] । "अंचल मानो धरे हुए"—गुरुभक्त । (संज्ञा, पु०, दे०, अ०) आग्रह, रोक, अड़ जाना । **मुहा०**—(**आधु०**) **देना**–किसी के द्वार पर किसी बात के लिए हठ-पूर्वक बैठना या अड़ जाना, और जब तक कार्य्य पूर्ण न हो न उठना, आग्रह करना । **धरा रह जाना**–पड़ा रह जाना, काम न आना ।

धरम*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धर्म] स्वभाव । दान-पुण्य, अच्छा काम, धर्म ।

धरवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० धरना का प्रेरणा० रूप] धरने का कार्य्य दूसरे से कराना, धराना ।

धरषन, धरसन*—(क्रि० स०, दे०) [सं० धर्षण] मलना, दबाना, पराजित या दलित करना ।

धरसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० धर्षण] दबना, डरना । (क्रि० स०, दे०) दबाना, अपमानित करना ।

धरसनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धर्षणी] दर्षणी, धर्षणी ।

धरहर†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धरना + हर प्रत्य०] धर-पकड़ । बीच-बिचाव । रक्षा, धैर्य्य । सहाय, अवलंब । "रबि सुरपुर धर हर करै, नर-हरि नाम उदार "—नरो० ।

धरहरना*—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) धड़धड़ाना ।

धरहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धर—ऊपर + घर] मीनार, धौरहरा (ग्रा०) ।

धरहरिया†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धरहरि] बीच-बिचाव या रक्षा करने वाला ।

धरांगजा—(संज्ञा, स्त्री०) सीता, जानकी, पृथ्वी की पुत्री । "कहा धीर धर धरांगजा ने"—हरिऔध ।

धरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि, पृथ्वी, संसार । एक छंद । " धरा को स्वभाव यही तुलसी, जो फरा सो झरा औ जरा सो बुताना " ।—"जीवन के सब बीज धरा ही में कुम्हलाते जाते"—गिरीश । "मिले जलाशय व्याज धरा को मुकुर निराले"—हरिऔध ।—**तल**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जमीन का ऊपरी भाग । भूमि, पृथ्वी क्षेत्रफल । रकबा । —**धर**,—**धरन**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पहाड़ । शेष । विष्णु । **पति**–(संज्ञा, पु०) विष्णु । राजा । —**पुत्र**–(संज्ञा, पु०) मंगल ग्रह ।—**शायी** –(वि०) पृथ्वी पर गिरा हुआ । युद्ध में हारा हुआ । "वह ज्योति, भले ही नेता आज धराशायी"—बच्चन ।—**सुत**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) मंगल

ग्रह, भौम ।—सुता–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) सीता, जानकी ।—सुर†–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ब्राह्मण ।

धराऊ—(वि०, दे०) [हिं० धरना + ग्राऊ प्रत्य०] जो विशेष अवसरों या उत्सवों को छोड़ कभी न निकाला जाय । बहुमूल्य, बढ़िया । पुराना ।

धराक*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० धड़ाक] धड़ाक ।

धराधार—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) शेष नाग ।

धराधिप, धराधिपति—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) भूपाल, राजा ।

धराधीश, धराधीश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) राजा, भूप, धरेश, धरापति ।

धराना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० धरना का प्रेरणा० रूप] पकड़ाना, थँभाना, टेकाना, रखाना, मुकर्रर कराना । (पू० का०, दे०) धरि, धराय ।

धराहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० धरहरा] धरहरा, मीनार ।

धरित्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि, पृथ्वी, जमीन । [धरती (दे०)] ।

धरैया†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० धरना] धरने वाला ।

धरोहर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धरना] अमानत, थाती, न्यास (सं०) ।

धरौवा—(संज्ञा, पु०, दे०) विशेष अवसर के लिए सुरक्षित वस्त्रादि ।

धर्त्ता—(संज्ञा, पु०) [सं० धर्तृ] धारण करने वाला । [धरता (दे०)] । कर्त्ता—,(यौ०) पूर्ण अधिकारी ।

धर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वभाव, प्रकृति, गुण । कर्त्तव्य, [धरम (दे०)] । सुकृति, सुकर्म, सदाचार । लक्षण । दान-पुण्य । सत्कर्म, लोक-परलोक बनाने वाले कर्म । "यतोऽभ्युदय निश्रेयस सिद्धः स धर्मः" —[शेषि०] । "पा ममता-आघात धर्म का बंधन टूटा"—[तारकवध] ।—कर्म–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्म ग्रन्थानुसार आवश्यक कर्म, दान, दया परोपकारादि ।—कार्य–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) भगवान् बुद्ध ।—कृत्य–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्म-कर्म, धर्म-कार्य ।—कोष–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्म-संचय ।—क्षेत्र–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) कुरुक्षेत्र, पुण्यक्षेत्र, तीर्थ, धरम-छेत्र । "धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः"—[गीता०] ।—गति–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) धर्म का मार्ग, धर्म-तत्त्व ।—ग्रन्थ–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्म-शिक्षक पुस्तकें, श्रुति, स्मृति, पुराण आदि ।—घड़ी–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० धर्म + हिं० घड़ी] बड़ी घड़ी जिसे सब कोई देख सके ।—चक्र–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्म-समूह, भगवान् बुद्ध की धर्म-शिक्षा ।—चर्या–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) धर्माचरण, धर्म-कर्म करना ।—चारी–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धर्मचारिन्] धर्म-कर्म या धर्माचरण करने वाला । (वि०, सं०) धर्मपरायण । [धर्मचारिणी (स्त्री०)] ।—चिन्ता–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) धर्म-कर्म की चिन्ता या विचार ।—जीवन–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) धार्मिक या धर्ममय जीवन । धर्मात्मा या धर्मचारी ब्राह्मण ।—ज्ञ–(संज्ञा, पु०, सं०) धर्म का जानने वाला, धर्मज्ञाता, धर्मज्ञानी, धर्मात्मा । "देहि वासांसि धर्म्मज्ञ"—[भाग०] ।—०ता–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धर्म की जानकारी ।—ज्ञान–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्म-बोध, परलोक-विचार, कर्तव्य । ज्ञान । [धर्मज्ञानी (वि०)]—तत्त्व–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्म की यथार्थता, धर्म-रहस्य, धर्म का मूल या सारांश ।—दीप्त–(वि०, सं०) धर्म-भावना अथवा कर्त्तव्य की धारणा से उत्साहित । "धर्मदीप्त मनुष्य का उज्वल नया इतिहास"—दिन० ।—द्रोही–(वि०, सं०, यौ०) धर्मघाती, पापी, अधर्मी, धर्म का विरोधी । —धक्का–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धर्म + हिं० धक्का] धर्म करने से जो हानि हो ।—धुरंधर–(वि०, सं०, यौ०) धार्मिक नेता, धर्मात्मा, धर्माचार्य, धर्म में अग्रगामी । "धर्मधुरंधर मुनि गुरु-बानी"—[रामा०] ।—धुरीण–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०, सं०) धर्म-पालक । [धरमधुरीन (दे०)] । "धरमधुरीन धर्म-गति जानी"—[रामा०] । [धर्म-धुरीणता (संज्ञा, स्त्री०)] ।—ध्वज–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) लोगों को धोखा देने और छलने के लिए धर्म का आडंबर करने वाला, पाखंडी, छली । राजा जनक । "धिक धर्म्मध्वज धंधक-धोरी" —[रामा०] । (वि०) धर्म ही की ध्वजा वाला ।—ध्वजा–(संज्ञा, स्त्री०) धर्म का झंडा । "कुमारियो धर्मध्वजा सँभालो ।"—मधुपुरी ।—ध्वजी–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धर्मध्वजिन्] पाखंडी, आडंबरी [धर्मध्वजिनी (स्त्री०)] ।—निष्ठ–(वि०, यौ०, सं०) धर्मपरायण, धर्म-प्रेमी, धर्मात्मा, धार्मिक । —निष्ठा–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) धर्म में प्रेम, भक्ति, श्रद्धा और प्रवृत्ति ।—परायण–(वि०, संज्ञा,

पु०, सं०, यौ०) धर्मात्मा । [**धर्मपरायणता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।**—पत्नी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) विवाहिता स्त्री, पत्नी ।**—पुत्र**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) राजा युधिष्ठिर । नर-नारायण । दत्तक-पुत्र । [(सद्द०)—**धर्मपिता, धर्ममाता**] ।**—बुद्धि**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) धर्माधर्म का विवेक, विचार, ज्ञान, भले-बुरे का ज्ञान ।**—भीरु**–(वि०, सं०) धर्मभयधारी, जो अधर्माचरण से डरे, धर्मात्मा ।**—भ्राता,—बंधु**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सहपाठी ।**—मूर्ति**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) धर्मावतार, धर्मस्वरूप ।**—याजक**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पुरोहित । पौराणिक ।**—युग**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सतयुग ।**—युद्ध**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नियमानुसार युद्ध, निश्चित नीति के अनुसार युद्ध ।**—रक्षक**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) राजा । आचार्य । [**धर्मरक्षिका** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]**—रक्षित**–(संज्ञा, पु०, सं०) बौद्ध मत का एक उपदेशक, जो अशोक के समय में यवन देशों को गया था । (वि०) धर्म से रक्षित ।**—राइ,—राय***–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० धर्मराज] धर्मराज, युधिष्ठिर । धर्मात्मा राजा ।**—राज**–(संज्ञा, पु०, सं०) राजा युधिष्ठिर । धर्मात्मा राजा । यम ।**—लुप्तोपमा**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० धर्मलुप्त+उपमा] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेयोपमान का धर्म प्रगट नहीं रहता (अ० पी०) ।**—वीर**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जो धर्म-कर्म करने में साहसी हो ।**—व्याध**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जनकपुर-निवासी एक बहेलिया जिसने एक वेदपाठी ब्राह्मण को धर्म-तत्व समझाया था ।**—शाला**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०, यौ०) वह घर जो परदेशी यात्रियों के ठहरने के हेतु बनवाया गया हो । [धरमसाला (दे०)]**—शास्त्र**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्म के तत्व की विवेचना का ग्रंथ ।**—शास्त्री**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्म-शास्त्र का ज्ञाता तथा धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था देने वाला, धर्मशास्त्रज्ञ ।**—शील**–(वि०, सं०) धर्म-प्रकृति, धर्मभक्त, धर्मात्मा । [**धर्मशीलता** (संज्ञा, स्त्री०)] "सुनु सठ धर्मसीलता तोरी"—[रामा०] ।**—संहिता**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) स्मृति ग्रंथ, कर्तव्याकर्तव्य या रीति-नीति-सूचक ग्रंथ ।**—संकट**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दो समान कर्तव्यों में एक का निश्चय न कर सकना, दुबिधा, असमंजस ।**—सभा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) न्यायसभा, न्यायालय, अदालत, कचहरी ।**—सारी*†**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० धर्मशाला] धर्मशाला, यात्री-मन्दिर ।**—सूत्र**–(संज्ञा, पु०, सं०) महर्षि जैमिनि-प्रणीत एक धर्म-ग्रंथ । **मुहा०—कमाना**–धर्म का फल जोड़ना ।**—बिगाड़ना**–धर्म भ्रष्ट करना ।**—छोड़ना**–ईमान छोड़ देना ।**—लगती कहना**–सत्य, ठीक या उचित बात कहना ।**—कर्म का पक्का**–कर्तव्य-कर्म या सत्कर्म करने में दृढ़ ।**—से कहना (बोलना)**–सच-सच कहना । मत, सम्प्रदाय, पंथ । ईमान । कानून, नीति ।

धर्मतः—(अव्य०, सं०) धर्म का विचार या ध्यान रखते हुए, सत्य से, धर्म से ।

धर्मांशु—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सूर्य्य, भानु ।

धर्माचरण—(संज्ञा, पु०, सं०) धर्म के अनुरूप आचरण ।

धर्माचार्य—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्मशिक्षक या उपदेशक, गुरु ।

धर्मात्मा—(वि०, यौ०) [सं० धर्मात्मन्] धार्मिक, धर्मशील, धर्मनिष्ठ ।

धर्माधर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) धर्म और अधर्म ।

धर्माधिकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) न्यायालय । न्याय करने वाला ।

धर्माधिकरणिक—(संज्ञा, पु०, सं०) न्यायाधीश, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित का निर्णय करने वाला । [जज] ।

धर्माधिकारी—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) न्यायाधीश, न्यायाध्यक्ष ।

धर्माध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) न्यायाधीश । दानाध्यक्ष । धर्माधिकारी ।

धर्मानुसरण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्म का पालन ।

धर्मानुसार—(संज्ञा, पु०, सं०) धर्म की रीति से । [**धर्मानुसारी**–(वि०) धार्मिक ।]

धर्मारण्य—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तपोवन, ऋषि-आश्रम ।

धर्मार्थ—(क्रि० वि०, सं०, यौ०) धर्म या पुण्य या परोपकार के हेतु । (संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्म और अर्थ ।

धर्मावतार—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) साक्षात् धर्मस्वरूप, धर्मात्मा, न्यायाधीश । राजा युधिष्ठिर ।

धर्मासन—(संज्ञा, पु०, वि०, सं०) न्यायाधीश की गद्दी या कुर्सी ।

धर्मिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पत्नी । (वि०, सं०) धर्म करने वाली ।

धर्मिष्ठ—(वि०, पु०, सं०) धर्मात्मा, सज्जन, धार्मिक, धर्म-कर्म करने वाला ।

धर्मी—(वि०, पु०) [सं० धर्मिन्] धर्मात्मा, धार्मिक, धर्म का मानने वाला । [**धर्मिणी** (स्त्री०)] ।

धर्मेन्द्र—(संज्ञा, पु०, सं०) यमराज । युधिष्ठिर ।

धर्मोधर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) धर्म और अधर्म । "भेद खुल पाया न धर्मोधर्म का"—बच्चन ।

धर्मोपदेश—(संज्ञा, पु०) [सं० धर्म+उपदेश] धर्म का उपदेश या प्रवचन, धार्मिक शिक्षा ।

धर्मोपदेशक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धर्म-शिक्षक, धर्मोपदेष्टा, धर्म की शिक्षा देने वाला ।

धर्मोपाध्याय—(संज्ञा, पु०, सं०) पुरोहित, पंडित ।

धर्म्य—(वि०, सं०) धर्म-संगत, जो धार्मिक नियमों के करने से प्राप्त हो ।

धर्ष—(संज्ञा, पु०) [सं० धर्षण] अपमान, अनादर । आक्रमण, धावा, दबोचने, दबाने या दमन करने की क्रिया । "रिपु-बल धर्षि हर्षि हिय"—[रामा०] ।

धर्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) धर्षण करने वाला ।

धर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) अपमान, अनादर । आक्रमण, धावा, चढ़ाई, दबोचना । [**धर्षणीय, धर्षित** (वि०)] ।

धर्षणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपमान, अनादर, अवज्ञा । सतीत्व-हरण ।

धर्षित—(वि०, सं०) अपमानित, पराजित ।

धर्षी—(वि०, पु०) [सं० धर्षिन्] दबोचने, आक्रमण करने, हराने वाला, अनादर करने या नीचा दिखाने वाला [**धर्षिणी** (स्त्री०)]

धव—(संज्ञा, पु०, सं०) एक जंगली पेड़ । पति, स्वामी । [धवा (दे०)]

धवनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धौंकना] धौंकनी । धमनी । †* (वि०) [सं० धवल] उज्ज्वल, सफेद । (**संज्ञा, स्त्री०**) [सं० धमनी] नाड़ी, धमनी ।

धवरा, धौरा†—(वि०, दे०) [सं० धवल] सफेद, उज्ज्वल [**धवरी, धौरी** (स्त्री०)]

धवल—(वि०, सं०) उज्ज्वल, श्वेत । निर्मल, सुन्दर, [धौल (दे०)] । [**धवलता** (संज्ञा, स्त्री०)] "धवल धाम ऊपर नभ चुंबत"—[रामा०] ।—गिरि,—गिर-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धवल+गिरि] धौलागिरि, हिमालय पहाड़ की एक चोटी ।

धवलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उज्ज्वलता ।

धवलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० धवल] प्रकाशित करना या चमकाना, स्वच्छ और सुन्दर करना ।

धवला—(वि०, स्त्री०, सं०) उजली, साफ, सफेद । (संज्ञा, स्त्री०) सफेद गाय ।

धवलाई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धवल + आई प्रत्य०] सफाई, उज्ज्वलता, सफेदी ।

धवलाख्य—(संज्ञा, पु०, दे०) पियाज, प्याज ।

धवलित—(वि०, सं०) श्वेत किया हुआ, साफ बनाया गया ।

धवलिमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सफेदी, श्वेतता । "सुधा धवलिमा देख कालिमा की क्रिया"—हरिऔध ।

धवली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उजली गाय ।

धवलीकृत—(क्रि० वि०, सं०) उज्ज्वल किया हुआ, धवलीभूत, शुक्लीकृत ।

धवलोत्पल—(संज्ञा, पु०, सं०) कुमुद ।

धवा—(संज्ञा, पु०, दे०) कहारों की एक जाति ।

धवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० धाना का प्रेरणा० रूप] दौड़ाना, भगाना, जल्दी-जल्दी चलाना । "जात तुरंग धवाये"—रघुराज० ।

धस—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धँसना—पैठना] पानी इत्यादि में पैठना या घुसना, डुबकी, गोता ।

धसक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) सूखी खाँसी, ठसक । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धसकना] धसकने का भाव या कार्य, डाह, द्वेष, ईर्ष्या ।

धसकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० धँसना] नीचे की ओर किसी वस्तु का बैठ जाना । ईर्ष्या या डाह करना । डरना । "उठा धसकि जिउ औ सिर धुना"—पद० ।

धसना, धँसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ध्वंसन] मिटना, ध्वस्त या नष्ट होना । ‡(क्रि० अ०, दे०) [हि० धँसना] धँसना, किसी वस्तु का नीचे बैठ या घुस जाना ।

धसनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धँसनि] धसने, नीचे पैठने की क्रिया ।

धसमसाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० धँसना] धसना, नीचे बैठना या घुस जाना । "औ धरती दर में धसमसी"—पद० ।

धसान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धँसान] धँसी जमीन, ढाल । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दशार्णा] एक छोटी नदी (बुंदे०) ।

धाँगड़, धाँगर—(संज्ञा, पु०, दे०) भूमि खोदने का उद्यम करने वाली एक जाति । एक अनार्य जाति ।

धाँधना—(क्रि० स०, दे०) किसी जीवधारी को किसी कोठरी या पिंजरे में बंद करना । बेंड़ना । ज्यादा खा जाना ।

धाँधल, धाँधला—(संज्ञा, पु०, अनु०) उपद्रव, उधम, झगड़ा, झंझट । फरेब, नटखटी, अंधेर, उतावली ।

धाँधलपन, धाँधलापना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धाँधल+पन प्रत्य०] दगा या धोखेबाजी, बदमाशी, अंधेर, अन्याय, अत्याचार । उपद्रव, नटखटी ।

धाँधली—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० धाँधल+ई प्रत्य०] उपद्रव, अंधेर, अत्याचार, अन्याय, स्वेच्छाचार, धोखा ।—**बाजी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धाँधला] अत्याचार, अंधाधुन्धी, अंधेर । [**धांधलेबाज** (वि०, दे०)]

धाँय-धाँय—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) तोप या बन्दूक के छूटने या जलने का शब्दाभास, धड़ाका ।

धाँस—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) किसी पदार्थ की अति तीक्ष्ण गंध, जैसे लाल मिर्च की ।

धाँसना—(क्रि० अ०, अनु०) पशुओं का खाँसना ।

धा—(वि०, सं०) किसी पदार्थ का धारण करने या उठाने वाला । भाँति, विधि । (प्रत्यय सं०, दे०) चतुर्धा मुक्ति, चहुँधा (ब्र०) । (संज्ञा, पु०) [सं० धैवत] धैवत स्वर (संगी०) ।

धाइ, धाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धात्री] धात्री, उपमाता, दूध पिलाने वाली दाई । [पू० का०, क्रि० अ०, दे०] (ब्र०) दौड़कर, झपटकर । "सुमिरत सारद आवति धाई"—[रामा०] ।

धाउ—(संज्ञा, पु०) [सं० धाव] एक तरह का नाच । (क्रि० अ०) विधि । [दे० धाना] दौड़ ।

धाऊ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धावन] धावन । हरकारा, दूत, चर ।

धाक—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) आतंक, शान, रोब-दाब, दबदबा । **मुहा०—बाँधना (बाँधना)**—आतंक, या रोब छा जाना ।—**जमाना (जमना)**—रोब छा जाना ।

धाकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० धाक] आतंक छाना, धाक बाँधना ।

धाकर—(संज्ञा, पु०, दे०) नीच जाति, वर्णसंकर, दोगला ।

धाखा—(संज्ञा, पु०, दे०) पलाश, छिउल, ढाख, ढाक ।

धागा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० तागा] तागा, डोरा, सूत । "कच्चे धागे में बँधे आएँगे सरकार यहाँ " ।

धाड़†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० डाढ़] डाढ़, दाढ़, ढाड़ । दहाड़ । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धार] गिरोह, जत्था, डाकुओं का झुण्ड । आक्रमण, धावा ।—**मारना**-चिल्लाना, चिल्लाकर रोना ।

धाड़ना—(अ०, क्रि०) दहाड़ना ।

धात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धातु] धातु ।

धातकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धव का फूल ।

धाता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धातृ] ब्रह्मा । "धाता न धृति पायी"—[तारकवध] । विष्णु । शिव । एक वायु । शेष । सूर्य । विधि । विधाता । (वि०, सं०) पालने या धारण करने वाला, रक्षक, पालक ।

धातु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी वस्तु का धारक पदार्थ, जैसे शरीर-धारक वात, पित्त, कफ आदि, गेरू, मैनसिल आदि, सोना, चाँदी आदि, भू आदि मूल शब्द (व्या०) ।—**क्षय**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) प्रमेह रोग, धातुक्षीणता, धातुदौर्बल्य —**पुष्ट**-(वि०, सं०, यौ०) वीर्य को गाढ़ा और अधिक करने वाली औषधि ।—**मर्म**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) धातु का साफ करना ।—**माक्षिक**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सोनामाखी, स्वर्णमाक्षिक ।—**वर्द्धक**-(वि०, सं०, यौ०) वीर्य को बढ़ाने वाली वस्तु ।—**वाद**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) रसायन बनाने का काय, धातु के साफ करने का कार्य, कीमियागीरी ।—**वादी**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) धातु-विद्या-वेत्ता, धातु-द्रव्य-परीक्षक । —**साधिन्**—(वि०, सं०, यौ०) धातु-द्वारा प्रस्तुत, धातु से बनी ।

धात्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) माता, माँ । धाय, दाई । आँवला । पृथ्वी । गंगा । गाय ।—**फल**-(संज्ञा, पु०) आँवला । "धात्रीफल सदा पथ्यम्"—वैद्या० । —**विद्या**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) बालक या

बच्चा जनाने और उसका पालन-पोषण करने की विद्या, धात्री-विज्ञान, धात्री-कला।

धात्वर्थ—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धातु का अर्थ। "उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते"।

धात्वितर—(वि०, यौ०) [सं० धातु+इतर] बिना धातु का, धातु-रहित।

धाधि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धधकना] लपट, ज्वाला। "चानन देह चौगुन हो धाधि" —विद्या०।

धान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धान्य] शालि, अन्न, व्रीहि, चावल का प्राकृत रूप।—**पान**-(वि०, यौ०, दे०) [हिं० धान+पान] पतला, दुबला, दुर्बल, कोमल।

धानक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धानुष्क] धनुर्द्धारी, धनुष चलाने वाला, कमनैत। धुनिया, बेहना, एक पहाड़ी जाति। [धानुक (दे०)]

धानकी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० धानुक] धनुषधारी, कमनैत।

धानमाली—(संज्ञा, पु०, सं०) बैरी के बाणों को रोकने की एक क्रिया।

धाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० धावन] दौड़ना, भागना, प्रयत्न करना [धावना (दे०)]।—**चूर्ण** (संज्ञा, पु०, सं०) सत्तू, भुँजे जव और चने का आटा।

धानी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जगह, स्थान, ठौर। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० धान+ई प्रत्य०] धानों की पत्ती-सा हलका हरा रंग। (वि०) हलके रंग वाला। *†(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धान्य] धान।

धानुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धानुष्क] धनुषधारी। धुनिया, एक पहाड़ी जाति।

धान्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चार तिल भर की तौल। धनियाँ (औष०)। धान, अन्न, अनाज। एक पुराना हथियार।—**पति**-(संज्ञा, पु०) चावल, जौ।—**बीज**-(संज्ञा, पु०) धनिया।

धाप—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० टप्पा] कोस भर या आधे कोस की नाप। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धापना] संतोष, तृप्ति।

धापना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० तर्पण] संतुष्ट या तृप्त होना, अघाना, जी भर जाना। (क्रि० स०, दे०) संतुष्ट या तृप्त करना। (क्रि० अ०, दे०] [सं० धावन] भागना, दौड़ना।

धाबा—(संज्ञा, पु०, दे०) अटारी। बालाखाना, रसोईघर, ढाबा (प्रान्ती०)।

धाभाई—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० धा=धाय+भाई] दूध-भाई।

धाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धामन्] स्थान, मंदिर, घर। शरीर। लगाम। शोभा। प्रभाव। तीर्थ। जन्म। विष्णु। ज्योति। ब्रह्म। स्वर्ग। "पतत्यधोधाम विसारि सर्वतः"—माघ०। "बिनु घनस्याम धाम धाम ब्रज मंडल मैं"—[ऊ० श०]।

धामक, धूमक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धूम-धाम] धूमधाम।

धामिन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० धाना=दौड़ना] एक बहुत तेज दौड़ने वाला साँप, जिसकी पूँछ में विष होता है।

धायँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) तोप या बंदूक के छूटने या आग के जलने का शब्दाभास।

धाय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धात्री] धात्री, दाई, धायी, दूध पिलाने वाली स्त्री। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धातकी] धव का वृक्ष। (क्रि० अ०, पू० का०) [दे० धाना] धाइ, दौड़ कर।

धायना, धावना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० धाना] दौड़ना, भागना।

धार—(संज्ञा, पु०, सं०) अखंड प्रवाह। वेग से पानी बरसना, वर्षा का जल। कर्ज। प्रदेश। हथियार की पैनी बगल। "बोरौं सबै रघुवंश कुठार की धार में"—[रामा०]। सेना, दिशा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) मालवा की प्राचीन राजधानी, धारा-नगरी। **मुहा०**—**चढ़ाना**-किसी देवता पर दूध चढ़ाना।—**देना**-दूध देना।—**निकालना**-दूध दुहना। अस्त्र को पैना बनाना।—**मारना**-पेशाब करना।—**उलटना**-अस्त्र की धार का कुंठित होना।—**बाँधना**-किसी हथियार को धार को किसी प्रकार निकम्मा कर देना।

धारक—(वि०, सं०) धारण करने या रोकने वाला। ऋणी, कर्जदार।

धारण—(संज्ञा, पु०, सं०) थामना, अपने ऊपर धरना, पहनना। सेवन करना। मान लेना, अंगीकार करना। खाना-पीना।

धारणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुद्धि, ज्ञान, विचार, अक्ल, समझ, स्मृति। योग का एक अंग।—**शक्ति**-(संज्ञा, स्त्री०) मानसिक ग्रहण-शक्ति।

धारणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्थिरता। सिरा, पंक्ति। बौद्धिक मंत्र।

धारणीय—(वि०, सं०) धारण करने योग्य।

धारना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० धारण] धारण करना, उधार लेना। (क्रि० स०, दे०) ढारना।

धारयिता—(संज्ञा, पु०, सं०) धारण करने वाला व्यक्ति, धारक।

धारयित्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी। धारण करने वाली।

धारांकुर—(संज्ञा, पु०, सं०) जल-कण, ओला। सैनिक-दल के आगे जाना।

धारा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घोड़े की चाल। पानी का बहाव, प्रवाह, झरना। सोना। हथियार की बाढ़ या धार। अधिक वर्षा। समूह, झुंड। एक प्राचीन नगर (दक्षिण) या शहर। मालवा की पुरानी राजधानी। रेखा। कानून। दफा।—**धर**-(संज्ञा, पु०, सं०) बादल, मेघ।—**प्रवाह**-(वि०) अविच्छिन्न या अविराम गति से प्रवाहित होने वाला या चलने वाला। (अ०) अविच्छिन्न रूप से।—**वाही**-(वि०, सं०) धारा सा स्वच्छंद, बिना रोक-टोक के चलने वाला।—**सभा**-(संज्ञा, स्त्री०) व्यवस्थापिका-सभा [लेजिस्लेटिव असेम्बली]।

धारि*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० धारा] अखंड प्रवाह। (क्रि० स०, पू० का०) [हिं० धारना] धारण करके। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) समूह, झुंड।

धारित—(वि०, सं०) धारण किया या पकड़ा हुआ।

धारिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धरणी, पृथ्वी। (वि०, स्त्री०, सं०) धारण करने या धरने वाली।

धारी—(वि०, पु०) [सं० धारिन्] धारण करने वाला। [**धारिणी** (स्त्री०)] (संज्ञा, पु०, सं०) एक छंद (पिं०)। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० धारा] सेना। समूह, समुदाय। रेखा। [**धारीदार** (वि०, दे०)]।—**दार**-(वि०) [हिं० धारी+दार फ़ा०] धारियों या लकीरों वाला।

धारोष्ण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) थनों से निकला हुआ कुछ गर्म दूध।

धार्तराष्ट्र—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) राजा धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधनादि। कलहंस। एक प्रकार का साँप।

धार्मिक—(वि०, सं०) धर्मात्मा। धर्मसंबंधी।

धार्मिकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धर्मशीलता।

धार्य—(वि०, सं०) धारण करने के योग्य।

धाव—(संज्ञा, पु०, दे०) दौड़। एक पेड़।

धावक—(संज्ञा, पु०, सं०) धावन। हरकारा। संस्कृत के एक विख्यात कवि।

धावन—(संज्ञा, पु०, सं०) दौड़ना। दूत, हरकारा। धोना, साफ करना। जिससे कोई वस्तु धो कर साफ की जाय। "धावन तहाँ पठावहु देहिं लाख दस रोका"—प०।

धावना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० धावन] भागना, दौड़ना, जल्दी-जल्दी जोर से चलना।

धावनि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धावन] धावना क्रिया का भाव, भगदड़। धावा, चढ़ाई।

धावनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० धावन] दूती, परिचारिका।

धावमान—(वि०) [सं० धावन] द्रुत या शीघ्र-गामी, दौड़ता या भागता हुआ।

धावरी*†—(संज्ञा, स्त्री०) [दे० धवल] सफेद गाय, धवरी गाय, [धौरी (दे०)]। (वि०, दे०) बलवान। पापी।

धावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धावन] चढ़ाई, आक्रमण, हमला। दौड़। **मुहा०**—**मारना** (**करना**)-शीघ्र-शीघ्र चलना या जाना। आक्रमण करना।

धाह*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) जोर से चिल्ला कर रोना-पीटना, धाड़, चीख।

धाही*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धात्री] धाय, धायी, उपमाता।

धिंग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दृढ़ांग, हिं० धाँगा, धाँगी] धींगा-धींगी, उपद्रव, ऊधम, शरारत।

धिंगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) गुंडा।

धिंगा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० दृढ़ांग] निर्लज्ज, बदमाश, अन्यायी।

धिंगाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दृढ़ांगी] निर्लज्जता, शरारत, धिंगता।

धिंगाधिंगी—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए धींगा-धींगी।

धिंगाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० धिंग] उपद्रव, ऊधम या शरारत करना।

धिंगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ऊधमी स्त्री।

धिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धिय] लड़की, पुत्री, कन्या।

धिग्रान*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ध्यान] ध्यान, विचार ।

धिग्राना†*—(क्रि० स०, दे०) [हि० ध्यावना] ध्यान करना, विचारना ।

धिक , धिक्—(अव्य०, सं०) अनादर, तिरस्कार और निन्दा-सूचक शब्द, फटकार, घृणा, छी-छी। "धिक् धिक ऐसी कुरुराज रजपूती पै"—[अ० व०]।

धिकना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० दग्ध] तप्त या गर्म होना ।

धिकाना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० दग्ध, दे० दहकाना] तपाना या गर्म करना ।

धिक्कार—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपमान, तिरस्कार और घृणा-सूचक शब्द । "उस बुद्धि को धिक्कार है" ।

धिक्कारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० धिक] धिक्-धिक् कह कर किसी व्यक्ति का अनादर, तिरस्कार या निन्दा करना, डाँटना, फटकारना, घृणा प्रगट करना, [धिकारना (दे०)] ।

धिक्कारी, धिक्कारित—(वि०) [सं० धिक्कार] निन्दित, गर्हित, शापित ।

धिग*—(अव्य०, सं०) धिक् , धिक्कार ।

धिय*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दुहिता] बेटी, पुत्री ।

धिरकार, धिरकाल†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धिक्कार] धिक्कार, लानत, छी-छी ।

धिरवना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० धर्षण] भयभीत करना, डराना, धमकाना, फटकारना ।

धिरावना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० धिरवना] भयभीत करना, डराना, धमकाना । (क्रि० अ०, दे०) [सं० धीर] मंद पड़ना, धीमा होना, धीरज धरना ।

धींग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डिंगर] हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा, दृढ़ांग पुरुष । (वि०, दे०) बलवान । पापी ।

धींगड़, धींगड़ा†—(वि०, दे०) [सं० डिंगर] दुष्ट, पाजी । मोटा-ताजा । वर्णसंकर [धींगड़ी (स्त्री०)]।

धींगर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डिंगर] मोटा-ताजा, मुसंड, हृष्ट-पुष्ट । मूर्ख । बदमाश, धिंगरा । [धींगरी (स्त्री०)] ।

धींगरा—(संज्ञा, पु०) गुंडा, बदमाश ।

धींगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० डिंगर=मूर्ख, शठ] उपद्रवी, बखेड़िया, पाजी ।

धींगा, धींगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० धींग] अन्याय, अंधेर, जबरदस्ती, बदमाशी, उपद्रव, उत्पात ।

धींगामस्ती, धींगामुश्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धींगा-धींगी] धींगा-धींगी, बदमाशी, अंधेर, उपद्रव ।

धींद्रिय—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) ज्ञानेन्द्रियाँ, जीभ, आँख, कान, नाक, त्वचा ।

धींवर—(संज्ञा, पु०) [सं० धीवर] धीवर, धीमर, मल्लाह, मछुवा ।

धी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्ञान, बुद्धि । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दुहितृ] बेटी, कन्या ।

धीजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० धृ, धार्य, धैर्य] ग्रहण, अंगीकार, स्वीकार करना । धैर्य धरना, प्रसन्न या सन्तुष्ट होना । "सुन्दर कहत ताहि धीजिये सु कौन भाँति" ।

धीम, धीमा*†—(वि०, पु०, दे०) [सं० मध्यम] धीरे-धीरे चलने वाला, मंदगामी । धीमा, कम तेज ।

धीमर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धीवर] मछवाहा, केवट, मल्लाह, धीवर ।

धीमान्—(वि०, पु०) [सं० धीमत्] बुद्धिमान, होशियार । (संज्ञा, पु०) बृहस्पति । [धीमती (स्त्री०)]।

धीय, धीया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धी या दुहितृ] बुद्धि, ज्ञान । कन्या ।

धीर—(वि०, सं०) धैर्यवान, शान्त, गम्भीर । सुन्दर । धीमा, धीरा (दे०) ।*†[धीरता (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]—**ललित**–(संज्ञा, पु०, सं०) बना-ठना, हर्षित-हृदय नायक ।—**शांत**–(संज्ञा, पु०, सं०) जो नायक शील, दयादि गुणयुक्त और पुण्यवान हो ।

धीरक, धीरज†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धैर्य] धैर्य, मन या चित्त की स्थिरता । "धीरज धरिय तौ पाइय पारू"—[रामा०] ।—**मान**–(वि०) धैर्यवान ।

धीरता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) धैर्य, संतोष, स्थिरता, चित्त की दृढ़ता । [धीरत्व (संज्ञा, पु०, सं०)]

धीरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धैर्यवती, संतोषवती एक नायिका। "कोप जनावै व्यंग तें, तजै न पति सनमान। ताको धीरा नायिका, कहै सदा गुण-वान"—पद्मा०। (वि०, पु०) [सं० धीर] मंद, धीरज वाली। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धैर्य] धैर्य, धीरज।

धीराधीरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) एक नायिका। "करै अनादर व्यङ्ग सों, प्रगटे कोप पसार। धीराधीरा नायिका, मानों सुख की सार"—पद्मा०।

धीरिय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धी] कन्या, दुहिता, पुत्री, बेटी, लड़की।

धीरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धार] आँख की पुतली।

धीरे—(क्रि० वि०, दे०) [हि० धीर] मन्द गति या गमन। चुपके-चुपके से।—**धीरे**-(अव्य०) [हि० धीर] मन्द-मन्द, शनैः-शनैः, कोमलता या चुपके से। "धीरे-धीरे बहे हवा"—मा० ला० च०।

धीरोदात्त—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अहंकार या अभिमान से रहित, क्षमाशील, दयालु, धीर, वीर, बलवान नायक।

धीरोद्धत—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अति चंचल, प्रचंड और आत्मश्लाघी नायक। *(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) धीर और उद्दंड।

धीवर—(संज्ञा, पु०, सं०) मल्लाह, केवट, मछ-वाहा।

धुँआँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धूम] धूम। चिता का धूम, धुआँ। "धुआँ देखि खरदूषन केरा"—[रामा०]।

धुँआरा—(संज्ञा, पु०, दे०) धुआँ निकलने का छेद।

धुँई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धूम] धूनी।

धुँकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ध्वनि+कार] बड़े जोर का शब्द, गरज, गड़गड़ाहट।

धुँगार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धूम्र+आधार] छौंक, बघार, तड़का (प्रान्ती०)।

धुँगारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० धुँगार] छौंकना, बघारना, तड़का देना।

धुँजा†—(वि०, दे०) [हि० धुँध] धुँधी, धुँधली, मन्द दृष्टि वाला।

धुँद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धूम्र, हि० धुंध] धुँधी, धुँधली। एक नेत्र रोग, धुंध।

धुँध—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धूम्र+अंध] धुन्धी, धुँधली, धुँद, नेत्र-रोग।

धुँधका—(संज्ञा, पु०, दे०) धुआँ निकलन का छेद।

धुँधकार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धुँकार] धुँकार, गरज। अँधेरा।

धुँधकारी—(वि०, दे०) गर्जन-तर्जन करने वाला। उपद्रवी। 'धुंधु' नामक राक्षस की तरह आचरण करने वाला।

धुँधमार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धुंधुमार] राजा कुवलयाश्व जो राजा त्रिशंकु के पुत्र थे और जिन्होंने धुंधु नामक राक्षस को मारा था।

धुँधर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धुँध] अँधेरा, वायु में छाई धूल। [धुँधुरी (दे०)]।

धुँधराना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० धुँधलाना] धुँधला दिखाई देना।

धुँधला—(वि०, दे०) [हि० धुँध+ला] कुछ कुछ अँधेरा सा, अस्पष्ट।—**पन**-(संज्ञा, पु०) अस्पष्ट या धुँधला होने का भाव।

धुँधलाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धुँधला] धुँधलापन।

धुँधली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अंधेरा। दृष्टि की कम-जोरी।

धुँधार—(वि०, दे०) धुँआधार। धूमिल।

धुंधु—(संज्ञा, पु०, सं०) मधु दैत्य का एक पुत्र।—**मार**-(संज्ञा, पु०, सं०) राजा त्रिशंकु का पुत्र, कुवलयाश्व, जिसने धुन्धु दैत्य को मारा था।

धुँधुकार—(संज्ञा, पु०) [हि० धुँध+कार] अँधेरा, धुँकार, नगाड़े की आवाज।

धुँधुरि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धुन्ध] अँधेरा, धूलि कण से होने वाला अंधकार, [धुँधुरी (दे०)]।

धुँधुरित—(वि०, दे०) [हि० धुँधुर] धूमिल, अस्पष्ट। धुँधली दृष्टि वाला।

धुँधुवाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० धूम्र, हि० धुआँ] धुँधुआना, धुआँ देना, धुआँ दे कर जलना। "प्रगट धुआँ नहिं देखिए उर अंतर धुँधुवाय"—गिरि०।

धुँधेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धुँध] धूलि-कणों और धुआँ के कारण अँधेरा।

धुँधेला—(वि०, दे०) छली, हठी, दुराग्रही, धूर्त, ठग। धुँधला।

धुत्र, धुव*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ध्रुव] ध्रुव-तारा । ध्रुव । (वि०, दे०) अटल, स्थिर ।

धुआँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धूम्र] धुआँ, धूम । बहुत बड़ा समुदाय, भारी समूह ।—**कश**—(संज्ञा, पु०) [हि० धुआँ+फ़ा० कश] अग्निबोट, स्टीमर । रोशनदान ।—**धार**–(वि०, दे०, यौ०) [हि० धुआँ+धार] धुएँ से भरा, काला । प्रचंड, घोर । (क्रि० वि०, दे०) बहुत ज्यादा या बड़े जोर का । **मुहा०** (**मुँह**)—**होना**–लज्जा, भय से मुँह का रंग स्याह या मैला पड़ना ।—(**एँ**) **का धौरहरा**–थोड़ी देर में नष्ट होने वाली वस्तु ।—(**एँ**) **के बादल उड़ाना**–बड़ी भारी गप हाँकना ।—**निकालना या काढ़ना**–बढ़-बढ़ कर बातें करना ।

धुआँना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० धुआँ+ना प्रत्य०] अधिक धुएँ से किसी वस्तु का स्वाद, रंग या गंध बिगड़ जाना ।

धुआँयँध, धुआँइँध—(वि०, दे०) [हि० धुआँ+गंध] धुएँ के तुल्य महकने वाला । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) अजीर्णता या अपच से आने वाली डकार ।

धुआँस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धुवाँस] उरद की धोई हुई दाल या आटा ।

धुआँसा—(संज्ञा, पु०) कालिख, धुआँ की कालिख । (वि०, पु०) धुआँया हुआ ।

धुक—(संज्ञा, पु०, दे०) कलाबतून बटने की सलाई ।

धुकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तोड़ा, रुपये रखने की थैली, बसनी ।

धुकधुकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० धुक-धुक से] छाती और पेट के मध्य का गड्ढा । कलेजे की धड़कन, कंप, भय, डर । एक गहना । "सुरगन सभय धुकधुकी धरकी"—[रामा०] ।

धुकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झुकना] झुकना, लचना । नवना, गिर या टूट पड़ना, झपटना । "तुलसी जिन्हें धाये धुके धरनीधर, धौरे धकानि सों मेरु हले हैं"—[कविता०]

धुकनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० धौंकनी] धौंकनी, धूनी ।

धुकान†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धमकाना] गर्जन, दहाड़, घोर शब्द, गड़गड़ाहट ।

धुकाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० धुकना] नवाना, झुकाना, लचाना, गिराना, पटकना, ढकेलना, पछाड़ना । (क्रि० स०, दे०) [सं० धूम+करण] धूनी देना ।

धुकार, धुकारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [धुसे अनु०] नगाड़ा बजने का शब्द । "होत धुकार दुंदुभिन को अरु बजत संख सहनाई"—[रघु०] ।

धुकड़-पुकड़, धुकुर-पुकुर—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) भयादि से होने वाली घबराहट; आगापीछा, मन की अस्थिरता । [**धुकपुकी** (स्त्री०, दे०)] ।

धुकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झुकना] झुकना, लचना, लचकना, नवना, टूट पड़ना ।

धुकारना—(क्रि० स०) [हि० धुकाना] लचाना, झुकाना, नवाना, गिराना, पटकना, ढकेलना, पछाड़ना ।

धुज, धुजा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ध्वजा] पताका, झंडा । धुजी ।

धुजिनी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ध्वजा] चमू, सेना, अनीकिनी, अनी ।

धुरगा—(वि०, दे०) [हि० धूर+अंगी] जिसके शरीर पर वस्त्र न हो केवल धूल ही लिपटी हो, धुरगा ।

धुतकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० दुतकार] दुतकार, फटकार, अनादर से हटाने का शब्द ।

धुतकारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० दुतकारना] दुतकारना, ललकारना ।

धुताई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धूर्त्तता] छल, धूर्त्तता, पाखंड, कपट, [धुर्तताई (दे०)] ।

धुधुकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [धुधु से अनु०] गरज, घोर शब्द, दहाड़ ।

धुधुकारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धुधुकार] गरज, घोर शब्द, दहाड़ । "बाल धुधुकारी दै दै तारी दै दै गारी देत"—[कविता०] ।

धुन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धुनना] किसी काम में लगे रहने का स्वभाव, प्रवृत्ति, लगन । "गया था बम्बई इस धुन में"—नेहब ।—**मुहा० का पक्का (पूरा)**–जो कार्य्य को पूर्ण किये बिना न छोड़े । मन की इच्छा या उमंग, मौज, सोच-विचार । "धुन की पूरी है कामकी पक्की" ।—**बाँधना (लगाना)**–रटन लगाना । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० ध्वनि] ध्वनि । धुनि, गाने का ढंग या तर्ज ।

धुनकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० धुनना] रुई धुनना । [**धुनकाना, धुनकवाना** (प्रेरणा० रूप)]

धुनकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धनुष] धनुही, धुनने का धन्वाकार यन्त्र ।

धुनना—(क्रि० स०, दे०) [हि० धुनका] रुई बेहनना, मारना, पीटना। बारम्बार कहना। कोई कार्य्य लगातार करना। "पुनि-पुनि कालनेमि सिर धुना"—[रामा०]। "सिर धुनने लग गयीं लताएँ" —[तारकवध]।

धुनवाना, धुनाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० धुनना का प्रेरणा० रूप] रुई धुनने का कार्य दूसरे से करवाना।

धुनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ध्वनि] शब्द, आवाज। गाने का ढंग।

धुनिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धुनना] रुई धुनने वाला, बेहना। [धुना (दे०)]

धुनिहाव—(संज्ञा, पु०, दे०) शरीर या हड्डी की पीड़ा, हड्फूटन। धूनी लगाने का भाव।

धुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ध्वनि] नदी, सरिता। "बहु गुन तो मैं हैं धुनी, अति पवित्र तव नीर"—दीन०।—**नाथ**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धुनिनाथ] समुद्र, सागर।

धुपना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० धुलना] धुलना, धोया जाना।

धुपाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० धूप] धूप दिलाना। धूप के धुएँ से सुवासित करना।

धुपेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धूप] अन्हौरी, गरमी के दिनों में शरीर पर निकले हुए छोटे-छोटे दाने। (वि०, दे०) धूप के रंग की, पीले रंग की।

धुबला—(संज्ञा, पु०, दे०) लहँगा, घाँघरा।

धुमला, धुमारा—(वि०, दे०) [सं० धूम+ऐला प्रत्य०] धुएँ के रंग का, मटमैला, धूमिल, धूमिला।

धुमलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धूमिल+आई प्रत्य०] धुएँ की सी मलिनता।

धुमिला—(वि०, दे०) धुएँ के रंग की तरह का, धुँधला।

धुमैला—(वि०) धूमिल, धुएँ के रंग की तरह का।

धुरंधर—(वि०, पु०, सं०) किसी वस्तु की धुरी का धारण करने या बोझ उठाने वाला, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम।

धुर—(संज्ञा, पु०) [सं० धुर] रथ, गाड़ी, बग्घी आदि की धुरी जिसमें पहिये लगाये जाते हैं, धुरा, धुरी, अक्ष। भार, बोझ। आरंभ। बिस्वांसी। ठीक, मुख्य, जैसे—धुरपूर्ब। (अव्य०) [सं० धुर] सर्वांग ठीक, सीधे, सटीक। एकदम या एकबारगी दूर। (वि०, दे०) [सं० ध्रुव] दृढ़, स्थिर, अटल। मुहा०—**सिर से**-बिलकुल शुरू से।—**से धुर तक**—आदि से अंत तक, इस सिरे से उस सिरे तक।—**कट**-जेठ में दिया गया पेशगी लगान।—**चट**-(दे०) लगातार।

धुरजटी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धूर्जटी] शिव, महादेव जिनके शरीर में धूलि जड़ी या लगी है, धूरजटी।

धुरना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० धूर्वण] मारना, कूटना, पीटना, बजाना। किसी पदार्थ पर कोई चूर्ण छिड़कना। माँड़े हुए अन्न को फिर से माँड़ना।

धुरपद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ध्रुपद] एक गाना, ध्रुपद, ध्रुवपद (संगी०)।

धुरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) मेघ, बादल। "धुंधुआरे धुरवा चहुँ मासा"—[स्फु०]।

धुरव्य—(संज्ञा, पु०, दे०) मेघ, बादल।

धुरस—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धुस्सा] एक ऊनी वस्त्र, धुस्सा।

धुरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धुर] धुर।

धुराधुर—(अव्य, दे०) सीधे, बराबर, जैसे—वे धुराधुर चले गये।

धुरियाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० धूर] किसी वस्तु पर धूल या मिट्टी डालना। किसी बुराई या ऐब को युक्ति से छिपाना। (क्रि० अ०, दे०) किसी पदार्थ का धूल से ढँक या छिप जाना, बुराई या ऐब का दबाया जाना।

धुरियामलार—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) एक राग, मलार (संगी०)।

धुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धुर हि० धुरा] अक्ष, छोटा धुरा।

धुरीण, धुरीन—(वि०, सं०, दे०) किसी पदार्थ का धुरा या बोझ धारण करने या सँभालने वाला, मुख्य, श्रेष्ठ, प्रधान, धुरंधर। "धर्म-धुरीण धर्मगति जानी"—[रामा०]।

धुरेंडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धूलि उड़ाना] चैत बदी प्रतिपदा को मनाया जाने वाला हिन्दुओं का त्यौहार, मदनोत्सव, होली, धुरेटी, धुरेटी (ग्रा०)। [धुलेंडी, धुरेहंडी (दे०)]।

धुरेटना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० धुर+एटना प्रत्य०] धूल से लपेटना। धूल लगाना।

धुर्य—(वि०, सं०) धुरंधर। धुरीण। बोझ उठाने या धारण करने वाला। भारवाही। (संज्ञा, पु०, सं०) ऋषभ नामी औषधि। वृषभ, बैल। प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य, मुखिया, अगुआ। "तस्याभवनापर धुर्य पदावलंबी"—[रघु०]।

धुरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धूर] कण, अणु, परमाणु, भुआ। मुहा०—**उड़ाना**–किसी पदार्थ के बहुत छोटे-छोटे भाग कर डालना, छिन्न-भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट कर डालना। बहुत पीटना या मारना।

धुलना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० धोना का अ० रूप] धोया या साफ किया जाना।

धुलवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० धुलाना] धुलाना, धोने का कार्य दूसरे से कराना।

धुलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धोना] धोने का भाव या कार्य, धोने की मजदूरी। [**धुला, धुली** (वि०)]

धुलाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० धवल] धोने का कार्य दूसरे से कराना, धुलवाना।

धुव*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ध्रुव] ध्रुवतारा, (वि०, दे०) अटल, स्थिर, दृढ़, ध्रुव।

धुवका—(संज्ञा, स्त्री०) पद की पहली पंक्ति, टेक।

धुवाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) धुआँ।

धुवाँना—(क्रि० अ०, दे०) धुएँ से काला होना।

धुवाँरा—(संज्ञा, पु०, दे०) धुएँ के निकलने का सुराख जो छतों में बना रहता है।

धुवाँस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धूर+माष वा० धूमसी] उरद का आटा [धुआँस (दे०)]।

धुवाना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० धुलाना] धुलाना, धोवाना।

धुस्स—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ध्वंस] मिट्टी आदि का ऊँचा ढेर या टीला, बाँध।

धुस्सा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विदश] ऊनी वस्त्र (ओढ़ने का)।

धूँध—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धुँध] धुंध, अँधेरा। "तीनि ताप सीतल करति सघन तरुन की धूँध"—नागरी०।

धूँधर, धूँधुर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धुंध] धुंध, अँधेरा, धुँधला।

धू*—(वि०, दे०) [सं० ध्रुव] अचल, अटल, स्थिर।

धूआँ—(संज्ञा, पु०) [सं० धूम] देखिए—धुआँ।

धूआँधार—(संज्ञा, पु०, दे०) बहुत धुआँ। (वि०) बेशुमार, अपार, बेसंभाल।

धूईं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धूनी] धूनी।

धूत—(वि०, सं०) हिलता या काँपता हुआ, थरथराता हुआ, धमकाया या फटकारा गया या डाँटा हुआ। त्यक्त, छोड़ा हुआ। †* (वि०, दे०) [सं० धूर्त] छली, ठग, धूर्त। [**धूर्तता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

धूतना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० धूर्त] ठगना, धोखा देना, छलना।

धूतपापा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काशी की एक नदी।

धूति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कंपन, हिलना। हवा करना। शारीरिक शुद्धि की हठयोग की एक क्रिया।

धूती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक पक्षी।

धूधू—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) अग्नि के ज़ोर से जलने या दहकने का शब्द।

धूनक—(संज्ञा, पु०, सं०) हिलाने वाला, कंपित करने वाला।

धूनन—(संज्ञा, पु०, सं०) हवा। कंपन। क्षोभ।

धूनना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० धूनी] धूनी देना। (क्रि० स०, दे०) धुनना।

धूना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धूनी] एक पेड़। आग में जलाने का एक सुगंधित पदार्थ [कोलतार (दे०)]।

धूनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि०] धूप, धुईं। मुहा०—**देना**–सुगंधित धुआँ उठाना या लगाना। साधुओं के तापने की अँगीठी।—**रमाना**–साधुओं-सा आग सुलगा कर बैठना।—**जगाना या लगाना**–अँगीठी जलाना। विरक्त होना। "लाए ध्यान धूनी त्यों उमंग मै उमैठो है"—रसाल।

धूप—(संज्ञा, पु०, सं०) सुगंधियुक्त धुआँ, कई पदार्थों से बना हवन का पदार्थ। सूर्य्य का प्रकाश और ताप, घाम।—**घड़ी**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धूप+घड़ी] धूप-द्वारा समय-सूचक यंत्र।—**छाँह** (**छाँही**)–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धूप+छाँह] एक ही जगह बारी-बारी से दो रंग दिखलाई देने वाला, लाल-हरा कपड़ा। "धूप-छाँही विरलवेला"—महादेवी।—**दान**–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धूप+आधान] धूप जलाने की डिबिया या पात्र, अगियारी। [**धूपदानी** (स्त्री०)] —**बत्ती**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धूप+बत्ती] सुगंधित पदार्थ लगी सींक या बत्ती जिसके जलाने से सुगंधित धुआँ फैलता है, अगरबत्ती। मुहा०—**खाना, लेना**–धूप में बैठना या खड़ा होना।—**चढ़ना या निकलना**–दिन चढ़ना।—**दिखाना**–धूप में रखना, धूप लगने देना।—**में बाल सफेद**

करना-अनुभव प्राप्त किये बिना बहुत काल व्यर्थ बिता देना।

धूपन—(संज्ञा, पु०, सं०) गंधद्रव्य, धूप देने का काम।

धूपना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० धूपन] धूप देना। सुगंधित पदार्थ जलाना। (क्रि० वि०, दे०) सुगंधित वस्तु जला कर धुआँ पहुँचाना, सुगंधित धुएँ में बसाना या सुगंधित करना, (क्रि० स० दे०) [सं० धूप=श्रांत होना] दौड़ना, हैरान होना। [**दौड़ना-धूपना** (यौ०)]

धूपित—(वि०, सं०) तप्त। थका हुआ। धूप-गंध से बासा हुआ।

धूम—(संज्ञा, पु०, सं०) धुआँ। अनपच। डकार। धूमकेतु, पुच्छलतारा। (संज्ञा, स्त्री०)[सं० धूम= धुआँ] जन-समूह के शोर-गुल मचाने का ढंग, रेल-पेल, हलचल, उपद्रव, आंदोलन, उत्पात, ऊधम, कोलाहल। ठाट-बाट। भारी आयोजन। प्रसिद्धि, ख्याति। **मुहा०—डालना, मचाना**-उपद्रव या ऊधम करना।**—केतन**-(संज्ञा, पु०) आग।**—केतु**-(संज्ञा, पु०, सं०) आग, अग्नि। केतु-ग्रह, पुच्छलतारा। शिव।**—ज**-(संज्ञा, पु०) बादल।**—दर्शी**-(संज्ञा, पु०) वह व्यक्ति जिसे चतुर्दिक धुँधला अथवा अस्पष्ट दिखायी पड़ता हो।**—धड़क्का, धड़ाका**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० धूमधाम] धूम-धाम, ठाट-बाट, भारी तैयारी, समारोह, आयोजन।**—धाम**-(संज्ञा स्त्री०, दे०) [हि० धूम+धाम अनु०] ठाट-बाट, समारोह, भारी तैयारी।**—पान**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गाँजा, तम्बाकू आदि का धुआँ लेना। किसी औषधि का धुआँ लेन की क्रिया, धूम्रपान।**—पोत**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अग्नि-बोट, स्टीमर, वाष्प-शक्ति-संचालित नौका।

धूमकधैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धूम] उछल-कूद, उत्पात, ऊधम, हल्ला-गुल्ला। [धूम्मकधैया (दे०)]।

धूमर*†—(वि०, दे०) [सं० धूमिल] मलीन, धुएँ के रंग का।

धूमल, धूमला—(वि०, दे०) [सं० धूमल] मलीन, मैला, मटमैला, धुएँ के रंग का। [धूमिल (दे०)]।

धूमाग्नि—(संज्ञा, स्त्री०) वह अग्नि जिसमें धुआँ हो धुआँ हो।

धूमाभ—(वि०, सं०) धुएँ के रंग का।

धूमायन—(संज्ञा, पु०, सं०) धुआँ देना। भाप निकलना।

धूमायमान—(वि०, सं०) धूम से परिपूर्ण। "धूमायमान वह घूर्ण्य प्रसर"—निराला।

धूमाली—(संज्ञा, स्त्री०) धुएँ की घुमावदार उठान। "नभ के नीचे नभ सी धूमाली"—पंत।

धूमावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक देवी।

धूमित—(वि०, सं०) धुएँदार, जिसमें धुआँ लगा हो।

धूमिल, धूमिला†*—(वि०, दे०) [सं० धूमल] मैला, धुएँ के रंग का।

धूम्र—(वि०, सं०) धुएँ के रंग का। (संज्ञा, पु०, सं०) लाल-काला मिला हुआ रंग, शिलाजीत (औष०)। एक दैत्य। शिव। भेड़।**—वर्ण**-(वि०, सं०) धुएँ के रंग का।

धूर*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धूल] धूलि, धूल, धूरि। "धूसर धूर भरे तनु आए"—[रामा०]।**—धान**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धूर+धान] धूलि की राशि, गर्द का ढेर या टीला। विनाश, ध्वंस। बंदूक। [**धूरधानी** (स्त्री०)]

धूरजटी†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धूर्जटि] शिव, धूर्जटी।

धूरत*‡—(वि०, दे०) [सं० धूर्त] धूर्त, ठग, छली, कपटी, चालाक।

धूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धूर] धूलि, धूल। चूर्ण, बुकनी। **मुहा०—करना, देना**-शरीर में कोई रोग होने पर सोंठ आदि का चूर्ण मलना।

धूरि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धूलि] धूल, धूलि, धूली।

धूर्जटि—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, धुर्जटी।

धूर्जटी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धूर्जटि] शिव, धूरजटी (ग्रा०), [धुरजटी (दे०)]। "गुन धूर्जटी वन पंचवटी"—[रामा०]।

धूर्त्त—(वि०, सं०) छली, ठग, चालबाज। (संज्ञा, पु०, सं०) काव्य में शठ नायक का एक भेद, विट्। लवण। लोहे का मैल। धतूरा।

धूर्त्तता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ठगी, चालाकी, [धूर्तताई (दे०)]

धूल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धूलि] मिट्टी, रेत आदि का बारीक चूर्ण, गर्द, रज, धूलि। "नहीं भली यह धूलि हवा भी जिसे उड़ाती"—गिरीश। धूल-सी तुच्छ वस्तु। **मुहा०—उड़ना**-बर्बादी होना,

तबाही आना, सन्नाटा या उजाड़ होना। भूलों और बुराइयों का सविस्तार वर्णन होना, निंदा या उपहास होना।—**की रस्सी बटना**–अनहोनी बात के पीछे पड़ना। धूर्त्तता से कार्य सिद्ध करना।—**चाटना**–अति विनम्र विनती करना। (**आँखों में**)—**डालना, झोंकना**–देखते-देखते धोखा देना, चुरा लेना। अंधेर करना। (**किसी बात पर**)—**डालना**–दबा देना, फैलने न देना, ध्यान न देना। (**दर-दर की**)—**फाँकना** (**छानना**)–मारा मारा फिरना।—**में मिलना, मिलाना**–नष्ट या चौपट होना, करना। **पैर** (**जूतों**) **की**—,अति तुच्छ वस्तु, नाचीज। (**सिर पर**)—**डालना**–सिर धुनना, पछताना।—**समझना**–अति तुच्छ जानना, किसी गिनती मे न लाना।

धूला—(सज्ञा, पु०, दे०) भाग, टुकड़ा।

धूलि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्द, धूली, धूल। [**धूलीलव** (यौ०)]। "धूली-लवः शैलताम्"।—**धूसर**–जो धूल लगाने से मटमैला या भूरे रंग का हो गया हो।

धूलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुहरा।

धूवाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धूम] धुआँ।

धूसना—(क्रि० स०, दे०) अनादर करना, कोसना, गाली देना।

धूसर, धूसरा, धूसला—(वि०, दे०) [सं० धूसर] मटमैला, खाकी, मटियारा, कुछ-कुछ पांडु वर्ण, धूसला (ग्रा०)। "धूसर धूरि भरे तन आये"—[रामा०]। धूल भरा। **धूल**—, (वि०, यौ०) धूल से भरा। "धूलधूसर भी करी पाता जगत में मान है"—रामच०। वैश्यों की एक जाति, दूसर, भार्गव। **धम**—, (वि०, यौ०) मोटा-ताजा। **लो०**—ऋण की फिकिर न धन की चोट, ई धम-धूसर काहे मोट"।

धूसरित—(वि०, सं०) धूल से भरा।

धूहा—(संज्ञा, पु०, दे०) धोखा। एक खेल का मध्य स्थान। (संज्ञा, पु०) [हि० + ढूह] वह पुतला जो पशु-पक्षियों को डराने के लिए बनाया जाता है।

धृक, धृग†—(अव्य, दे०) [सं० धिक्, धिग्] अनादर या अपमान-सूचक-शब्द, धिक।

धृत—(वि०, सं०) धरा या धारण किया हुआ, स्थिर किया हुआ। "धृत सायक चाप निषंग वरम्"—[रामा०]।—**राष्ट्र**–(संज्ञा, पु०, सं०) अच्छे राजा से शासित देश। दृढ़ राजा का राज्य। एक जन्मांध राजा जो दुर्योधन के पिता और युधिष्ठिर के बड़े चाचा थे। अंधा (वि०, व्यंग्य)।

धृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धारण, ठहराव। धैर्य्य। धर्म की स्त्री। एक छंद (पिं०)। "धृतिः क्षमा दया-मास्तेयः शौचमिन्द्रिय-निग्रहः"—मनु०। "धाता ने धृति पायी"—[तारकवध]।—**मान**–(संज्ञा, पु०, सं०) स्थिर चित्त, धैर्य्यावलंबी, धीर, गंभीर। [**धृतिमती** (स्त्री०)]

धृष्ट—(वि०, सं०) निर्लज्ज, ढीठ, उद्धत। नायक-विशेष। " करै ऐब निरसंक जो डरै न तिय के मान ' लाज धरै मन में नहीं, नायक धृष्ट निदान "—रस०। [**धृष्टा** (स्त्री०)]।—**केतु**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) शिशुपाल का पुत्र जो पांडवों की ओर से महाभारत में लड़ा था।—**द्युम्न**–(संज्ञा, पु०, सं०) पंजाब देश के राजा द्रुपद का पुत्र।

धृष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ढिठाई, निर्लज्जता।

धृष्णु—(वि०, सं०) प्रगल्भ, निर्लज्ज।

धृष्य—(वि०, सं०) घिसने योग्य, घर्षणीय।

धेंगामुष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मुक्कामुक्की, घुस्सा-घुस्सी, घुस्सम-घुस्सा। [(क्रि० वि०) **जबर-दस्ती**] [धींगामुस्ती (दे०)]

धेन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धेनु] गाय।

धेनु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हाल की बियायी गाय। "लात खाय पुचकारिए होय दुधारू धेनु"—वृं०।

धेनुक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य जिसे बलदेव ने मारा था। [**धेनुकासुर** (यौ०)]

धेनुमती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोमती नदी।

धेय—(वि०, सं०) धार्य्य, धारण करने के योग्य, पालन-पोषण करने योग्य। " तुम धेय गेय अजेय हो "—मैथिली०।

धेर—(संज्ञा, पु०, दे०) अनार्य्य या नीच जाति।

धेलचा, धेला†—(संज्ञा, पु०, दे०, हि०) अधेला, आधा पैसा। [**धेलहा** (स्त्री०, पु०)] अधेला (ग्रा०)।

धेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० अधेला] अठन्नी। अधेली (ग्रा०) [**धेलीरुपया** (यौ०)]

धैताल—(वि०, दे०) [अनु धै + ताल हि०] चचल, उद्धत, चपल।

धैना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धरना = धंधा] स्वभाव, प्रकृति। नटखटी। काम-धंधा। "कह गिरिधर कविराय यही फूहर के धैना "—गिरि०।

धैर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) धीरज, सब्र, कुसमय में भी मन की स्थिरता, अनातुरता, अनुद्वेग। "दर्शक-मानस-धैर्य बाँध को तोड़ गिराता"—[तारकवध]।

धैवत—(संज्ञा, पु०, सं०) एक स्वर (संगी०)।

धौंकना—(क्रि० स०, दे०, हि०) आग जलाने के लिए धौंकनी से हवा देना। (क्रि० अ०, दे०) काँपना। "सब सिद्धि कँप्यो सुरनायक धौंके—"नरो०।

धोंधा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ढुंढि=गणेश] लोंदा, भद्दा या बेडौल पिंड। **मुहा० मिट्टी का—**, मूर्ख, अनाड़ी, निकम्मा।

धोई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धोना] छिलका निकाली मूँग या उरद की दाल। *(संज्ञा, पु०) [हि० धवई] राजगीर, थवई (प्रान्ती)। (क्रि० वि०, स्त्री०, दे०) धुली हुई।

धोकड़—(वि०, दे०) मुस्टंड, हृष्टपुष्ट, हट्टा-कट्टा, बली। धनी। धाकड़ (ग्रा०)।

धोखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धूकता] छल, भुलावा, चालाकी, धूर्त्तता। भूल, भ्रान्ति। [धोखार (दे०)] बेसन का एक पकवान। ध्वाखा (ग्रा०)। [**धोखा-धड़ी** (यौ०)]।—**बाज**-(वि०) [हि० धोखा+फ़ा० बाज] धूर्त, छली, ठग, कपटी। [**धोखेबाजी** (संज्ञा, स्त्री०)]। **मुहा०—खाना**-ठगा जाना, भ्रम में पड़ना।—**देना**-छलना, भ्रम में डालना। **मुहा०—की टट्टी**-शिकारियों का पर्दा, भ्रम में डालने वाला, दिखाऊ, सारहीन।—**खड़ा करना या रचना**-धोखे या भ्रम में डालने के लिए आडंबर या झूठी नकल रचना। अज्ञानता, मूर्खता।—(**खे**) **में (से)**-भूल से, गलती से। हानि, जोखिम।—**उठाना**-भ्रम में पड़ कर हानि या कष्ट उठाना। संशय—**पड़ना**-सोच-समझ से उलटा होना। भूल-चूक। प्रमाद।—**लगना, लगाना**-कमी, त्रुटि या भूल होना, करना। खेत में दिखावटी पुतला, खट-खटा।

धोटा—(संज्ञा, वि०, दे०) [हि० ढोटा] लड़का, पुत्र। "देखत छोट खोट नृप-धोटा"—[रामा०]।

धोती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अधोवस्त्र] एक वस्त्र। "धोती फटी सी लटी दुपटी"—नरो०। **मुहा०—ढीली होना**-डर जाना, भयभीत होना। डर कर भागना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० धौती] योग की एक क्रिया, धौति-क्रिया।

धोना—(क्रि० स०, दे०) [सं० धावन] पखारना, साफ या शुद्ध करना। **मुहा० किसी वस्तु से हाथ—**, गँवा या खो देना। **हाथ धो कर पीछे पड़ना**-सब छोड़ कर लग जाना, मिटाना, नष्ट या दूर करना, हटाना। **मुहा०—धो बहाना**-न रहने देना। **धो जाना**-इज्जत बिगड़ना, प्रतिष्ठा या मर्यादा का नष्ट होना।

धोप*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खड्ग, तलवार। (क्रि० वि०, दे०) झूठ, मिथ्या। धुप्प, धूप [धुप्पल (दे०)]।

धोब—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धोना] धोये जाने का काम, धुलावट।

धोबिन—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० धोबी] धोबी की स्त्री। पानी की चिड़िया। धोबइनि (ग्रा०)।

धोबियाघाट—(संज्ञा, पु०, दे०) धोबी का घाट जहाँ वह कपड़ा साफ करता है।

धोबी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धोना] रजक, कपड़े धोने वाला। [**धोबिन** (स्त्री०)] **मुहा०—का कुत्ता (न घर का न घाट का)**-व्यर्थ इधर-उधर घूमने वाला, निकम्मा। "धोबी केसो कूकुर न घर कौ न घाट कौ"—तुल०।—**का गीत**-बेसिर-पैर की, बड़ी लम्बी बात।

धोम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धूम्र] धुआँ, धूम।

धोर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धन=किनारा] निकट, पास, किनारा। (क्रि० वि०, दे०) निकट, पास। [धोरे (दे०)]

धोरण—(संज्ञा, पु०, सं०) सवारी, यान, वाहन। घोड़े की चाल।

धोरणि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परम्परा, अविच्छिन्न क्रिया।

धोरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धौरेय] बोझ, भार या धुरा को उठाने या धारण करने वाला। (वि०) प्रधान, मुखिया, श्रेष्ठ पुरुष, सरदार, अगुआ (ग्रा०)।

धोवती—(संज्ञा, स्त्री०, पु०) [सं० अधोवस्त्र] धोती। (क्रि० अ०, दे०) [हि० धोना]। "टटकी धोई धोवती, चटकीली मुख जोति"—बिहारी।

धोवन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धोना] धोने का भाव, धोने की क्रिया। किसी पदार्थ के धोने से बचा पानी, ध्वावन, धोउना (ग्रा०)।

धोवना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० धोना] धोना, पखारना, साफ करना।

धोवा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धोना] धोवन। पानी। अर्क।

धोवाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० धोना का प्रेरणा० रूप] धुलाना, धुलवाना। (क्रि० अ०, दे०) धुलना, धोया जाना।

धौं*†—(अव्य०) [हि० दैव, दहुं] न जाने, ज्ञात या मालूम नहीं, राम जाने, अथवा, या तो, भला, जोकि, विधि वाक्यों में जोर देन वाला शब्द। "अति कथा रुचिर प्रताप पावक प्रबल सुरपुर को चलो"—[रामा०]। [**किधौं, कैधौं** (ब्र०, यौ०)]

धौंक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धौंकना] धौंकनी की आग मे लगने वाली वायु का झोंका। लू, ताप, गरमी की लपट।

धौंकना—(क्रि० स०, दे०) [सं० धम=धौंकना] आग को प्रज्वलित करने के लिए धौंकनी को दबा कर वायु का झोंका पहुचाना। भार डालना।

धौंकनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धौंकना] भाथी, (खाल आदि की) जिससे वायु देकर आग जलाई जाती है।

धौंका†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धौंकना] लू, लपट, उष्ण वायु।

धौंकिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धौंकना] धौंकने या भाथी चलाने वाला। टूटे-फूटे बरतनो की मरम्मत करने वाला।

धौंकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धौंकनी] धौंकनी, भाथी।

धौंकैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धौंकना] धौंकने वाला।

धौंज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धौंजना] दौड़-धूप, घबराहट, चित्त को उद्विग्नता।

धौंजन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धौंजना] दौड़धूप, घबराहट, चित्त की उद्विग्नता।

धौंजना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० ध्वंजन] दौड़ना-धूपना, कोशिश करना। (क्रि० स०, दे०) पैरों से रौंदना।

धौंताल—(वि०, दे०) [हि० धुन+ताल] जिसे किसी बात को धुन लग जाय। चुस्त, फुर्तीला, साहसी, दृढ़, हट्टा-कट्टा, हेकड़ (प्रान्ती०)। चतुर। धनी। दुर्जन।

धौंताली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धौंताल] धनबल। दुर्जनता। सूमपना।

धौंस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दंश] घुड़की, धमकी, डॉट-डपट, धाक, अधिकार, आतंक, झाँसा-पट्टी, धोखा, भुलावा, छल।—**पट्टी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धौंस+पट्टी] झाँसा-पट्टी, दमदिलासा, भुलावा।

धौंसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ध्वंसन] दबाना, दमन करना, घुड़की या धमकी देना, डराना, मारना-पीटना।

धौंसा—(संज्ञा, पु०) नगाड़ा, डंका। सामर्थ्य। "प्रगट युद्ध के धौंसा बाजे"—छत्र०।

धौंसिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धौंसना] धौंस से कार्य सिद्ध करने वाला, झाँसा-पट्टी देने वाला। नगाड़ा बजाने वाला।

धौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धव] एक जंगली पेड़। स्वामी, पति, मालिक, जैसे—सधवा।

धौत—(वि०, सं०) धोया हुआ, साफ, स्नान-युक्त। (संज्ञा, पु०, दे०) रूपा, चाँदी। [(विलो०) **कलधौत**-सोना]।

धौति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शुद्ध, साफ। शरीर-शुद्धि की योग-क्रिया, आँतें साफ करने को विधि, [धौती (दे०)]।

धौमक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक देश।

धौम्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पांडवों के पुरोहित। एक तारा।

धौम्र—(वि०, सं०) धुएँ के रंग वाला।

धौर—(संज्ञा, पु०, दे०) जंगली कबूतर।

धौरहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धौराहर] धरहरा, मीनार, बुर्ज, धौरहरा।

धौरा—(वि०, दे०) [सं० धवल] उज्ज्वल, श्वेत। धौ का वृक्ष, एक पंडुक। [**धौरी** (स्त्री०)]

धौराहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धुर=ऊपर+घर] ऊंची अटारी। धरहरा, बुर्ज, मीनार।

धौरितक—(संज्ञा, पु०, सं०) घोड़े की चाल।

धौरिया*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० धौरेय] बैल।

धौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धौरा] कपिला या सफेद रंग की गाय। "धौरी के ढिग हरिणी आयो"—[तारकवध]। एक पक्षी।

धौरे—(क्रि० वि०, दे०) [हि० धोरे] समीप, पास।

धौरेय—(वि०, सं०) जो बोझ या धुरा संभालने योग्य हो। (संज्ञा, पु०) बैल जो गाड़ी खींचने वाला होता है। घोड़ा।

धौल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) थप्पड़, धप्पा। हानि, घटी। * (वि०) [सं० धवल] उजला,

श्वेत ।—**धक्कड़, धप्पड़**–(संज्ञा, पु०, दे०) धक्का-मुक्का, मार-पीट, उपद्रव, उत्पात ।—**धूर्त्त**–गहरा धूर्त । [**धौलता** (संज्ञा, स्त्री० दे०)] । **मुहा०—जड़ना**–(क्रि० स०, हि०) मुक्का मारना, पीटना ।—**मारना (देना, लगाना)**–(क्रि० स०, हि०) थप्पड़ मारना ।—**लगना**–(क्रि० स०, दे०, यौ०) हानि या घटी सहना या उठाना । मनोरथ-भंग या हताश होना ।—**धक्का, धप्पा**–(संज्ञा, पु०) मार-पीट, आघात, चपेट ।

धौलहर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० धौराहर] मीनार, बुर्ज ।

धौला—(वि०, दे०) [सं० धवल] श्वेत, उजला, सफेद । [**धौली** (स्त्री०)] ।—**गिरि**–(संज्ञा, पु०, दे०, हि०) धवलगिरि, हिमालय की एक चोटी ।

धौलाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० धौल+आई प्रत्य०] उज्ज्वलता, सफेदी ।

ध्यात—(वि०, सं०) चिंतित, विचारित, ध्यान किया हुआ ।

ध्यातव्य—(वि०, सं०) ध्यान करने या देने योग्य, अति उपयोगी या प्रिय ।

ध्याता—(वि०) [सं० ध्यातृ] ध्यान या विचार करने वाला । [**ध्यात्री** (स्त्री०)]

ध्यान—(संज्ञा, पु०, सं०) सोच-विचार, चिंता । अनुसन्धान, ज्ञान, लौ, मानसिक एकाग्रता । योग का एक अंग । "कास कास देखे होत जारत अकास बैठि तारापति तारापति ध्यान न धरत हैं" । चेत, ख्याल ।—**योग**–(संज्ञा, पु०, सं०) वह योग जिसमें सब कामों में केवल ध्यान ही प्रधान या मुख्य अंग माना जाय, समाधि-योग ।—**योग्य**–(संज्ञा, पु०, सं०) विचारने के योग्य । ध्येय । समझ, बुद्धि, ज्ञान, धारणा, स्मरण । **मुहा०—में डूबना, लीन या मग्न होना**–सब भुला कर एक ही बात में मन लगा देना ।—**करना**–मन में लाना, विचारना, स्मरण करना, भजना । (**किसी के**)—**में लगना**–किसी का ख्याल या विचार मन मे ला कर मग्न होना । मनन, चिंतन, भावना, विचार । —**आना**–विचार प्रगट होना, स्मरण आना । —**जमना**–विचार ठहर जाना, मन या चित्त का एकाग्र होना ।—**बँधना**–सदा विचार बना रहना, मन लगना ।—**रखना**–विचार या स्मरण बनाये रखना, न भूलना ।—**में न आना**–अनुमान या कल्पना में भी न आ सकना ।—**लगना, लगाना**–बराबर लगातार ख्याल या विचार बना रहना, रखना ।—**में न लाना**–चिंता, परवाह या विचार न करना ।—**जाना**–मन का किसी ओर आकृष्ट हो जाना ।—**दिलाना**–चेताना, सुझाना, जताना । ख्याल या स्मरण दिलाना ।—**देना**–सोचना, विचारना, गौर करना, मन लगाना ।—**पर चढ़ना (धँसना, बसना, पैठना, बैठना)**–मन मे बस जाना, दिल मे घर कर लेना, जी से न टलना । याद या स्मरण होना या आना ।—**बँटना**–चित्त का एकाग्र या स्थिर न रहना, विचार का इधर-उधर होना ।—**बाँधना**–किसी ओर चित्त को एकाग्र या स्थिर करना ।—**में आना**–अनुमान कर सकना, समझना ।—**कराना**–याद या स्मरण कराना ।—**से उतरना**–भूल जाना ।—**छूटना (टूटना, उखड़ना, उचटना)**–चित्त या मन का इधर-उधर हो जाना, या हट जाना ।—**धरना**–परमेश्वर को याद मे चित्त एकाग्र करना ।

ध्यानना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० ध्यान] ध्यान या विचार करना ।

ध्याना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० ध्यान] स्मरण या सुमिरन करना ।

ध्यानाभ्यास—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० ध्यान+अभ्यास] ध्यान या एकाग्र होने का अभ्यास, समाधि ।

ध्यानावस्थित—(वि०, सं०, यौ०) [सं० ध्यान+अवस्थित] ध्यानमग्न, ध्यान में दत्तचित्त ।

ध्यानी—(वि०, दे०) [सं० ध्यानिन्] स्मरण करने वाला । समाधि लगाने वाला, सुधि मे मग्न होने वाला, ध्यान-युक्त ।

ध्यानीय—(वि०, सं०) स्मरणीय, ध्यान करने के योग्य ।

ध्यापक—(संज्ञा, पु०, सं०) चिंतक, विचारक, ध्यान करने वाला, ध्याता ।

ध्यावना—(क्रि० स०, दे०) ध्यान करना या लगाना । भजन करना । "इन्द्र रहे ध्यावत मनावत मुनिन्द्र रहे"—रत्ना० ।

ध्येय—(वि०, सं०) ध्यान या स्मरण करने के योग्य, जिसका ध्यान किया जावे । उद्देश्य । "मै ध्यानी तू ध्येय है, तू स्वामी मै दास"—मन्ना० ।

ध्रुपद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ध्रुवपद] एक प्रकार का गीत या गाना, [धुरपद (दे०)] ।

ध्रुव—(वि०, सं०) अचल, स्थिर, नित्य, निश्चित, पक्का, ठीक, दृढ़ । (संज्ञा, पु०) आकाश । कील ।

पहाड़ । खंभा । बरगद । ध्रुपद । विष्णु । ध्रुव-तारा । राजा उत्तानपाद के भगवद्भक्त पुत्र ।—**तारा**—(संज्ञा, पु०) [सं० ध्रुव+तारक] वह तारा जो पृथ्वी को अक्ष के सिरे की सीध में उत्तर की ओर दिखलाई पड़ता है ।—**दर्शक**-(संज्ञा, पु०, सं०) कुतुबनुमा, कंपास, दिग्दर्शक यंत्र ।—**दर्शन**—(संज्ञा, पु०, सं०) विवाह की एक रीति जिसमें वर-कन्या को ध्रुव दिखलाया जाता है ।—**लोक**-(संज्ञा, पु०, सं०) ध्रुव का स्थान ।

ध्रुवक—(संज्ञा, पु०, सं०) पद की पहली पंक्ति जिसे अनेक बार टेक के लिए दुहराया जाता है ।

ध्रुवता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अटलता, दृढ़ता, स्थिरता, निश्चय ।

ध्वंस—(संज्ञा, पु०, सं०) नाश, विनाश ।

ध्वंसक—(वि०, सं०) नाश या नष्ट करने वाला ।

ध्वंसन—(संज्ञा, पु०, सं०) नाश करने का कार्य्य । नाश होने का भाव, विनाश, क्षय । [**ध्वंसित**, **ध्वंसनीय**, **ध्वस्त** (वि०)]

ध्वंसावशेष—(संज्ञा, पु०, सं०) खंडहर ।

ध्वसित—(वि०, सं०) नष्ट किया हुआ, हटाया हुआ ।

ध्वंसी—(वि०) [सं० ध्वासन्] विनाशक, नष्ट-भ्रष्ट या नाश करने वाला । [**ध्वंसिनी** (स्त्री०)] ।

ध्वज—(संज्ञा, पु०, सं०) पताका, झंडा, निशान ।—**भंग**-(संज्ञा, पु०, सं०) नपुंसकता का एक भेद ।

ध्वजवान्—(वि०, सं०) जिसका कोई विशेष चिह्न हो, ध्वजवाला, प्रतीक से युक्त । (संज्ञा, पु०) ध्वजवाहक ।

ध्वजा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ध्वज] झंडा, पताका, निशान । एक छंद (पिं०) ।

ध्वजारोपण—(संज्ञा, पु०, सं०) झंडा लगाना, झंडा गाड़ना ।

ध्वजिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सेना, फौज ।

ध्वजी—(वि०) [सं० ध्वजिन्] पताका या झंडा वाला, निशान या झंडेदार । [**ध्वजिनी** (स्त्री०)] ।

ध्वनि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शब्द, धुनि (दे०), नाद । काव्य का एक अलंकार । आशय, मतलब, गूढ़ाशय । "ध्वनि अवरेव कवित बहु जाती"—[रामा०] । "ध्वनिपयी करके गिरि कंदरा"—हरिऔध ।

ध्वनित—(वि०, सं०) शब्दित, व्यंजित, वादित । गूढ़ाशय का होना ।

ध्वन्य—(वि०, पु०, सं०) व्यंग्य ।

ध्वन्यात्मक—(वि०, सं०, यौ०) ध्वनिमय, ध्वनि-स्वरूप, व्यग्य-प्रधान (काव्य०) ।

ध्वन्यार्थ—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० ध्वन्यार्थ] ध्वनि या व्यजना से प्रगट अर्थ ।

ध्वस्त—(वि०, सं०) गिरा-पड़ा, च्युत, टूटा-फूटा, भग्न, नष्ट-भ्रष्ट । पराजित ।

ध्वांत—(संज्ञा, पु०, सं०) अँधेरा, अंधकार । "ध्वान्तापहं तापहम्"—[रामा०] ।—**चर**—(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस, निशाचर ।

न

न—हिन्दी-संस्कृत की वर्णमाला के तवर्ग का पाँचवाँ अक्षर या वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान दाँत और नासिका है ।

न*—(संज्ञा, पु०, सं०) उपमा । सोना । रत्न । बुद्ध । बध । (अव्य०, दे०) नहीं, मत, निषेध-वाचक शब्द ।

नंग—(संज्ञा, पु०) [हिं० नंगा] अवैधपति, उप-पति, जार । नंगापन, नग्नता छिपा या गुप्त अग ।—**धड़ंग**-(वि०, दे०) [हिं० नंगा+धड़ंग=धड़+अंग] वस्त्ररहित, दिगंबर, निरा या बिलकुल नंगा । [**नंगाधड़ंगा** (दे०)]—**मुनंगा**-(वि०) [हिं० नगा+नगा] नंगधड़ंग, विवस्त्र, निरा नगा । **लो०**—"नगमुनंग चबाल सों"—"खूब पटती है जो मिल जाते हैं दीवाने दो" ।

नंगा—(वि०, दे०) [सं० नग्न] वस्त्रहीन, दिगंबर । **अलिफ—या मादरजाद**—, बिलकुल नगा, नंग-धड़ंग । निर्लज्ज, पाजी, लुच्चा । खुला । [**नंगई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)] ।—**झोली (झोरी)**-(संज्ञा, दे०) [हिं० नगा+झोरना] कपड़ों की नोंच या तलाशी ।—**नाच**-निर्लज्जता का काम ।—**बुच्चा**, **बूचा**-(वि०, दे०) [हिं० नगा+बूचा=खाली] महा दरिद्र कंगाल, या जिसके पास कुछ भी न हो, निपटनंगा ।—**लुच्चा**-(वि०, दे०) [हिं० नंगा+लुचा] दुष्ट पुरुष, बदमाश, नीच प्रकृति का ।—**सिर**-(वि०, हिं०) सिर खोले, विवस्त्र सिर । **मुहा०**—**(से) नाचना**-निर्लज्जता का काम करना ।

नंगियाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० नगा+इयाना प्रत्य०) नंगा करना, सब छीन लेना, शरीर पर

वस्त्रादि कुछ भी न रहने देना, धोती या पैजामा छीन लेना, लँगोट या लंगोटी उतरा लेना। निर्लज्जता, नीचता या असभ्यता करना।

नंगी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० नंगा] विवस्त्रा स्त्री या दिगंबरा स्त्री, वस्त्र-हीना। निर्लज्जा, दुष्टा।

नंद—(संज्ञा, पु०, सं०) हर्ष, प्रसन्नता, आनंद। परमेश्वर। एक निधि, पुत्र। लड़का। श्रीकृष्ण के पालक एक गोप। बुद्ध के सौतेले भाई। मगध का एक राजवंश (इति०)। ६ की संख्या।—**किशोर**-(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण जी। "बिना भक्ति रीझै नहीं तुलसी नंदकिशोर"।—**कुमार**-(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण। एक बंगाली ब्राह्मण, जो लार्ड क्लाइव के मुंशी थे, जिन्हें लार्ड वारिन हेस्टिंग्ज ने फाँसी दिला दी थी (इति०)।—**गाँव**-(संज्ञा, पु०) [सं० नदग्राम] वृन्दावन के पास एक गाँव है जहाँ नंद जी रहते थे।—**ग्राम**-(संज्ञा, पु०, सं०) नंदगाँव। नंदिग्राम जो अयोध्या के पास है, जहाँ भरत जी ने तप किया था।—**नंदन**-(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण।—**नंदिनी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) योग-माया, देवी।—**रानी**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० नंद+हिं० रानी] नंद की पत्नी, यशोदा।—**लाल**-(संज्ञा, पु०) [सं० नंद+हिं० लाल=पुत्र] नंद के पुत्र श्रीकृष्ण जी।

नंदक—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण जी की तलवार। "अत्यर्थमुद्वेजयिता परेषां नाम्नापि तस्यैव स नंदकोऽभूत्"—माघ०। (वि०) आनंददायक। कुल या वंश का पालक। संतोषप्रद।

नंदकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विष्णु भगवान।

नंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र की पुष्प-वाटिका। देवोपवन। एक विष। शिव। विष्णु। लड़का, पुत्र। एक हथियार। बादल। एक छंद (पिं०)। (वि०) प्रसन्न या हर्षित करने वाला, आनंददायक। "पुरीमवस्कन्द लुनीहि नंदन"—माघ०।—**वन**-(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र की पुष्प-वाटिका।

नंदना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नंद] प्रसन्न होना। (क्रि० स०, दे०) प्रसन्न करना। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० नदबेटा] बेटी, पुत्री, कन्या। "भीमनरेन्द्र नंदना"—[नैष०]।

नंदनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नंदिनी] कन्या, लड़की, पुत्री।

नँदवा—(संज्ञा, पु०, दे०) मिट्टी का एक पात्र।

नंदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, गौरी, देवी। एक तरह की कामधेनु। बालग्रह। संपत्ति। ननँद। प्रसन्नता। (वि०, सं०) आनंद देने वाली। शुभदा।—**पुराण**-(संज्ञा, पु०) एक पुराण का भाग विशेष जिसमें नंदा की महिमा का वर्णन है।

नंदि—(संज्ञा, पु०, सं०) आनन्द। आनन्दमय परमेश्वर। शिव का बैल नंदी, [नाँदिया (दे०)]। [नंदीश्वर (यौ०)]।—**ग्राम**-(संज्ञा, पु०) वह गाँव जिसमे राम के वनवास-काल तक भरत ने निवास किया था।

नंदिक—(संज्ञा, पु०, सं०) तुनु-वृक्ष। आनंद। नंदनकानन।

नंदिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मिट्टी का जल-पात्र। नंदनकानन। किसी एक पक्ष की परिवा, षष्ठी तथा एकादशी तिथि।

नंदिकेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) शिव का बैल नंदी। एक पुराण।

नंदघोष—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अर्जुन का रथ। वंदिजनों की घोषणा।

नंदित—(वि०, सं०) सुखी, प्रसन्न, आनंदित। * (वि०) [हिं० नादना] बजता हुआ।

नंदिन*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० नंद+बेटा] बेटी।

नंदिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लड़की, बेटी। रेणुक नामक औषधि। उमा। गंगा। ननँद। दुर्गा। एक छंद (पिं०) कलहंस। सिंहनाद। वशिष्ठ की कामधेनु। पत्नी। "वसिष्ठ-धेनुश्च यदृच्छयागता, श्रुतप्रभावाददृशेऽयनंदिनी"—[रघु०]।

नंदिवर्द्धन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिव। पुत्र, लड़का, बेटा। मित्र। प्राचीन विमान। (वि०, सं०) आनन्द बढ़ाने वाला।

नंदी—(संज्ञा, पु०) [सं० नदिन्] धव। बरगद। शिव-गण। बैल, साँड़। विष्णु। (वि०, सं०) आनंदयुक्त, प्रसन्न।—**गण**-(संज्ञा, पु०) [हिं० नंदी+गण] शिव के द्वारपाल। शिव का बैल, साँड़।—**मुख**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० नांदी+मुख] जात-कर्म, श्राद्ध-विशेष।

नंदीश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिव का एक गण।

नंदेऊ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० नंदोई] नंदोई, स्वामी का बहनोई, ननँद का पति।

नंदोई—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० नंद+ओई प्रत्य०] स्वामी का बहनोई, ननँद का स्वामी।

नंबर—(वि०, अ०) संख्या, गिनती । (संज्ञा, पु०, अ०) गिनती, गणना, अंक । ३६ इंच का गज । —**दार**–(संज्ञा, पु०) [अ० नंबर + दार फ़ा०) गाँव के पट्टीदारों का मुखिया, जमीदार, [लंबरदार (दे०)] । [**नंबरदारिन** (स्त्री०)] [**नंबरदारी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**वार**–(क्रि०, वि०) [अ० नम्बर + फ़ा० वार] क्रमशः, सिलसिलेवार ।

नंबरी—(वि०, दे०) [अ० नंबर + ई प्रत्य०] जिस वस्तु पर नंबर लगा हो । विख्यात, प्रसिद्ध । (दे० व्यंग्य) सब से बड़ा दुष्ट ।—**गज**–(संज्ञा, पु०, हि०) छत्तीस इंच का गज जो वस्त्र नापने में काम आता है ।—**सेर**–(संज्ञा, पु०, हि०) अस्सी रुपये भर का लोहे का सेर ।

नंस*—(वि०, दे०) [सं० नाश] नाश को प्राप्त, नष्ट ।

नई, नयी*—(वि०, स्त्री०) [सं० नव] नया का स्त्रीलिंग रूप । *† (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नदी] नदी, दरिया ।

नउँजी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लीची] लीची फल ।

नउ*†—(वि०, दे०) [सं० नव] नव, नया नूतन, नवीन । (वि०) [हि० नौ, सं० नव] एक कम दस, नव, नौ (९) ।

नउआ, नउवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नापित] नौवा, नाई, नाऊ । [**नउनी, नउनिया** (स्त्री०)]

नउका*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नौका] नौका, नाव ।

नउत, नौत*†— (वि०, दे०) [हि० नवना] नीचे की ओर झुका हुआ, नवत (सं०) ।

नउल†—(वि०, दे०) [सं० नवल] नया, नवीन ।

नओढ़*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नवोढ़ा] युवा या नवीन नायिका ।

नक—(संज्ञा, स्त्री०) नाक शब्द का लघुरूप ।—**कटा**–(हि०, दे०, यौ०) [हि० नाक + काटना] कटी नाक वाला । (वि०) जिसकी बदनामी या दुर्दशा हुई हो, निर्लज्ज । [**नककटी** (स्त्री०)]—**घिसनी**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० नाक + घिसना] अत्यन्त दीनता, दुर्दशा, परेशानी । पृथ्वी पर अपनी नाक रगड़ने का कार्य ।—**चढ़ा**–(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नाक + चढ़ाना] क्रोधी, चिड़चिड़ा । [**नकचढ़ी** (स्त्री०)]—**छिकनी**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० छिक्कनी] एक घास जिसके फूल सूँघने से छींकें आने लगती हैं ।—**तोड़ा**–(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नाक + तोड़ = गति] घमंड से नाक-भौं चढ़ाकर नखरे करना या कोई बात कहना ।—**फूल**–(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नाक + फूल] नाक में पहनने का एक गहना, कील या लौंग ।—**बानी**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नाक + बानी] नाकों दम, हैरानी, परेशानी । नाक से बोलना, नाक का शब्द ।—**बेसर**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हि० नाक + बेसर) नथ नामक नाक का गहना, बेसर ।—**मोती**–(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नाक + मोती] लटकन, नाक मे पहिनने का मोती, बुलाक ।

नकटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नाक + कटना] जिसकी नाक कट गई हो । स्त्रियों का ब्याह के समय का एक गीत । (वि०) जिसकी नाककटी हो, निर्लज्ज । [**नकटी** (स्त्री०)] ।

नकड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) नाक का एक रोग, लकड़ा । [**नकड़ी, नकरी, लकड़ी** (स्त्री०)]

नक़द—(संज्ञा, पु०, अ०) रुपया, पैसा । लो० नौ नगद न तेरह उधार । (वि०) वह तैयार धन जो तत्काल काम दे सके, खास, [नगद (दे०)] । "क्या खूब सौदा नकद है इस हाथ दे उस हाथ ले" । [(विलो०) **उधार**]

नक़दी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० नकद] नकद, नगद, नगदी । [**नकदा नकदी** (यौ०)]

नकनकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० नाक] नाक से बोलना, नकनाना (ग्रा०) । [**नकना, नकनाहा** (वि०)]

नकना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० नाकना] लाँघना, फाँदना, लंघन करना । (क्रि० अ०, दे०) [हि० नकियाना] नाकों दम होना, परेशान या हैरान होना । (क्रि० स०, दे०) नाकों दम करना । नाक से बोलना ।

नकन्याना—(क्रि० अ०, दे०) नाकों दम होना, हैरान होना । " अब तौ हम नकन्याय गयेन "—प्रता० ।

नकब—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सेंध, दीवाल मे चोरों का बनाया छेद ।

नकल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अनुकरण । [नकल (दे०)] अनुकृति, एक लेख के अनुसार दूसरा लेख, प्रतिलिपि, पूर्ण रूप से अनुकरण । स्वाँग, अनोखा और हँसी के योग्य रूप-निर्माण । हँसी का छोटा-मोटा किस्सा, चुटकुला । [**नकलची, नकली** (वि०)] ।—**नवीस**–(संज्ञा, पु०, यौ०)

[अ० नकल+फ़ा० नवीस] दूसरे के लेखों की प्रतिलिपि करने वाला, मुंशी। [**नकलनवीसी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**ची**-(संज्ञा, पु०, दे०) बहुरूपिया, नकल करने वाला। [**नक्काल** (वि०)]

नकली—(वि०, अ०) जो नकल करके बनाया गया हो, बनावटी, झूठा, कृत्रिम, खोटा।

नकश—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० नक्श] नक्शा, चित्र। ताश का एक खेल।

नकशा—(संज्ञा, पु०) [अ० नक्श] जो बनाया या लिखा गया हो, नक्श किया या खोदा गया हो, चित्र। [**नकशाकशी** (यौ०)]

नकसीर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० नाक +सं० सीर=पानी] नाक से बिना चोट लगे रक्त या खून बहना। **मुहा०—फूटना**-एक नाक से गर्मी के कारण रक्त बहना।—**भी न फूटना**-थोड़ी भी हानि या कष्ट न होना।

नकाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० नकियाना] हैरान होना, नाकों दम आना या होना। (क्रि० स०, दे०) [हि० नकियाना] नाकों दम करना, बहुत हैरान करना। नाक से बोलना।

नकाब—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, अ०) परदा, घूँघट। मुख छिपाने का वस्त्र।—**पोश**-(वि०) मुख पर पर्दा डाले हुए।

नकार—(संज्ञा, पु०, सं०) न, एक अक्षर या वर्ण। न, ना, नहीं, इनकार, अस्वीकार।

नकारना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० नकार+ना प्रत्य०] न मानना, अस्वीकार या इनकार करना, नाही करना।

नकारा†—(वि०, दे०) [फ़ा० नाकार:] व्यर्थ, बेकाम, निकम्मा, खराब। [**नकारी** (स्त्री०)]

नकाशना, नकासना†—(क्रि० स०, दे०) [अ० नक्काशी] पत्थर, लकड़ी या धातु आदि पर खोद-खोद कर बेल-बूटे या फूल पत्ती आदि बनाना।

नकाशी, नकासी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० नक्काशी] किसी चीज पर बेल-बूटे आदि खोद कर बनाना, नक्काशी।

नकियाना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० नाक+ आना प्रत्य०] नाकों दम होना। बहुत ही हैरान या दुखी होना। नाक से बोलना।

नकीब—(संज्ञा, पु०, अ०) भाट, चारण, बंदीजन, कड़खैत।

नकुआ—(संज्ञा, पु०) [हि० नाक] नाक, नकुवा (ग्रा०)। **मुहा०—(अन) जीव (दम) आना, करना**-बहुत हैरान हो ऊब उठना। हैरान कर उबाना।

नकुल—(संज्ञा, पु०, सं०) नेवला जंतु। सहदेव का बड़ा भाई, पांडु-पुत्र। [**नकुली** (स्त्री०)]

नकेल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नाक+एल प्रत्य०] मुहरा, ऊँट के नाक की रस्सी। **मुहा० किसी की—हाथ में होना**-किसी पर सब तरह का अधिकार होना।—**न मानना**-आज्ञा या शासन न मानना, मनमानी उद्दंडता करना।

नक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नाक] नाका, सुई का वह छेद जिसमें डोरा रहता है।

नक्कारखाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नौबतखाना, वह स्थान या ठौर जहाँ नगाड़ा बजता हो। **मुहा०—में तूती की आवाज (कौन सुनता है)**-बड़ों के सम्मुख छोटों की बात कौन मानता है।

नक्कारची—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नगाड़ों का बजाने वाला।

नक्कारा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नगाड़ा, डंका।

नक्काल—(संज्ञा, पु०, अ०) नकल या अनुकरण करने वाला, भाँड़।

नक्काली—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) नक्काल या नकल का काम।

नक्काश—(संज्ञा, पु०, अ०) नक्काशी करने वाला।

नक्काशी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पत्थर, काष्ठ और धातु आदि पर खोद-खोद कर बेल-बूटे आदि बनाने का कार्य या विद्या, खोद कर किसी पदार्थ पर बनाये गये बेल-बूटे। [**नक्काशीदार** (वि०)]

नक्की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नाक] नाक-स्वर से सानुनासिक बोलना। निश्चित, स्थिर, दृढ़। नाक (ग्रा०)।—**मूठ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) एक प्रकार का जुए का खेल।

नक्कू—(वि०, दे०) [हि० नाक] बड़ी नाक वाला। अपने को माननीय या प्रतिष्ठित जानने वाला। सब से भिन्न और उलटे कार्य करने वाला। आत्माभिमानी। बदनाम, अपयशी।

नक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) संध्या का समय, रात्रि। एक वृत्त (पिं०)। शिव। "नक्त भीरुर्यं त्वमेव तदिमम् राधे गृहं प्रापय"—[गीत०]।

नक्र—(संज्ञा, पु०, सं०) नाक या नाका नामक पानी का जंतु। मगर, घड़ियाल। नाक, नासिका। मकर राशि (ज्यो०)।

नक्क़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० नकल] अनुकरण, नकल, अभिनय।

नक्श—(वि०, अ०) जो चित्रित या अंकित किया गया हो, लिखा या बनाया हुआ। **मुहा० (मन में)—करना या कराना**–अपने या दूसरे के मन में कोई बात भली-भाँति बैठाना।—**होना**–प्रगट होना। (संज्ञा, पु०, अ०) चित्र, तसवीर, किसी वस्तु पर खोद या लिख कर बनाये गये बेल-बूटे। मोहर, छाप।—**बैठाना**–अधिकार या हक जमाना या स्थिर करना। तावीज। टोना-टोटका, जादू।

नक्शा—(संज्ञा, पु०, अ०) चित्र, प्रतिमूर्ति, तसवीर। शकल, ढाँचा, आकृति, स्वरूप। तर्ज, दशा। ठप्पा। देशों के चित्र।—**नवीस**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [अ० नक्शा + नवीस फ़ा०) नक्शा बनाने या खीचने वाला। [**नक्शानवीसी** (संज्ञा, स्त्री०)]

नक्शी—(वि०) [अ० नक्श + ई प्रत्य०] नक्काशीदार, बेल-बूटेदार वस्तु।

नक्षत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) २७ तारे, जो चंद्र-मार्ग में स्थित है, मघा, पुष्य, पुनर्वसु श्लेषादि, नछत्तर। [**नक्षत्र-मंडल** (यौ०)]।—**नाथ**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) चन्द्रमा, नक्षत्रेश, नक्षत्रपति।—**पथ**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नक्षत्रों के चलने का मार्ग।—**राज**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) चन्द्रमा।—**लोक**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जिस लोक में नक्षत्र हैं।—**वृष्टि**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) उल्कापात, तारा टूटना।

नक्षत्रामृत—(संज्ञा, पु०) [सं० नक्षत्र + अमृत] किसी दिन-विशेष मे पड़ने वाले नक्षत्रों का योग।

नक्षत्री—(संज्ञा, पु०) [सं० नक्षत्रिन्] चन्द्रमा। (वि०) [सं० नक्षत्र + ई प्रत्य०] भाग्यवान्, भाग्यशाली, नक्षत्रधारी।

नख—(संज्ञा, पु०, सं०) नाखून, नह (ग्रा०)। एक औषधि। टुकड़ा, भाग, खंड। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फा० नख] पलंग की डोरी।—**क्षत**–(संज्ञा, पु०, दे०) शरीर का वह चिह्न या दाग जो नाखून गड़ जाने से बना हो, नखछोलिया*। [नखच्छत-दे०]।—**रेखा**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) नख-क्षत, नाखून का घाव, नखों पर की रेखा।—**बिन्दु**–(संज्ञा, पु०, सं०)-मेंहदी या महावर का स्त्रियों के नाखूनों पर बना चिह्न।—**शिख**–(संज्ञा, पु०, सं०) [हिं० नखसिख] नाखून से लेकर चोटी तक के सारे अंग।—०**वर्णन**–(यौ०) सर्वांग वर्णन। (क्रि० वि०) सिर से पैर तक। "हँसत देखि नख-सिख रिसब्यापी"—[रामा०]।

नखत*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नक्षत्र] २७ तारे, जो चन्द्र-मार्ग में है। [नखतर (दे०)] "वेद, नखत, ग्रह जोरि अरध करि"—सूर।—**राज**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० नक्षत्रराज] चन्द्रमा [नखतराय (दे०)]।

नखतेस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नक्षत्रेश] चन्द्रमा। "लसत सरस सिंधुर बदन, भालथली नखतेस" —रतन०।

नखना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० नाखना] फाँदा या लाँघा जाना, उल्लंघित होना।

नखरा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नाज, चोंचला, चुलबुलापन, चंचलता, दुलार।—**तिल्ला**–(संज्ञा, पु०) [फा० नखरा + तिल्ला हिं० अनु०] नाज, नखरा, चोचला, चंचलता।—**(रे) बाज**–(वि०, फ़ा०) अति नखरा या नाज करने वाला। [**नखरेबाजी** (संज्ञा, स्त्री०)]

नखरौट—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० नखरेखा] नखक्षत।

नखांक—(संज्ञा, पु०, दे०, सं० यौ०) नाखून गड़ जाने का दाग या चिह्न। नख नाम का गंधद्रव्य।

नखायुध—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) बाघ, व्याघ्र, शेर, चीता। नृसिंह।

नखास—(संज्ञा, पु०) [अ० नख़्ख़ास] पशुओं या घोड़ों का बाजार।

नखियाना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० नख + इयाना प्रत्य०) किसी के शरीर में नाखून गड़ाना।

नखी—(संज्ञा, पु०) [सं० नखिन्] व्याघ्र, शेर, चीता। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) नख नामक गंधद्रव्य।

नखोटना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० नख + ओटना प्रत्य०] नाखून से नोचना या खरोचना। खरोटना, [निकोटना (दे०)]

नग—(संज्ञा, पु०, सं०) पहाड़। पेड़। सात की संख्या। साँप। सूर्य। (संज्ञा, पु०) [फा० नगीना, सं० नग] नगीना। संख्या।—**ज**–(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी। (वि०, सं०) जो पहाड़ से उत्पन्न हो।—**जा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती जी। "नगजा नगजा दयिता दयिता"—भट्टी०।—**दंती**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विभीषण की पत्नी।—**धर**

-(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्णचन्द्र ।—**धरन***-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नगधर] श्रीकृष्ण, गिरिधर, गिरिधारी, नगधारी ।—**नंदिनी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती ।—**पति**-(संज्ञा, पु०, सं०) हिमालय या सुमेरु पहाड़ । शिव । चन्द्रमा ।—**रंधकर**-(संज्ञा, पु०) कार्त्तिकेय, षडानन ।—**वाहन**-(संज्ञा, पु०) महादेव ।

नगचाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) समीपता, निकटता । अवाई, समीपागमन ।

नगचाना—(क्रि० अ०, दे०) निकट या समीप आना, निगचाना (ग्रा०) ।

नगचाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सामीप्य, निकटता, पास पहुँचना ।

नगण—(संज्ञा, पु०, सं०) तीन लघुवर्णों का एक शुभ गण-।।। (पिं०) ।

नगणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्योतिष्मती । ज्योतिपूर्ण ।

नगण्य—(वि०, सं०) तुच्छ, गया-बीता ।

नगद—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० नक़द] रुपया-पैसा, नकद ।

नगदौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नागदमन] नागदमन, एक औषधि या जड़ी ।

नगन*†—(वि०, दे०) [सं० नग्न] नंगा, दिगंबर । (संज्ञा, पु०) [हिं० नग का बहुवचन-रूप] पहाड़ ।

नगनिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्रीड़ा-वृत्त ।

नगनो—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नग्न] लड़की, बेटी । नंगी स्त्री ।

नगभिन्नक—(संज्ञा, पु०, सं०) पाषाणभेद । एक औषधि, [पखानभेद (दे०)] ।

नगर—(संज्ञा, पु०, सं०) शहर, वह बस्ती जो कसबे से बड़ी हो, जहाँ अधिक लोग रहते हों । —**कीर्त्तन**-(संज्ञा, पु०, सं०) जो गाना-बजाना नगर की गलियों मे घूम फिर कर हो ।—**नारि, नारी**-(संज्ञा, स्त्री०) [सं० नगर-नारी] वेश्या । "नगर-नारि को यार भूलि परतीति न कीजै"—गिरि० ।—**नायिका**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेश्या, रंडी ।—**पाल**-(संज्ञा, पु०, सं०) कोतवाल, नगर-रक्षक ।—**पालिका**-(संज्ञा, स्त्री०) म्युनिस्पिलिटी ।—**वर्ती**-(वि०) [सं० नगरवर्तिन्] नगर मे स्थित, नगर-वासी ।—**वासी**-(संज्ञा, पु०, सं०) शहर का रहने वाला, नगर-निवासी ।—**हा**-(संज्ञा, पु०, दे०) नगर-निवासी ।

नगरहार—(संज्ञा, पु०, सं०) जलालाबाद के समीप का एक पुराना शहर ।

नगराई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नगर+आई प्रत्य०] शहरातीपन, नागरिकता । चतुरता ।

नगराधिप—(संज्ञा, पु०, सं०) नगर की रक्षा के लिए उच्च पदाधिकारी ।

नगरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शहर, नगर ।—**काक**-(संज्ञा, पु०) कौआ ।—**पौंत**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नगर का द्वार या पार्श्व । नगर का निकास, नगर के समीप का भाग ।—**बक**-(संज्ञा, पु०) बगुला ।

नगस्वरूपिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रमाणिका या प्रमाणी छंद (पिं०) । "जरा लगौ प्रमाणिका"

नगाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० नगारा] धौंसा, डंका । [नगारा (दे०)]

नगारि—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र ।

नगाधिप, नगाधिपति, नगाधिराज—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) हिमालय, सुमेरु । "हिमालयो नाम नगाधिराज"—कु० ।

नगावास—(संज्ञा, पु०) मोर ।

नगाश्रय—(वि०, सं०) पहाड़ का निवासी, पर्वतवासी ।

नगी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० नग+ई प्रत्य०] मणि, नगीना । पार्वती । पहाड़ी स्त्री ।

नगीच‡—(क्रि० वि०, दे०) [फ़ा० नजदीक] निकट, पास, नजदीक, समीप । [**नगीची** (वि०, दे०)] ।

नगीना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मणि, नग । "सिया सोने की अँगूठी राम नीलम नगीना है" ।—**साज**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नग बनाने या किसी वस्तु में जड़ने वाला, जड़िया ।

नगेन्द्र, नगेश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) हिमालय, सुमेरु, नगपति, नगराज ।

नगेसरि*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नागकेसर] नागकेशर, नागकेसर । (औष०) ।

नग्न—(संज्ञा, पु०, सं०) नंगा, वस्त्र-रहित, आवरण-रहित, दिगम्बर [नगन (दे०)] । "कहा निचोरै नग्न जन, न्हान सरोवर कौन"—वृं० ।

नग्नता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नंगे होने का भाव, नंगई, नंगापन ।

नग्र—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नगर] शहर, नगर ।

नघना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लंघन] फाँदना, लाँघना, नाकना, डाँकना (ग्रा०), [नाँघना (दे०)]

नघाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लंघन] फँदाना, लँघाना। [**नघवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

नचना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० नाचना] नाचना। (वि०) नाचने वाला, लगातार इधर-उधर घूमने वाला। [**नचवाना** (प्रेरणा०रूप)]।

नचनि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नाचना] नाच, नृत्य।

नचनिया†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० नाचना + इया प्रत्य०] नाचने या नृत्य करने वाला।

नचनी—(वि०, स्त्री०, दे०) [हिं० नाचना] नाचने या नृत्य करने वाली। लगातार इधर-उधर घूमने या रहने वाली।

नचवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० नाचना का प्रेरणा० रूप] नाच या नृत्य कराना, नचाना।

नचवैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० नाचना + वैया प्रत्य०] नाचने वाला, नर्तक, नृत्यकर्त्ता, नचैया।

नचहिं—(क्रि० अ०, ब्र०) [हिं० नाचना] नाचता है, नृत्य करता है।

नचाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० नाचना] नाच या नृत्य कराना, दिक या हैरान करना। "सबहि नचावत राम गोसाईं"—[रामा०]। **मुहा० नाच—**, चलने-फिरने या और किसी कार्य-विशेष के लिए विवश करके दिक या तंग करना, व्यर्थ इधर-उधर घुमाना।"छछिया भर छाँछ पै नाच नचावें"—रस०। **मुहा० (आँखें, नैन)—**, चपलता से आँखें इधर-उधर घुमाना। इशारा करना।

नचिकेता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नचकेतस्] एक ऋषि-पुत्र जिसने काल से ब्रह्मज्ञान सीखा था।

नचौहाँ*†—(वि०, दे०) [हिं० नाचना + औहाँ प्रत्य०] सदा नाचने और इधर-उधर फिरने वाला।

नछत्र—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नक्षत्र] देखिए नक्षत्र। "प्रेमिन कैं नभ मैं नछत्र हैं न तारे हैं" —रसाल। **मुहा०—बली (प्रबल) होना**—भाग्यवान होना।—**की बात है**—भाग्य का खेल है।—**बुरा होना**—मन्द भाग्य, बुरा समय होना।

नछत्री*†—(वि०, दे०) [सं० नक्षत्र + ई प्रत्य०] देखिए नक्षत्री।

नजदीक—(वि०, फ़ा०) समीप, निकट, पास करीब। [**नजदीकी**–(संज्ञा, वि०) समीपी]।

नज़्म—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० नज्म] काव्य, कविता।

नज़र—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दृष्टि, निगाह। उपहार, भेंट।—**बंद**–(वि०, यौ०) [अ० नजर + बंद फ़ा०] वह बंदी जो कड़ी निगरानी में रक्खा जावे, जो कहीं आ जा न सके। (संज्ञा, पु०) इन्द्रजाल का खेल जिसे लोग दिठबंध समझते हैं।—**बंदी**–(संज्ञा, स्त्री०) [अ० नजर + बंदी फ़ा०] कड़ी निगरानी, नजरबन्द होने की दशा।—**बाग**–(संज्ञा, पु०, अ०) मकान के चारों ओर या सम्मुख को पुष्पवाटिका या फुलवाड़ी।—**बाज़**–भलाई-बुराई को परखने वाला, घूरने वाला (वि०)।—**हाया, नज़रहा**–(वि०, दे०) [अ० नजर + हाया प्रत्य०] नजर लगाने वाला। [**नजरहाई, नजरही** (स्त्री०)] जादूगरी, बाजीगरी। **मुहा०—आना**–दीख पड़ना, दिखलाई देना या पड़ना।—**उतारना**–बुरी दृष्टि के प्रभाव को मिटा देना।—**गुजारना**–उपहार देना, आधीनता स्वीकार करना।—**पड़ना**–दिखलाई देना या पड़ना।—**पर चढ़ना**–पसन्द आ जाना, अच्छा लगना, प्रिय होना।—**बाँधना** मंत्र के बल से और का और दिखाना, दृष्टिबंध कराना।—**रखना**–कृपा-दृष्टि या दया की निगाह से देखना, निगरानी या देख-भाल करना, ध्यान: ख्याल रखना। पहचान, परख। दृष्टि का बुरा प्रभाव।—**लगाना (लगना)**–बुरी दृष्टि का प्रभाव डालना या पड़ना।

नजरना*—(क्रि० अ०, दे०) [अ० नजर + ना प्रत्य०] देखना, नजर लगाना।

नजरानना*†—(क्रि० स०, दे०) [अ० नजर + हिं० आनना प्रत्य०] भेंट या उपहार के ढंग पर देना। नजर लगाना।

नजराना—(क्रि० अ०, दे०) [अ० नजर + हिं० आना प्रत्य०] नजर लग जाना। (क्रि० स०, दे०) नजरियाना, नजर लगाना। (संज्ञा, पु०, अ०) भेंट, उपहार।

नजरि, नजरिया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० नजर] दृष्टि, निगाह।

नजरियाना—(क्रि० स०, दे०) बुरी दृष्टि लगना। नजर लगाना।

नजला—(संज्ञा, पु०, अ०) [सं० श्लेष्मा] जुकाम, सरदी।

नज़ाकत—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कोमलता, सुकुमारता। "सब नजाकत एक तरफ लफजी नजाकत देखिए।"

नजात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मोक्ष, मुक्ति, रिहाई, छुटकारा, छुट्टी। **मुहा०—पाना**-छुटकारा पाना, मुक्ति पाना।

नज़ारा—(संज्ञा, पु०, अ०) दृष्टि। दृश्य। प्यार पर डाली हुई प्रेम की दृष्टि। "मारा दिलदार ने जादू का नजारा मारा"—[स्फु०]।

नजिकाना*‡—(क्रि० स०, दे०) [हि० नजीक या नजदीक+आना प्रत्य०] समीप, निकट या पास पहुँचना, नचकाना, नजकाना।

नजीक†*—(क्रि० वि०, दे०) [फ़ा० नजदीक] समीप, निकट, नगीच (ग्रा०)।

नज़ीर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दृष्टांत, उदाहरण, मिसाल।

नजूम—(संज्ञा, पु०, अ०) ज्योतिष विद्या।

नजूमी—(संज्ञा, पु०, अ०) ज्योतिषी।

नजूल—(संज्ञा, पु०, अ०) कस्बे या शहर की वह भूमि जो सरकार के अधिकार में हो।

नट—(संज्ञा, पु०, सं०) नाटक करने या खेल दिखाने वाला, नाट्य-कला-निपुण। नाचने वाला। कसरती। "इत-उत तें चित दुहुन के, नट लौं आवत जात"—बिहारी। एक राग।**—नागर**-(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण।**—नारायण**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सम्पूर्ण जाति का एक राग (संगी०) कृष्ण। शिव।**—माया**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छल-विद्या, इन्द्रजाल।**—वर**-(संज्ञा, पु०, सं०) नाट्य-कला में निपुण, श्रीकृष्ण। (वि०) बहुत चतुर, चालाक।**—सार**†*-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नाट्यशाला] नटसाला, [नटसारा (दे०)] नाट्यशाला, वह स्थान जहाँ नाट्य हो।**—सारी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नटबाजी। "जेहि नटवै नटसारी साजी"—कबीर। छोटी नाट्यशाला।**—साल**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फाँस या काँटे का वह भाग जो टूट कर शरीर के भीतर रह जाता है। तीर की गाँसी। कसक।

नटई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गरदन, गला, घाँटी, टेटुवा, नटई (ग्रा०)।

नटखट—(वि०, दे०) [हि० नट+खट अनु०] उत्पाती, उपद्रवी, ऊधमी, चंचल।

नटखटी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० नटखट] उपद्रव, ऊधम, बदमाशी, पाजीपन, शरारत।

नटता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नटत्व, नट का भाव।

नटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नट] नटत्व या नाट्य करना, नाचना। (ब्र०) कहकर बदल जाना, इनकार करना, मुकरना (ब्र०)। (क्रि० स०, दे०) [सं० नष्ट] नष्ट करना। (क्रि० अ०, दे०) नष्ट होना। "सौंह करै भौंहनि हँसै, देन कहै नटि जाय"—बिहारी।

नटनि*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नर्तन] नाच, नृत्य। (संज्ञा, स्त्री०, ब्र०) [हि० नटना] इनकार या अस्वीकार करना।

नटनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नट+नी प्रत्य०] नट की या नट जाति की स्त्री।

नटवना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० नट] नाट्य या अभिनय करना। "एक ग्वालि नटवति बहु लीला"—सूर।

नटिन, नटिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नट] नट की या नट जाति की स्त्री, नटनिया।

नटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नट जाति या नट की स्त्री। नाचने या नाटक करने वाली।

नटुआ, नटुवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नट] नट। चंचल बालक। "करत ढिठाई माई नन्द जू को नटुवा"—[स्फु०]।

नटेश्वर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) शिव। नटनागर। [नटराज, नटराज-राज, नटराय]

नठना, नठाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नष्ट] नष्ट होना। (क्रि० स०, दे०) नष्ट करना।

नठिया—(वि० दे०) नष्ट, बुरा (स्त्रियों की गाली)।

नढ़ना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० नाथना] गूँथना, पिरोना, बाँधना, कसना।

नत—(वि०, सं०) नम्र, झुका हुआ। कुटिल।**—नयना**-(वि०) झुकी हुई आँखों वाली। "भीरु पीनोरु नतनयना नवयौवना पर"—निराला।**—पाल**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) प्रणतपाल, शरणागतपाल। "प्रीति रीति समुझाइबी नतपाल कृपालुहिं परमिति पराधीन की"—[विन०]**—मस्तक**-(वि०) जिसका मस्तक झुका हो, आदर देनेवाला।

नतर, नतरु*†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० न+तो] नहीं तो, नातरु, अन्यथा। "नतरु बाँझ भलि बादि बियानी"—[रामा०]।

नतांगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) जवान स्त्री, युवती।

नतांश—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रहों को स्थिति जानने का वृत्त।

नति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) झुकाव। प्रणाम। विनय, नम्रता।

नतिनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नाती का स्त्री० रूप] बेटी की बेटी, पुत्री की पुत्री।

नतीजा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) फल, परिणाम।

नतु—(क्रि० वि०, दे०, यौ०) [हिं० न+तौ] नतरु, नहीं तो, ना तौ, अन्यथा। "नतु मारे जैहैं सब राजा"—[रामा०]।

नतैत†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० नाता+ऐत प्रत्य०] नातेदार, रिश्तेदार, सम्बन्धी।

नत्थ†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नाथना] बेसर, नथ, बड़ी नथुनी।

नत्थी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नाथना] कागज या कपड़े के कई टुकड़ों का एक ही तार या डोरे में निबंधन। मिसल। (वि०) निबद्ध, संलग्न।

नथ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नाथना] बेसर, नथुनी (ग्रा०)।

नथना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नस्त] नाक का अग्रभाग, नाक के छेद [नथुना (दे०)]। **मुहा०—फुलाना**-क्रोध करना। (क्रि० अ०, दे०) [हिं० नाथना का अ० रूप] किसी के साथ नत्थी होना, एक में बँधना। छिदना, छेदा जाना।

नथनी, नथिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नथ] नथ, नक-बेसर, नथुनी।

नथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छेदी हुई, फँसी हुई, नाथी हुई।

नथुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) नाथने वाला। छिदुआ, जिसकी नाक छिदी हो, नत्थू।

नथुई—(संज्ञा, पु०, दे०) छिदुई।

नथुना—(संज्ञा, पु०, दे०) नाक के छेद। [**नथुनी** (स्त्री०)]।

नद—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ी नदी या जिसका नाम पुल्लिंग वाची हो।—**राज**-(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र [नदपति, नदीश, नदराय (दे०)]।

नदन—(संज्ञा, पु०, सं०) नाद या शब्द करना।

नदना, नादना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नदन =शब्द करना] पशुओं का शब्द करना, रँभाना, बँबाना।

नदान*†—(वि०, दे०) [फ़ा० नादान] बेसमझ, नादान। [**नदानी (संज्ञा, स्त्री०, दे०)**]

नदारद—(वि०, फ़ा०) अप्रस्तुत, लुप्त, गुप्त, गायब। खारिज।

नदिया*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नदी] छोटी नदी। "इक नदिया इक नार कहावत"—सूर।

नदी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दरिया, पानी की वह देवीधारा जो किसी पहाड़ या झील से निकल कर पानी के किसी भाग में गिरे। [**नदीनाला** (यौ०)] [**नदी-नद** (यौ०)]।—**गर्भ**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) वह ताल या दहार जहाँ से नदी की धारा बहती हो।—**ज**-(संज्ञा, पु०, सं०) भीष्म पितामह। "नदीज लंकेश वनारि केतुः"।—**मातृक**-(वि०, सं०) वह देश जहाँ नदी के जल से खेतीबारी होती हो। **मुहा०—नाव संयोग**-ऐसा मिलाप जो कभी दैवयोग से हो।

नदीश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) समुद्र, महासागर। "बाँध्यो जलनिधि, तोयनिधि, उदधि, पयोधि नदीश"—[रामा०]।

नदेश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) समुद्र, नदों का स्वामी, सागर।

नदोला—(संज्ञा, पु०, दे०) मिट्टी की बड़ी नाँद, जिसमे पशुओं को खिलाया जाता है।

नद्दना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नदन] शब्द करना, नादना, नदना।

नद्दी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नदी।

नद्ध—(वि०, सं०) बँधा हुआ, बद्ध।

नद्य—(वि०, सं०) नदी-सम्बन्धी।

नधना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नद्ध+ना प्रत्य०] जुतना, जुड़ना, बँधना, जुटना, काम में लगना।

ननका—(संज्ञा, पु०, दे०) छोटा बच्चा।

ननकारना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० न+करना] नाही करना, नामंजूर या अस्वीकार करना, [नकारना (दे०)]।

ननँद, ननद, ननँदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ननंदृ] स्वामी की बहिन, नंद, ननँदी।

ननदोई—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ननद+ओई प्रत्य०] ननद का पति, स्वामी का बहनोई, नंदोई (ग्रा०)।

ननसार, ननसाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० नाना+शाला सं०) नाना का घर या गाँव [ननाउर, ननियाउर, ननिआउर (ग्रा०)]। "भरतहिं पठइ दीन्ह ननिअउरे"—[रामा०]।

ननियाससुर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० नाना + ससुर] पति या स्त्री का जो एक दूसरे के ननिया ससुर हैं। [**ननियासास** (स्त्री०)]

ननिहाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नाना + आलय] नाना का घर, ननसार।

नन्हा—(वि०, दे०) [सं० न्यंच या न्यून] छोटा। [**नन्हीं** (स्त्री०)] । **मुहा०—कातना**-बहुत सूक्ष्मांश में कुछ करना।

नन्हाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नन्हा + ई प्रत्य०] छोटाई, अप्रतिष्ठा, हेठी।

नन्हियाना—(क्रि० स०, दे०) नन्हा या महीन करना, बारीक बनाना।

नन्हैया†*—(वि०, दे०) [हि० नन्हा] छोटा।

नपाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नाप + ई प्रत्य०] नापने का काम, भाव और मजदूरी।

नपाक*†—(वि०, दे०) [फ़ा० नापाक] अछूत, अपवित्र, अपावन।

नपुंसक—(संज्ञा, पु०, सं०) हिजड़ा, नामर्द, क्लीव, षंढ (सं०)।

नपुंसकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हिजड़ापन, नामर्दी, क्लीवता, क्लीवत्व। [**नपुंसकत्व** (संज्ञा, पु०)]।

नपुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) नपना, नापने का पात्र, बर्तन।

नपुत्री*†—(वि०, दे०) [हि० निपुत्री] निपूता, नपूता (ग्रा०), निःसंतान, बेऔलाद, संतान या पुत्रहीन।

नप्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नप्तृ] पोता, बेटा का बेटा, [पौत्र (दे०)], [**नप्ती** (स्त्री०)]।

नफर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सेवक, दास, नौकर, मजदूर। व्यक्ति, पुरुष।

नफरत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) घृणा, घिन।

नफरी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) एक मजदूर का एक दिन का काम या मजदूरी। मजदूरी का दिन।

नफा—(संज्ञा, पु०, अ०) लाभ, फायदा।

नफासत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) उमदापन, अच्छाई। सफाई।

नफीरी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तुरही, धुतूरा।

नफीस—(वि०, अ०) उमदा, साफ, बढ़िया।

नबी—(संज्ञा, पु०, अ०) भगवान का दूत, रसूल, पैगंबर, देव-दूत।

नबेड़ना—(क्रि० स०, दे०)[सं० निवारण] निपटाना, तै करना, चुकाना, समाप्त करना। [निबेरना (दे०)] निवारना।

नबेड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० निबेड़ना] न्याय, निपटारा, फैसला, [निबेरा (अ०)]।

नब्ज—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) नाड़ी, नारी। "जुम्बिशे नब्ज से औ लौन से कारूरी की "—जौक। **मुहा० —चलना**-नाड़ी चलना।**—छूटना**-नाड़ी बंद होना।**—टटोलना**-भीतरी भेद या इरादा जानना।

नभःसुत—(संज्ञा, पु०) वायु, हवा।

नभःसद्—(संज्ञा, पु०) आकाश में विचरण करने वाले देवता। पक्षी।

नभ—(संज्ञा, पु०) [सं० नभस्] आकाश, व्योम, शून्य, गगन। सावन या भादों मास। शिव। मेघ। जल। वर्षा। कुंडली में लग्न से दशम भवन। चाक्षुष मन्वतरीय सात ऋषियों में से एक।**—ग**-(संज्ञा, पु०) वैवस्वत मनु का पुत्र।**—गंगा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आकाश गंगा। " नभगंगा की रजत-धार में "—महादेवी।

नभगामी—(संज्ञा, पु०) [सं० नभोगामिन्] चन्द्रमा। पक्षी। देवता। सूर्य। तारागण। बादल। विमान।

नभगेश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गरुड़। चंद्रमा।

नभचर, नभचारी—(संज्ञा, पु०) [सं० नभश्चर] आकाशचारी। देवता। विमान। बादल। तारागण, सूर्य, चन्द्रमा।

नभतल—(संज्ञा, पु०) आकाश का ऊपरी भाग। "जो मयंक नभतल को था बहुकान्त बनाता"।

नभधुज*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० नभ-ध्वज] बादल।

नभभाषित—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) आकाश-भाषित—एक प्रकार का नाटकीय कथन।

नभश्चर—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा। पक्षी। बादल। सूर्य। तारागण। विमान। देवता। (वि०) आकाश में चलने वाला।

नभस्तल—(संज्ञा, पु०, सं०) वायुमण्डल, आकाश का निचला हिस्सा।

नभस्थल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) आसमान, आकाश। [**नभस्थली** (स्त्री०)]

नभस्थित—(वि०, सं०, यौ०) आकाश में, नभ-स्थिर।

नभस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) भादों का महीना।

नभस्वान—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पवन, वायु।

नभांक—(संज्ञा, पु०) [सं० नभ + अंक] आकाश की गोद। "नभांक में जगमगा रहे थे"—हरिऔध।

नभोग—(वि०, सं०) आकाश-विहारी। जो लग्न स्थान से दसवाँ घर हो। (संज्ञा, पु०) पक्षी। आकाश में विचरण करने वाला देवता।

नभोगति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) आकाशगमन। (संज्ञा, पु०, सं०) आकाशचारी, विमानादि।

नभोधूम—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) मेघ, बादल।

नभोमण्डल—(संज्ञा, पु०, सं०) आकाश, मंडलाकार, गोलाकार।

नभोरज—(संज्ञा, पु०) अंधकार।

नभोलय—(वि०, सं०) आकाश में समा जाने वाला। (संज्ञा, पु०) धुआँ।

नमः—(अव्य, सं०) प्रणाम आदि के मौके पर प्रयुक्त होने वाला शब्द-विशेष।

नम—(वि०, फ़ा०) आर्द्र, गीला, भीगा। [**नमी** (संज्ञा, स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) [सं० नमस्] प्रणाम। स्वर्ग। अन्न। वज्र। यज्ञ।

नमक—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नोन, नून (ग्रा०) लवण, लोन, [निमक (दे०)]।—**ख्वार**–(वि०, फ़ा०) नमक खाने वाला, पाला जाने वाला, नौकर, सेवक, दास।—**सार**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नमक निकलने या बनने की जगह या स्थान।—**हराम**–(वि०) [फ़ा० नमक + हराम अ०] कृतघ्न, जो जिसका धन खावे उसी का बिगाड़ करे। [**नमकहरामी** (संज्ञा, स्त्री०)]। "भरि भरि पेट विषय को धावत ऐसो नमकहरामी"—सूर०।—**हलाल**–(संज्ञा, पु०, वि०) [फ़ा० नमक + हलाल अ०] जो पुरुष अपने अन्नदाता का कार्य तन-मन-धन से करे, कृतज्ञ, स्वामिभक्त। [**नमकहलाली** (संज्ञा, स्त्री०)]। **मुहा०—अदा करना** (**चुकाना**)–अपने स्वामी या रक्षक या पालक के उपकारों का बदला देना। (**किसी का**)—**खाना**–किसी के द्वारा पालित-पोषित होना या दिया हुआ खाना।—**मिर्च मिलाना या लगाना**–किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना।—**फूट-फूट कर निकलना**–कृतघ्नता का दंड या सजा मिलना, नमकहरामी का दंड मिलना। (**जले या कटे पर**) —**छिड़कना,—लगाना**–दुखियों को और अधिक दुख देना। दुख पर दुख, बुराई पर बुराई करना। सुन्दरता, जो मनोहर और प्रिय हो, लावण्य, [लुनाई (दे०)]।

नमकीन—(वि०, फ़ा०) नमक पड़ा पदार्थ। नमक के स्वाद वाला पदार्थ। सुन्दर, स्वरूपवान। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) जिस पदार्थ में नमक पड़ा हो।

नमदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जमाया हुआ ऊनी वस्त्र। **मुहा०—कसना**–रोब या आतंक जमाना।

नमन—(संज्ञा, पु०, सं०) नमस्कार, प्रणाम। झुकाव। झुकने की क्रिया। नम्रता का भाव। [**नमनीय, नमित** (वि०)]

नमना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नमन] नमस्कार या प्रणाम करना, झुकना, नम्र होना।

नमनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नमन] नम्रता, झुकाव, प्रणाम, [नवनि (दे०)]। "नमनि नीच की अति दुखदाई"—[रामा०]।

नमनीय—(वि०, सं०) झुकने या नम्र होने योग्य। माननीय, आदरणीय, पूजनीय। परिवर्त्तनशील। [फ्लेक्सिबिल]।

नमस्—(अव्य०, सं०) एक शब्द जो विशिष्ट व्यक्तियों से प्रणाम करने के समय प्रयोग में लाया जाता है।—**कार**–(संज्ञा, पु०, सं०) प्रणाम, अभिवादन, नमस्ते।—**ते**–(सं०) आप को नमस्कार है। मैं तुमको नम्र होता या झुकता हूँ। "नमस्ते भगवन् भूयो देहि में मोक्षमव्ययम्"।

नमस्य—(वि०, सं०) पूज्य, सम्माननीय। नम्र, विनीत। [**नमस्या**–(संज्ञा, स्त्री०) पूज्य]।

नमाज़—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० मि० सं० नमन] मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना या संध्या। **मुहा०—पढ़ना (अदा करना)**–ईश्वर की वंदना करना।

नमाज़ी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नमाज पढ़ने वाला, ईश्वर की वन्दना या प्रार्थना करने वाला।

नमाना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० नमन] किसी वस्तु को झुकाना, लचाना, लचकाना, नवाना। किसी को दबा कर अपने अधीन करना।

नमित—(वि०, सं०) झुका हुआ, नीचा। "बैठि नमित मुख सोचति सीता"—[रामा०]।

नमिस—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० नमिश्क] बनाया हुआ दूध का फेन।

नमी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आर्द्रता, गीलापन। भीगा।

नमुचि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि। कामदेव। शुंभ, निशुंभ का छोटा भाई, एक दैत्य।

नमूना—(संज्ञा, दे०, फ़ा०) बानगी, ठाठ, ढाँचा, खाका। "है नमूना बानगी अटकल क़यास"—ख़ालि०।

नम्र—(वि०, सं०) झुका हुआ, विनीत, नम्रता वाला।—**मुखी**-(संज्ञा, स्त्री०) नीचे की ओर झुके हुए मुखवाली। "नम्रमुखी हँसी, खिली, खेल रंग प्यारे संग"।—निराला।

नम्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नम्र होने का भाव, विनय।

नय—(संज्ञा, पु०, सं०) नीति, कानून, न्याय। नम्रता। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० नद] नदी।

नयकारी*—(संज्ञा, पु०, दे०, वि०) [सं० नृत्य-कारी] प्रधान। नचवैया, नचैया, नचनिया। नीतिकार।

नयन—(संज्ञा, पु०, सं०) नैन, नयना, नैना (ग्रा०) आँख, नेत्र, चक्षु। ले जाने। "गिरा अनयन नयन बिनु बानी"—[रामा०]।—**गोचर**-(वि०, सं०) सम्मुख, समक्ष, प्रत्यक्ष। "सो नयनगोचर जाहि श्रुति नित नेति कहि कहि ध्यावही"—[रामा०]।—**पट**-(संज्ञा, पु०, सं०) नेत्र-पटल, आँख की पलक, लोचनपट।—**पुतरि**,—**पुतरी**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नयन+हि० पुतरी सं० पुत्रिका, पुत्तली, पुत्री] आँख की पुतली। [नैनपूतरी (दे०)] "नयन पुतरि इव जोगवत रहेऊँ"—[रामा०]।

नयना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नमन] झुकना, नम्र होना, नमना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नयन] नैन, नेत्र, आँख।

नयनागर—(वि०, सं०) नीति में निपुण या कुशल। "बोले बचन राम नयनागर"—[रामा०]।

नयनाभिराम—(वि०, सं०) नेत्र-प्रिय, आँखों को अच्छा लगनेवाला।

नयनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नवनीत] मक्खन, नैनू। एक पतला महीन वस्त्र। (वि०, स्त्री०, सं०) नेत्रवाली, जैसे मृगनयनी।

नयनू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नवनीत] नैनू (ग्रा०), मक्खन, नैनू। नेत्र।

नयनोत्सव—(संज्ञा, पु०) दीपक। प्रिय लगने वाली वस्तु।

नयनोन्मेष—(संज्ञा, पु०) [सं० नयन+उन्मेष] नेत्र की ज्योति, आँख की ज्योति। "चाहिए विश्व को आज भाव का नयनोन्मेष"।—पंत।

नयर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नगर] नगर, शहर।

नयशील—(वि०, सं०) नीति में कुशल या निपुण। [**नयशीलता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

नया—(वि०, दे०) [सं० नव] नवीन, हाल का बना, नूतन। **मुहा०**—**करना**-फसिल पर पहले पहल अन्न खाना।—**पुराना होना**-परिचित हो जाना, आये पर्याप्त समय होना।—**पुराना करना**-पुराने को हटा कर उसके बदले नवीन करना।—**संसार रचना**-नई बात करना, आश्चर्यकारी कार्य करना।—(**ये**) **सिरे से**-आरम्भ से।—**पन**-(संज्ञा, पु०) [हि० नया+पन प्रत्य०] नवीनता, नूतनत्व।

नयाम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) तलवार की म्यान।

नर—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव। विष्णु। अर्जुन। पुरुष। शंकु। लंर। सेवक। एक प्रकार का दोहा, छप्पय (पिं०)। नारायण के भाई। "नर नारायण की तुम दोऊ।" "नर के हाथ मृत्यु निज बाँची"—[रामा०]। पक्षी आदि में पुरुष [(विलो०) **मादा**]। (संज्ञा, पु०) [हि० नल] पानी का नल।—**कंत***-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० नरकांत] राजा।—**कुल**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) मनुष्य जाति, मनुष्य का वंश। (दे०) तृण-विशेष नरकट।—**केसरी**,—**केशरी**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नरसिंह, नृसिंह, नरनाहर, नरहरि।—**केहरि**, **केहरी**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० नरकेसरी] नरसिंह, नृसिंह, नरकेसरी, नरनाहर। "प्रगटे नरकेहरि खंभ माँह"—तुल०।—**तात**-(संज्ञा, पु०, सं०) राजा, नरपति।—**त्राण**-(संज्ञा, पु०) राजा।—**दारा**-(संज्ञा, सं०) नपुंसक, क्लीव, हिंजड़ा। कायर, डरपोंक।—**देव**-(संज्ञा, पु०, सं०) राजा।—**नाथ**-(संज्ञा, पु०, सं०) राजा।—**नारायण**-(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु के अवतार, दो धर्म-पुत्र। "नरनारायण की तुम दोऊ"—[रामा०]।—**नारि**,—**नारी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अर्जुन की स्त्री द्रौपदी। (संज्ञा, सं०) स्त्री-पुरुष। शिव।—**नाह**,—**नाहु**-(संज्ञा, पु०) [सं० नरनाथ] राजा। "कह मुनि सुन नरनाह प्रवीना"—[रामा०]।—**नाहर**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नर+नाहर हि०] नरसिंह, नृसिंह।—**पति**-(संज्ञा, पु०, सं०) राजा। "नरपति धीर-धरम-धुर धारी"—[रामा०]।—**पाल**,—**पालक**-(संज्ञा, पु०) [सं० नृपाल] राजा, नरकांत।—**पिशाच**-

(संज्ञा, पु०, सं०) जो मनुष्य पिशाचों के से कार्य करे ।—**भक्षी,—भक्षक**–(संज्ञा, पु०)[सं० नर-भक्षिन्] राक्षस, नरमांसाहारी ।—**मेध**–(संज्ञा, पु०, सं०) बलिविश्वदेव । कुत्ते । कौवे । चींटी आदि को खिलाना, अतिथि-सत्कार करना ।—**लोक**–(संज्ञा, पु०, सं०) संसार ।—**सिंह**–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नृसिंह] नरहरि, नृसिंह, विष्णु का अवतार । [**नरसिंहपुराण** (यौ०)] ।—**हरि**–(संज्ञा, पु०, सं०) नृसिंह, नरसिंह ।—**हरा**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक छंद । [सं० नृहरि] नरसिंह, नृसिंह ।

नरई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार की घास । घास आदि का डंठल ।

नरक—(संज्ञा, पु०, सं०) नर्क । दुःखद, अपवित्र या गंदा स्थान ।—**कुंड**–(संज्ञा, पु०, सं०) कष्ट देने वाला कुंड, कुकर्म का फल भोगन का कुंड, [नाबदान, नरदा (दे०)] ।—**गामी**–(वि०, सं०) नरक जाने वाला ।—**चतुर्दशी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कार्तिक बदी चौदस या छोटी दिवाली, [नरका-चौदस (दे०)] । **मुहा०—धोना (उठाना)**–मल-मूत्रादि धोना, फेंकना ।

नरकचूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नृकर्चूर] एक औषधि ।

नरकट—(संज्ञा, पु०) [सं० नल] नरकुल ।

नरकांतक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) विष्णु । श्री कृष्ण । नरक से त्राता ।

नरकाधिकारी—(वि०, सं०, यौ०) नरक-योग्य, नरक जाने वाला । "सो नृप अवस नरक-अधि-कारी"—[रामा०] ।

नरकामय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नरक का रोग । प्रेत । कुष्ठ रोग ।

नरकावास—(संज्ञा, पु०) [सं० नरक+आवास] नरक में निवास । नरक में बसने वाला ।

नरकासुर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक दैत्य, जिसे विष्णु ने मारा था ।

नरकी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नरकिन्] नारकी, नरक-योग्य, नरक-निवासी, पापी । मनुष्य । "नरकी नर-काव्य करै नर को"—[स्फु०] ।

नरगिस—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) एक पौधा, जिसके फूल से आँख की उपमा दी जाती है ।

नरगिसी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नरगिस फूल की छाप वाला एक प्रकार का कपड़ा ।

नरत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) नर होने का भाव, पुरुषत्व । मनुष्यता ।

नरद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० नर्द] चौपर की गोट, नर्द । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० नर्दन= नाद] नाद, शब्द, ध्वनि । "फूट ते नर्द उठ जाति बाजी चौपर की ।"

नरदन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नर्दन] धुनि या नाद करना, गरजना, नाँदना ।

नरदहाना—(संज्ञा, पु०, दे०) पनाला, नाबदान, नाली, पानी की मोरी, नरदवा, नरदहा (ग्रा०) ।

नरदा—(संज्ञा, पु०, दे०) पनाली, नाबदान, मैले पानी की मोरी, नरदहा, नरदवा (ग्रा०) । "जैसे घर को नरदवा भलो-बुरो बहि जाय"—तुल० ।

नरबदा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नर्मदा] एक नदी । "नरबद गंडक नदिन के, छोटे पाहन जोय"—कुंजवि० ।

नरम—(वि०, दे०, फ़ा०) नम्र, कोमल, मुलायम । [**नरमी** (संज्ञा, स्त्री०)] । [**नरम-गरम** (यौ०)] । **मुहा०—पड़ना (होना)**–धीमा पड़ना ।

नरमा—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० नरम] मनवा, कपास । देव या राम कपास । सेमर का भुवा । कान की लौ । एक तरह का रंगदार वस्त्र ।

नरमाई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० नर्म] कोमलता, नम्रता, मुलायमियत ।

नरमाना—(अ०, क्रि०) मुलायम या नरम होना, शांत होना । (क्रि० स०, दे०) मुलायम बनाना, नरम करना । शांत करना ।

नरमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नर्मी, नम्रता, कोम-लता ।

नरवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दे० नरई ।

नरसल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नरकट] नर-कट, नरकुल, एक प्रकार की घास ।

नरसिंघ—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० नृसिंह] नृसिंह, नरसिंह, नरहरि ।

नरसिंघा, नरसिंगा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० नर=कड़ा+सिंघा, सिंगा] सींग का बाजा । तुरही-सा एक ताँबे का बाजा ।

नरांग—(संज्ञा, पु०, सं०) मुँहासा । पुरुष का लिंग ।

नरांतक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) रावण का लड़का जिसे अंगद ने मारा था, नारान्तक ।

नराच, नाराच—(संज्ञा, पु०) [सं० नाराच] बाण, तीर । एक छंद (ज, र, ज, र, ज, गुरु— (पिं०) ।

नराचिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक छंद ।

नराज—(वि०, दे०) [फ़ा० नाराज] नाखुश, अप्रसन्न । [**नराजी, नाखुशी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

नराजना*—(क्रि० स०, दे०) [फ़ा० नाराज] नाराज या अप्रसन्न करना ।

नराट*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०)] सं० नरराट्] राजा, नरेश, नृपति ।

नराधम—(संज्ञा, पु०) [सं० नर+अधम] नीच आदमी, कुटिल पुरुष ।

नराधिप, नराधिपति—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) राजा, नराधीश ।

नरिंद*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० नरेन्द्र] राजा । " कवी कब्ब चन्दं सु माधौ नरिंदम्" ।

नरिया†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नाली] गोल खपरा । नाली, मोरी ।

नरियाना—(क्रि० अ०, दे०) बिना कारण चिल्लाना ।

नरी—(संज्ञा, फ़ा०) पकाया या सिझाया हुआ नरम चमड़ा । जुलाहों की नार । एक घास । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नलिका] नाली, नली । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० नर] स्त्री, औरत । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नाड़ी] नारि, नाड़ी, नाड़िका ।

नरेंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) राजा, नरेश, नृप । साँप-बिच्छू के विष का वैद्य । एक छंद (पिं०) ।

नरेतर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पशु, मनुष्य से भिन्न प्रकार का प्राणी ।

नरेली—(संज्ञा, स्त्री०) छोटा नारियल । नारियल का बना हुआ हुक्का ।

नरेश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) राजा, नरेंद्र, नृपाल, नरेश्वर ।

नरोत्तम—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) परमेश्वर । नर-वर, श्रेष्ठ-नर ।

नर्क*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नरक] नरक ।

नर्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) नाचने या नृत्य करने वाला, नट । नरकट । चारण, भाट । शिव । एक संकर जाति । [**नर्त्तकी** (स्त्री०)] । "दण्ड यतिन कर भेद तहँ, नर्तक-नृत्य-समाज"—[रामा०] ।

नर्तकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाचने वाली, नटी ।

नर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) नाच, नृत्य ।—**शाला** –(संज्ञा, स्त्री०) नाचने का स्थान, नाचघर ।

नर्तना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नर्तन] नाचना ।

नर्तित—(वि०, सं०) नचाया हुआ । नाचता हुआ । जिसे नचाया जा चुका हो ।

नर्द—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चौपड़ की गोट । " फूटे ते नर्द उठि जात बाजी चौपर की ।"

नर्दन—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भ ंकर शब्द । [नाँदना (दे०)] । [**नर्दित** (वि०)] ।

नर्म—(संज्ञा, पु०) [सं० नर्मन्] दिल्लगी, हंसी, परिहास, हंसी-ठट्ठा । रूपक (नाटक) का एक भेद (नाट्य०) । (वि०, हि०) नरम ।—**गर्म**–(वि०) सस्ता-मँहगा । बुरा-भला ।—**द्युति**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाटक का एक अंग (नाट्य०) ।—**सचिव**–(संज्ञा, पु०, सं०) विदूषक, दिल्लगीबाज ।

नर्मद—(सज्ञा, पु०, सं०) भाँड़, मसखरा ।

नर्मदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक नदी, नर्वदा ।

नर्मदेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नर्वदा नदी से प्राप्त शिवलिंग या मूर्ति ।

नल—(संज्ञा, पु०, सं०) नरकट । कमल । निषध देश के राजा वीरसेन के पुत्र । "नलः स भूजानिर्भूद् गुणाद्भुतः"—[नैष०] । रामदल का एक बन्दर । [**नलनील** (यौ०)] । (संज्ञा, पु०) [सं० नाल] लोहे का पोला गोल लम्बा खंड, पनाला, नाली, बंबा [पाइप] ।—**कूप**–वह कुआँ जिसमें पाइप लगा कर पानी निकाला जाता है, [ट्यूब वेल] ।—**कूबर**–(संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर के पुत्र ।—**पट्टिका**–(संज्ञा, स्त्री०) नरकट की बनी चटाई ।—**सेतु**–(संज्ञा, पु०, सं०) नल-निर्मित वह पुल जिससे राम की सेना लंका गई थी ।

नला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नल] पेशाब उतरने की नली । नल ।

नलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नली, चोंगा । एक गंध द्रव्य । एक पुराना हथियार, नाल । तरकश तूणीर, भाथा ।

नलिन—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल, कुमुद । नील । सारस ।—**पति**–(संज्ञा, पु०) सूर्य । "थोड़े ऊँचे नलिन-पति हो जा छिपे पादपों में"—हरिऔध ।

नलिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमलिनी, कमल । वह देश जिसमें अधिक कमल उत्पन्न होते हैं ।

नलिनीश—(संज्ञा, पु०) [सं० नलिन+ईश] सूर्य । "विलसता नभ में नलिनीश है"—हरिऔध ।

नली—(संज्ञा, दे०, अ०) [हि० नल का स्त्री०

अल्पा०] छोटा या पतला नल, छोटा चोंगा। घुटने के नीचे का भाग, पैर की पिंडुली। बन्दूक की नाल।

नलुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० नल=गला] छोटा नल या चोंगा।

नलोत्तम—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ा नरकट, देव-नल।

नलोपाख्यान—(संज्ञा, पु०) [सं० नल+उपाख्यान] राजा नल की कथा।

नवंबर—(संज्ञा, पु०, अं०) अंगरेजी साल का ग्यारहवाँ महीना।

नव—(वि०, सं०) नूतन, नवीन, नया। नौ की संख्या। "नव जग सुमन रस हेतु होगा सिद्ध तव अमरत्व"—[तारकवध]।—**कुमारी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) नवरात्रि में पूजनीय नौ कुमारी कन्याएँ। —**ग्रह**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) चन्द्रमा। सूर्य। मंगल। बुध। बृहस्पति। शुक्र। शनि। राहु। केतु—नौ ग्रह हैं।—**तन***†—(वि०, दे०) [सं० नवीन] नूतन, नया, नवीन, हाल का।—**दुर्गा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नौ देवी—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्मांडा, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्री, महागौरी, सिद्धिदा।—**नीत**-(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) मक्खन, नैनू। [नौनीत (दे०)] "सोहत कर नवनीत लिये"—सूर०।—**नीतोपम**-(वि०) नवनीत या मक्खन से जिसकी उपमा दी जा सके। "नवनीतोपम कोमलता के साथ ही"—हरि०।—**पदी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नौ चरणों वाला एक छंद (पिं०)।—**मल्लिका**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चमेली। निवाड़ी। मालती।—**मालिका**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नवमालिनि छन्द (पिं०)।—**यज्ञ**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) वह यज्ञ जो नवीन यज्ञ के निमित्त किया जाता है।—**युवक**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) तरुण, नौजवान। [**नवयुवती** (स्त्री०)]।—**युवा**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० नवयुवक] तरुण, नौजवान।—**यौवना**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नौजवान स्त्री। मुग्धानायिका।—**रंग**-(वि०, यौ०) [सं० नव+रंग हिं०] सुन्दर, नये ढंग का नवेला, नया रंग।—**रंगी**-(वि०, यौ०) [हिं० नवरंग+ई प्रत्य०] हँसमुख, खुशमिजाज, नये रंग वाला, प्रतिदिन नवीन आनन्द करने वाला।—**रत्न**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नौ जवाहिर, जैसे—हीरा, मोती, मानिक, पन्ना, गोमेद, मूँगा, पद्मराग, नीलम, लहसुनिया। विक्रमादित्य की सभा के नवरत्न—कालिदास, धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बैतालभट्ट, वररुचि, घटखर्पर, वराहमिहिर। नवरत्नों का हार या माला।—**रस**-(संज्ञा, पु०, सं०) काव्य के नवरस शृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक आदि। "बीभत्स्याद्भुत विज्ञेय शांतश्च नवमो रसः"—[साहित्य०]। —**रात्रि**-(संज्ञा, पु०, सं०) नौरात (दे०)। नवदुर्गा, नौदुर्गा, क्वार और चैत सुदी प्रतिपदा (परिवा) से नवमी तक की नौ रातें—जिनमें दुर्गा देवी के नव रूपों की पूजा होती है।—**शिक्षित**-(संज्ञा, पु०, सं०) नौपदा, नौसिखिया, आधुनिक शिक्षा-प्राप्त।—**सत**-(संज्ञा, पु०) [सं० नव+सत=सप्त] सोलह शृङ्गार। (वि०, दे०) सोलह। —**सप्त**-(संज्ञा, पु०, सं०) सोलह शृंगार, सोलह। "सजि नव सप्त सकल द्युति दामिनी"—[रामा०] —**ससि***-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० नवशशि] नूतन चन्द्रमा, नया चाँद, द्वितीया का चन्द्रमा। —**सर**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० नौ+सक सं०] नौ लरों या लड़ों का हार या माला। (वि०, दे०, यौ०) [सं० नव+वत्सर] नौयुवा, नौजवान।

नवक—(संज्ञा, पु०, सं०) नौ वस्तुओं का समूह।

नवछावरि, न्यौछावर*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०)[हिं० निछावर] उतार, उतारा, वारा फेरा, उत्सर्ग, कोई वस्तु किसी के ऊपर उतार कर किसी को देना।

नवधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं० यौ०) नौ तरह की। —**भक्ति**-श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य, आत्म-निवेदन, [नौधा भगति (दे०)]। " नौधा भगति कहौं तोहिं पाहीं "—[रामा०]।

नवन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नमन] नमस्कार, प्रणाम। झुकना, नम्र होना।

नवना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नमन] नम्र होना, झुकना, लचना। प्रणाम करना। "जिमि न नवै पुनि उकठि कुकाठू"—[रामा०]।

नवनि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नवन] दीनता, नम्रता, झुकने का भाव। " नवनि नीच की अति दुखदाई "—[रामा०]।

नवम—(वि०, सं०) नवाँ। [**नवमी** (स्त्री०)] [नौमी (दे०)]

नवल—(वि०, सं०) नया, नवीन, नूतन, सुन्दर, युवा। स्वच्छ, उज्ज्वल। " सोइ नवल तन सुन्दर सारी"—[रामा०]।—**अनंगा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार की मुग्धा नायिका। नवयौवना।

—किशोर–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) श्रीकृष्ण। "इन नयननि भरि देखि हौं, सुन्दर नवलकिशोर"—[स्फु०]।—वधू–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक मुग्धा नायिका।

नवला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जवान स्त्री, युवती।

नवाँ—(वि०) आठवें के बाद का, नवम।

नवांग—(संज्ञा, पु०) [सं० नव+अंग] नौ पदार्थ जिसमें सोंठ-पीपल आदि सम्मिलित हैं।

नवा—(वि०, दे०) नया।

नवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नवाना] नम्र होने का भाव। †*(वि०, दे०) नया, नूतन, नवीन।

नवागंतुक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नया आने वाला व्यक्ति।

नवागत—(वि०, सं०, यौ०) नवीन आगत, नया आया हुआ।

नवाज, निवाज—(वि०, दे०, फ़ा०) दया या कृपा करने वाला, [नेवाज (दे०)]

नवाजना*†—(क्रि० स०, दे०) [फ़ा० नवाज] दया या अनुग्रह दिखलाना, कृपा या दया करना, [निवाजना, नेवाजना (दे०)]।

नवाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक तरह की नाव।

नवाढ़िया—(वि०, दे०) नया, अनुभव-हीन।

नवाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० नमन] झुकाना, लचाना। [शीश नवाना–(क्रि० अ०, दे०) प्रणाम करना।

नवान्न—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) फसल का नूतन अन्न, नया अनाज।

नवाप्त—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नौ से भाग देने पर प्राप्त।

नवाब—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० नव्वाब] बादशाह का स्थानापन्न, सूबेदार, मुसलमानों की पदवी। (वि०) बड़ी शान-शौकत और अमीरी ठाठ-बाट में रहने वाला।—जादा–(संज्ञा, पु०) नवाब का लड़का, जो बहुत शौकीन हो।

नवाबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नवाब+ई प्रत्य०] नवाब का कार्य, पद या दशा। राजत्व-काल। नवाबों का सा शासन, बहुत अमीरी, अंधेर (व्यंग्य)।—करना–नवाबों की तरह फिजूल खर्च करना।

नवासा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लड़की का लड़का, दौहित्र। [नवासी (स्त्री०)]।

नवाह—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी पवित्र पुस्तक का पाठ जो नौ दिनों में पूरा हो, नवाह्निक।

नवीन—(वि०, सं०) नया, नूतन, अपूर्व, अनोखा, तरुण। "धात्री प्रथम नवीन जगत की"—[तारक-वध]। [नवीना (स्त्री०)]।

नवीनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नयापन, नूतनता, नव्यता।

नवीस—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लेखक, लिखने वाला, जैसे—नकलनवीस।

नवीसी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) लिखाई, लिखने की क्रिया या भाव।

नवेद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निवेदन] निमंत्रण, न्योता, बुलौआ। निमंत्रण-पत्र।

नवेला—(वि०, दे०) [सं० नवल] नया, नूतन, नवीन, जवान, तरुण। [नवेली (स्त्री०)]

नवोढा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हाल की ब्याही, नववधू। नौजवान। नवयौवना। समान लज्जा और शीलवाली नायिका।

नवोत्कर्ष—(संज्ञा, पु०) [सं० नव+उत्कर्ष] नया सौन्दर्य, नया उत्कर्ष, नई उठान। "भरा हर्ष वन के मन, नवोत्कर्ष छाया"—निराला।

नवोदक—(संज्ञा, पु०, सं०) पहली वर्षा का पानी जमीन के अंदर से निकलने वाला पहला पानी।

नव्य—(वि०, सं०) नूतन, नवीन, नया। "अंत में बनता नव्य विधान"—महादेवी। [नव्यता (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]

नशना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नाश] नष्ट या नाश होना, [नसना (दे०)]।

नशा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० वा अ०] मादक दशा।—पानी–(संज्ञा, पु०) मादक वस्तु और उसका सारा सामान, नशे की सामग्री। धन, विद्या आदि का घमंड, मद, गर्व। मुहा०—किरकिरा हो जाना–नशे का मजा मिट जाना। (आँखों में) —छाना–मस्ती चढ़ना।—जमना–अच्छा नशा होना।—हिरन होना–किसी आपत्ति से नशा बिलकुल उतर जाना।—उतारना,—उतरना–अहंकार मिटाना, मिटना।—खोर–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मद्य-सेवी, नशेबाज, नसेड़ी (ग्रा०)।—(शे) बाज–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मद्य या मादक वस्तु-सेवी, नसेड़ी (ग्रा०)।

नशाना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० नाश] नष्ट करना, बिगाड़ना, [नसाना (दे०)]।

नशावना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० नसाना का प्रेरणा० रूप] नाश करना।

नशीन—(वि०, फ़ा०) बैठने वाला।

नशीनी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बैठने की क्रिया या भाव, बैठक; जैसे—तख्तनशीनी।

नशीला—(वि०) [फ़ा० नाश+ईला प्रत्य०] मादक, नशा पैदा करने वाला। [**नशीली** (स्त्री०, दे०)]—(**ली**) **आँखें**-मदमस्त आँखें, वे आँखें जिनमें मस्ती हो।

नशोहर†—(वि०, दे०) [सं० नाश+ओहर प्रत्य०) नाशक।

नश्तर—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, फ़ा०) छोटा और तेज चाकू या छुरी, जिससे फोड़े आदि चीरे जाते हैं। [नस्तर (दे०)]। **मुहा०—लगाना**-चीरना। टीका लगाना।

नश्वर—(वि०, सं०) नष्ट होने वाला, नाश होने योग्य। [**नश्वरता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

नष*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नख] नाखून।

नषत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नक्षत्र] नक्षत्र, नछत्र, नखत (ग्रा०)।

नष्ट—(वि०, सं०) जिसका नाश हो गया हो। जो दिखाई न दे। नीच, व्यर्थ। प्रस्तारादि की एक क्रिया (पिं०)।—**प्राय**-लगभग नष्ट। —**बुद्धि**—(वि०, सं०) मूर्ख, मूढ़।—**भ्रष्ट**-(वि०, सं०) जो बिलकुल खराब या बरबाद हो गया हो।

नष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नष्ट होने का भाव, दुराचारिता। व्यर्थता।

नष्टा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेश्या, रंडी, कुलटा, व्यभिचारिणी।

नसंक*†—(वि०, दे०) [सं० निःशंक] निडर, निर्भय, बेधड़क, [निसंक (दे०)]।

नस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्नायु] नाड़ी, रग। (**सूखी**)—(**सों**) **का** रक्त-प्राण-प्रिय (प्रि० प्र०)।—**ढीली करना**-हौसला का समाप्त होना। शक्ति का ह्रास होना।—**ढीली होना**-हौसला पस्त होना, शक्ति का टूटना। **मुहा०—चढ़ना या नस पर—चढ़ना**-रग-रग में दर्द होना।—**नस में**-सारे शरीर में।—**नस फड़क उठना**-अति प्रसन्न होना। (**सूखी**)—(**सों**) **में रक्त दौड़ना**-जोश या नया जीवन आना।—**तरंग**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० नस+तरंग] एक बाजा।

नसतालीक—(संज्ञा, पु०, अ०) स्वच्छ और सुन्दर लिपि या लेख।

नसना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नशन] नष्ट होना, खराब या बरबाद होना। बिगड़ जाना। (क्रि० वि०, दे०) [हि० नटना] भागना। [**नसवाना** (प्रेरणा०रूप)]

नसल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) जाति, वंश, कुल। औलाद।

नसवार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नास+वार प्रत्य०] नास, सुँघनी, पिसी तम्बाकू।

नसाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नाश] नष्ट, खराब या बरबाद हो जाना, बिगड़ जाना। (क्रि० स०, दे०) नष्ट करना, बिगाड़ना। नठाना (ग्रा०)। "अबलौं नसानी अब ना नसैहौं"—तुल०।

नसावना‡—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नाश] बिगाड़ना, खराब या नष्ट करना।

नसेनी, नसैनी, नसैनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निःश्रेणी] सीढ़ी।

नसीब, नसीबा—(संज्ञा, पु०, अ०) भाग्य, प्रारब्ध, तकदीर, किस्मत। **मुहा०—होना**-मिलना, प्राप्त होना।—**जागना** (**खुलना**)-भाग्योदय होना।—**फूटना**-(संज्ञा, पु०, दे०) भाग्य मंद होना।—**वर**-(वि०, अ०) भाग्यवान।

नसीहत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सीख, शिक्षा।

नसूढ़िया—(वि०, दे०) अमंगलकारी, बुरा, मनहूस।

नसूर, नासूर—(संज्ञा, पु०, दे०) पुराना घाव, नस पर का घाव।

नस्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) जानवरों के नाक में किया हुआ छेद।

नस्ता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नाक का छेद, नथुना।

नस्तित—(वि०, सं०) वह पशु (बैल) जिसका नाक नथा हो।

नस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सुँघनी, नास।

नस्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुँघनी। जानवरों की नाक में पहनाई गई रस्सी। तेल-विशेष।

नस्ल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कुल, वंश, जाति।

नस्वर*†—(वि०, दे०) [सं० नश्वर] नाशवान।

नहँ, नहाँ‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नख], नाखून। [**नहँविष** (यौ०)]।—**छू,—छुर**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नखक्षौर] ब्याह में वर के नाखून

काटने की एक रीति या रस्म, नाखुर (ग्रा०)।

नहना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० नधना] जोतना, नाधना, काम में लगाना।

नहर—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) वह कृत्रिम जलधारा जो किसी नदी या झील से खेतों की सिंचाई के लिए निकाली गई हो।

नहरन, नहरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नख+हरणी] नाखून काटने का हथियार, नहन्नी (ग्रा०)। "नहरन हू टूटो रहै"—कुंजवि०।

नहरुग्रा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक रोग जिसमें घाव से सुत जैसे कीड़े निकलते हैं।

नहलाई, नहवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नहलाना] नहलाने का भाव या क्रिया या मजदूरी, हनवाई, अन्हवाई (ग्रा०)।

नहलाना—(क्रि० स०, हिं०) स्नान कराना, नहुवाना, हनवाना, अन्हवाना (ग्रा०)।

नहछुत—(क्रि० स०, दे०) [सं० नखक्षुत] नाखून का चिह्न या नख-रेखा।

नहान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्नान] नहाने की क्रिया या पर्व, अन्हान, न्हान, हनान, असनान (ग्रा०)।

नहाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्नान] स्नान करना, जल से शरीर धोना या साफ करना। [अन्हाना, हनाना (दे०)]। **मुहा०** (दूधों)—**पूतों फलना**-धन-कुटुंब से परिपूर्ण या भरा-पूरा होना। तर हो जाना, [**नहवाना** (प्रेरणा०रूप)]

नहार—(वि०, दे०) [फ़ा० मि०, सं० निराहार] बासी मुँह, जिसने आहार न किया हो।—**मुँह**—(अ०) बासी मुँह।

नहारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० नहार] जलपान।

नहि*—(अव्य०, दे०) [हिं० नहीं] नहीं। "नाहि नहि नहीत्येव वदते"।

नहीं, नाहीं—(अव्य०, दे०) [सं० नहि] निषेध या अस्वीकार-सूचक अव्यय, न, मत, ना। "डरो नहीं—बोले करुणामय"—[तारकवध]। "नाहीं कहे पर वारे हैं प्रान, तौ वारिहैं का फिर हाँ कहने पर"—बल०। **मुहा०—तो**-जब कि ऐसा न हो, अन्यथा।—**सही (न सही)**-यदि ऐसा न हो तो कुछ हानि नहीं है।

नहुष—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राजा। एक नाग। विष्णु। "गालव, नहुष नरेश"—[रामा०]।

नहुषात्मज—(संज्ञा, पु०) [सं० नहुष+आत्मज] ययाति।

नहूसत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अ०) अशुभ लक्षण, उदासीनता, अपशकुन, मनहूसी। "नहूसत शबो-रात मँडला रही है"—हाली०।

नाँई*—(अव्य०, दे०) समान, सदृश, तरह। "जौ तुम अवतेउ मुनि की नाँई"—[रामा०]।

नाँउँ, नाँऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाम] नाम। [नाँव (दे०)]। [**नाँव-गाँव** (यौ०)]

नाँगा—(वि०, पु०, दे०) [सं० नग्न] नंगा, नग्न। (संज्ञा, पु०) [हिं० नंगा] नंगे रहने वाले नागा साधु। देखिए नागा।

नाँघना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० लंघन] लाँघना, कूद कर इधर से उधर जाना। "जो नाँघै सत जोजन सागर"—[रामा०]।

नाँठना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नष्ट] नष्ट होना, बिगड़ना।

नाँद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नंदक] हौदा, मिट्टी का एक बड़ा बर्तन, पशुओं को चारा-पानी देने का पात्र।

नाँदना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नाद] गर्जन, शब्द करना, छींकना, ललकारना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० नंदन] प्रसन्न होना। दीपक का बुझने के पूर्व भभकना।

नाँदिया—(संज्ञा, पु०, दे०) शिव का नांदी बैल।

नाँदी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समृद्धि, बढ़ती, उदय, अभ्युदय, मंगलाचरण (नाट्य०)। "नंदिता देवता यस्मात्तस्मान्नांदीति कीर्तिता"। (संज्ञा, पु०, सं०) नांदी, शिवगण, बैल। [**नाँदीपाठ** (यौ०)]।—**कर**-(संज्ञा, पु०) नांदी-पाठ करने वाला।—**मुख**-(संज्ञा, पु०, सं०) कल्याण के उद्देश्य से जन्म, जनेऊ, विवाह आदि अवसरों पर किया जाने वाला श्राद्ध, जातकर्म। [**नांदीमुख-श्राद्ध** (यौ०)]।—**मुखी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्ण वृत्त। (पिं०)।

नांदीक—(संज्ञा, पु०, सं०) नांदीमुख श्राद्ध।

नाँयँ*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाम] नाम। (अव्य०, ग्रा०) न। (अव्य०, दे०) नाँई, समान।

नाँवँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाम] नाम । "प्रात लेय जो नाँवँ हमारा"—[रामा०] ।

ना—(अव्य०, सं०) नहीं, नहिं, मत । "साँकरी गली मैं प्यारी हाँ करी ना ना करी" ।—**इत्तिफ़ाक़ी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) फूट, विरोध, मतभेद ।—**उम्मेद**-(वि०, फ़ा०) निराश । [**नाउम्मेदी** (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०)] ।—**कंद**-(वि०, दे०) [फ़ा० ना+कंदः] बिना निकाला हुआ बैल या घोड़ा आदि । अशिक्षित, बिना सिखाया, बिना काढ़ा, अलहड़ ।—**क़दर**—(वि०) [फ़ा० ना+अ० क़द्र] प्रतिष्ठा-रहित । [**नाक़दरी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**खुश**-(वि०, फ़ा०) नाराज, अप्रसन्न । [**नाखुशी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**चीज**-(वि०, फ़ा०) पोच, तुच्छ ।—**जायज**-(वि०, अ०) अयोग्य, अनुचित ।—**ताक़त**-(वि०) [फ़ा० ना+ताक़त अ०] निर्बल, हीन, क्षीण । [**नाताक़ती** (संज्ञा, स्त्री०)] —**दान**-(वि०, फ़ा०) मूर्ख, मूढ़, अज्ञान, अजान, अनाड़ी, बेसमझ । [**नादानी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**पसंद**-(वि०, फ़ा०) अप्रिय, जो अच्छा न लगे, अरोचक ।—**पाक**-(वि०, फ़ा०) अपवित्र, मैला-कुचैला, अशुद्ध । [**नापाकी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**बालिग**—(वि०, पु०) [अ०+फ़ा०] जो जवान न हुआ हो, न्यून, युवा । [**नाबालगी** (संज्ञा, स्त्री०)] —**मंजूर**—(वि०, फ़ा०] अस्वीकार, जो माना न गया हो । [**नामंजूरी** (संज्ञा, स्त्री०)] । —**मर्द**-(वि०, फ़ा०) क्लीव, नपुंसक, हिजड़ा, कायर, डरपोक । [**नामर्दी** (संज्ञा, स्त्री०)] । —**माक़ूल**-(वि०, यौ०) [फ़ा० ना+अ० माक़ूल] अयोग्य, अनुचित, अयुक्त ।—**मुनासिब**-(वि०, फ़ा०) अयोग्य, अनुचित ।—**मुमकिन**-(वि०) [फ़ा०+अ०] असम्भव ।—**राज**-(वि०, फ़ा०) खफा, नाखुश, अप्रसन्न, रुष्ट । [**नाराजगी, नाराजी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**लायक**-(वि०) [फ़ा० ना+लायक अ०] अयोग्य, निकम्मा । [**नालायकी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**समझ**-(वि०, हि०, यौ०) मंद या अल्प-बुद्धि या निर्बुद्धि । [**नासमझी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**हक़**-(क्रि० वि०) [फ़ा० ना+अ० हक़] व्यर्थ, वृथा, निष्प्रयोजन ।

नाइ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नौ] नाव, नैया, नौका । (पू० का०, दे०) [हि० नवाना] नायकर, नवाकर, फैलाकर । "अस कहि नाइ सबनि कहँ माथा "—[रामा०] ।

नाइक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नायक] नायक, स्वामी । [**नाइका**-(स्त्री०, दे०) नायिका ।]

नाइन—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० नाई] नाई या नाई जाति की स्त्री, नायनि, नाउनि (ग्रा०) ।

नाइब*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० नायब] नायब ।

नाईं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० न्याय] तरह, समान, तुल्य । " उमा दारु योषित की नाईं "—[रामा०] ।

नाई—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नापित] नाऊ, नउवा, नौवा (ग्रा०) । बाल बनाने वाला ।

नाउँ‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाम] नाम, नाँव (ग्रा०) ।

नाउ‡—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० नौ] नाव, नौका ।

नाउन, नाउनि†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नाऊ] नाइन, नउनिया (ग्रा०) ।

नाऊ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नापित] नाई ।

नाक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नक्र] नासिका, नासा । "लछिमन तेहि छन ताकहँ, नाक-कान बिन कीन्ह" । " नाक कान बिनु भइ विकराला " —[रामा०] । मर्यादा, प्रतिष्ठा । दिमाग का मल जो नाक से निकलता है, रेंट नेटा, (ग्रा०) (प्रान्तो०) । शोभा की चीज, मान, प्रतिष्ठा की वस्तु (संक्षिप्त रूप नक) ।—**बुद्धि**-(वि०, यौ०) [हि० नाक+बुद्धि सं०] कमसमझ, मंदमति । —**घिसनी**-विनती, गिड़गिड़ाहट । मुहा०— **रगड़ना**-बड़ी विनय के साथ आग्रह या प्रयत्न करना, दीनता दिखाना, आधीन होना ।—**काटना**-प्रतिष्ठा या इज्जत मिटाना ।—**रहना, (जाना)**-प्रतिष्ठा या मर्यादा रहना (जाना) ।—**कान काटना**-कठिन सजा या दंड देना ।—**किसी की —का बाल**-घनिष्ठ मित्र या बड़ा मंत्री, सलाही, सदा का साथी ।—**चढ़ना, चढ़ाना**-रोष या क्रोध आना, (करना), त्योरी चढ़ना ।—**लम्बी होना**-बड़ी शान या प्रतिष्ठा होना ।—**लम्बी करना**-प्रतिष्ठा का भाव बढ़ाना ।—**(को) चने चबवाना, चबाना**-बहुत ही तंग या हैरान करना, होना ।— **भौं चढ़ाना या सिकोड़ना**-क्रोध या अप्रसन्नता प्रगट करना, घिनाना, चिढ़ना, नापसंद करना ।— **में दम करना या लाना, होना, रहना**-बहुत तंग या हैरान करना, होना । " नाक दम रहे जौं लौं

नाक दम रहै तौं लौं" ।—**रगड़ना, रगड़ाना**-गिड़गिड़ाना, मिन्नत करना, बहुत विनती करना, कराना ।—(**कों**) **दम आना, होना**-बहुत तंग या परेशान होना ।—**सिकोड़ना**-घिनाना, अरुचि प्रगट करना ।—**सिनकना, छिनकना**-नाक का मल साफ करना ।—**रख लेना**-प्रतिष्ठा या इज्जत रख लेना । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाक] मगर, घड़ियाल । "नाक उरग-झष व्याकुल मरता" । (**संज्ञा, पु०,** सं०) स्वर्ग, बैकुंठ, आकाश । हथियार की एक चोट ।

नाकड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० नाक+ड़ा प्रत्य०] नाक पक जाने का एक रोग, [नाका (दे०)] ।

नाकना†*—(क्रि० स०, दे०) [सं० लंघन] फाँदना, उल्लंघन करना, लाँघना, बढ़ जाना, हरा देना, डाँकना (ग्रा०) ।

नाका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ताकना] रास्ते का आखीर, मार्ग का छोर । घुसने का द्वार, प्रवेश-द्वार, मुहाना, मार्ग का आरम्भ स्थान । कर या महसूल उगाहने की चौकी । थाने की चौकी, सुई का छेद ।—(के) **बंदी**-(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० नाका+बंदी फ़ा०] किसी मार्ग से आने-जाने की रोक या रुकावट, प्रवेशमार्ग बंद करके रक्षा का विधान । —(के) **दार**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० नाका+फ़ा० दार] नाके या फाटक के सिपाही । कर या महसूल लेने वाला अफसर । (वि०) जिसमें छेद हो । मुहा०—**छेंकना या बाँधना**-आने-जाने का रास्ता बंद करना या रोकना ।

नाकिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) वह स्त्री जो नाक के स्वर बोले, नकस्वरी, नकनकही (ग्रा०) ।

नाकिस—(वि०, अ०) खराब, बुरा ।

नाकुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नाका] सर्प-विष-नाशक एक जड़ी ।

नाक्षत्र—(वि०, सं०) नक्षत्र-संबंधी ।

नाखना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० नष्ट] नाश करना, बिगाड़ना, खराब करना, फेंकना, गिराना । (क्रि० स०, दे०) [हिं० लाँघना] उल्लंघन करना । "हाथ चाप बाण लै गये गिरीस नाखिकै" —[रामा०] ।

नाखुना, नाखूना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नेत्र-रोग-विशेष ।

नाखून—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० नाखुन] नख, नहँ ।

नाखूनी—(वि०, दे०) बहुत पतली रेखादार ।

नाग—(संज्ञा, पु०, सं०) साँप, सर्प । [**नागिन** (स्त्री०)] । पाताल के देवता । एक देश । पर्वत । हाथी । राँगा । सीसा । नागकेसर । पान । एक वायु । बादल । आठ की संख्या । बुरा मनुष्य । एक जाति ।—**अरि,** (**नागारि**)-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नाग-शत्रु, गरुड़ । सिंह । "जिमि सस चहै नाग-अरि भागू"—[रामा०] ।—**कन्या**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाग जाति की बेटी जो अति सुन्दरी होती है ।—**केशर, केसर, केसरी**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाग+केशर] एक पौधा जिसके फूल औषधि के काम आते हैं, नाग-चंपा, "एला नागकेसर कपूर समभाग करि"—कुजवि० ।—**गर्भ**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सिंदूर ।—**चम्पेय**-(संज्ञा, पु०, सं०) नागकेसर । —**ज**-(संज्ञा, पु०, सं०) सिंदूर । रंग ।—**झाग***†-(संज्ञा, पु०) [हिं० नाग+झाग] अफीम । —**दंत**-(संज्ञा, पु०, सं०) हाथीदाँत । खूँटी ।—**दंतक**-(संज्ञा, पु०, सं०) घर में लगे खूँटे । ताखा, आला ।—**दंती**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विशल्या, इंद्र । वारुणी ।—**दमन**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक पौधा, [नागदौन (दे०)] ।—**दमनी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा नागदौना ।—**दौन**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नागदमन] एक छोटा पहाड़ी पौधा जिसके पास साँप नहीं आता, नागदौना ।—**नग**-(संज्ञा, पु०, सं०) गजमुक्ता । [गजमोती, (दे०)] —**पंचमी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सावन शुक्ला पंचमी, गुड़िया (ग्रा०) ।—**पति**-(संज्ञा, पु०, सं०) सर्पराज, वासुकी । हाथीराज, ऐरावत, नागेन्द्र ।—**पाश**-(संज्ञा, पु०, सं०) अस्त्र-विशेष, जिससे बैरियों को बाँध लेते थे (प्राचीन) । —**पुष्प**-(संज्ञा, पु०) नागकेसर । चम्पा । पुन्नाग पेड़ ।—**फनी**-(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० नाग+फन] एक औषधि । कान का एक गहना ।—**फाँस**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाग+पाश] नाग-पाश । "नाग-फाँस बाँधिसि लै गयऊ"—[रामा०] ।—**फेन**-(संज्ञा, पु०) अफीम ।—**बल**-(संज्ञा, पु०) दस सहस्र हाथियों का बल रखने वाले भीम । (वि०) जिसमें हाथी के इतना बल हो ।—**बला**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंगेरन (औष०) ।—**बेला**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नाग+वल्ली] पान । पान की बेल । —**भगिनी**-(संज्ञा, स्त्री०) जरत्कारु, जो वासुकि नाग की बहन थी ।—**भाषा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०)

पाताल की बोली, प्राकृत भाषा।—**भूषण**–(संज्ञा, पु०) महादेव।—**माता**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नागों की माँ, कद्रू। कश्यप की स्त्री। "नाग-माता निषूदिता"—वाल्मी०।—**राज**–(संज्ञा, पु०, सं०) शेषनाग। ऐरावत। नागेश। एक छंद (पिं०)।—**रिपु**–(संज्ञा, पु०, सं०) नकुल, न्योला, मोर, गरुड़, सिंह, नागारि।—**लोक**–(संज्ञा, पु०, सं०) पाताल।—**वंश**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक जाति की एक शाखा जिसका राज्य भारत में कई जगह था।—**वल्ली, वल्लरी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पान, नागरबेला, नागबेल। **मुहा०**—**खिलाना, पालना**–ऐसा कार्य करना जिसमें मरने का भय हो, शत्रु पालना।

नागर—(वि०, पु०, सं०) शहर या नगर-वासी। (संज्ञा, पु०, सं०) नगर-वासी, चतुर मनुष्य, सभ्य, निपुण, शिष्ट। देवर। गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति। [**नागरी** (स्त्री०)]।—**बेल**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वल्ली] पान, नागरबेली।—**मुस्ता**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नागरमोथा।—**मोंथा**–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नागर+मुस्ता] एक जड़ी (औष०)।

नागरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शहरातीपन, सभ्यता, चतुरता। 'हँसै सबै कर ताल दै, नागरता के नाउँ"—बिहारी।

नागरिक—(वि०, सं०) नगर का, नगर-वासी, शहराती, सभ्य, चतुर।—**उड्डयन विभाग**–(संज्ञा, पु०) वह सरकारी विभाग जो नागरिकों की हवाई यात्रा की सुव्यवस्था करता है, [सिविल ऐवियेशन डिपार्टमेंट]।—**शास्त्र**–(संज्ञा, पु०) श्रेष्ठ नागरिक जीवन के सिद्धांतों की व्याख्या करने वाला शास्त्र, [सिविक्स]।

नागरिकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चतुरों के द्वारा संग्रह होने की दशा, चतुरता, शहरातीपन।

नागरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नगर-निवासिनी स्त्री, चतुर, प्रवीण स्त्री। देवनागरी लिपि या भाषा, हिन्दी।

नागवार—(वि०, फ़ा०) असह्य, अप्रिय।

नागा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नग्न] नंगा। (संज्ञा, पु०) [अ० नाग] आसाम की पहाड़ी। वहाँ के जंगली मनुष्य। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नागः] अन्तर, बीच। गैरहाज़िरी। "पढ़िबे मैं कबहूँ नहीं, नागा करिये चूक"—वृं०।

नागानंद—(संज्ञा, पु०, सं०) हर्षवर्द्धन-कृत संस्कृत-नाटक।

नागानन—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश।

नागाह्वा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नागदौना, मरुआ (प्रान्ती०), नागदमन।

नागारि—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गरुड़। नकुल, न्यौला। मोर। "नागारि-वाहन सुधाब्धि-निवास शौरे"—शंकरा०।

नागार्जुन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन बौद्ध महात्मा, शून्यवाद के प्रवर्तक बौद्ध आचार्य का नाम।

नागाशन—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गरुड़। मोर। सिंह।

नागिन, नागिनि, नागिनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० नाग] साँपिनी, साँपिन, नाग की स्त्री। मनुष्य आदि के पीठ की लम्बी लोमपंक्ति (अशुभ)।

नागेन्द्र—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) बड़ा साँप, शेषनाग, वासुकी। ऐरावत। नागेश, नागेश्वर।

नागेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) ऐरावत। शेषनाग।

नागेसर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नागकेशर] नागकेसर। नागेश्वर, शेष।

नागोद—(संज्ञा, पु०, दे०) छाती का कवच।

नागौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नव+नगर] एक शहर।

नागौरी—(वि०, दे०) [हि० नागौर] नागौर का बैल। (वि०, स्त्री०, दे०) नागौर-संबंधी। एक जाति की गाय। असगंध।

नाघना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लंघन] लाँघना, फाँदना, डाँकना।

नाच—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाट्य] नृत्य, नाट्य।—**कूद**–(संज्ञा, स्त्री०) [हि० नाच+कूद] खेल-कूद, नाच, तमाशा। प्रयत्न, आयोजन। डींग। क्रोध से उछलना।—**घर**–(संज्ञा, पु०, हि०) नृत्य-शाला।—**महल**–(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नाच+अ० महल] नाच-घर, नृत्य-शाला।—**रंग**–(संज्ञा, पु०, हि०) जलसा, आमोद-प्रमोद। **मुहा०**—**काछना**–नाचने को तैयार होना। (**कठपुतली का**)—**नाचना (तारों पर**)–किसी के आधीन हो उसके इशारे पर कार्य करना।—**दिखाना**–उछलना-कूदना, हाथ-पाँव हिलाना। अनोखा आचरण करना।—**नचाना**–मनमाना कार्य कराना, तंग या हैरान करना। **नंगा—नाचना**–निर्लज्जता का कार्य करना।

नाचना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० नाच] नृत्य करना, थिरकना, घूमना, चक्कर लगाना। **मुहा०** **सिर पर—**, ग्रसना, घेरना, निकट या पास आना। **आँख के सामने—**, प्रत्यक्ष के समान दिल में जान पड़ना। दौड़ना-धूपना, हैरान होना। काँपना, थर्राना। क्रोध से उछल-कूद मचाना, बिगड़ना।

नाचार—(वि०, फ़ा०) लाचार, मजबूर, असमर्थ, विवश, निरुपाय। [**नाचारी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

नाचिकेत—(संज्ञा, पु०, सं०) आग। एक ऋषि का नाम।

नाज†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० अनाज] अनाज, अन्न। [**नाजमंडी** (यौ०)]। (संज्ञा, पु०,) [फ़ा० नाज] नखरा, चोंचला। गर्व, घमंड। **मुहा०—उठाना**-नखरा या चोंचला सहना।

नाजनी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सुन्दरी स्त्री।

नाज़िम—(वि०, अ०) प्रबन्ध या बन्दोबस्त करने वाला। (संज्ञा, पु०, अ०) सूबेदार।

नाज़िर—(संज्ञा, पु०, अ०) देख-भाल करने वाला, निरीक्षक, मीर मुंशी, ख्वाजा। रंडियों का दलाल।

नाजुक—(वि०, फ़ा०) सुकुमार, कोमल, नरम, पतला, सूक्ष्म, कमजोर।—**ख्याल**-(वि०) अच्छे विचारों वाला।—**मिजाज**-(संज्ञा, पु०) जो थोड़ी सी भी तकलीफ न सह सके।

नाट—(संज्ञा, पु०, सं०) नाच, नृत्य, नकल, स्वाँग। एक देश। उस देश का निवासी।

नाटक—(संज्ञा, पु०, सं०) लीला या अभिनय। नटों का कार्य। रंगशाला में घटनाओं का प्रदर्शन। वह खेल जिसमें स्वाँग के द्वारा चरित्र दिखाया गया हो। दृश्य-काव्य, रूपक।—**कार**-(संज्ञा, पु०) नाटक लिखने वाला।—**शाला**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) नाटक होने का ठौर या स्थान, [सं० नाट्यशाला]।

नाटकावतार—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक नाटक के बीच में दूसरे का आविर्भाव।

नाटकिया, नाटकी—(वि०, दे०) [हिं० नाटक] नाटक का अभिनय करने वाला।

नाटकीय—(वि०, सं०) नाटक-सम्बन्धी।

नाटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नाट्य=बहाना] प्रतिज्ञा तोड़ देना, वादा पूरा न करना। (क्रि० स०, दे०) नामंजूर या अस्वीकार करना।

नाटा—(वि०, दे०) [सं० नत=नीचा] छोटे डील-डौल का, बावन, बौना। [**नाटी** (स्त्री०)]।

नाटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दृश्य-काव्य जिस में ४ ही अंक होते हैं (नाट्य०)। नाड़ी।

नाटित—(वि०, सं०) जिसका नकल या अभिनय किया गया हो, अभिनीत। (संज्ञा, पु०) अभिनय।

नाट्य—(संज्ञा, पु०, सं०) नटों का कार्य। नाच-गान और वाद्य। अभिनय, स्वाँग।—**कला**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अभिनयकला। [**नाट्यकौशल** (यौ०)]।—**कार**-(संज्ञा, पु०, सं०) नाटक करने वाला, नट।—**मंदिर**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नाट्य-शाला, रंगशाला, प्रेक्षागृह।—**रासक**-(संज्ञा, पु०, सं०) वह रूपक या दृश्य-काव्य जिसमें एक ही अंक हो।—**शाला**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) वह स्थान जहाँ पर नाटक का खेल या अभिनय किया जावे।—**शास्त्र**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नाच-गान और अभिनय की विद्या की पुस्तक, भरत मुनि-प्रणीत एक प्राचीन ग्रंथ।

नाट्याचार्य—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) निर्देशक, अभिनय, नृत्य आदि के बारे में शिक्षा देने वाला आचार्य।

नाट्यालंकार—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नाटक में रोचकता या सौंदर्य बढ़ाने वाला विधान।

नाट्योक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) नाटकों में विशेष-विशेष पुरुषों के लिए संबोधन, जैसे—(पति के लिए) आर्य-पुत्र।

नाट्योचित—(वि०, सं०, यौ०) अभिनय के योग्य।

नाठ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नष्ट] ध्वंस, नाश, अभाव।

नाठना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० नष्ट] नाश, नष्ट या ध्वस्त करना, नठाना (ग्रा०)।

नाठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नष्ट] जिसके वारिस या दायभागी न हों, अकेला, असहाय।

नाठिया, नठिया—(वि०, दे०) [सं० नष्टी] नष्ट, बुरा, नठैल (ग्रा०)।

नाड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नाल] गरदन, ग्रीवा।

नाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाड़ी] इजारबंद, नीवी। देवताओं को चढ़ाने का रंगीन गंडेदार तागा।

नाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नली, धमनी, रग। " नाड़ी धत्ते मरुत्-कोपे जलौकासर्प-योर्गतिम् "

—[भावप्र०] ।—चक्र-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) शरीर का वह स्थान जहाँ से नाड़ियाँ या रगें सब अंगों-प्रत्यंगों को जाती हैं ।—मंडल-(संज्ञा, पु०, सं०) विषुवत् रेखा । देह का नाड़ी-समूह ।—वलय –(संज्ञा, पु०, सं०) समय जानने का एक यंत्र । मुहा०—चलना-जीवित होने के लक्षण प्रगट होना ।—छूट जाना-नाड़ी का न चलना, मृत्यु होना ।—देखना-नाड़ी से रोगी की दशा का विचार करना । घाव या नासूर का छेद । बंदूक की नली । समय का मान जो ६ क्षणों का होता है ।

नात†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जाति] सम्बन्धी, नाते या रिश्तेदार । सम्बन्ध, रिश्ता । नातो (ब्र०) । [**नातगोत** (यौ०, ग्रा०)] ।

नातर, नातरु*—(अव्य०, दे०, यौ०) [हिं० ना +तर, तरु] नहीं तो, और नहीं तो, अन्यथा, "नातरु नेह राम सो साँचो"—तुल० ।

नातवाँ—(वि०, फ़ा०) निर्बल, कमजोर, हीन ।

नाता—(संज्ञा, पु०) [सं० जाति] जाति-सम्बन्ध, लगाव, सम्बंध, रिश्ता ।

नाती—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नप्त] लड़की का लड़का । [**नतिनी, नातिन** (संज्ञा, स्त्री०)]

नाते—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० नाता] सम्बन्ध से, हेतु, वास्ते, लिए ।—दार-(वि०, दे०) [हिं० नाता+दार फ़ा०] सगा-सम्बन्धी, रिश्तेदार । [**नातेदारी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

नात्सी—(संज्ञा, पु०) जर्मनी का एक प्रमुख राजनीतिक दल जिसने द्वितीय विश्वयुद्ध में प्रमुखता प्राप्त की थी ।

नाथ—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वामी, मालिक, प्रभु, पति । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नाथना] नाथने का भाव या क्रिया, पशुओं की नकेल या नाक की डोरी ।—द्वारा-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० नाथद्वार] जयपुर राज्य में वल्लभ संप्रदाय का एक स्थान ।

नाथना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० नाथ्य] पशुओं की नाक छेद कर उसमें रस्सी डालना । नत्थी करना, लड़ी जोड़ना ।

नाद—(संज्ञा, पु०, सं०) आवाज, शब्द । संगीत । वर्णोच्चारण-स्थान । अर्ध चन्द्र ।—मुद्रा-(संज्ञा, स्त्री०) एक तांत्रिक मुद्रा ।—विद्या-(संज्ञा, स्त्री०) संगीत-शास्त्र ।—विन्दु-(संज्ञा, पु०, सं०) विंदुसहित अर्धचन्द्र । योगियों के ध्यान करने का तत्व ।

नादन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नदन] शब्द या ध्वनि करने, गरजने की क्रिया ।

नादना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० नदन] बाजा बजाना । (क्रि० अ०, दे०) बजना, गरजना, चिल्लाना, शब्द करना । (क्रि० अ०) [सं० नन्दन] लहलहाना, लहकना, प्रफुल्लित होना । आरम्भ करना ।

नादली—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) संगयशब की चौकोर टिकिया जो यंत्र के तुल्य बाँधी जाती है ।

नादार—(वि०, फ़ा०) कंगाल, दरिद्र, निर्धन, बुरा, नदार (प्रा०) । [**नादारी** (संज्ञा, स्त्री०)]

नादित—(वि०, सं०) ध्वनित, क्वणित, निनादित—संजात-शब्द, शब्दयुक्त ।

नादिम—(वि०, अ०) शरमिंदा, लज्जित ।

नादिया—(संज्ञा, पु०) [सं० नंदी] नंदी, शिवगण । वह बैल जिसे साथ लेकर लोग भीख माँगते है ।

नादिर—(वि०, फ़ा०) अनोखा, अद्भुत, अजीब । बड़ा कठोर या उग्र ।—शाह-(संज्ञा, पु०) फारस का एक अत्याचारी बादशाह जिसने सन् १७३६ में दिल्ली पर आक्रमण किया था और नगर मे कत्लेआम कराया था ।—शाही-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बड़ा अन्याय, अंधेर, अत्याचार ।

नादिहंद—(वि०, फ़ा०) न देने वाला, जिससे धन उसूल न हो सके, [नादेहन्द (दे०)] ।

नादी—(वि०, पु०) [सं० नादिन] ध्वनि या शब्द करने वाला, बजने वाला । [**नादिनी** (स्त्री०)]

नाधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० नद्ध] जोतना, जोड़ना, सम्बद्ध करना, गूँथना या गूँधना, प्रारंभ करना या ठानना ।

नाधा—(संज्ञा, पु०, दे०) पानी निकलने का मार्ग । बैलों के जुए में बाँधने की रस्सी ।

नान—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) रोटी, चपाती । (संज्ञा, पु०, दे०) पुर खींचने की मोटी रस्सी, नार (ग्रा०) । जोतने, नाधने, कार्य में नियोजित करने की क्रिया । (वि०, दे०) बारीक, महीन, छोटा ।—खताई-(संज्ञा, फ़ा०) टिकिया सी एक सोंधी खस्ता ; ठाई ।—फरोश-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) देखिए नानबाई ।—बाई-(संज्ञा, पु०) [फा० नानबा, नानबफ] रोटियाँ और शोरबा बना कर बेचने वाला ।

नानक—(संज्ञा, पु०, दे०) सिक्ख संप्रदाय के

आदि गुरु जिनका आविर्भाव सं०१५२६ कार्त्तिक की पूर्णिमा को तथा तिरोभाव सन् १५६७ आश्विन कृष्णा दशमी को हुआ ।—**पंथी**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० नानक+पंथी] सिक्ख ।—**शाही**-(वि०, हि०) गुरु नानक सम्बंधी । नानकशाह का चेला या शिष्य या अनुयायी । सिक्ख, [सिख (दे०)] ।

नानकार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) माफी जमीन, बिना कर की भूमि ।

नानकीन—(संज्ञा, पु०, दे०) [चीनी नानकिङ्] एक तरह का सूती कपड़ा ।

नानसरा—(संज्ञा, पु०, दे०) ननिया ससुर, पति या स्त्री का नाना, [ननसार (दे०)] ।

नाना—(वि०, सं०) अनेक प्रकार के, बहुत, अनेक । (संज्ञा, पु०, दे०) माता का बाप या पिता, मातामह । [**नानी** (स्त्री०)] । (क्रि० स०) [सं० नमन] झुकाना, लचाना, नीचा करना । फेंकना, घुसाना । (संज्ञा, पु०, अ०) पुदीना । **अर्क**—, (संज्ञा, पु०) सिरका-सहित पुदीने का अर्क ।—**कारण**-(संज्ञा, पु०, सं०) भाँति-भाँति के कारण, अनेक प्रकार के हेतु ।—**जातीय**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अनेक प्रकार या तरह के । —**ध्वनि**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अनेक प्रकार के शब्द, अनेक भाँति की ध्वनियाँ ।—**प्रकार**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अनेक भाँति, विविध भाँति, बहुविधि ।—**भाँति**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अनेक प्रकार, तरह-तरह, रंग-रंग के । —**मत**-(संज्ञा, पु०, सं०) भिन्न-भिन्न मत । बहु-विधि सिद्धान्त ।—**रूप**-(संज्ञा, पु०, सं०) अनेक भाँति या प्रकार । "सुन्दर खग रव नाना रूपा"—[रामा०] ।—**विधि**-(वि०, सं०, यौ०) अनेक प्रकार या उपाय । "नाना विधि तहँ भई लड़ाई" —[रामा०] ।—**शास्त्रज्ञ**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) विविध विद्या-विशारद, षट् शास्त्री ।—**कार**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अनेक रूप के, विविध भाँति के) ।

नानात्मवादी—(वि०, सं०) सांख्यमत में विश्वास रखनेवाला ।

नानात्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) आत्म-भेद । पृथक् या भिन्न-भिन्न आत्मा ।

नानाथ—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अनेक अर्थ ।

ननिहाल—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० नानी +आल=घर] नाना या नानी का घर या स्थान । [नेनाउर, ननिहाल, ननियाउर (दे०)] ।

नानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) माता की माता, मातामही । **मुहा०—याद आना या मर जाना**—आफत-सी आ जाना, दुःख-सा पड़ जाना ।

नानुकर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ना+करना] नाहीं या इन्कार करना ।

नान्ह†—(वि०, दे०) [सं० न्यून] नन्हा, लघु, छोटा । महीन, पतला, नीच, तुच्छ । **मुहा०**—(**नन्हा**) **कातना**—बहुत ही महीन बारीक या हलका कार्य करना ।

नान्हक—(संज्ञा, पु०) [दे० नानक] देखिए नानक ।

नान्हरिया*‡—(वि०, दे०) [हि० नान्ह] छोटा ।

नान्हा†*—(वि०, दे०) [हि० नन्हा] नन्हा, छोटा ।

नाप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मापन] माप, तौल, परिमाण ।—**जोख,—तौल**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० नापना+जोखना=तौल] मात्रा या परिमाण, जो तौल-नाप कर ठहराई जावे ।

नापना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मापन] मापना । किसी पदार्थ का परिमाण जानना । **मुहा० सिर**—, सिर काटना । **रास्ता**—, चलते बनना ।

नापित—(संज्ञा, पु०, सं०) नाऊ, नाई, हज्जाम ।

नाफा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कस्तूरी की थैली ।

नाबदान—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० ना+आब+दान] नाली [नरदा, नरदवा, पनाला, पनारा (दे०)] ।

नाबूद—(वि०, फ़ा०) नष्ट-भ्रष्ट, ध्वस्त ।

नाभ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नाभि] नाभि, नाभी, तोंदी, ढोंढ़ी । शिव । एक राजा । "पद्मनाभं सुरेशम् "—[रामा०] ।

नाभादास—(संज्ञा, पु०, दे०) भक्तमाल के लेखक एक वैष्णव साधु ।

नाभाग—(संज्ञा, पु०, सं०) एक सूर्यवंशीय राजा ।

नाभि—(संज्ञा, सं०) गाड़ी के पहिये के बीच का खंड । चक्र का मध्य भाग । नाभी, तोंदी । कस्तूरी । (संज्ञा, पु०) प्रधान राजा, व्यक्ति या पदार्थ, गोत्र, क्षत्रिय ।—**च्छेदन**-(संज्ञा, पु०) नाल काटने का कार्य ।—**ज,—जन्मा**-(संज्ञा, पु०) ब्रह्मा (कथा है कि ब्रह्मा का जन्म विष्णु की नाभि से हुआ) ।—**भू**-(संज्ञा, पु०) ब्रह्मा ।—**संबंध**-(संज्ञा, पु०)

एक ही माँ से अथवा एक ही गोत्र में जन्म लेने का संबंध।

नाम—(संज्ञा, पु०) [सं० नामन्] संज्ञा, आख्या, किसी पदार्थ का बोधक शब्द, नाँव (ग्रा०)। "प्रति धड़कन में नाम तुम्हारा लेते"—[तारकवध]। "नाम लेत अघ सिंधु सुखाहीं"—[रामा०]। **—करण (कर्म)**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) १६ संस्कारों में से बच्चे का नाम रखने का एक कर्म। "नामकरन कर अवसर जानी"—[रामा०]।**—कीर्त्तन**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नवधा भक्ति का एक भेद, भगवान का नाम लेना।**—जद**-(वि०, फ़ा०) किसी का नाम किसी काम के लिए चुन या निश्चित कर लेना।**—देव**-(संज्ञा, पु०, सं०) मरहठी के एक विख्यात विष्णु-भक्त कवि।**—धराई**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० नाम+धराना] निंदा, अयश, अपकीर्ति।**—धाम**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० नाम+धाम] नाम और स्थान। **—ग्राम**-(संज्ञा, पु०) पता, ठिकाना।**—धारी**-(वि०, सं०, यौ०) नामक, नाम वाला, नामी। **—धेय**-(संज्ञा, पु०, सं०) नाम, संज्ञा। (वि०) नाम वाला, नाम का। "चौरैः प्रभोवलिभिरिन्द्रिय नामधेयैः"—शंकरा०।**—निशान (नामोनिशाँ)**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०, यौ०) नाम और पता।**—बोला**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० नाम+बोलना] ईश्वर का नाम लेने वाला, भक्त।**—लेवा**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० नाम+लेना] नाम लेने या याद करने वाला। वारिस, उत्तराधिकारी।**—वर**-(वि०, फ़ा०) जिसका नाम बहुत विख्यात या प्रसिद्ध हो, प्रसिद्ध, विख्यात, नामी। [**नामवरी** (संज्ञा, स्त्री०)]।**—शेष**-(वि०, सं०, यौ०) जिसका केवल नाम ही शेष हो, ध्वस्त, नष्ट, मृत। [**नामी** (वि०)]। मुहा०**—उछालना**-बदनामी या निंदा करना।**—उठ जाना**-चिह्न मिट जाना। (किसी बात का)**—करना**-कोई कार्य नाममात्र को करना, पूर्ण रूप से न करना। (किसी का)**—करना, होना**-किसी की ख्याति या प्रशंसा करना, होना।**—का**-नामधारी, कहने भर को। **—के लिए या—को**-थोड़ा-सा, कहने भर को, यथार्थ।**—चढ़ना (चढ़ाना)**-नामावली में नाम लिख (लिखा) जाना।**—चलना**-नाम की याद बनी रहना।**—भी न रहना**-कोई भी चिह्न न रहना।**—जपना**-बारम्बार नाम लेना, सहारे रहना।**—धरना**-दोष लगाना, निंदा या बदनामी करना, ऐब बताना।**—धराना**-नामकरण कराना। बदनामी कराना, निंदा कराना।**—न लेना**-बचना, दूर रहना, चर्चा भी न करना।**—निकल जाना**-किसी बात के लिए विख्यात या बदनाम हो जाना। (किसी के)**—पर**-किसी के हेतु या निमित्त। (किसी के)**—पड़ना**-किसी के नाम के आगे लिखा जाना, जिम्मेदार रखा जाना। (किसी के)**—पर मरना या मिटना**-किसी के प्रेम में लीन होना या खपना।**—पर मरना**-ख्याति या मर्यादा के लिए मरना। (किसी के)**—पर बैठना**-किसी के भरोसे पर संतोष कर बैठ रहना। (किसी का)**—बद करना**-कलंक लगाना, बदनामी करना।**—बाकी रहना**-सदा यश रहना। केवल नाम ही रह जाना, और कुछ भी नहीं।**—बिकना**-नाम प्रसिद्ध या विख्यात होने से मान-सम्मान होना। **—मिटना**-नाम या यश का मिट जाना, सर्वथा विनष्ट, लुप्त या अभाव हो जाना।**—मात्र**-नाम भर को, थोड़ा। अल्प। (कोई)**—रखना**-नाम निश्चित करना, नाम-करण करना।**—लगाना**-किसी दोष या अपराध के संबंध में नाम लेना, दोष मढ़ना, अपराध लगाना। (किसी के)**—लिखना**-किसी के नाम के आगे लिखना या टाँकना, किसी के जिम्मे लिखना। (किसी का)**—लेकर**-नाम के प्रभाव से, नाम को याद कर के।**—लेना**-नाम कहना या जपना, गुण गाना, चर्चा करना।**—निशान (नामोनिशाँ)**-खोज, चिह्न, पता। "बाकी मगर है अब भी नामो-निशां हमारा"—इक०। **किसी—से**-किसी शब्द के द्वारा विख्यात होकर। **किसी के—से**-चर्चा से, किसी से संबंध बता कर, यह कहना कि वह कार्य किसी की ओर से है, किसी को हकदार या स्वामी बनाकर, किसी के भोग या उपयोग के लिए।**—से काँपना**-नाम सुनते ही डर जाना या भय मानना।**—होना**-दोष या कलक लगना। ख्याति, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति होना।**—कमाना या करना**-ख्याति या प्रसिद्धि प्राप्त करना, विख्यात या मशहूर होना।**—को मर मिटना**-सुकीर्ति या सुयश के हेतु निज को तबाह करना।**—जगाना, जगना**-निर्मल यश फैलाना, रहना।**—डुबाना (डूबना)**-सुयश और सुकीर्ति नष्ट करना (होना)।**—पर धब्बा लगाना**-बदनामी करना, यश में कलंक लगाना।**—निकालना**-विख्यात होना, नेकनाम होना।**—पाना**-प्रसिद्ध होना,

कीर्ति पाना।—**रह जाना**–यश या कीर्ति की चर्चा रह जाना।

नामक—(वि०, सं०) नाम वाला, नाम से विख्यात या प्रसिद्ध।

नामांकित—(वि०, सं०, यौ०) जिस पदार्थ पर किसी का नाम लिखा, छपा या खोदा हो।

नामा—(वि०, दे०) [सं० नामन्] नामधारी, नामक। (**संज्ञा**, पु०) [प्रान्ती०] रुपये आदि का माँज।

नामालूम—(वि०, पु०, फ़ा०) अज्ञात, जो ज्ञात या मालूम न हो।

नामावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नामों की पंक्ति, पत्र या सूची। रामनामी वस्त्र।

नामित—(वि०, पु०, सं०) नवाया, लचाया हुआ।

नामी—(वि०) [हि० नाम+ई प्रत्य० अथवा सं०नामन्] नामवाला, नामधारी, विख्यात, प्रसिद्ध।

नामूसी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० ना+मूस=इज्जत] अप्रतिष्ठा, बेइज्जती, बदनामी।

नाम्ना—(वि०, पु०, सं०) नाम वाला। [**नाम्नी** (स्त्री०)]।

नायँ, नावँ*—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० नाम] नाम। (अव्य०, दे०) नहीं।

नाय—(पू० का०, क्रि० स०) [दे० नाना] फैला कर, नवा कर, नाइ (ब्र०)।

नायक—(संज्ञा, पु०, सं०) नेता, अगुआ, स्वामी, सरदार, अधिपति। वह पुरुष जिसके चरित्र पर नाटक बना हो। संगीत में कलावन्त। एक छंद (पिं०)। "देखत रघुनायक जन-सुखदायक संमुख होइ कर जोरि रही "—[रामा०] "तरुन सुघर सुन्दर सकल काम-कलानि प्रवीन। नायक सो 'मतिराम' कह, कवित-रीति-रस-लीन"। [**नायिका** (स्त्री०)]

नायन, नाइन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नाई] नाइनि, नाई की स्त्री, नाउनि, नउनिया (ग्रा०)।

नायब—(संज्ञा, पु०, अ०) सहायक, मुनीम। [**नायबी, नयाबत** (संज्ञा, स्त्री०, पु०)]

नायाब—(वि०, फ़ा०) दुर्लभ, अत्युत्तम, श्रेष्ठ।

नायिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अत्यन्त सुन्दरी रूप-गुण-युक्त स्त्री, वह प्रधान स्त्री जिसका चरित्र नाटक में हो। "उपजत जाहि बिलोकि कै, चित्त बीच रस-भाव। ताहि बखानत नायिका, जो प्रवीन कविराव"—मति०।

नायिकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नायक की स्त्री। दूती, कुटनी। नायक का भाव या काम।

नारंग—(संज्ञा, पु०, सं०) नारंगी।

नारंगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नागरंग, अ० नारंज] नारंगी का पेड़ या फल, नारंगी के छिलके सा पीला-लाल मिला रंग।

नार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नाल] गरदन, ग्रीवा। **मुहा०—नवाना या नीचा करना**–सिर या गर्दन झुकाना, नीची दृष्टि करना। जुलाहों की ढरकी, नाल। (संज्ञा, पु०) आँवलनाल। नाला। बहुत मोटा रस्सा। इजारबन्द, जुवा जोड़ने की रस्सी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नारी] स्त्री। एक छन्द (पिं०)। झुंड (पशुओं का)।

नारक—(वि०) [सं० नरक] नरक-सम्बन्धी, नरक का।

नारकी—(वि०) [सं० नारकिन्] नरक में जाने या रहने के योग्य, पापी। "पाव नारकी हरिपद जैसे"—[रामा०]।

नारकीय—(वि०, सं०) नरक से सम्बन्धित, अत्यन्त निकृष्ट, अधम, अत्यन्त अघोड़ी।

नारद—(संज्ञा, पु०, सं०) एक देवर्षि जो ब्रह्मा के पुत्र और भगवद् भक्त थे। (वि०) झगड़ा कराने वाला पुरुष। [**नारदी** (वि०)]।—**पुराण**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) तीर्थव्रत-माहात्म्यपूर्ण एक पुराण।

नारदीय—(वि०, सं०) नारद-सम्बन्धी।

नारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ज्ञान] थाह लेना, पता लगाना। "ये मन ही मन मोकों नारति"—सूबे०।

नारबेवार†—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० नार+विवार=फैलाव सं०] जन्मे हुए बच्चे की नाल, नारा-पेटी।

नारसिंह—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) नृसिंह, नरसिंह, नरहरि। एक तंत्र। एक उपपुराण। (**वि०, सं०**) नृसिंह-सम्बन्धी।

नारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाल] नीवी, इजारबन्द, कमरबन्द। कुसुंभ-सूत्र। हाल के जुएँ की रस्सी। नाला। प्रचार के लिए सिद्धान्त-सूत्र।

नाराच—(संज्ञा, पु०, सं०) बाण, शर, तीर। बुरा दिन, दुर्दिन, जब बादल छाया हो और उपद्रव होते हों। एक वर्ण वृत्त-ज, र, ज, र, ज, गुरु वर्ण का, महामालिनी, तारका, एक छन्द (पिं०)।

नाराचिका—(संज्ञा, स्त्री०) सुनारों का काँटा-विशेष, छोटा नाराच।

नारायण—(संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर, विष्णु। पौषमास। अ अक्षर। एक उपनिषद। एक वाण। "नर-नारायण की तुम दोऊ"—[रामा०]।

नारायणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा देवी। गंगा। लक्ष्मी। श्री कृष्ण की सेना जो दुर्योधन को दी गई थी। शतावरि (औष०)। "कुरुराज ने नारायणी तब सेन आतुर है लई"—मैथिली०।

नारायणीय—(वि०, सं०) नारायण-सम्बन्धी।

नारायन, नरायन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नारायण] नारायण।

नाराशंस—(संज्ञा, पु०) तीन पितर जिनके नाम हैं ऊम, और्व और काव्य। इन पितरों को सोमरस देने का चमस अथवा चमचा। पितरों के लिए चमस में रक्षित सोमरस। मंत्र जिसमें मनुष्यों का स्तुतिगान किया गया है। प्रशंसा।

नाराशंसी—(संज्ञा, पु०, सं०) वह पुस्तक जिसमें मनुष्यों की प्रशंसा हो।

नारि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० नारी] औरत, स्त्री। नाड़ी।

नारिकेल—(संज्ञा, पु०, सं०) नारियल।

नारियल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नारिकेल] नारियल का पेड़ या फल। उसका हुक्का।

नारी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्त्री, औरत। "नर नारी अधिकार नहीं सम माना"—[तारकवध]। एक वृत्त। *†(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नाड़ी। नाली। एक पक्षी। जुए की रस्सी।

नारू—(संज्ञा, पु०, दे०) जुआँ, जूँ, ढील। नहरुआ रोग।

नालंदा—(संज्ञा, पु०, सं०) बौद्धों का पुराना विश्वविद्यालय या क्षेत्र, जो पटना से ६० मील पर दक्षिण की ओर था।

नाल—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमल, कमलिनी आदि फूलों की पोली डंडी। पौधों का डंठल। नली, नल। बन्दूक की नली। सुनारों की फुँकनी। जुलाहों की नली, छूँछी। (संज्ञा, पु०) आँवला। नारा। लिंग। हरताल। पानी बहने की जगह। (संज्ञा, पु०, अ०) घोड़े आदि के पाँवों और जूतों में लगाने की लोहे की नाल। व्यायामार्थ पत्थर का गोल चक्कर। वह रुपया जो जुआरी अड्डा रखने के लिए देते हैं।—**कटाई**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) तत्काल जन्मे बच्चे के नाल काटने का कार्य या मजदूरी।—**बंद**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [अ० नाल + बन्द फ़ा०] घोड़ों या बैलों के पैरों या जूतों में नाल बाँधने या जड़ने वाला। [**नालबंदी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

नालकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नाल= डंड] पालकी, शिविका, डोली।

नाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाल] जल-प्रवाह-मार्ग, बरसाती पानी के नदी आदि में बहकर जाने की बड़ी नाली, छोटी नदी, नारा, नरवा (ग्रा०)। "नाला जो था क्षुद्र..."—[तारकवध]। [**नाली** (स्त्री० अल्पा०)]

नालिक—(संज्ञा, पु०, दे०) अग्न्यस्त्र, बंदूक, तोप।

नालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा डंठल या नाल। नली, नाली, नालिका। एक गंध द्रव्य।

नालिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) फर्याद, निवेदन।

नालिसिंदुक—(संज्ञा, पु०, दे०) सँभालू चावल।

नाली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० नाला] पानी बहने का पतला-सा मार्ग, मोरी, ढरका, नली। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाड़ी, धमनी। करेमू की भाजी। घड़ी। कमल। छोटा नाला।

नालीक—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल। "याति नालीक-जन्मा"—[भो० प्र०]।

नावँ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नाम] नाम।

नाव—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नौका] नौका, नइया, नैया (ग्रा०) "माँगत नाव करारे है ठाढ़े"—[कविता०]।

नावक—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक छोटा तीर, बाण, किरात। "सतसैया के दोहरा, ज्यों नावक के तीर"। शहद को मक्खी का डंक। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाविक] मल्लाह, केवट। "ऐ नावक पतवार छोड़ दे"।

नावना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० नामन] नवाना, लचाना, झुकाना। डालना या फेंकना, गिराना। घुसाना, प्रविष्ट करना, उड़ेलना।

नावर, नावरि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नाव] नाव, नौका, नाउर (ग्रा०) नाव का खेल, नावनवरिया। "जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं"—[रामा०]। "बहै करिया तिन नाउर"—गिरि०।

नाविक—(संज्ञा, पु०, सं०) केवट, मल्लाह।

नाश—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी वस्तु का लोप या लय [नास (दे०)] ।—**कारी,—करी**—(वि०, पु०, स्त्री०) [सं० नाश+कारिन्] नाश करने वाला, नाशक ।

नाशक—(वि०, सं०) नाश या ध्वंस करने वाला, मारने या वध करने वाला, मिटाने या दूर करने वाला, नाशकारक ।

नाशन—(संज्ञा, पु०, सं०) हनन, मारण, ध्वंसकरण ।

नाशना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० नासना] नासना, नष्ट करना ।

नाशनीय—(वि०, सं०) नष्ट करने योग्य । नष्ट होने वाला ।

नाशपाती—(संज्ञा, स्त्री०, तु०) एक प्रसिद्ध फल । " नासपाती खातीं ते बनासपाती खाती हैं "—भूषण ।

नाशवान—(वि०, सं०) अनित्य, नश्वर ।

नाशाद—(वि०, फ़ा०) अप्रसन्न ।

नाशित—(संज्ञा, पु०, सं०) ध्वंसित, हत, उच्छेदित ।

नाशितव्य—(वि०, सं०) नाश या नष्ट करने योग्य ।

नाशी—(वि०, पु०) [सं० नाशिन्] नाशक, नाशकारी, नश्वर । [**नाशिनी** (स्त्री०)]

नाश्ता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जल-पान ।

नास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नासा] सूँघनी, नाश ।—**दान**—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० नास+फ़ा० दान, सं० आधान] सुँघनी रखने की डिबिया । **मुहा०—लेना**—सूँघना ।

नासना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० नाशन] नाश या नष्ट करना, मार डालना । "संसृत, सन्निपात दारुण दुख बिन हरिकृपा न नासै"—[विनय०] ।

नासत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अश्विनीकुमार ।

नासा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाक, नासिका, नथुना । "अशुभ रूप श्रुति नासाहीना"—[रामा०] । [**नस्य** (वि०)] ।—**पाक**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नाक का एक रोग ।—**पुट**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नथुना ।—**भेदन**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नक-छिकनी घास । नाक छेदने वाला । नाक छेदना ।—**मल**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नाक का मैल ।

नासा-वामावर्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नथ-बेसर, नथुनी, नथ ।

नासायोनि—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नपुंसक ।

नासिक—(संज्ञा, पु०) [सं० नासिक्य] महाराष्ट्र देश में एक नगर या तीर्थ स्थान ।

नासिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाक, नासा, " मुख नासिका श्रवण की बाटा "—[रामा०] ।

नासी*—(वि०, पु०, दे०) [सं० नाशिन्] नासक, [नाशक (दे०)] । नाश करने वाला । [**नासिनी** (स्त्री०)] ।

नासीर—(संज्ञा, पु०, सं०) अग्रसर, अग्रगामी । सेनापति के आगे चलने वाली सेना । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) नस ।

नासूर—(संज्ञा, पु०, अ०) नस का पुराना घाव जिसमें से मवाद निकलता हो और लम्बा छेद हो गया हो । नाड़ी व्रण ।

नास्ति—(क्रि० अ०, सं०, यौ०) नहीं है, अविद्यमानता, अभाव । "सत्ये नास्ति भयं क्वचित्" [स्फु०] ।

नास्तिक—(संज्ञा, पु०, सं०) वेदों की प्रामाणिकता, परमेश्वर तथा परलोक को न मानने वाला, अनीश्वरवादी, वेदनिन्दक, शरीर-आत्मवादी पाखंडी । बौद्ध ।—**दर्शन**—(संज्ञा पु०) चार्वाक, योगाचार, माध्यमिक, सौत्रांतिक, वैभाषिक और जैन दर्शन को नास्तिक दर्शन कहते हैं ।—**वाद**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) परमेश्वर, परलोक और वेद-प्रमाण न मानने का सिद्धान्त । [**नास्तिकवादी** (वि०)] ।

नास्तिकता—(संज्ञा, दे०, स्त्री०) [सं० नास्तिक्य] परमेश्वर, परलोक, वेद को न मानने का भाव ।

नास्य—(वि०, सं०) नासा-संबंधी, नाक में पैदा होने वाला । (संज्ञा, पु०, सं०) बैल को नाक में लगाने की रस्सी, नाथ ।

नाह*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाथ] स्वामी, पति, प्रभु, अधिपति, मालिक । "कह मुनि सुनु नरनाह प्रवीना"—[रामा०] ।

नाह-नूह*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नाहीं] नहीं, नाहीं, अस्वीकार, इनकार, नाहींनूहीं ।

नाहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नाहरि] व्याघ्र, बाघ, सिंह, शेर । (संज्ञा, पु०, दे०) टेसू का फूल । "नाह गरजि नाहर गरज, बोल सुनायो टेरि"—बिहारी ।

नाहरू—(संज्ञा, पु०, दे०) नहरुवा रोग । नाहर, सिंह, बाघ । बाज (काश्मीर) । चमड़े का टुकड़ा । मोट खींचने का रस्सा । "मारसि गाय नाहरू लागी"—[रामा०] । "बाज नाहरू कहत है, काश्मीर शुभदेश" ।

नाहल—(संज्ञा, पु०, दे०) म्लेच्छों की एक जाति ।

नाहिं, नाहि—(अव्य०, दे०) नाही, नहीं, नाहिन ।

नाहिनै*—(अव्य०, दे०) [हि० नाही] नहीं है ।

नाही—(अव्य०. दे०) [हि० नही] नहीं ।

नाहुषि—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा नहुष का पुत्र, ययाति ।

नित, नित*—(क्रि० वि०, दे०) [सं० नित्य] नित्त, नित्य, सदा, सर्वदा ।

निंद*—(वि०, दे०) [सं० निंद्य] निन्दनीय, निन्दा-योग्य । "नहिं अनक सुत निंद"—वृं० ।

निंदक—(संज्ञा, पु०, सं०) निंदा करने वाला ।

निंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) निंदा करने का कार्य । [**निंदनीय, निंदित** (**वि०**)]

निंदना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० निंदन] निंदा करना, बुराई या बदनामी करना ।

निंदनीय—(वि०, सं०) बुरा, गर्ह्य, निन्दा करने के योग्य ।

निंदरना—(क्रि० स०, दे०) [हि० निंदना] निंदा करना, निंदना ।

निंदरिया*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० निद्रा] नींद, निंदिया (ग्रा०) ।

निंदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी की बुराई करना, अपवाद, बदनामी । "जहं कहु निंदा सुनहिं पराई" —[रामा०] । [नींद (दे०)] ।

निंदासा—(वि०, पु०, दे०) [हि० नींद + आसा प्रत्य०] उनींदा, नींद से व्यथित, जिसे नींद आ रही हो ।

निंदास्तुति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) निंदा के बहाने प्रशंसा, व्याजस्तुति, हजोमली (फ़ा०) ।

निंदित—(वि०, पु०, सं०) बुरा, दूषित, खोटा, जिसकी लोग निंदा करें ।

निंदिया‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नींद] नींद ।

निंद्य—(वि०, सं०) निंदनीय, निंदा करने योग्य, खोटा, दूषित, बुरा ।

निंब, निंबा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नीम का पेड़, नींब, नींबी (ग्रा०) । "जो मुख नींब चबाय"— वृं० ।—**तरु**-(संज्ञा, पु०) नीम का पेड़ ।

निंबरौरी—(संज्ञा, स्त्री०) नीम का फल, निमौरी ।

निंबरिया—(संज्ञा, दे०, स्त्री०) नीम के पेड़ों की बगिया ।

निंबार्क—(संज्ञा, पु०, सं०) आचार्य्य निंबादित्य । उनके द्वारा प्रवर्तित वैष्णव सम्प्रदाय ।

निंबू—(संज्ञा, पु०, सं०) नींबू, निंबुआ (ग्रा०), [निम्बू (दे०)] ।

निः—(अव्य०) [सं० निस] एक उपसर्ग— बिना, नहीं, जैसे—कारण से निष्कारण, छल से निश्छल ।

निःशंक, निश्शंक—(वि०, सं०, यौ०) निडर, निर्भय, बेधड़क, अशंक ।

निःशब्द—(वि०, सं०) शब्द-रहित, शान्त ।

निःशून्य—(वि०, सं०) बिलकुल शून्य, खाली ।

निःशेष—(वि०, सं०) संपूर्ण, समस्त, समूचा, सब, सर्व, अशेष, शेष रहित, सारा ।

निःश्रेणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नसेनी, काठ की सीढ़ी, सिड्ढी, सिढ़िया (ग्रा०) ।

निःश्रेयस—(वि०, सं०) कल्याण, मुक्ति, मोक्ष । भक्ति । विज्ञान । शिव । (वि०) सर्वश्रेष्ठ । "यतो-ऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः"—[वैश जी०] ।

निःश्वास—(संज्ञा, पु०, सं०) नाक से निकलने वाली या निकाली वायु, साँस । "निश्वास नैसर्गिक सुरभि यों"—मैथिली० ।

निःसंकोच—(क्रि० वि०, सं०) बेखटके, बेधड़क, बिना संकोच ।

निःसंग—(वि०, सं०) निर्लिप्त, निःस्वार्थ, बेलगाव ।

निःसंतान—(वि०, सं०) लावल्द, संतानहीन, निपूता, निपुत्री, निःसंतति ।

निःसंदेह—(वि०, सं०) बेशक, संदेह-रहित ।

निःसंशय—(वि०, सं०) निःसंदेह, बेशक ।

निःसत्व—(वि०, सं०) सार या तत्व-रहित ।

निःसरण—(संज्ञा, पु०, सं०) रास्ता, मार्ग, निकास । निर्वाण, मरण, मुक्ति ।

निःसीम—(वि०, सं०) अपार, अनंत, असीम ।

निःसृत—(वि०, सं०) निकाला हुआ, बहिर्भूत ।

निःस्पृह—(वि०, सं०) आकांक्षा, अभिलाषा या इच्छा-रहित, निर्लिप्त, निर्लोभ ।

निःस्वार्थ—(वि०, सं०) बेमतलब, परोपकार, स्वार्थ-रहित ।

नि—(उप, सं०) इसके कारण शब्द में समूह या संघ, अधोभाव, घनता, आदेश, नित्यता, कौशल,

बंधन, अंतर्भाव, समीपता, तिरस्कार, दर्शन आदि का भाव संचारित होता है। (संज्ञा, पु०, सं०) निषाद स्वर का संकेत (सं०)।

निअर, नियर†*—(अव्य०, दे०) [सं० निकट] पास, निकट, समीप। नेरे, निअरे (ग्रा०)। (वि०, दे०) समान, तुल्य, बराबर।

निअराना, नियराना†*—(क्रि० स०, दे०) [हि० निअर] पास, समीप या निकट जाना या आना। (क्रि० अ०, दे०) निकट आना या पास होना या पहुँचना। "बरसहिं जलद भूमि निअराए"—[रामा०]।

निआउ, नियाव‡*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० न्याय] न्याय, [न्याव (दे०)]।

निआन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निदान] अंत, अखीर। (अव्य०, दे०) अंत में।

निआमत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अलभ्य, अमूल्य, बहुमूल्य या बढ़िया वस्तु। **लो०**—"तंदुरुस्ती हजार न्यामत है"।

निकंटक*—(वि०, दे०) [सं० निष्कंटक] निष्कंटक, शत्रु-रहित, निर्वाध।

निकंदन—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० नि+कंदन= नाश, वध] नाश, विनाश, वध। "कंस निकंदन देवकिनंदन"—[स्फु०]।

निकट—(वि०, सं०) समीप, पास। (क्रि० वि०, सं०) समीप, पास। लिए, वास्ते। **मुहा० किसी के—**, किसी के विचार, समझ या लेखे में। **—वर्त्ती**-(वि०) [सं० निकट+वर्तिन्] समीप, निकट या पास वाला। [**निकटर्तिनी (स्त्री०)**] **।—स्थ**-(वि०, सं०) समीप या पास का।

निकटता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नजदीकीपना, समीपता, [**नैकट्य** (सं०)]।

निकम्मा—(वि०, दे०) [सं० निष्कर्म्म] बे-काम, व्यर्थ, बेमसरफ, निष्प्रयोजन। [**निकम्मी** (स्त्री०)]।

निकर—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, राशि, निधि। "निशिचर-निकर-पतंग"—[रामा०]।

निकरना†*—(क्रि० अ०) [हि० निकलना] निकलना। [**निकराना, निकरवाना** (प्रेरणा० रूप)]

निकर्त्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) फाड़ना, चीरना, काटना।

निकम्मा—(वि०, दे०) [सं० निष्कर्म्म] आलसी, निकम्मा।

निकर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) खेलने-कूदने का मैदान। आंगन। पड़ोस। परती जमीन जो जोती न गई हो।

निकलंक—(वि०, दे०) [सं० निष्कलंक]। निर्दोष। "जिमि निकलंक मयंक लखि गनै लोग उतपात"—वृं०।

निकलंकी—(संज्ञा, पु०) [सं० निष्कलंक] विष्णु का अवतार, कल्कि अवतार। (वि०, दे०) कलंक-हीन।

निकल—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) एक धातु।

निकलना—(क्रि० अ०) [हि० निष्कासन] कहीं से बाहर आना, प्रगट या निर्गत होना, उदय होना। "सिंह मॉद से नहीं निकलने पाये"—[तारकवध]। पार होना। उतरना, जाना। दिखाई पड़ना। निश्चित, आरम्भ या सिद्ध होना। फैलाव होना। छूटना, मुक्त होना। आविष्कृत होना। हिसाब-किताब होने पर कुछ धन देय होना। देह के ऊपरी भाग मे उत्पन्न होना। बचा जाना, कह कर न करना, नटना (प्रान्ती०)। खपना, बिकना, व्यतीत होना। घोड़े बैल आदि का सवारी अथवा जुताई मे लगने के लिए शिक्षण प्राप्त करना। **मुहा०—(-ना) चलना**-अति करना, इतराना। अपने सामर्थ्य से अधिक कार्य करना। भाग चलना।—**(-ना) जाना**-आगे बढ़ जाना या चला जाना। नष्ट हो जाना। घट जाना, भाग जाना, अलग या पार हो जाना। **स्त्री का—(-ना) जाना**-किसी पुरुष के साथ अपना घर-बार छोड़ कर चला जाना।

निकलवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० निकालना का प्रेरणा० रूप] निकालने का कार्य दूसरे से कराना।

निकष—(संज्ञा, पु०, सं०) कसौटी, शुद्धता और अशुद्धता का बोध कराने वाली कसौटी।

निकषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रावण आदि की मॉं। (अव्य) निकट, पास।

निकसना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० निकलना] निकलना। [**निकसाना, निकसवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

निकाई*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निकाय] समूह। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० नीक] भलाई, सुन्दरता। खेत से घास आदि काट कर साफ करना, निकवाई (ग्रा०)।

निकाज—(वि०, दे०) [हिं० नि+काज] निकम्मा, बेकाम।

निकाना—(क्रि० स०, दे०) खेत से घास आदि छील कर साफ करना, निकावना (ग्रा०)। "हरि अंतराय लौ निकाय हर्‌यौ तल तें"—सरस। [**निकवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

निकाम—(वि०, दे०) [हिं० नि+काम] खराब, बुरा, निकम्मा, व्यर्थ। " निपट निकाम बिन राम बिसराम कहाँ"—पद्मा०।

निकामन—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिलाषा, इच्छा, कामना।

निकाय—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, राशि, झुंड, [गिल्ड]। " लव-निमेष महँ भुवन निकाया" —[रामा०]।

निकारना*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निकालना] निकालना।

निकालना—(क्रि० स०, दे०) [सं० निष्कासन] भीतर से बाहर लाना। मिलित को अलग करना। पार करना, ले जाना। निश्चित या आरम्भ करना। खोलना, चलाना। घटाना, छुड़ाना, बरखास्त करना, हटाना। बेचना। सिद्ध करना, जारी या आविष्कृत करना। ऋण निश्चित या बरामद करना। पशुओं को सवारी आदि ले चलने की रीति सिखाना। सुई से बेल-बूटे आदि कपड़े पर बनाना।

निकाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० निकालना] निकालने का कार्य। किसी स्थान से निकाले जाने की सजा, निष्कासन [**देशनिकाला** (यौ०)]

निकाश—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षितिज। निकट, सदृश, दृश्य।

निकाष—(संज्ञा, पु०, सं०) रगड़ना, खुरचना।

निकास—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० निकासना] निकासने अथवा निकसने की क्रिया का भाव। द्वार, दरवाजा। मैदान। उद्‌गम। कुटुम्ब का मूल। रक्षा का यत्न, छुटकारे का उपाय। निर्वाह की रीति, सिलसिला। प्राप्ति की रीति। निकासी, लाभ।—**पत्र**—(संज्ञा, पु०) बही जिसमे आय-व्यय तथा अवशिष्ट का ब्योरा रहता है।

निकासना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निकालना] निकालना।

निकासी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० निकास] निकालने का भाव या कार्य। रवानगी, प्रस्थान, कूच। मालगुजारी देने पर जमींदार को लाभ, मुनाफा। माल की रवानगी, बिक्री, चुंगी। वर या बारात का ब्याह के लिए घर से प्रस्थान (रीति)।

निकासू—(वि०, दे०) निकाला हुआ, बहिष्कृत, निष्कासित। (संज्ञा, पु०, दे०) द्वार, निकास।

निकास्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) थूनी, टेक, स्तंभ, खम्भा, थाम (प्रान्ती०)।

निकाह—(संज्ञा, पु०, अ०) मुसलमानों के ब्याह या विवाह की रीति। **मुहा०—पढ़ना, पढ़ाना**—ब्याह करना, कराना।

निकियाना—(क्रि० स०, दे०) नोच-नाच कर टुकड़े-टुकड़े या धज्जी-धज्जी अलग करना।

निकिष्ट†*—(वि०, दे०) [सं० निकृष्ट] नीच, तुच्छ, अधम।

निकुंज—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) लताभवन, लता-गृह, घनी लताओं से आच्छादित स्थान। "गतोऽपि दूर यमुना-निकुंजे"—[स्फु०]।

निकुंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) कुम्भकर्ण का पुत्र। रावण का मंत्री, कुम्भ का भाई। एक शिवगण। एक विश्वेदेव। "कुंभोदरं नाम निकुम्भ-तुल्यम्"—[रघु०]। " निकुम्भ कुम्भ धावहीं "—[स्फु०]।

निकुंभित—(संज्ञा, पु०, सं०) नृत्य की क्रिया-विशेष।

निकुंभिला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मेघनाद का यज्ञ-स्थान, राक्षसों का देवालय।

निकुच—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़हल।

निकुटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटी इलायची।

निकूल—(संज्ञा, पु०, सं०) नदी का किनारा।

निकृत—(वि०, सं०) असम्मानित, तिरस्कृत। नीच, पापी।—**प्रज्ञ**—(वि०) दूषित बुद्धिवाला।—**मति**—(वि०) निंदित विचारों वाला।

निकृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अधर्म, पाप, कुकर्म, बुरा काम।

निकृष्ट—(वि०, सं०) नीच, तुच्छ, अधम।

निकृष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नीचता, तुच्छता, बुराई।

निकेत—(संज्ञा, पु०, सं०) भवन, मंदिर, घर, स्थान, [निकेता, निकेतू (दे०)]।

निकेतन—(संज्ञा, पु०, सं०) मन्दिर, भवन, घर, मकान, स्थान, जगह।

निकोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) संकोचन।

निकोना, निकोलना—(क्रि० स०, दे०) छीलना, ऊपर का छिलका हटाना।

निकोटना—(क्रि० स०, दे०) चुटकी काटना, नोचना।

निकोसना—(क्रि० स०, दे०) खिसियाना, दाँत दिखाना। अपमान करना।

निकौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० निकाना] निकाने का कार्य या मजदूरी, निकाई, निकवाई। लो०—"कहत की बात लजौनी। सब से बुरी निकौनी"।

निक्की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लोहे के पलड़ों का छोटा तराजू, काँटा।

निक्वण—(संज्ञा, पु०, सं०) वीणा बाजे का शब्द, सितार या तार का शब्द।

निक्षिप्त—(वि०, सं०) त्यक्त, अर्पित। न्यस्त, स्थापित, धरोहर या बंधक रखा हुआ। छोड़ा या फेंका हुआ।

निक्षेप—(संज्ञा, पु०, सं०) त्याग, समर्पण, धरोहर, अमानत, थाती। फेंकने या डालने की क्रिया का भाव। चलाने, छोड़ने या पोंछने की क्रिया का भाव। "सुपात्र-निक्षेप निराकुलात्मना"—माघ०। जमा किया जानेवाला धन [डिपाजिट]।—**लेखा**—जमाखाता। [डिपाजिट एकाउंट]।

निक्षेपक, निक्षेपकारी—(वि०, सं०) स्थापक, स्थापनकर्ता। त्याग करने वाला, समर्पणकर्ता। धरोहर या थाती या गिरों रखने वाला, फेंकने, डालने, छोड़ने या पोंछने वाला।

निक्षेपण—(संज्ञा, पु०, सं०) छोड़ने, त्यागने, फेंकने, चलाने, डालने की क्रिया, समर्पण। [**निक्षिप्त, निक्षेप्य, निक्षेपणीय** (वि०)]

निखंग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निषंग] तरकश, तूणीर, भाथा। "कटि निखंग, कर धनु-सर सोहा"—[रामा०]।

निखंड*—(वि०, यौ०) [सं० निस्+खंड] मध्य, बीच, मँझोमँझ, बीचोबीच, ठीक-ठीक, सटीक।

निखट्टर—(वि०, पु०, दे०) निर्दय, निर्दयी, कठोर-हृदय।

निखट्टू—(वि०, दे०) [हि० उप० नि=नहीं+खटना=कमाना] कुछ कमाई न करने वाला, आलसी, निकम्मा, इधर-उधर व्यर्थ घूमने वाला। [**निखट्टूपन** (संज्ञा, पु०, हि०)]।

निखनन—(संज्ञा, पु०, सं०) खोदना, खनना, गोड़ना। [**निखनना** (क्रि० स०, दे०)]।

निखरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निक्षरण] छँटना, साफ, स्वच्छ या निर्मल होना, रंगत का खुलता होना।

निखरवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० निखरना का प्रेरणा० रूप) धुलवाना, स्वच्छ या साफ कराना, निखराना। [**निखराई, निखरवाई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

निखरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० निखरना] पक्की रसोई पूरी आदि। [(विलो०) **सखरी**]। (सा० भू०, स्त्री०, दे०) स्वच्छ हुई, शुद्ध। (वि०, स्त्री०, दे०) स्वच्छ, धुली।

निखर्व—(संज्ञा, पु०, सं०) दस खर्व की संख्या।

निखवख*—(वि०) [सं० न्यक्षु=सारा, सब] निश्शेष, सम्पूर्ण, सब का सब, सारा।

निखात—(संज्ञा, पु०, सं०) परिखा, खाँई, गढ़ा, खत्ती।

निखाद—(संज्ञा, पु०, दे०,) [सं० निषाद] केवट, मल्लाह, सात स्वरों में से एक स्वर। "कहत निखाद सुनौ रघुराई"—[गीता०]।

निखार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० निखरना] स्वच्छता, सफाई, निर्मलता, श्रृंगार।

निखारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० निखरना] परिमार्जित करना, स्वच्छ या साफ करना, पवित्र या निर्मल करना।

निखालिस‡—(वि०, दे०) [हि० नि+खालिस अ०] मेल-रहित, बिलकुल स्वच्छ, विशुद्ध।

निखिल—(वि०, सं०) सब का सब, संपूर्ण, समग्र। "नीर-क्षीरे गृहीत्वा निखिल खग-पती"—[भो० प्र०]। "ऊर्ध्व संचरण में रे व्यक्ति निखिल समाज का नायक"—पंत।

निखुटना, निखूटना—(क्रि० अ०, दे०) घट जाना, समाप्त होना। "बातो सूखी तेल निखूँटा"—कबीर।

निखेध*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निषेध] रोक, मनाही, इनकार। "विधि निषेधमय कलि-मल-हरनी"—[रामा०]। [**निखिद्ध, निषिद्ध** (वि०, दे०, सं०)]।

निखेधना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निषेध] रोकना, मना करना।

निखोट, निखोटि—(वि०, दे०) [हि० उप० नि+खोट] निर्दोष, विशुद्ध, स्वच्छ, साफ। (क्रि० वि०, दे०) संकोच-रहित, बेधड़क।

निखोड़ना—(क्रि० स०, दे०) निकोलना, छीलना।

निखोरना—(क्रि० स०, दे०) नख से नोचना ।

निगंद—(संज्ञा, पु०) औषधि के उपयोग में आने वाली एक बूटी ।

निगंदना—(क्रि० स०) [फ़ा० निगदः=बखिया] रजाई आदि रुई-भरे कपड़ों में तागा डालना ।

निगंध*—(वि०, दे०) [सं० निर्गंध] गंध-रहित ।

निगड़—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हाथी की जंजीर, बेड़ी । "निगृह्य निगडैः गृहे"—[भाग०] ।

निगड़ित—(वि०, सं०) कैद, बँधा हुआ, वद्ध, बेड़ी पहिनाया हुआ ।

निगद—(संज्ञा, पु०, सं०) भाषण, कथन । एक औषधि ।

निगदन—(संज्ञा, पु०, सं०) कथन । पाठ करना जो याद हो ।

निगदना—(क्रि० स०, दे०) कहना । [**निगदन, निगदनीय** (संज्ञा, पु०, वि०)] ।

निगदित—(वि०, पु०, सं०) भाषित, कथित, उक्त, वर्णित, उल्लेख किया या कहा हुआ । "इति निगदितमार्य्यें नेत्र-रोगातुराणाम्" ।

निगम—(संज्ञा, पु०, सं०) वेद । निश्चय । मार्ग, बाजार, मेला, व्यापार । "निगम-कल्प-तरोगलितं फलं"—[भाग०] ।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०) यात्राधिकार-पत्र [पासपोर्ट] ।

निगमन—(संज्ञा, पु०, सं०) फल, नतीजा । कर्म । निष्कर्ष [डिडक्शन] । "प्रतिज्ञायाः पुनः कथनं निगमनम्"—[न्या०] ।

निगमनात्मक—(वि०, सं०) निष्कर्षणीय, निष्कर्ष निकालने योग्य । [डिडक्टिव] ।—**पद्धति**-जिस प्रणाली या रीति से निष्कर्ष निकाला जा सके । [डिडक्टिव मेथड] ।

निगमागम—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) वेद-शास्त्र । "नाना पुराण निगमागम सम्मतं यत्"—[रामा०] ।

निगर—(वि०, सं०, पु०, दे० [सं० निकर] समूह, झुंड ।

निगरना—(क्रि० स०, दे०) निगलना ।

निगराँ—(वि०, फ़ा०) रक्षक । "खुदा कैसर का निगराँ हो" ।

निगरा*—(वि०, दे०) [सं० नि+ गुरु] हलका, जो भारी या वजनी न हो । बिना गुरु वाला, निगुरा, निगोड़ा (ग्रा०) ।

निगराना—(क्रि० स०) निर्णय करना, स्पष्ट करना । (क्रि० अ०) पृथक् या स्पष्ट होना ।

निगरानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) देख-भाल, देख-रेख, निरीक्षण, चौकसी ।

निगरी—(संज्ञा, स्त्री०, ग्रा०) सत्तू की पिंडी ।

निगलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० निगरण] लील जाना, दूसरे का धन आदि मार लेना या बैठना । [**निगलाना, निगलवाना** (प्रेरणा० रूप)] ।

निगह—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० निगाह] निगाह, नजर, दृष्टि । [**निगहबाँ** (वि०)] ।

निगहबान—(वि०, फ़ा०) निरीक्षक, रक्षक । [**निगहबानी** (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०)] ।

निगहबानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) रक्षा, हिफाजत ।

निगार—(संज्ञा, पु०, सं०) भक्षण, निगलना । (फ़ा०) बेलबूटा, नक्कासी । फारसी राग-विशेष ।

निगालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वर्णवृत्तात्मक छंद (पिं०) ।

निगाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० निगाल] हुक्के की नली, जिसे मुँह में लगाकर धुआँ खींचते हैं ।

निगाह—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) नजर, दृष्टि, चितवन, कृपादृष्टि, मेहरबानी । ध्यान, पहिचान । **मुहा०—करना, रखना**-कृपादृष्टि रखना, ध्यान रखना ।—**फेरना, फिरना**-रूठ जाना, भूल जाना ।

निगिम*—(वि०) [सं० निगुह्य] बहुत प्यारा, जिसका अधिक लालच हो ।

निगुण, निगुन—(वि०, दे०) [सं० निर्गुण] तीनों गुणों से परे । गुण-रहित, मूर्ख ।

निगुनी*—(वि०, दे०) [हि० उप० नि+गुणी] गुण-रहित, जिसमें कोई गुण न हो ।

निगुरा—(वि०, दे०) [हि० उप० नि+गुरु] जिसने गुरु से शिक्षा न ली हो । अदीक्षित, अपढ़, मूर्ख । "जो निगुरा सुमिरन करै, दिन में सौ-सौ बार"—कबीर । [**निगुरी** (स्त्री०)] ।

निगूढ़—(वि०, सं०) अति गुप्त या छिपा । रहस्यमय । "निगूढ़ तत्वं नय वेत्ति विद्वांसः"—[किरा०] । [**निगूढ़ता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

निगूढ़ार्थ—(वि०, सं०) जिसका अर्थ अस्पष्ट हो, जिसका अर्थ छिपा हो ।

निगूहन—(संज्ञा, पु०, सं०) गोपन, छिपाना ।

निगृहीत—(वि०, पु०, सं०) पकड़ा या धरा हुआ। आक्रांत, आक्रमित, दुखित, पीड़ित। "अभ्यास-निगृहीतेन"—[रघु०]।

निगोड़ा—(वि०, पु०, दे०) [हिं० निगुरा] [**निगोड़ो** (ब्र०)] असहाय, अनाथ, अभागा। दुष्ट, दुराचारी, दुष्कर्मी, नीच। "चाप निगोड़ो अबै जरि जाव चढ़ौ तो कहा न चढ़ौ तो कहा है"—[स्फु०]। [**निगोड़ी** (स्त्री०)]।

निग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) रोक, दमन, अवरोध, बंधन। फटकार। सीमादंड। **—स्थान**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जब उलटी-पुलटी या बेसमझी की बातें कहने लगे तो विवाद रोक दिया जाता है, क्योंकि यह पराजय है। इसी को निग्रह-स्थान कहते है। ये २२ हैं (न्या०)।

निग्रहण—(संज्ञा, पु०, सं०) बंधन, दबाने या रोकने की क्रिया। प्रभाव। (वि०) दमन करने या रोकने वाला।

निग्रहना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निग्रह] रोकना, पकड़ना, फटकारना, दंड देना।

निग्रही—(वि०, पु०) [सं० निग्रहीन्] रोकने, दबाने या दंड देने वाला।

निघंटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कंद का एक प्रकार।

निघंटु—(संज्ञा, पु०, सं०) वेद के शब्दों का कोश, शब्द-संग्रह मात्र।

निघटत—(क्रि० अ०, दे०) कम या न्यून होते ही, घटते ही।

निघटना*—(क्रि० अ०, दे० [हिं० घटना] घटना, चुकना, समाप्त होना, निबट जाना। "घटि गो तेल निघटि गई बाती"—कबीर।

निघटा—(क्रि० वि०, पु०, दे०) [हिं० निघटना] घटा, कम हुआ। [**निघटी** (स्त्री०)]।

निघटाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निघटना] घटवाना, कम कराना। [**निघटावना, निघटवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

निघरघट—(वि०, दे०, यौ०) [हिं० नि=नहीं+ घरघाट] जिसका घरघाट या ठीक-ठिकाना कहीं भी न हो। निर्लज्ज। **मुहा०—देना**-लज्जा की परिस्थिति उत्पन्न होने पर मिथ्या भाषण द्वारा अपना बचाव करना।

निघरघटा—(वि०, पु०, दे०) [हिं० निघरघट] जिसके घर-द्वार न हो। [**निघरघटी** (स्त्री०)]

निघरा—(वि०, पु०, हिं०) जिसके घर-बार न हो।

निघर्ष, निघर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) पीसना। रगड़, घिसावट।

निघ्न—(वि०, पु०, सं०) वशीभूत, आधीन। शिष्ट। आयत। "तथापि निघ्न नृप तावकीनैः"—[किरा०]।

निचय—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, संचय, निश्चय। "शाखा डोली तरु निचय की"—हरिऔध।

निचल*—(वि०, दे०) [सं० निश्चल] अचल, स्थिर, अटल।

निचला—(वि०, दे०) [हिं० नीचे+ला प्रत्य०] नीचे वाला, नीचे का। [**निचली** (स्त्री०)]। (वि०, दे०) [सं० निश्चल] शांत, अटल, स्थिर, अचल।

निचाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० नीच] नीचपन, नीचता, कमीनापन, दुष्टता। "नीच निचाई नहिं तजै"—वृं०।

निचान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नीचा] नीचापन, ढाल, ढुलार।

निचाय—(संज्ञा, पु०, सं०) राशि, ढेर, समूह।

निचिंत, निचीत—(वि०, पु०, दे०) [सं० निश्चिंत] सुचित, बेखटके, निश्चिंत। "जाको घर है गैल मों, सो क्यों सोव निचीत"—कबीर।

निचुड़ना, निचुरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नि +च्यवन] चूना, टपकना, गरना, दबाव डालने पर रस निकल जाना।

निचै*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निचय] समूह, राशि।

निचोड़, निचोर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० निचोड़ना] सारांश, सार, रस, सत, खुलासा, निष्कर्ष।

निचोड़ना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निचुड़ना] किसी गीली या रस या पानी-भरी वस्तु को दबा या ऐंठ कर रस या पानी गिराना, किसी पदार्थ का मूल तत्व या सार भाग निकाल लेना, सब हर लेना, [निचोरना (दे०)]।

निचोना*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निचोड़ना] निचोड़ना। "कहा निचोवै नग्न जन"—वृं०।

निचोरना*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निचोड़ना] निचोड़ना।

निचोल—(संज्ञा, पु०, दे०) औरतों की चादर या ओढ़नी।

निचोवना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० निचोड़ना] निचोड़ना।

निचौहाँ—(वि०, दे०) [हि० नीचा+औहाँ प्रत्य०] नीचे की तरफ झुका हुआ, नमित। "सोहै करि नयन निचौहैं करि लेति है"—रसाल। [**निचौंही** (स्त्री०)]

निचौहैं—(क्रि० वि०, दे०) [हि० निचौहाँ] नीचे की ओर।

निछक्का—(वि०, दे०) [सं० निस+चक्र=मंडली] एकांत, निर्जन स्थान, निराला।

निछत्र—(वि०, दे०) [सं० निश्छत्र] बिना छत्र, छत्र-हीन, राज-चिह्न-रहित। (वि०, दे०) [सं० निः+क्षत्र] क्षत्र-रहित या क्षत्रहीन।

निछनियाँ‡—(वि०, दे०) [हि० निछान] निछान, शुद्ध, खालिस, बेमेल।

निछल*—(वि०, पु०, दे०) [सं० निश्छल] छल-रहित, निश्छल। [**निछलता** (**संज्ञा, स्त्री०**)]।

निछान†—(वि०, दे०) [हि० उप० नि+छानना] बेमेल, शुद्ध। (अव्य, दे०) बिलकुल, एकदम।

निछावर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० न्यासावर्त्त, मि० अ० निसार] उतारा, उतार, वाराफेरा, उत्सर्ग। **मुहा० किसी का किसी पर—होना**—किसी के लिए मर जाना या मरने तक के लिए सन्नद्ध होना। वह वस्तु जो निछावर की जाय, इनाम, नेग (विवाहादि में)।

निछोह, निछोही—(वि०, दे०) [हि० उप० नि +छोह] प्रेम-रहित, निर्दय, निर्मोही।

निज—(वि०, सं०) अपना, स्वकीय। **मुहा०—का**—खास अपना।—**करके (निजके गुरु)**—निश्चय, ठीक-ठीक, अवश्य, जरूर, विशेष करके, मुख्यतः।

निजाना‡—(क्रि० अ०, दे०) [फ़ा० नजदीक] समीप, पास, निकट आना या पहुँचना। निचकाना (ग्रा०)।

निज़ाम—(संज्ञा, पु०, अ०) बंदोबस्त, इन्तजाम करने वाला, सूबेदार। हैदराबाद के नवाबों की पदवी।

निजोर‡*—(वि०, दे०) [हि० नि+जोर फ़ा०] कमजोर, निर्बल।

निजी—(वि०, दे०) खास, प्रधान, मुख्य, यथार्थ, ठीक।—**उद्यम**—(संज्ञा, पु०, यौ०) वैयक्तिक उद्योग [प्राइवेट इण्टरप्राइज]।—**विधान**—वैयक्तिक नियम, निजीकानून [प्राइवेट लॉ]।—**लिपि**—निजी मसविदा, वैयक्तिक विधेयक [प्राइवेट बिल]।—**सम्पत्ति**—वैयक्तिक सम्पत्ति [प्राइवेट प्रापर्टी]।

निजू‡—(वि०, दे०) [हि० निज] अपना, निज का।

निझरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० नि+झरना] भली भाँति झड़ जाना। अपने को निर्दोष सिद्ध करना, सफाई देना "निझरि गये सब मेह"—सुबे०।

निझारना—(क्रि० स०, दे०) झपटकर ले लेना।

निझाना—(क्रि० अ०, दे०) छिप-छिप कर देखना, ओट से देखना।

निझोल—(वि०, दे०) झोल रहित, सुडौल।

निटिलाक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव।

निटोल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० उप० नि+टोल] टोला-मुहल्ला, बस्ती, पुरा।

निट्ठि*—(क्रि० वि०, दे०) [हि० नीठि] निठि (ब्र०) अरुचि, अनिच्छा। "बहि बहि हाथ चक्र ओर ठहि जात नीठि" —रत्ना०।

निठल्ला—(वि०, पु०, दे०) [हि० उप० नि=नहीं+टहल=कामकाज] बेकार, बेकाम, काम-धंधा या उद्यम रहित, बैठाठाला।

निठल्लू—(वि०, पु०, दे०) [हि० निठल्ला] निठल्ला, बेकार, बैठाठाला।

निठाल, निठाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नि +टहल=कार्य] एकान्त, खाली वक्त, फ़ुरसत का समय, जिस समय कोई काम या आदमी न हो। **मुहा०—(ले) में**—एकांत में या फ़ुरसत में।

निठुर—(वि०, दे०) [सं० निष्ठुर] निर्दय, क्रूर, निर्मोही। "जननी निठुर बिसरि जनि जाई"—[रामा०]।

निठुरई, निठुराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० निठुरता] निर्दयता, क्रूरता, कठोरता।

निठुरता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निष्ठुरता] क्रूरता, निर्दयता, कठोरता।

निठुराव—(संज्ञा, पु०, दे०) निष्ठुरता।

निठौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नि+ठौर] बुरास्थान, बुरी जगह या दशा। बुरा दाँव।

निडर—(वि०, दे०) [हि० उप० नि+डर] निर्भय, निःशंक, साहसी, ढीठ।—**पन, (पना)**—(**संज्ञा, पु०**) [हि० निडर+पन प्रत्य०] निर्भीकता, निर्भयता।

निडै*—(क्रि० वि०, दे०) [सं० निकट] निकट, समीप, पास ।

निढाल, निढाला—(वि०, दे०) [हिं० नि+ढाल—गिरा हुआ] अशक्त, शिथिल, थका, नरुत्साह ।

निढिल*—(वि०, दे०) [हिं० नि+ढीला] कड़ा, कसा हुआ । [**निढिलता** (संज्ञा, स्त्री०)]

नितंत—(क्रि० वि०, दे०) [सं० नितांत] नितांत, बहुत अधिक ।

नितंब—(संज्ञा, पु०, सं०) कमर के पीछे का उभड़ा भाग, चूतड़ ।

नितंबिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दर नितंब वाली स्त्री, सुन्दरी । "नितंबिनीनां भृशमादधे धृतिं"—[किरा०] ।

नित—(अव्य०, सं०) नित्य, प्रति दिन, नित्त नितै (ब्र०) ।—**नित,—प्रति**-प्रति दिन, हर रोज । —**नया**-सदा नया रहने वाला, अजर, प्राचीनता की बाधा से मुक्त ।

नितराम्—(अव्य०, सं०) सदा, सर्वदा । अत्यन्त, पूर्णरूप से, प्रत्येक अवस्था में, निश्चित रूप से ।

नितल—(संज्ञा, पु०, सं०) सात पातालों में से एक (पुरा०) ।

नितांत—(वि०, सं०) बहुत अधिक, एकदम, सर्वथा, बिलकुल, सदैव ।

निति†*—(अव्य०, दे०) [सं० नित] सदा, सर्वदा, प्रतिदिन ।

नित्य—(वि०, सं०) जो सदा रहे, शाश्वत, अविनाशी । (अव्य०,) प्रतिदिन, सदा । "नित्य निबाहि गुरुहि सिर नाये ।"—[रामा०] ।—**कर्म**-(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिदिन का कार्य, नित्य क्रिया, पूजन-पाठादि ।—**कृत्य**-(संज्ञा, पु०, सं०) नित्य कर्म ।—**क्रिया**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नित्य-कर्म । "नित्य-क्रिया करि गुरु पहँ आये"—[रामा०] । —**गति**-(संज्ञा, पु०, सं०) वायु, पवन ।—**दान**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रतिदिन का कर्त्तव्य या दान ।—**नियम**-(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिदिन का नियमित कर्त्तव्य या कार्य, प्रतिदिन की रीति । अचल ।—**नैमित्तिककर्म**-(संज्ञा, पु०, सं०) सध्योपासना, अग्निहोत्रादि कर्म, ग्रहण-स्नान आदि पुण्य या शुभ कर्म ।—**प्रति**-(अव्य०, सं०) प्रतिदिन, सदा, नियम से ।—**प्रलय**-(संज्ञा, पु०, सं०) चार प्रकार के प्रलयों में से एक, जीवों के प्रति दिन का मरण ।—**मुक्त**-(वि०, सं०) जीवनमुक्त, चिरमुक्त, क्रियावान्, कर्मनिष्ठ ।—**यौवन**-(वि०, सं०) स्थिर यौवन, सदा जवान या युवा रहने वाला ।—**यौवना**-(वि०, स्त्री०, सं०) स्थिर या चिर यौवना, सदा युवा या जवान रहने वाली । द्रौपदी, कुन्ती, तारा आदि ।—**सम**-(संज्ञा, पु०, सं०) निर्विकार, अप्रशस्त उत्तर, अयुक्त खंडन (न्या०) । **मुहा०—निबाहना**-नित्य कर्म करना ।

नित्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नित्य होने का भाव, अनश्वरता, सदा विद्यमानता, नित्यत्व ।

नित्यत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) नित्यता, अमरता ।

नित्यशः—(अव्य०, सं०) सदा, सर्वदा, प्रति दिन । "शुक, पिक करते हैं, नित्यशः शब्द प्यारे ।"

नित्यानन्द—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जो अक्षय, अमर आनंद में स्थित हो । परमेश्वर । एक साधु (बंगाल) ।

नित्यानित्य—(वि०, सं०, यौ०) नश्वर और अनश्वर, नित्य और अनित्य ।—**वस्तुविवेक**-(संज्ञा, पु०) ब्रह्म सत्य है जगत मिथ्या—यह विवेचन ।—**विवेक**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नित्य और अनित्य या नश्वर और अनश्वर वस्तु का विचार । यह व्याख्या कि संसार मिथ्या है तथा ब्रह्म ही सत्य है ।

नित्योदित—(वि०, सं०) विकासशील, प्रगतिशील, सदा उदित होने वाला ।

निथंभ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नि+स्तंभ] खम्भा ।

निथरना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० नि+थिर +ना प्रत्य०] पानी आदि द्रव पदार्थों का स्थिर होना, जिससे उसमें घुली वस्तु नीचे बैठ जावे और द्रव वस्तु साफ हो जावे ।

निथरा—(वि०, दे०) [हिं० निथरना] स्वच्छ, निर्मल, साफ, उज्ज्वल पानी आदि ।

निथार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० निथारना] साफ पानी । पानी में नीचे बैठी वस्तु ।

निथारना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निथरना] पानी आदि द्रव पदार्थ को ऐसा स्थिर करना कि उसमें घुली वस्तु नीचे बैठ जावे, पानी को साफ करना, थिराना (ग्रा०) ।

निदई*—(वि०, दे०) [सं० निर्दय] दया-रहित, निर्दय ।

निदग्धिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्वेत, छोटी चटाई ।

निदरना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निरादर] तिरस्कार, अपमान या अनादर करना । त्यागना । मात करना । बढ़ कर निकलना । [**निदरि** (पू० का० क्रि०)] ।

निदरहिं—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निदरना] अनादर या अपमान करें, न मानें, प्रतिष्ठा न करें । "जो हम निदरहिं विप्र वदि, सत्य सुनहु भृगुनाथ"—[रामा०] ।

निदरि—(क्रि० स०, पूर्व० का०) [हिं०निदरना] अनादर या अपमान करके, निन्दा करके । "निदरि पवन हय चहत उड़ाना ।"—[रामा०] ।

निदर्शक—(वि०, सं०) पथ-प्रदर्शक, दिखाने या बतानेवाला ।

निदर्शन—(संज्ञा, पु०, सं०) उदाहरण, दृष्टांत । **—पत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) दृष्टांत पत्र, उदाहरण-पत्र । **—मुद्रा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मान या प्रतिष्ठा-सूचक मुद्रा ।

निदर्शना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अलंकार जिसमें एक बात दूसरी की पुष्टि करती है । " सदृश वाक्य युग अर्थ को करिये एक अरोप । भूषण ताहि निदर्शना कहत बुद्धि के ओप ।"

निदलन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्दलन] निर्दलन, दलन, विनाशीकरण ।

निदहना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निदहन] जलाना ।

निदाघ—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रीष्म ऋतु, गर्मी, घाम, धूप । " जगत तपोवन सो कियो दीरघ दाघ निदाघ"—बिहारी ।**—कर**-(संज्ञा, पु०) सूर्य । **—काल**-(संज्ञा, पु०) भयंकर गर्मी के दो महीने—ज्येष्ठ और आषाढ़ ।

निदान—(संज्ञा, पु०, सं०) आदि या मूल कारण । रोग का निर्णय या लक्षण । अंत, नाश । "कह्यो भूप जनि करसि निदानू "—[रामा०] । (अव्य०, सं०) अन्त में, आखिरकार । (वि०) निकृष्ट, नीच ।**—शास्त्र**-रोगों का अध्ययन करने वाला शास्त्र, [पेथालॉजी] ।

निदारुण—(वि०, सं०) कड़ा, कठोर, भयंकर दुःसह । निर्दय ।

निदाह—(संज्ञा, पु०, सं०) निदाघ, गर्मी, ग्रीष्म ।

निदिग्ध—(वि०, सं०) प्रवर्द्धित, जिसपर लेप किया गया हो ।

निदिध्यासन—(संज्ञा, पु०, सं०) बारम्बार ध्यान या स्मरण, परमार्थ-चिंतन ।

निदेश—(संज्ञा, पु०, सं०) आज्ञा, शासन, हुक्म । कथन, अनुमति, नियोग, अनुशासन । " कीन्हेसि मोर निदेश निगेट्ट"—[प०] ।

निदेस*—(संज्ञा, पु०) [सं० निदेश] आज्ञा, शासन । अनुमति, नियोग, कथन ।

निदोष*—(वि०) [सं० निर्दोष] निर्दोष, शुद्ध, निर्मल ।

निद्धि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० निधि] सम्पदा, निधियाँ नौ है ।

निद्रु—(संज्ञा, पु०, सं०) एक हथियार ।

निद्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नींद, स्वप्न, सुप्ति । " अभाव प्रत्ययालंबना वृत्ति निद्रा " (योग०) । **—भंग**-(संज्ञा, पु०) जागरण, नींद का अंत ।

निद्रायमान—(वि०, सं०) जो सो रहा हो ।

निद्रालस—(वि०, सं०) सोया हुआ, निद्रित अवस्था वाला, तंद्रालु ।

निद्राणु—(वि०, सं०) सोने वाला, निद्राशील ।

निद्रित—(वि०, सं०) सोया हुआ ।

निधड़क, निधरक—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० नि=नहीं+धड़क] बेखटके, निश्चिन्त । (वि०, दे०) उत्साही, साहसी, उद्योगी ।

निधन—(संज्ञा, पु०, सं०) मरन, मरण । नाश । कुंडली में अष्टम भवन । जन्म-नक्षत्र से सातवें, सोलहवें तथा तेईसवें पड़ने वाला नक्षत्र । साम का अंतिम अंश जैसे वंश, कुल, वंश का स्वामी, विष्णु । (वि०, दे०) कंगाल, निर्धन, दरिद्र ।

निधनी—(वि०, दे०) [हिं० नि+धनी] निर्धन, कंगाल । "देखत ही देखत कितेक निधनी के धन"—[अ०व०] ।

निधान—(संज्ञा, पु०, सं०) आश्रय, आधार, निधि, लयस्थान, कोष ।

निधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खजाना, कोष, नौ निधियाँ । समुद्र । स्थान । घर । विष्णु । शिव । नौ की संख्या ।**—नाथ,—पति**-(संज्ञा, पु०, सं०) निधियों के स्वामी, कुबेर ।

निधुवन—(संज्ञा, पु०, सं०) वासनायुक्त क्रीड़ा । मैथुन, केलि । कंपन ।

निध्यात—(वि०, सं०) विचारित, जिस पर सोचा गया हो ।

निध्यान—(संज्ञा, पु०, सं०) दर्शन, देखना ।

निनरा—(वि०, दे०) [सं० नि+निकट, प्रा० निनिअड़] अलग, जुदा, न्यारा, दूर।

निनाद—(संज्ञा, पु०, सं०) आवाज, शब्द ।

निनादी—(वि०, पु०) [सं० निनादिन्] शब्द करने वाला। [**निनादिनी** (स्त्री०)] [**निनादित** (वि०)]

निनान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निदान] लक्षण, अन्त। (क्रि० वि०, दे०) आखिर में, अन्त में। (वि०, दे०) हद दरजे का, बिलकुल, एकदम। बुरा, नीच।

निनानवे, **निन्यानबे**—(वि०, दे०) [सं० नवनवति] नब्बे और नौ। (संज्ञा, पु०, दे०) नब्बे और नौ की संख्या। **मुहा०—के फेर में आना, पड़ना**-धन जोड़ने की फिक्र या धुन में पड़ना, चक्कर में पड़ना।

निनाना†—(क्रि० स०, दे०,) [हिं० नवना=झुकना] झुकाना, लचाना, नवाना।

निनार—(वि०, दे०) बिलकुल, न्यारा, अकेला, निछला (ग्रा०, प्रान्ती०)।

निनारा—(वि०) [सं० निः+निकट] जुदा, भिन्न, अलग, दूर। [**निनारी** (स्त्री०)]। "ननंद निनारी सासु माइके सिधारी"—[स्फु०]।

निनावाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० नन्हा] मुँह के भीतर निकलने वाले छोटे-छोटे दाने।

निनौना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० नवन] लचाना, झुकाना, नवाना।

निन्यानबे—(वि०) एक कम सौ, नब्बे और नौ।—**का फेर**-धन जुटाने का हौसला।

निन्यारा*—(वि०, दे०) [हिं० निनारा] जुदा, पृथक्, भिन्न, दूर।

निपंग*—(वि०, दे०) [सं० नि+पंगु] अपाहिज, लँगड़ा-लूला, [अपंग (दे०)]।

निपजन*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निष्पद्यते] उगना, उपजना, बढ़ना, पकना।

निपजी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० निपजना] लाभ, उपज।

निपत्र—(वि०, दे०) [सं० निष्पत्र] ठूँठ, पत्र-हीन।

निपट—(अव्य०, दे०) [हिं० नि+पट] केवल, सिर्फ, निरा, एकमात्र। बिलकुल। "निपट निरंकुस अबुध असंकू"—[रामा०]।

निपटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निवर्त्तन] फ़ुरसत या छुट्टी पाना। निवृत्त या समाप्त होना, निर्णीत या तय होना।

निपटाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० निवर्त्तन] चुकाना, निर्णीत करना। [**निपटारा, निपटाव** (संज्ञा, पु०)]।

निपटेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० निपटाना] निर्णय, फैसला, समाप्ति, छुट्टी, निपटारा।

निपतन—(संज्ञा, पु०, सं०) गिरना, अधः-पतन, गिराव। [**निपतित, निपतनीय** (वि०)]।

निपतित—(वि०, पु०, सं०) गिरा हुआ, नीचे आया हुआ।

निपांगुर—(वि०) पंगु, अपाहिज, बिना हाथ-पाँव वाला।

निपाक—(संज्ञा, पु०, सं०) अत्यधिक पक जाना।

निपाटना—(क्रि० स०, दे०) काट देना, समाप्त करना।

निपात—(संज्ञा, पु०, सं०) गिराव, पतन, नाश, मृत्यु। बिना नियम के बना शब्द। (वि०, दे०) [हिं० नि+पत्ता] बिना पत्तों का।

निपातन—(संज्ञा, पु०, सं०) मारने या गिराने का काम, नाश, नीचे गिराना। [**निपातनीय, निपातित** (वि०)]।

निपातना—(क्रि० स०, दे०) नष्ट करना, काट गिराना, मार डालना। "सबहिं निपाते राम"—[रामा०]।

निपाती—(वि०, दे०) [सं० निपातिन्] गिराने, फेंकने या मारने वाला। [**निपातित***(वि०)]। (संज्ञा, पु०, सं०) शिव। (वि०, दे०) [हिं० नि+पाती] बिना पत्ते का।

निपीड़क—(वि०, सं०) पेरने वाला।

निपीड़न—(संज्ञा, पु०, सं०) दुख या कष्ट देना, पेरना, दबाना, मलना। [**निपीड़ित, निपीड़नीय** (वि०)]।

निपीड़ना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निपीड़न] दबाना, मलना, पेरना, कष्ट या दुख देना।

निपीत—(वि०, सं०) शोषण करने वाला, चूसने वाला।

निपुण—(वि०, सं०) चतुर, दक्ष, कुशल, प्रवीण, निपुन (दे०)। "नीति-निपुण नृप की जस करनी"—[रामा०]।

निपुणता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चतुरता, कुशलता, दक्षता।

निपुणाई*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० निपुणता] चतुरता, कुशलता, [निपुनाई (दे०)]।

निपुत्री—(वि०) [हिं० नि+पुत्री] जिसके पुत्र न हो, निःसन्तान।

निपुन*—(वि०, दे०) [सं० निपुण] चतुर, कुशल, निपुण। [**निपुनता (संज्ञा, स्त्री०)**]।

निपुनई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निपुणता] चतुरता, [निपुनता (दे०)]। "करत निपुनई गुननि बिन"—रहीम।

निपूत, निपूता*†—(वि०, दे०) [हिं० नि+पूत] पुत्रहीन, निःसन्तान। [**निपूती (स्त्री०)**]।

निपोड़ना, निपोरना—(क्रि० अ०, दे०) दाँत दिखाना, निकोसना, निर्लज्जता की एक मुद्रा। **मुहा० खीस (दाँत) निपोरना**।

निफन*—(वि०, दे०) [सं० निष्फल] पूरा, पूर्ण। (क्रि० वि०, दे०) भली-भाँति, पूर्ण रूप से।

निफरना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० निफारना] आर-पार हो जाना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० नि+स्फुट] खुलना, निकलना, स्वच्छ या उद्घाटित होना।

निफल*—(वि०, दे०) [सं० निष्फल] व्यर्थ, निरर्थक, निष्फल। [**निफलता, निष्फलता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

निफाक—(संज्ञा, पु०, दे०, अ०) विरोध, वैर, फूट, अनबन, बिगाड़। [**निफाकी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निफोट—(वि०, दे०) [नि+स्फुट] स्पष्ट, साफ-साफ।

निबंध—(संज्ञा, पु०, सं०) बन्धन। प्रबन्ध, लेख। गीत। "भाषा निबन्ध मति मंजुल-मातनोति"—[रामा०]।

निबंधक—(संज्ञा, पु०, सं०) लेख्यपत्र-रक्षक, [रजिस्ट्रार]।

निबंधन—(संज्ञा, पु०, सं०) बन्धन, नियम, व्यवस्था, कारण। [**निबद्ध, निबंधनीय** (वि०)]।

निबकौरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नीम+कौड़ी] नीम का फल, निबौरी, नीम का बीज, निमकौरी (ग्रा०)।

निबटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निवर्त्तन] फुरसत या छुट्टी पाना, निवृत्त या पूर्ण होना, तै होना। चुकना।

निबटाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निबटना] चुकाना, तै करना, पूर्ण करना।

निबटाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० निबटना] निबटेरा, निबटाने का भाव।

निबटेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० निबटना] निबटने का भाव या काम, फैसला, निश्चय। छुट्टी। पूर्ण।

निबड़ना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० निबटना] निबटना, पूरा या तै करना, फैसला करना।

निबद्ध—(वि०, सं०) बँधा, रुका, गुँथा हुआ, निरुद्ध, ग्रथित, बैठाया या जकड़ा हुआ।

निबर‡—(वि०, दे०) [सं० निर्बल] निबल (दे०) निर्बल, दुर्बल, निपस (ग्रा०)।

निबरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निवृत्त] अलग या मुक्त होना, छूटना, फुरसत पाना, पूर्ण या निर्णीत होना, सुलझना, दूर होना।

निबर्हण—(संज्ञा, पु०, सं०) मारने या नष्ट करने का भाव। मारण। (वि०) नाश करने वाला।

निबल*—(वि०, दे०) [सं० निर्बल] निर्बल, दुर्बल, कमजोर। " निर्बल जानि कीजै नहीं " —वृं०।

निबलाई—(संज्ञा, स्त्री०) अशक्तता, क्षीणता, निर्बलता।

निबह—(संज्ञा, पु०, दे०) समूह, झुंड, जमाव।

निबहना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० निबाहना] छुट्टी, पार या फुरसत पाना, सपरना (प्रान्ती०), पालन या निर्वाह होना। " सखा धर्म निबहै केहि भाँती "—[रामा०]।

निबहुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० नि+बहुरना] वह स्थान जहाँ से कोई न लौटे, यमलोक। " सो दिल्ली अस निबहुर देसू "—[पद०]।

निबहुरा—(वि०, दे०) [हिं० नि+बहुरना] जो जाकर न लौटे (गाली)।

निबाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्वाह] निबाहने का भाव, गुजारा। परम्परा या सम्बन्ध की रक्षा, पालन। छुटकारे या बचाव की राह, निबाहू (ग्रा०)।

निबाहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० निर्वाहन] निर्वाह या गुजारा करना, चलाये जाना, पालन करना, सपराना। " आजु बैर सब लेहुँ निबाही " —[रामा०]।

निबाहू—(वि०, दे०) [हिं० निबाहना] टिकाऊ। निपटारू, निर्वाह। " उघरे अन्त न होय निबाहू" —[रामा०]।

निबिड़—(वि०) [सं० निविड़] घना, गहरा, घोर। "कबहुं दिवस महँ निबिड़ तम"—[रामा०]।

निबुआ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नीबू] निबू, निब्बू (ग्रा०)।

निबुकना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निर्मुक्त] बन्धन से छूटना, छुटकारा पाना। चुपचाप, बेजाने छूट जाना। "निबुकि गयो तेहि मृतक प्रतीती"—[रामा०]।

निबेड़ना, निबेरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० निवृत्त] छुड़ाना, उन्मुक्त करना, उद्धार करना। चुनना, सुलझाना, निर्णय या फैसला करना, निबटाना। हटाना, दूर या निवारित करना। "जं जै कृष्ण टेरत निबेरत सुभटभीरि"—[अ० व०]।

निबेड़ा, निबेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० निबेड़ना] मुक्ति, छुटकारा, रिहाई, चुनाव, निबटेरा, निर्णय। "संसय सकल सँकोच निबेरी"—[रामा०]। [**निबेड़ि, निबेरि** (पू० का०)]

निबेरू—(वि०, दे०) [हि० निबेरना] निपटाने वाला, निर्णय या फैसला करने वाला।

निबेहना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० निबेरना] छुड़ाना, उद्धार करना, उन्मुक्त करना। निर्णय करना।

निबोध—(संज्ञा, पु०, सं०) समझना, सीखना, ज्ञान प्राप्त करना।

निबौरी, निबौली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निम्ब+वर्तुल] नीम का फल, निमकौरी, निबकौरी (ग्रा०)। "कोयल अम्बहिं लेति हैं, काक निबौर-हेत"—वृं०।

निभ—(संज्ञा, पु०, सं०) कांति, प्रभा, प्रकाश। (वि०, सं०) समान, बराबर, तुल्य, सम। "हिम-कुन्द शशि प्रभसंख निभं"—[भो० प्र०]।

निभना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० निबहना] निर्वाह या गुजारा होना, भुगतना, पटना, बनना।

निभरम*—(वि०, दे०) [सं० निर्भ्रम] शंका, भ्रम या सन्देह-रहित। (क्रि० वि०, अ०) निस्सन्देह, बेधड़क, बेखटके।

निभरोस, निभरोसी*—(वि०, दे०) [हि० नि=नहीं+भरोसा] हताश, निराश, निराश्रय, आसरा या भरोसा-रहित।

निभाऊ—(संज्ञा, पु०) देखिए निबाह। (वि०, यौ०) [नि+भाऊ=भाव] भावशून्य।

निभागा—(वि०, दे०, यौ०) [हि० नि+भाग्य] अभागा, मन्दभागी।

निभाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० निबाहना] निर्वाह या गुजर करना, चलाये जाना, भुगताना।

निभालन—(संज्ञा, पु०, सं०) दर्शन, देखना।

निभाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० निबाह] निबाह, निर्वाह।

निभूत—(वि०, सं०) भूत, बीता हुआ। अत्यन्त डरा हुआ।

निभृत—(वि०, सं०) अटल, स्थिर, निश्चल। गुप्त। नम्र। शांत, धीर, एकांत, पूर्ण।

निभ्रांत*—(वि०, दे०) [सं० निर्भ्रांत] भ्रम, सन्देह, शंका आदि से रहित, निस्सन्देह, निर्भ्रांत।

निमन्त्रण—(संज्ञा, पु०, सं०) बुलावा, आह्वान, न्योता, दावत, निउता (ग्रा०)। [**निमंत्रित** (वि०)]।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) न्योता के लिए पत्र।

निमन्त्रना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निमंत्रण] न्योता देना, [न्योतना (दे०)]।

निमन्त्रित—(वि०, सं०) जिसे न्योता दिया गया हो, आहूत।

निम—(संज्ञा, पु०, सं०) शलाका, सूची। कतरनी। (दे०) न्यून, थोड़ा, कम।

निमक‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० नमक] नमक, लवण, लोन, नून, [लोन (दे०)]। [**निमकीन** (वि०)]।

निमकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० नमक] अचार, नीबू। गेहूँ के मैदे की नमकीन टिकिया।

निमकौड़ी, निमकौरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० निबौरी] नीम का फल, निबौरी।

निमग्न—(वि०, सं०) मग्न, तन्मय, डूबा हुआ। [**निमग्ना** (स्त्री०)]।

निमज्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) डुबकी लगा कर किया जाने वाला स्नान, अवगाहन। [**निमज्जनीय, निमज्जित** (वि०)]।

निमज्जना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निमज्जन] डुबकी या गोता लगाना, अवगाहना, स्नान करना, नहाना।

निमज्जित—(वि०, सं०) मग्न, डूबा हुआ, स्नात, नहाया हुआ।

निमटना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० निबटना] निबटना, निपटना।

निमता*—(वि०, दे०) [हि० नि+माता] जो उन्मत्त न हो। बिना माता का।

निमन—(वि०, दे०) [हि० निमनाना] सुन्दर, मनोरम, दर्शनीय। दृढ़, पोढ़ा, कड़ा, ठोस।

निमनाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० निमनाना] अच्छापन, सुन्दरता, दृढ़ता, मनोहरता।

निमनाना—(क्रि०, स०, दे०) सुन्दर या मनोरम बनाना, सुधारना, पोढ़ा या दृढ़ करना।

निमय—(संज्ञा, पु०) [सं० नि+मय] विनिमय, परिवर्त्तन, बदला।

निमात्ता—(वि०, दे०) [सं० निमय] सावधान, सचेत, अप्रमत्त।

निमान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निम्न] गड्ढा, नीचा स्थान, ताल, ढाल।

निमि—(संज्ञा, पु०, सं०) इक्ष्वाकु का एक पुत्र जिससे निमि वंश चला। निमेष, पलकों का बन्द होना, व खुलना। " मनहु सकुचि निमि तजेउ दृगंचल "—[रामा०]।

निमिख, निमिष—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निमेष] निमेष, पलकों का खुलना और बन्द होना, पलक मारने का समय। "सोउ मुनि देउँ निमिष इक माहीं"—[रामा०]।

निमित्त—(संज्ञा, पु०, सं०] कारण, हेतु, उद्देश्य, साधन।

निमित्तक—(वि०, सं०) किसी हेतु या उद्देश्य से होने वाला, उत्पन्न, जनित।

निमित्तकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) जिस के द्वारा कोई पदार्थ बनाया जावे, एक कारण (न्या०)।

निमिष—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निमेष] निमेष। पलक मारना, आँखें बंद करना।

निमिषांतर—(संज्ञा, पु०) [सं० निमिष+अंतर] पलभर का अंतर।

निमिषित—(वि०, सं०) निमीलित, बंद पलकें। (संज्ञा, पु०) निमिष।

निमीलन—(संज्ञा, पु०, सं०) आँख मींचना या मूँदना, पलकें लगाना।

निमीलित—(वि०, सं०) पलकों से मुँदे या बन्द, बन्द पलकें।

निमुँहा—(वि०, दे०) जिसमें बोलने की दृढ़ता या साहस न हो। चुप रहने वाला।

निमूँद—(वि०, दे०) [हि० मुँदना] बन्द, मुँदा हुआ, निमीलित।

निमूना—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० नमूना] आदर्श रूप।

निमूल—(वि०) देखिए निर्मूल।

निमेख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निमेष] निमेष, पल। " लव निमेख महँ भुवन निकाया "—[रामा०]।

निमेट—(वि०, दे०) [हि० नि+मिटाना] न मिटने वाला।

निमेष—(संज्ञा, पु०, सं०) पलकों का मुँदना और खुलना। पल, क्षण, निमिष।

निमेषक—(संज्ञा, पु०, सं०) पलक, निमिष। जुगनू।

निमोना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नवान्न] चने या मटर के हरे दानों से बना सालन।

निमौनी—(संज्ञा, स्त्री०) ऊख (गन्ना) काटने का पहला दिन।

निम्न—(वि०, सं०) नीचे, तले। नीचा।

निम्नांकित—(वि०, सं०, यौ०) नीचे लिखा।

निम्नगा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी।

नियंतव्य—(वि०, सं०) नियमन के योग्य।

नियंता—(संज्ञा, पु०) [सं० नियंतृ] नियम या व्यवस्था बाँधने वाला, नियम पर चलाने वाला, शासक। [**नियंत्री** (स्त्री०)]।

नियंत्रण—(संज्ञा, पु०, सं०) नियम में बाँधना या तदनुकूल चलाना। [**नियंत्रणीय** (वि०)]।

नियंत्रित—(वि०, सं०) नियम से बँधा हुआ, नियमबद्ध, प्रतिबद्ध।

नियत—(वि०, सं०) नियम के द्वारा स्थिर या बँधा हुआ, मुकर्रर, नियोजित, तैनात, स्थापित, निश्चित, ठीक। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) नीयत, इरादा।

नियतन—(संज्ञा, पु०, सं०) नियत करना, निश्चित करना, बँटवारा। [एलाटमेंट]।—**आदेश**-निस्थापन आदेश [एलाटमेंट आर्डर]।—**पत्र**-निस्थापन या विभाजन पत्र। [एलाटमेंट लेटर]

नियताप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) अन्य उपायों को छोड़ एक ही उपाय से फल की प्राप्ति का निश्चय (नाट०)।

नियतात्मा—(वि०, सं०, यौ०) वशी, यमी, यती, जितेन्द्रिय।

नियताहार, नियताहारी—(वि०, सं०, यौ०) परिमित भोजन, मितभुक, अल्पाहारी।

नियति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नियत होने का भाव, स्थिरता, बन्धेज। भाग्य या अवश्यंभावी बात।—**वाद**-(संज्ञा, पु०, यौ०) भाग्यवाद, भाग्य पर विश्वास करने का सिद्धान्त [फ़ेटलिज़्म]।

नियतेन्द्रिय—(वि०, सं०, यौ०) जितेन्द्रिय, संयत शरीर, प्रशांत चित्त।

नियम—(संज्ञा, पु०, सं०) दस्तूर, परम्परा, व्यवस्था। कानून-कायदा, शर्त, प्रतिज्ञा। योग का एक अंग।—**निष्ठा**-(संज्ञा, स्त्री०) नियमानुवर्त्तिता, नियम-पालन-सम्बन्धी दृढ़ भावना।—**पर**-(वि०, सं०) दृढ़तापूर्वक नियम पर चलने वाला।—**बद्ध**-(वि०, सं०) नियमों द्वारा अनुशासित। कायदे का पाबन्द, नियमों से बँधा हुआ।—**सेवा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नियम-पालन। विष्णु की पूजा जो क्वार मास की शुक्ला एकादशी से कार्त्तिक मास के अंत तक की जाती है। [**नियमसेवी** (वि०)]।—**स्थिति**-(संज्ञा, स्त्री०) कठोर नियम-पालन की अवस्था, तपश्चर्या।

नियमन—(संज्ञा, पु०, सं०) कायदा बाँधना, शासन।—**विधान**-व्यवस्थित करने वाला कानून। [रेगुलेटिंग ऐक्ट]। [**नियमित, नियम्य** (वि०)]।

नियमित—(वि०, सं०) क्रमबद्ध, नियम या कायदे के अनुसार, नियमबद्ध।

नियर†—(अव्य०, दे०) [सं० निकट, अं० नियर] समीप, पास। (क्रि० वि०, दे०) नियरे, नेरे।—**सेना**-प्रत्येक समय के लिए तैयार रहने वाली फौज, स्थायी सेना। [रेगुलर आर्मी]

नियराई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नियर+आई प्रत्य०] सामीप्य, निकटता। (क्रि० सा०, भू०, स्त्री०) निकट आयी। [**नियराये** (क्रि० स०, भू०, पु०)]। "बरसहिं जलद भूमि नियराये"—[रामा०]।

नियराना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० नियर+आना] पास या समीप पहुँचना या आना।

नियाई*—(वि०, दे०) [सं० न्याय] न्यायी, न्यायशास्त्रज्ञ।

नियान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निदान] परिणाम। (अव्य०, दे०) आखिरकार, अंत में, निदान।

नियामक—(संज्ञा, पु०, सं०) नियम या व्यवस्था करने वाला, अनुशासक व्यक्ति। सारथि। नाविक। (वि०) नियंत्रणकारी, दमनकारी। मारने वाला। [**नियामिका** (वि०)]। [**नियामिकता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

नियामत, न्यामत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० नेअ्मत] दुर्लभ या अलभ्य पदार्थ, स्वादिष्ट या उत्तम भोजन। धन, लक्ष्मी। लो०—"तन्दुरुस्ती हजार न्यामत है"।

नियाय, नियाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० न्याय] न्याय, उचित व्यवहार, इन्साफ, न्याव (ग्रा०)।

नियार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० न्यारा] सोनारों, जौहरियों या सर्राफों की दूकान का कूड़ा।

नियारा†—(वि०, दे०) [सं० निर्निकट] दूर, अलग, जुदा, [न्यारा (दे०)]।

नियारिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नियारा] न्यारिया, सुनार आदि की दूकान के कूड़े से सोना-चाँदी आदि का निकालने वाला। (वि०, दे०) चतुर, चालाक।

नियारे†*—(क्रि० वि०, दे०) [हि० नियारा] न्यारे, अलग, जुदा, पृथक्।

नियुक्त—(वि०, सं०) तैनात, मुकर्रर, नियोजित, लगाया या तत्पर किया हुआ, प्रेरित, स्थिर। "यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि"—[गीता०]।

नियुक्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिहस्तक, अभिकर्त्ता, मुख्तार [एटॉर्नी]।

नियुक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तैनाती, मुकर्ररी।

नियुत—(संज्ञा, पु०, सं०) दस लाख की संख्या।

नियुद्ध—(संज्ञा, पु०, सं०) कुश्ती, मल्ल युद्ध।

नियोक्तव्य—(वि०, सं०) नियोजित करने योग्य।

नियोक्ता—(संज्ञा, पु०) [सं० नियोक्तृ] नियोग करने वाला, नियोजनकर्त्ता।

नियोग—(संज्ञा, पु०) [सं० नियोगिन्] नियोजित करने का काम, प्रेरणा, मुकर्ररी, तैनाती। आज्ञा, आदेश (निर्वाचकों की ओर से व्यवस्थापिका सभा के सदस्यों को) [मैण्डेट]। द्वितीय पतिकरण, संतान-हीना स्त्री का, पति के रोगी, नपुंसक आदि होने की अवस्था में, देवर अथवा अन्य किसी गोत्रज से संतानोत्पादन करा लेने की प्रथा।

नियोगी—(वि०, सं०) नियुक्त, आज्ञा-प्राप्त।

नियोजक—(संज्ञा, पु०, सं०) तैनात या मुकर्रर करने वाला, काम में लगाने वाला।

नियोजन—(संज्ञा, पु०, सं०) मुकर्रर या तैनात करने, किसी को किसी काम में लगाने का कार्य। [**नियोजित, नियोजनीय, नियोज्य, नियुक्त** (वि०)]।

नियोजित—(वि०, सं०) नियुक्त, संयोजित, तैनात।

नियोज्य—(वि०, सं०) नियोजन के लायक, जो नियुक्त किया जाय। (संज्ञा, पु०) सेवक, नौकर।

निरंकार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निराकार] निराकार, ईश्वर, आकाश।

निरंकुश—(वि०, सं०) जिसे किसी का भी डर न हो, स्वतंत्र, स्वच्छंद, निडर। "निरंकुशाः कवयः"। "निपट निरंकुश, अबुध, अशंकू"—[रामा०]। [**निरंकुशता** (संज्ञा, स्त्री०)] **—राजतंत्र**–(संज्ञा, पु०, यौ०) ऐसी सरकार जिसमें राजा के ऊपर किसी प्रकार का नियंत्रण न हो। [ऐब्सोल्यूट मोनार्की]।

निरंग—(वि०, सं०) जिसके शरीर या अंग न हो, केवल। (संज्ञा, पु०, सं०) रूपकालंकार का एक भेद [(विलो०) **सांग**]। (वि०) [हि० उ० नि=नहीं+रंग] बदरंग, बेरंग, विवर्ण, उदास।

निरंजन—(वि०, सं०) कज्जल या अंजन-रहित। दोष-रहित, शुद्ध, निर्दोष। भाषा-रहित। (संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा।

निरंजनी—(वि०, सं०) निरंजनी सम्प्रदाय का (संन्यासी)। (संज्ञा, पु०) संन्यासियों का सम्प्रदाय-विशेष।

निरंतर—(वि०, सं०) घना, मिलित, स्थायी, अविच्छिन्न, अविचल। (क्रि० वि०, सं०) सदा, लगातार।

निरंतराभ्यास—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) लगातार अभ्यास, स्वाध्याय।

निरंतराल—(वि०, सं०) अविच्छेद, निरवकाश।

निरंध—(वि०, सं०) अत्यन्त अंधा, महामूर्ख। अति अंधकार, बहुत अँधेरा।

निरंभ—(वि०, दे०) [सं० निरंभम्] निर्जल, पानीरहित।

निरंश—(वि०, सं०) अंशहीन, जिसका हिस्सा या भाग न हो। बिना अक्षांश का, निरक्षांश।

निरकेवल†—(वि०, दे०) [सं० निस्+केवल] स्वच्छ, खालिस, बेमेल।

निरक्ष—(वि०, सं०) भूमि के मध्य भाग में अवस्थित।—**देश**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भूमध्य या विषुवत रेखा के निकटवर्ती देश (प्रा०)।—**रेखा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निरक्ष-वृत्त, क्रांति-वृत्त, नाड़ी-मंडल।

निरक्षन*—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० निरीक्षण] निगरानी, देखरेख, देखभाल। दर्शन, जाँच।

निरक्षर—(वि०, सं०) अक्षर-शून्य, [निरच्छर (दे०)] मूर्ख, अपढ़ **—भट्टाचार्य**–अपढ़, मूर्ख।

निरक्षि—(वि०, सं०) नेत्र-विहीन, अंधा।

निरखना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निरीक्षण] अवलोकन करना, देखना, ताकना। [**निरखाना. निरखवाना** (प्रेरणा० रूप, दे०)]।

निरग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नृग] एक दानी राजा, नृग।

निरगुन*—(वि०, दे०) [सं० निर्गुण] निर्गुण, तीनों गुणों से परे, भगवान।

निरगुनिया—(वि०, पु०) निर्गुण मत को मानने वाला।

निरचू—(वि०, दे०) [सं० निश्चित] निश्चित, खाली, छुट्टी या फुरसत वाला, निहचू (ग्रा०)।

निरच्छ*—(वि०, दे०) [सं० निरक्षि] अंधा।

निरजर—(वि०, दे०) [सं० निर्जर] जो कभी पुराना या जीर्ण न हो। देवता।

निरजोस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्यास] निर्णय, निचोड़, सारांश।

निरजोसी—(वि०, दे०) [हि० निरजोस] निर्णय करने या निचोड़ या सारांश निकालने वाला।

निरझर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्झर] सोता, चश्मा, झरना, निर्झर। [**निरझरी, निर्झरी** (स्त्री०, दे०)]।

निरत—(वि०, सं०) तत्पर, लीन, लगा हुआ। *‡(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नृत्य] नाच, नृत्य।

निरतना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नर्तन] नाचना, नृत्य करना।

निरति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अप्रीति, अप्रेम, अस्नेह।

निरतिशय—(वि०, सं०) सर्वोत्तम या उत्कृष्ट, सर्व श्रेष्ठ, सब से अच्छा या बढ़िया।

निरधातु—(वि०, दे०) [सं० निर्धातु] बल या शक्ति-हीन।

निरधार*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्धार] निर्णय, निश्चय, ठीक । सिद्धांत । "जो कहिए सो कीजिए पहले करि निरधार"—वृं० ।

निरधारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० निर्धारण] मन में निश्चय या स्थिर करना, समझना । बहुतों में से एक को चुन लेना ।

निरनुनासिक—(वि०, सं०, यौ०) अननुनासिक, नाक की सहायता से उच्चरित न होने वाले वर्ण ।

निरनुरोध—(वि०, सं०) सद्भावरहित, अमैत्री-पूर्ण ।

निरन्न—(वि०, सं०) निराहार, अन्न या भोजन-रहित, भूखा ।

निरन्ना—(वि०, दे०) [सं० निरन्न] अन्न-रहित, निराहार ।

निरन्वय—(वि०, सं०) निःसंतान । असम्बद्ध । मालिक की अनुपस्थिति में, चोरी-चोरी । असंगत ।

निरपत्य—(वि०, सं०) निस्संतान, पुत्र-कन्या-रहित ।

निरपत्रप—(वि०, सं०) निर्लज्ज, बेशर्म, धृष्ट ।

निरपना*—(वि०, दे०) [सं० निर+हि० अपना] दूसरे का, पराया, अन्य, जो अपना न हो।

निरपराध—(वि०, सं०) निर्दोष, अपराध-रहित । (क्रि० वि०, हि०) बिना कोई कसूर किये।

निरपराधी*—(वि०, सं०) निर्दोष, अपराध-रहित।

निरपवर्त्त, निरपवर्त्तन—(वि०, सं०) जिसका परिवर्त्तन न हो सके।

निरपवाद—(वि०, सं०) निर्दोष, कभी अन्यथा न होने वाला, सभी जगह एकसा ।

निरपाय—(संज्ञा, पु०) [सं० निर्+अपाय] रक्षा । निर्विघ्नता की स्थिति ।

निरपेक्ष—(वि०,) [सं० निर्+अपेक्ष] स्वतंत्र, बे परवाह, लापरवाह, अनपेक्ष, उदास, चाह या भरोसा-रहित, अलग, तटस्थ । [**निरपेक्षा, निरपेक्षी** (संज्ञा, स्त्री०)] । [**निरपेक्ष्य, निरपेक्षणीय, निरपेक्षित** (वि०)] ।

निरबंध—(वि०) बंधन से रहित, स्वच्छन्द । (संज्ञा, पु०) परमेश्वर ।

निरबंस, निरबंसी—(वि०, दे०) [सं० निर्वंश] संतान-रहित, वंश या कुटुम्ब-हीन ।

निरबल*—(वि०, दे०) [सं० निर्बल] निर्बल, कमजोर, निबल । "निरबल को न सताइए"—कबीर ।

निरबहना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० निभना] निभना, निबहना, निर्वाह होना ।

निरबेद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्वेद] वैराग्य, त्याग, ज्ञान ।

निरबेरा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० निबेरा] निबेरा ।

निरभिमान—(वि०, सं०) गर्वहीन, अहंकार-रहित, अभिमान-शून्य । "बन निरभिमान तुम बसो प्राण में, गाऊँ मैं"—पंत ।

निरभियोग—(वि०, सं०) अभियोग-रहित ।

निरभिलाष—(वि०, सं०) इच्छा, आकांक्षा या अभिलाषा से रहित, निरभिलाषी । [**निरभिलाषा** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

निरभ्र—(वि०, सं०) मेघ या बादल के बिना ।

निरमना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निर्माण] बनाना, निर्माण करना ।

निरमम—(वि०, दे०) [सं० निर्मम] ममता-रहित ।

निरमर, निरमल*—(वि०, दे०) [सं० निर्मल] निर्मल, स्वच्छ, उज्ज्वल ।

निरमाता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्माता] निर्माण करने वाला ।

निरमान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्माण] रचना, सृजन ।

निरमाना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निर्माण] रचना, बनाना, तैयार करना ।

निरमायल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्माल्य] किसी देवता पर चढ़ी वस्तु, निर्माल्य ।

निरमित—(वि०, दे०) [सं० निर्मित] बनाया हुआ । "ब्रह्मांड निकाया निरमित माया"—[रामा०] ।

निरमूलना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निर्मूलन] जड़ से नाश या निर्मूल करना । [**निरमूलन** (संज्ञा, पु०, दे०)] ।

निरमोल—(वि०, दे०) [सं० निर्मूल्य] अमोल, अमूल्य, अनमोल, उत्तम ।

निरमोहिल—(वि०, दे०) निर्मोही । "या निरमोहिल रूप की रासि"—ठाकु० ।

निरमोही*—(वि०, दे०) [सं० निर्मोही] निर्मोही, निर्दय, निर्दयी, मोह-रहित । ज्ञानी ।

"निरमोही ऐसे, सुधिहू न लेत"—[स्फु०]। "मत बन निरमोही नैन के सामने तू"—हरिऔध।

निरय—(संज्ञा, पु०, सं०) नरक, दोजख।

निरयण—(संज्ञा, पु०, सं०) अयन-रहित। गणना बिना। बेघर का।

निरर्गल—(वि०, सं०) अबाध, अप्रतिबंधक, बेरोक-टोक, अर्गल या जंजीर-रहित।

निरर्थक—(वि०, सं०) अर्थ-रहित। व्यर्थ, निष्फल, निष्प्रयोजन। (संज्ञा, पु०) एक निग्रह-स्थान (न्या०)। काव्य-सम्बन्धी दूषण। [**निरर्थकता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निरवच्छिन्न—(वि०, सं०) लगातार, क्रमशः, क्रमबद्ध।

निरवद्य—(वि०, सं०) दोष-रहित, स्वच्छ, शुद्ध, निर्दोष। [**निरवद्यता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निरवधि—(वि०, सं०) सीमा-रहित, असीम।

निरवयव—(वि०, सं०) अवयव-रहित, निराकार, निरंग।

निरवलंब—(वि०, सं०) अवलंब या आधार-हीन, बिना सहारे, निराश्रय, निरालंब।

निरवशेष—(वि०, सं०) सम्पूर्ण, समग्र, कुल।

निरवसाद—(वि०, सं०) प्रसन्न, खेद-रहित।

निरवसित—(वि०, सं०) जो पात्र पुनः शुद्ध न हो सके। निम्न श्रेणी के (चांडाल आदि) लोगों के छू जाने या उस पात्र में खा लेने पर जो पात्र फिर उपयोग में न आ सके।

निरवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) निराने का काम या दाम।

निरवाना—(क्रि० स०, दे०, हि०) निराई कराना।

निरवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० निवारना] छुटकारा, बचाव, निस्तार, निपटारा, सुलझाव, निवारण। निराने का काम या दाम।

निरवारना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निवारण] छुड़ाना, मुक्त करना। सुलझाना, निर्णय करना, तै या अलग करना। "बड़े बार श्रीवंत सीस के प्रेम-सहित लै लै निरवारे"।

निरवाह*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्वाह] निर्वाह, गुजारा।

निरशन—(संज्ञा, पु०, सं०) उपवास, लंघन, भोजन-परित्याग, अनशन।

निरसंक*‡—(वि०, दे०) [सं० निःशंक] निःशंक, निःसन्देह, निर्भय, बेधड़क।

निरस—(वि०, सं०) रस या स्वाद-बिना, विरस, फीका, बदमजा। [(विलो०) **सरस**]।

निरसन—(संज्ञा, पु०, सं०) हटाने, फेंकने, दूर या रद करने, निकालने, बध अथवा नाश करने की क्रिया। [**निरसनीय, निरस्य** (वि०)]।

निरस्त—(वि०, सं०) त्यक्त, त्यागा या छोड़ा हुआ, प्रत्याख्यात, निराकृत, निवारित, हटाया हुआ। "निरस्त नारी समया-दुराधयः"—[किरा०]। "होता मैं तब भी निरस्त नित हूँ।"—हरिऔध।

—**भेद**—(वि०) जिसका अंतर-भेद दूर किया गया हो, अनुरूप।

निरस्त्र—(वि०, सं०) अस्त्र-रहित, खाली हाथ।

निरस्त्रीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) निरायुध करना। [डिसआर्मेमेंट]।

निरहंकार—(वि०, सं०) घमंड या अभिमान-रहित।

निरहेतु*—(वि०, दे०) [सं० निर्हेतु] निर्हेतु, कारण-रहित, व्यर्थ।

निरा—(वि०, पु०, दे०) [अ० निराश्रय] खालिस, शुद्ध, बेमेल, केवल, निपट, बिलकुल, एकदम, एकबारगी। बहुत, सब का सब। [**निरी** (स्त्री०)]।

निराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० निराना] निराने का कार्य्य या मजदूरी, निरवाई।

निराकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) फैसला, निपटारा। सन्देह-निवारण। निवारण, परिहार, खंडन। [**निराकरणीय, निराकृत** (वि०)]।

निराकांक्षी—(वि०, सं०) संतुष्ट, शांत, निस्पृह। परमेश्वर। आकाश।

निराकार—(वि०, सं०) आकार-रहित। (संज्ञा, पु०) परमेश्वर। आकाश। ब्रह्म। [**निराकारिता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निराकाश—(वि०, सं०) पूरा भरा हुआ, जिसमें थोड़ी भी जगह खाली न हो।

निराकुल—(वि०, सं०) सावधान, जो घबराया या आकुल न हो; व्याकुलता-रहित। "सुपात्र निक्षेप निराकुलात्मन"—माघ०। [**निराकुलता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निराकृत—(वि०, सं०) अपमानित। अस्वीकृत। हटाया हुआ।

निराकृति—(वि०, सं०) आकार-हीन। "रूपमय, रगमय, निराकृति"—महा०।

निराखर*†—(वि०, दे०) [सं० निरक्षर] बिना अक्षर का, अक्षर-रहित, अपढ़, मूर्ख। चुप, मौन।

निराचार—(वि०, सं०) आचार-रहित, अनाचार, आचार-भ्रष्ट। [**निराचारी** (वि०)] । [**निराचारिता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निराट—(वि०, दे०) [हिं० निराला] कोरा, एकमात्र, निरा, निपट, बिलकुल, सब का सब।

निराडंबर—(वि०, सं०) बिना ढोंग का।

निरातंक—(वि०, सं०) निःशंक, निर्भय, बेधड़क, आतंक-रहित।

निरातप—(वि०, सं०) छायादार, जिसमें गर्मी या धूप न हो।

निरादर—(संज्ञा, पु०, सं०) अपमान, बेइज्जती।

निराधार—(वि०, सं०) बेसहारे। जो प्रमाणों के द्वारा पुष्ट न हो सके, मिथ्या, अयुक्त।

निरानंद—(वि०, सं०) आनंद-रहित, दुखी। "होगा कोई, जो निरानंद, कर मलता"—निराला।

निराना—(क्रि० स०, दे०) [सं० निराकरण] निकाना, खेत से घासादि खोदकर हटाना, [निरावना (दे०)]। [**निरवाना** (प्रेरणा० रूप)]। "कृषी निरावहिं चतुर किसाना"—[रामा०]। [**निराई, निरवाई** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निरापद—(वि०, सं०) निर्विघ्न, अनापद, सुरक्षित, विपत्ति-रहित, निरापत्ति।

निरापन, निरापुन*—(वि०, दे०) [पु० निः + हिं० अपना] पराया, जो अपना या निजी न हो।

निराबाध—(वि०, सं०) बाधा-रहित। जिसके साथ कोई बाधा न हो।

निरामय—(वि०, सं०) नीरोग, तंदुरुस्त, स्वस्थ, स्वास्थ्ययुक्त। "सर्वे संतु निरामयः"—[वे०]। "जो निरामय शक्ति है तम, त्याग में"—दिनकर।

निरामिष—(वि०, सं०) जो मांस न खाता हो, मांस-रहित, [निरामिख (दे०)]। "होहि निरामिष कबहुं कि कागा"—[रामा०]।

निराय—(वि०, सं०) जिसे कुछ आमदनी न हो।

निरायास—(वि०, सं०) जिसमें कोई मेहनत न लगे, आसान।

निरायुध—(वि०, सं०) बिना अस्त्र के, खाली हाथ, निरस्त्र।

निरार, निरारा—(वि०, दे०) [हिं० निराला] जुदा, अलग, पृथक्, निराला।

निरालंब—(वि०, सं०) सहारा या अवलंब से रहित, निराधार, निराश्रय।

निरालय—(वि०, सं०) मकान या घर-रहित, निर्जन, एकांत, निराला।

निरालस्य—(वि०, सं०) चुस्त, फुर्तीला, तत्पर, आलस-रहित, [निरालस (दे०)]।

निराला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निरालय] एकांत घर या स्थान, निर्जन, एकांत। [**निराली** (स्त्री०)] (वि०, दे०) विलक्षण, सब से अलग या भिन्न, अजीब, अनोखा, अद्भुत, अनूठा, उत्तम, अपूर्व।

निरालोक—(वि०, सं०) अंधेरा। दृष्टिशून्य। प्रकाश-रहित। (संज्ञा, पु०) शिव।

निरावना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० निराना] निराना। [**निरवाई** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निराश, निरास—(वि०, सं०, दे०) नाउम्मेद, आशा-हीन। (संज्ञा, पु०, सं०) [नैराश्य, निराशा]।

निराशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आशा का अभाव, [निरासा (दे०)], नाउम्मेदी, हताश होने का भाव।

निराशी*—(वि०) [सं० निराशा] हताश, विरक्त, उदासीन, नाउम्मेद, [निरासी (दे०)]। "निराशी, निर्ममोभूत्वा"—[गीता]।

निराश्रय—(वि०, सं०) आश्रयविहीन, बेसहारा, असहाय। [**निराश्रित** (वि०)]।

निरास्वाद—(वि०, सं०) अस्वादिष्ट, बिना स्वाद का।

निराहार—(वि०, सं०) भोजन-रहित, आहार-रहित।

निराह्लाद—(वि०) आह्लाद-शून्य। "जन जीवन बना न विशद, रहा वह निराह्लाद"—पंत।

निरिंद्रिय—(वि०, सं०) इन्द्रिय-रहित, बिना इंद्रिय का।

निरिच्छना—(क्रि० स०, दे०) [सं० निरीक्षण] देखना।

निरिच्छा—(वि०, सं०) इच्छा-रहित।

निरीक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) देखनेवाला, देख-रेख करने वाला [निरीच्छक (दे०)]।

निरीक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) देखरेख, निगरानी। चितवन, अवलोकन, [निरीच्छन (दे०)]। [**निरीक्षित, निरीक्ष्य, निरीक्षणीय, निरीक्षक** (वि०)]।

निरीक्षणाधिकारी—(संज्ञा, पु०, सं०) देखरेख करने वाला अधिकारी [सुपरवाइजिंग अथारिटी]।

निरीक्षा—(संज्ञा, स्त्री॰, सं॰) अवलोकन, चितवन। [निरीच्छा (दे॰)]।

निरीश्वर—(वि॰, सं॰) जिसमे ईश्वर की सत्ता का खण्डन हो या अभाव का प्रतिपादन हो, नास्तिक, ईश्वर की सत्ता में न विश्वास करने वाला।—**वाद**–(संज्ञा, पु॰, सं॰, यौ॰) यह सिद्धान्त कि परमेश्वर कोई वस्तु नहीं है। ईश्वर की सत्ता को न मानने का मत।—**वादी**–(संज्ञा, पु॰, सं॰) परमेश्वर को न मानने वाला, नास्तिक।

निरीह—(वि॰, सं॰) चेष्टा-रहित, प्रयत्न या इच्छा-रहित, उदासी, विरक्त, शांतिप्रिय। [**निरीहता** (संज्ञा, स्त्री॰)]।

निरुआर†—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ निवारण] निवारण, निर्वार। सुझाव।

निरुक्त—(वि॰, सं॰) निश्चय या ठीक रूप से कहा हुआ, नियुक्त, ठहराया हुआ। (संज्ञा, पु॰) वेद के छः अंगों में से चौथा अंग, जिसमें यास्क मुनि-कृत वैदिक शब्दों की व्याख्या है।

निरुक्ति—(संज्ञा, स्त्री॰, सं॰) शब्दों या वाक्यों की व्युत्पत्ति-बोधक व्याख्या। एक अलंकार जिसमें किसी संज्ञा शब्द के साभिप्राय अर्थान्तर से भाव मे सयुक्ति पुष्टि की जावे।

निरुच्छ्वास—(वि॰, सं॰) जो साँस न भरे हो या न लेता हो। जहाँ साँस लेने की जगह न हो, तंग, सकरा।

निरुज—(वि॰) [सं॰ नीरूज] रोग-रहित, तन्दुरुस्त, नीरोग।

निरुत्तर—(वि॰, सं॰) लाजवाब। उत्तर-हीन, जो उत्तर न दे सके। जिसका उत्तर न हो सके।

निरुत्सुक—(वि॰, सं॰) उत्सुकता-रहित, निरुद्वेग, उदासीन।

निरुत्साह—(वि॰, सं॰) उत्साह-हीन। [**निरुत्साही** (वि॰)]।

निरुद्देश्य—(वि॰, सं॰) उद्देश्य-रहित। (अ॰) बिना किसी लक्ष्य का।

निरुद्ध—(वि॰, सं॰) बँधा या रुका हुआ, घिरा हुआ।

निरुद्यत—(वि॰, सं॰) जो तत्पर न हो।

निरुद्यम—(वि॰, सं॰) उद्यम या रोजगार से रहित, उद्योग-हीन, बेकार। [**निरुद्यमता** (संज्ञा)], [**निरुद्यमी** (वि॰)]।

निरुद्यमी—(संज्ञा, पु॰) [सं॰ निरुद्यमिन्] निकम्मा, बेकार, उद्यम-रहित, निरुद्योगी।

निरुद्योग—(वि॰, सं॰) उद्योग-रहित, बेकार, निरुद्यम [**निरुद्योगी** (वि॰)]।

निरुपद्रव—(वि॰, सं॰) उपद्रव-रहित, शांत।

निरुपद्रवी—(वि॰, सं॰) [निरुपद्रविन्] शांत, जो उपद्रव न करे।

निरुपम—(वि॰, सं॰) उपमा-रहित, बेमिसाल, बेजोड़, अद्वैत, अनुपम।

निरुपयुक्त—(वि॰, सं॰) अनुपयुक्त, अनुचित।

निरुपयोगी—(वि॰, सं॰) उपयोग-रहित, व्यर्थ, निरर्थक। [**निरुपयोग** (संज्ञा, पु॰, सं॰)]।

निरुपस्कृत—(वि॰, सं॰) पवित्र, विशुद्ध।

निरुपहत—(वि॰, सं॰) अनाहत, शुभ, जिसकी क्षति न हुई हो।

निरुपाधि—(वि॰, सं॰) उपाधि-रहित। निर्बोध, माया-रहित। (संज्ञा, पु॰, सं॰) ब्रह्म।

निरुपाय—(वि॰, सं॰) उपाय-रहित, जो कुछ उपाय न कर सके, जिसका कोई उपाय न हो सके।

निरुपेक्ष—(वि॰, सं॰) जो उपेक्षा न करे, उपेक्षा से रहित।

निरुवरना*†—(क्रि॰ अ॰, दे॰) [सं॰ निवारण] कठिनता आदि का न होना, सुलझना।

निरुवार†—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ निवारण] मोचन, छुटकारा। रक्षा। फैसला, निर्णय।

निरुवारना*—(क्रि॰ स॰, दे॰) [हि॰ निरुवार] मुक्त करना, छुड़ाना। सुलझाना, निर्णय देना, फैसला करना, निबटाना।

निरूढ़—(वि॰, सं॰) बहुत प्रसिद्ध। कुँआरा। बहुत अधिक प्रचलित। संशोधित। (संज्ञा, पु॰)। पशु-यज्ञ-विशेष।—**लक्षणा**–(संज्ञा, स्त्री॰, सं॰) एक लक्षणा-भेद, जिसमें शब्द का ग्रहण किया हुआ अर्थ रूढ़ हो गया हो (काव्य॰)।

निरूढ़ा—(संज्ञा, स्त्री॰, सं॰) निरूढ़ लक्षणा।

निरूप—(वि॰) [हि॰ निः+रूप] रूप-रहित, निराकार। कुरूप।

निरूपक—(वि॰, सं॰) निरूपण करने वाला।

निरूपण—(संज्ञा, पु॰, सं॰) दर्शन। विचार, निर्णय। प्रकाश। बखान, [निरूपन (दे॰)]। "ब्रह्मनिरूपण करहिं सब"—[रामा॰]। [**निरूपणीय** (वि॰)]।

निरूपना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निरूपण] निश्चित, निर्णय करना, ठहराना, विचारना। कहना।

निरूपित—(वि०, सं०) जिसका निर्णय या निरूपण हो चुका हो।

निरूप्य—(वि०, सं०) निरूपण करने योग्य।

निरूह—(संज्ञा, पु०, सं०) वस्ति का एक विशेष प्रकार। निश्चय, तर्क।

निरूहण—(संज्ञा, पु०, सं०) वस्ति का प्रयोग। तर्क या निश्चय करना।

निरेखना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० निरखना] निरखना, देखना, अवलोकन करना।

निरेट—(वि०, दे०) पोढ़ा, ठोस, दृढ़।

निरै*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निरय] नरक। (क्रि० वि०, दे०) बिलकुल ही, निरा, निपट।

निरोग, निरोगी—(संज्ञा, पु०) [सं० नीरोग] स्वस्थ, तन्दुरुस्त, रोग-रहित।

निरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) अवरोध, रोक, बंधन, घेर। नाश। "योगश्च चित्त-वृत्ति-निरोधः" —[योग०]।—**परिणाम**–(संज्ञा, पु०) चित्त-वृत्ति की स्थिति-विशेष।

निरोधक—(वि०, सं०) रोकने वाला।

निरोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) अवरोध, रोक, बंधन। [**निरोधनीय, निरोधित** (वि०)]।

निरौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) निराने की क्रिया या मजदूरी।

निर्ख—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दर, भाव।—**नामा** –(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भावसूचक पत्र।

निर्गंध—(वि०, सं०) गंध-रहित। [**निर्गंधता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "निर्गंधा इव किंशुकाः"।

निर्गत—(वि०, सं०) निकला या बाहर आया हुआ। "नख-निर्गता, सुरवंदिता, त्रैलोक्य-पावन सुरसरी"—[रामा०]। [**निर्गता** (स्त्री०)]।

निर्गत्य—(क्रि० अ०, पू० का०) [सं० निर्गत] निकलकर।

निर्गम—(संज्ञा, पु०, सं०) निकास, उद्गम।

निर्गमन—(संज्ञा, पु०, सं०) निकलने का कार्य।

निर्गमना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निर्गमन] निकलना, बाहर आना या जाना।

निर्गुंडी, निर्गुंडिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संभालु, सिंधवार (औष०)।

निर्गुण—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्गुन, तीनों गुणों से परे, [निरगुन (दे०)], परमेश्वर। (वि०, सं०) जिसमें कोई गुण न हो, बुरा। [**निर्गुणता, निर्गुणत्व** (संज्ञा, स्त्री०, पु०)]। "गुणाःगुणज्ञेषु गुणाः भवंति, ते निर्गुणं प्राप्य भवंति दोषाः"।

निर्गुणिया—(वि०, दे०)[सं० निर्गुण+इया प्रत्य०] निर्गुण ब्रह्म का उपासक। गुण-रहित। [निरगुनिया (दे०)]। "निर्गुणिया के साथ गुणी गुण आपन खोवत"—गिरि०।

निर्गुणी—(वि०) [सं० निर्गुण] मूर्ख, निरगुनी, [निर्गुनी (दे०)]।

निर्गूढ़—(वि०, सं०) अत्यन्त रहस्यवादी, अत्यधिक गूढ़।

निर्घंट—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्दकोष, निघंटु।

निर्घात—(संज्ञा, पु०, सं०) ध्वंस, नाश, आँधी के आन का शब्द। वज्रघात, आघात, प्रहार।

निर्घातन—(संज्ञा, पु०, सं०) शल्य-चिकित्सा की क्रिया-विशेष। बाहर निकालना।

निर्घृण—(वि०, सं०) नीच, निर्दय, निन्दित। घृणा या जुगुप्सा-हीन। [**निर्घृणी** (वि०)]।

निर्घोष—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द, आवाज। (वि०, सं०) शब्द-रहित। [**निर्घोषित** (वि०)]।

निर्छल*†—(वि०, दे०) [सं० निश्छल] छल-रहित, निष्कपट, निहछल (ब्र०)।

निर्जन—(वि०, सं०) सुनसान, एकान्त, मनुष्य-रहित, विजन, [निरजन (दे०)]।

निर्जल—(वि०, पु०, सं०) जल-रहित, बिना पानी, [निरजल (दे०)] निरंबु। [**निर्जला** (वि०, स्त्री०)] —(**ला**) **एकादशी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी, जब निर्जल व्रत किया जाता है (पुरा०)।

निर्जित—(वि०, सं०) पराजित, परास्त, वशीभूत।

निर्जीव—(वि०, सं०) बेजान, जीवन या जीव-रहित, जड़, मरा हुआ। उत्साह या शक्ति से हीन। अचैतन्य।

निर्झर—(संज्ञा, पु०, सं०) सोता, झरना, चश्मा। [**निर्झरी** (स्त्री०)]।

निर्झरिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी।

निर्णय—(संज्ञा, पु०, सं०) उचितानुचित का निश्चय, दो पक्षों में से एक को ठीक ठहराना। निश्चय, फैसला, निबटारा, [निरनय (दे०)]। "साँच झूठ निर्णय करै, नीतिनिपुन जो होय"—वृं०।—**विंदु**–(संज्ञा, पु०) विवादग्रस्त प्रश्न, [प्वाइंट ऐट इशू]

निर्णयोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के गुण-दोष की विवेचना रहती है (काव्य०)।

निर्णायक—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्णय करनेवाला व्यक्ति।—**मत**–वह मत जिसके मिलने पर जीत का निश्चय हो जाये। [कास्टिंग वोट]

निर्णायन—(संज्ञा, पु०, सं०) निश्चय करने का एक भाव।

निर्णीत—(वि०, सं०) निर्णय किया हुआ, निर्णय-सिद्ध।

निर्णेता—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्णय करने वाला, निश्चयकर्त्ता।

निर्त*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नृत्य] नाच, नृत्य।

निर्तक*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नर्त्तक] नाचने या नृत्य करने वाला। [**निर्तकी** (स्त्री०)]।

निर्तना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नृत्य] नाचना।

निर्दई*†—(वि०, दे०) [सं० निर्दय] दया-रहित।

निर्दग्ध—(वि०, सं०) जो दग्ध न हो, जो जला हुआ न हो।

निर्दय—(वि०, सं०) दया-रहित, निष्ठुर, निर्दय।

निर्दयता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निष्ठुरता, बेरहमी।

निर्दयी*†—(वि०, दे०) [सं० निर्दय] निष्ठुर, दया-हीन, अकरुण।

निर्दहन—(संज्ञा, पु०, सं०) जलाना।

निर्दहना*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० दहन] जलाना।

निर्दिष्ट—(वि०, सं०) ठहराया, बतलाया या नियत किया हुआ।—**क्षेत्र**–(संज्ञा, पु०) सूचित क्षेत्र (जिन्हें नगर-पालिका के थोड़े से अधिकार प्राप्त होते हैं) [नोटीफाइड एरिया]।—**रीति**–(संज्ञा, स्त्री०) बताई हुई परिपाटी, [प्रेसक्राइब्ड मैनर]।

निर्दूषण—(वि०, सं०) निर्दोष, दोष-रहित।

निर्देश—(संज्ञा, पु०, सं०) आज्ञा, आदेश ; प्रस्ताव, कथन। निरूपण, निर्णय। उल्लेख, वर्णन, नाम।—**ग्रंथ**–(संज्ञा, पु०) सदर्भ ग्रंथ। [रिफरेंस बुक]।—**लिपिक**–(संज्ञा, पु०) निर्देष करणिक। [रिफरेंस क्लर्क] ।—**सहायक**–(संज्ञा, पु०) हवाला या प्रसंग आदि देने के लिए नियुक्त सहायक, [रिफरेंस असिस्टेंट]।

निर्देशक—(वि०, सं०) जो निर्देश करे।

निर्देशिनी—(संज्ञा, स्त्री०) निर्देश-पुस्तक, [डाइरेक्टरी]।

निर्दोष—(वि०, सं०) दोष-रहित, निरपराध, बेकसूर, बेऐब, [निरदोष (दे०)]। " ज्यों निरदोष मयंक लखि, गिनै लोग उतपात "—वृं०।

निर्दोषता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निरपराधता।

निर्दोषी—(वि०) [सं० निर्दोषिन्] दोष-रहित, निरपराध, बेकसूर, [निरदोषी (दे०)]।

निर्द्वंद, निर्द्वंद्—(वि०, सं०, दे०) स्वतंत्र, स्वच्छंद, मान-अपमान, राग-द्वेष, दुख-सुख आदि से परे, अकेला, विरोध-रहित।

निर्धन—(वि०, सं०) कंगाल, धन-रहित, [निरधन (दे०)]। " निर्धन के धन गिरधारी "—मीरा०।

निर्धनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कंगाली, [निरधनता (दे०)]।

निर्धार, निर्धारण—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिष्ठा पाना। निर्णय, निश्चय, [निरधार, निरधारन (दे०)]। " पहिले करि निरधार "—वृं०।—**अधिकारी**–(संज्ञा, पु०) कर का निर्धारण करने वाला पदाधिकारी, [एसेसमेंट आफिसर]।

निर्धारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० निर्धारण] ठहराना, निश्चित या निर्धारित करना, [निरधारना (दे०)]।

निर्धारित—(वि०, सं०) ठहराया या निश्चित किया हुआ, [निरधारित (दे०)]।—**कर**–(संज्ञा, पु०) निश्चित किया हुआ कर, [एसेस्ड टैक्स]।

निर्नाथिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रक्षा का अभाव, अनाथ होने की स्थिति।

निर्निमेष—(वि०, सं०) जिसमें पलक तक न मारो जाय। (अ०) बिना पलक गिराए, एक टक। "या निर्निमेष पलकों में"—महा०।

निर्बंध—(संज्ञा, पु०, सं०) रुकाव, रुकावट, अड़चन। आग्रह, हठ, जिद। "निर्बंध तत्सतद् ज्ञात्वा" [भाग०]।

निर्बल—(वि०, सं०) दुर्बल, बल-रहित, [निरबल (दे०)]। " निर्बल पक्ष परिग्रहः "—माघ०। "निर्बल को न सताइए"—कबीर।

निर्बलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमजोरी, शक्ति का अभाव। " अबला जियति लाल निरबलता बल सों "।

निर्वहना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निर्वहन] दूर या पार होना, अलग होना, निभना। पालन होना, [निवहना (दे०)]।

निर्वाचन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्वाचन] चुनाव, छँटाव। निश्चय, निर्णय। [**निर्वाचित, निर्वाचनीय** (वि०)]

निर्बाध—(वि०, सं०) बिना बाधा का, बिना रोक-टोक का, प्रतिबंध-रहित। एकांत, निर्जन।

निर्बाधित—(वि०) बाधारहित।

निर्बासन—(संज्ञा, पु०) [सं० निर्वासन] देश-निकाला, नगर-निकाला। दूर करना। [**निर्बासित, निर्बासनीय** (वि०)]।

निर्बुद्धि—(वि०, सं०) बेसमझ, मूर्ख, अज्ञान।

निर्बूझ—(वि०, दे०) [हि० बूझना] अबूझ, नासमझ, मूर्ख, अज्ञान।

निर्बोध—(वि०, सं०) अज्ञान, अनजान, अबोध।

निर्भय—(वि०, सं०) निडर, बेधड़क, अशंक।

निर्भयता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बेखौफी, बेधड़की, बेडरपन, निडरता। "मा, तेरी निर्भयता हो नित तेरे पूजन के उपहार"—पंत।

निर्भर—(वि०, सं०) परिपूर्ण, खूब भरा, युक्त। अवलंबित, आश्रित। "निर्भर प्रेम-मगन हनुमाना" —[रामा०]।

निर्भीक—(वि०, सं०) निडर, बेधड़क, बेडर।

निर्भीकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निडरता, निर्भयता।

निर्भीत—(वि०, दे०) निडर, अशंक।

निर्भ्रम—(वि०, सं०) शंका, संदेह या भ्रम से रहित, निर्भ्रांत। (अव्य०) निश्चिन्त होकर, बिना किसी खटके के। [**निर्भ्रामक, निर्भ्रमात्मक** (वि०)] भ्रम-मुक्त, भ्रान्तिहीन, जिसे भ्रम न उत्पन्न हो सके।

निर्भ्रांत—(वि०, सं०) संदेह, शंका या भ्रम से रहित, जिसमें कोई संदेह न हो।

निर्मना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० निर्माण] निरमना, बनना।

निर्मम—(वि०, सं०) मोह या ममता से रहित, निर्मोही, जिसे कोई इच्छा या वासना न हो, त्यागी। "दुखमय तन में निर्ममों से रुके हैं"—हरिऔध।

निर्मर्याद—(वि०, सं०) मर्यादा का अतिक्रमण करने वाला। मान्यता-हीन, अपमानकारी।

निर्मल—(वि०, सं०) स्वच्छ, निर्दोष, शुद्ध, पवित्र, निष्कलंक, [निरमल (दे०)]। "सरिता सर निर्मल जल सोहा"—[रामा०]।

निर्मलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वच्छता, शुद्धता, निष्कलंकता।

निर्मला—(संज्ञा, पु०) [सं० निर्मल] नानक-पंथी, एक प्रकार के साधु। (वि०, स्त्री०) शुद्धा।

निर्मली—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० निर्मल] रीठा का पेड़ या फल, जिससे पानी साफ हो जाता है।—कृत,—भूत-(वि०, सं०, यौ०) स्वच्छ किया हुआ।

निर्मलोत्पल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) स्फटिक, संगमरमर।

निर्माण—(संज्ञा, पु०, सं०) रचना, बनावट, सृष्टि-करण, गठन, [निरमान (दे०)]। "निर्माण-दक्षस्य-समीहतेषु"—[नैष०]।—**विद्या**-(संज्ञा, स्त्री०) बनाने की विद्या। निर्माण करने की कलात्मक शक्ति।

निर्माता—(संज्ञा, पु०, सं०) सृजन करने या बनाने वाला, रचयिता। "जग निर्माता जाहि रचि, कला कृतारथ कौन"—मन्ना०।

निर्मात्रिक—(वि०, सं०) मात्रा-रहित, बिना मात्रा के, अमात्रिक।

निर्मात्री—(संज्ञा, स्त्री०) निर्माण करनेवाली।

निर्मान—(वि०) [हि० निः+मान] अपार, असीम, बेहद। (संज्ञा, पु०) [सं० निर्माण] बनाव, सृजन, रचना।

निर्माना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निर्माण] [निरमाना (दे०)], रचना, सृजना, बनाना।

निर्मायल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्माल्य] किसी देवता पर चढ़ी हुई वस्तु।

निर्मार्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) साफ करना या धोना।

निर्माल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) देवता पर चढ़ी हुई वस्तु। "निराशा का सूना निर्माल्य"—महा०।

निर्मित—(वि०, सं०) रचित, सृजित, बनाया हुआ। [निरमित (दे०)]। "ब्रह्मांड निकाया, निर्मित माया"—[रामा०]।

निर्मुक्त—(वि०, सं०) सर्वथा मुक्त, बंधनरहित।

निर्मुक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मुक्ति। छुटकारा।

निर्मूल—(वि०, सं०) बेजड़, बेबुनियाद। नाश को प्राप्त, नष्ट। [**निर्मूलित** (वि०)]।

निर्मूलन—(संज्ञा, पु०, सं०) मूलोच्छेदन। [**निर्मूलीय** (वि०)]।

निर्मेघ—(वि०) मेघरहित, बादलों से रहित। "शुभ्र जो था निर्मेघ गगन"—महा०।

निर्मोक*†—(संज्ञा, पु०, सं०) सर्प की केंचुली। देह की त्वचा। आकाश।

निर्मोक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्ण मुक्त।

निर्मोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) मुक्ति, छुटकारा।

निर्मोल*†—(वि०) [सं० निः+हि० मोल] अनमोल, अमूल्य, अधिक बढ़िया।

निर्मोह—(वि०, सं०) मोह-ममता-रहित, कठोर, निर्दय, कड़ा, [निरमोह (दे०)]।

निर्मोहिनी—(वि०, स्त्री०) [हि० निर्मोह+इनी प्रत्य०] ममता-मोह-रहित, निर्दय।

निर्मोही—(वि०) [सं० निर्मोह] मोह-ममता-रहित, निर्दय, कठोर, निठुर, [निरमोही (दे०)]।

निर्याण—(संज्ञा, पु०, सं०) कूच, प्रस्थान, बाहर जाना। प्राण का निकलना, मोक्ष।

निर्यात—(संज्ञा, पु०, सं०) रफ्तनी माल, विदेश भेजा गया माल, [एक्सपोर्ट]।

निर्यातन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिहिंसा, बैर-शोधन, प्रतिकार। माल विदेश भेजने का कार्य।

निर्याति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रस्थान, गमन। मोक्ष।

निर्यास—(संज्ञा, पु०, सं०) पेड़ों का गोंद या रस, सत, सार।

निर्युक्त—(वि०, सं०) युक्ति-रहित, अनुपयुक्त, अनुचित। [**निर्युक्ति** (संज्ञा, सं०)]।

निर्यौक्तिक—(वि०, सं०) युक्ति-रहित, मन-गढ़ंत, अनुचित, अनुपयुक्त।

निर्योगक्षेम—(वि०, यौ०, सं०) निश्चित, चिंता-शून्य, जिसे किसी बात का खटका न हो।

निर्लज्ज—(वि०, सं०) लज्जा-रहित, बेशरम, [निरलज्ज, निलज्ज (दे०)]।

निर्लज्जता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बेशर्मी, बेहयाई।

निर्लिप्त—(वि०, सं०) जो लिप्त या आसक्त न हो। साफ, शुद्ध, निर्दोष, [**निर्लिप्तता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निर्लेप—(वि०, सं०) लेप या दोष-शून्य, निर्दोष, निष्कलंक, साफ, शुद्ध।

निर्लेपन—(संज्ञा, पु०, सं०) दोष-शून्यता। [**निर्लेपनीय, निर्लेपित** (वि०)]।

निर्लेश—(वि०, सं०) लेश-रहित, निर्दोष, निष्कलंक, साफ, शुद्ध।

निर्लोभ—(वि०, सं०) लालच-रहित, लोभ-हीन।

निर्लोम—(वि०, सं०) लोम या रोम-रहित।

निर्वंश—(वि०, सं०) कुल-रहित, कुटुम्ब या परिवार-हीन, जिसका वंश नष्ट हो गया हो। [निरबंस (दे०)]। [**निर्वंशता** (संज्ञा, स्त्री०)]। [**निर्वंशी** (वि०)]।

निर्वचन—(वि०, सं०) मौन, चुप। निर्दोष। आपत्ति-शून्य।

निर्वचनीय—(वि०, सं०) जिसका निर्वचन किया जा सके, जो लक्षण या उदाहरण द्वारा समझाया जा सके।

निर्वहण—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्वाह, निबाह, सम्पादन गुजर, गुजारा।—**संधि**—नाटक की पांच संधियों मे अंतिम।

निर्वहना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निर्वहन] निभना, चलना, गुजर करना, निबहना।

निर्वाचक—(संज्ञा, पु०, सं०) चुनने वाला, जो चुने या निर्वाचन करे।—**पदाधिकारी**—(संज्ञा, पु०) चुनाव अधिकारी। [रिटर्निंग अधिकार]

निर्वाचन—(संज्ञा, पु०, सं०) बहुतों मे से एक का चुनाव। [**निर्वाचनीय** (वि०)]।—**अधिकारी**—(संज्ञा, पु०) चुनाव अधिकारी [पोलिंग आफिसर] [एलेक्शन आफिसर]।—**अपराध**—(संज्ञा, पु०) चुनाव संबंधी नियम-विरुद्ध कार्य।—**क्षेत्र**—(संज्ञा, पु०) मत-क्षेत्र, चुनाव का सीमावर्ती भाग, मतदाताओं का समूह [कांस्टीट्यूशन]।—**ज्वर**—(संज्ञा, पु०) चुनाव की सरगर्मी। [एलेक्शन फीवर]।—**न्यायालय**—(संज्ञा, पु०) निर्वाचन सम्बन्धी झगड़ों को तय करने वाला न्यायालय, [एलेक्शन ट्रिब्यूनल]।—**पुस्तिका**—(संज्ञा, स्त्री०) निर्वाचक सूची, [पोलिंग बुक]।—**प्रार्थनापत्र**—(संज्ञा, पु०) किसी के चुनाव को रद्द कराने के लिए दी जाने वाली दरख्वास्त [एलेक्शन पिटीशन]—**मंडल**—(संज्ञा, पु०) मतदातागण, निर्वाचक मण्डल। [एलेक्टोरल कालेज]।—**लेखा**—चुनाव सम्बन्धी व्यय का हिसाब, [एलेक्शन एकाउंट]।—**सूची**—मतदाताओं की सूची। [एलेक्टोरल लिस्ट]।

निर्वाचित—(वि०, सं०) चुना या छाँटा हुआ।—**सदस्य**—(संज्ञा, पु०) चुना हुआ सदस्य, [एलेक्टेड मेंबर]।

निर्वाण—(वि०, सं०) बुझा हुआ, अस्तंगत। शांत। मृत। (संज्ञा, पु०, सं०) ठंडा हो जाना। अस्त अथवा समाप्त होने का भाव, मुक्ति, [निरबान (दे०)]। "पद न चहौं निरबान"—[रामा०]।

निर्वाणोन्मुख—(वि०) [सं० निर्वाण + उन्मुख] जो निर्वाण की ओर अग्रसर हो। "कभी आयेगा ध्यान अतीत तुम्हे क्या निर्वाणोन्मुख दीप"—महा०।

निर्वात—(वि०, सं०) वायु या पवन-रहित स्थान। निर्वायु।

निर्वाद—(संज्ञा, पु०, सं०) लोकनिन्दा, अफवाह, लोकापवाद।

निर्वाध—(वि०, सं०) बाधा या विघ्न-रहित, कंटक या शत्रु-रहित। सुगम, सरल, अबाध।

निर्वाप—(संज्ञा, पु०, सं०) दान, पितरों के लिए किया जानेवाला दान।

निर्वापण—(संज्ञा, पु०, सं०) त्याग, दान। प्राण-नाश, वध, नाश।

निर्वायु—(वि०, सं०) वायु-रहित।

निर्वास—(संज्ञा, पु०, सं०) निकाल देने या बाहर कर देने का भाव, दूरीकरण।

निर्वासक—(संज्ञा, पु०, सं०) निकालने या बाहर करने वाला, देश-निकाला देने वाला।

निर्वासन—(संज्ञा, पु०, सं०) वध करने, मार डालने, देश आदि से निकाल देने की क्रिया। देश-निकाला। [**निर्वासनीय** (वि०)]

निर्वासित—(वि०, सं०) दूरीकृत, निकाला गया, बहिष्कृत।

निर्वास्य—(वि०, सं०) निकालने योग्य, देशनिकाले के योग्य, अपराधी।

निर्वाह—(संज्ञा, पु०, सं०) गुजर, निबाह (दे०)। **—साधन**—(संज्ञा, पु०) जीवन-यापन के साधन। [मीन्स आफ सब्सिटेंस] **—स्वत्व**—(संज्ञा, पु०) भरण-पोषण सम्बन्धी अधिकार, [क्लेम फारमेंटेनेंस]।

निर्वाहना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निर्वाह + हि० ना प्रत्य०] गुजर या निर्वाह करना।

निर्विकल्प—(वि०, सं०) विकल्प या भेद-रहित, परिवर्तन-हीन, निश्चल, स्थिर, नित्य। **—समाधि**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) समाधि का एक भेद जिसमें ज्ञान, ज्ञाता और ज्ञेय का भेद मिट जाता है, परमात्मा का साक्षात्कार।

निर्विकार—(वि०, सं०) विकार-रहित, परिवर्तन-हीन। शुद्ध, साफ, निर्दोष, स्वच्छ।

निर्विकारी—(वि०, सं०) विकार-शून्य।

निर्विघ्न—(वि०, सं०) बाधा-रहित। (क्रि० वि०, सं०) विघ्न के बिना। [**निर्विघ्नता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निर्विचार—(वि०, सं०) विचारशून्य। (संज्ञा, पु०) समाधि का योग-विशेष।

निर्विरोध—(वि०, सं०) बिना विरोध का। विरोध हुए बिना, विरोध-रहित, [यूनेनिमस]।

निर्विवाद—(वि०, सं०) विवाद-रहित, झगड़ा-हीन। बिना हुज्जत। **—आधिपत्य**—(संज्ञा, पु०) विवाद-रहित अधिकार, [अनडिसप्यूटेड पजेशन]।

निर्विवेक—(वि०, सं०) विचार-रहित, बुद्धि या ज्ञान से शून्य। [**निर्विवेकी** (वि०)]।

निर्विशंक—(वि०, सं०) निडर, साहसी, निर्भय।

निर्विशेष—(संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर, परमात्मा, जिससे विशेष या अधिक कोई न हो।

निर्विष—(वि०, सं०) विष-मुक्त, विष के बिना।

निर्विषी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक घास जिसकी जड़ अनेक विष-दोषों को मिटाने में काम आती है, जदवार (प्रान्ती०)।

निर्वीज—(वि०, सं०) बीज-रहित, बिना बीज के, कारण-रहित। (दे०) [सं० निर्वीर्य] नपुंसक, अशक्त।

निर्वीर—(वि०, सं०) वीर-विहीन, बिना वीर के। [**निर्वीरता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "निर्वीर-मुर्वीतलम्"—[ह० ना०]।

निर्वीर्य—(वि०, सं०) वीर्य-रहित, पौरुष या बल-रहित, कमजोर, निस्तेज।

निर्वृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सिद्धि, निष्पत्ति, वृत्ति-रहित, [**निवृत्तिक** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

निर्वेद—(संज्ञा, पु०, सं०) अपनी अवज्ञा, अपना अपमान, आत्मावहेलना, एक संचारी भाव (काव्य०)।

निर्वैर—(वि०, सं०) वैर-रहित, अजातशत्रु।

निर्व्यलीक—(वि०, सं०) निष्कपट।

निर्व्याज—(वि०, सं०) छल-रहित, बाधा-हीन, निष्कपट, बिना बहाने के।

निर्व्याधि—(वि०, सं०) व्याधि-रहित; अरोग, निरोग।

निर्हरण—(वि०, सं०) शव-बहिष्करण, मृतक, अरथी या मुर्दा निकालना।

निर्हेतु—(वि०, सं०) कारणरहित, निष्प्रयोजन ।

निर्हेतुक—(वि०, सं०) निष्प्रयोजन, अकारण, निष्कारण ।

निल—(संज्ञा, पु०, सं०) विभीषण का मन्त्री । (अव्य०, अं०) शून्य, कुछ नहीं ।

निलज्ज—(वि०, दे०) [सं० निर्लज्ज] निर्लज्ज, बेशर्म, [निलज (दे०)] । "अधम निलज्ज लाज नहिं तोहीं "—[रामा०] ।

निलज्जता*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निर्लज्जता] निर्लज्जता, बेशर्मी ।

निलज्जी*†—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० निर्लज्ज] निर्लज्ज, बेशर्म स्त्री ।

निलय—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थान, घर, मकान ।

निलयन—(संज्ञा, पु०, सं०) रहना । निवास-स्थान, घर ।

निलहा—(वि०, दे०) [हि० नील] नीलवाला । नीलसम्बन्धी, नील का व्यापारी ।

निलीन—(वि०, सं०) गुप्त, प्रच्छन्न, तिरोहित, गूढ़, बहुत ही छिपा हुआ ।

निवर—(वि०, सं०) निर्णय-कर्त्ता । निवारण-कर्त्ता, बचाने वाला ।

निवरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुमारी कन्या, अविवाहिता ।

निवर्त्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) रोकना, लौटना, वापिस या फिर आना ।

निवसन—(संज्ञा, पु०) [निस्+वसन] गाँव । घर, वस्त्र, कपड़ा ।

निवसना—(क्रि० अ०) [सं० निवसन] निवास करना, रहना, टिकना ।

निवह—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, यूथ, झुंड, सात वायु में से एक ।

निवाई—(वि०, दे०) [सं०, नव] नूतन, नवीन, नया । विलक्षण, अनोखा ।

निवाज—(वि०, फ़ा०) कृपा, दया । मेहरबान, दयालु, [निवाजू, नेवाज (दे०)] । "गयी बहोर गरीब निवाजू" । "बनहुँ गरीब निवाज" ।

निवाजना*†—(क्रि० स०, दे०) [फ़ा० निवाज] कृपा, दया या अनुग्रह करना, मेहरबानी करना, [नेवाजना (दे०)] ।

निवाजिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कृपा, अनुग्रह ।

निवाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) छोटी नाव, नाव का एक खेल जिसमें नाव को बार-बार चक्कर देते है, नाव-नवरिया, नावा (ग्रा०) ।

निवात—(संज्ञा, पु०, सं०) वह स्थान जहाँ वायु न आ सके, वायु-रहित । (संज्ञा, पु०) कवच जिसे शस्त्र भेद न सके ।—**कवच**–(संज्ञा, पु०, सं०) प्रह्लाद का पुत्र, एक दैत्य, जिसके नाम से उसके वंशज भी प्रसिद्ध हुए, अर्जुन ने इन्हें मारा था ।

निवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० नवार] निवाड़ा, नेवार, मोटे सूत की पट्टी जिससे पलंग बुनते है, [निवाड़ (दे०)] । (संज्ञा, पु०) [सं० सोवार] एक प्रकार का धान, तिनीधान ।

निवारक—(वि०, सं०) हटाने या दूर करने वाला । रोधक, रोकने या मिटाने वाला ।

निवारण—(संज्ञा, पु०, सं०) [निवारन (दे०)] निवृत्ति, छुटकारा । रोक, निरोध । "करिय जतन जेहि होय निवारन"—[रामा०] । [**निवारणीय** (वि०)] ।

निवारना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निवारण] रोकना । हटाना, दूर करना, मिटाना । मना या निषेध करना । " सैनहिं रघुपति लखन निवारे" —[रामा०] ।

निवारा—(संज्ञा, पु०, दे०) निवाड़ा, जल-क्रीड़ा, नाव फेरना ।

निवारि—(पू० का०, क्रि० स०, दे०) [हि० निवारना] बचा कर । रोक कर, मना करके, बरज कर ।

निवारित—(वि०, सं०) हरका, बचाया, रोका, मना किया हुआ ।

निवारी, निवाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नेवाली या नेमाली] एक लता और उसके फूल । "निवाड़ी की अजब साकी मीठी है बू"—सौदा० ।

निवाला—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कौर, ग्रास ।

निवास—(संज्ञा, पु०, सं०) घर, मकान, स्थान, रहाइश । "ऊँच निवास नीच करतूती"—[रामा०] ।—**स्थान**–(संज्ञा, पु०, सं०) घर, मकान, जगह, ठौर, रहने की जगह ।

निवासी—(संज्ञा, वि०, पु०) [सं० निवासिन्] वासी, रहने या बसने वाला । [**निवासिनी** (स्त्री०)]

निविड़—(वि०, सं०) घना, गहरा, [निबिड़ (दे०)] । "कबहुं दिवस महँ निबिड़ तम"—[रामा०] ।

निविष्ट—(वि०, सं०) तत्पर, लगा हुआ, एकाग्र । घुसा या पैठा हुआ । बाँधा हुआ ।

निवीत—(संज्ञा, पु०, सं०) गले से लटका हुआ । जनेऊ । चादर ।

निवृत्त—(वि०, सं०) समाप्त किया हुआ। मुक्त, विरत। अवकाश-प्राप्त।

निवृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छुटकारा। मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण।

निवेद, नैवेद*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नैवेद्य) देवबलि, भोग। **मुहा०—लगाना**—देवार्पित करना।

निवेदक—(संज्ञा, पु०, सं०) निवेदन या प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी।

निवेदन—(संज्ञा, पु०, सं०) समर्पण। प्रार्थना, विनय, विनती। [**निवेदनीय** (वि०)]।

निवेदना*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निवेदन] प्रार्थना या विनती करना। खाने की वस्तु आगे रखना, अर्पित करना, नैवेद्य चढ़ाना।

निवेदित—(वि०, सं०) निवेदन या अर्पित किया हुआ। "तुमहिं निवेदित भोजन करहीं"—[रामा०]।

निवेरना*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निबटाना] निबटाना, चुकाना। बेबाक या पूर्ण करना, हटाना। "जै जै कृष्ण टेरत निबेरत सुभटभीर"—[अ० व०]।

निवेरा*—(वि०, दे०) [हिं० निवेरना] छँटा या चुना हुआ। नया, अनोखा।

निवेश—(संज्ञा, पु०, सं०) पड़ाव, डेरा, खेमा। प्रवेश। घर, निवास। उल्लेख। जोड़, [इंसर्शन]।

निवेशन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थापन, पड़ाव, डेरा, खेमा।

निवेष्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) आवरण, ढकने का कपड़ा।

निवेष्टन—(संज्ञा, पु०, सं०) ढकना। ओढ़ना।

निशंक, निश्शंक—(वि०) [सं० निःशंक] निडर, निर्भय, बेधड़क, अशंक, सदेह-रहित, [निसंक (दे०)]। [**निशंकता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निशंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निषंग] तरकस, भाथा, तूणीर, [निखंग (दे०)]।

निश—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निशा, रात, रात्रि।

निशचर, निश्चर—(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस, [निसचर (दे०)]। "आवा निसचर-कटक भयंकर"—[रामा०]। [**निशचरी** (स्त्री०)] "नाम लंकिनी एक निशचरी"—[रामा०]।

निशब्द—(वि०, सं०) मौन, चुप।

निशमन—(संज्ञा, पु०, सं०) देखना-सुनना।

निशांत—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) रात्रि का अंत, निशावसान, प्रातःकाल, तड़का, सवेरा, भोर, प्रभात।

निशांध—(वि०, सं०, यौ०) जिसे रात्रि को दिखलाई न दे, रतौंधी के रोगवाला।

निशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात्रि, रजनी। हरदी। [निसा (दे०)]। [**निशावसान** (यौ०, सं०)]।—**कर**–(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा। मुरगा, [निसाकर (दे०)]। "लिखत निशाकर लिखिगा राहू"—[रामा०]।—**नाथ**–(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा।—**पति**–(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा।—**मणि**–(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा।—**मुख**–(संज्ञा, पु०, सं०) संध्या का समय, गोधूली बेला।

निशाखातिर—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [अ० खातिर + फ़ा० निशाँ = खातिरनिशाँ] तसल्ली, सान्त्वना, दिलजमई, [निसाखातिर (दे०)]। (वि०) निश्चिन्त।

निशागम—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) रात्रि का आना, साँझ, संध्या, सायंकाल।

निशाचर—(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस। स्यार। उल्लू। भूत। चोर। रात में चलने वाला, (निशां चरतीति) सर्प।

निशाचरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राक्षसी, कुलटा, अभिसारिका नायिका। "दुस्सहेन हृदये निशाचरी" [रघु०]।

निशाचारी—(वि०, पु०) [वि० निशाचरिन्] रात्रि में चलने वाला। [**निशाचारिणी** (स्त्री०)]

निशाट, निशाटन—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) राक्षस। चोर, उल्लू।

निशाटी, निशाटिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) राक्षसी। कृष्णाभिसारिका।

निशात—(वि०, सं०) शान दिया हुआ, पैनाया हुआ।

निशाधीश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) चन्द्रमा, निशापति, निशाधिपति।

निशान—(संज्ञा, पु०, स्त्री०) लक्षण, चिह्न, दाग, धब्बा। पताका। रण का बाजा। "हने निसाना"—[रामा०]। जिस व्यक्ति के हेतु व्यंग्य कहा जावे। **नाम**—, (संज्ञा, पु०) लक्षण या चिह्न।—**ची**–(संज्ञा, पु०) [फ़ा० निशान + ची प्रत्य०] ध्वजाधारी, झंडाबरदार।—**देही**–(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) असामी को

सम्मन आदि दिलाना । **मुहा०—नामो—न रहना**-कुछ भी शेष न रहना। "बाकी मगर है फिर भी नामो-निशाँ हमारा"—इक० ।**—देना, (करना, लगाना)**-किसी की पहिचान या पता करना, चिह्न लगाना, ध्वजा, पताका, झंडा ।**—गाड़ना, (खड़ा करना)**-झंडा गाड़ना । **किसी बात का उठाना—या खड़ा करना**-मुखिया या अगुआ बन कर लोगों को अपना अनुचर बनाना।

निशाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लक्ष्य । **मुहा०—बाँधना**-वार करते समय अस्त्र-शस्त्र को ऐसा साधना कि ठीक-ठीक लक्ष्य पर लगे ।**—मारना या लगाना**-लक्ष्य को ठीक ताक कर मारना ।

निशानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) यादगार, स्मृति-चिह्न, पहचान, निशान, चिन्हारी ।

निशावसान—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रभात, सवेरा ।

निशास्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गेहूँ का गूदा या सत, माँड़ी, कलफ ।

निशि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात्रि, रात ।**—कर**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा ।**—चर**-(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस, उल्लू ।**—०राज***-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) विभीषण, निशिचरेश ।**—नाथ**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा ।**—पाल**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा, निशिपालक । एक छन्द (पिं०) ।**—वासर***-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दिन-रात, राता-दिन, सदा। "निशि वासर ताकहँ भलो, मानै राम-इतात" "मधु की प्रीति मुझे निशिवासर..."—गिरीश ।

निशित—(वि०, सं०) पैना, तीखा ।

निशीथ—(संज्ञा, पु०, सं०) अर्द्धरात्रि, आधी-रात । "निशीथे तम उद्भूते जायमाने जनार्दने" —[भाग०] ।**—निद्रा**-(संज्ञा, स्त्री०) आधी रात की नींद । " तू अनंत निशीथ-निद्रा में हुई लयमान"—बच्चन ।

निशीथिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात, रात्रि ।

निशुंभ—(संज्ञा, पु०, स०) हिंसा, मारण, वध । एक दैत्य ।**—मर्दिनी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा देवी ।

निशोत्सर्ग—(संज्ञा, पु०) [सं० निशा+उत्सर्ग] सुबह, प्रभात, सवेरा ।

निश्चय—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्वास, संशय, संदेह और भ्रम से रहित ज्ञान, दृढ़ या पक्का संकल्प या विचार, निहचै (ग्रा०, ब्र०) । एक अर्थालंकार (काव्य०) ।

निश्चयात्मक—(वि०, सं०, यौ०) ठीक-ठीक, संदेह-रहित, निश्चित ।

निश्चल—(वि०, स०) अटल, अचल, स्थिर ।

निश्चलप्राण—(वि०) जिसके प्राणों में स्फूर्ति नहीं है । "हे उर्मिल जल, निश्चलप्राण पर शत-दल"—निराला ।

निश्चलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दृढ़ता, स्थिरता, अचलता ।

निश्चला—(वि०, स्त्री०, सं०) स्थिरा, अचला, भूमि, पृथ्वी ।

निश्चिंत—(वि०, सं०) बेफिक्र, बेखटके, चिंता-रहित, [**निश्चिन्तता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

निश्चितई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निश्चिंतता] निश्चिन्तता, बेफिक्री ।

निश्चितता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बेफिक्री, चिन्ता-हीनता, निःशंकता ।

निश्चित—(वि०, सं०) निश्चययुक्त, निर्णीत, तै किया हुआ, पक्का, दृढ़ ।

निश्चेतन—(वि०, सं०) संज्ञाशून्य, बेहोश ।

निश्चेष्ट—(वि०, सं०) चेष्टा-रहित, अचेत, निश्चल, स्थिर ।

निश्चेष्टाकरण—(संज्ञा, पु०) कामदेव का एक बाण ।

निश्चै—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निश्चय] यकीन, निश्चय, विश्वास, प्रतीति ।

निश्छंद—(वि०, सं०) जिसने वेद का अध्ययन-मनन न किया हो ।

निश्छल—(वि०, सं०) कपट या छल-रहित, सीधा, [**निश्छलता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

निश्छिद्र—(वि०, सं०) छिद्र या दोष-रहित ।

निश्रेणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीढ़ी । मुक्ति । [नसेनी (दे०)] ।

निश्रेयस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निःश्रेयस] मुक्ति, मोक्ष । दुःख का पूर्ण नाश, कल्याण । "यतोऽभ्युदय-निःश्रेयस-सिद्धिः स धर्मः" ।

निश्वास—(संज्ञा, पु०, सं०) पेट से बाहर नाक या मुख के द्वारा आने वाली वायु । "निश्वास नैसर्गिक सुरभि यों फैल उनकी थी रही"—मैथिली० ।

निश्शंक—(वि०, सं०) निर्भय, निडर, संदेह या शंका से रहित ।

निश्शब्द—(वि०, सं०) सन्नाटा, शब्द-हीन । [**निश्शब्दता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] ।

निश्शील—(वि०, सं०) जिसमें शील न हो, दुष्ट स्वभाव वाला ।

निश्शेष—(वि०, सं०) शेष-रहित, सब, संपूर्ण ।

निषंग—(संज्ञा, पु०, सं०) तरकश, भाथा, तूण-तूणीर । [**निषंगी** (वि०)] । "कटि निषंग कर बाण शरासन"—[रामा०] ।

निषण्ण—(वि०, सं०) उपविष्ट, बैठा हुआ ।

निषध—(संज्ञा, पु०, सं०) एक देश । पर्वत । निषध देश का राजा । निषाध स्वर (संगी०) ।

निषाद—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अनार्य जाति, केवट । "कहत निषाद सुनौ रघुराई" ।

निषादी—(संज्ञा, पु०) [सं० निषादिन्] महावत, हाथीवाल, हाथीवान ।

निषिद्ध—(वि०, सं०) जिसके हेतु रोक या मनाही हो । दूषित, बुरा ।

निषिद्धाचरण—(वि०, सं०, यौ०) अधर्म-सम्मत कर्म, शास्त्र-विरुद्ध कार्य ।

निषूदन—(संज्ञा, पु०, सं०) नाश करने वाला । "बल-निषूदनमर्थपतिञ्चतम्"—[रघु०] । [**निषूद-नीय, निषूदित** (वि०)] ।

निषेक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक संस्कार का नाम, गर्भाधान संस्कार ।

निषेचन—(संज्ञा, सं०) सींचने का कार्य । [**निषेच-नीय, निषेचित** (वि०)] ।

निषेध—(संज्ञा, पु०, सं०) रुकाव, मनाही, बाधा, वर्जन, न करने की आज्ञा । "विधि निषेधमय कलिमल हरणी"—[रामा०] ।

निषेधक—(संज्ञा, पु०,) रोकने या मना करने वाला ।

निषेधाक्षेप—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) आक्षेपालङ्कार का एक भेद (काव्य०) ।

निषेधाधिकार—(संज्ञा, पु०) अस्वीकार करने का हक, [विटो] ।

निषेधाभास—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अलंकार, आक्षेप का एक भेद ।

निषेधित—(वि०, सं०) निषिद्ध, रोका या मना किया गया । बुरा, दूषित ।

निष्कंटक—(वि०, सं०) बाधा, आपत्ति, झंझट-रहित, निर्विघ्न, शत्रु-रहित ।

निष्कंप—(वि०, सं०) कंपन-रहित, जिसमें चंच-लता, कंपन न हो, अचल, स्थिर । "निष्कंप शिखा सा वह निरुपम "—पंत

निष्क—(संज्ञा, पु०, सं०) सोने का एक सिक्का । जिसकी तौल लगभग सोलह माशे की होती थी । स्वर्ण-पात्र । स्वर्णालङ्कार-विशेष । प्राचीन चार माशे की तौल (वैद्यजी०) । टंक, सुवर्ण ।

निष्कपट—(वि०, सं०) छल-रहित, निश्छल, सीधा ।

निष्कपटता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छल-विहीनता, निश्छलता, सीधापन, सिधाई ।

निष्कर—(वि०, सं०) बिना कर, बिना महसूल ।

निष्करुण—(वि०, सं०) कठोर हृदय वाला, निष्ठुर, निर्दय ।

निष्कर्म—(वि०, दे०) [सं० निष्कर्मन्] वह पुरुष जो कर्म करने में लिप्त न हो, अकर्मा ।

निष्कर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) निश्चय, निष्पत्ति, व्यवस्था । तात्पर्य, सत्य, प्रत्यक्ष । सिद्धान्त, तत्व, सार, निचोड़ ।

निष्कलंक —(वि०, सं०) बेऐब, निर्दोष, बेदाग, विशुद्ध ।

निष्काम—(वि०, सं०) कामना-हीन, अभिलाषा-युक्त, आसक्ति-रहित [**निष्कामता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

निष्कारण—(वि०, सं०) हेतु या कारण से शून्य, व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।

निष्कासन—(संज्ञा, पु०, सं०) निकालना, बाहर करना, [क्लियरेंस] । [**निष्कासनीय, निष्का-सित** (वि०)] ।

निष्क्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) बाहर निकलने का कार्य । एक संस्कार जो चार महीने के शिशु के प्रथम बार घर से बाहर निकलने के अवसर पर सम्पादित किया जाता है । [**निष्क्रमणीय, निष्क्रांत** (वि०)]

निष्क्रय—(संज्ञा, पु०, सं०) वेतन, तनख्वाह, विनिमय, बदला ।

निष्क्रांत—(वि०, सं०) निर्गत, प्रस्थित, निःसृत, बाहर निकला हुआ ।

निष्क्रिय—(वि०, सं०) व्यापार-रहित, निश्चेष्ट बिना काम-धाम वाला ।—**प्रतिरोध**—(संज्ञा, पु०) सत्याग्रह ।

निष्क्रियता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था ।

निष्क्लेश—(वि०, सं०) क्लेश से रहित, सभी कष्टों से मुक्त ।

निष्ठ—(वि०, सं०) तत्पर, लगा हुआ, स्थित।

निष्ठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निश्चय, विश्वास, श्रद्धा, भक्ति, पूज्य बुद्धि, ज्ञान की अंतिम दशा। निर्वाह। नाश।—**वान**-(वि०) [सं० निष्ठावत्] जिसमें श्रद्धाभक्ति हो।

निष्ठित—(वि०, सं०) दृढ़, निष्ठावान। दक्ष।

निष्ठीवन—(संज्ञा, पु०, सं०) थूक।

निष्ठुर—(वि०, पु०, सं०) निर्दय, कड़ा, कठिन, क्रूर। [**निष्ठुरा** (स्त्री०)]।

निष्ठुरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निर्दयता, कठोरता, क्रूरता, कड़ाई।

निष्ठ्यूत—(वि०, सं०) निकला हुआ। "वह्नि निष्ठ्यूत मैशम्"—[रघु०]।

निष्णात—(वि०, सं०) प्रवीण, चतुर, विज्ञ, पंडित, निपुण, पूरा ज्ञानी, पारंगत। (वि०) नहाया हुआ।

निष्पंद—(वि०, सं०) कंप-रहित, स्थिर, दृढ़।

निष्पंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) कंपन। [**निष्पंदित, निष्पंदनीय** (वि०)]

निष्पक्ष—(वि०, सं०) पक्षपात-रहित, तटस्थ। [**निष्पक्षता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निष्पत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सिद्धि, परिपाक, समाप्ति, विचार, मीमांसा, निश्चय, निर्धारण।

निष्पन्न—(वि०, सं०) सम्पन्न, पूर्ण, सिद्ध।

निष्परिग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) वैरागी, सन्यासी, योगी, तपस्वी, त्यागी।

निष्पादन—(संज्ञा, पु०, सं०) साधन, निष्पत्ति, सिद्धि, संपादन, सिद्धान्त का समाधान, प्रतिज्ञा या प्रण की पूर्ति। [**निष्पादनीय, निष्पादित** (वि०)]।

निष्पौरुष—(वि०, सं०) पौरुषहीन, पुरुषार्थ से रहित।

निष्प्रकंप—(वि०, सं०) कंपनरहित, गतिशून्य।

निष्पाप—(संज्ञा, पु०, सं०) पाप-रहित, निर्दोष, निरपराध।

निष्पीड़न—(संज्ञा, पु०, सं०) पेरने, मरोड़ने, निचोड़ने का कार्य। [**निष्पीड़नीय, निष्पीड़ित** (वि०)]।

निष्प्रतिभ—(वि०, सं०) हतबुद्धि, निर्बोध, मूर्ख, अज्ञान, अज्ञ।

निष्प्रत्यूह—(वि०, सं०) निर्विघ्न, निर्बाध, निरापद, तर्करहित। [**निष्प्रत्यूहता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

निष्प्रभ—(वि०, सं०) कांति या दीप्ति से रहित, प्रभा-रहित, अस्वच्छ, हतमनोरथ।

निष्प्रयोजन—(वि०, सं०) निष्कारण, हेतु-रहित, बेमतलब, व्यर्थ। [**निष्प्रयोजनता** (संज्ञा, स्त्री०)] [**निष्प्रयोजनीय** (वि०)]

निष्प्रेही*—(वि०) [सं० निस्पृह] लोभ या लालच-रहित, निस्पृह।

निष्फल—(वि०, सं०) निरर्थक, बेमतलब, व्यर्थ, बेफायदा, निष्प्रयोजन, [निफल (दे०)]।

निसंक, निस्संक†—(वि०, दे०) [सं० निश्शंक] निडर, निर्भय। (वि०, सं०] अशक्त, पुरुषार्थ-हीन।

निसंकट—(वि०, सं०) संकट-रहित, विपत्ति-मुक्त, अनायास।

निसँठ—(वि०, दे०) [हि० नि+सँठ=पूँजी] कंगाल, गरीब। [**निसँठई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

निसंधाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) संधि या छिद्र-रहित, ठोस, दृढ़, पोढ़ा।

निसंस*†—(वि०, दे०) [सं० नृशंस] दुष्ट, क्रूर। [**निसंसई, निसंसता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)] (वि०) [हि० नि+साँस] मृतक या मुर्दा, के समान।

निसंसना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निःश्वसन] बड़े जोर से हाँफना, निःश्वास लेना।

निस, निसि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निशि] रात्रि।

निसक—(वि०, दे०) [सं० निः+शक्त] निसक्त, निर्बल, कमजोर।

निसकर, निसाकर†*—(संज्ञा, पु०) [सं० निशाकर] चन्द्रमा।

निसत*‡—(वि०, दे०) [सं० निः+सत्य] झूठ, असत्य, असाँच।

निसतरना*†—(क्रि० अ०, हि०) छुटकारा या निस्तार पाना।

निसतारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० निस्तार] मुक्त या निस्तार करना। गुजर करना, निर्वाह करना।

निसद्योस*†—(क्रि० वि०, दे०, यौ०) [सं० निशि +दिवस] सदा, सर्वदा, रातोदिन, नित्य। "कौन सुनै शिवलाल की बात रहै निसद्योस इन्हीं को अखारो"—शिव०।

निसनेहा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०)[सं० निः स्नेहा] स्नेह या प्रेम रहित स्त्री । [**निसनेह** (पु०)] ।

निसबत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सम्बन्ध, ताल्लुक, लगाव । मँगनी, विवाह । तुलना, मुकाबिला ।

निसयाना*—(वि०, दे०) [हि० नि+सयाना] बेहोश या बेहवास, अचेत ।

निसरना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० निकलना] निकलना, बाहर जाना या आना । "निसरी रुधिर धार तहँ भारी"—[रामा०] । [**निसराना, निसरवाना** (प्रेरणा० रूप)]

निसर्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वभाव, प्रकृति । दान । सृष्टि, आकृति, रूप । "निसर्ग सम्कारविनीत इत्यसौ" [रघु०] । "निसर्ग दुर्बोधमबोध विक्लवः"—[किरा०] ।—**सिद्ध**–(वि०) स्वभावसिद्ध ।

निसवादला‡*—(वि०, दे०) [सं० निःस्वाद] बेमजा, स्वाद-रहित, [निसवादिल (दे०)] ।

निसवासर, निसिवासर*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० निशिवासर] रात दिन । (क्रि० वि०) सदा, सर्वदा, नित्य, रातोदिन । "निसवासर ताकहँ भलो, मानै राम इतात"—तुल० ।

निसस*†—(वि०, दे०) [सं० निः+श्वास] बेहोश, स्वास-रहित, निसाँस ।

निसाँक‡—(वि०, दे०) [सं० निःशंक] निःशंक, निडर, निर्भय ।

निसाँस, निसाँसा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निःश्वास] लंबी या ठंडी साँस । (वि०, दे०) बेदम, मृतप्राय ।

निसाँसी—(वि०, दे०) [सं० नि+श्वासिन्] दुखी, व्यस्त, उद्विग्न ।

निसा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निशा] रात, रात्रि । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० निशा] संतोष, धैर्य ।—**कर**–(संज्ञा, पु०, दे०) निशाकर, चन्द्रमा ।—**चर**–(संज्ञा, पु०, दे०) राक्षस । **मुहा०—भर**–पर्णतया, जितने भर मे संतोष हो जाय ।

निसान—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० निशान] नगाड़ा, धौंसा । झंडा, चिह्न । [**निसानी** (स्त्री०, दे०)] ।

निसानन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निशानन] प्रदोष काल, संध्या समय । रात्रि का मुख, चन्द्रमा ।

निसानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चिन्हारी, जिससे किसी की स्मृति हो ।

निसाफ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० इन्साफ] न्याय ।

निसार—(संज्ञा, पु०, सं०) समुदाय, राशि । (संज्ञा, पु०, अ०) निछावर, सदका । चार आने की कीमत का एक मुगल-कालीन सिक्का । *† (दे०) सार-रहित, तत्व-हीन । [**निस्सार** (सं०)], [**निसारता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

निसारना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० निस्सारण] निकालना, निकासना (ग्रा०) । [**निसरवाना** (प्रेरणा० रूप)] ।

निसास*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निःश्वास] लंबी या ठंडी साँस । (वि०) [हि० नि+साँस] साँसरहित, बेदम ।

निसासी*—(वि०, दे०) [सं० निःश्वास] साँस-रहित, बेदम, मृतप्राय ।

निसि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निशि] रात । "निसि-तम-घन खद्योत बिराजा"—[रामा०] । एक वर्णवृत्त (पिं०) ।—**कर**–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निशिकर] चन्द्रमा, निसिनाथ, [निसिपति (दे०)] ।—**चर***–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निशाचर] राक्षस, निसाचर । [**निसिचरी, निसाचरी** (स्त्री०, दे०)] ।—**चारी***–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निशाचारिन्] राक्षस ।—**दिन***–(क्रि० वि०, दे०) [सं० निशिदिन] रात दिन । "निसिदिन बरसत नैन हमारे"—सूर० ।—**निसि**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निशि+निशि] आधीरात, अर्धरात्रि, निशीथ ।

निसित—(वि०, दे०) [सं० निशित] पैना, तीक्ष्ण ।

निसियर, निसिअर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निशिकर] चंद्रमा, निशाकर ।

निसीठा, निसीठी—(वि०, दे०) [सं० हि० नि+सीठी] नीरस, तत्व-हीन, निस्सार ।

निसीथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निशीथ] मध्य या अर्धरात्रि, आधीरात ।

निसु*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निशा] रात्रि । "निसु न अनल मिलु राज-कुमारी"—[रामा०] ।

निसुरका*—(वि०, दे०) [सं० निस्वक] कंगाल ।

निसूदन—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) नाश करना, मार डालना। [**निसूदनीय, निसूदित** (वि०)]।

निसृष्ट—(वि०, सं०) त्यक्त या छोड़ा हुआ, बिचवानी, मध्यस्थ, प्रेरित, दत्त। (संज्ञा, पु०) एक दिन का पारिश्रमिक।

निसृष्टार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दोनों पक्षों के अभिप्राय का ज्ञाता दूत, श्रेष्ठदूत (नाट्य० का०)। **—दूतिका, —दूती**–(संज्ञा, स्त्री०) नायक और नायिका दोनों ही की अभिलाषाओं को समझ कर कार्य सफल बनाने वाली सहचरी या सेविका।

निसेनी, निसैनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निश्रेणी] सीढ़ी, निसेनी (ग्रा०)।

निसेष*—(वि०, दे०) [सं० निःशेष] सब का सब, निश्शेष।

निसेस—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० निशेश] चन्द्रमा, निशेश, निशानाथ।

निसोग*†—(वि०, दे०) [सं० निःशोक] शोक-रहित, प्रसन्न।

निसोच*—(वि०, दे०) [सं० निःशोक] शोक-रहित, प्रसन्न। निर्मल।

निसोत—(वि०, दे०) [सं० संयुक्त] शुद्ध, खालिस।

निसोथ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निसृता] एक रोचक औषधि (वैद्य जी०)।

निसोधु*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सोध या सुधि] खबर, समाचार, संदेसा।

निस्केवल—(वि०, दे०) [सं० निष्केवल] शुद्ध, बेमेल, खालिस, निर्मल।

निस्तत्व—(वि०, सं०) निस्सार, तत्व-हीन।

निस्तब्ध—(वि०, सं०) निश्चेष्ट, जड़, निश्शब्द।

निस्तब्धता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जड़ता, सन्नाटा, शांति।

निस्तरण—(संज्ञा, पु०, सं०) पार या मुक्त होना, तरना। [**निस्तरणीय** (वि०)]।

निस्तरना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निस्तार] छूटना, मुक्त होना, निर्वाह होना, तरना।

निस्तल—(वि०, सं०) तलरहित, अतल। चंचल। "सिमट रहा चंचल कूलों को निस्तल सागर"—पंत।

निस्तार—(संज्ञा, पु०, सं०) छुटकारा, मोक्ष, मुक्ति, उद्धार, निर्वाह।

निस्तारण—(संज्ञा, पु०, सं०) निस्तार करना, पार करना, छुड़ाना, मुक्त करना।

निस्तारन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निस्तारण] देखिए 'निस्तारण'।

निस्तारना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० निस्तार + ना प्रत्य०] उद्धार करना, मुक्त करना, छुड़ाना।

निस्तारा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निस्तार] गुजारा, निर्वाह, छुटकारा, मुक्ति।

निस्तीर्ण—(वि०, सं०) मुक्त, निर्वाहित, पार, छूटा हुआ।

निस्तेज—(वि०) [सं० निस्तेजस्] प्रताप या तेज-रहित, प्रभा-हीन, मलिन, उदास।

निस्तोक—(संज्ञा, पु०, दे०) निर्णय, फैसला, निबटेरा।

निस्तुप—(वि०, सं०) निर्लज्ज, बेशर्म।

निस्पंद—(वि०, सं०) स्पंदन-शून्य, जिसमें कोई हरकत न हो। "निस्पंद पड़ी हैं आँखें"—महा०। (संज्ञा, पु०) स्पंदन।

निस्त्रिंश—(वि०, सं०) तलवार, असि, खड्ग।

निस्पृह—(वि०, सं०) लोभ-शून्य, वासना-मुक्त। निर्लोभ, लालच-रहित, कामना-रहित। [**निस्पृहता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

निस्फ—(वि०, अ०) आधा, अर्द्ध। [**निस्फा-निस्फ**–(दे०, यौ०) आधोआध]।

निस्बत—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अनुपात, संबंध, लगाव। (अव्य०) सम्बन्ध में।

निस्वन, निस्वान—(संज्ञा, पु०, सं०) कोलाहल, शोर, शब्द, वायु के चलने की सरसराहट।

निस्संकोच—(वि०, सं०) संकोच-रहित, लज्जा-रहित, बेधड़क।

निस्संग—(वि०, सं०) विषय के अनुराग से रहित, निर्लिप्त, अनासक्त, निष्काम।

निस्संतान—(वि०, सं०) संतान-रहित, संतति-हीन।

निस्संदेह—(क्रि० वि०, सं०) जरूर, अवश्य, (वि०, सं०) जिसमें संदेह या शक न हो।

निस्सत्व—(वि०, सं०) असार, सत्व रहित, कम जोर।

निस्सहाय—(वि०, सं०) सहायरहित।

निस्सवन—(वि०) [सं० निः + सवन—अग्नि] शीतल, दाह-रहित। "निस्सवन प्रभात की वायु बही"—निराला।

निस्सार—(वि०, सं०) सार या तत्व-रहित, व्यर्थ। (संज्ञा, पु०, सं०) निस्सारण।

निस्सारण—(संज्ञा, पु०, सं०) निकलने का रास्ता या मार्ग। निकलने का भाव या क्रिया। [**निस्सरणीय** (वि०)]।

निस्सारित—(वि०, सं०) निकाला हुआ।

निस्सीम—(वि०, सं०) अपार, असीम, बेहद।

निस्सृत—(संज्ञा, पु०, सं०) तलवार के हाथों में से एक हाथ।

निस्स्वार्थ—(वि०, सं०) बेमतलब, स्वार्थ-रहित जिसमें अपना कुछ मतलब न हो। [**निस्स्वार्थी** (वि०)]।

निहंग, निहंगा—(वि०, दे०) [सं० निःसंग] नंगा। अकेला, एक, एकाकी। बेशर्म। —**लाडला** –(वि०, दे०, यौ०) माता-पिता के अति दुलार से लापरवाह और स्वच्छंद हुआ व्यक्ति।

निहंता—(वि०, दे०) [सं० निहंतृ] मार डालन या प्राण लेन वाला, नाशकर्त्ता। [**निहंत्री** (स्त्री०)]

निहकाम*†—(वि०, दे०) [सं० निष्काम] निष्काम, इच्छा, कामना या मनोरथ से रहित।

निहचय*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निश्चय] अवश्य, निस्संदेह, बेशक, ठीक।

निहचल*†—(वि०, दे०) [सं० निश्चल] स्थिर, अटल, ध्रुव, अचल।

निहत—(वि०, सं०) मार डाला गया, नष्ट, मृत। फेंका हुआ।

निहतार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) साहित्य-सम्बन्धी दोष।

निहत्थ, निहत्था—(वि०, दे०) [हिं० नि+हाथ] शस्त्र-हीन, खाली हाथ। निर्धन, कंगाल, निहथा (ग्रा०)।

निहनना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० निहनन] मार डालना, मारना। [**निहनन** (संज्ञा, पु०, (सं०)]

निहपाप*†—(वि०, दे०) [सं० निष्पाप] पाप-रहित, अपराध-रहित, निर्दोष, शुद्ध।

निहफल†*—(वि०, दे०) [सं० निष्फल] बेसूद, बेमतलब, निष्प्रयोजन, व्यर्थ, नाहक।

निहाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निघात, मि० फ़ा० निहाली] सुनारों और लोहारों का एक औजार जिस पर रख कर किसी धातु को हथौड़े से पीटते है। "चोरी करै निहाई की त्यों, करै सुई कर दान"—[स्फु०]।

निहाउ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० निहाई] निहाई।

निहानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्त्री का रजोदर्श।

निहायत—(वि०, अ०) बहुत, अत्यंत।

निहार, नीहार—(संज्ञा, पु०, सं०) कुहरा, पाला, ओस, बर्फ, हिम। —**जल**–(संज्ञा, पु०) ओस।

निहारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० निभालन— देखना] देखना, ताकना, ध्यान-पूर्वक देखना। "अस कहि भृगुपति अनत निहारे"—[रामा०]।

निहारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देखिए नीहारिका।

निहाल—(वि०, फ़ा०) प्रसन्न, संतुष्ट, पूर्णमनोरथ या पूर्णकाम। [**निहाली** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

निहाली—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तोशक, गद्दा, निहाई। "तिस पर यह शरारत निहाली तले उसको"—सौदा०। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) प्रसन्नता, संतोष।

निहिंसन—(संज्ञा, पु०, सं०) बध करना, मार डालना।

निहि—(उप०) निस् उपसर्ग जो विकृत रूप में है।

निहित—(वि०, सं०) स्थापित, रखा हुआ।

निहुँकना—(क्रि० अ०, दे०) झुकना।

निहुरना†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० नि+होडन] नवना, झुकना, लचकना।

निहुराना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निहुरना का प्रेरणा० रूप) नवाना, लचाना, झुकाना।

निहोरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मनोहार] विनय या प्रार्थना करना, मनाना, कृतज्ञ होना, मनौती करना। "सखा निहोरई तोहिं"— [रामा०]।

निहोरा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मनोहार] विनती, प्रार्थना। उपकृत होने की भावना, कृतज्ञता। सहारा, आसरा, भरोसा। "कोई सखी हरि जी करति निहोरा ललिता आदि सब ठाढ़ी"—सूर०। "राम काज अरु मोर निहोरा"—[रामा०]। —**निहोरे**–(अव्य०) कारण से, निमित्त-वश। (क्रि० वि०, दे०) बदौलत, द्वारा, कारण या हेतु से, वास्ते निमित्त, के लिए। "धरई देह नहिं आन निहोरे"—[रामा०]।

निह्नव—(संज्ञा, पु०, सं०) अपलाप, अह्हव। गोपन, छिपाना। अविश्वास, न मानना।

निह्राद—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द, ध्वनि, नाद, निनाद।

नींद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निद्रा] स्वप्न। निंदा, निंदी, निंदिया (ग्रा०) सोने की दशा या अवस्था। "नींद भूक जमुहाई, ये तीनों दरिद्र के भाई"—घाघ। उघाई, झपकी। **मुहा०—उचटना**-नींद न आना, नींद न लगना।—**खुलना या टूटना**-जाग पड़ना, नींद चली जाना।—**पड़ना**-नींद आना या लगना।—**भर सोना**-मनमाना सोना, जी भर कर सोना।—**लेना**-सोना।—**सँचरना**-नींद आना।—**हराम होना**-सोने का त्याग होना, छूट जाना। आराम का न मिलना। —**हिराना**-नींद न आना।

नींदड़ी, नींदरी‡*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० नींद] निद्रा, नींद, स्वप्न, सोने की दशा। निंदरिया (ग्रा०)। "मेरे लाल को आउ निंदरिया काहे न आनि सुवावै"—सूर०।

नींबी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कटि पर, सामने, साड़ी का बन्धन (स्त्रियों०)। [**नींबीबन्धन** (यौ०)]। नीम।

नींव—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बुनियाद।

नीक, नीका*—(वि०, दे०) [सं० निक्त=स्वच्छ] भला, अच्छा, सुन्दर, चोखा। [**नीको** (ब्र०)] "सबहि सुहाय मोहिं सुठि नीका"—[रामा०]। (वि०, भ०) नीको। "फीकी पै नीकी लगै, कहिए समय विचार।" [**निकाई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]। भलाई, अच्छाई, सुन्दरता, उत्तमता, अच्छापन। "त्यों त्यों खरी निखरै सी निकाई"।

नीकाश—(वि०, सं०) समान, तुल्य, सदृश।

नीकिं, नीके—(क्रि० वि०, दे०, ब्र०) [हि० नीक] भली भाँति, अच्छी तरह। अच्छी। "नीकिं दीन्हि हरि सुन्दरताई" "नीके निरखि नयन भरि शोभा" "यद्यपि यह समुझत हौं नीके"—[रामा०]।

नीगने—(वि०, दे०) असंख्य, अगणित। "मृगराज ज्यों बनराज में गजराज मारत नीगने"—[रामा०]।

नीग्रो—(पु०, अं०) हब्शी।

नीच—(वि०, सं०) किसी बात में कम, छोटा, तुच्छ, निकृष्ट, हेठा, क्षुद्र, अधम, बुरा। [(विलो०) **उच्च, ऊँच**]। "कछु कहि नीच न छेड़िए"—वृं०। "ऊंच निवास नीच करतूती"—[रामा०]।—**ऊंच, ऊँच**—, (वि०) बुरा-भला। (संज्ञा, पु०) गुण-अवगुण, हानि-लाभ, सुख-दुःख।—**गा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निम्नगा, नदी, निम्नगामिनी।—**गामी**-(पु०, वि०) [सं० नीचगामिन्] नीचे को ओर जाने वाला, तुच्छ, ओछा। [**नीचगामिनी** (स्त्री०)]। **मुहा०—(चे) ऊँचे पैर पड़ना या रखना**-गलत काम होना, करना।

नीचट—(वि०, दे०) निचाट (ग्रा०), एकांत, निर्जन। दृढ़, पक्का। पूरा, बिल्कुल।

नीचता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अधमता, क्षुद्रता, [निचाई (दे०)], कमीनापन। "नीच न छाँड़े नीचता"—वृं०। "नीच निचाई नहिं तजै"—वृं०।

नीचा—(वि०, दे०) [सं० नीच] जो गहराई पर हो, गहरा, निम्न। जो ऊंचा न हो, धीमा, मध्यम। बुरा, ओछा, क्षुद्र। [**नीचो** (ब्र०)] "ज्यों ज्यों नीचो ह्वै चलै"—बिहारी।—**ऊँचा**-(वि०, दे०) बुरा-भला। (संज्ञा, पु०) गुण-अवगुण, हानि-लाभ, संपद्-विपद, दुःख-सुख। **मुहा०—खाना**-अपमानित होना, हारना, झेंपना, लज्जित होना। —**दिखाना**-अपमानित करना, हराना, शेखी झाड़ना, लज्जित करना।—**देखना**-अपमानित होना, तुच्छ बनना। **आँख—(ची) होना, करना, नाक—(ची) होना, करना**-लज्जित होना। **सिर —होना, करना**-लज्जित होना। **दृष्टि, या निगाह —(ची) करना**-अपना सिर झुकाना, सम्मुख न देखना।

नीचाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नीचता] नीचता, छुटाई, नीचपना।

नीचाशय—(वि०, सं०, यौ०) तुच्छ, ओछा, क्षुद्र।

नीचू†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० नीचा] नीचे को ओर, एक पेड़ तले। (वि०, दे०) नीच।

नीचे—(क्रि० वि०, दे०) [हि० नीचा] नीचे की ओर, तले।—**ऊपर**-ऐसा क्रम जिसमें एक दूसरे के ऊपर हों, जो नीचे का ऊपर और ऊपर का नीचे हो।—**गिरना**-गर्त में जाना, पतन होना।—**गिराना**-पतित बनाना। कुश्ती में पछाड़ गिराना। —**से ऊपर तक**-सिर से पाँव तक, एक छोर से दूसरे छोर तक।

नीजन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्जन] निर्जन स्थान, जहाँ कोई न हो।

नीजू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निज] पानी भरने को डोर, लेजुरी (ग्रा०)।

नीझर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निर्झर] सोता, झरना, निर्झर।

नीझरना, निझरना—(क्रि० अ०, दे०) समाप्त होना, चुक जाना।

नीठ, नीठि—(क्रि० वि०, दे०) [सं० अनिष्टि] अरुचि, अनिच्छा, ज्यों-त्यों करके, कठिनता से, किसी न किसी भाँति या प्रकार। "वहि वहि हाथ चक्र ओर ठहि जात नीठि"—रत्ना०।

नीठो*—(वि०, दे०) [सं० अदिष्ट] अप्रिय, अनिष्ट।

नीड—(संज्ञा, पु०, सं०) चिड़ियों का घोंसला। "निज नीड द्रुम पीडिनः खगान्"—[नैषः]।

नीत—(वि०, सं०) पहुचाया या लाया हुआ, प्राप्त, स्थापित।

नीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सदाचार, श्रेष्ठ व्यवहार, अच्छी चाल। कानून, राज विद्या। युक्ति, उपाय, हिकमत, तदबीर। "नीति-नयनागर गुनागर गुविंद सुनौ"—मन्ना०।—**ज्ञ**-(वि०, सं०) नीति का ज्ञानी या जानकार, नीति में निपुण या कुशल, चतुर। [**नीतिज्ञता** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**विद्या**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) नीतिशास्त्र।—**शास्त्र**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नीतिविद्या, कानून।

नीतिमान्—(पु०, वि०) [सं० नीतिमत] नीतिमान्, नीति-परायण, सदाचारी। [**नीतिमती** (स्त्री०)]।

नींदना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० निंदन] निंदा करना।

नीधन, नीधना*—(वि०, दे०) [सं० निर्धन] दरिद्र, कंगाल, निर्धन, निर्धनी। [**नीधनता, निधनता, निधनई** (संज्ञा, स्त्री०)]।

नीप—(संज्ञा, पु०, सं०) कदम का फूल या पेड़। नील अशोक। एक प्राचीन देश का नाम। पर्वत का निचला भाग। "निकट अति अनूठे नीप फूले फले है"—हरिऔध।

नीपना—(क्रि० स०) लीपना।

नीबी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नीवि] कमरबन्द, इजारबन्द, नारा। धोती, साड़ी। [**नीबी-बन्धन** (संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) नीम।]

नीबू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निंबूक, अ० लेमूँ] एक खट्टा या मीठा फल, कागजी, बिजौरा, जँबीरी, चकोतरा, चार भाँति के खट्टे नीबू, निम्बू, निबुआ (ग्रा०)। **मुहा०**—**निचोड़**-बड़ा भारी कंजूस।

नीम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निंब] एक पेड़, जिसके फल को निंबौरी, निमौरी कहते हैं, [नीब, नींबी (दे०)]। "जानै ऊख मिठास सो, जो मुख नीम चबाय"—वृं०। (वि०) [फ़ा० मि० सं० नीम] अर्द्ध, आधा।

नीमन†—(वि०, दे०) [सं० निर्मल] भला-चंगा, नीरोग, तन्दुरुस्त, ठीक, बढ़िया।

नीमर—(वि०, दे०) [सं० निर्बल] कमजोर, निर्बल, निमस (ग्रा०)।

नीमरजा—(वि०, फ़ा०, यौ०) आधा राजी, अर्द्ध प्रसन्न या अर्द्ध-सहमत। **लो०**—"खामोशी नीमरजा"। (फ़ा०) मौनम् स्वीकृति-लक्षणम् (सं०)।

नीमा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जामे के तले का कपड़ा।

नीमावत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० निंब] निम्बार्क पंथ।

नीमास्तीन—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [फ़ा० नीम + आस्तीन] आधी बाँहों की कुरती।

नीयत, नियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) हार्दिक लक्ष्य, आशय, उद्देश्य, संकल्प, इच्छा। **मुहा०**—**डिगना, डोलना या बद होना, बिगड़ना**-उचित विचार या संकल्प दृढ़ न रहना।—**बदलना (खाम होना)**-विचार या संकल्प का और से और हो जाना, बेईमानी या बुराई की ओर झुकना।—**बाँधना**-संकल्प या इरादा करना।—**भरना**-जी भर जाना, इच्छा पूर्ण होना।—**में फर्क आना**-बेईमानी या बुराई की ओर झुकना।—**लगी रहना**—जी ललचा रहना, इच्छा का बना रहना।

नीर—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी, जल, नीर, अंबु, तोय, वारि, देवता पर चढ़ाया जल।—**ज**-(संज्ञा, पु०, सं०) जलभव वस्तु, कमल। "नीरज नयन भावते जी के"—[रामा०]। मुक्ता, मोती।—**द**-(संज्ञा, पु०, सं०) बादल, मेघ। (संज्ञा, वि०) [सं० निः + रद] अदन्त, बेदाँत का।—**धि**-(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र, सागर।—**निधि**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) समुद्र, सागर। "बाँधेउ जलनिधि, नीरनिधि, उदधि, पयोधि नदीश"—[रामा०]। **मुहा०***—**ढलना**-मरते समय आँखों से आँसू बहना। **आँख का—ढल जाना**-निर्लज्ज या बेशर्म हो जाना।

नीरथ—(वि० दे०) निरर्थक, निष्फल, व्यर्थ वृथा।

नीरमय—(वि०, सं०) जलमय, जल-रूप, जल में डूबा।

नीरव—(वि०, सं०) ध्वनिरहित, शांत, जो शब्द न करे।

नीरस—(वि०, सं०) सूखा, रसहीन । स्वाद-रहित, फीका, अरोचक, अरुचिर [निरस(दे०)] । [**नीरसता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

नीराँजन, नीराजन—(संज्ञा, पु०, सं०) दान । आरती उतारना । विसर्जन । हथियारों के साफ करने का कार्य । "दौड़ी नीराजन-थाल लिए निज कर मे" —दिनकर ।

नीराजना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आरती, दीप-दर्शन । हथियार की सफाई का कार्य । "नीराजना जिनयनान् निज बन्धुवर्गान्"—[नैष०] ।

नीरुज—(वि०, सं०) स्वस्थ, तन्दुरुस्त, रोगरहित, नीरोग ।

नीरे, नियरे, नेरे*—(क्रि० वि०, दे०) [सं० निकट] पास, निकट, समीप ।

नीरोग, निरोग—(वि०, सं०) चंगा, स्वस्थ, तन्दुरुस्त, अरोग, आरोग्यवान् ।

निरोगी—(वि०) [सं० नीरोगिन्] भला-चंगा, रोग-रहित, स्वस्थ, तन्दुरुस्त, निरोगी ।

नील—(वि०, सं०) नीले रंग का । (संज्ञा, पु० सं०) नीला रंग, एक पौधा जिससे रंग बनता था । चोट का काला दाग । कलंक । राम-दल का एक बंदर । नौ निधियों में से एक । नीलम (रत्न) । सौ अरब की संख्या । एक छंद (पिं०) ।—**कंठ**—(वि०, सं०, यौ०) जिसका गला नीला हो (संज्ञा, पु०) शिव । मोर । चाष या गौरापक्षी, यात्रा में वाम ओर इसका बैठ कर चारा लेना शुभ है । "नीलकंठ कोरा भयै"—[स्फु०] ।—**कमल**—(संज्ञा, पु०, सं०) कृष्ण कमल, नीलोत्पल ।—**कांत**—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पक्षी । विष्णु, नीलमणि ।—**क्रांत**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नीले और बड़े फूलों वाली विष्णुक्रांता लता ।—**गवय, नील-गाव**—(संज्ञा, पु०, सं०) नीलगाय, रोझ (ग्रा०) ।—**ग्रीव**—(संज्ञा, पु०, सं०) महादेवजी । मोर । चाष पक्षी ।—**चक्र**—(संज्ञा, पु०, सं०) जगन्नाथ जी के मन्दिर के ऊपरी शिखर का चक्र । एक दंडक वृत्त (पिं०) । "सोनील चक्र पर ध्वजा विराजै माथे हीहै हीरा"—कबीर । **मुहा०—का टीका लगना**—कलंक लगना, बदनामी होना ।—**की सफाई फिरवा देना**—अंधा कर देना, आँखें फोड़वा डालना ।

नीलक—(संज्ञा, पु०, सं०) नीले रंग का मृग । बीजगणित का प्रमाण ।

—**पुस्तिकाएँ**-सरकारी रिपोर्ट । इंगलैंड की पार्लियामेंट की विवरण पत्रिकाएँ, [ब्ल्यू बुक्स] ।—**बड़ी, नील-बरी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नीले रंग का टुकड़ा या खंड । नील की बट्टी ।—**मणि**—(संज्ञा, पु०, सं०) नीलकान्तिमणि, इन्दुनील-मणि, नीलम ।—**माधव**—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, जगन्नाथ ।—**मोर**—(संज्ञा, पु०, हिं०) कुररी पक्षी ।—**लोहित**—(वि०, सं०) बैंगनी रंग, लाल और नीला रंग । (संज्ञा, पु०) शिव । विष्णु । नीलकंठ ।—**वर्ण**—(वि०, सं०) श्यामरंग, आसमानी रग । "नीलवर्ण सारी बनी"—[दानली०] ।—**स्वरूप, स्वरूपक**—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्णवृत्त (पि०) ।

नीलक—(संज्ञा, पु०, सं०) नीले रंग का मृग । बीजगणित का प्रमाण ।

नीलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नीलापन, नीलिमा, [निलाई (दे०)] ।

नीलम—(संज्ञा, पु०, फा०) [सं० नीलमणि] इन्द्रनीलमणि, नीलमणि, नीलकांतमणि । "सिया सानि की अँगूठी राम नीलम नगीना है"—द्विज० ।

नीलांजन—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नीला या श्याम सुरमा । नीलाथोथा, तूतिया । देखिए नीरांजन ।

नीलांबर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नीले रंग का रेशमी वस्त्र, नील वस्त्र । (वि०) नीले वस्त्र पहनने वाला, बलराम । "नीलांबर ओढ़े बलरामा"—[प्रेम०] । " विपिन की नीलाम्बर मेदिनी "—हरिऔध ।

नीलांबरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) लक्ष्मी ।

नीलांबुज—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नील कमल । "नीलांबुजश्यामलकोमलांगम्"—तुल० ।

नीला—(वि०, दे०) [सं० नील] नील के रंग का, श्याम या आसमानी रंग का ।—**थोथा**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नील तुल्य] तूतिया, ताँबे का क्षार । **मुहा०—पीला होना**-बिगड़ना, क्रोधित होना । **चेहरा—पड़ जाना**-मुँह का रंग श्याम हो जाना, जिससे चित्त की उद्विग्नता या लज्जा प्रगट हो, जीवन-लक्षण नष्ट हो जाना ।

नीलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नील] श्यामता, नीलापन, नीलता ।

नीलाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [पुर्त० लीलाम] बोली बुलाकर माल बेचना [लिल्लाम (दे०)] ।

नीलामी—(वि०) नीलाम में खरीदा हुआ। जिसको नीलाम किया जाय।

नीलार्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रियावासा, पिया-वाँसा (औध०)।

नीलावती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नीलवती] चावल का एक भेद।

नीलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नीलवरी, सिंदुवार, काली निर्गुण्डी, नील सँभालू का पेड़। नेत्र-रोग। मुख पर तथा शरीर के अन्य भागों में छोटे-छोटे काले दाने निकल आने का रोग-विशेष।

नीलिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नील का पौधा, नील।

नीलिमा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नीलिमन] श्यामता, स्याही, नीलापन।

नीली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नील का पौधा। एक रंग। एक मक्खी। रोग-विशेष। (वि०, स्त्री०) देखिए नीला।—**घोड़ी**-(संज्ञा, स्त्री०, हि०, यौ०) [लिल्ली घोड़ी (दे०)]। डफालियों की भीख माँगने वाली कागज की घोड़ी।

नीलोत्पल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नील कमल। "नीलोत्पल-दल श्यामम्"—मल्लि०। "अलि नीलोत्पल में प्रसुप्त ज्यों"—मैथिली०।

नीलोपल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नील-मणि, नीलम।

नीलोफर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नीलोत्पल] नील कवँल।

नीवँ-नीव—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, दे०) [सं० नेमि, प्रा० नेह] किसी मकान या इमारत की बुनियाद या जड़। मूल, आधार। मुहा०—**देना**-गढ़ा खोद कर दीवार की जड़ जमाना। **किसी बात की—देना**-हेतु, कारण या आधार तैयार या खड़ा करना, जड़ जमाना, आरंभ करना।—**जमाना डालना, या देना**-दीवाल की बुनियाद या जड़ जमाना। (**किसी बात की**)—**जमाना या डालना**-दृढ़ बुनियाद स्थिर या स्थापित करना। (**किसी चीज या बात की**)—**जमना, पड़ना**-आरंभ या सूत्र-पात होना, बुनियाद पड़ना।

नीवा—(संज्ञा, पु०, दे०) मंदता।

नीवार—(संज्ञा, पु०, सं०) पसही धान। "नीवार पाकादिकडंगरीयः"—[रघु०]।

नीवी, निवि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कटिबंध, फुफुन्दी, नारा। साड़ी या धोती, लहँगा।

नीशार—(संज्ञा, पु०, सं०) तंबू। कंबल, गरम कपड़ा जो ओढ़ने के काम आता है। मसहरी।

नीसक—(वि०, दे०) निर्बल, कमजोर।

नीसानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक छंद (पिं०)। उपमान।

नीसारना—(क्रि० स०, दे०) निकालना, निकासना, बाहर करना, निसारना।

नीहार—(संज्ञा, पु०, सं०) कुहरा, पाला, तुषार।

नीहारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुहरा, कुहासा नीहारिका-वाद का सिद्धान्त (न्याय०)।

नुकता—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० नुक्त] बिंदी, बिंदु। (संज्ञा, पु०, अ०) चुटकुला, फबती। ऐब। —**चीनी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) दोष या ऐब निकालने का काम।

नुकती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० नखुद्दी] बेसन की बारीक बुँदिया, एक तरह की मिठाई।

नुकना—(क्रि० अ०, दे०) छिपना, लुकना।

नुकरा—(संज्ञा, पु०, अ०) चाँदी, घोड़ों का सफेद रंग। (वि०) सफेद रंग का।

नुकसान—(संज्ञा, पु०, अ०) घाटा, घटी, हानि। ह्रास, क्षति, छीज। दोष, विकार, अवगुण। मुहा०—**उठाना**-घटी या हानि सहना।—**पहुँचाना** (**करना**)-हानि पहुँचाना।—**भरना** (**देना**)-घटी या हानि पूरी करना। **किसी का—करना**-दोष उपजना, तंदुरुस्ती या स्वास्थ्य के विरुद्ध प्रभाव करना, अहितकर सिद्ध होना। [**नुकसान देह** (वि०, अ०)]।

नुकाना—(क्रि० स०, अ०, दे०) छिपाना, लुकाना। [**नुकवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

नुका—(संज्ञा, पु०, दे०) कज्जल। एक छंद (पिं०)।

नुकीला—(वि०) [हि० नोक+ईला प्रत्य०] नोकदार, जिस वस्तु में नोक हो। [**नुकीली** (स्त्री०)]।

नुक्कड़—(संज्ञा, पु०, सं०) [हि० नोक का अल्पा०] नोक या निकला हुआ कोना, पतला सिरा।

नुक्का—(संज्ञा, पु०,) नोक।—**टोपी**-(संज्ञा, स्त्री०) लखनवी पतली दुपलिया टोपी।

नुक्स—(संज्ञा, पु०, अ०) ऐब, बुराई, दोष, गलती। त्रुटि, कमी।

नुखहा—(संज्ञा, पु०, दे०) नख की खसोट।

नुचना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लुंचन] नोचा जाना, उखड़ना। [**नुचाना** (क्रि० स०)]।

नुचवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० नोचना का प्रेरणा० रूप] नोचने का कार्य्य किसी दूसरे से करवाना।

नुति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्तुति, स्तोत्र, विनय, प्रार्थना।

नुत्फा—(संज्ञा, पु०, अ०) वीर्य्य, शुक्र।—**हराम**–(वि०, अ०, यौ०) वर्ण-संकर (गाली)।

नुनखरा, नुनखारा—(वि०, दे०, यौ०) [हिं० नून] नमक के खारे स्वाद से युक्त।

नुनना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लवन, लून] लुनना, खेत का अनाज काटना।

नुनाई†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नून] लुनाई, सुन्दरता, सलोनापन, नमकीनपन।

नुनियाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) नमक, शोरा बनाने वाली एक नीच जाति, नोनियाँ (ग्रा०)।

नुनेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० नून+एरा प्रत्य०] नमक बनाने वाला लोनियाँ, नोनियाँ।

नुमाइश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्रदर्शन, दिखावट, तड़क-भड़क, सजावट। प्रदर्शनी।

नुमाइशी—(वि०, फ़ा०) दिखाऊ, दिखौवा (ग्रा०), दिखावटी।

नुसखा—(संज्ञा, पु०, अ०) लिखा कागज, दवाइयों का रुक्का।

नूत—(वि०, दे०) [सं० नूतन] नवीन, नया, अनोखा, ताजा, अनूठा।

नूतन—(वि०, सं०) नवीन, नया, अनोखा, ताजा, [नूत (दे०)]।

नूतनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नयापन, नवीनता।

नूधा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार की तम्बाकू।

नूनं—(अव्य०, सं०) निश्चयार्थक शब्द। "नूनं त्वयायास्यति"—[भो० प्र०]।

नून—(संज्ञा, पु०, दे०) आल, आल की जाति का एक लता। †(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लवण] नमक, नोन (ग्रा०)। **मुहा०—तेल**–गृहस्थी का सामान। *(वि०, दे०) [सं० न्यून] न्यून, कम।

नूनताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० न्यूनता] न्यूनता, कमी।

नूपुर—(संज्ञा, पु०, सं०) पायजेब, पैजनी, घुँघरू। ' कंकन-किंकिन-नूपुर-धुनि सुनि"—[रामा०]।

नूर—(संज्ञा, पु०, अ०) रोशनी, प्रकाश, ज्योति। **मुहा०—का तड़का**–प्रातः काल। "रात बीती नूर का तड़का हुआ"। शोभा, श्री, कांति।—**बरसना**–अधिक कांति होना। [**नूरजहाँ** (यौ०) जहाँगीर बादशाह की बेगम।]

नूरा†—(वि०, दे०) [अ० नूर] तेजस्वी, प्रतापी।

नूह—(संज्ञा, पु०, अ०) एक पैगम्बर (मुस०), जिनके समय मे बहुत बड़ा तूफान आया था।

नृ—(संज्ञा, पु०, सं०) मनुष्य, नर, आदमी। शतरंज की गोटी।—**कपाल**–(संज्ञा, पु०, सं०) मनुष्य की खोपड़ी।—**कपालिक**–(संज्ञा, पु०) मनुष्य की खोपड़ी से सम्बन्धित कार्य में लिप्त।—**केसरी**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० नृकेशरिन्] नृसिंह, नरसिंह, श्रेष्ठ पुरुष, नरकेसरी।—**देव, देवता**–(संज्ञा, पु०, सं०) राजा, ब्राह्मण।—**प**–(संज्ञा, पु०, सं०) राजा, नरपति, १६ की संख्या।—**पति, पाल**–(संज्ञा, पु०, सं०) राजा, नरेश, नरपति, नृपालक।—**मेध**–(संज्ञा, पु०, सं०) नरमेध यज्ञ।—**वराह**–(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु का वाराह अवतार।—**सिंह**–(संज्ञा, पु०, सं०) नरसिंह, सिंह रूपी भगवान। मनुष्यों मे सिंह-सा वीर।—**हरि**–(संज्ञा, पु०, सं०) नृसिंह, नरसिंह, नरहरि, नरकेहरि।

नृतक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नर्तक] नाचने वाला।

नृतना*—(क्रि० अ०) [सं० नृत्य] नाचना।

नृत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) नाच, नर्त्तन।—**शाला**–संज्ञा, स्त्री०) नाचघर।—**स्थान**–(संज्ञा, पु०) रंगशाला।

नृत्यकी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नर्त्तकी] नाचने वाली, नर्तकी।

नृपासन—(संज्ञा, पु०) [सं० नृप+आसन] सिंहासन, गद्दी, तख्त।

नृपोचित—(वि०, सं०) जो कार्य राजा की प्रतिष्ठा के अनुरूप हो।

नृपोत्तम—(वि०) [सं० नृप+उत्तम] जो राजाओं में उत्तम या श्रेष्ठ हो। "रघुकुल-पुंगव-प्रथित नृपोत्तम"।—हरिऔध।

नृशंस—(वि०, सं०) निर्दय, दुष्ट, क्रूर, अत्याचारी, उद्दंड, मनुष्यों को पीड़ा देनेवाला।

नृशंसता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निर्दयता, क्रूरता, निर्भीकता, उद्दंडता।

ने†—(प्रत्य०, दे०) [सं० प्रत्य० टा=एण] सकर्मक क्रिया के भूतकाल के कर्ता की विभक्ति या चिह्न।

नेइँ, नेई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नींव, बुनियाद। "दीन्हेसि अचल विपति कै नेई"—[रामा०]।

नेउछावरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) निछावरि, न्यौछावर ।

नेउतना—(क्रि० स०, दे०) [सं० निमंत्रण] न्यौता देना, निर्मंत्रित करना । नेउता, न्यौता । [**नेउतनी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०) ।

नेउतहारि, नेउतहारी—(संज्ञा, पु०, दे०, हि०) निमंत्रित लोग, न्यौतिहारी (ग्रा०) ।

नेउला, नेउरा, नेउर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नकुल] नेवला । (वि०, प्रान्ती०) बुरा, नेवर ।

नेक—(वि०, फ़ा०) अच्छा, भला, सज्जन । *†(वि०, दे०) [हि० न+एक] तनिक, थोड़ा । [**नैक**-(क्रि० वि०, ब्र०) तनिक, थोड़ा ।] "नैक कही बैननि अनेक कही नैननि सों"—रत्ना० ।—**चलन**-(वि०, दे०, यौ०) [अ० नेक + हि० चलन] सदाचारी, सुकर्मी, अच्छे चाल-व्यवहार का । [**नेकचलनी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**दिल**-(वि०) अच्छे हृदय वाला ।—**नाम**-(वि०, फ़ा०, यौ०) अच्छे नाम वाला, यशस्वी । [**नेकनामी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**नियत**-(वि०, यौ०) [फ़ा० नेक+नीयत अ०] उत्तम या अच्छे विचार वाला, अच्छे संकल्प का । [**नेकनियती** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

नेकी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) भलाई, भलमंसी । "उसने को नेकी तो लोग उसको बदी कहने लगे" —गालि० ।—**बदी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) भलाई-बुराई । **मुहा०**—**और पूछ-पूछ**-कहीं भलाई भी पूछ कर की जाती है, भलाई करने में पूछने की क्या आवश्यकता ?

नेक्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) पोषक, पालक ।

नेग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नैयमिक] ब्याह आदि में कर्मचारियों या सम्बन्धियों की प्रसन्नता के लिए दिया गया धन, दस्तूरी ।—**चार**-(संज्ञा, पु०, हि०) शुभकार्य्य में धन पाने का अवसर । —**जोग**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० नेग+योग= संयोग] शुभकार्य्य में धन पाने का अवसर ।

नेगटी†*—(संज्ञा, पु०, हि०) नेग की रीति का पालन करने वाला ।

नेगी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नेग] नेग पाने वाला "लछिमन होहु धरम के नेगी—[रामा०] ।—**जोगी** -(संज्ञा, पु०, हि०, यौ०) नेग पाने वाला ।

नेछावर‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, हि०) निछावर, न्यौछावर ।

नेजक—(संज्ञा, पु०, सं०) रजक, धोबी, परिष्कारक, शुद्ध करने या कपड़े धोने वाला ।

नेजन—(संज्ञा, पु०, सं०) परिष्करण, शोधन ।

नेजा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भाला, साँग, बरछा । निशान ।—**बरदार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भाला, बरछा, निशान या झंडा लेकर चलने वाला ।

नेजाल‡*—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० नेजा] बरछा, भाला ।

नेटा—(संज्ञा, पु०, दे०) नाक का मल, रेंट, गूजो (ग्रा०) ।

नेठना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० नष्ट] नाश करना, नाठना, ध्वस्त या नष्ट करना ।

नेठमी—(वि०, दे०) स्थिर, एक स्थान पर स्थित ।

नेड़े†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० निकट] समीप, निकट, पास, नेरे ।

नेत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नियति] निर्धारण, ठहराव, निश्चय, संकल्प, प्रबन्ध, व्यवस्था । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नेत्र] मथानी की रस्सी । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक तरह की रेशमी चादर । (संज्ञा, पु०, दे०) एक भूषण । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० नीयत] हार्दिक इच्छा या विचार, आशय, उद्देश्य, संकल्प । "पुनि गज मत्त चढ़ावा, नेत बिछाई खाट"—पद० । **मुहा०** —**बैठना**-डौल लगना, ठीक होना ।

नेतक—(संज्ञा, पु०, दे०) नरकुल, नरकट । चूनरी ।

नेता—(संज्ञा, पु०) [सं० नेतृ] अगुआ, सरदार, नायक, स्वामी, मालिक, निर्वाहक । [**नेत्री** (स्त्री०)] (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नेत्र) मथानी की रस्सी ।

नेति—(क्रि० वि०) [सं० न+इति] इतना ही नहीं, यही नहीं है, अर्थात् अनन्त है "नेति नेति कहि गावहिं वेदा"—[रामा०] ।

नेती—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० नेता] मथानी की रस्सी, जो खींची जाने पर घूमती है ।—**धोती**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नेत्र=हि० नेता+सं० धोति] कपड़े की एक पतली धज्जी को गले से पेट में डाल कर आँतों को शुद्ध करने की एक क्रिया (हठयोग) ।

नेत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) नयन, आँख । एक तरह का कपड़ा । मथानी की रस्सी । पेड़ की जड़ । रथ । दो की संख्या का सूचक शब्द ।—**कनीनिका**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) आँख की पुतली ।—**च्छद**-(संज्ञा,

पु०, सं०) आँखें बन्द करने वाला चमड़ा, पलक । —जल-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) आँख का पानी, आँसू ।—पटल-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पलक । —बाला-(संज्ञा, पु०, सं०) सुगंध बाला ।—मंडल-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) आँख का गोला या घेरा ।—स्राव-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) आँख से पानी का बहना (रोग) ।

नेत्रछीत—(संज्ञा, पु०, दे०) बन्दी, कैदी, अपराधी ।

नेत्रांत—(संज्ञा, पु०, सं०) आँख का बाहरी कोना ।

नेत्रांबु—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) आँखों का पानी, आँसू ।

नेत्री—(वि०, सं०) नेत्र वाली ।

नेत्रौषध—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आँख की दवा, पुष्पकासीस ।

नेनुआ, नेनुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) घियातरोई नाम की तरकारी ।

नेपचून—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक ग्रह ।

नेपथ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वेशभूषा । नाट्यगृह का वह भाग जहाँ स्वरूप साजे जाते हैं । सजावट की जगह, शृंगार-गृह (नाट्य०) ।

नेपाल, नैपाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नैपाल] हिमालय का एक पहाड़ी प्रदेश ।

नेपाली, नैपाली—(वि०, दे०) [हिं० नेपाल] नेपाल सम्बन्धी । नैपालनिवासी । वहाँ की भाषा ।

नेपुर—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं० नोपुर] पायजेब, घुंघरू ।

नेफा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लहँगा या पायजामे में नारा या इजारबंद के रहने का स्थान ।

नेब*—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० नायब] सहायक, मददगार, मंत्री, नायब ।

नेम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नियम] नियम, कायदा, दस्तूर, रीति, आचार ।—धरम-(यौ०) पूजा-पाठ, उपवास, व्रत ।

नेमि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चक्र की परिधि, पहिये का घेरा । कुएँ की जगत । प्रांत । भाग । (संज्ञा, पु०) एक तीर्थंकर । वज्र । "आनेमिमग्नैः"—माघ० ।

नेमी—(वि०,दे०) [सं० नियम] नियम-व्रत का पालन करने वाला, पूजा-पाठ, व्रत आदि का करने वाला ।

नेराना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० निराना] निराना । (क्रि० अ०, दे०) [हिं० नेरे=समीप] समीप पहुचना, निकट जाना, नियराना ।

नेरुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) पयाल, नौली, डाँड़ी ।

नेरे†—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० नियर] नियरे, समीप, निकट, पास । "जासु मृत्यु आई अति नेरे" —[रामा०] ।

नेव*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० नायब] नायब, मन्त्री, सहायक । (संज्ञा, स्त्री०) नीव । निहोरे में या के लिए । "भरत बंदि-गृह सेइहैं, राम-लखन के नेव"—[रामा०] ।

नेवग*—(संज्ञा, पु०, दे०,) नेग, रीति, दस्तूर ।

नेवज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नैवेद्य] भोग ।

नेवतना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० निमंत्रण] न्यौतना, नेउतना (ग्रा०) । नेवता भेजना, निमंत्रित करना, भोजन करने को बुलाना ।

नेवता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० न्यौता] नेउता, न्यौता (ग्रा०), निमंत्रण ।

नेवतिहारी, न्यौतिहारी, नेउतिहारी—(वि०, दे०) निमंत्रित लोग ।

नेवर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नूपुर] नूपुर, घुँघरू, पायजेब । नेवला । घोड़े के पाँवों का घाव, जो परस्पर रगड़ खाने से उनमें हो जाता है । (वि०, प्रान्ती०) बुरा, खराब, घटिया ।

नेवरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० निवारण] निवारण, भिन्न, अलग या दूर करना ।

नेवल, नेवला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नकुल] एक जन्तु जो साँप का शत्रु है, नेउर, नेउरा (ग्रा०), न्यौला ।

नेवा—(संज्ञा, पु०) प्रथा, रीति, दस्तूर । (वि०) समान, तुल्य । खामोश ।

नेवाज—(वि०, दे०) [फा० निवाज] नेवाजू (ग्रा०) । कृपा, दया करने वाला । "गई बहोरि गरीबनेवाजू"—[रामा०] ।

नेवाजिस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० निवाजिश] कृपा, दया ।

निवाजी—(क्रि० स०, दे०) [फ़ा० निवाज] शरण में ली, कृपा की । (वि०) कृपा करने वाला, दयालु । "वानर सेना सकल नेवाजी" —[रामा०] ।

नेवारना*—(क्रि० स०, दे० [हिं० निवारना] निवारना, दूर या अलग करना, हटाना ।

नेवारी, नेवाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नेपाली] नेवाड़ी के पेड़ या फूल, फूल मल्लिका (सं०) ।

नेसुक, नैसुक*†—(वि०, दे०) [हि० नेकु] थोड़ा, तनिक, रंच। (क्रि० वि०, ब्र०) तनिक-सा, जरा-सा, थोड़ा-सा। "वे तौ नेह चाहतीं न नैसुक रसाल कहै"।

नेस्त—(वि०, फ़ा०) नहीं है, जो न हो।—**नाबूद** (वि०) पूर्णतया नष्ट, उन्मूलित।

नेस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अनस्तित्व, न होना, नाश। [(विलो०) हस्ती]।

नेह*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्नेह] स्नेह, प्रीति, प्रेम। चिकनाई, तेल या घी। "नातो नेह राम सो साँचो"—[विन०]। "नेह चीकने चित्त" —बिहारी। (क्रि० वि०, यौ०) न इह, नहीं।

नेही*—(वि०, दे०) [हि० नेह+ई प्रत्य०] प्रेमी, स्नेही, मित्र।

नै—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नय] नीति, नय। नमन। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नदी] नदी। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बाँस की नली, हुक्के की निगाली। बाँसुरी।—**जाना**–(क्रि० अं०, दे०) झुकना। "गुमान ताको नै गयो"।

नैअृत*—(संज्ञा, वि०, पु०, दे०) [सं० नैऋत्य] दक्षिण-पश्चिम के बीच की दिशा। राक्षस।

नैक, नैकु—(वि०, दे०) [हि० नेक, नेकु] रंच, थोड़ा, तनिक। "लट उरझी है नैक बेसर सुधारि दै"।

नैकट्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सामीप्य, निकटता।

नैकधा—(अव्य, सं०) कई तरह से।

नैकृतिक—(वि०, सं०) दूसरे को हानि पहुँचाकर अपने स्वार्थ को पूरा करने वाला, बेईमान, कमीना।

नैगम—(वि०, सं०) निगम या वेद-संबन्धी। (संज्ञा, पु०) उपनिषद्-भाग, नीति।

नैगमिक—(वि०, सं०) वेद-संबन्धी। वेदों से निकला हुआ।

नैगमेय, नैगमेष—कार्त्तिकेय का एक सेवक।

नैघंटुक—(संज्ञा, पु०, सं०) यास्क मुनि कृत निरुक्त में वर्णित वैदिक शब्दों का संग्रह-ग्रन्थ।

नैचा—(संज्ञा, पु०, फा०) हुक्के की लकड़ी।

नैज—(वि०, सं०) निजी, आत्मीय, आत्म-संबन्धी।

नैतिक—(वि०, सं०) नीति-संबन्धी।—**आभार**–(संज्ञा, पु०) नैतिक एहसान, [मौरल अब्लि-गेशन]।

नैन, नैना*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नयन] नयन, नेत्र, आँख। "नैना देत बताय सब हिय को हेत अहेत"—वृं०। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नवनीत] [नेनू (दे०)] मक्खन।—**सुख**–(संज्ञा, पु०, हि०, यौ०) एक सफेद और चिकना सूती कपड़ा। लो०—आँख के अंधे नाम नैनसुख।

नैनू—(संज्ञा, पु०, हि०) एक बूटीदार महीन कपड़ा। †(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नवनीत] मक्खन, नेनू।

नैपाल—(वि०, सं०) नैपाल, नैपाल संबन्धी। (संज्ञा, पु०) [दे० नीपाल] हिमालय का एक प्रदेश।

नैपाली—(वि०) [हि० नैपाल] नैपाल देश का निवासी या वहाँ उत्पन्न। (संज्ञा, स्त्री०) नैपाल की भाषा।

नैपुण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) निपुणता, चतुराई, दक्षता, [निपुनाई (दे०)]।

नैमित्तिक—(वि०, सं०) किसी कारण या प्रयोजन से होने वाला कार्य। आकस्मिक, अकालिक, [इन्सीडेंटल]।—**आदेश**–(संज्ञा, पु०) आकस्मिक आदेश, [इन्सीडेंटल आर्डर]।

नैमिष—(संज्ञा, पु०, सं०) एक तीर्थ।

नैमिषारण्य—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नैमिष तीर्थ के पास का एक वन।

नैयमिक—(संज्ञा, पु०, सं०) नियम के अनुसार होने वाला कार्य।

नैया*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नौ] निइय्या (ग्रा०), नाव, नौका। "नैया मेरी तनक सी, बोझी पाथर भार"—गिर०।

नैयायिक—(वि०, सं०) न्याय-वेत्ता, न्याय का पढ़ने या जानने वाला। "कर्त्तेति नैयायिका:"— [ह० ना०]।

नैर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नगर] नगर, शहर।

नैराश्य—(संज्ञा, पु०, सं०) निराशा, नाउम्मेदी। "नैराश्यं परमं सुखं"—[स्फु०]। "जहाँ आशा बनती नैराश्य"—महा०।

नैऋत—(वि०, सं०) नैऋति-संबन्धी। (संज्ञा, पु०) एक राक्षस। दक्षिण-पश्चिम के कोण का स्वामी।

नैऋति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पश्चिम और दक्षिण के बीच की दिशा।

नैर्मल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्मलता, स्वच्छता, विमलता।

नैवेद्य—(संज्ञा, पु०, सं०) देवभोग, देवबलि।

नैषध—(वि०, सं०) निषध-देश का, निषध देश-सम्बन्धी। (संज्ञा, पु०, सं०) राजा नल। श्रीहर्ष-रचित एक महाकाव्य।

नैष्ठिक—(वि०, सं०) श्रद्धा-भक्ति-युक्त। [**नैष्ठिकी** (स्त्री०)]। "वासुदेव कन्यायां ते यज्जाता नैष्ठिकी रतिः"—[भग०]।

नैष्ठुर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्दयता, निष्ठुरता।

नैसर्गिक—(वि०, सं०) प्राकृतिक, स्वाभाविक। [**निसर्ग** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]

नैसा*—(वि०, दे०) [सं० अनिष्ट] खराब, बुरा, अनैसी (ग्रा०)।

नैहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ज्ञाति=पिता+हिं० घर] मायका, पीहर, स्त्री के पिता का घर।

नोआ, नोवा—(संज्ञा, पु०, दे०) रस्सी का वह टुकड़ा जिससे दूध दुहते समय गाय के पीछे के पैर बाँध देते हैं। [**नोइ, नोई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

नोक—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) किसी चीज का निकला हुआ कोना या अग्र भाग। [**नोकदार, नोकीला** (वि०)], [**नोकीली (स्त्री०)**]।—**चोक**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) संकेत या इशारे से बातें करना, लाग-डाँट।—**झोंक**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [फ़ा० नोक+हिं० झोंक] सजावट, ठाट-बाट। आतंक, दर्प। व्यंग, ताना, छेड़-छाड़, विवाद।—**दार**–(वि०, फ़ा०) जिसमें नोक हो।

नोकना—(क्रि० स०, दे०) ललचाना, आकृष्ट होना।

नोकाझोंकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नोक झोंक] छेड़छाड़, व्यंग्य। बनाव-शृंगार, ठाट-बाट। घमंड, आतंक। विवाद।

नोखा†—(वि०, दे०) [हिं० अनोखा] अनोखा, अजीब, नवीन, [**नोखी** (स्त्री०, दे०)]।

नोच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नोचना] चुटकी, बकोट, लूट। **खसोट**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) छीना-झपटी, बलपूर्वक अधिकार-स्थापन, लूट। [**नोचा-खसोटी** (स्त्री०)]।

नोचना—(क्रि० स०) [सं० लुंचन] झटके से खींचना, उखेड़ना, नखों से फाड़ना, निकोटना, दुखी करके लेना, चुटकी या बकोट काटना।

नोट—(संज्ञा, पु०, अं०) लिखा परचा। सरकारी हुण्डी। संक्षिप्त लेख। [**नोटबुक** (यौ०)]।

नोटिस—(संज्ञा, पु०, अं०) विज्ञापन, सूचना-पत्र।

नोदन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रेरणा, औंगी। पैना।

नोन—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० नमक] लोन, नमक, नून (ग्रा०)।—**हा**–(वि०) नमकीन। —**चा**–(संज्ञा, पु०, दे०) अधिक नमकदार, आम की सूखी खटाई। (वि०, दे०) नोनखर, नोनहर (ग्रा०), नमकीन।—**छी**–(संज्ञा, स्त्री०) लोनी मिट्टी।

नोना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लवण] लोनी मिट्टी। शरीफा। (वि०, स्त्री०) [हिं० नोनी] नमक मिला, खारा, सलोना, सुन्दर। [**नोना** (वि०, प्रान्ती०)] चोखा। (क्रि० स०, दे०) नोचना।

नोनाचमारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) विख्यात जादूगरनी, जिसकी मंत्रों में दुहाई दी जाती है।

नोनिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० नोन] लोनिया, एक नमक-शोरा बनाने वाली जाति।

नोनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लवण] लोनी मिट्टी। एक पौधा। अमलोना। (वि०, स्त्री०, प्रान्ती०) सलोनी, चोखी।

नोनो†*—(वि०, दे०) [हिं० नोना] चोखा, सुन्दर, अच्छा, सलोना।

नोर, नोल—(वि०, दे०) [सं० नवल] नया, नवीन, नूतन।

नोवना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० नद्ध] दूध दुहते समय गाय के पैर बाँधना।

नोहर†—(वि०, दे०) [सं० मनोहर या नोपलभ्य] सुन्दर, मनहरण। अलभ्य, दुर्लभ, अनोखा।

नौ—(वि०, दे०) [सं० नव] एक कम दस की संख्या, जैसे नव ग्रह।—**नगा**–(संज्ञा, पु०) हाथ का एक आभूषण जिसमें नौ नग होते हैं, नौरतन।—**मासा**–(संज्ञा, पु०) गर्भधारण के समय से नवाँ महीना। गर्भधारण के नवें महीने मे मिष्ठान्न वितरण की प्रथ.।—**रंग***‡–(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० औरंग] औरंगजेब बादशाह। "सारँग है सिवराज बली, जिन नौरँग में रँग एक न राख्यो"—भूषण। (यौ०, दे०) नया या ९ रंग।—**रंगी**†–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० नारंगी] नारंगी, संतरा। (वि० यौ०) नये या ९ रंग वाला।—**रतन**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० नवरत्न] हीरा, नीलम,

पन्ना, पुखराज, चुन्नी आदि नौ रत्नों का समूह। नौनगाभूषण। (संज्ञा, स्त्री०) एक प्रकार की चटनी, नौरतनी।—**लखा**-(वि०) जिसका मूल्य नौ लाख हो। **लो०**—नये के नौ दाम पुराने के छः। "जैसे घटत न अंक नौ, नौ के लिखत पहार"—तुल०। **मुहा०—दो ग्यारह होना**-देखते-देखते भाग जाना, एक दो तीन होना, चल देना। **लो०**—नौ दिन चलै अढाई कोस। बड़ी कठिनता से देर में थोड़ा कार्य करना। (संज्ञा, स्त्री०) नौका, जहाज।—**कर्ण**-(संज्ञा, पु०) जहाज की पतवार।—०**धार**-(संज्ञा, पु०) जहाज का कप्तान, पोतचालक।—**सेना**-(संज्ञा, स्त्री०) जल-सेना, समुद्री युद्ध करने वाली सेना।—०**पति**-(संज्ञा, पु०) समुद्री सेना का अध्यक्ष। [एडमिरल]। (वि०, सं०) नव, नया, नवीन।—**रस**-(वि०) ताजा फल। युवक-नौजवान।—**सिखिया**-(वि०) जिसने हाल ही में काम सीखा हो, जिसे कार्य के सम्बन्ध में प्रौढ़ अनुभव न हो। —(वि०, फ़ा०) ताजा, नया, हाल का।—**जवान**-(वि०) जिसमें यौवन का उदय हो रहा हो, [**नौजवान** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**रोज**-(संज्ञा, पु०) पारसियों का नव वर्ष दिन।—**शा**-(संज्ञा, पु०) दूल्हा, वर।—**शी**-(संज्ञा, स्त्री०) दुलहिन, बधू।

नौकर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सेवक, चाकर, टहलुआ, वैतनिक कर्मचारी। [**नौकरानी** (स्त्री०)], [**नौकरी** (संज्ञा, स्त्री०)], [**नौकर-चाकर** (यौ०)]।—**पेशा**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नौकरी-द्वारा जीवन निर्वाह करने वाला व्यक्ति।—**शाही**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०, यौ०) नौकरों द्वारा राज-प्रबन्ध, राज-कर्मचारी के हाथ में रहने वाली राज्य-व्यवस्था।

नौकरानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) दासी, मजदूरनी, टहलुई।

नौकरी—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० नौकर+ई प्रत्य०] सेवा, टहल, खिदमत। [**नौकरी, चाकरी** (यौ०)] —**पेशा**-देखिए 'नौकर पेशा'।

नौका—(संज्ञा, पु०, सं०) नाव, तरी, तरणी। —**गम्य**-(वि०, सं०, यौ०) जहाज या नाव चलाने के योग्य, [नैवीगेबल]।

नछावर†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० निछावर] निछावर, उतारा, त्याग, [**न्योछावर** (दे०)]।

नौज—(अव्य०, दे०) [सं० नवद्य, प्रा० नवज्ज] भगवान न करे ऐसा हो, न हो न सही।

नौजा—(संज्ञा, दे०) [फ़ा० लौज] चिलगोजा। बादाम।

नौतन*—(वि०, दे०) [सं० नूतन] नूतन, नया, नवीन।

नौतम*—(वि०, दे०, यौ०) [सं० नवतम] बिल्कुल नया, ताजा, अति नवीन, हाली।

नौता—(वि०, दे०) [सं० नव] नया, नवीन, नूतन। (संज्ञा, पु०, दे०) न्यौता, निमंत्रण।

नौधा*—(वि०, दे०) [सं० नवधा] नवधा, नव प्रकार की, नौ तरह की। "नौधा भगति कहौं तोहि पाहीं"—[रामा०]।

नौना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० नवना] लचना, झुकना, नम्र होना।

नौबढ़—(वि०, दे०) [हि० नौ+बढ़ना] हाल ही में कंगाल से धनी हुआ व्यक्ति। हाल का बढ़ा हुआ।

नौबत—(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) हर्षवाद्य, शहनाई। "नौबत बजत कहूँ नारी-नर गावत"—भा० हरि०। अवसर, मौका।—**खाना**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नक्कारखाना, द्वार के ऊपर का स्थान जहाँ शहनाई बजाते हैं। **मुहा०—झड़ना**-नौबत बजना। —**बजना**-आनंददोत्सव होना, प्रताप आदि की घोषणा होना।—**बजाकर**-सब के सामने, बाजे गाजे के साथ।—**किसी बात की—न आना**-अवसर या मौका न मिलना।

नौबती—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० नौबत+ई प्रत्य०] नक्कारची या शहनाई वाला, नौबत बजाने वाला। पहरेदार। कोतवाल घोड़ा। बड़ा तम्बू।

नौमि—(क्रि० स०, सं०) मैं नमस्कार करता हूँ। "नौमीड्यतेऽभ्रवपुषे तडिदम्बराय"।

नौसत—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि०नौ+सात] सोलह श्रृंगार, श्रृंगार। "नौसत साजे सजी सेज पै विराजै मनौ"—मन्ना०।

नौमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नवमी] नवमी नाउमी (ग्रा०)। "नौमी तिथि मधुमास पुनीता" —[रामा०]।

नौल*—(वि०, दे०) [सं० नवल] नवीन। "शिव सरजा की जगत में राजति कीरति नौल"—भूषण।

नौशेरवाँ—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) फारस का न्यायप्रिय सम्राट जो छठी शताब्दी में हुआ था।

नौसादर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० नौशादर] एक तीक्ष्ण औषधि (क्षार)।

नौहड़—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० नव=नया + हाँड़ी हि०] मिट्टी की नयी हाँड़ी ।

न्यक्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) तिरस्कार, निन्दा, अनादर, घृणा ।

न्यग्रोध—(संज्ञा, पु०, सं०) वट, बरगद । शमी वृक्ष । शिव । विष्णु ।

न्यस्त—(वि०, सं०) धरोहर, अमानत । त्यक्त, छोड़ा हुआ । "जो कुछ न्यस्त प्रकृति में है"—दिनकर ।

न्याउ, न्याव†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० न्याय] न्याय, नियाव (ग्रा०) । " यहै बात सब कोउ कहै, राजा करै सो न्याउ"—वृंद ।

न्यात—(संज्ञा, पु०, ग्रा०) डौल, मौका, घात ।

न्याति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ज्ञाति] जाति ।

न्याय—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रमाणों के द्वारा अर्थ का प्रतिपादन, जैसे—तक्रकौडिन्य न्याय, वलीवर्द-न्याय । "प्रमाणैरर्थप्रतिपादनम् न्यायः" । तर्क-शास्त्र का गौतम ऋषि प्रणीत एक महान ग्रंथ । इंसाफ, उचित निपटारा, व्यवहार ।—**कर्त्ता**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) न्याय, इन्साफ या निपटारा करने वाला शासक । न्याय-शास्त्र के बनाने वाले गौतम ऋषि । [**न्यायकारी, न्याय-कारक** (वि०)] ।—**तः**-(क्रि० वि०, सं०) न्याय-द्वारा, न्याय से, ठीक-ठीक, ईमान-धर्म से । —**पर**-(वि०) न्याय-सम्मत व्यवहार करने वाला । —**परता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) न्याय-सम्मत होने का भाव ।—**परायण**-(वि०) न्याय के पक्ष पर चलने-वाला । "तुम राजाओं में राजा न्यायपरायण थे" —बच्चन ।

न्यायवान—(संज्ञा, पु०) [सं० न्यायवत्] न्यायी, न्याय पर ध्यान रखने वाला, [**न्यायवती** (स्त्री०)] ।

न्यायाधीश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) न्याय करने वाला, न्याय-कर्त्ता, मुकद्दमों का फैसला करने वाला शासक या अधिकारी, [जज] ।

न्यायालय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अदालत, कचहरी, न्यायभवन, [कोर्ट] ।

न्यायी—(संज्ञा, पु०) [सं० न्यायिन्] नीति या न्याय पर चलने या चलाने वाला । (वि०, सं०) न्याय करने वाला ।

न्यायोचित—(वि०, सं०) जो न्याय की दृष्टि से उचित हो, जो न्यायसंगत हो । "न्यायोचित अधि-कार माँगने से न मिलें तो लड़ के ।"—दिनकर ।

न्याय्य—(वि०, सं०) न्यायानुसार, ठीक-ठीक, उचित ।

न्यारा—(वि०, दे०) [सं० निर्निकट] दूर, पृथक् । न्यारो (ब्र०), भिन्न, निराला, अनोखा । "न्यारो न होत बफारो ज्यों धूमसों"—देव० । [**न्यारी** (स्त्री०)]

न्यारिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० न्यारा] सुनारों के कूड़े से सोने-चाँदी को अलग करने वाला ।

न्यारे, न्यारो—(क्रि० वि०, दे०) [हि० न्यारा] अलग, भिन्न, दूर ।

न्याव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० न्याय] न्याय, तर्क, ठीक या उचित बात ।

न्यास—(संज्ञा, पु०, सं०) धरोहर, थाती, रखना । [**न्यस्त** (वि०)]

न्यून—(वि०, सं०) अल्प, कम, थोड़ा, घट कर ।

न्यूनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमी, अल्पता, हीनता ।

न्योछावर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० निछावर] निछावर, उतारा ।

न्योजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लीची फल । चिल-गोजा ।

न्योतना, न्यौतना—(क्रि० स०, दे०) [हि० न्योता + ना प्रत्य०] किसी उत्सव मे सम्मिलित होने के लिए किसी को बुलाना, निमंत्रण देना, निमंत्रित करना । [**न्यौतना, न्योतवाना** (प्रेरणा० रूप)]

न्योतहारी, न्योतिहारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० न्योता] न्योते में सम्मिलित या निमंत्रित पुरुष ।

न्योता, न्यौता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० निमंत्रण] निमंत्रण, बुलावा, दावत, न्यउता, नेउता, निउता (ग्रा०) ।

न्योला, न्यौला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नकुल] नेवला, नेउला, नेउरा (ग्रा०), नकुल ।

न्योली, न्यौली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नली] पेट के नसों को पानी से शुद्ध करने की एक क्रिया (हठयोग) ।

न्हान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्नान] । अन्हान ।

न्हाना†*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्नान] नहाना, अन्हाना ।

प—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला के पवर्ग का पहला अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है—"उपूपध्मानीयानामोष्ठौ" ।

पंक—(संज्ञा, पु०, सं०) कीच, **कीचड़**, **लेश** । "पंक न रेनु सोह अस धरनी"—[रामा०] । **—ज**-(संज्ञा, पु०, सं०) कमल, जलज ।**—०श्री**-(यौ०) कमलकांति ।**—०राग**-(संज्ञा, पु०, सं०) पद्मरागमणि ।**—०वाटिका**-(संज्ञा, स्त्री० सं०) एक वृत्त (पिं०) ।**—जात**-(संज्ञा, पु०, सं०) कमल ।**—रुह**-(संज्ञा, पु०, सं०) कमल, पंकज ।

पंकजासन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्रह्मा, कमलासन ।

पंकिल—(वि०, सं०) कीचड़-युक्त ।

पंकिलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कलुषता, कालिमा ।

पंकेरुह—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल । सारस ।

पंक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाँति, कतार, श्रेणी, सतर । एक वृत्त (पिं०) । दस, [पंगति (दे०)] । [**पंक्ति-भेद** (यौ०)] ।**—पावन**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दान लेने और यज्ञ में बुलाने के योग्य ब्राह्मण ।**—बद्ध**-(वि०, सं०, यौ०) कतार में बँधा या रखा हुआ, श्रेणीबद्ध ।

पंख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्ष] पर, डैना । **मुहा०** (**चींटी के**)**—जमना** (**उगना**)-मरने या हानि उठाने का समय आना ।**—लगना**-पक्षी के वेग के समान वेग वाला होना ।

पंखड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पक्ष्म] पँखुरी, पंखुड़ी, पाँखुरे (ब्र०) । फूल के पत्ते, पुष्प-दल ।

पंखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पंख] बेना, बिजना । [**पंखी** (स्त्री० अल्प०)] ।**—कुली**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० पंखा + कुली अं०] पंखा खींचने वाला नौकर ।**—पोश**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पंखा + पोश फ़ा०] पंखा ढाँकने का वस्त्र, पंखे का गिलाफ ।

पंखाज—(संज्ञा, पु०) पखावज ।

पंखियाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पंख] छोटे-छोटे पंख । भूसी के बारीक या सूक्ष्म टुकड़े । छोटे पर । "बेग ही बूड़ि गयी पंखियाँ अँखियाँ मधु की मखियाँ भई मोरी"—देव० ।

पंखी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्षी] पक्षी, पखेरू, चिड़िया । पाँखी, पतिंगा । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पंखा] छोटा पंखा, पँखिया ।

पंखुड़ा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्ष] पखोर, पखौरा, हाथ और कंधे का जोड़ ।

पंखुड़ी, पँखुरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पंख] पंखड़ी, पाँखुड़ी, पखुरी, फूल की पत्ती, पुष्प-दल । "पँखुरी गड़ै गुलाब की, परिहैं गात खरौंट"—बिहारी । "पुषपान की पंखुरी पाँयन मैं"—[रघु०] ।

पँखेरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्षी] पक्षी, पखेरू, चिड़िया, पंछी ।

पंग—(वि०, दे०) [सं० पंगु] लँगड़ा, पंगुआ, पंगुवा । (संज्ञा, पु०, दे०) एक तरह का नमक । "भई गिरा गति-पंग"—सूर० ।

पंगत, पगति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पंक्ति] पाँति, पंक्ति, कतार, सभा, समाज ।

पंगा—(वि०, दे०) [सं० पगु] पंगु, पंगुआ, पंगुवा, लंगड़ा । [**पगी** (स्त्री०)]

पगु—(वि०, सं०) पाँव का लंगड़ा, पंगुआ, पंगुवा, लंगड़ा । "पंगु चढ़हिं गिरवर गहन"—[रामा०] । (संज्ञा, पु०, सं०) शनिश्चर ग्रह, वात रोग का भेद । [**पंगुता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।**—गति**-(संज्ञा, स्त्री० सं०, यौ०) वर्णिक छंदों का एक अवगुण या दोष (पिं०) ।

पंगुल, पंगुला—(वि०, दे०) [सं० पंगु] पँगुआ पँगुवा, लँगड़ा । "पाँयन तें पगुला हुआ, सतगुरु, मारा बान"—कबीर ।

पंच—(वि०, सं०) पाँच ।(संज्ञा, पु०) पाँच की संख्या का अंक । लोक, जनता, समाज, सभा । झगड़ा मिटाने वाले मुखिया । "पंच कहैं शिव सती बिवाही"—[रामा०] । पंचायत का सदस्य । पंचायत । **—नामा**-(यौ०) पंचों का निर्णय । **मुहा०—की भीख**-सब की दया या कृपा, सब की असीस ।**—की दुहाई**-अन्याय मिटाने या सहायता करने की पुकार ।**—परमेश्वर**-समुदाय-कथन परमेश्वर-वाक्य-सा मान्य है । पंचायत, न्यायसभा । **लो०**—"पंचै मिलिकै कीजै काज, हारे-जीते होय न लाज" । **किसी को—मानना या बदना**-झगड़ा के निपटारे के हेतु किसी को नियत करना । जज के असेसर लोग ।**—कन्या**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अहल्या, तारा, कुंती, द्रौपदी, मंदोदरी, जो विवाह होने पर भी कन्या रहीं ।**—कल्याण**-(संज्ञा, पु०, सं०) ऐसा घोड़ा जिसके चारों पैर सफेद हों और माथे पर सफेद तिलक हो, शेष शरीर का रंग लाल या काला कोई हो । "तुर्की, ताजी और कुमैता, घोड़ा अरबी पँचकल्यान"—[आल्हा] ।**—कवल**-(संज्ञा, पु०, सं०) भोजन के पहले पाँच ग्रास जो कुत्ते, कौए, रोगी, पतित और कोढ़ी के हेतु निका-

ले जाते हैं, अग्रासन, अग्राशन, आत्म-नैवेद्य के पाँच ग्रास [पंचकौर (दे०)] । "पंचकवल करि जेवन लागे"—[रामा०] ।—**कोण**–(वि०, सं०) पाँच कोनों का क्षेत्र [पचकोन (दे०)] । —**कोश**–(संज्ञा, पु०, सं०) शरीर बनाने वाले पाँच कोश—अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय कोश ।—**कोशा**–(संज्ञा, पु०, सं०) पंचकोस काशी ।—**कोस**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंच-क्रोश] पाँच कोस की लंबाई-चौड़ाई के मध्य मे स्थित पवित्र भूमि, काशी । [**पंचकोसी** (स्त्री०)] ।—**कोसी**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पंचकोस] काशी की परिक्रमा ।—**गंगा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपाप नामक पाँच नदियों का समुदाय, पंचनद ।—**गव्य**–(संज्ञा, पु०, सं०) गाय के दूध, घी, दही, गोबर, मूत्र पाँचों पदार्थों का समूह । [**पंचगव्यघृत** (यौ०)] ।—**गौड़**–(संज्ञा, पु०, सं०) सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल, उत्कल नामक पाँच ब्राह्मणों का समुदाय ।—**चामर**–(संज्ञा, पु०, सं०) ज, र, ज, र, गु, गु युक्त एक छंद (पिं०) । चामर या नाराच छंद । गिरिराज ।—**जन**–(संज्ञा, पु०, सं०) गंधर्व, देव, पितर, राक्षस और असुर । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद का वृंद । मनुष्य-समुदाय, पाँच प्राणों का समूह । —**जन्य**–(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण का शंख । "पंचजन्यं हृषीकेशो"—[गीता०] ।—**तत्व**–(संज्ञा, पु०, सं०) आकाश आदि पंचभूत । "पंच-रचित यह अधम शरीर"—[रामा०] ।—**तन्मात्र**–(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द, रूप, स्पर्श, रस, गंध का समूह ।—**तपा**–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंचतपस्] पंचाग्नि तापने वाला ।—**तिक्त**–(संज्ञा, पु०, सं०) चिरायता, गुरिच, भटकटैया, सोंठ, कूट नामक औषधियों का समूह । "पंचतिक्त कषायस्य मधुना सह निषेवणात्"—[भाव०] ।—**निर्णय**–मध्यस्थल द्वारा किया गया निर्णय या फैसला । —**देव**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) शिव, गणेश, विष्णु, सूर्य्य, देवी, इन पाँच देवताओं का समूह, पंचदेवता ।—**द्रविड़**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) द्रविड़, अंध, महाराष्ट्र, करणाट और गुर्जर नामक पाँच ब्राह्मणों का समुदाय ।—**नद**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) झेलम, चनाव, ब्यास, रावी, सतलज नामक पाँच नदियों का समुदाय, पंजाब देश । "पंचनद जिस देश में है सो अहै पंचाल"—मन्ना० । पंच गंगा तीर्थ, काशी ।—**नाथ**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जगन्नाथ, बद्रीनाथ, द्वारिकानाथ, श्रीनाथ, रंगनाथ का समूह । "पंचनाथ दरसन-बिना, जीवन दिया गँवाय"—मन्ना० ।—**नामा**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० पंच + नामा फ़ा०] वह पत्र जिस पर पंचों का निर्णय लिखा हो । **मुहा०—को प्राप्त होना**–मर जाना ।—**पति**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पांच पति, पांडव, पंचभर्ता । —**परिषद्**–पंचायत समिति । [आर्बिट्रेशन बोर्ड] । —**पल्लव**–(संज्ञा, पु०, सं०) आम, जामुन, कैथा, बेल और नीबू, वृक्षों के पत्ते ।—**पात्र**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक बर्तन (पूजा) । श्राद्ध ।—**पीरिया**–(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पंच + पीर फ़ा०] पाँच पीरों का पूजा करने वाला (मुसल०) । —**प्राण**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान नामक पाँच पवनों का समुदाय । "पंचप्राण बिन सूना मंदिर देखत ही भय धावे"—[स्फु०] ।—**भर्त्तारी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) द्रौपदी ।—**भूत**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पंचतत्व, आकाश, तेज, वायु, जल, पृथ्वी नामक पाँच तत्वों का समूह, पंचमहाभूत ।—**मकार**–(संज्ञा, पु०, सं०) मछली, मुद्रा, मद्य, माँस, मैथुन, इन पाँचों का समुदाय (वाम०) । [**पंचमकारी**–(वि०) वाममार्गी ।—**महापातक**–(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्महत्या, चोरी, सुरापान, गुरु-पत्नी-मैथुन और इनके करने वाले व्यक्ति का संग । [**पचपातकी** (वि०)] ।—**महायज्ञ**–(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मयज्ञ (संध्या), देवयज्ञ (अग्निहोत्र या हवन), पितृयज्ञ (श्राद्ध), भूत-यज्ञ (बलि वैश्य देव) नृयज्ञ (अतिथि-पूजन) ।—**महाव्रत**–(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह—दान न लेना, अहिंसा, अस्तेय (चोरी का त्याग), सूनृता, सत्य-भाषण, येही पंचयज्ञ भी कहे जाते हैं । [**पंचमहाव्रती** (वि०)] ।—**मुख,—मुखी**–(वि०, यौ०) [सं० पंचमुखिन्] पाँचमुख वाला, शिव, सिंह, पचानन ।—**मूल**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पाँच जड़ों के मेल से बनी औषधि ।—**मेल**–(वि०, हिं०, यौ०) जिसमें पाँच या कई प्रकार की चीजें मिली हों ।—**रंग,—रंगा**–(वि०, दे०, यौ०) [हिं० पाँच + रंग] पाँच या अनेक रंगों का । [**पंचरंगी** (स्त्री०)] ।—**रत्न**–(संज्ञा, पु०, सं०) सोना, हीरा, मोती, लाल, नीलम इनका समूह ।—**राशिक**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) चार

ज्ञात राशियों से पाँचवीं अज्ञात राशि के निकालने की क्रिया या रीति (गणि०) ।—**लड़ा,—लरा**–(वि०, दे०) [हि० पांच+लड़] पाँच लड़ों का, पाँचलड़ों वाला, हार आदि, [**पँचलरी, पँचलड़ी** (स्त्री०)] । —**लवण**–(संज्ञा, पु०, सं०) सेंधा, सोंचर, विट, सामुद्र, काँच नामक पाँच प्रकार के नमक । [पचलोन (दे०)] । [**पंचलोना** (वि०)] । —**वाण**–(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव के पाँच वाण—मोहन, उन्मादन, तापन, शोषण, द्रोषण । काम के आम्र, अशोक, कमल, नीलोत्पल, नव-मल्लिका के पुष्प वाण । कामदेव । "प्रयाणे पंच-वाणस्य शंखनापूरयन्निव"—[सा० द०] ।—**शब्द**–(संज्ञा, पु०, सं०) सितार, ताल, झाँझ, नगाड़ा, तुरही का मिलित शब्द । सूत्र, वार्त्तिक, भाष्य, कोष, महाकाव्य (वैया०) ।—**शर**–(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव के पाँच वाण । कामदेव, पच-सायक ।—**शिख**–(संज्ञा, पु०, सं०) नरसिंघा बाजा । कपिल के पुत्र ।—**सूना**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाँच प्रकार की हिंसाएँ जो गृहस्थों से गृहकार्य करने में होती है—पीसना, कूटना, आग जलाना, झाड़ू लगाना, पानी का घड़ा रखना ।—**हजारी**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [फ़ा० पंजहज़ारी] पाँच हजार सैनिकों का नायक (मुस०) ।

पंचवटी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) गोदावरी तट के दण्डकारण्य में एक स्थान । "गुनधूरटी बन पंच-वटी"—[रामा०] ।

पंचक—(संज्ञा, पु०, सं०) पाँच का समुदाय या समूह । धनिष्ठा से ५ नक्षत्र [पाँचक (दे०)] । इनमें शुभकार्य का निषेध है । पंचायत । "मघपचक लै गयो साँवरो तातें जिय घबरात"—सूर० ।

पंचता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मृत्यु, विनाश ।

पंचतोलिया—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० पाँच+तोला] एक तरह का महीन या बारीक कपड़ा ।

पंचत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्यु, मरण । "देहे पंचत्वमापन्ने देही कर्म्मानुगोऽवशः"—[भाग०]

पंचम—(वि०, पु०, सं०) पाँचवाँ । निपुण । सुन्दर । (संज्ञा, पु०, सं०) गान विद्या का पाँचवाँ स्वर, कोयल का स्वर । एक राग (संगी०) । [**पंचमी** (स्त्री०)] ।

पंचमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पचमी तिथि । द्रौपदी, अपादान कारक (व्या०) ।

पँचवाँसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाँच+मास] गर्भधारण के पाँचवें महीने का एक संस्कार ।

पचवान—(संज्ञा, पु०, दे०) रजपूतों की एकजाति ।

पंचाँग†—(संज्ञा, यौ०, सं०) पाँच अंग या पाँच अंगों की वस्तु, औषधि के पंचांग—फल, फूल, पत्ती, छाल, जड़ (वैद्य०) । तिथि-पत्र जिसमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण हो (ज्यो०), पत्रा, प्रणाम की एक रीति माथा, दोनों हाथ और दोनों घुटने पृथ्वी पर रख आँखें देवता की ओर कर मुख से प्रणाम शब्द बोलना ।

पंचांगिक—(वि०, सं०) पांच अंगों वाला ।

पंचांगुल—(वि०, सं०) पांच उँगलियों वाला, जो पांच अंगुल का हो ।

पंचांगुलि—(वि०) [सं० पंच+आगुलि] जिसे पांच उंगलियाँ हों ।

पंचांश—(संज्ञा, पु०) [सं० पंच+अंश] पाँचवाँ भाग ।

पंचाक्षर—(वि०, यौ०, सं०) जिसमें पाँच अक्षर हों (संज्ञा, पु०) एक वृत्त (पिं०) । "नमः शिवाय", यह शिव-मंत्र ।

पंचाग्नि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) पचन, गार्ह-पत्य, आहवनीय, आवस्थ्य अन्याहार्य पाँच प्रकार की आग, चारों ओर अग्नि और ऊपर सूर्य-ताप मे तापने का एक तप । (वि०) पचाग्नि तापने या पूजने वाला, पंचाग्नि-विद्या-वेत्ता, [पंचागिन (दे०)] ।

पंचानन—(वि०, सं०, यौ०) जिसके पाँच मुख हों । (संज्ञा, पु०) शिव । बाघ, सिंह ।

पंचामृत—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दूध, दही, घी, शक्कर और शहद या मधु मिला पदार्थ जो देवताओं के स्नान के हेतु बनाया जाता है ।

पंचायत, पंचाइत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पंचायतन] पंचों की सभा, बैठक, कमेटी (अं०) बहुत से लोगों की बातचीत ।—**कार्यविधि**–(पंच-निर्णय सम्बन्धी कार्यवाही । [आर्बिट्रेशन प्रोसि-डिंग]

पंचायतन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवताओं की पंच मूर्त्तियों का समुदाय, जैसे—ग्रामपंचाय-तन ।

पचायती—(वि०, दे०) [हि० पंचायत] पंचायत का, पंचायत-सम्बन्धी, पंचायत का किया हुआ, साझे का, सब लोगों का ।—**राज्य**–(संज्ञा, पु०) गणतंत्र, प्रजातंत्र, जनता द्वारा चालित शासन ।—**सभा**–(संज्ञा, स्त्री०) पंच-पद्धति से निर्णय करने वाली सभा । [आर्बिट्रेशन] ।

पंचाल—(संज्ञा, पु०, सं०) पाँचाल, पंजाब देश, पंजाब देशी-वासी, पंजाब का राजा, शिव; एक छंद (पिं०)। [**पंचाली** (स्त्री०)]

पंचालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पुतली, गुड़िया। रंडी, नाचने वाली। नटी। "नर्वात मंच पंचालिका, कर संकलित अपार"—[रामा०]।

पंचाली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पांचाली। पुतली। द्रौपदी। एक गीत। पीपर (औध०)।

पंचाश—(वि०, सं०) पचासवाँ।

पंचाशत—(वि०, सं०) चालीस और दस।

पंचिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाँच अध्यायों वाली किताब, पाँच गुट्टियों वाला एक खेल जो जुआ में भी सम्मिलित है।

पंचोपचार—(संज्ञा, पु०, सं०) पूजा के पाँच द्रव्य-गंध, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य।

पंचौली—(संज्ञा, स्त्री०) एक सुगन्धित तेल का पौधा।

पंचीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पाँचों भूतों या तत्वों का विभाग।

पंछा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पानी+छाला] जीवधारियों और वृक्षों से जो पानी टपकता है। फफोले का पानी, रंग। [**अँगौछा** (प्रान्ती०)]

पंछी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्षी] पक्षी, चिड़िया। "दस द्वारे का पींजरा, ता में पंछी पौन" —कबीर।

पंजर—(संज्ञा, पु०, सं०) पिंजरा, ठट्टर, कंकाल, हड्डियों का समूह या ढाँचा, देह, तन, शरीर। [**अस्थि-पंजर** (यौ०)]

पंजहजारी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) देखिए 'पंचहजारी'।

पंजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० मि० सं० पंचक] हाथ या पैर की पाँचों अँगुलियों का समूह। गाही। पाँच पदार्थों का समूह। चंगुल, शिकंजा। जूते का अग्र भाग। पाँच बूटियों वाला ताश का पत्ता। **मुहा०—(जे) झाड़ कर पीछे पड़ना या चिमटना**—हाथ धोकर पीछे पड़ना, जी-जान से तत्पर होना या लगना।—**(जे) में आना, पड़ना**—पकड़ मे, मुट्ठी में, अधीनता में, अधिकार में आना। **छक्का—**,दाँव-पेच, चालाकी, छल-प्रपंच।

पंजाब—(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) पाँच नदियों का एक देश।

पंजाबी—(वि०, फ़ा०) पंजाब का। (संज्ञा, स्त्री०) पंजाब की भाषा (बोली)। (संज्ञा, पु०) पंजाब का रहने वाला। [**पंजाबिन** (स्त्री०)]

पंजारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंजिकार] धुनियाँ।

पंजिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पंचांग। तिथिपत्र, तिशर टीका, रजिस्टर।—**कार, कारक**—(संज्ञा, पु०) बही लेखक, क्लर्क, मुंशी।

पंजीकृत—(वि०, सं०) रजिस्ट्री किया हुआ, राज-पुस्तकांकित, निबंधित। [रजिस्टर्ड]।

पँजीरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाँच जीरा] चीनी और मेवा मिला कर घी में भुना हुआ आटा।

पंजेरी—(संज्ञा, दे०) [हि० पाँजना] बर्तन जोड़ने वाला।

पंडल—(वि०, दे०) [सं० पांडुर] पीला, पांडु वर्ण का।

पँड़वा, पड़वा—(संज्ञा, पु०, दे०) भैंस का बच्चा, पड़ा (ग्रा०)।

पंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंडित] किसी मंदिर या तीर्थ का पुजारी, पुजारी।

पँडाइन—(संज्ञा, स्त्री०) पाँडे की स्त्री।

पंडाल—(संज्ञा, पु०, दे०) सभा की बैठक के हेतु बनाया हुआ मंडप।

पंडित—(वि०, सं०) विद्वान्, ज्ञानी, चतुर। [**पंडिता, पंडिताइन, पंडितानी** (स्त्री०, संज्ञा, पु०)] ब्राह्मण।—**राज**-(संज्ञा, पु०) बड़ा विद्वान्, संस्कृत के एक विद्वान की उपाधि।

पंडिताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पंडित+ आई प्रत्य०] विद्वत्ता, पांडित्य।

पंडिताऊ—(वि०, दे०) [हि० पंडित] पंडितों के ढंग का सा, पंडितों का सा।

पंडितानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पंडित] पंडिताइन, पंडित की स्त्री। विद्वान् स्त्री। ब्राह्मणी।

पंडु—(वि०, सं०) श्वेत, पांडु रोग, पीला-पीला, मटमैला। (संज्ञा, पु०, सं०) पांडु राजा। "पंडु की पतोहू भरी स्वजन सभा के बीच"—रत्ना०।

पंडुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पांडु] पंडुकी, पेड़की (प्रान्ती०), कबूतर की जाति का एक पंछी, पिंडुकी, फाख्ता। [**पंडुकी** (स्त्री०)]

पंडुर—(संज्ञा, पु०, दे०) पनिहा साँप, डेड़हा। (वि०, दे०) [सं० पांडुर] पांडु वर्ण का।

पंडोह—(संज्ञा, पु०) नाबदान।

पँतीजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पिंजन] रुई ओटना, पींजना।

पँतीजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिंजक] रुई धुनने की धुनकी ।

पंथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पथ] पथ, रास्ता, मार्ग, राह, बाट । आचार, पद्धति, रीति, चाल । "खोजत पंथ मिलै नहिं धूरी"—[रामा०] । **मुहा०—गहना**-चलना, राह पकड़ना, आचरण ग्रहण करना ।—**दिखाना**-राह बताना, शिक्षा देना ।—**देखना, निहारना, जोहना**-अवसर या प्रतीक्षा करना, बाट जोहना (ब्र०) ।—**में (पर) पाँव देना**-आचार ग्रहण करना या चलना । —**पर लगना, होना, आना**-राह पर आना, या होना, ठीक चाल पकड़ना । **किसी के, को—लगना, लगाना**-किसी का अनुचर या अनुयायी होना, बनना; किसी को ठीक रास्ते पर लाना । पीछे लगना, बारम्बार तंग करना ।—**सेना**-राह देखना, अवसर करना, आसरा देखना । धर्म-मार्ग, मत, संप्रदाय । जैसे—कबीरपंथ ।

पंथकी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पथिक] बटोही, राही, पथिक ।

पंथान*—(संज्ञा, पु०) [सं० पंथ] मार्ग, रास्ता ।

पंथिक*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पथिक] बटोही, राही, पथिक (सं०) ।

पंथी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पथिन्] बटोही, राही, पथिक । किसी मत का अनुयायी । जैसे—दादू पंथी ।

पंद—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सिखावन, उपदेश, शिक्षा, सीख ।

पंपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्षिण देश की एक नदी । एक ताल । एक नगरी ।—**सर**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक ताल, (दक्षिण भारत) ।

पंपाल—(वि०, दे०) बड़ा पापी, पापी । "बुरो पेट पंपाल है, बुरो युद्ध सो भागनो"—गंग० ।

पँवर—(संज्ञा, पु०, दे०) ड्योढ़ी, द्वार, सामान, सामग्री ।

पँवरना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्लवन] तैरना । पैरना, थाह लेना, पता लगाना ।

पँवरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुर=घर] ड्योढ़ी, द्वार । "आतुर जाय पँवरि भयो ठाढ़ो, कह्यो पँवरिया जाय"—सूबे० ।

पँवरिआ, पँवरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पँवरी=पौर] दरबान, द्वार-पाल, ड्योढ़ीदार, द्वार पर गा गा कर माँगने वाला भिखारी । "कह्यो पँवरिया हाथ जोरि प्रभु विश्वामित्र पधारे" ।

पँवरी, पाँवरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पँवरि] ड्योढ़ी, द्वार, दरवाजा । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाँव] पाँवड़ी, खड़ाऊँ । "पाँव न पँवरी भूँभुर जरई"—[पद०] ।

पँवाड़ा, पँवारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रवाद] विस्तार-युक्त कथा, व्यर्थ विस्तार से कही हुई बात, गीत । "वीर पँवारा वीरै गावै औ रणसूर सुनै चित लाय"—[आल्हा०] । कीर्ति कथा । "अजहूँ जग गावत जासु पँवारो"—[कविता०] ।

पँवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परमार] क्षत्रियों की एक जाति ।

पँवारना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रवारण] फेंकना, दूर करना, हटाना । "रज हुई जाहिं पखान पँवारे" । "कछु अंगद प्रभु-पास पँवारे"—[रामा०] ।

पँवारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रवाल] मूँगा ।

पंसरहट्टा—(संज्ञा, पु०) वह बाजार जहाँ पंसारियों की दूकानों का समूह रहता है ।

पंसारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पण्यशाली] किराना, मेवा और औषधि बेचने वाला बनिया ।

पंसासार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाशक+सारि—गोटी] पाँसों का खेल, चौपड़ । "जहाँ बैठि रावन खेलत है सुख सों पंसासार"—[स्फु०] ।

पँसुरी, पँसुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पार्श्व] पसली, पसुली, पाँसुरी (ब्र०) । "पाँसुरी उमाहि कबौं बाँसुरी बजावै है"—[ऊ० श०] ।

पंसेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाँच+सेर] पाँच सेर की तौल का बाट, पसेरी (ग्रा०) ।

पइता—(संज्ञा, पु०, दे०) एक छंद (पिं०) पाईता ।

पइँती—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पवित्री] पैंती, कुश की मुद्रिका । (स्त्री०, प्रान्ती०) दाल ।

पइसना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पैठना] पैठना, घुसना, प्रवेश करना । [प्रविशना]

पइसार, पैसार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पइसना] प्रवेश, पैठार । "अति लघु रूप धरौं निसि, नगर करउँ पैसार"—[रामा०] ।

पउँर, पउँरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पौरि] ड्योढ़ी, द्वार, पौरि, पौरी ।

पउनार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पद्मनाल] पद्मनाल, कमलदंडी, कंज नाल ।

पउनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पौनी] नेगी, नेग पाने वाले, नाई, बारी, धोबी आदि ।
"चलीं पउनि सब गोहने, फूल-डार लेइ हाथ"—[पद०] ।

पउला—(संज्ञा, पु०) रस्सी लगी रहने वाली खड़ाऊँ ।

पकड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रकृष्ट] ग्रहण, धरन, रोक ।—**धकड़, पकर-धकर**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पकड़ना + धरना] भागते हुए पुरुषों के पकड़ने का कार्य, गिरफ़्तारी, कैद ।—**में आना**-काबू में किया जाना, पकड़ा जाना ।

पकड़ना, पकरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रकृष्ट] थामना, ग्रहण करना, वशीभूत, कैद या गिरफ्तार करना, ठहराना, रोक रखना, रोकना-टोकना ।

पकड़वाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० पकड़ना का प्रेरणा० रूप] पकड़ने का कार्य दूसरे से कराना ।

पकड़ाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० पकड़ना] थमाना । [पकराना (दे०)] किसी के हाथ में कोई वस्तु देना, पकड़ने का काम कराना, गहाना (ब्र०) ।

पकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पक्व] गल जाना, सीझना, मवाद से भर जाना, गोट का अपने घर आ जाना, पक्का होना । **मुहा० बाल—**, बाल सफेद होना । **दिल—**, तंग आना, ऊब उठना, आग या सूर्य की गर्मी से गलना, सिद्ध या तैयार होना, सीझना । **कलेजा—**, जी जलना या कुढ़ना ।

पकरना*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० पकड़ना] पकड़ना, थामना, रोकना । [**पकराना** (प्रेरणा० रूप)] ।

पकवान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्वान्न] घी मे तला हुआ अन्न का पदार्थ, जैसे पूड़ी ।

पकवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० पकाना का प्रेरणा० रूप] पकाने का कार्य दूसरे से करवाना ।

पकवाई-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पकवाने का भाव या मजदूरी ।

पका—(वि०, दे०) [सं० पक्व] पक्का, गला, सफेद (बाल) ।

पकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पकाना] पकाने की मजदूरी, क्रिया या भाव ।

पकाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० पकना] गर्मी देकर किसी फल या धातु को गलाना, आग से किसी वस्तु को सिझाना, सिद्ध करना, राँधना, तैयार करना, पक्का करना, फोड़े को दवा से मवाद-युक्त करना, गलाना, पकावना (ग्रा०) ।

पकाव—(संज्ञा, पु०) पकने का भाव या स्थिति, मवाद ।

पकावन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पकवान] पकवान ।

पकौड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पका + बरी = बड़ी] बेसन या पीठी की घी में तली या फुलाई हुई बरी । [**पकौड़ी** (स्त्री०, अल्पा०)]

पक्का—(वि०, दे०) [सं० पक्व] पका या गला हुआ, सिद्ध किया हुआ, आग पर पकाया हुआ, पुष्ट, तैयार, दुरुस्त, पुराना, सफेद (बाल, पान) कंकड़ कुटा मार्ग, दक्ष, अभ्यस्त, अनुभवी, ठीक, सही, दृढ़, टिकाऊ, ईंट, पत्थर, चूने से दृढ़, पूरा । [**पक्की** (स्त्री०)] [पाक (दे०)] [**कच्चा—कच्ची** (स्त्री०, विलो०)] ।—**भोजन,—खाना,—(की) रसोई**-घी में बना भोजन पदार्थ ।—**पानी**-औटाया हुआ स्वास्थ्यकर पानी । निश्चित, तय, प्रामाणिक, चोखा ।—**कागज**-इस्टांप पेपर (अं०) ।—**(की) बात**-ठीक और पुष्ट (सत्य, शुद्ध या प्रामाणिक) बात ।—**खाता,—(की) बही,—रोकड़**-सही हिसाब-किताब ।

पक्ख—(संज्ञा, पु०) [सं० पक्ष] पाख । " सुभ खन बेरा सुकुल पक्ख है—विद्या० ।

पक्खर*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पाखर] पाखर, पाखरी (ग्रा०) ।

पक्व—(वि०, सं०) पका, पका हुआ, गलित, दृढ़, मजबूत । "द्रुमालयं पक्व फलांबु सेवनम्" ।

पक्वता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पकापन ।

पक्वाधान—(संज्ञा, पु०, सं०) आहार या भोजन पचने का स्थान ।

पक्वान्न—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पका हुआ अनाज, घी आदि से पकाया या भूना अन्न ।

पक्वाशय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पेट की वह थैली जहाँ भोजन पकता है, मेदा ।

पक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) पार्श्व, ओर, तरफ, एक पहलू या बगल, दो भिन्न-भिन्न बातों में से एक, किसी की बात के विरुद्ध अपनी बात को ठीक बताने का आग्रह । पंख, बाजू । [**विपक्ष** (विलो०)] लगाव, संबंध, कारण, निमित्त । साध्य की प्रतिज्ञा । सेना, सहायक, साथी, विवाद या झगड़ा करने वालों के भिन्न-भिन्न समूह । बाण के पंख,

पाख, पखवारा (मास के दो विभाग) घर ।—पात-(संज्ञा, पु०, सं०) तरफदारी ।—पाती-(संज्ञा, पु०, सं०) तरफदार । **मुहा०—गिरना**-गृहीत बात का प्रमाणों से सिद्ध न होना । **किसी का—करना**-पक्षपात या तरफदारी करना । **किसी का—लेना**-झगड़े में किसी की ओर हो जाना, सहायक बनना, पक्षपात या तरफदारी करना ।

पक्षांत—(संज्ञा, पु०) [सं० पक्ष+अंत] पूर्णिमा या अमावस्या ।

पक्षांतर—(संज्ञा, पु०, सं०) दूसरा पक्ष ।

पक्षाघात—(संज्ञा, पु०, सं०) बात रोग जिसमें शरीर के किसी ओर का आधा भाग क्रिया-रहित हो जाता है, फालिज, लकवा ।

पक्षाभास—(संज्ञा, पु०, सं०) हेत्वाभास युक्त तर्क ।

पक्षालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कार्त्तिकेय की एक सेविका मातृका ।

पक्षाहार—(संज्ञा, पु०, सं०) पखवारे में केवल एक भोजन ग्रहण करना ।

पक्षिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चिड़िया, पूर्णमासी ।

पक्षिराज—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गरुड़ । एक भाँति का धन ।

पक्षिशावक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पक्षी का बच्चा ।

पक्षी—(संज्ञा, पु०) [सं० पक्षिण] तरफदार, चिड़िया, पक्ष वाला । [पक्षवान]

पक्षीय—(वि०, सं०) पक्षवाला, समूह या दल का हिमायती, तरफदार । पक्ष-संबन्धी ।

पक्ष्म—(संज्ञा, पु०, सं०) आँख की बरौनी । "जो बूँदें थीं सरल दृग के पक्ष्म में विद्यमाना"—हरिऔध ।

पखंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाखंड] ढोंग, छल, कपट, वेदनिन्दा, पाखंड (सं०) ।

पखंडी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पाखंडी] पाखंडी, ढोंगी, वेद-निन्दक, छली, कपटी ।

पख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पक्ष] व्यर्थ बढ़ाई हुई बात, बाधक नियम, अड़ंगा, झगड़ा-बखेड़ा, शर्त, बाधा, तुर्रा, दोष, त्रुटि, ऊपर से बढ़ाई हुई शर्त । **मुहा०—लगाना**-दोष मढ़ना ।

पखड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पक्ष्म] पखंडी, पंखुड़ी, पखुड़ी (ग्रा०), पाँखुरी, पखुरी, फूल के पत्ते, पुष्प-दल ।

पखराना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० पखारना का प्रेरणा० रूप] धुलवाना, छँटवाना, साफ कराना । "पद पंकज पखराय कै, कह केसव सुख पाय"—[रामा०] । [**पखरवाना** (प्रेरणा० रूप)] ।

पखरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पाखर] पाखर, पाखरी । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पक्ष्म] पंखड़ी, फूल की पत्ती, पुष्प-दल ।

पखरैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पाखर+ऐत प्रत्य०] लोहे की पाखर वाला, घोड़ा या हाथी आदि ।

पखरौटा—(संज्ञा, पु०) सोने-चाँदी के वर्क से लपेटा हुआ पान ।

पखवाड़ा, पखवारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्ष+वार] पन्द्रह दिनों का समय । "परखेउ मोहिं एक पखवारा"—[रामा०] ।

पखान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाषाण] पत्थर । "रज होइ जाइ पखान पँवारे"—[रामा०] ।

पखाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपाख्यान] कहावत, उपाख्यान, मसल, कहनूत, कहतूत, कथा । ‡ (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पाखाना] पाखाना, टट्टी ।

पखारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रक्षालन] धोना, शुद्ध या साफ करना । "विप्र सुदामा के चरन, आप पखारत स्याम"—[स्फु०] । "आँसू लेते वे पदपखार"—महादेवी ।

पखाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पय=पानी +खाल हिं०] बैल के चमड़े की मशक, धौंकनी, मुख धोने का बर्तन । "त्रिय चरित्र मदमत्त न उठि पखाल मुख धोवत"—सूर० ।

पखावज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पक्ष+वज], मृदङ्ग । "बाजत खाल पखावज बीना"—[रामा०] ।

पखावजी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पखावज+ई] मृदङ्ग या पखावज का बजाने वाला ।

पखिया—(वि०, दे०) [सं० पक्ष] झगड़ालू, बखेड़िया ।

पखी, पखीरी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्षी] पक्षी, पखेरू [पंछी] (ग्रा०) [पच्छी

(दे०)] चिड़िया। फूल के पत्ते, पुष्प-दल। "पखुरी गड़े गुलाब की, परिहै गात खरौंट"—बिहारी।

पखुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्ष] पार्श्व, बगल। पखौवा, पखौरा (ग्रा०)।

पखेरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्ष+रू] पक्षी, चिड़िया, पंछी।

पखौआ, पखौवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्ष] पख, पखना, डैना, पक्ष। "क्रीट मुकुट सिर छाँड़ि पखौवा, मोरन को क्यों धार्यो"—हरि०।

पखौटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्ष] पंख, पखना, पर, पक्ष।

पखौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) हाथ का धड़ से जोड़, बगल।

पग—(संज्ञा, पु०) [सं० पदक] पाँव, पैर, डग, फाल [पैग] (ब्र०)।—**डंडी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० पग+डंडी] लोगों के पैदल चलने से बनी मैदान या वन में छोटी राह।—**तरी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० पग+तल] जूता, पनही। (ग्रा०) खड़ाऊँ।—**दासी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० पग+दासी] जूता, पनही खड़ाऊँ, चरन-दासी।

पगड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पटक] पगिया पाग (ब्र०), चीरा, साफा, उष्णीष। [पगरी (दे०)] [**पगड़ा**]। **मुहा० किसी से—अटकना** समानता या बराबरी होना, मुकाबला होना।—**उछालना**-दुर्दशा या बेइज्जती करना, उपहास करना।—**उतारना**-मान या प्रतिष्ठा का भंग करना, ठगना, लूटना। **किसी को—बाँधना**-वरासंत मिलना, उत्ताराधिकार प्राप्त होना, उच्च पद, प्रतिष्ठा या सम्मान मिलना। **किसी के साथ—बदलना**-मैत्री या बंधुता जोड़ना। **पैरों पर—रखना**-आधीन हो विनय करना, सम्मान देना।

पगना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पाक] किसी का किसी वस्तु से पूर्ण मेल होना, मिलना, लीन होना, किसी वस्तु में निहित होना, प्रभावित होना।

पगनियाँ†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पग] जूता।

पगरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पग+रा प्रत्य०] कदम, पग, डग, बड़ी पगड़ी, पगड़ा। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पगाह] चलने का समय, प्रभात, तड़का, सवेरा।

पगला—(वि०, पु०, दे०) पागल, विक्षिप्त, उन्मत्त, सिड़ी। [**पगली** (स्त्री०)]

पगलाना—(क्रि० अ०, दे०) पागल होना, पागल पन का काम करना।

पगहा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ग्रह] गिरवाँ, पघा। [**पगही** (स्त्री०)]। **लो०—**आगे नाथ न पीछे पगहा—अनाथ, असहाय की स्थिति।

पगा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाग] पाग, पगिया। "शीश पगा न झगा तन में"—नरो०। (वि०) [हि० पगना] लीन, पगा हुआ, अनुरक्त।

पगाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पाक] अनुरक्त या मग्न करना, मिलाना, ऊपर से चीनी आदि चढ़ाना। [**पगवाना** (प्रेरणा० रूप दे०)] [**पगाई, पगवाई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)] पगाने, पगवाने की क्रिया या मजदूरी।

पगार*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रकार] घेरा, चहार-दीवारी। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पग+गारना] पाँवों से कुचली हुई मिट्टी, कीचड़ या गारा, पाँवों से पार करने योग्य नदी या पानी, पायाब। (वि०, ग्रा०) ढेर, समूह।

पगारना—(स०, क्रि०) फैलाना।

पगाह—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चलने का वक्त, भोर, सवेरा, तड़का।

पगिआना, पगियाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० पगाना] पागना, पगाना, अनुरक्त या मग्न करना।

पगिया*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पगड़ी] पग, पगड़ी।

पगुराना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पागुर] जुगाली करना, पचाना, दुबारा चबाना, (ग्रा०) व्यंग्य, धीरे-धीरे बात करना।

पघा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रगट] पगहा, पगही, बैल आदि के बाँधने की मोटी रस्सी।

पच—(वि०, दे०) [सं० पञ्च] पाँच। (प्रायः समास में प्रयुक्त)।

पचकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पिचकना] किसी उभरे या उठे हुए तल का दब जाना, पिचकना। [**पचकवाना** (प्रेरणा० रूप)]।—**कल्यान**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंचकल्याण] वह घोड़ा जिसके चारों पाँव और माथा सफेद हों, शेष

शरीर का और रंग हो। "तुरकी ताजी और कुमैता घोड़ा सब्जा पचकल्यान"—[अलहा०] ।—गुना—(वि०, दे०, यौ०) [सं० पंचगुण] पाँच गुना। —मेल—(वि०, दे०) [हि० पंचमेल] पंचमेल, पाँच पदार्थों के मेल से बना पदार्थ।—रंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाँच+रंग] पाँच रंग, चौक पूरने का सामान, अबीर, बुक्का, हलदी, मेंहदी की पत्ती, सुरवारी के बीज।—रंगा—(वि०, दे०) [हि० पाँच रंग] पाँच रंगों से रँगा कपड़ा या कोई और पदार्थ। (संज्ञा, पु०) नवग्रहों की पूजा का चौक। [पचरंगी (स्त्री०)] ।—लड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाँच+लड़ी] वह हार जिसमें पाँच लड़ी हों। [पचलड़ा (पु०)] ।—लोना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाँच+लोन-लवण] वह चूर्ण जिसमें पाँच प्रकार के नमक पड़े हों। "चूरण मेरा है पचलोना"—[स्फु०] ।—हरा—(वि०, दे०) [हि० पाँच+हरा प्रत्य०] पचौहरा (ग्रा०) पाँच तहों या परतों वाला (वस्त्रादि), पाँच बार किया हुआ, पचौहरा (ग्रा०) पचौवर। "चौबर-पचौबर कै चूनरि निचोरै है"।

पचखा‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंचक] पुंचक।

पचड़, पचरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाँच—प्रपंच+ड़ा प्रत्य०) झंझट, प्रपंच, बखेड़ा, एक गीत।

पचतोरिया, पचतोलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) एक तरह का महीन बारीक कपड़ा।

पचन—(संज्ञा, पु०, सं०) पाक, पकाने या पचाने को क्रिया या भाव, अग्नि, आग। पकाने वाला, पाक कर्म करने वाला।

पचना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पचन] हजम होना। पर धन इस ढंग से हाथ आना कि वापिस न हो सके। शरीर गलाने वाला परिश्रम करना। बहुत तंग या हैरान होना। "चलै कि जल बिनु नाव, कोटि जतन पचि-पचि मरिय"—[रामा०] । मुहा० बाई—(व्यंग्य)-गर्व दूर होना। पच-मरना—बहुत अधिक परिश्रम करना, हैरान या तंग होना, खपना। (क्रि० स०, दे०) पचाना। [पचवाना (प्रेरणा० रूप)]

पचनागार—(संज्ञा, पु०) रसोईघर।

पचनाग्नि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जठराग्नि।

पचनिका—(संज्ञा, स्त्री०) कड़ाही।

पचनीय—(वि०, सं०) पकाने लायक।

पचपच—(संज्ञा, सं० स्त्री०) "पच" शब्द होने की क्रिया या भाव।

पचपचा—(वि०) अधूरा पका हुआ।

पचपचाना—(अ०, क्रि० दे०) गीला होना।

पचपन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंचपंचाशत्] पचास और पाँच की संख्या, ५५।

पचहत्तर—(संज्ञा, पु०, दे०) सत्तर और पाँच की संख्या, ७५।

पचाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पचना] पकाना, जीर्ण करना, अन्य के धन को लोन करना, खपाना।

पचानबे—(संज्ञा, पु०, दे०) नब्बे और पाँच की संख्या, पंचानबे, पचानवे, ९५।

पचारना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रचारण] डाँटना, ललकारना, प्रचारना। "लागेसि अधम पचारन मोहीं"—[रामा०] ।

पचास—(वि०, दे०) [सं० पंचाशत् प्रा० पंजासा] चालीस और दस। (संज्ञा, पु०) एक संख्या, ५०।

पचासा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पचास] एक ही तरह की पचास चीजों का समुदाय।

पचासी—(संज्ञा, पु०, दे०) पंचाशीति, अस्सी और पाँच, ८५ की संख्या।

पचित—(वि०, सं०) पचा हुआ, पची किया या जड़ा हुआ।

पचीस—(वि०, दे०) [सं० पंचविंशत्] पच्चीस। (संज्ञा, पु०, दे०) पचीस की संख्या, २५।—(सा) सौ—एक सौ पचीस, १२५।

पचीसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पचीस] एक ही प्रकार की २५ चीजों का समूह। किसी की उम्र के २५ वर्ष। चौपड़ जैसा एक खेल।

पचूका—(संज्ञा, पु०, दे०) पिचकारी, दमकला।

पचोतरसो—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पंचोत्तरशत्] एक सौ पाँच का अंक या संख्या, १०५।

पचोतरा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) पाँच रुपये सैकड़ा।

पचौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पचना] पाकाशय, आमाशय, अन्न पचने की जगह, मेदा, ओझ, जोझ।

पचौर, पंचौली—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पंच] गाँव का सरदार, मुखिया, पंच। "चले पचौर विदा है ज्यों हीं"—छत्र०।

पचौवर—(वि०, दे०) [हि० पाँच + आवर्त सं०] पाँच परत या तह किया हुआ, पँचपरता, पचहरा, पचौहर (ग्रा०)।

पच्चड़, पच्चर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पचित या पच्ची] काठ या लकड़ी के जोड़ को कसने के हेतु लगाया गया लकड़ी या काठ का पेवंद, ठेक, पचड़ा।

पच्चाँनवे—(संज्ञा, पु०, दे०) पंचानवे, नब्बे और पाँच, ६५।

पच्ची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पचित] खुदाई, जड़ाई, जड़ाव, एक वस्तु खोद कर उसमें दूसरी यों जड़ना कि दोनों का तल समान रहे । **मुहा० किसी का—हो जाना**-लीन हो जाना, पूर्ण रूप से मिल जाना। **दिमाग (मगज)—करना**-व्यर्थ की बात पर बहुत विचार करते रहना।—**कारी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पच्ची + कारी] पच्ची करने की क्रिया का भाव या कार्य्य, जड़ाई, खुदाई।

पच्चीस—(संज्ञा, पु०, दे०) बीस और पाँच की संख्या, २५, [पचीस (दे०)]

पच्छ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्ष] पक्ष, ओर, तरफ, पार्श्व, दो या अधिक में के एक, पंख। **—पात**-(संज्ञा, पु०) एक ओर, दल, व्यक्ति आदि की ओर अधिक झुकाव। "इहां न पच्छपात कछु राखौं"—तुल०।**—पाती**-(वि०) जो सन्तुलन का निर्वाह न कर सके, एक ओर को अधिक झुक जाय। [**पच्छपाती** (वि०)]।

पच्छम, पच्छिम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पश्चिम] पश्चिम दिशा।

पच्छघात, पच्छाघात—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पक्षाघात] एक अर्द्धांग-नाशक बात रोग, फालिज, लकवा।

पच्छिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पक्षिणी] चिड़िया, पच्छी का स्त्री लिं०।

पच्छी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्षी] पंछी (ग्रा०) पक्षी, चिड़िया, पखेरू, पंखी।

पछड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पीछा] गिर पड़ना, पकड़ा जाना, पीछे रह जाना या हटना, पिछड़ना।

पछताना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पछताव] अनुचित कार्य्य करने पर दुखी होना, पश्चात्ताप करना।

पछतानि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पछतावा] पश्चाताप, दुख।

पछतावना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पछताना] पश्चाताप या शोक करना, दुखी होना।

पछतावा, पछताया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पश्चात्ताप] दुख, शोक, अनुताप । "सिय कर सोच, जनक पछतावा"—[रामा०]।

पछना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पाछना] पच जाना। (**संज्ञा, पु०**) वस्तु पाछने का यंत्र, फसद, छूरा, चाकू।

पछनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाछना] कतरनी, छूरी, छोटा चाकू ।

पछमन—(क्रि० वि०, दे०) [सं० पश्चात्] पीछे, (विलो० आगे) । "धीर न कसत पग पछमनी, सर सम्मुख उर लाग"—सूर।

पछरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पछाड़] पछाड़ "कछु न उपाय चलत अति व्याकुल मुरि मुरि पछरा खात"—हरि०। (पु०, वि०, दे०) पिछड़ा हुआ, पीछे।

पछलगा, पछलागा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० अनुग] अनुयायी, अनुगामी, अनुचर, दास । "हौं पंडितनकेर पछलगा"—[पद०] पैरों की मार या चोट। [**पछलग्गा (वि०)**], [**पछलग्गी (स्त्री०)**]

पछलना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पिचलना] पिछलना, पीछे रहना, पिछड़ना।

पछवाँ—(वि०, दे०) [सं० पश्चिम] पश्चिम दिशा का, पश्चिम ओर का। (**संज्ञा, पु०, दे०**) पश्चिमी वायु।

पछाँह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पश्चिम] पश्चिम दिशा का देश। **पछँहा**-(वि०) पश्चिम देश का वासी, पछाँही।

पछाँहियाँ, पछाँही—(पु०, दे०) [हि० पछाँह + इया प्रत्य०] पश्चिम दिशा का, पश्चिम देश का वासी, [पछहिया (दे०)]।

पछाड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पीछा] मूर्छित या अचेत होकर, पछार (ग्रा०)। **मुहा०—खाना**-खड़े होने पर अचेत होकर गिर पड़ना। **—खा कर रोना**-रोते-रोते गिरना, अचेत होना।

पछाड़ना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पछाड़] गिरा। या पटक देना, गिराना, पटकना। (क्रि० स०,

दे०) [सं० प्राचलन] कपड़े साफ करने को उसे जोर के पटकना, पछारना (ग्रा०) ।

पछानना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० पहचानना] पहचानना, चीह्नना, पिछानना (ब्र०) ।

पछाना—(क्रि० अ०, ब्र०) पछियाना, पिछियान, पीछे पीछे जाना । "कहै 'रतनाकर' पछाये पच्छि-राज हू को" ।

पछार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) 'देखिए' पछाड़ा । "गंग के कछार में पछार छार करिहौं"—पद्मा० ।

पछारना*—(क्रि० सं०, दे०) [हि० पछाड़ना] पछाड़ना, गिराना, पटकना, कपड़े को साफ करने के लिए जोर से पटकना, फींचना (ग्रा०) छाँटना ।

पछावरि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दूध, दही और चीनी मिला पदार्थ, मट्ठे गुड़ की मूरन । "देखत हैहय राज को मास पछावरि कौरन खाय लियो रे" —[रामा०] ।

पछाहीं—(वि०, दे०) [हि० पछाँह] पश्चिम का, पछाँह का, [**पछैहाँ** (ग्रा०)] ।

पछिआना, पछियाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० पीछे+आना] पीछे चलना, पीछा करना ।

पछिताना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पश्चात्ताप] पश्चात्ताप करना, अफसोस करना ।

पछितानि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पछिताना] पश्चात्ताप, अफसोस ।

पछिताव, पछितावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पछतावा] पछनाव, पश्चात्ताप, अफसोस ।

पछियाव—(वि०, दे०) [हि० पच्छिम] पश्चिमीय वायु, पछवा हवा ।

पछुवाँ—(वि०, दे०) [हि० पच्छिम] पच्छिम की वायु, पच्छिम का पवन ।

पछेला, पछेलवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पीछे +एला, एलवा प्रत्य०] एक गहना, जो हाथ में पहना जाता है ।

पछेली, पछेलिया†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पीछे+एली, एलिया प्रत्य०] स्त्रियों के हाथ में पहनने का एक गहना । "आगे आगेलिया पीछे पाछेलिया पट्टा परे पनारिदार"—[आल्हा०] ।

पछेवड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पिछौरा] पिछौरा, चादर । "मन-मंदिर में पैस करि तानि पछेवड़ा सोइ"—कबीर० ।

पछोड़ना, पछोरना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रक्षालन] सूप से साफ करना, फटकना ।

पछौंत, पछौंता*—(क्रि० वि०, दे०) [हि० पीछे +ओंत] पिछौंता, पीछे की ओर ।

पछौंहैं*—(क्रि० वि०) पीछे की ओर । "सौंहै होत लोचन पछौंहैं करि लेति है ।

पछ्यावरि†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दूध, दही और शक्कर से बनी सिकरन, मट्ठा और गुड़ से बना पदार्थ ।

पजरना*—क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रज्ज्वलन] उग्र रूप से जलना ।

पजारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पजरन] जलाना ।

पजावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पजावः] ईंटें पकाने का भट्टा ।

पजोखा—(संज्ञा, पु०, दे०) मातमपुरसी (फ़ा०) ।

पज्ज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पद्य] शूद्र, नीच ।

पज्झटिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पद्धटिका] १६ मात्राओं एक छंद, पद्धटिका (पिं०) ।

पटंबर*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पाटम्बर] कौषेय या रेशमी वस्त्र । " पैठे जात सिमिट भवानी के पटंबर मैं "—रत्ना० ।

पट—(संज्ञा, पु०, सं०) कपड़ा, वस्त्र । पर्दा । चिक । चित्रपट, कपास, छप्पर, पलक । (संज्ञा, पु०) [सं० पट्ट] किवाड़, केवार (प्रा०) । किसी वस्तु के गिरने का शब्द । सिंहासन पल्ला, चौरस भूमि, औंधा [**चित्त** (विलो०)] ।—**धारी**—(वि०, पु०, सं०) वस्त्रधारी, कपड़े पहने हुए ।—**पट**—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु० पट] हलके पदार्थ के गिरने के शब्द का अनुकरण । (क्रि० वि०) लगातार पट, पट शब्द करता हुआ ।—**मंडप** (**मंडप**)—(संज्ञा, पु०, सं०) खेमा, डेरा, तंबू । पट-भवन ।—**रानी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पट्टरानी] पाट-महिषी, खासी रानी ।—**वास**—(संज्ञा, पु०, सं०) कपड़ों को सुगंधित करने का गंध द्रव्य, तंबू, डेरा, शिविर, लहँगा, घाँघरा । **मुहा०—पधरना या खुलना**—दर्शन हेतु मंदिर का द्वार खुलना ।—**पड़ना**—धीमा पड़ना, न चलना । (क्रि० वि०) [पट का अनु०] तुरंत । " धरती सरग जाँत पट दोऊ " —[पद०] । [**झटपट, चटपट, लटपट, सरपट** (**यौ०**)]

पटइन, पटइनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पटवा] पटवा की या पटवा जाति की स्त्री।

पटकन, पटकनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० चटकना] पछाड़। चपत, तमाचा। छड़ी। पटक।

पटकना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पतन+करण] झोंका देकर नीचे गिराना, उठाकर जोर से नीचे गिराना, दे मारना। [**पटकवाना** (क्रि० प्रेरणा० रूप)]। **मुहा० किसी (के सिर) पर**—बिना मन काम कराना, कोई वस्तु किसी को उस अवस्था में सौंपना जब वह उसके लिए सहमत न हो। (क्रि० अ०, दे०) सूजन बैठना या पचकना, आवाज के साथ फटना। "पटकत बाँस, काँस, कुस ताल" —सूर। [**पटकी-पटका** (यौ०)]

पटकनिया, पटकनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पटकना] पटकने का भाव, जमीन पर गिर कर पछाड़ खाने या लोटने की दशा या भाव।

पटका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पट्टक] कमर-पेच, कमर-बन्द। पटुका (ब्र०), एक वस्त्र।

पटकान—(संज्ञा, पु०) पटकने का भाव या क्रिया, पछाड़।

पटकाना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पटकनी] पटकने का भाव, पृथ्वी पर पछाड़ खाकर लोटने की दशा, पचकाना।

पटघर—(संज्ञा, पु०, दे०) चोर, चिकवा।

पटतर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पट्ट+तल] उपमा, समता, तुल्यता, समानता, मिसाल (फा०)। "पटतर-जोग न राजकुमारी"—[रामा०]। † (वि०) चौरस, बराबर समतल।

पटतरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पटतर] उपमा देना, समान करना। "केहि पटतरिय विदेह कुमारी"—[रामा०]।

पटतारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पटा+तारना] मारने को अस्त्र सुधार कर लेना या निकालना, सँभालना। (क्रि० स०) [हि० पटतर] सम या बराबर करना, पड़तालना।

पटना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पट=भूमि के बराबर] किसी गढे का भरना, समतल होना, भर जाना, परिपूर्ण होना। छत बनाना, सींचा जाना। मन मिलना। "खूब पटती है जो मिल जाते हैं दीवाने दो"। निभना, तै हो जाना। ऋण चुक जाना। (संज्ञा, पु०) बिहार की राजधानी, पाटलीपुत्र (प्राचीन)।

पटनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पटना] वह भूमि जो सार्वकालिक (इस्तमरारी) प्रबंध (बंदोबस्त) पर मिली हो।

पटपटाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पटकना] भूख आदि से दुख पाना, किसी वस्तु से पटपट शब्द निकलना, पानी बरसना, जलना, भुनना। (क्रि० स०) किसी चीज को इस ढंग से पीटना या बजाना कि उससे पटपट शब्द उत्पन्न हो। चने या मटर को भूनना अथवा किसी को चने या मटर की तरह भूनना।

पटपर—(वि०, दे०) [हि० पट+ पर अनु०] चौरस, हमवार, बराबर, समतल। (संज्ञा, पु०) चौरस मैदान। वर्षा काल में नदी के जल से मग्न भूमि।

पटबंधक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पटना+बंधक सं०] दखली रेहन, दखली गिरवी जिसमें लाभ या ब्याज निकालने के पीछे मूल धन में शेष रुपया मिनहा किया जाता है और ब्याज सहित मूलधन की प्राप्ति हो जाने पर रेहन की हुई वस्तु लौटा दी जाती है।

पटबास—(संज्ञा, पु०, सं०) कपड़े के सुगंधित करने की गंध द्रव्य या वस्तु। "निजरजः पटवास-मिवाकिरत" घृतपटोऽयमवारिमुचां दिशाम्—माघ। "जल, थल, फल, फूल भूरि अंबर पटवास धूरि"—केशव।

पटबीजना†—(संज्ञा, पु०, सं०) [हि० जुगनू] जुगनू।

पटमंजरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक रागिनी (संगी०)।

पटरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पटल] तख्ता, पल्ला। (स्त्री०, अल्पा०) पटरी। **मुहा०—होना** —नष्ट या उजाड़ होना।—**कर देना**—मार-काट कर बिछा या फैला देना, चौपट कर देना। धोबी का पाट, पटा।

पटरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पटरा] लंबा पतला काठ का तख्ता, २ फुट नाप की इंच के निशानों वाली लकड़ी। **मुहा०—जमाना या बैठाना**—दिल या मन मिलाना, मेल होना या आपस में पटना। लिखने की तख्ती, पटिया, सड़क के दोनों किनारे जहाँ से पैदल चलने वाले चलते हैं। बागों की रविश। एक तरह की चूड़ी।

पटल—(संज्ञा, पु०, सं०) आवरण, छप्पर, छानी। छत, पर्दा। तह, परत। पहलू, पार्श्व। आँख के पर्दे। पटरा, तख्ता। पुस्तक के अंश या अध्याय, परिच्छेद। टीका, तिलक। अंबार, ढेर, समूह।

पटलक—(संज्ञा, पु०) आवरण, पर्दा। टोकरी। ढेर।

पटलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पटल का धर्म या भाव, अधिकता।

पटली—(संज्ञा, स्त्री०) छाजन, छप्पर। पेड़। डंठल।

पटवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाट+वह] पटहार, पाट। पटसन, पटुवा (ग्रा०)। [**पटइन, पटवी** (स्त्री०)]

पटवाना—(क्रि० सं०, दे०) [हिं० पटना का प्रेरणा० रूप] पटना या पाटने का कार्य दूसरे से कराना।

पटवारगरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पटवारी+गरी फ़ा०] पटवारी का पद या कार्य। [**पटवारगीरी** (संज्ञा, स्त्री०)]

पटवारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पट्टा+वार हिं०] एक सरकारी कर्मचारी जो किसानों और जमींदारों का हिसाब रखता है। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० पट+वारी प्रत्य०] दासी जो अमीरों को कपड़े पहनाती है। (वि०, स्त्री०) वस्त्रवाली।

पटसन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाट+सन हिं०] एक प्रकार का सन, जूट, पटुआ पट (ग्रा०)।

पटह—(संज्ञा, पु०, स०) नगाड़ा, दुंदभी। "बाजे पटह पखावज बीना"—[रामा०]।

पटहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पटवा] पटवा [**पटहारिन** (स्त्री०)]।

पटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पट्ट] किर्च जैसा एक लोहे का अस्त्र, जिससे तलवार के हाथ सीखे जाते हैं। (संज्ञा, पु०) [स० पट्ट] पाटा, पीढ़ा, पटरा, पट्टा। **—बाज**—(वि०, दे०) पटा चलानेवाला। **—बाजी**—(संज्ञा, स्त्री०) पटा चलाने का कौशल। **—फेर**—ब्याह में वर-कन्या के आसन बदलने की रीति, उलट पीठा (ग्रा०)। **मुहा०—बाँधना**—पटरानी बनाना। **—चलाना**—लकड़ी की तलवार के कौशल दिखाना। (संज्ञा, पु०) * [सं० पट्ट] अधिकार-पत्र, सनद, सार्टीफिकेट (अं०)। (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पटना] सौदा-क्रय-विक्रय, लेनदेन, चौड़ी लकीर, धारी, खेतों का पट्टा।

पटाई†—(संज्ञा, स्त्री०, पु०) [हिं० पटाना] पाटने या पटाने की क्रिया, मजदूरी।

पटाक—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) किसी छोटे पदार्थ का ऊँचे से गिरने का शब्द।

पटाका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पट्ट का अनु०] पट या पटाक शब्द, एक आतिशबाजी जो पटाक शब्द करती है, तमाचा, चपत, थप्पड़। [पटाखा]

पटाक्षेप—(संज्ञा, पु०, सं०) पर्दा का गिराना या गिरना।

पटाखा—(संज्ञा, पु०) पटाका, एक आतिशबाजी।

पटाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० पट=समतल] पाटने का कार्य कराना, पिटवा कर छत को सम कराना। ऋण चुकाना, मोल तै करना। (क्रि० अ०) शांत या चुप होना, लेन-देन का चुकता होना, दूर या अच्छा होना (रोगादि)।

पटापट—(क्रि० वि०, दे०) [अनु० पट] बारम्बार, लगातार पट पट शब्द के साथ।

पटापटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) अनेक रंगों की बेल-बूटेदार वस्तु। लेन-देन का चुकता हो जाने का भाव।

पटार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पटारा, पेटारा, पेटी, पिटारी।

पटाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पाटना] पाटने की क्रिया या भाव, छत को पटान, द्वारे के ऊपर का तख्ता।

पटि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रंगीन कपड़ा, पर्दा, यवनिका। **—क्षेप**—(संज्ञा, पु०) पर्दा गिराना।

पटिआ, पटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पट्टिका] पत्थर का टुकड़ा जो पतला और आयताकार हो। पलँग की पट्टी, पाटी। सिर के सँवारे हुए बाल। लिखने की तख्ती या पट्टी। पाटा, पीढ़ा। "वै मार सिर पटिया पारे, कंथा काहि उढ़ाऊँ"—सूर। **मुहा०—पारना**—बाल सँवारना।

पटिका—(संज्ञा, स्त्री०, स०) वस्त्र, कपड़ा।

पटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [स० पट] कपड़े का कम चौड़ा लम्बा टुकड़ा, पटुका, कमर-बन्द, परदा।

पटीर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक चंदन। "सीर समीर उसीर गुलाब के नीर पटीर हुँ तो सरसाती"—दास०। पपीहा। कत्था, वटवृक्ष। कामदेव।

पटीलना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पटाना] किसी को उलटी-सीधी बातों से समझाना, परास्त करना, बना या उड़ा लेना, कमाना, ठगना, पूरा या समाप्त करना, बलात् हटाना। **मुहा०—किसी के मत्थे (सिर)—**, किसी के ऊपर छोड़ना।

पटु—(वि०, सं०) दक्ष, कुशल, प्रवीण, चतुर, निपुण, चालाक। कठोर-हृदय तीखा, तीक्ष्ण, प्रचंड उग्र। स्वस्थ। (संज्ञा, पु०, दे०) परवल, नमक-करेला (प्रान्ती०)। [**पटुता, पटुत्व** (**संज्ञा, स्त्री०**, सं०)]

पटुआ, पटुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाट] पटसन (प्रान्ती०) जूट, लटियासन: करेमू।

पटुका, पटूका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पट्टिका] कमरबन्द,, कमर-पेंच।

पटुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निपुणता, चतुराई, प्रवीणता, दक्षता। [**पटुत्व** (**संज्ञा, स्त्री०**)]

पटुत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) निपुणता, चतुराई।

पटुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पट्ट] चौकी, पीढ़ी, झूले का पटला, तख्ती।

पटूस—(संज्ञा, पु०, दे०) पुरुषार्थ, पुरुषत्व, पटुता, चतुरता।

पटेबाज—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पटा+बाज फ़ा०] पटा खेलने वाला, पटे से लड़ने वाला। धूर्त्त। व्यभिचारी। पटैत। [**पटेबाजी, पटाबाज** (**संज्ञा, स्त्री०**)]

पटेर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पटेरक] गोंद पटेर।

पटेल, पटैल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पट्टा +ऐल प्रत्य०] नम्बरदार, जमींदार, पट्टा देने वाला, गाँव का मुखिया, चौधरी, एक उपाधि (महारा०)।

पटेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाटना] मध्य भाग में पटी नाव, हेगा, सिलपटिया, पटैला (प्रा०) तख्ता। [**पटेली** (स्त्री०) अल्पा०]।

पटैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पटेबाज] पटे-बाज।

पटैला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पटरा] किवाड़ बंद करने की चौकोर लंबी लकड़ी, ब्योड़ा, तख्ता।

पटोर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पटोल] परवर। पटोल, रेशमी कपड़ा।

पटोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पाट+ओरी प्रत्य०] रेशमी धोती या साड़ी।

पटोल—(संज्ञा, पु०, सं०) परवल। रेशमी कपड़ा। "वासापटोल त्रिफला"—[वैद्य जी०]।

पटोलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सफेद फूल की तुरई।

पटोहिया—(संज्ञा, पु०, दे०) उल्लू पक्षी।

पटौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पटी नाव।

पट्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) पाटा, पीढ़ा, पट्टी, तख्ती। ताम्रपत्र। शिला, पटिया, पट्टा। ढाल। पगड़ी। दुपट्टा। नगर। चौराहा। राज-सिंहासन। रेशम। पटसन। (वि०, सं०) प्रधान, मुख्य। (वि० अनु०) पट।—**देवी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) पटरानी।—**महिषी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पटरानी। **मुहा०—होना** (**आँखें**)—नेत्र-ज्योति का नष्ट हो जाना, आँख फूटना।—**पड़ना**-चौपट होना।

पट्टन—(संज्ञा, पु०, वि०) शहर, नगर। "मोती लादन पिय गये धुर पट्टन, गुजरात"—गिरि०।

पट्टन—(संज्ञा, पु०, स०) शहर, नगर।

पट्टनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नगरी।

पट्टला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जिला, समुदाय।

पट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पट्ट] भूमि का अधिकार-पत्र जो जमींदार किसान या असामी को देता है। सह० कबूलियत। कुत्तों के गले की बद्धी, पीढ़ा। जुल्फें। चपरास, कमर बंद। एक तलवार।—**वधि**-(**संज्ञा, स्त्री०, सं०**) पट्टे की शर्तें, जिस शर्त के साथ अधिकार-पत्र दिया जाये। [टर्म्स आफ लीज]।—**दाता**-(संज्ञा, पु०) पट्टा देने वाला। [लेसर]

पट्टार—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन देश।

पट्टिका—(संज्ञा, स्त्री० सं०) छोटी तख्ती, कपड़े की छोटी पट्टी, पत्थर की पटिया।

पट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पट्टिका] तख्ती। पाटी। सबक। पाठ। शिक्षा, उपदेश। बहकावा। भुलावा। पलँग की पाटी। सन का कपड़ा। कपड़े की किनारी या कोर। एक मिठाई। टाँगों में लपटने का कपड़ा। कतार, पाँति, पंक्ति। सिर के बालों की पटिया। भाग हिस्सा। पत्ती। नेग।

मुहा०—पढ़ाना-भुलावा देना, बहकाना ।—में आना-किसी धूर्त के चक्कर मे आना । [दम-पट्टी' झाँसा पट्टी (यौ०)] ।—दार-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पट्टी+दार फा०] अधिकारी, हिस्सेदार, दायभागी ।—दारी-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पट्टीदार] बहुत से भाग या हिस्से होना । पट्टीदार होने का भाव । साझे का धन । भाईचारा । मुहा०—० करना-बराबरी करना ।

पट्टू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पट्टी या सं० पट्ट] पट्टी की शकल का एक ऊनी कपड़ा, तोता, सुग्गा, सुआ, पटुआ (ग्रा०) । मुहा०—पढ़े पढ़ाये पट्टू-स्वतः अनुभवी और चालाक । —सा पढ़ाना-खूब सिखाना ।

पट्ठमान*—(वि०, दे०) [सं० पठ्यमान] पढ़ने-योग्य ।

पट्ठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुष्ट, प्रा० पुट्ठ] तरुण, जवान, पाठा (ग्रा०) । पहलवान कुश्ती-बाज, लड़का, मोटी नसें, पुट्ठा । [पट्ठी, पठिया (स्त्री०)] । मोटा पत्ता, जैसे घीकार का पट्ठा । मुहा०—चढ़ना-एक नस का तन कर दूसरी पर चढ़ जाना, चौड़ा गोटा, कमर और जांघ का जोड़ ।

पट्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पट्ठा] पठिया (ग्रा०) युवती, धृष्टा ।

पठन—(संज्ञा, पु०, सं०) पढ़ना ।—पाठन-(यौ०) पढ़ना-पढाना ।—शील-(वि०) जो पढ़ने में अधिक प्रवृत्त हो ।

पठनीय—(वि०, सं०) पढ़ने के योग्य । [पठित (वि०)] ।

पठनेटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पठान+एटा —बेटा प्रत्य०] पठान का लड़का (भूप०) ।

पठवना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रस्थान] भेजना, [पठावना (दे०)] ।

पठवाना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० पठाना का प्रेरणा० रूप] भेजवाना, पठाना । [पठवैया, पठैया (वि०)] ।

पठान—(संज्ञा, पु०, दे०) [पश्तो० पुख्ताना] मुसलमानों की एक जाति, अफगान, काबुली ।

पठान*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रस्थान] भेजना, पठवाना ।

पठानी, पठानिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पठान की स्त्री । पठान की भाषा, शूरता, क्रूरता आदि, पठानों के गुण, पठानन । [पठानों का (वि०)] ।—लोध (संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पट्टिका लोध्र] एक जंगली पेड़ जिसकी लकड़ी और फूल औषधि के काम आते हैं ।

पठार—(संज्ञा, पु०, दे०) पर्वतीय मैदान, घास-वाली पहाड़ी भूमि (भू०) ।

पठावन†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पठान] दूत, पठौना ।

पठावनि, पठावनी, पठौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पठाना] किसी को कुछ पहुँचाने को भेजना, भेजी वस्तु या मजदूरी, कन्या के घर से वर के यहाँ भेजी वस्तु (रीति) । "ख्वैहों न पठावनी कहे हों ना हँगाइ कै"—कवि० ।

पठि—(संज्ञा, स्त्री०) अध्ययन ।

पठित—(वि०, सं०) पढ़ा हुआ ग्रंथ, पढ़ा-लिखा पुरुष, शिक्षित ।

पठिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाठ+इया प्रत्य०] जवान, युवा और तगड़ी स्त्री । [पट्ठी (दे०)] ।

पठौना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पठाना] भेजना, पठाना ।

पठौनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पठाना] पठावनी, पठउनी (ग्रा०) ।

पठमान—(वि०, सं०) पढ़े जाने के योग्य, सुपाठ्य ।

पड़छती, पड़छत्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पटच्छदि] दीवालों लो बरसात से रक्षित रखने वाला छोटा छप्पर, कमरे आदि के बीज की पाटन, डाँड़, परछती (ग्रा०) ।

पड़ता—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे० [हि० पड़ना] किसी वस्तु का क्रय-मोल, लागत । मुहा०—खाना या पड़ना-लागत और चाहा हुआ लाभ मिल जाना । —(ते) से—लागत से, व्यय और लाभ दोनों मिल जाने पर ।—फैलाना या बैठाना-कुल व्यय और लाभ मिलाकर किसी वस्तु का भाव निश्चित करना । दर, भाव, लगान को दर, सामान्य दर, औषत, मध्यराशि ।

पड़ताल, परताल, परतार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० परितोलन] पड़तालने की क्रिया, छान-बीन, जाँच, अनुसंधान, निरीक्षण, अन्वीक्षण, खेतों की जाँच । [जाँचपड़ताल (यौ०)] । "पातक अपार परतार पार पावैगी"—रत्ना० ।

पड़तालना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पड़ताल + ना प्रत्य०] पड़ताल करना, देख-भाल या जाँच करना, परतारना (ग्रा०)।

पड़ता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पड़ना] वह भूमि-खंड जहाँ कुछ दिनों से खेती न की जाती हो, परती (ग्रा०)। **मुहा०—उठना**-पड़ती का जोता बोया जाना या उसमें खेती होना ।**—छोड़ना**-बिना जोते बोये या बिना खेती के छोड़ना, जिससे उपज-शक्ति अधिक हो जावे ।**—पड़ना**-(ठीक समय पर भूमि को जोती-बोई न मकने से उसे छोड़ रखना ।

पड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पतन] गिरना, लेटना, ऊँचे से नीचे आना, पतित होना, दुख में फँस जाना, बीमार होना, परना (ग्रा०)। **मुहा० किसी पर—**, (आफत या विपत्ति पड़ना, कठिनाई या संकट आ जाना । बिछाया या फैलाया जाना । पहुँचाया जाना या पहुँचना, प्रविष्ट या दाखिल होना, दखल देना या हस्तक्षेप करना, टिकना या ठहरना । **पड़ा होना (रहना)**-एक ही ठौर ठहरना या बना रहना, रखा रहना, शेष रहना, विश्रामार्थ लेटना, सोना या आराम करना । कुछ कार्य किये बिना लेटे रहना, बेकाम रहना, रोगी या बीमार होना, चारपाई पर पड़े रहना, प्राप्त होना, मिलना, राह मे मिलना । उत्पन्न होना, ठहरना, इच्छा या धुन होना । **बे भाव का—**, किसी पर बुरी तरह से विपत्ति आना । **क्या पड़ी है**-क्या प्रयोजन है ।

पड़पड़—(संज्ञा, स्त्री०) अनेक बार उत्पन्न 'पड़' शब्द ।

पड़पड़ाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) पड़-पड़ का शब्द होना । चरपराना, तड़पना ।

पड़पड़ाहट—(संज्ञा, स्त्री०) पड़पड़ाने का भाव या क्रिया ।

पड़पोता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रपौत्र] पुत्र का पोता, पोते का लड़का । [**पड़पोती, प्रपौत्री** (स्त्री०)], [**पड़दादा, पड़बाबा, पड़दादी** (यौ०)] ।

पड़वा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतिपदा, प्रा० पाड़िवआ] हर एक पाख का पहिला दिन । परीवा । भैंस का बच्चा, डाँगर (ग्रा०) ।

पड़ाक—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) पटाक ।

पड़ाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पड़ना का प्रेरणा० रूप] गिराना, झुकाना । रोग से शय्या मग्न होना ।

पड़ापड़—(संज्ञा, स्त्री०) पड़-पड़ की आवाज ।

पड़ाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पड़ना + आव प्रत्य०] यात्रियों के ठहरने या टिकने की जगह । **—मारना**-काफिले या यात्रियों के दल को लूटना । साहसिक कार्य करना ।

पड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० + पँड़वा, पड़वा] भैंस का मादा बच्चा । [**पड़वा** (पु० विलो०)]

पड़ियाना—(क्रि० अ०) भैंस का भैंसे से पारस्परिक मिलन या संयोग होना । (क्रि० स०) भैंस का भैंसे से संयोग करना ।

पड़िवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पड़वा] पड़वा, परीवा (ग्रा०) ।

पड़ोस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रतिवास, प्रतिवेश] किसी पुरुष के घर के निकट के घर, परोस (ग्रा०) "आपति परें, परोस बसि"—वृं० । **पास—**, (यौ०) निकट के घर । **मुहा०—करना**-समीप बसना ।

पड़ोसी, परोसी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पड़ोस + ई प्रत्य०] पड़ोस में या अपने घर के समीप के घर मे रहने वाला, प्रति-वासी । [**परोसिन, पड़ोसिन** (स्त्री०)] । "प्यारी पदमाकर परोसिन हमारी तुम" ।

पढ़ंत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पढ़ना + अन्त प्रत्य०] पढ़ने की क्रिया, सदा पढ़ना, मंत्र ।

पढ़ंता—(वि०, दे०) [हि० पढ़ना] पढ़ने वाला ।

पढ़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पठन] बाँचना, उच्चारण करना, याद होने के लिए बारम्बार कहना, रटना, तोते का शब्द बोलना । मंत्र या विद्या पढ़ना, अध्ययन करना, शिक्षा पाना या लेना । (यौ०)—**लिखना**-शिक्षा पाना । [**पढ़ना, पढ़ाना** (यौ०)] । [**पढ़ालिखा**-(यौ०)] शिक्षित ।

पढ़वाना—(क्रि० स०, दे०) [पढ़ना का प्रेरणा० रूप] किसी से किसी को शिक्षा दिलाना, पढ़ने में लगवाना, सिखवाना, बँचवाना ।

पढ़वैया—(वि०) पढ़ाने वाला या पढ़नेवाला ।

पढ़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पढ़ना + आई प्रत्य०] विद्याभ्यास, पढ़ने का भाव, अध्ययन, पठन । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पढ़ाना + आई] अध्यापन, पाठन, पढ़ौनी, अध्ययन-शैली ।

पढ़ाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पढ़ना] अध्यापन करना, शिक्षा देना । तोते को मनुष्य की भाषा सिखाना, समझाना ।

पढ़िन, पढ़िना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाठीन] एक बड़ी मछली, पहिना (ग्रा०)।

पढ़ैया—(वि०) पढ़ने-पढ़ाने वाला।

पण—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिज्ञा, शर्त, होड़। व्यवहार, लेनदेन का व्यापार। वेतन, मूल्य। व्यवसाय। स्तुति, प्रशंसा। ताँबे का प्राचीन सिक्का, [प्रन (दे०)]। "अहः तात पणस्तव दारुणः"—[हनु०]।—**फर**-(संज्ञा, पु०, सं०) जन्मांक में २, ५, ८, ११ घर।

पणव—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा नगाड़ा, ढोल। एक छंद (पिं०)। "पणवानक गोमुखः"—[भाग०]।

पणाशी—(वि०, सं०) नाशक, विनाशक, प्रनाशी। "हौ जबहीं जब पूजन जात पिता-पद्द पावन पाप-पणाशी"—[रामा०]।

पणित—(वि०, सं०) बेचा गया हुआ, विक्रीत। शर्त या स्तुति किया हुआ, स्तुत।

पण्य—(वि०, सं०) क्रय-विक्रय योग्य, खरीदने या बेचने लायक, स्तुति या प्रशंसा के योग्य। (संज्ञा, पु०) माल, सौदा। व्यापार। बाजार, दूकान। व्यवहार की वस्तु।—**दासी**-(संज्ञा, स्त्री०) दासी। —**पति**-(संज्ञा, पु०) व्यापारी, बड़ा व्यवसायी। —**भूमि**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) गोदाम, कोठी, गोला, सौदा या माल जमा करने का स्थान।—**वीथी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) हाट, बाजार। दूकान। चौक, बाजार-गली।—**शाला**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) दूकान, बाजार, हाट। वेश्या, वारांगना।—**संस्था**-(संज्ञा, स्त्री०) गोदाम।

पतंखा—(संज्ञा, पु०) बगला की जाति-विशेष, बगला का एक प्रकार।

पतंग—(संज्ञा, पु०, सं०) पक्षी। सूर्य। पतिंगा, टीड़ी, पाँखी। गुड्डी। चंग। उड़ने वाले कीड़े। जड़धन। नाव। गेंद। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पत्रङ्ग] एक पेड़ जिसकी लकड़ी से बढ़िया लाल रंग बनता है। "सुनहु भानुकुल कमल-पतंगा"—[रामा०]।—**बाज**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पतंग+फ़ा० बाज] पतंग उड़ाने की लत वाला। —**बाजी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पतंगबाज] पतंग उड़ाने की कला या हुनर, काम।

पतंगज—(संज्ञा, पु०, सं०) यम। कर्ण। सुग्रीव।

पतंगजा—(संज्ञा, स्त्री०) सूर्य की कन्या, यमुना।

पतंगसुत—(संज्ञा, दे०, सं०, यौ०) अश्विनी-कुमार। यम। कर्ण। सुग्रीव।

पतंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पतंग] एक कीड़ा। चिनगारी। [पतिंगा (दे०)]।

पतंगिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार की मधुमक्खी। छोटी चिड़िया।

पतंगेंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) गरुड़।

पतंचल—(संज्ञा, पु०, सं०) गोत्र-प्रवर्त्तनकारी एक ऋषि।

पतंचिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धनुष की ताँत या डोरी प्रत्यञ्चा।

पतंजलि—(संज्ञा, पु०, सं०) योगदर्शन और पाणिनि-कृत अष्टाध्यायी के महाभाष्य के रचयिता एक महर्षि।

पत*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पति] पति, स्वामी, मालिक। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतिष्ठा] लज्जा, कानि, प्रतिष्ठा, मर्यादा। —**पानी**-लज्जा, आबरू, मानमर्यादा, प्रतिष्ठा। **मुहा०—उतारना या लेना**-अपमान करना।—**रखना**-इज्जत बचाना।

पत—(संज्ञा, पु०) पत्ता शब्द का सामासिक रूप (जो केवल समास-व्यवहृत होता है।)—**झड़, झर**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० पत=पत्ता+झड़ना) वह ऋतु जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं। शिशर ऋतु, अवनति का समय।—**झाड़ झार**†—(संज्ञा स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० पतझड़] पत्ते गिरना, पतझड़, पतझर, शिशर ऋतु जब वृक्षों के पत्ते झड़ जाते हैं। "होत पतझार झार तरुनि समूहनि कौ"—[ऊ० श०]।

पतत्—(वि०, सं०) गिरता हुआ, नीचे आता हुआ। एक चिड़िया।—**प्रकर्ष**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दश प्रकार का रस-दोष (काव्य०)।

पतन—(संज्ञा, पु०, सं०) गिरना, डूबना। अवनति, अधोगति, तबाही, नाश, मृत्यु। पाप, जाति-बहिष्कार, उड़ान।—**शील**-(वि०, सं०) गिरने के स्वभाव वाला। गिरने वाला, पतनोन्मुख।

पतनीय—(वि०, सं०) गिरने-योग्य।

पतनोन्मुख—(वि०, सं०, यौ०) जो गिरने की ओर लगा (प्रवृत्त) हो, जिसका विनाश, असंगति या अवनति निकट आ रही हो।

पतर*†—(वि०, दे०) [सं० पत्र] पतला, दुर्बल। कृश। पत्ता। पत्तल।

पतरा, पतला—(वि०, दे०) [सं० पात्रट] कृश। झीना, महीन, बारीक। अधिक द्रव या तरल। असमर्थ। पातर, पातरो, पतरो (ब्रा०)। [**पतरी, पतली** (स्त्री०)] । **मुहा०—पड़ना**-बुरी दशा में फँस जाना।—**हाल**-कष्ट और दुख की दशा, बुरा हाल।

पतरी, पतरि—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० पतली] दुबली। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) पत्तों से बना थाली-सा पात्र। "जूठी पातरि खात हैं"—[प्र० रा०]।

पतलाई, पतराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पतला] दुबलाई, कृशता।

पतलापन—(संज्ञा, पु०, हि०) दुबला होने का भाव, दुर्बलता, दुबलाई, कृशता। बारीकी।

पतलाना, पतराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पतला] पतला करना।।

पतलून—(संज्ञा, पु०, दे०) अँग्रेजी पायजामा। [अं० पैंटलून]

पतलो—(स्त्री०, पु०, दे०) [हि० पतला] सरपत, साँकड़ा। (वि०, दे०) पतला, पतरो।

पतवर†—(क्रि० वि०, दे०, यौ०) [सं० पंक्ति] पंगति के क्रम से, पंक्ति के अनुसार, पाँतिवार, बराबर-बराबर।

पतवार, पतवारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पात्रपाल] नाव के पीछे रहने वाला डाँड़ जिससे नाव घुमाई जाती है, करिया, [**कन्हर** (दे०)]।

पतवास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिड़ियों का अड्डा।

पता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ठिकाना। खोज। पत्र पर लिखा नाम, ठिकाना, परिचय। [ऐड्रेस]—**ठिकाना**-(संज्ञा, पु०, यौ०) किसी चीज का परिचय या उसका ठीक ठीक स्थान, अनुसंधान, टोह, सुराग, खोज, ज्ञान। **मुहा० क्या**—, न मालूम।—**निशान**-नाम-निशान, भेद, रहस्य गूढ़ तत्व या मर्म, खबर।—(ते) **की बात**-रहस्य या भेद-सूचक, या मर्म खोलने वाली बात। ठीक, सत्य या उपयुक्त बात।

पताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पत्र] पत्तियों का ढेर, सूखी गिरी पत्तियाँ।

पताका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) झंडा, फरहरा। **मुहा० किसी स्थान में (पर)—उड़ाना**-अधिकार या राज्य होना, सर्व प्रधान वा श्रेष्ठ माना जाना। **किसी वस्तु की—उड़ाना**-ख्याति या धूम होना।—**बाँधना (खड़ा करना)**-आतंक जमा देना, विजयी होना।—**उड़ाना**-अधिकार करना, विजयो होना।—**गिरना**-पराजय या हार होना। **विजय की**—जीत का झंडा, पिंगल में छंद-प्रस्तार सम्बन्धी गणित की एक क्रिया।—**स्थान**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) झंडे की जगह, नाटकीय एक संधि।

पताकिक—(संज्ञा, पु०, सं०) पताका धारण करने वाला।

पताकिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सेना, फौज।

पतार*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाताल] पाताल, जंगल, घनावन। **लो०**—"अहिर पतारे केवट घाट"।

पताल, पत्ताल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाताल] पाताल। [**पताली** (वि०)] [**पातालीय** (सं०)] **सरगपताली** (यौ०) ऐंचाताना।—**आँवला**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पाताल आमलकी] एक औषधि का क्षुप।—**कुम्हड़ा**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पाताल-कुष्मांड] एक वन-वृक्ष जिसकी गाँठों में शकरकंद या कंद होती है

पतावर—(संज्ञा, पु०) सूखे पत्ते।

पतिंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पतंग] पतंग, पतींगा।

पतिंवरा—(वि०, स्त्री०, यौ०, सं०) स्वयंवरा स्त्री०।

पति—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वामी, अधिपति, मालिक, दूल्हा। शिव, परमेश्वर। प्रतिष्ठा, मर्य्यादा, इज्जत। "पच पतिहूँ के पतिहूँ की पति जायगी"—रत्ना०। [**पत्नी** (विलो०, स्त्री०)]।—**भक्ता**-(वि०, सं०, यौ०) पतिव्रता। "पति-भक्ता न या नारी, व्यवसायी न यः पुमान्"।—**घातिनी**-(संज्ञा, स्त्री०) पति को मार डालने वाली स्त्री।—**देवता, देवा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) पतिव्रता। "पतिदेवता सुतीय महँ, मातु प्रथम तव रेख"—[रामा०]।—**लोक**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) स्वामी के रहने का स्वर्ग या वैकुण्ठ।—**वती**-(वि०, स्त्री०, सं०) सधवा, सौभाग्यवती।—**व्रत**-(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्री की अपने स्वामी में अनन्य भक्ति और प्रीति, पातिव्रत्य, [पतिवरत (दे०)]।—**व्रता**-(वि०, सं०) सती, साध्वी, पति-भक्ता,

पतिबरता। "जग पतिव्रता चारि विधि अहहिं"—[रामा०]।

पतिश्राना, पतियाना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रत्यय+श्राना प्रत्य०] पत्याना (ब्र०), भरोसा या विश्वास करना, एतबार करना। "कहीं सुभाव नाथ पति श्राहू"—[रामा०]।

पतिश्रार, पतियार*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पतिश्राना, पतियाना] साख, एतबार, विश्वास।

पतित—(वि०, सं०) गिरा हुआ, आचार-विचार या धर्म से गिरा हुआ, पापी, जाति या समाज से च्युत, नीच, अधम। [**पतिता** (स्त्री०)]।—**उधारन***–(वि०, दे०, यौ०) [सं० पतित+हिं० उधारना] अधमों और नीचों का उद्धार करने या तारने वाला। (संज्ञा, पु०, हिं०) परमेश्वर।—**पावन**–(वि०, सं०, यौ०) नीचों या अधमों को पवित्र करने वाला। (संज्ञा, पु०) परमेश्वर। "हरि हम पतित पावन सुने"—विनय०। [**पतित पावनी** (स्त्री०)]

पतितता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नीचता, अधमता।

पतित्व—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रभुत्व, स्वामित्व, पति होने का भाव।

पतिनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पत्नी] स्त्री, पत्नी, नारी। "जेहि रज मुनि-पतिनी तरी"—रही०। "पतिनी पति लै पितु ऊपर सोई"। **पति-प्रीता (प्रिया)**—(वि०, यौ०, सं०) पति-प्रेम वाली।

पतियारा*—(संज्ञा, पु०, दे० [हिं० पतियाना] विश्वास, यकीन, एतबार। (यौ०, हिं०) पति का मित्र।

पतिराखन, पतिराखनहार—(वि०, यौ०, हिं०) लज्जा का रक्षक।

पतीजन, पतीजना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० प्रतीत+ना प्रत्य०) पतियाना, विश्वास करना। "तिन्हें न पतीजै री जे कृतही न मानै"—सुबे०।

पतीरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार की चटाई।

पतील‡—(वि०, दे०,) [हिं० पतला] पतला, महीन, बारीक, बारीक।

पतीली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पातिली= हाँड़ी] एक तरह की पतली बटलोई।

पतुकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हाँड़ी।

पतुरिया, पतुर, पातुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पातिली] रंडी, वेश्या।

पतुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक गहना जो पहुंचे में पहना जाता है।

पतुही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटे मटर की छीमी।

पतोखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पत्ता] दोना, पत्ते का बर्तन। (संज्ञा, पु०, दे०) एक तरह का बगुला। [**पतोखी** (स्त्री० अल्पा०)]।

पतोखी, पतौखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पतोखा] छोटा दोना, दुनियाँ, छोटा छाता, बारीक कटी सुपाड़ी।

पतोह, पतोहू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुत्र वधू] लड़के या बेटे की पत्नी, पुत्रवधू। "होहिं राम-सिय पूत-पतोहू"—[रामा०]।

पतौश्रा, पतौवा*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पत्र] पत्ता, पर्ण।

पत्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) शहर, नगर।

पत्तर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पत्र] किसी धातु की पतली चादर।

पत्तल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पत्र] पतरी। पत्तल में रखी हुई भोजन की चीजें, एक व्यक्ति का पूर्ण भोजन। **मुहा० एक—के खाने वाले**–आपस में रोटी-बेटी का सम्बन्ध रखने वाले। **किसी के—में खाना**–किसी से खाने-पीने का सम्बन्ध करना या रखना। **जिस—में खाना उसी में छेद करना**–जिससे लाभ हो उसी को हानि पहुँचाना, कृतघ्नता करना।

पत्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पत्र] पर्ण, पलाश, पात, पतौवा (ग्रा०)। [**पत्ती** (स्त्री०)]। **मुहा०—खड़कना**–(कुछ आशङ्का, खटका या संदेह होना। **लो०**—"पत्ता खटका बंदा सटका"। **—न हिलना**–हवा का न चलना, बिलकुल बन्द होना, किसी भी व्यक्ति का कुछ न करना (होना)। कानों का एक गहना।

पत्ती—(संज्ञा, पु०, सं०) पैदल सिपाही, पदाति, प्यादा, सेना का सबसे छोटा खंड।—**सैन्य**–(संज्ञा, पु०) पैदल सेना।

पत्तिक—(संज्ञा, पु०, सं०) सेना का एक खण्ड, जिसमें घोड़े, हाथी, रथ, पैदल प्रत्येक दश हों, ऐसी सेना का नायक।

पत्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पत्ती+ई प्रत्य०] छोटा पत्ता, हिस्सा, भाग, साझे का अंश, पट्टी, राजपूतों की जाति।—**दार**-(संज्ञा, पु०) [हि० पत्ती+फ़ा० दार] हिस्सेदार, साझी।

पत्थ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पथ्य] रोगनाशक पदार्थ, स्वास्थ्यकारी पदार्थ, पथ्य।

पत्थर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रस्तर] जमी हुई अति कड़ी मिट्टी, पाथर [**पथराना** (क्रि०)]। "मेरा यारो है पत्थर का कलेजा"—हरि०। [**पथरीली** (वि०)]।—**कला**, (**पथरकला**) -(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पत्थर+कल] चकमक पत्थर लगी बन्दूक (प्राचीन)।—**चटा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पत्थर+चाटना]—(**पथरचटा**)-एक घास। मछली। साँप। कंजूस।—**फूल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) छरीला।—**फोड़**-(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) एक वनस्पति, पथरफोर (ग्रा०)। **मुहा०—का कलेजा (दिल या हृदय)**-जिसमें दया, कोमलता या करुणा न हो।—**की छाती**-पक्का या दृढ हृदय, पक्का स्वभाव।—**की लकीर** अमिट, स्थायी।—**चटाना**-घिस कर धार निकालना या तेज करना।—**तले हाथ आना या दबना**-ऐसे संकट मे फस जाना जिससे छूटने का यत्न न दिखाई दे, बुरी तरह से फँसना।—**तले से हाथ निकालना**-संकट या विपत्ति से छुटकारा पाना। —**पर दूब जमना (जमाना)**-अनहोनी या असंभव बात होना (करना)।—**पसीजना या पिघलना**-निर्दय के मन में दया, कठोर में नम्रता और कंजूस मे दान की इच्छा होना।—**से सिर फोड़ना या मारना**-असंभव के लिए उपाय करना। —**होना**-नीरस, कठोर या कड़ा हो जाना, स्तब्ध हो जाना, निर्जीव हो जाना। मील का पत्थर, ओला, इन्द्रोपल।—**पड़ना**-नष्ट होना, चौपट होना।—**पानी**-आँधीपानी और ओलों का आना। रत्न, कुछ नहीं, बिल्कुल खास।

पत्नी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विवाहिता स्त्री, भार्या, बहू, सहधर्मिणी।—**व्रत**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक ही ब्याही स्त्री से प्रेम का नियम।—**शाला**-(संज्ञा, स्त्री०) पत्नी का वास-स्थान या कमरा।

पत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पति होने का भाव।

पत्याना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० पतियाना] पतियाना, पतिआना।

पत्यारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पतियारा] पति का यार, पति का मित्र।

पत्यारी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पंक्ति] पंक्ति।

पत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) पत्ता, पत्ती, पर्ण, लिखा कागज, चिट्ठी, अखबार, एक पन्ना, पत्रा। चद्दर, पंखा।—**कार**-(संज्ञा, पु०, सं०) पत्र लिखने वाला, समाचार-पत्र का सम्पादक।—**०सम्मेलन** -(पु०) पत्रकारों की सभा [प्रेस कान्फरेंस]। —**०परामर्श समिति**-(स्त्री०) पत्रकारों की सलाहकार समिति [प्रेस एडवाइजरी कमेटी]। —**कृच्छ्र**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पत्तों का काढ़ा पीकर रखा जाने वाला एक व्रत (पु०)।—**पुष्प**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) फूल-पत्ते, छोटा उपहार, छोटा सत्कार। "पत्रं पुष्पं फलं तोयं" —[गी०]।—**प्रतिनिधि**-समाचार पत्र का प्रतिनिधि [प्रेस रिप्रेजेण्टेटिव]।—**भंग**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सुन्दरता के हेतु स्त्रियों के मस्तक, कपोल आदि पर रची गई रेखायें।—**वाहक**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पत्र ले जाने वाला, हरकारा, चिट्ठीरसा। [**पत्र-वाहन** (संज्ञा, पु०, सं०, यौ०)] [**पत्र-वाहिका** (स्त्री०)]।—**व्यवहार**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) लिखापढ़ी, खतकिताबत (फ़ा०) [करेस्पांडेंस]।

पत्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) पत्ता, तेजपत्ता, पत्रों की श्रेणी।

पत्रांग—(संज्ञा, पु०, सं०) भोज-पत्र नाम का वृक्ष, कमलगट्टा।

पत्रा—(संज्ञा, पु०) [सं० पत्र] जंत्री, तिथि-पत्र, पन्ना, पृष्ठ [पत्तरा (दे०)]। [**पोथी पत्रा** (यौ०)]। "पत्रा ही तिथि बताइये"—[वि०]।

पत्रावलि—(संज्ञा, स्त्री०) गेरू, पत्रों का समूह।

पत्रावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) पत्र-भंग, पत्रों की पंक्ति या समूह।

पत्राहार—(संज्ञा, दे०, सं०) केवल पत्तियों को खाकर रहना।

पत्रिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चिट्ठी, छोटा लेख, छोटा समाचार-पत्र, सामयिक पत्र या पुस्तक [मैगजीन]।

पत्रित—(वि०, सं०) जिसमें पत्ते निकल रहे हों। [**पत्रिता** (स्त्री०)]।

पत्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चिट्ठी, खत, छोटा लेख, पत्रिका। [**चिट्ठी-पत्री** (यौ०)]। (वि०)

[सं० पत्रिन्] पत्तेदार । (संज्ञा, पु०) वाण । पक्षी । पेड़ ।

पथ—(संज्ञा, पु०, सं०) रास्ता, राह, मार्ग, व्यवहारादि की रीति । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पथ्य] रोगनाशक पदार्थ, पथ्य ।—**गामी**-(संज्ञा, पु०) [सं० पथगामिन्] बटोही, पथिक, मुसाफिर । —**दर्शक,—प्रदर्शक**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) रास्ता दिखलाने वाला, मार्ग बताने वाला, नेता । [**पथ-दर्शन, पथ-प्रदर्शन** (संज्ञा, पु०, सं०, यौ०)] —**शुल्क**-(पु०) सड़क महसूल [टालटैक्स] ।—**गृह**-(पु०) चुंगीघर । [टालहाउस] ।—**द्वार**-(पु०) जिस फाटक पर चुंगी आदि वसूल की जाती है । [टाल गेट] । "पथदर्शक इसको मिलते रहते बहुतेरे" ।—**सुन्दर**-(संज्ञा, पु०) एक पौधा-विशेष ।—**स्थ**-(वि०) जो राह में हो ।—**हारा** -(वि०) जो रास्ते में थक गया हो । "खोजता-सा कुछ चिर पथहारा"—पंत ।

पथक—(संज्ञा, पु०, सं०) रास्ते का जाननेवाला, पथ-दर्शक [गाइड] ।

पथना—(क्रि० अ०, दे०) पाथना, कंडे बनाना ।

पथर—(संज्ञा, पु०) पत्थर का एक रूपान्तर ।—**कला**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० पत्थर या पथरी + कल] वह बन्दूक जो चकमक पत्थर द्वारा आग पैदा करके छोड़ी जाती थी ।—**चटा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पत्थर + चाटना] पाषाण या पाखानभेद नाम की दवा ।

पथराना, पथरियाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पत्थर + आना प्रत्य०] पत्थर के समान कड़ा ।

पथरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पत्थर + ई प्रत्य०] कटोरानुमा पत्थर का बरतन, मूत्राशय का एक रोग । चकमक पत्थर, सिल्ली, कुरंढ पत्थर जिससे सान बनती है, पत्थर की कूँड़ी ।

पथरीला—(वि०, पु०, दे०) [हि० पत्थर + ईला प्रत्य०] पत्थरयुक्त, पत्थरमिलित । [**पथरीली** स्त्री०)] ।

पथरौटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पत्थर + औटी प्रत्य०] पत्थर की कूँड़ी, पथरी ।

पथिक—(संज्ञा, पु०, सं०) बटोही, राही, यात्री, मार्ग चलने वाला ।

पथिकाश्रय—(संज्ञा, पु०) [सं० पथिक + आश्रय] सराय, विश्राम-स्थान, धर्मशाला ।

पथिन्—(संज्ञा, पु०, सं०) रास्ता, पथ, मार्ग । समुदाय, मत । यात्रा ।—(**पथि**) **कार**-(संज्ञा, पु०) मार्ग प्रशस्त करने वाला ।—(**पथि**) **वाहक** -(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) कहार, मजदूर ।

पथी—(संज्ञा, पु०) [सं० पथिन्] बटोही, यात्री ।

पथु*†—(संज्ञा, पु०)[सं० पथ] रास्ता, राह, मार्ग ।

पथेरा—(संज्ञा, पु०) कुम्हार, खपड़ा-ईंट पाथने वाला ।

पथैया—(वि०, दे०) [हि० पाथना] पाथने वाला, पथवैया ।

पथ्य—(संज्ञा, पु० सं०) रोगी के अनुकूल भोजन, उपयुक्त आहार । "पथ्यमिच्छतः"—रघु० । **मुहा० —से रहना**-संयम से रहना । हित । कल्यान । मंगल, सत्य ।

पथ्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हर । हरड़ । हड़ । एक छंद (पिं०) ।

पद—(संज्ञा, पु०, सं०) रोजगार, उद्यम । रक्षा, बचाव । दर्जा । पाँव, चरण । देह । छंद का एक चरण । वस्तु । देश । चौथा-भाग, चौथाई । उपाधि । मोक्ष । अधिकार-स्थान, भजन, गीत । दान की वस्तुयें । विभक्तियुक्त शब्द (व्या०) ।—**क्रम**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पग, डग ।—**ग**-(संज्ञा, पु०, सं०) पैदल । पियादा । पैदल चलने वाला ।—**ग्रहण**-(पु०) पद का स्वीकार करना [एक्सेप्टेंस आफ आफिस] ।—**चतुरर्द्ध**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) विषम वृत्तों का एक भेद (पिं०) ।—**चर**-(संज्ञा, पु०, सं०) पैदल, पियादा, प्यादा । पदाति ।—**चाप**-(स्त्री०) पैरों की आहट । "नीरव है उसका पदचाप"—महा० ।—**च्छेद**-(संज्ञा, पु०, सं०) व्याकरणानुसार किसी वाक्य के पदों को अलग-अलग करना । —**च्युत**-(वि०, सं०, यौ०) पद या अधिकार से भ्रष्ट या हटाया हुआ ।—**ज**-(संज्ञा, पु०, सं०) पाँव की अँगुलियाँ ।—**तल**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पैर का तलवा ।—**त्याग**-(संज्ञा, पु०) अपने पद या ओहदे को त्याग देना ।—**त्राण**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) जूता, जूती ।—**दलित**-(वि०, सं०, यौ०) पाँवों से रौंदा हुआ, अपमानित । दबाकर निर्बल किया गया ।—**न्यास**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) चलना, चलन । पदों का व्यवस्थित करना, पदविन्यास (काव्य) ।—**पटी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०)

एक प्रकार का नाच।—**पत्र**–(वि०, सं०, यौ०) पुष्करमूल (औष०), कमल का पत्र, अधिकार-पत्र।—**पीठ**–(संज्ञा, पु०,सं०, यौ०) खड़ाऊँ, जूता।—(**पाद**) **पीठ**–पैर रखने की चौकी।—**मैत्री**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) अनुप्रास (काव्य)। —**योजना**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) कविता के हेतु पदों को जोड़ना, पद-व्यवस्था।—**रिपु**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) काँटा।—**वृत्त**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) मिलित या युक्त शब्द।—**विग्रह**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) सामासिक पदों का पृथक्करण (व्या०)।—**व्याख्या**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) पदों (शब्दों) का व्याकरणानुकूल परिचय। —**सेवा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) पैर दाबना। —**स्था**–(वि०, सं०) पदारूढ़, पद पर वर्त्तमान, पदस्थित।

पदक—(संज्ञा, पु०, दे०) पूजार्थ देवता के चरण की मूर्ति। देवता के चरण वाला धातु-पत्र जो शिशुओं को पहनाया जाता है। तमगा। (संज्ञा, पु०, सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि। पैर। गले का जेवर। पद की रचना करने वाला। दर्जा, ओहदा।

पदना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्दन] अधिक पादने वाला, डरपोक। (क्रि० अ०, दे०) अमित होना, तंग होना।

पदनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पदना] दुराचारिणी, व्यभिचारिणी।

पदम, पदुम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पद्म] कमल। "बन्दौं गुरु-पद-पदुम-परागा"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पद्मकाष्ठ] पद्माख, पद्माक।

पदमक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पद्माक] पद्माख औषधि।

पदवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रास्ता, मार्ग। प्रणाली। चलन। पद्धति। उपाधि, ओहदा, खिताब [टाइटिल]।

पदांक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पाँव का चिह्न, पदलांछन।

पदांगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हंसपदी नामक लता।

पदांत—(संज्ञा, पु०) [सं० पद+अंत] पद का अंतिम हिस्सा। अंतिम चरण। अंतिम भाग।

पदांतर—(संज्ञा, पु०) [सं० पद+अंतर] एक पग या डग की दूरी। दूसरा पग।

पदाक्रांत—(वि०) [सं० पद+आक्रांत] पैरों से दबाया या कुचला हुआ।

पदानुसरण (पदानुकरण)—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पीछे-पीछे चलना, अनुयायी बनना, अनुकरण करना।

पदाघात—(संज्ञा, पु०, सं०) पाँव से मारना। "पदाघात से मोह युक्त हो गयो आज जन अतर"—पंत।

पदाति, पदातिक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्यादा, पियादा, पयादा। पैदल। दास, सेवक।—**सैन्य**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पैदल सेना।

पदाधिकारी—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ओहदेदार। पद-विशेष का अधिकारी [आफिस बेयरर]।

पदाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० पादना का प्रेरणा० रूप] बहुत तंग या दिक करना, दौड़ाना।

पदानुराग—(संज्ञा, पु०) नौकर, सेवक, सेना।

पदानुशासन—(संज्ञा, पु०) व्याकरण।

पदाम्भोज—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पदाम्बुज, चरण-कमल।

पदारबिंद—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) चरण-कमल। "राम-पदारबिन्द-अनुरागी"—[रामा०]।

पदार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) [पदारथ (दे०)] पद का अर्थ, तात्पर्य या प्रयोजन, नौ या सात पदार्थ, ५ तत्व, काल, दिक्, आत्मा, मन "पृथ्व्यप् तेजो व्यावाकाश कालदिगात्ममनांसिनवैच"—(वैशे०)। वस्तु, चीज, चार पदार्थ—अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।—**वाद**–(संज्ञा, सं०, यौ०) वह मत जिसमें आत्मा को छोड़ कर केवल भौतिक पदार्थों ही को सृष्टि-कर्त्ता माना है। प्रकृतिवाद, तत्ववाद। [**पदार्थवादी** (वि०)]।—**विज्ञान**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) विज्ञान-शास्त्र, चीजों की विद्या, तत्व-विद्या।—**विद्या**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) विज्ञान-शास्त्र, तत्वज्ञान।

पदार्पण—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) किसी जगह जाना या आना।

पदावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वाक्य-श्रेणी, भजन। संग्रह। पदों की पंक्ति। पद-माला।

पदासन—(वि०, सं०, यौ०) पादपीठ, पीढ़ा, काष्ठासन, पैर रखने की चौकी।

पदाश्रित—(वि०, सं०) आश्रय में रहनेवाला, शरणार्थी।

पदाहत—(वि०, सं०) पैर से ठुकराया हुआ ।

पदिक—(संज्ञा, पु०, सं०) पैदल फौज । *† (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पादक] जुगुनू नामक गहना । हार की चौकी । हीरा ।—**हार**–(संज्ञा, पु०, यौ०) रत्नहार, मणिमाला ।

पदी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पद] पियादा-पैदल । (वि०, सं०) पदवाली, जैसे षट्पदी ।

पदेन—(अ०, सं०) पद की हैसियत से ।—**सदस्य**–(पु०) किसी निश्चित पद की हैसियत से बनाया जानेवाला सदस्य [एक्स आफिस मेंबर] ।

पदोड़ा—(वि०) बहुत पादने वाला, कायर ।

पदोन्नति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० पद + उन्नति] तरक्की, पद की वृद्धि ।

पद्धटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १६ मात्राओं का एक छन्द, पज्झटिका, पद्धरि (पिं०) ।

पद्धति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मार्ग । परिपाटी । रीति, रस्म, कर्मकांड की पुस्तक, विधि । विधान । प्रणाली ।

पद्धरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १६ मात्राओं का एक छंद , पद्धटिका (पिं०) ।

पद्म—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल, जलज, पङ्कज । विष्णु का एक अस्त्र । एक निधि । देह पर के सफेद दाग, पद्माख पेड़ । एक नरक, एक पुराण । एक छंद (पिं०), एक संख्या ।—**कंद**–(संज्ञा, पु०, सं०) कमल की जड़, भसीड़ा, भिस्सा । मुरार ।—**काष्ठ**–(संज्ञा, पु०, सं०) पद्माख ।—**गर्भ**–(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा ।—**जन्मा**–(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा, नालीकजन्मा ।—**तंतु**–(संज्ञा, पु०, सं०) कमलदंडी, मृणाल ।—**नाभ**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) विष्णु, भगवान । " पद्मनाभं सुरेशम् " ।—**नेत्र**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) विष्णु ।—**पत्र**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पुष्कर-मूल, कमल-दल ।—**पलाश**,—**लोचन**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) श्रीकृष्ण, विष्णु ।—**पाणि**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ब्रह्मा । बुद्ध की एक मूर्ति । सूर्य ।—**पुष्प**–(संज्ञा, पु०) कनेर का पेड़ ।—**बंध**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक प्रकार का चित्रकाव्य ।—**बीज**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) कमलगट्टा ।—**व्यूह**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) लड़ाई में खड़ा होने का सेना का एक ढंग ।—**योनि**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ब्रह्मा ।—**राग**–(संज्ञा, पु०, सं०) माणिक, लाल । "पद्मराग के फूल"—[रामा०] ।—**रेखा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) हाथ की एक रेखा (सामु०) ।—**लांछन**–(वि०, पु०, सं०, यौ०) सूर्य । राजा । कुबेर । प्रजापति ।—**लोचन**–(वि०, सं०, यौ०) कमल नेत्र ।—**स्नुषा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्ष्मी, दुर्गा, गंगा ।

पद्मक—(संज्ञा, पु०, सं०) पद्माक (औष०) "लोहितचन्दन, पद्मक, धान्या "—(वै० जी०) ।

पद्मांतर—(संज्ञा, पु०) कमल-दल ।

पद्मा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्ष्मी । भादों सुदी एकादशी ।

पद्माकर—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ा ताल या झील जहाँ कमल हों, हिन्दी का एक प्रसिद्ध कवि ।

पद्माख, पद्माक—(संज्ञा, पु०, दे०] [सं० पद्मक] एक औषधि, पद्मकाष्ठ ।

पद्मालय—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ब्रह्मा, पद्म का स्थान ।

पद्मालया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) लक्ष्मी जी ।

पद्मावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्ष्मी । " पद्मावती-चरण-चारण-चक्रवर्ती"—गीत गो० । चित्तौड़ की रानी, पटना, पन्ना, उज्जयिनी (प्राचीन नगरों के नाम) ।

पद्मासन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) योग की एक बैठक, ब्रह्मा, शिव ।

पद्मिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमलिनी, छोटा कमल, चित्तौड़ की रानी, लक्ष्मी, उत्तम स्त्री ।—**वल्लभ**–(संज्ञा, पु०, यौ०) सूर्य, कमल-युक्त झील या सरोवर ।

पद्य—(वि०, सं०) जिसका सम्बन्ध पैरों से हो, जिसमें कविता के पद हों । [**पद्यवक्ता** (संज्ञा, स्त्री०)] (संज्ञा, पु०, सं०) कविता, छन्दमयी कविता । [**गद्य, गद्य-काव्य** (विलो०)] ।

पद्यमय—(वि०, सं०) पद्यरूप, छन्दोबद्ध ।

पद्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पगडंडी, सड़क का किनारा ।

पद्यात्मक—(वि०, सं०) जो छन्दोबद्ध हो ।

पधराना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रधारण] आदर से ले जाना, भली-भाँति बैठाना, स्थापित करना । [**पधरावना** (प्रे० रूप)] ।

पधरावनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पधराना] किसी देवता की मूर्ति की स्थापना, किसी को आदर के साथ बैठाने का कार्य ।

पधारना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पधराना] आगमन, आना ।

पन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रण] प्रतिज्ञा, प्रण, सकल्प, विचार। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्वन्=विशेष दशा] जीवन के चार भागों में से प्रत्येक। "बीति गये पन ऐसे ही द्वै"—नरो० । (प्रत्य०, हि०) भाववाचक संज्ञा बनाने का प्रत्यय, जैसे पागल से पागलपन ।—**कपड़ा**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० पानी+कपड़ा] पानी से तर वह कपड़ा जो चोट पर बहुधा बाँधा जाता है ।—**काल**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पानी+काल] अति वर्षा के कारण पड़ा हुआ दुर्भिक्ष, अकाल ।—**गोटी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बनी बसन्त, चेचक का एक भेद ।—**घट**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० पानी +घाट] वह घाट जहाँ से लोग पीने के लिये पानी भरते हों ।—**चक्की**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० पानी+चक्की] पानी के बल से चलने वाली चक्की। "नहर पर चल रही थी पनचक्की" ।—**छुटा**-(वि०, दे०, यौ०) [पानी+छूटना] जिससे पानी छूटता या निकलता हो ।—**डब्बा**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० पान+डिब्बा] पान रखने का डब्बा ।—**डुब्बा**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० पानी+डूबना] डुबकिहारा, पानी मे डुबकी लगाने वाला, एक नाव (आधु०), गोताखोर, पानी में डुबकी लगा कर मछलियाँ पकड़ने वाला पक्षी ।—**डुब्बी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पनडुब्बा] एक पक्षी। एक नाव जो पानी में डूबी हुई चलती है। [**सबमेरीन**] ।—**बट्टा**-(संज्ञा पु०, दे०) [हि० पान+बट्टा=डिब्बा] पानदान, पान रखने का डिब्बा, पनडब्बा ।—**बसना**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० पान+वसन] पान रखने का कपड़ा ।—**भरा**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० पानी+भरना] पानी भरने वाला, पनिहारा, कहार ।—**बाड़ी**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पान+बाड़ी] पान का बाग, पान की बारी, पानों का खेत। तमोली, पान बेचने वाला ।—**वार,—वारा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पान+वार प्रत्य०] पत्तल, पतरी ।—**शाला**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पानी+शाला] पौसला, पियाऊ, प्याऊ, [**पयशाला** (सं०)] ।—**साखा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाँच+शाखा] एक मशाल जिसमें पाँच या तीन फलीते साथ जलते हैं। —**सारी**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पण्यशाली] किराना, मेवा, औषधि बेचने वाला दूकानदार।—**साल**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) (हि० पानी+शाला] पौसरा, पंसरा, पियाऊ, प्याऊ । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) पानी की गहराई जाँचने का उपकरण ।—**सुइया, सोई**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० पानी+सुई] एक तरह की छोटी नाव, डोंगी ।—**सेरी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० पाँच सेर] पसेरी, पाँच सेर का बाट, पसेरी (ग्रा०) ।—**हरा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पानी +हारा प्रत्य०] पनभरा, कहार ।—**हारा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पानी+हारा प्रत्य०] पानी भरने वाला, कहार, पनभरा। [**पनहारिन, पनिहारिन, पनिहारी** (स्त्री०)] **मुहा०—बढ़ाना (हटाना)**—झंझट या झगड़ा मिटाना, वाद-विवाद बन्द करना, झगड़ा टालना या हटाना, दूर होना ।

पनच—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० प्रतंचिका] प्रत्यंचा, धनुष की ताँत या डोरी।

पनपना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पर्णन्=हरा होना] पानी पाने से हरा-भरा हो जाना, तन्दुरुस्त हो जाना, अच्छी दशा मे आना ।

पनपनाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पनपनाना] सनसनाहट, जोर से हवा चलने का शब्द ।

पनव*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रणव] प्रणव, ओउम् शब्द ।

पनस—(संज्ञा, पु०, सं०) कटहल।

पनसा—(वि०, दे०) [हि० पानी+सा= समान] पानी का सा, पानी जैसा स्वाद, फीका ।

पनहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिणाह] किसी वस्तु की चौड़ाई। गूढाशय, गूढ़ तात्पर्य, भेद, मर्म। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पण] चोरी का पता लगाने वाला ।

पनहाना—(क्रि० अ०, दे०) दूध उतरने के लिये गाय-भैंस का स्तन सुहराना। पल्हाना, पलुहाना (ग्रा०)।

पनहियाभद्र—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० पनही+भद्र=मुण्डन सं०] इतने जूते सिर पर मारना कि सिर के सब बाल गिर जावें ।

पनहीं†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उपानह] जूता।

पना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रपानक या पानीय] आम या इमली के गूदे का शर्बत ।

पनाती—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पनप्तृ] पोता या नाती का लड़का, पन्ती (ग्रा०) । [**पनातिन** (स्त्री०)]

पनारा, पनाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परनाला] परनाला [**पनारी, पनाली** (स्त्री०)] ।

पनासना†—(क्रि० स०, दे०) [दे० पानाशन] पालन-पोषण करना, परवरिश करना ।

पनाह—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) रक्षा, बचाव, त्राण । शहर ।—, (यौ०) रक्षार्थ नगर की चहारदिवारी । **मुहा० किसी से—माँगना**–बचाव की विनती करना । शरण, आड़, रक्षा का ठौर ।—**मिलना (पाना)**–शरण या रक्षा का स्थान मिलना ।

पनिच*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पनच] प्रत्यञ्चा, धनुष की ताँत ।

पनिया†—(वि०, दे०) [हि० पनिहा] पानी में रहने वाला । पानी-मिला । पानी संबंधी । [**पनियासाँप** (यौ०)] । (संज्ञा, पु०, दे०) भेदिया, जासूस । पानी ।—**सोत**†–(वि०, दे०, यौ०) [हि० पानी + सोत] पानी का सोता, बहुत गहरा, पानी के सोते वाला गहरा ताल आदि ।

पनियाना—(क्रि० स०, दे०) सींचना, पानी देना, पानी भरना ।

पनियाला—(संज्ञा, पु०, दे०) पनियार, एक फल ।

पनिहा—(वि०, दे०) [हि० पानी + हा प्रत्य०] पानी का निवासी । पानी मिला । पानी-सम्बन्धी, पानी जैसा । (संज्ञा, पु०) जासूस, भेदिया ।

पनी†*—(वि०, पु०, दे०) [सं० पण] प्रतिज्ञा या प्रण करने वाला, [पन्नी (दे०)] ।

पनीर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पानी निचोड़ा दही, फाड़ कर जमाया दूध ।

पनीरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फूलों-पत्तोंवाले पौधे जो अन्यत्र लगाने के लिये उगाये गये हों, फूलों-पत्तों के पेड़ या बेहन, वह क्यारी जिसमे पनीरी उगाई गयी हो, बेड़ या बेहन की क्यारी । (वि०) पनीर वाली ।

पनीला—(वि०, दे०) [हि० पानी + ईला = प्रत्य०] पानी युक्त, पानी मिला । [**पनीली** (स्त्री०)]

पनीहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पानी + हा प्रत्य०] पानी के संयोग से बनी हुई वस्तु, जलजंतु, जल में उत्पन्न होने वाला, जल-संबंधी ।

पनुआँ, पनुवाँ—(वि०, दे०) [हि० पानी] नीरस, फीका ।

पनेथी—(संज्ञा, स्त्री०) पलेथन के स्थान में पानी लगाकर तैयार की गई रोटी ।

पनेरी, पनैरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पान] पान वाला, तमोली, बरई ।

पनेरिन, पनैरिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पनेरी, पनेरी] तमालिन, पान बेचने वाली ।

पनैला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पनीला = एक प्रकार का सन] एक तरह का चिकना चमकीला और अति गाढ़ा वस्त्र या कपड़ा । बेलहरा ।

पनौआ—(संज्ञा, पु०) पान के पत्ते की पकौड़ी ।

पनौटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पान + औटी] पानदान, पान रखने का डिब्बा ।

पन्न—(वि०, सं०) गिरा या पड़ा हुआ, गत, नष्ट ।—**ग**–(संज्ञा, पु०, सं०) साँप, सर्प । पद्माख औषधि । [**पन्नगी** (स्त्री०)] ।—०**पति**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शेषनाग ।

पन्नगारि—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गरुड़ । "पन्नगारि यह नीति अनूपा"—[रामा०] ।

पन्नगाशन—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) गरुड़ । "सुनहु पन्नगाशन यह रीती"—[रामा०] ।

पन्नगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) साँपिनी, सर्पिणी, नागिन । "हली साति पन्नगी हरीरे परबत पै"—लछि० ।

पन्ना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्ण] मरकत मणि, हरित मणि । वरक, पृष्ठ । एक नगर जहाँ हीरों की खान है । "पन्ना माँहि पन्ना की सुचौकी पै उपन्ना ओढ़ि, पन्ना गेय गीता को सो पन्ना उलटावै है" । पना ।

पन्नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पन्ना = पत्रा] कागज के समान राँगा या चाँदी आदि के पत्तर, सोने आदि के पानी से रँगा कागज । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पना] एक खानेयोग्य वस्तु । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बारूद की एक तौल ।—**साज**–(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पन्नी + साज फ़ा०] पन्नी का काम करने वाला । [**पन्नीसाजी** (संज्ञा, स्त्री०)]

पन्हाना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पहनाना] पहनाना, पिन्हाना । पलहाना ।

पपड़ा, पपरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्पट] लकड़ी का सूखा छिलका। रोटी का छिलका (स्त्री० अल्पा०)।

पपड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पपड़ी] छोटा पपड़ा।—**कत्था**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पपड़ी + कत्था] सफेद पपड़ीदार कत्था।

पपड़ियाना—(क्रि० अ०, दे०)[हि० पपड़ी + आना] किसी पदार्थ की ऊपरी परत का सूख कर सिकुड़ जाना, पपड़ी पड़ जाना।

पपड़ी, पपरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पपड़ा का अल्पा०] किसी पदार्थ की ऊपरी परत का सूखा और जगह-जगह से फटा भाग। एक पकवान। [पपरिया (दे०)]

पपड़ीला, पपरीला—(वि०, दे०) [हि० पपड़ा + ईला प्रत्य०] अधिक पपड़े वाला।

पपनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बरौनी, पलक।

पपी—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, भानु, रवि।

पपीता—(संज्ञा, पु०, दे०) अंड-खरबूजा। [**पपीती** (स्त्री०)]

पपीहरा—(संज्ञा, पु०) देखिए 'पपीहा'। "मैं पपीहरा धर्म पी कहाँ कहना मेरा"—गिरीश।

पपीहा, पपिहा—(संज्ञा, पु०, दे०) चातक पक्षी। "पीहा पीहा रटत पपीहा मधुबन में"—[ऊ० श०]।

पपैया—(संज्ञा, पु०, दे०,) एक खिलौना। अंड-खरबूजा, पपीहा। एक पक्षी।

पपोटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्र + पट] पलक, दृगंचल।

पपोरना†—(क्रि० स०, दे०) भुजा ऐंठना और अभिमान सहित उनका पुष्ट उभाड़ देखना।

पबनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पर्वणी] त्योहार, पर्व।

पबरना—(क्रि० स०, दे०) निर्वाह होना, काम चलना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) पर्व या त्योहार का दिन।

पबि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पवि] वज्र।

पब्बय*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्वत] पहाड़, पव्वय। "कुंजर उप्पय सिंह, सिंह उप्पै द्वै पव्वय"—[रासो०]।

पमार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परमार] पँवार (ग्रा०) क्षत्रियों की एक जाति।

पय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पयस्] दूध। पानी। "बढ़ै गरल बहु भुजग को, यथा किये पय पान"—वृं०।—**द***-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पयोद] स्तन, थन। बादल। "स्रवत पयद, लोचन जल छाये"—[रामा०]।—**धि**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पयोधि] समुद्र।—**निधि***-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पयोनिधि] सागर। "बाँध्यो पयनिधि, तोय-निधि, उदधि, पयोधि, नदीश"—[रामा०] —**हारी**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पयस् + आहारी] केवल दूध पीकर रहने वाला तपस्वी, साधु, पयसाहारी।

पयस्विनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूध देने वाली गाय, एक नदी। "पथ पयस्विनी सरि मृदुल-धार"।

पयस्वी—(वि०) [सं० पयस्विन्] जलवाला। दूध-वाला, दूध-युक्त। [**पयस्विनी**-(स्त्री०) नदी।]

पयान, पयाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रयाण] यात्रा, गमन, जाना। "प्रान न करत पयान अभागे"—[रामा०]।

पयार, पयाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पलाल] धान आदि के छूँछे और सूखे डंठल, पुवाल (दे०)। "सहना छिपा पयार-तर को कहि वैरी होय"—कबीर। **मुहा०**—**गाहना या झाड़ना**-व्यर्थ परिश्रम या सेवा करना।—**तापना**-निस्सार कार्य करना।

पयोज—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल।

पयोद—(संज्ञा, पु०, सं०) बादल, मेघ। "उनको देखि पयोद"—वृं०।

पयोधर—(संज्ञा, पु०, सं०) स्तन, थन। बादल। नागरमोथा। कसेरू। तालाब। गाय का आयन। पहाड़। दोहा का ११ वाँ और छप्पय का २७ वाँ भेद (पिं०)। "लगी पयोधर जोंक"—वृंद०।

पयोधि—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र।

पयोनिधि—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) समुद्र। "जो छवि सुधा पयोनिधि होई"—[रामा०]।

पयोमुखी—(वि०, स्त्री०, सं०) दुधमुँही। जिसके दूध के दाँत न टूटे हों, बालिका। "निपट थी जिस काल पयोमुखी"—हरि०।

पयोराशि—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) समुद्र।

पयोव्रत—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दूध या जल के आहार पर व्रत करना, या ऐसा व्रत करने वाला।

परंच—(अव्य०, सं०) लेकिन, परन्तु, तो भी।

परंजय—(संज्ञा, पु०, सं०) वरुण, शत्रु को पराजित करने, जीतने वाला ।

परंतप—(वि०, सं०, यौ०) वैरियों को दुःख देने वाला, इन्द्रियजित ।

परंतु—(अव्य०) [सं० परं+तु] मगर, लेकिन, किंतु, पर, तो भी ।

परंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० परिंदा] पक्षी, चिड़िया, परिंदा ।

परंपर—(संज्ञा, पु०, सं०) पौत्र । प्रपौत्र, आदि । (वि०) क्रमानुसार, सिलसिलेवार ।

परंपरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्रम से एक के पीछे दूसरा । पूर्वापर क्रम, अनुक्रम । वंश-परम्परा । प्रणाली । संतति, औलाद । परिपाटी । प्राचीन रीति ।

परंपरागत—(वि०, सं०, यौ०) जो सदा से होता आया हो, सनातन ।

पर—(वि० सं०) दूसरा, अन्य, पराया, दूसरे का, जुदा, अलग, भिन्न, अतिरिक्त, पीछे का, दूर । तटस्थ । श्रेष्ठ, तत्पर । लीन । (प्रत्य०, दे०) [सं० उपरि] भाषा में अधिकरण का चिह्न, जैसे; कोठे पर ।—**कलत्र**–(संज्ञा, पु०) अन्य की स्त्री ।—**काज,—कारज**–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परकार्य] दूसरे का काम, परोपकार ।—**काजी**–(वि०, दे०) [हि० पर+काज+ई प्रत्य०] परोपकारी, पर-स्वार्थी ।—**गाछा**–(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पर गाछ=पेड़] दूसरे पेड़ों पर उगने वाले पौधे (गरम देशों में) ।—**छिद्र**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) परदोष, दूसरे का ऐब । " जो सहि दुख परछिद्र दुरावा "—[रामा०] ।—**जन***–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिजन] कुटुम्बी, वंश के लोग । नौकर, सेवक । "पर-जन, पुरजन मित्र, उदासी" —[स्फु०] ।—**जात**–(वि०, सं०) दूसरे से उत्पन्न, दूसरे का पला, दूसरी जाति का ।—**तंत्र**–(वि०, सं०) पराधीन, परवश ।—**दार,—दारा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) परतिया, दूसरे की स्त्री, पराई औरत । " माता सम परदार अरु, माटी सम परदाम ।"—**०लंपट**–(वि०, यौ०) पर-स्त्री-गामी । [—**०लंपटता** (संज्ञा, स्त्री०)]—**दुःख**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अन्य की पीड़ा या क्लेश, परदुख ।—**देश (देस)**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) बिदेश, अन्य देश, भिन्न देश ।—**देशी (देसी)**–(वि०, सं०) दूसरे देश का, बिदेशी, अन्य देशवासी ।—**द्वेष्टा**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) परहिंसक, परा-निष्टकारी, दूसरे की हानि करने वाला ।—**द्रोह**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) परानिष्ट, दूसरे का अशुभ, पर-पीड़न । "न शक्नोमि कर्तुं परद्रोहं लेशम् "—शं० ।—**द्रोही**–(वि०, यौ०) [सं० परद्रोहिन्] परानिष्टकारी, पराशुभकारी, परपीड़क ।—**धन**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अन्य या दूसरे का धन या द्रव्य । लो० " परधन बाँधे मूरख-नाथ "—[स्फु०] ।—**धाम**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) वैकुंठ, स्वर्ग । परमात्मा । अन्य का धाम, परम-धाम ।—**नाम**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० परनामन्] अन्य या दूसरे का नाम, दूसरा नाम । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रणाम] प्रणाम, नमस्कार ।—**पति**–(संज्ञा, पु०) [सं० पर+पति] पर का पति । " मध्यम परपति देखहिं कैसे "—[रामा०] ।—**पार**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दूसरी ओर का तट या किनारा ।—**पीड़क**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अन्य या दूसरे को कष्ट या दुःख देने वाला, परंतप ।—**पुरुष**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अन्य पुरुष, दूसरी स्त्री का पति ।—**पुष्ट**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) कोकिल, परभृत । (वि०, सं०) अन्य द्वारा पोषित, परपोषित ।—**भाग्योपजीवी**–(वि०, सं०) पराश्रित, दूसरे के द्वारा जीवन बिताने वाला ।—**भुक्त**–(वि० पु०, सं०) अन्य से भोगा हुआ । [**परभुक्ता**–(स्त्री०) दूसरे की भोगी हुई] ।—**भृत**–(संज्ञा, पु०, स्त्री०, सं०) कोकिल, कोयल । कोइली । " परभृत अपना तू गान है जो सुनाती "—[स्फु०] ।—**मत**–(संज्ञा, पु०, सं०) दूसरे का मत या सिद्धांत, अन्य की सम्मति ।—**लोक**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) स्वर्ग, वैकुंठ, दूसरा लोक या जन्म, दूसरा शरीर ।—**०वासी**–(यौ०) मरा हुआ । **मुहा०—०सिधारना (जाना)**–मर जाना, अन्य शरीर धारण, पुनर्जन्म ।—**०गमन**–(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्यु ।—**वश, वश्य**–(वि०, सं०, यौ०) परतंत्र, पराधीन ।—**हित**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) परोपकार, दूसरों की भलाई । "परहित सरिस धर्म नहिं भाई"—[रामा०] । (अव्य०) [सं० परम्] पीछे, पश्चात, परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर, तो भी । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) चिड़ियों का पंख, पंखना, डैना, पक्ष ।—**कटा**|–(वि०, दे०) [फ़ा० पर+काटना हि०] जिसके पंख या पँखने कट गये हों । **मुहा०—कट जाना**–निर्बल या शक्ति-हीन या

असमर्थ हो जाना।—**जमना**-पंख निकलना। शरारत सूझना। **कहीं जाते हुए—जलना**-साहस या हिम्मत न होना, गति या पहुँच न होना।—**न मारना**-पाँव न रखना, न आना।

परई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पार=कटोरा] दिया से बड़ा मिट्टी का एक पका हुआ बरतन।

परकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० परचना] परचना। हिलमिल जाना। चस्का लगना, अभ्यास या टेव पड़ना। (क्रि० स०) [प्रेरणा० रूप] परकाना।

परकसना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० परकासना] प्रकट या प्रकाशित होना, जगमगाना।

परकाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० परचाना] अभ्यास डलवाना, चस्का लगाना।

परकार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वृत्त खीचने का यंत्र। †(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रकार] तरह, प्रकार, भाँति।

परकारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० परकार] परकार के द्वारा वृत्त खींचना, चारों तरफ घुमाना।

परकाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० परकार] परकार, प्रकार।

परकाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रकार या प्रकोष्ठ] जीना। सीढ़ी। चौखट। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० परगला] खंड, भाग। काँच का टुकड़ा। आग की चिनगारी। **मुहा० आफत का—**, गजब ढहाने वाला, आफत उठाने वाला, भयानक या प्रचंड मनुष्य।

परकास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रकाश] प्रकाश, उजेला।

परकासना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रकाशन] उजेला करना, प्रकट करना।

परकीति, परिकीति, परकीती*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रकृति] स्वभाव। टेव, आदत। "हम बालक अज्ञान अहै प्रभु अति चंचल परकीती"—प्र० ना० मि०।

परकीय—(वि०, सं०) दूसरे का, पराया।

परकीया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूसरे की स्त्री, पति को छोड़ परपुरुष से प्रेम करने वाली नायिका। [**स्वकीया** (विलो०)] "परकीया परनारि।"—मति०।

परकीरति, परकोरति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० परकीर्त्ति] दूसरे का यश, नेकनामी, बड़ाई। "तुलसी निज कीरति चहैं, परकीरति को खोय"—तुल०।

परकोटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परकोट] किसी गढ़ या किले के चारों ओर की रक्षा-पंक्ति, घेरा। बाँध। चढ़। धुस।

परख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० परीक्षा] जाँच। भलीभाँति देखभाल। पहिचान। अनुसंधान। खोज, पारिख (ग्रा०)। [**पारखी** (वि०)]

परखना—(क्रि० स०, दे०) [सं० परीक्षण] परीक्षा (जाँच या अनुसंधान या खोज) करना, देखभाल करना, पहचानना। (क्रि० स०, हि०) [परेखना (दे०)] आसरा देखना। प्रतीक्षा या इन्तजारी करना।

परखवाना—(क्रि० स०, हि०) [परखना का प्रेरणा० रूप] जँचवाना, अनुसंधान करवाना। प्रतीक्षा करना।

परखवैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परख+वैया प्रत्य०] परखने, जाँच या अनुसंधान करने वाला। इन्तजार करने वाला।

परखाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० परखाना] परखने का काम या मजदूरी। इन्तजारी।

परखाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० परखना] जँचाना। परीक्षा कराना। इन्तजारी कराना।

परखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुजे की तरह का एक लोहे का यंत्र, जिससे बोरे से अन्न निकाल कर परखा जाता है।

परखैया—(संज्ञा, पु०) [हि० परखना+ऐया प्रत्य०] परखने या जाँच करने वाला, खोजी। इन्तजार करने वाला।

परग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पदक] पग, डग।

परगट—(वि०, दे०) [सं० प्रकट] प्रगट, स्पष्ट, परघट (ग्रा०)।

परगटना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रकट] प्रगट होना, खुलना। (क्रि० स०, दे०) जाहिर या प्रगट करना।

परगन, परगना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परगना] परगना, तहसील का वह भाग जिसमें बहुत से गाँव हों।

परगसना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रकाशन] प्रगट या प्रकाशित होना। [**परगासना** (क्रि० स०, दे०)]

परगहनी—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० परगृहिणी] दूसरे का घर, परघर। पर-स्त्री। [परघरनी (दे०)]।

परगास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रकाश] प्रकाश, उजेला, रोशनी।

परघट†—(वि०, दे०) [सं० प्रकट] प्रकट, जाहिर। पैदा। "जाहिर परघट तादीरपाक"—[खालिक०]।

परघनी, परघरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सोना-चाँदी आदि के ढालने का साँचा या परधी।

परचंड*—(वि०, दे०) [सं० प्रचंड] अधिक तेज या तीव्र, प्रखर, भयकर, कठोर, असह्य, बड़ा भारी।

परचई, परचै—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिचय] परिचय, जानकारी, पहिचान, परचौ (ग्रा०)।

परचत*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० परिचित] जान-पहिचान, जानकारी, परिचय।

परचना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० परिचयन] हिलना-मिलना। चसका लगना।

परचा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कागज का टुकड़ा, चिट। पुरजा, चिट्ठी। परीक्षा का प्रश्न-पत्र। (संज्ञा, पु०) [सं० परिचय] परिचय। परीक्षा। प्रमाण।

परचाना, परचावना—(क्रि० स०, दे०) [हि० परचना] चसका लगाना। टेव डालना, हिलाना-मिलाना। (क्रि० स०, दे०) [सं० प्रज्वलन] जलाना, सुलगाना।

परचार*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रचार] प्रचार, रिवाज, चलन।

परचारना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रचारण] प्रचारना, ललकारना।

परचून—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्र+चूर्ण] आटा, दाल आदि की सामग्री। "सकुची-सी परचून किनारे की ढेरी"—पंत।

परचूनी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परचून] खाने की सामग्री बेचने वाला बनिया, मोदी।

परचौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिचय] परीक्षा, जाँच, परिचय।

परछती, परछत्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० परि+छत] कोठरी में थोड़ी दूर तक की पटनई, फूस का छोटा छप्पर।

परछन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० परि+अर्चन] द्वार पर आये वर की आरती। "परछन करत मुदित मन रानी"—[रामा०]।

परछना—(क्रि० स०, दे०) [हि० परछन] किसी देवता या वर की आरती या पूजन करना।

परछा—(संज्ञा, पु०, दे०) कोल्हू के बैल की आँख पर बाँधने के लिए कपड़े की पट्टी। बड़ी बटलोई। कड़ाही।

परछाईं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतिच्छाया] छाँही, छाँह, छाया, साया। प्रतिबिम्ब। **मुहा०**—**से डरना या भागना**-पास तक जाने से डरना, बहुत ही डरना।

परछालना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रक्षालन] धोना।

परछाहीं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखिए 'परछाईं'। "जल बिलोकि तिनकी परछाँही"—[रामा०]।

परछी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दूध वा दही की मटकी।

परजंक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्यंक] पलंग। [प्रजंक (दे०)]

परज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पराजिका] एक रागिनी (संगी०)।

परजकर—(संज्ञा, पु०, दे०) वह महसूल जो भूमि में बसने से जमींदार को दिया जावे।

परजरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रज्वलन] सुलगना, जलना। रुष्ट होना, डाह करना, कुढ़ना।

परजन्य—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्जन्य] मेघ, बादल, जलद, वारिद। "परकारज देह को धारे फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ"—घना०।

परजवट—(संज्ञा, पु०, दे०) कर, शुल्क। भाड़ा। राजभूमि का महसूल। [परजौट (दे०)]

परजा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रजा] प्रजा, रिआया, रैयत, असामी, किसान। सेवक, नौकर, दास।

परजाता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पारिजात] पारिजात वृक्ष। हर-सिंगार। पारजात।

परजाय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्याय] समान या एक अर्थ वाले शब्द। एक अलंकार। परम्परा, प्रकार। (यौ०, दे०) [सं० पर+जाय] पर-स्त्री, परजोय, परजाया।

परजारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० परजरना] जलाना।

परजौट—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परजा+औट प्रत्य०] मकान बनाने के हेतु वार्षिक भाड़े पर भूमि के लेने-देने का नियम ।

परज्वलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रज्वलन] प्रज्वलित करना, जलाना । (क्रि० अ०, दे०) प्रज्वलित होना । "देखन ही तें परज्वलै, परसि करै पैमाल"—कबीर० ।

परणना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० परिणयन] विवाह करना, ब्याहना ।

परतंचा, परतिचा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतंचिका] धनुष की डोरी, प्रत्यंचा ।

परतंत्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पराधीनता ।

परतः—(अ०) [सं० परतस्] अन्य या दूसरे से पीछे, आगे ।

परत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पत्र] तह, स्तर, छिलका । पुट ।

परतच्छ, परतछ*—(वि०, दे०) [सं० प्रत्यक्ष] प्रत्यक्ष । सम्मुख । प्रगट, आँखों के आगे । "हम परतच्छ में प्रमान अनुमाने नाहिं"—[ऊ० श०] ।

परतल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पट+तल] डेरा-डंडा । टट्टू या घोड़े पर लादने का गोन या बोरा । खुरजी (ग्रा०) ।

परतला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परितन] चपरास, चपरास लगाने की पट्टी ।

परता, पड़ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पड़ता] किसी वस्तु का मूल्य । खरचे का दाम, लागत । **मुहा०—पड़ना (खाना)**-पूरा मूल्य आजाना ।

परताप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रताप] प्रताप, तेज, इकबाल । [**परतापी** (वि०)]

परताल, परतार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पड़ताल] पड़ताल, जाँच । "पातक अपार परतार पार पावैगा"—रला० ।

परतिचा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतंचिका] धनुष की डोरी । प्रत्यंचा ।

परती, पड़ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० परना =पड़ना] वह भूमि जो बिना जोती-बोई पड़ी हो । **—लेना**-ओसाना ।

परतीति, परतीत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतीति] प्रतीति, विश्वास, भरोसा । "भूलि परतीति न कीजै"—गिर० ।

परतेजना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० परित्यजन] छोड़ना, परित्याग करना ।

परत्र—(वि०, सं०) अन्यत्र, स्वर्ग, परकाल या परलोक ।

परत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रथम या पूर्व होने का भाव, आगे होने का भाव ।

परथन, परेथन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पलेथन] पलेथन, गीले आटे से रोटी बनाने में लगाने का सूखा आटा । व्यर्थ का व्यय, खर्च, परोथन ।

परदच्छिना*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रदक्षिणा] प्रदक्षिणा, परिक्रमा, फेरा ।

परदनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० परदा] धोती "टका परदनी देतु"—कबीर० ।

परतिग्या, परतिज्ञा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतिज्ञा] प्रण, पण, प्रतिज्ञा ।

परदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पट, चिक, यवनिका, पर्दा ।**—नशीन**-(वि०, यौ०, फ़ा०) परदे में रहने वाला, अंतःपुरवासिनी । [**परदा-नशीनी** (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०)] । **मुहा०—उठाना या खोलना**-गुप्त भेद या छिपी बात प्रगट करना ।**—डालना**-छिपाना ।**—रखना**-लज्जा करना, इज्जत बचाना । **—फाश करना**-भेद या लज्जा की बात प्रगट करना । **आँख पर—पड़ना**-देख न पड़ना । **ढँका—**,छिपा दोष या कलंक, बनी मर्य्याद या प्रतिष्ठा, व्यवधान, मर्य्यादा या प्रतिष्ठा, व्यवधान, ओट, आड़, छिपाव । **—प्रथा**-(यौ०) स्त्रियों के अंदर रहने और मुख ढाँके रहने का रिवाज । **मुहा०—रखना**-परदे की ओट मे रहना, छिपाव या दुराव रखना, परदे के भीतर रहना, लज्जा रखना ।**—होना**-परदा होने का नियम या दुराव होना ।**—में रहना**-छिपा रहना ।

परदादा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्र+दादा हि०] दादा का पिता, प्रपितामह । [**परदादी** (स्त्री०)] ।

परदाराभिगमन—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दूसरे की पत्नी से भोग-सम्बन्ध ।

परदाराभिगामी—(वि०, पु०, यौ०) दूसरे की पत्नी से व्यभिचार करने वाला ।

परदुम्भ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रद्युम्न] प्रद्युम्न, श्री कृष्ण जी के पुत्र ।

परदोस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रदोष] शाम का वक्त, संध्या समय । त्रयोदशी का शिव-व्रत । बड़ा भारी दोष या अपराध । (संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० प्रदोष] अन्य या दूसरे की बुराई । "जे परदोस लखैं सह साखी"—[रामा०] ।

परधान*—(वि०, दे०) [सं० प्रधान] मुख्य, श्रेष्ठ । मंत्री । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिधान] आच्छादन, परिधान, वस्त्र, कपड़ा । (संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) परधान का स्थान ।

परन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रण] प्रतीज्ञा, प्रण, टेक, हठ । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पड़ना] स्वभाव, बान, टेव, आदत ।*(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्ण] [पर्न (दे०)] पान, पत्ता, पत्ती । जैसे—परनकुटी ।—**गृह**–(संज्ञा, पु०, दे०, सं०, यौ०) पर्णगृह, पत्तों का झोंपड़ा, पर्णशाला । [**परनशाला, परनकुटी, पर्णकुटीर** (सं०, दे०)]

परना, पड़ना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पड़ना] गिरना, पड़ना । सो रहना, लेटना ।

परनाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर+नाना हि०] नाना का पिता । [**परनानी** (स्त्री०)]

परनाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रणाली] नाबदान, मोरी, पनाल, नरदवा, नर्दहा । [**परनाली** स्त्री०, अल्पा०)]

परनाह—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पर+नाथ] परपति, पर-नाथ ।

परनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पड़ना] स्वभाव, प्रकृति, टेव, बान, पड़ने की क्रिया । [**परनी, प्रणी** (सं०, वि०, दे०)]

परनौत*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० परनवना] प्रणाम, नमस्कार ।

परपंच*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रपंच] प्रपंच, झगड़ा-बखेड़ा, चालबाजी । "मोहिं न बहुत परपंच सुहाही"—[रामा०] । [**परपंची, प्रपंची** (वि०, सं०, दे०)] [**परपंचिनी** (स्त्री०)]

परपंचक—(वि०, दे०) [सं० प्रपंच] झगड़ालू, बखेड़िया, धूर्त्त, मायावी, चालबाज ।

परपट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्पट] एक औषधि, पित्तपापरा । "छिन्नोद्भवा पर्पट वारिवाह:"—[वैद्य०] । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पर+पट=चादर सं०] चौरस मैदान, समतल भूमि । दूसरे का वस्त्र ।

परपटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पर्पट] सौराष्ट्र या गुजरात या काठियावाड़ की मिट्टी, गोपी-चंदन, पापड़ी, पपड़ी । [**स्वर्णपर्पटी**–(यौ०) औषधि (वैद्य०) ।]

परपराना—(क्रि० अ०, दे०) तीक्ष्ण लगना, जलना, चुनचुनाना । किसी वस्तु के टूटने का अनुकरण-शब्द ।

परपराहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० परपराना] तीक्ष्णता, चरपराहट ।

परपाजा, परबाजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परार्य्य] आजा या दादा का पिता ।

परपूठा*—(वि०, दे०, यौ०) [सं० परिपुष्ट] पक्का । (वि०, दे०) [सं० परपुष्ट] अन्य द्वारा पोषित । (संज्ञा, पु०, दे०) कोकिल, कोयल ।

परपूर—(वि०, दे०) [सं० परिपूर्ण] परिपूर्ण, पूरा-पूरा [परिपूरन (दे०)] ।

परपैठ—(संज्ञा, पु०, दे०) मुख्य हुंडी की तीसरी प्रति, पहली प्रति हुंडी, दूसरी पैठ और तीसरी परपैठ कहलाती है ।

परपोता, पड़पोता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रपौत्र] पोते का पुत्र, पुत्र का पोता ।

परफुल्ल*—(वि०, दे०) [सं० प्रफुल्ल] प्रफुल्ल, विकसित, फूला हुआ, प्रसन्न ।

परबंध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रबंध] प्रबंध, व्यवस्था, आयोजन । संबद्ध वाक्य-रचना । प्रकृष्ट बंधन ।

परब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्व] पुण्य काल, उत्सव, त्यौहार, पर्व । अंश, भाग, ग्रहण, परबी (ग्रा०) ।

परबत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्वत] पर्वत, पहाड़ । [**परबतिया** (वि०)]

परबल—(वि०, दे०) [सं० प्रबल] प्रबल, बलवान, उग्र । एक तरकारी, परवर ।

परबस—(वि०, दे०, यौ०) [सं० परवश] परतंत्र, पराधीन । "परबस परे परोस बसि"—वृं० । [**परबसी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)] ।

परबसताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० परवश्यता] परतंत्रता, पराधीनता, परबसी । [परबसता (दे०)]

परबोधना—(क्रि० स०, दे०) प्रबुद्ध करना, जगाना, उपदेश देना, समझाना-बुझाना ।

परवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतिपदा] परिवा । [परीवा (दे०)]

परबाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पर=दूसरा+बाल=रोयाँ] आँख की पलकों के भीतरी बाल ।* [सं० प्रवाल] प्रवाल, मूँगा ।

परबीन*—(वि०, दे०) [सं० प्रवीण] प्रवीण, चतुर । "केते परबीन धन-हीन फिरैं मारे मारे, गुणन-विहीन पावैं सुख मनमान्यो है"—मन्ना० ।

परबेस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रवेश] पैठ, गति। विषय-ज्ञान। (यौ०) दूसरे का वेश या रूप।

परबोध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रबोध] प्रबोध, शिक्षा। समझौता, यथार्थ ज्ञान। ढाढ़स, दिलासा। चितावनी, जगाना। "प्रभु परबोध कीन्ह विधि नाना"—[रामा०]।

परबोधना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रबोधन] समझाना, सान्त्वना या शिक्षा देना, ज्ञानोपदेश करना। जगाना, सचेत करना। "पिता-मातु गुरु-जन परबोधत"—सुबे०।

परब्रह्म—(संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा, भगवान, निर्गुण, परमेश्वर।

परभा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०,) [सं० प्रभा] प्रभा, दीप्ति, प्रकाश, कांति, शोभा, उजेला।

परभाई, परभाउ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रभाव] प्रभाव, शक्ति, महिमा, परभाव, परभाय।

परभात*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रभात] प्रभात, सवेरा, तड़का। "जातहू न जानी ज्यों तरैया परभात की"—[स्फु०]।

परभाती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रभाती] सवेरे गाने का एक राग या गीत, प्रभाती।

परभाव*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रभाव] प्रभाव, शक्ति, महिमा, महात्म्य, परभाउ, परभाय। "कछु परभाव देखावहु आपन जोग जुगुति जो होई"—[स्फु०]।

परम—(वि०, सं०) अत्यंत, उत्कृष्ट, प्रधान, श्रेष्ठ, अग्रगण्य, मुख्य, केवल। **—गति**-(संज्ञा, पु०, सं०) मुक्ति, मोक्ष, उत्तम गति। "हरि-पद-विमुख परम गति चाहा"—[रामा०]। **—तत्व**-(संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा, ब्रह्म, मूलतत्व। "जोगिन परमतत्वमय भासा"—[रामा०]। **—धर्म**-(संज्ञा, पु०, सं०) श्रेष्ठ धर्म। **—धाम**-(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ग, वैकुंठ। "परमधाम सम धाम नहिं, राम नाम सम नाम"—[स्फु०]। **—पद**-(संज्ञा, पु०, सं०) मुक्ति, मोक्ष। "भये परमपद के अधिकारी"—[रामा०]। **—पिता**-(संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा। **—पुरुष**-(संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा, परमेश्वर, ब्रह्मा, विष्णु, पुरुषोत्तम। **—फल**-(संज्ञा, पु०, सं०) मोक्ष। **—भट्टारक**-(संज्ञा, पु०, सं०) एकछत्र राजाओं की एक पदवी। [**परमभट्टारिका** (स्त्री०)]। **—लाभ**-(संज्ञा, पु०, सं०) मोक्ष, अतिशय या अत्यन्त या उत्कृष्ट लाभ। "परम लाभ सब कहँ, मम हानी"—[रामा०]। **—हंस**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) संन्यासी, योगी, अवधूत। संन्यासियों की ज्ञानावस्था। परमात्मा। [**परम-हंसता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

परमल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिमल] ज्वार या गेहूँ का उबाल कर भूना दाना।

परमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शोभा, सुन्दरता, सौंदर्य्य। "होत पंक तें पदुम है, पावन परमा गेह"—दीन०।

परमाणु—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी पदार्थ के ऐसे छोटे से छोटे अंश जिसके फिर विभाग न हो सकें, बहुत ही छोटा अणु। **—वाद**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) सृष्टि के परमाणुओं से रचित मानने का सिद्धान्त (न्या० वैशे०)।

परमात्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० परमात्मन्] परमेश्वर, ब्रह्म।

परमाद्वैत—(संज्ञा, पु०) [सं० परम+अद्वैत] सभी भेद से रहित परमेश्वर, विष्णु।

परमाधिकार—(संज्ञा, पु०, सं०) विशेषाधिकार [प्रिरोगेटिव]।

परमानंद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परमानन्द, ब्रह्म के अनुभव का सुख, समाधि का सुख, आनन्द-स्वरूप ब्रह्म। "परमानन्द मगन मुनि राऊ"—[रामा०]।

परमान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रमाण] प्रमाण, सबूत, सत्य, या यथार्थ बात, सीमा, हद।

परमानना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रमाण] ठीक समझना या स्वीकार करना, मानना। प्रमाण अंगीकार करना, विश्वास करना, प्रमाण से पुष्ट या दृढ़ करना।

परमान्न—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) उत्कृष्ट या श्रेष्ठ अन्न, जैसे—खीर, पूड़ी आदि।

परमायु—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० परमायुस्] जीवन-काल की सीमा या हद, मनुष्य की परमायु भारत में १२५ वर्ष है।

परमार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पमार, पमर] क्षत्रियों की एक जाति, पँवार।

परमारथ*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० परमार्थ] मोक्ष, मुक्ति, सबसे उत्कृष्ट पदार्थ, यथार्थ तत्व। "स्वारथ, परमारथ सकल, सुलभ एक ही ओर"—तुल०।

परमार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) सबसे श्रेष्ठ वस्तु, मोक्ष, मुक्ति। "स्वारथ रत परमार्थ विरोधी"—[रामा०]। —**वादी** (**परमारथवादी**)-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० परमार्थवादिन्] ज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी, तत्वज्ञ, वेदान्ती। "जे मुनीश परमारथ वादी"—[रामा०]

परमार्थी—(वि०) [सं० परमार्थिन्] यथार्थ तत्व का खोजी, तत्वजिज्ञासु, मुमुक्षु।

परमिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चरम या अंत सीमा, मर्य्यादा, सीमित। [**परमितता** (संज्ञा, स्त्री०)]

परमुख*—(वि०, दे०) [सं० पराङ्मुख] प्रतिकूलाचारी, विरुद्ध।

परमेश, परमेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) भगवान् परमात्मा, ब्रह्म, विष्णु, शिव, [परमेसुर (दे०)]।

परमेश्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, देवी, [परमेसुरी (दे०)]। "परापराणाम् परमा, त्वमेव परमेश्वरि"—[दुर्गा०]।

परमेष्टी—(संज्ञा, पु०) [सं० परमेष्टिन्] ब्रह्मा, विष्णु, शिव। "परमेष्टी पितामह"—[अमर०]।

परमेसर, परमेसुर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परमेश्वर] परमेश्वर, भगवान।

परमोद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रमोद] प्रमोद, हर्ष, प्रसन्नता।

परमोधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रबोधन] प्रबोधना, जगाना, ज्ञानोपदेश या शिक्षा देना, दिलासा या धैर्य्य देना, समझाना। "बात बनाई जग ठगा, मन परमोधा नाहिं"—कबीर।

परयंक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्यंक] पलंग, बड़ी चारपाई, शय्या [परजंक (दे०)]।

परलय*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रलय] सृष्टि का प्रलय या नाश। [परलउ, परलव, परलै (दे०)] "पल में परलै होइगी"—कबीर०।

परला—(वि०, दे०) [सं० पर=उधर+ला प्रत्य०] उधर का, उस ओर का। **मुहा०—(ले) दरजे या सिरे का**-हद दरजे का, अत्यन्त, बहुत ज्यादा। [**परली** (स्त्री०)]

परवर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पटोल] परवल। (वि०, फ़ा०) पालने वाला—जैसे, गरीबपरवर। [**परवरी** (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०)]—**दिगार**—(संज्ञा, पु०, फ़ा०, यौ०) परमेश्वर।

परवरिश, परवस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, फ़ा०) परवरी, पालन-पोषण, सहायता।

परवल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पटोल] एक लता या उसका फल जिसकी तरकारी बनती है।

परवश्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परतन्त्रता, पराधीनता, परवशता।

परवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतिपदा] परिवा, परीवा, पड़वा, एकम। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चिन्ता, आशंका। ध्यान। परवाह।

परवाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० परवा] परवाह। परवाही।

परवानगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आज्ञा, हुक्म। अनुमति, मंजूरी।

परवानना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रमाण] ठीक समझना, मान लेना।

परवाना*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रमाण] प्रमाण। सबूत, यथार्थ या सत्य बात। सीमा, हद। (वि०, सं०) परतंत्र, पराधीन। [परमान (दे०)] (**किसी पर)—होना**-किसी पर आसक्त होना। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) आज्ञापत्र, पतंग। पाँखी, पतिंगा। "मगस को बाग में आने न दीजै। कि नाहक खून परवाने का होगा"—[स्फु०]।

परवाय—(संज्ञा, पु०) [सं० बाढ] ढक्कन। आच्छादन।

परवाल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रवाल] प्रवाल, मूँगा।

परवाह—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चिन्ता, ध्यान, आसरा। [**परवाही** (संज्ञा, स्त्री०)] (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रवाह] पानी का सोता, बहाव, धारा। काम जारी रहना, चलता हुआ क्रम, सिलसिला।

परवी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पर्व] पर्वकाल, उत्सव-समय, त्यौहार का दिन।

परवीन—(वि०, दे०) [सं० प्रवीण] निपुण, चतुर, दक्ष। कुशल। [परवीनता दे०)]।

परवेस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिवेष] चन्द्रमा या सूर्य के चारों ओर के हलके बादल का घेरा या मंडल।

परवेस, परवेश—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रवेश] प्रवेश, पैठना, घुसना।

परश—(संज्ञा, पु०, सं०) पारस पत्थर। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्पर्श] परस; स्पर्श, छूना।

परशु—(संज्ञा, पु०, सं०) कुठार, तवर, भलुवा। (अ०) फरसा। "परशु अछत देखौं जियत, वैरी भूप-किशोर"—[रामा०] ।—**राम**-(संज्ञा, पु०, सं०) जमदग्नि ऋषि के पुत्र, परसुराम (ग्रा०)।

परश्व—(अव्य०, सं०) परसों, आने वाला तीसरा दिन।

परसंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रसंग] प्रसंग, सम्बन्ध, लगाव। विषय का लगाव, अर्थ को संगति। पुरुष-स्त्री का संयोग, बात, विषय, अवसर, कारण, प्रस्ताव, प्रकरण, विस्तार।

परसंसा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रशंसा] प्रशंसा, बड़ाई, स्तुति।

परस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्पर्शन] स्पर्श, छूना, [**दरस-परस** (यौ०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परस] पारस पत्थर।

परसन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्पर्शन] छूना, छूने का कार्य या भाव। [**दरसन-परसन** (यौ०)]

परसना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्पर्शन] स्पर्श करना, छूना, छुलाना। (क्रि० स०, दे०) [सं० परिवेषण] परोसना। "परसत पद पावन सोक नसावन, प्रगट भई तप-पुञ्ज सही"—[रामा०]।

परसन्न*—(वि०, दे०) [सं० प्रसन्न] प्रसन्न, खुश।

परसपखान—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० स्पर्श-पाषाण] लोहे को सोना करने वाला पारस पत्थर।

परसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परसना] पत्तल, एक पुरुष का भोजन।

परसाद*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रसाद] प्रसाद। प्रसन्नता। कृपा, दया। देवता का दिया या उस पर चढ़ाया हुआ पदार्थ, भोजन।

परसाना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० परसना] छुलाना। भोजन बँटवाना। "दल पर फन परसावति"—सूर०।

परसाल, पारसाल—(अव्य०, दे०, यौ०) [सं० पर+साल फ़ा०] पिछले वर्ष, आगामी वर्ष।

परसिद्ध*—(वि०, दे०) [सं० प्रसिद्ध] प्रसिद्ध, विख्यात।

परसिया—(संज्ञा, पु०, दे०) हँसिया, दाँती।

परसु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परशु] कुठार, फरसा। परशु।

परसूत*†—(वि०, संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रसूत] संजात। उत्पन्न, पैदा, उत्पादक। (संज्ञा, पु०, दे०) एक रोग जो प्रसव के पीछे हो जाया करता है (वैद्य०)।

परसूती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रसूती] वह स्त्री जिसके हाल में बच्चा उत्पन्न हुआ हो या जिसके प्रसूत रोग हुआ हो।

परसेद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रस्वेद] प्रस्वेद, पसीना।

परसों—(क्रि० वि०) [सं० परश्वः] बीते दिन के पहले का दिन, आगामी दिन के बाद का दिन।

परसोतम*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पुरुषोत्तम] पुरुषोत्तम, विष्णु। श्रेष्ठ पुरुष।

परसौंहाँ—(वि०, दे०) [सं० स्पर्श] छूने या स्पर्श करने वाला।

परस्पर—(क्रि० वि०, सं०) आपस में, एक दूसरे के साथ। [परसपर (दे०)]

परस्परोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अलंकार, जिसमें उपमेय और उपमान परस्पर उपमान और उपमेय हों, उपमेयोपमान।

परस्मैपद—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रिया का एक भेद (सं० व्या०)।

परहरना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० परिहरण] छोड़ना, त्यागना। "अस विचारि परहरहु न मोरे"—[रामा०]।

परहार‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रहार] हार, चोट। (संज्ञा, दे०, दे०) [सं० परिहार] त्याग, उपाय, परिहार।

परहेज—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उन वस्तुओं से बचना जो स्वास्थ्य को हानिकर हों। दोषों, दुर्गुणों या बुराइयों से बचना, संयम।—**गार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) संयमकर्त्ता, संयमी।

परहेलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रहेलना] तिरस्कार, अनादर, अपमान करना।

परहोंक—(संज्ञा, पु०, दे०) बोहनी।

परांग—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रेष्ठ अंग, दूसरे का अंग।

परांगद—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव।

परांगव—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र।

परौंठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पलटना] परोठा, परौठा, परेठा, पराठा, तवा पर घी द्वारा सेंकी परतदार पूरी।

परांत—(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्यु ।—**काल**-(संज्ञा, पु०, यौ०) मृत्यु-काल ।

परा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दो विद्याओं में से एक, ब्रह्मविद्या, उपनिषद-विद्या । (संज्ञा, पु०, दे०) पाँति, पंक्ति, कतार (फ़ा०) ।—**गति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गायत्री ।

पराइ, पराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पर] अन्य या दूसरे की । (क्रि० अ०, दे०) भागना, "देखि न सकहिं पराइ विभूती"—[रामा०] ।

पराक—(संज्ञा, पु०, सं०) वृत्त-विशेष (पिं०) प्रायश्चित, विशेष तलवार या खड्ग, क्षुद्र रोग-जन्तु-भेद ।

पराकाष्ठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीमांत, चरम-सीमा, अंत ।

पराक्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) शक्ति, बल, पौरुष । उद्योग, पुरुषार्थ । [**पराक्रमी** (वि०)]

पराक्रमी—(वि०, पु०, दे०) [सं० पराक्रमिन्] बलिष्ठ, शक्तिशाली, पुरुषार्थी, वीर ।

पराक्रान्त—(वि०, पु०, सं०) वीर, पराक्रमी, शक्तिशाली, आक्रान्त ।

पराग—(संज्ञा, पु०, सं०) रज, फूल की धूल। पुष्प-रज, उपराग । "स्फुट पराग परागत पंकजम्", "नहिं पराग नहिं मधुर मधु"—बिहारी ।—**केसर**-(संज्ञा, पु०, सं०) फूलों के वे बारीक-बारीक सूत जिनकी नोकों पर पराग होता है ।

परागना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० उपराग] अनुरक्त या मोहित होना ।

पराङ्मुख—(वि०, सं०, यौ०) विमुख, विरुद्ध, उदासीन, जो ध्यान न दे ।

पराजय—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हार, पराभव [**पराजित**-(वि०) हारा हुआ ।]

पराजिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परज नाम की एक रागिनी (संगी०) ।

पराजिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक लता, विष्णु-कांता । (वि०, स्त्री०, सं०) हारी हुई ।

पराजेता—(वि०, पु०, सं०) पराजय करने वाला, विजयी ।

पराठा—(संज्ञा, पु०, दे०) तवा पर सेंकी हुई कम घी से बनी परतदार पूड़ी या रोटी । [परेठा, परौठा (दे०)]

परात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पात्र] बड़ा थाल, कोपर (प्रान्ती०) । "पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैननि के जल सों पग धोये"—नरो० ।

परातिक्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक औषधि, लाल रंग का पुनर्नवा ।

पराती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) परात, थाल, (संज्ञा, पु०, दे०) प्रातःकाल गाने के योग्य भजन, प्रभाती ।

परात्पर—(वि०, सं०, यौ०) सर्वश्रेष्ठ, सबसे बढ़िया । (संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा, विष्णु ।

परात्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा ।

परादन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) फारस देश का घोड़ा ।

पराधीन—(वि०, पु०, सं०, यौ०) परतंत्र, परवश । "पराधीन सुख सपनेहुं नाहीं"—[रामा०] ।

पराधीनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) परतंत्रता, परवश्यता । "पराधीनता दुख महा, सुख जग मे स्वाधीन"—वृन्द० ।

परान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्राण] प्राण, जीव, जान ।

पराना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पलायन] भागना । (संज्ञा, पु०, दे०) प्राण ।

परानी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्राणी] प्राणी, जीवधारी । (क्रि० अ०, सा० भू०, स्त्री०, दे०) भाग गई ।

परान्न—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पराया अनाज, दूसरे का भोजन । "परान्नं दुर्लभं लोके"—[स्फु०] ।

परापर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० पर+अपर] श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ दोनों गुणों वाला ।

पराभव—(संज्ञा, पु०, सं०) हार, पराजय, विनाश । अपमान, तिरस्कार । "मो तेहि सभा पराभव पावा" "भवभव विभव पराभवकारिणी"—[रामा०] ।

पराभिक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) वानप्रस्थ-मुनि जो थोड़ी सी भिक्षा से ही निर्वाह करते हैं ।

पराभूत—(वि०, पु०, सं०) पराजित, हारा हुआ, नष्ट, ध्वस्त, अपमानित । [**पराभूता** (स्त्री०)]

परामर्श—(संज्ञा, पु०, सं०) खींचना, पकड़ना । विचार, विवेचन, युक्ति, सलाह ।—**दात्रीसमिति** सलाहकारी की समिति । [एडवाइजरी कमेटी]

परामर्शन—(संज्ञा, पु०, सं०) पकड़ना, खींचना । सलाह करना ।

परामर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) सहना, तितिक्षा, सलाह, निवृत्ति ।

परामोद—(संज्ञा, पु०, सं०) फुसलावा, झाँसा, बहकावा ।

परामृत—(वि०, पु०, सं०) जिसने मृत्यु पर अधिकार प्राप्त कर लिया हो ।

परामृष्ट—(वि०, सं०) पकड़ कर खींचा हुआ, पीड़ित । विचारा हुआ । निर्णीत ।

परायण—(वि०, सं०) गया हुआ, गत । तत्पर, प्रवृत्त, लगा हुआ [परायन (दे०)] ।

परायत्त—(वि०, सं०) परतंत्र, पराधीन, परवश । "पति परायण थी वह जो जीवित रह पाती ?"—हरि० ।

पराया, पराय—(वि०, पु०, दे०) [सं० पर] अन्य या दूसरे का । [बिराना (दे०)] [**पराई** (स्त्री०)]

परायु—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ब्रह्मा ।

परार—(वि०, दे०) [सं० पर] पराया, अन्य या दूसरे का । (संज्ञा, पु०, दे०) पयाल । "धान को खेत परार तें जानो "—सुन्द० ।

परारध*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परार्द्ध] एक शंख की संख्या, ब्रह्मा की आयु का आधा समय ।

परारब्ध, परालब्ध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रारब्ध] भाग्य, दैव, अदृष्ट ।

परारि—(वि०, सं०) बीता या आगे आने वाला वर्ष ।

परार्थ—(वि०, सं०, यौ०) परोपकार, दूसरे का कार्य, जो दूसरे के अर्थ हो, परनिमित्तक ।

परार्द्ध—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक शंख की संख्या, ब्रह्मा की अर्ध आयु ।

परार्द्धि—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, ऋद्धिवान ।

परार्द्ध्य—(वि०, सं०) श्रेष्ठ, प्रधान । सर्वोत्कृष्ट ।

पराल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पलाल] घास, तृण । [पलाल (दे०)]

परावत—(संज्ञा, पु०, सं०) फालसा ।

परावन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पराना] भगदड़, भागना । [**परावना** (क्रि० अ०, दे०)] (संज्ञा, पु०) [सं० पर्व] पर्व ।

परावना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्व] पुण्य काल, पर्व । " पूरे पूरा व पुन्य तें, परो परावन आज "—मति० ।

परावर—(वि०, सं०) सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, पास या दूर का, इधर-उधर का ।

परावर्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०) लौटना, पलटाव, अदल-बदल, लेन-देन ।

परावर्त्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) बदली करने वाला [ट्रांसफरर] ।

परावर्त्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) लौटना, पलटना, पीछे फिरना, बदली, एक स्थान से दूसरे स्थान में जाना [ट्रांसफर] ।

परावर्त्तनीय—(वि०, सं०) परिवर्त्तन के योग्य । [ट्रांसफरेबुल] ।—**भत्ता**-(पु०) बदली होने पर मिलने वाला खर्च । [ट्रांसफर एलाउंस]—**वाद**-(पु०) अचानक क्रांति द्वारा स्थापित साम्यवाद का विरोधी मत [रिवर्सनिज्म] ।

परावर्त्तित—(वि०, सं०) पीछे फेरा या पलटा हुआ, उलटाया ।

परावसु—(सं०) असुरों का पुरोहित, एक गंधर्व, विश्वामित्र का एक पुत्र ।

परावह—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वायु-भेद ।

परावा, पराव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर] अन्य या दूसरे का, [परावा, पराया (दे०)] । "करैं मोह-वश द्रोह परावा"—[रामा०] ।

परावृत्त—(वि०, सं०) फेरा, लौटा या बदला हुआ, उलटा हुआ ।

परावृत्ति—(वि०, सं०) पलटाव, मुकदमे का पुनर्विचार, पुनरावृत्ति ।

परावेदी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भटकटैया, कटई, कटेरी, [**कंटकारी** (सं०)] ।

पराशर—(संज्ञा, पु०, सं०) वशिष्ठ और शक्ति के पुत्र (पुरा०), एक स्मृतिकार, व्यास के पिता ।

पराशरी—(संज्ञा, पु०) संन्यासी, भिक्षुक ।

पराश्रय—(वि०, सं०, यौ०) परतंत्रता, पराधीनता, परवशता, दूसरे का सहारा । [**पराश्रित** (वि०)] ।

परास*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं०पलाश] एक पेड़ और उसके पत्ते, टेसू, छिउल ।

परासी—(संज्ञा, वि०, दे०) एक रागिनी, (संगी०) ।

परासु—(वि०, सं०) प्राण-हीन, गतप्राण, मृतक, गत-जीवन ।

परास्त—(वि०, सं०) हारा हुआ, पराजित, विजित, पराभूत, ध्वस्त ।

पराह—(संज्ञा, पु०, सं०) भगदड़, भागोभाग । देश-त्याग, भगाड़ । [**पराहना** (क्रि० अ०, दे०)] ।

पराहत—(वि०, सं०) आक्रांत, हटाया हुआ, खदेड़ा हुआ, खंडित । (संज्ञा, पु०) आघात ।

पराह्ण—(वि०, सं०) अपराह्ण, दोपहर के पीछे का वक्त, तीसरा पहर, दिन का दूसरा भाग।

परिंदा—(संज्ञा, पु०,फ़ा०) पक्षी, चिड़िया।

परि—(उप० सं०) सर्वतोभाव, वर्ज्जन, व्याधि, शेष, इस प्रकार आख्यान। भाग, वीप्सा, आलिंगन, लक्षण, दोषाख्यान, दोष-कथन, निरसन। पूजा। व्यापकता। विस्मृति। भूषण। उपरमा। शोक। संतोष। भाषण। चारों ओर, अच्छी तरह, पूर्णता, अतिशय। नियम-क्रमादि अर्थसूचक है।

परिकंप—(संज्ञा, पु०, सं०) कँपकँपी, अत्यधिक भय।

परिक—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खोटी चाँदी।

परिकथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सहायक कथा, वह छोटी उपकथा जो मुख्य कथा को गति प्रदान करती है।

परिकर—(संज्ञा, पु०, सं०) कटि-बंधन, कमर-बंद। पलंग, चारपाई। परिवार। समारंभ। समूह। वृन्द। सरकारी। विवेक। "मृगविलोकि कटि परिकर बाँधा"—[रामा०]। साभिप्राय विशेषणों वाला एक अर्थालंकार (अ० पी०)।

परिकरमा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिक्रमा] परिक्रमा, प्रदक्षिणा। "अर्धासन बैठारि बहुरि परिकरमा दीन्ही"—नन्द० [भ्र० गी०]।

परिकरांकुर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अर्थालंकार, जिसमें साभिप्राय विशेष्य है।

परिकर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) कुकुम आदि के द्वारा अंग-संस्कार। स्नान करना। उबटना लगाना।

परिकर्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) सेवक, दास, टहलुआ, किंकर।

परिकल्पन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रवंचन, दगाबाजी, धोखाधड़ी, छल।

परिकल्पना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपाय। चिन्ता। चेष्टा। उद्योग। क्रिया। खाका, साँचा, आकृति, [डिजाइन]।

परिकल्पित—(वि०, सं०) गढ़ा हुआ। रचा हुआ। आविष्कृत, मनगढ़ंत, विभक्त।

परिकांक्षित—(संज्ञा, पु०, सं०) भक्त, तपस्वी।

परिकीर्ण—(वि०, सं०) व्याप्त, विस्तृत, समर्पित।

परिकीर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रस्ताव, स्तुति, बड़ाई, प्रतिष्ठा या प्रशंसा करना।

परिकूट—(संज्ञा, पु०, सं०) शहर के फाटक की खाँई।

परिक्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) टहलना, फेरी देना, घूमना।

परिक्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) चारों ओर लगाया जाने वाला फेरा। परिक्रमा। टहलना, घूमना। परिक्रमा करना। [**परिक्रमणीय** (वि०)]। "कामदगिरि का कर परिक्रमण"—निराला।

परिक्रमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रदक्षिणा, किसी के चारों ओर घूमना, फेरी या चक्कर देना, किसी देव-मंदिर आदि के चारों ओर घूमने का मार्ग। [परिकरमा (दे०)]

परिक्रय—(संज्ञा, पु०, सं०) भाड़ा, पारिश्रमिक, मजदूरी। द्रव्य देकर खरीदा हुआ सामान।

परिक्रान्त—(वि०, सं०) भयभीत, आक्रांत। पद-दलित, कुचला, रौंदा हुआ।

परिक्लान्त—(वि०, सं०) अत्यन्त थका हुआ।

परिक्लिष्ट—(वि०, सं०) जिसे अत्यन्त कष्ट हो। (संज्ञा, पु०) कष्ट, तकलीफ, परेशानी।

परिक्षत—(वि०, सं०) नष्ट-भ्रष्ट।

परिक्षव—(संज्ञा, पु०, सं०) छींक।

परिखा, परिच्छा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० परीक्षा] परीक्षा, इम्तहान, जाँच, देखभाल।

परीक्षित, परिक्षित—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परीक्षित] राजा परीक्षित। (वि०, दे०) परीक्षा लिया हुआ।

परिक्षिप्त—(वि०, सं०) खाँई आदि से घिरा हुआ।

परिक्षीण—(वि०, सं०) निर्धन, कंगाल।

परिखन—(वि०, दे०) [हि० परिखना] रक्षक, चौकसी या रखवाली करने वाला।

परिखना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० परखना] परखना, परीक्षा या जाँच करना, बुरा-भला पहिचानना। प्रतीक्षा करना। "तब लगि मोहिं परखियो भाई"—[रामा०]।

परिखा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खाँई, खंदक। "लंका कोट समुद परिखा है।"

परिखाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० परखना] जँचाना, परखाना, परीक्षा या प्रतीक्षा कराना।

परिख्यात—(वि०, सं०) विख्यात, प्रसिद्ध।

परिगणन—(संज्ञा, पु०, सं०) गिनना, गणना करना। [**परिगणित, परिगणनीय, परिगण्य** (वि०)]।

परिगणित—(वि०, सं०) ठीक-ठीक गिना हुआ।

परिगणित जाति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हरिजन, अछूत, [शिड्यूल्ड कास्ट]।

परिगत—(वि०, सं०) प्राप्त, लब्ध। विदित, ज्ञात। विस्मृत, गत। वेष्ठित।

परिगह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिग्रह] कुटुंबी, आश्रित जन, संगी-साथी।

परिगहना—(क्रि० स०, दे०) [हि० परिगह] ग्रहण या अंगीकार करना। "लटे लटपंटन का कौन परिगहैगो"—[विन०]।

परिगुंठित—(वि०, सं०) ढका या छिपा हुआ।

परिगृहीत—(वि०, सं०) मंजूर, स्वीकृत। मिला हुआ, शामिल।

परिगृह्या—(वि०, स्त्री०, सं०) विवाहिता स्त्री, धर्म-पत्नी।

परिग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वीकार, प्रतिग्रह, दान लेना। भार्या, पत्नी। विवाह। परिवार। ग्रहण। [**परिग्राह्य** (वि०, सं०)]। "येषु दीर्घं तपस, परिग्रहः"—[रघु०]। धनादि संग्रह।

परिग्रहण—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्ण रूप से लेना, ग्रहण करना। कपड़े पहनना। [**परिग्रहणीय** (वि०)]।

परिग्राह्य—(वि०, सं०) सद्व्यवहार के लायक।

परिघ—(संज्ञा, पु०, सं०) लोहे की लाठी। अर्गला। घोड़ा। तीर। भाला। बरछी। गदा। मुगदर। घर। फाटक। बाधा। प्रतिबंध।

परिघात—(संज्ञा, पु०, सं०) नाश। हत्या। अस्त्र।

परिघोष—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द-विशेष, मेघ-ध्वनि। कटु शब्द।

परिचय—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्ञान। जान-पहचान, जानकारी। अभिज्ञता, लक्षण। प्रमाण। किसी पुरुष के नाम, ग्राम, गुण आदि की विशेष जानकारी। **—पत्र**-(संज्ञा, पु०) किसी अधिकारी व्यक्ति का पत्र जिसमे व्यक्ति-विशेष के सम्बन्ध में परिचय दिया रहता है।

परिचयक—(वि०, सं०) ज्ञापक, बोधक, परिचय या जान-पहिचान कराने वाला।

परिचर—(संज्ञा, पु०, सं०) सेवक [टहलू (दे०)], टहलुआ (ग्रा०)। रोगी का सेवक, सहायक।

परिचरजा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० परिचर्या] सेवा। रोगी की सेवा-सुश्रूषा।

परिचरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दासी, टहलुई।

परिचर्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) टहल, सेवा, रोगी की सेवा-सुश्रूषा।

परिचायक—(संज्ञा, पु०, सं०) जान-पहचान या परिचय कराने वाला, सूचक, सूचित करने वाला।

परिचार—(संज्ञा, पु०, सं०) टहल, सेवा। टहलने की जगह।

परिचारक—(संज्ञा, पु०, सं०) भृत्य, सेवक, नौकर-चाकर, रोगी की सेवा करने वाला।

परिचारण—(संज्ञा, पु०, सं०) सुश्रूषा या सेवा करना, या संग करना या रहना।

परिचारना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० परि+चारण] सुश्रूषा करना।

परिचारिका—(संज्ञा, पु०, सं०) दास, सेवक।

परिचारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सेवकिनी, दासी। "ये दारिका परिचारिका करि पालबी करुनामयी"—[रामा०]।

परिचार्य—(वि०, स०) सेवा करने योग्य। सुश्रूषा के योग्य।

परिचालक—(संज्ञा, पु०, सं०) चलाने वाला।

परिचालन—(संज्ञा, पु०, सं०) चलाना, हिलाना, गति देना, कार्य-क्रम का जारी रखना, चलने की प्रेरणा करना। [**परिचालित, परिचालनीय** (वि०)], [**परिचालना, परिचालित** (क्रि० स०, दे०)]।

परिचित—(वि०, स०) चलाया या हिलाया हुआ, कार्य-क्रम जारी किया हुआ।

परिचिंतन—(संज्ञा, पु०, सं०) सोचना, चिंतन करना।

परिचित—(वि०, सं०) ज्ञात, जाना-समझा, जाना-बूझा, परिचय-प्राप्त, अभिज्ञ।

परिचिति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [पु० परिचय] जानकारी, अभिज्ञता, लक्षण, प्रमाण।

परिचुंबन—[संज्ञा, पु०, सं०) अत्यधिक स्नेहवश चूमना।

परिचेय—(वि०, सं०) परिचय के योग्य।

परिचो, परचौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिचय] परिचय।

परिच्छद—(संज्ञा, पु०, सं०) आच्छादन, कपड़ा, ढकने का वस्त्र, पट-परिधान, सामान, परिवार, राजसेवक, राजचिह्न।

परिच्छन्न—(वि०, सं०) छिपा या ढका हुआ, वस्त्र-युक्त, स्वच्छ किया हुआ।

परिच्छिन्न—(वि०, सं०) सीमा या मर्यादायुक्त, परिमित, विभक्त।

परिच्छेद—(संज्ञा, पु०, सं०) टुकड़े या खंड करना, विभाजन। पुस्तक का कोई स्वतंत्र भाग, अध्याय, प्रकरण।

परिच्छेदक—(संज्ञा, पु०, सं०) सीमा या अवधि नियत करने वाला, विभाजन करने वाला। सीमा। अवधि।

परिच्छेदन—(संज्ञा, पु०, सं०) अवधारण, पुस्तक का अध्याय या विभाजन।

परिछन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परिछन] [परछन (दे०)] विवाह में द्वाराचार पर वर की आरती आदि की रस्म।

परिछाहीं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० परछाईं] [परिछाँई (दे०)], प्रतिबिम्ब। "जल विलोकि तिनकी परछाहीं"—[रामा०]।

परिजंक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्यंक] पलंग, पर्यंक, प्रजक, पर्जंक [परजंक (दे०)]।

परिजटन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्यटन] पर्यटन, घूमना, फिरना, टहलना, यात्रा करना।

परिजन—(संज्ञा, पु०, सं०) परिवार, कुटुम्ब, नातेदार, स्वजन, सेवक। "बड़े भये परिजन सुखदाई" [रामा०]।

परिजिपत—(संज्ञा, पु०, सं०) उपेक्षित नायिका का व्यंगपूर्ण शब्दों के माध्यम से नायक की निष्ठुरता, निर्दयता का मार्मिक ढंग से वर्णन करना, सेवक का अपने मालिक की निर्दयता, कठोरता का बड़े कौशल से व्यक्त करना।

परिज्ञा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्ञान, बुद्धि।

परिज्ञात—(वि०, स०) ज्ञात, समझा-बूझा।

परिज्ञान—(वि०, पु०, सं०) पूरा ज्ञान।

परिणत—(वि०, स०) परिणाम प्राप्त, पक्व, पका या झुका हुआ, रूपांतर, बदला हुआ, पचा हुआ।

परिणति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) फल, रूपांतर होना या बदलना, प्रौढ़ता, पुष्टि, परिपाक, पचा हुआ, अंत। "परिणतिरलधार्यः यत्नः पंडितेन"।

परिणय—(संज्ञा, पु०, सं०) विवाह, ब्याह।

परिणयन—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्याहना, विव करना, विवाहना।

परिणाम—(संज्ञा, पु०, सं०) रूपांतर-प्राप्ति, बदल रूप-परिवर्तन, अवस्थांतर-प्राप्ति, विकृति, विका स्थिति-भेद (योग०) विकास, वृद्धि, परिपुष्टि बीतना, फल, नतीजा, एक अर्थालंकार जिसमें उ मेय का कार्य (उससे एक रूप होकर) या कं कार्य करता है (अ० पी०)। [कांसीक्वेंस]।—दर्शी–(वि०, यौ०) [सं० परिणामदर्शिन् दूरदर्शी, सूक्ष्मदर्शी, फल को विचार कर का करने वाला। [परिणाम-दर्शक (वि०)], [परि णामदर्शन–(संज्ञा, पु०, यौ०)]।—दृष्टि (संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) किसी कार्य के फल जान जाने की शक्ति।—वाद–(संज्ञा, पु०, यौ० सं०) संसार की उत्पत्ति और नाश आदि को नि परिणाम के रूप में मानना (सांख्य०)। [परिणाम वादी (वि०)]।

परिणामक—(वि०, सं०) परिणति या रूपांत प्रस्तुत करने वाला।

परिणामन—(संज्ञा, पु०, सं०) परिणति को प्रा करना।

परिणामिक—(वि०, स०) सुपाच्य, पचनेयोग्य

परिणामी—(वि०) [सं० परिणामिन्] जो लगा तार बराबर बदलता रहे। [परिणामिनी (स्त्री०)

परिणायक—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वामी, पति। पाँस खेलने वाला।—रत्न–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) बौ परिणाम के रूप में मानना (सांख्य०)। बौ चक्रवर्तियों के साधन-कोषों में से एक। [परिणाम वादी (वि०)]।

परिणाह—(संज्ञा, पु०, सं०) विस्तार, विशालता चौड़ाई, आकार, आकृति, दीर्घ श्वास।

परिणीत—(वि०, सं०) विवाहित, जिसका विवा हो चुका हो, पूर्ण, समाप्त।

परिणीता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाणिगृहीता, विवा हिता, ब्याही हुई स्त्री, ऊढ़ा (नायि०)।

परिणेता—(संज्ञा, पु०, सं०) भर्ता।

परिणेय—(वि०, पु०, सं०) ब्याहने योग्य, [परि णेया (हि०, स्त्री०)]।

परितः—(अ०, सं०) सर्वतः, चारो ओर, चारो ओर से।

परितच्छ, परतच्छ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रत्यक्ष) प्रत्यक्ष, सम्मुख, सामने, प्रगट, [प्रतच्छ (दे०)] ।

परितप्त—(वि०, सं०) अधिक तपा हुआ, अत्यधिक गरम, दुखी, संतप्त ।

परितप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संतप्त, दुखी होने का भाव, संताप, दुःख ।

परिताप—(संज्ञा, पु०, सं०) मनस्ताप, संताप, क्लेश, शोक, दुःख, पश्चात्ताप, आँच, ताव । "अति परिताप सीय मनमाहीं" । [**परितापित** (वि०)]

परितापन—(संज्ञा, पु०, हि०) संताप देना । [**परितापनीय** (वि०)] ।

परितापी—(वि०) [सं० परितापिन्] व्यथित, दुखित, पीड़ा देने या सताने वाला, जिसको परिताप हो । (वि०) [सं० प्रतापिन्] प्रतापी, [परतापी (दे०)] ।

परितिक्त—(वि०, सं०) बहुत तीता, कड़ुवा ।

परितुष्ट—(संज्ञा, वि०) [सं० परितुष्टि] अत्यन्त सतुष्ट, प्रसन्न, आनन्दित, हृष्ट ।

परितुष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सम्यक् संतोष, तृप्ति, आह्लाद, हर्ष, आनन्द ।

परितृप्त—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्यक् तृप्त ।

परितृप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तृप्ति, अघाई, सन्तोष, हर्ष, पूर्णता, संतुष्टि ।

परितोष—(संज्ञा, पु०, सं०) तृप्ति, प्रसन्नता, सतोष । "करु परितोष घोर संग्रामा"—[रामा०] । [**परितोषित** (वि०)] ।

परितोषक—(संज्ञा, पु०, सं०) तृप्ति या संतोष करने वाला, प्रसन्न करने वाला ।

परितोषण—(संज्ञा, पु०, सं०) परितुष्टि, संतोष । [**परितोषणीय** (वि०)] ।

परितोषी—(वि०, सं०) संतोषी ।

परितोस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परितोष] परितोष, संतोष, तृप्ति ।

परित्यक्त—(वि०, सं०] त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, दूर किया या फेंका हुआ । [**परित्यक्ता** (स्त्री०)] ।

परित्यजन—(संज्ञा, पु०, सं०) त्यागना, त्यागने का भाव या क्रिया ।

परित्याग—(संज्ञा, पु०, सं०) त्यागना, छोड़ना, निकालना या अलग कर देना । [**परित्यागी** (वि०)] । [एबांडनमेंट] ।

परित्याज्य—(वि०, सं०) त्यागने योग्य, छोड़ने के योग्य, अलग या दूर करने योग्य ।

परित्राण—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्षा, बचाव । "परित्राणाय साधूनाम्"—[गीता०] ।

परित्रात—(वि०, सं०) रक्षित, पालित ।

परित्राता—(वि०, सं०) रक्षक, पालक ।

परिदर्शक—(संज्ञा, पु०, सं०) निरीक्षण करने वाला । निरीक्षक [इन्सपेक्टर] ।

परिदर्शन—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्यक् दर्शन, अच्छी तरह से देखना, निरीक्षण [इन्सपेक्शन] ।

परिदहन—(संज्ञा, पु०, सं०) झुलसाना, जलाना ।

परिदान—(संज्ञा, पु०, सं०) परिवर्त्तन, विनिमय, बदल, लेन-देन ।

परिदाह—(संज्ञा, पु०, सं०) ताप, दाह, अत्यधिक जलन, अधिक मानसिक क्लेश, मनस्ताप ।

परिदेवक—(वि०, सं०) विलाप-कर्त्ता । दुःख देने वाला, दुःखदायी । जुआरी ।

परिदेवा—(संज्ञा, पु०, सं०) पश्चात्ताप, पछताना, विलाप । जुआ का खेल । " तंत्र का परिदेवना"—[गीता०] । [**परिदेवना** (स्त्री०)] ।

परिद्रष्टा—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्यक् दर्शन प्राप्त करने वाला ।

परिध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिधि] परिधि ।

परिधन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिधान] परिधान, धोती, कपड़ा, अधोवस्त्र ।

परिधान—(संज्ञा, पु०, सं०) वस्त्र धारण करना, कपड़ा पहनना, वस्त्र, धोती, कपड़ा । " परिधान वल्कलं"—भर्तृ० । " ओढ़ देखो तनिक तुम्हीं तो परिधान यह"—मैथिली० ।

परिधायक—(संज्ञा, पु०, सं०) घेरा, बेड़ा, बाड़ा ।

परिधावन—(संज्ञा, पु०, सं०) दौड़ना, भागना, पीछा करना ।

परिधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घेरा । मंडल । कुण्डल । गोला । कपड़ा, वस्त्र, परिवेश ।

परिधेय—(वि०, सं०) पहनने के योग्य । (संज्ञा, पु०, सं०) वस्त्र, कपड़ा ।

परिध्वंस—(संज्ञा, पु०, सं०) अपचय । नाश । क्षति हानि । एक वर्णसंकर जाति ।

परिनय*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिणय] विवाह, ब्याह, पाणि-ग्रहण ।

परिनिर्वाण—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्ण मोक्ष, मुक्ति, छुटकारा।

परिनिष्ठित—(वि०, सं०) परिज्ञात, ज्ञानी, प्रतिष्ठित, सम्मानित।

परिन्यास—(संज्ञा, पु०, सं०) काव्य में वह स्थल जो विशेष अर्थपूर्ण हो, नाटक में मूल घटना को संकेत से सूचित करना (नाट्य०)।

परिपंच—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रपंच] प्रपंच, बखेड़ा, झंझट। चालबाजी। [परपंच (दे०)]।

परिपक्व—(वि०, सं०) पूर्णतया पका या पचा हुआ। पूर्ण रूप से फूला हुआ, प्रौढ़, अनुभवी, रसज्ञ। [**परिपक्वता** (संज्ञा, स्त्री०)] कुशल, प्रवीण। "परिपक्व कपित्थ सुगंधि"—[भो० प्र०]।

परिपक्वावस्था—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परिपक्व होने की स्थिति।

परिपंथी—(संज्ञा, पु०) [सं० परिपंथिन्] शत्रु, रिपु, विपक्षी। चोर, ठग, लुटेरा।

परिपाक—(संज्ञा, पु०, सं०) पकना, पकाया जाना। प्रौढ़ता, पूर्णता, अनुभव। निपुणता, कुशलता, चतुरता, जानकारी, बहुदर्शिता।

परिपाटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रीति, पद्धति, ढंग, शैली। सिलसिला, क्रम, प्रथा। "प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी"—[रामा०]।

परिपार—(संज्ञा, पु०) [सं० पालि] सीमा, मर्यादा।

परिपार्श्व—(संज्ञा, पु०, सं०) बगल। (वि०) निकटवर्त्ती।

परिपालक—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्षा-कर्ता, पालन करने वाला।

परिपालन—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्षा, बचाव, बचाना। [**परिपाल्य, परिपालनीय** (वि०)]

परिपालित—(वि०, सं०) रक्षित, पाला हुआ।

परिपिष्टक—(संज्ञा, पु०, सं०) सीसा, धातु।

परिपीड़न—(संज्ञा, पु०, सं०) अत्यन्त पीड़ा देना। पेरना। अनिष्ट करना।

परिपीड़ित—(वि०, सं०) अत्यन्त पीड़ित।

परिपुष्ट—(वि०, सं०) जो भली-भाँति पाला-पोषा गया हो। [प्रौढ़, पोढ़ (दे०)]।

परिपूत—(वि०, सं०) पवित्र, शुद्ध।

परिपूरक—(वि०, सं०) पूरा करने वाला।

परिपूरन—(संज्ञा, दे०) [सं० परिपूर्ण] परिपूर्ण, पूर्ण तृप्त, अघाया हुआ, भरा हुआ, समाप्त किया हुआ।

परिपूरित—(वि०, सं०) भली भाँति या पूरा भरा हुआ, प्रपूर्ण।

परिपूर्ण—(वि०, सं०) पूर्ण रूप से तृप्त, भली भाँति अघाया या भरा हुआ, सब। "सुख-दुख के मधुर मिलन से, यह जीवन हो परिपूर्ण"—पंत।

परिपोषक—(वि०, सं०) पोषण-कर्त्ता, पालने वाला, भरण-पोषण करने वाला।

परिपोषण—(संज्ञा, पु०, सं०) पालना और सेना, पालन-पोषण करना। [**परिपोषणीय** (वि०)]।

परिपोषित—(वि०, सं०) पालित, सेवित, पाला-पोषा हुआ, परिपुष्ट।

परिप्रोत—(वि०, सं०) चारों ओर विस्तृत। "उमड़ पड़ा पावस परिप्रोत"—पंत।

परिप्लव—(संज्ञा, पु०, सं०) पैरना, तैरना। बाढ़। अत्याचार। नाव।

परिप्लावित—(वि०, सं०) सराबोर। बाढ़ के जल से व्याप्त। "हो उठा प्रीति जल से परिप्लावित"—पंत।

परिप्लुत—(वि०, सं०) डूबा हुआ, भीगा।

परिव्राजक—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) संन्यासी, अवधूत, सदा घूमने वाला।

परिभव, परिभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) अपमान, तिरस्कार, अनादर। पराजय, हार, पराभव। अवज्ञा। हेयबुद्धि।

परिभावना—(संज्ञा, पु०, सं०) चिंता, सोच। ऐसा वाक्य जो उत्सुकता या कुतूहल सूचित करे (साहि०)।

परिभाषण—(संज्ञा, पु०, सं०) निन्दा-सहित कथन, बुरा व्याख्यान या भाषण।

परिभाषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परिष्कृत भाषा, प्रज्ञप्ति, सांकेतिक नियम, स्पष्ट गुण-कथन। (सं०) यश-रहित कथन। लक्षण। परिचय। "पीड़ा भारी परिभाषा कहे रहे तो हितैषी" [डिफनीशन]—**शास्त्र**—(पु०) पारिभाषिक शब्दावली। [टर्मिनालजी]

परिभाषित—(वि०, सं०) भली भाँति कहा हुआ, जिसकी परिभाषा की गयी हो।

परिभाष्य—(वि०, सं०) कथन के योग्य।

परिभिन्न—(वि०, सं०) विकृत, क्षत, विदीर्ण।

परिभुक्त—(वि०, सं०) जो भोगा जा चुका हो, कार्य में परिणत किया हुआ।

परिभू—(संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर, भगवान।

परिभूत—(वि०) [सं० परि+भू+क्त] पराजित, अपमानित। हराया हुआ।

परिभूषित—(वि०, सं०) सजाया या सँवारा हुआ।

परिभोक्ता—(वि०, पु०, सं०) बिना अधिकार के भी दूसरों की वस्तु का उपयोग करने वाला।

परिभ्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) घूमना, टहलना, घूमना-फिरना, चक्कर लगाना, पर्यटन।

परिभ्रष्ट—(वि०, सं०) पतित, विनष्ट, गिरा हुआ, च्युत।

परिमंडल—(संज्ञा, पु०, सं०) गोला, घेरा।

परिमल—(संज्ञा, पु०, सं०) सुगंधि, सुवास। संभोग, मैथुन। उबटन, मलना। [**परिमलित** (वि०)]।

परिमाण—(संज्ञा, पु०, सं०) तौल, मात्रा, माप। पैमाइश, भूमापन [सर्वे]।

परिमाणक—(संज्ञा, पु०, सं०) तौल, मात्रा, बाँट।

परिमाता—(संज्ञा, पु०, सं०) माप, तौल करने वाला। [**परिमेय** (वि०)] [**परिमित** (वि०)]

परिमान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिमाण] माप, तौल, परिमाण।

परिमार्जक—(संज्ञा, पु०, सं०) परिष्कारक, परिशोधक, माँजने या धोने वाला।

परिमार्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) परिष्करण, परिशोधन, माँजना या धोना। [**परिमार्जनीय, परिमार्जित, परिमृष्ट** (वि०)]।

परिमार्जित—(वि०, सं०) शुद्ध या साफ किया या माँजा-धोया हुआ, परिष्कृत।

परिमित—(वि०, सं०) सीमाबद्ध, निश्चित संख्या में, उचित माप में, कम, थोड़ा, अल्प, संकीर्ण, सीमित।—**व्यय**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) नियमित या समझा-बूझा, ठीक-ठीक खर्च। किफायतशारी, कम खर्च, मापा, तौला हुआ, ठीक-ठीक। [**परिमित-व्ययिता** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**व्ययी**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) कम खर्च करने वाला, समझ-बूझ कर खर्च। करने वाला, किफायतशार।

परिमिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तौल, माप, सीमा, मर्यादा। परिमाण। "परिमिति-रहित अनंत प्रगति की"—गिरीश।

परिमेय—(वि०, सं०) जो तौला या मापा जा सके, तौलने या नापने के योग्य, थोड़ा, कम। "माभूदाश्रमपीडे परिमेय पुरः सरौ"—[रघु०]। "सृष्टि को निज बुद्धि से करता हुआ परिमेय"—दिनकर।

परिमोक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्ण मुक्ति या मोक्ष, निर्वाण, परित्याग।

परिमोक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) मोक्ष या मुक्ति करना या होना, परित्याग करना, छोड़ना।

परियंक, पर्जंक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्यंक] पर्यंक, पलंग, बड़ी चारपाई, [**प्रजंक, परजंक** (दे०)]।

परियंत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्यंत] पर्यन्त, तक, लौं। [परजंत, प्रजंत (दे०)]

परिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तामिल—परैयान] एक नीच जाति (दक्षिण भा०)। (सा० भू० क्रि० अ०, दे०) पड़ा। "मुख में परिया रेत"—कबीर०।

परिरंभ, परिरंभण—(संज्ञा, पु०, सं०) आलिंगन, गले या छाती से लगा कर मिलना। [**परिरंभ्य, परिरंभी, परिरंभणीय** (वि०)]।

परिरंभक—(संज्ञा, पु०, सं०) आलिंगन करने या मिलने वाला।

परिरंभना—(क्रि० स०, दे०) [सं० परिरंभ+ना प्रत्यय] आलिंगन करना, गले या छाती से लगाना।

परिरक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्वविद्यालय का प्रबंधक। पालक। अजायबघर का अध्यक्ष [क्युरेटर]।

परिरक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रत्येक ढंग से रक्षा करना, बचाव, पालन, निभाना।

परिरक्षित—(वि०, सं०) जिसका बचाव अच्छी तरह से किया गया हो, जिसका पालन-पोषण अच्छे ढंग से किया गया हो।

परिलंबन—(संज्ञा, पु०, सं०) भचक्र का २७ अंश पर एक कल्पित वृत्त-रेखा।

परिलुप्त—(वि०, सं०) लुप्त, क्षतिग्रस्त, नष्ट।

परिलेख—(संज्ञा, पु०, सं०) चित्र का ढाँचा, खाका, तस्वीर, चित्र खींचने की कूँची या कलम। उल्लेख, वर्णन।

परिलेखन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी के चारों ओर रेखायें खींचना, खाका, चित्र, वर्णन।

परिलेखना—(क्रि० स०, दे०) [सं० परिलेख + ना प्रत्य०] मानना, जानना, समझना ।

परिवदन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी में कमी या दोष दिखाना, निंदा करना, शोरगुल मचाना ।

परिवर्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) त्याग, मारण ।

परिवर्जित—(वि०, सं०) त्यक्त, त्यागा हुआ ।

परिवर्त—(संज्ञा, पु०, सं०) चक्कर, फेरा, घुमाव, विनिमय, बदला ।

परिवर्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) घूमने-फिरने या चक्कर खाने वाला, घूमने या चक्कर देने वाला, उलटने-पलटने या बदलने वाला ।

परिवर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) आवर्तन, चक्कर, फेरा, घुमाव । अदल-बदल, रूपान्तर, हेर-फेर । [**परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती** (वि०)] ।

परिवर्तित—(वि०, स०) रूपांतरित, बदला हुआ, बदले में प्राप्त ।

परिवर्ती—(वि०) [सं० परिवर्तिन्] बारम्बार बदलने वाला, परिवर्तनशील, जो बराबर घूमे । "परिवर्तिनि संसारे मृः को वा न जायते"—बाण० [**परिवर्तिनी** (स्त्री०)] ।

परिवर्द्धक—(संज्ञा, पु०, सं०) परिवर्द्धक, अति बढ़ाने या तरक्की करने वाला ।

परिवर्द्धन—(संज्ञा, पु०, सं०) परिवृद्धि, तरक्की, बढ़ती, प्रवर्धना ।—**परिवर्त्तन**-(पु०) सम्यक् रूप से बढ़ाना-घटाना और हेर-फेर करना । [एडिशन्स ऐंड आल्टरेशन्स]

परिवर्द्धित—(वि०, सं०) उन्नति या वृद्धि किया या बढ़ाया हुआ, प्रवर्धित ।

परिवह—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पवन, अग्नि की जीभ ।

परिवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतिपदा] प्रतिपदा, पड़िवा, परेवा, परीवा (ग्रा०) ।

परिवाद—(संज्ञा, पु०, सं०) अपवाद, निन्दा ।

परिवादिनी, परिवादिनि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वीणा, बाजा । "कलतया वचसः परिवादिनी स्वरजिता रजिता वशमाययुः"—माघ० ।

परिवादी—(वि०, सं०) निन्दक, निन्दा करने वाला ।

परिवा—(संज्ञा, पु०, सं०) वपन, बोना । मुंडन, मूँड़ना, जलाशय । अनुचारण । लावा, भुना हुआ चावल ।

परिवादित—(वि०, सं०) मुंडित, मुड़ा हुआ ।

परिवार—(संज्ञा, पु०, सं०) आवरण, कोष । वंश, कुटुम्ब, कुल । "सुत, वित, नारि, बन्धु, परिवारा" —[राम०] ।

परिवारित—(वि०, सं०) घिरा हुआ, आवृत, आवेष्टित ।

परिवास—(संज्ञा, पु०, सं०) घर, मकान, सुगन्धित, ठहरना ।

परिवाह—(संज्ञा, पु०, सं०) जलधारा का तीव्र बहाव, बाढ़, प्रवाह ।

परिवृत—(वि०, सं०) वेष्टित, आवृत, ढका, छिपाया या घिरा हुआ ।

परिवृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेष्टन, ढकने, घेरने या छिपाने वाला पदार्थ ।

परिवृत्त—(वि०, सं०) वेष्टित, घेरा हुआ, उलटा-पलटा हुआ ।

परिवृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेष्टन, घेरा, घुमाव, चक्कर । समाप्ति । बदला, अर्थान्तर, बिना शब्द परिवर्तन (न्या०) । (संज्ञा, पु०) एक अलंकार जिसमें लेन-देन या विनिमय का कथन हो (अ० पी०) ।

परिवृद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परिवर्द्धन ।

परिवेद—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्ण ज्ञान ।

परिवेदन—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्णज्ञान, विचारण-लाभ, बहस । दुःख । बड़े भाई से पहले छोटे का ब्याह होना ।

परिवेश—(संज्ञा, पु०, सं०) घेरा, वेष्टन । "पुण्य का रच तुमने परिवेश"—पंत ।

परिवेष—(संज्ञा, पु०, सं०) भोजन परोसना, परसना (ग्रा०), वेष्टन, घेरा, सूर्य आदि के चारों ओर का बादल का मंडल, कोट, परकोटा, शहर-पनाह । [**परिवेषणीय, परिवेष्टव्य, परिवेष्य** (वि०)] ।

परिवेषक—(संज्ञा, पु०, सं०) भोजन परसनेवाला, परसोइया ।

परिवेष्टन—(संज्ञा, पु०, सं०) आवरण, आच्छादन, घिराव, परिधि । [इनसरकिलमेंट] ।

परिवेष्टित—(वि०, सं०) आवृत, चौतरफा घिरा हुआ, आच्छादित ।

परिव्यक्त—(वि०, सं०) अत्यन्त स्पष्ट ।

परिव्रज्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भ्रमण, तपस्या, भिखारी-सा गुजर करना या जीवन-निर्वाह ।

परिव्राज, परिव्राजक—(संज्ञा, पु०, सं०) संन्यासी, परमहंस, यती ।

परिव्राट्, परिव्राड्—(संज्ञा, पु०, सं०) परिव्राज, संन्यासी, साधु ।

परिशिष्ट—(वि०, सं०) अवशेष, बाकी । (संज्ञा, पु०, सं०) किसी कारण ग्रंथ में प्रथम न दिया जा सका किन्तु अंत में दिया उपयोगी, आवश्यक या महत्त्वपूर्ण बातों का अंश । [सप्लीमेंटरी] ।

परिशीलन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी विषय को भली भाँति सोचते-विचारते ध्यान लगा कर पढ़ना । स्पर्श करना । "ललित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे"—[गीत०] [**परिशीलित, परिशीलनीय** (वि०)] ।

परिशुद्ध—(वि०, सं०) परिष्कृत, परिशोधित, पवित्र, शुद्ध, साफ-सुथरा ।

परिशुष्क—(वि०, सं०) बहुत सूखा ।

परिशेष—(वि०, सं०) बाकी, बचा हुआ । (संज्ञा, पु०, सं०) अवशेष, परिशिष्ट, अन्त ।

परिशोध—(संज्ञा, पु०, सं०) पूरी सफाई, पूर्ण शुद्धि, चुकता, बेबाकी ।

परिशोधक—(संज्ञा, पु०, सं०) चुकता या बेबाक करने वाला, सफाई या शुद्धि करने वाला ।

परिशोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्णरूप से शुद्ध या साफ करना, चुकता या बेबाकी करना, समाधान । [रेक्टिफिकेशन] । [**परिशुद्ध, परिशोधनीय, परिशोधित** (वि०)]

परिश्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) मेहनत, आयास, श्रम, क्लेश, उद्यम, थकावट, श्रांति ।

परिश्रमी—(वि०) [सं० परिश्रमिन्] मेहनती, उद्यमी, श्रम करने वाला ।

परिश्रय—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्षा या आश्रय का स्थान, परिषद्, सभा ।

परिश्रांत—(वि०, सं०) थका या हारा हुआ ।

परिश्रुत—(वि०, सं०) प्रसिद्ध, विख्यात ।

परिषत्, परिषद्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सभा-समाज, किसी विषय पर व्यवस्था देने वाली विद्वत्सभा ।

परिषद्—(संज्ञा, पु०, सं०) सभासद, सदस्य, दरबारी ।

परिषिक्त—(वि०, सं०) सींचा हुआ, जिस पर पानी छिड़का गया हो ।

परिष्करण—(संज्ञा, पु०, सं०) शुद्धि करना, माँजना, स्वच्छ करना ।

परिष्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) सफाई, शुद्धि, संस्कार, निर्मलता, स्वच्छता, भूषण, गहना, शृंगार, सजावट ।

परिष्कृत—(वि०, सं०) शुद्ध या स्वच्छ किया हुआ, धोया-माँजा हुआ, परिमार्जित ।

परिष्कृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शुद्धि या साफ करना, सँवारना ।

परिष्क्रिया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शोधन, मार्जन, धोना, सजाना, माँजना, सँवारना ।

परिष्वंग—(संज्ञा, पु०, सं०) आलिंगन ।

परिसंख्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गिनती, गणना । एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत या अप्रस्तुत बात उसके समान अन्य बात के व्यंग या वाच्य से रोकने के लिये कही जाय । इसके दो भेद हैं—(१) सप्रश्न, (२) अप्रश्न (अ० पी०) ।

परिसंवाद—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्तर्वार्ता, कई व्यक्तियों के बीच में होने वाली वार्त्ता (किसी निश्चित विषय पर) [सिम्पोजियम] ।

परिसर—(संज्ञा, पु०, सं०) निकास, कगर ।

परिसर्प—(संज्ञा, पु०, सं०) परिक्रमण । घूमना, फिरना, टहलना । खोजना ।

परिसर्पण—(संज्ञा पु०)] किसी पात्र का किसी की खोज में मार्गगत चिह्नों से भटकना । (सा० द०) ११ कुष्ठों में से एक (सुश्रुत) ।

परिसांत्वन—(संज्ञा, पु०, सं०) ढाढ़स बँधाना, सांत्वना देना ।

परिसीमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चौहद्दी, हद, अवधि ।

परिसीमित—(वि०, सं०) परिमित, सीमाबद्ध । "फिर भी वे थे काम-बंधन से परिसीमित ।"—बच्चन ।

परिसेवना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूजा, आराधना । "कर सुरोत्तम की परिसेवना"—हरि० ।

परिस्तान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) परियों का देश, सुन्दर स्त्रियों के जमाव का स्थान ।

परिस्थिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अवस्था । चारों तरफ की स्थिति [सिचुएशन] ।

परिस्पंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) अत्यधिक कंपित होना।

परिस्फुट—(वि०, सं०) जाहिर, प्रगट, प्रकाशित। खिला हुआ, फूला हुआ। [**परिस्फुटन** (संज्ञा, पु०)]।

परिस्यंद—(संज्ञा, पु०, सं०) झरना, रसना।

परिहँस, परिहस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिहास] हँसी, परिहास, दिल्लगी। ईर्ष्या, डाह। (संज्ञा, पु०, दे०) खेद, दुःख, रंज।

परिहत—(वि०, सं०) मारा, मृत।

परिहरण—(संज्ञा, पु०) छीन लेना। (सं०) परित्याग करना, छोड़ना, तजना। दोष-निवारण, निराकरण। [**परिहार्य, परिहर्तव्य, परिहृत** (वि०)]

परिहरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० परिहरण] तजना, छोड़ना, त्यागना। "जनक-सुता परिहरेउ अकेली" —[रामा०]।

परिहरि—(क्रि० स०, पू० का०) [हि० अ० परिहरना] त्याग या छोड़ कर। "गुरु समीप गवने सकुचि, परिहरि बानी वाम"—[रामा०]।

परिहा—(संज्ञा, पु०, दे०) पारी से आने वाला ज्वर, एक प्रकार का छंद (पिं०)।

परिहाना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रहार] प्रहार करना, मारना। (संज्ञा, पु०, दे०) हँसी-दिल्लगी, मजाक। खेल, क्रीड़ा।

परिहार—(संज्ञा, पु०, सं०) [वि० परिहारक] बुराई, ऐब, दोष। अनिष्ट आदि के दूर करने का उपाय या युक्ति, उपचार, औषधि, इलाज। परित्याग, त्यागने का काम। पशुओं के चरने की पड़ती भूमि। विजय-धन। छूट। खंडन, तिरस्कार, उपेक्षा, अनुचित कार्य का प्रायश्चित्त (सा० द०)। (संज्ञा, पु०, सं०) राजपूतों का एक वंश।

परिहारना—(क्रि० स०, दे०) प्रहार करना, मारना। "अभिमनु धाई खड्ग परिहारे"।

परिहारी—(संज्ञा, पु०) [सं० परिहारिन्] त्याग, निवारण, दोष या कलंक को छिपाने या मिटाने वाला। (संज्ञा, स्त्री०, प्रान्ती०) हल की एक लकड़ी।

परिहार्य—(वि०, सं०) परिहार-योग्य, बचाव या त्याग के योग्य, निवारण करने योग्य।

परिहास—(संज्ञा, पु०, सं०) उपहास, दिल्लगी, कुतूहल, कौतुक। "रिस परिहास कि साँचहु साँचा"—[रामा०]।

परिहास्य—(संज्ञा, पु०, सं०) हँसने या हास्य के योग्य, उपहास्य, हँसी का पात्र।

परिहित—(वि०, सं०) वेष्टित, आच्छादित, परिधान किया या पहना हुआ।

परिहृत—(वि०, सं०) त्यक्त, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ। छिपाया हुआ। खंडित।

परी—(संज्ञा, फ़ा०) तेल निकालने की करछी। अप्सरा, देवांगना, स्वर्ग-वधूटी, परम सुन्दरी, काफ पहाड़ की कल्पित सुन्दर परदार स्त्री (फ़ा०)।—**जाद**-(वि०, फ़ा०) अत्यन्त सुन्दर।

परीच्छित—(वि०, सं०) अन्य या दूसरे द्वारा ईप्सित, चाहा हुआ। [**परीक्षित** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] परीक्षित राजा। (वि०) जाँचा हुआ।

परीक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) परीक्षा या इम्तहान लेने वाला, जाँच-पड़ताल करने वाला। [**परीक्षिका** (संज्ञा, स्त्री०)] [इक्जामिनर]।

परीक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) जाँच-पड़ताल करना, इम्तहान लेना, निरीक्षण।—**काल**-जिसके बीत जाने के बाद स्थायी रूप से नियुक्ति होती है। [प्रोबेशन]। [**परीक्षणीय** (वि०)]।

परीक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इम्तहान, जाँच-पड़ताल, निरीक्षण, समीक्षा, गुण-दोष, सत्यासत्य, योग्यतादि का निर्णय। [परीच्छा (दे०)]। [इक्जामिनेशन]।—**काल**-(संज्ञा, पु०) परीक्षा का समय।—**भवन**-(संज्ञा, पु०) परीक्षा देने का भवन।—**शुल्क**-(संज्ञा, पु०) परीक्षा के लिये द्रव्य, फीस।

परीक्षित—(वि०, सं०) जिसकी जाँच या परीक्षा की गयी हो। (संज्ञा, पु०, सं०) अर्जुन का पौत्र, अभिमन्यु-सुत जिनकी तक्षक के काटने से मृत्यु हुई। इसके समय में कलियुग का प्रवेश हुआ था।

परीक्ष्य—(वि०, सं०) जाँच या परीक्षा के योग्य।

परीखना—(क्रि० स०, दे०) [हि० परखना] परखना, जाँचना।

परीछत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परीक्षित] परीक्षित, जाँची हुई, अनुभूत। राजा परीक्षित।

परीछा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० परीक्षा] इम्तहान। जांच, परीक्षा। [परिच्छा (दे०)]।

परीछित—(क्रि० वि०, दे०) [सं० परीक्षित] जाँची या परीक्षा की हुई। अवश्यमेव।

परीत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रेत] प्रेत, भूत, [परेत (दे०)] ।

परीताप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिताप] परिताप, दुःख, शोक ।

परीदाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिदाह] परिदाह, जलना ।

परीषह—(संज्ञा, पु०, सं०) जैन धर्म्मानुसार २२ प्रकार के त्याग, सहन ।

परु—(संज्ञा, पु०) स्वर्ग । समुद्र । पहाड़। ग्रंथि ।

परुआ—(संज्ञा, स्त्री०) जमीन का एक प्रकार-विशेष । बदला । (वि०) कामचोर ।

परुई—(संज्ञा, स्त्री०) भूजने की नाँद ।

परुख—(वि०, दे०) [सं० परुष] परुष, कटु । "परुख बचन सुनि काढ़ि असि"—[रामा०] ।

परुखाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० परुख+आई प्रत्य०] कठोरता, परुषता । [परुखई (दे०)] ।

परुष—(वि०, सं०) कड़ा, कठोर, निर्दय, निठुर, बुरी लगने वाली बात [**परुषा** (स्त्री०)] ।—**वचन**-(संज्ञा, पु०) प्रिय न लगने वाली बात । कठोर वचन ।

परुषता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कड़ाई, कठोरता, निर्दयता, कर्कशता । [**परुषत्व** (संज्ञा, पु०)] ।

परुषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) टवर्ग, संयुक्त वर्ण तथा र, श, ष, क्ष, दीर्घ समास वाली पद-योजना या वृत्ति (काव्य०) । रावी नदी ।

परुषाक्षर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) टवर्ग के कठोर या संयुक्त अक्षर, व्यंग्य या निष्ठुर वचन, तानाजनी, कुवचन, कटूक्ति ।

परुषोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) कठोर या कड़े वाक्य, नीरस वचन, गाली-गलौज ।

परे—(अव्य०) [सं० पर] उधर, आगे, उस ओर, अलग । बाहर । ऊपर । बढ़कर । पीछे ।

परेई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० परेवा] कबूतरी । पंडुकी । फाखता (फ़ा०) । "पट पाँखे भख काँकरे सदा परे संग" ।—बिहारी ।

परेखना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रेक्षण] परखना, जाँचना, राह या आसरा देखना ।

परेखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परीक्षा] परीक्षा, प्रतीति, विश्वास, पश्चात्ताप, खेद । "सुआ परेखा का करै "—[स्फु०] ।

परेग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० पेग] छोटा काँटा ।

परेत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रेत] प्रेत, भूत ।

परेता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परितः] सूत लपेटने की चरखी (जुलाहा०) ।

परेताना—(क्रि० स०, दे०) [सं० परितः] चरखी में डोर लपेटना, सूत की फेंटी बनाना ।

परेर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर=दूर, ऊँचा + एर प्रत्य०] आसमान, आकाश ।

परेवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पारावत] कबूतर, पेंडुकी, फाखता । (फ़ा०) हरकारा, चिट्ठीरसाँ । [**परेई** (स्त्री०)] । "सुखी परेवा जगत में, तूही एक विहंग"—बिहारी ।

परेश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) परमेश्वर ।

परेशान—(वि०, फ़ा०) व्याकुल, उद्विग्न, व्यग्र ।

परेशानी—(संज्ञा, स्त्री०) उद्विग्नता, घबराहट ।

परेष्टि—(संज्ञा, पु०) ब्रह्म ।

परेष्टुका—(संज्ञा, स्त्री०) अनेक बच्चे दे चुकने वाली गाय ।

परेह—(संज्ञा, पु०, दे०) कढ़ी, जूस, रसा ।

परों, परौं*†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० परसों] परसों । [**कल-परसों, परसों-नरसों** (यौ०)] ।

परोक्तदोष—(संज्ञा, पु०) न्यायालय में गलत गवाही देने का अपराध ।

परोक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) अभाव, गैरहाजिरी (वि०, सं०) जो देखा न गया हो । गुप्त छिपा ।—**भूत**-(यौ०) विगत भूतकाल (व्या०) "परोक्षे कार्यहंतारम् प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्" ।—**मतदान**-(पु०) लिखित रूप में मत देना [एबसेंट वोट] ।—**सत्ता**-(पु०) आँखों से ओझल सर्वव्यापी सत्ता, ईश्वर ।

परोक्षार्थ—(वि०, सं०) जिसका लक्ष्य रहस्यपूर्ण हो ।

परोजन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रयोजन प्रयोजन, मतलब, आवश्यकता ।

परोपकार—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) उपकार दूसरों की भलाई या हित का कार्य्य ।—**वाद**-(पु० परमार्थवाद, दूसरे की भलाई का उद्देश्य बनाने वाला वाद । [ऐल्ट्रूइज्म] ।

परोपकारी—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० परोप कारिन्] दूसरों का हित या भलाई करने वाला उपकारी । [**परोपकारिणी** (स्त्री०)] ।

परोपदेश—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दूसरों को शिक्षा देना, हित की बात कहना । "परोपदेशे-पांडित्यं सर्वेषाम् सुकुरं नृणाम्" ।

परोपदेशक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) दूसरों को शिक्षा देने वाला, दूसरों के हित की बात कहने वाला ।

परोना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० पिरोना] पिरोना, पोहना, गूँथना ।

परोरना†—(क्रि० स०, दे०) जादू या मंत्र पढ़ कर फूँकना ।

परोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) परवल ।

परोल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० पेरोल] सैनिकों का संकेत शब्द जिसके कहने से आनेजाने में रुकावट नहीं होती ।

परोस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रतिवास] पड़ोस । [**पास-परोस** (यौ०)] । "परबत परे परोस बसि, परे मामिला जान"—वृं० ।

परोसना‡—(क्रि० स०, दे०) [हिं० परसना] परसना, भोजन देना, परसना ।

परोसा‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० परोसना] एक व्यक्ति के भोजन का पूरा सामान, पत्तल । परसा (ग्रा०) ।

परोसी, पड़ोसी—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रतिवासी] पड़ोस में रहने वाला । [**परोसिन** (स्त्री०)] । "प्यारे पद्माकर परोसिन हमारी तुम" ।

परोसैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० परसना] परसने या परोसने वाला, परसैया (ग्रा०) ।

परोहन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्ररोहण] सवारी गाड़ी आदि यान, वाहन ।

परोहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परश्वः] चरस, पुर, पानी भरने का चमड़े का थैला ।

पर्कटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पाकर नामक वृक्ष ।

पर्चा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पुरजा । परख, जाँच । परीक्षा, अनुभव, चिन्हान, परिचय, [परिचौ (दे०)] । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) टुकड़ा, परीक्षा का प्रश्न या उत्तर-पत्र ।

पर्चाना—(क्रि० स०, दे०) भेंट या परिचय कराना, हिलाना-मिलाना ।

पर्चन—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० परचूर्ण] चावल, आटा, दाल और मसाला आदि भोजन की सामग्री या सामान, परचून (ग्रा०) ।

पर्चूनिया—(संज्ञा, पु०, दे०) आटा, दाल आदि बेचने वाला, मोदी ।

पर्चूनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आटा-दाल आदि का व्यापार, मोदी का काम ।

पछँती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा छप्पर, छोटी छानी, परछती (ग्रा०) ।

पर्छा—(संज्ञा, पु०, दे०) तकुआ, तेकुवा (ग्रा०), सूजा, जला हुआ धन । मिट्टी का घड़ा ।

पर्छाईं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतिछाया] प्रतिबिंब, छाया, परछाहीं ।

पर्जंक, प्रजंक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्यंक] पलंग, बड़ी चारपाई, [परजंक (दे०)] ।

पर्ज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक रागिनी (संगीत) ।

पर्जनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दारुहलदी ।

पर्जन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र । विष्णु । मेघ, बादल । [परजन्य (दे०)] "परजन्य जथारत ह्वै दरसौ"—घना० ।

पर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) वट-पात्र, पत्ता, पत्ती, पात (ग्रा०), [पन (दे०)] पान ।—**कपूर**–(संज्ञा पु०, दे०, यौ०) [सं० पर्णकपूर] पान-कपूर, कपूर-पान ।—**कार**–(संज्ञा, पु०, सं०) बरई, तमोली ।—**कुटी**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पर्ण-शाला, पत्तों का झोपड़ा या झोपड़ी, पर्नकुटी । "रघुबर पर्णकुटी तहँ छाई"—[रामा०] ।—**कुच**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) व्रत-विशेष जिसमें ढाक, गूलर और बेल के पत्तों का काढ़ा तीन दिन तक पिया जाता है ।—**कृच्छ्र**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) व्रत-विशेष जिसमें पाँच दिन तक क्रम से, ढाक, गूलर, कमल, बेल और कुश के पत्तों का काढ़ा पिया जाता है ।—**खंड**–(संज्ञा, पु०, सं०) वनस्पति, जिस पेड़ में फूल के बिना फल होते हों ।—**चोरक**–(संज्ञा, पु०, सं०) गंधद्रव्य-विशेष ।—**नर**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) ढाक के पत्तों का बना पुतला जो मृतक के बदले जलाया जाता है ।—**भोजन**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) वह जीव जो केवल पत्ते खाकर रहे, बकरी, छेरी, पर्णभोजी ।—**मणि**—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) हरितमणि, पन्ना, एक प्रकार का अस्त्र ।—**माचल**–(संज्ञा, पु०, सं०) कमरख वृक्ष ।—**मृग**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पत्तों में घूमने वाला जीव, गिलहरी, बंदर आदि ।—**राह**–(संज्ञा, पु०, सं०) बसंत ऋतु ।—**लता**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) पान की

बेल।—**वल्कल**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक ऋषि।—**वल्ली**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) पलासी नाम की लता।—**शबर**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देशविशेष।—**शाला**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पत्तों की झोपड़ी, पर्णकुटीर।—**शालाग्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) भारतवर्ष का एक पहाड़।

पर्णांक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि जिनसे पार्णिक गोत्र चला (पु०)।

पर्णाय—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य जो इन्द्र द्वारा मारा गया था (पु०)।

पर्णासि—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल, पानी में बना हुआ घर, सागर, समुद्र।

पर्णास—(संज्ञा, पु०, सं०) तुलसी।

पर्णिक—(संज्ञा, पु०, सं०) पत्ते बेंचने वाला, बारी।

पर्णिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शालपर्णी, मान कद, अग्नि मथने की अरणी।

पर्णिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मषवन। (संज्ञा, पु०, सं०) सुगंध वाला।

पर्णी—(संज्ञा, पु०) [सं० पर्णिन्] पेड़, वृक्ष, एक औषधि। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) अप्सरा-भेद।

पर्त—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परत] परत, तह।

पर्दनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, हि०) पर्दा, धोती।

पर्दा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परदा] परदा, यवनिका। सितार के बंद। कान का परदा।—**नशीन**-पर्दे में रहने वाली स्त्री। **मुहा०—फाश करना**-गुप्त या गोपनीय बात का प्रगट करना।

पर्पट—(संज्ञा, पु०, सं०) पित्तपापड़ा, पापड़। "छिन्नोद्रवा पर्पट वारिवाहः"—लोलं०।

पर्पटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुजरात की मिट्टी, गोपीचंदन, पानड़ी, पपड़ी, स्वर्ण पर्पटी, रस पर्पटी, नाम की औषधि (वै०)।

पर्पटीरस—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) एक प्रकार का रस (वैद्य०)।

पर्पटीक—(संज्ञा, पु०) सूर्य, अग्नि। जलाशय।

पर्यंक—(संज्ञा, पु०, सं०) पलंग, बड़ी चारपाई। [प्रजंक, पर्जंक (दे०)]।—**बंधन**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) योग का एक प्रकार का आसन।

पर्यंत—(अव्य०, सं०) तक, लौं।—**देश**-(संज्ञा, पु०, स्त्री०, सं०) किसी देश के अंत का देश, सीमांत देश।—**भूमि**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी, नगर या पर्वत आदि के समीप की भूमि, परिसर भूमि।

पर्यंतिका—(संज्ञा, स्त्री०) नैतिक ह्रास, गुणों का नाश।

पर्यटक—(संज्ञा, पु०, सं०) भ्रमण करने या घूमने वाला।

पर्यटन—(संज्ञा, पु०, सं०) भ्रमण, यात्रा, घूमना-फिरना।

पर्यनुयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) जिज्ञासा, किसी अज्ञात विषय के ज्ञात करने हेतु प्रश्न।

पर्यवलोकन—(संज्ञा, पु०, सं०) दृष्टिकोण [परव्यू]।

पर्यवदात—(वि०, सं०) पूर्ण रूप से शुद्धि।

पर्यवसान—(संज्ञा, पु०, सं०) चरम, अंत, समाप्ति, शेष, परिमाण, मिलना। अर्थ। पर्याय निश्चित करना। [**पर्य्यवसित** (वि०)]।

पर्यवस्था—(संज्ञा, स्त्री०) विरोध में कही जाने वाली बात, विरोध।

पर्यसन—(संज्ञा, पु०, सं०) फेंकना, दूर करना।

पर्यसित—(वि०, पु०) दूर किया हुआ, निकाला हुआ।

पर्यस्तापह्नुति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) एक अर्थालंकार जिसमें वर्ण्य वस्तु का गुण छिपाकर उसी का दूसरे पर आरोपण हो (अ० पी०)।

पर्याप्त—(वि०, सं०) यथेष्ट, पूरा, काफी (फ़ा०), आवश्यकतानुसार, प्राप्त, समर्थ।

पर्याय—(संज्ञा, पु०, सं०) तुल्यार्थवाची शब्द, समान अर्थ वाले शब्द, एकार्थी शब्द, एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का अनेक में और अनेक वस्तुओं का एक में आश्रित होना कहा जाय (अ० पी०)। पाला। क्रम। आनुपूर्वी। परिवर्त्तन। प्रकार। अवसर। निर्माण। [ओसरी (दे०)] बारी।—**वाचक,—वाची**-(संज्ञा, पु०, सं०) एकार्थबोधक।—**शयन**-(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पहरेदारों का बारी-बारी से सोना।

पर्याप्ति—(संज्ञा, स्त्री०) काफी मात्रा से प्राप्ति का भाव, समष्टि, योग्यता, तृप्ति।

पर्यायी—(वि०, सं०) समानार्थसूचक। "हिन्दुत्व शब्द है मानवता का पर्यायी"—बच्चन।

पर्यायोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) एक अर्थालंकार जिसमें घुमा-फिरा कर बात कही जाय या किसी रोचक ब्याज से कार्य-सिद्धि सूचित की जाय (अ० पी०)।

पर्यालोचना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) समीक्षा, पूरी जाँच-पड़ताल, विचार-पूर्वक देखना, गुण-दोष ज्ञात करना।

पर्यावर्त्त—(संज्ञा, पु०) वापस आना, लौटना, घूम-फिर कर फिर यथास्थान आ जाना ।

पर्यासन—(संज्ञा, पु०) चक्कर, फेरा ।

पर्याहार—(संज्ञा, पु०) जूआ ले जाना । बोझ । अन्न जमा करना ।

पर्युत्सुक—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) उद्विग्न-चित्त ।

पर्युपासक—(संज्ञा, पु०, सं०) दास, सेवक ।

पर्युपासन, पर्युपासना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) सेवा, दासता ।

पर्व—(संज्ञा, पु०, सं०) पुण्य या धर्मकाल, उत्सव-दिन, त्यौहार । टुकड़ा, भाग, अध्याय ।—**काल**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पुण्य या धर्म-काल ।—**संधि**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) प्रतिपदा और पूर्णिमा या अमावस्या के बीच का समय, सूर्य या चंद्र-ग्रहण का समय ।

पर्वणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूर्णिमासी, पूर्णिमा ।

पर्वत—(संज्ञा, पु०, सं०) पहाड़ । एक प्रकार के सन्यासी । [**पर्वतीय** (वि०)] ।—**ज**–(संज्ञा, पु०, सं०) पहाड़ से उत्पन्न ।—**नंदिनी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०, यौ०) पार्वती । "सुत मैं न जायो राम-सम, यह कह्यो पर्वतनंदिनी"—[राम चं०] ।—**राज**–(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) हिमालय या सुमेरु पहाड़ ।

पर्वतक—(संज्ञा, पु०, सं०) पहाड़ ।

पर्वतात्मज—(संज्ञा, पु०, सं०) मेनाक ।

पर्वतारि—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) इन्द्र । "वज्र को अखर्व गर्व गंज्यो जेहि पर्वतारि भागे हैं सुपर्व सर्व लैलै संग अंगना "—[रामा०] ।

पर्वताशय—(संज्ञा, पु०) मेघ, बादल ।

पर्वताश्रय—(संज्ञा, पु०) [सं० पर्वत+आश्रय] पहाड़ी, पर्वत-निवासी ।

पर्वतास्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसके फेंकने से शत्रुसेना पर पत्थर पड़ने लगते थे या वह सेना पहाड़ों से घिर जाती थी ।

पर्वतिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्वत+इया प्रत्य०] लौकी, कद्दू । [**पहाड़ी** (वि०, दे०)]

पर्वती—(वि०, दे०) [सं० पर्वतीय] पर्वतीय, पहाड़ी, पहाड़ पर रहने या होने वाला, पहाड़-सम्बन्धी । "गूँठ पर्वती नकुला घोड़ा त्यों दरयायी पार के घोड़ "— [आल्हा०] ।

पर्वतीय—(वि०, सं०) पहाड़ पर रहने या होने वाले, पहाड़-सम्बन्धी, पहाड़ी ।

पर्वतेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) हिमालय । शिव ।

पर्वर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० परवल] परवल, [**पटोल** (सं०)], [परवर (दे०)] एक तरकारी ।

पर्वाह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० परवाह] परवाह, चिन्ता ।

पर्विणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पर्व-सम्बन्धी, पर्व की ।

पर्हेज, परहेज—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अपथ्य या बुराई का त्याग, अलग या दूर रहना । छोड़ना, बचना, त्यागना ।

पलंका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पर+लंका] बहुत दूर का स्थान या जगह ।

पलंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पल्यंक] पर्यंक, बड़ी चारपाई । [**पलंगड़ी** (स्त्री० अल्पा०)] [पलंगा (दे०)]।—**पोश**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० पलंग+पोश फ़ा०] पलंग पर डालने की चादर ।—**पर पड़ना (पकड़ना)**–अधिक बीमार हो जाना ।

पलंगिया†—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० पलंग+इया प्रत्य०] खटिया, छोटा पलंग, चारपाई ।

पल—(संज्ञा, पु०, सं०) घड़ी का ६०वाँ भाग, चार कर्ष की तौल, माँस, धान का पयाल । धोखेबाजी । तराजू । [**पलक** (संज्ञा, पु०, सं०)] पलक । **मुहा०—मारते या पलक मारते में**–अतिशीघ्र, आँख झपते, तुरंत, क्षण में ।—**के पल में**–क्षण में, अत्यन्त थोड़े काल में ।

पलई—(संज्ञा, स्त्री०,दे०) [सं० पल्लव] पेड़ की कोमल डाली या टहनी ।

पलक—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० पल+क] आँख के ऊपर का चमड़ा, पपोटा । " राखेहु पलक नैन की नाँई "—[रामा०] ।—**दरिया**†–(वि०, दे०, यौ०) [हि० पलक+दरिया फ़ा०] अति उदार, बड़ा दानी ।—**नेवाज**–(वि०, दे०, यौ०) [हि० पलक+नेवाज] पलकदरिया, अति उदार, अति दानी । **मुहा०—झपते (मारते, लगते)**–बहुत थोड़े काल में, बात कहते, बात की बात में । "पलक मारते काम हो जाय सारा"—अ० सिं० । **किसी के रास्ते में या किसी के लिये—बिछाना**–अति

प्रेम से स्वागत करना।—**भाँजना**-पलक हिलाना। —**मारना**-आँखों से संकेत या इशारा करना, पलक झपकाना या गिराना।—**लगना (लगाना)** -आँखें बंद होना या मुँदना, पलक झपकना, झपकी लगना, नींद आना।—**से पलक न लगना**-नींद न आना, टकटकी बँधी रहना।—**दूर करना**-सामने से हटाना। "पलक-दूर नहि कीजिये"—गिर०।

पलका*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्यंक] पलंग, बड़ी चारपाई। [**पलकी (स्त्री०)**]

पलक्या—(संज्ञा, पु०, दे०) पालक का शाक या तरकारी।

पलच्चर—(संज्ञा, पु०, स०, यौ०) एक प्रकार के उपदेवता।

पलटन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० बटालियन या प्लैटून] अंग्रेजी सेना का एक दल जिसमें २०० के लगभग सिपाही होते हैं, समुदाय, [पल्टन (दे०)]।

पलटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रलोठन] उलट जाना, परिवर्तित होना, बदलना, काया-पलट हो जाना। घूमना-फिरना। लौटना, वापस होना। (क्रि० स०) बदला करना। उलटना।

पलटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पलटना] परिवर्त्तन, परिवर्तित, बदला, प्रतिकार। प्रतिफल। **मुहा०—खाना**-स्थिति या दशा का फिरना या उलटना।—**लेना**-बदला लेना, लौटा लेना, वैर चुकाना।

पलटाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पलटना] उलटाना, फेरना, लौटाना, बदल लेना, बदलना, परिवर्तन करना।

पलटाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पलटाना] लौटाव, फिराव, अदल-बदल।

पलटे†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० पलटा] प्रतिफल के रूप मे, एवज में, बदले में।

पलड़ा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पलट] तराजू का पल्ला, तुलापट।

पलथा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्यस्त] लोटपोट। **मुहा०—मारना**-लोटना-पोटना।

पलथी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पर्यस्त] स्वस्तिकासन, एक आसन (यौ०)।

पलना—(क्रि० अ०) [सं० पालन] पाला जाना, हृष्ट-पुष्ट होना, तैयार होना। *†(संज्ञा, पु०, दे०) पालना।

पलनाना†*—(क्रि० सं०, दे०) [हि० पलानजीन +ना प्रत्य०] घोड़े पर जीन कसाना।

पलल—(संज्ञा, पु०, सं०) आमिष, मांस। पशुओं के खाने की खली।

पलवा†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पल्लव] अंजुली, चुल्लू। तराजू का पलड़ा, डलिया।

पलवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पालना का प्रेरणा० रूप] किसी से किसी का पालन कराना।

पलवार—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़ी नाव।

पलवारा—(संज्ञा, पु०, दे०) बड़ी नाव।

पलवारी—(संज्ञा, पु०, दे०) केवट, मल्लाह।

पलवैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पालना+ऐया प्रत्य०] पालक, पोषक, पालन-पोषण करने वाला।

पलस्तर—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० प्लास्टर] दीवार पर मिट्टी के गारे या चुने का लेस या लेप। **मुहा०—ढीला होना, बिगड़ना या बिगड़ जाना** -नसें ढीली होना, बहुत परेशान होना।

पलहना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० पल्लव] पत्ते निकलना, पल्लवित होना, लहलहाना।

पलहा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पल्लव] कोमल पत्ते, कोंपल।

पलांडु—(संज्ञा, पु०, सं०) प्याज।

पला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पल] निमिष। *§ (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पलट] तराजू का पलड़ा, पल्ला। अंचल, किनारा, पार्श्व,पाला हुआ, पलुवा (प्रान्ती०)।

पलाद—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राक्षस।

पलान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पल्याण मि० फ़ा० पालान] जीन, चारजामा। [**पलानी (स्त्री०)**]

पलानना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० पलान+ना प्रत्य०] घोड़े पर जीन या पलान रख कर कसना। चढ़ाई की तैयारी करना। बुरा-भला कहना।

पलाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पलायन] भागना, भाग जाना। (क्रि० स०, दे०) भगाना, पलायन कराना।

पलायक—(संज्ञा, पु०, सं०) भगोड़ा, भागने वाला।

पलायन—(संज्ञा, पु०, सं०) भगना, भाग जाना।

पलायमान—(वि०, सं०) भागता हुआ।

पलायित—(वि०, सं०) भागा हुआ।

पलाल—(संज्ञा, पु०, सं०) पयाल, पुवाल। "पलाल-छालैः पिहितः रचयं हि प्रकाश-मासादयतीन्दु डिम्भः"—[नैषध०]।

पलाश—(संज्ञा, पु०, सं०) पलास, टेसू, ढाक, छिउल। पत्ता। राक्षस। कठोर। मगधदेश (वि०, सं०) मांसाहारी, निर्दय।

पलाशिका—(संज्ञा, स्त्री०) पेड़ों पर चढ़ने वाली एक लता।

पलाशी—(वि०) [सं० पलाशिन्] मांसाहारी। पत्ते-युक्त, पत्रयुक्त। (संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस।

पलाशीय—(वि०, सं०) पत्तोंवाला।

पलिया—(संज्ञा, पु०) पशुओं के गले का एक रोग।

पलिहर—(संज्ञा, पु०) चैत फसल के लिए छोड़ा हुआ परती खेत।

पलास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पलाश] ढाक, छिउल। एक मांसाहारी पक्षी। "ज्यों पलास संग पान के"—बृं०।

पलित—(वि०, सं०) बूढ़ा, बुड्ढा, वृद्ध, पका हुआ। सफेद बाल। ताप। गरमी। [**पलिता** (स्त्री०)]

पली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पलिघ] बड़े बरतनों से घी आदि द्रव पदार्थ के निकालने का पात्र या उपकरण, परी। **मुहा०—पली या परी परी जोड़ना**-थोड़ा-थोड़ा कर के संचय करना।

पलीत—(संज्ञा, पु०, दे०) भूत या प्रेत, भूतयोनि, प्रेतयोनि। (वि०) मैला-कुचैला। लथ-पथ

पलीता—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फलीतः] लपेटे हुए कपड़े की बत्ती जिसे पंसाखों में लगाते हैं, तोप या बन्दूक की रंजक, जलाने वाली बत्ती। (वि०) बहुत कुछ। आग-बबूला। [**पलीती** (स्त्री० अल्प०)]

पलीद—(वि०, फ़ा०) अशुद्ध, अपवित्र, गंदा, दुष्ट, नीच। (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पलीत] भूत-प्रेत। **मुहा० मिट्टी पलीत या—करना**-बरबाद करना।

पलुआ, पलुवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पलना] पालतू, पालित, पाला हुआ।

पलुहना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० पल्लव] हराभरा या पल्लवित होना।

पलुहाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० पलुहना] पल्लवित या हराभरा करना। गाय-भैंस का दूध के लिए आयन सहलाना।

पलेड़ना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रेरण] धक्का देना या ढकेलना।

पलेथन, पलोथन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिस्तरण] सूखा आटा जो रोटी बनाते वक्त रोटी में लगाया जाता है, [परोथन, परेथन, परथन (दे०)]। **—निकलना**-बहुत मार पड़ना या खाना। तंग या परेशान होना, अनावश्यक व्यय होने के पीछे और खर्च।

पलोटना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रलोठन] पाँव दबाना, पलटना। (क्रि० अ०, दे०) [हिं० पलटना] कष्ट से लोटना-पोटना, तड़फड़ाना। "पॉय पलोटत भाय"—[रामा०]।

पलोवना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रलोठन] पैर दबाना, पाँव मलना, सेवा करना।

पलोसना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० परसना] धोना। मीठी बातें कर ढंग पर लाना। परसना।

पल्लव—(संज्ञा, पु०, सं०) नये निकले पत्ते, कोंपल, कल्ला। हाथ का कंकण या कड़ा, बल। विस्तार, एक देश, (पह्लव) दक्षिण का एक राजवंश। **—दल**-(पु०) पल्लवों का समूह। "जो लगते-गिरते पल्लव-दल" बच्चन। **—ग्राही**-(वि०) जिसमें पत्तियाँ लगी हों। अपूर्ण, अधूरा।

पल्लवर—(संज्ञा, पु०,) लंपट। अशोक का पेड़। वेश्या का दोस्त।

पल्लवना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पल्लव+ना प्रत्य०] नये पत्ते निकलना, पनपना।

पल्लवास्त्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव।

पल्लवित—(वि०, सं०) जिसमें नये पत्ते हों, हरा-भरा, लंबा-चौड़ा, जिसके रोंगटे खड़े हों, किशलय-वाला, पनपा हुआ।

पल्लविनी—(वि०, सं०) जिसमें पल्लव हों, पल्लवमयी, पल्लवयुक्त।

पल्लवी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पल्लविन्] पेड़, वृक्ष, जिसमें पत्ते हों।

पल्ला—(क्रि० वि०, दे०) [सं० परवापार] दूर। (संज्ञा, पु०, सं०) दूरी। (संज्ञा, पु०, दे०) वस्त्र का छोर, आँचर, दामन। [**पास-पल्ले** (यौ०)]। **मुहा०—(ले) होना**-पास होना। **—छूटना**-पीछा छूटना, छुटकारा मिलना। **—पसारना**-किसी से कुछ माँगना। **—(ले) पड़ना** प्राप्त होना, मिलना। **—पकड़ना**-आश्रय लेना।

किसी के—(ले) बाँधना–किया जाना ।—(ले) बँधना–गले पड़ना, आश्रित होना । तरफ, पास, अधिकार में । (संज्ञा, पु०) [सं० पटल] दुपल्ली टोपी का आधा हिस्सा, पटल, किवाड़, पहल, तीन मन का बोझा । (संज्ञा, पु०) [सं० पल] तराजू का पलड़ा । मुहा०—झुकना या भारी होना–पक्ष बलिष्ट या बली होना, (विलो०)—हलका होना (पड़ना)–(संज्ञा, पु०) [सं० फल] कैंची का एक भाग । (वि०, दे०)–परला, अव्वल, प्रथम । मुहा० (पल्ले, परले) दरजे का ।

पल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा गाँव, खेड़ा, पुरवा, कुटी, जाजम, सतरंजी छिपकली । "निपतति यदि पल्ली वाम भागे नराणाम्" ।

पल्लू†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पल्ला] दामन, छोर, आँचल, पट्ठा, चौड़ी गोट ।

पल्ले†*—(वि०, दे०) [सं० प्रलय] प्रलय, पास । —दार–(संज्ञा- पु०, दे०) [हि० पल्ला + फ़ा० दार] अनाज ढोने या तौलने वाला, बया ।—दारी —(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पल्लेदार + ई प्रत्य०] पल्लेदार काकार्य या मजदूरी ।

पल्लौ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पल्लव] पल्लव, (संज्ञा, पु०) अनाज की गौन, पल्ला ।

पवंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक छंद (पिं०) ।

पव—(संज्ञा, पु०, सं०) गोबर, वायु, हवा, शुद्धी-करण ।

पवई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पक्षी विशेष ।

पवन—(संज्ञा, पु०, सं०) वायु, हवा, पौन (ब्र०) । मुहा०—का भूसा होना–कुछ न रहना, सब उड़ जाना । कुम्हार का आवा । जल । साँस, प्राणवायु । (संज्ञा, पु०, दे०) पावन । पवित्र ।—अस्त्र–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० पवनास्त्र] एक अस्त्र जिसके चलाने से जोर की वायु चलने लगती थी, पवनास्त्र ।—कुमार–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ० सं०) हनुमान् । भीमसेन, पवन-पुत्र, पवनात्मज पवन-सुत । "बंदौ पवन-कुमार"—[रामा०] । —चक्की–(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० पवन + हि० चक्की] हवा-चक्की ।—चक्र–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बवंडर ।—तनय–(संज्ञा, पु०, सं०) हनुमान । भीमसेन । पवनात्मज । "पवन-तनय अतुलित बल धामा"—[रामा०] ।—पति –(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वायु के अधिष्ठाता, या देवता ।—परीक्षा–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) आषाढ़-पूर्णिमा को वायु की दिशा को देख कर भविष्य कहना ।—पुत्र–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हनुमान, भीमसेन, [पौनपूत (दे०)] ।—बाण–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह बाण जिसके छोड़ते ही बड़े वेग से वायु चलने लगे, पवन-शर ।—सखा–(संज्ञा, पु० यौ०, सं०) आग ।—सुत, सुवन, नन्दन– (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हनुमान । भीमसेन । "जात पवनसुत देवन देखा"—[रामा०]

पवना—(संज्ञा, पु०) झरना । पौना ।

पवनात्मज—(संज्ञा, पु०) [सं० पवन + आत्मज] हनूमान, भीमसेन ।

पवनायन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) झरोखा, खिड़की, गवाक्ष, वातायन ।

पवनाल—(संज्ञा, पु०, दे०) पुनेरा नामक धान ।

पवनावर्ती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महर्षि कश्यप की एक स्त्री ।

पवनाश, पवनाशन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नाग, साँप, सर्प ।

पवनाशी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० पवनाशिन्] सर्प, साँप ।

पवनास्त्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक अस्त्र जिसके वेग से वायु चलने लगे ।

पवनाहत—(वि०) [सं० पवन + आहत] वायु-ग्रस्त, वातग्रस्त ।

पवनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाना] नीच प्रजा, नाई, बारी आदि जो गाँव वालों से कुछ पाया करते हैं ।

पवमान—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा । वायु । सोमदेवता । वह प्रधान अग्नि जिसकी रक्षा शाखानुसार गृहस्थों को अपने घरों में करना चाहिये ।

पवर, पवरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पँवरि] पँवरि, घर का द्वार, दरवाजा ।

पवरिया—(संज्ञा, पु०, दे०] [हि० पँवरि] पौरिया ।

पवर्ग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) संस्कृत या हिन्दी भाषा की वर्ण-माला का पाँचवाँ वर्ग ।

पवाँड़ा—(संज्ञा, पु०) लम्बी चौड़ी । देखिए-पवाड़ा ।

पवाँर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परमार] क्षत्रियों की एक जाति, परमार ।

पवाँरना, पवारना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रवारण] फेंकना, गिरना । "रज होइ जाहिं पखान पवाँरे"—[रामा०]

पवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाँव] एक जूता, चक्की का एक पाट, पाने का भाव ।

पवाड़ा—(संज्ञा पु०, दे०) [सं० प्रवाद) पँवाड़ा, लम्बा चौड़ा या विस्तृत इतिहास, कथा । [**आल्हा, पँवारा** (यौ०)] ।

पवाज—(संज्ञा, पु०, दे०) गँवार, ग्रामीण ।

पवाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० पान+भोजन करना] जिमाना, खिलाना, भोजन कराना, रोटी बनवाना, पोवाना (ग्रा०) ।

पवि—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र का अस्त्र, वज्र, बिजली, गाज, वाक्य । "छूटे पवि पर्वत पहँ जैसे" —[रामा०] ।

पविताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पवित्रता] पवित्रता ।

पवित्तर‡—(वि०, दे०) [सं० पवित्र] पवित्र । "गोबर लगे पवित्तर होय"—प्र० ना० ।

पवित्र—(वि०, सं०) साफ, शुद्ध, निर्मल, निर्दोष । (संज्ञा, पु०, सं०) वर्षा, ताँबा, कुशा, पानी, दूध, जनेऊ, घी, शहद, शिव, विष्णु ।

पवित्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सफाई, निर्मलता, निर्दोषिता, शुद्धता ।

पवित्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हलदी, पिपरी, तुलसी, रेशमी माला ।

पवित्रात्मा—(वि०, यौ०) [सं० प्रवित्रात्मन्] शुद्धांतःकरण, शुद्धात्मा वाला ।

पवित्रित—(वि०, सं०) शुद्ध, निर्दोष, साफ किया हुआ, पवित्रीकृत ।

पवित्री—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० पवित्र] अनामिका में पहनने की कुशा की अँगूठी या मुद्रिका (कर्मकांड) पैंती (ग्रा०) ।

पविपात—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वज्रपात, वज्र पड़ना, बिजली गिरना ।

पशम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० पश्म] नरम और मुलायम बढ़िया ऊन, उपस्थ, इन्द्री के समीपके बाल, अत्यन्त तुच्छ वस्तु ।

पशमी—(वि०, दे०) पशम का बना वस्त्र, पशमीना ।

पशमीना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पशम का बना वस्त्र या कपड़ा, पशमी, वस्त्र, दुशाला आदि ।

पशु—(संज्ञा, पु०, सं०) चौपाया, चार पैर के जीव-जन्तु, प्राणी, देवता । "महा महीप भये पशु आई" —[रामा०] ।—**कर्म**—(संज्ञा, पु०) क्रिया । (संज्ञा, स्त्री०) मैथुन, पशु का बलिदान ।—**चर्म सुरक्षण**—(पु०) पशुओं की खाल में मसाला आदि लगा कर वास्तविक रूप में रखने की कला । [टॉक्सीडर्मी]—**चिकित्सक**—(पु०) जानवरों का डाक्टर । [वेटीनरी सर्जन]—**तुल्य**—(वि०, सं०) पशु के समान मूर्ख, अज्ञान, अबोध ।—**धर्म**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पशुओं का सा आचार, पशुओं के से निंद्य कर्म ।—**पति**—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव जी, अग्नि, औषधि ।—**पाल, पालक**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पशुओं का पालक या रक्षक, अहीर, गड़रिया । चरवाहा ।—**भाव**—(संज्ञा, पु०) पशुता, पशुत्व ।—**राज**—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंह, व्याघ्र ।

पशुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पशुत्व, पशुपना, मूर्खता, जड़ता, औद्धत्य ।

पशुत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) पशुता, मूर्खता ।

पशुपतास्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) शिव जी का त्रिशूल, पशुपत ।

पश्चात्—(अव्य०, सं०) पीछे, अनन्तर, बाद, फिर । [तत्पश्चात् (यौ०)]—**ताप**—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अनुशोक, पछतावा, अनुताप ।—**तापी**—(संज्ञा, पु०) [सं० पश्चात्तापिन्] अनुशोक या पछतावा करने वाला ।

पश्चाद्वर्त्ती—(वि०) [सं० पश्चाद्वर्त्तिन्] पीछे रहने या चलने वाला ।

पश्चानुताप—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) पछतावा ।

पश्चार्द्ध—(वि०, सं०) पीछे का आधा, शेषार्द्ध ।

पश्चिम—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतीची, [पच्छिम (दे०)] [**पश्चिमा** (स्त्री०)] । "उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग्विभागे"—[स्फु०] ।—**वाहिनी**—(वि०, सं०, यौ०) वह नदी जो पश्चिम दिशा को बहती हो । "माघे पश्चिम वाहिनी"—[स्फु०] ।

पश्चिमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सूर्य के डूबने की दिशा, पच्छिम ।

पश्चिमाचल—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) अस्ताचल, सूर्यास्त का एक कल्पित पर्वत ।

पश्चिमी—(वि०, सं०) पश्चिम संबंधी, पच्छिम का, अनुकरण पर चलना । [वेस्टर्नाइज]

पश्चिमोत्तर—(संज्ञा, पु०, सं०) वायव्य या वायुकोण, उत्तर और पश्चिम के बीच का कोना ।

पश्तो—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अफगानों की एक भाषा।

पश्म—(संज्ञा स्त्री०, फा०) नरम और बढ़िया ऊन जिसके शाल दुशाले बनते है। उपस्थ इन्द्री के समीप का बाल, पशम, [पसम (दे०)]।

पश्मीना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पशमीना, शाल-दुशाले आदि वस्त्र।

पश्यंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाद की द्वितीय अवस्था जिसमें मूलाधार से हृदय में आता है।

पश्यतोहर—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) देखते-देखते चुराने वाला, सुनार। "देखते ही सुवरन हरि परि लेत को पश्यतोहर मनोहर ये लोचना तिहारे है" —दास।

पश्वाचार—(संज्ञा, पु०, सं०, यौ०) वैदिकाचार, वदिकरीति से सकल्प युक्त देवी की पूजा (तांत्रिक) [**पश्वाचारी** (वि०)]।

पष, पषा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्ष] पंख, पखना, डैना, ओर, पाख, [पखा (दे०)]।

पषा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्ष] दाढ़ी, मूछ।

पषाण, पषान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाषाण] पाषाण, पत्थर, [पाथर (दे०)]।

पषारना, पषालना, पखारना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रक्षालन] धोना, साफ, स्वच्छ या निर्मल करना, पछाड़ना।

पसघा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पासंग] पासंग, तराजू के पल्लों को बराबर करने के लिये रक्खा गया बाट। (वि०) बहुत ही कम या थोड़ा। **मुहा०—भी न होना**-कुछ भी न होना। अत्यन्त तुच्छ।

पसंती*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पश्यंती] पश्यंती नाद की एक अवस्था।

पसंद—(वि०, फा०) जो भावे या अच्छा लगे, रुचि-अनुकूल, मनचाहा। (संज्ञा, स्त्री०) अभिरुचि। [**पसंदगी** (संज्ञा, स्त्री०)]। [**पसंदीदा** (वि०)]।

पस—(अव्य, फ़ा०) इस कारण या इसलिये। अतः, निस्सन्देह, बेशक। (संज्ञा, पु०) मवाद। **—(सो) पेश**-(संज्ञा, पु०) आगा-पीछा, टाल-मटोल, बहाना। ऊंच-नीच, दुविधा।

पसनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्राशन] अन्न-प्राशन, लड़के को पहले पहल अन्न खिलाना।

पसम—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पश्म] पशम, पश्म। "ग्वाल कवि कहै देखो नारी कोख सम जानै धर्म को पसम जानै पातक शरीर के"—ग्वाल०।

पसमीना—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पश्मीना] पश्मीना। "फेर पसमीनन के चौहरे गलीचन पै सेज मखमली सौर सोऊ सरदी सी जाय"—ग्वाल०।

पसर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रसर] आधी अँजुली, अर्द्धांजली। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रसार] फैलाव, विस्तार।

पसरना—(क्रि० अ० दे०) [सं० प्रसरण] फैलना, बढ़ा, विस्तृत होना, पैर फैला कर लेटना। [**पसराना**—(प्रेरणा० रूप)]। [**पसराना पसारना**, (स० रूप)]।

पसरहट्टा—(संज्ञा, पु०) [हि० पसारी+हाट] बाजार का वह भाग जहाँ पसारियों की दूकानें हों, पसरट्टा (ग्रा०)।

पसराना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रसारण] किसी को पसराने मे लगाना, फैलाना।

पसरौंहा*—(वि०, दे०) [हि० पसारना+औहा प्रत्य०] फैलने या पसरने वाला।

पसली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पर्शुका] छाती की हड्डी, पाँसुरी (ब्र०) पसुरी, पसुली (ग्रा०)। **मुहा०—फड़कना या फड़क उठना**-मन में जोश या उत्साह आना।**—हड्डी पसली तोड़ना**-बहुत मारना। पीटना।**—चलना**-बच्चों की सर्दी से स्वास बढ़ जाना।

पसही—(संज्ञा, स्त्री०।) तिन्नी का चावल।

पसा—(संज्ञा, पु०, दे०) अंजली, अँजुली।

पसाई, पसई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बन-धान।

पसाउ, पसाव†*—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० प्रसाद प्रसन्नता, कृपा, प्रसाद। "सपनेहु साँचेहु मोहि पर जो हरि-गौरि पसाउ"।

पसाना—(क्रि०, स०, दे०,) [सं० प्रस्रावण] पके चावलों में से माँड़ निकालना, पसेव गिराना। †*(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रसन्न] प्रसन्न होना।

पसार—(संज्ञा, पु०, दे०) [प्रसार] प्रसार, विस्तार, फैलाव, प्रस्तार।

पसारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रसारण] विस्तारित करना। फैलाना। "जोजन भर तेहि बदन पसारा"—[रामा०]।

पसारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रसार] विस्तार, फैलाव। (क्रि० स०) [सं० प्रसारण] फैलाना, विस्तारना।

पसारि—(संज्ञा, पु०) [दे० पंसारी] पंसारी, किराने और औषधों का दुकानदार।

पसाव, पसावन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पसाना] चावलों का माँड़, पीच, पानी।

पसावनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अंगराग।

पसित—(वि०, दे०) बँधा हुआ, [**पाशित** (सं०)]।

पसीजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्र+ स्विद्] स्वेद या पसीना निकलना, पानी रसना, करुणा या दया से द्रवीभूत होना। " नैननि के मग जल बहै, हियो पसीज पसीज "—(वि०)।

पसीना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रस्वेदन] स्वेद, प्रस्वेद, श्रमवारि, गर्मी से निकला हुआ देह का जल। **(गाढ़े)—(ने) की कमाई**–मेहनत और ईमानदारी की कमाई। **मुहा०—पसीने होना**–पसीने से भीग जाना, तर हो जाना।

पसुरी, पसुली*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पसली] पसली, छाती की हड्डी, पाँसुरी।

पसूज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सीधी सिलाई।

पसूजना—(क्रि० स०, दे०) सीधी सिलाई करना।

पसेउ, पसेऊ, पसेव‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पसेव] पसीना, स्वेद, प्रस्वेद, श्रमवारि। " पोंछि पसेऊ बयारि करौं "—**कवि०**।

पसेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाँच+सेर ई प्रत्य०] पंसेरी, पाँच सेर का बाट।

पस्त—(वि०, फ़ा०) हारा, थका, दबा हुआ।—**हिम्मत**–(वि०, यौ०, फ़ा०) कादर, कायर, डरपोक, भीरू। [**पस्त हिम्मती** (संज्ञा, स्त्री०)]।

पस्सो बाबूल—(संज्ञा, पु०) [दे० पस्सी+हि० बबूल] एक पहाड़ी बबूल।

पहँ*—(अव्य० दे०) [पु० पार्श्व] समीप, निकट, पास से। " खर-दूखन पहँ गई बिलखाता "—[रामा०]।

पहँसुल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रह—झुका हुआ+शूल] तरकारी काटने की हँसिया।

पह*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पौ] प्रकाश की किरण।

पहचनवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पहचानना का प्रेरणा रूप] किसी से पहचानने का कार्य कराना।

पहचान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रत्याभिज्ञान] लक्षण, निशानी, परिचय, चिन्ह, चीन्हा, चिन्हारी, भेद समझने की शक्ति।

पहचानना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पहचान] चीन्हना, गुण विशेषतादि से परिचित होना, अभिज्ञान, भेद समझने की शक्ति।

पहटना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रखेट] खदेड़ना, पीछा करना, धार पैनी करना।

पहट—(संज्ञा, पु०, दे०) खेत चौरस करने का लकड़ी का तख़ता, हेगा (प्रान्ती०)। [**पहटाना** (क्रि० स०, दे०)।]

पहन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाषाण] पाहन, पत्थर, पाषाण।

पहनना, पहिनना—(क्रि० स०, दे०) [सं० परिधान] शरीर पर धारण करना, परिधान करना [**पहनवाना** (प्रेरणा रूप)] [**पहनाना** (क्रि० स०)]।

पहनाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पहनाना] पहनाने की क्रिया या मजदूरी।

पहनाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पहनना] किसी को वस्त्र-भूषणादि धारण कराना।

पहनाव, पहनावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पहनना] मुख्य वस्त्र, पोशाक, परिच्छद, कपड़े पहनने की रीति या चाल।

पहपट—(संज्ञा, पु०, दे०) स्त्रियों के गाने का एक गीत, हल्ला-गुल्ला, शोर, कोलाहल, घोष, बदनामी का शोर, छल।—**बाज़**–(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पहपट+बाज फ़ा०] शरारती, झगड़ालू, ठग, धोखेबाज। [**पहपट बाज़ी** (संज्ञा, स्त्री०)]—**हाई**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पहपट+हाई प्रत्य०] झगड़ा कराने वाली।

पहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रहर] तीन घंटे का वक्त, जमाना, युग।

पहरना, पहिरना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पहनना] पहनना, धारण करना।

पहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पहर] चौकी, निगरानी, [**— चौकी** (यौ०)]। **मुहा०—बदलना** रक्षक बदलना।—**बैठना, बैठाना**–रक्षक बैठाना, रखवाली करना।—**देना**–रखवाली करना। तैनाती, नियुक्ति, रक्षकदल, गारद, चौकीदार का फेरा या आवाज, हवालात, हिरासत।—**(रे) में देना या रखना**–जेल भेजना।—**(रे) में होना**–हिरासत में

या नजरबन्द होना। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाँव +रा पौरा] आने जाने का शुभाशुभ प्रभाव। (दे०) समय, युग।

पहराना, पहिराना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० पहनना] किसी को पहनाना, धारण कराना।

पहरावनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पहरावना] बड़े आदमी के दिये हुए वस्त्र, खिलअत।

पहरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रहरी] पहरा देने वाला, चौकीदार, रक्षक, पहरेदार।

पहरुआ, पहरुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पहरू] पहरू, पहरा देने वाला, रक्षक, चौकीदार, पहरू, (अ०)।

पहरू, पाहरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पहरा+ ऊ प्रत्य०] रक्षक, पहरा देने वाला।

पहल—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पहलू मि० सं० पहल] ठोस चीज के समतल, पहल, बगल, किनारा, पुरानी जमी हुई रुई या ऊन। तह, परत। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पहला] आरम्भ, शुरू, छेड़। [**पहले-पहल** (यौ०)] ।—**दार**-(वि०, दे०) [हि० पहल+फ़ा०दार] जिसमें पहल हों, पहलू-दार।

पहलवान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कुश्ती लड़ने या मल्ल युद्ध करने वाला, मल्ल, बली या डील-डौल वाला। [**पहलवानी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

पहलवी—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० वा सं० पह्लवी] एक प्रकार की फारसी भाषा।

पहला, पहिला—(वि०, दे०) [सं० प्रथम] प्रथम का, आदि का। औवल। (संज्ञा, पु०, दे०) पुरानी रुई की तह रजाई आदि की। [**पहली** (स्त्री०)।]

पहलू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बगल, पार्श्व, पाँजर, (दे०) तरफ, करवट, किसी विषय के भिन्न भिन्न अंग (गुण दोषादि के भाव के पक्ष, पहल।) —**दार**-(वि०) जिसके कई पहलू या पार्श्व हों। "तुम रहो पहलू में मेरे"।—**बचाना**-मुठभेड़ को बचाते हुए किसी किनारे से कट जाना।—**में बैठना**-किसी से सट कर या मिलकर बैठना।

पहले, पहिले—(अव्य०, हि० पहला) प्रारंभ या आदि में सर्व-प्रथम, पूर्व (स्थिति), आगे, बीते या पूर्व समय में।—**पहल, पहिल**-(अव्य०, पु०) [हि० पहल] सर्वप्रथम।

पहलौठा, पहिलौठा—(वि०, दे०) [हि० पहला +औठा प्रत्य०] प्रथम बार का पैदा हुआ लड़का। [**पहलौठी** (स्त्री०)] । "जो पहलौठी बिटिया होय"—घाघ०।

पहाड़, पहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाषाण] पर्वत, गिरि, पहार, [पहारू (दे०)] [**पहाड़ी** (स्त्री० अल्पा०)] **मुहा०—पहाड़ उठाना**-भारी कार्य अपने जिम्मे लेना।—**टूट पड़ना या टूटना**-अचानक बड़ी भारी आपत्ति आना, महा संकट आ जाना। **सिर पर—गिरना**-बड़ी विपत्ति सहसा आना। "सिर पर गिरे पहाड़ तो फरियाद क्या करे"।—**हिलाना**-बड़ा कठिन कार्य करना।—**से टक्कर लेना**-अधिक बली या जबरदस्त से भिड़ जाना। बहुत बड़ा ढेर या ऊँची राशि। दुष्कर कार्य। अति भारी वस्तु [**पहाड़ी** (वि०)]—पर्वतीय।

पहाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) गुणनफल-तालिका, संकलन की हुई अंकों की सूची, किसी अंक के गुणनफलों की अनुक्रमणिका, पहारा, पहार (ग्रा०) "नौ के लिखत पहार"—तुल०।

पहाड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा पहाड़, पहाड़ी। (वि०) पर्वतीय, पर्वत-वासी।

पहाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० पहाड़+ई प्रत्य०] छोटा पहाड़। राग या गान। [**पर्वतीय** (वि०, दे०)]।

पहारू, पाहरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पहरा] चौकीदार, पहरेवाला। "नाम पहारू दिवसनिसि, ध्यान तुम्हार कपाट"—[रामा०]।

पहिचान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रत्यभिज्ञान] लक्षण, निशानी, परिचय। [**जान-पहिचान** (यौ०)]।

पहिचानना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पहचानना] चीन्हना, परिचित होना। (वि०) पहिचानने वाला। [**पहिचानी** (वि०, दे०)]।

पहित, पहिती*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पकी हुई दाल।

पहिनना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पहनना] पहनना। [**पहिनना** (क्रि० स०)] [**पहिनवाना** (प्रेरणा रूप)], [**पहिनावा, पहिनाव** (संज्ञा, पु०, दे०)।]

पहियाँ*†—(अव्य०, दे०) [हि० पहँ] पास, समीप, निकट, पर, से।

पहिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिधि] धुरी पर घूमने वाला चक्र, चक्कर, चक्का, चाका, [चाक (दे०) ।]

पहिरना‡—(क्रि० स०, दे०) [हि० पहनना] पहनना। [**पहिराना** (क्रि० स०)] [**पहिरवाना** —(प्रेरणा रूप)] ।

पहिरावनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पहनावा] पहनावा। [**पहिराव** (संज्ञा, पु०, दे०)] ।

पहिला—(वि०, दे०) [हि० पहला] पहला, प्रथम, प्रथम ब्यायी या प्रसुता गाय या भैंस । [**पहिली** (स्त्री०) ।]

पहिले—(अव्य०, दे०) [हि० पहले] पहले ।

पहिलौठा—(वि०, पु०, दे०) [हि० पहलौठा] पहलौठा, प्रथमवार का जन्मा पुत्र। [**पहिलौठी** (स्त्री०) ।]

पहीति*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पहती] दाल ।

पहुँच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रभूत] पैठ, प्रवेश, गुजर, रसाई। पहुँचने की सूचना। रसीद, फैलाव, विस्तार, पकड़, दौड़, परिचय, दखल, समझने की शक्ति या सामर्थ्य, जानकारी, अभिज्ञता की मर्यादा या शक्ति। "अपनी पहुँच विचारि कै"—वृं० ।

पहुँचना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रभूत] एक जगह से चल कर दूसरी जगह प्राप्त होना। (स० रूप—**पहुँचाना**) [**पहुँचवाना** (प्रेरणा रूप)] **मुहा०—हुआ**-परमेश्वर के समीप पहुँचा हुआ, सिद्ध, पता रखने वाला, जानकार, निपुण, उस्ताद। प्रविष्ट होना, घुसना या पैठना, ताड़ना, समझना, मिलना, अनुभूत होना, समान या तुल्य होना। फैलना। एक दशा से दूसरी में जाना, भेजी या आई हुई वस्तु का मिलना।—(ने) **वाला**-रहस्य या भेद का जानने वाला, जानकार ।

पहुँचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रकोष्ठ] मणिबन्ध, कलाई, हाथ की कुहनी से नीचे का भाग। (क्रि० अ०, सा०, भू० गया) प्राप्त हुआ। "वहाँ पहुचा कि फरिश्तों का भी मकदूर न था"।

पहुँचाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पहुँचना का स० रूप] एक जगह से दूसरी जगह किसी को प्रस्तुत या प्राप्त कराना, ले जाना, किसी के साथ जाना। भेजना। किसी विशेष दशा में उपस्थित करना, प्रविष्ट कराना, लाकर या ले जाकर कुछ देना। अनुभूत कराना। तुल्य बनाना।

पहुँची—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० पहुँचा] कलाई का एक गहना, युद्ध में पहिनने का एक दस्ताना। (क्रि० स०, सा०, भू०) गयी, प्राप्त हुई। "हमारे हाथ को पहुँची तुम्हारे हाथ पहुँची हो"—स्फुट० ।

पहुड़ना—(क्रि० अ०, दे०) पौढ़ना, लेटना, [**पहुड़ाना** (क्रि० स०)।] [**पहुड़वाना**—(प्रेरणा रूप)।]

पहुना†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाहुना] पाहुना, महिमान, मेहमान, पाहुन, अतिथि "पाहुन निसिदिन चार रहत सब ही के दौलत" —गिर० ।

पहुनाई, पहुनई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पहुना + ई प्रत्य०) अतिथि-सत्कार; मेहमानदारी, अतिथि होकर जाना या आना । "विविधि भाँति होवे पहुँनाई।"—[रामा०] ।

पहुप*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुष्प] पुष्प ।

पहुमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भूमि] भूमि ।

पहुला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रफुल्ल] कुमुदिनी ।

पहेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रहेलिका] बुझौवल, गूढ़ प्रश्न या बात, फेर फार की बात, समस्या, किसी विषय या वस्तु का सांकेतिक वर्णन। "कहत पहेली बीरबल, सुनिये अकबर शाह"। [**पहेला** (पु०)] । **मुहा०—बुझाना** –फेर-फार या घुमा-फिरा कर अपने स्वार्थ की बात कहना ।

पह्लव—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन, जाति जिसका निवास स्थान फारिस या ईरान था ।

पह्लवी—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० वा सं० पह्लव] फारसी भाषा का प्राचीन रूप ।

पाँ, पाँइ, पाँउ, पाँय*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद] पाँव, पैर, पद। "पाँ लागौं करतार"।

पाँइता*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाँयता] पाँवता, पाँव की ओर, पैता, पैताना (ग्रा०) पाँयता ।

पाँईं बाग—(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) राजमहल के चारों ओर स्त्रियों की पुष्प-वाटिका, या फुलवाड़ी ।

पाँक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंक] पंक, कीच, कीचड़, काँदो (ग्रा०) ।

पाँख†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्ष] पक्ष, पंख, पर। "पट पाँखे भख काँकरे, सदा परेई सग"—वि०। पानी बरसने के पूर्व वायु का शब्द विशेष (ग्रा०)। मुहा०—**बोलना**-वर्षा से पूर्व वायु में शब्द विशेष होना।

पाँखड़ा—(संज्ञा, पु०) पर, पंख।

पाँखड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पंखड़ी] पंखड़ी, पंखुरी, पाँखुरी, पाँखड़ी। "पाँखड़ी गुलाब केरी काँकड़ी समान गड़ै"—मन्ना०। "पुसपानि की पाँखुरी पाँयनि मै"—रघु०।

पाँखी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पक्षी] पतिंगा, पक्षी, चिड़िया।

पाँखुरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पंखड़ी] पंखड़ी, पुष्प पत्र। फूल की पत्ती या पत्ता।

पाँग—(संज्ञा, पु०, दे०) कछार, खादर।

पाँगा, पाँगानोन—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० पंक] सामुद्रीय या समुद्री नमक।

पाँगुर—(वि०, दे०) [सं० पंगु] लँगड़ा, पंगुआ। (संज्ञा, पु०, दे०) लँगड़ा मनुष्य। "पाँगुर को हाथ-पाँव, आँधरे को आँख है"—विन०।

पाँच—(वि०, दे०) [सं० पंच] चार और एक की संख्या, या अंक (५) लोग, पंच। "तुम परि पाँच मोर हित जानी"—[रामा०]। "पाँचहिं मार न सौ सके"—वृं०। मुहा०—**(चों) अँगुलियाँ घी में होना**-सब प्रकार का आराम या लाभ होना, अच्छी बन पड़ना।—**(चों) सवारों में नाम लिखना**-श्रेष्ठों में अपने को भी गिनना। पांडव, जाति के मुखिया, जन-समूह।

पाँचक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंचक] धनिष्ठा से लेकर पाँच नक्षत्र।

पाँचजन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अग्नि। कृष्ण या विष्णु का शंख। "पाँचजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः"—[गीता०]।

पाँचनद—(वि०, सं०) पंजाब का, पंजाबी, पंचनद सम्बन्धी। (सं०, पु०) पजाब का निवासी।

पाँचभौतिक, [**पाञ्चभौतिक**]—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाँचों तत्वों या भूतों से बना शरीर।

पाँचर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पच्चड़, लकड़ी का टुकड़ा।

पाँचा—(संज्ञा, पु०) पाँच दाँतों वाला। भूसा बटोरने के लिए आला।

पाँचाल—(संज्ञा, पु०, सं०) पंचाल या पंजाब।

पाँचालक—(संज्ञा, पु०, सं०) पंचाल देश का राजा। (वि०) पंचालवासियों से सम्बन्धित।

पाँचालिका-[**पाञ्चाली**]—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) द्रौपति, पाँचै। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० पंचमी] किसी पक्ष की पंचमी तिथि, गुड़िया। नटी, रंडी। ५ या ६ दीर्घ समासयुक्त कांति गुण-पूर्ण पदावलीमय वाक्य-विन्यास की प्रणाली या रीत (साहित्य)।

पाँचैं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पंचमी] किसी पक्ष की पंचमी तिथि।

पाँजना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० प्रणद्ध] झालना, टाँके लगाना, धातु के टुकड़े टाँकों से जोड़ना।

पाँजर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंजर] बगल और कटि के बीच पसलियों वाला भाग, हड्डियों का पिंजरा या ढाँचा। (क्रि० वि०, ग्रा०) **पास, समीप**। (संज्ञा, पु०, प्रान्ती०) पसली, पार्श्व (सं०) बगल।

पाँजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पदाति] नदी का ऐसा घट जाना कि उसे हिल कर पार किया जा सके।

पाँझ—(वि०, दे०) [सं० पदाति] पाँजी।

पाँडर—(वि०, सं०) [अप० पाँडर) पीला, सफेद। (संज्ञा, पु०, सं०) धौ वृक्ष, बगुला, कबूतर, खड़िया, कामला रोग। श्वेतकुष्ठ (वैद्य०)।

लिपि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) मसौदा, पाँडु-लेख, कच्चालेख।

लेख—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) पाँडु-लिपि, मसौदा लेखादि का परिवर्तनशील प्रथम रूप)।

पाँडव—(संज्ञा, पु०, सं०) पांडु के पुत्र, पाँडु तनय, पांडु-सुत, पाँडु के पुत्र कुन्ती और माद्री से उत्पन्न युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव, पांडु-कुमार। वितास्ता (झेलम) के तट का देश (प्राचीन)।—**नगर**-(संज्ञा, पु० यौ०, सं०) दिल्ली।

पाँडविक—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का गौरा।

पांडवेय-(संज्ञा, पु०) पांडव, पांडव-पुत्र।

पाँडित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) विद्वत्ता, पंडिताई।

पाँडु—(संज्ञा, पु०, स०) लाल मिला पीला रंग, श्वेत रंग, रक्त-विकार जन्य एक रोग जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है, पांडव वंश के एक आदि राजा, युधिष्ठिरादि पाँच पांडवों के पिता, श्वेत हाथी, परमल।—**कंबल**-(संज्ञा, पु०) सफेद कम्बल, एक सफेद पत्थर।—**तरु**-(संज्ञा, पु०) धव का पेड़।—**नाग**-(संज्ञा, पु०) सफेद हाथी, सफेद साँप।—**पुत्र**-(संज्ञा, पु०) पांडु का कोई एक पुत्र।—**रोग**-(संज्ञा, पु०) पीलिया, एक रोग जिसमें सारा शरीर पीला पड़ जाता है। कवल रोग।

पाँडुक—(संज्ञा, पु०) पीलिया रोग। पाँडु नामक एक राजा, एक प्रकार का धान।

पाँडुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पीलापन, पाँडुत्व, सफेदी।

पाँडे—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंडित] ब्राह्मणों और कायस्थों की एक शाखा, पंडित, विद्वान्।

पाँडेय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंडित] पाँडे, ब्राह्मणों की एक शाखा, पंडित, विद्वान्।—**पाँड्य**-पाँडु देश का वासी, पाँड देश का नरेश, दक्षिण एक प्राचीन प्रदेश-विशेष।

पाँतर—(संज्ञा, पु०, दे०) उजाड़, निर्जन।

पाँत, पाँति, पाँती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०)[सं० पंक्ति] पंक्ति, पंगति, कतार, एक साथ भोजन करने वाले जाति के लोग।

पाँथ—(वि०, सं०) बटोही, पथिक, यात्री, विरही, वियोगी।—**निवास**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) धर्म्मशाला, सराँय, चट्टी, पाँथशाला।—"प्रेम के पांथवास में आज"—बच्चन।—**शाला**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पाँथ-निवास, सराँय, धर्म्मशाला, चट्टी। आज पांथशाला है गुंजित—पंत।

पाँपोश—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पापोश] जूता, पनही।

पाँयँ†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद] पाँव, पैर, चरण। "पाँय पखारि बैठि तरुछाँहीं"—[रामा०]।

पाँयँचा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कदमचा, पाखाने में शौच के लिये बैठने का स्थान, पायजामे की मोहरी।

पाँयता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाँय+तल] पैंता, पैंताना, खाट पर लेटने में जिस ओर पाँव रहते हैं। नीच, पापी, मूर्ख।

पाँव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद] गोड़ (प्रान्ती०) पैर, चरण, पद, पाँय। **मुहा***—**उखड़ना (जाना)**-हार जाना, हिम्मत छोड़ कर भागना।—**उठाना**-शीघ्रता या वेग से चलना।—**उतरना, उखड़ना**-पाँव का उखड़ या टूट जाना या फूलना।—**काँपना (डगमगाना)**-डरना, भयभीत होना।—**(किसी का) उखाड़ना**-किसी को किसी स्थान पर ठहरने या जमने न देना। **किसी के गले में—डालना**-तर्क द्वारा उसकी बातों से उसे दोषी ठहराना।—**घिसना (घिस जाना)**-बहुत चलना, चलते-चलते थक जाना।—**चल जाना**-डगमगाना, अस्थिर होना।—**(न) जमना**-दृढ़तापूर्वक (न) स्थिर होना। या ठहरना, विचलित हो न हटना।—**जमीन पर न ठहरना (रखना)**-अत्यंत प्रसन्न होना, मारे हर्ष के फूल जाना। अभिमान करना।—**डालना (पैर रखना)**-किसी कार्य को प्रारंभ करना व करने को उद्यत होना।—**डिगना**-फिसलना, रपटना या किसी कार्य से निराश होना।—**तले से मिट्टी (जमीन) निकल (खिसक) जाना**-(आश्चर्य या भय की बात से) स्तब्ध या सन्न रह जाना, होश उड़ जाना।—**तले मलना (पद-दलित करना)**-दुःख या पीड़ा देना, पीड़ित करना, कुचलना।—**तोड़ना**-किसी के कार्य में विघ्न या बाधा डालना, हानि पहुँचाना बड़ी दौड़-धूप या कोशिश करना, इधर-उधर हैरान हो दौड़ना। आलस में बैठा रहना, अधिक चलना।—**तोड़ कर बैठना (पैठ जाना)**-हार कर बैठना, अचल वा स्थिर होना।—**धो धो कर पीना**-अधिक आदर या सत्कार करना, अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति करना, विनय करना। **किसी के—धरना (पकड़ना)**-दीनता से पैर छूकर विनय करना, प्रणाम करना।—**निकालना**-मर्यादा छोड़ना, कुल की रीति को डाँक जाना।—**पकड़ना**-शरण में आना, दीनता से विनती करना। पैर छूना, विनय कर जाने से रोकना।—**पर—रखना**-अनुकरण करना, दूसरे की चाल पर चलना, शीघ्रता करना।—**पखारना**-पैर धोना। "पाँव पखारि बैठि तरुछाँहीं"।—**पाँव चलना**-पैदल चलना।—**पीटना**-घबराना, अधीर होना, व्यर्थ परिश्रम या निष्फल उद्योग करना।—**पड़ना (परना)**-पैरों पर गिर कर प्रणाम करना,

दीनता से प्रार्थना करना।—**पर गिरना, पाँव पूजना**-भक्ति करना, पृथक् या अलग रहना, ब्याह में कन्या-पक्ष वालों का पक्षवालों का वर कन्या के पैर पूजना।—**पसारना**-पैर फैलाना, मरना, आडंबर या ठाठ-बाट बढ़ाना, अति करना।—**(पैर) फूँक फूँक कर रखना**-सावधान रहना, सावधानी से चलना, विचारपूर्वक कार्य करना।—**फैला कर सोना**-निश्चिन्त या बेधड़क या निर्भय रहना।—**फैलाना**-अधिकार बढ़ाना, प्रवेश या पैठ या प्रसार करना, मचलना, जिद करना, पाकर अधिक के लिये लोभ से हाथ फैलाना।—**बढ़ाना**-वेग से चलना, अतिक्रमण करना, आगे (अधिक) बढ़ना, पैर आगे रखना। —**भर जाना**-श्रांत या थक जाना, थकावट से पैरों का भारी होना।—**भारी होना**-गर्भ रहना। —**भारी पड़ना**-जोर से पैर पड़ना, थक जाना। —**रगड़ना**-निष्फल या व्यर्थ काम करना, व्यर्थ उद्योग करना, शोक वा दुःख प्रगट करना।— **(पद) रोपना**-प्रण या प्रतिज्ञा करना। "सभा माँझ प्रन करि पद रोपा"—[रामा०]। "बहुरि पग रोप कह्यो"—रत्ना०।—**लगना**-ठहरना, प्रणाम करना।—**से पाँव बाँधना (बाँध रखना)** -सदा किसी के पीछे लगा रहना, कभी भी नहीं छोड़ना, रक्षा या चौकसी करना।—**भिड़ाना**-बराबरी करना।—**सोना**-पाँव शून्य होना, झुनझुनी उठना। **दबे—(पैर) आना**-धीरे धीरे आना। **(किसी के)—न होना**-स्थिर न रहने का साहस या बल न होना, दृढ़ता न होना, चल न सकना। **धरती (जमीन) पर— (पैर न धरना) रखना**-अति अभिमान करना।

पाँवण, पाँवड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) पाँवरा (व्र०) बड़ों की राह में बिछाने का वस्त्र, पायन्दाज, पाँवर (ग्रा०)। [**पाँवड़ी** (स्त्री०)]।

पाँवर*†—(वि० ...) [सं० पामर] नीच, पामर, पापी, दुष्ट, मूर्ख, पोच, तुच्छ।

पाँवरी, पाँवड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाँव+री प्रत्य०] पाँवड़ी, जूता, खड़ाऊँ, सीढ़ी, सोपान। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पौगी] पौरी, ड्यौढ़ी, दालान, बैठक।

पाँशु—(संज्ञा, पु०, सं०) रज, धूलि, दोष, बालू, खाद, [पाँस (दे०)]। "तस्याः खुरन्यास-पवित्र, पाँशुम्"—रघु०। पवन-वाहित पाँशु-प्रहार से—हरि०।

पाँशुका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धूलि, रज, रजस्वला।

पाँशुल—(वि०, पु०, सं०) दोषी, मलिन, लंपट, व्यभिचारी [**पाँशुला** (स्त्री०)]।

पाँशुला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दोषिणी, मलिना, व्यभिचारिणी। "अपांशुलाना धुरि कीर्तिनीया" —रघु०।

पाँस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पाँशु] खेत को उपजाऊ करने की सड़ी-गली चीजों की खाद, सड़ने से उठा खमीर।

पाँसना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० पाँस+ना प्रत्य०] खेत में खाद देना। "खेत पाँसना, खूब जोत कर पानी देना तीन"—स्फुट०। [**पाँसाना, पसवाना**—(प्रे० रूप)]।

पाँसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाशक] चौपड़ खेलने के हाथी दाँत या हड्डी के चौकोर टुकड़े। "ज्यों चौपड़ के खेल में, पाँसा पड़े सो दाँव"— वृन्द। **मुहा०—उलटना**-किसी उपाय या उद्योग का उलटा फल होना।

पाँसी—(संज्ञा, स्त्री०) घास-भूसा रखने की जाली जो रस्सी से बिनी हुई होती है।

पाँसुरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पसली] पसली। "पाँसुरी उमाहि कबौं बाँसुरी बजावैं है" —ऊ० श०।

पाँहीं*†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० पंत] समीप, निकट, पास, से (करण-विभक्ति)। "मुख-छबि कहि न जाय मोहिं पाहीं।"

पा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पाँव, पैर, कदम। पेड़ की जड़।—**कार**-(संज्ञा, पु०) प्यारा, खिदमत करने वाला व्यक्ति।—**खाना**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पुरीष, टट्टी, मैला, गूह, मल-त्याग-स्थान।— **जामा**-(संज्ञा, पु०, दे०, फ़ा०) पैरों से कमर तक ढाँकने का पाँवों में पहनने का सिला कपड़ा, इसके भेद है—पेशावरी, नैपाली, सुथना, चूड़ीदार, अरबी, कलीदार, इजार, तमान आदि पतलून। —**जेब**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) नूपुर, छागल। —**ताबा**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पाँवों में पहनने का मोजा।—**पोश**-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) जूता।—**बंद**-(वि०, फ़ा०) पराधीन, बद्ध, कैद, प्रतिज्ञा-पालन में विवश। [**पाबंदी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**बंदी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पाबंद होने का भाव, कैद।—**माल, पायमाल** -(वि०) [फ़ा० पा+माल—रौंदना] पददलित,

चौपट, खराब, बरबाद, तबाह। [**पामाली** (संज्ञा, स्त्री०)]।

पाजी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पदाति] रक्षक, पैदल सिपाही, पयादा, प्यादा, चौकीदार। (वि०, दे०) [सं० पाय्य] दुष्ट, लुच्चा, गुंडा। [**पाजीपन** (संज्ञा, पु०)]

पाइ*—संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पायिक] पाँव, पाद, पू० का० क्रि० स० (हि० पाना) पाकर।

पाइक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद] धावन, दूत, दास, सेवक।

पाइतरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पाद-स्थली] पाँयताना, पाँयता।

पाइल*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पायल] पायल, पाजेब, छागल (प्रान्ती०)।

पाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पाद-चरण] किसी वस्तु का चौथाई भाग, दीर्घ आकार की मात्रा, पूर्ण विराम का चिह्न। एक ताँबे का सिक्का जो एक पैसे मे ३ मिलता है। घुन एक कीड़ा (गेहूँ या धान का)। एकाई का चौथाई सूचक संख्या के आगे लगाने की छोटी खड़ी लकीर। मंडल मे नाचने की क्रिया। क्रि० स० सा० भू० स्त्री० पाया।

पाउँ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद] पाँव, पैर। "आज संसार तो पाउँ मेरे परै" राम चं०।

पाक—(संज्ञा, पु०, सं०) पकाने की क्रिया या भाव, पकवान, रसोई, औषधियों का चाशनी में पाग, पाचन-क्रिया, श्राद्ध के पिंडों की खीर। "आप गयी जहँ पाक बनावा"—[रामा०] (वि०, फ़ा०) शुद्ध, पवित्र, निर्मल, निर्दोष, समाप्त।—**गृह**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रसोईघर।—**दामन**—(वि०, यौ०, फा०) निर्दोष। [**पाकदामिनी** (संज्ञा, स्त्री०)] सती, पतिव्रता।—**पात्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, स०) रसोई के बरतन, थाली, हाँडी आदि।—**पटी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) चूल्हा, भट्ठी, आँवा।—**यज्ञ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गृह-प्रतिष्ठा के समय खीर का हवन, पंच महायज्ञों में से ब्रह्मयज्ञ को छोड़कर शेष ४ यज्ञ, बलि, वैश्व-देव, श्राद्ध, अतिथि-भोजन। [**पाकयाज्ञिक** (वि०)]।—**रिपु**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्र।—**स्थान**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) रसोई-घर, पाकालय, पाकगृह।—**शासन**-(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र, पाक नामक दैत्य के मारने वाले, [**पाक-सासन** (दे०)]। "बैठे पाकसासन लों सासन कियो करैं"—रसाल।—**सबसी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गरम बटलोई उठाने का हथियार, संगसी।—**स्थली**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पक्वाशय, रसोई-घर। [**पाकस्थल** (पु०)]।—**स्थान**-(संज्ञा, पु०) रसोईघर। [—**साफ** (यौ०)]। मुहा० —**झगड़ा—करना**-किसी कठिन कार्य को कर डालना, बखेड़ा मिटाना, मार डालना। साफ। [—**दामन** (यौ०)—निर्दोष, निष्कलंक। (वि०, दे०) [सं० पक्व] परिपक्व। [**पाककर्त्ता** (वि०, यौ०, सं०) रसोई बनाने वाला, रसोइया।

पाकखार—(संज्ञा, पु०, सं०) जवाखार।

पाकठ†—(वि०, दे०) [हि० पकना] पका हुआ, अनुभवी, तजरबेकार, मजबूत, दृढ़।

पाकड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाकर] पाकर पेड़।

पाकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पकना] पकना, पक जाना, परिपक्व होना।

पाकर, पाकरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्कटी] पकरिया, पलखन नामक पेड़। "पाकर जंतु रसाल, तमाला"—[रामा०]।

पाकल—(संज्ञा, पु०, सं०) वायु, अग्नि, हाथियो को होने वाला एक प्रकार का बुखार, कुंजरज्वर।

पकलि—(संज्ञा, स्त्री०) रोहिणी, एक पेड़।

पाका†—(वि०, दे०) [सं० पक्व] पका हुआ, पक्का। (संज्ञा, पु० दे०) फोड़ा, व्रण।

पाकारि, पाकारी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० व ... दे०] पाक दैत्य के शत्रु, इन्द्र।

पाकागार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रसोईघर।

पाकिस्तान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भारतवर्ष के मुसलमानो की जनसंख्या वाले प्रान्त जो अब (१५ अगस्त १९४७ से) स्वतंत्र होकर पाकिस्तान नामक राष्ट्र के रूप में हो गये है।

पाकिस्तानी—(वि०, फ़ा०) पाकिस्तान का (संज्ञा, पु०) पाकिस्तान का निवासी।

पाकूका—(संज्ञा, पु०, दे०) पाककर्त्ता।

पाकृया—(संज्ञा, पु०, दे०) सज्जी खार।

पाक्य—(वि०, सं०) पचने या पकने योग्य।

पाक्ष—(वि०, सं०) पाक्षिक, किसी दल से बँधा हुआ या सम्बन्धित।

पाक्षपातिक—(वि०, सं०) पक्षपाती, पक्षपात करने वाला, फूट पैदा करने वाला।

पाक्षिक—(वि०, सं०) पक्ष या पखवारा संबंधी, पक्षवाही, दो मात्राओं का एक छंद (पिं०)।

पाखंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाषंड] ढोंग, ढकोसला, आडंबर, धोखा, छल, नीचता, दिखावा, वेद-विरुद्ध आचार। [**पाखंडी, पाखंडी** (वि०)।] "जिमि पाखंड-विवाद तें गुप्त होहिं सदग्रंथ"—[रामा०]। **मुहा०—फैलाना**-किसी के ठगने का ढोंक फैलाना, मक्कर रचना।—**रचना**-दिखावा या धोखे की बात बनाना।—**करना**-ढोंग करना।

पाख, पाखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्ष] एक पक्ष या १५ दिन, पखवारा (ग्रा०), त्रिकोणाकार बड़ेर रखने को चौड़ाई की दीवार, पर, पंख, पखना।

पाखर, पाखरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पक्खर] बैलगाड़ी में अनाज आदि भरने को टाट की एक बड़ी गोन, हाथी की लोहे की झूल। (संज्ञा, पु०, दे०) पाकर वृक्ष।

पाखा—(संज्ञा, पु०, दे०) छोर, कोना, पाख।

पाखान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाषाण] पाषाण, पत्थर, पखान (ग्रा०)। "तुलसी राम-प्रताप तें, सिंधु तरे पाखान"—[रामा०]।

पाग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पग] पगड़ी, पगिया। (संज्ञा, पु०, दे०) पाक (सं०), चाशनी में पगी औषधि के लड्डू, शीरे में पके फल, मिठाई का शीरा।

पागना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पाक] मीठी चीनी में सानना या लपेटना। (क्रि० अ०, व्र०) अति अनुरक्त होना। "राम-सनेह-सुधा जनु पागे"—[रामा०] [**पगाना, पगवाना**—(क्रि० प्रेरणा रूप)।]

पागल—(वि०, दे०) सिड़ी, बावला, विक्षिप्त, मूर्ख, जिसका दिमाग या होश-हवास ठीक न हो। [**पगली** (स्त्री०)]।—**पन**-(संज्ञा, पु०) उन्माद, मूर्खता, चित्त विभ्रम, इच्छा और बुद्धि का विकारक रोग।—**खाना**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पागल+खाना फ़ा०] पागलों का औषधालय।

पागा—(संज्ञा, पु०, दे०) घोड़ों का समूह। (वि०, दे०) [हि० पागना] पागा हुआ।

पागुर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोमंथन] जुगाली, खाये हुए को फिर से चबाना।

पागुराना, पगुराना—(क्रि० अ०, दे०) [वि० पागुर] जुगाली या रोमंथ करना, बातचीत करना।

पाचक—(वि०, सं०) पकाने या पचाने वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) पाचन-शक्ति वर्धक औषधि। रसोइया। पाँच पित्तों में से एक पाचन अग्नि।

पाचन—(संज्ञा, पु०, सं०) पकाना, पचाना, खट्टा-रस, अग्नि, भोजन का शरीर की धातुओं में परिवर्तन, जठराग्नि-वर्धक औषधि, प्रायश्चित्त। [**पाचक** (वि०)] [**पाचिका** (स्त्री०)]। [**पाचकता, पाचकत्व** (संज्ञा, स्त्री०, वि०)]। पचाने वाला।—**शक्ति**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह शक्ति जो भोजन पचाती है, हाजिमा।

पाचना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० पाचन] भली भाँति पकाना। [**पाचित** (वि०)]।

पाचनीय—(वि०, सं०) पकाने या पचाने के योग्य, पाच्य।

पाचयिता—(वि०, पु०, सं०) पचानेवाला, पकाने वाला।

पाचल—(वि०, सं०) पकाने वाला, पचानेवाला। (संज्ञा, पु०) महाराज। रसोइया। अग्नि वायु।

पाची—(संज्ञा, स्त्री०,) एक लता विशेष।

पाच्छाह†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पादशाह] बादशाह, बाच्छाह (ग्रा०)।

पाच्य—(वि०, सं०) पाचनीय, पकाने या पचाने योग्य।

पाछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाछना] पोस्ता को बोंड़ी से अफ़ीम निकालने के हेतु नहन्नी से लगाया हुआ चीरा या किसी पेड़ के रस निकालने के हेतु लगाया हुआ चाकू या चीरा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पश्चात] पीछा, पिछला भाग। [**पीछे, पाछे** (क्रि० वि०, दे०)।]

पाछना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पाछा] चीरना, चीरा लगाना।

पाछल, पाछिल—(वि०, दे०) [हि० पिछला] पिछला, पीछे का, पीछे वाला।

पाछा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पीछा] पीछा।

पाछी, पाछू, पाछ*—(क्रि० वि०) [हि० पीछे] पीछे, पश्चात।

पाज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाजस्य] पाँजर।

पाटंबर, पाटांबर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रेशमी कपड़ा। [पटंबर (दे०)] "पाट कीट ते होय, तातें पाटंबर रुचिर"—[रामा०]।

पाट—(संज्ञा, पु०) [सं० पट्ट] रेशम, राजगद्दी,

सिंहासन, पीढ़ा। चक्की का एक पिल, कपड़ा वालों की पटियाँ, फैलाव, नख, रेशम का कीड़ा। एक प्रकार का सन, पीढ़ा। [राज-पाट, पाटाम्बर—(यौ०)] देखिए पटंबर। "जुगुल पाट घन-घटा बीच मनु उदय कियो नवसूर"—सूर०। नदी की चौड़ाई, चौड़ाई (वस्त्रादि), भरना।

पाटकृमि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रेशम का कीड़ा।

पाटच्चर—(संज्ञा, पु०, सं०) चोर, तस्कर।

पाटन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाटना] पटाव, छत, [पटनई (दे०)]। साँप के विष उतारने का एक मंत्र, घर के ऊपर की अटारी या छत।

पाटना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पाट] गढ़े को भर देना, छत बनाना, तृप्त करना, चुकाना (ऋण) सींचना।

पाटमहिषी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पटरानी। "जनक पाटमिषी जग जाना"—[रामा०]।

पाटरानी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० पाटराज्ञी] पटरानी।

पाटल—(संज्ञा, पु०, सं०) पाढ़र का वृक्ष।

पाटला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाढ़र का पेड़, लाल लोध, दुर्गा। "स पाटलायाम् गवितस्थ वांसम्"—रघु०। (संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का सोना।

पाटलि—(संज्ञा, स्त्री०) पाडर का वृक्ष। पांडु-फलि।—**पुत्र,—(ली) पुत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) मगध या बिहार की राजधानी, पटना नगर।

पाटली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पांडुफली, पाडर, पटना की एक देवी।—**पुत्र**-(संज्ञा, पु०) देखिए—'पाटलिपुत्र'।

पाटल्या—(संज्ञा, स्त्री०) पाटल। पुष्पों का गुच्छा।

पाटव—(संज्ञा, पु०, सं०) चतुराई। कुशलता। पटुता, दृढ़ता, विज्ञता, नैपुण्य। आरोग्यता।

पाटवी—(वि०) [सं० पाट] पटरानी का पुत्र। रेशमी या कौषेय कपड़ा।

पाटसन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पटसन] पटसन, एक प्रकार का सन।

पाटा—(संज्ञा, पु०) [हि० पाट] पीढ़ा, पट्टा।

पाटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पौधा विशेष, छाल, छिलका, एक दिन की मजदूरी।

पाटिया—(संज्ञा, पु०, दे०) पटिया, तुरसी, गले का एक सोने का बना गहना।

पाटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रीति, परिपाटी, अनुक्रम, जोड़, बाकी, गुणा, आदि का क्रम पंक्ति, श्रेणी, बालों की पटिया। **मुहा०—पढ़ना**-पाठ पढ़ना, शिक्षा पाना।—**पारना**-माँग के दोनों ओर बालों की पटिया बनाना, चारपाई की लम्बी पट्टी, चट्टान, खपरैल की नाली का अर्धभाग।

पाटीर—(संज्ञा, पु०, सं०) चंदन।

पाठ—(संज्ञा, पु०, सं०) सबक, किसी पुस्तक को बिना अर्थ के मूलमात्र पढ़ना। धर्म-ग्रन्थ का नियमानुसार पठन, पढ़ा या पढ़ाया गया, पढाई, अध्याय, परिच्छेद।—**दोष**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पढ़ने का ऐब या निंदनीय ढंग।—**भेद**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाठांतर।—**शाला**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चटशाला, विद्यालय, मदर्सा, स्कूल। **मुहा०—(कुपाठ) पढ़ाना**-स्वार्थ हेतु बहकाना। "कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू"—[रामा०] **उलटा—पढ़ाना**-बहका देना, कुछ का कुछ समझा देना। शब्द या वाक्य-योजना।

पाठक—(संज्ञा, पु०, सं०) पढ़ने वाला, बाँचने वाला, पाठ करने या पढ़ाने वाला, अध्यापक, धर्मोपदेशक। ब्राह्मणों की एक पदवी या जाति।

पाठन—(संज्ञा, पु०, सं०) पढ़ाना, अध्यापन। [**पठन-पाठन** (यौ०)] [**पाठनीय** (वि०)]

पाठना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० पढ़ाना] पढ़ाना।

पाठांतर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाठ-भेद, दूसरा पाठ, एक ग्रन्थ की दो प्रतियों में शब्द, वाक्य या क्रम में अन्तर।

पाठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाढ़ नामक लता (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुष्ट] जवान, हृष्ट पुष्ट, मोटा-ताजा, पट्ठा, भैंसा, बैल आदि। [**पाठी, पठिया** (स्त्री०)]

पाठालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाठशाला।

पाठिक—(वि०, सं०) जो मूल से भिन्न न हो, जो मूल पाठ से मिलता जुलता हो।

पाठिका—(संज्ञा, स्त्री०) पढ़ने या पढ़ाने वाली, पाढ़।

पाठित—(वि०, सं०) पढ़ाया हुआ।

पाठी—(संज्ञा, पु०) [सं० पाठिन्] पाठक, पाठ करने या पूजने वाला, चीता या चितावर।

पाठीन—(संज्ञा, पु०, सं०) मछली का भेद। [पढ़ना (दे०)]। "मीन पीन पाठीन पुराने"—[रामा० ।]

पाठ्य—(वि०, सं०) पढ़ने-योग्य, पठनीय । **—पुस्तक**—(संज्ञा, स्त्री०) कक्षाओं के लिए निर्धारित ज्ञाता [टेक्स्ट बुक]

पाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाट] किनारा, (धोती आदि कपड़े का) मचान, बाँध, चह, तिकठी (फाँसी की), कुएँ की जाली ।

पाड़ड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पाटल] पाटल नामक पेड़ ।

पाड़ना—(क्रि० स०, दे०) गिराना, पछाड़ना, पटकना, पारना, लिटाना ।

पाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पट्टन] पड़ा (प्रान्ती०) भैंस का बच्चा, मुहल्ला ।

पाढ़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाटा] पाटा, रखवाली करने वाला मचान ।

पाढ़त*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पढ़ना] जो पढ़ा जाय, जादू-मन्त्र, पढ़ना क्रिया का भाव ।

पाढ़र [**पाढ़ल**]—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाटल] पाडर नाम का पेड़ ।

पाढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) चित्रमृग । (संज्ञा, स्त्री०) एक औषधि-लता, [पाठा (दे०)]

पाढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पाठा] पाढ़ नामक औषधि विशेष ।

पाण—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पीना । पत्ता । तांबूल । कपड़े की माँड़ी, पान ।

पाणि, पाणी—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथ, कर, [पानि (दे०)] " जोरि पाणि अस्तुति करति" ।**—ग्रहण**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विवाह की एक रीति जब वर कन्या का हाथ पकड़ता है, ब्याह, विवाह ।**—ग्राहक**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पति ।**—घ**—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथों का बाजा, मृदंग, ढोल आदि ।**—ज**—(संज्ञा, पु०, सं०) अँगुली, नाखून ।**—पात्र**—(वि०) जो हाथ का पात्र काम लें ।**—पाद**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कर और चरण, हाथ-पैर ।**—पीडन**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विवाह, ब्याह, पाणिग्रहण, क्रोधादि से हाथ मलना ।**—बंध**—(संज्ञा, पु०) विवाह, पाणिग्रहण ।

पाणिनि—(संज्ञा, पु०, सं०) व्याकरण-ग्रन्थ अष्टाध्यायी के रचयिता एक प्रसिद्ध मुनि जो ईसा से ३ या ४ सौ वर्ष पूर्व हुए थे ।

पाणिनीय—(वि०, सं०) पाणिनि मुनि का कहा या निर्माण किया हुआ ।**—दर्शन**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाणिनि मुनि का व्याकरण शास्त्र (अष्टाध्यायी) ।

पातंजल—(वि०, सं०) पतंजलि कृत । (सं०, पु०) पतञ्जलि कृत योग-दर्शन और महाभाष्य (व्याकरण का उत्कृष्ट ग्रंथ) ।**—दर्शन**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) योग दर्शन या योग शास्त्र ।**—भाष्य**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महाभाष्य नामक व्याकरण का प्रख्यात ग्रंथ ।**—सूत्र**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) योगसूत्र या योग-शास्त्र ।

पात—(संज्ञा, पु०, सं०) पतन, मृत्यु, नाश, गिरना, पड़ना, नक्षत्रों की कक्षाओं के क्रांति-वृत्त को काट ऊपर या नीचे जाने का स्थान (खगोल) राहु (*संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पत्र], पत्ता । "ज्यों केला के पात पर, पात पात पर पात" । कान में पहनने के स्वर्ण के पत्ते (आभूषण) ।

पातक—(संज्ञा, पु०, सं०) पाप, अधर्म, कुकर्म । [**पातकी** (वि०)]

पातघावरा—(वि०, यौ०, दे०) अति डरपोक ।

पातन—(संज्ञा, पु०, सं०) पत्तों (व्र०), गिराने वाला । (क्रि० स०) गिराने की क्रिया ।

पातनीय—(वि०, सं०) गिराने या प्रहार करने योग्य ।

पातयिता—(वि०, पु०, सं०) गिराने वाला, फेंकने वाला ।

पातर, पातुर, पातुरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पत्र] पत्तरी, पत्तल । (संज्ञा स्त्री०) [सं० पातली] वेश्या, पतुरिया, रंडी । *† (वि०, दे०) [सं० पात्रट=पतला] पतला, दुबला, क्षीण, सूक्ष्म, बारीक ।

पातराज—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) सर्प विशेष ।

पातरि [**पातरी**]—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पत्र] पत्तल, [पतरी (दे०)] । "जूठी पातरी खात हैं"—प्र० राय० । (वि०, स्त्री०, दे०) दुबली, पतली, क्षीण, कृश ।

पातल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि०, पातर] पत्तल । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पातली] रंडी, पतुरिया । *† (वि०, दे०) [सं०, पात्रट= पतला] पतला ।

पातव्य—(वि०, सं०) रक्षा करने या पीने के योग्य ।

पातशाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पादशाह] बादशाह, राजा ।

पाता*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि०, पत्ता] पत्ता ।

पाताखत†—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० पात+आखत] पत्र और अक्षत, तुच्छ भेंट ।

पातार, पाताल—(संज्ञा, पु०, सं०) [पाताल (दे०)] पृथ्वी के नीचे ७ लोकों में से एक लोक, अधोलोक, नाग-लोक, गुफा । विवर या बिल, मात्रिक छंदों की संख्या, कला गुरु लघु आदि का सूचक चक्र (पिं०) बड़वानल । [**पातालीय, पाताली** (वि०, दे०)] **—केतु**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाताल वासी एक दैत्य विशेष ।**—खंड**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाताल ।**—गरुड़,—गरुड़ी**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) छिरैटा, छिरिहटा ।**—तुंबी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक लता विशेष ।**—निलय**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक दैत्य । सर्प जिसका घर पाताल में हो ।**—नृपति**-(संज्ञा, पु०, यौ०) सं०) सीसा धातु, पाताल का राजा, धातु ।**—यंत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कड़ी औषधों के गलाने या तेल निकालने का यंत्र ।

पाति-पाती*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पत्र, पत्री] पत्ती, पत्ता, दल, पत्र, चिट्ठी । "रावन कर दीजो यह पाती"—[रामा०] ।

पातित—(वि०, सं०) गिराया हुआ, फेंका हुआ, झुकाया हुआ ।

पातित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पतित होने का भाव, पाप, दुराचार, अधःपतन ।

पातिव्रत-पातिव्रत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पतिव्रता होने का भाव ।

पातिशाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० बादशाह] बादशाह ।

पाती—(वि०, सं०) गिरने या गिराने वाला । (वि०) पत्र, चिट्ठी । लज्जा, मर्यादा ।

पातुर†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पातली] वेश्या, रंडी, पतुरिया । [पातुरी (दे०)] ।

पात्य—(वि०, सं०) गिराने योग्य, प्रहार करने योग्य ।

पात्र—(संज्ञा, पु०, सं०) बरतन, भाजन । किसी विषय का अधिकारी । उपयुक्त, योग्य । नाटक के नायक, नायिका आदि, नट, अभिनेता, पत्र, पत्ता । **—दुष्टरस**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक प्रकार का रस-दोष जिसमें कवि अपने समझे या जाने हुए विषय से विरुद्ध कह जाता है ।**—वर्ग**-(संज्ञा, पु०) अभिनय करने वाला दल ।**—संस्कार**-(संज्ञा, पु०) प्रवाह, सफ़ाई (बर्त्तनों की)

पात्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) योग्यता, क्षमता, (संज्ञा, पु०) पात्रत्व ।

पात्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्याला, पात्र, फटा-पुराना या जीर्ण कपड़ा ।

पात्रता—(संज्ञा, स्त्री०) पात्रत्व (संज्ञा, पु०) पात्र होने का भाव या योग्यता ।

पात्रिक—(वि०, सं०) जो किसी पात्र से पाया गया हो, तौला हुआ ।

पात्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा बरतन, बरतन वाला ।

पात्रीय—(वि०, सं०) पात्र का, पात्र संबंधी ।

पाथ—(संज्ञा, पु०) [सं० पाथस्] पानी, जल, अग्नि, सूर्य, अन्न, वायु, आकाश । **पाथनाथ**-(यौ०)-सागर । (संज्ञा, पु०, दे०) (सं० पु०, दे०) [सं० पथ] राह, रास्ता, मार्ग, सागर । "पाथ नाथ नन्दिनी सों"—तु० ।

पाथना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रथन] बनाना, गढ़ना, सुडौल करना, ईंटें या खपरे बनाना, थोपना, कंडे बनाना, मारना, पीटना, ठोंकना, पीट या दबा कर बड़ी टिकिया बनाना ।

पाथनिधि—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पाथो-निधि] समुद्र, सागर, पाथनाथ ।

पाथर†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रस्तर] पत्थर । "पाथर डारै कीच में, उछरि बिगारै अंग" । —वृं० ।

पाथा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाथस्] जल, पानी, अन्न, आकाश । (क्रि० स०, सा०, भू०, हि०) पाथना ।

पाथि—(संज्ञा, पु०) [सं० पाथस्] समुद्र, आँख । घाव की पपड़ी, पितरों का जल ।

पाथेय—(संज्ञा, पु०, दे०) राह या मार्ग का भोजन, राह-खर्च, संबल ।

पाथोज—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल ।

पाथोद—(संज्ञा, पु०, दे०) मेघ, बादल ।

पथोधर—(संज्ञा, पु०, दे०) मेघ, बादल ।

पाथोधि—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र । "जेहि पाथोधि बँधायो हेला"–[रामा०] ।

पाथोनिधि—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र ।

पाद—(संज्ञा, पु०, सं०) पाँव, चरण, पैर । छंद का चौथाई भाग चरण, पद, बड़े पहाड़ के पास का लघुपर्वत । वृक्ष मूल, तल, गमन । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्द] अधोवायु, अपानवायु, गुदा-मार्ग की वायु ।—**कंटक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बिछुआ ।—**कीलिका**-(संज्ञा स्त्री०, सं०) पाजेब । —**कृच्छ्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) व्रत विशेष । —**खंड**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वन, जंगल । —**ग्रन्थि**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एँड़ी । —**गंडिर**-(संज्ञा, पु०, सं०) श्लीपद रोग, पीलपाँव रोग (वैद्य०) ।—**ग्रहण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाँव छूना ।—**चत्वर**-(संज्ञा, पु०, सं०) बकरा । बालू का टीला । ओला । पीपल का पेड़ । (वि०) निन्दक, चुगुलखोर ।—**चारी**-संज्ञा, पु०, सं०) पैदल चलने वाला ।—**टीका**-(संज्ञा, पु०, सं०) वह टीका या टिप्पणी जो किसी ग्रंथ के नीचे लिखी गयी हो, फुटनोट (अं०)—**तल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाँव का तलवा ।—**त्राण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जूता, खड़ाऊँ, पावड़ी, पौला ।—**प**-(संज्ञा, पु०, सं०) पेड़, वृक्ष, बैठने का पीढा । —**पीठ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पीढ़ा, पाटा "भूपाल-मौलि-मणि मंडित पाद-पीठ"—भो० प्र० ।—**पूरण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) छंद के किसी चरण के पूरा करने के हेतु रखा गया शब्द, किसी पद का पूरक वर्ण या शब्द ।—**प्रक्षालन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाँव धोना । —**प्रणाम**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाँव छू कर प्रणाम, साष्टांग दंडवत ।—**प्रहार**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) लात मारना, ठोकर मारना, पदाघात । —**रक्ष-रक्षक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जूता, पनही, खड़ाऊँ, पावड़ी, पौला (ग्रा०) ।—**वंदन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाँव पड़ कर प्रणाम ।—**शाह**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बादशाह ।—**हीन**-(वि०, यौ०, सं०) बिना चरण का ।

पादक—(वि०, सं०) चलने वाला, चौथाई ।

पादना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पर्दन] अधो-वायु छोड़ना, वायु सरना ।

पादरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [पुर्त० पैड्रे] ईसाई धर्म का पुरोहित ।

पादांगुलि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० पाद+अंगुलि] पैर की उँगली ।

पादांत—(संज्ञा, पु०, सं०) पैर का अगला भाग ।

पादांबु—(संज्ञा, पु०, सं०) पाँव धोने का पानी ।

पादाकुलक—(संज्ञा पु०, सं०) चौपाई, छंद ।

पादाक्रांत—(वि०, यौ०, सं०) पददलित, पाँव से रौंदा या कुचिला हुआ, पामाल ।

पादाग्र—(संज्ञा, पु०) [सं० पद+अग्र] पाँव का अगला हिस्सा ।

पादाघात—(संज्ञा, पु०, सं०) पैर का आघात, लात मारना ।

पदाति-पादातिक—(संज्ञा, पु०, सं०) पैदल सिपाही, प्यादा, [पयादा (दे०)] ।

पादारघ*—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० पाद्यार्घ] पाँव धोने के लिए जल ।

पादारविंद—(संज्ञा, पु०, सं०) चरण कमल ।

पादार्पण, पदार्पण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रवेश करना, पाँव देना या रखना । "पादार्पणा-नुग्रह पूतपृष्ठाम्"—रघु० ।

पादी—(संज्ञा, पु०) [सं० पादिन्] पाँव वाले जल-जन्तु जैसे—मगर ।

पादीय—(वि०, सं०) पद वाला, मर्यादा वाला ।

पादुक—(वि०, सं०) पैदल चलने वाला ।

पादुका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खड़ाऊँ, पावड़ी "जे चरनन की पादुका, भरत रहे लव लाय"—[रामा०] ।

पादोदक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चरणामृत, पाँव का धोवन ।

पाद्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पाँव धोने का जल ।

पाद्यक—(संज्ञा, पु०, सं०) पाद्य देने का एक भेद विशेष ।

पाद्यार्घ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाँव धोने का जल, पूजा की सामग्री ।

पाधा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उपाध्याय] आचार्य; पंडित, उपाध्याय, पुरोहित ।

पान—(संज्ञा, पु०, सं०) पीना, खाना, सेवन करना, जैसे—[**मद्यपान**—(यौ०)] शराब पीना । [**खानपान** (यौ०)] पेय द्रव्य, पीने की वस्तु, पानी, मद्य । कटोरा, प्याला । (संज्ञा, पु०) [सं० प्राण] प्राण, [प्रान (दे०)] । (संज्ञा, पु०) [सं० पर्ण] पत्र, ताँबूल । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाणि] पानि, हाथ । **मुहा०**—**देना**-बीड़ा देना ।—**लगाना**-कत्था-सुपारी आदि से पान बनाना । (यौ०) ।—**पत्ता**-लगा या बना पान, तुच्छ पूजा या भेंट ।—**फूल**-(यौ०) सामान्य उप-हार या भेंट, अत्यन्त मृदु वस्तु ।—**बनाना**-बीड़ा

तैयार करना। पान लगाना, —लेना—बीड़ालेना। तास के रंगों का एक भेद।—गोष्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) मद्यपान की मंडली या सभा।—दान —(संज्ञा, पु०) [हि० पान+फ़ा० दान प्रत्य०] पान का डिब्बा, पनडब्बा।

पानड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० पान+ड़ी प्रत्य०] एक सुगंधित पत्ती।

पानन—(संज्ञा, पु०) सजावट के काम आनेवाली टिकाऊ लकड़ी।

पानस—(वि० सं०) कटहल से सम्बन्धित। (संज्ञा, पु०) कटहल की शराब।

पानारा, पनारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पनारा] नाबदान, नरदवा, नर्दा (ग्रा०)।

पाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रापण] प्राप्त करना, वापस मिलना, भोगना, समथ या बराबर होना, भोजन करना, खाना, (साधु) पावना, अधिकार में करना, पता या भेद पाना, सुन या जान लेना, अनुभव या साक्षात करना, समझना। देखना, जानना, मिलना। [प्राप्तव्य—(वि०)] पावना।

पानागार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शराबखाना, मधुशाला, हौली (ग्रा०)।

पानात्यय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अति मद्यपान से उत्पन्न एक रोग (वै०)।

पानासक्त—(वि०, यौ०, सं०) मद्यप्रिय।

पानाहार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अन्न-जल, खाना-पीना।

पानि, पानी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाणि] हाथ। *(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पानीय] पानी। "जोरि पानि अस्तुति करत"—[रामा०]।

पानिग्रहन*—(संज्ञा, पु०, दे० यौ०) [सं० पाणि-ग्रहण] विवाह, ब्याह।

पानिप—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पानी+प प्रत्य०] कांति, द्युति, चमक, ओप, आब। "सकल जगत पानिप रह्यो बूँदों में ठहराय"—ललित०।

पानिय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पानीय] पानी। "प्यासी तजौं तनु-रूप-सुधा बिनु पानिय पीको पपीहै पिआओ"—हरि०।

पानी—(संज्ञा, पु०) [सं० पानीय] आक्सीजन और हाईड्रोजन गैसों से बना एक द्रव पदार्थ (विज्ञा०), जल, अंबु, तोय।—दार—(वि०) [हि० पानी+दार फ़ा० प्रत्य०] इज्जतदार, मानी, साहसी, धार, बाढ़ या चमकवाला। "पानीदार पारथ-सपूत को कृपानी-गत, पानीदार धार मैं विलीन बड़भागी है"—अ० व०।—देवा—(वि०, यौ०) [हि० पानी+देवा—देनेवाला] पिंडदान या तर्पण करने वाला, वंशज।—फल—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० पानी+फल सं०] सिंघाड़ा। मुहा०—का बतासा या बुलबुला—नश्वर, क्षण-भङ्गुर वस्तु।—का फेन या फफोला—"पानी कैसो फेन और जल को फफोला है"—पद्मा०।—की तरह बहाना—अंधा-धुंध खर्च करना, बिना सोचे-समझे व्यय करना।—के मोल—बहुत कम मूल्य पर, बहुत ही सस्ता।—टूटना—कुएँ-ताल में पानी का बहुत ही कम हो जाना।—देना—सींचना। पितरों के नाम पर पानी डालना, तर्पण करना।—पढ़ना मंत्र पढ़कर पानी फूँकना।—परोना—पानी पढ़ना या फूँकना।—पानी होना—शरम के मारे कट जाना, लज्जित होना।—फूँकना—मंत्र पढ़कर पानी में फूँक मारना। किसी पर—फेरना या फेर देना (डालना, गिराना)—मटियामेट या चौपट कर देना। किसी के सामने—भरना—अधीनता स्वीकार करना, फीका पड़ना।—भरी खाल—अति क्षणभंगुर या अनित्य शरीर।—में आग लगाना—जहाँ सम्भव न हो वहाँ झगड़ा करा देना।—में फेकना या बहाना—बरबाद या नष्ट करना। सूखे—में डूबना—भ्रम में पड़ना, धोखा खाना। मुँह में—भर आना या छुटना—स्वाद लेने की इच्छा होना, अति लालच होना। रस, अर्क, जूस, छवि, कांति, जौहर, आब, इज्जत-आबरू, शर्म, पानी सी द्रव वस्तु, जल-रूप में सार अंश। मान, प्रतिष्ठा।—उतारना—इज्जत उतारना, अपमानित करना।—जाना—लज्जा या प्रतिष्ठा नष्ट होना या न रहना, इज्जत जाना। (आँख का)—जाना—लज्जा न रहना मरदानगी, हिम्मत, वर्ष। (जैसे—पाँच पानी का बैल) मुलम्मा, वंशगत विशेषता या कुलीनता (पशुओं की)।—रखना—मान-मर्यादा रखना। "रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून। पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुस, चून"।—करना या कर देना—किसी का क्रोध मिटाना, चित्त, शीतल करना, नष्ट या शिथिल करना।—निकालना—अति श्रमित या दलित करना। जलवायु, आबहवा, पानी सी फीकी निःस्वाद वस्तु। वैर। द्वंद्व-युद्ध।—लगना—जल-वायु का उपयुक्त न होना, उससे स्वास्थ्य

बिगड़ना। "लागै अति पहार कर पानी"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाणि] हाथ। "बोले भरत जोरि जुग पानी"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, हि०) कांति, धार, बाढ़ (अस्त्रादि की)—**रखना** (**खड्ग में**)–बाढ़ या धार रखना। (**आँखों से**)—**आना** (**गिरना**)–आँखों से आँसू गिरना। (**आँखों में**)—**आना** (**बहना, गिरना**)–आँसू बहते रहना।—**न माँगना**–तुरन्त मर जाना।—**पड़ना**–मेंह बरसना।—**पी कर कोसना**–सदा बुरा मनाना, अशुभ चाहना।—**भरना** (**भराना**)–अधीन होना (करना) (**किसी जगह**)—**भरना**–पानी रुकना, अधीनता स्वीकार करना, तुच्छ होना। (**आँखों का**)—**मरना**–लज्जा न रहना।—**पतला करना**–दुख देना, पीड़ा पहुँचाना दुखी करना।—**सा पतला** अति तुच्छ, सूक्ष्म या साधारण।

पानीपत—(संज्ञा, पु०) दिल्ली के पास का मैदान जहाँ की तीन मुठभेड़ें (प्रथम-बाबर और इब्राहिम लोदी की १५२६ में, द्वितीय अम्बर और हेमू की १५५६ में, तृतीय शाह अब्दाली और मराठों में १७६३ में) प्रसिद्ध है।

पानीय—(संज्ञा, पु० सं०) पानी, जल। (वि०) पीने के योग्य, रक्षा-योग्य।

पानूस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फानूस] फानूस'।

पानौरा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पान+बरा] पान के पत्ते की पकौड़ी।

पाप—(संज्ञा, पु०, सं०) बुरा काम, कुकर्म, पातक, अघ, पापी [**पुण्य, धर्म** (विलो०)]। **मुहा०—उदय होना**–बुरे प्रारब्ध या संचित कुकर्मों या पापों का फल मिलना, पाप कटना, पाप का नाश होना। **कटना**–बखेड़ा या अनिच्छित काम का दूर होना।—**काटना**–पाप मिटाना, पाप का बुरा फल भोगना।—**कमाना या बटोरना**–पाप-कर्म करना।—**लगना**–दोष या पाप होना, कलंक लगना। अपराध, पाप बुद्धि, अनिष्ट, बुराई, अहित, जुर्म, हत्या, वध, झंझट।—**कटना**–जंजाल छूटना, झगड़ा मिटना।—**मोल लेना**–जान बूझ कर झगड़े में फँसना।—**पड़ना**–कठिन हो जाना, दोष होना।—**ग्रह**–(यौ०) मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य, बुरे ग्रह (ज्यौ०)।—**कर्म**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाप का कर्म, कुकर्म, अशुभ कार्य।—**कर्मा**–(संज्ञा, यौ०) [सं० पाप कर्मन्] पापाचारी, पापी, कुकर्मी।—**गण**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ठगण का आठवाँ भेद (पिं०)।—**घ्न**–(वि०, सं०) पापनाशक, पापसूदन।—**चारी**, [**पापचारी**]–(वि०) [सं० पापचारिन्] पापी, पाप करने वाला। [**पाप-चारिणी** । (स्त्री०)]—**दृष्टि**–(वि० यौ०, सं०) बुरी पाप-पूर्ण दृष्टि, हानि या अनिष्टप्रद दृष्टि।—**नाशन**–(संज्ञा, पु० यौ०, सं०) पाप का विनाश करने वाला, शिव, विष्णु।—**नाशक**–पापनाशी, प्रायश्चित्त।—**योनि**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पाप से मिलने वाली कीड़े या पशु-पक्षी की योनि।—**रोग**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पापाचरणजन्य रोग, जैसे— यक्ष्मा, कुष्ठ, उन्माता, अन्धता, पीनस, मूकता आदि, छोटी माता, वसंत रोग।—**लोक**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नरक।—**हर**–(वि०, पु०, सं०) पापनाशक।

पापड़-पापर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्पट] उर्द या मूँग की धोई दाल के आटे की मसालेदार पतली रोटियाँ। **मुहा०—बेलना**–बड़ा परिश्रम करना, दुख या कठिनता से समय बिताना। **बहुत से—बेलना**–अनेक प्रकार के काम कर चुकना।

पापड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्पट] एक पेड़, पित्तपापड़ा।

पापाचार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाप का आचरण, दुराचार। [**पापाचारी** (वि०)], [**पापचारिणी** (स्त्री०)]।

पापात्मा—(वि०, यौ०) [सं० पापात्मन्] दुष्टात्मा, पाप में अनुरक्त, पापी। "पापात्मा पाप-संभवः"—स्फु०।

पापाधम—(संज्ञा, पु०) [सं० पाप+अधम] महापापी।

पापानुबंध—(संज्ञा, पु०, सं०) पाप का बुरा परिणाम।

पापिष्ठ—(वि०, सं०) बहुत बड़ा पापी।

पापी—(वि०) [सं० पापिन्] पाप करने वाला, अघी, नृशंस, निर्दय, क्रूर, पातकी, पर-पीड़क। "राम तोर भ्राता बड़ पापी"—[रामा०]। [**पापिनी** (स्त्री०)]

पामड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाँवड़ा] पाँवड़ा, बड़ों के रास्ते में बिछाने का वस्त्र, [**पायंदाज** (फ़ा०)]।

पामर—(वि०, सं०) दुष्ट, पापी, खल, कमीना, नीच, मूर्ख। "नर पामर केहि लेखे माँही"—[रामा०]।

पामरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रावार] दुपट्टा। (हि० पाँवड़ी) खड़ाऊँ।

पायँ, पाइँ, पाय†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाँव] पाँव, पैर] "आज संसार तो पायँ मोरे परै"—[राम०]।—**जेहरि**※-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० पायजेब] पायजेब, [पाजेब (दे०)]। —**ता**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पाँय+स्थान सं०] पैताना, [**सिरहना, उसीस** (विलो०)] [**पायँती (स्त्री०)**]।

पायंदाज—(संज्ञा, पु०, सं०) पाँव पोंछने का कपड़ा। "निरमल राखै चाँदनी, जैसे पायंदाज" —वृं०।

पाय—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी, जल (फ़ा०) पा का समास में।—**ताबा**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पैर का मोजा, जुर्राब।—**दार**-(वि० फ़ा०) टिकाऊ, दृढ़, मजबूत।—[**पायदारी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

पायक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पादातिक, पायिक] दूत, दास, सेवक, धावन, प्यादा।

पायना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गीला करना, सींचना। धार तेज करना।

पायरा—(संज्ञा, पु०) [हि० पाय+रा] पैकड़ा, रकाब।

पायल—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० पाय+ल+प्रत्य०] पाजेब, नूपुर, तेज चलने वाली हथिनी, उलटा उत्पन्न होने वाला लड़का।

पायस—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खीर, सलई का गोंद, सरल-निर्यास।

पायसा※†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पार्श्व] पड़ोस, [परोस (दे०)]।

पाया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद] पावा, मचवा (प्रान्ती०), गोड़ा, पद, खंभा। ओहदा। सीढ़ी, सहारा, आधार। (सा०, भू०, स०, क्रि०) [हि० पाना] पागया। **मुहा०—मजबूत होना (करना)**-आधार या सहारा, दृढ़ होना (करना)। **(किसी का) मजबूत—पकड़ना**-दृढ़ सहारा लेना।—**दृढ़ करना (होना)**-आधार या स्थिति को सुदृढ़ करना (होना)। आधार।—**पकड़ना**-सहारा या सहायक पाना या बनाना।

पायिक—(संज्ञा, पु०, सं०) दूत, पैदल सिपाही।

पायी—(वि०) [सं० पाइयेन] पीने वाला।

पारंगत—(वि०, सं०) पूरा ज्ञाता या पंडित, पार गया हुआ, मर्मज्ञ, पारगामी।

पारंपरीय—(वि०, सं०) परंपरागत, क्रमानुसार।

पारंपर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) परंपरा का क्रम, वंशपरंपरा, कुल की सदा की रीति।

पार—(संज्ञा, पु०, सं०) नदी आदि के दूसरी ओर का तट या किनारा। "जो तुम अवसि पार गा चहहू"—[रामा०]।—**दर्शक**-(वि०) पार को देखने वाला, दूर की स्थिति को समझने वाला।—**दर्शी**-(वि०) दूरदर्शी, दूर तक सोचने वाला, परिणाम-दर्शी, पंडित। **आरपार**-(यौ०) दोनों किनारे, इस किनारे से उस किनारे तक। [**वार-पार** (यौ०)]। **मुहा०—उतरना (उतारना)**-किसी कार्य्य से छुट्टी मिलना, सफलता या सिद्धि प्राप्त करना, ठिकाने लगना (लगा देना), मार डालना, पूरा करना, मुक्त होना, निकल जाना।—**करना**-पूर्ण करना, बिताना, तय करना, सह या झेल जाना, नदी आदि तैर कर दूसरे तट पहुचना, निबाहना। —**लगना**-नदी के एक तट से दूसरे पर पहुँचाना, निबाहना, निर्वाह होना।—**पाना**-सफलता या मुक्ति पाना, जीतना। "धीरज धरिय तौ पाइय पारू" —[रामा०]। **किसी से—लगना**-पूरा होना, हो सकना, निर्वाह होना, सफल या पूर्ण (सिद्ध) होना।—**लगाना**-मुक्त या उद्धार करना, निर्वाह करना, दुःख या कष्ट से निकालना। पार उतारना, पूरा करना।—**होना**-किसी कार्य को पूरा करना, मुक्त होना, किसी वस्तु के बीच से होकर दूसरी ओर पहुँचना। **मुहा०—पाना**-समाप्ति या पूरा होने तक पहुँचना। **किसी से—पाना**-जीतना, हरा देना, विरुद्ध सफलता प्राप्त करना। ओर-छोर, अंत, सीमा; दूसरा पार्श्व, दो तटों में कोई (एक की अपेक्षा दूसरा)। अव्य०—आगे, परे, दूर, अलग।

पारई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० परई] परई।

पारख*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पारिख] पारिख, परख, पारखी।

पारखद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पार्षद] सेवक, मंत्री, साथ रहने वाला, अंगरक्षक।

पारखी—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० परिख+ई० प्रत्य०] परीक्षक, परखैया, परखने वाला। "वचन पारखी होहु तुम पहले आप न भाख।"

पारग—(वि०, पु०, सं०) कार्य पूर्ण करने वाला, पार जाने वाला, पूर्ण ज्ञाता, समर्थ ।

पारग्रामिक—(वि०, सं०) विरोधी, पराया ।

पारचा—(संज्ञा, पु०, फा०) खंड, भाग, टुकड़ा, अंश, परचा, कपड़े या कागज का टुकड़ा, एक तरह का रेशमी वस्त्र, पहनावा ।

पारजात*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पारिजात] एक देव-वृक्ष ।

पारण—(संज्ञा, पु०, सं०) व्रत के दूसरे दिन का प्रथम भोजन तथा तत्संबन्धी कृत्य, पूर्ण, समाप्ति, बादल, [पारन (दे०)] [**पारणा** (स्त्री०)] ।

पारणीय—(वि०, सं०) समाप्त, पूर्ण, पूरा करने योग्य ।

पारतंत्र्य—(संज्ञा, पु०, सं०) परतंत्रता ।

पारत्रिक—(वि०, सं०) पारलौकिक, मुक्ति-संबंधी ।

पारथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पार्थ] अर्जुन । "पारथ से ठाढे पुरुषारथ को छाँड़े ठिग ।"

पारथिव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पार्थिव] पृथ्वी-संबंधी । (वि०) मिट्टी का, मिट्टी का निर्मित, मिट्टी सम्बन्धी ।

पारद—(संज्ञा, पु०, सं०) रस, पारा, फारस की एक पुरानी जाति । "अक न आव मयंकमुखी परजक पै पारद की पुतरी सी ।"

पारदारिक—(संज्ञा, पु०, सं०) परस्त्रीरत ।

पारदेशिक—(वि०, सं०) विदेशी, अन्य देश का ।

पारदर्शक—(वि०, सं०) वह वस्तु जिसमे उसके दूसरी ओर के पदार्थ दिखलाई दें, जैसे—काँच या शीशा ।

पारदर्शी—(वि०) [सं० पारदर्शिन्] दूरदर्शी, अग्रसोची, चतुर, बुद्धिमान, ज्ञानी ।

पारधी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पारिधान] व्याध, शिकारी, बहेलिया, वधिक, हत्यारा । "धनुष बान ले चला पारधी"—कबी० ।

पारन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पारण] पारण ।

पारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पड़ना] गिराना, लेटाना, पछाड़ना, रखना [**पिंडा पारना** (यौ०)] । —श्राद्ध या पिंडदान करना, उत्पात या बखेड़ा मचाना, अंतर्गत करना, पहनाना । बुरी बात घटित करना, जमा या ढालकर तैय्यार करना, जमाना, जैसे—काजल पारना । *† (क्रि० अ०, दे०) [हि० पार लगना] समर्थ होना । *† (क्रि० स०, दे०) [हि० पालना] पालना, पोषना ।

पारमार्थिक—(वि०, सं०) परमार्थ या मुक्ति-साधक, परमार्थ संबंधी, वास्तविक, ठीक ठीक ।

पारमार्थ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) परम सत्य ।

पारलोक्य—(वि०, सं०) दूसरे लोक से सम्बन्धित ।

पारलौकिक—(वि०, यौ०, सं०) मुक्ति-साधक, परलोक में अच्छा फल देने वाला, स्वर्गलोक सम्बन्धी । [**लौकिक** (विलो०)] ।

पारवश्य—(संज्ञा, पु०, सं०) परवशता ।

पारशव—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्य स्त्री से उत्पन्न, एक वर्ण-संकर जाति, लोहा, एक देश जहाँ मोती निकलते थे, [पारसव (दे०)] ।

पारषद*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० पार्षद] पार्षद, सेवक, दास, मंत्री, साथी ।

पारस—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० स्पर्श] एक कल्पित स्पर्श मणि, जिसके छू जाने से लोहा सोना हो जाता है । "पारस परसि कुधातु सुहाई"—[रामा०] । अत्यन्त उपयोगी या लाभदायक वस्तु । (वि०) पारस के समान, स्वच्छोत्तम, नीरोग । *(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पार्श्व] निकट, पास । (संज्ञा, पु०) [हि० परसना] परोसा हुआ भोजन, मिठाई आदि का पत्तल । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पारस्य] प्राचीन काम्बोज और वाह्लीक के पश्चिम का देश, फारस ।—**नाथ**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पार्श्वनाथ] जैनियों के एक तीर्थंकर ।

पारसव*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पारशव] पराई, स्त्री से जन्मा पुत्र, पारशव ।

पारसी—(वि०, दे०) [फ़ा० फारस] पारस देश संबंधी, पारस का । (संज्ञा, पु०) बंबई और गुजरात के वे निवासी जिनके पूर्वज हजारों वर्ष पूर्व मुसलमान होने के भय से फारस त्याग कर आये थे, पारसी लोग ।

पारसीक—(संज्ञा, पु०, सं०) फारस देश का, फारसवासी, फारस का घोड़ा ।

पारस्कर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन देश, गृह्यसूत्रकार एक मुनि ।

पारस्परिक—(वि०, सं०) आपस का, परस्पर, एक दूसरे का ।

पारस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पारस या फारस ।

पारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पारद] चाँदी से सफेद, चमकदार एक द्रव धातु जो साधारण शीत-ताप में द्रव ही रहती है, मुक्ति, प्राधान्य, प्रतिलोष्य, भृशार्थ, विक्रम, अहंकार, अनादार, शब्द का आदि स्वरूप। (वि०) सब से बढ़ा, सब से ऊपर। **मुहा०—पिलाना**-अति भारी करना। (संज्ञा, पु० दे०) [सं० पारि=प्याला] परई, पार, तट। "तुमहिं अछत को बरनै पारा"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पारः] टुकड़ा, केवल पत्थरों से बनी छोटी दीवाल।

पारायण—(संज्ञा, पु०, सं०) समय नियत करके किसी धर्म-पुस्तक का आद्योपांत पाठ समाप्ति, पूरा करना, पुराण-पाठ।

पारायणिक—(वि०, संज्ञा, पु०, सं०) पारायण कर्त्ता, पाठक, छात्र।

पारायणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चिंतन, मनन, कर्म। सरस्वती।

पारावत—(संज्ञा, पु०, सं०) कबूतर, पंडुकी, कपोत। बन्दर। पर्वत। "कूजत कहुं कल हंस कहूं मज्जत पारावत"—भा० हरि०।

पारावार—(संज्ञा, पु०, सं०) दोनो ओर के तट, सीमा, समुद्र, वार-पार, आर पार। देख भावों का पारावार—महा०।

पाराशर—(संज्ञा, पु०, सं०) पराशर के पुत्र या वंशज, व्यास जी। (वि०) पराशर-संबंधी।

पाराशरी—(संज्ञा, पु०, सं०) साधू, सन्यासी।

पाराशर—(वि०, सं०) पाराशर के निकटस्थ देश या स्थान।

पाराशर्य्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पराशर के पुत्र या वंशज, व्यास जी। "पाराशर्य वच सरोजममलम्"—[गी० माहा०]।

पारि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पार] सीमा, ओर, दिशा, देश, तट।

पारकांक्षी—(संज्ञा, पु०, सं०) तपस्वी, तापस।

परिक्षत—(संज्ञा, पु०, सं०) परीक्षित के आत्मज जनमेजय।

पारिख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परीक्षक] परख, परखने वाला, परीक्षक, परखैया, जाँचना, परखना। "पारिख आये खोलिये, कुंजी बचन रसाल"—कबी०।

पारिजात—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंधु-मंथन से प्राप्त नन्दन वन का एक देवतरु, पारिभद्र, हर-चंदन, हरसिंगार, कचनार, कोविदार।

पारिणामिक—(वि०, सं०) विकासशील, जिसकी प्रगति हो सके, पचने वाला।

पारिणाह्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्बन्ध, बंधन, घर या गृहस्थी का उपकरण।

पारितथ्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सधवा स्त्रियों के धारण करने योग्य वस्तु, बेंदी, टिकुली।

पारितोषिक—(संज्ञा, पु० सं०) परितुष्टि या प्रसन्नता से दिया धन, इनाम, पुरस्कार।—**न्यायालय**-(पु०) युद्ध में जीते हुए सामान का बँटवारा करने वाला न्यायालय [प्राइज़कोर्ट]।

पारिन्द्र, परीन्द्र—(वि०, सं०) सिंह, शेर।

पारिपथिक—(संज्ञा, पु०, सं०) चोर, डाकू।

पारिपात्र—(संज्ञा, पु०, सं०) विन्ध्याचल के सात पर्वतों मे से एक।

पारिपार्श्व—(संज्ञा, पु० सं०) अनुचर, दास, पारिषद्।

पारिपार्श्विक—(संज्ञा, पु० सं०) सेवक, दास, पारिषद्, सूत्रधार (स्थापक) का सहायक, (अनुचर) नट (नाट्य०)।

पारिभद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) देवदारु, देववृक्ष, साखू, निंब, फरहद।

पारिभाव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिभू, जमानत।

पारिभाषिक—(वि०, सं०) सांकेतिकार्थ, जिसका अर्थ केवल परिभाषा द्वारा हो सके।

पारिमाण्डल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) परमाणु।

पारिमाण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सीमा, घेरा, परिधि।

पारिमुखिक—(वि०, सं०) जो निकट हो, जो सामने हो।

पारिरक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) तपस्वी, साधु।

पारिश—(संज्ञा, पु०, दे०) परात।

पारिशील—(संज्ञा, पु० सं०) एक प्रकार का मालपुआ (भोजन)

पारिषद्—(संज्ञा, पु०, सं०) सभ्य, सभासद, अनुचर, दास, साथी, गण।

पारिहारिक—(संज्ञा, पु०, सं०) हरणकर्त्ता, आवृत, करने वाला, घेरने वाला, माला बनाने वाला।

पारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० वार, बारी] बारी, ओसरी (प्रान्ती०), अवसर क्रम।

पारीण—(वि०, सं०) पारगामी, पार जाने वाला।

पारुष्य—संज्ञा, पु०, सं०) कठोरता, कड़ापन, इन्द्र का वन, परुषता।

परोक्ष—(वि०, सं०) अस्पष्ट, रहस्यमय।

पारोक्ष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) रहस्य।

पार्घट—(संज्ञा, पु०, दे०) भस्म, राख।

पार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) पृथ्वीपति, (पृथापुत्र) अर्जुन, अर्जुन पेड़, युधिष्ठिर, भीम।

पार्थक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अलग होना, पृथकता, जुदाई, अलगाव, वियोग, भिन्नता, अन्तर।

पार्थवी—(संज्ञा, पु०, सं०) भारीपन, स्थूलता, बढ़ाई, मोटाई। (वि०) पृथु सम्बन्धी।

पार्थिव—(वि०, सं०) पृथिवी सम्बन्धी, पृथ्वी से उत्पन्न, मिट्टी का बना, राजसी। (संज्ञा, पु०, सं०) मिट्टी का शिवलिंग, सांसारिक पदार्थ।

पार्थिवात्मज—(संज्ञा, पु०, सं०) राजकुमार।

पार्थिवाधम—(संज्ञा, पु०, सं०) निकृष्ट राजा।

पार्थिवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी से उत्पन्न, सीता जी, पार्वती जी।

पार्थी—(संज्ञा, पु०, सं०) शिवलिङ्ग (मिट्टी का बना हुआ)।

पार्पर—संज्ञा, पु०, दे०) काल, यमराज।

पार्योसिक—(वि०, सं०) सम्पूर्ण।

पार्वण—(संज्ञा, पु०, सं०) पर्व-सम्बन्धी कार्य, किसी पर्व पर किया श्राद्ध।

पार्वत—(वि०, सं०) पर्वत-सम्बन्धी, पर्वत पर होने वाला [**पार्वती** (स्त्री०)]

पार्वती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हिमालय की कन्या, गौरी, दुर्गा, गिरजा, गोपी चंदन।—**नंदन**—(संज्ञा, पु०) गणेश, कार्त्तिकेय।

पार्वतीय—(संज्ञा, पु०, सं०) पहाड़ी, पहाड़ का, पहाड़ सम्बन्धी, पहाड़ से उत्पन्न।

पार्वतेय—(वि०, सं०) पहाड़ पर होने वाला।

पार्श्व—(संज्ञा, पु०, सं०) बगल, अगल-बगल, निकट, समीप, पास, समीपता, निकटता।—**वर्ती**-(यौ०) सङ्गी, साथी।—**शूल**-दाहिनी या बाईं पसली का दर्द।—**नाथ**-(संज्ञा, पु०, सं०) जैनियों के तेईसवें तीर्थंकर जो काशी के इक्ष्वाकु-वंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे।—**टिप्पणी**-(स्त्री०) हाशिये पर लिखी हुई टीका। [मार्जिनल नोट्स]—**वर्त्ती**-(संज्ञा, पु०) [सं० पार्श्ववर्त्तिन् निकटस्थ, समीपवर्ती, साथी [**पार्श्ववर्त्तिनी** (स्त्री०)]—**स्थ**-(वि०, सं०) निकटस्थ, समीप-वर्ती (संज्ञा, पु०) अभिनय के नटों में से एक (नाट्य)।

पार्श्वग—(संज्ञा, पु०, सं०) सहचर, साथी।

पार्श्वतीय—(वि०, सं०) पार्श्ववर्ती, जो निकट हो।

पार्श्विक—(वि०, सं०) वे व्यंजन जिनके उच्चारण में मुखद्वार बीच में बंद कर लिया जाता है किन्तु दोनों तरफ से सांस आ जा सकती है। (उदा० —ल्) [लेटरल]

पार्षद (संज्ञा, पु०, सं०) पारिषद्, सेवक, मन्त्री, पास रहने वाला।

पाल—(संज्ञा, पु० सं०) पालक, पालने वाला, चितावरी का पेड़, बंगाल का एक राजवंश (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पालना] फलों के पकाने की रीति। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पट, पाट] नाव में मस्तूल में तानने का कपड़ा, शामियाना, चदोवा, ओहार (पालकी, गाड़ी के ढाकने का) (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पालि] मेंड़, बाँध, कगारा, ऊँचा किनारा।

पालक—(संज्ञा, पु०, सं०) पालने वाला, साईस, दत्तक या गोद लिया लड़का। (संज्ञा, पु०, सं०) एक शाक विशेष। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पलंग] पलंग।

पालकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पल्यंक] डोली, म्याना, जिसे आदमी कन्धे पर ले जाते हैं। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पालक] पालक का शाक।—**गाड़ी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) पालकी-सी छत वाली गाड़ी।

पालट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पालन] गोद लिया दत्तक पुत्र।

पालतू—(वि०, दे०) [सं० पालन] पाला या पोसा हुआ (पशु आदि)।

पालथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पलथी] सिद्धासन नाम का आसन, पलथी, पार्थी, पार्थिव। **मुहा०**—**मारना**-दोनों पैरों को एक दूसरे पर रख कर बैठना।

पालन—(संज्ञा, पु०, सं०) भरण-पोषण, निर्वाह, अनुकूलाचरण से बात की रक्षा, भंग न करना या न टालना। [**पालनीय, पालित, पाल्य** (वि०)]

पालना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पालन] पर-वरिश (फ़ा०), भरण-पोषण, पशु-पक्षी को

जिलाना, टालना या भंग न करना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पल्यंक] हिंडोला, झूला, **गहवारा पिंगूरा** (प्रान्तो)। "जसोदा हरि पालनैं झुलावै"—सूर०।

पालवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पल्लव] पत्ता, कोमल पत्ता, पल्लव।

पाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रालेय] पृथ्वी के ठंडे होने से उस पर जमी हवा की भाप, तुषार, हिम, बर्फ। **मुहा०—मार जाना**-हिम या शीत से नष्ट हो जाना,**—पड़ना**-अति शीत से वायु की भाफ का जम कर तुषार हो जाना। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पल्ला] वास्ता, व्यवहार, संयोग। "परे आजु रावन के पाले"—[रामा०] (संज्ञा, पु०, दे०) खेल में पक्षों की सीमा। **मुहा०—किसी से—पड़ना**-वास्ता या काम पड़ना, संयोग या सम्बन्ध होना। **किसी के पाले पड़ना**-वश में आना, पकड़ या काबू में आना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पट्ट, हि०, पाड़ा] मुख्य या प्रधान स्थान, सदर मुकाम, सीमा सूचक मिट्टी की मेंड़, धुस, अखाड़ा, अन्न रखने का कच्ची मिट्टी का बड़ा बरतन।

पालागन—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० पाँय लागन] नमस्कार, प्रणाम, पैर छूना।

पालाश—(वि०, सं०) पलाश का, पलाश सम्बन्धी **—खंड**-(संज्ञा, पु०) मगध देश।

पालिंदी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्यामा लता।

पालि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कान की लौ, पंक्ति, पाँति, कोना, सीमा, मेंड़, भीटा, बाँध, कगार, गोद, किनारा, चिह्न, परिधि।

पालिक—(संज्ञा, पु०) पालिकी, पलंग।

पालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पालने वाली।

पालित—(यौ०, सं०) रक्षित, पाला हुआ।

पालित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सफेदी (बालों की) जिसका पालन-पोषण किया गया हो।

पालिनी—(वि०, स्त्री०, सं०) पालने वाली।

पाली—(वि०) [सं० पालिन्] रक्षित, रक्षा करने वाला, पालने-पोषने वाला। [**पालिनी** (स्त्री०)] (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पालि—पंक्ति] ब्रह्मादि देशों मे संस्कृत-सी पठित-पाठित प्र० प्राचीन बिहारी भाषा जिसमे बुद्धमत के ग्रन्थ लिखे है। (स्त्री०) पली हुई, रक्षित।

पालीवाल—(संज्ञा, पु०) मारवाड़ी ब्राह्मण की उपाधि।

पालू—(वि०, दे०) [हि० पालना] पालतू।

पाल्य—(वि०, सं०) पालने योग्य, पालनीय।

पाल्लविक—(वि०, सं०) फैलने वाला, पसरनेवाला, प्रसरणशील।

पावँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद) पैर, पाँय चलने का अंग।**—दान**-(संज्ञा, पु०) देखिए—पायदान। **मुहा०—किसी काम या बात में—(टाँग) अड़ाना**-व्यर्थ मिलना, व्यर्थ बोलना, या दखल देना।**—उखड़ जाना**-ठहरने का बल या साहस न रहना, युद्ध से भागना।**—न उठना**-चलने में असमर्थ होना।**—उठाना (न उठाना)** -कदम बढ़ाना, शीघ्रता से चलना, प्रयाण करना। **—घिसना**-पैर थक जाना।**—जमना (जमाना)** -दृढ़ रहना (होना) अपने बल पर खड़े होना। **—तले की जमीन या मिट्टी निकल जाना**-होश उड़ जाना, भयादि से बड़े जोर से भागना। " जाती है उनके पावँ तले की जमीं निकल "—सौदा०।**—तोड़ना**-पैर थकाना, बड़ी दौड़-धूप करना, हैरान होना, अति प्रयत्न करना।**—तोड़ कर बैठना**-अचल या स्थिर हो जाना, चलना। त्याग देना। हार बैठना। **किसी के—धरना (पकड़ना)**-पैर छू कर प्रणाम करना, दीनता से विनय करना, हा हा खाना। **बुरे पथ पर—धरना (रखना)** बुरे काम करने लगना।**—पकड़ना**-बिनती कर के जाने से रोकना, पैर छूना, अति दीनता से प्रार्थना करना।**—पखारना** -पैर धोना। " पाँव पखारि बैठि नरु छाहीं—[रामा०]।**—पड़ना**-पैरों गिरना, दीनता से विनय करना, प्रवेश करना, जाना।**—पर गिरना (सिर रखना या देना)**-पाँव पड़ना।**—(टाँग) पसारना (फैलाना)**-पैर फैलाना, आराम से सोना। आडंबर बढ़ाना। ठाट-बाट करना। मर जाना। **—पाँव (पैरो) चलना**-पैदल या पैरों से चलना। **—पुजना**-अति आदर-सत्कार करना, पैर पूजना (ब्याह मे वर-कन्या के)।**—फूँक फूँक कर—रखना**-सतर्कता से बहुत बचा कर कार्य करना, बहुत ही सावधानी या होशियारी से चलना।**—फैलाना**—ज्यादा पाने को हाथ फैलाना या मुँह बाना, पा कर और माँगना, मचलना।**—बढ़ाना** -पाँव आगे रखना, तेजी से चलना, ज्यादा बढ़ना। **—भारी (हलका) पड़ना**-जोर से (धीरे)

चलना।—**भर जाना**-पैर थक जाना।—**भारी होना**-गर्भ या हमल होना।—(**पद, पग**) **रोपना**-प्रतिज्ञा, या प्रण करना। "बहुरि पग रोपि कह्यो "—रत्ना०।—**लगना**-प्रणाम करना, विनय करना।—**से पावँ बाँध कर रखना**-सदा अपने निकट रखना, चौकसी या रक्षा रखना।—**सो जाना**-पैर झन्ना जाना, शून्य हो जाना।—(**पैर**) **होना** (**हो जाना**)-चलने या काम करने में समर्थ होना।—**न होना**-ठहरने का बल या साहस न होना। **धरती (जमीन) पर—(पैर) न रखना** अति अभिमान करना, अति या ज्यादती करना।

पावँड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पावँ+ड़ा प्रत्य०] किसी के आदरार्थ बिछाया गया मार्ग-विस्तर, पायंदाज।

पावँड़ी, पावँरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० पावँ+ड़ी प्रत्य०] जूता, पादत्राण। खड़ाऊँ।

पावँर*—(वि०, दे०) [सं० पामर] दुष्ट, नीच। "ते नर पावँर पाप-मय, देह धरे मनुजाद"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०) [हिं० पावँड़ा) पावड़ा।

पाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद] चतुर्थांश, चौथाई, एक सेर का चौथाई भाग, ४ छटाँक, पौवा (ग्रा०)।

पावक—(संज्ञा, पु०, सं०) अग्नि, आग। सदाचार। ताप। अग्नि-मन्थ (अगेथू) वृक्ष। सूर्य। वरुण। (वि०) शुद्ध या पवित्र करने वाला। "तुम पावक महँ करहु निवासू"—[रामा०]।

पावकुलक—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० पादाकुलक] एक तरह की चौपाइयों का समूह।

पावन—(वि०, सं०) पवित्र करने वाला, पुनीत, पवित्र, शुद्ध। [**पावनी** (**स्त्री०**)] (संज्ञा, पु०) अग्नि। जल। विष्णु। रुद्राक्ष, गोबर। व्यास मुनि। प्रायश्चित्त।—**ध्वनि**-(संज्ञा, पु०) शंख।

पावनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पवित्रता।

पावना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रापण] पाना, समझना, भोजन करना। (संज्ञा, पु०) लहना (ब्र०) पाने का एक हक, जो पाना हो।

पावस†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रवर्ष] वर्षाकाल, बरसात। "तुलसी पावस आइगै"।

पावा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद] पावँ, पैर, गोड़, चारपाई या पलँग का पाया। (सा० भू०, स०, क्रि०) [हिं० पाना] पाया।

पावी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पावा की एक जाति।

पाश—(संज्ञा, पु०, सं०) डोरी, फाँसी, रस्सी, पशु-पक्षी आदि के फँसाने का जाल, बंधन, फँसाने वाली वस्तु।—**जाल**-(संज्ञा, पु०) संसार रूपी माया-जाल।—**बद्ध**-(वि०) बंधन में बँधा हुआ, पाश से बद्ध।—**भृत**-(संज्ञा, पु०, सं०) वरुण। पाशी। "पाशभृतः समस्य"—रघु०।

पाशक—(संज्ञा, सं०) चौपड़ के पाँसे।

पाशकेरली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह ज्योतिष-विद्या जिसमें पाँसा फेंक कर विचार किया जाता है, रमल (ज्यो०)।

पाशव—(वि०, सं०) पशुओं का, पशु जैसा, पशु-संबंधी।

पाशविक—(वि०,सं०) पशु के ढंग का, पशु का, पशु सम्बन्धी।

पाशा—(संज्ञा, पु०) [तु० फ़ा० पादशाह] तुर्की सरदारों की उपाधि। (संज्ञा, पु० दे०) चौपड़, जुआ, कर्ण-भूषण विशेष।

पाशिक—(संज्ञा, पु०, सं०) बहेलिया, चिड़ीमार।

पाशित—(संज्ञा, पु०, सं०) पाशयुक्त, बँधा।

पाशी—(संज्ञा, पु०) [पाशिन्] वरुण।

पाशुपत—(वि०, सं०) शिव का, शिव संबंधी, त्रिशूल। (संज्ञा, पु०) शिव या पशुपति का उपासक, पशुपति का कहा तंत्र-मंत्र-शास्त्र, अथर्ववेद का एक उपनिषद्।—**दर्शन**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक दर्शन साम्प्रदायिक शास्त्र (स० द० सं०) नकुलीश पाशुपति दर्शन।

पाशुपतास्त्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिव जी का त्रिशूल।

पाश्चात्य—(वि०, सं०) पिछला, पीछे का पश्चिम दिशा का पश्चिम में उत्पन्न या निवासी [विस्टर्न]। [**प्राच्य** (विलो०)]।

पाषंड—(संज्ञा, पु०, सं०) ढोंग, [पाखंड (दे०)] दिखावा, वेद-विरुद्ध मत या आचरण।

पाषंडी—(वि०) [सं० पाषंडिन्] वेद-विरुद्ध मत या आचार करने वाला, धर्मादि का झूठ आडंबरी ढोंगी, धूर्त, छली, ठग [**पाषंडिनी** (**स्त्री०**)]।

पाषर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पाखर] पाखर।

पाषाण—(संज्ञा, पु०, सं०) पत्थर, प्रस्तर, [**पखान** (वि०, दे०)] कठोर, क्रूर ।—**भेद**—(संज्ञा, पु०, सं०) पाखान-भेद । [पथरचटा (दे०)] (औष०) ।—**हृदय**-(वि०) पत्थर जैसा, निष्ठुर, निर्दय, जिसका हृदय पत्थर की तरह कठोर हो ।

पाषाणी—(संज्ञा, स्त्री०) पत्थर का तौल या बटखरा । (वि०, स्त्री०) पत्थर की तरह हृदय रखने वाला ।

पासंग, पासँग—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पसंघा (दे०) तराजू के पल्लों को बराबर करने के लिये भार । **मुहा०**—**किसी का—भी न होना**-बहुत कम होना ।—**बराबर**-स्वल्प, तुच्छ । (**तराजू में**) **होना**-डंडी का बराबर न होना ।

पास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पार्श्व] ओर, तरफ, बगल, समीपता, निकटता, अधिकार । पल्ला । रक्षा (के, से, में विभक्तियों के साथ)—**मान**-(संज्ञा, पु०, हि०) पास रहने वाला, सेवक या दास, पार्श्ववर्त्ती ।—**वर्त्ती**-(वि०, दे०) [सं० पार्श्ववर्त्तिन्] पास रहने वाला, पासमान दास । [(**पास-पल्ले** (यौ०))] ।—**वाले**-समीपी मित्र । (अव्य०)-समीप, निकट । [**आस-पास**-चारों ओर, समीप लगभग, अगल-बगल । **मुहा०**—**किसी के—बैठना**-संगति में रहना ।—**न फटकना** निकट न जाना । अधिकार, रक्षा या कब्जे, पल्ले में समीप जा या सम्बोधित कर, किसी से या के प्रति । *(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाश] पास, फाँसी, रस्सी ।*(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाशक] पाँसा । (वि०, अं०) परीक्षा में उत्तीर्ण ।

पासनी, पसनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्राशन] अन्न-प्राशन, लड़के को सर्व प्रथम अन्न देने का संस्कार ।

पासा, पाँसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाशक फ़ा० पासा] चौपड़ या चौसर खेलने के हाथी-दाँत या हड्डी के चार या ६ पहल-वाले बिंदीदार पाँसे, पाँसों का खेल, चौपड़, गुल्ली । **लो०**—"पाँसा परै सो दाँव" । **मुहा०** (**किसी का**)—**पड़ना**-भाग्य खुलना या अनुकूल होना, कार्य (उपाय) लगना, सफल होना ।—**पलटना**-भाग्य फूटना, युक्ति या उपाय का विरुद्ध फल देना ।—**फेंकना**-भाग्य अजमाना ।

पासी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाशिन] जाल, फंदा या फाँसी लगा कर हरिण, पक्षी आदि का पकड़ने वाला, एक नीच जाति, बहेलिया । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पाश, हि० पास+ई० प्रत्य०] फाँस, फंदा, फाँसी, घोड़े की पिछाड़ी की रस्सी ।

पासुरी, पाँसुरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पार्श्व] पसली । "पासुरी उमाहि कबौं बाँसुरी बजावै है"—[ऊ० श०] ।

पाहँ, पहँ*—(अव्य, दे०) [सं० पार्श्व] पास, निकट, समीप । विभ० (अव०) अधिकरण और कर्म की विभक्ति पर, पै, प्रति, से (व्या०) ।

पाहन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाषाण] पत्थर । "पाहन तें वन-बाहन काठ कौ"—कवि० ।

पाहरू*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पहरा] पहरेदार, पहरा देने वाला । "नाम पाहरू दिवस निसि"—[रामा०] ।

पीहा—(संज्ञा, पु०) मेड ।

पाहिं, पाहीं*—(अव्य० दे०) [सं० पार्श्व] समीप, निकट, पास, किसी के प्रति, किसी से । "सो मन रहत सदा तोहिं पाहीं" ।

पाहि—(क्रि०, स०, सं०) बचाओ, रक्षा करो । "पाहि पाहि अब मोहि"—[रामा०] ।

पाहुँच†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पहुँच (हि०) ।

पाहुना, पाहुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रघूर्ण] अतिथि, दामाद, अभ्यागत । [**पाहुनी** (स्त्री०)] । "पाहुन निसि दिन चार रहति सबही के दौलत" —गिर० । [**पहुनाई, पहुनई** (सज्ञा, स्त्री०, दे०)] ।

पाहुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पहुना] स्त्री अभ्यागत या अतिथि, पाहुनाई, पहुनाई, मेहमानदारी, आतिथ्य ।

पाहुर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रभृत] नजर या नजराना (फ़ा०) सौगात, भेंट ।

पिंग—(वि०, सं०) पीला, पीत-श्वेत, श्वेत-रक्त, तामड़ा, सुँघनी के रंग का, भूरा, पिंगल ।

पिंगल—(वि०, सं०) पीत, पीला, भूरा, लाल या पीत तामड़ा, सुँघनी के रंग का । (संज्ञा, पु०) एक मुनि जो छंदःशास्त्र के प्रथम आचार्य्य थे, छंदःशास्त्र, एक संवत्सर (ज्यो०), बन्दर, एक निधि, उल्लू पक्षी, अग्नि, पीतल ।

पिंगला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मेरुदंड के वाम ओर एक नाड़ी (हठ योग), लक्ष्मी का नाम, शीशम का पेड़, गोरोचन, राजनीति, दक्षिण के दिग्गज की स्त्री, एक वेश्या, एक रानी ।

पिंगलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बगले और उल्लू की एक जाति । एक मक्खी ।

पिंगलित—(वि०, सं०) पिंगल के अनुसार बनाया हुआ, पिंगलीकृत ।

पिंगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चुहिया, शमी का वृक्ष ।

पिंजड़ा, पींजड़ा, पिंजरा-पींजरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पञ्जर] तोता आदि पक्षियों के पालने का घर, देह । "दस द्वारे का पींजरा" कबी० ।

पिंजर—(वि० सं०) पीला, पीत वर्ण का, भूरा लाल । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंजर] पिंजड़ा, पिंजरा, हड्डियों का ठट्टर, पाँजर, पंजर, भूरे लाल रंग का घोड़ा, सोना ।

पिंजरापोल—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० पिंजरा+पोल—फाटक] गोशाला, पशुशाला ।

पिंजल—(वि०, सं०) व्याकुल । (संज्ञा, पु०) हरताल, कुश-पत्र ।

पिंड—(संज्ञा, पु०, सं०) ठोस, गोला, गोल टुकड़ा, राशि, ढेर, नक्षत्र, तारे, ग्रहादि, शरीर, आहार, श्राद्ध मे पितरों के लिये खीर का गोला भोजन । **मुहा०—छोड़ना**-साथ न लगा रहना, सम्बन्ध न रखना, तंग न करना ।**—खजूर**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिंड खर्जूर] मीठा खजूर ।**—ज**-(संज्ञा, पु० सं०) देह से उत्पन्न मनुष्य आदि जीव जो देह-सहित पैदा होते हैं ।**—दान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्राद्ध ।**—पात**-(संज्ञा, पु०) भिक्षादान ।**—पुष्प**-(संज्ञा, पु०) अशोक-वृक्ष या उसका फूल । **—रोग**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नरक रोग, कोढ़, देह में बसा रोग ।**—रोगी**-(संज्ञा, पु०, सं०) पिंड रोग वाला ।

पिंडरी, पिंडुरी, पिंडली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पिंडली] टाँग का पिछला भाग ।

पिंडली, पिंडुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिंड] टाँग का ऊपरी माँसल पिछला भाग ।

पिंडवाहा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक कपड़ा ।

पिंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिंड] ठोस गोला, सूत का गोला, श्राद्ध में पितरों के लिये तिल, मधु, खीर का गोला, शरीर, देह ।**—पिंडी** (स्त्री० अल्पा०) । **मुहा०—पानी देना**-पिंडा पारना, श्राद्ध-तर्पण करना ।

पिंडारी—(संज्ञा, पु०, दे०) दक्षिण की एक कृषक हिन्दू जाति, जो फिर मुसलमान हो लूटमार करती थी । (इति०) ।

पिंडालू—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, यौ०) [सं० पिंड+आलू] एक तरह का शकरकंद, पिंडिया, एक तरह का शफतालू या रतालू ।

पिंडिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पिंडी, छोटा पिंडा, वेदी, पिंडली, देवमूर्ति की पिंडी ।

पिंडित—(वि०, सं०) जिसे पिंड का आकार दिया गया हो । गुणित, गिना हुआ ।

पिंडिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिंडिका] सत्तू आदि की लंबी गोलाकार लड्डुइया, गुड़ की लम्बी सी भेली, लपेटे हुए सूत या रस्सी आदि का लम्बा गोला, लच्छा, मुट्ठी, सरयू-पारीण ब्राह्मणों का एक भेद ।

पिंडिल—(वि०, सं०) जो गणना करने में कुशल हो । (संज्ञा, पु०) सेतु, बाँध, पुल, गणक ।

पिंडी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा पिंडा, छोटा, गोला, वलि वेदी, सूत, रस्सी आदि का छोटा गोला, सत्तू की गोली, पिंड खजूर घीया कद्दू ।

पिंडीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) पिंड के आकार का बनाना ।

पिंडरी, पिंडुली*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पिंडली] टाँग का ऊपरी पिछला हिस्सा ।

पिअ, पिय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रिय] देखिए—'प्रिय' । (वि०) प्यारा, प्रिय ।

पिअर—(वि० दे०) [सं० पीत] पीला ।

पिअरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रिय] प्रिय ।

पिअराई*†—(संज्ञा, दे०, स्त्री०) [सं० पीत] पीला-पन, पीलाई ।

पिअरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पीली] पीली धोती जो वर-कन्या को ब्याह में पहनाई या गंगा जी को चढ़ाई जाती है, पेरी (ग्रा०) । [**पीली** (वि० स्त्री०)] ।

पिआज—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० प्याज] प्याज ।

पिआना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० पान] पिलाना ।

पिआर—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० प्रिय] प्यार ।

पिआरा—(वि०, दे०) [सं० प्रिय] प्यारा । "मे बैरी सुग्रीव पिआरा"—[रामा०] । [**पिआरी** (स्त्री०)] ।

पिआस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिपासा] प्यास, तृषा ।**—पिआसा, पिआसी**-(वि० स्त्री०) ।

पिउ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रिय] स्वामी, पति, पीव, पीउ (ग्रा०) । "पिउ जो गयो फिर कीन्ह न फेरा"—पद्० ।

पिक—(संज्ञा, पु०, सं०) कोयल। [**पिकाली** (यौ०)]।—**बांधव**-(संज्ञा, पु०) वसन्त ऋतु।

पिकरव—(संज्ञा, पु०, यौ०) कोकिलस्वर। 'पंचम पिकरव, विकल मनोभाव'—पंत।—**वल्लभ**-(पु०) आम का पेड़।

पिकांग—(संज्ञा, पु०, सं०) चातक।

पिकाक्ष—(वि०, सं०) जिसके नेत्र कोयल की तरह हों।

पिकानंद—(संज्ञा, पु०, सं०) वसन्त ऋतु।

पिघरना, पिघलना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० प्रगलन] गरमी से किसी वस्तु का गल कर पानी सा हो जाना, गलना, टिघलना, द्रव रूप होना, मन में दया आना, पसीजना। (स० रूप—**पिघलाना, पिघलवाना** (प्रे० रूप)]।

पिचकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पिच्च—दबना] फूले हुए पदार्थ का दब जाना। [**पिचकाना**।—[**पिचकवाना** (प्रेरणा रूप)], [**पिच्चित, पिच्ची** (वि०)]।

पिचका, पिचक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पिचकना] पिचकारी पिचुक्का। [**पिचकी, पिचक्की** (स्त्री० अल्पा०)]।

पिचकारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पिचकना] पानी आदि के जोर से फेंकने का यंत्र। —**छूटना**-किसी तरल पदार्थ का तेजी से बाहर निकलना।—**छोड़ना**-किसी तरल पदार्थ को पिचकारी में भरे पानी की तरह तेजी से बाहर निकालना।

पिचकी—(संज्ञा, स्त्री०) पिचकारी, [**पिचपिचा** (वि०)] चिपचिपा, गुलगुल।

पिचपिचाना—(क्रि० अ०) पके चोट आदि का आर्द्र होना।

पिचु—(संज्ञा, पु०, सं०) कपास।—**मंद**-(संज्ञा, पु०, सं०) नीम का पेड़। "लोहित चन्दन पद्मक धान्या छिन्नरुहा पिचुमन्द कषाय"—[लोलंब०]।

पिच्छ—(संज्ञा, पु०, सं०) लांगूल, पूँछ, चूड़ा, मयूर-पुच्छ या चोटी।

पिच्छल—(संज्ञा पु०, सं०) शीशम, मोचरस, आकाशवेल, चिकना, रपटने वाला। (वि०) पिछला। चूड़ायुक्त, कफकारी।

पिच्छिल—(वि०, सं०) चिकना, फिसलने वाला। दुमदार।

पिछ—(संज्ञा, पु०) पीछा का छोटा रूप।—**लगा**-(वि०, संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० पीछे+लगना] अनुचर, अनुगामी, अनुवर्ती, आश्रित, आधीन, नौकर, दास, पीछे चलने या रहने वाला, पछलगा।—[**लगू, लग्गू** (संज्ञा, पु०)] अनुचर, अनुगामी, अनुवर्त्ती।—**वाड़ा** (रा)-(पु०) पिछला हिस्सा, पीछे का भाग, पीछे की जमीन। **लगी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पिछलगा] अनुयायी होना, अनुगमन करना, पीछे लगना, पछलगी (ग्रा०)।

पिछड़ना—(क्रि० अ० दे०) [हि० पिछौड़ी+ना प्रत्य] पीछे रह जाना, पिछड़ जाना, साथ बराबर न रहना। (स० रूप—**पिछड़ाना पिछड़ना**, प्रे० रूप—**पिछड़वाना**।

पिछलयाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पिछला] भूतिन, चुड़ैल, पिशाचिनी।

पिछला—(वि०, दे०) [हि० पीछा] पाछिल (ग्रा०) पीछे की ओर का, अंत या पीछे का, बाद या पश्चात का [**पहला** (विलो०)] अन्त की ओर का [**अगला** (विलो०)] [**पिछली** (स्त्री०)]। **मुहा०— पहर**-अंत का पहर, दोपहर या आधी रात के पीछे का समय। "पिछले पहर भूप नित जागा"—[रामा०]।—**रात**-आधी रात के बाद का वक्त। विगत, पुराना, गत बातों मे से अन्त की।

पिछवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पीछा] पीछे की तरफ काटने वाला परदा।

पिछवाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पीछा+वाड़ा] घर के पीछे का भाग या स्थान, पिछवारा (ग्रा०)।

पिछाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पीछा] पीछे का भाग या खंड पिछला हिस्सा, घोड़े के पिछले पैर बाँधने की रस्सी।

पिछानना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० पहचानना] पहचानना। "जाति ना पिछानी औ न काहू को पिछानति है"—रत्ना०।

पिछूत, पिछौंत—(अव्य०, दे०) [हि० पीछे] पश्चात, पीछे की ओर, [पछौंत (दे०)]। पीछे का भाग। (सं०, पु०, दे०) पिछवाड़ा।

पिछेल, पछेल—(वि०, दे०) [हि० पीछा] पिछवाड़ा। (संज्ञा, पु०, दे०) एक-भूषण, पछेला (ग्रा०) स्त्री०।

पिछौंड़—(वि०) जिसने अपना मुख पीठ की ओर अर्थात् पीछे कर लिया हो।

पिछोहैं, पछौंहैं*†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० पाछा] पीछे, पीछे की ओर, पीछे से।

पिछौरा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पक्षपट] चादर, दुपट्टा । [**पिछौरी** (स्त्री०)] ।

पिटक—(संज्ञा, पु०, सं०) पिटारा, पिटारी, फुंसी फोड़ा । ग्रंथ-विभाग । [**पिटका** (स्त्री०) ।

पिटत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाटना + अंत प्रत्य०] पीटने की क्रिया का भाव ।

पिटना—(क्रि० अ०, हि०) मारा जाना, मार खाना, ठोंका जाना, बजना । (संज्ञा, पु०) चूना पीटने की थापी । [**पिटाना** (स०, रूप)], **पिटवाना** (प्रे० रूप) ।

पिटपिटाना—(अ०, क्रि०) लाचार होकर या असमर्थ होकर रह जाना ।

पिटवाना—(सं०, क्रि०) किसी के मारे पीटे जाने का कारण होना ।

पिटाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० पीटना] पीटने का काम या भाव या मजदूरी, मार, आघात, चोट, प्रहार ।

पिटारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिटक] [पेटारा (दे०)] बाँस आदि का एक ढक्कनदार पात्र । [**पिटारी** (स्त्री० अल्पा०)] ।

पिट्टू—(वि० दे०) [हि० पिटना] मार खाने का अभ्यासी, अति प्रिय ।

पिट्ठू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पिठ + ऊ प्रत्य०] अनुयायी, अनुगामी, सहायक, साथी, खिलाड़ी का कल्पित संगी जिसके स्थान पर वह स्वतः खेले ।

पिठर—(संज्ञा, पु०, दे०) मोथा, मथानी, थाली, घर, अग्नि ।

पिठरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हाँडी, बटुली ।

पिठवन पिथवन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पृष्ठ पर्णी] पृष्ठपर्णी (औष०) पिथौनी (ग्रा०) ।

पिठी, पिट्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उरद को भीगी धोई और पिसी दाल, पीठी (ग्रा०) ।

पिठौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पीठी + और प्रत्य०] पिठी या पीठी की बरी या पकौड़ी, मिथौरी ।

पिड़क, पिड़ाका—(संज्ञा, पु०, दे०, स्त्री०) फोड़ा, फुन्सी, पिरकी (ग्रा०) ।

पिड़किया—(संज्ञा, स्त्री०) गुझिया ।

पिड़की—(संज्ञा, स्त्री०) फोड़िया । पंडुक नामक पक्षी ।

पिढ़ई—(संज्ञा, स्त्री०) छोटा पीढ़ा, छोटा यंत्र रखने का छोटे पीढ़ा की तरह का आधार ।

पितंबर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पीतांबर] पीला वस्त्र, पीली रेशमी धोती, श्रीकृष्ण ।

पितपापड़ा, पितपापरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्पट] पित्तपापरा, एक औषधि ।

पितर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पितृ] मृत पूर्वज, मरे पुरखा । [**पितर-पक्ष** (यौ०)] ।

पितरायँध† —(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पीतल + गंध] पीतल का कसाव, पितराइँध (ग्रा०) ।

पितरिहा—(वि०, दे०) [हि० पीतल] पीतल का ।

पितरीला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पीतल] पितृ-पूजन का बरतन ।

पितलाना, पितराना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पीतल] पीतल की कसावट या पितरायँध ।

पिता—(संज्ञा, पु०) [सं० पितृ का कर्त्ता] जनक, बाप, [पितु (दे०)] ।

पितामह—(संज्ञा, पु०, सं०) पिता का पिता, दादा, शिव, भीष्म, ब्रह्मा । [**पितामही** (स्त्री०)] ।

पितिया—(संज्ञा, पु०) चाचा ।—**ससुर**-(पु०) चचिया ससुर ।—**सास**-चचिया सास ।

पितु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पितृ] बाप । "ते पितु-मातु कहौ सखि कैसै"—[रामा०] ।—**मातु**-(पु०) माता-पिता ।

पितृ—(संज्ञा, पु०, सं०) पिता, मरे पुरखा, प्रेतत्वमुक्त पूर्वज, एक प्रकार के उपदेवता (सब जीवों के आदि पूर्वज) ।—**ऋण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पितरों (पितादि) के प्रति ऋण, जो पुत्र उत्पन्न करने से पटता है ।—**कर्म**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० पितृ कर्मन्] श्राद्ध, तर्पण आदि पितरों के अर्थ कर्म ।—**कुल**-(संज्ञा, पु०, सं०) बाप का वंश ।—**गृह**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बाप का घर, नैहर (स्त्रियों का), [मायका (दे०)] । —**तर्पण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तर्पण, पितरों को जलदान या पानी देना ।—**तीर्थ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गया तीर्थ, तर्जनी और अंगुष्ठ के मध्य का भाग ।—**पक्ष**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) क्वार मास का कृष्ण पक्ष, पिता के सम्बन्धी, पितृ-कुल, [पितर-पक्ष (दे०)] ।—**पद**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पितरों का लोक ।—**भक्ति**-(संज्ञा, स्त्री०) पिता के प्रति भक्तिभाव ।—**भोजन**-(पु०) पितरों को भोजन ।—**मेधि**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वैदिक काल मे श्राद्ध से भिन्न अंन्त्येष्टि कर्म का भेद ।—**यज्ञ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्राद्ध तर्पण ।—**याण**-(संज्ञा, पु०,

यौ०, सं०) मरने के पीछे जीव का चन्द्रमा के प्राप्त होने का रास्ता।—**लोक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पितरों का लोक, पितृपद, पितरों का स्थान।—**श्राद्ध**-(पु०) पितरों के लिये किया जाने वाला श्राद्ध।—**सत्ता**-(स्त्री०) पैतृक तंत्र । [पैट्रिआर्की]

पितृत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) पिता या पितरों का भाव।

पितृव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चाचा, चचा।

पित्त—(संज्ञा, पु०, सं०) यकृत में बना शरीर-पोषक एक पीत द्रव धातु, पित्त, पित्ता।—**घ्न** (वि० सं०) पित्त-नाशक।—**ज्वर** (संज्ञा, पु० यौ० सं०) पैत्तिक ज्वर, पित्त-प्रकोप से उत्पन्न ज्वर।—**मुहा०—(पित्ता) उबलना या खौलना**-मन में जोश आना।—**गरम होना**-शीघ्र क्रोध आना।—**नाशक**-(वि०) पित्त को दमन करने वाला।—**पापड़ा (पापरा)**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्पट] पितपापरा (औष०)।—**प्रकृति**-(वि०, यौ०, सं०) वह व्यक्ति जिसके शरीर में कफ-वात से पित्त अधिक हो।—**प्रकोपी**-(वि०, यौ०) [सं० पित्त प्रकोपिन] पित्त बढ़ाने वाले पदार्थ।

पित्तनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शालपर्णी, [सरिवन (दे०)] (औष०)।

पित्तल—(वि० दे०) [सं० पित्त] पित्तकारी। (संज्ञा, पु०, दे०) भोजपत्र, हरताल, पीतल।

पित्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पित्त] पित्ताशय, जिगर में पित्त की थैली। **मुहा०—उबलना या खौलना**-अति क्रोध आना, मिजाज उभड़ उठना।—**निकालना**†‡-अधिक श्रम करना।—**पानी करना**-अधिक श्रम से या जान लड़ा कर कार्य करना।—**मरना**-क्रोध न रहना।—**मारना**-क्रोध दबाना। अरोचक या कठिन काम से न ऊबना, साहस, हौसला।

पित्तातिसार—(संज्ञा, पु०, सं०) पित्त से होने वाला अतिसार।

पित्ताशय—(संज्ञा, सं०, यौ०, सं०) जिगर में पीछे और नीचे वाली पित्त रहने की थैली।

पित्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पित्त+ई] एक रोग जिसमें खुजलाने वाले ददोरे देह पर निकल आते है, गर्मी से लाल छोटे दाने, अँधौरी।†‡—(संज्ञा, पु०, ग्रा०) पितृव्य (सं०) चचा, काका, पीती (ग्रा०)। (वि० दे०) पित्त प्रकृति वाला।

पित्र्य—(वि० सं०) पितृ सम्बन्धी।

पिद्दी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) पिद्दी, बहुत छोटी चिड़िया, नगण्य या तुच्छ वस्तु।

पिद्दा, पिद्दी—(संज्ञा, पु०, सं०) [दे० अनु०] पिदाड़ा या पिदड़ी, चिड़िया।—**लो०**-"क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा।"

पिधान—(संज्ञा, पु०, सं०) गिलाफ, पर्दा, ढक्कन, आवरण, किवाड़, तलवार का म्यान।

पिनकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० पीनक] (अफीम से) पीनक लेना, ऊंघना, नींद के मारे आगे को झुकना।

पिनपिन†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) बच्चों का रोना। [**पिनपिनहा (वि०)**]।

पिनपिनाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० पिन पिन] रोगी या कमजोर बच्चे का रोना।

पिनाक—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव-धनु, अजगव, त्रिशूल। "छुवतहिं टूट पिनाक पुराना"—[रामा०]।

पिनाकी—(संज्ञा, पु०) [सं० पिनाकिन्] शिव जी।

पिन्ना—(संज्ञा, पु०, दे०) पीना (ग्रा०) तिल की खली। (वि०) बहुत रोने वाला।

पिन्नी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० पिन्ना] पीसे चावल के लड्डू। (वि०, स्त्री०) बहुत रोने वाली।

पिन्हाना—(क्रि०, स०, दे०) [हिं० पहनाना] पहनाना।

पिपरामूल, पिपरामूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिप्पलीमूल] एक औषधि (वि०)।

पिपासा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्यास, तृषा, लोभ। "जातें लगै न छुधा, पिपासा।"

पिपासित—(वि०, सं०) तृषित, प्यासा।

पिपासु—(वि०, सं०) [पियासु (दे०)], प्यास, तृषित, लोभी। "होते प्रलयंकर पिपासु कालकूट के"—अनूप।

पिपियाना—(अ०, क्रि०) पीव का उत्पन्न होना। [अ०, क्रिया] पीव निकालना।

पिपील, पिपीलक—(संज्ञा, पु०, सं०) चींटा, चींटी। "जिमि पिपील चह सागर थाहा"—[रामा०]। "पिपीलिका नृत्यति वह्नि मध्ये"।

पिपीलिका—(संज्ञा, स्त्री०) चींटी।—**भक्षक या भक्षी**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चींटियाँ खाने वाला एक जंतु (अफ्रीका)।—**मातृक-दोष**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बालकों की एक बीमारी (वैद्य०)।

पिप्पल—(संज्ञा, पु०, सं०) अश्वत्थ, पीपल पेड़।

पिप्पलक—(संज्ञा, पु०, सं०) सीने का डोरा या तागा, आलपीन।

पिप्पली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०] पिपरी, पीपल, [पीपर (दे०)] ।—**मूल**–(संज्ञा, पु०, सं०) पिपरा-मूर । "पिप्पली, पिप्पलीमूल, विभीतक महौषधे:" —लोलं० ।

पिय, पिया*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रिय] स्वामी, पति, प्यारे । "जानकी न ल्याये पिय ल्याये ज्वाल जान को" ।

पियर, पियरा—(वि०, दे०) [सं० पीत] पीले रंग का, पीला, पियरो (ब्र०) । [**पियरी** (स्त्री०)] ।

पियरवा—(संज्ञा, पु०) प्रियतम ।

पियराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पियर] पीलापन ।

पियराना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० पियरा] पीला पड़ना या होना ।

पियरी—(वि०, स्त्री०, दे०) पीली । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० पियर] पीली धोती (ब्याह की) ।

पियला*—(वि०, दे०) [हि० पीला] पीला । (संज्ञा, पु०) [हि० पीता] दूध पीता बच्चा, पिल्ला ।

पियाना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० पिलाना] पिलाना ।

पियार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पियाल] चिरौंजी का पेड़, पियाल । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रिय] प्यार । (वि०) [हि० प्यारा] पियारा । "रामहिं केवल प्रेम पियारा" [रामा०] ।

पियारा—(वि०, दे०) [हि० पियारा] प्यारा । [**पियारी** (स्त्री०)] ।

पियारी—(वि०, दे०, स्त्री०) [सं० प्रिया] प्यारी, दुलारी । "सासु ससुर, गुरु-जनहिं पियारी" ।

पियाल—(संज्ञा, पु०, सं०) चिरौंजी का पेड़ ।

पियाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० प्याला] प्याला । "पियाला पिया ला अँगूरी मुझे" ।

पियासा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिपासित या पिपासु] प्यासा, तृषित । "आली सों पियासा है पियासा प्रेम रस का" ।

पियासी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पियासा] प्यासी । "दरस-पियासी दुखिया सी ब्रजवासी बाल"—मन्ना० ।

पियासाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पीत-साल, प्रियसालक] बहेड़े का सा एक वृक्ष ।

पियूख*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पीयूष] पियूष, [पियूख (दे०)] अमृत । " ऊख मैं महूख मैं पियूख मै न पाई जाय"—रा० भट्ट० ।

पिरकी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिड़क] फुन्सी, फुड़िया ।

पिरथी*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पृथ्वी (सं०) ।

पिराई*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पियराई] पियराई, पीलापन । पीड़ा ।

पिराक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिष्टक] गोझा, गोझिया, एक पकवान । [**पिरकियाँ** (स्त्री० अल्पा०) ।

पिराना†*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पीड़न] दुखना, दर्द करना, पीड़ित होना ।

पिरारा‡*—(संज्ञा, पु०, दे०) [पिंडारा] डाकू, लुटेरा ।

पिरीत-पिरीता—(वि०, दे०) [सं० प्रीत] प्रीत, प्यारा, प्रिय । " हा रघुनन्दन प्रान पिरीते " ।

पिरीतम‡*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रियतम] प्यारा, स्वामी, पति, [प्रीतम (दे०)] ।

पिरोजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फीरोजा] फीरोजा, एक हरा नग, एक गाढ़ा द्रव पदार्थ गंध फिरोजा । "मोती मानिक कुलिस, पिरोजा" —[रामा०] ।

पिरोना—(क्रि० सं०, दे०) [सं० प्रोत] गूँथना, [पोहना (दे०)] छेद में तागा डालना ।

पिलई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं०, प्लीहा] पिलही, बरबट, तापतिल्ली, पिल्ला का स्त्री० लिंग ।

पिलक—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पीत पक्षी ।

पिलकना—(क्रि० अ०, दे०) गिराना, ढकेलना ।

पिलखन—(संज्ञा, दे०) पाकर का पेड़ ।

पिलचना—(क्रि० अ०, दे०) लिपटना ।

पिलड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गोली, पिण्डी ।

पिलना—(क्रि० अ०, दे०) [पिल=प्रेरण] एकबारगी घुस या टूट पड़ना, झुक या ढल पड़ना, भिड़ या लिपट जाना, रस या तेल के लिये दबाया जाना, प्रवृत्त होना ।

पिलपिला—(वि०, दे०, अनु०) नरम और गोला । [**पिलपिलाहट** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

पिलपिलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पिल-पिला] किसी गीली वस्तु को ढीला या नरम करना ।

पिलवाना—(क्रि० सं०, दे०) पिलाना [हि०, का प्रे० रूप] क्रि० स० (हि०, पेलना) पेरवाना ।

पिलाना—(क्रि० स०) [हि० पीना] पान कराना, घुसेड़ना, पीने को देना, ढीला या पतला करना।

पिलुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक कीड़ा।

पिल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) कुत्ते का बच्चा। [**पिल्ली** (स्त्री०)]।

पिल्लू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पीलू+कीड़ा] सड़े घाव या फलादि का एक लंबा सफेद कीड़ा।

पिव, पीव*—(संज्ञा पु०, दे०) [सं० प्रिय] पिउ, पिव (ग्रा०), स्वामी, पति, प्यारा,। "बाहर पिव पिव करता हो, घट-भीतर है पीव"। (क्रि० स० सं०) पीना, पीओ। "पिव हे नृपराज रुजापहरम्" —भो० प्र०।

पिवाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० पिलाना] पिलाना।

पिशंग—(संज्ञा, पु०, सं०) पिंगल या पीत वर्ण, पीला रंग। (वि०) पिंगल वर्ण वाला। "पिशंग मौ जीयुजमजुंनच्छविम्"—माघ०।

पिशाच—(संज्ञा, पु०, सं०) भूत, बेताल, देव-योनि विशेष, [पिसाच (दे०)]। "कहुँ भूत, प्रेत पिशाच डाँकिनि योगिनी संग नाचहीं"।—**ग्रस्त**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) उन्मत्त, वातुल, सिड़ी, पागल, प्रेत-बाधायुक्त।—**घ्न**-(वि०, सं०) पिशाच-नाशक।—**भाषा**-(स्त्री०) पैशाची प्राकृत जिसका परिचय संस्कृत के अनेक नाटकों मे उपलब्ध होता है।—**वदन**-(वि०). जिसका शरीर, मुँह पिशाच जैसा हो। **पिशाची**—(वि०) पिशाच-सम्बन्धी, भूतका वशकारी।

पिशाचक—(संज्ञा, पु०, सं०) भूत, पिशाच।

पिशाचकी—(संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर।

पिशित-(संज्ञा, पु०, सं०) आमिष, मांस।

पिशिताशन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राक्षस, मांसाहारी, मांस खाने वाला।

पिशुन—(संज्ञा, पु०, सं०) दुष्ट, छली। [पिसुन (दे०)]। "पिसुन छल्यो नर सुजन सो"—वृं०। धोखेबाज, क्रूर, निंदक।—**वचन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दुर्वाक्य, गाली, चुगली। [**पिशुनवाक्य** (यौ०)]।

पिशुनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुष्टता, क्रूरता।

पिशुना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चुगली।

पिशोन्माद—(संज्ञा, पु०) उन्माद का एक प्रकार विशेष।

पिष्ट—(वि०, सं०) पिसा हुआ।—**पेषण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पिसे को फिर पीसना, व्यर्थ बात को दुहराना, चर्वितचर्वण।

पिष्टक—(संज्ञा, पु०, सं०) पीठी, कचौरी, पुआ, रोट।

पिष्टान्न—(संज्ञा, पु०, सं०) आटे की बनी हुई वस्तु।

पिष्टि—(संज्ञा, स्त्री०) आटा, चूर्ण।

पिसनहारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पीसना +हारी प्रत्य०] आटा पीसने वाला।

पिसना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पीसना] पिस कर आटा हो जाना, कुचल वा दब जाना, बड़ा कष्ट, हानि या दुख उठाना, बहुत थक जाना। [**पिसाना** (क्रि० स०)], [**पिसवाना**—(प्रे० रूप)]।

पिसाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पीसना] पीसने का भाव, कार्य का मूल्य, श्रम।

पिसाच—(संज्ञा, पु०, दे०) पिशाच (सं०)।

पिसान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिष्टान्न] पीसा हुआ अनाज, आटा, चूर्ण, [चून (दे०)]।

पिसुन*—(संज्ञा, पु०, दे०) पिशुन (सं०)।

पिसौनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पीसना] पीसने का कार्य, कठिन श्रम का काम।

पिसौनी—(संज्ञा, स्त्री०) पीसने का काम, पीसने का पेशा।

पिस्तई—(वि०, दे०) [फ़ा० पिस्तः] पिस्ते के रंग का, हरा-पीला मिला रंग।

पिस्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पिस्तः] पिस्ता का वृक्ष, एक हरा मेवा।

पिस्तौल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० पिस्टल] छोटी बंदूक, तमंचा।

पिस्सू, पिसू—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पश्शः] कुटकी, छोटा उड़ने और काटने वाला कीड़ा।

पिहकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) कोकिला आदि चिड़ियों की बोली, कूकना।

पिहित—(वि०, सं०) छिपा हुआ। (संज्ञा, पु०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी के आकृति आदि से उसके मन का भेद जान कर कोई ऐसा कार्य करने का उल्लेख होता है जिससे यह ज्ञात हो कि भेद खुल गया। "पलाल जालेः पिहित"—[नैष०]।

पींजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पिंजन] रुई धुनना। [**पिंजवाना** (प्रे० रूप)]।

पींजरा पांजड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंजर] पिंजड़ा । "दस द्वारे को पीजरा"—कबी० ।

पींड—(संज्ञा, पु०,) [सं० पिंड] देह, शरीर, पिंड, पेड़ का तना, पेड़ी (ग्रा०) गीली या सूखी वस्तु का ठोस गोला, पीड़ा (ग्रा०), लड्डू, पिंड खजूर ।

पी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रिय] प्रिय, पति । **संज्ञा**, पु०, (अनु०) पपीहा की बोली । "पी हा ! पीहा ! रटत पपीहा मधुवन में"—[ऊ० श०] ।—**कहाँ**-पपीहे की बोली ।—**खग**-(पु०) पीपी करने वाला पक्षी, पपीहा ।

पीक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिच्च] थूक मिला पान-तम्बाकू का रस । "पान लाल पीक लाल पीक हू की लीक लाल" ।—**दान**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० पीक+दान फ़ा०] उगालदान, पीक थूकने का बरतन ।

पीकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पिक] पिहकना, कोयल, पपीहा का बोलना ।

पीका†—(संज्ञा, पु० दे०) नया कोमल पत्ता, पल्लव, कोंपल ।—**मुहा०**—**फूटना**-कोंपल निकलना ।

पीच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिच्च] मांड़, लपसी, पीक ।

पीछा—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० पश्चात्] पीठ के ओर का भाग, पश्चात् भाग । (विलो०)—**आगा** । **मुहा०**—**दिखाना**-पीठ दिखाना, भागना ।—**देना**-(दे०) साथ देकर हटना, किनारा करना । किसी घटना के पश्चात् का समय, पीछे चलते हुए साथ रहना ।—**मुहा०**—**पकड़ना**-अनुसरण करना, पीछे या सहारे में चलना ।—**करना (पकड़ना)**-तंग करना, गले पड़ना, मारने या पकड़ने को पीछे चलना, खदेड़ना ।—**होना**-मार जाना ।—**छुड़ाना**-जान छुड़ाना, अप्रिय सम्बन्ध हटाना ।—**छूटना**-पिंड छूटना, जान छूटना ।—**छोड़ना**-परेशान या तंग न करना, अप्रिय कार्य से सम्बन्ध न रहना, फँसे हुए कार्य को त्यागना ।

पीछू, पाछू*†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० पीछा] पीछे ।

पीछे‡—(अव्य दे०) [हि० पीछा] पश्चात्, पीठ की तरफ । (विलो०)—**आगे, सामने** । पाछे (ग्रा०), पीछे कुछ दूर पर । **मुहा०**—(**किसी के**)—**चलना**-नकल या अनुसरण या अनुकरण करना, अनुयायी होना । **किसी के—छोड़ना या भेजना**-किसी का पीछा करने के हेतु किसी को भेजना । **धन—डालना**-जोड़ना, संचय करना । **किसी काम के—पड़ना**-किसी कार्य के पूर्ण होने के हेतु लगातार उद्योग या श्रम करना । **किसी व्यक्ति के—पड़ना**-उसे परेशान या तंग करना; घेरना, बुराई करते रहना । किसी काम के लिये प्रेरित करना या बराबर कहना ।—**लगना (लगाना)**-पीछे पीछे जाना, पीछा करना (भेजना), अप्रिय वस्तु का साथ हो जाना । **अपने—लगाना (लेना)**-साथ करना (लेना) आश्रय देना, हानिकारी वस्तु से सम्बन्ध करना । **किसी और के—लगाना**-अप्रिय वस्तु या व्यक्ति से संबंध करा देना, जिम्मे मढ़ देना, भेद लेने या ताक रखने को साथ करा देना । **मुहा०—छूटना, पड़ना या होना**-पिछड़ा या न्यून होना, पिछड़ जाना, समान व्यक्ति से किसी बात में घट कर हो जाना । **किसी को—छोड़ना**-किसी बात मे बढ़ कर या अधिक हो जाना, किसी को पीछे भेजना । मर जाने पर, पश्चात्, अंत में, न होने पर, उपरान्त हेतु, बदौलत, अनन्तर, निमित्त, अभाव या अविद्यमानता में, वास्ते, लिये, पीठ-पीछे ।

पीटना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पीडन] मारना, ठोंकना, आघात करना, चोट दे चौड़ा या चिपटा करना । **मुहा०—(सिर) छाती पीटना**-दुःख या शोक में हाथों से छाती ठोंकना, शोक करना, बुरा-भली भाँति कर डालना, किसी तरह ले लेना, फटकार लेना । (संज्ञा, पु०) मरने का शोक या दुख, आपत्ति । [**पिटाई** संज्ञा, (स्त्री०)] ।

पीठ—(संज्ञा, पु० सं०) चौकी, पीढ़ा, पाटा, "पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा"—[रामा०] । अधिष्ठान, सिंहासन, वेदी । ८ प्रदेश । मूर्ति का आधार-पिंड । विष्णुचक्र से कट कर दक्ष-सुता सती के अङ्ग या भूषण का स्थान (पुरा०), वृत्त के अंश पूरक, प्रान्त । 'भूपाल मौलि मणिमंडित-पाद पीठं" । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पृष्ठ] पेट के पीछे को ओर का भाग, पृष्ठ, पुश्त, पशु-पक्षी के ऊपर का भाग—**स्थान**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पीठ, पृष्ठ । **मुहा०—चारपाई से लग जाना**-अति दुर्बल या कमजोर हो जाना ।—**लहना (पाना)**-जीतना । "जिनके लहहिं न रिपु रन पीठो"—[रामा०] ।—**का**-पीठ पर का, पीछे का ।—**ठोंकना**-शाबाशी देना, प्रशंसा

करना, प्रोत्साहित करना, हिम्मत बँधाना।—**दिखाना**–लड़ाई या तुलना से भाग जाना, पीछा दिखाना।—**दिखा कर जाना**–ममता मोह या प्रेम-स्नेह त्याग कर जाना।—**दिखा जाना**–हार मान लेना, विमुख हो भाग जाना।—**देना**–विदा या रुखसत होना, चल देना, भाग जाना, मुँह मोड़ना, विमुख होना, लेना, आराम करना।—**पर का**—**पर का**–जन्म-क्रम में पीछे का (अनुज)।—**मींजना या—पर हाथ फेरना (रखना)**–पीठ ठोंकना, शाबाशी देना प्रशंसा करना, प्रोत्साहन देना।—**पर होना**—सहायक होना।—**पीछे** परोक्ष में, अनुपस्थिति में। **लो०**—"पीठ पीछे राजा को भी लोग गाली देते हैं।—**फेरना**–चला जाना, अनिच्छा दिखाना, भाग जाना, पीठ दिखाना, विदा या विमुख होना, अनिच्छा दिखाना। (**घोड़े बैलादि की**)—**लगना**–पीठ पर घाव हो जाना, पीठ का पक जाना। **चारपाई से—लगाना**–पड़ना, लेटना, सोना। किसी वस्तु का ऊपरी या पृष्ठ भाग।

पीठक—(संज्ञा, पु०, सं०) आसन, चौकी, पालकी

पीठना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० पीसना] पीसना।

पीठमर्द—(संज्ञा, पु० सं०) ४ सखाओं में से नायक का वह सखा जो कुपित नायिका को प्रसन्न कर सके, वह नायक जो रूठी हुई नायिका को मना सके (नाट्य०)।

पीठा—(संज्ञा, पु०) चने-उर्द की पिसी हुई पीठी को आटे की लोई में भरकर बनाई हुई वस्तु।

पीठि—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) पीढ़ा, पाटा, सिंहासन। "जेवन पीठादुदतिष्ठदच्युतः"—माघ०। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिष्टक] एक पकवान।

पीठि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पीठ] पीठ।

पीठिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पीढ़ा, अंश, भाग, अध्याय।

पीठिया-ठोक—(वि०, यौ०, दे०) मिला, सटा या जुड़ा हुआ।

पीठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिष्टक] उर्द की धोई और पीसी हुई दाल, पिट्ठी, पीठ, पीठि (ग्रा०)।

पीड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आपीड] सिर में बालों पर बाँधने का एक गहना, पीड़ा, दर्द।

पीड़क—(संज्ञा, पु०, सं०) दुख या पीड़ा देने वाला, सताने वाला, दुखदायक।

पीड़न—(संज्ञा, पु०, सं०) दबाना, पेरना, दुख या कष्ट देना, उच्छेद, अत्याचार करना, दबोचना, नाश। [**पीड़क पीड़नीय, पीड़ित** (वि०)]।

पीड़ा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुख, कष्ट, व्यथा, दर्द, व्याधि, वेदना, पीरा (ग्रा०)।

पीड़ित—(वि० सं०) क्लेशित, दुखित, रोगी, दबाया, या नष्ट किया हुआ।

पीडुरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पिंडली] पिंडली, पिंडुली, पीडुरी (ग्रा०)।

पीड्यमान—(संज्ञा, पु०, सं०) पीड़ा या दुख-युक्त।

पीढ़ा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पीठक] पाटा। पीठक, (सं०) पीठ। छोटी कम चौड़ी चौकी।

पीढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पीढ़ा, सं० पीठिक] कुल-परंपरा, किसी व्यक्ति से बाप-दादे या बेटे-पोते आदि के क्रम से प्रथम, द्वितीयादि स्थान, पुश्त, वंश-क्रम, संतति-समूह, संतान, किसी वर्ग के व्यक्तियों का समूह। [जनरेशन] (संज्ञा, स्त्री०, अल्प०) छोटा [पीढ़ा (दे०)]।

पीत—(वि०, दे०) पीला, पीले रंग का, कपिल, भूरा। [**पीता** (स्त्री०)]। "नील-पीत जल-जात सरीरा"—[रामा०]। (वि०) [सं० पान] पिया हुआ। (पु०, सं०) भूरा या पीला रंग। पुखराज, मूंगा, हरताल, कुसुम, हरिचन्दन।—**कंद**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गाजर।—**कदली**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पीला केला, सोनकेला, चंपक।—**करवीर**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पीला कनौर।—**चन्दन**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हरिचन्दन, पीले रंग का चन्दन (द्रविण देश)।—**धातु***–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोपी-चंदन, रामरज। सुवर्ण।—**पुष्प**–(संज्ञा, पु०, यौ०, स०) चंपा, कट-सरैया, पोला कनैर। तोरई। धिया।—**मणि**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुखराज।—**रत्न**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुखराज।—**रस**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हल्दी।—**वास**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रीकृष्ण।—**शाल**–(संज्ञा, पु०, सं०) विजयसार।—**सार**–(संज्ञा, पु०, सं०) हरि-चंदन, पीला या सफेद चंदन, गोमेद मणि, शिलाजीत।—**हरित**–(संज्ञा, पु०) पीलेपन से युक्त हरा रंग।

पीतक—(संज्ञा, पु०, सं०) केसर, हरताल, हल्दी, पीतल। अगर। शहद। पीला चंदन। (वि०) पीला, पीले रंग का।

पीतता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पीलापन, जर्दी।

पीतम*—(वि०, दे०) [सं० प्रियतम] प्रीतम (दे०), अति प्यारा या स्नेही, पति।

पीतल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पित्तल] ताँबे और जस्ते से बनी एक मिश्रित उपधातु, पीतर (ग्रा०)।

पीतला—(वि०, दे०) [सं० पित्तल] पीतल का बना, पीतल-निर्मित।

पीतांग—(वि०, सं०) पीले अंगो वाला। (संज्ञा, पु०) सोनापाठा, एक प्रकार का पेठक।

पीतांबर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पीला वस्त्र, रेशमी धोती, श्रीकृष्ण, विष्णु। "पीतांबरः सांद्र पयोद सौभगं"—भा० द०।

पीता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हल्दी, महाज्योतिष्मती, प्रियंगु।

पीताभ—(वि०, सं०) पीले रंग का। पीताभ, अग्निमयज्यो दुर्जय—निराला।

पीतारुण—(संज्ञा, पु०) [सं० पीत+अरुण] ललाई लिए हुए पीलापन। (वि०) ललाई लिये पीले रंग का।

पीति—(संज्ञा, पु०, सं०) घोड़ा। (संज्ञा, स्त्री०) पान, गति, गमन।

पीतिमा—(संज्ञा, स्त्री०) पीलापन।

पीन—(वि०) [सं० पुष्ट] दृढ़, स्थूल, संपन्न, पीनो, पीवर। [**पीनता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] "प्रगट पयोधर पीन"—[रामा०]।

पीनक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पिनकना] अफीम के नशे में आगे को झुक-झुक पड़ना, ऊँघना, पिनक। [**पिनकी** (वि०)]

पीनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मोटाई, दृढ़ता।

पीनना—(क्रि० अ०, दे०) झुक झुक पड़ना, झूमना, ऊँघना, [पिनकना (दे०)]।

पीनस—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घ्राण-शक्ति नाशक, नाक का रोग। "पीनस बारे यों तज्यो, सोरा जानि कपूर"—[नीति०]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० फीनस] पालकी।

पीनसा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ककड़ी।

पीनसी—(वि०) [सं० पीनस] पीनस रोगी, मोटी या स्थूल सी।

पीना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पान) पान करना, घुटक जाना, गले से द्रववस्तु का घूँट घूँट कर नीचे जाना, सोखना। उत्तेजना, किसी बात या (क्रोधादि) मनोविकार को दबा लेना, प्रगट या अनुभव न करना, सह जाना, उपेक्षा करना, मारना, शराब पीना या हुक्का चुरुट आदि का धुँआ अन्दर खींचना। पीना, धूम्रपान। (संज्ञा, पु०) (प्रान्ती०) तिल की खली। (दे०) **मुहा०**—**करना (बनाना)**-खूब मारना।

पीनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पोस्त, तिसी

पीप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पूय] मवाद, फोड़े या घाव का सफेद लसीला विकार, पीब (ग्रा०)।

पीपर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिप्पल] पीपल। "अमिली बर सों ह्वै रही, पीपर तरे न जाउँ—स्फु०।—**पर्न**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पिप्पल-पर्ण] पीपल का पत्ता, एक कर्ण-भूषण।

पीपरि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिप्पली] छोटा पाकर, पिप्पली, पीपल।

पीपल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिप्पल] बट जैसा पीपर का पेड़ जो पवित्र है (हिन्दू)। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिप्पली] एक औषधि। "पीपल रत्ती तून तज"—स्फु०।

पीपरामूर, पीपलामूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिप्पलीमूल] एक औषधि, पीपरी की जड़।

पीपा—(संज्ञा, पु०, दे०) तेल या शराब आदि रखने का लोहा या काष्ठ का बड़ा ढोल जैसा गोल पात्र।

पीब—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पूय] मवाद।

पीय*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रिय] प्रिय, स्वामी, पति, प्यारा, पिय।

पीयर—(वि०) पीला।

पीयु—(संज्ञा, पु०, सं०) समय, काल। कौआ, सूर्य। उल्लू। सोना।

पीयूख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पीयूष] अमृत, "पीयूखत माठे पके, सुन्दर रसाल रसाल है"—भूष०।

पीयूष—(संज्ञा, पु०, सं०) अमृत, दूध, ७ दिन की ब्यायी गाय का दूध।—**भानु**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चन्द्रमा।—**वर्ष**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा। कपूर। आनन्द-वर्धक। एक मात्रिक छंद (पिं०)। [**पीयूषवर्षी** (वि०)]

पीर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पीड़ा] पीड़ा, दर्द, सहानुभूति, [पीरा (दे०)]। **लो०**—"सो का

जाने पीर पराई।" (वि०, फ़ा०) बूढ़ा, महात्मा, बड़ा सिद्ध [पीरी (संज्ञा, स्त्री०)]।

पीरा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पीडा] पीड़ा, दर्द। (वि०, दे०) [सं० पीत] पीला। "गयो बिखाद मिट्टी सब पीरा"—[रामा०]।

पीराई—(संज्ञा, पु०) डफाली, पीरों के गीत गाकर अपनी रोजी चलानेवाली जाति-विशेष।

पीरी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बुढ़ापा, वृद्धापन, गुरुवाई, शासन, ठेका, इजारा।

पील—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गज, हाथी, शतरंज का एक मोहरा, फील या ऊँट।—**पाँव**-(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फीलपा] श्लीपद रोग (वै०)। —**पाल**-(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फीलवान] फीलवान, हथवाल।—**वान**-(संज्ञा, पु०, दे०) [फा० फीलवान] फीलवान, हथवाल।

पीलसाज—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फतीलसोज] चिरागदान, दीवट, [दीयट (दे०)।]

पीला—(वि०, दे०) [सं० पीत] हल्दी सा, पीले रंग का, निस्तेज, कांति-हीन, सोने या केसरिया रंग का, हल्दी या सोने का सा रंग [पीली (स्त्री०)]।—**पन**-(संज्ञा, पु०, हि०) पीला होने का भाव, पीतता, [पियराई (दे०)]। **मुहा०**—**पड़ना या होना**-रोग या भय से मुख पीला पड़ जाना, देह में रक्ताभाव होना।

पीलिमा—(संज्ञा, स्त्री०) पीलापन।

पीलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पीला] कमल या कमल रोग (वै०)।

पीलु—(संज्ञा, पु०, सं०) पीलू वृक्ष, फूल, फलवान पेड़, हाथी, हड्डी का टुकड़ा, परमाणु।

पीलू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पीलु] काँटेदार, एक पेड़ (औष०) सड़े फल आदि के सफेद लम्बे पतले कीड़े। (संज्ञा, पु०, दे०) एक राग (संगी०)।

पीलुक—(संज्ञा, पु०, सं०) चींटा।

पीव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रिय] प्यारा, पीउ (ग्रा०), स्वामी, पति। "बाहर पिउ पिउ करत हौ, घट भीतर हैं पीव"—स्फु०।

पीवना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० पीना] पीना। "सूखी रूखी खाय कै ठंडा पानी पीव"—कबी०।

पीवर—(वि०, सं०) स्थूल, मोटा, दृढ़, भारी। [पीवरा (स्त्री०)], [पीवरता (संज्ञा, स्त्री०)]।

"तनु विशाल पीवर अधिकाई"—[रामा०]। "दिनेषु गच्छत्सु नितान्त पीवरम्"—रघु०।

पीवरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सरिवन, सतावर, (औष०) गाय, तरुणी।

पीता—(संज्ञा, स्त्री०) जल, पानी। (वि०) मोटा, स्थूल।

पीसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पेषण] अनाज, या अन्य वस्तु का आटा बनाना, चूर्ण करना, जल में रगड़ कर महीन करना। कुचल कर धूल सा करना। **मुहा०**—**किसी मनुष्य का**—उसे बड़ी हानि पहुचाना, चौपट या नष्टप्राय कर देना। अति श्रम करना, जान लड़ाना। (संज्ञा, पु०) पीसी जाने वाली चीज, एक व्यक्ति के पीसन योग्य अनाज या वस्तु।

पीहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पितृगृह] स्त्रियों के माँ-बाप का घर, मैका, मायका, प्रियघर।

पीहु, पीहू—(संज्ञा, पु०, दे०) एक कीड़ा, पिस्सू।

पुंग—(संज्ञा, पु०, सं०) राशि, समूह, श्रेणी।

पुं—(संज्ञा, पु०, सं०) पुंस, शब्द का रूपान्तर। नर, पुरुष।—**गव**-(संज्ञा, पु०, सं०) बैल, वर्द, वरद। (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़कर।—**लिंग**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुरुष चिह्न लिंग पुरुषवाची शब्द (व्या०)।—**शक्ति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पुरुषार्थ, पुरुषत्व, पौरुष, वीर्य।

पुंख—(संज्ञा, पु०, सं०) बाण का अंतिम या पिछला भाग जिसमें पर लगे रहते हैं। "सक्तांगुली सायक-पुंख एव"—रघु०।

पुंगल—(संज्ञा, पु०, सं०) आत्मा।

पुंगीफल, पूंगीफल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुँगीफल] सुपारी।

पुंछार, पुछार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पूँछ] मोर, मयूर। (वि०) लम्बी पूँछ वाला।

पुँछाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पुछल्ला] बड़ी या लम्बी पूँछ, पीछे लगा रहने वाला, चापलूस, आश्रित, पिछलगा, पुछल्ला।

पुंज—(संज्ञा, पु०, सं०) ढेर, राशि, समूह। "बालितनय बल-पुंज"—[रामा०]। [पुंजीकृत, पुंजीभूत (वि०, यौ०, सं०)]।

पुंजित—(वि०, सं०) ढेर लगाया हुआ, राशीकृत।

पुंजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुंज, हि० पूँजी] मूलधन, [पूँजी (दे०)]।

पुंड—(संज्ञा, पु०, सं०) तिलक, टीका, त्रिपुंड।

पुंडरिया—(संज्ञा, पु०) एक पौधा विशेष जिसके पत्ते शाल वृक्ष के पत्तों के समान हों।

पुंडरी—(संज्ञा, पु०) [सं० पुंडरिन्] स्थल कमल, गुलाब।

पुंडरीक—(संज्ञा, पु०, सं०) श्वेत कमल, रेशम का कीड़ा, कमल, बाण, बाघ, तिलक, श्वेत हाथी, श्वेत कुष्ठ, अग्निकोण का दिग्गज, आग, आकाश (अनेकार्थ)।—**लोचन**-(वि०) कमल-नयन। —**मुख**-कमलवदन।

पुंडरीकाक्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विष्णु। (वि०) कमल से नेत्र वाला। "स पुंडरीकाक्ष इतिस्फुटोऽभवत्"—माघ०।

पुंड्र—(संज्ञा, पु०, सं०) पौंड़ा, गन्ना, तिलक। श्वेत कमल। भारत का एक प्रदेश (प्राचीन)। हिन्दी का प्रथम ज्ञात कवि (मि०, वं०, वि०)।

पुंड्रवर्द्धन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुंड्रदेश की राजधानी (प्राचीन)।

पुंश्चली—(वि०, स्त्री०, सं०) छिनाल, कुलटा, व्यभिचारिणी। "वेश्या पुंश्चली तथा"।

पुंस*†—(संज्ञा, पु०, सं०) मर्द, पुरुष, नर।

पुंसवन—(संज्ञा, पु०, सं०) द्विजों के १६ संस्कारों में से गर्भाधान से तृतीय मास का एक संस्कार, वैष्णवों का एक व्रत, दूध।

पुंसत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) पुरुषत्व, पुरुष की मैथुन-शक्ति, वीर्य, शुक्र, पुंसकता, पुंसता।

पुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूप] मोटी और मीठी पूड़ी या टिकिया।

पुआल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पयाल] पयाल, [पयार (दे०)]।

पुकार—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० पुकारना] हाँक, दुहाई, टेर। (अ०), प्रतिकार, रक्षा या सहायतार्थ चिल्लाहट। नालिश। गोहार, फरियाद, बहुत माँग, नाम लेकर बुलाना।

पुकारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रकुश] टेरना, नाम ले बुलाना, साहाय्य या रक्षार्थ चिल्लाना, हाँक या धुन लगाना, नामोच्चार करना या रटना, घोषित करना, गोहराना (ग्रा०), चिल्लाकर कहना या माँगना, नालिश या फरियाद करना।

पुक्कस—(संज्ञा, पु०, सं०) नीच, डोम, चांडाल, अधम। [**पुक्कसी** (स्त्री०)]।

पुख, पुक्ख†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुष्य] पुष्य, पुष्य नक्षत्र (ज्यो०)।

पुखर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुष्कर] तालाब, तड़ाग—पोखर (ग्रा०) [**पोखरी** (स्त्री०)]।

पुखराज, पोखराज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुष्पराग] पीत मणि, पीले रंग का एक रत्न, पुष्पराज।

पुख्य—(संज्ञा, पु०, दे०) पुष्य नक्षत्र (सं०)।

पुगना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० पुजना] पुजना, पूजना, पूरा करना। (प्रान्ती०)। [स० रूप—**पुगाना, पुगवाना** (प्रेरणा रूप)]।

पुचकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पुचकारना] पुचकारी, प्यार, चुमकार।

पुचकारना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० पुच=से+हिं० कार+ना प्रत्य०] चुमकारना, चूमने के से शब्द से प्यार प्रकट करना।

पुचकारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० पुचकारना] चूमने का सा शब्द, चुमकार, प्यार प्रगट करना। स्नेह या प्रेम दिखाना।

पुचारा, पुचाड़ा—(संज्ञा, पु०) [अनु० प्राय०] गीले वस्त्र से पोंछना, पोता, पोतने का गीला वस्त्र, पानी में घोली पोतने या लेप की वस्तु, पतला लेप करने का कार्य हलका लेप, छूटी हुई तोप, बंदूक आदि की गर्म नली के ठंडा करने को गीला वस्त्र फेरने का कार्य, प्रोत्साहक या प्रसन्नकारक वाक्य। चापलूसी। बढ़ावा, झूठी बड़ाई।

पुच्छ—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूँछ, दुम, पिछला भाग। (संज्ञा, पु०) केतु (ज्यो०)।

पुच्छल—(वि०, दे०) [हिं० पुच्छ] पूँछ वाला, दुमदार।—**तारा**-(संज्ञा, पु०) कभी-कभी निकलने वाला एक तारा।

पुच्छल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पूँछ+ला प्रत्य०) बड़ी लम्बी पूँछ, पूँछ सी पीछे जुड़ी वस्तु, आश्रित, पिछलगा, खुशामदी, चापलूस, अनावश्यक साथ लगी वस्तु या पीछे लगा व्यक्ति।

पुछार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पूछना] पूछने या सत्कार करने वाला, [मोर (दे०)]।

पुछया*—(वि०, दे०) पूछने वाला।

पुजना—(क्रि० अ०, हिं०) पूजा जाना, आराधनीय या सम्मानित होना, सत्कार पाना। [**पुजाना, पुजवाना**—(स० रूप, प्रेरणा रूप)]।

पुजवना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० पूजना] सफल या पूरा करना, भर देना, भरना, पुजाना।

पुजवाना—(क्रि०, स०) [हि० पुजना का प्रे० रूप] पूजा में प्रवृत्त करना, पूजा कराना, सेवा-सम्मान करवाना, अपनी पूजा या सेवा कराना। [**पुजवाई** (**संज्ञा, स्त्री०**)]।

पुजाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० पूजना] पूजने का भाव या कार्य या पुरस्कार।

पुजाना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० पूजना] धन वसूल कराना, भेंट चढ़वाना, सेवा-सम्मान कराना, पूजा में नियुक्त या प्रवृत्त करना, अपनी पूजादि कराना। (क्रि०, स०) [हि० पूजना—पूरा होना] भर देना, पूरा या सफल करना।

पुजापा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूजा+पात्र] देवादि की पूजा का सामान या सामग्री।

पुजारी, पुजेरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूजा+कारी] देव-मूर्ति की पूजा करने वाला, पूजक।

पुजाही—(संज्ञा, पु०) पूजा करने की सामग्री का पात्र या झोला।

पुजौरा—(संज्ञा, पु०) पूजा, पूजन, पूजन मे अर्पित की गयी सामग्री।

पुजैया—(संज्ञा, पु०) [हि० पूजना] पूजक, पुजारी। (संज्ञा, पु०) [हि० पूजना—भरना] भरने या पूरा करने वाला। [**पूजा, पुजारिनि** (**संज्ञा, स्त्री०, दे०**)]।

पुट—(संज्ञा, पु०, अनु०) मिलावट, बोर देना, डुबोना, कम मेल, भावना, हलका छिड़काव, छींटा, बोर। (संज्ञा, पु०, सं०) आच्छादन, आच्छादक, दोना, ढक्कन, कटोरा, मुँहबन्द बरतन औषधि बनाने का संपुट, या दो बराबर पात्रों के मुँह मिला कर जोड़ने से बना खूब बन्द घेरा, (वै०), घोड़े की टाप, अंतःपट, अँतरौटा, दो नगण, मगण, रगण से बना एक वर्ण वृत्त (पिं०)।—**पाक**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पत्ते के दोनों या दो सम पात्रों में रख कर औषधि पकाने की विधि, मुँह-बंद बरतन को गढ़े में रखकर औषधि पकाने की रीति (वै०)।

पुटकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुटक] गठरी, पोटली, पोटरी (ग्रा०)। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पटपटाना—मरना] दैवी विपत्ति या आपत्ति, अचानक मृत्यु। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० पुट—हलका मेल] मिलावट, आलन (तरकारी के रस को गाढ़ा करने को डाला गया बेसन आदि पदार्थ)।

पुटित—(वि०, सं०) पीसा या रगड़ा हुआ। फाड़ा या सिला हुआ। किसी मंत्र का पहला अक्षर या पद की पहली पंक्ति जिसे पढ़ा या जपा जाय।

पुटियाना—(स०, क्रि०) फुसलाना, समझा-बुझा कर या पुचकार कर अपनी ओर कर लेना।

पुटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुट] छोटा कटोरा या दोना, पुड़िया, लँगोटी, कुछ वस्तु रखने का रिक्त स्थान।

पुटीन—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० पोटीन] एक मसाला जो किवाड़ों मे शीशे लगाने में या लकड़ी के जोड़ भरने में काम देता है।

पुट्ठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुष्ट, पृष्ठ] चूतड़ का ऊपरी भाग, जो कुछ कड़ा हो, घोड़ो या चौपायों के चूतड़, किताब की जिल्द के पीछे का भाग।

पुठवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पुट्ठा] पीछे, पार्श्व या बगल मे।

पुठवाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पुट्ठा+वाला प्रत्य०] सहायक, पृष्ठ-रक्षक।

पुड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुट] बंडल या बड़ी पुड़िया। [**पुड़िया** (स्त्री० अल्पा०)]।

पुड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुटिका] किसी वस्तु के ऊपर संपुटाकार लपेटा कागज, पुड़िया में रक्खी दवा की एक मात्रा, घर, स्थान, आधार, भंडार, खान।—**आफत की पुड़िया**-(यौ०) शैतान।

पुण्य—(वि० सं०) शुभ, अच्छा, पुनीत। (संज्ञा, पु०) धर्म्म-कर्म्म, सुफलप्रद पावन काम, शुभ कार्य का संचय।—**कर्म**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) धर्म, पवित्र, या शुभ कार्य।—**काल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शुभ या पवित्र समय, दान-धर्म्म करने का समय।—**कृत**-(वि०, सं०) पुण्यकर्त्ता, धार्मिक, सुकृती, सुकर्म्मी।—**क्षेत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तीर्थ, वह स्थान जहाँ जाने से पुण्य हो।—**गंध**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चंपा का फूल। "पुण्य-गंधवहः शुचिः"—भा० द०।—**जन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) यक्ष, राक्षस, सज्जन मनुष्य।—**जनेश्वर**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुबेर।—**पत्तन**-(संज्ञा, पु०, सं०) पूना नगर।—**भूमि**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आर्यावर्त्त, भरतखंड, तीर्थस्थान।—**वान्**-(वि०) [सं० पुण्यवत्] पुण्यशील, धर्म्मात्मा, पुण्यकर्म करने वाला, दानी।

[पुण्यवती (स्त्री०)] ।—**शील**-(संज्ञा, पु०, सं०) दानी, उदार, धर्मात्मा, सुकर्म्मी ।—**श्लोक**-(वि०, यौ०, सं०) पवित्र आचरण या चरित्रवाला, यशस्वी, [**पुण्यश्लोका** (स्त्री०)] । "पुण्यश्लोक शिखामणिः"—स्फु० । विष्णु, युधिष्ठिर, राजा नल ।—**स्थान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तीर्थ-स्थान, पुण्यस्थल ।

पुण्याई, पुन्याई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पुण्य, पुन्य+आई प्रत्य०] सुकृत कर्म, पुण्य का प्रभाव या फल।

पुण्यात्मा—(वि०, यौ०) [सं० पुण्यात्मन्] दानी, सुकर्मी, धर्मात्मा, पुण्यशील ।

पुण्याह—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुण्यजनक, शुभ दिन, अच्छा दिन ।

पुण्याह, वाचन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवकर्मों के अनुष्ठान मे स्वस्ति वाचन के प्रथम मंगलार्थ तीनि बार 'पुण्याह' कहना ।

पुतरा, पुतला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुत्रक] काष्ठ, तृण, मिट्टी, वस्त्र आदि से क्रीड़ा-कौतुकार्थ बनी हुई मनुष्य की मूर्त्ति, गुड्डा । [**पुतरी, पुतली** (स्त्री०)] । **मुहा०—किसी का पुतला बाँधना**-निन्दा या बदनामी करते फिरना ।

पुतरी, पुतली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुत्रिका, पुत्तली] काष्ठ, धातु, तृण, वस्त्र आदि से कौतुकार्थ बनी स्त्री की मूर्त्ति, छोटा पुतला, गुड़िया, आँख का काला भाग, पूतरि, पूतरी (ग्रा०) । "अंत लूटि जैहौ ज्यों पूतरी बरात की" । **मुहा०—फिर जाना**-आँखें उलट जाना, नत्र स्तब्ध हो जाना (मृत्यु-चिन्ह) । **आँख की—बनाना (चख-पूतरी करना)**—अति प्रिय बनाना (करना) । "करौं तोहि चख-पूतरि आली"—[रामा०] । कपड़ा बुनने की मशीन (यौ०) ।—**घर**—कपड़ा बुनने का कार्यालय, कल-करखाना ।

पुताई, पोताई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० पोतना+आई प्रत्य०] पोतना क्रिया का भाव, पोतने का कार्य या मजदूरी ।

पुतारा—(संज्ञा, पु०) किसी वस्तु पर रंग या पानी से तर कपड़ा फेरने की क्रिया ।

पुत्त*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुत्र] लड़का, बेटा, [पूत (दे०)] ।

पुत्तल—(संज्ञा, पु०, सं०) पुतला ।—**दहन** (पु०) किसी मरे हुए आदमी के अभाव में पुतले जलाने की क्रिया ।

पुत्तरी, पुत्तली*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुत्री] कन्या, लड़की, बेटी, पुतली । "क्रीडाकला-पुत्तली"—हरि० ।

पुत्तलिका, पुत्तरिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुत्रिका], गुड़िया, पुतली, पुत्री ।

पुत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) लड़का, बेटा, [पूत (दे०)] पुतौनन (ग्रा०) ।—**जीव, जीवी**-(संज्ञा, पु०, सं०) इंगुदी सा एक सुन्दर बड़ा पेड़ जिसकी छाल और बीज दवा में पड़ते हैं ।—**भाव**-(संज्ञा, पु०) पुत्रता, पुत्र का भाव [—**लाभ**-(संज्ञा, पु०) पुत्र-प्राप्ति ।—**वती**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लड़के वाली, लड़कौरी (दे०), जिसके लड़का हो, [पूती (दे०)]। "पुत्रवती युवती जग सोई"—[रामा०] ।—**वधू**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) लड़के की स्त्री, पतोहू, बहू । "मैं पुनि पुत्र-वधू प्रिय पाई"—[रामा०] ।—**वान**-(संज्ञा, पु०) [सं० पुत्रवत्] लड़के वाला, जिसके लड़का हो । [**पुत्रवती** (स्त्री०)] —**हीन**-(वि०) जिसे पुत्र न हो ।

पुत्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) लड़का, बेटा । शरभ । धूर्त आदमी । पुतला । बाल, केश ।

पुत्रार्थी—(वि०, यौ०, सं०) संतान-कांक्षी, संतानेच्छु, पुत्राभिलाषी, पुत्राकांक्षी ।

पुत्रिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लड़की, बेटी । गुड़िया, आँख की पुतली मूर्त्ति, स्त्री० का चित्र ।

पुत्रिणी—(वि०, स्त्री०, सं०) लड़के वाली, संतान-युक्ता, पुत्रवती ।

पुत्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लड़की, बेटी, सुता, तनुजा, कन्यका ।

पुत्रेष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पुत्र प्राप्ति के लिए एक विशेष यज्ञ ।

पुदीना—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पोदीनः] एक पौदा जो सुगंधित पत्तियों वाला, पाचक और रुचिकारक होता है । **पोदीना** ।

पुद्गल, पुद्नल—(संज्ञा, पु०, सं०) रूप, रंग और स्पर्श गुणवाली वस्तु, शरीर (जैन०), चैतन्य पदार्थ, परमाणु (बौद्ध) आत्मा ।

पुनः—(अव्य०) [सं० पुनर] फिर, पीछे, पश्चात । पुनि (ब्र० अ०) उपरान्त, दोबारा, अनन्तर ।—**पुनः**-(अव्य०, यौ०, सं०) फिर फिर, बारबार, मुहुर्मुहुः । "जायन्ते च पुनः पुनः"—स्फु० [पुनि-पुनि (दे०)] ।—**संस्कार**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दोबारा संस्कार ।—**स्थापन**-(संज्ञा, पु०) फिर से स्थापित करना ।

पुन*—(संज्ञा, पु०, दे०,) [सं० पुण्य] पुन्य, दान, धर्म-पुन्न, पुण्य।

पुनर—(संज्ञा, पु०, सं०) फिर, दुबारा। —**अपि**-(क्रि० वि०, सं०) फिर भी, दुबारा भी। "पुनरपिजननं पुनरपिमरणं"—चर०। —**आगमन—आगम**-(संज्ञा, सं०, यौ०, सं०) फिर जन्म, दोबारा जन्म, फिर आना "भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत:"। —**आवृत्ति**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) फिर से घूमना, फिर से आना, दुहराना, फिर से पढ़ना, किये काम को फिर से करना [**पुनरावृत्त** (वि०)]। —**आवेदक**-(पु०) अपील-कर्त्ता [एपिलेंट]। —**आवेदन**-(पु०) पुन: विचार करने की प्रार्थना [अपील]। —०**न्यायालय**-जिस न्यायालय में अपील की जाय। [एपिलेट कोर्ट] —**उक्तप्रकाश**-(संज्ञा, पु०, सं०) रोचकता के लिये शब्द का पुनर्प्रयोग (दास)। —**उक्तवदाभास**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक शब्दालंकार जिसमें शब्द के अर्थ की पुनरुक्ति का केवल आभास सा प्रतीत हो। —**उक्ति**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक बार कहे शब्द या वाक्य को फिर कहना, कथित-कथन, एक ही अर्थ मे व्यर्थ के पुन: प्रयोग का काव्य दोष। [**पुनरुक्त** (वि०) —**उत्थान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) फिर से उठना, दूसरी बार उठना, फिर उन्नति करना, पुनरुन्नति। —**ग्राह्य**-(वि० सं०) दुबारा चुने जाने योग्य। [रिएलिजिबिल]—**जन्म**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मर कर एक देह छोड़ दूसरी धारण करना, फिर उत्पन्न होना, पुनरुत्पत्ति। "पुनर्जन्म न विद्यते"। —**नव**-(वि०, सं०) जो फिर से नया हो गया हो, गदहपुन्ना (औष०)। —**नवा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जो फिर से नया हो गया हो, गदापुन्ना गदहपूरना (औष०) जो श्वेत रक्त और नील रंग के फूलों के विचार से तीन प्रकार का होता है। —**निर्यात**-(पु०) अपने देश में आई हुई वस्तु को पुन: बाहर भेजना। [रिएक्सपोर्टिंग]—**नियोजन**-(पु०) पुनर्वसित करना, पुन: प्रतिप्रतिष्ठान [रिहैबिलिटेशन]। —**निर्वाचन**-(पु०) फिर से चुनाव का होना [रिएलेक्शन] —**परीक्षण**-(पु०) फिर से परीक्षा का होना [रिएक्जामिनेशन]। —**भव**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नख, नाखून। बाल। पुनर्जन्म, पुनरुत्पत्ति, पुनर्विवाह। फिर से पैदा होना, अंडज। [**पुनर्भूत, पुनर्भवा** (वि०, स्त्री०)]। —**भू**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दो बार की ब्याही स्त्री, द्विरूढ़ा स्त्री, पुनर्विवाहिता, दूसरे से ब्याही गई विधवा स्त्री। —**वसु**-(संज्ञा, पु०, सं०) २७ नक्षत्रों मे से ७ वाँ नक्षत्र, विष्णु, कात्यायन मुनि, शिव, एक लोक। —**वास**-(पु०) फिर से बसाना। —०**मंत्री**-पुनर्वास सचिव, जिसका कार्य शरणार्थियों आदि को पूर्व स्थिति में लाने से सम्बन्धित रहता है। [रिहैबिलिटेशन मिनिस्टर]—**विचार**-(पु०) फिर से विचार करना। [रिकान्सीडरेशन]—०**पत्र**-(पु०) फिर से विचार करने के लिए दिया जाने वाला आवेदन पत्र। [मेमो आफ अपील]—**विवाह**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दुबारा ब्याह। [**पुनर्विवाहित** (वि०)]।

पुनवाना—(क्रि० स०, दे०) अनादर या अपमान करना, अप्रतिष्ठा करना।

पुनि*—(क्रि० वि०, पु०) [सं० पुन:] फिर से, पुन:, दुबारा, फिर। "पुनि आउब यहि बिरियाँ काली"—[रामा०]। [**पुनि-पुनि** (यौ०)]।

पुनी*—(संज्ञा, पु०) [सं० पुण्य] पुण्यात्मा, दानी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पूर्ण] पूनो तिथि, पूर्णमासी, पूर्णिमा। (क्रि० वि०, दे०) [सं० पुन:] फिर, दुबारा, पुनि, पुन:।

पुनीत—(वि०, सं०) शुद्ध, पवित्र, पावन।

पुन्न, पुन्य—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुण्य] पुण्य, धर्म। [**दान-पुन्न** (यौ०)।

पुन्ना—(क्रि० स०, दे०) गाली देना, अनादर या अपमान करना।

पुन्नाग—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का चंपा, जायफल, सफेद कमल। "पुन्नाग कहुँ कहुँ नागकेसर, संतरा, जंभीर हैं"—भूष०।

पुन्नार—(संज्ञा, पु०, दे०) चकवड़ का पेड़।

पुन्य—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुण्य] धर्म्मकार्य्य, शुभ कर्म, दान, धर्म। शुभ, पवित्र, अच्छा [वि० दे०]।

पुपली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि०, पोपली] बाँस की पोली पतली नली। (वि०, स्त्री०) बिना दाँत वाली। [**पुपला-पोपला** (पु०)]।

पुमान्—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुरुष, नर।

पुरंजय—(संज्ञा, पु०, सं०) एक सूर्य-वंशी राजा जो पीछे से ककुत्स्थ कहलाये, जिससे सूर्य्यवंशी

काकुस्थ कहलाते हैं। पुर राक्षस के विजेता इन्द्र।

पुरंजर—(संज्ञा, पु०, सं०) वय, स्कंध, कंधा, बाहुमूल।

पुरंदर—(संज्ञा, पु०, सं०) पुर नामक दैत्य के नाशक, इन्द्र, विष्णु, शिव। "पुरंदरश्रीः पुरमुत्पताकं"—रघु०।

पुरंध्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पति, पुत्रादि से सुखी स्त्री, नारी, सुगृहणी।

पुरः—(अव्य०) [सं० पुरस्] प्रथम, पहले, आगे। "पुरः प्रवालैरिव पूरिताधंया"—माघ०।—**सर**, (**पुरस्सर**)-(वि० सं०) आगे चलने वाला, अग्रगामी, अगुआ, सहित, साथी।

पुर—(संज्ञा, पु०, सं०) शहर, नगर, [**पुरी** (स्त्री०)] अटारी, घर, कोठा, भुवन, लोक, राशि, शरीर, किला। (वि०, अ०) भरा हुआ, पूर्ण, पूरा। (संज्ञा, पु०, दे०) चरसा, चरस, चमड़े का डोल। "कृपा करिय पुर धारिय पाऊँ"—[रामा०]।—**जन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नगरवासी। "पुरजन, परिजन, जाति जन"—[रामा०]।—**त्राण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परकोटा, प्राकार, शहर-पनाह, नगर कोट।—**बासी**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नगर-निवासी, पुरजन। "यह सुधि सब पुरबासिन पाई"—[रामा०]।

पुरइन*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुटकिनी] कमल का पत्ता, कमल, नलिनी, पुरैनि (ग्रा०)।

पुरइया—(संज्ञा, पु०, दे०) तकुआ। "भुन भुन बोल पुरइया"—कबीर०।

पुरखा, पुरिखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुरुष] पहले के पुरुष या लोग, बाप-दादा, परदादा आदि, घर का बड़ा बूढ़ा। "तब पुरखा इच्छवाकु आदि सब नभ मैं ठाढ़े"—हरि०। [**पुरखिन (स्त्री०)**] (वि०, दे०) बुजुर्ग, अनुभवी। **मुहा०—पुरखे तर जाना**-परलोक में पूर्वजों को उत्तम गति मिलना, बड़ा पुण्य या फल होना।

पुरचक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं०, पुचकार] पुचकार, चुमकार, उत्तेजना, उत्साह-दान, समर्थन, तरफदारी, प्रेरणा, पक्षपात।

पुरजा, पुर्जा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भाग, खंड, टुकड़ा, पर्चा, कागज का टुकड़ा, अंश, अंग, धज्जी, कतरन, रुक्का, यंत्र या कल का अवयव, कतल। **मुहा०—पुरजे करना या उड़ाना**—टुकड़े टुकड़े या खंड खंड करना। **मुहा०—चलता-पुरजा**-चालाक मनुष्य। [**कल-पुरजा यौ०**]।

पुरट—(संज्ञा, पु०, सं०) पुरट, सोना, सुवर्ण। "पुरट-कोट कर परम प्रकासा—[रामा०]।

पुरतः—(अव्य, सं०) संमुख, सामने, आगे, "नीरस तरुरिहि विलसति पुरतः"।

पुरना—(क्रि० स०, दे०) भर जाना, बन्द होना, पूरा या पूर्ण होना। [**पुराना** (क्रि० स०)]। [**पुरवाना** (प्रे० रूप)]।

पुरनियाँ—(संज्ञा, पु०, वि०, दे०) [सं० पुराण] प्राचीन, पुराना, बूढ़ा, वृद्ध, एक नगर, पुर्निया (बिहार)।—**पाल, पालक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नगर-रक्षक, कोतवाल, जीव। "जब पुरबनिता आ पूछती थी संदेसा"—हरि०।

पुरबला†, पुरबुला†—(वि०, दे०,) [सं० पूर्व + ला प्रत्य०] पूर्व या प्रथम का, पहले जन्म का, प्रथम, पहले या पूर्व का। [**पुरबली, पुरबुली** (स्त्री०)] "कौन पुरबुले पाप तें, बन पठये जगतात"—गिर०।

पुरबहु, पुरवहु—(क्रि० स०, दे०)। पुरवना पूर्ण या पूरा करो, भर दो, पुजा दो। "पुरबहु सकल मनोरथ मोरे"—[रामा०]।

पुरबा, पुरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) पुरवा, करई, चुकड़, पूरब की हवा, पुरवाई, पूर्वा नक्षत्र।

पुरबिया, पुरबिहा—(वि०, दे०) [हिं० पूरब] पूर्व देश का निवासी या उत्पन्न, पूर्व का, [**पूर्वीय** (सं०)], [**पुरबनी (स्त्री०)**]।

पूरबी, पूरवी—(वि०, दे०) पूर्वीय (सं०)।

पुरवट†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुर] चरसा, चरस, मोट, सिंचाई के लिये कुएँ से पानी खींचने का चमड़े का बड़ा डोल।

पुरवना*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० पुरना] भरना, पुजाना, पूरना, पूरा करना। **मुहा०—साथ**—(क्रि० अ०) साथ देना। पूरा या पर्याप्त होना, काम भर को होना, पूर्ण या यथेष्ट होना।

पुरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुर] खेड़ा, पुरा, छोटा गाँव, पूर्वा या पूर्वाषाढ़ नक्षत्र (ज्यो०)। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पटक] मिट्टी का सकोरा

या कुलहड़। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूर्व + वात] पूर्व दिशा से चलने वाली वायु, पुरवाई, पुरवैया (ग्रा०), "उठति उसाँस सो झकोर पुरवा को है" —[ऊ० श०] "जो पुरवा पुरवाई पावै"— घाघ।

पुरवाई, पुरवैया, पुरवइया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पूर्व + वायु] पूर्व दिशा से चलने वाली हवा।

पुरश्चरण—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी कार्य की सिद्धि के लिये अनुष्ठान, नियमपूर्वक कार्यसिद्धि के लिये स्तोत्र या मंत्रादि का पाठ या जप करना, पूजा या प्रयोग करना (तन्त्र)।

पुरषा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुरुष] पुरखा।

पुरसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुरुष] साढ़े चार या पाँच हाथ की एक नाप।

पुरस—(अ०, सं०) समक्ष, आगे, पहले, सामने। **—करण**-(संज्ञा, पु०) पुरस्कृत करने की क्रिया, पूरा करना।**—कार**-(संज्ञा, पु०, सं०) पारितोषिक, इनाम, आदर, सत्कार या प्रतिष्ठा-पूर्वक दान, उपहार, पूजा, अच्छे कार्य का बदला; धन्यवाद, आगे करना, प्राधान्य, स्वीकार। [**पुरस्कृत**, **पुरस्करणीय** (वि०)]।**—कृत**-(वि०, सं०) पूजित, आदृत, सम्मानित, स्वीकृत, जिसे पुरस्कार, पारितोषिक, या इनाम मिला हो, आगे किया हुआ। "पुरस्कृता बत्मनि पार्थिवेन"—रघु०।

पुरस्तात्—(अव्य० सं०) पूर्व दिशा, अतीत काल, प्रथम, पहले, आगे, पूर्व, पूर्व मे। "पुरस्तात अपवादानन्तरान् विधान् बाधन्ते नोत्तरान्"— कौ०।

पुरही—(संज्ञा, स्त्री०) एक झाड़ी की पत्तियाँ या उसकी जड़ जो औषधि के काम में आती है। हर जेवड़ी।

पुरहूत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुरुहूत] इन्द्र, पुरुहूत। "पुरुहूत पुहुमी में प्रगट प्रभाव है" —ललि०।

पुरांतक—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव।

पुरा—(अव्य० सं०) पुराना, प्राचीन या पुराने समय में। (वि०) पुराना, प्राचीन। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुर] गाँव, मुहल्ला। पूर्व दिशा, बस्ती, स्त्री०। "पूरा प्रष्टवान्-पद्मयोनिं विडौजा"— स्फु०।**—कल्प**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पूर्व या पहला कल्प, प्राचीन काल, एक भाँति का अर्थ-वाद जिसमें पुराने इतिहास के आधार पर कार्य करने का विधान किया जाता है।**—कृत**-(वि०, सं०) पूर्व जन्म या समय में किया हुआ। "यह संघट तब होय जब, पुन्य पुराकृत भूरि"—[रामा०]।**—तत्व**-(संज्ञा, पु०, सं०) प्राचीन समय संबंधी विद्या, प्रत्न शास्त्र। [आर्कालाजी] [**पुरातत्वान्वेषण** (यौ०)]—प्राचीन खोज।**—तत्ववेत्ता**-(संज्ञा, पु०, सं०) प्रत्न शास्त्र का ज्ञाता, प्राचीन काल सम्बन्धी विद्या का ज्ञाता।**—वृत्त**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इतिहास, प्राचीन या पुराना वृत्तांत या हाल। "पुरावृत्त तब संभु सुनावा"— [रामा०]।

पुराण, पुरान—(वि० सं०) पुराना, प्राचीन, पुरातन। (संज्ञा, पु०, सं०) इतिहास, जन-परम्परागत देवदानवादि के वृत्तान्त, हिन्दुओं के १८ धर्म-सम्बन्धी आख्यान-ग्रन्थ, जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति, प्राचीन ऋषि-मुनियों तथा प्रलयादि के वृत्तान्त हैं, १८ की संख्या, शिव। "वेद-पुरान करहिं सब निंदा"—[रामा०]। "नाना पुराण निगमागम समतं यद्"।

पुरातन—(वि०, सं०) पुराना, प्राचीन, पुराण (संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, परमेश्वर, पुराण पुरुष। "पुरुष पुरातन की प्रिया, क्यों न चंचला होय"— रही०।

पुरातल—(संज्ञा, पु०, सं०) रसातल।

पुरान—(वि०, दे०) [सं० पुराण] पुराना, (संज्ञा, पु०, दे०) पुराण।

पुराना—(वि०, दे०) [सं० पुराण] अतीत, प्राचीन, बहुत दिनों या काल का, पुरातन, जीर्ण, परिपक्व, बहुत दिनों तक के, अनुभव-वाला, पुराण। "छुवतै टूट पिनाक पुराना"—[रामा०]। [**पुरानी** (स्त्री०)]।**—खुर्राट**-(यौ०) वृद्ध, बड़ा चालाक, अनुभवी।**—घाघ**-बड़ा अनुभवी या चालाक,**—चावल**-जिसका चलन न हो, बहुत अगले समय का। (क्रि० स०, दे०) [हिं० पूरना का प्रे० रूप] पुजवाना, अनुसरण करना, भराना, पूरा (करना) कराना, पालन या अनुसरण कराना (करना)। "जौ सखि कह्यो होइ कछु तेरो अपनी साध पुराऊँ"—सूर०।

पुरारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुर राक्षस के शत्रु, महादेव जी, शिव जी। "सोइ पुरारि को दंड कठोरा"—[रामा०]।

पुराल†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पलाल] पयाल, पयार, पुआल।

पुरासिनी—(संज्ञा, स्त्री०) सहदेई नाम की बूटी।

पुरि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पुरी, नगरी, शरीर, नदी, (संज्ञा, पु०, सं०) राजा, संन्यासियों का एक भेद।

पुरिखा, पुरिषा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुरुष] पूर्वपुरुष, पूर्वज, पहले के लोग, बाप-दादा आदि पुरिखा।

पुरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जगन्नाथ पुरी, छोटा शहर या नगर, पुरुषोत्तम-धाम। "मम धामदा पुरी सुखरासी"—[रामा०]। [पूड़ी (दे०)]

पुरीतत्—(संज्ञा, पु०, सं०) आँत, नाड़ी, वह नाड़ी, जहाँ सोते समय मन स्थिर रहता है।

पुरीष, पुरीषा—(संज्ञा, पु०, सं०) मल, मैला, विष्ठा, गू। "जो पुरीष सम त्यागि भजै जग सोई पुरुष कहावै"—ध्रु व०।

पुरु—(संज्ञा, पु०, सं०) अमर या देव-लोक, दैत्य, देह, शरीर, पराग। एक राजा जो ययाति का पुत्र था (पुरा०), पंजाब का राजा जो सिकंदर से लड़ा था (इति०) ।—**कुत्स**–(संज्ञा, पु०, सं०) मान्धाता पुत्र।—**चेतन**–(वि०) प्रकट, प्रत्यक्ष। —**भोजा**–(संज्ञा, पु०, सं०) भेंड़, भेंड़ा।

पुरुख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) पुरुष (सं०)।

पुरुखा, पुरुखे*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुरुष] पूर्वज, पूर्व पुरुष, बाप-दादा आदि।—**जित**–(संज्ञा, पु०, सं०) एक राजा जो अर्जुन का मामा था, विष्णु।

पुरुदस्म—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु।

पुरुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूर्वा] पूर्व दिशा, पूर्व दिशा की वायु। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पूर्वा] एक नक्षत्र, पूर्वाषाढ़, पूर्वा।

पुरुराज—(संज्ञा, पु०, सं०) पुरूरवा।

पुरुष—(संज्ञा, पु०, सं०) नर, आदमी, मनुष्य। आत्मा, जीव। ब्रह्म। विष्णु। सूर्य। शिव। सर्वनाम और क्रिया के रूप का वह भेद जिससे वक्ता संबोध्य, या अन्य व्यक्ति का बोध हो, पुरुष तीन है।—(१) उत्तम (कहने वाला), (२) संबोध्य —जिससे कहा जाय, (३) अन्य—जिसके विषय में कहा जाय (व्या०), मनुष्य का शरीर, पूर्वज, स्वामी, पति, प्रकृति-भिन्न एक चैतन्य, अपरिणामी, असंग और अकर्ता पदार्थ (सांख्य)।—**कार**–(वि०, सं०) पुरुष का कर्म, चेष्टा, पौरुष, शौर्य। —**कुंजर**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुरुष-पुंगव, पुरुष-श्रेष्ठ।—**पुर**–(संज्ञा, पु०, सं०) प्राचीन गंगा-धार की राजधानी, पेशावर नगर (वर्त०)। —**मेध**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नरबलि वाला यज्ञ, मनुष्य-यज्ञ, (वैदि०) मृतक मनुष्य की दाह-क्रिया, दाह-कर्म।—**सिंह**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रेष्ठ या उत्तम या उद्योगी पुरुष। "उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मी", "पुरुषसिंह जो उद्यमी लक्ष्मी ताकि चेरि"।—**सूक्त**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सहस्र शीर्षा से प्रारंभ होने वाला ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध सूक्त।—**हूत**–(संज्ञा, पु०, सं०) सुरेश, इन्द्र।

पुरुषत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) पुंसत्व, मनुष्यपन, मरदानगी, पौरुष, बल।—**हीन**–(वि०, यौ०, सं०) पुंसत्व-रहित, नपुंसक, हिजड़ा।

पुरुषाद, पुरुषादक—(संज्ञा, पु०, सं०) नरभक्षी, राक्षस। "पुरुषादाऽनवृतः"—भा०।

पुरुषाधम—(वि०, संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) निकृष्ट, नीच, पामर मनुष्य, नराधम।

पुरुषानुक्रम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुरखों की परम्परा जो क्रम से चली आई हो।

पुरुषायितबंध—(संज्ञा, पु०, सं०) विपरीत रति (कामशा०)।

पुरुषारथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुरुषार्थ] पौरुष, उद्यम, मनुष्य का उद्योग या लक्ष्य, सामर्थ्य, पराक्रम। "पारथ से छाँड़ पुरुषारथ को ठाढ़े ढिग" —स्फु०।

पुरुषार्थ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मनुष्य का लक्ष्य या उद्योग का विषय, पराक्रम, उद्यम, पौरुष, सामर्थ्य, शक्ति। "त्रिविधि दुःखमत्यंत निवृत्ति-रत्यंत पुरुषार्थः"।

पुरुषार्थी—(वि०) [सं० पुरुषार्थिन्] उद्योगी, परिश्रमी, बलवान, पुरुषार्थ करने वाला।

पुरुषोत्तम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) उत्तम या श्रेष्ठ पुरुष, विष्णु। श्रीकृष्ण, नारायण। जगन्नाथ (उड़ीसा), मल (अधिक) मास।

पुरूरवा—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा इला के पुत्र (ऋग्वेद) उर्वशी इनकी स्त्री थी, विश्वेदेव।

पुरैन, पुरैनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुटकिनी] कमल का पत्ता।

पुरोगत—(वि०, सं०) जो प्रत्यक्ष या सामने हो, जो पहले आ गया हो।

पुरोगम—(वि०, सं०) अग्रसर, अग्रगामी।

पुरोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्योधन का मित्र और सेवक।

पुरोजन्मा—(वि०, सं०) जिसका जन्म पहले हुआ हो। (संज्ञा, पु०) ज्येष्ठ भ्राता।

पुरोडाश—(संज्ञा, पु०, सं०) हवि, होम-सामग्री, यज्ञभाग, सोमरस, खीर, [पुरोडास (दे०)], यज्ञाहुति के लिए कपाल में पकाई यवादि के चूर्ण की टिकिया। "पुरोडास चर रासभ खावा"—[रामा०]।

पुरोत्सव—(संज्ञा, पु०, सं०) शहर भर में मनाया जानेवाला उत्सव)

पुरोद्यान—(संज्ञा, पु०) नगर के बीच का उद्यान। [पार्क]।

पुरोधा—(संज्ञा, पु०) [सं० पुरोधस्] पुरोहित।

पुरोवर्त्ती—(वि०) [सं० पुरोवर्तिन्] अग्रगामी।

पुरोहित—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञादि गृह-धर्म या संस्कार कराने वाला, याजक, उपरोहित, कर्मकांडी, [प्रोहित (दे०)]। [**पुरोहितान** (स्त्री०)]। "अग्निमीडे पुरोहितम्"—ऋ०।

पुरोहिताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुरोहित+आई हिं० प्रत्य०] पुरोहित का कर्म।

पुर्जा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पुरजा], पुरजा।

पुर्त्तगाल—(संज्ञा, पु०) [अं० पोर्टगाल] महाद्वीप यूरुप के दक्षिण-पश्चिम में एक प्रदेश।

पुर्त्तगाली—(वि०) [हिं० पुर्त्तगाल] पुर्तगाल का निवासी या सम्बन्धी।

पुर्त्तगीज—(वि०) [अं० पोर्टगीज] पुर्त्तगाली।

पुर्सा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुरुषमात्र] पुरुष की लंबाई भर, ४ हाथ की नाप।

पुल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सेतु, नदी आदि के आर-पार जाने का मार्ग। **मुहा०—किसी बात का—बाँधना**-झड़ी लगाना, बहुत अधिकता कर देना।**—टूटना**-अधिकता होना, जमघट लगना।

पुलक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रेम, हर्षादि के उद्वेग से उत्पन्न रोमांच, देह-आवेश, याकूत, एक रत्न। "पुलक कंप तनु नयन सनीरा"—[रामा०]।

पुलकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पुलक+ना हिं० प्रत्य०] पुलकित या गद्गद होना, हर्षावेश से प्रफुल्लित होना।

पुलकाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पुलकना] पुलकना का भाव, गद्गद् होना।

पुलकाकुल—प्रमुद, पुलकाकुल-कोकिल-बाल—पंत।

पुलकालय—(संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर।

पुलकालि, पुलकावलि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पुलकावली, प्रेमादि से रोमांचित होना।

पुलकित—(वि०, सं०) रोमांचित, गद्गद। "पुलकित तनु मुख आव न बचना"—[रामा०]।

पुलट†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पुलट] पलट जाना। [**उलट-पुलट** (यौ०)]।

पुलटिस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० पोल्टिस] पकाने के लिये फोड़े पर चढ़ाया दवा का गाढ़ा लेप।

पुलपुला—(वि०, दे०, अनु०) जो दबाने से धंसे।

पुलपुलाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० अनु०] नर्म चीज को दबाना। [**पुलपुला** (वि०)]।

पुलपुलाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पुलपुलाना] दबावट, दबनि।

पुलस्त्य—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रजापतियों और सप्तर्षियों में से एक ऋषि, रावण के दादा, ब्रह्मा के मानस-पुत्र, शिव। "उत्तम कुल पुलस्त्य के नाती"—[रामा०]।

पुलह—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा के मानस पुत्र और प्रजापति, सप्तर्षि में से एक ऋषि, शिव।

पुलहना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पल्लव] पलुहना, पल्लवित या हरा-भरा होना।

पुलाक—(संज्ञा, पु०, सं०) अकरा नामक अन्न, भात, मॉड़, पुलाव, पीच।

पुलाव—(संज्ञा, पु०,) [सं०, पुलाक, मि० फ़ा० पुलाव] मांस और चावल की खिचड़ी, मांसोदन।

पुलिंद—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन असभ्य जाति, इस जाति का देश (भारत)।

पुलिंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं०, पूला] कागजों, कपड़ों का मोटा बंडल, गड्डी।

पुलिन—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी से निकली भूमि, किनारा, तट, चर। "कलत्रभारैः पुलिन नितम्बिभिः"—किरात०।

पुलिस—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) प्रजा-रक्षक सिपाही या अफसर।

पुलिहारा—†—(संज्ञा, हिं०, दे०) एक पकवान।

पुलोम—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य, इन्द्राणी का पिता।**—जा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शची, इन्द्राणी। "पुलोमजा वल्लभ-सुनुपत्नी"—लोलंब०।

पुलोमही—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अफीम।

पुलोमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भृगुमुनि की स्त्री।

पुवाँ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूप] मीठी पूड़ी।

पुवार, पुवाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पलाल] पयाल, पलाल, पयार।

पुश्त—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पीठ, पृष्ठ, पीछा, पीढ़ी, शाखा, वंश-क्रम में पिता, पितामह, पुत्र पौत्रादि का क्रम से स्थान।—**नामा**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पीढ़ी पत्रा, वंशावली, कुरसी नामा।—**दरपुश्त**–(यौ०) कई पीढ़ियों तक। पीढ़ी दर पीढ़ी। —**हा-पुश्त**–वंश-परम्परा में।

पुश्तक—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०, पुश्त) दो लत्ती, घोड़े आदि का पिछले पैरों से मारना।

पुश्ता—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० पुश्तः] पुट्ठा, पुस्तक की जिल्द का पिछला चमड़ा, दृढ़ता या पानी की रोक के लिये दीवार से लगा मिट्टी या ईंट का ढालू टीला, बाँध, मेड़।

पुश्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सहारा, थाम, टेक, पृष्ठ-रक्षा, बड़ा तकिया, पक्ष, सहायता।

पुश्तैनी—(वि०) [फ़ा०, पुश्त] कई पीढ़ियों से चला आने वाला, पुराना, पुश्त-हा पुश्त का, आगे, पीढ़ियों तक जाने वाला।

पुष्कर—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी, तालाब कमल, हाथी की सूँड़ का अग्र भाग, बाण, आकाश, युद्ध, साँप, भाग, पोहकरमूल (औष०), चम्मच की कटोरी, सूर्य्य, सारस चिड़िया, एक दिग्गज, शंकर, विष्णु, बुद्ध, ७ द्वीपों में से एक (पु०), अजमेर के पास एक तीर्थ-स्थान। [पुष्करक्षेत्र (यौ०)] ।—**मूल**–(संज्ञा, पु०, सं०) पोहकरमूल (औष०)।

पुष्करणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा तालाब।

पुष्कराक्ष—(वि०, सं०) कमल की तरह आँखों वाला।

पुष्कल—(संज्ञा, पु०, सं०) भरत जी का पुत्र, अन्न मापने का मान (प्राचीन), चार ग्रास की भिक्षा, शिव। (वि०) अधिक, परिपूर्ण, श्रेष्ठ, पुनीत, उपस्थित, प्रचुर, बहुत।

पुष्कलक—(संज्ञा, पु०, सं०) गंधमृग, सिटकनी, कील, एक भिक्षु (बौद्ध)

पुष्कलावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पुष्कल की राजधानी।

पुष्ट—(वि०, सं०) मोटा ताजा, तैयार, पाला-पोषा हुआ, बलवान, मोटा-ताजा करने वाला, बल बढ़ाने वाला, पक्का, दृढ़।

पुष्टई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुष्ट+ई हि० प्रत्य०) बल, वीर्य या पौरुष बढ़ाने वाली वस्तु या औषधि, पौष्टिक वस्तु।

पुष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दृढ़ता, मजबूती।

पुष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बढ़ती, बलिष्ठता, पोषण, संतति-वृद्धि, बात-समर्थन।—**पुष्टि-कारक**–(वि०, सं०) बलवीर्य या पौरुष की उत्पादक वस्तु या औषधि।—**मार्ग**–(संज्ञा, पु०, सं०) वैष्णव-भक्ति मार्ग, ईश्वर की कृपा (बल्लभाचार्य-मत)।—**वर्धन**–(वि०) सुख, वैभव की वृद्धि करनेवाला, जिससे उन्नति अभ्युदय की सिद्धि हो।

पुष्टिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीपी, सुतही।

पुष्प—(संज्ञा, पु०, सं०) पौधों का फूल, मांस (वाम०) ऋतु वाली स्त्री० का रज, नेत्र रोग या फूलो। [पुहुप (दे०)) ।—**चाप**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव।—**दंत**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वायु-कोण का दिग्गज, शिव सेवक एक गंधर्व।—**धन्वा**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० पुष्प धन्वन] कामदेव, मदन, मनोज मनोभव।—**ध्वज**–(सं०, पु०, सं०) कामदेव।—**पुर**–(संज्ञा, पु०, सं०) पटना (प्राची०)।—**मित्र**–(संज्ञा, पु०, सं०) पुष्यमित्र राजा।—**रज**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं०, पुष्परजस] फूल की धूल, पराग।—**राग**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुखराज मणि। "हरित मणिन के मंजु फल पुष्पराग के फूल"—[रामा०] ।—**रेणु**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पराग।—**वती**–(वि०, स्त्री०, सं०) फूली हुई, फूल युक्त, रजोवती, रजस्वला।—**वाटिका**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) फुलवाड़ी। "पुष्प-वाटिका बाग वन"—[रामा०] ।—**बाण**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव।—**वृष्टि**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) फूलों की वर्षा। "अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः"—रघु०।—**शर**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव।—**सार**–(संज्ञा, पु०, सं०) फूलों का मूलतत्व, इतर।—**पुष्पांजलि**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) फूलभरी अँजुली, देवार्पित सुमनाञ्जलि।

पुष्पा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चंपापुरी।

पुष्पागम—(संज्ञा, पु०) वसंत ऋतु।

पुष्पाग्र—(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भकेश, बीजकोष।

पुष्पाभिषेक—(संज्ञा, पु०, सं०) पुष्पस्नान।

पुष्पायुध—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव।

पुष्पासव—(संज्ञा, पु०, सं०) मधु, मधुकी शराब।

पुष्पिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अध्याय के अन्तिम समाप्ति-सूचक वाक्य जो इतिश्री से आरम्भ होते हैं।

पुष्पित—(वि० सं०) विकसित, फूला हुआ।

पुष्पिताग्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अर्धसम छंद (पिं०)।

पुष्पी—(वि०, सं०) जिसमें फूल हों, पुष्पों से लदा हुआ।

पुष्पेषु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव।

पुष्पोद्यान—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) फुलवाड़ी।

पुष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पोषण, पुष्टि, सार वस्तु, वाण की आकृति वाला ८ वाँ नक्षत्र (ज्यो०) तिष्य, पूस (पौष) मास।—**मित्र**–(संज्ञा, पु०) सं० मौर्यों के बाद शुङ्गराज वंश का स्थापक एक राजा (मगध)।

पुसाना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पोसना] पूरा पड़ना, शोभा देना, उचित जान पड़ना, अच्छा लगना, बन पड़ना।

पुस्तक—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किताब, पोथी।—**डाक**–(पु०) डाकखाने द्वारा कम महसूल पर छपे कागज पत्र-भेजना। [बुकपोस्ट] स्त्री०, अल्पा०—**पुस्तिका**।

पुस्तकाकार—(वि०, यौ०, सं०) किताब नुमा (फ़ा०) पोथी के रूप या बनावट का।

पुस्तकालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुतुबखाना (फ़ा०), लाइब्रेरी (अं०) किताबों के रखने का घर, पुस्तकों का संग्रहालय। [लाइब्रेरी]

पुहकर, पुहुकर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुष्कर] तालाब, जलाशय। "पुहुकर पुण्डरीक पूरन मनु खंजन कलि पगे"—सूर०।

पुहप, पुहुप*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुष्प] फूल। "सुनिये विपट प्रभु पुहुप तिहारे हम"—अमीश०।—**राग**–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुष्पराग] पुष्पराग, पुखराज।

पुहमी, पुहुमी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भूमि] भूमि, पृथ्वी।

पुहुपरेनु*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पुष्प-रेणु] पराग।

पुहवी*—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए पृथ्वी।

पूँगफल, पूँगीफल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुगीफल] सुपारी, पूगीफल, पूगफल।

पूँगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक बाँसुरी; पोंगी।

पूँछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुच्छ] पुच्छ, दुम (उ०), लांगूल, अंतिम भाग, पिछलग्गू पुछल्ला, उपाधि (व्यंग्य)।—**ताँछ—पाछ**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पूँछताछ, जाँच पड़ताल, तहकीकात, दर्याफ्त।—**पूँछ**–(संज्ञा, स्त्री०) देखिए—पूछ।

पूँछना, पूछना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पृच्छण] प्रश्न करना, दर्याफ्त करना, जिज्ञासा करना, पोंछना, साफ करना।

पूँजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुञ्ज] धन, संपत्ति, [जमा-जथा (दे०)] व्यापार में लगा धन, किसी विषय मे योग्यता, समूह।—**दार**–(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पूँजी+दार फा०] धनवान, रुपये वाला, महाजन।—**पति**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० पूजी+पति सं०] धनवान, रुपये वाला, महाजन, पूँजी रखने या लगाने वाला, पूँजीदार।—**वाद**–(संज्ञा, पु०) वह सिद्धान्त जिसमें धनिक वर्ग समस्त उत्पादन-साधन पर अपना प्रभुत्व स्थापित करके श्रमिकों का शोषण करता है।—**वादी**–(वि०) पूँजीवाद के सिद्धान्त को व्यवहार या प्रयोग में लाने वाला।

पूठ†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पृष्ठ] पीठ, पृष्ठ।

पूआ, पुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूप] मीठी पूड़ी, मालपुआ, [अपूप (सं०)]।

पूखन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पोषण] पोषण, पालन, [पूषण (सं०)] सूर्य।

पूग—(संज्ञा, पु०, सं०) सुपारी (वृक्ष या फल) समूह, राशि, ढेर, कम्पनी (अं०) संघ, छंद।

पूगना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पूजना] पूजना, पूर्ण या पूरा होना, मिलना, पास जाना।

पूगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पूगफल] सुपारी।

पूछ—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० पूछना] खोज, तलाश, जिज्ञासा, आदर, चाह, आवश्यक।—**ताछ**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पूछना] जिज्ञासा, तलाश, खोज, तहकीकात, जाँच।

पूछना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पृच्छण] टोकना, प्रश्न या जिज्ञासा करना, खोज-खबर लेना,

दरियाफ्त करना, आदर या सत्कार करना, ध्यान देना, गुण या मूल्य जानना मुहा०—बात न—आदर सत्कार न करना तुच्छ जान ध्यान न देना। —पूछपाछ–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पूछताछ।

पुछरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पूछ] पूँछ।

पूछाताछी, पूछापाछी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पूछ-ताछ, पूछपाछ।

पूजक—(संज्ञा, पु०, सं०) पूजा करने वाला, पुजारी।

पूजन—(संज्ञा, पु०, सं०) अर्चन, बन्दन, सत्कार, आराधना, सम्मान, देव-सेवा। [**पूजक, पूजनीय, पूज्य, पूजितव्य** (वि०)]।

पूजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पूजन] देव-देवी के प्रसन्नतार्थ अनुष्ठान करना, आराधना या अर्चन, करना, सम्मान या आदर करना, रिश्वत या घूस देना (व्यंग्य)। (क्रि० अ०, दे०) [सं० पूर्यते] पूर्ण या पूरा होना, भरना, चुकता होना, बीतना, पटना, समाप्त होना। "पूजहिं मन-कामना तिहारी"—[रामा०]।

पूजनीय—(वि०, सं०) अर्चना या पूजने योग्य, वदनीय, आदरणीय, सत्कार-योग्य, पूज्य।

पूजमान—(वि०, दे०) पूज्य।

पूजयिता—(वि०, पु०) पूज्य, पूजा करने योग्य।

पूजा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अर्चन, आराधन, देवी-देवता के प्रति भक्तिमय समर्पण का भाव प्रकट करने का कार्य, अर्चा, आदर-सत्कार, सम्मान, धर्मार्थ देवादि पर फल-फूलादि चढ़ाना या रखना, घूस, रिश्वत, अंकोर, दंड, ताड़न, प्रसन्नतार्थ कुछ देना।

पूजित—(वि०, सं०) अर्चित, आधारित, पूजा किया हुआ। [**पूजिता** (स्त्री०)]।

पूजोपकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) पूजा के उपकरण, पूजा के सामान।

पूज्य—(वि०, यौ०, सं०) पूजनीय। [**पूज्या** (स्त्री०)]।—**पाद**–(वि०, यौ०, सं०) अत्यन्त मान्य या पूज्य जिसके पैर पूजने योग्य हों, पिता, गुरु आदि।

पूज्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूज्या होने का भाव।

पूज्यमान—(वि०) जिसकी पूजा होती हो, जो पूजा जा रहा हो।

पूठ*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पृष्ठ (सं०) पीठ।

पूठ, पूठा—(संज्ञा, पु०, दे०) पृष्ठ (सं०) पुट्ठा, गाता, जिल्द।

पूड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूप] पूआ, पुआ, मालपुआ।

पूड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पूलिका] पूरी।

पूणी, पूनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रुई की पहल, पौनी (प्रा०)।

पूत—(वि०, सं०) शुद्ध, पावन, शुचि। (संज्ञा, पु०, सं०) शंख, सत्य, श्वेत कुश, तिल का पेड़, पलास। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुत्र] पुत्र, लड़का, बेटा। "दृष्टि पूतं निसेत्पादम्"—मनु०।

पूतड़ा—(संज्ञा, पु०) छोटा बिस्तर।

पूतन—(संज्ञा, पु०, सं०) भूतयोनि की जाति या भेद विशेष।

पूतना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक राक्षसी जिसे कंस ने बाल कृष्ण को मारने के लिए भेजा था। कृष्ण को इसने विष-लिप्त स्तन पिलाये और कृष्ण ने दूध पीते पीते इसके प्राण खींच लिये, बालरोग या ग्रह। "पूतना बाल घातिनी"—भ० द०। "यः पूतना मारण-लब्ध-कीर्तिः"।

पूतनारि, पूतनारी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रीकृष्ण जी, पूतना के शत्रु या बैरी। (संज्ञा, स्त्री०, हि०) शुद्ध स्त्री।

पूतनासूदन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पूतना के मारने वाले कृष्ण।

पूतरा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुत्रक] पुत्र, पुतला। [**पूतरी** (स्त्री०)]। "कागज कैसो पूतरा, सहजहि में घुलि जाय"—रही०।

पूतरी, पूतली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुत्रिका] पुतली, पुत्तरी, पूतरी। "सूर आजलौं सुनी न देखी पात पूतरी पीहत"—सूर०। "अंत लूटि जैहो ज्यों पूतरी बरात को।"

पूतात्मा—(वि०, सं०) शुद्ध अन्तर वाला या पवित्र हृदयवाला।

पूति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गंधि, पवित्रता।—**कर्णक**–(संज्ञा, पु०, सं०) कान का रोग, कान पकना (वै०)।—**काष्ट**–(संज्ञा, पु०) देवदारु। —**गंधि**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दुर्गंधि।—**योनि**–(संज्ञा, पु०) योनि सम्बन्धी एक रोग विशेष।—**वात**–(संज्ञा, पु०) गंदी हवा, दूषित वायु।

पूती—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० पात—गट्टा] गाँठ रूपी जड़, लहसुन, प्याज।

पूतीकृत—(वि०, यौ०, सं०) पवित्रीकृत, शोधित, रक्षित ।

पून—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुण्य] पुण्य, दान । "जहिकर चून तेहीकर पून"—घाघ० । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूर्ण] पूर्ण ।

पूनसलाई—(संज्ञा, स्त्री०) पूनी वाली सलाई ।

पूनव, पूनो—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पूर्णिमा] पूर्णिमा, पूर्णमासी, पूनिउँ (ग्रा०) । "नित प्रति पूनो ही रहति"—वि० ।

पूनी, पोनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिंजिका] धुनी हुई रुई की मोटी बत्ती जिससे चरखे पर सूत काता जाता है ।

पूनी, पूनौ†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पूर्णिमा] पूर्णिमा, पूर्णमासी, पूनव ।

पूप—(संज्ञा, पु०, सं०) पुआ ।—**दंड-पूप**-(यौ०) एक न्याय (तर्क०) ।

पूय—(संज्ञा, पु०, सं०) पीब, मवाद ।

पूर—(वि०, दे०) [सं० पूर्ण] पूर्ण, किसी पकवान के भीतर भरने का मसाला या अन्य पदार्थ, जैसे गोझिया में । (वि०, सं०) जलसमूह, जल का प्रवाह, प्रवर्धन, जलधारा, "महोदधेः पूर इवेन्दु दर्शनात्"—रघु० ।

पूरक—(वि०, सं०) पूरा करने वाला । (संज्ञा, पु०, सं०) प्राणायाम की प्रथम विधि जिसमें श्वास को भीतर की ओर बलपूर्वक खींचते हैं [**रेचक** (विलो०)] गुणक अंक (गणि०) स्वास छोड़ना, बिजारा नींबू, मृत्यु तिथि से दस दिन तक मृत व्यक्ति के लिये दिये जाने वाले १० पिंड (हिन्दू) ।

पूरण—(संज्ञा, पु०, सं०) [**क्षरण** (विलो०)] पूरा या समाप्त करना, भरना, अंकों का गुणा करना, पूरक या दशाह पिंड वृष्टि, सागर । (वि०, दे०) पूर्ण (सं०), (वि०, सं०) पूरा करने वाला, पूरक । [**पूरणीय** (वि०)] ।

पूरन*—(वि०, दे०) [सं० पूर्ण] पूर्ण, पूरा । —**परब***†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पूर्ण +पर्वन्] पूर्णमासी, अमावस्या, आदि, पूरा पर्व, त्यौहार ।—**पूरी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पूर्ण +पूलिका पूरी हि०] मीठी कचौरी ।—**मासी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पूर्णमासी] पूर्णमासी, पूनो ।

पूरना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० पूरण] पूर्ण या पूरा करना, कमी या त्रुटि को पूर्ण करना, ढांकना, (इच्छा) सफल या सिद्ध करना, शुभावसरों पर आटे या अबीर से चौक बनाना, देवपूजन के लिये वर्गादि बनाना, फैलाना या बटना, जैसे—डोरा पूरना, बजाना, फूँकना, जैसे—शंख पूरना । (क्रि० अ०, दे०) [सं० पूर्ण] भर जाना पूरा हो जाना, गढे आदि को भरना ।

पूरब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूर्व] प्राची, पूर्व, सूर्योदय की पूर्व दिशा । [(विलो०)—**पच्छिम**]*† (वि०)—पहले का, अगला, पुराना, पहले, आगे ।"तिनकहँ मैं पूरब वर दीन्हा" —[रामा०] ।

पूरबल*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूर्व+ल हि० प्रत्य०] प्राचीन काल, पुराना समय, पूर्व या पहला जन्म । "कौन पुरबिले पाप तें"—गिर० ।

पूरबला—(वि०, पु०, दे०) [सं० पूर्व+ल प्रत्य०] पुराने समय का, पूर्व जन्म का, प्राचीन, पुराना । [**पूरबली** (स्त्री०)] ।

पूरबी—(वि० दे०) [सं० पूर्वीय] पूर्व .दिशा या पूर्व का, पूर्व दिशा या पूर्व संबंधी । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूर्वीय] पूर्व देश का एक चावल या तमाखू, बिहार का एक राग, दादरा (संगी०) ।

पूरयिता—(संज्ञा, पु०, सं०) पूरा करने वाला, विष्णु ।

पूरा—(वि०, पु०, दे०) [सं० पूर्ण] भरा, परिपूर्ण, समग्र, पूर्ण, भरपूर, काफी, यथेष्ट, समूचा. संपन्न । [**पूरी** (स्त्री०)] । **मुहा०—किसी बात का**—जिसके पास कोई वस्तु यथेष्ट या बहुत हो, दृढ़, मजबूत । **मुहा०—किसी का—पड़ना**—काम पूर्ण हो जाना और सामान न घटना, पूर्णकृत या पूर्णतया संपादित, संपूर्ण । **मुहा०—कोई काम—उतरना**-यथेष्ट या यथायोग्य रूप में होना, भली भाँति होना । **बात का—उतरना**—सत्य या ठीक होना । **दिन-(रे) करना**—किसी भाँति कालक्षेप करना, वक्त बिताना, समय बिताना, काल काटना, पूरे दिनों से होना (स्त्री का) आसन्न प्रसवा होना, गर्भ के समय का पूरा होना । **दिन—(रे) होना**—अंतकाल का समय आना । "पूरा सेइये, सब विधि पूरा होय"—कबीर० । **गाँठ का—**—धनी । **लो०**—आँख का अन्धा गाँठ का पूरा ।

पूरित—(वि०, सं०) भरा हुआ, पूरा, पूर्ण, गुणा किया हुआ, संपन्न, तृप्त ।

पूरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पूलिका] खौलते घी में पकी रोटी, पूड़ी, ढोल आदि के मुँह का

गोल चमड़ा, घास का छोटा पूरा। (वि०, स्त्री०, दे०) पूर्ण। [**पूरा** (पु०)]

पूरुष—(संज्ञा, पु०, सं०) आत्मा, पुरुष।

पूर्ण—(वि०, सं०) भरा हुआ, पूरा, इच्छा रहित, पूर्णकाम, तृप्त, यथेच्छ, भरपूर, पर्याप्त, अखंडित, समस्त सिद्ध, समाप्त, सफल, [**पूरण**, पूरन (दे०)]। (यौ०)—**काम**–जिसकी इच्छा पूर्ण हो गई हो, पूर्ण-मनोरथ।—**काम**–(वि०, यौ०, सं०) जिसके सब मनोरथ पूरे हो गये हों, कोई इच्छा शेष न हो, निष्काम, कामना-रहित।—**कुंभ**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जल भरा घड़ा, मंगल-घट, पूरा कलस।—**चन्द्र**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पूर्णिमा का पूरा चन्द्रमा। "पूर्णचन्द्र निभानना"।—**पात्र**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी वस्तु से पूर्णतया भरा हुआ बर्तन, हवन-सामग्री से भरा बर्तन।—**प्रज्ञ**–(वि०, यौ०, सं०) पूरा ज्ञानी। संज्ञा, पु० "पूर्णप्रज्ञ, दर्शन के निर्माता मध्वाचार्य। —**प्रज्ञ-दर्शन**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वेदान्त दर्शन के सूत्रों के आधार पर बना हुआ एक दर्शन शास्त्र विशेष।—**भूत**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह भूतकाल जिसे बीते बहुत समय हो चुका हो (व्या०)।—**मासी**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पूर्णिमा, चांद्र मास का अंतिम दिन जब चन्द्रमा सब कलाओं से युक्त होता है। पूरनमासी पूनो, [**पुनवासी** (दे०)]।—**यौवन**–(वि०) पूरा जवान।—**विराम**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वाक्य के पूर्ण होने का चिन्ह (लिपि)।

पूर्णतः पूर्णतया—(क्रि० वि०, सं०) पूरी तरह से, पूरी तौर पर, पूर्ण रूप से।

पूर्णता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूर्ण होने का भाव, पूरा होना। पूर्णत्व।

पूर्णातिथि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं०] पंचमी, दशमी, पूर्णिमा, अमावस्या तिथियाँ (ज्यो०)।

पूर्णायु—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० पूर्णायुस्] पूरी आयु, सौ वर्ष की आयु। (वि०) सौ वर्ष पर्यंत जीने वाला।

पूर्णावतार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ईश्वर या देवता की षोड्स कला-युक्त पूरा अवतार।

पूर्णाहुति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) होम में अंतिम आहुति, किसी काम का अंतिम कृत्य।

पूर्णिमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूर्णमासी।

पूर्णेंदु—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रमा की वह स्थिति जब वह सोलहों कलाओं के पूर्ण रहता है। पूर्णिमा का चंद्रमा।

पूर्णोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उपमा अलकार का एक भेद जिसमें उपमान उपमेय वाचक, और धर्म चारों अंग प्रकट हों।

पूर्त—(संज्ञा, पु०, सं०) कुआँ, बावली, देव मन्दिर, बाग, सड़क, धर्मशाला आदि का बनवाना, पालन। (वि०) पूरित, आच्छादित।—**विभाग**–(संज्ञा, पु०, सं०) सड़क आदि के बनवाने का विभाग।

पूर्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूरापन, पूर्णता, भरण, गुणन, पूरण, कार्य का पूर्ण करना, समाप्ति, कूपादि का उत्सर्ग, कमी के पूरा करने की क्रिया।

पूर्य—(वि०, सं०) पूर्ण होने के योग्य, पूरणीय।

पूर्वंगम—(वि०, सं०) पूर्वगामी।

पूर्व—(संज्ञा, पु०, दे०) [पूरब (दे०)] प्राची दिशा, सूर्योदय की दिशा, [**पश्चिम** (विलो०)] (वि०, सं०) अगला या प्रथम का, आगे का, पिछला, पुराना। (क्रि० वि०) पहले, प्रथम। [**पूर्ववर्त्ती** (वि०, यौ०)]। [**पूर्वीय** (वि०, सं०)]।—**काल**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्राचीन काल। [**पूर्वकालीन** (वि०)]।—**कालिक**–(वि०, यौ०, सं०) पूर्वकाल-सम्बन्धी, पूर्व काल का उत्पन्न, पहले समय का।—**कालिक-क्रिया**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपूर्ण क्रिया का वह रूप जिससे मुख्य क्रिया से पूर्ववर्त्ती काल ज्ञात हो, इसका चिह्न के, या कर के है (अ० भा० में धातु को इकारान्त करने से) कभी-कभी धातु ही इसका कार्य करता है (व्या०)।—**गत**–(वि०) पहले गया हुआ।—**ज**–(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्व पुरुष, जो प्रथम जन्मा हो, जैसे—बड़ा भाई, पिता, दादा, [पुरखा (दे०)]।—**जन्म**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० पूर्व जन्मन] पहले या पीछे का जन्म, जन्मान्तर "पूर्व जन्म-कृतं कर्म यद्दैवमिति कथ्यते"—[हितो०]।—**जा**–(संज्ञा, स्त्री०) बड़ी बहन —**ज्ञान**–(संज्ञा, पु०) पूर्व जन्म का ज्ञान।—**दिन**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पहले का दिन बीता दिन।—**देश**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्राची दिशा का देश।—**पक्ष**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शङ्का, प्रश्न, विवाद का प्रथम पक्ष (न्या०)

मुद्दई का दावा, कृष्ण पक्ष (अँधेरा पाख)।—**पक्षी**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० पूर्व+पक्षिन्] विवाद में प्रथम अपना पक्ष रखने वाला, कर्त्ता, मुद्दई, दावादार [**परपक्ष** (विलो०)] [**पूर्वपक्षीय** (वि०)] ।—**पथ**–(संज्ञा, पु०) पुराना रास्ता, पहले का पथ ।—**पद**–(संज्ञा, पु०) समास में पहली पंक्ति, पहला स्थान ।—**पीठिका**–(संज्ञा, स्त्री०) भूमिका ।—**पुरुष**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पिता। पितामह, प्रपितामह आदि, प्रथम के लोग, पूर्वज, पुरखा ।—**फल्गुनी**, **पूर्वाफाल्गुनी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २७ नक्षत्रों में से ११ वाँ नक्षत्र ।—**भाद्रपद**–(संज्ञा, पु०, सं०) २७ नक्षत्रों में से २५ वाँ नक्षत्र (ज्यो०)।—**भूत**–(वि०) जो पहले हुआ हो ।—**मीमांसा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महर्षि जैमिनि कृत एक दर्शन (शास्त्र) जिसमे कर्मकाण्ड का वर्णन है [**उत्तर-मीमांसा** (विलो०)] ।—**याम**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रथम या पहला पहर ।—**लिखित**–(वि०, यौ०, सं०) पूर्वोल्लिखित, प्रथम का लिखा हुआ, पूर्व-कथित, पूर्वोक्त ।—**रंग**–(संज्ञा, पु०, सं०) नाटकारंभ से पूर्व विघ्न-शांति के लिए की गई स्तुति या बन्दना, दर्शकों को सजग करने के लिए गान । "पूर्व रंग प्रसगाय नाटकीयस्य वस्तुनः ।"—**राग**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) संयोग से पूर्व नायक-नायिका की विशेष प्रेमा-वस्था, प्रथम प्रेम, प्रथमानुराग, पहला अनुराग, [**पूर्वानुराग** (काव्य०)] ।—**रूप**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आगम-सूचक चिह्न वा लक्षण, आसार किसी वस्तु का पूर्व आकार या रूप, उपस्थित होने से पूर्व प्रगट होने वाला, वस्तु-लक्षण, एक अर्था-लंकार जो किसी वस्तु के रूपान्तर के बाद उसका प्राथमिक रूप सूचित करे ।—**वर्त्ती**–(वि०) [सं० पूर्व+वर्तिन] प्रथम का, जो प्रथम रह चुका हो, पूर्व सम्बन्धी ।—**वायु**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुरवा हवा, पुरवैया, पुरवाई, पूर्वीय वायु (सं०) ।—**वृत्त**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इति-हास, पहिले का हाल ।—**संध्या**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) प्रभात ।—**स्थिति**–(संज्ञा, स्त्री० । पूर्वदशा ।

पूर्वतः—(अ०, सं०) प्रथमतः, सामने । पहले ।

पूर्वक—(क्रि० वि०, सं०) सहित, युक्त ।

पूर्ववत्—(क्रि० वि०, सं०) प्रथम के तुल्य, पहले की तरह, यथापूर्व । (संज्ञा, पु०) वह अनुमान जो कारण के देखने से कार्य के विषय में उससे प्रथम ही किया जाय ।

पूर्वा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूर्व दिशा, एक नक्षत्र । (वि०) पूर्वज, पूर्व पुरुष ।

पूर्वाचल—(संज्ञा, पु०, सं०) उदयाचल ।

पूर्वाधिकारी—(संज्ञा, पु०, सं०) पहले का अधि-कारी ।

पूर्वानिल—(संज्ञा, पु०, सं०) पुरवैया, पूरबी हवा ।

पूर्वानुराग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी के गुण-श्रवण, चित्र-दर्शन या रूप देखने से उत्पन्न प्रेम, पूर्वराग, प्रेम की प्रथम जागृति, पूर्वानुरक्ति ।

पूर्वापर—(क्रि० वि०, यौ०, सं०) आगे-पीछे (वि०) आगे-पीछे का, पिछला-अगला ।

पूर्वापर्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पूर्वापर का भाव, आगा-पीछा ।

पूर्वाफाल्गुनी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) २७ नक्षत्रों में से ११ वाँ नक्षत्र ।

पूर्वाभाद्रपद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) २७ नक्षत्रों में से २५ वां नक्षत्र ।

पूर्वाभिमुख—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पूर्व दिशा की ओर मुख । [**पूर्वाभिमुखी** (वि०)] ।

पूर्वाभ्यास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रथम या पहले का अभ्यास, पहले की बान ।

पूर्वार्द्ध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आरम्भ या आदि (प्रथम या पहले) का आधा भाग । [**परार्ध**, **उत्तरार्ध** (विलो०)] ।

पूर्वावधि—(वि०, यौ०, सं०) पूर्वकालावधि, चिरकाल पर्यन्त ।

पूर्वावस्था—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) प्रथम या पहले की अवस्था या दशा ।

पूर्वाषाढ़ा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २७ नक्षत्रों में २० वाँ नक्षत्र ।

पूर्वाह्न—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सबेरे से दो पहर तक का समय [**पराह्न** (विलो०)] ।

पूर्वी—(वि०, दे०) [सं० पूर्वीय] पूरब का, पूर्व दिशा संबन्धी । (संज्ञा, पु०, दे०) पूर्व देश का चावल, या तम्बाकू, एक दादरा (बिहारी भाषा का गीत) ।—**द्वीपसमूह**–(संज्ञा, पु०) भारत के पूर्व में स्थित पूर्वी द्वीपों का समूह जैसे जावा, सुमात्रा आदि ।

पूर्वोक्त—(वि०, यौ०, सं०) प्रथम कथित, पहले का कहा हुआ, मजकूर (फ़ा०)।

पूर्वोत्तर—(वि०, सं०) उत्तरी-पूरबी।

पूर्वोत्तरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूर्व और उत्तर के मध्य की दिशा।

पूला, पूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पूलक] घास आदि का बँधा हुआ मुट्ठा, [**पूली** (स्त्री० अल्पा०)]।

पूष—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पौष] पूस या पौष मास।

पूषण—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, पशुओं का पालन-पोषण करने वाला एक देवता (वेद) १२ आदित्यों में से एक।

पूषा—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य्य, पोषक, पूषण। "स्वासीनः पूषा विश्ववेदाः"—[यजुर्वेद]।

पूषात्मज—(संज्ञा, पु०, सं०) बादल, मेघ, इन्द्र।

पूस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पौष] अगहन के बाद का चांद्र मास, पौष।

पृक्का—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) असबरंग।

पृक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्न, अनाज।

पृच्छक—(वि०, सं०) प्रश्न-कर्त्ता, पूछने वाला, जिज्ञासु।

पृच्छा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जिज्ञासा, प्रश्न, पूर्वा पक्ष।

पृतना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) युद्ध, सेना, फौज का एक भाग जिसमे २४३ हाथी, इतने ही रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल सैनिक रहते हैं।

पृथक्—(वि०, सं०) विलग, जुदा, भिन्न, पृथक्। [**पृथक्ता** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**करण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भिन्न भिन्न या अलग अलग करने का कार्य्य।—**क्षेत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भिन्न वर्ण की स्त्री से उत्पन्न पुत्र।

पृथगात्मा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वैराग्य, विवेक, विराग।

पृथग्जन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) साधारण या अन्य लोग, मूर्ख, नीच, पापी, प्राकृत।

पृथग्विधि—(अल्प० यौ०, सं०) नाना प्रकार, अनेक प्रकार, विविध, बहुरूप।

पृथवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि, मेदिनी, बसुधा, अवनि, वसुन्धरा।

पृथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुंतिभोज की कन्या, कुंती। (सं०, पु०) [अपत्य सं०] पार्थ।

पृथिवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि, धरती।

पृथिवीश—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा।

पृथु—(वि०, सं०) विस्तृत, महान्, चौड़ा, विशाल, असंख्य, चतुर। (संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, अग्नि, शिव, राजा वेणु का पुत्र, एक विश्वेदेव। (वि०) अधिक यशी।

पृथुक—(संज्ञा, पु०, सं०) चिउड़ा।

पृथुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चौड़ाई, विस्तार।

पृथुमा—(संज्ञा, पु०) [सं० पृथु+रोमन्] मछली। बड़े रोवों वाला। (वि०, सं०) मोटा, बड़ा, अति विस्तृत।

पृथुल—स्थूल, मोटा, विशाल। पृथुल भीम शरीर भयावने।—हरि०

पृथुशिवा—(संज्ञा, पु०, सं०) लौना वृक्ष।

पृथूदक—(संज्ञा पु०, सं०) एक तीर्थ।

पृथूदर—(संज्ञा, पु०, सं०) मेढ़, भेड़ा। (वि०, यौ०, सं०) बड़े पेट वाला।

पृथ्वी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इला, अवनि, धरा, सौर जगत में हमारा ग्रह धरती, भूमि, गंध गुण प्रधान, (रूप, रस, गंध, स्पर्श) गुणयुक्त पाँच तत्वों में से अंतिम तत्व, भूमि का, मिट्टी पत्थर वाला ऊपरी ठोस भाग, मिट्टी, १७ वर्णों का एक वृत्त (पिं०)। **मुहा०**—देखिए "जमीन"।—**तल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) धरातल, भूमि का ऊपरी तल, जमीन की सतह, संसार, भूमंडल, भूतल।—**नाथ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा।—**पति**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा।—**पाल, पालक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा।—**राज**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पृथ्वी का राजा। भारत का अंतिम वीर राजपूत राजा (१२ वीं शताब्दी)।

पृथ्वीका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बड़ी इलायची, स्याह जीरा, कलौंजी।

पृश्नि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुपत राजा की रानी, चितकबरी गाय, किरण, पिथवन या पिठवन (औष०)।

पृषत्—(संज्ञा, पु०, सं०) विन्दु, कण, श्वेत विन्दु-युक्त मृग, एक राजा (पुरा०)।

पृषत्क—(संज्ञा, पु०, सं०) बाण, तीर, शर।

पृषदश्व—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पृषत अश्व, पवन, वायु, एक राजा (पुरा०)।

पृषोदर—(वि०, यौ०) [सं० पृषत+उदर] अल्पोदर, छोटे पेट वाला, (सं०, पु०) सर्प ।

पृष्ट—(वि०, सं०) पूछा हुआ, प्रश्न किया ।

पृष्ठ—(संज्ञा, पु०, सं०) [पीठ (दे०)] किसी पदार्थ का ऊपरी तल, पीछे का अंग या भाग, किताब के पन्ने के एक ओर का तल, सफा, पन्ना, पत्रा ।—**पोषक**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सहायता या मदद करने वाला, सहायक, पीठ ठोकने वाला । [**पृष्ठपोषण** (सं०)] । —**भाग**-(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) पीठ, पुश्त, पीछे का खंड या भाग, पिछला हिस्सा ।—**भूमि**-(संज्ञा, स्त्री०) ऊपर की मंजिल, छत, [बैक ग्राउंड]—**वंश**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पीठ या रीढ़ की हड्डी, रीढ़, मेरु-दंड ।—**व्रण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पीठ का फोड़ा या घाव ।—**ग्रंथि** -(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुब्ज, कुबड़ा ।

पृष्ठता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पीठ की ओर ।

पृष्ठास्थि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पीठ की हड्डी, मेरुदंड, रीढ़ ।

पेंग, पैंग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पटेंग झूलते समय झूले का इधर-उधर जाना, झूले का हिलना । एक पक्षी । [पांग (दे०)] । **मुहा०**—**मारना**—झूले को जोर से चलाना ।

पेंठ, पैंठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हाट, बाजार, मंडी । "लेना हो सो लेय ले उठी जाति है पैठ" —कबी० ।

पेंडुकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पंडुक] पंडुक चिड़िया, फ़ाख्ता [फ़ा० पंडुकी] सुनारों की फुँकनी । (संज्ञा, स्त्री०, प्रान्ती०) गुझिया । लो०—बाप न मारी पेंडुकी बेटा तीरंदाज ।

पेंडुलम—(संज्ञा, पु०, अं०) दीवाल-घड़ी का लटकने वाला पुरजा विशेष जो झूला करता है ।

पेंडुकी—(संज्ञा, स्त्री०) पंडुक, सोनारों की फुकनी, एक गुझिया ।

पेंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिंड] तला, तल, नीचे का भाग जिस पर कोई वस्तु ठहरे ।

पेंदी—(संज्ञा, स्त्री०) "पेंदा" का अल्पा० । तला, गुदा, जड़-विशेष । **मुहा०** (**बिना**)—**का लोटा**-बिना किसी सिद्धान्त का, किसी एक विचार पर दृढ़ न रहने वाला ।

पेई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पिटारी, पेटी ।

पेउसरी, पेउसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पीयूष] इंदर (प्रान्ती०) एक तरह का पकवान, पेवस (ग्रा०) ब्यायी गाय-भैंस के दूध की पनीर ।

पेखक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रेक्षक] दर्शक, देखने वाला, स्वाँग बनाने वाला, क्रीड़ा या खेल-तमाशा करने वाला ।

पेखना†*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रेक्षण] देखना, स्वाँग बनाना, क्रीड़ा या खेल-तमाशा करना । "जग पेखन तुम देखन-हारे"—[रामा०] । [**पेखाना** (क्रि० स०)] [**पेखवाना** (प्रे० रूप)] ।

पेखनिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पेखना] स्वाँग करने वाला, बहुरूपिया, दर्शक ।

पेखवैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पेखना+वैया प्रत्य०] देखने वाला, देखवैया प्रेक्षक ।

पेखित—(वि०, दे०) [सं० प्रेषित] भेजा हुआ ।

पेखिय—(क्रि० दे०) [हि० पेखना] देखिये ।

पेच, पेंच—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चक्कर, घुमाव, झंझट, बखेड़ा, उलझन, झगड़ा, चालाकी, धूर्तता, पगड़ी की लपेट, कल, मशीन, यन्त्र, मशीन का पुरजा, आधी दूर तक लकीर या चक्करदार काँटा या कील, स्क्रू (अं०) उड़ती हुई पतंगों की डोरियों की परस्पर की उलझन, कुश्ती में दूसरे को पछाड़ने की युक्ति, तदबीर, तरकीब, टोपी या पगड़ी के आगे लगाने का सिरपेंच (आभूषण), गोशपेंच (कर्णभूषण) ।—**कश**, **पेंचकश**-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) कीलों के जड़ने या उखाड़ने का यन्त्र, (बढ़ई, लोहार), शीशी या बोतल के काग निकालने का घुमावदार यन्त्र ।—**ताब**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मन के भीतर ही रहने वाला क्रोध ।—**दार**-(वि०, फ़ा०) पेंचीला, जिसमें पेंच या कल हो ।—**वान**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बड़ा हुक्का, या उसकी बड़ी लम्बी लचीली सटक ।—[**दाँव-पेंच** (यौ०)] । **मुहा०**—**घुमाना**-किसी के विचार बदलने की युक्ति करना ।—**की बात**-गूढ़ या मर्म की बात [**पेंचदार, पेचीदा, पेंचीला** (वि०)] ।

पेचक—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बटे तागे की लच्छी या गुच्छी, गोली । (संज्ञा, पु०, सं०) [**पेचिका** (स्त्री०)], जूँ, उल्लू पक्षी, बादल, पतंग ।

पेचा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पेचक] उल्लू पक्षी । [**पेची** (स्त्री०)] ।

पेचिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आमातिसार, मरोड़, आँव के दस्तों की बीमारी या पीड़ा ।

पेचीदा—(वि०, फ़ा०) पेंचदार, कठिन, चक्करदार, जटिल, टेढ़ा मेढ़ा । [**पेचीदगी (संज्ञा, स्त्री०)**] पेचीदा होने का भाव ।

पेचीला—(वि०, फ़ा०) पेंचदार, पेंचीदा ।

पेज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पेटा] रबड़ी, बसौंधी (प्रान्ती०) । (संज्ञा, पु०, अ०) पृष्ठ, सफा ।

पेट—(संज्ञा, पु०) [सं० पेट—थैला] उदर, जठर, देह में भोजन पचाने का थैला । "रहिमन कहते पेट सों, क्यों न हुआ तू पीठ"—रहीम० **मुहा०—आना**-पेट चलना, अतिसार होना । **—काटना**-बचत के लिए कम खाना ।**—का धंधा**-जीविका का उपाय या काम ।**—का (में) पानी न पचना**-रह न सकना, गुप्त बात प्रगट कर देना ।**—का हलका**-ओछे स्वभाव या क्षुद्र प्रकृति का ।**—का पानी न हिलना**-बेकार बैठा रहना, हिलना-डुलना नहीं ।**—का काला (मैला)**-धोखा देन वाला, कपटी, नीच हृदय वाला । **—की आग**-भूख ।**—की आग बुझाना**-भोजन करना, खाना ।**—की बात**-छिपा भेद, भेद को बात, मर्म, सच्चा रहस्य, इरादा ।**—को दुःख देना (दुःखाना)**—पेट भर न खाना ।**—खलाना**-बहुत दीनता दिखाना, भूखे होने का संकेत करना ।**—गड़बड़ाना**-पेट मे पीड़ा या दर्द होना । **—गिरना (गिराना)**-गर्भ-पात करना या गुप्त भेद प्रकट होना (करना) ।**—खोलना**-पेट को बात बताना ।**—चलना**-अतिसार होना, दस्त आना, रोजी चलना, निर्वाह होना ।**—जलना**-बहुत भूख लगना ।**—दिखाना**-दीनता प्रगट करना ।**—दुःखना**-पेट में दर्द होना ।†**—देना**-मन का भेद खालना, मार्मिक बात बताना ।**—पालना**-किसी प्रकार निर्वाह करना; दिन काटना ।**—का पीठ से लगना (—पीठ एक होना)**-दुर्बल या पतला होना, भूखा होना ।**—पोंछना**-सबसे अन्तिम संतान होना ।**—पोंसू**-पेटू, खाऊ ।**—फूलना**-गर्भवतो होना (स्त्री के लिए), बहुत उत्सुकता या हँसी के कारण पेट मे हवा भर जाना, अफरा या पेट में वायु का प्रकोप हो जाना ।—**(बढ़ना) बढ़ाना (—बढ़ा होना)**-अति लालच या लोभ (होना) करना ।**—बाँधना**-कम खाना ।**—भरना**-अघा जाना, तृप्त होना, रूखा-सूखा भोजन करना, आवश्यकता न होना, अधिक बे स्वाद खाना ।**—मारना या मार कर मरजाना**-आत्मघात करना ।**—मारना**-आत्मघात करना, किसी की जीविका नष्ट करना ।**—में दाढ़ी होना**-लड़कपन ही में बहुत चतुर होना ।**—में डालना (के हवाले करना)—को भेंट या अर्पण करना**-खा जाना । "अरु कोंची ही पेट को भेंट करो है" ।**—में पानी होना**-भोजन का ठीक पाचन न होना ।**—में पाँव होना**-बहुत कपटी या छली होना, चालक या चालबाज होना (**काइ वस्तु)—में होना**-गुप्त रूप में या छिपे तौर पर होना ।**—से पाँव निकलना**-बहुत इतराना, बुरे पन्थ मे लगना ।**—में पैठना**-बड़ा मित्र बनना, भेद लेना ।**—में रखना**-खा लेना, किसी बात को गुप्त (अपने ही अन्दर) रखना ।**—से न निकालना**-न कहना ।**—में लेना**-सहना, झेलना ।**—में हाथ समाना**-शोक या भय से अति प्रभावित होना ।**—लग जाना**-भूखों मरना ।**—लगे रहना**-भूखे रहना ।**—लेना (जानना)**-भेद लेना (जानना) ।**—से सीखना**-स्वभावतः सीख जाना ।**—हड़बड़ाना**-पेट-रोग होना । (संज्ञा, पु०, दे०) गर्भ, हमल । **लो० दाई से—छिपाना**-"ज्यों दाई सो पेट" ।**—गिरना (गिराना)**-गर्भपात होना या कराना (करना) । **—रहना**-गर्भ या हमल रहना ।**—वाली**-(वि०) गर्भवती ।**—से होना (पेट होना)**-गर्भवती होना । भोजन के रहने और पचने की थैली, पचौनी, ओझरी (प्रान्ती०), अंतःकरण, मन । **—में क्या है**-मन मे क्या है ।**—देखना**-मन देखना ।**—गुड़गुड़ाना**-वायुदोष से पेट मे शब्द होना ।**—में घुसना**-गुप्त भेद जानने को मेल बढ़ाना ।**—में बैठना या पैठना**-गुप्त भेद जान लेना ।**—में होना**-मन में या ज्ञान मे होना । पोली चीज के बीच का भाग, समाई, गुंजाइश, जीविका, भोजन ।**—के लिये (कारण)** रोजी या जीविका के अर्थ या हेतु ।

पेटक—(संज्ञा, पु०, सं०) मंजूषा, पिटारा, समूह, राशि ।

पेटका पेटकैया—(क्रि० वि०, दे०) [हि०, पेट का कैया प्रत्य०] पेट के बल ।

पेटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि०, पेट) बीच या मध्य का भाग, ब्यौरा, पूर्ण विवरण, सीमा, घेरा, वृत्त, भेद, मर्म । **मुहा०—न मिलना (पाना)**-

भेद न जान पाना। **बड़े पेटा का होना**-बड़े घेरे का या सामर्थ्य का होना, धनी होना।

पेटागि—(संज्ञा, , स्त्री० दे०, यौ०) [सं० पेट+अग्नि) भूख, जठराग्नि।

पेटारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि०. पिटारा] पिटारा, पेटार (ग्रा०)।

पेटार्थी [पेटार्थू]—(वि०, दे०) [सं० पेट+अर्थिन्) जो व्यक्ति केवल पेट भरने को ही सब कुछ जानता हो, पेटू, भुक्खड़।

पेटिका—(संज्ञा, स्त्री०, स०) पेटी, संदूक, पिटारी।

पेटिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि०, पेट+इया प्रत्य०] प्रतिदिन का भोजन या भोजन की सामग्री।

पेटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पेटिका] छोटी संदूक, पिटारी, कमरबन्द, कमरकस, चपरास, छाती और पेड़ू का मध्यवर्ती भाग, तोंद, नाइयो की छुरा आदि रखने की किसबत। **मुहा०—पड़ना**-तोंद निकलना।

पेटीकोट—(संज्ञा, पु०, अं०) साड़ी के नीचे का एक पहनावा जो घाघरे की तरह होता है।

पेटू—(वि०, दे०) [हि०, पेट] अधिक खाने वाला, बड़ा भुक्खड़, पेटार्थी।

पेटौखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पेट] पेट रोग, अतिसार आमातिसार, उद्वेग।

पेठा—(संज्ञा, पु०, दे०) सफेद कुम्हड़ा, उससे बनी मिठाई।

पेड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिंड] वृक्ष, तरु।

पेड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पड] खोवा की कड़ी गोल चिपटी मिठाई, आटे की लोई।

पेड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिंड] पेड़ का धड़ या तना, कांड, पान का पुराना पौधा या उसका पान, प्रति वृक्ष पर लगाया हुआ कर या महसूल, मनुष्य का धड़।

पेड़ू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पेट] उपस्थ, गर्भाशय, नाभि और लिंग के बीच का स्थान।

पेन्हाना-पिन्हाना—(क्रि० सं०, दे०) [हि० पहनाना] पहिनाना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० पयः स्रवन] गाय आदि के थनों में दुहते समय दूध उतरना, पल्हाना (ग्रा०)।

पेम—*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रेम] प्रेम।

पेमी—(वि०, दे०) [सं० प्रेमिन्] प्रेमी।

पेय—(वि०, सं०) पीने के योग्य। (**संज्ञा**, पु० सं०) पीने की चीज, दूध, पानी आदि।

पेरना—(क्रि० सं०, दे०) [सं० पीडन] किसी वस्तु को ऐसा दबाना कि उसका रस निकल आये, कष्ट या दुःख देना, सताना, किसी कार्य में बड़ी देर करना। (क्रि० स०, दे०) [सं० प्रेरणा] प्रेरणा करना, लगाना, पठाना, भेजना, चलाना। [**पेराना** (द्वि० क०)], [**पेरवाना**-(प्रे० रूप)]।

पेरू—(संज्ञा, पु०, दे०) विलायती मुरगी।

पेलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पीडन] धक्का देना, ठेलना, ठूँसना, धँसाना, हटाना, ठासना, घुसेड़ना, प्रविष्ट करना, तेल निकालना, दबाना, त्यागना, अवज्ञा करना, टाल देना, फेंकना, बल प्रयोग करना, पेरना (ग्रा०)। "आयो तात वचन मम पेली"—[रामा०]। (क्रि० स०, दे०) [सं० प्रेरणा] आगे बढ़ाना। [**पेलाना** (द्वि०, क्रि०)]।

पेलवाना—(स० क्रि०) किसी को ठूसने या पेलने के लिए प्रवृत करना।

पेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पेलना] झगड़ा, अपराध, धावा, आक्रमण, चढ़ाई। पेलने का भाव। [**पेली** (स्त्री०)]।

पेव—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रेम।

पेवस, पेवसरी, पेवसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पीयूष] हाल की व्यायी गाय, भैंस का कुछ पीला गाढ़ा दूध।

पेश—(क्रि० वि०, फ़ा०) आगे, सामने।**—कार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [**पेस्कार** (दे०)] एक कर्मचारी जो हाकिम के सामने कागज रखे।**—कारी**-(संज्ञा, स्त्री०) पेशकार का काम।**—खेमा**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) फौज का आगे भेजा जाने वाला सामान, अग्रसेना, [**हरावल** (प्रान्ती०)] घटनादि का पूर्व लक्षण।**—गी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अगाऊ, अगौड़ी, प्रथम (आगे) दिया धन, [पेसगी (दे०)]।**—तर**-(क्रि० वि०, फ़ा०) प्रथम, पूर्व।**—बंदी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्रथम या पूर्व से किया हुआ प्रबन्ध या बचाव की युक्ति, भूमिका।**—राज**-(संज्ञा, पु०) [फ़ा० पेश+राज—घर बनाने वाला हि०] ईंट-पत्थर ढोने वाला मजदूर।**—मुहा०—आना**-व्यवहार या बर्ताव करना, सामने आना, घटित होना।**—करना**-

आगे या सामने रखना, दिखाना, भेंट करना।—जाना या चलना-वश या बल चलना।

पेशवा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [पेसवा (दे०)] सरदार नेता, अगुवा, प्रधान मन्त्री की उपाधि (महाराष्ट्र राज्य में)।

पेशवाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) किसी बड़े आदमी का आगे बढ़कर स्वागत करना, [पेसवाई (दे०)] अगवानी। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० पेशवा+ई प्रत्य०] पेशवा का कार्य या पद, पेशवा की शासन-प्रणाली।

पेशवाज—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) नाचते समय पहिनने की वेश्याओं की पोशाक या घाँघरा।

पेशा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उद्यम, रोजगार, व्यवसाय, जीविकोपाय।

पेशानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) माथा, ललाट, मस्तक, भाग्य।

पेशाब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [पेसाब (दे०)] मूत्र, [मूत (दे०)]।—**खाना**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मूत्रालय, मूतने की जगह। **मुहा०—करना**-मूतना, हेय या तुच्छ समझना।—**से चिराग जलना**-बड़ा प्रतापी होना।

पेशावर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) व्यवसायी, ब्यौपारी, रोजगारी। एक शहर (पंजाब)।

पेशी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सामने होने की क्रिया, मुकदमें की सुनवाई। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) तलवार का म्यान। वज्र। गर्भाशय, बच्चेदानी। शरीर की मांस की गिलटियाँ या गाँठें।

पेश्तर—(क्रि० वि०, फ़ा०) प्रथम, पहले।

पेषण—(संज्ञा, पु०, सं०) पीसना। [**पेषक, पेषित, पेषणीय** (वि०)]।

पेखना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पेषण] पेखना।

पेस*—(क्रि० वि०, दे०, फ़ा०) पेश, आगे।

पेहँटा†—(संज्ञा, पु०, दे०) कचरी नामक लता और उसके फल, [सेंधिया, (प्रान्ती०)]।

पैजनी, पैजनियाँ—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० पाँय+अनु० झन-झन] पायजेब, पैर का बजने वाला गहना। "चूनरि बेजनी पैजनी पायन"—द्वि०।

पैंठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पण्यस्थान] हाट, दुकान, बाजार, बाजार का दिन। "लेना हो सो लेय ले, उठी जात है पैंठ"—कबी०।

पैंठौर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पैंठ+ठौर] दूकान, बाजार या दूकान का स्थान।

पैंड, पैंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पाँय+ड़ प्रत्य०] मार्ग, पंथ, रास्ता, डग, कदम। **मुहा०—(डे) परना**-पीछे पड़ना, बारम्बार तंग करना। घुड़साल, प्रणाली।

पैंत*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पणकृत] दाँव, बाजी।

पैंतरा—(संज्ञा, पु०) हथियार के प्रयोग। मल्ल-युद्ध आदि के लिए पैर रखने का विशेष ढंग।

पैंती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पवित्र] श्राद्धादि के समय अँगुलियों में पहिनने के कुश के छल्ले, पवित्री, पंइती (ग्रा०) दाल, [पंहिती (प्रान्ती०)]।

पै*†—(अव्य०, दे०) [सं० पर] पर, परंतु, लेकिन। अवश्य, निश्चय। पीछे, बाद। "जो पै कृपा जरै मुनि गाता'—[रामा०]। **जोपै**-(वि०) यदि, अगर। [**तोपै** (विलो०)]—तो फिर करण और अधिकरण की विभक्ति (ब्र० भा०) पर, से। "मोपै निज ओर सों न जाय कुछ कही है"—दास०। उस दशा या अवस्था में। (हिं० पहँ) पास, निकट, प्रति, ओर। (प्रत्य० दे०) [सं० उपरि] ऊपर, पर, से, द्वारा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० आपत्ति] ऐब, दोष। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पय] दूध, पानी।

पैकरमा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [परिक्रमा (दे०)] [**परिकरमा** (ब्र०)]।

पैकार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) छोटा व्यापारी, फेरी लगा कर फुटकर सौदा बेंचने वाला।

पैखाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पाखाना] पाखाना, टट्टी, मैला, मल त्याग का स्थान।

पैगम्बर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) परमेश्वर का दूत या संदेश वाहक। जैसे मुहम्मद, ईसा।

पैगाम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) संदेशा, संवाद।—**बर**-(संज्ञा, पु०) संदेशा या सम्वाद पहुँचाने वाला।

पैज*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतिज्ञा] प्रण, [पन, (ब्र०)] हठ, प्रतिज्ञा, टेक, अहद, होड़।

पैजामा—(संज्ञा, पु०, दे०) [**पायजामा** (फ़ा०)]।

पैजार—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जूता, जोड़ा, जूती। **जूता पैजार (होना)**—(यौ०) जूते की मार-पीट होना, जूता चलाना, लड़ाई-झगड़ा होना।

पैठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रविष्ट] प्रवेश, गति, पहुँच, दखल, पैठने का भाव।

पैठना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० पैठ+ना प्रत्य०] प्रविष्ठ होना, प्रवेश करना, घुसना।

पैठाना—(स०, क्रि०) भीतर प्रवेश कराना, घुसाना।

पैठार*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पैठ+आर प्रत्य०] प्रवेश, पैठ, फाटक, पहुँच, गति।

पैठारी—(स्त्री०) पहुँच, गति।

पैड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० पैर] सीढ़ी।

पैतरा—(संज्ञा, पु०) [दे० पदातर] कुश्ती या युद्ध में खड्ग चलाने में पाँव रखने की रीति या मुद्रा, वार करने का ढंग)—**(रे) बाज**-(वि०) चाल बाज।—**(रे) बाजी**-(संज्ञा, स्त्री०) चाल बाजी। **मुहा०—बदलना**-कुश्ती, हथियार बाजी में घूम फिर कर विशेष चाल और नया हाथ दिखाना।

पैताना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पादस्थान] पायँता।

पैतृक—(वि०, सं०) पितृ-सम्बन्धी, पूर्वजों या पुरखों की, पुश्तैनी।

पैदर, पैदल—(वि०, हिं०) [हिं० पादतल] पाँव से चलने वाला। (क्रि० वि०) पैरों पैरों से। [**पैदली** (वि०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) पैदल सिपाही। [**पदाति** (सं०)] पद, चरण, सतरंज में एक छोटा मुहरा।

पैदा—(वि०, फ़ा०) प्रसूत, उत्पन्न, प्रगट, प्राप्त, कमाया हुआ, उपार्जित, प्रभूत। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) आय, लाभ, आमदनी।—**वार**-(संज्ञा, पु०) खेत की उपज।—**वारी**-(संज्ञा, स्त्री०) पैदावार।

पैदाइश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जन्म, उत्पत्ति।

पैदाइशी—(वि०, फ़ा०) जन्म का, प्राकृतिक।

पैदावार—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) खेत से अन्नादि की उपज, फसल।

पैना—(वि०, दे०) [सं० पैण] तेज, बारीक नोक या धार वाला। (संज्ञा, पु०, दे०) [**औगी** (प्रान्ती०)] बैल हाँकने की लोहे की नोकदार छोटी छड़ी। [**पैनी** (स्त्री०)]।

पैमाइश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) माप, नाप, माप की क्रिया या विधि।

पैमाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मानदंड, नापने का यंत्र या साधन, शराब का गिलास।

पैमाल*‡—(वि०, दे०) [फ़ा० पामाल] पामाल, नष्ट।

पैयाँ‡—(संज्ञा, स्त्री०) [दे० पाँय] पैर, पाँव। —**पैयाँ-पैयाँ**-(यौ०, क्रि० वि०) पैर-पैर।

पैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाय्य=निकृष्ट] बिना सत का अनाज का दाना, खोखला, खुक्ख, दीन-हीन, निर्धन।

पैर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद] जीवों के चलने का अंग, पाँव, धूलि पर पड़ा पद-चिन्ह।—**गाड़ी**-(संज्ञा, स्त्री०, हिं०) साइकिल, ट्राइसिकिल, बाईसिकिल (अं०) बैठ कर पैर से दबाने पर चलने वाली हलकी गाड़ी। मुहावरों के लिए देखो "पाँव"।

पैरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्लावन] तैरना। [**पैराना** (क्रि० स०)] [**पैरवाना** (प्रे० रूप)]। "लरिकाई को पैरबो, आगे होत सहाय"।

पैरवी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अनुगमन, पीछे पीछे चलना, पक्ष लेना प्रयत्न, दौड़धूप, आज्ञा-पालना, पक्ष-समर्थन।—**कार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पैरवी करने वाला, [पैरोकार (दे०)]।

पैरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० पर] पड़े हुये चरण, पौरा, ऊँचाई पर चढ़ने की लकड़ी के बल्लों से बना मार्ग।

पैराई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० पैरना] पैरना या तैरने का भाव या क्रिया, तैराई।

पैराक—(संज्ञा, पु०) [हिं० पैरना] तैराक।

पैराव—(संज्ञा, पु०) [हिं० पैरना] पैर कर पार करने योग्य, गहरा पानी।

पैरेखना*‡—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रेक्षण] परखना, जाँचना, औसरे करना, आसरा देखना, बाट जोहना, परेखना।

पैरोकार—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पैरवीकार] पैरवी करने वाला, अनुगामी।

पैलो†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पातिली] अनाज नापने का काष्ठ पात्र, मापपात्र, दूध आदि ढकने का पात्र। [**पैली** (स्त्री० अल्पा०)]।

पैबंद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वस्त्र के छेद बंद करने का टुकड़ा, चकती, थिगरी या थिगली जोड़, फल बढ़ाने या स्वाद बदलने को एक पेड़ की टहनी को काटकर दूसरे में जोड़ना, कलम बाँधना, पेवंद।

पैवंदी—(वि०, फ़ा०) पैवंद द्वारा उत्पादित (फलादि)।

पैवस्त, पेवस्त—(वि०, दे०) [फ़ा० पैवस्तः] समाया या पैठा हुआ, सोखाया, घुसा हुआ, भीतर प्रविष्ट हो फैला हुआ।

पैशाच—(वि०, सं०) पिशाच सम्बन्धी, पिशाच देश का, पिशाच का।—**विवाह**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आठ प्रकार के विवाहों मे से एक जो सोती कन्या को उठा ले जाकर या मदमत्त स्त्री को बहका या फुसला कर किया जावे।

पैशाचिक—(वि०, सं०) राक्षसी, घोर, भयंकर और घृणित या वीभत्स, पिशाचों का।

पैशाची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक तरह की प्राकृतिक भाषा, [पिशाची, पिमाची (दे०)] पिशाच का उपासक। [**पिशाचिनी** (स्त्री०)]।

पैशाच्य—(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षसी स्वभाव, क्रूर स्वभाव।

पैशुन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पिशुनता, छल, दुष्टता, धोखेबाजी, चुगुलखोरी, पर-निन्दा।

पैसना†*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रविश] घुसना, प्रवेश करना, पैठना। [**पैसाना** (द्वि० क्रि०)] [**पैसवाना** (प्रे० रूप)]।

पैसरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परिश्रम] झंझट, व्यापार, प्रयत्न, बखेड़ा।

पैसा—(संज्ञा, सं०, दे०) [सं० पाद या पणांश] ताँबे का एक चलता सिक्का, जो एक आने का चौथाई होता है, धन, द्रव्य, रोकड़। "जब लगि पैसा गाँठ में तब लग यार हजार"—गिर०।—**वाला**-(वि०) धनी। **मुहा०**—**डुबाना**-बहुत खर्च करना, अधिक व्यय करना ठगना, चुराना।—**खाना**-विश्वासघात करके खा लेना या दबा बैठाना।—(**से**) **का मुँह न देखना**-रुपये का विचार कर खर्च न करना।—**डुबोना**-धन गँवाना या नष्ट करना, घाटा उठाना।—**डूबना**-धन मारा जाना या नाश होना, घाटा होना।—**लगाना**-धन लगाना, व्यय या खर्च करना।—(**से**) **से दरबार बाँधना**-रिश्वत या घूस देकर मनमाना काम करना—(**से**) **को फूस या धूल समझना**-अंधाधुंध व्यय करना।

पैसार—(संज्ञा, पु०) [हि० पैसना] प्रवेश, पैठार। "अति लघुरूप धरौं निसि नगर करौं पैसार"—[रामा०]। [**पैसारी** (स्त्री०)]।

पैहारी—(वि०, दे०, यौ०) [सं० पयस+आहारी] केवल दूध ही पीकर रहने वाला।

पोंका—(संज्ञा, पु०, दे०) पौधों पर उड़ने वाला पतिंगा, पोका, बोंका (प्रान्ती०)।

पोंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुटक] धातु या बाँस की नली, पाँव की नली। (वि०) पोला, मूर्ख। [**पोंगी** (स्त्री० अल्पा०)]।

पोंछन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पोंछना] वस्तु का शेषांश जो पोंछ कर निकाला जावे, झाड़न, शुद्धकरण।

पोंछना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रोंछन] झाड़ना, शुद्ध या साफ करना, किसी पात्रादि में लगी वस्तु को पोंछ कर हटाना। [**पोंछाना** (द्वि० क्रि०)], (प्रे० रूप)—**पोंछवाना**-(संज्ञा, पु०) पोंछने का वस्त्र। [**पोंछनी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

पोआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुत्रक] साँप का बच्चा, दूध पीने वाला छोटा बच्चा।

पोइया, पोई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० पोयः] घोड़े की दो दो पैर फेंक कर सरपट दौड़।

पोइस—(अव्य०, दे०) [फ़ा० पोइश] भागो, हटो, बचो, देखो। (संज्ञा, स्त्री०) सरपट दौड़ [हि० पोइया फ़ा० प्रायः]। **लो०**—"जोई बना-इस रामनौमी वोही का धक्का पोइस"।

पोई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पोदकी] एक बरसाती लता जिसकी पत्तियों से भाजी और पकौड़ियाँ बनती हैं। (क्रि० स०, दे०) [पोना (दे०)] रोटी बनाना।

पोख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पोषण] पोषक के ऊपर प्रेम, हेलमेल, मिलाप।

पोखना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० पोषण] पालना या रक्षा करना, शरण में रखना, बढ़ाना, पोषना। [**पोखवाना** (प्रे० रूप)], [**पोखाना** क्रि० स०)]।

पोखर, पोखरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुष्कर] ताल, तालाब। [**पोखरी** (स्त्री० अल्प०)]।

पोगंड, पौगंड—(संज्ञा, पु०, सं०) पाँच से दस वर्ष तक की बाल्यावस्था, किसी छोटे, बड़े या अधिक अंग वाला।

पोच, पोचू—(वि०, फ़ा०) तुच्छ, निकृष्ट, क्षुद्र, हीन, नाचीज़, क्षीण। "डर न मोहिं जग कहइ कि पोचू"—[रामा०]। नीच, बुरा। [**पोची** (स्त्री०)]। "सो मतिमंद तासु मति पोची"—

[रामा०]।—**पोटक**—(संज्ञा, पु०, सं०) नौकर, सेवक।

पोची, पोचाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पोचता, नीचता, हेठी, बुराई। [**पोच** (वि०)]।

पोट—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पोटली, गठरी, अटाला, ढेर, बकुचा (प्रान्ती०)।

पोटना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० पुट] बटोरना, समेटना, इकट्ठा करना, फुसलाना। [**पोटना** (क्रि० स०)], [**पोटवाना** (प्रे० रूप)]।

पोटरी, पोटली*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पोटलिका] छोटी गठरी, छोटा बकुचा, (अल्पा०)।

पोटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुट=थैली] पेट की थैली, पित्ता, साहस, समाई, सामर्थ्य, औक़ात, उँगली का छोर, आँख की पलक। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पोत] चिड़िया का बच्चा। [**पोटी** (स्त्री०, अल्पा०)]—उदराशय।

पोढ़ा—(वि०, दे०) [सं० प्रौढ] कड़ा, दृढ़, पुष्ट, कठोर। [**पोढ़ी** (स्त्री०)]।

पोढ़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) प्रौढता (सं०) पुष्टता, दृढ़ता, पोढ़ापन।

पोढ़ाना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पोढ़ा] पुष्ट या दृढ़ होना, कठोर या कड़ा होना, पक्का होना। (क्रि० स०, दे०) पुष्ट या पक्का करना।

पोत—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी जीव का छोटा बच्चा, कपड़े की बुनावट, नौका, जहाज, छोटा पौधा, वे झिल्ली का गर्भ-पिंड। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पोता] माला आदि की छोटी गुरिया या मनका, काँच की गुरिया। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रवृत्ति] प्रवृत्ति, ढंग, दाँव, बारी। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फोता] भूमिकर, जमीन का लगान।

पोतदार, पोद्दार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पोत-धर] खजानची, तहसीलदार, रुपया परखने वाला।

पोतक—(संज्ञा, पु०, सं०) बहुत छोटा बच्चा।

पोतनहार—(संज्ञा, स्त्री०) चौके की मिट्टी और पोतने का बर्तन, स्त्री जो पोतने का काम करती है।

पोतना—(क्रि० सं०, दे०) [सं० पोतन=पवित्र] किसी वस्तु पर किसी वस्तु की गीली तह जमाना, चूना, मिट्टी आदि से लीपना। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फोत्ता] पोता। (संज्ञा, पु०) पोतने का कपड़ा, पोता। [**पोताना** (क्रि० स०)], [**पोतवाना** (प्रे० रूप)]।

पोतला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पोतना] पराठा, घी में सेंकी रोटी।

पोता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पौत्र] पुत्र का पुत्र, बेटे का बेटा, पौत्र। [**पोती** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फोता] पोत, भूमिकर, जमीन का लगान, अंडकोष। (संज्ञा, पु०, दे०) पोटा। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पोतना] पोतने का कपड़ा, पोतने की घुली मिट्टी आदि, पोत्ता (ग्रा०)।

पोताई—(संज्ञा, स्त्री०) पोतने का काम।

पोतिया—(संज्ञा, पु०) तम्बाकू, चूने की थैली नहाने के लिए टुकड़ा।

पोती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पौत्री] पुत्र की पुत्री। (संज्ञा, स्त्री०, हि०) पोत, पोतने की मिट्टी।

पोथा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुस्तक) बड़ी पुस्तक, ग्रन्थ, कागजों की गड्डी। [**पोथी** (स्त्री० अल्पा०)]। "पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ"—कबी०।

पोदना—(संज्ञा, पु०) [अनु० फुदकना] एक बहुत छोटा पक्षी, नाटा मनुष्य।

पोद्दार—(संज्ञा, पु०) मारवाड़ी वैश्यों की एक जाति विशेष।

पोना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पुवा+ना प्रत्य०] गीले आटे की लोई को हाथ से बढ़ाकर रोटी बनाना, रोटी पकाना। [**पोवना** (क्रि० स०),] [**पोवाना** (प्रे० रूप)]। (क्रि० स०, दे०) [सं० प्रोत] पिरोना, गूँधना या गूँथना।

पोपनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक बाजा।

पोपला—(वि०, दे०) [हि० पुलपुला] सिकुड़ा और चुचका हुआ, दाँत रहित मुख, जिसके दाँत न हों। [**पोपली** (स्त्री०)]।

पोपलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० पोपला] पोपला होना। "बिना दाँत के मुँह पोपलान"—प्र० ना०।

पोपली—(संज्ञा, स्त्री०) आम की गुठली का एक साधारण बाजा जिसे घिसकर बनाया जाता है, इसे बच्चे ही विशेष रूप से पसन्द करते हैं।

पोमचा—(संज्ञा, पु०, दे०) रँगा वस्त्र।

पोया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पोत] पेड़ का कोमल छोटा पौधा, बच्चा, सर्प का बच्चा।

पोर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्व] उँगली का वह भाग जो दो गाँठों के मध्य में है। बाँस या ईख आदि की दो गाँठों का मध्यवर्ती भाग, पीठ, रीढ़। "तऊ पोर-पोर पोला है"—पद्मा०।

पोल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पोला] खाली जगह, शून्य स्थान, खोखलापन, निस्सारता। [**पोलाई** (संज्ञा, स्त्री०)]। **लो०**—"ढोल के भीतर पोल"। **मुहा०—खुलना (खोलना)**—भेद फूटना, (फोड़ना), गुप्त दोष या बुराई प्रगट हो जाना (करना) (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रतोली] सहन, द्वार, फाटक, आँगन। [**पोला** (वि०, दे०)]—खोखला।

पोला—(वि०, दे०) [सं० पोल=फुलका] खोखला, सार या तत्व हीन, जो ठोस न हो, पुलपुला, खुक्ख। [**पोली** (स्त्री०)]। [**पोलापन** (संज्ञा, पु०)], [**पोलाई** (स्त्री०)]। "पोर-पोर मैं पोलाई परी"—रसाल।

पोलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) पौरिया, दरबान।

पोशाक—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पहनने के वस्त्र, पहनावा, वस्त्र, परिधान।

पोशीदा—(वि०, फ़ा०) छिपा हुआ, गुप्त।

पोष—(संज्ञा, पु०, सं०) पोषण, उन्नति, वृद्धि, पुष्टि, तुष्टि, संतोष।

पोषक—(वि०, सं०) वर्द्धक, पालक, सहायक, संरक्षक, बढ़ाने वाला।

पोषण—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्द्धन, पालन, सहायता, पुष्टि। [**पोषित, पोष्य, पुष्ट, पोषणीय** (वि०)]।

पोषना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पोषण] पोसना, पालना (ग्रा०)। [**पोषाना** (क्रि० स०)], **पोषवाना** (प्रे० रूप)]।

पोषित—(वि०, सं०) जिसका पालन पोषण किया गया हो, पाला हुआ।

पोषित—(वि०, फ़ा०, सं०) पोषक, पोषण करने वाला, पालन करने वाला।

पोष्य—(वि०, सं०) पालने या पोषने के योग्य।—**पुत्र**—(संज्ञा, पु०, सं०) दत्तक या पालक पुत्र, पुत्र सा पाला लड़का।

पोस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पोषण] पोषक के प्रति प्रेम या हेलमेल।

पोसन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पोषण] [पोषन (दे०)] रक्षा, पालन, वृद्धि।

पोसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पोषण] पालना या रक्षा करना, अपनी शरण या देख-रेख मे रखना, [पोषना (दे०)]। [**पोसाना** (क्रि० स०)], [**पोसवाना** (प्रे० रूप)]।

पोस्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बकला, छिलका, चमड़ा, छाल, अफीम का पौधा या ढोंढा, पोस्ता।

पोस्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पोस्ता] एक पौधा, जिससे अफीम निकलती है।

पोस्ती—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पोस्ते की डोंड़ी पीस कर पीने वाला नशेबाज, आलसी, सुस्त।

पोस्तीन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) समूर आदि पशुओं के गरम और नरम रोयेंवाली खाल के वस्त्र, चमड़े के नीचे रोयें वाला वस्त्र।

पोहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रोत] जड़ना, लगाना, गूँथना, गूँधना, पीसना, छेदना, घिसना, घुसेड़ना, धँसाना, पोतना, पिरोना। पोना (ग्रा०) घुसने या छेदने वाला। [**पोहनी** (स्त्री०)]। [**पोहाना** (क्रि० स०) **पोहवाना** (प्रे० रूप)]।

पोहमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भूमि] पुहुमी, भूमि।

पौंचा, पौंचा—(संज्ञा, पु०, दे०) साढ़े पाँच का पहाड़ा, प्यौंचा (ग्रा०)।

पौंढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पौंड्रक] एक तरह का मोटा गन्ना (ईख)।

पौंड्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) [पौंडा (दे०)] मोटा गन्ना, एक पतित जाति, जरासंध का सम्बन्धी, पुंड्र देश का राजा जिसे कृष्ण ने मारा था, भीमसेन का शंख, पौंड्र। "पौंड्रकं दध्मौ महाशंखं भीमकर्मा वृकोदरः"—[गीता]।

पौंढ़ना—(क्रि० स०, दे०) पौढ़ना, लेटना।

पौंरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्लवन] तैरना।

पौंरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतोली] पौरि, पौरी (दे०) द्वार, दरवाजा।

पौ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रपा, प्रा० पावा] पौसला, पौसाला, प्याऊ। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पाद] ज्योति, किरण, प्रकाश रेखा। **मुहा०—फटना**—प्रभात-प्रकाश दीखना, सवेरा होना। "रंचक पौ फाटन लागी"—रत्ना०। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद] पाँव, पाँसे की एक चाल। **मुहा०—बारह होना**—बन आना, जीत का दाँव लगाना, लाभ होना, लाभ का समय मिलना।

पौआ, पौवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद] एक सेर का चौथाई, पाव भर, एक पाव का पाव, घंटे का चौथा भाग।

पौगंड—(संज्ञा, पु०, सं०) पाँच से दस के बीच उम्र या अवस्था । (वि०) बालकों जैसा ।

पौढ़ना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्लवन] झूलना हिलना । (क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रलोठन] लेटना, सोना, पड़ना । (क्रि० सं०) पौढ़ाना, [**पौढ़वाना** (प्रे० रूप)] ।

पौत्तलिक—(संज्ञा, पु०, सं०) मूर्तिपूजक ।

पौत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) पुत्र का पुत्र, पोता । [**पौत्री** (स्त्री०)] ।

पौत्रिक—(वि०, सं०) पुत्र सम्बन्धी, पौत्र-सम्बन्धी ।

पौद, पौध—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पोत] छोटा पौधा, वह पौधा जो दूसरे ठौर पर लग सके । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) पाँवड़ा । **मुहा०—लगाना**-किसी चीज की शुरुआत करना ।

पौदर, पौडर—संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पाँव + डालना] पगडंडी (रास्ता), पदचिन्ह ।

पौधा, पौदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पोत] क्षुप, नया पेड़, छोटा पेड ।

पौधि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पोत] पौद ।

पौन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पवन] वायु, हवा, प्राण, जीव, भूत, प्रेत । (संज्ञा, पु०) टगण का एक भेद (मात्रिक) । (वि०, दे०) [सं० पाद + ऊन] चौथाई कम, अर्थात् तीन चौथाई या पौना । "बिना डुलाये ना मिलै, पंखा को पौन"—वृं० ।

पौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पाद + ऊन] पौना का पहाड़ा (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पौना] लोहे या काठ की बड़ी करछी । (क्रि० सं०, दे०) रोटी बनाना, पोना ।

पौनार-पौनारि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पद्मनाल] कमल की डंडी, कमलनाल ।

पौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पावना] नाई, बारी आदि, विवाह आदि उत्सवों में इन्हे दिया गया इनाम, पौनी । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० पौना] छोटा पौना ।

पौने—(वि०) [हि० पौन] किसी पदार्थ का तीन चौथाई ।—**सोलह आना**-करीब करीब पूरा, समूचा ।

पौमान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पवमान] वायु, जलाशय, पवमान ।

पौर—(वि०, सं०) पुर या नगर का । (संज्ञा, पु०, दे०) पौरि—द्वार ।

पौरि, पौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [प्रतोली] द्वार, ड्योढ़ी । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० पैर] सीढ़ी, पैड़ी । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० पाँवरि] खड़ाऊँ, पाँवरी ।

पौरव—(संज्ञा, पु०, सं०) पुरुवंशी, पुरु की संतान, उत्तर-पूर्व का देश (महा०) ।

पौरस्त्य—(वि०, स०) प्रथम, आदि, पूर्वीय, पूर्व दिशा सम्बन्धी ।

पौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पैर] आया हुआ कदम, पड़ा हुआ पाँव, पैरा ।

पौराण—(वि०, सं०) प्राचीन समय का, पहले का, पुराण सम्बन्धी ।

पौराणिक—(वि०, स्त्री०, सं०) पुराणपाठी, पुराणवेत्ता, पुराण-सम्बन्धी, पुराने समय का, [**पौराणिकी** (स्त्री०)] । (संज्ञा, पु०, सं०) १८ मात्राओं के छन्द (पिं०) ।

पौरिक—(संज्ञा, पु०, सं०) नागरिक । नगर का शासनकर्त्ता ।

पौरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पौर] दरबान, प्रतीहारी । "द्वार द्वार छरी लीने वीर पौरिया है खड़े"—सुदामा० । "बेटा, बनिता, पौरिया, यज्ञ करावनहार"—गिर० ।

पौरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अंतःपुर के कर्मचारियों की भाषा । [**ड्योढ़ी** (हि०)] । खड़ाऊँ ।

पौरुष—(संज्ञा, पु०, सं०) पुरुषत्व, पुरुषार्थ । पुरुष का कर्म, साहस, पराक्रम, उद्यम, उद्योग, परिश्रम, यत्न । [**पुरुष सम्बन्धी** (वि०)] । "दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या ।"

पौरुषेय—(वि०, सं०) पुरुष-सम्बन्धी, आध्यात्मिक, पुरुष का निर्मित या बनाया हुआ, पुरुष-समूह । "पौरुषेयवृता इव"—माघ० ।

पौरुष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पुरुषत्व, साहस ।

पौरुहूत—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र का अस्त्र, वज्र ।

पौरू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार की मिट्टी या भूमि ।

पौरेय—(संज्ञा, पु०, सं०) नगर-सम्बन्धी, नगर का समीपी देश, गाँव आदि ।

पौरोगव—(संज्ञा, पु०, सं०) पाकशालाध्यक्ष, बावरचीखाने का दारोगा ।

पौरोहित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पुरोहित का कार्य पुरोहिताई, पुरोहिती ।

पौर्णमास—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्णमासी को किया जाने वाला एक यज्ञ ।

पौर्णमासी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूर्णमासी, पूर्णिमा, पूरणमासी, [पूरनमासी (दे०)] ।

पौर्वाह्णिक—(वि०, यौ०, सं०) सबेरे से दोपहर तक का कार्य या क्रिया, पूर्वाह्न सम्बन्धी ।

पौलस्त्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पुलस्त्य ऋषि का वंशज, कुबेर, रावण आदि, चन्द्र [**पौलस्त्यी** (स्त्री०)] ।

पौला†—(संज्ञा, पु०,) [हि० पाव+ला प्रत्य०] एक तरह की खड़ाऊँ । [**पौली, पौलिया** (स्त्री० अल्पा०)] । "पौला पाहरि निरावै"—घाघ ।

पौलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पौरिया] पौरिया, द्वारपाल । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पौला] छोटी खड़ाऊँ ।

पौली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [प्रतोली] ड्योढ़ी, पौरी । (संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि० पौला] छोटी खड़ाऊँ, टाँग, घुटने और पैर का मध्यभाग ।

पौलोमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इन्द्राणी, भृगुपत्नी, प्रलोम की कन्या ।

पौवा—(संज्ञा, पु०) एक पाव, सेर का चौथाई भाग ।

पौष—(संज्ञा, पु०, सं०) पुष्य नक्षत्र की पूर्णिमा वाला मास, पूस महीना [**पौषी** (स्त्री०)] ।

पौष्टिक—(वि०, सं०) बलवीर्य-वर्द्धक, पुष्टिकारी ।

पौष्पी—(संज्ञा, स्त्री०) पुष्प । मदिरा । पाटलिपुत्र, पटना ।

पौसरा, पौसला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पयःशाला] प्यासे आदमियों को पानी पिलाने का स्थान, प्याऊ, जलशाला ।

पौहारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पयस+आहार] दुग्धाहारी, केवल दूध पीकर रहने वाला ।

प्याऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रपा] पौसला, पौसरा, जलशाला, पियाऊ (ग्रा०) ।

प्याज—(संज्ञा, पु०, फ़ा० [पियाज (दे०)] गोल गाँठ वाला एक तीव्र बुरी गन्ध वाला कन्द ।

प्याजी—(वि०, फ़ा०) हलका गुलाबी रंग, [पियाजी (दे०)] ।

प्यादा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पैदल, दूत, सेवक [पियादा दे०)] । रहिमान सीधी चाल तें, प्यादा प्यादा होता वजीर" ।

प्याना—(क्रि० स०, दे०) [हि० पिलाना] पिलाना, [पियाना, पियावना (दे०)] ।

प्यार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रीति] स्नेह, प्रेम, चाह, पियार (ग्रा०) ।

प्यारा—(वि०, दे०) [सं० प्रिय] प्रेम-पात्र, प्रिय, स्नेही, भला जान पड़ने वाला, पियारा । [**प्यारी** (स्त्री०)] ।

प्याला—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) छोटा कटोरा, बेला, [पियाला (दे०)] तोप, बन्दूक आदि में रंजक और बत्ती लगाने का स्थान ।—**देना**-शराब पिलाना । [**प्याली, पियाली** (स्त्री०, अल्पा०, दे०)] ।

प्यावना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० पिलाना] पिलाना, पियावना, पियाना (ग्रा०) ।

प्यास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिपासा] तृषा, तृष्णा, पियास (ग्रा०) । [**प्यासा** (वि०, पु०)], [**प्यासी** (वि०, स्त्री०)] ।—**बुझाना**-किसी तीव्र इच्छा की पूर्ति करना, पानी पीकर प्यास बुझाना ।

प्यासा—(वि०, दे०) [सं० पिपासित] [पियासा (दे०)] तृषित, प्यास-युक्त । [**प्यासी** (स्त्री०)] ।

प्यो—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पिय] स्वामी, पति । "प्यो जो गयो फिरि कीन्ह न फेरा" ।

प्योसर, प्योसरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पीयूष] नई ब्यायी भैंस या गाय का दूध, उससे बनी मिठाई ।

प्योसार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पितृशाला] स्त्री के पिता का घर, मायका, पीहर ।

प्यौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रिय] प्रियतम, पति, स्वामी ।

प्रकंप—(संज्ञा, पु०, सं०) कपकपी, कंपन, थरथराहट ।

प्रकंपन—(वि०) कपाने वाला, हिलाने वाला । (संज्ञा, पु०) वायु, हवा ।

प्रकंपित—(वि०, सं०) कांपता हुआ, हिलता हुआ ।

प्रकोप—(संज्ञा, पु०, सं०) कंप, कपकँपी । [**प्रकम्पित** (वि०)]—काँपता हुआ । [**प्रकम्पन** (संज्ञा, पु०, सं०), [**प्रकंपनीय** (वि०) ।

प्रकट—(वि०, सं०) व्यक्त, स्पष्ट, उत्पन्न, प्रत्यक्षीभूत, विदित, [प्रगट (दे०)] ।

प्रकटन—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्पन्न होना, प्रगटना, व्यक्त होना । [**प्रकटनीय** (वि०)] ।

प्रकटित—(वि०, सं०) प्रगट, स्पष्ट किया हुआ ।

प्रकटीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकट करना, प्रकट करने का भाव या क्रिया ।

प्रकटीभवन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकट होने का भाव, प्रकट करना।

प्रकथन—(संज्ञा, पु०, सं०) घोषित करना।

प्रकर—(संज्ञा, पु०, सं०) फैले हुये कुसुम आदि, समूह, दल।

प्रकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रसङ्ग, विषय, वृत्तान्त, प्रस्ताव, अभिनय करने की रीति, रूपक का भेद (नाट्य०), ग्रन्थ-सन्धि, ग्रंथ-विच्छेद, निरूपणीय विषय को समाप्ति, एकार्थ-वाचक सूत्रों का समूह (व्या०) कांड, सर्ग, अध्याय, ग्रन्थ का छोटा भाग।

प्रकरिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रासंगिक कथा-वस्तु।

प्रकरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक तरह का गाना, नाटक मे प्रयोजन-सिद्धि के पाँच भेदों मे से एक, नाटक खेलने की वेदी (नाट्य०) कुछ काल तक चल कर रुक जाने वाली कथा-वस्तु।

प्रकर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तमता, उत्कर्ष, बहुतायत, अधिकता, बढ़ाव, बाहुल्य। [**प्रकर्षता** (संज्ञा, स्त्री०)]—उत्कृष्टता।

प्रकर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) अशांति, क्षोभ। उत्तमता। लगाम। चाबुक। हल चलाना।

प्रकला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समय का साठवाँ भाग (ज्यो०)।

प्रकल्पना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नियत या स्थिर करना।

प्रकल्प्य—(वि०, सं०) निश्चित करने योग्य, स्थिर करने योग्य।

प्रकांड—(वि०, सं०) बहुत विस्तृत या बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ, प्रशस्त।

प्रकांत—(वि०, सं०) आरब्ध, आरम्भ या शुरू किया हुआ, अनुचित।

प्रकाम—(वि०, सं०) यथेष्ट, अति, मनमाना। "प्रकाम विस्तार फल हरियया"—रघु०।

प्रकार—(संज्ञा, पु०, सं०) भाँति, तरह, किस्म, भेद। [परकार (दे०)]।* (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्राकार] घेरा, परकोटा, शहर-पनाह (फा०)।

प्रकारान्तर—(वि०, यौ०, सं०) अन्य विधि या भाँति, अन्य रीति, दूसरी तरह।

प्रकाश—(संज्ञा, पु०, सं०) [परकास (दे०)] उजेला, दीप्ति, रोशनी, आलोक, [प्रकास (दे०)], कांति, ज्योति, अभिव्यक्ति, विकास, आभा, प्रसिद्ध, ग्रन्थ का भाग, अध्याय, घाम, स्फुटन, प्रकट या गोचर होना।—**धृष्ट**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रकट रूप से ढिठाई करने वाला नायक।—**वियोग**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) केशव दास के मतानुसार वह विछोह जो अवसर पर प्रकट हो जावे।—**संयोग**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सब पर प्रकट हो जाने वाला मिलाप (केश०)। [**प्राकश्य** (वि०)], [**प्रकाशित** (वि०)]।

प्रकाशक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकट, प्रकाश या प्रसिद्ध करने वाला, प्रकाश करने वाला। [पब्लिशर]

प्रकाशन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रगट या व्यक्त करना, प्रकाशित करना, फैलाना, जनता के सामने छपवा कर प्रकट करना। विष्णु। [**प्रकाशनीय** (वि०)]।

प्रकाशमान—(वि०, सं०) विख्यात, शोभायमान, प्रसिद्ध, चमकीला, आलोकित, चमकता हुआ, रोशन।

प्रकाशवान्—(वि०, सं०) प्रकाशयुक्त।

प्रकाशित—(वि०, सं०) प्रकाश-युक्त, चमकता हुआ, प्रकट, प्रसिद्ध, व्यक्त।

प्रकाशी—(संज्ञा, पु०, सं०) चमकता हुआ। (वि०) प्रकाशित करने वाला, प्रकाशक।

प्रकाश्य—(वि०, सं०) प्रकट या प्रकाश करने योग्य। (क्रि० वि०) प्रकट या स्पष्ट रूप से, स्वगत का विलोम (नाट्य०)।

प्रकास*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रकाश] [प्रकाश, परकास (दे०)]।

प्रकासना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रकाश] प्रकाशित या उजेला करना, व्यक्त या प्रकट करना, [परकासना (दे०)]।

प्रकीर्ण—(वि०, सं०) विस्तृत, मिश्रित, ग्रंथ-विच्छेद।

प्रकीर्णक—(संज्ञा, पु०, सं०) फैलाने वाला, प्रकरण, अध्याय, मिलित, स्फुट या फुटकर।

प्रकीर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रस्तावना, वर्णन, कथन। [**प्रकीर्तनीय** (वि०)]।

प्रकीर्तित—(वि०, सं०) कथित, भाषित, उक्त, वर्णित, निरूपित।

प्रकीर्य—(वि०, सं०) बिखेरने या फैलाने योग्य, घुलाने-मिलाने योग्य।

प्रकुपित—(वि०, सं०) क्रोध-युक्त, प्रकुप्त, कुपित।

प्रकुप्त—(वि०, सं०) प्रकोप-युक्त, उग्र विकार को प्राप्त।

प्रकृत—(वि०, सं०) यथार्थ, सच्चा, विकार-रहित। [**प्रकृतता** (संज्ञा, स्त्री०)], **प्रकृतत्व** (पु०)। (**संज्ञा**, पु०, सं०) श्लेष अलंकार का एक भेद।

प्रकृतार्थ—(वि०, यौ०, सं०) उचित या ठीक-ठीक अर्थ, यथार्थ, उपयुक्त, मूल भाव।

प्रकृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वभाव, मिजाज, माया, मूल गुण, प्रधान प्रवृत्ति। "प्रकृति मिले मन मिलत है"—वृं०।—**भाव**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्वभाव, विकार रहित दो पदों की सन्धि का नियम।—**वाद**-(पु०) प्राकृतिक नियमों के सिद्धान्त। [नेचुरलिज्म]।—**शास्त्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक या स्वाभाविक बातों या पदार्थों का वर्णन हो, जैसे—भूगर्भ शास्त्र।—**सिद्ध**-(वि०, यौ०, सं०) स्वाभाविक, नैसर्गिक, प्राकृतिक। "प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्"—[भर्तृ०], —**स्थ**-(वि०, सं०) स्वाभाविक दशा में रहने वाला; प्राकृतिक।

प्रकृष्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तम, श्रेष्ठ, प्रशस्त, उत्कृष्ट, मुख्य, प्रधान।

प्रकृष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्रेष्ठता, उत्तमता।

प्रकोट—(संज्ञा, पु०, सं०) परिखा, परिकोटा।

प्रकोप—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षोभ, अधिक क्रोध, बीमारी की ज्यादती, देह में वात, पित्त, कफ का रोगकारी विकार, चंचलता।

प्रकोपन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकोपित करना। (वि०) प्रकुपित करने वाला।

प्रकोपित—(वि०, सं०) जिसमें उत्तेजना उत्पन्न किया गया हो, क्रुद्ध किया गया।

प्रकोष्ठ—(संज्ञा, पु०, सं०) फाटक के पास की कोठरी, कोठा, बड़ा आँगन, हाथ की कलाई। "ततः प्रकोष्ठे हरिचंदनांकिते'—रघु०।

प्रकोषण—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अप्सरा।

प्रक्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) उपक्रम, क्रम, सिलसिला, अनुष्ठान, आरम्भ, उद्योग, अवसर।—**भग**-(संज्ञा, पु०, सं०) काव्य में यथेष्ट क्रम के न होने का एक दोष, व्यतिक्रम, सिलसिला का नष्ट होना। [(**प्रक्रमभंगता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

प्रक्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) भली भाँति, घूमना, पार करना, आरम्भ करना, आगे बढ़ना। [**प्रक्रमणीय** (वि०)]।

प्रक्रिया—(संज्ञा स्त्री०, सं०) युक्ति, प्रकरण, देवकर्म क्रिया, देव चेष्टा, रीति, विधि, प्रणाली। "प्रक्रियां नाति विस्तराम्"—सार०।

प्रक्लिन्न—(वि०, सं०) संतुष्ट, तृप्त, पसीना से डूबा हुआ या लदफद, स्वेदमय।

प्रक्लेद—(संज्ञा, पु०, सं०) नमी, तरी।

प्रक्ष—(वि०, दे०) [सं० पृच्छक] पूछने वाला।

प्रक्षपण—(संज्ञा, पु०, सं०) नष्ट करना।

प्रक्षरण—(संज्ञा, पु०, सं०) झरना, चूना।

प्रक्षय—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षय, विनाश, खराबी, बरबादी।

प्रक्षाल—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रायश्चित्त।

प्रक्षालन—(संज्ञा, पु०, सं०) धोना, पखारना, शुद्ध या साफ करना।

प्रक्षालित—(वि०, सं०) साफ किया हुआ, धोया हुआ, जिसका प्रायश्चित्त किया गया हो।

प्रक्षाल्य—(वि०, सं०) शुद्ध या साफ़ करने योग्य, धोने योग्य।

प्रक्षित—(संज्ञा, पु०, सं०) फेंका हुआ। पीछे से मिलाया या बढ़ाया हुआ।

प्रक्षिप्त—(वि०, सं०) क्षेपक, बाद को मिलाया या बढ़ाया हुआ, फेंका हुआ।

प्रक्षेप, प्रक्षेपण—(संज्ञा, पु०, सं०) फेंकना, छोड़ना, त्यागना, डालना, बिखराना, मिलाना, बढ़ाना। [**प्रक्षेपणीय** (वि०)]—**लिपि**-(संज्ञा, स्त्री०)] लिखावट का एक ढंग।

प्रखर—(वि०, सं०) निशित, खरा, तीक्ष्ण, तीखा, उग्र, पैना, तीव्र, प्रचंड, घोड़े को जीन या चारजामा। [**प्रखरता** (संज्ञा, स्त्री०)]

प्रखरांशु—(वि०, यौ०, सं०) तीक्ष्ण या तीव्र किरण वाला। (**संज्ञा**, पु०, सं०) सूर्य।

प्रख्यात—(वि०, सं०) मशहूर, प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी, कीर्तिमान।

प्रख्याति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रसिद्ध, ख्याति।

प्रख्यान—(संज्ञा, पु०, सं०) सूचना, खबर देना, सूचित करना।

प्रख्यापन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रचारित करना, प्रसिद्ध करना, सूचित करना।

प्रगट—(वि०, दे०) [सं० प्रकट] प्रकट, व्यक्त, विदित, प्रसिद्ध, स्पष्ट, प्रत्यक्ष उत्पन्न ।

प्रगटना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० प्रकटन] व्यक्त या प्रकट होना, उत्पन्न या पैदा होना, प्रसिद्ध या विख्यात होना, प्रत्यक्ष या विदित होना ।—[**प्रगटाना**-(स० क्रि०)]—[**प्रगटवाना**-(प्रे० रूप)]

प्रगत—(वि०, सं०) आगे बढ़ा हुआ ।

प्रगति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उन्नति, आगे बढ़ना । —**शील**-उन्नतिशील, आगे बढ़नेवाला ।—**वाद**-(संज्ञा, पु०) मार्क्सवाद का साहित्यिक नाम—**वादी**-(वि०) मार्क्स के विचार-दर्शन के प्रति सहानुभूति रखने वाला या विश्वास करने वाला ।

प्रगम—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्वानुराग, प्रेमी-प्रमिका के बीच प्रेम का उदय ।

प्रगल्भ—(वि०, सं०) प्रवीण, चतुर, प्रतिभाशाली साहसी, उत्साही, हाजिरजवाब, उद्धत, निर्भय, उद्दंड, दंभी, ढीठ । "इतिप्रगल्भं पुरुषाधिराजो"—रघु० । [**प्रगल्भता** (संज्ञा, स्त्री०)]—**वचना**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह मध्या नायिका जो बातों द्वारा अपना क्रोध और दुःख प्रगट करे । प्रगल्भा ।

प्रगल्भित—(वि०) प्रसिद्ध, नामी, घमंडी ।

प्रगसना†*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० प्रकटना] प्रगटना, जाहिर करना [परगसना (दे०)] [**प्रगासना** (स० क्रि०)] [**प्रगसवाना** (प्रे० रूप)] ।

प्रगाढ—(वि०, सं०) दृढ़, अधिक, कठोर, कड़ा, गहरा या गाढ़ा । [**प्रगाढता** (संज्ञा, स्त्री०)]

प्रगीत—(वि०, सं०) गाया हुआ । (पु०) गाना, गीत ।

प्रगीति—(संज्ञा, पु०) एक छंद ।

प्रगुण—(वि०, सं०) सरल, ऋजु, सीधा उदार । (संज्ञा, पु०) उत्तम स्वभाव ।

प्रगृहीत—(वि०, सं०) भलीभाँति ग्रहण किया हुआ, संधि-नियम के बिना उच्चरित ।

प्रगृह्य—(वि०, सं०) ग्रहण करने के योग्य, संधि नियम के बिना उच्चारण योग्य । "ईदूदे द्विवचनं प्रगृह्यम्"—[अष्टा०] ।

प्रग्रह, प्रग्राह—(संज्ञा पु०, सं०) तराजू की डोरी, पशु बाँधने की रस्सी, लगाम, पगहा (प्रान्ती०), बंदी । (संज्ञा, पु०, सं०) रस्सी, डोरी, बंधन, धारण, ग्रहण करने या पकड़ने का भाव या ढग ।

प्रघट, परघट*—(वि०, दे०) प्रकट (सं०) ।

प्रघटक—(संज्ञा, पु०, सं०) सिद्धान्त ।

प्रघटना, परघटना*—(क्रि० अ०, दे०) प्रगटना ।

प्रघटाना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रकटन] प्रगटना, जाहिर होना, पैदा या उत्पन्न होना । [**प्रघटावना** (स० क्रि०)] प्रघटाना, [**प्रघटवाना** (प्रे० रूप)], [**प्रघट, प्रघट्टक** (वि०)]

प्रघट्टक*—(वि०, दे०) [सं० प्रकट] प्रकाश या प्रकट करने वाला, खोलने वाला ।

प्रघट्टन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रगटना, घर्षण ।

प्रघस्—(संज्ञा, पु०, सं०) रावण का एक सेनापति ।

प्रघासा—(संज्ञा, पु०, सं०) द्वार के बाहर का बरामदा या दालान, चौपार (ग्रा०) ।

प्रघोष—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊँची आवाज, ऊँची ध्वनि, प्रचण्ड नाद या शब्द । प्रखर शब्द ।

प्रचंड—(वि०, सं०) उग्र, भयानक, प्रखर, भयंकर तेज, तीव्र, कठिन, तीक्ष्ण, असह्य, भारी, बड़ा । [**प्रचंडी** (वि०, स्त्री०), [**प्रचंडता** (संज्ञा, स्त्री०)] । —**त्व**-(संज्ञा, पु०, सं०) उग्रता, प्रखरता । —**मूर्ति या रूप**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) भयंकर आकार, प्रतापी, उग्र स्वभाव या रूप, प्रचंडाकार, प्रचंडाकृति । **मुहा०**—**पड़ना**-तीव्र क्रोध करना, कुपित होना, लड़ना ।

प्रचंडता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उग्रता, प्रखरता, तीक्ष्णता, असह्यता, तीव्रता, भयंकरता ।

प्रचंडा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गादेवी, चंडी ।

प्रचरना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रचार] चलना, फैलना, प्रचारित होना ।

प्रचलन—(संज्ञा पु०, सं०) प्रचार, चलन ।

प्रचलित—(वि०, सं०) जारी, चालू, चलतू, चलने वाला, व्यवहृत ।

प्रचायक—(संज्ञा, पु०, सं०) पुष्पों का चयनकर्त्ता ढेर लगाने वाला ।

प्रचार—(संज्ञा, पु०, सं०) चलाना, उपयोग, रिवाज । [**प्रचारक, प्रचारित** (वि०)]

प्रचारक—(वि०, पु०, सं०) प्रचारकर्त्ता, फैलाने-वाला, वितरक ।

प्रचारण—(संज्ञा, पु०, सं०) चलाना, जारी करना । [**प्रचारणीय** (वि०, सं०)]

प्रचारनाॐ†—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रचारण] फैलाना, जारी करना, प्रचार करना, चलाना, घोषित करना, ललकारना। "भीषम भयानक प्रचार्यौ रन भूमि आनि"—रत्नाकर। "लागेसि अधम प्रचारन मोहीं"—[रामा०]।

प्रचादित—(वि०, सं०) प्रचार किया हुआ, फैलाया हुआ, चलाया हुआ।

प्रचारी—(वि०, सं०) प्रचार करने वाला, प्रचारक।

प्रचालन—(संज्ञा, पु०, सं०) चलाने की क्रिया।

प्रचालित—(वि०, सं०) जो चलाया हुआ हो, प्रचलित किया हुआ।

प्रचुर—(वि०, सं०) बहुत, अधिक।—**पुरुष**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चोर।

प्रचुरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अधिकता, बहुतायत, ज्यादती, बाहुल्य।

प्रचुरत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) आधिक्य, यथेष्टता।

प्रचेता—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रचेतस्] वरुण, पृथु का परपोता, प्राचीन बर्हि के दस लड़के।

प्रचेल—(संज्ञा, पु०, सं०) पीला चंदन।

प्रचेलक—(संज्ञा, पु०, सं०) घोड़ा।

प्रचोदन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रेरणा, आज्ञा, उत्तेजना, नियम। [**प्रचोदक, प्रचोदित, प्रचोदनीय** (संज्ञा, पु०, वि०)]।

प्रच्छक—(वि०, सं०) प्रश्न कर्त्ता, पूछने वाला।

प्रच्छद—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तरीय वस्त्र, चादर, पिछौरी (प्रान्ती०)

प्रच्छन्न—(वि०, सं०) ढका या छिपा हुआ, आच्छादित, गुप्त, लपेटा हुआ।

प्रच्छर्दिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वमन, उलटी, उद्गार, कै।

प्रच्छादन—(संज्ञा, पु०, सं०) ढाँकना, गुप्त करना, छिपाना, उत्तरीय—वस्त्र विशेष। [**प्रच्छादक, प्रच्छादित, प्रच्छादनीय** (संज्ञा, पु०, वि०)]।

प्रजंक—(संज्ञा, पु०, दे०) पर्यंक। "राजत प्रजंक पर भीतर महल के"—पदमा०।

प्रजंत*—(अव्य० दे०) [सं० पर्यंत] तक।

प्रजनन—(संज्ञा, पु०, सं०) सन्तानोत्पादन, दाई का काम, धात्री-कर्म (सुश्रु०) जन्म।

प्रजनिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) माता।

प्रजरण—(संज्ञा, पु०, सं०) अतिशय जलना। [**प्रजरक** (संज्ञा, पु०)], [**प्रजरित, प्रजरणीय** (वि०)]।

प्रजरना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० उप० प्र+जरना हि०] खूब जलना।

प्रजल्प—(संज्ञा, पु०, सं०) गप, मनोरंजक बात इधर उधर की बातें।

प्रजल्पन—(संज्ञा, पु०, सं०) गपशप करना, इधर उधर की बातें करना।

प्रजल्पित—(वि०, सं०) रहा हुआ। वार्तालाप (पु०)।

प्रजव—(संज्ञा, पु०, सं०) अतिवेग। [**प्रजवी** (वि०)]।

प्रजा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सन्तान, किसी राजा के राज्य का जन-समूह, रैयत, रिआया।—**काम**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुत्र-प्राप्ति की इच्छा वाला, प्रजाकामी।—**कार**—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रजा उत्पन्न करने वाला, ब्रह्मा, प्रजापति, प्रजाकारक।—**वाद**—(पु०) गणतंत्र राज्य का समर्थन करनेवाला सिद्धान्त। [रिपब्लिकनिज्म]—**तंत्र**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह शासन-प्रणाली जिसमे प्रजा का चुना हुआ शासक शासन करता हो, प्रजाधिकार।—**पति**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सृष्टिकर्त्ता, विरंचि, दक्षादि, मनु, सूर्य, राजा, मेघ, अग्नि, पिता, घर का मुखिया।—**सत्ता**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) प्रजातन्त्र।—**हित**—(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) प्रजा की भलाई, प्रजा का उपकार, प्रजा का शुभ।

प्रजागरण—(संज्ञा, पु०, सं०) अतिशय जागरण, बहुत जागना, अति चिन्ता। [**प्रजागरित** (वि०)]

प्रजागरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अप्सरा।

प्रजाधिकारी राज्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रजातंत्र राज्य, जहाँ प्रजा का चुना हुआ व्यक्ति शासन करता है।

प्रजारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रजारण] भली भाँति जलाना। "नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी"—[रामा०]।

प्रजावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जेठे भाई की स्त्री, पुत्रवती स्त्री।

प्रजावान—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रजावत्] लड़के वाला।

प्रजासन—(संज्ञा, पु०, दे०) [(सं०) प्रजाशन] प्रजा का भोजन, साधारण आहार।

प्रजित—(संज्ञा, पु०, सं०) विजय करने वाला।

प्रजुलित*—(वि०, दे०) (सं०) [प्रज्वलित] "प्राची दिशि तें प्रजुलित आवति अग्नि उठी जनु' —नागरी०।

प्रजेश, प्रजेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा, नृप।

प्रजोग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रयोग] प्रयोग।

प्रज्झटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १६ मात्राओं का एक छन्द (पिं०) पद्धटिका, पद्धरी।

प्रज्ञ—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्ञानी, विद्वान्, पण्डित।

प्रज्ञता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विद्वता, पांडित्य।

प्रज्ञप्ति——(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निवेदन, संकेत, विज्ञापन, सूचना।

प्रज्ञा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्ञान, बुद्धि, समझ, सरस्वती। "वही प्रज्ञा का सत्य स्वरूप हृदय मे बनता प्रणय अपार"—पंत।—**चक्षु**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) धृतराष्ट्र। अन्धा। (वि० यौ०, सं०) बुद्धिमान, ज्ञानी, ज्ञान-दृष्टि से देखने वाला।—**पारमिता**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुणो की पराकाष्ठा (बौद्ध०)।—**मय**–(संज्ञा, पु०, सं०) विद्वान्, पंडित,—**हीन**–(वि०) मूर्ख, बुद्धिहीन।

प्रज्ञात—(वि०, सं०) सुपरिचित, विवेचित, प्रसिद्ध, ख्यात, स्पष्ट।

प्रज्ञात्मा—(वि०, स०) अत्यन्त बुद्धिमान।

प्रज्ञान—(संज्ञा, पु०, सं०) बुद्धि, प्रतीक। (वि०) विद्वान, पंडित, बुद्धिमान।

प्रज्ञापन—(संज्ञा, पु०, सं०) मालूम कराना, जताना, सूचित करना।

प्रज्ञावान—(वि०, सं०) बुद्धिमान, होशियार।

प्रज्वलन—(संज्ञा, पु०, सं०) बहुत ही जलना। [**प्रज्वलनीय, प्रज्वलित** (वि०)]

प्रज्वलित—(वि०, सं०) जलता या धधकता हुआ, प्रकाशित, स्पष्ट।

प्रज्वलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रज्झटिका] पद्धरी, पद्धटिका।

प्रडीन—(संज्ञा, पु०, स०) पक्षी को उड़ान, प्रथम उड़ान, उड़ना।

प्रण—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) प्रतिज्ञा, [पण (दे०)] हठ, दृढ़ निश्चय। "कहहु नृप जाय कहौ प्रण मोरा" [रामा०]।

प्रणख—(संज्ञा, पु०, सं०) नख का अग्र भाग।

प्रणत—(वि०, सं०) दीन नम्र, झुका हुआ, कृत प्रणाम, नम्रीभूत, नत (दे०)]।—**पाल**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शरणागत-रक्षक, भक्तों, दासों या दोनों का पालन करने वाला। "प्रणतपाल रघुवंश-मणि त्राहि त्राहि अब मोहिं"—[रामा०]।

प्रणति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रणाम, नमस्कार, नम्रता, दंडवत, विनय, बंदगी।

प्रणमन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रणाम करना, नम्र होना, झुकना।

प्रणम्य—(वि०, सं०) प्रणाम करने योग्य। (क्रि० स०, पू०, का०, सं०) प्रणाम कर के। "प्रणम्य परमात्मानम्"—[सारस्वत०]।

प्रणय—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रेम-प्रार्थना, स्नेह, विनय, प्रेम, मोक्ष, विश्वास।

प्रणयन—(संज्ञा, पु०, सं०) बनाना, रचना, निर्माण करना। "दशाश्चतस्त्रा प्रणयन्नुपाधिभिः" —[नैष०]।

प्रणयिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं० अनुरक्ति, प्रेम से युक्त होने का भाव।

प्रणयिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रेमिका, प्यारी, प्रिया, प्रियतमा, स्त्री, पत्नी। प्रणयिनी भुज-पाश से जो है रहा चिरकाल वंचित—बच्चन।

प्रणयी—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रणयिन्] प्रेमी, स्नेही, प्रेम करने वाला, पति।

प्रणव—(संज्ञा, पु०, सं०) ओइम्, ओंकार, ब्रह्म, ईश्वर। "तस्य वाचकः प्रणवः" [योग०]।

प्रणवना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रणमन] नमस्कार या प्रणाम करना, नम्रीभूत होना। "पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना"—[रामा०]।

प्रणाम—(संज्ञा, पु०, सं०) नमस्कार, प्रणिपात, [प्रनाम, परनाम (दे०)]। "करौं प्रनाम जोरि जुग पानी"—[रामा०]।

प्रणामांजलि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) करबद्ध प्रणाम।

प्रणामी—(वि०, सं०) नमस्कारी, देवताओं के प्रणामार्थ दक्षिणा।

प्रणायक—(संज्ञा, पु०, सं०) नेता, मुखिया।

प्रणाल—(संज्ञा, पु०, सं०) पनाला, मोरी, नाली।

प्रणाली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जल के दो भागों का संयोजक, पनाली, मोरी, जलमार्ग, नाली, रीति, विधि, परम्परा, चाल, प्रथा, तरीका, ढंग। [सिस्टम, मेथड]

प्रणाशन—(संज्ञा, पु०, सं०) नाश करने का भाव या क्रिया। (संज्ञा, पु०) **प्रणाशक**—विनाशक। [**प्रणाशनीय** (वि०)]।

प्रणाशी, प्रणाश—(संज्ञा, पु०, सं०) ध्वंस, नाश, उत्पात।

प्रणिधान—(संज्ञा, पु०, सं०) समाधि, रखा जाना, अत्यंत भक्ति, श्रद्धा या प्रेम, ध्यान या मन की एकाग्रता, प्रयत्न। "ईश्वर प्रणिधानाद्वा"—[योग०]।

प्रणिधि—(संज्ञा, पु०, सं०) दूत, चर, प्रार्थना।

प्रणिपात—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रणाम। "अभूच्च नम्रः प्रणिपात शिक्षया"—रघु०।

प्रणिहित—(वि०, सं०) रक्षित, स्थापित, समाहित, मनोयोग कृत।

प्रणी—(वि०) [सं० प्रणिन] अटल प्रण या दृढ़ प्रतिज्ञा वाला।

प्रणीत—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्मित, रचित, बनाया हुआ, संशोधित, भेजा या लाया हुआ।

प्रणेता—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रणेतृ] निर्माण कर्त्ता, रचयिता, बनाने वाला। [**प्रणेत्री** (स्त्री०)]

प्रणेय—(वि०, सं०) वशवर्त्ती, आधीन, लौकिक, संस्कारयुक्त।

प्रणोदित—(वि०, यौ०, सं०) प्रेरित।

प्रतंचा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० प्रत्यंचा] धनुष की डोरी या रोदा, ताँत।

प्रतच्छ*†—(वि०, दे०) [सं० प्रत्यक्ष] प्रत्यक्ष, सम्मुख, सामने [परतच्छ (दे०)]।

प्रतनु—(वि०, सं०) क्षीण, दुर्बल, बारीक, महीन, पतला, बहुत छोटा।

प्रतपन—(संज्ञा, पु०, सं०) तप्त करना, उत्ताप, गर्मी।

प्रतप्त—(वि०, सं०) उष्ण, गर्म, तपा हुआ।

प्रतर्क—(संज्ञा, पु०, सं०) तर्क, वितर्क, कल्पना करना, समझना।

प्रतर्क्य—(वि०, सं०) कल्पनीय, जिसमें तर्क की गुंजाइश हो।

प्रतर्दन—(संज्ञा, पु०, सं०) दिवोदास का पुत्र काशी का राजा, विष्णु, एक ऋषि।

प्रतल—(संज्ञा, पु०, सं०) सातवाँ पाताल।

प्रतान—(संज्ञा, पु०, सं०) विस्तार, कुटिल ततु। "लता प्रतानोद्ग्रथितैः सकेशैः"—रघु०।

प्रताप—(संज्ञा, पु०, सं०) ताप, तेज, पौरुष, बल, प्रभाव, ऐश्वर्य, पराक्रम, गर्मी, वीरता।—**सिंह**-(संज्ञा, पु०, सं०) चित्तौड़ के महाराणा उदयसिंह के पुत्र जिन्होंने धर्मरक्षा के हेतु अपार दुःख सहे (इति०)।

प्रतापी—(वि०) [सं० प्रतापिन्] तेजवान, प्रभावी, ऐश्वर्यवान, सताने वाला।

प्रतारक—(संज्ञा, पु०, सं०) धूर्त्त, छली, ठग, चालाक, वंचक।

प्रतारण—(संज्ञा, पु०, सं०) धूर्त्तता, छल, ठगी, चालाकी, वंचकता। [**प्रतारणा** (स्त्री०)]

प्रतारित—(वि०, सं०) ठगा या छला हुआ।

प्रतिंचा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतंचिका] धनुष की डोरी, रोदा, ताँत, ज्या, चिल्ला।

प्रति—(अव्य०, सं०) ओर, सामने, एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाने से अर्थ देता है। विपरीत (प्रतिकूल), हर एक (प्रत्येक), सामने (प्रत्यक्ष), बदले मे (प्रत्युपकार), मुकाबिला में (प्रतिवादी), समान (प्रतिनिधि)। सम्मुख, ओर, हेतु। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) नकल।

प्रतिकर्त्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतीकार करनेवाला, बदला लेने वाला।

प्रतिकाय—(संज्ञा, पु०, सं०) पुतला, दुश्मन, शत्रु, बाण का निशाना।

प्रतिकार—(संज्ञा, पु०, सं०) बदला, जवाब।

प्रतिकारक—(संज्ञा, पु०, सं०) बदला चुकाने वाला।

प्रतिकितव—(संज्ञा, पु०, सं०) जुआरी का जोड़ीदार।

प्रतिकूप—(संज्ञा, पु०, सं०) खाई, परिखा।

प्रतिकूल—(वि०, सं०) विपरीत, विरुद्ध, उलटा। [**प्रतिकूलता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**कारी,—**—**चारी**—(वि०) विरुद्ध आचरण करने वाला, विरोधी।—**दर्शन**—(वि०) जो देखने में अप्रिय और अशुभ प्रतीत हो—**वाद**-(पु०) खंडन, विरोधी बातें।

प्रतिकृत—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रतिमूर्ति, प्रतिमा, प्रतिबिंब, प्रतिच्छाया, चित्र, प्रतिकार, बदला।

प्रतिक्रिया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बदला, प्रतिकार, प्रयत्न, उपाय, एक क्रिया के फल-स्वरूप दूसरी क्रिया। [रिऐक्शन]।

प्रतिक्षण—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रत्येक क्षण।

प्रतिगृहीत—(संज्ञा, पु०, सं०) बदला या दान लेने वाला, ग्रहण किया हुआ।

प्रतिगृहीता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विवाहिता, पाणिगृहीता, धर्म्म-पत्नी।

प्रतिग्या—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखिए प्रतिज्ञा (सं०)।

प्रतिग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वीकार, ग्रहण, पकड़ना, दान, विधिवद्दान, ग्रह-विशेष, अधिकार, में लेना, पाणिग्रहण, उपराग।

प्रतिग्रहण—(संज्ञा, पु०, सं०) आदान, स्वीकार, ग्रहण, दान लेना। बदला लेना, वस्तु से वस्तु बदलना। [**प्रतिग्रहणीत** (वि०)]।

प्रतिघात—(संज्ञा, पु०, सं०) चोट या आघात के बदले में चोट या आघात करना, रुकावट, बाधा, टक्कर। [**घात-प्रतिघात** (यौ०)]।

प्रतिघाती—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रतिघातिन्] शत्रु, वैरी [**प्रतिघातिनी** (स्त्री०)।

प्रतिचिंतन—(संज्ञा, पु०, सं०) चिंतित का पुनः चिंतन, बारम्बार ध्यान। [**प्रतिचिंतक, प्रतिचिंतनी** (संज्ञा, पु०, वि०)]।

प्रतिचिकीर्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रतिकार करने या बदला चुकाने की इच्छा।

प्रतिचिकीर्षु—(वि०, सं०) प्रतिकार करने या बदला चुकाने की इच्छा वाला।

प्रतिछाँह-[**प्रतिछाँह**]—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतिच्छाया] प्रतिच्छाया, प्रतिबिंब, परछाईं।

प्रतिच्छा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतीक्षा] प्रतीक्षा, बाट देखना।

प्रतिच्छाया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रतिबिंब, परछाईं, चित्र, प्रतिमूर्ति।

प्रतिज्ञांतर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तर्क में एक निग्रह-स्थान, पराज्य (न्याय०)।

प्रतिज्ञा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पण, प्रण, हठ, दृढ़ निश्चय, शपथ, सौगंद, अभियोग, दावा, वह बात जिसे सिद्ध करना हो (न्याय०)।—**पत्र**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्वीकारपत्र, इकरारनामा (फ़ा०), शर्त या प्रतिज्ञा, (निश्चय) सूचक पत्र।—**पालन**—(पु०) प्रतिज्ञा को पूरी करना, प्रतिज्ञा को निर्वाह करना।—**भंग**—(पु०) प्रतिज्ञा को न निबाहना, प्रतिज्ञा की अवहेलना करना।—**हानि**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक प्रकार की पराजय या निग्रह स्थान (न्याय०)।

प्रतिभात—(वि०, सं०) प्रकाशित, प्रगट। देखा था जो शशि प्रतिभात—निराला।

प्रतिदर्शन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दर्शन के पीछे दर्शन, पुनः पुनः दर्शन।

प्रतिदान—(संज्ञा, पु०, सं०) दान के बदले का दान, विनिमय, बदला, धरोहर या अमानत का लौटाना, परिवर्तन।

प्रतिदिन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रत्यह, अहरहः, दिन दिन, प्रत्येक दिन।

प्रतिदेय—(वि०, सं०) पुनर्दातव्य, लौटाने या फेर देने योग्य।

प्रतिद्वंद्व—(संज्ञा, पु०, सं०) बराबर वालों का परस्पर झगड़ा या मुक़ाबिला।

प्रतिद्वंद्वी—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रतिद्वंद्विन्] बराबर का लड़ने वाला, वैरी, शत्रु। [**प्रतिद्वंद्विता** (संज्ञा, स्त्री०)।

प्रतिध्वनि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गूँज, प्रति शब्द, एक बार सुनाई देकर फिर उत्पत्ति-स्थान पर टकरा कर सुनाई देने वाला शब्द, दूसरे के भावों का दोहराया जाना। [ईको]

प्रतिध्वनित—(वि०, सं०) गूँजा हुआ।

प्रतिना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पृतना] पृतना, सेना, फौज।

प्रतिनायक—(संज्ञा, पु०, सं०) नायक का प्रतिद्वन्द्वी नायक (नाट्य०, काव्य)। [साइड हीरो]।

प्रतिनिधि—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिमूर्ति, प्रतिमा, दूसरे की ओर से काम करने पर नियुक्त व्यक्ति, स्थानापन्न। [रिप्रेज़ेंटेटिव]

प्रतिनिधित्व—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिनिधि का कार्य। [रिप्रज़ेंटेशन]।

प्रतिनिर्यातन—(संज्ञा, पु०, सं०) अपकार के बदले अपकार।

प्रतिनिवर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) लौटना।

प्रतिपक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) दूसरा पक्ष, शत्रु का पक्ष। [**प्रतिपक्षता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

प्रतिपक्षी—(संज्ञा, पु०,) [सं० प्रतिपक्षिन्] विरोधी, विपक्षी, शत्रु, दूसरे पक्ष वाला।

प्रतिपत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुख्याति, सम्मान, प्राप्ति, सम्भ्रम, गौरव, प्रगल्भता, पदप्राप्ति, प्रबोध, दान, प्रतिष्ठा, यश, ज्ञान, अनुमान, प्रतिपादन, स्वीकृति, निरूपण।

प्रतिपदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परिवा, प्रतिपद, किसी पक्ष की प्रथम तिथि।

प्रतिपन्न—(वि०, सं०) ज्ञात, अवगत, प्राप्त, स्वीकृत, निश्चित, प्रमाणित, सिद्ध, शरणागत, माननीय, भरापूरा।

प्रतिपादक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिपादन या सिद्ध करने वाला, प्रकाशक, बोधक, ज्ञापक, अधिवक्ता, वकील। [प्लीडर]

प्रतिपादन—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्पादन, प्रतिपत्ति, बोधन, ज्ञापक, सप्रमाण कथन, प्रमाण, भलीभाँति समझना।

प्रतिपादित—(वि०, सं०) प्रमाणित, घोषित, कथित, निरूपित।

प्रतिपाद्य—(वि०, सं०) जिसका स्पष्टीकरण किया जाय, प्रमाणित।

प्रतिपार*†—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रतिपाल (सं०)।

प्रतिपाल, प्रतिपालक—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा, पोषक, रक्षक, पालन-पोषण करने वाला।

प्रतिपालन—(संज्ञा, पु०, सं०) पालन पोषण, रक्षण, निर्वाह। [**प्रतिपालनीय, प्रतिपालित, प्रतिपाल्य** (वि०)]।

प्रतिपालना*†—(क्रि० स०) [सं० प्रतिपालन] बचाना, पालना-पोसना या रक्षा करना। "जो प्रतिपालै सोई नरेसू"—[रामा०]।

प्रतिपालित—(वि०, सं०) पालित, रक्षित, जिसका अनुगमन या अभ्यास किया गया हो।

प्रतिपाल्य—(वि०, सं०) पोषणीय, पालनीय, रक्षणीय, पोषनीय, पोष्य।

प्रतिपुरुष—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिनिधि। यौ० प्रत्येक पुरुष या मनुष्य।

प्रतिपुस्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) हस्तलिखित प्रति।

प्रतिप्रसव—(संज्ञा, पु०, सं०) निषेध का पुनः विधान, एक बार रोक कर फिर आज्ञा देना।

प्रतिफल—(संज्ञा, पु०, सं०) छाया, प्रतिबिंब परिणाम, फल। [**प्रतिफलित** (वि०)]।

प्रतिबंध—(संज्ञा, पु०, सं०) अटकाव, रुकावट, रोक, विघ्न-बाधा, मनाही। "कंध पै परी तौ कोटि बन्ध प्रतिबन्ध सबै"—रत्ना०।

प्रतिबंधक—(संज्ञा, पु०, सं०) मना करने या रोकने वाला, विघ्न-बाधा डालने वाला।

प्रतिबद्ध—(वि०, सं०) लगाया हुआ, जमाया हुआ, बँधा हुआ, फँसा हुआ, अँटका हुआ।

प्रतिबाधक—(संज्ञा, पु०, सं०) बाधा डालने वाला, अवरोधक, रोकने वाला।

प्रतिबाधित—(वि०, सं०) बाधित, निवारित, हटाया हुआ।

प्रतिबिंब—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिच्छाया, परछाँही, प्रतिमूर्त्ति, प्रतिमा, दर्पण, चित्र। [**प्रतिबिंबित** (वि०)]। "प्रतिबिंबित जग होय"—वि०। **—वाद**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जीव के वस्तुतः ब्रह्म के प्रतिबिंब होने का सिद्धान्त (वेदा०)। [**प्रतिबिंबवादी** (वि०)]।

प्रतिबिंबक—(संज्ञा, पु०, सं०) छाया के ढंग पर अनुसरण करने वाला।

प्रतिबिंबन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिबिंबित होना, तुलना, अनुकरण।

प्रतिबिंबित—(वि०, सं०) जिसकी परछाईं पड़ी हो, शीशा आदि में ज्यों का त्यों प्रतिफलित।

प्रतिभट—(संज्ञा, पु०, सं०) समान वीर या शूर, प्रत्येक वीर, बराबर का योद्धा।

प्रतिभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुद्धि, ज्ञान, आत्मशक्ति, प्रत्युत्पन्नमति, प्रगल्भता, दीप्ति, विशेष असाधारण मानसिक शक्ति, असाधारण ज्ञान या बुद्धि-बल। **—शाली**–(वि०) प्रतिभा-सम्पन्न।

प्रतिभान्वित—(वि०, सं०) प्रतिभा से युक्त, प्रतिभासम्पन्न, प्रतिभा वाला।

प्रतिभावान्—(वि०, सं०) प्रतिभा वाला, जिसमें प्रतिभा हो।

प्रतिभाग—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रत्येक अंश, राज्य के हिस्से।

प्रतिभू—(संज्ञा, पु०, सं०) जामिनदार, मनौतिया, जमानत में पड़ने वाला।

प्रतिम—(अव्य, सं०) सदृश, तुल्य।

प्रतिमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रतिमूर्त्ति, पत्थर आदि की देव-मूर्त्ति, अनुकृति, प्रतिकृत, प्रतिच्छाया, प्रतिरूप, चित्र, प्रतिबिंब, एक अर्थालङ्कार जिसमें किसी व्यक्ति या वस्तु के अभाव पर तत्सादृश्य अन्य

वस्तु या व्यक्ति का स्थापन और वर्णन हो।—पूजा-(स्त्री०) मूर्त्ति पूजा।

प्रतिमान—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिबिंब, प्रतिच्छाया, समानता, तुल्यता, उदाहरण, दृष्टांत, हाथी के मस्तक का एक भाग।

प्रतिमार्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रत्येक मार्ग।

प्रतिमास—(संज्ञा, पु०, सं०) हर महीने।

प्रतिमुख—(संज्ञा, पु०, सं०) नाटक की पाँच संधियों में से एक अंगसंधि (नाट्य०)।

प्रतिमूर्त्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रतिमा, अनुकृति।

प्रतिमोक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) मुक्ति प्राप्ति।

प्रतियत्न—(संज्ञा, पु०, सं०) लिप्सा, वांछा, बंद या निग्रह करने का उपाय, गुणांतर का ग्रहण, संस्कार, संशोधन प्रतिग्रह।

प्रतियाम—(अव्य०) प्रत्येक प्रहर प्रतीक्षा में रहना "प्रतियाम यही स्वर्गिक आनन्द"—पंत।

प्रतियोग—(संज्ञा, पु०, सं०) विरोध, वैर, शत्रुता, विरुद्ध संयोग।

प्रतियोगिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चढ़ा ऊपरी, प्रतिद्वंद्विता, विरोध, शत्रुता। [काम्पीटिशन]—परीक्षा-(स्त्री०) किसी पद-विशेष की उम्मीदवारी के लिए योग्यता की जाँच के लिए ली गई परीक्षा। [काम्पीटिटिव एक्जामिनेशन]

प्रतियोगी—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रु, वैरी, विरोधी, सहायक, हिस्सेदार।

प्रतियोद्धा—(संज्ञा, पु०, सं०) बराबर का योद्धा, शत्रु।

प्रतिरथ—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) समान लड़ने वाला।

प्रतिरात्रि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) प्रत्येक रात्रि।

प्रतिरूप—(संज्ञा, पु०, सं०) मूर्त्ति, प्रतिमा, प्रतिनिधि, चित्र। (वि०) समान, तुल्य, बराबर। [**प्रतिरूपता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

प्रतिरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) विरोध, रोक, रुकावट, बाधा, विघ्न। [**प्रतिरोधक** (वि०)]।

प्रतिरोधक, प्रतिरोधी—(संज्ञा, पु०, सं०) चोर, तस्कर, ठग, डाकू, अपहारक। "उदीर्ण राग प्रतिरोधकं"—माघ०।

प्रतिलिपि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लेख की नकल। —लेखा-(पु०) बेंक आदि में रुपया जमा करने और निकालने के हिसाब की किताब। [पास बुक]

प्रतिलोम—(वि०, सं०) नीचे से ऊपर जाना, विपरीत, प्रतिकूल, उलटा, विरुद्ध, विलोम। [**अनुलोम** (विलो०)], [**प्रतिलोमानुलोम** (यौ०)]—उलटा-सीधा, ऐसी रचना जिसे उलटा-सीधा, दोनों ओर से पढ़ सकें (चित्र काव्य)।—**विवाह**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) उच्च वर्ण की कन्या का नीच वर्ण के वर से विवाह।

प्रतिवक्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) जवाब देने वाला, व्याख्या करने वाला (कानून आदि की)

प्रतिवचन—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तर प्रत्युत्तर, जवाब।

प्रतिवर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) वापस लौटना।

प्रतिवर्ष—(संज्ञा, पु०) प्रत्येक वर्ष।

प्रतिवस्तु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह वस्तु विशेष जो उसी रूप आदि में दूसरी वस्तु से मिलती जुलती हो, सदृश वस्तु, उपमान।

प्रतिवस्तूपमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमें पृथक् वाक्यों में उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का कथन हो।

प्रतिवाक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तर प्रत्युत्तर।

प्रतिवाद—(संज्ञा, पु०, सं०) खंडन, विरोध, विवाद, वह बात जो किसी मत या विपक्षी को झूठा सिद्ध करने के लिये कही जाय।

प्रतिवादी—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रतिवादिन्] खंडन या प्रतिवाद करने वाला, उत्तरदाता, प्रतिपक्षी, वादी का विरोधी।

प्रतिवाधक—(संज्ञा, पु०, सं०) निवारक, प्रतिबंधक, वाधक या विघ्नकारी।

प्रतिवास—(संज्ञा, पु०, सं०) पड़ोस, निकटनिवास, समीप वास।

प्रतिवासर—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिदिन।

प्रतिवासी—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रतिवासिन्] परोसी (ग्रा०) पड़ोसी, पड़ोस का वासी।

प्रतिविधान—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिक्रिया, प्रतीकार, निवारण, उपाय।

प्रतिविम्ब—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिच्छाया, परछाँही, प्रतिमा, प्रतिकृति, प्रतिमूर्त्ति। [**प्रतिबिंबित** (वि०)]

प्रतिवेश—(संज्ञा, पु०, सं०) घर के सामने का घर, पड़ोस।

प्रतिवेशी—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रतिवेशिन्] पड़ोसी।

प्रतिशब्द—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिध्वनि। "गुहा-निबद्धा प्रतिशब्द दीर्घम्"—रघु०।

प्रतिशोध—(संज्ञा, पु०, सं०) बदला, पलटा। [**प्रतिशोधक, प्रतिशोधी** (वि०)]।

प्रतिश्याय—(संज्ञा, पु०, सं०) श्लेष्मा, जुकाम।

प्रतिश्रव—(संज्ञा, पु०, सं०) अंगीकार, स्वीकार, प्रतिज्ञा, निश्चित कथन।

प्रतिश्रुत—(वि०, सं०) प्रतिज्ञा या स्वीकृत किया हुआ।

प्रतिषिद्ध—(वि०, सं०) जिसके लिए रोक-टोक या मनाही की गई हो।

प्रतिषेध—(संज्ञा, पु०, सं०) निषेध, रोक-टोक, मनाही, खंडन, एक अर्थालंकार, जिसमें किसी प्रसिद्ध अन्तर या निषेध का ऐसा उल्लेख हो कि उससे कोई विशेष अर्थ प्रकट हो। "हरिविप्रतिषेधं तम् आचचक्षे विचक्षणः"—माघ०। [**प्रतिषिद्ध, प्रतिषेधक** (वि०)]।

प्रतिष्क—(संज्ञा, पु०, सं०) दूत।

प्रतिष्ठ—(वि०, सं०) ख्यात, प्रसिद्ध।

प्रतिष्ठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्थापना, (देव-प्रतिमादि का) गौरव, मान-मर्यादा, कीर्ति, सत्कार, आदर, व्रत का उद्यापन, एक छंद, चार वर्णों का वृत्त (पिं०)।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) सम्मान-पत्र, सनद, सार्टीफिकेट (अं०)।

प्रतिष्ठान—(संज्ञा, पु०, सं०) बैठाना, रखना, स्थापित या प्रतिष्ठित करना, एक नगर।—**पुर**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन नगर जो गंगा-यमुना के संगम पर आजकल के भूँसी के पास था, गोदावरी-तट पर एक नगर (प्राचीन)।

प्रतिष्ठापन—(संज्ञा, पु०) प्रतिष्ठित या स्थापित करने का कार्य, पद पर आसीन करना।

प्रतिष्ठापित—(वि०, सं०) जिसको प्रतिष्ठित बनाया जाय या स्थापित किया जाय।

प्रतिष्ठावान—(वि०, सं०) मान-प्रतिष्ठावाला, गौरवशाली।

प्रतिष्ठित—(वि०, सं०) आदर-सत्कार प्राप्त, स्थापित किया हुआ, सम्मानित।

प्रतिसंख्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चेतना, सम्यक् ज्ञान।

प्रतिसंधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दो युगों की सन्धिकाल, वियोग, पुनर्जन्म, पुनर्योग।

प्रतिसंहार—(संज्ञा, पु०, सं०) लपेटना, समेट लेना, त्यागना, दूर रहना (किसी वस्तु के)।

प्रतिसीरा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) परदा।

प्रतिस्पर्द्धा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लाग-डाँट, चढ़ा-ऊपरी, दूसरे से किसी कार्य में आगे बढ़ने का यत्न या इच्छा।

प्रतिस्पर्द्धी—(संज्ञा, पु०) (सं० प्रतिस्पर्द्धिन्) बराबरी या मुकाबला करने वाला।

प्रतिहत—(वि०, सं०) निराश, प्रतिरुद्ध, निराकृत। "प्रतिहत भये देखि सब राजा"—[रामा०]।

प्रतिहार—(संज्ञा, पु०, सं०) ड्योढ़ी, द्वार, दरवाजा, द्वारपाल, ड्योढ़ीवान, नकीब, चोबदार, छड़िया, समाचारादि देने वाला राजकर्मचारी (प्राचीन)।

प्रतिहारी—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रतिहारिन्] ड्योढ़ीवान, द्वारपाल, [**प्रतिहारिणी, (स्त्री०)**]।

प्रतिहास—(संज्ञा, पु०) हँसने के उत्तर हँसना।

प्रतिहिंसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बदला लेना, बैर चुकाना, प्रतिशोध [**प्रतिहिंसक** (वि०)।

प्रतिहित—(वि०, सं०) रखा हुआ, जमाया हुआ।

प्रतीक—(संज्ञा, पु०, सं०) चिन्ह, पता, मुख, रूप, आकृति, प्रतिरूप, स्थानापन्न, प्रतिमा, व्याख्या मे किसी श्लोकादि का उद्धृत एक अंश या चरण।

प्रतीकार—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिकार, बदला, निवारण, चिकित्सा।

प्रतीकाश—(संज्ञा, पु०, सं०) तुल्य, समान, सदृश, तुलना, उपमा।

प्रतीकोपासना—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) किसी विशेष वस्तु में ईश्वर की भावना से उसे पूजना मूर्ति-पूजा।

प्रतीक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) राह देखने वाला।

प्रतीक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी कार्य के होने या किसी के आने की राह या बाट देखना, प्रत्याशा, औसेरे करना, ठहरे रहना, आसरा। [**प्रतीक्षमाण** (वि०)]।

प्रतीची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पश्चिम दिशा [**प्राची** (विलो०)]।

प्रतीचीन—(वि०, सं०) पश्चिम दिशा मे उत्पन्न या स्थित, हाल का, [**अर्वाचीन, प्राचीन** (विलो०)]।

प्रतीच्य—(वि०, सं०) पश्चिमी । [**प्राच्य**—(विलो०)।

प्रतीत—(वि० सं०) विदित, ज्ञात, प्रसिद्ध, आनन्द, प्रसन्न।

प्रतीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विश्वास, ज्ञान, प्रसन्नता । मोहिं अतिशय प्रतीति जिय केरी"। —[रामा०]

प्रतीप—(संज्ञा, पु०, सं०) महाराज शान्तनु के पिता, एक अर्थालंकार जिसमें उपमान को ही उपमेय बनाते या उपमेय से उपमान को तिरस्कृत सा दिखाते हैं—अ० पी०] (वि०) प्रतिकूल, विपरीत, आशा से विरुद्ध। "प्रतीपभूपैरिव किं ततो मिया"—[नैष०] ।—**वचन**-(पु०) खंडन ।

प्रतीयमान—(वि०, सं०) प्रतीत या ज्ञात होता हुआ, जान पड़ता हुआ।

प्रतीहार—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिहार, ड्योढ़ी।

प्रतीहारी—(संज्ञा, पु०, सं०) द्वारपाल, नकीब ड्योढ़ीवान, चोबदार, छड़िया, प्रतिहारी।

प्रतुद—(संज्ञा, पु०, सं०) चोंच से तोड़ कर भक्ष्य खाने वाले पक्षी।

प्रतोद—(संज्ञा, पु०, सं०) चाबुक, पैना, साम-गान विशेष। "परिणत हो रहा था पवन-प्रतोद में" —(मैथिली०)।

प्रतोली—(संज्ञा, पु०, सं०) किले या दुर्ग का द्वार, रास्ता, गली, चौड़ी सड़क, राजमार्ग।

प्रत्न—(वि०, सं०,) प्राचीन, पुरातन।

प्रत्नतत्व—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुरातत्व।

प्रत्यंग—(संज्ञा, पु०, सं०) गौण अंग । अध्याय, परिच्छेद, अस्त्र । (अ०) हरेक अंग मे, अंग-अंग मे।

प्रत्यंचा†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रतञ्चिका] धनुष की डोरी या ताँत, चिल्ला (प्रान्तो०)।

प्रत्यंत—(वि०, सं०) जो अति निकट हो। (पु०) सीमा।—**पर्वत**-(पु०) किसी विशाल पर्वत के निकट का छोटा पहाड़।

प्रत्यक्ष—(वि०, सं०) इन्द्रियों और उनके अर्थों से होने वाला निश्चयात्मक ज्ञान, आँखों के आगे या सामने, इन्द्रियों से ज्ञात, [प्रतच्छ, परतच्छ (दे०)] (संज्ञा, पु०) चार प्रमाणों मे से एक प्रमाण (न्या०) [**प्रत्यक्षता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**ज्ञान**-(पु०) साक्षात्कार ज्ञान ।—**दर्शी**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० प्रत्यक्षदर्शिन] प्रत्यक्ष रूप मे अपनी आँखों से देखने वाला, साक्षी, गवाह ।—**निर्वाचन**-(पु०) मतदाताओं द्वारा ही होनेवाला सदस्यों का चुनाव। [डाइरेक्ट एलेक्शन]—**प्रमाण**-(पु०) साक्षात्कार ज्ञानरूप प्रमाण ।—**फल**-(वि०) साक्षात फल देने वाला ।—**वादी**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० प्रत्यक्षवादिन्] अन्य प्रमाणों को न मान कर केवल प्रत्यक्ष प्रमाण ही को मानने वाला व्यक्ति । [**प्रत्यक्षवाद** (संज्ञा, पु०, यौ०)], [**प्रत्यक्षवादिनी** (स्त्री०)] ।—**सिद्ध**-(वि०) जो साक्षात प्रमाण द्वारा सिद्ध हो।

प्रत्यक्षीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) साक्षात्कार, स्पष्टीकरण।

प्रत्यक्षीकृत—(वि०, सं०) आँखों देखा हुआ, जिसका भोग इन्द्रियों द्वारा किया जा चुका हो।

प्रत्यक्षीभूत—(वि०, सं०) जो प्रत्यक्ष या स्पष्ट हो गया हो।

प्रत्यग्र—(वि०, सं०) नूतन, नवीन, शुद्ध, अभिनव बोधित।

प्रत्यनीक—(संज्ञा, पु०, सं०) बैरी, विरोधी, प्रतिपक्षी, एक अर्थालङ्कार जिसमे किसी के सम्बन्धी या पक्षवाले के प्रति हित या अहित के करने का कथन हो—(अ० पी०)

प्रत्यपकार— संज्ञा, पु०, सं०) अपकार के बदले अपकार [**प्रत्युपकार**—(विलो०)]।

प्रत्यभिज्ञा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्मृति की सहायता से उत्पन्न ज्ञान ।—**दर्शन**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक दर्शन जिसमे महेश्वर ही परमेश्वर मान गये है, महेश्वर सम्प्रदाय।

प्रत्यभिज्ञान—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्मृति-द्वारा होने वाला ज्ञान [**प्रत्यभिज्ञात** (वि०)]।

प्रत्यभियोग—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रत्यपराध, अपराध पर अपराध, अपराधी होकर फिर अपराध करना।

प्रत्यभिलाष—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिलाष पर अभिलाष, पुनरभिलाषा।

प्रत्यभिवाद, प्रत्यभिवादन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रणाम के करने पर दिया गया आशीर्वाद।

प्रत्यय—(संज्ञा, पु०, सं०) निश्चय, विश्वास, विचार, ज्ञान, शपथ, अधीन, हेतु, आचार, छिद्र

बुद्धि, प्रमाण, व्याख्या, प्रसिद्धि, प्रख्याति, लक्षण, आवश्यकता, चिन्ह, निर्णय, सम्मति, छन्दों के भेद और उनकी संख्या जानने की ६ रीतियाँ (पिं०) वे वर्ण या वर्ण समूह जो किसी धातु या अन्य शब्द के अन्त में उसके अर्थ में कुछ विशेषता लाने को लगाये जाते हैं (व्या०)।

प्रत्यमित—(वि०, सं०) विश्वस्त।

प्रत्यर्थी—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रति+अर्थिन्] वैरी, शत्रु, प्रतिवादी।

प्रत्यर्पण—(वि०, सं०) पुनर्दान, लौटाना। सौंपना (अपराधियों को उनके राज्य को लौटाना) [इक्स-ट्रेडीशन]

प्रत्यवसित—(वि०, सं०) खाया हुआ, भुक्त जो पुनः अपनी पुरानी स्थिति को अपना चुका हो।

प्रत्यवाय—(संज्ञा, पु०, सं०) पाप, दोष, अपराध, अनिष्ट, विघ्न, व्याघात।

प्रत्यवेक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) देखभाल, निगरानी, किसी प्रश्न के उठने पर उसकी पूर्व स्थिति पर विचार करना।

प्रत्यह—(अव्य, सं०) प्रतिदिन।

प्रत्याख्यान—(संज्ञा, पु०, सं०) निरसन, निराकरण, खण्डन, अस्वीकार।

प्रत्यागत—(वि०, सं०) जाकर लौटा हुआ, आया हुआ। "कर्मभूमि के निकट विरागी को प्रत्यागत पाकर"—'दिनकर'।

प्रत्यागम—(संज्ञा, पु०) वापस लौट आना।

प्रत्यागमन—(संज्ञा, पु०, सं०) आकर फिर आना, वापस लौट आना, दोबारा आना।

प्रत्यादेश—(संज्ञा, पु०, सं०) निरसन, निराकरण, खण्डन, देवता की आज्ञा, उपदेश, देववाणी, परामर्श।

प्रत्यालीढ—(संज्ञा, पु०, सं०) धनुष चलाने में बैठने का एक ढंग।

प्रत्यावर्त्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) लौट आना। प्रत्यावर्त्तन के पथ मे···"—'प्रसाद'।

प्रत्याशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अभिलाषा, आशा, विश्वास, भरोसा, प्रतीक्षा।

प्रत्याशी—(वि०) [सं० प्रत्याशिन्] अभिलाषी, आकांक्षी, भरोसे वाला।

प्रत्यासन्न—(वि०, सं०) निकटवर्त्ती, समीपस्थ, समीप रहने वाला। "प्रत्यासन्नेऽपि-मरणेऽपि" —स्फुट।

प्रत्याहार—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्रिय-निग्रह, इन्द्रियों को उनके विषयों से हटाकर चित्त का अनुसरण (अष्टांग योग), व्याकरण मे अक्षरों का संक्षेप रूप।

प्रत्युक्त—(वि०, सं०) उत्तर द्वारा जिसका खण्डन किया जाय, जिसका जवाब दिया गया हो।

प्रत्युक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जवाब, उत्तर।

प्रत्युत—(अव्य०, सं०) बल्क, बरु (ग्रा०)। वरन्, बल्कि, इसके विपरीत।

प्रत्युत्तर—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तर पाने पर दिया हुआ उत्तर, उत्तर का उत्तर। [**उत्तर प्रत्युत्तर** (यौ०)]।

प्रत्युत्पन्न—(वि०, सं०) जो फिर से या ठीक समय पर उत्पन्न हो, प्रस्तुत। **—मति**-(यौ०) तत्पर-ज्ञानी, तत्पर बुद्धि वाला, तत्कालिक, बुद्धि, तुरन्त उपयुक्त बात या काम सोचने वाला।

प्रत्युपकार—(संज्ञा, पु०, सं०) उपकार के बदले में किया गया उपकार। [**प्रत्युपकारी, प्रत्युपकारक** (वि०)]

प्रत्यूष—(संज्ञा, पु०, सं०) सवेरा, तड़का।

प्रत्यूह—(संज्ञा, पु०, सं०) विघ्नबाधा, आपद, अटकाव, रुकावट।

प्रत्येक—(वि०, सं०) बहुतों में से हर एक, अलग-अलग, पृथक्-पृथक्।

प्रथम—(वि०, सं०) पहला, अव्वल, पूर्व, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम। (क्रि० वि०, सं०) आगे, पहिले। (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रथम पुरुष परमेश्वर, व्याकरण के पुरुषवाची सर्वनाम में उत्तम पुरुष। **—ज**-(संज्ञा, पु०, सं०) जेठा, बड़ा। **—पुरुष**-(पु०) वह व्यक्ति जिसके बारे में कुछ कथन हो। **—यौवन**-(पु०) उभरती हुई जवानी। **—विरह**-(पु०) प्रथम वियोग।

प्रथमतः—(क्रि० वि०, सं०) पहले, सबसे से पहले, प्रथम बार। "प्रथमतः पठनं कठिनं महा।"

प्रथमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मदिरा, (तान्त्रिक) प्रथम या कर्त्ताकारक (व्या०)।

प्रथमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पृथ्वी (सं०)।

प्रथमोदित—(वि०, सं०) पहले कहा हुआ।

प्रथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चलन, व्यवहार, चाल, रीति, नियम, प्रणाली, रिवाज, सिस्टम।

प्रथित—(वि०, सं०) विदित, प्रसिद्ध।

प्रथी‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पिरथी, पृथ्वी, (सं०) ।

प्रथु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पृथु] पृथु, विष्णु । (वि०) बड़ा, मोटा, पीन, स्थूल ।

प्रद—(वि०, सं०) दाता, दानी, उदार, देने वाला । (यौ०) में—**सुखप्रद** ।

प्रदच्छिन, प्रदच्छिना—(संज्ञा, पु०, स्त्री०) [**प्रदक्षिण, प्रदक्षिणा** (दे०, सं०)] परिक्रमा, किसी के चारों ओर घूमना ।

प्रदक्षिण, प्रदक्षिणा—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, सं०) किसी देवता (देव-मूर्त्ति) या महापुरुष के चारों ओर घूमना, परिक्रमा, परिक्रमण ।

प्रदत्त—(वि०, सं०) दिया हुआ ।

प्रदर—(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्रियों का प्रमेह रोग जिसमें गर्भाशय से श्वेत या लाल लसोला सा पानी गिरता है । (वैद्य०)

प्रदप—(संज्ञा, पु०, सं०) बहुत ज्यादा अभिमान या घमंड ।

प्रदर्शक—(संज्ञा, पु०, सं०) दिखलाने या देखने वाला, दर्शक ।

प्रदर्शन—(संज्ञा, पु०, सं०) दिखलाने का कार्य । [**प्रदर्शनीय** (वि०)]

प्रदर्शनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह स्थान जहाँ लोगों को दिखलाने के हेतु भाँति भाँति की वस्तुएँ रक्खी जावें, नुमाइश । "तीर्थराज की पावन यात्रा प्रदर्शनी-दर्शन के साथ"—मैथि० । [एक्जीबीशन]

प्रदर्शित—(वि०, सं०) जो दिखलाया गया हो, दिखलाया हुआ ।

प्रदल—(संज्ञा, पु०, सं०) बाण, तीर, शर ।

प्रदाता—(वि०) [सं० प्रदातृ] देने वाला दानी ।

प्रदान—(संज्ञा, पु०, सं०) दान, विवाह, देना, भेंट ।

प्रदायक—(संज्ञा, पु०, सं०) देने वाला, दानी, दाता । [**प्रदायिका** (स्त्री०)]

प्रदायी—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रदायिन्] प्रदायक, देनेवाला, दाता, दानी । [**प्रदायिनी** (स्त्री०)]

प्रदाह—(संज्ञा, पु०, सं०) शारीरिक जलन ।

प्रदिशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विदिशा, कोन ।

प्रदिष्ट—(वि०, सं०) दिखाया या बताया हुआ, नियत किया हुआ ।

प्रदीप—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश, दीपक, दिया ।

प्रदीपक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाशक, दीपक, दिया । [**प्रदीपिका** (स्त्री०)]

प्रदीपति*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रदीप्ति] प्रकाश, उजेला, कांति, चमक, ज्योति, आभा ।

प्रदीपन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश या उजाला (उज्ज्वल) करना, चमकाना ।

प्रदीप्त—(वि०, सं०) प्रकाशवान, रोशन, जगमगाता हुआ, चमकीला ।

प्रदीप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रकाश, उजेला, चमक, आभा, कांति, प्रभा ।

प्रदुमन—*(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रद्युम्न] प्रद्युम्न, श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ पुत्र ।

प्रदेय—(वि०, सं०) दान देने योग्य । "किं वस्तु विद्वन् गुरुवे प्रदेयं"—रघु० ।

प्रदेश—(संज्ञा, पु०, सं०) अपनी पृथक् रीति-रस्म भाषा तथा शासन विधि वाला देश भाग, सूबा, प्रांत, स्थान, अवयव, अंग । प्राविंस

प्रदेशनी, प्रदेशिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तर्जनी नामक अंगुली ।

प्रदेशीय—(वि०, सं०) प्रदेश सम्बन्धी । प्रान्त सम्बन्धी, प्रदेशका । [प्राविंशियल]

प्रदोष—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्यास्त या सायंकाल, सध्या, त्रयोदशी का व्रत जिसमें संध्या को शिव-पूजन कर खाते हैं, बड़ा अपराध या दोष । [**प्रदोषा** (स्त्री०)] रात्रि ।

प्रद्युम्न—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव, श्री कृष्ण के ज्येष्ठ पुत्र, [प्रदुमन (दे०)] ।

प्रद्योत—(संज्ञा, पु०, सं०) रश्मि, किरण, दीप्ति, कांति, आभा, प्रभा ।

प्रद्योतन—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, दीप्ति, चमक ।

प्रधान—(वि०, सं०) मुख्य । (संज्ञा, पु०, सं०) सरदार, मुखिया, मन्त्री, सचिव, सभापति, माया, प्रकृति, [परधान (दे०)] [**प्राधान्य** (संज्ञा, पु०) ।

प्रधानता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रधान का भाव, प्रधान का कार्य्य, धर्म या पद ।

प्रधारणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी विषय विशेष पर अपना ध्यान केन्द्रित रखना ।

प्रधानी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० प्रधान + ई प्रत्य०] प्रधान का कार्य्य या पद ।

प्रधि—(संज्ञा, पु०, सं०) पहिये की धुरी।

प्रधी—(वि०, सं०) उत्कृष्ट या श्रेष्ठ बुद्धि युक्त।

प्रध्वंस—(संज्ञा, पु०, सं०) नाश, विनाश, नष्ट भ्रष्ट। [**प्रध्वंसाभाव** (यौ०)]। [**प्रध्वंसक या प्रध्वंसी** (वि०, पु०)], [**प्रध्वंसिका या प्रध्वंसिनी** (स्त्री०)], [**प्रध्वंसनीय** (वि०)]।

प्रन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रण (सं०)।

प्रनति*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) प्रणति (सं०)।

प्रनमना, प्रनवना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रणमन] प्रणमना, [प्रणाम दे०]।

प्रनाम*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रणाम] प्रणाम, नमस्कार, परनाम।

प्रनामी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रणामी=प्रणामिन्] प्रणाम करने वाला (दे०)। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रणाम+ई प्रत्य०] गुरु, विप्रादि बड़ों को प्रणाम करते समय दी गई दक्षिणा।

प्रनास—(संज्ञा, पु०, दे०] प्रणाश (सं०)।

प्रनासी—(वि०, दे०) [सं० प्रणाशी=प्रणाशिन्] नाशवान, नश्वर, अनित्य। "पिता-पद पावन पाप-प्रनासी"—[रामा०]।

प्रनिपात*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रणिपात] प्रणाम, नमस्कार।

प्रपंच—(संज्ञा, पु०, सं०) ढोंग, आडंबर, भव-जाल, झमेला, झगड़ा, जंजाल, विस्तार, संसार, सृष्टि, छल, [परपंच (दे०)]।—**छल-प्रपंच**-(यौ०) "रचि प्रपंच भूपहि अपनाई" "मोहि न बहु परपंच सुहाहीं"—[रामा०]।—**बुद्धि**-(वि०) धूर्त, चालबाज।—**वचन**-(संज्ञा, पु०) विस्तार के साथ कथन।

प्रपंचित—(संज्ञा, पु०, सं०) विस्तार के साथ व्याख्या करने वाला।

प्रपंची—(वि०) [सं० प्रपंचिन्] ढोंगी, आडंबरी, कपटी। प्रपंच करने वाला, छली, [परपंची (दे०)]।

प्रपत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनन्य भक्ति या शरणागत होने की भावना।

प्रपन्न—(वि० सं०) शरणागत, आश्रित, प्राप्त। "प्रपन्नान् पाहिनो प्रभो"—भा० द०।

प्रपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पौसरा, पौसला, प्याऊ।

प्रपाठक—(संज्ञा, पु०, सं०) वेदादि या श्रौत ग्रन्थों के अध्यायों का एक भाग।

प्रपात—(संज्ञा, पु०, सं०) पर्वतों का पार्श्व या किनारा, ऊँचे से गिरती जल-धार, दरी, झरना, सहसा नीचे गिरना।

प्रपितामह—(संज्ञा, पु०, सं०) परदादा, परमेश्वर, परब्रह्म। [**प्रपितामही** (स्त्री०)]।

प्रपितृव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चचेरा परदादा।

प्रपीड़न—(संज्ञा, पु०, सं०) अत्यन्त कष्ट देना। [**प्रपीड़क** (संज्ञा, पु०)], [**प्रपीड़ित, प्रपीड़नीय** (वि०)]।

प्रपुंज—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, झुंड।

प्रपुत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) पुत्र का पुत्र, पोता।

प्रपुना—(संज्ञा, पु०, दे०) पुनर्णवा (सं०) एक औषधि, पुनर्नवा।

प्रपूरित—(वि० सं०) अच्छी तरह से पूरा भरा हुआ।

प्रपौत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) परपोता, पुत्र का पोता, पोते का लड़का। [**प्रपौत्री** (स्त्री०)]।

प्रफुड़ना, प्रफुलना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रफुल्ल] फूलना, खिलना, प्रसन्न होना।

प्रफुला*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रफुल्ल] कमलिनी, कुमुदनी, कुई, कमल।

प्रफुलित*—(वि०, दे०) [सं० प्रफुल्ल] फूला या खिला हुआ, कुसुमित, विकसित, प्रसन्न।

प्रफुल्ल—(वि०, सं०) खिला, विकसित या फूला हुआ, आनंदित, प्रसन्न, पुष्पयुक्त। [**प्रफुल्लता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

प्रफुल्लित—(वि० सं०) विकसित, खिला या फूला हुआ, [प्रफुलित (दे०)]।

प्रबंध—(संज्ञा, पु०, सं०) निबन्ध, क्रमबद्ध लेख या काव्य, उपाय, आयोजन, बंदोबस्त, योजना, मजमून, व्यवस्था, बंधान। [**प्रबंधक** (वि०)], [**प्रबंधकर्त्ता** (यौ०)] (पु०) प्रबन्ध करने वाला।—**कल्पना**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सत्या-सत्य कथा, तथ्यातथ्य कल्पित निबन्ध।—**कारिणी**-(वि०) कार्यकारिणी समिति।—**काव्य**-(पु०) वह काव्य जिसमें जीवन का क्रमबद्ध चित्रण हो। [एपिक पोयम]

प्रबंधक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रबंधकर्त्ता। [मैनेजर]

प्रबर—(संज्ञा, क्रि०, सं०) अति श्रेष्ठ।

प्रबल—(वि०, सं०) महान्, अति बली, प्रचंड, उग्र, घोर । [**प्रबला** (स्त्री०)], [**प्राबल्य** (संज्ञा, पु०)], [**प्रबलता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

प्रबाल—(संज्ञा, सं०) विद्रुम, मूँगा ।

प्रबुद्ध—(वि०, सं०) पंडित, ज्ञानी, खिला हुआ, जगा हुआ, सचेत । [**प्रबुद्धता** (संज्ञा, स्त्री०)]

प्रबोध—(संज्ञा, पु०, सं०) [परबोध (दे०)] जागना, पूर्ण बोध या ज्ञान, समझाना, चेतावनी, तसल्ली, सान्त्वना । [**प्रबोधक प्रबोधित** (वि०)] ।

प्रबोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) जागना, जगाना, जताना, समझाना, सांत्वना, ज्ञान देना, ज्ञान, यथार्थ बोध, चेताना, चेत, सावधान करना । [**प्रबोधनीय, प्रबोधित** (वि०)] ।

प्रबोधना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रबोधन] नींद से जगाना या उठाना, सचेत करना, जताना, सिखाना, समझाना-बुझाना, सान्त्वना देना, पाठ पढ़ाना, [पूरबोधना (दे०)] । "लगे प्रबोधन जानकिहिं"—[रामा०] ।

प्रबोधिता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक वर्ण वृत्ति, मंजुभाषिणी, (पिं०), प्रियंवदा, सुनंदिनी ।

प्रबोधिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कार्तिक शुक्ला देवोत्थान एकादशी । (वि०, स्त्री०) प्रबोध देने वाली ।

प्रभंजन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रबल वायु, आँधी, नाश, तोड़फोड़, नष्ट-भ्रष्ट । [**प्रभंजनीय, प्रभंजक** (वि०)] "प्रबल वेग प्रभंजन आदि से"—हरि० ।—**जाया**-(संज्ञा, स्त्री०, वि०, सं०) वायु-पत्नी । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रभंजन] हनुमान, भीमसेन, प्रभंजनजात । "कीन्हेउ विरथ प्रभंजन जाया"—[रामा०] ।—**सुत**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हनुमान् जी, भीमसेन, प्रभंजनात्मज ।

प्रभद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) नीम का पेड़ ।

प्रभद्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्ण वृत्त । (पिं०) [**प्रभद्रिका** (स्त्री०)] ।

प्रभव—(संज्ञा, पु०, सं०) एक संवत्सर (ज्यो०) उत्पत्ति का हेतु, जन्मस्थान, सृष्टि, उत्पत्ति, जन्म, पराक्रम, आकर । " क सूर्य प्रभवो वंशः "—(रघु०) ।

प्रभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कांति, आभा, प्रकाश, प्रतिभा, सूर्य की एक स्त्री, कुबेर की पुरी, एक गोपी, एक द्वादशाक्षर वृत्त (पिं०), मदाकिनी । —**कर**-(संज्ञा पु०, सं०) सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, सागर, विभाकर ।—**कीट**-(संज्ञा, पु०, यौ०, स०) जुगनू ।

प्रभाउ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रभाव] देखिए—प्रभाव ।

प्रभात—(संज्ञा, पु०, सं०) सवेरा, तड़का, परभात (दे०) ।—**समय**-(पु०) प्रातःकाल का समय ।—**फेरी**-(स्त्री०) [हि०] किसी विशेष उत्सव आदि के अवसर पर प्रातःकाल नारे लगाते हुए जुलूस बनाकर घूमना ।

प्रभाती—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० प्रभात] सवेरे या तड़के गाने का एक गीत, परभाती (दे०) ।

प्रभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) शक्ति, बल, असर, सामर्थ्य, यथेष्ट कार्य करने-कराने का अधिकार, दबाव, उद्भव, माहात्म्य, महिमा, महत्ता, [परभाव (दे०)] । "मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे"—[रामा०] ।—**शाली**-(वि०) अधिक प्रभाववाली ।

प्रभावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सूर्य की एक स्त्री, १३ वर्णों का एक छंद, रुचिरा (पिं०) एक दैत्य-कन्या । (वि० स्त्री०) प्रभा या प्रभाववाली ।

प्रभाववान्—(वि०, सं०) शक्तिवान्, प्रतापी ।

प्रभावान्वित—(वि०, सं०) प्रभाव से युक्त, प्रभावित ।

प्रभावित—(वि०, सं०) जिस पर असर या प्रभाव पड़ा हो ।

प्रभास—(संज्ञा, पु०, सं०) कांति, प्रकाश, ज्योति, दीप्ति, सोम नामक एक प्राचीन तीर्थ ।

प्रभासना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रभासन] भासित या प्रकाशित होना, दिखाई या समझ पड़ना । [**प्रभासन** (संज्ञा पु०)] ।

प्रभु—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वामी, नायक, अधिपति, परमेश्वर, प्रभू, परभू (दे०) ।

प्रभुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महत्त्व, वैभव, साहिबी, शासनाधिकार, हुकूमत, ऐश्वर्य । "प्रभुता पाय काहि मद नाहीं"—[रामा०] ।

प्रभुताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रभुता] महत्व, वैभव, ऐश्वर्य, साहिबी । "मैं जानी तुम्हारि प्रभुताई"—[रामा०] ।

प्रभुत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रभुता, प्रभुताई ।

प्रभू*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रभु] प्रभु ।

प्रभूत—(वि०, सं०) उत्पन्न, उद्भूत, प्रचुर, अधिक, उन्नत । (संज्ञा, पु०) पंचभूत, पंचतत्त्व ।

प्रभूतत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रचुरता, राशि ।

प्रभूति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रभाव, उत्पत्ति, उन्नति, प्रचुरता, बहुलता ।

प्रभृति—(अव्य, सं०) इत्यादि, आदि ।

प्रभेद—(संज्ञा, पु०, सं०) अलगाव, भिन्नता, अन्तर, भेद, गुप्त बात ।

प्रभेदक—(वि०, सं०) चीरने-फाड़ने वाला, अंतर करने वाला ।

प्रभेव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रभेद] प्रभेद ।

प्रमत्त—(वि०, सं०) पागल, नशे में चूर, मतवाला, मस्त, बदहवास । (संज्ञा, हि० प्रमत्तता ।—**गीत**-(पु०) नशे की स्थिति में गाया हुआ गीत ।—**चित्त** (वि०) लापरवाह, बेपरवाह ।

प्रमथ—(संज्ञा, पु०, सं०) मंथन या पीड़ित करने वाला, शिव के गण या सेवक । "भृंगी फूँकि प्रमथ गन टेरे"—[रामा०] ।—**गण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिव के सेवक ।—**नाथ**, —**पति**, **प्रमथाधिप**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिव, प्रमथेश ।

प्रमथन—(संज्ञा, पु०, सं०) वध या नाश करना दुखी करना, मथना, प्रमंथन । [**प्रमथनीय** (वि०)] ।

प्रमथित—(वि०, सं०) मथा हुआ, जिसे तकलीफ दी गयी हो, रौंदा हुआ, कुचला हुआ ।

प्रमद—(संज्ञा, पु०, सं०) हर्ष प्रसन्नता, मस्ती, मतवालापन, प्रमत्तता । (**वि०**) मस्त, मतवाला ।

प्रमदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) युवती । (वि०, स्त्री०) मस्त । "प्रमदा प्रमदाऽमहता महता"—भट्टी० ।

प्रमदन—(सं०, पु०, सं०) भली भाँति मलने, रौंदने, कुचलने का कार्य । अति मर्दनकर्त्ता ।

प्रमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यथार्थ बोध, शुद्ध ज्ञान (न्याय), माप, नाप ।

प्रमाण, प्रमान—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी बात को सिद्ध करने वाली बात, सबूत । एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी का चमत्कृत कथन हो, सत्यता का साधन, सम्मान, निश्चय का हेतु, प्रतीति, मानने योग्य बातें, माननीय बात या वस्तु, मान, मर्यादा, प्रामाणिक बात, इयत्ता, सीमा ।—**पुष्ट**-(वि०) प्रमाण द्वारा समर्थित । (वि०) ठीक, सत्य, सिद्ध, बड़ाई आदि मे समान, चरितार्थ प्रमाणित ।—**कोटि**-(स्त्री०) उन बातो या पदार्थों का घेरा जो प्रमाण हों ।—**पत्र**-(पु०) कागज-पत्र जो प्रमाण के रूप में उपस्थित किये जा सकें । लेख-पत्र, सनद, सर्टीफिकेट (अं०) । (अव्य) तक, पर्य्यंत । "सत जोजन प्रमान लै धाऊँ"—[रामा०] ।—**शास्त्र**-(संज्ञा, पु०) तर्कशास्त्र, न्यायशास्त्र ।—**सूत्र**-किसी वस्तु विशेष को नापने की डोरी ।

प्रमाणना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रमाण + ना प्रत्य०] [प्रमानना (दे०)] प्रमाण मानना, ठीक समझना ।

प्रमाणिक—(वि०, दे०) [सं० प्रामाणिक] मानने योग्य, प्रमाणों-द्वारा सिद्ध, सत्य, ठीक ।

प्रमाणिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आठ अक्षरों का एक वर्ण वृत्तात्मक छंद, 'नगस्वरूपिणी' भी इसका एक नाम है "जरा लगौ प्रमाणिका"—(पिं०) ।

प्रमाणित—(वि०, सं०) साबित, निश्चित, ठीक, प्रमाणों से सिद्ध, प्रमाणपुष्ट ।

प्रमाता—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रमातृ] प्रमाणों द्वारा सिद्ध करने वाला, साबित करने वाला । प्रमा का ज्ञानी, ज्ञानकर्त्ता, आत्मा या चेतन जीव, साक्षी, द्रष्टा, प्रमायुक्त । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) पिता की माता, दादी ।

प्रमातामह—(संज्ञा, पु०, स०) मातामह या नाना के पिता, परनाना । [**प्रमातामही** (स्त्री०)]

प्रमाथ—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रमथन, बलपूर्वक हरण, बलात्कार, विलोड़न, शिव का अथवा शिव के पुत्र षडानन का सेवक । धृतराष्ट्र के पुत्रों मे से एक । [**प्रमाथना** (क्रि० स०, दे०)] ।

प्रमाथी—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रमाथिन्] पीड़न-कर्त्ता, मारने या मथने वाला, देह और इन्द्रियों को दुख पहुचाने वाला ।

प्रमाद—(संज्ञा, पु०, सं०) भ्रम, भूल, धोखा, बेहोशी, असावधानी, समाधि के साधनों को ठीक न जान उनको भावना से उदासीनता (योग) । "राजन् ! प्रमादेन निर्जन लंकाम्"—भट्टी० ।

प्रमादिक—(वि०, सं०) भ्रमात्मक, भूलचूक करने वाला, भ्रमीभूत । [**प्रमादिका** (स्त्री०)] ।

प्रमादित—(वि०, सं०) हेय या नीच समझा हुआ, तिरस्कृत ।

प्रमादी—(वि०)[सं० प्रमादिन्] प्रमादयुक्त, भूल करने वाला, असावधान, नशेबाज । [**प्रमादिनी** (स्त्री०)] ।

प्रमान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रमाण] प्रमाण ।

प्रमानना—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रमाण + ना प्रत्य०] प्रमाण प्रमानना, साबित या निश्चित

करना, स्थिर करना। "सरस बखानै हम वचन प्रमानै आज"।

प्रमानी*—(वि०, दे०) [सं० प्रामाणिक] मानने या प्रमाण के योग्य, माननीय।

प्रमापक—(वि०, सं०) प्रमाणित करने वाला। (पु०) प्रमाण।

प्रमार्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) धोना, पोंछना, साफ करना।

प्रमित—(वि०, सं०) ज्ञात, विदित, निश्चित, थोड़ा, परिमित।

प्रमिताक्षरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक द्वादशाक्षर वर्णिक वृत्त (पिं०)।

प्रमिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सत्यबोध या ज्ञान।

प्रमीला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शिथिलता, ग्लानि, तंद्रा, थकावट।

प्रमुख—(वि०, सं०) प्रधान, श्रेष्ठ, प्रथम, प्रतिष्ठित, अगुआ, माननीय। (अव्य०) इत्यादि।

प्रमुदित—(वि०, सं०) प्रसन्न, हर्षित।—**वदना**—(स्त्री०) एक द्वादशाक्षर छंद, मंदाकिनी (पिं०)। (वि०, स्त्री०) प्रसन्नमुखी।

प्रमेय—(वि० सं०) प्रमाण का विषय या साध्य, प्रतिपादन करने-योग्य, जो प्रमाण द्वारा सिद्ध हो सके, निर्धारणीय, जिसका मान कहा जा सके। (संज्ञा, पु०) प्रमाणद्वारा बोधनीय।

प्रमेह—(संज्ञा, पु०, सं०) एक रोग जिसमें मूत्र-द्वारा शरीर का क्षीण धातु या शुक्र निकलता है।

प्रमोद—(संज्ञा, पु०, सं०) आनन्द, हर्ष। "प्रमोद नृत्यैः सह वारयोषिताम्"—[रघु०]।

प्रमोदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि (सांख्य०)।

प्रमोदित—(वि०, सं०) प्रसन्न, प्रमोद से युक्त।

प्रमोह—(संज्ञा, पु०, सं०) मोह, जड़ता, मूर्च्छा—**चित्त**-(वि०) हतबुद्धि।

प्रमोहन—(संज्ञा, पु०, सं०) मोहित करना, वह शास्त्र जिसके प्रयोग मात्र से शत्रु विवेक-शून्य हो जाय।

प्रमोही—(वि०, सं०) मोहजनक, बुद्धिहीन करने वाला।

प्रयंक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पर्यंक] [**प्रजंक, परजंक** (दे०)] पलंग, शय्या।

प्रयंत*—(अव्य०, दे०) तक, पर्यंत (सं०)।

प्रयत्न—(संज्ञा, पु०, सं०) उद्देश्य-पूर्ति के लिये क्रिया, उपाय, चेष्टा, प्रयास, परिश्रम, वर्णोच्चारण-क्रिया (व्या०), क्रिया (प्राणियों की), जीवों का व्यापार (न्याय०)।—**वान**-(वि०) [सं० प्रयत्नवत्] उपाय करने वाला। **प्रयत्नवती** (स्त्री०)]।

प्रयाग-पराग—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) गंगा जमुना के संगम पर एक तीर्थ, इलाहाबाद—**वाल**-(पु०) प्रयाग का पंडा।

प्रयाण—(संज्ञा, पु०, सं०) यात्रा, प्रस्थान, गमन, युद्ध-यात्रा, हमला, चढ़ाई।—**प्रयाण**-(यौ०) महाप्रस्थान, मोक्ष, मृत्यु।—**काल**-(पु०) प्रस्थान का समय।

प्रयान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रयाण] देखिए—प्रयाण।

प्रयास—(संज्ञा, पु०, सं०) उद्योग, उपाय, प्रयत्न, श्रम। "बिन प्रयास सागर तरहिं नाथ भालु-कपि-धार"—[रामा०]।

प्रयुक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्मिलित, संयोजित, कार्य में प्रचलित, व्यवहृत।

प्रयुत—(संज्ञा, पु०, सं०) दश लाख की संख्या।

प्रयोक्ता—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रयोक्तृ] व्यवहार या प्रयोग करने वाला, ऋणदाता।

प्रयोग—(वि०, सं०) किसी पदार्थ को किसी कार्य में लाना, व्यवहार, साधन, आयोजन, बरता जाना, क्रिया का विधान, मारण, मोहनादि १२ तांत्रिक उपचार, पद्धति, यज्ञादि के अनुष्ठान की बोध-विधि। अभिनय, दृष्टांत, विधि, निदर्शन।

प्रयोगातिशय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रस्तावना का एक भेद (नाट्य०)।

प्रयोगार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रधान कार्य के सिद्धि हेतु किया जानेवाला गौण कार्य।

प्रयोगी, प्रयोजक—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुष्ठान या प्रयोग-कर्त्ता, प्रदर्शक, प्रेरक।

प्रयोजन—(संज्ञा, पु०, सं०) अभिप्राय, अर्थ, हेतु, उद्देश्य, कार्य, आशय, व्यवहार, तात्पर्य, उपयोग, कारण। [**प्रयोजनीय, प्रयोजक, प्रयोजित** (वि०)]। "सरसकाव्य-प्रयोजन है यही।"

प्रयोजनवतीलक्षणा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) प्रयोजन-द्वारा वाच्यार्थ से पृथक् अर्थसूचक लक्षणा (काव्य०)।

प्रयोजनवान—(वि०, सं०) प्रयोजनवाला, उपयोगी। जिसे कोई कारणभूत उद्देश्य हो।

प्रयोजनीय—(वि०, सं०) काय या मतलब का, आवश्यकीय, उपयोगी ।

प्रयोज्य—(वि०, सं०) काय में लान या प्रयोग करन के योग्य ।

प्ररोचना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रुचि या चाह उत्पन्न करना, बढ़ाना, उत्तेजना, नट या सूत्रधारादि का प्रस्तावना के बीच में नाटककार या नाटक का प्रशंसात्मक परिचय देना (नाट्य०) ।

प्ररोह—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रस्फुटित होना । अंकुरित होना, उगना, चढ़ाव, उत्पत्ति, नया पल्लव ।

प्ररोहण—(संज्ञा, पु०, सं०) चढ़ाव, जमना, उगना, आरोहण । [**प्ररोहक प्ररोहित, प्ररोहणीय** (वि०)] ।

प्रलंब—(वि०, सं०) लटकता या टगा हुआ, लंबा, निकला या टिका हुआ । "प्रलंब बाहु विक्रमम्" —[रामा०] । (संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य ।

प्रलंबन—(संज्ञा, पु०, सं०) सहारा, अवलम्बन । **प्रलंबनीय, प्रलंबित, प्रलंबी** (वि०)] ।

प्रलंबी—(वि०) [सं० प्रलंबिन्] लटकन या सहारा लेने वाला । प्रलंबिनी ।

प्रलंभन—(संज्ञा, पु०, सं०) छलना, धोखा देना ।

प्रलपित—(वि०, सं०) कथित, उक्त, व्यथ या मिथ्या भाषित, अडबंड या ऊटपटाग कहा हुआ ।

प्रलयंकर—(वि०, सं०) प्रलय या नाशकारी, विनाशक । [**प्रलयंकारी** (स्त्री०)] ।

प्रलय—(संज्ञा, पु०, सं०) नाश, लय, मिट जाना, संसार के सब पदार्थों का प्रकृति में मिल जाना, विश्व का तिरोभाव, मूर्छा, अचेत, एक सात्विक भाव, किसी वस्तु या व्यक्ति के ध्यान में लय होन से पूर्वस्मृति का लोप (साहि०)—**कर्त्ता**-(संज्ञा (पु०) [सं० प्रलयकर्तृ] प्रलय या नाश करने वाला ।—**कारी**-(पु०) प्रलय करने वाला, [**प्रलयकारक** (पु०)] ।

प्रलयानिल—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रलय+अनिल] प्रलय की वायु । "लपटा है इसमें प्रलयानिल"—महा० ।

प्रलाप—(संज्ञा, पु०, सं०) बकना, कहना, पागल सा व्यर्थ बकवाद या बड़-बड़ । [**प्रलापी, प्रलापक, प्रलापित** (वि०)] ।

प्रलापक—(संज्ञा, पु०, सं०) बकवाद करने वाला ।

प्रलिप्त—(वि०, सं०) चिपका हुआ, लिपटा हुआ ।

प्रलुब्ध—(वि०, सं०) जो लालच मे आ गया हो ।

प्रलेप—(संज्ञा, पु०, सं०) लेप, मलहम, पुल्टिस ।

प्रलेपन—(संज्ञा, पु०, सं०) पोतन या लेप करना या लेपने का कार्य । [**प्रलेपक, प्रलेप्य, प्रलेपनीय** (वि०)] ।

प्रलोभ, प्रलोभन—(संज्ञा, पु०, सं०) लालच या लोभ दिखाना । [**प्रलोभनीय, प्रलोभक** (वि०)]

प्रवंचन—(संज्ञा, पु०) ठगना, धोखा देना ।

प्रवंचना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धूर्तता, ठगी, छल । [**प्रवंचनीय, प्रवंचक, प्रवंचित** (वि०)]

प्रवक्ता—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रवक्तृ] भली भाँति कहने या बोलने वाला, वेदादि का उपदेशक [स्पोक्समैन] ।

प्रवचन—(संज्ञा, पु०, सं०) भली भाँति (श्रोता को) समझ में आने योग्य कथन, वेदांग, व्याख्या । [**प्रवचनीय** (वि०)]

प्रवण—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रमशः नीची होती हुई । भूमि, चौराहा, ढाल, उतार, पेट । (वि०) नत, ढालुवा, झुका या ढालू, नम्र, विनीत, उदार, रत, प्रवृत्त ।

प्रवत्स्यत्पतिका—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह नायिका जिसका स्वामी विदेश जा रहा हो ।

प्रवत्स्यत्प्रेयसी, प्रवत्स्यद्भर्तृका—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) प्रवत्स्यत्पतिका ।

प्रवर—(वि०, सं०) बड़ा, श्रेष्ठ, मुख्य । (संज्ञा, पु०) संतति, गोत्र में विशेष प्रवर्तक, श्रेष्ठ मुनि ।—**ललिता**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णिक वृत्त (पिं०) ।

प्रवर्त—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार के बादल । कार्यारंभ, अनुष्ठान, आयोजन [**प्रवर्तित** (वि०)] ।

प्रवर्त्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) संचालक, चलाने और प्रारम्भ करने वाला, प्रवृत्त या जारी करनेवाला, निकालने या ईजाद करने वाला, उभाड़नेवाला, उत्तेजक, प्रस्तावना का वह रूप जिसमें सूत्रधार वर्तमान काल का कथन करता तथा तत्सम्बन्ध लिये हुए पात्र प्रविष्ट होता है (नाट्य०) ।

प्रवर्त्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) काम का आरम्भ करना या चलाना, प्रचार या जारी करना; ठानना । [इनोशिएशन] ।

प्रवर्तित—(वि०, सं०) चालित, स्थापित, सूचित, प्रज्वलित ।

प्रवर्द्धन—(संज्ञा, पु०, सं०) वृद्धि, बढ़ती।

प्रवर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्षा, एक पहाड़, (किष्किन्धा)। "राम प्रवर्षण गिरि पर छाये"—[रामा०]।

प्रवसन—(संज्ञा, पु०) विदेश-यात्रा।

प्रवह—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ा भारी बहाव, वायु के सात भेदों में से एक।

प्रवहमान—(वि०, सं०) प्रवाहशील। "प्रवहमान प्रमंद-प्रवाह था"—हरि०।

प्रवाक—(वि०, सं०) वाग्मी, वाक्पटु, वाचाल।

प्रवाचक—(वि०, सं०) सुवक्ता।

प्रवाच्य—(संज्ञा, पु०, सं०) साहित्यिक कृति।

प्रवाद—(संज्ञा, पु०, सं०) बातचीत, जनरव, जनश्रुति, अपवाद। [**लोकप्रवाद** (यौ०)]। "लोकप्रवादः सत्योऽयं"—वाल्मी०।

प्रवान*—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रमाण (सं०)।

प्रवाल—(संज्ञा, पु०, सं०) विद्रुम, मूँगा। "पुरः प्रवालैरिव पूरितार्धय"—माघ०।

प्रवास—(संज्ञा, पु०, सं०) विदेश में वास, स्वदेश छोड़ अन्य देश में निवास।

प्रवासन—(संज्ञा, पु०, सं०) देश-निकाला, वध, बाहर रहना।

प्रवासित—(वि०, सं०) देश से बाहर किया हुआ।—**मार्ग**-(पु०) सांसारिक कार्यों में लगा रहना।

प्रवासी—(वि०) [सं० प्रवासिन्] परदेशी, विदेशी, दूसरे देश में रहने वाला।

प्रवाह—(संज्ञा, पु०, सं०) जल-स्रोत, पानी का बहाव, धारा, चलता हुआ कार्य्य-क्रम, सिलसिला, प्रचलन।

प्रवाहित—(वि०, सं०) बहता हुआ।

प्रवाही—(वि०, सं०) [सं० प्रवाहिन्] बहने या बहाने वाला। [**प्रवाहिनी** (स्त्री०)]।

प्रविष्ट—(वि०, सं०) घुसा हुआ। "गङ्गा-गर्भ-प्रविष्ट सूर्य सुत शोभाशाली"—मैथिलो०।

प्रविसना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० प्रविश] घुसना पैठना, अंदर जाना। (क्रि० पू० का० प्रविसि। "प्रविसिनगर कीजै सब काजा"—[रामा०]।

प्रवीण—(वि०, सं०) पटु, चतुर, दक्ष, निपुण, होशियार, कुशल [प्रबीन, परवीन (दे०)]। "विधि की जड़ता का कहां, भूले परे प्रवीण"—नीति०। [**प्रवीणता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

प्रवीन—(वि०, दे०) [सं० प्रवीण] प्रवीण।

प्रवीर—(वि०, सं०) शूर, वीर, बहादुर, योद्धा।

प्रवृत्त—(वि०, सं०) उद्यत, तत्पर, तैयार।

प्रवृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मन की लगन, बहाव, चित्त का लगाव, रुचि, सांसारिक विषयों का ग्रहण, प्रवर्तन, कार्य चलाना, एक यत्न (न्या०) प्रवाह। [**निवृत्ति** (विलो०)]।

प्रवृद्ध—(वि०, सं०) प्रौढ़, पक्का, मजबूत, बढ़ा हुआ। (संज्ञा, पु०) खड्ग के ३२ हाथों में एक।

प्रवेग—(संज्ञा, पु०, सं०) अत्यधिक वेग।

प्रवेदन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकट करना, स्पष्ट होना।

प्रवेश—(संज्ञा, पु०, सं०) घुसना, भीतर जाना, पैठना, पहुंच, गति, रसाई, जानकारी।—**पत्र**-(पु०) प्रवेश करने के लिए आवश्यक पत्र।—**शुल्क**-(पु०) प्रवेश पाने के लिए दिया जाने वाला आवश्यक धन।

प्रवेशिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह चिन्ह या पत्र जिससे द्वारा कहीं जा सके, दाखिला। (वि०, स्त्री०) प्रवेश करने वाली। [**प्रवेशक** (पु०)]

प्रवेष्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) भुजा, पहुंचा, हाथी का पीठ।

प्रव्यक्त—(वि०, सं०) स्पष्ट, स्फुट।

प्रव्रज्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संन्यास।

प्रशंस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [प्रशंसा (सं०)। (वि०) [सं० प्रशंस्य] प्रशंसा के योग्य।

प्रशंसक—(वि०, सं०) स्तुति या प्रशंसा करने वाला, चापलूस, खुशामदी।

प्रशंसन—(संज्ञा, पु०, सं०) सराहना, गुणगान या कीर्तन, स्तुति करना। [**प्रशंसनीय, प्रशंसित, प्रशंस्य** (वि०)]।

प्रशंसना*—(क्रि०, स०, दे०) [प्रशंसन सं०] सराहना, गुण गाना, स्तुति करना, [प्रशंसना, परससना (दे०)]।

प्रशंसनीय—(वि०, सं०) श्रेष्ठ, सराहने योग्य।

प्रशंसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्तुति, गुणगान, बड़ाई, तारीफ (फ़ा०)। [**प्रशंसित** (वि०)]।

प्रशंसोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अलंकार जिसमें उपमेय की अति प्रशंसा से उपमान की सराहना सूचित की जाय। [**निन्दोपमा** (विलो०)]

प्रशंस्य—(वि०, सं०) प्रशंसनीय।

प्रशमन—(संज्ञा, पु०, सं०) शांति, विनाश, ध्वंस, बध, मारण, शमन।

प्रशस्त—(वि०, सं०) प्रशंसनीय, श्रेष्ठ, उत्तम, होनहार, सुन्दर, प्रशंसा-पात्र।—**पाद**–(पु०) वैशेषिक, पर पदार्थ धर्म-संग्रह ग्रन्थ के लेखक एक आचार्य। (प्राचीन)।

प्रशस्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्तुति, बड़ाई, प्रशंसा, ताम्रपत्र या पत्थर आदि पर खुदे लेख या राजाज्ञा के लेख, पुस्तक के आदि या अन्त में पुस्तक के रचयिता, विषय कालादि-सूचक पंक्तियाँ (प्राचीन)।—**पाठ**–(पु०) कीर्ति, कीर्तन या यशोगान।

प्रशांत—(वि०, सं०) स्थिर, शान्त, निश्चल। (संज्ञा, पु०) एशिया और अमेरिका के बीच का महासागर (भूगो०) [**प्रशांति** (संज्ञा, स्त्री०)]

प्रशाख—(वि०) जिसकी अनेक शाखाएँ चारों तरफ फैली हों; जो अपने निर्माण की पाँचवीं अवस्था (गर्भ में) हो।

प्रशाखा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पतली डाली या टहनी प्रतिशाखा, शाखा की शाखा।

प्रशासक—(संज्ञा, पु०, सं०) शासनकर्त्ता, आचार्य। [एडमिनिस्ट्रेटर]

प्रशासन—(संज्ञा, पु०, सं०) शासन, कर्त्तव्य की शिक्षा।

प्रशाशित—(वि०, सं०) खास तौर से शासित।

प्रशास्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) शासनकर्त्ता, शासक प्रधान, परामर्शदाता।

प्रशास्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०) पात्र-विशेष जिसमे शासक सोमपान करता है।

प्रशिक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी कार्य को करने के लिये शिक्षा देना [ट्रेनिंग]।

प्रश्न—(संज्ञा, पु०, सं०) पूछने की बात, विचारणीय बात, जिज्ञासा, पूछताछ, सवाल, एक उपनिषद् [**कुशल-प्रश्न** (यौ०)], [**कथा** (स्त्री०)]। जिस कथा मे कोई प्रश्न हो।—**पत्र**–(पु०) वह परचा जिसमे प्रश्न लिखा हो।

प्रश्नोत्तर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सवाल-जवाब, सम्वाद, एक अलंकार जिसमें अनेक प्रश्नों का एक उत्तर हो। [**प्रश्नोत्तरी** (वि०, स्त्री०)] जिसमे प्रश्न और उत्तर दोनों हो।

प्रश्नोत्तरी—(वि०, स्त्री०) प्रश्नोत्तर से सम्बन्धित।

प्रश्रय—(संज्ञा, पु०, सं०) सहारा, आधार, आश्रय स्थान, आसरा, भरोसा।

प्रश्राव—(संज्ञा, पु०, सं०) मूत्र, पेशाब।

प्रश्वास—(संज्ञा, पु०, सं०) नाक से बाहर निकलने वाला वायु।

प्रश्रित—(वि०, सं०) प्रणयी, विनीत, प्रेमी।

प्रश्लथ—(वि०, सं०) शिथिल, अशक्त।

प्रष्टव्य—(वि०, सं०) पूछने के योग्य।

प्रष्टा—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रश्नकर्त्ता, पृच्छक।

प्रष्ठ—(वि०, सं०) अग्रगामी, श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य, अगुआ।

प्रष्ठा—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रेष्ठ।

प्रसंग—(संज्ञा, पु०, सं०) संगति, सम्बन्ध। विषय का लगाव, अर्थ का मेल। पुरुष स्त्री का संयोग। विषय, बात, प्रकरण, प्रस्ताव। अवसर। उपयुक्त संयोग, मौका, कारण, हेतु। विस्तार, विषयानुक्रम। "जेहि प्रसंग दूषन लगै तजिये ताको साथ"—[नीति०]।

प्रसंगी—(वि०, सं०) प्रसंग से युक्त, अनुरागी, सहवासी, आकस्मिक।

प्रसंसना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रशंसन] प्रशंसना। "कहौ स्वभाव न, कुलहिं प्रसंसी" —[रामा०]।

प्रसक्त—(वि०, सं०) प्रासंगिक, प्रसंग से युक्त विषय, सम्बद्ध, आसक्त, निरत, नित्य, स्थायी, निकट, समीप।

प्रसन्न—(वि०, सं०) हर्षित, संतुष्ट, आनंदित, अनुकूल, प्रफुल्ल [परसना (दे०)]। "भये प्रसन्न देखि दोउ भाई"—[**रामा०**]। ‡ (वि०) (फा० पसन्द) मनोनीत, [परसंद (दे०)]।—**चित्त**–(पु०) संतुष्ट या हर्षित मन, दयालु [**खुशदिल** (फा०)], [**प्रसन्नवदन** (यौ०)]।—**मुख**–(वि०) हँसमुख।

प्रसन्नता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आनन्द, संतोष, हर्ष, खुशी, कृपा, प्रफुल्लता।

प्रसन्नित*†—(वि०, सं०) प्रसन्न।

प्रसरण—(संज्ञा, पु०, सं०) फैलना, व्याप्ति, आगे बढ़ना, फैलाव, विस्तार, खिसकना, सरकना। [**प्रसरणीय, प्रसरित** (वि०)]।

प्रसल—(संज्ञा, पु०, सं०) हेमन्त ऋतु।

प्रसव—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रसूति, जनन, बच्चा पैदा करना, जन्म, जनना, सन्तान, उत्पत्ति।—**गृह**–(पु०) सौरी।—**प्रसव-पीड़ा**–(यौ०, स्त्री०) प्रसव-वेदना, प्रसव सम्बन्धी कष्ट।

प्रसविनी—(वि०, स्त्री०, सं०) प्रसव करने या जानने वाली।

प्रसाद—(संज्ञा, पु०, सं०) [परसाद (दे०)] अनुग्रह, दया, कृपा, प्रसन्नता। "प्रसादस्तु प्रसन्नता"—नैवेद्य, जो वस्तु देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर छोटों (भक्तों, दासों) को दें। देवता, गुरुजनादि को देकर बची वस्तु, भोजन, देवता पर चढ़ी वस्तु। "प्रभुप्रसाद मैं जाब सुखाई"—[रामा०]। **मुहा०—पाना (मिलना)**-भोजन करना, बुराई का फल पाना (व्यंग्य)। शुद्ध, शिष्ट, स्पष्ट तथा स्वच्छ भाषा का एक गुण (काव्य०), शब्दालंकार-सम्बन्धी एक वृत्ति, कोमला वृत्ति।

प्रसादक—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्मल बनाने वाला, प्रसन्न बनाने वाला। धन, सम्पत्ति का धर्मनिष्ठ के पास स्थानांतरित होना।

प्रसादना*—(क्रि० स०, दे०, सं०) प्रसादन प्रसन्न या राजी या खुश करना।

प्रसादनीय*—(वि०, सं०) प्रसन्न, राजी या खुश करने योग्य।

प्रसादी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रसाद + ई हि० प्रत्य०] नैवेद्य, देवता पर चढ़ी वस्तु, जो बड़े या पूज्य लोग प्रसन्न हो छोटों को दे, [परसादी (दे०)]।

प्रसाधक—(संज्ञा, पु०,सं०) श्रृंगारकर्त्ता, वह कर्मचारी जो राजा को वस्त्र, आभूषण आदि पहनाता है। निष्पादक।

प्रसाधन—(संज्ञा, पु०, सं०) निष्पादन, सम्पादन, वेश रचना। [**प्रसाधनीय** (वि०)]।

प्रसाधनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कंघी (बाल सुधारने की) ककई (ग्रा०)।

प्रसाधिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेशकारिणी, वेश रचने वाली, श्रृंगार करने वाली, नाइन।

प्रसार—(संज्ञा, पु०, सं०) [पसार (दे०)] फैलाव, विस्तार, गमन, निकास, निर्गम, संचार।

प्रसारण—(संज्ञा, पु०, सं०) फैलाना, प्रस्तारण, विस्तारित करना। [**प्रसारित, प्रसारणीय, प्रसार्य्य** (वि०)]।

प्रसारिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लाजवंती-लता, लजालू, गंधप्रसारिणी।

प्रसारित—(वि० सं०) फैलाया हुआ।

प्रसारी—(वि०) [सं० प्रसारिन्] फैलाने वाला, किराना और औषधियों की दुकान करने वाला, [पसारी, पसारी (दे०)]।

प्रसित—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पीब, मवाद।

प्रसिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रस्सी, रश्मि, ज्वाला, लपट।

प्रसिद्ध—(वि०, सं०) विख्यात, अलंकृत, प्रतिष्ठित, भूषित, [परसिद्ध (दे०)]।

प्रसिद्धता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ख्याति।

प्रसिद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ख्याति, भूषा, प्रचार, अलंकृत, श्रृंगार, [प्रसिद्धी (दे०)]।

प्रसीद—(क्रि० स०, सं०) प्रसन्न हो, कृपा या दया करो। "प्रसीद परमेश्वर"।

प्रसुप्त—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सोया हुआ।

प्रसुप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नींद, निद्रा।

प्रसू—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जनने या उत्पन्न करने वाली, प्रसूता, प्रसवा।

प्रसूत—(वि०, सं०) उत्पन्न, पैदा, संजात, उत्पादक। [**प्रसूता** (स्त्री०)]। (**संज्ञा, पु०,** सं०) प्रसव के बाद होने वाला स्त्रियों का एक रोग, [परसूत (दे०)]।

प्रसूता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बच्चा उत्पन्न करने वाली स्त्री, जच्चा।

प्रसूति, प्रसूती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कारण, उत्पत्ति, उद्भव, जन्म, प्रसव, दक्ष की स्त्री, प्रकृति। "मंजुल मंगल मोद-प्रसूती"—[रामा०]।—**ज्वर**—(पु०) प्रसव के कुछ समय बाद का बुखार।

प्रसूतिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रसूता।

प्रसूतिकागृह—(पु०) जहाँ प्रसूता जनन करे और रहे, सौवर (प्रान्ती०)।

प्रसून—(संज्ञा, पु०, सं०) फूल, सुमन, फल। —**शर**-(पु०) कामदेव।

प्रसृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विस्तार, संतान, तत्पर, लंपट। [**प्रसृत** (वि०)]

प्रसृष्ट—(वि०, सं०) परित्यक्त, त्यागा हुआ।

प्रसेक—(संज्ञा, पु०, सं०) सींचना, छिड़काव, निचोड़, प्रमेह रोग, जिरियान (सुश्रु०)।

प्रसेद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रस्वेद] पसीना।

प्रसेनजित—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन राजा।

प्रसेव—(संज्ञा, पु०, सं०) बीन की तूँबी।

प्रस्कन्दन—(संज्ञा, पु०, सं०) फलाँग, झपट। शिव, विरेचन, अतीसार।

प्रस्कन्न—(वि०, सं०) पतित, गिरा हुआ।

प्रस्खलन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्खलन, पतन, गिरने की क्रिया, पत्तों का बिछौना ।

प्रस्तर—(संज्ञा, पु०, सं०) पत्थर, बिछौना, प्रस्तार । [**प्रस्तरमय** (यौ०)] ।—**भेद**-(पु०) एक वृक्ष जिसका नाम हड़जोड़ है ।—**युग**-(पु०) पाषाण-युग ।

प्रस्तरण—(संज्ञा, पु०, सं०) बिछौना, बिछावन, प्रस्तार, फैलाव ।

प्रस्तव—(संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर अवसर, स्तुति ।

प्रस्तार—(संज्ञा, पु०, सं०) वृद्धि, फैलाव, परत । नौ प्रत्ययों में से प्रथम जो छन्दों की भेद-संख्या और रूप सूचित करता है । (पिं०) ।

प्रस्ताव—(संज्ञा, पु०, सं०) अवसर की बात, प्रसङ्ग, प्रकरण, कथानुष्ठान, चर्चा, सभा में उपस्थित मन्तव्य या विचार, भूमिका, विषय-परिचय, प्राक्कथन (आधु०) । [रिज़ुलूशन] [**प्रस्तावक, प्रस्ताविक** (वि०)] ।

प्रस्तावना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आरम्भ, भूमिका, प्राक्कथन, उपोद्घात, उठाया हुआ प्रसंग । अभिनय से पूर्व विषय-परिचायक प्रसङ्ग कथन (नाट्य) । [फोर वर्ड]

प्रस्ताविक—(वि०, सं०) यथा समय, समयानुसार ।

प्रस्तावित—(वि०, सं०) जिसके हेतु प्रस्ताव किया गया हो ।

प्रस्तुत—(वि०, सं०) कथित, उक्त, उपस्थित, सम्मुख आया हुआ, तैयार, उद्यत, प्रशंसित, वर्ण्य-वस्तु, उपमेय (काव्य०) ।

प्रस्तुतालंकार—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अलंकार जिसमें एक प्रस्तुत पर कही हुई बात का अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत पर घटित किया जाय (काव्य०) ।

प्रस्तुति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्तुति, प्रशंसा, प्रकृष्ट ।

प्रस्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) पर्वत पर की समतल भूमि, एक बाट या मान (प्राचीन) ।—**कुसुम, पुष्प**-(पु०) एक नीबू, तुलसी के पौधे की एक जाति ।

प्रस्थल—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन देश ।

प्रस्थान—(संज्ञा, पु०, सं०) यात्रा, गमन, यात्रा-मुहूर्त पर यात्रा की दिशा में कहीं रखाया गया यात्री का वस्त्रादि ।

प्रस्थानी—(वि०) [सं० प्रस्थानिन्] जाने वाला ।

प्रस्थापक—(वि०, सं०) भेजने वाला, स्थापना करने वाला । [**प्रस्थापनीय** (वि०)] ।

प्रस्थापन—(संज्ञा, पु०, सं०) भेजना, प्रस्थान करना, प्रस्थापन, प्रेरण । [**प्रस्थापित** (**वि०**)] ।

प्रस्थापना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भेजना, प्रेषण ।

प्रस्थित—(वि०, सं०) ठहराया या टिका हुआ, गत, जो गया हो, दृढ़ ।

प्रस्थिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रस्थान, यात्रा, गमन ।

प्रस्नुषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पोते की स्त्री ।

प्रस्फुट—(वि०, सं०) खिला हुआ, विकसित ।

प्रस्फुटित—(वि०, सं०) विकसित, प्रफुल्लित, प्रकाशित, प्रस्फुरित । [**प्रस्फुटन** (संज्ञा, पु०)] विकास । [**प्रस्फुटनीय** (वि०)] ।

प्रस्फुरण—(संज्ञा, पु०, सं०) विकसना, निकलना, प्रकाशित होना, फूलना । [**प्रस्फुरणीय, प्रस्फुरित** (वि०)] ।

प्रस्फोट, प्रस्फोटन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्फोट, एकबारगी बड़े ज़ोर से फूटने या खुल पड़ने की क्रिया ।

प्रस्रव—(संज्ञा, पु०, सं०) मूत्र, मूत, पेशाब ।

प्रस्रवण—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्झर, सोता, झरना, प्रपात, जल का गिरना या टपक कर बहना । [**प्रस्रवणीय प्रस्रवित** (वि०)]

प्रस्राव—(संज्ञा, पु०, सं०) झरना, पेशाब ।

प्रस्वेद—(संज्ञा, पु०, सं०) पसीना, [पसेव (दे०)] ।

प्रस्वेदित—(वि०, सं०) तप्त, जिसको पसीना आ गया हो ।

प्रहत—(वि०, सं०) निहत, आहत, फैलाया हुआ, पराभूत, विद्वान ।

प्रहर—(संज्ञा, पु०, सं०) [पहर (दे०)] दिन-रात के ८ सम भागों में से एक ।

प्रहरण—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रहार, आघात, हटाना, आक्रमण, युद्ध, दमन ।

—**कलिका**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चौदह वर्णों का एक वर्णवृत्त (पिं०) ।

प्रहरषना, प्रहरखना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रहर्षण] प्रसन्न, हर्षित या आनंदित होना ।

प्रहरी—(वि०) [सं० प्रहरिन्] [**पाहरु, पहरुआ** (दे०)] चौकीदार, पहरेदार, घड़ियाली, पहर पहर पर घंटा बजाने वाला ।

प्रहर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) आनन्द, प्रसन्नता ।
प्रहर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) आनन्द, एक अर्थालंकार जिसमें अकस्मात् बिना यत्न के अभीष्ट फल की प्राप्ति का वर्णन हो । एक पर्वत । [प्रहरखन (दे०)] । [**प्रहर्षित, प्रहर्षणीय** (वि०)] । "राम प्रहर्षण गिरि पर छाये"—[रामा०] ।
प्रहर्षणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णवृत्त (पिं०) ।
प्रहसन—(संज्ञा, पु०, सं०) परिहास, हँसी-दिल्लगी, चुहल, नाटक या रूपक के दस भेदों में वह भेद जो काव्यमय और हास्यरस-प्रधान हो (नाट्य०) ।
प्रहसित—(संज्ञा, पु०, सं०) जोरों से हँसना । (वि०) प्रसन्न, खुश, हँसता हुआ ।
प्रहार—(संज्ञा, पु०, सं०) चोट, आघात, मार, वार ।
प्रहारना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० प्रहार] मारना, आघात करना, मारने को फेंकना ।
प्रहारित†*—(वि०) [सं० प्रहार] प्रताड़ित, जिस पर आघात या चोट की जाय ।
प्रहारी—(वि०) [सं० प्रहारिन्] मारने, आघात या प्रहार करने वाला, छोड़ने या चलाने वाला, विनाशक । [**प्रहारिणी** (स्त्री०)] ।
प्रहित—(वि०, सं०) क्षिप्त, प्रेषित, प्रेरित । "रणेषु तस्य प्रहिता प्रचेतसा"—माघ० ।
प्रहाण—(संज्ञा, पु०, सं०) उद्योग, चेष्टा, परित्याग ।
प्रहीण—(वि०, सं०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ ।
प्रहुत—(संज्ञा, पु०, सं०) बलिवैश्वदेव, भूतयज्ञ ।
प्रहृष्ट—(वि०, सं०) संतुष्ट, प्रसन्न, हर्षित ।—**मना**–संतुष्ट चित्त (वि०) ।
प्रहेलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पहेली, बुझौवल, एक अलंकार (काव्य०) ।
प्रह्लाद—(संज्ञा, पु०, सं०) [प्रहलाद (दे०)] आनन्द, प्रमोद । हिरण्यकशिपु का पुत्र, एक भक्त दैत्य ।
प्रह्व—(वि०, सं०) नम्र, विनीत, आसक्त ।
प्रह्वलीका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पहेली ।
प्रांगण, प्रांगन—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) आँगन, सहन, घर के बीच का खुला भाग ।
प्रांजल—(वि०, सं०) सीधा, सरल, सच्चा समान ।
प्रांत—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्त, छोर, किनारा, सीमा, दिशा, सूबा, जिला, प्रदेश, ओर, सिरा, खंड । [प्राविन्स]—**निवासी**–(वि०) प्रान्त का रहने वाला । [प्रांतिक (वि०)] ।
प्रांतर—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्तर, बिना छाया का मार्ग या वन, दो प्रदेशों के मध्य की खाली जगह ।
प्रांतीय, प्रांतिक—(वि०, सं०) किसी एक प्रांत सम्बन्धी । [प्राविंशियल] [**प्रांतीयता, प्रांतिकता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।
प्रांतीयता—(संज्ञा, स्त्री०) अपने प्रान्त के प्रति पक्षपात की भावना । [प्राविंशलिज्म]
प्राकरणिक—(वि०, सं०) प्रस्तुत, जिसका कोई प्रसंग या प्रकरण हो, उपमेय ।
प्राकाम्य—(संज्ञा, पु०, सं०) आठ भाँति की सिद्धियों में से एक ।
प्राकार—(संज्ञा, पु०, सं०) कोट, परकोटा, शहरपनाह, नगर-रक्षक, प्राचीर ।
प्राकृत—(वि०, सं०) स्वाभाविक, नैसर्गिक, प्रकृति-सम्बन्धी या जन्य, भौतिक । (संज्ञा, स्त्री०) किसी समय किसी प्रांत में प्रचलित बोलचाल की भाषा, भारत की एक प्राचीन आर्य्य भाषा, वह प्राचीन बोली जिससे सब आर्य-भाषाएँ निकली हैं ।—**दोष**–वात, पित्त आदि से उत्पन्न रोग ।
प्राकृतिक—(वि०, सं०) प्रकृति का, प्रकृति-जन्य, प्रकृति-सम्बन्धी, स्वाभाविक, नैसर्गिक, सहज, कुदरती ।—**भूगोल**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भूगोल का वह भाग जिसमें पृथ्वी की बनावट, वर्तमान स्थिति तथा स्वाभाविक दशाओं का वर्णन हो ।—**समृद्धि**–(स्त्री०) उद्योग-धंधों की उन्नति में योग प्रदान करने वाली प्राकृतिक सुविधाएँ । [नेचुरल रिसोर्सेज]—**सीमा**–(स्त्री०] स्वाभाविक सीमा (पहाड़, नदी आदि द्वारा निर्मित सीमा), [नेचुरल बाउंड्री]
प्राक्—(वि०, सं०) प्रथम का, अगला । (संज्ञा, पु०) पूर्व, पूरब । "प्राक् पादयोः पतति खादति पृष्ठ-मांसम्"—भर्तृ० ।—**कथन**–(पु०) प्रस्तावना, भूमिका ।
प्राखर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रखरता ।
प्रागल्भ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रगल्भता, साहस, प्रबलता, चातुर्य, धृष्ठता ।

प्राग्ज्योतिष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामरूप देश (महाभा०)। गोहाटी (वर्तमान) प्राग्ज्योतिष देश की राजधानी।

प्रागभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी विशेष समय के पूर्व न होना, किसी वस्तु की उत्पत्ति के पहले का अभाव, जिसका आदि तो हो पर अन्त न हो।

प्रागार—(संज्ञा, पु०, सं०) भवन, इमारत।

प्रागैतिहासिक—(वि०, सं०) इतिहास में प्राप्त वर्णन के पहले का। [प्रीहिस्टारिक]

प्राघुर्णिक—(संज्ञा, पु०, सं०) पाहुन, अतिथि, अभ्यागत।

प्राङ्मुख—(वि०, सं०) पूर्वाभिमुख, पूर्व दिशा की ओर मुख वाला।

प्राचंड्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उग्रता, प्रचंडता।

प्राची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूर्व दिशा।

प्राचीन—(वि०, सं०) पुराना, पुरातन, पहले का, वृद्ध, पूर्व का [एन्शियण्ट]। **—मत**-(पु०) प्राचीन काल से चला आया हुआ मत।

प्राचीनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पुरानापन।

प्राचीर—(संज्ञा, पु०, सं०) परकोटा, शहर पनाह।

प्राचुर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बहुतायत, बाहुल्य, अधिकता, प्रचुरता।

प्राचेतस—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राचीन, वर्हि के पुत्र, प्रचेतागण, बाल्मीकि मुनि, विष्णु, दक्ष, वरुण का पुत्र, प्रचेत के वंशज।

प्राच्य—(वि०, सं०) पूर्व का, पूर्व देश या दिशा में उत्पन्न, पूर्वीय, पुराना। [**पाश्चात्य**-(विलो०)]। **—भाषा**-(स्त्री०) पूर्वी भाषा। **—वृत्ति**-(स्त्री०) वैताली वृत्ति का भेद (साहि०)।

प्राजक—(संज्ञा, पु०, सं०) सारथी, रथ लाने वाला।

प्राजापत्य—(वि०, सं०) प्रजापति-सम्बन्धी, प्रजापति का, प्रजापति से उत्पन्न एक यज्ञ, ८ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें कन्या-पिता वर कन्या से गार्हस्थ धर्म-पालन का संकल्प कराता है।

प्राज्ञ—(वि०, सं०) बुद्धिमान, चतुर, विद्वान्, पंडित। [**प्राज्ञी** (स्त्री०)]। "अधीस्व भो महाप्राज्ञ"—स्फु०।

प्राड्विवाक—(संज्ञा, पु०, सं०) न्यायाधीश, न्याय कर्त्ता, वकील।

प्राण—(संज्ञा, पु०, सं०) वायु, पवन, दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण-काल, श्वास, शरीर में जीव धारण करने वाला वायु, बल, शक्ति, जान, जीव, [परान, प्रान (दे०)]। "सींचहिं सुर पुर प्राण पठायेहु"—[रामा०]। परम प्रिय। विष्णु। ब्रह्मा। शिव। अग्नि। **—(णों) का प्यासा,—(णों) का गाहक**-(पु०) अति कष्ट देने वाला। **—अधार**†*-(पु०) अत्यन्त प्यारा, पति, स्वामी, प्राणाधार (सं०) प्राणप्रिय। **—घात**-(पु०) वध, हत्या, मार डालना। **—जीवन**-(पु०) परम प्रिय, प्राणाधार, पति। **—त्याग**-(पु०, सं०) मर जाना। **—दंड**-(पु०) मार डालने की सजा, फाँसी। **—द**-(वि०, सं०) जीवन देने वाला, प्राण रक्षा करने वाला। **—दाता**-(पु०) [सं० प्राणदातृ] जीवन देने वाला, जीव-रक्षक। **—दान**-(पु०) जीव बचाना, जीवन-दान, प्राण-रक्षा करना, जान छोड़ना, मारे जाने या मारने से बचाना। **—धन**-(वि०) परमप्रिय, स्वामी, जीवन-धन, पति। **—धारी**-(वि०) [सं० प्राणधारिन्] जीवधारी, जीवित, चेतन, साँस लेता हुआ, प्राण युक्त। (संज्ञा, पु०) प्राणी, जीव। **—नाथ**-(पु०) प्रियतम, परमप्रिय, प्यारा, पति, एक संप्रदाय-प्रवर्तक क्षत्रिय आचार्य (औरंगजेब काल)। "प्राणनाथ तुम बिनु जग माहीं"—[रामा०]। **—नाथी**-(पु०) स्वामी प्राणनाथ का चलाया हुआ संप्रदाय। इस संप्रदाय का व्यक्ति। **—नाश**-(पु०) मृत्यु, हत्या, निधन, जीवनात्यय, प्राणांत, मरण। **—पण**-(पु०) प्राण-त्याग, जीवन पर्यंत प्रतिज्ञा, अत्यन्त आयास, मरूँगा या मारूँगा का प्रण। **—पति**-(पु०) प्रियतम, पति, प्यारा। "सुनहु प्राण-पति भावत जीका"—[रामा०]। **—प्यारा**-(पु०) प्रियतम, परम प्रिय, प्राणों सा प्रिय, पति। [**प्राण-प्यारी** (स्त्री०)]। "प्रिय सुत वह मेरा, प्राण प्यारा कहाँ है"—हरिऔध। **—प्रतिष्ठा**-(स्त्री०) मंत्रों के द्वारा नयी मूर्त्ति में प्राणों का संस्थापन, प्रतिमा में देवत्व करण। **—प्रद**-(वि०) जीवन-दाता प्राण-प्रदाता, स्वास्थ्यवर्धक। [**प्राणप्रदा** (स्त्री०)]। **—प्रिय**-(वि०) प्रियतम, जीवन तुल्य प्रिय, पति। "राम प्राण प्रिय जीवन जीके"—[रामा०]। **—प्रीता**-(वि०, स्त्री०) प्राणों सी प्रिय, प्रियतमा, प्यारी। **—प्रेयसि**-(वि०, स्त्री०, यौ०, सं०) प्रिया, स्त्री, प्यारी। "प्राणप्रेयसि मा पिवन्तु पुरुषाः"। **—वल्लभ**-(पु०) परम प्रिय, पति।

[**प्राण-वल्लभा** (स्त्री०)] प्रिया।—**वायु**–(पु०) प्राण-पवन, प्राण।—**शरीर**–(पु०) मनोमय सूक्ष्म शरीर।—**सम**–(वि०) प्राण-तुल्य। [**प्राण-समा** (स्त्री०)]। [**प्राण-पखेरू**–(यौ०)]।—**मुहा०—उड़ जाना**–हक्काबक्का हो आना, बहुत घबरा या डर जाना।—**प्रण**–(पु०) कठोर प्रण, प्राण देने को उद्यत होकर कार्य-सिद्धि का संकल्प। **मुहा०—का गले तक आना**–मरणासन्न होना। **—या प्राणों का मुँह का आना या चले जाना**–मरणासन्न होना, अत्यन्त कष्ट या दुख होना। **—जाना (छूटना, निकलना)**–जीवन का अंत होना, मरना, प्राण का चलना चाहना, मरने के निकट होना।—**डालना (फूँकना)**–जान डालना, जीवन प्रदान करना—**त्यागना (तजना, छोड़ना)**–मरना।—**देना**–मरना, अत्यन्त आतुर होना, घबराना।—**(किसी पर या किसी के ऊपर) देना**–किसी पर अति अप्रसन्न होकर मरना। प्राणों से भी अधिक किसी को प्यार करना या चाहना।—**निकलना (जान निकलना)**–मरना, मर जाना, बहुत घबरा या डर जाना।—**पयान (प्रयाण) होना**–प्राण निकलना। "प्राणः प्रयाण समये कफ वात पित्तैः"।—**(प्राणों) पर बीतना**–जीवन का संकट में पड़ना, असहनीय क्लेश की परिस्थिति में पड़ना।—**रखना**–जिलाना, जीवन-रक्षा करना, जीना, जीवन छोड़ना, जान बचाना, जीवन देना। "राम कह्यो तनु राखहु प्राना"—[रामा०]।—**रहना**–न मरना, जीवन (जान) शेष रहना।—**लेना या हरना**–मार डालना।—**हारना**–मर जाना, साहस टूटना।—**मय**–(वि०, सं०) जिसमे प्राण हो।—**कोष, कोश**–(पु०) पाँच कोशों में से दूसरा जो पाँच प्राणों से बना है और जिसमे पाँचों कर्मेन्द्रियाँ भी सम्मिलित है। [वेदान्त]।

प्राणवान—(वि०, सं०) सप्राण, जीवित।

प्राणांत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मरण, मृत्यु। [**प्राणांत पीड़ा, कष्ट** (यौ०)]।

प्राणांतक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जीव या प्राण लेने वाला घातक यमदूत।

प्राणाचार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वैद्यराज, राजवैद्य।

प्राणात्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) जीवात्मा, सूत्रात्मा।

प्राणाधार, प्राणाधिक—(वि०) परमप्रिय, प्यारा। (संज्ञा, पु०) स्वामी, पति। [**प्राणाधारा, प्राणाधिका** (स्त्री०)]।

प्राणायाम—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राणों को वश में करना या रोकना, श्वास-प्रश्वास की गति का क्रमशः दमन; अष्टांग योग का चौथा अंग (योग)।

प्राणावरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) साँस का अवरोध।

प्राणित—(वि० सं०) प्राणयुक्त, सजीव बनाया हुआ, जिसमे सजीवता का संचार किया गया हो। सुन्दर थी सदर्थ से प्राणित—रा० न० त्रि०

प्राणिद्यूत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह बाजी तीतर, मेढ़े आदि जीवो की लड़ाई पर लगायी जावे।

प्राणी—(वि०) (सं० प्राणिन) जीवधारी। (संज्ञा, पु०) जीव, जन्तु, मनुष्य। †(संज्ञा, स्त्री०, पु०, पुरुष या स्त्री।—**जात**–(पु०) जीव जगत।—**वध**–(पु०) जीवहत्या।—**हिंसा**–(स्त्री०) जीवों को सताना या कष्ट देना।

प्राणेश, प्राणेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पति, जीवनेश, परमप्रिय, प्राणाधीश। [**प्राणेश्वरी** (स्त्री०)]।

प्राणोपहार—(संज्ञा, पु०, सं०) भोजन, आहार।

प्रात—(अव्य०, दे०) [सं० प्रातः] तड़के, सबेरे, भोर (ग्रा०)। (संज्ञा, पु०) प्रभात, प्रातःकाल, सबेरे। "प्रात काल चलिहौं प्रभुपाँही"—[रामा०]।

प्रातः—(पु०) [सं० प्रातर्] प्रभात, सबेरे [**प्रातः-काल** (यौ०)]। "प्रातः काले पठेन्नित्यम्"—[स्फु०]।—**कर्म**–(पु०) स्नान संध्यादि प्रभात के काम। "प्रात-कर्म करि रघुकुल-नाथा"—[रामा०]।—**काल**–(पु०) निशान्त में सूर्योदय से पूर्व का समय इसके तीन भाग है, सबेरे, तड़के। [प्रातकाल (दे०)]। [**प्रातःकालीन** (वि०)]। "प्रात काल उठि कै रघुनाथा"—[रामा०]।—**कृत्य**–(स्त्री०) स्नान-संध्यादि, प्रातः कर्म।—**क्रिया**–(स्त्री०) स्नान संध्यादि, [प्रात क्रिया (दे०)]। "प्रातक्रिया करि गुरु पहँ आये"—[रामा०]।—**नाथ**–(पु०) सूर्य।—**संध्या**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सबेरे की संध्या, सबेरे के समय का ब्रह्मध्यान।—**स्मरण**–(संज्ञा पु०, यौ०, सं०) सबेरे भगवान की याद।—**स्मरणीय**–(वि०) सबेरे याद करने के योग्य, पूज्य, श्रेष्ठ। [**प्रातःस्मरणीया** (स्त्री०)]।—**राश**–(पु०) प्रातः-कालीन भोजन, जल-पान, कलेवा। "सराघवैः किं वत वानरैस्यैः प्रातराशो, विप्रन कस्यचिन्नः"—भट्टी०।

प्रातिकूल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वैपरीत्य, विपक्षता, शत्रुता।

प्रातिपदिक—(संज्ञा, पु०, सं०) अग्नि, धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोड़ कर अर्थवान शब्द, जैसे—राम। "अर्थवद् धातुर-प्रत्ययः प्रातिपदिकम्"—[अष्टा०]।

प्राथमिक—(वि०, सं०) प्रारंभिक, आदि या पहले या पूर्व का [प्रिलिमिनरी]।

प्रादुर्भाव—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकट होना, उत्पत्ति, आविर्भाव।

प्रादुर्भूत—(वि०, सं०) उत्पन्न, प्रकटित, आविर्भूत, जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो।—**मनोभवा**–(स्त्री०) चार प्रकार की मध्या नायिकाओं में से एक (केश०)।

प्रादेश—(संज्ञा, पु०, सं०) तर्जनी सहित विस्तृत अंगुष्ठ, वितस्ति, बीता, बालिश्त।

प्रादेशिक—(वि० सं०) प्रदेश का, प्रदेश संबंधी, प्रांतिक (संज्ञा, पु०, सं०) सरदार, सामंत।

प्राधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंधर्वों और अप्सराओं की माता, कश्यप की पत्नी।

प्राधान्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मुख्यता, प्रधानता, श्रेष्ठता। "प्रचुर विकार प्राधान्यादिषु मयट्"—सरस्वती। "दुर्गुणों ही का वहाँ प्राधान्य होता जा रहा"—गिरीश।

प्रान—(संज्ञा, पु०, दे०) प्राण (सं०) स्वाँस, जीव। [परान (दे०)]।

प्रापक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राप्तकर्ता, पहुचाने वाला।

प्रापण—(संज्ञा, पु०, सं०) मिलना, प्राप्ति, प्रेरणा [**प्रापक, प्राप्य, प्राप्त, प्रापणीय** (वि०)]।

प्रापति*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्राप्ति] प्राप्ति, उपलब्धि, सिद्धि, लाभ, आय।

प्रापना*†—(क्रि०, स०, दे०) [सं० प्राप्रेषण] मिलना, प्राप्त होना।

प्रापित—(वि०, सं०) प्राप्त किया हुआ, पहुचाया हुआ।

प्राप्त—(वि०, सं०) जो मिला हो, पाया हुआ, समुपस्थित।—**काल**–(पु०) उचित या उपयुक्त समय, मरने योग्य समय। (वि०) जिसका समय आ गया हो। "प्राप्तकालस्व काः रक्षा"। —**जीवन**–(वि०) मृत्यु के पास पहुचकर भी बच जाना।—**यौवन**–(वि०) जिसका यौवन आ गया हो।

प्राप्तव्य—(वि० सं०) पाने या प्राप्त करने योग्य, प्राप्य।

प्राप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पहुँच, मिलना, उपलब्धि, नाटक का सुखप्रद उपसंहार, अणिमादि ८ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिसमें सब इच्छायें पूरी हो जायें (योग) आय, लाभ।—**सम**–(संज्ञा, पु०, सं०) हेतु और साध्य की प्राप्यावस्था में उनके अवशिष्ट बताने की आपत्ति (न्याय)।

प्राप्त्याशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०)—**फल**–प्राप्ति की आशा।

प्राप्य—(वि०, सं०) पाने या प्राप्त करने योग्य, प्राप्तव्य, मिलने के योग्य, गम्य।

प्राबल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रबलता।

प्रामाणिक—(वि०, सं०) सत्य जो प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो, मानने योग्य प्रमाण पुष्ट, माननीय, ठीक।

प्रामाण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रमाणता, मान-मर्यादा। "तद् वचनादाम्नयस्य प्रामाण्यम्"—[वैद्यजी०]।—**वादी**–(वि०) प्रमाण में आस्था रखने वाला।

प्रायः—(वि० सं०) लगभग, बहुत करके, बहुधा, अक्सर, विशेष करके। "प्रायः समापन्न विपत्ति-काले"—हितो०।

प्राय—(संज्ञा, पु०, सं०) समान, लगभग, बराबर, तुल्य, जैसे–प्रायद्वीप, मृत्युप्राय।

प्रायद्वीप—(पु०) [सं० प्रयोद्वीप] वह भू-भाग जो तीन ओर जल से घिरा हो। (भूगो०)।

प्रायशः—(क्रि०, वि०) बहुधा प्रायः। "वर विहँग सुनाते, प्रायशः शब्द प्यारे"।

प्रायश्चित्त—(संज्ञा, पु०, सं०) पाप मिटाने के लिए शास्त्रानुकूल कर्म या कृत्य।

प्रायश्चित्तिक—(वि०, सं०) प्रायश्चित्त के योग्य, प्रायश्चित्त-सम्बन्धी।

प्रायश्चित्ती—(वि०) [सं० प्रायश्चित्तिन्] प्राय-श्चित्त करने वाला या उसके योग्य।

प्रायोगिक—(वि०, सं०) नित्य ही जिसका प्रयोग किया जाय या नित्य ही जिसका प्रयोग होता हो।

प्रायोज्य—(वि०, सं०) प्रयोजन के लायक।

प्रारम्भ—(संज्ञा, पु०, सं०) आदि, आरंभ।

प्रारम्भिक—(वि०, सं०) प्राथमिक, आदि का, आदिम, प्रारंभ का।

प्रारब्ध—(वि०, सं०) प्रारंभ या शुरू किया हुआ। (संज्ञा, पु०) तीन प्रकार के कर्मों में एक, वह कर्म

जिसका फल-भोग हो चला हो, भाग्य, पूर्वकृत कर्म। [**प्रारब्धी** (वि०)]।

प्रार्थना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निवेदन, बिनती, माँगना, विनय, याचना। [**प्रार्थनीय** (वि०)]। —**पत्र**-(पु०) निवेदन या विनय-पत्र, अर्जी, सवाल, दरख्वास्त (फ़ा०) ।—**समाज**-(पु०) ब्रह्म समाज सा एक नया संप्रदाय।

प्रार्थनीय—(वि०, सं०) प्रार्थना के योग्य।

प्रार्थित—(वि०, सं०) माँगा, जाँचा।

प्रार्थनीय—(वि०, सं०) प्रार्थना करने योग्य।

प्रार्थी—(वि०) [सं० प्रार्थिन्] निवेदन या प्रार्थना करने वाला। [**प्रार्थिनी** (स्त्री०)]।

प्रालेय—(संज्ञा, पु०, सं०) तुषार, हिम, बर्फ।

प्रावृट—(संज्ञा, पु०, सं०) बरसात, वर्षाऋतु।

प्रावृत—(वि०, सं०) खास तौर से घिरा हुआ, ढका हुआ।

प्रावृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीमा, चहार दीवारी बाड़ा, अज्ञान।

प्रावृत्तिक—(वि०, सं०) गौण, जानकार।

प्रावेशिक—(वि०, सं०) जिसके माध्यम से प्रवेश मिले, प्रवेश-सम्बन्धी।

प्राशन—(संज्ञा, पु०, सं०) भोजन, खाना, चखना। [**अन्न-प्राशन** (यौ०)]।

प्राशी—(वि०) [सं० प्राशिन्] भोजन करने या खाने वाला, [**प्राशिनी** (स्त्री०)]।

प्रासंगिक—(वि०, सं०) प्रसंग से प्राप्त, प्रसंग सम्बन्धी, प्रसंग का।

प्रासाद—(संज्ञा, पु०, सं०) राज-सदन, विशाल भवन, महल।

प्रासादिक—(वि०, सं०) अनुकूल, कृपा से, युक्त, सुन्दर।

प्रासादीय—(वि०, सं०) प्रासाद या राज-सदन सम्बन्धी, प्रासाद का।

प्रियंगु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कँगुनी या कँगनी अनाज, माल कँगुनी (ओष०)।

प्रियंवद—(वि०, सं०) प्रियभाषी, प्रिय वचन कहने वाला। [**प्रियंवदा** (स्त्री०)]।

प्रिय—(संज्ञा, पु०, सं०) पति, स्वामी। (वि०) प्यारा, सुन्दर, मनोरम। [**प्रिया** (स्त्री०)]। "प्रिय परिवार सुहृद समुदाई"—[रामा०] ।—**दर्शन**-(वि०, यौ०, सं०) सुन्दर, मनोहर, जो देखने में प्यारा लगे। [**प्रियदर्शना** (स्त्री०)]।—**दर्शी**-(वि०, यौ०) [सं० प्रियदर्शिन्] सब को प्यारा देखने वाला, सबसे प्रेम करने वाला।—**भाव**-(पु०) प्रेम।—**भाषी**-(वि०, यौ०) [सं० प्रियभाषिन्] मधुर और प्यारे वचन बोलने वाला। [**प्रियभाषिणी** (स्त्री०)]। "प्रियभाषिणि सिखि दीन्हेउँ तोही"—[रामा०] ।—**मधु**-(वि०) जिसे मदिरा प्रिय हो।—**वक्ता**-(वि०) चापलूस।—**वर**-(वि०, सं०) बहुत प्यारा, अति प्रिय।—**वादी**-(संज्ञा, पु०) [सं० प्रियवादिन्] प्रियभाषी, प्यारा बोलने वाला। [**प्रियवादिनी** (स्त्री०)]।—**तम**-(वि०, सं०) परम-प्रिय, बहुत प्यारा। (संज्ञा, पु०) पति, स्वामी। [**प्रियतमा** (स्त्री०)]।

प्रिया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रेमिका, प्यारी, स्त्री, नारी, पत्नी एक वृत्त, मृगी, १६ मात्राओं का एक छंद (पिं०)। "उस प्रियावरण प्रकाश मे बँध" —निराला।

प्रीत—(वि०, सं०) प्रीतियुक्त। * संज्ञा, पु०, दे०) प्रीति, प्रेम, प्यार, मैत्री।

प्रीतम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रियतम] अति प्रिय, स्वामी, पति।

प्रीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रेम, तृप्ति, स्नेह, मैत्री, हर्ष। "कबहूँ प्रीति न जोरिये"—वृं०। —**कर**—**कारक**—**कारी**-(वि०) प्रेमजनक, प्रेमोत्पादक, प्रसन्नता करने वाला। [**प्रीतिकारिणी** (स्त्री०)]।—**पात्र**-(पु०) प्रेम करने योग्य। प्रीति-भाजन, प्रेमी।—**भोज**-(संज्ञा, पु०) प्रिय मित्रों और बंधुओं का सप्रेम सम्मिलन और भोजन।

प्रीत्यर्थ—(अव्य०, यौ०, सं०) प्रेम के हेतु, प्रसन्नतार्थ, स्नेह के कारण, प्रीति के लिए।

प्रूम—(संज्ञा, पु०, अं०) समुद्र की गहराई नापने का शीशे आदि का लट्टू जैसा यन्त्र।

प्रेक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) दर्शक, देखने वाला।

प्रेक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) नेत्र, आँख, देखना। [**प्रेक्षणीय, प्रेक्षित, प्रेक्ष्य** (वि०)]।

प्रेक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाच-तमाशा देखना, दृष्टि, बुद्धि, ज्ञान, प्रज्ञा।

प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राज-मंत्रणागृह, रंगशाला, नाट्यशाला। "देत रंगशालादि, मुनि, प्रेक्षागृह यह नाम—रसाल।

प्रेखण—(संज्ञा, पु०, सं०) भली भाँति झूलना या हिलना, रूपक के १८ भेदों मे से एक।

प्रेत—(संज्ञा, पु०, सं०) मृतक, मरा मनुष्य, एक देवयोनि, मरणोपरान्त प्राप्त कल्पित शरीर (पुरा०)। नरक-निवासी।—**कर्म**-(पु०) [सं० प्रेतकर्मन्] प्रेत कार्य (हिन्दू)।—**कार्य्य**-(पु०) प्रेतकर्म। —**गेह—गृह**-(पु०) प्रेतगृह, मरघट, श्मशान। —**दाह**-(पु०) मृतक के जलाने आदि का कार्य। —**देह**-(पु०) मृतात्मा का मरण से सपिंडी के समय तक का कल्पित शरीर।—**यज्ञ**-(पु०) प्रेत योनि को प्राप्त करने वाला यज्ञ।—**राज**-(पु०) यमराज।—**लोक**-(पु०) यमलोक।—**विधि, गति** —(स्त्री०) मृतक का दाहादि संस्कार।—**प्रेतत्व**-(संज्ञा, पु०, सं०) प्रेतता, प्रेत का भाव या धर्म।

प्रेतनी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० प्रेत+नी प्रत्य०] भूतिनी, चुड़ैल, पिशाचिनी।

प्रेता—(संज्ञा पु०, सं०) पिशाची, भूतिनी, कात्यायिनी देवी।

प्रेतावास—(संज्ञा, पु०, सं०) श्मशान।

प्रेताशिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवी भगवती।

प्रेताशौच—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी के मरने पर लगी अशुद्धता, शूद्रक, (हिन्दू)।

प्रेतास्थि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रेत की अस्थि (हड्डी)।

प्रेती—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रेत+ई प्रत्य०] प्रेत-पूजक, प्रेतोपासक।

प्रेतोन्माद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक प्रकार का उन्माद, भूतोन्माद।

प्रेम—(संज्ञा, पु०, सं०) रूप, गुण या कामवासना जनित अनुरक्ति, स्नेह, प्रीति, अनुराग, प्यार। एक अलंकार।—**गर्विता**—(स्त्री०) पति से प्रेम रखने वाली नायिका का घमंड।—**पात्र**-(पु०) स्नेह करने योग्य, स्नेहभाजन, जिससे प्रेम किया जाय।—**बंधन**-(पु०) प्रेम का बंधन।—**भक्ति** —(स्त्री०) स्नेह, श्रद्धा।—**भाव**-(पु०) प्रेम का भाव।—**वारि**-(पु०) प्रेमाश्रु, प्रेमाम्बु, आँसू, नेह-नीर, स्नेह-सलिल।

प्रेमा—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रेमन्] स्नेह, इन्द्र, वायु, उपजाति वृत्त का ११ वाँ भेद।

प्रेमाक्षेप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आक्षेपालंकार का वह भेद जिसमे प्रेम के वर्णन में बाधा सी सूचित हो (केश०)।

प्रेमानल—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रेम+अनल] प्रेम की अग्नि या ज्वाला। "उर उर में दहक रहा पर, तेरे प्रेमानल का कण मधु ज्वाल"—पंत।

प्रेमालाप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्नेह-संलापन, प्रेमवार्ता।

प्रेमालिंगन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्नेह से गले लगाकर मिलना।

प्रेमाश्रु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्नेह के कारण निकले आँसू।

प्रेमास्पद—(वि०, यौ०, सं०) स्नेहभाजन, प्रणय-पात्र, प्रणयी, स्नेही।

प्रेमिक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रेमी, स्नेही। [**प्रेमिका** (स्त्री०)]।

प्रेमी—(संज्ञा, पु०) [सं० प्रेमिन्] स्नेही, मित्र।

प्रेमोन्मत्त—नहीं यदि प्रेमोन्मत्त हृदय स्वर्ग भी है तब नरक समान ?—पंत।

प्रेय, प्रेयस—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अलंकार जिसमे एक भाव दूसरे भाव का अंग हो (काव्य०)। प्यारा।

प्रेयसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रेमिका, प्यारी।

प्रेरक—(संज्ञा पु०, सं०) प्रेरणा करने वाला।

प्रेरण—(संज्ञा, पु०, सं०) आज्ञा देना, भेजना।

प्रेरणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जोर या दबाव, उत्तेजना, कार्य मे प्रवृत्त करना।

प्रेरणार्थक क्रिया—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) क्रिया का वह रूप जो यह सूचित करे कि कर्त्ता किसी की प्रेरणा से कार्यकरता है कभी कभी क्रिया में एक साधारण और दूसरा प्रेरक दो कर्त्ता होते हैं, जैसे—राम ने मोहन से पत्र लिखवाया है।

प्रेरणीय—(वि०, सं०) प्रेरणा के योग्य, किसी कार्य में प्रवृत्त करने योग्य।

प्रेरयिता—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रेरणा करने या कार्य में लगाने वाला, भेजने वाला।

प्रेरित—(वि०, सं०) प्रेषित, भेजा हुआ।

प्रेषक—(संज्ञा, पु०, सं०) भेजने वाला।

प्रेषण—(संज्ञा, पु०, सं०) भेजना, प्रेरणा करना। [**प्रेषित, प्रेषणीय** (वि०)]।

प्रेषित—(वि०, सं०) प्रेरित, भेजा हुआ।

प्रेष्ठ—(वि०, सं०) प्रिय, प्रेषणीय।

प्रेष्य—(वि०, सं०) प्रेरणीय, प्रेषणीय, भेजने योग्य, दास, सेवक, भृत्य।

प्रैष—(संज्ञा, पु०, सं०) कष्ट, दुख, मर्दन, उन्माद, भेजना।

प्रैष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दास, सेवक।

प्रोक्त—(वि०, सं०) कथित, वदित, कहा हुआ।

प्रोक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी छिड़कना, पानी का छींटा, पोंछना।

प्रोत—(वि०, सं०) छिपा, पोहा या पोआ, मिलित। (पु०) कपड़ा।—**ओत-प्रोत**-(वि०) परस्पर मिला, उलझन।

प्रोत्साह—(संज्ञा, पु०, सं०) अत्यन्त उत्साह या उमंग।

प्रोत्साहन—(संज्ञा, पु०, सं०) अत्यन्त उत्साह बढ़ाना, साहस देना। [**प्रोत्साहनीय, प्रोत्साहित** (वि०)]।

प्रोत्साहित—(वि०, सं०) जिसका उत्साह या साहस बढ़ाया गया हो।

प्रोथ—(वि०, सं०) भयंकर, प्रसिद्ध, यात्रा पर चला हुआ। (पु०) घोड़े की नाक या मुँह, सूअर का थूथन, राही, पुट्ठा।

प्रोदक—(वि०, सं०) आर्द्र, गीला, तर।

प्रोषित—(वि०, सं०) विदेश जाने वाला, विदेशी, प्रवासी।

प्रोषितनायक, (पति)—(संज्ञा, पु०, सं०) विरही या वियोगी नायक जो विदेश में विकल हो।

प्रोषितपतिका, नायिका—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पति के विदेश में होने से दुखी नायिका, प्रवत्स्यत्प्रेयसी।

प्रोषितभर्तृका—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) प्रोषित-पतिका।

प्रोषितभार्य्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह व्यक्ति जो निज स्त्री के विदेश में होने से दुखी हो।

प्रौढ़—(वि०, सं०) समाप्तप्राय युवावस्था वाला, जवान, युवा, पक्का, दृढ़, गूढ़, गंभीर, चतुर। [**प्रौढ़ा** (स्त्री०)]।

प्रौढ़ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रौढ़त्व, जवानी।

प्रौढ़ा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्राय: २० से ५० वर्ष तक की आयु वाली काम कलादि में चतुर नायिका (काव्य)।—**अधीरा**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) पति वियोग से अधीर प्रौढ़ा नायिका (काव्य)।—**धीरा**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) व्यंग्य से निज क्रोध प्रकट करने वाली प्रिय-वियोग में धीर रहने वाली, प्रौढ़ा नायिका (काव्य)।—**धीरा-धीरा**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) प्रिय वियोग से धीर अधीर, प्रौढ़ा नायिका (काव्य)।

प्रौढ़ोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अलंकार जिसमें किसी के उत्कर्ष का अहेतु ही हेतु रूप में कहा जाय।

प्रौण—(वि०, सं०) कुशल, निपुण, होशियार।

प्लक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) [पिलखा (दे०)] पाकर पेड़, पीपल, सात कल्पित द्वीपों में से एक (पुरा०)।

प्लवंग—(संज्ञा, पु०, सं०) वानर, बन्दर, मृग, हिरन, पाकर वृक्ष।

प्लवंगम—(संज्ञा, पु०, सं०) एक मात्रिक छंद, (पिं०) बन्दर।

प्लवन—(संज्ञा, पु०, सं०) तैरना, उछलना, कूदना। [**प्लवनीय** (वि०)]।

प्लावन—(संज्ञा, पु०, सं०) बाढ़, तैरना, खूब धोना।

प्लावित—(वि०, सं०) पानी में डूबा हुआ, जल-मग्न।

प्लीहा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तिल्ली।

प्लुत—(संज्ञा, पु०, सं०) वक्रगति, उछाल, ३ मात्रा वाला स्वर का एक भेद। "अश्व प्लुत वासव-गर्जनञ्च"—(ज्या०)।

प्लुति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कूदना, फाँदना, उछलना।

प्लुष्ट—(वि०, सं०) जला हुआ, दग्ध।

प्लोत—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मुँह से गिरा पित्त।

प्लोष—(संज्ञा, पु०, सं०) दाह, जलन।

फ

फ—हिन्दी-संस्कृत की वर्णमाला में पवर्ग का दूसरा वर्ण, २२वाँ अक्षर, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।*

फ—(संज्ञा, पु०, सं०) कटु और रूखा वाक्य, फुफकार, व्यर्थ की बात।

फँक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० फक्किका] फाँक, फाँकी, चीरी हुई वस्तु का एक भाग या टुकड़ा।

फंका*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फाँकना] किसी वस्तु का उतना भाग जो एक बार में फाँका जाये, टुकड़ा, भाग, अंश। [**फंकी** (स्त्री०)]।

फँकाना—(क्रि० स०, दे०) किसी को फाँकने में लगाना।

फंकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फंका] उतनी औषधि जो एक बार में फाँकी जा सके, फाँकने की

औषधि । †(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फाँक] छोटी फाँक ।

फंग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बंध] फंदा, बंधन, राग, प्रेम, अनुराग, स्नेह ।

फंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बंध हि० फंदा] बंधन, फंदा, फाँस, जाल, कपट, धोखा, मर्म, दुःख, नथ की गूँज, रहस्य, कष्ट ।

फँदना*—(क्रि० अ०) [सं० बंधन, हि० फंदा] फँसना, फंदे में पड़ना । (क्रि० स०) [हि० फाँदना] फाँदना, उलाँघना ।

फँदवार—(वि०, दे०) [हि० फंदा] जाल या फंदा लगाने वाला ।

फँदा—(संज्ञा, पु०) [सं० पाश, बंध] फँसाने को तागे या रस्सी का पाश, फाँस, जाल, फाँद, बंधन, दुःख । **मुहा०—लगाना**-फँसाने को जाल लगाना, धोखा देना ।—**(दे) में पड़ना (आना)**-धोखे में पड़ना, वश में होना ।—**मारना**-जाल में फँसाना ।

फँदाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० फँदना] जाल में फँसाना, फंदे में लाना । [**फँदावना, फँदवाना** (प्रेरणा०)] । (क्रि० स०) [सं० स्पंदन] कुदाना, लघवाना ।

फँफाना†—(क्रि० अ०, दे०) (अनु०) हकलाना, बोलने में जीभ काँपना ।

फँसना—(क्रि० स०, दे०) [हि० फाँस] उलझना, अटकना, फंदे या बंधन मे पड़ना, धोखे मे पड़ना । **मुहा०—बुरा फँसना**—विपत्ति मे पड़ना । **चंगुल में फँसना—**कब्जे में आना ।

फँसाना, फँसावना—(क्रि० स०, दे०) [हि० फसना] फंदे में लाना, बझाना, वशीभूत या वश में करना, अटकाना । [**फँसवाना** (प्रेरणा०)] । [**फँसाव** (संज्ञा, पु०, दे०)] । धोखे में या उलझन मे डालना ।

फँसिहारा—(वि०) [हि० फाँस+हारा प्रत्य०] फँसाने बाला । [**फँसिहारिन** (स्त्री०)]

फक—(वि०, दे०) [सं० स्फटिक] साफ, सफेद, स्वच्छ, बदरंग । **मुहा०—रंग (चेहरा)-हो जाना या पड़ना**—घबरा जाना, चेहरे पर उदासी छा जाना, मुख फीका पड़ना ।

फकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० फक्कड़+ई-प्रत्य०] दुर्गति, दुर्दशा, खराबी ।

फ़क़त—(वि०, अ०) पर्याप्त, सिर्फ, केवल, बस, अलम्, इति ।

फ़क़ीर—(संज्ञा, पु० अ०) निर्धन, भिक्षुक, साधु, भिखारी, त्यागी, योगी । [**फ़क़ीरी** (संज्ञा, स्त्री०), [**फ़क़ीरिन, फ़क़ीरनी** (वि०, स्त्री०)] ।

फ़क़ीरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० फकीर+ई, प्रत्य०] साधुता, निर्धनता, कंगाली, भिक्षुकता । (वि०) फक़ीर की । "झूठी झार फूँकहू फक़ीरी परी जाति है"—रत्ना० ।

फक्कड़—(वि० दे०) निर्धन और मस्त, लापरवाह । [**फक्कड़ी, फक्कड़ता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**बाज**-(वि०) ऊलजलूल बकने वाला ।

फक्किका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कूट या गूढ प्रश्न, अयोग्य व्यवहार, छल धोखेबाजी । "कठिन दोषित निर्मित फक्किका"—स्फुट० ।

फ़खर—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फख्र] गर्व, गौरव ।

फग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फंग] फंदा ।

फगुआ, फगवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फागुन] होली, होली का उत्सव, फागुन में आमोद-प्रमोद, फाग, फाग खेलने पर दिया गया उपहार, होली के अश्लील गीत । **मुहा०—खेलना या मनाना**—होली के उत्सव में दूसरों पर रंग-गुलाल डालना ।

फगुनाहट—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि० फागुन+हट प्रत्य०] फागुन की तेज हवा, फागुन सम्बन्धी ।

फगुहरा, फगुहारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फगुआ+हारा प्रत्य०] फाग खेलने वाला । [**फगुहारी, फगुहारिन** (स्त्री०)] ।

फ़जर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सवेरा, तड़का, फ़जिर (दे०) ।

फ़ज़ल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० फज्ल] कृपा, दया, अनुग्रह ।

फ़जीलत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) श्रेष्ठता, उत्कृष्टता । **मुहा०—की पगड़ी**—श्रेष्ठता या विद्वत्तासूचक चिह्न या पदक ।

फ़ज़ीहत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) [फजीहत (दे०)] दुर्गति, दुर्दशा, बेइज्जती । [**फजिहतताई** (संज्ञा, स्त्री० दे०)] ।—"अब कविताई कहा फजिहतताई है" ।

फ़जूल—(वि०, अ०) व्यर्थ, बाकी बचा, बेकाम, बहुत, निरर्थक ।

फ़जूल-खर्च—(वि०, यौ०, फ़ा०) बहुत खर्च करने वाला, अपव्ययी। [**फजूलखर्ची** (संज्ञा, स्त्री०)]।

फट—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) हलकी या पतली वस्तु के गिरने का शब्द, एक अस्त्र, मंत्र (तंत्र) "जैसे—ॐ हु फट स्वाहा"। [**फट से** (क्रि० वि०, हि०)] झट से।

फटक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्फटिक] बिल्लौर, संगमरमर, [फटिक (दे०)]। (क्रि० वि०, अनु०) झट, ततक्षण।

फटकन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फटकना] अनाज के फटकने पर निकला भूसा या कूड़ा।

फटकना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० फट] पटकना, झटकना, फटफटाना, फेंकना, चलाना, मारना, हिलाकर सूप से अन्न साफ करना, रुई धुनना। **मुहा०—पछोरना**-सूप से साफ करना, जाँचना या परखना। (क्रि० अ०, दे०, अनु०) जाना, पहुँचना, अलग होना, हाथ-पाँव हिलाना या पटकना, श्रम करना, तड़फड़ाना, [**फटकाना** (स० रूप)], [**फटकवाना** (प्रे० रूप)]।

फटका*—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) रुई धुनने की धुनकी, रस-गुण-रहित कविता, तुकबंदी। (संज्ञा, पु०, दे०) फाटक।

फटकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० फटकना] फटकने का काय दूसरे से कराना, फेंकाना, अलग कराना, पछोरवाना।

फटकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फटकारना] झिड़की, दुतकार, डाँट, उलटी, कै।

फटकारना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) चादर आदि को झटका देकर उसमे लगे पदार्थ को गिराना, झाड़ना, लाभ उठाना, वस्त्रादि को पटक पटक कर भली भाँति धोना, झटके से दूर फेंकना, किसी को डाँटना या झिड़कना, कड़ी या खरी बात कह कर चुप कराना, प्राप्त करना, लेना, (अस्त्रादि से) मारना, चलाना, छितराना। [**डाँटना, फटकारना** (यौ०)]।

फटना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० फाड़ना] किसी पोले पदार्थ का ऐसा दरक जाना कि उसके भीतर की वस्तु बाहर आ जाये या दिखाई देने लगे, [फाटना (दे०)]। **मुहा०—छाती**-दुसह दुख पड़ना, लज्जा आना। (**किसी से**) **मन, दिल या चित्त का फट जाना (फटना)**—मन हट जाना, सम्बन्ध की रुचि न रहना, विरक्ति होना, किसी विकार से दूध आदि के पानी और सारभाग का पृथक् हो जाना, छिन्न-भिन्न, विलग या पृथक् हो जाना, फटकर छिन्न-भिन्न हो अलग होना, अति कष्ट या पीड़ा होना, दीवाल आदि का टूट-फूट जाना (पड़ना) किसी बात या वस्तु का अति अधिक होना, सहसा टूट पड़ना। **मुहा०—फट पड़ना (फाट परना)**—अचानक आ जाना।

फटफटाना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) फड़फड़ाना, व्यर्थ यत्न या बकवाद करना, हाथ पैर पटकना या मारना, परिश्रम करना, इधर-उधर टक्कर खाना। (क्रि० अ०) फट फट शब्द होना।

फटा—(संज्ञा, पु०) [हि० फटना] छेद, छिद्र। [**फटी** (स्त्री०)]। **मुहा०—(किसी के)—(टे) में पाँव देना**—दूसरे की विपत्ति अपने सिर पर लेना। **मुहा०—(टे) हाल (फटी हालत)**—(यौ०) दुर्दशा, गरीबी।

फटिक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्फटिक] स्फटिक, संगमरमर, बिल्लौर।

फट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फटना] बाँस को चीड़ कर बनाया गया लट्ठा, कपड़े का टुकड़ा। [**फट्टी** (स्त्री०)]।

फड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पण] जुए का दाँव जिस पर बाजी लगाई जाती है, जुआ का अड्डा, बनिये का बैठ कर माल बेंचने, या लेने का स्थान, दल, पक्ष। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पटल या फल] तोप चढ़ाने या रखने की गाड़ी, चरख। **मुहा०—फड़ पाना**-जीतना, बाजी मारना।—**बाज**—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फड़+फ़ा० बाज] वह व्यक्ति जो अपने घर में लोगों को जुआ खिलाता हो, जुआरी।

फड़क, फड़कन—(**संज्ञा**, स्त्री०, दे०) (अनु०), **फरकना**-(दे०) फड़कने का भाव या क्रिया।

फड़कना—(क्रि० अ०, दे०) (अनु०) [फरकना (दे०)] उछलना, फड़फड़ाना, ऊपर-नीचे या इधर-उधर बारम्बार हिलना। [**फड़काना**(क्रि० स०)], [**फड़कवाना** (प्रे० रूप)]। **मुहा०—फड़क उठना या जाना**—प्रसन्न, हर्षित या मुग्ध होना, किसी अंग का अचानक हिलना (शकुन, अशकुन)। "फरकहिं सुभग अंग सुनु भ्राता"—[रामा०]। **मुहा०—बोटी-बोटी (रग-रग) फड़कना**—बहुत ही चंचलता होना, किसी कार्य पर उद्यत होना, लड़ाई विरोध, या बदला लेने के लिए तैयार होना। "फेरि फरकै सो न कीजै"—गिर०।

फड़नवीस—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फदन-वीस] मरहटों के राज्य-काल में एक राजपद ।

फड़फड़ाना—(क्रि०, स०, अ०, दे०) (अनु०) फटफटाना, फड़ फड़ शब्द करना ।

फण—(संज्ञा, पु०, सं०) [फन (दे०)] साँप का सिर, रस्सी का फदा ।—**धर**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) साँप, नाग ।

फणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देखिये—'फड़'—धर-(पु०) साँप, शिव ।

फणिक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फणी] [फनिक (दे०)] साँप, नाग । "मणि बिन फणिक जियै अति दीना"—[रामा०] ।

फणींद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) वासुकी, शेषनाग, बड़ा भारी सर्प, फनीन्द, [फनीद (दे०)] ।

फणी—(संज्ञा, पु०) [सं० फणिन्] [फनी (दे०)] साँप, नाग, नागफनी नामक वृक्ष ।—**पति**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शेषनाग, वासुकी, बड़ा साँप । "मणि-विहीन रह फणिपति जैसे"—[रामा०] ।—**मुक्ता**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) साँप की मणि ।

फणीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शेषनाग, वासुकी, [फनीस (दे०)] । "ईस लागे कसन फनीस कटि-तट मैं"—रत्ना० ।

फ़तवा—(संज्ञा, पु०, अ०) अपने धर्मशास्त्रानुकूल किसी कार्य के उचित या अनुचित या होने की मौलवियों की दी हुई व्यवस्था (मुस०) ।

फ़तह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) जीत, जय, सफलता, कृतार्थता, [फते (दे०)] ।

फतिगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पतंग] एक उड़न वाला कीड़ा, फतिंगा, पतग । [**फतिंगी** (स्त्री०)] ।

फतीलसोज़—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक या कई दिये (ऊपर नीचे) रखने की पीतल की दीवट, चौमुखी, चिरागदान ।

फतीला—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फलीतः] बत्ती, पलीता, फलीता ।

फ़तूर—(संज्ञा, पु०, अ०) खुराफ़ात, दोष, विकार, विघ्न बाधा, उपद्रव, क्षति ।

फ़तूरिया—(वि०, दे०) [अ० फ़तूर+इया प्रत्य०] उपद्रवी, बखेड़िया, झगड़ालू ।

फ़तूह—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० फ़तह का बहुवचन] जीत, विजय, लड़ाई या लूट में मिला धन ।

फ़तूही—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बंडी (दे०) बिना बाहों की कुरती, [फतुही (दे०)], सदरी (प्रान्ती०), जीत या लूट का माल ।

फ़ते†*—(संज्ञा, स्त्री० दे०) फतह (अ०) ।

फतेह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० फतह] विजय ।

फदकना—(क्रि०, अ०, दे०, अनु०) फद-फद शब्द करना, फुदकना ।

फदफदाना—(अ०, क्रि०) अधिक फुंसियाँ या गरमी के दिनों मे दाने निकल आना । टहनियों का निकल आना ।

फन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फण] छत्राकार फैला हुआ साँप का सिर, फण ।

फ़न—(संज्ञा, पु०, अ०) हुनर, गुण, विद्या, मक्र, छलने का ढग, कला-कौशल ।

फनकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) सनसन शब्द करते वायु में चलना या हिलना ।

फनकार—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) फुफकार, साँपादि के फूँकने या बैलादि, के साँस लेने से फन शब्द, फुकार, फुसकार, [**फुत्कार** (सं०)] ।

फनगा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पतग] फतिंगा, पतिंगा ।

फनफनाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) फन-फन शब्द करते हुए बेग से चलना, क्रोध से दौड़ना ।

फ़ना—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) नाश, लय, खराबी)

फनिग-फनिंद*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० फणींद्र] फनींद, साँप ।

फनि*—(संज्ञा, पु०, दे०,) [सं० फणी] साँप । —**राज**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० फणि-राज] देखिए फनिपति ।

फनिग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पतग] पतिंगा ।

फनी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फणी] साँप ।

फनीस*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० फणीश] शेषनाग, सर्पराज । "ईस लागे कसन फनीस कटि-तट मैं"—रत्ना० ।

फनूस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० फ़ानूस] फ़ानूस । [**झाड़-फ़ानूस** (यौ०)] ।

फन्नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० फण] पच्चर, किसी ढीली वस्तु के कसने को ठोंका गया काठ का टुकड़ा ।

फफदना—(अ०, क्रि०) फदफदाना, दाद आदि का फैल पड़ना ।

फफूँदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फुबती] धोती या साड़ी का बंधन, नीबी, लकड़ी आदि पर बरसात में सफेद काई सी जमी चीज, भुकड़ी।

फफोला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रस्फोट] पानी-भरा ऊपरी चमड़े का उभार, छाला, झलका। "फोड़ता है जला फफोला ताक"—जौक। **मुहा०—दिल के—(ले) फोड़ना**—दिल का क्रोध प्रगट करना।

फबती—(संज्ञा, स्त्री०) (हि० फबना) समयानुकूल बात, किसी पर घटती हुई हँसी को चुभती बात, व्यंग्य, चुटकी। "सुनि फबती सी उत्तरेस की प्रतापी कर्न"—अ० व०। **मुहा०—उड़ाना**—हँसी उड़ाना। **—कहना**—चुभती हुई हँसी की बात कहना।

फबन—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० फबना] सुन्दरता, छबि, शोभा, छटा, फबनि (व्र)।

फबना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० प्रभवन] घटित या शोभा देना, छजना, सोहना, चरितार्थ होना, सुन्दर या भला लगना। [**फबाना** (क्रि० स०)]।

फबि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फबना] फबन, शोभा, सुन्दरता, रुचिरता।

फबीला—(वि०, दे०) [हि० फबि+ईला प्रत्य०] सुन्दर, शोभायमान। [**फबीली** (स्त्री०)]।

फर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फल] फल, अस्त्र की नोक, धार। "बिन फर बान राम तेहि मारा'—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) सामान, बिछौना।

फरक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फरकना] फड़क, फड़कने का भाव। [**फर्क** (पु० फ़ा० दे०)]।

फ़रक़—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० फ़र्क़] अन्तर दूरी, अन्यता, भिन्नता, दुराव, अलगाव, भेद, कमी, [फरक (दे०)]। **मुहा०—फ़रक़ होना**-हटो, बचो, भागो, दूर हो का शब्द होना, अलग-अलग होना।

फरकन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फरकना] फड़कने या फरकने का भाव, फड़क, फरक, [**फरतिक** (प्रे०)]।

फरकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्फुरण] पृथक् या विरुद्ध होना, फड़कना, कूदना, उछलना, हिलना, उमड़ना, उड़ना, आप ही बाहर होना। [**फरकाना** (क्रि० स०)], [**फरकवाना** (प्रे० रूप)]। "फेरि फरकै सो न कीजै"—गिर०।

फरका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फलक] बँड़ेर के एक ओर का छप्पर, जो अलग बना कर चढ़ाया जाता है, द्वार का टट्टर, पल्ला।

फरकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० फरकना] हिलाना, फड़फड़ाना, अलग या पृथक् करना।

फरचा‡—(वि०, दे०) [सं० स्पृश्य] पवित्र, शुद्ध, साफ-सुथरा।

फ़रज़ंद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लड़का, बेटा, पुत्र, "घर कब्र से बदतर है जो फ़रजंद नहीं है"—अनीस।

फ़रज़ी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) शतरंज में वजीर का मोहरा। (वि०) बनावटी, कल्पित, नकली, [फरजी (दे०)]। **—बंद**-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) शतरंज के खेल में एक योग।

फ़रद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० फ़र्द] स्मरणार्थ एक कागज पर लिखी वस्तुओं की सूची या लेखा, बहुतों में से एक वस्तु, एक से कपड़ों के जोड़े मे से एक, रजाई या दुलाई का एक पल्ला, दो पदों की कविता, बिछौना, जाजिम। (वि०) अनुपम, बेजोड़, अनोखा।

फरना*‡—(क्रि० अ०, दे०) [सं० फल] फलना। "सब तरु फरे राम हित लागी"—[रामा०]।

फरफंद—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० अनु० फर+फंदा-जाल] कपट, छल, दाव-पेंच, प्रपंच, माया, चोचला, नखरा, मक्कर। [**फरफंदी** (वि०)]।

फरफर—(संज्ञा, पु०, अनु०) उड़ने या फड़कने का शब्द। "फर फर फर फर नहा बछेड़ा ज्यों पिंजरा ते उड़ि जाय बाज"।

फरफराना—(क्रि० स०, दे०, अ०) फड़फड़ाना, फटफटाना, फर फर शब्द कर जलना। [**फरफराहट** (संज्ञा, स्त्री०,)।

फरफंदा*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पतंग] पतिंगा, फतिंगा।

फरमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० फ्रेम] कलाबूत, जूते का साँचा या ढाँचा। (संज्ञा, पु०, दे०) [अं० फार्म] प्रेस मे एक बार मे छपने का कागज का एक तख्ता।

फरमाइश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आज्ञा, किसी वस्तु के तैयार करने या लाने की आज्ञा।

फरमाइशी—(वि०, फ़ा०) विशेष रूप से आज्ञा देकर बनवाई या मँगाई गई वस्तु।

फ़रमान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) राजाज्ञा-पत्र, अनु-शासन-पत्र । [**फ़रमानशाही** (यौ०)] ।

फ़रमाना—(क्रि० स०, दे०, फ़ा०) आज्ञा देना, इजाजत देना, कहना । "मैं जो कहता हूँ कि मरता हूँ तो फरमाते हैं"—अक० ।

फरराना, फर्राना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० फहराना] फहरना, फहराना, उड़ना ।

फरलाँग, फर्लांग—(संज्ञा, पु०, अं०) २२० गज या १/८ मील ।

फरवी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्फुरण] लाई, मुरमुरा, भुना चावल ।

फरश, फरस—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० फ़र्श] बिछौना, धरातल, पक्की गच, समतल भूमि ।—**बंद**–(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० फर्श+बंद फ़ा०] फरश ।

फ़रशी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) धातु का बड़ा हुक्का, गुड़गुड़ी ।

फरस, फरसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परशु] पैनी और चौड़ी धार की कुल्हाड़ी, कुठार, फावड़ा । (संज्ञा, पु०, दे०) फर्श ।

फरहद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पारिभद्र] एक पेड़ जिसकी छाल और फूलों से रंग बनता है ।

फरहर—(वि०, दे०) वृष्टि के बाद धूप और हवा से भूमि का कुछ सूख जाना, थकी कम होना, उत्तेजना आना ।

फरहरना†—(क्रि० अ०) [अ० फर फर] फह-राना, फरफराना । "फरहरत केतु ध्वजा पताका" —हरि० काशी ।

फरहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फरहरना] पताका, झंडा । [**फरहरी** (स्त्री०, वि०, दे०)] । फरहर, फरहार, फलाहार ।

फरहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [**फलाहार** (सं०)] ।

फराँक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० फराख] मैदान । [देखिए फ़राख (वि०)] ।

फराकत-फराग़त—(वि०, दे०) [फ़ा० फ़राख] मैदान जो लम्बा-चौड़ा और समतल हो, विस्तृत, [फरागत (दे०)] । संज्ञा, पु०, दे०) [अ० फरागत] मुक्ति, छुट्टी, निवृत्ति, फ़ुरसत, निश्चितता मल-त्याग । [**दिसा-फरागत** (यौ०)]

फराख—(वि०, फ़ा०) लम्बा चौड़ा, फरॉक । संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) **फ़राखी**—चौड़ाई, सम्पन्नता, विस्तार ।

फरामोश—(वि०, फा०) विस्मृत, भूला हुआ । (संज्ञा, स्त्री०, फरामोशी) । [**एहसान फरामोश** (यौ०)] ।

फरार—(वि०, अ०) भागा हुआ ।

फरासीस, फरासीसी—(वि०, दे०) [हि० फरा-सीसी] फ्रांस का रहने वाला, फ्रांस का, एक लाल छींट, फ्रांस देश ।

फरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फरना] सामने न सिला हुआ एक प्रकार का घाँघरा या लहँगा, सारी । "चौर नयी फरिया ले अपने हाथ बनाई"—सूबे० ।

फ़रियाद—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) न्याय-रक्षार्थ पुकार, नालिश, प्रार्थना, शोर, शिकायत, [गुहार (ब्र०)] । "गुलसितां से ताकफस इक शोर है फरियाद का" —स्फुट ।

फ़रियादी—(वि०, फ़ा०) फरियाद या शोर, करने वाला, प्रार्थी ।

फरियाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० फलीकरण] साफ या शुद्ध करना, तै करना, निपटाना । (क्रि० अ०, दे०) छँटकर अलग होना, साफ या शुद्ध होना, निपटना, समझ पड़ना ।

फ़रिश्ता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भगवान का सेवक जो पैगम्बरों के पास भगवान का आदेश लाता है (मुस०), देवता, देव-दूत, ईशाज्ञाकारी ।

फरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० फल] कुशा, फाल, गाड़ी का हरिसा, फड़, गदके की चोट रोकने की चमड़े की छोटी ढाल ।

फ़रीक—(संज्ञा, पु०, अ०) विरोधी, विपक्षी, दो पक्षों में से किसी पक्ष का कोई व्यक्ति ।—**सानी**–(यौ०) प्रतिवादी, विपक्षी (कानून०) ।

फरुही†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फावड़ा] मथानी, छोटा फावड़ा । (**फरुहा** पु०) । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्फुरण] फरवी, लाई, मुर-मुरा ।

फरेंदा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फलेंद्र] बढ़िया जामुन । [**फरेंदी** (स्त्री०)] ।

फरेब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कपट, छल, धोखा । [**जाल-फ़रेब** (यौ०)] ।

फ़रेबी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कपटी, धोखेबाज, छली, ढोंगी, मक्कार ।

फरेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फल+री प्रत्य०] वन फल वन की मेवा ।

फरोख्त—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बेचना, बिक्री।

फरोश—(वि०, फ़ा०) बेचने वाला, जैसे—मेवा-फरोश।

फ़र्क़—(संज्ञा, पु०, अ०) अन्तर, दूरी, भेद, अन्यता, अलगाव, कमी, [फरक (दे०)]।

फ़र्ज़—(संज्ञा, पु०, अ०) कर्त्तव्य-कर्म, धर्म्म, कल्पना, मान लेना। "करें फर्ज माँ-बाप का क्या अदा"—स्फुट०।—**अदा करना**–कर्त्तव्य पालन करना।—**करना**–कल्पना करना, मान लेना।

फ़र्ज़ी—(वि०, फ़ा०) [फरजी (दे०)] माना या ठहराया हुआ, कल्पित, नाम मात्र का, सत्ता-हीन। (संज्ञा, पु०, दे०) शतरंज में वजीर नाम का मोहरा।

फ़र्द—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लेखा या सूची का कागज, विवरण या सूची-पत्र, शाल या रजाई आदि का ऊपरी पल्ला, चादर, फरद [**फर्दी** (स्त्री०)]।

फर्राटा—(संज्ञा, पु०, अनु०) वेग, तेजी, शीघ्रता, क्षिप्रता, खर्राटा।

फ़र्राश—(संज्ञा, पु०, अ०) बिछौना बिछाने या डेरा लगाने वाला नौकर।

फ़र्राशी—(वि०, फ़ा०) फर्श या फर्राश के कार्य से सम्बन्ध रखने वाला। (संज्ञा, स्त्री०) फर्राश का काम, पद या मजदूरी।—**पंखा**–(यौ०) वह पंखा जिससे बिछौना पर भी हवा की जा सके।—**सलाम**—बहुत झुक कर सलाम।

फ़र्श—(संज्ञा, पु०, अ०) बिछौना, चाँदनी।

फ़र्शी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) एक तरह का बड़ा हुक्का। (वि०) फर्श का, फर्श-सम्बन्धी।

फलंक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फलंघन] कूदना, फाँदना, लाँघना। (संज्ञा, पु०) [अ० फलक] आकाश। "कूदि गयो कपि एक फलंका लंका के दरवाजा"—रघु०।

फल—(संज्ञा, पु०, सं०) ऋतु विशेष में फूलों के बाद उत्पन्न गूदेदार पेड़ों का बीज-कोश, लाभ, कार्य का परिणाम या नतीजा, शुभाशुभ कर्मों का सुखद या दुखद परिणाम, कर्म-विपाक, शुभ कर्मों के चार परिणाम—अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष (सांख्य०) प्रतीकार, बदला, चाकू, भाला, बाणादि का पैना अग्र भाग, फार, हल की फाल, ढाल, मतलब पूरा होना, प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न अर्थ (न्याय०)। "पावहुगे फल आपन कीन्हा"—[रामा०]। "निज कृत कर्म भोग फल भ्राता"—[रामा०]। गणित में किसी क्रिया का परिणाम, त्रैराशिक की तृतीय राशि को प्रथम निष्पत्ति का दूसरा पद, ग्रहों के योग का सुखद या दुखद परिणाम (फ० ज्यो०)।—**कर**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० फल+कर] वृक्षों के फलों पर लगा हुआ महसूल।—**द**,—**प्रद**–(वि० सं०) फल देने वाला।—**दाता**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० फल-दातृ] फल देने वाला, फलप्रद, फलदायक —**दान**–(संज्ञा, पु०, यौ० सं०) तिलक विवाह की एक रीति, वरेच्छा, वर रक्षा।—**दार**–(वि०) [हि० फल+दार-रखने वाला फ़ा० प्रत्य०] फलों वाला, फल युक्त वृक्ष।—**मूल**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) फल और जड़। "असन कंद, फल-मूल"—[रामा०]।—**योग**–(संज्ञा, पु० सं०) नाटक में नायक के उद्देश्य की सिद्धि या प्रयत्न के फल की प्राप्ति का स्थान।—**लक्षणा**–(संज्ञा, स्त्री० यौ०, सं०) एक लक्षणा (काव्य)।—**हरी**†–(संज्ञा, स्त्री०) [सं० फल+हरी हि० प्रत्य०] वनफल, वनमेवा। (वि०, दे०) बिना अन्न की मिठाई, [फरहरी (दे०)]।

फलक—(संज्ञा, पु०, सं०) पट्टी, पटल, पृष्ठ, चादर, वरक, पत्र, हथेली, फल, तख्ता।

फ़लक—(संज्ञा, पु०, अ०) स्वर्ग, आसमान।

फलकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) उमगना, छलकना, फरकना।

फलका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्फोटक] छाला, फफोला, झलका।

फलजनक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) फलद।

फलत—(अव्य सं०) परिणाम या फलस्वरूप, इस हेतु, इस कारण, इसलिए।

फलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० फलन] फल लगाना, सफल होना, फल युक्त होना, फल देना, लाभदायक होना। [**फलाना** (क्रि० स०)], [**फलवाना** (प्रे० रूप०)]।—**फूलना**–(यौ०) सब भाँति सुखी और सम्पन्न होना। **मुहा०—मनसा फलना**–इच्छा पूर्ण या सुफल होना। शरीर में पीड़ा युक्त छोटे छोटे दाने निकल आना, पूर्ण होना।

फलबुझौवल—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) एक प्रकार का खेल।

फलवान्—(वि०) [सं० फलवत्] फलयुक्त, सफल, सार्थक, फलवंत ।

फलहार—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० फलाहार] केवल फल खा कर रहना और अन्नादि न खाना, बिना अन्न का भोजन, [फरहार (दे०)] ।

फलहारी—(वि०, दे०, यौ०) [सं० फला+हारिन्] केवल फल खा कर रहने वाला । फलाहारी । (वि०) [हि० फलहार+ई प्रत्य०] केवल फलों से बना हुआ, बिना अन्न का भोजन । फरहरी, [फलहरी (दे०)] ।

फलाँ—(वि०, फा०) अमुक, [फलाना (दे०)] फलान (ग्रा०) ।

फलाँग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रलंघन] कुदान, चौकड़ी, उछाल, फलांग या उछाल की दूरी ।

फलाँगना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० फलाँग+ना प्रत्य०] कूदना, फाँदना, उछलना, एक स्थान से उछलकर दूसरे पर जाना ।

फलांश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) निष्कर्ष, सारांश, तात्पर्य ।

फलागम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शरद-ऋतु, फल लगने की ऋतु, नाटकीय कथा में नायक के उद्देश्य की जहाँ सिद्धि हो (नाट्य०) ।

फलादेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जन्म-पत्रानुसार ग्रहों का फल कहना (ज्यो०) ।

फलाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० फलाँ+ना प्रत्य०] फलाना, [फलान (दे०)], अमुक, कोई । [फलानी (स्त्री०)] ।

फलाफल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) लाभा-लाभ, हिताहित ।

फलार्थी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० फलार्थिन्] फलकामी, फल की चाह रखने वाला ।

फलालीन, फलालेन, फलालैन—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० फ्लैनेल] एक ऊनी कपड़ा ।

फलाशन, फलाशी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) फलाहारी, फल खाने वाला ।

फलास—(संज्ञा, पु०, दे०) डग, फलाँग ।

फलासक्त—(वि०, सं०) फल में आसक्ति रखने वाला, फल में आकांक्षा रखने वाला ।

फलाहार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) केवल फल ही खाना, फल-भोजन, बिना अन्न का भोजन, [फराहार, फरहार, फलहार (दे०)] ।

फलाहारी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० फलहारिन्] केवल फल खाकर रहने वाला ।

फलाहारिणी—(स्त्री०, वि०) [हि० फलाहार+ई प्रत्य०] केवल फलों से बना पदार्थ, फलाहार-सम्बन्धी । [फलहारी, फरहारी, फलहरी, फरहरी (दे०)] ।

फलित—(वि०, सं०) फला हुआ, पूर्ण, संपन्न, फल या परिणाम को प्राप्त ।—**ज्योतिष**-(यौ०) ज्योतिष का वह भाग जिसमें ग्रहों की चाल से अच्छे या बुरे फल का विचार किया जाता है ।

फलितार्थ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सिद्ध अर्थ, सिद्धान्त, तात्पर्यार्थ । (वि०) पूर्ण मनोरथ ।

फली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० फल+ई प्रत्य०] छेमी, छोटे छोटे लम्बे बीजदार फल, फलियाँ ।

फलीता—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० फतीला] बत्ती, [फलीता (दे०)] ।

फलीभूत—(वि०, यौ०, सं०) फलदायक, फल या परिणाम को प्राप्त, जिसका कुछ परिणाम या फल हो ।

फलूवा—(संज्ञा, पु०, दे०) गठीला, झालर ।

फलेंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फलेंद्र] बढ़िया जामुन, फरेंदा (प्रान्ती०) ।

फलोत्तमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) दाख, द्राक्षा, मुनक्का ।

फलोदय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मनोरथ की सिद्धि, लाभ, प्राप्ति, आनन्द ।

फल्गु—(वि०, सं०) क्षुद्र, तुच्छ, छोटा निस्सार । [फलगू नदी (संज्ञा, स्त्री०)]

फल्का, फलका—(संज्ञा, पु०, दे०) छाला, फफोला, झलका ।

फव्वारा—(संज्ञा, पु०, दे०) फुहारा, फौवारा ।

फसकड़, फसकड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) पलथी लगा या पैर फैला कर बैठना ।

फसकना—(वि०, अ०, दे०) फटना, फिसलना, धँसना, फूटना । [फसकाना (सं० रूप)], [फसकवाना (प्रे० रूप)] ।

फसठी, फसड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फाँसी, फंदा, फँसरी ।

फसड्डी—(वि०, दे०) निकृष्ट, हेय, पिछड़ा हुआ ।

फसना—(क्रि०, अ०, दे०) उलझना, बझना, रुकना, फँसना । [फसाना (सं० रूप)], [फसवाना (प्रे० रूप)]

फसफसा—(वि०, दे०) पिलपिला, निर्बल।

फसल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० फस्ल] ऋतु, मौसिम, समय, काल, अनाज, खेत की उपज, [फसिल (दे०)]।

फसली—(वि० दे०) [अ० फस्ली] ऋतुसंबंधी। (संज्ञा, पु०) अकबर का चलाया एक सन् जो उत्तरी भारत में कृषि-कार्य में चलता है।—**बुखार**–(पु०) मौसमी बुखार।

फसाद—(संज्ञा, पु०, अ०) बलवा, बिगाड़, बिकार, विद्रोह, बखेड़ा, उपद्रव। [**फसादी** (वि०)], [**झगड़ा-फसाद** (यौ०)]। 'कि बू फसाद की आती है बन्द पानी में"—स्फुट०।

फसादी—(वि०, फ़ा०) झगड़ालू, उपद्रवी।

फ़स्द—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शरीर की नस में नश्तर या छेद लगा कर दूषित लोहू निकालने का कार्य। **मुहा०—खुलवाना या लेना**–शरीर का बुरा लोहू निकलवाना, होश या अक्ल की औषधि करना।

फहम—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) समझ, ज्ञान बुद्धि। **आम फहम**—(यौ०) सब के समझने योग्य। "फ़हम से मालूम हक़ होता नहीं हरगिज़ कभी"।

फहरना—(क्रि० अ० दे०) [सं० प्रसरण] वायु में इधर-उधर उड़ना। [**फहराना** (स० रूप)], [**फहरवाना** (प्रे० रूप)]

फहरान, फहरनि, फहरानि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फहराना] फहराने का भाव या क्रिया।

फ़हश—(वि०, दे०) [अ० फ़ुहश] अश्लील, भद्दा, फूहड़, पोच [फोश (दे०)]।

फाँक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० फलक] टुकड़ा, खंड। "खीरा की सी फाँक"—रही०।

फाँकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० फंकी] भुरभुरी वस्तु को दूर से मुँह में डालना, फाँक काटना। **मुहा०—धूलना**—दुर्दशा में रहना।

फाँग, फाँगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक साग।

फाँट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फाँड़-पेट] धोती आदि का कमर में बंधा भाग, फेंटा।

फाँड़ा—(संज्ञा, पु०) फेंटा, धोती का वह हिस्सा जो कमर में बँधा रहता है।

फ़ाँद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फाँदना] उछाल, कुदान, फँदान। [**कूद-फाँद** (यौ०)] (संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) फंदा (हि०) पाश।

फाँदना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० फणन] कूदना, उछलना, लाँघना। (क्रि० स०) कूद कर लाँघना। (क्रि० स०, दे०) [हि० फंदा] फंदे में फँसाना। [**फँदाना** (स० रूप)], [**फँदवाना** (प्रे० रूप)]।

फाँदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गन्नों का बोझा।

फाँपना—(क्रि० अ०, दे०) सूजना, फूलना।

फाँफड़, फाँफर—(संज्ञा, पु०, दे०) अवकाश, अंतर, छेद, मुँह, छिद्र।

फाँफी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पर्पटी] अति बारीक जाला, फूली, माड़ा, झिल्ली।

फाँस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पाश] फंदा, बंधन, पशु-पक्षी के फँसाने का फंदा, तीली, खपाँच। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पनस] बाँस आदि का महीन या बारीक टुकड़ा जो शरीर में घुस जाता है, कमाची।

फाँसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पाश] जाल आदि में फँसाना, धोखा देकर अधिकार में करना।

फाँसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पाश] पाश, फंदा, रस्सी का वह फंदा जो गले में पड़कर मार डालता है, अति दुखद बात, या विपत्ति। **मुहा०—चढ़ना**–फाँसी द्वारा प्राण-दंड पाना, अपराधी को फंदे द्वारा मार डालने का दंड।—**देना**–रस्सी का फंदा गले में डाल कर मार डालना।—**पड़ना**–मारा जाना, प्राण-दंड पाना।—**लगाना**–फंदे से गला घोंट कर मार डालना।

फ़ाका—(संज्ञा, पु०) [अ० फ़ाकः] उपवास। —**कशी**–(स्त्री०) भूखों कई दिन तक रहने वाला।—**मस्त, (के) मस्त**–(वि०, यौ०, फ़ा०) जो भोजनादि का दुख सहकर भी निश्चिंत रहे। [**फ़ाकेमस्ती** (संज्ञा, स्त्री०)]।

फ़ाखता—(संज्ञा, पु०, अ०) पंडुक पक्षी, धवँरखा (प्रान्ती०)।

फाग—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फागुन] फागुन या होली का उत्सव, जब रंग, अबीर चलता है, होली के गीत।

फागुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फाल्गुन] माघ के बाद एक हिन्दी महीना।—**फगुनहटे**–(क्रि० वि०) फागुन के समीप। [**फागुनहटा** (संज्ञा, पु०)]।

फाज़िल—(वि०, अ०) जरूरत से ज्यादा, आवश्यकता से अधिक, विद्वान्। [**आलिम फाज़िल** (यौ०)]।

फाट—(संज्ञा, पु०, दे०) भाग, हिस्सा, चौड़ाई।

फाटक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० कपाट] तोरण, बहुत बड़ा द्वार या दरवाजा, काँजीहौस, मवेशी-खाना। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फटकना] अन्न फटकने से बचा भूसा, फटकना, पछोरना, फटकन।

फाटका—(संज्ञा, पु०, दे०) वस्तु के भाव के अनुमान पर एक प्रकार का जुआ। [**सट्टा-फाटका** (यौ०)] [व्यापा०]।

फाटना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० फटना] फट जाना, फटना, टूट पड़ना।

फाड़न—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फाड़ना] फाड़ने से निकला कपड़े आदि का टुकड़ा।

फाड़ना, फारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्फाटन] विदीर्ण करना, चीरना, टुकड़े-टुकड़े करना, धज्जियाँ उड़ाना, संधि या जोड़ खोलना, द्रव वस्तु के पानी और सार भाग का अलग अलग करना [**फड़ाना, फड़ावना** (स० रूप)], [**फड़वाना** (प्रे० रूप)]।

फातिहा—(संज्ञा, पु०, अ०) मृतक पुरुषों के नाम पर दिया जाने वाला दान, प्रार्थना (मुसल०)।

फानूस——(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक बड़ी लालटेन, बत्तियाँ जलाने को छड़ में लगे शीशे के गिलास, कंदील। [**झाड़फानूस** (यौ०)]।

फाफर—(संज्ञा, पु०, दे०) कूटू।

फाब—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फबन] शोभा, छवि, सुन्दरता।

फाबना—*†—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० फबना] शोभा या छवि देना, सुन्दर लगना।

फ़ायदा—(संज्ञा, पु०, अ०) नफ़ा, लाभ, सफल प्रभाव, अच्छा असर, उद्देश्यसिद्धि, प्राप्ति, अच्छा फल या परिणाम।—**दे मंद**-(वि०, फ़ा०) लाभ-दायक, लाभपूर्ण, गुणकारी।

फार*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फाल] फाल।

फारखती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [अ० फ़ारिग़+खती] बेबाकी, चुकती, ऋण की अदा-यगी के सबूत का लेख।

फारना*†—(क्रि०, स०, दे०) [सं० स्फाटन] फाड़ना।

फारस, फारिस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पारस्य] भारत से पश्चिम में मुसलमानों का एक देश, ईरान [**परशिया** (अं०)]।

फारसी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) ईरानी या फ़ारसी की भाषा।

फारा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फाल] फाल, फाँक, कतरा, कटी फाँक, [फाल (दे०)]।

फाल—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हल के नीचे लगी लोहे की नुकीली छड़ या कुसी, फार (ग्रा०)। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० फलक] कटी सुपारी या छालिया, काटा हुआ टुकड़ा, कतरा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्लव] फलाँग, डग। **मुहा०**—**बाँधना**-उछल कर लाँघना, एक कदम की दूरी, [**डग** (हि०)], [**पैंड** (प्रान्ती०)]।

फालतू—(वि०) [हि० फाल—टुकड़ा+तू प्रत्य०] जरूरत से ज्यादा, आवश्यकता से अधिक, व्यर्थ, निकम्मा, अतिरिक्त।

फालसई—(वि०) [फ़ा० फालसा] फालसा के रंग का, ललाई लिये हलका ऊदा रंग।

फालसा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [सं० परूषक] मटर जैसी बैगनी रंग के खटमीठे फलों का पेड़।

फालिज—(संज्ञा, पु०, अ०) पक्षाघात रोग जिसमें आधा अंग शून्य (जड़) हो जाता है।

फालूदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गेहूँ के सत से बनी एक प्रकार की ठंढाई (मुसल०)।

फाल्गुन—(संज्ञा, पु०, सं०) [फागुन (दे०)]। माघ के बाद का चांद्र महीना, अर्जुन का एक नाम।

फाल्गुनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूर्वा या उत्तरा फाल्गुनी नाम के नक्षत्र (ज्यो०)। (वि०) फाल्गुन-सम्बन्धी।

फावड़ा, फावरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फाल] मिट्टी खोदने का हथियार। [फरुहा दे०]। करसी (प्रान्ती०)। [**फवड़ी, फावरी** (स्त्री० अल्पा०)] [फरुहा (दे०)]।

फ़ास—(वि०, फ़ा०) खुला, प्रगट।

फ़ासला, फ़ासिला—(संज्ञा, पु०, अ०) अंतर, दूरी।

फाहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फ़ाल] तेल, घी या और किसी द्रव वस्तु से तर रुई, फ़ाया, फोहा (ग्रा०)।

फ़ाहिशा—(वि०, स्त्री०, अ०) पुंश्चली, छिनाल स्त्री, कुलटा।

फ़िक़रा—(संज्ञा, पु०, अ०) वाक्य, व्यंग्य, ताना, झाँसापट्टी।—[(रे) **बाज** (वि०)]।—**फ़िकरे-बाज़ी**-(संज्ञा, स्त्री०)। **मुहा०**—**कसना**-व्यंग्य, वाक्य कहना, ताना मारना।

फिकरना, फेकरना—(क्रि०, अ०, दे०) स्यार का रोदन सा शब्द करना।

फिकारना—(क्रि०, स०, दे०) सिर उघारना या नङ्गा करना।

फिकिर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० फ़िक्र] चिंता, उपाय, कल्पना।

फ़िकैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फेकना] गदका फरी चलाने वाला।

फ़िक्र—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) चिंता, खटका, सोच, विचार, प्रयत्न, उपाय। "फ़िक्र रोजी है तो रोजी का है रज़्ज़ाक़ कुफ़ैल"—ज़ौक़।—**मंद**-(वि०) [अ० फ़िक्र+फ़ा० मंद] चिंतित, सोच-विचार या खटके में पड़ा हुआ।

फिचकुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पिच्छ=लार] मूर्छा में मुँह से निकला फेन।

फिट—(अव्य०) [अनु०] छी छी, धिक्, थुड़ी। (वि०, अं०) ठीक, मूर्छा।

फिटकार—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) लानत, डाँट, शाप, धिक्कार, कोसना, फटकार।

फिटकिरी, फिटकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्फटिक] मिश्री या स्फटिक सी एक श्वेत खनिज वस्तु।

फिटन—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) चार पहिये वाली खुली गाड़ी।

फिट्टा—(वि० दे०) [हि० फिट] अपमानित, डाँट-फटकार खाया हुआ, श्रीहत।

फितना—(संज्ञा, पु०, अ०) फसाद, झगड़ा, दंगा, एक प्रकार का इत्र।

फितरत—[संज्ञा, पु०, दे०) बखेड़ा, यत्न। [**हिक-मत-फितरत** (यौ०)]।

फ़ितूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० फ़ुतूर] उपद्रव, झगड़ा, बखेड़ा, ख़राबी, विकार [**फितूरी, फितूरिया** (वि०)]।

फिदवी—(वि०) [अ० फिदाई से फ़ा०] आज्ञा-कारी, स्वामि-भक्त। (संज्ञा, पु०) दास। [**फिद-विया** (स्त्री०)]।

फिनिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कान का एक गहना।

फिनैल—(संज्ञा, पु०) [अं० फ़िनायल] एक तीव्र गंध वाला द्रव पदार्थ जिससे कीड़े मर जाते हैं।

फिरंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० फ्रॉक] यूरोप महाद्वीप का एक देश, फ़िरंगिस्तान, गोरों का देश। —**रोग**-(यौ०) गरमी, आतशक और मूत्रकृच्छ्र या सुजाक का रोग।

फिरंगिस्तान—(संज्ञा, पु०) पश्चिमी देश, यूरोप।

फिरंगी—(वि०, दे०) [अ० फ्रांक] फिरंग देश का वासी, या वहाँ उत्पन्न, गोरा। (संज्ञा, स्त्री०) विलायत की बनी तलवार।

फिरंट—(वि०, दे०) [हि० फिरना, अं० फ्रंट] ख़िलाफ़, विरुद्ध, फिरा हुआ, सन्मुख, लड़ने को तैयार।

फिर—(क्रि० वि०) [हि० फिरना] पुनः दोबारा, पुनर्वार, बहुरि, फेरि (ब्र०), [फिरि (दे०)]।—**फिर**-(यौ०) बार बार, लौट लौट कर, कई बार। अनन्तर, दूसरे समय, पीछे, उपरांत, उस दशा में, तब, इसके अतिरिक्त, इसके सिवाय, आगे चलकर। **मुहा०—क्या है**-तब क्या पूछना है, तब तो कोई अड़चन ही नहीं है।

फिरका—(संज्ञा, पु०, अ०) जाति, संप्रदाय, पंथ, मार्ग, जत्था, समूह।

फिरकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फिरना] लड़कों का एक बीच की कील पर घूमने वाला गोल खिलौना, चकई, फिरहरी, चरखे के तकले में लगाने का चमड़े का गोल टुकड़ा। "खिरकी खिरकी पै फिरै फिरकी सी"—मति०।

फिरता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फिरना] वापसी, अस्वीकार। (वि०) वापस लौटाया हुआ। [**फिरती** (स्त्री०)]।

फिरदौस—(संज्ञा, पु०, अ०) स्वर्ग, बाग।

फिरदौसी—(संज्ञा, पु०, अ०) अबुलकासिम तूसी (९३२-१०२०) द्वारा रचित फ़ारसी का प्रसिद्ध महाकाव्य।

फिरना—(क्रि० अ०) [हि० फेरना का अ०] घूमना, टहलना, भ्रमण करना, विचरना, सैर करना, चक्कर लगाना, ऐंठ जाना, लौटना, पल-टना, विरोधी हो जाना, मरोड़ना, मुड़ना।—[**फिराना** (सं० रूप)], [**फिरवाना** (प्रे० रूप)] **मुहा०—किसी ओर**—प्रवृत्त होना। **भाग्य**—दुर्भाग्य या सौभाग्य आना। **दिल या जी**—चित्त उचट जाना। **दिन**—सौभाग्य के अच्छे दिन आना, लौटना, विपरीत होना, लड़ने को तैयार हो जाना, उलटा होना। **मुहा०—सिर-दिमाग़**

—बुद्धि नष्ट या भ्रष्ट होना। **आँखें—**मूर्छित होना, मर जाना। झुकना, टेढ़ा होना, घोषित होना। चढ़ाया या पोता जाना, बात पर दृढ़ न रहना, इधर उधर घूमना या चलना।

†फिरहरा—(संज्ञा, पु०) एक पक्षी।

फ़िराक़—(संज्ञा, पु०, अ०) बिछोह, वियोग, अलगाव, खोज, चिंता, सोच।

†फिराना—(क्रि० स०) [हिं० फिरना] इधर या उधर घुमाना, ऐंठना, मरोड़ना, बार बार चक्कर या फेरे देना, पलटाना, टहलाना, उलटाना, [लौटाना, फेराना (दे०)]।

फ़िरार, फरार—(संज्ञा, पु०, दे०) भाग जाना, भागना। [**फ़िरारी, फरारी** (वि०)]।

फिरि†*—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० फिरना] [फेर, फेरि (दे०)] फिर, आगे पीछे, पुनः, दोबारा। (पू० का क्रि० अ०) फिर या लौट कर।

†फिरियाद*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० फरियाद] फरियाद, पुकार, गुहार। [**फिरियादी** (वि०)]।

†फरली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पिंडली।

फिस—(वि० अ०) कुछ नहीं। **मुहा०—टाँय, टाँय—**धूमधाम तो बहुत थी पर फल कुछ भी न हुआ। (**मामला**)—**होना** (**करना**)-किसी कार्य या बात का व्यर्थ होना (करना)।

†फिसड्डी, फसड्डी—(वि०, दे०) [अनु० फिस] जो काम में सबसे पीछे हो, जो कुछ भी न कर सके।

फिसफिसाना—(अ०, क्रि०) ढीला होना, कमजोर हो जाना, फिस होना।

†फिसलन—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० फिसलना] झुकना, प्रवृत होना, रपट, रपटन, गीलेपन और चिकनाहट से पैर का स्थिर न होना। [**फिसलाहट** (संज्ञा, पु०)]।

फिसलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रसरण] झुकना, रपटना।

फिहरिस्त, फेहरिश्त—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) सूचीपत्र, खाता।

फींचना—(क्रि० स०, दे०) कपड़े धोना।— [**फिंचाना** (स० रूप)], [**फिंचवाना** (प्रे० रूप)]।

फ़ी—(अव्य० अ०) प्रत्येक, हर एक।—**साल—**(अ) प्रतिवर्ष।—**सैकड़े**-(अ) प्रतिशत। (संज्ञा, स्त्री०, अं०) परिश्रम, फल, मजदूरी, [फीस (दे०)]।

फीका—(वि०, दे०) [सं० अपक्व] नीरस, सीठा, स्वाद-रहित, मलिन, कांति-हीन, उदास, मैला, निष्फल, व्यर्थ, प्रभावहीन, धूमिल। [**फीकी** (स्त्री०)]।

फीता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कोर, किनारी, पतली धज्जी जिससे कुछ लपेटते या बाँधते हैं, [फीता (दे०)]।

फ़ीरनी—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० फिरनी] एक तरह की खीर।

फ़ीरोज़ा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नील मणि, नीलापन लिये हरे रंग का एक पत्थर या नग, [फ़िरोजा (दे०)]।

फ़ीरोजी—(वि०, फ़ा०) हरापन लिये नीले रंग का [फ़िरोजी (दे०)]।

फील—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हाथी, शतरंज का एक मोहरा, फीला।—**खाना**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हथियार, हस्तिशाला, हाथी बाँधने का स्थान।—**पा, पाँव**-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) खम्भा, एक रोग जिसमें पैर सूज कर भारी हो जाते हैं।—**वान**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हथवाल, हाथीवान।

फीला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पिंडली] पिंडली।

फुँकना, फुकना—(क्रि० अ०, दे०)[हिं० फूँकना] जलना, भस्म होना, नष्ट या बरबाद होना। [**फुँकाना** (स० रूप)], [**फुकवाना** (प्रे० रूप)] (संज्ञा, पु०) [हिं० फुँकनी] मूत्राशय।

फुँकनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० फूँकना] वह नली जिससे फूँककर आग जलाते हैं, धौंकनी, भाथी।

फुँकरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० फुंकार] फुत्कार या फुंकार छोड़ना।

फुँकार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फूत्कार] मुँह से हवा छोड़ने का शब्द, फुफकार, फूँक।

फुँकैया—(संज्ञा, पु०) फूँकने वाला।

फुँदना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० फूल + फंद] झब्बा, फुलरा, फूल जैसी सूत की गाँठें।

फुँदिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० फुँदना] झब्बिया, फुलरी।

फुँदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फंदा] गाँठ, फंदा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बिंदी] बेंदी, टीका, बिंदी।

फुँसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पनसिका] छोटी फुड़िया। [**फोड़ा, फुंसी** (यौ०)]।

फुग्रा—(संज्ञा, स्त्री०) पिता की बहन, बुग्रा।

फुग्रारा—(संज्ञा, पु०) फौव्वारा।

फुचड़ा, फुचरा—(संज्ञा, पु०, दे०) बुने कपड़े से बाहर निकला हुग्रा सूत का रेशा।

फुट—(वि०, दे०) [सं० स्फुट] अकेला, एकाकी, अलग, भिन्न, पृथक्। (संज्ञा, पु०) [अं० फुट] ३६ जौ या १२ इंच की लम्बाई की माप।

फुटकर, फुटकल—(वि०, दे०) [सं० स्फुट+कर प्रत्य०] भिन्न भिन्न, अलग अलग, पृथक् पृथक्, थोड़ा थोड़ा, विषम, अकेला। कई प्रकार या मेल का—[**थोक** (विलो०)]।

फुटका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्फोट] ज्वार आदि का भूनने से फूला और बिखरा दाना, लावा।

फुटकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० फुटक] दूध आदि जमी हुई द्रव वस्तु के छोटे बुलबुले, पीब, खून आदि के छींटे।

फुटेहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फूटना+हरा प्रत्य०] चने या मटर का भूनने से बिखरा और फूला हुग्रा दाना।

फुट्ट—(वि०, दे०) [**फुट** (अं०)] फुट (हि०)।

फुट्टल, फुट्टैल—(वि०, दे०) [सं० स्फुट] झुंड, या जोड़ से अलग या भिन्न। (वि०) [हि० फूटना] अभागा, फूटी, भाग्य वाला।

फुड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्फोट] छोटा फोड़ा, फुंसी।

फुत्कार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फूत्कार] दुत्कार, तिरस्कार, फुसकार।

फुदकना—(क्रि० अ०, अनु०) उछल उछल कर कूदना, उमंगित होना।

फुदकी—(संज्ञा, स्त्री०) [दे० फुदकना] एक बहुत छोटी चिड़िया।

फुनँग, फुनगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुलक] अंकुर, पौधों या पेड़ों की डालियों का अग्रिम खंड।

फुप्फुस—(संज्ञा, पु०, सं०) फेफड़ा।

फुफँदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फूल+फंद] नीबी, स्त्रियों की धोती की गाँठ या घाँघरे (लँहगे) का नारा, इजारबंद, कमरबंद।

फुफकना—(क्रि० अ०, दे०) फुफकारना।—[**फुफकाना** (स० रूप)]।

फुफकार—(संज्ञा, पु०, अनु०) फुँकार, फुसकार, साँप के मुख से निकली वायु का शब्द।

फुफकारना—(क्रि० अ०) [दे० फुफकार] साँप का मुख से वायु निकालना, फुसकारना, फूत्कार छोड़ना।

फुफी, फुफू*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) बाप की बहन, बुग्रा। [**फूफी, फूफू, फूफा** (पु०)]।

फुफेरा—(वि०, दे०) [हि० फूफा+एरा प्रत्य०] फूफा का पुत्र, फूफा से उत्पन्न। [**फुफेरी** (स्त्री०)]

फुर, फुरु†—(वि०) [दे० फुरना] सच, सत्य। (संज्ञा, स्त्री०, अनु०) पक्षी के उड़ने में पंखों का शब्द। "तौ फुर होइ जो कहौं सब"—[रामा०]।

फुरती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्फूर्ति] तेजी, जल्दी, शीघ्रता।

फुरतीला—(वि०, दे०) [हि० फुरती+ईला प्रत्य०] तेज, फुरती वाला। [**फुरतीली** (स्त्री०)]।

फुरना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्फुरण] प्रगट या उद्भूत होना, उच्चरित या प्रकाशित होना, फड़कना, चमक जाना, सत्य ठहरना, पूरा उतरना, प्रभाव उत्पन्न करना या दिखाना, निकलना। [**फुराना** (स० रूप)], [**फुरवाना** (प्रे० रूप)]।

फुरफुराना—(क्रि० स० दे०) [अनु० फुरफुर] उड़ना, पंखों का शब्द करना, वायु में लहराना फरफराना। (क्रि० अ०) किसी हलकी वस्तु का फुर फुर शब्द कर हिलना।

फुरफुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) फुरफुर शब्द होने या पंख फड़फड़ाने का भाव।

फुरमान—(संज्ञा, पु०, दे०) फरमान (फा०) राजाज्ञा।

फुरमाना—(क्रि० स०, दे०) [फा० फरमाना] आज्ञा देना, कहना, स्फुरित या प्रकट करना। "सो सब तुरत देहु फुरमाय"—[आल्हा०]।

फुरसत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अवकाश, अवसर, निवृत्ति, छुट्टी, आराम, रोग-मुक्ति।

फुरहरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्फुरण] निकलना, स्फुरित, या उद्भूत होना।

फुरहरी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) कँपकँपी, फड़कना, पक्षी के उड़ने से परों का शब्द, हवा में वस्त्रादि के उड़ने का शब्द, फरफराहट, रोमांच युक्त कंप, सींक के छोर पर इतर में डूबी रुई का फाहा, फुरेरा ।

फुरेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फुरफुराना] सींक के सिरे पर इतर में डूबी हलकी लिपटी रुई, फुरहरी, रोमांच-युक्त कंप । **मुहा०**—**लेना**-फड़कना, भय या शीत आदि से रोमांचित होना या काँपना, थरथराना, हिलना ।

फुल—(संज्ञा, पु०) फूल का समास रूप ।—**चुही**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फूल+चूसना] एक काली चिड़िया ।—**झड़ी, झरी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फूल+झड़ना] एक तरह की आतशबाजी, उपद्रव या फ़साद पैदा करने वाली बात ।—**रा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फूल+रा प्रत्य०] फुँदना, सूत या ऊन का फूल जैसा गुच्छा ।—**वर**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फूल+वार] बूटीदार एक रेशमी वस्त्र ।—**वाई***-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुष्पवाटिका] उद्यान, पुष्पवाटिका, कागज के पुष्प-वृक्ष जो बरात में निकाले जाते हैं, फुलवारी । "करत प्रकास फिरति फुलवाई"—[रामा०] ।—**वार**-(वि०, दे०) [हि० फूल+वारा] प्रसन्न, प्रफुल्ल ।—**वाड़ी,—वारी,—**—**वारी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पुष्पवाटिका] बाग, पुष्पवाटिका, बगीचा, उद्यान, फुलवाई । बारात में कागज के फूल, वृक्ष ।—**हारा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फूल+हारा प्रत्य०] माली, फूलवाला । [**फुलहारी, फुलहारिन** (स्त्री०)] ।

फुलका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फूलना] झलका, छाला, फफोला, पतली और छोटी रोटी, चपाती । [**फुलकी** (स्त्री० अल्पा०)]

फुलहथा—(संज्ञा, पु०, दे०) लाठी की मार ।

फुलाना—(क्रि० स०) [हि० फूलना] वायु आदि भर कर किसी पदार्थ का विस्तार बढाना । **मुहा०**—(**गाल**) **मुँह**-रूठना, मान करना । पुलकित या हर्षित कर देना, गर्व पैदा करना, विकसित या कुसुमित करना, पुष्पयुक्त करना । [**फूलाना** (क्रि० अ०, दे०)], [**फुलावना, फुलवाना** (प्रे० रूप)] ।

फुलायल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फूलेल] फुलेल, सुगन्धित तेल ।

फुलाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फूलना] फूलने की क्रिया का भाव, सूजन, उभार ।

फुलावा—(संज्ञा, पु०) चोटी या जूड़ा की डोरी ।

फुलासरा—(संज्ञा, पु०, दे०) लल्लो-चप्पो, चाटुकारी ।

फुलिंग, फुलागा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्फुलिंग] आग की चिनगारी ।

फुलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्फोट] फुड़िया । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फूल] छोटा फूल, नाक की लौंग, फूल जैसे सिरे वाली कील ।

फुलेल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फूल+तेल] सुगंधित तेल, फुलायल । [**तेलफुलेल** (यौ०)] ।

फुलेहरा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फूल+हार] रेशम या सूत के बंदनवार ।

फुलौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फूल+वरी] बेसन या चने के महीन आटे की पकौरी ।

फुल्ल—(वि०, स०) विकसित, खिला या फूला हुआ ।

फुल्लदाम—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० फुल्लदामन] १९ वर्णों की एक एक वृत्ति (पिं०) ।

फुल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फूल] आँख का जाला, फूली, नाक का एक गहना पुल्ली ।

फुस—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) धीमा शब्द ।

फुसकारना*†—(क्रि० अ०, अनु०) फूत्कार छोड़ना, फूक मारना, फुफकारना ।

फुसफुस—(संज्ञा, पु०, दे०) फुप्फुस, फेफड़ा ।

फुसफुसा—(वि०, दे०) [हि० फूस, अनु० फुस] निर्बल, मंदा, जो दबने से टूट या चूर हो जाय । [फुसफुस (दे०)], [फुसफुसहा (ग्रा०)] ।

फुसफुसाना—(क्रि० अ०, अनु०) बहुत ही धीमे स्वर से बोलना ।

फुसफुसाहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० फुसफुसाना] धीमे स्वर से बोलने का भाव ।

फुसलाऊ—(वि०, दे०) [हि० फुसलाना] फुसलाने या बहकाने वाला ।

फुसलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० फिसलाना] चकमा देना, बहकाना, झाँसा देना, अनुकूल बनाने को मीठी मीठी बात करना ।

फुसलावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फुसलाना] झाँसा, चकमा, बहकावा, भुलावा ।

फुसाहिंदा—(वि०, दे०) घिनौना, घृणास्पद, दुर्गंधी ।

फुस्का—(वि०, दे०) दुर्बल, निर्बल, ढीला । (पु०, दे०) छाला, फफोला ।

फुहार—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० फूत्कार] सूक्ष्म जल-कण, जल के बारीक छींटे, छोटी-छोटी बूँदों की झड़ी, झींसी (प्रान्ती०)।

फुहारा—(संज्ञा, पु०) [हि० फुहार] पानी के बारीक छींटे, एक जल यन्त्र जिससे दबाव के कारण पानी के सूक्ष्म कण या धार वेग से ऊपर निकलते हैं, फव्वारा।

फुही, फुहीर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फुहार (हि०)।

फूँ—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) साँप की फुसकार।

फूँक—(संज्ञा, स्त्री०,) [अनु० फूँ फूँ] संकुचित मुँह से वेग के साथ छोड़ी वायु, साँस। **मुहा०—निकल जाना**-प्राण या जान निकल जाना। मंत्र पढ़ कर मुँह से छोड़ी हुई हवा। **झाड़-फूँक**—(यौ०) मंत्र-तंत्र का उपचार।

फूँकना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० फूँका] संकुचित मुँह से बड़े वेग से वायु छोड़ना। [**फँकाना** (द्वि० स० रूप)], [**फंकवाना** (प्रे० रूप)]। **मुहा०—फूँक फूँक कर पैर रखना या चलना**-कोई काम बड़ी सतर्कता या सावधानी से करना। मंत्रादि पढ़ कर किसी पर फूँक डालना, शंख, बाँसुरी आदि को फूँक कर, बजाना, फूँक कर आग जलाना, भस्म करना, अपव्यय या व्यर्थ खर्च करना, उड़ाना, गुरु मंत्र देना। **मुहा०—कान फूँकना**-गुरु मंत्र या दीक्षा देना, **तापना**—(यौ०) व्यर्थ खर्च कर देना।

फूँका—(संज्ञा, पु०) [हि० फूँक] जलन पैदा करने वाली दवा भर कर स्तन में लगा बाँस की नली से फूँक कर गाय आदि का सब दूध निकालने की विधि, फूँका मारने की नली, फफोला, किसी वस्तु में मुँह की फूँक भर देना।

फूँकारना—(क्रि०, अ०, दे०) फनफनाना, फुफकारना, फुसकारना, क्रोध का निश्वास।

फूँद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फुँदना] फुँदना, झब्बा।

फूँदा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फुँदना] फुँदना, झब्बा, फंदा। **फदफूँदारा**—(यौ०) फुँदने वाला, फुफुँदी। [**फुँदी** (स्त्री०)]।

फूआ, फुआ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फूफी] बुआ, फूफी।

फूट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० फूटना] फूटना क्रिया का भाव, विरोध, बिगाड़, मित्रता, अलगाव, मत-भेद, एक बड़ी मोटी पकी ककड़ी। **—डालना**-अंतर करना, विरोध पैदा करना, झगड़ा लगाना। **—मिलना**-किसी स्वजन से विरोध कर विलग हो उसके शत्रु से जा मिलना। "फूट मिलिगो बिभीषण है"। **—पड़ना (होना)**-विरोध होना या बढ़ना, बिगाड़ या विलगाव होना। **—रहना (जाना)**-विरोध से अलग हो जाना, बिगाड़ या विरोध रहना, (विरोध से विलग हो जाना)। **—होना**-बिगाड़ या विरोध होना, विलगाव होना। **—डालना**-बिगाड़ या बैर पैदा करा देना। एक पक्ष छोड़ दूसरे में हो जाना, देह पर दाने या घाव निकल आना, सवेग फोड़ कर बाहर आना, व्याप्त होना, व्यक्त या प्रकट होना।

फूटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्फुटन] किसी कड़ी वस्तु के आघात से किसी खरी नरम वस्तु का टूट जाना, फट जाना, करकना, दरकना, मुँह से शब्द निकलना, नष्ट होना, बिगड़ जाना, पोली या नर्म चीज से भरी वस्तु का फटना, कली का खिलना, अंकुर या नये पत्त शाखादि का निकलना, प्रस्फुटित होना, बिखरना। **मुहा०—फूट (फूट-फूट) कर रोना**-विलाप करके रोना।

फूटा—(वि०) बिगड़ा हुआ, फूटा हुआ। **मुहा०—भेद फूटना**—गुप्त बात का प्रगट हो जाना। **—(टी) आँखों न भाना (सुहाना)**—रंच भी न सुहाना, बुरा लगना। **—(टी) आँखों न देख सकना**-बुरा मानना, कुढ़ना, जलना। बाँध आदि का टूट जाना, जोड़ों में पीड़ा होना। **लो०—(टी)** सहे पर आँजी न सहे—थोड़ी न सह कर बड़ी हानि या पीड़ा सहना।

फूत्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) फुफकार, फुसकार, फूँक, मुख से निकली वायु का शब्द [फूफकार (दे०)]।

फूफा—(संज्ञा, पु०, अनु०) पिता का बहनोई, बुआ या फूफी का पति।

फूफी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) पिता की बहिन, भुआ, बुआ, फूआ, फूफू।

फूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुष्प] पुष्प, सुमन, कुसुम, पौधों की फलोत्पादक शक्तिवाली ग्रंथि या गाँठ। **—गोभी**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) गोभी (फूलदार) गाँठ गोभी, बँधे पत्तों के पिंड-

वाली गोभी।—दान-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० फूल+दान फ़ा०] पीतल या काँच आदि का गिलासनुमा पात्र जिसमें गुलदस्ता रखा जाता है। —दार-(वि०) [हि० फूल+दार फ़ा०] वह पदार्थ जिस पर फूल-पत्ते बने हों, फूलवाला। —मती-(संज्ञा, स्त्री०) [हि० फूल+मती प्रत्य०] एक देवी। मुहा०—(मुख से)-झड़ना-मधुर या प्रिय वचन बोलना।—सा-अति सुकुमार या कोमल, सुन्दर, हलका।—सूँघ कर रहना-बहुत कम खाना (व्यंग्य)। पान-फूल सा—बहुत ही सुकुमार, पुष्पाकार बेल बूटे, कसीदे, नक्काशी, पुष्प सा भूषण, जैसे—शीश-फूल, करणफूल, हथफूल (हिंदू), कुष्ठ-जनित शरीर के सफेद या लाल दाग, स्त्रियों का रज, जलने के पीछे मृतक की बची हड्डी, ताँबा और राँगे से बनी एक धातु, पीतल आदि की गोल फूल मी गाँठ। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० फूलना] फूलना का भाव, आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष, उत्साह, उमग।

फूलना—(क्रि० अ०) [हि० फूल+ना प्रत्य०] पुष्पित या कुसुमित होना, सुमन युक्त होना, खिलना, विकास को प्राप्त होना, कली का संपुट खुलना, कुछ भर जाने से किसी वस्तु का फैलकर बढ़ना। मुहा०—फलना-धनी और सुखी होना, उन्नति करना। प्रसन्न या हर्षित होना, उल्लास में रहना। शरीर के किसी अंग का सूजना, मोटा या स्थूल होना, इतराना, घमंड करना, प्रसन्न होना। मुहा०—फूला फूला फिरना—हर्ष में घूमना। फूले (अंग) न समाना-बहुत प्रसन्न होना। मुँह फुलाना—मान करना, रूठना।

फूली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० फूल] जाला, सफेद काँचा, आँख की पुतली पर पड़ा छोटा दाग।

फूस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुष] छप्पर में लगाई जाने वाली लंबी दृढ़ घास, गाडर, [तिन दे०] सूखा तृण, खर। [घास फूस , फूस-फास (यौ०)]।

फूहड़, फूहर—(वि०, दे०) [सं० पव—गोबर+घट—गढ़ना] निर्बुद्धि, बेशऊर, बेढंगा, भद्दा। जैसे लो०—"पेड़न में थूहर, तस तिरियन में है फूहर"—घाघ०।

फूही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० फूत्कार] फुहार।

फेंकना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० प्रेषण] एक स्थान से उठाकर बल पूर्वक दूसरे स्थान में डालना या गिराना, भूल से इधर-उधर छोड़ना, गिराना, अनादर से छोड़ना, अपव्यय करना। [फेंकना, (द्वि० रूप)], [फेंकवाना (प्रे० रूप)]।

फेंकरना*†—(क्रि०, अ०) [अनु० फें फें करना] बड़े जोर से चिल्ला कर रोना। जैसे—स्यार।

फेंकारना—(क्रि०, स०, दे०) बाल खोले नंगे सिर रहना।

फेंट—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पेट—पेटी] फेरा, घुमाव, कटि-मंडल, कमर का घेरा, कमर में लपेट कर बाँधा गया धोती या वस्त्र का छोर। पटुका (व्र) लपेट, कमर-बंद, [फेंटा (दे०)]। परिकर। मुहा०—धरना या पकड़ना-कमरबंद को ऐसा पकड़ना कि भाग न सके।—(परिकर) कसना या बाँधना-कमर बाँध कर तैयार होना। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० फेंटना] फेंटना का भाव।

फेंटना—(क्रि० स०, दे०) [सं० पिट] गाढ़े द्रव पदार्थ को अँगुलियों और हथेली से रगड़ना, ताशों को उलट-पुलट कर मिलाना।

फेंटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फेंट] पटुका, कमर-बंद, छोटी पगड़ी।

फेकरना—(क्रि०, अ०, दे०) खुलना, नङ्गा होना। [फेकरना (क्रि० अ०)]। स्यार की भाँति जोर से चिल्ला-चिल्ला कर रोना।

फेण, फेन—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) नन्हे-नन्हें बुलबुलों का गठा समूह, फेना, झाग। [फेनिल (वि०)]।

फेनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० फेनिका] सूत के लच्छे जैसी मिठाई, सूतफेनी।

फेफड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फुप्फुस+ड़ा प्रत्य०] फुप्फुस, प्राणियों की छाती की भीतर साँस लेने का अवयव।

फेफड़ी, फेफरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० पपड़ी] पपड़ी, होंठों के चमड़े की पपड़ी।

फेर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फेरना] फिरने या घूमने की क्रिया, दशा, या भाव, चक्कर, घुमाव, रदबदल, परिवर्तन। "सब सों लघु है माँगिबो यामे फेर न सार"—वृ०। प्रेत बाधा, धोखा, जाल, छल, सन्देह, भ्रम, मोड़, झुकाव, झंझट, चालबाजी, बखेड़ा। मुहा०—खाना-सीधी राह न आकर टेढ़ी राह से अधिक चलना, चक्कर खाना, भटकना।

—देना–लौटा या वापिस कर देना।—फार–पेंच, घुमाव, फिराव, जटिलता, अदल-बदल, अंतर, बहाना, चक्कर, इधर-उधर, छल-कपट । मुहा०—कर्मों या (समय) दिनों का फेर–दशान्तर, विपत्ति का समय, अच्छी से बुरी दशा होना। "रहिमन चुप ह्वै बैठिये, देखि दिनन का फेर" —कुफेर–बुरी दशा। सुफेर–अच्छी दशा। "बोलब वचन बिचार जुत, समझी कुफेर-सुफेर।" अंतर, भेद, उलझन। मुहा०—में पड़ना (आना)–भ्रम, धोखा, संदेह, संशय, असमंजस या झंझट में पड़ना (आना)। षट्चक्र, षड्यंत्र।—पड़ना (होना) भूल या अंतर पड़ना। मुहा०—निन्यानबे का फेर–रुपया जोड़ने या बढ़ाने का चसका, ९९ से १०० रुपये पूरे करने की चिंता।—(लगाना) बाँधना–लेन देन या आदान-प्रदान का क्रम लगाना, युक्ति, ढंग, उपाय, एवज, बदला। [उलट-फेर (यौ०)] उलटा पलटा। धाल-फेर–आना-जाना, छल, धोखा। जाल-फेर–छल-कपट। हेर-फेर—लेन-देन, व्यवसाय। आदान-प्रदान। घाटा, हानि, भूत-प्रेत का प्रभाव, दिशा, ओर। (अव्य० दे०) फिर, पुनः, दोबारा। "फेर न ह्वै है कपट सो, जो कीजै व्यापार"—वृ०।

फेरना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० प्रेरण] मरोड़ना, घुमाना, लौटाना, वापिस करना या लेना, (लौटा लेना देना), चक्कर देना, ऐंठना, मोड़ना, पोतना, पीछे चलाना, इधर उधर ऊपर स्पर्श करना, तह चढ़ाना। मुहा०—पानी-फेरना–नष्ट-भ्रष्ट करना। घोषित या प्रचारित करना, घोड़े आदि पशुओं को चलना सिखाना, उलट-पलट या इधर-उधर करना, बदलना, परिवर्तन करना। मुहा०—आँखें फेरना (फेर लेना)–मर जाना। मुँह फेरना–विमुख होना, उपेक्षा करना, उदासीन होना।

फेरवट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फेरना] घुमाव, फिराव, चक्कर, पेंच, बहाना, फेर-फार, टाल-मटूल।

फेरवा—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का सोने का आभूषण।

फेरा—(संज्ञा, पु०) [हि० फेरना] परिक्रमण, कील पर चारों ओर घूमना, चक्कर, मोड़, एक बार की लपेट, बारंबार आना-जाना घूमते फिरते आ जाना या पहुँचना, फिर लौट कर आना, मंडल, आवर्त, घेरा, ब्याह में भाँवर। "हरि जो गये फिरि कीन्ह न फेरा"—पद्मा०।

फेरी*—(अव्य०, दे०) [हि० फिर] फिर, पुनः, क्रि० स० पूर्व० (अ०) घुमाकर। "फेरि मिलन की बात"—स्फुट। कह्यो बिमति या टेरि, चहूँ ओर कर फेरिकै।"—[रामा०]।–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० फेरना] फेरा, परिक्रमा, लौट कर आना, चक्कर, साधु या भिखारी का भिक्षार्थ, गाँव या बस्ती में बराबर घूमना या आना-जाना। मुहा०—करना या लगाना–सौदा बेचना (घूम घूम कर), फिर फिर आना-जाना।—वाला–(संज्ञा, पु०, हि०) घूम-फिर कर सौदा बेचने वाला व्यापारी।

फेल—(संज्ञा, पु०, अ०, दे०) काम, क्रिया, कार्य, कर्म। (क्रि०, अ०, अं०) गिर जाना, चूकना, असफल या अनुत्तीर्ण होना।

फेहरिस्त—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० फिह्‌रिस्त] विषय-सूची, तालिका।

फैल*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० फेल] कार्य, खेल, नखरा, क्रीडा, कौतुक।

फैलना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० प्रसृत] पसरना, वृद्धि या बढ़ती होना, विस्तृत होना, बढ़ना, छितराना, बिखरना, अति बढ़ा या लम्बा चौड़ा होना, प्रचार पाना, प्रसिद्ध होना, मोटा या स्थूल होना, आग्रह या हठ करना, भाग का ठीक ठीक पूर्ण रूप से लग जाना, प्रचुरता या अधिकता से मिलना, किसी ओर तन कर बढ़ना। [फैलाना (स० रूप)]। [फैलवाना (प्रे० रूप)]।

फैलसूफ—(वि०, दे०) [यू० फिलसफ [अप-व्ययी, फजूल खर्च (फ़ा०)।

फैलसूफी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० फैलसूफ] अपव्यय फजूलखर्ची (फ़ा०)।

फैलाना—(क्रि०, स०) [हि० फैलना] पसारना, बखेरना, छितराना, विस्तृत करना, बढ़ाना, भर या छा देना, व्यापक, प्रसिद्ध या प्रचलित करना, दूर तक पहुचाना, सब ओर प्रगट करना, गुणा-भाग की शुद्धता की परीक्षा करना, खेल या हिसाब लगाना, दूर तक पृथक्-पृथक् कर देना, बढ़ती करना।

फैलाव—(संज्ञा, पु०) [हि० फैलाना] विस्तार, प्रसार, प्रचार, बढ़ती।

फैलावट—(संज्ञा, स्त्री०) फैलाव।

फैसला—(संज्ञा, पु०, अ०) निपटारा, मुकदमे में निर्णय, अदालत का अंतिम निर्णय।—सुनाना–किसी मुकद्दमे का निर्णय सुनाना।

फोंक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पंख] बाण के पीछे की नोक जहाँ पर लगे रहते हैं। "धनुष बान लै चला पारधी, बान में फोंक नहीं है"—कबी०।

फोंदा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फुंदना] फुंदना, झब्बा, [फंदा (दे०)]।

फोंफर—(वि०) निस्सार, पोला।

फोक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० फोकला] तुष, किसी वस्तु का सार निकल जाने पर बचा हुआ भाग या अंश, भूसी, बकला, सीठी, नीरस या फोकी वस्तु।

फोकट—(वि०) [हि० फोक] निःसार, मूल्य-रहित, निर्मूल्य, व्यर्थ। **मुहा०—में**-मुफ्त में, योंही।—**का माल**-मुफ्त का माल।

फोकला†—(संज्ञा, पु०, दे०) [वल्कल छिलका, बकला, बोकला, (ग्रा०), बक्कल।

फोट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फोट] फोड़ा, फुंसी।

फोड़ना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० फोटन] खरी चीज को चूर चूर करना, विदीर्ण करना, भग्न करना, तोड़ना, अंकुर, डाली या टहनी निकलना, आघात या दबाव से भेदना, दूसरे पक्ष से अपने पक्ष में मिलाना या कर लेना, भेद-भाव पैदा करना, फूट डाल कर अलग-अलग करना, भेद या रहस्य का सहसा खोलना, देह में विकार से फोड़े या घाव हो जाना।

फोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० फोटक] बड़ी फुन्सी, शोथ, स्फोट, व्रण, फुड़ी, दोष-संचय में उत्पन्न पीब के रूप में सड़े रक्त की सूजन। [**फोड़िया, फुड़िया** (स्त्री०, अल्पा०, दे०)]।

फ़ोता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भूमिकर, जमीन का लगान, पोत, थैला, कोष, अंडकोष।—(ते) **दार**—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कोषाध्यक्ष, खजानची। [पोतदार (दे०)]। [**फोतेदारी, पोतदारी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

फोफी—(संज्ञा, स्त्री०) चोंगी, छूँछी।

फोरना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० फोड़ना] फोड़ना, तोड़ना।

फौआरा, फौवारा, फव्वारा—(संज्ञा, पु०,) [हि० फुहारा] फुहारा।

फ़ौज—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सेना, जत्था, झुंड, लश्कर। [**फ़ौजी** (वि०)]।—**दार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सेनानायक, सेनापति।—**दारी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मारपीट, लड़ाई, वह कचहरी जहाँ मार-पीट के झगड़े (मुकदमे) निपटाये जाते और अपराधी को दंड (शारीरिक) दिया जाता है।

फ़ौजी—(वि०, फ़ा०) सेना सम्बन्धी, सैनिक।

फ़ौत—(वि०, अ०) मरा हुआ, मृत, मृतक, गत। [**फ़ौती** (संज्ञा, स्त्री०)]।

फ़ौरन—(क्रि० वि०, अ०) तत्काल, तुरन्त, झटपट, शीघ्र, चटपट।

फ़ौलाद—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० पौलाद] कड़ा, अच्छा और साफ लोहा, खेड़ी। [**फ़ौलादी** (वि०)]।

फ्रांसीसी—(वि०) [फ्रांस] फ्रांस निवासी, फ्रांस का [फरासीसी (दे०)]।

ब

ब—हिन्दी और संस्कृत की वर्णमाला का २३ वाँ तथा पवर्ग का तीसरा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है। (संज्ञा, पु०, सं०) सुगन्धि, वरुण, पानी, सागर।

बंक—(वि०) [सं० वक्र, बंक] तिरछा, टेढ़ा, पराक्रमी, विक्रमी, पुरुषार्थी, दुर्गम, अगम। [बंका (दे०)]। [**बंकता** (संज्ञा, स्त्री०)] (संज्ञा, पु०) [अं० बैंक] लेन-देन करने वाली एक संस्था।

बंकट—(वि०, दे०) [सं० बंक] टेढ़ा, तिरछा। "बंकट भौंह चपल अति लोचन बेसरि रस मुकताहल छायो"—सूर०।

बंकराज—(संज्ञा, पु० यौ०) [सं० वंकराज] एक तरह का साँप।

बंका†—(वि०, दे०) [सं० बंक] वक्र, तिरछा टेढ़ा, पराक्रमी, बाँका, तिरश्चीन। "तिनतें अधिक रम्य अति बंका"—[रामा०]।

बंकाई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वक्रता] [बंकुरता (दे०)] टेढ़ाई, [बंगई (दे०)]।

बंकुरता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) वक्रता (सं०)।

बंकिम—(वि०) टेढ़ा। "बंकिम दृग, रक्तिम मदिरा-घर"—[पंत०]

बंग—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पौष्टिक औषधि, (रसायन), बंग देश, बंगाल। "साधत बैरागी जड़ बंग"—सूर०। (वि०, दे०) वक्र, बंक।

बँगला—(वि०, दे०) [हि० बंगाल] बंगाल देश का, बंगाल सम्बन्धी। (संज्ञा, स्त्री०) बंगाल देश की भाषा। (संज्ञा, पु०) चारों ओर बरामदों वाला एकमंजिला घर जो खुले ठौर पर हो, छोटा हवादार अटारी पर का कमरा, बंगाले का पान।

बँगली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बंगला] हाथ का एक गहना, छनियाँ, छोटा बँगला, [बंगलिया (दे०)]।

बंगा—(वि०, दे०) [सं० बक्र, उद्दंड, मूर्ख। "राम मनुज कसरे सठ बगा"—[रामा०]

बंगाल, बंगाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बंगाल] बंग या बंगाल देश, बंगालिका नाम की एक रागिनी (संगी०)।

बंगाली—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बंगाल+ई० प्रत्य०] बंगाल का वासी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बंग] बंगाल की भाषा।

बंचक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वंचक] ठग, पाखंडी, छली, धूर्त। [**बंचकता** (संज्ञा, स्त्री०)] "बचक भगत कहाय राम के"—[रामा०]।

बंचकता, बंकचताई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वंचकता] धूर्त्तता, ठगी, छल।

बंचनता—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० वंचकता] ठगी, धूर्त्तता, छल।

बंचना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वचना] छल ठगी, धूर्त्तता, पाखंड। *†(क्रि० स०, दे०) [सं० बंचन] छलना, ठगना।

बँचवाना—(क्रि० स०) पढ़वाना।

बँचाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बाँचना] पढ़ाना, पढ़वाना।

बंछना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० वाँछा] चाहना, इच्छा या अभिलाषा करना।

बंछित, बांछित*†—(वि०, दे०) [सं० वांछित] चाहा हुआ, इच्छित, अभिलषित।

बंज†—(संज्ञा, पु०) [हि० बनिज] बनिज, बाणिज्य, व्यापार। "खेती करै न बंजै जाय"—[घाघ०]।

बजर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वन=ऊजड़] ऊसर, ऊसर भूमि।

बंजारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बनजारा] बनजारा, व्यापारी। [**बंजारिन** (स्त्री०)]। "जब लाद चलै बंजारा।"

बंजुल—(संज्ञा, पु०, सं०) स्तवक, गुच्छा।

बंझा—(संज्ञा, वि०, स्त्री०, दे०) बंध्या [बाँझ (सं०)]

बँटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वितरण] हिस्सा या विभाग होना, कई पुरुषों को भिन्न भिन्न भाग दिया जाना। [**बँटाना**, (स० रूप०)] [**बँटवाना** (प्रे० रूप०)]।

बँटवारा, बटवारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाँटना] विभाग, तकसीम, बाँटने की क्रिया। [**अमीन, बँटवारा** (यौ०)]

बंटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [स० वटक] गोलाकार छोटा डब्बा। [**बँटी** (स्त्री० अल्पा०)] [**चंटा-बटा** (यौ०)]।

बँटाई, बटाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बाँटना] बाँटने का भाव या क्रिया, लगान के रूप मे खेत की पैदावार का कुछ भाग लिया जाना।

बंटाधार—(वि०) चौपट, सत्यानास।

बँटावन*†—(वि०, दे०) [हि० बाँटना] बाँटने वाला।

बटैया—(संज्ञा, पु०) बाँटने वाला।

बंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बँटा] एक तरह की अरुई। (वि०) [प्रान्ती०] अकेला।

बंडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बाँडा=कटा] आधी बाँही की कुरती, फतुही, बगलबंदी]

बँड़ेरी, बड़ेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वरदंड] खपरैल में मँगरे पर लगने वाली लकड़ी। "ओरी का पानी बँड़ेरी धावै"—[घाघ०]।

बंद—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० मि० सं० बंध] बाँधने की वस्तु, बाँध, पुश्ता, मेंड़, तनी, बंधन, देह के अंगों के जोड़, क़ैद। (वि०, फ़ा०) जो खुला न हो, ढँका, स्थगित या रुका हुआ, क़ैद में किवाड़, ढकने या ताले से ऐसा अवरुद्ध मुख या मार्ग कि बाहर-भीतर आना-जाना न हो सके, अवरुद्ध। **—गोभी**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) पात-गोभी, करमकल्ला।

बंदगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) ईश्वर की बंदना, सेवा, प्रणाम, सलाम। "बंदगी होती है इस सिन की क़बूल"।

बंदन—(संज्ञा, पु०) [सं० वंदन] स्तुति, प्रणाम। (संज्ञा, पु०) [सं० वंदनी=गोरोचन] रोचन, सेंदुर, ईंगुर, रोली।

बंदनता—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० वंदनता] बंदनीयता, बंदना या आदर के लिये योग्यता।

बंदनवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वंदनमाला] तोरण, द्वार पर बाँधने की पत्तों और फूलों की झालर (मंगल-सूचनार्थ)।

बंदना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वंदना] स्तुति, प्रणाम। (क्रि० स०, दे०) प्रणाम करना।

बंदनी*—(वि०, दे०) [सं० वंदनीय] स्तुति या प्रणाम करने योग्य, वंदनीय।

बंदनी माल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० वंदनमाल] गले से पैर तक लटकती हुई माला।

बंदर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वानर] कपि, मर्कट, वानर, मनुष्य से मिलता हुआ एक चौपाया। **मुहा०—घुड़की या भबकी**–केवल डराने या धमकाने के लिये डाँट-डपट या धमकी। "कह दसकठ कौन तैं बन्दर"—[रामा०]।—**गाह**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) समुद्र के किनारे पर जहाजों के ठहरने का स्थान।—**शुल्क**–(पु०) बंदरगाह में लगने वाला कर [हारबरड्यूज़)।

बंदवान—(संज्ञा, पु०) [सं० वंदी+वान] बंदीगृह का रक्षक, कैदखाने का अफसर, जेलर (अं०)।

बंदसाल†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वंदीशाला] जेल, वंदीगृह, कारागार।

बंदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दास, नौकर। (संज्ञा, पु०, वि०) [सं० वंदी] कैदी, बंदी। "बंदा मौज न पावहो, चूक चाकरी माहिं"—कबी०।

बंदारु—(वि०) [सं० वंदारु] वंदनीय, सम्माननीय, पूजनीय।

बंदाल—(संज्ञा, पु०, दे०) देवदाली, एक प्रकार की घास।

बंदि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० वंदिन्) कैद, बंदीजन। **पू० का० (ब्र० अ०)** वंदना करके। "बंदि बैठि सिरनाइ"—[रामा०]।

बंदिया—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० वंदनी] मस्तक पर बाँधने का एक गहना, बेंदी, बेंदिया, दासी, टहलुई, बाँदी।

बँदिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्रबन्ध, बाँधने की क्रिया, योजना, रचना, षड्यंत्र। **मुहा०—बाँधना**–आयोजन करना।

बंदी—(संज्ञा, पु०) [सं० वंदिन्] चारण, राजाओं का यशोगान करने वाली एक जाति, भाट कैदी। [**बंदीजन** (यौ०)]। (संज्ञा, स्त्री०) [वि० बंदनी] एक सिर-भूषण, [बेंदी, बेंदिया (दे०)]। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) कैदी।—**उपस्थान**–(पु०) वैयक्तिक स्वतन्त्रता का शासन पत्र, कैदी को अदालत में पेश करने का परवाना। [हैबिअस कार्पस] —**खाना, गृह**–(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) जेलखाना, कारागार, [**बंदीघर** (हि०)]।—**छोर***†–(संज्ञा, पु०, यौ०) [फ़ा० बंदी+हि० छोर] बंधन (कैद) से छुड़ाने वाला।—**जन**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चारण। "तब बंदीजन जनक बुलाये"—[रामा०]।—**परिवर्त्तन-पोत**–(पु०) युद्ध बंदियों के आदानप्रदान के काम में आने वाला जहाज। [कार्टेलशिप]।—**लेखा**–(पु०) बंदी जीवन-पत्र। [हिस्ट्री टिकट (जेल)]।—**वान***–(संज्ञा, पु०) [सं० वंदिन्] कैदी।

बंदूक—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बारूद से गोली फेंकने वाला लोहे की नली-जैसा एक अस्त्र।—**ची**–(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बंदूक चलाने वाला, सिपाही।

बँदेरा*—(संज्ञा, पु०) [सं० वंदी] बंदी, कैदी, दास। [**बँदेरी** (स्त्री०)]।

बंदोबस्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) इन्तजाम, प्रबन्ध, खेती की भूमि को नाप कर लगान नियत करने का कार्य, इस प्रबंध का एक सरकारी विभाग।

बंदोल—(संज्ञा, पु०, दे०) दासी-पुत्र।

बंध—(संज्ञा, पु०, सं०) योग की मुद्रा या आसन (योग०), रति के आसन (कोक०), गिरह, लगान-बद, गाँठ, बंधन, कैद, बाँध, गद्य या पद्य मे निबंध रचना, शरीर, किसी विशेष आकृति या चित्र के रूप में छंद के वर्णों की व्यवस्था (चित्र का०) फँसाव, लगाव। रुक्का, दस्तावेज। [बांड]

बंधक—(संज्ञा, पु०, सं०) रेहन, ऋण के बदले में ऋणी के यहाँ रखी गई वस्तु, गिरवी, थाती, रति या योग का आसन, बंध (सं०)।—**ऋण**–(पु०) रेहन रखकर लिया जाने वाला कर्जा [मार्गेज डेट]।

बंधन—(संज्ञा, पु०, सं०) रस्सी, बाँधने की क्रिया या वस्तु, कारागार, शरीर के जोड़, वध, प्रतिबंध, स्वतन्त्रता का बाधक।

बंधना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० बंधन] बाँधा जाना, बद्ध होना, कैद में जाना, प्रतिज्ञा या वचन से बद्ध होना, क्रम का स्थिर होना, ठीक या सही होना, प्रेम-पाश में बँधना, मुग्ध होना, अटकना, फँसना, प्रतिबंध में रहना। [**बँधाना** (स० रूप)]

[बँधावना (प्रे० रूप)],—बँधवाना—(संज्ञा, पु०) [सं० बंधन] बाँधने की वस्तु या साधन।

बंधनागार—(संज्ञा, पु०) [सं० बंधन+आगार] कारागार, बंदीगृह।

बंधनालय—(संज्ञा, पु०) [सं० बंधन+आलय] कारागार।

बंधनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बंधन (सं०) बाँधने, उलझाने या फँसाने की चीज या साधन।

बंधनिक—(संज्ञा, पु०, सं०) बंदीगृह में बंद करने वाला व्यक्ति। [जेलर]

बंधनीय—(वि०) बाँधने योग्य, बंधन में डालने योग्य।

बंधयिता—(संज्ञा, पु०, सं०) बाँधने वाला।

बधान, बँधान—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बंधना] पानी के रोकने का धुस्स या बाँध। व्यवहार या लेन-देन की निश्चित परिपाटी, इस परिपाटी से दिया-लिया धन, ताल का मीटा, बंदिश, आयोजन। मुहा०—**बाँधना**-विधान बनाना। ताल-स्वर का सम (संगी०) बंधान, निश्चित कार्य-क्रम।

बंधी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बंधिन] बँधा हुआ। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० बंधना] बंधेज।

बंधु—(संज्ञा, पु०, सं०) भ्राता, भाई, सहायक, मित्र, दोधक छद, एक वर्णवृत्त (पिं०)। बंधूक फूल। [बंधुता, बंधुत्व (संज्ञा, स्त्री०)]। [बंधु-बांधव (यौ०)]।

बँधुआ, बंधुवा—(संज्ञा, पु०, वि०) [हि० बँधना] बंदी, कैदी।

बधुक—(संज्ञा, पु०, सं०) दुपहरिया का फूल।

बंधुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बंधुत्व, भाई-चारा, मित्रता, बन्धु का भाव।

बंधुत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) बंधुता, बंधु का भाव।

बंधुर—(संज्ञा, पु०, सं०) मुकुट, दुपहरिया का फूल, हंस, बगुला, बहिरा मनुष्य। (वि०, सं०) सुन्दर।

बधुरा—(संज्ञा, स्त्री०) वेश्या, दुश्चरित्रा, कुलटा।

बंधुल—(संज्ञा, पु०, दे०) वेश्या-पुत्र। (वि०) निहुरा हुआ, वक्र, सुन्दर, मनोहर।

बंधूक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बंधुक] बंधु, दुपहरिया का फूल, बधुक, दोधक छंद (पिं०)।

बंधेज—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बंधना+एज प्रत्य०] प्रतिबंध, नियम, रुकावट, नियत रूप और समय से लेने-देने का पदार्थ या धन, बाँधने की युक्ति या क्रिया।

बंध्या—(वि०, स्त्री०, सं०) [बाँझ बाँझिनी (दे०)] संतान न पैदा करने वाली स्त्री।—**पुत्र**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बाँझ का लड़का, अनहोनी वस्तु, बध्यापुत्र, असंभव बात।

बंध्यापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बंध्य+अयन हि० प्रत्य०] बाँझपन, बंध्यारोग। (वैद्य०)।

बंपुलिस—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [अनु० बं+प्लेस अं०] म्युनिसपैलिटी का सार्वजनिक पाखाना, टट्टी।

बंब—(संज्ञा, पु०, अनु०) युद्ध के आरम्भ से पूर्व वीरों का उत्साह बढ़ाने वाली घोर ध्वनि, हल्ला, रण नाद, डंका, दुन्दुभी, नगाड़ा। मुहा०—**बजाना**-रण या लड़ाई के लिये तैयार होना।

बंबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मंबा] पंप, सोता, जल का यंत्र, जल-कल, बच्चों को डराने का कल्पित नाम।

बँबाना—(क्रि०, अ०, दे० अनु०) राँभना, गाय आदि का बाँ बाँ बोलना।

बंबू—(संज्ञा, पु०) [मलाया० बेंबू=बाँस] चंडू पीने की बाँस की पतली छोटी नली, (अं०) बाँस।

बंस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वंश] वंश, कुल, बाँस। "बंस सुभाव उत्तर तेहिं दीन्हा"—[रामा०]। —**कार**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वंश] बाँसुरी। —**लोचन**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वंश+लोचन] वंस कपूर, सफेद और नीले रंग का बाँस का सार भाग (औष०)।

बँसवाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०,) वह स्थान जहाँ बाँसों के एक साथ काफी संख्या में मकान हों।

बंसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०] [सं० वंशी] बाँस की नली से बना एक मुँह का बाजा, बाँसुरी, मुरली, मछली फसाने का यंत्र, विष्णु, राम, कृष्णादि के पद-तल का एक रेखा-चिन्ह (सामु०)।—**धर**—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वंशीधर] श्रीकृष्ण।

बँहगी, बँहिगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वह] बोझा ढोने की एक बाँस की लंबी खपाच के सिरों पर लटके हुए छींके [बँहिगा (पु०)]।

ब—(संज्ञा, पु०, सं०) जल, वरुण, ताना, बुनना, घट। (अ०, फा०) वास्ते, लिए, पर, से, साथ।—

खुद-(अ०) अपने से ।—**खूबी**-(क्रि०, वि०, फ़ा०) भली भाँति, अच्छी तरह, पूर्णतया ।—**गैर**-(अव्य, अ०) बिना ।

बहुठना*—(क्रि०, अ०, दे०) बैठना (हि०) ।

बउर†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बौर या मौर] बौर, मौर ।

बउरा, बाउर*†—(वि०, दे०) [हि० बावला] बावला, पागल, सिड़ी, गूँगा । "तेहि क्रिमि यह बाउर बर दीन्हा"—[रामा० ।]

बक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वक] बगुला, बगला अगस्त्य का एक फूल या वृक्ष, कुबेर, बकासुर । "भये पुरान बक तऊ, सरवर निपट कुचाल"—[नीति०] । (वि०) बगले सा सफेद । [**बकध्यान** (यौ०)]"बैठे सबै बकध्यान लगाये ।" (संज्ञा, स्त्री०) [हि० बकना] बकवाद, प्रलाप । "छाँड़ि सबै जक तोहिं लगी बक"—नरो० । —**ध्यान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० वक+ध्यान] बनावटी साधुपन, पाखंड, दुष्ट उद्देश्य के साथ दिखावटी साधु-चेष्टा । "यहाँ आय बकध्यान लगावा"—[रामा०] [**बकध्यानी** (वि०)] ।—**मौन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिये बगुले के समान दिखावटी साधु-भाव से चुप रहना । (वि०) चुप-चाप अपना उद्देश्य साधने वाला ।

बकतर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [बखतर (दे०)] सनाह, कवच, युद्ध में देह-रक्षार्थ पहिनने का लोह-वस्त्र, जिरह-बक्तर ।

बकता*—(वि०, दे०) [सं० वक्ता] कहने वाला । "बिन बानी बकता बड़ जोगी"—[रामा०] ।

बकना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० वचन] बड़-बड़ाना, व्यर्थ प्रलाप करना, व्यर्थ बेढंगी बातें कहना, डाँटना, क्रोध से दपटना ।—[**बकाना** (द्वि० स० रूप)], [**बकवाना** (प्रे० रूप)] ।

बकबक—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० बकना] बकने का भाव या क्रिया ।

बकरकसाब—(संज्ञा, पु०, यौ०,) [हि० बकरा अ० कस्साब=बकसाई] चिकवा, बकरे को मार कर मांस बेचने वाला, बकरकसाई ।

बकरना —(क्रि०, स०, दे०) [हि० बकना] अपना अपराध आप ही कहना, आप ही आप बकना, बड़बड़ाना, बकुरना, बक्कुरना (ग्रा०), [**बकराना** (स० रूप)], [**बकरवाना**-(प्र ० रूप)] ।

बकरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वकीर] छोटे झुके सींग, लम्बे बालों, छोटी पूँछ और फटे खुरों वाला एक पशु, [बुकरा, बोकरा (दे०)] [**बकरी**-(स्त्री०)] । "बकरा पाती खात है ताकी काढ़ी खाल"—कबी० ।

बकलस—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० बकलस] बकसुआ, किसी बंधन के दो सिरों को मिलाकर कसने की अँकुसी (विलो०) ।

बकला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वल्कल] पेड़ की छाल, फल का छिलका, बोकला, बक्कल (ग्रा०) ।

बकवाद—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) व्यर्थ की बक बक या बात, [बकवाय (दे०)], [**बकवादी** (वि०)] ।

बकवादी—(वि०) [हि० बकवाद] बक्की । "बकवादी बालक बधजोगू"—[रामा०] ।

बकवास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बकवाद] [बकवाय (दे०)] बकवाद, बकबक ।

बकस—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० बाक्स] बाकस (दे०), संदूक, डिब्बा, खाना ।

बकसना*—(क्रि०, स०, दे०) [फ़ा० बख्स+ना हि०] प्रसन्नता या कृपापूर्वक देना, क्षमा करना [**बकसाना** (स० रूप)] [**बकसवाना** (प्रे० रूप)] । "तिन्हैं बकसीस बकसी हौं मैं बिहसि कै"—कालि० ।

बकसी—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० बख्शी] मुन्शी ।

बकसीस*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० बखशिश] पारितोषिक, इनाम, दान । "ताको वाहन भेजिये यही बड़ी बकसीस"—स्फु० ।

बकसुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बकलस] बकलस ।

बकाउर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बकावली] एक पौधा जिसके फूल अति सुगंधित होते हैं ।

बकाना—(क्रि० स०, दे०) बकना का प्रे० रूप, रटाना, बकवाद कराना ।

बकायन, बकाइन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बड़का+नीम] नीम जैसा एक पेड़ ।

बकाया—(संज्ञा, पु०, अ०) बचत, बचा हुआ, शेष, बाकी ।

बकार—(संज्ञा, पु०, दे०) ब वर्ण । (फ़ा०) कार्यार्थ । जैसे—बकार-सकार ।

बकारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ब, कार या [वाक्य] मनुष्य के मुँह से निकलने वाला शब्द ।

बकावर—(संज्ञा, पु०, सं०) [बकाउर, (दे०)] बकावली (सं०) ।

बकावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुलबकावली, एक पौधा जिसका फूल श्वेत और सुगंधित होता है। [**बकपंक्ति** (यौ०)]

बकासुर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० बकासुर] बक रूपी एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था (भाग०)।

बकुचना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० विकुंचन] सिकुड़ना, सिमटना, संकुचित होना।

बकुचा-बकचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बकुचना] छोटी गठरी, बकचा, स्त्री० [बकची, बकुची-(दे०)]।

बकुची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वाकुची] एक औषधि का पौधा। (संज्ञा, स्त्री०,) [हि० बकुचा] छोटी गठरी, बकची (ग्रा०)।

बकुचौहाँ‡—(वि०, दे०) [हि० बकुचा+औहाँ प्रत्य०] बकुचे की तरह [**बकुचौहीं** (स्त्री०)]।

बकुल—(संज्ञा, पु०, सं०) मौलसिरी। "सोऽयम् सुगंधिमकुलो वकुलो विभाति"—लोलं०।

बकुला†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बगला] वक (सं०) एक जल-पक्षी।

बकेन-बकेना†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वष्कयणी] साल भर से अधिक की ब्यायी दूध देने वाली गाय या भैंस। [**लवाई**–(विलो०)]।

बकैयाँ, बकइयाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वक्र+ऐया प्रत्य] बच्चों का घुटनों के बल चलना। "चलत बकैयाँ नंद-अजिर मैं कान्ह दुलारे"—मन्ना०।

बकोट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० प्रकोष्ठ या अभिकोष्ट] बकोटने की क्रिया या भाव।

बकोटना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बकोट] खरोंचना, नाखूनों से नोचना, निकोटना, पंजा मारना, खरबोटना।

बकौरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बकावली] बकाउर, गुलबकावली।

बक्कम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० बकम] एक कटीला छोटा पेड़ जिससे लाल रंग निकलता है, पतंग।

बक्कल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वल्कल] बकला, छाल, छिलका।

बक्काल—(संज्ञा, पु०, अ०) बनियाँ।

बक्की—(वि०, दे०) [हि० बकना] बहुत बकनेवाला, बड़बड़िया, बकवादी।

बक्खर—(संज्ञा, पु०, दे०) हल के जोड़ का खेत जोतने का एक यंत्र, चीनी का शीरा।

बक्स—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० बाक्स] सन्दूक।

बक्षोज—(संज्ञा, पु०, सं०) उरोज, उरज, स्तन।

बखत—(संज्ञा, पु०, दे०) वक्त, (फ़ा०)।

बखतर, बख्तर—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० बक्तर] कवच, सनाह, [बकतर (दे०)]।

बखर—(संज्ञा, पु०, दे०) बक्खर, बखार, बाखर।

बखरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० बखरः] हिस्सा, भाग, बाँट, बाखर।

बखरी‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बखार] घर, मकान, जमींदार का बड़ा मकान, बखारी (ग्रा०)।

बखसीस*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० बख-शीश] पारितोषिक, इनाम, बकसीस, दान।

बखान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्याख्यान] कीर्तन, कथन, वर्णन, स्तुति, बड़ाई, प्रशंसा। "दिन दस आदर पाय के, कर ले आप बखान"—वि०।

बखानना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० बखान+ना प्रत्य०] प्रशंसा या स्तुति करना, सराहना, वर्णन करना, कहना, निन्दा करना, गाली देना [व्यंग्य]।

बखार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्राकार] अन्न भरने का कोठा। [**बखारी** (स्त्री०, अल्पा०)]।

बखिया—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक तरह की महीन सिलाई।—**उधेड़ना**–सीयन खोलना, रहस्य खोलना या भंडाफोड़ करना।

बखियाना—(क्रि० स०, दे०) [फ़ा० बखिया +ना हि० प्रत्य०] बखिया की सिलाई करना।

बखीर†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, [हि० खीर का अनु०] मीठे रस में पका चावल, मीठा भात।

बखील—(वि०, अ०) सूम, कंजूस, कृपण। [**बखीली** (संज्ञा, स्त्री०)]—कंजूसी। "बखीलर बुअद जाहिदा बहुरोबर"—सादी०।

बखेड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [बखेरना) व्यर्थ विस्तार, आडंबर, झंझट, झगड़ा, टंटा, उलझन, विवाद, कठिनाई।

बखेड़िया—(वि०, दे०) [हि० बखेड़ा+इया प्रत्य०] झगड़ालू, फ़सादी।

बखेरना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० विकरण] [बिखारना (दे०)], छितराना, फैलाना, बिथराना (ग्रा०)।

बखोरना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० बकुर] छेड़ना, टोकना, बोलना।

बख़्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भाग्य, तकदीर। [**बदबख़्त, नेकबख़्त, कमबख़्त** (यौ०)], [बखत (दे०)] वक्त (फ़ा०)।

बख़्तर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कवच, सनाह, बखतर, बक्तर।

बख़्शना—(क्रि०, स०, दे०) [फ़ा० बख्श+ना हि० प्रत्य०] दान या क्षमा करना, दे डालना, त्यागना, [**बख़्शाना** (द्वि० रूप)] [**बख़्शवाना** (प्रे० रूप)]।

बख़्शिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) उदारता, कृपा, क्षमा, दान। "बख़्शिश तेरी आम है घर घर" —हाली०।

बग†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वक] बगुला।

बगई‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुत्तों की मक्खी। कुकुरमाछी (ग्रा०) एक प्रकार की घास।

बगछुट, बगटुट—(क्रि०, वि०, दे०) [हि० बाग+छुटना या टूटना] सरपट, बड़े वेग से, बे लगाम भागना।

बगदना†—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० बिगड़ना] लुढ़क जाना, बिगड़ जाना, ठीक मार्ग से हट जाना, खराब हो जाना, बिखरना, गिरना, भटकना, भ्रम में पड़ना। [**बगदाना** [स० रूप)], [**बगदवाना** (प्रे० रूप)]।

बगदहा*‡—(वि०, दे०) [हि० बगदना+हा प्रत्य०] बिगड़ैल, चौंकन या बिगड़ने वाला [**बगदही** (स्त्री०)]।

बगदाद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) इराक़ का एक प्रसिद्ध एव प्राचीन नगर जो ८ वीं और ९ वीं शताब्दी मे कला, विज्ञान आदि का एक प्रधान केन्द्र था।

बगदाना—(स० क्रि०) बिगाड़ना, भड़काना, खराब करना।

बगना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० बक] घूमना, भ्रमण करना, फिरना।

बगनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बगई घास।

बगमेल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाग+मेल] बाग से बाग मिलाकर चलना, बराबर-बराबर चलना, बराबरी, तुलना। "हरषि परसपर मिलन हित, कछुक चले बगमेल"—[रामा०]। (क्रि० वि०) साथ साथ, बाग मिलाये हुए चलना।

बगर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० प्रघण] प्रासाद, महल, घर, आँगन, सहन, गोशाला, बगार, कोठरी। (संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० बगल] बगल, घाटी। "जो पै पशुपति सो तो नद की बगर में" —स्फुट०। "बगर बगर माँहि बगर रही है छवि" —रसाल०।

बगरना*†—(क्रि० अ०, स०, दे०) [सं० विकरण] बिखरना, फैलाना, छिटकना, छितराना। [**बगराना** (स० रूप)], [**बगरवाना** (प्रे० रूप)]।

बगरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बखरी] घर, मकान, बखरी, [कुत्ते की मक्खी (दे०)] दले हुए धान।

बगरूर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बगूला] वायु का चक्कर, बगुला (उ०)।

बग़ल—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) काँख, छाती के दोनों ओर बाहु मूल के नीचे के गढ़े, पार्श्व, ओर। **—गंध**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [फा० बगल+गंध हि०] बगल से आते दुर्गंधियुक्त पसीना निकलने का रोग, बगल का फोड़ा, कँखवार।**—बंदी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) एक तरह की कुरती या मिरजई। **मुहा०—में दबाना या धरना**-अधिकार करना, ले लेना।**—बग़लें बजाना**-अति हर्ष प्रगट करना, अति प्रसन्नता मनाना। इधर उधर या किनारे का हिस्सा।**—(लें) झाँकना**-भागने का उपाय करना।**—गर्म करना**-किसी की बगल में प्रेम से मिल कर बैठना। पास या समीप का स्थान, कुर्ते आदि में बगल या कंधे के नीचे जोड़ का कपड़ा।

बगला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बक+ला प्रत्य०] लंबी चोंच, टाँगें और गला वाला एक श्वेत पक्षी, बगुला, बक। [**बगली** (स्त्री०)]। **मुहा०—भगत**-पाखंडी, ढोंगी, धर्मध्वजी, धोखेबाज, छली, कपटी। **लो०**—"बगला मारे पखना हाथ"—व्यर्थ परिश्रम करना, गरीब का मारना निष्फल है।

बगलामुखी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) एक देवी (तंत्र)।

बगलियाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बगल+इयाना प्रत्य०] बगल से जाना, हटकर चलना, एक ओर हटना। (क्रि० स०) अलग करना, बगल में करना या लेना (दबाना)।

बगली—(वि०, दे०) [हि० बगल+ई प्रत्य०] बगल-सम्बन्धी, बगल का, बगल की ओर से। **मुहा०—घूँसा**-वह चोट जो ओट में छिपकर या धोखे से की जाये। दरजियों के सुई तागादि रखने की थैली, तिलादानी। (संज्ञा, स्त्री०) कुरते आदि में कंधे के नीचे का भाग, बगल।

बगलौहाँ‡—(वि०) [हि० बगल+औहाँ प्रत्य०] तिरछा, बगल की ओर झुका हुआ। [**बगलौहीं** (स्त्री०)]।

बगसना*‡—(क्रि० स०, दे०) [हि० बख्शना] बकसना, बख्शना, दान या पारितोषिक देना।

बगहंस—(संज्ञा, पु०, दे०) एक हंस-विशेष।

बगहा—(संज्ञा, पु०, दे०) बाग (फ़ा०) व्याघ्र (सं०) बाघ।

बगा, बागा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बागा] जामा। "बागो बनो जरपोस को तामैं"—[देव०]। *(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वक] बगला।

बगाना*‡—(क्रि० स०, दे०) [हि० बगना का द्वि रूप] घुमाना, फिराना, सैर कराना, टहलाना। (क्रि० अ०, दे०) भगाना, वेग से जाना।

बगार—(संज्ञा, पु०, दे०) वह स्थान जहाँ गायें बाँधी या चराई जाती हैं, बगर, घाटी।

बगारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वितरण] (हि० बगरना का स० रूप) छिटकाना, फैलाना, बिखेरना, बगराना, बगरावना (ग्रा०)।

बग़ावत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बाग़ी होने का भाव, राजद्रोह, बलवा, विद्रोह।

बगिया*†—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० बाग+इया हि० प्रत्य०] छोटा बाग या उपवन, वाटिका।

बगीचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० बागचा] छोटा उपवन या बाग, बग़ीचा [**बगीची** (स्त्री० अल्पा०)] बागीची।

बगुर—(संज्ञा, पु०, दे०) जाल, फाँसी।

बगुला—(संज्ञा, पु०, दे०, हि०) बगला। "बगुला झपटे बाज पै बाज रहे सिर नाय"—[गिर०]। **—भगत**-(वि०) पाखंडी, सीधेपन का ढोंग करना, ठगनेवाला।

बगूरा, बगूला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाउ+गोला] किसी एक जगह भँवर सी चक्कर खाती हवा, वातचक्र, बवंडर। "उट्ठा सहरा में बगूला तो यों बोला मजनूं।"

बगेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) टिटिहिरी, भरुही, बघेरी (प्रान्ती०) एक मटमैले रंग का पक्षी।

बग्गी बग्घी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० बोगी] चार पहियों की छायादार घोड़ागाड़ी।

बघम्बर, बाघम्बर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० व्याघ्रांबर] शेर या बाघ का चमड़ा। "बरुनी बघंबर मैं"—[देव०]। [**बघम्बरी** (वि०)]।

बघ—बाघ के समान का छोटा रूप। **—छाला**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० व्याघ्र+छाला] बाघ की खाल, बघंबर, बाघंबर।

बघनखा†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० व्याघ्र+नख] शेर के पंजे सा चिपटे टेढ़े काँटेदार अस्त्र, शेर-पंजा, बच्चों के गले का गहना जिसमें बाघ के नख सोने या चाँदी में कुछ कुछ मढ़े रहते हैं, बघनख। [**बघनहीं** (स्त्री० अल्पा०)]। "गले बीच बघनहाँ सुहाये"—[रामा०]।

बघनहियाँ*†—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० व्याघ्रनख] बघनहाँ, बघनख।

बघना*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्याघ्रनख] बघनहाँ।

बघरूरा‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० वायु+गोला] बवंडर, वायुचक्र, बगरूरा।

बघार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बघारना] गर्म घी में पड़ा मसाला, छौंक, तड़का।

बघारना—(क्र स०, दे०) [सं० अवधारण] तड़का देना, छौंकना, अपनी योग्यता से अधिक बोलना, दागना। **मुहा०—शेख़ी बघारना**-शान दिखाना।

बघी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) डांस, मधुमक्खी, पशुओं की मक्खी।

बघेल, बघेला—(संज्ञा, पु०, दे०) राजपूतों की एक जाति, डाँवरू (प्रान्ती०), बाघ का बच्चा। [**बघेलखंड** (यौ०)] बघेल क्षत्रियों का प्रदेश, रीवाँ के चारों ओर का प्रान्त।

बच*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वचः] वचन, वाक्य। "मन बच काय मैं हमारे रहिबो करै"—सरस०। (संज्ञा, स्त्री०) एक पौधा जिसके पत्ते और जड़ औषधि के काम आती है। "बचाभया सुंठिशतावरी समा"—लोल०। [**दुधबच** (यौ०)]

बचका—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पकवान, गठरी, पुटकी। **लो०**—"चोरन बचका लीन, बिगारिन छुट्टी पाई।" [**बचकी** (स्त्री०)]।

बचकाना‡—(वि०, दे०) [हिं० बच्चा+काना प्रत्य०] बच्चों के योग्य, बच्चों का सा। (क्रि० स०, दे०) बचके में बाँधना, बचकियाना (ग्रा०)।

बचकाना—(वि०) बच्चों जैसा, बच्चों के लायक, बच्चों के नाप का। [**बचकानी** (स्त्री०)]।

बचत, बचती—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बचना] बचने का भाव, शेष, बाक़ी, बचाव, लाभ, रक्षा, रिहाई। **—प्रमाण-पत्र**-(पु०) डाकखाने में बिकनेवाले प्रमाण-पत्र जिन्हें निश्चित अवधि के बाद भुनाने पर ब्याज सहित मूलधन मिल जाता है। [सेविंग सर्टीफिकेट]

बचन*†—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० वचन] वाणी, बात, वाक्। "विप्र बचन नहिं कहेउ विचारी"—[रामा०]। **मुहा०—देना (लेना)**-वादा या प्रतिज्ञा करना (कराना)**—निभाना**-कही हुई बात का प्रति-पालन या पूरा करना।**—बंद करना**-प्रतिज्ञा करना।**—बंध (बद्ध) होना**-प्रतिज्ञा मे बँध जाना।**—मानना**-आज्ञा पालन करना। "तौ तुम बचन मानि घर रहहू"—[रामा०]।**—लेना**-आज्ञा लेना, प्रतिज्ञा कराना।**—डालना**-माँगना।**—टालना (पेलना)**-वादा या आज्ञा न मानना। "आयेहु तात बचन मम पेली"—[रामा०]।**—तोड़ना या छोड़ना**-प्रतिज्ञा भग करना, वादा न पूरा करना।**—बद्ध**-(यौ०) प्रतिज्ञा से बँधा हुआ।**—दत्त**-वादा किया हुआ, मँगतेर, सगाई किया हुआ।**—बाँधना**-प्रतिज्ञा कराना।**—हारना**-प्रतिज्ञा-बद्ध होना।**—(नों) पर रहना**-वादे पर रहना, प्रतिज्ञा का ध्यान रख उसे पूरा करना।

बचना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वंचन—न पाना] प्रभावित न होना, रक्षित रहना, विपत्ति, दुःख या झगड़े से अलग रहना, छूट या रह जाना, बुरी बात से दूर रहना, खर्च न होना, शेष या बाक़ी रहना, छिपाना, चुराना। (क्रि० स०) [सं० वचन] कहना। [**बचाना बचावना** (स० रूप)], [**बचवाना** (प्रे० रूप)]। **मुहा०—बच (बचा) कर चलना**-सँभल कर सतर्कता से व्यवहार या काम करना।

बचपन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बच+पन प्रत्य०] लड़कपन, छोटापन, अबोधता।

बचवैया*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बचाना+वैया प्रत्य०] बचैया, रक्षक, बचाने वाला।

बचा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० बचा, सं० वत्स] लड़का, बालक, अपमान सूचक शब्द। [**बची** (स्त्री०)]।

बचाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बचाना] त्राण, रक्षा, हिफ़ाज़त।

बच्चा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) किसी जीव का छोटा छौना, लड़का, बालक। [**बच्ची** (स्त्री०)]**—दान**-(संज्ञा पु०, फ़ा०) गर्भाशय। [**बच्चादानी** (स्त्री०)] **मुहा०—(च्चों) सा बोलना**-तुतलाना।**—(च्चों) का खेल**-सरल कार्य्य। (वि०) अज्ञान, अनजान।**—बनना (होना)**-अजान या अबोध बनना (होना)।

बच्छ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वत्स] बेटा, बच्चा, गाय का बछड़ा। "बच्छ पियाय बाँधि तब राजा"—ला० सी० रा०। "बहुरि लाल कहि बच्छ कहि"—[रामा०]।

बच्छल*†—(वि०, दे०) [सं० वत्सल] वत्सल, दयालु, कृपालु, बछुल (ग्रा०)।

बच्छस*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वक्षस्] छाती, वक्षस्थल।

बच्छा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वत्स] गाय का बच्चा, बछड़ा, बछुवा (ग्रा०)। [**बछिया** (स्त्री०)]।

बच्छासुर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वत्सासुर] एक दैत्य।

बछ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वत्स] बछुवा, बछड़ा, बच्छा, बाछा (ग्रा०)। [**बाछी** (स्त्री०)]।

बछड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बच्छ+ड़ा प्रत्य०] गाय का बच्चा। [**बछड़ी, बछिया** (स्त्री०)]।

बछनाग, बच्छनाग—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वत्सनाभ] सींगिया, तेलिया। मीठा स्थावर विष। एक नैपाली विष वृक्ष की जड़। "बच्छनाग नीको लगै"—कुं० वि० ला०।

बछरा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वत्स] बछड़ा।

बछरू, बछेरू†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वत्स] बछड़ा, लयेरू (ग्रा०)।

बछल*†—(वि०, दे०) वत्सल (सं०)। [**बछलता, बत्सलता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

बछवा‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वत्स] बछड़ा। [**बछिया** (स्त्री०)]

बछेड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वत्स] घोड़े का बच्चा । [**बछेड़ी** (स्त्री०)] ।

बजंत्री—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाजा] बजनियाँ, बाजा बजाने वाला ।

बजड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वज्रा] घर जैसी नौका । बजरा, बाजरा (अन्न) ।

बजना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बाजा] किसी बाजे या वस्तु से चोट लगने पर शब्द प्रगट होना, बोलना, हथियारों का चलना, हठ या आग्रह करना, विख्यात होना, लड़ाई होना । [**बजाना, बजाबना**—स० रूप] [**बजवाना**—प्रे० रूप] ।

बजनियाँ, बजनिहाँ—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) [हि० बजना] बाजा बजाने वाला ।

बजनी—(वि०, दे०) [हि० बजना] जो बजता या बजाता हो ।

बजबजाना—(क्रि० अ०, दे०) सड़ने की झाग उठना ।

बजमारा*†—(वि०, दे०, यौ०) [हि० वज्र + मारा] वज्र से मारा हुआ, जिस पर वज्र गिरा हो । [**बजमारी** (स्त्री०)] । " हांही बजमारी मारी मारी फिरिबो करौं"—रसाल ।

बजरंग, बजरंगी*—(वि०, दे०, यौ०) [सं० वज्रांग] वज्र सा कठोर शरीर वाला, हनुमान जी । " महावीर विक्रम बजरंगी "—हनु० ।—**बली**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वज्रांग + बली] हनुमान जी, महावीर जी ।

बजर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वज्र] वज्र, बज्जुर (ग्रा०) ।—**बट्टू**–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वज्र + बट्टा पु०] एक पेड़ का बीज जिसे दृष्टि-दोष से बचाने के लिये बच्चों को पहिनाते हैं ।

बजरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वज्रा] बजड़ा, बड़ी पटी हुई कमरे सी नाव । (संज्ञा, पु०, दे०) [वि० बाजरा] बाजरा (अन्न) ।

बजरागि, बजरागी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वज्राग्नि] बिजली, विद्युत ।

बजरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वज्र] कँकड़ी, छोटे छोटे कंकड़, छोटा बाजरा, किले आदि पर छोटा दिखावटी कँगूरा, ओला ।

बजवैया†—(वि०, दे०) [हि० बजवाना] बजानेवाला, जो बजाता हो । [बजैया (दे०)]

बजाक—(संज्ञा, पु०, दे०) सर्प-विशेष ।

बजागि‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० वज्र + अग्नि] वज्र की अग्नि, बिजली, बजागी ।

बज़ाज़, बज़ाज़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० बज्जाज़] कपड़े की दूकान करने वाला, वस्त्र-व्यापारी । [**बजाजिन** (स्त्री०)]

बज़ाज़ा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वह बाज़ार जहाँ बजाज़ों की दूकाने हों ।

बज़ाज़ी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बजाज़ का कार्य्य, पेशा या दूकान ।

बजाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बाजा] बाजे आदि पर चोट पहुँचा या हवा का दबाव डाल कर शब्द करना, मारना, आघात करना, पूरा करना । [**बजवाना**—प्रे० रूप], [**बजवाई** (संज्ञा, स्त्री०)] । **मुहा०—ठोकना**,—जाँच-पड़ताल करना ।

बजार*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० बाज़ार] हाट, बाजार । [बजारू (दे०)] । "जाय न बरनि विचित्र बजारू "—[रामा०] । (वि०) [बजारु (दे०)] । बाजारू (हि०) बाज़ार का ।

बजूखा—(संज्ञा, पु०, दे०) काली हाँड़ी जो खेत में लगाई जाती है, बिजूखा (प्रांती०) ।

बजर, बज्जुर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वज्र] वज्र ।

बझना, बझावना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० बद्ध] बँधना, हठ करना, उलझना, फँसना, भिड़ना । [**बझाना**—(सं० रूप)], [**बझवाना**—(प्रेरणा रूप)] ।

बझाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बझाना] उलझाव, फँसाव । [**बझावट** (संज्ञा, स्त्री०)]

बट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वट] बरगद का पेड़, बड़ा या बरा (भोजन) बाट (बटखरा) रस्सी की ऐंठन, बटाई, गोला, लोढ़ा, बट्टा । "बट-छाया बेदिका सुहाई"—[रामा०] ।

बटई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्त्तक] बटेर पक्षी ।

बटखरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वटक] पत्थर का बाँट जिससे वस्तुयें तौली जाती हैं ।

बटन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बटना] ऐंठन, बटने क्रिया का भाव या काम । (संज्ञा, पु०, अं०) कपड़े की घुंडी, बोताम ।

बटना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वट=बटना] वितरित होना, बँटना, कई तागों या तारों

को मिलाकर ऐंठना जिससे सब मिलकर एक हो जावें। [बटना—(द्वि० रूप)]

बटपरा, बटपार†*—(संज्ञा पु०, दे०) [हि० बटमार] बटमार, रास्ते में मारकर सामान छीन लेने वाला।

बटमार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बट+मार] डाकू, ठग, लुटेरा।

बटमारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बटमार] डकैती, धूर्त्तता, ठगी।

बटला, बटुश्रा, बटुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्त्तुल] देगचा, देग, हंडा, दाल-चावल पकाने का चौड़े मुँह वाला बरतन। [**बटली, बटलोई, बटलोही, बटुई** (स्त्री०)]

बटवाना—(क्रि० अ०, दे०) सिल पर लोढ़ा से पीसना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उद्वर्त्तन, प्रा० उव्वटन] चिरौंजी या सरसों आदि का देह पर लगाने का उबटन या लेप, बाँटने या पीसने का लोढ़ा।

बटवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाटवाला] पहरे वाला, राह का कर लेने वाला।

बटवारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाटना] भाग, हिस्सा, विभाजन।

बटा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वटक] गोला, गेंद, ढेला, रोड़ा, ढोंका, पथिक, बटोही, यात्री। [**बटिया** (स्त्री० अल्पा०)]। (वि०) [हि० बटना] ऐंठा या पिसा हुआ। (संज्ञा, पु०, हि०) भिन्न का हर जैसे—तीन बटा चार (३/४)।

बटाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बटना, बाँटना] बटने या बाँटने का कार्य या [मजदूरी (दे०)], आधा साझा (कृषि या बछवा आदि चराने में)।

बटाऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाट+आऊ] पथिक, बटोही, मुसाफिर। (वि०, ग्रा०) हिस्सा बँटाने वाला [हि० बँटाना]। "राजिवलोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं"—क व०। मुहा०—**होना**-चल देना।

बटाक‡*—(वि०, दे०) [हि० बड़ा+क] बड़ा, ऊंचा, उत्तुंग।

बटाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बटना] पिसाना, बँटवाना [हि० बाँटना]। (क्रि० अ०, दे०) [पू० हि० पटाना] बंद होना, जारी न रहना।

बटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बटा=गोला] छोटा गोला या बट्टा, लोढ़िया। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बाट=मार्ग] छोटा मार्ग या पथ, पगडंडी। "बाके संग न लागिये, घाले बटिया कोंच"—कबी०।

बटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वटी] गोली, एक पकान्न, बड़ी। *—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वाटी] वाटिका, उपवन। (वि०) [हि० बटना] ऐंठी हुई।

बटुश्रा, बटुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्तुल] बड़ी बटलोई, कई खानेदार गोल थैला। [**बटुई, बटुइया** (स्त्री० अल्पा०, दे०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बटना] पीसा हुआ।

बटुई—(संज्ञा, स्त्री०) छोटी बटलोही।

बटुरना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वर्त्तुल+ना प्रत्य०] सिमटना, सिकुड़ना, एकत्रित या इकट्ठा होना, झाड़ू से साफ होना, बटुरियाना (ग्रा०)। [**बटुराना**—(स० रूप)], [**बटुरवाना**—प्रे० रूप)]।

बटेर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्त्तक] लवा पक्षी। "किसी को बटेरें लड़ाने की लत है"—हाली०।—**बाज़**-(संज्ञा, पु०) [हि० बटेर+बाज फ़ा०] बटेर लड़ाने या पालने वाला।—**बाज़ी**-(संज्ञा, स्त्री०) बटेर लड़ाना, बटेर पालने का व्यसन।

बटेरिन—(संज्ञा, स्त्री०) सफाई करने के बाद निकलनेवाला कूड़ा, वह वस्तुओं की राशि जो झाड़ने-बटोरने पर निकलता है और उसका कोई उपयोग भी नहीं होता।

बटोर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बटोरना] जमघट, जमाव, भीड़, वस्तुओं का समूह। "करम करोर पंचतत्त्वनि बटोर"—पद्मा०।

बटोरना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बटुरना] बिखरी चीजों को समेटना, चुनकर इकट्ठा करना, मिलाना, जुटाना, एकत्र करना, झाड़ू से कूड़ा साफ करना।

बटोही—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाट+वाह प्रत्य०] पथिक, राही, यात्री बटाऊ।

बट्ट—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बटा] बटा, गेंद, गोला।

बट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वार्त्त, प्रा० बट्ट=बनियाई] किसी वस्तु या सिक्के के असली मूल्य में कमी, दस्तूरी, दलाली। मुहा०—**लगना** (**लगाना**)-दोष या कलंक (धब्बा) लगना या

लगाना। घाटा, हानि, टोटा, चति। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वटक] लोढ़ा, गोल पत्थर, जमी हुई गोल वस्तु, छोटा गोल डिब्बा। [बट्टी, बटिया (स्त्री०, अल्पा०)]—**खाता**-(संज्ञा, पु०, हि०) डूबे हुये धन का लेखा या बही।—(**बट्टे**) **खाते में जाना** (**पड़ना, लिखना**)-रकम का डूब या मारा जाना, घटी होना।—**ढाल**-(वि०, यौ०) [हि० बट्टा+ढालना] समतल और चिकना।

बट्टी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बट्टा] छोटी गोल लोढ़िया, टिकिया। जैसे—साबुन की बट्टी।

बट्टू—(संज्ञा, पु०, दे०) बजर-बट्टू (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्वट] लोबिया, बोड़ा (प्रांती०)।

बड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० बड़बड़] बकवाद।—**बड़**-(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) प्रलाप, बकवाद। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वट] बरगद वृक्ष। † (वि० दे०) बड़ा। "कै आपन बड़ काज"—[रामा०] (वि० 'बड़ा' का समास रूप।—**दंता**-(वि०) बड़े दाँत वाला।—**बेरी**-(संज्ञा, स्त्री० दे०, यौ०) [हि० बड़ी+बेरी] झड़बेरी। (संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० बड़ी+बेर] बड़ा विलंब।—**बोल**,—**बोला**-(वि०, दे०, यौ०) [हि० बड़ा+बोल] सीटने वाला, बढ़बढ़ कर बातें करने वाला।—**भाग**,—**भागी**-(वि०, दे०, यौ०) [हि० बड़ा+भाग्य] भाग्यवान, तकदीरवर। "आज धन्य बड़भाग हमारा।" "बड़भागी अगद हनुमाना"—[रामा०]।

बड़प्पन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बड़ा+पन] महत्व, बड़ाई, श्रेष्ठता, गुरुता।

बड़बड़ाना, बरबराना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० बड़बड़] रुष्ट हो कर कुछ बकना, व्यर्थ बकबक या बकवाद करना, कुछ बुरा लगने पर मुँह में ही कुछ कहना, बुड़बुड़ाना।

बड़बड़िया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बड़बड़+इया प्रत्य०] गप्पी, बक्की।

बड़रा*—(वि०, दे०) [हि० बड़ा] विशाल, बड़ा। [बड़री (स्त्री०)]। "ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि—रही०।

बड़वाग्नि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समुद्र के अन्दर की आग, बड़वानल। [बाड़वाग्नि, बड़वागी (दे०)]। "पानी दार धार मैं विलीन बड़वागी है"—अ० व०।

बड़वानल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बड़वाग्नि।

बड़वार†—(वि०, दे०) [हि० बड़ा] बड़ा।

बड़वारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बड़वार] महत्व या महत्ता, गौरव, बड़प्पन, गुरुता, बड़ाई, स्तुति। "भनत परसपर बचन सकल ऋषि नृप विदेह-बड़वारी"—रघु०।

बड़हन†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बड़ा+धान] एक तरह का धान।

बड़हर, बड़हल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बड़ा फल] शरीफे जैसे बड़े और बेडौल खटमिट्ठे फल वाला एक वृक्ष-विशेष।

बड़हार—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वर+आहार] विवाह के पीछे बरात की ज्योंनार, बढ़ार (ग्रा०)।

बड़हेला—(संज्ञा, पु०, दे०) जंगली या बनैला सुअर।

बड़ा—(वि०, दे०) [वि० वर्द्धन] विशाल, खूब लंबा और चौड़ा, विस्तृत, वृहत, दीर्घ, महान्, भारी, अधिक, बुजुर्ग, वृद्ध, गुरु, श्रेष्ठ, आयु-धन-प्रतिष्ठा या योग्यता में अधिक, परिमाण, मान, माप, विस्तारादि में ज्यादा।—**घराना**-(पु०) ऊँचा घराना।—**बाबू**-(पु०) बड़ा मुंशी [हेड क्लर्क]।—**बोल**—(पु०) डींग, बड़ी बात, गर्वोक्ति।—**दिन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) २५ दिसम्बर का दिन, जो ईसाइयों का त्यौहार है, क्रिसमस (अं०)।—**साहब**-(पु०) प्रधान अफसर, कलेक्टर। [**बड़ी** (स्त्री०)]। **मुहा०**—**घर**-कारागार, जेलखाना। (संज्ञा, पु०) [सं० वटक] उर्द की पिसी दाल की तेल या घी में भुनी और दही या मट्ठे में भीगी छोटी टिकिया [बरा (दे०)]। [अल्पा० (स्त्री०)] [बड़ी या बरी (दे०)]।

बड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बड़ा+ई प्रत्य०] बड़े होने का भाव, गौरव या गुरुता, बड़प्पन, श्रेष्ठता, महत्व, महिमा, प्रशंसा, परिमाण। विस्तार। आयु। मर्यादादि की अधिकता। "ताड़का घारी तिय न विचारी कौन बड़ाई ताहि हने"—राम चं०। **मुहा०**—**देना**-आदर सम्मान करना—**करना**-सराहना।—**मारना** (**हाँकना**)-शेखी बघारना।

बड़ापा—(संज्ञा, पु०, दे०) महत्व बड़ाई, बड़प्पन, गुरुता।

बड़ी—(वि०, स्त्री०) [हि० बड़ा] विशाल, महत, महान्। "साखा-मृग की बड़ि मनुसाई"

—[रामा०] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बड़ा, बरा] पेठा आदि मिली मूँग या उरद की धुली पिसी मसालेदार दाल की सूखी गोलियाँ, या टिकिया, बरी, कुम्हड़ौरी ।—**माता**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) शीतला, चेचक, कई माताओं में से बड़ी । "तौ जनि जाहु जानि बड़िमाता"—[रामा०] ।

बडँखा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार की ईख ।

बड़ेमियाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) बूढ़ा, वृद्ध, मूर्ख, निर्बुद्धि (व्यंग) ।

बड़ेर—(संज्ञा, पु०, दे०) चक्रवात, बवंडर, एक स्थान पर ठहर कर चक्कर देने वाली वायु का झोंका । [**अँधी-बड़ेर** (यौ०)] ।

बड़ेरा†*—(वि०, दे०) [हि० बड़ा+एरा प्रत्य०] महान्, वृहत, प्रधान, मुख्य । [**बड़ेरी** (स्त्री०)] । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बडमि] छप्पर में बीच की मोटी बड़ी लकड़ी । [**बड़ेरी** (स्त्री० अल्पा०)] "भये एक तें एक बडेरे"—[रामा०] ।

बड़ौना†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बड़ापन] बड़ाई, प्रशंसा ।

बढ़ई—(संज्ञा, पु०, दे०) [दे० वर्द्धकि, प्रा० बढ़्ढई] काठ का कारीगर । [**बढ़इनि** (स्त्री०)] । —**गीरी**-(संज्ञा, स्त्री०) बढई का काम या पेशा ।

बढ़ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बढ़ना+ती प्रत्य०] मात्रा, गिनती या तौल में अधिकता, ज्यादती, सुख-सम्पत्ति आदि की वृद्धि, उन्नति, बढ़वारी । [**घटती** (विलो०)] ।

बढ़ना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वर्द्धन] उन्नति करना, अधिक होना, ज्यादा होना, वृद्धि को प्राप्त होना, नाप, तौल, विस्तार, गिनती, परिमाण आदि में अधिक होना [**बढ़ाना** (स० रूप)] । [**बढ़वाना** (प्रे० रूप)] । **मुहा०—बढ़कर चलना**-घमंड करना, इतराना । दुकान बंद होना, दिया का बुझाना, विद्याबुद्धि, सुख-सम्पत्ति, मान-मर्यादा या अधिकारादि में अधिक होना, आगे जाना या चलना, अग्रसर या आगे होना, किसी से किसी बात में अधिक होना, लाभ होना, दुकान आदि का समेटा जाकर बंद होना ।

बढ़ाना—(क्रि० स०) [हि० बढ़ना] गिनती, नाप, तौल, विस्तार, परिमाण आदि में अधिक करना, फैलाना, लंबा करना, आगे चलाना, उत्तेजित करना, अधिक व्यापक, प्रबल या तीव्र करना, उन्नत करना, दीपक बुझाना, दूकान बंद करना, सस्ता बेचना, दाम अधिक करना । (क्रि० अ०, दे०) समाप्त होना, चुकना । [**बढ़वाना**—(प्रे० रूप)], [**बढ़ावना** (द्वि० रूप; ब्र० भा०)] । [**बढ़ैया, बढ़वैया** (वि०)]

बढ़नी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्द्धनी] झाड़ू, बुहारी (प्रान्ती०) ।

बढ़ाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बढ़ाना+आव प्रत्य०] वृद्धि, बढ़ना क्रिया का भाव । [**बढ़वारी** (स्त्री०)]—बढ़ने का भाव, वृद्धि ।

बढ़ावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बढाव] मन को उमगाना, उत्तेजना, प्रोत्साहन, साहस या हिम्मत उत्पन्न करने वाली बात । **मुहा०—देना**-प्रोत्साहन या साहस देना ।

बढ़िया—(वि०, दे०) [हि० बढ़ना] अच्छा, उम्दा, चोखा, उत्तम, बहुमूल्य । [**घटिया** (विलो०)]

बढ़ैया†—(वि०, दे०) [हि० बढ़ाना, बढ़ना+ऐया प्रत्य०] बढ़ने या बढाने वाला । [बढवैया (दे०)] । (संज्ञा, पु०, दे०) बढ़ई ।

बढ़ोतरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० बाढ़+उत्तर] उन्नति, बढ़ती, क्रमशः वृद्धि, बढवार ।

बणिज—(संज्ञा, पु०, सं०) [बनिक (दे०)] सौदागर, विक्रेता, बनियाँ, व्यापारी, व्यवसायी । "बैठे बणिक वस्तु लै नाना"—[रामा०] ।

बणिज्—(संज्ञा, पु०, सं०) [बनिज (दे०)] सौदागरी व्यापार, व्यापारी । "साहिब मेरा बानियाँ, बणिज करै व्यापार"—कबी० ।

बणिय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वणिक] बनियाँ ।

बत—(संज्ञा, पु०, अ०) बात, करार, एक जल जीव, बतख, एक कीड़ा ।—**कहा**-(संज्ञा, पु०, दे०) बातूनी, गप्पी ।—**कही**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हि० बात+कहना] बातचीत, वार्त्तालाप, वाद-विवाद । "करत बतकही अनुज सन"—[रामा०]—**चल**-(वि०, दे०, यौ०) [हि० बात+चलाना] बकवादी ।—**बढ़ाव**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० बात+बढ़ाना] झगड़ा बढ़ाना, बातों बातों में व्यर्थ ही बिरसता बढ़ाना । —**रस**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० बात+रस] बातें करने का आनंद, बातचीत का स्वाद या मजा । "बतरस लालच लाल को"—बि० ।—**राना**†-

(क्रि० अ०, दे०) [हि० बात+आना प्रत्य०] बातें या बातचीत करना। "हम जानी अब बात तुम्हारी सूधे नहिं बतरात"—सूवे०। (क्रि० अ०) [बतरावना (दे०)] बतलाना। "सो बतराय देउ ऊधो हमें तुमहू तो अति निपट सयाने"—[भ्र० गी०]।

बतख़—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० बत] हंस की जाति का एक जल-पक्षी।

बतबिना—(संज्ञा, पु०, दे०) [बातूना (हि०)]।

बतरौहाँ*†—(वि०, दे०) [हि० बात] बातचीत का अभिलाषी या इच्छुक, वार्तालाप में प्रवृत्त। बतरौहीं।

बतहा—(वि०, दे०) वात-रोगी, वायु-दोष कारक।

बतलाना, बताना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बात+ना प्रत्य०] [बतलावना, बतावना (दे०)] कहना, जताना, समझाना, भाव बताना। ठीक करना। मार-पीट कर ठीक करना। बात करना। बतियाना (प्रान्ती०)। [**बतैया, बतवैया** (वि०, दे०)]

बतवाना—(क्रि० स०, दे०) बात करने में लगाना, कहवाना, उत्तर दिलाना।

बताना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बात+ना प्रत्य०] बतलाना, जताना, समझाना, प्रदर्शित या निर्देश करना, नाचगान में हाथ आदि से भाव प्रगट करना, दिखाना, ठीक करना (मार पीट कर—व्यंग्य)। [**बतवाना**—(प्रे० रूप)] [बतावना (दे०)]।

बतास‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वातसह] वायु, पवन, वात-रोग, गठिया, बतास। (संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हि० बात+आस] बातचीत करने की लालसा। "बैहरि बतास है चबाव उमगाने मैं"—[ऊ० श०]।

बतासा, बताशा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बतास=हवा] चीनी की चाशनी से बनी एक मिठाई, एक प्रकार की आतशबाजी, बुद्‌बुद, बुलबुला, वायु, पवन, बतास। "कछु दिन भोजन वारि-बतासा"—[रामा०]।

बतिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्त्तिका, प्रा० वत्तिआ—बत्ती] नवजात, कोमल, छोटा कच्चा फल, बात। "यहाँ कुम्हड़-बतिया कोउ नाहीं"—[रामा०]।

बतियाना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बात] वार्त्तालाप या बातचीत करना।

बतियार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बात] बातचीत।

बतीसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बत्तीस] बत्तीसों दाँत। "चमकि उठै तस बनी बतीसी"—पद०। "बतीसी मोती सी, कम बिजली सी अधर में"—सरस।

बतू, बत्तू—(संज्ञा, पु०, दे०) कलाबत्तू।

बतूनी—(वि०, दे०) [हि० बात] बक्की या वाचाल, बातूनी, बहुत बात करने वाला।

बतोली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भाँड़पन, गप्पी भाँड़ों का काम, भँड़ौती। [**बतोलेबाज** (वि०)] [**बतोलेबाज़ी** (संज्ञा, स्त्री०)]

बतौर—(क्रि० वि०, अ०) सदृश, समान, तरह पर, तरीके पर, रीति से।

बतौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बतौर] वायु-दोष से उत्पन्न सूजन, बरतोर। "उर पर कुच नीके लगैं, अनत बतौरी आहि"—रही०।

बत्तिस, बत्तीस—(वि०, दे०) [सं० द्वात्रिंशत प्रा० बत्तीसा] गिनती में तीस से दो अधिक। (संज्ञा, पु०) तीस और दो की संख्या और अंक (३२)। (संज्ञा, पु०, हि०) दाँत (लक्ष्यार्थ)।

बत्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्त्ति, प्रा० वर्ति] बाती, दीप में तेल से जलने वाला रुई या सूत का बटा टुकड़ा। (ग्रा०) दीपक, स्लेट की पेंसिल, मोमबत्ती, पलीता, प्रकाश। "धर दो बत्ती तुम तोपन पर इन पाजिन को देउ उड़ाय"—आल्हा०। सलाई जैसी लम्बी पतली वस्तु। घास-फूस का मूठा या पूला। घाव साफ करने की कपड़े की धज्जी, (पाचक और पौष्टिक)।

बत्तीसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बत्तीस] बत्तीस का समूह, मनुष्य के नीचे ऊपर के सब दाँत, बतीसी (ग्रा०)। "भुवन-पुराण माँहि जो बिध बताई गयो बनिकै बतीसी मुख भवन बसायो है"—मन्ना०।

बत्सा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वत्स] एक प्रकार का चावल, बछवा। (वि०, स्त्री०) बछवे वाली गाय।

बाथन—(संज्ञा, पु०) गोरूबार, जानवर रखने का स्थान।

बथुआ, बथुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वास्तुक] एक छोटा पौधा जिसके पत्तों की भाजी बनती है। [**बथुई** (स्त्री०)]

बद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्ध्म=गिलटी] पेड़ू और जाँघ के जोड़ में फोड़े के रूप में एक रोग, बावी, गोढ़िया (प्रान्ती०) । (वि०. फ़ा०) ख़राब, बुरा, निकृष्ट, दुष्ट, नीच । "नेकी का बदला नेक है बद से बदी की बात ले"—स्फुट० । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्त्त] बदला, पलटा । मुहा०—बद में-बदले में ।—अमली-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [फ़ा० बद+अ० अमल] अशांति, हलचल, बुरा बंदोबस्त, कुप्रबन्ध ।—कार-(वि०, यौ०, फ़ा०) व्यभिचारी, कुकर्म्मी । [बदकारी (संज्ञा, स्त्री०)] ।—क़िस्मत-(वि०, यौ०) [फ़ा० बद+अ० क़िस्मत] अभागी, मंद भाग्य । [बदक़िस्मती (संज्ञा, स्त्री०)] ।—चलन-(वि०, यौ०, फ़ा०) लंपट, व्यभिचारी, कुमार्गी । [बदचलनी (संज्ञा, स्त्री०)] ।—ज़ात-(वि०, यौ०) [फ़ा० बद+ज़ात अ०] नीच, तुच्छ, खोटा । [बदज़ाती (संज्ञा, स्त्री०)]—तमीज़-(वि०) गँवार, असभ्य, जिसे तमीज़ न हो । —तमीज़ी-(स्त्री०) गुस्ताखी, अशिष्टता ।—तर-(वि०, फ़ा०) किसी की अपेक्षा बुरा, बहुत बुरा [बत्तर (दे०)] । [बदतरी (संज्ञा, स्त्री०)] ।—दुआ-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [फ़ा० बद+दुआ अ०] शाप, स्राप, [सराप (दे०)] ।—नसीब-(वि०, यौ०) [फ़ा० बद+नसीब] अभागा, मंद-भाग्य । [बदनसीबी (संज्ञा, स्त्री०)]—नाम-(वि०, यौ०, फ़ा०) निंदित, कलंकित । लो०—"बद अच्छा बदनाम बुरा" । "हम नाम के तालिब हैं हमें नेक से क्या काम । बदनाम जो होवेंगे तो क्या नाम न होगा ।"—नामी-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) लोक-निंदा, अपयश, अकीर्ति ।—निगाह -(वि०, स्त्री०) बुरी दृष्टि वाला ।—नीयत-(वि०, यौ०) [फ़ा० बद+नीयत अ०] जिसकी इच्छा, बुरी हो, धोखेबाज । [बदनीयती (संज्ञा, स्त्री०)] । —बू-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) बदबोय (ग्रा०) दुर्गन्ध, बुरी महक । [बदबूदार, बदबोयदार (वि०)] —परहेज़-(वि०) खाने पीने में परवाह न करने वाला ।—परहेज़ी-कुपथ्य ।—पसन्दी-(संज्ञा, स्त्री०) अनुचित निर्वाचन की प्रवृत्ति । "हद न हो जाय । बदपसन्दी की"—हरि० ।—माश-(वि०) [फ़ा० बद+अ० मआस—जीविका] [बदमास (दे०)] दुष्ट, दुर्वृत्त, पाजी, दुराचारी, लुच्चा, कुकर्मी, दुष्कर्मोपजीवी, बुरे काम से जीविका पैदा करने वाला ।—माशी-(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० बद+मआस+ई प्रत्य०] दुष्टता, दुष्कर्म, व्यभिचार, पाजीपन, [बदमाशी (दे०)] ।—मिज़ाज-(वि०, यौ०, फ़ा०) बुरे स्वभाव वाला । [बदमिजाजी (संज्ञा, स्त्री०)] ।—रंग-(वि०, यौ०, फ़ा०) विवर्ण भद्दे या बुरे रंग का, जिसका रंग बिगड़ गया हो ।—राह-(वि०, यौ०, फ़ा०) दुष्ट, कुमार्गी । [बदराही—(संज्ञा, स्त्री०)] दुष्टता, बुराई ।—रोबी-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, फ़ा०) अप्रतिष्ठा ।—रौहां†-(वि०, दे०) [फ़ा० बद+रौहा चाल] बदचलन, कुमार्गी । † (संज्ञा, पु०, दे०) [यौ० बादर+औहाँ प्रत्य०] बदली का आभास या सूचक ।—सूरत-(वि०) कुरूप, असुन्दर ।—हज़मी-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, फ़ा०) अजीर्ण, अपच (रोग) ।—हवास-(वि०, यौ०, फ़ा०) उद्विग्न, अचेत, व्याकुल, विकल, बेहोश ।

बदन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) देह, गात । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वदन] मुख ।

बदना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० वद=कहना] वादा (प्रतिज्ञा) करना, कहना, वचन देना, बखान या वर्णन करना, नियत या स्वीकार करना, ठहराना, निश्चित करना, मान लेना । "मंदिर अरध अवधि हरि बदिगे" । मुहा०—बदा होना-भाग्य में (लिखा) होना ।—कर करना-जान-बूझ कर, ललकार कर, हठपूर्वक बाजी या शर्त लगाना, कुछ समझना, बड़ा या महत्त्वपूर्ण मानना । "जब हिरदं ते जाइहो, मर्द बदोंगो तोहि"—सूर० ।—किसी को कुछ (न)—,किसी को कुछ न समझना ।

बदर—(संज्ञा, पु०, सं०) बेर का वृक्ष या फल । [बदरी (स्त्री०)], [बदरी-फल (यौ०)] । "विश्व बदर जिमि तुम्हरे हाथा"—[रामा०] ।

बदरा—(संज्ञा, पु०, दे०, हिं०) बादल, मेघ, बादर । "बदरा ही बड़ी बदरा ही करें ।"

बदरि—(संज्ञा, पु०, सं०) बेर का पौधा या फल । [बदरी (दे०)] । "धात्री फलं सदा पथ्य कुपथ्यं बदरी फलं" ।

बदरिकाश्रम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हिमालय पर बद्रीनाथ का तीर्थ-विशेष, जहाँ नरनारायण तथा व्यास का आश्रम है ।

बदरिया‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बादल] बदली, छोटा बादल ।

बदरी—(संज्ञा, पु०, सं०) बेर का वृक्ष या फल । बदर । (संज्ञा, स्त्री०, पु०) [हिं० बादल] बदली, बादल का टुकड़ा ।

बदरीनाथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बदरीनारायण, [बद्रीनाथ (दे०)] हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान।

बदरीनारायण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) [बद्रीनारायन (दे०)] बदरीनाथ।

बदल—(संज्ञा, पु०, अ०) परिवर्त्तन, एवज (अ०) हेर-फेर, प्रतिकार, पलटा।

बदलना—(क्रि० अ०) [अ० बदल + ना प्रत्य०] प्रतीकार करना, एक के स्थान पर दूसरा नियत करना, विनिमय करना, परिवर्तित होना, एक जगह से दूसरी जगह नियुक्त होना। [**बदलाना**—(स० रूप)], [**बदलवाना**—(प्रे० रूप)] **मुहा०—बात—**, कही बात के पीछे और कहना, (उसके विरुद्ध बात)। (क्रि० स०) वास्तविक रूप से भिन्न करना, रूपान्तरित करना, एक वस्तु की पूर्ति दूसरी से करना।

बदला—(संज्ञा, पु०) [हि० बदलना] लेने-देने का व्यवहार, विनिमय, एवज, पलटा, प्रतीकार किसी व्यवहार के उत्तर में वैसा ही व्यवहार, एक वस्तु की क्षति या स्थान को पूर्ति के लिए दूसरी वस्तु। **मुहा०—देना (लेना)**–बुराई के बदले बुराई करना। नतीजा, परिणाम।

बदलाई—(संज्ञा, स्त्री०) अदली-बदली। बदलने की क्रिया।

बदली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बादल] [बदरी (दे०)] हलका या छोटा बादल, घन का फैलाव। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० बदलना] एक स्थान से दूसरी स्थान पर नियुक्ति, तबादिला, तबदीली, एक वस्तु के स्थान पर दूसरी रखना। "नजर बदली जो देखी उस सनम की"—स्फु०।

बदलौवल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बदलना] हेर-फेर, अदल-बदल, बदलने का काम।

बदस्तूर—(क्रि० वि०, फ़ा०) जैसा का तैसा, नियम या कायदे के अनुकूल, ज्यों का त्यों, जैसा था वैसा ही।

बदा—(वि०, दे०) [हि० बदना] भाग्य में लिखा, विधि-विधान।

बदान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बदना] बदना क्रिया का भाव।

बदाबदी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बदना] दो पक्षों की परस्पर प्रतिज्ञा, लाग-डाँट, हठ, शर्त या बाजी, भाग्य-विचार।

बदाम—(संज्ञा, पु०, दे०) देखिए बादाम। बादाम। "सोहत नर नग त्रिबिधि ज्यों बेर, बदाम, अँगूर"—वृं०।

बदि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्त] बदला, पलटा। [अव्य० (दे०)] बदले में, हेतु, वास्ते।

बदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अँधेरा पाख, कृष्ण पक्ष। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अहित, बुराई। [**नेकी-बदी** (यौ० विलो०)] "नेकी का बदला नेकी है बद कर बदी की बात ले।"

बदौलत—(क्रि० वि०, फ़ा०) द्वारा, प्रताप या सहारे से, कारण या कृपा से।

बद्दर, बद्दल†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बादल] बादल, मेघ।

बद्ध—(वि०, सं०) बँधा हुआ, कैद, भवजाल में फँसा, सीमित, निर्धारित, जिसके लिये रोक या सीमा ठहरायी गई हो, मुक्ति-रहित। [**बद्धता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "जीव बद्ध है ब्रह्म मुक्ति है अंतर याही जानो"—मन्ना०।—**कोष्ठ**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दस्त साफ न होना, मलबद्ध या कब्ज (रोग)।—**चित्त**–(वि०) जिसका चित्त एकाग्र हो।—**परिकर**–(वि०, सं०) तैयार, कटिबद्ध, प्रस्तुत, कमर बाँधे (कसे) हुये। "बद्ध परिकर हैं सभी परलोक जाने के लिये"—स्फु०।—**पद्मासन**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पद्मासन लगाकर, हाथों को एक दूसरे पर पीठ-पीछे चढ़ा दाहिने हाथ से दाहिने पैर के और बाँये से बाँये के अँगूठे पकड़ कर बैठना (हठ-योग)।

बद्धांजलि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) प्रणामार्थ दोनों हाथ जोड़ना।

बद्धी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बद्ध] बाँधने या कसने का तसमा, डोरी, रस्सी, गले का चार लड़ों का एक गहना।

बध—(संज्ञा, सं०) हत्या, हनन, मारना।—**स्थान**–(संज्ञा, पु०, सं०) जीवों के मारे जाने की जगह।

बधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० बध + ना प्रत्य०] बध या हत्या करना, मार डालना। [**बधाना, बधवाना** (प्रे० रूप)]। (संज्ञा, पु०) [सं० बर्द्धन] मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।

बधाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्द्धन] बढ़ती, मंगलाचार, शुभ समय पर गाना-बजाना, उत्सव, शुभावसर पर आनन्द या प्रसन्नता सूचक वचन । "आजु नन्द-घर बजत बधाई री"—सूर० ।

बधागार—(संज्ञा, पु०, सं०) कसाईखाना । [शैम्बल्ज़]

बधाना—(क्रि० स०) बध कराना ।

बधाया, बधावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बधाई] बधाव, बधाई, संबन्धियों या मित्रों के यहाँ से मंगलोत्सव पर आई भेंट या वस्तु । [**उच्छव-बधाव** (यौ०)] ।

बधिक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वधिक] हत्यारा, व्याधा, बहेलिया, जल्लाद । "बधिक बध्यो मृग बान तें लोहू दियो बताय"—तुल० ।

बधिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वध] आखता, खस्सी, अंडकोष-हीन षंढ बैल आदि पशु ।

बधियाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बध, बधिया] बधना, बधिया करना ।

बधिर—(संज्ञा, पु०, सं०) बहरा, श्रवण शक्ति-हीन । [**बधिरता** (संज्ञा, स्त्री०)] "गुरु सिख अंध बधिर कर लेखा"—[रामा०] ।

बधू—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० वधू] पतोहू, भार्या, स्त्री । [बहू (दे०)] ।

बधूटी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वधूटी] पतोहू, सुहागिन स्त्री, नवीन बहू, स्त्री । "करहिं बधूटी मंगल गाना"—[रामा०] [**देव-वधूटी**—(यौ०)] अप्सरा, स्वर्ग-बधूटी ।

बधूरा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बहुधूर] एक बवंडर, बगूला, वायु-चक्र ।

बधैया—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए बधाई ।

बध्य—(वि०, सं०) बध के योग्य ।

बन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वन] कानन, जंगल । पानी । बाग । कपास का पौधा, समूह । "बड़भागी बन अवध, अभागी"—[रामा०] । "पाहन तें बन वाहन काठ को कोमल है जल खाय रहा है"—कवि० । "सब ढंकन होत है जैसे बन को सुत"—[नीति] ।—**कंडा**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वनस्कंदन] जंगली उपले ।—**कर**—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वनकर] जंगली उपज का महसूल ।—**खंड**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वनखंड] जंगली प्रदेश ।—**खंडी**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० बन+खंड] छोटा बन का कोई भाग । (संज्ञा, पु०) वनवासी, वन में रहने वाला ।—**चर, बनेचर**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वनचर] वन में रहने वाला, वन का पशु, जंगली जीव या आदमी, वनमानुस । "युधिष्ठिरं द्वैत वने वनेचर:"—[किरात०] ।—**चारी**—(वि०, यौ०) [सं० वनचारिन्] वन में घूमने या रहने वाला, वानर । [**बनचारिणी** (स्त्री०)] ।—**ज**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वनज] जल से उत्पन्न पदार्थ । कमल । मोती । वन में होने वाली वस्तु । "जैय रघुवंश बनज बनभानू"—[रामा०] । (संज्ञा, पु०, दे०) वाणिज्य (सं०) व्यापार । [बनिज (दे०)] ।—**नर**—(संज्ञा, पु०, दे०) पड़ती या ऊसर भूमि, बंजर (ग्रा०) ।—**जात**—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वनजात] कमल, जल या वन मे उत्पन्न ।—**जारा, बंजारा**—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बनिज+हारा] बैलों पर माल ले जाने या ले आने वाला व्यापारी टँडिया (प्रांती०) । "सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा"—स्फु० । [**बन-जारिन** (स्त्री०)] ।—**जारी**—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बनजारा] बनजारा की स्त्री, बनजारा की वस्तु ।—**जोत्स्ना**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० वनज्योत्स्ना] माधवी लता । [बनजोति (दे०)] —**तराई**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बनतारा] एक पौधा ।—**ताई***†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० वन+ताई प्रत्य०] वन की भयानकता या सघनता, बनावट, बनत ।—**तुलसी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वनतुलसी] बबई नामक पौधा, बर्बरी । —**द***—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वनद] बादल, मेघ ।—**दाम**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० वनदाम] वनमाला, वनमाल ।—**देव**—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वनदेव] वन का अधिष्ठाता देवता । [**वनदेवी** (स्त्री०)] "बनदेवी बनदेव उदारा"—[रामा०] ।—**धातु**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० वनधातु] गेरू आदि रंगीन मिट्टी ।—**निधि**—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वननिधि] समुद्र, जल राशि, वनधि ।—**पट***—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वनवट] वृक्षों की छाल के वस्त्र, सूती कपड़ा ।—**पथ**—(पु०) वह रास्ता जो जंगल से होकर गया हो ।—**पाती***†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० वनस्पति] वनस्पति, जंगल के पेड़ ।—**फल**—

(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) जंगली फल ।—फ़शा-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक वनस्पति जिसकी जड़, फूल और पत्तियाँ औषधि के काम में आती हैं। —बास-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वनवास] वन में रहना। "तथा न मम्लौ वनवास-दुःखतः" —[वा० रा०] ।—बासी-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वनवासिन्] वन में रहने वाला, जंगली । "चौदह बरस राम बनबासी"—[रामा०] ।—बाहन-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वनवाहन] नाव। "पाहन तें बन-बाहन काठ को कोमल है जल खाय रहा है"—कवि० । —बाहः-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कहार, मेघ, बादल ।—बिलाव-(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) जंगली बिल्ली ।—मानुस-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० वनमानुष] जंगली आदमी, गोरिल्ला आदि बनैले मनुष्य-जैसे जंतु ।—माला-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वनमाला] पारिजात, मंदार, कमल, कुंद और तुलसी के फूल-पत्तों से बनी माला, फूल पत्तों से बनी माला, [वनमाल (दे०)]। "भूषन बनमाला नैन बिसाला सोभा सिंधु खरारी"—[रामा०] ।—माली-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वनमालिन्] बनमाला पहनने वाला, नारायण, श्रीकृष्ण, विष्णु। मेघ, बादल, घने वन या बादल का प्रदेश। "एहो बनमाली तुम कौन बनमाली तुम कौन बनमाली माल उर में सुझाके हौ"—पद्मा० । (यौ०) उपवन का माली।—रखा-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वन+रक्षक, हि० बन+रखना] जंगल की रखवाली करने वाला, वन-रक्षक, बहेलियो की एक जाति ।—राज, राय*†-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वनराज] सिंह, बाघ, शेर, बहुत बड़ा पेड़। "देख्यो बनराज, बनराज ही की छाया पर्यो"—मन्ना० ।—राजी-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) वनों-पवनों की पंक्ति या वन का समूह । [वनराजि—(सं०)] ।—रुह-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वनरुह] जंगली पेड़, कमल । —स्थली-(संज्ञा, स्त्री०, पु०, यौ०) [सं० वनस्थली, पु०, वनस्थल] वन-खंड, जंगल का कोई हिस्सा या प्रदेश। "वनस्थली बीच बिराजती रही"—हरि० ।

बनक*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बनना] भेष, सजावट, बाना, सजधज, बानक ।

बनजी*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाणिज्य] व्यापार, व्यापारी। "कोउ खेती कोउ बनजी लागै कोउ आस हथियार की"—[सुन्दर०] ।

बनत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बनना+त प्रत्य०] बनावट, रचना। मेल। सामंजस, अनुकूलता, तैयार या सिद्ध होना, एक बेल। [बनताई (दे०)]

बनना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वर्णन] रचा जाना, प्रस्तुत या तैयार होना, किसी का अजान सा प्रगट करना (होना) (व्यंग्य) । [बनाना—(स० रूप)], [बनवाना—(प्रे० रूप)] मुहा०—बन-ठन के-सज-धज कर, शृंगार करके ।—बना रहना-जीता या उपस्थित रहना, उपयोग होना, रूपान्तरित होना, बदल जाना, भाव या सम्बन्ध में अन्तर हो जाना, विशेष पद आदि प्राप्त करना, उन्नति को पहुँचना, प्राप्त या सम्भव होना, वसूल या दुरुस्त होना, पटना, निभना, मित्रभाव होना, सुयोग (अवसर) मिलना, स्वादिष्ट या सुन्दर होना, उन्नति करना, स्वरूप धारण करना, मूर्ख ठहरना, अपने को अधिक योग्य या गंभीर सिद्ध करना, दुरुस्त होना, निभाना । —बना हुआ-चालाक व्यक्ति जो कहे कुछ और करे कुछ ।—बन कर-भली-भाँति, अच्छी तरह सजना। "प्रात भये सब भूप, बन बन मंडप गये"—[रामा०] ।—बन पड़ना (जाना)-(क्रि० स०, यौ०, हि०) सुधरना, सुअवसर मिलना, हो सकना, निभना, सद्गति प्राप्त होना, निबहना, यथेष्ट कार्य होना। "मीरा की बनपड़ी राम गुन गाये ते"—मीरा० । "बन पड़े तो नेकी करना ।"

बननि*†—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बनना] बनावट, बनाव, सिंगार ।

बननी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बनीनी] बनीनी, बनिया की स्त्री, बानिन ।

बनर—(संज्ञा, पु०, दे०) एक हथियार।

बनरपकड़—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) दुराग्रह, निंदित हठ ।

बनरा*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वानर] बंदर, वानर, [बँदर (दे०)]। "सिन्धु तर्यो उनको बनरा"—[रामचं०] । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बनना] दूल्हा, दुलहा, वर, विवाह के समय का एक गीत। [बनरी (स्त्री०)] ।

बनरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बनरा] बानरी, बँदरिया, नववधू, दुलहिन ।

बनबना*—(क्रि० स०, दे०, यौ०) [हि० बनाना] बनाना। [बनाबना (दे०)]

बनवसन*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वन-वसन] पेड़ों की छाल का वस्त्र, सूती कपड़ा।

बनवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बनवाना] बनवाने का कार्य, बनवाने की मजदूरी।

बनवारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वनमाला] कृष्ण। "अब बनवारी बनवारी बात त्यागिये" —मन्ना०। (दे०, यौ०) [हिं० बनवारी] बाग-वाटिका, वन का जल। (वि०) बनमाली।

बनवैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बनाना + वैया प्रत्य०] निर्माता, रचयिता, बनाने वाला।

बनसी, बंसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वंशी] बाँसुरी, बंसी, मुरली। मछली फँसाने का काँटा।

बना, बन्ना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बनना] वर, दुलहा, दूल्हा। [बनी (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) दंडकला छंद (पिं०)।

बनाइ, बनाय—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० बना-कर=भली-भाँति] नितांत, अत्यन्त, बिलकुल, अच्छी तरह, भली-भाँति। "जो ना चमकति बिजुली बहिगा रहै बनाय"—स्फु०। (पू० का० क्रि०, ब्र० भा०) बनाकर (हिं०)।

बनाउरि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बाणा-वली] तीरों की माला या पंक्ति, बाणों की अवली या वर्षा।

बनाग्नि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० वनाग्नि] दावानल, जंगल की आग। [बनागि (दे०)]

बनागी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) वनाग्नि (सं०)। "वर्षा बिना नास भई बनागी"—कु० वि० ल०।

बनात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बाना] एक बढ़िया ऊनी कपड़ा।

बनाना—(क्रि० स०) [हिं० बनना] निर्माण या तैयार करना, रचना, भावान्तर या सम्बन्धान्तर रखने वाला, करना, रूपान्तरित कर उपयोग के योग्य करना, एक वस्तु को बदल कर दूसरा करना। मुहा०—बना कर-भली-भाँति, अच्छी तरह। काई बड़ा पद या शक्ति आदि देना, उन्नत दशा मे पहुचाना, उपार्जित, प्राप्त या वसूल करना, मरम्मत करना, मूर्ख ठहराना, उपहास-योग्य करना, दोष दूर कर ठीक करना, ठीक रूप या दशा में लाना।

बनाफर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वन्यफल] क्षत्रियों की एक जाति। "माहिल बोला तब उदया तें यह सुनि लेहु बनाफर राय"—[आ० खं०]।

बनाम—(अव्य०, फा०) किसी के प्रति या नाम पर, नाम से। "बनामे जहाँदार जाँ आफरी" —सादी।

बनाय—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० बनाकर] निपट, बिलकुल, भली प्रकार। (पू० का० क्रि०, ब्र० भा०) बनाकर।

बनायुज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वनायुज= बनायु—फारिस + ज—उत्पन्न] फारिस या ईरान देश में उत्पन्न होने वाला घोड़ा, अरबी घोड़ा। "पारसीका वनायुजाः"—[हलायुध०]।

बनार—(संज्ञा, पु०, दे०) वर्तमान बनारस की उत्तर सीमा पर एक प्राचीन राज्य।

बनारस—(संज्ञा, पु०) काशी, वाराणसी।

बनारसी—(वि०) बनारस का, बनारस का रहने वाला या बना हुआ।

बनाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बनना + आव प्रत्य०] रचना, शृंगार, बनावट, सजावट, ढंग, युक्ति।—**सिंगार**-(पु०) बनना-सवरना।

बनावट—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बनाना + वट प्रत्य०] गढ़न, आडंबर, ऊपरी दिखाव, बनने (बनाने) का भाव।

बनावटी—(वि०, दे०) [हिं० बनावट + ई प्रत्य०] कृत्रिम, नकली, बनाया हुआ, दिखावटी, झूठ।

बनावत, बनावनत*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बनना + अबनना] विवाह से पूर्व वर-कन्या की जन्मपत्रियों का मिलान, बनता बनना (ग्रा०)।

बनावनहारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बनावना + हारा प्रत्य०] निर्माता, रचयिता, बनाने वाला, बिगड़े को बनाने वाला। "बिगरी कौन बनावन-हार"—[आल्हा०]।

बनावरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बाणावलि] तीरों की पंक्ति या माला या अवली, [पानावली (दे०)]।

बनासपती, बनासपाती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वनस्पति] जड़ी-बूटी, फल-फूल, सागपात, कंदमूल। "नासपाती खातीं ते बनासपाती खातीं हैं"—भूषण।

बनि*†—(वि०, दे०) [हिं० बनाना] सब, समस्त, बिलकुल। (पू० का० ब्र०) बन कर।

बनिज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाणिज्य] सौदागरी, व्यापार, रोजगार, सौदा, व्यापार का माल। "और बनिज में नाही लाहा होय मूर में हानि"—कबी०।

बनिजना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० वाणिज्य] वाणिज्य या व्यापार करना, बेचना, खरीदना, अपने वश कर लेना।

बनिजारिन, बनजारी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बनजारा] बनजारे की स्त्री।

बनित*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बनना] साज-बाज, बानक, वेष, ठाटबाट।

बनिता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वनिता] पत्नी, भार्य्या, स्त्री, औरत। "सजि बनसाज समाज सब, बनिता-बंधु समेत"—[रामा०]।

बनियाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वणिक्] वैश्य, वणिक, व्यापारी, सौदागर, मोदी। [**बानिनि, बनियाइन, बनीनी** (स्त्री०)]। "बनियाँ अपन बाप को ठगत न लावै बार"—गिर०।

बनियाइन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० बेनियन] एक प्रकार की बुनावट की चुस्त बंडी या कुरती, गजी (प्रान्ती०)।

बनिस्बत—(अव्य०, फ़ा०) अपेक्षा, मुकाबले में।

बनिहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बनी+हार प्रत्य०] कृषि के कार्यार्थ नियुक्त सेवक।

बनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बन] बन का एक खंड, बनस्थली, बाग, वाटिका। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० बना] दुलहिन, नववधू, स्त्री, नायिका। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वणिक्] बनिया। (संज्ञा, स्त्री०, ग्रा०) कृषि के मजदूरों की मजदूरी में दिया गया अन्न।

बनीनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बनियाँ+ईनी प्रत्य०] वैश्य जाति या बनिया की स्त्री, बानिनि (ग्रा०);

बनीर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वानीर] बेंत।

बनेठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बन+सं० यष्टि] पटेबाजों की लाठी, जिसके सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं।

बनैला—(वि०, दे०) [हि० बन+ऐला प्रत्य०] वन्य, वन सम्बन्धी, जंगली। [**बनैली** (स्त्री०)]।

बनोबास*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० बनवास] बनवास।

बनौटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बनावट] कपासी रंग, कपास के रंग के समान।

बनौठी—(वि०, दे०) [हि० बन+औठी प्रत्य०] कपास के फूल जैसे रंग वाला, कपासी रंग।

बनौरी‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वन—पानी+ओला] छोटा ओला, पत्थर।

बनौवा—(वि०, दे०) [हि० बनाना+औवा—प्रत्य०] बनावटी, झूठा, दिखावटी।

बन्हि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वह्नि] अग्नि, आग। "पिपीलिका नृत्यपि वह्नि मध्ये।"

बपंश—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वप्तांश] बपौती, बाप का धन।

बप*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वप्त] पिता, बाप। [बाप, बप्पा (दे०)]—**मार**-(वि०, दे०) [हि० बाप+मारना] अपने बाप को मार डालने वाला, सब के साथ धोखा करने वाला। "अंगद क्यों न हनै बपमारे"—[रामचं०]।

बपतिस्मा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० बैप्टिज़्म] किसी को ईसाई बनाने का संस्कार (ई०)।

बपना*†(क्रि० स०, दे०) [सं० वपन] बीज आदि बोना। (संज्ञा, पु०, दे०) वपन, बीज बोने का कार्य।

बपु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वपुस्] देह, रूप, शरीर, तनु, अवतार।

बपुख, बपुष*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बपुस्] देह, शरीर।

बपुरा, बापुरा†—(वि०, दे०) [सं० वराक] दुखिया, बेचारा। (ब्र० भा०) बापुरो। "कहा सुदामा बापुरो"—रही०। "हम को बपुरा सुनिये मुनिराई"—[रामचं०]।

बपौती—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाप+औती प्रत्य०] बाप का धन, पैतृक सम्पत्ति। "मोरि बपौती बहुबो लैके कैसे राज करै परिमाल"—[आल्हा०]।

बप्पा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाप] बापा (ग्रा०) बाप, पिता, जनक। [बापू (दे०)]।

बफारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भाफ+आरा प्रत्य०] औषधि मिले पानी की भाप से शरीर के किसी रोगी अंग को सेंकना। "न्यारो न होत बफारो ज्यों धूम सों"—देव०।

बबकना—(क्रि० अ०, अनु०) उत्तेजित होकर बोलना, उछलना, [बमकना (दे०)] "बबकि उठि फूलि बसुदेव रैया"—सूर०।

बबर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बबर देश का सिंह, बड़ा शेर। [बब्बर (दे०)]

बबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाबा] बाबा, दादा, पिता। "चेरी है न काहू हम ब्रह्म के बबा की ऊधो"—[ऊ० श०]।

बबुआ, बबुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाबू] जमींदार, रईस, लड़के या दामाद के लिये प्यार का शब्द। [**बबुआइन, बबुवानी, बबुई** (स्त्री०)]।

बबूर, बबूल, बंबूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बब्बूर] काँटेदार पेड़। **लो०**—"बोवे बीज बबूल के, दाख कहाँ ते खाय"—**कबी०**।

बबूला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाउ + गोला] बगूला, बवंडर, वायु चक्र। [बुलबुला (दे०)]

बबेसिया—(संज्ञा, पु०, दे०) गप्पी, प्रलापी, गपाड़िया। बवासीर के रोग वाला।

बबसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अर्श रोग, बवासीर रोग।

बब्बी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चूमा, चूमी, चुम्मन, मच्छी।

बभूत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विभूति] धन, लक्ष्मी, ऐश्वर्य, प्रताप। भस्म, भभूत (ग्रा०)।

बम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० बॉब] विस्फोटक वस्तुओं से भरा लोहे का गोला। (संज्ञा, पु०, अनु०) शिवोपासकों का बम बम शब्द। [—**शंकर,—भोला,—शिव** (यौ०, पु०)]। **मुहा०—बोलना या—बोल जाना**-कुछ न रह जाना, धन-ऐश्वर्य का मिट जाना। कनाड़ी बंबू।—**बाँस**-(संज्ञा, पु०) बग्घी, एक्के आदि के आगे घोड़े जोतने के लिये निकला एक या दो बाँस या लट्ठे। **मुहा०—बजना**-लड़ाई में लाठी या अस्त्र चलना। **लो०**—"कबों न कायर रन चढ़े, कबों न बाजी बम"।

बमकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) बहुत शेखी या डींग हाँकना, क्रोध में जोर से बोलना।

बमना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० वमन] मुँह से खाये पदार्थों का उगलना, उलटी या कै करना। [**बमन** (संज्ञा, पु०, दे०)]

बम-पुलिस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बंपुलिस] जन-साधारण के लिये म्युनिसिपैलिटी-द्वारा निर्मित पाखाना।

बमूजिब—(क्रि० वि०, फ़ा०) अनुसार, मुताबिक, मुआफिक, अनुकूल।

बम्हनी, बम्हनौती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ब्राह्मण] छिपकली जैसा एक पतला लाल कीड़ा, नेत्र रोग, आँख की पलक पर फुंसी। [बबलनी (दे०)] (ग्रा०) ब्राह्मण सा दुराग्रह, दोष न मान कर रुष्ट हो हठ करना। [**बम्हनियाना** (क्रि० अ०, दे०)]

बयन, बैनछ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वचन] बात, वाणी, वचन।

बयना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० वपन] बाज बोना। (क्रि० स०, दे०) [सं० वचन] कहना, बखान करना। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बैना] बैन, वचन, बैना, इष्ट मित्रों या बंधुओं के यहाँ उत्सवों पर भेंट या व्यवहार रूप में कुछ खाने-पीने की वस्तुएं भेजना, [बायना (दे०)]।

बयनी*†—(वि०, दे०) [हि० बयन] बोलने वाली। "करहिं गान कल कोकिल बयनी"—[रामा०]।

बयस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वयस्] उम्र, अवस्था, वय। [बैस (दे०)]।—**सिरोमनि***†-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वयसशिरोमणि] यौवन, जवानी, युवावस्था।

बया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वयन—बुनना] रंग-रूप में गौरैया का सा एक पक्षी, इसका घोंसला बड़ी चतुरता तथा कौशल से सुन्दर बना होता है। (संज्ञा, पु०, दे०) [अ० बायः—बेचने वाला] अनाज आदि तौलने वाला।

बयान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हाल, वर्णन, बखान, वृत्तांत, विवरण, पाठ, अध्याय, बयाँ। **मुहा०—से बाहर**-जो न कहा जा सके, अकथनीय।

बयाना—(संज्ञा, पु०) [अ० बै + आना फ़ा० प्रत्य०] किसी बात-चीत को पक्का करने के लिये प्रथम से दिया गया कुछ धन, मूल्य या पुरस्कार का निश्चय सूचक अग्रिमांश, पेशगी। [एडवांस] (क्रि० स०, दे०) बकना, कहना। "विवस बयात हौ"—रत्ना०।

बयार, बयारि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वायु] वायु, पवन, हवा। **मुहा०—जैसी बयारि बहना**-जैसी परिस्थिति हो, जैसा स्थान और समय हो। "जैसी बहै बयार पीठ तब तैसी दीजै"—गिर०। "तब लों यह कौन बयार चली"—मैथिली०।

बयारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वायु] वायु। "घोर घाम हिम बारि बयारी"—[रामा०] (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विहार] ब्यालू। बियारी (ग्रा०)।

बयाला†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाह्य+आला] झरोखा, दिवाल में बाहर झाँकने की झंझरी, आला, अरवा, (ग्रा०) ताक़, क़िलों में तोपें लगाने के स्थान।

बर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर] दूल्हा, दुलहा, आशीर्वाद-रूपी वचन, वरदान। (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा। **मुहा०—पड़ना**-श्रेष्ठ होना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वल] शक्ति, बल। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वट] वट, बरगद का पेड़। (संज्ञा, पु०) [हि० बल=सिकुड़ना] लकीर, रेखा।—**खींचना**-अति दृढ़ता सूचित करना, हठ करना। (अव्य० फ़ा०) ऊपर।—**आना या पाना**-बढ़ कर निकलना, तुलना में बढ़ जाना या अच्छा ठहरना। (वि०) बढ़ा चढ़ा, पूर्ण, श्रेष्ठ, पूरा। * (अव्य० दे०) [सं० वरं] बल्कि, वरन्। [**बरूक**, बरू (दे०)] —**क़रार**-(वि०, यौ०) [फ़ा० बर+क़रार अ०] स्थिर, अटल, दृढ़, क़ायम, उपस्थित।—**खास***†-(वि०, दे०)[फ़ा० बरख़ास्त] विसर्जित, ख़ारिज, नौकरी से छुड़ाया हुआ, मौकूफ़।—**ख़ास्त**-(वि०, फ़ा०) विसर्जन करना, मौक़ूफ़।—**ख़ास्त**-(वि०, फ़ा०) विसर्जन करना, मौक़ूफ़, नौकरी से छुड़ाया गया। [**बरख़ास्तगी** (संज्ञा, स्त्री०)]—**ख़िलाफ़**-(क्रि० वि०, यौ०) [फ़ा० बर+ख़िलाफ़ अ०] विरुद्ध, प्रतिकूल, उल्टा।—**ख़ुरदार**-(वि०) भाग्यवान, सफल। (पु०) बेटा।—**तरफ़**-(वि० यौ०) [फ़ा० बर +तरफ़ अ०] एक ओर, अलग, किनारे, मौकूफ़, बरख़ास्त, नौकरी से अलग।—**दाश्त**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सहन करने का भाव या सहन-शक्ति। [बरदास (दे०)]।

बरई†—(संज्ञा, पु०) [हि० बाड़=बयारी] तमाली, [**बरइनि** (स्त्री०)]। (क्रि० स०, दे०) बरे, बरण करे।

बरकंदाज़—(संज्ञा, पु०, यौ०) [अ०+फ़ा०] तोड़ेदार, बंदूक या बड़ी लाठी रखने वाला सिपाही।

बरकत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बहुतायत, बाहुल्य, यथेष्ट से अधिक लाभ, ज्यादती, अधिकता, बढ़ती, प्रसाद। कृपा। धन-दौलत, समाप्ति। एक की संख्या।

बरकती—(वि०) [अ० बरकत+ई प्रत्य०] बरकत वाला, बरकत-संबंधी, बरकत का।

बरकना‡—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वारण] बुरे कर्मों से हटना, बचना, दूर रहना, निवारण होना। [**बरकाना**—(स० रूप)], [**बरकवाना**—(प्रे० रूप)]।

बरकाज—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वर+ कार्य्य] ब्याह, विवाह, श्रेष्ठ कार्य।

बरकाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वारण, वारक] निवारण करना, बचाना, बहलाना।

बरख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्ष] बरस, बरिस (ग्रा०)।

बरखना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वर्षण] बरसना। [**बरखाना**—(स० रूप)]

बरखा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्षा] वर्षा। "बरखा, बिगत सरद ऋतु आई"—[रामा०]।

बरगद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वट] घनी और ठंडी छायादार पीपल की जाति का चौड़े मोटे पत्तों वाला एक पेड़, वट, बड़ (हि०)।

बरगदाही—(वि०, संज्ञा, स्त्री०, दे०) वह अमावस्या जिसमें स्त्रियाँ वट-पूजन करती हैं।

बरगा—(संज्ञा, पु०, दे०) कड़ा तख़्ता।

बरछा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्रश्चन=काटने वाला] भाला (अस्त्र) [**बरछी** (स्त्री०)]

बरछैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बरछा+ऐत प्रत्य०] भाला-बरदार, बरछा चलाने-वाला।

बरजन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्जन] रोकना, वर्जन, निषेध या मना करना। [**बरजना**, **बर्जना** (क्रि० स०, दे०)]। "मैं बरजी कै बार तू"—वि०।

बरजनि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्जन] रोक, मनाही, निषेध, रुकावट।

बरज़बान—(वि०, फ़ा०) कंठस्थ, मुखाग्र, [मुँह-जबानी (दे०)]। [**बरज़बानी** (क्रि० वि०, दे०)]।

बरज़ोर—(वि०, दे०) [हि० बल+ज़ोर फ़ा०] बलवान, प्रबल, जबरदस्त, अत्याचारी। (क्रि० वि०, दे०) जबरदस्ती, बलपूर्वक।

बरज़ोरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जबरदस्ती, बल-प्रयोग। (क्रि० वि०, दे०) जबरदस्ती से, बल-पूर्वक । (यौ०) [बरजो=रोका+री= अरी] रोका, मना किया। (यौ०) [बर+जोरी] अच्छी जोड़ी, वर युग्म । "अति बर जोरी तऊ अति वर जोरी करी, कैसी बर जोरी मीडि रोरी कह्यो होरी है "—रसाल।

बरणना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वर्णन] [बरनना (दे०)] कहना, बखानना।

बरत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्रत] व्रत, उपवास। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बरना= बटना] रस्सी। "दीठ बरत बाँधी दिगनि, चढ़ि आवत न डरात" (क्रि० वि०) [दे० बरना] जलता हुआ।

बरतन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्तन] पीने के पदार्थ रखने की धातु या मिट्टी से बनी वस्तुएँ, पात्र, भाँड़ा, [भड़वा (दे०)] बर्तन, भाँड (सं०) [बासन (दे०)] ।

बरतना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वर्तन] प्रयोग में लाना, बरताव या व्यवहार करना। (क्रि० स०)—व्यवहार या कार्य्य में लाना, इस्तेमाल या उपयोग करना।

बरताना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वर्तन=वितरण] बाँटना, वितरण करना।

बरताव, बर्ताव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बर्तन या वितरण] व्यवहार, बरतने का ढंग । [बर्ताव (दे०)] बाँटने का भाव।

बरती—(वि०, दे०) [सं० व्रतिन्, हि० व्रती] व्रत या उपवास करनेवाला, उपासा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्ती, वस्ति] बरती।

बरतोर, बरतोरु—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० बाल+तोड़ना] जो फोड़ा-फुंसी बाल टूटने से उत्पन्न हो, फोड़ा, फुड़िया, फुंसी। "जनु छुइ गयो पाक बरतोरु"—[रामा०]।

बरतौनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बरताना] ब्याह में कन्या के पिता या भाई का वर के बंधु-बांधवों तथा बरातियों में प्रेमोपहारस्वरूप धनादि के वितरण की रीति।

बरद, बरदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्द] बैल, बरधा (ग्रा०)। "बर बौराह बरद असवारा" —[रामा०]। "ज्यों बरदा बनजार के फिरत घनेरे देश"—तु०। (वि०, पु०) [सं० वरद, स्त्री० वरदा] वरदान देने वाला देवता या देवी।

बरदाना†—(क्रि० स०, दे०) [वर्द] गाय और बैल का संयोग कराना, जोड़ा खिलाना। (क्रि० अ०) जोड़ा खाना, संयोग करना। [बरदवाना —(प्रे० रूप)]

बरदार—(वि०, फ़ा०) धारण करने या मानने वाला, लेने या पालनेवाला, वहन करने या ढोने वाला, जैसे—झंडा बरदार।

बरदिया, बरधिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बरद+इया प्रत्य०] बैलों का चरवाहा।

बरधा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बद] बैल, बलीवर्द। [बरदा (दे०)]

बरधाना—(क्रि० स०, अ०, दे०, हि०) देखिए— बरदाना।

बरन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्ण] वर्ण, अक्षर, जाति, रंग । (अव्य०, दे०)। बल्कि, बरूक। वरन् (सं०)। "तुलसी रघुवर नाम के, बरन विराजत दोय"।

बरनन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्णन] वर्णन, बखान, वृत्तांत, [बर्नन (दे०)]।

बरनना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० वर्णन] बखान या वर्णन करना, बयान करना।

बरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वरण] ब्याहना, विवाह करना, चुनना, नियुक्त करना, दान देना। ‡ (क्रि० अ०, दे०) जलना। "लछिमन कहा तोहिं सो बरई"—[रामा०]।

बरनी—(वि०) [सं० वरणिन्] वरण किया हुआ। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बरौनी।

बरपा—(वि०, फ़ा०) खड़ा, उठा, मचा हुआ।

बरफ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० बर्फ़] बर्फ़, हिम, तुषार, पाला।

बरफी—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० बर्फ़] खोये और चीनी से बनी एक मिठाई।

बरफीला—(वि०) देखिए बर्फ़ीला।

बरबंड, बरिबंड*‡—(वि०, दे०) [सं० बलवंत] उद्धत, प्रतापी, प्रचंड, अति बलवान, प्रखर, उद्दंड। [बरबंडा* (दे०)]। "अति बरबंड प्रचंड हिंड आखेटक खिल्लै"—[पृ० रा०]।

बरबट*—(क्रि० वि०, दे०) [सं० बल+वट] जबरदस्ती, बलपूर्वक, विवस, बरवस। "नैनमीन के नागरनि, बरबट बाँधत आय"—मति०। (संज्ञा, पु०, दे०) पिलही, तिल्ली, बाउट (ग्रा०)। (यौ०) [हि० बर+बट] अच्छा बट वृक्ष।

बरबर†—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) बकबक, झकझक। (संज्ञा, पु०) शेर बबर, सिंह, बर्बर, जंगली या असभ्य मनुष्य।

बरबस—(क्रि० वि०, दे०) [सं० बल+वश] जबरदस्ती, हठात, बलपूर्वक, व्यर्थ।। "बर बस लिये उठाइ"—[रामा०]।

बरबाद—(वि०, फ़ा०) चौपट, नष्ट, नाश, खराब, तबाह। [**बरबादी** (संज्ञा, स्त्री०)]

बरबादी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) खराबी, तबाही, नाश। "सादी कहा भई बरबादी भई घर की" —बेनी।

बरम*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्म] देह-त्राण, कवच, सनाह, जिरह-बक्तर।

बरभसिया—(वि०, दे०) [सं० वरभास] बहुरूपिया, स्वांगी, बरभासी।

बरमा—(संज्ञा, पु०, दे०) लकड़ी आदि मे छेद करने का लोहे का एक औजार। (अ०) ब्रह्म देश। [**बरमी** (स्त्री० अल्पा०)]

बरमी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बरमा+ई प्रत्य०] बरमा देशवासी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बरमा देश की भाषा, छोटा बरमा, हथियार। (वि०) बरमा देश का, बरमा-संबंधी।

बरम्हा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ब्रह्मा] ब्रह्मा, बरमा या ब्रह्मा देश।

बरम्हाना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० ब्रह्म] ब्राह्मण का आशीर्वाद देना।

बरम्हाव*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ब्रह्म+आव प्रत्य०] ब्राह्मण की अशीष, ब्राह्मणत्व।

बरराना, बर्राना—(क्रि० स०, दे०) बयाना (ग्रा०), प्रलाप या बकवाद करना, स्वप्न में बकना, ऐंठ या ऐंठ जाना। "ब्रह्मब्रह्मा कबहूँ बहकि बररात हौ"—[ऊ० श०]।

बरवट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तिल्ली रोग, बावट (ग्रा०)।

बरवा, बरवै—(संज्ञा, पु०, दे०) १९ मात्राओं का एक छंद (पिं०), कुरंग, ध्रुव, मछली फँसाने का कांटा, एक रागिनी (संगी०)।

बरषना*†—(क्रि० अ०, दे०, यौ०) [सं० वर्षण] बरसना। [**बरषाना**—(स० रूप)]·[**बरषावना, बरषवाना**—(प्रे० रूप)]।

बरषा, बरिषा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्षा] [बरसा (दे०)] वृष्टि, बरसात, वर्षाकाल। "बरषा बिगत सरद ऋतु आई"—[रामा०]।

बरषासन*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वर्षाशन] एक वर्ष के हेतु खाने का सामान।

बरस, बरिस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्ष] १२ मासों का वृंद, वर्ष, साल [बरष (दे०)]। "जियहु जगत-पति बरिस करोरी"—[रामा०]। **—गाँठ**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० वर्ष ग्रंथि] सालगिरह, जन्म-गाँठ जन्म-दिन।

बरसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वर्षण] मेंह पड़ना, पानी गिरना, पानी के समान गिरना। [**बरसवाना, बरसावना** (स० रूप)], [**बरसाना** (प्रे० रूप)]—"बरसहिं जलद भूमि नियराये"—[रामा०]। अधिक मात्रा में सब ओर स आना, झलकना, प्रगट होना। **मुहा०—पड़ना**-अति क्रुद्ध होकर डाँट-फटकार बताना। भूसा, अलग करने के लिए अन्न को वायु में उड़ाना, ओसाया जाना।

बरसाइत†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वट+सावित्री] वरगदाही (ग्रा०) जेठ बदी अमावस्या जब वट की पूजा होती है। "कैसी बरसाइत में भई बर साइत री"—मन्ना०।

बरसात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्षा] वर्षा काल, वर्षा ऋतु। "बरसात गई बर साथ न सोई"—[स्फु०]।

बरसाती—(वि०, दे०) [सं० वर्षा] बरसात सम्बन्धी, बरसात का, एक प्रकार का कपड़ा जिससे वर्षा में शरीर नहीं भीगता।

बरसाना—(क्रि० स०) [हिं० बरसना का प्रे० रूप] वृष्टि या वर्षा करना, वृष्टि-जल सा अधिक गिरना, अधिक मात्रा या संख्या मे सब ओर से मिलना, डाली देना, ओसाना।

बरसी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बरस+ई प्रत्य०] मृतक का वार्षिक श्राद्ध।

बरसौंड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बरस+औंड़ी प्रत्य०] वार्षिक कर या भाड़ा।

बरसौंहाँ—(वि०, दे०) [हिं० बरसना+औहाँ प्रत्य०] बरसने वाला। (यौ०) [बर+सौंह] प्रिय-सम्मुख। "जाति बरसौंहों लखि वारिद मैं"—मन्ना०।

बरहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बहा] खेतों मे सिंचाई के लिए छोटी नाली (संज्ञा, पु०, दे०)

मोटा रस्सा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बर्हि] मयूर, मोर, मयूर शिखा। [**बरही** (स्त्री० अल्पा०)]

बरही—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बर्हि] मोर, मयूर, । मुर्गा । साही जंतु। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) मोटी रस्सी। जलाने की लकड़ियों का बोझ, प्रसूता के १२ वे दिन का स्नानादि कृत्य, बरहो (ग्रा०)। **—पीड़***†–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० बर्हिपीड] मोरमुकुट । **—मुख***†–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० बर्हिमुख] अग्निमुख, देवता।

बरहौं—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बाहर+औं प्रत्य०] बारहवें दिन का सूतिका स्नान, [बरही (दे०)]।

बरह्मंड, बरह्मांडी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ब्रह्मांड] ब्रह्मांड, सारा संसार, खोपड़ी।

बरह्मावना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ब्रह्म+आवना] आशीर्वाद वा अशीष देना।

बरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वटी] उड़द की पिसी दाल से बना एक पकान, बड़ा। (संज्ञा, पु०, दे०) टाड़, बहुटा, बाँह का एक भूषण, बर-गद, वट वृक्ष।

बराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बड़ाई] बड़ाई, आधिक्य, श्रेष्ठता।

बराक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वराक] शिव, युद्ध। (वि०) बेचारा, नीच, बापुरा, शोचनीय अधम। "महाबीर बाँकुरे बराकी बाहुपीर क्यों न, लंकिनी ज्यो लात-घात ही मरोरि मारिये"—कवि०।

बराट, बराटक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वरा-टिका] कौड़ी।

बरात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वरयात्रा] जनेत (प्रान्ती०) वर के साथ कन्या के यहाँ जाने वाले लोगों का समूह। "लागी जुरन बरात"—[रामा०]। मुहा०—**करना**–बरात में सम्मिलित होना।

बराती—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बरात+ई प्रत्य०] वर के साथी। [**घराती** (विलो०)]। "बने बराती बरनि न जाहीं"—[रामा०]।

बराना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वारण] प्रसंग पर भी बात न कहना, बचाना, रक्षा करना। (क्रि० स०, दे०) [सं० वरण] बेराना (ग्रा०) छाँटना, चुनना, [बाँछना (दे०)] †(क्रि० स०) बालना, जलाना, जलवाना।

बराबर—(वि० फ़ा०) गुण, मूल्य, मात्रादि मे समान, तुल्य, समान समतल भूमि। मुहा०—**करना**-समान या पूरा करना, समाप्त करना। **—ले-दे कर करना**–(क्रि० वि०) लगातार, सदा, निरन्तर, एक साथ, एक ही पंक्ति मे।

बराबरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बराबर+ई प्रत्य०] तुल्यता, समानता, सादृश्य, सामना, विरोध, मुकाबिला। "बराबरी कैसे करूँ पूरी परती नाहिं"—स्फु०। [**बड़ा और बरी** (यौ०)]

बरामद—(वि०, फ़ा०) बाहर आया हुआ, खोई या चोरी गई वस्तु का कहीं से निकालना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) निकासी, आमदनी, गंगाबरार, दियारा (प्रान्ती)। मुहा०—**करना**–चोरी के माल को बाहर प्रकट करना। **—होना**–(अ०) प्रगट होना, बाहर होना।

बरामदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दालान, ओसारा, घर का छाया हुआ बाहर का भाग, छज्जा, बारजा।

बराय—(अव्य, फ़ा०) हेतु, वास्ते, लिये। जैसे—बराय मेहरबानी।

बरायन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर+आयन प्रत्य०] लोहे का छल्ला जो व्याह में वर पहनता है।

बराव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बराना+आव प्रत्य०] दुराव, बचाव, रक्षा, परहेज, बराना का भाव। [**बरावना** (क्रि० स०, दे०)]

बरास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पोतास] भीम-सेनी कपूर।

बराह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बराह] शूकर। (क्रि० वि०, फ़ा०) द्वारा, तौर पर।

बराहरास्त—(क्रि० वि०, फ़ा०) ठीक रास्ते पर।

बरिया*—(वि०, दे०) [सं० बलिन्] बली।

बरियाई†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० बलात] जबरदस्ती, बलपूर्वक, हठात। "दीन्ह राज मोकहँ बरियाई"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बलवान का भाव।

बरियारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बली] बड़े बड़े वीर या बलवान, एक औषधि, खिरेंटी, बनमेथी,

बीजबंद। [**बरियारी** (स्त्री०)]। "हारे सकल वीर बरियारा"—[रामा०]।

बरिल†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बड़ा, बरा] बड़ा या पकौड़ी जैसा एक पकवान।

बरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वटी] मूंग या उरद की पिसी दाल की सुखाई हुई छोटी छोटी बटिकायें। (वि०, फ़ा०) छूटा हुआ, मुक्त।* (वि० दे०) बली।

बरीस‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्ष] वर्ष, साल। "जीवहु कोटि बरीस"—[रामा०]।

बरीसना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बरसना] बरसना।

बरु†*—(अव्य०, दे०) [सं० वर—श्रेष्ठ, भला] चाहे, भलेही। (संज्ञा, पु०) [सं० वर] वर। "बरु मराल मानस तजै, चंद सीत रबि घाम"—तुल०।

बरुआ, बरुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वटुक] ब्रह्मचारी, बटु, उपनयन, विप्रकुमार, जनेऊ।

बरुक—(अव्य, दे०) [हि० बरु] चाहे, भलेही।

बरुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वरण लोमिका] बरौनी (ग्रा०), पलकों के बाल। "बरूनी बघंबर मैं जोगिन ह्वै बैठी है वियोगिनि की अँखियाँ"—देव०।

बरूथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वरूथ] सई, गोमती के मध्य की एक छोटी नदी, छोटी सेना।

बरेंड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वरंडक] छप्पर या खपरैल के मध्य की मोटी लम्बी शहतीर या ऊपर का मध्य भाग। [**बरेंडी** (स्त्री०)]

बरे*†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० बल] बलपूर्वक या जोर पर, जबरदस्ती, ऊँचे स्वर से। (अव्य, दे०) [सं० वर्त्त] बदले में, वास्ते, हेतु, लिये।

बरेखी, बरेषी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बाँह + रखना] स्त्रियों का भुज-भूषण। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बरदेखो] वर देखना, व्याह की ठहरौनी, वर्षा। "व्याह न बरेखो जाति-पाँति ना चहत हौं"—[गीता०]।

बरेज—(संज्ञा, पु०, दे०) पानवाड़ी, पान का खेत।

बरेठा—(संज्ञा, पु०, दे०) धोबी, रजक। [**बरेठिन** (स्त्री०)]।

बरेवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पान का खेत, बिरनी, हाड़ा।

बरै—(संज्ञा, पु०, दे०) बरई, तमोली।

बरैन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बरइनि, तमोलिन।

बरोक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बर+रोक] बरेच्छा, फलदान, व्याह पक्का करने को कन्या-पक्ष द्वारा वर-पक्ष को दिया गया द्रव्य।* (संज्ञा, पु० दे०) [सं० बलौकः] सेना। (क्रि० वि०, दे०) जबरदस्ती।

बरोठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्वार+कोष्ठ, हि० बार+कोठा] पौरी, बैठक, ड्योढ़ी, दीवानखाना, द्वार के निकट की दालान। **मुहा०**—(ठे) **का चार**—द्वारपूजा, द्वाराचार (सं०)

बरोरु*—(वि०, दे०, यौ०) [सं० वरोरु] अच्छी जाँघों वाला या वाली।

बरोह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वट+रोह—उगना] बरगद की जटा, वट शाखाओं से नीचे लटकी जड़ों जैसी शाखायें जो पृथ्वी पर जम कर जड़ें हो जाती हैं।

बरौठा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बरोठा, बरेठा] बरोठा, बरेठा, धोबी।

बरौनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० वरलोमिका] बरोनी, पलकों के बाल, बरुनी।

बरौरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बड़ी, बरी] बरी या बड़ी नाम का पकवान।

बर्क़—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) विद्युत्, बिजली। (वि०) चालाक, तेज।

बर्ज—(वि०, दे०) [सं० वर्य] श्रेष्ठ।

बर्जना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बरजना] रोकना।

बर्णन, बर्नन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्णन] बयान, कथन, वर्णन, बरनन। [**बर्णना** (क्रि० स०, दे०)]

बर्तन—(संज्ञा, पु०, दे०) बरतन (हि०)।

बर्त्तना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बरतना] व्यवहार करना, बरतना।

बर्न*—(संज्ञा, पु०, दे०) वर्ण (सं०) अक्षर, रंग, जाति, बरन। "तुलसी रघुबर नाम के बर्न बिराजत दोय"—[रामा०]

बर्फ़—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शीत से जम कर गिरने वाली वायु में की पानी की भाप, हिम, बरफ़, अति ठंडक से जम कर ठोस और पारदर्शक हुआ पानी, कृत्रिम उपायों या मशीन से जमाया जल, दूध या फलों का रस। [**बर्फ़ीला** (वि०)] [**बर्फ़ीली** (स्त्री०)]

बर्फ़िस्तान—(स्त्री०, पु०, फ़ा०) हिम-स्थल, हिम का देश ।

बर्फ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० बर्फ़] बरफी नाम की मिठाई ।

बर्बर—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्णाश्रम-रहित, असभ्य मनुष्य, अस्त्रों की झनकार, घुँघराले बाल । (वि०) जंगली, उद्दंड, असभ्य । [**बर्बरता, बर्बरी** (संज्ञा, स्त्री०)]

बर्बरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पीला चंदन, वन-तुलसी, ईंगुर ।

बर्राक़—(वि०, अ०) तेज़, जगमगाता हुआ, चमकीला, तीव्र, चतुर, सफेद ।

बर्राना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० बर बर] व्यर्थ बकना या बोलना, नींद या अचेत होने पर बकना, बड़बड़ाना, बरराना, ऐंठ जाना ।

बर्रे, बर्रे†—(संज्ञा, पु०) [सं० बरवट] ततैया, भिड़, बरैया (ग्रा०) । "बर्रे बालक एक सुभाऊ" —[रामा०] ।

बलंद, बुलंद—(वि०, फ़ा०) ऊँचा [**बलंदी, बुलंदी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**अकबाल**–(वि०, यौ०) [फ़ा०+अ०] उच्च भाग्य, भाग्वान, तकदीर वाला ।

बल—(संज्ञा, पु०, सं०) शक्ति, जोर, ताकत, सामर्थ्य, बूता [बिर्ता (दे०)], भरोसा, आश्रय, सेना, पार्श्व, सँभार, सहारा ।—**कारक—कारी**–(वि०, सं०) पुष्टकारक, बल-जनक, बल वर्द्धक बलकर ।—**दाऊ,—देव**–(संज्ञा, पु०, दे०) बलराम ।—**बीर***–(संज्ञा, पु०) [हि० बल—बलराम+बीर—भाई] बलदेव जी के भाई श्रीकृष्ण । "बताओ बलबीर जू के धाम इत कौन है"—**नरो०** ।—**भद्र**–(संज्ञा, पु०, सं०) बलराम जी ।—**राम**–(संज्ञा, पु०, सं०) बलदेव जी ।—**शाली**–(वि०, सं०) बली, बलवान् ।—**शील**–(वि०, सं०) बलवान्, शक्तिशाली ।—**हीन**—(वि०, यौ०, सं०) कमजोर, निर्बल, बल-रहित । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वलि] मरोड़ ऐंठन, लपेट, मोड़, लहरदार, घुमाव, फेरा शिकन । **मुहा०—खाना**-टेढ़ा होना, घाटा या हानि सहना, झुकना, लचकना, चूकना । टेढ़ापन, लचक, झुकाव, कसर, कमी ।—**पड़ना**–अन्तर रहना, भेद होना, भूल-चूक होना, सिकुड़न पड़ना ।

बलकट—(वि०, दे०) अगाऊ, पेशगी ।

बलकना—(क्रि०, अ०, दे०, अनु०) खौलना, उबलना, जोश में आना, उमँगना, उत्तेजित हो उमड़ना । [**बलकाना** (स० रूप)] [**बलकवाना** (प्रे० रूप)] ।

बलकल*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वल्कल] छाल के कपड़े । "भूमि सयन बलकल-बसन, असन, कंद-फल मूल"—[रामा०] ।

बलग़म—(संज्ञा, पु०, अ०) कफ, श्लेष्मा । [**बलग़मी** (वि०, स्त्री०)]

बलद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्द] [**बरद** (दे०)] बैल । (**वि०**) बल देने वाला ।

बलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वर्हण] [**बरना** (दे०)], जलना, दहकना । [**बालना** (स० रूप)], [**बलवाना** (प्रे० रूप०)]

बलबलाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) ऊँट का बोलना, व्यर्थ बकना, जोश में सगर्व बड़ी-बड़ी बातें करना ।

बलबलाहट, बलबली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बलबलाना] ऊँट की बोली, व्यर्थ की बकबक, मिथ्या गर्व या जोश ।

बलभी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बलभि] घर मे सबसे ऊपर वाला कोठा, चौबारा (प्रान्ती०) ।

बलम, बलमा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वल्लभ] पति, स्वामी, नायक, [बालम (दे०)] ।

बलमीकि—(संज्ञा, पु०, सं०) बाँबी ।

बलय*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वलय] **कंकण** ।

बलवंड*—(वि०, दे०) [सं० बलवतः] बलवान्, प्रतापी [बरबंड (दे०)] ।

बलवंत—(वि०) [सं० बलवतः] बली ।

बलवा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) विद्रोह, बगावत, हुल्लड़, विप्लव, दंगा, [बलवा (दे०)] ।

बलवाई—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० बलवा+ई प्रत्य०] विद्रोही, उपद्रवी, विप्लवी ।

बलवान्—(वि०) [सं० बलवत्] सामर्थ्यवान्, बली । [**बलवती** (स्त्री०)]

बलवार—(वि०, दे०) बलवान् ।

बलहा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बोझा, लम्बी और पतली लकड़ियाँ ।

बला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बरियारी नामक पौधा (औषधि), पृथ्वी, लक्ष्मी, भूख, प्यास, एक प्रकार की विद्या । [**बला अतिबला** (यौ०)] ।

"बलामतिबलाम् चैव पठतस्तातराघव"—वा० रा०। (संज्ञा, स्त्री०, अ०) विपत्ति, कष्ट, दुःख, आफ़त, [बलाय (दे०)] बुराई, व्याधि, भूत-प्रेत की बाधा। मुहा०—लाका-अत्यंत, घोर।

बलाइ, बलाय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० बला] बला, आफ़त, विपत्ति।

बलाक—(संज्ञा, पु०, सं०) बक, बगुला, बगला। [**बलाका** (स्त्री०)]।

बलाका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बगली, बगलों की पंक्ति। [**बलाकिनी** (वि० स्त्री०)]

बलाग्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सेनापति, सेना का अगला भाग। (वि०) बलवान, बली।

बलाढ्य—(वि०, यौ०, सं०) बलवान।

बलात्—(क्रि० वि०, सं०) हठात्, हठ या बल-पूर्वक, जबरदस्ती।—**आधिपत्य**-(पु०) बलाधिकार। [फोर्सिएबुल पजेशन]—**स्वीकरण**-(पु०) जबरदस्ती कबुलवाना, बल से स्वीकार कराना। [एक्सटार्ट कनफेशन]—**कार**-(संज्ञा, पु०, सं०) जबरदस्ती किसी स्त्री के साथ हठात् कुछ करना, इच्छा के विरुद्ध संभोग करना।

बलात्मक स्वराघात—(संज्ञा, पु०) वाक्य के किसी शब्द या शब्द के किसी भाग पर उच्चारण करते समय ज़ोर डालना कि वह ध्वनि शेष से अधिक ज़ोर की सुनाई पड़े। [स्ट्रेस ऐक्सेंट]

बलाधिक—(वि०, सं०) ज्यादा बलवाला।

बलाधिकरण—(संज्ञा, पु०) [सं० बल+अधिकरण] शक्ति या बल की अधिकता।

बलाधिक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बल की अधिकता।

बलाध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) सेनापति।

बलान्वित—(वि०, सं०) शक्तिशाली, बली।

बलाय—(संज्ञा, पु०, सं०) वरुण नामक वृक्ष।

बलाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बोल्लाह] बुलाह घोड़ा।

बलाहक—(संज्ञा, पु०, सं०) बादल, मेघ, एक नाग, एक दैत्य, एक तरह का बगला, एक पर्वत (शाल्मली द्वीप)। "नाहक हमारो प्रान-गाहक भयो है यह, चातक तू आपने बलाहक बरजि ले" —रसाल।

बलि—(संज्ञा पु०, सं०) राजकर, कर, लगान, भेंट, उपहार, पूजा का सामान, भूतयज्ञ, चढ़ावा, भोग, देवता के नैवेद्य का पदार्थ, किसी देवता पर चढ़ाने को काटा गया पशु। "भइ बलि वार जाय बलि मैया"—[रामा०]।—**दान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवार्थ नैवेद्य आदि चढ़ाना, भेंट देना, देवतार्थ बकरे आदि पशु का वध, उत्सर्ग।—**पशु**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवार्थ बलिदान करने (किया गया) का पशु। —**पुष्ट**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) काग, कौआ। —**प्रदान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बलिदान। —**वेदी**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) बलि के लिए एक निश्चित स्थान या चबूतरा।—**वैश्वदेव**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गृहस्थ के पंच महायज्ञों में से एक, जिसमें भोजन से एक एक ग्रास पृथक् रखा जाता है।—**मुख***-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० बलिमुख] बंदर। "चली बलीमुख सेन पराई"—[रामा०]। मुहा०—**चढ़ना (चढ़ाना)**-मारा जाना।—**चढ़ाना**-देवता को भेंट चढ़ाना या पशु वध करना।—**जाना**-बलिहारी जाना, निछावरी होना।—**बलिबलि-जाऊँ**-मैं तुम पर निछावर हूँ। प्रह्लाद का पौत्र एक दैत्य-राज। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० बला] छोटी बहन, सखी। "कहनोई करौ बलि मेरो इतो"—रसाल।

बलित*—(वि०) [सं० बलि] बलिदान किया या मरा हुआ, हत।

बलिया—(वि०, दे०) [सं० बल] बलवान्।

बलिरसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंधक।

बलिवर्द—(संज्ञा, पु०, सं०) साँड़, बैल।

बलिष्ठ—(वि०, सं०) अधिक बली।

बलिसंग—(संज्ञा, पु०, सं०) अंकुश, चाबुक, वानरों का समूह।

बलिहारना*—(क्रि० स०, दे०, हि०) निछावर कर देना।

बलिहारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बलिहारना] निछावर, प्रेम, भक्ति, श्रद्धादि के कारण अपने तईं त्याग, आत्मोत्सर्ग।। "कहहु तात जननी बलिहारी"—[रामा०]। मुहा०—**जाना** (**बलि जाना**)-निछावर होना, बलैया लेना।—**लेना**-प्रेम दिखाना, बलैया लेना।

बली—(वि०) [सं० बलिन्] बलवान।

बलीयान्—(वि०, सं०) बलवान।

बलुआ, बलुवा—(वि०, दे०) [हि० बालू] बालू मिला, रेतीला। [**बलुई** (स्त्री०)]

बलूच—(संज्ञा, पु०, दे०) बलूचिस्तान के मुसलमानों की एक जाति।

बलूचिस्तान—(संज्ञा, पु०, दे०) बलूचों का एक देश जो भारत के पश्चिम में है ।

बलूची—(संज्ञा, पु०, दे०) बलूचिस्तान का निवासी ।

बलूत—(संज्ञा, पु०, अ०) माजूफल की जाति का एक वृक्ष ।

बलूरना—(क्रि० स०, दे०) खुरचना, नोचना ।

बलूला—(संज्ञा, पु०, दे०) बुलबुला, बुद्‌बुदा ।

बलैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० बला + हिं० बलाय] बला, बलाय । "बलैया लेहीं"—[रामा०] । **मुहा०**—(**किसी की**) **लेना**—(किसी का) रोग, दोष या दुख अपने ऊपर लेना, मंगल या कल्याण चाहते हुए प्यार करना, आत्मोत्सर्ग करना ।

बल्कि—(अव्य०, फा०) परंतु, अन्यथा, इसके विरुद्ध, प्रत्युत, और अच्छा है ।

बल्लभ—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रिय, पति, स्वामी ।

बल्लभी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रिया, प्यारी, गोपी । "सुरति सदेस सुनाय मेटो वल्लभिन को दाहु"—सूर० ।

बल्लम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बल, हिं० बल्ला] छड़, बरछा, सोटा, बल्ला, डंडा, राजाओं के चोबदारों की सोने या चाँदी की छड़ी । भाला । —**बर्दार**—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० बल्लम + बर्दार फा०] राजा की सवारी या बरात मे आगे बल्लम लेकर चलने वाला ।

बल्लमटेर—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० वालंटियर] स्वेच्छा से सेना में भरती होने वाला स्वयं-सेवक ।

बल्लरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार की लता, लता, बल्ली ।

बल्ला—(संज्ञा, पु०) [सं० बल] बाँस या और किसी पेड़ का लंबा खंड, नाव खेने का बाँस, (डॉड) गेंद खेलने का काठ का बैट (अं०) [**बल्ली** (स्त्री० अल्पा०)] ।

बल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लता । "वृनती तुलतावल्ली"—अमर० । बाँस की लग्घी, छत में लगाने की गोल मोटी लकड़ी ।

बवँडना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० व्यावर्त्तन] व्यर्थ फिरना, इधर-उधर घूमना, बौंडना, बौंड़ियाना (ग्रा०), लता का बढ़कर फैलना ।

बवंडर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वायुमंडल] चक्रवात, बगूला, चक्र सी घूमती आँधी, पेचीदी बात । "ऊधौ तुम बात को बवंडर बनावो कहा" —रत्ना० ।

बवंडा—(संज्ञा, पु०) बवंडर ।

बवड़ियाना—(अ० क्रि०) भटकना ।

बवघूरा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बवंडर] चक्रवात, बगूला, बवंडर ।

बवन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वमन] वमन, कै, उलटी ।

बवना*—(क्रि० स०, अ०, दे०) [सं० वपन] बोना, बिखराना, छितराना, कै करना । (**संज्ञा**, पु०) [सं० वमन] वामन, नाटा । [**बौना** (दे०)] ।

बवरना—(क्रि० अ०, दे०) बौरना ।

बवासीर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अर्श या गुदेन्द्रिय में मस्से होने का रोग (वै०) ।

बसंती—(वि०, दे०) [हिं० बसंत] वसंत ऋतु संबंधी, बसंत का, पीले रंग का ।

बसंदर, बैसंधर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैश्वानर] आग । **लो०**—"मेरे घर से आगी लाये नॉव धरेन बैसंदर" ।

बस—(वि०, फा०) बहुत, काफी, पूर्ण, पर्याप्त, पूरा । अव्य० अलम् (सं०) पर्याप्त, केवल, काफी । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वश] आधीन, वश, अधिकार, सामर्थ, शक्ति, बल, जोर ।

बसती, बस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गाँव, आबादी । [**गाँव-बस्ती** (यौ०)]

बसन—(संज्ञा, पु०) [सं० वसन] कपड़ा, वस्त्र । "रहा न नगर बसन घृत-तेला"—[रामा०]।

बसना—(क्रि० अ०) [सं० वसन] रहना, निवास करना, आबाद होना, डेरा करना, ठहराना, टिकना । [**बसाना**—(स० रूप)] [**बसवाना**—(प्रेरणा रूप)] । **मुहा०**—**घर**— गृहगृहस्थी का बनना, सकुटुंब सुखी रहना, स्त्री-पुत्र समेत होना । **घर में**—, सुख से गृहस्थी करना, टिकना ।—(**हृदय**) **मन** (**नैनों आँखों**) **में** —, ध्यान या स्मृति में बना रहना, बैठना, पैठाना । "बसौ मेरे नयनन में नन्दलाल" । (क्रि० अ०, दे०) [हिं० बासना] बासा जाना, सुगंधि या महक से भर जाना । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वसन] किसी वस्तु पर लपेटने का वस्त्र, बेठन, जैसे—पन-बसना ।

बसनि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बसना] निवास, वास, रहनि ।

बसनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वसन] रुपये भर कर कमर में लपेटने की पतली थैली ।

बसवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बास] बघार, छौंक ।

बसवास—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० बसना + वास] निवास-योग्य परिस्थिति, रहना, निवास, स्थिति, ठिकाना, ठहरने या टिकने की सुविधा ।

बसवैया—(वि०, दे०) बसाने या बसने वाला ।

बसर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) निर्वाह । [**गुज़र-बसर** (यौ०)]

बसराना—(क्रि० स०, दे०) समाप्त या पूरा करना ।

बसह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृषभ] बैल । "भरि भरि बसह अपार कहारा"—[रामा०] ।

बसा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वसा] चरबी, मेद । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बर्रें, भिड़ ।

बसाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बसना] बसने, ठहरने या टिकने को स्थान देना, आबाद करना । **मुहा०—घर**-, गृहस्थी जमाना, सकुटुंब सुख मे रहने का ठिकाना (प्रबंध) करना, ब्याह करना, स्त्री सहित होना । (क्रि० स०, दे०) [सं० वेशन] रखना, बैठाना । *(क्रि० अ०) रहना, बसना, ठहरना, दुर्गंध देना, 'ध-युक्त करना, सुवासित होना । (क्रि० अ०) [हि० वश] वश चलना, जोर चलना । "विधि सों कछु न बसाय"—[रामा०] । (क्रि० अ०, दे०) [हि० वास] महकना, सुवास देना ।

बसिऔरा, बस्यौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बासी] बासी भोजन, बसौड़ा (ग्रा०), बासी भोजन खाने की कुछ तिथियाँ (स्त्रियों को) ।

बसीकत, बसीगत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बसना] बस्ती, आबादी, रहन, बसने का भाव या कार्य ।

बसीकर—(वि०, दे०) [सं० वशीकर] आधीन या वश में करने वाला ।

बसीकरन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वशीकरण] वश में या अधीन करने वाला । "बसी करन इक मंत्र है, परिहरु वचन कठोर"—तुल० ।

बसीठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अवसृष्ट] संदेसा ले जाने वाला, दूत, धावन । "तौ बसीठ पठवा केहि काजा"—[रामा०] ।

बसीठी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बसीठ] दूत कर्म, दूतता, दूतत्व ।

बसीना*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बसना] रहन । [रहाइस (दे०)]

बसूला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वासि + ला प्रत्य०] लकड़ी छीलने या गढ़ने का एक लोहे का औजार । [**बसूली** (स्त्री० अल्पा०)]

बसेरा—(वि०, दे०) [हि० बसना] बसने या रहने वाला । (संज्ञा, पु०) ठहरने या टिकने का स्थान, पक्षियों के रात बिताने या रहने का घोंसला, रहने या टिकने का कार्य या भाव । "ना घर तेरा ना घर मेरा जंगल बीच बसेरा है"—कबीर । **मुहा०—करना**-बसना, डेरा या निवास करना, रहना, ठहरना, घर बनाना ।—**लेना**-रात बिताने को रहना, निवास करना, टिकना ।—**देना**-आश्रय देना ।

बसेरी—(वि०, दे०) [हि० बसेरा] निवासी, रहने या बसने वाला ।

बसैया*†—(वि०, दे०) [हि० बसना] बसने वाला, बसवैया ।

बसोबास—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० बास + आवास] रहने का स्थान ।

बसौंधी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० वास + औंधी] सुगंधित लच्छेदार रबड़ी ।

बस्ता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कागज-पत्र या पुस्तकादि बाँधने का चौकोर कपड़ा, बेठन । "भागे मुसद्दी तब बँगला ते बस्ता कलमदान लै हाथ"—[आल्हा०] ।—**बांधना**-कागज-पत्र समेटना, तैयारी करना (कार्यालय आदि के लिए) ।

बस्ती, बसती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वसति] गाँव, आबादी, निवास, जनपद । "औरों की तू बस्ती रखे तेरा भी है बस्ता पूरा" । घर बना कर रहने का कार्य या भाव ।

बस्तु, बस्तू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वस्तु] पदार्थ, द्रव्य, चीज ।

बस्साना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० वास] दुर्गंधि देना, बसाना ।

बहँगी, बहिंगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विहंगिका] बोझ ले जाने को तराजू जैसी चीज काँवर, काँवरि । [**बहिंगा** (संज्ञा, पु०)]

बहकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बहना] सही रास्ते से भूल कर अन्य ओर जाना, भटकना,

भूलना, चूकना, भुलावे में आ जाना, धोखा खाना, बहलाना (बच्चों का) किसी कार्य या बात में पड़ कर शान्त हो जाना, मद या रस में चूर होना, आपे में न रहना, ठीक लक्ष्य से अन्यथा जाना। **मुहा०—बहकी बहकी बातें करना**-उन्मादी की सी बातें करना, बढ़ी-चढ़ी या भुलावे की बातें करना । [**बहकाना**—(स० रूप)] [**बहकवाना**—(प्रेरणा रूप)]।

बहकाना—(क्रि० स०) [हिं० **बहकना**] सही स्थान, लक्ष्य या मार्ग से दूसरी ओर ले जाना या कर देना, भुलवाना, बहलाना, भरमाना, फुसलाना, बातों से शांत करना।

बहकाव, बहकावट—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बहकाना] बहकाने का भाव।

बहकावा—(संज्ञा, पु०) भुलावा, बहकाने वाली बात।

बहतोल*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बहता + ल प्रत्य०] पानी बहाने को छोटी नाली, बरहा।

बहन, बहिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भगिनी] बहिन। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बहना] बहना क्रिया का भाव।

बहना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वहन] प्रवाहित होना, पानी आदि द्रव वस्तुओं का किसी ओर जाना, हटना, दूर होना, कुमार्गी या आवारा होना, फिसल जाना, बिगड़ना, वायु का चलना, स्थान या लक्ष्य से सरक जाना, अड़ाना (पशुओं का), बुरा होना, अधिक या सस्ता मिलना, गर्भ गिरना, नष्ट होना, डूब जाना (रुपया आदि), खींच या लाद कर ले चलना, चलना, निर्वाह करना, धारण या वहन करना, उठना, मारा मारा फिरना, पानी की धार के साथ चलना, धार या बूँद के रूप में निकल चलना, स्रवित होना। [**बहाना**—(स० रूप)]। **मुहा०—बहती गंगा में हाथ धोना**-जिससे अन्य लोग लाभ उठा रहे हों उससे लाभ उठाना।

बहनापा—(संज्ञा, पु०) [हिं० बहिन + आपा प्रत्य०] बहिन का संबंध या नाता।

बहनि, बहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) प्रवाह, बहना, अनुजा, बहिन, बहिनी।

बहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वह्नि] आग, अग्नि।

बहनु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वहन] वाहन, सवारी।

बहनेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बहिन] बहिन से संबंध वाली।

बहनोई—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भगिनी-पति] बहिन का पति, जीजा (प्रान्ती०)।

बहनौरा—(संज्ञा, पु०) बहन की ससुराल।

बहरा, बहिरा—(वि०, दे०) [सं० वधिर] जिसे कम या कुछ न सुनाई दे। [**बहिरी बहरी** (स्त्री०)] [**बहरापना** (संज्ञा, पु०)]।

बहराना, बहलाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० बहराना या बहलाना] दुःख, चिंतादि को भुलवाने वाली मनोरंजक बातों कहना, फुसलाना, भुलाना, बहकाना। "कछु बहराई लगे कछुक सराहनि से"—रत्ना०।

बहरिया—(वि०) देखिए-बाहरी। (पु०) बाहर रहनेवाला मंदिर का सेवक।

बहरियाना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० बाहर + इयाना प्रत्य०] निकालना, जुदा या विलग करना, बाहर करना। (क्रि० अ०, दे०)—जुदा या अलग होना, निकलना।

बहरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सामुद्रीय बाज जैसे एक शिकारी पक्षी। [**बधिर** (वि०, स्त्री०, दे०)]

बहल, बहली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वहन] रथ जैसी छोटी हलकी बैल-गाड़ी। खड़खड़िया (प्रान्ती०)।

बहलना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० बहलाना] मनोरंजन होना, प्रसन्न होना, चिन्ता या दुःख दूर हो मन का अन्य ओर लगना।

बहलाना—(क्रि०, स०, दे०) [फ़ा० बहाल] मन प्रसन्न करना, मनोरंजन करना, बहकाना, भुलावा देना, फुसलाना, चिंता या दुःख भुलवा कर चित्त का अन्य ओर या बातों में लगाना।

बहलाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बहलाना] प्रसन्नता, मनोरंजन, बहलाने का भाव।

बहल्ला‡*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बहलना] आनंद प्रसन्नता।

बहस—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) वाद-विवाद, तर्क, दलील, झगड़ा, बदाबदी, होड़, खंडन-मंडन को युक्ति, हुज्जत। [**बहसी** (वि०)]

बहसना*—(क्रि० अ०, दे०) बहस या विवाद करना, बदाबदी या होड़ लगाना।

बहादुर—(वि०, फ़ा०) पराक्रमी, शूरवीर, उत्साही, साहसी।

बहादुराना—(अ०, फ़ा०) वीरतापूर्वक । (वि०) वीरतासूचक ।

बहादुरी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) वीरता ।

बहाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बहना] प्रवाह (धारा) में छोड़ना, लुढ़काना, ढालना, फेंकना, प्रवाहित करना, हवा चलाना, गँवाना, धन खोना, व्यर्थ व्यय करना, धार या बूंद के रूप में बराबर छोड़ना, सस्ता बेंचना, डालना, द्रव वस्तु का नीचे की ओर चलाना या छोड़ना । (संज्ञा, पु०, दे०, फ़ा०) मतलब निकालने या किसी बात से बचने के लिए झूठी बात कहना, मिस, ब्याज, हीला, कहने या सुनने का एक हेतु या कारण, स्वार्थ-सिद्धि के लिये मिथ्या बात ।—(ने) **बाज़ी**—(स्त्री०) बहाने बनाना ।

बहार—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) वसंत ऋतु, यौवन का विकास, आनन्द, प्रफुल्लता, मौज, जवानी का रंग, रौनक, मजा, कौतुक, तमाशा । "बागो बहार आतिशे नमरूद को किया"—ज़ौक । **मुहा०**—**पर आना,—पर होना**-पूर्ण यौवन पर आना, पूर्ण विकास की स्थिति पर होना ।

बहारना—(सं०, वि०) झाड़ू लगाना, झाड़ना ।

बहाल—(वि०, फ़ा०) प्रथम के समान स्थित, जैसे का तैसा, प्रसन्न, स्वस्थ, मुक्त ।

बहाली—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) फिर से नियुक्ति, फिर उसी पद पर होना । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० बहलाना] ब्याज, मिस बहाना ।

बहाव—(संज्ञा, पु०) [हि० बहना] बहने का भाव, प्रवाह, धारा, बहता पानी ।

बहि—(अव्य०) [सं० वहिस्] बाहर ।

बहिक्रम*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वयः क्रम] उम्र, अवस्था ।

बहित्र—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वहित्र] नाव ।

बहिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भगिनी] भगिनी, बहिनी ।

बहियाँ‡*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बाहु] हाथ, बाहु, भुजा, बाँह । "करू बहियाँ बल आपनो छाँड़ि बिरानी आस"—कबीर ।

बहिरंग—(वि०, सं०) बाहिरी, बाहर वाला । [**अंतरंग** (विलो०)]

बहिर (रा)—(वि०) कान से कम सुनने वाला, बधिर ।

बहिरत‡*—(अव्य० दे०) [सं० बहिः] बाहर ।

बहिराना—(क्रि० स०) बाहर निकालना । (क्रि० अ०) बाहर होना । बहरा होना ।

बहिर्गत—(वि०, यौ०, सं०) बाहर आया या निकला हुआ, बहिरागत ।

बहिर्गमन—(संज्ञा, पु०, सं०) बाहर जाना ।

बहिर्गामी—(वि०, सं०) बाहर जाने वाली ।

बहिर्जगत—(संज्ञा, पु०, सं०) बाह्य जगत । "विस्तृत होता बहिर्जगत अब"—पन्त० ।

बहिर्देश—(संज्ञा, पु०, सं०) परदेश, अपने देश से बाहर का स्थान ।

बहिर्भाग—(संज्ञा, पु०, सं०) बाहर का हिस्सा ।

बहिर्भूत—(वि०, सं०) बहिर्गत, जो बाहर हो या गया हो ।

बहिर्भूमि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) बस्ती या आबादी से बाहर वाली जमीन ।

बहिर्मुख—(वि०, यौ०, सं०) विरुद्ध, प्रतिकूल, विमुख ।

बहिर्लापिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्रकार की पहेली जिसका उत्तर बाहरी शब्दों से प्राप्त होता है । (काव्य०) । [**अन्तर्लापिका** (विलो०)]

बहिष्करण—(संज्ञा, पु०, सं०) बाहर या अलग करना, अन्तःकरण का विपरीत ।

बहिष्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) निकालना, हटाना, बाहर करना ।

बहिष्कृत—(वि०, सं०) परित्यक्त, जिसका बहिष्कार किया गया हो ।

बही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बद्ध हि० बँधी] हिसाब-किताब लिखने की किताब ।—**खाता**-(पु०) महाजन के हिसाब की किताब ।

बहीर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भीड़] जन-समूह, सेना की सामग्री, तथा उसके साथ के सेवक, सईस, दूकानदार आदि । *‡(अव्य०) [सं० वहिस्] बाहर ।

बहु—(वि०, सं०) अनेक, अधिक, ज्यादा, बहुत । "बहु धनुहीं तोरेउँ लरिकाईं"—[रामा०] । (संज्ञा स्त्री०, दे०) [सं० वधू] बहु, वधू, पतोहू, स्त्री । —**गुना**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० बहुगुण] चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन, तसला, तबला, (ग्रा०) । (वि०) कई गुना ।—**जनतन्त्र**-(पु०) अनेक सत्तात्मक राजपद्धति । [पॉलीआर्की] —***हिताय**-(क्रि० वि०) अधिक संख्यक लोगों

के कल्याणार्थ। जो कुछ करेगा, बहुजन हिताय करेगा।—'कल्पना' सम्पादक।—ज्ञ-(वि०, सं०) बड़ा जानकार। [बहुज्ञता (संज्ञा, स्त्री०)]।—तिथि-(वि०, यौ०, सं०) बहुत दिनों, बहुत समय, बहुत बार।—त्व-(संज्ञा, पु०, सं०) अधिकता।—दर्शिता-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) बहुज्ञता।—दर्शी-(संज्ञा, पु०) [सं० बहुदर्शिन्] अनुभवी, जानकार, बहुज्ञ, बहुत देखने वाला, बहु साची।—बाहु-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रावण, सहस्र बाहु। "नाहीं तो अस होइह बहुबाहू"—[रामा०] "बहुबाहु जुत्त जोई"—[रामा०]।—ब्रीहि-(संज्ञा, पु०, सं०) ६ प्रकार के समासों में से वह समास जिसके दो या अधिक पदों से बने समस्त पद से अन्य पदार्थ का बोध हो और जो किसी पद का विशेषण सा हो (व्या०)।—श्रुत-(वि०, यौ०, सं०) अनेक विषयों का ज्ञाता, जिसने बहुत सुना हो।—मत-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बहुत से लोगों की भिन्न भिन्न सम्मति, बहुत से लोगों की मिलकर एक राय। [मेजारिटी] *—दल-(पु०) अधिक मत प्राप्त करनेवाला दल। [मेजारिटी पार्टी]—शासन-(पु०) अधिक मत प्राप्त करने वाले पक्ष का शासन। [मेजारिटी गवर्नमेंट]—मूत्र-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बहुत मूत्र होने का एक रोग।—मूल्य-(वि०, यौ०, सं०) दामी, कीमती, बढ़िया, बड़े दाम का।—रंगा-(वि०, यौ०) [हिं० बहुरंग] कई रंगों का, चित्र विचित्र, मनमौजी; बहुरूपिया।—रंगी-(वि०, यौ०) [हिं० बहुरंगा+ई प्रत्य०] अनेक करतब करनेवाला, अनेक रंगवाला, कौतुकी, बहुरूपिया।—रूपिया-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० बहु+रूप] स्वाँगी, तमाशिया, जो अनेक रूप धरकर दिखाता है, जाव, बहुरूपी।—वचन-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शब्द का वह रूप जिससे एक से अधिक वस्तु का ज्ञान हो (व्या०)।—विधि-(स्त्री०)बहुरूप, बहुगुनो। [मल्टिपिल]—*कर प्रणाली-(स्त्री०) नाना प्रकार से कर लेन वाली [मल्टी टैक्स सिस्टम] प्रणाली।—संख्यक-(वि०, यौ०, सं०) जो गिनती में बहुत अधिक हों, अगणित, बहुसंख्यात।

बहुटनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बहुटार] बहुटा, बहुँटी (ग्रा०)।

बहुत—(वि०, दे०) [सं० बहुतर] अनेक, एक या दो से अधिक, ज्यादा, यथेष्ट, काफी, बस, [बहु (दे०)]। "बहुत बुझाय तुम्हैं का कहऊं"—[रामा०]। मुहा०—अच्छा-स्वीकार सूचक वाक्य।—करके-अधिकतर, प्रायः बहुधा।—कुछ-कमनहीं।—खूब-बहुत अच्छा, वाह क्या कहना है। (क्रि० वि०) अधिक तौल में, ज्यादा।

बहुतक†*—(वि०, दे०) [हिं० बहुत+क] बहुत से, बहुतेरे।

बहुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अधिकता। (वि०) अधिक, बहुत।

बहुताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बहुता] बहुतायत, बाहुल्य, बहुलता।

बहुतात, बहुतायत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बहुता] ज्यादती, अधिकता।

बहुतेरा—(वि०, दे०) [हिं० बहुत+एरा प्रत्य०] अधिक, बहुत सा। (क्रि० वि०, दे०) अनेक प्रकार से, बहुत। [बहुतेरी (स्त्री०)]।

बहुतेरे—(वि०, दे०) [हिं० बहुतेरा] अनेक, बहुत से (बहुतेरा का ब० व०)।

बहुधा—(क्रि० वि०, सं०) प्रायः, बहुत करके, अक्सर, अनेक प्रकार से।

बहुनैन—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० बहुनयन] इन्द्र, सहस्राक्ष, सहसाखी।

बहुर, बहुरि*†—(क्रि० वि०, दे०, हिं०) फिर, फिरि, पीछे, उपरांत, पुनः। (पू० का०, क्रि० दे०) लौटकर। "बहुर लाल कहि बच्छ कहि"—[रामा०]। "आगे चले बहुरि रघुराई"—[रामा०]।

बहुरना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० प्रघूर्णन] लौटना, फिरना, वापिस आना। "गा जुग बीति न बहुरा कोई"—प०। [बहुराना (स० रूप०)] [बहुरवाना (प्रे० रूप०)]

बहुराचौथ—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) एक चौथ का त्योहार जब बहुरी चबाई जाती है।

बहुरिया†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वधूटी] बहू, वधू, दुलहिन, नयी बधू।

बहुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भौरन=भुनना] भूना, हुआ खड़ा अनाज, चबैना, चबण।

बहुल—(वि०, सं०) अधिक, बहुत।

बहुलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बाहुल्य, अधिकता, बहुतायत।

बहुला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बहुला] इलायची ।

बहूँटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बाहुस्थ] बाँह का एक गहना, बहुँटा । [**बहूँटी, बहुँटो** (स्त्री०, अल्पा०)] ।

बहू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वधू] पतोहू, पुत्रवधू, पत्नी, दुलहिन ।

बहूपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमें एक ही धर्म से एक ही उपमेय के अनेक उपमान कहे गये हों (अ० पी०) ।

बहेड़ा, बहेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विभीतक प्रा० बहेड़अ] एक पेड़ जिसके फल औषधि के काम में आते हैं ।

बहेतू—(वि०, दे०) [हि० बहना] मारा-मारा फिरने वाला, कुमार्गी ।

बहेरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बहराना] मिस, बहाना, हीला ।

बहेलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वध+हेला] किरात, व्याध, हिंसक, शिकारी, चिड़ीमार, पशु-पक्षियों के पकड़ने या मारने का व्यवसाय करने वाला ।

बहोर, बहोरि*†—(संज्ञा, पु०) [हि० बहुरना] वापसी, फेरा । [**बहोरि** (क्रि० वि०)]—फिर । "कह कर जोरि बहोरी" । "फिरति बहोरि बहोरि" —[रामा०] ।

बहोरना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० बहुरना] फेरना, लौटाना, वापिस करना ।

बहोरि, बहोरी†*—(अव्य०, दे०) [हि० बहोर] फिर, पुनः, पश्चात को । "आसिष दीन्ह बहोरि बहोरी"—[रामा०] ।

बह्मनेटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ब्राह्मण] ब्राह्मण का पुत्र (तिरस्कार-सूचक है) ।

बाँ—(संज्ञा, पु०, अनु०) बैल या गाय के बोलने का शब्द । (**संज्ञा, पु०,** दे०) [हि० बेर] बार, बेर, दफ़ा । "मै तोसौं कै बाँ कह्यो"—वि० ।

बाँक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वक्र] बाँह का एक भूषण, पैरों का चाँदी का एक गहना, एक प्रकार का चाकू, धनुष, हाथ की एक चौड़ी चूड़ी । (संज्ञा, पु०, दे०) वक्रता, टेढ़ाई । (वि०) [सं० बंक] टेढ़ा, तिरछा, [बाँका (दे०)] ।—**डोरी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० बाँक] एक प्रकार का हथियार ।

बाँकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बंक+ड़ी प्रत्य०] बादले और कलाबत्तू का सोनहला या रूपहला फ़ीता ।

बाँकना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० बंक] टेढ़ा करना । ‡(क्रि० अ०, दे०) टेढ़ा होना ।

बाँकपन, बाँकपना, बाँकापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाँका+पन प्रत्य०] तिरछापन या टेढ़ापन, छैलापन ।

बाँकड़ा, बाकरा, बाँकुरा—(वि०, दे०) [सं० बंक, हि० बाँका] बहादुर, शूरवीर ।

बाँकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार का गोटा ।

बाँका—(वि०, दे०) [सं० बंक] तिरछा, टेढ़ा, अच्छा, चोखा, वीर, छैला, बना-ठना, सुन्दर ।

बाँकिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बंक=टेढ़ा] नरसिंहा बाजा ।

बाँकुड़ा, बाँकुर, बाँकुरा*†—(वि०, दे०) [हि० बाँका] पैना, टेढ़ा, बाँका, बहादुर, चतुर । "पवन-तनय अति वीर बाँकुरा"—[रामा०] ।

बाँकुड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वक] फीता ।

बाँग—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) नमाज़ के समय के सूचनार्थ मुल्ला का मसजिद में अल्लाह आदि ऊँचा शब्द, अज़ान, पुकार, आवाज़, प्रातः समय मुर्गे का शब्द ।

बाँगड़—(संज्ञा, पु०, दे०) हरियाना, करनाल, रोहतक और हिसार का प्रांत, [हिसार (प्रान्ती०)] ।

बाँगड़ू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बाँगड़] बाँगड़ प्रान्त की बोली, जाटूभाषा, [हरियानी (प्रान्ती०)] ।

बाँगर—(संज्ञा, पु०) वह जमीन जो बाढ़ आने पर न डूबे, ऊँची जमीन ।

बाँगा—(संज्ञा, पु०) रुई, कपास जो ओटा न गया हो ।

बाँगुर, बागुर—(संज्ञा, पु०, दे०) पशु-पक्षी के फँसाने का फंदा, जाल । "बागुर विषम तुराय, मनहुँ भाग मृग भाग बस"—[रामा०] । "तुलसिदास यह विपति बाँगुरो तुमहिं तो बनै निबेरे"—[विन०] ।

बाँचना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० वाचन] पढ़ना, पाठ करना । (क्रि० स०, दे०) बचना, छुड़ाना, बचाना । [**बँचाना** (स० रूप०)], [**बँचवाना** (प्रे० रूप०)] ।

बाँछना, बाछना†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बाँछा] इच्छा, कामना, मनोरथ । †(क्रि० स०,

दे०) चाहना, इच्छा करना, छाँटना, चुनना, बीनना।

बाँछा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वाँछा] कामना, इच्छा, अभिलाषा।

बाँछित*—(वि०, दे०) [सं० वाँछित] इच्छित, अभिलषित।

बाँछी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाछिन्] चाहने वाला, इच्छा या अभिलाषा करने वाला, आकांक्षी।

बाँजर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बंजर] बंजर, ऊसर।

बाँझ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बंध्या] बंध्या। **—पन-पना**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वंध्या + पन, पना प्रत्य०] बंध्यात्व, बंध्या का भाव।

बाँट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बाँटना] भाग, खंड, हिस्सा, अंश, बाँटने का भाव।**—बूँट**-(स्त्री०) बटवारा, विभाजन हिस्सा। **मुहा०—पड़ना**-हिस्से में आना। "जिनके बाँट परी तरवारि" —[आल्हा०]।

बाँटना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वितरण] हिस्सा या विभाग करना या लगाना, हिस्सा देना, वितरण करना, बरताना (ग्रा०)।

बाँटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाँटना] भाग, हिस्सा।

बाँड़ा—(वि०, दे०) पूँछ-हीन पशु, अकेला, बंडा (ग्रा०)। [**बाँड़ी** (स्त्री०)]।

बाँड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छड़ी, लाठी, डंडा। (वि०, स्त्री०)—पूँछ-हीन, अकेली।

बाँदा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फा० बंदा] सेवक, दास, नौकर, बंदा। [**बाँदी** (स्त्री०)]।

बाँदर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वानर] बंदर, वानर। [**बाँदरी, बँदरियाँ** (स्त्री०)]।

बाँदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बंदाक] एक प्रकार की वनस्पति जो दूसरे पेड़ों पर उगती और बढ़ती है, बंदाल (ग्रा०)।

बाँदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० बंदा] दासी, चेरी, लौंडी।

बाँदू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बंदी] क़ैदी, बंधुवा।

बाँध—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाँधना] नदी तालादि के जल रोकने का मिट्टी, पत्थर आदि से बना धुस्स, बंद, बंध।

बाँधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० बंधन] घर आदि बनाना, पानी रोकने की बाँध बनाना, जकड़ना, कसना, कुछ जकड़ने या कसने की रस्सी, वस्त्रादि से घेर या लपेट कर गाँठ लगाना, रोकना, योजना या उपक्रम करना, व्यवस्था, विधान या क्रम ठीक करना, कोई अस्त्र-शस्त्र साथ रखना, नियत या स्थिर करना, पकड़ कर बंद या कैद करना, मन में धरना, नियम, प्रतिज्ञा, शपथ या अधिकार से मर्यादित रखना, मंत्र-तंत्र के द्वारा गति या शक्ति रोकना, प्रेम-पाश में जकड़ना।

बाँधनीपौर†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० बाँधना + पौरि] पशुओं के बाँधने की जगह।

बाँधनू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाँधना] उपक्रम, मंसूबा, विचार, मनगढ़ंत बात, ख्याली पुलाव, झूठा दोष, कलंक, रंगरेज का कपड़ा, लहरियादार रँगाई के पहले वस्त्र में गाँठें लगाना, इस प्रकार रँगी चुनरी, किसी बात को संभव जान तत्सम्बन्ध में पहले से ही विचार बनाना।

बाँधव—(संज्ञा, पु०, सं०) बंधु, भाई नातेदार, मित्र। [**बंधु-बाँधव** (यौ०)]

बांधव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) नाता, रिश्ता।

बाँबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वल्मीक] साँप का बिल, बँबीठा (ग्रा०), साँप का बिल, दीमकों का बनाया मिट्टी का भीटा।

बाँभन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ब्राह्मण] ब्राह्मण, विप्र, बाम्हन (ग्रा०)।

बाँवना*†—(क्रि० स०, दे०) रखना। (संज्ञा, पु०, दे०) बौना, वामन।

बाँस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वंश] कई पोले कांडों और गाँठों वाला तृण जाति का एक प्रकार की वनस्पति पेड़।**—पूर**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाँस + पूरना] एक बारीक वस्त्र। **मुहा०—पर चढ़ना (चढ़ाना)**-बदनाम होना (करना)। **—पर चढ़ाना**-बदनाम करना, बहुत बढ़ा देना, अति आदर देकर ढीठ या घमंडी कर देना।**—(सों) उछलना**-बहुत अधिक प्रसन्न होना। सवा तीन गज की नाप, लाठी, नाव खेने की लग्गी, रीढ़।**—बजाना**-लाठी से मारपीट करना।**—कुओं में बांस डालना**-खूब ढूँढ़ना।

बाँसला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बाँस + ली प्रत्य०] वंशी, मुरली, बाँसुरी, हिमयाना

[प्रान्ती०]। रुपये-पैसे रख कमर में कसने की जालीदार लम्बी थैली, बसनी।

बाँसा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वंश=रीढ़] नाक के दोनों नथनों के बीच की हड्डी, पीठ की हड्डी, रीढ़।

बाँसी—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) [हि० बाँस] एक नरम बाँस, एक धान या चावल।

बाँसुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वंश+स्वर] वंशी, बाँस से बना और मुँह से बजाने का एक बाजा, बाँसुरी, बाँसुरिया, बँसुरिया।

बाँह-बाँही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बाहु] हाथ, भुजा, बाहु, बँहिया (ग्रा०)। "बाँह छुड़ाये जात हौ, जानि ऑंधरो मोहि"—सूर०।—**बोल**-(यौ०) सहायता देने या रक्षा करने का वचन। बल, सहायक, रक्षक, शक्ति।—**गहना या पकड़ना**-सहारा देना, मदद करना, अपनाना, ब्याह करना।—**देना**-सहायता या सहारा देना।—**टूटना**-भाई, रक्षक या सहायक न रह जाना, दो आदमियों के मिलकर करने की एक कसरत, भरोसा, सहारा, शरण, आस्तीन, कुरते, कोट आदि का वह मोहरीदार भाग जिसमें बाँह डालते हैं।—**गहे की लाज**-रक्षा करने के प्रण को अनेक कष्ट भोगते हुये भी न छोड़ना। "एक विभीषन बाँह गहे की।"

बा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बा=जल] पानी (संज्ञा, पु०) [फ़ा० बार] मरतबा, बार, दफ़ा।

बाई, बाय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वायु] वात रोग। "नाई के बाई भई, राई दई लगाय"—कु० वि० ला०। **मुहा०—की झोंक**-आवेश, वायु का प्रकोप।—**चढ़ना**-वायु का कुपित होना, घमंड से व्यर्थ बकना, करना।—**पचना**-वायु दोष का शान्त होना, घमंड टूटना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बाबा, बाबी] स्त्रियों के लिये आदर का शब्द, यह कहीं कहीं रंडियो के नाम के पीछे बोला जाता है।

बाईस, बाइस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्वाविंशति] बीस और दो की संख्या या तत्सूचक अंक। (वि०) जो बीस और दो हो।

बाईसी, बाइसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बाइस+ई प्रत्य०] बाइस पदार्थों का समूह।

बाउ, बाऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वायु] वायु, हवा, बाव, बाय (ग्रा०)।

बाउर†—(वि०, दे०) [सं० वातुल] पागल, बावला, सीड़ी, सीधा-सादा, मूर्ख, बाउरा, बौरा, (ग्रा०) गूँगा। "तेहिं जड़ बर बाउर कस कीन्हा" —[रामा०]।

बाएँ—(क्रि० वि०, दे०) [सं० वाम] बायें या बाँई ओर, वाम बाहु की ओर।—**चाल**†-(वि०, दे०,) [सं० वाक्+हि० चलना] बक्की, वाचाल, बातूनी।

बाक, बाका*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वाक्] वाणी, गिरा।

बाकना*‡—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वाक्] बकना।

बाकल†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वल्कल] बकला, बक्कल।

बाकला—(संज्ञा, पु०, अ०) एक बड़ी मटर, एक तरकारी, बकला।

बाकस—(संज्ञा, पु०, दे०) अड़ूसा, वासा, रूसा, संदूक, पेटारी, बुरा और फीका स्वाद।

बाकी—(वि०, अ०) शेष, बचत, अवशिष्ट। (संज्ञा, स्त्री०) दो संख्याओं के घटाने पर बची संख्या, दो मानों के अन्तर निकालने की क्रिया या विधि (गणि०)। (अव्य०) परन्तु, लेकिन, मगर, किन्तु। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक धान।

बाखर, बाखरि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बखरी] आँगन, चौक, बखरी (ग्रा०) घर। "एकै बाखरि के बिरह लागे बास बिहान"—वि०।

बाग़—(संज्ञा, पु०, अ०) [बाग़ (दे०)] उपवन, वाटिका। "भूप बाग वर देखेउ जाई"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० बाग] लगाम, वल्गा (सं०)।—**डोर**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) लगाम में बँधी डोरी, लगाम।—**वान**-(संज्ञा, पु०, फा०) माली।—**वानी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) माली का कार्य। **मुहा०—मोड़ना (मरोड़ना)**-किसी ओर प्रवृत्त होना या करना, घूमना, चेचक के दानों का मुरझाना।

बागना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० बक=चलना] चलना, टहलना, घूमना, फिरना।† (क्रि० अ०, दे०) [सं० वाक्] बोलना।

बागर—(संज्ञा, पु०, दे०) नदी का वह ऊँचा किनारा जहाँ बाढ़ का भी जल कभी नहीं पहुँचता, [**बाँगर** (दे०)]। [**खादर** (विलो०)]।

बाँगल*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वक] बगला वक, बगुला, बकुला (ग्रा०) ।

बागा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फा० बाग] एक प्रकार का अँगरखा, जामा, खिलअत । "बागा बनो जरपोस को तामे"—देव० ।

बागी—(संज्ञा, पु०, अ०) राजद्रोही, विद्रोही, बलवाई । [**बागावत** (संज्ञा, पु०)] ।

बागुर—(संज्ञा, पु०, दे०) जाल, फंदा । "बागुर विषम तुराय, मनहुं भाग मृग भाग-बस"—[रामा०] ।

बागुरा—(वि०, दे०) अधिक बोलने वाला, बक्की, बकवादी ।

बागेसरी‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० वागीश्वरी] सरस्वती, एक रागिनी (संगी०) ।

बाघंबर, बघंबर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्याघ्रांबर] शेर या बाघ की खाल, एक कंबल ।

बाघ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्याघ्र] एक हिंसक जन्तु, शेर । [**बाघिनी** (स्त्री०)] [सं० व्याघ्रणी] ।

बाघी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) गरमी के रोगी के पेड़ू और जाँघ के जोड़ की गिलटी ।

बाचना‡—(क्रि० अ०, दे०) [हि० वचना] बचना । (क्रि० स०, दे०) बचना, रक्षित रखना । "बालक बोलि बहुत मैं बाचा"—[रामा०] ।

बाचा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [पु० वाचा] वाणी, वचन, वाक्य, वाक् शक्ति, प्रण ।—**बध**—(वि०, दे०, यौ०) [सं० वाचाबद्ध] प्रणबद्ध, प्रतिज्ञाबद्ध, प्रण करने वाला ।

बाछ, बाँछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चुनाव, निर्वाचन, छाँट । [**बाँछना**-(क्रि० स० दे०)] चुनना ।

बाछा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वत्स, प्रा० वच्छ] गाय का बछड़ा, लड़का, बच्छा । [**बाछी**-(स्त्री०)] ।

बाज—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० बाज] एक शिकारी पक्षी । "बाज झपट जिमि लवा लुकाने"—[रामा०] । (प्रत्यय, फा०) जो शब्दों में लग कर रखने, करने, खेलने के शौकीन का अर्थ देती है । जैसे—नशेबाज, दगाबाज । (वि०, फा०) रहित, वंचित ।—**दावा**-(संज्ञा, पु०, यौ०, फा०) अपने दावं, अधिकार या स्वत्व का त्याग देना । **मुहा०**—**आना**-पास न जाना, त्यागना, छोड़ना, दूर होना ।—**करना**-रोकना ।—**रखना**-मना करना । (वि०) [अ० बअज] विशिष्ट, कोई कोई, कुछ थोड़े से । (क्रि० वि०) वगैरह, बिना । (संज्ञा, पु०) [सं० वाजिन्] घोड़ा, बाजी । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाद्य] बाजा, बाजे का शब्द ।

बाजन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाजा] बाजा । "पुर गहगहे बाजने बाजे"—[रामा०] ।

बाजना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० बजना] बाजे का शब्द करना, [बजना (दे०)] झगड़ना, लड़ना, पुकारा जाना, प्रसिद्ध होना, लगना, चोट पहुँचना ।

बाजरा, बजरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बजरी] एक प्रकार का अन्न । **लो०**—"वज्र तपै तौ बजरा होय" ।

बाजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाद्य] वाद्य, राग-रागिनी, स्वर-ताल के लिये बजाने की मशीन या यंत्र ।—**गाजा** (**बाजे-गाजे**)-(यौ०) बजते हुए बाजों का समूह ।—(**जे**) **गाजे से**-धूम-धाम से ।

बाजाब्ता—(क्रि०, वि०, फा०) कानून या जाब्ते के साथ, नियमानुसार । (वि०) जो नियमानुकूल हो ।

बाजार—(संज्ञा, पु०, फा०) जहाँ अनेक प्रकार के पदार्थ बिकते हों, [बजार-बाजार (दे०)], हाट, पैठ, । "बाजार रुचिर न बनै बरनत वस्तु बिन गथ पाइये"—[रामा०] ।—**भाव**-(पु०) जिस भाव से वस्तुएँ बाजार में बिकती हों । [मार्केट रेट] **मूल्य**—(पु०) किसी वस्तु का बाजार मे प्रचलित मूल्य । **मुहा०**—**करना**—बाजार मे चीज लेना, ।—**गर्म होना**-रौनक अधिक होना, गाहकों और माल का अधिक होना, खूब काय चलना ।—तेज (**मंदा**) **होना**-वस्तुओं का मूल्य बढ़ (घट) जाना । काम जोरों पर होना । —**उतरना, गिरना या मंदा होना**-दाम घटना, वस्तुओं की माँग कम होना, कम काम चलना, किसी नियत समय पर दूकानें लगने का स्थान ।

बाजारी—(वि०, फा०) बाजार का बाजार-संबंधी, साधारण, अशिष्ट ।

बाजारू, बजारू—(वि०, दे०) [फा० बाजारी] बाजारी, मामूली, अशिष्ट । (संज्ञा, पु० दे०) बाजार ।

बाजि-बाजी*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाजिन्] घोड़ा, पक्षी, बाण, अड़ूसा या रूसा। (वि०) चलने वाला। "बाजि भेष जनु काम बनावा"—[रामा०] "बाजीवार बाजी पर बाजी लग जाति हौ"—मन्ना०।

बाजी—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) हार-जीत पर कुछ लेन-देन की शर्त या दाँव, दाँव या शर्त के साथ आदि से अंत तक पूरा खेल। —**गर**-(संज्ञा, पु०, फा०) जादूगर। [**बाजीगरी** (संज्ञा, स्त्री०)] [**बाजीगरनी** स्त्री०)]। **मुहा०—मारना**, (**ले लेना**)—दाँव या बाजी जीतना। —**ले जाना**-जीत जाना, बढ़ जाना, बाजी लगाना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाजिन्] घोड़ा।

बाजु—(अव्य०, दे०) [सं० वजन, मि० फ़ा० वाज] बिना, सिवा, अतिरिक्त, बगैर। (संज्ञा, पु०, दे०) बाजू, बाँह।

बाजू—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० बाजू] बाहु, भुजा, बाँह, एक गहना, बाजूबंद। सेना का एक पक्ष, सदा सहायक, चिड़िये के पख। —**बंद**-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) बाँह पर बाँधने का (भुजबंद) गहना, बिजायठ, बाजू। —**बरी**‡-(संज्ञा, पु०, दे०) बाजूबंद।

बाझ—(वि०, दे०) [हि० बाझना] रहित, पेंच। "भिन्न न मेरे चाहिये, बाझ पियारे तुझ"—कबीर।

बाझन*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बझना] फसने का भाव, फंसावट, उलझन, झंझट, बखेड़ा पेंच।

बाझना—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० बझना] फँसना, उलझना, झगड़ना।

बाट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाट] राह, रास्ता, माग। "श्रवन, नासिक, मुख की बाटा"—[रामा०]। **मुहा०—करना**-माग बनाना। —**जोहना या देखना**-इन्तजारी करना, प्रतीक्षा करना। —**काटना**-राह तै करना। —**पड़ना**-पीछे पड़ना, तग करना, डाका पड़ना, घाटा (बट्टा) होना। "बाट परै मोरी नाव उड़ाई"। —**पारना**-डाका मारना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वटक] तौलने का भार, बटखरा, माप, बट्टा, कमी, सिल पर पीसने का पत्थर।

बाटना—(क्रि०, स०, दे०) [हि० बाट] सिल पर लोढ़े से पीसना, पिसान करना। (क्रि० स०, दे०) बटना, उबटना। बाँटना।

बाटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) फुलवारी, छोटा बगीचा। सुमन बाटिका बाग वन, विपुल विहग निवास"—(रामा०)।

बाटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वटी] पिंड, गोली, वाटिका, उपलों या अंगारों पर सेंकी एक प्रकार की रोटी, अंगाकड़ी, [अंकुरी (दे०)] लिट्टी (प्रान्ती०)। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्त्तुल मि० हि० बटुआ] कम गहरा और चौड़ा कटोरा, बटी।

बाड़व—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़वानल, समुद्र के भीतर आग, बड़वाग्नि। (वि०) बड़वा-सम्बन्धी। —**ज्वाला**-(स्त्री०) समुद्र के भीतर की अग्नि की ज्वाला, लपट। "बाड़वज्वाला सोती थी"—प्रसाद।

बाड़वानल—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [बड़वानल (सं०)] बड़वाग्नि, बड़वागी।

बाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बाट] अहाता, पशुशाला, सब ओर से घिरा बड़ा मैदान, तोता [प्रान्ती]।

बाड़ी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वारी] वाटिका, मुहल्ला।

बाढ़-बाढ़ि—(संज्ञा, स्त्री०,) [हि० बढ़ना] वृद्धि, बढ़ाव, बढ़ती, ज्यादती, अधिकता, अति वर्षादि से नदी में पानी की अधिकता, सैलाव, जल-प्लावन व्यापार का लाभ, तोपों, बंदूकों का लगातार छूटना। **मुहा०—दगना**-तोपादि का लगातार छूटना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वाट हि० वारी] तलवार आदि हथियारों की धार, सान, उत्साह, उत्तेजना। —(**पर**) **रखना**-उत्तेजित या उत्साहित करना, धार तेज करना।

बाढ़ना—*†—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० बढ़ना] बढ़ना।

बाण—(संज्ञा, पु०, सं०) सायक, शर, तीर, शर का अग्र भाग, गाय का थन, निशाना, लक्ष्य, अग्नि, पाँच की संख्या, बाणासुर एक दैत्य, कादंबरीकार एक कवि, (संस्कृत सा०) "बाण न बात तुम्हैं कहि आवति"—[रामा०]। —**गंगा**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक नदी। —**भट्ट**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) संस्कृत के गद्य कादम्बरी के निर्माण-कर्त्ता। —**विद्या**-(स्त्री०) तीरंदाजी।

बाणलिंग—(संज्ञा, पु०, सं०) नर्मदा नदी से प्राप्त शिव-लिंग।

बाणासुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा बलि के सौ पुत्रों में से सर्व ज्येष्ठ, जिसके हजार हाथ थे। "रावण बाणासुर दोऊ, अति विक्रम विख्यात"—[राम०]।

बाणिज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सौदागरी, व्यापार, रोजगार, [वणिज, बनिज (दे०)]।

बाणी·बानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वाणी] सरस्वती, भाषा, गिरा, जिह्वा, बोली, वाक्। "बानी जगरानी की उदारता बखानी जाय"—[रामच०]।

बात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वार्त्ता] वाणी, वचन, सार्थक शब्द या वाक्य, कथन। "तात सों बात कहौ समुझाय कै" ।—**चीत**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० बात + चिंतन] वार्त्तालाप, परस्पर कथोपकथन। **मुहा०—(तो) में आना (पड़ना)**-बहकाने या भुलावे में पड़ना। (**पुरानी**)—**उखाड़ना**-(पुरानी) चर्चा छेड़ना, भूली बातों की स्मृति दिलाना, प्रसंग उठाना, बुरी बातें छेड़ना। —**उठाना (सहना)**-कड़ी बातें सहना, बात मानना।—**कहते**-बात की बात में।—**काटना**-किसी की बातों के बीच में बोलना, बातों का खंडन करना।—**(तें) गढ़ना**—प्रसन्नकारी, चिकनी-चुपड़ी अच्छी बात करना, झूठी बातें करना।—**की बात में**-तुरंत, झटपट।—**पर जमना**-अपने कथन से न बदलना।—**ही बात में**-बातचीत करने में। "बातहि बात कर्ष बढ़ि गयऊ"—[रामा०]—**रहना**-जो कहा है उसका सही होना, वही होना। —**पर आना (अड़ना)**-आग्रह या हठ करना। —(**खाली**) **जाना**-प्रार्थना या बिनती का मंजूर न होना, निष्फल जाना।—**से टलना**-अपने कथन से हट जाना।—**टालना**-कहना व्यर्थ होना। —**टलना**-सुनी अनसुनी करना, किसी बात को छोड़ दूसरी छेड़ना।—**न पूछना**-तनिक भी आदर या परवाह न करना। **किसी की—पकड़ना**-सारे प्रसंग को छोड़ किसी एक ही बात को ले लेना। —**पर जाना**-बात पर ध्यान देना, कहने का भरोसा करना।—**तक न पूछना**-कुछ भी ध्यान न देना, रंच भी आदर न करना।—**पूछना**-खोज-खबर लेना, आदर करना।—**बढ़ना**-विवाद या झगड़ा हो जाना, किसी विवाद, प्रसंग या घटना का विकट रूप होना।—**बढ़ाना**-विवाद या झगड़ा करना। —**बनाना**-बहाना करना, झूठ बोलना, धोखे की बात करना।—(**तें**) **बनाना**-झूठमूठ बातें करना, बहाना या खुशामद करना। —(**तों**) **में उड़ाना**-बातों या हँसी में टालना, टाल-मटूल करना।—(**तों**) **में लगाना**-बातों में फँसा रखना। चर्चा, प्रसंग, वर्णन।—**उठाना**-चर्चा या प्रसंग चलाना या छेड़ना।—**चलाना या छेड़ना**-चर्चा होना, प्रसंग आना।—**लगना**-किसी कथन का संकल्प सा दृढ़ होना, बात का प्रभाव पड़ना, बात का बुरा लगना।—**निकालना**-बात चलाना।—**को (के लिये) मरना**-अपनी बात रखन का प्रयत्न करना, वचनों से अपना महत्व प्रगट करना। "मरत कह बात को"—नद०।—**पर मरना**-अपने कथन या संकल्प की चरितार्थता का पूर्ण प्रयत्न करना, तदर्थ सर्वस्व त्यागना।—**पड़ना**-चर्चा छेड़ना।—**पूछना,—की जड़ पूछना**-किसी विषय पर व्यर्थ काय कारण सम्बन्धी प्रश्न करना, व्यर्थ खोज करना। अफवाह, किम्बदंती, प्रवाद।—**उड़ना (उड़ाना)**-चर्चा फैलना (निंदा करना), किसी प्रसंग का समाप्त होना।—**कहना**-सब ओर खबर फैलाना, बुरा भला कहना। व्यवस्था, माजरा, हाल।—**का बतंगड़ करना (बढ़ाना)**-छोटे से कार्य को व्यर्थ बहुत सा बढ़ा देना।—**पर बात कहना**-उत्तर-प्रत्युत्तर देना।—**का बवंडर बनाना**-व्यर्थ बात का विस्तार देना, बातों की उलझन बढ़ाना। —**न पूछना**-दशा पर कुछ विचार न करना, ध्यान न देना, आदर न करना।—**बढ़ना (बढ़ाना)**-किसी बात का भयंकर रूप में (विस्तृत) प्रगट होना (करना), झगड़ा होना।—**बनना**-काम पूर्ण रूप से बनना या ठीक हो जाना, यथेष्ट रूप से सफलता होना, अच्छी परिस्थिति या स्थिति होना, मतलब पूरा होना।—**बनाना या सँवारना**-कार्य्य बनाना या सिद्ध करना।—**बात पर या (बात बात में)**-हर एक कार्य्य में।—**बिगड़ना**-विफलता होना, कुछ बुराई होना, कार्य्य नष्ट होना। वार्त्तालाप, गपशप, घटित होने वाली दशा, वाग्विलास, संदेसा, प्राप्त संयोग; परिस्थिति।—(**तों**) **बातों में**-साधारण बात में, बातें करते समय। "बातों बातों में बिगड़ जाता था वह"। —**ठहरना (पक्की होना)**-विवाह या सम्बन्ध स्थिर होना, कुछ तय करने को उसकी चर्चा होना। —(**तों**) **में आना या जाना**-कथन से धोखा खाना, व्यवहार से ठग जाना। धोखा या भुलावा देने या फँसाने को कहे हुए शब्द या किये हुये व्यवहार, बहाना, प्रतिज्ञा, मिस, झूठ, या बनावटी

कथन, प्रतिज्ञा, वादा, बहाना, वचन, हठ।—**का धनी या पक्का या पूरा**–दृढ़ प्रतिज्ञ, प्रणपालक। [**पक्की-कच्ची (बात) बात** (विलो०)] ठीक निश्चित या सत्य बात।—**पक्की करना**–सम्बन्ध व्यवहारादि स्थिर करना, दृढ़ निश्चय करना, तय करना, प्रतिज्ञा (संकल्प) पुष्ट करना। **(अपनी)—रखना**–वचन या प्रतिज्ञा पूर्ण करना।—**अपनी ही—रखना**–अपना ही हठ रखना।—**हारना**–वचन देना, मामला, हाल, प्रतीति, विश्वास, साख।—**खाना**–प्रतीति या सन्मान गवाना।—**न रहना**–साख या विश्वास न रहना। (**किसी की**)—**जाना**–प्रतिष्ठा या विश्वास जाना।—**खोना**–साख बिगाड़ना, वचन का निष्फल कराना।—**बनना**–काय्य सिद्ध होना, विश्वास रहना, प्रतिष्ठा पाना। चिंता, परवाह, इज्जत।—**कोई—नहीं**–कुछ चिंता या परवाह नहीं।—**जाना**–इज्जत जाना।—**बनाना (सँवारना)**–कार्य सिद्ध करना।—**बनना**–अभीष्ट प्राप्त होना काम बनना, इज्जत मिलना, बोला बाला होना, अच्छी दशा होना, आदेश, गुण, योग्यतादि का कथन, उपदेश। रहस्य, प्रशसा की बात, उक्ति, तात्पय, गूढ़ार्थ, चमत्कृत या वैचित्र्य पूर्ण वचन।—**पाना**–गूढार्थ जान जाना। प्रश्न, समस्या, इच्छा, ढंग, विशेषता, अभिप्राय, कथन का सार, मर्म, कर्म, व्यवहार, आचरण, लगाव, कार्य, सम्बन्ध, गुण, चिंता, परवाह, प्रवृत्ति, पदार्थ, लक्षण, स्वभाव, मामला, घटना, विषय, उपाय, कर्तव्य, मूल्य। (संज्ञा, पु०, दे०) बात।—**क्या बात है (अच्छी बात है।) लम्बी चौड़ी बातें**–झूठी शान या गर्व की बातें।—**बड़ी बात**–(क्रि० वि०, हि०) कठिन कार्य, सराहनीय, महान् या आदर्श काम, प्रशंसा, महिमा, महत्ता। **छोटी—**, तुच्छ या नीच कार्य, निंदित या अनुचित कथन, अपमानजनक आचार-व्यवहार।—**साधारण**–सरल या मामूली काम।—**कोई नहीं**–कोई चिंता या परवाह नहीं, कोई कठिन काम नहीं।—**पड़ने पर**–प्रसंग या अवसर आने पर।—**बहुत बड़ी—कहना**–लज्जा या अपमान-जनक वाक्य कहना, गूढ़ या गंभीर भावपूर्ण विचारणीय वाक्य कहना।—**पते (मार्के) की**–गूढ़ (रहस्य) या मर्म-वाक्य, उपयुक्त या ठीक कथन, विचारणीय या स्मरणीय वचन।—**हलकी या थोड़ी बात**–छोटी बात, साधारण या स्वल्प कार्य, [**भारी बात** (विलो०)]। **फबती**–व्यंग्य या तानें का कथन, खटकने वाला वचन।—**बातें कहना**–क्रोध से बकना, बुरा-भला कहना (संज्ञा, पु०, दे०) वायु, देह के तीन गुणों (वायु, पित्त, कफ मे से एक) [**बात रोग** (यौ०)]–वायु-रोग। **जहरबात,**—वायु-विकार जन्य एक रोग (वैद्य०)। **लो०**—"बात हाथी पाइये, बातै हाथी पाँव"—**बनी होना**–साख, प्रतिष्ठा या मर्यादा का स्थिर रहना, अच्छी दशा होना।—**बाती**–(सज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बत्ती। बत्ती, दिया की बर्त्ती, वर्त्ती (सं०)। "दीप बाति नहिं टारन कहहूँ"—[रामा०]।—**मिलाई** (यौ०)–ब्याह में दीपक की दो बत्तियों को मिलाने की रस्म।—**देना (बत्ती लगाना)**–विस्फोटक पदार्थों मे बत्ती से अग्नि-सचार करना। "भरी भराई सुरँग माँहि दीन्ही जनु बाती"—रत्ना०।

बातुल—(वि०, दे०) [सं० वातुल] सनकी, सिड़ी, पागल।

बातूनियाँ, बातूनी—(वि०, दे०) [हि० बात + ऊनी प्रत्य०] बकवादी, बक्की, गप्पी, वाचाल, वाचाट।

बाथ†—(संज्ञा, पु०, दे०) गोद, अंक, गोदी।

बाद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाद] तर्क, विवाद, बहस, झगड़ा, शर्त, बाजी, पृथक्, बिलग। **मुहा०—मेलन**–बाजी लगाना। (अव्य, अ०) पश्चात्, पीछे, अनंतर। (अव्य० दे०) [सं० बाद] निष्प्र-योजन, व्यर्थ, वृथा। (वि०) अलग किया गया, छोड़ा हुआ, दस्तूरी, कमीशन, सिवाय, अतिरिक्त। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) वायु, वात, हवा पवन।—**सब**–(यौ०) प्रभात-वायु।

बादना—(क्रि० स०, दे०) [सं० बाद + ना प्रत्य०] बदना, तर्क-वितर्क या बकवाद करना, तकरार करना, शर्त लगाना, अलग करना, ललकारना, इज्जत करना।

बादबान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पाल।

बादर, बदरा†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वारिद] बद्दल (ग्रा०) बादल, मेघ। [**बादरी, बदरी** (स्त्री०)]। (वि०, दे०) प्रसन्न हर्षित, आनन्दित। "कादर करत माँहि बादर नये नये"।

बादरायण—(संज्ञा, पु०, सं०) वेदव्यास।

बादरिया‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बदली] बदली, बदरी, बादरिया (ग्रा०)।

बादल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वारिद] मेघ, बादर—आकाश में शीत से घनी होकर छा जाने

तथा गर्मी से बूँदों के रूप में गिरने वाली पृथ्वी के सागरों की भाफ का। मुहा०—उठना या चढ़ना—बादलों का किसी ओर से घिर आना।—गरजना—बादलों का टकरा के शब्द करना।—घिरना—मेघों का चारों ओर से भली भाँति छा जाना।—छटना—आकाश साफ हो जाना।

बादला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० पतला] सोने चाँदी का चिपटा तार, कामदानी का तार, एक रेशमी कपड़ा। "आँखें मल करके जो देखूँ तो है इक बादला पोश"—सौदा।

बादशाह—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० बादशाह] बड़ा राजा, स्वतन्त्र शासक, मनमानी करने वाला, शतरंज का एक मुहरा, ताश का एक पत्ता।

बादशाहत—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) राज्य, शासन, हुकूमत।

बादशाही—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) राज्य, हुकूमत, शासन, स्वतन्त्रता, मनमाना व्यवहाराचार। (वि०) बादशाह सम्बन्धी। **बादहवाई**—(क्रि० वि०, यौ०) [फ़ा० बाद+हवा अ०] फजूल, व्यर्थ, निरर्थक, यों ही।

बादाम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बड़े कड़े छिलके और मींगीवाला एक मेवा, उसका वृक्ष। [बदाम (दे०)]। "सोहत नर, नग त्रिविधि ज्यों, बेर, बदाम, अंगूर"—"मोरचा मखमल में देखा आदमी बादाम मे"।

बादामी—(वि०) [फ़ा० बादाम+ई प्रत्य०] बादाम के छिलके के रंग या आकार का, कुछ लालिमा लिये पीतवर्ण का। (संज्ञा, पु०) एक तरह की छोटी डिब्बी, एक पक्षी, किल-किला, बादाम के रंग का घोड़ा।

बादि—(अव्य० दे०) [सं० वादि] फजूल, नाहक, व्यर्थ। "नतरु बाँझ भलि बादि बियानी"—[रामा०]।

बादिनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वादिनी] बोलने वाली, झगड़ालू।

बादी—(वि०, फ़ा०) वायु-सम्बन्धी, बात विकार सम्बन्धी, वायु रोग का पैदा करने वाला। (संज्ञा, स्त्री०) बात-रोग, वायु-विकार।

बादुर—(संज्ञा, पु०, दे०) चमगीदड़। "ते बिधना बादुर रचे, रहे अधरमुख झूलि"—कबीर०।

बाध—(संज्ञा, पु०, सं०) अड़चन, रुकावट, बाधा, पीड़ा, मुश्किल, कठिनाई, अर्थ की संगति न होना, व्याघात, वह पक्ष जो साध्य-रहित सा बात हो (न्याय०)।† (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बद्ध] मूँज की रस्सी। "बाध बाधकताभियात"—[भ० गी०]।

बाधक—(संज्ञा, पु०, सं०) विघ्न-कारक, विघ्न डालने या बाधा पैदा करने वाला, दुखःदायी।

बाधकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विघ्न, बाधा, रुकावट, अड़चन।

बाधन—(संज्ञा, पु०, सं०) विघ्न, बाधा या रुकावट डालना, दुःख या कष्ट देना। [**बाधित, बाध्य, बाधनीय** (वि०)]।

बाधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० बाधन] रोकना, विघ्न या बाधा डालना, दुख देना। "तिन को कबहूँ नहिं बाधक बाधत"—[स्फु०]।

बाधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रुकावट, विघ्न, रोक, अड़चन, दुःख या कष्ट, संकट। "जिमि हरि-सरन न एकउ बाधा"—[रामा०]।

बाधित—(वि०, सं०) विघ्न या बाधा-युक्त, रोका हुआ, जिसके साधन में विघ्न या रुकावट पड़ी हो, असंगत, तर्क-विरुद्ध, ग्रसित, गृहीत।

बाध्य—(वि०, सं०) रोकने या दबाने के योग्य, जो रोका या दबाया जाने वाला हो, विवश होने वाला, बाधनीय।

बान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बाण] तीर, शर, बाण, एक तरह की अग्नि-क्रीड़ा या आतश-बाजी, ऊँची लहर। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० बनना] वेश-विन्यास, बनावट, शृंगार, सज-धज, स्वभाव, टेंव (ग्रा०)। "करधरि चक्र चरन की धावनि नहिं बिसरति वह बान"—सूर०। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर्ण] कांति, आभा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बाण) बाद, हथियार। (संज्ञा, पु०, दे०) गोला।

बानइत†—(वि०, दे०) [हि० बान+इत प्रत्य०] बान चलाने वाला, तीरंदाज़, योद्धा, सिपाही, बहादुर, बानैत।

बानक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बनाना] भेष, सजधज, वेश, बननि। "यहि बानक मो मन बसहु, सदा बिहारी लाल"।

बानगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बयाना] नमूना। "है नमूना, बानगी, अटकल क़यास"—[खा० बा०]।

बानर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वानर] बंदर। [**बानरी, बानरी** (वि०, स्त्री०)]। "सपने बानर लंका जारी"—[रामा०]।

बानरेन्द्र—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० बानरेन्द्र] सुग्रीव, बानरेश । " बानरेन्द्र तब कह कर जोरी "—[स्फु०] ।

बाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बनाना] पोशाक, पहनावा, भेष, रूप, चाल, स्वभाव । रीति । बाण । " बाना बड़ा दयाल को, छाप तिलक औ माला ।" " देखि कुठार सरासन बाना "—[रामा०] । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बाण] भाला या तलवार जैसा सीधा एक दुधारा हथियार । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वयन—बुनना] बुनना, बुनाई, बुनावट, कपड़े में ताने के आड़े तागे, भरनी (ग्रा०), पतंग उड़ाने की डोरी । (क्रि० स०, दे०) [सं० व्यापन] फैलने और किसी सिकुड़ने वाले छेद को फैलाना ।

बानावरी†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बान+आवरी फ़ा० प्रत्य०] तीरंदाजी, बाण चलाने की विद्या, कमनैती ।

बानि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बनना या बनाना] सजधज, बनावट स्वभाव, टेव । " बिसराई वह बानि "—वि० । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्ण] आभा, कांति । *(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वाणी] बोली, वाणी, बात, गिरा, वचन, सरस्वती । [**बोली-बानी** (यौ०)]

बानिक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्णक या हिं० बनना] बनाव, सिंगार, वेश, सजधज, भेष, बानक । " बानिक वेश अवध बनरे को "—रघु० । " देखे बानिक आजु को वारौं कोटि अनंग "—ललित० ।

बानिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बनियाँ] बनियाँ की स्त्री, बनीनी (ग्रा०) ।

बानियाँ, बनिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वणिक्] व्यापारी, दूकानदार, मोदी । " बैरी, बँधुआ, बानियाँ, ज्वारी, चोर, लबार"—गिर० ।

बानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वाणी] गिरा, वाणी, वचन, सरस्वती, प्रतिज्ञा, साधु-शिक्षा, जैसे—कबीर की बानी, मनौती, एक अस्त्र, बान, गोला । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वणिक] बनियाँ । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वर्ण] चमक, कांति । (संज्ञा, पु०, अ०) प्रवर्त्तक, जड़ जमाने वाला, चलाने वाला । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) वाणिज्य । " बानी जगरानी की उदारता बाखानी जाय " —[रामा०] । " राम मनुज बोलत अस बानी " —[रामा०] ।

बानूबा—(संज्ञा, पु०, दे०) जल-पक्षी ।

बानूसा, बानूसी—(संज्ञा, पु०, दे०) एक वस्त्र-विशेष ।

बानैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बाना+ऐत प्रत्य०] बाना फेरने या बाण चलाने वाला, सैनिक, तीरंदाज । (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बाना] बाना धारण करने वाला ।

बाप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वप्ता—बीज बोने वाला] पिता, जनक, [बापा, बप्पा, बापू (दे०)] । **मुहा०—दादा**-पूर्व पुरुष ।—**माँ**—, (—, **माँ**)-रक्षक, पालक, पोषक, [माई-बाप, (दे०)] ।—**रे बाप**-(अ०) भय, शोक को सूचित करने वाला अन्तःकरण का उद्गार ।—**की चीज़ समझना**-अपनी चीज समझना ।—**दादा का नाम डुबाना**-कुल की मर्यादा, प्रतिष्ठा को समाप्त करना ।—**दादा से**-पीढ़ियों से ।—**बनाना**-अत्यधिक आदर करना, चापलूसी करना ।

बापिका, बापी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वापिका] बावली ।

बापुरा, बापुरो—(वि०, दे०) [सं० बर्बर—तुच्छ] अकिंचन, नगण्य, तुच्छ । बेचारा, दीन । [**बापुरी** (स्त्री०)] " का बापुरो पिनाक पुराना "—[रामा०] ।

बापू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बाप] बाप, पिता, बाबू । [बप्पू, बापू, बापा (दे०)] ।

बाप्पा—(संज्ञा, पु०) मेवाड़ के राजवंश के आदि पुरुष ।

बाफ†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भाप] भाप, [**बाष्प** (सं०)] ।

बाँफता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बूटीदार एक रेशमी वस्त्र । " खादी, धातर, बाफ़ता, लोहा-तवा समसेर "—[नीति०] ।

बाब—(संज्ञा, पु०, अ०) अध्याय, परिच्छेद ।

बाबत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) विषय में, मध्ये, संबंध में ।

बाबर—(संज्ञा, पु०, तु०) बबर, बड़ा शेर, अकबर बादशाह का दादा जिसने मुगलराजवंश की स्थापना १५२६ में इब्राहिम लोदी को पराजित करके की । बब्बर (ग्रा०) ।

बाबरी—(वि०) बाबर-सम्बन्धी, बाबर की ।

बाबा—(संज्ञा, पु०, हिं०) पिता का पिता, पितामह, दादा, बबा (ब्र०) पिता, श्रेष्ठ मानुष्य, बूढ़ा,

साधुओं के लिये आदर-सूचक शब्द, सम्बोधन का साधारण शब्द, जैसे—अरे बाबा। (संज्ञा, पु०, दे०) [अं० बेबी] बच्चा, लड़का। "चेरी है न काहू हम ब्रह्म के बबा की ऊधौ"—[ऊ० श०]।

बाबी*‡—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बाबा] संन्यासिनी, साधु की स्त्री, छोटी बच्ची, दादी।

बाबुल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बाबू] बाबू।

बाबू—(संज्ञा, पु०, दे०) राजवंशीय या रईस क्षत्रियों का प्रतिष्ठा-सूचक शब्द। [**राजा-बाबू** (यौ०)] आदर सूचक शब्द, भला मानुष, पिता का संबोधन शब्द, दफ्तर का क्लर्क (मुन्शी) या हाकिम। [बबुआ (दे०)]।—**जी**-(पु०) पिता या अन्य आदरणीय लोगों के प्रति सम्बोधन।—**साहब**-(पु०) आदरणीय लोगों के प्रति प्रयुक्त शब्द। [**बबुआइन** (स्त्री०)]

बाबूना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक छोटा पौधा जिसके फूलों से तेल बनता है।

बाभन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ब्राह्मण] ब्राह्मण, भूमिहार। [बाँभन, बाम्हन (दे०)]।

बाम—(वि०, दे०) [सं० वाम] दाहिने के विरुद्ध, विरुद्ध, प्रतिकूल। [**बामता** (संज्ञा, स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, फा०) कोठा, अटारी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० वामा] स्त्री। "भयो बाम बिधि, फिरेउ सुभाऊ"—[रामा०]। "स्यामा बामा सुतरु पर देखी"। "बाम ह्वै ह्वै बामता करै है, तौ अनोखी कहा, नाम निज बाम चरितारथ दिखावे है"—रसाल।

बायँ, बावँ—(वि०, दे०) [सं० वाम] बायाँ, बाम, चूका हुआ लक्ष्य या दाँव पर न बैठा हुआ। **मुहा०—देना**-छोड़ देना, बचा जाना, कुछ ध्यान न देना। तरह देना, फेरा लगाना, चक्कर देना।

बाय*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वायु] वायु, बाई, बात रोग। "नाग, जलौका, बाय"—[वैद्यक०]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वापी] बावली, वापिका, बेहर (प्रान्ती०)।

बायक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाचक] दूत, धावन, कहने, पढ़ने या बांचने वाला, बताने वाला।

बायन, बायना*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वायन] उत्सवादि पर बंधुओं या मित्रों के यहाँ भेजी गई मिठाई आदि, भेंट, उपहार, बइना, बैना (ग्रा०)। (संज्ञा, पु०, दे०) [अ० बयाना] अगाऊ, बयाना। "आजु भले घर बायन दीन्हा"—[रामा०]। **मुहा०—देना**-छेड़छाड़ करना।

बायब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वायव्य] वायव्य कोण। (क्रि० वि०, दे०) अलग, दूर, अन्य, दूसरा। [**बयबियाना** (क्रि० स०, दे०)]

बायबिड़ंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विडंग] एक पेड़ जिसके काली मिर्च से कुछ छोटे फल औषधि के काम आते हैं। "धूम बायबिडंग को करि वायु-शूल मिटाइये"—[वै० भूष०]।

बायबी—(वि०, दे०) [सं० वायवीय] बाहरी, अपरिचित, अजनबी, नवागंतुक। (वि०, दे०) वायव्यीय, वायव्य कोण का।

बायव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वायु-कोण, पश्चिम और उत्तर के मध्य का कोण। (वि०, सं०) वायु-सम्बन्धी।

बायाँ, बाँवाँ—(वि०, दे०) [सं० वाम] दाहिने का विरोधी, वाम, किसी प्राणी का देह का वह पार्श्व जो पूर्वाभिमुख होने पर उत्तर की ओर हो। [**बाईं** (स्त्री०)]। **मुहा०—देना**-बचा कर निकल जाना, जान-बूझ कर छोड़ देना। उलटा, विरुद्ध, प्रतिकूल। [**दाहिना, बायाँ** (यौ०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वामीय] बायें हाथ से बजने वाला तबला।—**यें**-हाथ का काम, खेल, बहुत साधारण काम।

बायें—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० बायाँ] बाम ओर, विपरीत, विरुद्ध, प्रतिकूल। [**दाहिने-बायें** (यौ०)] "जे बिन काज दाहिने-बायें"—[रामा०]। **मुहा०—(यें) (वाम) होना**-प्रतिकूल या विरुद्ध होना, अप्रसन्न होना।

बाया—(क्रि० स०, दे०) फैलाया, पसारा।

बारंबार—(क्रि० वि०, दे०) [सं० वारंवार] पुनः पुनः, बार-बार, लगातार, निरन्तर। "बरंबार सुता उर लाई"—[रामा०]।

बार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वार] ठिकाना, आश्रय, द्वार, दरवाजा, दरबार। (संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) मरतबा, दफा, विलंब, देरी। बेर, समय। "जात न लागी बार"—[रामा०]। —**गह,—गाह**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० बारगाह] ड्योढ़ी, द्वार, तंबू, डेरा, खेमा।—**दाना**-(संज्ञा,

पु० फ़ा०) व्यापार के पदार्थों के रखने के पात्र, सेना के खाने-पीने की सामग्री, रसद, राशन (अं०)।—**नारी**-(स्त्री०, दे०) [सं० वारनारी] वेश्या, रंडी, पतुरिया। "सोह न बसन बिना बरनारी"।—**बधू,—बधूटी**-(स्त्री०)[सं० वारवधू] वेश्या, रंडी, "बारवधू नाचहिं, करिं गाना"—[रामा०]। "शास्यन्ति ते किम् मम हा प्रयासानंधा यथा वार वधू-विलासान्"—[वै० जी०]।—**बरदार**-(पु०, फा०) बोझा ढोने वाला।—**बरदारी**-(स्त्री०, फ़ा०) सामान ढोने का काम या मजदूरी। —**मुखी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वार मुख्या] रंडी, पतुरिया, वेश्या। "बार मुखी कल मंगल गावहिं"—[रामा०]। **मुहा०—बार**-फिर फिर। —**लगाना**-विलंब करना, देरी लगाना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बाट] किनारा, छोर, किसी स्थान के चारों ओर का घेरा, धार, बाढ़।† (संज्ञा, पु०, दे०) बाल। (पु०, दे०) [सं० वाल] लड़का, स्त्री। [**बालबच्चा** (यौ०)] । (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० मि० सं० भार] बोझ, भार। (वि०, दे०) बाला, बाल।

बारजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बार=द्वार] द्वार पर कोठा, अटारी, द्वार के ऊपर बढ़ाया हुआ पाट कर बना बरामदा, कमरे के आगे छोटा दालान।

बारतिय, बारतिया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वारस्त्री] वेश्या, रंडी, पतुरिया, वारवधू।

बारन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वारण] मनाही, रोक, निषेध, बाधा, कवच, हाथी। "बारन बाजि दसरत्थै"—[रामा०]।

बारना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वारण] रोकना, निषेध या मना करना, निवारण करना। (क्रि० स०, दे०) [हि० बरना] जलाना, बालना। (क्रि० स०, दे०) [सं० वारन] निछावर करना। "वारौं भीम भुजन पै करण करण पर"—भूष०।

बारह—(वि०, दे०) [सं० द्वादश] बारा (ग्रा०), दो अधिक दश, द्वादश, आभूषण।—**खड़ी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० द्वादशाक्षरी] व्यंजनों में से प्रत्येक के वे बारह रूप जो स्वरों की मात्राओं के योग से बनते हैं।—**दरी**-(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बारह+दरी फ़ा०] वह खुला हुआ कमरा जिसमें तीन तीन द्वार चारों ओर हों।—**बान**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्वादशवर्ण] बहुत ही बढ़िया एक तरह का सोना—**बाना**-(वि०, दे०) [सं० द्वादशवर्ण] सूर्य्य के समान चमकने वाला, बहुत ही बढ़िया सोन, खरा, चोखा, सच्चा, निर्दोष, पक्का, पूर्ण।—**बानी**-(वि०, दे०) [सं० द्वादशवर्ण] सूर्य्य सा चमकने वाला, चोखा, खरा, सच्चा सोना, निर्दोष, पक्का। (संज्ञा, स्त्री०) सूर्य्य की सी दमक।—**मासा**-(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०, हि०) वह विरह-गीत या पद्य जिसमें प्रत्येक महीने की प्राकृतिक दशा का वर्णन वियोगी द्वारा हो। —**मासी**-(वि०, हि०) बारहों महीने होने वाला, सदा-बहार, सदा फल, सब ऋतुओं में फलने-फूलने वाला।—**सिंघा,—सिंगा**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० बारह+सींग] एक प्रकार का हिरण, जिसके कई सींग होते हैं। [**बारहवाँ** (यौ०)]। **मुहा०—बाट करना या घालना**-नष्ट-भ्रष्ट या छिन्न-भिन्न या इधर-उधर कर देना, तितर बितर करना।—**बाट जाना या होना**-तितर-बितर होना, फुट फैल होना, नष्ट-भ्रष्ट होना। (संज्ञा, पु०) बारह की संख्या या अंक (१२)।

बारहवाँ, बारहाँ—(वि०, हि०) ग्यारहवाँ के बाद वाला।

बारहा—(क्रि० वि०, फ़ा०) कई बार, कई मरतबा, बारम्बार, बहुधा, बहुतेरा। "बारहा दिल से कहा पर एक भी माना नहीं"—[स्फु०]।

बारहीं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बारह] जन्म से बारहवें दिन का पुत्र-जन्मोत्सव, बरही, बरहीं (ग्रा०)।

बारा—(वि०, दे०) [सं० बाल] बालक, छोटा बच्चा। (संज्ञा, पु०, दे०) लड़का, बालक। (संज्ञा, पु०, दे०) बारह। (क्रि० वि०, दे०) बेर, विलंब। "अति सुकुमार तनय मम बारे"—[रामा०]। "सो मैं करत न लाउब बारा"—[रामा०]।

बारात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वरयात्रा] वर या दूल्हे के साथ उसके बंधु-बाँधवों या मित्रों का जुलूस, वर-यात्रा, [**बरात** (दे०)]। [**बाराती, बराती** (वि०)]।

बारान, बाराँ—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मेह, बादल, बरसात।

बारानी—(वि०, फ़ा०) बरसाती। (संज्ञा, स्त्री०) वह पृथ्वी जहाँ बरसात के पानी से ही खेती हो, बरसात में पानी से बचाने वाला कपड़ा।

बाराह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वराह] शूकर।

बाराहीवेर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वराह +बदर] औषधि-विशेष, नेत्रवाला ।

बारि—(संज्ञा, पु०, दे०) पानी, वारि (सं०) ।

बारिगर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बारी+गर] सिकलीगर, हथियारों में धार रखने वाला ।

बारिधर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वारिधर] मेघ, वारिद, वारिध, बादल, एक वर्ण वृत्त (पिं०) ।

बारिश—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) बरसात, वर्षा ऋतु, वर्षा, वृष्टि ।

बारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अवार] तट, किनारा, हाशिया, खेत, बाग आदि के चारों ओर की मेंड़, घेरा, बाढ़, बरतन के मुँह का घेरा, ओंठ, धार । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वाटी] क्यारी, बाटिका, फुलवारी, घर, मकान, झरोखा, खिड़की, बंदरगाह । (संज्ञा, पु०) एक जाति जो दोना-पत्तल बनाती है । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० बार] बेर, पारी (ग्रा०) । क्रमानुगत, अवसर, मौक़ा । **मुहा०—बारी से**-काल या स्थान के क्रम से, एक के बाद एक ।**—बाँधना (लगाना)**-क्रमानुसार आगे पीछे प्रत्येक का पृथक् पृथक् समय नियत कर देना । (वि०, दे०) कम उम्र की । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० बार=छोटा] कन्या, लड़की, बच्ची, नवयौवना । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) कान की बाली ।

बारीक—(वि०, फा०) महीन, पतला, सूक्ष्म, जो कठिनता से सोचा समझा जावे, जिसके बनावट में कला पटुता तथा दृष्टि सूक्ष्मता प्रगट हो । [**बारीकी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

बारीकी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) महीनता, सूक्ष्मता, दुर्बलता, खूबी, गुण, विशेषता ।

बारुनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वारुणी] मदिरा । [दारू (दे०)]

बारू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बालुका] बालू ।

बारूद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [तु० बारूत] तोप या बंदूक छुड़ाने का मसाला या बुकनी, एक तरह का धान, दारू (प्रान्ती०) । **मुहा०—गोला,—लड़ाई** का सामान ।

बारे—(क्रि० वि०, फ़ा०) निदान, अंत या आखिर को । (संज्ञा, पु०) बालक, लड़के, बच्चे । "मैया कहहु कुशल दोउ बारे"—[रामा०] ।

—में-(अव्य०, दे०) [फ़ा० बारा+में हि०] विषय या सम्बन्ध में, प्रसंग में ।

बारोठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्वार] बरोठा, ब्याह में वर के द्वार पर आने के समय की एक रस्म ।

बाल—(संज्ञा, पु०, सं०) बालक, लड़का, बच्चा, मूर्ख, न समझ । (वि०) जो छोटा हो, पूरा न बढ़ा हो, थोड़ी देर का हुआ या प्रगटा । "बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा"—[रामा०] । (संज्ञा, पु०, सं०) लोम, केश । [**बाला** (स्त्री०)] । **—कांड**-(पु०) रामचरितमानस का पहला कांड जिसमें श्री राम के बाललीला का वर्णन है ।**—काल**-(पु०) बाल्यावस्था, बचपन ।**—कृष्ण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बालक कृष्ण, लड़कपन के कृष्ण, बाल-गोपाल ।**—खिल्य**-(संज्ञा, पु०, सं०) अँगूठे के बराबर के ऋषियों का समूह (पुरा०) ।**—खोरा**-(संज्ञा, पु०, दे०) सिर के बाल झड़ने का रोग, गंजरोग ।**—गोविंद**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बाल-कृष्ण ।**—ग्रह**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बालकों के मारक नौ ग्रह (वै० ज्यो०) । **—चन्द्र**-(पु०) दुइज का चन्द्रमा ।**—चर**-(पु०) बालकों मे अनुशासन, चरित्र, आत्मनिर्भता का भाव लाने वाले संघ का सदस्य, [ब्वाय स्काउट] ।**—तंत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कौमार-भृत्य, दायागिरी, संतान-पालन विधि । **—तोड़, बलतोड़**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० बाल+तोड़ना] बाल टूटने से हुआ फोड़ा, बरतोर (ग्रा०) ।**—धि,—धी**-(संज्ञा, पु०, सं०) पूँछ, दुम । "बालधि घुमावै झहरावै आग चारों ओर"—कवि० ।**—पन, बालापन**-(संज्ञा, पु०) [सं० बाल+पन प्रत्य०] लड़कपन, शिशुपन । **—बच्चे**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० बाल+बच्चा हि०] लड़के बाले, औलाद ।**—बोध**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) शिशु ज्ञान, देवनागरी लिपि । **—भोग**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रातः-काल का नैवेद्य जो देवताओं वा बलराम और कृष्ण की मूर्तियों के आगे रक्खा जाता है ।**—मुकुंद**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिशु-कृष्ण । "रोवत है अति बालमुकुंदा"—वृज वि० ।**—लीला**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) बच्चों का चरित या खेल ।**—वत्स**-(संज्ञा, पु०, सं०) कबूतर, छोटा बछवा, लड़कों पर दयालु ।**—विधवा**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटी अवस्था की राँड़ या विधवा स्त्री ।**—विधु**-(संज्ञा,

पु०, यौ०, सं०) शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चद्रमा। "भाले बालविधु र्गलेचगरलं यस्योरसि व्यालराट् "—[रामा०]।—सुख-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) लड़कपन का सुख, बालकों का आनंद।—सूर्य-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रातःकाल का सूर्य, बालरवि। [—बच्चे,—गोपाल (यौ०)]। [बाला (संज्ञा, स्त्री०)] नवयौवना स्त्री। मुहा० —बाँका (टेढ़ा) न होना-कुछ भी हानि या कष्ट न होना।—न बाँकना-बाल बाँका न होना। नहाते—न खिसना-हानि या कष्ट कुछ भी न होना। (किसी काम में)—पकाना-बहुत दिनों का अनुभव प्राप्त करना (काम करते करते बूढ़ा हो जाना।—बाल बचना-विपत्ति या हानि पहुचन मे थोड़ी ही कसर रहना, साफ या बिलकुल बच जाना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाली, कुछ अनाजों के डंठलों के आगे का खंड जिसमें दाने रहते हैं।

बालक—(संज्ञा, पु०, सं०) शिशु, बच्चा, पुत्र, लड़का, अजान, नादान, केश, बाल। हाथी-घोड़े का बच्चा। "कौशिक सुनहु मंद यह बालक" —[रामा०]।

बालकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लड़कपन।

बालकताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बालकता+ई० प्रत्य०] बाल्यावस्था, नादानी।

बालकपना—(संज्ञा, पु०) [सं० बालक+पन प्रत्य०] लड़कपन, नादानी।

बालछड़, बालछर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जटामासी औषधि।

बालटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० बकेट] एक हलका डोल।

बालना, बारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ज्वलन] जलाना [बलवाना—(प्रे० रूप)]।

बालम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वल्लभ] प्रियतम, प्रेमी, स्वामी, पति। "बालम बिदेश तुम जात हौ तो जाउ किंतु "—पद्मा०।—खीरा-(संज्ञा, पु०, हि०) एक तरह का बड़ा खीरा।

बालमीकि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाल्मीकि] आदि काव्य रामायण के कर्त्ता एक मुनि।

बाला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) युवती, १२ या १३ वर्ष से १६ या १७ वर्ष तक की जवान स्त्री। स्त्री, पत्नी, औरत, दो वर्ष की कन्या, पुत्री, १० महाविद्याओं में से एक महाविद्या, एक वार्णिक छंद (पिं०), हाथ का कड़ा, वलय।—रुण-(संज्ञा, पु०) अरुणोदय का प्रारम्भिक स्वरूप। वे बालारुण में मुस्काते।—[महा०]।—पन-(संज्ञा, पु०, हि०) बालपन। (वि०, फ़ा०) जो ऊपर हो ऊँचा। "सुबाला है दुशाला है विशाला चित्रशाला है।"—पद्मा०।—खाना-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) मकान या कोठे के ऊपर का कमरा या बैठका। मुहा० बोल—रहना-मान सम्मान सदा अधिक होना। (संज्ञा, पु०) [हि० बाल] जो लड़कों के समान हो, सरल, निष्कपट, अज्ञान। [बाला-भोला—(यौ०)] भोला-भाला, बहुत ही सीधा-सादा। (वि०, फ़ा०) ऊपर का, ऊपरी, आय से अतिरिक्त।

बालाई—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० बाला+ई प्रत्य०] गर्म दूध का ऊपरी सारांश, साढ़ी, मलाई। (वि०, फ़ा०) ऊपरी, ऊपर का, वेतन के अलावा।

बालावर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक अँगरखा।

बालावस्था—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० बाल+अवस्था] बचपन।

बालार्क—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रातःकाल या कन्याराशि का सूर्य, बालरवि।

बालि—(संज्ञा, पु०, सं०) सुग्रीव का भाई और अंगद का पिता, किष्किंधा का राजा। "नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई"—[रामा०]।

बालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कन्या, पुत्री, छोटी लड़की।—विद्यालय-(पु०) लड़कियों का विद्यालय। [गर्ल्स स्कूल]

बालिग़—(संज्ञा, पु०, अ०) प्राप्तवयस्क, जवान, युवा। [नाबालिग (विलो०)]।

बालिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तकिया। (वि०, सं०) अज्ञान, मूर्ख, अबोध [बालिस (दे०)]।

बालिश्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बित्ता, बीता।

बालिस—(वि०, दे०) [सं० बालिश] मूर्ख।

बाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बालिका] कान का एक गहना, [बारी (दे०)]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बाल] जौ, गेहूँ आदि की बाल। [भुट्टा-बाली (यौ०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बालि] बालि नामक वानर। "बाली रिपु-बल सहइ न पारा"—[रामा०]।

बालुका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बालू, बालु का, रेत।

बालू, बारू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बालुका] पहाड़ों से बह आकर नदियों के तटों पर जमा

हुआ पत्थरों का बारीक चूर्ण, रेणुका, बालुका, रेत। "अम्बर डम्बर साँझ के ज्यों बारू की भीत"—वृं०। मुहा०—की भीत-शीघ्र नष्ट होने वाला पदार्थ, अस्थायी वस्तु या कार्य।—दानी-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० बालू +दानी फ़ा०] झँझरीदार डिबिया जिसमें बालू रखते है और स्याही सुखाने का कार्य लेते हैं।—साही-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० बालू+शाही फ़ा०] एक मिठाई।

बाल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बचपन, लड़कपन, बालक होने की अवस्था। (वि०, सं०) बालक का या लड़कपन का।—काल-(पु०) बचपन।

बाल्यावस्था—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) लड़कपन, १६ या १७ वर्ष तक की अवस्था बाल्यकाल।

बाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वायु] वायु, पवन, अपानवायु, हवा, पाद, बाउ (ग्रा०)।

बावड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बावली] बावली।

बावन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वामन] छोटे शरीर का मनुष्य, बौना, बामन का अवतार। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्विपंचाशत] पचास और दो की संख्या, ५२। (वि०) पचास और दो। "हरि बाढ़े आकाश लौं, बावन छुटा न नाम"—रही०। मुहा०—तोले पाव रत्ती-बिलकुल ठीक, सही या दुरुस्त।—वीर-बड़ा शूर-वीर या बहादुर, बड़ा चालाक। लो०—"एक बेर डहकावै, सो बावनवीर कहावै"—घा०।

बावर, बावरा*†—(वि०, दे०) [हि० बावला] पागल, सिड़ी, बावला, बौरा, बाउर (ग्रा०)। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) विश्वास। "बावरो नाह भवानी"—[विन०]।

बावर्ची—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) रसोइया (मुसल०)।—खाना-(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) भोजनालय, रसोईघर (मुसल०)।

बावला—(वि०, पु०, दे०) [सं० वातुल, प्रा० बाउल] सिड़ी, पागल, मूर्ख, बौरा (ग्रा०) [बउली (स्त्री०)]।—पन-(संज्ञा, पु०, हि०) सिड़ीपन, झक, पागलपन।

बावली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बाव+ली प्रत्य०] चौड़े मुँह का सीढ़ीदार कुआँ, बापिका, वापी।

बावाँ, बाँव*†—(वि०, दे०) [सं० वाम] बाईं ओर का, बायाँ, विरुद्ध, प्रतिकूल, वाम। (संज्ञा, पु०, दे०) बायाँ तबला।

बाशिंदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) रहने वाला, निवासी। [वाशिंदगान (ब० व०)]।

बाष्प—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाष्प] भाफ, भाप, अश्रु, आँसु। लोहा, बाफ (ग्रा०)।—कण-(यौ०) अश्रु-कण (बिंदु)।

बाष्पिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक पौधा विशेष।

बासंतिक—(वि०) वसंत सम्बन्धी। (पु०) नर्तक।

बास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वास] निवास, स्थान, रहने की जगह, गंध, महक, एक छंद (पिं०), कपड़ा, वस्त्र, रहने का भाव। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वासना] इच्छा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वसन] कपड़ा, छोटा वस्त्र। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वाशिः] अग्नि, आग, एक हथियार, पैने चाकू, छुरी आदि छोटे अस्त्र जो तोपों के द्वारा फेंके जाते हैं। "वरु भल बास नरक कर ताता"—[रामा०]।—मती-(संज्ञा, पु०) [हि० बास—महक+मती प्रत्य०] एक सुगंधित धान या चावल।

बासकसज्जा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह नायिका जो स्वामी या प्रियतम के आने पर केलि-सामग्री उपस्थित करे या सजावे।

बासन—(संज्ञा, पु०, सं०) बरतन-भाँड़ा, वस्त्र, कपड़ा। [भँड़वा-बासन (यौ०)]। "बदलत वाहन, बासन सबै"—[राम चं०]। "लेहि न बासन वसन चुराई"—[रामा०]।

बासना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वासना] इच्छा, अभिलाषा, मनोरथ। (क्रि० स०, दे०) सुगंधित या सुवासित करना, महकाना, वास देना। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० वास] गंध, महक, बू।

बासर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वासर] दिन, सवेरा, प्रातःकाल, सवेरे का रोग। [निसि-बासर (यौ०)]। "भूख न बासर नींद न जामिनि"—[रामा०]।

बासव—(संज्ञा, पु०, दे०) इन्द्र।

बाससी—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं० वासस्] कपड़ा, वस्त्र।

बासा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वास] वह स्थान जहाँ पक्की रसोई बिकती हो। (संज्ञा, पु०) निवास, बास, कई दिन का रक्खा पदार्थ।

बासिग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वासुकी] वासुकी नाग ।

बासित—(वि०) सुगंधित किया हुआ, वासित, मसाला डाला हुआ, जो ताजा न हो ।

बासी—(संज्ञा, पु०) [सं० वासिन्] निवासी, रहने वाला । (वि०, दे०) [सं० वास—गंध] देर का रक्खा भोजन का पदार्थ, जिसमें महक आने लगे, बहुत दिनों का बना पदार्थ, सूखा या कुम्हलाया हुआ । " ये दोऊ बंधु संभु उर बासी "—[रामा०] ।—**तिवासी**-(वि०) कई दिनों का । —**मुँह**-(वि०) जिसने सुबह से कुछ ग्रहण न किया हो । **मुहा०—कढ़ी में उबाल आना**-बुढ़ापे में जवानी की तरंग उठना, किसी बात का समय बीत जाने पर उसकी बासना होना ।

बासुकी—(संज्ञा, पु०, सं०) सर्प जाति में एक प्रधान सर्प ।

बासौंधी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बसौंधी] लच्छेदार रबड़ी ।

बाह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जोत धारण करना, ले जाना । "जैसे करनि किसान बापुरो नौ नौ बाहैं देत"—[भ्र० गी०] ।

बाहक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाहक] वहन करने या ले जाने वाला, सवार, कहार, पालकी ले चलने वाला कहार । " फेरत बाहक मैन लखि, नैन हरिन इक साथ "—रतन० ।

बाहकी*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० वाहक+ई प्रत्य०] कहारिन, पालकी ले चलने वाली स्त्री ।

बाहन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाहन] सवारी "आप को बाहन बैल बली बनिताहु को बाहन सिंहहि पेखिकै" ।

बाहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वहन] लादना, ढोना, चढ़ा कर ले चलना, हाँकना, पकड़ना, चलाना, फेंकना, धारण करना, प्रवाहित होना, खेत जोतना, लेना ।

बाहनी, बाहिनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वाहिनी] फौज, सेना, कटक, नदी, सवारी ।

बाहम—(क्रि० वि०, फा०) आपस में, परस्पर ।

बाहर—(क्रि० वि०, दे०) [सं० बाह्य] किसी निश्चित सीमा से अलग हट कर निकला हुआ । [**बाहिरी** (वि०)] ।—**जामी***†-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बाह्य+यामी] परमेश्वर का सगुण रूप, राम, कृष्ण आदि ।—**बाहर**-(अ०) दूर दूर ।—**भीतर**-(अ०) अन्दर और बाहर । **मुहा० —आना या होना**-संमुख आना, अलग होना, प्रगट होना ।—**करना**-हटाना, दूर करना ।—**बाहर**-अलग या दूर से, बिना किसी को जनाये, दूसरे स्थान या नगर में, संबंध । अधिकार या प्रभाव से, अलग, सिवा, बिना, बग़ैर ।—**का**-पराया, बेगाना ।

बाहरी—(वि०) [हि० बाहर+ई प्रत्य०] बाहर वाला, बाहर का, पराया, ऊपरी, सम्बन्ध से अलग, अपरिचित, जो बाहर से देखने भर को हो, [बाहिरी (दे०)] ।

बाहाँजोरी—(क्रि० वि०, दे०, यौ०) [हि० बाँह जोड़ना] हाथ से हाथ मिलाकर ।

बाहिज*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बाह्य] देखने में, ऊपर से ।

बाहीं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाहु (सं०) [बाँह (दे०)] । "दै गर-बाहीं जु नाही करी" ।

बाहु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हाथ, भुजा, [बाहू (दे०)] । "नाहिं तो अस होई बहुबाहू"—[रामा०] ।—**त्राण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हाथों के रक्षार्थ दस्ताना (सैनिक) ।—**बल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हाथों को बल, शक्ति, पराक्रम । [**बाहुबली** (वि०)] ।—**पाश**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हाथों को मिलाकर बनाया गया फंदा ।—**मूल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हाथ और कंधे का जोड़, हाथ की जड़ ।—**युद्ध**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुश्ती, मल्लयुद्ध ।—**हज़ार**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सहस्र बाहु] राजा सहस्रबाहु ।

बाहुक—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा नल का नाम (अयोध्या नरेश के सारथी रूप में) नकुल ।

बाहुल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अधिकता ज्यादती, बहुतायत, बहुलता ।

बाह्य—(वि०, सं०) बाहरी, बाहर का, बहिरंग । (संज्ञा, पु०, सं०) सवारी, यान, भार-वाहिक पशु ।—**करण**-(पु०) बाहर के ज्ञान की इन्द्रिय । —**पटी**-(स्त्री०) जवनिका ।—**रूप**-(पु०) बाहरी रूप, ऊपरी ।—**वासी**-(वि०) बाहर का रहने वाला ।

बाह्याभ्यंतर—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राणायाम का एक भेद-विशेष ।

बाह्लीक—(संज्ञा, पु०, सं०) काम्बोज के उत्तरीय प्रदेश, बलख का प्राचीन नाम।

बिंग*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यंग] व्यंग।

बिंजन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यंजन] व्यंजन, भोज्य पदार्थ।

बिंद*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विंदु] वीर्य या पानी की बूँद, भुजों का मध्य स्थान, बिंदी, मस्तक पर का गोल तिलक।

बिंदा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वृंदा] एक गोपी का नाम, तुलसी। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विंदु] मस्तक का बड़ा और गोल टीका, [बेंदा, बुंदा (दे०)]।

बिंदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विंदु] बिंदु, शून्य, सिफर, मस्तक का गोल छोटा टीका, बेंदी, बिंदुली, टिकुली।

बिंदु—(संज्ञा, पु०, सं०) बूँद, शून्य, बिन्दी, नाटक का वह प्रारम्भिक रूप जहाँ गौण घटनाएँ अपना विस्तार ग्रहण करती हैं।—**रेखा**—(स्त्री०) बिन्दुओं की रेखा।

बिंदुका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विंदु] बिंदी।

बिंदुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विंदु] टिकुली, बिंदी।

बिंध†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विंध्य] विंध्याचल पहाड़। "बिंध के बासी उदासी तपोव्रतधारी" —कवि०।

बिंधना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वेधन] बींधा या छेदा जाना, फँसना।

बिंब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बिम्ब] छाया, आभास, प्रतिबिंब, प्रतिमूर्ति, कुन्दरू फल, चन्द्र या सूर्य्य का मंडल, कमंडल, एक छन्द (पिं०)। [**बाँबी** (संज्ञा, पु०, दे०)]।

बिंबक—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्र मण्डल या सूर्य मण्डल।

बिंबा—(संज्ञा, पु०, सं०) कुन्दरू, प्रतिबिंब। [**बिंबा फल** (गौ०)]। "बिंबोष्ठी चारु नेत्री सुविपुल जघना"—हनु०।

बिंबित—(वि०, सं०) प्रतिबिम्बित।

बिंबिसार—(संज्ञा, पु०, सं०) पटना नरेश अजातशत्रु के पिता जो गौतम बुद्ध के समकालीन थे [इति०]।

बि*—(वि०, दे०) [सं० द्वि] दो, द्वि।

बिआध—(संज्ञा, पु०, दे०) व्याध, बहेलिया, व्याधि।

बिआधि, बिआधु—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) [सं० व्याधि, व्याध] कष्ट, दुख, पीड़ा।

बिआज—(संज्ञा, पु०, दे०) ब्याज (हि०) सूद, बहाना। [**बिआजू** (वि०)]।

बिआना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ब्याह] बच्चा जनना या देना (पशु के लिये)। [ब्याना (दे०)]। "नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी"।

बिआहुता†—(वि०, दे०) [सं० विवाहिता] विवाहिता, ब्याही हुई, विवाह-सम्बन्धी, ब्याह का।

बिक, बिग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृक] भेड़िया। "भालु बाघ बिक केहरि नागा"।

बिकचना—(क्रि० अ०, दे०) फूलना, खिलना।

बिकट—(वि०, दे०) [सं० विकट] भयंकर, डरावना, कठिन। "बिकट भेष मुख पंच पुरारी" —[रामा०]। [**बिकटता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

बिकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विक्रय] बेचा जाना, विक्रय होना। [**बिकाना** (स० रूप)]—[**बिकवाना** (प्रे० रूप)]। **मुहा० किसी के हाथ**—किसी का दास या सेवक होना। "आपु चिनेरिन हाथ बिकानो"—रत्ना०।—**बिना मूल्य**—बिना किसी प्रतिकार के दास हो जाना।

बिकरम†—(संज्ञा, वि०, पु०, दे०) [सं० विक्रम] बल, पराक्रम, पौरुष, वीरता, राजा विक्रमादित्य, [बिकरमाजीत (दे०)]।

बिकरार—(वि०, दे०) [फ़ा० बेकरार] व्याकुल। (वि०, दे०) [सं० विकराल] भयंकर डरावना। "नाक कान बिन भइ बिकरारा।"—[रामा०]।

बिकल†—(वि०, दे०) [सं० विकल] बेचैन, अचेत, व्याकुल, घबराया हुआ। [**बिकलता** (संज्ञा, स्त्री०)] "बिकल होसि जब कपि के मारे" [रामा०]।

बिकलाई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विकलता] व्याकुलता, बेचैनी, घबराहट। "सुनि मम बचन तजौ बिकलाई"—[रामा०]।

बिकलाना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विकल] बेचैन या व्याकुल होना, घबराना।

बिकसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विकसन] फूलना, खिलना, प्रसन्न होना। [**बिकसाना** (स० रूप)], [**बिकसवाना** (प्रे० रूप)]।

बिकसित—(वि०, दे०) [सं० विकसन] फूला या खिला हुआ।

बिकाऊ—(वि०, दे०)[हिं० बिकना + आऊ प्रत्य०] जो बिकने के हेतु हो, बिकने वाला।

बिकाना—(अ०, क्रि०) बिकना, काबू में होना। (स० क्रि०) खरीदना।

बिकार*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विकार] बिगाड़, अवगुण, बुराई, खराबी, हानि। "सकल प्रकार बिकार बिहाई"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, वि०, दे०) विकराल, विकट, भीषण। [**बिकारता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

बिकारी†—(वि०, दे०) [सं० विकार] बदला हुआ, रूपान्तरित, परिवर्तित रूप वाला, हानिकारक, बुरा। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० विकृति अवंक] एक टेढ़ी पाई जिसे रुपये आदि के लिखने मे संख्या के मान या मूल्यादि के सूचनार्थ आगे लगा देते हैं, जैसे—), ऽ। "बंक बिकारी देत ही दाम रुपैया होत"।

बिकाश—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विकाश] उजेला, प्रकाश, एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु का बिना निज का आधार छोड़े बहुत-विकसित होना कहा गया हो (काव्य०)।

बिकास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विकास] प्रस्फुटन, खिलना, फूलना, प्रसार, फैलाव, वृद्धि, उन्नत होना।—**वाद**–(यौ०) एक पश्चिमीय वृद्धि सिद्धान्त, आनन्द, हर्ष।

बिक्की—(संज्ञा, पु०, दे०) खेल के साथी, खेल के एक पक्ष वाले आपस मे बिक्की कहे जाते हैं।

बिक्री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विक्रय] विक्रय, बेचने से मिला धन, बेचने की क्रिया या भाव, [बिक्रिरी (दे०)]।

बिख†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विष] विष, जहर। [**बिखैला** (वि०)]। "बिख-रस भरा कनक-घट जैसे"—[रामा०]।

बिखम—(वि०, दे०) [सं० विषम] जो सम या सरल न हो, ताक, भीषण, विकट, अति कठिन, अति तीव्र। "बिखम गरल जेहि पान किय"—[रामा०] [**बिखमता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

बिखरना, बिखेरना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० विकीर्ण] छितराना, तितर-बितर हो जाना, फैल जाना [**बिखराना या बिखरना, बिखेरना** (स० रूप)]—[**बिखरवाना** (प्रे० रूप)]।

बिखराना—(क्रि० स०) देखिए। बिखेरना।

बिगड़ना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० विकृत] किसी वस्तु के रूप, गुणादि में विकार हो जाना, बुरी दशा को प्राप्त होना, खराब होना, किसी दोष से किसी वस्तु का बनकर ठीक न उतरना, बिकार होना, कुमार्गी, नष्ट या भ्रष्ट होना, नीति के पथ से च्युत होना, अप्रसन्न या नाराज होना, विद्रोह करना, विरोध या वैमनस्य होना, स्वामी या रक्षक के अधिकार से बाहर हो जाना, व्यर्थ व्यय होना।—(**ड़े**) **दिल**–(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० बिगड़ना + दिल फ़ा०] झगड़ालू, बखेड़िया, कुमार्गी, क्रोधी।

बिगड़ैल—(वि०, दे०) [हिं० बिगाड़ना + ऐल प्रत्य०] हठी, जिद्दी, क्रोधी, झगड़ालू, कुमार्गी।

बिगर-बिगिर—(क्रि०, वि०, दे०) बगैर (फ़ा०) बिना।

बिगरना—(क्रि०, अ०, दे०) बिगड़ना।

बिगराइल†—(वि०, दे०) बिगड़ैल (हिं०)।

बिगसना*—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० बिकसना] बिकसना, फूलना। [**बिगसाना, बिगसावना** (स० क्रि० प्रे० रूप)]।

बिगहा—(संज्ञा, पु०, दे०) बीघा (हिं०)।

बिगाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बिगड़ना] दोष, खराबी, वैमनस्य, झगड़ा, मनोमालिन्य।

बिगाड़ना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० विकार] किसी चीज में दोष या विकार पैदा कर उसे ठीक न होने देना, बुरी दशा या अवस्था में लाना, कुमार्गी करना, बुरा स्वभाव डालना, स्त्री का सतीत्व भ्रष्ट करना, बहकाना, खराब करना, किसी वस्तु के वास्तविक रूप, गुणादि को नष्ट करना, व्यर्थ व्यय करना।

बिगाना†—(वि०, दे०) [फ़ा० बेगाना] पराया, गैर, दूसरा। [**अपना-बिगाना** (यौ०)]।

बिगार†—(संज्ञा, पु०, दे०) **बिगाड़** (हिं०)।

बिगारि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बेगार (हिं०) बिना मूल्य बलात् कार्य लेना।

बिगारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बेगारी (हिं०)।

बिगास*†—(संज्ञा, पु०, दे०) विकास (सं०)।

बिगासना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० विकास] विकसित या विकासित करना।

बिगिर*†—(क्रि० वि०, दे०) [फ़ा० बगैर] बिना, बिगुर (ग्रा०)।

बिगुन*†—(वि०, दे०) [सं० विगुण] गुण-रहित, निर्गुणी, मूर्ख। [बेगुन (दे०)]।

बिगुर—(वि०, दे०) [हिं० बि० + गुरु] जिसके गुरु न हो, निगुरा। (क्रि० वि०, ग्रा०) बिना, बगैर।

बिगुरचिन*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विकुंचन या विवेचन] अड़चन, कठिनता, दिक्कत, असमंजस, द्विविधा।

बिगुरदा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पुराना हथियार।

बिगुल*†—(संज्ञा, पु०, अं०) अँग्रेजी सैनिकों की एक प्रकार की तुरही।

बिगुलर*†—(संज्ञा, पु०, अ०) बिगुल बजाने वाला।

बिगूचन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विकुंचन या विवेचन] मनुष्य के किंकर्त्तव्य-विमूढ़ होने की दशा, अड़चन, कठिनता, असमंजस, हैरानी, दिक्कत, परेशानी, द्विविधा।

बिगूचना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० विकुंचन] असमंजस या अड़चन में पड़ना, पकड़ा या दबाया जाना, द्विविधा में आना। (क्रि० स०, दे०) [सं० विकुंचन] छोप लेना, धर दबाना, दबोचना।

बिगोई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बिगोना] भ्रम, भुलावा, छिपाव, दुराव, तंग या दिक करना, नष्ट किया। "राज करत यहि दैव बिगोई"—[रामा०]।

बिगोना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विगोपन] बिगाड़ना या नष्ट-भ्रष्ट करना, दुराना, छिपाना, दिक या तंग करना, बहकाना या भ्रम में डालना, बिताना, सोना।

बिगोहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विगाथा] आर्या छंद का एक भेद, उद्गीति (पिं०)।

बिग्रह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विग्रह] विभाग करना, यौगिक या सामासिक पदों को अलग-अलग करना, कलह, झगड़ा, लड़ाई, युद्ध, विरोधियों के पक्ष में फूट या झगड़ा कराना, शरीर, देह। [**बिग्रही** (वि०)]।

बिघटना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० विघटन] बिगाड़ना या विनाश करना, तोड़ना, नष्ट करना। "बिरची धनु बिघटन परिपाटी"—[रामा]।

बिघन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विघ्न] उपद्रव, विघ्न, बाधा, रोक-टोक, उत्पात, मनाही, छेड़छाड़। "बिघन बिदारन, बिरद बर"।—**हरन***†—(वि०, दे०, यौ०) [सं० विघ्नहरण] विघ्न-बाधा को मिटाने वाला, बिघन-बिदारना। (संज्ञा, पु०, दे०) गणेशजी।

बिच*†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० विच = अलग करना] किसी वस्तु का मध्यभाग, मध्य, आधा-आध, बीच [**बिच-बिच** (यौ०)]। "बिच-बिच गुच्छा कुसुम-कली के"—[रामा०]।

बिचकना—(क्रि० अ०, अनु०) भड़कना, चौंकना चिढ़ना, सतर्क होना, भड़कना, मुँह बनाना या टेढ़ा करना। [**बिचकाना** (स० रूप)], [**बिचकवाना** (प्रे० रूप)]।

बिचकाना—(क्रि० स०) भड़काना, मुँह बनाना।

बिचकवा—(वि०, दे०) [हिं० बिचकना] बिचकनेवाला, सावधान, सतर्क।

बिचच्छन*†—(वि०, दे०) [सं० विचक्षण] पंडित, चतुर, निपुण, प्रवीण, विद्वान्, बुद्धिमान। [**बिचच्छनता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

बिचरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विचरण] भ्रमण करना, चलना-फिरना, घूमना, यात्रा या सफर करना। "कौन हेतु बन बिचरहु स्वामी"—[रामा०]।

बिचलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विचलन] इधर-उधर हटना, हिम्मत हारना, डिगना, हिलना, कह कर इन्कार करना, मुकरना, विचलित होना, तितर-बितर होना, भागना। "निज दल बिचल सुना जब काना"—[रामा०]। [**बिचलाना** (स० रूप०)], [**बिचलवाना** (प्रे० रूप०)]।

बिचला—(वि०, दे०) [हिं० बीच + ला प्रत्य०] बीच का, मध्यवाला। [**बिचली** (स्त्री०)]।

बिचलित—[वि०, दे०) हटा हुआ, घबराया, विकल, व्याकुल।

बिचवई—(संज्ञा, पु०) मध्यस्थ, बीचबिचाव करने वाला। (स्त्री०) मध्यस्थता।

बिचवान, बिचवानी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बीच + वान] मध्यस्थ, मध्यवर्ती, बीच-बचाव करने वाला, मिलाने वाला।

बिचहुत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बीच] अंतर, संदेह, दुविधा, भेद।

बिचार—(संज्ञा, पु०, दे०) विचार, भाव, सोच, ध्यान, इरादा।—**मान**-(वि०) [हिं० बिचार] बिचारने योग्य, विचार करने वाला।

बिचारना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विचार +ना प्रत्य०] सोचना, समझना, पूछना। "देखु बिचारि त्यागि मदमोहा"—[रामा०]। [**बिचराना** (स० रूप)], [**बिचरवाना** (प्रे० रूप)], [**बिचारनीय** (वि०)]।

बिचारवान—(वि०, दे०) विचारवान, बुद्धिमान, अग्रसोची, दूरदर्शी।

बिचारा—(वि०, दे०) [फ़ा० बेचारा] दुखिया, बिवश, बापुरा।

बिचारित—(वि०, दे०) [सं० विचारित] सोचा या निश्चय किया हुआ।

बिचारी*†—(संज्ञा, पु०) [सं० विचारिन्] विचार करने वाला। (वि०, स्त्री०) [हि० बेचारा] दुखिया। "ज्यों दसनन महँ जीभ बिचारी"—[रामा०]।

बिचाल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विचाल] अलग करना, अंतर।

बिचाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पुआल, सूखी घास, चटाई।

बिचेत*†—(वि०, दे०) [सं० विचेतस्] अचेत, मूर्छित, बेहोश।

बिचौनिया, बिचौनिया—(संज्ञा, पु०, स्त्री०) [हि० बीच] मध्यस्थ, बिचवाई, बिचवानी।

बिच्छित्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शृंगार रस के ११ हावों मे से एक जिसमें कुछ शृंगार ही से पुरुष के वश में करने का वर्णन हो, वक्रोक्ति, वैचित्र्य, चमत्कार (काव्य०)।

बिच्छी, बिच्छू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृश्चिक] एक विषैले डंक वाला छोटा कीड़ा, एक विषैली घास, बिच्छी-बीछू (ग्रा०)।

बिच्छेप*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विक्षेप] फेंकना, चित्त की चंचलता, विघ्न, बाधा, रोक।

बिछना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विस्तरण] बिछाया जाना, फैलना, पसरना। [**बिछाना, बिछावना** (स० रूप)], [**बिछवाना** (प्रे० रूप)]।

बिछलता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [विचलता] रपट, फिसलन, बिछलन (ग्रा०)।

बिछलन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फिसलन, बिछलौहा, (ग्रा०)।

बिछलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विचल] रपटना, फिसलना, डगमगाना. [**बिछुलना** (दे०)]। [**बिछलाना** (स० रूप)], [**बिछलवाना** (प्रे० रूप)]।

बिछलावा—(वि०, दे०) [हि० बिछलना] फिसलाहट, रपट, बिछलौहा (ग्रा०)।

बिछलाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बिछलना] रपट, फिसलाहट, फिसलन, बिछुलाहट।

बिछवाना—(क्रि० स०) दूसरे के द्वारा बिछाने का कार्य कराना।

बिछाना—(क्रि० स०) बिस्तरा आदि खाट या जमीन पर फैलाना, बिखेरना।

बिछावन†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बिछौना] बिछौना, बिस्तर। [**बिछावना** (क्रि० स०, दे०)] बिछाना।

बिछिया, बिछुआ†—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० बिच्छी] एक करधनी, पैर की अँगुलियों का गहना, या छल्ला, एक हथियार, [बछुआ, बीछू, बिच्छू (दे०)]।

बिछिप्त, बिच्छिप्त—(वि०, दे०) विक्षिप्त (सं०)। [**बिछिप्ति** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

बिछुड़न, बिछुरन†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बिछुड़ना, बिछुरना] वियोग, बिछोह। "यह बिछुरन वह मिलन कहौ कैसे बनि आवत"—गिर०।

बिछुड़ना, बिछुरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विच्छेद] बिछोह या वियोग होना, जुदाई होना, प्रेमियों का अलग होना। "बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं'—[रामा०]।

बिछुरता*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बिछुरना +अंता प्रत्य०] वियोग, बिछुड़ने वाला।

बिछूना*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बिछुड़ना] वियोगी, बिछोही, बिछुड़ा हुआ।

बिछोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बिछुड़ना] विरह, वियोग, बिछोह।

बिछोय, बिछोह, बिछोहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बिछुड़ना] वियोग, बिछोह, बिरह। [**बिछोही** (वि०)]। "मित्र बिछोहा कठिन है अस न करौ करतार"—गिर०।

बिछौना—(संज्ञा, पु०) [हि० बिछाना] बिस्तर, बिछाने का वस्त्र, [बिछावन (दे०)]।

बिजन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यजन] पंखा, बेना, बिनवाँ, बिजना (ग्रा०)। (वि०

दे०) [सं० विजन] जन-रहित, निर्जन, एकांत, अकेला। "बिजन डुलाती वै तौ बिजन डुलाती है" —भू० । (क्रि० स०) [फा० बिजन] मारो, मार, मारिये । मुहा०—बोलना-मारने की आज्ञा देना, धावा मारना ।

बिजना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यजन] बेना, पंखा। [**बिजनी, बिजनियाँ** (स्त्री०, अल्पा०)] ।

बिजय, बिजै—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विजय] जीत, जय। (संज्ञा, पु०) विष्णु सेवक या पार्षद ।

बिजयसार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विजयसार] एक बहुत बड़ा जंगली वृक्ष।

बिजया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विजया] भंग, क्वारसुदी दशमी। "या विजया के सकल गुण, कहि नहिं सकत अनंत"—स्फु० ।

बिजली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विद्युत] बिजुली (ग्रा०) चपला, दामिनी, वातावरण की बिजली से उत्पन्न एक बादल से दूसरे मे जाने वाली प्रकाश-रेखा, विद्युत, वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण करने वाली एक शक्ति, जिसमे कभी कभी ताप और प्रकाश भी हो। मुहा०—**गिरना या पड़ना**-गाज गिरना, वज्रपात होना या पड़ना, आकाश से भूमि की ओर बिजली का वेग से आना और मार्ग को वस्तुओं को जलाना।—**कड़कना**-बिजली चमकने पर बादलों की रगड़ से बड़े जोर का शब्द या गरज होना। आम की गुठली की गिरी, गले और कान का गहना। (वि०) अति चंचल या तेज, बहुत चमकने वाला।

बिजहन—(वि०) हतवीर्य, जिसका बीज समाप्त या नष्ट हो गया हो, निर्बल ।

बिजाती—(वि०, दे०) [सं० विजातीय] दूसरी जाति का, अन्य जातीय, दूसरी प्रकार का, जाति से च्युत (बहिष्कृत), अजाती।

बिजान*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० वि+ज्ञान] अज्ञान, अनजान, अजान, बेसमझ, विज्ञान ।

बिजायट, बिजायठ—(संज्ञा, पु०) [सं० विजय] भुज-बंद, कंकन, बाजूबंद, अंगद । "सोभा न देत बिजायट बाहु मै"—भ० अनु० ।

बिजार—(संज्ञा, पु०, दे०) बैल, वृषभ, साँड़। (वि०, दे०) बीजवाला। (वि०, दे०) बीमार, बेजार (ग्रा०), [**बिजारी, बेजारी** (संज्ञा, स्त्री०, ग्रा०)]—बीमारी।

बिजारा—(संज्ञा, पु०, दे०) बीजवाला, बीज-युक्त, [बिजार (दे०)]।

बिजुरी, बीजुरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विद्युत] बिजली, दामिनी, विद्युत।

बिजूका, बिजूखा‡—(संज्ञा, पु०, दे०) पशु-पक्षियों को डराने को खेतों में लकड़ी पर रखी हुई काली हाँड़ी।

बिजै—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) विजय (सं०) जीत।

बिजोग*†—(संज्ञा, पु०, दे०) वियोग (सं०) बिछोह।

बिजोना—(क्रि० स०, दे०) भली भाँति देखना। "प्रिय ठाढ़े मे मरम लखि, तिय उत रहीं बिजोय"।

बिजोरा—(वि०, दे०) [सं० वि+जोर फा०=बल] निर्बल, अशक्त।

बिजोहा—(संज्ञा, पु०, दे०) विमोह, बिज्जूहा, एक वार्णिक छंद (पिं०)।

बिजौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बीजपूरक] एक प्रकार का बड़ा तीव्र नीबू।

बिजौरी—(संज्ञा, स्त्री०) कुम्हड़ौरी।

बिज्जु*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विद्युत] बिजली। "बिज्जु कैसी उजियारी"—रत्ना०।—**पात***‡-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० विद्युत्पात] वज्रपात, बिजली गिरना।

बिज्जुल*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विज्जुल] छाल, खाल, त्वचा, छिलका, चमड़ा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विद्युत] बिजली।

बिज्जू, बीजू—(संज्ञा, पु०, दे०) बिल्ली-सा एक जंगली जंतु।

बिज्जूहा—(संज्ञा, पु०, दे०) बिजोहा, बिमोहा, एक वर्णिक छंद (पिं०)।

बिझकना, बिझुकना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० झोंका] भड़कना, बिचकना, डरना, तनना, वक्र होना। [**बिझकाना, बिझुकाना** (स० रूप)], [**बिझकवाना** (प्रे० रूप)]।

बिझुकाना—(क्रि० स०) भयभीत करना, डराना, चौंकाना।

बिट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विट] वैश्य, धनी, खल, नीच, नायक का कला-निपुणसखा (काव्य०, नाट्य०)। "नट, भट, विट, गायक नहीं, भूपति हू हैं नहिं।"—[भ० भा०]

बिटना—(क्रि० अ०, दे०) बिथरना, छिटकना, छिटक जाना। [**बिटाना** (स० रूप)], [**बिटवाना** (प्रे० रूप)]।

बिटप, बिटपी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विटप] पेड़, वृक्ष। "लागे बिटप मनोहर नाना"—[रामा०]।

बिटरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विलोड़न] गदा होना, घघोरा जाना। [**बिटारना** (स० रूप)] [**बिटरवाना** (प्रे० रूप)]।

बिटिया बिटिनिया‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बेटी] बेटी, पुत्री, लड़की, बिटौवा, बिटनी (ग्रा०)।

बिटौरा, भिटौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) उपलों या कण्डों का ढेर, चींटों का भीटा।

बिट्ठल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विष्णु] विष्णु, भगवान, पंढरपुर की विष्णु-मूर्त्ति (बम्बई), वल्लभाचार्य के शिष्य विट्ठलनाथ।

बिठाना—(क्रि० स०) बैठाना।

बिठालना—(क्रि० स०) बैठाना।

बिडंब—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विडंब] आडंबर, ढोंग। "विडंबयंत सित वाससस्तनुम्"—माघ०।

बिडंबना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विडंबन] स्वरूप बनाना, नकल उतारना। (**संज्ञा, स्त्री०**) उपहास, निंदा, हँसी। "केशव कोदंड बिसदंड ऐसे खंड अब, मेरे भुजदंडन की बड़ी है बिडंबना"। "केहि कर लोभ बिड़ंबना, कीन्ह न यहि संसार"—[रामा०]।

बिड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विट] वैश्य, नीच, धनी।

बिड़कन—(संज्ञा, पु०, दे०) बटेर, लवा। "बिड़कन घनचूर, भच्छि कै बाज जीवै"—[रामा०]।

बिड़र—(वि०, दे०) [हि० बिड़रना] तितर-बितर, अलग-अलग, दूर-दूर, छितराया हुआ। (वि०) [हि० बि=बिना+डर] **ढीठ**, निडर, निर्भीक, धृष्ठ।

बिड़रना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विट्] इधर उधर होना, बिचकना (पशुओं का) तितर-बितर या नष्ट होना। [**बिड़राना** (स० रूप)], [**बिड़रवाना** (प्रे० रूप)]।

बिड़वना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० विट्] तोड़ना।

बिड़ारना—(क्रि० स०) [हि० बिड़रना] डराकर भगाना, बिचकाना, तितर-बितर या नष्ट करना। "जैसे छेरिन में बिग पैठे जैसे नहरू बिड़ारै गाय"—[आल्हा०]।

बिडाल—(संज्ञा, पु०, सं०) बिलार, बिल्ली, दुर्गा से मारा गया बिडालाक्ष दैत्य, दोहे का बीसवां रूप (पिं०)।

बिडौजा—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र। "बिडौजा पाक शासन।"—[अमर०]।

बिढ़तो*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बढ़ाना] कमाई, लाभ।

बिढ़वना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० बढ़ाना] कमाना, जोड़ना, सचय करना, पैदा, करना।

बिढाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० बढाना] कमाना या पैदा करना, जोड़ना, संचय करना।

बित*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वित्त] शक्ति, द्रव्य, धन, दौलत, आकार, सामर्थ्य। "सुत, बित, नारि बंधु, परिवारा"—[रामा०]।

बितताना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बिलखना] व्याकुल या संतप्त होना, बिलखना। (क्रि० स०) —सताना, दिक या दुखी करना।

बितना‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बित्ता] चौथाई गज या एक बित्ता लंबा, बौना, बालिश्त। [**बितनिया** (वि०, दे०)]—बौना। (क्रि० अ०, दे०) बीतना, समाप्त होना।

बितरना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० वितरण] बाँटना, बरताना (ग्रा०)।

बितवना, बितावना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० व्यतीत] बिताना, व्यतीत करना, काटना। "काव्य शास्त्र के मोद मे, पंडित बितवत काल"—[भ० नीति अनु०]।

बिताना—(क्रि० स०, दे०) [सं० व्यतीत] व्यतीत करना, काटना, गुजारना (फा०)। [**बितवाना** (प्रे० रूप)]।

बितीतना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० व्यतीत] व्यतीत होना, बीतना, गुजरना। (क्रि० स०) बिताना, गुजारना। "कैधौ साँझ हो बितीते पे"—पद्मा०।

बितु*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वित्त] बित, धन, दौलत, सामर्थ्य।

बित्त—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बित्त] धन, सामर्थ्य, औक़ात, हैसियत। "चोरी कबौं न कीजिये, जदपि मिलै बहु बित्त"—वृं०।

बित्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) पूर्णतया फैले हुए पंजे में अँगूठे के सिर से कनिष्ठिका के सिर तक की दूरी, चौथाई गज़, [**बालिश्त** (फ़ा०)] बीता, बिलस्ता (प्रान्ती०)।

बिथकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० **थकना**] हैरान या परेशान होना, थकना, मोहित या चकित होना [**बिथकित** (वि०, हिं०)]।

बिथरना, बिथुरना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विस्तृत] बिखरना, छितराना, खिल जाना, अलग अलग होना, फैल जाना [**बिथराना** (स० रूप)], [**बिथरवाना** (प्रे० रूप)।

बिथा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० व्यथा] व्यथा, पीड़ा, कष्ट, दुःख। "विरह बिथा जल परस बिन, बसियत मो हिय लाल"—वि०।

बिथारना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० बिथरना] फैलाना, बिखेरना, छितराना, छिटकाना। [**बिथरवाना** (प्रे० रूप)]।

बिथित*—(वि०, दे०) [सं० व्यथित] व्यथित, दुखित, पीड़ित।

बिथुरित—(वि०) बिखरा हुआ, फैला हुआ।

बिथोरना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० बिथरना] फाड़ना, पृथक् करना, बिथराना, छितराना। "बारन बिथोरि थोरि थोरि जे निहारे नैन"।

बिदकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विदारण] घायल होना, फटना, चिरना, भड़कना, बिचकना। [**बिदकाना**, (स० रूप)], [**बिदकवाना** (प्रे० रूप)]।

बिदर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विदर्भ] बरार या विदर्भ देश, बीदर, ताँबे और जस्ते से बनी एक उपधातु।

बिदरना*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विदीर्ण] दरार, दरज़, छेद। [**बिदरना** (क्रि० अ०, दे०)] फटना। (वि०) चीरने या फाड़ने वाला।

बिदरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विदर्भ] बिदर, बिदर की धातु का बना चाँदी-सोने के तारों का नक़्क़ाशीदार सामान।

बिदलना—(क्रि०, अ०) दलित करना।

बिदहना—(क्रि० स०) धान आदि को बिखेरकर जोतना।

बिदा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० विदाअ] गवन (दे०) गमन, रुख़सत, गौना, प्रस्थान, प्रयाण, द्विरागमन, जाने की आज्ञा। **मुहा०—माँगना**—प्रस्थान की आज्ञा लेना।—**देना**—जाने की आज्ञा देना।—**करना** (**कराना**) बहू बेटी को भेजना (लिवा लाना)।

बिदाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बिदा] बिदा होने की क्रिया का भाव, बिदा होने का हुक्म, वह धन जो बिदा होते समय दिया जावे।

बिदारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विदारण] फाड़ना, चीरना, नष्ट या विदीर्ण करना।

बिदारी—(संज्ञा, पु०) शालपर्णी, गले का एक रोग, एक कर्ण रोग, एक औषधि।—**कंद**—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० विदारीकंद] एक लाल कंद या जड़ (औषधि०) [बिलाईकंद (दे०)]।

बिदाहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विदहन] बोये-जमे खेत को दूर दूर जोतना।

बिदुराना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विदुर= चतुर] धीरे-धीरे हँसना, मुसकुराना, मुसक्याना।

बिदुरानि, बिदुरानी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बिदुराना] मुसक्यान, मुसकुराहट।

बिदुषन—(संज्ञा, पु०, बहु०, दे०) [सं० विदुष] (पंडित या विद्वान् लोग। "विदुषन प्रभु बिराटमय दीसा"—[रामा०]।

बिदूषना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विदूषण] कलंक, दोष या ऐब लगाना, बिगाड़ना। "इनहिं न संत बिदूषहिं काऊ"—[रामा०]।

बिदेश—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विदेश] परदेश, अन्य देश, बिदेस। "पूत बिदेश न सोच तुम्हारे" —[रामा०]।

बिदोख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विद्वेष] बैर, शत्रुता, वैमनस्य।

बिदोरना—(क्रि० स०, दे०) चिढ़ाना, बिराना।

बिद्दत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० बिदअत] बुराई, दोष, ख़राबी, आपत्ति, अत्याचार, कष्ट, दुर्दशा।

बिद्ध—(वि०) बिंधा या छेदा हुआ।

बिधसना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विध्वंसन] नष्ट या विध्वंस करना।

बिध, बिधि—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) [सं० विधि] तरह, प्रकार, कांति, ब्रह्मा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०)

[सं० विधा=लाभ] आय-व्यय का लेखा, जमा-खर्च का हिसाब। **मुहा०—मिलाना**-यह देखना कि जमाखर्च ठीक लिखा है या नहीं।

बिधना, बिधाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विधि] ब्रह्मा, विधाता, स्रष्टा, विरंचि।—**नाखरी**-(यौ०) भाग्य-लेख, बुरा लेख (व्यं०)। (क्रि० अ०, दे०) बिंधना, छिदना। "बानन साथ बिंधे सब बानर"—[रामा०]।—**बिधाई**-(संज्ञा, स्त्री०) बेधने की क्रिया।

बिधवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विधवा] पति हीना, रंडी, बिना स्वामी की।

बिधँसना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विध्वसन] नष्ट या विध्वस करना।

बिधाई—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विधायक] विधायक, विधान करने वाला।

बिधाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बिधना] [बिधावना (दे०)] छेदवाना। [**बिधवाना** (प्रे० रूप)] "सुन्दर क्यों पहिले न सँभारत जो गुड़ खाय सुकान बिधावे।"

बिधानी*†—(संज्ञा, पु०) [सं० विधान] विधान करने वाला, रचने या बनाने वाला।

बिधावट—(संज्ञा, पु०) [सं० विधाना] छेद, साल, रंध्र, बिधाने का भाव, बिंधाई।

बिधि—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) [सं० विधि] रीति, कायदा, व्यवस्था, नियम, ब्रह्मा। "बिधि-निषेधमय कलि-मल हरनी"—[रामा०]।

बिधिना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विधिना] ब्रह्मा, विधाता, विरंचि।

बिधुर—(हि०) [सं० विधुर] व्याकुल, भयभीत, असमर्थ, दुखित, रँडुआ। [**बिधुरा** (स्त्री०)]।

बिन-बिनु*†—(अव्य०, दे०) [हि० बिना] देखिए बिना। "राम नाम बिन गिरा न सोहा"—[रामा०]।

बिनई*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विनयी] विनयी, नम्र, नीतिज्ञ। "सो बिनई बिजई गुन-सागर"—[रामा०]।

बिनउ, बिनव*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विनय] विनय।

बिनति, बिनती, बिन्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विनय] विनय, निवेदन, प्रार्थना। "बिनती बहुत करउँ का स्वामी"-[रामा०]।

बिनन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बिनना] कूड़ा कर्कट चुनना, बीनने का भाव, बीनना (दे०)।

बिनना-बानना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वीक्षण] चुनना, छाँटना, अलग करना, वस्त्रादि बुनना।

बिनवना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विनय] प्रार्थना या विनय करना, मिन्नत करना। "पुनि बिनवौं पृथुराज समना"—[रामा०]।

बिनवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बिनावना] बिनन का काम, बिनन की मजदूरी, बिनाई।

बिनवाना—(क्रि० स०) चुनवाना, दूसरे के द्वारा बुनन का काम कराना।

बिनसना*†—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० विनाश] नाश होना, बरबाद या खराब होना, नष्ट-भ्रष्ट होना, मिट जाना। [**बिनसाना** (स० रूप)] [**बिनसवाना** (प्रे० रूप)] (क्रि० स०, दे०) नष्ट करना। "बिनसत बार न लागई, ओछे नर की प्रीति"—वृं० [नीति०]।

बिना—(अव्य० दे०) [सं० विना] रहित, छोड़ कर, बगैर। "राम बिना सपति, प्रभुताई"—[रामा०] **मुहा०—आये तरना**-समय से प्रथम मर जाना।—**रोये लड़का दूध नहीं पाता**-बिना प्रयत्न कुछ भी नहीं मिलता।—**भय प्राति नहीं**-पराक्रम दिखाये बिना प्रभाव नहीं जमता। **लो०**—"बिना माँगे तो दूध बराबर, माँगे दे तो पानी बराबर"—माँगना बुरा है।

बिनाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बिनना] बिनवाई, बिनने या चुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी; बुनना क्रिया का भाव या मजदूरी।

बिनाती, बिन्ती†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विनती] विनय, नम्रता।

बिनाना—(क्रि० स०) बुनवाना।

बिनानी—(वि०, दे०) [सं० विज्ञानी] अज्ञानी, विज्ञानी, अनजान, अनारी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विज्ञान) विशेष ज्ञान या विचार, सांसारिक पदार्थों का यथार्थ ज्ञान, गौर।

बिनावट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बुनावट (हि०)। बुनने का तरीका, बीनने में घना, झीना का होना।

बिनासना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विनष्ट] नाश या बरबाद करना, नष्ट भ्रष्ट या संहार करना।

बिनि, बिनु*—(अव्य०, दे०) [हिं० बिना] बिना, बगैर, सिवाय ।

बिनूठा*†—(वि०, दे०) शुद्ध, पवित्र, अनोखा, अनूठा (हिं०) ।

बिनै*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नम्रता, विनय (सं०) विनय, बिनती ।

बिनौना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विनय] विनय या बिनती करना, अर्चना, पूजना, ध्यान करना, छाँटना ।

बिनौला—(संज्ञा, पु०, दे०) बिनौर (दे०) । कपास का बीज, कुकटी (प्रान्ती०) ।

बिपच्छ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विपक्ष] बैरी, विरोधी, शत्रु । (वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध, विमुख, नाराज ।

बिपच्छी*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विपक्षिन्] विरोधी पक्ष का, शत्रु ।

बिपत, बिपति, बिपद*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विपत्ति] आपत्ति, क्लेश, आफ़त, कष्ट, दुःख । "बिपति मोरि को प्रभुहिं सुनावा"—[रामा०] ।

बिपता, बिपदा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विपत्ति] विपत्ति, आफ़त, आपत्ति, क्लेश, कष्ट, दुःख । "जापै बिपता परति है सो आवत यहि देश"—[रही०] ।

बिपथ—(संज्ञा, पु०,) कुमार्ग ।

बिपर, बिप्र*†—(संज्ञा, पु०, दे०) ब्राह्मण विप्र (सं०) [**बिप्रता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

बिपरना—(क्रि० स०, दे०) आक्रमण, धावा या चढ़ाई करना ।

बिपरीत—(वि०, दे०) [सं० विपरीत] प्रतिकूल, विरुद्ध, उलटा । "मो कहँ सकल भयो बिपरीता"—[रामा०] ।

बिपाक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विपाक] पकना, फल, नतीजा, दुर्गति ।

बिपादिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विपादिका] पैरों के फट जाने का रोग, बिमाईं, बिवाईं ।

बिफर, बिफल*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विफल] निष्फल, फल-रहित, व्यर्थ ।

बिफरना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विप्लवन] विद्रोही या बागी होना, बिगड़ उठना, नाराज होजा, ढीठ होना ।

बिफ्फै, बीफै—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बृहस्पति] बृहस्पति या गुरुवार ।

बिबछना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विपक्ष] विरोधी या विरुद्ध होना, उलझना, फँसना ।

बिबर—(संज्ञा, पु०, दे०) गुफा, छिद्र, गड्ढा, विवर (सं०) । "पैठे बिबर बिलब न कीन्हा"—[रामा०] ।

बिबरन*—(वि०, दे०) [सं० विवर्ण] बदरंग, जिसका रंग बिगड़ गया हो, कांतिहीन, गतश्री । (संज्ञा, पु०, दे०) व्याख्या, विवेचन, भाष्य, टीका, वृत्तांत, हाल, विवरण (सं०) ।

बिबस*‡—(वि०, दे०) लाचार, मजबूर, पराधीन, परतंत्र, विवश (सं०) बेबस । [**बिबसता** (संज्ञा, स्त्री०)] । (क्रि० वि०, दे०) विवश या लाचार होकर । "बिबस बिलोकत लिखे से चित्र-पट मैं"—[रत्ना०] ।

बिबहार*†—(संज्ञा, पु०, दे०) बर्ताव, कार्य्य, व्यापार, व्यवहार (सं०), ब्यौहार । "भाँति अनेक कीन्ह बिबहारा"—[रामा०] ।

बिबाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विपादिका] पैर का एक रोग जिसमें तलवों की खाल फट जाती है, बिमाई, बेवाई । "देखि बिहाल बिबाइन सों"—[नरो०] । लो०—"जेहि के पाँव न जाय बिवाई, सो का जानै पीर पराई ।"

बिबाक*—(वि०, दे०) [फ़ा० बेबाक] चुकता किया या चुकाया हुआ, उद्धार, उरिन । [सं० उऋण] बेबाक ।

बिबाकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० बेबाक़ी] हिसाब चुकता, निश्शेष, बेबाकी । "सहित सेन सुत कीन्ह बिबाकी"—[रामा०]

बिबाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विवाह] ब्याह, शादी ।

बिबाहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विवाह] ब्याह करना, ब्याहना, बिआहना, बिवाहना (ग्रा०) ।

बिबि—(वि०, दे०) दो । "तीन बलकर ल्याय हो इत तीन बिबि देखो आय"—[स्फु०] ।

बिभचार, बिभिचार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यभिचार] दुष्कर्म, दुराचार, बदचलनी ।

बिभचारी, बिभिचारी*—(वि०, दे०) [सं० व्यभिचारिन्] कुकर्मी, दुराचारी, बदचलन ।

[**बिभिचारिनी** (स्त्री०)] । "व्यसनी गति बिभिचारी"—[रामा०] ।

बिभाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विभा] शोभा पाना, चमकना देख पड़ना । "भूतल की बेणी सी त्रिबेणी शुभ शोभित हैं, एक कहैं सुरपुर मारग बिभात हैं"—[रामा चं०] ।

बिभावरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तारों वाली रात, विभावरी (सं०) । "ज्यों ज्यों बढ़त बिभावरी, त्यों त्यों बढ़त अनंत"—[वि०] ।

बिभिनाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विभिन्न] अलग या पृथक् करना, भिन्न करना ।

बिभु—(संज्ञा, पु०, दे०) स्वामी, परमेश्वर, विभु (सं०) । (वि०) सर्वव्यापक, महान् ।

बिभौ—(संज्ञा, पु०, दे०) ऐश्वर्य्य, संपत्ति, वैभव, विभव (सं०) ।

बिमन*†—(वि०, दे०) [सं० विमनस्] उदास, सुस्त, दुखी, उन्मन (क्रि० वि०) बिना मन के अनमना होकर । [**बिमनता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

बिमाता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विमाता] सौतेली माँ ।

बिमान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विमान] आकाशीय सवारी, वायुयान, रथ आदि सवारी, अनादर, मान या अभिमान रहित ।

बिमानी*†—(वि०, दे०) [सं० विमानिन्] आदर या सत्कार रहित, मान-रहित, निरभिमानी । "बिमानी कृत राजहंस"—[रामा०] ।

बिमोहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विमोहन] लुभाना, मोहना, मोहित करना । (क्रि० अ०, दे०) मोहित होना, लुभाना । "को सोवै को जागै अस हौं गयेउँ बिमोह"—[पद्मा०] ।

बिय*†(वि०, दे०) [सं० द्वि] दो, युग्म, दूसरा । *†(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बीज] बीज, बिया बीजा (ग्रा०) ।

बियत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वियत्] आकाश, नभ, व्योम, गगन ।

बिया†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बीज] बीज, [बीजा (दे०)] । "बोवै बिया बबूर का, आम कहाँ तें होय"—[वृं०] ।

बियाज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्याज] बहाना, सूद, मिस, ब्याज ।

बियाड़—(संज्ञा, पु०) धान के वह खेत जो बीज रोपने के लिए बोये जाते हैं ।

बियाधा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्याधा] व्याधा, बहेलिया, शिकारी, बियाध ।

बियाधि, बियाध, बियाधा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० व्याधि] व्याधि, रोग, कष्ट, बियाधी (ग्रा०) । "ज्यों बिन औखधि बढ़ै बियाधि"—[आल्हा०] ।

बियान†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ब्यान] ब्यान, ब्याना, उत्पन्न करना । "न तरु बाँझ भलि बादि बियानी"—[रामा०] ।

बियाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ब्याना] जनना, बच्चा पैदा करना ।

बियापना*†—(क्रि० स०, दे०) व्यापना (हि०) व्याप्त होना ।

बियाबान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जंगल, उजाड़ स्थान, मरुस्थल ।

बियारी, बियालू*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ब्यालू (हि०), रात का भोजन, बिआरी (ग्रा०) ।

बियाल—(संज्ञा, पु०, दे०) साँप, शेर ।

बियाह*†—(संज्ञा, पु०, दे०) विवाह (सं०), बिआह, ब्याह । [**बियाहा, बियाही** (वि०, स्त्री०)] ।

बियाहता‡—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० विवाहिता] जिसके साथ विवाह हुआ हो ।

बियोग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वियोग] बिछोह । [**बियोगी, बियोगिनी** (वि०, स्त्री०)] । "तो प्रभु कठिन बियोग-दुःख"—[रामा०] ।

बिरंग—(वि०, हि०) कई रंग का, बेरंग का ।

बिरकत—(वि०, दे०) [सं० विरक्त] विरक्त, योगी, सन्यासी । "बैरागी बिरकत भला, गेही चित्त उदार"—कबी० ।

बिरख, बिरिख—(संज्ञा, पु०, दे०) वृष (सं०) ।

बिरखभ—(संज्ञा, पु०, दे०) बैल, वृषभ (सं०) ।

बिरचना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विरचन] रचना, सजाना, बनाना । (क्रि० अ०, दे०) मन उचटना ।

बिरचुन, बेरचुन—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० बदरचूर्ण] बेर का चूर्ण ।

बिरछ, बिरछा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) वृक्ष (सं०), पेड़, बिरिछ (ग्रा०) ।

बिरछिक*†—(संज्ञा, पु०, दे०) वृश्चिक (सं०) बिच्छू, बीछी, बीछू, वृश्चिक राशि ।

बिरझना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विरुद्ध] झगड़ना, उलझना। बिरझाना—मचलना, आग्रह करना, बिरुझाना, बिरुझना (ग्रा०)।

बिरतंत*†—(संज्ञा, पु०, दे०) वृत्तांत (सं०)। हाल, वर्णन, बिरतांत।

बिरत—(वि०, दे०) विरत, (सं०) वृत, वैरागी, विरक्त। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बिरति, विरति (सं०)।

बिरताना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० वितरण] बाँटना, बरताना (ग्रा०)।

बिरथा†—(वि०, दे०) व्यर्थ (सं०) वृथा।

बिरद†—(संज्ञा, पु०, दे०) विरद (सं०) बड़ाई, नाम, यश। "बाँधे बिरद बीर रन गाढ़े"—[रामा०]।

बिरदैत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० विरद+ऐत प्रत्य०] अति विख्यात, शूरवीर, योद्धा। (वि०) प्रसिद्ध, विख्यात। [बिरुदैत (ब्र०)]।

बिरध—(वि०, दे०) [सं० वृद्ध] वृद्ध, बूढ़ा। [**बिरधापन (संज्ञा, पु०)**]। "बिरध भयेउँ अब कहहि रिछेसा"—[रामा०]।

बिरधाई—(संज्ञा, स्त्री०) बुढ़ापा।

बिरमना, बिलमना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विलंबन] सुस्ताना, विश्राम या आराम करना, मोहित हो फँस रहना, ठहरना, रुकना। [**बिरमाना, बिरमावना** (स० रूप)], [**बिरमवाना** (प्रे० रूप)]। "माधव बिरमि बिदेस रहे"—सूर०।

बिरल, बिरला—(वि०, दे०) [सं० विरल] अलग, जुदा, कोई एक, इक्का-दुक्का। "बिरला राम भगत कोउ होई"—[रामा०]।

बिरव, बिरवा, बेरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृक्ष] पेड़, वृक्ष, चने का फला हुआ पौधा, होरहा, बूट (प्रान्ती०)। "रोपै बिरवा आक को, आम कहाँ ते खाय"—वृं०।

बिरवाई—(संज्ञा, स्त्री०) छोटे पौधों का समूह।

बिरसता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विरसता] झगड़ा, मनमुटाव, नीरसता।

बिरस—(वि०) रसरहित, नीरस।

बिरसना—(क्रि० अ०, दे०) रहना, ठहरना, टिकना, विरस या उदास होना।

बिरह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विरह] वियोग, बिछोह, जुदाई, अहीरों का एक राग या गीत। "बिरह बिथा जल परस बिन, बसियत मो हिय लाल"—वि०।

बिरहा—(संज्ञा, पु०) अहीरों द्वारा गाया जाने वाला लोकगीत।

बिरहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विरह] विरह पीड़ित होना। "राधा बिरह देखि बिरहानी"—सूबे०।

बिरहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विरहिनी] वियोगिनी, बिछोहिनी, बिरहिनी (ब्र०)।

बिरहाना—(क्रि० अ०) वियोग-कष्ट अनुभव करना।

बिरहिया—(वि०, दे०) [सं० विरहिन्] वियोगी। [**वियोगिनी** (वि०, स्त्री०)]।

बिरही—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विरहिन्] वियोगी, बिछोही।

बिराग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विराग] विरक्ति, उदासीनता। [**बिरागी** (वि०)]।

बिरागना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विराग] विरक्त होना। "लखि गति ग्यान बिराग बिरागी" —[रामा०]।

बिराजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विराजन] बैठना, शोभित होना।

बिरादर—(संज्ञा, पु०, फा०) भाई, भ्राता, बंधु-बांधव। [**भाई-बिरादर** (यौ०)]।

बिरादरी—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) भाई-चारा, एक जाति के लोग, जाति।

बिरान, बिराना*—(वि०, दे०) [फा० बेगाना] दूसर, गैर, पराया, अन्य, अपर।

बिराना, बिरावना—(क्रि० स०, दे०) चिढ़ाना, मुँह बनाना।

बिराम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विराम] विश्राम, देरी, वाक्य की समाप्ति-सूचक चिन्ह।

बिरिख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) वृष (सं०), बैल, दूसरी राशि [ज्यो०] (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृक्ष] वृक्ष, पेड़।

बिरिछ*—(संज्ञा, पु०, दे०) वृक्ष (सं०)।

बिरिध—(वि०, दे०) [सं० वृद्ध] बूढ़ा, "जानेसि बिरिध जटाऊ एहा"—[रामा०]।

बिरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वेला] समय, वक्त, मौका, बेरा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वार] बार, दफा। "पुनि आउब इहि बिरियाँ काली"—[रामा०]।

बिरी, बीरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बीड़ी] पान का बीड़ा, पत्ते में लिपटी तमाखू या बीड़ी। "खरे अरे प्रिय के प्रिया, लगी बिरी मुँह देन"—(वि०)। "खाये पान-बीरी सी बिलोचन बिराजै आज"—पद्मा०।

बिरुझना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विरुद्ध] झगड़ना, मचलना। "लागी भूख चंद में खैहों देहुदेहु रिस करि बिरुझावत"—सूबे०। [**बिरुझना** (स० रूप)], [**बिरुझवाना** (प्रे० रूप)]।

बिरुद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विरद] प्रशंसा, यश-कीर्तन। "बिरुद, बड़ाई पाय गुननि बिनु बड़े न हूजै"—मन्ना०।

बिरुदैत—(वि०, दे०) [हि० बिरद+ऐत प्रत्य०] विख्यात, प्रसिद्ध। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० विरदैत] प्रतिज्ञावाला, नामी वीर। "बिरुझे बिरुदैत जो खेत अरे, न टरे हठि बैर बढ़ावन के"—[कविता०]।

बिरुधाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वृद्धता] बुढ़ापा, बुढ़ाई, बिरधापन।

बिरूप—(वि०, दे०) [सं० विरूप] कुरूप, बदला रूप, बिलकुल भिन्न। [**बिरूपता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

बिरोग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वियोग] बियोग, बिछोह, बिरह।

बिरोगिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वियोगिनी] बिरहिनी, वियोगिनी।

बिरोजा—(संज्ञा, पु०, दे०) चीड़ के पेड़ का गोंद, गंधाबिरोजा।

बिरोधना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विरोध] बैर या विरोध करना, द्वेष करना। "नवहि बिरोधे नहिं कल्याना"—[रामा०]।

बिलंद—(वि०, दे०) [फ़ा० बुलंद] ऊंचा, कड़ा, बिफलीभूत (व्यंग्य)।

बिलंबना†*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विलंब] देर करना, रुकना, ठहरना, बिलमना।

बिल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बिल] वन के जंतुओं का खोद कर बनाया हुआ गढ़ सा रहने का स्थान, मांद, बिवर, छेद, गुफा—**में घुसना**—छिपकर घर मे बैठ रहना। (अं०) विधेयक, कानूनी-मसविदा, पुरजा। हिसाब का लेखा।

बिलकुल—(क्रि० वि०, अ०) सम्पूर्ण, समस्त, सब का सब, पूरा पूरा, सारा, सब, निपट, निरा, आदि से अन्त तक।

बिलखना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विकल] फूट-फूट कर जोर से रोना, बिलाप करना, दुखी होना, संकुचित होना, बिलगना। [**बिलखाना**, **बिलखावना**] (स० रूप)]।

बिलग—(वि०) [हि० वि+लगना प्रत्य०] पृथक्, अलग। (संज्ञा, पु०, हि०) पार्थक्य, द्वेष, बुरा भाव, दुख, रंज। **मुहा०**—**मानना**—बुरा या माख मानना। "तजिहौ जौ हरखि तौ बिलग न मानै कहूँ"—अमी०

बिलगाना—(क्रि० अ०, दे०, हि०) पृथक् या अलग होना, दूर होना। (क्रि० स०, दे०) पृथक् या अलग करना, दूर करना, चुनना, छाँटना। "सो बिलगाय बिहाय समाजा"—[रामा०]।

बिलच्छन—(वि०, दे०) अनोखा, अपूर्व, अद्भुत, विलक्षण (सं०)।

बिलछनाꕥ—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लक्ष्य] ताड़ना, लक्ष्य करना।

बिलटी, बिल्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० बिलेट] रेल से माल भेजने की रसीद।

बिलनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बिल] काली पतली भौंरी जो दीवारों पर बाँबी बनाती है। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) आँख की पलक पर छोटी फुन्सी, गुहाँजनी (प्रान्ती०)।

बिलपना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विलाप] रोना, चिल्लाना, रोना-पीटना, विलाप करना। [**बिलपाना**—(स० रूप)], [**बिलपवाना**—(प्रे० रूप)] "यहि बिधि बिलपत भा भिनसारा"—[रामा०]।

बिलफेल—(क्रि० वि०, अ०) इस वक्त, इस समय।

बिलबिलाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) छोटे छोटे कीड़ों का इधर-उधर रेंगना, व्याकुल होकर बकना, रोना, चिल्लाना, घबराना।

बिलम-बेलम*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विलंब] देरी, विलंब, देर, बेर।

बिलमना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विलंब] देर या विलंब करना, ठहर जाना, रुक रहना, बिरमना [**बिलमाना** (स० रूप)], [**बिलमावना** (प्रे० रूप)] "बालम बिलमि बिदेस रहे।"

बिललाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वि०+लाप] बिलखना, रोना, चिल्लाना, रोना-पीटना। "बिललात परे एक कटे गात"—सुजा०।

बिलल्ला—(वि०) व्यर्थ के कार्यों मे समय नष्ट करने वाला, बेसहूर।

बिलवाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विलय] खोना, हेरवा देना, छिपाना, छिपवाना, नष्ट या बरबाद करना या कराना, लुप्त करना।

बिलसना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विलसन] शोभित होना, अच्छा लगना। (क्रि० स० दे०) बरतना, भोगना, उपभोग करना। [**बिलसाना** (स० रूप)], [**बिलसवाना** (प्रे० रूप)] "नित्त कमावै कष्ट करि, बिलसै औरहि कोय"—वृं०।

बिलहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बेल] पान रखने का बाँस की पतली तीलियों का संपुटाकार छोटा डब्बा, बेलहरा।

बिला—(अव्य०, अ०) बिना, बगैर।—**वजह**-(अ०) बिना कारण, अकारण।—**नागा**-(अ०) प्रतिदिन, रोज।—**शर्त**-(अ०) बिना किसी शर्त के।

बिलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बिल्ली] बिल्ली, बिलारी, कुयें का काँटा, किवाड़ की सिटकिनी, कद्दूकस।

बिलाईकंद, बिदारीकंद—(संज्ञा, पु०, दे०) एक जड़ (औष०)।

बिलाना—(क्रि० अ०, दे०,) [सं० विलयन] नाश या नष्ट होना, लोप या अदृश्य होना, मिट जाना [**बिलावना** (स० रूप)], [**बिलवाना** (प्रे० रूप)] "रावन से बली तेऊ बुल्ला से बिलायगे"—बेनी०।

बिलापना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विलाप रोना। **बिलपना**—विलाप करना।

बिलायत-बिलाइत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० बिलायत] अन्य देश, [**बिलायती** (वि०)]।

बिलार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विडाल] बिल्ली [**बिलारी** (स्त्री०)]।

बिलारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विडाल] बिल्ली।

बिलारीकंद—(संज्ञा, पु०, दे०) बिदारीकंद (सं०) बिलाईकंद।

बिलावल—(संज्ञा, पु०, दे०) एक राग विशेष। (स्त्री०)। पत्नी, स्त्री। (संगी०)।

बिलासना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विलसन] बिलसना, भोगना, उपभोग करना, बरतना।

बिलासिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विलासिन्] भोग करने वाली वेश्या।

बिलासी—(वि०) [सं० विलासिन्] भोगी।

बिलैया‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विडाल] बिल्ली। "छुटि जाय गैया कै बिलैया चाटि चाटि जाय"—ग्वा०।

बिलोकना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विलोकन] देखना, परीक्षा या जाँच करना। "राम बिलोके लोग सब, चित्र लिखे से देखि"—[रामा०]।

बिलोकनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विलोकन] कटाक्ष, दृष्टिपात, चितवनि। "बक बिलोकनि बानि"—वि०। "उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका" —[रामा०]।

बिलोचन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विलोचन] नेत्र, आँख। "बरबश रोकि बिलोचन वारी"—[रामा०]।

बिलोड़ना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विलोडन] दही मथना, अस्त-व्यस्त करना। [**बिलोड़न** (संज्ञा, पु०)] [**बिलोड़नीय, बिलोड़ित** (वि०)]।

बिलोन—(वि०, दे०) [सं० वि०+लवण] लवण-विना, नीरस, निस्वाद, विरस, कुरूप।

बिलोना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विलोडन] दूध या दही मथना, बिगाड़ना, गिराना, ढालना, अस्त-व्यस्त करना।

बिलोरना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० बिलोड़ना] बिलोड़ना, मथना, छिन्न-भिन्न करना।

बिलोल—(वि०) चचल, सुन्दर।

बिलोलना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० विलोलन] हिलना, डोलना। **बिलोल**-(वि०) चंचल।

बिलोवना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० विलोडन] बिलोना, मथना। "तुलसी मदोवै रोय-रोय के बिलोवै आँसू"—कवि०।

बिलौरा—(संज्ञा, पु०) बिल्ली का बच्चा।

बिल—(अ०, अ०) साथ, से, लिए, द्वारा।—**मुक्ता**—(वि०, अ०) जो घट बढ़ न सके। (संज्ञा, पु०) सार्वकालिक कर या लगान।

बिल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विडाल] बिलार, मार्जार, नर बिल्ली। (संज्ञा, पु०) [सं० पटल, हिं० पल्ला, बल्ला] एक प्रकार की चपरास, बैज (अं०)।

बिलखाना—(क्रि० अ०) चीत्कार करना, विलाप करना।

बिल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विडाल, हि० बिलार] सिंहादि की जाति का एक छोटा मांसाहारी जंतु, बिलारी, सिटकिनी, कद्दूकश। [बिलैया (दे०)]। **मुहा०—का रास्ता काटना**-बिल्ली का रास्ते से गुजरना जो अशुभ या असगुन समझा जाता है।

बिल्लौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैदूर्य्य मि० फ़ा० बिल्लूर] स्फटिक, एक प्रकार का साफ सफेद पारदर्शक पत्थर, अति स्वच्छ शीशा।

बिल्लौरी—(वि०) [हि० बिल्लौर] बिल्लौर का।

बिल्हण—(संज्ञा, पु०, सं०) विक्रमांकदेवरचित नामक कृति के एक प्रसिद्ध प्राचीन कवि।

बिवरा—(संज्ञा, पु०, दे०) ब्यौरा, वृत्तांत।

बिवराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बिवरना का स० रूप] बाल सुलझाना, सुलझवाना।

बिवाई, बेवाँई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विपादिका] पद-रोग विशेष। "देखि बिहाल बिवाइनि सों"—नरो०।

बिषया—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० विषय] विषय-भोगों की इच्छा। "जो विषया संतन तजी, मूढ़ ताहि लपटात"—रहीम०।

बिषान, बिखान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विषाण] सींग।

बिसंच*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विसंचय] भय, संचय का नाश, बे परवाही, बाधा, कार्य-हानि।

बिसंभर—*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विश्वंभर] परमेश्वर, भगवान। *†(वि०, दे०) [हि० बिसंभार] बेसँभार, संभार रहित, असावधान, अचेत, बेखबर, अव्यवस्थित।

बिसंभार†—(वि०, दे०, हि०) बेहोश, अचेत, असावधान।

बिस, बिष—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विष] जहर, गरल। "बिषरस भरा कनक-घट जैसे"—[रामा०]।

बिसखपरा, बिसखापड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विषखर्पर] एक विषैला गोह की जाति का जंतु, एक जंगली बूटी।

बिसतरना, बिसतारना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विस्तरण] फैलना, फैलाना, बढ़ना, बढ़ाना, विस्तार करना।

बिसद*—(वि०, दे०) [सं० विशद] स्वच्छ, साफ, सफेद, बड़ा, विस्तृत। "सब मंचन तें मंच इक, सुन्दर बिसद बिसाल"—[रामा०]।

बिसन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यसन] शौक, स्वभाव, टेंव, व्यसन, लत। "बिसन नींद अरु कलह में, मूरख रहत बिहाल"—नीति०।

बिसनी—(वि०, दे०) [सं० व्यसन] शौकीन, लती, जिसे कोई व्यसन हो।

बिसमउ, बिसमय†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विस्मय] दुख, विषाद, संदेह, आश्चर्य। "हरख समय बिसमय करसि, कारन मोहि सुनाव"—[रामा०]।

बिसमरना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विस्मरण] भूल जाना।

बिसमिल—(वि०, दे०) [फ़ा० बिस्मिल] घायल।

बिसमिल्ला—(क्रि० वाक्य) [अ० बिस्मिल्लाः] श्रीगणेश करना, आरम्भ करता हूं, भगवान के नाम से। **मुहा०—करना**-शुरू करना।

बिसयक*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विषय] सूबा, प्रदेश, रियासत। (वि०, दे०) विषयक, सम्बन्धी।

बिसरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विस्मरण] भूलना, भूल जाना। [**बिसराना, बिसरावना** (स० रूप)], [**बिसरवाना** (प्रे० रूप)]। "बिसरि गयां मम भोर सुभाऊ"—[रामा०]।

बिसरात†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेशरः] खच्चर।

बिसराना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विस्मरण] भूलना, भुलाना, बिसरावना।

बिसराम*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विश्राम] विश्राम, आराम। "निपट निकाम बिन राम बिसराम कहाँ"—पद्मा०।

बिसरावना†*—(क्रि० स०, दे०) [हि० बिसराना] भुलाना, भूलना।

बिसवास*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विश्वास] प्रतीति, भरोसा। "स्वास बस डोलत सो याको बिसवास कहा"—पद्मा०।

बिसवासिनि—(वि०, स्त्री०) विश्वास करने वाली।

बिसवासी—(वि०, दे०) [सं० विश्वासिन्] जिसका विश्वास हो, विश्वास करने वाला। [**अबिसवासी** (विलो०)] अविश्वासी, विश्वास-घाती।

बिसबिसाना—(क्रि० अ०, दे०) सड़ना, बजबजाना।

बिससना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विश्वसन] एतबार, प्रतीति या विश्वास करना। (क्रि० स०, दे०) [सं० विशसन] घात करना, काटना, मारना, बध करना।

बिसहना, बेसहना†*—(क्रि० स०, दे०) मोल लेना, बिसाहना, ख़रीदना, जान-बूझ कर अपने साथ लगाना।

बिसहर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विषधर] साँप, विष वाला। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विषहर] विष-नाशक।

बिसायँध बिसाँइध—(वि०, दे०) [सं० वसा=चरबी+गंध] जिसमें सड़ी मछली की सी दुर्गंध हो। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) सड़े माँस की सी दुर्गंधि।

बिसाख, बिसाखा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विशाखा] एक नक्षत्र।

बिसात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) वित्त, सामर्थ्य, समाई, औक़ात, स्थिति, हैसियत, जमा-पूँजी, चौपड़ या शतरंज के खेल का खानेदार वस्त्र।—**खाना**-(**पु०**) बिसाती की दुकान।

बिसाती—(संज्ञा, पु०, अ०) तरकी, चूड़ी, सुई, तागा, खिलौने आदि का बेचने वाला।

बिसाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वश] वश या बल चलना, काबू चलना, [बसाना (दे०)]। "तासों कहा बसाय।"† (क्रि० अ०, दे०) [हि० विस+ना प्रत्य०] विष का प्रभाव करना, बिसताना (ग्रा०)।

बिसारद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विशारद] पूर्ण ज्ञाता, विद्वान्, दक्ष, कुशल।

बिसारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विस्मरण] ध्यान न रखना, भुलाना, [बिसराना, बिसरावना (दे०)]। "सुधि रावरी बिसारे देत"—रत्ना०।

बिसारा*—(वि०, दे०) [सं० विषालु] विषैला, बिष-भरा, विषाक्त। [**बिसारी** (**स्त्री०**)]। (सा० भू०, क्रि० स०, दे०) [हि० बिसारना] भुलाया, भुला दिया। "पुनि प्रभु मोहिं बिसारेऊ"—[रामा०]।

बिसास*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विश्वास] विश्वास, प्रतीति, भरोसा, एतबार। "ताहि बिसासे होत दुख, बरनत गिरधर दास।"

बिसासिन, बिसासिनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अविश्वासिनी] जिस स्त्री का भरोसा या प्रतीति न हो।

बिसासी*—(वि०, दे०) [सं० अविश्वासी] जिस पुरुष का भरोसा या विश्वास न हो सके। [**बिसासिनि, बिसासिनी** (**स्त्री०**)]। "बोरिगो बिसासी आज लाज ही की नैय्या को"—पद्मा०। "कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन"—घना०।

बिसाहना, बेसाहना—(क्रि० स०, दे०, हि०) मोल लेना, ख़रीदना, जान-बूझ कर अपने पीछे लगाना। (संज्ञा, पु०, दे०) सौदा, मोल ली हुई वस्तु, ख़रीद, मोल लेने की क्रिया। "आनेउ मोल बिसाहि कि मोहीं"—[रामा०]।

बिसाहनी—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) सौदा, मोल की वस्तु।

बिसाहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बिसाहना] माल ली वस्तु, सौदा-पाती, बिसाहनी।

बिसिख*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विशिख] बाण, शर, तीर। "बिसिख-निकर निसिचर मुख भरेऊ"—[रामा०]। [**बिसिखासन** (**यौ०**)] धनुष।

बिसिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमल-दल, कमल।

बिसियर*—(वि०, दे०) विषधर (सं०), बिषैला, बिसहा।

बिसूरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विसूरण=शोक] मन मे दुख मानना, शोक या खेद करना, स्मरण करना। (संज्ञा, स्त्री०) सोच, चिन्ता। "जानि कठिन सिव-चाप बिसूरति"—[रामा०]।

बिसेखना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विशेष] विशेष रूप से ब्यौरेवार बयान करना, निश्चय या निर्णय करना, विशेष रूप से जान पड़ना।

बिसेन—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षत्रियों की एक जाति।

बिसेस*—(वि०, दे०) [सं० विशेष] अधिक, ज्यादा, बढ़कर, भेद, अंतर, दोष (ग्रा०)। "अश्व लिये जुग दाम दिये नहिं एको बिबेक बिसेस लखाई"—जिया०।

बिसेसर*‡—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० विश्वेश्वर] जगदीश्वर, महादेव जी।

बिस्तर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [सं० विस्तर] बिछौना, बिछावन, बिस्तार, बढ़ाव, बिसतर (सं०)।

बिस्तरना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विस्तरण] फैलाना, चारों ओर बढ़ना । [**बिस्तरन** (संज्ञा, पु०, दे०] । (क्रि० स०, दे०) बढ़ाना, फैलाना, बढ़ाकर कहना ।

बिस्तार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विस्तर] फैलाव, बढ़ाव । [**बिस्तारित** (वि०)] ।

बिस्तारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विस्तरण] फैलाना, विस्तार करना । [**बिस्तारन** (संज्ञा, पु०)] । "कूप भेक जानै कहा, सागर को बिस्तार"—[नीति] ।

बिस्तुइया, बिसतोइया†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० विष+तूना—चूना] गृह-गोधा, छिपकली ।

बिस्वा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बीसवाँ] एक बीघे का बीसवाँ भाग, कान्यकुब्जों की जाति, मर्यादा-सूचक एक शब्द, बिसा (ग्रा०) । **मुहा०**—**बीस बिस्वा**-ठीक ठीक निश्चय, निस्संदेह, बिसौ बिसे (ग्रा० अ०), (**संज्ञा, स्त्री०**, दे०) वेश्या (सं०) "बिस्वा, बंदर, अगिन, जल, कूटी, कटक कलार ।"

बिस्वास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विश्वास] प्रीति, एतबार, भरोसा, बिसास (ग्रा०) । [**बिस्वासी** (वि०)] ।

बिहंग, बिहंगम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विहंग] पक्षी, चिड़िया । "पंखहीन जिमि दुखी बिहंगा"—[राम०] ।

बिहंडना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विघटन, प्रा० विहंडन] तोड़ना, नष्ट करना, टुकड़े-टुकड़े करना, मार डालना ।

बिहँसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विहसन] मुसकुराना, हँसना ।

बिहँसाना—(क्रि० स०) [हि० बिहँसना] हर्षित या प्रफुल्लित कराना, हँसाना ।

बिहँसौंहा—(वि०, दे०) [हि० बिहसना] हँसता हुआ ।

बिहग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विहग] पक्षी । "ससय बिहग उड़ावन हारी"—[राम०] ।

बिहतरी—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) भलाई, अच्छाई, कल्याण, बेहतरी ।

बिहद, बिहद्द*—(वि०, दे०) [फा० बेहद] असीम, अपार, अधिक, बेहद (दे०) ।

बिहबल*—(वि०, दे०) [सं० विह्वल) व्याकुल बेचैन, विकल ।

बिहरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विहरण] भ्रमण या यात्रा करना, घूमना, फिरना, सैर करना । [**बिहरन (संज्ञा, पु०**, दे०)] । †* (क्रि० स०, दे०) [सं० विघटन] विदीर्ण होना, फटना, फूटना, टूटना । "नव रसालबन बिहरनसीला ।" "बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती"—[राम०] ।

बिहराना†ꕥ—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विहरण] फटना ।

बिहरी—(संज्ञा, स्त्री०) चंदा ।

बिहाग—(संज्ञा, पु०, दे०) एक राग (संगी०) ।

बिहान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विभात] सबेरा, कल, अग्रिम दिन, भोर, प्रातःकाल, भिहान (ग्रा०) । **लो०**—"जहाँ न कुक्कुट-शब्द का, तहाँ न होत बिहान ।"

बिहाना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० वि०+हा—त्याग] त्यागना, छोड़ना । [**बिहाय, बिहाइ** (पू० का० रूप)] । "भजिय राम सब काम बिहाई" —[रामा०] । (क्रि० अ०, दे०) बीतना, व्यतीत होना, गुजरना । "निमिष बिहात कल्प सम तेही" —[रामा०] ।

बिहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विहार] आनंद, सैर, क्रीड़ा, केलि । उत्तर प्रदेश के पूर्व में स्थित भारतवर्ष का राज्य ।

बिहारना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विहरण] विहार, केलि या खेल करना, क्रीड़ा, करना ।

बिहाल—(वि०, दे०) [फा० बेहाल] बेचैन, व्याकुल, विकल । **हाल,—(यौ०)** (हाल बेहाल) । "देखि बिहाल बिवाइन सों"—नरो० ।

बिहि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विधि] ब्रह्मा ।

बिहिश्त—(संज्ञा, पु०, फा०) बैकुंठ, स्वर्ग ।

बिही—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) अमरूद, बीही, अमरूद से फलों वाला एक वृक्ष । (अव्य० ग्रा० प्रान्ती०) बिही के पेड़ के फलों के दाने, गाय के हाँकने का शब्द ।—**दाना**–(पु० फा०) औषधि ।

बिहीन, बिहीना-बिहून—(वि०, दे०) [सं० विहीन] बिना, रहित, बगैर । "थल-बिहीन तरु कबहु कि जामा"—[रामा०] ।

बिहोरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बिहरना] अलग होना, बिछुड़ना, लौटाना, फेरना, बहोरना (ग्रा०) ।

बींड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बींड़ो+आ प्रत्य०] टहनियों या पतली लकड़ियों का पूला या

लंबा नाल जो कुआँ खोदते समय कुएँ मे भगाड़ गिरने को लगाया जाता है, घास को बट कर बनाई हुई गेंडुरी, बाँस आदि का बोझ।

बींधना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विद्ध] फँसना। (क्रि० स०, दे०) फँसाना, छेदना, बेधना विद्ध करना, बिधना।

बी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फा० बीबी] बीबी, स्त्री, पत्नी, कुलवधू, (प्रान्ती०] बहिन, लड़की। "पूछा जो उनसे बी कहो परदा कहाँ गया"—अक०।

बीका†—(वि०, दे०) [सं० वक्र) टेढ़ा, बाँका। "बार न बाँका करि सकै"—कबी०।

बीख†ꕥ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बीखा] डग, कदम। [फ़ा० बीख] जड़।

बीग†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृक] भेड़िया, बिगवा (ग्रा०)। [**बिगिन** (स्त्री०)]।

बीगना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० विकीरण] छितराना, बिखेरना, गिराना, छाँटना, फेंकना, फैलाना।

बीघा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विग्रह] खेत को २० बिस्वे की नाप का एक परिमाण (३०२५ वर्ग गज़)।

बीच†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विच=अलग करना] किसी पदार्थ का मध्य भाग, मध्य भेद, अन्तर, बिलगाव।—**बचाव**-(यौ०) झगड़े का निपटारा।—**खेत**-खुले मैदान, सब के संमुख। अवश्यमेव, थोड़े थोड़े अंतर पर।—(**चों**) **बीच**-(क्रि० वि०) ठीक मध्य में, बिलकुल बीच मे।—**मुहा०**—**करना**-झगड़ा निपटाना या मिटाना, लड़ने वालों को अलग अलग करना, झगड़े तय करना।—**बीच में**-थोड़ी देर में।—**में पड़ना**-झगड़ा तय करने को मध्यस्थ होना या पंच बनना, प्रतिभू होना, जिम्मेदार बनना।—**पड़ना**-अंतर आना। "परै न प्रकृतिहिं बीच"—तु०।—**पारना या डालना**-पार्थक्य या अलगाव करना, भेद डालना, परिवर्तन करना।—**रखना**-भेद या दुराव रखना, गैर समझना।—**में कूदना**-वृथा हस्तक्षेप करना, व्यर्थ टाँग अड़ाना। (**ईश्वर आदि को**)—**में रख के कहना**—(ईश्वरादि की) शपथ या कसम खाना। अवकाश, अवसर, बीच का, अन्तर, मौका। "बीच पाय तिन काज सँवार्यो।" (क्रि०, वि०, दे०) अंदर, भीतर, में। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बीचि] लहर, तरंग। "बारि, बीचि जिमि गावे बेदा"—[रामा०]।

बीचु*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बीच] भेद, अतर, दूरी, अवसर, मौका।

बीछना*†—(क्रि०, स०, दे०) [सं० विचयन] चुनना, छाँटना, बाछना (ग्रा०)।

बीछी*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वृश्चिक] बिच्छू, बिच्छी (ग्रा०)। "ग्रह-गृहीत पुनि बात बस, तापै बीछी मार"—[रामा०] "छुवत चढी जनु सब तन बीछी"—[रामा०]।

बीछू*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृश्चिक] बिच्छू, बिच्छू, बीछी।

बीज—(संज्ञा, पु०, सं०) फूल वाले पेड़ों का गर्भांड जिससे पेड़ निकलता है, दाना, बिया (ग्रा०), तुख़्म (फ़ा०) मूल, जड़, प्रकृति, प्रमुख कारण, हेतु, कारण, वीर्य, शुक्र, अव्यक्त संकेत वर्ण या शब्द, अव्यक्त संख्या-सूचक चिह्न। जैसे-बीजगणित। किसी देवता के प्रसन्न करने की शक्ति वाली अव्यक्त ध्वनि या शब्द (तंत्र) [**बीजमंत्र** (यौ०)]। * (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विद्युत] बिजली, दामिनी। —**कोश, कोष**—(पु०) फूल का वह हिस्सा जिसमे बीज रहता है।—**गणित**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह गणित विद्या जिसमे अज्ञात राशियों के वर्णों को संख्या सूचक मान कर उनके द्वारा नियत नियमों से राशियों को निकालते हैं।—**दर्शक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नाटक के अभिनय की व्यवस्था करने वाला।—**पूर,—पूरक**-(संज्ञा, पु०, सं०) चकोतरा, बिजौरा नीबू।—**बंद**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० बीज+बाँधना] बरियारी के बीज, खिरैटी के बीज, बला (प्रान्ती०)।—**मंत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी देवता के प्रसन्न करने की शक्ति वाला मूलमंत्र, गुर, तत्व सारांश।

बीजक—(संज्ञा, पु०, सं०) सूची, तालिका, फेहरिश्त, माल के दर, मूल्यादि ब्योरे की सूची, गड़े धन की सूची, कबीर की रचना की तीन संग्रहों मे से एक।

बीजत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) बीच का भाव।

बीजन, बीजना*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यंजन] पंखा, बेना, बिनवाँ, बिजना (ग्रा०)।

बीजरी-बीजु-बीजुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विद्युत्] बिजली, दामिनी।

बीजांकुर—(संज्ञा, पु०, सं०) अंकुर।—**न्याय**–(पु०) बीज से अंकुर, अंकुर से बीज की उत्पत्ति का चलने वाला निरन्तर प्रवाह।

बीजा—(वि०, दे०) [सं० द्वितीय] दूसरा। (संज्ञा, पु०. दे०) [सं० बीज] बिया, दाना बीया, बीज।

बीजाक्षर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बीज मंत्र का प्रथम वर्ण।

बीजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बीज+ई प्रत्य०] मींगी, गिरी, गुठली।

बीजु—(संज्ञा, स्त्री०) बिजली।—**पात**–(पु०) वज्र-पात।

बीजुरी—(संज्ञा, स्त्री०) बिजली।

बीजू—(वि०, दे०) [सं० बीज+ऊ हि० प्रत्य०] जो बीज से उत्पन्न हो, पेड़ आदि। [**कलमी** (विलो०)] (संज्ञा, पु०, दे०) बिज्जु (हि०) बिजली।

बीज्य—(वि०, सं०) बीज से उत्पन्न, अच्छे कुल का, कुलीन।

बीझ-बीझा*†—(वि०, दे०) [सं० विजन] निर्जन, एकांत, शून्य। "दंडकारन बीझ बन जहाँ"—पद्मा०।

बीझना—*†—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० विद्ध] फँसना, लिप्त होना।

बीट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विट] चिड़ियों का मल या मैला, विष्ठा।

बीड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) (हि० बीड़ा] ऊपर-नीचे रखे हुये रुपये जो गुल्ली के समान दीखते है।

बीड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बीटक] पान की गिलौरी लगा या मसाला सहित लपेटा पान, [बीरा (दे०)] **मुहा०—उठाना (लेना)**–किसी कार्य के करने का संकल्प करना या भार लेना, उद्यत या तैयार होना।—**डालना**–किसी कार्य के करने के हेतु लोगों से कहना।

बीड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बीड़ा] बीड़ा, छोटा बीड़ा, गड्डी, स्त्रियों के दाँतों में लगाने की मिस्सी, पत्ते मे लिपटी तमाखू जिसे लोग सिगरेट या चुरुट के समान सुलगा कर पीते हैं।

बीणा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वीणा] सितार सा एक बाजा, [बीना (दे०)]।

बीतना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० व्यतीत] समय व्यतीत या विगत होना, गुजरना, घटना, दूर होना, पड़ना, संघटित होना, चला जाना।

बीता—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० बालिश्त] एक गज का चौथाई भाग, वालिश्त, बित्ता, बिलस्ता (ग्रा०)। "बन बन खोजत फिरे बधु सग, कियो सिंधु बीता को"—[भ्र० गा०]। (वि०) व्यतीत हुआ, गुजरा। "सो छन कपिहिं कल्प मम बीता"—[रामा०]।

बीथि, बीथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वीथी] सड़क, गली, मार्ग, रास्ता। "बीथी सब असवारन भरीं"—[रामा०]।

बीथित*†—(वि०, दे०) [सं० व्यथित] पीड़ित, दुखी, व्यथित।

बींधना*†—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० विद्ध] फसना। (क्रि०, स०, दे०) छेदना, बेधना। "मनहु कमल संपुट महँ बींधे, उड़ि न सकत चंचल अलि बारे"—सूर०।

बीन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वीणा] बीणा, बीना (दे०), सितार की तरह का एक बाजा। "बाजत बीन, मृदंग, झांझ, डफ मंजीरा, सहनाई"—[स्फु०] "बीन क्यों फिर बज उठी जब जग रहा था सो।"—वि० कु० शु०।

बीनना†—(क्रि०, स०, दे०) [सं० विनयन] चुनना, उठाना, छाँटना, छोटी चीजें अलग करना। (क्रि० स०, दे०) बींधना। (क्रि०, स०, दे०) बुनना।

बीपै—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बृहस्पति] गुरुवार, बृहस्पति, बिफ्फै (ग्रा०)।

बीबी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कुलीन स्त्री, या कुल-वधू, पत्नी, बहू, कन्या, बहिन छोटी ननद।

बीभत्स—(वि०, सं०) घृणित, पापी, दुष्ट। (संज्ञा, पु०, सं०) काव्य के नौ रसों मे से ७ वॉ रस जिसमे मांस, मज्जादि घृणित वस्तुओं का वर्णन हो (काव्य)। "बीभत्साद्भुत विज्ञेय, शांतश्च नवमो रसः।"

बीभत्सा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घृणा।

बीभित्सित—(वि०, सं०) घृणित, निन्दित।

बीमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० बीम—भय] आर्थिक हानि की जिम्मेदारी जो कुछ नियत धन लेकर बदले में की जाये, वह पारसल या पत्रादि जिसकी यों जिम्मेदारी ली गई हो। [इन्श्योरेन्स]।

बीमार—(वि०, फ़ा०) रोगी, जिसे कोई रोग हो।

बीमारी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) व्याधि, रोग, मर्ज़, बखेड़ा, बुरा स्वभाव, झंझट (व्यंग्य०)।

बीय, बीया*†—(वि०, दे०) [सं० बीज] [बीया (दे०)] बीज, दाना।

बीया*—(वि०, दे०) [सं० द्वितीय] दूसरा, द्वितीय। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बीज] दाना, बीज, बिया, बीजा।

बीर—(वि०, दे०) [सं० वीर] बहादुर, शूर। [**बीरता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "बीर वृती तुम धीर अछोभा" —[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वीर] भ्राता, भाई। "बीते अवधि जाउँ जौं, जियत न पाऊँ बीर"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वीर] सखी, सहेली, संगिनी। "फिरति कहाँ है बीर बावरी भई सी, तोहीं कौतुक दिखाऊँ चलि परे कुंज द्वारीके"—हठो०। "ऐरी मेरी बीर जैसे तैसे इन आँखिन सों, कढि गो अबीर पै अहीर तौ कढै नहीं"—पद्मा०। कलाई और कान का एक गहना, तरना, बीरी, चरागाह।

बीरउ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बिरवा] पेड़।

बीरज*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० वीर्य्य] बल, पुंसत्व, पराक्रम, बीज, बिया।

बीरता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वीरता] बहादुरी, शूरता। "कीरति बिजय बीरता भारी"—[रामा०]।

बीरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० वीर] भाई, राजा बीरबल, वीर।

बीरबहूटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वीर वधूटी] इन्द्रवधू, लाल बरसाती छोटा एक कीड़ा।

बीरा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बीड़ा] देव-प्रसाद के रूप में दिया गया फल फूल, पान का बीड़ा। (वि०, दे०) वीर।

बीरासन—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० वीरासन] वीरों के बैठने का ढंग या आसन "जागन लगे बैठि बीरासन"—[रामा०]।

बीरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बीड़ा] पान का बीड़ा, कान का एक गहना, तराना (प्रान्ती०)। "खाये पान-बीरी सी"—पद्मा०।

बीरो, बीरौ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बिरवा] पेड़, वृक्ष, बिरवा, रूख (ग्रा०)।

बीस—(वि०, दे०) [सं० विंशति] जो गिनती में उन्नीस से एक अधिक हो। (संज्ञा, पु०, दे०) बीस का अङ्क या संख्या, २०। मुहा०—**बिस्वे** [**बीसौ बिसे**]—निश्चय, ठीक, संभवतः। श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा।

बीसा—(संज्ञा, पु०, दे०) बीस नाखून वाला कुत्ता, बीसहा (ग्रा०), वैश्यों की एक जाति।

बीसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बीस] बीस पदार्थों का समूह, कोड़ी, अन्न नापने की नाप, साठ संवत्सरों का एक तिहाई भाग (ज्यो०)। "बीसी बिस्वनाथ की सनीचरी है मौन की"—कवि०।

बीह*—(वि०, दे०) [सं० विंशति] बीस। "साँचहुँ मैं लबार भुजबीहा"—[रामा०]।

बीहड़—(वि०, दे०) [सं० विकट] ऊँचा-नीचा, जंगल, ऊबड़-खाबड़, विकट, विषम।

बुंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विंदु] बूँद, कतरा। "बुंद-अघात सहैं गिरि कैसे"—[रामा०]।

बुंदकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विंदु+की प्रत्य०] छोटी गोल बींदी, छोटा गोल धब्बा या दाग।—**दार**-(वि०) [हिं० बुंदी+दार फ़ा० प्रत्य०] जिस पर छोटी छोटी बिंदियाँ हों।

बुँदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विंदु] बुलाक जैसा कान का एक गहना, लोलक (प्रान्ती०) मस्तक पर की टिकुली।

बुँदिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बूँदी] छोटी बूँदें, एक मिष्ठान्न।

बुंदेलखंड—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० बुंदेला + खंड] बाँदा, जालौन, झाँसी का प्रदेश जहाँ पहले बुंदेलों का राज्य था।

बुंदेलखंडी—(वि०, दे०) [हिं० बुंदेलखंड+ई प्रत्य०] बुंदेलखंड का, बुंदेलखंड संबंधी। (संज्ञा, पु०) बुंदेलखण्ड का निवासी। (संज्ञा, स्त्री०) बुंदेलखण्ड की बोली या भाषा।

बुंदेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बूंद+एला प्रत्य०] क्षत्रियों की गहरवार जाति की एक शाखा, बुंदेलखण्ड का निवासी।

बुंदोरी, बुंदौरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बूंद+औरी प्रत्य०] बूंदी या बुंदिया नाम की एक मिठाई।

बुआ, बुँवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाप या पिता की बहिन, फूफी, बड़ी बहिन।

बुक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० बकरम] कलफ किया हुआ एक बारीक कपड़ा ।

बुकचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [तु० बुकचा] गठरी, मुटरी, गट्ठा, मोट । [**बुकची** (स्त्री० अल्पा०)] ।

बुकची—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बुकचा + ई प्रत्य०] छोटी गठरी या मुटरी, सुई तागा रखने की दरजियों की थैली ।

बुकनी—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० बूकना + ई प्रत्य०] बारीक चूर्ण, बुकुनू (ग्रा०) ।

बुकना†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बूकना] बुकनी, चूर्ण, बुकुनू (ग्रा०) ।

बुक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बूकना—पीसना] अभ्रक का चूर्ण ।

बुक्की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कन्धे पर डालने का कपड़ा ।

बुखार—(संज्ञा, पु०, अ०) भाप, ज्वर, ताप, शोक, क्रोध, दुःखादि का आवेग, छाते के ऊपर का कपड़ा ।

बुजदिल—(वि०, फ़ा०) डरपोक, कायर, भीरु । [**बुजदिली (संज्ञा, स्त्री०)**] ।

बुजना—(संज्ञा, पु०, दे०) स्त्रियों की अशुद्धता के समय का एक कपड़ा ।

बुजहरा, बुझारा—(संज्ञा, पु०, दे०) पानी गर्म करने का एक बरतन ।

बुजुर्ग—(वि०, फ़ा०) बड़ा, बूढ़ा । संज्ञा, पु० बाप-दादा, पुरुषा, पूर्वज, [बुजुरुग (दे०)] ।

बुझना—(क्रि० अ०, दे०) आग की लपट शान्त होना, पानी से गर्म पदार्थ का ठंडा होना, गर्म चीज पर पानी का छौंका जाना, उत्साहित मन के वेग का धीमा होना । [**बुझाना** (स० रूप)], [**बुझवाना** (प्रे० रूप)] ।

बुझाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बुझाना] बुझाने की क्रिया का भाव । "रावरे दुहाई नो बुझाई ना बुझैगी फेरि, नेह भरी नायका की देह दिया-बाती सी"—पद० ।

बुझाना—(क्रि० स०, हि०) अग्नि या जलती वस्तु को शान्त या ठंडा करना, तपी हुई वस्तु को पानी से ठंडा करना, आवेग रोकना । **मुहा०—जहर से**—किसी हथियार की नोक या धार को गरम करके विष जल से बुझाना ताकि उसमें भी विष आ जावे, उत्साहादि मनोवेग को शान्त करना, पानी से छौंकना । (क्रि० स०) [हि० बुझना का प्रे० रूप] संतोष देना, समझाना । [**बुझावना** (स० रूप)], [**बुझवाना** (प्रे० रूप)] ।

बुझौवल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बुझाना] पहेली, दृष्टकूट ।

बुटा†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बूटी] बूटी ।

बुटना*†—(क्रि० अ०, दे०) भागना ।

बुड़ना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बूड़ना] डूबना, बूड़ना । [**बुड़ाना** (स० रूप)], [**बुड़वाना** (प्रे० रूप)] ।

बुड़बुड़ाना—(क्रि० अ०, अनु०) मन ही मन कुढ़ना, बड़बड़ाना ।

बुड़भस—(संज्ञा, पु०, ग्रा०) बुढ़ाई की मूर्खता ।

बुड्ढा†—(वि०, दे०) [सं० वृद्ध] वृद्ध, बूढ़ा । [**बुड्ढी** (स्त्री०)] ।

बुढ़वा‡—(वि०, दे०) [सं० वृद्ध] वृद्ध बुड्ढा ।

बुढ़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वृद्धता] बुढ़ापा ।

बुढ़ाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बूढ़ा + ना प्रत्य०] बूढ़ा या वृद्ध होना, वृद्धावस्था को प्राप्त होना ।

बुढ़ापा—(संज्ञा, पु०) [हि० बूढ़ा + पा प्रत्य०] वृद्धावस्था, बुढ़ाई, वृद्धता ।

बुढ़ौती†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बुढ़ापा] बुढ़ापा, वृद्धता, वृद्धत्व ।

बुत—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० मि० सं० बुद्ध] पुतला, प्रतिमा, मूर्ति, प्रियतम । (वि०) मूर्ति के समान शांत और मौन । (अव्य०, ग्रा०) अच्छा, भला । **—परस्त**—(संज्ञा, पु० यौ०, फ़ा०) मूर्ति-पूजक । "हिन्दू हैं बुतपरस्त मुसलमाँ खुदापरस्त"—[स्फु०] ।

बुतना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बुझना] बुझना [**बुताना** (स० रूप)], [**बुतवाना** (प्रे० रूप)] ।

बुताना—(क्रि० अ०, दे०) बुझना । (क्रि० स०) बुझाना । "जो बरा सो बरा और बरा सो बुताना" —तु० ।

बुत्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) छल, धोखा, झाँसा-पट्टी, बहाना, हीला [**बाला-बुत्ता** (यौ०) । **मुहा०—बताना (देना)**—धोखा देना [**बुत्तेबाज** (यौ०)] ।

बुद्बुद—(संज्ञा, पु०, सं०) बुलबुला, बुल्ला । "भवसिंधु के बुद्बुद प्राणियों को"—**हितैषी** ।

बुद्ध—(वि०, सं०) जागा हुआ, जागरित, विद्वान्, पंडित, ज्ञानी, सचेत। (संज्ञा, पु०) शाक्य वंशीय राजा शुद्धोदन और रानी माया के कुमार गौतम जो बुद्धमत के प्रवर्त्तक एक महात्मा हुए (५५० पू० ई०)। इनका जन्म कपिलवस्तु के लुंबिनी नगर। नैपाल तराई में हुआ था (इति०)।—**गया**-(स्त्री०) गया के निकट एक स्थान जहाँ भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।—**धर्म**-(पु०) बौद्ध धर्म।

बुद्धागम—(संज्ञा, पु०, सं०) बौद्ध धर्म के सिद्धान्त।

बुद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विवेक-शक्ति, ज्ञान, समझ, उपजाति वृत्त का १४ वाँ भेद, एक छंद, लक्ष्मी, छप्पय का ४२ वाँ भेद (पिं०)।—**गम्य**, -**ग्राह्य**-(वि०) जो बुद्धि के लिए ग्राह्य हो।—**जीवी**-(वि०) जिसकी जीविका बुद्धि द्वारा चलती हो, मानसिक काय करने वाला।—**दोष**-(पु०) समझ की कमी या फेर।—**पर**-(वि०, सं०) समझ से बाहर या दूर, जहाँ बुद्धि न पहुंचे।—**पूर्वक**-(अ०) सोच समझकर, इच्छा-पूर्वक।—**वाद**-(पु०) हेतुवाद, बुद्धि को सर्वोपरि प्रमाण मानने वाला सिद्धान्त। [रैशनलिज्म]।—**हीन**-(वि०, यौ०, सं०) मूर्ख, अज्ञानी, बेसमझ, निर्बुद्धि।

बुद्धिमत्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समझदारी, होशियारी, अक्लमन्दी।

बुद्धिमान—(वि०, सं०) बहुत होशियार या समझदार, बड़ा अक्लमन्द।

बुद्धिमानी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुद्धिमत्ता, होशियारी, अक्लमन्दी, समझदारी।

बुद्धिवंत—(वि०, सं०) बुद्धिमान, समझदार, [बुद्धिवान (दे०)]।

बुध—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्र-सुत, सूर्य के सबसे अधिक समीप रहने वाला एक ग्रह, (ज्यो०), देवता, पंडित विद्वान्, ज्ञानी, नौग्रहों में से चौथा।—**जायी**-(संज्ञा, पु०) बुध के पिता चंद्रमा।—**वार**-(संज्ञा, पु०, सं०) मंगलवार और गुरुवार के बीच का एक दिन, रविवारादि सात दिनों में से चौथा दिन।

बुधवान्-बुद्धवान्*†—(वि०, सं०) बुद्धिमान्, ज्ञानी, समझदार।

बुधि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बुद्धि] बुद्धि, अकल, समझ [**सुधि-बुधि** (यौ०)] "निज बुधि-बल-भरोस मोहिं नाहीं"—[रामा०]।

बुधित—(वि०, सं०) जाना हुआ, समझा हुआ, ज्ञात।

बुधिल—(वि०, सं०) विद्वान।

बुध्य—(वि०, सं०) जानने योग्य।

बुनकर—(संज्ञा, पु०) कपड़ा बुनने वाला जुलाहा।

बुनना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वयन] बिनना, जुलाहों के सूतों से कपड़ा बनाने की क्रिया, वस्त्र बनाना [**बुनाना** (द्वि० रूप)], [**बुनवाना**, **बुनावना** (प्रे० रूप)]।

बुनवाना—(स०, क्रि०) दूसरे के द्वारा बुनने का कार्य कराना।

बुनाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बुनना + ई प्रत्य०] बुनावट, बुनन, बुनने की मजदूरी या क्रिया।

बुनावट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बुनना + आवट प्रत्य०] बुनाई, बुनन, बुनने का भाव, बुनने में सूतों के मिलाने का ढंग।

बुनिया—(संज्ञा, स्त्री०) बुँदिया नाम की मिठाई।

बुनियाद—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) नींव, जड़, मूल, वास्तविकता।

बुनियादी—(वि०) मूलगत, आधारिक, नींव का काम देने वाला।

बुबुकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) चिल्ला-चिल्ला कर रोना, ढाड़ मारना, सुलग सुलग कर बलना।

बुबुकारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० बुबुक + आरी प्रत्य०] जोर से चिल्लाना, फूट-फूट कर या ढाड़ मार कर रोना। "बाल बुबुकार दैदै तारी दै दै गारी देत"—[कवि०]।

बुभुक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूख, क्षुधा।

बुभुक्षित—(वि०, सं०) क्षुधित, भूखा। "बुभुक्षितः किन्न करोति पापम्।"

बुभुत्सा—(संज्ञा, स्त्री०) जानने की अभिलाषा।

बुयाम—(संज्ञा, पु०, अ०) चीनी मिट्टी का बना एक पात्र, गोल ऊंचा जार।

बुरकना—(क्रि०, सं०, दे०, अनु०) किसी वस्तु पर चूर्ण आदि छिड़कना, भुरभुराना। [**बुरकाना** (द्वि० रूप)], [**बुरकवाना** (प्रे० रूप)]।

बुरका—(संज्ञा, पु०, अ०) मुसलमान स्त्रियों का कपड़ा जो सिर से पैर तक सारे शरीर को ढांक लेता है।

बुरा—(वि०, दे०) [सं० विरूप] खराब, निकृष्ट, मंदा, अधम ।—**काम**-(पु०) निंदित काम ।—**भला**-(पु०) अच्छा-बुरा, हानि-लाभ (सोचना) गाली-गुप्ता (कहना, सुनना) ।—**वक्त**-(पु०) विपत्ति का समय ।—**हाल**-(पु०) दुर्दशा, तबाही । **मुहा०**—**मानना**-द्वेष रखना, जलना, नाराज होना । —**लगना**-नागवार लगना ।—**हाल होना**-स्थिति का बिगड़ना, बेहद कष्ट मे पड़ना ।—(**रे**) **दिन**-विपत्ति का समय ।—**भला-नेकी-बदी**-हानि-लाभ, खोटाखरा, गाली गलौज । **अच्छा-बुरा**-लानत मलामत, गाली-गलौज ।

बुराई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बुरा + ई प्रत्य०] दोष, खोटापन, अनभल, खराबी, ऐब, निंदा, नोचता, शिकायत । "होय बुराई से बुरा, यह कीन्हें निर्धार"—[नीति०] ।

बुरादा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लकड़ी चीरने से निकला चूर्ण, कुनाई (ग्रा०) ।

बुरी—(वि०, स्त्री०) देखिए बुरा ।—**घड़ी**-(स्त्री०) विपत्ति काल, तकलीफ का समय ।—**नजर**-कुदृष्टि, बुरी निगाह ।—**बला**-(स्त्री०) विपत्ति, तकलीफ देने वाली चीज ।—**सुहबत**-(स्त्री०) कुसंगति । **मुहा०**—**तरह पेश आना**-अच्छी तरह व्यवहार में न आना, दुर्व्यवहार करना ।

बुर्ज—(संज्ञा, पु०, अ०) मीनार का ऊपरी भाग, गरगज (ग्रा०) गुंबद, किले आदि की दीवाल पर उठा हुआ गोल या पहलदार खण्ड जिसमें नीचे बैठक हो । [**बुर्जी** (स्त्री० अल्पा०)] ।

बुर्द—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) ऊपरी लाभ या आमदनी, होड़, बाजी, शतरंज के खेल मे सब मुहरो के मर जाने पर केवल बादशाह के रह जाने की दशा । **मुहा०**—(**मामला**)—**होना**-काम बिगड़ना ।

बुलंद—(वि०, दे०) [फ़ा० बलंद] बहुत ऊँचा, अति उत्तुंग, भारी ।—**आवाज**-(स्त्री०) ऊँची जोर की आवाज ।

बुलंदी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) उत्कर्ष, ऊँचाई ।

बुलबुल—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० फ़ा०] एक छोटी काली गाने वाली चिड़िया । "कहो बुलबुल से ले जाये चमन से आशियाँ अपना"—[स्फु०] ।

बुलबुला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बुदबुद] पानी का बुल्ला, बुदबुदा, जल का फफोला । [**बुलबुलाना** (क्रि० अ० दे०)] ।

बुलवाना—(स० क्रि०) दूसरे के द्वारा बुलाने का कार्य करना ।

बुलाक—(संज्ञा, पु०, स्त्री०) नाक मे पहनने का एक लंबा सा सुराहीदार गहना ।

बुलाकी—(संज्ञा, पु०) [तु० बुलाक] घोड़े की एक जाति ।

बुलाना-बुलावना—(क्रि०, स०, हिं०) न्योता देना, पुकारना, टेरना, बोलने मे प्रवृत्त करना, पास आने को कहना ।

बुलावा—(संज्ञा, पु०) [हिं० बुलाना + आव प्रत्य०] न्योता, निमंत्रण, बुलौवा (ग्रा०) ।

बुलाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वोल्लाह] पीली पूँछ और गरदन का घोड़ा ।

बुलौआ—[वा] (संज्ञा, पु०) निमंत्रण, न्योता ।

बुल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बुलबुला] बुलबुला ।

बुहनी, बोहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पहली बिक्री ।

बुहारना—(क्रि०, स० दे०) [सं० बहुकर + ना प्रत्य०] झाड़ना झाड़ू लगाना ।

बुहारा—(संज्ञा, पु०) बड़ा झाड़ू ।

बुहारी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हिं० बुहारना + ई प्रत्य०] साहनी (प्रान्ती०), बढ़नी, झाड़ू ।

बूँद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बिंदु] बिंदु, जलादि का थोड़ा गोला सा अंश, कतरा, टोप (प्रान्ती०) । "बूँद अघात सहैं गिरि कैसे"—[रामा०] । **मुहा०**—(**दें**) **गिरना—या पड़ना**-धीमी धीमी वर्षा होना । एक प्रकार का वस्त्र, वीर्य ।

बूँदा, बाँदी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हिं० बूँद + बाँद अनु०] थोड़ी या हलकी वृष्टि ।

बूँदी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बूँद + ई प्रत्य०] एक प्रकार का मिष्ठान्न, [बुँदिया (दे०)] । वर्षा के पानी की बूँद, एक शहर ।

बू—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) गंध, बास, महक, दुर्गंधि । "हर गुल मे तेरी बू है ।"—**उड़ना,—फैलना**-भेद, बदनाम हो जाना ।

बूआ, बूवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फूफी, बाप की बहिन, बड़ा बहन । (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बकोटा] बकोटा, चंगुल ।

बूकना—(क्रि० स०, दे०) किसी वस्तु को बारीक पीसना, चूर्ण बनाना, गढ़ गढ़ कर बातें बनाना । जैसे—**फ़ारसी** (**पक्की**)—शान दिखाने को उर्दू बोलना ।

बूचड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० बुचर] कसाई। **—खाना**-(संज्ञा, पु०) [हि० बूचड़+खाना फ़ा०] कसाईबाड़ा।

बूचा—(वि०, दे०) [सं० बुस=विभाग करना] जिसका कान कटा हो, कनकटा, कुरूपकारी अंग का कटना। [**बूची (स्त्री०)**], [**नंगा-बूचा** (यौ०)]।

बूजना—(क्रि० स०, दे०) धोखा देना।

बूझ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बुद्धि] ज्ञान, बुद्धि, समझ, अक्ल, पहेली। [**समझ-बूझ ज्ञान-बूझ** (यौ०)], [**बुझैया (वि०)**]। "न करती समझबूझ की रहबरी"—हाली०।

बूझन*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बूझ] ज्ञान, बुद्धि, समझ, अक्ल, पहेली। [**बुझवार, बुझवैया** (वि०)]।

बूझना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बूझ=बुद्धि] समझना, जानना, पूछना, ताड़ना। [**बुझाना, बुझवाना** (स० रूप)]। "अजहुं न बूझ अबूझ" —[रामा०]।

बूट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विटप, हि० बूटा] चने का हरा पौधा या दाना, वृक्ष, पौधा। (संज्ञा, पु०, अं०) जूता।

बूटनि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बहूटी] बीरबहूटी नामक एक बरसाती कीड़ा।

बूटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विटप] पौधा, छोटा वृक्ष, वस्त्रों या दीवाल आदि पर बनाने के फलों-फूलों, बेलों और वृक्षों के चिन्ह। [**बेल-बूटा** (यौ०)], [**बूटी** (स्त्री० अल्पा०)]।

बूटी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बूटा] जड़ी, वनस्पति, वन-औषधि, भाँग, भंग, वस्त्रादि पर छोटा बूटा, खेलन के ताश की बूँदे या टिपकियाँ। [**जड़ी-बूटी, भांग बूटी** (यौ०)]।

बूड़ना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० बुड़=डूबना] निमग्न होना, डूबना, लीन या विलीन होना।

बूड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० डूबना] अति वृष्टि आदि से पानी की बाढ़, सैलाब।

बूढ़, बूढ़ा‡—(वि०, दे०) [सं० वृद्ध] बुड्ढा, वृद्ध, डुकरा, डोकरा। (संज्ञा, पु०, प्रान्ती०) लाल रंग, वीरबहूटी। **—(दे) तोते को पढ़ाना**—उम्र के न रहने पर किसी चीज को सीखना-पढ़ना।

बूढ़ी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृद्धा] वृद्धा, बुढ़िया, डुकरिया, [**बुड्ढी** (दे०)]।

बूत—(संज्ञा, पु०, दे०) देखिए—बूता।

बूता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वित्त] बल, सामर्थ्य, पौरुष, शक्ति, बूत (ग्रा०)।

बूरना*‡—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बूड़ना] डूबना।

बूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भूरा] शक्कर, भूरे रंग की कच्ची चीनी, साफ़ चीनी, चूर्ण।

बृन्दारण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वृंदावन।

बृच्छ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) वृक्ष (सं०) पेड़, बिरिछ (ग्रा०)।

बृष, बृषभ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृष] बैल, दूसरी राशि (ज्यो०) वृषकेतु। **—षध्वज**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृष ध्वज] शिवजी, महादेव जी, वृषकेतु।

बृहती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भटकटैया, कटैया, बनभाँटा, बरहड़ा (प्रान्ती०), विश्वावसु गंधर्व की वीणा, उपरना, उत्तरीय वस्त्र, ६ वर्णों का एक वर्ण वृत्त (पिं०)। "देवदारु धना शुंठी बृहती द्वय पाचनम्"—लोलं०।

बृहत्, बृहद्—(वि०, सं०) विशाल, बहुत ही बड़ा, बलिष्ठ, दृढ़, ऊंचा (स्वरादि)। **—काय**-(वि०) विशाल काय।

बृहदारण्यक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शत-पथ ब्राह्मण का एक उपनिषद्।

बृहद्रथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्र, राजा शतधन्वा के पुत्र और जरासंध के पिता का नाम (महा०)।

बृहन्नल—(संज्ञा, पु०, सं०) अर्जुन का एक नाम, जब वे अज्ञातवास में विराट के यहाँ स्त्री-वेष में रह उत्तरा को नाच-गान सिखाते थे (महा०)।

बृहन्नला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अर्जुन।

बृहस्पति—(संज्ञा, पु०, सं०) देवताओं के गुरुदेव जो अंगिरा के पुत्र और भरद्वाज के पिता हैं (वैदिक), देवगुरु, सौरमण्डल का ५ वाँ ग्रह (ज्यो०) महाविद्वान्।

बेंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भेक] मेंढक।

बेंट, बेठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हथियारों में लगा काठ आदि का दस्ता, मठ।

बेंड़ा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बेंड़ा] चाँड़, टेक।

बेंड़ा—(वि०, दे०) [हिं० आड़ा] आड़ा, तिरछा, टेढ़ा, क्लिष्ट, कठिन।

बेंत, बेत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेतस्] एक लता। "फूलै फलै न बेंत, यदपि सुधा बरसहिं जलद"—[रामा०]। मुहा०—**की तरह काँपना**—भय से थर थर काँपना, बहुत डरना।—**नीति**—मार पड़ने पर झुक जाना और फिर सीधा खड़ा हो जाना।

बेंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विंदु] टीका, बेंदी, सिर का एक गहना, टिकली, बिन्दी।

बेंदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विंदु, हिं० बिंदी] बिंदी, टिकली, बिन्दु, दावनी (प्रान्ती०), शून्य, [सुन्ना, (दे०)], बेंदिया (ग्रा०)।

बेंवड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बेंड़ा=आड़ा] बंद किवाड़ों के पीछे लगाने की लकड़ी, गज अरगल (प्रान्ती०), [ब्योंड़ा (दे०)]।

बे—(अव्य०) [फ़ा० बे, मि० सं० वि०] बिना, बगैर, जैसे—बेजान। [(विलो०)—**बा**]। (अव्य०) [हिं० हे] छोटों का संबोधन।—**अंत***†—(क्रि० वि०, दे०) अनंत, असीम।—**अकल**—(वि०, दे०) निर्बुद्धि, मूर्ख, बेअक्ल। [**बेअक़ली, बेअक़्ली** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**अदब**—(वि०) जो बड़ों का आदर-सत्कार न करे, [**बाअदब** (विलो०)], [**बेअदबी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**आब**—(वि०) जिसमें चमक न हो, तुच्छ।—**आबरू**—(वि०, फ़ा०) बेइज्जत।—**इज्ज़त**—(वि०) अप्रतिष्ठित, अपमानित। [**बेइज़्ज़ती** (संज्ञा, स्त्री०)], [**बाइज़्ज़त**(विलो०)]—**ईमानी**—(वि०, फ़ा०) अधर्मी, अनाचारी, छली, धोखा देने वाला, अन्यायी। [**बेईमानी** (संज्ञा, स्त्री०)], [**बाईमान** (विलो०)]।—**उज्र**—(वि०) आज्ञा-पालन में आपत्ति न करने वाला, [बेउजुर (दे०)]।—**क़दर**—(वि०, फ़ा०) बेइज्ज़त, अप्रतिष्ठित। [**बेक़दरी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**क़रार**—(वि०, फ़ा०) विकल, व्याकुल, अधीर, बेचैन। [**बेक़रारी** (संज्ञा, स्त्री०)]। (वि०) बिना क़रार या वादा के। "भनभनाई वह बहुत ही बेकरार"—हाली०।—**कल***†—(वि०, दे०) [सं० विकल] व्याकुल, बेचैन, विह्वल, विकल। [**बेकली** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**कली**—(संज्ञा, स्त्री०) व्याकुलता, बेचैनी, घबराहट।—**क़सूर**—(वि०) निरपराध, निर्दोष।—**कहा**—(वि० हिं०) जो कहना न माने।—**क़ाबू**—(वि०) वश से बाहर, विवश, मजबूर, लाचार, जो अधिकार या वश में न हो।—**काम**—(वि०, हिं०) निकम्मा, जिसे कोई काम न हो, निठल्ला, व्यर्थ, जो काम मे न आ सके, निरर्थक, [बेकार, निकाम (दे०)]।—**क़ायदा**-(वि०) नियम के विरुद्ध। [**बाक़ायदा** (विलो०)]।—**कार**—(वि०, फ़ा०) व्यर्थ, निकम्मा, जिससे कोई काम न हो, निठल्ला, निरर्थक, बेकाम। निकाम।—**कारी**—(स्त्री०) कार्य विहीनता। [अनइम्प्लवायमेंट]।—**क़सूर**—(वि०) निरपराध, निर्दोष।—**खटके**—(क्रि० वि०, दे०) बेधड़क, निश्चित, निर्भय, निस्संकोच।—**ख़बर**—(वि०, फ़ा०) बेसुध, बेहोश, अनजान। [**बेख़बरी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**ग़रज़**—(वि०) बे-मतलब, बेपरवाह, [बेगरज, बेगरजू (दे०)]। [**बेग़रज़ी** (संज्ञा, स्त्री०)]। "करत बेगरजी प्रीति, यार हम बिरला देखा"—गिर०।—**ग़ाना**—(वि०, फ़ा०) दूसरा, अन्य, पराया। [**बेगानगी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**गुनाह**—(वि०, फ़ा०) निरपराध, निर्दोष, बेकसुर। [**बेगुनाही** (वि०)]।—**चारा**—(वि०, फ़ा०) उपाय-रहित, उद्यम-हीन, दुखिया, गरीब, दीन, असहाय, बपुरा, बापुरो। [**बेचारी** (स्त्री०)]।—**चैन**—(वि०, फ़ा०) विकल, व्याकुल, बेकल। [**बेचैनी** (संज्ञा स्त्री०)]।—**जड़**—(वि०) मूल रहित, बेबुनियाद, बेअसल।—**ज़बान**—(वि०, फ़ा०) मूक, गूँगा, सरल, सीधा, दीन, असहाय, जो कुछ कह न सके।—**जा**—(वि०, फ़ा०) अनुचित, बे-मौका, अयोग्य, नामुनासिब, बुरा। [**बेजा जा** (विलो०)]।—**जान**—(वि०, फ़ा०) निर्जीव, मृतक, मुरदा, जिसमें दम न हो, मुरझाया या कुम्हलाया हुआ, निर्बल, निरुत्साह। (क्रि० वि०, दे०) बिना जान में।—**ज़ाब्ता**—(वि०) राजनीति के विरुद्ध, अन्याय, कानून के खिलाफ़, नियम के विरुद्ध।—**जोड़**—(वि०) खंड-रहित, जिसमे कहीं जोड़ न हो, अद्वितीय, अनुपम, बे मिसाल।—**ठिकाने**—(वि०) बेपते, स्थानच्युत, व्यर्थ, ऊलजलूल, निरर्थक, बेमौके, बेठौर।—**ठीक**—(वि०, दे०) अनुचित, अयोग्य।—**डौल**—(वि०) भद्दा, बेढंग, कुरूप।—**ढंग, —ढंगा**—(वि०, दे०) बेतरतीब, बुरे ढंग का, भद्दा, कुरूप, भोंड़ा, क्रम-रहित। [**बेढंगी** (स्त्री०)], (**बेढंगापन** (संज्ञा, पु०)]।

—ढब–(वि०, दे०) [हिं० फ़ा० मि०] भद्दा, बेढंगा, बुरे ढंग या ढब वाला। (क्रि० वि०) बेतरह, बुरी तरह से।—तकल्लुफ़–(वि०) जो दिखावटी, या बनावटी बात न करे या कहे, साफ या ठीक ठीक, मन की बात कहने वाला। [बेतकल्लुफ़ी (संज्ञा, स्त्री०)]। (क्रि० वि०) बेखटके, निस्संकोच, बेधड़क, कृत्रिमता-रहित।—तमीज़–(वि०) बेहूदा, मूर्ख, अज्ञानी, उजड्ड, बेशऊर, बदतमीज़। [बेतमीज़ी (संज्ञा, स्त्री०)]।—तरह–(क्रि० वि०) असाधारण या अनुचित रीति से, अयोग्य रूप या प्रकार से, बुरी तरह। (वि०) बहुत ज्यादा, अत्यन्त अधिक। "बेतरह जल रहा कलेजा है"—हरि०।—तरतीब–(वि०, क्रि०) क्रम-विरुद्ध, जो सिलसिलेवार न हो, अव्यवस्थित। [बेतरतीबी (संज्ञा, स्त्री०)]।—तरीक़ा–(वि०, क्रि० वि०) नियम-विरुद्ध, अनुचित रीति।—तहाशा–(क्रि० वि०) बड़े वेग से, बड़ी तेजी से, अति घबरा कर, बिना समझे-बूझे, बिना सोचे-विचारे।—तादाद–(वि०, फ़ा०) अगणित, बहुत।—ताब–(वि०, फ़ा०) व्याकुल, विकल, दुर्बल, अशक्त, कमजोर, शिथिल, बेदम। [बेताबी (संज्ञा, स्त्री०)]।—तार–(वि०) बिना तार का, तार-रहित।—का तार–केवल बिजली की शक्ति से, बिना तार के समाचार भेजने का यंत्र और बेतार से भेजा गया समाचार।—तुका–(वि०) बेमेल, बेढंगा, बेढब, सामंजस्य-विहीन, असगत, अनुपयुक्त। [बेतुकी (स्त्री०)]।—छंद–(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० बेतुका + छंद सं०] अमिताक्षर या तुकान्त रहित, अतुकान्त या बिना तुक का छंद।—दखल–(वि०, फ़ा०) अधिकार-रहित, अधिकारच्युत, जिसका कब्जा या दखल न हो, स्वत्वहीन।—दख़ली–(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) भूमि या संपत्ति से कब्जा हटाया जाना, अनधिकार।—दम–(वि० अ०) प्राण-रहित, मृतक, अधमरा, जर्जर, शिथिल, अशक्त, बोदा।—दर्द–(वि०, फ़ा०) निर्दय, निष्ठुर, निरदई, क्रूर या कठोर हृदय, जो किसी का दर्द या व्यथा ना समझे, बेदरदी (ग्रा०)। [बेदर्दी (संज्ञा, स्त्री०)] ।—दाग़–(वि०, फा०) साफ, स्वच्छ, शुद्ध, निर्दोष, निरपराध, निष्कलंक, दाग या धब्बा रहित। [बेदाग़ी (वि०)]।—दाना–(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बिहीदाना] बढ़िया काबुली अनार, बिहीदाना के बीज, दारु हलदी, चित्रा (औष०)। (वि०) मूर्ख, नादान, बेसमझ।—धड़क–(क्रि० वि०, दे०) संकोच-रहित, बेखटके, निडर, निर्भय, निडर या बेखौफ हाकर, आगा-पीछा किये बिना। (वि०) निडर, वेखौफ, निर्भय, जिसे संकोच या खटका न हो, निर्द्वन्द्व, निर्भीक।—धर्म,—धरम–(वि०, दे०) [सं० विधर्म] धर्मच्युत, अधर्मी, बेईमानी, स्वधर्म-कर्म से गिरा हुआ।—धीर*–(वि०, दे०) अधीर।—नसीब–(वि०) [फा० बे + नसीब अ०] अभागा, भाग्यहीन, बदकिस्मत। [बेनसीबी (संज्ञा, स्त्री०)]।—निमून,—नमूना–(वि०, दे०) [फा० बे + नमूना] अप्रतिम, अनुपम, अद्वितीय, बेमिसाल।—परद–(वि०, दे०) नग्न, अनावृत, नंगा, ओट-रहित, जिसके परदा न हो। मुहा०—करना–नंगा करना, बेपर्द। [बेपर्दगी (संज्ञा, स्त्री०)]।—परवा,—परवाह–(वि०, दे०) बेफिक्र, जिसे परवाह न हो, मन मौजी, निश्चिंत, उदार, लापरवाह। [बेपरवाही (संज्ञा, स्त्री०)]। "मनुवा बेपरवाह"—कबी०।—पाइ*†–(वि०, दे०) किंकर्त्तव्य विमूढ़, भौचक, उपाय-रहित, हक्का-बक्का।—पीर–(वि०) निष्ठुर, पर-पीड़ा न समझनेवाला, निर्दयी, निर्दय, बेरहम, कठोर, क्रूर। "तो मनकी जानत नहीं, अरे मीत बेपीर"—श० अनु०। "बुलाते हो कैसे बेपीर"—महा०।—पेंदी–(वि०, दे०) पेंदा रहित। मुहा०—का लोटा–जो किसी के तनिक बहकाने से अपना विचार बदल दे, किसी बात पर दृढ न रहने वाला।—फ़ायदा–(वि०) नाहक, बेमतलब, व्यर्थ, निरर्थक।—फ़िक्र–(वि०, फ़ा०) बेपरवाह, निश्चिंत। [बेफ़िक्री (संज्ञा, स्त्री०)]।—बस–(वि०, दे०) [सं० विवश] लाचार, परवश, मजबूर, पराधीन। [बेबसी (संज्ञा, स्त्री०)]।—बाक–(वि०, फ़ा०) चुकाया या चुकता किया हुआ, निःशेष किया हुआ। [बेबाकी (संज्ञा, स्त्री०)]।—ब्याह–(वि०, दे०) कुंवारा, कुँआरा, अविवाहित। [बेब्याही (स्त्री०)]।—भाव–(क्रि० वि०) बेहद, बिना भाव के।—मतलब–(अ०) बिना प्रयोजन।—मरम्मत–(वि०) टूटा फूटा, बिना मरम्मत का।—मालूम–(क्रि० वि०, फ़ा०) अज्ञात, बिना जाना समझा। (वि०) जो ज्ञात न होता हो।—मुरव्वत–(वि०, फ़ा०) जिसमें मुरव्वत न हो, तोताचश्म। [बेमुरव्वती (संज्ञा, स्त्री०)]।—मौका–(वि०, फ़ा०) जो ठीक समय पर न हो। (संज्ञा, पु०) अवसर का

न होना।—**मन**-(क्रि० वि०) बिना मन या इच्छा की। "जोड़ो जायें बेमन की"—प्रसाद।—**मौत**-(अ०) बिना मृत्यु आये ही मरना।—**रहम**-(वि०, फ़ा०) दया या कृपा-रहित, निर्दय, निष्ठुर। [**बेरहमी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**रुख**-(वि०, फ़ा०) बेमुरव्वत, बेशील, नाराज, विमुख। [**बेरुखी-बेरुखाई** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**लाग**-(वि०, दे०) सब प्रकार है अलग, खरा, साफ।—**लौस**-(वि०, फ़ा०) बेमुरव्वत, सच्चा, स्पष्टवक्ता, निष्पक्ष, खरा।—**वक्त**-(क्रि० वि०, फ़ा०) कुसमय, असमय, नावक्त, [बेवखत (दे०)]।—**वफा**-(वि०] दुःशील, बेमुरव्वत, जो मैत्री न निबाहे। [**बेवफाई** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**शक**-(क्रि० वि०) निस्संदेह, जरूर, अवश्य, [बेसक (दे०)]।—**शरम**-(वि०, दे०) [फ़ा० बेशर्म] निर्लज्ज, निलज्ज, बेहया, [बेसरम (दे०)], लिहाड़ा (प्रान्ती०)। [**बेशरमी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**शुमार**-(वि०, फ़ा०) [बेसुम्मार (दे०)] असंख्य, अगणित।—**सँभर,**—**सँभार***†-(वि०, दे०) अचेत, बेहोश, जो निज को सँभाल न सके, जो सँभाला न जा सके।—**सब्र**-(वि०, दे०) असंतोषी, अधीर।—**सरा**-(वि०, दे०) गृह-हीन, आश्रय-हीन, बे घर का। (संज्ञा, पु०, दे०) एक पक्षी।—**सुध**-(वि०, हिं०) बेखबर, बेहोश अचेत, [बेसुध (दे०)]। [**बेसुधी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**पन**-(पु०) अचेतावस्था। "मैं अपने ही बेसुधपन में"—महा०।—**सुर,**—**सुरा**-(वि०) नियत स्वर से हीन या अलग, बेताल, (संगी०), स्वर-रहित बे मौका। [**बेसुरी** (स्त्री०)]। 'बेसुरे गाना न गायें बेसुरा'—हरि०।—**हद**-(वि०, फा०) असीम, अनत, अपार, अपरिमित, अधिक, बहुत।—**हाल**-(वि०) बेचैन, व्याकुल, विकल। "चाह रहा हूँ दूर भागना, होता है बेहाल"।—बचन।—**हिसाब**-(क्रि० वि०, दे०) [फ़ा० बे+हिसाब अ०] असंख्य, अनंत, अगणित, बहुत ज्यादा, बेफायदा।—**हुनर,**—**हुनरा**-(वि०, फ़ा०) अज्ञान, मूर्ख, निर्गुणी, बेहुनर (ग्रा०)।—**हूदा**-(वि०, फा०) ढीठ, शिष्टता या सभ्यताहीन, अशिष्ट, असभ्य। [**बेहूदगी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**०पन**—**०पना**-(संज्ञा, पु०) असभ्यता, अशिष्टता, बेहूदगी।—**होश**-(वि०, फ़ा०) अचेत, असावधान, मूर्छित, बेसुध। [**बेहोशी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**होशी**-(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मूर्च्छा, अचेतनता।

बेइखा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बेला] बेरा।

बेकारयो*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० विकारी] संबोधन या बुलाने का शब्द। जैसे—रे, हे, अरे आदि।

बेख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेष] [भेस (दे०)] वेष, स्वरूप, नकल, स्वाँग।

बेग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेग] गति की तीव्रता, तेजी, शीघ्रता, प्रवाह, धारा।

बेगम—(संज्ञा, स्त्री०) [तु० बेग का स्त्री०] रानी, महारानी, राजपत्नी, महिषी।

बेगवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जो बड़े वेग से चले, एक वर्णार्द्ध वृत्त (पिं०)। [**बेगवान** (वि०, पु०)]।

बेगवन्त—(वि०, सं०) शीघ्रगामी, वेगवान।

बेगार—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) बलात्, बिना मजदूरी दिया गया काम, बेमन का काम। **मुहा०** —**टालना** (**करना**)-कोई कार्य्य मन लगाये बिना करना।—**भुगतना** (**भुगताना**)-जबर-दस्ती दिया गया काम करना। **लो०**—"बैठे से बेगार भली।"

बेगारा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बेगार करने वाला पुरुष। (क्रि० वि०, दे०) बिना गाली के। **लो०** —"बेगारी निकरै नहीं बेगारी को काम।"

बेगि*†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० वेग] तुरन्त, तत्काल, शीघ्र, जल्दी, झटपट। "बेगि करहु किन आँखिन ओटा"—[रामा०]।

बेचना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विक्रय] विक्रय करना, फरोख्त करना, मूल्य ले कर देना। [**बेचाना** (क्रि० स०)], [**बिचवाना** (प्रे० रूप)]। **मुहा०**—**बेच खाना**-गँवा देना, खो देना।

बेचू—(वि०, दे०) बेचने वाला।

बेजू—(संज्ञा, पु०, दे०) नेवला, नकुल।

बेझना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वेधन] बेधना, छेदना, सींगों से दीवार आदि में छेद करना, लड़ना।

बेझर, बेझरा—(संज्ञा, पु०, दे०) गेहूँ, चना और जव मिला अन्न।

बेझा*†—(संज्ञा, पु०) [सं० वेध] लक्ष्य, निशाना।

बेटकी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लड़की, बिटिया, बेटा (हिं०)।

बेटला*†—(संज्ञा, पु०, दे०) लड़का, पुत्र ।

बेटवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बेटा] बेटा, लड़का, पुत्र, बेटौना (ग्रा०) ।

बेटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वटु=बालक] लड़का, पुत्र, तनय, सुत ।—**बेटी**-(स्त्री०) बाल-बच्चे ।

बेटी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बेटा] लड़की, पुत्री । —**देना**-लड़की का विवाह करना ।

बेठन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेष्टन] बधना, बाँधन या लपटने का वस्त्र ।

बेड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बाड़] पेड़ की रक्षा के लिये उसके चारों ओर लगाई गई काँटेदार वस्तु, मेड़, आड़, बाड़ (प्रान्ती०) ।

बेड़ना, बेढ़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वेष्टन] पेड़ या खेत के चारों ओर रक्षार्थ काँटेदार वस्तु लगाना, पशु को घेर कर हाँकना, किसी घर में बन्द करना, बेढ़ना, धाँधना ।

बेड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेष्ट] नदी आदि पार करने को बाँसों या लकड़ियों का ढाँचा, लट्ठों से बना चारों ओर का घेरा, कुछ लोगों का समूह । "बेड़ा कौन लगावे पार"—आल्हा० । **मुहा०**—**पार करना या लगाना**-किसी को विपत्ति से निकालना या छुड़ाना, सहायता करना ।—**बाँधना**-भाँड़ आदि का तमाशे के लिये एक गिरोह बनाना । कई जहाजों या नावों आदि का समूह । (वि०, दे०) [हि० आड़ा का अनु०] [बेड़ा (दे०)] आड़ा, तिरछा, कठिन, विकट ।

बेड़िन, बेड़िनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नट जाति की नाचने गाने वाली स्त्री ।

बेड़िया—(संज्ञा, पु०, दे०) नटों की एक जाति ।

बेड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वलय] लोहे के कड़े या जंजीर जो कैदियों के पैरों में पहनाये जाते हैं जिनसे वे भाग न सकें, निगड़, बाँस की एक प्रकार की पानी उलचने की टोकरी । "कर्म पाप औ पुन्य लोह, सोने की बेड़ा"—[अ०] ।

बेढ़—(संज्ञा, पु०, दे०) विनाश, खराबी ।

बेढ़ई, बेढ़ड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बढ़ना] दाल की पीठी भरी रोटी, कचौड़ी ।

बेढ़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वेष्टन] किसी काँटेदार पदार्थ या तार आदि से रक्षार्थ पेड़ बाग या खेत आदि को रूँधना, घेरना, पशुओं को घेर कर हाँकना । [**बेढ़ाना** (स० रूप)], [**बेढ़वाना** (प्रे० रूप)] ।

बेढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बेढ़ना=घेरना] हाथ का एक तरह का कड़ा, घर के चारों ओर का हाता, बाड़ा, घेरा ।

बेणी—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए—वेणी ।—**फूल**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० वेणी+फूल हि०] सीसफूल, पुष्पाकार शिरोभूषण ।

बेतना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वेतन] ज्ञात या मालूम होना, जान पड़ना ।

बेताल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेताल] द्वार-पाल, एक भूतयोनि (पुरा०), शिव के एक गणाधिप, भूतों के अधिकार को प्राप्त, मृतक, छप्पय छंद का छठा भेद (पिं०) । (वि०, दे०) ताल या लय-रहित (संगी०) । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैतालिक] भाट, बंदीजन ।

बेद—(संज्ञा, पु०, दे०) वेद ।

बेदमजनू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक पेड़ जिसकी छाल और फल औषधि के काम आते हैं ।

बेदमुश्क—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कोमल सुगंधित फूलों का एक पेड़ ।

बेदसिरा—(संज्ञा, पु०, सं०) एक मुनि ।

बेदिल—(वि०) बिना दिल का, हृदय-हीन । "हम न दिल आपका दुखाएँगे आप करते रहे हमें बेदिल —हरि० ।

बेध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेध] छेद, छिद्र, नक्षत्र युक्त एक योग (ज्यो०) ।

बेधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० बेधन] नोकदार वस्तु से छेदना, भेदना । [**बेधाना** (स० रूप)], [**बेधवाना** (प्रे० रूप)] । "सिरस सुमन किमि बेधिय हीरा"—[रामा०] ।

बेधिया†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बेधना] अंकुश ।

बेन, बेनु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेणु] बंशी मुरली, बाँसुरी, बाँस, बीन बाजा, सँपेरों का महुवर या तूमड़ा ।

बेना, बेनवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेणु] बाँस का पंखा, बाँस, उशीर, खस । "बेना कबहुँ न भेदिया, जुग जुग रहिया पास"—कबी० ।

बेनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वेणी] स्त्रियों की चोटी, गंगा, सरस्वती और यमुना का संगम, त्रिवेणी, किवाड़ के पल्ले में लगी लकड़ी जिसके कारण दूसरा पल्ला नहीं खुलता ।

बेनु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेणु] वंशी, बाँस, बाँसुरी, मुरली। "बेनु हरित मनिमय सब कीन्हे" —[रामा०]।

बेपथु—(वि०, दे०) [वेपथु सं०] कंपित।

बेमाता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विमातृ] विमाता, सौतेली माता, माता रहित।

बेर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बदरी] एक कटीला मीठे फल वाला पेड़, बेरी का फल [**बेरी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, स्त्री०) [अबर (दे०)] बार, मरतबा, दफा, देरी, बिलम्ब, बेरी। "कुबेर बेर कै कही न यक्ष भीर मडिरे"—[रामा०]। "कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को संग।"—**बेर**-(यौ०) फिर फिर। [**अबेर** (विलो०)]।

बेरजरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बेर+झड़ी] झड़बेरी।

बेरा†—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) [सं० वेला] समय, वक्त, मौका, सबेरा।

बेरियाँ†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बेर] वक्त, बेरा, समय। "पुनि आउब यहि बेरियाँ काली"—[रामा०]।

बेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बदरी] बेर का पेड़, बेड़ी। (क्रि० वि०, दे०) बार, बेर।

बेलंद†—(वि०, दे०) [फ़ा० बलंद] ऊँचा, विफल मनोरथ, हताश।

बेलंब, बिलंब * †—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विलंब] विलब, देरी, बेलम (ग्रा०)।

बेल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विल्व] गोल कड़े बड़े फल वाला एक कँटीला पेड़ और उसके फल, श्रीफल। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वल्ली] फैलने और सहारे से ऊपर उठ कर फैलने वाले कोमल पौधे, लता, बल्ली, लतर। "सब ही जानत बढ़ति है, वृक्ष बराबर बेल"—वृं०। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० बेलचा] एक तरह की कुदाली, सड़क आदि की निर्धारित सीमा-सूचक लकीर।—**चा**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कुदाली, कुदाल।—**दार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) फावड़ा चलाने वाला मजदूर, मजदूरों का मुखिया।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० बल्व-पत्र] शिव-मूर्ति पर चढ़ाने की बेल की पत्ती।—**बूटा**-(संज्ञा, पु०, दे०) फूल पत्तीदार बेल के चत्र, चित्रकारी, या सुई का काम। **मुहा०—मँढ़े चढ़ना**-किसी काम को अन्त तक ठीक ठीक पूरा करना या उतारना। वंश, संतति, फीते, वस्त्र वा दीवाल आदि पर कढ़े या बने हुये फूल-पत्ते आदि, नाव का डाँड़। [**ढाक**—(यौ०)]। *† (संज्ञा, पु०, दे०) बेले का फूल। [**बेलपत्र** (यौ०)]।

बेलन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेलन] दडाकार गोल-भारी पदार्थ जिसे लुढ़काकर कंकड़ और पत्थर कूटते या समतल करते हैं, बेलने का यंत्र (रोटी), कोल्हू की जाठ, धुनियाँ का रुई धुनकने का हत्था, [बेलना (दे०)], रोलर (अं०)।

बेलना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेलन] रोटी पूड़ी आदि बेलने का काठ का गोल लम्बा यंत्र। (क्रि० स०, दे०) रोटी, पूड़ी आदि को चकले पर बेलने से बढ़ा कर गोल और पतला करना, चौपट या नष्ट करना। **मुहा०—पापड़ बेलना**-कार्य बिगाड़ना। विनोदार्थ पानी के छींटे उड़ाना।

बेलवाना—(क्रि० स०) दूसरे के द्वारा बेलने का कार्य कराना।

बेलसना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विलास+ना प्रत्य०] उपभोग करना, सुख लूटना, आनन्द लेना, [बिलसना (दे०)]।

बेलहरा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बेल=पान +हरा प्रत्य०] लगे हुए पानों की लम्बी छोटी सी पिटारी। [**बेलहरी** (स्त्री० अल्पा०)]।

बेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मल्लिका] चमेली आदि की जाति का एक श्वेत सुगंधित फूलों का पौधा। (संज्ञा, पु०, सं०) लहर (प्रान्ती०), कटोरा, समुद्रतट, समय, तेल भरने की चमड़े की छोटी कुलिहया।

बेलि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लता। "अमर बेलि जिमि बहु बिधि पाली"—[रामा०]।

बेली—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वल] संगी, साथी। (स्त्री०, दे०) बेल, लता। (क्रि० वि०) [हि० बेलना] बेली हुई।

बेलू—(संज्ञा, पु०, दे०) लुढ़कन, लुढ़काव।

बेलौ—(वि०, दे०) [बेलव हि०] उदासीन, निराश, बिना लव या प्रेम के।

बेवकूफ—(वि०, फ़ा०) नासमझ, मूर्ख, निर्बुद्धि। [**बेवकूफी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

बेवपार, ब्यौपार‡†—(संज्ञा, पु०, दे०) व्यापार (सं०) उद्यम, [व्यापार (दे०)]।

बेवरा, ब्यौरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) ब्योरा (हि०) विवरण।

बेवरेवार—(वि०, दे०) [**हि०** बेवरा+वार प्रत्य०] विवरण के साथ, तफसीलवार।

बेवसाय, ब्यौसाय†—(संज्ञा, पु०, दे०) व्यवसाय (सं०) पेशा, उद्यम । [**बेवसायी** (वि०)] ।

बेवहर, ब्यौहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यावहारिक] लेन-देन करने वाला, महाजन, धनी, ब्यौहार ।

बेवहरना, ब्यौहरना * †—(क्रि० अ०, दे०) [सं० व्यवहार] बरतना, व्यवहार या बरताव करना ।

बेवहरिया, ब्यौहरिया * †—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यवहार+इया प्रत्य०] महाजन, धनी, व्यवहार या लेन-देन करने वाला । "अब आनिय बेवहरिया बोली"—[रामा०] ।

बेवहार, ब्यौहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यवहार] लेन-देन, ऋण, बर्ताव ।

बेवा—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) राँड़, विधवा ।

बेवान, बिवान* †—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विमान] वायुयान, हवाईजहाज, मृतक-अरथी ।

बेशकीमती—(वि०, फा०) अमूल्य । [**बेशकीमती** (संज्ञा, स्त्री०, वि०)] ।

बेशी—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) ज्यादती, अधिकता । [**कमीबेशी** (यौ०)] ।

बेश्म—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेश्म] घर, मकान, गृह, मंदिर ।

बेसंदर, बैसंधर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैश्वानर] अग्नि, आग ।

बेस—(अव्य०, दे०) अच्छा । (संज्ञा, पु०, दे०) वेष, भेष ।

बेसन—(संज्ञा, पु०, दे०) चने की दाल का आटा, रेहन (प्रान्ती०) ।

बेसनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बेसन] बेसन की बनी या भरी हुई रोटी या पूड़ी, बेसनौटी (ग्रा०) ।

बेसनौटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बेसन] बेसन की बनी रोटी या पूड़ी ।

बेसर—(संज्ञा, पु०, दे०) खच्चर, घोड़ा, नाक की नथ या नथुनी ।

बेसवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वेश्या] वेश्या, पतुरिया, रंडी, बेसुवा (ग्रा०) ।

बेसा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वेश्या] वेश्या, पतुरिया, रंडी । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भेष] भेष, रूप, वेष ।

बेसारा*†—(वि०, दे०)[हि० बैठाना] बैठानेवाला, कमाने या रखनेवाला ।

बेसाहना†—(क्रि० स०, दे०) मोल लेना, खरीदना, जान-बूझ कर अपने पीछे झगड़ा लगाना । "आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं"—[रामा०] ।

बेसाहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बेसाहना] माल मोल लेने का कार्य ।

बेसाहा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बेसाहना] सौदा, सामग्री, सामान, मोल ली वस्तु ।

बेस्वा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वेश्या] वेश्या, रंडी । "बेस्वा केरो पूत ज्यों, कहे कौन को बाप" —कबी० ।

बेहंगम—(वि०, दे०) [सं० विहंगम] पक्षी, भद्दा, भोंड़ा, बेढंगा, विकट, बेढब ।

बेहँसना*‡—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हँसना सं० विहसन] बड़े जोर से हँसना, ठट्ठा मार कर हँसना, [बिहँसना (दे०)] ।

बेह*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेध] छिद्र, छेद । अच्छा, भला ।—**तर**,—**तरीन**-(वि०, फा०) किसी से बढ़कर, बहुत अच्छा, बहुत ही अच्छा । (अव्य०) स्वीकार-सूचक शब्द, अच्छा ।

बेहड़—(वि०, संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विकट] ऊँचा-नीचा वनखंड, विकट; [बीहड़ (दे०)]

बेहना†—(संज्ञा, पु०, दे०) जुलाहों की एक जाति, धुनिया, धुना ।

बेहया—(वि०, फा०) बेशरम, निर्लज्ज । "न निकली जान अब तक, बेहया हूँ"—भा० ह० । [**बेहयाई** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

बेहर—(वि०, दे०) स्थावर, अचर, पृथक्, भिन्न, अलग ।

बेहरा—(वि०, दे०) अलग, भिन्न, पृथक्, रसोइया (अं०) ।

बेहराना—(क्रि० अ०, दे०) फटना ।

बेहरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चंदे का धन, जमींदारी का एक खंड ।

बेहला, बेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० वायोलिन] सारंगी जैसा एक अंग्रेजी बाजा ।

बेहून*‡—(क्रि० वि०, दे०) [सं० विहीन] बिना, बगैर ।

बेहूक—(वि०, फ़ा०) निश्चिन्त, बेखटके, प्रसन्नता से, बेधड़क, बेफिक्र ।

बैंगन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बंगण] भाँटा ।

बैंगनी, बैजनी—(वि०) [हि० बैंगन+ई प्रत्य०] लाल और नीला मिला रंग, बैंगन के रंग का रंग । (संज्ञा, स्त्री०) एक प्रकार का नमकीन पक्वान्न ।

बैड़ा*—(वि०, दे०) [हि० बेंडा] आड़ा, बेंड़ा ।

बै—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वय] कंघी (जुलाहा) "नय वै चढवो बार"—वि० ।

बैकल†—(वि०, दे०) [सं० विकल] उन्मत्त, पागल । [**बैकली (संज्ञा, स्त्री०)**] ।

बैकलाना—(क्रि० अ०, दे०) पागल होना, उन्मत्त सा बकना ।

बैकुंठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैकुंठ] विष्णु, स्वर्ग, विष्णु-लोक । "वैकुंठ कृष्ण मधु-सूदन पुष्कराक्ष" —शंक० ।

बैखानस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैखानस] एक प्रकार के वनवासी तपस्वी ।

बैजंती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वैजयंती] लम्बे गुच्छेदार फूलों का एक पौधा, विष्णु की माला, विजय-माला ।

बैजनाथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैद्यनाथ] शिव जी, महादेवजी ।

बैजयंती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वैजयन्ती] विष्णु की माला, विजयमाल ।

बैठक—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बैठना] बैठने-उठने का व्यायाम, बैठने का स्थान, अथाई, चौपाल, आसन, पीढ़ा, चौकी, मूर्त्ति या खम्भे के नीचे की चौकी, आधार, साथ बैठना-उठना, सदस्यों का एकत्रित होना, अधिवेशन, जमावड़ा, मेल; संग, बैठने का ढंग या क्रिया, बैठाई ।—**खाना**-(पु०) भेंट मुलाकात करने का विशेष कमरा ।—**बाज़**-(वि०) धूर्त शरारिक ।

बैठका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बैठक] लोगों के बैठने का कमरा, बैठक ।

बैठकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बैठक+ई प्रत्य०] उठने-बैठने का व्यायाम, बैठक, आसन, काष्ठ या धातु आदि की दीवट, आधार ।

बैठन—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बैठना] आसन, बैठक, बैठने की क्रिया का भाव, दशा या ढंग ।

बैठना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वेशन] ठहरना, स्थित होना, आसन लगाना या जमाना, आसीन होना, चिड़ियों का अंडे सेना । [**बैठाना** (स० रूप)], [**बैठवाना** (प्रे० रूप)] । **मुहा०—बैठे बैठाये (बिठाये)**—एकाएक, अचानक व्यर्थ में, अकस्मात्, व्यर्थ, निरर्थक, अकारण । **बैठे बैठे**—बेकार, व्यर्थ मे, बे मतलब, अकारण, अकस्मात्, अचानक, निष्प्रयोजन । **बैठते-उठते**—सदा हरदम । किसी समय या स्थान पर ठीक जमना, कंडे पर आना, अभीष्ट कार्य या बात होना, प्रभाव पड़ना, उपयुक्त या ठीक होना, किसी उठाये हुए कार्य को छोड़ देना, नीचे धँस जाना ।—**नाक**—कंठ-स्वर में अनुनासिकता आना । अभ्यस्त होना, पानी आदि मे घुली वस्तु का तल पर जम जाना, डूबना, दबना, पैठना, पचक या धँस जाना, बिगड़ना, कारबार टूट जाना, पड़ता पड़ना, मूल्य या खर्च होना निशाने पर लगना, जमीन मे पौधे का गाड़कर लगाया जाना, किसी स्त्री का किसी पुरुष की पत्नी बन जाना, घर मे पड़ना ।—**मन चित्त या दिल में**-पसंद आना, प्रभाव पड़ना, याद हो जाना ।—**गला**-स्वर बिगड़ना । बे रोजगार या बेकार रहना ।

बैठाना—(क्रि० स०) [हि० बैठना] आसनासीन या उपविष्ट करना, स्थित होने को कहना, नियुक्त या स्थापित करना, हाथ को किसी कार्य को बार-बार कर अभ्यस्त करना, माँजना, ठिकाना, ठीक तरह जमा देना, डुबाना, पचकाना या धँसाना, निशान या लक्ष्य पर जमाना, कारबार को बिगाड़ना या चलता न रहने देना, जलादि में घुली वस्तु को तल पर जमाना, पौधे आदि को पृथ्वी पर गाड़ना या लगाना, किसी स्त्री को पत्नी बनाकर में घर रखना, किसी उलझन या पेंचीदी बात को सुलझा कर ठीक करना, उपयुक्त या ठीक करना । जैसे—हिसाब बैठाना । **मुहा०—ठीक**—अभीष्ट कार्य या बात करना, प्रबन्ध या व्यवस्था (उचित) करना । अर्थ—असगत तथा निरर्थक से प्रतीत होने वाले शब्दों को सार्थक सा बना देना । राँधना या पकने को आग पर रखना ।

बैठारना-बैठालना†*—(क्रि० स०, दे०) [हि० बैठाना] बैठाना, बिठलाना ।

बैडाल—(वि०, सं०) बिडाल से सम्बन्धित ।

बैढ़ना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० बाड़ा, बेढ़ा] बेढ़ना, बंद करना ।

बैत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पद्य, छंद, श्लोक । **बाज़ी**—(यौ०) अंताक्षरी, पद्य पाठ ।

बैतरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वैतरणी] यमलोक की नदी ।

बैतरा, बैतला—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार की सोंठ ।

बैताल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैताल] द्वारपाल, शिवजी के गणाधिप, एक भूतयोनि ।

बैतालिक—(सं०, पु०, दे०) [सं० वैतालिक] स्तुति-पाठक ।

बैद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैद्य] वैद्य, हकीम, डाक्टर [**बैदिनी** (स्त्री०)] । **बैदी**—(संज्ञा, स्त्री०) वैद्य का कार्य या पेशा । **लो०**—"बैद करै बैदकी चंगा करै खुदाय, जाव बैद घर आपने बात न बूझै कोय"—कबी० ।

बैदक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैद्यक] आयुर्वेद, चिकित्सा-शास्त्र, वैद्यक ।

बैदकी, बैदगी, बैदी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बैद] वैद्यविद्या, वैद्य का व्यवसाय, वैद का कार्य या काम ।

बैदाई, बैदई, बैदी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बैद] वैद्य का कार्य । "बैद करै बैदाई भाई चंगा करै खुदाय"—कबी० ।

बैदेही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वैदेही] सीताजी, जानकीजी, विदेह-पुत्री । "वैदेही मुख पटतर दीन्हे"—[रामा०] ।

बैनबैना*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वचन] बात, वचन, [बयन (दे०)] । "मुनि केवट के बैन"—[रामा०] । **मुहा०—झरना (कढ़ना)**—मुख से बात निकलना ।

बैनतेय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैनतेय] विनता का पुत्र, गरुड़ । "बैनतेय बलि जिमि चह कागू"—[रामा०] ।

बैना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बयन विवाहादि उत्सवों पर मित्रों आदि के घर भेजी जाने वाली मिठाई आदि वस्तु, [बायना, बायन (दे०)] । (क्रि० स०, दे०) [सं० वपन] बोना । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वचन] वचन बात ।

बैपार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यापार] रोजगार, उद्यम, व्यवसाय, ब्यौपार (ग्रा०) ।

बैपारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यापारी] रोजगारी, व्यवसायी, ब्यौपारी ।

बैमात्र—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैमात्र] सौतेला भाई ।

बैयर*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वधूवर] स्त्री० ।

बैया*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाय] बैसर, बै, बया, एक पत्ती ।

बैयाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मोल लेने वाली वस्तु का भाव तय होने पर कुछ धन पेशगी देना, बयाना ।

बैयाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वायु + आला] झरोखा, बयाला ।

बैरंग—(वि०, दे०) [अं० बिअरिंग] जिसका महसूल पेशगी न दिया गया हो ।

बैर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैर] वैमनस्य, विरोध, शत्रुता, द्वेष । "लायक ही सों कीजिये, ब्याह, बैर अरु प्रीति ।" **मुहा०—काढ़ना या निकालना (भंजाना)**-शत्रुता का बदला लेना । **—ठानना**-दुश्मनी करना, शत्रुता या विरोध करना । **—मानना**-वैमनस्य का भाव रखना । **—पड़ना**-शत्रु होकर दुख देना । **—बिसाहना या मोल लेना**-किसी से शत्रुता पैदा करना । **—लेना**-बदला लेना, कसर निकालना । † (संज्ञा, पु०) [सं० वदरी] बेरी का फल, बेर (ग्रा०) ।

बैरख—(संज्ञा, पु०, दे०) [तु० बैरक] सेना का झंडा, ध्वजा, पताका ।

बैरखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हाथ का एक गहना ।

बैराग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैराग्य] देखी-सुनी वस्तुओं में प्रेम न होना, त्याग, वैराग्य, विराग । [**बैरागी** (वि०)] ।

बैरागी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विरागी] वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद, त्यागी, संन्यासी । [**बैरागिनी, बैरागिन** (स्त्री०)] । "बैरागी रागी बागी सब जासों अति भय मानत"—[स्फु०] ।

बैराना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वायु] वायु-प्रकोप से बिगड़ना ।

बैरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैरिन्] शत्रु, दुश्मन, विरोधी, [**बैरिणी, बैरिनी** (स्त्री०, दे०) । "उतर देत छाड़ौ जियत, बैरी राजकिसोर"—[रामा०] ।

बैल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बलद] वृषभ, एक पशु जाति, बैरद, बेरदा, बैरधा, (ग्रा०), [**गाय** (स्त्री०)] ।

बैसंदर, बैसंधर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैश्वानर] अग्नि, आग । **लो०**—"मोरे घर से आगी लाये नाँव धरेन बैसंदर ।"

बैस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वयस्] उम्र, आयु, अवस्था, जवानी । (संज्ञा, पु०, दे०) क्षत्रियों की एक जाति ।

बैसना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० वेशन] बैठना, बसना।

बैसर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बय] जुलाहों की कपड़ा बुनने में बाना सुधारने को कघी, बय (ग्रा०)।

बैसवारा, बैसवाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बैस+वारा प्रत्य०] अवध का पश्चिमीय प्रान्त।

बैसवारी, बैसवाड़ी—बैसवाड़ की बोली।

बैसाख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैशाख] चैत्र के बाद का महीना।

बैसाखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विसाख] वह दो शाखा की लाठी जिसे लँगड़े लोग बगल में लगाकर टेकते चलते हैं। (वि० दे०) बैसाख का।

बैसाना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० बैसना] बैठाना, [**बैसारना** (स० रूप)], [**बैसरवाना, बैसवाना** (प्रे० रूप)]।

बैसिक*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैशिक] वेश्या प्रेमी नायक (काव्य०)।

बैहर*‡—(वि०, दे०) [सं० बैर+भयानक] भयानक, भयंकर, क्रोधालु। ‡* (संज्ञा, स्त्री०, दे०) वायु (सं०) बेहरिया।

बोआई, बुवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बोना] बोने की मजदूरी) बोने का कार्य।

बोआना—(क्रि० स०, दे०) खेत में बीज छिड़कवाना, बुवाना, बोवाना (ग्रा०)।

बोआरा—(संज्ञा, पु०, दे०) खेत बोने का समय, सुकाल।

बोक†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बकरा] बकरा।

बोज—(संज्ञा, पु०, दे०) घोड़ों का एक भेद।

बोजा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फा० बोजः] चावल की मदिरा।

बोझ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भार] गुरुत्व, भार, भारीपन, बोझा, गठरी, कठिन कार्य या बात, किसी कार्य में होनवाला श्रम, व्यय या कष्ट, गट्ठा, एक आदमी या पशु के लादने योग्य भार, वह जिसका सम्बन्ध निबाहना कठिन हो। **मुहा०**—**उठाना**-भार वहन करना।—**उतारना**-भार हलका करना।

बोझना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० बोझ] बोझ लादना।

बोझल, बोझिल—(वि०, दे०) [हिं० बोझ] भारी, वजनी, गुरु, [गरू (दे०)]।

बोझा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बोझ] भार, वजन, गट्ठा, पोटरी, गठरी।

बोट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटी नाव, डोंगी, संस्थाओं मे प्रथिनिधि भेजने की सम्मति। [**वोट** (अं०)]।

बोटी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बोटा] मांस का छोटा सा टुकड़ा। **मुहा०**—**बोटी कटना (काटना)**-शरीर को काट कर टुकड़े-टुकड़े कर देना।

बोडा—(संज्ञा, पु०, दे०) अजगर (संज्ञा, पु०, दे०) लोबिया।

बोड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) दमड़ी, कौड़ी, बहुत थोड़ा धन। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बौंड़ी, लता।

बोत—(संज्ञा, पु०, दे०) घोड़ों को एक जाति।

बोतल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० बाटल] काँच की बड़ी लम्बी गहरी शीशी।

बोतली—(संज्ञा, स्त्री०) छोटी बोतल।

बोताम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० बटन] बटन गोदाम, गुदाम, बुताम (ग्रा०)।

बोतू—(संज्ञा, पु०, दे०) बकरा, छाग।

बोदली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भोदली।

बोदा—(वि०, दे०) [सं० अबोध] गावदी, भोला, मूर्ख, सुस्त, मट्ठर, फुसफुसा। [**बोदापन** (संज्ञा, पु०)], [**बोदी** (स्त्री०)]।

बोद्ध—(वि० सं०) व्युत्पन्न, बुद्धिमान, समझदार, चतुर, ज्ञानी।

बोद्धव्य—(वि०, सं०) जानने योग्य। ध्यान देने योग्य।

बोध—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्ञान, समझ, जानकारी, संतोष, धीरज, धैर्य।—**कर**-(वि०) जगानेवाला।—**गम्य**-(वि०) समझ में आने योग्य।

बोधक—(संज्ञा पु०, सं०) समझाने या ज्ञान कराने वाला, जताने वाला, संकेत या क्रिया-द्वारा एक दूसरे को मनोगत भाव जनाने वाला, शृंगार रस का एक हाव (काव्य)।

बोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) सूचित करना, जगाना। [**बोधनीय, बोध्य, बोधित** (वि०)]।

बोधना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० बोधन] समझाना, बोध व ज्ञान देना। [**बोधाना** (द्वि० क० रूप)], [**बोधवाना** (प्रे० रूप)]।

बोधनीय—(वि०, सं०) जानने योग्य।

बोधयिता—(संज्ञा, पु०, सं०) शिक्षक, बताने वाला।

बोधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समाधि का एक प्रकार विशेष। **—तरु, —द्रुम**-(पु०) गया का वह पीपल का वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध को संबोधि (बुद्धत्व) ज्ञान प्राप्त हुआ था। **—सत्व**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी।

बोधित—(वि०, सं०) जिसे जानकारी या बोध कराया जाय।

बोधितव्य—(वि०, सं०) जानने योग्य।

बोध्य—(वि०, सं०) जानने योग्य।

बोना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वपन] छितराना, बिखराना, खेत या भुरभुरी भूमि में जमने को बीज डालना। **लो०**—"जो बोना सो काटना, कहै यहै सब कोय।"

बोबा†—(संज्ञा, पु०, दे०) स्तन, थन, साज-सामान, गट्ठर, अंगड़-खंगड़, गठरी [**बोबी** (स्त्री०)]।

बोय‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० बू] गंध, बास, महक। जैसे-बदबोय, खुसबोय।

बोर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बोरना] डुबाने की क्रिया, डुबाव, सिर का एक गहना।

बोरना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० बूड़ना] जलादि में निमग्न कर देना, डुबाना, बदनाम या कलंकित करना, मिलाना या योग देना, घुले रंग में डुबोकर रँगना।

बोरसी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [गोरसी (हि०)] अँगीठी। (वि०) गोरस सम्बन्धी।

बोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० पुर=दोना, पात्र] टाट का बना अनाज आदि भरने का थैला। (संज्ञा, पु०, दे०) डुबाने की क्रिया, डुबाव।

बोरिया—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चटाई, बिस्तर। "अपने अपने बोरिया पर जो गदा था शेर था"—मीर०। [**बोरिया-बसना, बोरिया-बँधना, बोरिया-बस्तर, बोरिया-बकचा** (यौ०)]। **मुहा०**—**बँधना उठाना**-कूच की तैयारी करना, प्रस्थान करना।

बोरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बोरा] छोटा बोरा, टाट की थैली।

बोरो—(संज्ञा, पु०) [हि० बोरना] एक प्रकार का मोटा धान, इन्द्र-धनुष।

बोल—(संज्ञा, पु०) [हि० बोलना] शब्द, वाक्य, वाणी, कथन, वचन, व्यंग, ताना, फबती या लगती हुई बात, बाजों का गठा शब्द, प्रतिज्ञा, प्रण। **—चाल**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, हि०) सम्भाषण, कथोपकथन, बातचीत, चलती भाषा, व्यवहार की बोली, छेड़-छाड़, हेलमेल, पारस्परिक सद्भाव। [**बोली-बानी** (यौ०)]। **—चाल न होना**-परस्पर सद्भाव न होना, वैमनस्य होना। **मुहा०** **—बाला रहना या होना**-बात का बढ़ कर रहना या माना जाना, साख, धाक या मान-मर्यादा बनी रहना। गीत का खंड, अंतरा (संगी०)। **बड़े —बोलना**-अभिमान की बात करना। **लो०**—"दूर के बोल सुहावन लागत।"

बोलता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० बोलना] ज्ञान कराने और बोलने वाला तत्व, आत्मा, जीव, प्राण, जीवन-तत्व, जान।

बोलती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बोलने की शक्ति, वाणी, वाक्‌शक्ति।

बोलनहारा—(संज्ञा, पु०) [हि० बोलन+हारा प्रत्य०] आत्मा, जीव, बोलने वाला।

बोलना—(क्रि० अ०, दे०, हि०) शब्दोच्चारण करना, बातचीत करना, किसी वस्तु का शब्द निकालना या करना। **—चालना**-(यौ०) बातचीत करना। **मुहा०—बोल जाना**-मर जाना (अशिष्ट), चुक या फट जाना, बेकाम हो जाना, उपयोग या व्यवहार के योग्य न रहना, कुछ कहना, बदना, ठहराना, रोक-टोक या छेड़ छाड़ करना। *बुलाना, टेरना (ब्र०), पुकारना, पास आने को कहना। —[**बोलवाना, बोलावाना** (प्रे० रूप)], [**बोलनि** (संज्ञा, स्त्री०)]। **—बोलि पठाना**-बुला भेजना, निमंत्रित करना। "राजा जनक ने यज्ञ रची है दशरथ बोलि पठाये हैं जी"—[स्फु०]।

बोलसरी†—(संज्ञा, पु०, दे०) मौलसिरी। (संज्ञा, पु०) [?] एक प्रकार का घोड़ा।

बोला-चाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बोल-चाल] बात-चीत, बोल-चाल, बोला-बाली (ग्रा०)।

बोली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बोलना] मुख से निकला शब्द, वाणी, वचन, बात, अर्थवान शब्द, या वाक्य, भाषा, नीलाम में दाम कहना, हँसी, दिल्लगी, ठठोली, किसी प्रान्त-वासियों के विचार प्रगट करने का व्यवहारिक शब्द समुदाय या भाषा। **—ठोली**-(स्त्री०) व्यंग्य, कटाक्ष। **मुहा०—बोलना**-व्यंग्य या कटाक्ष करना, नीलाम के लिए दाम लगाना। **—मारना**-ताना मारना, आवाज

कसना।—छोड़ना, (बोलना या मारना)—व्यंग या उपहास के शब्द कहना।

बोल्लाह—(संज्ञा, पु०, दे०) घोड़ों की एक जाति।

बोवना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० बोना] बोना, छींटना। [**बोवाना**—(प्रे० रूप)]।

बोह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बोर] गोता, डुबकी, डुब्बी, बुड्डी (ग्रा०)।

बोहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बोधन=जगाना] प्रथम या पहली बिक्री।

बोहित*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बोहित] जहाज, बड़ी नाव। "संभु-चाप बड़ बोहित पाई"—[रामा०]।

बौंड़, बौंड़ा†—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) [सं० वोराट=टहनी] पेड़ की टहनी, लता।

बौंड़ना—(क्रि० अ०) [हिं० बौंड] लता की भाँति बढ़ना, टहनी फेंकना, फैलना।

बौंडर‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० बवंडर] चक्करदार हवा, बवंडर।

बौंड़ियाना—(क्रि० अ०, दे०) चक्कर खाना, घूमना।

बौंड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बौंड़] कच्चे फल, ढेंड़ी, ढोंड़, फली, छेमी, छदाम, दमड़ी, [ढोंढी, [बोंबी (दे०)], [बोंड़ा (पु०)]।

बौआना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० बाउ+आना प्रत्य०] स्वप्न की दशा का प्रलाप, सन्निपाती या पागल की भाँति अंडबंड बकना, बर्राना।

बौखल—(वि०, दे०) [हिं० बाउ] पागल, सिड़ी।

बौखलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० बाउ+स्खलन सं०] पगलाना, सनक जाना।

बौखलाहट—(संज्ञा, स्त्री०) विक्षिप्तता, बदहवासी।

बौछाड़, बौछार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वायु+चरण] पानी की नन्ही-नन्हीं बूँदें जो वायु वेग से गिरती है, झटास (प्रान्ती०), झड़ी, बातों का तार, ताना, बोली, ठठोली, कटाक्ष, अधिक देते जाना, वर्षा की बूँदों सा किसी वस्तु का अधिक संख्या या मात्रा मे आ पड़ना।

बौड़ना—(क्रि० अ०)

बौड़म—(सज्ञा, पु०) सनकी, पागल।

बौड़हा—(वि०) पागल, सनकी, बौड़म।

बौड़हा, बौरहा—(वि०, दे०) [हिं० बावला] बावला, पागल, सिड़ी, बौराह (ग्रा०)। "बर बौराह बरद असवारा"—[रामा०]।

बौद्ध—(वि०, सं०) वह मत जिसे बुद्ध ने चलाया है। (संज्ञा, पु०) बुद्ध का अनुयायी।—धर्म-(सज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गौतम बुद्ध का चलाया धर्म या मत इस मत की दो बड़ी शाखायें है—(१) हीनयान (२) महायान।

बौधायन—(संज्ञा, पु०, सं०)। एक ऋषि जिन्होंने कल्प सूत्र की रचना की थी।

बौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वामन] अति नाटे या छोटे कद या डील-डौल का मनुष्य। [**बौनी** (स्त्री०)]। "अति ऊँचे पर लाग फल, बौना चाहै लेन"—कु० वि० ला०।

बौर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुकुल] आम की मंजरी, आम के फूलों का गुच्छा, मौर।

बौरना—(क्रि० अ०) (हिं० बौर+ना प्रत्य०] आम के वृक्ष में बौर निकलना, मौरना, [बौराना (दे०)]।

बौरहा†—(वि०, दे०, हिं०) बौराह, बावला, पागल, सिड़ी।

बौरा, बउरा—(वि०, दे०,) [सं० वातुल] पागल, सिड़ी, बावला। "तेहि बिधि कस बौरा वर दीन्हा"—[रामा०]।

बौराई†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० बौरा+ई प्रत्य०] पागलपन। (क्रि० अ०, दे०) पागल हो जाता है। "जस थोरे धन खल बौराई"—[रामा०]।

बौराना†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० बौरा+ना प्रत्य०) पागल वा सिड़ी हो जाना, सनक जाना, बावला होना, विवेक से रहित हो जाना। (क्रि० स०, दे०) किसी को ऐसा कर देना कि उसे भले बुरे का ज्ञान न रहे, आम में बौर आना, बौरना।

बौरापन—(संज्ञा, पु०, हिं०) पागलपन।

बौराह, बौराहा*†—(वि०, दे०) [हिं० बौरा] सिड़ी, पागल। [**बौराहापन** (संज्ञा, पु०)]।

बौरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बौरा] पगली, बावली। "हौं बौरी खोजन गयी, रही किनारे बैठ"—कबी०।

बौलसिरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मौलसिरी।

बौहर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वधू] वधू, बहू, दुलहिन, बहुरिया (ग्रा०)।

बौहा—(वि०, दे०) पथरीला, कँकरीला । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वधू] बधू, पतोहू ।

बौहाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रोगिणी स्त्री, उपदेश, शिक्षा, सीख ।

ब्यंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यंग] ताना, चुटकी, गूढ़ अर्थ । [**व्यंगार्थ** (यौ०)] ।

ब्यंजन—(संज्ञा, पु०, दे०) व्यंजन, अक्षर, वर्ण, भोजन ।

ब्यजन, ब्यजना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यजन] बिजना, पंखा, बेना, बिनवाँ ।

ब्यतीतना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० व्यतीत + ना प्रत्य०] गुजर या बीत जाना, [बितीतना (दे०)] ।

ब्यथा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० व्यथा] पीड़ा, दर्द, [बिथा (दे०)] ।

ब्यलीक—(वि०, दे०) [सं० व्यलीक] अप्रिय, विलक्षण । (संज्ञा, पु०, दे०) डाँट फटकार, अपराध, दुख, अनुचित, अयोग्य ।

ब्यवसाय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यवसाय] [ब्यौसाय (दे०)] व्यापार, रोजगार ।

ब्यवस्था—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० व्यवस्था] प्रबंध, स्थिति, स्थिरता, इन्तजाम, [विवस्था (दे०)] । [मैनेजमेंट] ।

ब्यवहर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यवहार] [**ब्यौहर** (दे०)] ऋण उधार देने वाला, धनी ।

ब्यवहरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० व्यवहार] ब्यौहरिया, व्यवहर, महाजन, धनी । "अब आनिय ब्यवहरिया बोली"—[रामा०] ।

ब्यवहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यवहार] [ब्यौहार (दे०)] व्यवहार, रुपये का लेन-देन, सुख-दुख में सम्मिलित होने का मेल सम्बन्ध ।

ब्यवहारी—(संज्ञा, पु०) [सं० व्यवहारिन्] काम करने वाला, लेन देन करने वाला, व्यापारी, मेली, सम्बन्धी ।

ब्याज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्याज] सूद, ब्याज, लाभ, वृद्धि, बियाज (ग्रा०) । [इन्टरेस्ट] —**बट्टा**-(पु०) नफा-नुकसान ।

ब्याना—(क्रि० स०) [हि० बियाना] बियाना, जनना, पैदा या उत्पन्न करना ।

ब्यापना—*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० व्यापन] फैलना, किसी वस्तु या स्थान में पूर्णतया घेरना, ओत-प्रोत होना, ग्रसना, प्रभाव करना । "नगर व्याप गई बात सुतीछी"—[रामा०] ।

ब्यारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विहार] रात का भोजन, बियारी, ब्यालू ।

ब्याल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्याल] साँप ।

ब्याली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० व्याल] साँपिनी । (वि०) [सं० व्यालिन्] साँप पकड़ने वाला, सँपेरा ।

ब्यालू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विहार] रात का भोजन, ब्यारी, बियारी ।

ब्याह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विवाह] स्त्री-पुरुष मे पत्नी पति सम्बन्ध स्थापित करने की रीति, विवाह, परिणय, दारपरिग्रह ।

ब्याहता—(वि०, दे०) [सं० विवाहित] जिसके साथ ब्याह हुआ हो, ब्याहा, ब्याही ।

ब्याहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विवाह वि० ब्याहता] विवाह होना या करना ।

ब्याहा—(वि०, दे०) [सं० विवाहित] जिसका ब्याह हो चुका हो । [**ब्याही** (स्त्री०)] ।

ब्याहुला†—(वि०, दे०) [हि० ब्याह] विवाह का ।

ब्योंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) चमड़ा छीलने का एक हथियार ।

ब्योंचना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विकुंचन] झोंके से मुड़ने या टेढ़े होने से नसों का स्थानों से हट जाना, बिलोचना, मुरकना ।

ब्योंत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० व्यवस्था] मामला, माजरा, व्यवस्था, ढंग, युक्ति, तदबीर, साधन-रीति, उपाय, कार्य पूरा उतारने का हिसाब किताब, तैयारी, आयोजन, संयोग, साधन या सामान की सीमा, नौबत, प्रबन्ध, उपक्रम, समाई, अवसर, तराश, पोशाक के लिये कपड़े की नाप-जोख से काट-छाँट, ब्यउँत (ग्रा०) । **मुहा०**—**बाँधना**-तैयारी करना । **लो०**—"पूरन के लत्ता बिनै कन्या तन का ब्योंत बाँधै ।"

ब्योंतना, ब्यौंतना—(क्रि० स०, दे०) [हि० ब्योंत] पोशाक के लिये कपड़े की काट-छाँट या नाप जोख करना, ब्यउँतना । [**ब्योंताना**—(द्वि० रूप)] [**ब्योंतवाना**—(प्रे० रूप)] । "दरजी अरजी सुनै न, कुरता मेरो ब्यौंतै ।"

ब्योपार, ब्यौपार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यापार] व्यापार, रोजगार, उद्यम ।

ब्योमासुर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य ।

ब्योरन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० ब्योरना] बाल सँवारने का ढंग ।

ब्योरना, ब्यौरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विवरण] गुथे बालों को सुलझाना ।

ब्योरा, ब्यौरा—(संज्ञा, पु०,) [हिं० ब्योरना] तफसील, विवरण, किसी बात या घटना की एक एक बात का कथन ।—(रे) **बार**–(यौ०) विस्तार के साथ ।

ब्योहर, ब्यौहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यवहार] धनी, महाजन, ऋणदाता, ऋण देना-लेना ।

ब्योहरिया, ब्यौहरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यवहार] धनी, महाजन, ऋणदाता, ब्यौहार । "अब आनिय ब्योहरिया बोली"—[रामा०] ।

ब्योहार, ब्यौहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यवहार] लेन-देन ब्यापार, बर्त्ताव, कार्य्य, न्याय ।

ब्रंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृंद] समूह, झुंड । "मनु अडोल वारिधि में विंबित राका उड़गण ब्रंद ।"

ब्रज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्रज] गोकुल गाँव, मथुरा और वृंदाबन के चारों ओर का देश, चलना, जाना, गमन । "सूरदास या ब्रज यों बसि कै"—सूर० ।

ब्रजना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० व्रजन] चलना ।

ब्रजेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रीकृष्ण ।

ब्रह्मंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ब्रह्मांड] संसार ।

ब्रह्म—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ब्रह्मन्] सत, चित् और आनन्द स्वरूप एक मात्र अखिल कारण रूप, नित्य सत्ता, परमेश्वर, चैतन्य, भगवान, ज्ञान की परमावधि-रूप, नारायण, परमात्मा, आत्मा, ब्राह्मण । "सत्यंज्ञानमनन्तं ब्रह्म", "यः ज्ञानस्य परमावधिः" । ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहै न दूजी बात"—[रामा०] । ब्राह्मण (सामासिक पदों में), ब्रह्मा (समास मे), ब्रह्मराक्षस, वेद, एक और चार की संख्या ।—**कुंड**–(पु०, सं०) ब्रह्मसर नामी तीर्थ ।—**गाँठ**–(स्त्री०) [सं० ब्रह्मग्रंथि] जनेऊ या यज्ञोपवीत की गाँठ-विशेष ।—**ग्रंथि**–(स्त्री०, सं०) जनेऊ या उपवीत की गाँठ-विशेष ।—**घाती**–(पु०) ब्राह्मण का मारनेवाला, ब्रह्महत्याकारी ।—**घोष**–(पु०) वेदध्वनि ।—**चर्य्य**–(पु०) चार आश्रमों मे से पहला आश्रम जिसमें मनुष्य का सदाचारमय साधारण जीवन रख कर मुख्य कार्य वेद पढ़ना है, एक प्रकार का यम (योग०) [**ब्रह्मचर्याश्रम्** (यौ०)] ।—**चारिणी**–(स्त्री०),सरस्वती, दुर्गा, पार्वती, ब्रह्मचर्य व्रत रखनेवाली स्त्री ।—**चारी**–(पु०) [सं० ब्रह्मचारिन्] प्रथमाश्रमी, ब्रह्मचर्य व्रत रखने वाला ।—[**ब्रह्मचारिणी** (स्त्री०)] ।—**ज्ञ**–(वि०) ब्रह्मज्ञानी, वेदज्ञ, आत्मतत्वज्ञ, वेदविद्, वेदज्ञ ।—**ज्ञान**–(पु०, सं०) अद्वैतवाद, ब्रह्म सम्बन्धी ज्ञान, पारमार्थिक अद्वैत सत्ता के सिद्धान्त का बोध । "ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहै न दूजी बात"—[रामा०] ।—**ज्ञानी**–(वि०) [सं० ब्रह्मज्ञानिन्] अद्वैतवादी, पारमार्थिक, अद्वैत सत्ता रूप, ब्रह्म सम्बन्धी ज्ञान रखनेवाला ।—**तीर्थ**–(पु०, सं०) ब्रह्मसर नामी तीर्थ, पुष्करमूल, पोहकरमूल ।—**दंड**–(पु०) बटु या ब्रह्मचारी का दंडा, ब्रह्मा का दिया दंड, ब्राह्मण का दंड ।—**दिन**–(पु०) ब्रह्मा का दिन जो एक हजार या १०० चतुर्युगी का माना जाता है ।—**देव**–(पु०) ब्रह्मा, चंद्रमा, शिव [बरमदेव (दे०)] ।—**दोष**–(पु०) ब्राह्मण के मार डालने का पाप या दोष [**ब्रह्मदोषी** (वि०)] । "ब्रह्मदोष सम पातक नाहीं"—[रामा०] ।—**द्रोह**–(पु०) विप्रद्रोह ।—**द्रोही**–(वि०, यौ०) [सं० ब्रह्मद्रोहिन्] ब्राह्मणों से शत्रुता या द्रोह करनेवाला । "ब्रह्मद्रोही न तिष्ठति ।"—**द्वार**–(पु०) ब्रह्मरंध्र ।—**द्वेष**–(पु०, सं०) ब्राह्मणों से वैर, [**ब्रह्मद्वेषी** (वि०)] ।—**ध्यान**–(पु०) ब्रह्म का ध्यान या विचार । [**ब्रह्मध्यानी** (वि०)] ।—**निष्ठ**–(वि०) ब्रह्मणों का भक्त, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञान-संपन्न । [**ब्रह्मनिष्ठा** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] ।—**पद**–(पु०) मुक्ति, मोक्ष, ब्राह्मणत्व, ब्रह्मत्व ।—**पाश**–(पु०) ब्रह्म [फाँस (दे०)] एक अस्त्र, ब्रह्मास्त्र ।—**पुत्र**–(पु०) ब्रह्मा का लड़का, वशिष्ठ, नारद, मरीचि, मनु, सनकादिक, मानसरोवर से निकल बंगाल की खाड़ी मे गिरने वाली ब्रह्मपुत्रा नदी ।—**पुराण**–(पु०) आदि पुराण, अठारह पुराणों में से एक पुराण ।—**पुरी**–(स्त्री०) ब्रह्मा का नगर ।—**भट्ट**–(पु०) वेदज्ञानी, ब्रह्मविद्, एक तरह का ब्राह्मण ।—**भूति**–(स्त्री०) ब्राह्मण का तेज, ब्राह्मण का धर्म, ऐश्वर्य पदाधिकार ।—**भोज**–(पु०) ब्राह्मण-भोजन,

[**बरमभोज** (दे०)] ।**—भोजन**-(पु०) ब्राह्मणों को खिलाना ।**—मुहूर्त्त**-(पु०) प्रातःकाल, प्रभात, प्रात, सवेरे, उषाकाल, ब्रह्मबेला ।**—यज्ञ**-(पु०) यथाविधि वेद पढना, वेदाध्ययन, वेदाभ्यास ।**—रंध्र**-(पु०) मस्तक के मध्यभाग का एक गुप्त छिद्र, जिससे प्राणों (जीव) के निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है (योग०) ।**—राक्षस**-(पु०) ब्राह्मणभूत ।**—रात्रि**-(स्त्री०) ब्रह्मा की एक रात्रि जो उनके दिन के समान ही होती है, सौ (एक) कल्प ।**—रूप**-(पु०) ब्रह्मा या ब्राह्मण के रूप का ।**—रूपक**-(पु०) चित्र या चंचल छंद, १६ वर्णों का वृत्त (पिं०) ।**—रेख,—लेख**-(पु०) जीव के गर्भ में आते ही ब्रह्मा का लिखा विधान, भाग्य का लिखा, विधि-विधान, ब्रह्माक्षर ।**—रोष**-(पु०) विप्रक्रोध ।**—लोक**-(पु०) ब्रह्मा के रहने का लोक, मुक्ति या मोक्ष का एक भेद ।**—वाद**-(पु०) वेदपाठ, वेद का पठन-पाठन, वेदाभ्यास, अद्वैत या वेदान्तवाद ।**—वादी**-(वि०) वेदांती, अद्वैतवादी, केवल ब्रह्म को ही सत्ता माननेवाला । [**ब्रह्मवादिनी** (स्त्री०)] ।**—विद्**-(वि०) ब्रह्म का जानने या समझने वाला, वेदार्थज्ञाता, वेदान्ती ।**—विद्या**-(स्त्री०) ब्रह्म के ज्ञान की विद्या, उपनिषद् शास्त्र, वेदान्त, अध्यात्मज्ञान ।**—वैवर्त्त**-(पु०) ब्रह्म के कारण ज्ञात होने वाला संसार, श्रीकृष्ण, ब्रह्म सकाश से उत्पन्न प्रतीति, कृष्ण भक्ति सम्बन्धी एक पुराण ।**—समाज**-(पु०) एकेश्वरवादी पंथ जिसे राजा राममोहनराय ने प्रवर्तित किया था ।**—सूत्र**-(पु०) यज्ञोपवीत, जनेऊ, व्यास भगवान् कृत शारीरिक सूत्र या वेदान्त ।**—हत्या**-(स्त्री०) ब्राह्मण का वध, ब्राह्मण का मारना, ब्राह्मण के वध का महापाप—(मनु०) ।

ब्रह्मण्य—(वि०, सं०) ब्राह्मणों का सेवक या प्रेमी, ब्राह्मणसत्कारी, ब्रह्मा या ब्रह्म सम्बन्धी । "प्रभु ब्रह्मण्य देव मैं जाना"—[रामा०] ।

ब्रह्मत्व—(पु०, सं०) ब्रह्म का भाव, ब्राह्मणत्व ।

ब्रह्मर्षि—(पु०) ब्राह्मण ऋषि ।

ब्रह्मश्रव—(संज्ञा, पु०, सं०) वेद ।

ब्रह्मांड—(पु०) अनंत लोक वाला, समस्त विश्व, सारा संसार, चौदहों भुवनों का समूह, खोपड़ी, कपाल, भरभंड (ग्रा०) । "कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊँ"—[रामा०] ।

ब्रह्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) विधाता, विधि, पितामह, ब्रह्म या ईश्वर के तीन रूपों में से सृष्टि रचनेवाला विरंचि रूप, यज्ञ का एक ऋत्विक, [बरम्हा (दे०)] । भारत के पूर्व में एक प्रान्त ।

ब्रह्माक्षर—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊ

ब्रह्माणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ब्रह्मा की शक्ति, या स्त्री । सरस्वती देवी । "अगनित उमा रमा ब्रह्माणी"—[रामा०] ।

ब्रह्मानंद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्रह्म या परमात्मा के रूप ज्ञान या अनुभव से उत्पन्न हर्ष या आनंद । "ब्रह्मानंद मगन सब लोगू"—[रामा०] ।

ब्रह्माभ्यास—(संज्ञा, पु०,) वेद का अध्ययन ।

ब्रह्मारण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वेदाध्ययन की भूमि ।

ब्रह्मावर्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०) सरस्वती और शरद्वती नदियों के मध्य का प्रदेश ।

ब्रह्मासन—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्म-ध्यान के अनुकूल एक आसन ।

ब्रह्मास्त्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मंत्र विशेष से संचालित एक अस्त्र, ब्रह्मबाण ।

ब्रह्मोपदेश—(संज्ञा, पु०, सं०) वेद की शिक्षा ।

व्रात—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्रात्य] संस्कार रहित, जिसका जनेऊ न हुआ हो, पतित, अनार्य्य ।

ब्राह्म—(वि०, सं०) ब्रह्म या परमात्मा संबंधी । (संज्ञा, पु०, सं०) विवाह का एक भेद । (मनु०) **—मुहूर्त्त**-(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्योदय से दो घड़ी पूर्व का समय, ऊषा, प्रभात ।**—समाज**-(संज्ञा, पु०, सं०) केवल ब्रह्म के मानने वाले लोगों का सम्प्रदाय, ब्रह्मोपासक पंथ ।

ब्राह्मण—(संज्ञा, पु०, सं०) चार वर्णों में से सर्वश्रेष्ठ एक वर्ण या जाति जिसके प्रमुख कर्म यज्ञ करना-कराना, वेद का पठन-पाठन, ज्ञान और उपदेश देना है, ब्राह्मण जाति का मनुष्य, मंत्र-भाग को छोड़कर शेष वेद, विष्णु, शिव । [**ब्राह्मणी** (स्त्री०)] ।**—भोजन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्राह्मणों को जिमाना या खिलाना, ब्राह्मणों को भोजन कराना, [बरमभोज (दे०)] ।

ब्राह्मणक—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्राह्मण का कार्य न करने वाला । कुत्सित ब्राह्मण ।

ब्राह्मणत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्राह्मणपन, ब्राह्मण का भाव, धर्म या अधिकार, ब्राह्मणता ।

ब्राह्मण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्राह्मणत्व ।

ब्राह्मी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, भारत की पुरानी लिपि जिससे नागरी बंगला आदि आधुनिक

लिपियाँ विकसित हुई हैं, बुद्धि और स्मरण-शक्ति-वर्धक एक बूटी, शिव की अष्ट मातृकाओं में से एक, ब्रह्मा-संबंधी।

ब्रीड़ना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ब्रीडन] लजाना, लज्जित होना।

ब्रीड़ा, ब्रीड़—(संज्ञा०, स्त्री०, दे०) [सं० ब्रीडा] लज्जा, शरम। "समुझत चरित होति मोंहिं ब्रीड़ा"—[रामा०]।

भ

भ—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला के पवर्ग का चौथा वर्ण। (संज्ञा, पु०, सं०) राशि, ग्रह, नक्षत्र, भांति, भ्रम, शुक्राचार्य, पहाड़, भ्रमर, [भगण (दे०)] (पिं०)।

भंकार—(संज्ञा, पु०, अनु०) विकट या घोर शब्द।

भंग—(संज्ञा, पु०, सं०) भेद, लहर, हार, टुकड़ा, खंड, वक्रता, टेढ़ाई, डर, भय, विध्वंस, नाश, अड़चन, बाधा, झुकने या टूटने का भाव। [भंगता (संज्ञा, स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भृंगा] भाँग। "गंग-भंग दोउ बहिनि हैं, बसती शिव के अंग"—देव०।

भंगड़, भंगड़ी—(वि०, दे०) [हिं० भाग+अड़ प्रत्य०] बहुत भाँग खाने वाला। भंगेड़ी (ग्रा०)।

भंगना†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० भंग] दबना, (क्रि० स०, दे०) झुकाना, तोड़ना।

भंगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भाग+रा=का] भांग के रेशों से बना वस्त्र। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भृंगराज] भंगराज, भंगेरी, भंगरैया (ग्रा०)।

भंगराज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भृंगराज] एक काला पक्षी, भंगरा।

भंगरैया‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भृंगराज] भंगरा, पौधा (औष०)।

भंगान—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार की मछली।

भंगार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भंग] बरसाती पानी का गड्ढा, कुआँ खोदते समय खोदा गया गढ़ा। (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भांग] कूड़ा-करकट, घास-फूस।

भंगिमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वक्रता, झुकाव। "भ्रू भंगिमा पंडिता"—हरि०।

भंगी—(संज्ञा, पु०) [सं० भंगिन्] भंगशील, नष्ट होने वाला, भंग करने या तोड़ने वाला, भंगकारी। [भंगिनी (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) [सं० भक्ति] एक अस्पृश्य नीच जाति, डुमार, डोम। [भंगिन (स्त्री०)]। (वि०) [हिं० भांग] भांग पीनेवाला, भंगेड़ी।

भंगुर—(वि०, सं०) टूटने या भंग होने वाला, नाशवान, नश्वर, टेढ़ा, वक्र। [भंगुरता (संज्ञा, स्त्री०)]। [क्षण-भंगुर (यौ०)]।

भंगेड़ी—(वि०, दे०) [हिं० भंगड़] भांग पीने वाला, भंगड़।

भंजक—(वि०, सं०) तोड़ने वाला। [भंजिका (स्त्री०)]।

भंजन—(संज्ञा, पु०, सं०) तोड़ना, विध्वंस, विनाश। (वि०) तोड़नेवाला, भंजक। [भंजनीय (वि०)]।

भंजनक—(संज्ञा, पु०, सं०) लकवा, चेहरे का टेढ़ा हो जाना।

भंजना, भँजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भंजन] टूटना, तोड़ना, भुनाना, बड़े सिक्के का छोटे सिक्कों में बदलना, भुनाना, भुँजाना (ग्रा०)। (क्रि० अ०, दे०) [हिं० भाँजना] बटा या ऐंठा जाना, कागज के तख्तों का मोड़ा जाना, भाँजा जाना। "बिनु भंजे भव धनुष बिशाला"—[रामा०]।

भँजाई—(संज्ञा, स्त्री०) भाँजने का कार्य, नोट आदि के बदले फुटकर भांज के लिये दिया जाने वाला रकम या कमीशन, छपे फर्मे की मुड़ाई।

भंजाना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० भंजन] तोड़ना। "भंजेउ राम शंभु धनु भारी"—[रामा०]। (क्रि० स०, दे०) [हिं० भँजना] तुड़वाना, बड़े सिक्कों का छोटे सिक्कों में बदलवाना, भुनाना। (क्रि० स०, दे०) [हिं० भांजना] भंजवाना, बयना, ऐंठाना।

भंजी—(वि०, सं०) तोड़ने फोड़ने वाला।

भंटा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृंताक] बैंगन, भाँटा, भटा (ग्रा०)।

भंड—(वि०, सं०) गंदी या फूहड़ बातें कहने वाला, पाखंडी, धूर्त, भाँड। [भंडता, भंडपन (संज्ञा, स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) एक जाति के लोग जो सभाओं में गाते नाचते और नकलें करते हैं।

—**फोड़**†—(पु०) [हिं० भाँडा फोड़ना]

मिट्टी के बरतनों का फोड़ना या गिराना, तोड़ना, मिट्टी के बरतनों का टूटना फूटना, छिपी बात का खोलना, रहस्योद्घाटन, भंडाफोड़।

भँड़ताल†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०, हि०) तालियाँ बजाते हुए भाँड़ों का गान, भंड़तिल्ला, भड़चाँचर (प्रान्ता०)।

भड़तिल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भँड़ताल] देखिए, भँड़ताल।

भड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० भंडन] तोड़ना, भग करना, बिगाड़ना, नष्ट-भ्रष्ट करना, हानि पहुँचाना।

भड़भाँड़, भड़भाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भाडीर] एक कटीला क्षुप जिसकी जड़ और पत्तियाँ औषधि के काम आती है।

भँडरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भड्डरि] एक जाति के लोग, भड्डर, भड्डरा। (वि०) मक्कार, धूर्त, पाखंडी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भंडारा + इया प्रत्य०] दीवाल पर पल्लेदार ताख या आला।

भड़सार, भड़साल†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० भाँड़+शाला] वह स्थान जहाँ अनाज भरा जाता है। खत्ती, खौं (ग्रा०) बखारी, गोदाम।

भंडा—(संज्ञा पु०, दे०) [सं० भंड] पात्र, बरतन, भाँड़ा, भंडारा, रहस्य या भेद। (यौ०)—**फोड़**- देखिए भंडफोड़। **मुहा०—फूटना (फोड़ना)**- भेद खुलना (खोलना)।

भँड़ाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० भाँड़] उपद्रव मचाना, भाँड़ों सा उछल-कूद मचाना या नाचना-गाना, विनष्ट करना, तोड़ना-फोड़ना, भँड़ैती करना।

भंडार—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० भाँडागार] समूह, कोष, खजाना, कोठार, बखारी, पाकशाला, [**भंडारा** (दे०)]। उदर, पेट, अन्न भरने का स्थान।

भंडारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भाँडागार] कोष, खजाना, झुंड, भंडार, समूह, पाकशाला, साधुओं का भोज, पेट, उदर।

भंडारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भंडार+ई प्रत्य०] खजाना, कोष, छोटी कोठरी। (संज्ञा, पु०) [हि० भंडार+ई प्रत्य०] खजानची, कोषाध्यक्ष, रसोइया, भंडारे का मालिक, तोशाखाने का दारोगा। **लो०**—"दाता देय भँडारी का पेट पिराय।"

भंडित—(संज्ञा, पु०, सं०) भंडितायन नामक गोत्र के प्रवर्तक, एक ऋषि।

भंडिमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धोखा, छल।

भंडिर—(संज्ञा, पु०, सं०) सिरिस का पेड़।

भंडिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मिट्टी का छोटा चौड़े मुख का बरतन।

भँड़ेहर—(संज्ञा, पु०, दे०) भँड़ियों का समूह।

भँड़ैती—(संज्ञा, स्त्री०, ग्रा०) भाँड़ों सा आचार-व्यवहार, नकल।

भड़ौआ, भड़ोवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भाँड़] भाँड़ों के गाने का गीत या नकल, निम्न श्रेणी की बुरी कविता जो हास्य-प्रधान हो, असभ्य गीत।

भंदिल—(संज्ञा, पु०, सं०) भाग्य, भचक-भचक कर चलना, संदेश-वाहक।

भभ—(संज्ञा, पु०, सं०) धुआँ, चूल्हे का मुख।

भभरना—(क्रि० अ०) भयभीत होना, डरना।

भभा—(संज्ञा, पु०) छिद्र, बिल, (स्त्री०) डुग्गी।

भँभाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० रँभाना] रँभाना, भाँय भाँय करना।

भँभीरी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) लाल रंग का एक बरसाती कीड़ा, जुलाहा। "उड़ भभीरी कि सावन आ गया अब"—**मीर०**।

भँभेरि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०)) [हि० भभरना] डर, भय।

भँवन*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रमण] घूमना, फिरना, भ्रमण करना।

भँवना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भ्रमण] फिरना, घूमना, भ्रमण करना, चक्कर लगाना। [**भवैया** (वि०)]।

भवफेर—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) चक्कर, घुमाव, भ्रम, उलझन। **भवफेर**—जग जंजाल।

भँवर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रमर] भौंरा, जल-गर्त या आवर्त, पानी का चक्कर। भौंर (ग्रा०)। **—कली**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, हि०) पशुओं के छूने का यंत्र, सहज ही में सब ओर घूमने वाली कील में जुड़ी हुई कड़ी।—**जाल**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रमजाल] भ्रमजाल, सांसारिक झगड़े-बखेड़े, भँवजाल (ग्रा०), भवजाल।—**भीख**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रमर-भिक्षा] वह भीख जो भौंरे

के समान घूम फिर कर थोड़ी थोड़ी यों मांगी जावे कि देने वाले को हानि न हो। **मुहा०—में पड़ना**–चक्कर या झंझट में पड़ना।

भँवरा—(संज्ञा, पु०) भौंरा, भ्रमर।

भँवरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रमरी] भ्रमरी, भांरी (ग्रा०) ऐंठना, माड़ना, फेरी, गश्त, फेरा, पानी का चक्कर, एक केन्द्र पर घूमे हुए बालों या रोंओं का स्थान, विवाह मे अग्नि प्रदक्षिणा, [भाँवरि, (दे०)]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भँवरना या भँवना] घूम-फिर या चक्कर लगा कर सौदा बेचना, फेरा।

भँवाना*—(क्रि० स०, दे०, हि०) घुमाना, फिराना, चक्कर देना, भ्रम मे डालना, मरोड़ना, ऐंठना।

भँवारा†—(वि०, दे०) [हि० भवना+आरा प्रत्य०] घूमने या भ्रमण करने वाला, फिरने वाला, भ्रमण-शील।

भँसना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० बहना] पानी मे फेंका या डाला जाना।

भ—(संज्ञा, पु०, सं०) ग्रह, नक्षत्र, राशि, शुक्र, पर्वत, भगण, भौंरा।—**कूट**–(पु०) राशियों की गणना जो विवाह के निमित्त वर-कन्या के शुभ-अशुभ को ध्यान मे रखकर किया जाता है।—**गण**–(पु०) पिंगल के वर्णिक छंद के अंतर्गत एक गण प्रथम दीर्घ और अंतिम लघु (ऽ।।) होते हैं। —**गोल**–(पु०) खगोल।—**चक्र**–राशिचक्र। —**सूचक**–(पु०) ज्योतिषी।

भइया-भय्या—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्राता] भाई, बराबर वालो का आदर-सूचक।

भई—(क्रि० अ०, ब्र०) हुई, भै (ब्र०)।

भक—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) एकाएक या रह रहकर आग के जल उठने का शब्द।

भकाऊँ—(संज्ञा, पु०, अनु०) हौवा।

भकुआ, भकुवा—(वि०, दे०) [सं० भेक] मूढ़, मूर्ख। "घाघ कहैं ई तीनों भकुआ सिर बोझा औ गावै।"

भकुआना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० भकुआ] घबरा जाना, चकपका जाना (क्रि० स०, ब्र०) घबरा देना, चकपका देना, मूर्ख बनाना। "भभंर से भकुवाने से"—[ऊ० श०]।

भकोसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० भक्षण] जल्दी जल्दी या बुरी तरह से खाना, निगलना।

लो०—"जो न किया सा ना हुआ भकोसा मेरे भाई।"

भक्त-भगत—(वि०, सं०) भागों मे बटा हुआ, विभक्त, अलग या भिन्न किया या बाँट कर दिया हुआ, प्रदत्त। (संज्ञा, पु०) अनुयायी, सेवक, दास, भक्ति करने वाला। "रघुबर-भक्त जासु सुत नाहीं"—[रामा०] ।—**वत्सल**–(वि०, यौ०, सं०) भक्तों पर दयालु, विष्णु। [**भक्तता भक्ता**, (संज्ञा, स्त्री०)] [भक्त-वछलता, भक्त-बसलता (दे०)] । "भक्तवसलता हित हुलसानी"—[रामा०]।

भक्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) आराधक, पूजक।

भक्ताई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भक्तइ] भक्ति।

भक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बाँटना, भिन्न भागों मे बाँटना, विभाग, भाग, अवयव, अंग, विभाग करने वाली रेखा, सेवा, शुश्रूषा, श्रद्धा, पूजा, भगवान के प्रति प्रेम या अनुरक्ति, भक्ति नौ प्रकार की है:—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन। [भगति (दे०)]। एक छन्द (पिं०)। "रस्म-भक्ति बिनु धन प्रभुताई"—[रामा०] ।—**पूर्वक**–(अ०) भक्ति के साथ ।—**मार्ग**–(पु०) मोक्ष के प्राप्ति के तीन मार्गों में से एक।—**योग**–(पु०) भक्ति के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति की साधना ।—**रस**–(पु०) ईश्वर के निमित्त अनुराग ।—**सूत्रण**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शांडिल्यमुनि कृत वैष्णव संप्रदाय का एक सूत्र ग्रन्थ।

भक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) खाना, चबाना, खाने का पदार्थ।

भक्षक—(वि०, सं०) खादक, खाने या चबाने वाला (बुरे अर्थ मे)।

भक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) भोजन करना, दाँत से काटकर चबाना या खाना, भोजन। [**भक्ष्य, भक्षित, भक्षणीय** (वि०)]।

भक्षना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० भक्षण] खाना।

भक्षयिता—(संज्ञा, पु०, सं०) भक्षण करने वाला।

भक्षिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भोजन, आहार।

भक्षित—(वि०, सं०) खाया हुआ। (पु०) आहार। शेष (पु०) जूठन।

भक्षी—(वि०) [सं० भक्षिन्] भक्षक, खाने-वाला [**भक्षिणी (स्त्री०)**]।

भक्ष्य—(वि०, सं०) खाने योग्य । [**अभक्ष्य** विलो०] । (संज्ञा, पु०) खाद्य, आहार, अन्न । **—कार**-(पु०) पाचक, रसोइया ।

भख*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भक्ष] आहार, खाना, भोजन । "अजया-भख अनुसारत नाहीं"—सूर० ।

भखना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० भक्षण] खाना । [**भखाना, भखवाना** (प्रे० रूप)] ।

भगंदर—(संज्ञा, पु०, सं०) गुदा का फोड़ा (रोग) । [**भगंदरी** (वि०)] ।

भग—(संज्ञा, पु०, सं०) योनि, १२ आदित्यों में से एक आदित्य, सूर्य्य, प्रताप, सौभाग्य, ऐश्वर्य्य, धन, गुदा ।—**शास्त्र**-(पु०) कोकशास्त्र ।

भगई—(संज्ञा, स्त्री०) लँगोटी, कमर में पहने जाने वाला रूमाल की तरह का चिट ।

भगण—(संज्ञा, पु०, सं०) ३६० अंशों वाला ग्रहों का पूरा चक्कर, (खगो०) ।

भगत—(वि०, दे०) [सं० भक्त] निरामिष या शाकाहारी साधु, उपासक, सेवक, ओझा । (संज्ञा, पु०, दे०) वैष्णव साधु, भगत का स्वांग, भूत-प्रेत दूर करने वाला । [**भगतिन** (स्त्री०)] ।—**बछल***-(वि०, दे०, यौ०) [सं० भक्तवत्सल] भक्तवत्सल, भक्त पर दयालु, विष्णु । [**भगतबछ्लता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)] । "भगत-बछलता हिय हुलसानी"—[रामा०] ।

भगति, भगती*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भक्ति] भक्ति, भक्ती, श्रद्धा, प्रेम, अनुराग ।

भगतिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भक्ति हिं० भगति] राजपूताने की एक गाने-बजाने का पेशा करने वाली जाति । [**भगतिन** (स्त्री०)] ।

भगती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भक्ति] भक्ति ।

भगदर—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० भागना] भागना, भागने की क्रिया का भाव ।

भगन*—(वि० दे०) [सं० भग्न] टूटना । (संज्ञा, पु०, दे०) भगण (पिं०) ।

भगना†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० भागना] भगना । (संज्ञा, पु०, दे०) भानजा । [**भगैल्या** (वि०)] । [**भगान**-(स० रूप)] [**भगवाना** (प्रे० रूप)] ।

भगर, भगल*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) ढोंग, छल, कपट, फरेब, मक्र, जादू । [**भगरी** (वि०)] ।

भगरी, भगली—(वि०, संज्ञा, पु०) [हिं० भगल +ई प्रत्य०] ढोंगी, छली, बाजीगर ।

भगल—(संज्ञा, पु०) धूर्तता, छल, धोखेबाजी ।

भगली—(वि०) छली ।

भगवंत*†—(संज्ञा, पु०, सं०) भगवंत, ऐश्वर्य्य-वान, परमात्मा, भगवान । "तिनहिं को मारै बिन भगवंता"—[रामा०] ।

भगवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवी, सरस्वती, गौरी, दुर्गा, पार्वती ।

भगवत्—(संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा, परमेश्वर, भगवान, ईश्वर ।

भगवदीय—(संज्ञा, पु०, सं०) भगवद्भक्त ।

भगवद्गीता—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) महाभारत के भीष्म-पर्व का एक प्रसिद्ध प्रकरण, जिसमें कृष्णार्जुन के कर्म-योग सम्बन्धी प्रश्नोत्तर हैं ।

भगवत्भक्त—(वि०, पु०, सं०) ईश्वर का भक्त, वैष्णव ।

भगवत्भक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ईश्वर भक्ति ।

भगवन्मय—(वि०, सं०) ईश्वर में लीन या तन्मय ।

भगवा—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का रंग, रंगा हुआ वस्त्र ।

भगवान्, भगवान—(वि०) [सं० भगवत्] ऐश्वर्य्यवाला, प्रतापी, पूज्य । (संज्ञा, पु०) परमात्मा, परमेश्वर, विष्णु, पूज्य और आदरणीय पुरुष ।

भगाना—(क्रि० स०) [हिं०+भगना] दौड़ना, दूर करना, हटाना । (क्रि० अ०) भागना ।

भगिनी—(संज्ञा, स्त्री०) बहन ।

भगीरथ—(संज्ञा, पु०, सं०) अयोध्या नरेश दिलीप के पुत्र, जो घोर तपस्या कर गंगा जी को पृथ्वी पर लाये थे ।—**प्रयत्न**-(पु०, यौ०) कठिन प्रयत्न ।

भगोड़ा—(वि०, दे०) [हिं० भगाना+ओड़ा प्रत्य०] भागने वाला, कायर, भागता हुआ । [भगैया (दे०)] ।

भगौती*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भगवती] भगवती, देवी ।

भगौहाँ—(वि०, दे०) [भागना+औहाँ प्रत्य०] भागने को तैयार, कायर । (वि०, दे०) [हिं० भगवा] गेरुआ, भगवा ।

भग्गुल*‡—(वि०, दे०) [हि० भागना] युद्ध से भागा हुआ, भगोड़ा, भग्गू। "भग्गुल आइ गये तब हीं"–[रामा०]।

भग्गू†—(वि०, दे०) [हि० भागना + ऊ प्रत्य०] जो विपत्ति देख भागता हो, भीरु, कायर।

भग्न—(वि०, सं०) टूटा हुआ, पराजित।—**संधि**–(वि०) जिसकी अस्थि-संधि विशृंखलित हो गयी हो।

भग्नावशेष—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० खडहर] टूटे-फूटे पदार्थ के बचे टुकड़े।

भग्नोत्साह—(वि०) जिसका उत्साह भंग हो गया हो।

भचक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भचकना] लँगड़ापन।

भचकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० भौचक] आश्चर्य्ययुक्त, भौचक या चकित होना। (क्रि० अ०, अनु०) लँगड़ाते हुए चलना, टेढ़ा पैर पड़ना।

भचक्र—(संज्ञा, पु०, सं०) राशियों या ग्रहों की गति का मार्ग या चक्र, नक्षत्र-समूह, ग्रह-कक्षा (खगो०)।

भच्छ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भक्ष्य] भक्ष्य।

भच्छना, भक्षना*†—(क्रि० सं०, दे०) [सं० भक्षण] भखना, खाना (बुरे अर्थ में)।

भजन—(संज्ञा, पु०, सं०) सेवन, किसी देवता या पूज्य का नाम बार-बार लेना, स्मरण, जप, देव-स्तुति या देव गुण-गान। "राम-भजन बिनु सुनहु खगेसा"—[रामा०]। [हि० भजना] भगना। दूर भजन जाते रह्यो।—(वि०)।

भजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० भजन] सेवा करना, देवादि का नाम रटना, जपना, स्मरण करना, आश्रय लेना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० भजन, पा० वजन] भागना, प्राप्त होना, पहुँचना, भग जाना। "भजन कह्यो तासों भज्यो" —बिहारी।

भजनानंद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भजन करने का हर्ष।

भजनानंदी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० भजनानंद + ई प्रत्य०] भजन गाकर प्रसन्न रहने वाला।

भजनी—(संज्ञा, पु०) [भजन + ई प्रत्य०] भजन गाने वाला।

भजाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० भजना = दौड़ना] भागना, दौड़ना, भजन करने में लगाना। [**भजावना** (सं० रूप)], [**भजवाना** (प्रेरणा रूप)]। (क्रि० स०) भगाना, दूर करना, दौड़ाना।

भजियाउर†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० भाजी + चाउर] चावल, दही और भाजी से एक साथ बनाया हुआ भोजन, उभिया (प्रान्ती०)।

भट—(संज्ञा, पु०, सं०) योद्धा, सैनिक, सिपाही, वीर। (वि०, दे०) शून्य, रहित।

भटकटाई, भटकटैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० कटाई] काँटेदार एक छोटा क्षुप या पौधा, कटेरी।

भटकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भ्रम] मार्ग भूलकर, इधर-उधर मारे मारे फिरना, भ्रम में पड़ना, व्यर्थ इधर-उधर घूमना। [**भटकाना** (स० रूप)], [**भटकवाना** (प्रे० रूप)]।

भटका—(क्रि० वि०) [हि० भटकना] भूला। [**भूला-भटका** (यौ०)]।

भटकाना—(क्रि० स०) [हि० भटकना] भ्रम में डालना, गलत रास्ता बताना।

भटकैया‡—(संज्ञा, पु० दे०) [हि० भटकना, + ऐया प्रत्य०] भटकने या भटकाने वाला।

भटकौहाँ*‡—(वि०, दे०) [हि० भटकना + औहाँ प्रत्य०] भटकने वाला।

भटनास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक लता जिसकी फलियों के दानो की दाल बनती है।

भटभेड़ा, भटभेरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भट + भिड़ना] मुठभेड़, दो की भिड़ंत, आकस्मिक भेंट, मुकाबिला, भिड़ंत, ठोकर, टक्कर, धक्का। "निसिदिन निरखौं जुगुल माधुरी रसिकनि नें भटभेरा"—दास०।

भटा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृंताक] बैंगन, भाँटा। "भटा काहु को पित करै।"

भटियारा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक जाति, खाना बेचने वाला मुसलमान रसोइया। [**भटियारी, भटियारिन** (स्त्री०)]।

भटू†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वधू] हे सखी, आली, स्त्रियों का सूचक संबोधन। "या ब्रजमंडल में रसखान जू कौन भटू जो लटू नहिं कीनो।"

भट्ट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भट] दक्षिण ब्राह्मणों की एक उपाधि, योद्धा, शूर, भाट।—**नारायण**–(पु०) वेणी संहार नामक नाटक के लेखक।

भट्टाचार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बंगालियों का एक आस्पद, विद्या-संबंधी उपाधि।

भट्टार—(संज्ञा, पु०, सं०) पूज्य, माननीय।

भट्टारक—(वि०) पूज्य, आदरणीय। (पु०) राजा, पंडित, मुनि, देवता।

भट्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भट्टिकृत संस्कृत महाकाव्य।

भट्टिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रानी, ब्राह्मणी, साधारण (स्त्री०)।

भट्ठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्राष्ट्र] ईंटों आदि से बनी बड़ी भट्ठी, खपरों या ईंटों के पकाने का पजावा, **भाटी** (व्र०)।

भट्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्राष्ट्र, प्रा० भट्ठ] ईंटों आदि से बना बड़ा चूल्हा, देशी शराब बनाने का स्थान।

भट्टियारखाना—(संज्ञा, पु०) वह स्थान जहाँ अधिक भम्भड़ रहता है और नीच प्रकृति के लोग रहते हैं।

भठियारपन—(संज्ञा, पु०) [हिं० भठियारा+पन प्रत्य०] भठियारे का कर्म, भठियारों सा लड़ना और गालियाँ बकना।

भठियारा—(संज्ञा, पु०) [हिं० भट्ठी+इयारा प्रत्य०] सराय का प्रबंधकर्ता या रक्षक, मुसलमानों का खाना बनाने और बेचने वाला। [**भठियारी, भठियारिन** (स्त्री०)]।

भड़ंत—(संज्ञा, पु०, सं०) भाँड़ों का सा काम, भँड़ैती।

भड़ंबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विडंबा] ढोंग, आडंबर।

भड़क—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) दिखाऊ, चमकीला या चटकीलापन, ऊपरी चमक-दमक, सहमने या भड़काने का भाव।—**दार**-(वि०) भड़कीला, चमकीला, रोबदार, चटकीला।

भड़कना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० भड़क+ना प्रत्य०] शीघ्रता या तेजी से जल उठना, भभकना, झिझकना, चौंकना, भयभीत होकर पीछे हटना, रुष्ट होना (पशुओं का)।

भड़काना—(क्रि० स०) [हिं० भड़कना] उभारना, चमकाना, उत्तेजित करना, जलाना, चौंकाना, डराना (पशुओं को), शंकित करना, क्रुद्ध करना।

भड़की—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० भड़कना] घुड़की, भभकी, डरपाव।

भड़कीला—(वि०) [हिं० भड़क+ईला प्रत्य०] भड़कदार।

भड़कैल, भड़कैला—(वि०) [हिं० भड़क+ऐल, ऐला, प्रत्य०] भड़कने और झिझकने-वाला, अपरिचित, जंगली।

भड़भड़—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) आघात से हुआ भड़-भड़ शब्द, भीड़, भम्भड़ (ग्रा०) व्यर्थ की ज्यादा बातचीत, [भर-भर (दे०)]।

भड़भड़ाना—(क्रि० स०, अनु०) भड़-भड़ शब्द करना, व्यर्थ में मारे-मारे फिरना, [भटभटाना (दे०)]।

भड़भड़िया—(वि०, दे०) [हिं० भड़भड़+इया प्रत्य०] व्यर्थ बहुत बातें करने वाला, बक्की, जल्दी मचाने वाला।

भड़भाँड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भाँडरि] घमोय (ग्रा०) सत्यानासी।

भड़भूँजा, भरभूँजा—(संज्ञा, पु०) [हिं० भाड़+भूँजना) एक जाति जो भाड़ के द्वारा अन्न भूनती है, भुँजवा (ग्रा०)।

भड़साँई—(संज्ञा, स्त्री०) भाड़।

भड़ार, भंडार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भंडार] कोष, कोठार।

भड़िहा—(संज्ञा, पु०, दे०) चटोरा, चोर।

भड़िहाई꠶†—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० भड़िया] छिपछिपा या दब कर चोरों सा कार्य करना, चोरी करना। "इतउत चितै चला भड़िहाई"—[रामा०]।

भड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भड़काना] झूठा बढ़ावा।

भँड़ुआ, भँड़ वा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भाँड़] वेश्याओं का दलाल, सफरदाई, पछुआ (प्रान्ती०), भड़ुवा (ग्रा०)।

भड्डर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भद्र] ब्राह्मणों की एक जाति, भडर।

भणना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भणन] कहना, [भनना (दे०)]।

भणित—(वि०, सं०) कहा हुआ, रचित, [भनित (दे०)]। "भाषा भणित मोरि मति भोरी"—[रामा०]।

भणिता—(संज्ञा, पु०, सं०) वक्ता, भाषण देने वाला, बोलने वाला।

भणिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कथन, वार्ता, बातचीत।

भतार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भर्तार] पति, स्वामी। "परदा कहा भतार सों, जिन देखी सब देह"—कबी०।

भतीजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रातृज] भाई का पुत्र या लड़का।

भतीजी—(संज्ञा, स्त्री०) भाई की लड़की।

भत्ता—(संज्ञा, पु०) [दे० भरण] किसी कर्मचारी को बाहर यात्रा के समय दिया गया प्रति दिन का व्यय।—**भोजन**-(पु०) खाने पीने के लिए मिलने वाला खर्च। [एलाउंस फार फूड]—**यात्रा**-सफर-खर्च। [ट्रेवेलिंग एलाउंस]—**विराम**-दौरे पर जाने पर किसी स्थान पर रुकने का भत्ता। [हाल्टिंग एलाउंस]

भथुरना, भथोरना—(क्रि० स०, दे०) कुचलना।

भथेलना—(क्रि० स०, दे०) कुचलना।

भदंत—(क्रि० स०) पूजित, आद्रित, सम्मानित। (पु०) बौद्ध भिक्षु।

भदई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० भादों] भादों में तैयार होने वाली फसल, भादों की अमावस या पूनो। (वि०) भादों की।

भदभद—(संज्ञा, पु०, अनु०) किसी वस्तु जैसे फल आदि के गिरने का शब्द, पैर का शब्द, हँसी या उपहास।

भदभदाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० भद] भद भद शब्द करना। [भद भद (यौ०, क्रि० वि०)]।

भदभदाहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० भदभदाना] भद भद शब्द।

भदाक—(संज्ञा, पु०, अनु०) धड़ाक, पड़ाक, या भदाक शब्द के साथ गिरना।

भदावर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भदुवर] ग्वालियर राज्य का एक प्रान्त।

भदेश, भदेस—(वि०, दे०) [हि० भद्दा] भद्दा, कुरूप, भोंड़ा, बुरा।

भदेसल, भदेसिल†—(वि०, दे०) [हि० भद्दा] कुरूप, भोंड़ा, भद्दा, बुरा।

भदौंह, भदौंहा†—(वि० दे०) [हि० भादों] भादों के महीने में होने वाला।

भदौरिया—(वि०, दे०) [हि० भदावर] भदावर प्रांत का, भदावर सम्बन्धी। (संज्ञा, पु०, दे०) क्षत्रियों की एक जाति।

भद्दर—(वि०, दे०) भद्र, पूर्णतया, पूरे, बहुत।

भद्दा—(संज्ञा, पु०) [अनु० भद] कुरूप, भोंड़ा, बुरा। [भद्दी (स्त्री०)]।

भद्दापन—(संज्ञा, पु०) [हि० भद्दा+पन प्रत्य०] भद्दे होने का भाव।

भद्र—(वि०, सं०) श्रेष्ठ, सभ्य, शरीफ, कल्याणकारी, साधु, शिष्ट, शिक्षित। [भद्रता (संज्ञा, स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, सं०) महादेव, उत्तर का दिग्गज, सोना, सुमेरु पर्वत, खजन। (संज्ञा, पु०) [सं० भद्राकरण] मूछ, दाड़ी, सिर आदि का मुण्डन। "भद्र करावा सब परिवारा"—[स्फु०]। —**काली**-(स्त्री०) भगवती, दुर्गा देवी, कात्यायिनी देवी।—**जन**-(पु०) सज्जन, शिष्ट आदमी।—**पुरुष**-(पु०) देखिए—भद्रजन।—**भावोद्भाविनी**-(वि०, सं०) भाव उत्पन्न करने वाली। "हो भद्र-भावोद्भाविनी, वह भारती हे भगवते"—मैथली०। —**मुखी**-(स्त्री०) चंद्रमुखी (संबोधन के लिए)—**श्री**-(पु०) चंदन।—**सोमा**-(स्त्री०) गंगा नदी।

भद्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पुराना देश, एक वर्णिक छंद (पिं०)। (वि०) कल्याणकारी।

भद्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शिष्टता, सभ्यता, भलमनसी, शराफत (फ़ा०)।

भद्रवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृष्ण की एक कन्या। वेश्या।

भद्रांग—(संज्ञा, पु०, सं०) बलराम।

भद्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) केकय राज की कन्या जो श्रीकृष्ण की पत्नी थी, आकाश गंगा, दुर्गा, गाय, सुभद्रा, उपजाति वृत्त का १०वाँ रूप (पिं०), फलित ज्योतिष के अनुसार एक निषिद्ध योग जिसमें कोई शुभकार्य नहीं किये जाते। पृथ्वी एक आरम्भ योग (फ० ज्यो०) बाधा (व्यं०)।

भद्राक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) बनावटी या कृत्रिम रुद्राक्ष।

भद्रानंद—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर-साधना का एक नियम-विशेष।

भद्रासन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक यौगिक आसन, राजसिंहासन।

भद्रिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)।

भद्री—(वि०) [सं० भद्रिन्] सौभाग्यशाली।

भनई—(क्रि० स०) [हि० भनना] कहता है। "सुकवि भरत मन की गति भनई"—[रामा०]।

भनक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भणन] ध्वनि, धीमी आवाज, उड़ती खबर। "परो भनक मम कान"—सरस।

भनकना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० भणन] कहना।

भनना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० भणन] कहना।

भनभनाना—(क्रि० अ०, अनु०) गुंजारना, भुन-भुनाना, भन भन शब्द करना (मक्खियों), क्रोध से बड़बड़ाना। "भनभनाई वह बहुत ही बेकरार"—हाली।

भनभनाहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० भनभनाना + आहट प्रत्य०] गुंजार, भनभनाने का शब्द।

भनाना—(क्रि० स०, दे०) भुनाना, बड़े सिक्के के बदले छोटे सिक्के लेना, [भुनाना, भजाना (दे०)]।

भन्ना—(संज्ञा, पु०, दे०) भांज, बड़े सिक्के के बदले छोटे सिक्के लेना, नामा (प्रान्ती०)।

भन्नाना—(क्रि० अ०, अनु०) भनभनाना, कुपित या क्रोधित होना, बड़बड़ाना, पीड़ा, चक्कर करना (सिर आदि)। [**भन्नाहट** (संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०)]।

भनित*—(वि०, दे०) [सं० भणित] कहा हुआ। "भाषा भनित मोरि मति भोरी"—[रामा०]।

भबका, भपका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भाप] अर्क उतारने का यन्त्र, [भभका (दे०)]।

भभकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) उबलना, भड़कना गरमी पाकर ऊपर उमड़ना, जोर से जलना। [**भभकाना** (स० रूप)]।

भभरना—(अ०, क्रि०) भयभीत होना, घबराना।

भभकी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० भभक] घुड़की, धमकी, [भबकी (दे०)]। [**गीदड़ भभकी** (यौ०)]।

भब्भड़, भम्भड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भीड़] भीड़-भाड़, अव्यवस्थित जन समुदाय, [भाभर (दे०)]।

भभरना, भभराना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भय] डरना, भयभीत होना, घबरा जाना, भ्रम में पड़ जाना, सूजना।

भभूका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भभक] ज्वाला, लपट।

भभूत, भभूति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विभूति] धन, ऐश्वर्य, संपत्ति, लक्ष्मी, संपदा, राख, भस्म, [बभूत (दे०)]।—**मुहा०—रमाना**-साधु या वैरागी हो जाना।

भभोरना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० फाड़खाना]।

भयंकर—(वि०, सं०) जिसे देखने से डर लगे, भीषण, भयानक, डरावना। "रूप भयंकर प्रगटत भई"—[रामा०]।

भयंकरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भीषणता।

भय—(संज्ञा, पु०, सं०) घोर विपत्ति या शंका, भीषण वस्तु के देखने से उत्पन्न एक मनोविकार, डर।—**प्रद**-(वि०) भयद, भयानक, भीषण, भयकारक, भयकारी।—**प्रदर्शन**-(पु०) भय दिखाना।—**भीत**-(वि०) डरा हुआ, सभीत।—**मोचन**-(वि०) भय से मुक्त कराने वाला।—**शील**-(वि०) डरपोक।—**शून्य**-(वि०) निर्भय।—**हारी**-(वि०) डर छुड़ाने या दूर करने वाला। "वानि तुम्हारि प्रणत-भयहारी"—[रामा०]। **मुहा०—खाना**-डरना।—**दिखाना**-डराना। *(क्रि० अ०) हुआ, भै (ब्र०) भया।

भयवाद—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भाई + आद प्रत्य०] एक ही गोत्र या वंश के लोग, भाई-बंधु, बंधु-बाँधव।

भया*†—(वि०, दे०) [हिं० हुआ] हुआ, भयो, भो (ब्र०)।

भयाकुल—(वि०) भय से डरा या घबराया हुआ, भय से विह्वल।

भयाक्रांत—(वि०, सं०) डर से आक्रांत।

भयातुर—(वि०, सं०) भयविह्वल, भयभीत, डरा हुआ, डरपोक।

भयान*†—(वि०, दे०) [सं० भयानक] डरावना, भीषण।

भयानक—(वि०, सं०) भीषण, डरावना। (संज्ञा, पु०) भीषण दृश्य का वर्णन वाला एक रस, छठा रस (काव्य०)। [**भयानकता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

भयाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भय] डरना, भयभीत होना। (क्रि० स०) डराना, भयभीत करना।

भयान्वित—(वि०, सं०) भयभीत।

भयाभिभूत—(वि०, सं०) भय से आक्रांत, डरा हुआ, भीतिग्रस्त, भय से प्रभावित। "उसे कहीं देखा भयाभिभूत हो।"—[हरिऔध]।

भयापह—(संज्ञा, पु०, सं०) भय नाशक ।

भयावन, भयावना—(वि०) [सं० भय] भयानक, डरावना, भयकारी ।

भयावह—(वि०, सं०) डरावना, भयंकर ।

भयाहू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटे भाई की स्त्री ।

भयोत्पादक दंड—(संज्ञा, पु०, सं०) डराने के लिये दिया जाने वाला दंड । [डेटरेंट पनिशमेंट]

भयोपराय—(संज्ञा, पु०, सं०) भय का दमन, प्रोत्साहन ।

भरंत*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रांति] संदेह, शक, भरने का भाव, भरती ।

भर—(वि०, दे०) [हिं० भरना] तौल में सब, कुल, पूरा ।*† (क्रि० वि०, दे०) [हिं० भार] द्वारा, बल से । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भार] मोटाई, बोझ, पुष्टि, भार । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भरत] एक नीच अस्पृश्य जाति ।—**पाई**-(क्रि० वि०) भली भाँति, अच्छी तरह, पूर्ण रूप, से, पूरा पूरा पा जाना, चुकता होना ।—**पाना**-(क्रि० स०, यौ०, दे०) अभीष्ट से विरुद्ध वस्तु मिलना (व्यंग्य), पूरा पूरा पाना ।—**पूर**-(वि०) पूरा पूरा या सब प्रकार से भरा हुआ, परिपूर्ण, पूरी तरह । (क्रि० वि०) भली भाँति, पूर्ण रूप से ।—**पेट**-(अ०) मन भर कर, जी भर कर ।—**सक**-(क्रि० वि०) यथाशक्ति, बलभर, जहाँ तक हो सके ।

भरक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भड़क ।

भरकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० भड़कना] भड़कना । [**भरकाना** (स० रूप)], [**भरकवाना** (प्रे० रूप)] ।

भरण—(संज्ञा, पु०, सं०) [भरन (दे०)] पालन, पोषण । "विश्व भरण पोषण कर जोई" —[रामा०] ।

भरणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीन तारों से बना त्रिकोणाकार २७ नक्षत्रों में से दूसरा नक्षत्र [भरनी (दे०)] । एक कीड़ा जो साँप को फाड़ डालता है । (वि०, दे०) भरण पोषण करने वाला ।

भरणीय—(वि०) भरण के लायक ।

भरण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वेतन, पालन-पोषण, भरणी नक्षत्र ।

भरण्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मेहनताना । स्त्री, औरत ।

भरत—(संज्ञा, पु०, सं०) कैकेयी से उत्पन्न दशरथ के लड़के रामचन्द्र के छोटे भाई, इनकी स्त्री माँडवी थीं । जड़ भरत, राजा दुष्यंत के शकुन्तला से उत्पन्न पुत्र जिनसे इस देश का नाम भारत हुआ, एक संगीताचार्य, उत्तर भारत का एक प्राचीन देश [वाल्मी० रामा०], नाटक में अभिनय करने वाला नट, नाट्य शास्त्र के रचयिता तथा आचार्य एक मुनि । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भरद्वाज]; लवा या बटेर की एक जाति । (संज्ञा, पु०, दे०) काँसा या कसकुट धातु, ठठेरा ।—**खंड**-(पु०) राजा भरत कृत पृथ्वी के ६ खंडो मे से एक, भारतवर्ष आर्यावर्त, हिन्दुस्थान ।—**पुत्र**-(पु०) भरत जी का लड़का ।—**भूमि**-(स्त्री०) भारतवर्ष ।—**वाक्य**-(पु०) नाटक के समाप्ति पर दिया गया एक पद्यात्मक आशीर्वाद ।—**शास्त्र**-(पु०) नाट्य-शास्त्र ।

भरता—(संज्ञा, पु०, दे०) एक सालन जो बैंगन या आलू को आग में भून कर बनाया जाता है, चोखा (प्रान्ती) । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भर्त्ता] पति, स्वामी । "अमित दानि भरता बैदेही"—[रामा०] ।

भरताग्रज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रामचन्द्र ।

भरतार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भर्त्ता] पति, स्वामी, भर्तार, भतार (ग्रा०) ।

भरती—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० भरना] भरने का भाव, भरा जाना, प्रविष्ट होने का भाव । नया सैनिक भरती करना [रिक्रूटमेंट] । **मुहा०—करना**-किसी के बीच में रखना, बैठाना ।—**का**-बहुत ही तुच्छ या रद्दी ।

भरत्थ*†(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भरत] भरत । "भलो कही भरत्थ तें उठाय आग अंग ते"—[रामा०] ।

भरथरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भर्तृहरि] एक राजा ।

भरदूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भरद्वाज] लवा, बटेर, टिटिहरी ।

भरद्वाज—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा दिवोदास के पुरोहित एक ऋषि जो गोत्र प्रवर्तक और सप्त ऋषियों तथा वैदिक मंत्रकारों में गिने जाते हैं, इनके वंशज ।

भरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० भरण] [**भराना** (स० रूप)], [**भरवाना** (प्रे० रूप)] । पूर्ण करना, उड़ेलना, उलटना, रिक्त स्थान की पूर्ति के लिये कुछ डालना, तोपादि में गोली-बारूद आदि

डालना, रिक्त पद की पूर्ति के लिये नियुक्त करना, चुकाना, देना, क्षति-पूर्ति या ऋण-परिशोध करना। (पु०) रिश्वत, घूस, भरने का भाव। **मुहा०—किसी का घर**—बहुत सा धन देना। **किसी के कान**—चुग़ली करना, छिप कर बुराई या निंदा करना। **माँग**—विवाह में वर का कन्या की माँग में सिन्दूर लगाना। **कोंछ**—नववधू को आशीष के साथ नारियल आदि देना (रीति)। निबाहना, निर्वाह करना, सहना, झेलना, पोतना, लगाना, काटना, डसना। (क्रि० अ०) खाली बरतन का किसी पदार्थ से पूर्ण होना, डाला जाना, मन में क्रोध होना, अप्रसन्न या असंतुष्ट रहना, घाव में अंगूर आना या उसका पुरना, किसी अंग का अधिक श्रम से पीड़ा करना, शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना, ख़ाली न रहना, ऋण परिशोध होना, तोपादि में गोली-बारूद होना।

भरनि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भरण] पोशाक, पहनावा।

भरनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० भरना] करघा की ढरकी, नार (प्रान्ती०)। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भरणी] अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से दूसरा नक्षत्र।

भरभर—(संज्ञा, पु०, दे०) जन समूह का शोर, अव्यवस्था, भीड़।

भरभराना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) रोमांच होना, घबराना, भरभर शब्द करना, गिर पड़ना, भड़भड़ाना।

भरभेंट, भरभेंटा*†—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हिं० भर+भेंटना] मुठभेड़, सामना, मुकाबिला।

भरम*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रम] संदेह, धोखा, संशय, रहस्य, भेद। **मुहा०—न देना**—भेद न बताना।—**गँवाना**—भेद खोलना। "आपन भरम गँवाइ कै, बाँट न लैहै कोय"—रहीम। "भरम खो दिया रो दिया"—मैथिली०।

भरमना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भ्रमण] घूमना फिरना, मारा मारा फिरना, भटकना, भ्रम या धोखे में पड़ना, बहकना, चकराना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रम] भूल, भ्रम, धोखा, भ्रांति। [**भरमाना** (स० रूप)], [**भरमवाना** (प्रे० रूप)]।

भरमाना—(क्रि० स०, दे०) भटकाना, व्यर्थ इधर-उधर घुमाना, भ्रम में डालना, हैरान करना, बहकाना। (क्रि० अ०, दे०) चकित या हैरान होना।

भरमार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भरना+मार=अधिकता] बहुतायत, अधिकता।

भरमीला—(वि०, दे०) [सं० भ्रम] संशयी, संदेही, भ्रमवाला।

भरराना, भर्राना—(क्रि०, अ०, दे०, अनु०) [भहराना (दे०)]। अरराना, टूट पड़ना, भरर शब्द से गिरना।

भरसन, भरसना*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भर्त्सना] डाँट फटकार, ताड़ना।

भरसाईं—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भाड़] भाड़।

भरहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) भरभर शब्द के साथ गिरना।

भरहरना, भरहराना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० भहराना] भरभराना, टूट पड़ना।

भराँति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रांति] भ्रांति, भ्रम।

भरा—(वि०) पूर्ण, सम्पन्न, आबाद, मांसल, पुष्ट।—**पुरा**-(वि०) घरबार से सम्पन्न, धन धान्य से पूर्ण।—**भरा**-(वि०) आबाद। मोटा।—**री जवानी**-जवानी की पूर्णावस्था। **मुहा०—थाली में लात मारना**-मिली हुई रोजी को छोड़ देना।—**सभा में**-सब के समक्ष।

भराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भरना] भरने का कार्य्य या भाव या मजदूरी।

भराव—(संज्ञा, पु०) [हिं० भरना+आव प्रत्य०] भरने का कर्म या भाव, भरत।

भरित—(वि०, सं०) भरा हुआ।

भरिता—(वि०, सं०) भरी हुई। पूर्ण की हुई, सम्पन्न की हुई। "गति गति सृति सृति चिर भरिता"—पंत।

भरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भर] एक रुपये के बराबर की या दस माशे भर की तौल।

भरु*—(संज्ञा, पु०) [सं० भार] भार, बोझ।

भरुआ, भरुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भँडुआ] भड़ुआ, भड़ुवा, सफरदाई, पछुआ। (वि०, दे०) [हिं० भरना] भरा हुआ।

भरुआना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भार] भारी होना, [भरुहाना (दे०)]।

भरुहाना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० भारी + होना] अहंकार या घमंड करना। (क्रि० स०, दे०) [सं० भ्रम] धोखा देना, बहकाना, बढ़ावा देना, उत्तेजित करना।

भरेठ—(संज्ञा, पु०) दरवाजे की दीवाल का भार संवहन करने के लिए लगायी गई लकड़ी।

भरैया†—(वि०, दे०) [सं० भरण] पालक, रक्षक। (वि०, दे०) [हि० भरना + ऐया—प्रत्य०] भरने वाला।

भरोस, भरोसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वर + आशा] आसरा, सहारा, अवलंब, आशा, विश्वास।

भर्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) शंकर, महादेव या शिवजी। "भर्गः जो शुद्ध विज्ञानयुत्"—कु० वि० ला०।

भर्त्ता (तृ)—(संज्ञा, पु०) [सं० भर्त्तृ] स्वामी, पति, विष्णु, अधिपति, [भरता (दे०)]।—**हरि**-(पु०) उज्जयिनीनृप श्री विक्रमादित्य के भाई, एक प्रख्यात कवि और वैय्याकरणी राजा।

भर्त्तार—(संज्ञा, पु०) [सं० भर्त्तृ] स्वामी, पति।

भर्त्सना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डाँट फटकार, ताड़ना, निंदा, शिकायत।

भर्त्सित—(वि०, सं०) निंदित जिसका तिरस्कार, अपमान किया गया हो।

भर्म*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रम] भ्रम, संदेह, भरम।

भर्मन, भर्मना*†—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रमण, भ्रम] भ्रमण, घूमना-फिरना, भ्रम, संदेह। (क्रि०, अ०, दे०) भटकना, घूमना, भरमना। [**भर्माना** (स० रूप)]।

भर्राना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० भर से] भर्र भर्र शब्द होना, भरभर शब्द से गिरना।

भर्सन*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भर्त्सना] डाँट फटकार, ताड़ना, निन्दा, शिकायत।

भल—(वि०) [हि० भला] अच्छा, भला। "बुरहु करै भल पाय सुसंगू"—[रामा०]।

भलपति—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० भाला + पति सं०] भाला बाँधने वाला, नेजेबरदार। (वि०) भला-पति।

भलमनसत, भलमनसाहत, भलमनसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भला + मनुष्य] सज्जनता, भद्रता। [**भलामानुस** (वि०)]।

भला—(वि०, दे०) [सं० भद्र] उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया।—**बुरा**-(यौ०) सीधी-उलटी बात, अनुचित बात, डाँट-फटकार, अच्छा या बुरा। (अव्य०) अस्तु, अच्छा, खैर वाक्यारंभ या वाक्य के मध्य में नहीं सूचक शब्द। (संज्ञा, पु०) कल्याण, कुशल, भलाई, लाभ, अच्छाई।—**बुरा**-लाभ-हानि। **मुहा०**—(**ले**) **ही**-ऐसा होता रहे या हुआ करे, इससे कोई हानि नहीं अच्छा ही है।

भलाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० भला + ई प्रत्य०] नेकी, उपकार, भलापन, कुशलता, अच्छाई। 'कहहु कहै को कीन्ह भलाई"—[रामा०]।

भले—(क्रि० वि०) [हि० भला] अच्छी तरह, भली भाँति, पूर्ण रूप से। (वि०) अच्छे, ए० व० भला। (अव्य०) वाह, खूब। "भले नाथ कहि सीस नवाई"—[रामा०]।

भलेरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भला] अच्छा।

भल्ल—(संज्ञा, पु०, सं०) भाला, भालु, शिव।

भल्लूक—(संज्ञा, पु०, सं०) रीछ।

भवंग, भवंगा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भुजंग] साँप।

भवंगम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भुजंगम] साँप।

भवंत—(सर्व०) [सं० भवत्] भवत् का बहुवचन, आप लोग।—(**संज्ञा**, पु०) वर्त्तमान समय।

भवँर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रमर] भौंर।

भवँरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भ्रमरी, ब्याह में अग्नि प्रदक्षिणा, भौंरी।

भव—(संज्ञा, पु०, सं०) जन्म, उत्पत्ति, संसार, मेघ, कुशल, शिव, कामदेव, सत्ता, जन्ममरण का दुःख [भौ (दे०)]। (वि०) शुभ, उत्पन्न। "भव भव विभव पराभव कारिनि"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, [सं० भय] भय, डर।—**नाशिनी**-(वि०) सांसारिक क्लेशों को नष्ट करने वाली। "भव नाशिनी त्रयलोक की"।—**बंधन**-(पु०) संसार का झंझट, जन्म-मरण का दुःख, सांसारिक कष्ट। "भव बंधन काटहिं मुनि ज्ञानी"—[रामा०]।—**भंजन**-(पु०) परमेश्वर। "भवभंजन जनरंजन हे प्रभु भंजन पाप समूह"—मन्ना०।—**भय**-(पु०) जग में जन्म मरण का डर।—**भामिनी**-(स्त्री०) पार्वती।—**भाव**-(पु०) सांसारिकता में अनुराग।—**भूति**-(संज्ञा) संस्कृत के एक प्रमुख कवि।

संसार की विभूति।—भूप—भूपति*†—(पु०, सं०) संसार के राजा, जगत्पति।—भूष-भूषण-(पु०) संसार के गहना, शिवजी का गहना, साँप, भस्म।—भोग-(पु०) सांसारिक सुख का भोग। —मोचन-(वि०) जन्म-मरण आदि संसार-बंधन से छुड़ाने वाले, भगवान। "देखेउँ भरि लोचन प्रभु भवमोचन इहइ लाभ शंकर जाना"—[रामा०]।—वारिधि-(पु०) संसार-सागर, भवोदधि। "भववारिधि बोहित सरिस"—[रामा०]। —विलास-(पु०) अज्ञान जन्य संसारी सुख, मोह माया, प्रपंच।—संभव-(वि०) सांसारिक। "भवसंभव नाना दुख दारन"—[रामा०]।

भवदीय—(सर्व०, सं०) तुम्हारा, आपका।

भवन—(संज्ञा, पु०, सं०) महल, घर, मकान, मंदिर छप्पय का एक भेद (पिं०)—सभा-व्यवस्थापिका सभा। "भवन भरत, रिपु-सूदन नाहीं"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भुवन] संसार, जगत्।—नेता-(पु०) सभा का अग्रणी व्यवस्थापिका सभा का नेता, [लीडर आफ दि हाउस]—लिपिक-(पु०) सभाभवन का लेखक। [क्लर्क आफ दि हाउस]

भवना, भँवना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भ्रमण] झुकना, मुड़ना, चक्कर लगाना, घूमना, फिरना—भवाना-[सं० रूप]।

भवनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भवन] घरनी, स्त्री०।

भवनीय—(वि०, सं०) होने वाला।

भवाँ‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भवना] चक्कर, फेरी। [**भवाँफेरी** (यौ०)]।

भवांतर—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्व या पश्चात् का जन्म।

भवाँना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० भ्रमण] फिराना, घुमाना।

भवाचल—(संज्ञा, पु०, सं०) कैलाश पर्वत।

भवादृश—(वि०, सं०) आपके तुल्य।

भवा, भवानी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती जी। "राम नाम जपि सुनहु भवानी"—[रामा०]।

भवात्मज—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश, कार्त्तिकेय, पार्वती-पुत्र।

भवार्णव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) संसारसागर, भवसागर।

भवान्—(सर्व० सं०) आप।

भवानी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती, शंकर की पत्नी।—पति-(पु०) शिव।—नंदन-(पु०) कार्त्तिकेय।

भवितव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) होनहार। "भवितव्य का उपहार हो"—महादेवी।

भवितव्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) होनहार, भावी, होतव्यता, भाग्य, होनी। "तुलसी नृपति भवितव्यता बस काम-कौतुक लेखई"—[रामा०]।

भविष्णु—(संज्ञा, पु०, सं०) भावी, होनहार होतव्यता।

भविष्य—(वि०) [सं० भविष्यत्] आगे आने वाला समय, वर्तमान काल से आगे का काल भावी।—काल-(पु०) क्रिया के तीन कालों में एक जो आगत काल के लिए है।—गुप्ता—सुरति-सर्वोपना-(स्त्री०) एक गुप्ता नायिका जो आगे रति करने वाली हो और प्रथम ही से उसे छिपावे (साहि०)।

भविष्यत्—(संज्ञा, पु०, सं०) भावी, भविष्य।

भविष्यद्वक्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) आगे होने वाली बात का कहने वाला, ज्योतिषी, दैवज्ञ, भविष्यद्वाणी करने वाला।

भविष्यद्वाणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रथम ही से कही गई, आगे होने वाली बात।

भवीला*†—(वि०, दे०) [हि० भाव+ईला प्रत्य०] भाव-पूर्ण या युक्त, तिरछा, बाँका।

भवेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महादेवजी।

भवैया—(संज्ञा, पु०, दे०) कत्थक, नचैया।

भवोदधि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) संसार सागर, भवसागर।

भव्य—(वि०, सं०) देखने में सुन्दर या भारी, मंगल और शुभ सूचक, भविष्य में होने वाला, सत्य, मनोरम।

भव्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भव्य का भाव।

भष*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भक्ष्य] भोजन, खाना। "अजया-भष अनुसारत नाहीं"—सूर०।

भषना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० भक्षण] खाना (बुरे अर्थ में), भखना (ग्रा०)।

भस—(संज्ञा, पु०, दे०) भस्म, राख, किसी पदार्थ की असह्य गंध।

भसकना—(क्रि० अ०, दे०) गिरना, पड़ना, फाँकना, बुरे रूप से अधिक खाना।

भसना†—(क्रि० अ०, दे० बँ०) जल पर तैरना, जल में डूबना।

भसभसा—(वि०, दे०) पोला, थलथला।

भसम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भस्म] भस्म, राख, विभूति।

भसमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० दस्मा का अनु०] एक तरह का खिज़ाब।

भसर—(क्रि० वि०, दे०) भस शब्द से गिरना या बैठना।

भसान†—(संज्ञा, पु०, दे०) [बँ० भसाना] काली आदि की मूर्त्ति को नदी में प्रवाहित करना, बहा देना।

भसाना†—(क्रि० स०, दे०, बँ०) किसी वस्तु को पानी में डालना या तैराना।

भसींड़ा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कमल की जड़, कमल की नाल, मुरार (प्रान्ती०)।

भसुंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भुशुंड] हाथी।

भसुंडी, भुशुंडी—(संज्ञा, पु०, दे०) काकभुसुंड, गणेश।

भसुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ससुर का अनु०] जेठ, पति का बड़ा भाई।

भस्त्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धौंकनी।

भस्म—(संज्ञा, पु०) [सं० भस्मन्] राख, खाक। (वि०) जो जल कर राख हो गया हो,—**सात**—(वि०, सं०) जलकर भस्म होना।

भस्मक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक रोग जिसमें भोजन तत्काल पच जाता है। "रूप असन अँखियन को भस्मक रोग"—वर०।

भस्मता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भस्म होने का धर्म्म या भाव।

भस्मांत—(वि०) अंत में शून्य का रूप धारण करने वाला। "भूल क्षणिक भस्मांत स्वप्न को"—पंत।

भस्मावशेष—(वि०, सं०) जो भस्म मात्र रह गया हो, जो जलकर भस्म हो गया हो।

भस्मासुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक दैत्य (पुरा०)।

भस्मीभूत—(वि०, सं०) जो जल कर राख हो गया हो। "भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः"—ना०। "तुमने था अपना पहले भस्मीभूत किया"—'बच्चन'।

भहराना—(क्रि० अ०, अनु०) बड़े शब्द के साथ एकाएक गिर पड़ना, टूट पड़ना।

भाउँ, भाउ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भाव] भाय, (ब्र०) भाव, अभिप्राय, मतलब।

भाँउर, भाँवरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भाँवर] अग्नि-परिक्रमा, भाँवर, भौंरी। (ब्याह०)। "तुलसी भाँवरि के परे, ताल सिरावत मौर"।

भाँग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भृंगा] एक मादक पत्तियों वाली बूटी, विजया, भंग। [**भँगेड़ी** (वि०)]। "भाँग-भषन तौ सरल है।" **मुहा०—खा जाना या पी जाना**-पागलपने या नशे की सी बातें करना।—**छानना**-भंग को पीस कर पीना। **घर में भूँजी—न होना**-बहुत कंगाल होना।

भाँज—(संज्ञा, स्त्री०,) [हिं० भाँजना] घुमाने या भाँजने का भाव, मरोड़, नोट आदि के बदले में दिया गया धन, भुनाव। "लेत देत भाँज देत ऐसे निबहत हैं"—बेनी०।

भाँजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० भंजन] तह करना, मरोड़ना, मोड़ना, खड्ग, लाठी, मुग्दर आदि घुमाना। [**भँजाना, भँजवाना** (प्रे० रूप)]।

भाँजी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भाँजना= मोड़ना] किसी के हानि पहुँचाने की बात, चुगुली। **मुहा०—मारना**-किसी को हानि पहुँचाने की बात कहना, विघ्न डालना।

भाँटा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृंताक] बैगन, भटा (ब्र०)। "भाँटा एकै पित करै, करै एक को बाय"—[नीति]।

भाँड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भंड] दिल्लगीबाज, नक्काल, विदूषक, मसखरा, सभाओं में नाचने गाने और हास्यपूर्ण नकलें करने का पेशेवर, नंगा, निर्लज्ज, बरबाद। (संज्ञा, पु०) [सं० भाँड] बरतन, भाँड़ा, उत्पात, भंडाफोड़, रहस्योद्घाटन। [**भँड़ैती** (संज्ञा, स्त्री०)]।

भाँड़ना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भंड] व्यर्थ इधर-उधर घूमना, मारे-मारे फिरना। (क्रि० स०) किसी को बदनाम करते फिरना, बिगाड़ना, नष्ट-भ्रष्ट करना।

भाँड़, भाँड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भांड] पात्र, बरतन, भँड़वा (ग्रा०)। **मुहा०—(के) में जी देना**-किसी पर दिल लगा होना।—(**के**)

भरना–धन इकट्ठा होना, किसी को खूब देना, पछिताना ।—**भर देना**–खूब धन देना, बहुत दान देना ।

भांडागार—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) खजाना, कोष (कोश), भंडार ।

भांडागारिक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भंडारी, कोषाध्यक्ष, खजानची ।

भांडार—(संज्ञा, पु०, सं०) खजाना, कोष, उपयोगी वस्तुओं का संग्रहालय, [भाँडार (दे०)] । एक सी अनेक बातें या गुण जिसमें हो । [**भाँडारी, भंडारी** (संज्ञा, पु०, सं०)] ।

भाँत, भाँति, भाँती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भेद] प्रकार, तरह, क़िस्म, रीति ।—**गृह**–(पु०) गोदाम [स्टोर हाउस] ।—**भाँति के**–तरह तरह के, विभिन्न प्रकार के ।

भाँपना†—(क्रि० स०, दे०) पहचानना, ताड़ना, देखना, अनुमान करना, समझना ।

भाँयँ-भाँयँ—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) अत्यंत एकांत स्थान या सन्नाटे में होने वाला शब्द, निर्जनता । "संपति में काँय-काँय, विपति में भाँयँ-भाँयँ "—देव० । अब आँगन भाँयँ-भाँयँ है—मैथिली० ।

भाँरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भाँवर] [भाँरी, भाँवरी (दे०)] ।

भाँवना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० भ्रमण] खरादना, कुनना, भली भाँति सुन्दरता से बनाना, रचना, दही आदि बिलोड़ना ।

भाँवर, भाँवरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रमण] परिक्रमा करना, अग्नि की वह परिक्रमा जो वर और कन्या विवाह के अंत में करते है (रीति), भौरी, [भाँवरि (दे०)] "तुलसी भाँवर के परे ताल सिरावत मौर " [रामा०] । [**भाँवर, भौंर, भ्रमर, भौंरा, भौंरी** (संज्ञा, पु०)] ।

भा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आभा, कांति, चमक, दीप्ति, शोभा, किरण, बिजली, छटा, रश्मि । *† (अव्य, दे०) यदि इच्छा हो, भला, चाहे या अच्छा । * (सा० भू० क्रि० अ०, ब्र०) भया, भयो, हुआ ।

भाइ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भाव] प्रीति, प्रेम, स्वभाव, विचार, भाव । (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० भाँति] भाँति, तरह, रंग-ढंग, प्रकार, चाल-ढाल । (संज्ञा, पु०, दे०) भइकरा (ग्रा०), भाई, भाय ।

भाइप*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भाई] [भायप, भाइप (दे०)] भाईचारा ।

भाई—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रातृ] बंधु, भ्राता, भैया (ग्रा०), सहोदर, एक पीढ़ी के दो व्यक्ति बराबर वालों का सम्बोधन शब्द ।—**चारा**–(पु०) कुटुंब, वंश, मैत्री संबंध, घरेलू संबंध या व्यवहार ।—**दूज**–(स्त्री०)कार्तिक शुक्ल की यमद्वितीया, भैयादूज, भइया-दुइज (ग्रा०) ।—**बंद**–(पु०) कुटुम्ब या वंश के लोग, बंधु-बाँधव, मित्र लोग । [**भाईबंदी** (स्त्री०)] ।—**बिरादर**–(स्त्री०) कुटुम्ब और जाति के लोग । [**भाई-बिरादरी** (स्त्री०)] ।

भाउ, भाऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भाव] स्वभाव, भाव, स्नेह, विचार, प्रेम, भावना, अवस्था या दशा, अभिप्राय, प्रयोजन, महिमा, सत्ता, स्नेह वृत्ति, स्वरूप, महत्त्व, चित्तवृत्ति । (संज्ञा, पु०, दे०) भव (सं०) जन्म, उत्पत्ति । "आकर रहा जहाँ जस भाऊ "—[रामा०] ।

भाएँ*†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० भाव] समझ मे, बुद्धि के अनुसार । "ज्योतिष झूठ हमारे भाएँ "—[रामा०] ।

भाकर—(संज्ञा, पु०, सं०) भास्कर, सूर्य्य ।

भाकसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भस्त्री] भट्ठी ।

भाकुर—(संज्ञा, पु०) मछली की जाति-विशेष ।

भाक्त—(वि०, सं०) आश्रित, जिसे रोज खाना खिलाया जाता हो । औपचारिक । (पु०) चावल ।

भाख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भाषण] भाषण, बातचीत ।

भाखना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० भाषण] कहना, कथन करना, भविष्य कहना । " पहिले आपु न भाख "—वृं० ।

भाखा‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भाषा] बोली, बातचीत । " भाखा भनित मोरि मति भोरी "—[रामा०] ।

भाग—(संज्ञा, पु०, सं०) खंड, अंश, हिस्सा, पार्श्व, ओर । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० भाग्य] किस्मत, नसीब, तक़दीर, माथा, भाल, सौभाग्य का कल्पित स्थान । सबेरा, प्रभात, किसी राशि को कई अंशों या हिस्सों में बाँटने की क्रिया (गणि०) बाँटना ।—**त्याग**–(पु०) भाग छोड़ना, जहदजहल्लक्षणा ।—**फल**–(पु०) लब्धि ।

भागड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भागना] भगदड़, बहुत से लोगों का घबरा कर एकदम एक साथ भागना। (वि०) भागने वाला, [भगोड़ा (दे०)]।

भागना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भाज्] दौड़ कर चलना, चला जाना, पलायन करना, हट जाना, पीछा छुड़ाना, किसी काम या बात से बचना या हटना। **मुहा०—सिर पर पैर रखकर**-बड़े वेग से भागना।

भागधेय—(संज्ञा, पु०, सं०) भाग्य, राजा का कर। "तद् भागधेयं परमं पशूनाम्"—भर्तृ०।

भागनेय—(संज्ञा, पु०, सं०) भानजा, भैने, भानैज (ग्रा०)।

भागवंत†—(वि०, दे०) [सं० भाग्यवान्] भाग्यवान्, किस्मती, तकदीरी, भाग्यशाली।

भागवत—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यास कृत १८ पुराणों में से एक पुराण जिसमें श्रीकृष्ण लीला १२ स्कंधों, ३१२ अध्यायों और १८००० श्लोकों मे वर्णित हैं इसे वेदान्त का तिलक मानते हैं। देवी भागवत पुराण, परमेश्वर का दास, १३ मात्राओं का एक छंद। (वि०) भागवत-सबंधी।

भागिनेय—(संज्ञा, पु०, सं०) भानजा, बहिन का लड़का। भैने (ग्रा०) [**भागिनेयी** (स्त्री०)]।

भागी—(संज्ञा, पु०) [सं० भागिन्] अधिकारी, हकदार, हिस्सेदार, भाग्यवान् (यौगिक में) जैसे —बड़भागी। "अहो धन्य लछिमन बड़भागी" —[रामा०]।—**दारी-अनुलेख** (पु०) साक्षी-पत्र। [पार्टनरशिप डीड]।

भागीरथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भगीरथ] भगीरथ राजा।

भागीरथी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंगा नदी।

भाग्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मनुष्य के कार्यों को पूर्व ही से निश्चित करने वाला अवश्यंभावी, दैवी विधान, नसीब, तक़दीर, किस्मत, विधि लेख, [भाग (दे०)]। (वि०) हिस्सा करने योग्य। **मुहा०—खुलना**-सुख मिलना।—**जागना**-धनी या सुखी होना।—**ग्राही**-हिस्सेदार।—**भरोसा**-धीरता, भाग्याधीन।—**स्थान**-कुंडली में १०वाँ घर या खाना (ज्यो०)।—**हीन**-(वि०) कंगाल, अभागा।—**क्रीड़ा**-(स्त्री०) चिट्ठी डालकर इनाम बाँटने की रीति। [लाटरी]

भाग्यवंत, भाग्यवान—(वि०) [सं० भाग्यवत] धनी, भाग्यशाली।

भाग्याधीन—(वि०, यौ०, सं०) देवी-विधान के अधीन।

भाग्योदय—(संज्ञा, पु०, सं०) भाग्य का उदय होना। "आरम्भ भीत धरणी के भाग्योदय का" —दिनकर।

भाचक्र—(संज्ञा. पु०, सं०) क्रांतिवृत्त।

भाजक—(वि०, सं०) विभाग करने या बाँटने वाला, किसी राशि में भाग देने का अंक (गणि०) विभाजक।

भाजकांश—(संज्ञा, पु०, सं०) वह भाजक जिससे भाग देने पर शेष कुछ न बचे।

भाजन—(संज्ञा, पु०, सं०) पात्र, योग्य, आधार, बरतन। "भूरि भाग्य भाजन भयसि"—[रामा०]।

भाजना—(क्रि० अ०, दे०) भागना, भगना।

भाजित—(वि०, सं०) विभक्त।

भाजी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तरकारी, साग, माँड़, पीच।

भाज्य—(सं०) वह पदार्थ जो बाँटा जावे, जिस अंक में भाजक से भाग दिया जाय (गणि०) (वि०) विभाग करने योग्य।

भाट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भट्ट] चारण, राजाओं का यशोगान करने वाले, बंदी, सूत, नीच ब्राह्मणों की एक जाति, चाटुकार। [**भाटिन** (स्त्री०)]। "चले भाट हिय हर्ष न थोरा"—[रामा०]। [**भटैती, भटैंय** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

भाटा—(संज्ञा, पु०, दे०) समुद्र के पानी के चढ़ाव का उतार, पानी का उतार होना [**ज्वार** (विलो०)]।

भाठ्यौ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भाट] [भटई (दे०)] कीर्ति-कीर्त्तन, भाट का कार्य।

भाठ—(संज्ञा, स्त्री०) बाढ़ की आई हुई मिट्टी जो किनारे जम जाया करती है।

भाठी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भट्ठी] भट्ठी। "करि मन मंदिर में भावना की भाठी धर्यो"—रसाल।

भाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्राष्ट्र] भड़-भूजों की अनाज भूनने की भट्ठी। **मुहा०—झोंकना (चूल्हा बुझाना)**-तुच्छ या अयोग्य कार्य करना।—**में झोंकना (डालना)**-नष्ट करना, जाने देना, फेंकना।

भाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भाट] किराया। [भारा (दे०)]। **मुहा०—(ड़े) का टट्टू**–अस्थायी, क्षणिक, निकम्मा।

भाण—(संज्ञा, पु०, सं०) हास्य रस-पूर्ण दृश्य-काव्य या एक एकांकी रूपक (नाट्य०) बहाना, मिस, ब्याज।

भात—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भक्त] पानी में उबाला या पकाया चावल, विवाह की एक रीति जिसमें कन्या वाला समधी को भात खिलाता है। (संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश, प्रभात, सवेरा।

भाति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कांति, आभा, शोभा।

भाथा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भस्त्रा, ग्रा० भत्था] तूणीर, तरकश, बड़ी भाथी या धौंकनी।

भाथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भस्त्री] भट्ठी की आग सुलगाने की धौंकनी।

भादों—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भाद्र, प्रा० भद्दो] भाद्रपद, सावन के बाद और क्वार के प्रथम का एक महीना, [भादौ (दे०)]।

भाद्र, भाद्रपद—(संज्ञा, पु०, सं०) भादों।—**पदा**–(स्त्री०) एक नक्षत्र-समूह इसके दो भाग हैं—(१) पूर्व भाद्रपद, (२) उत्तर भाद्रपद।

भाद्री—(संज्ञा, स्त्री०) भादों की पूर्णिमा।

भान—(संज्ञा, पु०, सं०) चमक, रोशनी, प्रकाश, कांति, दीप्ति, आभास, ज्ञान, प्रतीति। बिसरा सा सब भान जा रहा—[मैथली०]।

भानजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भगिनी+जः] भाग्नेय, बहिन का पुत्र, भैने, भानेज (ग्रा०)। [**भानजी (स्त्री०)**]।

भानना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० भजन] काटना, तोड़ना, भंग या नष्ट करना, दूर करना, मिटाना। (क्रि० स०) [हि० भान] समझना। "सब की शक्ति शंभु धनु भानो"—[रामा०]।

भानमती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भानुमती] जादूगरनी। **मुहा०—का पिटारा**–विचित्र और मनोरंजक वस्तुओं की राशि, विचित्र कुतूहलकारी और मनोरंजक बातों का समूह।

भानवी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भानवीया] भानुजा, यमुना, जमुना नदी।

भानवीय—(वि०) सूर्य सम्बन्धी।

भाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भान=ज्ञान] ज्ञात या मालूम होना, जान पड़ना, अच्छा या भला लगना, पसंद आना, शोभा देना। (क्रि० स०, दे०) [सं० भा—प्रकाश] चमकाना।

भानु—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा, सूर्य, विष्णु, किरण, रश्मि। "जगत्यपर्याप्त सहस्र भानुना"—माघ०।—**ज**–(पु०) यम, शनिश्चर, कर्ण, मनु। [**भनुजा** (स्त्री०)]।—**जा**–(स्त्री०) यमुना।—**तनय**–(पु०) यम, शनि, मनु, कर्ण।—**तनया**–(स्त्री०) यमुना।—**तनूजा,—तनुजा**–(स्त्री०) यमुना।—**नंदनी**–(स्त्री०) जमुना। "हाय भानु-नंदिनि निरमोहिनि"—'गिरीश'।—**सुत**—(पु०) यम, मनु, कर्ण, शनिश्चर, भानुतनय।—**सुता**–(स्त्री०) यमुना।

भानुमत्—(वि०, सं०) प्रकाशमान्। (संज्ञा, पु०) सूर्य।

भानुमती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा भोज की कन्या जो इन्द्रजाल की बड़ी ज्ञाता थी।

भाप, भाफ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बाष्प प्रा० बप्प] जल के अति सूक्ष्म कण जो उसके खौलने पर ऊपर उठते दीखते हैं, ताप पाने पर घनीभूत या द्रवीभूत वस्तुओं की दशा (भौ० शा०) वाष्प, ताप के कारण भौतिक पदार्थों की सूक्ष्मावस्था।

भापना, भाँपना—(क्रि० स०, दे०) अटकल लगाना, कूतना, भीतरी भेद का अनुमान करना, भाप से बफारा देना।

भाभर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वप्र] पहाड़ों की तराई का वन।

भाभरा*†—(वि०, दे०) [हि० भा+भरना] लाल।

भाभी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भाई] भौजाई, भउजी (ग्रा०), एक बुरी देवी [ग्रा० गाली]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भावी] होतव्यता। "भाभी-बस सीता मन डोला"—[रामा०]। **मुहा०—आना**–बुरी दशा या रोग होना, (ग्रा० गाली)।

भाम—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्णिक छंद, (पिं०)। *(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भामा] स्त्री।

भामा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्त्री, वामा।

भामिनि, भामिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्त्री, पत्नी। " भामिनि मन मानहु जनि ऊना "—[रामा०]। "ज्यों पुरुष बिनु भामिनी ज्यों चन्द्र बिनु है यामिनी"—मन्ना०।

भामिनीविलास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पंडितराज जगन्नाथ-कृत एक काव्य-ग्रंथ ।

भाय‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भाई] भाई ।* (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भाव] विचार, भाव, मन की वृत्ति, परिमाण, भाव, दर, ढंग, भाँति, प्रेम, विचार, लेखे । "ज्योतिष झूठ हमारे भाये" —[रामा०]

भायप—(संज्ञा, पु०, दे०) भाईप, भाई-चारा ।

भाया—(सा० भू० क्रि० स०) [हि० भाना] अच्छा लगा, पसंद आया । (वि०, दे०) प्यारा, प्रिय, भावता ।

भारंगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक जंगली पौधा जो औषधि के काम आता है, असबरगा, बॅभनेटी (प्रान्ती०) । लो०—"भारंगी गुड़ीची घनदारु सिंहा" ।

भार—(संज्ञा, पु०, सं०) बीस पंसेरी का माप, बोझा, बहंगी का बोझ, रक्षा, संभाल, उत्तरदायित्व, किसी कार्य के करने का जिम्मा । "शेषहिं इतो न भार है, जितो कृतघ्नी भार"—[नीति०] । **—वाहक**-(वि०, स०) बोझ ढोने वाला ।**—वाही** -(वि०, दे०) बोझ ढोने वाला । **मुहा०—उठाना**-उत्तर-दायित्व अपने सिर लेना ।**—उतारना** (**उतरना**)-कार्य पूर्ण करना (होना), कर्तव्य या ऋण उतारना । **किसी के सिर से—उतारना**-सहाय करना, सहारा, आधार, आश्रय, २००० पल या २० तुला की तौल ।**—अपना (अपने सिर का) दूसरे के सिर या माथे (डालना)**-अपना कार्य, ऋण या उत्तरदायित्व दूसरे पर छोड़ना । *† (संज्ञा, पु०, दे०) भाड़ । "रहिमन उतरे पार, भार झोंकि सब भार में"—रहीम ।

भारक—(संज्ञा, पु०) एक तौल ।

भारत—(संज्ञा, पु०, सं०) महाभारत का मूल ग्रन्थ जिसमें चौबीस हजार श्लोक हैं । भारतवर्ष, हिन्दुस्तान, आर्यावर्त, भरतवंशी, घोर युद्ध, लंबी कथा । "तं तितीक्षस्व भारत"—[भ० गी०] । (संज्ञा, पु०, सं०) युधिष्ठिर, अर्जुनादि ।**—खंड, खण्ड**-(पु०) भारतवर्ष ।**—वर्ष**-(पु०) उत्तर में हिमालय पर्वत से दक्षिण में कन्याकुमारी तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी से पश्चिम में सिंध नदी तक का देश, आर्यावर्त, हिन्दुस्तान, भारतखण्ड ।**—वर्षीय, —वासी**-(पु०) भरतवर्ष का निवासी, भारतीय, भारतवर्ष में होने वाला, [भारतवर्षी (दे०)] ।

—सेवक समाज-(स्त्री०) गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा स्थापित राष्ट्रीय विचारों की सभा । [सर्वेंट आफ इंडिया सोसाइटी]

भारती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) वचन, गिरा, वाणी, सरस्वती, वीभत्स और रौद्र रस के वर्णन की एक वृत्ति (काव्य), ब्राह्मी, संन्यासियों के १० भेदों में से एक भेद । "वि०" भारत की, भारत का, भारतवासी, भारतीय । 'सुनि भारती ठाढ़ि पछिताती' —[रामा०] ।

भारतीय—(वि०, सं०) भारत संबंधी । (संज्ञा, पु०) भारत-वासी, भारत का रहने वाला या निवासी, हिन्दुस्तानी, [भारती (दे०)]**—नरेन्द्र मण्डल**-(पु०) भारतीय नरेशों की समिति । [इंडियन चेम्बर आफ प्रिंसेज़]**—नागरिक सेवा** -(स्त्री०) भारतीय शासन सेवा । [इंडियन सिविल सर्विस (दे०)] ।

भारतीयीकरण—(सं०, पु०) सरकारी मामलों में भारतीयों को प्रधानता देना, भारतीय बनाना ।

भारथ†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भारत] भारत ग्रन्थ, घोर युद्ध, संग्राम, भारतवर्षीय ।

भारथी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भारत] सैनिक, सिपाही ।

भारद्वाज—(संज्ञा, पु०, सं०) भरद्वाज के वंशज, द्रोणाचार्य, भरदल पक्षी, श्रौत और गृह्य-सूत्र के रचयिता एक ऋषि, भारद्वाज गोत्र के लोग ।

भारना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० भार] बोझ लादना, दबाना, भार डालना ।

भारवि, भारवी—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) किरातार्जुनीय काव्य के रचयिता, एक संस्कृत के कवि । "तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः" ।

भारा†—(वि०, दे०) [सं० भार] बोझा, भार (संज्ञा, पु०) भाड़ा किराया ।

भाराक्रांत—(वि०, यौ०, सं०) बोझ से पीड़ित ।

भाराक्रांता—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०) ।

भारावलंबकत्व—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पदार्थों के परमाणुओं का पारस्परिक आकर्षण ।

भारी—(वि०) [सं० भार] गुरु, जिसमें बोझा हो, बोझिल, कठिन, बड़ा, कराल, विशाल । "नाथ एक आवा कपि भारी"—[रामा०] । **मुहा०—भरकम**-देखने में बड़ा और भारी । गभीर, अत्यंत, बहुत सूजा या फूला हुआ, शान्त, प्रबल, असह्य ।

भारीपन—(संज्ञा, पु०, हि०) गुरुत्व, बोझिल।

भारोपीय—(वि०) भारत और योरप से सम्बन्धित। [इंडो योरोपियन]—जातियाँ (स्त्री०) हिन्दी योरोपीय जातियाँ। [इंडो योरोपियन रेसेज]।

भार्गव—(संज्ञा, पु०, सं०) भृगुवंशीय-व्यक्ति, शुक्राचार्य, परशुराम, मार्कंडेय, एक उपपुराण, जमदग्नि, वैश्य जाति का एक भेद। (वि०) भृगुसंबंधी, भृगु का। तब लौं भार्गव मूर्ति आ गयी—मैथली०।

भार्गवेश—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० भार्गव+ईस] परशुराम। "भार्गवेश देखिये"—[रामा०]।

भार्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पत्नी, स्त्री। "तस्मै सभ्याः सभार्यायाः"—रघु०। "किन्तु आर्य भार्या हो तुम"—मैथली०।

भार्याजित—(वि०, सं०) स्त्री०-भक्त, पत्नी का दास।

भार्यातिक्रम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्त्री त्याग, स्त्रीनाश, परस्त्री-गमन।

भार्यात्व—(संज्ञा, पु०, सं०) पत्नीत्व।

भाल—(संज्ञा, पु०, सं०) मस्तक, माथा, ललाट, कपाल। "बिधि कर लिखा भालनिज बाँचो"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भाला] बरछा, भाला बाण की गाँसी या फल। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भल्लुक] भालू, रीछ। **चन्द्र**—(पु० शिवजी, महादेवजी, गणेश। **—दर्शन**-(स्त्री०) सिन्दूर। शिव—**दर्शी**-(पु०) स्वामी के इशारे पर चलना। **—लोचन**-(पु०) शिवजी।

भालना—(क्रि० स०, दे०) भली भाँति देखना, खोजना, ढूँढ़ना। [**देखना भालना** (यौ०)]।

भाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भल्ला] बरछा। **बरदार**-(पु०) बरछैत, बरछा बाँधने या चलाने वाला। [**भालाबरदारी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

भालि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भाला] बरछी, शूल, काँटा, साँग।

भाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भाला] भाला की नोंक या गाँसी, काँटा।

भालु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भल्लुक] रीछ। "नर कपि, भालु अहार हमारा"—[रामा०]। **—नाथ**-(पु०) जाम्ववंत।

भालुक—(संज्ञा, पु०) [सं० भल्लुक] रीछ, भालू।

भालू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भल्लुक] रीछ।

भावंता*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भाना] प्रिय, प्रीतम, प्रियतम, प्रेमपात्र, प्यारा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भावी] होनहार।

भाव—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्ता, मन की इच्छा या प्रवृत्ति, विचार, उद्देश्य, अभिप्राय, तात्पर्य, मुख की चेष्टा या मुद्रा, जन्म, आत्मा, पदार्थ, प्रेम, चित्त, प्रकृति, कल्पना, ढंग, स्वभाव, प्रकार, अवस्था, दशा, विश्वास, भावना, आदर, विक्री का हिसाब, दर, प्रतिष्ठा, सम्मान, भरोसा, आकृति। अस्तित्व, [**अभाव** (विलो०)]**—गति**-(स्त्री०, सं०) इच्छा, विचार, ख्याल, इरादा। **—गम्य**-(वि०) श्रद्धा, भक्ति, प्रेम या भाव से जानने योग्य, भावपूर्ण। **—ग्राह्य**-(वि० सं०) श्रद्धा, भक्ति और प्रेम भाव से ग्रहण करने के योग्य। **—चक्र**-(पु०) दर का उतार चढ़ाव। [रेट सर्किल]**—ताव**-(संज्ञा, पु०, हि०) दर, निर्ख, किसी वस्तु का मूल्य। **—भक्ति**-(स्त्री०) श्रद्धा, प्रेम और भक्ति-भाव, सम्मान, सत्कार, आदर। **—मग्ना**-(वि०) भाव में डूबी हुई। "भावमग्ना प्रिया को गले से लगा" —[मधुपुरी]। **—वाचक**-(पु०) वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का गुण, दशा, स्वभावादि जाना जावे या किसी व्यापार का बोध हो (व्या०), जैसे—नीचता। **—वाच्य**-(पु०) वह वाक्य जिसमें भाव प्रधान हो और कर्त्ता तृतीयांत हो, अथवा क्रिया का वह रूप जो सूचित करे कि वाक्य का उद्देश्य कोई भाव मात्र है (व्या०), जैसे—मुझसे पढ़ा नहीं जाता। **—संधि**—(स्त्री०) एक अलंकार जहाँ दो विरुद्ध भावों का मेल प्रकट हो (काव्य)। **—शबलता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अलंकार जिसमें कई एक भाव एक साथ प्रकट किये जाते हैं (काव्य)। **मुहा०—उतरना या गिरना**-किसी वस्तु का मूल्य घट जाना। **—०चढ़ना (बढ़ना)**-मूल्य बढ़ जाना। श्रद्धा, भक्ति, गीत के अनुसार अंगों का चलाना, ईश्वरादि के प्रति भक्ति या श्रद्धा, नायिका के मन में नायक के दर्शनादि से उत्पन्न विकार, गान के विषयानुसार शरीर या अंगों का विशेष रूप से संचालन। **मुहा०—देना (दिखाना)** -मुखाकृति या अंग-संचालन या इंगन से मन की दशा प्रकट करना। नखरा, चोचला, नाज, अदा।

भावइ, भावै†—(अव्य०, दे०) [हि० भाना] जी चाहे, अच्छा लगे। "भावइ तुम्है करौ तुम सोई"—[रामा०]।

भावक*—(क्रि० वि०, दे०) [सं० भाव] थोड़ा सा, रंचक, किंचित, तनिक। (वि०, सं०) भावपूर्ण, भाव से भरा। (संज्ञा, पु०, सं०) भावना करने वाला, भक्त, प्रेमी, भाव युक्त, अनुरागी।

भावज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रातृजाया] भौजी, भौजाई, भाभी, भाई की स्त्री। भउजी (ग्रा०)। (वि०, सं०) भाव से उत्पन्न।

भावता—(वि०) [हि० भावना] प्रिय, जो भला या अच्छा लगे। "नीरज नयन भावते जी के"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, सं०) प्रेम पात्र, प्रियतम, प्यारा, भावता। [**भावती** (स्त्री०, व्र०)]।

भावन*†—(वि०, दे०) [हि० भावना] प्रिय, अच्छा या प्यारा लगने वाला, जो भला लगे। [**मनभावन** (यौ०)]।

भावना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्मृति और अनुभव से उत्पन्न चित्त का एक संस्कार, मनसा, विचार, कल्पना, ध्यान, ख्याल, विचार, इच्छा, चाह। "यादृशी भावना यस्यसिद्धिर्भवति तादृशी"—वाल्मी०। पुट देना, किसी चूर्णादि को किसी द्रव रस में तर कर घोटना, जिससे द्रव-रस का गुण उसमें आ जावे (वैद्य०)। * (क्रि० अ०, दे०) अच्छा लगना, पसंद आना। (वि०, दे०) [हि० भावना] प्यारा, प्रिय।—**नियंत्रण**-(पु०) वस्तुओं का मूल्य निर्धारण। [कंट्रोल आवप्राइस]

भावनाश्रय—(संज्ञा, पु०, सं०)शिव।

भावनि*†—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० भाना] जो मन में आवे, इच्छानुकूल बात।

भावनी—(वि०, सं०) भवितव्यता, होनहारी। "नहिं चलति नराणाम् भावनी कर्म रेखा"—[स्फुट०]।

भावनीय—(वि०, सं०) भावना करने योग्य।

भावली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) किसान और जमींदार के बीच पैदावार की बँटाई।

भावांतर—(संज्ञा, पु०, सं०) मानसिक अवस्था में परिवर्त्तन।

भावा—(क्रि० स०, दे०) [हि० भाना] अच्छा लगे, मन माने। "करहु जाय जा कहँ जोइ भावा"—[रामा०]।

भावानुग—(वि०, सं०) भाव का अनुगमन करने वाला।

भावाभास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भाव का आभास मात्र प्रगट करने वाला एक अलंकार (काव्य)।

भावार्थ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तात्पर्य्य, अभिप्राय, मतलब, किसी पद्य या वाक्य का मूल भाव-सूचक अर्थ।

भावालंकार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक अलंकार (काव्य)।

भावालीना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छाया।

भावाश्रित—(संज्ञा, पु०, सं०) नृत्य-कला का भेद-विशेष।

भाविक—(वि०, सं०) मर्मज्ञ, भेद जानने वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) भूत और भविष्य को भी वर्तमान सा सूचित करने वाला एक अलंकार (काव्य)।

भावित—(वि०, सं०) चिन्तित, विचारित, सोचा-विचारा हुआ।

भावी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० भाविन्] आगे आने वाला समय, भविष्यत काल काल, भवितव्यता, होनहार, भाग्य, अवश्यंभावी बात। "भावी भूत वर्त्तमान जगत बखानत है"—[रामा०]। "भावी बस प्रतीति जिय आई"—[रामा०]।

भावुक—(वि०, सं०) सोचने या भावना करने वाला, जिस पर भावों का प्रभाव शीघ्र पड़े, अच्छी अच्छी बातें सोचने वाला। "मुहरहो रसिकाभवि भावुकः"—आ०।

भावुकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भाव-प्रवणता।

भावै†—(अव्य०) [हि० भाना] चाहे। (सा० भू० क्रि० स०, दे०) अच्छा लगै। "भावै तुम्हैं करौ तुम सांईं"—[रामा०]।

भावोन्मत्त—(वि०, सं०) भाव-विह्वल।

भावोन्मेष—(संज्ञा, पु०, सं०) भाव का उदय।

भावोन्मेषी—(वि०) भावों को उत्तेजना देने वाला, उद्दीप्त करने वाला। "भावोन्मेषी प्रणय करता चित्त सद्वृत्तियों को है"—हरिऔध।

भाव्य—(वि०, सं०) होनेवाला, भाव के योग्य, सिद्ध योग्य।

भाषण—(संज्ञा, पु०, सं०) कथन, व्याख्यान, वक्तृता। [**भाषणीय** (वि०)]।—**प्रतिबंध**-(पु०) मुखबंदी करना, भाषण-बहस आदि बंद कर देना। [गैग]—**स्वातंत्र्य**-(पु०) भाषण करने या व्याख्यान देने की स्वतंत्रता। [फ्रीडम आफ स्पीच]

भाषना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भाषण] कहना, बोलना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० भक्षण] भखना, खाना, भोजन करना।

भाषांतर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) उलथा, अनुवाद, एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना [रेंडरिंग]।

भाषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कहीं किसी समाज में प्रचलित बातचीत का ढंग, वाणी, बोली, वाक्य, ज़बान (फ़ा०), आजकल की हिन्दी, मन के भावों को प्रगट करने वाला शब्दों और वाक्यों का समूह। —तत्व-(पु०) भाषा विज्ञान ।—**बद्ध**-(वि०, यौ०, सं०) साधारण देश की बोली या वाणी मे बना हुआ । " भाषा बद्ध करब मैं सोई "—[रामा०] ।—**विद्**-(पु०) भाषा-विज्ञान का विद्वान, भाषा-शास्त्री । [लिंगुइस्ट]—**विज्ञान**-(पु०) भाषा सम्बन्धी वह विज्ञान जिसमें उसके उत्पत्ति, क्रमिक विकास आदि पर प्रकाश डाला जाता है। [फाइलालॉजी]—**समुदाय**-(पु०) भाषा-कुल, भाषा-परिवार । [ग्रुप आफ स्पीच]—**सम, समक**-(पु०) एक शब्दालंकार जिसमें कई भाषाओं मे समान रूप से बोले जाने वाले शब्दों की योजना हो (काव्य०) ।

भाषिक—(वि०, सं०) भाषा या बोली सम्बन्धी ।

भाषित—(वि०, सं०) कथित, वर्णित, कहा हुआ ।

भाषी—(संज्ञा, पु०) [सं० भाषिन्] कहने या बोलने वाला । " मिथ्याभाषी साँचहू कहै न मानै कोय "—[नीति०] ।

भाष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी गूढ़ या गहन विषय या सूत्रो की वृहत टीका या व्याख्या । " विस्तृत व्याख्या भाष्यभूता भवन्तु मे "—[माघ०] ।—**कार**-(पु०) सूत्रो की व्याख्या करने वाला, भाष्य रचने वाला । " भाष्यकारं पतंजलिम् "—[शिक्षा० पा०] ।

भास—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश, मयूख, कांति, दीप्ति, चमक, किरण, इच्छा ।

भासना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भास] चमकना, प्रकाशित होना, प्रतीत या मालूम या ज्ञात होना, दिखाई देना, फँसना, लिप्त होना । *† (क्रि० अ०, दे०) [सं० भाषण] भाषना, कहना ।

भासमान—(वि०, सं०) दिखाई या जान पड़ता हुआ, भासता हुआ ।

भासांत—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य्य, चन्द्रमा, पक्षी विशेष । (वि०) मनोहर, सुहावना, रमणीय ।

भासित—(वि०, सं०) प्रकाशित, चमकीला ।

भासु—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य ।

भासुर—(वि०, सं०) प्रकाशमान, दीप्तिमान ।

भास्कर—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य्य, सोना, सुवर्ण, अग्नि, शिव, वीर । पत्थर पर चित्र और बेल-बूटे बनाना ।

भास्कराचार्य्य—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रसिद्ध ज्योतिषी या गणितज्ञ ।

भास्करानंद—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रसिद्ध सिद्ध कान्यकुब्ज संन्यासी या महात्मा ।

भास्य—(वि०, सं०) प्रगट या प्रकाशित करने योग्य ।

भास्वती—(संज्ञा, स्त्री०) एक प्राचीन समय की नदी ।

भास्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) दिन, सूर्य्य । (वि०) प्रकाशमान, चमकदार ।

भास्वान—(वि०, सं०) दीप्तिमान ।

भिगना—(क्रि० स०, दे०) [हि० भिगोना] भिगोना, भीगना । [**भिगाना**—(स० रूप)] [**भिगवाना**—(प्रे० रूप)]

भिजाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० भिगोना] भिगोना, भिजोना (ग्रा०) । [**भिजवाना**—(प्रे० रूप)] ।

भिंडिपाल, भिंदिपाल—(संज्ञा, पु०, दे०) एक अस्त्र-विशेष, गोफना, छोटा डंडा । " गहि कर भिंदिपाल वर साँगी "—[रामा०] ।

भिंडी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० भिंडा] एक तरह की फली जिसकी तरकारी होती है ।

भिंसार—(संज्ञा, पु०) सुबह, सबेरा ।

भिक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) भीख माँगना ।

भिक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) याञ्चा, माँगना, दीनता से उदर पूर्ति के लिये माँगने का काम, याचना, भीख, माँगन से मिला अन्न या पदार्थ । [भिच्छा, भीख (दे०)] ।—**पात्र**-(पु०) भीख माँगने का बरतन ।

भिक्षार्थी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भीख चाहने वाला, याचक ।

भीक्षित—(वि०, सं०) भिक्षा में मिला हुआ ।

भिक्षु, भिक्षुक—(संज्ञा, पु०, सं०) भिखारी, बौद्ध-संन्यासी । [**भिक्षुणी** (स्त्री०)] ।—**संघ**-(पु०) बौद्ध भिक्षुओं का संघ ।

भिखमंगा—(संज्ञा, पु०, दे०, हि०) भिक्षुक, भिखारी, याचक ।

भिखारिणी, भिखारिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भिक्षुणी] भिखमंगिन ।

भिखारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भिक्षुक] भिक्षुक, भिखमंगा । [**भिखारिन, भिखारिणी, भिखरिनी** (स्त्री०)] ।

भिखिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भिक्षा] भिक्षा, भीख । "दर्शन भिखिया के लिये"—रतन० । [**भिखियारी** (संज्ञा, पु०, दे०)] ।

भिगाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० भिगोना] भिगोना, भिजोना, भिगावना (ग्रा०) । [**भिगवाना** (प्रे० रूप)] ।

भिगोना—(क्रि० स०, दे०) [सं० अभ्यज] भिगाना, पानी से तर करना, भिगोवना, भिजोना (ग्रा०) ।

भिचना—(क्रि० अ०, व्र०) बंद होना, भिचाना, खिंचना ।

भिच्छा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भिक्षा] भीख माँगना, माँगा हुआ अन्न आदि ।

भिच्छु, भिच्छुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भिक्षुक] भिखारी, भिखियारी ।

भिजवना, भिजोवना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० भिजोना] भिगोने में दूसरे को लगाना, भिगोना, भिजोना ।

भिजवाना, भेजवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० भेजना का प्रे० रूप] किसी के यहाँ भेजने में लगाना, पठाना, पठवाना ।

भिजाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० भिगोना] भिगोना । (क्रि० स०) [हि० भिजवाना] भेजाना, भेजने में लगाना, पठाना, पठवाना, पठावना ।

भिजोना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० भिगोना] भिगोना, भिजोवना (ग्रा०) ।

भिज्ञ—(वि०, सं०) जानकार, ज्ञाता । [**भिज्ञता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

भिटनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्तन का अग्र भाग, फूल के नीचे का भाग । (वि०) छोटा, लघु ।

भिड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० बर्रें] बर्रें, ततैया, बरैंया ।

भिड़त—(संज्ञा, पु०, दे०) भिड़ने का भाव, लड़ाई, मल्ल ।

भिड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० भड़] लड़ना, टकराना, टक्कर खाना, बहस करना, झगड़ना । [**भिड़ाना** (स० रूप)], [**भिड़वाना** (प्रे० रूप)] ।

भितरिया—(वि०) अतरंग, अन्दर आने जाने वाला, घरौआ ।

भितरियाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० भीतर] भीतर करना या होना ।

भितल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भीतर+तल] दोहरे वस्त्र का भीतरी अस्तर या पल्ला । (वि०) भीतर या अन्दर का । [**भितल्ली** (स्त्री०)] ।

भिताना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० भीति] डरना, डराना ।

भित्त—(संज्ञा, पु०, सं०) टुकड़ा, खंड, टुकड़ा ।

भित्ति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भीत, भीति, [भीती (दे०)] दीवार, दीवाल, भीति, नींव डर, भय, वह वस्तु जिस पर चित्र बनाया जावे ।

भित्तिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दीवाल, छिपकली ।

भिथारना—(क्रि० स०, दे०) मथोरना, मथेलना, कुचलना । [**भिथुरना** (अं० रूप)] ।

भिद—(संज्ञा, पु०) [सं० भिद्] अंतर, भेद, भेदन ।

भिदना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भिद्] घुसना घायल होना । [**भिदाना** (स० रूप)], [**भिदवाना** (प्रे० रूप)] । "भिदत नहीं जल ज्यों उपदेश"—के० ।

भिदिर—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) वज्र, भिदर ।

भिदुर—(संज्ञा, पु०, सं०) वज्र, भिदिर ।

भिद्—(वि०, सं०) (समास के अंत में) तोड़ने या नष्ट करने वाला ।

भिद्य—(वि०, सं०) भेदनीय ।

भिनकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) भिन-भिन शब्द करना, मक्खियों का शब्द, घृणा होना ।

भिनभिन—(संज्ञा, स्त्री०) मक्खी के परों की ध्वनि ।

भिनभिनाना—(क्रि० अ०, अनु०) भिन-भिन शब्द करना, भनभनाना ।

भिनसार, भिनुसार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विनिशा] सवेरा, प्रातःकाल । "यह विधि-जलपत भा भिनसारा"—[रामा०] ।

भिनहीं—(क्रि० वि०, दे०) सवेरे, प्रातःकाल ।

भिन्न—(वि०, सं०) अन्य, पृथक्, अलग, जुदा, अपर, दूसरा, इतर । (संज्ञा, पु०) इकाई से कम

संख्या (गणि०)।—**देशीय**-(वि०) विदेशीय, अन्य देश का।—**मतावलंबी**-(संज्ञा, पु०) अन्य मत या धर्म का माननं वाला।—**वृत्ति**-(वि०) दूसरे देश का, भिन्न भाव, भिन्न रुचिवाला।

भिन्नता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अलगाव, भेद, अंतर, विलगना, पृथक्ता।

भिन्नार्थ—(वि०, सं०) भिन्न लक्ष्य वाला।

भियना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भीत] डरना। [**भियाना** (क्रि० स०)]।

भिरना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० **भिड़ना**] भिड़ना।

भिरिंग*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भृंग] भौंरा।

भिल्लनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भील] भीलिनी, भीलिन, भिल्लिनी।

भिलावाँ, भेलावाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भल्लातक] एक जंगली पेड़ जिसका फल औषधि के काम आता है।

भिलौंजा, भिलौंजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भिलावें का बीज।

भिल्ल†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भील] भील।

भिल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लोध।

भिल्लोट—(संज्ञा, पु०, सं०) लोध।

भिश्त*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फा० विहिश्त] बैकुंठ, स्वर्ग, विहिश्त, जन्नत।

भिश्ती—(संज्ञा, पु०, दे०) सक्का, मशक से पानी ढोने वाला।

भिषक्, भिषज्—(संज्ञा, पु०, दे०) वैद्य, डाक्टर, हकीम। "शुद्धाधिकारी भिषगीदृशः स्यात्"—वै० जी०।

भींगना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० अभ्यंज] तर या गीला होना, आर्द्र होना। [**भिगाना** (स० रूप)], [**भिगवाना** (प्रे० रूप)]।

भींचन—(क्रि० स०, दे०) [हि० खींचना] खींचना, मींचना, कसना।

भींजना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० भीगना] गीला, तर या आर्द्र होना, भीगना, गद्गद् या पुलकित होना, नहाना, समा जाना, मेल पैदा करना, भींजना।

भी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डर, भय। (अव्य० हि०) अवश्य, तक, लौं, अधिक।

भीउँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भीम] भीम।

भीख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भिक्षा] भिक्षा।

भीखन*—(वि०, दे०) [सं० भीषण] भयंकर, डरावना, भयानक।

भीखम*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भीष्म] भीष्म पितामह। (वि०, दे०) भीषण, भयानक। "भीखम भयानक प्रचार्यो रन-भूमि आनि"—रत्ना०।

भीखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भिक्षा] यज्ञोपवीत संस्कार मे वटु को मातादि के द्वारा दी गई भिक्षा।

भीगना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० अभ्यंज] पानी आदि से तर या आर्द्र होना।—(**गी**) **बिल्ली**-अत्यन्त स्वार्थी होने के कारण नम्र, दीन होना।

भीजना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० भीगना] भीगना, तर या आर्द्र होना।

भीटा—(संज्ञा, पु०, दे०) ऊँची या टीलेदार भूमि, वह बनाई भूमि जहाँ पान होते हैं, तालाब के चारों ओर की ऊँची भूमि।

भीड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भिड़ना] मनुष्यों का जमाव या जमघट, जन-समुदाय।—**भड़क्का**-(पु०) भीड़-भाड़, जमघट, जमाव।—**भाड़**-(स्त्री०) मनुष्यों का जमघट या जमाव, जन-समुदाय।—**शासन**-(पु०) वह शासन जिसमे भम्भड़ या धींगाधींगी हो, भीड़ का शासन। [मॉब रूल]—**शाही**-(स्त्री०) हुल्लड़बाजी, भीड़ का राज्य। [माबोक्रेसी]। **मुहा०**—**छँटना**-भीड़ के लोगों का इधर-उधर चला जाना, भीड़ न रह जाना।—**लगना**-जन-समूह इकट्ठा होना। आपत्ति, विपत्ति, संकट, भीर।

भीड़न*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भीड़ना] मलने भरने या लगाने का काम।

भीड़ना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० भिड़ाना] मिलाना, मलना, लगाना।

भीड़ा—(वि०) [हि० भिड़ना] तंग, संकुचित।

भीत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भित्ति] दीवाल, गच, छत, चटाई। **मुहा०**—**में दौड़ना**-अपनी शक्ति या सामर्थ्य से बाहर या असंभव कार्य करना।—**के बिना चित्र बनाना**-निराधर या बे सिर-पैर की बात करना, विभाग करने वाला

परदा । (वि०, सं०) डरा हुआ । [**भीता** (स्त्री०)] ।

भीतर—(क्रि० वि०, दे०) [सं० अभ्यंतर] अंदर । (संज्ञा, पु०) हृदय, दिल, अंतःकरण, रनिवास, स्त्री भवन । [**भीतर-बाहर** (यौ०)] । **मुहा०—बाहर करना** (**देखना**)-सब काम करना, चौकसी रखना ।—**ही भीतर**-मन ही मन, अंदर ही अंदर ।

भीतरी—(वि०) [हिं० भीतर+ई प्रत्य०] गुप्त, अंदर का, भीतर वाला, मन का ।—**टाँग**-(पु०) कुश्ती का एक दाँव ।

भीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भय, डर । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भित्ति] दीवाल । लो०—"जैसी देखै गाँव की रीति, वैसी उठावै अपनी भीति" । "भीतै ना रही तौ कहा छातैं रहि जायँगी"—[ऊ० श०] ।—**कर**-(वि०) भयंकर ।

भीती*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भित्ति] दीवाल, [**भित्ती** (दे०)] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भीति] डर, भय ।

भीन*†—(संज्ञा, पु०) [हिं० विहान] सबेरा । (वि०, ब्र०) भीगा हुआ । जैसे—रसभीन ।

भीनना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० भीगना] समा जाना, भर जाना, घुस जाना, प्रविष्ट होना, भीगना । "यह बात कही जल सों गल भीनों"—[रामा०] ।

भीनी—(वि०, दे०) तर, गीला, सनी हुई, मंद, मधुर । जैसे—भीनी भीनी सुगंधि ।

भीम—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, शिव की आठ मूर्तियों में से एक मूर्ति, भयानक रस (काव्य०), भीमसेन (पाँडवों में से एक, जो वायु के द्वारा कुंती से उत्पन्न हुए थे और बड़े वीर तथा बलवान थे] । —**काय**-(वि०) बड़े शरीर वाला ।—**पलासी**-(स्त्री०) एक रागनी विशेष ।—**सेन**-(पु०) युधिष्ठिर के छोटे और अर्जुन के बड़े भाई भीम ।—**सेनी, एकादशी**-(स्त्री०) ज्येष्ठ और माघ के शुक्ल पक्ष की एकादशी ।—**सेनी, कपूर**-(पु०) एक प्रकार का उत्तम कपूर, बरास (प्रान्ती०) । **मुहा०—के हाथी**-भीमसेन ने एक बार सात हाथी आकाश में फेंके थे जो आज भी वहाँ घूमते है । (वि०) भयानक, डरावना, बहुत बड़ा । [**भीमता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

भीमता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भारी-भरकम शरीर से युक्त होने का गुण ।

भीमराज—(संज्ञा, पु०, दे०) काले रंग का एक पक्षी ।

भीमाथली—(संज्ञा, पु०, सं०) घोड़े की एक जाति ।

भीर, भीरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भीड़] भीड़, कष्ट, दुख, विपत्ति, आफत । "रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय ।" *(वि०, दे०) [सं० भीरु] भयभीत, डरा हुआ, कायर, डरपोक ।

भीरना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भीरु] डरना ।

भीरु—(वि०, सं०) कायर, डरपोक । [भीरु (दे०)] —**चेता, हृदय**-(पु०) हिरन । (वि०) डरपोक —**सत्त्व**-(वि०) स्वभावतः डरपोक ।

भीरुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कायरता, बुजदिली, डर, भय ।

भीरुताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भीरुता (सं०) ।

भीरे*†—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० भिड़ना] नेरे, पास, समीप ।

भील—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भिल्ल] एक जंगली जाति । [**भीलनी** (स्त्री०)]

भीष*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भिक्षा] भीख ।

भीषज, भिसज*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भेषज] वैद्य ।

भीषण—(वि०, सं०) भयंकर, भयानक, डरावना, दुष्ट या उग्र, घोर । (संज्ञा, पु०, सं०) भयानक रस (काव्य०) । भीषणक । (वि०, सं०) भयानक ।

भीषणता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भयंकरता ।

भीषन*—(वि०, दे०) [सं० भीषण] भयंकर ।

भीषम*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भीष्म] भीष्म ।

भीषित—(वि०, सं०) डराया हुआ ।

भीष्म—(संज्ञा, पु०, सं०) भयानक रस (काव्य०), शिव, राक्षस, गंगा-गर्भ से उत्पन्न राजा शांतनु के पुत्र, गांगेय, देवव्रत । (वि०) भयंकर, भीषण । —**पंचक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णमासी तक के पाँच दिन जिनमें लोग व्रत रखते है ।—**पितामह**-(संज्ञा, पु०,

यौ०, सं०) राजा शांतनु के पुत्र और कौरव-पांडव के पितामह या बाबा, देवव्रत, गांगेय।

भीष्मक—(संज्ञा, पु०, सं०) रुक्मिणी के पिता विदर्भ- नरेश।

भीष्माष्टमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भीष्म के प्राणत्याग का दिन माघ शुक्ल अष्टमी।

भीसम*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भीष्म] भीष्म, [भीखम (दे०)]।

भुंइ, भुँइया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भूमि] भूमि, पृथ्वी, अवनि।

भुइफोर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० भुंइ+फोरना] गरजुआ (प्रान्ती०) एक बरसाती खुंभी।

भुँइहरा, भुँइधरा—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हिं० भुँइ+धर] भूमि खोद कर नीचे बनाया गया स्थान या घर, तर-घर, तहखाना (फा०)।

भुँजना†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० भुनना] भुनना, झुलसना।

भुअंग, भुअंगम*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भुजंग, भुजंगम] साँप, सर्प।

भुअन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भुवन] भुवन, लोक।

भुआर, भुआल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भूपाल] भूपाल, राजा, [भुआलू (दे०)]। "भरत भुआल होहिं यह साँची"—[रामा०]।

भुइँ*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भूमि] भूमि। "भुइँ नापत प्रभु बाढ़ेऊ, सोभा कही न जाय" —[रामा०]।—**आँवला**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भूम्यामलक] एक प्रकार की घास जो औषधि के काम में आती है।—**डोल**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० भूकंप] भूडोल, भूकंप।—**पाल**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० भूमिपाल] राजा भूपाल।—**हार**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भूमिहार] एक प्रकार के क्षत्रियोचित निम्न श्रेणी के ब्राह्मण।

भुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भुज्] भोजन, आहार, खाद्य, अग्नि।

भुकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) फफूंदी।

भुकाना—(क्रि० स०) बकवास करने के लिए उन्मुख करना।

भुक्खड़—(वि०, दे०) [हिं० भूख+अड़ प्रत्य०] भूखा, पेट्ठू, कंगाल, दरिद्र, बहुत खानेवाला।

भुक्त—(वि०, सं०) भक्षित, खादित, खा चुका, भोगा गया।—**भोगी**-(यौ०) पुनः भोग कर्त्ता, अति अनुभवी, भोगे हुए का भोग करने वाला।

भुक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आहार, खाद्य, भोजन, भोजन, लौकिक सुख, कब्जा।—**वर्जित**-(वि०) जिसके उपभोग की मनाही हो।

भुखमरा—(वि०, दे०, यौ०) [हिं० भूख+मरना] जो भूखों मर रहा हो, पेट्ठू, भुक्खड़, मरभुखा।

भुखाना‡—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० भूखा] भूखा होना, भूख से दुखी होना। "भोर ही भुखात हौ है"।

भुखालू—(वि०, दे०) [हिं० भूखा] भूखा।

भुगत*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भुक्ति] आहार, खाद्य, भोजन, लौकिक सुख।

भुगतना—(क्रि० स०, दे०) [सं० भुक्ति] भोगना, सहना, झेलना। (क्रि० अ०, दे०) बीतना, पूरा होना, निबटना, चुकना।

भुगतवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० भुगतना का स० रूप] पूरा करना, बिताना, संपादन करना, चुकाना, चुकता करना, बेबाक करना, लगाना, झेलना, भोग कराना, दुःख देना। [**भुगतवाना** (प्रे० रूप)]।

भुगतान—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भुगतना] फैसला, निबटारा, देन, दाम चुकाना, बेबाकी, देना।

भुगताना—(क्रि० स०) अदा करना, चुकाना, पहुँचाना।

भुगाना—(क्रि० स०) भोगवाना, भोग कराना।

भुगुति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भुक्ति] भोजन, आहार, खाद्य।

भुग्गा—(वि०, दे०) भोला, सीधा, भोंदू।

भुग्न—(वि०, सं०) कुटिल, वक्र, टेढ़ा, तिरछा।

भुच, भुच्चड़—(वि०, दे०) [हिं० भूत+चढ़ना] बेसमझ, मूर्ख, अपढ़।

भुजंग—(संज्ञा, पु०, सं०) साँप।—**पाश**-(पु०) नाग-पाश नामक एक प्राचीन अस्त्र।—**प्रयात**-(पु०) ४ यगण का एक वर्णिक छंद। "चतुर्भिर्यकारैः भुजंग प्रयातम्"—(पिं०)।—**विजृंभित**-(पु०) एक वर्णिक छंद (पिं०)।—**संगता**-(स्त्री०) एक छंद (पिं०)।

भुजंगम—(संज्ञा, पु०, सं०) साँप ।

भुजंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भुजंग] एक काला पक्षी, भुजैटा (ग्रा०) । (संज्ञा, पु०, दे०) साँप ।

भुजंगिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) साँपिनी गोपाल नाम का एक छंद (पिं०) ।

भुजंगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) साँपिनि, नागिनी, एक वर्णिक छंद (पिं०) ।

भुज—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथ, बाहु, बाँह । "भुज-बल भूमि भूप-बिनु कीन्ही"—[रामा०] । **मुहा० —में भरना (—भर भेंटना**)-मिलना, आलिंगन करना । हाथी की सूंड़, डाली, शाखा, किनारा, त्रिभुज या अन्य किसी क्षेत्र के किनारे की रेखा या आधार । [ज्यामि०], समकोण का पूरक कोण, दो की संख्या, का बोधक, संकेत शब्द ।—**दंड**-(पु०) बाहुदंड, हाथ । "दोउ भुजदंड तमकि महि मारे"—[रामा०] ।—**पाश**-(पु०) गले में हाथ डालना, गलबाही, गरबाही (ब्र०) ।—**प्रतिभुज**-(पु०) सरल क्षेत्र की संमुख भुजायें (ज्यामि०) ।—**बंद, बंध**-(पु०) बाजूबंद (भूषण) ।—**बाथ***-(पु०) अंकवार । "दृग मोचत मृगलोचनी, भर्यो उलटि भुजबाथ"—बिहारी ।—**बीहा**-(पु०) बीस हाथों वाला रावण । "साँचहुं मैं लबार भुजबीहा"—[रामा०] ।—**मूल**—(पु०) पखुआ, मोढ़ा, काँख । "कर कुचहार छुवत भुजमूलौ"—सूर० । कंखरी (ग्रा०) खवा (प्रान्ती०) ।

भुजग—(पु०) साँप । "शान्ताकारम् भुजगशयनम् पद्मनाभम् शुभांगम्"—[स्फुट०] ।—०,—**निसृत**-(स्त्री०) एक वर्णिक छंद (पिं०) ।—०,—**शिशुभृता**-(स्त्री०) एक वर्णिक वृत्ति, भुजंग-शिशुसुता (पिं०) ।

भुजवा—(संज्ञा, पु०, दे०) भड़भूँजा, भुँजवा।

भुजांतर, भुजांतराल—(संज्ञा, पु०, सं०) छाती, गोद ।

भुजा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हाथ, बाहु, बाँह । **मुहा०—(भुज) उठाना या टेकना**-प्रतिज्ञा करना । "प्रण विदेह कर कहहिं हम भुजा उठाय विशाल ।" "भुज उठाइ प्रन कीन"—[रामा०] ।

भुजाग्र—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथ ।

भुजाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भुजा + आली प्रत्य०] एक तरह की टेढ़ी बड़ी छूरी, खुखरी, छोटी बरछी, कुकरी (प्रान्ती०) ।

भुजिया†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भूजना = भूनना] उबले हुये धान का चावल, सूखी भूनी हुई तरकारी ।

भुजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) टुकड़ा । "बरु तन भुजी भुजी उड़ि जाय"—[आल्हा०] ।

भुजैना‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भूजना] भूना अन्न, भूजा, भूनने या भुनाने की मजदूरी, भुँजवा ।

भुजैल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भुजंग] भुजगा पक्षी ।

भुट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भृष्ट, प्रा० भुट्ट] बाजरा, मक्का और ज्वार की हरी बाल । घौद (प्रान्ती०) गुच्छा । [**भुट्टी** (स्त्री०, अल्पा०)] ।

भुठौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [भूड़ + ठौर] घोड़े की एक जाति ।

भुतना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भूत] छोटा भूत । [**भुतनी** (स्त्री०)] ।

भुतहा—(वि०, दे०) [हिं० भूत + हा-प्रत्य०] भूत का, भूत के समान, फूहड़, जिसमें भूत रहे ।

भुन—(संज्ञा, पु०, अनु०) भुनगे या मक्खी आदि का शब्द, अव्यक्त गुंजार ।

भुनगा—(संज्ञा, पु०, अनु०) एक छोटा उड़ने वाला कीड़ा, पतिंगा । [**भुनगी** (स्त्री०)] ।

भुनना—(क्रि० अ०) [हिं० भूनना] भूना जाना, क्रोध से जलना । [**भुनाना** (स० रूप)], [**भुन-वाना** (प्रे० रूप)] । (क्रि० अ०, दे०) [हिं० भुनाना] तपाया या भुनाया जाना, भुँजना ।

भुनभुनाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) भुन-भुन शब्द करना, बड़बड़ाना, मन में कुढ़ कर अस्पष्ट स्वर से कुछ बकना । [**भुनभुनाहट** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

भुन, भुन—(संज्ञा, स्त्री०) (कुढ़ने पर) धीमी और अस्पष्ट आवाज ।

भुनभुनाना—(क्रि० अ०) भुनभुन करना, धीमे स्वर में कुढ़ने का भाव व्यक्त करना ।

भुनवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भुनवाने की मजदूरी ।

भुनाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० भुनाना] भूनने की क्रिया या मजदूरी।

भुनाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० भूनना का प्रे० रूप] कोई वस्तु किसी से भुनवाना, भुँजाना। आग पर रखवा, गर्म बालू डलवा या गर्म घी-तेल आदि में छोड़वा कर पकवाना, (क्रि० स०) [सं० भंजन] बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में बदलना, तुड़ाना। [**भुनवाई (संज्ञा, स्त्री०)**]।

भुवि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भू] भूमि, पृथ्वी, महि, अवनि।

भुमिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भूमि] जमींदार।

भुरकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भुरण] सूखकर भुरभुरा हो जाना, भूलना। (क्रि० स०, दे०) भुरभुराना, बुरकना। [**भुरकाना** (स० रूप)]—छिड़काना। [**भुरकवाना** (प्रे० रूप)]। "चलचित पारे की भसम भुरमाइ कै"—[ऊ० श०]।

भुरकस, भुरकुस—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भुरकना] चूर्ण, चूर चूर। **मुहा०—निकलना (होना)**—चूर चूर होना, इतना मारा जाना कि हड्डी-पसली चूर चूर हो जावें। विनष्ट होना।

भुरता, भरता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भुरकना या भुरभुराना] दब दबाकर विकृत या चूर चूर हो जाना, भरता नाम का बैगन आदि का सालन, चोखा (ग्रा०)। **(किसी को)—बनाना (करना)**—बहुत मारना।

भुरभुर, भुरभुरा—(वि०, अनु०) वह वस्तु जिसके कण थोड़ी ही चोट से अलग अलग हो जावें, बलुआ। [**भुरभुरी (स्त्री०)**]।

भुरभुरान—(क्रि० स०, दे०) भुरभुरा करना, चूर्ण करना, भुरकना।

भुरवना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० भ्रमण] फुसलाना, भ्रम में डालना, बहकाना, भुलवाना, बहकवाना।

भुरवाना—(क्रि० स०, दे०) भुलवाना, बहकवाना, भ्रम में डलवाना।

भुराई*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० भोला] भोलापन। (संज्ञा, पु०) [हिं० भूरा] भूरापन।

भुरान*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० भुलाना] बहकाना, भूलना, भुलाना, भुलवाना, भुरवाना, भुरावना। " औचकि भुराये भूलि औचकि से रहिंगे "—अ० व०।

भुर्रा—(वि०) अत्यन्त काला (संज्ञा, पु०) एक प्रकार की चीनी या शक्कर।

भुलक्कड़—(वि०, दे०) [हिं० भूलना] बहुत भूलने वाला, भुलैया (ग्रा०) जिसका, स्वभाव भूलने का हो।

भुलावना—(क्रि० स०) बहकाना, भुलाना।

भुलसना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० भुलभुला] गरम राख वा वस्तु से झुलसना। [**भुलसाना, भुलसवाना**—(प्रेरणा रूप)]।

भुलाना—(क्रि० स०) [हिं० भूलना] भूल जाना, विस्मरण करना या कराना, भ्रम में डालना। (क्रि० अ०, दे०) भटकना विस्मरण होना, भूलना, भ्रम में पड़ना, राह भूलना, भरमना। [**भुलवाना**—(प्रेरणा रूप)]।

भुलावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भूलना] धोखा, छल, बहकाव।

भुवंग, भुवंगम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भुजंग, भुजंगम] सांप।

भुवः—(संज्ञा, पु०, सं०) " ॐ भूर्भुवःस्वः "—वेद। अंतरिक्ष लोक, सूर्य और भूमि के अंतर्गत।

भुव—(संज्ञा, पु०, सं०) आग, अग्नि। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि, पृथ्वी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रू] भ्रू, भौं, भौंह।—**पाल**–(पु०) भूपाल, राजा।

भुवन—(संज्ञा, पु०, सं०) संसार, जगत, जल, लोग, जन, लोक जो चौदह हैं सात तो पृथ्वी से ऊपर और सात पृथ्वी के तले है। लोक जो तीन हैं, आकाश, पाताल, पृथ्वी। " त्रिभुवन तीन काल जग माहीं "—[रामा०]। " भुवन चारि दश भर्यो उछाहू "—[रामा०]। चौदह भुवन या लोक, पृथ्वी से ऊपर के सात भुवन है—भू, भुवः, स्वः, मह, जनः, तपः, सत्य। पृथ्वी से नीचे के सात भुवन है :—अतल, वितल, सुतल, तलातल (गभस्तिमत), महातल, रसातल, पाताल, चौदह की संख्या, का सूचक संकेत शब्द, सारी सृष्टि। —**काश**–(पु०) ब्रह्मांड, संसार, भूमंडल, पृथ्वी।—**पति**–(पु०) ईश्वर, भूपति, राजा। " जियहु भुवनपति कोटि बरीसा "—[रामा०]।

भुवनेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भुवनपति, ईश्वर, अखिलेश।

भुवर्लोक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अंतरिक्ष लोक।

भुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घूआ] घूआ, रुई।

भुवार, भुवाल—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० भूपाल] राजा, भुआल, भुवालू (ग्रा०)। "भरत भुवाल होहिं यह साँची"—[रामा०]।

भुवि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० भू] भूमि, पृथ्वी, पृथ्वी में। "भुविपदं विपदंतकरं सताम्"—माघ०।

भुशुंडी—(संज्ञा, पु०, सं०) काकभुशुंडी। "सुनत भुशुंडी अति सुख पावा"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक प्राचीन अस्त्र।

भुस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुष] भूसा। **मुहा०—में डालना (मिलाना तरे, जाना)**—व्यर्थ नष्ट करना।

भुसी*—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० भूसा] भूसी।

भुसेरा, भुसौरा—(संज्ञा, पु०) [हि० भूसा] वह घर जहाँ भूसा भरा जाता है, तुषशाला (सं०) भूसाघर।

भूँकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु) भूँ भूँ या भौं-भौं शब्द करना (कुत्तों सा), कुत्तों का बोलना, व्यर्थ बकना।

भूँख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भूख, बुभुक्षा। [**भूँखा** (वि०)]।

भूँचाल—(संज्ञा, पु०) [सं० भूचाल] भूकंप, भूडोल।

भूँजना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० भूनना] तपाना, भूनना, सताना, दुःख देना, जलाना। (क्रि० स०, दे०) [सं० भोग] भोगना। [**भुँजाना**—(स० रूप)] [**भुँजवाना**—(प्रे० रूप)]।

भूँजा‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भूनना] भूना हुआ चबेना, भड़भूँजा।

भूँडोल—(संज्ञा, पु०, दे०, हि०) भूकंप।

भू—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि, पृथ्वी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रू] भौंह, भ्रू। **—कंप**—(पु०) भूचाल, भूडोल। **—खंड**—(पु०) पृथ्वी का टुकड़ा, पृथ्वी। **—गर्भ**—(पु०) विष्णु, पृथ्वी का भीतरी भाग, एक विद्या पृथ्वी, विद्या या विज्ञान। **—गर्भशास्त्र**—(पु०) पृथ्वी-विद्या, पृथ्वी-विज्ञान जिससे पृथ्वी के ऊपरी और भीतरी भाग की बनावट या रूपादि का ज्ञान होता है। **—गोल**—(पु०) पृथ्वी का गोला, वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के धरातल, प्राकृतिक भागों और उसकी दशाओं आदि का ज्ञान होता है, वह पुस्तक जिसमें पृथ्वी के स्वाभाविक भागों आदि का वर्णन हो। **—चर**—(पु०) भूमि पर चलने वाले जीवधारी, एक सिद्धि (तंत्र०) शिवजी। **—चरी**—(स्त्री०) योग में समाधि की एक मुद्रा (योग०)। **—चाल**—(पु०) भूकंप, भूडोल। **—तत्व**—(पु०) भूत होना, भूत का धर्म या स्वभाव। (यौ०) पृथ्वी तत्व। **—विद्या**—(स्त्री०) भूगर्भ विद्या, भूगर्भशास्त्र, प्रेत-विद्या। **—डोल**—(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) भूकंप, भूचाल। **—तल**—(पु०) पृथ्वी का ऊपरी तल, धरातल, संसार, दुनिया, पाताल। **—दान**—(संज्ञा, पु०, सं०) भूमि का दान। **—देव**—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्राह्मण। **—धर**—(पु०) पर्वत, पहाड़। "सिंधु तीर एक सुन्दर भूधर"—[रामा०]। **—धराकार**—(वि०) पर्वताकार। "नाथ भूधराकार शरीरा"—[रामा०]। **—प, पति**—(पु०) राजा। "सुनहु भरत, भूपति बड़ भागी"—[रामा०]। **—परिमाप**—(स्त्री०) जमीन की नपाई या पैमाइश। [लैंड सर्वे] **—पाल**—(पु०) राजा, एक नगर, एक ताल। **लो०**—"ताल तो भूपाल ताल और हैं तलैयाँ"। **—पाली**—(स्त्री०) एक रागिनी (संगी०)। **—प्रबंध**—(पु०) भूमि का प्रबंध, जमीन का बंदोबस्त। [लैंड सेटिलमेंट] **—० अधिकारी**—(पु०) भूमि के प्रबंध-संबंधी अधिकारी। [लैंड सेटिलमेंट आफिसर] **—भल**—(स्त्री०) गर्म रेत, गर्म धूलि या राख। ततूरी (प्रान्ती०) भूभुर (ग्रा०)। "पाँव पखारि हौं भूभुल डाहे"—कवि०। **—भुरि, भुरी**—(पु०) गर्म धूलि या रेत, भुलभुल (ग्रा०)। **—भुत, भृत**—(पु०) राजा। **—मंडल**—(पु०) पृथ्वी का गोला। **—मिज**—(वि०) पृथ्वी से उत्पन्न, मंगल। **—मिजा**—(स्त्री०) सीता जी, भूमिसुता, भूमितनया। **—रुह**—(पु०) पेड़, वृक्ष। **—लोक**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पृथ्वीलोक, संसार, दुनिया। **—शायी**—(वि०, यौ०) [सं० भूशायिन्] धराशायी, जमीन पर सोने वाला, भूमि पर गिरा हुआ, मृतक, मुरदा। **—सम्पति**—(स्त्री०) अचल सम्पत्ति। [लैंडेड प्रापर्टी] **—सुत**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुंज, भौम। मंगलग्रह, भू-तनय। **—सूता**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) भू-तनया, सीता जी, कुजा, अवनिजा। **—सुर**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्राह्मण, महिसुर। "भूसुर लिये

हँकरि, दीन्ह दच्छिणा विविधि विधि '—[रामा०]। [भूसुरत्व (संज्ञा, पु०)] ।—स्वामितंत्र-जमींदार संघ। [लैंडोक्रैसी]

भूआ—(संज्ञा, पु०, दे०) सेमर आदि की रुई। " बिनु सत जस सेमर का भूआ "—पद्मा०।

भूई, भुई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० घूआ] रुई के तुल्य नरम छोटा टुकड़ा।

भूख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बुभुक्षा] क्षुधा, खाने की इच्छा, बुभुक्षा, कामना, इच्छा, आवश्यकता (व्यापारी)।

भूखन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भूषण] गहना, भूषण, जेवर, अलंकार, [भूषन (दे०)]।

भूखना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० भूषण] सजना, अलंकृत करना।

भूखा—(वि०, पु०, दे०) [हिं० भूख] बुभुक्षित, क्षुधित, जिसे भूख लगी हो, दरिद्र, इच्छुक। [भूखी (स्त्री०)] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०)—क्षुधा, खाने की इच्छा। " सुनहु मातु मोहि अतिशय भूखा "—[रामा०]।

भूटान—(संज्ञा, पु०, दे०) भारत से उत्तर तथा नैपाल से पूर्व में हिमालय का एक प्रदेश।

भूटानी—(वि०) [हिं० भूटान+ई प्रत्य०] भूटान का, भूटान सम्बन्धी । (संज्ञा, पु०) भूटान का निवासी, भूटान का घोड़ा । (संज्ञा, स्त्री०) भूटान की भाषा।

भूटिया, बादाम—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हिं० भूटान+बादाम फ़ा०] एक पहाड़ी पेड़ जिसका फल खाया जाता है, कपासी (प्रान्ती०)।

भूत—(संज्ञा, पु०, सं०) पाँच वे मूल तत्व या पदार्थ जिनसे सब सृष्टि बनी है, पाँच तत्व, पाँच महाभूत, द्रव्य, जीवधारी, चराचर, जड़ या चेतन पदार्थ या प्राणी।—नाथ-(पु०) शिवजी।—पति-(पु०) शिवजी।—पूर्व-(सं०) वर्तमान से पूर्व का, बीते हुये समय का।—भर्त्ता-(पु०) शिवजी।—भावन-(पु०) शिवजी, विष्णु। " भगवान भूत भावनः "—[भाग०]।—भाषा-(संज्ञा, स्त्री०) प्राचीन पैशाची भाषा, प्रेतों की बोली, प्राचीन भाषा।—यज्ञ-(पु०) पंचयज्ञों में एक, भूत-वलि, बलिवैश्व।—योनि-(पु०) परमेश्वर।—राज-(पु०) शिवजी। (यौ०)—दया-जड़-चेतन या चराचर पर होने वाली कृपा। जीव, प्राणी, बीता हुआ समय, सत्य रुद्रानुचर प्रमथगण या एक प्रकार के पिशाच (पुरा०) एक देव-योनि। " भूतोऽयो देवयोनयः "—अमर०। मृतक, पिशाच, प्रेत, शव, शैतान, जिन, मृत देह, मृत प्राणी की आत्मा। मुहा०—चढ़ना या सवार होना-बहुत ही हठ या आग्रह होना, अधिक क्रोध होना। क्रिया के व्यापार की समाप्ति-सूचक क्रिया का रूप (व्या०), बीता हुआ समय।—की मिठाई या पकवान-वह वस्तु जो भ्रम से दिखाई दे, वस्तुतः कुछ भी न हो, आसानी से मिला धन जो शीघ्र नष्ट हो जावे। (वि०) विगत या बीता हुआ, गत काल, मिला हुआ, युक्त, समान, तुल्य, जो हो गया हो।

भूतांकुश—(पु०, सं०) कश्यप ऋषि, गावजुबान (औष०)।

भूतात्मा—(संज्ञा, पु०) [सं० भूतात्मन्] शरीर, जीव या जीवात्मा, परमेश्वर, शिवजी।

भूति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राज्यश्री, ऐश्वर्य्य, वैभव धन, संपत्ति, राख, भस्म, वृद्धि, उत्पत्ति, अणिमादि आठ सिद्धियाँ, अधिकता। " गति मति कीरति भूति बड़ाई "—[रामा०]।

भूतिनि, भूतिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भूत] प्रेतिनी, शाकिनी, डाकिनी, पिशाचिनी। भूत-योनि को प्राप्त स्त्री। (वि०) दुष्ट स्त्री।

भूतृण—(संज्ञा, पु०, सं०) रूसा, रूस।

भूतेश—(संज्ञा, पु०, सं०) शिवजी। " कृपा करें भूतेश।"

भूतेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) महादेव जी, " भूयास भूतेश्वर पार्श्ववर्ती "—[रघु०]।

भूतोन्माद—(संज्ञा, पु०, सं०) भूत या प्रेत के कारण होने वाला उन्माद (वैद्य०)।

भून*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रूण] गर्भ।

भूनना—(क्रि० स०, दे०) [सं० भर्जन] कोई वस्तु पकाना, गरम बालू डाल, आग पर रख या गर्म घी आदि से डाल कर कुछ वस्तु पकाना, तलना, अति कष्ट देना, भूँजना। [भुनाना—(द्वि० रूप)] [भुनवाना—(प्रेरणा० रूप)]।

भूमि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भू, पृथ्वी, मही, धरा, अवनि, जमीन, आधार, क्षेत्र स्थान। प्रान्त, देश, प्रदेश, जड़ या बुनियाद, योगों को क्रम से प्राप्त होने वाली दशाएँ (योग०)।—कर-(पु०) जमीन सम्बन्धी लगान, कर।—०निर्धारण-(पु०) भूमिकर लगाना, जमाबंदी [लैंड एसेसमेंट]।—नाग-(पु०) केंचुवा

नाम का एक बरसाती सर्पाकार पतला छोटा कीड़ा। "भूमि-नाग किमि धरइ कि धरनी"—[रामा०]। पति-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा।—पुत्र-(पु०) कुज, मंगल।—योजन-(स्त्री०) भूमि सम्बन्धी योजना। [लैंड प्लैन] —राजस्व-(पु०) मालगुजारी, भूमिकर। [लैंड रेवेन्यू]—रुह-(पु०) पेड़, वृक्ष।—वर्गीकरण-(पु०) भूमि विभाजन। [लैंड क्लासिफिकेशन]—विधान—(पु०) भूमि सम्बन्धी कानून। [लैंड ला]—सुत-(पु०) भूमि-तनय, मंगल, भौम, कुज।—सुता-(स्त्री०) भूमि-तनया, सीताजी, अवनिजा। "भूमिसुता जिनकी पतिनी किमि राम महीपति होहिं गुसाईं"—स्फुट०। —हार-(पु०) ब्राह्मणों की एक जाति। मुहा० —होना (पर आना)-पृथ्वी पर गिर पड़ना।

भूमिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भेष बदलना, रचना-मुख, दीबाचा (अ०) किसी पुस्तक के आरम्भ में ग्रन्थ सम्बन्धी आवश्यक और ज्ञातव्य बातों की सूचना, प्राक्कथन, वक्तव्य, मुखबंध, रचना। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि, क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध नामक चित्त की पाँच अवस्थायें (वेदा०)।

भूमिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भूमि+इया प्रत्य०] जमींदार, ग्राम देवता।

भूमीन्द्र, भूमीश—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा, भूमीश्वर।

भूय, भूयः—(अव्य) [सं० भूयस्] फिर, पुनः।

भूयसी—(वि०, सं०) बहुत अधिक मात्रा या संख्या में। "उठा उठा भूयसी भुजाएँ"—'हरिऔध'।

भूयोभूयः—(अव्य०, यौ०) [सं० भूयोभूयस्] बार बार, फिर फिर, पुनः पुनः।

भूरभूरि—(वि०, दे०) [सं० भूरि] अधिक, बहुत। "भूरि भाग्य-भाजन भरत"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भुरभुरा] बालू, रेत। *(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भेंट, उपहार, दान। मुहा० —बँटना।

भूरज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भूर्ज] भोजपत्र। (संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० भू+रज] धूलि, मिट्टी, गर्द।—पत्र-(पु०) [सं० भूर्जपत्र] भोजपात्र।

भूरपूर, भूरिपूरि*†—(वि०, दे०) [हिं० भरपूर] भरपूर, सब प्रकार से पूर्ण, अधिक और पूर्ण।

भूरसी, भूइसी दक्षिणा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [सं० भूयसी+दक्षिणा] वह दक्षिणा जो धर्मकृत्य या ब्याहादि उत्सवों पर बिना संकल्प ब्राह्मणों को दी जाती है।

भूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बभ्रु] खाकी रंग, मिट्टी का सा रंग, कच्ची चीनी, बूरा। (वि०) मटमैला या खाकी रंग का। [भूरापन (संज्ञा, पु०, दे०)]।

भूरि, भूरी—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, ब्रह्मा, शिव, सोना, सुवर्ण, इन्द्र। (वि०) बहुत, अधिक, बड़ा। "भूरि भागभाजन भइस, तोहिं समेत बलि जाऊँ"—[रामा०]।—तेज-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० भूरि-तेजस्] आग, अग्नि, सोना। सूर्य। —द-(पु०) बहुत देने वाला। [भूरिदा (स्त्री०)]।—श्रवा-(वि०) कीर्तिमान, बड़ा यशी। (संज्ञा, पु०) सोमदत्त का पुत्र एक राजा।

भूजपत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) भोजपत्र।

भूल—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० भूलना] भूलने का भाव, चूक, गलती, क़सूर। अशुद्धि,। अपराध, दोष, त्रुटि।—चूक-(स्त्री०) गलती, भूल।—भुलैया-(स्त्री०) न निकल सकने वाला मार्ग (जो विशाल इमारतों में प्रायः होता है)।—से-भूलकर, गलती से।

भूलक*†—(संज्ञा, पु०) [हिं० भूल+क प्रत्य०] भूलने-चूकने या गलती करने वाला, जिससे कोई भूल-चूक हुई हो।

भूलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विह्वल] सुधि या याद न रखना, बिसार देना, विस्मरण करना, चूकना, गलती, करना, खो देना। (क्रि० अ०) स्मरण न रहना, विस्मरण होना, गलती होना, चूकना, भुलाना, खो जाना, इतराना, मुग्ध होना। [भुलाना—(द्वि० रूप)], [भुलवाना—(प्रे० रूप)]।

भूलनी, भुलनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मार्ग भुला देने वाली एक घास।

भूलभुलैयाँ—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हिं० भूल+भूलाना+ऐया प्रत्य०] घुमाव या चक्करदार इमारत जिसमें जाकर लोग ऐसे भूल जाते है कि

उनका बाहर निकलना कठिन हो जाता है, चकाबू, बड़े घुमाव-फिराव की बात या घटना।

भूवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० घूआ] सेमर की रुई, कपास की रुई। (वि०) सफेद, उज्ज्वल, उजला।

भूषण—(संज्ञा, पु०, सं०) विभूषण, गहना, आभूषण, जेवर, अलंकार, वह वस्तु जिससे किसी की शोभा बढ जावे। "किय भूषण तिय भूषण तिय को"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, सं०) हिन्दी के एक प्रसिद्ध महाकवि जो शिवाजी के यहाँ थे।

भूषन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भूषण] भूषण, गहना, अलंकार। "लेहिं न भूषन बसन चुराई" —[रामा०]।

भूषना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० भूषण] सजाना, अलंकृत या विभूषित करना।

भूषा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० भूषण] जेवर, गहना, सजाने की क्रिया। [**वेशभूषा** (सं०)]।

भूषित—(वि०, सं०) विभूषित, अलंकृत, सँवारा या सजाया हुआ, आभूषित, गहना पहिने हुए। "सब भूषण भूषित वर नारी"—[रामा०]।

भूसन‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भूषण] भूषण, गहना। "भूसन सकल सुदेश सुहाये"—[रामा०]।

भूसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० तुष] गेहूँ, जव आदि के डंठलों के नन्हें-नन्हें टुकड़े। [**घास-भूसा** (यौ०)]।

भूसी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० भूसा] अन्न के दाने का ऊपरी छिलका, महीन या बारीक भूसा। [**चूनी-भूसी** (यौ०)]

भृंग—(संज्ञा, पु०, सं०) भौंरा, एक कीड़ा, बिजली।—**प्रिया**-(स्त्री०) माधवी लता।—**राज** -(संज्ञा, पु०, सं०) भँगरैया, भँगारा, वनस्पति, घमिरा (ग्रा०), एक काला पक्षी, भीमराज। "भृंगराज की देय भावना औषधि बनै सुहाई" कुं० वि० ला०।

भृंगक—(संज्ञा, पु०, सं०) भौंरा, भृंगराज नाम का एक पक्षी।

भृंगार—(संज्ञा, पु०, सं०) झारी, सोना, लौंग। "लबालब भर ले उर भृंगार"—बच्चन।

भृंगारि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) केवड़ा।

भृंगारी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) झींगुर।

भृंगावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भौंरों का समूह।

भृंगि—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव जी का एक दास।

भृंगी—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव जी का एक दास या परिषद्। "भृंगी फेरि सकल गण टेरे"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) भौंरी, बिलनी कीड़ा। "भृंगी सम सज्जन जग गाये"—स्फुट०।

भृकुटि, भृकुटी, भृगुटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भृकुटी] भौंह। "भृकुटी बिकट मनोहर नासा"—[रामा०] "बिकट भृकुटि कच घूँघर वारे"—[रामा०]।

भृगु—(संज्ञा, पु०, सं०) एक विख्यात मुनि जिन्होंने विष्णु की छाती में लात मारी थी, शुक्राचार्य, परशुराम, शिव, शुक्रवार।—**कच्छ**-(पु०) एक तीर्थ, भड़ौच नगर (वर्तमान)।—**नाथ**-(पु०) भृगुपति, परशुरामजी। "जो हम निदहिं विप्र वदि, सत्य सुनहु भृगुनाथ"—[रामा०]। —**नायक**-(पु०) परशुराम।—**पति**-(पु०) परशुराम। "भृगुपति परशु दिखावहु मोहीं" —[रामा०]।—**मुख्य**-(पु०) भृगुवर, परशुराम, भृगुश्रेष्ठ।—**रेखा,**—**लता**-(स्त्री०) भृगुमुनि के पद प्रहार का विष्णु भगवान की छाती पर चिन्ह। "हिये विराजित भृगुलता, त्यों बैजंती माल [स्फु०]।—**संहिता**-(पु०) भृगुमुनि कृत एक प्रसिद्ध ज्योतिष-ग्रंथ।

भृत—(संज्ञा, पु०, सं०) दास, सेवक। (वि०, सं०) पूरित, भरा हुआ, पालापोषा हुआ, (यौगिक में) जैसे—परभृत।

भृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चाकरी, नौकरी, मजदूरी, तनख्वाह, वेतन, दाम भरना, मूल्य, पालना, पोषना।

भृत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) नौकर। [**भृत्या** (स्त्री०)]

भृत्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दासी।

भृश—(क्रि०, वि०, सं०) अधिक, बहुत।

भेंगा—(वि०, दे०) टेढ़ी या तिरछी आँख वाला, ऐंचाताना, ढेरा (ग्रा०)।

भेंट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० भेंटना] मिलाप, मेल, मिलन, मुलाकात, दर्शन, उपहार, नज़र या नजराना। "तासों कबहु भई होइ भेंटा।" "कीन्ह प्रणाम भेंट धरि आगे"—[रामा०]।

भेंटना*†—(क्रि० स०) [हिं० भेंट] मिलना, आलिंगन करना, मुलाकात करना, गले लगाना । [**भेंटाना, भिटाना**—(स० रूप)], [**भटवाना** (प्रेरणा द्वि० रूप)] । "भेंटेउ लखन ललकि लघुभाई"—[रामा०] । "किया कृतार्थ अंक भर भेंट"—मैथिली० ।

भेंड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भेड़ी । * (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाधा । **मुहा०**—**मारना**-किसी कार्य की सिद्धि में बाधा डालना ।

भेंवना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० भिगोना] भिगोना ।

भेउ, भेव*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भेद] भेद, रहस्य ।

भेक—(संज्ञा, पु०, सं०) मेंढक । "कबहूँ न जानहीं भेक अमल कमल की बास ।"

भेख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेष] रूप, वेष ।

भेखज*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भेषज] "ग्रह, भेखज, जल, पवन, पट पाय सुयोग कुयोग"—[रामा०] ।

भेजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० व्रजन्] किसी व्यक्ति या वस्तु को कहीं से कहीं रवाना करना, पठाना, पठवाना । [**भेजाना** (द्वि० रूप)], [**भेजवाना** (प्रे० रूप)] ।

भेजा—(संज्ञा, पु०, दे०) मगज, दिमाग, मस्तिष्क, खोपड़ी के भीतर का गूदा । (सा० भू० अ० क्रि०) [हिं० भेजना] पठाया ।

भेड़, भेड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मेष] गाडर, बकरी जाति का एक छोटा चौपाया । **मुहा०**—**भेड़िया धसान**-फल को बिना सोचे-समझे दूसरे का अनुकरण या अनुसरण करना ।

भेड़हा—(संज्ञा, पु०, दे०) भेड़िया ।

भेड़ा—(संज्ञा, पु०) [हिं० भेड़] भेड़ का नर, मेढ़ा, मेष । [**भेड़ी** (स्त्री०)], [**भेंगा** (वि०, दे०)] ।

भेड़िया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भेड़] कुत्ता जैसा स्यार जाति का एक मांसाहारी बनैला जंतु, [भेड़हा जनाउर, उँड़ाउर (ग्रा०)] ।

भेद—(संज्ञा, पु०, सं०) छेदने या भेदने की क्रिया, शत्रु-पक्ष के लोगों को फोड़कर अपनी ओर मिलाना या उनमें फूट करा देना, विभेद, रहस्य, मर्म तात्पर्य्य, अंतर, प्रकार । "भेद हमार लेन सठ आवा"—[रामा०] ।—**नीति**-(स्त्री०) दलों में फूट डालकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना । [डिवाइड एंड रूल पालिसी] ।—**बुद्धि**-(स्त्री०) अंतर करने वाली निगाह । (वि०) द्वैतवादी ।—**भाव**-(पु०) फर्क, अंतर ।

भेदक—(वि०, सं०) भेदने या छेदने वाला रेचक, दस्तावर (वैद्य०) ।

भेदकातिशयोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अर्थालंकार, जिसमें और और शब्दों के द्वारा किसी वस्तु का अति उत्कर्ष दिखाया जाय (अ० पी०) ।

भेदड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रबड़ी, बसौंधी ।

भेदन—(संज्ञा, पु० सं०) बेधना, छेदना, भेदना, नीति । [**भेदनीय, भेद्य** (वि०)] ।

भेदना—(क्रि० स०, दे०) [सं० भेदन] बेधना, छेदना । "काठ कठिन भेदै भ्रमर, कमल न भेदे सोय" ।

भेदिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाश, ध्वंश ।

भेदित—(वि०, सं०) छेदा, फाड़ा, अलग किया हुआ ।

भेदिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भेद + इया प्रत्य०] गुप्तचर, जासूस, गुप्त बातें या रहस्य जानने वाला ।

भेदी—(संज्ञा, पु०) [सं० भेदिन्] भेदिया । **लो०**—घर का भेदी लंका दाह । (वि०, दे०) भेदन करने वाला । जैसे—मर्मभेदी ।

भेदीसार—(संज्ञा, पु०, सं०) बढ़ैयों का छेद करने का औजार, बरमा ।

भेदू—(संज्ञा, पु०) [सं० भेद] भेदी, भेद या मर्म जानने वाला ।

भेद्य—(वि०, सं०) जो छेदा या भेदा जावे, भेदनीय ।

भेन, भैन—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० बहिन] बहिन ।

भेना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० भेवना] भिगोना, भेवना (ग्रा०) ।

भेरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) बेड़ा, भेड़ा ।

भेरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बड़ा नगाड़ा ।—**कार**-(पु०) भेरी बजाने वाला ।

भेंरुड—(वि०, सं०) भयानक । (पु०) एक चिड़िया ।

भेंरुडक—(संज्ञा, पु०, सं०) सियार आदि की तरह के हिंसक पशु ।

भेल—(वि०, सं०) मूर्ख, डरपोक, लम्बा, ऊंचा।

भेला*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भेंट] भेंट। मुठभेड़, भिड़न्त। [संज्ञा, पु०, दे०) भिलावाँ (औष०)। (संज्ञा, पु०, दे०) पिंड या बड़ा गोला।

भेली†—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० भेला] गुड़ आदि की गोल पिंडी, या बट्टी, सिर के पीछे का उभरा भाग।

भेव*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भेद] भेद, मर्म की बात, रहस्य, पारी, बारी। "तेउ न जानैं भेव तुम्हार" —[रामा०]।

भेवना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० भिगोना] भिगोना, भेना।

भेष—(संज्ञा, पु०) [सं० वेष] वेष, भेस, रूप। [**भेष-भूषा** (यौ०)]। **मुहा०—रखना (बनाना)**-दूसरे के रूपादि की नकल करना।

भेषज—(संज्ञा, पु०, सं०) औषधि, दवा, जल, उपचार। "ग्रह भेषज जल पवन पट पाय सुयोग कुयोग"—[रामा०]।—**कृत**-(वि०) रोग से मुक्त किया हुआ।—**वीर्य**-(पु०) दवा की शक्ति जिससे रोगी नीरोग होता है।

भेषजांग—(संज्ञा, पु०, सं०) औषधि खान के बाद या साथ की वस्तु जो ऊपर से खिलायी जाती है।

भेषज्य—(वि०, सं०) आरोग्यदायक।

भेषना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० भेष] पहिनना, भेष, स्वाँग या रूप बनाना।

भेस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भेष] बाहिरी रूप रँग पहनावा आदि, वेष, रूप, बनावटी रूप, वस्त्रादि।

भेसज*—(संज्ञा, पु०) [सं० भेषज] औषधि।

भेसना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० वेश, हि० भेस] वेश धरना, वेश बनाना या रखना, वस्त्रादि पहिनना।

भैंस, भैंसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० महिष] गाय जैसा एक काला और बड़ा दूध देने वाला चौपाया (मादा), एक प्रकार की मछली। **लो०**—भैंस के आगे बीन बाजै, भैंस खड़ी पगुराय। (वि०) बहुत मोटी स्त्री।

भैंसा, भैंइसा—(संज्ञा, पु०) [सं० महिष] भैंस का नर, महिष। (वि०) बहुत मोटा और सुस्त (व्यंग्य)। [**भैंस, भैंसी** (स्त्री०)]।

भैंसासुर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० महिषासुर] एक दैत्य (पुरा०)।

भै*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भय] भय, डर। [**भैभीत** (यौ०)]। (क्रि० अ० ब्र०) हुई।

भैक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) भीख, भिक्षा, भीख माँगने की क्रिया या भाव। "भोक्तुं भैक्षमपीह लोके"—[भ० गी०]।—**चर्या,—वृत्ति**-(स्त्री० सं०) भिक्षा माँगने का काम।—**द,—दा***-(वि०) [सं० भयद, भयदा] भयप्रद, भयकारक।

भैचक, भैचक्क*†—(वि०, यौ०, दे०) [हि० भय + चक—चकित] चकित, अचंभित, चकपकाया हुआ, भौचक (ब्र०)।

भैजन, भैजनक*—(वि०, दे०) [सं० भयजनक] भयप्रद, भयकारी।

भैना, भैनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० बहिन] बहिन।

भैने—(संज्ञा, पु०, दे०) बहिन का लड़का, भाँजा, भानेज।

भैमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा नल की स्त्री, और विदर्भ के राजा भीम की सुता, दमयन्ती।

भैयंस†—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [भ्रात्रंश, हि० भाई + अंश] पैत्रिक संपत्ति मे भाई का अंश या भाग, भैयास।

भैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रातृ] भ्राता, भाई, बराबर वाले या छोटों का संबोधन।—**चार**-(पु०) जिनके साथ भाई जैसा व्यवहार हो, बंधु-बाँधव, जाति जन, भाई-बन्धु।—**चारि,—चारी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भाईचारा] भाई-चारा।—**दूज**-(स्त्री०) [सं० भ्रातृ द्वितीया] कार्तिक शुक्ल द्वितीय, भाई-दुइज, जब बहिन भाई के तिलक करती है, यमद्वितीया।

भैरव—(वि०, सं०) भयप्रद, भयानक, भयंकर, डरावना, भयावने या घोर शब्द वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) महादेवजी, शिवजी के गण जो उन्ही के अवतार माने जाते हैं, भयानक रस (काव्य), ६ रागों में से एक मुख्य राग, भयानक शब्द।—**नाथ**-(पु०) शिव, शिव के एक प्रमुख गण। "त्योंही भैरवनाथ वाक मैं वाक मिलायो"—हरि०।

भैरवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, चामुंडा। "भार्यां रक्षतु भैरवी"—[दु० स०]।—**चक्र**-(पु०) वाम मार्गियों की मंडली। "प्राप्ते भैरवी-

चक्रे सर्व वर्ण द्विजातिय:"—[स्फु०]।—यातना–(स्त्री०) मरते समय भैरव-द्वारा दिया गया कष्ट ।

भैरों—(संज्ञा, पु०, दे०) [भैरव (दे०)] शिव या शिव के एक मुख्य गण ।

भैवाद—(संज्ञा, पु०) बिरादरी, बंधुता भाई-चारा ।

भैषज—(संज्ञा, पु०, सं०) औषधि, दवा ।

भैषज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चिकित्सा, औषध, दवा । **—रत्नावली**-(स्त्री०) आयुर्वेद का एक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ ।

भैहा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भय+हा प्रत्य०] डरा हुआ, भयभीत, जिस पर भूतादि का आवेश हो ।

भोंकना—(क्रि० स०, अनु०) नुकीली चीज शरीर में घुसाना या धँसाना, घुसेड़ना । [**भोंकाना** (स० रूप)], [**भोंकवाना** (प्रे० रूप)] ।

भोंड़ा—(वि०, दे०) [हि० भद्दा या भों से अनु०] कुरूप, भद्दा, बदसूरत । [**भोंड़ी** (स्त्री०)]।—**पन**-(पु०) भद्दापन, बेहूदगी ।

भोंथरा—(वि०, दे०) गोठिल, कुंठित, बिना धार का, जो पैना न हो ।

भोंदू—(वि०) [हि० बुद्धू] मूर्ख, बेवकूफ ।

भोंपा, भोंपू—(संज्ञा, वि०, अनु०) मुँह से फूँक कर बजाने का एक बाजा ।

भों, भों—(पु०) कुत्तों के भूकने की आवाज ।

भोंसला, भोंसले—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भूशिला] महाराष्ट्रों या मरहठा राजाओं की उपाधि, महाराज शिवाजी और रघुनाथ राव इसी कुल के थे ।

भो*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० भया=हुआ] हुआ, भया, संबोधन ।

भोई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कहार, धीमर, पालकी ढोने वाला ।

भोकस*†—(वि०, दे०) [हि० भूख] भुक्खड़ । (संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार के राक्षस ।

भोकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० भो भो] जोर जोर से रोना ।

भोक्तव्य—(वि०, सं०) भोगने या खाने योग्य ।

भोक्ता—(वि०) [सं० भोक्तृ] भोजन या भोग करने वाला, भोगने वाला । [**भोक्तृत्व** (संज्ञा, पु०)] ।

भोक्तृ—(वि० अं०) खाने वाला । (संज्ञा, पु०) विष्णु, स्वामी, मालिक ।

भोग—(संज्ञा, पु०, सं०) सुख-दुःख का अनुभव करना, दुःख या कष्ट, सुख, विलास, विषय, सभोग, देह, धन, भक्षण, पालन, भोजन करना, भाग्य, प्रारब्ध, भोगा जाने वाला पाप या पुण्य का फल, अथ, फल, देवमूर्त्ति आदि के सामने रखे हुये खाद्य पदार्थ, नैवेद्य, सर्प का फन, ग्रहों का राशियों मे रहने का समय । आधिपत्य । [आकुर्षसी] ।—**शील**-(वि०) भोगी ।—**बंधक**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० भोग्य+बंधक हि०] दखली रेहन, रेहन की हुई भूमि आदि के भोगने का अधिकार देने वाला रेहन ।—**लिप्सा**-(स्त्री०) भोग की कामना या प्यास ।—**विलास**-(पु०) चैन, आमोद-प्रमोद, विषय भोग ।

भोगना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भोग] दुःख सुख या भले-बुरे कर्मों का अनुभव करना, भुगतना, सहना । [**भोगाना** (स० रूप)], [**भोगवाना** (प्रे० रूप)] ।

भोगली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) नाक मे पहिनने की लौंग, कान का गहना, तरकी, लौंग या कर्ण-फूल के अटकाने की पतली पोली कील ।

भोगवना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भोग] देखिए—भोगना ।

भोगांत—(संज्ञा, पु०, सं०) भोग की समाप्ति, कष्ट का अंत ।

भोगाना—(सं०, क्रि०) दूसरे के द्वारा भोग करना ।

भोगावास—(संज्ञा, पु०, सं०) अंतःपुर ।

भोगिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा की रखुई, नागिन ।

भोगी—(संज्ञा, पु०) [सं० भोगिन्] भोगने वाला । (वि०) विषयासक्त, सुखी, इन्द्रियों का सुख चाहने वाला, विलासी, विषयी, भुगतने वाला, आनन्द, करने वाला । (संज्ञा, पु०, सं०) सप ।

भोगेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक तीर्थ ।

भोग्य—(वि०, सं०) भोगने योग्य, कार्य्य में लाने योग्य ।

भोग्यमान—(वि०, सं०) जो भोगने को हो, जो अभी तक भोगा न गया हो ।

भोज—(संज्ञा, पु०) [सं० भोजन] जेवनार, दावत, खाने की वस्तु। (संज्ञा, पु०, सं०) भोज का या भोजपुर प्रांत, अनेक मनुष्यों का एक साथ खाना-पीना, कान्यकुब्ज के राजा, रामभद्र देव के पुत्र, परमार वंशीय विद्वान् संस्कृत कवि तथा मालवा के एक राजा। [**भोज्य** (वि०)]।—**देव**-(पु०) प्रसिद्ध कान्यकुब्ज नरेश।—**पुरी**-(स्त्री०) भोजपुर की भाषा। राजा भोज की नगरी। (पु०) भोजपुर का रहने वाला। (वि०) भोजपुर संबंधी, भोजपुर का।—**राज**-(पु०) राजा भोज। "भोजराज तव कीर्त्ति-कौमुदी"—भो० प्र०।—**विद्या**-(स्त्री०) इन्द्र जाल, भानुमती का खेल, बाजीगरी।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भोजपत्र] एक पेड़ और इसकी छाल जो प्राचीन काल में कागज का काम देती थी।

भोजन—(संज्ञा, पु०, सं०) खाना, खाने की वस्तु। "भोजन करत बुलावत राजा" —[रामा०]। —**खाना**-(पु०) भोजनालय, पाकशाला, रसोई-घर।—**शाला**-(स्त्री०) रसोई-घर।

भोजनालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रसोई-घर।

भोजयिता—(वि० सं०) भोजन खिलाने वाला।

भोजी—(संज्ञा, पु०) [सं० भोजन] खाने वाला।

भोजू*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भोजन] भोजन, भोज।

भोज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) खाने की वस्तु, खाद्य पदार्थ। (वि०) खाने के योग्य।—**काल**-(पु०) खाना खाने का समय।

भोट—(संज्ञा, पु०) [सं० भोटग] भूटान देश, एक तरह का बड़ा पत्थर।

भोटिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भोट+इया प्रत्य०] भूटान का रहनेवाला, भूटानी। (संज्ञा, स्त्री०) भूटान की बोली या भाषा, (वि०) भूटान सम्बन्धी, भूटान का, भूटानी।—**बादाम**-(पु०) आलू-बुखारा, मूँगफली।

भोडर, भोडल†—(संज्ञा, पु०, सं०) अभ्रक, अबरक, बुक्का, अभ्रक का चूर्ण।

भोना*—(क्रि० अ०) [हि० भीनना] भीगना, भीनना, संचरित, होना, लीन या लिप्त होना, आसक्त होना।

भोपा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० भों] भोंपू, एक तरह की तुरही, मूर्ख।

भोर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विभावरी] सबेरा, तड़का, प्रातःकाल। "सागर रात जो सोयकै जागत है बड़ भोर"—[नीति०]। *†(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रम] भ्रम, धोखा। (वि०) स्तंभित, चकित। *† (वि०, दे०) [हि० भोला] सीधा, सरल, भोला।

भोरा*†—(संज्ञा, पु०) [हि० भोर] सबेरा, तड़का, प्रातःकाल। *† (वि०) सीधा, भोला। [**भोरी** (स्त्री०)]। "सकल सभा की मति भई भोरी"—[रामा०]।—**नाथ**-(पु०) भोलानाथ (हि०) शिव।

भोराई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० भोला] भोलापन, सिधाई।

भोराना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० भोर+आना प्रत्य०] बहकाना, भ्रम में डालना, भुलावा देना। (क्रि० अ०, दे०) धोखे में आना।

भोरु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भोर] सबेरा, भोर।

भोला—(वि०, दे०) [हि० भूलना] सरल, सीधा-सादा, मूर्ख, बे समझ।—**नाथ**-(पु०) शिवजी, महादेव जी। "भोलानाथ अपने किये पै पछितावें हैं"—रसाल।—**पन**-(पु०) सिधाई, सादगी, सरलता, मूर्खता, बे समझी, नादानी।—**भाला**-(वि०) सरल चित्त का, सीधा-सादा।

भौं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रू] भौंह, भृकुटी।—**चढ़ाना,—तानना**-गुस्सा जाहिर करना, नाराज होना।

भौंकना—(क्रि० अ०) [अनु० भौ भौं से] भौं भौं शब्द करना, कुत्ते का बोलना, भूँकना, व्यर्थ बहुत बकवाद करना।

भौंचाल†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भूचाल] भूडोल, भूकंप।

भौंड़ा—(वि०) भोंड़ा, कुरूप, भद्दा।

भौंतुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भ्रमना=घूमना] काले रंग का एक बरसाती कीड़ा जो पानी के ऊपर ही घूमा करता है। बाहु के नीचे गिलटी निकलने का एक रोग, तेली का बैल।

भौंर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रमर] भौंरा, आवर्त, पानी के धार का चक्कर, मुश्की घोड़ा, नाँद। "चहुँदिशि अति भौंरें उठें केवट है मतवार" —गिर०। "भौंर न छोड़त केतकी, तीखे कंटक जान"—वृ०।

भौंरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रमर] एक काला मोटा दृढांग पतिंगा, भ्रमर, अलि, भवर, सारंग, बड़ी मधु मक्खी, डंगर (प्रान्ती०) डोरी से नाचने का एक खिलौना, काली या लाल भिड़, भूले में रस्सी बाँधने की लकड़ी। "भौंरा ये दिन कठिन हैं, दुख सुख सहौ शरीर"—[नीति०]। [**भौंरी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रमण] घर के नीचे का भाग, तखर, तहखाना, खत्ती, खौं, खत्ता, या अन्न रखने का कुएँ सा गहरा गढ़ा।

भौंराना, भौंरियाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० भ्रमण] घुमाना, प्रदक्षिण (परिक्रमा) कराना, व्याह की भाँवर दिलाना, ब्याहना। (क्रि० अ०, दे०] घूमना, फिरना।

भौंरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रमण] भौंरे की स्त्री, भाँवर, ब्याह में वर-कन्या की अग्नि-परिक्रमा, पानी का चक्कर, आवर्त, पशुओं के शरीर में बालों का घुमाव, जो स्थान-विचार से गुण दोष सूचक है, बाटी, रोटी, अंगा कड़ी, अंकरी।

भौंह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रू] भौं, भृकुटी, आँख के ऊपर की हड्डी पर के बाल। **मुहा०—चढ़ाना तरेरना या तानना**-कुपित या क्रुद्ध होना, रुष्ट होना, त्योरी चढ़ाना, बिगड़ना। **—जोहना**-खुशामद करना।

भौ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भव] जगत संसार। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भय] डर, भय।**—जाल**-(पु०) झमेला, झंझट, भवजाल, सांसारिक बंधन, जन्म-मरण का झगड़ा। [**भौजाली** (वि०)]।

भौगिया*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० भोग + इया प्रत्य०] संसार के सुख भोगने वाला।

भौगोलिक—(वि० सं०) भूगोल सम्बन्धी। [जियाग्रॉफिकल]

भौचक, भौचक्का—(वि०, दे०, यौ०) [हि० भय + चकित] अचंभित, चकराया या चकपकाया हुआ, हक्का-बक्का, स्तंभित।

भौज, भौजाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भ्रातृ, + जाया] भाभी, भावज, भौजी, भाई की स्त्री, भ्रातृ-वधू।

भौज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रजा के पालन का विचार छोड़ कर जो राज्य केवल सुख भोग के लिये किया जावे।

भौतक—(वि०, सं०) भूताविष्ट।

भौतिक—(वि०, सं०) पंच भूत-सम्बन्धी, पाँच महाभूतों से बना हुआ, पार्थिव, भूत योनि का, सांसारिक, शारीरिक, ऐहिक दुख। "दैहिक दैविक भौतिक तापा"—[रामा०] ।**—वाद**-(पु०) पंचभूत-तत्वों पर आधारित सिद्धान्त। जड़वाद। [मैटीरियलिज़्म]**—वादी**-(पु०) भौतिकवाद के सिद्धान्त में विश्वास रखने वाला व्यक्ति। [मैटीरियलिस्ट]**—विज्ञान**-(पु०) वह विज्ञान जिसमें तत्वों के गुण-दोष आदि का ज्ञान कराया जाता है।**—विद्या**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) भूतों के बुलाने या हटाने की विद्या, सांसारिक पदार्थों के ज्ञान का शास्त्र, भौतिक पदार्थ-विज्ञान।**—विश्व**-(पु०) संसार, अखिल ब्रह्मांड। [मैटीरियल-यूनीवर्स]**—सभ्यता**-(स्त्री०) पार्थिव सभ्यता। लौकिक स्वार्थ-सिद्धि को महत्त्व देने वाली सभ्यता। [मैटीरियल सिविलाइजेशन]**—सृष्टि**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सांसारिक उपज, जैसे—८ प्रकार की देवयोनि, पाँच प्रकार की तिर्यग योनि और मनुष्य योनि, इन सब का समूह या समष्टि।

भौन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भवन] घर, मकान। "भौन तेरे आई री"। "प्रीतम के गौन ते सुहात है न भौन"—[स्फु०]।

भौना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भ्रमण] घूमना, भवना (ग्रा०)।

भौम—(वि०, सं०) भूमि का, भूमि-सम्बन्धी, भूमि से उत्पन्न, भू-विकार। (संज्ञा, पु०) कुंज, मंगल। भौमपर्ज्यधिः—[भा० दा०]। "परै मूर्त्ति में भौम पत्नी विनासै—[स्फु०]।**—वार**-(पु०) मंगलवार।

भौमिक—(संज्ञा, पु०, सं०) जमीदार। (वि०) भूमि-सम्बन्धी, भूमि का।

भौम्य—(वि०, सं०) पृथ्वी या भूमि सम्बन्धी।

भौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भ्रमर] भौंरा, घोड़ों का एक भेद, भँवर, फूस की आग।

भौलिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बहुला] एक छायादार नाव।

भौसा, भउसा—(संज्ञा, पु०, दे०) भीड़-भाड़, जनसमूह, गड़बड़, शोरगुल, गड़बड़ी।

भ्रंश—(संज्ञा, पु०, सं०) नीचे गिरना, ध्वंस, नाश, पतन, भागना। (वि०) नष्ट-भ्रष्ट।

भ्रंसन—(संज्ञा, पु०, सं०) पतन होना, भ्रष्ट होना।

भ्रंशित—(वि०, सं०) वंचित, पतित।

भ्रकुटि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भृकुटी, भौंह। "भ्रकुटि-विलास नचावत ताही"—[रामा०]।

भ्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) उलटा-पलटा समझना, मिथ्या ज्ञान, भ्रांति, धोखा, संदेह, संशय। "तेहि भ्रम तें नहिं मारेउ सोऊ"—[रामा०]। मस्तिष्क-विकार जिससे चक्कर आते हैं (रोग), मूर्छा, भ्रमण। "पैत्तिके भ्रमरेव च"—[मा० नि०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सम्भ्रम] प्रतिष्ठा, सम्मान।—**जाल**-(पु०) मोहपाश।—**मूलक**-(वि०) जो भ्रम से उत्पन्न हुआ हो, भ्रमात्मक।—**वात**-(पु०) सदा घूमने वाला, आकाश का वायु-मंडल।

भ्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) घूमना-फिरना, फेरी, विचरण, यात्रा, आना-जाना, चक्कर। [**भ्रमणीय** (वि०)]।—**कारी**-(वि०) घूमने वाला, घुमक्कड़।—**वृतांत**-(पु०) यात्रा-वर्णन।

भ्रमना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भ्रमण] घूमना, फिरना। [**भ्रमवाना** (प्रे० रूप)], [**भ्रमाना** (स० रूप)]। (क्रि० अ०) [सं० भ्रम] धोखा खाना, भूलना, भूल जाना, [भरमना (दे०)] भूल करना।

भ्रमर—(संज्ञा, पु०, सं०) भौंरा, भँवर। "गुंजत भ्रमर-पुंज मधु-माते"—[रामा०]।—**गुफा**-(पु०) हृदय के भीतर का एक स्थान (योग०)। उद्धव का एक नाम।—**गीत**-(पु०) वह गीत-काव्य जिसमें गोपियों ने उद्धव को उलहना दिया है। दोहा का एक भेद, छप्पय का ६३ वाँ भेद (पिं०) दो पद रोला और एक दोहे से मिला छंद जिसके साथ अंत में १० मात्राओं की एक टेक सी रहती है।—**विलासिता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक छंद (पिं०)।

भ्रमरावली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) भौंरों का समूह या पंक्ति, मनहरण छंद, नलिनी (पिं०)।

भ्रमारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चारों तरफ भ्रमण करना।

भ्रमरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मादा भौंरा। पार्वती। "जो मैं भ्रमरी होती, एकाकी बैठ यहाँ पर, क्यों आहें भरती रोती"—गिरीश।

भ्रमात्मक—(वि०, यौ०, सं०) संदेह का मूल कारण, संदिग्ध, संदेह-जनक, जिससे या जिसके सम्बन्ध में भ्रम होता हो, भ्रमजनक।

भ्रमित—(वि०, सं०) घूमता हुआ, चक्कर खाता हुआ।

भ्रमी—(वि०) [सं० भ्रमिण] जिसे भ्रम हुआ हो, भौंचक, चकित।

भ्रष्ट—(वि०, सं०) पतित, ख़राब, कुमार्गी, बहुत ही बिगड़ा हुआ, दूषित, बुरा।

भ्रष्टा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छिनाल, कुलटा।

भ्रष्टाचार—(वि०, यौ०, सं०) बुरा व्यवहार। (संज्ञा, पु०) राज कर्मचारियों का पक्षपातपूर्ण व्यवहार, सरकार या जनता के धन का अनुचित प्रयोग। घूस आदि लेना।

भ्रांत—(संज्ञा, पु०, सं०) तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ। (वि०, सं०) विकल, भ्रांति या भ्रम वाला, व्याकुल, बेकल, घुमाया हुआ, उत्पन्न, भूला हुआ।

भ्रांतापह्नुति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमें भ्रांति के मिटाने के हेतु सत्य वस्तु का वर्णन हो (अ० पी०)।

भ्रांति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धोखा, भ्रम, संदेह, भ्रमण, उन्माद, पागलपन। चक्कर, भवरी, घुमेर, मोह, भूल-चूक। प्रमाद, एक अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं के साम्य के कारण एक को भ्रम से दूसरी वस्तु के समझने का कथन हो (अ० पी०), भ्रांतिमान्। "बीज भ्रांतियों के बोकर"—गिरीश।—**नाश**-(वि०) भ्रम का अंत।

भ्रांतिमान—(वि०, सं०) भ्रम से युक्त। घूमता हुआ, चक्कर खाता हुआ।

भ्राजक—(संज्ञा, पु०, सं०) त्वचा में निवास करनेवाला पित्त। (वि०) चमकाने वाला।

भ्राजना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भ्राजन] शोभा पाना, सुशोभित होना।

भ्राजमान*—(वि०, सं०) शोभायमान, सुशोभित।

भ्राता, (तृ)—(संज्ञा, पु०) [सं० भ्रातृ]—**ज**-(पु०) भाई का आत्मज (पुत्र)—**जा**-(स्त्री०) भाई की लड़की।—**जाया**-(स्त्री०) भावज।—**द्वितीया**-(स्त्री०) यमद्वितीया, कार्तिक शुक्ल द्वितीया, भाई-दूज। [भैयादूज, भय्यादुइज (दे०)]—**पुत्र**-(पु०) भतीजा, भ्रातृज।—**भाव**-(पु०) भाई-चारा, भ्रातृ-स्नेह, भ्रातृत्व, भाईपन।

भ्रातृत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) भाईपन।

भ्रामक—(वि०, सं०) भ्रम में डालने वाला, चकराने, बहकाने या घुमाने वाला ।

भ्रामर—(संज्ञा, पु०, सं०) शहद, मधु, दोहा का द्वितीय प्रकार । [**भ्रमर-सम्बन्धी** (वि०)]

भ्रू—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भौं, भौंह ।

भ्रूण—(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भ का बच्चा ।—**हत्या** –(स्त्री०) गर्भ के बच्चे को मार डालना ।—**भंग**-(पु०) भौंहें टेढ़ी करना, त्योरी चढ़ाना, क्रोध करना । [**भ्रूभंगिमा** (संज्ञा, स्त्री०)] "किसका था भ्रूभंग प्रलय सा"—प्रसाद ।

भ्वहरना*‡—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० भय + हरना प्रत्य०] भयभीत होना, डरना ।

म

म—संस्कृत और हिन्दी की वर्ण-माला के पवर्ग का पाँचवाँ वर्ण या अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और नासिका है । "अमङणनानाम् नासिकाच "—पा० । (संज्ञा, पु०, सं०) मधुसूदन, चन्द्रमा, यम, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, कृष्ण ।

मंकलक—(संज्ञा, पु०) एक ऋषि, एक यक्ष ।

मंकिल—(संज्ञा, पु०) दावानल ।

मंग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० माँग] स्त्रियों के सिर की माँग, याचना ।

मँगता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० माँगना + ता प्रत्य०] याचक, भिखारी, भिखमंगा, भिक्षुक । " सब जाति कुजाति भये मँगता "—[रामा०] ।

मंगन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० माँगना] भिखारी, भिक्षुक, मंगा । " मंगन लहहिं न जिनके नाहीं "—[रामा०] ।

मगनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० माँगना + ई प्रत्य०] वह वस्तु जो किसी से इस वादे पर माँग ली जावे कि कुछ दिन पीछे उसे लौटा दी जावेगी, इस प्रकार माँगने का भाव, ब्याह पक्का होने की एक रीति ।

मंगल—(संज्ञा, पु०, सं०) इच्छा या मनोरथ का पूर्ण होना, अभीष्ट-सिद्धि, कुशल, कल्याण, भलाई, सूर्य से १४,१५,००,००० माल दूर और पृथ्वी से पहिले पड़ने वाला सौर जगत का एक ग्रह, भौम, कुज, मंगलवार, शुभ कार्य, विवाहादि । " जग-मंगल भल काज बिचारा "—[रामा०] ।—**कलश** (**घट**)–(पु०) ब्याह आदि के समय देव-पूजा के निमित्त स्थापित किया गया जलपूर्ण घड़ा । " मंगल कलश विचित्र सँवारे "—[रामा०] —**कामना**–(स्त्री०) कल्याण की इच्छा ।—**गान** –(पु०) किसी शुभ अवसर पर होने वाला गाना-बजाना ।—**गीत**–(पु०) किसी शुभअवसर पर पढ़ा गया गीत ।—**वार**–(पु०) सोम के बाद और बुधवार से पूर्व का दिन, भौमवार ।—**सूत्र**–(पु०) देवप्रसाद के रूप में बाँधा गया तागा, रक्षा-बंधन । —**स्नान**–(पु०) कल्याण की इच्छा से होने वाला स्नान, [मंगल असनान (दे०)] । "राम कीन मंगल असनाना "—[रामा०] ।

मंगलमय—(वि०, सं०) कल्याणमय ।

मंगला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती जी । "आयुध सघन सिव-मंगला समेत सर्व, पर्वत उठाय गति कीन्ही है कमल को "—[रामा०] ।—**मुखी**–(स्त्री०) वेश्या ।

मंगलाचरण—(संज्ञा, पु०, सं०) वे श्लोक या वेद-मंत्र जो मंगलकामना से प्रत्येक शुभ कार्य के आरंभ में पढ़े जाते है, मंगल-पाठ । काव्य के प्रारम्भ में देव-स्तुति आदि के छंद, इसके तीन रूप हैं—(१) आशीर्वादात्मक, (२) देव नमस्कार या स्तवनात्मक, (३) वस्तु निर्देशात्मक, " आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशोवापि तन्मुखम् "

मंगलाचार—(संज्ञा, पु०, सं०) शुभ अवसर के अवसर का मंगलगान ।

मंगलारंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश ।

मंगलाष्टक—(संज्ञा, पु०, सं०) विवाह आदि के अवसर पर पढ़ा जाने वाला मंत्र ।

मंगली—(वि०) [सं० मंगल + ई प्रत्य०] वह पुरुष या स्त्री जिसके जन्म-पत्र में केन्द्र, चौथे, आठवें और बारहवें स्थान में मंगल ग्रह पड़ा हो, यह अशुभ योग है (ज्यो०) ।

मंगलोत्सव—(संज्ञा, पु०, सं०) मंगलसूचक उत्सव ।

मँगवाना—(क्रि० स०) [हिं० माँगना] माँगना का प्रेरणार्थक रूप

मँगाना—(क्रि० स०) [हिं० माँगना] मँगनी करना, माँगने का प्रे० रूप ।

मंगेतर—(संज्ञा, स्त्री०) वह लड़की जिसकी मँगनी किसी व्यक्ति के साथ हो चुकी हो ।

मंगेतरा—(वि०, दे०) [हिं० मगनी + एतर प्रत्य०] वह व्यक्ति जिसकी मँगनी किसी कन्या के साथ हो चुकी हो ।

मंगोल—(संज्ञा, पु०) (मंगोलिया देश से) तातार, चीन, जापानादि एशिया के पूर्वीय देशों की एक जाति, मंगोलिया के निवासी।

मंच, मंचक—(संज्ञा, पु०, सं०) खाट, खटिया, मचिया, पीढ़ा, ऊँचा मंडप, कुरसी। "सब मंचन तें मंच इक, सुन्दर विशद विशाल"—[रामा०]। [**रंगमंच** (यौ०)]—नाटकादि के खेलने का ऊँचा स्थान।

मंचोपरि—(मंच संज्ञा, उपरि अव्य सं०) रंग भूमि में। "वह मंचोपरि कांत तर्जना"—मैथिली०।

मंजन—(संज्ञा, पु०) [सं० मज्जन] दाँत उजले करने या माँजने का चूर्ण, स्नान, मज्जन। "मंजन करि सर सखिन समेता"—[रामा०]।

मंजना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० माँजना] माँजा जाना, अभ्यास या मश्क होना, साफ होना, निखरना। [**मँजाना, मंजवाना** (प्रे० रूप)]।

मंजरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) फूलों की बाल, बेल, लता, कोंपल, नया कल्ला, आम की बौर।

मंजरित—(वि०) कोंपलों, कल्लों से लदा हुआ। "मंजरित नवलमृदु देह-डाल"—महादेवी।

मंजरीक—(संज्ञा, पु०, सं०) अशोक वृक्ष। तुलसी। मोती। बेंत।

मंजार, मंजार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मार्जार] बिल्ली, "सिंहान चूहा हनि सकै, मारै ताहि मंजार" —[नीति०]।

मंजिष्ठ, मंजिष्ठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मजीठ, मँजीठ। लो०—"मदारोध्र बिल्वाब्द मंजीष्ठ, वाला"।

मंज़िल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सराँय, पड़ाव, घर का खंड, यात्रा में ठहरने या उतरने का स्थान। "वहीं मंजिल है जहाँ ठहरे हयाते गुजराँ" —जौक।

मंजीर—(संज्ञा, पु०, सं०) [मँजीरा (दे०)] घुँघुरू, पायजेब, नूपुर, एक बाजा। "बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ मंजीरा सहनाई"—[स्फुट०]।

मंजु—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोहर, साफ [**मंजुता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "मंजु विलोचन मोचति बारी" —[रामा०]।—**घोष**-(पु०) एक बौद्ध आचार्य्य, मंजुश्री, सुन्दर शब्द।—**श्री**-(पु०) मंजुघोष। (स्त्री०) मनोहर कांति।

मंजुल—(वि०, सं०) सुन्दर, मनहरण, मनोहर। "मंजुल मंगल-मूल वाम अंग फरकन लगे"—[रामा०]। [**मंजुलता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मंजूर—(वि०, अ०) स्वीकृत, स्वीकार। [**मंजूरी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मंज़ूरी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० मंजूर+ई प्रत्य०] स्वीकृति, मानने का भाव।—[एक्सेप्टेन्स]

मंजूषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पिटारी, संदूक, पिंजड़ा, डिब्बा।

मंझा*†—(वि०, दे०) [सं० मध्य] बीचोंबीच का। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंच] खाट, पलंग। (संज्ञा, पु०, हिं०) [माँझा] पेड़ी, बीच का भाग, पतंग की डोरी का कलप।

मँझार, मँझारा†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० मध्य] बीच में।

मंझियार†—(वि०, दे०) [सं० मध्य] बीच का।

मंड—(संज्ञा, पु०, सं०) भात का पानी, माँड़।

मंडन—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) सँवारना, सजाना, शोभा देना, शोभित होना, प्रमाणों द्वारा अपने पक्ष की पुष्टि करना।—**मिश्र**-(पु०) एक प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान्, मंडन मिश्र, जिन्हें शास्त्रार्थ में श्रीशंकराचार्य ने पराजित कर बौद्ध धर्म को हटाया था। [**मंडनीय, मंडित** (वि०)], [**खंडन** (विलो०)]। "खंडन मंडन की बातें सब करते सिखी सिखाई"—मिश्र बंधु।

मंडना*—(क्रि० स०) [सं० मंडन] सजाना, भूषित करना, युक्ति से अपने पक्ष को पुष्ट करना, भरना। "जिन रघुकुल मंडेउ हर धनु खंडेउ सीय स्वयंवर माँझ बरी"—[रामा०]। (क्रि० स०, दे०) [सं० मर्दन] दलित या नष्ट करना।

मंडप—(संज्ञा, पु०, सं०) टिकने का स्थान, विश्राम-स्थान, बारहदरी, यज्ञस्थल, देव-मंदिर, शामियाना, चँदोवा, उत्सवादि के लिये बाँस आदि से बनाया गया स्थान। "जेहि मंडप दुलहिन वैदेही"—[रामा०]।

मंडर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंडल] गोला।

मँडरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मंडल] चारों ओर घूमना, मँडराना, चारों ओर से घेर लेना, मंडल बाँधकर छा जाना, किसी वस्तु के चारों ओर चक्कर लगाकर उड़ना, आसपास घूमना, परिक्रमा करना।

मँडराना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मंडल] किसी पदार्थ के चारों ओर घूमते हुये उड़ना, परिक्रमा करना, किसी वस्तु या व्यक्ति के आसपास ही घूम-फिर कर रहना।

मंडल—(संज्ञा, पु०, सं०) परिधि, वृत्त, गोला, क्षितिज, सूर्य-चंद्रमा के चारों ओर गोल बादल का घेरा, परिवेष। "रविमंडल देखत लघु लागा"—[रामा०]। समूह, ऋग्वेद का खंड, बारह राज्यों का समूह, समाज, ग्रहों के घूमने की कक्षा।

मंडलाकार—(वि०, यौ०, सं०) गोल।

मँडलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० मंडराना] मँडराना, चारों ओर घूमते हुये उड़ना, मँडराना। "नहूसत चपोरास मँडला रही है"—हाली०।

मंडली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सभा, समाज, समूह। (संज्ञा, पु०) [सं० मंडलिन्] वट का पेड़, बरगद, बिल्ली, सूर्य। "खल मंडली बसहु दिन-राती"—[रामा०]।

मंडलीक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मांडलीक] बारह राजाओं के मंडल का अधिपति।

मंडलेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मांडलीक, मंडलीक, मंडलेश।

मँड़वा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंडप] मंडप।

मँडार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंडल] डलिया, झाबा, टोकरा।

मंडित—(वि०, सं०) सजाया हुआ, शोभित, भरा या छाया हुआ, आभूषित, युक्ति से प्रतिपादित। "श्री कमला-कुच कुँकुम-मंडित पंडित देव अदेव निहार्यो"—[राम०]।

मंडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मंडप] बड़ी बाजार।

मँडुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का तुच्छ अनाज।

मंडूक—(संज्ञा, पु०, सं०) मेढक, एक ऋषि, दोहा छंद का ५ वाँ प्रकार। [**कूपमंडूक** (यौ०)]—संकीर्ण बुद्धि वाला। "रटैं कहूँ मंडूक कहूँ झिल्ली झनकारै"—हरि०।

मंडूर—(संज्ञा, पु०, सं०) सिघान (प्रान्ती०) लोहे का कीट, गलाये हुये लोहे का मैल।—**रस** (**कोटी**)-(यौ०) लौह-कीट से बना एक रस। "नासत है मंडूररस, जैसे तन को सोथ"—वि० वै०।

मंत*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंत्र] सलाह। [**तंतमंत** (यौ०)]—प्रयत्न, उद्योग, मंत्र।

मंतव्य—(वि०) मानने योग्य, माननीय। (पु०) मत।

मंत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) रहस्यात्मक, गोपनीय या छिपी बात, सलाह, राय, परामर्श, वेद की ऋचा, वेदों के गायत्री आदि देवाधिसाधन-वाक्य जिनसे यज्ञादि का विधान हो, वेद-मंत्रों का संग्रह-भाग, संहिता, वे शब्द या वाक्य जिनके जप से देवता प्रसन्न हो अभीष्ट फल देते हैं (तन्त्र०), [मंतर, मंतुर (दे०)]। "ताको जोग नाहि जोग मंतर तिहारे मैं"—[ऊ० श०]।—**कार**-(पु०) मंत्र रचने वाला ऋषि।—**प्रयोग**-(पु०) मंत्र द्वारा काम लेना।—**बल**-(पु०) मंत्र की शक्ति।—**मुग्ध**-(वि०) काबू में किया हुआ, मंत्र द्वारा वश में किया हुआ।—**विद्या**-(स्त्री०) तन्त्र-विद्या, मंत्र-शास्त्र, भोज-विद्या, तन्त्र।—**संस्कार**-(पु०) मंत्र का संस्कार।—**संहिता**-(स्त्री०) वेदों का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह है।

मंत्रणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राय, सलाह, परामर्श, मशविरा, मंतव्य, कई व्यक्तियों के द्वारा निर्णीत मत या विचार।

मंत्रित—(वि०, सं०) अभिमंत्रित, मंत्र द्वारा संस्कृत।

मंत्रिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मंत्रित्व, मंत्री का कार्य या पद।

मंत्रित्व—(संज्ञा, पु०, सं०) मंत्रिता, मंत्रीपन, मंत्री का पद या कार्य।

मंत्री—(संज्ञा, पु०) [सं० मन्त्रिन्] सलाह या परामर्श देने वाला, राज्य-कर्मों में राय देने वाला, सचिव, अमात्य। "जामवंत मंत्री अति बूढ़ा"—[रामा०]।

मंथ—(संज्ञा, पु०, सं०) बिलोना, मथना, हिलाना, ध्वस्त करना, मलना, मारना, बिलोड़ना, मथानी।

मंथन—(संज्ञा, पु०, सं०) मथना, बिलोना, अति खोजना, तत्वान्वेषण, पता लगाना, मथानी। [**मंथनीय, मंथित** (वि०)]।

मंथर—(संज्ञा, पु०, सं०) मथानी, मंथ ज्वर। (वि०) मट्ठर, सुस्त, मंद, जड़, मूर्ख, भारी, नीच।—**गति**-(स्त्री०) धीमी गति।—**ग्रह**-शनि।—**विवेक**-(वि०) अच्छे बुरे का निर्णय जिसमें समय लगे।

मंथरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कैकेयी की दासी जिसके बहकाने से कैकेयी ने राम का वनवास कराया था। "नाम मंथरा मंद मति, चेरि कैकेयी केरि"—[रामा०]।

मंथान—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०) मथना।

मंद—(वि०, सं०) सुस्त, धीमा, शिथिल, आलसी, मूर्ख, दुष्ट, कुबुद्धि। "मंद महीपन कर अभिमानू"—[रामा०]। [**मंदता** (संज्ञा, स्त्री०) ।—**भाग्य**–(वि०) अभाग्य, दुर्भाग्य।—**मति**–(वि०) मोटी बुद्धि वाला।

मंदर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र मथा था (पुरा०), स्वर्ग, मंदार, दर्पण, एक वर्णिक छंद (पिं०)। (वि०) धीमा, मंद, सुस्त। " बाल मराल कि मंदर लेहीं "—[रामा०]।

मंदरगिरि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मंदराचल।

मँदरा—(वि०, दे०) [सं० मंदर] नाटा, बावन, ठिनगिना।

मंदरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंडल) एक बाजा।

मंदराचल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मंदर पर्वत।

मंदा—(वि०, दे०) [सं० मंद) सुस्त, धीमा, आलसी, कम दाम का, सस्ता, निकृष्ट, बुरा, माँदा, थका, शिथिल। [**मंदी** (स्त्री०)]।

मंदाकिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वर्गगंगा, आकाशगंगा, चित्रकूट के पास की पयस्विनी नदी, १२ वर्णों का एक वृत्त (पिं०)। "मंदाकिनी नदी अस नामा"—[रामा०]।

मंदाक्रांता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १७ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) १० और ८ वर्णों पर यति के साथ एक नगण (।।।), दो भगण (S।।), दो तगण (SS।) और दो गुरु से १८ वर्णों का छंद।

मंदाग्नि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) भोजन न पचने का रोग, अपच, बदहजमी।

मंदार—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ग का एक देववृक्ष [मदार (दे०)], आक, मंदराचल। "वैकुंठ, हाथी"। **लो०**—"स्फुरत्सुंदरोदार मंदार दाम"।

मंदारमाला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २२ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

मंदिर, मंदिल—(संज्ञा, पु०, सं०) मकान, घर, देवालय। "मंदिर मंदिर प्रतिकर सोधा"—[रामा०]।

मंदी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० मंद] किसी वस्तु का भाव गिर जाना या उतरना, सस्ती [**महँगी** (विलो०)]।

मंदोदरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मय दानव की कन्या और रावन की पटरानी, मँदोदरि, मदोवै, मँदोवरि (ग्रा०)।

मंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वरों के तीन भेदों में से एक गहरी ध्वनि (संगी०)। (वि०) सुन्दर, मनोरम, प्रसन्न, धीमा, गंभीर (शब्दादि)। मंद्र स्तनित भर चेतन—**पंत**।

मंसब—(संज्ञा, पु०, अ०) स्थान, पद, पदवी, काम, अधिकार, कर्त्तव्य।—**दार**–(पु०) मुगलों के राज्य में एक पद। [**मंसबदारी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मंशा—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० मि० सं० मनस्] अभिरुचि, इच्छा, चाह, आशय, मतलब, अभिप्राय, प्रयोजन, मंसूबा।

मंसा, मनसा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मंशा] अभिरुचि, इच्छा, मतलब, आशय। "मनमतंग गैयर हनै, मंसा भई सचान"—**कबी०**।

मंसूख—(वि०, अ०) रद, काटा या खारिज किया हुआ। [**मंसूखी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मंसूबा—(संज्ञा, पु०, अ०) [**मनसूबा** (दे०)] उपाय, ढंग, इरादा, विचार, आयोजन।

मंसूर—(संज्ञा, पु०, अ०) एक सूफी साधु।

म—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, समय, यम, विष।—**गण**–(पु०) छंदशास्त्र (पिंगल) का एक गण जिसमें तीनों वर्ण गुरु (SSS) होते हैं।

मई‡—(सर्व०, दे०) [हिं० मैं] मैं।

मइमंत—(वि०, दे०) [सं० मदमत्त] मदोन्मत्त, मतवाला, घमंडी, अहंकारी, अभिमानी।

मई—(प्रत्य०, दे०) मयी (सं०) वाली। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० मे] अप्रैल के बाद और जून के पूर्व का महीना।

मउसी—(संज्ञा, स्त्री०) मा की बहन, मौसी।

मकई, मकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मक्का नामक अन्न।

मकड़ा, मकरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मर्कटक] बड़ी मकड़ी, नर मकड़ी। [**मकड़ी** (स्त्री०)]।

मकड़ाना—(क्रि० अ०) मकड़ी के ढंग पर चलना, अकड़ कर या सीना तान कर चलना।

मकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मर्कटक] [मकरी (दे०)] आठ आँखों और आठ पैरों वाला एक कीड़ा, मकड़ी, छोटा मकड़ा।

मकतब—(संज्ञा, पु०, अ०) पाठशाला, बच्चों के पढ़ने का स्थान, मदरसा। "तिफ़ले मकतब है अरसतू मेरे आगे"—ज़ौक़।

मक़दूर—(संज्ञा, पु०, अ०) शक्ति, सामर्थ्य, वश, समाई, काबू, गुंजाइश। "मक़दूर हमें कब तेरे वसफ़ों की रकम का"—ज़ौक़।

मक़बरा—(संज्ञा, पु०, अ०) क़ब्रस्तान, मज़ार, रौज़ा, वह घर या स्थान जहाँ लाश गड़ी हो। "मक़बरों में जा के हम यह देखते हैं रोज़ रोज़"—सोज़।

मकरंद—(संज्ञा, पु०, सं०) फूलों का रस, पराग, फूल का केसर, आम, माधवी, मञ्जरी, एक वर्णिक वृत्त (पिं०)।

मकर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक जलजंतु, मगर, मेषादि १२ राशियों में से दसवीं राशि, एक लग्न (ज्यो०), एक सेना व्यूह, मछली, माघ का महीना, छप्पय का ३६ वाँ भेद (पिं०) [मक्र (दे०)] मकर संक्रांति। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) मक्र, छल, फ़रेब, धोखा, कपट, नख़रा। "एक बार तहँ मकर नहाये"—[रामा०] ।—**ध्वज**–(पु०) मदन, कामदेव। रससिंदूर। चन्द्रोदय रस। हनुमान जी के स्वेद-बिन्दु-पान से एक मछली से उत्पन्न पुत्र।—**संक्रांति**–(स्त्री०) वह समय जब सूर्य मकर राशि में प्रविष्ट होता है।—**सप्तमी**–(स्त्री०) माघ शुक्ला सप्तमी।—**केतन**–(पु०) कामदेव। "मकरकेतन के वल केतु से"—[स्फु०]।

मकरतार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मकलैश] बादले का तार।

मकरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वरक] मड़ुवा नामी एक तुच्छ अन्न। (संज्ञा, पु०) [हि० मकड़ा] एक कीड़ा, बड़ी मकड़ी।

मकरांक—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव।

मकराकृत—(वि०, यौ०, सं०) मकर या मछली के आकार का। "मकराकृत गोपाल के कुण्डल सोहत कान"—बिहारी।

मकरालय—(संज्ञा, पु०) "पार किया मकरालय मैंने"—मैथिली०।

मकरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मगर की मादा, [मकड़ी (दे०)]।

मकान—(संज्ञा, पु०, अ०) घर, गृह, वास स्थान। [**मकानियत** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**दार**–(वि०) मकान वाला।

मकुंद, मकुंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुकुंद] [मुकुंदा (दे०)] मुकंद, मुकुंद, कृष्ण। "अरि करौ जनि बाल मकुन्द"—वृजवि०।

मकु—(अव्य०, दे०) बल्कि, चाहे, क्या जाने, शायद, कदाचित। "गगन मगन मकु मेघहिं मिलई"—[रामा०]।

मकुना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मनाक=हाथी] बिना दाँतों का हाथी, बिना मूँछ का मनुष्य।

मकुनी, मकूनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बेसन की कचौरी, बेसनी रोटी, बेसनौटी।

मकोई, मकोय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मकोय] जंगली मकोय, मकोइया (ग्रा०)।

मकोड़ा—(संज्ञा, पु०) [हि० कीड़ा का अनु०] छोटा कीड़ा। [**कीड़ा-मकोड़ा** (यौ०)]।

मकोय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० काक माता] लाल और काले दो तरह के छोटे मीठे फलों का एक छोटा पौधा, उसका फल, झाड़ीदार जंगली पेड़ और उसका फल, रसभरी।

मकोरना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० मरोड़ना] मरोड़ना, खुरीचना।

मक्कड़—(संज्ञा, पु०) नर मकड़ी।—**जाला**–(पु०) मकड़ी का जाला।

मक्का—(संज्ञा, पु०, अ०) अरब देश का एक प्रसिद्ध नगर (मुसलमानों का तीर्थ)। (संज्ञा, पु०, दे०) मकाई अन्न, ज्वार।

मक्कार—(वि०, अ०) धूर्त, कपटी, छली, फ़रेबी, चालाक, बहानेबाज, ढोंगी। [**मक्कारी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मक्खन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंथज] नेनू, [माखन (दे०)] नवनीत, दूध या दही के मथने

से प्राप्त सार भाग जिसे गरम करने से घी बनता है। "मातु मैं मक्खन मिसरी लैहौं"—सूर०। **मुहा०—कलेजे पर मक्खन मला जाना**–शत्रु की क्षति से प्रसन्नता होना।

मक्खी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मक्षिका] मक्षिका, माछी, एक छोटा कीड़ा जो सवत्र उड़ता मिलता है, माखी, माछी (ग्रा०)।—**चूस**–(संज्ञा, पु०, यौ०, ि०) बड़ा भारी कंजूस, अत्यंत कृपण। **लो०**—"दाता रहे ते मर गये रह गये मक्खीचूस"।—**मार**–(वि०) घृणित, घिनौना। **मुहा०—जीती मक्खी निगलना**–समझ बूझकर ऐसा अनुचित या बुरा कार्य करना जिससे पीछे हानि हो। (**दूध की)—की तरह निकाल या फेंक देना**–किसी को किसी काम से एकदम या बिलकुल जुदा कर देना। **दूध की—होना**–व्यर्थ तथा दूर करने योग्य होना। "भामिनी भयउ दूध की माखी"—[रामा०]।—**मारना या उड़ाना**–बेकार बैठा रहना, निकम्मा रहना। "हाथ जब मक्खी उड़ा पाते नहीं"—हरि०। मधु-मक्षिका, मुमाखी (प्रान्ती०), [मधुमाखी (दे०)]।

मक्षिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मक्खी। **लो०**—(सं०) **मक्षिका स्थाने मक्षिका**–ज्यों का त्यों नकल करना।

मख—(संज्ञा, वि०, सं०) यज्ञ। "कौशिक मुनि-मख के रखवारे"—[रामा०]।—**शाला**–(स्त्री०) यज्ञशाला, यज्ञभवन। "देखन चले धनुष-मखशाला"—[रामा०]।

मखतूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महर्घतूल] काला रेशम।

मखतूली—(वि०, दे०) [हि० मखतूल+ई प्रत्य०] काले रेशम का या उससे बना हुआ।

मखन*—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं० मंथज] मक्खन, माखन।

मखनिया†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मक्खन +इया प्रत्य०] मक्खन बनाने या बेचने वाला (वि०) मक्खन निकाला हुआ दूध।

मख़मल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) एक बढ़िया नरम रेशमी वस्त्र। [**मख़मली** (वि०)]।

मखाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मक्खन] कमल के भुने बीज, ताल मखाना (औष०)।

मखी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मक्षिका] मक्षिका, मक्खी। [माखी (दे०)]। (वि० सं०) यज्ञ-सम्बन्धी।

मखौना†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक तरह का वस्त्र।

मखौल, मखौला—(संज्ञा, पु०, दे०) हँसी-ठट्ठा, दिल्लगी, मजाक। **मुहा०—उड़ाना**–हँसी या उपहास करना।

मग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मार्ग] राह, रास्ता, पथ। "मोहिं मग चलत न होइहि हारी"—[रामा०] (संज्ञा, पु०, सं०) एक शाकद्वीपी ब्राह्मण, मगह या मगध देश।

मगज—(संज्ञा, पु०, दे०) (अ० मग्ज़) दिमाग, मस्तिष्क, गूदा, भेजा, गिरी, मींगी।—**पच्ची**–(स्त्री०) किसी काम में दिमाग या मस्तिष्क बहुत खपाना, सिर खपाना, मगज मारना। **मुहा०—खाना या चाटना**–बक बक कर परेशान या तंग करना।—**खाली करना या पच्ची करना या पचाना**–सिर खपाना, बहुत दिमाग लगाना।

मगज़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) वस्त्र के छोर पर लगी हुई गोट।

मगद, मगदल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुद्ग] मूँग या उरद के आटे का लड्डू।

मगदा—(वि०) [सं० मग+दा प्रत्य०] राह या रास्ता दिखाने वाला, मग-प्रदर्शक, मार्ग-दर्शक, पथ-प्रदर्शक।

मगदूर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मक़दूर] मकदूर, सामर्थ्य, समाई, वश।

मगध—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिणीय बिहार प्रान्त का पुराना नाम, कीकट, बंदीजन। "मगधदेश में जरासंध है महाबली जग जानै"—कु० वि० ला०। [**मागध** (संज्ञा, पु०, सं०)] [**मागधी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मगन—(वि०, दे०) [सं० मग्न] डूबा या समाया हुआ, लीन, प्रसन्न, निमग्न। "लगन लगाये तुम मगन बने रहौ।"

मगना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मग्न] डूबना, लीन या तन्मय होना। (वि०, दे०) मग्न (सं०)।

मगर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मकर] घड़ियाल नाम का एक जल-जंतु, मछली। (संज्ञा, पु०) [सं० मग] ब्रह्मा का अराकान प्रदेश जहाँ मग

जाति के लोग रहते हैं। (अव्य०) परन्तु, पर, लेकिन, किन्तु। [मगर-मस्त (यौ०)]।—मच्छ-(पु०) घड़ियाल या मगर, बड़ी मछली।

मगरा—(वि०, दे०) ढीठ, धृष्ट, निर्लज्ज, अभिमानी, घमंडी।

मगराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ढिठाई, धृष्टता, मचलाहट।

मगरापन—(संज्ञा, पु०, दे०) धृष्टता, ढिठाई, मचलाई, अहंकार, घमंड।

मगरी, मगुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मकरी] मगर की मादा, मछली-विशेष।

मग़रूर—(वि०, अ०) अभिमानी, अहंकारी, घमंडी, [मगरूर (दे०)]। **मुहा०—का सर नीचा**—घमंडी की बेइज्जती। "मगरूर देख देख के चल दिल में याद रख"—[स्फु०]।

मग़रूरी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० मगरूर+ई प्रत्य०] अभिमान, अहंकार, घमंड, [मगरूरी (दे०)]। "करे कोई लाख मगरूरी उसी घर सब को जाना है"—[स्फु०]।

मगरैल, मगरेला—(संज्ञा, पु०, दे०) एक बीज विशेष, छप्पर का ऊपरी सिरा।

मगसिर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मागशीर्ष] अगहन का महीना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मृगशिरा] मृगशिरा नक्षत्र।

मगह, मगहय, मगहर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मगध] मगध देश। "जाय मरे मगहर की पाटी"—कबी०।—**पति***-(पु०) मगध देश का राजा, जरासंध।

मगही—(वि०, दे०) [सं० मगह+ई प्रत्य०] मगध देश का, मगध देश सम्बन्धी, मगध देश में उत्पन्न, मघई (ग्रा०)।—**पान**-(पु०) मगध में उत्पन्न होने वाला अच्छे क़िस्म का पान।

मगहैया—(संज्ञा, पु०, दे०) मगध देश का वासी मगध देश का।

मगु, मग्ग*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मार्ग] राह, पथ, मार्ग, रास्ता, [मग (दे०)]। "मोहिं मगु चलत न होइहि हारी"—[रामा०]।

मग़ज़—(संज्ञा, पु०, अ०) दिमाग़, मस्तिष्क, भेजा, गूदा, मींगी, गिरी।

मग्न—(वि०, सं०) निमज्जित, डूबा हुआ, लिप्त, लीन, तन्मय, हर्षित, प्रसन्न, खुश, नशे में मस्त, [निमग्न, मगन (दे०)]। [मग्नता (संज्ञा, स्त्री०)]।—**भूत**-(वि०) सर्वथा ध्यानावस्थित। "वह मग्न भूत अति ही..."—हरि०।

मघन—(संज्ञा, पु०, दे०) सुगंध, महक।

मघवा—(संज्ञा, पु०) [सं० मघवन्] इन्द्र, देवराज। "इन्द्रो मरुत्वान्मघवा बिड़ौजा पाकशासनः"—[इति अमर]।—**प्रस्थ**-(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्रप्रस्थ, दिल्ली, देहली।

मघा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २७ नक्षत्रों में से ५ तारों वाला दसवाँ नक्षत्र (ज्यो०)। "तोपें छूटें अस सेना में जैसे मघा नखत घहराय"—[आल्हा०]।

मघोनी*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० मघवन्] इन्द्राणी, शची, पुलोमजा। [**मघोना** (पु०)]।

मघौना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मेघ+वर्ण] नीले रंग का वस्त्र।

मचक—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मचकना] दबाव।

मचकना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० मच मच] किसी वस्तु को दबा कर मच-मच शब्द निकालना। (क्रि० अ०) ऐसा दबाना जिसमें मच मच शब्द हो, झटका देकर हिलाना। [**मचकाना** (स० रूप)]

मचका—(संज्ञा, पु०) मचक, लचक।

मचकाना—(क्रि० स०) लचकाना, हिलाना।

मचना—(क्रि० अ०, अनु०) शोर-गुल वाले कार्य्य का आरम्भ करना, फैल या छा जाना। (क्रि० अ०, दे०) [हि० मचकना] मचकना। [**मचाना** (स० रूप)], [**मचवाना** (प्रे० रूप)]।

मचमचाना—(क्रि० अ०, अनु०) मच मच शब्द करना, हिलना-डोलना, काँपना। [**मचमचाहट** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मचलना—(क्रि० अ०, अनु०) आग्रह या हठ करना, जिद बाँधना, अड़ जाना। [**मचलाना, मचलवाना** (स०, प्रे०)], [**मचली** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मचला, मचली—(वि०) [हि० मचलना, पं० मचला] मचलने वाला, जिद्दी, हठी, बोलने के समय में जो जान कर चुप रहे। "हरि मचले लोटत है आँगन"—सूर०।

मचलाना—(क्रि० अ०) कय का मालूम होना।

मचलाहा—(वि०, दे०) [हि० मचला+हा प्रत्य०] हठीला, घमंडी, ढीठ।

मचलाना—(क्रि० अ०, अनु०) ओकाई आना, जी का मिचलना, कै या वमन मालूम होना। (क्रि० स०, दे०) मचलना, मचलने में लगाना। (क्रि० अ०) मचलना।

मचली, मिचली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मचलना] कै, वमन, ओकाई, मितली, (प्रान्ती०)।

मचवा—(संज्ञा, पु०, दे०) खाट का पाया।

मचान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंच] शिकार खेलने या खेत की रखवाली के लिये बैठने को बाँस आदि से बना ऊँचा स्थान, माचा, मैरा, मंच, उच्चासन।

मचाना—(क्रि० स०) किसी कार्य का साधक होना, निमित्त बनना।

मचामच—(अव्य०, दे०) लदालद।

मचिया†—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मंच+इया प्रत्य०] पलंगड़ी, छोटी चारपाई, छोटी कुरसी। "न्हाय धोय मचिया चढ़ि बैठीं लटें दिहिन फटकार"—[स्फु०]।

मचिलई, मचिलाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मचलना] मचलाहट, मचलापन ओकाई, मचलने का भाव। "कान्ह करें मचलाई लेत नहिं देति जो माता"—[स्फु०]।

मचैया—(वि०, दे०) [हि० मचाना+ऐया प्रत्य०] मचाने वाला।

मचोड़ना—(क्रि० स०, दे०) [हि० निचोड़ना] निचोड़ना, ऐंठना, गारना।

मच्छ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मत्स्य, प्रा० मच्छ] बड़ी मछली, दोहे का १६ वाँ भेद (पि०)। **—गंधा**-(स्त्री०) सत्यवती।

मच्छड़, मच्छर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मशक] एक छोटा बरसाती पतिंगा, जिसकी मादा काट कर डंक से खून चूसती है।

मच्छरता*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मत्सरता] द्वेष, ईर्षा, डाह, मत्सर। "पंडित मच्छरता भरे, भूप भरे अभिमान"—दीन०।

मच्छी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मत्स्य] मछली। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मक्षिका] मक्खी, माछी।

मच्छोदरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० मत्स्योदरी] राजा शांतनु की स्त्री सत्यवती, व्यास जी की माता।

मछरंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) राम चिड़िया, एक जल-पक्षी।

मछली, मछरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) (सं० मत्स्य] एक प्रसिद्ध जल-जीव, मीन, मीन जैसी वस्तु। "प्रेम तो ऐसो कीजिये, जैसे मछरी नीर" [स्फु०]।—**मार**-(पु०) मछुआ, मल्लाह।

मछुआ, मछुवा, मछुवाहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मछली+उआ प्रत्य०] मछली मारने या बेचने वाला, केवट, मल्लाह, [मछवाहा (दे०)]।

मज़दूर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मोटिया, कुली, बोझा ढोने या छोटे-मोटे काम करने वाला, कारखाने आदि में मजदूरी करने वाला, [मजूर (दे०)]। [**मज़दूरनी, मज़दूरिनी** (स्त्री०)]।
—दल-(पु०) श्रमजीवी वर्ग का संगठित दल-समूह।

मज़दूरी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मजदूरी का काम-काज या पेशा, छोटे-मोटे काम करने या बोझा आदि ढोने का इनाम या पुरस्कार, उजरत, श्रम के बदले में मिला धन, पारिश्रमिक, मजदूरी [मजूरी (दे०)]।

मजना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मज्जन] डूबना, निमज्जित होना, अनुरक्त होना। रगड़ कर साफ होना या चमकना, अभ्यस्त होना। मजना।

मजनू—(संज्ञा, पु०, अ०) पागल, बावला, सिड़ी, प्रेमी, आसक्त, अरब देश के एक सरदार का पुत्र कैस जो लैला नाम की कन्या पर आसक्त हो पागल हो गया था, एक पेड़, वेदमजनू।

मजबूत—(वि०, अ०) पुष्ट, सुदृढ़, पक्का, बलवान, सबल। [**मज़बूती** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मज़बूर—(वि०, अ०) लाचार, विवश।

मजबूरन—(अ०, अ०) लाचार होकर।

मज़बूरी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० मजबूर+ई प्रत्य०] लाचारी, बेबसी, असमर्थता।

मजमा—(संज्ञा, पु०, अ०) लोगों का जमाव, जमघट, भीड़-भाड़, जन-समूह।

मज़मून—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रबंध, निबंध, लेख, कथनीय या वर्णनीय विषय।

मजल, मँजल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मंजिल] सराँय, पड़ाव।

मजलिस—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) समाज, सभा, नाच-रंग का स्थान, महफिल, जलसा। [**मजलिसी** (वि०)]

मज़हब—(संज्ञा, पु०, अ०) धार्मिक संप्रदाय, मत, पंथ। [**मज़हबी** (वि०)]

मज़ा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) स्वाद, लज्जत, आनंद, सुख, हँसी [मजा (दे०)]। [**मजेदार** (वि०)]। **मुहा०—चखना, चखाना**-किये का दंड (पाना) देना।**—आ जाना**-दिल्लगी का सामान होना, आनंद आना।—(जे) **दार**-(वि०) स्वादिष्ट, आनन्दप्रद।

मज़ाक—(संज्ञा, पु०, अ०) परिहास, हँसी, उपहास, ठट्ठा, दिल्लगी, [मजाक (दे०)]। **मुहा०—उड़ाना**-हँसी करना मजाकिया।

मजार—(संज्ञा, पु०, अ०) समाधि, कब्र। "आ के वह हंस के यों मेरी मजार पर बोले"—दीन०।

मजार, मजारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मार्जार] बिल्ली। "मारति ताहि मजार"—नीति०।

मजाल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०,) शक्ति, बल, सामर्थ्य।

मजिल*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मंजिल] पड़ाव, सराँय। [मइजल (दे०)]

मजीठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मंजिष्ठा] एक लता, जिसकी जड़ आदि से लाल रंग निकलता है। "फीको परै न बरु घटै ज्यों मजीठ को रंग"—[स्फु०]।

मजीठी—(संज्ञा, पु०) [हि० मजीठ+ई प्रत्य०] लाल, मजीठ के रंग का।

मजीर, मजीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंजीर] बजाने के हेतु काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी, [मँजीरा (दे०)]।

मजूर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मयूर] मोर, (संज्ञा, पु०, दे०) मजदूर (फ़ा०)। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० मजदूरी] मजूरी।

मजेज*†—(वि०, दे०) [फ़ा० मिजाज] मिजाज, अहंकार, घमंड।

मज्ज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मज्जा] हड्डी के भीतर का एक शारीरिक धातु या गूदा, मज्जा।

मज्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) नहाना, स्नान। "मज्जन करि सर सखिन समेता"—[रामा०]।

मज्जना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मज्जन] स्नान करना, नहाना, गोता लगाना, डूबना।

मज्जा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अस्थियों में भरा हुआ चिकना पदार्थ।**—रस**-(पु०) वीर्य।

मझ—(क्रि० वि०, दे०) [सं० मध्य] बीच, माँझ।**—धार**-(स्त्री०) नदी की बीच धारा, किसी कार्य का मध्य या बीचोबीच।**—०—में छोड़ना**-बीच में असहाय स्थिति में छोड़ देना।

मझला, मझिला—(वि०, दे०) [सं० मध्य] बीच का। [**मझिली, मझली** (संज्ञा, स्त्री०)]

मझाना, मझावना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० मध्य] प्रविष्ट करना, बीच में धँसना, घुसना। (क्रि० अ०) पैठना, प्रविष्ट होना।

मझार*†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० मध्य] बीच में, [मँझारा (दे०)]।

मझियाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० माझी] नाव खेना, मल्लाही करना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० मध्य+इयाना प्रत्य०] बीच में से होकर निकलना, मँझाना।

मझियार, मझियारा*†—(वि०, दे०) [सं० मध्य] बीच का।

मझोला—(वि०, दे०) [सं० मध्य] मझला, बीच या मध्य का, मध्यम डीलडौल का।

मझोली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मझोला] एक तरह की बैलगाड़ी। (वि०, स्त्री०) मध्यम आकार की।

मट, माट†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मटका] मटका, घड़ा।

मटक—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० मठ—चलना+क प्रत्य०] चाल, गति, मटकने का भाव। [**चटक-मटक** (यौ०)]।

मटकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मठ=चलना] अंग हिलाते या मटकाते चलना, नखरे के साथ अंग चलाना या चलाते चलना, हिलना, फिरना, विचलित होना, हटना। [**मटकाना**—(स० रूप)], [**मटकवाना**—(प्रे० रूप)]। "मटकत आवै मंजु मोर को मकुट माथे"—रत्ना०।

मटकनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मटकना] नाचना, नृत्य, नखरा, मटक।

मटका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मिट्टी+का प्रत्य०] मिट्टी का बड़ा घड़ा, माट, मट।

मटकाना—(क्रि० स०) शरीर के किसी विशेष भाग की ओर से मटकने चटकने का कार्य करना, नखरे के साथ शरीर हिलाना।

मटकी, मटुकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मटकना] छोटा मटका । "दूधौ खायो दहियो खायो मटकी डारी फोर "—सूर० । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मटकना] मटकने या मटकाने का भाव, मटक ।

मटकीला—(वि०) [हि० मटकना+ईला प्रत्य०] मटकने या नखरे से अंग चलाने वाला ।

मटकौअल, मटकौवल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मटकना] मटक, मटकने का भाव ।

मटमगरा—(संज्ञा, पु०) विवाह के पूर्व की एक रस्म ।

मटमैला—(वि०, यौ०, दे०) [हि० मिट्टी+मैला] मिट्टी के रंग का, धूलि या ख़ाकी । [**मटमैली** (स्त्री०)] ।

मटर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मधुर] एक मोटा अन्न, इसकी लम्बी-लम्बी छीमियों या फलियों के भीतर गोल दाने होते है ।—**गश्त**-(पु०) सैरसपाटा, टहलना, घूमना ।—**गश्ती**-(स्त्री०) देखिए 'मटर गश्त' ।

मटरा—(संज्ञा, पु०) [हि० मटर] बड़ा मटर, एक रेशमी कपड़ा ।

मटरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मटरा] छोटा मटरा ।

मटिआना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० मिट्टी+आना प्रत्य०] मिट्टी लगा कर माँजना, मिट्टी से ढँकना ।

मटियाफ़ूस—(वि०) अत्यन्त दुर्बल ।

मटियारा—(संज्ञा, पु०, दे०) वह खेत जिसमें मिट्टी अधिक हो, [मटियार (दे०)] ।

मटियाव—(संज्ञा, पु०, दे०) उपेक्षा, उदासीनता, आनाकानी करना ।

मटियामसान—(वि०, यौ०, दे०, हि०) गया बीता, नष्टप्राय, बहुत बिगड़ा हुआ ।

मटियामेट—(वि०, यौ०, दे०, हि०) नष्टप्राय, सत्यानाश, बरबाद, ख़राब, भ्रष्ट ।

मटियाला, मटियारा—(वि०, दे०) [हि० मटमैला] मटमैला । (संज्ञा, पु०, दे०) मिट्टी-भरा खेत ।

मटियासाँप—(संज्ञा, पु०) मटमैले रंग का एक सर्प ।

मटीला—(वि०, दे०) [हि० मिट्टी] मिट्टी से सना, मटमैला ।

मटुका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मटका] मटका, माट ।

मटुकिया, मटुकी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मटकी] मटकी ।

मट्टी, मिट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मृत्तिका] मृत्तिका, मिट्टी, मृतशरीर । **मुहा०—करना**-नाश करना, बिगाड़ना, ख़राब या बरबाद करना ।—**खाना**-धूल फाँकना, मांस खाना, पीड़ा देना ।—**डालना**-तोपना, छिपाना, मूँदना, झगड़ा मिटाना, दोष छिपाना ।—**देना**-मुर्दा गाड़ना या दफनाना ।—**पर लड़ना**-भूमि के लिये झगड़ना, व्यर्थ की छोटी सी बात पर लड़ना ।—**में मिलना** (**मिलाना**)-नष्ट होना (करना), ख़राब या बरबाद होना (करना) ।—**ख़राब करना (होना)**—बेकार या सत्यानाश होना ।

मट्ठर†—(वि०, दे०) आलसी, सुस्त ।

मट्ठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मथन] मक्खन-रहित, मथा हुआ दही, मठा, माठा (ग्रा०) मही, छाँछ, तक्र ।

मट्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक पकवान, [मठरी, माठ (दे०)] ।

मठ—(संज्ञा, पु०, सं०) साधुओं के रहने का स्थान, घर, मकान, मन्दिर, वासस्थान ।—**धारी**-(पु०) मठाधीश, महन्त ।

मठरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मट्ठी, एक नमकीन पकवान जो मैदे का बनता है ।

मठा—(संज्ञा, पु०) [सं० मंथित] मट्ठा, माठा ।

मठाधीश—(संज्ञा, पु०) मठधारी, मठराज, महन्त ।

मठिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मठ+इया प्रत्य०] छोटा मठ या कुटी । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) फूल धातु की बनी चूड़ियाँ ।

मठी, मढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मठ+ई० प्रत्य०] छोटा मठ, मठ का स्वामी या महंत, मठ-धारी, मठाधीश ।

मठोठा—(संज्ञा, पु०) कुएँ की जगत ।

मठोर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मथन] दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी ।

मड़ई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मंडप] छोटा मंडप, झोपड़ा, कुटिया, पर्णशाला । (संज्ञा, पु०) [प्रान्ती०] आदमी ।

मड़क—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) भीतरी रहस्य, गुप्त-भेद।

मड़वा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंडप] मंडप।

मड़हा, मढ़ा—(संज्ञा, पु०) [प्रान्ती०] भीतरी दालान या कोठा।

मड़ाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) छोटा सा कच्चा ताल या गड़ैया, पोखरा।

मड़ियाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० माड़ी] माड़ी लगाना, चिपकाना।

मड़ियार—(संज्ञा, पु०) क्षत्रियों की जाति-विशेष।

मड़ुआ, मड़वा—(संज्ञा, पु०, दे०) बाजरे की किस्म का एक अन्न।

मड़ैया—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) [सं० मंडप] झोपड़ी, पर्णशाला, कुटिया, कुटी। "यहीं हती मोरी छोटी मड़ैया कंचन महल खड़ो"—[स्फु०]। "सरग-मड़ैया सब काहू की कोऊ आज मरै, कोउ काल"—[आल्हा०]।

मड़ोड़, मरोड़, मड़ोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [मरोड़ा (दे०)] ऐंठ, पेट का दर्द या शूल।

मड़ोड़ना, मरोड़ना—(क्रि० अ०, दे०) ऐंठना, बल देना।

मढ़—(वि०, दे०) [हिं० मट्ठर] धरना देने या अड़कर बैठने वाला, दुराग्रही।

मढ़वाना—(क्रि० स०) दूसरे के द्वारा मढ़ने का कार्य कराना।

मढ़ाई, मढ़वाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० मढ़ना] मढ़ने या मढ़ाने का भाव, कार्य्य या मजदूरी।

मढ़ाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मंडन] चारों ओर से लपेट लेना, आरोपित करना, आवेष्टित करना, ढोल आदि बाजे के मुँह पर चमड़ा चढ़ाना, किसी के गले लगाना, या पड़ना, किसी के मत्थे थोपना। † (क्रि० अ०, दे०) मचाना, आरंभ होना, मढ़ावना, मढ़ाना।

मढ़ी, मढ़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मध्य] छोटा मठ, झोपड़ा, कुटी, छोटा घर।

मढ़ैया—(संज्ञा, पु०) मढ़ने वाला।

मणि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जवाहिर, अमूल्य रत्न, श्रेष्ठ मनुष्य, [मनि (दे०)]। "मणि बिनु फनिक रहैं अति दीना"—[रामा०]।—**कर्णिका**–(स्त्री०) काशी में एक तीर्थ का नाम।—**कार**–(पु०) मणियुक्त आभूषणादि बनाने वाला, जौहरी, जड़िया, न्याय-ग्रंथ चिंतामणि का कर्त्ता।—**गुण**–(पु०) एक वर्णिक छंद, शशिकला, शरभ (पिं०)।—**गुणनिकर**–(पु०) चंद्रवर्त्ती छंद, मणिगुण छन्द का एक भेद (पिं०)।—**ग्रीव**–(पु०) कुबेर का पुत्र।—**जटित**–(वि०) मणियों से जड़ा हुआ, मणि-मंडित।—**दीप**–(पु०) मणियों से जड़ा हुआ दीपक। "मणि दीप विश्व मंदिर की"—प्रसाद।—**धर**–(पु०) साँप।—**पुर,—पूर,—पूरक**–(पु०) नाभि के समीप का एक चक्र (हठ यौ०)।—**बंध**–(पु०) कलाई, गट्टा, नव वर्णों का एक छंद (पिं०)।—**मंडप**–(पु०) रत्नमय गृह।—**मंदिर**–(पु०) रत्नमय गृह।—**मय**–(वि०) मणियों से बना, मणिजटित।—**माल,—माला**–(स्त्री०, सं०) १२ वर्णों का एक वृत्त (पिं०)। मणियों का हार या माला।—**हार**–(पु०) मणिमाला।

मणिक—(संज्ञा, पु०, सं०) मिट्टी का बना हुआ घड़ा। श्वेत पत्थर का बना हुआ प्रासाद।

मणियाना—(संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर का दास।

मणी—(संज्ञा, पु०) [सं० मणिन्] साँप, सर्प (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मणि]—मणि, रत्न।

मतंग—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी, शबरी के गुरु, एक ऋषि, बादल। [**मतंगिनी** (स्त्री०)]।—**ज**–(पु०) हाथी।

मतंगी—(संज्ञा, पु०) [सं० मतंगिन्] हाथी का सवार।

मत—(क्रि० वि०) [सं० मा] नहीं, न। (संज्ञा, पु०, सं०) सम्मति, राय, निश्चित सिद्धान्त। मत [वोट] पक्ष-विपक्ष में।—**गणना**–(स्त्री०) मतों [वोटों] की गिनती।—**गुप्त**–गुप्त रूप से दिया जाने वाला वोट-पर्चा। [सीक्रेट बैलेट]—**दाता**–(पु०) मत देने वाला [वोटर]।—**दान**–(पु०) चुनाव आदि में पर्चे द्वारा अपनी इच्छा का प्रकाशन। [बैलेटिंग]—**पत्र**–(पु०) वह पर्चा जिसके द्वारा चुनाव में किसी व्यक्ति या दल के पक्ष में स्वीकृति दी जाती है। [बैलेट पेपर]—**पेटी**–मत पत्रों का संदूक। [बैलेट बाक्स]—**भेद**–(पु०) विचारों में अन्तर। [डिफरेंस आफ ओपीनियन]। मत, विचार की भिन्नता।—**मापक**–(पु०) जनमत बताने

वाला। [बैरोमीटर आफ ओपीनियन]—**विरोधी**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० धर्म्म विरोधिन] अधर्म्मी, विधर्म्मी, धर्म्म-विरोधी। (संज्ञा, पु०, यौ०) मत-विरोध, मतभेद, मत-पार्थक्य।—**संग्रह**-(पु०) किसी खास प्रश्न पर विचार या मत को इकट्ठा करना।—**सूची**-(स्त्री०) मत देने वालों की सूची। [वोटर्स लिस्ट] मुहा०—**उपाना**-सम्मति स्थिर करना, पंथ, धर्म, संप्रदाय, राय, आशय, भाव, विचार।

मतना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मति+ना प्रत्य०] सम्मति निश्चित करना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० मत्त] मस्त होना।

मतरिया‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातृ] माता, [महतरिया (दे०)]। (वि०, दे०) [सं० मन्त्र] मन्त्री, सलाहकार, मन्त्रित।

मतलब—(संज्ञा, पु०, अ०) अभिप्राय, अर्थ, आशय, तात्पर्य, स्वार्थ, मन्तव्य, विचार, उद्देश्य संबंध, लगाव, वास्ता।

मतलबी—(वि०) [अ० मतलब] स्वार्थी।

मतली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० मतलाना] मिचली, उबकाई, ओकाना।

मतवार, मतवारा—(वि०, दे०) [हिं० मतवाला] मतवाला, नशे में चूर।

मतवाला—(वि०, पु०, दे०) [सं० मत्त+वाला प्रत्य०] मदमत्त, नशे आदि से उन्मत्त, पागल, धनादि के गर्व से चूर। [**मतवाली** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) वह बड़ा पत्थर जो शत्रुओं पर किले आदि से लुढ़काया जाता है, एक तरह का खिलौना।

मतमतांतर—(संज्ञा, पु०) अनेक मत, मतभेद।

मता†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मत] मत, सलाह, सम्मति, राय, धर्म। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मति] बुद्धि, राय, सम्मति।

माताधिकार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सम्मति या वोट देने का अधिकार।

मताना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० मत्त] मस्त होना, बेसुध होना—"मतंग लौं मताये हैं"—[कु० रा०]।

मतानुयायी—(संज्ञा, पु०, सं०) मतावलंबी।

मतारो†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातृ] महतारी, माता, माँ। मत या धर्म का शत्रु।

मतावलंबी—(संज्ञा, पु०,) [सं० मतावलबिन्] किसी धर्म, मत या संप्रदाय का सहारे वाला, मतानुयायी।

मति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समझ, बुद्धि, सलाह, सम्मति, राय। *† (क्रि० वि० दे०) मत, मती (अ०), (अव्य०, दे०) [सं० मत] सदृश, समान।—**भ्रंश**-(पु०) ऐसी अवस्था जिसमे मनुष्य अंट-संट बकने लगता है। (प्रायः बीमारी आदि के कारण) [डिलीरियम]।—**हीन**-(वि०, सं०) निर्बुद्धि, बुद्धिहीन। "मेरो मन मतिहीन गोसाईं"—वि०।

मतिमंत, मतिवंत—(वि०) [सं० मतिमत्] बुद्धि-मान।

मतिमान, मतिवान—(वि०, सं०) समझदार, बुद्धिमान।

मतिमाह*—(वि०, दे०) [सं० मतिमान्] मतिमान।

मती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मति] बुद्धि, समझ। (क्रि० वि०, दे०) मति, मत, नहीं।

मतीस—(संज्ञा, पु०, दे०) एक बाजा।

मतेई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विमातृ] विमाता, दूसरी माता। "कर्म मन बानिहु न जानी कि मतेई है"—[क० रामा०]।

मत्कुण—(संज्ञा, पु०, सं०) खटमल।

मत्त—(वि०, सं०) मतवाला, मस्त, पागल, उन्मत्त, प्रसन्न। *†(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मात्रा] मात्रा।—**कामिनी**-(स्त्री०) अच्छी स्त्री, सुभार्या।—**गयंद**-(पु०) सवैया छंद का एक भेद, मालती, इदव (पिं०)।—**मयूर**-(संज्ञा, पु०, सं०) १५ वर्णों का एक वृत्त (पिं०)।—**समक**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का चौपाई छंद (पिं०)।

मत्तता*—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पागलपन, मतवालापन।

मत्तताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मत्तता (सं०)।

मत्तमातंगलीलाकर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का दंडक छंद (पिं०)।

मत्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १२ वर्णों का वृत्त (पिं०) मदिरा। भाववाचक प्रत्यय जैसे—बुद्धिमत्ता। *† (संज्ञा, स्त्री०) [सं० मात्रा] मात्रा, जैसे—अमत्ता छंद।—**क्रीड़ा**-(स्त्री०) २३ वर्णों का एक छंद या वृत्त (पिं०)।

मत्तालंब—(संज्ञा, पु०, सं०) बरामदा।

मत्था†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मस्तक] मस्तक, [माथा (दे०)]।—**टेकना**-प्रणाम करना, आदर भाव प्रगट करना।

मत्य—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मत्स्य] मछली।

मत्स—(संज्ञा, पु०, सं०) मछली।

मत्सर—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रोध, जलन, डाह, ईर्षा।

मत्सरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डाह, जलन। "पंडित मत्सरता भरे, भूप भरे अभिमान"——दीन०।

मत्सरी—(संज्ञा, पु०) [सं० मत्सरिन्] डाही, मत्सर-पूर्ण।

मत्स्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मीन, मछली, राजा विराट का देश, छप्पय का २३ वाँ भेद, विष्णु के दशावतारों में से प्रथम।—**गंधा**-(स्त्री०) सत्यवती, व्यास-माता।—**द्वीप**-(पु०) एक द्वीप जिसकी चर्चा पुराणों में मिलती है।—**नारी**—(स्त्री०) सत्यवती।—**पुराण**-(पु०) १८ पुराणों में से एक।—**वित्ता**-(स्त्री०) कुटनी, औषधि-विशेष।

मत्स्यांड—(संज्ञा पु०, सं०) मछली का अंडा।

मत्स्यावतार—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु के १० अवतारों में से प्रथम अवतार।

मत्स्यासन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक आसन-विशेष जो तांत्रिक साधना में व्यवहृत होती है।

मत्स्येंद्रनाथ—(संज्ञा, पु०, सं०) हठयोगी गोरख-नाथ के गुरु, [मछंदरनाथ (दे०)]।

मथन—(संज्ञा, पु०, सं०) बिलोना, बिलोड़ना, मंथन, एक अस्त्र। (वि०) विनाशक, मारने वाला [**मथनीय, मथित** (वि०)]।

मथना—(क्रि० स०) [सं० मथन] बिलोना, बिलोड़ना, द्रव पदार्थ को काष्ठादि से चलाना या हिलाना, नष्ट या ध्वंस करना, चलाकर मिलाना, घूम-फिर कर पता लगाना, बड़ी छानबीन करना, कोई काम अधिक बार करना। "रिपु-मद मथि प्रभु-सुयश सुनाये"—[रामा०]। (पु०) मथानी, रई।

मथनियाँ*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० मथना] दही मथने का बरतन, मटकी, मथानी।

मथनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० मथना] दही मथने की मटकी, या काठ की मथानी।

मथवाह*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० माथा + वाह प्रत्य०] महावत।

मथानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० मथना] रई, दही मथने का काठ का एक डंडा, मंथन-दंड, [मथनी (दे०)]। **मुहा०—पड़ना या बहना**-खलबली मचना।

मथित—(वि०, सं०) मंथित, मथा या बिलोड़ा हुआ।

मथुरा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मधुपुर] ७ प्रसिद्ध प्राचीन पुरियों में से एक पुरी जो ब्रज में यमुना तट पर है।

मथुराधिप, मथुराधिपति—(संज्ञा, पु०, सं०) मथुरा-नरेश, कंस, कृष्ण।

मथुरिया—(वि०) [हिं० मथुरा + इया प्रत्य०] मथुरा का, मथुरा-निवासी, मथुरा-संबंधी।

मथुरेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रीकृष्ण, कंस।

मथौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मथना] बढ़ई का एक भद्दा रंदा।

मथ्था†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० माथ, सं० मस्तक] मस्तक, माथा, मत्था।

मदंध*—(वि०, दे०, यौ०) [सं० मदांध] मदोन्मत्त, मदमत्त। [**मदंधता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मद—(संज्ञा, पु०, सं०) नशा, मतवालापन, मद्य, उन्मत्तता, कस्तूरी, वीर्य्य, मतवाले-हाथी के गंडस्थल से निकला हुआ गंधयुक्त रस या द्रवपदार्थ, गर्व, घमंड, आनंद, हर्ष, हाथी का दान। (वि०) मस्त, मतवाला। [**मदमाता, मदमस्त, मदमत्** (यौ० वि०)]। (संज्ञा, स्त्री०, अ०) विभाग, खाता, सीगा, सरिश्ता, मद्द।—**कट**-(संज्ञा, पु०, सं०) खाँड़, चीनी, शक्कर।—**कल,—गल**-(वि०, दे०, सं०) मस्त, मतवाला, मत्त। [**मदकली** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**भरा**-(वि०) मस्त।—**मत,—मस्त**—(वि०) नसे से मत्त, मतवाला। [**मदमत्तता** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**लेखा**-(स्त्री०) एक वर्णिक वृत्ति (काव्य)।

मदक—(संज्ञा, स्त्री०, पु०) [सं० मद] अफ़ीम के सत से बनी एक मादक या नशे की वस्तु, जिसे चिलम से पीते हैं। [**मदकी** (वि०)]।—**ची**-(वि०) मदक पीनेवाला, मदकबाज।

मदद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सहायता, सहारा, किसी काम पर लगे मजदूर और राज आदि।

"नबीजी भेजो मदद खुदा की"—[कबी०]—गार-(वि०, फा०) सहायक, सहायता करने वाला।

मदन—(संज्ञा, पु०, सं०) काम-क्रीड़ा, कामदेव, कंदर्प, मैनफल, भ्रमर, सारिका, मैना, प्रेम, रूपमाल छंद (पिं०), छप्पय का एक भेद (पिं०)। "मदन-ताप भरेण विदीर्यं नो"—[नैष०]। (यौ०) [मद+न] मद-हीन। —कदन-(पु०) महादेवजी, शिवजी। "अब यह सब कहि देयगो, मदन-कदन-कोदंड"—[रामा०]।—गोपाल-(पु०) श्रीकृष्णजी। "रार करहु जनि मदनगोपाला"—[व्रज० वि०]। —चतुर्दशी-(स्त्री०) चैत्र शुक्ल चतुर्दशी।—जल-(पु०) मद-नीर, कामावेश से लिंग से निकला स्राव, वीर्य, मदन-रस।—ताप-(पु०) काम-ज्वर।—दाप-(पु०) कंदर्प-दर्प।—पाठक-(पु०) कोयल।—पीड़ा-(पु०) काम व्यथा।—फल-(पु०) मैनफल (औष०)।—बंधु-(पु०) वकुल, मौलसिरी।—बाण,—बान-(पु०) कामदेव के बाण, एक प्रकार के बेले का फूल। "मदन-बाण हर प्यारी"—[भा० गीतगो०]।—मंदिर-(पु०) स्मर-मंदिर, भग, योनि।—मनोरमा-(स्त्री०) सवैया का एक भेद (केशव०)। (वि०) काम की मनोरमा या प्यारी, रति, दुर्मिल सवैया (पिं०)।—मनोहर-(पु०) श्रीकृष्णचन्द्र, मनहर, दंडक, छंद का एक भेद (पिं०)। (वि०) कामदेव से सुन्दर, मदन-मनोरम। "मदन-मनोहर-मूरति जोही"—[रामा०]।—मल्लिका-(स्त्री०) मल्लिका नाम का एक छंद (पिं०)।—मस्त-(पु०) चंपा की जाति का एक फूल। (वि०) काम-दर्प से प्रमत्त। —महोत्सव-(पु०) चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी तक होने वाला एक प्राचीन उत्सव।—मित्र-(पु०) चन्द्रमा।—मोदक-(पु०) मदनोद्दीपक पौष्टिक औषधियों के लड्डू, सवैया छंद का एक भेद (पिं०), सुन्दरी छंद (केशव)।—मोहन-(पु०) श्रीकृष्ण।—ललिता-(स्त्री०) एक वर्णिक वृत्त (पिं०)।—सद्म,—सदन-(पु०) भग, योनि।—सारिका-(स्त्री०) मैना।—हरा-(स्त्री०) ४० मात्राओं का एक छंद (पिं०)।

मदनांतक—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव।

मदना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मदिरा, कस्तूरी।

मदनारि—(संज्ञा, स्त्री०) शिव।

मदनालय—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल, जन्म-चक्र में सातवाँ घर।

मदनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मदिरा, सुरा, कस्तूरी।

मदनोत्सव—(पु०) मदन-महोत्सव।

मदर*—(पु०) [सं० मंडल] मँडराना। (संज्ञा, स्त्री०, अं०) माता।

मदरसा—(संज्ञा, पु०, अ०) पाठशाला, विद्यालय।

मदांध—(वि०, यौ०, सं०) नसे में चूर, मदोन्मत्त, गर्व से अंधा, महा अभिमानी।

मदाइन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शराब, मद की देवी।

मदानि*—(वि०, दे०) कल्याणकारी।

मदार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंदार] आक।

मदारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मदार] कलंदर, बाजीगर, तमाशिया, मदारिया, एक मुसलमान जो बंदरादि नचाते या विचित्र खेल-तमाशे दिखाते हैं।

मदालसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विश्वावसु गंधर्व की पुत्री जिसे पातालकेतु दानव पाताल ले गया था (पुरा०)।

मदिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० मादा] स्त्रीलिंग जीवधारी, मादा, [नर (विलो०)]।

मदियाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० मद] नशे में होना, सुस्त पड़ना।

मदिर—(वि०, सं०) मस्ती, नशा उत्पन्न करने वाला।—दृगी-(स्त्री०)। "किया इस मदिर दृगी ने प्यार"—बच्चन।

मदिरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मद्य, शराब, सुरा, दारू, वारुणी, २२ वर्णों का एक वर्णिक छंद, मालिनी (पिं०) उमा, दिवा।

मदिराभ—(वि०) शराब की आभा से युक्त। "खोलता लोचन-दल मदिराभ"—पंत।

मदिरालय—(संज्ञा, पु०) शराब घर। "रहे मदिरालय चिर आबाद"—पंत।

मदिरालस—(संज्ञा, पु०) शराब पीने से उत्पन्न होनेवाला आलस्य भाव। "नयनों में मदिरालस रंग"—पंत।

मदीय—(वि०, सं०) मेरा। [मदीया (स्त्री०)]।

मदीला—(वि०, दे०) [हिं० मद+ईला प्रत्य०] नशीला, मादक, नशेदार, मदोत्पादक।

मदुकल—(संज्ञा, पु०, दे०) दोहे का एक भेद।

मदोन्मत्त—(वि०, यौ०, सं०) मदांध, नशे में चूर, मद या गर्व से प्रमत्त। [**मदोन्मत्तता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मदोवै*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मंदोदरी] रावण की रानी, मन्दोदरी, [मँदोवरि, मँदोदरि (दे०)]। "ठाढ़ी ह्वै मदोवै रोय रोय कै भिगोवै गात"—कवि०।

मद्धिम*†—(वि०, दे०) [सं० मध्यम] मध्यम, औसत दर्जे का, कम न ज्यादा, मन्दा, अपेक्षाकृत कम अच्छा। **मुहा०—चद्रमा (अन्यग्रह) का मद्धिम होना**-चद्र (अन्य ग्रह) का प्रभाव अच्छा न होना (ज्यो०)।

मद्धे—(अव्य, दे०) [सं० मध्य] बीच में, में, विषय में, संबंध में, बाबत।

मद्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सुरा, मदिरा, दारू, वारुणी, शराब।—**निषेध**-(पु०) मादक वस्तुओं का प्रयोग रोकना।—**प्रतिषेधवाद**-(पु०) शराब खोरी का विरोध करने वाला वाद। [एन्टी अलकोहलिज्म]।—**प,—पी**-(वि०) मदिरा पीने वाला, शराबी।—**पान**-(पु०) शराब पीना।

मद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) रावी और झेलम नदी के बीच का देश, उत्तर-कुरु देश (प्राचीन)।

मध, मधि*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मध्य] बीचों बीच, मध्य। अव्य० में।

मधिम*—(वि०, दे०) [सं० मध्यम] मध्यम।

मधु—(संज्ञा, पु०, सं०) शहद, पानी, मदिरा, मकरंद, बसंत ऋतु, चैत महीना, विष्णु से मारा गया एक दैत्य, एक यदुवंशी, श्रीकृष्ण, अमृत, शिव जी, मुलहटी, दो लघु वर्णों का एक छंद (पिं०)। "मधु बसंत मधुचैत है मधु मदिरा मकरंद, मधुपै मधु, हरि, मधु सुधा, मधु, माधव, गोविन्द"—[भा० अने०]।—**कर**-(पु०) भ्रमर, भौंरा, एक प्रकार का चावल, मधुमाखी। "मधुकरैरिवनादकरैरिव"—माघ०।—**करी**-(स्त्री०) भौंरी, वह भिक्षा जिसमें थोड़ा-सा पका अन्न लिया जावे, मधूकरी, बाटी। "माँगि मधुकरी खाँहि"—रही०।—**कैटभ**-(पु०) मधु और कैटभ नामक दो दैत्य भाई, जिन्हे विष्णु ने मारा था (पुरा०)।—**कोष**-(पु०) फूलों में रस का स्थान, शहद का छत्ता।—**गन्ध**-(पु०) पावन मदिरा की सुरभि। "मधुगंध दिशाओं में गमकी"—बच्चन।—**घट**-(पु०) पावन मदिरा का घड़ा। "जब मधुघट के आधार बने"—बच्चन।—**घड़ी**-(स्त्री०) आनंदमयी घड़ी। "फूलों में मधु से लिखती जो मधुघड़ियों के नाम"—महादेवी।—**चक्र**-(पु०) शहद की मक्खी का छत्ता।—**जा**-(स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।—**दिन**-"किसी मधुदिन की लहर समान"—महादेवी।—**दिवस**-"किसने जाता मधुदिवस जान"—महादेवी।—**प**-(पु०) मधुलिह, भौंरा, भ्रमर, उद्धव। [**मधुपी** (स्त्री०)]।—**पति**-(पु०) श्रीकृष्ण।—**पर्क**-(पु०) दही, घी, शहद, चीनी और जल का मिला हुआ पदार्थ जो नैवेद्य में काम आता है।—**पर्श**-(पु०) पका और रसभरा फल।—**पात्र**-"मधुपात्र-मधुबाला भरी"—बच्चन।—**पुर,—पुरी**-(स्त्री०) मथुरा नगरी। "व्रजे वसन्त किमकरोन्मधुपुर्य्यांच केशवः"—भा० द०।—**प्रभात**-"मधुप्रभात में भार देगा वह"—महादेवी।—**प्रमेह**-(पु०) मधुमेह, गाढ़े और अधिक मूत्र का एक रोग (वैद्य०)।—**प्रश्य**-(पु०) मीठा।—**बन,—वन**-(पु०) व्रज का एक वन, सुग्रीव का बाग। "मधुबन तुम कस रहत हो"—सूर०। "मधुवन के फल को सक खाई"—[रामा०]।—**भार**-(संज्ञा) एक मात्रिक छंद (पिं०)।—**मक्खी**-(स्त्री०) मधुमक्षिका, माखी, फूलों का रस चूस कर शहद इकट्ठा करने वाली मक्खी।—**मक्षिका**-(स्त्री०) मधुमक्खी, मधुमाछी (ग्रा०)।—**माखी—,माछी**-(स्त्री०, दे०) मधुमक्षिका, मधुमक्खी, मदमाखी (ग्रा०)।—**मालती**-(स्त्री०) मालती लता।—**माता (ते)**-(वि०) शराब पीने से उत्पन्न होने वाली बेहोशी से युक्त। "मधुमाते हो बिहँस रहे थे।"—महादेवी—**मिश्रित**-(वि०) मधुयुक्त। "अलसाती थीं लहरें पीकर मधुमिश्रित तारों की ओर"—महादेवी—**मेह**-(पु०) अति अधिक और गाढ़े मूत्र होने का एक प्रमेह रोग (वै०)।—**यष्टि**-(स्त्री०) मुलहटी, मुलैठी, मौरेठी।—**राका**-(पु०) वसंतऋतु की पूनो की रात। "मधुराका मुसक्याती थी"—प्रसाद।—**राज**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भौंरा, भ्रमर।—**रिपु**-(पु०) विष्णु, कृष्ण।—**वन**-(पु०) गोकुल के समीप का यमुना तट पर एक वन, सुग्रीव का वन (किष्किंधा)।—**वर्षा**-

(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रस का इतना अधिक दान कि उसकी वृष्टि सी जान पड़े । " मधुवर्षा से शशि तेरी "—प्रसाद ।—**वर्षिणी**-(वि०) रस की वर्षा करने वाली । "मधुवर्षिणी मधु बरसाती चल" —बच्चन—**वामन**-(पु०) भौंरा, भ्रमर ।—**वेला** -(संज्ञा, पु०) आनंद के रसास्वादन का उपयुक्त समय । 'मधुवेला है आज'—महादेवी ।—**व्रत** -(पु०) भौंरा, मधु संग्रह करना जिसका व्रत है । भ्रमर । "मधु की प्रीति मुझे निशिवासर तुम भी मधुव्रत धारे"—गिरीश ।—**शर्करा**-(पु०) शहद की बनी हुई चीनी ।—**संगीत**-(सं०) मादक, माधुर्य युक्त संगीत । " मर्मर का मधुसंगीत छेड़" —महादेवी ।—**सख—,सखा**-(पु०) मधुमित्र, कामदेव ।—**सिंधु**-(संज्ञा, पु०) मधु का समुद्र । "पीले अतल मधु-सिंधु को"—बच्चन ।—**स्नात**- मधु में भीगे । "सजल रोमों में बिछे है पाँवड़े मधुस्नात से"—महादेवी ।—**सूदन**-(पु०) मधुरिपु, श्रीकृष्ण ।—**सेवी**-(पु०) भ्रमर ।—**हंता**- (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विष्णु, कृष्ण ।

मधुमती—(स्त्री०) एक वर्णिक वृत्त (दो नगण और एक गुरु वर्ण से बनी) (पिं०) ।

मधुर—(वि०, सं०) मीठा, सुनने में सुखद, सुन्दर मनोरंजक, हलका । " मधुर वचन तें जात मिटि, उत्तम जन अभिमान "—नीति० [**मधुरता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

मधुरई, मधुराई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मधुरता] मधुरता, मिठाई, मधुरिमा ।

मधुरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मिठाई, मधुराई, मिठास, मृदुता, सुन्दरता ।

मधुरा—(संज्ञा, पु०, सं०) मद्रास प्रदेश का एक प्राचीन नगर, मदुरा, मडूरा, मदूरा, मथुरापुरी ।

मधुरान्न—(संज्ञा, पु०, सं०) मिठाई, मिष्ठान्न ।

मधुराना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० मधुर+ आना प्रत्य०] मीठा या सुन्दर होना ।

मधुरिमा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० मधुरिमन्] मिठास, सुन्दरता ।

मधुरी*—(संज्ञा, स्त्री०) सुन्दरता, सौंदर्य । " मधुरी नौबत बजत कहूँ नारी-नर गावत "—हरि० ।

मधुरिमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) माधुर्य, मिठास ।

मधुलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राई ।

मधूक—(संज्ञा, पु०, सं०) दाख, मौहा । "मधुक चिंता न करो दलों की"—मैथिली० ।

मधूकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मधुकरी] मधुकरी, बाटी ।

मधूत्सव—(संज्ञा, पु०, सं०) वसंतोत्सव ।

मध्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बीच का हिस्सा, बीचोंबीच, कटि, अन्तर, भेद, १७ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था (सुश्रु०) । "मध्य प्रदेश केशरी सुगज गति भाई है"—[रामा०] ।—**दिवस**- (पु०) दोपहर । " मध्य दिवस जिमि ससि सोहई "—[रामा०] ।—**देश**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मध्य भारत, सी० पी०, कटि, कमर "मध्यदेश केसरी सुगज गति भाई है "—[रामा०] । हिमालय से दक्षिण, विंध्याचल से उत्तर, कुरुक्षेत्र से पूर्व और प्रयाग से पश्चिम का भारत । —**भाग**-(संज्ञा, पु०, सं०) बीच का हिस्सा ।—**लोक**-(संज्ञा, पु०, सं०) मर्त्य लोक, पृथ्वी, भूलोक ।—**वर्त्ती**-(वि०, सं०) बीच में रहनेवाला, बीच का, बिचवानी (ग्रा०) मध्यस्थ ।—**स्थ**- (संज्ञा, पु०, सं०) तटस्थ, बीच में रहकर विवाद निपटाने वाला, बीच में रहने वाला । [**मध्यस्थता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] ।—**स्थल**-(संज्ञा, पु०, सं०) कमर, बीच का स्थान ।

मध्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मध्य का भाव ।

मध्यतायिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक उपनिषद् ।

मध्यम—(वि०, सं०) बीचोबीच का, न बहुत बड़ा न छोटा, औसत दर्जे का, बीच का । (संज्ञा, पु०) संगीत के ७ स्वरों में से चौथा स्वर, नायिका के क्रोध दिखाने पर अनुराग प्रकट न करने वाला उपपति (काव्य०) ।—**पद लोपी**-(पु०) लुप्तपद समास, वह समास जिसमें दो पदों के बीच संबंध-सूचक पद का लोप हो जाता है । (व्या०) । —**पुरुष**-(पु०) वह पुरुष जिससे बातचीत की जावे (व्या०) ।

मध्यमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बीच की अँगुली, वह खंडित-नायिका जो अपने पति के प्रेम या अपराध पर उसका मान या अपमान करे (काव्य०) ।

मध्यस्थता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तटस्थता, बिचवई ।

मध्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह नायिका जिसमें लज्जा और काम सम रूप में हों । " जहाँ बराबर

बरनत लाज मनोज, मध्या तहहिं बखानत सुकवि समोज "—रही०। तीन वर्णों का एक छंद या वृत्त। (पिं०)।

मध्यान्ह, मध्याह्न—(संज्ञा, पु०) [सं० मध्याह्न] ठीक दोपहर, मध्यदिवस।

मध्याह्नोत्तर—(संज्ञा, पु०, सं०) दोपहर के बाद का समय, तीसरा पहर।

मध्ये—(क्रि० वि०, दे०) [सं० मद्धे] मद्धे, विषय या सम्बन्ध में।

मध्व—(संज्ञा, पु०) एक वैष्णव आचार्य जिन्होने एक सम्प्रदाय प्रवर्तन किया है।—**सम्प्रदाय**-(पु०) मध्व द्वारा प्रवर्त्तित एक वैष्णव सम्प्रदाय।

मध्वरि—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० मधु+अरि] विष्णु, कृष्ण।

मध्वाचार्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वैष्णव मत के एक विख्यात आचार्य और माध्य संप्रदाय के प्रवर्त्तक (१२ वीं शताब्दी)।

मनःकल्पित—(वि०, सं०) मनगढ़ंत।

मनःपूत—(वि०, सं०) मन जिसे शुद्ध या पवित्र मानता है, अन्तर की आत्मा द्वारा समर्थित।

मनःप्रसूत—(वि०, सं०) मनगढ़ंत।

मनःशिल—(संज्ञा, पु०, सं०) मैनसिल। "सिंदूर दैतेन्द्र मनःशिलानाम्"—वैद्य०।

मन—(संज्ञा, पु०) [सं० मनस्] विचार या मनन-शक्ति, जीवों की विचार, इच्छा, वेदना, संकल्पादि करने वाली शक्ति, अन्तःकरण के चार भागों में से संकल्प-विकल्प के होने का भाग, अन्तःकरण, चित्त, दिल, इरादा, विचार, इच्छा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मणि] मणि, रत्न। —**कामना**-(स्त्री०) इच्छा। "पूजै मनकामना तुम्हारी"—[रामा०]।—**कूला**-(वि०) चर, जंगम, अस्थावर। [**स्थावर, गैरमनकूला** (विलो०)], [**जायदाद मनकूला**—(यौ०)] चर संपत्ति। गैरमनकूला—स्थिर संपत्ति। [**स्थायी** (विलो०)] —**गढ़ंत**-(वि०) कपोल कल्पित, वास्तवक सत्ताहीन। (संज्ञा, स्त्री०)—निरी या कोरी कल्पना।—**चला**-(वि०) निडर, धीर, साहसी, रसिक। [**मनचली** (स्त्री०)]।—**चाहा**-(वि०) इच्छित, चाहा हुआ, चितचाहा। [**मनचाही** (स्त्री०)]—**चिता—, चीता**-(वि०) चित-चीता, चितचेता, मन-चाहा, मन-सोचा। [**मन-चेती** (स्त्री०)]।—**चोर**-(वि०) दिल चुराने वाला, चितचोर। "तीरथ गये तो तीन जन चित चंचल मनचोर"—कबी०।—**जात**-(पु०) कामदेव, मनसिज, मनोज। "मनजात किरात निपात किये"—[रामा०]।—**बाँछित**-(वि०) मनचाहा, इच्छानुकूल, अभीष्ट, चितचाहा।—**भाया**-(वि०) मनोनुकूल, जो पसंद आवे, अभीष्ट। [**मनभायी** (स्त्री०)]—**भावता**-(वि०) जो अच्छा लागे, प्रिय, प्यारा। [**मन-भावती** (स्त्री०)]। "देहुँ तोहिं मनभावन आली"—[रामा०]।—**भावन**-(वि०) मन को अच्छा लगने वाला, प्रिय, प्रेमी। [**मनभावनी** (स्त्री०)]।—**मत***†-(वि०) मतवाला, मदोन्मत्त, अहंकारी, घमंडी।—**मति**-(वि०) स्वेच्छाचारी, अपने मन का काम करने वाला, स्वतंत्र।—**मथन**-(संज्ञा) कामदेव, मदन, मनोज।—**मानता**-(वि०) मनमाना।—**माना**-(वि०) यथेच्छ, दिल-पसंद, जो मन को भावे। [**मनमानी** (स्त्री०)]। **मुहा०—घर जाना**-जो मन आवे करना, स्वेच्छाचार।—**मुखी**†-(वि०) स्वेच्छा-चारी, स्वेच्छानुगामी।—**मुटाव,—मोटाव**-(पु०) वैमनस्य, मन मे भेद **पड़ना**, विरोध भाव।—**मोदक**-(पु०) मन का लड्डू, प्रसन्नतार्थ कल्पित और असम्भव बात। "मन-मोदक नहिं भूख बुताई"—[रामा०]।—**मोहन**-(वि०) मन को मोहने वाला, प्रिय, चित्ताकर्षक प्यारा। [**मनमोहनी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) श्रीकृष्ण जी, एक मात्रिक छंद (पिं०)।—**मौजी**-(वि०) इच्छानुसार या मन की मौज से कार्य करने वाला।—**रंज**-(वि०) मन को प्रसन्न करने वाला।—**रंजक**-(वि०) मन को प्रसन्न करने वाला।—**रंजन**-(वि०) चित्त को प्रसन्न करने वाला, मनोविनोद।—**रोचन**-(वि०) मनभावन, सुन्दर रोचक, रुचिर।—**लड्डू—,लाडू**-(पु०) मनमोदक।—**सुख**-(पु०) मन को प्रसन्न करने वाला, मन का सुख।—**स्ताप**-(पु०) मन का दुख, मनःपीड़ा, पछतावा, आंतरिक दुःख, पश्चात्ताप।—**स्विता**-(स्त्री०) स्वेच्छानुकूलता, बुद्धिमत्ता, शूरता।—**हर**-(वि०, दे०) [सं० मनोहर] मनोहर। (संज्ञा, पु०) घनाचरी छंद (पिं०)—**हरण,—हरन**-(संज्ञा, (पु०, हिं०) मन के हरने का भाव, १५ वर्णों का एक वर्णिक छंद, भ्रमरावली (पिं०)। (वि०)

मनोहर, सुन्दर। "मनहरण हमारे प्रात जाने न पावें"—हरिऔध।—**हार,—हारि**-(वि०, दे०) [सं० मनोहारी] मनोहारी, सुन्दर, मनहारी। [**मनहारिनी** (स्त्री०)]। **मुहा०—किसी से —अटकना या उलझना, लगना**-प्रेमानुराग या प्रीति स्नेह होना।—**आना** (**भाना**)-प्रेम होना, पसन्द आना, रुचना, इरादा होना।—(**दिल**) **टूटना**-हताश होना, साहस न रहना।—**गिरना**—उत्साह या हौसला न रहना, उन्मनता या उदासीनता आना।—**चलना**-इच्छा होना।—**चुराना** मोहित या मुग्ध करना, वशीभूत करना।—**बढ़ना**—उत्साह या साहस बढ़ना।—**करना**-इरादा या इच्छा करना। (**किसी का**)—**बूझना**-मन की थाह लेना, हृदय की बात जानना।—(**दिल**) **हरा होना**-चित्त प्रसन्न होना।—**मुरझाना**-चित्त का उदास होना, हतोत्साह या हताश होना।—**के लड्डू** (**मनमोदक**) **खाना**-कल्पित या झूठी आशा पर प्रसन्न होना।—**मोदक से भूख मिटाना** (**बुझाना**)-व्यर्थ की कल्पित बात (आशा) से प्रसन्न होना। "मन मोदक कहुं भूख बुझाई"—[रामा०]।—**चलना** (**का चलायमान होना**) (**चलाना**)-इच्छा होना (करना) प्रवृत्ति होना (करना)। (**किसी का**) —**टटोलना**-दिल का पता लगाना, मन की थाह लेना।—**डोलना**-मन का चचल होना, लालच या लोभ उत्पन्न होना।—**देना**-जी लगाना, ध्यान देना, दिल देना, प्रेम करना, इरादा या भेद प्रगट करना।—(**दिल**) **देखना**-हृदय का भाव देखना। (**किसी पर**)—**धरना**-मन लगाना, ध्यान देना।—**में धँसना**-मन में प्रवेश करना, दिल में चुभना, चित्त में पैठना।—**तोड़ना या हारना**-हिम्मत या साहस छोड़ना।—**रखना** (**किसी का**)-किसी की इच्छा पूरी करना, तदनुकूल करना। "अब तौ हमारो मन राखतै बनेगो ताहिं"—रत्ना०।—**फेरना** (**फिरना**)-मन हटाना (हट जाना)।—**में बसाना** (**बसना**) -स्मृति मे रखना (रहना)।—**में पैठना**-दिल की बात खोजना, अति प्रेम करना, दिल में रखना, दिल पर प्रभावित होना, सदा याद रहना।—**बढ़ाना** (**बढ़ना**)-साहस दिलाना (होना), उत्साह बढ़ाना (बढ़ना)।—**में बसना** (**रहना**)-अच्छा लगना, पसंद आना, रुचना, याद रहना, सदैव स्मृति में रहना।—**बहलाना या बहलना**-दुखी या उदास मन को किसी कार्य में लगाकर प्रसन्न करना (होना) मनोरंजन या मनोविनोद करना (होना)।—**भरना**-विश्वास या निश्चय होना, संतोष होना, इच्छानुकूल प्राप्त करना (देना)।—**में घर करना**-दिल पर अधिकार करना, हृदय मे बस जाना। "मेरे मन में घर किये लेती है ये"।—**भर जाना**-अघा जाना, तृप्ति हो जाना, निश्चय या संतोष हो जाना, इच्छा पूर्ण हो जाना।—**में रहना**-गुप्त रहना, बाहर प्रगट न होना, सदा याद रहना, अति प्रिय होना।—**भाना**-पसंद आना, भला या अच्छा लगना, रुचना।—**मानना**-संतोष या तसल्ली होना, निश्चय या प्रतीत होना, अच्छा लगना, पसद आना, प्रेम, स्नेह या अनुराग होना। "मन माना कछु तुमहि निहारी"—[रामा०]।—**में रखना**-गुप्त रखना, स्मरण या याद रखना।—**पाना**-मन का भेद जानना, स्वीकारता का भाव देखना।—**में लाना**-सोचना, विचारना।—**में न लाना**-बुरा न मानना।—**मिलना**-स्वभाव या प्रकृति मिलना। "प्रकृति मिले मन मिलत है"—वृंद०।—**मारना**-खिन्न या उदास होना, इच्छा को दबाना।—**मैला करना**-असंतुष्ट होना, अप्रसन्न होना। "परसत मन मैला करै"—रही०।—**मोटा होना**-उदासीन या विराग होना।—**मोटाव होना** (**करना**)-वैमनस्य या बिलगाव होना (रखना)।—**मोड़ना**-विचार या प्रवृत्ति को दूसरी ओर लगाना। (**किसी का**)—**रखना**-इच्छा पूर्ण करना।—**लगना**-जी या तबियत लगना, रुचना, ध्यान लगाना, मनोविनोद होना।—**लाना***-मन लगाना, प्रेम करना।—**से उतरना**-मन में आदरभाव का न रहना, विस्मृति होना, मन का भाव बुरा होना।—**ही मन** (**मन मन**)-चुपचाप, दिल मे ही। "मन हीं मन मनाय अकुलानी"—[रामा०]। इच्छा, विचार। **लो०**—"मन मन भावै, मुँड़िया डुलावै।" —**माना**-अपने मन के अनुसार, यथेच्छ, यथेष्ट। *(संज्ञा, पु०) [सं० मणि] मणि, रत्न।

मनई‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मानव] मनुष्य।

मनकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) हिलना, डोलना।

मनकरा*—(वि०, दे०) [हिं० मणि+कर चमकदार।

मनका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मणिका] माला की गुरिया या दाना । (संज्ञा, पु०) [सं० मन्यका] गले के पीछे की हड्डी जो रीढ़ से मिली रहती है । "मन का मनका फेर"—कबी० । मुहा०—**ढलना या ढलकना**-मरने के समय गरदन टेढ़ी हो जाना ।

मनता, मानता—(पु०) मनौती । मानता, मान्ता (ग्रा०) ।

मनन—(पु०) सोचना, चिंतन, भली-भाँति पढ़ना, गूढ़ाध्ययन ।—**शील**-(वि०) विचारवान । [**मननशीलता** (संज्ञा, स्त्री०)]

मननाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) गुंजारना ।

मनशा, मंशा—(संज्ञा) इरादा, इच्छा, तात्पर्य्य, मतलब, विचार, [मनसा, मसा (दे०)] ।

मनसना*—(क्रि० स०, दे०) इरादा या इच्छा करना, दृढ़ विचार या निश्चय करना, हाथ में पानी ले संकल्पमंत्र के साथ कुछ दान करना ।

मनसब—(पु०) पद, ओहदा, स्थान, अधिकार, कार्य, काम : "मनसब का जिसके रुतबा हो फीलो-निशाँ तलक"—सौदा० ।

मनसबदार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ओहदेदार पदाधिकारी । [**मनसबदारी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

मनसा, मंसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक देवी का नाम । इरादा । (स्त्री०) [अ० मनशा] मनोरथ, अभिलाषा, इच्छा, कामना, अभिप्राय, इरादा, सकल्प, विचार, तात्पर्य, बुद्धि, मन । (वि०, सं०) मन से उत्पन्न, मन का । (संज्ञा, पु०, सं० क्रि० वि०, सं०) मन से, मन के द्वारा । "जो व्रज में आनद हुतो सो मुनि शक्ति मानसन गहै"—सूर० । "मनसावाचा कर्मणा, जो मेरे मन राम"—[रामा०] । "मनसा भयो किसान"—तु० ।

मनसाकर—(वि०) [हिं० मनसा+कर] मनोरथ पूरा करने वाला ।

मनसाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० मनसा] उमग या तरंग में आना । [क्रि० स०, दे०] [**मनसवाना** (हिं० मनसना का प्रे० रूप)] ।

मनसायन†—(वि०, दे०) [हिं० मानुस] मनोविनोद का मनोरम स्थान या जगह, गुलजार ।

मनसिज—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव । "खेलत मनसिज-मीन जुग"—[रामा०] ।

मनसूख—(वि०, अ०) परित्यक्त, अप्रामाणिक, त्यागा हुआ, अतिवर्तित । [**मनसूखी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

मनसूबा—(संज्ञा, पु०, अ०) विचार, ढंग, युक्ति, इरादा । मुहा०—**बाँधना**-युक्ति सोचना, इच्छा करना ।

मनस्क—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटा मन, मन का अल्पार्थक रूप । जैसे अन्यमनस्क ।

मनस्तल—(संज्ञा, पु०) मन का स्तर, मनकी स्थिति-विशेष । "परिणत होता सूक्ष्म मनस्तल"—पंत ।

मनस्वी—(वि०) [सं० मनस्विन्] बहादुर, बुद्धिमान [**मनस्विनी** (स्त्री०) । "अभिमानवती मनस्विनः प्रियमुच्चैः पदमारूरुक्षतः"—किरात० । "मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुखं न च सुखम्"—[भर्तृ०] ।

मनहंस—(संज्ञा, पु०, हिं०) मानसहंस, १५ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०) । [संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हंस रूपी मन या मन रूपी हंस ।

मनहुँ, मनौ*—(अव्य०, दे०) [हिं० मानो] मानो, यथा । "नूतन किसलय मनहुँ कृशानू"—[रामा०] ।

मनहूस—(वि०, अ०) अशुभ, बुरा, अशकुन, अप्रियदर्शन । [**मनहूसी, मनहूसियत** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

मना, मने—(वि०, अ०) वर्जित, वारण किया, या रोका हुआ, निषेध, अनुचित ।

मनाक, मनाग—(वि०, दे०) [सं० मानक् मनावा] थोड़ा, किंचित्, रंच, रचक ।

मनाना—(क्रि० स०) [हिं० मानना] अंगीकार करना, स्वीकार कराना, रूठे को प्रसन्न करना, देवता से मनोरथ सिद्धि की प्रार्थना करना, स्तवन करना । "मनहीं मन मनाय अकुलानी"—[रामा०] ।

मनार्थ्य—(वि०, दे०) [सं० मनोऽर्थ] विचारार्थ ।

मनावन†—(संज्ञा, पु०) [हिं० मनाना] रुष्ट को प्रसन्न करने का भाव या कार्य ।

मनावी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मनु की स्त्री ।

मनाही—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० मना] न करने का हुक्म या आज्ञा, निषेध, रोक, वारण, अवरोध ।

मनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मणि (सं०) रत्न।

मनिधर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मणिधर] साँप, सर्प, नाग।

मनिमाला—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) मणि-माला।

मनिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० माणिक्य] मनका, गुरिया, माला का दाना, माला, कंठी। "गुहि-गुहि देते नंद जसोदा तनिक काँच की मनिया"—सू०।

मनियार*†—(वि०, दे०) [हि० मणि+आर प्रत्य०] चमकीला, उज्ज्वल, सुहावना, दर्शनीय, सुन्दर। "बरनौ कहा देस मनियारा"—पद्मा०।

मनिहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मणिकार] चुरिहारा, चूड़ी बेचने वाला। [**मनिहारिन** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मणियों का हार। "बनिहार कहा मनिहार कौ जानै"—कु० वि० ला०।

मनिहारिन, मनिहारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मनिहारिन] चुरिहारिन।

मनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मान] घमंड। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मणि] मणि, रत्न, बल, वीर्य्य। (संज्ञा, पु०, अं०) धन।

मनीषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुद्धि, ज्ञान, मति, समझ।

मनीषि, मनीषी—(वि०) [सं० मनीषिन्] ज्ञानी, पंडित, मेधावी, बुद्धिमान, विचार-चतुर। "मरम मनीषी जानत अहहूँ"—[रामा०]। "कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः"—वेद।

मनीषिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुद्धि, मनीषा, इच्छा।

मनीषित—(वि०, सं०) अभिलषित।

मनु—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा के चौदह लड़के जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने गये हैं। स्वायंभू, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि, इन्द्रसावर्णि, चौदह की संख्या, मन या अंतःकरण, विष्णु, वैवस्वतमनु। [मनू (दे०)]। "मनुष्य वाचा मनुवंशकेतुम्"—रघु०।* (अव्य०, दे०) [हि० मानना] मानो, मानहु, मनों।—**संहिता**-(स्त्री०) मनुस्मृति।—**स्मृति**-(स्त्री०) मनु द्वारा निर्मित धर्मशास्त्र।

मनुआँ‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मन] मन, चित्त। "मेरा तेरा मनुआँ कैसे एकै होयरी"—कबी०। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मानव] मनुष्य।

मनुज, मानुज—(संज्ञा, पु०, सं०) आदमी, मनुष्य। [**मनुजाई** (संज्ञा, स्त्री०)]। "त्रेता राम मनुज अवतारा"—[रामा०]।

मनुष, मनुस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मनुष्य] आदमी, मनुष्य, [मनुज (दे०)] [मानुस (दे०)] पति [**मनुसाई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

मनुष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) आदमी, मनुज।—**कृत**-(वि०) मनुष्य द्वारा निर्मित।—**गणना**-(स्त्री०) मर्दुमशुमारी।—**लोक**-(पु०) धरती, मृत्यु लोक। भूलोक, मानवलोक।

मनुष्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आदमीपन, दया, करुणा, शील, शिष्टता, तमीज, मनुष्यत्व।

मनुष्यत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) मनुष्यता, आदमीपन, शिष्टता, शील, तमीज, पुरुषत्व।

मनुस, मानुस—(संज्ञा, पु०, दे०) मनुष्य, पति। [**मनुसई** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मनुसाई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मनुस +आई प्रत्य०] पराक्रम, पुरुषार्थ, पौरुष, मनुष्यता शूरता, वीरता। "देखेहु कालि मोरि मनुसाई"—[रामा०]।

मनुहार, मनुहारि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० मन+हरना] मनौआ, मनावति, खुशामद, प्रार्थना, विनती, आदर सत्कार करना, मान छुड़ाने या रुष्ट को मनाकर प्रसन्न करने के लिये विनय। "करि मनुहार सुधा-धार उपराजै हम"—रत्ना०।

मनुहारना*†—(क्रि०, स०, दे०) [हि० मान+हरना] मनाना, विनती या विनय या प्रार्थना करना, आदर या सत्कार करना।

मनूव—(संज्ञा, पु०, दे०) मन, बिलार, रुई।

मनों, मनौं—(अव्य०, दे०) [हि० मानना] मानो। "तुमहू कान्ह मनौं भये"—वि०।

मनोकामना—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० मन +कामना] मन-कामना, अभिलाषा, इच्छा।

मनोगत—(वि०, सं०) दिली, जो मन में हो। (संज्ञा, पु०) कामदेव, मदन।

मनोगति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) मन की गति, चित्त-वृत्ति, इच्छा।

मनोज—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव, मदन, मनसिज । "कोटि मनोज लजावन हारे"—[रामा०] ।

मनोजव—(वि०, यौ०, सं०) अत्यंत वेगवान, मन के वेग के समान वेग वाला। "मनोजवं मारुततुल्य वेग"—[स्फु०] । (संज्ञा, पु०) विष्णु, पवनसुत, हनुमानजी ।

मनोज्ञ—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोहर । [**मनोज्ञता** (स्त्री०)] ।

मनोदधि—(संज्ञा, पु०, सं०) मनरूपी समुद्र । "वीर करो फिर क्षुब्ध मनोदधि"—[स्फु०] ।

मनोदेवता—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विचार, विवेक ।

मनोनयन—(संज्ञा, पु०, सं०) पसंद करने का कार्य । मन का नेत्र, अंतनयना । "अपलक रह जाते मनोनयन"—पंत

मनोनभ—(संज्ञा, पु०, सं०) मन के आकाश पर । "फैलो है सूक्ष्म मनोनभ पर"—निराला ।

मनोनिग्रह—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मन को वश में रखना या स्थिर करना, मनोगुप्ति (योग०) ।

मनोनीत—(वि०, सं०) पसंद, मन के मुआफिक, मन के अनुकूल, चुना हुआ । [नामिनेटेड] ।

मनोबल—(संज्ञा, पु०, सं०) मानसिक सामर्थ्य । असफल हो जब श्रांत मनोबल—पंत ।

मनोभव, मनोभूत—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव, अनग, मन्मथ, मदन, चंद्रमा । "मनोभूत कोटि प्रभासश्शरीरम्"—[रामा०] ।

मनोभावन—(संज्ञा, पु०, सं०) मनमे भाव विशेष का संचारण (वि०) मनोहर । "मधुर हो मुख मनोभावन"—निराला ।

मनोमय—(वि०, सं०) मानसिक मनोरूप ।—**कोश**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाँच कोशों में से तृतीय कोश जिसके अंतर्भूत मन, अहंकार और कर्मेंद्रियाँ मानी गई हैं (वेदा०) ।

मनोमालिन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मनमुटाव, मन मे मलिनता का भाव ।

मनोयोग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मन को सब ओर से रोक कर एकाग्र करना, मन की वृत्तियों को रोक कर एक वस्तु मे लगाना । [**मनोयोगी** (वि०)] ।

मनोरंजक—(वि०, यौ०, सं०) मन को प्रसन्न करने वाला ।

मनोरंजन—(संज्ञा, पु० यौ०, सं०) दिलबहलाव, मनोविनोद [**मनोरंजक, मनोरंजनीय** (वि०)] ।

मनोरथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इच्छा, अभिलाषा, कामना । "स्वानेव पूर्णेन मनोरथेन"—रघु० ।

मनोरम—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोज्ञ, मनोहर । [**मनोरमा** (स्त्री०)] । (संज्ञा, पु०) सखी छंद का एक भेद (पिं०) [**मनोरमता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

मनोरमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सात सरस्वतियों में से चौथी सरस्वती, एक छंद (पिं०), एक वर्णिक छंद जो आर्या का ५७ वाँ भेद है (चंद्रा), १० वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०), १४ वर्णों का एक वर्णिक छंद (केशव), दोधक छंद (केश०) १० वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (सूद०), स्त्री०, गोरोचन, कौमुदी की टीका (व्या०) । "न कौमुदी भाति मनोरमाम् विना"—[स्फुट०] ।

मनोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मनोहर] दीवाल पर गोबर के चित्र, गोबर की मूर्तियाँ (दिवाली के बाद बनती और पूजी जाती हैं) । (स्त्री०) झिंझिया ।—**झूमक**-(यौ०) एक तरह का गीत ।

मनोराज—(संज्ञा, पु०, दे०) मन की कल्पना, मानसिक कल्पना ।

मनोलौल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मन की चंचलता, लहर, तरंग, मानसिक भाव ।

मनोल्लास—(संज्ञा, पु०, सं०) मनकी प्रसन्नता, उमंग । "कितनी आशाएँ, मनोल्लास"—पंत ।

मनोवसन—(संज्ञा, पु०, सं०) मनको आवरण में रखने वाली बातें । "खोलो भेद भावना के मनोवसन नारी नर ।"

मनोवाँछा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) इच्छा, अभिलाषा, मनोकामना ।

मनोवाँछित—(वि०, यौ०, सं०) चित चाहा, ईप्सित, अभीष्ट, मनमाँगा, इच्छित, अभिलषित ।

मनोविकार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मन के भाव, विचार या विकार, जैसे—काम, क्रोध, लोभ, दया, मोह, ईर्षा आदि ।

मनोविकृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०)) मन का प्रकृत अवस्था में न रहने का भाव ।

मनोविज्ञान—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह शास्त्र जिसमें मन की वृत्तियों की विवेचना हो। [**मनोवैज्ञानिक** (संज्ञा, पु०, वि०, सं०)]। [साइकालाजिकल]।

मनोविश्लेषण—(संज्ञा, पु०, सं०) मन या अन्तर रहस्यों का ऊहापोह।

मनोवृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) मनोविकार।

मनोवेग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मनोविकार।

मनोव्यापार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विचार।

मनोसर*—(संज्ञा, पु०, यौ०, मनस्) मनोविकार।

मनोहत—(वि०, सं०) व्यग्र, अस्थिर।

मनोहर—(वि०, यौ०, सं०) सुन्दर, मनहरण, मन को आकृष्ट और वश में करने वाला। [**मनोहरता** (संज्ञा, स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, छप्पय छंद का एक भेद (पिं०)।

मनोहरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दरता।

मनोहरताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मनोहरता (सं०)।

मनोहराई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मनोहरता] मनोहरता, सुन्दरता।

मनोहारी—(वि०) [सं० मनोहारिन] मन को हरनवाला, मनोहर। [**मनोहारिणी** (स्त्री०)]।

मनौतिय—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मनौती] मनौती मानने वाला, प्रतिभू, जामिनदार।

मनौती*।—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मनाना] मन्नत, मानता, देव-पूजा, जामिनी।

मन्नत—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मानता] मानता, मनौती, अभीष्ट-पूर्ति पर किसी देवता की पूजा का संकल्प। **मुहा०—उतारना वा चढ़ाना**-पूजा मानने की प्रतिज्ञा पूरी करना।—**मानना**-यह प्रतिज्ञा करना कि इस कार्य के हो जाने पर इस देवता की यह पूजा की जायेगी।

मन्मथ—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव।—**प्रिया**-(स्त्री०) रति।

मन्वंतर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० मनु+अंतर] ७१ चतुर्युगी के बीतने या व्यतीत होने का समय, ब्रह्मा के १ दिन का १४ वाँ भाग।

मम—(सर्व०, सं०) मेरा, मेरी, मेरे, अहम् का षष्ठी के एक वचन का रूप। "त्व प्रेम कर मम अरु तोरा"—[रामा०]।

ममता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मेरापना, अपनापन, ममत्व, प्रेम, मोह, लोभ, वात्सल्य, छोह, माता का पुत्र पर प्रेम।

ममत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) ममता, मोह, अपनापन, मेरापन।

ममास, ममाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मातुल+वास] मवास, शरण, शरण की जगह, मामा का घर।

ममियाउर, ममियौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मातुल+गृह] मामा का घर, ममाना।

ममीरा—(संज्ञा, पु०) [अ० मामीरान] एक पौधे की जड़ जो नेत्र-रोग की परमौषधि है।

ममूली—(वि०, दे०, अ०) मामूली, साधारण।

मयंक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मृगांक] शशि, चन्द्रमा। "अक न आव मयंक मुखी परजंक पै पारद की पुतरी सी"।

मयंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मृगेंद्र] सिंह, शेर, बाघ, व्याघ्र।

मय—(संज्ञा, पु०, सं०) एक देश, एक दानव जो बड़ा कारीगर या शिल्पी था (पुरा०)। महाद्वीप अमेरिका के मैक्सिको देश के प्राचीन निवासी (प्रत्य० सं०) एक प्रत्यय जो तद् रूप, विकार अधिकता के अर्थ में शब्दों के अन्त में लाई जाती है। (**मयी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, स्त्री०, अव्य) मैं। (प्रत्य० फ़ा०) साथ। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शराब।—**कश**-(वि०) शराबीन। [**मयकशी** (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०)]।—**खाना**-(पु०) शराबखाना, सुरालय, मधुशाला।—**खोर**-(वि०) शराबी।

मयगल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मदकल] मतवाला या प्रमत्त हाथी, मैगल।

मयन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मदन] मैन, काम। "करहु कृपा मरदन-मयन"—[रामा०]।

मयना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सारिका, मैना।

मयमंत, मयमत्त—(वि०, दे०) [सं० मदमत्त] मस्त, मतवाला।

मयसुता—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) मयात्मजा, मन्दोदरी या मयतनया। [**मयसुत** (संज्ञा, पु०)]।

मयस्सर—(वि०, अ०) प्राप्त, उपलब्ध, सुलभ। "वाँ मयस्सर नहीं वह ओढ़ने को"—हाली।

मया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० माया] माया, प्रपंच, प्रकृति, प्रधान, प्रेम, दया, ममता, मोह, छोह, प्यार। (सर्व०) [सं० अहम् का तृतीया में रूप] मेरे द्वारा।

मयार—(वि०) [सं० माया] कृपालु, दयालु। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) छप्पर के ऊपर की लकड़ी, [मयारी (दे०)]।

मयारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छप्पर के सिरे पर लगाने की मोटी लकड़ी, हिंडोले के लटकाने की धरन या बड़ी लकड़ी।

मयूख—(संज्ञा, पु०, सं०) किरण, दीप्ति, प्रभा, अग्नि, ज्वाला, काँति, प्रकाश। "रवि मयूख प्रयूख समान है"—मैथिली०। [**—माली** (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०)]।

मयूर—(संज्ञा, पु०, सं०) मोर। [**मयूरी** (स्त्री०)]।**—केतु**-(पु०) कार्तिकेय।**—गति**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) २४ वर्णों की एक छंद या वृत्ति (पिं०)। संज्ञा, स्त्री० यौ०, सं०) मोर की चाल।**—नृत्य**-(पु०) मोर के नृत्य की तरह का एक नाच।**—सारिणी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १३ वर्णों का एक छन्द (पिं०)।

मरंद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मकरंद] मकरंद, पराग।

मर—(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्यु, पृथ्वी।

मरक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मरकना= दबाना] दबाकर संकेत करना, संकेत, मड़क (प्रान्ती०)।

मरकट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मर्कट] बानर, बन्दर।

मरकत—(संज्ञा, पु०, सं०) पन्ना, रत्न। "मरकत डिब्बे सा खुला ग्राम"—पंत।

मरकना—(क्रि० अ०, अनु०) किसी दबाव में पड़कर टूटना, मुड़कना, [मुरुकना (दे०)]।

मरकहा—(वि०, दे०) मारने वाला। **लो०**— "सुनो सार भलो कि मरकहा बैल।"

मरकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० मरकना] तोड़ना, चूर करना, फोड़ना, मुड़काना।

मरखपना—(क्रि० अ०, यौ०, दे०) मर मिटना, नाश हो जाना, अति परिश्रम करना।

मरगजा*†—(वि०, दे०, यौ०) [हि० मलना+ मींजना] मसला या मींजा हुआ, मलादला, विमर्दित। "देखि मरगज चीर"—वि०।

मरगल—(संज्ञा, पु०, दे०) मसाला भरा तला हुआ बैंगन।

मरघट—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०, सं०) मृतकों के जलाने का घाट या स्थान, श्मशान, [मरघटा (दे०)], चिटका (प्रान्ती०)।

मरज़, मरज—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मर्ज] रोग, बीमारी, बुरी आदत या लत, कुटेव, बुरा स्वभाव। [**मरीज** (वि०, संज्ञा, पु०)]। "मरज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की"—[स्फु०]।

मरजाद, मरजादा—(संज्ञा, स्त्री०,) [सं० मर्य्यादा] सीमा, हद, प्रतिष्ठा, महत्ता, महत्त्व, नियम, परिपाटी, प्रणाली, आदर, रीति। "राखी मरजाद पाप-पुन्य को सुराखी गनै"—रत्ना०।

मरजिया—(वि०, यौ०, दे०) [हि० मरना+ जीना] जो मरने से बचा हो, मरकर जीने वाला, मरणासन्न, जो मरने के निकट हो, मरने पर तैयार, अधमरा। (संज्ञा, पु०, दे०) समुद्र में पैठकर मोती निकालने वाला गोताखोर, डुबकिहा, पनडुब्बा, जिवकिया (प्रान्ती०)। [**मरज़ी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

मरज़ी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) [मरजी (दे०)]। प्रसन्नता, इच्छा, चाह, स्वीकृति, आज्ञा। "जाट जुलाहे जुरे दरजी मरजी में मिले चिक और चमारो'—शिवलाल०।

मरजीवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मरना जीना] मरजिया।

मरण—(संज्ञा, पु०, सं०) [मरन (दे०)] मृत्यु, मौत। "मरणशय्यायां प्रतिपेदिरे"—माघ०।**—शील**-(वि०) मर्त्य, मरने वाला।

मरणांतक—(वि०, सं०) जिसकी समाप्ति मृत्यु से हो।

मरणासन्न—(वि०, यौ०, सं०) मरने के निकट।

मरणीय—(वि०, सं०) मर्त्य, मरनेवाला।

मरणोन्मुख—(वि०, सं०) मृत्यु की ओर उन्मुख।

मरत—*—(संज्ञा, पु०, दे०), [सं० मृत्यु] मृत्यु। "जियत, मरत, झुकि झुकि परत"— [**मरता** (वि०)]। **लो०**—"मरता क्या न करता।"

मरतबा—(संज्ञा, पु०, अ०) पदवी, पद, दर्जा, कक्षा, बार, दफा। "वह मरतबा है और ही फहमीद के परे"—मीर०।

मरता—(वि०) मरता हुआ ।—(ते) **जीते**-(अ०) किसी तरह, ज्यों-त्यों करके ।—**दमतक**-(अ०) आखिरी समय तक । **मुहा०—को मारना**-पीड़ित को और कष्ट देना ।

मरद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० मर्द] मर्द, पुरुष, बहादुर, साहसी ।

मरदई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० मरद + ई प्रत्य०] साहस, वीरता, बहादुरी, मनुष्यत्व ।

मरदन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मर्दन] मलना, मालिश करना, कुचलना, रौंदना, नाश करना, मरद का ब० व० ।

मरदना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मर्दन] मलना, नष्ट करना, मसलना, मोड़ना, गूँथना, कुचलना ।

मरदनिया†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मर्दना] देह में तेल मलने वाला दास ।

मरदानगी, मर्दानगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शूरता, वीरता, बहादुरी, साहस, शौर्य ।

मरदाना—(वि०, फ़ा०) पुरुषों का सा, पुरुष-सम्बन्धी, वीरोचित । (संज्ञा, पु०, दे०) मर्द । [**मरदानी** (वि०, स्त्री०)] ।

मरदानी—(वि०, फ़ा०) पुरुषोचित गुणों से युक्त (स्त्रियों के लिए) "खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी"—सुभद्रा कु० ।

मरदी—(वि०, अ०) मर्द-सम्बन्धी, मर्दानगी । (यौ० में, जैसे—जवांमर्दी) ।

मरदूद—(वि०, अ०) नीच, तिरष्कृत ।

मरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मरण] जीवों के देहों से जीवात्मा का निकल जाना, मृत्यु को प्राप्त होना, चेतन शक्ति का नष्ट होना । "ऐसा हो कै न मुवा, कि फेरि न मरना होय"—कबी० । [**—खपना,—मिटना** (यौ०)] । **मुहा०—जीना**-शुभाशुभ अवसर, शादी-गमी, सुख-दुःख, अत्यधिक कष्ट उठाना । **किसी पर—** आसक्त या लुब्ध होना । **बात पर**—जीवन देकर भी बात रखना । **बात को**—व्यर्थ या निस्सार बातों में शान दिखाने की इच्छा करना । "मरत कह बात को"—नंद । **मर मिटना**—परिश्रम करते करते नष्ट हो जाना । "इसी तमन्ना में मर मिटे हम ।" **मरा जान**—व्याकुल होना, अत्याकुल होना, आतुर और कातर होना । कुम्हलाना, मुरझाना, सूखना, लज्जित होना, संकोच करना, किसी काम का न रह जाना, नष्ट होना । **पानी—** कलंक लगना, बे शरम या निर्लज्ज हो जाना, दीवाल की नींव में पानी धँसना, किसी से हारना, दबना, पछताना, वेग का शान्त होना ।

मरनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० मरना] मृत्यु, मौत, हैरानी, कष्ट, किसी के मरने पर उसके सम्बन्धियों का सदुःख कृत्य ।

मर-पचना—(क्रि० अ०, दे०) अति परिश्रम करना, बहुत ही दुःख सहना ।

मर-भुक्खा—(वि०, दे०, यौ०) [हिं० मरना + भूखा] दरिद्र, कंगाल, भुक्खड़ ।

मरभुखा, मरभूखा—(वि०, दे०) बिना खाया, खाऊ, पेटू, दरिद्र ।

मरम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मर्म] मर्म, भेद । "मरम हमार लेन सठ आवा"—[रामा०] । [**मरमी** (वि०)] ।

मरमर—(संज्ञा, पु०, सं०) संगमरमर, एक प्रकार का सफेद पत्थर । (**संज्ञा**, पु०, दे०) पानी के बहने का मरमर शब्द ।

मरमरा—(संज्ञा, पु०) एक पक्षी विशेष ।

मरमराना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) मर मर शब्द करना, दबाव से लकड़ी आदि का मरमर शब्द करना ।

मरम्मत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) जीर्णोद्धार, दुरुस्ती, किसी वस्तु के टूटे-फूटे भागों की दुरुस्ती, बिगड़ी वस्तु का सुधार ।

मरम्मती—(वि०, अ०) सुधारने या मरम्मत के योग्य ।

मरवाना—(क्रि० स०) [हिं० मारना प्रे० रूप०] किसी को किसी दूसरे के पीटने को प्रेरित करना ।

मरसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मारिष] एक प्रकार का साग ।

मरसिया—(संज्ञा, पु०, अ०) किसी की मृत्यु के सम्बन्ध में शोक-काव्य, करुण-क्रन्दन ।

मरहट*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मरघट] मरघट, श्मशान, मसान । *† (संज्ञा, स्त्री०, दे०) मोठ ।

मरहटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महाराष्ट्र] मरहठा, १६ मात्राओं का एक छन्द (पिं०) [मरहट्टा (दे०)] ।

मरहठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महाराष्ट्र] महाराष्ट्र देश का निवासी, महाराष्ट्र। [**मरहठिन** (स्त्री०)]।

मरहठी—(वि०, दे०) [हिं० मरहठा] मरहठा-सम्बन्धी, मरहठों का। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) मरहठों की बोली या भाषा, मराठी (प्रान्ती०)।

मरहम—(संज्ञा, पु०, अ०) पीड़ित स्थनों या घावों पर लगाने को औषधियों का लेप। "मरहम तो गये मरहम के लिये मरहम न मिला मरहम न मिला" ।—**पट्टी**-(स्त्री०) चोट या घाव पर मरहम का प्रयोग कर पट्टी बाँधना।

मरहला—(संज्ञा, पु०, अ०) पड़ाव, ठिकाना, मंजिल, मरातिब। मुहा०—**तय करना**-झगड़ा निपटाना, कठिन कार्य्य को पूर्ण करना।

मरहूम—(वि०, अ०) मृत, स्वर्गवासी।

मराठा—(संज्ञा, पु०) महाराष्ट्र का निवासी।

मराठी—(संज्ञा, पु०) महाराष्ट्र की भाषा।

मरातिब—(संज्ञा, पु०, अ०) उत्तरोत्तर आनेवाली अवस्थायें, दरजा, पद, घर के खंड, ध्वजा, पताका, झंडा।

मराना—(क्रि० स०) [हिं० मारना प्रे० रूप] मारने की प्रेरणा करना, मरवाना।

मरायल*†—(वि०, दे०) [हिं० मारना+आयल प्रत्य०] मार खाने वाला, पीटा हुआ, सत्वहीन, निर्बल, निःसत्व। (संज्ञा, पु०, दे०) घाटा, क्षति, हानि।

मराल—(संज्ञा, पु०, सं०) हंस, बतख, घोड़ा, हाथी। [**मराली** (स्त्री०)]। "बरु मराल मानस तजै, चंद सीत रबि घाम"—तु०। "जियइ कि लवन पयोधि मराली"—[रामा०]।

मरिंद, मलिंद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मलिंद] भौंरा, [मरद (दे०)]। (संज्ञा, पु०) [सं० मकरंद] मकरंद।

मरिच, मरीची—(संज्ञा, पु०, सं०) मिरिच, मिर्च। लो०—"रस-द्विजीर द्विनिशा मरीची"।

मरियम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ईसा की माता, कुमारी।

मरियल—(वि०, दे०) [हिं० मरना] मरगुल (ग्रा०) दुबला, कमजोर।—**टट्टू**-(वि०) कमजोर घोड़ा।

मरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मारी] एक संक्रामक रोग, महामारी, प्लेग (अं०)।

मरीचि—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा के मानसिक पुत्र, ऋषि जो एक प्रजापति और सप्तर्षियों में हैं (पुरा०), एक मारुत, भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) किरण, कांति, मिर्च, मृगतृष्णा।—**जल**-(पु०) मृगतृष्णा।—**माली**-(पु०) सूर्य्य, चन्द्रमा। "तेजस्वी मरीचिमाली नभग वृन्द का नाश किया"—गिरीश०।

मरीचिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मृग-तृष्णा, सिरोह (प्रान्ती०) किरण, मिर्च।

मरीची—(संज्ञा, पु०) [सं० मरीचिन्] सूर्य्य, चंद्रमा, किरण, कांति।

मरीज़—(वि०, अ०) बीमार, रोगी।

मरोन, मलीना—(संज्ञा, पु०, दे०) [स्पेनी० मेरिनो] एक पतला नरम ऊनी वस्त्र।

मरु—(संज्ञा, पु०, सं०) रेगिस्तान, रेतीला मैदान, निर्जल स्थान, मारवाड़ के समीप का देश।—**द्वीप**-(पु०) सजल, हरा-भरा और उपजाऊ स्थान जो मरुस्थल में हो, शाद्वलभूमि, ओसिस (अं०)।—**धर**-(पु०) मारवाड़ देश, बलुवा प्रदेश।—**भूमि**-(स्त्री०) रेतीला और निर्जल देश, रेगिस्तान बलुवा देश।—**स्थल**-(संज्ञा, पु०. यौ०, सं०) निर्जल प्रदेश, रेगिस्तान, रेतीला देश।

मरुआ, मरुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मरुव] बबरी (ग्रा०) बन-तुलसी की जाति का एक पौधा। (संज्ञा, पु०) [सं० मेरु] बँडेर, बल्ली, हिंडोला लटकाने की बल्ली या लकड़ी।

मरुत्, मरुद्—(संज्ञा, पु०, सं०) वायु, उनचास मरुत् हैं। हवा, प्राण, रुद्र और वृश्नि के पुत्र (वेद०), कश्यप और दिति के पुत्र (पुरा०), एक देव-गण।—**सखा**-(पु०) मरुन्मित्र, अग्नि, तेज। "मरुत्प्रयुक्ताश्च मरुत्सखाभम्"—रघु०।

मरुत्वान—(संज्ञा, पु०) [सं० मरुत्वत] इन्द्र, धर्म के पुत्र एक देवगण, हनुमान। "बभौ मरुत्वान विकृतः समुद्रः"—भट्टी०।

मरुतात्मज—(संज्ञा, पु०, सं०) मारुति, हनुमान जी।

मरुथल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मरुस्थल] रेगिस्तान, मरुदेश।

मरुरना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० मरोड़ना] ऐंठना, मरोड़ा जाना।

मरू*—(वि०, दे०) [हि० मारना] कठिन, दुरूह, मुश्किल। "चलै मरूकै अति गरू, रंच हरू करि देहु"—रसाल०। **मुहा०—करिकै** या **—करि**-बहुत कठिनता से, ज्यों-त्यों कर के, बड़ी कठिनाई या कष्ट से।

मरूरा, मरौरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मरोड़] मरोड़, दर्द। (वि०) मरोड़ा हुआ।

मरोड़—(संज्ञा, पु०) [हि० मरोड़ना] [मरोर (दे०)] मरोड़ने का भाव या क्रिया। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) पेट में ऐंठन सी पीड़ा।**—फली**-(स्त्री०) मुरा की लकड़ी, एक फली। अवतरना (प्रान्ती०)। **मुहा०—खाना**-चक्कर खाना। **मन में—करना**-कपट या छल करना।**—की बात**-पेंचीदा या घुमाव फिराव की बात। घुमाव, बल, ऐंठन, क्षोभ, व्यथा, दुःख।**—खाना**-उलझन में पड़ना, पेट में ऐंठन और पीड़ा होना। घमंड, क्रोध।**—गहना**-क्रोध करना।

मरोड़ना—(क्रि० सं०, दे०) [हि० मोड़ना] ऐंठना, घुमाना, बल डालना, उमेठना, [मरोरना (दे०)]। **अंग**—अँगड़ाई लेना। **भौंह या आँख आदि**—इशारा करना, कनखी मारना, नाक भौंह चढ़ाना, भौंह सिकोड़ना, उमेठ कर तोड़ डालना, ऐंठ कर नष्ट करना या मार डालना, मसलना, पीड़ा या दुःख देना, मलना। **मुहा० —हाथ**—पछताना, कलाई या हाथ ऐंठना।

मरोड़ा—(संज्ञा, पु०) [हि० मरोड़ना] ऐंठन, [मरोरा (दे०)] उमेठ, मरोड़, बल, पेट की ऐंठन सी पीड़ा।

मरोड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मरोड़ना] ऐंठना। **मुहा०—करना**-खींचातानी करना।

मर्कट—(संज्ञा, पु०, सं०) वानर, बंदर दोहा का एक भेद, छप्पय का ८ वाँ भेद (पिं०)। "मर्कट-भालु चहूँ दिशि धावहिं"—[रामा०]।

मर्कटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वानरी, बंदरी, मकड़ी, छंद, ६ प्रत्ययों में से अंतिम—इससे मात्रा, कला, गुरु, लघु और वर्ण-संख्या ज्ञात होती है (पिं०), एक वनौषधि (वैद्य)। **लो०**—"उच्चटा मर्कटी गोक्षुरैश्चूर्णितै"।

मर्कत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मरकत] पन्ना।

मर्कर—(संज्ञा, पु०) भंगरा।

मर्करा—(संज्ञा, स्त्री०) सुरंग, बाँझ स्त्री।

मर्ज़—(संज्ञा, पु०, अ०) रोग, बीमारी, बुरी बात या लत।

मर्तबान—(संज्ञा पु०, दे०) [हि० अमृतबान] अमृतबान, खटाई, घी आदि रखने का एक प्रकार का रोग़नी बरतन।

मर्त्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मनुष्य, शरीर, भू-लोक। (वि०) मरने वाला। "विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी"—मैथिली०। **—लोक**-(पु०) भूलोक, पृथ्वी।

मर्द—(संज्ञा, पु०, फा०) [मरद (दे०)] मनुष्य, साहसी पुरुष, पुरुषार्थी, वीरपुरुष, भर्ता, नर, पति, पुरुष।**—आदमी**-(पु०) बहादुर, मरदाना।**—बच्चा**-(पु०) बहादुर, वीर।

मर्दन—(संज्ञा, पु०, सं०) मलना, कुचलना, नष्ट करना [**मर्दनीय** (वि०)]।

मर्दना*—(क्रि० सं०, दे०) [सं० मर्दन] मलना, मालिश करना, नष्ट करना, [मरदना (दे०)] रौंदना। "कछु मारेसि कछु मर्देसि कछुक मिलायसि धूरि"—[रामा०]।

मर्दानगी—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) वीरता, साहस, बहादुरी।

मर्दाना—(वि०, फा०) पुरुषोचित, बहादुर, पुरुष सम्बन्धी। (पु०) मर्दाना बैठक।

मर्दनीय—(वि०, सं०) मलने या नष्ट करने के योग्य।

मर्दल—(संज्ञा, पु०, सं०) मृदंग सा एक बाजा (बंगाल०)।

मर्दित—(वि०, सं०) मसला या मला हुआ, कुचला या रौंदा हुआ।

मर्दुआ—(संज्ञा, पु०) नीच पुरुष, पति।

मर्दुम—(संज्ञा, पु०, फा०) मनुष्य।**—शुमारी**-(स्त्री०) देश की मनुष्य गणना, जनसंख्या।

मर्दुमी—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) मरदानगी, पौरुष। (वि०) [स्त्री० मुर्दिनी] नाशक, संहारकर्त्ता।

मर्दन—(संज्ञा, पु०, सं०) रौंदना, कुचलना, मलना, शरीर में तेल आदि लगाना या मसलना, ध्वंस, नाश, कुश्ती में एक मल्ल का दूसरे के गले आदि में घस्सा मारना, बाँटना, पीसना, रगड़ना। [**मर्दित**, **मर्दनीय** (वि०)]।

मर्म—(संज्ञा, पु०) [सं० मर्म्म] भेद, तत्व, रहस्य, संधि-स्थान, प्राणियों के शरीर के वे स्थान जहाँ चोट लगने से अधिक पीड़ा होती है, [मरम (दे०)] [**मार्मिक** (वि०)] । "मर्म तुम्हार सकल मैं जाना"—[रामा०] ।—**ज्ञ**–(वि०) भेद जानने वाला, तत्वज्ञ, रहस्य जानने वाला ।—**भेदक**–(वि०) मर्म-भेदी, हृदय पर चोट करने वाला, आंतरिक कष्ट पहुँचाने वाला ।—**भेदी**–मर्म-भेदक, दिली दुख देनेवाला ।—**वचन**–(पु०) ऐसी बात जिसके सुनने से आंतरिक कष्ट हो, दुःख दाई बात, रहस्य या भेद की बात, गूढ़ कथन । "मर्म-वचन सीता जब बोली"—[रामा०] ।—**वाक्य**–(पु०) रहस्य की बात, भेद की बात, गूढ़ कथन, गंभीरवाणी ।—**विद्**–(वि०) मर्म्मज्ञ, भेद जानने वाला ।—**स्पर्शी**–(वि०) मर्मभेदी ।—**स्पृह** —"मन में मर्मस्पृह सौरभ का..."—पंत ।

मर्मर—(संज्ञा, पु०, यू०) संगमरमर । (संज्ञा, पु०, सं०) तुषानल । "स्मरहुताशन मर्मर चूर्णताम्"—माघ० ।—**ध्वनि**–(स्त्री०) खड़खड़ाना । "यहाँ न पल्लव वन में ममेर"—पंत ।

मर्मरित—(वि०, सं०) जिससे मर्मर की ध्वनि होती हो ।

मर्मरी—(संज्ञा, स्त्री०) हलदी, देवदास ।

मर्मांतक—(वि०, सं०) मर्म्म-भेदक, दिल में चुभने वाला, हृदयस्पर्शी, मर्मस्पर्शी । मानव दुर्गति की गाथा से ओत-प्रोत मर्मांतक—पंत ।

मर्माघात—(संज्ञा, पु०, सं०) हृदय पर आघात पहुँचाना, मर्म पर चोट लगना ।

मर्मी—(वि०) [हिं० मर्म] मर्मज्ञ, तत्वज्ञ, मर्म-वाला ।

मर्मोद्घाटन—(संज्ञा, पु०, सं०) रहस्योद्घाटन ।

मर्याद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मर्यादा] मर्यादा, रीति, प्रथा बराहार , (विवाह) सीमा, [मरजाद (दे०)] । "उदधि रहै मर्याद में" —वृ० ।

मर्य्यादा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हद, सीमा, किनारा, कगार, कूल, नियम, प्रतिज्ञा, प्रतिष्ठा, धर्म, सदाचार, सम्मान, [मरजादा (दे०)] ।—**पालक**–(पु०) मर्यादा का पालन-कर्त्ता ।—**पुरुषोत्तम**–(पु०) राम ।

मर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) सहन, धैर्य ।

मर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) सहन, धैर्य रखना ।

मलंग—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक मुसलमान साधु । **मलंगा**—(वि०) नंगा, नग्न ।

मलंगी—(संज्ञा, पु०, दे०) एक जाति जो नमक बनाती है, नुनियाँ, लुनियाँ ।

मल—(संज्ञा, पु०, सं०) मैल, मैला, कीट, विष्ठा, पुरीष, देह का विकार, दूषण, ऐब, पाप । "कलि-मल ग्रसे धर्म्म सब"—[रामा०] ।—**द्वार**–(पु०) शरीर की मल निकालने वाली इन्द्रिय, गुदा ।—**रुचि**–(वि०) पापी, बुरी रुचिवाला ।—**रोधक**–(वि०) मल को रोकने वाला, कब्ज करने वाला ।—**विसर्जन**–(पु०) पाखाना करना, मलत्याग ।

मलकना—(क्रि० अ०, दे०) मटकना, नखरे से मटक-मटक कर चलना ।

मलका, मलिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मलिकः] महारानी, बेगम, पटरानी ।

मलकिन, मालकिन—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० मालिक] मालिक की स्त्री ।

मलखंभ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मल्लस्थंभ] [मलखम (दे०)] पहलवानों की कसरत का खंभ ।

मलखम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मल्लस्थभ] पहलवानों की कसरत का खंभ, मालखभा, उसका व्यायाम ।

मलखाना*†—(वि०, दे०) मलखाने वाला । (पु०) पश्चिमीय संयुक्त प्रान्त के वे राजपूत जो मुसलमान से अब फिर हिन्दू बन गये हैं ।

मलगजा*—(वि०) [हिं० मलना+गीजना] मला-दला, या गीजा हुआ, मरगजा । (संज्ञा, पु०) बेसन में लपेटे बैगन के घी या तेल में भूने टुकड़े ।

मलागिरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मलयगिरि] हलका कत्थई रग ।

मलना—(क्रि० स०) [सं० मलन] जोर से घिसना, हाथ से रगड़ना, एँठना, मर्दन करना, मीजना, मालिश करना, मसलना, हाथ या अन्य वस्तु से दबाते हुए घिसना । **दलना-मलना**–(यौ०) पीसना, चूर्ण करना, घिसना, मसलना, नष्ट करना । **मुहा०—हाथ मलना**–पछताना, क्रोध दिखाना । "मै रोता रह गया बस मलते हाथ" —हरि० ।

मलवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मल] कूड़ा-कर्कट, खर-कतवार, गिरे हुए घर का सामान, इंट, चूना आदि।

मलमल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मल-मल्लक] पतला सफेद एक सूती कपड़ा।

मलमलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० मलना] बार-बार खोलना मूँदना, बार-बार मिलना, भेंटना आलिंगन करना, पुनः पुनः स्पर्श करना।

मलमास—(संज्ञा, पु०, सं०) संक्रांति हीन अमान्त मास, अधिक मास, पुरुषोत्तम या अधिमास, लौंद का महीना।

मलमेंट—(संज्ञा, पु०, दे०) उजाड़, सत्यानाश, विध्वस, विनष्ट।

मलय—(संज्ञा, पु०, सं०) मलाबार देश, मैसूर से दक्षिण और ट्रावनकोर से पूर्व का पश्चिमी घाट का भाग, वहाँ के निवासी, नंदनवन, सफेद चदन-वन, एक पहाड़, छप्पय का एक भेद (पिं०)। "कोमल मलय-समीरे"—[गी० गो०]।—**गिरि**-(पु०) दक्षिण का एक पहाड़ जहाँ चंदन होता है, [**मलयगिरि** (दे०, यौ०)]।—**ज**-(पु०) चदन, मलयगिरि में उत्पन्न।—**बयार**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मलयाचल की ओर से बहने वाली वायु। "थक गयीं सौ मलयपयम्"—महादेवी।—**समीर**-(पु०) मलय पर्वत से आने वाली वायु।

मलयाचल—(संज्ञा, पु०) मलय पर्वत।

मलयानिल—(संज्ञा, पु०) मलय पहाड़ की सुगंधित वायु, सुगंधित वायु, वसंत-पवन।

मलयालम—(संज्ञा, पु०) दक्षिण भारत का एक प्रदेश। दक्षिण प्रदेश की भाषा।

मलयाली—(वि०, दे०) [ता० मलयालम्] मलाबार-संबंधी, मलाबार का। (संज्ञा, स्त्री० दे०) मलाबार की बोली या भाषा, मलायन।

मलयुग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कलियुग।

मलराना—(क्रि० स०, दे०) मलहराना, प्यार करना। "कोऊ दुलरावैं, मलरावैं, हलरावैं कोऊ, चुटकी बजावैं कोऊ देत करतारै हैं"—[रामरसा०]।

मलवाना—(क्रि० स०, दे०] [हि० मलना का प्रे० रूप] मलने का काम दूसरे से कराना।

मलाना, मलवाई—(संज्ञा, पु०, दे०)।

मलहम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मरहम] मरहम, फोड़ों आदि का लेप (औष०)।

मलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रस तत्व, दूध की साढ़ी, गर्म दूध का ऊपरी सार भाग। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० मलना] मलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मलान*—(वि०, दे०) [सं० ग्लान] मलीन, उदास, रंजीदा। "निन्दा सुनि कै खलन की धीर न होहि मलान।"—वृं०।

मलानि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उदासीनता, उदासी, मलीनता।

मलाबार—(संज्ञा, पु०) दक्षिण भारत का एक प्रदेश जो अरब सागर के तट पर बसा हुआ है।

मलामत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) फटकार, दुतकार, लानत, निकृष्ट भाग, गदगी। **लानत मलामत**-(यौ०) फटकार, निन्दा।

मलाया—(संज्ञा, पु०) बर्मा के दक्षिण में स्थित एक देश।

मलार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मल्लार] वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक राग। **मुहा०**—**गाना**—अति प्रसन्न हो कुछ कहना या गाना।—**की सूझना**-मौज उड़ाने या विनोद की बात सूझना।

मलाल—(संज्ञा, पु०, अ०) रंज, दुःख, उदासी, खेद, खिन्नता।

मलावरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) कब्ज।

मलाशय—(संज्ञा, पु०, सं०) शरीर का निचला भाग जहाँ मल रहता है।

मलाह*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मल्लाह] मल्लाह, केवट। [**मल्लाही**-**मलाही** (संज्ञा, स्त्री०)]केवट का पेशा।

मलिंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मिलिंद] भौंरा।

मलिक—(संज्ञा, पु०, अ०) मालिक, राजा, अधिपति, अधिराजा। [**मलिका** (स्त्री०)]।

मलिच्छ, मलिच्छ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० म्लेच्छ] म्लेच्छ, मांसाहारी, नीच, दरिद्र। [**मलिच्छी** (वि०)] गंदा, घृणित, नीच, दरिद्री।

मलिन—(वि०, सं०) मलीन, मैला, गदला, मटमैला, दूषित, उदास, धूमिल, पापी, धीमा, फीका, उदास, म्लान, बदरंग। [**मलिना, मलिनी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, स्त्री०) [मलिनता, मलिनाई (दे०)]। "पूछेउ मातु मलिन मन देखी"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०) मैले कपड़े पहनने वाले एक साधु लोग, अघोरी।

मलिनता, मलीनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मैलापन, उदासी । **मलिना**—(वि०, स्त्री०, सं०) दुखित, दूषित ।

मलिना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लाल खाँड, रजस्वला स्त्री ।

मलिनाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मलिनता] मलिनता, उदासी, मैलापन, [मलिनई (दे०)] ।

मलिनाना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मलिन] मैला-कुचैला होना, [मैलाना (दे०)] ।

मलिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मलिनता] ऋतुमती या रजस्वला स्त्री ।

मलिम्लुच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मलमास, अग्नि, चोर, वायु ।

मलिया†—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० मल्लिका] तंग मुँह वाला मिट्टी का पात्र या घेरा, चक्कर । बच्चों की माला ।

मलियामेट—(संज्ञा, पु०, दे०, हि०) सत्यानाश, तहस-नहस, मटियामेट ।

मलिष्ठ—(वि०, सं०) पापी, नीच ।

मलीदा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० मालीदः] चूरमा, एक बहुत मृदु ऊनी कपड़ा ।

मलीन—(वि०, दे०) [सं० मलिन] मैला, गंदा, उदास, खिन्न, दुखी, अस्वस्थ, अस्वच्छ ।

मलीनता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मलिनता] मलिनता, मलिनाई, उदासी ।

मलूक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक कीड़ा, एक पक्षी, अमलूक (प्रान्ती०) । (वि०, दे०)

मलेच्छ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० म्लेच्छ] म्लेच्छ, मांसाहारी । [मलिच्छ (दे०)]

मलेरिया—(संज्ञा, पु०, अं०) मच्छड़ों के काटने से उत्पन्न ज्वर जो जाड़ा देकर आता है ।

मलैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हाँड़ी, हंडी ।

मलोत्सर्ग—(संज्ञा, पु०) मलत्याग ।

मलोला—(संज्ञा, पु०) [अ० मलूल या बलबला] मनसंबंधी दुःख, रंज, दुःख, मानसिक या हार्दिक खेद या खिन्नता । मुहा०—**या (ले) आना** –दुःख या पछतावा होना ।—**(ले) खाना**–मन की व्यथा सहना । अरमान, हार्दिक वेदना, व्यथा या व्याकुलता उत्पन्न करने वाली इच्छा ।

मल्ल—(संज्ञा, पु०, सं०) दीप-शिखा, एक पुरानी जाति जो द्वन्द्व-युद्ध में बड़ी कुशल थी, इसी से पहलवान को मल्ल कहते हैं, पहलवान, कुश्तीगीर विराट के निकट का एक प्राचीन देश ।—**भूमि**–(पु०, सं०) अखाड़ा, कुश्ती लड़ने का स्थान ।—**युद्ध**–(पु०) कुश्ती, बाहुयुद्ध, केवल हाथों से बिना शस्त्रास्त्र के किया जाने वाला द्वन्द्व युद्ध ।—**विद्या**–(स्त्री०) कुश्ती की विद्या, मल्ल-विज्ञान ।—**शाला**–(स्त्री०) अखाड़ा, मल्ल-भूमि ।

मल्लक—(संज्ञा, पु०, सं०) दीपक, नारियल का पात्र, पहलवान ।

मल्लार—(संज्ञा, पु०, सं०) मलार राग (संगी०), मछली मारने और नाव चला कर निर्वाह करने वाली एक जाति, मल्लाह ।

मल्लारी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक रागिनी ।

मल्लाह—(संज्ञा, पु०, अ०) केवट, धीवर, नाव चलाने और मछली मारने वाली एक जाति, माँझी । [**मल्लाही** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

मल्लि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मल्लिका ।—**नाथ**–(संज्ञा, पु०, सं०) जैनमत में उन्नीसवें तीर्थंकर । संस्कृत के एक प्रसिद्ध टीकाकार पंडित ।

मल्लिक—(संज्ञा, पु०, सं०) हंस, श्वेत हंस ।

मल्लिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मोतिया, एक बेला फूल, ८ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०), सुमुखी वृत्ति, सुमुखि छन्द (पिं०) ।

मल्लिकार्जुन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक शिव लिंग ।

मल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मल्लिका, सुन्दरी छंद या वृत्ति का दूसरा नाम ।

मल्लू, मल्हू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मल्ल] बंदर ।

मल्लूर—(संज्ञा, पु०, सं०) बेल का पेड़, बिल्व-वृक्ष ।

मल्हराना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मल्ह] दुलार दिखाते हुये लेटाना, चुमकारना, प्यार करना ।

मल्हाना, मल्हारना‡—(क्रि० स०, दे०) [सं० मल्ह—गोस्तन] पुचकारना, चुमकारना, प्यार करना ।

मवक्किल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मुवक्किल] मुकदमे में अपने लिये वकील करने वाला ।

मवाज़ा—(संज्ञा, पु०, अ०) बदले या परिवर्तन में दिया धन, मुआवज़ा ।

मवाजिब—(संज्ञा, पु०, अ०) नियत समय पर मिलने वाली वस्तु, जैसे—तनख्वाह ।

मवाद—(संज्ञा, पु०, अ०) पीब।

मवास—(संज्ञा, पु०, सं०) त्राण या रक्षा का स्थान, शरण, आश्रय, गढ़, दुर्ग किले के प्रकार पर के वृक्ष। **मुहा०—करना**-रहना, निवास करना। "निडर तहाँई मधु करत मवासो है"—सरस।

मवासी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शरण, रक्षा, छोटा किला। "कठिन मवासी है महबे की"—[आल्हा०]।

मवेशी—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मवाशी] ढोर, पशु, चौपाये।—**खाना**-(पु०) मवेशियों का बाड़ा।

मशक—(संज्ञा, पु०, सं०) [मसक (दे०)] मच्छड़, मसा नामक एक चर्म-रोग। "मशक दंश बीते हिम-त्रासा"—[रामा०] (स्त्री०, फ़ा०) पानी ढोने का चमड़े का बड़ा थैला।

मशक्कत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) परिश्रम, मेहनत, वह श्रम जो जेल में कैदियों से कराते हैं। [**मेहनत, मशक्कत** (यौ०)]।

मशगूल—(वि०, अ०) कार्य-लीन, काम मे लगा हुआ।

मशरू, मशरुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मशरूअ] एक धारीदार कपड़ा।

मशविरा—(संज्ञा, पु०, अ०) राय, मंत्रणा, परामर्श, सलाह।

मशहरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मच्छड़ों से बचने के लिये बनाया हुआ कपड़ा, मसहरी, मसैरी।

मशहूर—(वि०, अ०) प्रसिद्ध, विख्यात। [**मशहूरी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मशाल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) एक बहुत मोटी बत्ती जो डंडे में लगी रहती है। **मुहा०—लेकर (जला कर) ढूँढ़ना**-बहुत खोज करना, खूब ढूँढ़ना।—**ची**-(पु०, फ़ा०) मशाल दिखाने वाला।

मशीन—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) यंत्र, कल।

मश्क—(संज्ञा, पु०, अ०) अभ्यास।

मष—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मख] यज्ञ।

मषि, मषी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० मसि] स्याही। "लिखिय पुरान मंजु, मषि सोई"—[रामा०]।

मष्ट—(वि०, सं०) संस्कार शून्य, उदासीन, मौन, चुप, भूला हुआ। "मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं"—[रामा०]। **मुहा०—करना, धारना या मारना**-कुछ न बोलना, चुप रहना।

मस*†—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० मसि] स्याही। मसि। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० श्मश्रु] मूछ निकलने के पूर्व होठों पर की रोमावली, मसि। **मुहा०—भीजना**-मोछों का निकलना शुरू होना।

मसक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मशक] मसा-मच्छड़। "मसक समान रूप कपि धरी"—[रामा०] (संज्ञा, स्त्री०, अनु०) मसकने की क्रिया, पानी भरने का चमड़े का थैला।

मसकत*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मशक्कत] परिश्रम, मेहनत। [मसक्कत (दे०)]

मसकना—(क्रि० स०, दे०, अनु०) कपड़े को दबाना कि वह फट जाय, बलपूर्वक मलना या दबाना। (क्रि० अ०) खिंचाव या दबाव पड़ने से फट जाना, मन का चिंतित होना।

मसकरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० मसख़रा] दिल्लगीबाज, रगड़ से धातुओं पर चमक लाने वाला, मसखरा।

मसकला—(संज्ञा, पु०, अ०) सिकली करने का एक यंत्र, सैकल या सिकली करने की क्रिया।

मसकली—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० मसकला] छोटी सैकल, पान।

मसका—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ताजा घी, मक्खन, नवनीत, नैनू। "दूध दही और मट्ठा मसका"—इस्मा०। दही का तोर या पानी, चूने को बरी का चूर्ण जो पानी छिड़कने से बने।

मसकीन*†—(वि०, दे०) [अ० मिसकीन] कंगाल, बेचारा, सज्जन, सुशील, भोला-भाला, दरिद्र, दीन। "कार मसकीना बसाजद कार साज"—सादी०।

मसख़रा—(संज्ञा, पु०, अ०) हँसोड़, ठट्ठेबाज, हँसी मजाक करने वाला, दिल्लगीबाज।—**पन**-(पु०) हँसी-ठठोली, ठट्ठेबाजी, दिल्लगी, ठट्ठा]

मसख़री—(संज्ञा स्त्री०) [फ़ा० मसखरा + ई प्रत्य०] हँसी, दिल्लगी, मजाक)

मसखवा, मसखावा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० मांस + खाना] मांसाहारी, मांस खाने वाला।

मसजिद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मस्जिद] एकत्रित होकर मुसलमानों के नमाज पढ़ने या ईश्वर की प्रार्थना करने का मन्दिर, महजित (ग्रा०)।

मसनद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बड़ा या गावतकिया, अमीरों के बैठने की गद्दी। [**मसनद-तकिया** (यौ०)]

मसनवी—(संज्ञा, अ०) एक छंद, कथा-काव्य।

मसना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० मसलना] मलना, मसलना।

मसमुंद*†—(वि०) [दे० मस+मूँदना= बंद होना हि०] ठेलमठेल, रेलपेल, धक्कमधक्का, कशमकश।

मसमसाना—(क्रि० अ०, दे०) दाँत पीसना, भीतर ही भीतर जलते रहना।

मसयारा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मशअल] मशालची, मशाल।

मसरफ़—(संज्ञा, पु०, अ०) काम या व्यवहार में आना, उपयोग, प्रयोग।

मसल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लोकोक्ति, कहावत, कहनावति।

मसलना—(क्रि० स०, दे०) [हि० मलना] हाथ से रगड़ना, बलपूर्वक दबाना, मलना, आटा गूँथना।

मसलन्—(वि०, अ०) उदाहरणार्थ, जैसे, यथा।

मसलहत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) भलाई की बात, ऐसी गुप्त युक्ति जो सहज में जानी न जावे। "दरोग मसलहत आमेज वेह अजब रास्ती फतना अंगेज"—सादी०।

मसलहतन्—(क्रि० वि०) जान-बूझ कर, युक्ति से।

मसला—(संज्ञा, पु०, अ०) लोकोक्ति, कहावत, विचारणीय, समस्या, मामला। **मुहा०—हल होना**-समस्या का हल होना।

मसवासी—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० मासवासी] एक मास से अधिक किसी स्थान पर न रहने वाला साधु। (संज्ञा, स्त्री०) वेश्या, रंडी, गणिका।

मसविदा—(संज्ञा, पु०, अ०) मसौदा (दे०), उपाय, युक्ति, तरकीब, वह लेख जो पहले साधारण रीति से लिखा जावे फिर विचारानुसार उसमें कमीवेशी की जावे।

मसहरी, मसेहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मशहरी] वह जालीदार वस्त्र जो मच्छड़ों से बचने के लिये पलँग के ऊपर और चारों ओर लगाया जाता है, मसहरी लगाने का पलंग, [मसेरी (दे०)]।

मसहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [माँसाहारिन्] माँसाहारी, [मसहारी (दे०)]।

मसा, मस्सा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माँसकील] देह पर मांस का उभरा हुआ काले रंग का छोटा दाना। बवासीर रोग के माँस का दाना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मशक] मच्छड़।

मसान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्मशान] श्मशान, मरघट, चिटका (ग्रा०)। [**तेलिया-मसान**—(यौ०)] प्रेत हुआ तेली, पिशाच। **मुहा०—जगाना**-तंत्र शास्त्र की रीति से मरघट में बैठकर मृतक या प्रेत की सिद्धि करना। भूत-प्रेत, युद्ध-भूमि।

मसाना—(संज्ञा, पु०, अ०) मूत्राशय, पेट में पेशाब की थैली।

मसानिया—(संज्ञा, पु०, दे०) डुमार, डोम, श्मशानवासी।

मसानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्मशानी] मरघट की पिशाचिनी, डाकिनी आदि।

मसाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मसालह] वह सामग्री जिससे कोई वस्तु बनाई जावे, औषधियों या रासायनिक पदार्थों का समूह या योग, साधन, आतिशबाजी, तेल आदि, लौंग, जीरा, मिर्च, हल्दी, धनिया आदि मसाले।—(**ले) दार**—(वि०) जिस पदार्थ में किसी प्रकार का मसाला या औषधियों का समूह मिलाया गया हो।

मसाहत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) माप, नाप, पैमाइश।

मसि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लिखने की स्याही, रोशनाई, काजल, कारिख। "तिनके मुँह मसि लागि है"—तुल०।—**दानी**-(स्त्री०) दावात, मसि-पात्र।—**पात्र**-(पु०) दावात।—**प्याली**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मसिपात्र, दावात 'मसि-प्याली, फरते तारकद्वय'—महादेवी।—**बिंदु**-(स्त्री०) स्याही की बूँद।—**बुंदा**—,**बुंद**-(पु०) मसि-बिंदु, स्याही का बूँद, काजल का बुंदा जो लड़कों के माथे में नजर न लगने के लिये लगाया जाता है, दिठौना।—**मुख**-(वि०) जिसके मुख में स्याही लगी हो, कुकर्मी, दुराचारी, कलंकी। —**विंदु**-(पु०) स्याही का बूँद, दृष्टि-दोष से

बचाने को बच्चों के मत्थे पर काजल का टीका, दिठौना।

मसियर, मसियार*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मशअल] मशाल। (वि०, दे०) स्याही लगा।

मसियाना*—(क्रि० अ०, दे०) पूरा हो जाना या भली भाँति भर जाना, मस भींजना।

मसियारा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० मशालची] मशालची। (वि०, दे०) कलंकी, स्याही लगा।

मसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [स० मसि] स्याही, रोशनाई।

मसीत, मसीद*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मसजिद] मसजिद, मुसलमानों के नमाज़ पढ़ने का स्थान, [मज्जित, महजित (दे०)]।

मसीना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अलसी, तीसी।

मसीह, मसीहा—(संज्ञा, पु०, अ०) [वि० मसीही] ईसाई मत के धर्म-गुरु, हज़रत ईसा। "इलाजे दर्द-दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता" —[स्फु०]।

मसीहाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जीवित करने की शक्ति।

मसू*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मरू] मुश्किल, कठिनाई। [**मसूमसा**—(यौ०, दे०)] कठिनता से। **मुहा०**—**करके**-अति कठिनता से।

मसूड़ा, मसूढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्मश्रु] दाँतों को साधने वाला मांस।

मसूर—(संज्ञा, पु०, सं०) [मसूरी (दे०)]। एक द्विदल चिपटा अनाज जिसकी दाल बनाई जाती है।

मसूरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मसूर की दाल या बरी।

मसूरिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चेचक का एक भेद, शीतला, माता, छोटी माता या देवी।

मसूरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शीतला, चेचक, माता, देवी।

मसूरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) माता, चेचक, शीतला।

मसूस, मसूसनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मसूसना] भीतरी दुःख, दिल मसूसने का भाव, अन्तर्व्यथा, मसूसन।

मसूसना—(क्रि० अ०, दे०, फ़ा०) अफ़सोस या मनोवेग को रोकना, ज़ब्त करना, कुढ़ना, मन में दुख करना ऐंठना, निचोड़ना, मरोड़ना।

मसृण—(वि०, सं०) मृदु, चिकना और मुलायम, नरम, कोमल। [**मसृणता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]

मसेवरा†—(संज्ञा, पु०) [हि० माँस] माँस से बने हुए खाने के पदार्थ।

मसोसना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० मसूसना] मसूसना, मन मसोसना।

मसौदा—(संज्ञा, पु०) [अ० मसविदा] प्रथम बार का लिखा साधारण लेख जिसमें फिर से काट-छाँट हो सके, मसविदा, उपाय।—(दे) **बाज़**—(संज्ञा, पु०) [अ० बाज फ़ा० प्रत्य०] चालाक, धूर्त, अधिक युक्ति खोजने वाला। **मुहा०**—**गाँठना या बाँधना (बनाना)**-काम करने का उपाय या युक्ति सोचना।—**करना**-सलाह करना, युक्ति सोचना।

मस्करा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मसख़रा] मसख़रा। [**मस्करी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

मस्त—(वि०) [फ़ा० मि० सं० मत्त] प्रमत्त, मतवाला, नशे में चूर, मदोन्मत्त, सदा प्रसन्न चित्त या निश्चिंत रहने वाला, मदभरा, मग्न, प्रसन्न, आनंदित, यौवन मदपूर्ण।

मस्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) सिर, माथा, मत्था।

मस्तगी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० मस्तकी] एक गोंद जैसी औषधि। [**रूमीमस्तगी** (यौ०)]।

मस्ताना—(वि०) [फ़ा० मस्तानः] मस्तों की भाँति, मस्तों का सा। (क्रि० अ०, दे०) [फ़ा० मस्त] मस्त या मतवाला होना। (क्रि० स०) मस्त करना।

मस्तिष्क—(संज्ञा, पु०, सं०) मग़ज़, दिमाग़, भेजा, मस्तक का गूदा, बुद्धि के रहने का स्थान।

मस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मस्त होने की क्रिया या भाव, मतवालापन, मत्तता, मदमस्त होने पर कुछ पशुओं के मस्तक, कान, आँख आदि से स्रवित हुआ श्राव, कुछ विशेष वृक्षों या पत्थरों का स्राव। **मुहा०**—**झड़ना**-मस्ती उतरना।—**झाड़ना**-मस्ती दूर कर देना।

मस्तूल—(संज्ञा, पु०, पुर्त०) बड़ी नाव के बीच का खड़ा शहतीर जिसमें पाल लगाया जाता है। "हैं जहाज आते का मस्तूल आशकार"—कुं ज०।

मस्याधार—(संज्ञा, पु०, सं०) मसिपात्र, दावात।

मस्सा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मसा] मसा।

महँ*†—(अव्य०, दे०) [सं० मध्य] में। "मन महँ तर्क करन कपि लागे "—[रामा०]।

महँई*†—(वि०, दे०) [सं० महा] बड़ा भारी, महान्। (अव्य०) महँ में।

महँगई, महँगाई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० महँगी] महँगी, महार्घता।

महगा—(वि०, दे०) [सं० महार्घ] मूल्य बढ़ जाना, जिसका साधारण या उचित से अधिक मूल्य हो।

महगाई—(संज्ञा, स्त्री०) महँगी का भत्ता।

महँगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० महँगा+ई प्रत्य०] महँगापन, महँगा होने का भाव या उसकी दशा, महार्घता, अकाल, दुर्भिक्ष।

महंत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महत्—बड़ा] साधु-समूह या मठ का अधिष्ठाता। (वि०) प्रधान, मुखिया, श्रेष्ठ।

महंती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० महंत+ई प्रत्य०] महंत का भाव या पद।

मह—(अव्य०, दे०) [सं० मध्य] में। (वि०) [सं० महत्] महत्, बहुत, महा, अति, बड़ा, श्रेष्ठ।

महक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गमक] गंध, बास। [**महकदार** (वि०)]

महकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० महक+ना प्रत्य०] गंध या बास देना। [**महकाना**—(प्रे० रूप)]

महकमा, मुहकमा—(संज्ञा, पु०, अ०) भाग, सरिश्ता, सीग़ा, कार्य-विभाग।

महकान, महकनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० महक] गंध, बास।

महकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० महक] सुँघाना, बासना, बास देना, बसाना।

महकीला—(वि०, दे०) [हि० महक] सुगंधित, सुवासित।

महज़—(वि०, अ०) केवल, मात्र, सिर्फ़, शुद्ध, ख़ालिस।

महत्—(वि०, सं०) बड़ा, वृहत, महान्, सर्व-श्रेष्ठ। (संज्ञा, पु०, सं०) महत्तत्व, प्रकृति का प्रथम विकार, ब्रह्म, परमेश्वर।

महत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महत्व] बड़ाई, गुरुता, श्रेष्ठता, उत्तमता, महत्व।

महता, महतों—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महत] गाँव का मुखिया, महतों, मुंशी, मुहर्रिर। *(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० महत्ता] बड़ाई, अभिमान।

महताब—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चाँदनी, चंद्रिका महताबी या एक प्रकार की आतिशबाज़ी। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) चाँद, चन्द्रमा, महिताब।

महताबी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) एक तरह की आतिशबाज़ी, बाग आदि में चौकोर या गोल ऊँचा चबूतरा। (वि०) सफेद।

महतारी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० महत्तरा या माता] माता, माँ, अम्मा, [महतारी (दे०)]।

महतिया—(संज्ञा, पु०, दे०) चौधरी, मुखिया, महतों।

महती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नारदमुनि की वीणा, महिमा, महत्व, बड़ाई। (वि०, स्त्री०) बड़ी भारी। " अवेक्षमाणं महतीं मुहुर्मुहुः"—माघ०।

महतु*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महत्व] महत्व।

महत्तत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकृति का प्रथमा-कृति या विकृति या विकार जिससे अहंकार उत्पन्न होता है, जीवात्मा, बुद्धितत्व।

महत्तम—(वि०, सं०) सबसे बड़ा।—**समापवर्त्तक**—(पु०) २ से विभाजनीय बड़ी से बड़ी संख्या।

महत्तर—(वि०, सं०) दो पदार्थों में से एक श्रेष्ठ। "तुम लोक सिद्धि के साधन बने महत्तर"—पंत।

महत्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महत् का भाव, श्रेष्ठता, गुरुता, उत्तमता, महानता। [ग्रेटनेस]

महत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) महत् का भाव, गुरुता, बड़ाई, श्रेष्ठता, उत्तमता।—**पूर्ण**, **युक्त**, **शाली**—(वि०) महत्व वाला।

महदात्मा—(वि०, यौ०, सं०) महान् आत्मावाला, महाशय, महात्मा।

महन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मथन] मथन, नष्ट।

महना*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मथना] मथना, नष्ट करना। [**महनामथना**—(यौ०)] कलह, झगड़ा।

महनाय—(वि०, सं०) महान्।

महनीय—(वि०, सं०) सम्मान्य, पूजनीय, गौरव-पूर्ण।

महनु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मथन] मथन, विनाशक ।

महफ़िल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मजलिस, जलसा, समाज, सभा, नाच-गान का स्थान । [**महफ़िल** (वि०)] ।—**जमना**-जलसा लगना ।

महबूब—(संज्ञा, पु०, अ०) पिय, प्रेम-पात्र, प्यारा, प्रियतम । [**महबूबा** (स्त्री०)]

महमंत—(वि०, यौ०, दे०) [सं० महा+मत्त] मद-मस्त, प्रमत्त, मतवाला ।

महमद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मुहम्मद] मुहम्मद ।

महमह—(क्रि० वि०, दे०) [हि० महकना] सौरभ, सुगंधि या सुवास के साथ । [**महमही**—(संज्ञा, स्त्री०)] ' ज्यों सुकृति कीर्ति गुणी जनों की फैलती है महमही"—मैथली० ।

महमहा—(वि०) [हि० महमह] सुगंधित, सौरभीला । [**महमही** (स्त्री०)]

महमहाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० महमहा, महकना] सुगंधि देना, गमकना ।

महमा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० महिमा] महिमा, बड़ाई, महत्त्व ।

महमूद—(वि०, अ०) स्तुत, प्रशस्त, जिसकी तारीफ़ की गयी हो ।—**गजनवी**-(पु०) एक प्रसिद्ध मुसलमान शासक जिसने भारतवर्ष पर १७ हमले किये थे ।

महमेज़—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जूते में लगी लोहे की वह कीलदार नाल जिससे सवार घोड़े को एड़ लगाकर बढ़ाते हैं ।

महम्मद—(संज्ञा, पु०, दे०, अ०) मुहम्मद ।

महर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महत] जमींदारों आदि के लिये एक आदर प्रदर्शक शब्द (व्रज०), एक पक्षी, सरदार, नायक, कहार । [**महरि, महरी** (स्त्री०)] । " नन्द महर घर बजत बधाई री " —सूर० ।—**सुत**-(संज्ञा, पु०, सं०) महर का पुत्र, गोप । श्रीकृष्ण । " आना प्यारे महरसुत का देखने के लिए ही "—हरिऔध ।

महरम—(संज्ञा, पु०, अ०) मुसलमानों में कन्या का ऐसा निकट का सम्बन्धी जिसके साथ उसका ब्याह न हो सके जैसे, बाप, नाना, चाचा, मामा, आदि, भेद जानने वाला । (संज्ञा, स्त्री०) अँगिया या उसकी कटोरी । [**मलहम** (संज्ञा, पु०, दे०)] ।

महरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महत] नायक, सरदार, कहार । [**महरी** (स्त्री०)]

महराई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० महर+आई प्रत्य०] श्रेष्ठता, बड़ाई, प्रधानता ।

महराज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महाराज] देखिए महाराज । " तुम महराज, हमहूँ तौ कविराज हैं "—[स्फु०] ।

महराना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महर+आना प्रत्य०] महरों के रहने का स्थान । (संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० महा+राणा] महाराज (राज०) ।

महरानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखिए महारानी ।

महराब—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मेहराब] देखिए मेहराब ।

महरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० महर] व्रज मे प्रतिष्ठित घर की स्त्रियों के लिये सम्मान-सूचक शब्द, मालकिन, घर-वाली, एक पक्षी, दहिंगल (प्रान्ती०) ।

महरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कहारिन ।

महरूम—(वि०, अ०) वंचित, जिसे न मिले ।

महरेटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० महर+एटा प्रत्य०] श्रीकृष्णजी ।

महरेटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० महरेटा+ई प्रत्य०] श्रीराधिकाजी ।

महर्लोक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) १४ लोकों में से ऊपर का चौथा लोक (पुरा०) ।

महर्षि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रेष्ठ और बड़ा ऋषि, ऋषीश्वर ।

महल—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रासाद, बहुत बड़ा और सुन्दर कमरा, मकान या गृह, राज-भवन, अंतःपुर, रनिवास, अवसर, मौका ।

महल्ला, मुहल्ला—(संज्ञा, पु०, अ०) मुहाल, शहर का एक विभाग या खंड जिसमें बहुत से घर हों, टोला, पुरा ।

महसिल—(संज्ञा, पु०) [अ० मुहास्सिल] महसूल लेने या उगाहने वाला ।

महसूल—(संज्ञा, पु०, अ०) कर, लगान, भाड़ा, किराया, मालगुजारी, कार्य- विशेष के लिए किसी राजा या अधिकारी के द्वारा लिया गया धन ।

महसूस—(वि०, अ०) अनुभूत, ज्ञात, प्रगट । **मुहा०—करना—, होना**-अनुभव करना या होना ।

महँ*†—(अव्य०, दे०) [हि० महँ] में, महँ।

महा—(वि०, सं०) बड़ा, अत्यन्त भारी, अति अधिक, श्रेष्ठ, बहुत, बहुत बड़ा भारी, सर्वोत्तम, सबसे अधिक।—कंद–(पु०) लहसुन।—कल्प–(पु०) ब्रह्मा की पूर्णायु का समय, ब्रह्मकल्प।—काल–(पु०) महादेव जी। "करालं महाकाल कालं कृपालु"—[रामा०]।—काली–(स्त्री०) दुर्गा जी की एक मूर्ति।—काव्य–(पु०) वह प्रबंध काव्य जिसमें सब रसों, ऋतुओं प्राकृतिक दृश्यों, सामाजिक कृत्यों आदि का भिन्न-भिन्न सर्गों में वर्णन हो—जैसे रघुवंश। "सर्गबंधो महाकाव्यो..."—सा० द०। [एपिक पोयम]—कुम्भी–(पु०) कर्म-फल।—कुष्ट–(पु०) महाकोढ़, गलित कुष्ठ।—खर्व–(पु०) सौ खर्व की संख्या या अंक (गणि०)।—खाल–(पु०) महाखात, बड़ी खाड़ी।—गौरी–(स्त्री०) दुर्गाजी।—घोर–(पु०) बहुत भयानक या डरावना, ककरासिंही औषधि।—जंबू–(पु०) जामुन का बड़ा पेड़ या फल।—जन–(पु०) श्रेष्ठ पुरुष, सज्जन या साधु, धनी, रुपये का लेन-देन करने वाला, बनिया, भला मानुष, कोठीवाल। "महाजनो येन गतो स पंथः।" "सुनत महाजन सकल बुलाये"—[रामा०]।—जनी–(स्त्री०) रुपये-पैसे के लेने-देने का काम या व्यवसाय, कोठीवाली महाजनों के बही खाता लिखने की एक लिपि। [मुड़िया (दे०)]—जल–(पु०) समुद्र।—तत्व–(पु०) [सं० महत्तत्व] महत्तत्व।—तल–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) १४ भुवनों में से पृथ्वी से नीचे के सात लोकों में से ५वाँ लोक।—तीर्थ–(पु०) उत्तम या श्रेष्ठ तीर्थ, पुण्य क्षेत्र, पुण्य-स्थान, तीर्थराज।—तेजा–(वि०) प्रतापी, तेजस्वी।—दंडधारी–(पु०) यमराज।—दशा–(स्त्री०) मानव जीवन में किसी ग्रह विशेष का निर्धारित समय जो काफी समय का होता।—दान–(पु०) स्वर्गप्रद बड़े-बड़े दान, ग्रहणादि में नीचों को दिया गया दान। [महादानी, महादाता (वि०)]।—देव–(पु०) देवाधिदेव, शिव जी, शंकरजी।—देवी–(स्त्री०) दुर्गा जी, प्रधान राज-महिषी, पटरानी।—देश–(पु०) बड़ा देश जिसमें अनेक छोटे छोटे भूभाग हों।—द्वीप–(पु०) वह भूखंड जिसमें बहुत से देश हों। "सकल महाद्वीपन में भारी तुम एशिया बताओ"—बि० कु०। [महाद्वीपीय (वि०)]।—धन–(वि०) बड़ा भारी धनी, [महाधनी (दे०)] बड़े मूल्य का। "अंधस्यमे हृतविवेक महाधनस्य"—शंक०।—नंद–(वि०) मगधदेश का नन्दवंशीय एक परमप्रतापी राजा जिसके डर से सिकंदर पंजाब ही से लौट गया था, (इति०) (पु०) बहुत सुख, ब्रह्मानन्द, आत्मानन्द।—नाटक–(पु०) दस अंकों वाला नाटक जिसमें नाटक के संपूर्ण लक्षण हों (नाट्य०)।—नाभ–(पु०) एक मंत्र जिससे शत्रु के सब हथियार व्यर्थ हो जाते हैं (तन्त्र०)।—नाभ–(वि०, पु०) यश, अपयश, यशस्वी, निंदित।—निद्रा (स्त्री०) मरण, मृत्यु।—निधान–(पु०) शोधा पारा जिसे बावन तोले पाव रत्ती कहते हैं, बुभुक्षित, धातु-भेदी पारा, मरण, मृत्यु।—नियुक्तक–(पु०) प्रधान अभिकर्त्ता, प्रमुख मुख्तार। [पटार्नी जनरल]—निर्वाण–(पु०) परममोक्ष, परिनिर्वाण जिसके अधिकारी केवल बुद्ध और अर्हन् माने जाते है, (बौद्ध, जैन) महामुक्ति या मोक्ष।—निशा–(स्त्री०) प्रलय की रात्रि, कालरात्रि।—पथ–(पु०) राजमार्ग, सड़क, पक्की सड़क, मृत्यु।—पद्म–(पु०) नौ निधियो में से एक निधि। (यौ०) श्वेत कमल, सौ पद्म की संख्या (गणि०)।—पद्मक–(पु०) एक साँप, एक निधि।—परिदर्शक–(पु०) प्रधान निरीक्षक। [इंस्पेक्टर जनरल]—पातक, पाप–(पु०) बड़ा भारी पाप, जैसे—गुरु पत्नी गमन, ब्रह्महत्या, चोरी, मद्यपान तथा इन पापियों का संग।—पातकी–(वि०, पु०) [सं० महापातकिन्] महा पाप करने वाला, जैसे—ब्रह्महत्यारा।—पात्र–(पु०) श्रेष्ठ ब्राह्मण, (प्राचीन) मृतक कर्म में दान लेने योग्य ब्राह्मण, महाब्राह्मण, कट्टहा (ग्रा०)।—पुरुष–(पु०) श्रेष्ठ पुरुष, महानुभाव धूर्त, चालाक (व्यंग्य) महात्मा, नारायण।—प्रभु–(पु०) वैष्णव संप्रदाय के श्रेष्ठ पुरुषों की एक पदवी, जैसे—चैतन्य महाप्रभु, वल्लभ महाप्रभु। [महाप्रभुता—(संज्ञा, स्त्री०)] बड़ा ऐश्वर्य।—प्रयाण–(पु०) महाप्रस्थान।—प्रलय–(पु०) सबसे बड़ा प्रलय जब प्रकृति और पुरुष या अनन्त जल के अतिरिक्त सब का विनाश हो जाता है।—प्रसाद–(पु०) नरायण या देवताओं का प्रसाद, जगन्नाथ जी पर चढ़ा हुआ भात, मांस (व्यंग)।—प्रस्थान–(पु०) शरीरत्याग की इच्छा से हिमालय की ओर जाना, मरण, मृत्यु, शरीर त्याग, देहान्त।—प्राण–(पु०) अधिक प्रेरित प्राण-वायु,

के द्वारा उच्चरित होने वाले वर्ण, हिन्दी-वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग के दूसरे और चौथे वर्ण शेष पहले और तीसरे के अल्पप्राण हैं।—**बल**–(वि०) अत्यंत बली या पराक्रमी। "जयत्यतिबली रामः लक्ष्मणश्च महाबलः"—वाल्मी०।—**बलाधिकृत**–(संज्ञा, पु०, सं०) प्रधान सेनापति। [चीफ आफ जनरल स्टाफ]—**बली**–(वि०) अत्यंत बली।—**बाहु**–(वि०) आजानु, लंबी भुजाओं वाला, आजानुबाहु, बलवान।—**बोधि**–(संज्ञा) बुद्ध भगवान।—**ब्राह्मण**–(संज्ञा) महापात्र, कट्टहा।—**भाग**–(संज्ञा) बड़ा हिस्सा। (वि०) परम भाग्यशाली, महानुभाव।—**भागवत**–(पु०) परम वैष्णव, भागवत पुराण, छब्बीस मात्राओं का छंद (पिं०)।—**भारत**–(पु०) श्री व्यासकृत १८ पर्वो का एक प्राचीन परम प्रख्यात ऐतिहासिक महाकाव्य ग्रंथ जिसमे कौरवों और पांडवो के युद्ध का वर्णन है। कौरव-पांडव-युद्ध, कोई बड़ा ग्रंथ, कोई बड़ा युद्ध।—**भाष्य**–(पु०) श्री पाणिनि के सूत्रों पर श्री पातंजलि का भाष्य (व्याक०)।—**भूत**–(पु०) पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँचो तत्व या पंच-महाभूत।—**मंत्र**–(पु०) बड़ा और प्रभावशाली मंत्र, बड़ा मन्त्र, अच्छी सलाह या मंत्रणा। "महामंत्र जोइ जपत महेशू"—[रामा०]।—**मंत्री**–(पु०) प्रधान मंत्री, मुख्यामात्य।—**मति**–(वि०) बड़ा बुद्धिमान्।—**मरण**–(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्युतुल्य कष्ट भारी, विपत्ति। किसी उच्च कार्य के प्रसंग से मृत्यु। "महामरण में ही जीवन है"—बचन।—**महिमा**–(वि०) महान् महिमा वाला, महापुरुष।—**महोपाध्याय**–(पु०) गुरुओं का गुरु; भारत मे एक उपाधि जो संस्कृत के विद्वानों को सरकार देती है (वर्तमान)।—**मांस**–(पु०) गो-मांस नर-मांस।—**माई**–(स्त्री०) दुर्गा देवी, काली जी, महामाता।—**माया**–(स्त्री०) प्रकृति, गंगाजी, दुर्गाजी, आर्या छंद का १२वां भेद (पिं०)।—**मारी**–(स्त्री०) [मरी दे०] हैजा, प्लेग, ताऊन, एक भीषण संक्रामक रोग जिसमे बहुत से लोग एक साथ मरते है।—**मृत्युंजय**–(पु०) महादेव जी, शिव या महाकाल के प्रसन्नतार्थ एक मंत्र।—**मेदा**–(स्त्री०) एक कंद।—**मोदकारी**–(संज्ञा, पु०, सं०) क्रीड़ाचक्र, एक वर्णिक वृत्त (पिं०)।—**यज्ञ**–(पु०) नित्य किये जाने वाले पंच महायज्ञ या कर्म, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, नृयज्ञ (धर्मशा०)।—**यात्रा**–(स्त्री०) मरण, मृत्यु, परलोक यात्रा।—**यान**–(पु०) बौद्धों के तीन संप्रदायों में से एक।—**युग**–(पु०) चतुर्युगी, चतुर्युग-समूह, सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग इन चारों युगों का योग।—**यौगिक**–(पु०) २६ मात्राओं के छंद (पिं०)।—**रथ**–(पु०) बहुत बड़ा रथी, योद्धा। "सर्व एव महारथाः"—[भ० गी०]।—**रथी**–(पु०) महारथ।—**राज**–(पु०) बहुत बड़ा राजा, सम्राट्, राजाधिराज, ब्राह्मण, गुरु आदि के लिये संबोधन शब्द। [**महारानी, महाराज्ञी** (स्त्री०)]।—**राजाधिराज**–(पु०) बहुत बड़ा चक्रवर्ती राजा सम्राट्।—**राणा**–(पु०) उदयपुर, मेवाड़ और चित्तौड़ के राजपूतराजाओं की उपाधि। [**महाराणी** (स्त्री०)]।—**रात्रि**–(स्त्री०) [महारात (दे०)] महाप्रलय की रात्रि, जब ब्रह्मा का लय होकर दूसरा महाकल्प होता है (पुरा० ज्यो०)।—**रानी**–(स्त्री०) [सं० महाराज्ञी] सबसे बड़ी रानी, महाराज्ञी, महाराणी, महाराज की स्त्री।—**राव**–(पु०) बड़ा रईस या राजा।—**रावण**–(पु०) बड़ा रावण जिसके एक हजार तो मुख और दो हजार हाथ थे (पुरा०)।—**रावल**–(पु०) जैसलमेर और डूंगरपुर आदि के राजाओं की उपाधि।—**राष्ट्र**–(पु०) दक्षिणीय भारत का एक प्रदेश, वहाँ के निवासी, बहुत बड़ा राष्ट्र या राज्य, दक्षिणीय ब्राह्मणो की एक उपाधि या जाति।—**राष्ट्री**–(स्त्री०) मराठी या मरहठी भाषा या बोली, महाराष्ट्र की एक प्रकार की प्राकृतिक भाषा (प्राचीन)।—**राष्ट्रीय**–(वि०) महाराष्ट्र सम्बन्धी।—**रुद्र**–(पु०) महादेव या शिवजी।—**रोग**–(पु०) बहुत बड़ा रोग, क्षय, यक्ष्मा, दमा आदि (वैद्य०)। [**महारोगी** (वि०)]।—**रौरव**–(पु०) एक बड़े नरक का नाम।—**लक्ष्मी**–(स्त्री०) लक्ष्मी जी की एक मूर्ति, एक वर्णिक छंद (पिं०)।—**वारुणी**–(स्त्री०) गंगा-स्नान का एक योग।—**विद्या**–(स्त्री०) दश देवियाँ, तारा, काली, भुवनेश्वरी, षोडशी, भैरवी, छिन्नमस्ता, बगलामुखी, धूमावती, मातंगी, कमलात्मिका, दुर्गादेवी (तंत्र०)।—**वीर**–(पु०) हनुमानजी। "महावीर विक्रम बजरंगी"—[हनु०]। गौतम बुद्ध, जैनियों के चौबीसवें जिन या तीर्थंकर। (वि०) बहुत ही बड़ा बहादुर।—**व्याहृति**–(स्त्री०) भूः, भुवः, स्वः, ये ऊपर के तीन लोक, परमेश्वर के गौणिक नाम।—**शंख**–

(पु०) सौ शंख की संख्या (गणि०)।—**शक्ति**-(पु०) शिवजी, महादेव जी। [**दुर्गादेवी** (स्त्री०)]—**श्वेता**-(स्त्री०) सरस्वती, कादम्बरी ग्रंथ में एक नायिका।—**साहस**-(पु०) निधड़क, निर्भय, निर्भीक।—**सेनानी**-(पु०) प्रधान सेनानी। [लार्ड लेफ्टिनेंट]

महाई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० महना+आई प्रत्य०] मथने का कार्य या मजदूरी।

महाउत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० महावत] महावत, हथवाल।

महाउर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० महावर] महावर, यावक।

महातम*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माहात्म्य] माहात्म्य, बड़ाई। "कमल-नयन को छोड़ महातम और देव को गावे"—सूर०।

महातमा—(संज्ञा, पु०, दे०) उच्चात्मा, बड़ा संन्यासी; महात्मा (सं०)।

महात्मा—(पु०) उच्चात्मा या उच्चाशय वाला, महाशय, महानुभाव, बहुत बड़ा साधु या संन्यासी, [महातमा (दे०)]।

महान्—(वि०) उन्नत, विशाल, विशद, बड़ा भारी। [**महानता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

महानुभाव—(संज्ञा, पु०) महाशय, महापुरुष, महात्मा, माननीय या आदरणीय पुरुष। "महानुभाव महान अनुग्रह हम पै कीन्ही"—रत्ना०।

महानुभावता—(संज्ञा, स्त्री०) श्रेष्ठता। "कहो कहाँ न रावरी महानुभावता रही"—सरस।—**न्यायसभा**-(पु०) महापंचायत [अँगरेज़ूरी]।

महामालिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लघुदीर्घ के क्रम से १६ वर्णों का नाराच छंद। (पिं०) या ५ जगण और अंत्य गुरु का एक छंद।

महाय*—(वि०, दे०) बहुत, महान्। "तब जानहु मुनिवर परम, रूप अनूप महाय"—[रामा०]।

महारंभ—(वि०) बहुत ही बड़ा, महान् आरम्भ वाला।

महार्घ—(वि०) [सं० महा+अर्घ] बहुमूल्य, [महर्घ (दे०)] बड़े मूल्य का कीमती, महँगा। [**महार्घता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

महाल—(संज्ञा, पु०) [अ० महल का बहु०] टोला, पाड़ा, मुहल्ला, पट्टी, हिस्सा, भाग, मुहाल, वह भू-भाग जिसमें कई गाँव या जमींदार हों (बन्दो०)।

महालय—(संज्ञा, पु०, सं०) पितृपक्ष, महाप्रलय।

महालया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पितृ विसर्जनी अमावस्या (आश्विन् कृष्ण)।

महावट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० माह =माघ+वट] माघ-पूष की वर्षा, जाड़े की वर्षा या झड़ी। [**अक्षयवट** (संज्ञा, पु०, यौ०)]

महावत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महामात्र] हथवाल, फीलवान, हाथी हाँकने वाला, हाथीवान।

महावतारी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० महावतारिन्] २५ मात्राओं के छंदों की संज्ञा (पिं०)।

महावर—(संज्ञा, पु०) [सं० महावर्ण] यावक, सौभाग्यवती, स्त्रियों के पैर रँगने का लाल रंग, लाक्षारस। (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महा वरदान।

महावरी—(संज्ञा, पु०) [हिं० महावर] महावर की गोली या टिकिया, लाल रंग।

महाशय—(पु०) उच्च आशय वाला पुरुष, महात्मा, सज्जन, महानुभाव, महापुरुष।

महि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि, पृथ्वी, [मही (दे०)]। "उलटौं महि जहँ लग तव राजू"—[रामा०]।—**देव**-(पु०) ब्राह्मण। "जो अनुकूल होहिं महिदेवा"—[रामा०]।—**तल**-(पु०) भूतल।

महिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कर्ज, ऋण।

महिख*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महिष] भैंसा। "महिख खाय करि मदिरा, पाना"—[रामा०]। [**महिखासुर** (यौ०)]

महिजा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीता।

महिजात—(संज्ञा, पु०, सं०) भौम।

महिपाल*—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा, महिपति, महीश। "बोले बंदी बचन वर सुनहु सकल महिपाल"—[रामा०]।

महिमा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० महिमन्] प्रभाव, माहात्म्य, गौरव, महत्व, प्रताप, बड़ाई, महत्ता। "महिमा अगम अपार"—[स्फु०]। आठ सिद्धियों में से एक ५वीं सिद्धि जिससे सिद्ध योगी अपने को बहुत बड़ा बना सकता है।

महिमान—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० मेहमान] मेहमान, पाहुना, [**महिमानी** (स्त्री०)]। (यौ०) पृथ्वी की माप।

महिम्न—(संज्ञा, पु०, सं०) शिवस्तोत्र। "महिम्नः पारंते......।"

महियाँ*—(अव्य०, दे०) [सं० मध्य] में। "प्रगटे भूतल महियाँ"—सुर०।

महियाउर†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० मही + चाउर] मट्ठे में पके चावल, खट्टी खीर, महेरी (ग्रा०)।

महिला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सज्जन स्त्री, नेक औरत।—**मताधिकार**-(पु०) महिलाओं का मत देने का अधिकार। [वोमन सफ्रेज]

महिष—(संज्ञा, पु०, सं०) भैंसा, [**महिषी** (स्त्री०)]। "कहुं महिष मानुष धेनु खर अजया निशाचर भक्षही"—[रामा०]। शास्त्रानुकूल अभिषिक्त राजा, एक दैत्य जिसे दुर्गा जी ने मारा था।

महिष, मर्दिनी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) दुर्गाजी।

महिषासुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रंभ दैत्यात्मज भैंसे के आकार का एक दैत्य जिसे दुर्गाजी ने मारा था। "जय सुरहित कारिणि महिषासुर संहरिणि दुर्गामाता"—गिरीश।

महिषी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भैंस, रानी या पटरानी, सैरिंध्री। "जनक-पाट-महिषी जग जाना" —[रामा०]।

महिषेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) यमराज, महिषासुर '

महिसु, महीसुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महिदेव, ब्राह्मण। "सुर महिसुर हरिजन अरु गायी" —[रामा०]।

मही—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मिट्टी, पृथ्वी, भूमि, जमीन, स्थान, देश। नदी। एक की संख्या, एक छंद जिसमें एक लघु और एक गुरु होता है (पिं०)। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंथित] मट्ठा, माठा, छाँछ। "दही-मही बिलगाय"—रहीम।—**तल**-(पु०) संसार, जगत, भूतल। "भूपति कौन महीतल में"—[रफु०]।—**धर**-(संज्ञा, पु०, सं०) पर्वत, पहाड़, शेषजी, एक वर्णिक छंद (पिं०), वेद-भाष्यकार एक विद्वान्। "तुरत महीधर एक उपारा"—[रामा०]।—**प**-(पु०) राजा। "अपभय सकल महीप डराने" —[रामा०]।—**पति**-(पु०) राजा। "भूमिसुता जिनकी पतिनी किमि राम महीपति होहिं गोसाईं"—[रफु०]।—**पाल**-(पु०) राजा। "अलम् महीपाल तवश्रमेण"—रघु०।—**भृत्**-(पु०) पहाड़, राजा।—**रुह**-(पु०) पेड़, वृक्ष।—**सुर**-(पु०) महिसुर, ब्राह्मण। "बंदौ प्रथम महीसुर चरना"—[रामा०]।

महीन—(वि०, दे०) [सं० महा + क्षीन-पतला, हिं०] झीना, बारीक, पतला, धीमा, कोमल, मंद (स्वर या शब्द)। "सारी महीन पीन हीन कटि शोभा देति"—मन्ना०।

महीना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मास] पंद्रह-पंद्रह दिनों के दो पक्षों का समय, मास, माह, मासिक-वेतन, स्त्रियों का माहवारी, रजोदर्शन, मासिक-धर्म।

महीश—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा, महीश्वर।

महुँ*—(अव्य०, दे०) [हिं० महँ] में।

महुअर, महुवर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मधुकर] एक प्रकार का बाजा, तूँबी, तोमड़ी, [मौहर (दे०)] इन्द्रजाल का खेल जो महुवर बजा कर किया जाता है।

महुआ, महुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मधूक० प्रा० महुआ] एक बड़ा वृक्ष, इस वृक्ष के फूल जिनसे शराब भी बनती है। "महुआ नित उठि दाख सों, करत बतकही जाय"—गिर०।

महुआरी—(संज्ञा, स्त्री०) महुए का बाग।

महुर्छा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० महोच्छव, सं० महोत्सव] महोत्सव, बड़ा उत्सव।

महुवरि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मधुकर] मौहर या महुअर बाजा, तूँबी।

महूख*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मधूक] महुआ, मुलैठी, जेठीमधु। "ऊख मैं महूख में पियूख मैं न पाई जाय"—भट्ट०।

महूरत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुहूर्त] मुहूर्त सायत। "लगन, महूरत, जोग-बल, तुलसी गनत न काहि"—तुलसी।

महेंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, इन्द्र, सातकुल पर्वतों में से भारत का एक पहाड़। "महेंद्रः किंकरिष्यति"—[भा० द०]। [**महेन्द्राचल** (यौ०)]।—**वारुणी**-(स्त्री०) बड़ा इंद्रायण।

महेर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मही] मट्ठे में पके चावल। (संज्ञा, पु०, दे०) झगड़ा, बखेड़ा, लड़ाई। [**महेरी** (स्त्री०)]

महेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० महेर] मट्ठे में पके चावल।

महेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० महेरा] नमक-मिर्च से खाने की उबाली ज्वार, महेर, महेरा,

मट्ठे में पके चावल। (वि०, दे०) [हिं० महेर] अड़चन डालने वाला।

महेला—(संज्ञा, पु०, दे०) पानी में पकाया मोथी आदि अन्न, घोड़े का भोजन।

महेश—(संज्ञा, पु०, सं०) महादेवजी, ईश्वर, महेश्वर।

महेशान—(संज्ञा, पु०, सं०) महादेवजी। "नमस्कृत्य महेशानम्"—[सि० चं०]।

महेशी, महेशानी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती जी।

महेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) महादेव, शिवजी। [महेसुर (दे०)]।

महेष्वास—(संज्ञा, पु०, सं०) महा धनुष-धारी। "अत्र शूराः महेष्वासाः"—[भ० गी०]।

महेस, महेसुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महेश] महादेवजी।

महैला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बड़ी लाइची। डोंडा लाइची।

महोक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) बैल, साँड़। "महोक्षतां वत्सतरः स्पृशन्निव"—रघु०।

महोखा, महोखर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मधूक] तेज दौड़ने किन्तु न उड़ने वाला एक पक्षी। [**महोखरी** (स्त्री०)]।

महोगनी—(संज्ञा, पु०, अ०) एक पेड़ जिसकी लकड़ी टिकाऊ, दृढ़ और सुन्दर होती है।

महोच्छव, महोछा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० महोत्सव] महोत्सव। [महोछव (दे०)] बड़ा उत्सव। "जीव जंतु भोजन करहिं, महा महोच्छव होय"—[नीति०]।

महोत्पल—(संज्ञा, पु०, सं०) पद्म, कमल। "मुखारविंदानि महोत्पलानि"—[स्फु०]।

महोत्सव—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ा उत्सव, जलसा।

महोदधि—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र।

महोदय—(संज्ञा, पु०, सं०) आधिपत्य, स्वर्ग, महाशय, स्वामी, कान्यकुब्ज देश। [**महोदया** (स्त्री०)]। (**संज्ञा,** पु०) बड़ा भाग्य का उदय।

महोदर—(वि०, सं०) बड़े पेटवाला। (पु०) एक राक्षस।

महोन्नत—(वि०, सं०) ऊँच्चा, उन्नत।

महोपाध्याय—(संज्ञा, पु०, सं०) पंडित, योग्य अध्यापक।

महोबा—(संज्ञा, पु०) हमीरपुर जनपद के अन्तर्गत एक कसबा जो आल्हा-ऊदल का निवासस्थान था और यहीं चंदेल राजाओं की राजधानी थी।

महोला*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मुहेल] बहाना, हीला-हवाला, चकमा, धोखा।

महोसा—(संज्ञा, पु०, दे०) लहसन, तिल।

महौषधि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अनीस, सोंठ। शतावरि, दूब, औषधि, जड़ी। **लो०**—"रोध्रमहौषधि मोचरसानाम्"—(वि०) उत्तम या श्रेष्ठ औषधि।

मह्यौ—(संज्ञा, पु०, दे०) मट्ठा, माठा, तक्र, मही, माठा।

माँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातृ] माता, अम्बा, अम्मा। [**माँजाया**—(यौ०)] सगा भाई। (अव्य०) [सं० मध्य] में, अव्य० (सं०) मत, न। **—बाप**—(पु०) माता-पिता।

माँखना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मक्षण] अप्रसन्न या रुष्ट होना, क्रोध करना, बुरा मानना। [**माख** (संज्ञा, पु०)]। **मुहा०—माँख मानना** "माखे लखन कुटिल भई भौंहें"—[रामा०]। "माखि मानि बैठो एंठि लडिलो महारो ताको"—रत्ना०।

माँखी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मक्षिका] मक्खी, मक्षिका।

माँग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० माँगना] माँगने की क्रिया या भाव, चाह, खींच, अधिक खपत या बिक्री से किसी वस्तु की आवश्यकता। **—जाँच कर**-(अ०) इधर-उधर से ले लिवाकर। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मार्ग] सिर के बालों की मध्यवर्तिनी रेखा जो बालों को दो भागों में बाँटती है, सीमंत। "बिन सीसहिं माँग सँवारति आवै"—स्फु०। **—टीका**-(पु०) माँग पर का एक गहना। **मुहा०—कोख से सुखी रहना या जुड़ाना**-स्त्रियों का सौभाग्यवती और सतानवती रहना। **—पट्टी करना**-बालों में कंघी करना। **—भरी रहना**-स्त्री का सधवा या सौभाग्यवती रहना।

माँगन, मंगन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० माँगना] माँगना क्रिया का भाव, भिखारी, भिक्षुक। "मंगन लहहिं न जिनके नाहीं"—[रामा०]।

माँगना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मार्गण=याचना] याचना, इच्छा-पूर्ति के लिए कहना, चाहना करना । [**मँगाना**—(स० रूप)] [**मगवाना**—(प्रे० रूप)] ।

माँगलिक—(वि०, सं०) कल्याण या मंगलकारी, मांगलीक । (संज्ञा, पु०) नाटक मे मंगलपाठ पढ़ने वाला पात्र ।

माँगल्य—(वि०, सं०) कल्याणकारी, शुभ । (संज्ञा, पु०) मंगल का भाव ।

माँचना, मचना*‡—(क्रि० अ०, दे०) [हि० मचना] आरम्भ या शुरू होना, जारी या प्रसिद्ध होना, मचना (हि०) ।

माँचा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंच] पलंग, खाट, मचान, पीढ़ी, मंझा (प्रान्ती०) ।—**माँची, मँचिया** (स्त्री०, अल्पा०)] छोटी खाट ।

माँछ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मत्स्य] मछली, मांस ।

माँजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मंजन] किसी देहादि या पदार्थ को रगड़कर साफ करना ।—**माँझा देना**–शीशे का चूर्ण और सरेस आदि से डोर (पतंग) को दृढ़ करना । [**मँजाना**—(स० रूप)] [**मँजवाना**—(प्रे० रूप)] । (क्रि० अ०) अभ्यास करना ।

माँजर*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० पंजर] ठठरी, पंजर ।

माँजा—(संज्ञा, पु०, दे०) पहली वर्षा के पानी का फेन जो मछलियों के लिए हानिकारक होता हैं । " माँजा मनहु मीन कहँ व्यापा "—[रामा०] ।

माँझ*†—(अव्य०, दे०) [सं० मध्य] मे, मध्य, भीतर, **माँहि**, [मज्झ (दे०)] । *† (संज्ञा, पु०, दे०) अंतर, भेद, फरक ।

माँझा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मध्य] नदी के मध्य का टापू या द्वीप, पगड़ी में बाँधने का गहना, वर या कन्या के पीले वस्त्र, पेड़ की पेंड़ी या तना । (संज्ञा, पु०, दे०) पतंग की डोरी या नख पर लगाने का कलफ । मुहा०—**ढीला होना**–कमजोरी का अनुभव होना ।

माँझिल*†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० मध्य] बीच का, बिचला ।

माँझी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मध्य] नाव खेने या चलाने वाला, मल्लाह, केवट, झगड़ा निवटाने वाला, मामला तय करने वाला, मध्यस्थ ।

माँट—(संज्ञा, पु०, दे०) मटका, बड़ा घड़ा, कूंडा, अटारी, अट्टालिका ।

माँठ—(संज्ञा, पु०, दे०) चीनी में पगा पक्वान्न, मटका, बड़ा घड़ा, कूँड़ा (प्रान्ती०) ।

माँड़—(संज्ञा, पु०, दे०) उबाले हुए चावलों का लसदार पानी, पीच ।

माँड़ना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० मंडन] मलना, गूँधना, सानना, पोतना, सजाना, बाल से अन्न के दाने निकालना, मचाना, प्रारंभ करना, पोतना, बनाना । [**मँड़ाई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)] ।

माड़नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मंडन] गोट, मगजी, किनारी ।

माँडलिक—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़े राजा को कर देने वाला, छोटा राजा, माँडलीक, मंडल या प्रान्त का शासक ।

माँड़व—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंडप] विवाहादि का मडप, [मँड़वा, माँडव (दे०)] ।

माँडवी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० माण्डवी] राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो भरत जी को ब्याही गई थी (वाल्मी०) ।

माँडव्य—(संज्ञा, पु०) [सं० माण्डव्य] एक ऋषि जिन्होंने यमराज को शूद्र होने का शाप दिया था (पुरा०) ।

माँड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंड] एक नेत्र रोग जिसमें पुतली के ऊपर महीन झिल्ली सी छा जाती है । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंडप] मंडप, मँड़वा । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० माड़ना =गूँधना] मैदे की बहुत ही पतली रोटी या पूड़ी, लुचुई, उलटा, पराठा ।

माँड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मंड] भात या पके चावलों का पसावन, पीच, माँड़, कपड़े आदि का कलफ ।

मांडूक्य—(संज्ञा, पु०, दे०) एक उपनिषद् ।

माँड़ौ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मडप] मंडप, मँड़वा, माँडव ।

मांड्यो*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मडप] अतिथिशाला, विवाह का मंडप, [माँडव, मँड़वा (दे०)] ।

माँढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंडप] मंडप, मढ़ा, कोठरी ।

मौंत*—(वि०, दे०) [सं० मत्त] मतवाला, मस्त उन्मत्त । (वि०, दे०) [हिं० मात-मंद] [माता (दे०)] उदास, हतप्रभ, श्रीहत ।

मौंतना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मत+ना हि० प्रत्य०] पागल या उन्मत्त होना ।

मौंता*†—(वि०, दे०) [सं० मत्त] मतवाला ।

मांत्रिक—(संज्ञा, पु०, सं०) तंत्र-मंत्र करने या जानने वाला ।

मौंद—(वि०, दे०) [सं० मंद] मौंदा, उदास, श्रीहत, मुकाबिले में बुरा या हलका, पराजित, मात, हारा हुआ । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) हिंसक जंतुओं के रहने का बिल, चुर, गुफा, खोह ।

मौंदगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बीमारी, रोग ।

मौंदर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मर्दल] मृदंग, मर्दल ।

मौंदा—(वि०) [फ़ा० मौंदः] सुस्त, थका, श्रमित, शिथिल, बचा हुआ, शेष, रोगी, बीमार । [**थकामौंदा** (यौ०)] ।

मौंद्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मंदता, मंद होने का भाव ।

मौंधाता—(संज्ञा, पु०) [सं० मांधातृ] मान्धाता, एक सूर्य वंशीय राजा । " मांधाता च महीपतिः "—भो० प्र० ।

मौंपना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० मौंतना] नशे में मस्त या चूर होना, उन्मत्त होना । (क्रि० स०, दे०) नापना, मापना ।

मौंयँ—(अव्य०, दे०) [सं० मध्य] में, मध्य, बीच, माँहि, मौंह ।

मौंस, मास—(संज्ञा, पु०, सं०) देह की चर्बी और रेशेदार नर्म लाल पदार्थ, गोश्त, मास ।—**पेशी**-(स्त्री०) शरीर के भीतर का माँस-पिंड ।—**भक्षी**-(पु०) माँसाहारी ।

मौंसल—(वि०, सं०) माँसपूर्ण, माँस से भरा हुआ, मोटा-ताजा, हृष्ट पुष्ट । (संज्ञा, पु०) गौडी रीति का एक गुण (काव्य०) ।

मौंसाहारी—(संज्ञा, पु०) [सं० मौंसाहारिन्] माँस-भक्षी, माँस खाने वाला । [**मांसाहारिणी** (स्त्री०)] ।

मौंसु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मांस] मांस, माह, महीना, मास ।

मांसोपजीवी—(संज्ञा, पु०, सं०) मांस का विक्रय करके जीविका चलानेवाला ।

मौंह, मौंझ*†—(अव्य०, दे०) [सं० मध्य] में, मध्य, बीच, मँझियाँ, माँहिं ।

मौंहा*†—(अव्य०, दे०) [सं० मध्य] में, बीच, माँहि, मध्य ।

मौंहि, मौंही*†—(अव्य०, दे०) [सं० मध्य] में मध्य, बीच । " तेहि छिन माँहिं राम धनु तोरा "—[रामा०] । " कहु खगेस अस को जग माहीं "—[रामा०] ।

मा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्री, लक्ष्मी, प्रकाश, दीप्ति, माता । (अव्य०, सं०) निषेध, मत, यथा-मा कुरु । (अव्य०, दे०) में ।

माइ, माइ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातृ] मातृ-पूजनार्थ बनाया गया छोटा पुआ । **मुहा०**—**माइन में थापना**-पितरों के तुल्य सम्मान करना । (संज्ञा, स्त्री०, अनु०) लड़की, कन्या । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातुलानी] मामा की स्त्री ।

माइ, माई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातृ] माता, माँ ।—**का लाल**-(यौ०) उदार चित्त पुरुष, शूरवीर, बली, साहसी । बूढ़ी स्त्री का संबोधन ।

माइका, मायका—(संज्ञा, पु०, दे०) स्त्री या कन्या के पिता का घर, पीहर (प्रान्ती०) ।

माकूल—(वि०, अ०) वाजिब, ठीक, उचित, योग्य, अच्छा, मुनासिब, जो विवाद में प्रतिपक्षी की बात मान ले ।

माख*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मक्ष] पश्चात्ताप, नाराजी, अप्रसन्नता, अपना दोष छिपाना, क्रोध, अभिमान, रुष्टता, बुरा । **मुहा०**—**मानना**-बुरा या बिलग मानना । " माख मानि बैठी ऐंठि लाडिलो हमारो ताको "—रत्ना० ।

माखन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंथज] नवनीत, नैनू, कच्चा घी, मक्खन । [—**चोर** (यौ०)] श्रीकृष्णजी ।

माखना*†—(क्रि० अ०) [हिं० माख] बुरा मानना, पछताना, नाराज या अप्रसन्न होना, क्रोध करना । " माखे लषन कुटिल भईं भौंहें "—[रामा०] । " अब जनि कोऊ माखै भटमानी "—[रामा०] ।

माखी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मक्षिका] मक्षिका, मक्खी, सोनामक्खी, माछी (ग्रा०) । " भामिनि भइउ दूध की माखी "—[रामा०] ।

मागध—(संज्ञा, पु०, सं०) विरुदावली कहने वाली एक प्राचीन जाति, भाट, जरासंध। "मागध, सूत, बंदि गुण-गायक"—[रामा०]। (वि०—सं०) मगध देश का।

मागधिक—(वि०, सं०) मगध सम्बन्धी। (पु०) मगध-नरेश।

मागधी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मगध देश की प्राचीन बोली या प्राकृतिक भाषा, इसका एक भेद अर्ध मागधी थी।

माघ—(संज्ञा, पु०, सं०) पूस के बाद और फाल्गुन से पूर्व का एक चांद्र महीना, संस्कृत के एक विख्यात कवि, इनका रचा हुआ संस्कृत-काव्य-ग्रंथ, वृहत् त्रया महाकाव्यों में से प्रथम है।—**काव्य**-(पु०) शिशुपालवध। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माध्य] कुंद का फूल।

माघी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० माघ+ई प्रत्य०] माघ की पूर्णमासी या अमावस्या। (वि०) माघ का, जैसे—माघी मिर्च। [**माघीय** (वि०)]।

माच*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंच] मचान, पलँग, कुरसी, बड़ी मचिया।

माचना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० मचना] आरंभ होना, छिड़ना, होना।

माचल*†—(वि०, दे०) [हि० मचलना] मचलने वाला, हठी, मनचला जिद्दी।

माचा+—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंच] बड़ी खाट, पलँग, मचान, कुरसी, बड़ी मचिया।

माची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मंच] छोटा पलँग या खाट, खटिया, छोटा माचा, मचिया, कुरसी।

माछ‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मत्स्य] मच्छ, मछली।

माछा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मच्छड़] मच्छड़, मसा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मत्स्य] मछली, मच्छ।

माछी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मक्षिका] मक्षिका, मक्खी, [माखी (दे०)]।

माजरा—(संज्ञा, पु०, अ०) मामला, हाल, वृत्तांत, घटना, वारदात।

माजून—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) माजुम (दे०) मीठा अवलेह (औष०)।

माजू—(संज्ञा, पु०) एक झाड़ जो सरों की शकल का होता है।—**फल**-(स्त्री०) माजू झाड़ी का गोंद या एक फल जो औषधि और रँगाई के काम आता है।

माझी—(संज्ञा, पु०, दे०) माँझी, मल्लाह।

माट—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मटका] बड़ा मटका या घड़ा, रंगरेजों के रंग रखने का बरतन, मठोर (प्रान्ती०)।

माटा—(संज्ञा, पु०, दे०) लाल रंग का एक चींटा।

माटी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मिट्टी] मट्टी, मिट्टी, मृत्तिका, शव, लाश, धूलि, रज, शरीर, पृथ्वी-तत्व। **मुहा०—होना**-नष्ट होना, निस्सार और तुच्छ होना।

माठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मीठा] एक तरह की मिठाई, [मठरी (दे०)]।

माड़ना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मंडन] मचाना, करना, ठानना। (क्रि० स०, दे०) [सं० मंडन] मंडित या भूषित करना, पहनना, धारण करना, पूजना, आदर करना। (क्रि० स०, दे०) [सं० मर्दन] मसलना, मलना, घूमना, फिरना, माँड़ना।

माढ़ा, मढ़ा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंडप] अटारी पर का बँगला या चौबारा।

माढ़ी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मंडप] माढ़ी, कोठरी, छोटा मठ।

माणवक—(संज्ञा, पु०, सं०) बटु, विद्यार्थी, सोलह वर्ष का युवा, नीच या निंदित व्यक्ति।

माणव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बाल मण्डली।

माणिक, मानिक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माणिक्य] लाल रंग का एक रत्न, चुन्नी, पद्मराग, लाल। (वि०) सबसे बढ़कर, सर्वश्रेष्ठ, अति आदरणीय। "मोती माणिक, कुलिश पिरोजा"—[रामा०]।

माणिक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) एक लाल रत्न, लाल, चुन्नी, पद्मराग। (वि०) सर्व-श्रेष्ठ, आदरणीय।

मातंग—(संज्ञा, पु०, सं०) चांडाल, श्वपच, हाथी, शबरी के गुरु एक ऋषि, अश्वत्थ, पीपल।

मातंगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दश महा विद्याओं में से ९वीं महाविद्या या देवी (तंत्र०)।

माता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातृ] मातु, माता। (संज्ञा, स्त्री०, अ०) हार, पराजय, शत-

रंज में शाह के मोहरे का चारों ओर से घिर कर चल न सकने की दशा। (वि०, दे०) पराजित। *(वि०, दे०) [सं० मत्त] माता, मतवाला, उन्मत्त।

मातदिल—(वि०, दे०) [अ० मोअतदिल] जो न तो बहुत ठंडा ही हो और न अति गर्म ही हो।

मातना*‡—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मत्त] मतवाला या मस्त होना, नशे से उन्मत्त होना। "जो अँचवत मातें नृप तेई"—[रामा०]।

मातबर—(वि०, दे०) [अ० मोअतबिर] विश्वासी, विश्वासनीय, एतबारी (उ०) विश्वस्त।

मातबरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) विश्वास, विश्वासनीयता, ऐतबारी।

मातम—(संज्ञा, पु०, अ०) किसी के मरने पर रोना-पीटना, रंज, शोक, अफसोस, दुःख क्रंदन।—**पुर्सी**-(स्त्री०) मृत के सम्बन्धियों को सांत्वना या धैर्य देना।

मातमी—(वि०, फ़ा०) शोक-सूचक।

मातलि—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र का सारथी।—**सूत**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्र।

मातहत—(वि०, अ०) किसी की अधीनता में काम करने वाला।

मातहती—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अधीनता।

माता—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० मातृ] जननी, जन्मदात्री, पूज्या या बड़ी स्त्री, गौ, पृथ्वी, लक्ष्मी, शीतला, चेचक। (वि०) [सं० मत्त] प्रमत्त, मतवाला। [**माती** (स्त्री०)]।—**मह**-(संज्ञा, पु०, सं०) नाना, माता का बाप या पिता। [**मातामही** (स्त्री०)]।

मातु*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातृ] माँ, माता, जननी। स्त्री। "पूछेउ मातु मलिन मन देखी"—[रामा०]।

मातुल—(संज्ञा, पु०, सं०) मामा, माता का भाई, धतूरा। [**मातुली, मातुलानी** (स्त्री०)]

मातुली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मामी, माई, मामा की स्त्री, भाँग, मातुलानी।

मातृ—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) माता, माँ, अम्बा।—**पूजा**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० मातृ-पूजन] पितरों को पुत्रों से पूजने की एक रीति (ब्याह०), मातृका-पूजन।—**भाषा**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) माता की गोद से ही सीखी हुई बोली, [**मादरी ज़बान** (फ़ा०)] [मदरटंग]—**सत्तावाद**-(पु०) मातृ शासन, मातृ सत्तात्मक राज्य। [मेट्रियार्की]

मातृक—(वि०, सं०) माता-सम्बन्धी, माता का।

मातृका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धाय, दाई, धायी, जननी, माता, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुंडा सात देवियाँ (तांत्रि०)। निरीक्षिका। काराध्यक्षा। [मेट्रन]—**गृह**-(पु०) प्रसूति गृह, जच्चाख़ाना। [मेटर्निटी हाउस]

मातृत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) पुत्रवती होना, माँ का पद।

मात्र—(अव्य०, सं०) केवल, सिर्फ, भर।

मात्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मिकदार (फ़ा०), परिमाण, एक बार में खाने योग्य औषधि, कला, एक ह्रस्व स्वर के बोलने का समय, कला, मत्ता, स्वरों के वे सूक्ष्म रूप जो व्यंजनों से मिलते समय हो जाते है और उनके आगे पीछे या ऊपर-नीचे लगते है।—**समक**-(पु०) एक मात्रिक छन्द या वृत्ति (पिं०)।

मात्रिक—(वि०, सं०) वह छन्द जिसमें मात्राओं की संख्या का नियम हो, मात्रा-सम्बन्धी छन्द।

मात्सर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) डाह, ईर्ष्या, जलन।

माथ, माथा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मस्तक] मस्तक, भाल, ललाट, किसी वस्तु का ऊपरी या अगला भाग, मत्था। **मुहा०—ठनकना**-किसी दुर्घटना या इष्टार्थ के विपरीत होने के पहले ही से उसकी आशंका होना।—(थे) (**सिर**) **पर चढ़ाना**-मुँह लगाना, ढीठ करना, बहुत मानना।—(थे) **पर बल पड़ना**-मुख-मुद्रा से असंतोष, दुःख, क्रोधादि का प्रगट होना। **किसी के** (थे) **या मत्थे पीटना, पटकना** (**छोड़ना**)-बलात् किसी के जिम्मे कुछ काम छोड़ना या करना। (थे) **पड़ना**-बलात् जिम्मे हो जाना।—थे) **मानना**-सादर स्वीकार करना।—(थे-मत्थे) **होना** (**लेना**)-जिम्मे होना (लेना)। **सिर—(थे) होना** (**लेना**)-शिरोधार्य होना (करना)।—(**किसी के**) (थे) (**कोई काम**) **करना**-किसी के भरोसे करना। "सो जनु हमरे माथे काढ़ा"—[रामा०]।—**पच्ची करना**-(यौ०) अति अधिक समझाना या बकना, सिर खपाना। किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला खंड।—**माथी लेना**-समान बनाना, बराबर करना।

माथुर—(संज्ञा, पु०, सं०) मथुरावासी, चौबे, ब्राह्मणों तथा कायस्थों की एक जाति। [**माथुरानी** (स्त्री०)]। [**मथुरिया** (वि०)]

माथे—(क्रि० वि०, दे०) [हि० माथा] मस्तक या सिर पर, भरोसे, सहारे या आसरे पर। "सो जनु हमरे माथे काढ़ा"—[रामा०]।

मादक—(वि०, सं०) नशेदार, नशीला।

मादकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मादकपन, नशीलापन, मादक का भाव। "कनक कनक तें सौगुनी, मादकता अधिकाय"—[नीति०]।

मादन—(वि०, सं०) उन्माद उत्पन्न करने वाला। "हँसती, भर सौरभ सुर मादन"—पंत।

मादर—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) माता, माँ, [**मदर** (अं०)]। [**मादरी**—(वि०)] माता सम्बन्धी। —**ज़ाद**-(वि०, फ़ा०) पैदायशी, जन्म का, सहोदर भाई, दिगंबर, नितांत नंगा।

मादरिया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० मादर] माता, माँ, अम्मा। "मादरिया घर बेटा आई"—कबीर०।

मादा—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) स्त्री जाति का जीवधारी। [**नर** (विलो०)]

माद्दा—(संज्ञा, पु०, अ०) मूलतत्व, पीब, मवाद, योग्यता, लियाक़त।

माद्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा पांडु की स्त्री तथा नकुल और सहदेव की माता।

माधव—(संज्ञा, पु०, सं०) नारायण, श्रीकृष्ण, विष्णु। बैसाख महीना, बसन्त ऋतु, मुक्तहरा छन्द (पिं०), [माधौ (दे०)]।

माधवाचार्य्य—(पु०) संस्कृत के एक विद्वान् वैष्णव आचार्य।

माधवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुगंधित पुष्पों की एक लता। "मधुरया मधुबोधित माधवी"—माघ०। एक प्रकार का सवैया छंद। (पिं०), दुर्गा, एक शराब। तुलसी, माधवी की स्त्री।

माधुराई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० माधुरी] मधुरई, मधुरता, सुन्दरता, मिठास। "आनि चढ़ी कछु माधुराई सी"—पद्मा०।

माधुरता*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मधुरता] मधुरता, सुन्दरता, मिठास।

माधुरिया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० माधुरी] माधुरी, सुन्दर।

माधुरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मधुरता, मिठास, मधुराई, सुन्दरता, शराब, मद्य।

माधुर्य्य—(संज्ञा, पु०, सं०) माधुरी, मिठास, सुन्दरता, शोभा, मधुरता, पांचाली रीति के काव्य का मनोमोहक एक गुण (काव्य०)।—**प्रधान**-(वि०) जिसमें माधुर्य गुण की प्रधानता हो।

माधैया*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माधव] माधव।

माधो, माधौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माधव] श्रीराम, श्रीकृष्ण, विष्णु। "माधो अब के गये कब ऐहौ"—सूर०।

माध्यंदिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा।

माध्यम—(वि०, सं०) बीच का, मध्य का, बीच वाला। (संज्ञा, पु०) कार्य सिद्धि का साधन या उपाय।

माध्यमिक—(संज्ञा, पु०, सं०) बौद्धों का एक भेद, मध्य देश। (वि०) मध्य का।—**शिक्षा**-(स्त्री०) प्रारम्भिक और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा। [सेकेंडरी एजुकेशन]।

माध्याकर्षण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सदा सब पदार्थों को अपनी ओर खींचने वाला, पृथ्वी के केन्द्र का आकर्षण।

माध्याह्निक—(वि०, सं०) मध्याह्न का।

माध्व—[संज्ञा, पु०, सं०) मध्वाचार्य का प्रचलित किया हुआ चार प्रमुख वैष्णव-संप्रदायों में से एक। —**संप्रदाय**-(पु०) द्वैतवादी वैष्णव सम्प्रदाय जिसका मध्वाचार्य ने प्रवर्त्तन किया था।

माध्वी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मदिरा शराब।

मान—(संज्ञा, पु०, सं०) माप, तौल, भार, नाप, आदि, मिकदार, परिमाण, पैमाना, नापने या तौलने का साधन, अभिमान, गर्व, शेखी, रूठना, सम्मान, प्रतिष्ठा, सत्कार।—**गृह**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कोपभवन।—**चित्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नकशा।—**दंड**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पैमाना, नापने का दंड, राज-चिह्न। "स्थितः पृथिव्यामिव मानदंडः"—कु० सं०।—**मंदिर**-(पु०) कोपभवन, ग्रहों के देखने या वेध करने आदि की सामाग्री या तत्सम्बन्धी यंत्रों का स्थान, वेधशाला।—**मनौती**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) मनौती, मन्नत, रूठने और मनाने की क्रिया।—**मोचन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रूठे को मनाना,

मान छोड़ना ।—**सम्मान**-(पु०) आदर-सत्कार, प्रतिष्ठा ।—**हंस**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक छंद (पिं०) ।—**हानि**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपमान, अनादर, अप्रतिष्ठा, बेइज्जती, हतक-इज्जत । [डिफेमेशन]—**महत**-(यौ०) आदर, सत्कार । अपने प्रिय का दोष देखकर पैदा होने वाला एक मनोविकार (साहि०) । **मुहा०**—**मथना**-घमंड मिटाना ।—**रखना**-प्रतिष्ठा करना । —**मनाना**-रूठे हुए को मनाना ।—**मोरना**-मान छोड़ देना । शक्ति, सामर्थ्य, बल ।

मानकंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माणक] एक मीठा कंद, सालिम मिसरी ।

मानक्रीड़ा—(संज्ञा, हि०, सं०) एक छन्द-भेद (पिं० सूदन०) ।

मानता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मन्नत] मन्नत ।

मानना—(क्रि० अ०) [सं० मनन] स्वीकार या अंगीकार करना, कल्पना या फर्ज करना, समझना, ठीक रास्ते पर आना, ध्यान में लाना । (क्रि० स०) स्वीकृत या मंजूर करना, पारंगत जानना, आदर-सत्कार या प्रतिष्ठा करना, पूज्य जानना, धार्मिक भाव से श्रद्धा और विश्वास करना, मानता या मन्नत मानना, देवतार्थ भेंट करने का संकल्प करना ।

माननीय—(वि०, सं०) सम्मान या सत्कार करने योग्य, पूज्य । [**माननीया** (स्त्री०)] ।

मानपरेखा—(संज्ञा, पु०, दे०) आशा, भरोसा ।

मानमरोर*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मनमोटाव, बिगाड़, वैमनस्य, मनोमालिन्य ।

मानव—(संज्ञा, पु०, सं०) आदमी, मनुज, मनुष्य, चौदह मात्राओं के छंद (पिं०) । [**मानवता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**दयावाद**-(पु०) मनुष्यत्व-वाद, जीवमात्र पर दया करने को लक्ष्य बनाने वाला सिद्धांत [ह्यूमेनिटेरियनिज्म] ।—**द्वेष**-(पु०) विश्व-वैर, मनुष्य द्रोह । [मिसैन्थ्रोपी]—**वाद**-(पु०) मनुष्य-जाति की सेवा, मानव-हित परायणता । [ह्यूमनिज्म]—**विज्ञान**-(पु०) मानव-शरीर-रचना सम्बन्धी शास्त्र या विद्या । [एन्थ्रोपालिजी]—**शास्त्र**-(संज्ञा पु०, यौ०, स०) मनुस्मृति, मनुकृत धर्म्म शास्त्र ।

मानवता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मनुष्यता, पशु के सार से ऊपर उठा हुआ त्यागमय भाव । " हो रहा मानवता का ह्रास "—'गिरीश' ।

मानवी—(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्री, नारी । (वि०, दे०) [सं० मानवीय] मानव-संबंधी । " कृतारि षड्वर्ग जयेन मानवीमगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना" —किरा० ।

मानस—(संज्ञा, पु०, सं०) चित्त, हृदय, मन, कामदेव, मानसरोवर, संकल्पविकल्प, दूत, मनुष्य । (वि०) विचार, मनोभाव, मन से उत्पन्न । (क्रि० वि०) मन के द्वार । " बसहु रामसिय मानस मोरे "—[विनय०] । " बरु मराल मानस तजै "—तुल० ।—**पुत्र**-(पु०) जो पुत्र इच्छा मात्र से उत्पन्न हो (पुरा०) ।—**शास्त्र**-(पु०) मनोविज्ञान ।—**हंस**-(पु०) मानसरोवर के हंस, मानहंस, एक वृत्त (पिं०) । " जय महेश मन मानस हंसा "—[रामा०] ।

मानसर, मानसरोवर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मानस + सरोवर] एक बड़ी झील जो हिमालय के उत्तर मे है ।

मानसिंह—(संज्ञा, पु०, सं०) अम्बर के राजा और सम्राट् अकबर के सेनापति जिन्होंने पठानों से बंगाल जीतकर अकबर के अधीन किया और काबुल में भी विजय प्राप्त की थी । (इति०) ।

मानसिक—(वि०, सं०) मन-संबंधी, मन का, मन की कल्पना से उत्पन्न ।

मानसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह पूजा जो मन ही मन की जाय, मन संबंधी, एक विद्या देवी । (वि०) मन का, मन से प्रगट ।

मानसोन्मादिनी—(वि०, सं०) मन को उन्मत्त बनाने वाली । " काली कुंचित लम्ब मान अलकें थीं मानसोन्मादिनी "—हरिऔध ।

मानहुँ, मनहुँ*—(अव्य०, दे०) [हि० मानो] मानो, गोया, जैसे, ज्यों । (क्रि० स०, दे०) मानता हूँ । " मानहुँ लोन जरे पर देई "—[रामा०] ।

माना—(संज्ञा, पु०, दे०, इब०) एक तरह का दस्तावर मीठा निर्यास । *† (क्रि० स०, दे०) [सं० मान] नापना, जाँचना, तौलना । (क्रि० अ०, दे०) समाना, अमाना । (क्रि० स०) मान लिया । " हमने माना कि पढ़ाना है बहुत अच्छा काम "—[स्फुट०] ।

मानिंद—(वि०, फ़ा०) सदृश, तुल्य, समान, बराबर ।

मानिक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माणिक्य] माणिक, लाल रंग का एक रत्न, पद्मराग । "मानिक

मरकत कुलिस पिरोजा "—[रामा०] ।—चंदी-(संज्ञा, स्त्री०, हि०) मानिकचंद, एक छोटी और स्वादिष्ट सुपारी ।

मानिकरेत—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) गहने साफ करने का मानिक का रेत या चूरा ।

मानित—(वि०, सं०) प्रतिष्ठित, सम्मानित ।

मानिनी—(वि०, स्त्री०, सं०) मानवती, गर्ववती, रुष्टा, नायक का दोष देख उस पर रूठी हुई नायिका (साहि०) । " मानिनी न मानै लाला आपुहिं पग धारिये "—सूर० । " मानिनी मान-निरासे "—माघ० ।

मानी—(वि०) [सं० मानिन्] अभिमानी, घमंडी, संमानित, मानने वाला । (यौगिक में) जैसे—भटमानी, पंडितमानी । (संज्ञा, पु०) जो नायक नायिका से अपमानित होकर रूठ गया हो । [मानिनी (स्त्री०)] (संज्ञा, स्त्री०, अ०) अर्थ, तात्पर्य, मतलब ।

मानुख, मानुष—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मनुष्य] मनुष्य । " कहुं महिख मानुख धेनु खर अजया निसाचर भच्छही "—[रामा०] ।

मानुषिक—(वि०, सं०) मनुष्य-सम्बन्धी, मनुष्य का, मनुष्य के योग्य ।

मानुषी—(वि०, सं०) मनुष्य का । [मानुषीय (सं०)] मनुष्य-सम्बन्धी । [मानुषी (स्त्री०)] (संज्ञा, पु०, सं०) मनुष्य, मनुज, आदमी, मानुस, मानुख, मनुस, मन्नुष (ग्रा०) ।

मानुष्य—(संज्ञा, पु०) मनुष्यता, मानवजाति ।

मानुस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मानुष] मनुष्य । " मानुस तन गुन-ज्ञान निधाना "—[रामा०] ।

माने—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मानी] तात्पर्य्य, अर्थ, मतलब ।

मानो, मानौ—(अव्य०, दे०) [हि० मानना] मानौ, जैसे, गोया, मानहुँ, मनु । मानो अरुण तिमिर मय रासी "—[रामा०] ।

मान्य—(वि०, सं०) माननीय, मानने-योग्य, पूज्य, पूजनीय । [मान्या (स्त्री०)] ।—स्थान-(पु०) मान्यता की जगह, स्थिति ।

माप—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मापना] नाप, मान ।

मापक—(संज्ञा, पु०, सं०) माप, मान, पैमाना, जिससे कुछ नापा या मापा जाय, मापने वाला ।

मापना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मापन] नापना, किसी वस्तु के घनत्व या परिमाणादि का किसी निश्चित मान से परिमाण करना, पैमाइश करना । (क्रि० अ०, दे०) [सं० मत्त] मतवाला होना ।

माफ़—(वि०, अ०) क्षमा किया गया, क्षमित, मुआफ़ । [माफी (संज्ञा, स्त्री०)]

माफ़कत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मैत्री, अनुकूलता, मेल । [माफ़िकत (दे०)]

माफ़िक—(वि०, दे०) [अ० मुआफ़िक] अनुसार, अनुकूल, योग्य ।

माफ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) क्षमा, बिना कर की पृथ्वी, बिना लगान की भूमि ।—दार-(वि०, यौ०) वह व्यक्ति जिसके लिए सरकार ने भूमि कर छोड़ दिया हो ।

माम*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माम्] ममता, ममत्व, अहंकार, शक्ति, अधिकार । (सर्व० सं०) —मुझे, मुझको । " त्राहिमाम् पुण्डरीकाक्ष "—[स्फुट०] ।

मामता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ममता] आत्मीयता, अपनापन, प्रेम, स्नेह, मुहब्बत ।

मामलत*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मुआमिलत] व्यवहार की बात, मामला, झगड़ा, विवाद, विषय ।

मामला, मामिला—(संज्ञा, पु०) [अ० मुआमिला] काम, व्यापार, धंधा, उद्यम, आपस का व्यवहार, व्यवहार, व्यापार या विवाद की बात । झगड़ा मुकदमा, विवाद । " परबस परे परोस बसि, परे मामला जान "—तुल० ।

मामा—(संज्ञा, पु०, अनु०) माता का भाई, [मातुल (सं०)] (स्त्री०, फ़ा०) माता, माँ, रोटी बनाने वाली नौकरानी ।

मामी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मातुलानी] माई, मातुलानी । [हि० मामा+ई प्रत्य०] (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मा=निषेधार्थक] अपने दोष पर ध्यान न देना, इनकार करना । मुहा०—पीना-इनकार करना, मुकर जाना ।

मामूल—(संज्ञा, पु०, अ०) रीति, रिवाज ।

मामूली—(वि०, अ०) नियत, नियमित, साधारण, सामान्य । [गैरमामूली (विलो०)]

माय*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातृ] माँ, माता, जननी, महतारी, माई, आदरणीय वृद्धा,

स्त्री का सम्बोधन। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) लक्ष्मी, संपत्ति, अविद्या, छल, कपट, प्रकृति, माया। (अव्य०, दे०) [सं० मध्य] में, माँहि।

मायक—(संज्ञा, पु०, सं०) मायावी।

मायका, माइका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मातृ] [मैका, मइका (दे०)] पीहर (प्रान्ती०)। स्त्री के माता-पिता का घर या गाँव।

मायन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मातृका + आनयन] ब्याह के एक दिन प्रथम का मातृका-पूजन का दिन या उस दिन का कार्य, पितृ-निमंत्रण।

मायनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) मायाविनी, ठगिनी, कपटिनी।

मायल—(वि०, फ़ा०) प्रवृत्त, रुजू (फ़ा०) झुका हुआ, मिला हुआ, मिश्रित (रंग आदि)।

माया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धन, लक्ष्मी, संपत्ति। अविद्या, भ्रम, धोका। प्रकृति। ईश्वर के आज्ञा-नुसार कार्य करने वाली उसी की कल्पित शक्ति। जादू, इन्द्रजाल, छल, सृष्टि का मुख्य कारण, प्रपंच। एक वर्णिक छंद, इन्द्रवज्रा छंद का एक भेद (पिं०), मय दानव की कन्या जो शूर्पणखा, त्रिशिरा और खरदूषण आदि की माता थी। किसी देवता की शक्ति, लीला या प्रेरणा आदि। दुर्गा। बुद्ध की माता। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० माता, सं० मातृ] माता, माँ। *† (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ममता] [माया (दे०)]। ममत्व, दया, कृपा, आत्मीयता का भाव।—**देवी**-(स्त्री०) माया, बुद्ध की माता।—**कृत**-(पु०) संसार, इन्द्रजाल। (वि०) माया से निर्मित।—**पात**-(पु०) पर-मात्मा, ब्रह्म।—**मोह**-(पु०) माया और मोह।—**वाद**-(पु०) अद्वैतवाद, ब्रह्म के सिवा अन्य सब पदार्थों के अनित्य और नश्वर मानने का सिद्धान्त।—**वादी**-(संज्ञा, पु०) वह व्यक्ति जो ब्रह्म के अतिरिक्त सब सृष्टि को माया या प्रपंच-भ्रम या असत्य समझता हो, ब्रह्मवादी अद्वैत-वादी।

मायाविनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छल-कपट करने वाली, प्रपंचिनी, ठगिनी।

मायावी—(संज्ञा, पु०) [सं० मायाविन्] फ़रेबी, धोखेबाज, छली, प्रपंची, कपटी, एक दानव जो मय का पुत्र था, परमात्मा, जादूगर। [**मायाविनी** (स्त्री०)]। "भवन्ति मायविषु ये न कायिनः" —कि०।

मायास्त्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक अस्त्र जिसका चलाना रामचन्द्र जी ने विश्वामित्र से सीखा था।

मायिक—(वि०, सं०) मायावी, छली, बनावटी, जाली, माया से बना हुआ।

मायी—(संज्ञा, पु०) [सं० मायिन्] मायावी।

मायूस—(वि०, अ०) निराश, हताश।

मायूसी—(संज्ञा, स्त्री०, अं०) नाउम्मेदी, निराश।

मार—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव, धतूरा, विष। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मारना] निशाना, चोट, आघात, मार-पीट।—**काट**-(स्त्री०) संग्राम, युद्ध, लड़ाई, जंग, मारने काटने का भाव या कार्य।—**कूट**—,**कुटाई**-(स्त्री०) मारना कूटना, धुनाई पिटाई।—**पीट**-(स्त्री०) माराकाटी, लड़ाई, झगड़ा। (अव्य०, दे०) [हि० मारना] बहुत अत्यन्त। *† (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० माला] माला।

मारकंडेय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मार्कंडेय] मृकंड के पुत्र एक अमर ऋषि, इनका एक पुराण।

मारक—(वि०, सं०) मार डालने या नाश करने वाला, संहारक, किसी के प्रभाव आदि का मिटाने वाला।

मारका—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० मार्क] निशान चिन्ह, विशेषता सूचक चिह्न। (संज्ञा, पु०, अ०) लड़ाई, संग्राम, युद्ध, बड़ी और महत्त्वपूर्ण बात या घटना।

मारकीन—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० नैनकिन्] एक तरह का कोरा मोटा कपड़ा, लट्ठा।

मारकेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मार डालने वाला ग्रह, लग्न से दूसरे और सातवें घर का स्वामी (ज्यो०)।

मारग*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मार्ग] राह, रास्ता, पंथ, धर्म मत। "मारग सो जा कहँ जोइ भावा"—[रामा०]। **मुहा०—मारना**-राह में लूट लेना।—**लगना**-राह पकड़ना, रास्ता लेना।

मारगन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मार्गण] तीर, बाण, शर, भिखमंगा। भिखारी, भिक्षुक।

मारजन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मार्जन] परिष्कार, सफाई, नहाना।

मारजिन—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० मार्जिन] हाशिया।

मारजार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मार्जार] बिल्ली, बिलारी।

मारण—(संज्ञा, पु०, सं०) हत्या करना, मार डालना, किसी के मारने के लिए एक कल्पित तांत्रिक प्रयोग। [**मारणीय** (वि०)]

मारतंड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मार्तंड] सूर्य, मृतंडा के पुत्र।

मारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मारण] हनन करना, प्राण लेना, वध या हत्या करना, पीटना, चोट या आघात पहुँचाना, सताना, दुःख देना, मल्ल-युद्ध में विपक्षी को पछाड़ देना, बंद कर देना, हथियार चलाना या फेंकना, क्षार करना (पारा आदि)। **मुहा० गोली**—किसी पर बंदूक छोड़ना या चलाना, छोड़ देना या जाने देना। शारीरिक आवेग या मन के विकार को रोकना, विनष्ट कर देना, आखेट करना, छिपा रखना, संचालित करना, चलाना।—**कुछ पढ़कर**—, मंत्र पढ़-कर कोई वस्तु किसी पर फेंकना। **मन**—चित्त की वृत्तियों को रोकना, इच्छा-निरोध टोना, जादू या मंत्र मारना, मंत्र या जादू चलाना, धातु आदि को जला कर भस्म बनाना, सरलता से बहुत सा धन प्राप्त करना, जीतना, विजय पाना, बुरी तरह से रख लेना, प्रभाव या बल पर देना।

मार, मारना—(क्रि० स०, दे०, यौ०) [हि० मारना] आघात या आत्महत्या करना।

मारपेंच—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मारना+पेंच] चालाकी, चालबाजी, धूर्तता, ठगी।

मारफ़त—(अव्य०, दे०, अ०) माफ़त, ज़रिये से, द्वारा।

मारवाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मेवाड़] मेवाड़ का राज्य या देश (राजपूताना)।

मारवाड़ी—(संज्ञा, पु०) [हि० मारवाड़] मारवाड़ का निवासी, एक वैश्य जाति। [**मारवाड़िन** (स्त्री०)]। (संज्ञा, स्त्री०) मारवाड़ की भाषा या बोली। (वि०) [हि० मारन] मारवाड़ देश का।

मारा—(वि०, दे०) [हि० मारना] मारा हुआ, निहत। **मुहा०—या—मारा फिरना**-बुरी दशा में इधर-उधर घूमना।

मारात्मक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जिसका मूल तत्व कामदेव हो, हिंसक।

मारामार, मारोमार—(क्रि० वि०, दे०) [हि० मारना] बहुत जल्दी, अति शीघ्रता से।

मारिच*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मारीच] मारीच। (संज्ञा, पु०, दे०) मार्च (अं०) चलना, फरवरी के बाद का मास।

मारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मारना] महामारी, प्लेग।

मारीच—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राक्षस जिसने सोने का मृग बन कर श्रीराम को छला था। आकर मायावी मारीच—मैथिली०।

मारुत—(संज्ञा, पु०, सं०) हवा, वायु, पवन। "कबहुं प्रबल चल मारुत"—[रामा०]।

मारुति—(संज्ञा, पु०, सं०) हनुमानजी, भीमसेन। [मारुती (दे०)]।—**सुत**-(पु०) मारुतात्मज, वायुपुत्र, हनुमान जी। "मारुतसुत मैं कपि हनुमाना"—[रामा०]।

मारुतात्मज—(संज्ञा, पु०, सं०) मारुत तनय, वायुपुत्र, हनुमान।

मारू—(संज्ञा, पु०) [हि० मारना] युद्ध में बजाने और गाने का एक राग, जुझाऊ, बड़ा डंका या धौंसा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मरुभूमि] मारु देश या रेगिस्तान का निवासी। "मारू पाय मतीहू समझे ताहि पयोधि"—बिहारी। [हि० मारना] मारने वाला, कटीला, हृदय-बेधक।

मारे—(वि०, दे०) [हि० मारना] हेतु से, कारण से।

मार्कंडेय—(संज्ञा, पु०, सं०) मृकंडा ऋषि के पुत्र जो अपने तपोबल से अमर हैं।—**पुराण**-(पु०) अट्ठारह पुराणों में से एक।

मार्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मारका] मारका, चिह्न।

मार्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) [मारग (दे०)] पंथ, राह, रास्ता, मार्गशीर्ष या अगहन का महीना, मृग-शिरा नक्षत्र।—**दर्शक**-(पु०) पथप्रदर्शक।—**व्यय**-(पु०) यात्रा का खर्च। [ट्रैवलिंग एलाउंस]

मार्गण—(संज्ञा, पु०, सं०) बाण, शर, अन्वेषण, खोज। "विकाशमीयुर्जगतीश मार्गणाः"—किरात०। [**मार्गणीय, मार्गी** (वि०)]

मार्गन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मार्गण] बाण, खोज।

मार्गशीर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) अगहन मास। " मासानाम् मार्गशीर्षोऽहम् "—[भा० गी०]।

मार्गी—(संज्ञा, पु०) [सं० मार्गन्] यात्री, बटोही, पांथ, पथिक। (वि०) किसी वक्री ग्रह का फिर अपने मार्ग पर आ जाना।

माच—(संज्ञा, पु०, अ०) चलना, फरवरी के बाद का महीना।

मार्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) [मारजन (दे०)] सफाई, नहाना, धोना, माँजना, अभ्यास करना।

मार्जना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सफाई, क्षमा। [**मार्जनीय** (वि०)।

मार्जनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) झाड़ू, बढ़नी।

मार्जार—(संज्ञा, पु०, सं०) बिल्ली, बिलाव। [**मार्जारी** (स्त्री०)]।

मार्जित—(वि०, सं०) शुद्ध या साफ किया हुआ।

मार्तंड—(संज्ञा, पु०, सं०) मृतंडा के पुत्र सूर्यदेव।

मार्त्य—(वि०, सं०) मरणशील, मर्त्य।

मार्दव—(संज्ञा, पु०, सं०) कोमलता, मधुरता, मृदुता, अहंकार का त्याग, दूसरे को दुःखी देख दुःखी होना, सरलता।

मार्फत—(अव्य०, अ०) जरिये से या द्वारा।

मार्मिक—(वि०, सं०) जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े मर्म-सम्बन्धी, विशेष प्रभावशाली।

मार्मिकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मार्मिक होने का भाव, पूर्ण अभिज्ञता।

माल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मल्ल] पहलवान, मल्लयुद्ध करने या कुश्ती लड़ने वाला। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० माला] हार, माला, चरखे में टकुये को घुमाने वाली डोरी, पाँति, पंक्ति। " उर तुलसी की माल "—तुल०। (संज्ञा, पु०, अ०) धन, संपत्ति, अच्छा स्वादिष्ट भोजन, या पदार्थ। **—टाल**-(यौ०) धन-संपत्ति। असबाब, मालमता। पूँजी, माल लेने या बेचने का पदार्थ। कर या महसूल का धन, फसल की पैदावार, कीमती वस्तु, गणित में वर्ग का घात या अंक, वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बनी हो।**—खाना**-(पु०) मालघर, भांडागार, माल-असबाब रखने का स्थान।**—गाड़ी**-(स्त्री०) केवल माल ही लादने की रेलगाड़ी।**—गुज़ार**-(पु०) मालगुजारी देने वाला, नम्बरदार।**—गुज़ारी**-(स्त्री० फ़ा०) भूमिकर जो जमींदार सरकार को देता है, लगान।**—गोदाम**-(पु०) रेल के स्टेशन का वह स्थान जहाँ आने-जाने वाला माल रखा जाता है, [मालगुदाम (दे०)।**—दार**-(वि०) धनी, धनवान। **मुहा०—चारना या मारना**-दूसरे की संपत्ति हड़पना, दूसरे का धनादि दबा बैठना। सामग्री, असबाब, सामान।

मालकंगुनी—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) एक लता जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है।

मालकोश—(संज्ञा, पु०, सं०) संपूर्ण जाति का एक राग, कौशिक राग (संगी०)। किसी किसी ने छै रागों के अंतर्गत इसे भी माना है (हनुमत)।

मालती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बड़े वृक्षों पर फैलने वाली एक सघन लता, ६ वर्णों की एक वर्ण-वृत्ति, १२ वर्णों का वर्णिक छंद (पिं०), मत्तगयंद सवैया (पिं०), ज्योत्स्ना, चंद्रिका, रात्रि, रात।

मालद्वीप—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० मलय-द्वीप] मूँगे के लिए प्रसिद्ध भारत के पश्चिम की ओर का एक द्वीप-समूह।

मालपुआ, मालपूवा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० पूप] पूरी जैसा एक मीठा पकवान।

मालव—(संज्ञा, पु०, सं०) मालवा देश, भैरव राग (संगी०) मालवा निवासी। (वि०) मालव देश सम्बन्धी, मालवा का।

मालवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मालवा] एक देश।

मालवीय—(वि०, सं०) [मालवी दे०] मालवा का, मालव देश का रहने वाला। (संज्ञा, पु०, दे०) मालवा की एक ब्राह्मण जाति। "श्री मालवीय समान नेता, भूप दरभंगा यथा।"—मैथिली०।

माला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाँति, पंक्ति, अवली, झुंड, समूह, फूलों आदि का हार, गजरा। "माला फेरत जुग गया"—कबीर। **मुहा०—फेरना**-जपना, भजना, दूब, उपजाति छंद का एक भेद (पिं०)।**—दीपक**-(पु०) एक अलंकार जिसमें पहले कही वस्तु को पीछे कही वस्तुओं के उत्कर्ष का कारण कहा जाता है।**—धर**-(संज्ञा, पु०, सं०) १७ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)। **—रूपक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रूपकालंकार का एक भेद।

मालामाल—(वि०, फ़ा०) [मालोमाल दे०] बहुत धनी या सम्पन्न।

मालिक—(संज्ञा, पु०, अ०) स्वामी, अधिपति, ईश्वर, पति । [**मालिका** (स्त्री०)] ।

मालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) माला, हार, मालिन, अवली, पंक्ति ।

मालिकान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) स्वामित्व, स्वामी का स्वत्व या अधिकार, मिलकियत । (क्रि० वि०, दे०) स्वामी के समान, मालकाना ।

मालिकी, मालिकिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० मालिक] मालिक होने का भाव, मालिक का स्वत्व ।

मालिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चंपानगरी, मालिन, गौरीजी, स्कंद को ७ माताओं में से एक माता, एक वर्णिक छंद (पिं०)। "ननमयय युतेयं, मालिनी भागि लोके," मदिरा छंद (पिं०) ।

मालिन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मलिनता, मैलापन । [**मनोमालिन्य** (यौ०)] ।

मालियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) माल, मूल्य, संपत्ति, कीमती चीज, जायदाद ।

मालिवान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माल्यवान्] रावण का नाना, एक राक्षस । "मालिवान अति जठर निशाचर"—[रामा०] ।

मालिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मलाई, मर्द्दन, मलने का भाव या काल । [मालिस (दे०)]।

माली—(संज्ञा, पु०) [सं० मालिन्] फूलमाला बेचने वाला बागवान, पेड़-पौधे लगाने या सींचने वाला, ऐसे लोगों की एक छोटी जाति । "वह उर-कलिका का मंजु माली कहाँ है ?" [**मालिन, मालन, मालिनी** (स्त्री०)] । (वि०) [सं० मालिन्] माला पहने या धारण करने वाला, माला-धारी, समूह वाला, जैसे—मारीचि माली । [**मालिनी** (स्त्री०)] । (संज्ञा, पु०, सं०) लंका का एक निशाचर, माल्यवान् और सुमाली का भाई, राजीवगण छंद (पिं०) । (वि०, फ़ा०) धन संबंधी, आर्थिक ।

मालीदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चूरमा, मलीदा, ऊनी नरम और गरम एक वस्त्र ।

मालूम—(वि०, अ०) ज्ञात, जाना हुआ ।

मालोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें एक उपमेय के भिन्न भिन्न धर्म वाले अनेक उपमान होते हैं (अ० पी०) ।

माल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) माला, फूल ।

माल्यवत—(संज्ञा, पु०, दे०) [माल्यवान्] माल्यवान्, सुकेश का पुत्र एक राक्षस । (वि०) माला-युक्त ।

माल्यवान्—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पर्वत (पुरा०) सुकेशात्मज एक राक्षस, जो रावण का नाना था । (वि०) पुष्प-युक्त ।

मावत*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० महावत] हथवाल, महावत, फीलवान ।

मावली—(संज्ञा, पु०, दे०) दक्षिण भारत देश की एक पहाड़ी वीर जाति ।

मावस*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अमावस्या] अमावस । "अधिक अँधेरो जग करै, मिलि मावस रवि-चंद"—वि० ।

मावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंड] पीच, माँड़, निष्कर्ष, सत्त, खोवा, प्रकृति ।

माशा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माष] आठ रत्ती की तौल का एक बाट या मान, [मासा (दे०)] ।

माशी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० माष—उरद] कालिमा लिये हरा रंग, सब्ज रंग । (वि०) कालिमा लिये हरे रंग का ।

माशूक—(संज्ञा, पु०, अ०) प्यारा, प्रिय-तम ।

माशूका—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रिया, प्यारी, प्रियतमा ।

माष—(संज्ञा, पु०, सं०) उरद, माशा, देह पर काले रंग का मसा । * (संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि० माख] क्रोध ।—**पर्णी**-(स्त्री०) वन-उरद ।—**वरी**-(स्त्री०) उरद की बरी ।

माषीण—(संज्ञा, पु०, सं०) उरदों का खेत ।

मास—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्ष का बारहवाँ भाग, दो पक्षों या प्रायः ३० दिन का समय, महीना । *(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मांस] माँस, गोश्त । —**पंचांग**-(पु०) मासिक पंचाङ्ग । [मंथ कैलेंडर] —**फल**-(पु०) महीने का फल । [फलित कौ०]

मासना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मिश्रण] मिलाना । (क्रि० स०) मिलाना ।

मासांत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महीने का अंत, अमावस्या, संक्रांति । "मासांते म्रियते कन्या"—ज्यो० ।

मासा—(संज्ञा, पु०) [दे० माष] माशा ।

मासिक—(वि०, सं०) माहवारी, मास सम्बन्धी, महीने मे एक बार होने वाला, मास का । [मंथली] **—धर्म**-(पु०) माहवारी रजोधर्म ।**—विवरण**-(पु०) माहवारी ब्योरे का वर्णन । [मंथली रिपोट]

मासी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातृष्वसा] मौसी, माँ की बहिन ।

मासुरी—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) दाढ़ी, शत्रु, बैरी ।

मासूम—(वि०, अ०) निरपराध, छोटा बच्चा ।

मास्को—(संज्ञा, पु०) रूस की राजधानी ।

माह*—(अव्य०, दे०) [सं० मध्य] माँहि, में, बीच । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माघ] माघ का महीना । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माष] उरद, माष । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) मास, महीना, चाँद । **—वार**-(क्रि० वि०, फ़ा०) प्रतिमास । (वि०) प्रतिमास का, मासिक ।**—वारी**-(वि०, फ़ा०) प्रतिमास का ।

माहत*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० महत्ता] महत्व ।

माहताब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चंद्रमा ।

माहताबी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) महताबी, एक तरह का वस्त्र, एक आतिशबाजी । (वि०) चाँद जैसा उज्ज्वल ।

माहना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० उमाहना] उमाहना ।

माहली—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० महल] महली खोजा, सेवक, दास, अंतःपुर का नौकर ।

माहाँ*‡—(अव्य, दे०) [हि० महँ] में ।

माहात्म्य—(संज्ञा, पु०, सं०) महत्व, महिमा, गौरव, बड़ाई, महत्ता । "कौन वर्णन कर सकेगा आपका माहात्म्य"—हितैषी० ।

माहिं*—(अव्य, दे०) [सं० मध्य] में, बीच, भीतर, अन्दर, अधिकरण का चिह्न, में, पर, पै, [माँहिं, मह (दे०)] ।

माहिर—(वि०, अ०) जानकार, निपुण ।

माहियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) हालत, दशा ।

माहिला*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मल्लाह] माँझी, केवट ।

माहिष—(वि०, सं०) भैंस-संबंधी । "माँहिषञ्च शरच्चन्द्र चंद्रिका धवलं दधि"—[भो० प्र०] ।

माहिष्मती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्षिण देश का एक प्राचीन नगर ।

माहिष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्ण-संकर, क्षत्रिय से उत्पन्न वेश्या-पुत्र ।

माही*—(अव्य, दे०) [हि० माँहि] में, मध्य, बीच, माँहिं । "जिनके कछु विचार मन माहीं"—[रामा०] ।

माही—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मछली ।**—मरातिब** -(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) राजाओं के आगे हाथियों पर चलने वाले मछलियों या ग्रहों के चिह्न वाले ७ झंडे ।

माहुर—(संज्ञा, पु०, दे०) (सं० मधुर] विष, जहर । " मनहु जरे पर माहुर देई"—[रामा०] ।

माहेंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अस्त्र (प्राची०) ऐन्द्रास्त्र ।

माहेश्वर—(वि०, सं०) महेश्वर-संबंधी, महेश्वर से आया हुआ । "इति माहेश्वराणि सूत्राणि"—कौमु० । (संज्ञा, पु०) एक यज्ञ, एक उपपुराण, पाणिनि के आदि वाले चौदह सूत्र जिनमें स्वरों और व्यंजनों का प्रत्याहारार्थ संग्रह है, शैव संप्रदाय का एक भेद, एक अस्त्र (प्राची०), पशुपत ।

माहेश्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा देवी, एक मातृका, वैश्यों की एक जाति ।

मिंगना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बकरी आदि की लेंड़ी ।

मिंड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मीड़ना] मींजने या मीड़ने का भाव, मीड़ने की क्रिया या मजदूरी, देशी छपाई की छींट को पक्का और चमकदार करने की क्रिया ।

मिआद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अवधि, नियत समय । [**मिआदी** (वि०)] । नियत समय का ।

मिकदार—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मात्रा, परिमाण ।

मिचकना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० मिचना] बार बार आँखें खुलना और बन्द होना । [**मिचकाना** (स० रूप०)], [**मिचकवाना** (प्रे० रूप०)] ।

मिचकाना, मचकारना—(क्रि० स०, दे०) निचोड़ना, गलाना, खँचाना, आँखें मींचना ।

मिचना—(अ० दे०) [हिं० मीचना का अ० रूप०] बंद होना।

मिचराना—(क्रि० स०, दे०) धीरे-धीरे खाना, अनिच्छा या अरुचि से खाना।

मिचलाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० मतलाना] मतली आना, उपांतीच्छा होना, उबकाना, कै होने को होना।

मिछा*†—(वि०, दे०) [सं० मिथ्या] मिथ्या, झूठ, असत्य।

मिजराब—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) नाखुना, डंका, (प्रान्ती०), सितार बजाने की अँगूठी जो बहुधा तार की होती है।

मिज़ाज—(संज्ञा, पु०, अ०) स्वभाव, प्रवृत्ति, प्रकृति, तासीर, किसी वस्तु का सदा रहने वाला मूल गुण, शरीर या मन की दशा, दिल, तबीयत। **—दार**-(वि०) घमंडी, अभिमानी, मिज़ाजी।**—शरीफ़**-(वाक्य, अ०) आप कुशलक्षेम से तो हैं, आप अच्छे तो है। **मुहा०—खराब होना**-मन में दुःख, अप्रसन्नतादि होना, बीमारी या अस्वस्थता होना।**—पाना**-किसी के स्वभाव से परिचित होना, अनुकूल या प्रसन्न देखना।**—पूछना**-यह पूछना कि आप स्वस्थ तो हैं, शरीर तो अच्छा है। घमंड, अभिमान, शेखी।**—न मिलना**-घमंड के मारे किसी से बात न करना। **मिज़ाजपुर्सी करना**—मारना (व्यंग)।**—सातवें आसमान पर होना**-अभिमान बढ़ जाना।

मिजाजी—(हिं०, दे०) [फ़ा० मिजाज+ई प्रत्य०) घमंडी।

मिटना—(क्रि० अ०) [स० मृष्ट] किसी रेखा या चिह्न आदि का न रह जाना, विनष्ट या बरबाद हो जाना, खराब हो जाना। [**मिटाना, मिटवाना** (स० रूप०)], [**मिटावना, मिटवाना** (प्रे० रूप)]।

मिटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घड़ा, गगरी।

मिट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मृत्तिका] पृथ्वी के धरातल का चूर्ण जैसा पदार्थ, खाक, धूलि, जमीन, भूमि की नर्म चट्टान, राख, विभूति, भस्म, देह, शरीर, [माटी (दे०)]।**—का पुतला**-(यौ०) मनुष्य का शरीर।**—खराबी**-दुर्दशा, विनाश, बरबादी। राख, भस्म, शरीर, देह, बदन। **मुहा०—करना**-नष्ट या खराब करना।**—के मोल**-बहुत सस्ता।**—डालना**-दोष छिपाना, किसी बात को जाने देना।**—देना**-कब्र में तीन तीन मुट्ठी मिट्टी छोड़ना, कब्र में गाड़ना (मुसल०) **—में मिलना (मिलाना)**-नष्ट या चौपट होना (करना), मरना (मारना)।**—करना (होना)**-नष्ट करना (होना)।**—खराब होना (करना)**-दुर्दशा होना (करना)।**—पलीद करना**-बरबाद करना, दुर्दशा करना, खराबी करना। मुरदा, लाश, शव, मृतक, शारीरिक गठन, चंदन का सार जो इतर में दिया जाता है।**—का तेल**-(पु०) तेल-जैसा एक तरल खनिज पदार्थ जो पृथ्वी से निकलता और जलाने के काम आता है।

मिट्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० मीठा] चूमा, चुम्बन।

मिट्ठू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मीठा+ऊ प्रत्य०] मीठा बोलने वाला, तोता, मृदु, मधुरभाषी। (वि०) मौन या चुप रहने वाला, अनबोला, प्रियभाषी, प्यारी बातें कहने वाला।

मिठ—(वि०) [हिं० मीठा] मीठा का संक्षिप्त रूप (यौगिक में) जैसे—मिठबोल।**—बोला**-(पु०) [हिं० मीठा बोलना] मधुर या प्रियभाषी, कपटी जो ऊपर से मीठी बातें करने वाला हो।**—लोना**-(पु०) कम नमक वाला।

मिठरी, मठरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मठरी, नमकीन पकवान विशेष।

मिठाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० मीठा+आई प्रत्य०] मिष्टान, माधुरी, मिठास, मीठी वस्तु, अच्छा पदार्थ।

मिठास—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० मीठा+आस प्रत्य०] माधुर्य, मीठापन, मिठाई।

मिठिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चुंबन, चूमा, मिट्ठी।

मितंग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मितंगम्] हाथी।

मित—(वि०, सं०) परिमित, सीमाबद्ध, मर्य्यादित, सीमा, हद, कम, थोड़ा। "विरराम महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः"—माघ०।**—भाषी**-(पु०) थोड़ा या कम या मर्यादित बोलने वाला। "प्रकृत्या-मित भाषिणः"—माघ०।**—व्यय**-(पु०) कम या थोड़ा या मर्यादित खर्च करना, किफायतशारी करना।**—व्ययिता**-(स्त्री०) किफायतशारी, कमखर्ची।**—व्ययी**-(पु०) कम या थोड़ा व्यय करने

वाला, नियमित रूप से खर्च करने वाला, किफायतशार, कमखर्च।

मितक्षरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक स्मृति ग्रन्थ, याज्ञवल्क्य स्मृति की टीका।

मितप्रद—(वि०, यौ०, सं०) सीमाबद्ध देने वाला, हिसाब से देने वाला। "सुख मितप्रद सुनु राजकुमारी"—[रामा०]।

मिताई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मित्रता] मित्रता, मित्रत्व, दोस्ती। "मम जनकहिं तोहिं रही मिताई"—[रामा०]।

मिताक्षरा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) याज्ञवल्क्य-स्मृति की विज्ञानेश्वरी टीका।

मितार्थ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) थोड़ी बातों से अपना कार्य सिद्ध करने वाला दूत, सूक्ष्मार्थ।

मिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीमा, मर्यादा, हद, परिमाण, मान, काल की अवधि।—**शास्त्र** (पु०) भूमाप शास्त्र, क्षेत्रमिति।

मिती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मिति] महीने की तिथि या तारीख, दिन, दिवस। **मुहा०—पुगना या पूजना**—हुंडी का नियत समय पूरा हो जाना।

मित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) सखा, साथी, सहायक, संगी, दोस्त, शुभचिंतक, १२ आदित्यों में से एक, मरुद्गण में प्रथम वायु, एक राज-वंश जिसका राज्य पांचाल और अंबर था (प्राचीन), आर्यों के एक पुराने देवता। "कपटी मित्र शूल मम चारी"—[रामा०]।—**द्रोही**—(वि०, सं०) दुष्ट, खल, मित्र का द्रोही।—**लाभ**—(संज्ञा, पु०, सं०) दोस्त का मिलना, मैत्री का लाभ।—**वर्ग**—(संज्ञा, पु०, सं०) दोस्त लोग, सुहृद्गण।

मित्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मिताई, दोस्ती, मित्रत्व।

मित्रत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) मिताई, दोस्ती, मित्रता।

मित्राई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मित्रता] मित्रता, मित्रत्व, दोस्ती, मिताई।

मित्रा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शत्रुघ्न की माता, सुमित्रा, मित्रदेव की स्त्री।

मित्राक्षर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ऐसा पद जो छंद जैसा ज्ञात हो।

मित्रावरुण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मित्र और वरुण देवता (वैदिक)।

मित्रावसु—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्वावसु का एक आत्मज।

मिथ—(अव्य०) [सं० मिथस्) आपस में, परस्पर, अन्योन्य।

मिथिल—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा जनक।

मिथिला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तिरहुत का पुराना नाम। "जिन मिथिला तेहि समय निहारी"—[रामा०]।—**पति**—(पु०) राजा जनक। "हे मिथिलापति वेग दिखाउ, शरासन शंकर को किन तोरो"—**दास**०।

मिथिलेश—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० मिथिला + ईश] राजा जनक, मिथिलाधिपति, मिथिलेश्वर। "मिलहिं नाथ मिथिलेशकुमारी"—[रामा०]।

मिथुन—(संज्ञा, पु०, सं०) युग्म, स्त्री-पुरुष का जोड़ा, दंपति, समागम, संयोग, मेषादि १२ राशियों में से तीसरी राशि (ज्यो०)।

मिथ्या—(वि०, सं०) मृषा, झूठ, असत्य, अनृत। "कालै करमै ईश्वरै मिथ्या दोष लगाय"—[रामा०]।—**आरोप**—(पु०) दोषारोपण [फाल्स-चार्ज]।—**दृष्टि**—(स्त्री०) कर्मफलापवादक ज्ञान, नास्तिका, असत्यदर्शन।—**भाषी**—(पु०) झूठ या असत्य बोलने वाला। "मिथ्याभाषी सांचहू कहै न मानै कोय"—[नीति०]।—**भ्रम**—(पु०) व्यर्थ शंका। [मिस एप्रीहेंशन]।—**लेखा**—(पु०) बही आदि में झूठा लेखा। [फाल्सएंट्री]।—**वादी**—(पु०) झूठ बोलने वाला, असत्यवक्ता, झूठा। [मिथ्यावादिनी (स्त्री०)]।—**विवरण**—(पु०)।

मिथ्याचार—(वि०) [सं० मिथ्या + आचार] असत्य या झूठा व्यवहार, दांभिकाचार।

मिथ्याचारी—(वि०, सं०) दांभिक, असत्य या झूठा व्यवहार करने वाला।

मिथ्यात्व—(संज्ञा, पु०, सं०) माया, प्रपंच, मिथ्या होने का भाव, असत्यता।

मिथ्याध्यवसिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमें मिथ्या या असंभव बात का निश्चय करके दूसरी बात का कथन किया जाता है (अ० पी०)।

मिथ्याभियोग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) असत्य या झूठा दोषारोपण, मिथ्यावाद, झूठी लड़ाई।

मिथ्यायोग—(संज्ञा, पु०) ऋतु या प्रकृति आदि के प्रतिकूल **कार्य** [**मिथ्यायोगी** (वि०)] ।

मिथ्याहार—(संज्ञा, पु०) [सं० मिथ्या+आहार] अपथ्याहार, अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना । "मिथ्याहार विहाराभ्यां दोषाह्यामशया-श्रयाः"—[मा० नि०] [**मिथ्याहारी** (वि०)] ।

मिथ्योपचार—(संज्ञा, पु०, सं०) गलत उपचार ।

मिनती†—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० विनति] विनती, प्रार्थना, निवेदन ।

मिनमिनाना—(क्रि० अ०) धीमे स्वर में बोलना ।

मिनहा—(वि०, अ०) मुजरा किया हुआ, जो काट या घटा लिया गया हो ।

मिन्नत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) निवेदन, प्रार्थना, विनती ।

मिमियाई, मोमियाई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० मोमियाई] बनावटी या नकली शिलाजीत ।

मिमियाना—(क्रि० अ०) [अनु० मिन मिन] बकरी या भेड़ी की बोली ।

मिमियाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बकरी या भेड़ी का शब्द ।

मियाँ—(संज्ञा, पु०, फा०) मालिक, स्वामी, पति, महाशय, मुसलान बूढ़ा ।—**मिट्ठू**—(पु०) प्रिय-वादी, मीठी बोली बोलने वाला, मधुर-भाषी, तोता, मूर्ख । **मुहा०—अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना**-अपने ही मुँह से अपनी प्रशंसा करना ।

मियान—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तलवार का म्यान । "कढ़त मियान गर्त सों सुदामिनी लौं कौधि"—[अ० व०] ।—**में से निकल पड़ना**-बहुत तेज स्वभाव का होना ।

मियाना—(वि०, फ़ा०) मझोले आकार का । (संज्ञा, पु०, दे०) एक तरह की पालकी, [म्यान (दे०)] ।

मिरग, मिरिग*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मृग] [मिरगा (दे०)] हरिन । "ताकी सुघराई कहूँ पाई है न मिरगो ।"

मिरगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मृगी] मूर्छा सम्बन्धी एक मानसिक रोग, अपस्मार या मृगी रोग, हरिनी ।

मिरच, मिरचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मरिच] लाल मिर्च ।

मिरचवान—(संज्ञा, पु०, दे०) बरात को जनवास देकर मिर्च (ठंडाई) और शरबत देने की रीति, (ब्याह) ।

मिरजई, मिरजाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० मिरजा] कमर तक का तनीदार अंगा ।

मिरज़ा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मीर या अमीर का लड़का, अमीर-जादा, कुँवर, राजकुमार, मुगलों की एक उपाधि ।

मिर्च—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मरिच] कटु फलों या फलियों का एक वर्ग जिसके मुख्य दो प्रकार हैं—(१) [मिरचा (दे०)] लाल मिर्च (२) गोल या काली मिर्च, इनका उपयोग भोजन के मसाले में होता है ।

मिलक†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मिल्क] जाय-दाद जमींदारी, मिलकियत, जागीर ।

मिलकियत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जायदाद, जमीन ।

मिलकी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जमींदार, अमीर, धनवान ।

मिलन, मिलनि—(संज्ञा, पु०, सं०) मिलाप, भेंट, मिलावट । "बिछुरन मीन को औ मिलनि पतंग की" ।

मिलनसार—(वि०) [हि० मिलन+सार फ़ा०] सुशील, सबसे मेल रखने और सद्व्यवहार करने वाला । [**मिलनसारी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

मिलना—(संज्ञा, पु०, दे०) भेंट, मुलाकात, मिलाप । (क्रि० स०, दे०) [सं० मिलन] दो या अधिक पदार्थों का योग होना, सम्मिलित या मिश्रित होना, संयुक्त होना, समूह के अंतर्गत होना । **मिलाजुला**—(यौ०) मिश्रित । सटना, चिपकना, जुड़ना, एक हो जाना, पूर्णतया या अधिकांश में बराबर होना, एक सा होना, भेंट होना, आलिंगन करना, भेंटना, गले लगाना या करना, मुलाकात या भेंट होना, लाभ या नफा होना, मेल-मिलाप होना, प्राप्त होना ।—**जुलना**—(यौ०) बहुत कुछ समानता रखना, परस्पर मेल-मिलाप करना । [**मिलना, मिलाना** (यौ०)] । [**मिलाना**, (सं० रूप)], [**मिलवाना**, प्रे० रूप)] । **मुहा०—मिल बाँटकर खाना**-मिल-जुलकर बाँटकर या सम्मिलित होकर उपभोग करना ।

मिलनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मिलना+ई प्रत्य०] ब्याह की वह रीति जिसमें कन्या की ओर वाले वर की ओर वालों से गले मिलते और भेंट देते है।

मिलाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मिला+ई प्रत्य०] मिलने का भाव, भेंट, मिलावट।

मिलवाना—(क्रि० स०) दूसरों द्वारा मिलने के कार्य के लिए प्रेरित करना, मिलन कराना।

मिलान—(संज्ञा, पु०) [हि० मिलाना] मिलाने का भाव, मुकाबला, तुलना, ठीक होने को जाँच। **मुहा०—खाना**-समान होना।—**मिलना**-तुलना में बराबर उतरना।

मिलाना—(क्रि० सं०) [हि० मिलना का स० रूप] सम्मिलित या मिश्रित करना, जोड़ना, एक करना, चिपकाना, सटाना, भेंट या परिचय करना, तुलना या मुक़ाबला कराना, अपना साथी या भेदिया करना, संधि कराना, बजाने के बाजों का स्वर ठीक करना, अपने पूर्व पक्ष मे लाना, ठीक होने की परीक्षा करना, [मिलावना (दे०)]। [**मिलवाना**—(प्रे० रूप] । [**मिलाई, मिलवाई** (सज्ञा, स्त्री०)]।

मिलाप—(संज्ञा, पु०) [हि० मिलना+आप प्रत्य०] मिलने का भाव या काय, मित्रता, भेंट, मुलाक़ात।

मिलापी—(वि०) [हि० मिलाप] मिलनसारो, मेली, सज्जन, मित्र।

मिलाव—(संज्ञा, पु०, दे०) मिलौनी, मेल, बनाव, मित्रता।

मिलावट—(संज्ञा, स्त्री०,) [हि० मिलाना+आवट प्रत्य०) मिलाने का भाव, बढ़िया मे घटिया वस्तु मिश्रित करना, खोट, मेल।

मिलास—(सज्ञा, स्त्री०, दे०) मिलने की इच्छा।

मिलिक*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मिल्क] मिल्कियत, जागीर, जमीदारो।

मिलित—(वि० स०) मिला हुआ, सम्मिलित, मिश्रित, युक्त।

मिले जुले रहना—(दे०) मेल-मिलाप या एकी भाव से रहना, प्रेम-पूर्वक रहना, ऐक्यभाव से रहना।

मिलैया—(वि०, दे०) मिलाने या मिलने वाला।

मिलौना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० मिलाना] मिलाना, गौ का दूध दुहना। (संज्ञा, पु०, दे०) मिलना, भेंट, मिलाप।

मिल्कियत—(संज्ञा स्त्री०, अ०) ज़मीदारी, माफी, जागीर, धन, संपत्ति, जायदाद।

मिल्लत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मिलन+त प्रत्य०] मेल-जोल, मिलाप, मिलनसारी, घनिष्ठता। (संज्ञा, स्त्री०, अ०) मत, धर्म, संप्रदाय, पंथ।

मिश्र—(वि०, सं०) मिला या मिलाया हुआ, संयुक्त, मिश्रित, उत्तम, श्रेष्ठ, एक ही जाति की भिन्न-भिन्न नाम वाली सम्बन्धित संख्यायें (गणि०)। (संज्ञा, पु०, सं०) कान्यकुब्ज, सरयूपारी तथा सारस्वतादि ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि, मिस्र देश (अफ्रीका)।—**केशी**-(स्त्री०) एक अप्सरा।—**जाति**-(वि०) दोगला, वर्णसंकर।

मिश्रण—(संज्ञा, पु०, सं०) मिलावट, मेल, दो या अधिक वस्तुओं को एक करना, जोड़ना, मिलाना, एकीभाव, जोड़ या योग लगाने की क्रिया, जोड़ (गणि०)। [**मिश्रणीय** (वि०)]।

मिश्रित—(वि०, सं०) एक ही मे मिला हुआ।

मिश्री—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए—मिस्री। "मिश्री सा घुल जाता था मन छूते ही आँसुकन"—महादेवी।

मिष—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्याज, बहाना, मिस, हीला, छल, ईर्ष्या, कपट, डाह।

मिष्ट—(वि०, सं०) मधुर, मीठा।—**भाषी**-(पु०) मिष्टवादी, मीठा, प्रिय या मधुर बोलने वाला, मधुरभाषी।

मिष्टान्न—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मिठाई, मीठा पकवान।

मिस, मिसि, मिसु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मिष] ब्याज, बहाना, हीला हवाला, पाखंड, छल, नकल।

मिसकीन—(वि०, दे०) [अ० मिस्कीन] दीन, दुखिया, ग़रीब, निर्धन, बेचारा, बापुरा। [**मिसकीनी** (संज्ञा)]।

मिसकीनता*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मिसकीन+ता सं० प्रत्य०] निर्धनता, दीनता।

मिसना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मिश्रण] मिलना, मिश्रित होना। (क्रि० अ०, दे०) [हि० मिसला का अ० रूप] मला, मसला या मांजा जाना, मीसा जाना, पिसना।

मिसर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मिश्र] मिश्र देश, [मिसिर (दे०)]।

मिसरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मिसरअ] उर्दू-फारसी या अरबी के छंद का एक चरण।

मिसरी, मिसिरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मिश्री] मिश्र देश का निवासी, मिश्र की भाषा, एक प्रकार की साफ जमाई हुई दानेदार चीनी [मिश्री, मीसिरी मिसिरी (दे०)]। "बाँस फाँस औ मीसिरी, एकै भाव बिकाय"।

मिसल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मिसिल] कागजों का समूह, मुकदमे के कागजों का मुट्ठा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मिसल] समान, तुल्य, रणजीतसिंह के बाद स्वतन्त्र हो गये सिक्खों के समूह।

मिसाल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) नजीर, उपमा, उदाहरण, कहावत, नमूना।

मिसिल—(वि०, दे०) [अ० मिस्ल] समान, तुल्य, नज़ीर। (संज्ञा, स्त्री०) किसी विषय या मुकदमें के कागजों का समूह।

मिस्तर—(संज्ञा, पु०) [हिं० मिस्तरी] काठ का एक औजार जिससे राज लोग छत पीटा करते हैं, पिटना, लकीर खींचने का तागेदार दफ्ती का टुकड़ा। (संज्ञा, पु०) मेहतर। (वि०, दे०, अं०) मिस्टर, महाशय।

मिस्तरी, मिस्तिरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० मास्टर] हाथ का चतुर कारीगर, दस्तकार, [मिस्त्री (दे०)]।—**खाना**-(पु०) बढ़ई, लोहारों के काम करने का घर।

मिस्र—(संज्ञा, पु०) [अ० नगर] अफ्रीका महाद्वीप के उत्तर-पूर्व में लाल सागर के तट पर एक देश।

मिस्री—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० मिस्र] मिस्र देश का निवासी या सम्बन्धी, मिस्र देश का, मिस्र देश की भाषा, मिसिरी, मिश्री, साफ करके जमाई हुई दानेदार चीनी।

मिस्ल—(वि०, अ०) तुल्य, बराबर, समान।

मिस्सा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मिसना] कई दालों के मेल से बना आटा या पिसान।

मिस्सी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० मिसी=ताँबे का] दाँतों का एक काला मंजन जो बहुधा सौभाग्यवती स्त्रियाँ लगाती हैं। कई अन्नों के मिले आटे की रोटी।

मिहदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मेंहदी, एक वृक्ष विशेष जिसकी पत्ती से स्त्रियाँ हाथ पाँव रँगती हैं।

मिहना—(संज्ञा, पु०, दे०) ताना, बोली-ठठोली। **मुहा०**—**मारना**-ताना मारना, ठठोली करना।

मिहनत, मेहनत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) परिश्रम, मशक्कत। [**मिहनती, मेहनती** (वि०)]।

मिहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) हिजड़ा, जनखा, नपुंसक, मेहरा।

मिहरारू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मेहरारू (ग्रा०) स्त्री, नारी।

मिहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्त्री, नारी, कहारिन, महरी।

मिहाना—(क्रि० अ०, दे०) सीड़ना, गीला होना, भीगना।

मिहानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मथानी।

मिहिका—(संज्ञा, पु०, सं०) नीहार, कुहरा।

मिहिर—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य्य, चन्द्रमा, बादल, मदार या आक का पौधा, खत्रियों की एक जाति, मेहरा, मेहरोत्रा।

मिहिरकुल, मेहरूलगुल—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० मह्रगुल का सं० रूप] शाकल देश के हूण वंशीय राजा तूरमान (तोरमाण) का पुत्र।

मींगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुद्ग=दाल] बीज के भीतर का गूदा, गिरी।

मींच, मीचु—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मृत्यु] मृत्यु, मौत। "धर्म करिय, प्रभु जस कहिय जानि सीस पै मीच"।

मींचना—(क्रि० स०, अ०, दे०) मूँदना (आँख), ढकना, मिचना, मरना, बंद होना।

मींजना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० मीड़ना] मसलना, मलना, मर्दन करना, दबाना।

मींजा—(संज्ञा, पु०) [प्रान्ती०] चने के बेसन से बना एक सालन।

मींजू—(संज्ञा, पु०, दे०) मसूर, कलाई विशेष।

मींड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मीडम्]—संगीत में दो स्वरों के मध्य का संधिभाग, या दो स्वरों का ऐसा मिलान जिसमें दोनों स्पष्ट रहें (संगी०)। कसक परन्तु मींड़ भी कैसी—मैथिली०।

मीड़ना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० मॉड़ना] मलना, मसलना, हाथों से दबाना।

मीआद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अवधि [म्याद, मिआद (दे०)]।—**बोलना**-(स्त्री०) सजा का समय घोषित करना।

मीश्रादी—(वि०) [अ० मीश्राद+ई प्रत्य०] नियत अवधि वाला [मियादी, म्यादी (दे०)]। —**बुखार**–(पु०) वह ज्वर जो एक निश्चित मियाद तक रहता है ।

मीचना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मिष=झपकना] आँखें मूँदना या बंद करना । [**मिचाना** (स० रूप)], [**मिचवाना** (प्रे० रूप)] ।

मीच, मीचु*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मृत्यु] मौत । "तिय मिसु मीचु सीस पै नाची"—[रामा०] ।

माजना—(क्रि० स०) मसलन, मलना ।

मीज़ान—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) योग, जोड़ (गणि०), तराजू । **मुहा०—देना (लगाना)**-जोड़ना ।

मीठा*—(वि०, दे०) [सं० मिष्ट] मधुर, मधु या चीनी सा स्वाद वाला । "मीठा मीठा कुछ नहीं मीठा जाकी चाह"—[नीति०] । स्वादिष्ट, मजेदार, रुचिर, मध्यम, मंद, हलका, धीमा, सुस्त, साधारण, मामूली, नपुंसक, नामर्द, सीधा, रोचक, प्रिय, रुचिकर । [**मीठी** (स्त्री०)] । (संज्ञा, पु०) मिठाई, गुड़ आदि ।—**ज़हर या विष**–(पु०) बच्छनाग, वत्सनाग, सींगिया ।—**तेल**–(पु०) तिलों का तेल ।—**नीबू**–(पु०) चकोतरा या जंभीरी नीबू ।—**पानी**–(पु०) नींबू का सत मिला जल, लेमनेड, सुस्वादु जल (विलो०—खारी पानी) ।—**भात,—चावल**–(पु०) गुड या चीनी के शरबत में पकाया हुआ चावल ।—**मुहा०—होना**–लाभ या आनन्द मिलना ।—**मुँह का मीठा**–मधुर भाषी किन्तु कपटी ।

मीठिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चुंबन, [मिट्ठी (दे०)] चूमा, चूमी, चुंबा, मच्छी ।

मीठी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मीठा का स्त्री०] [मिट्ठी (दे०)], मिठिया, चूमा, मच्छी । (वि०) मधुर, मिष्ट । "मीठी बात लगति अति प्यारी"—[कहा०] ।—**छुरी**–(स्त्री०) देखने में तो अच्छा या मिष्टभाषी मित्र किन्तु वास्तव में शत्रु, विश्वासघाती, मधुरभाषी कपटी व्यक्ति ।—**नींद**–(स्त्री०) सुख की नींद ।—**मार**–(स्त्री०) वह मार जिसका चोट या घाव बाहर न दीख पड़े ।

मीणा—(संज्ञा, पु०, सं०) जंगली मनुष्यों की एक जाति ।

मीत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मित्र] मित्र, दोस्त, सखा, साथी, संगी । "मीत न नीति गलीत है"—वि० ।

मीतन—(वि०, दे०) [सं० मित्र] सनामी, एक नाम वाला, सखा, सनेही । (संज्ञा, पु०) मीत का बहु० व० ।

मीता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मित्र] मीत, मित्र । "रघुबर मन के साँचे मीता"—[स्फुट०] ।

मीन—(संज्ञा, पु०, सं०) मछली, मेषादि १२ राशियों में से अंतिम राशि । "सुखी मीन जहँ नीर अगाधा"—[रामा०] । **मुहा०—मेष करना**–किन्तु-परन्तु या इधर-उधर करना । "करके मीन मेख सब ओर"—मैथिली० ।—**मेष होना**–गड़बड़ होना ।—**मेष निकालना**–दोष निकालना । "काम विधि बाम की कला में मीन-मेख कहा"—[कु० श०] —**केतन**–(पु०) कामदेव ।—**केतु**–(पु०) कामदेव ।

मीना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मीन] मछली । "जल-संकोच विकल भये मीना"—[रामा०] । (संज्ञा, पु०, दे०) राजपूताने की एक वीर जाति । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) नीले रंग का एक बहुमूल्य रत्न, चाँदी-सोने पर का रंग-विरंगा काम, शराब रखने का पात्र, सुराही या कंटर । "हँसी के साथ रोना है मिसाले कुलकुले मीना"—जौक ।—**कारी**–(स्त्री०, फ़ा०) चाँदी-सोने पर रंगीन काम ।—**बाज़ार**–(पु०) देहली में अकबर बादशाह का लगवाया हुआ विशेष हाट या मंडी ।

मीनार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मनार] गोलाकार अति ऊँची इमारत, स्तंभ, लाट, कंगूरा ।

मीमांसक—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता, किसी विषय की विवेचना या मीमांसा करने वाला ।

मीमांसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनुमान और तर्कादि के द्वारा यह स्थिर करना कि यह बात मान्य है या नहीं, छः दर्शनों में से उत्तर मीमांसा और पूर्व मीमांसा नामक दर्शन शास्त्र, निर्णय ।

मीमांसित—(वि०, सं०) निर्णीत, विचारित, सिद्धान्तित ।

मीमांस्य—(वि०, सं०) विचारने या मीमांसा करने योग्य ।

मीर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [अ० अमीर] नेता प्रधान, सरदार, राजा, धर्म का आचार्य्य, सैयदों की उपाधि (मुस०), जीतने वाला, सबसे प्रथम प्रतियोगिता करने वाला । "फ़रजी मीर न है सकै,

टेढ़े की तासीर"—रहीम०।—फर्श-(पु०) फर्श की चाँदनी के कोनों पर रखे जाने वाले पत्थर। —मजलिस-(पु०) सभापति, राजा, सरदार।

मीरास—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बपौती, तारका (प्रान्ती०)।

मीरासी—(संज्ञा, पु०) [अ० मीरास] मुसलमान लोग जो गाने-बजाने या मसखरेपन का काम करते हैं। [**मीरासिन** (स्त्री०)]।

मील—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० माइल] आधे कोस की दूरी, आठ फर्लांग या १७६० गज की दूरी। "किये राहेफना कोई न फर्सक है न मील" —जौक। (संज्ञा, पु०, दे०) [अं० मिल] कार्यालय।

मीलन—(संज्ञा, पु०, सं०) संकुचित या बंद करना, मीचना। [**मीलनीय, मीलित** (वि०)]।

मीलित—(वि०, सं०) सम्मिलित, मिकोड़ा या बद किया हुआ। "उपान्तसम्मीलितलोचनो नृपः" —रघु०। (संज्ञा, पु०) एक अलंकार जहाँ एक होने से उपमेय और उपमान में अभेद या भेद का न जान पड़ना कहा जावे, (अ० पी०)।

मुँगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुद्गर] काठ का हथौड़ा जैसा औज़ार। [**मुँगरी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मोगरा] नमकीन बुँदिया।

मुँगोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मूँग+बरा] मूँग के बरे, बड़े।

मुँगौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० मूँग +बरी] मूँग की बनी हुई बरी।

मुंड—(संज्ञा, पु०, सं०) मूँड़, सिर। "फिर मरूँ न क्यों मुंड फोड़ के"—मैथिली०। असुरेश शंभु का सेनापति, एक दैत्य जिसे दुर्गा जी ने मारा था, पेड़ का टूँठ, राहु ग्रह, कटा सिर, एक उपनिषद्। **मुंडा**—(वि०) मुँड़ा हुआ।—**माला**-(स्त्री०) खोपड़ियों या कटे हुए सिरों का हार जो शिवजी या कालीदेवी के गले का गहना है।—**मालिनी**-(स्त्री०) काली देवी।—**माली**-(पु०) शिव जी।

मुँड़चिरा, मुँड़चिरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मूँड़+चीरना] एक तरह के मुसलमान भिखारी, जो अपने शरीर के किसी भाग, सिर आदि को घायल करके लोगों को दिखाते और धन लेते हैं, लेने देने में अति हठ करने वाला।

मुंडन—(संज्ञा, पु०, सं०) १६ संस्कारों में से एक संस्कार, सिर के बालों को उस्तरे से मूँड़ने की क्रिया, द्विजातियों के बालक के प्रथम सिर मूँड़ने का एक संस्कार (हिंदू०)।

मुँड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मुंडन] मूँड़ा जाना, सिर के बालों का बनाया जाना, लुटना, छला या ठगा जाना, घूमना।

मुंडा—(संज्ञा, पु०) [सं० मुंडी] जिसके सिर में बाल न हों या मुंडे हुए हों, जो किसी साधु या योगी का शिष्य हो गया हो, बिना सींगों का सींगदार पशु, मात्रा और ऊपर की लकीर से रहित एक महाजनी लिपि [**मड़िया** (दे०)]। एक प्रकार का जूता। (संज्ञा, पु०, दे०) एक असभ्य जाति जो छोटा नागपुर के आस-पास पायी जाती है। [**मुंडी** (स्त्री०)]।

मुँड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मुंडन+आई प्रत्य०] मूँड़ने या मुँड़ाने की क्रिया या मजदूरी।

मुँडासा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मुंड=सिर+आसा प्रत्य०] सिर का साफा।

मुँड़िया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मूँड़ना+इया प्रत्य०] साधु या संन्यासी का चेला, साधु संन्यासी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) महाजनी लिपि, मूँड़ या सिर। लो०—"मन मन भावै, मुड़िया डुलावै"।

मुंडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मूँड़ना+ई प्रत्य०] सिर के बाल मुँड़ी स्त्री, राँड़, विधवा (गाली)। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोरखमुंडी (एक औषधि-मूल) [निरगुंडी (दे०)] मूँड़ या सिर। "जटिलो मुंडी लुंचित केशः"—शं०।

मुँडेर, मुँडेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मूँड़] दीवाल का सबसे ऊपरी भाग जो छत के ऊपर रहता है।

मुँडेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मूँड=सिर +एरा प्रत्य०] छत के ऊपर उठा हुआ दीवार का सबसे ऊपरी भाग।

मुँदना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मुद्रण] ढक जाना, लुप्त होना, बंद हो जाना, छिपना, बिल या छेद का बन्द होना। (संज्ञा, पु०, दे०) ढक्कन [**मुँदवाना** (प्रे० रू०)]।

मँदरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [स्त्रि० मुँदरी] योगियों के कान का कुंडल, कर्णाभूषण ।

मुँदरी, मुँदरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुद्रा] छल्ला, मुद्रिका, अँगूठी ।

मुंशी—संज्ञा, पु०, अ०) लेख या निबंधादि लिखने वाला, लेखक, मुहर्रिर, [**मुंसी** (दे०)], [**मुंशियाइन** (स्त्री०)] ।

मुंसरिम—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रबंधकर्त्ता, दफ़्तर का एक प्रधान कर्मचारी जो मिस्लें ठीक ठिकाने पर रखता है ।

मुंसिफ—(संज्ञा, पु०, अ०) दीवानी अदालत का न्यायाधीश, इन्साफ करने वाला ।

मुंसिफी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० मुंसिफ+ई प्रत्य०] न्याय या इन्साफ करने का कार्य, मुंसिफ का पद या कार्य, मुंसिफ की कचहरी ।

मुँह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुख] मुख का बिल, मुख विवर, मुख, किसी प्राणी के बोलने और खाने-पीने का अंग ।—**अखरी***†-(वि०, दे०) शाब्दिक, जबानी, जिह्वाग्र ।—**काला**-(पु०) बदनामी, अनादर, अप्रतिष्ठा ।—**छुट**-मुँह फट ।—**जोर**-(वि०) बकवादी, वाचाल, धृष्ट, उद्दंड । [**मुँहजोरी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**तोड़**-(वि०) लाजवाब करने को ठीक विपरीत उत्तर ।—**दिखाई**-(स्त्री०) मुँह देखने की रीति, वह धन जो बहू को मुँह देखने पर दिया जाता है (ब्याह) ।—**देखा**-(वि०) जो मुँह देखकर बर्ताव करे । [**मुँह देखी** (स्त्री०)] ।—**नाल**-(स्त्री०) धुआँ खींचने की हुक्के के नैचे या सटक के छोर पर लगी हुई नली ।—**फट**-(वि०) कड़वी बातें कहने वाला, मुँह-छुट ।—**बोला**-(वि०) जो सत्यतः न हो, केवल मुख से कहा जावे ।—**भराई**-(स्त्री०) रिश्वत, घूस. मुँह भरने की क्रिया ।—**माँगा**-(क्रि०, वि०) यथेच्छा, याचना-अनुकूल, मनचाहा, कथनानुसार ।—**दर-मुँह**-(यौ०) एक दूसरे के सामने । **मुहा०**—**अँधेरे**-प्रातः, सायंकाल का समय जब अँधेरे के कारण मुख न दिखलाई देता हो ।—**(अपना सा) लेकर रह जाना**-कुछ कर न सकना, हताश या लज्जित होना ।—**आना**-मुख में छाले पड़ना और फूल जाना ।—**उतर जाना**-उदास या दुःखी होना, लज्जित होना ।—(**चेहरे**) **का रंग बदल जाना**—लज्जा, भयादि का मन पर पूरा प्रभाव पड़ना, घबरा जाना ।—**करना**-सामना करना, मिलाना, समता या बराबरी करना, साथ देना, फोड़ा चीरना या (फूटना), आक्रमण या धावा करना, टूट पड़ना, देखना, जाना ।—**खिल जाना**-प्रसन्नता से चेहरे पर विकास आ जाना ।—**खराब करना**-जीभ से बुरी बातें निकालना ।—**खुलना**-बेधड़क बातें करना ।—(**जीभ**) **चलना** (**चलाना**)-खाया जाना, व्यर्थ बकना या दुर्वचन कहना ।—**चिढ़ाना** (**बिराना**) पूरी पूरी नकल करना ।—**छूना**-नाम के लिये कहना, हृदय से न कह कर ऊपर से ही कहना ।—**चलना**-खाना, कुत्सित बोलना ।—**पर लाना**-कहना, चर्चा या वर्णन करना ।—**पेट चलना**-विसूचिका या हैजा होना ।—**फाड़ कर कहना**-स्पष्ट या निर्लज्जता से कहना ।—**पीला** (**स्याह**) **पड़ना**-लज्जा, भयादि से चेहरे का रंग बदल जाना ।—**बाँध कर बैठना**-चुपचाप रहना ।—**बाकर रह जाना**-आश्चर्य से चकित रह जाना । "चतुरानन बाइ रह्यो मुँह चारौ"—केश० ।—**भरना**-रिश्वत या घूस देना ।—**मीठा करना**-मिठाई खिलाना, कुछ देकर प्रसन्न करना ।—**बनाना**-असंतोष, रुष्टतादि से मुह का विकृत करना, चिढ़ाना, चिढ़ाने को मुँह का टेढ़ा-मेढ़ा करना ।—**में खून या लहू लगना**-चाट या चसका पड़ना ।—**बंद रखना**-कुछ न बोलना, मौन रहना ।—**में जबान न होना**-कहने की शक्ति या सामर्थ्य न होना ।—(**किसी का**)—**बंद कर देना**-उसे बोलने न देना, निरुत्तर कर देना ।—**में पानी भर आना**-लोभाना, ललचाना ।—**में लगाम न होना**-मनमानी बातें कहना ।—**लटकना**-उदास या लज्जित होना ।—**सीना** (**मुँह में ताला लगाना**)-चुपचाप रहना, कुछ न कहना या बोलना । **बे—का होना**-बहुत सीधा होना ।—**सूखना**-बहुत प्यास लगना, गले या जीभ में काँटे पड़ना या रोग के मारे गला सूखना ।—**में ताला पड़ना, लगाना** (**डालना**)-बलात् कुछ बोलने न देना ।—**से दूध टपकना** (**चूना**) बहुत अजान बालक होना ।—**लटकाना** (**फुलाना**)-असंतुष्ट या रुष्ट हो मुँह का विकृत करना, गाल-मुह फुलाना ।—**उठाना**-विरोध करना, सामने लड़ाई को तैयार होना, सामना करना ।—**से निकलना**-कुछ कह बैठना ।—**से निकालना**-कहना ।—**से फूल झड़ना** (**गिरना**)-अति मधुर और प्रियवचन बोलना ।—**का मीठा**-मधुर और प्रिय बोलने किन्तु अन्दर

कपट रखने वाला। मत्था, आँख, नाक, कान और गाल वाला, सिर का भाग, चेहरा। **अपना—काला करना**–पाप या व्यभिचार करना, बुरा काम करना, अपनी बदनामी करना। **—काला होना**–कलंकित होना। **दूसरे का—काला करना**–त्यागना, बदनाम या कलंकित करना, उपेक्षा से हटाना, बदनाम करना। **—की खाना**–अनादर होना, दुर्दशा कराना, मुँहतोड़ जवाब सुनना, हार जाना। **—न देखना**–अति घृणा से त्याग देना, भेंट न होना। **—के बल गिरना**–धोखा या ठोकर खाना, हानि उठाना। **—छिपाना (चुराना)**–शरम के मारे सामने न आना, किसी काम से दूर भागना, उसे न करना। **किसी का—ताकना**–कुछ पाने के लालच से मुँह देखना, विवश या चकित होकर देखना, सिहाना, आशा रखना, सहायता या सहारे का आसरा रखना। "ताकते हैं न दूसरों का मुँह"—हरिऔध। **—देखते या ताकते रह जाना**–आशा लगाये रहना और फिर हताश होना, विवश या चकित होकर रह जाना। **—न दिखाना**–समुख या सामने न आना। **—दिखाने योग्य न रहना**–अति लज्जित होना। **—देखकर बात कहना (करना)**–मुरव्वत करना। **—देखी करना**–लिहाज या खुशामद से पक्षपात या अयोग्य (अन्याय) करना। **किसी का—देखना (ताकना)**–सामना करना, चकित होकर देखना, सम्मुख जाना, आशा लगाना, लिहाज या मुरव्वत करना। **—धो रखना**–निराश या नाउम्मेद हो जाना। **—पर**–सामने, संमुख, प्रत्यक्ष। **—में (पर) न लाना**–न कहना, चर्चा न करना। **—पर या—से बरसना**–चेहरे या आकृति से प्रगट होना। **गाल—फुलाना या फुला कर बैठना**–चेहरे या आकृति से क्रोधित या असंतुष्ट, अप्रसन्न प्रगट होना। **—की ओर ताकना**–आशा लगाना, आसरा देखना या करना। **—फूँकना–मुहं** झुलसाना या जलाना, मुँह मे आग लगाना, दाह-कर्म करना (गाली)। **—धोकर आना**–निराश होना। **किसी के—लगना**–हुज्जत, प्रश्नोत्तर या वादविवाद करना, उद्दंड बनना, बढ़ बढ़ कर बातें करना। **—लगाना**–सिर चढ़ाना, उद्दंड या धृष्ट बनाना। **—सूखना**–लज्जा या भय से चेहरे की कांति, तेज या प्रताप चला जाना। प्यास से गला सूखना। किसी वस्तु का ऊपरी छेद, छिद्र, विवर, लिहाज, मुरव्वत। **—पर खेलना**–चेहरे पर प्रतिबिंबित या प्रगट होकर उपस्थित रहना। "मुख पर जिसके है मंजुता खेलती सी"—हरि०। **—देखे का**–जो दिल से न हो, जो दिखाने भर को हो। **—पर जाना**–लिहाज या ध्यान करना। **—मुलाहजे का रखना**–परिचित, जान-पहचान का। **—रखना**–लिहाज करना, ध्यान रखना। योग्यता, साहस, शक्ति, सामर्थ्य। **—पड़ना**–साहस होना, ऊपर का किनारा या सतह। **—तक आना या भरना**–पूर्ण रूप से भर जाना, लबालब भर जाना। **— का फूहड़**–कुत्सित भाषी, गाली बकने वाला। **—के कौवे उड़ जाना**–उदास, चिंतित या व्याकुल होना। **(किसी काम से)—मोड़ना**–इन्कार करना, नट जाना, किसी काम से दूर हटना। **—चढ़ाना**–क्रोध करना, प्रेम या स्नेह करना, सामने होना। **—चलना**–काट खाना, चुगुली करना, अनुचित या कुत्सित या व्यर्थ बात बकना या कहना, बहुत व्यर्थ बकना। **—छोरी**–लज्जा, भय से छिपकर, मुँह छिपाना। **—चुराना**–मुँह छिपाना, सामने न आना। **—ठठाना**–मुंह पर मारना, लज्जित या निरुत्तर करना, मुँह बंद करना। **—डालना**–खाना, माँगना, किसी विषय में भाग लेना। **—गिरा लेना**–उदास, असंतुष्ट या हताश होना। **—तो देखें**–योग्यता या शक्ति देखें। **—थुथाना**–मुँह बनाना। **—फेरना (फेर लेना)**–उपेक्षा करना, घृणा करना, त्यागना। **—मोड़ना, —फेरना**–अप्रसन्न होना। **—पर गर्म होना**–सामने क्रोध करना। **—पर लाना**–कहना। **—(चेहरे) पर हवाई उड़ना**–मुँह की रंगत उड़ जाना, निष्प्रभ होना। **—पसारना**–अधिक माँगना, या चाहना। **—फैलाना**–अधिक चाहना, अधिक लोभ दिखाना। **—बनाना**–त्योरी चढ़ाना, अप्रसन्नता, अरुचि या घृणा दिखाने को मुँह को विकृत करना।

मुँहाचाही—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० मुँह+चाहना डींग मारना, बढ़-बढ़ कर बातें करना। "मुँहाचही सेनापति कीन्ही सकटासुर मन गर्व बढ़ायो"—वि०।

मुँहामुँह—(क्रि० वि०, यौ०, हिं०) पूर्ण, भरपूर, लबालब, मुँह तक।

मुँहासा—(संज्ञा, पु०) [हिं० मुँह+आसा प्रत्य०] यौवनारंभ में मुँह पर निकलने वाली फुंसियाँ या दाने।

मुअतबर—(वि०, अ०) विश्वस्त, विश्वासपात्र, ऐतबारी, भरोसे का।

मुअत्तर—(वि०, अ०) सुगंधित, महकदार, सुवासित ।

मुअत्तल—(वि०, अ०) कुछ दिन के लिये काम से अलग किया गया । [**मुअत्तली** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

मुअम्मा—(संज्ञा, पु०, अ०) पहेली, भेद ।

मुअल्लिम—(संज्ञा, पु०, अ०) शिक्षक ।

मुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मृत] मृत, मुर्दा, मरा हुआ [**मुई** (स्त्री०)] ।

मुआफ़—(वि०, अ०) क्षमा किया हुआ । [**मुआफ़ी** (संज्ञा, स्त्री०)] क्षमा ।

मुआफ़िक़—(वि०, अ०) अनुकूल, उपयुक्त, मुताबिक, अविरुद्ध । [**मुआफ़िक़त** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

मुआयना—(संज्ञा, पु०, अ०) [मुआइना(दे०)], निरीक्षण, देख-भाल, जाँच-पड़ताल, [**मुआयिन** (वि०)] ।

मुआवज़ा—(संज्ञा, पु०, अ०) [मावजा (दे०)], बदला, पलटा, किसी काम या हानि के बदले मे दिया गया धन । [कम्पनसेशन] ।

मुकट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुकुट] [मकुट (दे०)] ताज, टोपा । "मोर मुकुट कटि काछिनी"—तुल० ।

मुकटा—(संज्ञा, पु०, दे०) रेशमी धोती ।

मुकत—(वि०, दे०) [सं० मुक्त] मुक्त, बंधन-विहीन ।

मुकतई, मुकति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुक्ति) मुक्ति, मोक्ष, [मुकती, मुक्ता (दे०)] ।

मुकता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुक्ता] मोती । (वि०) (हि० प्रत्य० अ० मुकता—समाप्त होना] । यथेष्ट, अधिक, बहुत । [**मुकती** (स्त्री०)] । "मुक्तो साँठिगाँठि जो करै"—पद्मा० ।

मुकतालि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) मुक्तावली, मोतियों की लड़ी ।

मुकताहल—(संज्ञा, पु०, दे०) मुक्ता, मोती ।

मुकतेरा, मुकतो, मुकतेरो—(क्रि० वि०) [व्र०] बहुत, अधिक ।

मुकदमा—(संज्ञा, पु०, अ०) अभियोग, नालिश, दावा, दो पक्षों में किसी अपराध, धन, स्वत्वाधिकारादि के संबंध का मामला जो विचारार्थ न्यायालय में जाये । (**मे)—बाज**-(पु०) [अ०, मुक़दमा + बाज़ फ़ा०) बहुत मुक़दमे लड़ने वाला । [**मक़दमेबाज़ी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

मुकद्दम—(वि०, अ०) आवश्यक, पुराना, मुखिया ।

मुकद्दर—(संज्ञा, पु०, अ०) भाग्य । "रिजक इन्सा को मुकद्दर के सिवा मिलता नहीं"—स्फु० ।

मुकद्दस—(वि०, अ०) पवित्र, जैसे—कुरान मुकद्दस ।

मुकना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मकुना] बेदाँत का हाथी, बिना मुच्छ का आदमी । (मकुना :*† क्रि० अ०, दे०) [सं० मुक्त] छूटना, समाप्त होना, चुकना ।

मुकफ़्फ़ा—(वि०, फ़ा०) काफ़ियादार या तुकान्त युक्त, एक सतुकांत गद्य ।

मुकम्मल—(वि०, अ०) पूर्ण, पूरा पूरा, सब का सब ।

मुकरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मा=नहीं+ हि० करना] कुछ कहकर उससे बदल जाना, नटना ।

मुकरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मुकरी] कथित बात का निषेध कर फिर उसी मे कुछ अन्य अभिप्राय प्रगटन वाली कविता या बात, जैसे— "अठयें, दसवें मो घर आवे, भाँति-भाँति की बात सुनावे । दस-दस के जोरे तार, कहु सखि सज्जन, नहि, अखबार" ।

मुकरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मुकरना +ई० प्रत्य०] कथित बाद से बदल कर अन्य अभिप्राय का सूचित करन वाली कविता, मुकरनी, कह-मुकरी । "सोटी देकै मोहिं बुलावै, रुपया देहु तो पास बिठावै, लै भागे और खेलै खेल, कहु सखी सज्जन नहि सखी रेल" ।

मुकर्रर—(वि०) दोबारा, फिर से । (अ०) नियत, नियुक्त, तैनात, निश्चित । [**मुकर्ररा** (संज्ञा, स्त्री०) ।

मुकाता—(संज्ञा, पु०, दे०) इजारा, साझा ।

मुक़ाबला—(संज्ञा, पु०, अ०) मुठभेड़, आमना, सामना, समानता, तुलना, विरोध, लड़ाई-झगड़ा, मिलान, विरोध, मुकाबिला ।

मुकाबिला—(क्रि० वि०, अ०) सामने, सम्मुख । (संज्ञा, पु०) प्रतिद्वंद्वी, शत्रु, वैरी, दुश्मन, विरोधी ।

मुकाम—(संज्ञा, पु०, अ०) टिकने का स्थान, पड़ाव, स्थान, ठहरने या रहने की जगह, विराम, घर, अवसर। "किसी ने न बजता सुना साँ मुकाम"—सौद०। **मुहा०—देना**-मृत व्यक्ति के घर में उसके वंश वालों से जाकर दुःख प्रकट करना।

मुकियाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० मुक्की + इयाना प्रत्य०] घूँसे या मुक्कियाँ लगाना या मारना।

मुकुन्द—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु भगवान्, कृष्ण, [मुकुन्दा (दे०)]।

मुकुन्दक—(संज्ञा, पु०) प्याज, साठी नामक धान।

मुकुट—(संज्ञा, पु०, सं०) राजाओं का एक प्रसिद्ध शिरोभूषण, [मकुट, मुकट (दे०)]।**—धर,—धारी**-(वि०) मुकुट को धारण करने वाला राजा।

मुकुत, मुकता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुक्ता] मोती, मुकुताहल।

मुकुताहल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुक्ता + हल] मोती। "चुनहिं रतन मुकुताहल हीरा"—पद्मा०।

मुकुर—(संज्ञा, पु०, सं०) आईना, शीशा, दर्पण, कली, मौलसरी। "राव सुभाय मुकुर कर लीन्हा" —[रामा०]।

मुकुल—(संज्ञा, पु०, सं०) कली, आत्मा, देह, एक छंद (पिं०)।

मुकुलित—(वि०, सं०) कली-युक्त कलियाया हुआ, कुछ कुछ फूला या खिली (कली), कुछ बंद कुछ खुले (नेत्र)। "सुरभिस्वयंबर मनु कियो, मुकलित शाख रसाल"—[रामा०]।

मुक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुष्टिका] बधी-मुट्ठी जो मारी जाय या मारने को उठाई जावे, घूँसा।**—(क्के) बाजी**-(स्त्री०) घूँसे बाजी।

मुक्की—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मुक्का] हलका घूँसा या मुक्का, किसी को आराम पहुंचाने के हेतु उसके शरीर को हलके घूँसों से पीटना, मुक्के मारने का युद्ध।

मुक्त—(वि०, सं०) बंधन-रहित, छूटा हुआ, स्वतंत्र, जिसे मुक्ति मिल गयी हो, फेंका हुआ।**—कंठ**-(वि०) चिल्ला कर बोलने वाला, जिसे कहने में सोच विचार न हो, पूर्ण स्वर से।**—कुंतला**-(वि०) खुले हुए बालों वाली। "मृत्यु रूपिणी मुक्तकुंतला माँ की नहीं किसी को चाह"—निराला।**—केश**-(वि०) जिसके केश खुले हों।**—द्वार नीति**-(स्त्री०) सब व्यक्तियों को समान शर्तों पर व्यापार करने देने की नीति। [ओपन डोर पालिसी]**—वाणिज्य**-(पु०) निःशुल्क व्यापार। [फ्रीट्रेड]**—व्यापार**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विरागी, कर्मत्यागी, व्यापार से विरक्त।**—हस्त**—(वि०, यौ०, सं०) वह दानी जो खुले हाथों दान करे, खुले हाथ। [**मुक्तहस्तता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मुक्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) मोती, एक अस्त्र जो फेंक कर मारा जाता था, स्फुट कविता, उद्भट।**—काव्य**-(यौ०) वह काव्य जिसमें कोई कथा या प्रबंध न चले।

मुक्तता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मुक्ति, मोक्ष।

मुक्तांबर—(संज्ञा, पु०, सं०) जैन।

मुक्ता—(स्त्री०) मोती [मुकता (दे०)]। "बिच बिच मुक्ता दाम जरायें"—[रामा०]।**—फल**-(पु०) मोती। **लो०**—"मुक्ताफलाकुल विशाल कुचस्थलीनाम्"।**—शुक्ति**-(स्त्री०) मोती उत्पन्न करने वाली सीप।

मुक्ताकर—(संज्ञा, पु०, सं०) मुक्ता का समूह। "इस भीषण वन में सुन्दर, छिपा हुआ है मुक्ताकर —पंत।

मुक्तागार—(संज्ञा, पु०, सं०) सीप। "अभी दयामयि! क्या न खुलेगा तेरा मुक्तागार"—पंत।

मुक्तात्मा—(वि०, सं०) आसक्ति शून्य, मिला हुआ मोक्ष।

मुक्तावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मोतियों की लड़ियाँ।

मुक्ति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० मुच + क्तन्] मोक्ष, [मुक्ता, मुकति, मुकती (दे०)] रिहाई, स्वातंत्र्य। "ऋते ज्ञानान्नमुक्तिः"।**—सेना**-(स्त्री०) शत्रुओं से देश को मुक्त कराने वाली सेना। [आर्मी आव् सैल्वेशन]**—धाम**-(पु०) तीर्थ स्थान।**—प्रद**-(वि०) मुक्ति देने वाला।**—मार्ग**-(पु०) साधन, मुक्ति प्राप्त करने का रास्ता।**—लाभ**-(पु०) मुक्ति, मोक्ष छुटकारा।

मुक्तिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक उपनिषद्।

मुख—(संज्ञा, पु०, सं०) बदन, आनन, चेहरा, मुँह, घर का द्वार, किसी वस्तु का अगला या ऊपरी खुला भाग आदि, आरम्भ, किसी वस्तु से पूर्व की वस्तु, नाटक में एक संधि (नाट्य०) । (वि०) मुख्य, प्रधान ।—**चपला**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आर्य्या छंद का एक भेद (पिं०) ।—**पत्र**-(पु०) किसी संस्थादि का प्रतिनिधि पत्र, उसकी रीति-नीति का प्रचारक पत्र ।—**बंध**-(पु०) प्रस्तावना, भूमिका, दीबाचा ।—**प्रक्षालना**-(पु०) मुख को दतून से साफ करना, मंजन करना, कुल्ला, करना । —**मण्डल**-(पु०) चेहरा ।—**मार्जन**-(पु०) मुँह शुद्ध करना ।—**विवर**-(पु०) मुख द्वार [माउथ केविटी]—**शुद्धि**-(स्त्री०) मुँह साफ करना, भोजन आदि के पीछे पान आदि खा कर मुख को शुद्ध करना ।

मुखड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुख+ड़ा हि० प्रत्य०] आनन, मुख, मुँह । "हमैं मुखड़ा तो दिखला जायँ प्यारे"—हरि०

मुख़तार—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रतिनिधि, कानूनी सलाहकार या कार्य करने वाला अधिकारी, मुख्तार । "वह मालिके मुखतार है इस तबलो अलम का" —[अनीस०] ।—**नामा**-(संज्ञा, पु०) प्रतिनिधि पत्र, किसी की ओर से अदालती कार्यवाही करने का अधिकारसूचक पत्र ।

मुख़तारी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० मुखतार+ई० प्रत्य०] मुखतार का काम या पेशा प्रतिनिधित्व ।

मुख़्फ़फ़—(वि०, अ०) संक्षिप्त ।

मुख़बिर—(संज्ञा, पु०, अ०) खबर देने वाला, जाजूस, गोइंदा ।

मुख़बिरी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० मुखबिर+ई हि० प्रत्य०] खबर देना, खबर देने का काम, मुखबिर का कार्य ।

मुख़म्मस—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रकार की गद्य शैली ।

मुखर—(वि०, सं०) बकवादी, कटुवादी, जो बहुत और अप्रिय बोलता हो । [**मुखरता** (संज्ञा, स्त्री०)] । "गिरा मुखर तनु अरध भवानी"—[रामा०] ।

मुखरित—(वि०, सं०) ध्वनित, अत्यधिक शब्दों से गुंजित ।

मुखस्थ—(वि०, सं०) मुखाग्र, कंठस्थ ।

मुखाकृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चेहरा ।

मुखाग्र—(वि०, सं०) कंठस्थ, बरजबान ।

मुखागर—(वि०, दे०) मुखाग्र (सं०) जबानी । "कहेउ मुखागर मूढ़ सन"—[रामा०] ।

मुख़ातिब—(वि०, अ०) बातें करने वाला, मध्यमपुरुष ।

मुखापेक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) दूसरे का मुख ताकना, पराश्रित रहना ।

मुखापेक्षी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० मुखापेक्षिन्] पराश्रित, पराधीन, दूसरे का मुख ताकने वाला, अन्योपजीवी ।

मुखाभा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) मुख की श्री या कांति, वदनालोक ।

मुखाम्बुज—(संज्ञा, पु०, सं०) मुख कमल । "प्रिय मुखाम्बुज की रमणीयता"—[प्रि० प्र०] ।

मुख़ालिफ़—(वि०, अ०) विरोधी, शत्रु, बैरी, दुश्मन, प्रतिद्वन्द्वी, विरुद्ध । [**मुख़ालिफ़त** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

मुखावलोकन—(संज्ञा, पु०, सं०) मुखदर्शन, मुख देखना ।

मुखिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुख्य+इया हि० प्रत्य०] प्रधान, नेता, सरदार, अगुआ । "मुखिया मुख सों चाहिये खान-पान को एक"—तुल० ।

मुख़्तलिफ़—(वि०, अ०) भिन्न भिन्न, विविध, अलग अलग, पृथक्-पृथक् ।

मुख्तसर—(वि०, अ०) संक्षिप्त, अल्प, थोड़ा, सूक्ष्म ।

मुख्य—(वि०, सं०) प्रधान, सब से बड़ा, खास, अगुवा ।—**न्यायालय**-(पु०) प्रमुख न्यायालय । [चीफ़ कोर्ट] ।—**पदाधिकारी**-(पु०) प्रधान अधिकारिक । [चीफ़ आफ़िसर]—**प्रश्न**-(पु०) प्रधान समस्या । [लीडिंग कोश्चन] । [**मुख्यता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**मन्त्री**-(पु०) राज्य का प्रधान मंत्री । [चीफ मिनिस्टर]

मुख्यतः—(अ०, सं०) प्रधानतः, खास तौर से ।

मुख्यार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द का खास अर्थ ।

मुगदर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुद्गर] व्यायाम करने की लकड़ी की गावदुम मुँगरी का जोड़ा, एक प्राचीन अस्त्र । "मुगदर, गदा, सूल, असि धारो" —[रामा०] ।

मुगरा—(संज्ञा, पु०) अत्यधिक मोटी मुगरी ।

मुगल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मंगोल का निवासी, तातार के तुर्कों की एक श्रेष्ठ जाति, मुसलमानों की चार जातियों में से एक जाति । [**मुगलानी** (स्त्री०)] ।

मुगलई, मुगलाई—(वि०, दे०) [फ़ा० मुग़ल + ई या आई प्रत्य०] मुगलों के तुल्य, मुगलों का सा । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) मुगलपन ।

मुगवन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वनमुद्ग] वन-मूँग, मोठ ।

मुगुधिनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) प्रेमासक्त स्त्री । "मुगुधिनि रमनी तुअ लागि रोय"—विद्यापति ।

मुग्गलता—(संज्ञा, पु०, अ०) धोखा, छल ।

मुग्धम—(वि०, दे०) भ्रमित या अस्पष्ट बात ।

मुग्ध—(वि०, सं०) मूढ़, मूर्ख, अज्ञान, भ्रम में पड़ा, मोहित, सुन्दर, आसक्त । [**मुग्धा, मुग्धता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**करी**-(वि०, सं०) मोहित करने वाली । "मुग्धकरी कुसुमावलि पूरित"—हरिऔध ।—**कारी**-(वि०, सं०) देखिये—मुग्धकरी । "रचना या मुग्धकारी छटा"—हरिऔध ।

मुग्धा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नवयौवना नायिका, काम-चेष्टा-रहित युवा स्त्री (सा०) ।

मुचक—(संज्ञा, पु०, सं०) लाह, लाख, लाक्षा ।

मुचकुंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुचुकुंद] एक बड़ा पेड़ । एक प्रबल राजा जिन्होंने देवासुर युद्ध मे इन्द्र की सहायता की थी (पुरा०) ।

मुचलका—(संज्ञा, पु०, तु०) अनुचित कर्म न करने या न्यायालय में नियत समय पर उपस्थित होने का प्रतिज्ञा-पत्र ।

मुच्चा—(संज्ञा, दे०) मांस का टुकड़ा ।

मुछंदर—(संज्ञा, पु०) [हिं० मूछ] बड़ी बड़ी मूछों वाला, मूर्ख, कुरूप । [**मुछंदरी** (वि०)] ।

मुछ—(संज्ञा, स्त्री०) मूँछ का सामासिक छोटा रूप ।—**मुंडा**-(वि०) जिसने मूँछें मुड़ा ली हों ।

मुजक्कर—(वि०, अ०) पुल्लिंग । [**मुअन्नस** (विलो०)] ।

मुजमिल—(संज्ञा, पु०, अ०) जुमला, योग, सब । (क्रि० वि०) कुल मिलाकर ।

मुजरा—(संज्ञा, पु०, अ०) मिनहा, घटाया हुआ, अभिवादन, वेश्या का बैठ कर गाना, किसी बड़े या धनी के सम्मुख रकम से काटी हुई रकम । "रात छुटायो सभा-मुजरा ।"

मुजावर—(संज्ञा, पु०, अ०) रौजा या कब्र का रक्षक और वहाँ का चढ़ा पैसे लेने वाला (मुसल०) ।

मुजाहिम—(वि०, अ०) बाधक ।

मुजिर—(वि०, अ०) हानिकर ।

मुज़रिम—(संज्ञा, पु०, अ०) अभियुक्त, अभियोगी, अपराधी ।

मुझ—(सर्व०) [हिं० मैं] मैं का वह रूप जो कर्त्ता और सम्बन्धकारक के अतिरिक्त शेष कारकों में विभक्ति आने के प्रथम होता है ।

मुझे—(सर्व०) [हिं० मैं] मै का वह रूप जो कर्म और सम्प्रदान कारक में होता है ।

मुटकना†—(वि०, दे०) [हिं० मोटा + कना प्रत्य०] आकार मे छोटा सुन्दर मोटा ।

मुटका, मुकटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मोटा] एक रेशमी वस्त्र या धोती ।

मुटाई, मोटाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० मोटा + ई प्रत्य०] पुष्टि, स्थूलता, मोटापन, अहंकार, शेखी ।

मुटाना, मोटाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० मोटा + आना प्रत्य०] मोटा या अहंकारी होना ।

मुटापा, मोटापा—(संज्ञा, पु०, दे०) मोटे होने का भाव ।

मुटासा—(वि०, दे०) [हिं० मोटा + आसा प्रत्य०] वह पुरुष जो धन कमाकर बेपरवाह या घमंडी हो गया हो ।

मुटिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मोट=गठरी + इया प्रत्य०] बोझा ढोने वाला, मजदूर ।

मुट्ठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मूठ] घास के डंठल आदि का मुट्ठी भर पूला, चंगुल भर वस्तु, पुलिंदा, यंत्र या हथियार का बेंट, दस्ता, [**हत्था** (दे०)] [**मुट्ठी** (स्त्री०)] ।

मुट्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुष्टिका, प्रा० मुट्ठिया] बँधी हथेली, मुड़ी अँगुलियों को हथेली में दबाने से हाथ की बँधी मुद्रा, उतनी वस्तु जो हथेली की इस मुद्रा में समा सके, [मूठा (दे०)] । **मुहा०**—**में**-अधिकार में, काबू या कब्जे में ।—**गरम करना**-धन या रुपया देना, किसी की थकी मिटाने को हाथों से अंगों को पकड़ कर दबाने की क्रिया, चंपी (प्रान्ती०) ।—**भर**-बहुत थोड़े ।—**में आना**-काबू में होना ।

मुठभेड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० मूठ + भिड़ना] टक्कर, युद्ध, भिड़ंत, भेंट, सामना ।

मुठिका*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुष्टिका] घूँसा, मुक्का, मुट्ठी। "मुठिका एक ताहि कपि हनो" —[रामा०]।

मुठिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुष्टिका] यंत्रों या हथियारों का दस्ता, बेंट, हत्था। (संज्ञा, स्त्री०) मुट्ठी-मुट्ठी भर अन्न भिखारियों को देने की क्रिया।

मुठियाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० मुट्ठी] मुट्ठी में लेना।

मुठी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मुट्ठी] मुट्ठी।

मुड़कना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० मुरकना] मुड़ना, मुरकना। [**मुड़काना** (क्रि० स०, रूप)।

मुड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मुरण] सीधी वस्तु का झुक जाना, दाँयें या बायें घूम जाना, अस्त्र की नोक या धार का झुकना, लौटना, पलटना, बाल बनना, ठगा जाना।

मुड़ला*†—(वि०, दे०) [सं० मुंड] मुंडा, जिसके सिर में बाल न हों, बिना छत के। [**मुड़ली** (स्त्री०)]।

मुड़वाना—(क्रि० स०) [हि० मूड़ना का प्रे० रूप] बाल बनवाना, धोखा दिलाना। (क्रि० स०) [हि० मुड़ना का प्रे० रूप] झुकवाना, घुमवाना।

मुड़वारी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मूड़+वारी प्रत्य०] सिरहाना, मुँड़ेर, अटारी की दीवार का सिरा।

मुड़हर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मूड़+हर प्रत्य०] चादर या साड़ी का वह भाग जो स्त्रियों के सिर पर रहता है, सिर का एक गहना।

मुड़िया†—(संज्ञा, पु०, दे०) (हि० मूड़ना+इया प्रत्य०] सिर मुड़ा व्यक्ति, साधु। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) महाजनी लिपि।

मुड़ेर—(संज्ञा, पु०, दे०) मुड़वारी।

मुतअल्लिक़—(वि०, अ०) सम्बन्धी, सम्बन्ध रखने वाला, सम्मिलित, संबद्ध। (क्रि० वि०) सम्बन्ध या विषय में।

मुतक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मूँड़+टेक] खंभा, लाट, मीनार छज्जे पर पटाव के किनारे की नीची दीवाल।

मुतफन्नी—(वि०, फ़ा०) धूर्त, नीच, छली।

मुतफ़र्रिक़—(वि० अ०) भिन्न-भिन्न, अलग-अलग, स्फुटिक।

मुतबन्ना—(संज्ञा, पु०, अ०) दत्तक या गोद लिया लड़का या पुत्र।

मुतलक़—(क्रि० वि०, अ०) रंचक भी, तनिक भी, रत्ती भर भी, केवल।

मुतवज्जह—(वि०, अ०) प्रवृत्त, जिसने ध्यान दिया हो।

मुतवफ़्फ़ा—(वि०, अ०) मृत, स्वर्गवासी।

मुतवल्ली—(संज्ञा, पु०, अ०) वली, नाबालिग और उसकी संपत्ति का कानूनी रक्षक।

मुतसद्दी—(संज्ञा, पु०, अ०) मुंशी, लेखक, पेशकार, दीवान, मुनीम, प्रबन्ध कर्त्ता, [मुसद्दी (दे०)]।

मुतसिरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मोती +श्री सं०] मोतियों की कंठी।

मुताना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मूत्र] मूतने में प्रवृत्त करना, [मुतावना (दे०)]। [**मुतवाना**—(प्रे० रूप)]

मुताबिक़—(क्रि० वि०, अ०) अनुसार, अनुकूल, मुआफ़िक।

मुतालबा—(संज्ञा, पु०, अ०) जितना धन पाना उचित हो, शेष रुपया, [मतालबा (दे०)]।

मुतास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मूतना] मूतने की इच्छा। [**मुतासा** (वि०, दे०)]

मुताह—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मुताअ] एक प्रकार का अस्थायी ब्याह (मुसल०)।

मुतिलाडू*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० मोती+लड्डू] मोतीचूर का लड्डू।

मुतीअ—(वि०, फ़ा०) प्रसन्न या अनुरक्त।

मुतेहरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मोती+हार] कलाई का एक गहना।

मुद—(संज्ञा, पु०, सं०) आनंद, हर्ष, मोद। "करहिं लगनि मुद-मंगलकारी"—[रामा०]।

मुदगर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मुगदर] मुगदर।

मुदर्रिस—(संज्ञा, पु०, अ०) अध्यापक। [**मुदर्रिसी** (संज्ञा, स्त्री०)]

मुदा*†—(अव्य०, दे०) [अ० मुद्आ=अभिप्राय] तात्पर्य यह है कि, लेकिन, परन्तु, मगर। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) आनंद, हर्ष।

मुदाम—(क्रि० वि०, फ़ा०) लगातार, सदैव, सदा, निरंतर, ठीक-ठीक। "बजा ही किया कोसे रेहलत मुदाम"—सौदा०।

मुदामी—(वि०, फ़ा०) जो सदा होता रहा करे।

मुदित—(वि०, सं०) प्रसन्न, खुश। "मुदित महीपति मंदिर आये"—[रामा०]।

मुदिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परकीया के अन्तर्गत एक नायिका। (वि०, स्त्री०, सं०) हर्षित।

मुदिर—(संज्ञा, पु०, सं०) मेघ, घन, बादल।

मुदी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जुन्हाई, चाँदनी।

मुद्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) मूँग, अन्न।

मद्गदाली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मूँग की दाल (प्राचीन)।

मुद्गर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अस्त्र, मुगदर, [मुदगर (दे०)]।

मुद्गल—(संज्ञा, पु०, सं०) एक उपनिषद्।

मुद्दआ—(संज्ञा, पु०, अ०) तात्पर्य, उद्देश्य।

मुद्दई—(संज्ञा, पु०, अ०) वादी, दावादार, विरोधी, शत्रु, बैरी। [**मुद्दइया** (स्त्री०)]। "कि लेकर क्या करें खत मुद्दई से मुद्दआ समझें" —ज़ौक।

मुद्दत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अवधि, अरसा, मिआद, बहुत दिन। [**मुद्दती** (वि०)]।

मुद्दाअलेह, मुदालेह—(संज्ञा, पु०, अ०) जिस पर दावा किया जावे, प्रतिवादी।

मुद्ध†—(वि०, दे०) [सं० मुग्ध] मुग्ध, मूर्ख।

मुद्धी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खिसक जाने वाली रस्सी की गाँठ।

मुद्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) छापने वाला। [प्रिंटर]

मुद्रण—(संज्ञा, पु०, सं०) छपाई, छापना। [प्रिंटिंग] [**मुद्रणीय** (वि०)] ।—**यंत्र**—(यौ०) छापने की कल, मुद्रणकला।—**प्रबंधक**—(पु०) छापेखाने का प्रबंध करनेवाला। [प्रेस मैनेजर]—**विधान**—(पु०) प्रेस-नियम या कानून। [प्रेस ऐक्ट]—**स्वतंत्र्य**—(पु०) प्रकाशन-सम्बन्धी स्वतंत्रता। [फ्रीडम आव् प्रेस]

मुद्रणालय—(संज्ञा, पु०, सं०) छापाखाना। [प्रिंटिंग प्रेस]

मुद्रांकित—(वि०, यौ०, सं०) मोहर किया हुआ, शरीर पर तप्त लोहे से दागकर छपे विष्णु के आयुध-चिन्ह (वैष्णव)। मुद्रा पर लिखा।

मुद्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मोहर, छाप, छल्ला, मुद्रिका, रुपया, अशरफ़ी आदि सिक्का, गोरखपंथियों का कर्णाभूषण, बैठने, खड़े होने, लेटने आदि का कोई ढंग, हाथ, मुख, नेत्रादि की स्थिति विशेष, मुख की आकृति या चेष्टा, हठ योग में विशेष प्रकार के अंगविन्यास, ये पाँच मुद्राएँ हैं: —खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी, एक अलंकार जिसमें प्रकृत या प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त कुछ और भी साभिप्राय संज्ञादि, शब्द हों (अ० पी०), वैष्णवों के शरीरों पर दगे हुए विष्णु के आयुध चिह्न।—**तत्व**—(पु०) एक शास्त्र जिसके आधार पर पुराने सिक्कों की सहायता से ऐतिहासिक बातें ज्ञात की जाती है।—**यंत्र**—(पु०) छापने या मुद्रण करने का यंत्र, छापे की कल, मुद्रण-यंत्र।—**विज्ञान**—(पु०) एक शास्त्र जिसके अनुसार पुराने सिक्कों की सहायता से ऐतिहासिक बातें ज्ञात की जाती हैं। [न्युमिज़मैटिक्स] —**विस्तार**—(पु०) मुद्रावृद्धिकरण, मुद्राप्रसार। [इनफ्लेशन]।—**शास्त्र**—(पु०) मुद्रा-विज्ञान।

मुद्राक्षर—(संज्ञा, पु०, सं०) मुहर का अक्षर। [टाइप]

मुद्राध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्य किसी राज्य विशेष में जाने का प्रवेश पत्र। [पास पोर्ट]

मुद्रिक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुद्रिका] अंगूठी, मुँदरी।

मुद्रिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अँगूठी, मुँदरी। "तब देखी मुद्रिका मनोहर"—[रामा०]। पवित्र। [पैंती (दे०)]। पितृ-कार्य में कुश की बनी अनामिका में पहिनने की अँगूठी, मुद्रा, सिक्का, रुपया।

मुद्रित—(वि०, सं०) छपा हुआ, अंकित या मुद्रण किया हुआ, बंद, मुँदा या ढका हुआ। [प्रिंटेड]

मुधा—(क्रि० वि०, सं०) वृथा, व्यर्थ। (वि०) व्यर्थ का, निरर्थक, निष्प्रयोजन, झूठ, मिथ्या, असत। (संज्ञा, पु०) असत्य, मिथ्या। "सरयू मैं कहती नहीं मुधा"—मैथिली०।

मुनक्का—(संज्ञा, पु०) [अ० मि० सं० मृद्वीका] द्राक्षा, दाख, एक तरह की बड़ी किसमिस, सूखा बड़ा अँगूर।

मुनादी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) ढिंढोरा, डुग्गी, वह घोषणा जो ढोल आदि बजाकर सारे नगर में की जाती है।

मुनाफ़ा—(संज्ञा, पु०, अ०) लाभ, फ़ायदा, नफ़ा।

मुनारा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मीनार] मीनार।

मुनासिब—(वि०, अ०) वाजिब, उचित, योग्य, उपयुक्त, समीचीन।

मुनि—(संज्ञा, पु०, सं०) तपस्वी, त्यागी, सात की संख्या, धर्म्म ब्रह्म, सत्यासत्य आदि का पूर्ण विचार करने वाला पुरुष। "जो तुम अवतेउ मुनि की नाईं"—[रामा०]।

मुनियाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लाल नामक पक्षी की मादा।

मुनिंद—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [मुनीन्द्र (सं०)] "गावत मुनिंद गुनगन छनदा रहैं"—रत्ना०।

मुनीब, मुनीम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मुनीब] सहायक, मददगार, सेठ-साहूकारों के हिसाब-किताब का लेखक या मुहर्रिर।

मुनींद्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) [मुनिंद (दे०)] मुनिवर, श्रेष्ठ मुनि।

मुनीश, मुनीश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रेष्ठ-मुनि, मुनिराज, मुनिनाथ, बुद्धदेव, विष्णु या नारायण, [मुनीस, मुनीसुर (दे०)]। "अहो मुनीश महाभट मानी"—[रामा०]।

मुनीसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [**मुनीश** (सं०)]।

मुन्ना, मुन्नू—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रिय, प्यारा, छोटों के लिए प्रेम-सूचक शब्द। [**मुन्नी** (स्त्री०)]

मुफलिस—(वि०, अ०) कंगाल, निर्धन, दरिद्र, गरीब। [**मुफलिसी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मुफस्सल—(वि०, अ०) सविवरण, व्योरेवार, सविस्तार, विस्तृत। (संज्ञा, पु०) किसी केन्द्रस्थ नगर के चारों ओर के ग्रामादि स्थान।

मुफीद—(वि०, अ०) लाभप्रद, लाभकारी, फ़ायदेमंद।

मुफ़्त—(वि०, अ०) बिना मूल्य या दाम का, सेंत का, मुफत (दे०)। "मुफ़्त में किसको मिला है वदरका"—गालिब। [**मुफ़्ती** (वि०)]।—**खोर**-(यौ०) जो दूसरों के धन का बिना कुछ किये भोग करे (खाये)। [**मुफ़्तखोरी** (संज्ञा, स्त्री०)]। **मुहा०—में**-बेदाम, बिना मूल्य, नाहक, व्यर्थ, बिना मतलब।

मुफ़्ती—(संज्ञा, पु०, अ०) मुसलमान धर्मशास्त्री। (वि०) [अ० मुफ़्त+ई प्रत्य०] बिना दाम या मूल्य का, सेंत का।

मुवतिला—(वि०, अ०) फँसा हुआ।

मुबलिग—(वि०, अ०) रुपये की संख्या के पूर्व आने वाला एक विशेषण शब्द, केवल।

मुबारक—(वि०, अ०) मंगलप्रद, शुभ, बरकत वाला, नेक।—**बाद**-(पु०) बधाई, धन्यवाद, किसी शुभ कार्य पर यह कहना कि मुबारक हो। **मुहा०—होना**-अच्छा होना, शुभ हो, फलना।

मुबारकी—(संज्ञा, स्त्री०,) [अ० मुबारक+ई प्रत्य०] मुबारकबाद, धन्यवाद, बधाई।

मुबाहिसा—(संज्ञा, पु०, अ०) बहस, विवाद।

मुमकिन—(वि०, अ०) संभव।

मुमानियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मनाही, निषेध।

मुमानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातुलानी] मामी, मातुलानी, माईं।

मुमुक्षु—(वि०, सं०) मोक्ष पाने की इच्छा वाला, मुक्ति की कामना वाला।

ममूर्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मरने की इच्छा या कामना।

मुमूर्षु—(वि०, सं०) मरणासन्न, मृत्यु का इच्छुक।

मुयस्सर— (वि०, अं०) आसानी से प्राप्त होने वाला।

मुरंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [गुड़धानी (दे०)], भूने गर्म गेहूँ के गुड़ मिले लड्डू। (वि०, दे०) शुष्क, सूखा हुआ।

मुर—(संज्ञा, पु०, सं०) वेठन, वेष्ठन, एक दैत्य, जो विष्णु भगवान् के द्वारा मारा गया था। अव्य० फिर, पुनि, पुनः दोबारा।—**हा**-(पु०) मुर राक्षस के मारने वाले श्रीकृष्ण जी। †(वि०, दे०) [सं० मूल नक्षत्र+हा प्रत्य०] मूल नक्षत्र, में उत्पन्न लड़का, उपद्रवी, नटखट, बदमाश, अनाथ।

मुरई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मूली, एक जड़।

मुरक—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मुरकना] मुरकने का भाव या क्रिया।

मुरकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० मुड़ना] मुड़ना लचक कर झुकना, घूमना, फिरना, लौटना, (किसी अंग का) मोच खाना, रुकना, हिचकना, विनष्ट या चौपट होना। [**मुरकाना** (स० रूप०)], [**मुरकवाना** (प्रे० रूप)]।

मुरखाई, मुरखई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूर्खता] मूर्खता, बेसमझी ।

मुरगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० मुर्ग] कई रंग का एक पक्षी जिसके सिर पर कलँगी होती है (नर), कुक्कुट, अरुणशिखा । [**मुरगी** (स्त्री०)] । **—बनाना**–घुटनों के बीच से दोनों हाथ निकलवा कर कान पकड़वाना और उकड़ूँ मुकड़ूँ बैठाना ।

मुरगाबी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जल-कुक्कुट, जल-पक्षी ।

मुरचंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मुरचंग] मुंह से बजाने का एक बाजा, [मुँहचंग (दे०)] ।

मुरछना, मुरछाना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मूर्च्छन्] अचेत या बेहोश होना, शिथिल होना ।

मुरछा, मूरछा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूर्छा] मूर्छा, बेहोशी । "सुग्रीवहु की मुरछा बीती"—[रामा०] ।

मुरछावत*—(वि०, दे०) [सं० मूर्च्छा+वंत प्रत्य०] मूर्च्छित, अचेत ।

मुरछित, मूरछित*—(वि०, दे०) [सं० मूर्च्छित] मूर्च्छित, बेहोश । "मूरछित गिरा धरनि पै आई" —[रामा०] ।

मुरज—(संज्ञा, पु०, सं०) पखावज, मृदंग (बाजा) ।

मुरझना—(क्रि० अ०, दे०) मूर्छित होना, कुम्हलाना ।

मुरझाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मूर्च्छन] फूल-पत्ती का कुम्हलाना, उदास या सुस्त होना, सूखना ।

मुरदर—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण जी ।

मुरदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० मि० सं० मृतक] मृतक, मरा हुआ, [मुर्दा (दे०)] । (वि०) मृत, मरा हुआ, बेदम, मुरझाया हुआ । "मुरदा बदस्त जिंदा जो चाहिये सो कीजै"—[स्फु०] । **—दिल**–(वि०) निरुत्साह, जिसकी आकांक्षाएँ मरी हों । **—संख**–(पु०) एक औषधि जो सिंदूर और सीसे को फूंक कर बनाई जाती है ।

मुरदार—(वि०, फ़ा०) मरा हुआ, बेजान, अशक्त, बेदम, मृत, अपवित्र, हीन ।

मुरदासन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मुरदासंख] मुरदासंख ।

मुरध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मरुधर] मारवाड़ ।

मुरना⊛—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० मुड़ना] मुड़ना, घूमना, फिरना, लौटना । "मरै न मुरै टरै नहिं टारे"—[रामा०] ।

मुरपरैना‡—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० मूड़ =सिर+पारना=रखना] फेरी लगाकर माल बेचने वालों का बुकचा ।

मुरब्बा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मुरब्बः] फलों या मेवों का अचार जो मिश्री या चीनी आदि की चाशनी में रखा जाता है ।

मुरब्बी—(संज्ञा, पु०, अ०) मालिक, स्वामी, पालन करने वाला ।

मुरमराना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० मुरमुर से] चूर चूर या चुरमुर होना, मुरमुर शब्द कर चबाना ।

मुररिपु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मुरारि, श्री कृष्ण । "चक्र लिये मुररिपु को लखि कै भीषम अति हर्षाये"—वि० क० ।

मुररिया†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० मरोड़ना] ऐंठन, बल, बटी हुई बत्ती ।

मुरली, मुरैला—(संज्ञा, पु०, दे०) पीपला, मोर पक्षी, मयूर, पुछार (प्रा०) ।

मुरलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बाँसुरी, वंशी, मुरली ।

मुरलिया†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुरली] वंशी, बाँसुरी ।

मुरली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वंशी, बाँसुरी ।**—धर**–(पु०) श्रीकृष्ण जी । "गिरधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं"—रहीम ।**—मनोहर**–(पु०) श्रीकृष्ण जी, वंशीधर ।

मुरवा, मोरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) पाँव की ऍड़ी के ऊपर का चारों ओर का भाग । †[संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मयूर, हिं० मोर] मोर, मयूर ।

मुरवी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मौर्वी] प्रत्यंचा, धनुष की ताँत या डोरी, चिल्ला ।

मुरशिद—(संज्ञा, पु०, अ०) गुरु, पथप्रदर्शक, पूज्य, माननीय, उस्ताद, कामिल ।

मुरसुत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वत्सासुर नामक एक दैत्य (पुरा०) ।

मुरहार—(संज्ञा, पु०, दे०) स्त्रियों के सिर का गहना ।

मुरहारि, मुरहारी—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण जी, मुरारि।

मुरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मुरामाँसी, एकांगी, एक गंध द्रव्य, राजा चन्द्रगुप्त की माता, एक नाइन, इसी से मौर्य वंश चला, (कथा०)।

मुराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक जाति विशेष, काछी।

मुराड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) जलती लकड़ी। "हम घर जारा आपना, लिये मुराड़ा हाथ"—कबीर।

मुराद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कामना, अभिलाषा, आशा, मनोरथ। मुहा०—**पाना (पूरी होना)**-मनोरथ पूर्ण होना।—**माँगना (चाहना)**-मनोरथ पूर्ण होने की प्रार्थना करना, आशय, अभिप्राय, मतलब।

मुरादी—(वि०, अ०) कामना रखने वाला।—**औवल**-(पु०) योरोप के देशों पर सर्वप्रथम विजय प्राप्त करने वाला तुर्क बादशाह जिसका समय १३१६ से १३८५ तक है।

मुराधार—(वि०, दे०) कुंठित, गोठिल।

मुराना*†—(क्रि० सं०) [अनु० मुर मुर से] चबाना, दाँतों से पीस कर बारीक करना, चुभलाना, चबाना। *† (क्रि० वि०, दे०) मोड़ना, मुड़ाना।

मुरार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मृणाल] कमल-नाल, कमल-दंडी। * (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुरारि] मुरारि, श्रीकृष्ण जी।

मुरारि, मुरारी—(संज्ञा, पु०) [सं० मुरारि] श्रीकृष्ण जी, डगण का तीसरा भेद (।ऽ।) (पिं०)।

मुरारे—(संज्ञा, पु०, सं०) हे मुरारे, हे कृष्ण (संबोधन)। "हे कृष्ण हे यादव हे मुरारे"—[स्फु०]।

मुरासा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मुरना] कर्ण-फूल, बड़ा साफा, मुड़ासा।

मुरीद—(संज्ञा, पु०, अ०) चेला, शिष्य, अनुयायी, शागिर्द अनुगामी।

मुरु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुर] मुर दैत्य।

मुरुआ, मुरुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) एँड़ी के ऊपर पैर के चारों ओर का भाग। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मयूर] मोर।

मुरुकना—(क्रि० अ०, दे०) झुकना, मोच खाना, टेढ़ा होना, टूटना [**मुरुकाना मुरकवाना** (स० रूप)]।

मुरुख, मूरुख*†—(वि०, दे०) [सं० मूर्ख] मूर्ख, नासमझ, बेवकूफ, मूरख।

मुरुखाई—(संज्ञा, स्त्री०) मूर्खता।

मुरुछना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० मुरझाना] मुरझाना, मूर्छित या उदास होना, सूखना, कुम्हलाना, मूर्च्छित होना। "परी मुरुछि धरनी सुकुमारी"—वि०।

मुरुझना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० मुरझाना] मुरझाना, कुम्हलाना, सूखना, उदास होना।

मुरेठा, मुरैठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मूँड़ + ऐठा प्रत्य०] पगड़ी, साफा, मुड़ासा।

मुरेरना—(क्रि० स०, हिं०) ऐंठना, घुमाना, मसलना [मरोरना (दे०)]।

मुरौअत, मुरौवत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मुरव्वत] संकोच, शील, लिहाज, रियायत, भलमंसी।

मुरौवती—(वि०, अ०) संकोचशील, मुरौवत करनेवाला।

मुर्ग—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुर्गा, मुरगा, कुक्कुट। —**केश**-(पु०) मरसे की किस्म का एक पौधा, जटाधारी।—**मुसल्लम**-(पु०) समूचा का समूचा, पकाया हुआ मुर्गा।

मुर्चा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० मोरचः] मुरचा मोरचा।

मुर्दनी—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० मर्दन=मरना] मुख पर मृत्यु के चिह्न, मृतक के साथ अंत्येष्टि क्रिया के हेतु जाना।

मुर्दा—(वि०, पु०, फ़ा०) मृत, मरा हुआ, बेजान।

मुर्दावली—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मुर्दनी। (वि०) मृतक या मुर्दे का।

मुर्रा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मरोड़ या मुड़ना] मरोड़फली, पेट में ऐंठन और बार-बार दस्त होना, मरोड़। (स्त्री०) एक दुधार भैंस की जाति।

मुर्री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० मरोड़ना] दो डोरों की ऐंठन, कपड़े की ऐंठन, कपड़े की बटी बत्ती, कमर पर धोती की ऐंठन, गाँठ, गिरह, टेंट (ग्रा०)।—**दार**-(वि०) [हिं० मुर्री + दार फ़ा० प्रत्य०] ऐंठनदार, जिसमें मुर्री पड़ी हो।

मुर्शिद—(संज्ञा, पु०, अ०) गुरु, मार्ग-दर्शक, बड़ा ज्ञानी, चतुर, श्रेष्ठ उस्ताद।

मुलक, मुलुक—(संज्ञा, पु०, दे०) मुल्क, देश, प्रदेश।

मुलकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० पुलकित] झलकना, पुलकित होना, आँखों में हँसी जान पड़ना झाँकना। [**मुलकाना** (स० रूप)]।

मुलकित—(वि०, दे०) [पुलकित सं०] मुस्कुराता हुआ।

मुलकी—(वि०, दे०) [अ० मुल्क] देशी, देशसंबंधी, शासन-संबंधी। "मुहय्यागर्चे सब सामान, मुल्की और माली था।"

मुलजिम—(वि०, अ०) अभियुक्त, जिस पर कोई अभियोग हो, अपराधी।

मुलतबी—(वि०, दे०) [अ० मुल्तवी] स्थगित, वह कार्य जिसका समय टाल दिया गया हो।

मुल्तान—(संज्ञा, पु०,) पश्चिमी पंजाब का एक शहर।

मुलतानी—(वि०) [हिं० मुल्तान=शहर+ई प्रत्य०] मुलतान-संबंधी, मुलतान का। (संज्ञा, स्त्री०) एक रागिनी, एक बहुत नरम और चिकनी मिट्टी।

मुलना—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मौलाना] मोलवी, मौलवी, विद्वान्। "बसै मन मुलना तन महजित माँ"—कबी०। (संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मुल्ला] मुल्ला।

मुलवी—(संज्ञा, पु०, दे०) मोलवी।

मुलमची—(संज्ञा, पु०) [अ० मुलम्मा+ची प्रत्य०] मुलम्मासाज, मुलम्मा या गिलट करने वाला।

मुलम्मा—(संज्ञा, पु०, अं०) गिलट, कलई, किसी वस्तु पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की तह, दिखावटी चमक-दमक, झूठी या नकली सोने की चीज, पीतल।—**साज**-(यौ०) मुलम्मा चढ़ाने वाला, मुलमची, ऊपरी तड़क-भड़क वाला।—**बाज**-(वि०) छली, धोखा देने वाला, झूठा।

मुलहा†—(वि०) [सं० मूलनक्षत्र+हा प्रत्य०] मूलनक्षत्र का जन्मा, उपद्रवी, उत्पाती, [मुरहा (दे०)]।

मुलाँ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मुल्ला] मोलवी, मौलवी।

मुलाकात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) भेंट, मिलना, मिलन, मेल-मिलाप, मुलकात (ग्रा०)।

मुलाकाती—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मुलाकात+ई प्रत्य०] मेली, मिलापी, मित्र, जान-पहचान वाला, परिचित।

मुलाज़मत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) नौकरी।—**पेशा**-(पु०) नौकरी से आजीविका चलाने वाला।

मुलाजिम—(संज्ञा, पु०, अ०) सेवक, दास, नौकर। [**मुलाजिमत** (संज्ञा, स्त्री०) नौकरी।

मुलायम—(वि०, अ०) मृदुल, सुकुमार, जो कड़ा या कठोर न हो, नम्र, नरम, नाजुक, धीमा, मंद, कोमल। [**सख्त** (विलो०)]।—**चारा**-(पु०) नरम खाना, जो सहज में दूसरे की बातों में आ जाय, जो सहज में मिले।

मुलायमियत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मुलयमत] मुलायम होने का भाव, नम्रता, नरमी, नजाकत, कोमलता

मुलायमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मुलायमत] नम्रता, नरमी, नजाकत; मृदुता।

मुलाहजा—(संज्ञा, पु०, अ०) देख-भाल, जाँच-पड़ताल, निरीक्षण, संकोच, रियायत, मुरव्वत, [मुलाहिजा (दे०)]। [**मुलाहजेदार** (वि०)]।

मुलेठी, मुलेहटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) (सं० मूलयष्टी या मधुयष्टी) जेठीमध, [मौरेठी (दे०)] मुलहठी, मुलट्ठी, घुंघची लता की जड़।

मुल्क—(संज्ञा, पु०, अ०) [**मुलुक** (दे०)] देश, प्रान्त, प्रदेश। [**मुल्की** (वि०)]।

मुल्ला—(संज्ञा, पु०, अ०) मौलवी, मोलवी। "मुल्लाई अगर कीजै तो है मुल्ला को यह कद्र"—सौदा०। [**मुल्लाई** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मुवक्किल—(संज्ञा, पु०, अ०) अपने लिये वकील करने वाला।

मुवना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मृत] मरना मुअना। [**मुवाना** (स० रूप)]।

मुशली—(संज्ञा, पु०, सं०) मूशलधारी, बलदेवजी, मूसली औषधि।

मुश्क—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० अ० मिश्क] गंध, कस्तूरी, मृगमद। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) भुजा, बाहु, बाँह। "मुश्क से बाल सी काफ़ूर हुये"—[स्फुट०]। —**दाना**-(पु०) एक लता के बीज, जो कस्तूरी के समान सुगंधित होते हैं।—**नाफा**-(पु०) कस्तूरी की नाभी, जिसके भीतर कस्तूरी रहती है। —**बिलाई**—(पु०) गंध-बिलाव, एक जंगली बिलार जिसके अंडकेशों का पसीना सुगंधित होता है। **मुहा०**—(कें) **कसना या बाँधना**-किसी अपराधी की दोनों भुजायें पीठ की ओर करके बाँध देना।

मुश्किल—(वि०, अ०) कठिन, कड़ा, दुष्कर । (संज्ञा, स्त्री०) दिक्कत, कठिनता, विपत्ति, मुसीबत, आफत । लो०—"मुश्किले नेस्त कि आसाँ न शवद"—सादी० । मुहा०—**आसान होना**-कठिनाई का हल होना ।

मुश्की—(वि०, फ़ा०) कस्तूरी के रंग या गंध का, काला, श्याम, जिसमें कस्तूरी पड़ी हो । (संज्ञा, पु०) काले रंग का घोड़ा ।

मुश्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुट्ठी ।—**एक मुश्त**-(यौ०) एक साथ, एक दम (रुपये के लेन-देन में) ।

मुश्ताक—(वि०, अ०) इच्छुक, चाहने वाला ।

मुश्तबहा—(वि०, अ०) संदेह-युक्त, संदिग्ध ।

मुषना—(क्रि० अ०, दे०) मूसना, चुराना, चोरी जाना, ठगना, छीनना ।

मुषुर*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुखर] गुंजार, गुंजन, गूँजने का शब्द । "नूपुर मुषुर मधुर कवि बरनी"—[रामा०] ।

मुष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मुट्ठी, घूँसा, मुक्का, दुर्भिक्ष, अकाल, मल्ल, मुष्टिक, चोरी ।—**युद्ध**-(पु०) घूँसेबाजी, मुक्काबाजी, घूँसों की लड़ाई । —**योग**-(पु०) हठयोग की कुछ क्रियायें जो रोग-नाशक बलवर्धक और शरीर-रक्षक मानी जाती हैं, सरल उपाय ।

मुष्टिक—(संज्ञा, पु०, सं०) कंस का एक मल्ल जिसे बलदेव जी ने मारा था, घूँसा, मुक्का, मुट्ठी, चार अंगुल की नाप । "मुष्टिक एक ताहि कपि हनी"—[रामा०] ।

मुष्टिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घूँसा, मुक्का, मुट्ठी, मूठी । [**मुष्टिका-प्रहार** (यौ०)] ।

मुसकनि, मुसकानि†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मुसकाना] मुसकुराहट, मुसकान । " अली री वा मुख की मुसकान बिसारी न जैहै न जैहै न जैहै " —[स्फु०] ।

मुसकनिया‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मुसकान] मुसकान ।

मुसकराना, मुसकुराना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्मय+कृ] मंद या मृदु हास, थोड़ा हँसना, [मुसकाना (दे०)] ।

मुसकराहट, मुसकुराहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मुसकराना+आहट प्रत्य०] मंदहास, मुसकुराने की क्रिया का भाव, स्मित ।

मुसकान—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मुसकाना] मुसकराहट ।

मुसकाना—(क्रि० अ०, हि०) मुसकुराना, मंद मंद हँसना । "दोउन को दोउन पै मुरि मुसकाइबो"—रसखानि ।

मुसजर, मुसज्जर—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मुशज्जर] एक तरह का छपा वस्त्र ।

मुसज्जा—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) एक प्रकार का अलंकृत गद्य ।

मुसटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूषिका] चुहिया, मुसटिया ।

मुसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मूषण] मूसा या चुराया जाना, ठगा या छला जाना ।

मुसन्ना—(संज्ञा, पु०, अ०) रसीद देने वाले के पास रहने वाली रसीद की प्रतिलिपि, नकल, किसी लेख की दूसरी प्रति ।

मुसन्निफ—(संज्ञा, पु०, अ०) ग्रंथ-लेखक ।

मुसब्बर—(संज्ञा, पु०, अ०) घीकुआर का जमाया हुआ रस (औषधि) ।

मुसफ्फी—(वि०, फ़ा०) खून साफ करने वाला, सूफी मत सम्बन्धी ।

मुसमुद, मुसमुध†—(वि०, दे०) ध्वस्त, नष्ट, बरबाद । (संज्ञा, पु०) विनाश, ध्वंश, बरबादी ।

मुसम्मात—(वि०, स्त्री०) [अ० मुसम्मा का स्त्री० रूप] नामावली, नामधारिणी, नाम्नी । (संज्ञा, स्त्री०) स्त्री, औरत ।

मुसम्मी—(वि०, पु०, अ०) नामवाला ।

मुसरा†—(संज्ञा, पु०) [हि० मूसल] पेड़ की सब से मोटी जड़ ।

मुसरी, मुसरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चुहिया, मुसरी, बाहों के माँसल भाग ।

मुसलधार—(क्रि० वि०, दे०) [हि० मूसलधार] मुसलधार, मूसलाधार ।

मुसलमान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुहम्मद साहब के मत के लोग, मुहम्मदी । [**मुसलमानिन-मुसलमानिनी** (स्त्री०)] ।

मुसलमानी—(वि०, फ़ा०) मुसलमान संबंधी मुसलमान का । (संज्ञा, स्त्री०) सुन्नत, बालक की लिंगेंद्रिय का कुछ ऊपरी चमड़ा काटने की रस्म, ईमानदारी । "कहते हैं कि खामोश मुसलमानी कहाँ है"—सौदा० ।

मुसलाधार—(अ०) मोटी और बड़ी बड़ी पानी की बूँदें बरसना।

मुसल्लम—(वि०, अ०) समूचा, सब का सब, पूर्ण, अखंड। (संज्ञा, पु०) मुसलमान, मुहम्मदी, ठीक।

मुसल्ला—(संज्ञा, पु०, अ०) नमाज पढ़ने की दरी। (संज्ञा, पु०) मुसलमान, मुसण्डा (ग्रा०)।

मुसव्विर—(संज्ञा, पु०, अ०) चित्रकार।

मुसहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मूस=चूहा +हर प्रत्य०] एक जंगली जाति जो जड़ी-बूटी बेचती है।

मुसहल, मुसहि—(वि०, अ०) दस्तावर, रेचक। "सहल था मुसहिल वले यह सख्त मुश्किल आ पड़ी।"

मुसाफिर—(संज्ञा, पु०, अ०) पथिक, यात्री। —**खाना**-(पु०) यात्रियों के ठहरने का स्थान, सराय, होटल। (अ०) धर्मशाला।

मुसाफिरत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मुसाफिर होने की दशा, प्रवास, परदेश, यात्री।

मुसाफिरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मुसाफिर होने की दशा, प्रवास, यात्रा।

मुसाहब, मुसाहिब—(संज्ञा, पु०, अ०) राजा या धनी का सहवासी, पार्श्ववर्त्ती, निकटस्थ, साथी। "कंगला जहान के मुसाहिब के बँगला में"—[स्फु०]।

मुसाहबत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मुसाहिबी, साथ उठना-बैठना या रफ्तजब्त।

मुसाहबी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० मुसाहिब+ई प्रत्य०] मुसाहब का पद या कार्य।

मुसीबत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आपत्ति, संकट, कष्ट, विपत्ति। —**का मारा**-संकटाग्रस्त, अभागा। —**के दिन**-दुर्दिन।

मुस्कयान*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मुसकराहट] मुसकुराहट, मंद हँसी।

मुस्टंड, मुस्टंडा—(वि०, दे०) [सं० पुष्ट] हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, गुंडा, बदमाश, [मुचंड, मुचंडा (दे०)]।

मुस्तकिल—(वि०, अ०) दृढ, स्थिर, अटल, मजबूत, कायम, पक्का [परमानेंट]।

मुस्तगीस—(संज्ञा, पु०, अ०) इस्तगासा या अभियोग लाने या मुकदमा चलानेवाला।

मुस्तशना—(वि०, अ०) अपवाद-स्वरूप, अलग किया हुआ, [मुस्तसना (दे०)]।

मुस्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नागरमोथा (औष०)। लो०—"मुस्ताभयानाम् जलम्।"

मुस्तैद—(वि०, दे०) [अ० मुस्तअद] तत्पर, तैयार, कटिबद्ध, सन्नद्ध, तेज, चालाक।

मुस्तैदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मुस्तअद+ई प्रत्य०] तत्परता, सन्नद्धता, फुरती, तेजी।

मुस्तौफी—(संज्ञा, पु०, अ०) आय-व्यय-निरीक्षक, हिसाब की जाँच करने वाला।

मुहकम—(वि०, अ०) दृढ़, मजबूत, पक्का।

मुहकमा—(संज्ञा, पु०, अ०) सीगा, सरिश्ता, विभाग।

मुहताज—(वि०, अ०) कंगाल, दरिद्र, गरीब, आकांक्षी, चाहने वाला।

मुहब्बत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रेम, स्नेह, चाह, प्रीति, प्यार, मित्रता, लगन, इश्क, लौ। "मुहब्बत भी नहीं खाली है कातिल की अदावत से"—जौक।

मुहम्मद—(संज्ञा, पु०, अ०) मुसलमानी मत के चलाने वाले अरब के एक धर्माचार्य।

मुहम्मदी—(संज्ञा, पु०, अ०) मुसलमान।

मुहर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) (फ़ा० मोहर अशरफी, मोहर, ठप्पा, छाप। —**लगना**-प्रामाणिकता की छाप लग जाना, पक्का होना।

मुहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मुँह+रा प्रत्य०] मोहरा, आगा, सामना, आगे या सामने का भाग। "गरुअर मोहरा है चौड़ा का मंत्री जौन पिथौरा क्यार"—आल्हा०। **मुहा०—लेना**-मुकाबिला या सामना करना। शतरंज की गोट, घोड़े के मुँह का एक साज, मुख, आकृति, निशाना, बिल का द्वार।

मुहरी, मोहरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मोहरा] छोटा मोहरा, बंदूक का मुँह।

मुहर्रम—(संज्ञा, पु०, अ०) अरबी वर्ष का प्रथम मास, इमाम हुसेन के शहीद होने का महीना।

मुहर्रमी—(वि०) [अ० मुहर्रम+ई प्रत्य०] मुहर्रम का, मुहर्रम सम्बन्धी, शोक-सूचक या व्यंजक, मनहूस।

मुहर्रिरी—(संज्ञा, दे०, अ०) मुंशी, लेखक।

मुहर्रिरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मुहर्रिर का काम, लिखने का कार्य।

मुहल्ला—(संज्ञा, पु०, अ०) मुहाल, टोला।

मुहसिल—(वि०, दे०) [अ० मुहासिल] उगाहने वाला, तहसील-वसूल करने वाला।

मुहाँसा—(संज्ञा, पु०, दे०) मुँह पर के छोटे-छोटे जवानी-सूचक फोड़े, मुहासा।

मुहाफिज—(वि०, अ०) संरक्षक, रखवाला, हिफाजत करने वाला। "मुहाफिज है खुदा जाओ सफर को"—[स्फुट०]।

मुहार—(संज्ञा, पु०, दे०) द्वार, दरवाजा, [मोहार (दे०)]।

मुहाल—(वि०, अ०) असंभव, दुस्साध्य, दुष्कर, कठिन। (संज्ञा, पु०) [अ० महाल] महाल, मुहल्ला, टोला।

मुहाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मुँह+आला प्रत्य०] पीतल की वह चूड़ी जो शोभार्थ हाथी के दाँतों के आगे पहनाई जाती है।

मुहावरा—(संज्ञा, पु०, अ०) बोलचाल, रोजमर्रा, अभ्यास, ऐसा प्रयोग या वाक्य जो लक्षणा या व्यंजना से सिद्ध हो और एक ही भाषा में प्रयुक्त होकर प्रगट (वाच्यार्थ या अभिधार्थ) अर्थ से भिन्न या विलक्षण अर्थ दे, जैसे—नौ दो ग्यारह हो गया=भाग गया।

मुहासिब—(संज्ञा, पु०, अ०) गणितज्ञ, हिसाबी, जाँच करने या हिसाब लेने वाला, कोतवाल।

मुहासिबा—(संज्ञा, पु०, अ०) लेखा, हिसाब, पूछ ताँछ, जाँच पड़ताल।

मुहासिरा—(संज्ञा, पु०, अ०) चारों ओर से किले या शत्रु को घेरना, घेरा।

मुहासिल—(संज्ञा, पु०, अ०) आमदनी, आय, मुनाफा, लाभ।

मुहिं, मोहिं*—(सर्व०, दे०) [हि० मुझे] मुझे, मुझको, मेरे हेतु।

मुहिम—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बड़ा या कठिन कार्य, युद्ध, संग्राम, लड़ाई, आक्रमण, चढ़ाई।

मुहुः—(अव्य०, सं०) बार-बार। [**मुहुर्मुहुः** (यौ०)]।

मुहूर्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०) रात-दिन का ३० वाँ भाग, दो घड़ी का समय, साइत, अच्छे काम करने का पत्रे से विचार कर निकाला हुआ नियत समय (फ० ज्यो०), [महूरत, मुहूरत (दे०)]। "लगन मुहूरत जोगबल"—तु०।

मूँग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुद्ग] एक अनाज जिसकी दाल बनती है।

मूँगफली—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) [एक बेल जिसकी खेती होती है इसके फल खाये जाते हैं, चिनिया बादाम।

मूँगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मूँग] प्रवाल, विद्रुम, समुद्र के कृमियों की लाल ठठरी जिसे रत्न मानते हैं, एक वृक्ष।

मूँगिया—(वि०, दे०) [हि० मूँग+इया प्रत्य०] हरा रंग, मूँग के रंग का, मूँगे के से रंग का। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का हरा रंग।

मूँछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्मश्रु] पुरुषों के ऊपरी ओठों के बाल, [मूच्छ, मोछ, मोछा (दे०)]। **मुहा०—उखाड़ना**-घमंड मिटाना।—(**छों**) **पर ताव देना**—घमंड से मूछें मरोड़ना। (**छें**) **नीची होना**—घमंड टूटना, अनादर या अप्रतिष्ठा होना।—**मरोड़ना**-अभिमानवश मूँछ मरोड़ना।

मूँड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक तरह की बेसन की कढ़ी।

मूँज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूँज] बिना टहनियों के पतली-लंबी पत्तियों वाला एक तरह का तृण।

मूँजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [मौंजी सं०] मूँज का जनेऊ।

मूँड़†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुंड] सिर, शीश। **मुहा०—काटना**-सर्वनाश करना, छल करना।—**मारना**-बहुत हैरान या परेशान होना, अति प्रयत्न या श्रम करना।—**मुँड़ाना**-संन्यासी होना। "मूँड़ मुड़ाय भये संन्यासी"।

मूँड़न—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुंडन] मुंडन, चूड़ा-करण संस्कार।—**छेदन**-(पु०) मुंडन और कान का छेदन।

मूँड़ना—(क्रि० स०) [सं० मुंडन] सिर के सब बाल बनाना, हजामत करना, हर लेना, धोखा देना, बाल उड़ा लेना, ठगना, छलना, चेला बनाना (साधु)। "मूँडन कौ मूँड़ पाप हू को मूँड़ लेते हैं"—द्वि०।

मूँड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) तादाद, संख्या, किता।

मूड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुंड] सिर, बिना सींग का मादा पशु। **लो०**—"मूँडी बछिया सदा कलोर"।

मूँदना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मुद्रण] ढाँकना, आच्छादित करना, बंद करना, द्वार या मुँह आदि को किसी वस्तु से बंद कर रोकना। [**मूँदाना** (स० रूप)], [**मूँदवाना**-(प्रे० रूप)]।

मूक—(वि०, सं०) गूँगा, अवाक्, विवश, मौन, लाचार। [**मूकता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "मूकं करोति वाचालम्"—[स्फु०]। "मूक होय बाचाल" -[रामा०]।—**जनता**-(स्त्री०) वह जनता जिसका राजशासन में कुछ अधिकार न हो।—**प्राण**-(वि०, सं०) जिसके प्राणों का रहस्य व्यक्त न हो सके। **बधिर**-(वि०, पु०) गूँगा बहरा।—० **विद्यालय**-(पु०) गूंगों-बहरों का शिक्षालय।

मूकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गूँगापन, मौनता।

मूकना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० मुच] छोड़ना, तजना, त्यागना, दूर करना, बंधन से मुक्त करना।

मूका†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मूषा+गवाक्ष] मोखा, झरोखा। (संज्ञा, पु०) मुक्का, घूँसा।

मूखना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० मूषण) मूसना, चोरी करना।

मूचना—(क्रि० स०, दे०) [हि० मोचना] मोचना, छोड़ना।

मूजी—(संज्ञा, पु०, अ०) कष्ट पहुँचाने वाला, खल, दुष्ट, कंजूस। "माले मूजी से तनफ़ुर आदमी को चाहिए"—जौक़।

मूठ, मूठि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुष्टि] मूठी (दे०) मुट्ठी, मुष्टि, हत्था, किसी हथियार या औजार का दस्ता, मुठिया, बेंट, कब्जा, मुट्ठी में समाने वाली वस्तु, एक तरह का जूआ, टोना, जादू। "बीर मूठ मारी कै अबीर मूठ मारी है" —(रसाल)। **मुहा०—चलाना या मारना**-जादू करना।—**लगना**-टोने या जादू का प्रभाव होना।

मूठना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मुष्ट] विनष्ट होना।

मूठी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मुट्ठी] मुष्टि, मुट्ठी, मुट्ठी भर अन्नादि।

मूड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुड़] मूंड़, सिर।

मूड़ना—(क्रि० स०, हि०) [मूंड़ना। (संज्ञा, पु०, दे०) मूँड़न।

मूढ़—(वि०, सं०) मूर्ख, विमूढ़, स्तब्ध, मंद बुद्धि, ठगमारा। "ज्ञानी मूढ़ न कोय"—[रामा०]। [**मूढ़ता** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**गर्भ**-(पु०) गर्भ-स्रावादि, गर्भ का बिगड़ना।—**चेता,—बुद्धि, मति**-(वि०) मूर्ख, बुद्धिहीन।

मूढ़ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मूर्खता, बेवकूफी।

मूढ़ात्मा—(वि०, यौ०, सं०) मूर्ख, अज्ञान, जड़ात्मा।

मूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मूत्र] मूत्र, पेशाब, [मूत्तो (दे०)]। "मूत के हम भी मूत के तुम भी मूत का सकल पसारा है"—कबी०। **मुहा० —का दिया जलना**-बड़ा ऐश्वर्य या प्रताप होना।

मूतना—(क्रि० अ०, दे०, हि०) पेशाब करना। **मुहा०—बंद करना**-बहुत हैरान करना।

मूत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) पेशाब, मूत।—**कृच्छ्**-(पु०) कष्ट से रुक रुक कर पेशाब होने का एक रोग (वै०)।—**ग्रंथि**-(संज्ञा, स्त्री०) पेशाब रुक जाने का एक रोग-विशेष।—**दोष**-(पु०) प्रमेह। —**पथ**-(पु०) मूत्र नली।—**परीक्षा**-(स्त्री०) पेशाब की जाँच।—**शुक्र**-(पु०) धातु रोग जिसमें पेशाब के साथ वीर्य निकलता है।

मूत्राघात—(संज्ञा, पु०) मूत्र के रुक जाने वाला रोग, पेशाब का बंद होना।

मूत्राशय—(संज्ञा, पु०) नाभि तले, मूत्र संचित रहने का स्थान, मसाना, फुकना (प्रान्ती०)।

मूना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मृत] मुवना, मरना।

मूर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मूल) मूल, जड़, मूलधन, मूलनक्षत्र, जड़ी, [मूरि (दे०)]। "साँचे होरा पाइये, झूँठे मूरौ हानि"—कबी०।

मूरख‡—(वि०, दे०) [सं० मूर्ख] बेसमझ, अज्ञानी, मूर्ख। [**मूरखता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "मूरख हिये न चेत"—तुलसी।

मूरखताई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूर्खता] मूर्खता, बेसमझी, अज्ञानता।

मूरचा—(संज्ञा, पु० दे०) [फ़ा० मोरचा] जंग, लोहे का मैल, मोरचा। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० मोर+चाल] वह खाई जहाँ युद्ध में सेना पड़ी रहती है। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० मोरचः], चींटी।

मूरछना*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूर्च्छना] एक ग्राम से दूसरे तक जाने में स्वरों का उतार-चढ़ाव (संगी०)। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० मूर्च्छा] मूर्च्छित होना।

मूरछा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूर्च्छा] मूर्च्छा, बेहोशी, [मुरछा (दे०)]।

मूरत, मूरात*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूर्ति] प्रतिमा, शरीर, आकृति। "मूरति मधुर मनोहर जोही"—[रामा०]।

मूरतिवंत*—(वि०, दे०) [सं० मूर्ति+वत् प्रत्य०] मूरतवान, देहधारी, मूर्तिमान्।

मूरध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मूर्द्धा] शिर।

मूरि, मूरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूल] जड़, मूल, बूटी, जड़ी।

मूरुख*†—(वि०, दे०) [सं० मूर्ख] मूर्ख, [मूरख (दे०)]। "मूरुख को पोथी दयो, बाँचन को गुनगाथ"—वृं०।

मूर्ख—(वि०, सं०) मूढ़, अज्ञ, बेसमझ। "किं कारण भोज भवामि मूर्खः"—भोज०।—**मंडली**—(स्त्री०) मूर्खों का समूह या दल।

मूर्खता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बेसमझी, मूढ़ता।

मूर्खत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) मूर्खता, मूढ़ता।

मूर्खिनी*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० मूर्ख] मूढ़ा स्त्री।

मूर्छन—(संज्ञा, पु०, सं०) अचेत या मूर्छित करना। संज्ञा-हीन होना, एक मदन-बाण, बेहोश करने का प्रयोग या मंत्र, पाराशोधन में तृतीय संस्कार (वैद्य०)।

मूर्छना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक ग्राम से दूसरे तक जाने में स्वरों का उतार-चढ़ाव (संगी०)। (क्रि० अ०, दे०) अचेत होना या करना।

मूर्च्छा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बेहोशी, अचेत होना, संज्ञा, हीनता, निश्चेष्टता, [मूर्छा, मूरछा मुरछा (दे०)]। "मूर्च्छा गयी पवनसुत जागा"—[रामा०]।—**रोग**—(पु०) हिस्टीरिया रोग जिसमें बेहोशी आती है।

मूर्छित, मूर्च्छित—(वि०, सं०) बेहोश, बेसुध, अचेत, निश्चेष्ट, मरा हुआ (पारा आदि धातु), [मूरछित, मूरछित (दे०)]।

मूर्त—(वि०, सं०) आकार-युक्त, साकार, ठोस। [**अमूर्त** (विलो०)]।

मूर्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गात, शरीर, सूरति, देह, आकृति, चित्र, प्रतिमा, विग्रह, [मूरति (दे०)]। "मूर्ति थापि करि विधिवत पूजा"—[रामा०]।—**कला**—(स्त्री०) मूर्ति निर्मित करने की कला।—**कार**—(पु०) मूर्ति या प्रतिमा बनाने वाला, चित्र बनाने वाला।—**पूजक**—(पु०) प्रतिमा या मूर्ति में ईश्वर या देवता की भावना कर उसकी पूजा करने वाला।—**पूजा**—(स्त्री०) प्रतिमा-पूजा, प्रतिमा में देव भावना कर उसकी पूजा करना।—**विद्या**—(स्त्री०) प्रतिमा या मूर्ति बनाने की कला, [आइकनोग्रैफी]।

मूर्तिमान्—(वि०, सं०) प्रत्यक्ष, शरीरधारी, सदेह जो रूप धरे हो, साकार, साक्षात। [**मूर्तिमती** (स्त्री०)]।

मूर्द्ध—(संज्ञा, पु०) [सं० मूर्द्धन्] सिर, मूँड।—**कर्णी**—(स्त्री०) छाया के निमित्त सिर पर रखी वस्तु।—**कपारी**—(स्त्री०) सिर पर छाया के निमित्त रखा हुआ वस्त्रादि।—**ज**—[पु०) सिर के बाल, केश। "रूक्षता मूर्द्धजानाम्"—[स्फुट०]।

मूर्द्धय—(वि०, सं०) मूर्द्धा से संबंध रखने वाला, ललाट में स्थित।

मूर्द्धन्यवर्ण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मूर्धा से उच्चरित होने वाले वर्ण,—जैसे ऋ ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष।

मूर्द्धा—(संज्ञा, पु०) [सं० मूर्द्धन्] सिर, मुख के भीतर तालु के पश्चात् का भाग। "ऋतु रषाना-म्मूर्द्धा"—शि० कौ०।

मूर्द्धाभिषेक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सिर पर अभिषेक या जल सिंचन। [**मूर्द्धाभिषिक्त** (वि०)]।

मूर्वा—(संज्ञा, पु०, सं०) मुरहार, मरोड़ फली (औष०)।

मूल—(संज्ञा, पु०, सं०) वृक्षों की जड़, कंद, खाने योग्य जड़, (जैसे-शकरकंद), अदरख, आरम्भ का भाग, प्रारम्भ, उत्पत्ति-हेतु, आदि कारण, यथार्थ धन, पूँजी, बुनियाद, नींव, ग्रंथ-कार का लेख या वास्तविक वाक्यादि जिसपर टीका टिप्पणी हो, १९वाँ नक्षत्र (ज्यो०)। (वि०) प्रधान, मुख्य।—**अधिकार**—(पु०) आधार भूत या मौलिक अधिकार, बुनियादी हक। [बेसिक राइट]।—**क्षेत्र**—(पु०) मूल अधिकार, सीमा।

[ओरिजिनल ज्यूरिसडिक्शन] ।—**पाठ**–(पु०) मूल ग्रंथ, सूत्र या वाक्य [टेक्स्ट] ।—**रूपरेखा**–(स्त्री०) मूल अनुलेख । [ओरिजिनल ड्राफ्ट]—**वाद**–(पु०) मूल अभियोग । [ओरिजिनल सूट]—**वादी**–(पु०) मूल अभियोगी । [ओरिजिनल प्लेंटिफ] ।—**सिद्धान्त**–(पु०) आधार भूत सिद्धान्त । [बेसिक प्रिंसिपुल]—**ग्रंथ**–(पु०) प्रधान पुस्तक जिसकी टीका या व्याख्या की गयी है ।—**तत्त्व**–(पु०) आधारभूत तत्त्व या सिद्धान्त, प्रधान तत्त्व ।—**द्रव्य**–(पु०) मुख्य या प्रधान पदार्थ या मूल सामग्री जिससे फिर और पदार्थ बने । मूल पदार्थ, मूल तत्त्व ।—**धन**–(पु०) वह धन जो ऋण या उधार दिया जावे या किसी व्यापार में लगाया जावे, पूँजी ।—**पुरुष**–(पु०) वंश चलाने वाला आदि पुरुष ।—**भूत**–(वि०) मूल, आधारभूत ।—**मंत्र**–(पु०) प्रधान तत्त्व, कुञ्जी ।—**स्थल, स्थान**–(पु०) प्राचीन पुरुषों या बाप-दादों का स्थान, मुख्य घर, प्राचीन मुलतान नगर ।—**स्थली**–(स्त्री०) पेड़ का थाला, आलबाल ।—**स्थिति**–(स्त्री०) आदिमी या प्रारम्भिक दशा ।—**स्रोत**–(पु०) नदी, झरने आदि का उद्गम स्थल ।

मूलक—(संज्ञा, पु०, सं०) मूली, मूल, जड़, मूलरूप । (वि०) पिता, जनक, उत्पन्न करने वाला । "सकौं मेरु मूलक इव तोरी"—[रामा०] ।

मूलतः—(अ०, सं०) मुख्यतः, मूलरूप में, प्रथमतः ।

मूलाधार—(संज्ञा, पु०, सं०) मनुष्य-शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक चक्र, (हठ योग०) ।

मूलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मूली, जड़ी ।

मूली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूलक] चरपरी, मीठी और तीक्ष्ण जड़ का पौधा, मूरी नामी जड़, जो कच्ची-पक्की खाई जाती है ।—**भूता**–(स्त्री०) दृढ़ आधार वाली । "मूलीभूता अवनितल में कांति कस्तूरिका की"—[प्रि० प्र०] **मुहा०**—(किसी को)—**गाजर समझना**–बहुत ही तुच्छ समझना । मूलिका, जड़ी-बूटी ।

मूलोच्छेद—(संज्ञा, पु०) [सं० मूल+उच्छेद] जड़ से नाश । "और मूलोच्छेद कर भू पर सुलाता क्रोध से"—दिन० ।

मूल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कीमत, दाम, [मोल (दे०)], बदले का धन, महत्त्व ।—**पात**–(पु०) मूल्य ह्रास । [डिप्रीसियेशन]—**विलोपक**–(पु०) मुद्रा, मूल्य में कमी करने का कार्य । [डीवेलुएशन]—**हीन**–(वि०) जो बिना मूल्य का हो, निकम्मा ।

मूल्यवन्त, मूल्यवान्—(वि०, सं०) कीमती, बहुमूल्य, अधिक या बड़े दामों का बेश-कीमत ।

मूल्यांकन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी का उचित रूप से मूल्य निर्धारण, उचित परख ।

मूष, मूषक—(संज्ञा, पु०, सं०) चूहा, मूस, [मूसा (दे०)] । "मूषक बाहन है सुत एक ।"

मूषण—(संज्ञा, पु०, सं०) हरण, चोरी करना, मूसना । [**मूषणीय, मूषित** (वि०)] ।

मूषा—(संज्ञा, पु०) [सं० मूषक] चूहा, मूस ।

मूषिक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मूषक] चूहा, मूसा । [**मूषिका** (स्त्री०)] ।

मूस, मूसा, मूसक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मूष, मूषक] चूहा । "मूसा कहत बिलार सों सुनरी जूठ जुठैल"—गिर० ।—**दानी**–(स्त्री०) चूहा फँसाने का पिंजड़ा ।

मूसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मूषण] चुरा लेना, हर लेना ।

मूसल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मूशल] धानादि कूटने का काठ का हथियार, बलराम का एक अस्त्र । (वि०) [दे० व्यंग] मूर्ख ।—**धार**–(क्रि० वि०, हि०) मूसल जैसी मोटी धार से (वर्षा) [मूसराधार (दे०)] ।

मूसला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मूसल] शाखा-रहित सीधी और मोटी जड़, [मुसरा (दे०)] । [झखरा (विलो०)] ।

मूसली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूशली] एक पौधा जिसकी जड़ औषधि के काम आती है ।

मूसा—(संज्ञा, पु०) खुदा का नूर देखने वाले, यहूदियों के धर्म्म-गुरु या पैगम्बर, चूहा, मूस ।

मूसाकनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूषाकर्णी] एक लता जो औषधि के काम आती है ।

मृग—(संज्ञा, पु०, सं०) पशु, जगली पशु, हिरन, हाथियों की एक जाति, अगहन या मार्गशीर्ष मास, मकर राशि, मृगशिरा नक्षत्र (ज्यो०), कस्तूरी की

नाभि, चार प्रकार के पुरुषों में से एक (काम०), [मिरिग, मिरगा (दे०)] । [मृगी (स्त्री०)] । "रामहिं देखि चला मृग भाजी"—[रामा०] । —चर्म-(पु०) हिरन का चमड़ा, अजिन, मृगछाला ।—छाला-(स्त्री०) [सं० मृगछाला] मृगचम (इसे पवित्र मानते हैं) । "चारु जनेउ माल, मृगछाला"—[रामा०] ।—छौना-(पु०) हिरन का बच्चा ।—जल-(पु०) मृगतृष्णा की लहरें । "मृगजल निरखि मरहु कतधाई"—[रामा०] । "जब मृगजल मे परिवर्तित हो मुझ पर मेरा अरमान हँसा"—बच्चन ।—तृषा, तृष्णा-(स्त्री०) मृगराज, मृगमरीचिका, तेज धूप के कारण प्राय: ऊसर मैदानों में जल की लहरों को प्रतीति या भ्रांति ।—दाव-(पु०) काशी के समीप सारनाथ का पुराना नाम ।—धर-(पु०) चद्रमा ।—नयनी-(स्त्री०) मृगनैनी, मृगलोचनी ।—नाथ-(पु०) सिंह, बाघ ।—नाभि-(पु०) कस्तूरी । —नैनी-(स्त्री०) मृगनयनी, मृगदृशी । "दे मृगनैनी कि दे मृगछाला"—[स्फु०] ।—पति-(पु०) सिंह, मृगराज ।—भद्र-(पु०) एक जाति का हाथी ।—मद-(पु०) कस्तूरी, [मृगम्मद (दे०)] । "मृगमद बिंद चारु चटक दुचंद भयो"—रत्ना० । —मरीचिका—(स्त्री०) मृगतृष्णा । "मृगमरीचिका के चिर पथ पर"—महादेवी ।—मित्र-(पु०) मृगसखा, चद्रमा, [मृगमीत (दे०)] । —मेद-(पु०) कस्तूरी ।—राज-(पु०) सिंह । "ठवनि जुबा मृगराज लजाये"—[रामा०] ।—रोचन-(पु०) कस्तूरी ।—लांछन-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चंद्रमा । "अंकाधिरोपति मृगश्चंद्रमा मृगलांछनः"—माघ० ।—लोचनि, लोचनी-(वि०, स्त्री०) मृगनयनी, हरिण के से नेत्रों वाली स्त्री । "मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये"—[रामा०] । —वारि-(पु०) मृगतृष्णा का जल, मृगनीर । "मृगवारि का सिन्धु अथाह नहीं"—महादेवी । —शिरा, शीर्ष-(पु०) २७ नक्षत्रों में से ५ वाँ नक्षत्र (ज्यो०) ।

मृगन—(संज्ञा, पु०, सं०) तलाश ।

मृगया—(पु०) आखेट, शिकार । "मृगया न विगीयते नृपैरपि धर्म्मागममर्म पारगैः"—[नैषध०] । "वन मृगया नित खेलन जाहीं"—[रामा०] ।

मृगांक—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा, एक रस, (वैद्य०) ।

मृगांतक—(संज्ञा, पु०, सं०) चीता ।

मृगाक्षी—(वि०, स्त्री०, सं०) हरिण के से नेत्रों वाली, मृगनयनी ।

मृगादन—(संज्ञा, पु०, सं०) चीता, शेर ।

मृगाशन—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंह, बाघ ।

मृगिन, मृगिनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मृगी] हरिणी ।

मृगित—(वि०, सं०) जिसका पीछा किया गया हो, खोजा हुआ । अन्वेषित ।

मृगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हरिणी, हिरनी, कश्यप ऋषि की १० कन्याओं मे से एक जिससे मृग उत्पन्न हुए (पुरा०), कस्तूरी, प्रिय नामक वर्ण-वृत्त (पिं०), अपस्मार रोग, [मिरगी (दे०)] । "मृगी देखि जनु दव चहु ओरा" [रामा०] ।

मृगेंद्र, मृगेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सिंह । "मरता गुहा में मृगेन्द्र हुंकार है"—दिन० ।

मृग्य—(वि०, सं०) अन्वेषणीय, अनुसंधान करने योग्य, दर्शन ।

मृच्छकटिक—(संज्ञा, पु०, सं०) संस्कृत का एक श्रेष्ठ नाटक ।

मृजा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मार्जन, शुद्ध करण ।

मृडा, मृडानी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गाजी ।

मृणाल, मृणाली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमल नाल, कमल का डंठल, भसींड़ा । "मदर्थ सदेश मृणालमंथरः"—[नैषध०] ।

मृणालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमलडंडी, कमल नाल ।

मृणालिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमलिनी, वह स्थान जहाँ कमल हों ।

मृत—(वि०, सं०) मुर्दा, मरा हुआ ।—कंबल-(पु०) कफ़न ।—जीवनी-(स्त्री०) एक विद्या जिसके द्वारा मुर्दा जिला दिया जाता है ।—संजीवनी-(स्त्री०) एक बूटी जिसके खाने से मुर्दा जीवित हो जाता है, एक औषधि जो अनेक रोगों में चलती है, संजीवनी (वै०) ।

मृतक—(संज्ञा, पु०, सं०) शव, मरा हुआ जीव, मुर्दा, निर्जीव ।—कर्म-(पु०) अंत्येष्टि, क्रिया, प्रेत-कर्म । "पूरण वेद-विधान तें मृतक-कर्म सब कीन्ह"—[रामा०] ।—धूम-(पु०) राख, भस्म, शवदाह का धूम ।

मृताशौच—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह छूत जो किसी संबंधी के मरने से लगती है ।

मृत, मृद्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मिट्टी। "शेष रह जाय नहीं मृद् मात्र"—पंत।

मृत्तिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मिट्टी, माटी, धूलि।

मृत्युंजय—(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्यु को जीतने वाला, शिव जी।

मृत्यु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मरण, मौत, जीवात्मा का देह-त्याग, यम।—**अनुपात**-(पु०) मरने वालों की संख्या का औसत। [डेथरेट]—**कर**-(पु०) मृतक के दाह-संस्कार आदि के पहले लगने वाला कर, मृत्यु शुल्क [डेथ ड्यूटी]।—**दंड**-(पु०) प्राणदंड, फाँसी। [डेथसेंटेंस]—**०योग्य अपराध**-(पु०) जिस अपराध के लिए मृत्युदंड उचित हो। [कैपिटल अफेंस]—**काल**-(पु०) मृत्यु का समय।—**लोक**-(पु०) यमलोक, मर्त्यलोक, संसार। **मुहा०—शय्या पर पड़ा होना**—किसी संक्रामक या सांघातिक रोग से अत्यन्त पीड़ित होने के कारण चंद दिनों का मेहमान होना।

मृथा*†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० वृथा, मृषा] व्यर्थ, वृथा, नाहक, झूठ।

मृदंग—(संज्ञा, पु०, सं०) ढोलक-जैसा पखावज बाजा। "बाजत ताल, मृदंग, झाँझ, डफ, मंजीरा, सहनाई"—कृ० वि० ला०।—**वादक**-(पु०) मृदंग बजाने वाला।

मृदव—(संज्ञा, पु०, सं०) गुणों के साथ दोषों की विरुद्धता या विषमता दिखाना (नाट्य०)।

मृदु—(वि०, सं०) दयालु, नरम, कोमल, मुलायम सुकुमार, नाजुक, मंद, सुनने में जो कर्कश या अप्रिय न हो [**मृद्वी** (स्त्री०)]। "बार बार मृदु मूरति जोही"—[रामा०]।—**भाषी**-(वि०) मधुर बोलने वाला।

मृदुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कोमलता, नम्रता, सुकुमारता, मन्दता, मिठाई।

मृदुल—(वि०, सं०) सुकुमार, नरम, कोमल, कृपालु। [**मृदुलता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "मृदुल मनोहर सुन्दर गाता"—[रामा०]।

मृनाल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मृणाल] कमलनाल। "तो शिव-धनु मृनाल की नाईं"—[रामा०]।

मृन्मय—(वि०, सं०) मिट्टी से बना हुआ।

मृन्मात्र—(क्रि० वि०, दे०) [सं० मृत्+मात्र] केवल मिट्टी। "मर्त्य हम केवल चर मृन्मात्र"—पंत।

मृषा—(अव्य०, सं०) व्यर्थ, झूठ। (वि०) असत्य, झूठ, व्यर्थ। "मृषा होइ मम साप कृपाला", "मृषा मरहु जनि गाल बजाई"—[रामा०]।—**भाषी**-(वि०) झूठा, लबार, असत्यवादी।

मृषात्व—(संज्ञा, पु०, सं०) मिथ्यात्व।

मृष्ट—(वि०, सं०) शोधित, शुद्ध।

मृष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शोधन।

में—(अव्य०, दे०) [सं० मध्य] अवस्थान या आधार-सूचक शब्द, अधिकरण का चिह्न जो भीतर या चारों ओर का अर्थ देता है (व्या०) [**में** (ग्रा०)]।—**में**-(स्त्री०) बकरी की बोली।

मेंगनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [दे० मींगी] भेड़-बकरियों आदि पशुओं की छोटी गोली जैसी विष्ठा, लेंड़ी।

मेंड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाँध, आड़, घेरा।

मेंड़की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मेढकी। [**मेंडक** (पु०)]।

मेकल—(संज्ञा, पु०, सं०) विंध्याचल का अमरकंटक वाला खंड।

मेख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मेष] भेड़ी, प्रथम राशि। (संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० मेख] खूटी, खूँटा, कीला, कील, काँटा।

मेखल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मेखला] मेखला।

मेखला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किंकड़ी, करधनी, कटि-सूत्र, तगड़ी, किसी वस्तु के मध्य भाग के चारों ओर घेरने वाली वस्तु, डंडे आदि के सिरे पर लोहे का गोलबंद, पहाड़ का मध्य खण्ड, गले में डालने का वस्त्र (साधु) अलफी, कफनी।

मेखली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मेखला] एक पहनावा जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और हाथ खुले रहते हैं, कटिबंध, करधनी।

मेघाडंबर—(संज्ञा, पु०, सं०) दल बादल, बादलों की गर्जन, बड़ा शामियाना।

मेघ—(पु०) आकाश में वृष्टि-कारक घनीभूत वाष्प, बादल, छः रागों में से एक राग (संगी०)।—**गर्जन**-(पु०) बादलों का गरजना।—**दूत**-(पु०) कालिदास द्वारा रचित काव्य जिसमें यक्ष ने विरह-शांति के निमित्ति मेघ को दूत बनाकर अपनी प्रेयसी को अपना संदेशा भेजा है।—**नाद**-(पु०) मेघ-गर्जन, वरुण, रावण का ज्येष्ठ पुत्र इन्द्रजीत मोर, मयूर। "मेघनाद माया विरचि रथ चढ़ि

गयो अकाश "—[रामा०] ।—**निर्घोष**–(पु०) बादलों का गर्जन ।—**पति**–(पु०) मेघनाथ, मेघाधिप, मेघेश, इन्द्र ।—**पुष्प**–(पु०) इन्द्र का घोड़ा, श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा ।—**माला**–(स्त्री०) बादलों की घटा, कादंबिनी, मेघमाला, मेघावलि ।—**राज**–(पु०) इन्द्र ।—**वरण,—वर्ण**–(पु०) मेघ के श्याम रंग का घनश्याम, श्रीकृष्ण जी । "विश्वाधारं गगन सदृश मेघवर्ण शुभांगम्"—[स्फु०] ।—**वर्त्त**–(पु०) प्रलय के बादलों में से एक, प्रलयाब्द ।—**वाई***‡–(स्त्री०) बादलों की घटा ।—**विस्फूर्जिता**–(स्त्री०) एक वर्णिक छंद (पिं०) ।

मेघा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मेघ] बादल, मेंढक ।

मेघागम—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्षा ऋतु, वर्षाकाल, बरसात, जलदागम । " मेघागमे किंकुरुते मयूरा "—[स्फु०] ।

मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित*‡—(वि०, यौ०, सं०) मेघों से ढका या छाया हुआ ।

मेघाध्व—(संज्ञा, पु०, सं०) मेघ-मार्ग, घन-पथ, आकाश, अंतरिक्ष ।

मेघावरि, मेघावलि, मेघावली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मेघावलि] बादलों की घटा, [मेघावरि (दे०)] ।

मेचक—(संज्ञा, पु०, सं०) श्याम या काला-वर्ण ।

मेचकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कालापन ।

मेचकताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मेचकता] कालापन, मेचकता, श्यामता । " कह प्रभु ससि महँ मेचकताई "—[रामा०] ।

मेज़—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पढ़ने-लिखने की लंबी, चौड़ी और ऊँची चौकी, [**टेबुल** (अं०)] ।—**पोश**–(पु०) मेज पर बिछाने का वस्त्र ।—**बान**–(पु०) आतिथ्यकार, मेहमानदार । [**मेज़बानी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

मेजा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंडूक] मडूक, मेढक ।

मेट—(संज्ञा, पु०, अ०) मजदूरों का सरदार या अफसर, टंडैल, जमादार, [मेठ (दे०)] ।

मेटक*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मेटना] विनाशक, मिटाने वाला ।

मेटनहार, मेटनहारा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मेटना + हारा प्रत्य०] मिटाने या मिटने वाला, दूर करने वाला, मेटैया (ग्रा०) । "विधि-कर लिखा को मेटन-हारा"—[रामा०] ।

मेटना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० मिटाना] मिटाना, बिगाड़ना ।

मेटिया†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मटकी] मटकी, माट ।

मेड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भित्ति] छोटा बाँध, घेरा, दो खेतों की सीमा या हद, मर्य्यादा ।

मेड़रा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मंडल] गोला, मण्डल । [**मेड़री** (स्त्री० अल्पा०)] ।

मेड़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मंडप] मढ़ी ।

मेढक—(संज्ञा, पु०, दे०) मेंडक, मंडूक (सं०) दादुर । [**मेढकी** (स्त्री०)] ।

मेढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मेढ=भेस के तुल्य] भेड़-बकरे की जाति का घने बालों वाला एक सींगदार छोटा चौपाया, भेड़ा, मेष ।—**सिंगी**–(स्त्री०) झाड़ीदार एक लता जिसकी जड़ औषधि के काम आती है ।

मेढ़ी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वेणी] तीन लड़ियों में गुँथी हुई चोटी ।

मेथी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक औषधि (मसाला) ।

मेथौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मेथी + बरी] मेथी के साथ की बरी । [मिथौरी (दे०)] ।

मेद—(संज्ञा, पु०) [सं० मेदस्, मेद] वसा, चरबी, चर्बी, या मोटेपन की अधिकता, कस्तूरी ।

मेदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक औषधि । (संज्ञा, पु०, अ०) उदर, पाकाशय ।

मेदिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वसुधा, धरती, पृथ्वी, अवनि, भूमि, वसुमती । "परिस्रावित मेदिनी थी रक्त से"—किरीट ।

मेध—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ । [**अश्वमेध** (यौ०)] ।

मेधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्मरण रखने की शक्ति, धारणा शक्ति, बुद्धि, ज्ञान, सोलह मातृकाओं में से एक, छप्पय छंद का एक भेद (पिं०) ।—**तिथि**–(पु०) मनुस्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार ।

मेधावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुद्धिमती, एक लता ।

मेधावी—(वि०) [सं० मेधाविन्] तीव्र धारणा शक्ति वाला, ज्ञानी, चतुर, बुद्धिमान्, विद्वान्, पंडित । [**मेधाविनी** (स्त्री०)] ।

मेध्य—(वि०, सं०) पवित्र, पुनीत ।

मेनका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वर्ग की एक अप्सरा, पार्वती की माता, मेना ।

मेना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मेनका] पार्वती की माता । (क्रि० स०, दे०) [हि० मोयना] पकवान मे मोयन डालना । "उवाच मेना परिरभ्य-वक्षसा:"—कुमार० ।

मेम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० मैडम] यूरप या अमेरिका आदि की स्त्री, बीबी, ताश का एक पत्ता, रानी ।

मेमना—(संज्ञा, पु०) [अनु० में मे] भेड़ का बच्चा, घोड़े की एक जाति ।

मेमार—(संज्ञा, पु०, अ०) राज, थवई, (प्रान्ती०) इमारत बनाने वाला ।

मेय—(वि०, सं०) जो नापा जा सके, थोड़ा । "परिमेय पुरः सरौ"—रघु० ।

मेयना—(क्रि० स०, दे०) [हि० मोयना] पकवान में मोयन डालना ।

मेर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मेल] मिलाप, संयोग, समागम, एकता, मैत्री, संगति, साथ निभना, प्रकार, समता, बराबरी, ढंग, जोड़, मिलावट, मेल ।

मेरवना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० मेलन] मिलाना, संयोग वा मिश्रित कराना ।

मेरा—(सर्व०) [हि० मैं+रा प्रत्य०] मै का सम्बन्धकारक मे रूप, मदीय, मम । [**मेरी** (स्त्री०)] । (संज्ञा, पु०, दे०) मेला, जमाव, भीड़ ।

मेराउ, मेराव†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मेर=मेल] मेल, समागम, भेंट, मिलाप । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) अभिमान । "गहन छूट दिन अरकर ससि सों भयो मिराउ"—पद्मा० ।

मेरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मेरा] मदीया ।

मेरु—(संज्ञा, पु०, सं०) हेमाद्रि, सुमेरु, जो सोने का है (पुरा०) जयमाला के बीच की गुरिया । एक प्रकार की गणना जिससे ज्ञात हो कि कितने कितने लघु-गुरु के कितने छन्द हो सकते हैं (पिं०) । "सात दीप नौ खंड है, मन्दर मेरु पहार"—[नीति०] । **—दंड**-(पु०) शरीर की रीढ़, पृथ्वी के दोनों ध्रुवों की मध्यगत एक सीधी कल्पित रेखा (भू०) ।

मेरे—(सर्व०) [हि० मेरा] मेरा का बहु बचन, (विभक्ति-युक्त सम्बन्धवान के साथ आता है ।)

मेल—(संज्ञा, पु०, सं०) मैत्री, मिलाप, समागम, संयोग, एकता, मित्रता, संगति, दोस्ती, उपयुक्तता । **मेल-जोल, मेल-मिलाप** (यौ०)] । **मुहा०—खाना, बैठना या मिलना**-साथ निभना, संगति का उपयुक्त होना, दो पदार्थों का जोड़ ठीक बैठना । जोड़, टक्कर, प्रकार, समता, चाल, ढंग, मिलावट, मिश्रण ।

मेलना*†—(क्रि० स०, दे०, हि०) फेंटना, डालना, रखना, मिलाना, पहनाना । (क्रि० अ०, दे०) एकत्रित या इकट्ठा होना ।

मेला—(संज्ञा, पु०) [सं० मेलक] देव-दर्शन, उत्सवादि के लिये मनुष्यों का जमाव, भीड़, जमघट । (सा० भू० क्रि० स० दे०) मेलना, डाला । **—ठेला**-(वा०, हि०) भीड़भाड़, जमाव, जमघट । **—तमाशा**-(पु०) भीड़भाड़, जमाव, खेल-तमाशा ।

मेलाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० मिलाना] मिलाना, एकी भाव करना, फेंटना ।

मेली—(संज्ञा, पु०) [हि० मेल+ई प्रत्य०] साथी, संगी, मित्र, दोस्त, मुलाकाती । (वि०, दे०) शीघ्र हिल-मिल जाने वाला । (सा० भू० स्त्री० क्रि० स०) डाली । "मेली कंठ सुमन की माला"—[रामा०] । **—मुलाकाती**-(पु०) संगी साथी, मित्र, साथी ।

मेल्हना†—(क्रि० अ०, दे०) बेचैन या विकल होना, छटपटाना, आनाकानी करके समय बिताना, [मेल्हराना (दे०)] ।

मेव—(संज्ञा, पु०, दे०) राजपूताने की एक लुटेरी जाति, मेवाती, मेवा ।

मेवा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बादाम, छोहारे, किशमिस आदि । सूखे फल, उत्तम खाद्य वस्तु, [**मेवा-मिष्ठान्न** (यौ०)] ।

मेवाटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० मेवा+बाटी हि०] मेवा भरा एक पकवान ।

मेवाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) राजपूताने का एक प्रदेश जिसकी राजधानी चित्तौड़ थी ।

मेवाड़ी—(वि०) मेवाड़ सम्बन्धी, मेवाड़ का । (पु०) मेवाड़ का निवासी ।

मेवात—(संज्ञा, पु०, सं०) राजपूताने और सिंध के मध्य का प्रदेश (प्राचीन) ।

मेवाती—(संज्ञा, पु०) [सं० मेवात+ई प्रत्य०] मेवात-निवासी, मेवात में उत्पन्न, मेवात-संबंधी ।

मेवाफ़रोश—(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) मेवा बेचने वाला । [**मेवाफरोशी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

मेवासा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मवासा] कोट, गढ़, किला, रक्षा-स्थान, घर ।

मेवासी—(संज्ञा, पु०) [हिं० मेवासा] घर का स्वामी, गढ़ निवासी, प्रबल और सुरक्षित ।

मेष—(संज्ञा, पु०, सं०) भेंड़ । प्रथम राशि ।—**पाल**–(पु०) गड़रिया । [शेपर्ड]—**वृषण**–(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र ।—**संक्रांति**–(स्त्री०) सूर्य के मेष राशि में आने का योग या वर्षकला, (ज्यो०) । **मुहा०—मीन—करना**–आगा-पीछा करना, किंतु परन्तु करना । **मीन—निकालना**–आलोचना कर दोष निकालना ।

मेहँदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मेन्धी] एक झाड़ी जिसकी पत्ती से स्त्रियाँ हाथ-पाँव रँगती हैं । "बाटन वाले के लगै, ज्यों मेहँदी का रंग" —रही० । [**मेहँदा**—(पु०)] बड़ी पत्तियों की मेहँदी ।

मेह—(संज्ञा, पु०, सं०) मूत्र, प्रसव, प्रमेह रोग । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मेघ] मेघ, बादल, वर्षा, मेंह । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) वर्षा, बारिश, झड़ी, वृष्टि, बादल ।

मेहतर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भंगी, हलाल-खोर । [**मेहतरानी** (स्त्री०)] ।

मेहनत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) परिश्रम, प्रयास । [**मेहनत, मशक्कत, मेहनत-मजूरी** (यौ०)] —**कश**–(वि०) मजदूर, परिश्रम करनेवाला । —**मजदूरी**–(स्त्री०) शारीरिक परिश्रम का कार्य । —**ठिकाने लगना**–मेहनत का सफल होना ।

मेहनताना—(संज्ञा, पु०) [अ० + फ़ा०] पारिश्रमिक, किसी परिश्रम का फल या मजदूरी ।

मेहनती—(वि०) [अ० मेहनत + ई प्रत्य०] परिश्रमी, उद्यमी ।

मेहमान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पाहुना, पाहुन, अतिथि ।—**दारी**–(स्त्री०) आतिथ्य, अतिथि-सत्कार, पहुनाई, पहुनई ।

मेहमानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पहुनाई, आतिथ्य, अतिथि-सत्कार । **मुहा०—करना**–(व्यंग्य) दुर्दशा करना, खूब गत बनाना, मारना, पीटना, सजा देना ।

मेहर, मेहरी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) दया, कृपा । (संज्ञा, स्त्री०) (मेहरी), स्त्री, पत्नी, जोरू, मेहरिया, मेहरारि, मेहरारू (ग्रा०), कशरिन ।—**बान**–(वि०) दयालु, कृपालु ।—**बानी**–(स्त्री०) कृपा, दया ।

मेहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) स्त्री सी चेष्टा वाला, जनखा, नपुंसक, खत्रियों की एक जाति, मेहरोत्रा ।

मेहरार, मेहरारू—(संज्ञा, स्त्री०) स्त्री, पत्नी ।

मेहराब—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) द्वार का अर्द्ध गोलाकार ऊपरी भाग ।—**मेहराबदार**–(वि०) धनुषाकार ।

मेहरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० मेहरा] स्त्री, जोरू, पत्नी, औरत । "मेहरी बेहरी देहरी छूटी, वर्गे हैं प्रेम बढ़ाया"—कुज० ।

मैं—(सर्व०, दे०) [सं० अहं] उत्तम पुरुष सर्वनाम के कर्त्ता कारक में एक वचन का रूप (व्या०), खुद, स्वयं, आप, (अव्य०) (व्र०) ।

मै—(अव्य०, दे०, हिं०) (मय) देखिए—मय ।

मैका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मायका] माँ, घर या गाँव (स्त्रियों का), मइका, माइका, मायका (ग्रा०) ।

मैगल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मदगल] मस्त हाथी । (वि०) मस्त, मतवाला ।

मैजल*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० मंजिल] यात्रा, पड़ाव, मंजिल, सराँय, खंड ।

मैत्रायणि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक उपनिषद ।

मैत्रावरुणि—(संज्ञा, पु०, सं०) मित्र और वरुण के पुत्र, अगस्त्य ।

मैत्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मित्रता, दोस्ती ।

मैत्रेय—(संज्ञा, पु०, दे०) एक ऋषि (भाग०), सूर्य, आगे होने वाले एक बुद्ध (बौद्ध०) ।

मैत्रेयी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) याज्ञवल्क्य की स्त्री, अहिल्या ।

मैत्र्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मित्रता, दोस्ती ।

मैथिल—(वि०, सं०) मिथिला देश का, मिथिला, संबंधी । "मागधं मैथिलं विना"—[का० वं०] । (संज्ञा, पु०) मिथिला-निवासी ।—**कोकिल**–(पु०) विद्यापति ।

मैथिली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीता, जानकी । "त्रिभुवन-जय-लक्ष्मी मैथिली तस्य दारा"—[ह० ना०] । (संज्ञा, स्त्री०) मिथिला प्रान्त की भाषा । (वि०) मिथिला-सम्बन्धी ।

मैथुन—(संज्ञा, पु०, सं०) संभोग, रति-क्रीड़ा, पुरुष का स्त्री के साथ समागम, भोग, स्त्री-प्रसङ्ग, विषय, भोग ।

मैदा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बहुत महीन आटा।

मैदान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लम्बा-चौड़ा सपाट या समतल भूमि, क्रीड़ा स्थल। "यहि विधि गये राम मैदाना"—[रामचंद्रिका]। **मुहा०—में आना (उतरना)**–सामने आना।—**साफ होना (करना)**–कोई बाधा न होना (बाधा हटाना), शत्रुओं को रण में मार डालना या भगाना।—**मारना**–बाजी जीतना, रण या युद्ध क्षेत्र।—**करना**–संग्राम करना, लड़ना।—**मारना (पाना)**–युद्ध मे विजय प्राप्त करना।—**लेना**–रण-क्षेत्र मे शत्रु का सामना करना, जीतना।

मैन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मदन] कामदेव, मदन, मोम, [मयन (दे०)]।—**फल**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० मदनफल] एक वृक्ष और उसका फल (औषधि)।

मैनका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मेनका अप्सरा।

मैनसिल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मनः शिलः] पत्थर जैसी एक औषधि।

मैना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मदना] श्याम रंग का एक पक्षी जो सिखाने से मनुष्य की बोली बोलता है, सारिका। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मेना, मेनका] पार्वती की माता। "हिमगिरि संग बनी जनु मैना"—[रामा०]। मेनका अप्सरा। (संज्ञा, पु०, दे०) राजपूताने की मीना नामक एक जाति।

मैनाक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पहाड़ जो हिमालय का पुत्र कहाता है। (पुरा०) हिमालय की एक चोटी। "तुरत उठे मैनाक तब"—[रामा०]।

मैनावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)।

मैमंत*†—(वि०, दे०) [सं० मदमत्त] मदमत्त, मतवाला, मदोन्मत्त, अभिमानी।

मैमा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) विमाता, सौतेली माता, मइय्या (ग्रा०) माता।

मैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातृका] माँ, माता, महतारी, मइय्या (ग्रा०)। "कहैं कन्हैया सुनो जसोदा मैया धीरज धारौ"—लाल०।

मैर†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मृदर, प्रा० मिस्र चणिक] साँप के विष की लहर।

मैरा—(संज्ञा, पु०) [ग्रा०, प्रान्ती०] खेत में मचान।

मैल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मलिन] मल, गंदगी, गर्द गुबार। **मुहा०—हाथ-पैर का—**, तुच्छ वस्तु, विकार, दोष। **किसी के प्रति—रखना (मन में)**–शत्रुता या द्वेष रखना।—**खोरा**–(वि०) जिस पर मैल शीघ्र न जमे तथा जान न पड़े।

मैला—(वि०, दे०) [सं० मलिन, प्रा० मइल] गंदा, मलिन, अस्वच्छ, दूषित, सविकार, दुर्गंध-युक्त।—**कुचैला**–(यौ०) मैले कपड़े वाला, बहुत ही मैला या गंदा। (संज्ञा, पु०) गलीज, कूड़ा-कर्कट, मल, विष्ठा। **मुहा०—मन—करना**–उदासीन होना। "परसत मन मैला करे"—रही०।

मैलापन—(संज्ञा, पु०) [हि० मैला + पन प्रत्य०] मलिनता, गंदापन।

मैहर, महहर—(संज्ञा, पु०, दे०) घी में मिला मट्ठा।

मों‡*—(अव्य, दे०) [हि० मै] में। (सर्व०, दे०) [सं० मम] मेरा। "कहा भयो जो बीछुरे, मो मन तो मन साथ"—वि०। विभ० (ब्र०) में (अधिकरण)।

मोंगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मोगरा] मोगरा, फूल, मुँगरा (प्रान्ती०)।

मोंगरी, मुँगरी—(संज्ञा, स्त्री०) [प्रान्ती०] कूटने को लकड़ी का एक बेलन।

मोंछ, मोंछा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मूँछ] मूँछ, मुच्छ, म्वाछा (ग्रा०)।

मोंढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मूर्द्धा] बाँस आदि का बना एक ऊँचा गोल आसन, कंधा।

मो*—(सर्व०, अ०, ब्र०) [सं० मम] मेरा, मैं का वह रूप जो कर्त्ता को छोड़ अन्य कारकों की विभक्तियों के लगने से होता है। "मो कहँ कहा कहब रघुनाथा"—[रामा०]। * (अव्य०, ब्र०) अधिकरण-विभक्ति, में।

मोकना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० मुक्त] छोड़ना, त्यागना, फेंकना, परित्याग करना, तजना।

मोकल*†—(वि०, दे०) [सं० मुक्त) बंधन-रहित, छूटा हुआ, स्वच्छन्द, मुक्त।

मोकला†—(वि०, दे०) [हि० मोकल] अधिक चौड़ा, बहुत स्वच्छन्द।

मोक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) जीवात्मा का जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होना (शास्त्र), मुक्ति, छुटकारा,

मृत्यु। [मोष (दे०)]—द,—प्रद-(पु०) मोक्ष-दाता, मुक्ति देने वाला, मोक्षदायी।—शास्त्र-(पु०) आध्यात्मविद्या।—साधन-(पु०) मोक्ष के मार्ग या उपाय।

मोक्ष्य—(वि०, सं०) मोक्ष या मुक्ति के लायक।

मोख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मोक्ष] मोक्ष, मुक्ति।

मोखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुख] झरोखा। छोटी खिड़की, ताखा, आला। "मोखों में औ पथ पर बने दिव्य वातायनों मे"—[प्रि० प्र०]

मोगरा, मोंगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुद्-गर] एक प्रकार का बड़ा बेला (पुष्प)।

मोगल—(संज्ञा, पु०, दे०) [तु० मुगल] मुगल [**मोगलानी** (स्त्री०)]।

मोघ—(वि०, सं०) निष्फल, चूकने वाला। [**अमोघ** (विलो०)]

मोघिया—(संज्ञा, स्त्री०) अत्यधिक चौड़ी, मोटी नरिया।

मोच—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) [सं० मुच] शरीर की किसी नस का अपने स्थान से टल जाना। मुहा०—खाना-(पैर) आदि की नस का टल जाना।

मोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) मुक्त करना, छोड़ना, हटाना, रहित करना, ले लेना, दूर करना।

मोचना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मोचन] फेंकना, छोड़ना, बहाना, छुड़ाना, गिराना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मोचन] बाल उखाड़ने की चिमटी।

मोचरस—(संज्ञा, पु०, सं०) सेमल का गोंद। "इन्द्रज मेघमदा कुसुम-श्री रोध्र-महौषधि मोच-रसानां"—[लो० रा०]।

मोची—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मोचन] जूता बनाने वाली एक जाति। (वि०) [सं० मोचिन्] छुड़ाने या दूर करने वाला। [**मोचिन** (स्त्री०)]

मोच्छ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मोक्ष] मोक्ष, मुक्ति।

मोछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मूँछ] मोंछ, मोंछा, म्वाच्छा (ग्रा०), मूछ, मूँछ, मुच्छ। *† (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मोक्ष] मोक्ष।

मोज़ा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पायतावा, जुर्राब, पिंडली के नीचे का भाग, वहाँ पहिनने का सूत से बुना कपड़ा।

मोट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मोटरी] मोटरी, गठरी। (संज्ञा, पु०, दे०) चरस, पुर, खेत आदि सींचने को कुएँ से पानी भरने का चमड़े का थैला *†(वि०, दे०) [हि० मोटा] स्थूल, मोटा, कम मूल्य का, साधारण, मोटवार (ग्रा०)।

मोटनक—(संज्ञा, पु०, सं०) त, ज, जगण और लघु-गुरु का एक वर्णिक वृत्त या १६ मात्राओं का एक छंद (पिं०)।

मोटरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [तैलग० मुटा= गठरी] गठरी, मुटरी (ग्रा०)।

मोटा—(वि०, दे०) [सं० मुष्ट] चरबी आदि से फूली देहवाला, स्थूलकाय, दलदार, पीन, पीवर, गाढ़ा। [**दुबला, पतला** (विलो०)] साधारण से अधिक घेरे या मान वाला। [**मोटी** (स्त्री०)] मुहा०—आसामी-अमीर, धनी।—अन्न-कदन्न, जैसे—चना, जुआर, बाजरा आदि।—भाग्य-सौभाग्य, खुश-किस्मती। दरदरा। [**महीन** (विलो०)] खराब घटिया।—(टी) बुद्धि-मन्द बुद्धि।—खाना-साधारण या रूखा-सूखा भोजन। —(टी) बात-मामूली या साधारण बात। —(टे) तौर पर,—(टे) हिसाब (विचार) से-स्थूल रूप या दृष्टि से, मोटी दृष्टि से, अटकल या अन्दाज से भारी या कठिन।—दिखाई देना-कम दिखाई देना। घमंडी, अभिमानी।

मोटाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मोटा+ई प्रत्य०] स्थूलता, मोटापन, पीवरता, पीनता, शरारत, दुष्टता, पाजीपन, बदमाशी, [मोटाई (दे०)]। मुहा०—चढ़ना-घमंडी या बदमाश होना।

मोटाना, मुटाना—(क्रि० अ०) [हि० मोटा+आना प्रत्य०] स्थूलकाय या मोटा हो जाना, अभि-मानी या घमंडी होना, धनी होना। (क्रि० स०) —मोटा या स्थूल करना।

मोटापा—(संज्ञा, पु०) [हि० मोटा+आपा प्रत्य०] मोटाई, स्थूलता, पीवरता, पाजीपन, शरा-रत, दुष्टता।

मोटिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मोटा+इया प्रत्य०] गाढ़ा, खद्दर, खादी, गजी, और खुरखुरा कपड़ा। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मोट=बोझा] बोझा ढोने वाला, मुटिया। [कुली (दे०)] (वि०) तुच्छ, मोटिआर। (ग्रा०)]

मोट्टायित—(संज्ञा, पु०, सं०) एक भाव जिसमें नायिका अपने प्रेम को कटु भाषणादि से छिपाने

की चेष्टा करती हुई भी छिपा नहीं सकती (काव्य०)।

मोठ, मोट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुकुष्ट] मूँग जैसा एक मोटा अन्न, मोथी, बन-मूँग। [**दालमोठ** (यौ०)]

मोठस—(वि०, दे०) चुप, मौन, मूक।

मोड़—(संज्ञा, पु०) [हि० मुड़ना] मार्ग में घूम जाने का स्थान, घुमाव, मुड़ने का भाव।

मोड़ना—(क्रि० स०) [हि० मुड़ना] घुमाना, फेरना, लौटाना, तह करना, फैली वस्तु को समेट कर परत करना, मुरझाना (चेचक)। **मुहा०—शीतला का बाग—**, चेचक के दानों का कुम्हलाना। **मुँह**—विमुख होना, अप्रसन्न होना। अस्त्रादि की धार को कुंठित या गोठिल करना।

मोड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) मराठी भाषा के लिखने के काम मे आने वाली लिपि।

मोतबर—(वि०, अ०) विश्वासपात्र, विश्वसनीय, [मोतबर (दे०)]। [**मोतबरी** (संज्ञा, स्त्री०)]

मोतियदाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मौक्तिक-दाम] चार जगण का एक वर्णिक वृत्त (पिं०)।

मोतिया—(संज्ञा, पु०) [हि० मोती+इया प्रत्य०] एक प्रकार का बेला, एक तरह का सलमा, गुलाबी और पीला मिला, या हलका गुलाबी रंग, छोटा गोल दाना।—**बिंद**-(पु०) [सं० मौक्तिक बिंदु एक नेत्र रोग जिसमे मैल का एक छोटा सा बिंदु सा आंख के तिल को ढक लेता है, माड़ा, फूली (प्रान्ती०)।

मोती—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मौक्तिक, प्रा० मोत्तिअ] समुद्र की सीप से निकलने वाला एक मूल्यवान रत्न। "निशिमोती दे मुसकाती"—महादेवी।—**चूर**-(पु०) छोटी बुँदिया का लड्डू।—**झरा, झिरा**-(संज्ञा, पु०, दे०) छोटी शीतला का रोग, मंथरज्वर जिसमे छाती पर मोती जैसे जल भरे छोटे दाने निकलते है।—**झला, झिला**-(संज्ञा, पु०, दे०) छोटी शीतला का रोग मंथरज्वर।—**बेल**-(स्त्री०) मोतिया बेला (पुष्प)।—**सिरी**-(स्त्री०) मोतियों की माला या कंठी। **मुहा०—कैसी आब (पानी) उतरना**-अप्रतिष्ठा या तिरस्कार होना।—**कूट कर भरना**-प्रकाशित या प्रकाशमान होना।—**गरजना**-मोती चटकना या कड़क जाना।—**पिरोना**-माला गूँथना, मधुरता के साथ बोलना या लिखना।—**रोलना**-बिना परिश्रम के सरलता से बहुत-सा धन प्राप्त कर लेना। (**मानस के**) **आँख के**-आँसू।—(**यों**) **से मुँह भरना**-बहुत सा धन देना। (संज्ञा, स्त्री०) मोती पड़े हुए कान के बाले।

मोतीभात—(संज्ञा, पु०, हि०) एक तरह का भात।

मोथरा—(वि०, दे०) कुंठित, गोठिल, घोड़े का एक रोग, हड्डी का रोग।

मोथा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मुस्तक] नागर-मोथा, एक पौधे की जड़। "मोथा जायफल वंसलोचन मिलाइये"—कु० वि० ला०।

मोथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मूँग जैसा एक अन्न।

मोद— (संज्ञा, पु०, सं०) हर्ष प्रसन्नता, आनन्द, एक वर्णिक वृत्त (पिं०) सुगंधि, महक। [**मोदी** (वि०)]।

मोदक—(संज्ञा, पु०, सं०) औषधादि का लड्डू, मिठाई, चार नगण वाला एक वर्णिक वृत्त (पिं०)। (संज्ञा, पु०, सं०) हर्ष। [**मन, मोदक** (यौ०)] (मन के लड्डू) झूठे सुख की कल्पना। "मन-मोदक नहिं भूँख बुताई"—[रामा०]। (वि०, सं०) प्रसन्न करने वाला।

मोदकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक तरह की गदा।

मोदन—(संज्ञा, पु०, सं०) हर्ष, आनन्द, प्रसन्न होना।

मोदना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मोदक] प्रसन्न या खुश होना, सुगंधि फैलाना। (क्रि० स०, दे०) हर्षित, प्रसन्न करना।

मोदित—(वि०, सं०) मुदित, आनंदित, प्रफुल्लित।

मोदी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मोदक] परचूनिया, आटा-दाल आदि बेचने वाला बनिया।—**खाना**-(पु०) अन्नादि का घर, भंडार, जहाँ मोदी की दूकान हो।

मोधुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मोदक= एक जाति] मछुवा, धीवर, मछवाहा।

मोधू†—(वि०, दे०) [सं० मुग्ध] मूर्ख, भोंदू, बेसमझ, बुद्धू।

मोन—(संज्ञा, पु०, दे०) पिटारा, डब्बा, झाबा। [**मोनिया** (स्त्री०)]। " अमृत रतन मोन दुइ मूँदे"—पद्मा०।

मोना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० मोयना] भिगोना, मोवना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मोण] झाबा, पिटारा, डब्बा।

मोम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) शहद की मक्खियों के छत्ते का चिकना और नरम मसाला। (वि०, दे०) मृदु, दयालु।—**जामा**-(पु०) मोम लगा कपड़ा, तिरपाल।—**बत्ती—बाती**-(स्त्री०) मोम या वैसे ही किसी अन्य वस्तु की बत्ती जो प्रकाश के हेतु जलाई जाती है। "जल जलकर गलकर मोम बाती वह देखो"—गिरीश।

मोमिन—(वि०, अ०) सच्चा, ईमानदार। (पु०) सच्चा, जुलाहा (मुसलमान) शिया।

मोमियाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) नकली शिलाजीत। "मोमियाई खिलाई गई हरदी"—मोर०।

मोमी—(वि०, फ़ा०) मोम का बना, मोम वाला।

मोयन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मैन=मोम] माड़ते समय आटे में घी मिलाना जिससे उससे बनी वस्तु मुलायम हो जावे, मोवना।

मोरंग—(संज्ञा, पु०, दे०) नैपाल का पूर्वीय भाग।

मोर—(संज्ञा, पु०, दे०,) [सं० मयूर] मयूर नामक एक सुन्दर सतरंगा बड़ा पक्षी। [**मोरनी** (स्त्री०)]। "बोलहि बचन मधुर जिमि मोरा" —[रामा०]।—**चंदा**-(पु०) मोर-चंद्रिका, मोर-पंख की चन्द्राकार बूटी।—**चंद्रिका**-(स्त्री०) मोर-पंख की चन्द्राकार बूटी।—**छल**-(पु०) देवताओं या राजाओं के सिर पर डुलाने का मोर पंख का चँवर।—**छली**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मौलसिरी] मौलसिरी का पेड़। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मोरछल+ई प्रत्य०] मोरछल चलाने या हिलाने वाला।—**छाँह***-(स्त्री०) देखिए मोरछल। —**जुटना**-(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मोर+ जुटाना] एक गहना।—**पंख**-(पु०) मोर का पर या पखना [**मोरपच्छ, मयूरपक्ष** (सं०)]। —**पंख***†-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० मोर +पंख] मोर का पर, मोर-पख की कलँगी।— **पंखी**-(स्त्री०) मोरपंख सी बनी और रँगे सिरे वाली एक प्रकार की नाव, एक वनस्पति। (पु०) मोर-पंख सा चमकीला नीला रंग। (वि०) मोरपख के रंग का।—**मुकुट**-(पु०) मोरपंखों से बना मुकुट। "मोर-मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल"—बिहारी।—**शिखा**-(स्त्री०) मोर की चोटी, एक औषधि, [मोरसिखा (दे०)]। "मोरसिखा को काथ साथ ताके फिर खावै"—कु० वि० ला०।

मोरचा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लोहे का जंग, नमी और वायु कृत रासायनिक विकार से उत्पन्न लोहे पर पड़ी पीले या लाल रंग की बुकनी की तह, दर्पण का मैल। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० मोर-चाल] परिखा, किले के चारों ओर की खाईं, वह खाईं जहाँ युद्ध के समय सेना रहती तथा नगर और गढ़ की रक्षा करती है [मोर्चा (दे०)]। **मुहा०—बंदी करना**-ऊँची खाईं में या गढ के चारों ओर सेना को लड़ने के लिये रखना।—**मारना या जीतना**-शत्रु के मोरचे पर अधिकार जमा लेना।—**बाँधना** (**लगाना, बनाना**)-मोरचाबन्दी करना।—**लेना**-लड़ना, युद्ध करना, सामना करना।

मोरन*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मोड़ना] मोड़ने का भाव। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मोरट] विलोड़ित दूध, दही और मिठाई, केसरादि मिश्रित पदार्थ, श्रीखंड, शिखरन, मूरन (ग्रा०)।

मोरना*—(क्रि० सं०, दे०) [हि० मोड़ना] मोड़ना घुमाना। (क्रि० स०, दे०) [हि० मोरन] दही को मथ कर मक्खन निकालना।

मोरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मोर+नी प्रत्य०] मोर की स्त्री या मादा, मोर के आकार का नथ का टिकड़ा।

मोरवा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मोर] मोर, मयूर। " चातक, कोकिल, कीर शोर मोरवा वन करहीं "—कु० वि०।

मोरा*†—(वि०, दे०) [हि० मेरा] मेरा। " जानत प्रिया एक मन मोरा "—[रामा०]।

मोराना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० मोड़ना का प्रे० रूप] चारों ओर घुमाना या फिराना।

मोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मोहरी] पनाला, नाबदान, मैले और गंदे पानी की नाली। *†(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० मोर] मोर की मादा। *†(वि०, स्त्री०) [हि० मेरी] मेरी। " जोउ आव सरनि तकि मोरी "—[रामा०]।

मोरे—(सर्व०, दे०) [हि० मोर] मोर का बहुवचन।

मोल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मूल्य] दाम, कीमत, मूल्य। [**गोल-मोल**—(यौ०)] पेचीदा, गूढ़ या अस्पष्ट बात।—**चाल, (—तोल) करना**—किसी वस्तु का मूल्य बढ़ा-घटा कर तै करना और तोलना।

मोलना†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० मौलाना] मौलवी।

मोलाना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० मोल] मोल तै करना या पूछना। [**मोलवाना**—(प्रे० स० रूप)]।

मोवना*†—(संज्ञा, पु०, दे०) मौलाना। (क्रि० स०, दे०) [हिं० मोना] मोना।

मोष—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मोक्ष] मोक्ष, मुक्ति। "मोहूँ दीजै मोष, ज्यों अनेक अधमन दयो"—वि०।

मोषण—(संज्ञा, पु०, सं०) लूटना, हरना, चोरी करना, बध करना, [मूसना, मोसना (दे०)]।

मोह—(संज्ञा, पु०, सं०) देह और जगत की वस्तुओं को अपना और सत्य जानने की दुःखद बुद्धि या भावना, भ्रांति, भ्रम, अज्ञान, प्रेम, प्यार, मोह, माया, अज्ञान में डालने वाला मंत्र। आसक्ति, ३३ संचारी भावों में से एक (काव्य०), भय, दुःख, विकलता, मूर्च्छा। "मोह सकल व्याधिन कर मूला।" "जो न मोह अस रूप निहारी"—[रामा०]।—**भंग**-(पु०) अज्ञान-निवारण।—**रात्रि**-(स्त्री०) अर्ध प्रलय की रात्रि जब ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतते हैं, [मोहनिशा, मोहरात (दे०)]।—**शास्त्र**-(पु०) अज्ञान पैदा करने वाला ग्रंथ।

मोहक—(वि०, सं०) मोहोत्पादक, मोह, उत्पन्न करने वाला, लुभाने वाला, मनोहर, मोहकारी, मोहकारक। "मोहन मुरली धुनि मोह करै साखी है सब ब्रजबाला"—मन्ना०।

मोहज—(वि०, सं०) मोह से उत्पन्न, मोह-जनित, मोहजन्य।

मोहठा—(संज्ञा, पु०, सं०) १० वर्णों का एक वृत्त (पिं०), बाला।

मोहड़ा, मुहड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मुह+ड़ा प्रत्य०] किसी वस्तु का खुला भाग या मुह, अगला या ऊपरी भाग, [मोहरा (दे०)]।

मोहताज—(वि०, दे०) [अ० मुहताज] मुहताज, कंगाल, चाहने वाला।

मोहन—(संज्ञा, पु०, सं०) जिसे देख कर चित्त मुग्ध हो जावे, श्रीकृष्ण, एक वर्णिक वृत्त (पिं०) किसी को मूर्छित या वशीभूत करने का एक तांत्रिक प्रयोग, शत्रु के अचेत करने का एक अस्त्र, मदन के ५ बाणों में से एक। (वि०, सं०) [स्त्री० मोहन] मोह पैदा करने वाला। "मोहन-मुख मन-सोहन जोहन जोग"—रसाल।—**भोग**-(पु०) एक तरह का हलुवा आम।—**मंत्र**-(पु०) मोहने या वशीभूत करने का मंत्र, वशीकरण मंत्र।—**माला**-(स्त्री०) मूँगे और सोने के दानों की माला। "मोहन-माला गोफ, गुंज, कंठा, कल कंठ विराजै"—कु० वि०।

मोहना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० मोहन] रीझना, मोहित या आसक्त होना, मूर्च्छित होना। (क्रि० स०) अपने ऊपर अनुरक्त करना, मुग्ध या मोहित करना, लुभा लेना, धोखा देना या भ्रम में डालना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मोहन] श्रीकृष्ण। "मोहना तिहारी माधुरी मुसकानी"—सूर०।

मोहनास्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रु को मूर्च्छित करने वाला बाण या अस्त्र।

मोहनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विष्णु का वह स्त्री-रूप जिसे उन्होंने अमृत बाँटते समय (सिंधु मंथन के बाद) दैत्यों के मोहित करने को धारण किया था, वशीकरण मन्त्र, एक वर्णिक छंद। "देखि मोहनी-रूप दैत्य गण भये तुरत वश"—स्फु०। **मुहा०—डालना (लाना)**-माया या जादू से वशीभूत करना। "जिन निज रूप मोहनी डारी"—[रामा०]।—**लगना**-लुभा जाना, मोहित होना, प्रिय लगना, माया। (वि०, स्त्री०) मोहित करने वाली, अति सुन्दरी। [**मोहनी-मूरति** (यौ०)]।

मोहनीय—(वि०, सं०) मोहने या आकर्षित करने योग्य।

मोहर—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चिह्न, अक्षर, नामादि को दबा कर छापने का ठप्पा, कागज आदि पर लगी मुद्रा या छाप, अशरफी।

मोहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० मुँह+रा प्रत्य०] किसी पात्र का मुख या खुला हिस्सा, किसी वस्तु का अगला या ऊपरी भाग, सेना की अग्रिम पंक्ति, सेना के धावे का मुख। [**मोहरी** (स्त्री०)]। **मुहा०—लेना**-सामना करना, भिड़

जाना, युद्ध या प्रतिद्वंद्विता करना। कोई द्वार या छेद जिससे कोई पदार्थ बाहर निकले, चोली आदि की गोट। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० मोहरः] शतरंज की गोट, चीजें ढालने का साँचा, रेशमी कपड़े के घोटने का घोटा, जहर-मोहरा, सिंगिया विष।

मोहरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० मोहरा] किसी पात्र आदि का छोटा मुँह, पैजामे में पाँयचों का अंतिम भाग, मोरी, नाली।

मोहर्रिर—(संज्ञा, पु०, अ०) मुहर्रिर, मुंशी, लेखक, क्लार्क (अं०)। [**मोहर्रिरी** (संज्ञा, स्त्री०)]

मोहलत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अवकाश, छुट्टी, फ़ुरसत, अवधि।

मोहार, मुहार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० मुह +आर प्रत्य०] द्वार, दरवाजा, मुँहड़ा (प्रान्ती०)।

मोहिं, मोहीं†—(सर्व०, ब०, अव०) [सं० मह्य] मुझे, मुझको। "मोहिं न कछु बाँधे कर लाजा" [रामा०]।

मोहित—(वि०, सं०) भ्रमित, मोहा हुआ, मुग्ध, आसक्त। "मोहित भे तब दैत्यागण, देखि मोहिनी रूप"—कृ० वि०। (यौ०) [अ० मो+हित मेरे लिये, मेरा भला।

मोहिनी—(वि०, स्त्री०, सं०) मोहने वाली, अत्यन्त सुन्दरी। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) विष्णु का एक स्त्री-रूप, माया, टोना, जादू, १५ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०) एक अर्द्धसम छंद (पिं०)। "जिन निज रूप मोहिनी डारी"—[रामा०]।

मोही—(वि०, दे०) [सं० मोहिन्] मोहने वाला, मोहित करने वाला (वि०) [हि० मोह+ई प्रत्य०] मोह, प्रेम या स्नेह करने वाला, लोभी, लालची, मूर्ख।

मोहोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उपमा का एक भेद (केशव०), भ्रांति अलंकार (अन्य०)।

मौंगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मौन] चुप, मौन, मूक।

मौंड़ा, मोंड़ा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माणवक] छोरा, बालक, लड़का। [**मौंड़ी, मोंड़ी** (स्त्री०)]।

मौका—(संज्ञा, पु०, अ०) वारदात की जगह, घटना, स्थल, स्थान, देश। अवसर, समय, [**मौका बे मौका** (यौ०)]।

मौकूफ़—(वि०, अ०) बंद या अलग किया हुआ, रोका हुआ, नौकरी से छुटाया या अलग किया हुआ, रद्द किया गया, बरखास्त, अवलंबित, निर्भर। [**मौकूफ़ी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

मौक्तिक—(वि०) [सं० मुक्ता] मोती का, मोती-सम्बन्धी।—**दाम**-(पु०) एक वर्णिक छंद जिसमें बारह वर्ण होते हैं (पिं०)।—**माला**-(स्त्री०) एक वर्णिक छंद जिसमें ग्यारह वर्ण होते हैं। (सं०) मोतियों की माला।

मौख—(संज्ञा, पु०, दे०) एक मसाला।

मौखरी—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पुराना हिन्दू राजवंश (इति०)।

मौखिक—(वि०, सं०) मुख-संबंधी, जबानी, जिह्वाग्र, मुख का।—**ठेका**-(पु०) जबानी ठेका। [ओरल कांट्रैक्ट]—**परीक्षा**-(स्त्री०) जबानी परीक्षा। [ओरल एग्जैमिनेशन]—**प्रतिपादन**-(पु०) जबानी तर्क। [वर्बल प्ली]—**समझौता**-(पु०) जबानी समझौता। [ओरल एग्रीमेंट] —**साक्ष्य**-(पु०) जबानी गवाही। [ओरल एविडेंस]

मौज—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) तरंग, लहर, जोश, मन की उमंग या उछंग। मुहा०—**किसी की—आना**-मरजी या इच्छा जानना। विभव, धुन, प्रभूति, आनन्द, मजा, सुख, विभूति।—**उड़ाना (करना)**-आनन्द उठाना, चैन करना।—**में आना**-धुन या जोश (उमंग) में आना, मौज आना।—**में होना**-आनन्द या उमंग में होना।

मौज़ा—(संज्ञा, पु०, अ०) ग्राम, गाँव, [मौजा (दे०)]।

मौजी—(वि०, दे०) [हि० मौज+ई प्रत्य०] मनमानी करने वाला, जोश या उमंग में रहने वाला, सदा प्रसन्न या हर्षित रहने वाला, आनंदी, उमंगी, लहरी, धुनी। [**मन-मौजी** (यौ०)]

मौजूद—(वि०, अ०) हाजिर, उपस्थित, प्रस्तुत, विद्यमान, तैयार।

मौजूदगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) उपस्थिति, हाजिरी, विद्यमानता। [प्रजेन्स]

मौजूदा—(वि०, अ०) वर्तमान काल का, प्रस्तुत, विद्यमान, उपस्थित।

मौड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० माणवक] लड़का, बालक। [**मौड़ी** (स्त्री०)]

मौत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मृत्यु, मरण, मीच (ग्रा०)। मुहा०—**का सिर पर खेलना**—मरना पास होना, आपत्ति का समीप होना। मरने का समय, काल, बड़ा कष्ट, विपत्ति।—**के घाट उतारना**—मार डालना। **सिर पर—का नाचना (खेलना)**—मृत्यु निकट होना।

मौताद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मात्रा, [मौताज (दे०)]।

मौदगल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मुद्गल ऋषि के आत्मज।

मौदगल्यायन—(संज्ञा, पु०, सं०) महात्मा बुद्ध के प्रधान शिष्यों में से एक।

मौन—(संज्ञा, पु०, सं०) चुप्पी, मूकता, चुप रहना। (वि०) चुप, शान्त, मूक।—**मुद्रा**—(स्त्री०) मौन-भाव।—**व्रत**—(पु०) मौन रहने का संकल्प। मुहा०—**ग्रहण या धारण करना**—चुपचाप रहना, न बोलना, मौन रहना (ब्र०)। "रहे सबै गहि मौन"—वि०।—**खोलना**—बोलना प्रारंभ करना।—**तजना**—बोलने लगना।—**बाँधना (लगाना)**—चुप हो जाना। (लो० सं०) "मौन स्वीकृतिलक्षणम्"।—**लेना या साधना**—चुप होना, न बोलना।—**सँभारना**—* मौन साधना, चुप होना। मुनियों का मूकव्रत, मुनि-व्रत। (वि०) [सं० मौनी] चुप, जो न बोले। † (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मौण] पात्र, बरतन, डब्बा, [मौन (दे०)]।

मौनी—(वि०) [सं० मौनिन्] चुप रहने वाला मुनि। [—**अमावस** (यौ०)] माघ की अमावस।

मौर—(वि०, दे०) [सं० मुकुट] ताड़-पत्र, या कागज आदि से बना एक मुकुट या शिरोभूषण (विवाह मे) प्रधान, शिरोमणि, मुख्य। [**मौरी** (स्त्री० अल्पा०)]। "तुलसी भाँवरि के परे, ताल सिरावत मौर।" [**शिर मौर**—(यौ०)] प्रधान, शिरोमणि, सर्वश्रेष्ठ। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मुकुल] मंजरी, बौर। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मौलि—सिर] सिर, गरदन।

मौरना, मौराना—(क्रि० स०, हि०) वृक्षों में मजरी आना, बौर लगना, बौरना।

मौरसिरी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मौलि श्री] सुगंधित पुष्पों का एक पेड़, वकुल वृक्ष, [मौलसिरी (दे०)]

मौरूसी—(वि०, अ०) बाप-दादा के समय से चला आया हुआ, पैतृक।

मौर्य्य—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षत्रिय-सम्राट् चन्द्रगुप्त और अशोक का राज-वंश (इति०)।

मौर्वी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धनुष की ताँति या डोरी। "धनुः पौष्यं मौर्वी मधुकर मयी, चंचल दृशाम्"—भो०।

मौलवी—(संज्ञा, पु०, अ०) अरबी और फारसी का पंडित, [मोलवी (दे०)], मुसलमानी धर्म्म का आचार्य, मुल्ला।

मौलसिरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मौलिश्री] मधुर और भीनी सुगंधि के छोटे पुष्पों का एक बड़ा पेड़, वकुल।

मौलाना—(संज्ञा, पु०, अ०) मुसलमानों का धर्म्म-गुरु।

मौलि—(संज्ञा, पु०, सं०) चोटी, सिर, जूड़ा, माथा, मस्तक, किरीट, सिरा, जटा जूट, सरदार, प्रधान व्यक्ति।

मौलिक—(वि०, सं०) नवीन, मूल-संबंधी, जड़ का, जड़ की वस्तु। (संज्ञा, पु०) कुलीन-भिन्न, अकुलिन। [ओरिजिनल]

मौलिकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मौलिक या मूलगत होने की स्थिति।

मौसर*†—(वि०, दे०) [अ० मुयस्सर] प्राप्त होना, मयस्सर।

मौसा—(संज्ञा, पु०) [हि० मौसी] माता की बहिन या मौसी का स्वामी या पति। मौसिया, फूफा। [**मौसी** (स्त्री०)]।

मौसिम, मौसम—(संज्ञा, पु०, अ०) उचित समय, ऋतु। [**मौसिमी** (वि०)]

मौसिया—(संज्ञा, पु०, दे०) मौसा।

मौसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० मातृष्वसा] माता की बहिन, मौसी। [**मौसेर** (वि० प्रान्ती०)]

मौसेरा—(वि०, दे०) [हि० मौसी + एरा प्रत्य०] मौसी के नाते से संबद्ध, मौसी के सम्बन्ध का। [**मौसेरी** (स्त्री०)]

म्यावँ, म्याऊँ—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) बिल्ली की बोली।—**ऊ का ठौर**—(यौ०) मुख्य तथा भय का स्थान, कठिन स्थल। मुहा०—**म्याँव करना**—डरकर धीरे धीरे बोलना, अधीनता स्वीकार कर नम्रता से बोलना।

म्यान—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० मियान] कटार और तलवार आदि के फल रखने का खाना, अन्नमय कोश, देह। **मुहा०—एक—में दो तलवार न रहना।**

म्याना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० म्यान] म्यान में रखना। *(संज्ञा, पु०, दे०) मियाना, पालकी।

म्यों—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) बिल्ली की बोली।

म्योड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० निगुंडी] छोटे पीले फूलों की मंजरी वाला एक सदा बहार झाड़, एक पेड़, निगुंडी, सँभालू।

म्रियमाण—(वि०, सं०) मृतकल्प, अवसन्नमृत, मृतप्राय:।

म्लान—(वि०, सं०) मलिन, मैला, कुम्हलाया हुआ, उदास, दुर्बल। [**म्लानता** (संज्ञा, स्त्री०)] **—मना**-(वि०) उदास, मुरझाये हुए मन वाला, खिन्न-चित्त। **—मुख**-(वि०) उदास, उदासीन, दुःखी, म्लानवदन।

म्लानता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मैलापन, उदासी, मलिनता, मलीनता।

म्लिष्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) अस्पष्ट वाक्य, अव्यक्त वचन।

म्लेच्छ—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्णाश्रम से रहित जातियाँ। [**म्लेच्छता** (संज्ञा, स्त्री०)]। (वि०) नीच, पापी। **—जाति**-(स्त्री०) अनार्य, असभ्य जाति, संस्कृत भाषा न बोलने वाली जाति। **—भाषा**-(स्त्री०) विदेशी भाषा, अनाथ भाषा।

म्ह*†—(सर्व०, दे०) [हि० मुझ] मुझे।

म्हारा, म्हारी—(सर्व०, दे०) [हि० हमारा] हमारा। [**म्हारी** (स्त्री०)]।

य

य—संस्कृत और हिंदी की वर्णमाला में अंतस्थ वर्ण का प्रथम वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है :— "इचुयशानाम् तालु"। (संज्ञा, पु०, सं०) योग यश, संयम, सवारी, पिंगल में यगण का संक्षिप्त रूप। **—गण**-पिंगल (छंदशास्त्र) का एक गण जिसमें प्रथम वर्ण लघु और शेष दो गण दीर्घ होते हैं। (।SS)

यंता—(संज्ञा, पु०, सं०) शासक, सूत्रधार, संचालक।

यंति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दमन।

यंत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) तंत्रशास्त्रानुसार विशेष प्रकार से बने कोष्ठकादि, [जंत्र, जंतर (दे०)] हथियार, औजार, कल, बंदूक, बाजा, ताला, कुलुफ किसी विशेष कार्य के लिये उपयुक्त उपकरण। **—गृह**-(पु०) वेधशाला। **—मन्त्र**-(पु०) जादू [टोना, जन्त्र-मंत्र, जंतर-मंतर (दे०)]। **—विद्या**-(स्त्री०) कलों के बनाने या चलाने की विद्या, यंत्र-विज्ञान। **—शाला**-(स्त्री०) वेधशाला, वह स्थान जहाँ अनेक तरह की कलें हों, यंत्रागार।

यंत्रण—(संज्ञा, पु०, सं०) बाँधना, रक्षा करना, नियमानुसार रखना, नियंत्रण।

यंत्रणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुःख, कष्ट, क्लेश, वेदना, दर्द, पीड़ा।

यंत्रालय—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) छापाखाना, कलों का स्थान या घर।

यंत्रित—(वि०, सं०) ताले में बंद, यंत्र या कल के द्वारा रोका या बंद।

यंत्रिका—(संज्ञा, पु०, सं०) ताला। "लोचन निज पद-यंत्रिका, प्राण जाहिं केहि बाट"—[रामा०]।

यंत्री—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यंत्रिन्] यंत्र-मत्र करने वाला, तांत्रिक, तंत्रशास्त्र का ज्ञाता, बाजा बजाने वाला।

यक—(वि०, सं०) एक, इक (दे०)]। **—अंगी**-(वि०, दे०) [सं० एकांगी] एकाँगी, [यकंगी इकंगी (दे०)]। **—टक**-(क्रि० वि०, दे०, हि०) लगातार, निर्निमेष दृष्टि से। "यकटक रहे निहारि लोग सब प्रेम-सहित दोउ भाई"—मन्ना०। **—बयक**—(क्रि० वि०) एकाएक अकस्मात, अचानक। **—बारगी**-(क्रि० वि०, फ़ा०) एकाएक, सहसा, अकस्मात, अचानक।

यकंग—(क्रि० वि०, दे०) [सं० एकांग] एकान्त, एकांग।

यकता—(वि०, फ़ा०) अपने गुणादि में अकेला, अद्वितीय, बेमिसाल, अकेला। [**यकताई—अकेलापन** (संज्ञा, स्त्री०)]। "एक से जब दो हुए तो लुत्फ यकताई नहीं"।

यकसाँ—(वि०, फ़ा०) एक प्रकार के, बराबर, समान, तुल्य।

यकायक—(क्रि० वि०, फ़ा०) अचानक, एकबारगी, सहसा, एकाएक।

यक़ीन—(संज्ञा, पु०, अ०) एतबार, भरोसा, विश्वास, प्रतीत ।

यक़ीनन—(अ०, अ०) निःसंदेह, अवश्य ।

यकृत—(संज्ञा, पु०, सं०) पेट में दाहिनी ओर भोजन पचाने वाली एक थैली, जिगर, कालखंड, वर्म-जिगर, यकृत बढ़ने का रोग ।

यक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) देवताओं का एक भेद जो कुबेर के अधीन है, और निधियों की रक्षा करते है, [जच्छ (दे०)] ।—**कर्दम**–(पु०) एक तरह का अंगराग या लेप । " स्वच्छ यक्षकर्दम हिय देवन दै अति ही अभिलाखे "—के० व० । —**नाथ**–(पु०) कुबेर, यक्षनायक ।—**पति**–(पु०) कुबेर ।—**पुर**–(पु०) अलकापुरी ।—**राज**–(पु०) कुबेर ।

यक्षाधिप, **यक्षाधिपति**—(संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर ।

यक्षिणी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० यक्षिणी] कुबेर की स्त्री, यक्ष की स्त्री, या पत्नी, [जच्छिनी (दे०)] ।

यक्षी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० यक्षिणी] यक्षिणी, यक्ष की स्त्री । (संज्ञा, पु०) [सं० यक्ष+ई प्रत्य०] यक्ष की साधना करने वाला ।

यक्षेश, **यक्षेश्वर**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कुबेर ।

यक्षौध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) यक्षों का घर या स्थान ।

यक्ष्मा—(संज्ञा, पु०) [सं० यक्ष्मन्] एक रोग, क्षयीरोग, तपेदिक । [**राजयक्ष्मा** (यौ०)] ।

यख़नी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जल में पकाये हुए मांस का रस, शोरबा ।

यच्छ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यक्ष] एक प्रकार के देवता, [जच्छ (दे०)] ।

यजत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) अग्निहोत्री ।

यजन—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ करना । " यजनं याजनं तथा "—मनु० । " बहु यजन कराके, पूज के देवतों को "—हरि० ।

यजमान—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ करने वाला, ब्राह्मणों को दान देने वाला, [जजमान (दे०)] । [**यजमानी, जजमंती** (संज्ञा, स्त्री०)]

यजमानी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० यजमान+ई प्रत्य०] यजमान के प्रति पुरोहित का धर्म-कर्म, पुरोहिताई, यजमान का धर्म या भाव, [जजमंती (दे०)] ।

यजु—(संज्ञा, पु०) [सं० यजुर्वेद ।

यजुर्वेद—(संज्ञा, पु० यौ०, सं०) चार वेदो में से एक वेद जिसमे यज्ञों का वर्णन है, [जजुर्वेद (दे०)] ।

यजुर्वेदी—(संज्ञा, पु०) [सं० यजुर्वेदिन्] यजुर्वेद का ज्ञाता या यजुर्वेदानुसार कर्म करने वाला । [**यजुर्वेदीय**—(वि०)] यजुर्वेद संबंधी । युजुर्वेद का जानकार ।

यज्ञ—(संज्ञा, पु०, सं०) मख, याग, आर्यों के हवन-पूजनादि वैदिक कृत्य, [जग्य (दे०)] । **कर्ता**–(पु०) यज्ञ करने वाला ।—**कुंड**–(पु०) हवन का गड्ढा या वेदी ।—**पति**–(पु०) विष्णु भगवान, यज्ञकर्ता, यजमान ।—**पत्नी**–(स्त्री०) यज्ञ की स्त्री, दक्षिणा ।—**पशु**–(पु०) यज्ञ मे बलिदान करने का पशु, वलिपशु ।—**पात्र**–(पु०) यज्ञ में काम आने वाले बरतन ।—**पुरुष**–(पु०) विष्णु भगवान, यजमान ।—**भूमि**–(स्त्री०) यज्ञ-स्थल, यज्ञक्षेत्र, यज्ञ करने का स्थान ।—**मंडप**–(पु०) यज्ञ के लिये बनाया हुआ मंडप, यज्ञशाला । —**महोत्सव**–(पु०) यज्ञ का विशाल उत्सव ।—**शाला**–(स्त्री०) यज्ञमंडप, यज्ञस्थल, यज्ञालय ।—**शास्त्र**–(पु०) मीमांसा ।—**सदन**–(पु०) यज्ञ का मंडप-स्थल ।—**सिद्धि**–(स्त्री०) यज्ञ की समाप्ति । —**सूत्र**–(पु०) यज्ञोपवीत, [जनेऊ (दे०)] । —**स्थल**–(पु०) यज्ञ-स्थान, यज्ञ-मंडप । [यज्ञ-**स्थली** (स्त्री०)] ।

यज्ञागार—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञशाला, यज्ञ स्थान ।

यज्ञाधिपति—(संज्ञा, पु०, सं०) भगवान विष्णु, यज्ञ के स्वामी ।

यज्ञेश, **यज्ञेश्वर**—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु भगवान ।

यज्ञोपवीत—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञसूत्र, जनेऊ " पीत यज्ञ-उपवीत सुहाई "—[रामा०] ।—**संस्कार**–(पु०) जनेऊ ग्रहण कराने का संस्कार ।

यज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ करने योग्य ।

यत्—(अव्य०, सं०) यदि, जो, जैसा ।—**किंचित्**–(क्रि० वि०) थोड़ा, जो कुछ, रंच, तनिक ।

यतनीय—(वि०, सं०) यत्न करने योग्य, कोशिश के योग्य ।

यति—(संज्ञा, पु०, सं०) योगी, त्यागी, संन्यासी, ब्रह्मचारी, छप्पय का ६६ वाँ भेद (पिं०)। (संज्ञा, स्त्री०) [स० यती] छंदों के चरणों में विराम या विश्राम, विरति। "दंडयतिनकर भेद" —[रामा०] ।—**धर्म**-(पु०) संन्यास ।—**भंग**-(पु०) छंद में यति या विराम के उपयुक्त स्थान पर न पड़ने का दोष (पिं०)।

यती—(संज्ञा, स्त्री०, पु०) [सं० यति] संन्यासी, त्यागी, विरागी।

यतीम—(संज्ञा, पु०, अ०) अनाथ, माता-पिता रहित। "यतीमे किना करदा कुरआँ दुरुस्त" —सादी।

यत्न—(संज्ञा, पु०, सं०) उपाय, उद्योग, प्रयत्न, तदबीर, रक्षा, रूपादि २४ गुणों में से एक गुण (न्याय०), [यतन, जतन (दे०)] ।—**पूर्वक**-(अ०) चेष्टापूर्वक, उपाय के द्वारा ।—**शील**-(वि०) कोशिश करने वाला, सचेष्ट।

यत्नवान्—(वि०) [सं० यत्नवत्] उपाय या यत्न करने वाला।

यत्र—(क्रि० वि०, सं०) जहाँ, जिस स्थान पर। [तत्र (विलो०)] ।—**तत्र**-(क्रि० वि०) जहाँ-तहाँ।

यथा—(अव्य०, सं०) जैसा, जैसे, जिस प्रकार, [जथा (दे०)]। [**तथा** (विलो०)]। **लो०** —"यथा राजा तथा प्रजा।"—**कथित्**-(अव्य०) जिस किसी प्रकार से, बड़े कष्ट या परिश्रम से।—**काल**-(पु०) समयानुसार, उपयुक्त समय, यथा समय।—**क्रम**-(क्रि० वि०) क्रमशः, क्रमानुसार। "यथा क्रमम् पुंसवनादिका क्रिया"—रघु०।—**तथ**-(अव्य०, सं०) ज्यों त्यों, जैसे-तैसे, जैसा हो वैसा ही।—**तथ्य**-(अव्य०) ज्यों का त्यों, जैसा हो वैसा ही, जैसा चाहिये वैसा। "यथा-तथ्य आतिथ्य करि, विनय कीन्ह करजोरि"— कं० वि०।—**पूर्व**-(अव्य०) जैसा पहले था वैसा ही, ज्यों का त्यों "यथा पूर्वमकल्पयत्"— [श्रुति] ।—**मति**-(अव्य०) बुद्धि अनुसार। "राम-चरित्र यथामति गाऊँ"—[रामा०]।—**योग्य**-(अव्य०) समीचीन, उपयुक्त, यथोचित, उचित, जैसा चाहिये वैसा, जथायोग्य। "यथा योग्य सब सन प्रभु मिलेऊ"—[रामा०]।—**रुचि**-(अव्य०, दे०) इच्छानुसार। "कहहुं सुखेन यथारुचि जेही"—[रामा०]।—**लाभ**-(वि०) जो कुछ मिले उसी पर निर्भर।—**विधि**-(वि०) विधि के अनुसार, विधिपूर्वक। "यथा-विधि हुताग्नीनाम्"—रघु०।—**शक्ति**-(अव्य०) भरसक, जितना हो सके, सामर्थ्य के अनुसार, शक्त्यनुसार।—**शास्त्र**-(वि०) शास्त्रानुसार।—**संभव**-(अव्य०, यौ०, सं०) जहाँ तक हो सके, संभवतः।—**समय**-(अ०) निश्चित अवधि या समय पर।—**साध्य**-(अव्य०) जहाँ तक साध्य हो, यथाशक्ति।—**स्थान**-(अ०) निश्चित या उचित समय पर।—**स्थित**-(वि०) निश्चित, सत्य, यथार्थ, स्थिति के अनुसार।

यथारथ*—(अव्य०, दे०) [सं० यथार्थ] उचित जैसा चाहिये वैसा, [जथारथ (दे०)]। "गुरु करिबो सिद्धांत यह होय यथारथ बोध"—तु०।

यथार्थ—(अव्य०) वस्तुतः, उचित, उपयुक्त, वास्तविक, जैसा चाहिये वैसा, ठीक ठीक। "करि यथार्थ सब कर सनमाना"—[रामा०]।

यथार्थतः—(वि०, सं०) वस्तुतः, यथानुरूप।

यथार्थता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सचाई, सत्यता, वास्तविकता, तथ्यता।

यथावत्—(अव्य०, सं०) यथोचित, ज्यों का त्यों, जैसा था वैसा ही, भली भाँति, जैसा चाहिये वैसा।

यथेच्छ—(अव्य, यौ०, सं०) इच्छानुसार, मन-माना।

यथेच्छाचार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मनमानी, स्वेच्छाचार, जो जो में आवे वही करना। [**यथेच्छाचारिता** (संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०)]।

यथेष्ट—(वि०, यौ०, सं०) जितना, चाहिये उतना, मन-चाहा, पूर्ण, पूरा, पर्याप्त।

यथोक्त—(अव्य०, यौ०, सं०) जैसा कहा गया हो। "प्रतार्यथोक्तव्रत पारणान्ते"—रघु०।

यथोचित—(वि०, यौ०, सं०) ठीक ठीक, उचित, उपयुक्त, समीचीन।

यदपि*—(अव्य०, दे०) [सं० यद्यपि] यद्यपि। "यदपि कही गुरु बारहिं बारा"—[रामा०]।

यदा—(अव्य०, सं०) जिस समय, जब, जहाँ। "यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत"— [भ० गी०] ।—**कदा**-(अव्य०) कभी-कभी। —**तदा**-(अव्य०) जब तब।

यदि—(अव्य०, सं०) अगर जो —**चेत्**-(अव्य०) यद्यपि, अगरचे।

यदीय—(वि०, सं०) जिसका।

यदु—(संज्ञा, पु०, सं०) ययाति राजा के बड़े पुत्र जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे (पुरा०) [जदु (दे०)] ।—**कुल**-(पु०) यदुवंश, [जदुकुल (दे०)] ।—**नन्दन**-(पु०) श्रीकृष्ण जी, [जदुनन्दन (दे०)] । " जबते बिछुरि गये यदुनन्दन नहिं कोउ आवत जात "—सुर० ।—**नाथ**-(पु०) श्रीकृष्ण जी ।—**पति**-(पु०) श्रीकृष्ण जी ।—**राई,—राव**-(पु०) श्रीकृष्ण जी । " अब तो कान्ह भये यदुराई ब्रज को सुधि बिसराई " —कं० वि० ।—**राज,—राय**-(पु०) श्रीकृष्ण जी । " आज यदुराज लाज जाति है समाज माहिं "—मन्ना० ।—**वंश**-(पु०) यदुकुल । यदुकुटुम्ब, [जदुबंस (दे०)] ।—**०मणि**-(पु०) यदुवंश-भूषण, श्रीकृष्ण जी ।—**वंशी**-(पु०) यादव, यदुकुल में उत्पन्न, यदुकुल का ।

यदृच्छया—(क्रि०, वि०, यौ०, सं०) अकस्मात्, मनमाने तौर पर, दैवसंयोग से । " यदृच्छया शिश्रियदाश्रयः श्रियः "—माघ० ।

यदृच्छा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आकस्मिक-संयोग, स्वेच्छाचार ।

यद्यपि—(अव्य०, यौ०) [सं० यदि + अपि] अगरचे, हरचंद, [यदपि, जदपि (दे०)] ।

यद्वातद्वा—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ऐसा वैसा, जो सो, भला-बुरा, अनिश्चित, अनियमित, जैसा-तैसा ।

यम—(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्यु और नर्क के देवता (आर्य), काल, मृत्यु, यमराज, [जमराज (दे०)] जुड़वाँ लड़के, धर्मराज, योग के अष्टांगों में से एक अंग, इन्द्रियों और मन का निग्रह (योग०) दो की संख्या, धर्म में मन को स्थिर रखने के कर्मों का साधन । " कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौयमौ० "—किरात० ।—**कातर**-(पु०) यम की तलवार या खाँड़ा, जमकातर । " कुलहा कातर औ यमकातर कटि में नागफाँस हू बाँधि "—[स्फुट०] ।—**घंट**-(पु०) कुछ विशेष दिनों में कुछ विशेष नक्षत्रों के पड़ने का एक कुयोग (ज्यो०), दिवाली का दूसरा दिन ।—**ज**-(पु०) धर्मराज, एक साथ के उत्पन्न दो लड़के, जुड़वाँ, अश्विनी-कुमार ।—**दग्नि**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० जमदग्नि] जमदग्नि—ऋषि, परशुराम के पिता ।—**द्वितीया**-(स्त्री०) कार्तिक शुक्ल द्वितीया, [जमदुतिया, भाईदुइज (दे०)] ।—**धार**-(पु०) दुधारी तलवार ।—**नाथ**-(पु०) यमराज, धर्मराज ।—**नाह**-(पु०) यमराज, धर्मराज ।—**पुर**-(पु०) यमलोक, यमपुरी । " नारि पाव यमपुर दुख नाना "—[रामा०] ।—**पुरी**-(स्त्री०) यमलोक ।—**पुत्र,—पूत**-(पु०) धर्मराज, युधिष्ठिर, यमसुत, यमात्मज ।—**यातना**-(स्त्री०) यमलोक या नरक की पीड़ा, मृत्यु के समय का कष्ट, [जम-जातना (दे०)] । " यमयातना सरिस संसारू "—[रामा०] ।—**राज**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) धर्मराज, काल, जमराज ।—**लोक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) यम का लोक, यमपुरी ।

यमक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अनुप्रास या शब्दालंकार जिसमें भिन्नार्थ के साथ यथाक्रम वर्णा-वृत्ति या शब्दावृत्ति हो, (अ० पी०), एक वृत्त (पिं०) ।

यमन—(संज्ञा, पु०, सं०) बंधन, रोक ।

यमल—(संज्ञा, पु०, सं०) यमज, जोड़ा, युग्म, जुड़वाँ बच्चे ।

यमलार्जुन—(संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर के पुत्र नल-कूबर और मणिग्रीव जो नारद के शाप से वृक्ष हो गये थे, श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया (भाग०) ।

यमालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) यमपुरी ।

यमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यम की बहिन, जो यमुना नदी हुई (पुरा०) ।

यमुना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [जमुना, जमना (दे०)] यम की बहिन, उत्तर भारत की एक बड़ी नदी, दुर्गा ।

यमनोत्तरी—(संज्ञा, पु०) यमुना नदी का उद्-गम-स्थान ।

यमेश—(संज्ञा, पु०, सं०) भरणी नक्षत्र ।

यमेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव ।

ययाति—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा नहुष के पुत्र, ये शुक्राचार्य की कन्या देवयानी से ब्याहे थे (पुरा०) । " मनहु स्वर्ग तें खस्यो ययाती "—[रामा०] ।

यव—(संज्ञा, पु०, सं०) जौ नामक एक अनाज, एक जौ या बारह सरसों की तौल, एक इंच का तिहाई भाग, अँगुली की पोर पर जवा जैसी रेखा (शुभ सामु०) ।—**द्वीप**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जावा द्वीप, (भूगो०) ।—**नाल**-(स्त्री०) जुआर नामक अन्न ।

यवन—(संज्ञा, पु०, सं०) यूनानी, मुसलमान, कालयवन दैत्य, यूनान देश का निवासी। [**यवनी** (स्त्री०)]।

यवनानी—(वि०) [सं० यवन + आनीप् प्रत्य०] यवन देश संबन्धी, यवनों की लिपि। "यवनाल्लिप्याम् "—[अष्टा०]।

यवनिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परदा, चिक, नाटक के रंगमंच पर एक परदा (नाट्य०)।

यवमती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)।

यवशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अजवाइन।

यवस—(संज्ञा, पु०, सं०) तृण, घास।

यवागू—(संज्ञा, पु०, सं०) यव के दलिये का माँड, या सत, यव के आटे का हलुआ।

यवास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यवासक] जवास, जवासा, एक कटीला पौधा।

यविष्ट—(वि०, सं०) अतिलघु, पूर्ण युवा।

यवीयस—(वि०, सं०) छोटा, युवा।

यवायान—(वि०, सं०) लघु, छोटा, युवा।

यश—(संज्ञा, पु०) [सं० यशस्] सुख्याति, कीर्त्ति, प्रशंसा, बड़ाई, नेकनामी, [जस (दे०)] **मुहा०—गाना (कीर्तन करना)**-प्रशंसा करना, एहसान मानना।**—कहना**-बड़ाई करना।**—मानना**-कृतज्ञ होना।

यशब, यशम—(संज्ञा, पु०, अ०) एक हरा पत्थर जिसकी नादंली बनाई जाती है।

यशस्वी, यशी, यशशील—(वि०) [सं० यशस्विन यश+ई प्रत्य०] कीर्त्तिमान, यश वाला। [**यशस्विनी (स्त्री०)**]।

यशुमति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यशोदा, [यशोमति, जसोमति (दे०)]।

यशोदा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) [जसोदा (दे०)] नन्द की स्त्री, [जसुदा (दे०)]। **—नन्दन**-(पु०) श्रीकृष्ण]

यशोधन—(वि०, यौ०, सं०) यश रूपी धन वाला। "यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच "—रघु०।

यशोधरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गौतम बुद्ध की स्त्री, और राहुल की माता।

यशोमति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० यशोदा] [जशोमति (दे०)]।

यष्टि, यष्टिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लाठी, छड़ी, मुलेठी, डाली, लकड़ी।

यह—(सर्व०, दे०) [सं० इदम्] श्रोता और वक्ता को छोड़ निकट के अन्य सब के लिये प्रयुक्त, होने वाला शब्द (व्या० हि०) या (ब्र०) संकेत वाचक निकटवर्त्ती सर्वनाम।

यहाँ—(क्रि० वि०, दे०) [सं० इस] इस ठौर या स्थान पर, इस संसार में, इस जगह में। इहाँ (ब्र०, अव)। **मुहा०—का यहीं**-ठीक इसी स्थान पर।

यहि—(सर्व, वि०, दे०) [हि० यह] विभक्ति से पूर्व यह का रूप (प्रा० हि) इहि (ब्र०, अव०) "यहि ते अधिक धर्म नहिं दूजा "—[रामा०]।

यहिया—(संज्ञा, पु०) ईसा के पूर्व का एक पैगंबर, जकरिया का पुत्र।

यही—(अव्य०, वि०) [हि० यह+ही प्रत्य०] यह ही, निश्चय रूप से यह, [यहि (दे०)] [इहै, यहै (ब्र० अव)]।

यहीं—(अव्य०, हि०) इसी स्थान पर, निश्चय रूप से यहाँ पर, [इहै (ब्र० अव०)]।

यहूद—(संज्ञा, पु०) [इब्रानी] वह स्थान जहाँ महात्मा ईसा जन्मे थे।

यहूदी—(संज्ञा, पु०) [यहूद+ई प्रत्य०] यहूद देशवासी, यहूद देश की भाषा और लिपि।

यहै, यहौ—(सर्व०, सं०) यह भी, यही।

याँ†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० यहाँ] यहाँ। "याँ आज जैसा देवेगा वैसा कल पायेगा।"

या—(अव्य०, फ़ा०) या, अथवा। (वि०, सर्व०, दे०) विभक्ति लगने से पूर्व यह का संक्षिप्त, [**रूप** (ब्र०)]।

याक, यका†—(वि०, दे०) [हि० एक] एक। [**इक** (अव०)]।

याक़ूत—(संज्ञा, पु०, अ०) एक लाल रत्न, लाल, चुन्नी।

याग—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ।

याचक—(संज्ञा, पु०, सं०) भिक्षुक, भिखारी, माँगने वाला। [**याचन, याचनीय** (संज्ञा, पु०, वि०)]। "याचक सकल अयाचक कीन्हें "—[रामा०]।

याचना—(क्रि० स०, दे०) [सं० यचन] माँगना, पाने के लिये निवेदन करना [याचना (दे०)]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) माँगने की क्रिया। "मैं याचन आयेउँ नृप तोहीं "—[रामा०]। [**याचित, याच्या** (वि०)]।

याचमान—(वि०, सं०) याचक ।
याचित—(वि०, सं०) प्रार्थित ।
याच्य—(वि०, सं०) याचना करने योग्य ।
याजक—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ की क्रिया ।
याजन—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ की क्रिया । "अध्यापनाध्यापनं चैव यजनं याजनं तथा" [म० स्मृत०] । [**याजनीय** (वि०)] ।
याज्ञवल्क्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वैशंपायन के शिष्य एक विख्यात ऋषि, स्मृतिकार, वाजसनेय, योगीश्वर याज्ञवल्क्य और उनके वंशज एक स्मृतिकार [जाग्यबलिक (दे०)] ।
याज्य—(वि०, सं०) यज्ञ को सम्पन्न कराने योग्य, दक्षिणा ।
याज्ञसेनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) द्रौपदी ।
याज्ञिक—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ करने या कराने वाला ।
यातना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कष्ट, पीड़ा, दुःख [जातना (दे०)] । "यम-यातना सरिस संसारू" —[रामा०] ।
यातव्य—(वि०, सं०) आक्रमणीय, हमले के योग्य ।
याता—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० यातृ] पति के भाई की पत्नी, जेठानी या देवरानी । "याता मातेति सप्तेते स्वस्त्रादयाः उदाहृताः"—[कौ० व्या०] ।
यातायात—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आना जाना, आवागमन, गमनागमन, आमदरफ्त (फ़ा०) । "यातायाते संसारे मृतः को वा न जायते"—[नीति०] ।
यातु—(संज्ञा, पु०, सं०) पथिक, राही, वायु, काल, समय, हिंसा, राक्षस ।—**धान**-(संज्ञा, पु०, सं०) राक्षस [जातुधान (दे०)] । "यातु-धान अंगद बल देखी"—[रामा०] ।
यालिक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक बौद्ध सम्प्रदाय ।
यात्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक जगह से दूसरी जगह जाने का कार्य, प्रस्थान, सफर, तीर्थाटन, प्रयाण ।
यात्रावाल—(संज्ञा, पु०) [सं० यात्रा + वाल हि० प्रत्य०] यात्रियों को देव-दर्शन कराने वाला पंडा ।
यात्रिक—(वि०, सं०) यात्रा करने वाला ।
यात्री—(संज्ञा, पु०) [सं० यात्रा] यात्रा करने वाला, पथिक, बटोही, मुसाफिर, तीर्थ जाने वाला ।
याथार्थिक—(हि०, सं०) वास्तविक, सत्य, ठीक, तथ्य ।
याथार्थ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्यता यथार्थता ।
याद—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) स्मृति, सुरति, स्मरण-शक्ति, सुधि ।—**गार**-(संज्ञा) स्मृति-चिह्न । [**यादगारी**—(संज्ञा, स्त्री०)] स्मरण ।—**दाश्त**-(संज्ञा, स्त्री०) स्मृति, स्मृति के लिये लिखी बात, स्मरण-शक्ति ।
यादव, यादौ, जादौ—(संज्ञा, पु०, सं०) यदु के कुटुंबी, या वंशज, [जादव (दे०)] । [**यादवी** (स्त्री०)]—**गिरि**-(पु०) एक पर्वत ।
यादृक—(वि०, सं०) जैसा ।
यादृशी—(वि०, स्त्री०, सं०) जैसी । यादृशी भावना, यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी "—वाल्मी० ।
यान—(संज्ञा, पु०, सं०) रथ, गाड़ी, सवारी, वाहन, विमान, आकाशयान, हवाई जहाज, शत्रु पर चढ़ाई करना । "सीतहिं यान चढ़ाय बहोरी" —[रामा०] ।
यानी, याने—(अव्य०, अ०) अर्थात, तात्पर्य्य, मतलब ।
यापन—(संज्ञा, पु०, सं०) चलाना, बिताना, निबटाना, व्यतीत करना । [**यापित, याप्य, यापनीय** (वि०)] । [**काल-यापन** (यौ०)] ।
यापना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीवन-यापन करना, निर्बाह करना, समय काटना ।
याबू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) छोटा घोड़ा, टट्टू ।
याबूक—(संज्ञा, पु०, सं०) महावर, लाल रंग ।
याम—(संज्ञा, पु०, सं०) समय, काल, एक पहर [जाम (दे०)] तीन घंटे का समय, एक तरह के देवगण । "दिवस रहा भरि याम" —[रामा०] । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० यामि] रात, यामिनी ।
यामना—(संज्ञा, पु०, दे०) अंजन, सुरमा ।
यामल—(संज्ञा, पु०, सं०) यमज, जुड़वाँ, एक तंत्र ग्रंथ ।
यामि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धर्म्म-पत्नी ।
यामिक—(संज्ञा, पु०, सं०) पहरुआ ।
यामिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात ।
यामिनि, यामिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात, रात्रि [जामिनि, जामिनी (दे०)] । "चंद बिनु यामिनी ज्यों कंत बिनु कामिनी है"—स्फु० ।

याम्य—(वि०, सं०) यम का, यम-संबंधी, दक्षिण का।

याम्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्षिण दिशा, भरणी नक्षत्र।

याम्योत्तर, दिगंश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) लंबांश, दिगंश, दक्षिणोत्तर दिग्विभाग (भू०, ख०)।

याम्योत्तर रेखा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सुमेरु कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर की कल्पित रेखा (भू०)।

यायावर—(संज्ञा, पु०, सं०) संन्यासी, खाना-बदोश, परिव्राजक, जरत्कारुमुनि। ब्राह्मण (वि०) हमेशा भ्रमण करने वाला।

यार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मित्र, प्रिय, दोस्त, उप-पति, जार। "यार वही दिलदार वही जो करार करै औ करार न चूकै"—[स्फु०]। [**यारदोस्त** (यौ०)]।

याराना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मैत्री, मित्रता, दोस्ती। (**वि०**) मित्र या मित्रता का सा।

यारी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मित्रता, दोस्ती, मैत्री, प्रेम, स्नेह। "को न हरि-यारी करै ऐसी हरियारी मैं"—[द्विज०]।

यावज्जीवन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जीवनभर, जन्मभर। "यावज्जीवन दास रहूँगा आपका"—कु० वि०।

यावद्, यावत्—(अव्य०, सं०) जब लग, जब तक, जौलों (व्र०), जतने।

यावनी—(वि०, सं०) यवन-संबंधी। "न वदेत् यावनीम् भाषाम् कंठेप्राणगतैरपि"—[स्फु०]।

यास—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रयास, चेष्टा। (स्त्री० अ०) निराश, मायूसी, अंदेशा।

यासु*—(सर्व०, सं०) जासु, जिसके। "यासु राज प्रिय प्रजा दुखारी"—[रामा०]।

यास्क—(संज्ञा, पु०, सं०) वैदिक निरुक्तकार एक प्रख्यात ऋषि।

यास्कमुनि—(संज्ञा, पु०, सं०) निरुक्त के रचयिता का नाम।

याहि, याही*†—(सर्व०, दे०) इसे, इसको, इसी। "याही हर गिरिजा गजानन को गोइ रही"—पद्मा०।

युंजान—(संज्ञा, पु०, सं०) अभ्यास करने वाला योगी। "युंजानः योगमुत्तमम्"—[गीता०]।

युक्त—(वि०, सं०) मिला या जुड़ा हुआ, संमि-लित, नियुक्त, संयुक्त, उचित्त, उपयुक्त [जुक्त (दे०)]। "युक्ताहार विहाराभ्याम्"—[मा० नि०]।—**कर्म**-(वि०) जिसे कोई कार्य दिया गया हो।

युक्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णिक छंद जिसमें दो नगण और एक मगण होता है (पिं०)।

युक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कौशल, चाल, उपाय, चातुरी, तदबीर, ढग, प्रथा, न्याय, रीति, नीति, मिलन, तर्क, उचित, विचार, ऊहा, योग। [जुगति, जुक्ति (दे०)]। "युक्ति विभीषण सकल बताई"—[रामा०]। स्वमर्म गोपनार्थ किसी को युक्ति या क्रिया के द्वारा वञ्चित करने की सूचना देने वाला एक अलंकार (काव्य०), स्वभावोक्ति (केश०)।—**युक्त**-(वि०, सं०) युक्ति-संगत, तर्कपुष्ट, वाजिब, ठीक, चातुरीपूर्ण।—**संगत**-(वि०) तर्कपुष्ट, चातुरी पूर्ण।

युगंधर—(संज्ञा, पु०, सं०) हरिस, कूबर, एक पहाड़, गाड़ी का बम।

युग—(संज्ञा, पु०, सं०) युग्म, जोड़ा, मिथुन, जुआ, जुआठ (प्रान्ती०), पाँसे के खेल में दो गोटों का एक ही घर में साथ आ जाना, बारह वर्ष का समय, काल, समय, काल का एक दीर्घ परिमाण (पुरा०) युग चार हैं:—सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि, चार की संख्या। [जुग (दे०)]। [—**युगांतर** (यौ०)]। "अह न छत्र युग जोरि, अरध करि सोई बनत अब खात"—सूर०। —**चेतना**-(स्त्री०) युग विशेष की प्रबुद्धता का स्तर।—**धर्म्म**-समयानुसार व्यवहार।—**पुरुष**-(वि०) युग विशेष का महान् पुरुष।—**युग**-(अ०) बहुत दिनों तक। **मुहा०**—**युग-युग**-बहुत दिनों तक।

युगति, युगुति*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० युक्ति] युक्ति, तदबीर, [जुगुति (दे०)]। उपाय, तर्क, ढंग। "योग युगति की अग्नि मैं"—[स्फु०]।

युगपत्—(अव्य०, सं०) साथ साथ, एक बारगी। "अथ रिरिं सुरमुम् युगपद्गिरौ"—माघ०। "युगपद् ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिंगम्"—[न्या० शा०]।

युगम*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० युग्म] दो, जोड़ा [जुग्म (दे०)]।

युगल—(संज्ञा, पु०, सं०) युग्म, जोड़ा, [युगुल, जुगुल (दे०)] । " बिहँसत युगल किशोर " —सूर० ।

युगांत—(संज्ञा, पु०, सं०) युग का अंत, अखीर, युग का प्रलय ।

युगांतर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दूसरा समय या युग और जमाना, दूसरा युग । **मुहा०—उपस्थित करना**–पुरानी रीति मिटाकर नयी चलाना ।

युगाद्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) युगारंभ की तिथि या तारीख, युगारम्भ-समय ।

युगावतार—(वि०, सं०) युग विशेष का अवतारी श्रेष्ठ पुरुष ।

युग्म—(संज्ञा, पु०, सं०) दो, जोड़ा, युग [जुग्म (दे०)] द्वंद्व मिथुनराशि (ज्यो०) ।—**चारी**–(वि०) जोड़े में भ्रमण करने या घूमने वाले ।—**धर्मा**–(वि०) स्वाभाविक रूप से मिलने-जुलने वाला ।

युजान—(संज्ञा, पु०, सं०) सारथी, गाड़ीवान ।

युज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मिलाप, संयोग । (वि०) मिला हुआ, उचित ।

युज्यमान—(वि०, सं०) मिलने योग्य, युक्त होने के उपयुक्त ।

युञ्जान—(संज्ञा, पु०, सं०) सुत, सारथी, विज्ञ, ध्यान-द्वारा सर्वज्ञाता योगी ।

युत—(वि०, सं०) युक्त, सहित, मिलित । [जुत (दे०)] ।

युति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मिलाप, योग ।

युद्ध—(संज्ञा, पु०, सं०) संग्राम, रण, लड़ाई [जुद्ध (दे०)] । " राम-रावण-योर्युद्धम् "—भट्टी० ।—**काल**–(पु०) लड़ाई का समय ।—**क्षेत्र**–(स्त्री०) युद्ध-भूमि, रण-क्षेत्र ।—**भूमि**–(स्त्री०) रणक्षेत्र ।—**विद्या**–(स्त्री०)—**शास्त्र**–(पु०) युद्ध सम्बन्धी विज्ञान ।

युद्धोन्मत्त—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राक्षस । (वि०) युद्ध के लिए उन्मत्त ।

युधाजित—(संज्ञा, पु०, सं०) भरत के मामा ।

युधान—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षत्रिय जाति ।

युधिष्ठिर—(संज्ञा, पु०, सं०) धर्म्मराज, पाँच पांडवों में सब से बड़े और धर्मात्मा । " दान में करण और धर्म्म में युधिष्ठिर लौं "—स्फुट ।

युयु—(संज्ञा, पु०, सं०) घोड़ा, अश्व ।

युयुत्—(संज्ञा, पु०, सं०) योद्धा, सिपाही, धृतराष्ट्र का दूसरा नाम (महा०) ।

युयुत्सा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) युद्ध करने या लड़ने की इच्छा, विरोध, बैर, शत्रुता ।

युयुत्सु—(वि०, सं०) युद्ध करने या लड़ने की इच्छा रखने वाला, जो युद्ध चाहता हो । " समवेतायुयुत्सवः "—[भ० गी०] ।

युयुधान—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र, क्षत्रिय, योद्धा । " युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथ "—[भ० गी०] ।

युवक—(संज्ञा, पु०, सं०) जवान, युवा, सोलह से पैंतीस वर्ष तक की आयु का मनुष्य ।

युवति, युवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मुग्धा, तरुणी, नवोढ़ा, जवान स्त्री [जुवती (दे०)] । " नोज्झितुं युवति माननिरासे "—[काव्य०] । " युवती भवन झरोखन लागीं "—[रामा०] ।

युवनाश्व—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्यवंशीय राजा प्रसेनजित् का पुत्र (पुरा०) ।

युवा—(वि०) [सं० युवन्] जवान, सिपाही, युवक । [जुवा (दे०)] । [**युवती (स्त्री०)**] । " युवा युगव्यायत बाहुरंसलः "—रघु० ।—**राई***–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० युवराज] राजा का सबसे बड़ा लड़का जिसे आगे राज्य मिले । (**संज्ञा, स्त्री०**) युवराज की पदवी ।—**राज**–(संज्ञा, पु०, सं०) राजा का सबसे जेठा पुत्र जिसे आगे राज्य मिले [जुवराज (दे०)] । [**युवराज्ञी (स्त्री०)**] । " सुदिन सुमङ्गल तबहि जब राम होहिं युवराज "—[रामा०] ।—**राजी**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० युवराज+ई प्रत्य०] युवराज का पद, युवराज्य, युवराज का कर्म ।—**राज्ञी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) युवराज की पत्नी ।

युष्मद्—(सर्व०, सं०) तू, तुम । " समस्य माने युस्मदस्मद् "—[कौ० व्या] ।

यूँ†—(अव्य०, दे०) [हि० यों] यों ।

यूक—(संज्ञा, पु०, सं०) जूँ, मत्कुण, खटमल ।

यूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यूति] मेल, मिलावट ।

यूथ—(संज्ञा, पु०, सं०) झुंड, समूह, वृंद । सेना, दल [जूथ (दे०)] । " यूथ यूथ मिलि "—कु० वि० ।—**यूथेश**–(यौ०) सेनापति ।—**प,—पति**–(पु०) सेनापति । " पदम अठारह यूथप बंदर "—[रामा०] ।

यूथिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जुही का फूल ।

यूनान—(संज्ञा, पु०, दे०) [ग्रीक आयोनिया] साहित्य और सभ्यता के लिये प्रसिद्ध महाद्वीप यूरुप का एक प्राचीन प्रदेश । "यूनान का सिकन्दर फारिस का शाहदारा"—कुं० वि० ।

यूनानी—(वि०) [यूनानी+ई प्रत्य०] यूनान का, यूनान सम्बन्धी, यूनान-वासी । (संज्ञा, स्त्री०) यूनान की भाषा, यूनान की चिकित्सा-प्रणाली, हकीमी ।

यूप—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञस्तम्भ, बलिपशु के बाँधने का खंभा । "कनक यूपसमुच्छ्रय शोभिनः" रघु० ।

यूपा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० द्यूत] जुआ, द्यूत-कर्म ।

यूरोप—(संज्ञा, पु०, अं०) एक छोटा महाद्वीप जिसके उत्तर में आर्कटिक, पश्चिम में एटलांटिक, दक्षिण में भूमध्यसागर और पूर्व में यूराल पवत स्थित है ।

यूरोपियन—(संज्ञा, पु०, अं०) योरोपीय देश का निवासी । (वि०) यूरोप सम्बन्धी, यूरोप का ।

यूरोपी*—(वि०) यूरोप सम्बन्धी, यूरोप का ।

यूष—(संज्ञा, पु०, सं०) [जूस (दे०)] पथ्य ।

यूह*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यूथ] झुंड, समूह, समुदाय, वृंद ।

ये—(सर्व०, दे०) [हि० यह का आदर-सूचक या बहु० व०] यह सब । "केशव ये मिथिलापति हैं"—[रामा०] ।

येई*†—(सर्व०, दे०) [हि० यह+ई प्रत्य०] यही, येही ।

येऊ†—(सर्व० दे०) [हि० ये+ऊ प्रत्य०] यह भी ।

येतो, एतो*†—(वि०, दे०) [हि० एतो] इतना, इत्तो (ग्रा०) । "येतो बड़ो समुद्र है, जगत पियासो जाय"—[रहीम०] ।

येहू*†—(अव्य०, दे०) [हि० यह+हू] येऊ (व्र०) ये या यह भी । "लोक-वेद सब कर मत येहू"—[रामा०] ।

यों, यौं—(अव्य, दे०) [सं० एवमेव] ऐसे, इस भाँति, इस प्रकार से, इस तरह पर ।

योंही—(अव्य०) [हि० यों+ही] ऐसे ही, बिना किसी विशेष प्रयोजन के, इसी प्रकार या तरह से, व्यर्थ ही, बिना काम ।

योग—(संज्ञा, पु०, सं०) मिलना, मेल, संयोग, उपाय, शुभ समय, ध्यान, प्रेम, संगति, स्नेह, धोखा, छल, प्रयोग, औषधि, धन, लाभ, नियम, साम, दाम, दंड और भेद नामक चारों उपाय, संबंध, सम्पत्ति और धन कमाना और बढ़ाना, वैराग्य, ध्यान और तप, दो या कई राशियों या संख्याओं या अंकों का जोड़ (गणि०), एक छंद (पिं०) । ताड़घात, सुभीता, कुछ विशेष अवसर (फ० ज्यो०), मुक्ति का उपाय, चित्त की वृत्तियों का रोकना । "योगश्च चित्तवृत्ति निरोधः"—(पतंजलि) । मन को एकाग्र कर ब्रह्म में योग द्वारा लीन होने का विधायक एक दर्शन शास्त्र । **—कन्या**-(स्त्री०) यशोदा की पुत्री । **—क्षेम**-(पु०) नवीन वस्तु की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा, जीवन-निर्वाह, कुशल क्षेम, कुशल-मंगल, राज्य का सुप्रबंध । "नियोग क्षेम आत्मवान्"—[भ० गी०] । **—ज**-(पु०) अलौकिक संनिकर्ष । (वि०) योग सम्बन्धी । **—तत्व**-(पु०) एक उपनिषद् । **—दर्शन**-(पु०) दर्शनों में से एक जिसके कर्त्ता पतंजलि ऋषि हैं । **—निद्रा**-(स्त्री०) युगान्त में विष्णु की नींद, जिसे दुर्गा मानते है (पुरा०) । **—पट्ट**-(पु०) ध्यान के समय में पहनने का कपड़ा, योगपट । **—फल**-(पु०) दो या अधिक संख्याओं के जोड़ने से प्राप्त संख्या (गणि०), योग करने का परिणाम । **—बल**-(पु०) तपोबल योगी को योग-साधन से प्राप्त शक्ति विशेष, योग-सिद्धि, (योग०) । **—भ्रष्ट**-(वि०) योग से गिरा हुआ । "धनिनाम् योगिनाम् गेहे योग भ्रष्टोऽपि जायते"—[भ० गी०] । **—माया**-(स्त्री०) देवी, भगवती, विष्णु की शक्ति, महामाया, प्रकृति, यशोदा की कन्या जिसे कंस ने मारा था (भाग०) । **—रूढ़ि**-(स्त्री०) ऐसी संज्ञा जो देखने में तो यौगिक संज्ञा हो किन्तु अपना सामान्य शाब्दिक अर्थ छोड़कर विशेष सांकेतिक अर्थ दे (न्या०) । **—वाशिष्ठ**-(पु०) वशिष्ठकृत एक वेदांत ग्रन्थ । **—शास्त्र**-(पु०) महर्षि पतञ्जलि कृत योगदर्शन, जिसमें योग साधन और चित्तवृत्ति-निरोध का विधान है । **—सिद्धि**-(स्त्री०) योगी । **—सूत्र**-(पु०) महर्षि पतञ्जलि कृत योग-सम्बन्धी सूत्रों का संग्रह ग्रन्थ ।

योगत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) योग का भाव ।

योगांजन—(संज्ञा, पु०, सं०) सिद्धांजन ।

योगाबंर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक बौद्ध देवता ।

योगा—(संज्ञा, स्त्री०) सीता की एक सहेली ।

योगागम—(संज्ञा, पु०, सं०) योगशास्त्र ।

योगाचार—(संज्ञा, पु०, सं०)

योगात्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं० योगात्मन्] योगी ।

योगाभ्यास—(संज्ञा, पु०, सं०) योग शास्त्रानुसार योग के अष्ठांगों का अनुष्ठान या साधन ।

योगाभ्यासी—(संज्ञा, पु०) [सं० योगाभ्यासिन्] योग की क्रियाओं को बारम्बार करने वाला, योगी ।

योगाराधन—(संज्ञा, पु०, सं०) योग की साधना ।

योगारूढ़—(संज्ञा, पु०, सं०) योगी ।

योगासन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) योग करने के हेतु बैठने की रीति या ढंग ।

योगित—(वि०, सं०) जिसके ऊपर मंत्र, जादू आदि का प्रयोग किया गया हो ।

योगिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रण-पिशाचिनी, तपस्विनी, योगाभ्यासिनी, योगिन, या आठ विशेष देवियाँ :—शैलपुत्री, चंद्रघंटा, स्कदमाता, काल-रात्रि, चंडिका, कुष्मांडी, कात्यायनी, महागौरी, योगमाया, देवी । ज्योतिष मे एक प्रकार का विचार ।

योगिराज, योगींद्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बहुत बड़ा योगी, शिव, योगीश ।

योगी—(संज्ञा, पु०) [सं० योगिन्] योग के द्वारा सिद्धि-प्राप्त व्यक्ति, आत्मज्ञानी, योग की क्रियाओं का अभ्यासी, शिव, महादेव [जोगी (दे०)] ।—**नाथ**–(पु०) महादेव जी ।—**राज**–(पु०) महान् योगी ।

योगीश, योगीश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ा योगी, सिद्ध, तपस्वी, याज्ञवल्क्य ।

योगीश्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवी, दुर्गा ।

योगेन्द्र—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रेष्ठ वा बड़ा योगी ।

योगेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ा भारी योगी, महात्मा, कृष्ण, शिव । "यत्रयोगेश्वरः कृष्णः तत्र-वैविजयो ध्रुवम्"—[महाभारत] ।

योगेश्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवी, दुर्गा ।

योग्य—(वि०, सं०) उपयुक्त, लायक, अधिकारी, ठीक, विद्वान् , काबिल, उचित पात्र, श्रेष्ठ, उपायी, उचित, माननीय, युक्ति लागाने वाला, सम्मानित, आदरणीय ।

योग्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लियाकत, क्षमता, काबलियत, पात्रता श्रेष्ठता, गुण, औकात, सम्मान, प्रतिष्ठा, सामर्थ्य, बड़ाई, उपयुक्तता ।

योजक—(वि०, सं०) मिलाने या जोड़ने वाला ।

योजन—(संज्ञा, पु०, सं०) [जोजन दे०] पर-मात्मा, योग, संयोग, मिलान, दो या चार या आठ कोस की दूरी (मत-भेद) । [**योजनीय, योज्य, योजित** (वि०)] । "योजन भरि तेहिं बदन पसारा"—[रामा०] ।—**गंधा**–(स्त्री०) सत्यवती, व्यास-माता, शांतनु की पत्नी ।

योजना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नियुक्ति, व्यवहार प्रयोग, मिलन, जोड़, मेल, रचना, बनावट, आयो-जन, आगे के कामों की व्यवस्था ।

योजनीय—(वि०) योजना के योग्य ।

योजित—(वि०, सं०) जिसकी रचना की गई हो, रचित, युक्त, नियमित ।

योज्य—(वि०, सं०) व्यवहार योग्य ।

योद्धा—(संज्ञा, पु०) [सं० योद्धा] लड़ाका, लड़ने वाला, सिपाही, वीर [योधा, जोधा (दे०)] ।

योधक—(संज्ञा, पु०, सं०) वीर, लड़ाका, योद्धा ।

योधन—(संज्ञा, पु०, सं०) युद्ध, संग्राम, लड़ाई ।

योधा, जोधा—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं० योद्ध] योद्धा ।

योधापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० योद्धृत्व] वीरता, शूरता ।

योनि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खाति, आकर, उत्पत्ति-स्थान, उद्गमस्थान । "चौरासी लख जिया योनि में भटकत फिरत अनाहक"—विन० । "जीवों की जातियाँ" वर्ग या विभाग जो चौरासी लाख कही गई है भग, जननेन्द्रिय, स्त्री-चिह्न, देह, शरीर, [जोनि (दे०) ।—**ज**–(संज्ञा, पु०, सं०) भग या योनि से उत्पन्न होने वाले जीव ।—**दोष**–(पु०) गर्मी, सुजाक ।—**शूल**–(पु०) योनि कष्ट, स्त्रियों का एक रोग विशेष ।—**संकोचन**–(पु०) योनि के सिकोड़ने का काम ।

योषा, योषित—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नारी, स्त्री । " योषा प्रमोदं प्रचुरंप्रयाति "—[लो० रा०] । " उमादारु योषित की नाईं "—[रामा०] ।

यौं*‡—(अव्य०, दे०) [हि० यों] यों, इस प्रकार ।

यौ*†—(सर्व०, दे०) [हि० यह] यह का बैसवाड़े (एक बोली) का रूप ।

यौगंधर—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रु के अस्त्रों को निष्फल करने वाला एक अस्त्र ।

यौगिक—(संज्ञा, पु०, सं०) मिला हुआ, मिश्रित, दो या अधिक शब्दों के योग से बना शब्द, प्रकृति और प्रत्यय के योग से बना शब्द, अट्ठाईस मात्राओं के छंदों का नाम । (वि०) योग-सम्बन्धी ।

यौतक, यौतुक—(संज्ञा, पु०, सं०) दायज, दहेज, जहेज (ग्रा०) ब्याह में वर-कन्या को प्राप्त धन ।

यौतिक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ज्योतिष] ज्योतिष ।

यौधेय—(संज्ञा, पु०, सं०) वीर, शूर, योद्धा, एक प्राचीन योद्धा जाति, एक प्राचीन देश ।

यौवन—(संज्ञा, पु०, सं०) जीवन का मध्य भाग (काल), लड़कपन और बुढ़ापे के बीच का समय जो सोलह से पैंतीस वर्ष तक माना गया है [जोवन (दे०)] जवानी, तरुणता, तरुणाई । **—लक्षण**-(वि०) जवानी के चिह्न, लावण्य, सुन्दरता ।

यौवनाश्व—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा मान्धाता ।

यौवराज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) युवराज का पद, भाव या कर्म । "स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं—[किरात०] ।**—अभिषेक**-(संज्ञा, पु०, सं०) वह उत्सव या अभिषेक (स्नान, तिलक आदि) जो किसी राजकुमार के युवराज बनाये जाने के समय होता है ।

यौत्स्नता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ज्योत्स्ना, उजियाली । रात ।

र

र—संस्कृत तथा हिन्दी की वर्णमाला में से अंतस्थों का दूसरा और समस्त वर्णों में २७ वाँ अक्षर जिसका उच्चारण जिह्वाग्र भाग द्वारा मूर्धा के स्पर्श करने से होता है—"ऋटुरषानाम् मूर्धा ।" (संज्ञा, पु०, सं०) कामाग्नि, आग, पावक, सितार का एक बोल ।

रंक—(वि०, सं०) दरिद्र, कंगाल, सुस्त, कंजूस, कृपण । "मनहु रंक धन लूटन धाये"—[रामा०] । [**रंकता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

रंकु—(संज्ञा, पु०, सं०) सफेद चित्तीवाला हिरन ।

रंग—(संज्ञा, पु०, सं०) नृत्य गीत या अभिनय का स्थान, नाच-गान, नाच-गान का स्थान, आकार भिन्न किसी दृश्य वस्तु का नेत्रानुभव जन्य गुण, युद्ध-स्थल, वर्ण (वस्तु, देह या मुख का), किसी वस्तु के रँगने का पदार्थ, रंगत, राँगा धातु । **—क्षेत्र**-(पु०) रंगभूमि, नाटक की जगह, तमाशे या जलसे का स्थान ।**—ढंग**-हाल, दशा तौर-तरीका, चाल-ढाल, व्यवहार, लक्षण, बरताव ।**—रलियाँ,**—(**रेलियाँ**)-आमोद-प्रमोद, मौज, रँगेली ।**—रलना**-मौज करना, आमोद-प्रमोद करना ।**—बिरंगा**-(वि०) कई रंगों वाला, विचित्र, चित्रित ।**—भवन**-(पु०) रंग-महल, [रंगभौन (दे०)], भोग-विलास करने का स्थान । "रंगभौन भीतर पलंग पर सग होत"—[स्फुट०] ।**—भूमि**-(स्त्री०) तमाशे या जलसे का स्थान, नाटक खेलने की जगह, नाट्यशाला, अखाड़ा, युद्धस्थल, मल्लशाला, रणभूमि । "रंगभूमि जब सिय पगुधारी"—[रामा०] ।**—महल**-(पु०) रंगभवन, रंगमन्दिर, भाग-विलास करने का स्थान, रंगागार, रंगसदन ।**—रली**-(स्त्री०) आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, खेल ।**—रस**-(पु०) आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, खेल ।**—रसिया**-(पु०) रसिक-विलासी, भोग-विलास करने वाला ।**—राज**-(पु०) श्रीकृष्ण जी । "रमया सह रंगराट्"—[स्फु०] ।**—राता**-(यौ०) प्रेम या अनुराग से पूर्ण । "अँगराती चली रँगराती भली ।"**—राग**-(पु०) आमोद-प्रमोद, रसरंग, रागरंग ।**—रावा**-(वि०) रँगा हुआ, प्रसन्न ।**—रूप**-(पु०) आकार-प्रकार चमक-दमक, रंग-रंग ।**—शाला**-(स्त्री०) नाटक खेलने का स्थान, नाट्यशाला, प्रेक्षागृह (नाट्य०) । **—साज**-(पु०) वस्तुओं पर रंग चढ़ाने वाला, रंग बनाने वाला, [**रंगसाज, रंगसाजी** (स्त्री०)] । **—स्थल,—स्थली**-(पु०) उत्सव या क्रीड़ा-कौतुक का स्थान, रंगशाला । **मुहा०**—(**चेहरे का**) **उड़ना या उतर जाना**-चेहरे की कांति या श्री का मिट जाना, हत-श्री या हत-प्रभ होना । **—निखरना (खिलना)**-चेहरे का साफ या चमकदार होना ।**—बदलना**-अप्रसन्न व क्रोधित होना । (**मुख का**)**—फीका पड़ना**-चेहरे की कांति का मलिन हो जाना । (**गिरगिट सा**)

—बदलना-किसी बात पर स्थिर या स्थायी न रहना, बात बदलना, दशा परिवर्तन करना।—उड़ जाना-रंग फीका या उदास पड़ जाना, जवानी, यौवन, युवावस्था।—चूना (आपा, टपकना) पूर्ण यौवन का विकास आना।—करना-खुशी करना, आनंद में समय बिताना।—चढ़ना-नशे में चूर होना।—चूना या टपकना-यौवन उभड़ना, जवानी प्रगट होना। सुषमा, शोभा, छवि, सुन्दरता, छटा, प्रभाव, असर, आतंक।—खिल उठना-कांति का बढ़ जाना।—आ जाना (आना)-गुण-वृद्धि होना, विशेषता आ जाना, मजा आ जाना।—चढ़ना (चढ़ाना)-प्रभाव पड़ना (डालना)। "सूरदास की कारी कामरि चढ़ै न दूजो रंग"।—जमना-असर व प्रभाव पड़ना, आतंक छा जाना।—फीका होना (पड़ना)-प्रभाव या कांति का कम होना। गुण महत्त्व का प्रभाव, धाक।—दिखाना-प्रभावातंक प्रगट करना।—जमाना (जमना) या बाँधना (बँधना)-आतंक बैठाना (बैठना), प्रभाव डालना (पड़ना)।—दिखाना-प्रभाव, आतंक या महत्त्व दिखाना।—देखना (दिखाना)-परिणाम या निष्पत्ति देखना (दिखाना)।—लाना-फल, गुण या प्रभाव दिखाना। "रंग लायेगी हमारी फाकामस्ती एक दिन"—गालिब। खेल, कौतुक, क्रीड़ा, उत्सव, आनन्द।—में भंग पड़ना-आनन्द में विघ्न पड़ना (होना)। युद्ध, समर, दशा, हाल। जैसे—क्या रंग।—बिगड़ना (बिगाड़ना)-हालत खराब होना (करना)।—मचाना-संग्राम मे खूब लड़ना।—(रारि) रचाना (मचाना) होली में खूब रंग फेंकना, मन की उमंग, आनंद, मजा।—जमना-अति आनंद होना, आतंक या महत्त्व या प्रभाव फैलना या होना।—मचाना-(युद्ध मे) धूम मचाना—रखना-रंग रचना-उत्सव करना।—होना-आतंक या प्रभाव होना। दशा, अद्भुत कांड, दृश्य प्रसन्नता, व्यापार, कृपा, प्रेम, ढंग, रीति, चाल।—में भंग होना (करना, डालना)-आनंद या अच्छे काम में विघ्न पड़ना (करना या डालना)।—काछना-ढंग पकड़ना। प्रकार, भाँति, चौपड़ की गोटियों के दो हिस्सों में से एक।—मारना-विजय पाना, बाजी जीतना।—रातना-गहरा प्रेम या अति मित्रता।—लगाना-अधिकार फैलाना, प्रभाव जमाना।

रंगअवनि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रंगभूमि। "रंगअवनि सब मुनिहिं दिखाई"—[रामा०]।

रंगत—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० रंग+त प्रत्य०] आनंद, मजा, अवस्था, दशा, रंग का भाव।

रंगतरा—(संज्ञा, पु०) [हि० रंग] मीठी और बड़ी नारंगी, संगतरा [संतरा (दे०)]।

रँगना—(क्रि० स०) [हि० रंग+ना प्रत्य०] रंग में डुबो कर किसी वस्तु पर रंग चढ़ाना, रंगीन करना, निज प्रेम में किसी को फँसाना, स्वानुकूल करना। (क्रि० अ०) किसी पर मोहित या आसक्त होना। [**रँगना**—(स०, रूप)], [**रँगवाना**—(प्रे० रूप)]।

रंगनाथ—(संज्ञा, पु०, सं०) एक विष्णुमूर्ति, दक्षिण में वैष्णवों का मुख्य तीर्थ।

रँगरूट—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० रिक्रूट] पुलिस या सेना का नया सिपाही, किसी काम का आरम्भ करने वाला आदमी।

रंगरेज—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कपड़े रंगने वाला। "छीपी औ रंगरेज तें नित्य होति तकरार"—[स्फुट]। [**रंगरेजिन** (स्त्री०)]।[**रँगरेजी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

रँगरेली†—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, खेल।

रँगवाई, रँगाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० रंगवाना रंगाना] रँगने की क्रिया या मजदूरी।

रँगाना—(क्रि० स०) दूसरे के द्वारा रँगने का कार्य कराना।

रंगाभरण—(संज्ञा, पु०, सं०) ठेके या ताल का एक मुख्य भेद।

रंगालय—(संज्ञा, पु०, सं०) रंगशाला।

रंगिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कैवर्तिक लता। (वि०, स्त्री०) रंगवाली।

रंगिया—(संज्ञा, पु०) रंगाई का कार्य करनेवाला, रंग बनाने का कार्य करनेवाला।

रंगी—(वि०) [हि० रंग+ई प्रत्य०] आनंदी, मौजी, प्रसन्नचित, विनोदी।

रंगीन—(वि०, फ़ा०) रंगदार, रँगा हुआ, विलास-प्रिय, आमोदप्रिय, मजेदार।

रंगीनी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सजाव, शृंगार, रंगीन होना।

रँगीला—(वि०) [वि० रंग+ईला प्रत्य०] रसिया, रसिक, आनन्दी, प्रेमी, सुन्दर। [**रँगीली** (स्त्री०)]।

रँगैया—(संज्ञा, पु०) रँगने का कार्य करनेवाला।

रंगोपजीवी—(संज्ञा, पु०, सं०) नट।

रंच, रंचक—(वि०, दे०) [सं० न्यंच] अल्प, थोड़ा, किंचित्।

रंज—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) शोक, दुःख, खेद। "रंज के खूगर हुआ इन्साँ तो घट जाता है रंज" —गालिब। [**रंजीदा** (वि०)]।

रंजक—(वि०, सं०) रँगने वाला, प्रसन्न करने वाला। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रंच=अल्प] बंदूक या तोप की प्याली में रखी जाने वाली तेज और थोड़ी सी बारूद, उत्तेजक या भड़काने वाली बात।

रंजन—(संज्ञा, पु०, सं०) रँगने की क्रिया, मन के प्रसन्न करने की क्रिया, लाल चंदन, छप्पय का ५० वाँ भेद (पिं०)। [**रंजनीय, रंजित** (वि०)]।

रंजना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० रंजन] प्रसन्न या हर्षित करना, स्मरण करना, भजना, रँगना।

रंजनीय—(वि०, सं०) आनन्ददायक, रंगने योग्य।

रंजित—(वि०, सं०) रँगा हुआ, प्रसन्न, अनुरक्त।

रंजिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) रंज होने का भाव, शत्रुता, बैर, मनमुटाव, मनोमालिन्य।

रंजीदा—(वि०, फ़ा०) दुःखित, शोकाकुल, अप्रसन्न। [**रंजीदगी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

रंडा—(संज्ञा, पु०, सं०) वैधव्य, वेश्या, राँड़ बेवा।

रँड़ापा—(संज्ञा, पु०) [हि० राँड़+आपा प्रत्य०] वैधव्य, विधवापन, विधवा की दशा।

रंडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रंडा] वेश्या, पतुरिया, कसबी (प्रान्ती०) ।—**बाज**-(पु०) वेश्यागामी। [**रंडीबाजी, वेश्यागमन** (स्त्री०)]।

रँडुआ, रँडुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० राँड़ +उआ प्रत्य०] जिसकी स्त्री मर गयी हो।

रंता*†—(वि०, दे०) [सं० रत] अनुरक्त, प्रेमी।

रंति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्रीड़ा। [**रंतिदेव**— (यौ०)] एक राजा।

रंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रंध्र] रोशनदान, प्रकाश-छिद्र, झरोखा, किले की दीवालों में बंदूक या तोप चलाने के लिए छेदमार।

रंदना—(क्रि० स०, दे०) [हि० रंदा+ना प्रत्य०] रंदे से छोल कर लकड़ी को चिकना या बराबर करना।

रंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रदन=काटना, चीरना] लकड़ी को छीलकर साफ, चिकना और समतल करने का एक औजार (बढ़ई)।

रंधक—(संज्ञा, पु०) [सं० रंधन] रसोइया, रसोई बनाने वाला।

रंधन—(संज्ञा, पु०, सं०) रसोई बनाना, पकाना [राँधना (दे०)]।

रंध्र—(संज्ञा, पु०, सं०) छेद, दोष, भग।

रंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) गंभीर नाद, भारी शब्द, बाँस, एक बाण।

रंभन—(संज्ञा, पु०, सं०) आलिंगन, भेंटना। [**रंभनीय** (वि०)]।

रंभा, रम्भा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) केला, वेश्या, एक देव अप्सरा (पुरा०), उत्तर दिशा। (संज्ञा, पु०) [सं० रंभ] दीवाल आदि के खोदने का लोहे का एक मोटा भारी डंडा, गदाला। "रंभा झूमत हौ कहा"—दीन०। पति (पु०) इंद्र।

रँभाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रंभण] गाय का शब्द करना या बोलना।

रंभित—(वि०, सं०) बजाता या शब्द किया हुआ, आलिंगित।

रंभा—(संज्ञा, पु०, सं०) द्वारपाल, वृद्ध।

रँहचटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रहस+चाट] चस्का, लालच, लोलुप, लालची। "रूप रहँचटे लगि रहे"—वि०।

रअय्यत, रइअत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रजा, रिआया [रैय्यत (दे०)]।

रइकौ*†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० रंची+कौ प्रत्य०] रंच, कमी, अल्प या थोड़ा भी, तनिक भी, कुछ भी, रचकौ (ग्रा०)।

रइनि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रजनी] रैन, रात्रि।

रई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रय] खलर (प्रान्ती०) मथानी। "सरस बखानै सोई रोष की रई सों पुनि"—अ० व०। (संज्ञा, स्त्री०)

[हिं० रवा] मोटा या दरदरा आटा, सूजी, चूर्ण। (वि०, स्त्री०) [सं० रंजन] अनुरक्त डूबो या पगी हुई, सहित, युक्त, मिली हुई, संयुक्त। "करिये एक भूषन रूप-रई"—[रामा०]।

रईस—(संज्ञा, पु०, अ०) ताअल्लुकेदार, इलाके या रियासत वाला, अमीर धनी, बड़ा आदमी। [(वि०, संज्ञा, स्त्री०) **रईसी**]।

रउता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रायता, रइता, रैता (ग्रा०)।

रउताई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रावत + आई प्रत्य०] स्वामित्व, ठकुराई, मिल्कियत।

रउरे†—(सर्व०, दे०) [हिं० राव, रावल] आप, जनाब, आदर-सूचक मध्यम पुरुष सर्वनाम। "करहिं कृपा सब रउरे नाईं"—[रामा०]।

रकछ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० रिकवच] पत्तों की पकौड़ी, पतौड़ी (प्रान्ती०)।

रकत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रक्त] खून लोहू, रक्त। (वि०) सुर्ख, लाल। **मुहा०—के आँसू**-बड़े दुःख से रोना।

रकताक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रक्तांग] मूँगा, प्रवाल (डिं०), केसर, लाल-चंदन।

रकबा—(संज्ञा, पु०, अ०) क्षेत्रफल। "विषम कोन सम चतुरभुज के रकबे की रीति"—कुं० वि० ला०।

रकबाहा—(संज्ञा, पु०, दे०) घोड़े का एक भेद।

रकम—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लिखने की क्रिया का भाव, मनोहर, छाप, संपत्ति, धन, गहना, धूर्त, चालाक, प्रकार।—**रकम के**-(यौ०) नाना प्रकार के।

रकाब—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) घोड़े के चारजामें या काठी का पावदान।—**दार**-(पु०) खानसामाँ, हलवाई, साईस। **मुहा०—पर (में) पैर रखना**-चलने को पूर्णतया तैयार होना।

रकाबी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तश्तरी, छोटी छिछली थाली।

रकीब—(संज्ञा, पु० अ०) एक ही प्रेमिका के दो प्रेमी परस्पर रकीब हैं, सपत्न। [**रकाबत** (संज्ञा, स्त्री०)]।

रक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) रुधिर, लोहू, खून, देह की नसों में बहने वाला लाल तरल पदार्थ, केसर, कुंकुम, कमल ताँबा, ईंगुर, सिंदूर, लाल या रंगा चंदन, लाल रंग, शिंगरफ, कुसुंभ। (वि०, सं०) लाल, सुर्ख रँगा हुआ। [**रक्तता, रक्तिमा** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**कंठ**-(पु०) कोयल, बैंगन, भाँटा।—**कमल**-(पु०) लाल-कमल।—**चंदन**-(पु०) लाल या देवी चंदन।—**चाप**-एक प्रकार का रोग जिसमें कि रक्त का वेग या चाप सामान्य से घट या बढ़ जाता है।—**ज**-(वि०) रक्त विकार से उत्पन्न रोग (वैद्य०)।—**पात**-(पु०) लोहू गिरना, रक्त बहाना, खून-खराबी, ऐसा झगड़ा जिसमें लोग घायल हों।—**पायी**-(वि०) लोहू या खून पीने वाला।—**पित्त**-(पु०) मुँह नाकादि से खून बहने का एक रोग, नाक से लोहू बहना, नकसीर फूटना। **लो०—"सम्बोधनंनुकिम् रक्तपित्तम्।"—प्रमेह**-(पु०) पुरुषों का एक रोग जिसमें पेशाब रक्त को तरह का होता है।—**बीज**-(पु०) बीदाना, अनार, एक दैत्य जो शुंभ निशुंभ का सेनापति था, इसके शरीर के रक्त की जितनी बूँदें गिरें उतने ही नये रूप इस दैत्य के बन जाते थे—(दु० स०)।—**वात**-(पु०) वात रोग।—**वृष्टि**-(स्त्री०) व्योम से लोहू या लाल रंग के पानी का गिरना, रक्त-वर्षा।—**शृंग**-(पु०) हिमालय की एक चोटी।—**संबन्ध**-(पु०) कुल के परम्परा का संबन्ध।—**स्राव**-(पु०) कहीं किसी अंग से लोहू बहना या निकलना।

रक्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) मूँगा।

रक्तता—(संज्ञा, पु०, सं०) लाली, सुर्खी।

रक्तांक—(संज्ञा, पु०, सं०) मूँगी।

रक्तांग—(संज्ञा, पु०, सं०) लाल चंदन। मूँगा केसर, मंगलग्रह, खटमल।

रक्तांबर—(वि०) लाल वस्त्र पहनने वाला। (पु०) संन्यासी।

रक्ताक्त—(वि०) खून से रंगा हुआ या लथपथ।

रक्तातिसार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) खून के दस्त आना, खूनी बवासीर, बवासीर के मसों से रक्त आना।

रक्ताश—(संज्ञा, पु०) [सं० रक्तार्शस्] खूनी बवासीर।

रक्तिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गुंजा, रत्ती, घुंघची [घुमची (दे०)]।

रक्तिम—(वि०, सं०) लालिमा से युक्त।

रक्तोत्पल—(संज्ञा, पु० सं०) लाल कमल का फूल।

रक्ष—(संज्ञा, पु० सं०) रक्षक, रखवाला, रक्षा, छप्पय का ६० वाँ भेद (पिं०)। (संज्ञा, पु०) [सं० राक्षस] राक्षस।

रक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) रखवाला, रक्षा करने वाला, पहरेदार [रच्छक (दे०)]।

रक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्षा करना, बचाना, पालन-पोषण [रच्छन (दे०)]।

रक्षणीय—(वि०, सं०) रक्षा करने योग्य।

रक्षन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रक्षण!] रक्षण, पालन-पोषण [रच्छन (दे०)]।

रक्षना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० रक्षण] [रच्छना (दे०)] रक्षा करना।

रक्षस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राक्षस] राक्षस।

रक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रक्षण, बचाव, पालन-पोषण, [रच्छा (दे०)], भूत-प्रेत या दृष्टिदोष से बचाने को बाँधने का सूत।—**गृह**-(पु०) सूतिका-गृह, जच्चाखाना।—**बंधन**-(पु०) श्रावण पूर्णिमा को हिन्दुओं का एक त्योहार, सलोनो (प्रान्ती०)।—**मंगल**-(पु०) भूत-प्रेत आदि की बाधा से रक्षित रहने के हेतु की जाने वाली धार्मिक क्रिया।

रक्षाइद*—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [सं० रक्षा+आइद हि० प्रत्य०] राक्षसपन।

रक्षिक—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्षक, प्रहरी।

रक्षित—(वि०, सं०) जिसका बचाव या रक्षा की गयी हो, पाला-पोषा। "अरक्षितः रक्षति दैव-रक्षितो"—[स्फु०]

रक्षिता—(वि०, स्त्री०) बचायी गयी, रक्षा की हुई।

रक्षी—(संज्ञा, पु०) [सं० रक्षस्+ई प्रत्य०] रक्षसोपासक, राक्षस पूजने वाला। [रक्षक (संज्ञा, पु०)]।

रक्ष्य—(वि०, सं०) रक्षा करने वा बचाने योग्य।

रख-रखा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गोचर-भूमि।

रखना—(स०, दे०) [सं० रक्षण] एक चीज दूसरी पर या में स्थापित करना, ठहराना, धरना, टिकाना, बचाना, रक्षा करना। [(स० रूप) —**रखाना**], [(प्रे० रूप)—**रखवाना**]। **रख-रखाव**—रक्षा, व्यर्थ विनष्ट या बरबाद न होने देना, जोड़ना, सौंपना, गिरवी या रेहन करना, निज अधिकार में लेना (विनोद या व्यवहार के लिये), मुकर्रर करना, धारण करना, व्यवहार करना, जिम्मे लगाना, सिर मढ़ना, ऋणी होना, मन में धारण या अनुभव करना, संबंध करना (स्त्री या पुरुष से), उपपत्नी (उपपति) बनाना।

रखनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० रखना+ई प्रत्य०] रखेली, बैठाई या रखी स्त्री, सुरैतिन, उपपत्नी।

रखया—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० रक्षा] रक्षा करने वाली।

रखला—(संज्ञा, पु०, दे०) छोटी तोप, तोप गाड़ी या चर्ख़।

रखवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रखना, रखाना] [रखाई (दे०)] रखवाली, चौकीदारी, रखवाली की मजदूरी, रखने या रखवाने का ढंग या काम।

रखवाना—(क्रि० सं०) दूसरे के द्वारा रखने का कार्य कराना।

रखवार*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रखवाला] रखवाला, चौकीदार, रक्षक।

रखवाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रखना+वाला प्रत्य०] चौकीदार, पहरेदार, रक्षक।

रखवाली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० रखना+वाली प्रत्य०] रक्षा करने की क्रिया का भाव, चौकीदारी [रखवारी (दे०)]।

रखाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रखाना+आई प्रत्य०] रखवाली, रक्षा, हिफ़ाजत, रक्षा का भाव, क्रिया या मजदूरी।

रखाना—(क्रि० स०) रखवाना।

रखिया*†—(संज्ञा, पु०) [हि० रखना+इया प्रत्य०] रक्षक, रखने वाला, राख, राखी, रक्षा-सूत्र।

रखियाना—(क्रि० स०) राख से माँजना।

रखेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रखनी] रखी या बैठारी स्त्री, उपपत्नी।

रखैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रक्षक] रक्षक, रखाने या रखने वाला। "राम हैं रखैया तो बिगारि कोऊ कैसे सकै।"

रग—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) देह की नाड़ी या नस।—**पट्ठा**-(पु०) देह के भीतर के भिन्न-भिन्न अवयव या अंग।—**रेशा**-(पु०) पत्तियों की नसें, देह के भीतर का प्रत्येक अंग, किसी बात, विषय या व्यक्ति का सम्पूर्ण भाग। **मुहा०**—**जानना**—सब बातें जानना।—**दबना**-दबाव मानना, किसी के अधिकार या प्रभाव में होना।—**रग फड़कना**-देह में

अति उत्साह या आवेश के चिह्न प्रगट होना।—**रग में**-सारे शरीर में। पत्तों की नसें।

रगड़—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० रगड़ना] रगड़ने की क्रिया या भाव, घर्षण, रगड़ने का निशान, अधिक श्रम, झगड़ा [रगर (दे०)]।

रगड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० घर्षण या अनु०] घिसना, पीसना, किसी कार्य्य को शीघ्रता से अति परिश्रम से करना, तंग करना, नष्ट करना। (क्रि० अ०) अति श्रम करना।

रगड़वाना—(क्रि० स०) दूसरे के द्वारा रगड़ने का कार्य कराना।

रगड़ा—(संज्ञा, पु०) [हिं० रगड़ना] घर्षण, रगड़, अति श्रम, लगातार झगड़ा।—**झगड़ा**-(पु०) बखेड़ा, लड़ाई झगड़ा।

रगड़ान—(संज्ञा, स्त्री०) रगड़ने का कार्य या भाव।

रगण—(संज्ञा, पु०, सं०) आद्यांत में गुरु और मध्य मे लघु वर्ण वाला एक गण (ऽ।ऽ) (पिं०), काव्यादि में यह दूषित माना गया है।

रगत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रक्त] रक्त, रुधिर, [रकत (दे०)]।

रगर*†—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए रगड़ (हिं०)। "कोटि जन्म लगि रगर हमारी"—[रामा०]।

रगाना†—(क्रि० अ०, दे०) चुपचाप होना। (क्रि० स०) चुप कराना, शांत कराना। [**रगवाना** (प्रे० रूप)]।

रगेदना—(क्रि० स०, दे०) [सं० खेट, हिं० खेदना] भगाना, दौड़ाना, खदेड़ना, तंग करना।

रघु—(संज्ञा, पु०, सं०) अयोध्या के सूर्यवंशीय प्रतापी राजा, दिलीप के पुत्र और रामचन्द्र के परदादा। "चकार नाम्ना रघुमात्मसंभवम्"—रघु०।—**कुल**-(पु०) राजा रघु का कुटुम्ब या वंश। "रघु-कुल रीति सदा चलि आई"—[रामा०]।—**नंदन**-(पु०) श्रीरामचन्द्र जी। "रघुनंदन चंदन खौर दिये मग बाजि नचावत आवत हैं।"—**नाथ**-(पु०) श्रीरामचंद्र जी। "प्रातःकाल उठि कै रघुनाथा"—[रामा०]।—**नायक**-(पु०) श्री रामचंद्र जी। "देखत रघुनायक जन-सुखदायक सम्मुख है कर जोरि रही"—[रामा०]।—**पति**-(पु०) श्रीरामचंद्र जी। "बहुरि बच्छ कहि लाल कहि, रघुपति, रघुबर, तात"—[रामा०]।—**राई***—(पु०) श्रीरामचंद्र जी। "कहत निषाद सुनौ रघुराई"—[गी० व०]।—**राज**-(पु०) श्रीरामचंद्र जी, रघुकुलनायक।—**राय,—राया**-(पु०) श्रीराम। "हा जगदेव वीर रघुराया"—[रामा०]।—**वंश**-(पु०) महाराज रघु का कुटुम्ब या परिवार, महाकवि कालिदासकृत एक महाकाव्य।—**वंशी**-(पु०) जो राजा रघु के वंश में उत्पन्न हुआ हो, क्षत्रियों की एक जाति। "कालहु डरहिं न रण रघुवंशी"—[रामा०]। [**रघुवंशीय** (वि०)]।—**वर**-(पु०) श्रीराम, [रघुबर (दे०)]। "रघुबर पार उतारिहैं अपनी बार निहार"—[स्फुट०]।—**वीर**-(पु०) श्री-राम। "जो रघुबीर होति सुधि पाई"—[रामा०]।

रचक—(संज्ञा, पु०, सं०) बनाने या रचने वाला, रचयिता, रचना करने वाला। (वि० दे०) रंचक, अल्प। "राम रचक पालक जग-नाशक"—[स्फु०]।

रचना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रचने का भाव या क्रिया, निर्माण, बनावट, बनाने का कौशल या ढंग, निर्मित पदार्थ, चमत्कार-पूर्ण, गद्य या पद्य, लेख, काव्य। [**रचनीय** (वि०)]। [**रचाना** (सं० रूप)] **रचवाना** (प्रे० रूप)]। (क्रि० सं०) [सं० रचन] सिरजना, बनाना, ग्रन्थ लिखना, निश्चित या विधान करना, ठानना, उत्पन्न या पैदा करना, कल्पना करना, क्रम से रखना, अनुष्ठान करना, काल्पनिक सृष्टि बनाना, शृंगार करना, सजना, सँवारना। "भलि रचना नृप सन मुनि कहेऊ"—[रामा०]। **मुहा०—रचि रचि**-बहुत ही कौशल और चतुरता (होशियारी या कारीगरी) के साथ कोई काम करना। **बातें रचना—मोहक**, किन्तु झूठी बातें बनाना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० रंजन] रंजित करना, रँगना, रंग देना, जैसे—पान या मेहदी रचना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० रंजन] अनुरक्त होना, रँगा जाना, रँग चढ़ना, सुन्दर बनाना।

रचयिता—(संज्ञा, पु०) [सं० रचयितृ] बनाने या रचन वाला, ग्रंथकार, लेखक। [राइटर]

रचाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रंजन] मेहदी, महावर आदि से हाथ-पाँव रँगाना, पान से मुख लाल करना, सुन्दर बनाना [रचावना (दे०)]। [**रचवाना** (प्रे० रूप)]।

रचित—(वि०, सं०) रचा या बनाया हुआ।

रच्छस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राक्षस] राक्षस। [**रच्छसी** (वि०)]।

रच्छा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रक्षा] रक्षा। [**रच्छित** (वि०)]।

रज—(संज्ञा, पु०) [सं० रजस्] स्तनपायी जीवों की मादा या स्त्रियों के प्रति मास योनि से ३ या ४ दिन निकलने वाला दूषित रक्त। आर्त्तव, ऋतु, कुसुम, रजोगुण, पानी, पाप, पुष्प-पराग, आठ परमाणुओं का मान। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) धूल, गर्द, रात, प्रकाश, ज्योति। "रज ह्वै जात पखान पँवारे"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०) [सं० रजत] चाँदी। (संज्ञा, पु०) [रजक] रजक, धोबी।

रजक—(संज्ञा, पु०, सं०) धोबी। [**रजकी** (स्त्री०)]।

रजगुण—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रजोगुण] रजोगुण।

रजतंत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० राजतत्व] शूरता, वीरता।

रजत—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चाँदी, रूपा। "रजत सीप महँ भास ज्यों, जथा भानुकर बारि"—[रामा०]। (पु०) लोहू, रक्त, सोना। (वि०) श्वेत, शुक्ल, धवल, लाल।

रजतमय—(वि०, सं०) चाँदी का निर्मित।

रजताई*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० रजत] श्वेतता।

रजतोपम—(संज्ञा, पु०, सं०) रूपा मक्खी।

रजधानी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० राजधानी] राजधानी। "बहुरि राम आव रजधानी"—[रामा०]।

रजना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० राल] राल, धूप। * (क्रि० अ०, दे०) [सं० रंजन] रँगा जाना। (क्रि० स०) रँगना, रंग में डुबाना।

रजनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात, रात्रि, निशा, हल्दी।—**कर**–(पु०) शशांक, मृगांक, चन्द्रमा, निशाकर, निशानाथ।—**चर**–(पु०) निशाचर, राक्षस, [रजनीचर (दे०)]। "परम सुभट रजनीचर भारी"—[रामा०]।—**पति**–(पु०) चन्द्रमा, रजनीश, नक्षत्रेश।—**मुख**–(पु०) संध्या।

रजनीश—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा।

रजपूत*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजपुत्र] राजपूत, शूर-वीर, योद्धा, क्षत्रिय।

रजपूती†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० राजपूत +ई प्रत्य०] क्षत्रियत्व, वीरता, क्षत्रियता। "धिक धिक ऐसी कुरुराज रजपूती पै"—अ० व०।

रजबहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राज=बड़ा +बहना हिं०] वह बड़ा बम्बा या नल जिससे और छोटे बम्बे निकले हों। (यौ०) [सं० रज =धूल+बहना] नाला, चौपायों के चलने से बना धूल से भरा मार्ग, गैड़हरा (प्रान्ती०)।

रजवंती—(वि०) रजस्वला स्त्री।

रजवाड़ा—(संज्ञा, पु०) [सं० राज्य+बाड़ा हिं०] राज्य, देशी रियासत, राजा।

रजवार*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० राज-द्वार] दरबार।

रजस्वला—(वि०, स्त्री०, सं०) ऋतुमती स्त्री, जिसे मासिक रज-स्राव हुआ हो।

रजा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) इच्छा, मरजी, छुट्टी, स्वीकृति, आज्ञा, अनुमति। "तुम्हारी ही रजा पै खुश है यों अपनी रजा क्या है।—**मंद**–(वि०, फ़ा०) जो किसी बात पर राजी हो, सहमत। [**रज़ामंदी** (स्त्री०)]। राजीखुशी।

रज़ाइ, रज़ाई—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० रजक= कपड़ा] लिहाफ़, रुई-भरा कपड़ा। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० राजा+आई हिं० प्रत्य०] राजा होने का भाव, राजापन, राजाज्ञा, राजेच्छा। "चलै सीस धरि भूप रजाई"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०) [अ० रजा] रजाई, आज्ञा, छुट्टी, इच्छा, मर्जी।

रज़ाई, रज़ाय*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० रजा] आज्ञा, छुट्टी, मर्जी, [रजाइय (दे०)]।

रजाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० राज्य] राज्य सौख्य का उपभोग कराना।

रजाय, रजायसु*†—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० रजा] स्वीकृति, आज्ञा, आदेश, इच्छा, मरजी। "केवट राम-रजायसु पावा"—[रामा०]।

रज़ील—(वि०, अ०) नीच, छोटी जाति का।

रजोकुल*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० राज-कुल] राज-वंश।

रजोगुण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजस, सत्वादि तीन गुणों में से एक गुण, भोग-विलास या दिखावे की रुचि पैदा करने वाला प्रकृति का एक गुण या स्वभाव।

रजोदर्शन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्त्रियों का मासिक या ऋतु-धर्म्म, रजस्वला होना।

रजोधर्म्म—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्त्रियों का ऋतु या मासिक धर्म्म ।

रजोवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रजस्वला, ऋतुमती ।

रज्जु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रस्सी, जेवरी (ग्रा०) । "रज्जोर्मथाहेभ्र मः ।" बागडोर, लगाम की डोरी । "यथा रज्जु मे सर्प को भ्रांति होती"—[स्फु०] ।

रट—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी शब्द को बार-बार कहने की क्रिया ।

रटन—(संज्ञा, पु०, सं०) घोषणा, बार-बार कहना । **मुहा०—लगाना**–किसी बात को बार-बार कहना रटना ।

रटना—(क्रि० स०, दे०) [सं० रट] किसी शब्द को बार बार कहना, बिना अर्थ-ज्ञान के एक ही शब्द का बारम्बार कहना, बिना समझे याद करना । "चातक रटत तृषा अति ओही"—[रामा०] । बार बार शब्द करना या बजना, जबानी याद करने को बारम्बार कहना ।

रठ†—(वि०, दे०) शुष्क, रूखा, सूखा ।

रढ़ना*—(वि०, स०, दे०) [हि० रटना] रटना ।

रण—(संज्ञा, पु०, सं०) युद्ध, संग्राम, जंग, रन (दे०) । "जो रण हमहि प्रचारै कोई"—[रामा०] ।**—क्षेत्र**–(पु०) युद्धस्थल, लड़ाई का मैदान ।**—छोड़**–(पु०) श्रीकृष्ण का एक नाम । **—खेत***–(पु०) युद्धस्थल ।**—भूमि**–(स्त्री०) रण-क्षेत्र, युद्ध-स्थल ।**—रंग**–(पु०) युद्ध, युद्ध का उत्साह, युद्ध-क्षेत्र, [रनरंग (दे०)] । "कुम्भकरण रणरंग विरुद्धा"—[रामा०] । [**रणरंगी** (वि०)] ।**—लक्ष्मी**–(स्त्री०) विजय-लक्ष्मी, विजय, जय श्री ।**—शिक्षा**–(स्त्री०) युद्ध-कला की शिक्षा ।**—सिंघा**–(पु०) नरसिंघा, तुरही, [नरसिंगा (दे०)] । एक बाजा । "बाजत निसान ढोल भेरी रणसिंघा घने"—कुं० वि० ।**—स्तंभ**–(पु०) विजय के स्मारक रूप में बनाया गया स्तंभ ।**—स्थल**–(पु०) रणभूमि, युद्ध क्षेत्र । [**रण-स्थली** (स्त्री०)] ।**—हंस**–(पु०) एक वर्णिक छंद (पिं०) ।

रणांगण—(संज्ञा, पु०, सं०) रणप्रांगण, युद्धक्षेत्र, रण-भूमि [रनाँगन (दे०)] ।

रणित—(वि०, सं०) शब्दित, नादित, बजता हुआ । "रणित शृङ्ग घंटावली झरत दान मदनीर"—[वि० श०] ।

रणना—(क्रि० अ०, दे०) बजना ।

रत—(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्री-प्रसङ्ग, मैथुन, प्रेम, प्रीति । (वि०) आसक्त, अनुरक्त, लिप्त । "नर न रत हो विषय में लागु हरि की शरण"—कुं० वि० । * (संज्ञा, पु०) [सं० रक्त] रक्त, खून ।

रतजगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रात+जागना] विहार, उत्सव या किसी त्योहार में सारी रात जागना ।

रतन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रत्न] रत्न, जवाहिर, मणि । "रतन रमा रन रेत मे, कंकर बिनि बिनि खाय"—कबी० ।**—जोति**–(स्त्री०) एक प्रकार की मणि, एक छोटा क्षुप, जिसकी जड़ से लाल रंग निकलता है ।

रतनाकर, रतनागर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रत्नाकर] समुद्र । "गर्व कियो रतनागर सागर खारो करि डारो"—[स्फु०] ।

रतनार, रतनारा—(वि०, दे०) [सं० रक्त] कुछ कुछ लाल, सुर्खी लिये हुए । " अमी, हलाहल, मद-भरे, स्वेत, स्याम, रतनार "—वि० ।

रतनारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रतनार+ई प्रत्य०] एक प्रकार का धान । (संज्ञा, स्त्री०) लाली, लालिमा, सुर्खी । "रतनारी अँखियाँ निरखि खंजरीट, मृग, मीन"—कुं० वि० ।

रतनालिया*†—(वि०, दे०) [हि० रतनारा] रतनारा, लाल, सुर्ख ।

रतनियाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का चावल ।

रतमुहाँ*†—(वि०, दे०, यौ०) [हि० रत=लाल+मुँह] लाल या रक्तमुख वाला । [**रतमुँही** (स्त्री०)] ।

रतवाही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुरैतनी, रखैली । (अव्य०) रातोंरात, रात ही रात ।

रताना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रत] कामातुर होना, रत या आसक्त होना । (क्रि० स०) किसी को अपनी ओर रत करना ।

रतायनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) वेश्या, रंडी, पतुरिया ।

रतालू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रक्तालु] वाराही-कंद, पिंडालू, एक प्रकार की जड़, गेंठी (प्रान्ती०)।

रति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दक्ष प्रजापति की परम सुन्दरी कन्या और कामदेव की सौंदर्य की साक्षात मूर्ति जैसी स्त्री, संभोग, काम-क्रीड़ा, मैथुन, प्रेम, शोभा, शृङ्गार रस का स्थायी भाव (काव्य), नायक और नायिका की पारस्परिक प्रीति। (क्रि० वि०)—रती, रत्ती। * (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रात] रात्रि, रैन।—**दान**-(पु०) मैथुन, संभोग। —**नाथ**-(पु०) कामदेव।—**नायक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव। "मनु पंच धरे रतिनायक है"—कवि०।—**नाह**-(पु०) कामदेव। "रूप देखि रतिनाह लजाहीं"—[रामा०]।—**पति**-(पु०) कामदेव। "जनु रतिपति निज हाथ सँवारे" —[रामा०]।—**पद**-(पु०) एक वर्णिक वृत (पिं०)।—**प्रिय**-(पु०) कामुक, जिसको मैथुन करना पसन्द हो।—**प्रीता**-(स्त्री०) रति में प्रेम करने वाली नायिका (काव्य०), कामिनी।—**बंध**-(पु०) काम-क्रीड़ा के आसन (कोक०), मैथुन का ढंग।—**भवन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्मर-मंदिर, प्रेमी प्रेमिकाओं का क्रीड़ा-स्थल, मैथुन-घर, योनि, भग, रति-मंदिर।—**भाव**-(पु०) स्त्री-पुरुष का पारस्परिक आकर्षण युक्त अनुराग। शृङ्गार का स्थायी भाव। प्रीति।—**भौन***-(पु०) रति-भवन।—**मन्दिर**-(पु०) रति-भवन, केलि-मंदिर, काम-मंदिर, भग, योनि।—**याना***†-(क्रि० अ०) प्रीति या स्नेह करना, रति की लालसा रखना।—**रमण**-(पु०) कामदेव, मैथुन, काम-केलि, संभोग।—**राइ, रतिराई**-(पु०) [सं० रतिराज] रतिराज, कामदेव [रतिराय (दे०)]। —**राज**-(पु०) कामदेव। "पाय ऋतुराज रति-राज को प्रभाव बढ्यो"—मन्ना०।—**शक्ति**-(स्त्री०) संभोग करने की शक्ति।—**शास्त्र**-(पु०) काम-शास्त्र, काम-विज्ञान।—**संयोग**-(पु०) संभोग। —**सहचर**-(पु०) कामदेव।

रतिवंत—(वि०) रतिवाला, रतिवान, सुन्दर, प्रेमी, प्रीतिवान्।

रतिक, रतीक*†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० रत्ती] रंचक, जरा सा, किंचित्, तनिक, बहुत थोड़ा।

रती*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रति] रति, कामदेव की स्त्री, सौंदर्य्य, कांति, मैथुन। †* (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रक्तिका] रत्ती, गुंजा। (क्रि० वि०, दे०) रत्तीभर, रंच, थोड़ा-सा, किंचित, रतीक।

रतीवंत—(वि०, दे०) भाग्यवान, तकदीरी।

रतीश—(पु०) कामदेव।

रतोपल*†—(पु०) लाल कमल, लाल पत्थर।

रतौंधी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रात+अंधा] एक रोग जिसमें रात को बिलकुल दिखाई नहीं देता [नक्तांध (सं०)]।

रत्त*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रक्त] लोहू।

रत्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रक्तिका] घुँघची, गुंजा, स्वर्णादि तौलने में एक माशे की तौल का ८ वाँ भाग। **मुहा०—भर**—तनिक या रंचक, थोड़ासा। (वि०) बहुत ही थोड़ा, किंचित।* (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रति] शोभा, छवि।

रत्थी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रथ] अरथी। टिकठी (प्रान्ती०) अंतिम संस्कारार्थ शव से ले जाने का सन्दूक या बाँस का ढाँचा।

रत्न—(संज्ञा, पु०, सं०) कांतिमान, बहुमूल्य खनिज, चमकीले पत्थर, जवाहिर, नगीना, माणिक, लाल, सर्वश्रेष्ठ। "कृत्स्नाच भूर्भवति संनिधि रत्न पूर्णा" —[भ० श०]।—**गर्भ**-(पु०) समुद्र सागर। [रत्नगर्भा (स्त्री०)]।—**गर्भा**-(स्त्री०) भूमि, पृथ्वी, वसुंधरा।—**जटित**-(वि०) जवाहिरात से जड़ा। "रत्न जटित मकराकृत कुंडल"—[स्फु०]। —**निधि**-(पु०) समुद्र।—**परीक्षक**-(पु०) जौहरी।—**पारखी**-(पु०) जौहरी, [रतनपारखी (दे०)]।—**माला**-(स्त्री०) रत्नों, हीरों या मोतियों की बनी माला, रत्नहार।—**राशि**-(स्त्री०) रत्न-समूह।—**सानु**-(पु०) सुमेरु पर्वत, देवलोक। —**सिंहासन**-(पु०) रत्न-जटित सिंहासन, राज सिंहासन [रतन-सिंहासन (दे०)]।

रत्ना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तुलसीदास की पत्नी का नाम। (पु०) एक नदी।

रत्नाकर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समुद्र, रत्नों की खानि [रतनाकर (दे०)]। "रत्नाकर सेवैं रतन, सर सेवै सालूर"—[नीति०]।

रत्नाचल—(संज्ञा, पु०, सं०) रत्न-राशि, ढेर, पथ।

रत्नाभूषण—(संज्ञा, पु०, सं०) रत्न से जड़ा हुआ आभूषण।

रत्नावली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) [रतनावली (दे०)] मणिमाला, रत्न राजि, मणि-समूह या श्रेणी, मणि-पंक्ति, एक अर्थालंकार जिसमें अन्य वस्तु-समूह के नाम प्रस्तुतार्थ के अतिरिक्त प्रगट होते हैं (अ० पी०)।

रथ—(पु०) चार या दो पहियों की एक प्राचीन गाड़ी (हिन्दू) बहल, रब्बा (प्रान्ती०) शरीर, चरण, ऊँट (शतरंज)।—**कार**-(पु०) रथ बनाने वाला, बढ़ई, एक जाति विशेष।—**गर्भक**-(पु०) शिविका, पालकी।—**गुप्ति**-(स्त्री०) रथ का परदा या ओहार।—**पाद**,—**चरण**,—**चक्र**-(पु०) पहिया, चाका।—**महोत्सव**-(पु०) रथ-यात्रा का उत्सव।—**यात्रा**-(स्त्री०) हिन्दुओं का एक पर्व जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होता है, [रथ-जात्रा (दे०)]।—**वाह**,—**वाहक**-(पु०) रथ चलाने वाला, सारथी, घोड़ा।

रथवान—(संज्ञा, पु०) [सं० रथवाह] सारथी, रथ हाँकने या चलाने वाला।

रथांग—(संज्ञा, पु०, स०) पहिया, रथ का एक अंग।—रघु०।—**नाम**-(पु०) चक्रवाक, "रथांग-नाम्नोरिव भाव बंधनम्"—रघु०।—**पाणि**-(पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण। "रथांग पाणेः पटलेन रोचिषाम्"—माघ०।

रथिक—(सज्ञा, पु०, सं०) रथी, रथ का सवार।

रथी—(संज्ञा, पु०) [सं० रथिन्] रथ का सवार, एक सहस्र वीरों से अकेले लड़ने वाला। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) मृतक की अरथी, रथी।

रथोत्सव—(संज्ञा, पु०, सं०) रथयात्रा का महोत्सव।

रथोद्धता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ११ वर्णों का एक वर्णिक छंद। "रान्नराविह रथोद्धता लगौ"—(पिं०)।

रथ्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रास्ता, राह, सड़क, गली, मार्ग, नाली। "रथ्या कर्पट विरचित कंथा"—च० प०।

रद—(संज्ञा, पु०, सं०) दाँत। "रद-पुट फरकत नयन रिसौंहैं"—[रामा०]। (वि०, फ़ा०)—जिसमें काट-छाँट या परिवर्तन किया गया हो [रद्द (दे०)]। "जिसे राज रद कर चुके थे वह पत्थर"—हाली०। बेकाम, निकम्मा, बेकार।—**दान**-(पु०) कहीं पर दाँतों का यों दबाव डालना कि चिह्न बन जावें (रति-चुम्बन में)।

रदच्छद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रदच्छद) ओष्ठ। (संज्ञा, पु०) [सं० रदक्षत) कपोलों या ओष्ठों पर रति में चुम्बनादि के दाँतों का घाव (रति-चिह्न)।

रदन—(संज्ञा, पु०, सं०) दाँत, दंत, दशन। "एक रदन गजबदन विनायक"—[विनय०]।—**छद**-(पु०) ओष्ठ, ओठ।

रदनी—(वि०) [सं० रदनिन्] दाँत वाला।

रदपट, रदपुट—(संज्ञा, पु०, सं०) ओठ, ओष्ठ। "रदपुट फरकत नैन रिसौं है"—[रामा०]।

रद्द—(वि० अ०) जो काट-छाँट या तोड़-फोड़ कर बदल दिया गया हो, त्यक्त, अस्वीकृत।—**बदल** (**रद्दो-बदल**)—(यौ०) हेर-फेर, फेर-फार, परिवर्त्तन। जो खराब या निकम्मा हो गया हो, बेकाम, व्यर्थ। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) कै, वमन।

रद्दा—(संज्ञा, पु०, दे०) दीवाल पर ईंटों की बेड़ी पंक्ति का एक चुनाव, स्तर, थालो में दीवाल के स्तर सा मिठाई का चुनाव, ऊपर तले रखी चीजों की एक तह, मल्लयुद्ध वालों की पीठ आदि पर मार (प्रान्ती०)।

रद्दी—(वि०) [फ़ा० रद] व्यर्थ, निकम्मा, निष्प्र-योजन, बेकाम, बेकार। "जिस्म तो रद्दी महज बेकार है"—कुं० वि०।

रन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रण] संग्राम, युद्ध। "रन मारि अच्छकुमार रावन-गर्व हरि पुर जारियो"—[रामचं०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अरण्य]। वन, जंगल। (संज्ञा, पु०, दे०) ताल, झील, साँभर का छोटा भाग।—**बंका**,—**बाँकुरा**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रण+बाँका हि०] योद्धा, शूरवीर। "पवन तनय रनबाँकुरा"—[रामा०]। "कूद्यो रनबंका गढ़ लंका पै फलंका मैं।"—**वन**-(संज्ञा, पु०, दे०) [वि० रणवन] भयानक वन, तहस, नाश, महावन।—**वादी***-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रणवादी] योद्धा, शूर-वीर। [संज्ञा, पु०, दे०) [**रनवाद, रणवाद** (सं०)]।

रनकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रणन= शब्द करना] पायजेब या घुँघुरू आदि का धीमा शब्द करना, बजना, झनकना, [रुनकना (दे०)]।

रनना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रणन] बजना, झनकार होना, शब्द करना।

रनवास, रनिवास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राज्ञी-वास] अंतःपुर। (हिं० रानीवास) रानियों का महल, राजाओं का जनानख़ाना।

रनित*—(वि०, दे०) [सं० रणित] बजता या झंकार करता हुआ। "रनित भृंग घंटावली झरत दान मदनीर"—वि०।

रनिवास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राज्ञीवास] रानियों का महल, रानी लोग। "सुनि हरष्यो रनिवास"—[रामा०]।

रनी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रण+ई प्रत्य०] शूरवीर, योद्धा, लड़ाका।

रपट†—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० रपटना] रपटने की क्रिया या भाव, फिसलाहट, दौड़; भूमि का ढाल। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० रिपोर्ट] इत्तला, सूचना, ख़बर।

रपटना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रफन] नीचे या आगे को फिसलना, झपटना, शीघ्रता से चलना। [**रपटाना** (स० रूप)], [**रपटवाना** (प्रे० रूप)]।

रपट्टा†—(संज्ञा, पु०) [हिं० रपटना] फिस-लाहट, फिसलाव, फिसलने की क्रिया, चपेट, दौड़-धूप, झपट्टा।

रफल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० राइफ़ल] विलायती बंदूक। (संज्ञा, पु०, दे०) [अं० रैपर] मोटी गरम और जाड़ों में ओढ़ने की चादर।

रफ़ा—(वि०, अ०) निवृत्त, दूर किया हुआ, शांत, दबाया हुआ, निवारित।

रफ़ा, दफ़ा—(वि०, यौ०, अ०) निवृत्त, दूर किया हुआ, शांत, दबाया हुआ, निवारित।

रफ़ू—(संज्ञा, पु०, अ०) फटे वस्त्र के छेदों को तागों से भर कर ठीक करना।

रफ़ूगर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) रफ़ू करने वाला।

रफ़ूचक्कर—(वि०, दे०) [अ० रफ़ू+चक्कर हिं०] चंपत, भग जाना।

रफतनी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) माल का बाहर जाना, जाने का भाव।

रफ्ता, रफ्ता, रफ्ते-रफ्ते—(क्रि० वि०, फ़ा०) धीरे धीरे, क्रम से, आहिस्ता आहिस्ता।

रब, रब्ब—(संज्ञा, पु०, अ०) मालिक परमेश्वर। "रब का शुक्र अदा कर भाई"—[रफ़ु०]।

रबड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० रबर] बट या बरगद आदि की जाति के वृक्षों के दूध से बना एक विख्यात लचीला पदार्थ, वट-वर्ग का एक वृक्ष। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) रगड़ने का भाव या क्रिया, थकावट, श्रम, दौड़धूप।

रबड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० रपटना] व्यर्थ दौड़धूप करना, थकना, श्रम करना, चलना। [**रबड़ाना** (स० रूप)], [**रबड़वाना** (प्रे० रूप)]।

रबड़ा—(वि०, दे०) [हिं० रबड़ना] थका, श्रमित।

रबड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रबड़ना] औट कर गाढ़ा किया हुआ दूध।

रबदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० रबड़ना] बोदा (ग्रा०), कीचड़, चलने की थकी या श्रम। **मुहा०** **—पड़ना**–अति वर्षा होना।

रबर—(संज्ञा, पु०, अ०) रबड़।

रबाना—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का झाँझ-दार डफ (बाजा)

रबाब—(संज्ञा, पु०, अ०) सारंगी जैसा एक बाजा।

रबाबिया—(संज्ञा, पु०) [अ० रबाब] रबाब बजाने वाला।

रबी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० रबीअ] रब्बी (ग्रा०), वसंत ऋतु में काटी जाने वाली फसल।

रब्त—(संज्ञा, पु०, अ०) अभ्यास, मश्क, महारत, मुहावरा, मेल, सम्बन्ध, रफ्त।—**ज़ब्त**–(पु०) मेल-जोल।

रभस—(संज्ञा, पु०, सं०) वेग, हर्ष, आनंद, औत्सुक्य, अत्यातुरता। "अति रभस कृतानाम्" —हि०।

रमेणक—(संज्ञा, पु०, सं०) सर्प रूप का एक राक्षस।

रम—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मदिरा, शराब विशेष। (वि०) सुन्दर (संज्ञा, पु०) पति, कामदेव।

रमक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रमना] झूले की पैग लहर, झकोरा, तरंग।

रमकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० रमना] हिंडोला, झूला, झूलना, झूम-झूम कर या इतराते हुए चलना।

रमचेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) दास, सेवक, नौकर, भृत्य।

रमज़ान—(संज्ञा, पु०, अ०) एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान रोजा (व्रत) रहते हैं।

रमझोला—(संज्ञा, पु०) घुँघुरू ।

रमठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रामठ] हींग ।

रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) केलि, क्रीड़ा, विलास, गान, मैथुन, घूमना, स्वामी, पति, कामदेव, एक वर्णिक छंद (पि०) । (वि०) सुन्दर, प्रिय, मनोहर, रमने वाला ।—**गमना**-(स्त्री०) वह नायिका जो यह सोच कर दुखी हो कि नायक संकेत-स्थल पर आ गया होगा मैं अभी यहीं हूँ [ना० भे०] ।

रमणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्त्री, नारी । "विगाढमात्रे रमणीभिरम्भसि"—[किरात०] ।

रमणीक—(वि०, दे०) [सं० रमणीय] सुन्दर, अच्छा, मनोरम, रुचिर । [**रमणीकता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

रमणीय—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोहर, अच्छा ।

रमणीयता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दरता, मनोहरता, स्थायी या सब अवस्थाओं मे रहन वाला माधुर्य या सौंदर्य (सा० द०) ।

रमता—(वि०) [हिं० रमना] एक स्थान पर न रहने वाला, घूमता-फिरता, जैसे—रमताजोगी । **लो०**—"रमता जोगी, बहता पानी ।"

रमति—(संज्ञा, पु० सं०) नायक, कामदेव, प्रेमी स्वर्ग, राग ।

रमन—(संज्ञा, पु०, वि०, दे०) [सं० रमण] स्वामी, पति, रमण ।

रमना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रमण] कहीं ठहरना या रहना, विरमना, मजा उड़ाना, आनंद या मौज करना, व्याप्त होना, अनुरक्त होना, घूमना-फिरना, चल देना, लग जाना, मौनना । [(स० रूप)—**रमाना**] [प्रे० रूप—**रमवाना**] (संज्ञा, पु०) [सं० आराम या रमता] चारागाह, वह रक्षित स्थान या घेरा जहाँ पशु पालने या शिकार आदि के लिये छोड़े जाते हैं, बाग, कोई मनोहर सुन्दर हरा-भरा स्थान ।

रमनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रमणी] रमणी, सुन्दर स्त्री ।

रमनीक*—(वि०, दे०) [हिं० रमणीक] रमणीक । [**रमनीकता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

रमन्ना—(संज्ञा, पु० दे०) जाने या प्रवेश करने का आज्ञा-पत्र, गमन ।

रमल—(संज्ञा, पु०, अ०) एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिसमें पासा फेंक कर भला-बुरा फल कहा जाता है ।

रमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्ष्मी, संपत्ति । "कहिय रमा सम किमि वैदेही"—[रामा०] ।—**कांत**-(पु०) विष्णु भगवान ।—**नरेश***-(पु०) विष्णु भगवान ।—**नाथ**-(पु०) विष्णु ।—**निकेत**-(पु०) विष्णु भगवान, **रमेश** ।—**निवास**-(पु०) विष्णु भगवान, रमानायक ।—**पति**-(पु०)विष्णु भगवान । "राम रमापति कर धनु लेहू"—[रामा०] ।—**रमण**-(पु०) विष्णु भगवान ।

रमाना—(क्रि० सं०) मन लगाये रहना जोड़ना, मोहित या आकर्षित करना, अनुरक्त करना ।

रमाली—(संज्ञा, पु०) एक महीन धान ।

रमित*—(वि०,दे०) [हिं० रमना] लुभाया हुआ, मोहित, मुग्ध ।

रमूज—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० रम्ज का बहु०] इशारा, सैन, कटाक्ष, रहस्य, श्लेष भेद, पहेली ।

रमैती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खेती के कामों मे किसानों की आपस की सहायता ।

रमैनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रामायण] कबीर के बीजक का एक खंड ।

रमैया†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राम] राम, भगवान, ईश्वर [हिं० राम + ऐया प्रत्यय] । (वि०, दे०) [हिं० रमना] रमने वाला । "रमैया तोरि दुलहिन लूटा बजार"—कबी० ।

रम्माल—(संज्ञा, पु० अ०) रमल फेंकने वाला ।

रम्य—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोहर, रमणीय, मनोरम । "परम रम्य आराम यह"—रामा० । [**रम्या** (स्त्री०)] ।

रम्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दरता, मनोहरता "पुर रम्यता राम जब देखो"—[रामा०] ।

रम्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात । (वि०) रमणीय ।

रम्हाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० रँभाना] रँभाना, बोलना (गाय आदि) ।

रय*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रज] धूलि, रज, गर्द, मिट्टी । (संज्ञा, पु०, सं०) तेजी, वेग, प्रवाह, धारा, ऐल के ६ पुत्रों में से चौथा पुत्र ।

रयन*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रजनि] [रयनि, रैन (दे०)] रात्रि रात । "जाव जू कन्हाई जहाँ रयन गँवाई तुम ।"

रयना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० रंजन] रंग से भिगोना या तर करना। (क्रि० अ०) संयुक्त या अनुरक्त होना, मिलना।

रयो—(क्रि० अ०) [हि० रयना] रंगे, मिले।

रय्यत†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० रअय्यत] [रैयत (दे०)] प्रजा, रिआया।

रय्या—(संज्ञा, पु०, दे०) राय, राजा। "रय्या रावचम्पत"—भूषण।

ररंकार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ररना] रकार की ध्वनि, ब्रह्म-द्योतक शब्द (ओंकार का अनु०) कबी०।

रर*†—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० ररना] रट, रटन।

ररक—(संज्ञा, स्त्री०) कराह, टीस का भाव, कसर।

ररकना†—(क्रि० अ०, अनु०) पीड़ा देना, सालना, कसकना। [ररक (संज्ञा, स्त्री०)]।

ररना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रटन] रटना, एक ही शब्द या बात को बार-बार कहना। **लो०** —"भोर होत जो कागा ररै।"

ररिहा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ररना+हा प्रत्य०] ररने वाला, रटुआ या ररुआ पक्षी, भारी भिखारी।

ररी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० ररना] गिड़गिड़ा कर माँगने वाला, अधम, नीच, तुच्छ।

रलना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ललन] सम्मिलित होना, एक में मिलना। [(सं० रूप—**रलाना**) प्रे० रूप—**रलवाना**। **रलाना**]—(क्रि० स०, दे०) मिलाना।

रली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [स० ललत=क्रीड़ा, केलि] विहार, क्रीड़ा, प्रसन्नता, आनन्द।

रला*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रेला] हल्ला, रेला।

रल्लक—(संज्ञा, पु०, स०) कम्बल, पशमीने का कंबल।

रव—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द, गुंजार, नाद, शोर-गुल, आवाज। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रवि] सूर्य।

रवकना—(क्रि० अ०) [हि० रमना=चलना] दौड़ना, उछलना, कूदना, उमँगना।

रवण—(संज्ञा, पु०, सं०) रव, शब्द, ऊँट, विदूषक। (वि०) गरम, तप्त, चंचर।—**रेती**—(स्त्री०) जमुना के किनारे की रेतीली जमीन।

रवताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रावत+आई प्रत्य०] स्वामित्व, रावता, प्रभुत्व, राव या राजा का भाव।

रवन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रमण] स्वामी, पति। (वि०, दे०) रमण करने वाला, क्रीड़ा या खेल करने वाला। (वि०, दे०) [रौन (दे०)] रमण, रमणीक। "गौन रौन रेती सों कदापि मरते नहीं"—[उ० श०]।

रवना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रमण] केलि या क्रीड़ा या रमण करना। (क्रि० अ०) [हि० रव] शब्द करना।‡ (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रावण] [रावना (दे०)] रावण।

रवनि रवनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रमणी] स्त्री०, पत्नी, सुन्दरी, रमणी। "राज-रवनि सोरह सहस, परिचारिकन समेत"—नरोत्तम०।

रवन्ना—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० रवाना] माल आदि के ले जाने या ले आने का आज्ञा-पत्र, राहदारी का परवाना, रवाना किये माल का ब्यौरा, बीजक।

रवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रज] रेजा, कण, टुकड़ा, सूजी, बारूद का दाना, एक प्रकार का शुद्ध देशी सोना। (वि०, फ़ा०) उचित, उपयुक्त, चलतसार, प्रचलित। (संज्ञा, पु०, दे०) परवाह, इच्छा, चिन्ता।—**दार**—(वि०) संबंधी, लगाव रखने वाला (वि०, दे०) आश्रित। (वि०) [हि० रवा+फ़ा० दार-प्रत्य०] कण या दाने वाला।

रवाज, रिवाज—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चलन, रीति, रस्म, प्रथा, चाल, परिपाटी, प्रणाली।

रवानगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्रयाण, प्रस्थान, कूच, [चाला (दे०)], रवाना होने का भाव या क्रिया।

रवाना—(वि०, फ़ा०) प्रस्थित, कूच होना, भेजना, चल देना।

रवानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्रवाह, गति।

रवायत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कहानी, क़िस्सा।

रवारवी—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० रवा+रवी अनु०] शीघ्रता, जल्दी।

रवि—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, मदार, आक, नायक, अग्नि, सरदार [रबि (दे०)]। "रवि दिशि नैन सकै किमि जोरी"—[रामा०]।—**कर**—(पु०) सूर्य किरण। "रविकर ने छूकर कंज गात"—गिरीश।—**कुल**—(पु०) सूर्य्य-वंश।—

चंचल–(पु०) काशी का लोलार्क तीर्थ ।—**चक्र**–(पु०) सूर्य मंडल, सूर्य के रथ का पहिया —**ज, जात**–(पु०) यम, शनिश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार ।—**जा**–(स्त्री०) यमुना ।—**तनय**–(पु०) यमराज, शनिश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार ।—**तनया**–(स्त्री०) यमुना । "रवितनया तट कदम वृक्ष सोहत छबि छायो"—[स्फु०] ।—**नंदन**–(पु०) यम, शनिश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार ।—**नंदनी**-(स्त्री०) यमुना । "राम-कथा रविनंदिनी बरणी"—[रामा०] ।—**पुत्र**–(पु०) सूर्य्य का बेटा, यम आदि रवितनय ।—**प्रिय**–(पु०) कमल, अकवन । —**प्रिया**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सूर्य्य की स्त्री या पत्नी ।—**पूत***–(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० रविपुत्र] यम, शनिश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार ।—**मंडल**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्य्य का गोला, सूर्य्य के चारों ओर का लाल गोला, रवि-बिंब । "रविमंडल देखत लघु लागा ।"—**मणि**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सूर्य्य-कांतिमणि, आतशी शीशा ।—**बाण**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जिस बाण के चलाने से सूर्य्य का सा प्रकाश हो । —**वार**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एतवार, आदित्यवार ।—**सुअन,—सुवन**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) रवितनय, सूर्य्य-पुत्र ।

रविक—(संज्ञा, पु०, दे०) पेड़ ।

रविश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चाल, गति, ढंग, तरीका, क्यारियों के बीच की छोटी राह ।

रवैया‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० रविश, रवां] रीति, चलन, व्यवहार, चाल-ढाल, ढंग, प्रथा । [**रीति-रवैया** (यौ०)] ।

रशनोपमा, रसनोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गमनोपमा या उपमामाला, उपमालंकार का एक भेद, जिसमें कई उपमेयोपमान उत्तरोत्तर उपमानोपमेय होकर चलते हैं (अ० पी०) ।

रश्क—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) डाह, ईर्ष्या ।

रश्मि—(संज्ञा, पु०, सं०) किरण, घोड़े की लगाम, बाग । "रविरश्मि संयुत"—[स्फु०] ।—**माली**–(यौ०) सूर्य, चन्द्र ।

रस—(संज्ञा, पु०, सं०) रसना का ज्ञान, स्वाद, रस छै प्रकार के होते हैं—मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय (वैद्य०), छः की संख्या, देह को ७ धातुओं में से प्रथम धातु तत्व या सार, काव्य और नाटक से उत्पन्न मन का एक भाव या आनन्द (साहित्य०), काव्य में शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त ९ रस हैं, नौ की संख्या, आनन्द । विहार, काम-क्रीड़ा, उमंग, गुण, द्रव पदार्थ, पानी, शरबत, पारा, धातुओं की भस्म (वैद्य०), रगण और सगण (केश०), भाँति, प्रकार, मन की मौज या इच्छा, हृदय की तरंग ।—**कपूर**–(पु०) एक श्वेत औषधि जो उपधातु मानी जाती है (वैद्य०) ।—**केलि**–(स्त्री०) काम-क्रीड़ा, विहार, दिल्लगी, हँसी ।—**कोरा**–(पु०) एक मिठाई, रसगुल्ला । —**गुनी**†–(पु०) काव्य और संगीत का ज्ञाता, रसज्ञ ।—**गुल्ला**–(पु०) छेनें की एक मिठाई । —**ग्रह**–(संज्ञा, पु०, सं०) रसना, जीभ ।—**ज्ञ**–(वि०, सं०) भावुक, रसिक, रस-ज्ञानी, काव्य और संगीत का मर्मज्ञ, कुशल, दक्ष, निपुण । [**रसज्ञता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**ज्ञा**–(संज्ञा) रसना, जिह्वा । "येपामाभीर-कन्या-प्रिय-गुण-कथनं नानु-रक्ता रसज्ञा ।"—**द**–(वि०) सुख या आनंद देने वाला, स्वादिष्ट, मजेदार ।—**भीजना** या **भीगना**–जवानी का प्रारम्भ होना । प्रीति, प्रेम, स्नेह ।—**रंग**–(यौ०) प्रेम, क्रीड़ा, केलि । वेग, जोश ।—**रीति**–स्नेह का व्योहार ।—**दार**–(वि०) [सं० रस+दार फ़ा०] रसपूर्ण, रस-युक्त, स्वादिष्ट, मजेदार, रसीला ।—**पति**–(पु०) चन्द्रमा, रसाधिप, रसाधिपति, राजा, पारा, शृङ्गार रस ।—**प्रबन्ध**–(पु०) नाटक, एक ही विषय का सरस सम्बद्ध काव्य वर्णन ।—**भरी**–(स्त्री०) एक स्वादिष्ट फल ।—**भीना**–(वि०) हर्ष-मग्न, आर्द्र, गीला, तर ।—**मसा**–(वि०) अनुरक्त, अनंद-मग्न, गीला ।—**राज**–(पु०) पारा, पारद, शृङ्गार रस । —**राय***—(पु०) रसराज, पारा, शृङ्गार, रस । "हम तुम सुखे एक से, हूजत है रसराय"—गिर० ।—**वाद**–(पु०) प्रेमानंद की बातचीत, मनोरंजक वार्तालाप, विनोद, वार्ता, हँसी दिल्लगी, छेड़छाड़, बकवाद । "कागा बैठे करत है कोयल को रसवाद"—गिर० ।—**वादी**–(पु०) रस को काव्य में प्रधान मानने वाले ।—**विरोध**–(पु०) एकही पद्य में दो विरोधी रसों की स्थिति (काव्य०) ।

रसता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रस का धर्म्म या भाव, [रसत्व (सं०)] ।

रसद—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बखरा, बाँट, खाने-पीने की सामग्री। मुहा०—**हिस्सा**-विभाजन में उचित हिस्सा मिलना, बिना पकाया कच्चा अनाज।

रसन—(संज्ञा, पु०, सं०) चाबना, स्वाद लेना, ध्वनि, जिह्व।

रसना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जिह्वा, जीभ, जबान। "रसना कसना राम रटै"। मुहा०—**खोलना**-बोल चलना।—(**जीभ**) **तालू से लगाना**-बोलना बंद करना। रस्सी, लगाम, जिह्वानुभवित स्वाद। (क्रि० अ०, हि०) गीला होकर द्रव वस्तु छोड़ना, धीरे धीरे टपकना या बहना।—**रस-रस या रसे-रसे**-धीरे-धीरे। "रसरस सूख सरित-सर-पानी"—[रामा०]। रस लेना या रस में निमग्न, तन्मय होना, प्रेम में अनुरक्त होना, स्वाद लेना।

रसनीय—(वि०, सं०) स्वादिष्ट, स्वाद लेने लायक।

रसनेंद्रिय—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) जीभ, जिह्वा, रसना।

रसनोपमा—(संज्ञा, पु०, सं०) गमनोपमा, क्रमशः उपमालंकार का वह भेद जिसमें पूर्वगत उपमेय आगे क्रमशः उपमान होते हुए उत्तरोत्तर उपमा-माला बनावे (अ० पी०)।

रसम, रस्म—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) रीति, रिवाज, चाल, प्रथा।

रसमि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रश्मि, किरण।

रसरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रस्सी] रस्सी, डोरी, जौरी, [लस्सी (दे०)]। "रसरी आवत जात ते', सिल पर परत निसान"—वृं०।

रसल—(वि०, दे०) [हि० रसीला] रसीला।

रसवंत—(संज्ञा, पु०) [सं० रसवत] रसिक, प्रेमी। वि० रसीला, रस-भरा।

रसवंती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रसवती] रसोई, रसवती, रसौती।

रसवत्—(संज्ञा, पु०, सं०) वह अलंकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रस या भाव का अंग हो (अ० पी०)। (वि०) रस-युक्त, या रस तुल्य, रसवाला। "कवीनाम् रसवद्वचः"—[स्फु० सा०]।

रसवत—(संज्ञा, पु०, सं०) रसौत (औष०)। [**रस-वती** (वि०, स्त्री०, सं०)]। रस वाली, रसयुक्त। (संज्ञा, स्त्री०) रसोई, पृथ्वी।

रसांजन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रसौत, सहजन।

रसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अवनि, पृथ्वी, भूमि, वसुधा, जिह्वा, जीभ। "रसा रसातल जाइहि तबहीं"—[रामा०]।—**तल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पृथ्वी का तल भाग, पृथ्वी के नीचे ७ लोकों मे से ६ वाँ लोक (पुरा०)। मुहा०—**में पहुँचाना (भेजना)**-बरबाद या तबाह होना (कर देना), मिट्टी में मिलना या मिला देना।—**में जाना**-पतित या विनष्ट होना।—**पाई**-(पु०) जीभ से पीने वाला जीवधारी। (संज्ञा, पु०) तरकारी का मसालेदार रस, शोरबा।—**दार**-(वि०) मसालेदार, रस युक्त तरकारी, शोरबेदार, रस वाला।

रसाइनी†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रसायन] रसायन विद्या का ज्ञाता, रसायनी।

रसाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पहुँच, सम्बन्ध।

रसाभास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक अलंकार जिसमें अनुचित विषय या स्थान पर किसी रस का वर्णन हो, ऐसे अलंकार का प्रसंग।

रसामृत—(संज्ञा, पु०, सं०) एक आयुर्वेदिक रस।

रसायन—(संज्ञा, पु०, सं०) धातूपधातुओं की भस्म, वह औषधि जिसके सेवन से मनुष्य बुड्ढा और बीमार नहीं होता (वैद्य०)। वस्तुओं के तत्वों का ज्ञान।—**विद्या**-(स्त्री०) वह विद्या जिसमें पदार्थों या धातुओं के मिलाने और अलग करने की विधि उनकी तत्व विवेचना तथा परिवर्तन, रूपान्तरादि कही गयी है, पदार्थ-विद्या।—(वि०) —**शास्त्र**-(पु०) ऐसा (कल्पित) योग जिससे ताँबे का सोना होना कहा जाता है।—**शास्त्र**-(पु०) रसायन विद्या, या विज्ञान, वह शास्त्र या विद्या जिसमें पदार्थों के मूल तत्वों की विवेचना हो और उनके मिलाने और अलगाने की विधियों तथा तत्वों के परिवर्तन से पदार्थों के परिवर्तनादि का कथन हो, विज्ञान-शास्त्र, पदार्थ विद्या, वस्तु-विज्ञान, तत्व-विद्या—[केमिस्ट्री]।

रसायनिक—(वि०, दे०) [सं० रासायनिक] रासायनिक, रसायनशास्त्र संबंधी, रसायनशास्त्र का ज्ञाता।

रसाल—(संज्ञा, पु०, सं०) आम, गन्ना, ऊख, गेहूँ, कटहल। [**रसाला** (वि०, स्त्री०)]—रसीला,

मीठा, मधुर, मनोरम, सुन्दर। (संज्ञा, पु०) [अ० हरसाल] राजस्व कर, महसूल। "पाकर, जम्बु, रसाल, तमाला"—[रामा०]।

रसालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रसमन्दिर, रसभवन, रस स्थान, रसशाला, आम्रवृक्ष, पृथ्वी का आलय, भूगर्भ-सद्म।

रसालस—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० रसाल] कौतुक।

रसाला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दही, घी, श्रीखण्ड शहद की चटनी। दही को मिलाकर खाया जाने वाला सत्तू।

रसालिका—(वि०, स्त्री०) [सं० रसालक] मधुर छोटा आम।

रसाव—(संज्ञा, पु०) रसने का कार्य या भाव।

रसावर, रसावल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० रसौर] ऊख के रस में पके चावल, रसियाउर, [रसौर (दे०)]।

रसाव—(संज्ञा, पु०) [हिं० रसना] रसने क्रिया का भाव।

रसास्वादन—(संज्ञा, पु०, सं०) रस का आस्वादन, रस का स्वाद लेने का कार्य।

रसास्वादी—(वि०, सं०) रस का आनन्द लेने वाला। (पु०) भ्रमर।

रसिआउर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० रस+चावल] रसावर, ईख के रस में पके चावल, रसौर, विवाह की एक रीति का गीत।

रसिक—(संज्ञा, पु०, सं०) रसस्वाद का ज्ञाता, रस का स्वाद लेने वाला, सहृदय, काव्य का मर्मज्ञ, भावुक, रसिया, अच्छा मर्मज्ञ या ज्ञाता, एक छंद (पिं०)। "पिवत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिकाः भुवि भावुकाः"—[भा० प्र०]।

रसिकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सरसता, रसिक होने का भाव या धर्म्म, हँसी-ठट्ठा। "रसिकता-गत हो चली"।—**विहारी**-(संज्ञा, पु०, सं०) श्री कृष्ण जी, एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि। "रसिक विहारी भृगु-नाथ भषिये तौ नैकु।"

रसिकई, रसिकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रसिकता] रसिक होने का भाव या धर्म्म, हँसी-ठट्ठा।

रसित—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द, ध्वनि।

रसिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रसिक] रसिक। लो०—"सब घर रसिया पहित अलोन"। फागुन में एक गाना। (ब्रज०)।

रसियाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० रसौर] रसौर, ऊख के रस में पके चावल।

रसी*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रसिक] रसिक, रसिया। (वि०) रस-युक्त।

रसीद—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्राप्ति-पत्र, स्वीकृति-पत्र, मिलने या पाने का प्रमाण-पत्र, प्राप्ति, पहुँच, [**रिसीट** (अं०)]।

रसील—(वि०, दे०) [हिं० रसीला] रसीला, रस-दार।

रसीला—(वि०) [हिं० रस+ईला—प्रत्य०] रसदार, रस से भरा, रसयुक्त, सरस, स्वादिष्ट आनंद-भोगी, रसिया, मनोरम, सुन्दर, बाँका। [**रसीली** (स्त्री०)]।

रसूम—(संज्ञा, पु०, अ०) रस्म का बहुवचन, नियम कानून, नेग, लाग (प्रान्ती०) प्रचलित प्रथानुसार दिया धन।

रसूल—(संज्ञा, पु०, अ०) पैगम्बर, ईश्वर-दूत। "रसूल पैगम्बर जान बसीठ"—खा०।

रसेन्द्र—(संज्ञा, पु०, सं०) एक रसौषधि जिसमें धनियाँ, पीपल, जीरा, शहद, रससिंदूर आदि का योग रहता है।

रसेश—(संज्ञा, पु०, सं०) पारा, षट् दर्शनों से भिन्न प्रकार एक दर्शन, श्री कृष्ण।

रसेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक रसौषधि, एक दर्शन-विशेष।

रसेस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रसेश] रसेश, श्रीकृष्ण जी।

रसोइया—(संज्ञा, पु०) [हिं० रसोई+इया प्रत्य०] रसोईदार, रसोई बनाने वाला, [**बावर्ची** (फ़ा०)]।

रसोंई, रसोई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रस+ओई प्रत्य०] भोजन पदार्थ जो पकाया गया हो [**रसवती** (सं०)]।—**घर**-(पु०) पाकशाला, भोजनालय।—**दार**-(पु०) रसोइया, रसोई बनाने वाला। **मुहा०—जीमना**-भोजन करना।—**तपना**-भोजन पकाना। "कह गिरधर कविराय तपै वह भोम रसोई।" पाकशाला, भोजनालय, चौका, रसोइया (ग्रा०)।

रसोद्भव—(संज्ञा, पु०, सं०) ईंगुर, शिंगरफ।

रसोन—(संज्ञा, पु०, सं०) लहसुन । "नान्या निमान्यानि किमौषधानि परन्तु वालेन रसोन कल्कात्"—लो० रा० ।

रसोपल—(संज्ञा, पु०, सं०) मुक्ता, मोती ।

रसोय*†—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० रसोई] रसोई ।

रसौत—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० रसोद्भूत] रसवत, दारुहलदी की लकड़ी या जड़ को पानी में पकाकर बनाई गई एक औषधि ।

रसौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रस+और प्रत्य०] ऊख के रस में पके हुए चावल ।

रसौल—(संज्ञा, स्त्री०) एक कटीली पत्ती वाली लता जो औषधि के काम में आती है ।

रसौली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शरीर में गिलटी निकलने का एक रोग (वै०) ।

रस्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० रास्ता] राह, मार्ग, रास्ता । मुहा०—**(ते) पर आना (लाना)**—ठीक कार्य करना (कराना) ।—**बताना**-धोखा देना, बहलाना, टालना । [रीति, रसम (दे०)] ।

रस्तोगी—(संज्ञा, पु०, दे०) वैश्यों की एक जाति ।

रस्म—(संज्ञा, पु०, अ०) मेल-जोल ।—**राहरस्म**-(यौ०) व्यवहार, चाल, रिवाज, परिपाटी, प्रणाली, रस्म । [रिवाज, रीति, रसम, रसूम (दे०)] ।

रस्मि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रश्मि] रश्मि, रस्सी, किरण ।

रस्सा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रसना] बहुत ही मोटी रस्सी । [**रस्सी** (स्त्री० अल्पा०)] ।

रस्सी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रस्सा] रज्जु, डोरी, [रसरी, लस्सी (दे०)], लजुरी (प्रान्ती०) ।

रहँकला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रथ+कल] एक हलकी गाड़ी, तोप लादने की गाड़ी, उस पर लदी तोप । [**रहँकलिया, रहँकली** (स्त्री० अल्पा०)] ।

रहँचटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रस+चाट] प्रेम का चसका, लिप्सा, चाट या चाह, "रूप-रहँ-चटे लगि रहे"—वि० ।

रहँट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० आरघट्ट, प्रा० अरहट्ट] एक यंत्र जिसके द्वारा कुयें से पानी निकाला जाता है ।

रहटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रहँट] सूत कातने का चर्खा ।

रहँटी—(संज्ञा, स्त्री०) रुई ओटने की चर्खी । रुपये, जो उधार दिये जाते हैं, की मासिक वसूली ।

रहचह—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) पक्षियों का शब्द, चिड़ियों की चहचहाहट ।

रहठा—(संज्ञा, पु०) अरहर का सूखा डंठल ।

रहन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रहना] आचार, व्यवहार, रहने की क्रिया का भाव । (दे०) चने के साग में बेसन का मेल ।—**सहन**-(स्त्री०) चाल, व्यवहार, जीवन निर्वाह, का ढंग, चालढाल, तौर-तरीका ।

रहना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० राज—विराजना] ठहरना, रुकना, थमना, स्थित होना, निवास या अवस्थान करना या होना । मुहा०—**रह जाना, रह चलना**-रुक जाना, ठहर जाना, बिना गति या परिवर्तन के एक ही स्थिति मे अवस्थान या निवास करना, टिकना, बसना, उपस्थित या विद्यमान होना, चुपचाप या शान्ति-संतोष से समय बिताना, कोई काम या चलना बंद करना ।—**रह जाना**—कुछ कार्य्यवाही न करना, सफल न होना, लाभ न उठा पाना, संतोष करना । कामकाज या नौकरी करना, स्थित या स्थापित होना, मैथुन करना, वचन, जीना, छूट जाना, जीवित रहना ।—**रहासहा**-(यौ०) बचाखुचा, बचा-बचाया, अवशिष्ट, भूतार्थ में था या थे, जैसे—"रहे प्रथम अब ते दिन बीते"—[रामा०] ।—**(अंग आदि का) रह जाना**-थक या शून्य हो जाना, शिथिल हो जाना ।—**रह जाना**-पीछे छूट जाना, अवशिष्ट रहना, खर्च या व्यवहार से बचना ।

रहनि*—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० रहना] रहना, प्रीति, प्रेम, स्नेह, रहने का ढंग या भाव ।

रहम—(संज्ञा, पु०, अ०) दया, कृपा, करुणा, अनुग्रह, अनुकंपा ।—**दिल**-(वि०) कृपालु, दयालु ।

रहमत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दया, कृपा ।

रहमान—(वि०, अ०) परम दयालु । (पु०) परमात्मा, परमेश्वर ।

रहर—(संज्ञा, स्त्री०) अरहर ।

रहरेठा—(संज्ञा, पु०) अरहर का सूखा हुआ डंठल ।

रहल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पढ़ने के लिए पुस्तक रखने की एक छोटी चौकी ।

रहलू*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रहरू] रहरू, राह चलने वाला।

रहस—(संज्ञा, पु०) [सं० रहस्य] गुप्त भेद, सुखमय लीला, छिपी बात, क्रीड़ा, आनंद, गूढ़तत्व, मर्म, एकांत स्थान। (व्र०) एक प्रकार का नाटक या लीला-कौतुक या नाच।—**बधावा**-(पु०, हिं०) शादी का एक रिवाज।

रहसना—(क्रि० अ०) [हिं० रहस+ना प्रत्य०] प्रसन्न या आनंदित होना।

रहस, बधावा—(संज्ञा, पु०) [सं० रहस्+बधाई] विवाह की एक रीति।

रहसि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० रहस्] एकांत, गुप्त स्थान।

रहस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) गुप्त भेद, मर्म्म या भेद की गोप्य बात, गूढ़तत्व, मजाक।

रहा—(वि०) बचा या छूटा हुआ।—**सहा**-(वि०) बचा खुचा।

रहाइस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रहना] निवास, टिकाव, स्थिति, वास।

रहाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० रहना] कल, आराम, चैन, रहने का भाव।

रहाना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० रहना] होना, रहना, रखना।

रहाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० रहना] स्थिति टिकाव, रहन।

रहावन†—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० रहना+आवन प्रत्य०] वह स्थान जहाँ सारे गाँव के पशु वन जाने से पहले इकट्ठे होते हैं, रहूनी, रहनियाँ (ग्रा०)।

रहित—(वि०, सं०) बिना, हीन, बगैर। "भक्ति रहित संपति, प्रभुताई"—[रामा०]।

रहिला-लहिला—(संज्ञा, पु०, दे०) चना, अन्न। "रहिमन रहिला की भलो '।

रहीम—(वि०, अ०) दयावान, दयालु, कृपालु। (संज्ञा, पु०, अ०) ईश्वर, अब्दुल रहीम खानखाना का उपनाम। "जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसग"।

रहुवा, रहुआ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० रहना] रोटियों पर नौकर रहने वाला टुकड़हा, रोटी तोड़। "कह गिरधर कविराय कहै साहिब सों रहुवा"—गिर०।

राँक†—(वि०, दे०) [सं० रंक] कंगाल, निर्धन। "धनी राँक सब कर्म्माधीना"—कु० वि०।

राँकब—(वि०, दे०) [सं० रंक] कंगाल, निर्धन। "राँकब कौन सुदामाहू तें आपसमान करै"—सूर०।

राँग, राँगा—(संज्ञा, पु०) [सं० रंग] एक सफेद कोमल धातु, बंग, रंग।

राँच*†—(अव्य, दे०) [सं० रंच] तनिक, किंचित, रंचक।

राँचना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रंजन] प्रेम करना, चाहना, अनुरक्त होना, रंग पकड़ना। (क्रि० स०, दे०) रँगना, रंग चढ़ाना, रचना, बनाना। "मन जाहि राँच्यो", "जो बिलोकि मुनिवर मन राँचा"—[रामा०]। "करि अभिमान विषयरस राँच्यो"—सूर० "कोटि इन्द्र छिन ही में राँचै छिन में करै निवास"—सूर०।

राँजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रंजन] सुरमा, अंजन या काजल लगाना। (क्रि० स०)—रँगना, रंजित करना, राँगे से फूटे बरतन की मरम्मत करना।

राँटा†—(संज्ञा, पु०, दे०) टिटिहरी पक्षी।

राँड—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० रंडा] बेवा, विधवा, रंडी वेश्या। [**रँड़ापा** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

राँढ़ना, राढ़ना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० रुदन] रोना।

राँध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० परांत] पड़ोस, परोस, समीप, पास। "राँध न तहवाँ दूसर कोई"—पद्म०। (वि०) परिपक्व बुद्धि वाला, ज्ञानी। "राँध जो मंत्री बोलै सोई"—पद्मा०।

राँधना—(क्रि० सं०, दे०) [सं० रंधन] चावल या दाल आदि पानी में पकाना, पाक करना।

राँपी, रापी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पतली छोटी खुरपी जैसा मोचियों का एक औजार।

राँभना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रंभण] गाय का बोलना या चिल्लाना, बँबाना। "जैसे राँभति धेनु लवाई"—कु० वि०।

राआ*—(संज्ञा पु०, दे०) राजा (सं०)।

राइ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजा] रइय्या (ग्रा०) राउ, राय, सरदार, छोटा राजा, राजपद। "राइ राव सब ही कहँ नीका"—[रामा०]।

राई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० राजिका] छोटा सरसों जैसा एक तिलहन, अति अल्प मात्रा या

परिमाण। "राई को पर्वत करै, परवत राई माहिं" —कबीर। **मुहा०—नोन उतारना**-दृष्टि दोष मिटाने के लिए राई और नमक को उतार कर आग में डालना।**—से पर्वत करना—का पहाड़ बनाना**-थोड़ी बात को बहुत बढ़ा देना।—**काई करना**-टुकड़े टुकड़े कर डालना, नष्ट करना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजा] राजा, श्रेष्ठ। "कह नृप बहुरि सुनहु मुनिराई" —[स्फु०]।

राउ, राऊ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजा] राजा। "राउ सुभाय मुकर कर लीन्हा प्रेम विवश पुनि पुनि कह राऊ"—[रामा०]।

राउत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राज + पुत्र] राजा, बहादुर, वीर पुरुष, क्षत्रियों की एक जाति, राजा के वंश का।

राउर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजपुर] अंतःपुर, रनवास, रनिवास। (सर्व०, वि० व्र०) आपका, श्रीमान् का। "जो राउर अनुशासन पाऊँ"—[रामा०]।

राउल*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजकुल] राजा, राजकुल में उत्पन्न व्यक्ति।

राकस*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राक्षस] राक्षस। [**राकसिन** (स्त्री०)]। "भलिभूंजि कै राकस खाकस कै, दुख दीरघ देवन को दरि हौं" —[रामा०]।

राकसिन, राकसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) राक्षसी (सं०), राक्षसिन।

राका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूर्णिमा, पूर्णमासी की रात्रि। "ज्यों सरद राका ससी"—वि०।—**पति**-(पु०) चंद्रमा।

राकेश—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रमा [राकेस (दे०)]।

राक्षस—(संज्ञा, पु०, सं०) असुर, दैत्य, निशाचर, दुष्ट जीव। "पपात राक्षसी भूमौ"—भट्टी०। एक प्रकार का ब्याह जिसमें युद्ध से कन्या छीन ली जाती है।—**विवाह**-(पु०) वह विवाह जिसमें लड़ाई के पश्चात् कन्या की प्राप्ति हो।

राक्षसी—(संज्ञा, स्त्री०) राक्षस स्त्री, दुष्ट, क्रूर हृदयवाली स्त्री।

राख—(संज्ञा स्त्री०, दे०) [सं० रक्षा] भस्म, खाक, विभूति।

राखना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रक्षण] रखना, आरोप करना, बचाना, रक्षा या रखवारी करना, छल करना, छिपाना, रोक रखना, जाने न देना, ठहरा लेना, बताना। "राउ राम राखन-हित लागी"—[रामा०]।

राखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रक्षा] रक्षाबंधन का डोरा, रक्षा [रखिया (दे०)]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० राख] भस्म, खाक। "राखी मरजाद पाप-पुन्य की सो राखी गनै"—रत्ना०। (क्रि० स०, दे०) रक्षा करना, बचाना, छिपाना, रखना। "तोहिं हरि, हर, अज सकहिं न राखी"—[रामा०]।

राग—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रीति, प्रेम, स्नेह, मत्सर, द्वेष, ईर्ष्या, पीड़ा, कष्ट, किसी प्रिय या इष्ट वस्तु के प्राप्त करने की इच्छा, सांसारिक सुखों की लालसा या चाह, एक वर्णिक छंद (पिं०), रंगविशेष, लाल रंग, लाली, महावर, अलता (प्रान्ती०) अंगराग, देह में लगाने का सुगंधित लेप। "कुवलय मुकलित होत ज्यों, परसिप्रातरवि-राग"—मति०। ध्वनि विशेष में बैठाये स्वर, गाने की ध्वनि, जिसके ६ भेद हैं:—भैरव, मलार, मेघ, श्री, सारंग, हिंडोल, बसंत, दीपक (मत-भेद है)।—**अपना (अपना) राग अलापना**-अपनी ही बात कहना। "रंजते अनेनेति रागः"—कौ० व्या०। **मुहा०—राग (बैठना)**-सिलसिला, ठीक विधान या प्रबन्ध बनना।—**राग बिगड़ना**-प्रबन्ध का बिगड़ना।—**लगाना**-किसी बात का सिलसिला जारी करना।

रागना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० राग] अनुरक्त होना, अनुराग करना, रँग जाना, मग्न, लीन या रंजित होना, डूबना। (क्रि० स०, दे०) [सं० राग] अलापना, गाना।

रागनी, रागिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संगीत के ६ रागों में से प्रत्येक राग का ५ वाँ भेद, अतः छत्तीस रागिनी हैं फिर प्रत्येक रागिनी के दो दो भेद हैं, अतः बहत्तर राग-पत्नियाँ या भार्य्यायें मानी गई हैं (संगी०)।

रागान्वित—(वि०, सं०) अनुरक्त, मोहित, आसक्त, कुपित।

रागी—(संज्ञा, पु०) [सं० रागिन्] प्रेमी, स्नेही, अनुरागी, ६ मात्राओं के छंद (पिं०)। (वि०) रंगा हुआ, रँगीला, लाल, विषयी, विषय में फँसा

[**विरागी** (विलो०)] । (वि०) रँगने वाला, राग गाने वाला, राग जानने वाला, गवैया। *‡ (संज्ञा, स्त्री०) [सं० राज्ञी] रानी। "छत्तौ राग छत्तीस रागनी मुरली में गावैं"—[स्फुट०]।

राघव—(संज्ञा, पु०, सं०) रघुवंशीय, श्रीरामचन्द्र जी। "सुग्रीवो राघवाज्ञया"—भट्टी०।

राचना—(क्रि० स०, दे०) [हि० रचना] रचना, बनाना। (क्रि० अ०, दे०) बनना, रचा जाना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० रंजन] रँगा जाना, प्रेम में मग्न या अनुरक्त होना, डूबना, प्रेम करना, रंजित या निमग्न, होना प्रसन्न होना, शोभित होना, रुचिर रोचक या भला लगना, चिंता या सोच में पड़ना।

राछ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रक्ष] कोरी या जुलाहों के कपड़ा बुनने का या करघे में ताने के तागों का नीचे-ऊपर उठाने और गिराव का एक यंत्र, कारीगरों का एक औज़ार, जलूस, बारात।

राछस, राच्छस*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राक्ष] राक्षस, राच्छस (ग्रा०)।

राज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राज्य] राज्य, शासन, हुकूमत, राजा। (अल्प०) जैसे कविराज, धर्मराज ! **मुहा०—पर बैठना**—"रामराज बैठे त्रय-लोका"—[रामा०] ।—**राजना (करना, भोगना)**—राज्य करना, अति सुख से रहना।—**काज**—राज्य-प्रबन्ध, राज्य शासन।—**पाट**—राज-सिंहासन, शासन। एक राजा से शासित देश, राज्य, जनपद राज्य अधिकार, अधिकार काल। **(किसी का) राज्य होना**—पूर्ण स्वतन्त्र अधिकार होना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजन्] राजा, राजगीर। यह विभिन्न शब्दों के साथ प्रयुक्त होकर श्रेष्ठता, बड़प्पन आदि का अर्थ प्रकट करता है।—**कन्या**—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) राजा की बेटी, राजसुता, राजतनया, राजकिशोरी, राज-पुत्री, राजकुमारी।—**कर**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह महसूल या कर जो राजा प्रजा से लेता है, लगान, खिराज।—**कुँअर,—कुंवर***†—(पु०) [सं० राजकुमार] राजा का बेटा, राज-पुत्र। [**राजकुवाँरि स्त्री०**] "राजकुँअर तेहि अवसर आये"—[रामा०]।—**कुटुम्ब**—(पु०) राजा का वंश, राजा का घराना। [**राजकुटुम्बी** (वि०)]।—**कुमार**—(पु०) राजा का पुत्र। [**राजकुमारी** (स्त्री०)]।—**कुल**—(पु०) राज-वंश, राज-परिवार।—**कृत्य**—(पु०) राजा का कार्य्य कर्त्तव्य।—**कोश**—(पु०) राजा का खजाना, राज्य और खजाना।—**गद्दी**—(स्त्री०) राज सिंहासन, नृपासन।—**गिरि**—(पु०) मगधदेश का एक पहाड़ (भू०), राजगृह, पटना।—**गीर**—(पु०) पत्थर से घर बनाने वाला, राज, थवई (प्रान्ती०)।—**गृह**—(पु०) राजा का महल, राज-प्रासाद, पटने के समीप एक स्थान, गिरिव्रज (प्राचीन मगध की राजधानी)।—**तरंगिणी**—(स्त्री०) कल्हण कवि रचित काश्मीर का संस्कृत इतिहास।—**तिलक**—(पु०) राजगद्दी के मिलने का उत्सव, राज्याभिषेक।—**दंड**—(पु०) वह दंड जो किसी को किसी राजा की आज्ञा से दिया जावे।—**दंत**—(पु०) और दाँतों से बड़ा तथा चौथा चौड़ा बीच का दाँत।—**दूत**—(पु०) राजा का धावन, राजा का चिट्ठीरसा, किसी राजा के यहाँ भेजा गया विशेष संवादवाहक अधिकारी।—[एम्बेसेडर]—**द्रोह**—(पु०) राजा या राज्य के प्रति द्रोह, बगावत। [**राजद्रोही** (वि०)]।—**द्वार**—(पु०) राज की ड्योढ़ी, न्यायालय।—**धर**—(पु०) आमात्य, मंत्री।—**धर्म्म**—(पु०) राजा का धर्म्म या कर्तव्य, वह धर्म्म जिसे राजा मानता हो।—**धानी**—(स्त्री०) किसी देश का शासन केन्द्र, राजा के रहने का नगर, देश शासक के निवास का नगर।—**नीति**—(स्त्री०) कानून, राजा का शासन-नियम, धर्म्म-शास्त्र। "राजनीति अस कहै दशानन"—[रामा०]।—**नीतिक**—(वि०) राजनीति संबंधी [राजनैतिक (दे०) ।—**पंखी**—(पु०) राजपक्षी, हंस, बहुत बड़ा पक्षी, [राजपच्छी (दे०)]। "राजपंखि तेहि पै मँडराहीं"—पद्मा०।—**पंथ**,—**पथ**—(पु०) राजमार्ग, सड़क, चौड़ी गली, राजा की बनवाई बड़ी सड़क।—**पत्नी**—(स्त्री०) राजा की रानी, राजा की स्त्री।—**पुत्र**—(पु०) राजकुमार, राजा का लड़का, एक वर्ण संकर जाति, [राजपूत (दे०) ।—**पुरुष**—(पु०) राज्य का कर्मचारी।—**पूत**—(पु०) [रजपूत (दे०), राजा का बेटा, राजपुत्र, राजपूताने में क्षत्रियों के खास-खास वंश।—**पूताना**—(पु०) एक प्रदेश जहाँ राजपूत रहते है (भारत)।—**प्रासाद**—(पु०) राज-महल, राज-वेश्म, राजसदन।—**बाड़ी**—(स्त्री०) राज-वाटिका, राजप्रासाद।—**बाहा**—(पु०) सबसे बड़ी नहर जिससे कई छोटी-छोटी नहरें निकली हों, [रजबहा (दे०) ।—**भक्त**—(वि०) राज्य या राजा में भक्ति करने वाला। [**राजभक्ति (संज्ञा, स्त्री०)**]।

—भक्ति–(स्त्री०) राज्य या राजा के प्रति श्रद्धा या प्रेम।—भवन–(पु०) [राजभौन (दे०)], राजा का महल, राज-मन्दिर, राज-प्रासाद, राज-सदन। "राजभवन की शोभा न्यारी"—कुं वि०। —भोग–(पु०) दोपहर का नैवेद्य, एक महीन धान।—मंडल–(पु०) किसी राज्य के आस पास के राज्य, राजाओं की सभा, समिति या समूह।—मंदिर–(पु०) राजभवन, राजसद्म, राजमहल। —महल–(पु०) राज-भवन, राजमन्दिर, मंथाल परगने का एक पहाड़।—मार्ग–(पु०) चौड़ी और बड़ी सड़क, शाही सड़क, राजपथ।—यक्ष्मा–(पु०) यक्ष्मा या क्षय रोग, तपेदिक, राजरोग। —योग–(पु०) वह योगक्रिया जो पतञ्जलि के योग दर्शन में बताई गई है (योग), जन्म-कुन्डली में राज करने वाले ग्रहों का योग (ज्यो०)।— —राज–(पु०) कुबेर, चंद्रमा, सम्राट्। "यक्षहिं विलोकि कोपि राजराज श्राप दियो"—[स्फु०]। —राजेश्वर–(पु०) राजराजेश, महाराजा, महाराजाधिराज, राजाओं का राजा। "राजराजेस के राजा आये यहाँ"—[रामा०]। [राजराजेश्वरी (स्त्री०)]।—राणी,—रानी–(स्त्री०) महारानी, राजा की रानी, राजमहिषी।—रोग–(पु०) यक्ष्मा या क्षय रोग, गहन और असाध्य रोग (वैद्य०]। —लक्ष्मी–(स्त्री०) राजश्री, राजवैभव, राज की शोभा या कांति।—लोक–(पु०) राज-महल। "केशव बहुराय राज राजलोक देखा"—केशव०। —वंत–(वि०) नृप कर्मयुक्त, राजयुक्त।—वंश–(पु०) राजा का कुटुम्ब या कुल, राज-कुल।—वर्त्म–(पु०) राज-पथ, राज-मार्ग।—वार–(पु०) राजद्वार।—विद्रोह–(पु०) राज-द्रोह, बगावत, गदर।—शासन–(पु०) राजा की हुकूमत, राज-दंड।—श्री–(स्त्री०) राज-लक्ष्मी, [राजसिरी (दे०)]। "चमू रघुनाथ जू की राजश्री विभीषण की रावण की मीच दर कूच चलि आई है"—[रामा०]।—संसद्–(पु०) राज-सभा, राजदरबार। —सत्ता–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राज-शक्ति, राज्य की सत्ता।—सभा–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) राजा का दरबार, राजाओं की सभा। "राज-सभा मान देय घर को घटावे ना"—विज०।—समाज–(संज्ञा, पु०, सं०) राजाओं का समाज या दरबार, राजमंडल, राजसभा। "राजसमाज विराजत रूरे" —[रामा०]।—सारस–(संज्ञा, पु०, सं०) मोर, मयूर।—सिंहासन–(संज्ञा, पु०, सं०) राजा के बैठने का सिंहासन, राजगद्दी, राजासन। —सिरी*–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० राजश्री] राजश्री, राज-लक्ष्मी।—सूर्य–(संज्ञा, पु०, सं०) चक्रवर्ती सम्राट् के करने योग्य यज्ञ, जिसमें अन्य राजा सेवक बनते हैं।—स्थान–(संज्ञा, पु०, सं०) राजपूताना, राजा का स्थान। (संज्ञा, वि०) राजस्थान की भाषा। [राजस्थानी (स्त्री०)]। —हंस–(संज्ञा, पु०, सं०) एक बड़ा हंस, सोना पक्षी। [राजहंसी (स्त्री०)]। "राज हंस बिन को करै, क्षीर नीर को दोष"—[नीति०]।

राज़—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) रहस्य, भेद।

राजकीय—(वि०, सं०) राजा या राज्य सम्बन्धी, राजा का।—महासभा–(स्त्री०) राजा की सभा, राज-दरबार, शाह-दरबार।

राजत्—(वि०) चाँदी-सम्बन्धी या रजत-निर्मित।

राजत्व—(पु०) राजा का पद, राजा का शासन, राजा का भाव या कार्य्य।

राजना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० राजन] शोभित या विराजमान होना, रहना, उपस्थित होना। "राजन राजसमाज मह, कौसल-भूप-किसोर"— [रामा०]।

राजन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा, क्षत्रिय। "मन्त्र हीनश्च राजन्यः शीघ्रं नश्यति न संशय"— [चा० नी०]।

राजमान—(वि०) विराजमान, बैठा हुआ। "राज-मान जलजान उपरि दोउ कान्ह भानु की नन्दिनी' —श्रीभट्ट०।

राजर्षि—(पु०) राजवंशीय या क्षत्रिय जाति का ऋषि, तपोबल से ऋषि हुआ राजा।

राजस—(वि०, सं०) रजोगुण, रजोगुणी, रजोगुणोत्पन्न। (संज्ञा, पु०) कोप, आवेश। [राजसी (स्त्री०)]।

राजसिक—(वि०, सं०) रजोगुणी, रजोगुणोत्पन्न।

राजसी—(वि०, हिं०) राज के योग्य, राजाओं का-सा, बहुमूल्य।

राजस्व—(संज्ञा, पु०, सं०) राज-कर।

राजा— संज्ञा, पु०) [सं० राजन्] नृप, भूपाल, प्रभु, स्वामी, अधिपति, किसी देश या समाज का मुख्य शासक और रक्षक, मालिक, अंग्रेजी सरकार से बड़े रईसों को मिलने वाली एक उपाधि, प्रिय, पति, सुन्दर (व्यंग-आधु०) (स्त्री० सं०) [राणी हि०] रानी। "रविरिव राजते राजा"—[च० व्या०]।

राजाज्ञा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा का आदेश या हुक्म ।

राजाधिराज—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्राट्, शाहंशाह, राजेश्वर, राजाओं का राजा ।

राजानक—(संज्ञा, पु०, सं०) संस्कृत-काव्य शास्त्र के एक प्रमुख लेखक, राजानक रुय्यक (सं०) आधीन राजा ।

राजाभियोग—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रजा की इच्छा के विरुद्ध राजा का कार्य्य करना ।

राजावर्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०) लाजवर्त नामक एक उपरत्न, [लाजवर्द (दे०)] ।

राजि, राजी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अवलि, पाँति, पंक्ति, श्रेणी, कतार, रेखा, राई । "शुचिव्यपाये वन-राजि पल्वलम्"—रघु० ।

राजिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राई, पंक्ति, रेखा, लकीर, श्रेणी ।

राजित—(वि०, सं०) शोभित, विराजित ।

राजिव*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजीव] कमल, राजीव । "भरि आये दोउ राजिव नैना" —[रामा०] ।

राजी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पंक्ति, श्रेणी । "राजीव राजीवश लोलभृङ्ग"—माघ० ।

राजी—(वि०, अ०) सुखी, खुश, प्रसन्न, सम्मत नीरोग, अनुकूल, कही बात के मानने मे तैयार, [राजी (दे०)] ।—**खुशी**-क्षेम कुशल ।

राजीनामा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) स्वीकृति वा सम्मति पत्र, अनुकूलता का लेख, वादी प्रतिवादी की परस्पर एकता या मेल का लेख ।

राजीव—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल । "राजीव-लोचन स्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी"— [रामा०] ।—**गण**-(पु०) १८ मात्राओं का एक छंद (पिं०) ।

राजुक—(संज्ञा, पु०, सं०) मौर्य्य वंशीय राजाओं के समय का सूबेदार या राज-कर्मचारी ।

राजेन्द्र, राजेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) राजाओं का प्रधान, राजाओं का मुखिया, राजाधिराज, राजेश । [**राजेश्वरी** (स्त्री०)] ।

राजोपजीवी—(संज्ञा, पु०, सं०) राज-कर्मचारी ।

राज्ञी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रानी, राज महिषी, सूर्य्य की स्त्री, संज्ञा ।

राज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा का कार्य्य, शासन, एक राजा से शासित देश ।—**तंत्र**-(पु०) राज्य की शासन-रीति । [प्रजातंत्र (विलो०)] ।—**व्यवस्था**-(स्त्री०) राज्य नियम, कानून, राजनीति, राज्यविधान ।

राज्याभिषिक्त—(वि०, सं०) जिसका राज्य-प्राप्ति के निमित्त अभिषेक हुआ हो ।

राज्याभिषेक—(संज्ञा, पु०, सं०) राजसूय यज्ञ में या राजसिंहासन पर बैठते समय राजा का अभिषेक या तिलक, राजगद्दी पर बैठने की रीति, राज्य-प्राप्ति, राज्यारोहण ।

राट्—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा, सरदार, श्रेष्ठ पुरुष ।

राटुल—(संज्ञा, पु०, दे०) सबसे बड़ा तराजू जो लट्ठों में टाँगा जाता है, तख (प्रान्ती०) ।

राठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राष्ट्र] राज्य राजा ।

राठौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राष्ट्रकूट] दक्षिणी भारत का एक राज-वंश, क्षत्रियों की एक जाति ।

राढ़—(वि०, दे०) [हि० राढ़] नीच, निकम्मा, भगोड़ा, डरपोक, कायर ।

राढ़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० राटि] रार, लड़ाई, झगड़ा कादर, कायर, निकम्मा ।

राढ़ि—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तरीय बंगाल देश का भाग ।

राढ़ी—(संज्ञा, पु०, दे०) राढ़ देशीय ब्राह्मण ।

राणा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राट्] राज, [राना (दे०)] ।

राणी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० राज्ञी) रानी ।

रात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रात्रि] दोषा, त्रियामा, निशा, यामिनी, रात्रि, रजनी, राति, संध्या से प्रभात तक का समय ।—**दिन**-(अ०) हमेशा, सर्वदा ।

रातड़ी, रातरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रात्रि] रात, रात्रि ।

रातना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रक्त] लाल रँग से रँग जाना, रंगा जाना, आसक्त होना ।

राता*—(वि०, दे०) [सं० रक्त] लाल, सुर्ख, रंगीन, रँगा हुआ, अनुरक्त, आसक्त । "राग रंग राता पुरुष, रंग-राती है नारि"—[स्फु०] ।

राति—(संज्ञा, स्त्री०) रात ।—**चर***-(पु०) निशाचर, राक्षस ।

रातिब—(संज्ञा, पु०, अ०) पशुओं का भोजन ।

रातुल—(वि०, दे०) [सं० रक्तालु] लाल, सुर्ख।

रात्रि—(संज्ञा, पु०, सं०) रात, निशा, यामिनी, रजनी। **—चारी**-(पु०) निशाचर, निश्चर, राक्षस। (वि०) रात में चलने या खाने वाला। [**रात्रिचारिणी** (स्त्री०)]।

राद्ध—(वि०, सं०) सिद्ध किया या पकाया हुआ।

राध—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सिद्धि, साधन। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) मवाद, कान की पीब। (संज्ञा, पु०, सं०) धन।

राधन—(संज्ञा, पु०, सं०) साधना, मिलना, सन्तोष, प्राप्ति, साधन, तुष्टि।

राधना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० आराधना] पूजा या आराधना करना, सिद्ध या पूर्ण करना, काम निकालना।

राधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राधिका, वृषभानुपुत्री और कृष्ण प्रिया, धनियाँ, बैसाख की पूर्णमासी, बिजली, प्रेम, प्रीति, वर्णिक वृत्त (पिं०)। "मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागर सोय"—वि०। **—रमण**-(संज्ञा, पु०, सं०) राधापति, राधाप्रिय, श्रीकृष्ण जी। **—वल्लभ**-(संज्ञा, पु० सं०) राधा-कान्त, श्री कृष्ण जी, राधावर। "राधा-वल्लभ राधिका, नाम लेन को दोय"—कु० वि०। **—वल्लभी, वल्लभीय**-(संज्ञा, पु०, सं०) एक वैष्णव सप्रदाय।

राधाष्टमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भाद्रपद-शुक्ल अष्टमी।

राधिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृष्ण कान्ता, कृष्ण-प्रिया, राधा जी, वृषभानु-पुत्री। २२ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)।

रान—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) जाँघ, जंघा।

राना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राट्] राणा। (क्रि० अ०, दे०) [हि० राचना] अनुरक्त होना।

रानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० राजा] राजा की स्त्री, स्वामिनी, मालकिन। **—काजर**-(पु०) एक भाँति का धान।

राब—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० द्रावक] औटा कर गाढ़ा किया गन्ने का रस, गीला गुड़।

राबड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रबड़ी] औटा कर गाढ़ा किया दूध।

राम—(संज्ञा, पु० सं०) ["रमन्ति साधवः यस्मिन्"] ईश्वर, विष्णु के दशावतारों में से एक, अवध-नरेश रघुवंशीय राजा दशरथ के बड़े कुमार श्रीरामचंद्र, परशुराम, बलराम। "वन्दौं राम नाम रघुबर के"—[रामा०]। **—कहानी**-(स्त्री०) दुख भरी या बड़ी कथा। **—कली**-(स्त्री०) एक रागिनी (संगी०)। **—गिरि**-(पु०) रामटेक, नागपुर के पास की एक पहाड़ी। "राम गिर्याश्रमेषु"—[मेघ०]। **—गीती**-(पु०) एक मात्रिक छंद जिसमें छत्तीस मात्रायें होती है (पिं०)। **—चंद्र**-(पु०) राजा दशरथ के ४ पुत्रों में से सर्वश्रेष्ठ और ज्येष्ठ पुत्र जो विष्णु के प्रमुख अवतारों में माने जाते हैं। **—जना**-(पु०) एक वर्ण-संकर जाति जिसकी कन्यायें वेश्या-वृत्ति करती है। [**रामजनी** (स्त्री०)]। **—जनी**-(स्त्री०) हिन्दू वेश्या। **—टेक**-(पु०) नागपुर के जिले की एक पहाड़ी, रामगिरि। **—तरोई**-(पु०) भिंडी। **—तारक**-(पु०) राम जी का मंत्र (ॐ रां रामाय नमः)। **—दल**-(पु०) रामचंद्र जी की बानरी सेना, अति बड़ी और प्रबल सेना जिससे लड़ना दुस्तर हो। **—दाना**-(पु०) चौराई या मरसे-सा एक पौधा जिसके दाने बहुत छोटे होते हैं। **—दास**-(पु०) हनुमान जी, महाराज शिवाजी के गुरु। **—दूत**-(पु०) हनुमान जी। "रामदूत मैं मातु जानकी"—[रामा०]। **—धनुष**-(पु०) इन्द्र-धनुष। **—धाम**-(पु०) वैकुंठ, साकेत लोक। **—नवमी**-(स्त्री०) चैत्र शुक्ल नवमी, [रामनौमी (दे०)]। **—नामी**-(पु०) राम नाम छपा वस्त्र, एक प्रकार के साधु, गले का एक गहना, एक प्रकार की माला। **—फल**-(पु०) शरीफा, सीताफल। **—बाँस**-(पु०) एक मोटी जाति का बाँस, केतकी या केवड़े का-सा एक पौधा जिसके पत्तों के रेशों से रस्से बनते है, हाथी चिग्घार (प्रान्तो०)। **—रज**-(स्त्री०) माधुओं की तिलक लगाने की पीली मिट्टी। **—रस**-(पु०) नमक, नोन। **—राज्य**-(पु०) राम का राज्य, प्रजा के लिए अति सुखद राज्य या शासन, [रामराज (दे०)]। "राम राज्य काहू नहिं ब्यापा"—[रामा०]। **—लीला**-(स्त्री०) राम-चंद्र जी का चरित्र या उसका नाटक या अभिनय। **—बाण**-(वि०) सद्यः सिद्ध, तुरन्त प्रभाव दिख-लाने वाली अमोघ औषधि, लाभदायक, उपयोगी औषधि, अचूक दवा। (पु०) रामशर, रामसायक। **—शर**-(पु०) एक प्रकार का सरकंडा या नर-सल, राम का बाण। **—सनेही**-(पु०) वैष्णवों का एक संप्रदाय। (वि०) राम का प्रेमी, राम का भक्त। **—सुंदर**-(स्त्री०) एक तरह की नाव।—

सेतु-(पु०) रमेश्वर के पास समुद्र पर रामचंद्र का बनवाया हुआ पुल या वहाँ के पत्थर-समूह। मुहा०—शरण होना-विरक्त या साधु होना, मर जाना।—राम करना-भगवान का नाम जपना, अभिवादन या प्रणाम करना।—राम करके-बड़ी कठिनता से।—राम सत्त हो जाना-मर जाना। —राम-प्रणाम, घृणा-जुगुप्सा सूचक। आत्मा, ईश्वर, भगवान, एक मात्रिका छंद (पिं०) ३ की संख्या।

रामता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रामपन, राम का गुण, अभिरामता, सुन्दरता।

रामति*†—(संज्ञा, पु०) [हिं० रमन] भिक्षार्थ इधर-उधर घूमना।

रामा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दर स्त्री, सीता, राधा, लक्ष्मी, रुक्मिणी, नदी, इन्द्रवज्रा और उपेन्द्र-वज्रा से मिलकर बना एक उप-जाति वृत्त, आर्य्या-छंद का १७ वाँ भेद, आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०)। लो०—"सौंदर्य्यं दूरी कृत राम रामे कषायकः कास-समीर सर्ग:"।

रामानद—(संज्ञा, पु०, सं०) रामावत (रामानंदी) नामक एक प्रसिद्ध वैष्णव मत के आचार्य्य (१४ वीं शताब्दी वि०) कबीर इन्हीं के चेले थे।

रामानंदी—(वि०) [सं० रामानंद+ई प्रत्य०] रामानंद के सम्प्रदाय वाला साधु।

रामानुज—(संज्ञा, पु०, सं०) श्री वैष्णव सम्प्रदाय के एक विख्यात-मत-प्रवर्तक आचार्य्य जिन्होंने वेदान्त दर्शन पर भाष्य किया है, इनका वेदान्त-वाद विशिष्टाद्वैत कहलाता है।

रामायण—(संज्ञा, पु०, सं०) आदि कवि महर्षि वाल्मीकि कृत आदिकाव्य (संस्कृत रामायण) जिसमें राम-चरित्र का वर्णन किया गया है। तुलसीकृत रामचरित मानस (भाषा-रामायण)। "रामायण महा माला रत्नं वंदेऽनिलात्मजं"—तुलसी०।

रामायणी—(वि०, दे०) [सं० रामायणीय] रामायण संबंधी, रामायण का। (संज्ञा, पु०) [यौ० रामायण+ई प्रत्य०] रामायण की कथा कहने वाला।

रामायुध—(संज्ञा, पु०, सं०) धनुष।

रामावत—(संज्ञा, पु०, सं०) आचार्य रामानंद का चलाया एक वैष्णव मत या संप्रदाय।

रामिल—(संज्ञा, पु०, सं०) पति, कामदेव।

रामेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण भारत में समुद्र तट के मंदिर का शिवलिंग तथा वह स्थान, [रामेसुर (दे०)] "जे रामेश्वर दर्शन करिहैं"। —[रामा०]।

रामेषु—(संज्ञा, पु०, सं०) रामबाण नाम का एक पौधा।

रामोपनिषद्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक उपनिषद जो अथर्ववेद के अन्तर्गत है।

राम्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात्रि, रजनी।

राय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजा] राजा, सामंत, सरदार, बंदीजनों या भाटों की पदवी। "राय राजपद तुम कहँ दीन्हा"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) परामर्श, सम्मति, अनुमति, सलाह, मत।—भोग-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजभोग] राजभोग, दोपहर का भोजन या नैवेद्य। —मानिया-(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का चावल [रैमुनियाँ (दे०)]।—रासि-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० राजाराशि] राजा का कोष, शाही खजाना (फा०)।—साहब, बहादुर-उपाधियाँ (अंग्रेज-सरकार)।

रायज—(वि०, अ०) प्रचलित, चलनसार, जिसका रिवाज हो।

रायता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजिकाक्त] नमकीन दही में पड़ा हुआ शाकादि, [रइता, रैता, रौता (दे०)]।

रायसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० रासो] पृथ्वी राजरासो, [रासा (दे०)]। *(संज्ञा, पु०) [प्रान्ती] झगड़ा, रैसा।

रार, रारि—(संज्ञा, दे०) [सं० राटि] तकरार, झगड़ा, टंटा, बखेड़ा। [रारी (वि०)]।

राल—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक विशेष बड़ा पेड़, इस पेड़ का गोंद या निर्यास, धूप। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लाला] पतला लसीला थूक, [लार (दे०)]। मुहा०—गिरना, चूना या टपकना-किसी पदार्थ के लेने की लालसा होना।

राव, राउ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजा] राजा, राय, भाट। "राव राम राखन हित लागी"—[रामा०]।—बहादुर,—साहब-उपाधियाँ (अंग्रेजी सरकार)।

रावटी, राउटी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० रावट] कपड़े का छोटा घर, जैसा डेरा, छौलदारी, बारादरी,

एक प्रकार का पत्थर। "रिमझिम बरसै मेघ कि उँची रावटी"—[जन०]।

रावण—(संज्ञा, पु०) [सं० रावयतीति रावणः] लंका का दस सिर और २० भुजा वाला एक परम प्रसिद्ध राक्षस नायक या राजा, दसानन, दशकंधर, [रावन, रावना (दे०)]।

रावणि—(संज्ञा, पु०, सं०) रावण का पुत्र, मेघनाद [रावणी (दे०)]।

रावत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजपुत्र] छोटा राजा, शूरवीर, बहादुर, सरदार, सामंत, [राउत (दे०)], एक क्षत्रिय जाति।

रावन—(संज्ञा, पु०) देखिए—रावण।—**गढ़***—(पु०) रावण का किला, लंका गढ़।

रावन*—(क्रि० स०) [सं० रावण] रुलाना।

रावर, रावरा, रावरो—(सर्व० दे०) [राउर (अव०), आपका। [**रावरी** (स्त्री०)]। "रावरो बावरो नाह भवानो"—विन० [वि० प०] (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजपुर] रनिवास, राजमहल, अन्तःपुर।

रावल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजपुर] राजमहल, रनिवास, अंतःपुर (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राजुल] सरदार, प्रधान, मुखिया, राजा, राजा की उपाधि (राजपूताना)। [**रावलि, रावली** (स्त्री०)]।

रावी—(संज्ञा, स्त्री०) पंजाब की पंच नदियों में से एक।

राशि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समूह, ढेर, पुंज, किसी का उत्तराधिकार, क्रांतिवृत्त के बारह तारा-समूह जो मेष, वृष, मिथुन, कर्क सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ और मीन कहाते हैं, [राशी (दे०)]।—**चक्र**–(पु०) मेषादि बारह राशियों का मंडल या चक्र, भचक्र।—**नाम**–(पु०) किसी मनुष्य का वह नाम जो उसकी राशि के अनुसार रखा जावे।

राशीश—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी राशि का स्वामी ग्रह, राशिपति राशीश्वर।

राष्ट्र—(संज्ञा, पु०, सं०) राज्य, देश, प्रजा, किसी राज्य या देश के निवासी लोगों का समुदाय।—**कूट**–(पु०) राठौर।—**तंत्र**–(पु०) राज्य-शासन-रीति या प्रणाली।—**पति**–(पु०) जनता का चुना हुआ प्रधान राज्य-शासक (आधु० प्रजातं०)। [प्रेसिडेंट]—**वासी**–(पु०) राष्ट्र में रहने वाला, विदेशी।—**विप्लव**–(पु०) विद्रोह।

राष्ट्रिय—(संज्ञा, पु०, सं०) राष्ट्रपति।

राष्ट्रीय—(वि०, सं०) राष्ट्र-संबंधी, राष्ट्र का, अपने राष्ट्र या देश का।

रास—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्राचीन काल की एक क्रीड़ा जिसमें मंडल बाँध कर नाचा जाता था, एक प्रकार का नाटक जिसमें श्रीकृष्ण जी की रास-लीला होती है, [रहस (दे०)]। (संज्ञा, स्त्री०, अ०) बाग-डोरी, लगाम। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० राशि] ढेर, समूह, [रासि (दे०)], एक छंद (पिं०), पशुओं का झुंड, जोड़, दत्तक पुत्र, ब्याज। (वि०) [फ़ा० रास्ता] अनुकूल। "घोड़े की सवारी तो उन्हें रास नहीं है"—मोर०।

रासक—(संज्ञा, पु० सं०) हास्य रस का एकाङ्की नाटक (नाट्य०)।—**धारी**–(संज्ञा, पु०) [सं० रासधारिन्] वह अभिनय-कर्त्ता जो श्रीकृष्ण जी के चरित्र या रास-लीला दिखलाता हो।

रासना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रास्ना] रास्ना नाम की औषधि।

रासभ—(संज्ञा, पु०, सं०) खच्चर, गर्दभ, गधा, अश्वतर। "पुरोडास चह रासभ पावा"—[रामा०]। [**रासभी** (स्त्री०)]।—**मंडल**–(पु०) रासलीला, करने वालों की मंडली रासधारियों का अभिनय।—**लीला**—(स्त्री०) कृष्ण-लीला का नाटक या अभिनय।

रासायनिक—(वि०, सं०) रसायन शास्त्र-संबंधी, रसायन-शास्त्र का ज्ञानी, [रसायनिक (दे०)]।—**शाला**–(स्त्री०) रसायन-शास्त्र सम्बन्धी परीक्षण स्थान।

रासि, रासी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० राशि] राशि।

रासी—(संज्ञा, पु०, दे०) मध्यम।

रासु*†—(वि०, दे०) [फा० रास्त] ठीक, सीधा, सरल।

रासेस्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राधा।

रासो, रासौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रहस्य] किसी राजा का जीवन-चरित्र जिसमें उसकी विजय और वीरतादि का वर्णन पद्य में हो।

रास्त—(स्त्री० फ़ा०) सीधा, सरल, ठीक, उचित।—**गोई**–(संज्ञा, स्त्री०) सिधाई।

रास्ता—(संज्ञा, वि०, फ़ा०) राह, पथ, मार्ग, मुहा०—देखना-मार्ग (पथ) देखना, प्रतीक्षा करना, बाट जोहना, आसरा देखना ।—(ते) पर आना (लाना)-उचित रीति से कार्य करने लगना (सुधारना) ।—पकड़ना (लेना नापना) -चल देना, चले जाना—बताना-टालना, चलता करना, सिखाना, तरकीब बताना। रास्ते पर लगाना—सुधार देना, उचित कार्य करने की ओर प्रवृत्त करना। चाल, प्रथा रीति, उपाय।

रास्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सचाई, सिधाई, "रास्ती मौजिबे रजाये खुदास्त"—सादी०।

रास्ना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रासना नामक औषधि। "रास्ना नागर लंग मूल हुत भुक् दारु अग्नि मंथै समैः—[लो० रा०]।

राह—(संज्ञा, सं०, पु०) [सं० राहु] राहुग्रह। (संज्ञा, स्त्री०, फा०) रास्ता, मार्ग, पंथ, बाट। —खर्च-(पु०) मार्ग-व्यय, सफर-खर्च।—गीर-(पु०) यात्री, बटोही, पथिक, [राही (दे०)]। —चलता-(पु०) बटोही, पथिक, राही, अनजान। —चौरगी†-(स्त्री०) चारों ओर को जाने वाला मार्ग या रास्ता,—ज़न-(पु०) बटमार, डाकू। [राहज़नी (संज्ञा, स्त्री०)] ।—दारी-(स्त्री०) सड़क का कर या महसूल, रास्ता चलने का कर, चुंगी, महसूल। [परवाना-राहदारी (यौ०)] किसी रास्ते से जाने या माल ले जाने का आज्ञा-पत्र।—रीति-(स्त्री०) व्यवहार, संबंध, रीति-रस्म। मुहा०—(अपनी)—आना, (अपनी)—जाना-अपने मतलब से मतलब रखना।—देखना या ताकना-बाट जोहना, औसेर करना, परखना, प्रतीक्षा करना, मार्ग (पत्र) देखना।—पड़ना-डाका पड़ना।—लगाना-रास्ते लगाना, लूट पड़ना। प्रणाली, चाल, प्रथा, नियम। (संज्ञा, स्त्री०, दे० [सं० रोहिष] रोहू मछली।

राहत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सुख आराम।

राहना*‡—(क्रि० अ०, दे०) [हि० रहना] रहना।

राहा—(संज्ञा, पु०) मिट्टी का चबूतरा।

राहिन—(संज्ञा, पु०, अ०) बन्धक या रेहन रखने वाला।

राही—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) यात्री, बटोही, पथिक। मुहा०—करना-टाल देना, चलता करना।—होना-चल देना।

राहु—(संज्ञा, पु०, सं०) ९ ग्रहों में से एक ग्रह (ज्यो०)। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० राघव] रोहू मछली।—ग्रस्त-(पु०) सूर्य या चंद्र-ग्रहण। —ग्रास-(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य या चंद्र-ग्रहण।

राहुल—(संज्ञा, पु०, सं०) महात्मा बुद्ध का पुत्र।

रिंगन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रिंगण] रेंगना, चलना। [रिंगना (क्रि० अ०, दे०)], [रिंगाना (प्रे० रूप)]।

रिंद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) धार्मिक बंधनों का न मानने वाला व्यक्ति, मनमौजी, स्वच्छंद।

रिंदा—(वि०) [फ़ा० रिंद] निरंकुश, मनमौजी, उद्दंड, स्वच्छंद।

रिआयत, रियायत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) नरमी, नम्रता, दया पूर्ण व्यवहार, ध्यान, विचार, न्यूनता, कमी। [रिआयती (वि०)]।

रिआया, रियाया—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रजा, [रैय्यत (दे०)]।

रिकवँछ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) उर्द की पीठी और अरुई के पत्तों से बना सालन।

रिकशा—(संज्ञा, पु०, अं०) साइकिल की तरह तीन पहिये की गाड़ी जिसे आदमी खींचता है।

रिकाब—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० रकाब] घोड़े की जीन का पावदान, पैकड़ा, रकाब।

रिक्त—(वि०, सं०) खाली, शून्य, रीता, कंगाल, निर्धन।

रिक्तता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शून्यता।

रिक्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चौथ, नवमी चतुर्दशी तिथियाँ।

रिक्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) बरासत में मिली जायदाद।

रिख, रिच्छ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऋक्ष] रीछ, भालू, नक्षत्र, तारागण।

रिखा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जूँ का अंडा, लीख।

रिखभ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऋषभ] सात स्वरों में से एक स्वर (संगी०)।

रिग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऋग्] एक वेद।

रिचा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऋग्वेद का मंत्र विशेष।

रिच्छ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऋक्ष] रीछ, भालू। "विग्रहानुकूल सब लच्छ लच्छ रिच्छबल,

रिच्छराज मुखी मुख केशवदास गाई है"—[रामा०]।

रिज़क—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० रिज्क] जीवन-वृत्ति, जीविका, रोजी। "फ़िक्र रोजी है तो है रिज़्क का रज्ज़ाक कुफ़ील"—ज़ौक़।

रज़ाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० रज़ील=नीच] रज़ालपन, निर्लज्जता।

रिजु—(वि०, दे०) ऋजु (सं०) सीधा।

रिझकवार, रिझवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० रीझना + वार] रूप या किसी बात पर प्रसन्न या मोहित होने वाला, अनुरागी, गुणग्राहक।

रिझवार, रिझवैया—(किसी विशेष गुण, सुन्दरता आदि पर) रीझने वाला, अनुरागी, प्रेमी।

रिझाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० रंजन] किसी को अपने ऊपर खुश कर लेना, अनुरक्त या प्रेमी बनाना।

रिझायल*†—(वि०, दे०) [हिं० रीझना] रीझने या प्रसन्न होने वाला।

रिझाव—(संज्ञा, पु०) [हिं० रीझना + आव प्रत्य०] रीझने का भाव। (क्रि० स०) [हिं० रिझाना] प्रसन्न करो। "रिझाव मोहिं राजपुत्र राम ले छुड़ाय कै"—[राम०]।

रिझावना*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० रिझना] रिझाना, प्रसन्न करना। [**रिझावनि** (संज्ञा, स्त्री०)]।

रित, रितु—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ऋतु] मौसिम, ऋतु। "बरसा बिगत सरद रितु आई"—[रामा०]।

रितवना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० रीता] खाली या रिक्त करना।

रिधम—(संज्ञा, पु०, सं०) बसंत। प्रेम।

रिध्दि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऋद्धि] ऋद्धि, एक औषधि, ऐश्वर्य, बढ़ती, संपत्ति।

रिनिआँ, रिनियाँ रिनी—(वि०, दे०) [सं० ऋण] ऋणी, कर्जदार। **लो०**—"टूटे रिनियाँ घरै मवास"।

रिपुंजय—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रु-विजयी, अरिंदम।

रिपु—(संज्ञा, पु०, सं०) बैरी, शत्रु। "रिपुसन करेहु बतकही सोई"—[रामा०]।—**सूदन**—(पु०) शत्रुघ्न, रिपुहा। (वि०) शत्रु का नाशक। "भवन भरत रिपुसूदन नाहीं"—[रामा०]।

रिपुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शत्रुता, बैर।

रिपुहा—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रुघ्न, रिपुसूदन। (वि०) बैर का नाशक।

रिमझिम—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) छोटी-छोटी बूँदें लगातार गिरना, रिमिक-झिमिक।

रियासत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) राज्य, हुकूमत, ऐश्वर्य, अमीरी, वैभव। [**रियासती** (वि०)]।

रिर*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रार] हठ, जिद।

रिरना†—(क्रि० अ०, अनु०) गिड़गिड़ाना, ररना।

रिरहा*—(वि०) [हिं० रिरना] अति दीनता से गिड़गिड़ा कर माँगने वाला।

रिलना*†—(क्रि० अ०) [हिं० रेलना] घुसना, मिल जाना, पैठना।

रिवाज़—(संज्ञा, पु०, अ०) रीति, रस्म, प्रथा, प्रणाली।

रिश्ता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नाता, सम्बन्ध, लगाव।—(ते) **दार**-(पु०) नातेदार, संबंधी। [**रिश्तेदारी** (स्त्री०)] संबंध।

रिश्वत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) घूस, अंकोर, उत्कोच (सं०)। [**रिश्वती** (वि०)]।—**खोर**-(पु०) घूस लेने वाला।

रिष्ट*—(वि०, दे०) [सं० हृष्ट] मोटा-ताजा, खुश, (संज्ञा, पु०, अ०) कलाई।

रिष्यमूक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऋष्यमूक] दक्षिण देश का एक पहाड़, [रीषमूक, रीखमूक (दे०)], "रिष्यमूक पर्वत नियराई"—[रामा०]।

रिस, रिसि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रुष] क्रोध, गुस्सा। "अस रिस होय दसौ मुख तोरौ"—[रामा०]।

रिसना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० रसना] छन छन कर बाहर निकलना, धीरे धीरे बहना।

रिसवाना†—(क्रि० स०) [हिं० रिसाना] क्रोधित करना, क्रोध दिलाना।

रिसहा†—(वि०, दे०) [हिं० रिस] क्रोधी।

रिसहाय†—(वि०) [हिं० रिस] क्रुद्ध, कुपित, नाराज। [**रिसहाई** (स्त्री०)]।

रिसाना†—(क्रि० अ०) [हिं० रिस] क्रोधित या कुपित होना। (क्रि० स०) किसी पर कुपित होना या बिगड़ना। "टूट चाप नहिं जुरत रिसाने"—[रामा०]।

रिसाल†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० इरसाल] राज्य-कर ।

रिसालदार†—(फ़ा०) घुड़सवार सेना का एक अफसर या सरदार ।

रिसाला—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) घुड़सवार सेना, अश्वारोही सेना, मासिक पत्र ।

रिसि*†—(संज्ञा, स्त्री०) [दे० रिस] "रिसिवश कछुक अरुन हुई आवा"—[रामा०] ।

रिसिआना, रिसियाना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० रिस + आना प्रत्य०] कुपित या क्रोधित होना । (क्रि० स०) किसी पर क्रुद्ध होना, बिगड़ना, रिसाना ।

रिसिक*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रिषीक] तलवार, खड्ग ।

रिसौंहाँ—(वि०, दे०) [हि० रिस + औहाँ प्रत्य०] क्रोधित सा, क्रोध से भरा, रोष-सूचक ।

रिहल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पुस्तक रख कर पढ़ने की एक काठ की चौकी ।

रिहा—(वि०, फ़ा०) छुटकारा, मुक्त, छूटा हुआ । [**रिहाई** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

रींधना—(क्रि० स०, दे०) [हि० राँधना] राँधना ।

री—(अव्य०, स्त्री०, दे०) [सं० रे] सखियों का संबोधन, अरी, एरी, ओरी ।

रीछ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऋक्ष] रिच्छ, भालू ।—**राज***—(पु०) जामवंत । "रीछराज गहि चरन फिरावा"—[रामा०] ।

रीज्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भर्त्सना, घृणा ।

रीझ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रंजन] प्रसन्नता, मुग्धता । "तुलसी अपने राम कहँ, रीझ भजै कै खीझ"—तुलसी० ।

रीझना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रंजन] प्रसन्न या मुग्ध होना, अनुरक्त होना ।

रीठ*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रिष्ट] युद्ध (डिं०) तलवार, खड्ग । (वि०) अशुभ, खराब ।

रीठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रिष्ट] एक बड़ा जंगली वृक्ष, इसके बेर जैसे फल ।

रीढ़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रीढक] पीठ के मध्य की लम्बी खड़ी हड्डी, मेरुदंड, जिससे पसलियाँ जुड़ी रहती हैं ।

रीत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रीति] रीति, रस्म, रिवाज ।

रीतना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रिक्त] खाली, शून्य तथा रिक्त होना । "बूँद बूँद तें घट भरै, टपकत रीतै सोय"—वृं० ।

रीता—(वि०, दे०) [सं० रिक्त] शून्य, रिक्त । "रीते सरवर पर गये"—वृं० ।

रीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ढंग, तरह, प्रकार, परिपाटी, रिवाज, रस्म, प्रथा, ढब, नियम, प्रणाली, काव्य मे ऐसी पद-योजना जिससे माधुर्यादि गुण आते हैं, इसे काव्यात्मा मानते हैं । "रीतिरात्मा काव्यस्य", "विशिष्टा पद रचना रीतिः"—वामन ।

रीषमूक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऋष्यमूक] दक्षिण भारत का एक पहाड़ । "रीषमूक पर्वत नियराई"—[रामा०] ।

रीस, रीसि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रिस] रिस, क्रोध, कोप । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० ईर्ष्या] स्पर्द्धा, डाह, समानता ।

रीसना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० रिस] क्रोधित होना ।

रुंज—(संज्ञा, पु०, दे०) एक बाजा ।

रुंड—(संज्ञा, पु०, सं०) कबंध, बिना सिर या हाथ-पैर का धड़ । "रुंड लागे कटन पटन काल-कुंड लागे"—रत्ना० ।

रुंडिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) युद्ध-भूमि, रणांगण ।

रुँदवाना—(क्रि० स०) [हि० रूँदना, रौंदना का प्रे० रूप] पैरों से रौंदवाना, कुचलाना ।

रुंधती*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अरुंधती (स०) ।

रुंधना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रुद्ध] घिर जाना, रुकना, कहीं मार्ग न मिलना, उलझना, फँस जाना, घेरा जाना, कार्य में लगना । [**रुँधाना** (स० रूप)], [**रुँधवाना** (प्रे० रूप)] ।

रु—(अव्य०, दे०) [हि० अरु का सूक्ष्म रूप] और ।

रुश्रा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोम] रोम, लोम, रोआँ, भुवा ।

रुआना, रुवाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० रुलाना] रुलाना, रोवाना ।

रुआब—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० रोब] रोब, दाब, आतंक ।

रुई—(संज्ञा, स्त्री०) कपास का रेशा, रुल। (वि०) रुई की तरह, मुलायम।—**दार**-(वि०) जिसमें रुई भरी हो।—**की तरह धुनना**-खूब पीटना।—**सा**-रुई की तरह।

रुकना—(क्रि० अ०) [हि० रोक] अवरुद्ध होना, ठहर जाना, अटकना, स्वेच्छा या मार्गादि न मिलने से रुकना, बीच ही में चलते हुए किसी काम या क्रम का बन्द हो जाना। [**रुकाना** (स० रूप)] [**रुकवाना** (प्रे० रूप)]।

रुकमांगद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रुक्मांगद] रुक्मांगद नामक राजा।

रुकमिनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रुक्मिणी] रुक्मिणी, रुकमिनी।

रुकाव—(संज्ञा, पु०) [हि० रुकाना] रुकाने का भाव या क्रिया, रुकावट। "रुकाव खूब नहीं ताब को रवानी में"—मोमिन।

रुकुम*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रुक्म] रुक्म।

रुकुमी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रुक्मी] रुकमी।

रुक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० रुक्अः] छोटा पत्र या चिट्ठी, परचा, पुरजा, कर्ज लेने का एक लेख। [**रुक्का-पुरजा** (यौ०)]।

रुक्ख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रुक्ष] पेड़, [वृक्ष, रूख (दे०)]। (वि०) रुखा।

रुक्म—(संज्ञा, पु०, सं०) सोना, स्वर्ण, धतूरा, धस्तूर। रुक्मिणी का भाई।

रुक्मवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वृत्त, रूपवती, चंपक माला (पिं०)।

रुक्मसेन—(संज्ञा, पु०, सं०) रुक्मिणी का छोटा भाई।

रुक्मांगद—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राजा।

रुक्मिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विदर्भ-राज भीष्मक की कन्या जो श्रीकृष्ण जी की प्रधान पटरानी थी।

रुक्मी—(संज्ञा, पु०) [सं० रुक्मिन्] राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र, रुक्मिणी का भाई।

रुक्ष—(वि०, सं०) चिकनाहट-रहित, खुरदरा, नीरस, रूखा, शुष्क, सूखा।

रुक्षता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) रुखाई रुक्षत्व।

रुख—(संज्ञा, पु०, अ०) आकृति, कपोल, मुँह, चेष्टा, गाल, कृपा की दृष्टि, मुखाकृति से प्रगट मन की इच्छा, आगे या सामने का भाग, शतरंज मे हाथी नामक मोहरा। (क्रि० वि०) ओर, तरफ सामने।

रुखसत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) विदा, परवानगी, छुट्टी, आज्ञा, प्रस्थान, अवकाश, प्रयाण, काम से छुट्टी। (वि०) जो कहीं से चल दिया हो।

रुखसती—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० रुखसत] विदाई, विशेष करके वधू की विदाई।

रुखाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० रूखा + आई प्रत्य०] शुष्कता, खुश्की, रूखा होने का भाव, रुखावट, रूखापन, शीलत्याग, बेमुरौवती।

रुखाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० रूखा] रूखा या नीरस होना, सूखना।

रुखानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रोक + खनित्र] बढ़ैयों का एक हथियार।

रुखावट—(संज्ञा, स्त्री०) रुखाई।

रुखिता*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रुषिता] मान वाली या मानिनी नायिका (सा०)।

रुखिया—(संज्ञा, स्त्री०) पेड़ों से ढकी हुई धरती।

रुखुदी—(संज्ञा, स्त्री०) भुना चना, चबैना।

रुखौंहाँ—(वि०, दे०) [हि० रूखा + औंहाँ प्रत्य०] नीरस, रुखाई युक्त, रुखाई लिये हुए, रूखासा। [**रुखौंही** (स्त्री०)]।

रुग्ण—(वि०) बीमार, रोगी, रुग्ण, मरीज। [**रुग्नता, रुग्णता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

रुग्दाह—(संज्ञा, पु०, सं०) सन्निपात का बुखार, वह बुखार जिसमें रोगी बकझक करता है और उसमें बड़ी ही पीड़ा के कारण व्याकुलता रहती है।

रुच*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रुचि] रुचि। (क्रि० वि०, दे०), **रुचकै**—रुचिपूर्वक भलीभाँति।

रुचक—(वि०, सं०) सुस्वाद। (संज्ञा, पु०) कबूतर, माला, एक प्रकार का नींबू, चौखूटा खंभा रोचना।

रुचना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रुचि + ना प्रत्य०] अच्छा लगना, रुचि के अनुकूल होना, भला लगना।

रुचा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रुचि] इच्छा, चाह, चमक, सारिका, मैना।

रुचि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चाह, प्रेम, अनुराग, किरण, प्रवृत्ति, शोभा, स्वाद, भूख, एक अप्सरा। "निज निज रुचि रामहिं सब देखा"—[रामा०]। (वि०, दे०) उचित, योग्य, फबता हुआ।—**कर**-(वि०, सं०) रुचि उत्पन्न करने वाला, रुचिप्रद। —**कारक**-(वि०, सं०) रुचिकर, रोचक।—**कारी**-(स्त्री०) मनोहर, प्रिय, स्वादिष्ट।—**वर्द्धक**-(वि०) रोचकता को बढ़ाने वाली, भूख या रुचि उत्पन्न करने वाली।

रुचित—(वि०, सं०) अभिलाषित।

रुचिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सौंदर्य्य, प्रेम। "रुचिर निहारी हारि जाति रुचिता की रुचि"—मन्ना०।

रुचिर—(वि०, सं०) रोचक, सुन्दर, मीठा, मनोरम। "रूप-रंग रुचि रुचिर रुचि"—कुं० वि०। —**बुत्ति**-(स्त्री०) अस्त्र संहार का एक भेद।

रुचिरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रुचिराई, सुन्दरता।

रुचिरांजन—(संज्ञा, पु०, सं०) शोभांजन।

रुचिरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) केसर, एक वृत्त वा छंद (पिं०)।

रुचिराई†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रुचिर+आई प्रत्य०] मनोहरता, रुचिरता, सुन्दरता। "रुचि रुचिराई रुचिता के संग ताके अंग, आई लै अनंग-रंग रुचि लुनाई है"—कुं० वि०।

रुचिरुचि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक साग।

रुचिष्य—(वि०, सं०) अभिलषित।

रुच्य—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोहर, रुचिकर।

रुच्छ*—(वि०, दे०) [हिं० रूखा] रूखा। (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० रूख] रूख, पेड़, वृक्ष।

रुज—(संज्ञा, पु०, सं०) रोग, बीमारी, कष्ट, घाव, भाँग, वेदना। " पिब हे नृपराज रुजापहरम्"—[भा० प्रो०]।

रुजाली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रोगों का समूह, कष्ट-समूह।

रुजी—(वि०) [सं० रुज] रोगी, बीमार, अस्वस्थ।

रुजू—(वि०, दे०) [अ० रुजूअ—प्रवृत्ति] प्रवृत्ति या चित्त का किसी ओर को झुकाव।

रुझना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रुद्ध] घावादि का भरना या पूर्ण होना। (क्रि० अ०) उलझना।

रुझान—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) प्रवृत्ति, झुकाव, (चित्त का) उलझन।

रुठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रुष्ट] क्रोध, रोष, कोप।

रुठना—(क्रि० स०, दे०) रूठना।

रुठाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० रुष्ट] अप्रसन्न या रुष्ट करना।

रुणित—(वि०, सं०) क्वणित, बजता या झनकारता हुआ। "रुणित, अंग घंटावली"—वि०।

रुत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ऋतु] मौसिम, फसल, ऋतु। (संज्ञा, पु०, सं०) चिड़ियों का शब्द या कलरव, ध्वनि। "कुहुरुताहूयत चन्द्र वैरिणी"—[नैष०]।

रुतबा—(संज्ञा, पु०, अ०) पद, ओहदा, प्रतिष्ठा, सम्मान। "रुतबा न इनको पेशए अरबाये हिम्मतों हो"—सौदा०।

रुदंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संजीवनी। (वि०) रोती हुई दुःखी स्त्री।

रुदन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोदन] क्रंदन, रोदन, रोना। " तव रिपुनारि-रुदन-जलधारा"—[रामा०]।

रुदराच्छ, रुद्राछ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रुद्राक्ष] रुद्राक्ष, एक बड़ा पेड़ जिसके फलों की गुठली का माला शैव लोग पहनते हैं।

रुदित—(वि०) रोदित, रोता हुआ।

रुद्ध—(वि०, सं०) वेष्टित, घिरा या मुँदा हुआ, आवृत्त, बंद, रोका हुआ, जिसकी गति रुकी हो। —**कंठ**-(वि०) जिसका गला भर आया हो, जो बोल न सके। " भोगीव मंत्रौषधि-रुद्ध-वीर्यं"—रघु०।

रुद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव जी का एक रूप, ११ रुद्रगण, देवता, रौद्र रस, ११ की संख्या। (वि०) भयंकर, भयानक। रोपि रन रुद्र श्री बिजै को लहिबो चहौ"—[अ० व०]।—**गण**-(पु०) शिव जी के सेवक या पारिषद्, भूतगण (पुरा०), ११ रुद्रों का समूह।—**जटा**-(स्त्री०) एक क्षुप। —**तेज**-(पु०) षडानन, कार्त्तिकेय।—**पति**-(पु०) रुद्राधिपति, शिव जी।—**पत्नी**-(स्त्री०) दुर्गा जी।—**भूमि**-(स्त्री०) मरघट, श्मसान।—**यामल**-(पु०) भैरव-भैरवी का संवाद ग्रंथ (तांत्रिक)।—**लोक**-(पु०) शिव का निवास-लोक।—**विंशति**-(स्त्री०) रुद्रवीसी, प्रभवादि

साठ संवत्सरों में से अंतिम बीस संवत्सर।—हिमालय-(पु०) हिमालय की एक चोटी।

रुद्रक†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रुद्राक्ष] रुद्राक्ष।

रुद्रट—(संज्ञा, पु०, सं०) संस्कृत के काव्यालंकार ग्रंथ के निर्माता एक प्रसिद्ध कवि और आचार्य्य।

रुद्रवंती—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० रुद्रवती] एक प्रसिद्ध दिव्य वनौषधि, [रुदंती, रुदवंती (दे०)]।

रुद्राक्रीड़—(संज्ञा, पु०, सं०) श्मशान।

रुद्राक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) एक बड़ा पेड़, उसके फलों की गुठलियाँ जिनकी माला शैव लोग पहनते हैं।

रुद्राणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती, दुर्गा, भवानी, रुद्रजटा नामक औषधि-लता।

रुद्रावास—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव-निवास, काशी-पुरी।

रुद्रिय—(वि०, सं०) आनन्ददायी, रुद्र-संबन्धी।

रुद्री—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० रुद्र+ई प्रत्य०] वेद के रुद्रानुवाक या अघमर्षण सूक्त की ग्यारह आवृत्तियाँ (वेद०)।

रुधिर—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्त, लोहू, खून।

रुधिराक्त—(वि०, सं०) खून से लथपथ, रक्त से भींजा हुआ, रक्त का सा अरुण।

रुधिरानत—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्योतिष की दृष्टि में मंगल की वक्र-गति।

रुधिराशी—(वि०, सं०) रक्त पीने वाला।

रुनझुन—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) पायजेब या घुँघुरू का शब्द, झनकार, कलरव।

रुनित*—(वि०, दे०) [सं० रुणित] बजता हुआ।

रुनी—(संज्ञा, पु०, दे०) घोड़े की एक जाति।

रुनुक-झुनुक—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) रुनझुन।

रुपना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० रोपना का अ० रूप] रोपा जाना, पृथ्वी में गाड़ा या लगाया जाना, अड़ना, डटना, जमना, रुकना।

रुपया, रूपया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रूप्य] [रुपैय्या (दे०)], चाँदी का एक बड़ा सिक्का जो सोलह आने का होता है (भारत), धन-संपत्ति। —**पैसा**-(पु०) धन-सम्पत्ति।—**वाला**-(वि०) अमीर। **मुहा०**—**उठाना**-धन का व्यय करना। —**उड़ाना**-रुपये का अपव्यय करना।—**जोड़ना**-धन बटोरना, इकट्ठा करना।—**पानी में फेंकना**-अपव्यय करना।

रुपहला—(वि०, दे०) [हिं० रूपा] चाँदी का सा, चाँदी के रंग का, श्वेत। [**रुपहली** (स्त्री०)]।

रुबाई—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) एक छंद (पिं०)।

रुमंच*—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० रोमांच] रोमांच, पुलकावली।

रुमन्वान—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन ऋषि, एक पहाड़।

रुमाँचित*—(वि०, दे०) [सं० रोमांचित] रोमांचित।

रुमाल—(संज्ञा, पु०, अ०) रूमाल।

रुमाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० रूमाल] एक तरह का लँगोटा या छोटी साफी, अँगौछी।

रुमावली*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रोमावली] रोमावली।

रुराई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रूरा] सुन्दरता।

रुरु—(संज्ञा, पु०, सं०) कस्तूरी-मृग, एक दैत्य जो दुर्गा जी से मारा गया, एक भैरव।

रुरुआ, रुरुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ररना] बड़ा उल्लू, घुगघू।

रुरुक्षु—(वि०, सं०) रूक्ष, रूखा।

रुलना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लुलन=इधर-उधर डालना] इधर-उधर मारा मारा फिरना, लोढ़े से पीसना, चूर्ण करना, अरोरना। "यहाँ की खाक से लेती थी खल्क मोती रूल"—सौदा०। [**रुलाना** (स० रूप०)], [**रुलवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

रुलाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० रोना+आई प्रत्य०] रोने की क्रिया का भाव, रोने की इच्छा या प्रवृत्ति, [रोवास, रोवाई (दे०)]।

रुलाना—(क्रि० स०) [हिं० रोना का प्रेरणा० रूप] रोवाना। (हिं० रुलना का प्रे० रूप) मारा, फिरना, नष्ट करना।

रुवल—(संज्ञा, स्त्री०) वह खेती की जमीन जिसमें पैदावार की शक्ति कम हो गई हो।

रुवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोम] सेमल के फल का भूआ।

रुवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रोना] रोने की क्रिया या भाव, रोने की इच्छा या प्रवृत्ति, [रोवाई (दे०)]।

रुष, रुषा—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रोध, कोप, रोष। [रुष्ट (वि०)]।

रुष्ट—(वि०, सं०) कुपित, क्रुद्ध, अप्रसन्न। [**रुष्टता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

रुष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्रुद्धता, अप्रसन्नता।

रुसना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० रूसना] रूसना, रूठना।

रुसवा—(वि०, फ़ा०) जिसकी बदनामी हुई हो, निंदित। [**रुसवाई** (संज्ञा, स्त्री०)]।

रुसित*—(वि०, दे०) [सं० रुषित] अप्रसन्न, रुष्ट, रूठा।

रुस्तम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) फारस का एक बड़ा पहलवान, बड़ा वीर या बलवान।—**हिंद**-(वि०) हिन्दुस्तान का सवश्रेष्ठ पहलवान।

रुहठि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रोहट= रोना] रूठने की क्रिया या भाव।

रुहिर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रुधिर] रुधिर।

रुहेलखंड—(संज्ञा, पु०) [हिं० रुहेला+खंड] अवध के उत्तर-पश्चिम मे एक प्रदेश।

रुहेला—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रायः रुहेलखंड में बसी हुई पठानों की एक जाति।

रूँगटा, रोंगटा—(संज्ञा, पु०, दे०) रोम, लोम, रोवाँ, शरीर के बाल।

रूँघट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मैल, मल, मलिनता।

रूँध—(वि०, दे०) [सं० रुद्ध] घिरा या रुका हुआ, अवरुद्ध।

रूँधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० रुंधन] काँटों आदि से घेरना, बाढ़ लगाना, छेंकना, रोकना, चारों तरफ से घेरना। "रूँधहु पोषहु दै बुधि बारी"—[रामा०]।

रू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चेहरा, मुख, मुँह, सामना, आगा, कारण, द्वारा।—**बरू**-समक्ष, सामने। **सुर्ख—(होना)**-सुखी, सम्मानित होना।—**दाद**-(स्त्री०) वृत्तांत, दशा, अवस्था, विवरण, समाचार, अदालत की कार्यवाही।—**बरू**-(क्रि० वि०) समक्ष, सम्मुख, सामने, आगे, प्रत्यक्ष।

रूई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रोम, लोम] [**रूई** (दे०)], कपास के कोषगत बीजों के ऊपर का रोवाँ या धुआ।—**दार**-(वि०) जिसके भीतर रुई भरी हो।

रूक्ष—(वि०, सं०) जिसमें कोमलता न हो। (पु०) वृक्ष।

रूख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रुक्ष] वृक्ष, पेड़। (वि०) रूखा, रुक्ष, नीरस।

रूखड़—(संज्ञा, पु०, दे०) योगी विशेष।

रूखड़ा†—(संज्ञा, पु०) [हिं० रूख] छोटा पेड़, पौधा, बिरवा, वृक्ष, [रूखवा (दे०)]।

रूखना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रुष] रूठना, सुखना।

रूखा—(वि०, दे०) [सं० रुक्ष] सूखा, शुष्क, जो चिकना या स्निग्ध न हो, नीरस, सीठा, स्वादहीन, बेमुरौवत, घी-तेल आदि से रहित। "तुझसे रूखा कही दुनिया में न देखा न सुना"—हाली०। (पु०, दे०) रूख, पेड़। **मुहा०—सूखा-घी-तेल** आदि के बिना बना साधारण भोजन। "रूखा-सूखा खाय के ठंडा पानी पीव"—कबीर। परुष, विरक्त, खुरदुरा, कठोर, उदासीन।—**पड़ना या होना**-क्रुद्ध होना, बेमुरौती करना।

रूखापन—(संज्ञा, पु०, हिं०) रुखाई, रूखे होने का भाव।

रूखी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० रुख] चिखुरी, गिलहरी।

रूचना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० रुचना] भला लगना, रुचना, भाना, पसंद आना।

रूज—(संज्ञा, पु०, दे०) एक कीड़ा।

रूझना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० उलझना] उलझना, फसना।

रूझा—(वि०, दे०) रोगी, बीमार, उलझा।

रूठ, रूठन—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० रूठना] रुष्टता, अप्रसन्नता, रूठने की क्रिया या भाव।

रूठना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रुष्ट] रुष्ट या अप्रसन्न होना। [**रूठाना** (स० रूप)]। (वि०) रूठने वाला, झगड़ालू।

रूठनी—(वि०, दे०) [हिं० रूठना] झगड़ालू।

रूड़, रूड़ा—(वि०, दे०) [हिं० रूरा] उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर, भला।

रूढ़—(वि०, सं०) आरूढ़, सवार, चढ़ा हुआ, उत्पन्न, प्रसिद्ध, उजड्ड, गवार, कठोर, अकेला, रूढ़ि, अविभाज्य। (संज्ञा, पु०) शब्द और प्रत्यय या दो शब्दों से बना अर्थानुसार एक शब्द-भेद,

[यौगिक (विलो०)], [रूढ़ि (स्त्री०)] ।—यौवना-(स्त्री०) पूर्णयुवा, तरुणी, नवयौवना ।

रूढ़ा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रचलित लक्षणा जिसका व्यवहार प्रसिद्ध अर्थ से भिन्न-अभिप्राय-व्यंजनार्थ न हो (सा०) ।

रूढ़ि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उभार, उठान, चढ़ाव, उत्पत्ति, ख्याति, चाल, प्रथा, निश्चय, विचार, प्रसिद्धि, यौगिक न होते हुए भी रूढ़ शब्द जिस शक्ति से अपना अर्थ दे, एक संज्ञा-भेद (व्या०) ।

रूप—(संज्ञा, पु०, सं०) सूरत, शकल, आकृति, स्वभाव, सौंदर्य, प्रकृति । (वि०) रूपवान, सुन्दर । "राम-रूप अरु सिय छबि देखी"—[रामा०] । —रंग,—रेखा-आकार-प्रकार, शकल, चिन्ह, पता, शरीर । मुहा०—हरना-लज्जित करना ।—लेना (रखना, बनाना)-रूप धारण करना । वेष, भेस ।—भरना (धरना)-भेस बनाना । लक्षण, समान, सदृश, अवस्था, दशा, रूपक, रूपा, चाँदी ।

रूपक—(संज्ञा, पु०,) प्रतिकृति, मूर्ति, नाटक, दृश्यकाव्य । ("रूपंकरोतीति रूपकम्"—नाट्य० ।) वह काव्य जिसका अभिनय हो सके, इस काव्य के दश मुख्य भेद हैं :—नाटक, प्रकरण, व्यायोग, भाण, समवकार, डिम, अंक, ईहामृग, प्रहसन, बीथी । एक अर्थालंकार जिसमें उपमान और उपमेय में अभेद कर दिया जाता है अथवा उपमान के साधर्म्य का आरोप उपमेय पर कर उपमान के रूप में अभेद सा कर उसका वर्णन हो (अ० पी०) ।—करण-(पु०) एक तरह का घोड़ा । —क्रांता-(स्त्री०) १७ वर्णों का वर्णिक वृत्त (पिं०) ।—गर्विता-(स्त्री०) अपनी सुन्दरता पर घमंड करने वाली नायिका ।—घनाक्षरी-(स्त्री०) अंत लघु और ३२ वर्णों का एक वर्णिक दंडक छंद (पिं०) ।—जीवी-(पु०) बहु रूपिया, रूप बनाकर पेट पालने वाला ।—जीविनी-(स्त्री०) वेश्या, रंडी, पतुरिया ।—निधान-(पु०) अति सुन्दर, रूपनिधि ।—मंजरी-(स्त्री०) एक फूल, एक प्रकार का धान ।—माला-(स्त्री०) २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०) ।—माली-(स्त्री०) एक छंद जिसमें नौ दीर्घ वर्ण हों (पिं०) ।—रूपक-(पु०) सावयव या साँग रूपकालंकार (काव्य०) ।—रस-(पु०) चाँदी या रूपा का भस्म (वैद्य०) ।—राशि-(पु०) अति सुन्दर, मनोहर । "वा निरमोहिल रूप की राशि"—ठाकुर० ।

रूपकातिशयोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अतिशयोक्ति अलंकार का वह भेद जिसमें केवल उपमान का वर्णन करके उपमेयों का अर्थ प्रकट करते हैं (काव्य०) ।

रूपमती*—(वि०, स्त्री०, दे०) [हिं० रूपमान] रूपवती ।

रूपमय—(वि०, हिं०) अति सुन्दर । [रूपमयी (स्त्री०)] ।

रूपमान—(वि०, दे०) [सं० रूपवान] रूपवान, अति सुन्दर ।

रूपवंत—(वि०) [सं० रूपवत] सुन्दर । [रूपवती (स्त्री०)] ।

रूपवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गौरी छंद, चंपकमाला वृत्ति (पिं०) । (वि०, स्त्री०) सुन्दरी, खूबसूरत । "रूपवती नारी जो शीलवती होती अरु"—मन्ना० ।

रूपवान्, रूपवान—(वि०) [सं० रूपवत] सुन्दर, स्वरूपवान, प्रियदर्शन । [रूपवती (स्त्री०)] ।

रूपहला—(संज्ञा, पु०, दे०) रूपे का बना, रूपे का रंग सा सफेद, [रूपहरा (दे०) ।

रूपा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रूप्य] चाँदी, घटिया चाँदी, सफेद घोड़ा ।

रूपावचर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक बौद्ध देवता, चित्र, ध्यान का एक केन्द्र ।

रूपास्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव ।

रूपित—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्ञान, वैराग्य आदि पात्र वाला नाटक या उपन्यास ।

रूपी—(वि०) [सं० रूपिन्] रूपवाला, रूपधारी, सदृश, समान । [रूपिणी (स्त्री०)] ।

रूपेन्द्रिय—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नेत्र, आँख ।

रूपोपजीविनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेश्या, रंडी ।

रूपोश—(वि०, फ़ा०) गुप्त, छिपा, भगा, हुआ, फरार । [रूपोशी (संज्ञा, स्त्री०)] । "हमसे रूपोशी औ गैरों से मिला करते हो" ।

रूप्यक—(संज्ञा, पु०, सं०) रुपया ।

रूबकार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सम्मुख लाने का भाव, पेशी, अदालत की आज्ञा, आज्ञा-पत्र, हुक्मनामा ।

रूम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) तरकी या तुरकी देश का नाम।

रूमटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घुमाव, मिष, बहाना, ब्याज।

रूमना—(क्रि० स०, दे०) [हि० भूमना का [अनु०] भूलना, भूमना।

रूमानिया—(संज्ञा, पु०, अं०) योरोप का एक देश।

रूमानी—(संज्ञा, पु०, अं०) रूमानिया का, रूमानिया निवासी।

रूमाल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुँह पोछने का चौकोर वस्त्र-खंड, चौकोर शाला या दुपट्टा।

रूमाली—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० रूमाल] रूमाली, लँगोट।

रूमी—(वि०, फ़ा०) रूम का, रूम-संबंधी, रूम का निवासी।

रूरना—(वि०, अ०, दे०) [सं० रोरवण] चिल्लाना।

रूरा—(वि०, दे०) [सं० रूढ=प्रशस्त] उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर, बहुत बड़ा, अच्छा। [**रूरी** (स्त्री०)]। "राज-समाज विराजत रूरे"—[रामा०]।

रूप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रुक्ष] रूख, पेड़, वृक्ष। (वि०, दे०) रुक्ष, रुखा।

रूषित—(वि०, सं०) धूल से सना हुआ, जो चिकना न हो।

रूस—(संज्ञा, पु०, सं०) योरोप-एशिया में फैला हुआ एक महादेश, सोवियत रूस।

रूसना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० रूठना] रूठना।

रूसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रूषक] अड़सा, अरूसा, बासा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोहिण] एक सुगंधित घास जिसका तेल निकालते हैं।

रूसी—(वि०) [हि० रूस] रूस देश का निवासी, रूस देश का, रूस-संबंधी। (संज्ञा, स्त्री०) रूस देश की भाषा या लिपि। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) भूसी जैसा सिर का मैल।

रूह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आत्मा, जीव, जीवात्मा, सत्त, सार, इत्र का एक भेद। **मुहा०—फना होना**-अति भयभीत होना, होश उड़ना।—**फूँकना (डालना)**-जान डालना, नवशक्ति का संचार करना, नवस्फूर्ति लाना।

रूहना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रोहण] उमड़ना, चढ़ना। (क्रि० अ०, दे०) [हि० रूँधना] घेरना, रूँधना, आवेष्टित करना।

रेंकना—(क्रि० अ०, अनु०) गदहे का बोलना, बुरे ढंग से गाना।

रेंगटा—(संज्ञा, पु०, दे०) गदहे का बच्चा।

रेंगना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रिंगण] चींटी आदि कीड़ों का चलना, धीरे धीरे चलना।

रेंट—(संज्ञा, पु०, दे०) नाक का मैल।

रेंड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० एरंड] एक पौधा जिसके बीजों का तेल बनता है। [**रेंड़ी** (स्त्री०)] रेंड़ के बीज।

रेंढ़ना—(क्रि० अ०) गर्भित होना, उस अवस्था में प्रौढ़ होना जब धान, गेहूँ में बालों का प्रस्फुटन होता है।

रेंड़ा—(संज्ञा, पु०) एक धान जो कुआर-कार्त्तिक में होता है।

रेंड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० रेंड़] रेंड़ के बीज।

रेंदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा खरबूजा।

रे—(अव्य, सं०) नीच-सम्बोधन शब्द। "कि रे हनूमान् कपिः"—ह० ना०। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ऋषभ] ऋसभ-स्वर।

रेख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रेखा] लकीर। "तुमते धनु रेख गई न तरो"—रामा०। **मुहा०—काढ़ना (खींना-खाँचना)**-लकीर बनाना, कहने पर जोर देना, प्रतिज्ञा करना। चिह्न, निशान। "रेख खँचाइ कहौं बल भाखी"—[रामा०]।—**भीजना या भीनना (निकलना)**-निकलती हुई मूछों का दिखाई पड़ना।

रेखता—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रकार की गजल (उ० पि०) उर्दू का प्रारम्भिक नाम। "रेखता के तुम्ही उस्ताद नहीं हो गालिब"—गालिब।

रेखना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० रेखन, लेखन] रेखा या लकीर खींचना, खरोंचना, खुरीच डालना।

रेखा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डाँड़ी, लकीर, सतर, दो विन्दुओं के बीच की दूरी-सूचक चिह्न। —**गणित**—(पु०) गणित विद्या का वह विभाग जिसमें रेखाओं के द्वारा कुछ सिद्धांत निर्धारित किये जाते हैं [जिओमेटरी]। **मुहा०—खींच**

कर कहना–प्रणपूर्वक कहना, बल-पूर्वक या जोरों के साथ कहना। "रेखा खींच कहौं प्रणभाषौं"—[रामा०]। आकृति, गणना, गिनती, आकार, हथेली तलुवे आदि पर पड़ी लकीरें जिनसे सामुद्रिक में शुभाशुभ का विचार होता है।

रेखांकित—(वि०, यौ०, सं०) चिह्नित, रेखा-द्वारा निर्धारित।

रेखित—(वि०, सं०) जिस पर रेखा पड़ी हो, कटा हुआ, लकीरदार।

रेगिस्तान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मरुस्थल, मरुभूमि, रेतीली या बालू का मैदान।

रेघारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हलकी रेखा, चिह्न या निशान।

रेचक—(वि०, सं०) दस्तावर, जुलाबी दवा। (संज्ञा, पु०) प्राणायाम की तीसरी क्रिया जिसमे खींची हुई साँस को विधिपूर्वक बाहर निकालते हैं। (योग०)।

रेचन—(संज्ञा, पु०, सं०) कोष्ठ शुद्धि, जुल्लाब, जुलाब, दस्त लाना। "ज्वर मुक्तेतु रेचनम्"—[भा० प्र०]।

रेचना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० रेचन] वायु या मल को बाहर करना, युक्ति या वायु द्वारा मल निकाला जाना।

रेज़ा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सूक्ष्म खंड, बहुत छोटा टुकड़ा, अदद, थान, नग।

रेणु—(संज्ञा, पु०, सं०) अत्यंत लघु परमाणु, धूलि, बालू, कण, कणिका, [रेनु (दे०)], एक औषधि। **लो०**—"शठीशुंठी रेणु"। "गरू सुमेरु रेणु सम ताही"—[रामा०]।

रेणुका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बालू, रेत, पृथ्वी, धूलि, रज, परशुराम जी की माता। "वह रेणुका तिय धन्य धरनी मैं भई जग-वंदिनी"—[रामा०]।

रेत—(संज्ञा, पु०) [सं० रेतस्] शुक्र, वीर्य्य, पारा, पानी, जल। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रेतजा] बालू, बालू का, मरुभूमि, बलुआ मैदान। " रतन लाइ नर रेत मों, काँकर बिन बिन खाय" —कबीर।

रेतना—(क्रि० स०) [हि० रेत] रेती से किसी पदार्थ को रगड़ कर उसके कण अलग करना, रगड़ कर काटना।

रेतहा—(संज्ञा, पु०) रेत वाला तट, रेता। [**रेतही** (स्त्री०)]।

रेता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रेत] मिट्टी, बालुका, बालू, बलुआ मैदान। (वि०) रेतीला।

रेती—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० रेतना] लोहे आदि को रेतने का लोहे का खुरदुरा यंत्र या लोहा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रेत+ई प्रत्य०] नदी या सागर के तट की बलुई भूमि, बलुआ तट।

रेतीला—(वि०) [हि० रेत+ईला प्रत्य०] बलुआ, बालू, वाला। [**रेतीली** (स्त्री०)]।

रेनु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रेणु] बालुका, बालू, रेत।

रेनुका—(स्त्री०, दे०) [सं० रेणुका]। "पंक न रेनु सोह अस धरनी"—[रामा०]।

रेफ—(संज्ञा, पु०, सं०) हलन्त, रकार का वह रूप जो अपने अग्रिम व्यंजन के ऊपर लिखा जाता है। "अचं दृष्ट्वा त्वधोयाति हलस्यो-परि गच्छति।" "अवसाने विसर्गः स्याद्रेफस्य त्रियद्गतिः"—[रा० भो०]।

रेरुआ—(संज्ञा, पु०) उल्लू, घुघ्घू।

रेल—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लोहे की पटरियाँ जिन पर गाड़ी चलती है, रेलगाड़ी, वाष्पवेग से चलने वाली गाड़ी। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० रेलना] अधिकता, धाराधक्का, भरमार।—**ठेल**–(स्त्री०) बड़ी भीड़, अधिकता, भरमार।

रेलना—(क्रि० स०, दे०) आगे या पीछे की ओर ढकेलना, धक्का देना, घुसेड़ना, अधिक खाना। (क्रि० अ० दे०) ठसाठस भरा होना।

रेलपेल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रेलना+पेलना] भारी भीड़, अधिकता, बाहुल्य, ज्यादती, भरमार, धक्कमधक्का। "रहे उसकी महफ़िल में नित रेलपेल"—ज़ौक़।

रेला—(संज्ञा, पु०, दे०) पानी का बहाव, प्रवाह, दौड़, धावा चढाई धक्कमधक्का, अधिकता, बाहुल्य, रेल।

रेलारेल—(क्रि० वि०, दे०) अधिकता, धक्कमधक्का, कशमकश,। (संज्ञा, स्त्री०) भीड़ बाहुल्य।

रेलापेल—(संज्ञा, पु०, दे०) धक्कमधक्का।

रेवंद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक पहाड़ी, बड़ा पेड़ जिसकी जड़ और लकड़ी औषधि के काम आती है और रेवंदचीनी कहलाती है।

रेवड़—(संज्ञा, पु०, दे०) भेड़-बकरियों को नार झुंड, गल्ला, लेंहड़ा (प्रान्ती०)।

रेवड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चीनी और तिलों से बनी एक मिठाई ।—**के फेर में आना**–लालच में आ जाना ।

रेवत, रेवतक—(संज्ञा, पु०, सं०) बलदेव जी के ससुर ।

रेवतक—(संज्ञा, पु०, सं०) कबूतर ।

रेवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ३२ तारों से बना २७ वाँ नक्षत्र, दुर्गा, गाय, राजा रेवतक की कन्या और बलराम जी की पत्नी ।—**रमण**–(पु०) बलदेव जी ।

रेवा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नर्वदा या नर्मदा नदी, दुर्गा, मदन-प्रिया, रति, रीवाँ राज्य, बघेलखंड ।

रेशम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कोश में रहने वाले विशेष प्रकार के कीड़ों से बनाया गया दृढ़, चमकीला और कोमल तंतु जिससे महीन कपड़ा बनाया जाता है, कौशेय, [रेसम (दे०)] ।—**के लच्छे**–एक मिष्ठान जो रेशम के धागों के ढंग का होता है ।

रेशमी—(वि०, फ़ा०) रेशम से बना ।

रेशा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पेड़ों की छाल आदि से निकला तंतु या बारीक सूत, [रेसा (दे०)], आम की गुठली के तंतु ।—**दार**(वि०) रेशेदार ।

रेसू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध ।

रेह—(संज्ञा, पु०, दे०) ऊसर-मैदान की क्षार या खार मिली मिट्टी [रेहू (दे०)] ।

रेहकल—(संज्ञा, पु०) [प्रान्ती०] छोटी गाड़ी, रँहकल । [**रेहकली, रँहकली** (स्त्री०)] ।

रेहड़—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार मी छोटी और हलकी बैलगाड़ी (प्रान्ती०), लढ़ी (ग्रा०) ।

रेहन—(संज्ञा, पु०, अ०) गिरवी, बंधक, किसी धनी के पास इस शर्त पर माल या जायदाद रखना कि कर्ज का रुपया दे देने पर वह वापस हो जायगी ।—**दार**–(पु०) जिसके यहाँ गिरवी या बंधक रक्खा गया हो, महाजन, धनी ।—**नामा**–(पु०) गिरवीनामा, बंधक-पत्र जिस पर रेहन की शर्तें लिखी हों ।

रेहल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० रिहल] पढ़ते वक्त किताब रखने की चौकी ।

रेहला—(संज्ञा, पु०, दे०) चना, रहिला, लहिला (ग्रा०) ।

रेहूपेहू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अधिकता, बहुतायत, भरमार ।

रै—(संज्ञा, पु०, सं०) धन, संपत्ति, सोना, शब्द ।

रैअत*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० रैयत] रैयत, प्रजा, रिआया ।

रैतुआ, रैतुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) रायता, [रैता (दे०)] ।

रैदास—(संज्ञा, पु०, दे०) कबीर का समकालीन स्वामी रामानंद का एक चमार भक्त शिष्य, चमारों की पदवी या जाति ।

रैदासी—(वि०) रैदास द्वारा प्रवर्त्तित सम्प्रदाय का ।

रैन, रैनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रजनी] रात्रि, रात । "रैन-दिन चैन हैन सैन, इहि उहिम मैं"—रत्ना० ।

रैनिचर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रजनिचर] राक्षस, निशाचर, रैनचर । "चली रैनिचर सैनि पराई"—[रामा०] ।

रैय्यत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) रिआया, प्रजा ।

रैयाराव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० राजा+राव] छोटा राजा, मालिक, स्वामी, सरदार । "रैयाराव चम्पत को"—भूषण० ।

रैयत—(संज्ञा, पु०, सं०) बादल ।

रैवतक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पहाड़ जो गुजरात में है (भू०), गिरनार । "असौ गिरि रैवतकं ददर्श"—माघ० । महादेव जी, चौदह मनुवों में से एक मनु ।

रैहर—(संज्ञा, पु०) [दे० रहर] झगड़ा, टंटा, बखेड़ा । "रैहर मैं ठानी बलि आप सौ सुनौ जू तुम"—मन्ना० ।

रोंआँ, रोंवाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोम] शरीर पर के बाल, लोम, रोम ।

रोंगटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोमक] शरीर पर के बाल । "टेढ़ो करै न रोंगटा जो जग बैरी होय"—कबीर० । **मुहा०—(टे) खड़े होना**–डरने से शरीर में क्षोभ उत्पन्न होना, रोमांच होना, रोयें खड़े होना

रोंगटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रोना] खेल में बुरा मानना, अन्याय या अधर्म्म करना, बेईमानी करना ।

रोंट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छल, कपट, बहाना।

रोंटना—(क्रि० स०, दे०) छल या कपट करना, बहाना करना।

रोंटिया—(संज्ञा, पु०, दे०) छली, विश्वासघातक, कपटी, धूर्त।

रोंव, रोंउ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोम] लोम, रोम, रोवाँ।

रोश्रा, रोवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रोया] रोया।

रोश्राई रोवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रोना] रोने का भाव या क्रिया, बिसरना, रोना, रुलाई।

रोश्राना, रोवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० रोना का स० रूप] किसी दूसरे को रुलाना, परेशान करना।

रोश्राब†—(संज्ञा, पु०) [अ० रोअब] रूआब (ग्रा०) रोब, आतंक।

रोश्रास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रोना] रुलाई, रोने की इच्छा।

रोउँ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोम] रोम, लोम।

रोउनई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अन्याय, बेईमानी, ज्यादती, रोउनॉय (ग्रा०)।

रोक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रोधक] गति या काम का अवरोध, निषेध, मनाही, बाधा, अटकाव, रोकने वाली वस्तु, छेंक।—**टोक**-(स्त्री०) बाधा, निषेध, छेड़छाड़, मनाही, प्रतिबंध।—**थाम**-(संज्ञा, पु०) [हि० रोकड़] रोकड़, नकद।

रोकड़—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० रोक=नकद] जमा, नकद, पूँजी, रुपया-पैसा, नगद धन।—**बही**-(स्त्री०) नगद रुपयों के लेने-देने के हिसाब की बही।—**बिक्री**-(स्त्री०) नगद दाम में की गई बिक्री। **मुहा०**—**मिलाना**-आय-व्यय का हिसाब रखना।

रोकड़िया—(संज्ञा, पु०) [हि० रोकड़+इया प्रत्य०] कोषाध्यक्ष, खजानची, रुपया लेने वाला।

रोकना—(क्रि० स०) [हि० रोक] मना करना चलने या बढ़ने न देना, निषेध या मनाही करना, ऊपर लेना, किसी चली आती बात को बंद करना, [लोकना (दे०)], छेंकना, ओड़ना [ओरना (दे०)], बाधा या अड़चन डालना, वश में रखना दबाना। [**रोकाना** (स० रूप०)] [**रोकावना, रोकवाना** (प्रे० रूप०)]।

रोकू—(संज्ञा, पु०, दे०) रोकने या मना करने वाला, बाधा या अड़चन डालने वाला।

रोख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोष] रोष, क्रोध, रिस, कोप। "विधि हू के रोख कौन राखै परवाह रंच"—रत्ना०।

रोग—(संज्ञा, पु०, सं०) बीमारी, व्याधि, मर्ज। [**रोगी, रुग्न** (वि०)]। **लो०**—"शरीरम् रोग मंदिरम्"।—**कारक**-(वि०) बीमारी उत्पन्न करने वाला।—**ग्रस्त**-(वि०) रोग से पीड़ित, रोगी, बीमार, व्याधि पीड़ित। "शरीरे जर्जरी भूते रोग-ग्रस्ते कलेवरे"—[स्फु०]।—**निदान**-(पु०) रोग के मूलगत कारणों की पहचान।—**लक्षण**-(पु०) रोग के लक्षण।

रोगदई, रोगदैया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रोना] अन्याय, अंधेर, बेईमानी, रोउनई (ग्रा०)।

रोगन—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० रोगन] चिकनाई, तेल, [**पालिश** (अं०)]। वस्तु पर पोतने से चमक लाने वाला पतला लेप, वारनिश, मिट्टी के बरतनों पर चढ़ाने का मसाला।

रोगनी—(वि०, फ़ा०) रोगन किया हुआ, रोगन-युक्त, एक प्रकार की रोटी।

रोगहा—(संज्ञा, पु०, सं०) रोग का नाश करने वाला, वैद्य, औषधि।

रोगाक्रांत—(वि०, सं०) रोग से आक्रांत या पीड़ित, रोगग्रस्त।

रोगिया, रोगिहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोगी] रोगी, बीमार, [रोगिहल (दे०)]।

रोगी—(वि०) [सं० रोगिन्] बीमार, अस्वस्थ, व्याधि-पीड़ित। [**रोगनी** (स्त्री०)]।

रोचक—(वि०, दे०) रुचिकारक, प्रिय, मनोरंजक दिलचस्प। [**रोचकता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

रोचन—(वि०, सं०) रोचक, रुचिकारक, मनो-रंजन, दिलचस्प, प्रिय, अच्छा लगने या शोभा देने वाला, लाल। [**रोचनीय** (वि०)] (संज्ञा, पु०) प्याज, काला सेमर, रोरी, स्वरोचिष, मन्वंतर के इन्द्र (पुरा०), मदन के पाँच बाणों में से एक बाण, रोचना।

रोचना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लाल कमल, गोरो-चन, वसुदेव-प्रिया, रोली-टीका, तिलक। (संज्ञा, पु०, दे०) तिलक करने का हलदी और चूने आदि से बना चदन।

रोचनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आँवला, गोरोचना, मैनसिल, दंती।

रोचमान—(वि०, सं०) शोभा से युक्त, सुन्दर, चमकना।

रोचि—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० रोचिस] दीप्ति, कांति, प्रभा, शोभा किरण, मयूख, आभा या किरण वाला, रश्मि।

रोचित—(वि०) [सं० रोचना] सुशोभित, सुन्दर, प्रिय।

रोचिष्णु—(वि०, सं०) प्रकाशमान, दीप्तिशील, रुचने योग्य।

रोज*—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० रोदन] रोदन, रुदन, रोना, एक बनैला पशु, बन-रोज।

रोज़—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दिन, दिवस। अव्य० नित्य, प्रतिदिन, [रोज (दे०)]।**—नामचा**—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वह पुस्तक जिसमें प्रति दिन का कार्य लिखा जाता है, दैनिक कार्य-लेख, दैनिक व्यय लेख।**—मर्रा**—(अव्य०, फ़ा०) नित्य, प्रतिदिन, हर रोज। (संज्ञा, पु०) प्रतिदिन की व्यवहार की बोली या भाषा, खड़ी या चलती बोली, बोल चाल।**—रोज़**—(अ०) नित्य, हर दिन।

रोजगार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जीविका, व्यवसाय, व्यापार, उद्यम, धंधा, पेशा, कारबार, सौदागरी, तिजारत, जीविका या धनार्थ कार्य।**—चमकना**—व्यवसाय में फायदा होना।

रोजगारी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सौदागर, व्यापारी, रोजगार करने वाला, उद्यमी, पेशेवर, व्यवसायी।

रोजा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उपवास, व्रत, मुसलमानों में रमज़ान के महीने में उपवास।

रोजाना—(अ०, फ़ा०) नित्य, प्रत्येक दिन।

रोजी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्रतिदिन का भोजन, जीविका, जीवन-निर्वाह का सहारा।

रोझ—(संज्ञा, पु०, दे०) नील गाय, [रोज, बन-रोज (दे०)]।

रोट—(संज्ञा, पु०) [हि० रोटी] बहुत बड़ी और मोटी-मोटी रोटी या पूड़ी; मीठी, मोटी और बड़ी पूड़ी।

रोटा†—(वि०, दे०) [हि० रोटी] मोटी बड़ी रोटी।

रोटिहा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रोटी+हा प्रत्य०] केवल भोजन मात्र पर नौकर रहने वाला, मेहमान जो रोटी खा जाता हो। [**पुरिहा** (विलो०)]। (वि०, दे०) रोटी (दूसरे की) खाने वाला। (बुरे अर्थ में)।

रोटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फुलका, गुँधे आटे की आग में सेंकी टिकिया, चपाती, टिकिया, रसोई, भोजन, जीविका।**—दाल,—पानी**-जीवन निर्वाह।**—फल**-(पु०) एक पेड़ का स्वादिष्ट फल। मुहा०**—कपड़ा**-भोजन-वस्त्र की सामग्री। **(किसी बात की)—खाना**-(उसी से) जीविका कमाना। **(किसी के यहाँ)—(टियाँ) तोड़ना**-किसी के यहाँ पड़ा रह कर पेट पालना। **—दाल या—चलाना**-गुजर या निर्वाह होना। **—कमाना**-रोजी या जीविका पैदा करना।**—(टियों) का प्रश्न होना**-जीविका की चिन्ता या विचार होना।

रोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोष्ट] पत्थर या ईंट का बड़ा ढेला, कंकड़। मुहा०**—अटकाना या डालना (अड़ाना)**-विघ्न-बाधा डालना। लो०—"कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा।"

रोड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० रोड़ा] छोटा रोड़ा।

रोदन—(संज्ञा, पु०, सं०) रुदन, रोना, क्रंदन।

रोदसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वर्ग, आकाश, भूमि, पृथ्वी।

रोदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोध] धनुष की प्रत्यंचा, कमान की ताँत या डोरी, चिल्ला (प्रान्ती०)।

रोधक—(संज्ञा, पु०, सं०) रोकने वाला।

रोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) अवरोध, रोक रुकावट, घेरघार, दमन। [**रोधना** (वि०)]।

रोधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० रोधन] रोकना, घेरना, अवरोध करना।

रोना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रुदन] रोदन या रुदन करना, चिल्ला-चिल्ला, कर आँसू बहाना। (संज्ञा, पु०) खेद, दुःख, रंज। [**रुलाना, रोवाना** (स० रूप)], [**रुलवाना** (प्रे० रूप)]। मुहा० **—धोना**-दुःख-शोक प्रगट करना या क्रंदन करना।**—पीटना**-बहुत विलाप या क्रंदन करना। **रो-रोकर**—ज्यों-त्यों करके, कठिनता से, धीरे-धीरे।**—गाना**-गिड़गिड़ाना, विनती करना। बुरा मानना, माख या दुःख करना, चिढ़ना, रोउना (ग्रा०)।**—रोउना**-(पु०) चिड़चिड़ा, मुहर्मी, रोने वाले का सा, थोड़ी सी बात पर भी रोने वाला, [रोवासा (दे०)]।

रोनी-धोनी—(वि०) रोने वाली। (स्त्री०) रुदन, रोने की आदत वाली।

रोप—(संज्ञा, पु०, सं०) रोपण, स्थापन, जमाना, लगाना (बीज), मोहना।

रोपक—(संज्ञा, पु०, सं०) लगाने, जमाने या खड़ा करने वाला।

रोपण—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थापित करना, जमाना, लगाना, बैठाना (बीज या पौधा) ऊपर रखना, मोहित करना, मोहना। [**रोपणीय, रोपित, रोप्य** (वि०)]।

रोपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० रोपण] लगाना, बैठाना, जमाना, दूसरे स्थान पर एक स्थान से उखड़े पौधे का जमाना, स्थापित करना, ठहराना, अड़ाना, बोना, लोकना, रोकना, ओड़ लेना, लेने के लिये हथेली आदि सामने करना। "सभा मध्य प्रण करि पद रोपा" [रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) ब्याह में नाई द्वारा लाया गया हल्दी मिला चावलों का गीला आटा।

रोपनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रोपनी] रोपाई, धान आदि पौधों के गाड़ने का कार्य।

रोपित—(वि०, सं०) लगाया या जमाया हुआ, स्थापित या रखा हुआ, भ्रांत, मुग्ध, मोहित, आरोपित।

रोप्य—(वि०, सं०) रोपणीय, रोपने-योग्य।

रोप्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) गाड़ने या लगाने-वाला, रोपण-कर्त्ता, रोपने या जमाने वाला।

रोब—(संज्ञा, पु०) [अ० रुअब] आतंक, प्रभाव, महत्व, धाक, दबदबा, प्रताप, [रुआब (दे०)]। **—दाब,—ताब**-आतंक, धाक, प्रभाव। **—दार**-(वि०) तेजस्वी, प्रभावशाली, रोबदाब वाला, रोबीला। **रोबीला**—(वि०, हि०) रोबदार। **मुहा०—जमाना, बैठाना (ग़ालिब करना)**-प्रभाव या आतंक उत्पन्न करना, जमाना।**—दिखाना**-भय, आतंक या प्रभाव प्रगट करना।**—में आना**-आतंक में आना, भय मानना, रोब के वश हो ऐसा काम करना जो साधारणतया न किया जाये। **(चेहरे से)—टपकना**-प्रभाव या महत्व प्रगट होना। **(चेहरे पर)—आना**-कांति या प्रतिभा आना।**—(किसी को)—में लाना**-प्रभाव या आतंक के द्वारा आधीन करना।**—छा जाना**-आतंक जम जाना।**—जाना**-आतंक नष्ट होना।

रोमंथ—(संज्ञा, पु०, सं०) पागुर, पगुराना, चबाये को फिर चबाना।

रोम—(संज्ञा, पु०) [सं० रोमन] रोवाँ, लोम, देह के बाल, रोयाँ। "रोम रोम पर वारिये, कोटि-कोटि ब्रह्मांड"—[रामा०]।**—कूप**-(पु०) रोवों के छेद, रोमरंध्र, लोमछिद्र। "न रोम-कूपौघमिषाज्जगत्कृता कृताश्च किं दूषण-शून्य बिन्दवः" —[नैषध०]।**—द्वार**-(संज्ञा, पु०, सं०) रोवों के छिद्र या छेद, रोम-छिद्र।**—पाट**-(पु०) ऊनी कपड़ा।**—पाद**-(पु०) अंग देश के प्राचीन राजा।**—राजी**-(स्त्री०) रोमावलि, लोम-पंक्ति, रोवों की पाँति, रोमाली।**—लता**-(स्त्री०) रोमावलि, रोम-पक्ति, लोमलता रोमवल्लरी।**—हर्षण**-(पु०) लोमहर्षण, प्रेम, आनंद, भय, विस्मयादि से शरीर के रोवों का खड़ा होना, रोमाञ्च। (वि०) भयंकर, भीषण। "बभूव युद्धम् अति रोमहर्षणम्" —[स्फु०]। **मुहा०—रोम में**-सारे शरीर में में, देह भर में।**—रोम से**-तन-मन से, पूर्ण हृदय से। छेद, छिद्र, सुराख, पानी, जल, ऊन, रूम, एक नगर (इटली) एक प्राचीन राज्य।

रोमक—(संज्ञा, पु०, सं०) रोम नगर-निवासी, रोमन, रोम नगर या देश का, रोमन।

रोमन—(वि०, अ०) रोम का, रोम की भाषा या लिपि, हिन्दी शब्दों को ज्यों का त्यों अँग्रेजी लिपि में लिखने की रीति।

रोमांच—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रेम, आनंद, भय, विस्मयादि से रोंगटे खड़े हो जाना, पुलकावली छा जाना।

रोमांचित—(वि०, सं०) पुलकावली-युक्त, रोंगटों के उभार से युक्त।

रोमावलि, रोमावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रोम-पंक्ति, लोम-पंक्ति, रोम-राजी, रोमाली, नाभि से ऊपर जाने वाली रोवों की पंक्ति।

रोयाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोमन्] प्राणियों के देहों के बाल, रोम, लोम, [रोवाँ (दे०)]। **मुहा०—खड़ा होना**-प्रेम, आनंद या भयादि से पुलकावली आना।**—टेढ़ा होना या करना (बाल-बाँका होना)**-हानि होना या करना।**—पसीजना**-दया आना, तरस लगना।

रोर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रवण] रौरा (ग्रा०) कोलाहल शोरगुल, हुल्लड़ हल्ला, बहुत लोगों से रोने-चिल्लाने का शब्द, उपद्रव, बखेड़ा,

हलचल, (अं०) गरजना। (वि०) उद्धत, उपद्रवी प्रचंड उद्दंड, दुर्दमनीय।

रोरा, रोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रोड़ा] ईंट या पत्थर का टुकड़ा, बड़ा कंकर।

रोरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रोली] रोली (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रोर] धूमधाम, चहल-पहल। (वि०, स्त्री०, दे०) [हि० रूरी] रुचिर, सुन्दर, मनोहर, रूरी।

रोल*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रवण] रोर, हल्ला, शोर-गुल, कोलाहल, ध्वनि। (संज्ञा, पु०) पानी का तोड़, बहाव, रेला, सड़ी सुपारी।

रोलना—(क्रि० स०, दे०) बराबर या चिकना करना, चिकनाना, लुढ़काना।

रोला, रौला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रावण] रोर, शोर, [रौरा (ग्रा०)], कोलाहल, हल्ला, घमासान लड़ाई। (संज्ञा, पु०, सं०) २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद, काव्य छंद (पिं०)। "रोला अथवा काव्य छंद ताको कवि भाखै"—[स्फुट०]।

रोली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रोचनी] हल्दी और चूने से बना लाल चूर्ण, जिससे तिलक लगाते है, श्री, [रोरी (दे०)]।

रोवना—(संज्ञा, पु०, दे०) रोदन, रोना। (क्रि० स०, दे०) रोना। [**रोवाना** (स० रूप)] रुलाना।

रोवनहार, रोवनिहार*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० रोना + हार प्रत्य०] रोने वाला, रोवनहारा, रोवनिहारा।

रोवनी, धोवनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० रोवना + धोवना, रोना + धोना] शोक वृत्ति, मनहूसी। (वि०, स्त्री०) शोक-वृत्ति वाली, मनहूसिनी, रोने-धोने की वृत्ति वाली।

रोवास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रोने की इच्छा।

रोवासा—(वि०, दे०) [हि० रोना] वह पुरुष जो रोना चाहता हो। [**रोवासी** (स्त्री०)]।

रोशन—(वि०, फ़ा०) प्रकाशित, प्रदीप्त, प्रकाशमान, जलता हुआ, प्रसिद्ध, विख्यात, विदित, प्रकट।—**चौकी**-(स्त्री०) शहनाई बाजा, [**नफीरी** (फ़ा०)]।—**दान**-(पु०) खिड़की, झरोखा, गवाक्ष, मोखा, प्रकाशार्थ छिद्र।

रोशनाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मसि, लिखने की स्याही, प्रकाश, रोशनी, तेल, घी, चिकनाई।

रोशनी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्रकाश, उजाला, दीपक; ज्ञान-प्रकाश, दीप-राशि का प्रकाश।

रोष—(संज्ञा, पु०, सं०) कुढ़न, कोप, क्रोध, चिढ़, विरोध, बैर, आवेश, जोश, युद्धोमंग, "गुनहु लखन कर हम पर रोषू"—[रामा०]।

रोषान्वित, रोषित—(वि०, सं०) क्रुद्ध।

रोषी—(वि०) [सं० रोषिन्] क्रोधी।

रोस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रोष] कोप, क्रोध, रिस, रोष।

रोह—(संज्ञा, पु०, दे०) बनरोज, रोझ, नील गाय। (संज्ञा, पु०, सं०) बढ़ना, उगना, ऊपर चढ़ना।—**ग**-(पु०) सिंहल का एक पर्वत।

रोहज*—(संज्ञा, पु०, दे०) नेत्र, आँख।

रोहण—(संज्ञा, पु०, सं०) आरोहण, चढ़ना, चढ़ाई, ऊपर बढ़ना, पौधा का उगना और बढ़ना, सवार होना। [**रोहणीय, रोहित** (वि०)]।

रोहना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रोहण] चढ़ना, सवार होना, ऊपर को जाना। (क्रि० स०)—चढ़ाना, धारण या सवार कराना, ऊपर करना।

रोहिणिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्रोधावस्था में लाल चेहरे वाली स्त्री।

रोहिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिजली, गाय, वसुदेव की पत्नी और बलराम जी की माता, चौथा नक्षत्र, ६ वर्ष की कन्या (स्मृति०), [रोहिनी (दे०)]। "पोंछति बदन रोहिणी ठाढी लिये लगाय अकोरे।" सूर०। "पंच वर्षा भवेत्कन्यानववर्षा च रोहिणी"।

रोहिणीश—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रमा। वसुदेव।

रोहित—(वि०, सं०) रक्त वर्ण का, लोहित। (संज्ञा, पु०) रोहू मछली, लाल रंग, एक प्रकार का हरिण, कुंकुम, इन्द्र-धनुष, केसर, रक्त लोहू। (वि०) [सं० रोहण] चढ़ा हुआ।—**वाह**-(पु०) अग्नि।

रोहिताश्व—(संज्ञा, पु०, सं०) अग्नि, राजा हरिश्चन्द्र का पुत्र। "हाय वत्स हा रोहितास्व कहि रोवन लागे"—हरि०।

रोहिष—(संज्ञा, पु०, सं०) एक घास, रोहू मछली, एक प्रकार का मृग जो गधे की तरह का होता है।

रोही—(वि०) [सं० रोहिन्] चढ़ने वाला। (संज्ञा, पु०, दे०) एक हथियार। [**रोहिणी** (स्त्री०)]।

रोहू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रोहित] एक प्रकार की बड़ी मछली।

रौंद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रौंदना] रौंदने की क्रिया या भाव। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० राउंड] चक्कर, गश्त, घूमना।

रौंदना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मर्दन] पाँवों से कुचलना या मर्दित करना। [**रौंदाना** (स० रूप)], [**रौंदावना, रौंदवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

रौ—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चाल, वेग, झोंक, गति, पानी का बहाव या तोड़, चाल, प्रवाह, किसी बात की धुन, झोंक, ढंग।*‡ (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रव] शब्द।

रौगन—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० रोगन] तेल, चिकनाई, पालिश, वारनिश।

रौजा—(संज्ञा, पु०, अ०) समाधि, कब्र, समाधि का स्थान।

रौताइन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रावत] रावत या राव की स्त्री, ठकुराइन।

रौताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० रावत+आई प्रत्य०] रावत या राव का भाव, सरदारी, ठकुराई, [रौतई (दे०)]।

रौद्र—(वि०, सं०) रुद्र-सम्बन्धी, भयंकर, डरावना, क्रोध-भरा, प्रचंड। (संज्ञा, पु०) काव्य के नौ रसों में से एक रस जिसमें क्रोध-सूचक शब्दों से भावनाओं और चेष्टाओं के वर्णन हों, ११ मात्राओं के मात्रिक छंद (पिं०) एक अस्त्र (प्राचीन)।

रौद्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रचंडता, उग्रता।

रौद्रार्क—(संज्ञा, पु०, सं०) २३ मात्राओं के मात्रिक छंद (पिं०)।

रौद्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रुद्र की स्त्री०, गौरी, पार्वती।

रौप—(संज्ञा, पु०, दे०) चाँदी, धातु विशेष।

रौन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रमण] स्वामी, पति। (संज्ञा, पु०, वि०, दे०) रमणीय। "गौन रौन रेती सों कदापि करते नहीं"—[ऊ० श०]।

रौनक—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रफुल्लता, आकृति और वर्ण, दीप्ति, कांति, विकास, सुषमा, शोभा, छटा, रूप, मनोहरता।

रौना†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० रोना] रोना।

रौनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रमणी] रमणी, सुन्दरी, स्त्री, [रवनी (दे०)]।

रौप्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चाँदी, रूपा। (वि०) रूपे या चाँदी से बना हुआ।

रौरव—(वि०, सं०) भयंकर, भयानक, बुरा। (संज्ञा, पु०) एक भयंकर नरक।

रौरा, रौला†—(संज्ञा, पु०) [हिं० रौला] गुल-शोर, हल्ला, धूम, भम्भर। "रौला है मच रहा सब तरफ रौलट बिल का"—मैथिली०। (सर्व०) [ब्र० रावर] आपका। [**रौरी** (स्त्री०)]।

रौराना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० रौरा] बकना, क्रंदन या प्रलाप करना।

रौरा—(सर्व०) आपका।

रौरे—(सर्व०, दे०) [हिं० राव, रावल] आपके (संबोधन) आप। "रौरेहि नाईं"—[रामा०]।

रौला—(संज्ञा, पु०) हल्ला-गुल्ला, हुल्लड़, हल-चल।

रौला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रवण] शोरगुल, हल्ला, हुल्लड़, भम्भर, धूम।

रौलि†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चपत, थप्पड़, चपेटा, चपेट, धौल।

रौशन—(वि०, दे०) [फ़ा० रोशन] प्रदीप्त, प्रकाशित, विदित, विख्यात।

रौस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० रविश] चाल, गति, रंग-ढंग, तौर-तरीका, चालढाल, बाग में क्यारियों के बीच का मार्ग।

रौहाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घोड़ा की एक जाति या चाल।

रौहिणेय—(संज्ञा, पु०, सं०) बलदेव जी, बलभद्र, रोहिणी के पुत्र।

ल

ल—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला के अन्तस्थों में से तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान दंत है। "लृतुलसानाम् दंतः"—सि० कौ०। (संज्ञा, पु०, सं०। भूमि इंद्र।

लंक—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कटि, कमर, मध्य देश। "बारन के भार सुकुमारि की लचत लंक" —पद्०। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लंका] लंका नामक द्वीप। "मानमथो गढ़ लंकपती को" —तुल०।—**नाथ,—नायक**-(पु०) रावण, विभीषण।—**पति,—पती**-(पु०) रावण, विभी-षण।

लंकलाट—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० लाँगक्लाथ] एक बढ़िया सफेद मोटा सूती वस्त्र।

लंका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भारत के दक्षिण में एक द्वीप जहाँ रावण का राज्य था। "तापर चढ़ि लंका कपि देखी"—[रामा०]। [सीलोन]। —**पति**-(पु०) रावण, विभीषण।

लंकाधिपति—(संज्ञा, पु०, सं०) लंकानायक, रावण, विभीषण।

लंकारि—(संज्ञा, पु०, सं०) रामचंद्र।

लंकिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लंका की एक राक्षसी। "नाम लंकिनी एक निशचरी"—[रामा०]।

लंकेश, लंकेश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) रावण, विभीषण।

लंग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लाँग] [लाँग (दे०)] धोती का वह खंड जो पीछे की ओर खोंसा जाता है, काँछ। (संज्ञा, पु०, फ़ा०) लँगड़ापन।

लँगटी—(संज्ञा, स्त्री०) लँगोटी।

लंगड़—(वि०, दे०) [हि० लँगड़ा] वह पुरुष जिसका एक पाँव टूटा हो, लँगड़ा। [लंगर (संज्ञा, पु०, दे०)]।

लंगड़ा—(वि०, दे०) [फ़ा० लँग] जिसका एक पाँव निकम्मा या टूटा हो। [**लँगड़ी** (स्त्री०)]।

लँगड़ाना—(क्रि०, अ०) [हि० लँगड़ा] लंग करते करते चलना, लँगड़ा होकर चलना।

लँगड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लँगड़ा] एक छंद (पिं०) (वि०, स्त्री०) टूटे पैर वाली। —**भिन्न**-एक भिन्न (गणित)।

लंगर—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) ढीठ व्यक्ति या स्त्री। "दौरि पुरुष के गल परै, ऐसी लंगर ढीठ।" (संज्ञा, पु०, फ़ा०) लोहे का एक बड़ा काँटा जो नावों और जहाजों के ठहराने में काम देता है, ठेंगुर (प्रान्ती०), दुष्ट गाय आदि पशुओं के गले में बाँधने का लकड़ी का कुँदा। लोहे की मोटी भारी जंजीर। लकटकने वाली भारी वस्तु। चाँदी का तोड़ा या पायल। कपड़े की कच्ची सिलाई के बड़े या दूर दूर टाँके। नित्य दरिद्रों को बाँटने का भोजन। दीनों को भोजन तथा उसके बाँटने का स्थान। पहलवानों का लंगोट। (वि०) भारी, बजनी, नटखट, ढीठ। "लरिका लेबे के मिसन, लंगर माँ ढिग आय"—**लोहा-लंगर**-(यौ०) बचा-बचाया रद्दी सामान। **मुहा०—करना**-बदमाशी या शरारत करना। (संज्ञा, स्त्री०)—**खाना**-रद्दी सामान का स्थान, कबाड़खाना।

लँगरई, लँगराई*†—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लंगर + आई प्रत्य०] ढिठाई, धृष्टता, दुष्टता।

लँगराना—(क्रि० अ०) देखिए—लँगड़ाना।

लंगुरा—(संज्ञा, स्त्री०) एक प्रकार का धान।

लंगूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लांगूल] बंदर, दुम, पूँछ (बानर की), बड़ी पूँछ वाला काले मुँह का एक बड़ा बंदर। —**फल**-(पु०) नारियल। —**लँगुरी**-(संज्ञा, स्त्री०) घोड़ों की चाल विशेष।

लंगूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लांगूल] पूँछ।

लँगोट, लँगोटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लिंग + ओट हि०] उपस्थ तथा गुदा ढकने के लिए कमर पर बाँधने का छोटा वस्त्र, कौपीन, रुमालों। [**लँगोटी** (स्त्री०)]। —**बंद**-(वि०) ब्रह्मचारी, स्त्री-त्यागी।

लँगोटिया यार—(संज्ञा, पु०) लड़कपन का मित्र।

लँगोटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लँगोट] कौपीन, कछनी, काँछा, भगई (प्रान्ती०)। —**पर फाग खेलना**-अपव्यय या फजूलखर्ची करना, सामर्थ्य से अधिक व्यय करना।

लंघन—(संज्ञा, पु०, सं०) उपवास, निराहार, [**फाका** (फ़ा०)] लाँघन की क्रिया, फाँदने-डाँकने की क्रिया। अतिक्रमण। [**लंघनीय** (अ०)]।

लंघना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० **लाँघना**] लाँघना, फाँदना।

लंघाना—(क्रि० स०) पार उतारना। पार लगाना।

लंघित—(वि०) डाँका या लाँघा हुआ।

लंघ्य—(वि०) लाँघने योग्य, उपवास करने लायक।

लंठ—(वि०, दे०, यौ०) [हि० लट्ठ] उजड्ड, मूर्ख, जाहिल, जड़, [लट्ठ (दे०)]। **लंठराज, लंठाधिराज**—(यौ०) जड़, मूर्ख।

लंड—(संज्ञा, पु०) पुरुष का लिंग।

लंडूरा—(वि०) [दे० या लांगूल] पूँछकटा पक्षी।

लंतरानी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शेखी, व्यर्थ की बड़ी बातें।

लपक—(संज्ञा, पु०) एक जैन सम्प्रदाय।

लंपट—(वि०, सं०) कामी, विषयी, व्यभिचारी, कामुक। [**लंपटता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "लोलुप लंपट कीरति चाहा"—[रामा०]।

लंपटता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कामुकता, दुराचार, व्यभिचार, कुकर्म।

लंब—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी रेखा पर खड़ी होकर दोनों ओर समकोण बनाने वाली रेखा। एक राक्षस जिसे कृष्ण जी ने मारा था (भा०), पति, अंग। (वि०, सं०) लंबा। (**संज्ञा**, पु०, सं०) विलंब, देर। —**कर्ण**—(वि०) गदहा, गधा, जिसके कान लंबे हों, खरगोश। —**ग्रीव**—(पु०) ऊंट। —**तड़ंग**—(वि०) जो ताड़ के समान बहुत लंबा हो, [लंबा तड़ंगा (दे०)]। [**लंबीतड़ंगी** (स्त्री०)]।

लंबक—(संज्ञा, पु०) लंब रेखा, किसी पुस्तक का परिच्छेद, ज्योतिष का एक योग विशेष, एक मुख रोग।

लंबा—(वि०, दे०) [सं० लंब] जो एक ही दिशा में बहुत दूर तक चला गया हो, विशाल, बड़ा, दीर्घ, अधिक ऊँचाई या विस्तार का (समय)। [**लंबी** (स्त्री०)]। —**चौड़ा**—(वि०) विस्तृत, फैला हुआ। —**सफर**—(वि०) दूर का सफर। **मुहा०**—**करना**—चलता या रवाना करना, पृथ्वी पर पटक या लेटा देना। —**होना**—लेट जाना, चला या भाग जाना।

लंबाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लंबा] लंबापन।

लंबान—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लंबा] लंबाई।

लंबाना—(क्रि० स०) लंबा बनाना या करना।

लंबित—(वि०, सं०) लंबा।

लंबिनी—(संज्ञा, स्त्री०) स्कंद की माता।

लंबी—(वि०, स्त्री०) [हि० लंबा] लंब का स्त्री-लिंग रूप। **मुहा०**—**तानना**—आनन्द से लेट कर सोना, वेग से चला जाना, भाग जाना। —**चौड़ी हाँकना**—डींग मारना। —**तानकर सोना**—निश्चिन्त होकर सोना। —**साँस लेना**—आहें भरना।

लंबुक—(संज्ञा, पु०, सं०) लम्बा आदमी।

लंबोतरा—(वि०, दे०) [हि० लंबा] लंबा आकार वाला, जो लंबा हो।

लंबोदर—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश जी। "लंबोदरम् मूषक-वाहनञ्च"—[स्फु०]।

लंबोष्ठ—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊँट।

लंभन—(संज्ञा, पु०, सं०) कलंक प्राप्ति।

लउटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लकुटि, लकुटी] छड़ी, लाठी। [**लउटा** (पु०)]।

लकड़दादा—(संज्ञा, पु०) दादा का दादा।

लकड़बग्घा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० लकड़ी + बाघ] भेड़िये से कुछ बड़ा एक मांसाहारी बनैला जंतु।

लकड़हारा, लकड़िहारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लकड़ी + हारा प्रत्य०] वन से लकड़ी लाकर बेचने वाला।

लकड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लकड़ी] लकड़ी का मोटा कुंदा, [लक्कड़ (दे०)]।

लकड़ाना—(क्रि० वि०) सूखकर लकड़ी की तरह दुर्बल हो जाना, बिना मांस का हो जाना।

लकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लगुड़] काष्ठ, काठ, ईंधन, गतका, लाठी, छड़ी, [लकरी (दे०)]। **मुहा०** (**सूखकर**)—**होना**—बहुत दुर्बल होना, सूख कर कड़ा हो जाना।

लकदक—(वि०, अ०) चटियल मैदान, वह मैदान जिसमें वृक्षादि न हों, साफ, चमकदार।

लकब—(संज्ञा, पु०, अ०) उपाधि, खिताब।

लकवा—(संज्ञा, पु०, अ०) एक वात-व्याधि जिसमे प्रायः मुँह टेढ़ा हो जाता है।

लकसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) फल तोड़ने की लग्गी।

लकीर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रेखा, हि० लीक] रेखा, खत, दूर तक एक ही सीध मे जाने वाली आकृति, धारी, सतर, पंक्ति। **मुहा०** —**का फकीर**—पुराने ढंग पर चलने वाला। "अरुन लकीर को फकीर बनो बैठो है"—रसाल। —**पीटना**—बे समझ पुरानी रीति पर चलना।

लकुच—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़हर। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लकुट] छड़ी।

लकुट, लकुटी, लकुटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लगुड़] छड़ी, लाठी, लकड़ी। "लिहे लकुटिया, जसुमति डोलै थोरो रे भैया करहु सहारो"—ला० दा०।

लकुटी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० लगुड़] छोटी लाठी, डंडा, छड़ी। "या लकुटी अरु कामरिया पर"—रस०।

लकड़, लक्कर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लकड़ी] काठ का बड़ा कुंदा ।

लक्का—(संज्ञा, पु०, अ०) पंखे जैसी पूँछ वाला एक तरह का कबूतर ।

लक्खी—(वि०, दे०) [हि० लाख] लाख या लाहे के रंग का, लाखी । (संज्ञा, पु०) घोड़े की एक जाति । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लाख, सं० लक्ष =संख्या] लखपती ।

लक्खो—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का घोड़ा । लखपती ।

लक्ष—(वि०, सं०) शत सहस्र, एक लाख, सौ हजार । (संज्ञा, पु०, सं०) एक लाख की संख्या का सूचक अंक, अस्त्र के संधान का एक प्रकार, निशाना, लक्ष्य ।

लक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) दर्शक, देखने या दिखाने वाला, बताने वाला ।

लक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) नाम, चिह्न, निशान, आसार, किसी वस्तु की वह विशेषता जिससे उसकी पहिचान हो, परिभाषा, शरीर के रोगादि-सूचक चिह्न, शुभाशुभ-प्रदर्शक शारीरिक या आंगिक चिह्न । (सामु०) शरीर का विशेष काला दाग । [लक्खन, लच्छन (दे०)], चाल-ढाल, तौर तरीका ।—लक्षणा-(स्त्री०) लक्षण का एक प्रकार जिसमे एक लक्षण दूसरे को उपलब्ध हो जाता है ।

लक्षणक—(संज्ञा, पु०, सं०) चिह्न, निशान ।

लक्षणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अभिप्राय या तात्पर्य-सूचक शब्द-शक्ति (काव्य) [लच्छना (दे०)] ।

लक्षना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लक्षण] [लच्छना (दे०)], लक्षणा ।* (क्रि० स०, दे०) [हि० लखना] लखना, देखना ।

लक्षि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लक्ष्मी] [लच्छि (दे०)] लक्ष्मी । "बसति नगर जेहि लक्षि करि, कपट नारि वर वेश"—[रामा०] । * (संज्ञा, पु०, दे०) लक्ष्य ।

लक्षित—(वि०, सं०) निर्दिष्ट, देखा या देखाया या बतलाया हुआ । अनुमान से जाना या समझा गया । (संज्ञा, पु०) लक्षणा-शक्ति के द्वारा ज्ञात शब्द का अर्थ । [**लक्षितार्थ** (यौ०)] ।

लक्षित, लक्षणा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक प्रकार की लक्षणा (काव्य०) ।

लक्षितव्य—(वि०) लक्ष्य करने योग्य ।

लक्षिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रकटित परकीया नायिका अर्थात् जिसका अन्य पुरुष के प्रति प्रेम दूसरों पर प्रगट हो (सा०) ।

लक्षितार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) लक्षण-शक्ति द्वारा उपलब्ध अर्थ ।

लक्षी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आठ रगण वाले चरण का एक वर्णिक छंद (पिं०), खंजन, गंगा-धर ।

लक्ष्म—(संज्ञा, पु० सं०) चिह्न, निशान, अंक । "लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति"—रघु० ।

लक्ष्मण—(संज्ञा, पु०, सं०) सुमित्रा, से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र श्रीराम जी के छोटे भाई, जो शेषावतार माने जाते हैं । लक्षण, चिह्न, निशान, लषन, लखन, [लक्खन (दे०)] ।

लक्ष्मणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्रीकृष्ण जी की पटरानी श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब की स्त्री जो दुर्योधन की पुत्री थी । सारस पक्षी की मादा, सारसी । एक औषधि-विशेष (वैद्य०) ।

लक्ष्मी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सागर-तनया, विष्णु-प्रिया तथा धन की अधिष्ठात्री देवी (पुरा०), रमा, कमला, रामा, दुर्गा, संपत्ति, श्री, शोभा, सौंदर्य, कांति । एक वर्णिक छंद जिसमें रगण, एक गुरु और एक लघु वर्ण होता है । आर्य्या छंद का प्रथम रूप (पिं०), गृह-स्वामिनी, छवि, [लच्छिम, लछिमी, लच्छिमी (दे०)] ।—**कांत**-(पु०) विष्णु भगवान, रमाकांत, रमापति ।—**धर**-(पु०) विष्णु भगवान, स्रग्विणी वृत्त (पिं०) ।—**नाथ,—नायक**-(पु०) विष्णु भगवान, रमेश ।—**पति**-(पु०) विष्णु भगवान, [लछमीपति (दे०)] ।—**पुत्र**-(वि०) धनी, धनवान ।—**वाहन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) उल्लू, (वि०, सं०) मूर्ख, धनी (व्यंग्य) ।

लक्ष्मीवान—(संज्ञा, पु०, सं०) धनी, धनवान ।

लक्ष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उद्देश्य, निशाना, अभीष्ट, वस्तु, जिस पर कोई आक्षेप किया जाय, शब्द का वह अर्थ जो लक्षणाद्वारा ज्ञात हो (काव्य०) । अस्त्रों का संधान-प्रकार ।—**पोत**-(पु०) चाँदमारी का जहाज । [टारगेट बोट]—**भेद**-(पु०) उड़ते या चलते हुए लक्ष्य के भेदने का निशाना । [**लक्ष्यभेदी** (वि०)] ।—**वेधी**-(पु०) निशाना लगाने या लक्ष्य भेजने वाला ।—**सिद्धि**-(स्त्री०) लक्ष्य की प्राप्ति ।

लक्ष्यार्थ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शब्द की लक्षणा-शक्ति से प्रगट होने वाला अर्थ (काव्य०), उद्देश्यार्थ ।

लख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लक्ष] प्रत्यक्ष, माया का प्रत्ण, लाख, लक्ष, लाख संख्या । "लाख चौरासी भरम गँवाया ।"

लखघर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० लाक्षागृह] लाख का घर ।

लखन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लक्ष्मण] लक्ष्मण, [लक्खन, लषन (दे०)] । "सखि जस राम लखन कर जोटा"—[रामा०] । (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० लखना] देखने या लखने की क्रिया या भाव । [लखनीय (वि०)] ।

लखना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लक्ष] देखना, ताड़ना, लक्षण देखकर अनुमान करना, विचारना । (क्रि० स०) देखना । [लखवाना (प्रेरणा०)] ।

लखपति, लखपती—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० लक्षपति] वह धनी जिसके यहाँ एक लाख रुपये सदा तैयार रहे ।

लखलखा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मूर्च्छा मिटाने वाली एक सुगंधित औषध ।

लखलखाना—(क्रि० अ०, दे०) हाँफना ।

लखलुट, लखलूट—(वि०, दे०, यौ०) [हिं० लाख + लुटाना] फजूल-खर्च, अपव्ययी, खर्चीला, उड़ाऊ ।

लखाउ, लखाऊ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लखना] लक्षण, चिह्न, पहचान, लखने या जानने-योग्य, चिन्हारी—चिह्न-रूप मे दिया पदार्थ ।

लखाना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० लखना] दिखाई पड़ना । (क्रि० स०) दिखलाना, समझाना ।

लखाव*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लखाउ] लक्षण, चिह्न, पहचान ।

लखिमी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लक्ष्मी] रमा, कमला, सम्पत्ति, [लछिमी, लच्छिमी (दे०)] ।

लखिया*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लखना + इया प्रत्य०] लखने या देखने वाला, लक्षक ।

लखी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लाखी] लाख के रंग का घोड़ा, लाखी, [लक्खी (दे०)] ।

लखुआ—(संज्ञा, पु०) गेहूँ की एक बीमारी ।

लखेदना—(क्रि० स०) खदेड़ना, भगाना ।

लखेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लाख + एरा प्रत्य०] लाख की चूड़ी बनाने या बेचने वाला । [लखेरिन (स्त्री०)] ।

लखौट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लाख + औट प्रत्य०] लाख या लाह की चूड़ी ।

लखौटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लाख + औटा प्रत्य०] केसर, चंदनादि से बना शरीर में लगाने का अंगराग या सुगंधित लेप, सेंदुरदानी, लाख की बड़ी चूड़ी ।

लखौरा—(वि०, दे०) [हिं० लाख + औरा प्रत्य०] लाख या लाह से बना हुआ ।

लखौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लाख + औरी प्रत्य०] लाख या लाह से बनी हुई वस्तु । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लाखा + औरी प्रत्य०] एक प्रकार की भ्रमरी या भृङ्गी का घर, भृङ्गी कीड़ा, एक छोटी पतली ईंट, नौतेरही या ककैया ईंट (प्रान्ती०) । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लक्ष] किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फल चढ़ाना ।

लगंत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लगना + अंत प्रत्य०] लगने या लगन होने की क्रिया का भाव ।

लग, लगि—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० व्र० लौं] पर्यंत, तक, ताईं, निकट, समीप, पास, लौं (व्र०), लगे (ग्रा०) । "जहँ लग नाथ नेह अरु नाते"—[रामा०] । (संज्ञा, स्त्री०) प्रेम, लगन, लाग, लौ । (अव्य०) हेतु, लिए, वास्ते, संग, साथ ।

लगचलना—(क्रि० अ० दे०, यौ०, हिं०) साथ साथ चलना, पास जाना ।

लगड़—(संज्ञा, पु०, दे०) पक्षी विशेष, बाज ।

लगड़बग्घा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लकड़ बाघ] लकड़बग्घा ।

लगढग—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० लगभग] लगभग, निकट, करीब ।

लगती—(वि०, दे०) लगने वाली, सटीक बैठने वाली ।

लगन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लगना] प्रवृत्ति, धुन, रुचि, किसी ओर ध्यान लगने की क्रिया, लौ, स्नेह, प्रेम, संबंध, चाह, लगाव । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लग्न] ब्याह की साइत का मुहूर्त्त, विवाहादि के होने के दिन, सहारग, सहालग (प्रान्ती०), लग्न, मुहूर्त्त । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रकार की बड़ी थाली । "लगन महूरत, जोग-

बल"—तुल०। "लगन लगाये तुम मगन बने रहौ"—रसाल।—पत्री-(स्त्री०) [सं० लग्न-पत्रिका] ब्याह की निश्चित तिथि-सूचक, वर के यहाँ भेजी हुई कन्या के पिता की चिट्ठी। मुहा०—लगना (लगाना)-प्रेम होना (करना)। —चढ़ना-विवाह की लग्न पत्रिका का वर के यहाँ पढ़ा जाना और तिलक होना।

लगनवट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लगन] प्रेम, स्नेह, प्यार, चाह।

लगना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लग्न] सटना, दो वस्तुओं के तलों का परस्पर मिलना, जुड़ना, दो वस्तुओं का चिपकाया, टाँका (सिया) या जड़ा जाना, सम्मिलित या शामिल होना। क्रम से रखा या सजाया जाना। छोर या किनारे पर पहुँच कर ठहरना, टिकना या रुकना। व्यय या खर्च होना। जान पड़ना, ज्ञात होना, स्थापित होना। आघात या चोट पड़ना। रिश्ते या संबंध में कुछ होना। किसी वस्तु का चुनचुनाहट या जलन उत्पन्न करना, खाद्य वस्तु का बरतन के तल में जम जाना। प्रारम्भ होना, चलना या जारी होना, प्रभाव या असर पड़ना। सड़ना, गलना। प्राप्त होना, रहना। जैसे—भूत, भेड़िया लगना, हानि करना। [लगाना (क्रि० स०)], [लगवाना (प्रेरणा० रूप)]। "लागै अति पहार कर पानी"—[रामा०]। मुहा०—लगती बात कहना-मर्म्म-भेदी कड़ी बात कहना, चुटकी लेना। आरोप होना, हिसाब या गणित होना। साथ-साथ या पीछे-पीछे चलना। गाय आदि पशुओं के दूध होना या दुहा जाना। धँसना, चुभना, गड़ना, छेड़छाड़ या छेड़-खानी करना। बंद होना, मुँदना। बदना या दाँव पर रखा जाना। होना, घात या ताक में रहना। पीड़ा या कष्ट देना। नोट—यह क्रिया अनेक शब्दों के साथ आकर भिन्न भिन्न अनेक अर्थ देती है। (संज्ञा, पु०, दे०) जंगली जंतु। (वि०, दे०) लगने वाला।

लगनि*—(संज्ञा, स्त्री०, ब्र०) [हि० लगन] स्नेह प्रेम, लगाव, संबंध।

लगनी—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० लगन—थाली] थाली, परात, रकाबी। (वि०, दे०) लगने वाली या फबती।

लगनीय—(वि०, सं०) जो संबद्ध या संयुक्त हो।

लगभग—(क्रि० वि०) [हि० लग—पास+भग अनु०] करीब-करीब, प्रायः।

लगमात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० लगना +मात्रा सं०] व्यंजनों में मिले स्वरों के सूक्ष्म रूप, मात्रा।

लगर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) लग्घड़ पक्षी।

लगलग—(वि०, दे०) [अ० लकलक] बहुत पतला-दुबला, अति सुकुमार।

लगव*†—(वि०, दे०) [हि० लगो] अनृत, मिथ्या, झूठ, असत्य, बेकार, व्यर्थ निस्सार।

लगवाना—(क्रि० स०) दूसरे के द्वारा लगाने का काम कराना।

लगवार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० लगना] यार, प्रेमी, उपपति।

लगाऊ—(वि०) लगाने वाला।

लगातार—(क्रि० वि०) [हि० लगना+तार—सिलसिला] निरंतर, एक के पीछे एक, मिलित, बराबर, एकचाल, एकसाँ, क्रमशः।

लगान—(संज्ञा, पु०) [हि० लगना या लगाना] भूमिकर, राजस्व, सरकारी महसूल, पोत, जमाबंदी, लगने या लगाने का भाव।

लगाना—(क्रि० स०) [हि० लगना का स० रूप) मिलाना, सटाना, जोड़ना। मलना, रगड़ना, चिपकना। गिराना, जमाना, पेड़ पौधे आरोपित करना। फेंकना, क्रम से रखना या सजाना, चुनना, उचित स्थान पर पहुँचाना। व्यय या खर्च कराना। अनुभव या ज्ञात कराना। नई प्रवृत्ति आदि पैदा करना। चोट पहुँचाना या आघात करना। उपयोग या काम में लाना। आरोपित करना या अभियोग लगाना। प्रज्वलित करना, जलाना। जड़ना, गणित या हिसाब करना, कान भरना, ठीक जगह पर बैठाना, नियुक्त करना। पशु दुहना। गाड़ना, ठोंकना, धँसाना, छलाना, स्पर्श करना। दाँव या बाजी पर रखना। अभिमान करना। पहिनना, ओढ़ना, करना, सम्मिलित करना। नोट—लगने के समान इसका प्रयोग भी विविध क्रियाओं के साथ भिन्न भिन्न अर्थों में होता है। मुहा०—बुझाना-लड़ाई-झगड़ा कराना, वैमनस्य करा देना। (किसी को कुछ) लगाकर कुछ कहना (गाली देना)—बीच में संबंध स्थापित कर कुछ आरोप करना।

लगाम—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) घोड़े का दहाना, करियारी (प्रान्ती०), रास, बाग, दोनों ओर रस्सी या चमड़े का तस्मादार घोड़े के मुँह में रखने का लोहे का कँटीला ढाँचा तथा इसकी रस्सी या तस्मा जो सवार पकड़े रहता है।

लगाय—(संज्ञा, स्त्री०) लगन, प्रेम ।

लगार*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लगना + आर प्रत्य०] नियमित रूप से दी जाने वाली कुछ वस्तु, बंधेज, प्रीति, लगाव, संबंध, मिलसिला, लगन, क्रम, तार, भेदिया, मेली, सम्बन्धी । "घर आवत है पाहुना, बनज न लाभ लगार"—[स्फु०] ।

लगालगी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लगना] प्रीति लगना, लाग, प्रेम, मेलजोल, संबंध "लगालगी लोचन करै"—रहीम० ।

लगाव—(संज्ञा, पु०) [हि० लगना + आव प्रत्य०] संबंध, ताल्लुक, वास्ता ।

लगावट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लगना + आवट प्रत्य] संबंध, ताल्लुक, वास्ता, प्रीति ।

लगावन*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लगना] लगाव, संबंध ।

लगावना—(क्रि० स०, दे०) [हि० लगाना] लगाना, मिलाना, जोड़ना ।

लगि*†—(अव्य, दे०) [हि० लौं] तक, पर्य्यंत, पास । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लग्गी] लग्गी, लग्घी (ग्रा०) ।

लगी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लग्गी] लग्गी, लग्घी (ग्रा०) ।

लगुँहा—(वि०, दे०) सुन्दर, मनोहर, मनभावन ।

लगु*†—(अव्य०, दे०) [हि० लौं, लग] लौं, तक, पर्यंत, लगि ।

लगुआ, लगुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लगाना] मित्र, प्रेमी, उपपति ।

लगुड—(संज्ञा, पु०, दे०) लाठी, छड़ी, डंडा, लकुट, लकुटी ।

लगूर, लगूल*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लाँगूल] पूँछ, दुम, लंगूर ।

लगे†—(अव्य०, दे०) [हि० लग] पास, निकट, समीप ।

लगौहाँ*—(वि०, दे०) [हि० लगना + औहाँ प्रत्य०] प्रेमेच्छु, रिझवार, लगन लगाने की इच्छा वाला ।

लग्गा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लगुड] लम्बा बाँस, वृक्षों से फल आदि तोड़ने की लम्बी लग्गी, लग्घा (ग्रा०) । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लगाना] कार्यारम्भ करना । मुहा०—लगाना-शुरू करना ।

लग्गी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लग्गा] पतला लम्बा बाँस जिससे फलादि तोड़ते हैं, लगसी, लग्घी (प्रान्ती०) ।

लग्घड़—(संज्ञा, पु०, दे०) बाज, शचान, चीता, लकड़बग्घा ।

लग्घा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लग्गा] लंबा बाँस । [लग्घी (स्त्री०)] ।

लग्न—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राशि के उदय रहने का समय, मुहूर्त्त, शुभकार्य की साइत (ज्यो०), ब्याह का समय या दिन, ब्याह, [सहारग, सहालग, लगन (दे०)] । 'लग्न मुहूरत, योग बल, "तुलसी गनत न काहि"—तुल० । (वि०, दे०) मिला या लगा हुआ, आसक्त, लज्जित । (पु०, दे०) लगन, प्रेम, स्नेह ।—**कुण्डली**-(स्त्री०) जन्म-कुण्डली ।—**दिन**-(संज्ञा, पु०, सं०) विवाह का निश्चित दिन ।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) वह चिट्ठी जिसमें विवाह की रीतियों के लिये निश्चित समय क्रम से लिखे रहते है, लग्न पत्रिका ।—**पत्रिका**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) लग्न-पत्र । "लिख्यते लग्नपत्रिका"—[स्फु०] ।—**मुहूर्त्त**-(पु०) विवाह का शुभ समय ।

लग्नेश—(संज्ञा, पु०) ज्योतिष में लग्न का स्वामी ग्रह ।

लघिमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक सिद्धि जिससे मनुष्य बहुत ही हलका या छोटा हो जाता है, लघुत्व, ह्रस्व या लघु होने का भाव ।

लघिष्ठ—(वि०, सं०) अति लघु या छोटा या नीच, अधम, निकृष्ट ।

लघु—(वि०, सं०) अल्प, छोटा, कनिष्ठ, शीघ्र, सुन्दर, अच्छा निःसार, कम, थोड़ा, हलका, ह्रस्व । (संज्ञा, पु०) व्याकरण में एक मात्रिक स्वर, एक मात्रा का ह्रस्व वर्ण जिसका चिह्न (।) है (पिं०) । "यह लघु जलधि तरत कति बारा"—[रामा०] ।—**अपराध**-(पु०) छोटा कुकृत्य । [माइनर अफेंस]—**अर्धन्यायालय**-(पु०) लघुवादाधिकरण, खर्फीफा अदालत । [स्माल काज़ कोर्ट]—**काय**-(पु०) बकरा, भेड़ा । (वि०, सं०) छोटे शरीर वाला ।—**कार्य**-(पु०) छोटा काम । [माइनर वर्क]—**चेता**-(पु०) तुच्छ या बुरे विचार वाला, नीच, दुष्ट ।—**पाक**-(पु०) सहज में शीघ्र पचने वाला भोज्य या खाद्य पदार्थ ।—**मति**-(वि०) कम समझ, मूर्ख, मंदमति । "लघुमति

मोरि चरित अवगाहा"—[रामा०]।—**मान**–(पु०) नायिका का थोड़ा रूठना या कुपित होना या अन्य स्त्री से नायक की बातचीत देख रूठना (काव्य०), अल्प परिमाण ।—**शंका**–(स्त्री०) पेशाब करना, मूत्र-त्याग ।—**शीर्षक**–(पु०) अवर या अप्रधान शीर्षक । [माइनर हेड]—**हस्त**–(पु०) छोटा हाथ । (वि०) शीघ्रता से बाण चलाने वाला, हलके हाथ वाला, फुर्तीला ।

लघुता, लघुताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लघुता] छोटाई, हलकाई, तुच्छता, नीचता । "लघुताई सब तें भलो, लघुताई तें सब होय"—तुल० ।

लघ्वी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अति छोटी, अति हलकी ।

लच, लचक—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लचकना] झुकाव, लचन, वस्तु के झुकने का गुण, लचने का भाव ।

लचकना—(क्रि० अ०) [हि० लच अनु०] लचना झुकना, कटि आदि का कोमलतादि से झुकना । [**लचकाना** (स० रूप)], [**लचकवाना** (प्रेरणा० रूप)]

लचकनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लचकना] लचक, लचीलापन ।

लचकाना—(क्रि० स०) दबाना, लचाना, झुकाना ।

लचकीला—(वि०) लचकदार ।

लचन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लचक] लचक, नवनि, [लचनि (दे०)] ।

लचाना—(क्रि० स०) लचकाना, दबाना, झुकाना ।

लचना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० लचकना] लचकना, झुकना, नवना, नम्र होना ।

लचार*†—(वि०, दे०) [फ़ा० लाचार] लाचार, मजबूर, विवश, बेबस ।

लचारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० लाचारी] लचारी, मजबूरी, बेबसी । (संज्ञा, पु०, दे०) उपहार, नजर, भेंट, एक प्रकार का गीत (संगी०) ।

लचीला—(वि०) लचकदार, जो आसानी से लच सके ।

लचुई—(संज्ञा, स्त्री०) मैदे की मुलायम पूड़ी ।

लच्छ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लक्ष्य] मिस, ब्याज, बहाना, निशाना, लक्ष्य, ताक । (संज्ञा, पु०) [सं० लक्ष] लाख, सौ हजार ।

लच्छन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लक्षण] लक्षण, चिह्न, लक्ष्मण जी । [**लच्छनी** (वि०)] । "लच्छन लाल कही हँसि के, भृगुनाथ न कोप इतो करिये" –[रामा०] ।

लच्छना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० लखना] लखना, देखना, चितवना । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लक्षणा] लक्षणा-शक्ति ।

लच्छमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लक्ष्मी] लक्ष्मी, संपत्ति, [लच्छिमी, लछिमी (दे०)] ।

लच्छा—(संज्ञा, पु०, अनु०) गुच्छे या झब्बे के आकार में लगे हुए तार, किसी वस्तु के सूत जैसे पतले लबे टुकड़े, पैर का एक गहना ।—(**छे**) **दार**–(वि०) लच्छे वाले (खाद्य पदार्थ), मधुर और मनरोचक बातें ।

लच्छि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लक्ष्मी] लक्ष्मी, रमा । "बसति नगर जेहि लच्छि करि, कपट नारि वर वेश"—[रामा०]।—**निवास**–* विष्णु, नारायण ।

लच्छित*—(वि०, दे०) [सं० लक्षित] लक्षित, आलोचित, देखा हुआ, अंकित, चिह्नित, लक्षण वाला ।

लच्छी—(वि०, दे०) एक तरह का घोड़ा । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लक्ष्मी] लक्ष्मी, रमा । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० लच्छा) छोटा लच्छा, अंटी ।

लछन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लक्ष्मण] लक्ष्मण जी । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लक्षण] लक्षण, चिह्न ।

लछना†—(क्रि०, अ०, दे०) [हि० लखना] लखना, देखना ।

लछमन, लछिमन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लक्ष्मण] लक्ष्मण जी । "समाचार जब लछमन पाये"—[रामा०] ।—**झूला**–(संज्ञा, पु०, दे०, हि०) रस्सों या तारों से बना पुल (हरिद्वार से आगे) ।

लछमना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लक्ष्मण] लक्ष्मणा, श्रीकृष्ण जी की एक पटरानी, साम्ब की पुत्री, सारस की मादा, सारसी, एक औषधि विशेष ।

लछमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लक्ष्मी] लक्ष्मी, रमा, [लछिमी, लच्छिमी (दे०)] ।

लज*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लाज, सं० लज्जा] लाज, लज्जा ।

लजना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० लजाना] शर्माना, लजाना।

लजलजा—(वि०, दे०) लसदार, चिपचिपा।

लजलजाना—(क्रि० अ०, दे०) चिपचिपाना, लसलसाना।

लजवाना—(क्रि० स०, दे०) [लजाना] दूसरे को लज्जित करना, लजावना।

लजाधुर†—(वि०) [सं० लज्जाधर] लज्जालु, लज्जावान्, शर्मीला। (संज्ञा, पु०) लजालू पौधा।

लजाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लज्जा] शर्माना, लज्जित होना। (क्रि० स०) लज्जित करना, [**लजावना, लजवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लजारू, लजालू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लज्जालु] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से तत्काल सिकुड़ जाती हैं, लज्जावंती, छुईमुई (ग्रा०)।

लजावना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० लजाना] लजाना, लजना।

लजिवाना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० लजाना] लजाना, शर्माना।

लजीला—(वि०, दे०) [सं० लज्जाशील] लज्जालू, लज्जावन। [**लजीली (स्त्री०)**]।

लजुरी‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रज्जु] रस्सी, डोरी, लेजुरी (ग्रा०)।

लजोर*†—(वि०, दे०) [सं० लज्जाशील] लज्जालू, लज्जाशील।

लजौना—(वि०) शर्मीला, लजाधुर, लज्जावान्।

लजोहाँ, लजौंहाँ—(वि०, दे०) [लज्जावह] लज्जाशील, लजीला। [**लजौहीं** (स्त्री०)]।

लज़्ज़त—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) स्वाद, मज़ा।

लज्जा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हया, [लाज (दे०)] शर्म, पत, इज्जत, मान-मर्य्यादा। [**लज्जित** (वि०)]। "**कहत सुकोया ताहि को**, लज्जाशील सुभाव"।—**प्रद**-(वि०) लज्जा जनक।—**प्राया**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चार प्रकार की मुग्धा नायिका में से एक (केशव)।—**रहित**-(वि०, सं०) निर्लज्ज, बेशर्म।—**शील**-(वि०, सं०) लजीला।

लज्जावंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [लजालू, छुईमुई, लजवंती (दे०)]।

लज्जावती—(वि०, स्त्री०, सं०) शर्मीली, लजीली।

लज्जावान्—(वि०) [सं० लज्जावत] लज्जाशील, शर्मीला, लजीला। [**लज्जावती (स्त्री०)**]।

लज्जित—(वि०, सं०) शर्माया हुआ।

लट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लट्वा] अलक, केश-पाश, केश-लता, उलझे बालों का गुच्छा। "बदन सलोनी लट लटकति आवै है"—रत्ना०। **मुहा०—छिटकाना**-सिर के बालों को खोलकर इधर-उधर बिखराना। (पु०) [हि० लपट] लपट, लौ, ज्वाला।

लटक—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लटकना] लटकने का भाव, झुकाव, लचक, शरीर के अंगों की मनोहर चेष्टा, अंगभंगी।

लटकन—(संज्ञा, पु०) [हि० लटकना] लटकने वाला पदार्थ, लटक, नाक का एक गहना, सरपेंच या कलँगी में लगे रत्नों का गुच्छा। (संज्ञा, पु०, दे०) एक पेड़ जिसके बीजों से गेरुआ लाल रंग निकलता है।

लटकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लटन=झूलना] झूलना, टँगना, लचकना, किसी खड़ी वस्तु का झुकना, बल खाना। किसी कार्य का अपूर्ण पड़ा रहना, विलम्ब या देर होना, ऊँचे आधार से नीचे की ओर अधर में टिका रहना। [**लटकाना** (स० रूप)], [**लटकावना, लटकवाना** (प्रेरणा०)]। **मुहा०—लटकती चाल**—बल खाती हुई मनोहर चाल। **लटके रहना**—उलझन में रहना, फँसे रहना (अपूर्ण कार्यादि में)।

लटका—(संज्ञा, पु०) [हि० लटक] चाल, ढब, गति, बनावटी चेष्टा, हावभाव, बात-चीत से बनावटी ढंग। धोखा, संक्षिप्त उपचार। तंत्र-मंत्रादि की युक्ति, टोना, टोटका, चुटकुला।

लटकाना—(क्रि० स०) टाँगना, झुकाना, प्रतीक्षा कराना, फँसा रखना।

लटकाव—(संज्ञा, पु०) [हि० लटका] टँगाव, झुकाव, भुलाव। **मुहा०—लटका देना**-झाँसा या धोखा देना, भुलावे में डालना।

लटकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० लटकना] टाँगना, झुकाना, अधर में रखना, विलंब करना, भुलावे में रखना, लटकावना।

लटकीला—(वि०, दे०) [हि० लटक+ईला प्रत्य०] लटकता या झूमता हुआ। [**लटकीली** (स्त्री०)]।

लटकू—(संज्ञा, पु०) एक पेड़ विशेष जिसकी छाल से रंग निकलता है।

लटकौवाँ—(वि०, दे०) [हि० लटकाना+औवाँ प्रत्य०] लटकने वाला।

लटजीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [दे० लट+जीरा हिं०] अपामार्ग, चिचड़ा, एक प्रकार का जड़हन धान।

लटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लड] बहुत थक जाना, लड़खडाना, अशक्त होना, दुर्बल और निर्बल होना, हतोत्साह और निकम्मा होना, व्याकुल या विकल होना। "कहा भानु कछु लटि गयो, देखै जो न उलूक"—नीतिं०। (क्रि० अ०, दे०) [सं० लल] चाहना, ललचाना, लुभाना, सप्रेम लीन या तत्पर होना।

लटपट—(वि०, दे०) [हि० लटपटाना] मिला, सटा, लड़खड़ाना "लटपट चाल चलति मतवारो" —[स्फु०]।

लटपटा—(वि०, दे०) [हि० लटपटाना] लड़खड़ाता, गिरता-पड़ता, ढीला ढाला, अस्पष्ट और अव्यवस्थित, ठीक और स्पष्ट क्रम से जो न निकले (शब्दादि) अस्तव्यस्त, टूटा-फूटा, अंडबंड, थक कर शिथिल, अशक्त। "शोक से ही लटपटा कर हो गये ऐसे अपी"—[स्फु०]। (वि०) जो अधिक मोटा (गाढ़) और पतला न हो, गिजा हुआ, लुटपुटा, मला दला हुआ (वस्त्रादि)।

लटपटान—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लटपटाना] लचक, लटक, लड़खड़ाहट।

लटपटाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लड+पत] गिरना, पड़ना, डिगना, लड़खड़ाना, चूकना, भली भाँति न चलना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० लल] मोहित होना, लोभाना, अनुरक्त या लीन होना, विचलित होना, घबड़ा जाना।

लटा†—(वि०, दे०) [सं० लट्ट] दुर्बल, अशक्त, लंपट, लोलुप, नीच, लुच्चा, हीन, तुच्छ, बुरा। [**लटी** (स्त्री०)]।

लटाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चर्खी, पेरनी, जिसमें डोरी लपेट कर पतंग उड़ाते हैं।

लटापटी—(संज्ञा, वि०, स्त्री०, दे०) [हि० लट पटाना] लड़खड़ाती, ढीली-ढाली, अस्त-व्यस्त अंड-बंडी, लड़ाई-झगड़ा। "लटापटी सी चाल से चलता हुआ आया यहाँ"—कुंज वि०।

लटापोट*†—(वि०, दे०) [सं० लोट+पोट] मोहित, मुग्ध, आसक्त, विवश।

लटी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लटा] बुरी वेश्या, साधुनी, भक्तिन, गप, झूठी-बुरी बात। (वि०, दे०) निर्बल, दुबली, फटी, चिथड़ा हुई। "धोती फटी सी लटी दुपटी"—नरो०।

लटुआ, लटुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लट्टू, लट्ट, एक गोल खिलौना, बरछी या भाले का फल। "लीन्हे भाला नागदमन का लटुवा जहर बुताओ लाग"—[आल्हा०]।

लटुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लकुट] छड़ी। [**लटुकी** (स्त्री०)] लकुटी।

लटुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लटूरी] लटूरी।

लटू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लट्टू] लट्टू, भौंरा। **मुहा०—(लट्टू) होना**—मुग्ध और प्रसन्न होना, रीझना।

लटूरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) चोटी, जटा, लट।

लटूरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लट] अलक, केश, केश-कलाप, लटकता हुआ बालों का गुच्छा।

लटोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लस+चिपचिपाहट] एक पेड़ जिसके फलों में बहुत सा लसदार गूदा होता है, लसोड़ा, लसोढ़ा (ग्रा०)।

लट्टपट्ट‡—(वि०, दे०) [हि० लथपथ] लथपथ होना, भीग जाना।

लट्टू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लुठन+लुढ़कना] एक गोल खिलौना जिसे डोरे से लपेट फेंक कर नचाते हैं।—**दार**-(वि०) लट्टू की तरह, लट्टूदार। **मुहा०—किसी पर—होना**-आसक्त या मोहित होना, उत्कंठित या लालायित होना।

लट्ठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यष्टि] बड़ी लाठी। **लो०**—"पड़ा लट्ठ तें काम, बिसरि गई पट्टेबाजी"।—**बाज**-(वि०) लाठी से लड़ने वाला, लठैत (ग्रा०)। [**लट्ठबाजी** (स्त्री०)]।—**मार**-(वि०) लट्ठ मारने वाला, अप्रिय या कठोर, कर्कश या कटु बोलने वाला।

लट्ठा—(संज्ञा, पु०) [हि० लट्ठ] लकड़ी की शहतीर, बल्ली, कड़ो, धन्नी, लकड़ी का मोटा और लंबा टुकड़ा, एक मोटा और गाढ़ा कपड़ा।

लट्ठी—(संज्ञा, पु०, दे०) लाठी।

लठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० यष्टि] बड़ी लाठी, लट्ठ।

लठालठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लठबाजी, लाठी की लड़ाई।

लठिया—(संज्ञा, स्त्री०) लाठी, डंडा।

लठियाना—(क्रि० अ०, दे०) लाठी से मारना पीटना या कूटना, लाठी के बल से भगाना।

लठैत—(वि०, दे०) [हि० लठ+ऐत प्रत्य०] लाठीबाज। (वि०, दे०) लठ से लड़ने वाला। [**लठैती** (संज्ञा, स्त्री०)]।

लट्ठर—(वि०, दे०) शिथिल, ढीला, धीमा, आलस, मट्ठर।

लड़ैत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लड़ना] लड़ाई, भिड़ंत, सामना, मुटभेड़, कुश्ती।

लड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० यष्टि] लड़ी, माला, श्रेणी, रस्सी का एक तार, पान, पंक्ति, पाँति।

लड़क—(संज्ञा, पु०) "लड़का" का समास रूप में प्रयुक्त होने वाला शब्द।—**खेल**-(पु०) बालकों का खेल, सहज काम।—**पन**-(पु०) [हि० लड़का+पन प्रत्य०] बालक होने की अवस्था, लड़कई, बाल्यावस्था, चंचलता, चपलता।—**बुद्धि**-(स्त्री०) बालकों की सी समझ, नासमझी, बालमति।

लड़कई, लरकई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लड़कपन] लड़कपन, [लरिकई, लरिकाई (दे०)]।

लड़का—(संज्ञा, पु०) [सं० लट या हि० लाड़=दुलार] अल्पवयस्क, बालक, बेटा, पुत्र, थोड़ी उम्र का मनुष्य, [लरका, लरिका (दे०)]।—**वाला**-(पु०) परिवार, कुटुम्ब, वंश, संतान, औलाद। **मुहा०—लड़कों का खेल**-बिना महत्व की बात, सहज कार्य, लड़कों का तमाशा।—**(कों) का खेल**-आसान काम, बिना किसी महत्व का कार्य।

लड़काई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लड़का+आई प्रत्य०] लड़कपन, बालपन, महत्व शिशुता, शैशव, [लरिकाई (दे०)]। "लड़काई को पैरिबो, आगे होत सहाय"—तुलसी।

लड़किनी—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए लड़की।

लड़की—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लड़की] बेटी, पुत्री, कन्या।

लड़कोर, लड़कौरी—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० लड़का+औरी प्रत्य०] वह स्त्री जिसकी गोदी में लड़का हो, लड़के वाली, [लरकौरी (दे०)]।

लड़खड़ाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लड़—डोलना+खड़ा] इधर-उधर झुकना या झोंका खाना, डगमाता, डगमगा कर गिरना, चूकना, विचलित होना, पूर्णतया स्थित न रहना, [लरखराना (दे०)]।

लड़खड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) लड़खड़ाहट।

लड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० रणन] झगड़ना, युद्ध करना, भिड़ना, परस्पर आघात करना, मल्लयुद्ध करना, बहस, तकरार या हुज्जत करना, विवाद या झगड़ा करना, टकराना या टक्कर खाना, मुकदमा चलाना। पूरा पूरा ठीक बैठना, सटीक होना, लक्ष्य पर पहुँचना, भिड़ आदि का डंक मारना, [लरना (दे०)]। (संज्ञा, स्त्री०) लड़ाई। [**लड़ाका, लड़ैया** (वि०)]। लड़ाई करने वाला।

लड़बड़—(वि०, दे०) हकला, तुतला।

लड़बड़ाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० लड़बड़] हकलाना, तुतलाना, लड़खड़ाना।

लड़बावला—(वि०, दे०, यौ०) [हि० लड़=लड़कों का सा+बावला] मूर्खता-सूचक, अनारी, बेसमझ, मूर्ख, गँवार, अल्हड़। [**लड़बावली** (स्त्री०)]।

लड़ाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लड़ाना+आई प्रत्य०] युद्ध, संग्राम, मल्लयुद्ध, झगड़ा, भिड़ंत, तकरार, विवाद, बहस, टक्कर, विरुद्ध, युक्ति या चाल, मुकदमा, वैर, विरोध, किसी मामले मे सफलतार्थ विरुद्ध यत्न।

लड़ाका—(वि०, दे०) [हि० लड़का+आका प्रत्य०] योद्धा, शूरवीर, झगड़ालू, तकरारी, विवादी, बहसी, लड़ाँक (ग्रा०) [**लड़ाँकी** (स्त्री०)]।

लड़ाना—(क्रि० स०) [हि० लड़ना का स० रूप] दूसरे को लड़ने या झगड़ने मे लगा देना, भिड़ाना, परस्पर उलझाना, तकरार या हुज्जत करा देना, सफलतार्थ प्रयोग करना, टक्कर खिलाना, लक्ष्य पर पहुचाना। (क्रि० स०) [हि० लाड़=प्यार] दुलार या लाड़-प्यार। "जो पै है कुपूत तौ तिहारेई लड़ाये है"—रत्ना०।

लड़ायता†—(वि०, दे०) [हि० लड़ैत] लड़ैता, दुलारा, प्यारा। [**लड़ैता** (ब्र०)]। "सांई पारवती को लड़ायतो सु लाला है"—[स्फु०]।

लड़ियाना—(क्रि० स०, दे०) गथना, पिरोना, पोहना, लड़वाना।

लड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लड़] पंक्ति, माला, रस्सी का एक तार, श्रेणी, [लरी (दे०)]। (क्रि० स०, भू०, स्त्री०) लड़ना।

लड़ुआ, लड़ुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लड्डुक] मोदक, लड्डू, एक मिठाई, लाडू (प्रान्ती०)।

लड़ैता—(वि०, दे०) [हि० लाड़—दुलार+ऐता प्रत्य०] दुलारा, लाड़-प्यार से इतराया हुआ, लाड़ला, लाड़िला, ढीठ, शोख, प्रिय, प्यारा, धृष्ट। (वि०, दे०) [हि० लड़ना]। योद्धा, लड़ने वाला, लड़ाका।

लड्डू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लड्डुक] मोदक, लड़ुआ, लड़ुवा, मिठाई, लाडू। **मुहा०—ठग के—खाना**-पागल या बेहोश होना, नासमझी करना। **मन के—(मन-मोदक) खाना या फोड़ना**—व्यर्थ किसी बड़े लाभ की कल्पना करना।

लड्याना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० लाड़—दुलार] दुलार, करना दुलराना, लाड़-प्यार करना, लड़ाना।

लढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लुढ़कना] बैल-गाड़ी, छकड़ा, बड़ी गाड़ी [**लढ़ी** (स्त्री०)]।

लढ़िया†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लुढ़कना] बैलगाड़ी, छोटी गाड़ी, छोटा छकड़ा।

लढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लढ़ा] छोटी बैलगाड़ी, छकड़ा।

लत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रति] दुर्व्यसन, कुटेव, बुरा स्वभाव, बुरी आदत। लात का ह्रस्व रूप।—**खोर,—खोरा**-(वि०) लातों की मार सदा खाने वाला, निलज्ज, कमीना, नीच, पाय-दाज़, गुलाम-गर्दा। [**लतखोरिन** (स्त्री०)]। [**लत-खोरी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**मर्दन**-(स्त्री०) लातों से मलने की क्रिया, लतमार, लतखोर।—**मार**-(वि०) लतखोर, निर्लज्ज, कमीना, नीच।

लतर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लता] बेल लता।

लतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) पुराने जूते। [**लतरी** (स्त्री०)]।

लतरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक पौधा जिसकी फलियों के दानों से दाल बनती है। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लतरा] पुरानी जूती।

लता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह पौधा जो पृथ्वी पर डोरी-सा फैले या किसी बड़े पेड़ से लिपट कर ऊपर फैले। लतिका, बेल, बल्लरी, वृतती, बल्ली, बौंड़, कोमल शाखा। सुन्दरी स्त्री। "लता ओट तब सखिन लखाये"—[रामा०]।—**कुंज**-(पु०) लता निकुंज, लताओं से मंडप के समान छाया हुआ स्थान, लतागृह, लता-भवन।—**गृह**-(पु०) लताओं का घर, लता-कुंज, लताओं से छाया स्थान।—**पता**-(पु०) पेड़-पत्त, जड़ी-बूटी।—**भवन**-(पु०) लताओं से छाया हुआ मंडपाकार स्थान, लताकुंज, [लता-भौन (दे०)] लतालय, लतायतन, लतासद्म। "लता भवन तें प्रगट भे"—[रामा०]।—**मंडप**-(पु०) लताओं से छाया हुआ स्थान विशेष, लता गृह, [**लतावास** (यौ०)]।

लताड़—(संज्ञा स्त्री०, दे०) डाँट फटकार।

लताड़ना—(क्रि० स०, दे०) [हि० लात] पैरों से कुचलना, रौंदना, हैरान करना।

लतिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटी लता, बेलि, बल्लरी।

लतियर—(वि०, दे०) [हि० लत+खोर] निर्लज्ज, लतमार, [**लतियल** (हि०)]।

लतियल—(वि०, दे०) [हि० लत+यल प्रत्य०] लती, लतखोर।

लतिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लत+इया प्रत्य०] बुरे स्वभाव का, कुचाली, दुराचारी।

लतियाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० लात+आना प्रत्य०] पैरों से कुचलना या रौंदना, खूब लातें मारना।

लती—(वि०, दे०) [हि० लत+ई प्रत्य०] स्वभाव या टेव वाला, आदी, दुराचारी, कुचाली, कुकर्मी, बुरी लत वाला।

लतीफ—(वि०, अ०) बढ़िया, साफ, निर्मल, स्वच्छ, मज़ेदार [**कसीफ** (विलो०)]।

लत्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लत्तक] फटा-पुराना कपड़ा, चिथड़ा, कपड़े का टुकड़ा। [**लत्ती** (स्त्री०)]। **मुहा०—लगाना (लपेटना)**-फटे वस्त्र पहिनना, कंगाल होना।

लत्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लात] लात, पद-प्रहार (पशु) (संज्ञा, स्त्री०) [हि० लत्ता] कपड़े की लंबी और फटी पुरानी धज्जी। **मुहा०—दुलत्ती चलाना**-घोड़े आदि का पीछे के दोनों पैरों से मारना।

लथड़ना—(क्रि० अ०, दे०) लदफद होना, कीचड़ से भीगना, मैला या धूल धूसरित होना।

लथपथ—(वि०, दे०, अनु०) तराबोर, भीगा हुआ, पानी, कीचड़ आदि से भीगा या सना हुआ।

लथर-पथर—(संज्ञा, पु०, दे०) ठसाठस, लबालब, मुँह तक भरा, लथपथ।

लथाड़—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु० लथपथ] पृथ्वी पर पटक कर घसीटने की क्रिया, चपेट, पराजय, झिड़की, डाँट-फटकार।

लथाड़ना—(क्रि० स०, दे०) [हि० लथेड़ना] डाँटना-फटकारना, लथेड़ना। [**लथड़ाना, लथड़वाना** (प्रेरणा रूप०)]।

लथेड़ना—(क्रि० स०, दे०) [हि० अनु० लथपथ] कीचड़ से मैला करना या कीचड़ में घसीटना, धूल या पृथ्वी पर लोटाना या घसीटना, हैरान करना, थकाना, डाँट-फटकार बताना, अपमान करना।

लदना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ऋद्ध) बोझ ऊपर लेना, भार युक्त होना, भार लेना या उठाना, पूर्ण या आच्छादित होना, गाड़ी में माल आदि भरा जाना, कैद होना, जेल जाना, हैरान होना। [**लदाना** (स० रूप०)], [**लदवाना** (प्रेरणा रूप०)]।

लदवाना—(क्रि० स०) दूसरे के द्वारा लादने का कार्य करना।

लदाऊ, लदाव*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लदाव] लादने की क्रिया या भाव, बोझ, भार, ईंटों की ऐसी जुड़ाई जो बिना सहारे अधर में लटकी रहे, छत आदि का पटाव।

लदाना—(क्रि० स०) देखिए लदवाना।

लदाफदा—(वि०, यौ०) [हि० लादना+फाँदना] बोझ या भार से लदा हुआ, भीगा हुआ। [**लदाना-फदाना** (क्रि० यौ०)]।

लदाव—(संज्ञा, पु०) [हि० लादना] लादने की क्रिया या भाव, बोझ, भार, छत का पटाव, ईंटों की ऐसी जुड़ाई जो कड़ी आदि के बिना सहारे ठहरी हो।

लदुआ-लदुवा-लद्दू—(वि०, दे०) [हि० लादना] बोझ ढोनेवाला, जिस पर बोझा लादा जाय।

लद्धड़—(वि०, दे०) [हि० लादना] आलसी, सुस्त, फसड्डी। [**लद्धड़-बद्धड़** (यौ०)]।

लद्धना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० लब्ध] प्राप्त करना।

लप—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, अनु०) लचीली वस्तु के हिलाने का कार्य। खड्गादि के चमक की चाल। (संज्ञा, पु०, दे०) अँजली।—**झप**-(वि०, दे०, यौ०) [हि० लपकना+झपकना] फुर्तीला, चालाक, चंचल।

लप्पझप्प –(संज्ञा, पु०, दे०) दिखावटी, धोखेवाला काम या बात, गप्पशप्प। सतर्कता, सावधानी।

लपक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० लप] लपट, ज्वाला, चमक, लौ, लपलपाहट, वेग।

लपकना—(क्रि० अ०) [हि० लपक] झपटना, दौड़ना, तेजी से चलना, बिजली आदि का चमकना। [**लपकाना** (स० रूप)], [**लपकवाना** (प्रेरणा रूप)]। **मुहा०—लपक कर**-चमक कर, तुरन्त, वेग से जाकर, झट से, आक्रमण करने या कुछ लेने के लिए झपटना, ऊपर उठ कर पहुँचना।

लपका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लपकना] आक्रमण, फुर्ती, शीघ्रता, बुरी चाल, चमक।

लपकी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) एक मछली।

लपची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक मछली।

लपट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लौ+पट] ज्वाला, अग्निशिखा, आग की लौ, गर्म और तपी हुई वायु, लू, लूक, आँच, गंध से भरा वायु का झोंका, महक, गंध, पकड़न, पकड़। [**लपटझपट** (यौ०)]।

लपटना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० लिपटना] लिपटना, चिमटना, कुश्ती लड़ना। सटना, फँसना, उलझना, संलग्न होना। [**लपटाना** (स० रूप)], [**लपटवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लपटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लपटना] नमकीन हलुआ, लगाव, सम्बन्ध।

लपटाना—(क्रि० स०) लिपटाना, चिपकाना, आलिंगन करना, घेरना, लपेटना।

लपटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लपटा] नमकीन हलुआ, लपसी, चिपकी।

लपटौआँ—(वि०) लिपटने वाला।

लपटौना—(संज्ञा, पु०) एक चिपकने वाली घास।

लपड़-चटाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सूखी या गिरी हुई चूँची, शिथिल स्तन।

लपन—(संज्ञा, पु०, सं०) मुख, भाषण, कथन।

लपना†—(क्रि० अ०, दे०) [अनु+लप] झुकना, लचना, चमकना, लपकना, हैरान होना, ललचना। [**लपाना** (स० रूप)], [**लपवाना** [प्रेरणा० रूप)]।

लपलपाना—(क्रि० अ०) [अनु+लप] हिलना-डोलना, लपाना, खड्गादि का चमकना, झलकना, लपकना, जीभ का बार बार बाहर निकालना। (क्रि० स०, दे०) जीभ, खड्गादि को निकाल या हिलाकर चमकाना।

लपलपाहट—(संज्ञा, स्त्री०) चमक।

लपसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लप्सिका] थोड़े से घी का हलुवा, गीली, गाढ़ी, गीली वस्तु, पानी में औटाया हुआ आटा जो कैदियों को दिया जाता है, [लपटा (दे०)]।

लपाटिया—(संज्ञा, पु०, दे०) झूठा, मिथ्यावादी, लबार।

लपाटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) झूठ, मिथ्या, झूठ-मूठ। (वि०, दे०) झूठा, लबार।

लपाना—(क्रि०, स०) [अनु+लप] लचीली छड़ी आदि को इधर-उधर लचाना, आगे बढ़ाना, फटकारना, चमकाना, हिलाना।

लपानक—(वि०, दे०) दुबला, पतला, क्षीण, सूक्ष्म, झीना।

लपालप—(क्रि० वि०, दे०) हिलते और चमकते हुए। "वीर अभिमन्यु की लपालप कृपानि वक्र"—रत्ना०।

लपित—(वि०) [सं० लप=कहना] कहा हुआ, कथित, जो एक बार कहा जा चुका हो, जल्पित।

लपेट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लपेटना] बंधन का घुमाव, ऐंठन, फेरा, मरोड़, घेरा, उलझन, जाल या चक्कर। ढक्कन, परिधि, फंदा, झपट, बल, लपेटने की क्रिया या भाव।—**झपेट**-(स्त्री०) टाल-मटूल, बहाना, कुश्ती, धावा, धर पकड़।

लपेटन—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लपेट] लपेट, घुमाव, फेरा, मरोड़, घेरा, फंदा, उलझन, जाल या चक्कर, ढक्कन। [संज्ञा, पु०) [हि० लपेटना] उलझने या लपेटने की चीज, वेष्टन, बेठन, बाँधने का वस्त्र।

लपेटना—(क्रि० स०) [हि० लिपटना] समेटना, बाँधना, फेरे या घुमाव देकर फँसाना, पकड़ लेना, चक्कर या झंझट में फँसाना, फैली वस्तु को समेट कर गट्ठर सा बनाना, घुमाव देकर समेटना, पकड़ लेना, वस्त्रादिक में बाँधना, गति-विधि बन्द करना, उलझन में डालना। [**लपेटवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लपेटवाँ—(वि०, दे०) [हि० लपेटना] लपेटा हुआ, सोने-चाँदी के तारों से लपेटा हुआ, गुप्त अर्थ वाला, व्यंग्य, गूढ़। (क्रि० वि०, दे०) सब को समेट कर, सब के साथ।

लफंगा—(वि०, दे०) [फ़ा० लफग] लंपट, दुराचारी, दुश्चरित्र, शोहदा, कुकर्मी, आवारा। [**लफंगिन** (स्त्री०)], [**लुच्चालफंगा** (यौ०)], [**लफंगई, लफंगी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

लफना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० लपना] झुकना, लपकना, लचना, ललचना, हैरान होना, ऊपर उठ कर पहुँचना। [**लफाना** (स० रूप)], [**लफवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लफलफानि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लपलपाना] नरम लम्बी छड़ी आदि का हिलना या डोलना, खड्गादि का चमकाना या हिलाने से चमकना, झलकाना।

लफाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० लपाना] नरम पतली छड़ी का हिलाना, फटकारना, आगे बढ़ाना, लपकाना, ऊपर उठाकर पहुँचाना।

लफ्ज—(संज्ञा, पु०, अ०) शब्द। [**लफ्ज़ी** (वि०)]।

लफ्फ़ाजी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शब्दाडंबर, शब्द-बाहुल्य।

लब—(संज्ञा, पु०. फ़ा०) होठ, ओष्ठ, ओठ। "दम लबों पर था दिलेजार के घबराने से"—अक०।

लबझना*†—(क्रि० अ०, दे०) उलझना।

लबझब—(संज्ञा, पु०, दे०) जल्दी, शीघ्रता लथर-पथर, झूठ बात, गपशप।

लबड़ खंदा—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) ढीठ, नटखट, शरीर, (अ०) दुष्ट, धूर्त।

लबड़ चटाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सूखी और गिरी हुई चूँचो, शिथिल स्तन।

लबड़धोधों—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लबाड़ +धम] झूठमूठ का शोर, अंधेर, धाँधली, अन्याय, गड़बड़ी, कुव्यवस्था, बेईमानी की चाल, अत्याचार, [लबर धौं धौं (दे०)]।

लबड़ना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लय=बकना] गप हाँकना, व्यर्थ भूठ बोलना ।

लबड़, सबड़—(संज्ञा, पु०, दे०) बकझक, भूठ-साँच, इधर उधर की बातें । गपशप ।

लबड़ा—(वि०, दे०) [हि० लबार] भूठा, असत्य-वादी, अनर्थकवादी ।

लबर, घहा—(संज्ञा, पु०, दे०) नकचढ़ा, जरा सी बात में क्रोध करने वाला ।

लबरा—(वि०, दे०) देखिए लबड़ा ।

लबलबा—(वि०, दे०) लिबलिबा, लसदार, चिपचिपा । [**लबलबाहट** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

लबादा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) रुई-भरा ढीला अंगा, रुईदार चोगा, अबा, दगला ।

लबार, लबारा—(वि०, दे०) [सं० लपन=बकना] भूठा, असत्य या मिथ्याभाषी, गप्पी, प्रपंची । "मिलि तपसिन संग भयसि लबारा", "साँचेहु मैं लबार भुज बीहा"—[रामा०] ।

लबारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लबार] भूठ या असत्य बोलने का काम । (वि०) भूठा, चुगुलखोर, मिथ्यावादी ।

लबालब—(क्रि० वि०, फ़ा०) ऊपर या मुँह तक भरा हुआ, भलकता हुआ ।

लबालेस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) खुशामद, लल्लोपत्तो, चापलूसी, [लल्लोचप्पो, लबालेस (दे०)] ।

लबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चीनी की चासनी ।

लबेदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लगुड़] मोटा और बड़ा-सा डंडा, बड़ी मोटी लकड़ी या छड़ी । [**लबेदी** (स्त्री०, अल्पा०)] ।

लबेरा, लभेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) लसोढ़ा का वृक्ष और फल ।

लब्ध—(वि०, सं०) प्राप्त, मिला हुआ, भाग देने का फल, भजन फल (गणि०) ।—**कीर्ति**-(वि०) यशस्वी ।—**काम**-(वि०, यौ०) प्राप्त काम, जिसकी कामना पूरी हो गयी हो ।—**प्रतिष्ठ**-(वि०) सम्मानित, प्रतिष्ठित, प्रख्यात ।—**वर्ण**-(पु०) विद्वान्, पंडित, विलक्षण । "कृच्छ्र लब्धमपि-लब्ध वर्ण भाक् तं दिदेश मुनये स लक्ष्मण"—[रघु०] ।

लब्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्राप्ति, लाभ, हाथ लगी, हाथ में आयी वस्तु, भाग करने से प्राप्त फल, भजन-फल (गणि०) ।

लभन—(संज्ञा, पु०, सं०) पाना । [**लभनीय** (वि०)] ।

लभस—(संज्ञा, पु०, सं०) धन, भिक्षुक, पिछाड़ी ।

लभेड़ा, लभेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) लसोढ़ा ।

लभ्य—(वि०, सं०) पाने-योग्य, उपयुक्त, उचित, प्राप्य, जो मिल सके ।

लम—(वि०) "लंबा" का समासगत रूप '—**छड़**,—**छर**-(स्त्री०) पथरकला, बन्दूक, लम्बा पुरुष । [**लमछरी** (स्त्री०)] ।—**टग**,—**टंगा**-(पु०) सारस । (वि०) लम्बी टाँगों वाला । [**लमटंगी** (स्त्री०)] ।—**तड़ंग**,—**तड़गा**-(वि०, दे०, यौ०) [हि० लम्बा+ताड़+अंग] बहुत लंबा या ऊँचा, लंबा-तड़गा । [**लमतड़ंगी** (स्त्री०)] ।

लमक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लमकना) लंपट, कुचाली, कुकर्मी, लफंगा ।

लमकना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० लपकाना] लपकाना, उत्कंठित होना, लफना, ऊपर उठकर पहुंचना, बाकना (ग्रा०) । [**लमकाना** (स० रूप०)], [**लमकवाना** (प्रेरणा० रूप)] । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लम्बकर्ण] लम्बे कानों वाला, गधा, खरगोश, लम्बकर्ण ।

लमकाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० लपकाना] लपकाना, बढ़ाना, लफाना । (पु०) [लम्बकर्ण] गधा, खरहा, लम्बे कानों वाला ।

लमधी†— (संज्ञा, पु०, दे०) समधी का बाप ।

लमहा—(संज्ञा, पु०, अ०) क्षण, पल ।

लमाना, लबाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० लम्बा+ना प्रत्य०] लम्बा करना, दूर तक बढ़ाना या फैलाना । [क्रि० अ०, दे०) लम्बा होना, दूर निकल जाना ।

लय—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वस्तु का दूसरी में मिलकर उसी के रूपादि का हो जाना, लीन होना, मिलना, प्रवेश, विलीनता, मग्नता, ध्यानमग्नता, एकाग्रता, प्रेम, अनुराग, स्नेह, कार्य्य का फिर कारण के रूप में हो जाना, संसार का नाश, संश्लेष, विनाश, लोप, प्रलय, नृत्य, गीत और बाजों की परस्पर समता, ठेका (संगी०) । (स्त्री०) गाने का ढंग, धुन, गाने में सम (संगी०) ।—**बालक**-(पु०) गोद लिया हुआ लड़का ।

लयन—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्राम, शरण, ग्रहण, प्रलय, तन्मयता ।

लर*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लड़] लड़, लड़ी ।

लरकई, लरकाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लड़का+ई प्रत्य०] लड़कपन, [लरिकाई, लरिकई (दे०)]। "लरकाई को पैरबो आगे होत सहाय"—तुलसी। "बहु धनुहीं तोरेउँ लरकाई"—[रामा०]। मुहा०—**करना**—ना समझी करना।

लरकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० लटकना] लटकना, पीछे-पीछे चलना, ललकना ललचना।

लरकाना—(क्रि० स०) झुकाना, लटकाना।

लरकिनी, लरिकिनी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लड़की] लड़की, बेटी, [लड़किनी (दे०)]।

लरखराना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० लड़खड़ाना] खड़खड़ाना।

लरजना—(क्रि० अ०, दे०) [फ़ा० लरजा=कंप] काँपना, हिलना, दहल जाना, डरना। "लरजि गई तौ फेरि लरजनि लागी री"—पद्मा०। [**लरजाना** (स० रूप)], [**लरजवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लरझर*‡—(वि०, दे०) [हिं० लड़+झड़ना] बहुत अधिक, ज्यादा, प्रचुर।

लरना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० लड़ना] लड़ना।

लरनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लड़ना] लड़ना, लड़ाई।

लराई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लड़ाई] लड़ाई। "सहसबाहु सन परी लराई"—[रामा०]।

लरिकई, लरिकाई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लड़कपन] लड़कपन, लड़काई।

लरिक, सलोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० लरिका+लाल—चंचल] लड़कों का खेल, खेलवाड़।

लरिका*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लड़का] लड़का।—**सयानी**-(संज्ञा) बड़ों के मामले में लड़कों के पड़ने का भाव।

लरिकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाल्यावस्था। बहु धनुही तोरेउँ लरिकाई—तुल०।

लरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लड़ी] लड़ी।

लर्छी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लच्छा] लच्छा, लच्छी, गुच्छा।

ललक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ललन] बड़ी उत्कट अभिलाषा, गहरी चाह, प्रबलेच्छा।

ललकना—(क्रि० अ०) [हिं० ललक] ललचना, अभिलाषा या लालसा करना, अति इच्छा करना, चाह या उमंग से भरना। "भेटे लखन ललकि लघु भाई"—[रामा०]।

ललकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लेले अनु+कार] ललकारने की क्रिया या भाव, प्रचारण।

ललकारना—(क्रि० स०) [हिं० ललकार] प्रचारना, लड़ने को जोर से बुलाना या आह्वान करना, लड़ने या प्रतिद्वंद्विता के हेतु उकसाना या बढ़ावा देना, उत्तेजित करना।

ललचना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० लालच] लालच करना, लुभा जाना, मोहित होना, मुग्ध और लुब्ध होना, अति अभिलाषी होना, पाने की इच्छा से अधीर होना।

ललचाना—(क्रि० स०) [हिं० लालच] लालच पैदा करना, लुभाना, कुछ दिखा कर मन में लाभ उत्पन्न करना, मोहित करना। (क्रि० अ०) मोहित होना, लुब्ध या मुग्ध होना, अभिलाषा से अधीर होना। मुहा०—**मन (जी) का ललचाना**—लुभाना, मुग्ध या मोहित होना, लालच कर अधीर होना। [**ललचवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

ललचौहाँ—(वि०, दे०) [हिं० लालच+औहा प्रत्य०] लालच या लाभ से भरा, ललचाया हुआ। [**ललचौहीं** (स्त्री०)]।

ललन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्यारा बालक, प्रिय-नायक या स्वामी, खेल-क्रीड़ा।

ललना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कामिनी, भामिनी, स्त्री जीभ। एक वर्णिक छंद (पिं०)।—**प्रिय**-(पु०) कदंब का वृक्ष।

ललनिका—(संज्ञा, स्त्री०) छोटी स्त्री, नीच स्त्री।

लला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लाल] लाला, दुलारा या प्यारा लड़का, [लल्ला (दे०)]। प्रिय-नायक या पति। [**लली** (स्त्री०)]। "मोल छला के लला न बिकैहौ"—पद्मा०।

ललाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लाली] लाली, सुर्खी, अरुणिमा, लालिमा।

ललाट—(संज्ञा, पु०, सं०) मस्तक, भाल, माथा, भाग्य, लिलार (ग्रा०)। "जो पै दरिद्र ललाट लिखो"—नरो०।—**पटल**-(पु०) मस्तक-तल, माथे की सतह, ललाट-पट, ललाटतल।—**रेखा**-

(स्त्री०) भाल या भाग्य का लेख, मस्तक की लकीर।

ललाटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तिलक, एक शिरो-भूषण।

ललाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० लालच] ललचना, लालच या लोभ करना, लुभाना, लालायित होना। "द्वार द्वार फिरत ललात विलालत नित"—तुल०।

ललाम—(वि०, सं०) रमणीय, सुन्दर, मनोहर, लाल, श्रेष्ठ। [**ललामता** (संज्ञा, स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) गहना, भूषण, रत्न, चिह्न, घोड़ा। "कन्या ललाम कमनीयमजस्य लिप्सो"—[रघु०]।

ललित—(वि०, सं०) चितचाहा, मनोरम, सुन्दर, प्यारा, मनहरण, हिलता-डोलता हुआ। "ललित लवंग-लता परिशीलन कोमल मलय समीरे"—गी० गो०। (संज्ञा, पु०) एक अंगचेष्टा जिसमे सुकुमारता से अंग हिलाये जाते है। शृङ्गार रस मे एक कायिक हाव। एक विषम वर्णिक छंद (पिं०) एक अर्थालंकार जिसमे वर्ण्य वस्तु की जगह पर उसके प्रतिबिंब का कथन किया जाता है। —**कला**-(स्त्री०) वे कलाएं जिनके व्यक्त करने मे सौंदर्य की अपेक्षा हो, जैसे—संगीत चित्रादि कलाएँ। —**लोचन**-(वि०) सुन्दर आँखों वाला। —**पद**-(पु०) २८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद, सार, नरेंद्र, दौवै। (पिं०)। (वि०) सुन्दर पद।

ललितई, ललिताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ललित] सुन्दरता, मनोहरता, सुघराई।

ललिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णिक छंद जिसके प्रति चरण में त, भ, ज, रगण होते हैं। (पिं०) राधिका जी की मुख्य सहेलियों में से एक। —**सप्तमी**-(स्त्री०) भाद्र शुक्ल सप्तमी।

ललितार्थ—(वि०, सं०) शृङ्गार-रसपूर्ण (कृति या रचना।

ललितोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उपमा नामक अर्थालंकार का एक भेद जिसमें उपमेय और उपमान की समता-वाचक सम आदि शब्द रखे जाकर निरादर, समता, ईर्ष्यादि भाव सूचक पद रखे जाते हैं।

लली—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० लाल] लड़की, पुत्री, नायिका, प्रेमिका, प्रेयसी, कन्या के लिए प्यार का सम्बोधन।

ललौहाँ—(वि०, दे०) [हिं० लाल] ललाई लिए हुए। **ललछौंहा**—कुछ कुछ लाल, सुर्खी मायल। [**ललौहीं** (स्त्री०)]।

लल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लला] लला, लड़का, प्रियतम, नायक, लाला।

लल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ललना] लड़की, जीभ, लली, लाली। —**चप्पो**-(स्त्री०) ठकुरसुहाती या चिकनी चुपड़ी बात [लल्लो-पत्तो (दे०)]। —**पत्तो**†-(स्त्री०) लल्लोचप्पो, ठकुर-सुहाती या चिकनी चुपड़ी बात।

लवंग—(संज्ञा, पु०, सं०) लौंग, लउंग, लवांग (दे०)। —**लता**-(स्त्री०) लौंग का पेड़। "ललित लवंग-लता परि शीलन कोमल मलय समीरे"—गीत० गो०।

लव—(संज्ञा, पु०, सं०) अत्यत थोड़ी मात्रा, छत्तीस पल या दो काष्ठा का समय। लवा पक्षी। लवग। रामचन्द्र जी के दो यमज सुतो (लव-कुश) मे से बड़े पुत्र। "लव कुश नाम पुरानन गाये"—[रामा०]। (वि०) लेश, अल्प, थोड़ा, रंच, तनिक। [**लवनिमेष** (यौ०)]। —**निमेष**-(पु०) अल्प समय। "लव-निमेष में भुवन निकाया"—[रामा०]। —**मात्र**-(वि०) थोड़ी देर, क्षण भर, अल्पकाल। —**लीन**-(वि०) [हिं० लव+लीन] मिलित, तन्मय, तल्लीन, मग्न। "प्रभु मन तें लवलीन मन, चलत बाजि छबि पाव"—[रामा०]। —**लेश**-(पु०) अत्यंत अल्प, थोड़ा, रंच, ससर्ग। "जाके बल लवलेश तें, जितेउ चराचर झारि"—[रामा०]।

लवक—(संज्ञा, पु०, सं०) करने वाला, कर-वैया।

लवकना—(क्रि० अ०) चमकना, कौंधना।

लवका—(संज्ञा, स्त्री०) चमक, कौंध।

लवण—(संज्ञा, पु०, सं०) नमक [नोन, लोन, लवन, लौन (दे०)]। —**भास्कर**-(पु०) पाचन के लिए एक चूर्ण जो तीनों नमक के योग से बनाया जाता है। —**मेह**-(पु०) प्रमेह का एक प्रकार विशेष। —**समुद्र**-(पु०) खारी पानी, का समुद्र लवणसिंधु, लवणोदधि, लवणाब्धि, लवण-सागर।

लवणांतक—(संज्ञा, पु०) लवणासुर का अंत करने वाला।

लवणाम्बु—(संज्ञा, पु०, सं०) खारा पानी, खारी पानी का समुद्र, लवणाम्बुधि।

लवणालय—(संज्ञा, पु०) समुद्र, मधुपुरी।

लवणासुर—(संज्ञा, पु०, सं०) मधु दैत्य का पुत्र जो शत्रुघ्न से मारा गया था।

लवन—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) छेदना, काटना, खेत की कटाई, लुनाई। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लवण] नमक, नोन।

लवना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लवन] खेत काटना, लुनना, काटना, छेदना।

लवनाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लावण्य] लावण्य, सुन्दरता, [लुनाई (दे०)]।

लवनि, लवनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लवन] अनाज की कटाई, लुनाई, [लौनी (दे०)]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नवनीत] मक्खन, नैनू।

लवर†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लपट] आग की ज्वाला या लपट, लौ, लव।

लवलासी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लव—प्रेम+लासी—लसी, लगाव] प्रेम का लगाव या सम्बन्ध।

लवली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हरफा रेवरी नामक पेड़ और उसका फल, एक विषम वर्णिक छंद (पिं०)।

लवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लाजा] धानों के लावा, खील। (लावा) एक पक्षी जो तीतर-सा परन्तु उससे छोटा होता है। "बाज झपटि ज्यों लवा लुकाने"—[रामा०]।

लवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हाल की ब्यायी गाय, छोटे बच्चे वाली गाय। "निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई"—[रामा०]। (संज्ञा, भा०, स्त्री०, दे०) [हि० लवना+आई प्रत्य०] खेत के अनाज की कटाई।

लवाक—(संज्ञा, पु०, सं०) हँसिया, हँसवा, दराती, खेत काटने का हथियार।

लवाजमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० लवाजिम] किसी के साथ रहने वाला, दल-बल और साज-सामान, आवश्यक सामग्री।

लवार-लवारा—(वि०, दे०) [सं० लपन=बकना] झूठा, असत्यभाषी। देखिए लबार। "मिलि तपसिन तैं भयसि लवारा"। "साँचहुँ मैं लवार भुजबीहा"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लवाई] गाय का छोटा बच्चा। (संज्ञा, पु०, दे०) चुगली, शिकायत। [**लवारी** (वि०)]।

लवासी*†—(वि०, दे०) [सं० लव—बकना+आसी प्रत्य०] बकवादी, गप्पी, लम्पट।

लशकर, लश्कर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सेना, दल, फौज, लसकर, छावनी, सेना का पड़ाव, जहाज के कुली आदि, खलासी।

लशकरी—(वि०, दे०) [फ़ा० लशकर] सिपाही, सेना-संबंधी, जहाजी, खलासी। (संज्ञा, स्त्री०) लशकर वालों की या जहाजियों की भाषा।

लशटम्पशटम्—(क्रि० वि०, दे०) [हि०] किसी भाँति, किसी प्रकार, उलटा-सीधा, उलटा-पुलटा, [लसटमपसटम (दे०)]।

लशुन—(संज्ञा, पु०, सं०) लहसुन, लहसन, एक कंद। "लशुन, जीरक, सैंधक, गंधक, त्रिकटु, रामठ, चूर्णमिदम् समम्"—[वैद्यजी०]।

लषन, लषण*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लक्ष्मण] लक्ष्मण जी, लखन (ग्रा०)। "लषन शत्रुसूदन एक रूपा"—[रामा०]। (वि०) इच्छित, अभिलषित।

लषित—(संज्ञा, पु०, सं०) चाहा या देखा हुआ अभिलषित।

लस—(संज्ञा, पु०, सं०) चिपकने या चिपकाने का गुण या वस्तु, चिपचिपाहट, लासा, आकर्षण, चित्त लगने की बात।—**दार**—(वि०) [सं० लस+दार फ़ा० प्रत्य०] लसीला, जिसमें लस हो।

लसकना—(क्रि० अ०) [दे० वा सं० लस] चिपचिपा या लसदार होना, लसना, गीला होना।

लसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लसन] सटाना, चिपकाना। * (क्रि० अ०, दे०) शोभित वा उत्कंठित होना, विराजमान होना, छजना, छाजना, फबना। "लसत राम मुनि-मंडली"—[रामा०]। [**लसवाना** (प्रेरणा० रूप)], [**लसाना, लसावना** (स० रूप)]।

लसनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लसना] उपस्थिति, विद्यमानता, स्थिति, शोभा, छटा, सत्ता, फबनि।

लसम—(वि०, दे०) खोटा, दूषित, बुरा।

लसलसा—(वि०, दे०) [सं० लस] लसदार, लसीला।

लसलसाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लस] चिपचिपाना, लसदार होना, लस छोड़ना।

लसलसाहट—(संज्ञा, स्त्री०) चिपचिपाहट।

लसा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लस] चिपटा हुआ, शोभित, हलदी। लो०—"गरे मसा, सोने लसा"।

लसित—(वि०) [सं० लस] शोभित, विराजमान, लक्षित, प्रत्यक्ष, युक्त।

लसयाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लस] चिपचिप होना, चिपकना, लस लस होना, रसावेश होना, सरसता आना, चाव युक्त होना, ललचना।

लसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लस] लस, लगाव, चिपचिपाहट, आकर्षण, फायदे का डौला, लाभ का योग, संबंध, दूध और पानी का शर्बत, लस्सी (ग्रा०)। (क्रि० अ०) [हि० लसना] शोभित, विराजमान।

लसीला—(दे०, वि०) [सं० लस+ईला प्रत्य] लसदार, सुन्दर, सरस, शोभावान। [**लसीली** (स्त्री०)]।

लसुनिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लशुन] एक बहुमूल्य धूमिल रंग का रत्न या पत्थर। लह-सुनिया, लाजावर्त, वैडूर्य मणि।

लसौटा—(संज्ञा, पु०) एक लासा जिससे चिड़ियाँ फंसायी जाती हैं।

लसोढ़ा, लसोढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लस —चिपचिपाहट] एक प्रकार का वृक्ष और उसके फल, लसौटा। (संज्ञा, पु०, दे०) बहेलियों के लासा रखने का चोंगा।

लस्टम, पस्टम†—(क्रि० वि०, दे०) ज्यों-त्यों करके, किसी न किसी प्रकार, किसी भाँति या प्रकार, उलटा-सीधा, उलटा-पुलटा।

लस्त—(वि०, दे०) [हि० लटना] अशक्त, शिथिल, श्रमित, थका हुआ, श्रांत, क्लांत।

लस्सी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लस] लसी, चिपचिपाहट, मही, मट्ठा, तक्र, छाँछ, आधा दूध और आधा पानी।

लस्सो—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लस] भक्ष्य विशेष, दूध और पानी मिला भोजन, उलझन, फंदा।

लहँगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लंक=कटि+अंगा हि०] स्त्रियों का एक पहनावा, कमर के नीचे घांघरा, कटि से नीचे के अंगों को ढाकने वाला घेरदार पहिनावा।

लहक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लहकना] आग की लपट, ज्वाला, लौ छबि, शोभा, कांति, चम-कीली, द्युति, दीप्ति।

लहकना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) लहराना, झोंके खाना, आग का लपट छोड़ना, जलना, दहकना, प्रकाशित होना, हवा का चलना, लपकना, झलकना, उत्कंठित होना, चमकना। [**लहकाना, लहकवाना, लहकावना, लहकारना** (प्रेरणा० रूप)]।

लहकाना—(क्रि० स०) बढ़ाना, ताव दिलाना, भड़काना, उभाड़ना, आगे बढ़ावा देना।

लहकारना—(क्रि० स०) उभाड़ना, बढ़ावा देना, ताव दिलाना, कुत्ते जैसे जानवरों को छोड़ना, लुहकारना।

लहकावट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लहकाना] शोभा, चमक, दीप्ति, कांति।

लहकीला—(वि०, दे०) [हि० लहक+ईला प्रत्य०] चमकीला।

लहकौर, लहकौरि, लहकौवर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लहना+कौर—ग्रास] वर-कन्या का एक दूसरे के मुख मे कौर डालने या खिलाने की रीति, विवाह में एक रीति जिसमे वर को दही-चीनी खिलाते हैं। लो०—"समाचार मड़ये के पाये, जब लहकौर भाँटा आये"।

लहजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० लहज:] गाने या बोलने का तरीका या ढंग, लय, स्वर।

लहज़ा—(संज्ञा, पु०, अ०) क्षण, पल।

लहड़ू—(संज्ञा, पु०, दे०) छोटी और हलका बैल-गाड़ी, लढ़ा (ग्रा०)।

लहनदार—(संज्ञा, पु०) [हि० लहना+दार फ़ा० प्रत्य०] ऋण देने वाला, उधार देने वाला, व्यवहर, महाजन। (वि०, दे०) खमीर उठा हुआ।

लहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लभन] प्राप्त करना, पाना (धन) भाग्य-फल भोगना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लभन] उधार दिया हुआ धन, किसी से मिलने वाला।

लहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लहना] प्राप्ति, फल भोग, भाग्य फल। "जैसी करनी होती है, तैसहि लहनी होय"—कुंज वि०।

लहबर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लहर] चोगा, लबादा, एक लम्बा-ढीला पहनावा, पताका, झंडा, निशान, तोता।

लहबरी—(संज्ञा, पु०) एक प्रकार का तोता ।

लहमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लहमः] क्षण, [पल, लमहा (दे०)]।

लहर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लहरी] हिलोर, मौज, तरंग, बीचि, ऊपर उठती हुई जलराशि, उमंग, आवेश, जोश, झोंका, कुछ अंतर से रह रह कर मूर्छा, पीड़ा आदि का वेग, विष का देह और मन पर प्रभाव। टेढ़ी चाल, साँप की वक्रगति सी कुटिल रेखा, हवा का झोंका, महक, लपट। "भाँग भखब तौ सहज है लहर कठिन ही हाय"।—**दार**-(वि०) सीधा न जाकर जो बल खाता हुआ जावे, तरंगयुक्त, लहर सी रेखाओं से युक्त।—**पटोर**-(पु०) धारीदार एक रेशमी वस्त्र। "विरह अगिन ते तनु जर्यो रहिगो लहर-पटोर"—[स्फु०]।—**बहर**-(संज्ञा) सौभाग्य, संपत्ति, आनंद और सुखचैन। **मुहा०—साँप काटने की लहर**-साँप काटे हुए मनुष्य की विषकृत मूर्छा के बीच-बीच में कुछ चैतन्य सा होने की दशा। आनंद की उमंग, मजा, मन की मौज।

लहरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० लहराना] लहराना, हिलना डोलना, लहर देना।

लहर-बहर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सौभाग्य, संपत्ति, धन, सुख-चैन।

लहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लहर] तरंग, लहर, मौज, आनन्द, मजा, वृष्टि का एक झोंका, बाजे या गान (आल्हा आदि) की एक तान।

लहराना—(क्रि० अ०) [लहर + आना प्रत्य०) वायु वेग से हिलना, लहरें या झोंके आना, डोलना, वायु-वेग : पानी में तरंग उठना या जल का हिलोरें मार बहना, इधर-उधर झोंके खाते या मुड़ते चलना, मन मे उमंग होना, उत्कंठित होना, आग की लपक का लपकना, दीप शिखा का हिलना, आग का भड़कना, दहकना, शोभित या विराजमान होना, छबि देना, लसना, छजना, किसी का फिर-फिर उसी स्थान में आना। (क्रि० स०) वायु के झोंके में इधर-उधर हिलाना, टेढ़ी चाल से ले जाना।

लहरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लहर] लहर जैसा चिह्न, टेढ़ी या वक्र लकीरों की श्रेणी या पंक्ति, रंग-बिरंगी, टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों वाला एक वस्त्र, या उसकी साड़ी या धोती। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० लहर] लहर।—**दार**-(वि०) लहरदार, बेल-बूँटोवाला।

लहरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तरंग, मौज, लहर। †(वि०) [हि० लहर + ई प्रत्य०] मनमौजी, स्वच्छन्द, स्वेच्छाचारी, उमंगी, तरंगी।

लहरीला—(वि०) लहरीदार।

लहलह—(वि०) हराभरा, लहलहाता हुआ।

लहलहा—(वि०, दे०) [हि० लहलहाना] हरा-भरा, लहलहाता हुआ, आनन्द-पूर्ण, प्रफुल्लित, हृष्ट-पुष्ट। [**लहलही** (स्त्री०)]। "ज्यों सुकृति-कीर्ति गुणी जनों की फैलती है लहलही"—मैथिली०।

लहलहाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० लहरना =हिलना] हरे-भरे पौधों का हवा के झोंके से हिलना, हरा-भरा होना, सरसब्ज होना, पेड़-पौधों का हरी पत्तियों से भरना, प्रफुल्लित या प्रसन्न होना, पनपना, सूखे पेड़-पौधों में फिर पत्तियाँ निकलना।

लहलूट—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० लहना + लूटना] लेलूट, लेकर न देने वाला।

लहलोट—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लहना + लूटना] लेलूट, लेकर न देन वाला।

लहसन—(संज्ञा, पु०, दे०) शरीर पर के काले दाग।

लहसुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लशुन] एक कंद, गोल गाँठ का कई फाँकों वाला एक छोटा पौधा (मसाला), लासुन (ग्रा०)।

लहसुनिया—(संज्ञा, पु०) [हि० लहसुन] बहुमूल्य धूमिल रंग का एक रत्न, रुद्राक्षक, वैडूर्य, केतु-रत्न (ज्यो०)।

लहा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लाह] लाह। (क्रि० स०, सा० भू०) [हि० लहना] पाया।

लहाछेह—(संज्ञा, पु०, दे०) नाच की एक गति, शीघ्रता और तेजी के साथ झपट।

लहालह*†—(वि०, दे०) [हि० लहलहा] लहलहा, हरा-भरा।

लहालोट—(वि०, दे०, यौ०)[दे० लाभ, लाह + लोटना] लट्टू, प्रसन्न, हँसी के मारे लोटता हुआ, मुग्ध, प्रेम-मग्न, हर्ष से परिपूर्ण, मोहित।

लहाश—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० लअश] मृतक शरीर, मुर्दा, [लाश (दे०)]।

लहासी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लभस] नाव खींचने की मोटी रस्सी।

लहि†—(अव्य०, दे०) [हि० लहना] तक, पर्य्यंत । (क्रि० स०, पू०) [हि० लहना] पाकर ।

लहियतु—(क्रि० स०, ब्र०) [हि० लहना] पाता है ।

लहु*†—(अव्य, दे०) [हि० लौं] तक, पर्य्यंत । (क्रि० स०, दे०) [हि० लहना] पाओ, लहो । (वि०) [सं० लघु] मंद । "वचनक चातुरि लहु लहु हास"—विद्यापति ।

लहुरा†—(वि०, दे०) [सं० लघु] छोटा । [**लहुरी** (स्त्री०)] ।

लहुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटे भाई की स्त्री । (वि०, दे०) आयु में छोटी, कम उम्र की ।

लहू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोहित] लोहू, रक्त, खून । **मुहा०—लहान या—लुहान होना**-रक्त से सराबोर होना या भर जाना, बहुत रक्त बहना । **—का घूँट पीकर रहना**-क्रोध को सह लेना । **—का प्यासा**-जानी दुश्मन । **—पसीना एक करना**-अत्यधिक कष्ट उठाना । **—पी जाना**-कतल करना । **—पीना**-कष्ट देना । **—पी पी कर रह जाना**-क्रोध सहन कर लेना ।

लहेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लाह—लाख + एरा प्रत्य०] लाहक, पक्का रंग रँगने वाला ।

लहेसना—(क्रि० स०) पलस्तर करना ।

लाँक†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लंक—कटि] कटि, कमर, खेत के काटे गये अन्न के पौधे, उनकी राशि (प्रान्ती०) ।

लाँग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लाँगूल—पूँछ] काँछ, धोती का छोर जो पीठ के पीछे खोंसा जाता है ।

लाँगल—(संज्ञा, पु०, सं०) जोतने का हल ।

लाँगली—(संज्ञा, पु०) [सं० लाँगलिन्] बलराम, साँप, नारियल । (संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) एक नदी (पुरा०) कलिहारी, मजीठ (औष०) ।

लाँगुली, लाँगूली—(संज्ञा, पु०) [सं० लाँगूलिन्] बानर, बन्दर ।

लाँघ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लाँघना] फलाँग, कूद, कुदान, उछाल, कुलाँच ।

लाँघना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लँघन] नाँघना (ग्रा०), फाँदना, डाँकना, कूद जाना । [**लँघाना** (स० रूप)], [**लँघवाना** (प्रेरणा रूप)] । "जो लाँघे सत जोजन सागर"—[रामा०] ।

लाँच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घूस, रिश्वत ।

लांछन—(संज्ञा, पु०, सं०) चिह्न, दाग, कलंक, दोष, ऐब । [**लांछनीय** (वि०)] ।

लाँछना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निन्दा, तिरस्कार, अपमान, बुराई, कलंक ।

लाँछनित*—(वि०, सं०) लाँछन युक्त, लाँछित, कलक युक्त, कलंकी दोषी, तिरस्कृत, अपमानित ।

लाँछित—(वि०, सं०) तिरस्कृत, निंदित, लाँछन युक्त ।

लाँबा†*—(वि०, दे०) [हि० लंबा] लम्बा । [**लाँबी** (स्त्री०)] ।

ला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लेना, प्राप्त करना ।**—इलाज**-(वि०)-जिसका कोई उपाय न हो, असाध्य । **—चार**-(वि०) विवश, मजबूर, असहाय ।**—चारी**-(स्त्री०) विवशता, लाचार होना ।**—जवाब**-(वि०) निरुत्तर, बेजोड़ ।**—पता**-(वि०) जिसका कोई पता ठिकाना न हो ।**—परवाह**-(पु०) बेपरवाह, बेफिकर ।**—वारिस**-(वि०) जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो, निपूता ।**—हासिल**-(वि०) बेफायदा ।

लाइ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अलात=लुक] अग्नि, लव । (पू० क्रि० ब्र०) लाकर ।

लाइक—(वि०, दे०) [अ० लायक] लायक, योग्य ।

लाई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लाजा] धान का लावा या खील, उबाले चावलों का लावा । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लगाना] चुगली, निन्दा । (क्रि० स०, स्त्री०, सा० भू० दे०) ले आई । [**लाई-लुतरी** (यौ०)], चुगुली, शिकायत, चुगुलखोर (स्त्री) ।

लाकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लकड़ी] लकड़ी, काष्ठ, काठ, लाकरी (ग्रा०) ।

लाक्षण—(वि०, सं०) लक्षण-सम्बन्धी ।

लाक्षणिक—(वि०, सं०) लक्षण संबंधी, लक्षण-सूचक । (संज्ञा, पु०, सं०) ३२ मात्राओं का मात्रिक छंद (पिं०), लक्षणज्ञाता, लक्षणा शक्ति-सम्बन्धी (शब्दार्थ) ।

लाक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लाह, लाख ।**—गृह**-(पु०) पांडवों के जलाने को दुर्योधन का बनवाया हुआ लाह का घर, लाक्षालय, लाक्षावास ।**—रस**-(पु०) महावर ।**—वृक्ष**-(पु०) पलाश ।

लाक्षिक—(वि०, सं०) लाह या लाख-संबंधी ।

लाख—(वि०, दे०) [सं० लक्ष] सौ हजार, अति अधिक । (संज्ञा, पु०) सौ हजार की संख्या, १,००,००० । (क्रि० वि०) अधिक, बहुत । **मुहा०—से लीख होना**-सब कुछ होने पर भी पीछे कुछ न रहना । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लाक्षा] लाह, लाही, एक तरह के छोटे लाल कीड़े जो लाह बनाते हैं, इन कीड़ों से अनेक वृक्षों पर बना एक लाल पदार्थ ।

लाखना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० लाख+ना प्रत्य०] लाह लगा कर छेद बन्द करना । *†(क्रि० स०, दे०) [सं० लक्षण] जानना ।

लाखा—(संज्ञा, पु०) लाख का बना हुआ एक विशेष रंग जिसे औरतें अपनी ओंठ में लगाती है । **—गृह**-(पु०) देखिए—लाक्षागृह ।

लाखी—(वि०, दे०) [हिं० लाख+ई प्रत्य०] लाख के रंग का, मटमैला लाल । (संज्ञा, पु०) लाख के रंग का घोड़ा ।

लाग—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० लगना) लगाव, लगन, सम्बन्ध, सम्पर्क, प्रीति, प्रेम, युक्ति, मन की तत्परता, उपाय, कौशल-पूर्ण स्वाँग । चढ़ा ऊपरी, प्रतियोगिता, बैर, शत्रुता । टोना, मंत्र, शुभ अवसरों पर जादू । ब्राह्मणादिकों को बाँटने का नियत धन, लगान, भूमि-कर । एक प्रकार का नाच । (क्रि० वि०, दे०) [हिं० लौं] तक, पर्य्यंत, [लगि (व्र०)] ।**—डाँट**-(स्त्री०) [हिं० लाग—बैर+डाँट] बैर, शत्रुता, प्रतियोगिता । [सं० लग्नदंड] नाच की एक क्रिया।

लागत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लगना] पूँजी, किसी वस्तु के बनाने या तैय्यारी में व्यय हुआ धन, [लग्गत (दे०)] ।

लागना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० लगना] लगना ।

लागि, लागी*†—(अव्य०, दे०) [हिं० लगना] द्वारा, हेतु, कारण, लिये, वास्ते, निमित्त । "बार बार मोहिं लागि बुलावा"—[रामा०] । "मोर जन्म रघुबर बन लागी"—[रामा०] । लिए द्वारा । [क्रि० वि०, दे०) [हिं० लौं] तक, पर्य्यंत, [लगि (दे०)] ।

लागी—(संज्ञा, स्त्री०, अव्य०, दे०) लिए, द्वारा, स्नेह, प्रेम । (संज्ञा, पु०) द्वेषी, शत्रु, विरोधी ।

लागू†—(वि०, दे०) [हिं० लगना] प्रयुक्त या चरितार्थ होने वाला, लगने-योग्य, लगने या घटित होने वाला ।

लागे—(अव्य०, दे०) [हिं० लगना] लिए हेतु, वास्ते, लागि । (सा० भू० क्रि०, अ०) [हिं० लगना] लगे !

लाघव—(संज्ञा, पु०, सं०) लघुता, छोटाई, हलकाई, अल्पता, कमी, फुर्ती, शीघ्रता, हाथ की सफाई, तदुरुस्ती, आरोग्य । [हस्त-लाघव (यौ०)] । "पर्य्यायवाची शब्दानाम लाघवगुरुता नाद्रियामः" —(पा० शि० व०) । (अव्य०, सं०) शीघ्रता से, सहज में । "राघव-समान हस्त-लाघव बिलोकि तासु"—[अ० व०] ।

लाघविक—(वि०, सं०) संक्षिप्त, छोटा ।

लाघवी*—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० लाघव+ई प्रत्य०] शीघ्रता, फुर्ती, तेजी ।

लाचार—(वि०, फ़ा०) विवश या मजबूर (क्रि० वि०, दे०) विवश या मजबूर होकर ।

लाचारी—(सज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) विवशता, मजबूरी, [बेबसी (दे०)] ।

लाची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) इलाचयी ।**—दाना**-(पु०) एक प्रकार की मिठाई ।

लाछन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लाँछन] लांछन, कलंक, दोष, अपराध, चिह्न ।

लाज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लज्जा] लज्जा, शर्म, इज्जत, पर्दा, पति, मान-मर्य्यादा । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लाजा] धान का लावा, खील । **—वंत**-(वि०) लज्जावाला, लज्जा-युक्त, शर्मदार, शर्मिंदा । [लाजवंती (स्त्री०)] ।**—वंती**-(स्त्री०) लज्जालु, छुईमुई, लजाधुर (ग्रा०) । [लज्जावती (सं०)] ।**—से गड़ जाना, गड़ना**-अत्यधिक शरम से सिकुड़ जाना ।

लाजक—(संज्ञा, पु०) [सं० लाजा] धान का लावा ।

लाजना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० लाज+ना प्रत्य०] लज्जित होना, शर्माना, [लजना, लजाना (दे०)] । [लजवाना (प्रेरणा० रूप)] ।

लाजवर्द—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक रत्न, एक बहु-मूल्य पत्थर, [राजवर्तक (सं०)] ।

लाजवर्दी—(वि०, फ़ा०) लाजवर्द के रंग का, हलके नीले रंग का । "और सिर पै लाजवर्दी का सायवाँ बनाया"—[स्फु०] ।

लाजवाब—(वि०, फ़ा०) निरुत्तर, अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय, चुप, मौन, मूक ।

लाजा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धान का लावा, चावल, लाई, खील । "अवाकिरन बाललता प्रसूनैराचार लाजैरिव पौर कन्या"—[रघु०] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लज्जा] लज्जा । "मोहिं न कछु बाँधे कर लाजा"—[रामा०] ।

लाजावर्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०) एक मणि या रत्न विशेष, [राबटी, लाजवर्द (दे०)] ।

लाज़िम—(वि०, अ०) उचित, योग्य, कर्त्तव्य, मुनासिब, वाजिब, समीचीन, उपयुक्त ।

लाज़िमी—(वि०) [अ० लाजिम] आवश्यक जरूरी, उचित ।

लाट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लट्ठ] ऊँचा और मोटा खम्भा, मीनार । (संज्ञा, पु०, सं०) वर्तमान अहमदाबाद के समीप का एक प्राचीन देश, वहाँ के निवासी, लाटानुप्रास (काव्य०) । (संज्ञा, पु०, दे०) [अं० लार्ड] मालिक, स्वामी । [**लाटी** (स्त्री०)] ।

लाटानुप्रास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक शब्दालङ्कार जिसमें अन्वयान्तर से तात्पर्यान्तर-पूर्ण वाक्य या शब्द की आवृत्ति हो ।

लाटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काव्य में स्वल्प समासों या पदों वाला एक रचना-रीति (काव्य०) ।

लाटी†—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु० लटलट—गाढ़ा या चिपचिपा होना] । मनुष्य के होंठों और मुँह के थूक के सूख जाने की दशा । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) लाटिका रीति ।

लाठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लाट] लाट, लार्ड ।

लाठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० यष्टि] मोटा और बड़ा डंडा, लकड़ी । "लाठी में गुन बहुत है सदा राखिये संग"—गिरि० । **मुहा०—चलना** (**चलाना**)-लाठियों से मार-पीट होना (करना) । **—सा मारना**-कटु तथा कठोर बात कहना ।

लाड़—(संज्ञा, पु०) [सं० लालना] बच्चों का लालन, प्यार, दुलार ।

लाड़न—(संज्ञा, पु०, हि०) दुलार, प्यार, लाड़, बाल-स्नेह ।

लाड़ना—(क्रि० अ०, दे०) दुलराना, लाड़-प्यार करना । "लाड़न में बहु दोष हैं ।"

लाड़—(वि०, दे०, यौ०) [हि० लाड़ला] लाड़ला, बहुत दुलारा या प्यारा । [**लाड़लडैती** (स्त्री०)] ।

लाड़लडैती—(वि०, स्त्री०) बड़े प्यार-दुलार से पाली पोसी हुई ।

लाड़ला—(वि०, दे०) [हि० लाड़] अति दुलारा या प्यारा । [**लाड़ली (स्त्री०)**] । "लाड़ला बेटा था एक माँ बाप का"—हाला० ।

लाड़ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बहुत दुलारी या प्यारी बेटी या स्त्री ।

लात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पाद, पाँव, पैर पद, पादाघात, पादप्रहार । "तात लात रावण मोहिं मारा"—रामा० । "लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धेनु"—वृं० । **मुहा०—खाना**-पदाघात सहना, पैर की ठोकर या अपमान सहना ।**—मारना**-तुच्छ समझ कर छोड़ देना या त्यागना । निरादर करना ।

लाद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लादना] लादने का कार्य, बोझ, भार, पेट की आँतें, पेट ।**—फाँद**-(स्त्री०) लादने का कार्य ।**—निकलना**-तोंद निकलना ।

लादना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लब्ध] गाड़ी आदि पर ढोने या ले जाने के लिए चीजें या वस्तुएँ भरना या रखना, भरना, चढ़ाना, किसी बात का भार रखना ।

लादिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लादना] लादने वाला ।

लादी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लादना] वह गठरी जो गधे आदि पर लादी जाती है ।

लादू—(वि०, दे०) [हि० लादना] लादने योग्य ।**—लद्दू**-(वि०) जिस पर सदा बोझ लादा जाय ।

लाधना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० लब्ध] पाना, प्राप्त करना ।

लानत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० लअनत] भर्त्सना, धिक्कार, फटकार । [**लानत-मलामत** (स्त्री०)] भर्त्सना, धिक्कार ।

लानती—(वि०, अ०) लानत के लायक ।

लाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० लेना+आना] कोई वस्तु उठाकर ले आना, साथ लेकर आना, सामने रखना, उपस्थित करना । (क्रि० स०, दे०) [हि० लाय—आग] आग लगाना, जला देना, नष्ट कर देना (ग्रा०) । *†(क्रि० स०) [हि० लगाना] लगाना ।

लाने*†—(अव्य, दे०) [हिं० लाना] वास्ते, लिए हेतु, कारण ।

लापक—(संज्ञा, पु०, सं०) गीदड़, सियार ।

लापता—(वि०, फ़ा०) जिसका पता न लगता हो, गुप्त, छिपा ।

लापरवाह—(वि०) [अ० ला + फ़ा० परवाह] निश्चिन्त, असावधान, बेखटका । "चाह घटी चिंता गयी, मन भा लापरवाह"—कबीर । [**लापरवाही** (संज्ञा)] ।

लापसी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लपसी] लपसी, थोड़े घी का पतला हलुवा ।

लाफना—(क्रि० अ०, दे०) लफना, (ग्रा०) कूदना, फाँदना, बढ़ना, हाँफना, लेने को ऊपर उठना या उचकना, [बौकना (प्रान्ती०)] [**लफाना** (स० रूप)] ।

लाबर*†—(वि०, दे०) [हिं० लबार] लबार, लबरा (ग्रा०) असत्यवादी, भूठा, मिथ्यावादी, धूर्त ।

लाभ—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राप्ति, लब्धि, मिलना, नफा, मुनाफा, उपकार, भलाई' फायदा, [**लाहु** (ब्र० व०)], "जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई" [रामा०] ।—**कर**-(पु०) हितकारी, कर । [बेनीफ़िशियल टैक्स] ।—**कारक, कारी**-(वि०) लाभदायक, गुणकारी, गुणदायक । फायदेमंद ।—**दायक**-(वि०) लाभकारक, लाभकर, लाभकारी, लाभदायी ।—**पद**-(पु०) वह पद जिसे स्वीकार करने पर लाभ हो ।—**प्रद**-(वि०) लाभकारी ।

लाभद—(वि०, सं०) लाभकारी ।

लाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० लाम] फौज, सेना, जन-समूह ।

लामज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लामज्जक] खस जैसी एक घास, पीलावाला (प्रान्ती०) ।

लामा—(संज्ञा, पु०, हिं०) तिब्बत और मंगोलिया के बौद्धों का धर्म्माचार्य्य । (वि०, दे०) लम्बा, लाँबा ।

लामे‡—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० लाम = लंबा] लम्बे, दूर, अंतर पर । (वि०, दे०) लाँबे)

लाय*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अलात] [**लाइ** (ब्र०)], लपट, ज्वाला, अग्नि, आग । (पू० का० क्रि० अ० हिं० लाना) लाकर, [**ल्याइ** (ब्र०)] ।

लायक—(वि०, अ०) समीचीन, योग्य, ठीक, उचित, मुनासिब, वाजिब, उपयुक्त, [लायक (दे०)] । "लायक ही सों कीजिये, ब्याह, बैर अरु प्रीति"—(वृं०) । सुयोग्य, समर्थ, गुणवान, सामर्थ्यवान् । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लाजा] धान का लावा । "जामवंत कह तुम सब लायक"—[रामा०] ।

लायकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० लायक] योग्यता, लियाकत, सामर्थ्य । "जामें देखो लायकी लायक जानो सोय" ।

लायची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० एला] इलायची, लाची (ग्रा०) ।

लार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लाला] तार के समान पतला और लसदार थूक जो कभी कभी मुख से निकलता है, [राल (दे०)] । **मुहा०—मुँह से—टपकना**-किसी पदार्थ को देखकर उसके पाने को अति अभिलाषा होना, मुँह में पानी भर आना । **(किसी के मुँह से)—चूना**-बालपन होना । कतार, पाँति, पंक्ति, लुआब, लासा । (क्रि० वि०, दे०) [मार + लैर—पीछे] पीछे, साथ ।—**लगाना**-बझाना, फँसाना । (संज्ञा, पु०, दे०) मणि विशेष, लाड़, दुलार, प्रिया, प्यारा, लाल । (वि०) लाल रंग का ।

लाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लालक] छोटा और प्यारा, दुलारा बालक, बेटा, लड़का, प्रियतम, प्रिय, श्रीकृष्ण, [**लला, लल्ला, लाला** (ब्र०)]। "कुछ जानत जलथंभ बिधि, दुरजोधन लौं लाल"—विहारी० । "लाल तिहारे मिलन को, नित्त चित्त अकुलात"—[स्फु०] । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लालन] लाड़, प्यार दुलार । (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लार] लार । *† (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लालसा] इच्छा, अभिलाषा, लालसा, चाह । (संज्ञा, पु०, दे०). मानिक, एक छोटा पक्षी, जिसकी मादा को मुनियाँ कहते है । (वि०) रक्त-वर्ण, अरुण, अति क्रुद्ध ।—**चंदन**-(पु०) रक्त या देवी चंदन, गोपी चंदन ।—**आतंक**-(पु०) बोलशेविकों का डर [रेड टेरर] ।—**बुझक्कड़**-(पु०) [हिं० लाल + बूझना] बातों का मनमाना मतलब बैठालने या लगाने वाला । "बूझै लाल बुझक्कड़ और न बूझै कोय, पायन चक्की बाँधिकै हरिन न कूदा होय"—जनश्रु० ।—**भक्ष**-(पु०) एक नर्क ।—**मिर्च**-(स्त्री०) सुर्ख मिर्च, [लालमिर्चा (दे०)] ।—**समुद्र**-(पु०) भारत-महासागर का

वह भाग जो अरब और अफ्रीका के मध्य में है (भूगो०) ।—सिखी-(पु०) मुर्गा । कुक्कुट, अरुणशिखा । मुहा०—पीला पड़ना या होना–क्रुद्ध होना, गरम पड़ना ।—पीले होना–क्रोध करना । खेल में सबसे पहले जीतना ।—होना–बहुत धन पाकर प्रसन्न होना, खेल में सर्वप्रथम जीतना, चौपड़ या पचीसी के खेल में गोटियों का घूमकर बीच में पहुँचना ।

लालच—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लालसा] किसी वस्तु की प्राप्ति की बुरी तरह की इच्छा, लोभ, लोलुपता । [**लालची** (वि०)] ।

लालचहा†—(वि०, दे०) [हिं० लालची] लालची, लोभी, लोलुप, ललचहा (ग्रा०) ।

लालची—(वि०) [हिं० लालच+ई प्रत्य०] लोभी, ललचहा, लोलुप ।

लालटेन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० लैंटर्न] तेल-बत्ती-युक्त चारों ओर शीशे आदि पारदर्शक वस्तु से ढँकी चीज, कंदील, [लालटेम (ग्रा०)] ।

लालड़ी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लाल—रत्न +ड़ी प्रत्य०] एक लाल नगीना ।

लालन—(संज्ञा, पु०, सं०) बालकों के प्रति आदर-युक्त प्रेम, लाड़, प्यार, दुलार । [**लालन-पालन** (यौ०)] । (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लाल] प्यारा बच्चा, प्रिय पुत्र, कुमार, बालक । (क्रि० अ०, दे०) लाड़-प्यार या दुलार करना ।

लालना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० लालन] दुलार, प्यार या लाड़ करना । [**लालना-पालना** (यौ०)] ।

लालनीय—(वि०, सं०) लाड़-प्यार या दुलार करने योग्य । [**लालित** (वि०)] ।

लालमन—(संज्ञा, पु०, हिं०) श्रीकृष्ण, एक प्रकार का शुक या तोता । लाल मणि, माणिक ।

लालमी—(संज्ञा, पु०, दे०) खरबूजा ।

लालरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लालड़ी] लाल नग, लाड़ली ।

लालस—(वि०, सं०) चंचल, लोलुप, उत्सुक । (पु०) लालसा ।

लालसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इच्छा, अभिलाषा, लिप्सा, उत्सुकता, उत्कंठा, चाह ।

लालसी*—(वि०) [सं० लालसा] उत्सुक, इच्छा या अभिलाषा करने वाला, आकांक्षी ।

लाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लालक] एक संबोधन, महाशय, श्रीमान् साहब, वैश्य और कायस्थ जाति का सूचक शब्द, प्यारे बच्चों का संबोधन, [लला, लाल, लल्ला, लल्लू (दे०)] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) लार, थूक । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) पोस्ते का लाल फूल, गुललाला । (वि०, दे०) [हिं० लाल] लाल रंग का ।—भक्ष-(पु०) एक नरक (पुरा०) ।—स्रव-(पु०) लार गिरने की क्रिया, मकड़ा ।—स्राव-(पु०) लार गिरने की क्रिया, मकड़ा का जाला, लालस्राव ।

लालाटिका—(वि०, सं०) भाग्याधीन, भाग्य भरोसी, मस्तक देख कर शुभाशुभ कहने वाला ।

लालायित—(वि०, सं०) ललचाया हुआ, लोभ-ग्रसित, अति उत्सुक, उत्कंठित ।

लालायित, लालुप—(वि०) लुब्ध, ललचाया हुआ, प्यारा, लार गिरता हुआ ।

लालित—(वि०, सं०) प्यारा, दुलारा, पाला-पोषा हुआ । [**लालित, पालित** (यौ०)] ।

लालित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सुंदरता, सरसता, सौंदर्य, काव्य का एक गुण (काव्य), "नैषधेपद-लालित्य"—[स्फु०] ।

लालिमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अरुणिमा लाली, सुर्खी, ललाई । "अधिक और हुई नभ-लालिमा" —[प्रि० प्र०] ।

लाली— (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लाल+ई प्रत्य०] लली, लड़की, ललाई, सुर्खी, लालिमा, इज्जत, प्रतिष्ठा, आबरू, पत, मान-मर्यादा । "लाली मेरे लाल की, जित देखों तित लाल"—कबीर ।

लालुका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार का हार, माला या गजरा ।

लाले—(संज्ञा, पु०) [सं० लाला] लालसा, इच्छा, अभिलाषा । मुहा०—(किसी वस्तु के) —पड़ना–किसी वस्तु के हेतु बहुत तरसने की स्थिति होना । कठिनता, मुश्किल । "तिन्हैं देखिबे के अब लाले परे"—हरि० ।

लाल्हा—†(संज्ञा, पु०, दे०) मरसा (साग) ।

लाव*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लाय] लव, अग्नि, लपक । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) मोटी रस्सी । (संज्ञा, पु०, दे०) लावा, खील । (क्रि० स०, वि०) [हिं० लाना] ले आ ।—दार-(वि०) [हिं० लाव—आग+दार फ़ा० प्रत्य०] रंजक देने या छोड़ी जाने वाली तोप । (संज्ञा, पु०) तोप छोड़ने

वाला, तोपची।—**लश्कर**-(पु०) सामग्री, सामान।

लावक—(संज्ञा, पु०, सं०) लवा पक्षी।

लावण—(वि०, सं०) नमकीन। (संज्ञा, पु०, दे०) सुँघनी, लावन।

लावण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) लवण का भाव, नमकीन होने का भाव, नमक, अति सुन्दरता, मनोहरता, लुनाई। "लावण्य-लीला मयी"—[प्रि० प्र०]।

लावणिक—(संज्ञा, पु०, सं०) नमक बेचने वाला नमक का पात्र। (वि०) नमक-संबन्धी।

लावनता*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुन्दरता, मनोहरता, लावण्य, (सं०), लुनाई।

लावना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० लाना] लाना। (क्रि० स०, दे०) [हि० लगाना] लगाना, छुलाना, स्पर्श करना, आग लगाना, जलाना।

लावनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लावण्य] सौंदर्य्य, लुनाई लाने का भाव।

लावनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार का छंद, ख्याल, चंग। [**लावनीबाज** (वि०)]।

लावलाव—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) लोभ, चाह, तृष्णा।

लाववाली—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) आवारा, बेफिक्र।

लावल्द—(वि०, फ़ा०) निःसंतान, पुत्रहीन।

लावल्दी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) निःसंतान होने की दशा।

लावसाव—(संज्ञा, पु०, दे०) लाभ, प्राप्ति, बढ़ती, वृद्धि।

लावा—(संज्ञा, पु०, सं०) लावा पक्षी। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लाजा] रामदाना या धान आदि को भूनने से फूट कर फूली हुई खील, फुल्ला, लाई, फुटका (ग्रा०)।—**परछन**-(पु०) विवाह के समय साले का लावा डालने की एक रीति, लावा-परसन।

लावाणक—(संज्ञा, पु०, सं०) मगध के निकट एक प्राचीन पेशा।

लावारिस—(संज्ञा, पु०, अ०) उत्तराधिकारी रहित, बेवारिस। [**लवारिसी** (वि०)]।

लावू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लौका, कद्दू।

लाश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्राणी की मृतक देह, शव, मुर्दा, लोथ, [लास, लहास (दे०)]।—**पर लाश गिरना**-(लड़ाई आदि में) लाशों का ढेर इकट्ठा हो जाना।

लाष*—(संज्ञा, पु०, वि०, दे०) [हि० लाख] लाख।

लाषना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० लखना] लखना, देखना, निहारना, अवलोकना।

लास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लास्य] एक प्रकार का नाच, नृत्य, रास, मोद-मटक।

लासक—(संज्ञा, पु०, दे०) मोर, मयूर, नर्त्तक, नचैया।

लासा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लास] चेप लुआब, चिपचिपा लवाब, लसीली वस्तु, बहेलियों के चिड़िया फँसाने का लसदार पदार्थ। **मुहा०**—**लगाना**-कपट जाल फैलाना, किसी के फँसाने का छद्मविधान बनाना।

लासानी—(वि०, अ०) अद्वितीय, अनुपम, अपूर्व, बेजोड़।

लासि—(संज्ञा, पु०, दे०) लास्य।

लासी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) आम आदि के फूलों मे लसदार विकार।

लास्य—(संज्ञा, पु०, सं०) शृंगारादि मृदु रसों का उद्दीपक, कोमलांग नृत्य, सुकुमार नाच।

लास्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाचनेवाली, अभिनेत्री।

लाह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लाक्षा] लाख, चपरा, चपड़ा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लाभ] लाहु, लाभ, फायदा, नफा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) आभा, कांति, दीप्ति।

लाहल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० लहौल] एक अरबी पद जो भूतप्रेत के भगाने व घृणा प्रकट करने के हेतु बोला जाता है।

लाहा-लाहु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लाभ] लाभ। "और बनिज में नाहीं लाहा है मूरौ मा हानि"—कबीर।

लाही‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लाक्षा] लाख, काले रंग का सरसों, महीन वस्त्र या कपड़ा, फसल को हानिकारी लाह के रंग का एक कीड़ा। (वि०) मटमैलापन लिये लाल रंग।

लाहु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लाभ] लाभ। "लेहु तात जग-जीवन लाहू"—[रामा०]।

लाहौर—(संज्ञा, पु०, दे०) पंजाब की राजधानी, एक प्रसिद्ध नगर।

लाहौल—(संज्ञा, पु०, अ०) एक अरबी वाक्य का प्रथम पद जो भूत-प्रेतादि के भगाने या घृणा प्रगट करने में बोला जाता है।

लिंग—(संज्ञा, पु०, सं०) लक्षण, चिह्न, निशान, जिससे किसी पदार्थ का अनुमान हो, मूल प्रकृति (सांख्य०), पुरुष की गुप्त इंद्रिय, शिश्न, शिव-मूर्ति। "लिंग थापि करि बिधिवत पूजा"—[रामा०]। संज्ञाओं में पुरुष-स्त्री का भेद-सूचक विधान (व्या०)।—**देह**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जीव का सूक्ष्म शरीर जो स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्म-फल भोगने के लिए जीव के साथ रहता है, लिंग-शरीर (अध्या०)।—**पुराण**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अठारह पुराणों में से शिव-महात्म विषयक एक पुराण।—**विवेक**-(पु०) स्त्री-पुरुष का भेद। [सेक्सुअल डिसक्रिमिनेशन] —**शरीर**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जीवात्मा का सूक्ष्म शरीर जो स्थूल के भीतर मृत्यु के बाद भी कर्म-फल भोगने को रहता है।—**स्थ**-(पु०) ब्रह्मचारी।

लिंगायत—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण देश का शैव संप्रदाय।

लिंगी—(संज्ञा, पु०) [सं० लिंगिन्] लक्षण-युक्त, चिह्न वाला, चिह्नधारी, आडम्बरी, धर्म्म-ध्वजी। "सवर्ण लिंगी विदित: समाययौ"—[किरा०]।

लिंगेंद्रिय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पुरुषों की गुप्तेंद्रिय या मूत्रेंद्रिय, शिश्न, [लॉड (दे०)]।

लिए—(अव्य०, दे०) हिंदी के संप्रदान कारक का चिह्न जो अपने शब्द के लिए क्रिया का होना प्रगट करता है, हेतु, वास्ते, निमित्त, [काज (ब्र०)]।

लिक्खाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लिखना] बहुत लिखने वाला, लिखैया, बड़ा भारी लेखक (व्यंग्य)।

लिक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जूँ का अंडा, लीख, एक परिमाण (कई भेद)।

लिखतंग—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) लेख, नियम-पत्र, चिट्ठी, लिखितांग (सं०)।

लिखत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लिखन] लेख, लिखी बात, दस्तावेज, तमस्सुक।

लिखधार—(संज्ञा, दे०) [हि० लिखना + धार प्रत्य०] लिखने वाला, लेखक, मुंशी, मुहर्रिर, क्लर्क (अं०)।

लिखना—(क्रि० स०) [सं० लिखन] स्याही या पेंसिल से अक्षरों की आकृति या चिह्न बनाना, लिखाई करना, चित्रित या अंकित करना, अक्षर बना कर किसी विषय की पूर्ति करना, लिपिबद्ध करना, पुस्तक, लेख या काव्य आदि की रचना करना, चित्र बनाना।—**पढ़ना**-अध्ययन करना।

लिखा—(संज्ञा, पु०) [हि० लिखना] प्रारब्ध, होनहार, भाग्य, भवितव्यता।

लिखाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लिखना + आई प्रत्य०] लिपि, लेख, लिखने का कार्य्य, लिखने की शैली या रीति, लिखावट, लिखने की मजदूरी।

लिखाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लिखन] लिखने का कार्य्य किसी दूसरे से कराना, [लिखावना (दे०)]। [लिखवाना (प्रेरणा० रूप)]।

लिखापढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० लिखना + पढ़ना] पत्र व्यवहार, चिट्ठियों द्वारा विचार-विनिमय; किसी विषय को लिख कर पक्का या स्थिर करने की क्रिया।

लिखावट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लिखना + आवट प्रत्य०] लेख, लिपि, लिखने की शैली या ढंग, लिखाई। [राइटिंग]

लिखित—(वि०, सं०) लिखा हुआ, अंकित, चित्रित, चिह्नित।—**संविधान**-(पु०) शासन-पद्धति के नियमों का लिखित रूप। [रिटेन कांस्टीट्यूशन]

लिखितक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लिखित] एक भाँति के प्राचीन चौखूँटे अक्षर।

लिखिता—(संज्ञा, पु०, सं०) चित्रकार।

लिख्या—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लिक्षा] लीख।

लिच्छवि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राजवंश जिसका राज्य कोशल, मगध और नैपाल में था (इति०)।

लिभड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हल, पोतड़ी।

लिटाना—(क्रि० स०) [हि० लेटना] किसी दूसरे को लेटने के कार्य्य में लगाना।

लिट्ट—(संज्ञा, पु०, दे०) मोटी रोटी, बाटी, अंगाकड़ी।

लिट्टी—(संज्ञा,) बाटी, मोटी रोटी।

लिठौर—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पकवान।

लिडार—(संज्ञा, पु०, दे०) सियार, गीदड़। (वि०) डरपोक, कायर, लेंडार (ग्रा०)।

लिथड़ना—(क्रि० अ०, दे०) धूल-धूसरित होना, लथेड़ जाना, अपमानित होना, लिथरना।

लिथाड़ना—(क्रि० स०) [हि० लिथड़ना] पछाड़ना, धूल-धूसरित या अपमानित करना, लथाड़ना, डाँटना, फटकारना।

लिपटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लिप्त] चिपटना, सटना, चिमटना, गले लगना, संलग्न होना, आलिंगन करना, किसी कार्य्य में तन-मन या जी-जान से लग जाना। [**लिपटाना** (स० रूप)], [**लिपटवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लिपटाना—(क्रि० स०) चिपटाना, भेंटना, गले लगना।

लिपड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) कपड़ा, वस्त्र। (वि०, दे०) [हि० लेप] गीला और चिपचिपा, [लिपरा (दे०)]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) लिबड़ी।

लिपड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) लेई की तरह चिपचिपा गीला पदार्थ।

लिपना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लिप्] लीपा या पोता जाना, रंग या गीला वस्तु का फैल कर भद्दा हो जाना, नष्ट होना। [**लिपाना, लिपावना** (स० रूप)], [**लिपवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लिपवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लिपवाने या लीपने की मजदूरी या क्रिया।

लिपवाना—(क्रि० स०) दूसरे के द्वारा लीपने का कार्य्य कराना।

लिपाई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लीपना] लीपने का कार्य्य, भाव या मजदूरी।

लिपाना—(क्रि० स०, हि०) मिट्टी, गोबर या चूना का लेप चढ़वाना, रंगादि कराना।

लिपि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लिखावट, लिखित या अंकित वर्ण चिह्न, अक्षर लिखने की रीति, जैसे—ब्राह्मी लिपि, अरबी लिपि, लिखे हुए वर्ण या बात, लेख।—**कर**-(पु०) लेखक, लिखने वाला।—**बद्ध**-(वि०, यौ०, सं०) लिखित, लिखा हुआ, अंकित।—**सज्जा**-(स्त्री०) लिखने का साधन।

लिपिक—(संज्ञा, पु०, सं०) लेखक। [क्लार्क]

लिप्त—(वि०, सं०) लिपा या पुता हुआ, अनुरक्त, लीन, अत्यंत तत्पर, पतली तह चढ़ा, निमग्न। [**लिप्तता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

लिप्सा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लोभ, लालच।

लप्सित—(वि०, सं०) अभिलषित।

लिफ़ाफ़ा—(संज्ञा, पु०, अ०) पत्रादि भर कर भेजने की कागज़ की चौकोर थैली। दिखावटी महीन वस्त्र मुलम्मा, वाह्य आडंबर, कलई, शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु। [**लिफाफिया** (वि०)]।

लिबड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लुगड़ी] वस्त्र, कपड़ा।—**बरतन या बारदाना**-(पु०) निर्वाह की साधारण सामग्री, सामान, माल-असबाब।

लिबलिबा—(वि०, दे०) लसलसा, चिपचिपा, लबलबा। [**लिबलिबाहट** (संज्ञा, स्त्री०)]।

लिबास—(संज्ञा, पु०, दे०) पोशाक, पहनने का वस्त्र, परिधान, पहनावा, आच्छादन।

लिब्बा—(संज्ञा, पु०, दे०) चपत, चपेटा, धौल तमाचा।

लिम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कलंक, दोष, अपराध, चिह्न, लक्षण।

लियाक़त—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) गुण, सामर्थ्य, योग्यता, विद्वता, क़ाबिलीयत, शिष्टता, शीलगुण, सभ्यता।

लिये—(अव्य०, दे०) वास्ते, निमित्त, हेतु। (संप्रदान का चिह्न) लिए। 'लिया' का बहुवचन। (क्रि० स०) [हि० लेना] लिये हुए।

लिलाट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ललाट] ललाट, मस्तक, भाग्य, [लिलार (दे०)]।

लिलाना—(क्रि० स०, दे०) चाहना, ललचाना, लोभ करना, निगलाना।

लिलार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ललाट] ललाट, मस्तक, माथा, भाग्य। मोट का पानी उलटने के लिए गहरा गड्ढा सा जो कुएँ से मिला हुआ बनाया जाता है।

लिलारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ललाट। माथे पर बालों की रेखा।

लिलोरी†—(वि०, दे०) [सं० लल=चाहना] लालची, लोभी।

लिवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० लेना या लाना] दूसरे के द्वारा किसी के लाने या लेने का कार्य्य कराना, साथ लेना, [लिवावना (दे०)]।

लिवाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लेना+वाल प्रत्य०] मोल लेने वाला, लेने वाला, लेवार।

लिसोड़ा, लिसोढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लस] एक पेड़ और उसके बेर से फल, लभेड़ा, लभेरा, लसोढ़ा (ग्रा०)।

लिहाज़—(संज्ञा, पु०, अ०) बर्ताव या व्यवहार में किसी बात का ध्यान, दयादृष्टि, शील-संकोच, पक्षपात, मुलाहजा, मर्यादा या सम्मानादि का ध्यान। लज्जा। मुरव्वत।

लिहाड़ा—(वि०, दे०) नीच, अधम, पतित, निकम्मा।

लिहाड़ी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) निंदा, उपहास। मुहा०—**लेना**-हँसी या निंदा करना, खिल्ली उड़ाना।

लिहाफ़—(संज्ञा, पु०, अ०) बड़ी रजाई, [लिहाफ़ (दे०)], जाड़े की रात में ओढ़ने का रुई भरा कपड़ा।

लिहित*—(वि०) [सं० लिह] चाटता या चाटा हुआ।

लीक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लिख] रेखा लकीर, गहरी पड़ी लकीर। "लीक लीक गाड़ी चलै, लीकै चलै कपूत"—नीति०। मर्यादा। यश, लोक-नियम, प्रथा, चाल, रीति। लांछन, धब्बा। गणना, गिनती। सीमा, प्रतिबिम्ब। प्रणाली। बैलगाड़ी के मार्ग-चिह्न। मुहा०—**खींच करके**-रेखा खींचकर, जोर या बल देकर, निश्चयपूर्वक। —**करना, खींचना**-किसी बात का दृढ़ और अटल होना, साख या मर्य्यादा बाँधना, प्रतिष्ठा स्थिर होना। —**पीटना**-प्राचीन रीति या प्रथा के अनुसार चलना, लकीर का फकीर होना।

लील—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लिक्षा] जूँ का अंडा, लिक्षा नाम का परिमाण।

लीचड़—(वि०, दे०) निकम्मा, सुस्त, काहिल, जिसका लेन देन या व्यवहार ठीक न हो, धन पिशाच, कंजूस, कृपण, जल्द न छोड़ने वाला।

लीची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [चीनी—लीचू] एक सदा-बहार पेड़ और उसके गोल मीठे फल।

लीझी—(वि०, दे०) निस्सार, निकम्मा, नीरस, सार-हीन, अवशिष्ट।

लीद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घोड़े, गधे आदि का मल।

लीन—(वि०, सं०) तन्मय, तत्पर, पूर्णतया लगा हुआ, आसक्त, मिलित, मग्न। [**लीनता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

लीपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लपन] भूमि-तल या दीवाल आदि पर गोबर की पतली तह चढ़ाना या पोतना। [**लीपा-पोती** (यौ०)]। **मुहा०—लीप-पोत कर बराबर करना**-विनष्ट या चौपट कर देना, चौका लगाना।—**लीपा-पोती करना**-जलादि से गीला कर भद्दा करना, नष्ट करना।

लीबड़—(संज्ञा, पु०, दे०) नेत्रों का मैल, कीचड़, पंक, [लीबर (दे०)]।

लीम—(संज्ञा, पु०, दे०) संधि, मेल, मिलाप, शांति।

लीमू—(संज्ञा, पु०, दे०) नींबू, [निम्बू (दे०)]।

लीर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिट, चिथड़ा, कतरन।

लील†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० नील] नील का पौधा, नीला रंग। (वि०) नीला, नीले रंग का।

लीलना—(क्रि० स०, दे०) [सं० गिलन या लीन] निगलना, गले से नीचे पेट में उतारना] [**लिलवाना** (प्रेरणा० रूप)], [**लिलाना** (स० रूप)]।

लीलया—(क्रि० वि०, सं०) बिना प्रयास, सहज ही में, खेल में।

लीलहिं—(संज्ञा, स्त्री० दे०) बिना परिश्रम, सहज में, खेल में। (क्रि० स०, दे०) निगलते हैं। (संज्ञा, स्त्री०, ब्र०) लीला को।

लीला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मनोरंजक कार्य। क्रीड़ा, विहार, प्रेम-विनोद, खेल, केलि। प्रेम-कौतुक। चरित्र। मनोरंजनार्थ ईश्वर के अवतारों का अभिनय। प्रेम-विनोदार्थ प्रिय के वेश-वाणी, गति आदि का नायिका द्वारा अभिनय-सम्बन्धी एक हाव (साहि०)। बारह मात्राओं का एक मात्रिक छंद। चौबीस मात्राओं का एक सगणान्त मात्रिक छंद। एक वर्णिक छंद जिसमें प्रत्येक चरण में भगण, नगण और एक गुरु होता है (पिं०)। (संज्ञा, पु०) [सं० नील] श्याम रंग का घोड़ा। (वि०, दे०) नीला।

लीलापुरुषोत्तम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्री-कृष्ण जी, लीलापुरुष।

लीलावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रख्यात ज्योतिषाचार्य्य भास्कराचार्य्य की कन्या (स्त्री) जिसने अपने नाम (लीलावती) से गणित की एक पुस्तक रची थी। ३२ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०) (वि०, स्त्री०) लीलायुक्ता।

लुंगाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) लुच्चा, शोहदा, गुंडा। [**लुंगाड़ी** (स्त्री०)]।

लुँगी, लँगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लँगोट, लाँग] धोती के बदले कमर में लपेटने का कपड़े का छोटा टुकड़ा, तहमत।

लुंचन—(संज्ञा, पु०, सं०) नोचना, उखेड़ना, उत्पाटन, चुटकी से उखाड़ना।

लुँज, लुंजा—(वि०, दे०) [सं० लुंचन] लंगड़ा, लूला, बिना पत्ते का पेड़, ठूँठ।

लुंठना—(क्रि० स०, दे०, सं०) लूटना, लुढ़कना, चुराना, [लुठना (दे०)]। [**लुंठित, लुंठनीय** (वि०)]। [**लुंठन** (संज्ञा, पु०)]।

लुंठित—(वि०, सं०) वे व्यंजन जिनके उच्चारण में मुख-द्वार को जीभ की नोक से बहुत जल्द-जल्द बंद करके दो तीन बार खोलना पड़े। [रोल्ड]

लुंड—(संज्ञा, पु०) [सं० रुंड] रुंड, कबंध, बिना सिर का धड़। [**लुंडा, लुंडी** (वि०, पु०, स्त्री०)]।

लुंड, मुंड—(वि०, यौ०, दे०) [सं० रुंड+मुंड] सिर और हाथ-पैर कटा धड़, धड़ और सिर, पत्रहीन वृक्ष, ठूँठ।

लुंडा—(वि०, दे०) [सं० रुंड] ऐसा पक्षी जिसके पर और पूँछ भी झड़ गये हों, रुंड, कबंध। [**लुंडी** (स्त्री०)]।

लुंबिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कपिलवस्तु के समीप का वह वन जहाँ गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

लुआठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोक=काष्ठ] सुलगती या जलती हुई लकड़ी, चुआनी (प्रान्ती०) [लुआठी (स्त्री०,अल्पा०))।

लुआब—(संज्ञा, पु०, अ०) चिपचिपा या लसदार गूदा, लासा, [लबाब (दे०)]।

लुकंजन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोपांजन] एक अंजन जिसका लगाने वाला अदृश्य हो जाता है, लोपांजन, सिद्धांजन।

लुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोक=चमकना] चमकदार रोगन, वार्निश, पालिश, आग की ज्वाला या लपट, लौ, गोपन।

लुकठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लुक] जलती लकड़ी, लुआठी।

लुकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लुक=लोप] छिपना, ओट या आड़ में होना, लोप होना। [**लुकावना, लुकाना** (स० रूप)], [**लुकवाना** (प्रेरणा० रूप)]। "खड्भ्य: लुक"—[अष्ट०]।

लुकमा—(संज्ञा, पु०, अ०) ग्रास, कौर।

लुकाट—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पेड़ और उसका फल।

लुकाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० लुकना] छिपाना, आड़ या ओट में करना। (क्रि० अ०, दे०) छिपना, लुकना। [**लुकवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लुकेठा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोक=काष्ठ] सुलगती हुई लकड़ी, चुआती (प्रान्ती०)।

लुखिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुलटा या चालबाज स्त्री।

लुगड़ा, लुगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) वस्त्र, कपड़ा, ओढ़नी। [**लहँगा, लुगरा** (यौ०)]।

लुगदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गीली वस्तु का निस्सार लोंदा, निस्सार वस्तु का पिंड या गोला, निस्तत्व गूदा।

लुगरा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लूगा+रा प्रत्य०] कपड़ा, ओढ़नी, फटा-पुराना वस्त्र, छोटी चादर, लत्ता। [**लहँगा, लुगरा** (यौ०)]।

लुगरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लुगरा] फटी-पुरानी धोती।

लुगाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लोग] लोगाई, स्त्री, औरत, नारी।

लुगी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लूगा] पुराना वस्त्र, घाँघरे या लहंगे की संजाफ या फटा चौड़ा किनारा।

लुगा‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लूगा] लुगरा, लूगा।

लुच—(वि०, दे०) निरा, केवल, नंगा, उघाड़ा।

लुचई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रुचि] मैदे की छोटी और बारीक पूरी। "कृपा भई भगवान की, लुचुई दोनों जून"—तुल०।

लुचपन—(संज्ञा, पु०) [हिं० लुचकना] लुच्चापन, दुष्टता, कुचाल, दुश्चरित्रता, बदमाशी।

लुचरा—(संज्ञा, पु०, दे०) मकड़ा (कीट विशेष)।

लुचुई—देखिए लुचई।

लुच्चा—(वि०, दे०) [हि० लुचकना] दुराचारी, दुश्चरित्र, बदमाश, कुमार्गी, कुचाली, शोहदा। [**लुच्ची** (स्त्री०)]। [**नंगा, लुच्चा** (यौ०)]। [**लुच्चई** (संज्ञा, स्त्री०)]।

लुजलुजा—(वि०, दे०) लचीला, कमजोर।

लुटंत†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लूट] लूट।

लुटकना—(क्रि० अ०, दे०) [स० लटकना] लटकना।

लुटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लुट=लुटना] लुट या लूटा जाना, नष्ट या बरबाद होना। *(क्रि० अ०, दे०) लुटना, लोटना। [**लुटाना, लुटावना** (स० रूप)], [**लुटवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लुटवैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लूटना+वैया प्रत्य०] लूटने वाला, ठग, बटमार, धूर्त, उचक्का।

लुटाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० लुटाना] लूटने देना, व्यर्थ व्यय करना, फेंकना, बहुत दान देना या बाँटना, पूरा मूल्य लिये बिना देना, [लुटावना (दे०)]।

लुटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लोटा] छोटा लोटा। **मुहा०—डुबोना** (**डूबना**)-नष्ट-भ्रष्ट कर देना (होना), बिगाड़ देना (बिगड़ जाना)। "लो दी उसने बिलकुल ही लुटिया डुबो"—[स्फु०]।

लुटेरा, लुटेरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लूटना +एरा या एरू प्रत्य०] डाकू, ठग, लूटने वाला, बटमार, धूर्त दस्यु।

लुट्टस—(संज्ञा, पु०, दे०) बिगाड़, नाश, ध्वंस, लूट-खसोट।

लुठन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लुंठन] घोड़ा आदि पशुओं का श्रम मिटाने को भूमि पर लोटना या लोटपोट करना, लुढ़कना, लोटना।

लुठना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लुंठन] लोटना, लुढकना, पृथ्वी पर पड़ना। [**लुठाना, लुठावना** (सं० रूप)], [**लुठवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लुड़का—(संज्ञा, पु०, दे०) लुरका, कान का एक गहना। [**लुरकी** (स्त्री०)]।

लुड़की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लुड़का] लुरकी (ग्रा०), छोटा लुड़का।

लुड़खना—(क्रि० अ०, दे०) ढुलना, ढुलकना, पुलकना। [**लुड़खाना** (स० रूप)]। **लुड़खवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लुड़खुड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ढुलन, लुढ़कन। [**लुड़खुड़ाना** (क्रि० स०)]।

लुढ़कना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लुंठन] गेंद सा चक्कर खाते जाना, ढुलकना, ढुरकना। [**लुढ़काना, लुढ़कावना** (स० रूप)]। [**लुढ़कवाना**। (प्रेरणा० रूप)]।

लुढ़ना*†—(क्रि० अ०) [हि० लुढ़कना] लुढ़कना ढुलकना। [**लुढ़ाना** (स० रूप)] [**लुढ़वाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लुढ़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लोढ़ा] छोटा लोढ़ा।

लुढ़ियाना—(क्रि० स०, दे०) कपड़े सीना, टाँके दिये कपड़े को पक्का सीना।

लुतरा—(वि०, दे०) चुगुल, चुगुलखोर, नटखट, बदमाश, [**लुतरी** (स्त्री०)]।

लुत्थ*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लोथ] लोथ, कबंध।

लुत्फ—(संज्ञा, पु०, अ०) दया, कृपा, मेहरबानी, मनोरंजन, उत्तमता, आनंद, मजा, रुचिरता, रोचकता, [लुतुफ, लुफुत (दे०)]।

लुनना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लवन] खेतों का अन्न या फसल काटना, नष्ट करना। "बुवै सो लुनै निदान"—वृं०।

लुनाई*—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [सं० लावण्य] सुन्दरता, मनोहरता, लावण्यता। "हृदय सराहत सीय-लुनाई"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० लुनना] लुनने का भाव, मजदूरी या क्रिया, कटाई।

लुनियाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लवण, हि० लोन] नमक बनाने वाली एक जाति, एक प्रकार की घास, [लोनिया (दे०)]।

लुनेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लुनना] खेत का पका अन्न काटने वाला, लुनने वाला।

लुपना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लुप्त] छिपना, लुप्त होना, [लुकना (दे०)]।

लुपरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लपसी, हलुआ।

लुपलुप—(क्रि० स०, अनु०) पशु आदि के खाने का शब्द विशेष। **मुहा०—लुपलुप, (लुपुर-लुपुर) करना**—अति आतुरता प्रगट करना।

लुप्त—(वि०, सं०) छिपा हुआ, गुप्त, अदृश्य, अंतर्हित। [**लोप** (संज्ञा, पु०)]।

लुप्तोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उपमालंकार का वह भेद जिसमें उसके ४ अंगों में से कोई अंग छिपा हो, न कहा गया हो।

लुबदा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लुगदी] लुगदी।

लुबुध*†—(वि०, दे०) [सं० लुब्ध] लुब्ध, मोहित, लोभित।

लुबुधना†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० लुबुध+ना प्रत्य०] लुभाना, ललचाना, लुब्ध या मोहित होना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लुब्धक] बहेलिया, अहेरी।

लुबुधा*—(वि०, दे०) [सं० लुब्ध] लोभी, लालची, मोहित, इच्छुक, प्रेमी, चाहने वाला।

लुब्ध—(वि०, सं०) लुभाया या ललचाया हुआ, मोहित, लोभ-ग्रसित, मुग्ध, तन मन की सुधि भूला हुआ।

लुब्धक—(संज्ञा, पु०, सं०) व्याधा, बहेलिया, शिकारी एक अति तेजवान तारा जो उत्तरी गोलार्द्ध में है (आधुनिक)।

लुब्धना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लुब्ध] लुभाना, ललचाना, मोहित होना।

लुब्धापति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पति और कुलजनों की लज्जा करने वाली प्रौढ़ानायिका (काव्य०)।

लुब्ब, लुबाब—(संज्ञा, पु०, अ०) तत्व सारांश, मूल, निष्कर्ष।

लुभाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० लोभ] मोहित वा लुब्ध होना, लोभ या लालच करना, आसक्त होना, रीझना, तन मन की सुधि भूलना। (क्रि० स०, दे०) मोहित या लुब्ध करना, सुधि-बुधि भुलाना, ललचाना, प्राप्ति की गहरी चाह उपजाना या मोह में डालना, रिझाना।

लुरकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लुरकना=लटकना] कान का एक गहना, बाली। मुरकी (प्रान्ती०)।

लुरना, लुलना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लुलन] भूलना, झुक या ढल पड़ना, लहराना, हिलना, चलायमान, कहीं से सहसा आ जाना, प्रवृत्त या आकर्षित होना।

लुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लुरवा=बछड़ा] हाल की ब्यायी गाय।

लुलित—(वि०, सं०) चलायमान, भूलता हुआ, आकर्षित, लहराता हुआ।

लुवार†—(वि०, दे०) [हिं० लू] लू, गर्म हवा का झोंका, लूक।

लुहंडा, लोहंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लोह +हंडा] लोहे का घड़ा, लोहे की गगरी, लोहपात्र।

लुहना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० लुभाना] लुभाना, ललचाना।

लुहान—(वि०, दे०) [हिं० लोहू या लहू] लहूभरा, रक्तपूर्ण, रक्तमय।—**लहू-लुहान**-(वि०) लाठी आदि की चोट से कपड़ों का रक्त से रँगा हुआ होना।

लुहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लौहकार] लोहे की चीज बनाने वाला, लोहे के काम करने वाली एक जाति। [**लुहारिन** (स्त्री०)]। "गंधी और लुहार की देखौ बैठि दुकान"—वृं०।

लुहारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लुहार] लोहे की वस्तु बनाने का कार्य्य, लुहार की स्त्री, लोहारिन।

लू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लुक=जलना या हिं० लौ—लपट] ग्रीष्म ऋतु की उष्ण या गर्म वायु का झोंका। **मुहा०—लगना (मारना)**-देह में तपी या उष्ण वायु के लगने से दाह, ताप आदि होना।

लुआठ, लुआठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोक +काष्ठ] सुलगती हुई लकड़ी, लुआती। [**लुआठी** (स्त्री० अल्पा०)]।

लूक—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० लुक] आग की लपट, जलती हुई लकड़ी, लूका। [**लूकी** (स्त्री०)] लुत्ती (प्रान्ती०)। लू या गर्म वायु, ग्रीष्म काल की तप्त वायु का झोंका, [लपट (दे०)]। **मुहा०—लगना (मारना)**-शरीर में गर्म हवा का प्रभाव पड़ जाना या उससे झुलस जाना।—(**लूक, लूका**)-(संज्ञा, पु०, दे०) उल्का, टूटा हुआ तारा। "दिनहीं लूक परन बिधि लागे"—[रामा०]।

लूकटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लोमड़ी, लोवा, लोखरी, लखिया (प्रान्ती०)।

लूकना*—(क्रि० स०, दे०, हिं०) जलाना, आग लगाना, लू से जलाना, लू लगाना। *† (क्रि० अ०, दे०) [हिं० लुकना] छिपना, लुप्त होना, दुरना।

लूकबाही—(संज्ञा, पु०, दे०) आग-वाही, होली के दिन का वह डंडा जिसके छोर पर बूट या बालो बाँध कर होली की आग में उसे छुलाते हैं।

लूका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लुका] आग की लपट, ज्वाला, लुआठा। [**लूकी** (स्त्री०, अल्पा०)]।

लूकी†—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लूका] स्फुलिंग, आग की चिंगारी, लूका, जलती लकड़ी। **मुहा०—लगाना**-आग लगाना, जलती बत्ती या लकड़ी छुलाना। वैमनस्यकारी या क्रोधोत्पादक बात कहना।

लूख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लूक, आग, ज्वाला।

लूखा*—(वि०, दे०) [सं० रुक्ष] रूखा, सूखा।

लूगा†—(संज्ञा, पु०, दे०) लुगरा, धोती, कपड़ा। "रोटी-लूगा नीके राखै आगेहू की बेद भाखै, भला ह्वै है तेरो ताते आनद लहत हौं।—[विन०]।

लूट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लूटना] किसी के धन का बल-पूर्वक मार कूट कर, डकैती, लूट का माल-असबाब।—**खसोट,—खूंद,—मार,—पाट**-(पु०) लोगों को अनुचित रूप से मार-पीट, कर उनके धन को हड़प लेने का कार्य्य।

लूटक—(संज्ञा, पु०) [हि० लूट] लूटने वाला, लुटेरा, ठग, कांति हरने वाला, कमरबंद।

लूटना—(क्रि० स०) [सं० लुट+लूटना] किसी का माल-असबाब या धन मार-पीट कर या डाँट-फटकार बता कर छीन-झपट लेना, बल पूर्वक अपहरण करना, अनुचित रीति से किसी का धनादि लेना, उचित से बहुत अधिक मूल्य लेना, ठगना, मुग्ध या मोहित करना। "रमैया तोरी दुलहिन ने लूटा बजार"—कबीर। [**लुटाना, लुटावना** (दे०, स० रूप)], [**लुटवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लूटि-(पू० का० क्रि०) [हि० लुटना] लूटकर।

लूटि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लूट] लूटने, छीन लेने, ठगने का कार्य्य। (पू० का० क्रि० ब्र०) लूटकर।

लूत, लूता—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० लूता] मकड़ी। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लूका] लूका, लुआठा।

लूती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिनगारी, लुआठी।

लून, लोन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लवण] नमक, नोन, काटा गया।

लूनना—(क्रि० स०, दे०) [हि० लुनना] खेतों की पकी फसल काटना, लुनना।

लूनिया—(संज्ञा, पु०, दे०) शोरा-नमक बनाने वाली एक जाति। एक घास। बेलदार या फावड़ा-गीर। [लुनिया, लोनिया (दे०)]।

लूनी—(संज्ञा, पु०, दे०) नैनू, मक्खन, नवनीत, लोनी, एक नदी (राजपूताना), चने के पौधों पर की बारीक रेणु जो खट्टी और नमकीन होती है, लोनी। (वि०, दे०) नमकीन, लोनी।

लूमना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लवन] लटकना, झूमना, झूलना।

लूरना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० लुरना] झूलना, लहराना, झुक पड़ना।

लूला—(वि०, दे०) [सं० लून=कटा हुआ] कटे हाथ का, लुँजा, डुंडा, असमर्थ, बेकार। [**लूली** (स्त्री०)]।

लूलू—(वि०, दे०) [हि० लूला] नासमझ, मूर्ख, निकम्मा। (संज्ञा, पु०, दे०) भयानक जंतु (कल्पित)।

लूह†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लू] लू, गर्म हवा, लूक, लुहार (ग्रा०)।

लूहर—(संज्ञा, पु०, दे०) लुकेठा, लूक या गिरा हुआ तारा, उष्ण वायु, लू।

लेंड़—(संज्ञा, पु०, दे०) बँधा गाढ़ा सूखा सा मल।

लेंड़ी—(संज्ञा, पु०) [हि० लेंड़] बँधे मल की बत्ती, बकरी या ऊँट की मेंगनी।

लेंहड़—(संज्ञा, पु०, दे०) झुंड, समूह, दल, गल्ला, (चौपायों का)। एक भाषा (पश्चिम प्रान्त) लेंहड़ा।

ले—(अव्य०, दे०) [हि० लेकर] आरंभ होकर, लेकर, [लौं (ब्र०)]। ‡ (सं० लग्न, हि० लग, लगि) पर्य्यंत, तक।

लेई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लेही, लेह्य] कागज आदि चिपकाने की आटे की पतली लपसी, अवलेह। आटा आदि किसी चूर्ण को पानी में पका कर गाढ़ा किया लसीला पदार्थ। (क्रि० स० सा० भ०) [हि० लेना] लेगा, लेगी।—**पूँजी**-(स्त्री०) सारा धन या सामान, सारी पूँजी या जमा, सर्वस्व। सुर्खी मिला बरी का चूना (जो ईंटों की जुड़ाई में लगता है।

लेख—(संज्ञा, पु०, सं०) लिखे अक्षर, लिपि, लिखाई, लिखावट, हिसाब-किताब, देवता, देव। *(वि०, दे०) लिखने-योग्य, लेख्य। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) [हि० लीक] लकीर, पक्की बात।

लेखक—(संज्ञा, पु०, सं०) लिपिकार, ग्रंथकार, लिखने वाला, रचयिता, मुहर्रिर, मुंशी। [**लेखिका (स्त्री०)**]।

लेखकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लेखक+ई प्रत्य०] लिखाई, लेखक का कार्य, पेशा या मजदूरी।

लेखन—(संज्ञा, पु०, सं०) लिखने की विद्या या कला, अक्षर या चित्र बनाना, लिखने का काम, हिसाब करना, लेखा लगाना। [**लेखनीय लेख्य** (वि०)]।—**सामग्री**–(स्त्री०) लिखने की सामग्री, कागज, कलम, पेंसिल, स्याही आदि [स्टेशनरी]। —**विभाग**–(पु०) जिस विभाग मे लेखक-सामग्री रहती हो। [स्टेशनरी डिपार्टमेंट]।

लेखना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० लेखन] समझना, विचारना, लिखना अक्षर या चित्र बनाना। गणित करना। गिनना, देखना, अनुमान करना।—**जोखना**–(क्रि० स०) ठीक-ठीक अनुमान या अंदाज करना, हिसाब या लेखा लगाना, जाँच या परीक्षा करना, जोखना, सोचना, विचारना। [**लेखवाना** (प्रेरणा० रूप)], [**लेखाना, लेखावना** (स० रूप)]।

लेखनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कलम। "सुरवर तरु-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी"—[स्फु०]।

लेखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लिखना] गणित, हिसाब-किताब, गणना, ठीक-ठीक अंदाज या अनुमान, कूत, आय-व्यय विवरण [एकाउंट] अनुमान, समझ, विचार। **मुहा०—पढ़ना**–व्यापार या व्यौहार-गणित पढ़ना।—**डेवढ़ (बराबर) करना (होना)**–हिसाब चुकता करना (होना) या निपटाना, (निपटना) चौपट या नाश करना (होना)। **मुहा०—किसी के लेखे**–किसी की समझ या विचार में। "नर-बानर केहि लेखे माँही"—[रामा०]।

लेखाध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) लेखापाल, गणक, आय-व्यय लेखक। [एकाउटेंट]

लेखिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लिखने वाली, पुस्तक रचने वाली।

लेखेक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) आय-व्यय का निरीक्षण करने वाला। [आडीटर]

लेखेक्षा-न्यायालय—(संज्ञा, पु०, सं०) जाँच-पड़ताल करने वाली अदालत। [कोर्ट आव् आडिट]।—**विवरण**–(पु०) आय-व्यय परीक्षा विवरण [आडिट रिपोर्ट]

लेख्य—(वि०, सं०) लिखने योग्य, जो लिखा जाने को हो। (संज्ञा, पु०, दे०) दस्तावेज, लेख, तमस्सुक।—**पाल**–(पु०) लेख्य रक्षक, लेख्य-भंडारी [रेकार्डकीपर]—**गृह**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दफ्तर, कचहरी, आफिस (अ०)।—**परिदर्शन**–(पु०) लेखनिरीक्षण। [इंस्पेक्शन आव् डाकूमेंट्स]

लेख्यालय—(संज्ञा, पु०, सं०) लेख्यगृह, लेख्यागार। [रिकार्ड आफिस]

लेज़म—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) एक नरम और लचीली कमान जिससे धनुर्विद्या का अभ्यास किया जाता है, लोहे की जंजीर लगी कमान जिससे कसरत की जाती है, [लेजम (दे०)])।

लेज—(संज्ञा, स्त्री० दे०) रस्सी, डोरी।

लेजुर, लेजुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० रज्जु] डोरी, रस्सी, लजुरी (प्रा०)।

लेट—(संज्ञा, पु०, दे०) चूने की गच, लेटने का भाव। (क्रि० अ०, वि०) देर, बिलंब।

लेटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लुंठन, हि० लोटना] पौढ़ना, बगल की ओर झुककर पृथ्वी पर गिर जाना, बिछौने आदि से पीठ लगाकर पूरा शरीर उस पर ठहराना। [**लेटाना, लिटाना, लिटावना** (क्रि० स० प्रा०)], [**लेटवाना लिटवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लेदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक पक्षी।

लेन—(संज्ञा, पु०) [हि० लेना] लेने की क्रिया या भाव, पावना, [लहना (दे०)]।—**देन**–(**पु०**) ऋण देने और उगाहने का कारबार।—**दार**–(पु०) महाजन, व्यवहार, लहनेदार।—**हार**–(वि०) लेने वाला, [लेनहारा (दे०)]।

लेना—(क्रि० स०) [हि० लहना] प्राप्त या ग्रहण करना, और के हाथ से अपने हाथ मे करना, पकड़ना, थामना, अपने अधिकार या कब्जे मे करना, खरीदना, मोल लेना, अगवानी करना, जीतना, धरना, जिम्मे लेना, भार उठाना, अभ्यर्थना करना। पीना, सेवन करना, अंगीकार या धारण करना। उपहास से लज्जित करना। **मुहा०—आड़े हाथों लेना**–गूढ़ व्यंग्य के द्वारा

लज्जित करना। **लेने के देने पड़ना**-लाभ के बदले हानि उठाना, लेने के बदले देना पड़ना। **ले डालना**-नष्ट या खराब करना, बिगाड़ना, चौपट करना, हरा देना, समाप्त या पूर्ण करना। **ले-दे डालना**-नष्ट करना, व्यंग्य से अपमानित या लज्जित करना। **ले-दे करना**-तकरार करना, झगड़ना। **लेना एक न देना दो**-कुछ मतलब या सरोकार नहीं। (**न कुछ**) **लेना-न-देना**-निष्प्रयोजन। **न** (**ऊधौ के**) **लेने में न** (**माधव के**) **देने में**-किसी प्रकार का सम्बन्ध न होना, निष्प्रयोजन, अकारण। **ले मरना, ले गिरना**-अपने साथ दूसरे को भी नष्ट या बरबाद करना, कुछ न कुछ कार्य सिद्ध हो कर लेना। **कान में लेना**—सुनना। **ले बीतना**—नष्ट या खराब कर देना, समाप्त कर लेना।

लेप—(संज्ञा, पु०, सं०) लेई की सी पोतने, छोपने या चुपड़ने की वस्तु, किसी वस्तु पर चढ़ी हुई किसी गाढ़ी और गीली वस्तु की तह।

लेपड़ना—(क्रि० स०, यौ०) [हिं० लेना+पड़ना] साथ सोना, ले जाना, नाश करना, बिगड़ना, कुछ काम पूरा ही कर लेना।

लेपन—(संज्ञा, पु०, सं०) लेपना, लेपने की वस्तु, मरहम, उबटन आदि। [**लेपनीय, लेपित लिप्त** (वि०)]।

लेपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लेपन] छोपना (ग्रा०), गीली और गाढ़ी वस्तु की तह चढ़ाना, लीपना।

लेपालक—(संज्ञा, पु०, यौ०,) [हिं० लेना+पलना] दत्तक या गोद लिया लड़का, पालट (प्रान्ती०)।

लेपालना—(क्रि० स०, यौ०) [हिं० लेना+पालना] किसी को किसी से लेकर पुत्र के समान पालना-पोसना, दत्तक पुत्र बनाना, गोद लेना।

लेपित—(वि०, सं०) लिप्त, लेप किया या लीपा हुआ।

ले रखना—(क्रि० स०, यौ०) [हिं० लेना+रखना] संचय या संग्रह करना, एकत्रित करना रक्षित रखना।

ले रहना—(क्रि० स०, यौ०) [हिं० लेना+रहना] संगी या साथी बनाना, साथ लेकर रहना, अपने अधिकार में करना, लेकर ही शांत होना।

लेरुवा, लेरू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लेह] लयरू, लयरुवा, लएरू (ग्रा०), बछड़ा, बछवा।

लेला—(संज्ञा, पु०, दे०) भेड़ का बच्चा, मेमना।

लेलिह—(संज्ञा, पु०, सं०) साँप, सर्प, नाग।

लेलुट—(वि०, दे०, यौ०) [हिं० लेना+लूटना] लेकर न देने वाला, [लैलूट (दे०)]।

लेव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लेप्य] लेप, आग पर चढ़ाने से पूर्व बटलोई आदि बरतनों के पेंदे पर मिट्टी आदि का लेप, लेवा (ग्रा०)।

लेवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लेप्य] लेप, कहगिल, गिलावा। (वि०, दे०) [हिं० लेना] लेने वाला।—**देई,—देवा**-(पु०) लेन-देन। **मुहा०—लगना**-धान बोने के उपयुक्त खेत की मिट्टी का पानी में घुल जाना।

लेवार—(संज्ञा, पु०, दे०) गीली मिट्टी, गिलावा, दीवाल पर छाप लगाने की मिट्टी, लेप, लेवा।

लेवाल, लेवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लेना+वाल प्रत्य०] लेने या खरीदने वाला।

लेवास—(संज्ञा, पु०, दे०) गन्ध, लेट। (स्त्री०, दे०) लेने की इच्छा।

लेवैया—(संज्ञा, पु०) [हिं० लेना+वैया प्रत्य०] लेने वाला, लेवा, ग्राहक।

लेश—(संज्ञा, पु०, सं०) चिह्न, अणु, सूक्ष्मता, संसर्ग, संबंध, लगाव, [**लेस** (दे०)]। एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के एक ही अंश में रोचकता हो। (वि०) थोड़ा, रंच, अल्प। [**लेश-मात्र** (यौ०)]।

लेश्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीव, जीव की वह दशा जिसमें वह कर्म से बँधता है।

लेसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लेश्य] बारना, जलाना, डंक मारना। "लेसा हिये ज्ञान का दिया"—[पद०]। (क्रि० स०, दे०) [हिं० लस] किसी वस्तु पर लेस लगाना या पोतना, दीवार पर मिट्टी का गिलावा छोपना, लीपना, सटाना, चिपकाना, चुगली खाना।

लेसालेस—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) लिपाई, सब ओरों से लिपाई का काम।

लेह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) जल्दी, शीघ्रता, उतावली। (क्रि० स०, सं०) लो।

लेहन—(संज्ञा, पु०) [सं० लिह] चाटना।

लेहना—(संज्ञा, पु०) [हिं० लहना] लहना। (क्रि० स०, दे०) [सं० लेहन] चाटना।

लेहाज—(संज्ञा, पु०, दे०) लिहाज (फ़ा०)।

लेहाजा—(संज्ञा, वि०, अ०) इसलिए, इस वास्ते।

लेही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लई] लेई, लपसी।

लेह्य—(वि०, सं०) चाटने योग्य वस्तु, चटनी, लेहनीय।

लैंगिक—(संज्ञा, पु०, सं०) वह ज्ञान जो लिंग या स्वरूप के वर्णन से प्राप्त हो, अनुमान। (वि०, सं०) लिंग संबंधी, लिंग का, लक्षण या चिह्न-सम्बन्धी।

लै*—(अव्य०, दे०) [हिं० लगना] लौं, पर्य्यंत, तक। (पु० का० क्रि०) [हिं० लेना] लेकर। "लै गयो, लै गयी, लै गयी राधा"—पद्मा०।

लैस—(वि०) [अ० लेस] वर्दी और हथियारों से सजा हुआ, कटिबद्ध, तैयार, सन्नद्ध। (संज्ञा, पु०, अं०) कपड़े पर चढ़ाने का फीता। (संज्ञा, पु०, दे०) एक तरह का बाण।

लों—(अव्य०, दे०) [हिं० लौं] लौं, तक, पर्य्यंत। "अवधि लों यदि जीवित मैं बचूँ"—गिरीश।

लोंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लुंठन] किसी गीली वस्तु का गोला डला, या बँधा भाग।

लोइ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोक] लोग। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० रोचि] दीप्ति, प्रभा, कांति, दीप-शिखा, लव, [लौ (दे०)] आँख।

लोइन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लावण्य] लावण्य, सुन्दरता, मनोहरता। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोचन] आँख, लोयन (ब्र०)।

लोई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लोली] एक रोटी या पूरी के बनाने योग्य गुँधे आटे की गोल टिकिया। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लोनीय] एक प्रकार की ऊनी कम्बल या चादर, [लोइया (दे०)]।

लोकंजन*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० लोपांजन] लोपांजन, वह अंजन जिसके लगाने से लोग औरों को दिखाई नहीं देते।

लोकंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लोकना] ब्याह के बाद कन्या के डोले के साथ भेजी गई दासी। [लोकंदी (स्त्री०)]।

लोकंदी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० लोकना] जो दासी कन्या के साथ ससुराल भेजी जावे।

लोक—(संज्ञा, पु०, सं०) जगत, संसार, प्रदेश, स्थान, निवास-स्थान। दिशा। जन, लोग। जीव-धारी, प्राणी। समाज। कीर्ति, यश। इहलोक और परलोक दो लोक है (उपनि०)। भूमि, आकाश, पाताल या पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक, तीन लोक हैं (निरुक्त)। भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक मह, जनः, तप और सत्य लोक, ये सात ऊपर के लोक (पुरा०) और फिर अतल, वितल, सुतल, महातल (तल), रसातल (नितल), तलातल (गभस्तिमान्) पाताल ये सात नीचे के लोक (पुरा०), यों कुल चौदह लोक हैं। "चहहु लोक परलोक नसाऊ"—[रामा०]।—**कंटक**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समाज को क्षति या हानि पहुँचाने वाला।—**दल**–(पु०) जनतादल [पीपुल्सपार्टी]।—**धुनि***–(स्त्री०) [सं० लोकध्वनि] अफ़वाह, उड़ती हुई बात।—**नाथ**–(पु०) राजा, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, लोक-नायक।—**प**,—**पति**–(पु०) ब्रह्मा, इन्द्र, वरुण, कुबेर आदि, राजा, लोकाधिपति। "लोकप रहहिं सदा रुख राखे"—रामा०।—**पाल**,—**पालक**–(पु०) इन्द्रादि देवता, दिक्पाल, दिशाओं के स्वामी, राजा।—**प्रवाद**–(पु०) कहावत, मसल, लोक-प्रचलित उक्ति। "लोकप्रवादः सत्योऽयम् पंडितैः समुदाहृतम्"—वाल्मी०।—**प्रियशासन**–(पु०) प्रजाहितैषी सरकार। [पापुलर गवर्नमेंट]—**माता**–(स्त्री०) लक्ष्मी, देवी, रमा, कमला।—**यात्रा**–(स्त्री०) लोक-व्यवहार या रीति, संसार यात्रा, जीवन।—**युद्ध**–(पु०) जन युद्ध। [पीपुल्सवार]—**रीति**–(स्त्री०) संसार या समाज में प्रचलित रीति, लोक-नीति।—**लाज**–(स्त्री०) [सं० लोकलज्जा] संसार की शर्म, समाज की लज्जा।—**लीक***–(स्त्री०) संसार की मर्य्यादा, समाज या लोक की रीति।—**विक्रय**–(पु०) जन-साधारण के लिए होने वाली बिक्री। [पब्लिक सेल] **व्यवहार**–(पु०) लोकाचार, लोक-रीति।—**लोचन**–(पु०) सूरज, सूर्य, भास्कर, चन्द्रमा, विश्व-नेत्र, विश्वविलोचन।—**श्रुति**–(स्त्री०) अफ़-वाह।—**संग्रह**–(पु०) संसार के लोगों को प्रसन्न रखना, सब की भलाई।—**सेवाभाव**–(पु०) जन सेवा की भावना। [पब्लिक स्पिरिट]—**हार**–(वि०) [सं० लोकहरण] संसार का नाश करने वाला, लोक संहारक।—**हित**–(पु०) विश्वमांगल्य।

"सर्व लोक-हिते रताः"—वाल्मी०।—**हितू**-(वि०) लोक-हित वा संसार की भलाई करने वाला। —**हितैषी**-(वि०) विश्व-हित का चाहने वाला।

लोकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० लोपन] ऊपर से गिरते हुए किसी पदार्थ को अपने हाथों से पकड़ या थाम लेना, बीच में से ही उड़ा लेना। [**लोकाना** (स० रूप)], [**लोकवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लोकांतर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परलोक, मरने पर जीव के जाने का लोक।

लोकांतरित—(वि०, सं०) मृत, मरा हुआ, पर-लोक-वासी।

लोकाचार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) लोकव्यवहार, संसार या समाज का व्यवहार, दुनिया का बर्ताव।

लोकाधिप, लोकाधिपति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा, लोकप।

लोकापवाद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) संसार-संबंधी निंदा, अपकीर्ति, अयश, बदनामी। "लोका-पवादी बलवान् मतो में"—[रघु०]।

लोकाट—(संज्ञा, पु०) [चीनी—लुः+क्यू] एक पेड़ जिसके फल बड़े बेर के से मीठे और गूदे-दार होते हैं, लुकाट।

लोकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० लोकाना का प्रेरणा० रूप] उछालना, ऊपर को आकाश में फेंकना।

लोकायत—(संज्ञा, पु०, सं०) केवल इस लोक का मानने वाला और परलोक को न मानने वाला, चार्वाक-दर्शन, दुर्मिल छंद (पिं०)।

लोकेश, लोकेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) लोक-पाल।

लोकैषणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लौकिक बातों की चाह, यशोकांक्षा, कीर्ति, लालसा। **लोकैषी**—(वि०, सं०) यशोकांक्षी।

लोकोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) कहावत, [लोकोक्ति, लोकउक्ति (दे०)], मसल, जन-श्रुति, एक अलंकार जहाँ लोकोक्ति का प्रयोग रोचकता के साथ भाव-पोषणार्थ हो।

लोकोत्तर—(वि०, यौ०, सं०) जो लोक या संसार में न हो, अलौकिक, अत्यंत अद्भुत या विल-क्षण, अनोखा, अपूर्व।

लोखर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लोह+खंड] लोहार, बढ़इयों आदि के लोहे के हथियार या औजार, लोहे के बरतन, भाँड़े।

लोखरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लोमड़ी, हुंडार (प्रान्ती०), लोवा। [**लेखरा** (पु०, दे०)]।

लोग—(संज्ञा, पु०, बहु०, दे०) [सं० लोक] मनुष्य, आदमी, जनता, जन। [**लुगाई** (स्त्री०)]। "सभय बिलोके लोग सब, जानि जानकी भीर" —[रामा०]।

लोगाइत—(संज्ञा, पु०, दे०) शान, घमंड। **मुहा०**—**बूकना**-शान जमाना।

लोगाई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लोग] नारी, स्त्री, औरत। "औध तजी मग-वास के रूख ज्यों पंथ के साथ ज्यों लोग, लुगाई"—[कविता-बली रामा०]।

लोच—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लचक] लचक, कोमलता, लचलचाहट। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रुचि] रुचि, अभिलाषा।

लोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) नेत्र, नयन, आँख। "लोचन जल रह लोचन कोना"—[रामा०]

लोचना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० लोचन+ना प्रत्य०] देखना, रुचि या अभिलाषा करना, प्रकाशित करना, प्रकाश करना। (क्रि० अ०, दे०) शोभित होना। (क्रि० अ०) अभिलाषा या कामना करना, तरसना, लोभ या लालच करना, लल-चना।

लोचुन, लोचून—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० लोहचूर्ण] लोहे का चूर्ण।

लोट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लोटना] लोटने का भाव, लुढ़कना। (संज्ञा, पु०) [हि० लोटना] उतार, त्रिवली, घाट।—**पोट**-(वि०) अति हँसी या हर्ष से विह्वल।

लोटन—(संज्ञा, पु०) [हि० लोटना] एक तरह का कबूतर। रास्ते के छोटे छोटे कंकड़।

लोटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लुंठन] लुढ़कना, करवट बदलना, तड़पना। **मुहा०**—**लोट जाना**-बेसुध या बेहोश हो जाना, मर जाना। विश्राम करना, लेटना, मुग्ध या चकित होना।

लोटपटा†—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० लोटना+पाट] विवाह के समय पाटा या स्थान बदलने की रीति, [लौटपटा (दे०)]। दाँव का उलट-फेर।

लोटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लोटना] धातु का एक गोल बरतन जिससे लोग पानी पीते हैं। [**लोटिया, लुटिया** (स्त्री०, अल्पा०)]।

लोटिया, लोटी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लोटा] छोटा लोटा। **मुहा०—डूबना (डुबोना)**-नष्ट करना। "तो दी उसने बिलकुल ही लोटिया डुबो"—[स्फु०]।

लोड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लोड़=जरूरत] आवश्यकता अनुभव करना, दरकार या चाह होना।

लोढ़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० लुंचन] चुनना, ओटना, तोड़ना।

लोढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोष्ठ] बट्टा, सिलबटा, बटनहाँ (ग्रा०), पत्थर का टुकड़ा जिससे सिल पर कोई वस्तु पीसी जाती है। [**लोढ़िया**, (स्त्री०, अल्पा०)]।—**ढाल**-चौपट, सत्यानाश, विनाश। **मुहा०—डालना**-बराबर करना।

लोढ़िया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लोढ़ा] छोटा लोढ़ा। [लुढ़िया]

लोढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लोढ़ा] छोटा लोढ़ा, लोढ़िया।

लोथ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लोष्ठ] मुरदा, मृत शरीर, लाश, शव। **मुहा०—लोथों की भीत उठाना**-अनेक मनुष्यों को मारना। "लोथनि पै लोथनि की भीति उठि जायगी"—रत्ना०।—**गिरना**-मारा जाना।—**डालना (गिराना)**-हत्या करना, मार डालना। [लोथि]

लोथड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लोथ] मांस का पिंड। [**लोथड़ी** (स्त्री०, अल्पा०)]।

लोथा—(संज्ञा, पु०, दे०) थैला, बोरा।

लोथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गठीली लाठी, लट्ठा।

लोदी—(संज्ञा, पु०, दे०) पठानों की एक जाति।

लोध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोध्र] एक पेड़, इसकी छाल और लकड़ी औषधि के काम आती है, एक जाति।

लोधिया, लोधी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लोध] एक जाति-विशेष, लोध।

लोध्र—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पेड़, लोध। "अधित्यकायामिव धातुमय्याम् लोध्रद्रुमं सानुमत प्रफुल्लम्"—[रघु०]।—**तिलक**-(पु०) उपमा अलंकार का एक भेद (काव्य०)।

लोन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लवण] नमक, लवण। "मनहु जरे पर लोन लगावति"—[रामा०]। सौंदर्य, लावण्य। (वि०, दे०) नमक। [लौन] **मुहा० (किसी का)—खाना**-अन्न खाना, पाला जाना।—**चुकाना (उतारना)**-नमकहलाली करना। **किसी का—निकलना**-नमकहरामी का फल मिलना।—**न मानना**-उपकार न मानना। **जले पर—लगाना या देना**-दुःख पर दुःख देना। (**किसी बात का)—सा लगना**-अप्रिय या अरुचिकर होना। (**राई)—उतारना**-दृष्टिदोष दूर करने को राई-नमक उतारना।—**हरामी**-(वि०) [हि० लोन+हरामी फ़ा०] नमकहरामी, उपकार न मानने वाला, [नोनहरामी (दे०)] "जिन तन दियो ताहि बिसरायो ऐसे लोन हरामी"—तुलसी०।

लोना—(वि०, दे०) [हि० लोन] नमकीन, सुन्दर, सलोना। [**लोनाई, लुनाई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]। (संज्ञा, पु०) [हि० लोन] नमकीन मिट्टी, अमलानो (प्रान्ती०), जिससे शोरा और नमक बनता है। दीवाल का एक विकार जिससे उसकी मिट्टी झड़ने लगती और वह निर्बल हो जाती है। लोने से दीवार से गिरी मिट्टी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक कल्पित चमारिन जो टोना-जादू में बड़ी प्रवीण मानी जाती है। (क्रि० स०, दे०) [सं० लवण] अन्न की फसल काटना, लुनना।

लोनाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लावण्य] सुन्दरता, मनोहरता, [लुनाई (दे०)]। "हिये सराहत सीय लोनाई"—[रामा०]।

लोनार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लोन] नमक बनाने या होने का स्थान।

लोनिका—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लोनी] लोनी, एक प्रकार का साग।

लोनया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लोन] नमक बनाने वाली एक जाति, नोनिया (ग्रा०)।

लोनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लोन] कुलफे जैसा एक साग, [लोनिया (दे०)], चने के पौधे की खट्टी नमकीन धूलि।

लोप—(संज्ञा, पु० सं०) अलक्ष्य, क्षय, नाश, अदर्शन, विच्छेद, अभाव, छिपना, दिखाई न देना, अंतर्धान होना। [**लोपन** (संज्ञा, पु०)]। [**लोपनीय, लुप्त लोपक, लोप्य, लोप्ता** (वि०)]। "लोपः शाकल्यस्य"—[सिद्धान्त कौ०]।

लोपन—(संज्ञा, पु०, सं०) लुप्त या तिरोहित करने, नष्ट करने, अदृश्य करने का कार्य। गोपन। [**लोपनीय** (वि०)]।

लोपना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० लोपन] छिपाना, लुकाना, लुप्त या गुप्त करना, मिटाना। (क्रि० अ०, दे०) मिटना, छिपना।

लोपमुद्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अगस्त्य ऋषि की स्त्री, अगस्त्य-मंडल के पास उदय होने वाला एक तारा। [लोपामुद्रा]

लोपांजन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक कल्पित सिद्धांजन, जिसका लगाने वाला अदृश्य हो जाता है।

लोपी—(संज्ञा, पु०) [सं० लोपिन्] लोप करने वाला, नाशकर्त्ता, लोपक।

लोबा—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० लोमड़ी] लोमड़ी। "लोबा पुनि पुनि दरस दिखावा"—[रामा०]। [लोवा]।

लोबान—(संज्ञा, पु०, अ०) एक पेड़ का सुगंधित गोंद जो जलाने और औषधि के काम में आता है।

लोबिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोभ्य] एक लता या बोड़ जिसमें लंबी फलियाँ होती हैं, चौरा। एक अन्न।

लोभ—(संज्ञा, पु०, सं०) लोचन, तृष्णा, लेने की इच्छा। [**लोभी, लुब्ध** (वि०)]। "किहि के लोभ बिडंबना, कीन्ह न यहि ससार"—[रामा०]।

लोभना, लोभाना*†—(क्रि० स०) [सं० लोभना हि० प्रत्य०] मोहित या मुग्ध करना, लुभाना। (क्रि० अ०, दे०) मोहित या मुग्ध होना।

लोभार*†—(वि०, दे०) [हि० लोभ] लोभ करने या लुभाने वाला, लालची, लोभी।

लोभित—(वि०) [हि० लोभ] मोहित, लुब्ध।

लोभी—(वि०) [सं० लोभिन्] लालची, लुब्ध, तृष्णाग्रस्त। "लोभी गुरू लालची चेला, दोनों खेलै दाँव"—कबीर०।

लोम—(संज्ञा, पु०, सं०) रोम, रोवाँ, बाल, देह पर छोटे पतले रोयें। (संज्ञा, पु०) [सं० लोमश] लोमड़ी। "किमस्य लौम्नां कपटेन कोटिभिर्विधिर्न लेखाभिरजीगणद्गुणान्"—[नैष०]।—**कर्ण**—(पु०) खरगोश खरहा।—**कूप**—(पु०) रोवों के छेद। "न लोमकूपौघमिषाज्जगत्कृता कृतश्च किं दूषण शून्य-बिन्दवः"—[नैष०]।—**पाद**—(पु०) राजा दशरथ के मित्र, अंग देशाधिपति, रोमपाद।—**हर्षण**—(वि०, यौ०, सं०) देखने से रोमांच करने वाला, भयंकर या भीषण, अति भयावना या रोमांचकारी। "बभूव युद्धं तद्लोम-हर्षणम्"—[स्फु०]।

लोमड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लोमश] स्यार जैसा एक जंगली पशु, [लोखरी (दे०)]।

लोमश—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि जो अमर माने जाते हैं (पुरा०)। (वि०) अधिक और बड़े-बड़े रोवाँ वाला, लोमड़ी।

लोय*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोक] लोग, जन। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लव, लाव] लपट, नेत्र, नयन, आँख। (अव्य, दे०) [हि० लौं] तक, पर्य्यंत। (क्रि० स०, ब०) देखो, देखकर। "भाग भरोसे क्यों रहै, हाथ पसारै लोय" —नीति०।

लोयन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोचन] नेत्र, आँख।

लोर†—(वि०, दे०) [सं० लोल] चंचल, लोल, चपल, इच्छुक, उत्सुक। "वायु-वेग तें सिंधु मैं जैसे लोर हिलोर"—वासु०।

लोरना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लोल] चपल या चंचल होना, हिलना, डोलना, ललकना, झुकना, लपकना, लोटना, लिपटना। [**लोराना** क्रि० स०, दे०)]।

लोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लोल] बच्चों के सुलाने का गीत और थपकी। "लोरी देके कभी उसको है सुलाती कर प्यार"—हाली०।

लोल—(वि०, सं०) चंचल, अस्थिर, क्षणिक, चपल, हिलता-डोलता या काँपता हुआ, चलायमान, परिवर्तनशील, कंपायमान, क्षणभंगुर। उत्सुक। "प्रभुहिं चितै पुनि चितै महि, राजत लोचन लोल", "कल-कपोल श्रुति कुंडल लोला"—[रामा०]। —**दिनेश**—(पु०) काशी का एक तीर्थ लोलार्क।

लोलक—(संज्ञा, पु०, सं०) कान का एक गहना, कान की बालियों का लटकन, कान की लव। "लोलक लोल बिराजत लोलक"—[स्फु०]। [**लोलकी** (स्त्री०)]।

लोलना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लोल+ना हि० प्रत्य०] हिलना, चलायमान होना, डोलना। [**लोलाना** (स० रूप, दे०)]।

लोला—(संज्ञा स्त्री०, सं०) जीभ, जबान, जिह्वा। लक्ष्मी, कमला, रमा। एक वर्णिक छंद जिसके प्रति चरण में म, स, य, भ, (गण) और अंत में दो गुरु वर्ण होते हैं (पिं०)।

लोलार्क—(संज्ञा, पु०, सं०) काशी का एक तीर्थ, लोल दिनेश।

लोलनी—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० लोल] चचल स्वभाव वाली। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) लक्ष्मी, बिजली।

लोलुप—(वि०, सं०) लोभी, लालची, चटोरा, परम उत्सुक। "लोभी-लोलुप कीरति चाहा"—[रामा०]।

लोवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लोमश] लोमड़ी, लोखरी (ग्रा०)। "लोवा पुनि पुनि दरस दिखावा" [रामा०]।

लोष्ट—(संज्ञा, पु०, अ०) पत्थर, ढेला, मिट्टी। "मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठ-लोष्ट समंचितौ"—मनु०।

लोहँड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लौहभांड़] लोहे का एक बड़ा पात्र या तसला, कड़ाहा [**लोहँड़ी** (स्त्री०, अल्प०)])

लोहंडा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० लौह-भांड़] लोहे का घड़ा, गगरा। [**लोहंडी** (अल्पा० दे० स्त्री०)]।

लोह—(संज्ञा, पु० सं०) लोहा। **मुहा०—लोह चबाना (खाना)**-युद्ध में खड्गाघात सहना। "लगन बिचारैं का छत्रीगन जे रन ठाढ़े लोह चबायें"—आल्हा।—**कार**-(पु०) लोहे का काम बनाने वाली एक विशेष जाति, [लोहार, लुहार (दे०)]।—**किट्ट**-(पु०) लोहे का मैल जो लोहे को आग की आँच देने से निकलता है।

लोहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लौह] अस्त्रादि बनाने की एक प्रसिद्ध काली धातु। "जिरह न उतरै जब रातौं दिन लोहा डारिस देह चबाय"—आल्हा। लोहे की वस्तु। लाल रंग का बैल आदि। **मुहा०—करना**-युद्ध में खड्ग या अस्त्र चलाना। **(किसी का)—मान जाना (मानना)**-बहादुर या शूरवीर जानना, हार या पराजय मानना, किसी का प्रभुत्व मानना।—**बजना (बजाना)** -तलवार चलना (चलाना), युद्ध होना (करना)। "तीन महीना लोहा बाजा, नदिया बितवाँ के मैदान"—आल्हा।—**(हे) के चने**-अति कठिन कार्य। हथियार, अस्त्र-शस्त्र।—**गहना, उठाना**-हथियार उठाना, लड़ना।—**लेना**-लड़ना, युद्ध करना।

लोहान—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लोहा] रुधिर-पूर्ण, रक्तमय, लोहू से लदफद या भरा हुआ। [**लोहू-लोहान** (यौ०)]।

लोहाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० लोहा+आना प्रत्य०] किसी वस्तु में लोहे का सा रंग या स्वाद आ जाना। [लुहान]

लोहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लौहकार] लोहे की वस्तुएँ बनाने वाली एक जाति। [**लोहारिन, लोहारिनी** (संज्ञा, स्त्री०)]। "गंधी और लोहार की, देखौ बैठि दुकान"—वृं०।

लोहारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० लौहकार+ई प्रत्य०) लोहार का कार्य या पेशा।

लोहित—(वि०, सं०) रक्तवर्ण लाल। (संज्ञा, पु०) [हि० लोहितक] मंगल ग्रह।

लोहित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मपुत्र नदी, लाल सागर।

लोहिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० लोहा+इया प्रत्य०] लोहे की वस्तुओं का व्यापार करने वाला, बनियों और मारवाड़ियों की एक जाति। लाल रंग का बैल।

लोही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० लोई] सने आटे के टुकड़े, जिनसे रोटियाँ आदि बनती हैं, लोई।

लोहु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लोहित] रक्त खून, लहू (प्रा०)।

लौं*†—(अव्य, दे०) [हि० लग] तुल्य, समान, सदृश, पर्य्यंत, तक। "तरवार वही तरवा के तरे लौं"—आल्हा।

लौंकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० लोकन] दिखाई देना या पड़ना, दृग्गोचर होना, लपकना, चमकना (बिजली), दृष्टि में आना।

लौंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लवंग] [लउँग (दे०)] एक झाड़ की कली जो तोड़ कर सुखा ली जाती है और मसाले और औषधि के काम आती है। लौंग जैसा नाक या कान का एक गहना (स्त्रियों का)।

लौंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) लड़का, बालक, छोकरा, छोहरा, छोरा। [(स्त्री०) लौंडी, लौंडिया]।

लौंड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) लिंग, शिश्न, [लॉड़, लंड (दे०)]।

लौंड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लौंड़ी] दासी, लड़की।

लौंद—(संज्ञा, पु०, दे०) अधिकमास, मलमास।

लौंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० लोंदा] गीली वस्तु का गोल पिंडा, लोंदा, ल्वोंदा (ग्रा०)।

लौ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० दावा] आग की ज्वाला या लपट, दीपक की शिखा या टेम। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लाग] चाह, लाग, लगन, चित्त वृत्ति, कामना, आशा।—**लीन**-(वि०) किसी के ध्यान में मग्न, लवलीन। "प्रभु मन में लौलीन मन चलत बाजि छबि पाव"—[रामा०]।

लौआ, लौवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लावुक] कद्दू, छोटा बच्चा।

लौकना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० लौ] दूर से दिखलाई पड़ना या देना, कौंधना, चमकना, लपकना। [**लौकाना** (स० रूप)]।

लौका—(संज्ञा, पु०, दे०) बिजली, इन्द्रधनुष, बड़ी लौकी, तूँबा। **लो०**—"चोर चोरी से जाई पै लौका टारी से न जाई।"

लौकिक—(वि०, सं०) लोक-संबंधी, व्यावहारिक, सांसारिक। "लौकिक प्रयोग निष्पत्तये"—(सा० व्या०)। (संज्ञा, पु०, सं०) ७ मात्राओं के छंद (पिं०)।—**स्वामी**-(पु०) ऐहिक प्रभु। [टेम्पोरललार्ड]

लौकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लौका] कद्दू, छोटा लौका, एक प्रसिद्ध साग।

लौजोरा†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० लौ +जोड़ना] धातु गलाने वाला शिल्पकार।

लौट—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० लौटना] लौटने की क्रिया, ढंग या भाव।

लौटना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० उलटना] पलटना, वापस आना, फिर आना, पीछे मुड़ना। (क्रि० स०, दे०) उलटना, पलटना [**लौटाना** स० रूप)], [**लोटवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

लौटपौट—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० लौटना +पौटना अनु०] उलट-पलट, हेर-फेर, दोनों ओर।

लौटफेर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० लौटना + फेरना] उलट-पलट, हेर-फेर, विशाल परिवर्त्तन, उलट-फेर।

लौटाना—(क्रि० स०) [हिं० लौटना] फेरना, वापस करना, पलटाना, ऊपर-तले करना।

लौन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० लवण] लोन, नमक। "मानहु लौन जरे पर देई"—[रामा०]।

लौना†—(संज्ञा, पु०) [हिं० लौनी] फ़सल की कटाई, कटनई, लवाई। (वि०, दे०) [सं० लावण्य, हिं० लोन] सुन्दर, मनोहर, लावण्ययुक्त। [**लौनी** (स्त्री०)]।

लौनी‡—(संज्ञा, स्त्री०,) [हिं० लौना] फ़सल की कटाई। कटनई, लवाई। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० नवनीत] मक्खन, नैनू, नवनीत।

लौह—(संज्ञा, पु०, सं०) लोहा।—**आवरण**-(पु०) ऐसा पर्दा जिसके पार कुछ न दिखायी पड़े। स्टेलिन काल में रूस के लिए प्रयुक्त क्योंकि अन्य राष्ट्र नहीं जान पाते थे कि वहाँ क्या हो रहा है। [आयरन कर्टेन]—**युग**-(पु०) वह युग जिसमे लोहे के अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग होने लगा था। [आयरन एज]—**रक्षक**-(पु०) रूमानिया की नात्सी संस्था। दृढ़ रक्षक। [आयरन गार्ड]—**स्वस्तिक**-(पु०) जमनी का एक पदक। [आयरन क्रास]

लौहित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मपुत्रा नदी, लाल सागर।

ल्याना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० लाना] लावना, लाना, [**ल्यावना** (ब्र)]।

ल्यारी—(संज्ञा, पु०, दे०) भेड़िया।

ल्यावना*—(क्रि० स० दे०) [हिं० लाना] लाना, लेआना, लावना।

ल्वारि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० लूह] लूह, लू, लपट, लुआरि, लुवार।

व

व—संस्कृत और हिन्दी-भाषा की वर्णमाला के अंतस्थों में का चौथा अर्ध-व्यंजन वर्ण, जो उ का विकार है, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है। "उपूपध्मानीयानामोष्ठौ"। (संज्ञा, पु०, सं०) कल्याण, वदन, वरुण, वाण, वायु, वस्त्र, बाहु, सागर। (अव्य०, फ़ा०) और, जैसे—राजा व रानी।

वंक—(वि०, सं०) वक्र, कुटिल, टेढ़ा, [बंक (दे०)]। [**वंकता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

वंकट—(वि०, दे०) [सं० वंक] बाँका, वक्र, कुटिल, टेढ़ा, विकट, दुर्गम, कठिन। [**वंकटता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

वंकटेश—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु भगवान की, एक मूर्त्ति (दक्षिण भारत)।

वंकनार, वंकनाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० वंक+नाड़ी] सुनार की टेढ़ी फुँकनी।

वंकनारी, वंकनाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० वंक+नाड़ी] सुषुम्ना नाम की एक नाड़ी (हठ योग)।

वंकिम—(वि०, सं०) वक्र, टेढ़ा, झुका हुआ, कुटिल।

वंक्षु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आक्सस नदी जो हिन्दूकुश पहाड़ से निकल कर अरल सागर में गिरती है (भूगो०)।

वंग—(संज्ञा, पु०, सं०) बंगाल प्रदेश, राँगा धातु, राँगे की भस्म। **लो०**—घोड़े को तङ्ग, मनुष्य को वंग"।

वंगज—(संज्ञा, पु०, सं०) पीतल। सिन्दूर। (वि०, सं०) बंगाल प्रदेश में उत्पन्न।

वंगेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वंग भस्म, (एक रस)। वंग देश का राजा, वंगेश, वंगाधिपति, वंग-नाथ, वंग-नायक।

वंचक—(वि०, सं०) छली, धोखेबाज़, धूर्त्त, ठग, खल। [**वंचकता (संज्ञा, स्त्री०)**]। "वंचक भक्त कहाय राम के"—तुल०।

वंचन—(संज्ञा, पु०, सं०) धूर्त्तता, ठगी, धोखाधड़ी।—**चंचुता**-(स्त्री०) ठगी-सम्बन्धी दक्षता। —**प्रवण**-(वि०) ठगने की ओर प्रवृत्ति रखने वाला।

वंचना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धोखा, छल, [बंचना (दे०)]। [वचनीय (वि०)]। "**न वंचनीया** प्रभवोऽनुजीवभिः"—**किरा०**। (क्रि० स०, दे०) [अं० वंचन] धोखा देना, ठगना, छल करना। (क्रि० स०, दे०) [सं० वाचन] बाँचना, पढ़ना।

वंचनीय—(वि०, सं०) जिसके साथ धूर्त्तता का व्यवहार किया जा सके।

वंचयिता—(वि०, सं०) धूर्त्त, वंचक।

वंचित—(वि०, सं०) जो छला या ठगा गया हो। बिलग, विहीन, रहित। "ते जन वंचित किये विधाता"—[रामा०]।

वंजुल—(संज्ञा, पु०, सं०) अशोक। बेत। एक चिड़िया। एक नदी।—**द्रुम**-(पु०) अशोक वृक्ष।—**प्रिय**-(पु०) बेत।

वंट—(संज्ञा, पु०, दे०) हिस्सा, बँट।

वंटक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० वंट+अक प्रत्य०] हिस्सा, भाग।

वंठ—(संज्ञा, पु०, दे०) मझोला, बौना, विवाहित व्यक्ति। [विकलांग (वि०)]।

वंडर—(संज्ञा, पु०, दे०) खोजा, कंजूस।

वंडा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कुलटा, स्त्री।

वंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्तुति, प्रणाम, पूजा। [**वंदनीय, वंदित** (वि०)]। "गाइये गनपति जग-वंदन"—तुल०।—**माला**-(स्त्री०) वंदनवार। "कदलि-खंभयुत कलश जहाँ शोभित हैं वंदनमाला"—कुज० वि०।

वंदना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्तुति, प्रणाम। वंदन। (क्रि० स०, दे०) बंदन करना, [बंदना (दे०)]। "प्रथम वंदना कर गणपति की"—[स्फु०]।

वंदनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वंदनीय] प्रणाम करने योग्य, पूजनीय, पूज्य। "वह रेणुका तिय धन्य धरनी में भई जगवंदनी"—[राम चं०]।

वंदनीय—(वि०, सं०) पूजनीय, स्तुत्य, वंदना या आदर करने योग्य, [बंदनीय (दे०)]। "वंदनीय जेहि जग जस पावा"—[रामा०]।

वंदनीयतम—(वि०, सं०) सबसे अधिक पूज्य, वंदना योग्य, आदरणीया। "वंदनीयतम पद पर पावे"—हरिऔध०।

वंदित—(वि०, सं०) कृत-स्तवन, कृतप्रणाम, पूज्य, आदरणीय। "जग-वंदित रघुकुल भयो प्रगटे जब श्रीराम"—वासु०। [**वंदिता** (स्त्री०)] सुर-वंदिता त्रैलोक्य पावन सुरसरी"—तुल०।

वंदी—(संज्ञा, पु०, सं०) एक जाति जो राजाओं का यशोगान करती थी (प्राचीन) भाट, बंदी, कैदी। "बोले बंदी वचन वर"—[रामा०]। "ववंदे वरदे वंदी विन यशो विनीतवत्"—वाल्मी०।—**गृह**(पु०) कैदखाना, जेलखाना, कारागृह।—**जन**-(पु०) भाट, वंदी। "तब वंदी जन जनक बुलाये"—[रामा०]।

वंद्य—(वि०, सं०) स्तुत्य, पूजनीय, पूज्य, वंदनीय। "वेद-विबुध-बुध-वृंद-वंद्य वृंदारक वंदित"—रसाल।

वंश—(संज्ञा, पु०, सं०) बाँस, रीढ़ की हड्डी, बाँसा या नाक के ऊपर की हड्डी, बाँसुरी, कुल, कुटुम्ब, बाहु आदि की लम्बी हड्डी, [बंश (दे०)]। "वंश-सुभाव उतर तेहिं दीन्हा"—[रामा०] ।—**कपूर**-(पु०) [सं० वंश कपूर] वंशलोचन (औष०) ।—**ज**-(पु०) बाँस का चावल, वंश-लोचन, संतति, संतान ।—**तिलक**-(पु०) कुल का शिरोमणि, एक छंद ।—**धर**-(पु०) कुल में उत्पन्न, संतति, कुल की प्रतिष्ठा रखने वाला, संतान, वंशज ।—**लोचन**-(पु०) वंशलोचन । "सितोपला षोडशिक स्यादष्टौ स्याद्वंश लोचनः"—[भाव प्र०] ।—**लोचना, —रोचना**-(स्त्री०) वंश-लोचन ।—**शर्करा**-(स्त्री०) वंश लोचन ।—**स्थ**-(पु०) ज, त, ज, र (गण) से युक्त १२ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०) । "जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ" ।

वंशावतंश—(वि०, यौ०, सं०) वंश-विभूषण, वंश-श्रेष्ठ, कुलोत्तम ।

वंशावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी वंश के पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रम-बद्ध सूची ।

वंशी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बाँसुरी, मुरली, मुह से फूँक कर बजाने का बाँस का बाजा, [बंसी (दे०)] । "बाजी कहैं बाजी तब बाजी कहे कहाँ बाजी, बाजी कहैं बाजी बंसी साँवरे सुघर की"—[स्फु०] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बंसी, मछली मारने का काँटा ।—**धर**-(पु०) श्री कृष्ण । "वंशीधर हू को बेधि कीन्हें इन चेरे है"—रसाल ।—**वट**-(पु०) वृंदावन का एक बरगद का पेड़ जिसके तले श्रीकृष्ण जी बहुधा बाँसुरी बजाते थे ।

वंशीय—(वि०, सं०) कुटुम्ब में उत्पन्न, कुटुम्बी, वंश-सम्बन्धी ।

वंश्य—(वि०, सं०) श्रेष्ठ-कुलोत्पन्न, कुलीन, कुलवान, सुवंश में उत्पन्न ।

वक—(संज्ञा, पु०, सं०) [बक (दे०)] बगला पक्षी, अगस्त्य का वृक्ष और फूल, एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था (भाग०), एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था (महाभा०) ।—**ध्यान**-(पु०) बगले-सा ध्यान, झूठा ध्यान, छल-पूर्ण-ध्यान । "इहाँ बैठि वक-ध्यान लगावा"—[रामा०] ।—**यंत्र**-(पु०) अर्क उतारने का यंत्र-विशेष ।—**वृत्ति**-(स्त्री०) बगले की-सी कार्रवाई । धोखा देकर कार्य सिद्धि की घात से रहने की वृत्ति । (वि०) धूर्त, छली । "हैतुकान् वकवृत्तीन् च वचनमात्रेणार्चयेत्"—मनु० ।

वकालत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बात या विवाद । वकील का काम । दौत्य । मुकदमे में किसी पक्ष के समर्थनार्थ बहस । दूत-कर्म ।—**नामा**-(पु०) [अ० वकालत+नामा] वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी ओर के मुकदमे की पैरवी या बहस के लिये रख सकता है ।

वकासुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण जी ने मारा था (भाग०) ।

वकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूतना नाम की राक्षसी । "मारन को आई वकी बानाक बनाई वर कान्ह की कृपा सो पाई सुगति सिधाई है"—मन्ना० ।

वकील—(संज्ञा, पु०, अ०) दूसरे के पक्ष का समर्थक (मंडन करने वाला) राजदूत, दूत, प्रतिनिधि, एलची, वकालत परीक्षा मे उत्तीर्ण व्यक्ति जो अदालतों में अपने मुवक्किलों के मुकदमों में बहस करे ।

वकुल—(संज्ञा, पु०, सं०) मौलसिरी का पेड़ । "वकुल पुष्प-रसासव पेशलध्वनि-रगान्निरगान्मधुपावली"— माघ० । "सोयं सुगन्धिमकुलो वकुलो विभाति "—लो० रा० ।—" प्रिय का वकुल-समाज"—मैथिली० ।

वक़ूअ—(संज्ञा, पु०, अ०) घटित होने का भाव । **मुहा०—में आना**-प्रगट होना, घटना के रूप में उपस्थित होना ।

वक़ूआ—(संज्ञा, पु०, अ०) घटना, वारदात ।

वक़ूफ़—(संज्ञा, पु०, अ०) समझ, ज्ञान ।

वक़्त—(संज्ञा, पु०, अ०) काल, समय, मौका, अवसर, अवकाश, [बखत (दे०)] ।—**का पाबंद**-नियत समय पर कार्य करने वाला ।—**की खूबी**-समय की महिमा ।—**की चीज़**-समय, ऋतु आदि के अनुकूल वस्तु । **मुहा०—देना**-किसी कार्य में समय लगाना स्वीकार करना ।—**बेवक्त काम आना**-समय कुसमय, आवश्यकता पड़ने पर सहायक होना ।

वक्तव्य—(वि०, सं०) वाच्य, कहने-योग्य, कथनीय । (संज्ञा, पु०, सं०) वचन, कथन, किसी विषय में कहने की बात ।

वक्ता—(वि०) [सं० वक्तृ] बोलने या कहने वाला, वाग्मी, भाषण में पटु या कुशल। (संज्ञा, पु०, सं०) कथा कहने वाला व्यक्ति, व्यास।

वक्तृता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्याख्यान, भाषण, कथन, वाक्‌पटुता, कुशलता। "वक्तृता में धरि देहु कँपाय"—प्र० ना०।

वक्तृत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) वक्तृता, वाग्मिता, व्याख्यान, कथन, भाषण।

वक्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०) मुख, मुँह। एक छंद (पिं०)।

वक्फ़—(संज्ञा, पु०, अ०) धर्म्मार्थ दान किया गया धन या सम्पत्ति। किसी को दी हुई कोई वस्तु।

वक्र—(वि०, सं०) [बाँका, वक्र (दे०)] टेढ़ा, कुटिल, तिरछा, झुका हुआ। "वक्र चन्द्रहि ग्रसै न राहू"—तुल०। [**वक्रता** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**गामी**–(वि०) [सं० वक्रगामिन्] टेढ़ी चाल चलने वाला, दुष्ट, शठ, कुटिल।—**ग्रीव**,—**ग्रीवा**–(पु०) ऊँट, टेढ़ी गरदन वाला।—**तुंड**–(पु०) गणेश जी।—**दृष्टि**–(स्त्री०) कुटिल या टेढ़ी निगाह, कटाक्ष, रोष दृष्टि। (वि०) जिसकी दृष्टि अनुकूल न हो। टेढ़ी निगाह वाला।

वक्री—(वि० पु०, सं०) जन्म से टेढे अंगों वाला। (संज्ञा, पु०) बुद्धदेव। वह ग्रह जो अपने मार्ग से हट कर वक्रगति से जाता हो। (ज्यो०)।

वक्रोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अर्था-लंकार जिसमें काकु या श्लेष से वाक्य का भिन्न अर्थ होता है (काव्य०)। टेढ़ी बात, बढ़िया उक्ति, काकूक्ति, [बक्रोकति (दे०)]। "वक्रोक्तिः काव्य—जीवितम्।"

वक्ष—(संज्ञा, पु०) [सं० वक्षस्] उर-स्थल, छाती।—**स्थल**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हृदय, छाती, उर। "वक्षःस्थले कौस्तुभं"—[स्फु०]।

वक्षु—(संज्ञा, पु०) [सं० वंक्षु] वंक्षु या आक्सस नदी जो अरल सागर में गिरती है (भूगो०)।

वक्षोज—(संज्ञा, पु०, सं०) उरोज, पयोधर, स्तन, चूँची, छाती।

वक्ष्यमाण—(वि०, सं०) वक्तव्य जो कहा जा रहा हो।

वगलामुखी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक महा विद्या या देवी रूप।

वगैरह—(अव्य०, अ०) इत्यादि आदि, प्रभृति।

वचं—(संज्ञा, पु०) [सं० वचन] वाक्य।

वचन—(संज्ञा, पु०, सं०) मानव मुख से निकला सार्थक शब्द या शब्द-समूह, बात, वाक्य, वाणी। "मम इदम् वचनं श्रृणु पुस्तकी"—[स्फु०]। उक्ति, कथन, एकत्व या बहुत्व का सूचक शब्द के रूप का विधान (व्या०) हिन्दी में वचन के दो भेद हैं (१) एकवचन, (२) बहुवचन। द्विवचन (सं०)।—**कारी**–(वि०) आज्ञानुवर्त्ती, आज्ञा-कारी।—**गुप्ति**–(स्त्री०) मौन व्रत धारण।—**गौरव**–(पु०) आज्ञा अथवा अनुरोध का सत्कार।**ग्राही**–(वि०) आज्ञानुसारी।—**पटु**–(वि०) भाषण-प्रवीण।—**बद्ध**–(वि०) प्रति श्रुत, प्रतिज्ञा के बन्धन में पड़ा हुआ।—**रचना**–(स्त्री०) बोलने की कला। बातों को व्यवस्थित रूप से कहने की कुशलता।—**लक्षिता**–(स्त्री०) वह परकीया नायिका जिसकी बातों से उसका प्रेमी (उपपति) के प्रति प्रेम प्रगट हो (काव्य०)।—**विदग्धा**–(स्त्री०) वह परकीया जो बातों की चतुराई से नायक की प्रीति प्राप्त कर कार्य सिद्ध कर ले। "वचनन की रचनानि तें जो साधै निज काज। वचन विदग्धा कहत हैं, कवि गन के सर ताज"—पद्मा०।

वचा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वच (औषधि)। "वचा-भयासुंठिशतावरीसमा"—[भाव—प्र०]।

वच्छ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वक्षस्] उर, हृदय, छाती। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वत्स] गाय का बछवा। प्यारा पुत्र। "निरखि वच्छ जनु धेनु लवाई"—[रामा०]। "बहुरि बच्छ कहि लाल कहि"—[रामा०]।

वच्छनाग—(संज्ञा, पु०, दे०) वत्सनाभ (विष)।

वजन—(संज्ञा, पु०, अ०) बोझा, भार, मान, तौल, गौरव, मर्यादा। "वजन से कम नहीं तुलता कभी बाजार में माल"—हाली०।—**दार**–(वि०) भारी। मूल्यवान। महत्वपूर्ण।

वजनी—(वि०) [अ० वजन+ई फ़ा० प्रत्य०] भारी, बोझिल।

वजह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सबब, कारण, हेतु।

वज़ा—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० वजअ] रचना, सज-धज, बनावट, दशा, प्रणाली, मुजरा, रीति, मिनहा। [वज़ा-कता (यौ०)]।—**दार**–(वि०) [अ० वजा+दार फ़ा० प्रत्य०] तरहदार, सुडौल, सुन्दर, अच्छी बनावट वाला, सुरुचित।

वज़ारत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मंत्री का पद या कार्य ।

वज़ीफा—(संज्ञा, पु०, अ०) छात्र-वृत्ति (सं०) मासिक या वार्षिक आर्थिक सहायता या वृत्ति जो विद्यार्थियों, विद्वानों आदि को दी जाती है । जप या पाठ (मुसल०) ।

वज़ीर—(संज्ञा, पु०, अ०) अमात्य, मंत्री, दीवान । शतरंज का एक मुहरा, फरजी ।

वज़ीरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) वजीर या मंत्री का काम या पद । घोड़ों की एक जाति ।

वज़ू—(संज्ञा, पु०) [अ० वुज़ू] नमाज पढ़ने से पहले शौचार्थ हाथ मुँह धोना (मुसल०) ।

वजूद—(संज्ञा, पु०, अ०) अस्तित्व, शरीर ।

वज्र—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र का एक भाला जैसा शस्त्र (पुरा०), कुलिश, पर्व, पवि, बिजली, हीरा, बरछा, भाला, फौलाद । (वि०, सं०) बहुत कड़ा या दृढ़, घोर, भीषण, दारुण, कठिन, कठोर । "वज्र को अखर्व गर्व गंज्यौ जेहि पर्वतारि"—[रामचं०] ।**—क्षार**-(पु०) एक औषधि, बज्र-खार (दे०)] ।**—गर्जन**-(पु०) वज्रपात होने के समय जैसा शब्द होता है, वैसा नाद करने वाला गर्जन । "आतंक-अंक से काँप रहे हैं धनी, वज्र गर्जन से बादल"—निराला ।**—तुंड**-(पु०) मच्छड़, गरुड़, गणेश, थूहर ।**—दंत**-(पु०) सूकर, सुअर, चूहा ।**—दंती**-(स्त्री०) एक पौधा विशेष ।**—धर**-(पु०) इन्द्र, देवराज ।**—नाभ**-एक दैत्य जो सुमेरु के पास वज्रपुर में रहता था (पुरा०) ।**—पात**-(पु०) बिजली गिरना, कठिन आपत्ति आना ।**—पाणि**-(पु०) इन्द्र ।**—लेप**-(पु०) एक प्रकार के मसाले का लेप जिसके लगाने से मूर्ति, दीवाल आदि दृढ़ हो जाती हैं ।**—विनिन्दक**-(वि०, सं०) वज्र को तुच्छ बना देने वाला । वज्र के महत्व को घटाने वाला । "है वज्र-विनिंदक भुज बंधन"—बच्चन ।**—सार**-(पु०) हीरा ।**—हस्त**-(पु०) इन्द्र ।

वज्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) हीरा ।

वज्रांग—(पु०) दुर्योधन, महावीर, सुदृढ़ शरीर वाले । "वज्रांग पांडव भीम का मन हो चुका परिशान्त था"—दिन० ।

वज्रांगी—(संज्ञा, पु०, या०, सं०) हनुमान जी, [बजरंगी (दे०)] ।

वज्राघात—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वज्रपात, वज्र से मारना, कठिन चोट ।

वज्रापात—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वज्र से मारना, वज्राघात ।

वज्रावर्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०) एक मेघ ।

वज्रासन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हठ योग का एक आसन ।

वज्रायुध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्र ।

वज्री—(संज्ञा, पु०) [सं० वज्रिन्] इन्द्र ।

वज्रोली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हठ योग की एक मुद्रा ।

वट—(संज्ञा, पु०, सं०) बरगद का पेड़, [बट (दे०)] । "तिन तरु-बरनि मध्य वट सोहा"—[रामा०] ।**—सावित्री**-(स्त्री०) वट-पूजन के साथ एक व्रत जो स्त्रियाँ किया करती हैं, [बरगदाही (दे०)] ।

वटक—(संज्ञा, पु०, सं०) गोला, बट्टा, बड़ी गोली या बटिका, बड़ा, पकौड़ा ।

वटर—(संज्ञा, पु०, सं०) मुर्ग, मुर्गा, चोर, पहाड़, आसन, चटाई ।

वटिका, वटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोली, टिकिया, [बटी, बटिया (दे०)] ।

वटु—(संज्ञा, पु०, सं०) माणवक, ब्रह्मचारी, विद्यार्थी, ब्राह्मण-कुमार, बालक । "वेद पढ़ैं जनु वटु-समुदाई"—[रामा०] ।

वटुक—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मचारी, बालक, एक भैरव ।

वड, वर—(संज्ञा, पु०, दे०) बरगद का पेड़ ।

वडवानल, वाडवानल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समुद्र की अग्नि, बड़वाग्नि, बड़वागी, वाड़व, [बड़-वानल (दे०)] । "प्रभु-प्रताप बड़वानल भारी"—[रामा०] ।

वडिश—(संज्ञा, पु०, सं०) मछली पकड़ने का लोहे का काँटा । "मीन वडिश जाने नहीं, लोभ आँधरी कौन"—वासु० । "सर्वेन्द्रियार्थ वडिशांध-झखोपमस्य"—शंक० ।

वणिक्—(संज्ञा, पु०, सं०) वैश्य, बनियाँ, बानी, व्यापारी, [बनिक (दे०)] । "साकवणिक मणि-गण-गुण जैसे"—[रामा०] ।

वतंस—(संज्ञा, पु०, सं०) कर-विभूषण, शिरो-भूषण, शिरोमणि, श्रेष्ठ पुरुष, अवतंस ।

वतन—(संज्ञा, पु०, अ०) घर, देश, जन्म-भूमि । "मुहब्बत नहीं जिसको अपने वतन की"—[स्फु०] ।

वत्—(संज्ञा, पु०, सं०) समान, तुल्य।

वत्स—(संज्ञा, पु०, सं०) गाय का बछवा, [**बच्छ** (दे०)] बेटा, पुत्र । **वत्सासुर**—(यौ०) एक दैत्य।—**नाभ**–(पु०) एक पौधे की विषैली जड़, बच्छनाग, बछनाग (ग्रा०), मीठा विष।

वत्सर—(संज्ञा, पु०, सं०) साल, वर्ष। "वत्सराः वासरीयान्वित वत्सरीयान्ति वासराः।"

वत्सरीय—(वि०, सं०) वार्षिक, वर्ष-संबंधी।

वत्सल—(वि०, सं०) प्रेमी, दयालु, बच्चे के प्रेम से पूर्ण, बच्चे या छोटे के प्रति दयालु या स्नेहवान। माता-पिता का संतति के प्रति प्रेम-सूचक काव्य में १० वाँ रस (मत भेद)। [**वत्सला** (स्त्री०)], [**वत्सलता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

वत्सासुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक दैत्य।

वदंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कथा। [**किम्बदंती** (यौ०)]।

वदतो, व्याघात—(संज्ञा, पु०, सं०) कही हुई बात के विरुद्ध बात कहने का एक तर्क-दोष (न्याय०)।

वदन—(संज्ञा, पु०, सं०) मुँह, मुख, अग्रिम भाग, कथन, वचन। "दश बदन-भुजानाम् कुंठिता यत्र शक्तिः"—[ह० ना०] ।—'गणनायक करिवर वदन'—[रामा०]।

वदनांबुज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मुख कमल। "था वदनांबुज विरुत्र वृत्ति थी संयम शीला"—हरिऔध।

वदनी—(वि०, सं०) वदन वाली। मुख वाली। "विधु वदनी बैठी थी सन्मुख"—पंत।

वदरीनाथ—(संज्ञा, पु०, सं०) एक तीर्थ, एक धाम, [बदरिकाश्रम, बद्रीनाथ (दे०)]।

वदान्य—(वि०, सं०) उदार, बड़ा दानी, अति-दाता, मधुरभाषी। [**वदान्या** (स्त्री०)]। "त्रिभुवन-जननी विश्वमान्या वदान्या"—[स्फु०]। "गतो वदान्यान्तरमित्यपं मे"—[रघु०]।

वदी, वदि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अवदिन] कृष्ण-पक्ष, [बदी (दे०)]।

वदुसाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विदूषण] दोष देना, कलंक लगाना, भला-बुरा कहना, वदुसावना।

वध—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राणहरण, हत्या या घात, प्राण हिंसा। "ताके वध कछु पाप न होई"—[रामा०] । [**वध्य** (वि०)]—**जीवी**–(पु०) व्याधा, कसाई।—**भूमि**–(स्त्री०) फाँसी-घर, कसाई-खाना।

वधक—(संज्ञा, पु०, सं०) हिंसक, व्याध, घातक, [बधिक (दे०)] मृत्यु, मौत। "वधक धर्म्म जानै नहीं, स्वारथ-रत मति-हीन"—वासु०।

वधत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) हथियार।

वधन—(संज्ञा, पु०, सं०) [बधन (दे०)], हत्या, हिंसा, घात। [**वधनीय, वध्य** (वि०)]।

वधना, बधना—(क्रि० स०, दे०) हिंसा या घात करना, मार डालना, हत्या करना।

वधू—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुलहिन, पत्नी, नयी व्याही स्त्री, भार्या, नव विवाहिता स्त्री, पतोहू, पुत्र-वधू। दीपक हिये छपाय नवल वधू घर लै चली—रहीम। "दुकूल वासाः स वधू समीपं"—[रघु०]।

वधूटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नवीन विवाहिता स्त्री, दुलहिन, पतोहू, पत्नी, भार्या, [बधूटी (दे०)]। "मंगल गावहिं देव-वधूटी", "भई मुदित सब ग्राम वधूटी'—[रामा०]।

वधूत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अवधूत] योगी, संन्यासी, यती, साधु। [**वधूतिन** (स्त्री०)]। "शंकर वधूत होय गोकुल में आये हैं"—मन्ना०।

वध्य—(वि०, सं०) वध या हत्या करने या मार डालने योग्य। "स मे वध्यः भविष्यति"—वाल्मी०।

वन—(संज्ञा, पु०, सं०) जंगल, बाग, [बन (दे०)], वाटिका। जल, पानी। भवन। "काननं भुवनं वनं"—इति अमरः। "जान कहेउ वन केहि अपराधा"—[रामा०]। शंकराचार्य के अनुयायी संन्यासियों की उपाधि।—**चर, वनेचर**–(वि०) वन में रहने वाला, वनवासी, वन में चलने वाला, [बनैला (दे०)]। "युधिष्ठिरं द्वैत वने वनेचरः"—[किरा०]।—**ज**–(पु०) कमल, वन (जंगल, पानी) में उत्पन्न। "जै रघुवंस, वनज-वनभानू"—[रामा०]।—**देव**–(पु०) वन या जंगल का देवता। [**वनदेवी** (स्त्री०)]। "वन-देवी, वनदेव उदारा"—[रामा०]।—**पथ**–(पु०) जंगल का मार्ग। "दूर जैसे सघन वन-पथ अंत का आलोक"—प्रसाद।—**पाँशुली**–(पु०) व्याधा, बहेलिया।—**प्रिय**–(पु०) कोयल, कोकिला, एक हिरन। "वन-प्रिय ध्वनि तेरी, क्यों न भाती

मुझे है"—कुंज वि० ।—माला-(स्त्री०) वन फूलों की माला, श्रीराम या कृष्ण जी की माला। "भूषन वन-माला नयन विशाला"—[रामा०]। —माला-(पु०) श्रीकृष्ण जी। "आली वनमाली आय बहियाँ गहतु है"—पद्मा०।—राज-(पु०) सिंह।—रुह-(संज्ञा, पु०, सं०) कमल, जलज। —लक्ष्मी-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वनश्री, वन की शोभा या छटा।—वास-(पु०) जंगल में रहना, गाँव-घर छोड़ वन में रहने की व्यवस्था या विधान। "तुम कहँ तौ न दीन्ह वनवासू" —[रामा०]।—वासी-(वि०) [सं० वनवासिन्] ग्रामधाम छोड़ वन में रहने वाला। "चौदह-बरस राम वन-वासी"—[रामा०]। [वनवासिनी (स्त्री०)]।—स्थल-(पु०) वनभूमि। [वनस्थली (स्त्री०)]।—हास-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) काँस।

वनस्पति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वृक्षमात्र, पेड़-पौधे, जड़ी-बूटी।—शास्त्र-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वनस्पति-विज्ञान, पेड़ों, पौधों, लाताओं आदि के अंग, रूप, रंग, गुण भेदादि की विवेचना की विद्या।

वनिता—(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्री, औरत, नारी, प्रिया, [बनिता (दे०)]। "वनिता बनी साँवरे गोरे के बीच बिलोकहु री सखी मोहि सी ह्वै"—[कविता०]। ६ वर्णों की एक वृत्ति, तिलका (पिं०) छिल्ला (ग्रा०)।

वनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा वन, वाटिका।

वनेला, वनैला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० वन +एला, ऐला प्रत्य०] वनवासी, वनेचर, वन्य, [बनैला (दे०)]।

वनेचर—(संज्ञा, पु०, सं०) वनचर, [बंचर (दे०)]। "युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचर"—[किरा०]।

वनोत्सर्ग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सर्वसाधारण के लिये-कुवाँ, मंदिर आदि के द्वारा जल-दान।

वनौषध, वनौषधि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) जंगली दवाइयाँ, जंगली जड़ी-बूटियाँ।

वन्य—(वि०, सं०) वनजात, वन में उत्पन्न होने वाला, वनोद्भव, जगली, बनैला। "वन्यान् विनेष्यन्निव दुष्टसत्वान्"—[रघु०]।

वपन—(संज्ञा, पु०, सं०) बीज बोने का कार्य। मुंडन [वपनीय (वि०, सं०)]।

वपनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नापित-शाला, नाइयों का अड्डा।

वपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मेद, चरबी।

वपु—(संज्ञा, पु०) [सं० वपुस्] देह, शरीर, गात्र। "वपुःप्रकर्षादजयद् गुरुं रघुः"—[रघु०]। "हो गये क्या उर में वपुमान"—महादेवी।

वपुरा, बापुरा—(वि०, दे०) बेचारा, तुच्छ, नीच, थोड़ा। "इमको वपुरा सुनिये मुनिराई" —[रामच०]। "कहा सुदामा बापुरो"—रही०।

वपुष्टमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काशीराज की कन्या और राजा जनमेजय की पत्नी।

वप्ता—(वि०, सं०) बीज बोने वाला, नाई।

वप्र—(वि०, पु०, सं०) नगरकोट, प्राचीर, दीवाल, चहार-दीवारी। "सवेला वप्र वलयां परिखीकृत सागरान्"—[रघु०]।

वफा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रतिज्ञा पूरी करना, बात निबाहना, पूर्णता, निर्वाह, सुशीलता, मुरौवत।—दार-(वि०) [अ० वफा+दार फा०] बात या कर्तव्य का पालने वाला। "अच्छी तकदीर से माशूक वफादार मिला"—[स्फु०]। [वफा-दारी (संज्ञा, स्त्री०)]।

वफात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मौत, मृत्यु, मरण।

ववा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) संक्रामक या फैलने वाला मारक रोग, मरी। जैसे—प्लेग, हैजा।

वबाल—(संज्ञा, पु०, अ०) भार, बोझा, झंझट, झमेला, आपत्ति, कठिनाई, जंजाल।

वभ्रु—(संज्ञा, पु०, सं०) यदुवंशी विशेष।

वभ्रुवाहन—(संज्ञा, पु०, सं०) अर्जुन का पुत्र।

वमन—(संज्ञा, पु०, सं०) कै या उलटी, कै किया हुआ पदार्थ।

वमनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जलौका, जोंक।

वमि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वमन रोग।

वयं, वयम्*—(सर्व०, सं०) हम।

वयःक्रम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अवस्था, उम्र।

वयःसंधि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) लड़कपन या बाल्यावस्था और जवानी या युवावस्था के बीच की अवस्था।

वय—(संज्ञा, स्त्री०,) [सं० वयस्] उम्र, अवस्था, [वैस, बयस (दे०)]।

वयस्क—(वि०, सं०) अवस्था, वाला। [यौ० में] पूरी अवस्था को प्राप्त, सयाना, बालिग। [**वयस्का** (स्त्री०)], । [**समवयस्क** (यौ०)]।

वयस्थ—(वि०, सं०) सयाना, बालिग।

वयस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) समान अवस्थावाला, सखा, मित्र, संगी, साथी, समवयस्क।

वयस्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सखी, सहेली। "कतिपय दिवसैर्वयस्यया वास्वयमभिलष्य वरिष्यते वरीयान्"—[नैष०]।

वयोवृद्ध—(वि०, यौ०, सं०) बड़ी अवस्था का, वृद्ध, बड़ा बूढा, आयु में बड़ा। [**वयोवृद्धा** (संज्ञा, स्त्री०)]।

वरं—(अव्य०, सं०) उत्तम, अच्छा, श्रेष्ठ।

वरंच—(अव्य, सं०) बल्कि, परन्तु, लेकिन, ऐसा नहीं ऐसा।

वर—(संज्ञा, पु०, सं०) वह मनोरथ जो किसी देवता या बड़े से माँगा जाय। "वर दूसर असमंजस माँगा—[रामा०]। किसी बड़े या देवतादि से प्राप्त सिद्धि या अभीष्ट फल, पति स्वामी, दूल्हा, [बर (दे०)]।—**यात्रा**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) बरात, बारात, वर का बाजे-गाजे के साथ कन्या के यहाँ प्रस्थान। "तब वर यात्रा को चले शंकर सहित समाज। (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम। जैसे—मुनिवर।

वरक—(संज्ञा, पु०, अ०) पत्र, पुस्तकादि का पन्ना, पत्रा, पतला पत्तर (सोना-चाँदी)।

वरज़िस—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) व्यायाम, कसरत। "दवा कोई वरजिस से बेहतर नहीं"।

वरटा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हंसिनी, हंसी। "नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी"—[नैष०]।

वरण—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्कार, अर्चना, किसी योग्य पुरुष का किसी कार्य्य के करने के हेतु चुनाव या नियुक्ति। स्वीकार या पूजन, पूजा, यज्ञादि शुभ कार्य्यों में होतादि के लिए विद्वानों को नियुक्त कर उन्हें दक्षिणा आदि द्वारा उचित आदर-प्रदान। वरण किये होतादि व्यक्तियों को दिया धन-दानादि, कन्या की वर द्वारा स्वीकृति।

वरणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक नदी, [बरना (दे०)]।

वरणी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० वरण] वरण किया हुआ, निमंत्रित, नियुक्त, नियोजित।

वरद—(वि०, सं०) वरदान देने वाला देवतादि [**वरदा** (स्त्री०)]।

वरदराज, वरदराट्—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव। विष्णु। ब्रह्मा। सिद्धान्त-कौमुदी के रचयिता एक प्रसिद्ध वैयाकरणी विद्वान् वरदराज।

वरदाता—(वि०, यौ०) [सं० वरदातृ] वरदान देने वाला।

वरदान—(वि०, यौ०, सं०) किसी देवता या गुरु-जन का अपनी प्रसन्नता से किसी को कोई इष्ट फल या सिद्धि प्रदान। किसी बड़े की प्रसन्नता से प्राप्त कोई सुफल का लाभ।

वरदानी—(संज्ञा, पु०, सं०) वरदान देने वाला।

वरदी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) किसी सरकारी विभाग के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं या नौकरों का पह-नावा-विशेष।

वरन—(अव्य०, दे०) [सं० वरम्] किंतु, ऐसा नहीं, बल्कि।

वरना*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वरण] ऊँट। (अव्य०, अ०) नहीं तो, यदि ऐसा न होगा तो।

वरपतिक—(संज्ञा, पु०, सं०) अभ्रक, अबरख।

वरम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सूजन, वर्म।

वररुचि—(संज्ञा, पु०, स०) एक विख्यात विद्वान् वैयाकरणी और कवि (विक्रम-सभा के ९ रत्नों में से एक।)

वरल—(संज्ञा, पु०, दे०) बिरनी, बर्रे, हड्डा।

वरवर्णिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रूपवती और गुणवती उत्तमा स्त्री।

वरह—(संज्ञा, पु०, दे०) पत्ता, पत्ती, पत्र।

वरही, बरही*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० बर्हिन्] मोर, मयूर, बर्ही।

वरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बकुची, एक औषधि विशेष।

वराक—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बेचारा, दुखिया।

वराट, वराटक—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ी कौड़ी, दीर्घ कपर्दिका। [**वराटिका** (स्त्री०)]।

वराटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कौड़ी, कप-र्दिका।

वरानना—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सुन्दर स्त्री। "सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने"।—[स्फु०]।

वराह—(संज्ञा, पु०, सं०) [बाराह (दे०)] । शूकर, विष्णु का शूकर अवतार, विष्णु, १८ द्वीपों में से एक द्वीप, एक विद्वान् ।—**क्रांता**-(स्त्री०) एक कंद, वाराही (औष०), [लजालू (दे०)], लज्जावंती, लज्जालु, वाराहीकंद ।—**मिहिर**-(पु०) वृहद् वाराही संहितादि के कर्ता, एक ज्योतिषाचार्य्य जो विक्रमादित्य की सभा के ६ रत्नों में थे ।

वरिष्ट—(वि०, सं०) पूजनीय, श्रेष्ठ, उत्तम, पूज्य ।

वरु, बरु—(अव्य, दे०) जो, यदि, भले ही, पक्षांतर में, [बरुक (दे०)] । "बरु मराल मानस तजै"—[रामा०] ।

वरुण—(संज्ञा, पु०, सं०) देव-रक्षक, दस्यु-नाशक जल के अधिपति एक वैदिक देवता, जिनका अस्त्र पाश है । जलेश, पानी के स्वामी, [बरुन (दे०)]। "वरुण, कुबेर, इन्द्र, यम, काला"—[रामा०]। वरुना का पेड़, सूर्य, पानी, नेपचून ग्रह (अं०)। —**पाश**-(पु०) फाँसी, फंदा, वरुण का अस्त्र, वरुणास्त्र ।

वरुणानी—(संज्ञा स्त्री०, सं०) वरुण की स्त्री ।

वरुणालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वरुण का घर, समुद्र, सिंधु, सागर, [बरुनालय (दे०)] ।

वरूथ—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, यूथ, दल ।

वरुथी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सेना, चमू, फौज ।

वरूथ—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, यूथ, दल, सेना । "रथ बरूथन को गनै"—[रामा०] ।

वरूथिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सेना, चमू, फौज ।

वरे—(अव्य, दे०) समीप, निकट, हेतु, वास्ते, लिए ।

वरेची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अंकोलवृक्ष ।

वरेषी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक गहने का नाम, वर्षी, [बरेखी (दे०)] ।

वरोरू—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) श्रेष्ठ जंघा वाली स्त्री । "जानसि मोर सुभाव वरोरू"—[रामा०] ।

वरोह—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [बरोह (दे०)] । बरगद की जटा, सोर ।

वरोहक—(संज्ञा, पु०, दे०) असगंध औषधि ।

वर्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) एक जाति की अनेक वस्तुओं का समूह । कोटि, श्रेणी, जाति । सामान्य धर्म वाली वस्तुओं का समूह, एक समूह, एक ही स्थान से उच्चरित या समान स्थानीय स्पर्शव्यंजन-समूह । अध्याय, प्रकरण, परिच्छेद । किसी अंक या राशि का उसी से घात या गुणन-फल (गणि०) ऐसा चतुर्भुज क्षेत्र जिसकी चारों भुजाएँ समान और कोण सम कोण हो (रेखा०) ।—**क्षेत्र**-(पु०) वह चतुर्भुज क्षेत्र जिसकी चारों भुजायें तुल्य और कोण समकोण-हों (रेखा०) ।—**फल**-(पु०) वह गुणन-फल जो किसी संख्या या राशि को उसी संख्या या राशि से गुणा करने से मिले ।—**मूल**-(पु०) किसी वर्गांक संख्या की ऐसी संख्या जिसे यदि उससे गुणा करें तो फल वही वर्गांक हो । जैसे—३६ का वर्ग मूल ६ है । अल्पा० रूप मूल ।

वर्गलाना, बरगलाना—(क्रि० स०, दे०) [फ़ा० वरगलानीदन] [बरगलाना (दे०)], किसी को बहकाना, फुसलाना, उभारना, उकसाना, उत्तेजित करना ।

वर्गीय—(वि०, सं०) वर्ग या समूह का ।

वर्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) त्याग, छोड़ना, मनाही, रोक । [**वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित** (वि०)] । "घर से निकलने के लिए है वज्र वर्जन कर रहा" —मैथिली० ।

वर्जित—(वि०, सं०) त्यागा या छोड़ा हुआ, रोका हुआ, त्यक्त, निषिद्ध, अग्राह्य ।

वर्ज्य—(वि०, सं०) त्याज्य, छोड़ने के योग्य, जो मना किया गया हो ।

वर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) लाल-पीले आदि रंग, जन-समूह के ४ विभाग या जाति—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र (प्राचीन आर्य), भेद, प्रकार, भाँति, रूप, अक्षर, अकारादि के चिह्न या संकेत, [बर्न, बरन (दे०)] ।—**खंड-मेरु**-(संज्ञा, पु०, सं०) पिंगल की वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाये ही ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्णों से कितने छंद बन सकते हैं (पिं०) ।—**नष्ट**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पिंगल की एक क्रिया जिससे ज्ञात हो कि लघु-गुरु के विचार से प्रस्तारानुसार अमुक संख्या के वर्णों के छंदों के अमुक संख्यक भेद का रूप कैसा होगा ।—**पताका**-(स्त्री०) पिंगल की एक क्रिया जिससे यह ज्ञात हो कि वर्णिक छंदों में से कौन सा ऐसा छंद है जिसमें अमुक संख्यक लघु-गुरु होंगे (पिं०) ।—**प्रस्तार**-(पु०) पिंगल की एक क्रिया जिससे ज्ञात होता है कि इतने वर्णों के

छंदों के इतने भेद हो सकते हैं और उनके रूप इस तरह होंगे।—माला-(स्त्री०) किसी भाषा के अक्षरों की क्रमबद्ध लिखित सूची।—विचार-(पु०) वर्ण-शिक्षा (प्राचीन-वेदांग) या व्याकरण का वह भाग जिसमें अक्षरों के रूप, उच्चारण और संधि आदि का वर्णन हो। (आधु०)।—वृत्त-(पु०) वह छंद जिसके चरणों में लघु-गुरु क्रम तथा वर्ण-संख्या समान हो।—संकर-(पु०) दो भिन्न भिन्न जातियों से उत्पन्न व्यक्ति या जाति, दोगला, व्यभिचार-जनित पुरुष, [बरन-संकर (दे०)]। "स्त्रीदुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः"—भ० गीता०। "भये वर्ण-संकर कलिहि, भिन्न सेत सब लोग"—[रामा०]। [वर्णसंकरता (संज्ञा, स्त्री०)]।—सूची-(स्त्री०) पिंगल की एक रीति या क्रिया जिससे ज्ञात होता है कि वर्णिक छंद-संख्या की शुद्धता और उनके भेदों में आदि-अंत के लघु-गुरु जाने जाते है।

वर्णक—(वि०, सं०) प्रशंसक, स्तुति कर्त्ता।

वर्णन—(संज्ञा, पु०, सं०) विस्तार से कहना, कथन, लापन, चित्रण, बयान, गुण-कीर्तन रँगना, प्रशंसा, [बरनन, बर्नन (दे०)]। [**वर्णनीय, वर्ण्य, वर्णित** (वि०)]।

वर्णना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वर्णन, स्तवन, स्तुति। (क्रि० स०, दे०) बखान करना, [बर्नना (दे०)], स्तवन करना, बखानना, कहना।

वर्णात्मक—(वि०, सं०) अक्षर-संबंधी, अक्षरात्मक, जाति या रंग-सम्बन्धी।

वर्णाश्रम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्राह्मण आदि चार वर्ण और ब्रह्मचर्य्य आदि चार आश्रम, [बरनास्रम (दे०)]। "वर्णाश्रम धर्म अचार गये"—[रामा०]।

वर्णिकवृत्त—(संज्ञा, पु०, सं०) वह छंद जिसमें अक्षरों की संख्या का नियम हो, वर्णवृत्त।

वर्णिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रंग भरने की लेखनी।

वर्णित—(वि०, सं०) प्रशंसित, कथित, जिसका वर्णन हो चुका हो, कहा हुआ।

वर्ण्य—(वि०, सं०) वर्णन के योग्य, वर्णन का विषय, उपमेय, प्रस्तुत। (संज्ञा, पु०, सं०) कुम-कुम, बन-तुलसी।

वर्त्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यवहार, बरताव, रोजी, वृत्ति, व्यवसाय, घुमाना, फेरना, हेरफेर, परिवर्तन, रखना, स्थापन, सिल बट्टे से पीसना, पात्र, [बरतन (दे०)]। [**वर्तनीय, वर्तित** (वि०)]।

वर्त्तमान—(वि०, सं०) उपस्थित, विद्यमान, मौजूद, चलता हुआ, हाल का, आधुनिक। (संज्ञा, पु०, सं०) क्रिया के तीन कालों में से एक काल जिससे प्रगट हो कि क्रिया का आरंभ हो गया हो, वह चली जाती है और समाप्त नहीं हुई, समाचार, वृत्तान्त, चलता व्यवहार। "वर्त्तमाने लट्"—[कौ० व्या०]

वर्त्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बटी, बत्ती, गोली, अंजन लगाने की सलाई, [वर्ती (दे०)]।

वर्त्तिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बत्ती, सलाई, शलाका।

वर्त्तित—(वि०, सं०) जारी किया या चलाया हुआ, संपादित।

वर्त्ती—(वि०) [सं० वर्त्तिन्] बरतने वाला, वर्त्तनशील, स्थित रहने वाला, [बर्ती (दे०)], बत्ती, व्रत रखने वाला, उपास, कृतोपवास। [**वर्त्तिनी** (स्त्री०)]।

वर्त्तुल—(वि०, सं०) गोला, वृत्ताकार।

वर्त्तुलाकार—(वि०, यौ०, सं०) गोलाकार, वृत्ताकार।

वर्त्म—(संज्ञा, पु०, सं०) राह, रास्ता, माग, पंथ, बाट, पथ, बारी, किनारा, तट, औंठ (प्रान्ती०), आँख की पलक, आश्रय, आधार। "पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन"—[रघु०]।

वर्दी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० वरदी] सिपाहियों और उनके अफसरों का पहनावा।

वर्द्धक—(वि०, सं०) वृद्धि-कारक, बढ़ाने या अधिक करने वाला, पूरक।

वर्द्धन—(संज्ञा, पु०, सं०) बढ़ाना, अधिक करना, उन्नति, बढ़ती, वृद्धि, तराशना, काटना। [**वर्द्धित, वर्द्धनीय** (वि०)]।

वर्द्धमान—(वि०, सं०) जो बढ़ रहा हो, बढ़ने वाला, वर्द्धनशील। (संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्णिक छंद जिसके चरणों में भिन्न अक्षर संख्या क्रम से १४, १३, १८, १५ होती हैं। जैनियों के २४ वें महावीर तीर्थंकर या जिन।

वर्द्धित—(वि०, सं०) छिन्न, भिन्न, बढ़ा हुआ, पूर्ण, कटा हुआ। "तं वर्द्धितानां सुत निर्विशेषम्"—[रघु०]।

वर्द्धिता—(वि०, स्त्री०) बढ़ी हुई, विकसित। "उत्कंठा थी परम प्रबला वेदना वर्द्धिता थी"—हरिऔध।

वर्म—(संज्ञा, पु०) [सं० वर्मन्] कवच, बख्तर, घर, रक्षा-स्थान।

वर्म्मा, वर्मा—(संज्ञा, पु०) [सं० वर्म्मन्] क्षत्रियों, कायस्थों आदि की एक उपाधि।

वर्य्य—(वि०, सं०) वर, श्रेष्ठ। जैसे—विद्वद्वर्य्य।

वर्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक देश, वर्वर देश के घुँघराले बालों वाले असभ्य निवासी। अधम, नीच, पामर। "पृथिवी वर्वर-भूरि भार-हरणे" [ह० ना०]।

वर्ष—(संज्ञा पु०, सं०) वर्षा, जल-वर्षण, वृष्टि। १२ मासों वाला एक काल-मान, साल, संवत्सर। वर्ष के चार भेद हैं, सौर, चांद्र, सावन और नाक्षत्र, सात द्वीपों का एक विभाग (पुरा०) किसी द्वीप का प्रधान भाग, बादल, मेघ। "वर्ष चतुर्दश विपिन बसि, करि पितु-वचन प्रमान"—[रामा०]। —गाँठ—(स्त्री०) [सं० वर्ष + गाँठ दे०]। जन्म-दिन, सालगिरह, बरस-गाँठ।—फल—(पु०) फलित ज्योतिष में एक कुण्डली जिससे मनुष्य के साल भर का भला-बुरा ग्रह-फल ज्ञात हो।

वर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) वृष्टि। [वर्षित (वि०)]।

वर्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आषाढ़ से क्वार तक की एक ऋतु जब पानी बरसता है, [चौमासा (दे०)] वृष्टि, बरसने का भाव या क्रिया, [बरषा, बरसा (दे०)]। "वर्षा बिगत शरद ऋतु आई"—[रामा०]। मुहा०—(किसी वस्तु की) वर्षा होना (करना)—अधिकता के साथ ऊपर से गिरना (गिराना), बहुतायत से मिलना (देना)।—काल—(पु०) पावस का समय, बरसात, प्रावृट्। "वर्षा काल मेघ नभ छाये"—[रामा०]।

वर्षाशन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक वर्ष का भोजन या जीविका।

वर्ही—(संज्ञा, पु०) [सं० वर्हिन्] मोर, मयूर।

वल—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य जिसे वृहस्पति ने मारा था। मेघ, सेना, चमू। "वलभीमाभिरक्षितम्"—[भ० गी०]।

वलन—(संज्ञा, पु०, सं०) नक्षत्रादि का सायनांश से हट कर चलना, विचलन (ज्यो०)।

वलक्ष—(वि०, सं०) श्वेत, उज्ज्वल। जिसका हृदय उतना मलिन है जितना कि शीर्ष वलक्ष है। (संज्ञा, पु०) श्वेत रंग।

वलभी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काठियावाड़ की एक पुरानी नगरी, वरनदा।

वलय—(संज्ञा, पु०, सं०) कंकण, चूड़ी, वेष्टन, मंडल। "मणिना वलयं वलयेन मणिः"—[स्फु०]।

वलवला—(संज्ञा पु०, अ०) उमंग, जोश, आवेश।

वलाहक—(संज्ञा, पु०, सं०) बादल, मेघ। पहाड़, पर्वत। एक दैत्य।

वलि—(संज्ञा, पु०, सं०) रेखा, पेट की रेखा या पेट की सिकुड़न। देवता की भेंट। बामन रूप विष्णु से छला गया एक दैत्य। पंक्ति, श्रेणी, सिकुड़न, शिकन, झुर्री।

वलित—(वि०, सं०) बल खाया हुआ, मोड़ा या झुकाया हुआ, लिपटाया या घेरा हुआ, झुर्रीदार, सहित, युक्त, ढका, लगा, झुका हुआ।

वली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सिकुड़न, शिकन, झुरा, श्रेणी, पंक्ति, लकीर, रेखा। (संज्ञा, पु०, अ०) सिद्ध, साधु, फकीर, स्वामी। मालिक, हाकिम, शासक। पहुँचा फकीर। संरक्षक।

वल्कल—(संज्ञा, पु०, सं०) त्वक्, पेड़ की छाल, बकला, तपस्वियों के छाल के कपड़े, [बलकल (दे०)]। "बल्कल बसन जटिल तनु श्यामा"—[रामा०]।

वल्गु—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोहर। "वल्गु-भाषितम्"—[स्फु०]।

वल्द—(संज्ञा, पु०, अ०) औरस पुत्र, बेटा।

वल्दियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पिता के नाम का परिचय।

वल्मीक—(संज्ञा, पु०, सं०) दीमक का घर, मिट्टी का ढेर, बाँबी, बिमौठ (प्रान्ती०) वाल्मीकि मुनि।

वल्लभ—(वि०, सं०) प्यारा, प्रियतम। (संज्ञा, पु०) प्रियमित्र। अध्यक्ष, स्वामी, नायक, पति, मालिक। वैष्णवमत की कृष्णोपासना के प्रवर्तक, एक प्रसिद्ध आचार्य, पुष्टि-मार्ग के प्रवर्त्तक।

वल्लभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रियतमा, प्यारी स्त्री, प्रिया।

वल्लभाचार्य्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वैष्णव मत या कृष्ण-भक्ति पुष्टि-मार्ग प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य।

वल्लभी—(संज्ञा, पु०) [सं० वलभी] काठियावाड़ का एक पुराना नगर, एक वैष्णव सम्प्रदाय, [**वल्लभीय**]।

वल्लरि, वल्लरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वल्ली, लता, मंजरी, व्रतती।

वल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लता, बेल। "व्रतती तु लता, वल्ली"—अमर०।

वल्वल—(संज्ञा, पु०, सं०) इल्वल नामक एक दैत्य जो बलदेव जी द्वारा मारा गया था (पुरा०)।

वश—(संज्ञा, पु०, सं०) इच्छा, चाह। अधिकार, काबू, इख्तियार। शक्ति, बस। "करि राखे अपने वश राऊ"—तुल०। प्रभुत्व, कब्जा, दखल।—**वर्त्ती**-(वि०) [सं० वशवर्त्तिन्] आधीन, ताबे। [**वशवर्तिनी** (स्त्री०)]। **मुहा०**—**का**-अपनी शक्ति के भीतर। "मेरे वश का है नहीं, कर पाऊँ यह कार्य"—गिरीश। शक्ति की पहुँच, सामर्थ्य।—**चलाना**-सामर्थ्य या शक्ति का सफल होना, काबू चलना।

वशिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ताबेदारी, अधीनता, मोहने की क्रिया, वशता।

वशित्व—(संज्ञा, पु०, सं०) वशता, अणिमादि आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि (योग०)।

वशिष्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) रघुवंश और रामचंद्र जी के पुरोहित या गुरु। "प्रस्थापयामास वशी वशिष्टः"—[रघु०]।

वशी—(वि०) [सं० वशिन्] अपने को वश में रखने वाला, इन्द्रियजित, आधीन। [**वशिनी** (स्त्री०)]।

वशीकरण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मंत्रादि से किसी को आधीन या वश में लाने का कार्य। वश मे करने की क्रिया, [बसीकरन (दे०)]। "वशीकरण इक मंत्र है परिहरु वचन कठोर"—तुल०। वश में करने (मोहने) का एक प्रयोग (तंत्र)। [**वशीकृत, वशीकरणीय** (वि०)]।

वशीभूत—(वि०, सं०) आधीन, पर-इच्छानुचारी, मुग्ध, मोहित।

वश्य—(वि०, सं०) वश में आने वाला।

वश्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आधीनता, दासता, परवशता, [परबसता (दे०)]।

वषट्—(अव्य०, सं०) इसे पढ़ कर देवताओं को हवि दी जाती है।

वसंत—(संज्ञा, पु०, सं०) साल की छः ऋतुओं में से चैत्र वैसाख के मासों की मुख्य और प्रथम ऋतु, बहार का मौसम, छः रागों में से दूसरा राग (संगी०), शीतला रोग, चेचक। [**वासंत, वासंतक, वासंतिक, वसंती** (वि०)]। "विहरति हरिरिह सरस वसंते"—गीत०।—**तिलका**-(संज्ञा, पु०, सं०) त, भ, ज, ज (गण) और गुरु वर्णान्त १४ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)। "ज्ञेया वसततिलका तभजा जगौगः।" [**तिलका** (स्त्री०)]।—**दूत**-(पु०) आम की बौर या वृक्ष, चैत्रमास, कोयल।—**दूती**-(स्त्री०) पिक, कोकिला, माधवीलता।—**पंचमी**-(पु०) माघ शुक्ल पचमी (त्यौहार)।

वसंती—(संज्ञा, पु०, सं०) वसंत-संबंधी, वसंत का गहरा, पीला रंग, पीला वस्त्र। **मुहा०**—**रंग चढ़ना**-प्रफुल्लता या रसिकता आना।

वसंतोत्सव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक प्राचीन उत्सव जो वसंत पंचमी के दूसरे दिन होता था, मदनोत्सव, होली का उत्सव, होलिकोत्सव।

वसअत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) फैलाव, विस्तार, समाई, चौड़ाई, शक्ति अटन का स्थान, सामर्थ्य, बल।

वसति, वसती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आबादी, गाँव, घर, रात, [बस्ती (दे०)]।

वसन—(संज्ञा, पु०, सं०) कपड़ा, वस्त्र, आवरण। निवास। "भूमि-सयन, बलकल वसन"—[रामा०]।

वसमा—(संज्ञा, पु०, अ०) उबटन, खिजाब, एक तरह का छपा कपड़ा।

वसवास—(संज्ञा, पु०, अ०) मोह या प्रलोभन, संदेह, संशय, भ्रम। [**वसवासी** (वि०)]।

वसह*—(संज्ञा, पु०) [सं० वृषभ] बैल। "चले वसह चढ़ि शंकर तबही"—स्फु०।

वसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चरबी, मेद, [बसा (दे०)]।

वसिष्ठ—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन वैदिक ऋषि जो ब्रह्मा के पुत्र थे; वेद, रामायण, महाभारत और पुराणों में इनका उल्लेख है। सप्तर्षि-मंडल

का एक तारा। सप्तर्षियों में से एक ऋषि। रघुवंश तथा रामचन्द्र जी के गुरु। "तब वसिष्ठ बहु-विधि समझावा"—[रामा०]। "वसिष्ठ धेनोरनुयायि-नंताम्"—[रघु०]।—**पुराण**–(पु०) एक उप-पुराण, लिंगपुराण (एकमत)।

वसीक़ा—(संज्ञा, पु०, अ०) वह धन जो सरकार के ख़जाने में इसलिए जमा किया जावे कि उसका ब्याज उसके सम्बन्धियों को मिलता रहे। ऐसे धन का ब्याज, वृत्ति।

वसीयत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कोई मनुष्य अपने मरने के समय अपनी धन-सम्पत्ति के प्रबन्ध और विभाग आदि के विषय में जो व्यवस्था लिख जाता है।—**नामा**–(पु०) [अ० वसीयत+नामा फ़ा०] वह व्यवस्था लेख या प्रबन्ध-पत्र जो कोई पुरुष अपने मरते समय अपनी सारी सम्पत्ति के विभाग या प्रबन्धादि के विषय में लिख जाता है।

वसीला—(संज्ञा, पु०, अ०) आश्रय, सहारा, सहायता, द्वारा, जरिया, संबंध।

वसंधरा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अवनि, भूमि, पृथ्वी, वसुधा, वसुमती। "वसुंधरा थी कमनीयतामयी" —हरिऔध।

वसु—(संज्ञा, पु०, सं०) आठ देवताओं का एक गण या समूह। आठ की संख्या। धन। रत्न। अग्नि। सोना। जल। कुवेर। सूर्य्य। शिव। विष्णु। साधु-व्यक्ति, सज्जन। तालाब, सर। छप्पय का ३६वाँ भेद (पिं०)। (स्त्री०) प्रकाश की किरण। वनस्पति-विशेष, अलका। दक्ष की एक लड़की, अमरावती।—**दा**–(स्त्री०) भूमि, पृथ्वी। माली नामक राक्षस की पत्नी, जिसके निल, अनल, हर और संपाति ४ पुत्र थे।—**दान**–(पु०) जनक का एक पुत्र। बृहद्रथ का एक लड़का।—**दामा**–(पु०) बृहद्रथ का एक लड़का।—**देव**–(संज्ञा, पु०, सं०) यदुवंशियों के शूर कुल के राजा और श्रीकृष्ण जी के पिता और कंस के बहनोई। "विरोचमानं वसुदेव रैवत"—[भा० द०]।—**भू**–(पु०) कृष्ण।—**द्रुम**–(पु०) गूलर।—**धा**–(संज्ञा, पु०, सं०) भूमि, पृथ्वी। "बावरे वसुधा काकी भई" [स्फु०]।—**धानन**–(पु०) वसुधा का मुख, पृथ्वी का मुख। "स्वप्नों के वैभव से व्याकुल, हँसे अश्रुओं में वसुधानन"—पंत।—**धानुराग**–(पु०) वसुधा का अनुराग, पृथ्वीमात्र से प्रेम। वसुधा-नुराग प्रिय पय पी"—हरिऔध।—**धारा**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जैनों की एक देवी, अलकापुरी कुवेर-नगरी।—**धावलंविनि**–(पु०) पृथ्वी को अवलंब देनेवाली। "उर्मिला-सदृश तुममें भी, वसुधावलम्बिनी धृति हो"—हरिऔध।—**हंस**– (पु०) वसुदेव के पुत्र एक यादव।

वसुमती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि, पृथ्वी, एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में छः वर्ण होते हैं (पिं०)। "नैकेनापि समंगता वसुमती नूनं त्वया यास्यति"—भोज०।

वसूल—(वि०, अ०) प्राप्त, मिला हुआ, लब्ध, जो चुका या ले लिया गया हो।

वसूली—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० वसूल] दूसरों से वसूल या प्राप्त करने का कार्य्य, प्राप्ति, लब्धि। [**वसूलयाबी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

वस्तव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बसने या ठहरने योग्य।

वस्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मूत्राशय, पेड़, पिचकारी।—**कर्म**–(पु०) पिचकारी देने या लगाने का कार्य्य (लिंग या गुदा में)।

वस्तु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पदार्थ, सत्तामय अस्तित्ववान, गोचर-पदार्थ, चीज, नाटक का का आख्यान या कथन, कथा-वस्तु, सत्य। [**वास्तव, वास्तविक** (वि०)]।—**निर्देश**–(पु०) मंगलाचरण का एक भेद, जिसमें कथा का कुछ सूक्ष्म आभास रहता है। "आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशोवापि तन्मुखम्"—(काव्य०)।—**वाद**– (पु०) दृश्य संसार जैसा दिखाई देता है वैसे ही रूप में उसकी सत्ता ठीक है यह दार्शनिक विचार (न्या० वैशे०)।

वस्तुतः—(अव्य, सं०) सत्यप्रः, सचमुच, यथार्थतः।

वस्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०) कपड़ा, [बस्तर (दे०)]। —**भवन**–(पु०) कपड़े का घर, वस्त्रगृह, डेरा, खेमा, तंबू, रावटी।

वस्त्रालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वस्त्र का घर, कपड़े का भंडार या कारख़ाना।

वस्फ़—(संज्ञा, पु०, अ०) गुण, हुनर, स्तुति, प्रशंसा, विशेषता, अधिकता, सिफ़्त।

वस्ल—(संज्ञा, पु०, अ०) दो वस्तुओं का मेल, मिलाप, मिलन, संयोग, प्रसंग।

वह—(सर्व०, दे०) [सं० सः] एक बचन, अन्य पुरुष का सूचक एक संकेत-शब्द (व्या०),

दूरवर्ती या परोक्षसूचक एक वचन निर्देश-कारक या संकेत-शब्द (व्या०), कर्तृकारक में प्रथम पुरुष सर्वनाम।

वहन—(संज्ञा, पु०, सं०) घसीट कर या अपने ऊपर लाद कर किसी वस्तु को कहीं से कहीं ले जाने का कार्य। [**वहनाय, वहमान, वहित** (वि०)]। "आपीनभारोद्वहन प्रयत्नात्"—[रघु०]। उठाना, ऊपर लेना, बेड़ा, तरेंदा (प्रान्ती०)।

वहम—(संज्ञा, पु०, अ०) झूठी धारणा, भ्रम, व्यर्थ की शंका, मिथ्या धारणा, झूठा सन्देह।

वहमी—(वि०) [अ० वहम] वहम करने वाला, जो व्यर्थ संदेह में पड़ा हो।

वहला—(संज्ञा, पु०, दे०) आक्रमण, धावा, चढ़ाई।

वहशत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) असभ्यता, जंगलीपन, उजड्डतापन, अधीरता, चंचलता।

वहशी—(वि०, अ०) जंगली, बनैला, असभ्य, जो पालतू न हो।

वहाँ—(अव्य०) [हि० वह] तहाँ, (व्र० अव०) उस ठौर, उस जगह, [उहाँ (दे०)]।

वहाबी—(संज्ञा, पु०, अ०) मुसलमानों का एक संप्रदाय जिसे अब्दुल वहाब नज्दी ने चलाया था, वहाब मतानुयायी।

वहिः—(अव्य०, सं०) बाहर, जो भीतर न हो। "अंतर्वाही पुरुषकाल रूपैः"—[भा० द०]। [**वहिरागत** (यौ०)]। बाहर आया हुआ।

वहित्र—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वोहित्थ] जहाज, पोत।

वहिरंग—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी पदार्थ का बाहिरी भाग, बाहिरी वस्तु, बाहिरी मनुष्य। [**अंतरंग** (विलो०)]। "असिद्धं वहिरंगमन्तरंगे" —[कौ० व्या०]। (वि०) बाहिरी, ऊपरी, ऊपर का।

वहिर्गत—(वि०, यौ०, सं०) जो बाहर गया हो, निकला हुआ, बाहर का, बाहरागत। [**वहिर्गमन** (संज्ञा, पु०, सं०)]।

वहिर्द्वार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बाहरी फाटक, सदर फाटक, तोरण, सिंहद्वार।

वहिर्भूत—(वि०, सं०) बहिर्गत।

वहिर्मुख—(वि०, सं०) विमुख, पराङ्मुख।

वहिर्लापिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऐसी पहेली जिसका उत्तर बाहर से देना पड़े। [**अंतर्लापिका** (विलो०)]।

वहिष्कृत—(वि०, सं०) बाहर निकाला हुआ, त्यक्त, त्यागा हुआ। "जाति वहिष्कृत ते नर जानहु"—[स्फु०]।

वहिष्करण, वहिष्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) परित्याग, बाहर करना। [**वहिष्करणीय** (वि०)]।

वहीं—(अव्य, दे०) [हि० वहाँ+ही]। उसी स्थान पर, उस जगह, तहीं, उहैं (ग्रा०)।

वही—(सर्व०, दे०) [हि० वह+हीं] अन्य पुरुष या दूरवर्ती निश्चयवाचक सकेतशब्द जिसके सम्बन्ध मे कुछ कहा गया हो उस निर्दिष्ट पूर्वकथित व्यक्ति या वस्तु, की मुख्यता-सूचक-शब्द निर्दिष्ट या उक्त व्यक्ति या वस्तु।

वह्नि—(संज्ञा, पु०, सं०) आग, अग्नि "पिपीलिका नृत्यतिवह्नि मध्ये।" श्रीकृष्ण जी के एक पुत्र। तीन की संख्या।

वाँछनीय—(वि०, सं०) चाहने योग्य, जिसकी चाह हो, इष्ट, अभिलषित। "वाँछनीय भगति राम की"—वासु०।

वाँछा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अभिलाषा, चाह, इच्छा, कामना। [**वाँछित, वाँछनीय** (वि०)]।

वाँछित—(वि०, सं०) आकांक्षित, चाहा हुआ, इच्छित, इष्ट, अभीष्ट।

वा—(अव्य०, सं०) संदेह या विकल्पवाचक शब्द, अथवा, [व, या (दे०)]। "वा पदान्तस्य" —[कौ० व्या०]।*† (सर्व० दे०) [हि० वह] कारक-विभक्ति लगने से पूर्व प्रथम या अन्य पुरुष का एकवचन (व्र०)। जैसे—वानें, वाकों, वासों। पूर्ववर्ती निश्चयसूचक विशेषण। जैसे—वा दिन की]।

वाहि*†—(सर्व०, दे०) वाहि, उसे।

वाक्—(संज्ञा, पु०, सं०) वाणी, सरस्वती, जीभ, गिरा, शारदा, रसना [**वाक्य** (दे०)]।

वाकई—(वि०, अ०) वस्तुतः, सच, वास्तव। (अव्य०, अ०) दरअसल, सचमुच, वास्तव या यथार्थ में।

वाक़या—(संज्ञा, पु०, अ०) घटना, समाचार, वृत्तांत, विवरण।

वाक़िफ़—(वि०, अ०) ज्ञाता, जानकार, अनुभवी।

वाक़िफ़ियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) ज्ञान, जानकारी, जान-पहचान, परिचय।

वाकूची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) औषधि ।

वाक्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वाणी, शब्द, वाक्य, कथन ।—**छल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) तीन प्रकार के छलों में से एक (न्या०), विपक्षी के भावार्थ के विरुद्ध अर्थ लेकर उसका पक्ष काटना । एक काव्य-दोष ।—**पटु**-(वि०, यौ०, सं०) बातें करने में चतुर । [**वाकूपटुता** (संज्ञा, स्त्री०)] । "सदसि वाक्-पटुता युधि विक्रमः ।—**पति**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वृहस्पति, गुरु, जीव । विष्णु । —**सिद्धि**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह सिद्धि जिससे वक्ता जो कहे वही ठीक या सच उतरे । [**वाक्-सिद्धि** (वि०)] ।

वाक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वह पद या शब्द-समूह जिससे किसी श्रोता को वक्ता का अभिप्राय सूचित हो और कोई आकांक्षा शेष न रहे, जुमला, [बाक (दे०)] ।—**भेद**-(पु०) पारस्परिक विरोध वाक्य ।—**रचना**-(स्त्री०) वाक्य बनाना । —**विन्यास**-(पु०) वाक्यों को नियत स्थान पर रखना ।

वाक्यार्थ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वाक्य का अर्थ, शब्दबोध ।

वागीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वृहस्पति, वाग्मी, कवि, पंडित, ब्रह्मा । (वि०) वाग्मी वक्ता, अच्छा बोलने वाला । "शारद, शेष, शंभु, वागीशा"—[रामा०] ।

वागीश्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सरस्वती, [वागेसुरी (दे०)] ।

वागुर, वागुरा—(संज्ञा, पु०, सं०) जाल, फंदा । "बागुर विषम तुराय, मनहु भाग मृग भाग-वस" —[रामा०] ।

वागुरि, वागुरी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० वागुर] छोटा जाल या फंदा ।

वाग्जाल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बातों का जाल या लपेट, कथनाडंबर या बातों की भरमार । "अनिर्लोडित-कार्य्यस्य वाग्जाल वाग्मिनो वृथा" —माघ० ।

वाग्दंड—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वाणी-संबंधी सजा, भला-बुरा कहने का दंड, डाँट-फटकार, डाँट-डपट, लिथाड़, बकझक ।

वाग्दत्त—(वि०, यौ०, सं०) जिसे दूसरों को देने को कह चुके हों, वाणी से दिया हुआ । लक्ष्मी या सरस्वती का दिया हुआ ।

वाग्दत्ता—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह कन्या जिसका ब्याह मौखिक रूप से किसी के साथ ठहर चुका हो ।

वाग्दान—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वाणी-द्वारा दान; कन्या के विवाह के लिये पिता का किसी के साथ वचन-बद्ध होने का कार्य्य ।

वाग्देव, वाग्देवता—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वाणी का देव या देवता, सरस्वती [**वाग्देवी** (स्त्री०)] । "वाग्देवता-चरित्र-चित्रित चित्तसद्मः" —[गी० गो०] ।

वाग्देवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सरस्वती, वाणी ।

वाग्भट्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) वैद्यक-शास्त्र के एक विख्यात आचार्य्य जिन्होंने वाग्भट्ट या अष्टांग-हृदय संहिता रची । भाव-प्रकाश, वैद्यक निघंटु और शास्त्र-दर्पण आदि ग्रन्थों के कर्त्ता । "सूत्रस्थाने तु वाग्भट्टः"—[स्फु०] ।

वाग्मी—(संज्ञा, पु०) [सं० वाक्-ग्मिन् प्रत्य०] वाचाल, अच्छा वक्ता, पंडित, वृहस्पति । "वाचो-वाग्मिन्"—अष्टा० । "वाग्जालं वाग्मिनो वृथा" —माघ० ।

वाग्विलास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आपस में सानंद वार्त्तालाप करना ।

वाग्वैदग्ध—(संज्ञा, पु०, सं०) भाषण, कथन में चतुरता, प्रवीणता, चमत्कारपूर्ण उक्तियों में प्रवीणता ।

वाङ्मय—(वि०, सं०) वचन संबन्धी, वचन द्वारा किया गया । (संज्ञा, पु०, सं०) गद्य-पद्यात्मक ग्रंथ जो पढ़ने-पढ़ाने का विषय हो, साहित्य ।

वाङ्मुख—(संज्ञा, पु०, सं०) एक गद्य-काव्य, उपन्यास ।

वाच्—(संज्ञा, पु०, सं०) वाणी, वाचा, गिरा । [वाच (दे०)] ।

वाचक—(वि०, सं०) सूचक, बताने वाला । (संज्ञा, पु०, सं०) नाम, संज्ञा, संकेत, चिह्न । "तद्वाचक प्रणवः"—सा० वि० । (सं०) बाँचने वाला ।—**धर्म-लुप्ता**-(स्त्री०) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें सामान्य धर्म और वाचक शब्द का लोप हो (अ० पी०) ।—**लुप्ता**-(स्त्री०) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमे उपमा वाची शब्द लुप्त हो (अ० पी०)—**सांपति**-(पु०) वृहस्पति, महाविद्वान् ।

वाचकोपमान-धर्मलुप्ता—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें केवल उपमेय हो और वाचक शब्द, उपमान तथा धर्म इन तीनों का लोप हो (अ० पी०)।

वाचकोपमान-लुप्ता—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उपमान और वाचक शब्द का लोप हो (अ० पी०)।

वाचकोपमेयलुप्ता—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमे उपमेय और वाचक शब्द का लोप हो (अ० पी०)।

वाचक्नवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गार्गी, वाचकुटी।

वाचन—(संज्ञा, पु०, सं०) बाँचना, पढ़ना, पठन, प्रतिपादन, कहना, कथन।

वाचनालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समाचार-पत्रों या पुस्तकों के पढ़ने का स्थान।

वाचनिक—(वि०, सं०) वचन-सम्बन्धी, कथित।

वाचस्पति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वृहस्पति, अतिविद्वान्।

वाचा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वाणी, वाक्य, शब्द वचन। "मनुष्य-वाचा मनु वंश केतुम्"—रघु०। —**बंध***-(वि०) प्रतिज्ञा, या प्रण से बद्ध, सकल्प से बधा हुआ।—**बद्ध**-(वि०) प्रतिज्ञा के कारण विवश।

वाचाल—(वि०, सं०) बकवादी, तेज बोलने वाला, वाक्पटु। [**वाचालता** (संज्ञा, स्त्री०) "मूक होहिं वाचाल"—[रामा०]।

वाचालता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अति बोलना, वाक् कौशल। "तथापि वाचालयता युनक्ति माम्" —माघ०।

वाचिक—(वि०, सं०) वाणी से किया हुआ, वक्ता-सम्बन्धी। (संज्ञा, पु०) केवल वाक्य-विन्यास से ही होने वाला (स०)। अभिनय, नाटक मे वह स्थाल जहाँ केवल परस्पर वार्त्तालाप ही होता है।

वाची—(वि०) [सं० वाचिन्] सूचक, प्रगट करने वाला।

वाच्य—(वि०, सं०) कहने-योग्य, जिसका बोध शब्द-संकेत से हो, अभिधेय। (संज्ञा, पु०) वाच्यार्थ, अभिधेयार्थ (काव्य०), क्रिया का वह रूप जिससे कर्त्ता, कर्म या भाव की प्रधानता प्रकट हो (व्या०)।—**परिवर्तन**-(पु०) वाक्य की क्रिया का रूपान्तर जिससे वाच्य बदल जाये (व्या०)।

वाच्यार्थ——(संज्ञा, पु० यौ०, सं०) मूल शब्दार्थ, वह अर्थ या भाव जो वाक्य-गत शब्दों के नियत अर्थों के द्वारा ज्ञात हो जाय।

वाच्यावाच्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बुरी-भली या अच्छी बुरी अथवा कहने या न कहने योग्य बात।

वाछिड़—(अव्य०, दे०) वाहजी, धन्य, प्रिय वाक्य।

वाज़—(संज्ञा, पु०, अ०) शिक्षा, उपदेश, धार्मिक उपदेश, कथा।

वाजपेई, वाजपेयी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाजपेयी] कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि, अत्यन्त कुलीन या कुलवान, वह पुरुष जिसने वाज-पेय यज्ञ किया हो।

वाजपेय—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ७ श्रौत यज्ञों में से ५ वाँ यज्ञ।

वाजपेयी—(संज्ञा, पु०, सं०) वाजपेय यज्ञ करने वाला, कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि, अत्यंत कुलीन या कुलवान।

वाजसनेय—(संज्ञा, पु०, सं०) यजुर्वेद की एक शाखा, याज्ञवल्क्य ऋषि।

वाजिब, वाजबी—(वि०, अ०) उचित, उपयुक्त, योग्य, ठीक।

वाजी——(संज्ञा, पु०) [सं० वाजिन्] वाजि, घोड़ा, फटे हुये दूध का पानी। "प्रभु मनसों लवलीन मन, चलत वाजि छबि पाव"—[रामा०]।

वाजीकर—(वि०, सं०) शक्तिवर्द्धक, कामोद्दीपक।

वाजीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) वह आयुर्वेदिक प्रयोग या औषधि जिसके सेवन से मनुष्य घोड़े के समान बलिष्ठ और वीर्यवान हो जाता है, बल-वीर्य-वर्द्धक।

वाट—(संज्ञा, पु०, सं०) [बाट (दे०)], रास्ता, राह, मार्ग, पंथ।—**धान**-(पु०) कश्मीर के नैऋत्य-कोण में एक जनपद, एक वर्णसंकर जाति। **मुहा०—परना**-हानि होना। "बाट परे मोरी नाव उड़ाई"—कवि०। (संज्ञा, पु०, दे०) ओट, आड़, बाट।

वाटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उद्यान, फुलवाड़ी, बागीचा, आराम, [बाटिका (दे०)]। "तोहिं अशोक-वाटिका उजारी"—[रामा०]।

वाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) स्थान, वाढ़, सान ।

वाडव—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र की आग, [बडवागी (दे०)] ।

वाडवाग्नि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समुद्र की आग, बड़वानल ।

वाडवानल—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र की आग, [बड़वानल (दे०)] ।

वाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) वाटिका, फुलवाड़ी ।

वाण—(संज्ञा, पु०, सं०) धनुष की डोर से खींचकर फेंका जाने वाला एक धारदार फलयुक्त छोटा अस्त्र, तीर, शर, शायक, [बान (दे०)], एक दैत्य । " जे मृग रामवाण के मारे "—[रामा०] । " रावण-वाण महाबली, जानत सब संसार"—[रामा०] ।

वाणावली—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) तीरों की पाँति, वाणसमूह, शर-श्रेणी ।

वाणासुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा वलि का पुत्र, एक महाबलवान दैत्य (पुरा०) ।

वाणिज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वनिज, व्यापार ।

वाणिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०) ।

वाणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सरस्वती, गिरा, वचन, मुख से कहे सार्थक शब्द, [बानी (दे०)] । **मुहा०**—**फुरना**-वचनो का सत्य होना, मुख से शब्द उच्चरित होना । जीभ, रसना, वाक् शक्ति ।

वात—(संज्ञा, पु०, सं०) वायु, पवन, हवा, प्राणियों के पक्वाशय में रहने वाली वायु, जिसके बिगड़ने से कतिपय रोग उत्पन्न होते है, [बात (दे०)] । "ग्रह-गृहीत पुनि बात वश तापर बीछी मार"—[रामा०] ।—**चक्र**-(पु०) एक योग, बवंडर ।—**ज**-(वि०) वायु से उत्पन्न । "वातज रोग अनेक गनाये"—कु० वि० ।—**जात**-(पु०) वायु से उत्पन्न, हनुमान जी । "रघुवर-वरदूत वात जातं नमामि ।"—**ज्वर**-(पु०) एक ज्वर जो वात के प्रकोप के कारण उत्पन्न होता है ।—**प्रकृति**-(वि०) जिसकी वात-प्रधान प्रकृति हो । —**प्रकोप**-(पु०) वायु का बिगड़ना, वातविकार जिससे अनेक रोग होते है ।—**शूल**-(पु०) पेट की पीड़ा जो वायु विकार से होती है ।—**स्कंध**-(पु०) आसमान का वह हिस्सा जहाँ हवा गतिशील रहती है ।

वातापि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य जो आतापि का भाई था और जो अगस्त्य के द्वारा खाया गया था ।

वातायन—(संज्ञा, पु०, सं०) झरोखा, खिड़की, एक जनपद (रामा०) । "तथैव वातायन संनिकर्षं ययौ शलाकामपरा वहंती"—रघु० ।

वातावरण—(संज्ञा, पु०, सं०) पृथ्वी के चारों ओर का वायु का आच्छादन । वायु का घेरा ।

वातास—(संज्ञा, स्त्री०) हवा, बयार, पवन । "आज जाने कैसी बातास"—पंत ।

वातुल—(वि०, सं०) वात से ग्रस्त, गठिया से पीड़ित, वायु-प्रकोप से ग्रस्त, विशिष्ट ।

वातुला, वातूल—(संज्ञा, पु०, सं०) उन्मत्त, पागल, बावला । [**वातुला** (स्त्री०)] ।

वातुलि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चमगादड़ ।

वातोर्मी—(संज्ञा, पु०, सं०) ११ वर्ण का एक छंद या वृत्त (पिं०) ।

वात्सल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) स्नेह, प्रेम, माता-पिता का अपनी संतान पर प्रेम, तत्प्रेम-सूचक काव्य का एक रस (एक-मत) ।—**रस**-(पु०) एक भाग विशेष जिसे आचार्यगण दसवाँ रस मानते है ।

वात्स्यायन—(संज्ञा, पु०, सं०) न्याय दर्शन के भाष्यकार एक ऋषि, कामसूत्र के प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि ।

वाद—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी बात के निर्णयार्थ बातचीत, शास्त्रार्थ, विवाद, तर्क, दलील, किसी विषय के तत्वज्ञों द्वारा निर्णीत सिद्धांत, उसूल, बहस, झगड़ा ।—**प्रतिवाद**-(पु०) बहस, तर्क, शास्त्रार्थ, शास्त्रीय बात-चीत ।—**विवाद**-(पु०) शास्त्रार्थ, बहस ।

वादक—(संज्ञा, पु०, सं०) बाजा बजाने वाला, तर्क या शास्त्रार्थ करने वाला वक्ता ।

वादन—(संज्ञा, पु०, सं०) बाजा बजाना । [**वादनीय, वादित** (वि०)] ।

वादरायण—(संज्ञा, पु०, सं०) वेदव्यास ।

वादा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वाइदा] प्रतिज्ञा, इकरार । **मुहा०**—**खिलाफी करना**-कहने के प्रतिकूल कार्य करना ।—**रखाना (रखना)**-प्रतिज्ञा कराना, (पूर्ण करना), वचन लेना (पूरा करना) ।

वादानुवाद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वाद-विवाद, बहस।

वादित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) बाजा। "वादित्रादि समोद वादन-परा"—हरिऔध।

वादी—(संज्ञा, पु०) [सं० वादिन्] बोलने वाला, वक्ता, मुकदमा चलाने वाला, मुद्दई, फर्यादी, प्रस्ताव या पक्ष का आरोपक।—**प्रतिवादी**-(पु०) पक्षी, विपक्षी, प्रतिपक्षी, विवाद में दोनों पक्ष वाले।

वाद्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बाजा।

वाद्यक—(संज्ञा, पु०, सं०) संगीत-वाद्य।

वानप्रस्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) चार आश्रमों मे से तीसरा आश्रम, जिसमें मनुष्य गृहस्थी छोड़ कर वन में रहता है (प्राचीन आर्य)।

वानर—(संज्ञा, पु०, सं०) [बानर, बाँदर (दे०)], बंदर, दोहे का एक भेद (पिं०)। [**वानरी** (स्त्री०)]। "सपने वानर-लंका जारी"—[रामा०]।—**मुख**-(पु०) बंदर का मुख, बंदर का सा मुख वाला, नारियल।

वानरेन्द्र—(संज्ञा, पु०, सं०) वानरराज। "है वही माल्व पति वानरेन्द्र सुग्रीव प्रमन"—निराला।

वानवासिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चौपाई या १६ मात्राओं के छंदों का एक भेद (पिं०)।

वानायु—(संज्ञा, पु०, सं०) भारत के पश्चिम-उत्तर में स्थित एक देश-विशेष।

वानिक—(वि०, सं०) वन में रहने वाला।

वापस—(वि०, फ़ा०) लौटाया या फेरा हुआ, फिरता।

वापसी—(वि०) [फ़ा० वापस] फेरा या लौटा हुआ, वापस होने के संबंध का। (संज्ञा, स्त्री०) लौटने की क्रिया या भाव, प्रत्यावर्तन।—**टिकट**-(पु०) लौटने के लिए प्राप्त टिकट।

वापिका-वापी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा जलाशय, बावली, [बापी (दे०)]। "बन-बाग, उपवन, वाटिका, सर, कूप, वापी सोहहीं"—[रामा०]।

वाम—(वि०, सं०) [बाम (दे०)], बायाँ। [दक्षिण (विलो०)]। विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल, कुटिल, खल, दुष्ट। "जनक वाम दिसि सोह सुनैना"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०) ११ रुद्रों में से एक रुद्र, वामदेव, कामदेव, धन, वरुण, २४ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०), मकरंद, मंजरी, माधवी, [**वमता** (संज्ञा, स्त्री०) कुटिलता।—**देव**-(पु०) महादेव, शिव, एक वैदिक ऋषि। "वामदेव, वशिष्ठ मुनि आये"—[रामा०]।—**मार्ग**-(पु०) एक तांत्रिक मत, जिसमें मद्य मांसादि का प्रचार है।—**मार्गी**-(पु०) वाम मार्गानुयायी।—**स्वभाव**-(वि०) सुन्दर स्वभाव का।

वामक—(वि०, सं०) विरोध में जाने वाला, प्रतिकूल, निष्ठुर।

वामकी—(संज्ञा, पु०, सं०) जादूगरों की एक देवी।

वामन—(वि०, सं०) बौना, नाटा, छोटे शरीर का, ह्रस्व, खर्व, [बावन (दे०)]। "ह्रस्वः खर्वः तु वामनः"—अमर०। (संज्ञा, पु० सं०) विष्णु, शिवजी, एक दिग्गज, राजा बलि के छलने को विष्णु का पंचमावतार, १८ पुराणों में से एक पुराण। "प्राँशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः"—रघु०।

वामनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बौनी स्त्री, एक प्रकार की औरत, एक योनि का रोग।

वामा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्त्री, औरत, दुर्गा जी, [बामा (दे०)], १० वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)। "जो हठ करहु प्रेमवश वामा"—[रामा०]।

वामाचारी—(संज्ञा, पु०, सं०) तंत्र-मत का माननेवाला। वाममार्गी।

वामालक—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वामा के केश, वामा की जुल्फें। "यह कहाँ, कहाँ वामालक चुम्बित पुलक गंध"—निराला।

वामावर्त्त—(वि०, सं०) बाईं ओर का घुमाव या भौंरी, बायीं ओर से प्रारंभ होने वाली प्रदक्षिणा। [**दक्षिणावर्त्त** (विलो०)]।

वाय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वायु] बाई, बादी, [बाय (दे०)]। "नाग, जलौका, वाय"—कु०।

वायवीय—(वि०, सं०) वायु से सम्बन्धित। "बहु वायवीय वपुधारी"—हरिऔध।

वायव्य—(वि०, सं०) वायु-सम्बन्धी। (संज्ञा, पु०) उत्तर-पश्चिम का कोण, पश्चिमोत्तर दिशा, एक अस्त्र।

वायस—(संज्ञा, पु०, सं०) काक, काग, कौआ, [बायस (दे०)]। "वायस पालिय अति अनुरागा"—[रामा०]।

वायु—(संज्ञा, पु०, सं०) पवन, हवा, बात। "टूटै टूटनहार तरु, वायुहि दीजै दोष"—[रामा०]। —**कोण**-(पु०) पश्चिमोत्तर दिशा, वायव्य कोण।—**ग्रस्त**-(वि०) गठिया या वायु रोग से ग्रस्त।—**भक्षण**-(पु०) हवा पीकर रहने वाला, साँप।—**मंडल**-(पु०) पृथ्वी के चारों ओर ४५ मील ऊपर तक हवा का गोला, आकाश, अंतरिक्ष। —**लोक**-(पु०) एक लोक (पुरा०), आकाश।

वारंवार—(अव्य०, स्त्री०, सं०) बार बार, पुनः पुनः फिर फिर, लगातार।

वार—(संज्ञा, पु०, सं०) रोक, द्वार, दरवाजा, आवरण, अवसर, मरतबा, दाँव, बारी, दफा, बेरी, बेर, क्षण, दिन, दिवस। "जात न लागी वार" —[रामा०]। "एक वार जननी अन्हवाए"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, सं०) आघात, चोट, आक्रमण, धावा, हमला।—**नारी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेश्या, रंडी, पतुरिया।—**पार**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अवर+पार] पूर्ण विस्तार, नदी आदि के एक किनारे से दूसरे किनारे पर, अंत, संपूर्ण, सारा, इस छोर से उस छोर तक, आदि से अंत तक। (अव्य०) एक तट (पार्श्व) से दूसरे तक।—**मुखी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वार-वधू, रंडी, वेश्या। "वारमुखी को गान सुनि, लखि कै नृत्य महीप"—कु० वि०।

वारण—(संज्ञा, पु०, सं०) निषेध, किसी काम के न करने का आदेश, रोक, मनाही, कवच, बाधा, हाथी। "वारण वाजि सहये"—[रामा०]। छप्पय का एक भेद, [बारन (दे०)]। (वि०) वारित, वारक, वारणीय। "बारन उबारन में बार न लगाई है"—रत्ना०।

वारणावत—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राचीन काल का एक प्रदेश या जनपद जो गंगा जी के किनारे पर था।

वारणीय—(वि०, सं०) हाथी-सम्बन्धी। वर्जित करने योग्य, रोकने योग्य। "संग्राम नहीं है वारणीय"—गिरीश।

वारतिय*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वारस्त्री] वेश्या, रंडी। "वारतिया नाचे करि गाना"—शि० गो०।

वारद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वारिद] बादल।

वारदात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दुर्घटना, मारपीट, दंगा, फसाद, भीषण कांड, झगड़ा।

वारन*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० वारना] उत्सर्ग, निछावर, उतारा, बलि। (संज्ञा, पु०) [सं० वंदन] वंदनवार। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वारण] हाथी, रुकावट।

वारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० उतारना] उत्सर्ग या निछावर करना, उतारना। (संज्ञा, पु०) उत्सर्ग, निछावर। [**वारी** (स्त्री०)]। **मुहा०—वारने, वार, (वारी) जाना**-निछावर होना।

वारफेर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० वारना +फेरना] निछावर, उतारा, बलि, उत्सर्ग।

वारांगना—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वेश्या, रंडी, श्रेष्ठ और सुन्दर गुणवती स्त्री, स्वर्ग की स्त्री, अप्सरा। "वारांगनारूपभृत विलोल दृष्टयः"—[किरा०]।

वारांनिधि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समुद्र, महासागर। "वारांनिधिम् पश्य वरानने त्वम्"—कु० वि०।

वारा—(संज्ञा, पु०) [सं० वारण] किफायत, बचत, खर्च की कमी, भला। (वि०) किफायत, सस्ता। **मुहा०—वारे से (पर)**-किफायत से।

वाराणसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) काशीपुरी, बनारस शहर।

वारान्यारा—(संज्ञा, दे०, यौ०) [हि० वार+न्यारा] फैसला, निपटारा, झंझट या झगड़ा की शांति, किसी पक्ष में निश्चय।

वाराह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वराह] शूकर, [बाराह, बराह (दे०)]।

वाराही—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक योगिनी, आठ मातृिकाओं मे से एक। "वाराही नारसिंही च" —[स्फु०]।—**कंद**-(पु०) एक कंद, गेंठी (प्रान्ती०)।

वारि—(संज्ञा, पु०, सं०) तोय, पानी, नीर, जल। "वारि जो नपुंसक तो वारिज न चाहिए" —[स्फु०]।—**जात**-(संज्ञा, पु०, सं०) कमल, पंकज, "श्याम वारिजात के समान हैं शरीर-रंग" —शि० गो०।—**चर**-(पु०) जलजंतु, जलचर। —**ज**-(संज्ञा, पु०, सं०) कमल, मोती, शंख, कौड़ी, घोंघा, असली सोना। "वारिज सम मुख नेत्र अरु कर, पद कहैं सुजान"—[स्फुट०]।—**द**-(संज्ञा, पु०, सं०) बादल, मेघ। "विगति-वारिद-वृन्दमयं तमः"—माघ०। " मधु मानस

का बरसाती वारिद माला रोती थी"—महादेवी। —धर-(पु०) मेघ, बादल। "चिन्ता के हैं घिरे वारिधर"—रा० न० त्रि० ।—धि-(पु०) समुद्र, सागर, [वारिध (दे०)]। "वारिधि पार गयो मति धीरा"—[रामा०] ।—नाथ-(पु०) समुद्र, सागर ।—निधि-(पु०) समुद्र। "पूर्वापरौ वारिनिधि विगाह्य, स्थितः पृथिव्यारिव मान-दंडः" —[कुमार०] ।—वर्त्त*—(पु०) एक मेघ। —वाह-(पु०) मेघ ।—वाहन-(पु०) मेघ। —वाही-(वि०) पानी (जल ढोने वाला।— विहार-(पु०) जल-क्रीड़ा ।—शास्त्र-(पु०) फलित ज्योतिष का एक ग्रंथ जिसका प्रणयन गर्ग ने किया है।

वारित—(वि०, सं०) निवारित, रोका या मना किया गया।

वारियाँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० वारी] निछावर, बलि।

वारिस—(संज्ञा, पु०, अ०) उत्तराधिकारी, किसी के मरने पर जो उसकी संपत्ति का स्वामी हो।

वारींद्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समुद्र।

वारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) घर, मकान, गृह।

वारीफेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हि० वारना + फेरा] वारफेर, निछावर, बलि।

वारीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समुद्र। "जेहि वारीश बँधायो हेला"—[रामा०]।

वारुंड—(संज्ञा, पु०, सं०) नाव में पानी आ जाने पर उलीचने का पात्र।

वारुणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मद्य, मदिरा, शराब, वरुण की स्त्री, उपनिषद् विद्या, पश्चिम दिशा, गंगा-स्नान का एक पर्व। "वारुणीम् मदिराम् पीत्वा"—[भा० द०]।

वारुणीश—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु।

वारेंद्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजशाही प्रान्त के समीप का प्राचीन जनपद।

वार—(संज्ञा, पु०, सं०) जल, पानी। रत्तक।— धि-(पु०) समुद्र।—वाह-(पु०) बादल।

वार्णिक—(संज्ञा, पु०, सं०) लेखक।

वार्त्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बात-चीत, गप्प, जनश्रुति, अफ़वाह, हाल, वृत्तांत, समाचार, संवाद, विषय, बतकही (ग्रा०) मामला, वैश्यों की जीविका या वृत्ति जिसमें गोरक्षा, कृषि, व्याज (कुसीद) और वाणिज्य है। "आन्वीक्षिकी त्रयी, वार्त्ता दंड-नीतिश्च शाश्वती"—[टी० किरा०]।

वार्त्तायन—(संज्ञा, पु०, सं०) गुप्तचर, भेदिया, दूत।

वार्त्तारंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) रोजगार, व्यापार।

वार्त्तालाप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बातचीत।

वार्त्तिक—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी सूत्रकार के मत का प्रतिपादक ग्रंथ, किसी सूत्रग्रंथ का अनुक्त उक्त और दुरुक्त अर्थों का स्पष्टकारक वाक्य या ग्रंथ।—कार(पु०) कात्यायन।

वार्द्धक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बुढ़ापा, बुढाई, आधिक्य, बढ़ती।

वार्षिक—(वि०, सं०) वर्ष-सम्बन्धी, सालाना।

वार्षिकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक लता जिसका नाम त्रायमाणा है, किसी विशेष वर्ष से सम्बन्धित साहित्य।

वार्षिकोत्सव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सालाना जलसा।

वार्षी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वर्षा ऋतु।

वार्ष्णेय—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्णजी। "अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः"—[भ० गी०]।

वार्हस्पत्य—(वि०, सं०) बृहस्पति-सम्बन्धी। (पु०) बृहस्पति का अनुचर। नास्तिक। पुष्य नक्षत्र।

वालखिल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अंगुष्ठ मात्र शरीर वाले ऋषियों का समूह।

वाला—(संज्ञा, पु०, सं०) उपजाति छंद का एक भेद (पिं०)। (प्रत्य०, दे०, हि०) हिंदी भाषा में क्रिया के अंत मे लग कर कर्तृवाचक संज्ञा का अर्थ और पदार्थ या वस्तुवाचक के अंत में संयुक्त होकर संबंधवाचक संज्ञा का अर्थ देता है, जैसे करना से करने वाला और दूध से दूध वाला। शान—(वि०) ऊँची शान वाला।

वालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देखिए बालिका। मुद्रा। कान का एक आभूषण।

वालिद—(संज्ञा, पु०, अ०) बाप, पिता, जनक।

वालिदा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) माँ, माता।

वालुका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रेत, बालू, कपूर शाखा।

वाल्मीकि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक भृगु-वंशीय मुनि जिन्होंने आदि काव्य रामायण का निर्माण

किया। "वाल्मीकि मुनि-सिंहस्य कविता-वन-चारिण"—[स्फु०]।

वाल्मीकीय—(वि०, सं०) वाल्मीकि का निर्माण किया या बनाया हुआ, वाल्मीकि संबंधी। "वाल्मीकीय काव्यम्"—[स्फु०]।

वावदूक—(संज्ञा, पु०, सं०) वक्ता, विख्यात वक्ता, अति बोलने वाला, वाग्मी।

वावैला—(संज्ञा, पु०, अ०) रोना-पीटना, विलाप, शोरगुल।

वाशिष्ठ—(संज्ञा पु०, सं०) एक उपपुराण, (वि०, सं०) वशिष्ठ का, वशिष्ठ-संबंधी।

वाशिष्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गोमती नदी।

वाष्प—(संज्ञा, पु०, सं०) आँसू, भाफ, भाप। निरुद्ध वाष्पोदय सन्न कण्ठमुवाच कृच्छादित राज-पुत्री"—[किरा०]।—**मुख**-(वि०) जिसका चेहरा आँसुओं से सिक्त हो।—**यान** (**वाष्प यंत्र**)-(यौ०) रेल आदि भाप से चलने वाली गाड़ियाँ या कलें।

वाष्पाकुलित—(वि०, यौ०, सं०) वाष्प या आँसू से भरे।

वाष्पाच्छादित—(वि०, यौ०, सं०) भाप से घिरा हुआ। "नमित नयन नभ वाष्पाच्छादित"—पंत।

वासंत—(संज्ञा, पु०, सं०) कोयल। मलय, वायु, मैन-पुरुष। ऊँट। (वि०) वसंती, वसंत से सम्बन्धित। कार्यरत।

वासंतिक—(संज्ञा, पु०, सं०) विदूषक, भाँड़, नचैया, नाचने वाला, नर्त्तक। (वि०) वसंत, संबंधी। "वसंत वासंतिकता वनान्त की"—हरिऔध।

वासंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जुही (पुष्प) माधवी-लता, मदनोत्सव, दुर्गा, १४। वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

वास—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थान, निवास, घर, गृह, मकान, रहना, सुगंधित, खुशबू। "बरु भल वास नरक कर ताता"—[रामा०]।—**गेह**,—**भवन**-(पु०) अंतःपुर, शयनागार।

वासक—(संज्ञा, पु०, सं०) अडूसा, रूसा, वासा। "खाँसी सब विधि की हरै, ज्यों वासक को क्वाथ"—कुं० वि०।—**सजा**-(स्त्री०) वह नायिका जो सब प्रकार साज सजा कर नायक से मिलने की सब तैयारी से तैयार बैठी हो।

वासन—(संज्ञा, पु०, सं०) सुगंधित करना, वस्त्र वसन, वास, [बासन, बरतन (दे०)]। [**वासित**, **वासनीय** (वि०)]। "बदलत बाहन वासन सबै"—[रामचं०]।

वासना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रत्याशा, भावना, स्मृति, संस्कार, ज्ञान हेतु, कामना, इच्छा अभिलाषा। "जैसी मन की वासना तस फल होत लखात"—कुं० वि०। "यादृशी वासना यस्य तादृशी गतिमाप्नुयात।"

वासना वर्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०) कामना की भँवर। "वासना वर्त्त में डाल प्रखर"—पंत।

वासर—(संज्ञा, पु०, सं०) दिवस, दिन, [बासर (दे०)]। "बहुवासर बीते यहि भाँति"—[रामा०]।

वासव—(संज्ञा, पु०, सं०) शचीश, इन्द्र, पाकशासन; विड़ौजा। "शशांक निर्वापयितुं न वासवः"—रघु०।

वासवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्यास की माता, मत्स्यगंधा, सत्यवती।

वासा—(संज्ञा, पु०, दे०) वास, अडूसा, रूसा। **लो०**—"वासा पटोल त्रिफला द्राक्षा शम्याक निम्बजः"।

वासायनिक—(वि०, सं०) घर घर भ्रमण करने वाला।

वासित—(वि०, सं०) सुगंधित किया, वस्त्र से आच्छादित, बासी। "जाके मुख को वास ते, वासित होत दिगत"—[रामा०]।

वासिता—(संज्ञा, वि०, सं०) स्त्री, प्रमदा, आर्य्या छंद का एक भेद (पिं०)।

वासिल—(वि०, अ०) प्राप्त, पहुचाया हुआ, जो वसूल हुआ हो। **बाक़ी**—वसूल और बाकी (प्राप्त और शेष रहा) धन।—**बाकीनवीस**-तहसील का एक मुंशी जो प्रत्येक नम्बरदार से वसूल और बाक़ी रहे धन का हिसाब रखता है।

वासिष्ठ—(वि०, सं०) वसिष्ठ संबंधी।

वासी—(संज्ञा, पु०) [सं० वासिन्] रहने वाला, निवासी। "ये दोउ बंधु शंभु-उर-वासी"—[रामा०]।

वासुकि-वासुकी—(संज्ञा, पु०, सं०) ८ नागों मे से दूसरा नाग, शेषनाग। "औैर ज्यौं भ्रमतभूत वासुकी गणेशयुत, मानो मकरंद बुन्द-माल गंगा-

जल की"—राम० । "सेवासु वासुकिरयं प्रसितः सितः श्रीः"—नैषध० ।

वासुदेव—(संज्ञा, पु०, सं०) वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्ण, पीपल का पेड़ । "वासुदेव इति श्रीमान् तं पौराः प्रचक्ष्यते"—[भा० द०] ।

वासुदेवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शतावरी ।

वास्तव—(वि०, सं०) यथार्थ, सत्य, सचमुच, प्रकृति, वस्तुतः ।

वास्तविक—(वि०, सं०) यथार्थ, ठीक ठीक ।

वास्तविकता—(संज्ञा, स्त्री०) यथार्थता ।

वास्तव्य—(वि०, सं०) बसने या रहने के योग्य । (संज्ञा, पु०) आबादी, बस्ती ।

वास्ता—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लगाव, संबंध, ताल्लुक ।

वास्तु—(संज्ञा, पु०, सं०) डीह, जहाँ घर बनाया जावे, इमारत, मकान, घर । (स्त्री०) ।—**कला**,—**विज्ञान**–गृह निर्माण की विद्या ।—**पूजा**–(स्त्री०) नव गृह में प्रवेश करने से पूर्व वास्तु पुरुष की पूजा (भारत०) ।—**विद्या**–(स्त्री०) इंजिनियरी, इमारत-संबंधी ज्ञान जिस विद्या से होता है, इमारती-इल्म, गृह-निर्माण-शास्त्र ।—**शास्त्र**–(पु०) वास्तुविद्या, वास्तु-विज्ञान ।—**सम्पादन**–(पु०) भवन-निर्माण ।—**स्थापन**–(पु०) भवन-निर्माण ।

वास्ते—(अव्य०, अ०) हेतु, निमित्त, लिए, [काज (व्र०)] "कौन मरता है किसी के वास्ते" —स्फु० ।

वास्प—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बाष्प] भाफ, भाप, आँसू ।

वाह—(संज्ञा, पु०, सं०) बोझा ले जाने वाला, (यौगिक में) । "यत्तान्प्रयातु मनसोऽपि विमान-वाहः"—नैषध । (अव्य०, फ़ा०) धन्य, प्रशंसा या आश्चर्य-द्योतक शब्द, घृणा-सूचक शब्द ।—**वाह**–(अ०) धन्य-धन्य, खूब-खूब ।—**वाही**–(स्त्री०) साधुवाद, वाह-वाह होना, प्रशंसा होना ।

वाहक—(संज्ञा, पु०, सं०) बोझा ले जाने या ढोने वाला, गाड़ी आदि का खींचने वाला, पालकी, पीनस आदि का उठाने वाला, सारथी ।

वाहन—(संज्ञा, पु०, सं०) सवारी, [बाहन (दे०)] । "देवी को वाहन जानि कै आये पै देख्यौ सिंहासन सीतला-वाहन ।"

वाहवाही—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) प्रशंसा, साधुवाद, स्तुति, तारीफ ।

वाहिक—(संज्ञा, पु०, सं०) भारवाहक, गाड़ी नगाड़ा ।

वाहिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सैन्य, सेना, सेना का एक भेद जिसमें ८१ रथ और ८१ हाथी, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल रहते हैं । "बहुत वाहिनी संग"—[रामा०] ।

वाहियात—(वि०) [अ० वाही+यात फ़ा०] फजूल, नाहक, व्यर्थ, बुरा, खराब ।

वाही—(वि०, अ०) आवारा, मूर्ख, सुस्त, निकम्मा, ढीला, बुरा, दुष्ट ।

वाही-तबाही—(वि०, यौ०, अ०) आवारा, बेहूदा, बुरा, खराब, अंडबंड, बेसिर पैर का । (संज्ञा, स्त्री०) अंडबंड बातें, गालीगलौज ।

वाह्य—(क्रि० वि०, सं०) बाहर, अलग, जुदा, भिन्न, पृथक् ।

वाह्यांतर, वाह्याभ्यंतर—(वि०, यौ०, सं०) भीतर और बाहर का, भीतर-बाहिरी ।

वाह्येंद्रिय—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) बाहिरी विषयों को ग्रहण करने वाली पाँचों बाहर की ज्ञानेंद्रियाँ, नाक, कान, आँख, जीभ, त्वचा । "वाह्येंद्रिय वश भये भूलि कै, सारो ज्ञान-कहानी" —वासु० ।

वाल्हीक—(संज्ञा, पु०, सं०) कंधार (गांधार-प्राचीन) के समीप का एक प्राचीन प्रदेश, वहाँ का घोड़ा ।

विंजन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यंजन] व्यंजन, भोजन, वे अक्षर जो स्वरों के योग से बोले जाते है, [बिंजन (दे०)] ।

विंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वृन्द, विंदु] समूह, झुंड, पानी की बूँद, शून्य, नुकता, सिफर, [बिंद (दे०)] । [**विन्दुता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

विंदक*—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्ञाता, ज्ञात करने या जानने वाला ।

विंदा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) वृन्दा, एक स्त्री जो कृष्ण की दासी थी ।

विंदावन—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) वृन्दावन (सं०) ।

विंदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) विन्दु, शून्य, बेंदकी, टिकुली ।

विंदु—(संज्ञा, पु०, सं०) वारि-कण, अनुस्वार, पानी की बूँद, शून्य, बिन्दी, सिफर, [**जीरो** (अं०)]। बुंदकी, अनुस्वार। "एक अचम्भा मैं सुना कि विंदु मा सिंधु समाय"—कबीर वह। जिसका स्थान हो पर परिमाण कुछ न हो (रेखा०), परमाणु, अणु, कण, [बिन्दु (दे०)]।

विंदुमाधव—(संज्ञा, पु०, सं०) एक विख्यात विष्णु मूर्त्ति (काशी)।

विंदुर—(संज्ञा, पु०, सं०) [विंद] बूँद, बुंदकी।

विंदुसार—(संज्ञा, पु०, सं०) महाराज चंद्रगुप्त के पुत्र तथा सम्राट् अशोक के पिता (इति०)।

विंध*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विंध्य] विंध्य पहाड़, [विंध (दे०)]। "बिंध के बासी उदासी तपोव्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे"—[कवि०]।

विंध्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तर भारत को दक्षिण से अलग करने वाली एक पवत श्रेणी।—**कूट**-(पु०, सं०) विंध्याचल।—**वासिनी**-(स्त्री० स०) देवी की एक मूर्त्ति जो विध्याचल (मिर्जापुर जिले) मे है।—**वासी**-(वि०) विंध्य का निवासी।

विंध्याचल—(संज्ञा, पु०, सं०) भारत के मध्य मे पूर्व से पश्चिम तक फैली हुई एक पर्वत श्रेणी, विंध्यगिरि, विंध्याद्रि।

विंशक—(वि०, सं०) बीस, जिसमे बीस हिस्से हों।

विंशोत्तरी—(संज्ञा, पु०, सं०) मनुष्य के शुभाशुभ के विचार की एक रीति या ग्रहदशा (ज्यो० फा०)।

वि—(उप० सं०) यह शब्दों के पहले आकर, विशेष (जैसे—विवाद), वैरूप्य (जैसे—विविध), निषेध (जैसे—विक्रय) बिना आदि का अर्थ देता है।

विकंकत—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वन-वृक्ष जो कटाई, किंकणी या बंज कहाता है।

विकंपन—(संज्ञा, पु०, सं०) कंपन, काँपना। एक राक्षस।

विकंपित—(वि०, सं०) खूब काँपता हुआ।

विकंपी—(वि०, सं०) काँपता या हिलता हुआ।

विकच—(वि०, सं०) खिला या फूला हुआ। "विकच तामरसप्रतिमम् भवेत"—[लो० रा०]। "वो यत्नों से विकच उसका पुष्प ही एक लादे —हरिऔध।

विकट—(वि०, सं०) भीषण, भयानक, भयंकर, विशाल, टेढ़ा, कठिन, दुर्गम, वक्र, दुस्साध्य। "भृकुटी विकट मनोहर नासा"—[राम०]।

विकटानन—(संज्ञा, पु०, सं०) धृतराष्ट्र का एक आत्मज। (वि०) जिसकी सूरत भद्दी हो।

विकत्थन—(वि०, सं०) घमंडी, डींग मारने वाला।

विकर—(संज्ञा, पु०, सं०) रोग, बीमारी, व्याधि, तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ।

विकरार, विकरारा—(वि०) [सं० वि राल] विकराल, भयंकर भीषण, डरावना। "नाक कान बिनु भइ विकरारा"—[रामा०]। (वि०, दे०) [अ० फा० बेकरार] व्याकुल, बेचैन, विकल।

विकराल—(वि०, सं०) घोर, भयंकर, भीषण, [विकराला (दे०)]। "नाक-कान बिन भइ बिकराला"—[रामा०]।

विकर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्ण का एक आत्मज दुर्योधन का एक भ्राता। (वि०) बिना कान का, बहरा।

विकर्णिक—(संज्ञा, पु०, सं०) सारस्वत प्रदेश।

विकर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य, मदार, वह पुत्र जो अपने पिता से विद्रोह करके स्वयं राज्य का अधिष्ठाता बन जाता है।

विकर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) निषिद्ध, अनुचित्त कार्य। (वि०) दुराचारी।

विकर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) आकर्षण, आकर्षित करने की विद्या या एक शास्त्र, संकर्षण।

विकल—(वि०, सं०) बेचैन, व्याकुल, बेहोश, विह्वल, अपूर्व, कलाहीन, खंडित, [बिकल (दे०)]। [**विफलता** (संज्ञा, स्त्री०,)]। "खर-भर देखि विकल नर-नारी"—[रामा०]।

विकलांग—(वि०, यौ०, सं०) अंग-हीन, न्यूनांग, जिसका कोई अंग टूट या बिगड़ गया हो। "सब लोग मरे कुछ पंगु, व्रण, विकलांग, विवर्ण, विहीन के हैं—दिन०।

विकला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समय का एक अति अल्प भाग, एक कला का साठवाँ भाग, क्षण, नष्ट, [बिकला (दे०)]। "चारू चातुर्य हीनस्य सकला विकला कला"—स्फुट। [**विकल** (वि०, स्त्री०)]।

विकलाना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विकल] बेचैन या व्याकुल होना, घबराना, [बिकलाना (दे०)]।

विकल्प—(संज्ञा, पु०, सं०) भ्रम, धोखा, भ्रांति, एक बात ठहराकर फिर उसके विपरीत सोच-विचार, जो केवल शब्द मात्र का बोधक हो कोई वस्तु न हो, अवांतर कल्प, चित्त की पंचविधि वृत्तियों मे से एक, समाधि का एक प्रकार, किसी विषय मे कई विधियों का मिलाना, एक अर्थालंकार जिसमे दो विरुद्ध बातों के लिए यह कहा जाय कि या तो यह या वह होगा (अ० पी०)। "शब्द-ज्ञानानुपाती वस्तु शून्यो विकल्पः"—[यो० द०]। व्याकरण मे एक ही विषय के दो या कई पक्षों या नियमों में से एक का इच्छानुसार ग्रहण करना।

विकल्पित—(वि०, सं०) विभक्त, अनिश्चित, अव्यवस्थित। अनियमित।

विकल्मष—(वि०, सं०) पाप से रहित, निर्दोष।

विकसन—(संज्ञा, पु०, सं०) फूलना, खिलना, फूटना, प्रस्फुटन, विकचन।

विकसना—(क्रि० अ०, दे०, सं०) फूलना, खिलना, प्रफुल्लित होना, फूटना, [बिगसना (दे०)]। [**विकसाना, विकसावना, विकासना** (स० रूप)], [**विकसवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

विकसित—(वि०, सं०) प्रफुल्लित, प्रस्फुटित, खिला या फूला हुआ, विकचित।

विकस्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी विशेष बात की पुष्टि सामान्य बात से की जावे (अ० पी०)। (वि०) ऊँचा, तेज, बड़े जोर का। "विकस्वर-स्वरैः"—नैषध।

विकार—(संज्ञा, पु०, सं०) वास्तविक रूप रंग का बदल या बिगड़ जाना, दोष, अवगुण, बुराई, वासना, प्रवृत्ति, मनोवेग या परिणाम, उलट-फेर, रूपान्तर, परिवर्तन, विकृति। "पाइ नर तन रतन सों, नरन रत होय विकार मैं"—कुं० वि०।

विकारी—(वि०) [सं० विकारिन्] रूपान्तर या विकार वाला, अवगुणी, दोषी, जिसमें परिवर्त्तन या विकार हुआ हो, क्रोधादि मनोविकारों वाला, वह शब्द जिसमें लिंग, वचन, कारकादि से रूप-विकार हो (व्या०)।

विकाश—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाश, फैलाव, प्रसार, विस्तार, एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु का उन्नति, वृद्धि, प्रवर्धन, स्वाधार छोड़े बिना ही अत्यन्त विकसित होना कहा जावे (काव्य०), विकास।

विकास—(संज्ञा, पु०, सं०) खिलना, प्रस्फुटन, फूलना, प्रसार, फैलाव, विस्तार, भिन्न रूपान्तर के साथ किसी वस्तु का उत्पन्न होकर क्रमशः उन्नत होना या बढ़ना, एक नवीन सिद्धान्त जो सृष्टि और उसके सब पदार्थों को एक ही मूल तत्व से निकल कर उत्तरोत्तर उन्नत होता हुआ मानना है (पाश्चात्य)। "नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहि विकास यहि काल"। [**विकासन** (संज्ञा, पु०)]। **—वाद**–(पु०) जीव का प्रादुर्भाव एक ही मूल तत्व से होने वाला सिद्धान्त जिसे डारविन ने प्रति-पादित किया था। बन्दर से विकसित होकर मनुष्य वर्तमान रूप मे आज पहुचा है यह मत डारविन के विकासवाद के अन्तर्गत है।

विकासना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विकास] प्रगट करना, बढाना, निकालना, प्रस्फुटित करना, फुलाना, विकास करना या खिलाना, खिलाने में लगाना। (क्रि० अ०, दे०) खिलना, प्रगट होना, प्रफुल्लित होना।

विकासित—(वि०, सं०) विस्तरित, प्रदर्शित, प्रकाशित।

विकिर—(संज्ञा, पु०, सं०) चिड़िया, पक्षी।

विकिरण—(संज्ञा, पु०, सं०) तितर-बितर या बिखेरने का कार्य, फैलाना, फाड़ना, मारना।

विकीर्ण—(वि०, सं०) फैलाया या छितराया हुआ, बिखेरा हुआ, विख्यात, प्रसिद्ध।

विकुंचित—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सिमटा हुआ। सिकुड़ा हुआ।

विकुंठ*——(संज्ञा, पु०, सं०) वैकुंठ, स्वर्ग लोक, [**विकुंठा** (स्त्री०)]।

विकुंठित—(वि०, सं०) निर्बल, भोंडा।

विकृत—(वि०, सं०) कुरूप, भद्दा, बिगड़ा हुआ, किसी प्रकार के विकार से युक्त, अस्वाभाविक।

विकृतानन—(वि०) कुरूप।

विकृति——(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विकृत रूप, विकार, खराबी, बिगाड़, रोग, व्याधि, बीमारी, परिणाम, विकार-युक्त (विकार आने पर) मूल प्रकृति का रूप (सांख्य), परिवर्त्तन, मन का क्षोभ, मूल धातु से बिगड़ कर बना शब्द-रूप (व्या०), २३ वर्णों के छंद (पिं०)।

विकृष्ट— (वि०, सं०) आकृष्ट, खीचा हुआ।—**सीमांत**–(पु०) फैली हुई सीमा।

विक्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) पौरुष, पराक्रम, शूरता, गति, बल, शक्ति, सामर्थ्य, विष्णु। (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया।

विक्रमाजीत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विक्रमादित्य] विक्रमादित्य राजा, [विकरमाजीत (दे०)]।

विक्रमादित्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वर्तमान विक्रमीय संवत् के प्रवर्तक, उज्जैन के एक प्रतापी राजा, इनके सम्बन्ध में बहुत सी कहानियाँ हैं।

विक्रमाब्द—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विक्रमादित्य का चलाया हुआ उनके नाम का सम्वत, विक्रम-सम्वत्, विक्रमीय संवत्।

विक्रमी—(संज्ञा, पु०) [सं० विक्रमिन्] पराक्रमी, विक्रमवाला, विष्णु। (वि०) विक्रम का, विक्रम-संबंधी, विक्रमीय (सं०)।

विक्रय—(संज्ञा, पु०, सं०) बिक्री, बेचना।

विक्रयी—(संज्ञा, पु०, सं०) बेचने वाला, विक्रेता।

विक्रांत—(संज्ञा, पु०, सं०) वैक्रांतमणि, पराक्रमी, शूरवीर, व्याकरण में एक प्रकार का संधि जिसमें विसर्ग प्रकृति-भाव में (अविकृत) रहता है।

विक्रियोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपमालंकार का एक भेद जिसमें किसी विशेष उपाय या क्रिया का सहारा कहा जाय (काव्य०)।

विक्रेता—(संज्ञा, पु०, सं०) बेचने वाला। "तुम क्रेता, हम विक्रेता हैं, क्रेय हृदय का हीरा"—कु० वि०।

विक्षत—(वि०, सं०) घायल। "क्षत विक्षत होकर शरीर से"—मैथिली०।

विक्षिप्त—(वि०, सं०) छितराया या बिखरा हुआ, पागल, व्याकुल, विकल, जिसका चित्त ठिकाने न हो। (संज्ञा, पु०) चित्त के कभी स्थिर और कभी अस्थिर रहने की एक विशेष अवस्था (योग०)।

विक्षिप्तता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विकलता, पागलपन, विह्वलता।

विक्षुब्ध—(वि०, सं०) क्षोभयुक्त, विकलता अशांत।

विक्षेप—(संज्ञा, पु०, सं०) इधर-उधर या ऊपर को फेंकना, हिलाना, डालना। झटका देना, तीर चलाना, धनुष की प्रत्यंचा चढाना, [**संयम** (विलो०)]। फेंक कर चलाया जाने वाला एक अस्त्र, विघ्न, बाधा, असंयम, व्याकुलता, मन को भटकाना।—**लिपि**-(स्त्री०) एक प्राचीन लिपि-विशेष।

विक्षोभ—(संज्ञा, पु०, सं०) मन का चाँचल्य, क्षोभ, उद्विग्नता। [**विक्षोभता** (वि०)।

विख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विष] विष।

विखान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विषाण] सींग, [बिखान (दे०)]। "बिन बिखान अरु पूँछ को, मूरख बैल महान"—वासु०।

विखायँधि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कड़वी गंध।

विख्यात—(वि०, सं०) प्रसिद्ध, प्रख्यात, मशहूर।

विख्याति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रसिद्धि, ख्याति, मशहूरता।

विगंध—(वि०, सं०) दुर्गंधयुक्त, गंध-रहित।

विगत—(वि०, सं०) गत या बीता हुआ, पिछला, बीते हुए या अंतिम से पूर्व का, विहीन, रहित। "विगत त्रास भइ सीय सुखारी"—[रामा०]।—**ज्ञान**-(वि०) जिसकी बुद्धि का ह्रास हो गया हो।

विगर्हणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निन्दा, डाँट या फटकार, घुड़की। [**विगर्हणीय**, **विगर्हित** (वि०)]।

विगर्हित—(वि०, सं०) निन्दित, बुरा, डाँटा फटकारा गया।

विगलित—(वि०, सं०) गला या गिरा हुआ, ढीला, शिथिल, बिगड़ा हुआ। "विगलित सीस निचोल"—सूर०।

विगाथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आर्य्या छंद का एक भेद, विगाहा, उद्गीत (पिं०)।

विगुण—(वि०, सं०) निर्गुण, गुण-हीन।

विगोना—(क्रि० स०, ब्र०) छिपाना, लुकाना, दुराना।

विगोया—(वि०, दे०) छिपा, गुप्त, लुका। "चंचल नयन रहैं न विगोये"—[स्फु०]।

विगाहा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [वि० विगाथा] आर्य्या छंद का एक भेद, विगाथा, उद्गीत।

विग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) झगड़ा, कलह, लड़ाई, समर, युद्ध, अलग या दूर करना, विभाग, (व्या०), यौगिक या सामासिक पदों के एक या सब पदों को पृथक् करने की क्रिया (व्या०), वैरियों या विपक्षियों मे फूट पैदा करना, आकृति, मूर्त्ति, शरीर। "विग्रहानुकूल सब लच्छ लच्छ रिच्छ-बल"—[रामा०]।

विग्रही—(संज्ञा, पु०) [सं० विग्रहिन्] युद्ध या लड़ाई-झगड़ा करने वाला, झगड़ालू, लड़ाका, देही, शरीरी।

विघटन—(संज्ञा, पु०, सं०) तोड़ना, फोड़ना, विनष्ट या बरबाद करना, बिघटन। [**विघटाना** (स० रूप)], [**विघटना** (अ० रूप)]। "प्रकटी धनु विघटन परिपाटी"—[रामा०]। [**विघटनीय** (वि०)]।

विघटिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समय का अल्प मान, एक घड़ी का २३ वाँ भाग।

विघटित—(वि०, सं०) जो तोड़ा-फोड़ा गया हो, बिगड़ा या नष्ट किया हुआ।

विघन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विघ्न] विघ्न, बाधा, अड़चन, बिघन। "बिघन मनावहिं देव कुचाली"—[रामा०]।

विघर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) घिसने या रगड़ने का कार्य।

विघात—(संज्ञा, पु०, सं०) आघात, चोट। निवारण। विरोध। परित्याग।

विघातक—(संज्ञा, पु०, सं०) बाधक, मारक, नाशक, घातक।

विघाती—(वि०) [सं० विघातिन्] घातक, मारक, विघ्नकारी।

विघोषक—(वि०, सं०) घोषणा करने वाला, ध्वनि कारक। "मनुज एक विघोषक बाधकी प्रथम ही करके बहु ताड़ना—[वि० प्र०]।

विघ्न—(संज्ञा, पु०, सं०) बाधा, अड़चन। "लंबोदर गिरजा-तनय विघ्न-बिनाशनहार"—स्फु०।—**जित**-(पु०) गणेश जी।—**पति**-(पु०) गणेश जी।—**विनाशक**-(पु०) गणेश जी, विघ्न-विदारक।—**विनायक**-(पु०) गणेश जी।

विघ्नांतक—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश।

विघ्नित—(वि०, सं०) जिस कार्य में अड़चन डाली गयी हो।

विघ्नेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गणेश जी।

विघ्नहारी—(संज्ञा, पु०, सं०) विघ्न नाशक, गणेश जी, विघ्नहर।

विचक्षण—(वि०, सं०) प्रकाशित, चतुर, निपुण, पंडित, पारदर्शी, विद्वान्, बुद्धिमान, विचच्छन।

विचच्छन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विचक्षण] विद्वान्, बुद्धिमान, चतुर, निपुण।

विचरण—(संज्ञा, पु०, सं०) घूमना फिरना, चलना, पर्यटन करना, [विचरन (दे०)]।—**शील**-(वि०) भ्रमण करने वाला।

विचरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विचरण] घूमना फिरना, चलना, पर्यटन करना।

विचरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विचरण] घूमना-फिरना, चलना, पर्यटन करना, [बिचरना (दे०)]। "कौन हेतु बन बिचरहु स्वामी"—[रामा०]।

विचरनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विचरण] घूमना फिरना, चलना, पर्य्यटन।

विचरित—(वि०, सं०) पर्यटित, भ्रमण किया हुआ। (पु०) पर्यटन, भ्रमण।

विचल—(वि०, सं०) अस्थिर, चंचल, स्थान से हटा हुआ। "निज दल बिचल सुना जब काना"—[रामा०]। "चलो चलु चलो चलु बिचलु न बीच ही मैं"—पद्मा०।

विचलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घबराहट, चंचलता, अस्थिरता, भगदार।

विचलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विचलन] निज स्थान से हट जाना, चल जाना, घबराना, अधीर होना, प्रण, प्रतिज्ञा या संकल्प पर दृढ़ता से स्थिर न रहना, [बिचलना (दे०)]। [**बिचलाना विचलावना** (स० रूप)], [**विचलवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

विचलित—(वि०, सं०) विकलित, चंचल, अस्थिर, प्रण या सकल्प से हटा हुआ, घबराया हुआ, व्याकुलित बेचैन।

विचार—(संज्ञा, पु०, सं०) भाव, मन का सोचा, समझा या निश्चित किया हुआ, भावना, चित्त मे उठी बात, ख्याल, मुकदमें की सुनवाई और फैसला, निर्णय, मत, [विचार (दे०)]। "विचार दृक् चारदृगप्य वर्तत"—नैषध।—**मूढ**-(वि०, यौ०, सं०) मूर्ख, जो विचार न कर सके। "विचार-मूढ प्रतिभासि मे त्वम्"—रघु०।—**पति**-(पु०) न्यायाधीश, न्यायकर्त्ता, विचारक।—**शक्ति**-(स्त्री०) सोचने या अच्छा-बुरा जानने की शक्ति, विवेक, समझने की शक्ति, बुद्धि, ज्ञान, समझ।—**शास्त्र**-(पु०) मीमांसा शास्त्र।—**शील**-(संज्ञा, पु०, सं०) विचारवान्, ज्ञानी, समझदार, बुद्धिमान। **शीलता**-(संज्ञा, स्त्री० सं०) बुद्धिमत्ता।—**स्थल**-(पु०) किसी विषय-विशेष पर विचार करने का स्थान। न्यायालय। तर्क।

विचारक—(संज्ञा, पु०, सं०) विचारने या सोचने वाला, विचार करने वाला, निर्णय करने वाला, न्यायाधीश, न्यायकर्त्ता। [**विचारिका** (स्त्री०)]।

विचारणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विचार करने की क्रिया या भाव।

विचारणीय—(वि०, सं०) चिन्त्य, विचार करने योग्य, चिन्तनीय, सोचनीय, संदिग्ध, प्रमाणित करने योग्य।

विचारना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विचार + ना प्रत्य०] सोचना, समझना, चिंतन या विचार, करना, पता लगाना, पूछना, खोजना, ढूंढ़ना, विचारना। "बुरे लगै सिख के बचन, हृदय बिचारो आप"—वृं०। [**विचराना, विचरवाना** (स० रूप)], [**विचरवाना** (प्रे० रूप)]।

विचारवान्—(संज्ञा, पु०) [सं० विचारवान्] विचारशील, ज्ञानी, बुद्धिमान, पंडित। "विचारवान् पाणिन एक सूत्रेस्वान युवानं मघवानमाह"—[स्फु०]।

विचारालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) न्यायालय, कचहरी।

विचारित—(वि०, सं०) निर्धारित, निर्णीत, व्यवस्थापित।

विचारी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विचारिन्] विचार करने वाला, ज्ञानी, समझदार। (वि०, स्त्री०, दे०) [हि० बिचारा] दुखिया, पराधीन, विवश, [बिचारी, बेचारी (दे०)]। "ज्यों दसनन-मह जीभ विचारी"—[रामा०]।

विचार्य्य—(वि०, सं०) विचारणीय, विचार करने योग्य। (पू० क्रि०, सं०) विचार कर।

विचिकित्सा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संदेह, भ्रम, संशय।

विचित्र—(वि०, सं०) अनेक रंगों वाला, अनोखा, अद्भुत, विलक्षण, चकित करने वाला या विस्मयकारी। [**विचित्रा** (स्त्री०)]। [**विचित्रता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "दैवो विचित्रा गतिः"—स्फुट। (संज्ञा, पु०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी अभीष्ट फल की प्राप्ति के लिए किसी उलटे प्रयत्न के करने का कथन हो (काव्य०)।—**चरित्र**-(वि०) अद्भुत आचरण वाला।—**वीर्य्य**-(पु०) चंद्रवंशीय राजा शांतनु के पुत्र।

विचित्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रंगा-विरंगा होने का भाव, विलक्षण होने का भाव, वैचित्र्य, विलक्षणता, वैलक्षण्य।

विचित्रित—(वि०, सं०) विभिन्न रंगों में प्रदर्शित, रंग विरंगा।

विचुम्बित—(वि०, सं०) चूमा हुआ। स्पर्श किया हुआ। आलिंगित। "होंठ से उसके विचुम्बित प्यालियों को रिक्त करते"—बच्चन।

विचेतन—(वि०, सं०) चेतना-रहित, विवेकहीन।

विच्छित्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अलगाव, विच्छेद, त्रुटि, कमी। शरीर को रंगों से रँगना। कविता में यति। नायिका का स्वल्प शृंगार से नायक के मोहने की चेष्टासूचक एक हाव (सा०) वैचित्र्य पूर्ण वक्रोक्ति (काव्य०)।

विच्छिन्न—(वि०, सं०) विभक्त, विलग, भिन्न, जुदा, छेद या काट कर पृथक् किया। (संज्ञा, पु०, सं०) चारों क्लेशों की वह दशा जब बीच में उनका विच्छेद हो जाये (योग०)।

विच्छेद—(संज्ञा, पु०, सं०) टुकड़े-टुकड़े करना, क्रम का टूट जाना, नाश, वियोग, बिछोह, विरह, छेद या काट कर पृथक् करने की क्रिया, कविता की यति। [**विच्छेदक, विच्छेदित** (वि०)]।

विच्छेदन—(संज्ञा, पु० सं०) काट कर अलग करना, नष्ट करना, खंडन करना। [**विच्छेदनीय, विच्छेदित** (वि०)]।

विछलना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० फिसलना] फिसलना, रपटना, बिछलना, बिछुलना (ग्रा०)।

विछेद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विच्छेद] विच्छेद।

विछोई*†——(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वियोगी] वियोगी, बिछोही, [बिछोई (दे०)]।

विछोह*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विच्छेद] वियोग, विच्छेद, जुदाई, विरह, बिछोह। "मित्र मिले तें होत सुख, पै बिछोह दुख-भूरि"—कुंज वि०।

विजड़ित—(वि०, दे०) जड़ बनाया हुआ। "अंग अलसित प्राण विजड़ित"—महादेवी।

विजन—(वि०, सं०) निर्जन, निराला, एकांत। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यंजन] पंखा, बिजना।

विजनता—(संज्ञा, पु०, सं०) एकान्तता।

विजना*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विजन] एकांत, निराला, अकेला। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यंजन] [बिजना, बीजना (दे०)] पंखा, बिनवाँ, बेनवाँ (ग्रा०)।

विजयंत—(संज्ञा, पु०, सं०) इंद्र।

विजयंतिका—(संज्ञा, पु०, सं०) एक योगिनी।

विजय—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विवाद या युद्ध में जीत, जय; [बिजय, बिजै (दे०)], विष्णु के एक पार्षद, एक छंद या मत्तगयंद सवैया (केश०)। "न कांक्षे विजयं कृष्ण"—[भ० गी०]।—**नगर**

—(पु०) कर्णाटक के अन्तर्गत स्थित एक नगर।—**पताका**–(स्त्री०) जीत होने पर उड़ाई जाने वाली पताका, जय-ध्वजा, जय-केतु, जीत का झंडा। "विजय-पताका राम की, लंका पै फहराय"—कुं० वि०।—**यात्रा**–(स्त्री०) देश जीतने के विचार से की गई यात्रा, [विजयजात्रा (दे०)]।—**लक्ष्मी, —श्री**–(स्त्री०) जयलक्ष्मी, विजय की प्रधान देवी जिसकी दया ही पर विजय का होना निर्भर है, जयश्री।

विजयक—(वि०, सं०) विजय-प्राप्ति में दक्ष।

विजया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, सिद्धि, भाँग, भंग। "या विजया के सकल गुण, कहि नहिं सकत अनंत"—स्फु०। श्रीकृष्ण जी की माला, १० मात्राओं का एक छंद, ८ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०), विजयदशमी।—**दशमी**–(स्त्री०) आश्विन या कार शुक्ल (सुदी) दशमी (हिंदुओं के त्यौहार या उत्सव का दिन)।

विजयानंद—(संज्ञा, पु०, सं०) संगीत में ताल का एक प्रकार विशेष।

विजयिनी—(वि०) विजय करने वाली। "विजयिनी, सहसा हुई तू हाय अंतर्धान"—वचन।

विजयी—(संज्ञा, पु०) [सं० विजयिन्] विजेता, जीतने वाला, जय प्राप्त। [**विजयिनी** (स्त्री०)]। "सो विजयी, विनयी, गुणसागर"—[रामा०]।

विजयोत्सव—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विजय दशमी का उत्सव, विजय होने का उत्सव, जयोत्सव।

विजात—(वि०, सं०) कुजात, वर्णसंकर। (संज्ञा, पु०, सं०) सखी छंद का एक भेद (पिं०)।

विजाति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दूसरी जाति। (वि०) दूसरी जाति का।

विजातीय—(वि०, सं०) दूसरी जाति का।

विजानना—(क्रि० स०, हि०) विशेष रूप से जानना।

विजानु—(संज्ञा, पु०, सं०) तलवार चलाने के ३२ हाथों में से एक हाथ, अखवा हाथ।

विज़ारत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) वज़ीर या मंत्री का पद या धर्म्म अथवा भाव, मंत्रित्व।

विजिगीषु—(वि०, सं०) जयकांक्षी, जयाभिलाषी, विजय चाहने वाला, विजयेच्छुक। [**विजिगीषा** (संज्ञा, स्त्री०)]। "होते हैं धनजै विजिगीषु महाभारत के"—[अनू०]।

विजित—(संज्ञा, पु०, सं०) जो जीत लिया गया हो, जीता हुआ देश, हारा हुआ, पराजित। "मुझ विजित जरा का, एक आधार जो है"—हरिऔध।

विजितेंद्रिय—(वि०, सं०) जिसने अपनी समस्त इन्द्रियों पर विजय प्राप्ति कर लिया हो।

विजितेय—(वि०, सं०) जिसे अपने काबू में करना हो।

विजेता—(संज्ञा, पु०) [सं० विजेतृ] जीतने वाला, विजयी, जिसने विजय पाई हो।

विजै*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) देखिए—विजय।

विजैसार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विजयसार साल जैसा एक बड़ा वृक्ष।

विजोग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वियोग] वियोग।

विजोगी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वियोगी] वियोगी।

विजोर—(वि०, दे०) [हि० वि+ज़ोर फ़ा०] बेज़ोर, कमज़ोर, निर्बल, निर्बल।

विजोहा, विज्जोहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विमोह] दो रगण वाला एक वर्णिक छंद, विमोहा। [जोहा (दे०)]।

विज्जु—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विद्युत्] बिजली। "फैलि गई सब ओर विज्जु कैसी उजियारी"—रत्ना०।

विज्जुलता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० विद्युत् + लता] बिजली, विद्युल्लता।

विज्जोहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विमोहा] जोहा, विमोहा, विजोहा छंद (पिं०)।

विज्ञ—(वि०, सं०) पंडित, विद्वान्, बुद्धिमान, ज्ञानी जानकार। [**विज्ञता**(संज्ञा, स्त्री०)]।

विज्ञप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विज्ञापन, इश्तहार, सर्वसाधारण को सूचित करने या जताने की क्रिया।

विज्ञाता—(संज्ञा, पु०, सं०) समझने या जानने योग्य।

विज्ञान—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी विषय की ज्ञात बातों का शास्त्र रूप में स्वतन्त्र संग्रह, सांसारिक पदार्थों का ज्ञान, तत्त्व-विद्या, पदार्थ ज्ञान, वस्तु-विज्ञान या शास्त्र, पदार्थ, आत्मा, ब्रह्म, निश्चयात्मक बुद्धि, अविद्या या माया नाम की वृत्ति।—**मयकोष**–(पु०) बुद्धि और ज्ञानेंद्रियों का समूह (वेदा०)। —**वाद**–(पु०) ब्रह्म और जीव की एकता का

प्रतिपादक सिद्धांत, आधुनिक विज्ञान की बातों का मानने वाला सिद्धांत।—**वादी**-(वि०) विज्ञान-वाद के सिद्धान्त में विश्वास रखने वाला।

विज्ञानी—(संज्ञा, पु०) [सं० विज्ञानिन्] बड़ा बुद्धिमान, किसी विषय का विशेष ज्ञाता, बड़ा विद्वान, वैज्ञानिक, विज्ञान-शास्त्र का ज्ञाता।

विज्ञापक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रचारक, समझाने-बतलाने वाला।

विज्ञापन—(संज्ञा, पु०, सं०) सूचना देना, इश्तहार, जानकारी कराना, सूचनापत्र, लोगों को किसी बात के जताने का लेख।—**पुस्तिका**-(स्त्री०) वह छोटी पुस्तक जिसमे विक्रय की जाने वाली वस्तुओं का परिचय दिया जाता है, सूचीपत्र।

विज्ञापनीय—(वि०, सं०) प्रचार या विज्ञापन के योग्य।

विज्ञापित—(वि०, सं०) विज्ञप्त, सूचित, प्रचारित।

विट—(संज्ञा, पु०, सं०) लंपट, कामी, वेश्यागामी, कामुक, चालाक, धूर्त, धनी, वैश्य विषयादि में सारी सम्पत्ति खोने वाला धूर्त स्वार्थी नायक (साहि०) मल, विष्ठा, बाट। "न नटः न विटः न च गायनः"—[भ० श०] "नट विट भट गायन नहीं"—वि० सिं०।—**लवण**-(पु०) सोंचर या सांचर नमक।

विटप—(संज्ञा, पु०, सं०) पेड़, वृक्ष, नवीन कोमल शाखा या पत्ते, कोंपल, [बिटप (दे०)]। "मोह बिटप नहिं सकत उपारी"—[रामा०]।

विटपी—(संज्ञा, पु०, सं०) पेड़, वृक्ष।

विट्ठल—(संज्ञा, पु०, दे०) विष्णु की एक मूर्त्ति (दक्षिण भारत)।—**नाथ**,—**विपुल**-वल्लभाचार्य के शिष्य।

विडंबना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चिढ़ाने को किसी की नक़ल करना या उतारना, हँसी उड़ाना, चिढ़ाना, उपहास, मजाक करना, दुर्दशा, [बिड़ंबन (दे०)]। **विडंबनीय, विडंवित** (वि०)]। केहिकर लोभ बिडंबना, कीन्ह न यहि संसार"—[रामा०]। "मेरे भुजदंडन को बड़ी है बिडंबना" केशव।

विडर—(क्रि० वि०, दे०) पृथक्, विलग, दूर-दूर पर।

बिडरना*†—(क्रि० अ०, दे०) भागना, दूर होना, दौड़ना, बिखरना, छितरना, तितर-बितर, विदीर्ण होना, फैल जाना, बिडरना। [**बिडराना** (स० रूप)], [**बिडरवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

विडारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० बिडरना] [बिडारना (दे०)], छितराना, बखेरना, भगाना, तितर-बितर करना, दौड़ाना, विदीर्ण या नष्ट करना। "जैसे सिंह बिड़ारै गाय।"—[आ० खं०]।

विडाल—(संज्ञा, पु०, सं०) बिल्ला, बिल्ली।

विडालाक्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक राजा (महा०)। (वि०, सं०) कंजा, बिल्ली की-सी आँख वाला।

विडौजा—(संज्ञा, पु०) [सं० विडौजस्] इन्द्र। "साधु विजयस्व विडौजा"—[नैषध]।

वितंड—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का ताला, हाथी।

वितंडा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पर पक्ष को दबाते हुए अपने पक्ष की स्थापना करना, (न्याय०) व्यर्थ के लिये झगड़ा या कहा-सुनी।—**वाद**-(पु०) व्यर्थ की दलील द्वारा संघर्ष को सहारा देना।

वितंत*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वितंत्र] बिना तार का बाजा।

वितंत्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वीणा के बेमेल तार जिसकी आकृति भिन्न-भिन्न होती है।

वित*—(वि०, दे०) [सं० विद्] ज्ञाता, चतुर, जानकार, निपुण। (संज्ञा, पु०, दे०) सामर्थ्य धन, शक्ति, वित्त, [बित्त (दे०)]। "सुत, वित, नारि, भवन, परिवारा"—[रामा०]।

वितत—(वि०, सं०) चौड़ा, विस्तृत, झुकाया हुआ, फैला हुआ। (पु०) तारवाले वाद्य जैसे वीणा, सितार।

विततान*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० व्यथा] बेचैन या बिकल होना।

वितति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विस्तार, फैलाव। झुंड, समूह।

विततोत्सव—(वि०, सं०) जिसने समारोह का आयोजन किया हो।

वितथ—(वि०, सं०) व्यर्थ, मिथ्या। भरद्वाज। —**प्रयत्न**-(वि०) जिसके प्रयत्न व्यर्थ हों।—**वादी**-(वि०) झूठ कहने वाला।

वितथ्य—(वि०) असत्य, मिथ्या।

वितद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) झेलम नदी।

वितनु—(वि०, सं०) अत्यन्त सूक्ष्म, बारीक सार-रहित। सुन्दर।

वितपन्न*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्युत्पन्न] प्रवीण, कार्य कुशल, दक्ष, निपुण, पटु। (वि०) विकल, घबराया हुआ।

वितरक—(संज्ञा, पु०) [सं० वितरण] बाँटने वाला।

वितरण—(संज्ञा, पु०, सं०) अर्पण या दान करना, बाँटना, देना, [बितरन (दे०)]। [**वितरणीय**, **वितरित** (वि०)]।

वितरन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वितरण] बाँटने वाला, बाँटना, [बितरन (दे०)]।

वितरना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० वितरण] बाँटना, [बरताना (दे०)]। [**वितराना**, **बितरवाना** (सं० रूप)]।

वितरिक्त*—(अव्य०, दे०) अतिरिक्त, अलावा, सिवाय, व्यतिरिक्त।

वितरित—(वि०, सं०) बाँटा हुआ।

वितरेक*—(क्रि० वि०, दे०) [सं० व्यतिरिक्त] अतिरिक्त, सिवा, छोड़ कर, विरुद्ध, अलावा।

वितर्क—(संज्ञा, पु०, सं०) तर्क पर होने वाला दूसरा तर्क, संदेह, संशय, एक अर्थालंकार जिसमें संदेह या वितर्क का कथन होता है।

वितर्कित—(वि०, सं०) जिस पर वाद-विवाद किया गया।

वितर्क्य—(वि०, सं०) विचारणीय, संदिग्ध।

वितल—(संज्ञा, पु०, सं०) सात पातालों में से तीसरा पाताल (पुरा०)।

वितस्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) झेलम नदी।

वितस्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बित्ता, बीता।

वितान—(संज्ञा, पु०, सं०) मंडप, चँदोवा, खेमा, शामियाना, संघ, समूह, रिक्त या शून्य स्थान, कुंज, विस्तार, यज्ञ, सम (गण) और दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)। "सो बितान तिहुँ लोक उजागर"—"बरन बरन बर बेलि-बिताना"—[रामा०]।

वितानना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० वितान] चँदोवा या शामियाना तानना, तानना, चढ़ाना।

वितिक्रम*—(संज्ञा, पु०, दे०) [व्यतिक्रम] क्रमशः न होने वाला, उलट-फेर, विघ्न, बाधा। [**यथाक्रम** (विलो०)]।

वितीत*†—(वि०, दे०) [सं० व्यतीत] बीता या गत हुआ, [बितीत (दे०)]। "सीत बितीत गई सिसियातहि"—नरो०।

वितीर्ण—(वि०, सं०) दूरवर्त्ती, पूर्ण किया हुआ, पराभूत, परित्यक्त।

वितुद—(संज्ञा, पु०, सं०) भूतों की एक योनि।

वितुंड—(संज्ञा, पु०) [सं० वि+तुंड] हाथी। "भूषण वितुंड पर जैसे मृगराज है।"

वितु*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वित्त] सामर्थ्य, धन, संपत्ति, [वित, बित्त (दे०)]। "बहु वितु मिलै अनीति तें तौ कदापि जनि लेहु"—वासु०।

वितृष्णा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संतुष्टि, विरक्ति। इच्छा की प्रबलता।

वित्त—(संज्ञा, पु०, सं०) संपत्ति, धन, लक्ष्मी। "हौं तो दीन वित्त-हीन कैसे दूसरी गढ़ाइ हौं"—कवि०।—**कोष**-(पु०) थैली जिसमें रुपया, पैसा रखा जाता है।—**पति**, **नाथ**-(पु०) कुबेर, वित्ताधिपति, वित्तेश। "वित्तपति सों छीन लीन्हौ शुभग नभ को यान, वित्तनाथहु जेठ है कै हार लीन्हो मान"—मन्ना०।—**हीन**-(पु०) कंगाल, निर्धन, दरिद्र। "वित्तहीन नर को कहूँ, आदर कतौं न होय"—[नीति०]।

वित्तागम—(संज्ञा, पु०, सं०) धन का आगम, धनागम का साधन।

वित्तार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) होशियार आदमी, निपुण व्यक्ति।

वित्रासित—(वि०, सं०) भयभीत किया हुआ।

विथक—(संज्ञा, पु०) [हिं० थकना] पवन।

विथकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० थकना] थक जाना, शिथिल या सुस्त हो जाना, मोह या आश्चर्य से चुप होना। [**विथकाना** (स० रूप)]।

विथकित*—(वि०, दे०) [हिं० थकना] क्लान्त, थका हुआ, शिथिल, चकित या मोहित होकर मौन हुआ। "विथकित हाय है अनीहू अकुलानी हैं"—अ० व०।

विथरना—(क्रि० अ०, दे०) बिखरना।

विथराना, **विथारना***—(क्रि० स०, दे०) [सं० वितरण] छितराना, फैलाना, छिरकाना, बिखारना, बिखराना, बिथरावना। [**बिथरवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

विथा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० व्यथा] व्यथा, पीड़ा, रोग, व्याधि, [बिथा (दे०)]। "बिरह-बिथा जल परस बिन, बसियत मों हिय-ताल"—वि०।

विथित*—(वि०, दे०) [सं० व्यथित] दुखित, पीड़ित, [बिथित (दे०)]।

विथुरना—(क्रि० स०, दे०) बिखरना, फैलना, फूटना, बिथुरना। [**बिथुरा** (वि०)], [**बिथुरी** (स्त्री०)]।

विथोरना, बिथोरना—(क्रि० स०, दे०) अलग या पृथक् करना। "बारन बिथोरि थोरि थोरि जो निहारै नैन"।

विदग्ध—(संज्ञा, पु०, सं०) चतुर, विद्वान्, कुशल, दक्ष, चालाक, रसिक, भावुक।

विदग्धता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चातुरी, विद्वत्ता, निपुणता, चालाकी, रसिकता।

विदग्धा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऐसी परकीया नायिका जो चातुरी या चालाकी से पर-पुरुष को मोहित या अनुरक्त करे।

विदमान*—(अव्य०, दे०) [सं० विद्यमान] विद्यमान, उपस्थित, प्रस्तुत।

विदरना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विदारण] बिदीर्ण होना, फटना। [**विदारना** (स० रूप)]। (क्रि० स०, दे०) फाड़ना, विदीर्ण करना।

विदर्भ—(संज्ञा, पु०, सं०) बरार देश का पुराना नाम। "यमवाप्य विदर्भभूः प्रभुम्"—नैषध।—**पुरंदर**—(पु०) राजा भीम, दमयन्ती के पिता। "धृतदरः स बिदर्भपुरंदरः"—नैषध।—**राज**—(पु०) दमयन्ती के पिता, विदर्भनरेश, भीम।

विदर्भाधिपति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा भीम, विदर्भनरेश, विदर्भनाथ, विदर्भनायक। "तं विदर्भाधिपतिः श्रीमान्"—नैषध०।

विदल—(संज्ञा, पु०, सं०) विभाग, अलगाव, पार्थक्य। टहनी। मिष्ठान्न। अनार का छिलका। मटर की दाल।

विदलन—(संज्ञा, पु०, सं०) मलने, दलने या दबाने आदि का कार्य, नष्ट करना, फाड़ना। [**विदलित, विदलनीय** (वि०)]।

विदलना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विदलन] दरना, दलित या नष्ट करना, दबाना, मलना। [**विदलाना** (स० रूप)], [**विदलवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

विदलित—(वि०, सं०) रौंदा हुआ, दलन किया हुआ, मला हुआ, रगड़ा हुआ, फैला हुआ।

विदा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० विदाय] कहीं से चलने की अनुमति या आज्ञा, प्रस्थान, रुखसत, प्रयाण। **मुहा०—माँगना**-प्रयाण की आज्ञा माँगना।—**देना**-प्रस्थान की आज्ञा देना।—(दीप)—**होना** (**करना**)-(दीप) बुझना (बुझाना)।

विदाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० विदा+ई प्रत्य०] प्रस्थान की आज्ञा, विदा की आज्ञा या अनुमति, विदा के समय दिया गया धन, प्रस्थान, प्रयाण, बिदाई।

विदारक—(वि०, सं०) दरने या चीरने वाला, फाड़ डालने वाला, विदीर्ण या विनाश करने वाला, दुःखद।

विदारण—(संज्ञा, पु०, सं०) फाड़ना, चीरना, मार डालना, नष्ट करना, [बिदारन (दे०)]। [**विदारित, विदारणीय** (वि०)]।

विदारना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० विदरना] फाड़ना, चीरना, [बिदारना (दे०)]।

विदारनहार—(वि०) [हिं० विदारना] चीरने या फाड़ने वाला। "कमल चीरि निकरै न अलि, काठ-विदारनहार"—[नीति०]।

विदारित—(वि०, सं०) चीरा-फाड़ा हुआ।

विदारी—(वि०) [सं० विदारिन्] फाड़ने या चीरने वाला।—**कंद**-(पु०) एक कंद भुइँ-कुम्हड़ा (ग्रा०)।

विदाहक—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथ-पाँव की जलन या वह जलन जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होती है।

विदाही—(संज्ञा, पु०) [सं० विदारिन्] पेट मे जलन उत्पन्न करने वाले पदार्थ।

विदिक, विदिश—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दो दिशाओं के बीच का कोण। "दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाँ"—[अमर०]।

विदित—(वि०, सं०) समझा या जाना हुआ, ज्ञात, मालूम, [बिदित (दे०)]। "मोर सुभाव बिदित नहिं तोरे"—[रामा०]।

विदिश, विदिशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दो दिशाओं के बीच का कोना, दिक्कोण। वर्तमान, भेलसा शहर (प्राचीन)।

विदीप्त—(वि०, सं०) चमकीला, प्रकाशमान।

विदीर्ण—(वि०, सं०) बीच से चीड़ा या फाड़ा हुआ, निहत, मार डाला हुआ, [बिदीरन (दे०)]। "फलस्तन-स्थान विदीर्ण रागिहृद्विशच्छुकास्यस्मर किंशुकाशुगाम्"—[नैषध०]।—**हृदय**-(वि०) मर्माहत।

विदीरन—(वि०, दे०) विदीर्ण (सं०)।

विदुर—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्ञाता, ज्ञानी, जानकार, पंडित, विद्वान्, धृतराष्ट्र के राजनीति और धर्म-नीति में अति कुशल मंत्री।

विदुष—(संज्ञा, पु०, सं०) पंडित, विद्वान्। "विदुषाम् किमुपेक्षितम्"—[भा० द०]।

विदुषी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पंडिता, पढ़ी-लिखी स्त्री।

विदूर—(वि०, सं०) जो अत्यंत दूर हो, बहुत दूर वाला। (संज्ञा, पु०, दे०) वैदूर्य मणि।

विदूरित—(वि०, सं०) दूर किया हुआ। "विदूरित लोचन लालसा—हरिऔध।

विदूषक—(संज्ञा, पु०, सं०) मसखरा, दिल्लगी-बाज, नक्काल, भाँड़, मंत्री, कामुक, विषयी। "कहत विदूषक सों कछू, को यह केशवदास"—[राम०]। नायक का वह अंतरंग मित्र जो अपने परिहासादि से उसे (या नायिका को) प्रसन्न करता तथा काम-केलि में सहायक होता है। (नाट्य०)।

विदूषण—(संज्ञा, पु०, सं०) भ्रष्ट, गंदा, व्यंग, दोषारोपण।

विदूषना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विदूषण] कलंक या दोष (ऐब) लगाना, सताना, दुःख देना (क्रि० अ०) दुखी होना। "इन्है न संत विदूषहि काऊ"—[रामा०]।

विदूषित—(वि०, सं०) अपमानित, लांछित, कलंकित, भ्रष्ट किया हुआ।

विदेश—(संज्ञा, पु०, सं०) परदेश, दूसरा देश, [बिदेस (दे०)]। "पूत विदेश न सोच तुम्हारे"—[रामा०]।

विदेशी, विदेशीय—(वि०, सं०) अन्य देश सम्बन्धी, अन्य देश-वासी, [परदेशी, परदेसी, बिदेसी (दे०)]।

विदेह—(संज्ञा, पु०, सं०) शरीररहित, बिना देह का, राजा जनक, जिसकी उत्पत्ति माता-पिता से न हो, मिथिला का प्राचीन नाम, संज्ञा-शून्य, [बिदेह (दे०)]। "भये विदेह विदेह विशोकी"—[रामा०]। (वि०, सं०) बेसुध, बे होश, अचेत।—**कुमारी**-(स्त्री०) विदेह-सुता, विदेह-तनया जानकी जी, सीता जी, विदेह-कन्या, विदेहतनुजा, विदेहात्मजा, विदेह-पुत्री। "केहि पट-तरिय विदेह-कुमारी"—[रामा०]।—**पुर-नगर**-(पु०) जनकपुर। "तुरत विदेहनगर नियराये"—[रामा०]।

विदेही—(संज्ञा, पु०) [सं० विदेहिन्] ब्रह्म।

विद्—(संज्ञा, पु०, सं०) पंडित, विद्वान्, जानकार, बुधग्रह (ज्यो०)।

विद्ध—(वि०, सं०) बीच से बेधा या छेद किया हुआ, फेंका हुआ, चुटहिल, छेदा या सटा हुआ, टेढ़ा। (वि०, दे०) वृद्ध (सं०)।

विद्यमान—(वि०, सं०) उपस्थित, मौजूद, हाजिर, प्रस्तुत। "विद्यमान रघुकुलमणि जानी"—[रामा०]।

विद्यमानता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मौजूदगी, हाजिरी, उपस्थिति।

विद्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शिक्षादि से प्राप्त ज्ञान, इल्म, व शास्त्रादि जिनसे ज्ञान प्राप्त हो, जानकारी, विद्या के चार और चौदह भेद कहे गये है, ४ वेद और उपवेद (आयुः, धनुः, गांधर्व, अर्थशास्त्र, षडंग (वेदांग) शास्त्र (मीमांसा, न्यायादि ३ शास्त्र), धर्मशास्त्र (स्मृति) भूगर्भादि अन्य शास्त्र (विज्ञान), काव्य कोषादि (साहित्य), पुराण (उपपुराण), आर्य्या छंद का पंचम भेद, दुर्गा [बिद्या (दे०)]। विद्या भोगकरी यशः, सुखकरी, विद्या गुरूणां गुरुः"—[भ० श०]।—**गुरु**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिक्षक, पढ़ाने वाला, विद्या में बड़ा।—**दान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विद्या पढ़ाना या देना।—**धर**-(संज्ञा, पु०, सं०) किन्नर, गंधर्व तथा अन्य खेचरादि की एक देवयोनि विशेष। "विद्याधर यश कहैं गंधर्व गान करैं किन्नर नाचैं"—मन्ना०। पंडित, विद्वान्, एक अस्त्र। [**विद्याधरास्त्र** (यौ०)]।—**धरी**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विद्याधर (देवता) की स्त्री।—**धारी**-(संज्ञा, पु०) [सं० विद्याधारिन्] ४ मगण का एक वर्णिक छंद (पिं०)।—**वारिधि**-(पु०) विद्यासागर, विद्वान्।—**विहीन**-(वि०) मूर्ख।—**व्यसन**-(पु०) अध्ययन, अत्यधिक पढ़ने का कार्य।

विद्याभ्यास—(संज्ञा, पु०, सं०) विद्याध्ययन।

विद्यारंभ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विद्या पढ़ना शुरू करने का एक संस्कार विशेष।

विद्यार्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्ञान, शिक्षा या विद्या की प्राप्ति।

विद्यार्थी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० विद्यार्थिन्] छात्र, शिष्य, विद्या पढ़ने वाला।

विद्यालय—(संज्ञा, पु०, वि०, सं०) पाठशाला।

विद्यावान्—(संज्ञा, पु०) [सं० विद्यावत्] विद्वान्, पंडित, ज्ञानी, विद्यावन्त।

विद्य—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिजली। विद्युच्चालक (वि०, सं०) जिसके एक छोर के स्पर्श होने से बिजली दुसरे छोर तक चली जाय।

विद्युत्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिजली।—**द्युति**-(स्त्री०) "चमकैंगे खड्ग सब विद्युद्युति बार-बार" निराला।—**मापक**-(पु०) बिजली नापने का यत्र, जिससे बिजली की शक्ति और गति जानी जाती है।—**माला**-(स्त्री०) बिजली का समूह या क्रम, दो मगण और दो गुरु (८ गुरु वर्णों) का एक वर्णिक छंद (पिं०) "मो मो गो गो विद्युन्माला"।—**माली**-(पु०) एक राक्षस (पुरा०) भ और म (गण) और २ गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।—**लेखा**-(स्त्री०) दो मगण (६ गुरु वर्णों) का एक वर्णिक छंद (पिं०) शेषराज, बिजली की धारा या रेखा, बिजली।

विद्युन्मापक—(संज्ञा, पु०, सं०) देखिए—विद्युतमापक।

विद्युन्माली—(संज्ञा, पु०, सं०) देखिए—विद्युत-माली।

विद्युल्लेखा—(संज्ञा, स्त्री०) देखिए—विद्युतलेखा।

विद्योपार्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) विद्या की प्राप्ति।

विद्रधि—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, सं०) पेट के भीतर का एक मारक फोड़ा।

विद्रावण—(संज्ञा, पु०, सं०) भागना, फाड़ना, उड़ाना, पिघलना, नष्टकर्त्ता। [**विद्रावणीय, विद्रावित** (वि०)]।

विद्रुम—(संज्ञा, पु०, सं०) मूँगा, प्रवाल। "बर विद्रुम में कहाँ लाली इती"—हरिऔध।

विद्रोह—(संज्ञा, पु०, सं०) द्वेष, राजद्रोह, बलवा, क्रांति विप्लव, बग़ावत, हुल्लड़, राज्य को नष्ट करने या क्षति पहुँचाने वाला उपद्रव। "विद्रोह जो जन कर रहे हैं, दण्ड समुचित पायेंगे"—गिरीश।

विद्रोही—(संज्ञा, पु०) [सं० विद्रोहिन्] द्वेषी, बलवाई, बाग़ी, हुल्लड़ करने वाला, राजद्रोही।

विद्वत्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पांडित्य, पण्डिताई, [विद्वता (दे०)]।

विद्वान्—(संज्ञा, पु०) [सं० विद्वस्] पंडित, ज्ञानी, जिसने बहुत विद्या पढ़ी हो।

विद्वेष—(संज्ञा, पु०, सं०) द्रोह, बैर, शत्रुता। "विद्वेष से जीवन-समस्या हल कभी होगी नहीं" —गिरीश।

विद्वेषक—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रु, दुश्मन।

विद्वेषी—(वि०) द्वेष करने वाला। (पु०) शत्रु।

विद्वेषण—(संज्ञा, पु०, सं०) द्रोह, बैर, शत्रुता, दो व्यक्तियों मे शत्रुता कराने का एक प्रयोग (तंत्र), बैरी, दुष्टता, शत्रु।

विधंस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विध्वंस] विनाश, [बिधंस (दे०)]। [**विध्वस्त, विनष्ट** (वि०)]।

विधंसना*†—(क्रि० स०, दे०) [विध्वंसन्] नष्ट या बरबाद करना।

विध*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विधि] विधाता, विधि, ब्रह्मा, [बिधि (दे०)]।

विधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विधि] प्राप्त करना, ऊपर लेना, साथ लगाना, [बिधना (दे०)], भिदना, बेधा जाना। (संज्ञा, स्त्री०) भवितव्यता, होनहार, होनी। (संज्ञा, पु०) विधि, ब्रह्मा, [बिधिना (दे०)]।

विधर†—(क्रि० वि०, दे०) उधर।

विधर्म्म—(संज्ञा, पु०, सं०) दूसरे का या पराया धर्म्म।

विधर्म्मी—(संज्ञा, पु०) [सं० विधर्म्मिन्] धर्म-च्युत, पर या अन्यधर्म्मानुयायी, धर्म्म-भ्रष्ट, धर्म के विपरीताचार करने वाला।

विधवा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पति-विहीन स्त्री, बेवा, राँड़ स्त्री।—**विवाह**-(पु०) विधवा से शादी करना।

विधवापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विधवा + पन हिं० प्रत्य०] रँड़ापा, वैधव्य।

विधवाश्रम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विधवाओं के पालन-पोषणादि के प्रबन्ध का स्थान।

बिधाँसना*† —(क्रि० स०, दे०) [हि० विधंसना] नष्ट या बरबाद करना ।

विधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हिस्सा, प्रकार, विभाग। तनख्वाह, उच्चारण ।

विधातव्य—(वि०, सं०) निर्धारित करने के लायक, पूर्ण करने योग्य ।

विधाता—(संज्ञा, पु०) [सं० विधातृ) प्रबंध या विधान करने वाला, उत्पन्न करने या सृष्टि रचने वाला, विरंचि, ब्रह्मा, परमेश्वर, बिधाता । [**विधात्री** (स्त्री०)] । "हमें जन्म देता जहाँ है विधाता"— मन्नन० ।

विधात्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रचना करने वाली, माता, उत्पन्न करने वाली, व्यवस्था करने वाली ।

विधान—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी कार्य की विधि या व्यवस्था, अनुष्ठान, प्रबन्ध, आयोजन, इंतजाम, परिपाटी, प्रणाली, पद्धति, रीति, निर्माण, रचना, युक्ति, उपाय, आज्ञादान, नाटक में किसी वाक्य से सुख-दुःख के एक साथ प्रकट किये जाने का स्थान (नाट्य०) । [कांटीट्यूशन] ।—**परिषद्**-(स्त्री०) वह सभा या परिषद् जो व्यवस्था के लिए कानून, नियम बनाये ।

विधानक—(वि०, सं०) वैधानिक व्यवस्था करने वाला । विधान का ज्ञाता ।

विधायक—(संज्ञा, पु०, सं०) विधान या प्रबंध करने वाला, बनाने वाला । [**विधायका** (स्त्री०)] ।

विधायी—(वि०, सं०) बनाने वाला, व्यवस्था करने वाला ।

विधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ढंग, किसी कार्य की रीति, प्रणाली, तरीका, व्यवस्था, युक्ति, योजना, [बिधि (दे०)] ।—**पुर**,—**लोक**-(पु०) ब्रह्म-लोक ।—**रानी***-(स्त्री०) ब्रह्मा की स्त्री, सरस्वती । " महिमा बखानी जाय कापै विधिरानी की "— मन्ना० ।—**पूर्वक**-(क्रि० वि०) यथा-विधि, यथा-रीति, सविधान । **मुहा०**—**बैठना** (**बैठाना**)— ठीक मेल या विधान होना (मिलाना) अनुकूलता होना (करना), अभीष्ट व्यवस्था होना (करना) । —**मिलना** (**मिलाना**)—आय-व्यय का हिसाब ठीक होना । शास्त्रादेश, शास्त्रीय आज्ञा या व्यवस्था, शास्त्रोक्त विधान, क्रिया का वह रूप जिससे आदेश या आज्ञा का अर्थ प्रकट हो (व्या०) । एक अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का विधान फिर से किया जाये (अ० पी०) । आचार-व्यवहार, चाल-ढाल । चेष्टा और कार्यवाही । प्रकार, भाँति, तरह, क़िस्म । "जेहि विधि सुखी होहिं पुर-लोगा" —[रामा०] । (संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा, विधाता । " विधि सों कवि सब बिधि बड़े "— [स्फुट०] ।

विधिना, बिधिना—(संज्ञा, पु०, दे०) विधि, ब्रह्मा, "जेहि विधिना दारुन दुख देही" ।

विधिवत्—(क्रि० वि०, सं०) पद्धति या रीति के अनुसार, उचित रूप से, यथाविधि, जैसा चाहिये वैसा । " लिंग थापि विधिवत् करि पूजा "— [रामा०] ।

विधुंतुद—(संज्ञा, पु०, सं०) राहु । "प्रकृतिरस्य विधुंतुददाहिका"—नैषध० ।

विधु—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रमा, शशि, मयंक, विष्णु, ब्रह्मा । "विधुरतो द्विजराज इति श्रुतिः", "किमु विधु ग्रसते स विधुंतुदः"—नैषध । "देखहिं विधु चकोर समुदाई"—[रामा०] ।—**दार**,—**दारा**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० विधु-दारा] रोहिणी, चंद्र-पत्नी ।—**बंधु**-(पु०) कुमुद का पुष्प ।—**मणि**-(पु०, स्त्री०, सं०) चंद्रकांत मणि । "पिघल चलते विधुमणि के प्राण"— महादेवी ।—**मण्डल**-(पु०) चंद्रमण्डल ।—**वदनी** (पु०) चंद्रमुखी या सुरूपा स्त्री ।—**बैनी***-(स्त्री०) सुन्दर स्त्री, मयंक-मुखी । "विधुबैनी मृग-शावक नैनी"—[रामा०] ।—**वदनी**-(स्त्री०) सुन्दरी स्त्री, चंद्रमुखी, चन्द्रमा सा मुखवाली । "विधुवदनी सब भाँति सँवारी"—[रामा०] ।

विधुर—(संज्ञा, पु०, सं०) घबराया हुआ, दुखी, विकल, व्याकुल, अशक्त, असमर्थ । "विधुर वंधुर वधुरमैत्तत"—माघ० ।

विधुरानना—(वि०, यौ०, सं०) म्लानमुखी ।

विधूत—(वि०, सं०) कंपित, हिलाया गया ।

विधेय—(वि०, सं०) स्थापित करने योग्य, देने योग्य, प्रदर्शन के योग्य; विनम्र, अधीन, शासन करने के योग्य ।—**ज्ञ**-(वि०) कर्तव्य को समझने वाला ।—**वर्त्ती**-(वि०) दूसरे के हुक्म में रहने वाली, अधीन ।

विधेयत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) उपयोगिता, अधीनता, निर्भरता ।

विधेया—(वि०, सं०) कर्त्तव्य, जिसका करना उचित हो, करणीय, उचितानुष्ठान वाला, जिसका विधान होने वाला हो, जो विधि या नियम से जान

जाये, अधीन, वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के विषय में कुछ कहा जावे (व्या०), वशीभूत, होनहार।

विधेयाविमर्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक काव्य-दोष, जहाँ प्रधानतया करने योग्य या कथनीय बात वाक्य-रचना में छिपी या दबो रहें।

विध्याभास—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमे किसी महान् अनिष्ट के होने की सम्भावना सूचित करते हुए अनिच्छा के साथ विवश हो किसी बात की अनुमति दी जावे (काव्य०)।

विध्वंस—(संज्ञा, पु०, सं०) विनाश, बरबादी, खराबी। [**विध्वंसक** (वि०)]।

विध्वंसी—(संज्ञा, पु०,) [सं० विध्वंसिन्] नाश करने वाला, बिगाड़ने वाला। [**विध्वंसिनी** (स्त्री०)]।

विध्वंसित—(वि०, सं०) बरबाद किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

विध्वंसी—(वि०, सं०) नाशक, बरबाद होने वाला, नष्ट होने वाला। शत्रु।

विध्वस्त—(वि०, सं०) नष्ट किया हुआ।

विन†—(सर्व०, दे०) [हिं० उस] उसका बहु-वचन, उन।

विनत—(वि०, सं०) विनीत, नम्र, शिष्ट, झुका हुआ।

विनतई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विनत] विनति, नम्रता, शिष्टता।

विनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कश्यप-पत्नी (दक्ष प्रजापति की कन्या) और गरुड़ की माता [**वैनतेय** (अप० संज्ञा)]। "कद्रू विनतहिं दीन्ह दुःख" —[रामा०]।

विनति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नम्रता, शिष्टता, सुशीलता, विनय, झुकाव, विनती, प्रार्थना।

विनती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विनति] नम्रता, शिष्टता, विनय, सुशीलता, प्रार्थना, झुकाव, [बिनती, बिन्ती (दे०)]। "विनती करि सुरलोक सिधाये"—[रामा०]।

विनम्र—(वि०, सं०) सुशील, विनीत, नम्र, झुका हुआ। [**विनम्रता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

विनय—(स्त्री०) नम्रता, प्रार्थना, विनती, नीति, [बिनय, बिनै (दे०)]। [**विनयी** (दे०)]।—**पिटक**-(पु०) बौद्धों का एक आदिशास्त्र।—**शील**-(वि०, सं०) सुशील, शिष्ट, विनम्र, [बिनै-सील (दे०)]। "विनयशील करुणा-गुण-सागर" —[रामा०]।

विनयी—(संज्ञा, पु०) [सं० विनयिन्] विनय-युक्त, सुशील, विनम्र। "सो विनयी विजयी गुण-सागर"—[रामा०]।

विनयोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) विनय-वाक्य, विनीत वाणी।

विनशन—(संज्ञा, पु०, सं०) विनाश, नाश, बरबादी, नष्ट होना। [**विनष्ट, विनश्वर** (वि०)]।

विनश्वर—(वि०, सं०) अनित्य, नाशवान, सदा या चिरकाल न रहने वाला।

विनश्वरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नश्वरता, क्षण-भगुरता।

विनष्ट—(वि०, सं०) नष्ट, ध्वस्त, नष्ट-भ्रष्ट, तबाह, बरबाद, खराब, मृत, पतित, बिगड़ा हुआ।

विनसना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विनशन] नाश या नष्ट होना, मिट जाना, खराब या बरबाद होना, [बिनसना (दे०)]। [**विनसाना, विन-सावना** (स० रूप)], [**विनसवाना** (प्रेरणा० रूप)]। "उपजै विनसै ज्ञान ज्यों, पाय सुसंग कुसंग"—[रामा०]।

विनसाना—(क्रि० स०, दे०) नष्ट करना, बिगाड़ना, [बिनसावना (दे०)]।

विना—(अव्य०, सं०) [बिना दे०] अभाव मे, अतिरिक्त, बगैर, सिवा, न रहने या होने की दशा में। "विना वात' विना वर्षा' विद्युत्पतन' विना"—भा० दा०।

विनाती*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विनति] विनय, विनती (सं०)।

विनादित—(वि०, सं०) ध्वनित।

विनाथ—(वि०, सं०) अनाथ। [**विनाथनी** (स्त्री०)]।

विनायक—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेशजी। "लम्बो-दर गजवदन विनायक"—तुलसी।

विनायिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गणेशजी या गरुण की स्त्री।

विनाश—(संज्ञा, पु०, सं०) ध्वस, लोप, खराबी, बरबादी, नाश, [बिनास (दे०)]। [**विनष्ट, विनाशक** (वि०)]। "विनाश-काले विपरीत-बुद्धिः"—[हितो०]।

विनाशन—(संज्ञा, पु०, सं०) नाश या नष्ट करना, बरबाद या खराब करना, संहार या वध करना, लोप

या लय करना, [बिनासन (दे०)] । [**विनाशी, विनाश्य, विनाशनीय** (वि०)] । " दससीस-विनाशन बीस भुजा"—[रामा०] ।

विनायिता—(वि०, पु०, सं०) नाशक ।

विनाशोन्मुख—(वि०, सं०) नष्ट होने की ओर उन्मुख, नष्ट होने के लिए प्रवृत्त या उद्यत ।

विनास*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विनाश] नाश । "मूर्ख रहै जा ठौर पर ताको करै विनास" —वृं० । (संज्ञा, पु०, दे०) नासिका, नकसीर, [बिनास (दे०)] ।

विनासन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विनाशक] ध्वंस, नाश, [बिनासन (दे०)] ।

विनासना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विनाशन] नष्ट करना, बरबाद करना, संहार या लय करना, बिगाड़ना, [बिनासना (दे०)] । (क्रि० अ०) नष्ट या बरबाद होना, [बिनसना (दे०)] ।

विनिंदक—(वि०, सं०) निंदक, निंदा करने वाला ।

विनिंदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निंदा, शिकायत ।

विनिपात—(संज्ञा, पु०, सं०) पतन, विपद, अधः-पात ।

विनिमज्जित—(वि०, सं०) मग्न, डूबा हुआ । "अरु-णिमा—विनिमज्जित-सी हुई"—हरिऔध ।

विनिमय—(संज्ञा, पु०, सं०) बदला करना, एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी देना, परिवर्त्तन, धोखा, भ्रम । "तेजो वारिमृदां यथा विनिमयः"—[भ० प्र०] ।

विनियोग—(संज्ञा, पु०, सं०) अभीष्ट फल के हेतु किसी वस्तु का प्रयोग, काम में लाना, उपयोग, वर्त्तना, मंत्र-प्रयोग (वैदिक कृत्य) भेजना, प्रेषण । "वस्त्रपरिधाने विनियोगः"—[वैदिक०] ।

विनिर्गत—(वि०, सं०) बाहर निकला हुआ, बीता हुआ । " बुद्धि-मंथन से विनिर्गत श्रेय वह नवनीत"—दिन० ।

विनिर्मित—(वि०, सं०) रचित, निर्धारित । "जो कुछ प्रियतर, सुखद मनोहर सखे हमारे लिए विनिर्मित—पत ।

विनीत—(वि०, सं०) विनयी, सुशील, नम्र, शिष्ट, धार्म्मिक रीत्यनुसार आचार व्यवहार करने वाला । "अति विनीत मृदु कोमल बानी"—[रामा०] ।

विनीतात्मा—(वि०, यौ०, सं०) सुशील, नम्र, शिष्ट ।

विनु*†—(अव्य०, दे०) [सं० विना] बिना, वगैर, अतिरिक्त, सिवा, छोड़कर, [बिनु, (दे०)] । "मणि-बिनु, फनिक रहै अति दीना' —[रामा०] ।

विनूठा†—(वि०, दे०) [हि० अनूठा] अनूठा, अनोखा, सुन्दर ।

विनेता—(संज्ञा, पु०, सं०) शासक, शिक्षक, राजा ।

विनोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी के बिना किसी को श्रेष्ठता या हीनता कही जाती है (अ० पी०) । जैसे—"बिन घन निर्मल सोह अकासा"—[रामा०] ।

विनोद—(संज्ञा, पु०, सं०) तमाशा, मनोरंजक, कुतूहल, कौतुक, क्रीड़ा, खेलकूद, हर्षानंद, हँसी-दिल्लगी, प्रसन्नता, परिहास, आमोद-प्रमोद ।

विनोदित—(वि०) प्रसन्न, अमोदित । "बर विनोदित वेलि बिहंग में"—हरिऔध ।

विनोदी—(वि०) [सं० विनोदिन्] आनंदी जीव, हँसी-ठट्ठा करने वाला, आमोद-प्रमोद करने वाला, कौतुकी । [**विनोदिनी** (स्त्री०)] ।

विन्यस्त—(वि०, सं०) स्थापित, क्रम से रखा हुआ ।

विन्यास—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थापन, रचना, सजाना, धरना, यथास्थान जड़ना, रखना । [**विन्यस्त, वाक्यविन्यास** (वि०, यौ०)] ।

विपंची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वीणा, खेल कूद, क्रीड़ा-कौतुक ।

विपक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिद्वंद्वी, विरोधी पक्ष, खंडन, प्रतिवादी, शत्रु, विरोधी, अपवाद, बाधक नियम (व्या०) । "देने तथा रण का निमंत्रण निज विपक्ष विरुद्ध में"—मैथिली ।

विपक्षी—(संज्ञा, पु०) [सं० विपक्षिन्] विरुद्ध पक्षवाला, प्रतिद्वंद्वी, शत्रु, प्रतिवादी, वैरी, बिना पंख का पक्षी ।

विपणि—(स्त्री०, सं०) बाजार, हाट । "बाजारों में विपणि सब में"—हरिऔध ।

विपत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विपद, आपत्ति, दुःख या शोक की प्राप्ति, कष्ट-काल, बुरे दिन, [बिपति, बिपत्ति (दे०)] । [**विपत्तिकाल** (यौ०)] । "प्रायः समापन्नविपत्तिकाले"—[हितो०] ।—**निपतित**-(वि०) विपत्ति में पड़ा हुआ । " थी विपत्ति-निपतित की सतत प्रबोधिनी"—हरिऔध ।

मुहा०—पड़ना (आना)-आपत्ति आना, कष्ट,

दुख या संकट आ जाना।— ढहना (ढाहना)– अकस्मात् कोई आपत्ति आ पड़ना (उपस्थित करना)। कठिनाई, झगड़ा, झंझट, बखेड़ा।

विपथ—(संज्ञा, पु०, सं०) कुमार्ग, बुरी राह।

विपदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आपत्ति, विपत्ति, संकट, आपदा। "जिनके सम वैभव वा विपदा"—[रामा०]।

विपद्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आपत्ति, विपत्ति। "विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा"—[हितो०]।—**ग्रस्त**–(वि०) संकटापन्न।

विपन्न—(वि०, सं०) आर्त, विपत्तिग्रस्त दुःखी, संकटापन्न, [(स्त्री०) विपन्ना]। "होने पावे न स्वर-लहरी अल्प भी तो विपन्ना"—हरिऔध।

विपरीत—(वि०, सं०) विरुद्ध, विलोम, उलटा, प्रतिकूल, रुष्ट, खिलाफ, हित के अनुपयुक्त तथा अहित में तत्पर, [विपरीत (दे०)]। "मो कहँ सकल भयो विपरीता"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०) एक अर्थालंकार जिसमें कार्य साधक का ही कार्य-सिद्धि में बाधक होना कहा जाता है।—**बुद्धि**–(वि०) जिसका दिमाग उलट गया हो।

विपरीतता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विपर्यय, विपरीत होने की स्थिति या भाव।

विपरीतोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उपमालंकार का एक भेद जिसमे कोई भाग्यशाली आर्त, दीन दशा में दिखाया जाये।

विपर्य्यय—(संज्ञा, पु०, सं०) और का और, व्यतिक्रम, उलटा, विलोम, प्रतिकूल, विरुद्ध होने का भाव। उलट-पलट, इधर का उधर, अव्यवस्था, अन्यथा समझने की स्थिति, भूल, गड़बड़ी।

विपर्य्यस्त—(वि०, सं०) गड़बड़, अस्तव्यस्त, अव्यवस्थित।

विपर्य्यास—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रतिकूल, विरुद्ध, उलटा-पुलटा होने का भाव, व्यतिक्रम।

विपल—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पल का साठवाँ भाग या अंश।

विपश्चित—(संज्ञा, पु०, सं०) विद्वान्, पंडित, दोषज्ञ, बुद्धिमान।

विपाक—(संज्ञा, पु०, सं०) परिपाक पूर्ण दशा की प्राप्ति। "अतिरभसकृतानां कर्मणां दुर्विपाकः।" परिणाम, कर्म-फल, दुर्दशा, दुर्गति।

विपादिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिमाई नामक रोग, पहेली, पहेलिका।

विपाशा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्यास नदी (पंजा०)।

विपिन—(संज्ञा, पु०, सं०) वन, अरण्य, जंगल, उपवन, वाटिका, [बिपिन (दे०)]। "सोह कि कोकिल विपिन-करीला"—[रामा०]।—**तिलका**–(स्त्री०) न, स, न और दो र (गण) वाला एक वर्णिक छंद (पिं०)।—**पति**–(पु०) सिंह, विपिन-नायक, विपिनाधिपति।—**विहारी**–(पु०) मृग, वन में आनन्द या विहार करने वाला, श्रीकृष्ण।

विपुल—(वि०, सं०) बृहत्, परिमाण-विस्तार और संख्या में अति अधिक या बड़ा और कई या अनेक, अगाध, बड़ा। "विपुल बार महिदेवन दीन्ही"—[रामा०]।

विपुलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आधिक्य, बाहुल्य, अधिकता।

विपुला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वसुधा, मेदिनी, भूमि, भ र (गण) और दो लघु वर्णों का एक छंद, आर्य्या छंद के ३ भेदों में से एक (पिं०)।

विपुलाई, विपुलई*—(संज्ञा, स्त्री०,) [सं० विपुल + आई हि० प्रत्य०] विपुलता।

विपोहना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विप्रोति] पोतना, लीपना, नाश करना, पोंछना।

विप्र—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्राह्मण, वेदपाठी, पुरोहित। "वेदपाठी भवेद्विप्रः ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः"—[स्फु०]। "विप्र वंस की अस प्रभुताई"—[रामा०]।—**चरण**–(पु०) विप्र-पाद, विष्णु के हृदय पर भृगुमुनि के चरणचिह्न (पुरा०), भृगुलता, ब्राह्मण का पैर।—**पद-पाद**–(पु०) विप्र-चरण, भृगुलता।—**राम**–(पु०)–परशुराम।

विप्रचित्ति—(संज्ञा, पु०, सं०) राहु-जननी सिंहिका का पति, एक दानव (पुरा०)।

विप्रलंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) अभीष्ट की अप्राप्ति, वियोग, प्रिय का न मिलना, बिछोह, जुदाई, विरह, पार्थक्य, विच्छेद, छल, धूर्त्तता, धोखा, शृंगार रस का एक भेद, वियोग (सा०)।—**शृंगार**–(पु०) जिसमें वियोग या विरह-वर्णन हो।

विप्रलब्ध—(वि०, सं०) अभीष्ट वस्तु जिसे न मिली हो, वंचित, रहित, वियोगी, विरही, वियोग को प्राप्त।

विप्रलब्धा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वियोगिनी, संकेत-स्थल पर प्रिय को न पाकर दुःखी हुई नायिका।

विप्लव—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्पात, अशान्ति, क्रांति, विद्रोह, बलवा, उपद्रव, उथल-पुथल, जल की बाढ़, आपत्ति।

विप्लवी—(वि०, सं०) अस्थायी, क्रांतिकारी विप्लवकर्त्ता।

विप्लुत—(वि०, सं०) अस्तव्यस्त, फैला हुआ, भग्न, उत्तेजित, आचारहीन, कुटिल, प्रतिकूल, (जल) स्रावित।

विफल—(वि०, सं०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन, निस्सार, जिसमें फल न लगा हो, परिणाम-रहित, प्रयत्नवान, असफल, निष्फल। [**विफलता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

विबुध—(संज्ञा, पु०, सं०) देवता, चंद्रमा, बुद्धिमान, पंडित। "अभून्नृपो विबुधसखः परंतपः" —भट्टि०।—**नदी**-(स्त्री०) सुरनदी, गंगाजी, देवापगा। "तिन कहँ विबुधनदी बैतरनी"—[रामा०]।—**विलासिनी**-(स्त्री०) देव-वधूटी, देवांगना, अप्सरा।—**बेलि**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) देवलतिका, कल्प-लता, विबुधवल्लरी, देववल्ली।

विबुधाचार्य—(संज्ञा, पु०, सं०) बृहस्पति।

विबोध—(संज्ञा, पु०, सं०) जागना, जागरण, पूर्ण और अच्छा ज्ञान या बोध, सावधान या सचेत होना, सतर्क या सजग होना।

विभंग—(संज्ञा, पु०, सं०) उपल, ओला।

विभक्त—(वि०, सं०) विभाजित बँटा हुआ, पृथक् या विलग किया हुआ। "विभुविभक्तावयव पुमानिति"—माघ०।

विभक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बाँट, विभाग, पार्थक्य, विलगाव, कारकों के चिह्न या वाक्य के किसी शब्द का क्रिया-पद से सम्बन्धसूचक प्रत्यय या शब्द (जो शब्द के आगे लगाया जाता है— (व्या०)।

विभग्न—(वि०, सं०) छिन्न-भिन्न।

विभव—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रताप, धन, संपत्ति, अधिकता, ऐश्वर्य्य, उन्नति, बहुतायत, मुक्ति, मोक्ष। "भव-भव-विभव पराभवकारिणि"—[रामा०]।—**शाली**-(वि०, सं०) विभववान्, प्रतापी, धनी, संपत्तिशाली, ऐश्वर्य या वैभव वाला।

विभांडक—(संज्ञा, पु०, सं०) ऋषि शृंग के पिता, एक महर्षि।

विभांडिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक वृक्ष जिसका नाम आहुल्य है।

विभाँति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वि+भाँति हि०] भेद, प्रकार, किस्म। वि० अनेक भाँति का। अव्य० अनेक भाँति से।

विभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कांति, शोभा, किरण, प्रकाश। "विभामय होते, है तमधाम"—हरि०।

विभाकर—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रभाकर, सूर्य्य, चंद्र, अग्नि, आग, राजा।

विभाग—(संज्ञा, पु०, सं०) बँटवारा, बाँट, हिस्सा, अंश, भाग, बखरा, सर्ग, प्रकरण, अध्याय, मुहकमा, कार्य्यक्षेत्र।—**रेखा**-(स्त्री०) सीमा-रेखा।

विभागक—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यवस्थापक, विभाजन करनेवाला।

विभाजक—(संज्ञा, पु०, सं०) अंश या विभाग-कर्त्ता, हिस्सा करने वाला, पृथक् या अलग करने वाला, बाँटने वाला।

विभाजन—(संज्ञा, पु०, सं०) बाँटने की क्रिया, भाजन पात्र। [**विभाजनीय, विभक्त, विभाजित** (वि०)]। [हिस्सेजन]

विभाजित—(वि०, सं०) बँटा हुआ, विभक्त।

विभाज्य—(वि०, सं०) बाँटने-योग्य, विभाग करने योग्य, जिसे बाँटना हो, जिसका हिस्सा या विभाग करना हो, विभाजनीय।

विभात—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रभात, प्रातःकाल, भोर, सबेरा, तड़का। "स्वाभाविक परगुणेन विभात-वायुः"—[रघु०]।

विभाति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० विभा] शोभा, कांति, छवि, छटा, दीप्ति।

विभाना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विभा + ना प्रत्य०] प्रकाशित होना, झलकना, चमकना, शोभा देना।

विभारना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विभार + ना] मोहना, चमकना, झलकना, शोभा देना।

विभाव—(संज्ञा, पु०, सं०) रसों के रत्यादि स्थायी भावों के आश्रयी तथा उत्पन्न या उद्दीप्त करने वाले पदार्थादि (काव्य०)।

विभावक—(वि०, सं०) वाद, वाद या तर्क करने वाला।

विभावना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अर्थालंकार जहाँ कारण के बिना या विपरीत कारण से कार्य का होना कहा जाये। जैसे—"साहि तनै शिवराज की, सहज टेंव यह ऐन। बिनु रीझै दारिद हरै, अनखीझै अरि-सैन।"—भूषण।

विभावरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निशा, रात, रात्रि, तारकित रजनी, कुटनी, कुट्टनी, दूती। "आई तू विभावरी मैं कान्ह को विभावरी है"—मन्ना०।

विभावसु—(संज्ञा, पु०, सं०) वसुओं के पुत्र, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, मदार का पेड़। "विभावसुः सारथिनेव वायुना"—[रघु०]।

विभावित—(वि०, सं०) प्रकट किया हुआ, व्यक्त किया हुआ, जाना हुआ, समझा हुआ, प्रमाणित, स्थापित।

विभाषित—(वि०, सं०) वैकल्पिक।

विभास—(संज्ञा, पु०, सं०) चमक, प्रकाश।

विभासना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विभास + ना हिं० प्रत्य०] चमकना, शोभित या प्रकाशित होना, झलकना।

विभाषित—(वि०, सं०) प्रकाशित, दीप्त। चमकाया हुआ।

विभिन्न—(वि०, सं०) पृथक्, विलग, जुदा, अनेक प्रकार का। "पृथक् विभिन्नश्रुतिमंडलैः स्वरैः"—माघ०।

विभिन्नता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अलगाव, भिन्न होना, अलग होना।

विभीतक—(संज्ञा, पु०, सं०) बहेरा फल।

विभीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भय, डर, संशय, संदेह, शंका, विभीतिका।

विभीषण—(संज्ञा, पु०, सं०) रावण का छोटा भाई जो रावण के बाद लंका का राजा हुआ, [बभीखन (दे०)]। "विभीषणोऽभाषत यातुधानान्"—भट्टी०।

विभीषिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भीति, भय, डरना, भयंकर दृश्य या कांड। "भीषन विभीषन विभीषिका सों भीति मानि"—शिव०।

विभु—(वि०, सं०) सर्वत्र गमनशील, सर्वत्र-सर्वकाल, वर्तमान या व्यापक, विस्तृत, महान्, मन, दृढ़, अचल, नित्य, शाश्वत, सर्वशक्तिमान, समर्थ। (संज्ञा, पु०) प्रभु, जीवात्मा, ब्रह्म, ईश्वर विष्णु, शिव, ब्रह्मा। "विभुर्विभक्तावयवं पुमानिति"—माघ०। "विभ्रता कहाँ दीखी नहीं विभु की"—गिरीश।

विभुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सर्वव्यापकता, प्रभुत्व, ऐश्वर्य, प्रताप।

विभूति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वृद्धि-समृद्धि, ऐश्वर्य, विभव, धन, संपत्ति, बढ़ती। योग की दिव्य शक्ति जिसमें अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियाँ हैं। राख, भस्म, शिवांग-रज। "शुचि कण्ठ में मुण्ड की माल लसी यह कौन बिभूति रमाये हुए"—गिरीश। लक्ष्मी। सृष्टि, विश्वामित्र द्वारा राम को दिया गया एक दिव्यास्त्र।

विभूषण—(संज्ञा, पु०, सं०) भूषण, अलंकार, गहना, शोभा। [**विभूषणीय, विभूषित** (वि०)]। "गये जहाँ त्रैलोक्य-विभूषण"—[रामा०]।

विभूषन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विभूषण, गहना, शोभा।

विभूषना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विभूषण] सँवारना, गहने आदि से सजना या सुशोभित करना, अलंकृत करना।

विभूषित—(वि०, सं०) अलंकृत, सुसज्जित, गहनों आदि से सुशोभित, शोभित, अच्छी वस्तु (गुणादि) से युक्त, सहित। "करहु बिभूषित नगर सब, हाट-बाट चौहाट"—कु० वि०।

विभेटन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० भेंट] समालिंगन, गले मिलाना। "भरत राम को देखि विभेटन प्रेम रह्यो सिर नाय"—स्फुट०।

विभेद—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्तर, पार्थक्य, बिलगाव, फरक, विभिन्नता, अनेक भेद या प्रकार, घुसना, धँसना। "अस्व लिये जुगदाम दिये नहिं एको विभेद विशेष लखाई"—जि० ला०।

विभेदक—(वि०, पु०, सं०) भेद डालने वाला, काटने-छाँटने वाला, छेद करने वाला, अंतर करने वाला।

विभेदन—(संज्ञा, पु०, सं०) काटने या छेदने का कार्य, फूट डालना, अलग करना। (वि०) छेदक।

विभेदना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विभेद] भेद या अन्तर डालना, भेदना, छेदना, छेदकर घुसना, भेदन करना।

विभौ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विभव] ऐश्वर्य, प्रताप, संपत्ति, धन ।

विभ्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) पर्यटन, भ्रमण, फेरा, चक्कर, भ्रान्ति, संदेह, भ्रम, संशय, आकुलता, स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे भ्रम-वश उलटे वस्त्राभरण पहन कभी तो क्रोध और कभी हर्षादि प्रगट करती है (साहि०) ।

विभ्रांत—(वि०, सं०) घूमता हुआ, फैला हुआ, घूमा हुआ, हड़बड़ाया हुआ, चक्कर खाता हुआ । **—मना**-(वि०) हतबुद्ध ।**—शील**-(वि०) मत्त, जिसका मस्तिष्क विकृत हो गया हो ।

विभ्राट—(संज्ञा, पु०, सं०) बखेड़ा, झगड़ा, आपत्ति, विपत्ति, उपद्रव, संकट ।

विमंडन—(संज्ञा, पु०, सं०) सँवारना, सजाना, शृङ्गार करना । [**विमंडित, विमंडनीय** (वि०)] ।

विमंडित—(वि०, सं०) सुसज्जित, अलंकृत, सुशोभित, सजा सजाया, सजा हुआ, युक्त, सहित (भली वस्तु से) ।

विमज्जित—(वि०, सं०) निमग्न ।

विमत—(संज्ञा, पु०, सं०) उलटा या विरुद्ध मत, प्रतिकूल सम्मति, विपरीत सिद्धान्त ।

विमति—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा जनक का बंदीजन। "सुमति विमति हैं नाम, राजन को वर्णन करैं"—[राम०] ।

विमत्सर—(संज्ञा, पु०, सं०) अति अभिमान ।

विमर्दन—(संज्ञा, पु०, सं०) कुचलना, मसलना ।

विमर्दित—(वि०, सं०) कुचला हुआ, रौंदा हुआ, पीसा हुआ । "किया यश ने मान विमर्दित अगणित भूपालों का"—दिन० ।

विमन—(वि०) [सं० विमनस्] उन्मन, उदास, अनमना, दुःखी । [**विमनता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

विमनस्क—(वि०, सं०) अन्यमनस्क, उन्मन, उदास, अनमना, विमन ।

विमर्द—(संज्ञा, पु०, सं०) मर्दन, रगड़ । "शय्योत्तरच्छद-विमर्द-कृशाङ्ग राग"—रघु० ।

विमर्दन—(संज्ञा, पु०, सं०) भली-भाँति मलना-दलना, मार डालना, नष्ट करना । [**विमर्दनीय, विमर्दित** (वि०)] ।

विमर्श—(संज्ञा, पु०, सं०) परामर्श, किसी विषय पर विचार, विवेचन, समीक्षा, आलोचना, परीक्षा ।

विमर्शन—(संज्ञा, पु०, सं०) परामर्श, विचार । विवेचन, समीक्षा, आलोचना, परीक्षा । [**विमर्शनीय** (वि०)] ।

विमर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) विमर्श, परामर्श, विवेचना, समीक्षा, आलोचना, परीक्षा, नाटक का एक अंग जिसमें व्यवसाय, प्रसंग, अपवाद, खेद, विरोध शक्ति और आदानादि का वर्णन हो (नाट्य०) ।

विमल—(वि०, सं०) निर्मल, साफ़, स्वच्छ, शुद्ध, निर्दोष, सुन्दर, मनोहर । [**विमला (स्त्री०)**] । [**विमलता (संज्ञा, स्त्री०)**] । "विमल सलिल सरसिज बहुरंगा"—[रामा०] ।**—ध्वनि**-(पु०) छः पदों का एक छंद (पिं०) ।

विमला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सरस्वती ।**—पति**-(पु०) ब्रह्मा जी, विमलेश ।

विमलात्मा—(वि०, सं०) जिसका आत्मा शुद्ध या पवित्र हो ।

विमाता—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० विमातृ] सौतेली माँ । "जान्यौ न विमाता ताहि माता सदा मान्यौ हम"—मन्ना० ।

विमान—(संज्ञा, पु०, सं०) नभ-मार्ग-गामी रथ, वायु-यान, हवाई-जहाज, उड़न-खटोला, मृतक की सजी हुई अर्थी, गाड़ी, सवारी, रथ, घोड़ा आदि रामलीला के स्वरूपों का सिंहासन, परिमाण, अनादर, बिमान, [बेमान (दे०)] । "नगर-निकट प्रभु प्रेरेउ, आयो भूमि बिमान"—[रामा०] ।

विमानक—(संज्ञा, पु०, सं०) वायुयान, सात खंडों वाला मकान, मीनार ।

विमार्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वच्छ, साफ, पवित्र ।

विमुंचना—(क्रि० स०, दे०) फेंकना, छोड़ना विमोचन । "वचन विमुंचत तीर"—वृं० ।

विमुक्त—(वि०, सं०) भली-भाँति मुक्त, पृथक्, छूटा हुआ, मोक्ष-प्राप्त, स्वच्छंद, स्वतन्त्र, बरी, छोड़ा या फेंका हुआ (दंड या हानि से) बचा हुआ ।

विमुक्ति—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० मुच + क्तिन्] मोक्ष, छुटकारा, रिहाई, मुक्ति ।

विमुख—(वि०, सं०) मुखहीन, किसी बात से जिसने मुह मोड़ लिया हो, निवृत्त, विरत, बेपरवाह, विरोधी, उदासीन, विरुद्ध, असफल, अपूर्ण

काम, अप्रसन्न, निराश । [**विमुखता** (संज्ञा, स्त्री०)] । "राम-विमुख सपनहु सुख नाहीं"—[रामा०] । "सम्मुख की गति और है, विमुख भये कछु और"—[नीति०] ।

विमुग्ध—(वि०, सं०) अज्ञान, मूर्ख, विशेष मोहित, उन्मत्त, भ्रांत, विकल । [**विमुग्धता** (संज्ञा, स्त्री०) । 'विमुग्धकारी मधु मंजु मास था"—[प्रि० प्र०] ।

विमुद—(वि०, सं०) उदास, खिन्न ।

विमूढ़—(वि०, सं०) विशेष रूप से मोहित, अत्यन्त मुग्ध, भ्रमित, भ्रांत, अचेत, बे समझ, मूर्ख । [**विमूढ़ा** (स्त्री०)] । [**विमूढ़ता** (संज्ञा, स्त्री०) । "पावहिं मोह विमूढ़, जे हरि-विमुख न भक्ति-रत"—[रामा०] ।

विमूढ़गर्भ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह गर्भ जिसमें बच्चा मर गया या बेहोश हो तथा प्रसव मे अति कठिनता हो ।

विमोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) मुक्त करना, छोड़ना या छुड़ाना, बंधनादि खोलना, फेंकना, रिहाई, बंधन से छुड़ाना । [**विमोच्य**, **विमोचनीय**, **विमोचित** (वि०)] ।

विमोचना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विमोचन] मुक्त करना, छोड़ना, गाँठ या बंधनादि खोलना, निकालना, रिहा या बाहर करना।

विमोह—(संज्ञा, पु०, सं०) अज्ञान, भ्रम, मोह, बेहोशी, मोहित होना, आसक्ति । [**विमोहक**, **विमोहित** (वि०)]। "तेहि विमोह मो सन चित हारा"—पद्मा० ।

विमोहन—(संज्ञा, पु०, सं०) चित्त लुभाना, मोहित करना, सुधि-बुधि भुलाना, कामदेव के पाँच बाणों में से एक मोह । [**विमोहित**, **विमोही**, **विमोहनीय** (वि०)] ।—**शील**-(वि०) मोहित करने या मोहने वाला, भ्रम में डालने वाला ।

विमोहना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विमोहन] लुभा जाना, मोहित होना, बेहोश होना, धोखा खाना । (क्रि० स०, दे०) लुभाना, मोहित या बेसुध करना, भ्रम या धोखे मे डालना ।

विमोहा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० विमोहा] विजोहा छंद (पिं०) ।

विमोहित—(वि०, सं०) लुब्ध, मुग्ध, लुभाया हुआ, अचेत, मूर्च्छित, भ्रमित ।

विमोही—(वि०) [सं० विमोहिन्] चित्त लुभाने वाला, सुधि-बुधि भुलाने य मोहित करने वाला, अचेत या मूर्च्छित करने वाला, निष्ठुर, निर्दय, भ्रम मे डालने वाला । [**विमोहिनी** (स्त्री०)] ।

विमौट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वल्मीक] दीमकों का बनाया घर, बाँबी ।

वियंग*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० विय + अंग] महादेव, द्व्यंग, अर्धांग ।

विय*—(वि०, दे०) [सं० द्वि] दो, जोड़ा, दूसरा, युग्म, मिथुन ।

वियुक्त—(वि०, सं०) बिलग, वियोगी, विरही, बिछोही, हीन, रहित, जुदा, पृथक् ।

वियो*—(वि०, दे०) [सं० द्वितीय] अन्य, दूसरा, अपर ।

वियोग*—(संज्ञा, पु०, सं०) जुदाई, विरह, बिछोह, विच्छेद, पृथकता । [**वियोगी** (वि०)] ।

वियोगान्त—(वि०, यौ०, सं०) दुःखान्त कथा का नाटक या उपन्यास । [**संयोगान्त**, **सुखान्त** (विलो०)] ।

वियोगिन, **वियोगिनी**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वियोगिन्] पति या प्रिय से विलग स्त्री, विरहिणी, बिछोहिनी । "योगिन ह्वै बैठी है वियोगिनि की अँखियाँ"—देव ।

वियोगी—(वि०) [सं० वियोगिन्] विरही, बिछोही, जो पत्नी या प्रिया से अलग, वियुक्त या दूर हो । [**वियोगिन**, **वियोगिनी** (स्त्री०)] ।

वियोजक—(संज्ञा, पु०, सं०) दो मिली हुई चीजों को भिन्न या अलग करने वाला, वह छोटी संख्या (राशि) जो उसी जाति की बड़ी संख्या मे से घटाई जावे (गणि०) । "घटै वियोजक जब वियोज्य में बाकी शेष कहावै"—कु० वि० ।

वियोजन—(संज्ञा, पु०, सं०) घटाना, पृथक्करण । [**वियोजनीय**, **वियोजित**, **वियोज्य** (वि०)] ।

विरंग—(वि०, सं०) फीके या बुरे रंग का, बदरंग, अनेक रंगों का । [**विरंगी** (स्त्री०)] ।

विरंचि—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा, विधाता । "जेहि विरंचि रचि सीय सँवारी"—[रामा०] ।—**पत्नी**-(स्त्री०) सरस्वती, विधि-प्रिया ।—**सुत**-(पु०) नारद, विरंचितनय ।

विरक्त—(वि०, सं०) उदासीन, विमुख, विरागी, अप्रसन्न, त्यागी । "हम अनुरक्त, हौ विरक्त तुम ऊधौ सुनौ"—मन्ना० ।

विरक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उदासीनता, अप्रसन्नता, प्रेम का अभाव, विराग। [**अनुरक्ति** (विलो०)]।

विरचन—(संज्ञा, पु०, सं०) बनाना, निर्माण। [**विरचनीय, विरचित** (वि०)]।

विरचना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० विरचन] सँवारना, बनाना, रचना, निर्माण करना, सजाना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० वि+रजन] विरक्त होना।

विरचित—(वि०, सं०) लिखित, निर्मित, बनाया या रचा हुआ। "जग विरचित तुम विरचन हारे" वासु०।

विरजा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक पौधा जिसका नाम कपित्थानी है। नहुष की पत्नी, कृष्ण की एक सखी। दुर्गा।

विरत—(वि०, सं०) विरक्त, विमुख, निवृत्त, वैरागी, जो तत्पर, अनुरक्त या लीन हो, विरागी, अत्यन्त या विशेष रत, अति लीन। [**अनुरत** (विलो०)]। "गृही विरत ज्यों हर्षयुत, विष्णु-भक्त कहँ देखि"—[रामा०]।

विरति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विरक्ति, वैराग्य, त्याग, चाह, का अभाव, उदासीन। "विषया हरि लीन रही विरती"—रामा०।

विरथ—(वि०, सं०) रथ-रहित, बिना रथ का, पैदल। (वि०, दे०) व्यर्थ। "विरथ कीन तेहि पवन-कुमारा"—[रामा०]।

विरथा, बिरथा—(वि०, दे०) वृथा, व्यर्थ।

विरद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विरुद] यश, प्रसिद्धि, ख्याति, कीर्त्ति, प्रशस्ति, यशकीर्त्तन। "बाँधे विरद वीर रण गाढ़े"—[रामा०]।

विरदावली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० विरुदावली] यशोगान, कीर्त्ति-कथा, प्रशस्तिगाथा, सुयश-गाथा। "विरदावली कहत चलि आये"—[रामा०]।

विरदैत*—(वि०, दे०) [हिं० **विरद**+ऐत हिं० प्रत्य०] प्रसिद्ध, यशस्वी, नामी, कीर्तिवान, यशी, विख्यात, [विरुदैत (दे०)]।

विरमण—(संज्ञा, पु०, सं०) ठहर या रम जाना, विराम करना, रुक जाना।

विरमना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विरमण] ठहर या रम जाना, विराम करना, रुक जाना, चित्त लगाना, वेगादि का कम होना या थमना, मुग्ध हो ठहर जाना। [**विरमाना** (स० रूप)], [**विरमावना** (प्रेरणा० रूप)]।

विरल—(वि०, सं०) बिडर, दूर-दूर, [**सघन** (विलो०)]। दुर्लभ, निर्जन, थोड़ा, पतला, अल्प, न्यून जो पास-पास या घना न हो, विरला, शून्य। [**विरलता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "ज्यों शरद ऋतु मे विमल घन के विरल खंडों से सदा"—मैथिली०।

विरला—(वि०, दे०) [सं० विरल] बिड़र, दूर-दूर, दुर्लभ, जो पास पास या घना न हो, कोई कोई, निर्जन, अल्प, थोड़ा, कम, शून्य, पतला। "करत बेगरजी प्रीति यार हम विरला देखा"—गिरधर०।

विरस—(वि०, सं०) नीरस, फीका, रसहीन, अप्रिय, अरुचिकर, रस-रहित या रस-निर्वाह-हीन काव्य। [**विरसता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

विरह—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति का विलग होना, वियोग, बिछोह, विच्छेद, जुदाई, वियोग-व्यथा।—**जनित**–(वि०) वियोग से उत्पन्न।

विरहानल—(संज्ञा, पु०, सं०) विरह की ज्वाला। "आये उसके ढिग विरहानलक"—पंत।

विरहिणी—(वि०, स्त्री०, सं०) वियोगिनी, विरहिनी।

विरहित—(वि०, सं०) रहित, बिना, विहीन, शून्य, वियोगी, विरह-प्राप्त।

विरही—(वि०) [सं० विरहिन्] वियोगी, बिछोही, प्रिया-हीन [**विरहिणी** (स्त्री०)]।

विरहोज्ज्वल—(वि०) विरह से उज्ज्वलता, शुद्धता को प्राप्त। "भावना रह गयी विरहोज्ज्वल"—पंत।

विरहोत्कंठित—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह नायक जो नायिका के संयोग की पूरी आशा होने पर भी उससे न मिल सके।

विरहोत्कंठिता—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) कारण-वशात् न आते हुए प्रिय या नायक के आने की पूरी आशा या उत्कंठा से युक्त नायिका।

विराग—(संज्ञा, पु०, सं०) वैराग्य, त्याग, अनुरागाभाव, विषय-भोगों से निवृत्ति, विरक्ति। [**विरागी** (वि०])। "जैसे बिनु विराग संन्यासी"—[रामा०]।

विरागी—(वि०) [सं० विरागिन्] योगी, वैरागी (दे०)] त्यागी, विरक्त ।

विराज—(संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर का स्थूल रूप, आदिपुरुष, क्षत्रिय । "विराजोऽधिपूरुषः" —[य० वे०] ।

विराजना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विराजन] फबना, शोभित होना, सोहना, छवि देना, उपस्थित होना, बैठना । "राजसभा रघुराज विराजा"—[रामा०] ।

विराजमान—(वि०, सं०) चमकता हुआ, सुशोभित, उपस्थित, बैठा हुआ, आसीन ।

विराजित—(वि०, सं०) सुशोभित, उपस्थित, प्रसिद्ध ।

विराट्—(संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा या ब्रह्म का विश्वरूप या स्थूल शरीर, दीप्ति, कांति, आभा, क्षत्रिय । वि० बहुत बड़ा या भारी । "विदुषन प्रभु विराटमय दीसा"—[रामा०] ।

विराट—(संज्ञा, पु०, सं०) मत्स्यदेश, मत्स्यदेश के राजा जिनके यहाँ अज्ञातवास में पांडव रहे थे (महा०) । (वि०, दे०) बड़ा, भारी ।

विराध—(संज्ञा, पु०, सं०) कष्ट, पीड़ा, सताने वाला, लक्ष्मण से मारा गया दंडक वन का एक राक्षस, [बिराध (दे०)] । "खर दूखन विराध अरु बाली"—[रामा०] ।

विराम—(संज्ञा, पु०, सं०) ठहरना, रुकना, थमना, विश्राम करना, सुस्ताना, वाक्य का वह स्थान जहाँ बोलते या पढ़ते समय ठहरना आवश्यक है (दो भेद हैं:—**पूर्ण**, अर्ध) इसका सूचक चिह्न (, ।) छंद में यति, देरी, विलंब ।

विराव—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द, कलरव, बोली, शोर, हल्ला । "आलोकशब्दं वयसां विरावैः"—[रघु०] ।

विरावित—(वि०, सं०) ध्वनित ।

विरास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विलास] विलास ।

विरासी*—(वि०, दे०) [सं० विलासी] विलासी ।

विरुज—(वि०, सं०) रोगरहित, नीरोग ।

विरुझना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० उलझना] उलझना, अटकना । [**विरुझाना, विरुझावना** (स० रूप)], [**विरुझवाना** (प्रेरणा० रूप)] ।

विरुद—(संज्ञा, पु०, सं०) राजस्तवन, यश-कीर्त्तन, सुन्दर भाषा में स्तुति, प्रशस्ति, राजाओं की प्रशंसासूचक पदवी (प्राचीन) यश, कीर्ति, ख्याति ।

विरुदावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यश-वर्णन, स्तवन, प्रशंसा, गुण-पराक्रमादि का विस्तृत कथन-कीर्ति-कीर्तन, [विरदावली (दे०)] ।

विरुद्ध—(वि०, सं०) प्रतिकूल, उलटा, विपरीत, अप्रसन्न, अनुचित । [**विरुद्धता** (संज्ञा, स्त्री०)] । (क्रि० वि०) प्रतिकूल दशा में ।—**कर्मा**-(पु०) बुरे चालचलन वाला, श्लेषालंकार का एक भेद जिसमें एक ही क्रिया के कई विरुद्ध फल सूचित होते हैं ।—**धर्मा**-(पु०) प्रतिकूल धर्म्म या स्वभाव वाला, विपरीताचारी । "विरुद्धधर्मैरपि भर्तृतोज्झिता"—नैषध ।—**रूपक**-(पु०) रूपकातिशयोक्ति नामक रूपकालंकार का एक भेद (केशव०) ।

विरुद्धता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रतिकूलता, विपरीतता, विलोमता ।

विरुद्धार्थ—(वि०, सं०) विरोध का अर्थ रखने वाला ।—**दीपक**-(पु०) दीपकालंकार का एक भेद जिसमे दो विरुद्ध क्रियायें एक ही बात से एक ही साथ होती हुई कही जाती है ।

विरूप—(वि०, सं०) [स्त्री० विरूपा] कुरूप, बदशकल, भद्दा, शोभा हीन, परिवर्तित, बदला हुआ, उलटा, विरुद्ध, कई रूप-रंग का । [**विरूपता** (संज्ञा, स्त्री०)] । "यद्यपि भगनी कीन्ह विरूपा" —[रामा०] ।

विरूपाक्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महादेवजी । एक शिव-गण, एक दिग्गज, रावण का एक सेनापति । "विरूपाक्षविश्वेशविश्वाधिकेशं"—शंकराचार्य ।

विरेक—(संज्ञा, पु०, सं०) अतीसार रोग ।

विरेचक—(वि०, सं०) दस्तावर, दस्त लाने या कराने वाला, मलभेदी ।

विरेचन—(संज्ञा, पु०, सं०) दस्तावर औषधि, जुलाबी दवा । "ज्वरान्ते भेषजं दद्यात् ज्वरमुक्तं विरेचनं"—[भा० प्र०] ।

विरोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाशमान, रवि-रश्मि, सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा, विष्णु, राजा बलि का पिता और प्रह्लाद के पुत्र । "सुता विरोचन की हती, दीरघजिह्वा नाम"—[राम०] ।

विरोध—(संज्ञा, पु०, सं०) जो मेल में न हो, प्रतिकूलता, अनैक्य, विपरीत या विरुद्ध भाव, शत्रुता, अनबन, व्याघात, एक साथ दो बातों का न होना, उलटी या विलोम स्थिति, विनाश, नाटक का एक अंग जहाँ किसी प्रसंग-वर्णन मे विपत्ति का आभास दिखाया जाता है। एक अर्थालंकार, जिसमें द्रव्य, जाति, गुण और क्रिया में से किसी एक का दूसरे द्रव्यादि में किसी एक से विरोध प्रकट हो [**विरोधक, विरोधी** (वि०)]।—**कारक**-(वि०) कलह उत्पन्न करनेवाला।—**कारी**-(वि०) कलह बढ़ाने वाला।—**शमन**-(पु०) कलह शांत करना।

विरोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) बैर या विरोध करना, शत्रुता करना, विनाश, नाटक में विमर्ष का एक अंग, जहाँ कारणवश कार्यध्वंस का सामान या उपक्रम हो (नाट्य०) [**विरोध्य, विरोधित, विरोधनीय, विरोधी** (वि०)]।

विरोधना*—(क्रि० स०) [सं० विरोधन] विरोध करना, बैर या झगड़ा करना, प्रतिद्वन्द्वी होना, विपरीत करना। "साईं ये न विरोधिये, गुरु, पंडित, कवि, यार"—गि० दा०।

विरोधाभास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) द्रव्य जाति गुण क्रिया का विरोध सा सूचक एक अर्थालंकार (अ० पी०)।

विरोधित—(वि०, सं०) जिसकी खिलाफत की गई हो, अस्वीकृत।

विरोधिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विरोध करने वाली औरत, दुश्मनी।

विरोधी—(वि०) [सं० विरोधिन्] प्रतिकूलता या विरोध करने वाला, विपक्षी, रिपु, शत्रु, प्रतिकूल, बाधक।—**श्लेष**-(पु०) श्लेषालंकार का एक भेद जहाँ श्लिष्ट शब्दों से दो पदार्थों में भेद, विरोध या न्यूनाधिक्य सूचित हो (केशव)।

विरोधोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उलटी-पुलटी बातें कहना, अनर्थ वचन, विलोमवाक्य, विरोध-सूचक उक्ति (अलं०)।

विरोधोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उपमालंकार का एक भेद जहाँ किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी वस्तुओं से दी जावे (केशव०)।

विरोपित—(वि०, सं०) रोपा हुआ, पूरा हुआ।

विरोहण—(संज्ञा, पु०, सं०) रोपना, उगना, अंकुरित होना।

विलंब—(वि०, सं०) देर, बेर, अतिकाल, अनुमान या आवश्यकता से अधिक समय, [बिलम, बिलंब (दे०)]। "अब बिलम्ब कर कारण काहा" —[रामा०]।

विलंबना—(क्रि० अ०, दे०) [विलंबन] देर करना, बेर लगाना, लटकना, चित्त लगने से रम या बस जाना, सहारा लेना।

विलंबित—(वि०, स०) लटकता या झूलता हुआ, वह कार्य जिसमें देर हुई हो।

विल—(संज्ञा, पु०, सं०) बिल, छेद, माँद।

विलक्षण—(वि०, सं०) विचित्र, अनोखा, अनूठा, असाधारण, अपूर्व, अद्भुत, [बिलच्छन (दे०)]। [**विलक्षणता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "नवगुण कविता माहिं एक तें एक विलक्षण"—दीन०।

विलखना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विलाप] रोना, विलाप करना, दुखी होना, विलपना। "विलखि कह्यो मुनि-नाथ"—[रामा०]।* (क्रि० अ०) [सं० लक्ष] ताड़ना, पता लगाना, समझना।

विलग—(वि०) [हिं० उप० + लगना] अलग, पृथक, भिन्न, माख या बुरा मानना, बिलग (दे०)]। "हूजत है रसराय, बिलग जनि याको मानो"—[गो० क०]।

विलगना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० विलग + ना प्रत्य०] विभक्त या अलग होना, पृथक् या भिन्न होना, जुदा होना। "सो विलगाय विहाय समाजा"—[रामा०]।

विलगाना, विलगावना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० विलग] अलग या पृथक् करना, भिन्न या जुदा करना।

विलच्छन—(वि०, दे०) [सं० विलक्षण] विचित्र, अनोखा, अद्भुत, अनूठा।

विलपना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विलाप] रोना, [बिलपना (दे०)]। [**विलपाना** (स० रूप)], [**विलपवाना** (प्रेरणा० रूप)]। "यहि विधि बिलपत भा भिनसारा"—[रामा०]।

विलम*— संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विलंब] [बिलव (दे०)] देर, बेर, अबेर।

विलमना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० विलम + ना प्रत्य०] देरी करना, ठहर जाना। [**विलमाना, बिरमाना** (स० रूप)]।

विलय—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रलय, नाश ।

विलयन—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षय होना, विगलन, दूर लगाना ।

विलसन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रमोद, खेल, क्रीड़ा, चमकना ।

विलसना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विलस] आनन्द मनाना या भोगना, विलास करना, शोभा पाना । [**विलसाना** (स० रूप)], [**विलसवाना** (प्रेरणा० रूप)] । "नित्त कमावै कष्ट करि, विलसै औरहि कोय"—वृं० ।

विलसित—(वि०, सं०) चमकता हुआ, व्यक्त, विनोदी । (पु०) अभिव्यक्ति, चमकने का कार्य परिणाम ।

विलाप—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रन्दन, रोना, प्रलाप, रो रो कर दुख कहना, रुदन, रोदन । "करत विलाप जाति नभ सीता"—[रामा०] ।

विलापना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० विलख] रोना चिल्लाना, शोक या क्रन्दन करना, [बिलापना (दे०)] ।

विलायत—(संज्ञा, पु०, अ०) कोई अन्य देश जहाँ एक जाति के लोग रहते हों, दूसरों या दूर का देश ।

विलायती—(वि०, अ०) विलायत का, विदेशी, दूसरे देश का बना हुआ ।

विलास—(संज्ञा, पु०, सं०) विषय-भोग, आमोद-प्रमोद, आनन्द, हर्ष, मनोविनोद, मनोरंजन, पुरुषों को लुभाने वाली स्त्रियों की प्रेम-सूचक क्रियाएँ, प्रसन्नकारी क्रिया, नाज-नखरा, हाव-भाव, किसी वस्तु का हिलना, किसी अंग की मनहरण चेष्टा, अति-सुख-भोग, करादि अंगों का रुचिर संचालन । "हास विलास लेत मन मोला"—[रामा०] ।—**गृह**,—**भवन**-(पु०) प्रमोदगृह ।—**वातायन**-(पु०) छज्जा ।

विलासन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रेमालिंगन, क्रीड़ा ।

विलासिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अंक का रूपक (नाट्य०) ।

विलासिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कामिनी, सुन्दर स्त्री, वेश्या । ज, र, ज (गण) और दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) । "विलासिनी बाहुलता वनालया, विलेपनामोदहृताः सिषेविरे" —[किरात०] ।

विलासी—(संज्ञा, पु०,) [सं० विलासिन्] भोग-विलास में अनुरक्त या लीन, भोगी या कामी व्यक्ति, कामुक, कौतुकी, हँसोड़ा, क्रीड़ा करने वाला, आराम चाहने वाला, आराम-तलब । [**विलासिनी** (स्त्री०)] । "विस्रस्तसंसादपरो विलासी"—रघु० ।

विलीक*—(वि०, पु०, दे०) [सं० व्यलीक] अनुपयुक्त, अनुचित, बेठीक । "वचन तुम्हार न होहि विलीका"—[रामा०] ।

विलीन—(वि०, सं०) छिपा हुआ, लुप्त, लय जो दूसरे में लीन या मिल गया हो, नाश, अदृश्य, निमग्न, लोप । [**विलीनता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

विलुंठन—(संज्ञा, स्त्री० सं०) लूटना, चोरी करना ।

विलुप्त—(वि०, सं०) अदृश्य, गुप्त ।

विलुलित—(वि०, सं०) हिलता या लहराता हुआ । "विलुलितालकसंहतिरामृशन् मृगदृशां श्रमवारि ललाटजम्"—माघ० ।

विलेप—(संज्ञा, पु०, सं०) लेप, उबटन ।

विलेशय—(संज्ञा, पु० सं०) बिल मे सोने या रहने वाला, साँप, सर्प ।

विलोक—(संज्ञा, पु०, सं०) दृष्टिपात, नजर ।

विलोकन—(संज्ञा, पु०, सं०) विचार करना, देखना, समझना, ध्यान करना ।

विलोकना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विलोकन] देखना । "नारि विलोकहिं हरषि हिय"—(रामा०] । [**विलोकन** (संज्ञा, पु०)] । [**विलोकनीय** (वि०)] ।

विलोकित—(वि०, सं०) देखा हुआ, विवेचित ।

विलोक्य—(वि०, सं०) देखने लायक ।

विलोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) नेत्र, आँख, नयन, आँख फोड़ने का काम । "भये विलोचन चारु अचंचल"—[रामा०] ।—**पथ**-(पु०) दृष्टिपथ ।

विलोड़क—(वि०) मंथनकारी, हिलोरें उत्पन्न करने वाला । "बिबुधवृंद विलोड़क शक्ति से" —हरिऔध ।

विलोड़ना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विलोडन] मथना, महना, हिलोरना ।

विलोड़ित—(वि०) मथित, क्षुब्ध, हिलाया हुआ ।

विलोप—(संज्ञा, पु०, सं०) अदर्शन, नाश, ध्वंस, छिपा, लुप्त ।

विलोपन—(संज्ञा, पु०, सं०) भग, लोप, नष्ट, लुप्त।

विलपोना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विलोप] छिपा लेना, नष्ट या लोप करना, उड़ाकर भागना, विघ्न डालना।

विलोपी—(वि०) [सं० विलोपिन्] नष्ट या नाश करने वाला, लोप करने या छिपाने वाला, लोपक।

विलोभन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रलोभन, बहकाना प्रशंसा।

विलोम—(वि०, सं०) विपरीत, प्रतिकूल, उलटा, विरुद्ध। (संज्ञा, पु०) ऊँचे से नीचे आना। [**विलोमता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

विलोमक—(वि०, सं०) प्रतिकूल, विपरीत।

विलोमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आँवला।

विलोल—(वि०, सं०) चंचल, चपल, सुन्दर। "विलोल नेत्रा तरुणी सुशीला"—रंभा०।

विलोहित—(वि०, सं०) गाढ़ा लाल।

विल्व—(संज्ञा, पु०, सं०) बेल का फल या पेड़। —**पत्र**–(पु०) बेल-पत्र, बेल का पत्ता।—**मंगल**–(पु०) अंधे होने से पहले महाकवि सूरदास का नाम।

विवक्षा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० वक्तुमिच्छा] कहने की इच्छा, अर्थ, मतलब, तात्पर्य्य, अनिश्चय, संदेह, संशय।

विवक्षित—(वि०, सं०) जिसकी कहने की इच्छा या आवश्यकता हो, अपेक्षित।

विवदना*—(क्रि० अ०) [सं० विवाद+ना हिं० प्रत्य०] विवाद या बहस करना, शास्त्रार्थ करना।

विवर—(संज्ञा, पु०, सं०) छेद, बिल, छिद्र, सूराख, दरार, गर्त, कंदरा, गुफा, गड्ढा।

विवरण—(संज्ञा, पु०, सं०) व्याख्या, भाष्य, विवेचन, वृत्तांत, बयान, ब्योरा, टीका।

विवर्जित—(वि०, सं०) परित्यक्त, वंचित, प्रदत्त, विभाजित।

विवर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रोध, भय, मोहादि से मुख का रंग बदल जाना (एक भाव साहि०)। (वि०) कमीना, नीच, कुजाति, अधम, बदरंग, कांति-हीन, मुख-श्री रहित, बुरे रंग का। [**विवर्णता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

विवर्त—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, समुदाय, समुच्चय, आकाश, नभ, भ्रम, भ्रांति, संदेह। "ईशाणिमैश्वर्य्यं विवर्त्त मध्ये"—[नैषध]।—**वाद**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०)—परिणामवाद सृष्टि को माया तथा ब्रह्म को सृष्टि का उद्गम-स्थान मानने का सिद्धान्त (वेदा०)।

विवर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) फिरना, टहलना, घूमना। [**विवर्तित**, **विवर्तनीय** (वि०)]।

विवर्तित—(वि०, सं०) घूमाया या चक्कर खाया हुआ, परिवर्तित, खंडित, उन्मीलित।

विवर्द्धन—(संज्ञा, पु०, सं०) उन्नति, तरक्की, उन्नति करना। [**विवर्द्धनीय** (वि०)]।

विवर्द्धित—(वि०, सं०) वृद्धि या उन्नति को प्राप्त, बढ़ाया हुआ। कल निनाद विवर्द्धित था हुआ।—हरिऔध।

विवश—(वि०, सं०) बेबस, [बेबस (दे०)] लाचार, जिसका वश न चले, मजबूर, पराधीन।

विवशता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) असहाय की स्थिति, लाचारी।

विवस्त्र—(वि०, सं०) नंगा, नग्न, वस्त्र-हीन, दिगम्बर।

विवस्वत्—(संज्ञा, पु०, सं०) विवस्वान्, सूर्य्य, अरुण (सूर्य-सारथी)। "इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्"—[भ० गी०]।

विवसा—(संज्ञा, पु०, सं०) इच्छित, वांछित, चाहा हुआ।

विवाद—(संज्ञा, पु०, सं०) शास्त्रार्थ, वाक्-युद्ध, बहस, कलह, झगड़ा, मुकदमेबाजी। **मुहा०**—**उठाना**–झगड़ा खड़ा करना।

विवादास्पद—(वि०, यौ०, सं०) विवाद-योग्य, विवादयुक्त, बहस के लायक, जिस पर बहस हो सके।

विवादी—(संज्ञा, पु०) [सं० विवादिन्] विवाद या बहस करने वाला, झगड़ा-फसाद करने वाला। (मुकदमे में) पक्षी या प्रतिपक्षी।

विवाह—(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्री-पुरुष को दांपत्य सूत्र में बाँधने की एक सामाजिक रीति, ब्याह, शादी, आज-कल ब्राह्म विवाह प्रचलित है, यों विवाह के ८ भेद हैं—ब्रह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच (मनु०), पाणिग्रहण, परिणय, [बिवाह (दे०)]। "दुष्ट

ही धनु भयो बिबाहू''—[रामा०]।—सम्बन्ध-(पु०) विवाह के माध्यम से होने वाला रिश्ता या सम्बन्ध।

विवाहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विवाह] ब्याहना, शादी करना, पाणिग्रहण या परिणय करना।

विवाहित—(वि०, अ०, सं०) ब्याहा हुआ, जिसका ब्याह हो चुका हो। [**विवाहिता** (स्त्री०)]।

विवाही—(वि०, स्त्री०) [सं० विवाहिता] जिसका ब्याह हो चुका हो, ब्याही, परिणीता।

विवि*—(वि०, दे०) [सं० द्वि०] दो, दूसरा।

विविक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) पवित्र, एकांत, निर्जन।

विविचार—(वि०, सं०) विचार-हीन, विवेक या आचार से रहित।

विविध—(वि०, सं०) अनेक प्रकार या बहुत भाँति का।

विविर—(संज्ञा, पु०, सं०) गुफा, खोह, दरार, बिल, छिद्र, छेद।

विबुध—(संज्ञा, पु०, सं०) देवता। "अमराः निर्जराः देवाः त्रिदशाः विबुधाः सुराः"—अमर०। "अभून्नृपो विबुधसखा"—भट्टी०।

विवृत—(वि०, सं०) विस्तारित, विस्तृत, फैला या खुला हुआ। (संज्ञा, पु०) ऊष्म स्वरों के उच्चारण का एक प्रयत्न (व्या०)।

विवृतोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमें श्लेष से गुप्त किये अर्थ को कवि स्वयं अपने शब्दों से प्रगट कर देता है (अ० पी०)।

विवेक—(संज्ञा, पु०, सं०) भले-बुरे की पहिचान या ज्ञान, सदसत ज्ञान की मानसिक शक्ति, ज्ञान, विचार, समझ, बुद्धि।—भ्रष्ट,—रहित-(वि०) ज्ञानशून्य।

विवेकी—(संज्ञा, पु०) [सं० विवेकिन्] विवेकवान्, ज्ञानी, समझदार, प्रवीण, चतुर, सदसत या भले-बुरे का ज्ञान रखने वाला, बुद्धिमान, न्यायी, न्यायशील। "बसति यदि विवेकी पंच वा षट् दिनानाम्"—स्फु०।

विवेचन—(संज्ञा पु०, सं०) आलोचन, मीमांसा, निर्णय, तर्क-वितर्क, सत्यासत्य, औचित्यानौचित्य की गवेषणा, परीक्षा या जाँच। [**विवेचना** (स्त्री०)]। [**विवेचनीय, विवेचित** (वि०)]।

विवेचक—(संज्ञा, पु०, सं०) मीमांसक, विचारक, बुद्धिमान्।

विवेचना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विचार, ज्ञान।

विवेचनीय—(वि०, सं०) विचार या विवेचन करने योग्य, विचारणीय, आलोचनीय।

विवेचित—(वि०, सं०) आलोचित, विचारा हुआ, निर्धारित, वर्णित, निश्चित।

विव्वोक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक हाव जब स्त्रियाँ संभोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं (सा०)।

विशद—(वि०, सं०) निर्मल, विमल, स्वच्छ, साफ, व्यक्त, स्पष्ट, सफेद, सुन्दर। [**विशदता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "विरस विशद गुणमय फल जासु"—[रामा०]।

विशांपति—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा। "तवैव संदेशहराद्विशांपतिः शृणोति लोकेश तथा विधीयताम्"—रघु०।

विशाख—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्त्तिकेय, शिव, कार्तिकेय के वज्र चलाने से प्रगट एक देवता।—दत्त-(पु०) संस्कृत भाषा के एक कवि जिन्होंने मुद्राराक्षस नामक संस्कृत-नाटक बनाया है।

विशाखा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) २७ नक्षत्रों में से १६ वाँ नक्षत्र, राधा, कौशांबी के समीप का एक पुराना प्रदेश।

विशार—(संज्ञा, पु०, सं०) गली।

विशारद—(संज्ञा, पु०, सं०) निपुण, दक्ष, कुशल, ज्ञाता, पंडित, [बिसारद (दे०)]। "शिव नारद सनकादि विशारद"—स्फु०।

विशाल—(वि०, सं०) सुविस्तृत, बहुत बड़ा या लंबा-चौड़ा, वृहत, सुन्दर, प्रसिद्ध।

विशालता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महानता, विस्तार, ख्याति।

विशाला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उज्जयन नगरी, इंद्रवारुणी, दक्ष की एक पुत्री।

विशालाक्ष—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) महादेव जी, शिव, गरुड़, विष्णु।

विशालाक्षी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुन्दर और बड़ी बड़ी आँखों वाली स्त्री, पार्वती जी, देवी की एक मूर्त्ति।

विशिख—(संज्ञा, पु०, सं०) तीर, बाण, [बिशिख (दे०)]। "बिशिख माश्रवणं परिपूर्य-चेदविचलद्भुज मुज्झितुमीशिषे"—नैषध। "संधान्यो तब बिशिख कराला"—[रामा०]।

विशिष्ट—(वि०, सं०) युक्त, मिश्रित, मिला हुआ, जिसमें कुछ विशेषता हो, विलक्षण, श्रेष्ठ, उत्तम ।

विशिष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विशेषता, विलक्षणता, श्रेष्ठता ।

विशिष्टाद्वैत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक दार्शनिक मत या सिद्धान्त जिसमे माया, जीवा, ब्रह्म तीन अनादि तथा जीव और जगत् ब्रह्म से भिन्न होते हुए भी भिन्न नहीं माना जाता है, विशिष्टाद्वैतवाद ।—**वादी**–(वि०) विशिष्टाद्वैतवाद के सिद्धान्त को मानने वाला ।

विशिष्टी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शंकराचार्य की जननी ।

विशुद्ध—(वि०, सं०) बिलकुल निर्दोष या साफ, सत्य, सच्चा ।—**भाव**,—**मना**–(वि०) शुद्ध मन या हृदय वाला ।

विशुद्धात्मा—(वि०, सं०) जिसका आचरण शुद्ध हो ।

विशुद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शुद्धता, सफाई ।

विशूचिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विसूचिका] दस्त आने का रोग, हैजा, बदहजमी, अनपच । " सपदि निम्बुरसेन विशूचिकां हरति भो रति भोग-विचक्षणे"—लो० रा० ।

विशृंखल—(वि०, सं०) जिसमें शृंखला या क्रम न पाया जावे, स्वच्छंद, स्वतंत्र । [**विशृंखला** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

विशेष—(संज्ञा, पु०, सं०) साधारण से परे या अतिरिक्त (अधिक), अंतर, भेद, पदार्थ, वस्तु, अधिकता, अधिक, विचित्रता, अनोखापन, सार, तत्व, एक अर्थालंकार जिसमें (१) आधार के बिना आधेय (२) थोड़े श्रम या यत्न से अधिक लाभ या प्राप्ति (३) तथा एक ही वस्तु का कई स्थानों में होना कहा जाये (अ० पी०) । ७ पदार्थों में से एक । "द्रव्य-गुण-क्रिया-सामान्य-विशेष-समवायाभावः सप्तैव पदार्थाः"—[वैशे०] ।—**ज्ञ**–(पु०) किसी विषय का विशेष या मार्मिक ज्ञाता ।

विशेषक—(वि०, सं०) भेद को स्पष्ट करने वाला ।

विशेषण—(संज्ञा, पु०, सं०) जो किसी वस्तु की कुछ विशेषता प्रगट करे किसी संज्ञा की बुराई-भलाई या विशेषता सूचक विकारी शब्द जो उसकी व्याप्ति को मर्यादित करता है । यह तीन भाँति का है, गुण-वाचक, संख्या-वाचक, सार्वनामिक (व्या०) ।

विशेषतः—(अव्य०, सं०) विशेष रूप से, अधिकता विशेषतया ।

विशेषता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विशेष का धर्म्म या भाव, खसूसियत (फ़ा०), अधिकता, असाधारणता, प्रधानता, मुख्यता ।

विशेषना—(क्रि० अ०) [सं० विशेष] विशेष रूप देना, निर्णय या निश्चय करना ।

विशेषोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अर्थालंकार जहाँ पूर्ण कारक के होते हुए भी कार्य्य के न होने का कथन हो (अ० पी०) ।

विशेष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वह संज्ञा जिसके साथ उसका विशेषण भी हो (व्या०) ।

विशोक—(वि०, सं०) शोकरहित, विगतशोक । [**विशोकी** (वि०, दे०)] ।

विश्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रजा, रिआया ।—**प**–(पु०) राजा ।

विश्रंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्वास, भरोसा, प्रतीति, प्रेमिका प्रेमी में रति के समय को प्रेम कलह, प्रेम । "माधुर्य्यं विश्रंभ विशेष भाजा"—[किरा०] ।—**कथा**–(स्त्री०) प्रेमालाप ।

विश्रब्ध—(वि०, सं०) विश्वास-योग्य, विश्वासनीय, शांत, निडर, निर्भय । "विश्रब्धं परिचुम्ब्य जातपुलकाम्"—[अमरुश०] ।

विश्रब्धनवोढा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह नवोढा नायिका जो पति पर कुछ विश्वास और अनुराग करने लगी हो (काव्य) । जैसे—"प्रीतम पान खवाइबे को परिजक के पास लौं जान लगी है"—पद्मा० ।

विश्रवा—(संज्ञा, पु०, सं०) कुबेर के पिता एक प्राचीन ऋषि ।

विश्रांत—(वि०, सं०) श्रमित, क्लांत, थकित, थका हुआ, जो आराम कर चुका हो । "दिवंमरुत्वानिव भोक्ष्यते भुवं दिगन्तविश्रान्त रथो हि तत्सुत"—रघु० ।

विश्रांतघाट—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मथुरा में यमुना जी का एक घाट ।

विश्रांति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आराम, विश्राम ।

विश्राम—(संज्ञा, पु०, सं०) थको मिटाना, श्रम दूर करना, आराम करना, सुख-चैन, ठहरने का

स्थान, आराम, टिकाश्रय, [विस्राम, बिसराम (दे०)]। "ऋषय संघ रघुवंशमणि, करि भोजन विश्राम"—[रामा०]।—स्थान-(पु०) "विश्राम स्थानम् कविवर वचसाम्"।

विश्रामलय—(संज्ञा, पु०, सं०) यात्रियों के विश्राम करने के लिये स्थान।

विश्रुत—(वि०, सं०) विख्यात, प्रसिद्ध।

विश्लिष्ट—(वि०, सं०) विश्लेषण-युक्त, शिथिल, वियोगी, अलग रहने वाला, विकसित प्रस्फुटित, खिला, प्रकाशित, प्रकट, मुक्त, ढीला, विभक्त।

विश्लेष—(संज्ञा, पु०, सं०) वियोग, बिरह, अलगाव, भेद।

विश्लेषण—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी पदार्थ के संयोजकों को अलगाना या पृथक् करना, पृथक्करण। [एनलिसिस]

विश्लेषित—(वि०, सं०) छानबीन किया हुआ, अलग-अलग किया हुआ।

विश्वंभर—(संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर, विष्णु भगवान, एक उपनिषद्, [बिसंभर (दे०)]। "का चिन्ता जगजीवने यदि हरिविश्वंभरो गीयते"।

विश्वंभरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वसुंधरा, पृथ्वी, वसुधा, भूमि। "विश्वंभरः पिता यस्य माता विस्वंभरा तथा"।

विश्व—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, समस्त ब्रह्मांड, चौदहों लोकों या भुवनों का समूह, जगत, संसार देवतों का एक गण जिसमें वसु, सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरूरवा, माद्रवा ये दस देवता हैं, शरीर, [विस्व (दे०)]। (वि०) सब, बहुत, समस्त। "विश्व-भरण-पोषण कर जोई"—[रामा०]।—कर्म्मा-(संज्ञा, पु०) [सं० विश्वकर्मन्] परमेश्वर, ब्रह्मा, सूर्य्य, समस्त शिल्प शास्त्र के आविष्कर्ता एक विख्यात देवता, कारु, देववर्द्धन, तक्षक, शिव जी, लोहार, बढ़ई, राज, मेमार। "मनहु विश्वकर्म्मा की रची"—स्फु०।—कोश-(संज्ञा, पु०, सं०) वह कोश ग्रंथ जिसमें सब प्रकार के शब्दों या विषयों का सविस्तार वर्णन हो। (यौ०) संसार का कोष।—नाथ-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महादेव, शिवजी, विष्णु भगवान।—पाल—पालक-(संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा, परमेश्वर, विश्वपोषक।—पूज्य-(वि०) जिसकी सर्वत्र पूजा होती है।—रूप-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिव, विष्णु। विश्व ही है रूप जिसका वह परमात्मा, गीतोपदेश के समय अर्जुन को दिखाया गया श्रीकृष्ण का विराटरूप। "विश्वरूप कलना-दुपपन्न"—[नैषध]।—लोचन-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्य और चंद्रमा, विश्वविलोचन, जगन्नेत्र।—विद्यालय-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह विद्यालय जहाँ सब प्रकार की विद्याओं की उच्च शिक्षा दी जावे, [यूनीवर्सिटी]।—व्यापी-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० विश्वव्यापिन्] परमात्मा, भगवान। (वि०) विभु, जो सारे संसार में फैला या व्याप्त हो।—श्रवा-(संज्ञा, पु०) [सं० विश्वश्रवस्] कुबेर और रावण के पिता एक मुनि।

विश्वसनीय—(वि०, सं०) विश्वास या प्रतीति करने योग्य, जिसका एतबार हो सके।

विश्वसित—(वि०, सं०) विश्वस्त, जिसका विश्वास किया गया हो।

विश्वस्त—(वि०, सं०) विश्वसनीय, प्रतीति या एतबार के योग्य, [विश्वासी (दे०)]।

विश्वात्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० विश्वात्मन्] परमात्मा, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, ब्रह्म। "विश्वसम्भवः"—य० वे०।

विश्वाधार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परमेश्वर, "विश्वाधार जगत पति रामा"—[रामा०]।

विश्वामित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) गाधेय या गाधितनय, रामचन्द्र जी के धनुर्विद्या गुरु कौशिक मुनि। ये बड़े क्रोधी और शाप देने वाले कहे गये हैं। "विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी"—[रामा०]।

विश्वाश्रय—(वि०) विश्व का आश्रय स्वरूप। "जागी विश्वाश्रय महिमाधर फिर देखा"—निराला।

विश्वास—(संज्ञा, पु०, सं०) भरोसा, प्रतीति, यकीन, एतबार, [बिस्वास (दे०)]। "कौनिउ सिद्धि कि बिनु बिश्वासा"—[रामा०]।—घात-(पु०) छल करना, धोखा देना, विश्वास करने वाले के साथ विश्वास के विपरीत कार्य करना। —घातक,—घाती-(वि०) विश्वासघात करने वाला, विश्वास के विरुद्ध कार्य करने वाली।—पात्र-(पु०) विश्वस्त, विश्वसनीय।

विश्वासित—(वि०) जिसके हृदय में विश्वास का भाव पैठा दिया गया हो।

विश्वासी—(संज्ञा, पु०) [सं० विश्वासिन्] विश्वास करने वाला, विश्वासनीय।

विश्वेदेव—(संज्ञा, पु०, सं०) देवताओं का एक गण जिसमें इन्द्र, अग्नि आदि नौ देवता है (वेद०) परमेश्वर, अग्नि ।

विश्वेश, विश्वेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) परमेश्वर, शिव, विश्वनाथ)

विष—(संज्ञा, पु०, सं०) गरल, जहर, जो किसी की सुख या शांति में बाधा करे। "विष-रस भरा कनक-घट जैसे"—[रामा०] ।**—कन्या**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह स्त्री जिसके शरीर में इसलिये विष प्रविष्ट किया जाता है कि उससे प्रसंग करने वाला मर जाये, विषकन्यका (चाणक्य) ।**—दंड**-(पु०) कमलनाल ।**—धर**-(पु०) शिव जी, साँप ।**—मंत्र**-(पु०) सर्पादि के विष को दूर करने का मंत्र, विष तथा ऐसे मंत्रों का ज्ञाता, वैद्य, सँपेरा ।**—विज्ञान**-(पु०) विषोपविष सम्बन्धी शास्त्र, विष-विद्या ।**—विद्या**-(स्त्री०) मंत्रादि से विष उतारने की विद्या या ज्ञान ।**—वैद्य**-(पु०) तंत्र-मंत्रादि से विष उतारने वाला, [विषवैद (दे०)] । **—हरमंत्र**-(पु०) वह मंत्र जिसके द्वारा विष उतारा जावे। **मुहा०—की गाँठ**-बड़ा उपद्रवी या अपकारी, दुष्ट ।**—का घट**-बड़ी बुरी या कड़ी बात । वच्छनाग, संखिया, विष दो प्रकार के है :—स्थावर, जैसे—संखिया, आदि, जंगम, जैसे सर्पादि का विष ।

विषण्ण—(वि०, सं०) दुःखी, उदास, विषाद-पूर्ण। "नत नयन भवन, विषण्ण आँगन"—निराला ।**—वदन**-(वि०) उदास मुख ।

विषम—(वि०, सं०) जो तुल्य, सम, समान या बराबर न हो, अतुल्य, असम, वह संख्या जो दो से पूरी बँट न सके और एक शेष बचे, [ताक (फ़ा०)] । अति कठिन, तीव्र या तेज, संकट, विकट, भयकर, भीषण विषमज्वर, आपत्ति-काल । (संज्ञा, पु०) वह छंद जिसके चरणों में समान मात्राएँ या वर्ण न हों वरन् न्यूनाधिक हों। [सम (विलो०)] । एक अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी पदार्थों का सम्बन्ध या यथायोग्यता का अभाव कहा गया हो ! "जरत सकल सुर-वृन्द, विषम गरल जेहिं पान किय"—[रामा०] ।**—काल**-(पु०) प्रतिकूल या विपरीत समय ।**—ज्वर**-(पु०) नित्य अनियत समय पर आने वाला एक बुखार, जाड़ा देकर और उतर चढ़ कर आने वाला ज्वर जैसे :—जूड़ी, एकजुनियाँ, एकतरा, तिजारी, चौथिया आदि। "कै प्रभात कै दुपहर आवै कै संध्या, अधिरात । बायकंप ज्वर स्वैद बियापै यही विषम ज्वर तात"—स्फु० । **लो०**—"अमृताब्द शिवं मधुमद्विषमे विषमे विषमेषु विलास-रते" ।**—बाण**-(पु०) काम-देव, विषमायुध ।**—वृत्त**-(पु०) वह छंद जिसके चरण समान (सम) न हों (पिं०) । [सम विलो०)] ।**—शर**-(पु०) कामदेव ।

विषमता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) असमता, विरोध, बैर, शत्रुता, वैमनस्य । "राम-प्रताप विषमता खोई"—[रामा०] ।

विषमायुध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) काम-देव ।

विषमित—(वि०, सं०) अव्यवस्थित, संकुचित, दुरूह बनाया हुआ ।

विषय—(संज्ञा, पु०, सं०) जिस पर कुछ विचार किया जावे, प्रबंध, निबंध, मैथुन, स्त्री प्रसंग, कर्मेंद्रियों के कार्य, धन, संपत्ति, बड़ा राज्य या प्रदेश, भोग विलास, वासना । "अथ स विषय व्यावृत्तात्मा यथाविधि सुनवे"—रघु० ।**—काम**-(पु०) सांसारिक सुख की कामना ।**—निर्धारिणी समिति,—निर्वाचनीसमिति**-(स्त्री०) सभा में पेश किया गया विषय आदि, वह समिति या उप-समिति जो प्रस्ताव आदि के सम्बन्ध में विचार करता है ।**—वासना**-(स्त्री०) भोग-विलास, काम की इच्छा या कामना । "विषय-वासना जा दिन छूटो"—स्फु० ।

विषयक—(वि०, सं०) विषय का, सम्बन्धी ।

विषयांतर—(संज्ञा, पु०, सं०) अप्रासंगिक होना, मूल विषय से हट जाना ।

विषयी—(संज्ञा, पु०) [सं० विषयिन्] जो सदा भोग विलास में लगा रहे, कामी, विलासी, धनी, अमीर, कामदेव । "विषयी को हरि कथा न भावा"—स्फु० ।

विषयानुक्रमणिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विषय-सूची । [इंडेक्स]

विषयासक्त—(वि०, सं०) विषय-रत ।

विषांगना—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) विष-कन्या ।

विषाक्त—(वि०, सं०) विष-युक्त विष-मिश्रित, विषपूर्ण, जहरीला, विषैला ।

विषाण—(संज्ञा, पु०, सं०) पशु का सींग, शूकर का दाँत । "नख, विषाण अरु शस्त्रयुत, तासों जनि पतियाय"—[नीति०] ।

विषाद—(संज्ञा, पु०, सं०) निश्चेष्ट या जड़ होने का भाव, दु:ख, रंज, खेद, शोक। [**विषादी** (वि०)]। "नहि विषाद कर अवसर आजू"—[रामा०]।

विषादित—(वि० सं०) अवसाद युक्त होना, विषाद से युक्त होना।

विषादिता—(संज्ञा, स्त्री०) विषाद की स्थिति।

विषुव—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य के ठीक भूमध्य रेखा के सामने पहुँचने का समय जब सारे संसार में दिन रात बराबर होते है। २१ मार्च और २३ सितम्बर को ऐसा होता है (भू०)।

विषुवत्‌रेखा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवों से बराबर दूरी पर पृथ्वी के मध्य में चारों ओर पूर्व पश्चिम खिंची हुई मानी जाती है, विषुवतवृत्त, भूमध्य रेखा (ज्यो०, भू०)।

विषूचिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० विसूचिका] विसूचिका (रोग)।

विष्कंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) एक योग (ज्यो०), विस्तार, विघ्न, बाधा, नाटक के अंक का एक भेद, जिसमें गत और आगत घटना (कथा) की सूचना मध्यम पात्रों के द्वारा दी जाती है। (नाट्य०)।

विष्कंभक—(संज्ञा, पु०) [सं० विष्कंभ] विष्कंभ, विस्तार, विघ्न, बाधा, नाटक के अंक का एक भेद।

विष्कंभी—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, अर्गल।

विष्कीर—(संज्ञा, पु०, सं०) चिड़िया, पक्षी, खग, विहंग।

विष्टंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) विघ्न, बाधा, रुकावट, अनाह, आध्मान, पेट फूलने का एक रोग (वैद्य०)।

विष्टंभन—(संज्ञा, पु०, सं०) रोकने या सिकोड़ने की क्रिया। [**विष्टंभित** (वि०)]।

विष्टप—(संज्ञा, पु०, सं०) लोक।

विष्टर—(संज्ञा, पु०, सं०) बिछौना, बिस्तर।

विष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भद्रा, अशुभ समय, बेगार।

विष्ठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मल, मैला, पाखाना।

विष्णु—(संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा के तीन रूपों में से दूसरा, त्रिदेव में से एक जो विश्व का भरण-पोषण करते हैं, ब्रह्म का एक विशेष रूप, १२ आदित्यों में से एक।—**क्रांता**-(स्त्री०) नीली अपराजिता, नीली कोयल लता।—**गुप्त**-(पु०) एक वैयाकरणी ऋषि, कौटिल्य, प्रख्यात राजनीतिज्ञ चाणक्य का वास्तविक नाम।—**पद**-(पु०) आकाश।—**पदी**-(स्त्री०) गंगा-जी।—**लोक**-(पु०) बैकुंठ, स्वर्ग। "विष्णुलोकं स गच्छति"—स्फु०। —**वाहन**-(पु०) गरुड़।—**संहिता**-(स्त्री०) एक स्मृति।

विष्वक्‌सेन—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, शिव, एक मनु।

विस—(सर्व०, दे०) वह, उस। [**विष** (संज्ञा, पु०, दे०)]।

विसदृश—(वि०, सं०) प्रतिकूल, विपरीत, विरुद्ध, उलटा, अद्‌भुत, विलक्षण, अनोखा।

विसर्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) त्याग, दान, देना, ऊपर-नीचे दो विन्दु जो अक्षर के आगे लगते हैं और प्रायः आधे ह के समान बोले जाते हैं। "द्विविन्दुर्विसर्गः—(व्या० स०)। मृत्यु, मोक्ष, मुक्ति, प्रलय, वियोग, विरह।

विसर्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) छोड़ना, परित्याग, चला जाना, विदा होना, षोडशोपचार पूजन में अंतिम उपचार, आवाहन किये देवता को फिर निज स्थान जाने की प्रार्थना करना, समाप्ति। "कथा विसर्जन होति है सुनौ वीर हनुमान"—[स्फु०]।

विसर्जनीय—(संज्ञा, पु०, सं०) त्यागने योग्य, देने योग्य, विसर्ग। "विसर्जनीय-स्यसः"—[कौ० व्या०]।

विसर्जित—(वि०, स०) कृतसमाप्ति, परित्यक्त।

विसर्प—(संज्ञा, पु०, सं०) फुंसियों का रोग जिसमें ज्वर भी होता है।

विसर्पी—(वि०) [सं० विसर्पिन्] फैलने वाला।

विसारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० विस्मरण] भूल जाना, विसराना।

विसासिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सौत, सपत्नी, दुष्टा।—**विसासी**-(पु०) विश्वास-घाती, दुष्ट। "कबहूँ वा विसासी सुजान के आँगन"—घना०। "उन हाय विसासिन कीन्ही दगा"—रत्ना०।

विसाल—(संज्ञा, पु०, अ०) मिलाप, संयोग, मृत्यु, मौत। "हुआ विसाल जो हासिल तो फिर फिराक नहीं"—[स्फु०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विशाल] बड़ा विस्तृत।

विसूचिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दस्तों का एक रोग, हैजा। **लो०**—"सपदि निंबुरसेन विसूचिकाम्"।

विसूची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक रोग, हैजा।

विसूरण—(संज्ञा, पु०, सं०) चिंता, शोक। [**विसूरणीय, विसूरित** (वि०)]।

विसूरना—(क्रि० सं०, दे०) [सं० विसूरण] शोक करना, रोना, दुविधा में पड़ना, सखेद स्मरण करना, बिसूरना। "सुरति बैठी बिसूरति राधा"—रसाल।

विस्तर—(वि०, दे०) [सं० विष्टर] बिछौना, विस्तार-युक्त, विस्तृत।

विस्तार—(संज्ञा, पु०, दे०) फैलाव, विशालता, प्रसाद, प्रस्तार।

विस्तारित—(वि०, सं०) फैला या बढ़ाया हुआ, विस्तृत।

विस्तीर्ण—(वि०, सं०) विशाल, विस्तृत, बहुत बड़ा, लंबा चौड़ा, अति अधिक।

विस्तृत—(वि०, सं०) विस्तार-युक्त, बहुत लंबा-चौड़ा, विशाल, यथेष्ट विवरण वाला, बहुत फैला हुआ।

विस्फार—(संज्ञा, पु०, सं०) फैलाव, विकास, तेजी का शब्द, चिल्ला, प्रत्यंचा।

विस्फारित—(वि०, सं०) फैलाया हुआ, तीव्र, फाड़ा या खोला हुआ (नेत्र)।

विस्फीत—(वि०, सं०) प्रचुर।

विस्फुरित—(वि०, सं०) कंपित, चंचल। फूला हुआ।

विस्फोट—(संज्ञा, पु०, सं०) गरमी आदि से किसी पदार्थ का उबल पड़ना या फूट जाना, विषैला और कठिन फोड़ा, ज्वालामुखी का फूटना।

विस्फोटक—(संज्ञा, पु०, सं०) विषाक्त फोड़ा, गरमी या आघात से भभक कर फूट उठने वाला, शीतला रोग, चेचक।

विस्फोटन—(संज्ञा, पु०, सं०) गर्जन, फूट पड़ना।

विस्मय—(संज्ञा, पु०, सं०) आश्चर्य, अचरज, [बिसमय (दे०)], अद्भुत रस का स्थायी भाव (काव्य)। " हर्ष समय विस्मय . करसि "—[रामा०]।—**कारी**—(वि०) अचरज पैदा करने वाला।

विस्मरण—(संज्ञा, पु०, सं०) भूल जाना। [**स्मरण** (विलो०)]।

विस्मित—(वि०, सं०) चकित, अचंभित, विस्मय-युक्त।

विस्मृत—(वि०, सं०) जो याद न हो, भूला हुआ, विस्मरित।

विस्मृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विस्मरण।

विस्राम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० विश्राम] आराम, [बिसराम (दे०)]।

विहंग, विहंगम—(संज्ञा, पु०, सं०) खग, द्विज, पक्षी, चिड़िया, मेघ, बादल, बाण, वायु, वायुयान, विमान, सूर्य्य चंद्रमा, तारागण, देवता।

विहँसना— (क्रि० अ०) मुसकाना।

विहग—(संज्ञा, पु०, सं०) पक्षी, विमान, बाण, देवता, सूर्य्य, चन्द्रमा, मेघ, तारागण, वायु, वायुयान।—**माला**-(स्त्री०) पक्षियों की टोली। "जब चला जाता उजाला लौटती जब विहग-माला" —बच्चन।

विहरना—(क्रि० अ०, सं०) खेल करना, क्रीड़ा करना, भोग करना, आनंद करना।

विहसित—(संज्ञा, पु०, सं०) नाति उच्च नाति मृदुहास, मध्यम हास्य। [**उपहसित** (वि०)]।

विहाग—(संज्ञा, पु०) एक राग विशेष।

विहान—(संज्ञा, पु०) सुबह, भोर।

विहाय—(संज्ञा, पु०, सं०) आकाश।

विहायस—(संज्ञा, पु०, सं०) आकाश, पक्षी।

विहार—(संज्ञा, पु०, सं०) घूमना, टहलना, भ्रमण करना, फिरना, केलि-क्रीड़ा, संभोग, रति-क्रीड़ा, बौद्ध साधुओं (श्रमणों) के रहने का घर, संघाराम।—**भूमि**-(स्त्री०) आमोद-प्रमोद का स्थान।

विहास—(संज्ञा, पु०, सं०) मुसकान।

विहारी—(संज्ञा, पु०) [सं० विहारिन्] विहार करने वाला, श्रीकृष्ण जी, [बिहारी (दे०)]। [**विहारिनी** (स्त्री०)]। " करत विहार विहारी मधुबन में"—स्फु०।

विहित—(वि०, सं०) जिसका विधान किया गया हो। "वेद-विहित अरु कुल-आचारू"—[रामा०]।

विहीन—(वि०, सं०) बिना, रहित, बगैर, हीन। [**विहीनता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

विह्वल—(वि०, सं०) व्याकुल, विकल, घबराया हुआ, केवल। [**विह्वलता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

वीक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) देखना ।

वीक्षित—(वि०, सं०) दृष्ट, विलोकित, देखा हुआ ।

वीचि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तरंग, लहरी, लहर । "वारि-वीचि जिमि गावहि वेदा"—[रामा०] ।—**माली**–(पु०) ऊर्मि-माली, समुद्र, सागर ।

वीची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लहरी, तरग, लहर, [बीची (दे०)] ।

वीज—(संज्ञा, पु०, सं०) मुख्य या मूल कारण, वीर्य्य, शुक्र, तेज, अन्नादि का बीजा, [बीज (दे०)], बीआ (ग्रा०), अंकुर, सार, तत्व, एक प्रकार के मंत्र, एक वर्ण-गणित, बीजगणित । "तुम कहँ विपति-बीज विधि बयऊ"—[रामा०] ।—**गणित** –(पु०) गणना का एक प्रकार, गणित का वह भेद जिसमें ज्ञात राशियों की सहायता से अज्ञात राशियों के स्थान पर कुछ सांकेतिक वर्णों को गणनार्थ रख कर अज्ञात राशियों का मान ज्ञात किया जाता है ।

वीजपूर—(संज्ञा, पु०, सं०) बिजौरा नींबू ।

वीजांकुर (*न्याय*)—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कार्य-कारण का ऐसा संयोग (सम्बन्ध) कि उनकी पूर्वापर सत्ता निश्चित न हो सके, अन्योन्याश्रय सम्बन्ध ।

वीणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सितार और एक प्राचीन बाजा, [बीन, वीना (दे०)] । "वीणावेणु-संख-धुनि द्वारे"—[रामा०] ।—**पाणि**–(स्त्री०) गिरा, सरस्वती । (पु०) नारद जी ।—**रव**–(पु०) वीणा का स्वर ।—**वती**,—**वति**–(स्त्री० सं०) सरस्वती ।—**वादिनी**–(स्त्री०) सरस्वती । "वीणा वादिनी वर दे"—निराला ।

वीत—(वि०, सं०) व्यतीत, गत, समाप्त, जो छूट या छोड़ दिया गया हो, मुक्त, निवृत्त हुआ, बीता हुआ ।—**राग**–(पु०) जिसने रागानुराग या आसक्ति आदि को त्याग दिया हो, त्यागी, वैरागी, बुद्ध जी का एक नाम । "भिक्षुः शेते नृप इव सदा वीतरागो जितात्मा" ।—**हव्य**–(पु०) अग्नि, हैहयराज का प्रधान ।—**होत्र**–(पु०) अग्नि, सूर्य्य, राजा प्रियव्रत के एक पुत्र का नाम ।

वीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गति, कांति, पार्थक्य ।

वीथि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वीथी] गली, मार्ग, प्रतोली, रास्ता, [बीथी (दे०)] ।

वीथिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गली, मार्ग ।

वीथी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रास्ता, राह, मार्ग, गली, कूचा, सड़क, नभ में रवि-मार्ग, व्योम में नक्षत्रों के स्थानों के कुछ विशेष भाग, रूपक या दृश्य काव्य का एक भेद जो एक नायक युक्त और एक ही अंक का होता है । "वीथी सब असवारिन भरीं"—[रामा०] ।

वीथ्यंग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रूपक में वीथी के १३ अंग (नाट्य०) ।

वीप्सा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अधिकता, व्यापकता । "नित्य वीप्सयोः"—[कौ० व्या०] । एक शब्दालंकार जिसमें अर्थ या भाव पर बल देने के लिये शब्दावृत्ति होती है (अ० पी०) ।

वीय—(वि०, दे०) [विय (दे०)] दो युगुल ।

वीर—(संज्ञा, पु०, सं०) शूर, साहसी, बलवान, पराक्रमी, सैनिक, योद्धा, जो औरों से किसी कार्य में बढ़कर हो, लड़का, भाई, पति सखी-सहेली (स्त्री०), काव्य में एक रस जिसमें उत्साह और वीरता की पुष्टि होती है (सा०), तंत्र में साधना के तीन भावों में से एक (तंत्र) । "बहुत चले सो वीर न होई"—[रामा०] । "ऐरी मेरी वीर जैसे-तैसे इन आँखिनि सों"—पद्मा० ।—**केशरी**–(पु०) वीरों में सिंह सा श्रेष्ठ, [वीर केहरी (दे०)] ।—**गति**–(स्त्री०) रण-भूमि में मरने से वीरों को प्राप्त श्रेष्ठ गति । "वीर-गति अभिमन्यु पाई शोक उसका व्यर्थ है"—कु० वि० ।—**भद्र** (पु०) शिव जी के एक गण जो उनके अवतार और पुत्र माने गये हैं (पुरा०), अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा, खस (उशीर) ।—**भाव**–(पु०) शूरता, वीरता का भाव ।—**भूमि**–(स्त्री०) वीरों की जन्म-भूमि, युद्ध-क्षेत्र, रण-स्थल, वह पृथ्वी जहाँ वीर ही उत्पन्न होते हों, बंगाल का एक नगर ।—**माता**–(स्त्री०) वीरप्रसू, वीर-जननी, वीरों की माँ ।—**रस**–(पु०) उत्साह, स्थायी भाव का एक विशेष रस (काव्य०) ।—**ललित**–(पु०) वीरों का-सा किन्तु मृदु स्वभाव वाला ।—**प्रसू**—**प्रसवा**–(स्त्री०) शूर-वीर पुत्र उत्पन्न करने वाली माता, वीर माता ।—**वधू**–(स्त्री०) वीर पुरुष की वीर स्त्री ।—**व्रती**–(वि०)–वीरता का व्रत वाला । "वीर-व्रती तुम धीर अछोभा" —[रामा०] ।—**वृत्ति**–(पु०) शूरों की-सी वृत्ति या स्वभाव (प्रवृत्ति) ।—**शय्या**–(स्त्री०) संग्रामभूमि, रणस्थली ।—**शैव**–(पु०) शैवों का भेद ।

वीरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बहादुरी, शूरता ।

वीरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मदिरा, शराब, पति और पुत्र वाली स्त्री ।

वीराचारी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० वीराचारिन्] वाममार्गियों का एक भेद जो देवताओं की पूजा वीर-भाव से करते हैं ।

वीरान—(संज्ञा, फ़ा०) श्री-हत, उजड़ा हुआ, उजाड़ा, वह स्थान जहाँ आबादी न रह गई हो, निर्जन ।

वीराना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उजाड़ स्थान, जंगल ।

वीरानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बरबादी, तबाही ।

वीराष्टक—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्त्तिकेय का एक अनुगामी ।

वीरासन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बैठने का एक ढंग या आसन अर्थात मुद्रा । "जागन लगे लखन वीरासन"—[रामा०] ।

वीरेंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) वीरों में अग्रणी, वीरों में श्रेष्ठ ।

वीर्य्य—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राणियों के शरीर में बल और कांति उत्पन्न करने वाली सात धातुओं में से एक प्रमुख धातु, रेत, शुक्र, [बीज (दे०)] पराक्रम, शक्ति, बल, [बीआ (दे०)] ।—**शाली**-(वि०) शक्तिशाली ।—**हीन**-(वि०) शक्तिहीन, कायर ।

वीर्यवान—(वि०, सं०) शक्तिवान, बली ।

वीर्याधान—(संज्ञा, पु०) गर्भाधान ।

वीर्यान्वित—(वि०, सं०) शक्तिशाली ।

वुराना—(क्रि० अ०, दे०) पुराना, समाप्त, होना ।

वृंत—(संज्ञा, पु०, सं०) बोंड़ी, ढेंढ़ी, नरुआ, स्तन,अग्रभाग ।

वृंतक—(संज्ञा, पु०, सं०) डंठल ।

वृंताक—(संज्ञा, पु०, सं०) बैगन, भाँटा । "वृंताकं कोमलं पथ्यं"—[भा० प्र०] ।

वृंताकी—(संज्ञा, स्त्री०) भाँटा, बैगन ।

वृंद—(संज्ञा, सं०) समुदाय, झुंड, समूह, एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि । "औरै भाँति पल्लव लगे हैं वृंद-वृंद तरु"—द्विज० ।

वृंदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तुलसी, राधिका का उपनाम ।—**वन**-(पु०) श्रीकृष्णजी का क्रीड़ा-स्थल जो हिन्दुओं का तीर्थ-स्थान है (मथुरा-प्रान्त,) [विंद्रावन (दे०)] । "यत्र वृंदावनं नास्ति यत्र न यमुना नदी"—गर्ग संहिता ।

वृंदार—(संज्ञा, पु०, सं०) देवता ।

वृंदारक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार के देवता । "जय वृंदारक-वृंद-वंद्य"—रत्ना० ।

वृंदारण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वृंदावन ।

वृक—(संज्ञा, पु०, सं०) भेड़िया, सियार, गीदड़, शृगाल, क्षत्रिय, कौआ ।

वृकोदर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भीमसेन । "भीमकर्म्मा वृकोदरः"—[भ० गी०] ।

वृक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) विटप, पेड़, द्रुम, पादप, रूख, किसी वस्तु (व्यक्ति के वंश) के उद्गम तथा शाखादि-सूचक वृक्ष जैसा चित्र या आकृति ।

वृक्षायुर्वेद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पेड़ों के रोगों की चिकित्सा का शास्त्र ।

वृज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्रज] व्रज ।

वृजिन—(संज्ञा, पु०, सं०) पाप, कष्ट, दुःख, तकलीफ, खाल, चमड़ा ।

वृत्त—(संज्ञा, पु०, सं०) चरित्र, चरित्र, समाचार, आचार, वृत्तांत, चाल चलन, हाल, वृत्ति, समाचार, जीविका-साधन, रोजगार, वर्णिक छंद, मंडल, गोलाकार क्षेत्र जो एक सीमा से जिसे परिधि कहते हैं, घिरा हो तथा जिसके केंद्र से परिधि की दूरी सर्वत्र समान हो (रेखा), दंडिका, गंडका, २० वर्णों का एक सम छंद, नियत वर्ण-संख्या तथा लघु-गुरु के क्रम के निश्चित नियम से नियंत्रित पदों वाला छंद [पिं०] ।—**खंड**-(पु०) वृत्त या गोल क्षेत्र का कोई भाग, वृत्तांश ।—**गन्धि**-(स्त्री०) गद्य का एक भेद (स०) ।—**पुष्प**-(पु०) कदंब, सिरिस ।—**भंग**-(पु०) छन्दोभंग ।—**शाली**-(वि०) सदाचारी ।—**हीन**-(वि०) आचरण-भ्रष्ट ।

वृत्तांगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रियंगु ।

वृत्तांत—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्णन, समाचार, हाल, घटनादि का विवरण । "सुनि वृत्तांत मगन सब लोगू"—[रामा०] ।

वृत्तानुसारी—(वि०, सं०) नियमित कार्य करने वाला ।

वृत्तार्ध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वृत्त या गोलाकार क्षेत्र का ठीक आधा भाग ।

वृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीविका-निर्वाह का साधन या कार्य, रोजी, जीविका, उद्यम, वजीफा,

दीन या छात्रादि को सहायतार्थ दिया गया धन, सूत्रों का अर्थ स्पष्ट करने या खोलने वाली व्याख्या या विवेचना (विवरण), नाटकों में विषय-विचार से चार प्रकार की वर्णन की रीति या शैली (नाट्य०); चित्त की दशा जो पाँच प्रकार की मानी गयी है—क्षिप्त, विक्षिप्त, निरुद्ध, मूढ़, एकाग्र (योग०), कार्य, व्यापार, एक संहारक शस्त्र या अस्त्र, प्रकृति, स्वभाव।

वृत्यनुप्रास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक शब्दालंकार जिसमें आदि या अंत के एक या कई वर्ण वृत्ति के अनुकूल एक या भिन्न रूप से बार-बार आते हैं, यह अनुप्रास का एक भेद है।

वृत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) अँधेरा, बादल, मेघ, बैरी, शत्रु, वृत्त, इन्द्र से मारा गया त्वष्टा का पुत्र, एक असुर, इसीलिये राजा दधीचि (ऋषि) की हड्डियों का वज्र बना था (पुरा०)। **—सूदन**—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र जिसने वृत्तासुर को मारा था। **—हा**—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र।

वृत्तारि, वृत्रारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्र, वृत्तहंता।

वृत्रासुर, वृत्तासुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) त्वष्टा का पुत्र एक विख्यात दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था (पुरा०)।

वृथा—(वि०, सं०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन, फजूल, बेमतलब, नाहक। **—कर्म**—(पु०) वह कर्म जो निष्प्रयोजन हो। **—वादी**—(वि०) मिथ्या भाषी।

वृथोत्पन्न—(वि०, सं०) जो व्यर्थ ही पैदा हुआ हो।

वृद्ध—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रायः ६० वर्ष से ऊपर की अंतिम अवस्था का बूढ़ा, बुडढा, जरा, बुढ़ाई, बुढ़ापा। विद्वान्, अनुभवी। **—काल**—(पु०) बुढ़ापा।

वृद्धता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुढ़ापा, बुढ़ाई, वृद्धत्व, बूढ़े का भाव या धर्म, पांडित्यानुभाव।

वृद्धत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) जरावस्था, बुढ़ापा, बुढ़ाई, वृद्धता। "तस्य धर्म्म रतेरासीत वृद्धत्व जरसा बिना"—रघु०।

वृद्धश्रवा—(संज्ञा, पु०) [सं० वृद्धश्रवस्] इन्द्र। "स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा"—[य० वे०]।

वृद्धा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रायः ६० वर्ष से ऊपर की अवस्था, बुडढी स्त्री, बुढ़िया।

वृद्धावस्था—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुढ़ापा।

वृद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उन्नति, बढ़ती, अधिकता, अधिक होने या बढ़ने का भाव या क्रिया, सूद, ब्याज, सूदक, संतान-जन्म पर घर का अशौच, अभ्युदय, समृद्धि, अष्ट वर्ग की एक लता, एक अलभ्य औषधि।

वृश्चिक—(संज्ञा, पु०, सं०) बिच्छू नामक एक विषैला कीड़ा जो डंक मारता है। बीछू, बीछी (ग्रा०)। बिच्छू या वृश्चि-माली लता, मेषादि १२ राशियों में से (बिच्छू के से आकार वाले तारों की स्थिति वाली) ८ वीं राशि (ज्यो०)।

वृश्चिकाली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिच्छू नामक लता जिसके काँटे या रोएँ देह में लगाकर जलन उत्पन्न करते हैं।

वृष—(संज्ञा, पु०, सं०) बैल, साँड़, चार प्रकार के पुरुषों में से एक (काम०), श्रीकृष्ण, १२ राशियों में से दूसरी राशि (ज्यो०)। **—कंध**—(वि०) बैलों जैसा मजबूत कंधों वाला। "व्यूढोरस्कः वृषस्कंधः—रघु०। **—केतन**—(पु०) शिव। **—ध्वज**—(पु०) महादेव, शिव, एक पहाड़ (पुरा०), गणेश जी। "भृंगी फूँक वृषध्वज टेरे"—[रामा०]। **—भान, भानु**—(पु०) नारायणांश जात राधा का पिता। **—नंदिनी, —सुता, —जा**—(स्त्री०) राधा। **—वाहन**—(पु०) शिव।

वृषण—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, इन्द्र, कर्ण, बैल, साँड़, घोड़ा, पोता, अंडकोष।

वृषभ—(संज्ञा, पु०, सं०) साँड़, बैल, श्रेष्ठ पुरुष। [**वृषभकंध, वृषभस्कंध** (यौ०)]। "वृषभकंध उर बाहु विशाला"—[रामा०]। चार प्रकार के पुरुषों में से एक (काम०), वैदर्भी रीति का एक भेद (सा०)। **—धुज***—(पु०) [सं० वृषभध्वज] महादेव जी। **—ध्वज**—(पु०) शिवजी।

वृषभांक—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव।

वृषभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मघा, पूर्वी और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र। एक नदी विशेष।

वृषल—(संज्ञा, पु०, सं०) शूद्र, नीच, पतित, पापी, दुष्कर्म्मी, घोड़ा, राजा चंद्रगुप्त का एक नाम।

वृषली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रजस्वला, कुलटा, दुराचारिणी, नीच जाति की स्त्री, रजस्वला हुई

कुँआरी कन्या (स्मृति०), [बिषली (दे०)]। "सदाचार बिनु वृषली स्वामी"—[रामा०]।

वृषाकपि—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, विष्णु।

वृषाकपायी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती, लक्ष्मी।

वृषादित्य-वृषादित—(संज्ञा, पु०) [सं० विषादित्य] वृष राशि के सूर्य। जेठ विषादित की तृषा, मरे मतीरन खोज"—वि०।

वृषासुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक दैत्य, भस्मासुर।

वृषोत्सर्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) मृत पितादि के नाम पर चक्रादि दाग कर साँड़ छोड़ने की एक धार्मिक रीति या विधि (पुरा०)।

वृष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वर्षा, [बरसा (दे०)] बारिश, मेह, ऊपर से किसी वस्तु का कुछ देर तक बराबर गिरना, किसी क्रिया का कुछ काल तक लगातार होना। "महा वृष्टि चलि फूटि कियारी"—[रामा०]।—**काल**-(पु०) बरसात। —**भू**-(पु०) मेढक।—**मान,**—**मापक**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वर्षा के पानी नापने का यंत्र।

वृष्णि—(संज्ञा, पु०, सं०) बादल, मेघ, यदुवंश, श्रीकृष्णजी, अग्नि, वायु, इन्द्र।

वृष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वीर्य्य, बल और हर्ष उत्पादक वस्तु या पदार्थ।

वृहती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बैगन, बड़ी भटकटैया, बनभाँटा, कंटकारी, बड़ी कटाई, भ, म, स (गण) का एक वर्णिक छंद (पिं०)। **लो०**—"देवदारु, घना, विश्वा वृहती द्वै पाचनम्"।

वृहत्—(वि०, सं०) महान्, बड़ा, भारी, विशाल।

वृहद्रथ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्र, सामवेद, यज्ञ पात्र।

वृहन्नला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अज्ञातवास में राजा विराट् के यहाँ स्त्री-वेशधारी अर्जुन का नाम।

वृहस्पति—(संज्ञा, पु०) [सं० वृहस्पति] देव-गुरु वृहस्पति, जीव, ९ ग्रहों में से ५ वाँ ग्रह (ज्यो०)।

वेंकट—(संज्ञा, पु०, सं०) दक्षिण में स्थित एक पर्वत जहाँ विष्णु का मंदिर है।—**गिरि**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दक्षिण भारत का एक पहाड़।

वेग—(संज्ञा, पु०, सं०) तेजी, बहाव, प्रवाह, देह से मल-मूत्रादि निकलने की प्रवृत्ति, शीघ्रता, प्रसन्नता, आनंद, जल्दी, [**वेग** (ब्र०)]। "वेग करहु वन-गवन-समाजा"—[रामा०]।

वेगवान्—(वि०, सं०) शीघ्रगामी, तेज चलने या बहने वाला, वेगवन्त। [**वेगवती** (स्त्री०)]।

वेगा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महाज्योतिष्मती।

वेगि—(क्रि० वि०, ब्र०) शीघ्र, जल्दी, वेगि। "वेगि करहु कि न आँखिन ओटा"—[रामा०]।

वेगी—(संज्ञा, पु०) [सं० वेगिन्] अधिक वेग वाला, वेगवान्।

वेण—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा पृथु के पिता। "लोक-वेद तें विमुख भा, नीच को वेण समान" —[रामा०]। वर्ण-संकर प्राचीन जाति।

वेणवी—(वि०, सं०) वेणु वाला। (पु०) शिव।

वेणि, वेणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्त्रियों की गूँधी हुई चोटी, [बेणी, बेनी (दे०)]। "कृश तनु, शीस जटा इक वेणी"—[रामा०]।

वेणु—(संज्ञा, पु०, सं०) बाँस, बाँस की मुरली, वंशी। वेणु हरित मणिमय सब कीन्हे"—[रामा०]। —**वादक**-(पु०) बाँसुरी बजाने वाला।—**शैय्या**-(स्त्री०) बाँस की चारपाई।

वेणुका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बाँसुरी।

वेत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वेत्र] बेंत।

वेतन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी काम के बदले दिया गया धन, तनख्वाह, मदीना, दरमहा, मासिक उजरत, पारिश्रमिक, [बेतन (दे०)]।—**जीवी**-(वि०) मासिक वेतन से अपनी जोविका चलाने वाला।—**भोगी**—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० वेतन भोगिन्] तनख्वाह लेकर कार्य करने वाला, नौकर।

वेतस—(संज्ञा, पु०, सं०) बडवानल, बेंत।

वेताल—(संज्ञा, पु०, सं०) संतरी, द्वारपाल, शिवजी का एक गणाधिप, एक भूतयोनि (पुरा०), भूत-ग्रहीत मुर्दा, [बैताल (दे०)] छप्पय का छठा भेद (पिं०)। "भूत, पिशाच, प्रेत, वेताल" —[रामा०]।

वेत्ता—(वि०, सं०) ज्ञाता, जानने वाला।

वेत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) [बेंत (दे०)]।—**धर**-(संज्ञा, पु०, सं०) द्वारपाल।

वेत्रवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बेतवा नदी। "क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता तथा गंडकी" —[स्फु०]।

वेत्रासुर—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राग्ज्योतिष नगर का राजा, एक दैत्य (पुरा०)।

वेत्री—(संज्ञा, पु०) [सं० वेत्रित] द्वारपाल।

वेद—(संज्ञा, पु०, सं०) आध्यात्मिक या धार्मिक विषय का ठीक ज्ञान, श्रुति, आम्नाय, भारत के आर्यों के सर्वमान्य प्रमुख धार्मिक ग्रंथ, वेद चार हैं:—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद (प्रथम के मूल तीन वेद) अथर्वणवेद (पश्चात्काल में) यज्ञांग, वित्त, वृत्त। "वेद-विहित संमत सबही का"—[रामा०]।—**ज्ञ**–(संज्ञा, पु०, सं०) वेदों का ज्ञाता, ब्रह्मज्ञानी, वेदवित, वेद-वक्ता।—**निंदक**–(पु०) वेदों की बुराई करने वाला, नास्तिक। "नास्तिकः वेदनिंदकः"—मनु०।—**मंत्र**–(पु०) वेदों के छंद। "वेद-मंत्र तब द्विजन उचारे"—[रामा०]।—**माता**–(स्त्री०) गायत्री, सावित्री, सरस्वती, दुर्गा। "गायत्री वेदमाता स्यात्"—[स्फु०]।—**वाक्य**–(पु०) ऐसी प्रामाणिक बात जिसका खंडन किसी प्रकार न हो सकता हो, स्वभाव-सिद्ध, ईश्वर-वाक्य, वेद-वाणी।—**व्यास**–(पु०) कृष्ण द्वैपायन, व्यासजी।—**सम्मत**–(वि०) वेद के अनुसार अनुमोदित।

वेदन—(संज्ञा, पु०, सं०) पीड़ा।

वेदना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्यथा, पीड़ा, दर्द। "वेदनायाश्च निग्रह"—[भा० प्र०]।

वेदांग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वेदों के छः अंग:—छः शास्त्र, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, निरुक्त, ज्योतिष, षडंग।

वेदांत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) आरण्यक उपनिषदादि वेद के अंतिम भाग जिनमें जगत, आत्मा और ब्रह्म का निरूपण है:—ब्रह्मविद्या, वेदों का अंतिम भाग, ज्ञानकांड, अध्यात्म विद्या, छह दर्शनों (शास्त्रों) में से एक प्रमुख दर्शन-शास्त्र जिसमें चैतन्य ब्रह्म को एक मात्र पारमार्थिक सत्ता मानी गई है (अद्वैतवाद) उत्तर मीमांसा।—**वादी**–वेदान्त में विश्वास रखने वाला।—**विद्**–(वि०) वेदान्त का ज्ञाता।—**सूत्र**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महर्षि बादरायण या व्यास प्रणीत उत्तर मीमांसा के मूल सूत्र।

वेदांती—(संज्ञा, पु०) [सं० वेदांतिन्] वेदांत-ज्ञानी, वेदांत का ज्ञाता, वेदांतवादी, ब्रह्मवादी, अद्वैतवाद, वेदान्तवादी।

वेदिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यज्ञादि के हेतु बनाई हुई ऊँची भूमि। "बट-छाया वेदिका सुहाई"—[रामा०]।

वेदित—(वि०, सं०) बतलाया हुआ। सूचित, निवेदित।

वेदी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शुभ या धर्म्म कार्य के हेतु बनी हुई ऊँची भूमि।

वेदोपनिषद्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक उपनिषद् विशेष।

वेध—(संज्ञा, पु०, सं०) वेधना, छेदना, यत्रादि का दूसरे ग्रह के प्रभाव को रोकना (ज्यो०)।—**मुख्या**–(स्त्री०) कस्तूरी, कपूर।—**शाला**–(पु०) वह भवन जहाँ ग्रह-नक्षत्रादि के देखने को यंत्रादि रखे हों।

वेधक—(वि०, सं०) छेदक, छेदने वाला, कोंचने वाला।

वेधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० वेध] छेदना, छेद करना, विद्ध करना, [बेधना (दे०)]। "सिरस सुमन किमि वेधिय हीरा"—[रामा०]।

वेधा—(संज्ञा, पु०) [सं० वेधस्] बिष्णु, ब्रह्मा, विधि, सूर्य्य, शिव। "तं वेधा विदधे नूनं महाभूत समाधिना"—रघु०।

वेधी—(संज्ञा, पु०) [सं० वेधिन्] बेध या छेद करने वाला। जैसे—शब्दवेधी, गगनवेधी। [**वेधिनी** (स्त्री०)], [**वेधनीय, वेधित** (वि०)]।

वेपथु, वेपथुः—(संज्ञा, पु०, सं०) कप, कंप-कँपी। "वेपथुश्च शरीरे मे रोम हर्षश्च जायते"—[गीता०]।

वेपन—(संज्ञा, पु०, सं०) कंप, काँपना। [**वेपित, वेपनीय** (वि०)]।

वेला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रात-दिन का २४ वाँ भाग, समय, काल, वक्त, वेरा, [बेला (दे०)], समुद्र का किनारा, सीमा, समुद्र की लहर। "वेलानिलः केतकरेणुभिस्ते"—रघु०।—**तट**–(पु०) समुद्र का किनारा।—**विलासनी**–(स्त्री०) वेश्या।

वेश—(संज्ञा, पु०, सं०) वेष, वस्त्रादि से अपने को सजना या सजाना, पहनने का ढंग, [भेस (दे०)]। **मुहा०—किसी का वेश धारण करना (बनाना)**–किसी के रूप रंग और पहनावे आदि की नकल। पहिनने के वस्त्र या कपड़े, पोशाक, खेमा, डेरा, घर कनात, तम्बू।—**धारी**–(संज्ञा, पु०) [सं० वेशधारिन्] वेश धारण करने वाला।—**भूषा**–(स्त्री०) पहनने के कपड़े आदि, पोशाक, पहनावा।

वधू,—वनिता-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) रंडी, वेश्या, गणिका।

वेशर, बेसर—(संज्ञा, पु०, दे०) नथ, नथुनी।

वेश्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रंडी, पतुरिया, गणिका, गाने-नाचने और कसब कमाने वाली स्त्री, तवायफ।—**गमन**-(पु०) कामेच्छा की पूर्ति के लिए वेश्या के पास जाना।—**गामी**-(पु०) रंडीबाज।—**पुत्र**-(पु०) वह पुत्र जो अवैध हो।

वेष, वेषम—(संज्ञा, पु०, सं०) घर, मकान, गृह, वेश, भेख।

वेष—(संज्ञा, पु०, सं०) वेश, [भेस (दे०)], रंग-मंच पर, नेपथ्य (नाट्य०)। "स तत्र मञ्चेषु मनोज्ञ वेषान्"—रघु०।

वेष्टन—(संज्ञा, पु०, सं०) [बेठन (दे०)], लपेटने या घेरने की क्रिया, पगड़ी, उष्णीष, किसी वस्तु के ऊपर लपेटने का कपड़ा। [**वेष्टनीय, वेष्टित** (वि०)]।

वेष्टित—(वि०, सं०) चारों ओर से लपेटा या घिरा हुआ।

वेंछना—(क्रि० स०, दे०) छीलना, उधेड़ना, काढ़ना, काटना।

वै—(अव्य०, सं०) निश्चय-सूचक शब्द। (सर्व० ब्र०) वे, वह का बहुवचन। "तत्र वै विजयो ध्रुवम्।"

वैकल्प—(संज्ञा, पु०, सं०) विकल्प।

वैकल्पिक—(वि०, सं०) जो इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके, जो एक ही पक्ष में हो, एकांगी, संदिग्ध। [आप्शनल]

वैकल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) विकलता।

वैकाल—(संज्ञा, पु०, दे०) दो पहर के बाद का समय, अपराह्न, चौथा पहर।

वैकालिक—(वि०, सं०) संध्यासम्बन्धी। (पु०) संध्या समय की पूजा या प्रार्थना।

वैकुंठ—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, विष्णु-लोक (पुरा०) स्वर्ग। [**वैकुंठीय** (वि०)]। "वैकुंठ कृष्ण मधु सूदन पुष्कराक्ष"—शंकरा०।—**वास**-(पु०) मृत्यु, मरण।—**वासी**-(वि०) मृत।

वैकृत—(संज्ञा, पु०, सं०) विकार, बिगाड़, खराबी, वीभत्सरस, वीभत्सरस का आलंबन विभावः—जैसे रक्तादि। (वि०) विकार से उत्पन्न, जो शीघ्र बन न सके, दुःसाध्य, कष्टसाध्य।

वैक्रमीय—(वि०, सं०) विक्रम-संबंधी, विक्रम का संवत्, विक्रमीय।

वैक्रांत—(संज्ञा, पु०, सं०) चुन्नी, मणि।

वैखरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वाग्देवी, वाक्शक्ति, गंभीर, ऊँचा और स्पष्ट स्वर।

वैखानस—(संज्ञा, पु०, सं०) वाणप्रस्थ आश्रम वाला, वनवासी तपस्वी या ब्रह्मचारी।

वैखानसि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि।

वैगंध—(संज्ञा, पु०, सं०) गंधन नामक धातु।

वैचक्षण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चातुर्य्य, दक्षता, प्रवीणता, विचक्षणता, चतुरता, कुशलता, पटुता।

वैचित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) विचित्रता।

वैचित्र्य—(संज्ञा, पु०, सं०) विचित्रता, विलक्षणता।

वैजनन—(संज्ञा, पु०, सं०) गर्भ का आखिरी महीना।

वैजयंत—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र, इन्द्रपुरी।

वैजयंती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पताका, झंडी, पाँच प्रकार के मोतियों की माला। "भूपे समुत्सर्पति वैजयंतीः"—[रघु०]।

वैज्ञानिक—(संज्ञा, पु०, सं०) विज्ञान शास्त्र का पूर्णज्ञाता, निपुण, प्रवीण, दक्ष, चतुर। (वि०) विज्ञान का, विज्ञान संबंधी। [साइंटिफिक]

वैतनिक—(संज्ञा, पु०, सं०) वेतन या तनख्वाह पर काम करने वाला, नौकर, सेवक। [पेड]

वैतरणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यम-द्वार या वैतरणि, यमपुर की नदी (पुरा०), [वैतरनी (दे०)]। "तिन कहँ विबुध नदी वैतरणी"—[रामा०]।

वैतसेन—(संज्ञा, पु०, सं०) वीतसेना का आत्मज राजा पुरुरवा।

वैतस्त वैतस्त्य—(वि०, सं०) वितस्ता नाम की नदी में सम्बन्धित।

वैतानिक—(वि०, सं०) यज्ञ सम्बन्धी। वैतान नामक यज्ञ-पद्धति से सम्बन्धित।

वैताल—(संज्ञा, पु०, सं०) पिशाच, भूतयोनि विशेष, भाट, बंदीजन। 'वैताल कहै विक्रम सुनो जीभ सँभारे बोलिए"—[वैता०]।

वैतालिक—(संज्ञा, पु०, सं०) राजाओं को जगाने वाला स्तुति-पाठक। "वैतालिक यश गान कियो जब धम्मँराज तब जागे"।

वैतालीय—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)। (वि०) वैताल का, वैतालसंबंधी।

वैत्रासुर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राक्षस, असुर।

वैद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वैद्य] चिकित्सक, वैद्य, हकीम, डाक्टर, वैद। "नारी को न जानै वैद निपट अनारो है"—सूर०।

वैदक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० वैद्यक] आयुर्वेद, चिकित्साशास्त्र, [बैदक (दे०)]।

वैदकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) वैद्य का काम या पेशा, [बैदिकी, बैदी, बैदाई (दे०)]।

वैदग्ध्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चातुर्य्य, नैपुण्य। "वैदग्ध्य मुग्ध-वचसां सु विलासिनीनाम्"—

वैदर्भ—(संज्ञा, पु०, सं०) विदर्भ देश का राजा, दमयंती के पिता भीमसेन, रुक्मिणी के पिता भीष्मक। "मेने यथा तत्र जनः समेतः वैदर्भ-मागन्तुमजं गृहेशम्—[रघु०]। (वि०) विदर्भ प्रान्त का।

वैदर्भी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रुक्मिणी, दमयती, भैमी, मधुर वर्णों द्वारा मधुर रचना की एक काव्य-शैली व रीति। "वैदर्भी केलिशैले मरकत शिखरा-दुत्थि तैरंशु दर्भैः"—[नैषध]।

वैदांतिक—(वि०, सं०) वेदान्त वक्ता, वेदान्त का ज्ञाता।

वैदारिक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ज्वर जिसमें सन्निपात भी हो जाता है।

वैदिक—(संज्ञा, पु०, सं०) वेदविहित कृत्य करने वाला, वेदों का पूर्ण ज्ञाता। वि० वेद का, वेद संबंधी, [बैदिक (दे०)]। "लौकिक बैदिक करि सब रीती"—[रामा०]।

वैदिश—(वि०, सं०) विदिशा-सम्बन्धी। (पु०) विदिशा के राजा, विदिशा के निवासी।

वैदिश्य—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन नगर जो विदिशा के निकट है।

वैदुरिक—(संज्ञा, पु०, सं०) विदुर का सिद्धान्त।

वैदूर्य्य—(संज्ञा, पु० सं०) मणि विशेष [लहसुनियाँ (दे०)]।

वैदुषी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विद्वता, विज्ञान।

वैदेशिक—(वि०, सं०) विदेश-संबंधी, विदेश का, विदेशीय, [बिदेसी (दे०)]।

वैदेही—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीता, जानकी, विदेह राजा की कन्या, [बैदेही (दे०)]। "बैदेहि मुख पटतर दीन्हे"—[रामा०]।

वैद्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पंडित, विद्वान्, चिकित्सक, आयुर्वेद या चिकित्साशास्त्र के अनुसार रोगियों की दवा करने वाला। "औषधं मूढ वैद्यस्य त्यजन्तु ज्वरपीड़िताः"—[वैद्य-विद्या, वैद्यराज (यौ०)]।

वैद्यक—(संज्ञा, पु०, सं०) आयुर्वेद, चिकित्सा-शास्त्र, रोगों के निदान एवं चिकित्सादि की विवेचना का शास्त्र, वैद्य-विद्या।

वैद्युत्—(वि०, सं०) बिजली का, बिजली-संबंधी।

वैध—(वि०, सं०) रीति-नीति के अनुकूल, विधि के अनुसार, उपयुक्त, ठीक।

वैधर्म्य—(संज्ञा, पु०, सं०) नास्तिकता, विधर्मी होने का भाव, भिन्नता, पृथकता। [साधर्म्य (विलो०)]।

वैधव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) रँड़ापा, विधवा होने का भाव। "नक्षत्रांतेषु वैधव्य"—[शीघ्र०]।

वैधात्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ब्राह्मी नाम की एक लता।

वैधानिक—(वि०, सं०) विधान-सम्बन्धी। [कांस्टि-ट्यूशनल]

वैधेय—(वि०, सं०) ब्रह्मा या विधि का, विधि-संबंधी, वैध्य।

वैनतेय—(संज्ञा, पु०, सं०) विनता की संतान अरुण, गरुड़। "वैनतेय-बलि जिमि चह कागू"—[रामा०]।

वैनभृत—(संज्ञा, पु०) एक वैदिक शाखा विशेष, एक ऋषि।

वैनयिक—(वि०, सं०) शिष्टता, विनय नैतिक। (पु०) युद्धरथ।

वैपार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यापार] व्यापार, वाणिज्य, सौदागरी, [बैपार (दे०)]। [बैपारी (वि०, दे०)]।

वैभव—(संज्ञा, पु०, सं०) विभव, धन, संपत्ति, ऐश्वर्य, प्रताप, महत्त्व। "वैभव देखि न कपि मन शंका"—[रामा०]।—**शाली**—(पु०) प्रतापी, धनी, बड़े ऐश्वर्य वाला, वैभवी, वैभववान।

वैभूतिक—(वि०, सं०) विभूति सम्बन्धी।

वैमनस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रुता, वैर।

वैमात्रेय—(वि०, सं०) विमाता या सौतेली माता से उत्पन्न, सौतेला [वैमात्रेयी (स्त्री०)]।

वैमानिक—(वि०, सं०) विमान सम्बन्धी। (पु०) आकाश-पर्यटक, एक तीर्थ-स्थान।

वैमुक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) मोक्ष, मुक्ति।

वैयक्तिक—(वि०, सं०) व्यक्तिगत। [पर्सनल]

वैयाकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) व्याकरण शास्त्र का पूर्ण ज्ञाता। या पंडित, विद्वान्। "वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदीयम् विरच्यते"—[कौ० व्या०]।

वैर—(संज्ञा, पु०) [सं० भा० वैरता] शत्रुता, दुश्मनी, विरोध, वैमनस्य, द्वेष।—**भाव**-(पु०) शत्रुता।—**शुद्धि**-(स्त्री०) किसी से वैर का बदला लेने का कार्य [**वैरशोधन** (संज्ञा पु०, यौ०, सं०)]।

वैरागी—(संज्ञा, पु०, सं०) विरक्त, त्यागी, संन्यासी, विरागी। "कहँ हम कौशलेंद्र महराजा कहँ विदेह वैरागी"—[रामक०]।

वैराग्य—(संज्ञा, पु०, सं०) विरक्ति, विराग, त्याग, [बैराग (दे०)], देखे-सुने पदार्थों की चाह का त्याग, संसार का त्याग, एकान्त में ईशाराधन की चित्तवृत्ति। "वैराग्यमेवा भयम्"—[भ० श०]।

वैराज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ही देश में दो राजाओं से शासित राज्य।

वैरी—(संज्ञा पु०) [सं० वैरिन] शत्रु, रिपु, अरि, विरोधी, द्वेषी। [**वैरिणी** (स्त्री०)]। "आलस वरी बसत तन, सब सुख को हर लेत"—[वि० भू०]।

वैलक्षण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) विचित्रता, विलक्षणता, विभिन्नता, अनोखापन।

वैवर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) विवर्णता, मलिनता।

वैवस्वत—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य का एक पुत्र, एक मनु, एक रुद्र, वर्तमान मन्वंतर।

वैवस्तीय—(वि०, सं०) मनु-सम्बन्धी।

वैवाह—(वि०, सं०) विवाह-सम्बन्धी।

वैवाहिक—(संज्ञा, पु०, सं०) समधी, कन्या या वर का श्वसुर। (वि०) विवाह-संबधी, विवाह का। [**वैवाहिकी** (स्त्री०)]।

वैशंपायन—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यास जी के शिष्य एक प्रसिद्ध ऋषि।

वैशाख—(संज्ञा, पु०, सं०) चैत्र और जेठ के मध्य का महीना, [बैसाख (दे०)]।

वैशाखी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वैशाख की पूर्णमासी, दो शाख की छड़ी, [बैसाखी (दे०)]।

वैशाली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विशाल नगरी, (प्राचीन बौद्ध काल) विशाल पुरी या नगर (मुजफ्फरपुर प्रान्त का बसाढ़ ग्राम)।

वैशालीय—(संज्ञा, पु०, स०) महावीर वर्द्धमान।

वैशिक—(संज्ञा, पु०, सं०) वेश्यागामी नायक (साहि०)।

वैशिष्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) विशिष्टता।

वैशिष्ट्य—(संज्ञा, पु०, सं०) विशेषता, श्रेष्ठता।

वैशीपुत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) वेश्या-पुत्र।

वैशेषिक—(संज्ञा, पु०, सं०) छः दर्शन शास्त्रों में से महर्षि कणाद कृत एक दर्शन शास्त्र जिसमें पदार्थों तथा द्रव्यों का निरूपण है, विज्ञान-शास्त्र, पदार्थ विद्या, औलूक्य दर्शन, वैशेषिक दर्शन का मानने वाला। "न वयम् षट् पदार्थवादिनः वैशेषिकवत्"—शं० भा०।

वैश्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चार वर्णों में से तीसरा वर्ण जिनका धर्म अध्ययन, यजन और पशुपालन था तथा जिनकी वृत्ति, कृषि और वाणिज्य था (भार० आर्य०) बनिया, व्यापारी, [बैस्य (दे०)]।

वैश्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वैश्यत्व, वैश्य का धर्म या भाव।

वैश्यत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) वैश्यता।

वैश्व—(वि०, सं०) विश्वदेव से सम्बन्धित।—**जनीन**-(वि०, सं०) सारे संसार के लोगों से सम्बन्ध रखने वाला, सब लोगों का, सार्वभौम।

वैश्वदेव—(संज्ञा, पु०, सं०) विश्वदेव-सम्बन्धी यज्ञ तथा होम, विश्वदेवार्थ हवन।

वैश्वानर—(संज्ञा, पु०, सं०) अग्नि, चेतन, परमात्मा। " वैश्वानरे हाटक-संपरीक्षा।"—[स्फु०]।

वैषम्य—(संज्ञा, पु०, सं०) विषमता।

वैषयिक—(वि०, सं०) विषय-सम्बन्धी, विषय का। (संज्ञा, पु०) विषयी, लंपट।

वैष्णव—(संज्ञा, पु०, सं०) आचार-विचार से रहने वाले विष्णूपासकों का एक संप्रदाय, विष्णु का, विष्णु-संबंधी।

वैष्णवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विष्णु-शक्ति, लक्ष्मी, तुलसी, दुर्गा, गंगा।

वैसा—(सर्व०, दे०) उसके समान या तुल्य, तत्सदृश, उसके ऐसा या जैसा।—**ऐसावैसा**-(यो०) साधारण।—**वैसी**-(स्त्री०, दे०) उधर की ओर।

वैसे—(वि०, दे०) बिना मूल्य, सेंत-मेंत, उसी प्रकार, उसी तरह ।—**ऐसे-वैसे**-(यौ०) साधारण, भले-बुरे ।

वोक—अव्य, दे०) ओर, तरफ, दिशा ।

वोछा—(वि०, दे०) ओछा, तुच्छ, नीच ।

वोड़ना—(क्रि० स०, दे०) फैलाना, पसारना, ओरना, ओड़ना (ग्रा०) । "दास दान तोपे चहै, दृगपल अँजुरी वोड़"—रतन० ।

वोद, वोदा—(वि०, दे०) गीला, भीगा, ओद, ओदा (ग्रा०) ।

वोदर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उदर] उदर, पेट, ओदर (ग्रा०) । "जग जाके वोदर बसै, तिहि दू ऊपर लेय"—दास० ।

वोर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ओर] ओर, तरफ़ ।

वोल्लाह—(संज्ञा, पु०, सं०) पीली अयाल और पूँछ वाला घोड़ा ।

वोहित—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० वोहित्थ] जहाज़, बड़ी नाव । "शंभु-चाप बड़ वोहित पाई" —[रामा०] ।

वोहित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) जहाज़, बड़ी, नाव ।

वौल—(संज्ञा, पु०, दे०) गोंद, गुग्गुल, धूप विशेष ।

व्यंगार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) सांकेतिक अर्थ, व्यंजना के द्वारा उपलब्ध अर्थ ।

व्यंग्य—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यंजना वृत्ति से प्रगट शब्द का गूढ़ार्थ, बोली, ताना, चुटकी, [व्यंग (दे०)] । "अलंकार अरु नायिका, छंद लच्छना व्यंग"—[स्फु०] ।

व्यंग्योक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह उक्ति जिसमें गूढ़ अर्थ छिपा हो या व्यंग हो ।

व्यंजक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकाशक, विशेष भाव बोधक शब्द ।

व्यंजन—(संज्ञा, पु०, सं०) होने, व्यक्त या प्रकट करने का भाव या क्रिया, पका भोजन जिसके छप्पन भेद हैं, साग-तरकारी आदि, अच्छा भोजन, वह अक्षर जो स्वर की सहायता बिना बोला न जावे, वर्ण-माला के सब वर्ण, अंग, अवयव ।

व्यंजना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रगट करने की क्रिया, शब्द की वह शक्ति जिससे उसके सामान्यार्थ को छोड़ विशेषार्थ व्यक्त हो ।

व्यक्त—(वि०, सं०) स्पष्ट, प्रकट, साफ़ । [**व्यक्तता, व्यक्तत्व** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**गणित**-(पु०) वह गणित जो प्रकट अंकों के द्वारा किया जावे, अंक-गणित ।

व्यक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्यक्त होने का भाव या क्रिया, प्राकट्य किसी शरीरधारी का शरीर । मनुष्य, आदमी, व्यष्टि, जन । स्वतन्त्र एवं पृथक सत्ता वाला । [**व्यक्तित्व, वैयक्तिक** (संज्ञा, पु०)] ।

व्यग्र—(वि०, सं०) व्याकुल, उद्विग्न, विकल, भय-भीत, कार्य में लीन या फसा हुआ, घबराया हुआ । [**व्यग्रता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

व्यतिक्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रम का बिगाड़ या उलट-पुलट, विघ्न, बाधा ।

व्यतिरिक्त—(क्रि० वि०, सं०) सिवा, अलावा, अतिरिक्त, अन्य, भिन्न ।

व्यतिरेक—(संज्ञा, पु०, सं०) भेद, अभाव, अति-क्रम, अंतर । एक अर्थालंकार जहाँ उपमान से उपमेय में कुछ अधिकता या विशेषता कही जाय ।

व्यतिरेकी—(संज्ञा, पु०) [सं० व्यतिरेकिन] जो किसी को अतिक्रमण करके जावे ।

व्यतीत—(वि०, सं०) बीता या गुजरा हुआ, गत, जो चला गया हो, [बितीत (दे०)] ।

व्यतीतना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० व्यतीत] बीतना, गुजरना, गत होना, चला जाना, [बितीतना (दे०)] ।

व्यतीपात—(संज्ञा, पु०, सं०) बहुत बड़ा उपद्रव या उत्पात; एक योग जिसमें शुभ कार्य या यात्रा का निषेध है (ज्यो०) ।

व्यत्यय—(संज्ञा, पु०, सं०) अतिक्रम, व्यतिक्रम, लाँघना, डाँकना ।

व्यथन—(वि०, सं०) पीड़क, कष्ट देने वाला । दुख पहुँचाने वाला ।

व्यथयिता—(वि०, सं०) व्यथा देने वाला, कष्ट देने वाला ।

व्यथा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रोग, क्लेश, पीड़ा, दुख, वेदना, कष्ट, [बिथा (दे०)] । "व्यथा असाध्य भूप तब जानी"—[रामा०] ।—**कर**-(वि०) कष्टदायक ।

व्यथाकुल—(वि०, सं०) व्यथा-ग्रस्त, व्यथित, पीड़ा से ग्रस्त ।

व्यथाक्रांत—(वि०, सं०) व्यथित, दुखित ।

व्यथित—(वि०, सं०) क्लेशित, पीड़ित, दुखित, रोगी ।

व्यदेश—(संज्ञा, पु०, सं०) व्याज, बहाना, अमुख्य में मुख्य का भाव ।

व्यभिचरण—(संज्ञा, पु०, सं०) संदेह ।

व्यभिचार—(संज्ञा, पु०, सं०) दूषित या बुरा आचार-व्यवहार, बदचलनी, छिनाला, पुरुष का पर-स्त्री तथा स्त्री का पर पुरुष से अनुचित संबंध ।

व्यभिचारिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परकीया, कुलटा, छिनाल स्त्री । "ऋण कर्त्ता पिता शत्रुः माता च व्यभिचारिणी"—नीति० ।

व्यभिचारी—(संज्ञा, पु०) [सं० व्यभिचारिन्] बदचलन, आचार-भ्रष्ट, परस्त्रीगामी, [छिनरा (दे०)] । [**व्याभिचारिणी** (स्त्री०)] । काव्य में एक संचारी भाव ।

व्यय—(संज्ञा, पु०, सं०) खर्च ।—**स्थान**-(पु०) जन्म-कुन्डली में लग्न से १२ वाँ घर ।

व्ययित—(वि०, सं०) खर्च किया हुआ ।

व्ययी—(वि०, सं०) अति व्यय करने वाला ।

व्ययेश—(संज्ञा, पु०, सं०) कुन्डली में व्यय-स्थान का राशि-पति ग्रह (ज्यो०) ।

व्यर्थ—(वि०, सं०) निष्प्रयोजन, निरर्थक, सार या अर्थ-हीन, बेफ़ायदा, नाहक़, वृथा । (क्रि० वि०) फ़ज़ूल, यों ही । "व्यर्थ धरहु धनु-बान-कुठारा"—[रामा०] ।

व्यलीक—(संज्ञा, पु०, सं०) दुःख, अनुचित, अयोग्य, विट, अपराध, डाँट-फटकार, डाँट-डपट, अलीक, [बिलीका (दे०)] । "वचन तुम्हार न होहिं व्यलीका"—[रामा०] ।

व्यवकलन—(संज्ञा, पु०, सं०) बाक़ी निकालना, बड़ी संख्या में से छोटी सजातीय संख्या का घटाना (गणि०) ।

व्यवगृहीत—(वि०, सं०) नीचे झुकाया हुआ ।

व्यवच्छिन्न—(वि०, सं०) पृथक् किया हुआ, विभक्त, भिन्न ।

व्यवच्छेद—(संज्ञा, पु०, सं०) अलगाव, पार्थक्य, पृथकता, विलगता, हिस्सा, विभाग, विराम, ठहराव ।

व्यवच्छेक—(वि०, सं०) खासियत दिखाने वाला, भिन्न करने वाला ।

व्यवधान—(संज्ञा, पु०, सं०) परदा, बीच में आकर ओट या आड़ करने वाली वस्तु, बीच में पड़ने वाला, भेद, खंड, विच्छेद ।

व्यवधारण—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्धारण, व्याख्या ।

व्यवभासित—(वि०, सं०) अच्छी तरह प्रकाशित किया हुआ ।

व्यवसाय—(संज्ञा, पु०, सं०) रोजगार, उद्यम, जीविका, व्यापार, काम-धंधा, [व्यौसाय (दे०)] । —**बुद्धि**-(वि०) दृढ़ निश्चय ।

व्यवसायात्मक—(वि०, सं०) प्रयास से पूर्ण, उद्योगपूर्ण, अभिप्राय पूर्ण, संकल्प ।

व्यवसायी—(संज्ञा, पु०) [सं० व्यवसायिन्] रोजगारी, उद्यमी, व्यापारी, कामकाजी । "पति-भक्ता न या नारी, व्यवसायी न यः पुमान्"—[नीति०] ।

व्यवस्था—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शास्त्रों के द्वारा किसी कार्य का निर्धारित या निश्चित विधान, निश्चित रीति नीति [मैनेजमेंट] ।—**पत्र**-(पु०) वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था लिखी हो । **मुहा०*—देना**-विद्वानों का किसी बात पर शास्त्रीय सिद्धान्त बतलाना । विधान या रीति-नीति बतलाना, प्रबंध, इंतिज़ाम, स्थिति, स्थिरता, वस्तुओं को सजा कर यथा-स्थान रखना ।

व्यवस्थाता, व्यवस्थापक—(संज्ञा, पु०, सं०) शास्त्रीय व्यवस्था देने वाला, नियम पूर्वक कार्य चलाने वाला, प्रबंध-कर्त्ता, विधायक । [**व्यवस्थात्री, व्यवस्थापिका** (स्त्री०)] ।

व्यवस्थापन—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्द्धारण, वैधानिक निर्देशन, निश्चय करना ।

व्यवस्थापिका सभा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) प्रबंधकारिणी या विधान बनाने वाली सभा (वर्तमान) ।

व्यवस्थित—(वि०, सं०) जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था या नीति हो, क़ायदे का । [मैनेज्ड, एरेंज्ड] ।

व्यवस्थिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भेद किया जाना, निर्णीत नियम, अध्यवसाय ।

व्यवहरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्यावहारिक] व्यवहार करने वाला, महाजन, ऋणदाता, [व्यवहार, ब्यौहार, ब्यौहरिया (दे०)] । "अब आनिय व्यवहरिया बोली"—[रामा०] ।

व्यवहार—(संज्ञा, पु०, सं०) काम, कार्य्य, क्रिया, बरताव, व्यापार, लेन-देन का काम, रोजगार,

महाजनी, विवाद, मुकदमा, झगड़ा।—**कुशल**-(वि०) सामाजिक काम-काज में प्रवीण।—**विधि**-(स्त्री०) न्याय-शास्त्र।—**शास्त्र**-(पु०) धर्म्म-शास्त्र, कानून, राजनीति, विवाद-निर्णय और अपराधादि के दंड-विधान का शास्त्र।—**सिद्धि**-(स्त्री०) धार्मिक शास्त्र के अनुसार वैधानिक निर्णय।

व्यवहार्य—(वि०, सं०) व्यवहार-योग्य, प्रचलित, प्रयोग-योग्य।

व्यवहित—(वि०, सं०) छिपा हुआ, जिसके आगे कोई आड़ या पर्दा हो, व्यवधान-प्राप्त, अंतराल-युक्त।

व्यवहृत—(वि०, सं०) जो कार्य्य मे लाया गया हो, प्रयुक्त, कृतानुष्ठान, जिसका आचरण किया गया हो। [**व्यवहृति** (संज्ञा, स्त्री०)]।

व्यष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समाज का एक पृथक् विशेष व्यक्ति। [**समष्टि** (विलो०)] अलग, भिन्न।

व्यसन—(संज्ञा, पु०, सं०) आपत्ति, बुरी या अमंगल बात, दुःख, विपत्ति, विषयानुरक्ति, कामादिक विकारों से होने वाला दोष, प्रवृत्ति, शौक, विषयाशक्ति, बुरी लत या कुटेव। "अति लघु रूप व्यसन यह तिनहीं' —[रामा०]। "यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ"—भर्तृ०।

व्यसनी—(संज्ञा, पु०) [सं० व्यसनिन्] शौकीन, किसी वस्तु में आसक्त, विषयानुरागी।

व्यस्त—(वि०, सं०) व्याप्त, व्याकुल, उद्विग्न, व्यग्र, घबराया हुआ, कार्य्य में फँसा या लगा हुआ।—**न्यास**-(वि०) ऊबड़खाबड़, अस्तव्यस्त।

व्याकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) वह विद्या जिससे किसी भाषा का ठीक-ठीक बोलना, लिखना और समझना जाना जाता है तथा शब्दों, वाक्यों आदि के शुद्ध प्रयोगादि के नियमों की विवेचना का शास्त्र। "अंगीकृतं कोटिमितंच शास्त्रं नाँगीकृतं व्याकरणं च येन"—[स्फु०]।

व्याकीर्ण—(वि०, सं०) अस्त-व्यस्त, व्याकुल, क्षुब्ध, फैलाया हुआ।

व्याकुल—(संज्ञा, पु०, सं०) विकल, घबराया हुआ, उत्कंठित। "व्याकुल कुम्भकरण पहँ आवा" —[रामा०]। [**व्याकुलता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

व्याकुलित—(वि०, सं०) हड़बड़ाया हुआ, भीत।

व्याकृत—(वि०, सं०) अलग किया हुआ, विश्लेषित, रूपांतरित, परिवर्त्तित।

व्याक्रोश—(संज्ञा, पु०, सं०) अनादर या तिरस्कार करते हुए कथन करना, चिल्लाना, शोर करना।

व्याख्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) टीका, विवेचना, व्याख्यान, स्पष्टार्थ, जटिल या क्लिष्ट वाक्यादि का अर्थ स्पष्ट करने वाली वाक्यावली।

व्याख्याता—(संज्ञा, पु०) [सं० व्याख्यातृ] व्याख्या करने वाला, टीकाकार।

व्याख्यान—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी विषय की व्याख्या टीका या विवेचनादि करने या बतलाने का कार्य्य, भाषण, वक्तृता।—**शाला**-(स्त्री०) भाषण या व्याख्यान देने का स्थान, विद्यालय।

व्याघात—(संज्ञा, पु०, सं०) बाधा, विघ्न, चोट, आघात, मार, प्रहार, एक अशुभ योग (ज्यो०), एक अलंकार जहाँ एक ही साधन या उपाय से दो विरोधी कार्यों के होने का कथन हो।

व्याघातक—(वि०, सं०) विरोध, आघात करने वाला।

व्याघ्र—(संज्ञा, पु०, सं०) बाघ, सिंह, शेर। "वरम् वनम् व्याघ्रगजेंद्रसेविनम्"—[भ० श०]।—**चर्म्म**-(पु०) बाघ या शेर की खाल, [व्याघ्राम्बर, बाघम्बर, बघम्बर (दे०)]।—**नख**-(पु०) नख (गंधद्रव्य) बाघ का नाखून, [बघनख (दे०)], बघनहा जिसे दृष्टि-दोष से बचाने को बालकों के गले में पहनाते हैं।—**सेवक**-(पु०) सियार।

व्याघ्रास्य—(संज्ञा, पु०, सं०) स्कंद का एक सेवक, एक राक्षस।

व्याघ्राण—(संज्ञा, पु०, सं०) सूँघने का कार्य।

व्याघ्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बाघिन।

व्याज—(संज्ञा, पु०, सं०) [मिस ब्र०] बहाना, छल, कपट, विघ्न, वेर, विलंब, देर, सूद ब्याज, [बियाज (दे०)], लाभ। "सिय मुख-छबि विधु-ब्याज बखानी"—[रामा०]। "दिन चलि गये ब्याज बहु बाढ़ा"—[रामा०]।

व्याजक—(वि०, सं०) छली। ऋणी, ब्याजू।—**निंदा**-(स्त्री०) ऐसी निन्दा जिसमें यों देखने से निन्दा न हो, एक अलंकार, जिसमें निन्दा तो हो किन्तु देखने में वह स्पष्ट न हो।—**स्तुति**-(स्त्री०) ऐसी स्तुति जिसमें देखने से स्तुति न हो वरन् ब्याज या बहाने से स्तुति हो। एक अलंकार जिसमें बहाने से ऐसी स्तुति की जाये कि देखने में वह स्पष्ट न जान पड़े।

व्याजू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० व्याज] वह धन जो व्याज या सूद पर उधार दिया जावे, [बियाजू (दे०)]। (वि०) व्याज पर धन लेने वाला।

व्याजोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) छल या कपट से भरी बात के छिपाने का कोई बहाना बनाया जाय।

व्याड—(वि०, सं०) छली, ठग, धूर्त्त। (संज्ञा, पु०) व्याघ्र, सिंह, सर्प।

व्याडि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक व्याकरण ग्रंथकार प्राचीन ऋषि।

व्यादान—(संज्ञा, पु०, सं०) फैलाव, विस्तार।

व्यादीर्ण—(वि०, सं०) फैलाया हुआ।

व्यादेश—(संज्ञा, पु०, सं०) खास आदेश।

व्याध—(संज्ञा, पु०, सं०) निषाद, अहेरी, बनैले पशुओं का शिकारी, किरात, बहेलिया, [व्याधा (दे०)], एक जंगली जाति। "व्याध बधो मृग बान तें, रक्तै दियो बताय"—तुल०।

व्याधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्यथा, रोग, बीमारी, झंझट, बखेड़ा, विपत्ति, काम या वियोगादि से देह में किसी रोग का संचार (साहि०)। [बियाधि (दे०)], अँगुली की नोक का फोड़ा। "व्याधि असाधि जानि तिन त्यागी"—[रामा०]।—**ग्रस्त**-(वि०) रुग्ण, रोगग्रस्त।—**पीड़ित**-(वि०) रोगग्रस्त।—**रहित**-(वि०) रोगमुक्त।

व्याधित—(वि०, सं०) रोगग्रस्त।

व्याधी—(संज्ञा, स्त्री०) रोग।

व्यान—(संज्ञा, पु०, सं०) देहान्तर को पाँच वायुओं में से सर्वत्र संचार करने वाली एक वायु।

व्यापक—(संज्ञा, वि०, सं०) आच्छादक, सब स्थानों में फैला हुआ, घेरने या ढकने वाला, प्रत्येक पदार्थ के भीतर-बाहर वर्तमान। "सब में व्यापक पै पृथक्, रीति अलौकिक सर्व"—मन्ना०। [**व्यापकता, व्यापकत्व** (संज्ञा, स्त्री०, पु०)]।

व्यापत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हानि, असफलता, मृत्यु संकट के बीच पड़ना।

व्यापना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० व्यापन] व्याप्त होना, किसी वस्तु के भीतर-बाहर फैलना या वर्त्तमान रहना, आच्छादित करना, असर करना, प्रभाव डालना, पैठना।

व्यापन्न—(वि०, सं०) संकटग्रस्त, नष्ट।

व्यापादन—(संज्ञा, पु०, सं०) हत्या, नाश, परपीड़न का यत्न या उपाय। [**व्यापादनीय, व्यापादित** (वि०)]।

व्यापार—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्य्य, कर्म, कामधधा, सौदागरी, रोजगार, व्यवसाय, उद्यम, क्रय-विक्रय का कार्य, [व्यौपार (दे०)]।

व्यापारिक—(वि०, सं०) व्यापार-सम्बन्धी।

व्यापारित—(वि०, सं०) कार्य में लगाया हुआ।

व्यापारी—(संज्ञा, पु०) [सं० व्यापारिन्] व्यवसायी, सौदागर, रोजगारी, [व्यौपारी (दे०)]। (वि०, हि०) व्यापार-सम्बन्धी।

व्यापी—(संज्ञा, पु०) [सं० व्यापिन्] सर्वगत, विभु, व्यापक।

व्याप्त—(वि०, सं०) विस्तृत, फैला हुआ।

व्याप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्याप्त होने का भाव, एक वस्तु का दूसरी में पूर्ण रूप से फैलना या मिश्रित होना, ८ प्रकार की सिद्धियों या ऐश्वर्यों में से एक।

व्यामोह—(संज्ञा, पु०, सं०) अज्ञान, मोह, दुःख, व्याकुलता।

व्यायाम—(संज्ञा, पु०, सं०) परिश्रम, कसरत, बल वर्धनार्थ किया गया शारीरिक श्रम। "व्यायाम दृढ़ गात्रस्य तेजो बुद्धियशोबल"—[स्फु०]।

व्यायामिक—(वि०, सं०) व्यायाम-सम्बन्धी।

व्यायामी—(वि०, सं०) कसरती, परिश्रमी।

व्यायोग—(संज्ञा, पु०, सं०) दृश्य काव्य या रूपक का एक भेद (नाट्य०)।

व्याल—(संज्ञा, पु०, सं०) साँप। बाघ। राजा। विष्णु। दंडक छंद का एक भेद (पिं०)।

व्यालि—(संज्ञा, पु०) [सं० व्याडि] व्याकरण ग्रंथकार एक ऋषि।

व्यालिक—(संज्ञा, पु०, सं०) सँपेरा, व्याली।

व्यालुष्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) साँप के काटने का एक प्रकार का ढंग।

व्यालू†—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) [सं० वेला] रात्रि का भोजन, बियारी।

व्यावर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) परांगमुख होना, निवारण, मुड़ना, लौटना, चक्कर खाना।

व्यावर्तित—(वि०, सं०) मोड़ा हुआ, परिवेष्टित, चक्कर खाया हुआ।

व्यावहारिक—(वि०, सं०) बरताव या व्यवहार का, व्यवहार-संबंधी, व्यवहार शास्त्र-संबंधी।

व्यावहार्य—(वि०, सं०) योग्य, सक्षम।

व्यावृत्त—(वि०, सं०) खंडित, निवृत्त, मनोनीत, निषिद्ध। "अथ स विषय व्यावृत्तात्मा"—[रघु०]। **—चेता**–(वि०) जिसका मन घूम गया हो।

व्यावृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०) घेरना, मुँह मोड़ना। मुक्ति, घुमाना, आवृत्ति, अंतर।

व्यासंग—(संज्ञा, पु०, सं०) अत्यधिक आसक्ति या मनोयोग।

व्यास—(संज्ञा, पु०, सं०) पराशर के पुत्र कृष्ण-द्वैपायन, इन्होंने महाभारत, भागवत, १८ पुराण और वेदान्तादि की रचना की, जिससे वेद-व्यास कहलाये, इन्होंने वेदों का संग्रह, संपादन और विभाग किया। "अष्टादशपुराणानि व्यासस्य वचनद्वय"—स्फु०। रामायणादि के कथावाचक। वह सीधी रेखा जो वृत्त गोले के केन्द्र से जाकर परिधि पर समाप्त हो, फैलाव, विस्तार। **—गीता**–(स्त्री०) सूर्यपुराण का एक परिच्छेद। **—देव**–(पु०) बादरायण, कृष्णद्वैपायन। **—समास**–(पु०) विस्तार-संक्षेप। **—स्मृति**—(स्त्री०) एक स्मृतिग्रंथ।

व्यासार्द्ध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) व्यास का आधा, अर्ध व्यास।

व्याहत—(वि०, सं०) व्यर्थ, निषिद्ध।

व्याहार—(संज्ञा, पु०, सं०) वाक्य।

व्याहृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उक्ति, कथन, भूः, भुवः, स्वः, इन तीनों का समुदाय या मंत्र।

व्युत्क्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यतिक्रम, क्रम-रहित, उलटा-पुलटा।

व्युत्क्रांत—(वि०, सं०) अतिक्रांत, उल्लंघित, उपेक्षित।

व्युत्थान—(संज्ञा, पु०, सं०) सक्रियता, सचेष्टता, नृत्य-कला का एक प्रकार-विशेष। खंडन। दबना।

व्युत्पत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी पदार्थ का मूल, उत्पत्ति-स्थान, उद्गम, शब्द का वह मूल रूप जिससे वह बना हो, किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञान।

व्युत्पन्न—(वि०, सं०) जो किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञाता या अभ्यासी हो।

व्युत्पादक—(वि०, सं०) व्युत्पत्तिकर्ता, उत्पादक।

व्युत्पादन—(संज्ञा, पु०, सं०) व्युत्पत्ति, मूल रूप का विश्लेषण।

व्यूह—(संज्ञा, पु०, सं०) जमाव, समूह, निर्माण, बनावट, रचना, शरीर, सेना, युद्ध में रचा गया सैन्यविन्यास या विशिष्ट स्थापन। जैसे—चक्र-व्यूह।

व्योम—(संज्ञा, पु०) [सं० व्योमन्] गगन, आकाश, नभ, आसमान, बादल, पानी। "ज्वलन्मणि व्योम सदा सनातनम्"—किरात०। **—चर,—चारी**–(संज्ञा, पु०) [सं० व्योमचारिन्] देवता, चंद्रमा, सूर्य्य, पक्षी, तारागण, मेघ, वायु, बिजली, विमान, वायुयान। "कांतं वपुर्व्योमचर प्रपेदे"—[रघु०]। **—यान**–(पु०) आकाश में उड़ने वाला यान, विमान, वायुयान, हवाई जहाज।

व्रज—(संज्ञा, पु०, सं०) गमन, जाना या चलना, समूह, वृन्द, श्रीकृष्ण का लीलाक्षेत्र, मथुरा के आस-पास का देश, बिरिज (ग्रा०)। "एती व्रज-वाला मृगछाला कहाँ पावेंगी"—[स्फु०]। **—चंद्र**–(पु०) श्रीकृष्ण, व्रजचंद। **—नाथ**–(पु०) श्रीकृष्ण जी, व्रज-नायक। "एहो व्रजनाथ करो थल को न बेडे को"—[स्फु०]। **—पति**–(पु०) व्रजाधिपति, व्रजाधिप, श्रीकृष्ण जी। **—भाषा**–(स्त्री०) व्रज-मंडल (मथुरा-आगरादि) की बोली या भाषा, उत्तर भारत के प्रायः सभी बड़े-बड़े कवियों ने (४ या ५ सौ वर्ष से) इसी में रचनाएँ की हैं जिनमें सूर, बिहारी, केशवादि प्रसिद्ध हैं। "व्रज-भाषा बरनी कबिन, निज-निज बुद्धि-विलास"—बिहारी। **—भूप,—भूपति**–(पु०) श्रीकृष्ण। "लखि व्रज-भूप-रूप अलख, अरूप ब्रह्म"—[ऊ० श०]। **—मंडल**–(पु०) व्रज और उसके आस-पास का प्रान्त या प्रदेश। **—राज**–(पु०) व्रजबिहारी, श्रीकृष्णजी।

व्रजन—(संज्ञा, पु०, सं०) चलना, जाना। "व्रजन् तिष्ठन् पदैकेन यथा एकेन गच्छति"—[भा०]।

व्रजांगना—(संज्ञा, स्त्री०) गोपी, व्रज-नारी।

व्रजेंद्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रीकृष्ण जी।

व्रजेश, व्रजेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रीकृष्ण। [**व्रजेश्वरी** (स्त्री०)]।

व्रज्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पर्य्यटन, भ्रमण, घूमना-फिरना, गमन, जाना, चढ़ाई, आक्रमण, धावा।

व्रण—(संज्ञा, पु०, सं०) शरीर का घाव या फोड़ा। **—ग्रंथि**–(स्त्री०) फोड़े की गाँठ। **—रोपण**–(वि०) भरने वाला फोड़ा। **—शोधन**–(पु०) फोड़े की सफाई।

व्रणायाम—(संज्ञा, पु०, सं०) एक असाध्य रोग। (आयुर्वेद की दृष्टि में)।

व्रणित—(वि०, सं०) जिसे चोट लगी हो, जो आहत या चुटैल हो।

व्रत—(संज्ञा, पु०, सं०) नियम, दृढ़ संकल्प, किसी पुण्य तिथि को पुण्यार्थ नियम से उपवास करना, खाना, भक्षण, उपवास, अनुष्ठान।—**ग्रहण**-(पु०) किसी कार्य के लिए दृढ़ संकल्प होना।—**चर्या**-(स्त्री०) व्रत रखना।—**धारण**-(पु०) धार्मिक-आचार का सम्पादन।—**भंग**-(पु०) व्रत का टूटना।

व्रतिक—(संज्ञा, पु०, सं०) व्रत का उपवास करने वाला, व्रती।

व्रती—(संज्ञा, पु०) [सं० व्रतिन्] व्रत या उपवास करने वाला, [वर्ती (दे०)], ब्रह्मचारी, यजमान, कोई व्रत या संकल्प धारण करने वाला।

व्रत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) व्रत या उपवास करने वाला।

व्राचड़—(संज्ञा, स्त्री०, अप०) ८ वीं से ११ वीं शताब्दी तक सिंध प्रदेश की प्राचीन भाषा (अपभ्रंश-भेद) पैशाचिक भाषा का एक भेद या रूप।

व्राज—(संज्ञा, पु०, सं०) गमन, समूह, गति। —**पति**-(पु०) समूह का नेता।

व्राजिक—(संज्ञा, पु०, सं०) दूध पर रहा जाने-वाला एक उपवास।

व्रात—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, भीड़, लोग। "गुरु निन्दक व्रात न कोपि गुणी"—[राम०]।

व्रात्य—(संज्ञा, पु०, सं०) जिसका उपवीत (जनेऊ) संस्कार न हुआ हो, दसों संस्कारों से हीन, वर्ण-संकर, अनार्य या पतित।—**यज्ञ**-(पु०) एक यज्ञ।

व्रीड—(संज्ञा, पु०, सं०) लज्जा।

व्रीडन—(संज्ञा, पु०, सं०) शर्म, लज्जा, अपकर्ष।

व्रीडित—(वि०, सं०) लज्जित, विनीत। (पु०) विनय, लज्जा।

व्रीडा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) त्रपा, लज्जा, शरम। "व्रीडा न तैरासजनोपनीतः"—[किरा०]।

व्रीहि—(संज्ञा, पु०, सं०) धान, चावल। "येनाहं स्यामि बहुव्रीहिः"—रघु०।

बहुव्रीहि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) षट् समासों में से एक (व्या०)।

श

श—संस्कृत और हिंदी की वर्णमाला के ऊष्मवर्णों में से प्रथम वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान प्रधानतया तालु है। "इचु यशानाम् तालु"—[सि० कौ]। (संज्ञा, पु०, सं०) मंगल, कल्याण। शस्त्र। शिव।

शं—(संज्ञा, पु०, सं०) शांति, सुख, कल्याण, वैराग्य, मंगल। (वि०) शुभ।......"शंकरो शंकरोतु"। "शन्नो मित्रः शंवरुण"—[यजुर्वे०]।

शंक—(संज्ञा, पु०, सं०) आशंका, डर भय, [संक (दे०)]। "देत-लेत मन शंक न करहीं" —[रामा०]।

शंकना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शंका] [संकना (दे०)], डरना, शंका या संदेह करना।

शंकर—(वि०, सं०) कल्याण या मंगल करने वाला, शुभकर्ता, लाभदाता। (संज्ञा, पु०)—महादेव, शिव, शंभु। शंकराचार्य्य। २६ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)। "निश्शंक शंकरां-के तड़िदिव लसिता"—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संकर] दो पदार्थों का मेल।—**शैल**-(पु०) शंकराचल, कैलाश पर्वत।—**स्वामी**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० शंकर-स्वामिन्] अद्वैत मत प्रवर्तक स्वामी शंकराचार्य्य।

शंकरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शंकरी, पार्वती जी।

शंकराचार्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अद्वैत मत के प्रवर्तक, एक प्रसिद्ध शैव आचार्य, वेदान्त और गीता पर इनके भाष्य परम प्रसिद्ध हैं, शंकर स्वामी, जो केरल प्रांत में सन् ७८८ में जन्मे और ३२ वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवासी हुए।

शंकरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती जी।

शंका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भय, भीति, डर, आशंका, खटका, चिंता, सन्देह, संशय अनुचित व्यवहारादि से होने वाली इष्ट-हानि या अनिष्ट का भय। साहित्य में एक संचारी भाव, [संका, (दे०)]। "देखि प्रभाव न कपि मन शका"—[रामा०]।—**जनक**-(वि०) शंका या संदेह पैदा करन वाला।—**निवारण**-(पु०) संदेह का दूर होना।—**निवृत्ति**-(स्त्री०) शंका-निवारण।—**शील**-(वि०) शंका करनेवाला स्वभाव।

शंकित—(वि०, दे०) भयभीत, डरा हुआ, संदेह-युक्त, चिंतित, अनिश्चित। [**शंकिता** (स्त्री०)]।

शंकु—(संज्ञा, पु०, सं०) कील, मेख, गाँसी, खूँटा, खूँटी, बरछा, भाला। कामदेव, शिव। वह खूटा जिससे सूर्य्य या दीपक की छाया नाप कर समय जाना जाता था (प्राचीन०)। शंख, दस लाख कोटि की संख्या (लीला०)।

शंकुर—(वि०, सं०) भयानक, डरावना।

शंख—(संज्ञा, पु०, सं०) कंबु, बड़ा समुद्रीय घोंघा, जो विशेषतया देवतादि के सामने बजाया जाता है, पवित्र माना जाता है। दस या सौ खर्व की संख्या, हाथी का गंडस्थल। शंखासुर दैत्य। ९ निधियों में से एक निधि। १४ रत्नों में से एक, छप्पय का एक भेद। दंडक छदान्तर्गत प्रावृत्त का एक भेद (पिं०)। "शंखान् दध्मौ पृथक्-पृथक्"—[भ० गी०]।—**चूड़**-(पु०) कुबेर का मित्र या दूत, एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। —**द्राव**-(पु०) शंख को भी गला देने वाला एक अर्क (वैद्य०)।—**धर**-(पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण।—**ध्वनि**-(पु०) विजयध्वनि, शंख का शब्द।—**नारी**-(स्त्री०) छः वर्णों का सोमराजी छंद (पिं०)।—**पाणि**-(पु०) विष्णु। —**पुष्पी**-(स्त्री०) शखाहुली, [सखौली (दे०)]। —**भृत**-(पु०) विष्णु।

शंखासुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्रह्मा जी के पास से वेदों को चुराकर समुद्र में जा छिपने वाला एक दैत्य जिसे विष्णु ने मत्स्य अवतार ले कर मारा था (पुरा०)।

शंखाहुली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शंखपुष्पी, सखौली, कौड़ियाला, श्वेत अपराजिता [**संखा-हुली** (दे०)]।

शंखिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शंखाहुली, [सखौली (दे०)], शंखपुष्पी, कौड़ियाला (प्रान्ती०), श्वेत अपराजिता, मुख की नाड़ी। सीप। एक देवी। पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक भेद (कोक०), एक वन-औषधि। "गुडच्यपामार्ग विडंग शंखिनी"—[भाव प्र०]। —**डंकिनी**-(स्त्री०) एक प्रकार का उन्माद रोग (वैद्य०)।

शंजरफ—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सिंगरफ़] ईंगुर।

शंठ—(संज्ञा, पु०, सं०) मूर्ख, बेवकूफ। साँड़। नपुंसक, हिजड़ा, [संठ (दे०)]।

शंड—(संज्ञा, पु०, सं०) साँड़, षंढ, नपुंसक, हिजड़ा वह पुरुष जिसके संतान उत्पन्न न हो।

शंडामर्क—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शंड और मर्क नामक दो दैत्य, [संडामर्का (दे०)]।

शंडील—(संज्ञा, पु०, सं०) शाण्डिल्य गोत्र के चलाने वाले एक ऋषि का नाम।

शंतनु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शांतनु] एक चंद्रवंशीय राजा, भीष्म पितामह के पिता।—**सुत** -(पु०) भीष्म पितामह। "तौ लाजौ गंगा-जननी को शंतनुसुत न कहाऊँ—रघु०।

शंपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विद्युत, बिजली।

शंपु—(वि०, सं०) प्रसन्न, हर्षित, आनंदित।

शंब—(वि०, सं०) सुकृति, पुण्यात्मा, धर्मी।

शंबर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था। एक प्राचीन शस्त्र। युद्ध। संग्राम। "शंबर कायमाया"—[नैषध], [**शांबरीय** (वि०)]।

शंबरारि, शंबररिपु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामदेव, प्रद्युम्न, शंबर-शत्रु।

शबल—(संज्ञा, पु०, सं०) पाथेय, मार्ग-भोजन, विद्वेष, तट, [संबल (दे०)]।

शंबु—(संज्ञा, पु०, सं०) घोंघा, छोटा शंख, [संबु (दे०)]।

शंबुक—(संज्ञा, पु०) घोंघा, छोटा शख, [संबुक (दे०)]। "मुक्तास्रवहिं कि शंबुक-ताली"—[रामा०]।

शंबूक—(संज्ञा, पु०, सं०) राम-राज्य में एक शूद्र तपस्वी, जिसकी तपस्या से एक ब्राह्मण-सुत अकाल ही मरा और जिसको मार कर राम ने उसे जीवित किया। [रामा०], घोंघा, छोटा शंख।

शंभु—(संज्ञा, पु०, सं०) महादेव, शिव, [संभु (दे०)] ११ रुद्रों में से एक, १९ वर्णों का एक वृत्त (पिं०), एक दैत्य, सुंभ। (संज्ञा, पु०, सं०) स्वायंभुव।—**गिरि**-(पु०) कैलास।—**धनु**-(पु०) [सं० शंभु-धनुष्] शिव-धनुष। "सब की शक्ति शंभु-धनु भानी"—[रामा०]।—**बीज**,—**तेज**-(पु०) पारद, पारा, शिव-शुक्र शभु-वीर्य। —**भूषण**-(पु०) चंद्रमा, साँप।—**लोक**-(पु०) कैलास।

शंसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रशंसा, चाह, अभिलाषा, उत्सुकता, उत्कंट इच्छा।

शंसित—(वि०, सं०) उक्त, कथित, प्रोक्त, निश्चित, प्रशंसित।

शंस्य—(वि०, सं०) प्रशंसनीय, स्तुत्य, प्रशंसा के योग्य, श्लाघ्य ।

शऊर—(संज्ञा, पु०, अ०) कार्य करने की योग्यता या क्षमता, लियाकत, तमीज, बुद्धि, अक्ल, [सहूर (दे०)] ।—**दार**-(पु०) [अ० शऊर+दार फ़ा०] योग्य, लायक, बुद्धिमान, अक़्लमंद । [**बेशऊर** (विलो०)] ।

शक—(संज्ञा, पु०, सं०) वह राजा जिसके नाम से कोई सम्वत् चले । सूर्य वंशीय राजा नरिष्यंत से उत्पन्न एक क्षत्रिय जाति विशेष जो पीछे म्लेच्छों में मानी गई (पुरा०) । राजा शालिवाहन का चलाया सम्वत् (ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् से प्रारम्भ) (संज्ञा, पु०, अ०) संदेह, शंका, भ्रम, [सक (दे०)] । "राम चाप तोरब सक नाहीं"—[रामा०] ।

शकट—(संज्ञा, पु०, सं०) बैलगाड़ी, छकड़ा, [लढ़ी (ग्रा०)], बोझा, भार, एक दैत्य जिसे कृष्ण जी ने मारा था, देह, शरीर ।

शकटासुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक दैत्य जो कृष्ण के द्वारा मारा गया था (भा०) ।

शकठ—(संज्ञा, पु०, सं०) मचान ।

शकर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शर्करा] शक्कर, चीनी, खाँड़ ।—**कंद**-(पु०) [हिं० शक्कर+ कंद सं०] एक विख्यात मीठी कंद ।—**पारा**-(पु०) नीबू से कुछ बड़ा और स्वादिष्ट एक फल, एक प्रकार का चौकोर पकवान या मिष्टान्न ।

शकरी—(वि०, फ़ा०) शक्कर का, शक्कर के रंग की तरह का ।

शकल, शक्ल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० शक्ल] आकृति, मुख की बनावट, रूप, चेहरा, सूरत, चेष्टा, बनावट या गठन, गढ़न, स्वरूप, उपाय, तरकीब, ढाँचा, ढब ।—**सूरत**-(स्त्री०) मुख का रूप, मुख की आकृति । (संज्ञा, पु०, सं०) टुकड़ा, खंड । "दंष्ट्रामयूखै शकलानि कुर्वन्"—[रघु०] ।

शकाब्द—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा शालिवाहन का शक सम्वत्, यह ईसवी सन् से ७८ वर्ष पीछे चला ।

शकार—(संज्ञा, पु०, सं०) शक वंशीय व्यक्ति शवर्ण ।

शकारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा विक्रमादित्य जिन्होंने शकों को पराजित किया था ।

शकुंत—(संज्ञा, पु०, सं०) पक्षी, पखेरू, विश्वामित्र का पुत्र ।

शकुंतला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मेनका अप्सरा की कन्या और राजा दुष्यंत की रानी और सुविख्यात राजा भरत की माता, एक नाटक ।

शकुन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी कार्यादि के समय ऐसे लक्षण जो शुभ या अशुभ माने जाते हैं, शुभसूचक चिह्न, [सगुन (दे०)] । [**अपशकुन, असगुन** (विलो०)] ।—**शास्त्र**-(पु०) शुभाशुभ शकुनों तथा उनके फलों की विवेचना का शास्त्र, शकुन-विज्ञान । **मुहा०—विचारना या देखना**—किसी कार्य के होने या न होने के विषय में लक्षणों या तत्सूचक चिह्नों के द्वारा निर्णय करना, शुभ घड़ी या मुहूर्त या उस घड़ी का कार्य, पक्षी ।

शकुनि—(संज्ञा, पु०, सं०) पक्षी, पखेरू, चिड़िया, हिरण्याक्ष का पुत्र एक दैत्य, कौरवों के विनाश का हेतु और उनका मामा तथा दुर्योधन का मन्त्री, शकुनी, सकुनि ।

शकुल—(संज्ञा, पु०, सं०) मछली विशेष ।

शकृत—(संज्ञा, पु०, सं०) मल, पुरीष, विष्ठा ।

शक्कर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शर्करा, फ़ा० शक्कर] चीनी, खाँड़, कच्ची चीनी, [सक्कर (दे०)] ।

शक्करी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चौदह वर्णों के छन्द या वृत्त (पिं०) ।

शक्की—(वि०) [अ० शक+ई प्रत्य०] शक या संदेह करने वाला, प्रत्येक बात या विषय मे शक करने वाला, संशयात्मा ।

शक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) शक्ति-युक्त, समर्थ, योग्य ।

शक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बल, ताक़त, सामर्थ्य, [सक्ति, सक्ती, सकति (दे०)], पौरुष, पराक्रम, ज़ोर, क़ूवत, वश, प्रभावोत्पादक बल, अधिकार, शत्रुओं पर विजयी होने के सेना, धन आदि राज्य के साधन तथा सैन्य-कोषादि इन यथेष्ट साधनों से युक्त बड़ा और पराक्रमी राज्य या राजा, प्रकृति, किसी पदार्थ तथा तद्बोधक शब्द का संबंध (न्याय०), माया, किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी, दुर्गा, भगवती, लक्ष्मी, गौरी, सरस्वती, एक शस्त्र, साँग, तलवार, बर्छी, [सक्ती (दे०)] ।—**धर,—भृत**-(पु०) षडानन, कार्त्तिकेय ।—**पूजक**-(पु०) वाम-मार्गी, शाक्त, तांत्रिक,

शक्त्युपासक।—**पूजा**-(स्त्री०) शक्ति या देवी की शक्ति-विधि से पूजा, वाम-मार्गियों द्वारा (तंत्रमंत्रादि विधान से) देवी का पूजन, शक्त्यार्चन।—**शाली**-(वि०) बलवान।—**हीन**-(वि०) निर्बल, बल-हीन, असमर्थ, नपुंसक, नामर्द, शक्ति-रहित, शक्ति-विहीन। [**शक्ति-हीनता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

शक्तिमत्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शक्तिमान् होने का भाव, बलिष्ठता, सामर्थ्य।

शक्तिमान्—(वि०) [सं० शक्तिमत्] बली, बलवान, बलिष्ठ। [**शक्तिमती** (स्त्री०)]।

शक्ती—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शक्ति] १८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद। (वि०) बर्छी देवी, बल, सामर्थ्य।

शक्तु—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्तू, सतुआ (ग्रा०)।

शक्य—(वि०, सं०) क्रियात्मक, संभव, किया जाने योग्य, होने योग्य, शक्ति-युक्त। (संज्ञा, पु०) शब्द शक्ति से प्रकट होने वाला अर्थ (व्याक०)।—**शक्यता**-(संज्ञा, स्त्री०) क्रियात्मिकता, योग्यता, क्षमता।

शक्यार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द की अभिधा-शक्ति से व्यक्त होने वाला।

शक्र—(संज्ञा, पु०, सं०) छः मात्राओं वाले रगण का चौथा भेद (पिं०), इन्द्र। "जहार चान्येन मयूरपत्रिणा शरेण शक्रस्य महाशनिध्वजम्"—रघु०।—**चाप**-(पु०) इंद्रधनुष।—**प्रस्थ**-(पु०) इन्द्रप्रस्थ, दिल्ली।—**सुत**,—**सुवन**-(पु०) शक्र-सुनु, इन्द्र का पुत्र, जयंत, बालि, अर्जुन, शक्रात्मज, शक्रतनय।—**वाहन**-(पु०) मेघ।—**सुत**-(पु०) अर्जुन, जयंत।

शक्ल—(संज्ञा स्त्री०, अ०) शकल, सूरत, चेहरा, बनावट, स्वरूप, आकृति। **मुहा० (अपनी)—तो देखिए**—अपनी योग्यता या कुशलता के अभाव पर व्यंग।—**दिखाना**-सामने आना, दिखाना।—**न दिखाना**-मुँह छिपाये फिरना।

शख्स—(संज्ञा, पु०, अ०) मनुष्य, जन, व्यक्ति।

शख्सियत—(संज्ञा, पु०, अ०) व्यक्तित्व।

शग़ल—(संज्ञा, पु०, अ०) कामधंधा, कार्य, व्यापार, मनोविनोद।

शगुन, शगून—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शकुन] शकुन, शुभाशुभ-सूचक चिह्न या लक्षण, विवाह की बातचीत पक्की होने पर की एक रीति या रस्म, टीका, [सगुन (दे०)]।

शगुनिया—(संज्ञा, पु०) [हिं० शगुन+इया प्रत्य०] शकुन बताने वाला छोटा ज्योतिषी।

शगूफ़ा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कली, बिना खिला फूल, पुष्प, फूल, नवीन और अनोखी बात या घटना। **मुहा०—छोड़ना**-नयी विलक्षण बात कहना।

शचि, शची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इन्द्र की स्त्री, पुलोमजा, इन्द्राणी। "पतिव्रता पत्युरनिच्छया शची"—नैषध।—**पति**-(पु०) इन्द्र, शचीनाथ।

शचीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्र।

शजरा—(संज्ञा, पु०, अ०) वंश-वृक्ष, वंशावली, खेतों का नक़शा (पटवारी)।

शटी—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का कबूतर।

शठ—(वि०, सं०) मूर्ख, अपढ़ धूर्त, बेसमझ, दुष्ट, बदमाश, पाजी, लुच्चा, चालाक, [सठ (दे०)]। [**शठता** (संज्ञा, स्त्री०)], [**शाठ्य** (पु०)]। "शठ सुधरहिं सतसंगति पाई"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०) वह नायक जो अपने अपराध को छल से छिपाने में प्रवीण हो (साहि०)।

शठता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शाठ्य, शठत्व, धूर्तता, बदमाशी, दुष्टता।

शण—(संज्ञा, पु०, सं०) सन, पाट।—**सूत्र**-(पु०) सुतली, वैश्यों का जनेऊ।

शत—(वि०, सं०) सौ, दस का दस गुना, सैकड़ा, सौ की संख्या (१००)।—**कोटि**-(पु०) इन्द्र का वज्र, सौ करोड़ की संख्या। "रामायण शतकोटि महँ, लिय महेश जिय जानि"—[रामा०]।—**क्रतु**-(पु०) इन्द्र। "तथा विदुर्मां मुनयः शतक्रतुं द्वितीयगामी न हि शब्द एष नः"—रघु०।—**घ्नी**-(पु०) पुराने समय की तोप या बन्दूक जैसा एक शस्त्र। "शतघ्नी शत-संकुलाम्"—वाल्मीकि।—**दल**-(पु०) पद्म, कमल। "शतदल स्वेत कमल पर राजा"—भारतेंदु।—**द्रु**-(स्त्री०) सतलज नदी।—**पत्र**-(पु०) कमल। "शतपत्रनेत्र"—स्फु०।—**पथ (ब्राह्मण)**-(पु०) महर्षि याज्ञवल्क्य कृत यजुर्वेद का एक ब्राह्मण ग्रंथ।—**पद्**-(पु०) कनखजूरा, गोजर, च्यूँटी (ग्रा०)। [**शतपदी** (स्त्री०)]।—**पुष्प**-(स्त्री०) सौंफ।—**भिषा**-(स्त्री०) सौ तारों के समूह से बना गोलाकार २४ वाँ नक्षत्र, [सतभिखा (दे० ज्यो०)]।—**मख**-(पु०) इन्द्र, शतक्रतु।—**मूली**-(स्त्री०)

लता विशेष ।—**रूपा**-(स्त्री०) स्वायंभुव मनु की पत्नी । "स्वायंभुव मनु अरु शतरूपा"—[रामा०] ।

शतक—(संज्ञा, पु०, सं०) सैकड़ा, एक-सी सौ वस्तुओं का समूह, शताब्दी । [**शतिका** (स्त्री०)] ।

शतरंज—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) एक विख्यात खेल जिसके बिछौने में चौंसठ घर होते है ।

शतरंजी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कई रंगों का छपा फ़र्श, दरी या बिछौना, सतरंगी (**सप्तरंगी**—सं०) शतरंज की बिसात, शतरंज का अच्छा खिलाड़ी ।

शतशः—(अ०, सं०) सैकड़ों ढंग से, सैकड़ों तरह से ।

शतांग—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पेड़ । एक राक्षस । (वि०) सौ अंगों वाला ।

शतांश—(संज्ञा, पु०, सं०) सौवाँ भाग ।

शता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सौंफ ।

शतानंद—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, ब्रह्मा, कृष्ण, गौतम मुनि, राजा जनक के पुरोहित, सतानद । "शतानंद तब आयसु दीन्हा"—[रामा०] ।

शतानीक—(संज्ञा, पु०, सं०) वृद्ध या बूढ़ा, चद्रवशीय द्वितीय राजा जिनके पिता जन्मेजय और पुत्र सहस्रानीक थे (पुरा०), सौ सैनिकों का नायक । "शतानीक शतानि च"—[भा० द०] ।

शताब्द, शताब्दी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सौ वर्षों का समय, किसी सवत् के एक से सौ वर्षों तक का समय ।

शतायु—(सज्ञा, पु०, यौ०) [सं० शतायुस्] वह पुरुष जिसकी अवस्था सौ वर्षों की हो ।

शतायुध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सौ अस्त्रों वाला, जिसके सौ हथियार हों ।

शतावधान—(संज्ञा, पु०, सं०) वह मनुष्य जो एक ही समय मे एक ही साथ सो या बहुत सी बातें सुनकर क्रमानुसार स्मरण रख सके और कई कार्य एक साथ कर सके, श्रुतिधर ।

शतावर, शतावरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शतवरी] सतावर नामक औषधि, सफ़ेद, मूसली । "वचाभयो-सुंठि शतावरी समा"—[भा० प्र०] ।

शती—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० शतिन्] सैकड़ा, सौ का समूह, (यौगिक में) जैसे—सप्तशती ।

शत्रु—(संज्ञा, पु०, सं०) वैरी, रिपु, अरि, [सत्रु सत्रु (दे०)] । [**शत्रुता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**घ्न**-(संज्ञा, पु०, सं०) अयोध्या-नरेश श्रीदसरथ की रानी सुमित्रा से उत्पन्न लक्ष्मण जी के छोटे भाई, रिपुसूदन, सुमित्रानंद, [शत्रुघन, सत्रुघन, सत्रुहन, शत्रुहन (दे०)] । "नाम सत्रुघन वेद-प्रकाशा"—[रामा०] ।—**दमन**-(पु०) शत्रुघ्न, रिपुसूदन ।—**मर्दन**-(पु०) शत्रुघ्न, रिपुसूदन । —**साल**-(वि०) वैरी के हृदय को छेदने या शूल देने वाला । (सं० पु०) एक राजा ।—**हंता**-(वि०) वैरियों को मारने वाला । (संज्ञा, पु०) शत्रुघ्न । [**शत्रुहंता-योग** (यौ० ज्यो०)] ।

शत्रुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वैर-भाव, दुश्मनी, रिपुता, वैमनस्य ।

शत्रुताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शत्रुता (सं०) ।

शत्रुहा—(वि०, सं०) रिपुहा, अरिहा, वैरियों का मारने वाला । (संज्ञा, पु०) शत्रुघ्न ।

शदीद—(वि०, अ०) अत्यधिक, भारी, बहुत बड़ा, बहुत ज्यादा, सख्त । जैसे दर्द शदीद, जरर-शदीद ।

शनि—(संज्ञा, पु०, सं०) शनिश्चर ग्रह, अभाग्य, दुर्भाग्य, दुष्ट अनिष्टकारी (व्यंग्य), [शनी, सनि, सनी (दे०)] ।—**प्रिय**-(पु०) नीलम, नील-मणि, पत्थर, रावटी ।—**वार**-(पु०) शुक्र-वार के पीछे और रविवार से पूर्व का एक दिन, शनिश्चर ।

शनिश्चर—(संज्ञा, पु०, सं०) सौर संसार का ७ वाँ ग्रह जो सूर्य से ८८,३०,००,००० मील की दूरी पर है और २६ वर्ष तथा १७६ दिनों में सूर्य की परिक्रमा करता है, [शनिवार, शनीचर, सनीचर, (दे०)] । [**शनिश्चरी** (वि०)] । **शनिश्चरी दृष्टि**—कुदृष्टि ।

शनैः—(अव्य०, सं०) धीरे-धीरे ।—**शनैः**-शनैः, क्रमशः, धीरे-धीरे ।

शनैश्चर—(संज्ञा, पु०, सं०) शनिश्चर ग्रह ।

शपथ—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सौगंद, सौगंध, कसम, कौल, करार, वचन, प्रतिज्ञा । **मुहा०**—**खाना (करना)**-कसम खाना । "शपथ खाय बोलै सदा"—वृं० ।

शप्या—(संज्ञा, पु०, सं०) चद्रमा, बोझा ।

शफतालू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रकार का आलू, रतालू, सतालू, शेबड़ा, आड़ू ।

शफरी—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटी मछली, [सफरी (दे०)] । "मनोऽस्य जह्रुः शफरी विवृत्तयः—[किरात०] ।

शफा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आरोग्यता, तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य ।—**खाना**-(पु०) चिकित्सालय, [अस्पताल (दे०)], दवाखाना । [हास्पिटल]

शब—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) रात्रि, रात । "शब कटती है एँड़ियाँ रगड़ते"—हाली० ।

शबद, सबद—(संज्ञा, पु०, दे०) [शब्द, सब्द (दे०)] ।

शबनम—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तुषार, ओस, एक तरह का महीन कपड़ा, [**शबनमी** (स्त्री०)] मसहरी, शामियाना ।

शबर—(वि०, अ०) कई रंगों का । (संज्ञा, पु०) एक वृक्ष, एक नीच जाति ।

शबाब—(संज्ञा, पु०, अ०) जवानी, युवावस्था, अति सुंदरता ।—**का आलम**-(पु०) युवावस्था का महत्त्वपूर्ण समय ।

शबी, सबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० शबीह] तसवीर, चित्र । "लिखन बैठ जाकी सबी, गहि गहि गरब गरूर"—बिहारी ।

शबील—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पौसला, प्याऊ ।

शबीह—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तसवीर, चित्र ।

शब्द—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी पदार्थ या भावादि-बोधक सार्थक ध्वनि, आवाज, लफ़्ज, किसी महात्मा या साधु के बनाये पद (जैसे कबीर के शब्द) [शबद, सबद (दे०)] ।—**चित्र**-(पु०) अनुप्रास नामक एक शब्दालंकार (अ० पी०) । —**प्रमाण**-(पु०) किसी आर्ष का कथन जो प्रमाण माना जाता है (न्या०), केवल कथन प्रमाण, शाब्द ।—**ब्रह्म**-(पु०) वेद, शब्द ही ब्रह्म है—यह सिद्धांत । "शब्दब्रह्मणिस्नात:"—स्फु० ।—**भेदी**-(पु०) केवल शब्द के आधार पर दिशा जानकर किसी को बाण से बिना देखे वेध देना, दशरथ, अर्जुन ।—**वेधी**-(पु०) वेधिन् बिना देखे हुए केवल शब्द के ही आधार पर किसी को बाण से वेध देना, दशरथ, अर्जुन, पृथ्वीराज ।—**शक्ति**-(स्त्री०) शब्द की वह शक्ति जिससे उसका कोई विशेष भाव ज्ञात होता है, इसके तीन भेद है—अभिधा, लक्षणा व्यजना (काव्य शा०) ।—**शास्त्र**-(पु०) शब्दादि की विवेचना का विज्ञान, व्याकरण । "शब्दशास्त्रम-निधीत्य यः पुमान् वक्तुमिच्छति सतां सभान्तरे" —स्फु० । शब्द-वारिधि । "इन्द्रादयोऽपि यस्यान्तं न ययुः शब्द वारिधेः" ।—**संग्रह**-(पु०) शब्द कोष, शब्दों का संकलन । एकत्रीकरण ।—**साधन**-(पु०) व्याकरण का वह खंड जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद, व्यवस्था या रूपान्तर आदि का विवेचन होता है ।

शब्दाडंबर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भावहीन, या अल्प भाव वाले, बड़े-बड़े शब्दों का प्रयोग, शब्दजाल ।

शब्दानुशासन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) व्याकरण ।

शब्दार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द का अर्थ ।

शब्दालंकार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक अलंकार जिसमें वर्णों या शब्दों के विन्यास के द्वारा ही चारु चमत्कार या लालित्य प्रगट किया जावे, जैसे—अनुप्रासादि ।

शम—(संज्ञा, पु०, सं०) मोक्ष, मुक्ति, शांति, उपचार, अंतःकरण या मन और इन्द्रियों का निग्रह, क्षमा, काव्य में शांतरस का स्थायी भाव । [शमता (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**लोक**-(पु०) शांतिलोक, स्वर्ग, वैकुंठ ।

शमन—(संज्ञा, पु० सं०) दमन, शांति, हिंसा, यम, यज्ञ में पशु-वलिदान, [समन (दे०)] । "शमन सकल भवरुज परिवारू"—[रामा०] । [**शमित, शमनीय, शम्य (स्त्री०)**] ।

शमशेर—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) खड्ग, तलवार । "दरतवगीरद सरे शमशेर तेज"—सादी० ।

शमा—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० शमअ] मोमबत्ती । "शमा सा है यह रोशन तजकिरा दुनिया में ऐ यारो"—स्फु० । शान्ति, क्षमा । "धातुषु क्षीयमाणेषु शमा कस्य न जायते।"—**दान**-(पु०) वह थाली जिसमें रखकर मोमबत्ती जलाई जाती है ।

शमित—(वि०, सं०) ठहरा हुआ, शांत, जिसका शमन किया गया हो ।

शमी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विजया दशमी पर पूजा जाने वाला एक वृक्ष विशेष, अग्नि-गर्भ, वृक्ष, [छोंकर, श्वेत कीकर, छिकुर (दे०)] । "शमी-मिवाभ्यान्तर लीन पावकम्"—रघु० ।

शमीक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक क्षमाशील ऋषि जिनके गले में राजा परीक्षित ने मरा साँप डाला था।

शयन—(संज्ञा, पु०, सं०) सोना, नींद लेना, पलँग, शय्या, बिछौना, [शयन (दे०)]। "रघुवर शयन कीन्ह तब जाई"—[रामा०]।—**आरती**–(स्त्री०) सोने के समय से पहले की आरती।—**गृह**–(पु०) [शयनागार (सं०), सोने का घर, [शय्यालय]।—**बोधिनी**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अगहन वदी एकादशी।

शयनागार—(संज्ञा, पु०, सं०) शयनगृह, सोने का घर, शयन-मन्दिर, शयनालय।

शय्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पलँग, खटिया, खाट, बिछौना, [सज्जा (दे०)], बिस्तर, बिछावन। "शय्योत्तरच्छद विमर्द कृशांगरागम्"—रघु०। —लो० "शय्या पल्लव पद्म पत्र रचिता"।—**दान**–(पु०) मृतक के निमित्त महापात्र को सब बिछावन और वस्त्राभरण सहित पलँग दान में देना, [सज्जादान (दे०)]।

शर—(संज्ञा, पु०, सं०) नाराच, तीर, बाण, शायक, सरई, सरपत, सरकंडा, रामशर, दूध-दही की मलाई, पाँच की संख्या का सूचक-शब्द, चिता, भाला का फल, एक असुर।

शरजन्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० शरजन्मन्] षडानन, कार्तिकेय।—**पुंख**–(पु०) सरफोंका (औष०) बाण के पीछे लगा हुआ पंख। सायक-पुंख।—**भंग**–(पु०) एक ऋषि जिनके यहाँ रामचद्रजी वनवास की दशा में दर्शनार्थ गये थे [रामा०]।

शरअ—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कुरान की आज्ञा, मजहब, दीन तरीका, मुसलमानों का धर्मशास्त्र, दस्तूर, [**शरई** (हि०)]।

शरच्चंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) शरद का चंद्रमा।

शरट—(संज्ञा, पु०, सं०) गिरगिट, गिरदान, कृकलास।

शरण—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आड़, आश्रय, पनाह, बचाव का स्थान, मकान, आधीन। [सरन (दे०)]। " तऊ शरण संमुख मोहिं देखी " [रामा०]।

शरणागत, शरणापन्न—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शरण मे आया हुआ, शरण को प्राप्त, शिष्य, दास। "शरणागत दीनार्त-परित्राण-परायणे"—दुर्गा०।

शरणी—(वि०, पु०) [सं० शरण] शरण देने वाला।

शरण्य—(वि०, सं०) शरणागत की रक्षा करने वाला। "तीर्थास्पद्म शिव विरचिनुतमू शरण्यम्" —[स्फु०]।

शरत—(संज्ञा, पु०) [अ० शर्त] बाजी, दाँव, बदान, बदाबदी।

शरतिया—(क्रि० वि०, दे०) [अ० शर्तिया] बाजी बदकर, शर्त लगाकर, निश्चय या दृढ़ता-पूर्वक कार्य करना। (वि०) बिलकुल ठीक, निश्चित।

शरत—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [सरद (दे०)] एक ऋतु जो क्वार और कातिक में मानी जाती है, वर्ष, सवत्सर। "शरादि हंसरवा परुषी कृतस्वर मयूरमयूरमणीयताम्"—माघ०।—**काल**–(पु०) शरद् ऋतु।

शरद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शरद्] क्वार-कातिक की ऋतु, [शरद (दे०)]। " शरद ताप निशि शशि अपहरई "—[रामा०]।—**ऋतु**–(पु०) क्वार और कातिक की ऋतु। "जानि शरद ऋतु खंजन आये "—[रामा०]।—**पूर्णिमा**–(स्त्री०) क्वार मास की पूर्णमासी, [शरदपूनो, सरदपूनो (दे०)]।—**चंद्र**–(पु०) शरच्चंद्र, शरद ऋतु का चंद्रमा। " शरदचद्र निंदक मुख नीके "—[रामा०]।

शरद्वत्—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि।

शरपट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शर+पट्टा हि०] एक शास्त्र-विशेष।

शरबत—(संज्ञा, पु०, अ०) मीठा पानी, मीठा रस, चीनी मे मिला या पका किसी औषधि या फलादि का अर्क, शक्कर या खाँड़ घुला पानी।

शरबती—(संज्ञा, पु०) [अ० शरबत+ई प्रत्य०] हलका पीला रंग, एक नगीना, एक नीबू विशेष, एक बढ़िया वस्त्र।

शरभ—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी का बच्चा, पतिंगा, शलभ, टिड्डी, रामदल का एक बानर विशेष, एक कल्पित अष्टपाद मृग, एक पक्षी, विष्णु। मणिगुण, शशिकला छंद (पिं०), दोहा का एक भेद, शेर।

शरम, शर्म—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० शर्म] लज्जा, व्रीड़ा हया, [सरम (दे०)]। [**शर-मीला, शरमदार** (वि०)]। **मुहा०—से गड़ना**

या पानी पानी होना-बहुत ही लज्जित होना। **—के मारे मरना**-लिहाज, मान मर्यादा, प्रतिष्ठा, संकोच।**—धो कर पी जाना**-निर्लज्ज हो जाना।

शरमाना—(क्रि० अ०, दे०) [फा० शर्म+आना प्रत्य०] लज्जित या व्रीड़ित होना, शर्मिंदा होना। (क्रि० स०) लज्जित या व्रीड़ित करना, शर्मिन्दा करना, [सरमाना (दे०)]।

शरमदगी—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) लाज, लज्जा, व्रीड़ा, नदामत, शर्मिंदगी।

शर्मिंदा—(वि०, फ़ा०) लज्जित, शर्मिन्दा।

शरमीला—(वि०) [फा० शर्म+ईला प्रत्य०] लज्जालु, जिसे शीघ्र लज्जा लगे, [लजीला (दे०)]। [**शरमीली** (स्त्री०)]।

शरह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) भाष्य, व्याख्या, टीका, भाव, दर।

शराकत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) हिस्सेदारी, साझा, शरीक होने का भाव।

शरापना—(क्रि० स०, दे०) [सं० श्राप] श्राप देना, [सरापना (दे०)]। "मति माता करि क्रोध शरापै नहि दानव धिग भनिकों"—सूर०।

शराफत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सज्जनता, भलेमानुसी, भलमसी, बुजुर्गी, सौजन्य, सभ्यता, शिष्टता।

शराब—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मधु, मदिरा, सुरा, मद्य, [सराब (दे०)]। "गालिब छुटी शराब पर अब भी कभी कभी"—गालिब।**—खाना**-(पु०) वह स्थान जहाँ शराब बनती या बिकती हो।**—खोरी**-(स्त्री०) मद्यपान, मदिरा पीना। [**शराबखोर** (वि०)]। **मुहा०—का दौर चलना**-पियक्कड़ों का निरंतर प्याले पर प्याला खाली करते जाना।

शराबी—(संज्ञा, पु०) [अ० शराब+ई प्रत्य०] मदिरा या शराब पीने वाला।

शराबोर—(वि० फा०) भीगा हुआ, तर-बतर, लथपथ, आर्द्र, [सराबोर, तराबोर (दे०)]।

शरारत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शैतानी, बदमाशी, पाजीपन, दुष्टता। [**शरारती** (वि०)]। [**शरारतन** (क्रि० वि०)]।

शरासन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) धनुष, धनु, धन्वा, कमान। "शंभु-शरासन तोरि शठ करसि हमार प्रबोध"—[रामा०]।

शरिष्ठ, शरेष्ठ*—(वि०, दे०) [सं० श्रेष्ठ] श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़कर।

शरीअत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मुसलमानों का धर्म्म-शास्त्र।—(**ते**) **मुहम्मदी**-(स्त्री०) मुहम्मद द्वारा निर्मित नियम आदि।

शरीक—(वि०, अ०) सम्मिलित, मिश्रित, शामिल साझी, मिला हुआ। (पु०) साथी, हिस्सेदार, साझी, सहायक। [**शरीकी** (वि०)]

शरीफ—(संज्ञा, पु०, अ०) कुलीन या सभ्य व्यक्ति, भला मानुष, शिष्ट। "शरीफों का अजब कुछ हाल है इस दौर में यारो"—जौक।**—खानदान**-(वि०) ऊँचे कुल का, उच्चवंशीय, कुलीन।

शरीफा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रीफल या सीताफल] एक गोल, मीठा हरा फल, इस फल का वृक्ष, श्रीफल, सीताफल (वृक्ष)।

शरीफाना—(वि०, फ़ा०) शरीफ जैसा।

शरीर—(संज्ञा, पु०, सं०) तन, देह, अंग, काया, बदन, गात्र, गात, [सरीर (दे०)]। जिस्म। "श्याम गौर जलजात शरीरा"—[रामा०] (वि०, अ०) दुष्ट, बदमाश, नटखट, पाजी।**—त्याग**-(पु०) मरना, मृत्यु, मौत, देह छोड़ना, तन-त्याग।**—पात**-(पु०) मरना, मृत्यु, मौत, पंचत्व-प्राप्ति।**—रक्षक**-(पु०) देह की रक्षा करने वाला। (राजा आदि के साथ) अंगरक्षक।**—शास्त्र**-(पु०) शरीर और अंगादि के कार्यादि की विवेचना की विद्या, शरीर-विज्ञान, शारीरिक अस्त्र।**—संस्कार**-(स्त्री०) अच्छा स्वास्थ्य।**—सम्बन्ध**-(पु०) विवाह, शादी।

शरीरांत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मरना, मृत्यु, मौत, देहान्त, देहावसान।

शरीरार्पण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी काम में अपनी देह को भली-भाँति लगा देना, शरीर तक दे डालना, देहार्पण।

शरीरी—(संज्ञा, पु०) [सं० शरीरिन्] देही, देहधारी, जीवधारी, प्राणी, शरीर वाला, आत्मा, जीव। "ततः शरीरीति विभाविता-कृतिम्"—माघ०।

शर्करा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चीनी, शकर, शक्कर, खाँड़, बालू के कण। "शर्करा दुग्धसम्मिश्रितैः पाचितैः"—[लो० रा०]।

शर्करी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १४ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

शर्त—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) हार-जीत के अनुसार कुल लेन-देन वाली बाजी, बाजी लगाना या बदना, होड़, नियम, दाँव, बाजी, किसी कार्य की सिद्धि के लिए आपेक्षित या आवश्यक बात या कार्य।—**बंद**-(वि०) शर्त से नियंत्रित।—**बदना,—बांधना**-बाजी लगाना।—**यह है**—इस शर्त पर।

शर्तिया—(क्रि० वि०, अ०) शर्त या बाजी बदकर, बहुत ही दृढ़ता या निश्चय के साथ। (वि०) निश्चित, बिलकुल ठीक।

शर्बत—(संज्ञा, पु०, अ०) शक्कर-घुला मीठा पानी, शरबत। [**शर्बती** (वि०)]।

शर्म—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शरम, लज्जा, व्रीडा। —**करना**-लज्जित करना।—**की बात**-लज्जित करने की बात।

शर्म्म—(संज्ञा, पु०, सं०) आराम, सुख, आनंद, हर्ष, घर, मकान, गृह।

शर्म्मद—(वि०, सं०) सुखदायक, आनंददायी, हर्ष या आराम देने वाला। [**शर्म्मदा** (स्त्री०)]।

शर्म्मा—(संज्ञा, पु०) [सं० शर्म्मन्] ब्राह्मणों की उपाधि या पदवी।

शर्माऊ—(वि०, दे०) शर्मीला, लज्जाशील, लज्जालु, लजीला।

शर्मिंदगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) लज्जित।

शर्मिंदा—(वि०, फ़ा०) शर्माऊ, शर्मीला, लज्जित, लज्जालु।

शर्मिष्ठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवयानी की सहेली जो दैत्यराज वृषपर्वा की कन्या थी (पुरा०)।

शर्मीला—(वि०, दे०) शरमीला, शर्माऊ, लज्जाशील, लज्जालु।

शर्य्यणावत्—(संज्ञा, पु०, सं०) एक सरोवर जो शर्यण जानपद के समीप था (प्राचीन)।

शर्याति—(संज्ञा, पु०, सं०) वैवस्वत मनु के आत्मज।

शर्व—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, विष्णु। "शर्व मंगला समेत सर्व पर्वत उठाय गति कीन्हीं है कमल की"—[रामा०]।

शर्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) कामदेव, कंदर्प, संध्या समय।

शर्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रजनी, रात्रि, रात, निशा, संध्या। "प्रभात कल्पा शशिनेव शर्वरी" रघु०।—**पति**-(पु०) चंद्रमा।

शल—(संज्ञा, पु०, सं०) कंस का एक मल्ल या पहलवान, भाला, ब्रह्मा।

शलगम, शलजम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गाजर जैसा एक कंद जिसकी तरकारी बनती है।

शलभ, शरभ—(संज्ञा, पु०, सं०) टीडी, टिड्डी, हाथी का बच्चा, पतंगा, फतिंगा, [सलभ, सल्लभ (दे०)], छप्पय का ३१ वाँ भेद। "होई सकल शलभ-कुल तोरा"—[रामा०]।

शलाका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लोहे या पीतल आदि की लंबी सलाई, सीक, सलाख, वाण, शर, जूआ खेलने का पाँसा, [सलाका (दे०)]।

शलातुर—(संज्ञा, पु०, सं०) पाणिनि मुनि का निवास-स्थान, एक जनपद (प्राचीन)।

शलीता—(संज्ञा, पु०, दे०) थैला, बोरा, एक मोटा कपड़ा, सलीता।

शलूका—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) आधी और पूरी बाँह की एक प्रकार की कुरती, [सलूका (दे०)]।

शल्प—(संज्ञा, पु०) [लशकटी] बाढ, अधिकता, बैल्लार।

शल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मद्र देशाधिपति, जो कर्ण के सारथी बने थे और द्रौपदी के स्वयंवर में भीम से मल्ल युद्ध में पराजित हुए थे (महा०), अस्त्र-चिकित्सा, अस्थि, हड्डी, साँग नाम का एक अस्त्र; वाण, तीर, छप्पय का ५६ वाँ भेद (पिं०), दुर्वाक्य, शलाका।

शल्यकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शल्लकी] साही या स्याही नामक वन जंतु।—**क्रिया**-(स्त्री०) शस्त्र-क्रिया, चीर-फाड़ की चिकित्सा।—**चिकित्सा**-(स्त्री०) चीर फाड़ के द्वारा उपचार।—**विद्या**-(स्त्री०) चीर-फाड़ के द्वारा किये जाने वाले उपचार की विद्या। [सर्जरी]—**शास्त्र**-(पु०) शस्त्रास्त्र-विज्ञान।

शल्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक औषधि जिसका नाम मेदा है। नागवल्ली लता।

शल्व—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शाल्व] सौभराज के एक राजा जिन्हे कृष्ण ने मारा था, एक पुराना देश, शाल्व।

शव—(संज्ञा, पु०, सं०) मृत देह, लाश।—**दाह**-(पु०) मनुष्य के मृत शरीर के जलाने की क्रिया, मुर्दा जलाना, मृतक-संस्कार करना।—**भस्म**-(पु०) मुर्दे की खाक, चिता की राख।—**यान,—रथ**-(पु०) अर्थी, मुर्दे को ले जाने की टिकटी।

—समाधि-(स्त्री०) वह संस्कार जिसमें शव को पृथ्वी में गाड़ने का कार्य किया जाता है या शव को जल में प्रवाहित करने का कार्य किया जाता है।

शवर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक जंगली जाति।

शवरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्रमणानाम्नी एक तपस्विनी जो शवर जाति की थी, [सवरी (दे०)]। "शवरी देखि राम गृह आये"—[रामा०]। शवर जाति की स्त्री।

शश, शशक—(संज्ञा, पु०, सं०) खरगोश, खरहा। "जिमि शश चहहि नाग-अरि भागू"—[रामा०]। "सिंह-बधुहिं जिमि शशक सियारा"—[रामा०]। चंद्र लांछन या कलंक, मनुष्य के चार भेदों में से एक (काम०)।

शशकलंक—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रमा। "शश-कलंक भयंकर यादृशां"—[नैषध]।

शशधर, शशभृत्—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रमा।

शशमाही—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) छमाही।

शशलांछन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चंद्रमा। "त्वमुदधौ शश-लांछन चूर्णितः"—[नैषध]।

शशशृंग, शशकशृंग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) खरहे का सींग, वैसा ही असंभव कार्य जैसे खरहे के सींग होना, असंभव बात।

शशांक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चंद्रमा, मृगांक।

शशा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शश] खरहा, खरगोश। [शशशृंग (यौ०)]।

शशि—(संज्ञा, पु०, सं०) देखिए—शशी।

शशी—(संज्ञा, पु०) [सं० शशिन्] इंदु, चंद्रमा, चाँद, रगण का द्वितीय भेद (।SS), छप्पय का ५४ वाँ भेद (पिं०)। "शरद-ताप निशि शशि अप-हरई"—[रामा०]। "आकाश है शशी तुम हो सरोज"—म० प्र०।—**कला**-(स्त्री०) चंद्रमा की कला, एक छंद या वृत्त (पिं०)।—**कुल**-(पु०) चंद्रवंश।—**ज**-(पु०) चंद्रात्मज, बुध नामक ग्रह।—**धर**-(पु०) शिव, चंद्रमौलि।—**पुत्र,—सुत**-(पु०) बुध नामक ग्रह, शशितनय।—**भाल,—मूर्द्धि,—मौलि**-(पु०) शिवजी, महा-देवजी।—**भूषण**-(पु०) शिवजी।—**भृत्**-(पु०) शिव।—**मंडल**-(पु०) चंद्र-मंडल, चन्द्रमा का गोला या घेरा।—**मुख**-(वि०) जिसका मुख चंद्रमा-सा सुन्दर हो। [**शशिमुखी** (स्त्री०)]।—**रेखा**-(स्त्री०) चंद्र कला।—**लेखा**-(स्त्री०) चंद्र रेखा, एक वर्ण वृत्त।—**वदन**-(वि०) जिसका मुख चद्रमा सा सुन्दर हो। [**शशिवदनी** (स्त्री०)]। "शीश जटा शशि-वदन सुहावा"—[रामा०]।—**वदना**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक छंद या वृत्त, चौबंसा, चंडरसा, पादाकुलक (पिं०)।—**शशि-वदनी**-(वि०, स्त्री०) चद्रमुखी।—**शाला**-(स्त्री०) वह घर जिसमें बहुत से शीशे लगे हों, शीशमहल।—**शेखर**-(पु०) शिव।—**हीरा**-(पु०) चंद्रकांतिमणि, शशिमणि।

शशीश—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव।

शश्वत—(अव्य०, सं०) सदा, सर्वदा, निरंतर, सनातन।

शसा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शश] खरहा।

शसि, शसी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शशि-शशिन्] चंद्रमा, [ससि, ससी (दे०)]।

शस्त—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) लक्ष्य, निशाना।

शस्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी के मारने या काटने का उपकरण या साधन, हाथ में लेकर मारने के हथियार, जैसे—खड्ग, कार्यसिद्धि का उत्तम उपाय।—**क्रिया**-(स्त्री०) नश्तर लगाने या चीरफाड़ करने की क्रिया, जर्राही का काम।—**धर,—भृत्**-(पु०) सिपाही, सैनिक, योद्धा, हथियार बाँधने वाला, हथियारबंद।—**धारी**-(वि०) हथियार बाँधने वाला, शस्त्र धारण करने वाला। [**शस्त्रधारिणी** (स्त्री०)]।—**विद्या**-(स्त्री०) हथियार चलाने की विद्या, शस्त्र-विज्ञान, धनुर्वेद, (यजु० उपवेद), शस्त्रास्त्र-संचालन विधि का विज्ञान।—**शाला**-(स्त्री०) शस्त्रागार, हथि-यारों के रखने का स्थान, सिलहखाना, शस्त्रालय।—**शास्त्र**-(पु०) शस्त्र-विज्ञान, शस्त्र-विद्या।

शस्त्रागार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शस्त्रशाला, सिलहखाना, शस्त्रालय।

शस्त्री—(संज्ञा, पु०) [सं० शस्त्रिन्] हथियार बाँधने या चलाने वाला, छुरी।

शस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्न, अनाज, धान्य, नई कोमल घास, फ़सल, खेती। "तू पुण्य भूमि और शस्य-श्यामला तू है"—[भार०]।

शस्यागार—(संज्ञा, पु०, सं०) खलिहान, अनाज रखने की जगह।

शहंशाह—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शाहंसाह] सम्राट्, महाराज।

शहंशाही—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) राजाओं जैसा रंगढंग या कार्य। (वि०) राजसी, शाही या राजसी ढंग का।

शह—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० शाह का संक्षिप्त] बादशाह, दूल्हा, वर। वि० श्रेष्ठतर, बढ़ा-चढ़ा। (संज्ञा, स्त्री०) शतरंज के खेल में किसी मुहरे को ऐसे स्थान पर रखना जिससे बादशाह के घात में आने का भय हो, क़िस्त, छिपे तौर पर किसी को बहकाने या उभाड़ने का कार्य, किसी को किसी दबाव से दबाना।—**ज़ादा**–(पु०) बादशाह का पुत्र, राजकुमार, [सहजादा (दे०)]। [**शहज़ादी** **शाहज़ादी** (स्त्री०)]।—**ज़ोर**–(वि०) बलवान, बली।—**ज़ोरी**–(स्त्री०) ज्यादती, बलप्रयोग। —**तूत**–(पु०) तूत नामक एक पेड़ और उसके फल।—**बाला**–(पु०) दूल्हे का छोटा भाई जो विवाह में साथ रहता है।—**मात**–(स्त्री०) शतरंज के खेल में शाह के जोर पर शह देकर मात किया जाना।—**सवार**–(पु०) योग्य एवं कुशल घुड़सवार। **मुहा०—लगाना** (**देना**)–लड़ाई-झगड़े के लिए बढ़ावा देना।

शहतीर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बड़ा और लम्बा लकड़ी का लट्ठा, [सहतीर (दे०)]।

शहद—(संज्ञा, पु०, अ०) चीनी के शीरे का-सा एक तरल मीठा रस या पदार्थ जिसे मधुमक्खियाँ फूलों से निकालती हैं, पुष्प रस, मधु, माक्षिक, सहत, सहद (ग्रा०)।—**की मक्खी**–मधुमक्खी। **मुहा०—लगा कर चाटना**–किसी बे काम वस्तु को व्यर्थ रखना (व्यंग)।

शहनाई—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) नफीरी बाजा, रौशनचौकी, [सहनाई (दे०)]।

शहर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नगर, पुर, क़सबे से बड़ी बस्ती जहाँ पक्की इमारतें और बड़ा बाजार हो, [सहर (दे०)]।—**पनाह**–(स्त्री०) शहर या नगर की चहार दीवारी, प्राचीर, नगरकोट, पुर-परिखा।—**यार**–(पु०) बादशाह।

शहराती, शहरी—(वि०, फ़ा०) शहर का, शहर का बाशिन्दा, नागरिक, नगर-निवासी।

शहादत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) साक्षी, गवाही, प्रमाण, सुबूत, शहीद होना।—**नामा**–(पु०) वह किताब जिसमें इमाम हुसेन के धर्मयुद्ध में शहीद होने का वर्णन हो।

शहाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शाहाना] सम्पूर्ण जाति का एक राग। (वि०) राजसी, शाही, श्रेष्ठ, उत्तम बढ़िया।

शहाब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक गहरा लाल रंग।

शहाबुद्दीन ग़ोरी—(संज्ञा, पु०) गजनी का बादशाह जिसने ११९३ में दिल्ली और अजमेर का सम्राट पृथ्वीराज को पराजित करके और गुलाम वंश की स्थापना करके अपने देश चला गया और वस्तुतः यही मुसलमानी साम्राज्य की नींव डालने वाला है।

शहिजादा*—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० शाहजादा का का अल्प०] शाहजादा, राजकुमार। [**शहिज़ादी** (स्त्री०)]।

शहीद—(संज्ञा, पु०, अ०) धर्मादि के हेतु बलिदान होने वाला मुसलमान।

शांकर—(वि०, सं०) शंकर-संबंधी, शंकराचार्य या शंकर का। (संज्ञा, पु०) एक छंद (पिं०)।

शांखायन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि का नाम जिन्होंने उपनिषद, गृह्य, श्रौत सूत्रों की रचना की थी।

शांडिल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) एक मुनि जिन्होंने एक भक्ति-सूत्र और स्मृति का निर्माण किया था एक गोत्रकार ऋषि (काव्य०)।

शांत—(वि०, सं०) स्थिर, सौम्य, धीर, गंभीर, मौन, चुपचाप, विनष्ट, जितेंद्रिय, क्रोधादि-विहीन, शिथिल, मृत, स्वस्थ चित रागादि-रहित वेग, क्रिया या क्षोभ-रहित, उत्साहादि से शून्य, विघ्नबाधा-विहीन, बंद या रुका हुआ। (संज्ञा, पु०) नौ रसों में से एक रस जिसका स्थायी भाव, निर्वेद और संसार की असारता, दुःख पूर्णता, तथा ब्रह्मस्वरूप आलंबन विभाव हैं।

शांतता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धीरता, गंभीरता, मौनता, सन्नाटा, स्वस्थता, मरण, स्थिरता, शांति (काव्य०)।

शांतनव—(संज्ञा, पु०, सं०) भीष्म, शांतनु के आत्मज।

शांतनु—(संज्ञा, पु०, सं०) द्वापर के चंद्रवंशीय २१ वें राजा, भीष्मपितामह के पिता (महा०)। " शांतनु की शांति कुल-क्रांति चित्र अंगद की " —रत्ना०।

शांता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा दशरथ की कन्या जो ऋष्यशृंग को ब्याही थी, रेणुका।

शांति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नीरवता मौनता, स्तब्धता, स्थिर, सौम्यता, उपशम, विराग, सन्नाटा, रोगादि नाश तथा चित्त का ठिकाने होना, स्वस्थता, मरण, धीरता, गम्भीरता, विरागता, अमंगल या विघ्न-बाधादि के मिटाने का उपचार, दुर्गा, वासनादिविहीनता। "शांतिराप: शांति रोषधय:"—[य० वे०]।—**कर्म**-(पु०) पाप-ग्रहादि-जन्य अमंगल के निवारण का उपचार।—**कारी**—, **कारक**-(पु०) शांति करने वाला। [**शांतिकारिणी** (स्त्री०)]।—**दायक, शांतिदाई, शांतिप्रद**-(वि०) शांति देने वाला। [**शांतिदायिनी** (स्त्री०)]।—**पाठ**-(पु०) वेद के शांतिकार मंत्र।—**प्रिय**-(वि०) शांति का इच्छुक।—**भंग**-(पु०) शांति में विघ्न पड़ना, अनुशासन न मानना।—**स्थापन**-(पु०) शांति बनाये रखना।

शांबरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इन्द्रजाल, जादूगरनी। (संज्ञा, पु०) लोध पेड़।

शांबुक, शांबूक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शंबूक शंबूक] घोंघा, छोटा शख, एक शूद्र तपस्वी (राम-राज्य-वाल्मी०)।

शांभर—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) नमक की साँभर झील (राज०)।

शाइस्तगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सभ्यता, शिष्टता, भलमनसी, आदमीयत।

शाइस्ता—(वि०, दे०) [फ़ा० शाइस्त:] सभ्य, शिष्ट, भलामानुष, विनम्र, विनीत।—**खाँ**-(पु०) औरंगजेब द्वारा भेजा गया दक्षिण का सूबेदार जिसने शिवाजी पर चढ़ाई की थी और पराजित होकर भाग गया था।

शाक—(संज्ञा, पु०, सं०) भाजी, साग, तरकारी। (वि०) शक जाति संबधी, शकों का।

शाकटायन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक बहुत पुराने व्याकरणकार इनका उल्लेख पाणिनि ने किया है, एक अर्वाचीन वैयाकरण। "त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य"—[कौ० व्या०]।

शाकद्वीप—(संज्ञा, पु०, सं०) सात द्वीपों में से एक (पुरा०), ईरान और तुर्किस्तान के बीच में आर्यों और शकों का देश।

शाकद्वीपीय—(वि०, सं०) शाकद्वीप का। (संज्ञा, पु०) ब्राह्मणों का भेद, मग ब्राह्मण।

शाकल—(संज्ञा, पु०, सं०) टुकड़ा, खंड, ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता, मद्र देश का एक शहर, हवन-सामग्री, शाकल्य।

शाकल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) होम या हवन की वस्तु या सामग्री, एक प्राचीन वैयाकरण। "लोप: शाकल्यस्य"—[सि० कौ०] (व्या०)।

शाक—(संज्ञा, पु०, सं०) शालिवाहन का संवत्, [साका (दे०)]।

शाकाहार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) निरामिष भोजन, अन्न, तरकारी और फलों का भोजन।

शाकाहारी—(वि०, यौ०, सं०) फलाहारी, निरामिष भोजी। [**मांसाहारी** (विलो०)]।

शाकिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चुड़ैल, डाइन।

शाकुंतल, शाकुंतलेय—(वि०, सं०) शकुंतला सम्बन्धी। (पु०) कालीदास-रचित "अभिज्ञान शाकुंतल" नाटक।

शाकुन—(वि०, सं०) शकुन-संबंधी, पक्षियों के संबंध का।

शाकुनि—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्याधा, बहेलिया।

शाकुनिक—(संज्ञा, पु०, सं०) बहेलिया, चिड़ियों को पकड़ने वाला। सगुन बताने वाला।

शाक्त—(वि०, सं०) शक्ति संबंधी। (संज्ञा, पु०) शक्ति का उपासक, तांत्रिक।

शाक्तागम—(संज्ञा, पु०, सं०) तंत्रशास्त्र, शाक्त-मंत्र।

शाक्तिक—(संज्ञा, पु०, सं०) शक्ति का उपासक, शाक्ति।

शाक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) नैपाल की तराई की एक प्राचीन क्षत्रिय जाति, बुद्धदेव की जाति।—**मुनि,—सिंह**-(पु०) गौतम बुद्ध जी।

शाक्र—(वि०, सं०) इन्द्र सम्बन्धी।

शाख़—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) [शाखा सं०] डाली, टहनी। **मुहा०—निकालना**-दोष निकालना भेद, प्रकार, जाति वर्ग, विभाग, टुकड़ा, फाँक, खंड।

शाखा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डाली, टहनी, प्रकार, विभाग, हिस्सा, वेद की संहिताओं के पाठ तथा क्रम-वेद, अंग, हाथ-पैर, किसी वस्तु से निकले भेद-प्रभेद, [साखा (दे०)]।—**मृग**-(पु०) बंदर, बानर। "शाखामृग की यह प्रभुताई"—[रामा०]।

शाखाम्ल—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इमली ।

शाखी—(संज्ञा, पु०) [सं० शाखिन्] पेड़, वृक्ष, तरु ।

शाखोच्चार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ब्याह के समय उभय ओर की वंशावली का कथन ।

शाख्य—(वि०, सं०) शाखा-संबंधी ।

शागिर्द—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) शिष्य, चेला, सेवक । **शागिर्दगी, शागिर्दी** (स्त्री०)] ।

शागिर्दी—(संज्ञा, स्त्री०) शिष्य होना । **मुहा०—करना**-शिष्य बनकर सीखना-पढ़ना ।

शाट्यायन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि ।

शाठ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रूरता, दुष्टता, धूर्तता । **लो०**—"शठे शाठ्य समाचरेत्", "शाठ्यं दुष्ट जने"—[भ० श०] ।

शाण—(संज्ञा, पु०, सं०) कसौटी, चार माशे की तौल, हथियार पैने करने की सान ।

शाणित—(वि०, सं०) तेज किया हुआ । कसौटी पर परीक्षित ।

शाणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) टाट, तम्बू, सन के रेशों का बना हुआ ।

शात—(संज्ञा, पु०, सं०) कल्याण, मंगल ।

शातकुंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) सोना, सुख ।

शातवाहन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शालिवाहन] शालिवाहन नाम के एक राजा ।

शातिर—(संज्ञा, पु०, अ०) शतरंज-बाज़, शतरंज का खिलाड़ी । (वि०) प्रवीण, पटु ।

शाद—(वि०, फ़ा०) ख़ुश, हर्षित, प्रसन्न । [**नाशाद** (विलो०)] ।

शादियाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हर्ष-वाद्य, आनंद, मंगल-सूचक बाजा, बधाई, बधावा ।

शादी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) ख़ुशी, प्रसन्नता, आनंद, आनंदोत्सव, ब्याह, विवाह ।

शाद्वल—(वि०, सं०) हरा-भरा मैदान, हरी घास, दूब । "ययौ मृगाध्यासित शाद्वलानि"—रघु० । (संज्ञा, पु०) रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती, बैल ।

शान—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) ठाठ-बाट, सजावट, तड़क-भड़क, ठसक, गुमान, प्रतिष्ठा, शक्ति, विशालता, मान-मर्यादा, विभूति, भव्यता, करामात । —**दार**-(वि०) तड़क-भड़क वाला, शान वाला ।—

शौकत-(स्त्री०) दबदबा, मर्तबा, तड़क-भड़क, सजावट, तैयारी, ठाट-बाट, सजधज । **मुहा०—किसी की—में**-किसी की इज्जत या प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में । गर्व की चेष्टा ।—**करना (दिखाना)**-गर्व प्रगट करना ।—**में बट्टा लगना**-शान घटना, प्रतिष्ठा में कमी होना ।

शाप—(संज्ञा, पु०, सं०) कोसना, स्राप, भर्त्सना, बददुआ, अहित-कामना-सूचक शब्द, फटकारना, धिक्कार, [साप (दे०)] ।—**ग्रस्त**-(वि०) शापित, जिसे शाप लगा हो ।—**मुक्त**-(वि०) शाप से मुक्त, जिसे शाप से छुटकारा मिल गया हो ।

शापना—(क्रि० स०, दे०) [सं० शाप] [सापना (दे०)] शाप देना । "जिय में डरयो मोहिं मति शापै व्याकुल वचन कहंत"—सूर० ।

शापास्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०) वह व्यक्ति जो अस्त्र-शस्त्र के स्थान पर शाप से ही कार्य कर लेता हो ।

शापित—(वि०, सं०) शापग्रस्त, जिसे शाप दिया गया हो ।

शाबर—(वि०, सं०) जंगली, क्रूर, नीच । (पु०) अपराध, पाप, हिरन का चमड़ा ।—**भाष्य**-(पु०) मीमांसा-सूत्रों पर एक प्रसिद्ध भाष्य या व्याख्या ।

शाबरी—(संज्ञा, पु०, सं०) शाबरों की भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद ।

शाबाश—(अव्य०, फ़ा०) ख़ुश रहो, वाह-वाह, साधु-साधु, धन्य हो ।

शाबाशी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सराहना, साधुवाद ।

शाब्द—(वि०, सं०) शब्द का, शब्द सम्बन्धी, शब्द पर निर्भर, एक प्रमाण । [**शाब्दी** (स्त्री०)] ।

शाब्दिक—(वि०, सं०) शब्द-सम्बन्धी, वैयाकरण ।

शाब्दी—(वि०, स्त्री०, सं०) शब्द-सम्बन्धिनी, जो शब्द ही पर निर्भर हो ।—**व्यंजना**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह व्यंजना जो केवल किसी विशेष शब्द के ही प्रयोग पर निर्भर हो और उसके पर्यायवाची शब्द के प्रयोग से न हो पाये । [**आर्थी व्यंजना** (विलो०)] ।

शाम—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) संध्या, साँझ । "झुटपुटा सा हो गया है शाम का"—म० इ० । (वि०, संज्ञा, पु०) श्याम । (संज्ञा, स्त्री०, सं०)

शामो। (संज्ञा, पु०) एक प्राचीन देश जो अरब के उत्तर ओर है, सीरिया।

शामकरण, शाम-कर्ण—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० श्यामकर्ण] वह श्वेत घोड़ा जिसके केवल कान काले हों, [स्यामकरन (दे०)]। "शामकरण अगनित हय होते"—[रामा०]।

शामत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) दुर्गति, आपत्ति, विपत्ति, दुर्भाग्य, दुर्दशा। **मुहा०**—(किसी की) **—आना**-दुरवस्था आना। **—शामत का घेरा या मारा**-जिसकी अभाग्यता या दुर्दशा का समय आ गया हो, दुर्भाग्य का मारा। **—सवार होना या सिर पर खेलना**-दुर्दशा का समय आना, शामत चढ़ना।

शामा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्यामा] राधिका, राधा जी, एक छोटा पक्षी, सोलह वर्ष की स्त्री, काली गाय, एक तरह की तुलसी, कोयल, यमुना, रात, स्त्री, औरत।

शामियाना—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० शाम] एक प्रकार का बड़ा चँदोवा, वितान, तंबू, वस्त्र-मंडप, [साम्याना (दे०)]।

शामिल—(वि०, अ०) मिला हुआ।

शामिला—(वि०, फ़ा०) युक्त, मिश्रित, मिलित, मिलित, जो साथ मे हो।

शामिलात—(संज्ञा, स्त्री०) साझे की सम्पत्ति, साझेदारी।

शामिलाती—(वि०) संयुक्त।

शामी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) धातु का वह छल्ला जिसे छड़ी आदि के सिरे पर उसकी रक्षार्थ लगाते हैं। [**शाम देश** (वि०)]—शाम देश का।

शामूक—(संज्ञा, पु०, सं०) घोंघा, सीप।

शायक—(संज्ञा, पु०, सं०) तीर, बाण, शर, तलवार, खड्ग, [सायक (दे०)]। " जेहि शायक मारा मैं बाली "—[रामा०]।

शायक़—(वि०, अ०) इच्छुक, शौकीन।

शायद—(अव्य०, फ़ा०) संभवतः, कदाचित्, चाहे।

शायर—(संज्ञा, पु०, अ०) कवि। [**शायरी** (स्त्री०)]।

शायरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कविता, काव्य, पद्यमयी रचना।

शायी—(वि०) [सं० शायिन्] सोने वाला।

शारंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सारंग] सारंग। रात। वस्त्र। दीपक। साँप। मोर। मेघादि। इसके ५६ अर्थ हैं। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शार्ङ्ग] विष्णु का धनुष, धनुष।**—पाणि**-(पु०) विष्णु, रामचंद्र, कृष्ण।

शारद—(वि०, सं०) शरद काल का, सरस्वती। **—ज्योत्स्ना**-(स्त्री०) शरद् कालीन चाँदनी जिसमें शीतलता अत्यधिक होती है।**—पूर्णिमा**-(स्त्री०) शरद् ऋतु की पूर्णिमा।

शारदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सरस्वती, दुर्गा, पुराने समय की एक लिपि, [सारदा (दे०)]। " शेष, शारदा, व्यास मुनि, कहत न पावैं पार " [नीति०]।

शारदी—(वि०, दे०) [सं० सारदीय] शरद् ऋतु संबंधी, शरद् काल का, [सारदी (दे०)]। " कहुं कहुं वृष्टि शारदी थोरी "—[रामा०]।

शारदीय—(वि०, सं०) शरद ऋतु का, शरद ऋतु संबंधी।**—महापूजा**-(स्त्री०) क्वार में होने वाली नवरात्रि की दुर्गापूजा।

शारदोत्सव—(संज्ञा, पु०, सं०) कुआँर की पूर्णमासी का उत्सव, शरद पूनो का उत्सव।

शारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मैना पक्षी, [सारिका (दे०)]। " शुक-शारिका पढ़ावहि बालक "—[रामा०]।

शारिवा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनंतमूल, सालसा धमासा, जवासा। " मदा, शारिवा, लोध्रजः क्षौद्र-युक्तः "—[लो० रा०]।

शारी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मैना, पाँसे के खेल की गोट। " शारी चरंतीं सखि मार पैताम् " —[नैषध]।

शारीर—(वि०, सं०) शरीर-संबंधी। " शारीरे सुश्रुतः प्रोक्तः "—स्फु०।**—तत्व**-(पु०) शरीर सम्बन्धी विज्ञान।**—विधान**-(पु०) शरीर के उत्पत्ति सम्बन्धी शास्त्र, शरीर-शास्त्र।**—विज्ञान**-(पु०) वह शास्त्र जिसमें जीवों के उत्पन्न होने, उनके शरीरों के बढ़ने आदि की विवेचना हो।

शारीरक—(संज्ञा, पु०, सं०) शरीर की सब दशाओं का विवेचना।**—भाष्य**-(पु०) शांकर वेदांत-भाष्य या ब्रह्मसूत्र की व्याख्या।**—सूत्र**-(पु०) श्री व्यास कृत वेदांत सूत्र।

शारीरिक—(वि०, सं०) शरीर-संबंधी।

शार्ङ्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु का धनुष, सींग का धनुष ।—**धर**—,**पाणि**—,**भृत्**–(पु०) विष्णु भगवान ।

शार्दूल—(पु०) बाघ, चीता, शेर । राक्षस, शरभ जंतु, एक पक्षी, सिंह, दोहे का एक भेद (पिं०), [सारदूल (दे०)] । (वि० सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ ।—**ललित**–(पु०) १८ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) ।—**विक्रीडित**–(पु०) १८ वर्णों का वर्णिक छंद (पिं०) ।

शाल—(संज्ञा, पु०, सं०) साखू, एक विशाल पेड़, एक मछली । (स्त्री०, फ़ा०) दुशाला, ऊनी चादर ।—**गिरि**–(पु०) एक पहाड़ ।—**ग्राम**–(पु०) विष्णु की एक पत्थर की मूर्ति, [सालिग-राम (दे०)] ।—**पर्णी**–(स्त्री०) सरिवन (औष०) ।—**भंजी**–(स्त्री०) कठपुतली ।

शालंकि, शालंकी—(संज्ञा, पु०, सं०) पाणिनि मुनि ।

शालांकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पुतली ।

शाला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आलय, गृह, मकान, घर, स्थान । जैसे—चित्रशाला । इन्द्र-वज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से बना एक छंद, उपजाति (पिं०) ।—**मृग**–(पु०) सियार नामक एक पशु ।

शालाक—(संज्ञा, पु०, सं०) पाणिनि ।

शालाक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) शल्य-विद्या की एक शाखा विशेष, वह तंत्र जिसमें गले से ऊपर की इंद्रियों की चिकित्सा का निरूपण होता है ।

शालातुरीय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पाणिनि मुनि ।

शालि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रकार का धान जड़हन, बासमती चावल, पौंड़ा, गन्ना ।—**धान**–(पु०) बासमती चावल ।—**वाहन**–(पु०) एक शक राजा जिसने शकाब्द नामक शाका या संवत चलाया था ।—**होत्र**–(पु०) अश्व वैद्य, अश्व चिकित्सा या अश्व विज्ञान का ग्रंथ, घोड़ा, अश्व । —**होत्री**–(पु०) अश्व-वैद्य, अश्व-विज्ञानी, घोड़े आदि पशुओं का चिकित्सक ।

शालिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ११ वर्णों का एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं०) ।

शालीन—(वि०, सं०) विनम्र, विनीत, लज्जा-वान, सदृश, तुल्य, सुन्दर, आचार-विचार । वाला । चतुर, दक्ष, पटु, शिष्ट, सभ्य, धनी, अमीर ।

शालीनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विनम्रता, लज्जा सुशीलता ।

शालेय—(संज्ञा, पु०, सं०) शालि नामक धान (चावल) पैदा होने वाले खेत ।

शाल्मलि—(संज्ञा, पु०, सं०) [सालमली (दे०)], सेमल या सेमर का पेड़, एक द्वीप, एक नरक (पुरा०) ।

शाल्मलिक—(संज्ञा, पु०, सं०) निम्न कोटिक का शाल्मलि वृक्ष ।

शाल्मलिनी—(संज्ञा, स्त्री०) सेमल का वृक्ष ।

शाल्मली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सेमल का वृक्ष, एक नदी (पताल की) (पु०) गरुड़ ।

शाल्व—(संज्ञा, पु०, सं०) सौभराज्य का एक राजा जो कृष्ण द्वारा मारा गया था । एक देश (प्राचीन) ।

शावक—(संज्ञा, पु०, सं०) बच्चा, पशु का बच्चा, [सावक (दे०)] ।

शावर—(संज्ञा, पु०, सं०) साबर, मंत्र-तंत्र विशेष । "शावर मंत्र-जाल जेहि सिरजा"— [रामा०] ।

शाश्वत—(वि०, सं०) सदा रहने वाला, नित्य, स्थायी, नाश-रहित । (पु०) ब्रह्म ।

शाश्वती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पृथ्वी । (वि०) स्थायी, नित्य । "मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वती समाः"—वाल्मीकि ।

शासक—(संज्ञा, पु०, सं०) हाकिम, शासन करने वाला । राजा, शासनकर्त्ता, राज्य संचालक । [एड-मिनिस्ट्रेटर] ।—**वर्ग**–(पु०) राज्य-संचालकों का संघ या समूह । [**शासिका** (स्त्री०)] ।

शासन—(संज्ञा, पु०, सं०) लिखित प्रतिज्ञा, आदेश, आज्ञा, हुक्म । ठीका । पट्टा, मुआफी, राजा से दान दी गई भूमि, आज्ञापत्र, शास्त्र, अधि-कार-पत्र, इन्द्रिय-निग्रह, सजा, दंड, हुकूमत, वश या अधिकार में रखना । [एडमिनिस्ट्रेशन]— **कर्ता**–(पु०) शासक ।—**तंत्र**–(पु०) राज्य-शासन की पद्धति ।

शासनीय—(वि०, सं०) शासन करने योग्य, सजा के लायक ।

शासित—(वि०, सं०) जिस पर शासन किया जावे, जिसे दंड दिया गया हो । [**शासिता** (स्त्री०)] ।

शास्ता—(संज्ञा, पु०) [सं० शास्तृ] राजा, शासक, पिता, गुरु, अध्यापक, उपाध्याय ।

शास्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शासन, सजा, दंड ।

शास्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०) वे धार्मिक या शिक्षा-ग्रंथ जो लोगों के हित और अनुशासन के हेतु रचे गये हों, चार वेद उनके छः अंग, छः उपांग, धर्म-शास्त्र, दर्शन-शास्त्र, पुराण, चार उपवेद, विज्ञान, ये सब पृथक्-पृथक् शास्त्र कहे जाते हैं। किसी विशेष विषय का यथाक्रम संग्रहीत पूर्णज्ञान, विज्ञान । "शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिर्मौर्वी धनुषि चातता"—रघु० ।—**कार**-(पु०) शास्त्र बनाने वाला, शास्त्रकर्ता, शास्त्र रचयिता ।—**चर्चा**-(स्त्री०) शास्त्र-सम्बन्धी विचार-विनियम ।—**चारण**-(पु०) शास्त्र का ज्ञाता, प्रचारक ।—**ज्ञ**-(पु०) शास्त्र-ज्ञाता, शास्त्रवेत्ता, शास्त्रविद् ।—**प्रवक्ता**-(पु०) शास्त्र को विभिन्न दृष्टियों में रखते हुए अपना मत प्रगट करने वाला ।—**प्रसंग**-(पु०) शास्त्रीय विषय, शास्त्र-सम्बन्धी किसी विषय पर होने वाली बातचीत ।—**विरुद्ध**-(वि०) जो अशास्त्रीय हो, जो अवैध हो ।—**संमत**-(वि०) शास्त्रानुमोदित ।

शास्त्रानुमोदित—(वि०, सं०) शास्त्र-सम्मत ।

शास्त्रानुशीलन—(संज्ञा, पु०, सं०) शास्त्र का पठन-पाठन ।

शास्त्रार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) शास्त्र के आधार पर वाद-विवाद, शास्त्रीय सिद्धान्त-निरूपण ।

शास्त्री—(संज्ञा, पु०) [सं० शास्त्रिन्] शास्त्रज्ञ, शास्त्र-ज्ञाता, धर्म या दर्शन शास्त्र का ज्ञाता, ज्ञानी, पंडित, शास्त्रविद्, शास्त्रवेत्ता ।

शास्त्रीय—(वि०, सं०) शास्त्र-संबंधी ।

शास्त्रोक्त—(वि०, यौ०, सं०) शास्त्रों में कहा हुआ, प्रामाणिक ।

शाहंशाह—(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) सम्राट्, बादशाहों का बादशाह, राजाधिराज ।

शाहंशाही—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शाहंशाह का कार्य या भाव, व्यवहार का खरापन (बोलचाल) ।

शाह—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बादशाह, महाराज, मुसलमान फकीरों की उपाधि, एक कुल या जाति (मुसलमान) । (वि०) बड़ा, भारी, महान्, [साह (दे०)], धनी, समधी (वैश्य) ।—**जादा**-(पु०) बादशाह का पुत्र, महाराज-कुमार । [**शाहजादी** (स्त्री०)] ।—**दरा**-(पु०) एक बस्ती जो दिल्ली के निकट यमुना के तट पर बसा हुआ है। किले के निकट का कसबा ।—**नामा**-(पु०) फारसी का वीर-रस प्रधान महाकाव्य जिसकी रचना फिरदौसी ने की थी ।—**जहाँ**-(पु०) अकबर का पुत्र (१५६३-१६६६) जिसने ताजमहल बनवाया था ।—**राह**-(स्त्री०) राज-मार्ग ।

शाहना—(वि०, फ़ा०) शाही । (पु०) दूल्हे के कपड़े ।

शाहाना—(वि०, फ़ा०) राजसी । (संज्ञा, पु०) ब्याह मे वर के जामा, जोड़ा आदि वस्त्र, एक राग, [शहाना (दे०)] ।

शाही—(वि०, फ़ा०) बादशाहों का, राजसी ।—**ज़माना**-(पु०) भारतीय इतिहास का मुस्लिम शासनकाल ।

शिंगरफ़—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ईंगुर ।

शिंजित—(वि०, सं०) झंकृत, बजता हुआ ।

शिंजिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धनुष की डोरी । नूपुर ।

शिंबिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक पक्षी ।

शिंबी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बौंड़ी, छेमी, फली, सेम, केवाँच, [कौंछ (दे०)] ।—**धान्य**-(पु०) दाल, द्विदल अन्न ।

शिंशपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शीशम का पेड़, अशोक का पेड़, [सिंसपा (दे०)] ।

शिंशुमार—(संज्ञा, पु०, सं०) सूस नामक एक जल-जन्तु ।

शिकंजा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक यंत्र जिसमें किताबें दबा कर उनके पन्ने काट कर बराबर किये जाते है, पदार्थों के कसने और दबाने का यंत्र, अपराधियों के पैर कसने का एक प्राचीन यंत्र काठ । **मुहा०**—(**जे**) **में खिंचवाना**-कठोर कष्ट या घोर यंत्रणा दिलाना ।—(**जे**) **में आना**-काबू मे आना, जाल या फंदे में फंसना ।

शिकन—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सिकुड़न, बल, सिलवट, सिकुड़ने से पड़ी धारी ।

शिकम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पेट, उदर, एक छोटे राज्य का नगर (बंगाल) ।

शिकमी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) जो असली काश्तकार से लेकर खेत की जुताई बोआई करे ।—**काश्तकार**-(पु०) जो काश्तकार किसी दूसरे काश्तकार की भूमि में खेती करे ।

शिकरा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक तरह का बाज पक्षी ।

शिकवा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) शिकायत ।

शिकस्त—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पराजय, हार । **मुहा०—खाना**-हार जाना ।

शिकायत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) उपालंभ, उलाहना, चुगुली, निंदा, [**गिला** (फ़ा०)] । बीमारी, रोग ।

शिकार—(संज्ञा, पु०, फा०) मृगया, आखेट, अहेर, भक्ष्य पशु, मारा हुआ जीव, मांस, आहार । असामी, वह व्यक्ति जिनके फँसने से लाभ हो, [सिकार (दे०)] । **लो०** फ़ा०—"शिकार कार बकारा नस्त" ।—**गाह**-(स्त्री०) शिकार या आखेट खेलने का स्थान । **मुहा०—खेलना**-अहेर या आखेट करना । **किसी का—होना**-किसी के द्वारा मारा जाना, वश मे आना, फँसना, चंगुल मे आना या फँसना । **किसी का—बनाना**-लाभ उठाने को किसी को फँसाना ।

शिकारी—(वि०, फ़ा०) अहेरी, आखेट करने वाला, मृगया में काम आने वाला ।

शिक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) उपदेश देने या समझाने वाला, सिखाने या पढ़ाने वाला, गुरु, अध्यापक, उस्ताद, [सिच्छक (दे०)] । "शिक्षक हौ सिगरे जग को"—नरो० ।

शिक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) पढ़ाई, उपदेश, शिक्षा, तालीम, सिखावन, अध्यापन ।—**कला**-(स्त्री०) पढ़ाने की कला ।

शिक्षणीय—(वि०, सं०) शिक्षा या पढ़ाने के योग्य ।

शिक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी विद्यादि के सीखने-सिखाने की क्रिया, पढ़ाई, उपदेश, सिखावन, सीख, मंत्र, मंत्रणा, तालीम, गुरु के समीप विद्याभ्यास, सलाह, छः वेदांगों में से वेदों के स्वर, मात्रा, वर्णादि का निरूपक एक विधान, दबाव, शासन, सबक, सजा, दंड ।—**केन्द्र**-(पु०) वह स्थान जहाँ शिक्षा-विभाग तथा प्रधान विद्यालय हो ।—**गुरु**-(पु०) विद्या पढ़ाने वाला, अध्यापक, गुरु ।—**दीक्षा**-(स्त्री०) उपदेश और शिक्षा द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास ।—**पद्धति**-शिक्षा देने की प्रणाली ।—**प्रणाली**-(स्त्री०) देखिए—'शिक्षा पद्धति' [एडुकेशनल सिस्टम] ।—**प्रद**-(वि०) शिक्षादायक ।—**मंत्री**-(पु०) शिक्षा सम्बन्धी सर्वोच्च पदाधिकारी । [एडुकेशन मिनिस्टर] ।—**विभाग**-(पु०) जनता की शिक्षा या तालीम का प्रबंध करने वाला एक सरकारी महकमा । [एडुकेशन डिपार्टमेंट]

शिक्षाक्षेप—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक अलंकार जिसमे उपदेश द्वारा प्रयाण या जाना रोका जाता है (केश०) ।

शिक्षार्थी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० शिक्षार्थिन्] विद्याभ्यासी, विद्यार्थी ।

शिक्षालय—(संज्ञा, पु०, सं०) विद्यालय, स्कूल, पाठशाला ।

शिक्षित—(वि०, पु०, सं०) पढ़ा या सीखा हुआ, उपदेश-प्राप्त, पंडित, विद्वान्, पढ़ा-लिखा । [**शिक्षिता** (स्त्री०)] ।

शिखंड—(संज्ञा, पु०, सं०) मयूर-पुच्छ, मोर की पूँछ या चोटी, काकपक्ष, काकुल, शिखा, चोटी । [**शिखंडिका** (स्त्री०)] ।

शिखंडिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मोरनी, मयूरी, द्रुपद नरेश की एक कन्या जो कुरुक्षेत्र के युद्ध में पुरुष-रूप से लड़ी थी ।

शिखंडी—(संज्ञा, पु०) [सं० शिखंडिन्] चोटी, शिखा, मयूर, मोर, मुर्गा, विष्णु, बाण, शिव, कृष्ण, शिखंडिनी, राजा द्रुपद का पुत्र जो पूर्व जन्म में स्त्री था, भीष्म की मृत्यु का कारण वही था (महा०) । "बान न होहिं शिखंडी तोरे" —[स० सिं०] ।

शिख*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिखा] शिखा, चोटी, शिक्षा, सीख, [सिख (दे०)] । "नखशिख मंजु महा छबि छायी"—[रामा०] ।

शिखर—(संज्ञा, पु०, सं०) चोटी, सिरा, शिखा, पहाड़ का शृंग, मंडप, कँगूरा, कलश, घर के ऊपर का नुकीला सिरा, गुंबद, जैनियों का एक तीर्थ, एक अस्त्र, एक रत्न ।

शिखरन, शिकरन—(संज्ञा, स्त्री०,) [सं० शिखरिणी] दही, दूध और शक्कर से बना खाने का एक पदार्थ, श्रीखंड (गुज०) ।

शिखरा—(संज्ञा, पु०, सं०) पहाड़, पेड़, अपामार्ग ।

शिखरिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नारी-रत्नी, श्रेष्ठ स्त्री, रसाल, रोमावली, शिखरन, दही, दूध और चीनी मिला पदार्थ, १७ वर्णों का य, म, न, स, भ (गण) और ल०, गु० वाला एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं०), [सिखरिनी (दे०)] ।

शिखरी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० शिखरा] विश्वामित्र द्वारा राम जी को दी गई गदा। (वि०, सं०) शिखर वाला।

शिखा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शिखर, डाली, शाखा, चोटी, चुटैया (ग्रा०)।—**सूत्र**-द्विजों के चिह्न,—चोटी और उपवीत। पक्षियों के सिर की कलँगी या चोटी, प्रकाश की किरण, ज्वाला, अग्नि की लपट, दीपक की लौ। "छविगृह दीपशिखा जनु बरई"—[रामा०]। एक विषम वृत्त (पिं०), किसी वस्तु की नोक, या नुकीला सिरा।

शिखावल—(संज्ञा, पु०, सं०) मयूर, मोर, चोटी वाला, कटहल का पेड़।

शिखि—(संज्ञा, पु०, सं०) मयूर, मोर, अग्नि, मदन, कामदेव, तीन की संख्या, [शिखी (दे०)]।

शिखिध्वज—(संज्ञा, पु०, सं०) धुआँ, धूम, धूम्र, षडानन, कार्त्तिकेय, मयूरध्वज।

शिखिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मोरनी, मयूरी, मुर्गी।

शिखी—(वि०) [सं० शिखिनी] चोटी, या शिखा वाला। [**शिखिनी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) मुर्गा, मयूर, मोर, साँड़, बैल, घोड़ा, अग्नि, नाराच, वाण, शर, केतु, पुच्छल-तारा, तीन की संख्या।—**कंठ**,—**ग्रीव**-(वि०) मोर के कंठ की तरह।—**वाहन**-(पु०) कार्त्तिकेय।

शिखीश्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्त्तिकेय।—**मास**-(पु०) कार्त्तिक का महीना।

शिगाफ—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दर्ज, दरार, छेद, छिद्र, नश्तर, चीरा, सूराख।

शिगूफा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शगूफा] कली, बिना फूला या खिला फूल, नयी और अनोखी बात या घटना।

शित*—(वि०, दे०) [सं० सित] सफेद, श्वेत, साफ, सित। "शितकंठ के कंठन कौ कठुला"—[रामा०]।

शितलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सितलाई (दे०)] शीतलता।

शितलाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शीतल] ठंडा होना।

शिताब—(क्रि० वि०, फ़ा०) शीघ्र, जल्द, जल्दी, तत्काल, तुरन्त। [**शिताबी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

शिति—(वि०, सं०) उज्ज्वल, शुक्ल, सफेद, श्वेत, साफ, कृष्ण, काला।—**कंठ**-(पु०) चातक, जलकाक, मुर्गाबी, पपीहा, मोर, महादेव।—**चंदन**-(पु०) कस्तूरी।—**रत्न**-(पु०) नीलम।

शिथिल—(वि०, सं०) ढीला, जो पूरा कसा या जकड़ा न हो, धीमा, मंद, थका-माँदा, श्रांत, जिसकी पाबंदी न हो, आलस्ययुक्त, सुस्त, [सिथिल (दे०)]। "शिथिल-वसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ"—[किरा०]।

शिथिलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ढीलापन, ढिलाई, तत्परता हीनता, थकान, थकावट, नियम-पालन में दृढ़ता न होना, आलस्य, वाक्य में शब्दों का सुगठित अर्थ-सम्बन्ध न होना।

शिथिलाई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिथिलता] शिथिलता, ढिलाई, आलस्य, [सिथलाई, सिथिलाई (दे०)]।

शिथिलाना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शिथिल] शिथिल, ढीला या सुस्त होना, थकना। (क्रि० स०, दे०) शिथिल करना, [सिथिलाना (दे०)]।

शिद्दत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) उग्रता, तीव्रता, तेजी, जोर, अधिकता, ज्यादती, प्रचुरता।

शिनाख्त—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) पहचान, तमीज, परख, यह निश्चय कि अमुक व्यक्ति या वस्तु यही है, [सिनाखत (दे०)]।

शिप्र—(संज्ञा, पु०, सं०) एक सरोवर का नाम जो हिमालय में स्थित है।

शिप्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शिप्र नामक सरोवर से निकली हुई एक नदी जिसके किनारे उज्जयन नगर स्थित है।

शिफर*‡—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० सिपर] ढाल, शून्य, विन्दु, [सिफ़र (दे०)]।

शिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० शीया] एक मुसलमानी संप्रदाय, जो हजरत अली को पैगंबर का उत्तराधिकारी मानता है [**सुन्नी** (विलो०)]।

शिर—(संज्ञा, पु०) [सं० शिरस्] सिर, सर, खोपड़ा, कपाल, शीश, माथा, मस्तक, शिखर, सिरा, चोटी। "शिर धरि आयसु करिय तुम्हारा"—[रामा०]।—**त्राण**-(पु०) शिर-रक्षा के लिये लोहे की टोपी, खोद, कूँड़ी, शिरत्रान, सिरत्राना।—**फूल**-(पु०) शीशफूल नामक एक गहना।—**मौर**-(पु०) सिर की मौर, शिरोमणि, सिरताज, प्रधान, शिरोभूषण, मुकुट, [सिर-मौर (दे०)]। "ताहि कहत हैं खंडिता, कबियन के शिरमौर"—मति०।

शिरकत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) साझा, हिस्सा, किसी कार्य में संमिलित होना, किसी वस्तु के अधिकार में भाग लेना।

शिरस्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रधान, मुखिया।

शिरनेत—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रदेश, (श्री नगर या गढ़वाल के आस-पास) क्षत्रियों की एक शाखा, सिरन्यात (ग्रा०)।

शिरस्त्राण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) युद्ध में शीश-रक्षार्थ लोहे की टोपी, खोद, कूँड़ी।

शिरहन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [स० शिरस्+आधान] तकिया, उसीसा, [सिरहाना, सिरहना (दे०)]।

शिरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रक्तवाही नाड़ी, रक्त-नलिका, पानी का स्रोत या धार।—**मूल**–(पु०) नाभि।

शिराकत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शिरकत, साझा, मेल।

शिरीष—(संज्ञा, पु०, सं०) सिरस पेड़। "पदं सहेत भ्रमरस्य कोमलं शिरीष-पुष्पं न पुनः पत-त्रिणः"—[कुमार०]।

शिरोधरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्दन, ग्रीवा, गला, चोंच।

शिरोधार्य्य—(वि०) [सं० शिरसि+धार्य] सिर पर धरने योग्य, सादर स्वीकार करने योग्य। "शिरोधार्य आदेश आपका कौन टाल सकता है" —वासु०।

शिरोभूषण*—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिरोमणि, सिर का गहना, मुकुट, श्रेष्ठ पुरुष, शीशफूल।

शिरोमणि—(संज्ञा, पु०, सं०) सिर की मणि, सिर का गहना, मुकुट, श्रेष्ठ व्यक्ति, चूड़ामणि, [सिरोमनि (दे०)]।

शिरोरुह—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बाल, केश।

शिल—(संज्ञा, पु०, सं०) उंछ, शीला। (स्त्री०) शिला, सिलौटी, [सिल (दे०)]।

शिला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पाषाण, प्रस्तर खंड, पत्थर की चट्टान या सिलौटी, पत्थर का बड़ा लंबा-चौड़ा टुकड़ा, शिलाजीत, उंछ वृत्ति, शीला, [सिला (दे०)]। "पूछा मुनिहिं शिला प्रभु देखी" —[रामा०]।—**क्षार**–(पु०) चूना।—**ज**–(पु०) शिलाजीत, लोहा।—**जतु**–(संज्ञा, पु०, सं०) शिलाजीत। "न चास्ति रोगो भुवि मानवानां शिलजातुल्यं न जयेत प्रसह्यम्"—चटक।—**जीत**–(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) [सं० शिलाजतु] काले रंग का शिलाओं का रस (एक पौष्टिक औषधि) मोमियाई (प्रान्ती०)। "पुष्ट होय संशय नाहीं है, शोधि शिलाजतु खाये"—कुं० वि०।—**पट**,—**पट्ट**–(पु०) पत्थर की चट्टान, [सिलवट (दे०)]।—**भव**–(पु०) शिलाजीत।—**रस**–(पु०) लोबान जैसा एक सुगंधित गोंद।—**लिपि**,—**लेख**–(पु०) पत्थर पर खुदा या लिखा कोई प्राचीन लेख।—**वृष्टि**–(स्त्री०) ओलों की वर्षा, ओले गिरना।—**हरि**–(पु०) शालिग्राम।

शिलादित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्राचीन राजा, हर्ष वर्धन।

शिलान्यास—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी मकान या मंदिर आदि की नींव रखी जाने का समारोह या उत्सव, तैयारी, आयोजन।

शिलासन—(संज्ञा, पु०, सं०) पत्थर की चौकी या आसन।

शिली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चौखट के नीचे की लकड़ी, ड्योढ़ी। भाला। केचुआ। बाण।—**मुख** (संज्ञा, पु०, सं०) भ्रमर, भौंरा, बाण, तीर। "अलि-बाणौ शिलीमुखौ"—[अमर०] "निपीय मानस्तवका शिली-मुखैरशोक यष्टिश्चल बाल-पल्लवा"—[किराता०]।

शिलोच्चय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पहाड़, पर्वत, पत्थरों की राशि। "शिलोच्चय चारु शिलो-च्चय तमेव क्षणान्नेष्यति गुह्यकस्त्वाम्"—[किरात०]। "न पादयोन्मूलन शक्ति रंहः शिलोच्चय मूर्च्छति मारुतस्य"—रघु०।

शिलोद्भव—(संज्ञा, पु०, सं०) एक तरह का पीला चंदन।

शिल्प—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथ से कोई वस्तु बना कर प्रस्तुत करना, कारीगरी, दस्तकारी, कला संबंधी व्यवसाय या धंधा।—**कला**–(पु०) कारी-गरी, दस्तकारी, हाथ से चीजें बनाने की कला।—**कार**–(पु०) शिल्पी, कारीगर, दस्तकार, राज, बढ़ई, मेमार।—**कौशल**–(पु०) शिल्प-कला।—**जीवी**–(पु०) कारीगर, दस्तकार, शिल्पी, राज, मेमार (प्रान्ती०)।—**विद्या**–(स्त्री०) शिल्प-कला। [इन्जिनियरी]—**शास्त्र**–(पु०) शिल्पकार्य का शास्त्र, कारीगरी की विद्या का ग्रंथ, गृह-निर्माण शास्त्र।

शिल्पक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ढंग का नाटक जिसमे इन्द्रजाल तथा आध्यामिक बातों का समावेश रहता है।

शिल्पी—(संज्ञा, पु०) [सं० शिल्पिन्] कारीगर, दस्तकार, शिल्पकार, राज, मेमार, थवई (प्रान्ती०)।

शिव—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षेम, कुशल, कल्याण, मंगल, पारा, जल, मोक्ष, देव, वेदरुद्र, त्रिदेव में से सृष्टि के संहारकर्ता एक देवता (पुरा०), महादेव, वसु, काल, लिंग, ११ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०) परमेश्वर, शंकर जी, [सिव, सिउ (दे०)]। "शिव सकल कीन्ह मन माँहीं"—[रामा०] ।—नंदन-(पु०) गणेश जी, स्वामिकार्तिक ।—निर्माल्य-(पु०) शिव को अर्पित पदार्थ (इसके लेने का निषेध है) परमत्याज्य वस्तु ।—पुराण-(पु०) १८ पुराणों में से एक शिवोक्त पुराण जिसमे शिव जी का माहात्म्य है।—पुरी-(स्त्री०) काशी।—रात्रि-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) फाल्गुन, कृष्ण चतुर्दशी, शिवचतुर्दशी, [सिवरात (दे०)] ।—रानी-(स्त्री०) पार्वती जी। [शिवराज्ञी (सं०)]।—लिंगन-(पु०) महादेवजी का लिंग जिसकी पूजा होती है।—लिंगी-(स्त्री०) एक लता (औष०)। —लोक-(पु०) कैलास ।—वाहन-(पु०) नांदिया, बैल ।—वृषभ-(पु०) महादेव जी की सवारी का बैल, नाँदिया, नंदी।

शिवता—(संज्ञा, स्त्री० सं०) शिव का धर्म्म या भाव, मुक्ति, मोक्ष।

शिवांक—(संज्ञा, पु०, सं०) अगस्त्य वृक्ष।

शिवा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दुर्गा, पार्वती, गिरजा, मोक्ष, मुक्ति, सियारिन, शृंगाली।

शिवाजी—(संज्ञा, पु०) महाराष्ट्र राज्य के संस्थापक (१६२७-१६८०) जिन्होंने मुगल-साम्राज्य के प्रति विपरीत भाव रक्खा और एक मामूली सैनिक के पद से राजा हो गये। राज्य के स्थापना के बाद इन्होंने 'छत्रपति' की उपाधि ग्रहण की।

शिवानी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती, दुर्गा।

शिवालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कोई देवमंदिर, देवालय, शिव जी का मंदिर।

शिवाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिवालय] महादेव जी का मंदिर, शिव-मंदिर, देवालय या देव-मंदिर।

शिवि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रसिद्ध दानी राजा जो राजा ययाति के दौहित्र और राजा उशीनर के पुत्र थे (पिं०)।

शिविका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) डोली, पालकी, [सिविका (दे०)]। "शिविका सुभग सुखासन जाना"—[रामा०]।

शिविर—(संज्ञा, पु०, सं०) तंबू, डेरा, खेमा पड़ाव निवेश, सेना की छावनी, कोट, किला। "शिविर द्वारे जाय पहुँचे तीन हूँ मति मान" —काशी नरेश।

शिशिर—(संज्ञा, पु०, सं०) जाड़ा, माघ-फागुन में होने वाली एक जाड़े की ऋतु, शीतकाल, हिम, [सिसिर (दे०)]। "शिशिर मासमपास्य गुणोऽस्य नः"—माघ० ।—मयूख-(पु०) शीत रश्मि, शिशिर-रश्मि, चन्द्रमा।

शिशिरंगु—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा।

शिशिरांत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वसंत ऋतु, शिशिर ऋतु का अंतिम समय।

शिशिरांशु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चन्द्रमा, हिमांशु, शीतांशु।

शिशु—(संज्ञा, पु०, सं०) [सिसु (दे०)] छोटा लड़का, छोटा बच्चा। (संज्ञा, पु०, सं०) शैशव। —नाग-(संज्ञा, पु०, सं०) शैशुनाग, मगध के प्राचीन राजा ।—पाल-(संज्ञा, पु०, सं०) प्रसिद्ध चेदि देशाधिपति जो श्री कृष्ण से मारा गया था। "तिरोहितात्मा शिशुपाल संज्ञया प्रतीयते संप्रति सोऽप्यसःपरै"—माघ० ।—मार-(संज्ञा, पु०, सं०) सूस नाम का एक जल-जंतु, कृष्ण, नक्षत्र मंडल ।—मार-चक्र-(पु०) समस्त ग्रहों के सहित सूर्य्य, सौर-संसार, (ज्यो०)।

शिशुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बचपन, शिशुत्व।

शिशुताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिशुता] शिशुता, शिशुत्व, बचपन, [सिसुताई (दे०)]।

शिशुपन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिशुता] शिशुत्व, शिशुता, लड़कपन, बचपन।

शिश्न—(संज्ञा, पु०, सं०) पुरुष का लिंग।

शिष*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिष्य] शिष्य, चेला, [सिष, सिष्य, सिक्ख (दे०)]। "शिष-गुरु अंध बधिर कर लेखा"—[रामा०] (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिक्षा] शिक्षा, उपदेश, सीख, [सिख (दे०)] । "दीन्ह मोहि शिष नीक

गोसांई "—[रामा०] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिखा] शिखा, चोटी ।

शिषरी—(वि०, दे०) [सं० शिखर] शिखर-वाला, शिखरी ।

शिषा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिखा] शिखा, चोटी, चोटैया, पर्वत-शृंग ।

शिषि*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिष्य] शिष्य, चेला ।

शिषी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिखी] शिखी, मोर, मयूर, मुर्गा, शिखाधारी ।

शिष्ट—(वि०, पु०, अं०) धर्म्मात्मा, सदाचारी, धर्म्मशील, गंभीर, धीर, शांत, सुशील, सभ्य, सज्जन, आर्य, भलामानुस, श्रेष्ठ पुरुष, अच्छे स्वभाव या आचरण वाला, बुद्धिमान् ।—**मंडल**–(पु०) शिष्ट व्यक्तियों का वह समूह जो दूसरे देश मे सद्भावना या पारस्परिक सहयोग को बढ़ाने के लिए जाता है ।

शिष्टई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिष्टता] शिष्टता, श्रेष्ठता ।

शिष्टता, शिष्टत्व—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सौजन्य, सज्जनता, सभ्यता, श्रेष्ठता, सुशीलता, भलमंसी, उत्तमता, शिष्ट का भाव या धर्म्म ।

शिष्टाचार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सभ्य पुरुषों का आचरण, आर्यजनों के योग्य आचरण, साधु व्यवहार, आदर सम्मान, विनय, सभ्य व्यवहार, दिखावटी आवभगति, नम्रता ।

शिष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उपदेश या शिक्षा पाने योग्य, चेला, [शागिर्द (फ़ा०)] । अंतेवासी, विद्यार्थी, चेला मुरीद ।—**परम्परा**–(स्त्री०) काफी अरसे से चली आनेवाली शिष्य-मण्डली ।

शिष्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ७ गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद शीषरूपक (पिं०) ।

शिस्त—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) लक्ष्य, निशाना, मछली पकड़ने का काँटा ।

शीकर—(संज्ञा, पु०, सं०) जल-कण, ओस-बिंदु, फुहार, कण, [सीकर (दे०)] । "श्रमशीकर श्यामल देह लसै"—[क० रामा०] ।

शीघ्र—(क्रि० वि०, सं०) सत्वर, तुरन्त, तत्क्षण, जल्दी, जल्द, तत्काल, चटपट, झटपट, बिना विलंब या देर, बेगि (व्रज०) ।—**गामी**–(वि०) तेज या जल्द चलने वाला, वेगवान । —**बुद्धि**–(वि०) तेज बुद्धिवाला ।—**लिपि**–(स्त्री०) वह लेखन-प्रणाली जो अत्यन्त शीघ्रता के साथ बोलने पर लिखी जा सकती है । [शार्टहैंड]

शीघ्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जल्दी, फुरती ।

शीत—(वि०, सं०) सर्द, ठंडा, शीतल । (संज्ञा, पु०) सर्दी, जाड़ा, ठंड, तुषार, ओस, जाड़े की ऋतु, प्रतिश्याय, सरदी, जुकाम, संनिपात ।—**कटिबन्ध**–(पु०) पृथ्वी के गोले में भू-मध्य रेखा से २३ अंश उत्तर के बाद और इतना ही दक्षिण के बाद के कल्पित विभाग जहाँ सर्दी अधिक पड़ती है (भू०) ।—**कर**–(पु०) चंद्रमा । —**कारी यंत्र**–ठंडा बनाने वाला एक यन्त्र । [रेफ्रिजरेटर]—**काल**–(पु०) सरदी या जाड़े की ऋतु, अगहन और पूष के महीने ।—**किरण**–(पु०) चंद्रमा ।—**ज्वर**–(पु०) जाड़ा देकर आने वाला ज्वर, [जूड़ी (दे०)] ।—**दीधित**–(पु०) चंद्रमा ।—**मयूख**–(पु०) चन्द्रमा, कपूर शीतांशु, शीतकर ।—**युद्ध**–(पु०) प्रचार के द्वारा अमैत्री भाव प्रदर्शन । [कोल्डवार]—**रश्मि**–(पु०) चंद्रमा ।

शीतल—(वि०, सं०) सर्द, ठंडा, प्रसन्न, [सीतल (दे०)] । "तुमहिं देखि शीतल भई छाती"—[रामा०] ।

शीतलचीनी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० शीतल + चीन-देश] कबाब-चीनी, [सीतलचीनी (दे०)] ।

शीतलता –(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ठंडापन, सरदी, [सीतलता (दे०)] ।

शीतलताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शीतलता] शीतलता, ठंढापन, ठंडक, [शितलाई (दे०)] ।

शीतला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चेचक, माता, विस्फोटक रोग, विस्फोटक की अधिष्ठात्री एक देवी ।

शीतलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शीतलता] शीतलता, [शितलाई, सितलाई (दे०)] ।

शीतलाष्टमी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) चैत्र-कृष्ण अष्टमी ।

शीतांग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक रोग, पक्षाघात, लकवा, अर्द्धांङ्ग ।

शीतांशु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हिमांशु, चंद्रमा, चाँद, हिमकर, शीतकर । "यति शीतांशुरस्तम्" —[स्फु०] ।

शीतार्त—(वि०, यौ०, सं०) शीत-पीड़ित, ठंड से कंपित, जाड़े से दुखी ।

शीतोष्ण—(वि०, यौ०, सं०) ठंडा-गर्म, सर्द-गर्म, सुख-दुख । "गात्रास्पर्शास्तु कौंतेय शीतोष्ण सुख-दुःखद"—[भा० गी०] ।

शीत्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) काम की अवस्था में संभोग्य स्त्री द्वारा 'सीसी' की आवाज ।

शीरा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चीनी या गुड़ को पानी में मिलाकर आग पर औटा कर गाढ़ा किया पदार्थ, चाशनी ।

शीरीं—(वि०, फ़ा०) मीठा, मधुर, प्रिय । [**जवांशीरीं** (यौ०)] ।

शीरीनी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मिठाई, मिष्टान्न, मिठास ।

शीर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) जीर्ण, पुराना, टूटा-फूटा, फटा-पुराना, मुरझाया हुआ, दुर्बल, कृश, पतला । "शीर्णपर्ण-फलाहाराः"—स्फु० ।

शीर्य—(वि०, सं०) नश्वर, भंगुर, नाशवान ।

शीर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) सिर, मूँड़, मुंड, माथा, अग्रभाग, चोटी, सिरा, सामना ।—**विन्दु**-(पु०) सिर के ऊपर की ओर सब से ऊंचा स्थान, शिखरविंदु । [**पदतल-विन्दु** (विलो०)] ।

शीर्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) चोटी, मस्तक, सिर, सिरा, किसी विषय का वह परिचायक संक्षिप्त शब्द या वाक्य जो बहुधा लेखादि के ऊपर रखा जाता है । [हेडिंग]

शील—(संज्ञा, पु०, सं०) व्यवहार, स्वभाव, आचरण, चाल ढाल, चरित्र, प्रवृत्ति, सद्वृत्ति, सदाचार, स्वभाव, संकोच, [**मुरौवत** (फ़ा०)], [सील (दे०)] । "लखन कहा मुनि शील तुम्हारा"—[रामा०] । संकोच मुरौव्वत ।

शीलवान्—(वि०) [सं० शीलवत्] अच्छे स्वभाव या आचरण का, सुशील, शीलवन्त । [**शीलवती** (स्त्री०)] ।

शीशा*—(संज्ञा, पु०, सं०) शिर, शीर्ष, माथा, मूँड़, मुंड, [शीशा, सीस, सीसा (दे०)] । "कर कुठार आगे यह शीशा"—[रामा०] ।—**महल**-(पु०) वह महल जिसकी दीवालों में शीशे लगे हों, [सीस-महल (दे०)] ।

शीशम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक पेड़, सिसपा ।

शीशा—(संज्ञा, पु०, अ०) खारी मिट्टी, रेह या बालू के गलाने से बनी एक पारदर्शी मिश्र धातु, काँच, आईना, दर्पण, आरसी, झाड़-फानूस आदि, काँच से बना सामान, [सीसा (दे०)] ।

शीशी—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० शीशा] काँच का छोटा पात्र, [सीसी (दे०)] । **मुहा०—शीशी सूँघाना**-औषधि-भरी शीशी सुंघा कर बेहोश करना ।

शीस—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं० शीर्ष] शिर, सिर, [सीस, सीसा (दे०)], मुंड़, मूँड़ । "तिय मिसु मीचु शीस पर नाची"—[रामा०] ।

शुंग—(संज्ञा, पु०, सं०) मगध का एक क्षत्रिय राज वंश (मौर्यों के पीछे) ।

शुंठि, शुंठी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सोंठ । "वचाभया शुंठि शतावरी समः"—[स्फु०] । "शुंठी कणा पुष्करजः कषायः"—लो० रा० ।

शुंड—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी की सूँड़, [सुंड (दे०)] ।

शुंडा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० शुंड] हाथी की सूँड़, शराब ।—**दंड**-(पु०) हाथी की सूड़ ।

शुंडी—(संज्ञा, पु०) [सं० शुंडिन] हाथी, गज, शराब बनाने वाला, कलवार ।

शुंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य जो दुर्गा जी के हाथ से मारा गया ।

शुक—(संज्ञा, पु०, सं०) तोता, [सुगना, सुग्गा (दे०)] शुकदेव जी, कपड़ा, वस्त्र, [सुक (दे०)] । "शुक-मुखादमृतद्रव संयुतम्" । "शुकस्तुतोऽपिच"—[नैषध] ।—**तरु**-(पु०) सिरीस वृक्ष ।—**देव**-(पु०) व्यास जी के पुत्र जो बड़े ज्ञानी थे ।—**नलिका न्याय**-लोभ में डालकर फँसाने का ढंग, नलिका लगाकर कुछ खाने का पदार्थ वहीं रख दिया जाता है, सुग्गे वहाँ खाने के लिए बैठ जाते हैं और लोभवश फँस जाते हैं, यह न्याय लोभवश फँसने के कार्य पर आधारित है ।—**वाहन**-(पु०) कामदेव की सवारी ।

शुकराना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक्र] कृतज्ञता, धन्यवाद, शुक्रिया, धन्यवाद के रूप में दिया गया धन ।

शुकाचार्य्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शुकदेव जी ।

शुक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) सड़ा कर खट्टी की गई काँजी, खटाई, सिरका । (वि०) अम्ल, खट्टा, अप्रिय, कठोर, नापसन्द, उजाड़, सुनसान ।

शुक्ति, शुक्ती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीपी, सीप, एक नेत्र-रोग, बवासीर रोग, उँगलियों के प्रथम पर्व के चिह्न (सामु०)। "रजत शुक्ति में भास जिमि" —[रामा०]।

शुक्तिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीपी, सीप, एक नेत्र रोग।

शुक्तिज, शुक्तिबीज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मोती, शुक्तिजात।

शुक्र—(संज्ञा, पु०, सं०) शुक्राचार्य्य, दैत्यगुरु (पुरा०) एक चमकीला ग्रह, सामर्थ्य, अग्नि, शक्ति, वीर्य्य, बल, गुरुवार के बाद और शनि से पूर्व का एक दिन, सुक, सुक्र।—**दोष**-(पु०) वीर्य संबंधी दोष।—**प्रमेह**-(पु०) वीर्यक्षीणता। (अ०) धन्यवाद।—**गुजार**-(वि०) कृतज्ञ, आभारी, एह-सानमंद।

शुक्रांग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गोरा, गौर शरीर।

शुक्राचार्य्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दैत्यों के गुरु एक ऋषि (पुरा०)।

शुक्रिया—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कृतज्ञता या धन्यवाद प्रकाश करना।

शुक्ल—(वि०, सं०) उज्ज्वल, श्वेत, धवल, उजला, सफेद, शुभ्र, निर्दोष। (संज्ञा, पु०) ब्राह्मणों की एक पदवी, चाँद्र मास का द्वितीय पक्ष।—**पक्ष**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चाँद्र, मास का द्वितीय पक्ष, अमावस्या के बाद की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक का पक्ष, उजेला पाख, [सुदी (दे०)]।

शुक्लांबर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्वेत वस्त्र। "शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।"

शुक्ला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सरस्वती।

शुक्लाभिसारिका—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) श्वेत वस्त्रादि पहिन चाँदनी रात में प्रिय-समीप जाने वाली नायिका (काव्य०)। [**कृष्णाभिसारिका** (विलो०)]।

शुचि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पवित्रता, शुद्धता, स्वच्छता। (**वि०**) पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ, [सुचि (दे०)]। "बोले शुचिमन लखन सन, वचन समय मनुहार"—[रामा०] साफ, निर्दोष, स्वच्छ हृदय वाला। [**शुचिता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

शुचिकर्म्मा—(वि०, यौ०) [सं० शुचिकर्म्मन्] कर्मनिष्ठ, सदाचारी, पवित्र कार्य करने वाला।

शुची—(वि०, दे०, सं०) साफ़, पवित्र।

शुतुर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ऊँट।—**मुर्ग**-(पु०) ऊँट की सी गर्दन वाला बहुत बड़ा पक्षी।

शुदनी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) होनहार, होतव्यता, भवितव्यता, होनी, नियति, भावी।

शुद्ध—(वि०, सं०) स्वच्छ, पवित्र, साफ़, उज्ज्वल, सफेद, सही, ठीक, अशुद्धि हीन, निर्दोष, ख़ालिस, बिना मिलावट का।—**पक्ष**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शुक्ल पक्ष।

शुद्धता—(संज्ञा, स्त्री०) शुद्ध या पवित्र होने का भाव या स्थिति।

शुद्धांत—(संज्ञा, पु०, सं०) अंतःपुर।

शुद्धात्मा—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव। (वि०) पवित्र, शुद्ध।

शुद्धापन्हुति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय को असत्य दिखाकर या उसका निषेध कर उपमान की सत्यता ठहराई जाये।

शुद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वच्छता, सफ़ाई, अशुद्ध को शुद्ध करने के समय का कृत्य, संस्कार या कार्य, मृतक अशौच के दूर करने को १० वें दिन का कार्य। "तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धि-मत्तरः"—रघु०।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह पत्र जो पुस्तकादि की अशुद्धियों का सूचक हो, शुद्धिसूचक लेख, शुद्धाशुद्ध-पत्र।

शुद्धोदन—(संज्ञा, पु०, सं०) शाक्य-वंशीय सुप्रसिद्ध गौतम बुद्धजी के पिता।

शुद्धयशुद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शुद्ध या अशुद्ध का भाव।

शुनःशेफ—(संज्ञा, पु०, सं०) महर्षि ऋचीक के पुत्र एक ऋषि (वैदिक काल)।

शुनासीर—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र।

शुनि—(संज्ञा, पु०, सं०) कुत्ता, स्वान। [**शुनी** (स्त्री०)]।

शुबहा—(संज्ञा, पु०, अ०) संदेह, शंका, शक, धोखा, भ्रम, वहम, [सुभा (दे०)]।

शुभंकर—(वि०, सं०) मंगल या कल्याण करने वाला।

शुभ—(वि०, सं०) मंगलप्रद, कल्याणकारी, उत्तम, अच्छा, पवित्र, भला, इष्ट। (संज्ञा, पु०) मंगल, भलाई, कल्याण, [सुभ (दे०)]। "राज्य देन कहँ शुभ दिन साधा"—[रामा०]।—**चिंतक**-(वि०)

भलाई या मंगल चाहन वाला, शुभेच्छु। कल्याण-कांक्षी, हितैषी खैरख्वाह । [**शुभचिंतन** (संज्ञा, पु०)] ।—**दर्शन**–(वि०) सुन्दर, मनोहर, मंगलमूर्ति ।—**सूचन**–(वि०) शुभ सूचना देने वाला ।

शुभांगी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दरी ।

शुभागमन—(संज्ञा, पु०, सं०) मंगलप्रद, सुन्दर आगमन ।

शुभाशीर्वाद—(संज्ञा, पु०, सं०) शुभ करने वाला आशीष-वचन ।

शुभेच्छु—(वि०, यौ०, सं०) भला चाहने वाला, हितैषी, शुभकांक्षी । [**शुभेच्छा** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

शुभ्र—(वि०, सं०) श्वेत, उज्ज्वल, धवल, सफ़ेद, [सुभ्र (दे०)] । **लो०**—"शुभ्राभ्र विभ्रम धर शशांक-कर सुन्दर" ।

शुभ्रता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्वेतता, उज्ज्वलता, सफ़ेदी ।

शुरुआत—(संज्ञा, स्त्री०) आरंभ ।

शुरुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शोरुवा] रसा, [सुरुवा (दे०)], विशेषत: मांस का पका रसा ।

शुरू—(संज्ञा, पु०) [अ० शुरुअ] प्रारंभ, आरंभ, आरंभस्थल, उत्थान, उद्गम आगाज़ । [**शुरुआत** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

शुल्क—(संज्ञा, पु०, सं०) घाट आदि का महसूल, दायज, दहेज, शर्त, बाजी, भाड़ा, किराया, मूल्य दाम, फ़ीस, किसी कार्य के बदले में दिया गया धन ।

शुश्रूषक—(संज्ञा, पु०, सं०) सेवा करने वाला, सेवक, दास, भृत्य, नौकर किंकर ।

शुश्रूषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परिचर्य्या, सेवा, खुशामद, टहल । [**शुश्रूष्य** (वि०)] । "गुरु शुश्रूषया विद्या" ।

शुषेण—(संज्ञा, पु०, सं०) वानरी सेना का एक वैद्य, [सुखेन (दे०)] ।

शुष्क—(वि०, सं०) [खुश्क फ़ा०] सूखा, नीरस, विरस, जिसमें मन न लगे, व्यर्थ, निरर्थक, निर्मोही, प्रमादि-विहीन ।

शुष्कता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नीरसता, हृदय-हीनता ।

शुहरत—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रसिद्धि, ख्याति ।

शूक—(संज्ञा, पु०, सं०) यव, जौ, सींकुर जो जव की बाल के आगे निकले रहते हैं । एक रोग, एक कीड़ा । "निवशते यदि शूकशिखापदे"—[नैष०] ।

शूकर—(संज्ञा, पु०, सं०) सुवर, सुअर, बाराह, विष्णु का तीसरा या बाराह अवतार (पुरा०) । [सूकर (दे०)] । [**शुकरी** (स्त्री०)] । "भर भर पेट विषय को धावै शूकर ग्रामी"—[विनय०] । —**क्षेत्र**–(पु०) नैमिषारण्य के समीप एक तीर्थ जो अब सोरों कहलाता है, [सूकरखेत (दे०)] ।

शूची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सूची] सुई, [सूजी (दे०)] ।

शूद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) चार वर्णों में से आर्य्यों का चौथा या अंतिम वर्ण जो अन्य तीन वर्णों की सेवा करे, नीच जाति, निकृष्ट, या बुरा व्यक्ति [सूद (दे०)] । "बादहिं शूद्र द्विजन सन, हम तुमते कछु घाट"—[रामा०] ।—**जन्मा**–(वि०) शूद्र से जन्मा ।

शूद्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) विदिशा नगरी का एक प्राचीन राजा और संस्कृत के मृच्छ-कटिक नाटक के निर्माता एक महाकवि, शूद्र जाति का एक राजा, **शम्बूक** ।

शूद्रता—(संज्ञा, पु०, सं०) शूद्रत्व, नीचता ।

शूद्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शूद्र जाति या शूद्र व्यक्ति की स्त्री ।

शूद्राणी, शूद्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शूद्र की स्त्री ।

शूना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान में छोटे जीवों (चींटी आदि) की हत्या हुआ करती है । जैसे—चक्की, चूल्हा, पानी के बरतन आदि ।

शून्य—(संज्ञा, पु०, सं०) आकाश, खाली जगह, एकांतस्थान, बिन्दी, विन्दु, सिफ़र । अभाव, स्वर्ग, परमेश्वर, विष्णु, [सुन्न (दे०)] । [**शून्यता** (संज्ञा, स्त्री०)] । (वि०) जिसके भीतर कुछ न हो, खाली, रहित, रिक्त, विहीन, निराकार ।—**पथ**–(पु०) आकाश, निर्जन-पथ ।—**मना**–(वि०) अन्यमनस्क, किसी कार्य में लगे रहने पर भी मन को अन्यत्र लगाये रखने वाला ।—**वाद**–(पु०) संसार को शून्य मानने का एक दार्शनिक विचार या सिद्धान्त, बौद्धमत का एक सिद्धांत ।—**वादी**–(पु०) नास्तिक, ईश्वर और जीव में विश्वास न रखने वाला, बौद्धमत के लोग ।

शून्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रिक्तता, खाली या छूँछापन, निर्जनता ।

शूप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूर्प] अन्नादि पछोरने का सूपा, [सूप (दे०)] । "लाला परे शूप के कोन"—[जनश्रुति] ।

शूर—(संज्ञा, पु०, सं०) वीर, सूरमा, बहादुर, योद्धा, सैनिक, सूर्य, सिंह, कृष्ण के पितामह, विष्णु, [सूर (दे०)] ।—**वीर**-(पु०) बहादुर, सूरमा ।—**सेन**-(पु०) प्राचीन मथुरा नरेश जो श्रीकृष्ण जी के पितामह थे, मथुरा प्रदेश (प्राचीन नाम) ।

शूरण, शूरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूरण] जमीकंद, [सूरन (दे०)] ।

शूरता—(संज्ञा, स्त्री०) बहादुरी, वीरता, [सूरता (दे०)] । "सोई शूरता कि अब कहु पाई"—[रामा०] ।

शूरताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शूरता] बहादुरी, वीरता ।

शूरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूर] वीर, सामन्त, बहादुर, [सूरा (दे०)] । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूर्य] सूर्य ।

शूर्प—(संज्ञा, पु०, सं०) अन्नादि पछोरने का सूप, [सूपा (दे०)] ।—**णखा**-(स्त्री०) [सूर्पनखा (दे०)], रावण की बहिन, लक्ष्मण द्वारा पंचवटी मे इसके नाक-कान काटे गये थे ।—**नखा**-(स्त्री०) देखिए—शूर्पणखा ।

शूर्पारक—(संज्ञा, पु०, सं०) बंबई प्रान्त के सोपरा स्थान का पुराना नाम ।

शूल—(संज्ञा, पु०, सं०) त्रिशूल, बरछी, जैसा एक अस्त्र (प्राचीन), भाला, शूली, प्राण-दंड देने की सूली, वायु-विकार जन्य पेट का तेज दर्द, दुःख, कोंच, पीड़ा, टीस, एक अशुभयोग (ज्यो०), बड़ा और लंबा नुकीला काँटा, मृत्यु, पताका, झंडा, सींक, छड़, सलाख । (वि०) नोकदार वस्तु, नुकीला ।—**धर, धारी**-(संज्ञा, पु०) [सं० शूल-धारिन्] महादेव जी ।—**पाणि**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महादेव जी, [सूलपाणी (दे०)] ।—**भृत्**-(संज्ञा, पु०, सं०) शिव जी ।—**हस्त**-(पु०) शंकर जी ।

शूलना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शूल+ना प्रत्य०] शूल के तुल्य गड़ना, पीड़ा या दुःख देना ।

शूलि—(संज्ञा, पु०, सं०) महादेव जी । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) सूली ।

शूलिक—(संज्ञा, पु०, सं०) फाँसी या सूली देने वाला ।

शूली—(संज्ञा, पु०) [सं० शूलिन्] महादेव जी, शिव जी, शूल रोगी, एक नरक । (संज्ञा, स्त्री०) सूली पर चढ़ने वाला, सूली देने वाला । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शूल] पीड़ा, दर्द, सूल, दुःख ।

श्रृंखल—(संज्ञा, पु०, सं०) मेखला, जंजीर, सिक्कड़, साँकल, हथकड़ी, बेड़ी ।

श्रृंखलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्रमबद्ध, या सिलसिले वार होने का भाव ।

श्रृंखला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जंजीर, साँकल, कटि वस्त्र, मेखला, तगड़ी, करधनी, श्रेणी, पंक्ति, क्रम, एक अर्थालंकार जिसमें कहे हुये पदार्थों का यथाक्रम वर्णन किया जाय, यथाक्रम, यथासंख्य (अ० पी०) ।—**बद्ध**-(वि०) क्रमबद्ध, यथाक्रम, सिलसिलेवार, श्रृंखला से बंधा हुआ ।

श्रृंखलित—(वि०) जंजीर या सिकड़ी से बँधा हुआ या जकड़ा हुआ, यथाक्रम ।

श्रृंग—(संज्ञा, पु०, सं०) पर्वत, शिखर, चोटी का सर्वोच्च भाग, गाय आदि के सिर के सींग, कंगूरा, श्रृंगी या सिंगी नाम का एक बाजा, पंकज, कमल, ऋष्य श्रृंग ।—**पुर**-(पु०) देखिए—श्रृंगवेरपुर ।

श्रृंगवेरपुर—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीराम के प्रिय निषाद-राज गुह का प्राचीन नगर, सिंगरौर (वर्तमान) ।

श्रृंगार—(संज्ञा, पु०, सं०) रस-राज, काव्य के नौ रसों में से सर्वप्रधान एक रस, जिसका स्थायी भाव रति, आलम्बन-विभाव नायक-नायिका, उद्दीपन वाटिका, सुन्दर वायु आदि, नायक-नायिका के मिलन और बिलगाव के आधार पर इसके दो भेद हैं :—संयोग और वियोग या विप्रलंभ; इष्टदेव को पति और निज को पत्नी मान कर की गई माधुर्य भाव की भक्ति, स्त्रियों का वस्त्रा-भरण से स्वदेह सजाना, सजावट, बनाव चुनाव, श्रृंगार सोलह है; किसी वस्तु को शोभा देने वाला साधन । [सिंगार, सिंगार (दे०)] ।—**चेष्टा**-(स्त्री०) कामचेष्टा ।—**भाषित**-(पु०) प्रेमालाप, प्रेम-वार्त्ता ।—**वेश**-(पु०) वह आकर्षक वेश जिसमें प्रेमी प्रियसी से मिलने के लिए जाता है ।—**हाट**-

(स्त्री०) वह बाजार जहाँ रंडियाँ रहती हों, [सिगारहाट (दे०)]।

शृंगारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० शृंगार + ना प्रत्य०] सजाना, सँवारना, शृंगार करना, [सिगारना (दे०)]।

शृंगारिक—(वि०, सं०) शृंगार संबंधी।

शृंगारिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्रग्विणी छंद (पिं)।

शृंगारित—(वि०, सं०) सजाया हुआ, शृंगार किया हुआ, अलकृत, सुसज्जित।

शृंगारिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृङ्गार + इया प्रत्य०] वह पुरुष जो देव मूर्त्तियों का शृंगार करता हो, बहुरूपिया, [सिगारिया (दे०)]।

शृंगि—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंगी मछली। (संज्ञा, पु०) [सं० शृंगिन्] सींग वाला।

शृंगी—(संज्ञा, पु०) [सं० शृंगिन्] सींग वाला पशु, वृक्ष, हाथी, पहाड़, शमीक ऋषि के पुत्र, एक ऋषि जिनके श्राप से अभिमन्यु पुत्र राजा परीक्षित को तक्षक ने काटा था, कनफटे के बजाने का सींग का एक बाजा, महादेव जी, शिव जी, ऋषभक नामक एक अष्टवर्गीय औषधि (वैद्य०)।—**गिरि**—(पु०) वह प्राचीन पहाड़ जहाँ शृंगी ऋषि तपस्या करते थे।

शृगाल—(संज्ञा, पु०) [सं० शृंगाल] सियार, गीदड़, स्यार।

शृष्टि—(संज्ञा, पु०, सं०) कंस का एक भाई (पुरा०)।

शेख—(संज्ञा, पु०, अ०) पैगम्बर मुहम्मद के वंशज मुसलमानों की उपाधि, मुसलमानों के चार वर्गों में से प्रथम श्रेष्ठवर्ग, बुजुर्ग, बड़ा, मुसलमान-धर्माचार्य। [**शेखानी** (स्त्री०)]। बाकी, समाप्त [सेष (दे०)], एक नाग-राज, शेष जी।—**चिल्ली**—(पु०) एक कल्पित मूर्ख, बड़े-मंसूबे बाँधने वाला, एक मूर्ख मसखरा।

शेखर—(संज्ञा, पु०, सं०) सिर, माथा, किरीट, मुकुट, शीर्ष, चोटी, सिरा, शिखर (पर्वतशृंग) सर्वश्रेष्ठ या उत्तम वस्तु या व्यक्ति, टगण का पाँचवा भेद (।।ऽ।-पिं०)।

शेखावत—(संज्ञा, पु०) [अ० शेख] कछवाहे राजपूतों की एक शाखा।

शेखी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अहंकार, घमंड, गर्व, शान, अकड़, ऐंठ, डींग।—**बाज़**—(वि०, फ़ा०) अभिमानी, घमंडी, अहंकारी, झूठी डींग मारने वाला। मुहा०—**बघारना (हाँकना या मारना)**—बढ़-बढ़ कर बातें करना, डींग मारना।—**झाड़ना (निकालना)**—गर्व दूर करना।—**भूलना (भुलाना)**—शान या गर्व दूर करना (होना)।—**दिखाना**—शान दिखाना। [**शेखी-शना** (यौ०)]।

शेर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) व्याघ्र, बाघ, नाहर, सिंह, बिल्ली की जाति का एक भयावना हिंसक पशु। [**शेरनी** (स्त्री०)]।—**दहाँ**—(वि०, फ़ा०) जिसका मुँह शेर का सा है, जिसके छोरों पर शेर का मुँह बना हो। (संज्ञा, पु०) शेर के मुँह की सी घुंडी वाला, पीछे संकरा और आगे चौड़ा घर।—**दिल**—(वि०, यौ०, फ़ा०) साहसी या वीर हृदयी। [**शेरदिली** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**पंजा**—(पु०) शेर के पंजे की आकृति का एक अस्त्र, बघनख, बघनहा नामक एक अस्त्र।—**बबर**—(पु०) केहरी, केसरी, सिंह, बड़ा व्याघ्र। मुहा० —**होना**—निर्भीक और धृष्ट होना, अत्यन्त वीर और साहसी व्यक्ति। (संज्ञा, पु०, अ०) उर्दू फारसी और अरबी के छंद के दो चरण। "कमन गुफ्ता शेर हमचूँ सीन ऐनों, दाल, ये"—सादी०।—**ख्वानी**—(स्त्री०) शेर कहना।

शेल—(संज्ञा, पु०, सं०) सेल, बर्छा, भाला।

शैलु—(संज्ञा, पु०, दे०) मेथी का साग।

शेरवानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अंग्रेजी ढंग के काट का एक प्रकार का अंगा, अचकन, चपकन।

शेवाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शैवाल] सेवार, जल की घास, शैवाल।

शेष—(संज्ञा, पु०, सं०) बाकी, बची वस्तु, अध्याहार, किसी वाक्य का अर्थ करने को ऊपर से लाया गया शब्द, समाप्ति, अंत, सहस्र फनों का सर्पराज, शेषनाग, जिसके फनों पर पृथ्वी ठहरी है (पुरा०), बलराम, लक्ष्मण, एक दिग्गज, परमेश्वर, टगण का पाँचवाँ भेद, छप्पय का २५वाँ भेद (पिं०), घटाने से बची संख्या (गणि०)। (वि०) बचा हुआ, बाकी, खतम, समाप्त, अंत को प्राप्त।—**धर**,—**भृत्**—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव जी।—**नाग**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपने सहस्रफनों पर पृथ्वी को धारण करने वाला सर्पराज।—**राज**—(संज्ञा, पु०, सं०) दो मगण का एक वर्णिक छंद या वृत्त, विद्युल्लेखा (पिं०)।—**शायी**—(पु०) विष्णु।

शेषर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिखा] शेखर, सिर, शीर्ष, मस्तक, चोटी ।

शेषवत—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुमान के तीन भेदों में से दूसरा, जहाँ कार्य के देखने से कारण का ज्ञान या निश्चय हो (न्या०) ।

शेषांश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अवशिष्ट या अंतिम भाग, बचा हुआ अंश ।

शेषाचल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक पर्वत (दक्षिण) ।

शेषावस्था—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वृद्धापन, बुढ़ापा, अंत की दशा ।

शेषोक्त—(वि०, सं०) अंतिम कथन, अंत में कहा गया ।

शैतान—(संज्ञा, पु०, अ०) अजाजील फरिश्ता का वंशज एक तमोगुणी देव जो लोगों को बहका कर कुकर्म कराता है—(मुसल०) । भूत, प्रेत, दुष्ट देव-योनि, दुष्ट व्यक्ति, बदमाश, नटखट । **मुहा०—की आँत**-बहुत ही लम्बी चीज ।—**का बच्चा**-दुष्ट आदमी ।—**के कान काटना**-शरारत मे आगे बढ़ जाना ।—**सवार होना**-शरारत करने पर आरूढ़ होना ।

शैतानी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० शैतान] दुष्टता, पाजीपन, शरारत, बदमाशी । वि० शैतान का, शैतानसम्बन्धी, नटखटी, दुष्टतापूर्ण । **मुहा०—चर्खा**-शरारत से भरा, उलझन का काम ।

शैत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) शीतता, शीतलता, ठंडक, सर्दी ।

शैथिल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) शिथिलता, ढीलापन, सुस्ती ।

शैल—(संज्ञा, पु०, सं०) पहाड़, पर्वत, शिलाजीत, चट्टान, [सैल (दे०)] । "नाथ शैल पर कपिपति रहई"—[रामा०] ।—**कुमारी**-(स्त्री०) शैलकिशोरी, पार्वती जी । "सुनत वचन कह शैलकुमारी"—[रामा०] ।—**गंगा**-(स्त्री०) गोवर्द्धन पहाड़ से निकली एक नदी ।—**जा**-(स्त्री०) शैलतनया, पार्वती जी, दुर्गा जी ।—**तटी**-(स्त्री०) पर्वत की तराई ।—**धर**,—**भृत**-(पु०) श्रीकृष्ण जी, गिरिधर, गिरिधारी ।—**नंदनी**-(स्त्री०) पार्वती जी, शैलजा, शैलात्मजा ।—**पति**,—**राज**-(पु०) हिमालय, शैलाधिपति, शैलनायक, शैलनाथ, शैलेन्द्र, शैलेश ।—**पुत्री**-(स्त्री०) पार्वती जी, शैल-तनुजा ।—**सुता**-(स्त्री०) पार्वती जी, शैल-कन्या ।

शैलाट—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंह, किरात, भील ।

शैलात्मजा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उमा-पार्वती ।

शैली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ढंग, ढब चाल, प्रणाली, प्रथा, तरीका, तर्ज, रीति, पद्धति, कौशल रस्म-रिवाज, वाक्य-रचना का ढंग । [स्टाइल]

शैलूष—(संज्ञा, पु०, सं०) नाटक खेलने वाला, नट, बहुरूपिया, धूर्त, छली । "अथोपपत्तिं छलना-परोऽपरामवाप्य सैलूष इवैष भूमिकाम्"—माघ० ।

शैलेंद्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हिमालय ।

शैलेय—(वि०, सं०) पथरीला, पत्थर का पहाड़ी । (संज्ञा, पु०) सेंधा नमक, शिलाजीत, छरीला, सिंह ।

शैलोदक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शैल-जल, प्रत्येक वस्तु को पत्थर कर देने वाला एक पर्वतीय जल ।

शैल्य—(वि०, सं०) पत्थर सरीखा, पथरीला । शिला-सम्बन्धी ।

शैव—(वि०, सं०) शिव का, शिव-संबंधी । (संज्ञा, पु०) शिवोपासक, शैवमतानुयायी, पाशुपात अस्त्र, धतूरा, शिव-भक्त । "यं शैवाः समुपासते शिव इति"—ह० ना० ।

शैवलिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी, सरिता ।

शैवाल—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सिवार, सेवार, जल-मल । "शैलोपमा शैवल मंजरीणां"—रघु० ।

शैवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वती, दुर्गा । (वि०) शिव या शैव सम्बन्धी ।

शैब्या—(संज्ञा स्त्री०, सं०) सत्यव्रती अयोध्या नरेश हरिश्चंद्र की रानी और रोहिताश्व की माता ।

शैशव—(संज्ञा, पु०, सं०) शिशुता, शिशु या बालक सम्बन्धी, बाल्यावस्था-सम्बन्धी, बच्चों का । "शैशव शेषवानयम्"—[नैषध] । (संज्ञा, पु०, सं०) बालकपन, लड़कपन, शिशु-सा व्यवहार ।

शैशुनाग—(संज्ञा, पु० सं०) प्राचीन मगध-देशाधिपति शिशुनाग का वंशज ।

शोक—(संज्ञा, अ०, सं०) दुःख, संताप, रंज, [सोक (दे०)], किसी प्रिय वस्तु के अभाव या पीड़ा से उत्पन्न क्षोभ । "यह सुनि समुझि शोक परिहरहूँ"—[रामा०] ।—**विह्वल**-(वि०) शोक

से आकुल ।—**संतप्त**–(वि०) शोक से पीड़ित, दुःखी ।—**हर**–(वि०) दुख-विनाशक ।—**हार**–(पु०) तीन मात्राओं का एक मात्रिक छन्द, शुभगी (पिं०) ।

शोकाकुल—(वि०, यौ०, सं०) संताप या दुःख से व्याकुल, शोक-पीड़ित, शोकातुर, शोकार्त्त ।

शोकातुर, शोकार्त्त—(वि०, सं०) संताप से व्याकुल, शोक-पीड़ित, शोकाकुल ।

शोकापह—(वि०, यौ०, सं०) दुःखनाशक, शोक-विनाशक ।

शोकाभिभूत—(वि०, सं०) शोक से पीड़ित ।

शोकावेग—(संज्ञा, पु०, सं०) दुःख का वेग, गम का दौर ।

शोख—(वि०, फ़ा०) धृष्ट, ढीठ । नटखट, शरीर, चंचल, गहरा चमकदार रंग । (**शोखी** [संज्ञा, स्त्री०)] ।

शोखी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चंचलता, ढिठाई, शरारत ।

शोच—(संज्ञा, पु०) [सं० शोचन] परिताप, संताप, शोक, दुःख, चिंता, फिक्र, [सोच (दे०)] । "फिर न शोच तन रहै कि जाऊं"—[रामा०] ।

शोचनीय—(वि०, सं०) चिंतनीय, जिसे देख दुःख हो, अति हीन-दीन, बुरा । "शोचनीय नहिं अवध-भुवालू"—[रामा०] ।

शोच्य—(वि०, सं०) दयनीय, शोचनीय ।

शोण—(संज्ञा, पु०, सं०) लालिमा, अरुणता, लाली, लाल, रंग, अग्नि, रक्त, सोन नदी ।

शोणित—(वि०, सं०) लाल, रक्त वर्ण का । (संज्ञा, पु०) रुधिर रक्त, लोहू, [सोनित (दे०)] । "तव शोणित की प्यास, तृषित रामशायक-निकर" —[रामा०] ।

शोथ—(संज्ञा, पु०, सं०) [सोथ (दे०)] सूजन, वरम, किसी प्राणी के किसी अंग का फूल या सूज उठना ।

शोध—(संज्ञा, पु०, सं०) खोज, शुद्धि-संस्कार, दुरुस्ती, ठीक करना, अदा या चुकता होना, परीक्षा, जाँच, अन्वेषण, खोज । "मंदिर मंदिर प्रति कर शोधा"—[रामा०] ।

शोधक—(संज्ञा, पु०, सं०) शोधने वाला, सुधारक, खोजने वाला, अन्वेषक, गवेषक ।

शोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) साफ या शुद्ध करना, सुधारना, शुद्ध, दुरुस्त या ठीक करना, संस्कार करना, जाँच, छान-बीन, विरेचन, दस्तों से उदर शुद्ध करना, खोजना या ढूंढ़ना, अन्वेषण, ऋण चुकाना, प्रायश्चित, औषधार्थ धातुओं का संस्कार करना । [**शोधित, शोधनीय, शोध्य** (वि०)] ।

शोधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० शोधन] साफ या शुद्ध करना, सुधारना, ठीक करना, औषधार्थ धातुओं का संस्कार करना, खोजना, ढूंढ़ना [साधना (दे०)] । "अहा दुष्ट तोहिं अतिशय शोधा"—[रामा०] ।

शोधनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बुहारी, बढ़नी ।

शोधवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० शोधना प्रेरणा० रूप] शुद्ध करना, ढुंढ़वाना, खोजवाना । [**शोधाना, शोधावना** (स० रूप)] ।

शोधैया—(संज्ञा, पु०) [हि० शोधना+ऐया प्रत्य०] शोधन वाला ।

शोध्य—(वि०, सं०) शोधनीय ।—**पत्र**–(पु०) अशुद्धियाँ ठीक करने के लिए छापने वाली सामग्री का प्रतिलिपि । [प्रूफ]

शोबदा—(संज्ञा, पु०, अ०) इन्द्रजाल, जादू ।

शोभ—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० शोभा] शोभा, सुन्दरता, । "चढ़ी जो निज मंदिर शोभा बढ़ी तरुनी अवलोकन को रघुनंदन"—[रामा०] ।

शोभन—(वि०, सं०) छबिमान, शोभायुक्त, सुन्दर, मनोहर, सुहावना, उत्तम, श्रेष्ठ शुभ । [**शोभनीय, शोभित** (वि०)] । (संज्ञा, पु०) इष्टियोग, शिव, अग्नि, २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद, सिंहिका (पिं०), सौंदर्य, भूषण, कल्याण, मंगल, दीप्ति, सुषमा । "शोभन कार्य ठयो"—[रामा०] ।

शोभना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दर स्त्री, हरिद्रा हलदी । (क्रि० स०, दे०) [सं० शोभित] मनोरम लगना, शोभित होना, [सोभना, सोहना (दे०)] ।

शोभांजन—(संज्ञा, पु०, सं०) सहिंजन वृक्ष ।

शोभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कांति, आभा, वर्ण, सुन्दरता, छबि, छटा, दीप्ति, रंग, सजावट, २० वर्णों का एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं०) । [सोभा (दे०)] । "शोभासींव सुभग दोउ बीरा"—[रामा०] ।

शोभान्वित—(वि०, सं०) सौंदर्यपूर्ण ।

शोभायमान—(वि०, सं०) छवियुक्त, सुन्दर, सोहता हुआ, सुशोभित ।

शोभित—(वि०, सं०) सजता हुआ, सुन्दर, सजीला, अच्छा या मंजुल लगता हुआ। "शोभित भये मराल ज्यों, शंभुसहित कैलास "—[रामा०]।

शोर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) कोलाहल, धूम, गुलगपाड़ा, ख्याति। "बड़ा शोर सुनते थे पहलू में दिल का।—**गुल**-(पु०) हल्ला-गुल्ला।

शोरवा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उबली वस्तु का रसा, [**जूस** (अं०)] यूष (सं०) उबाली वस्तु का पानी, [जूस (दे०)]।

शोरा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० शोर] मिट्टी का क्षार, [सोरा (दे०)]।

शोला—(संज्ञा, पु०, अ०) आग की लपट या ज्वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) वृक्ष विशेष जिसकी छाल से कपड़ा बनाया जाता है।

शोशा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) निकली नोक, विचित्र बात। **मुहा०—छोड़ना**-अनूठी बात कहना।

शोष—(संज्ञा, पु०, सं०) सुखना, खुश्क या रूखा होना, देह का घुलना या क्षीण होना, यक्ष्मा रोग का एक भेद (वैद्य०), क्षयी, बच्चों का सुखा रोग, सुखंडी (प्रान्ती०)।

शोषक—(वि०, पु०, सं०) सोखने या सुखाने वाला, क्षीण करने वाला, रस जलादि का खींचने वाला। [**शोषिका** (स्त्री०)]। " शशि शोषक पोषक समुझि, जग यश-अपयश दीन्ह "—[रामा०]।

शोषण—(संज्ञा, पु०, सं०) सोखना, सुखाना, खुश्क या सूखा करना, क्षीण करना, घुलाना, नाश करना, कामदेव का एक बाण।

शोषित—(वि०, सं०) सुखाया हुआ, नष्ट किया हुआ, समाप्त किया हुआ।

शोहदा—(संज्ञा, पु०, अ०) गुंडा, बदमाश, लुच्चा, लंपट, व्यभिचारी।

शोहरत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) ख्याति, प्रसिद्ध, नामवरी, धूम, जनरव, किंवदंती।

शोहरा—(संज्ञा, पु०) [अ० शोहरत] शोहरत, ख्याति, प्रसिद्ध, नामवरी, धूम।

शौंडिक—(संज्ञा, पु०, सं०) कलवार जाति।

शौक—(संज्ञा, पु०, अ०) किसी वस्तु के उपयोग की तीव्र अभिलाषा, प्राप्ति की लालसा, चाव, चाह। **मुहा०—करना**-प्रयोग या भोग करना।—**से**-प्रसन्नतापूर्वक, आकांक्ष, हौसला, व्यसन, चसका, प्रवृत्ति, झुकाव।

शौकत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शान, सजधज, ठाट-बाट, ठाठ।

शौकिया—(क्रि० वि०, अ०) शौक से, शौक के साथ, शौक के लिए।

शौकीन—(संज्ञा, पु०) [अ० शौक+ईन प्रत्य०] शौक करने वाला, बना-ठना या सजा रहने वाला।

शौकीनी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० शौकीन+ई प्रत्य०] शौकीन होने का कार्य या भाव।

शौक्तिक, शौक्तिकेय—(संज्ञा, पु०, सं०) मोती।

शौच—(संज्ञा, पु०, सं०) पावनता, पवित्रता, शुद्धता, स्वच्छता से रहना, शुद्ध जीवन बिताना, प्रातःकाल उठकर प्रथम करने के कार्य, [सौच (दे०)], मल त्याग करना, नहाना आदि। "सकल शौच करि जाय अन्हाये"—[रामा०]।

शौचागर, शौचालय—(पु०) शौचगृह।

शौत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सपत्नी] सपत्नी, सवत, [सवति (दे०)]।

शौध*—(वि०, दे०) [सं० शुद्ध] पवित्र, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ, [सौध (दे०)]।

शौनक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक पुराने ऋषि।

शौरसेन—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रज-मंडल का पुराना नाम।

शौरसेनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शौरसेन प्रान्त की प्राचीन प्राकृत भाषा या बोली जिससे ब्रजभाषा निकली है, नागर या एक प्राचीन अपभ्रंश भाषा।

शौरि—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण जी।

शौर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) शूरता, बहादुरी, वीरता, आरभटी नामक वृत्ति (नाट०)।

शौहर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भर्ता, स्त्री का स्वामी, पति, मालिक, खाविन्द।

श्मशान—(संज्ञा, पु०, सं०) मरघट, [समसान, मसान (दे०)]।—**पति**-(पु०) शिव जी, [मसानपति (दे०)], चांडाल, डोम।—**साधन**-(पु०) तांत्रिकों का एक मंत्र-साधन जो अर्धरात्रि को मुर्दे के सीने पर बैठकर किया जाता है।

श्मश्रु—(संज्ञा, पु०, सं०) मूँछ, मुँह या ओंठों पर के बाल, दाढ़ी, मूछ।

श्याम—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण, कन्नौज से पश्चिम का देश (प्राची०), मेघ, भारत से पूर्व श्याम देश। (वि०) आँवला, काला। [**श्यामता**,

श्यामलता (संज्ञा, स्त्री०)]।—कर्ण-(पु०) ऐसा घोड़ा जिसके एक या दोनों कान काले हों और सारा शरीर श्वेत हो, [स्यामकरन (दे०)]। "श्याम कर्ण अगनित हय होते"—[रामा०]। —जीरा-(पु०) काली बाल वाला एक धान, काला या स्याहजीरा।—टीका-(पु०) काजल का टीका जो दृष्टि-दोष के बचाने को लड़कों के माथे पर लगाया जाता है, [दिठौना (ब्र०)]।—सुन्दर-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्री कृष्ण जी, [श्यासुन्दर (दे०)], एक वृक्ष। "श्यामसुन्दर ते दास्यः कुर्वाणि तवोदितम्"—[भा० दे०]।

श्यामता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृष्णता, कालिमा, साँवलापन, कालापन, उदासी, मलिनता, [स्यामता, स्यामताई (दे०)]। "तव मूरति तेहि उर बसै, सोइ श्यामता भास"—[रामा०]।

श्यामल—(वि०, सं०) साँवला, काला। [श्यामलता (संज्ञा, स्त्री०)]। "श्यामल गौर सुभग दोउ वीरा"—[रामा०]।

श्यामलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्यामता।

श्यामा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राधिका, राधा जी, एक गोपी, मधुर और मृदु स्वर वाला एक काला पक्षी, सोलह वर्ष की स्त्री, सुरसा क्षुप, तुलसी, काली गाय, कोयल, यमुना, रात, स्त्री। (वि०) काली, श्यामरंग वाली, साँवली। "यो भजेतसमुधु श्यामाम्"—[लो० रा०]। "श्यामा वाम सुतरु पर देखी"—[रामा०]।

श्यामाक—(संज्ञा, पु०, सं०) सावाँ नामक एक प्रकार का अन्न।

श्यामिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कालापन, श्यामता।

श्याल—(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्री का भाई, साला, बहनोई, बहिन का पति। (दे०) [सं० शृंगाल] स्यार, सियार।

श्यालक—(संज्ञा, पु०, सं०) साला, बहनोई।

श्याला—(संज्ञा, पु०, सं०) साला, बहनोई। "श्यालः संबंधिनस्तथा"—[भ० गी०]।

श्येन—(संज्ञा, पु०, सं०) बाज या शिकरा पक्षी, दोहे का चौथा भेद (पिं०)।

श्येनिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मादा बाज, श्येनी ११ वर्णों का एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं०)।

श्येनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मादा, बाज, श्येनिका, पक्षियों की माता तथा कश्यप की एक कन्या (मार्क० पु०)।

श्योनाक—(संज्ञा, पु०, सं०) लोध्र, सोनापाढ़ी वृक्ष, लोध।

श्रद्धा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बड़ों के प्रति पूज्य भाव, आदर, प्रेम, सम्मान, भक्ति, आस्था, आप्त पुरुषों तथा वेदादि के वाक्यों में विश्वास, कर्दम-मुनि की कन्या जो अत्रिमुनि को ब्याही थी। "श्रद्धा बिना भक्ति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम" —[रामा०]:

श्रद्धान्—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रद्धा।

श्रद्धालु—(वि०, सं०) श्रद्धावान्, श्रद्धायुक्त।

श्रद्धावान्—(संज्ञा, पु०) [सं० श्रद्धावत] श्रद्धायुक्त, धर्म्मनिष्ठ, श्रद्धालु।

श्रद्धास्पद—(वि०, सं०) श्रद्धेय, पूज्य, पूजनीय, आदरणीय।

श्रद्धेय—(वि०, सं०) पूज्य, श्रद्धास्पद।

श्रम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०, सं०) मेहनत, परिश्रम, मशक्कत क्लांति, थकावट, दुख, क्लेश, कष्ट, पसीना, परेशानी, दौड़धूप, प्रयास, स्वेद, व्यायाम, एक संचारी भाव (सा०) किसी कार्य के करने से संतुष्टि तथा शैथिल्य, [स्रम (दे०)]। "गुरुहिं उरिन होतेउ श्रम थोरे"—[रामा०]।—कण-(पु०) श्रमसीकर, पसीने की बूँद। "श्रम कण सहित श्याम तनु पेखे"—[रामा०]।—जल-(पु०) स्वेद, पसीना, श्रम-सलिल, श्रम विंदु।—जित-(वि०) अति परिश्रम से भी न थकने वाला।—जीवी-(वि०) श्रम से पेट पालने वाला, परिश्रम करके जीवन-निर्वाह करने वाला।—विंदु-(पु०) श्रमसीकर, पसीने की बूँद। "श्यामगात श्रमविंदु सुहाये"—[रामा०]।—वारि-(पु०) स्वेद, पसीना, श्रम सलिल।—विभाग-(पु०) किसी कार्य के भिन्न-भिन्न विभागों के लिए अलग अलग व्यक्तियों की नियुक्ति। [लेबर डिपार्टमेंट]।—सलिल-(पु०) पसीना।—साध्य-(वि०) जो कार्य परिश्रम करने के बाद पूर्ण हो सके।—सीकर-(पु०) पसीने की बूँद। "श्रम-सीकर साँवरे देह लसै मनो रात महातम तारक में"—कवि०।

श्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) बौद्धमत का संन्यासी, मुनि, यति, मजदूर।

श्रमार्जित—(संज्ञा, पु०, सं०) परिश्रम से प्राप्त, श्रमोपार्जित।

श्रमिक—(संज्ञा, पु०, सं०) शारिरिक काय एवं परिश्रम करके अपनी जीविका चलाने वाला व्यक्ति।

[लेबर]—**कल्याण केन्द्र**-(पु०) श्रमिक वर्ग के हितार्थ कार्य किये जाने का स्थान। [लेबर वेलफेयर सेन्टर]

श्रमित—(वि०, सं०) श्रांत, थका हुआ, श्रम से शिथिल, कृत श्रम।

श्रमी—(संज्ञा, पु०) [सं० श्रमिन्] मेहनती, परिश्रमी, मजदूर, श्रमजीवी।

श्रवण—(संज्ञा, पु०, सं०) शब्द का बोध करने वाली इन्द्रिय, कर्ण, कान, [स्रवन, स्रौन (दे०)] शास्त्रादि या देव-चरित्रादि सुनना तथा तदनुकूल करना, एक प्रकार की भक्ति, वैश्य तपस्वी अंधक मुनि का पुत्र, [सरवन (दे०)], वाणाकार २२ वाँ नक्षत्र (ज्यो०)।—**विद्या**-(स्त्री०) कान से सुनकर प्राप्त की गयी विद्या।

श्रवन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रवण] कान, कर्ण, [स्रवन, स्रौन (दे०)], २२ वाँ नक्षत्र, एक अंध वैश्य तपस्वी का पुत्र, [सरवन (दे०)], एक प्रकार की भक्ति।

श्रवना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्राव] बहना, रसना, चूना, टपकना, [स्रवना] (दे०)]। (क्रि० स०) गिराना, बहाना।

श्रवित*—(वि०, दे०) [सं० स्राव] बहता या बहा हुआ, स्रवित।

श्रव्य—(वि०, सं०) सुनने-योग्य, जो सुना जा सके।—**काव्य**-(पु०) वह काव्य जो केवल सुना जा सके, नाटक के रूप में देखा या दिखाया न जा सके।

श्रांत—(वि०, सं०) क्लान्त, शिथिल, शांत, जितेंद्रिय, परिश्रम से थका हुआ, दुखी।

श्रांति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परिश्रम, क्लांति, थकावट, विश्राम, शिथिलता।

श्राद्ध—(संज्ञा, पु०, सं०) जो कार्य श्रद्धा-भक्ति से प्रेम-पूर्वक किया जावे, पितरों के हेतु पितृ-यज्ञ, पिंड-दान, तर्पण, भोजादि शास्त्रानुकूल कृत्य, [सराध (दे०)], पितृ पक्ष।—**कर्म**-(पु०) क्रिया (स्त्री०) श्राद्ध सम्बन्धी कार्य।—**पक्ष**-(पु०) पितृपक्ष।

श्राप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शाप] स्राप, [सराप (दे०)], कोसना, बददुआ देना, धिक्कार, फटकार।

श्रावक, श्रावग—(संज्ञा, पु०,) [सं० श्रावक] बौद्ध मत का साधु या संन्यासी, नास्तिक, जैनी। (वि०) श्रवण करने या सुनने वाला।

श्रावगी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रावक] जैनी, [सरावगी (दे०)]।

श्रावण—(संज्ञा, पु०, सं०) [सावन (दे०)] श्रावण का महीना, असाढ़ के बाद और भादों से पूर्व का महीना।

श्रावणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सावन महीने की पूर्णमासी, रक्षाबंधन त्यौहार, [सावनी (दे०)]।

श्रावन*—(क्रि० स०, दे०) [हि० स्रवना] गिराना, टपकाना।

श्रावस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उत्तर कोशल में गंगा-तट की एक प्राचीन नगरी जो अब सहेत-महेत कहलाती है।

श्राव्य—(वि०, सं०) श्रोतव्य, सुनने के योग्य।

श्रिय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्रिया] मंगल, कल्याण। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० श्री] शोभा, आभा, प्रभा।

श्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विष्णु पत्नी, लक्ष्मी, रमा, कमला, सरस्वती, गिरा, सफेद चंदन, कमल, पद्म, धर्म, अर्थ, काम, त्रिवर्ग, संपत्ति, ऐश्वर्य्य, विभूति, धन, कीर्ति, शोभा, कांति, प्रभा, आभा, स्त्रियों के सिर की बेंदी, नाम के आदि में प्रयुक्त होने वाला एक आदरसूचक शब्द, एक पद-चिह्न, [सिरी (दे०)]। (संज्ञा, पु०) वैष्णवों का एक सम्प्रदाय, एक एकाक्षर छंद या वृत्त (पिं०) रोरी, एक सम्पूर्ण जाति का राग (संगी०)। "भयो तेज हत श्री सब गई"—[रामा०]।—**कंठ**-(संज्ञा, पु०, सं०) शंभु, शिवजी।—**कांत**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विष्णु।—**कृष्ण**-(संज्ञा, पु०, सं०) कृष्णचंद्र।—**क्षेत्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) जगन्नाथपुरी।—**खंड**-(संज्ञा, पु०, सं०) सफेद चंदन, हरि चंदन, शिखरण, सिकरन। "श्रीखंडमंडित कलेवर वल्लरीणाम्"—[लो० रा०]।—**शैल**-(पु०) श्रीखंडाचल, मलय पर्वत, श्रीखंडाद्रि।—**गदित**-(संज्ञा, पु०, सं०) १८ प्रकार के उपरूपकों में से एक भेद (नाट्य०) श्रीरासिका।—**गिरि**-(पु०) मलयाचल।—**चक्र**-(पु०) देवी की पूजा का चक्र (वाम० तंत्र)।—**दाम**-(पु०) सुदामा, कृष्ण के एक बाल-सखा।—**धर**-(पु०) विष्णु, रमेश, संस्कृत के एक प्रसिद्ध आचार्य।—**धाम, निकेत**-(पु०) श्री-निकेतन, लक्ष्मी-धाम, वैकुंठ, लाल कमल, पद्म, सोना, स्वर्ण, विष्णु।—**नाथ**-

(पु०) लक्ष्मीपति, विष्णु।—**निवास,—निलय** विष्णु वैकुंठ, कमल, श्री-सदन, श्री-सद्म।—**पंचमी**–(स्त्री०) बसंत-पंचमी।—**पति**–(पु०) विष्णु। "धेयं श्रीपति-रूपमजस्त्रम्"—च० प०। **पाद**–(पु०) श्रेष्ठ, पूज्य।—**फल**–(पु०) नारियल, बेल, आँवला, खिरनी, धन, संपत्ति। "कोमल कमल उर जानिये न कैसे श्रीफल से कठिन उरोज उपजाये हैं।"—**माल**–(स्त्री०) गले का एक भूषण या हार, कंठश्री।—**मुख**–(पु०) शोभायुक्त, पूज्य जनों के मुख के लिए आदरार्थ शब्द, (जैसे आपके श्रीमुख से उपदेश सुनना है) सुन्दर मुँह, सूर्य्य, वेद।—**युक्त**–(वि०) शोभावान, कांतिमान, धनवान, बड़ों के लिये आदरसूचक विशेषण, श्रीमान्।—**युत**–(वि०) शोभावान, सुन्दर, धनवान, बड़ों के लिये आदरार्थ विशेषण।—**रंग,—रमण**–(पु०) विष्णु।—**वत्स**–(पु०) विष्णु, विष्णु की छाती पर एक चिह्न जिसे भृगु-चरणचिह्न मानते हैं। "श्रीवत्स-लक्ष्मम् गलशोभि कौस्तुभम्"—[भा० द०]।—**लांछन**-विष्णु।—**वास,—वासक**–(पु०) गंधा-बिरोजा, चंदन, देवदारु वृक्ष, कमल, पंकज, शिव, विष्णु।—**हत**–(वि०) शोभारहित, निष्प्रभ, निस्तेज, प्रभा या कांति से विहीन। "श्रीहत भये हारि हिय राजा"—[रामा०]।

श्रीमंत—(वि०, सं०) धनवान, श्रीमान्, रुपये वाला, धनी। (संज्ञा, पु०) [सं० श्रीमंत] एक शिरोभूषण, स्त्रियों के सिर की माँग।

श्रीमत्—(वि०, सं०) धनी, धनवान, अमीर, शोभा या श्री वाला, कांतिवान, सुन्दर।

श्रीमती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्ष्मी, राधिका, श्री या शोभायुक्त स्त्री, श्रीमान् का स्त्रीलिंग, लक्ष्मी।

श्रीमान्—(संज्ञा, पु०) [सं० श्रीमान्] नामादि के आदि में लगाने का आदरसूचक शब्द, श्रीयुत, धनिक, अमीर, पूज्य या बड़ों के लिये आदर-सूचक सम्बोधन।

श्रीवंत—(वि०, सं०) धनी, शोभावान, सुन्दर, श्रीमान्।

श्रीवास्तव—(संज्ञा, पु०, हि०) कायस्थों की एक ऊँची जाति।

श्रीहर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) संस्कृत के प्रसिद्ध नैषधकाव्य के बनाने वाले एक विद्वान् महाकवि, कान्यकुब्ज देश के प्रसिद्ध सम्राट् हर्षवर्द्धन जिन्होंने नागानंद, प्रियदर्शिका और रत्नावली रचे थे।

श्रुत—(वि०, सं०) सुना गया, जिसे परम्परा या सदा से सुनते चले आते हों, विख्यात, प्रसिद्ध।—**कीर्ति**–(स्त्री०) राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या, जो रामचन्द्र के कनिष्ठ भाई शत्रुघ्न की पत्नी थी। "जेहि नाम श्रुति कीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी"—[रामा०]।—**पूर्व**–(वि०) पहले का सुना या जाना हुआ।

श्रुति—(संज्ञा, स्त्री सं०) सुनना, कर्णेन्द्रिय, कान सुनी बात, ध्वनि, शब्द किंवदंती, खबर, जिसे सदा से सुनते चले आते हैं, वेद या ईश्वरीय पुनीत ज्ञान जिसे सृष्टि के आदि में ब्रह्मा या कुछ अन्य महर्षियों ने सुना और जिसे ऋषि परंपरा से सुनते आए, निगम, अनुप्रास अलंकार का एक भेद, विद्या, ज्ञान, नाम, त्रिभुज में समकोण के सामने की भुजा (रेखा०)। "गुरु-श्रुति-सम्मत धर्म फल, पाइय बिनहिं कलेश"—[रामा०]।—**कटु**–(पु०, सं०) काव्य में कठोर और कर्कश वर्णों का प्रयोग (दोष) जो सुनने मे बुरा लगे। [**श्रुतिमधुर, श्रुति-सुखद**—(विलो०)]।—**पथ**–(पु०) वेद-मार्ग, वेदानुकूल, सन्मार्ग, कान की राह से, श्रवणेंद्रिय, कान, कर्ण-मार्ग, श्रवण-पथ।—**पुट**–(पु०) कर्ण-रंध्र, कान के परदे। "श्रुति-पुट टपकता, जो सुधा सी वनों में"—हरिऔध।—**मार्ग**–(पु०) वेद-विहित विधि या रीति, वेद-पथ, श्रुति-पथ, कान की राह से, [स्त्रुतिमारग (दे०)]।—**सेतु**–(पु०) वेदमार्ग, वेद-पथ, (भव-सागर के तरने को) वेदरूपी सेतु या पुल। "श्रुति-सेतु पालक राम तुम"—[रामा०]।—**स्मृति**–(स्त्री०) धर्मशास्त्र और वेद।—**हर**–(वि०) कान को अच्छा लगने वाला।

श्रुत्य—(वि०, सं०) श्रवणीय, विश्रुत, प्रसिद्ध।

श्रुत्यनुप्रास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अनुप्रास नामक शब्दालंकार का एक भेद, जिसमें काव्य में एक ही स्थान से बोले जाने वाले व्यंजन दो या अधिक बार आते हैं।

श्रुवा—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) हवन करने मे घी डालने का चम्मच, चमचा, करछी, [स्रुवा (दे०)]। "चाप-श्रुवा शर आहुति जानू"—[रामा०]।

श्रेणि, श्रेणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अवली, पाँति, पंक्ति, शृंखला, परंपरा, क्रम, समूह, सेना, दल, एक ही व्यापार करने वालों की मंडली, कंपनी (अ०) जंजीर, सीढ़ी, सिकड़ी, जीना, कक्षा, दर्जा।—**बद्ध**-(वि०, यौ०, सं०) पंक्ति के रूप में स्थित, शृंखला बाँधे हुए, क्रम बाँधकर। "श्रेणी बन्धाद्वितन्वद्भिः"—रघु०।

श्रेणीकृत—(वि०, सं०) वर्गीकृत, क्रमानुसार।

श्रेय—(वि०) [सं० श्रेयस्] उत्तम, श्रेष्ठ, अधिक या बहुत अच्छा, शुभ, कल्याणकारी, मंगलदायी। [**श्रेयसी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) मंगल, कल्याण, धर्म, पुण्य, सदाचार, मोक्ष, मुक्ति। 'श्रेयसाधिगमः'—[न्याय०]।

श्रेयस्कार—(वि०, सं०) कल्याणकारी, शुभदायक, मंगलप्रद। [**श्रेयस्करी** (स्त्री०)]।

श्रेष्ठ—(वि०, सं०) बहुत ही अच्छा, उत्कृष्ट, सर्वोत्तम, प्रधान, मुख्य, पूज्य, वृद्ध, बड़ा सेठ, साहूकार]

श्रेष्ठता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उत्तमता, उत्कृष्टता, गुरुता, बड़ाई, बड़प्पन।

श्रेष्ठी—(संज्ञा, पु०, सं०) महाजन, सेठ, साहूकार, व्यापारियों या वैश्यों का मुखिया।

श्रोण, श्रोणित—(संज्ञा, पु०, वि०, दे०) [सं० शोण, शोणित] लाल रंग, अरुणता, रक्त।

श्रोणि, श्रोणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नितंब, कटि-प्रदेश।

श्रोत—(संज्ञा, पु०) [सं० श्रोतस्] कर्ण, कान, श्रवणेंद्रिय। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्रोत] सोता, चश्मा।

श्रोतव्य—(वि०, सं०) श्रवणीय, सुनने-योग्य, सदुपदेश।

श्रोता—(संज्ञा, पु०) [सं० श्रोतृ] सुनने वाला। "श्रोता-वक्ता च दुर्लभः"—[स्फु०]।—**वर्ग**-(पु०) भाषण, प्रवचन सुनने वाले लोग। [आडिएंस]

श्रोत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) कान, वेद-ज्ञान। "श्रोत्र-मनोभिरामात"—[भा० द०]।

श्रोत्रिय, श्रोत्री—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्ण रूप से वेद-वेदांग का ज्ञानी, वेद का ज्ञाता, ब्राह्मणों का एक भेद।

श्रोन, श्रोनित*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शोण, शोणित] लाल रंग, लाली, रक्त, रुधिर, [स्रोनित (दे०)]।

श्रौत—(वि०, सं०) वेदानुकूल, श्रवण-संबंधी, श्रुति या वेद-संबंधी, यज्ञ-संबंधी।—**सूत्र**-(पु०) कल्पग्रंथ का वह विभाग जिसमें यज्ञों का विधान कहा गया है, जैसे—गोभिल श्रौत सूत्र।

श्रौन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रवण] स्रौन, कान, [श्रवन, स्रवन (दे०)]।

श्लथ—(वि०, सं०) शिथिल, ढीला, अशक्त मंद, दुर्बल, धीमा।

श्लाघनीय—(वि०, सं०) प्रशंसनीय, बड़ाई के लायक, श्रेष्ठ, उत्तम।

श्लाघा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रशंसा, बड़ाई, स्तुति, तारीफ, चाटुकारी, चापलूसी, चाह, इच्छा, खुशामद। "त्यागे श्लाघाविपर्ययः"—रघु०।

श्लाघ्य—(वि०, सं०) प्रशंसनीय, बड़ाई या स्तुति के योग्य। "भवान् श्लाघ्यतमः शूरः"—भा० द०।

श्लिष्ट—(वि०, सं०) मिला हुआ, मिश्रित, जुड़ा हुआ, (साहित्य में) दो या अधिक अर्थों वाला श्लेषयुक्त पद, श्लेषालंकार युक्त। [**श्लिष्टता** (संज्ञा स्त्री०)]।

श्लीपद—(संज्ञा, पु०, सं०) फीलपाँव, पाँव के मोटे हो जाने का रोग (वैद्य०)।

श्लील—(वि०, सं०) उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया, शुभ, सुन्दर, जो भद्दा न हो, शिष्ट। [**श्लीलता** (स्त्री०)]।

श्लेष—(संज्ञा, पु०, सं०) मिलन, आलिंगन, जुड़ना, मिलना, जोड़ संयोग, एक गुण (दास), एक अलंकार जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ घटित हो सकें (अ० पी०)।

श्लेषक—(वि०, सं०) जोड़ने वाला, मिलने वाला। (संज्ञा, पु०) मिलना, आलिंगन, श्लेषालंकार।

श्लेषण—(संज्ञा, पु०, सं०) मिलाना, संयुक्त करना, जोड़ना, आलिंगन, भेंटना। [**श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट** (वि०)]।

श्लेषोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्द हों कि उनके अर्थ उपमान और उपमेय दोनों में घटित हों (काव्य०, केश०)।

श्लेष्मा—(संज्ञा, पु०) [सं० श्लेष्मन्] कफ, देह की तीन धातुओं में से एक, बलगम, लसोढ़े का फल, [लभेरा, लिसोड़ा (दे०)] "हंस पारावत-गतिं धत्ते श्लेष्म-प्रकोपतः"—[भा० प्र०]।

श्लैष्मिक—(वि०, सं०) कफ-सम्बन्धी।

श्लोक—(संज्ञा, पु०, सं०) आह्वान, शब्द, पुकार, स्तुति, बड़ाई, प्रशंसा, यश, कीर्त्ति, अनुष्टुप छंद संस्कृत का कोई पद्य। "पुण्यश्लोक-शिखा-मणिः" [भा० द०]।

श्वन्—(संज्ञा, पु०, सं०) कुत्ता, श्वान। [**श्वनी** (स्त्री०)]।

श्वपच, श्वपाक—(संज्ञा, पु०, सं०) कुत्ते का मांस खाने वाल, चांडाल, डुमार।

श्वफल्क—(संज्ञा, पु०, सं०) वृष्णि यादव के पुत्र तथा अक्रूर के पिता, [सुफलक (दे०)]।

श्वशुर—(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्री का पिता या पति का पिता। ससुर। [**श्वशुरालय** (यौ०)] [ससुराल, ससुरार (दे०)]।

श्वश्रू—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पति या पत्नी की माता, सास, [**सासु** (ब्र० अ०)]।

श्वसन—(संज्ञा, पु०, सं०) साँस लेना, वायु, दमा रोग। "हरति श्वसनं कसनं ललने"—[लो० रा०]।

श्वान—(संज्ञा, पु०, सं०) कुत्ता, कुक्कुर, कूकुर, दोहे का २१ वाँ तथा छप्पय का १५ वाँ भेद (पि०)। [**श्वानी** (स्त्री०)]।

श्वापद—(संज्ञा, पु०, सं०) व्याघ्रादि हिंसक जंतु।

श्वास—(संज्ञा, पु०, सं०) उसाँस, साँस, दम, नाक से वायु खींचने और बाहर निकालने का कार्य, हाँफना, दमा रोग, साँस फूलने का रोग, [स्वाँस, स्वासा (दे०)]। "श्वासकास-हरश्चैव-राजार्ह बलवर्द्धनम्"—[भा० प्र०]।

श्वासा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० श्वास] साँस, प्राण, दम, प्राण वायु, [स्वासा, स्वास (दे०)]। **लो०**—"जब तक श्वासा तब तक आसा।"

श्वसोच्छ्वास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वेग के साथ साँस खींचना और छोड़ना। स्वाँस-उसाँस।

श्वित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) श्वेत कुष्ठ। "श्वित्रं विनश्यात"—[भा० प्र०]।

श्वेत—(वि०, सं०) धवल, उजला, स्वच्छ, सफेद, निर्दोष, निष्कलंक, गोरा, [सेत (दे०)]। [**श्वेतता** (संज्ञा, स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) सफेद रंग, रजत, चाँदी, एक द्वीप, (पुरा०) श्वेत बाराह, एक शिवावतार। "ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महत्यस्यन्देस्थितौ"—[भ० गी०]।—**कृष्ण**-(पु०) धवल श्याम, सफेद-काला, एक पक्ष और दूसरा पक्ष, श्वेत श्याम, एक बात तथा उसके विरुद्ध दूसरी बात।—**केतु**-(पु०) उद्दालक मुनि के पुत्र, केतु-ग्रह।—**गज**-(पु०) ऐरावत हाथी, सुरेन्द्र गजेन्द्र।

श्वेतता—(स्त्री०) धवलता, सफेदी।—**द्वीप**-(पु०) विष्णु के रहने का एक उज्ज्वल द्वीप (पुरा०)।—**प्रस्तर**-(पु०) सफेद संगमरमर।—**प्रदर**-(पु०) स्त्रियों का एक प्रदर रोग जिसमें मूत्र के साथ सफेद धातु गिरती है।

श्वेतवाराह—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बाराह भगवान की एक मूर्ति, ब्रह्मा के मास का प्रथम दिन या एक कल्प, एक शिवावतार।

श्वेतांक—(संज्ञा, पु०, सं०) कागज के भीतर बनाया गया सफेद चिह्न। [वाटर मार्क]

श्वेतांग—(वि०, सं०) गौर वर्ण का, सफेद रंग का।

श्वेतांबर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जैनियों का एक श्वेत वस्त्रधारी प्रधान संप्रदाय, (द्वितीय—दिगंबर)। (वि०) श्वेत वस्त्र।

श्वेतांशु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चंद्रमा।

श्वेता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा, कौड़ी, शंख या श्वेत नामक हस्ती की माता, शखिनी, चीनी, शकर, सफेद दूब।

श्वेताश्वतर—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा, उसका एक उपनिषद्।

श्वेतिक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि जो उद्दालक मुनि के पुत्र थे।

श्वेतिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सौंफ (औषधि)।

ष

ष—संस्कृत और हिन्दी भाषा के वर्णमाला के ऊष्माक्षरों में से दूसरा वर्ण, या पूर्ण वर्णमाला का ३१ वाँ व्यंजन, इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है अतः यह मूर्धन्य वर्ण है, यह दो प्रकार से बोला जाता है १—श के समान, २—ख के समान। "ऋटुरषाणां मूर्धा", "रलयोः डलयोश्चैवशषयोः बवयोर्तथा।"

षंड—(संज्ञा, पु०, सं०) क्लीव, नपुंसक, हिजड़ा, नामर्द, शिव का एक नाम।

षंडत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) क्लीवत्व, नपुंसकता, नामर्दी, हिजड़ापन, क्लीवता। [**षंडता** (स्त्री०)]

षंडामर्क—(संज्ञा, पु०, सं०) शुक्राचार्य के पुत्र और प्रह्लाद के गुरु का नाम।

षट्—(वि०, सं०) छः, गिनती में छः। (संज्ञा, पु०) छः की संख्या, ६।—**कर्म**–(पु०) ब्राह्मणों के ६ कर्म—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान देना, दान लेना। [खटकरम (दे०)], कार्य-जालिका, बहुत-सा कर्मकांड का बखेड़ा, व्यर्थ के कार्य।—**कर्मी**–(वि०) विप्र।—**कोण**–(वि०) छः कोना, छः कोने वाला, छः पहला, छः कोनों का एक क्षेत्र, षड्भुज क्षेत्र।—**चक्र**–(पु०) शरीर के भीतर कुंडलिनी से ऊपर के छः चक्र, आधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि, प्रज्ञा (हठ यो०) षड्यंत्र।—**चरण**–(पु०) भ्रमर, भौंरा, षट्पद। (वि०) छः पैरों वाला।—**तिला**–(स्त्री०) माघ कृष्ण एकादशी। **पद**–(पु०) भ्रमर, भौंरा, द्विरेफ, मधु। (वि०) छः पैरों वाला।—**पदी**–(स्त्री०) भौंरी, भ्रमरी, छप्पय छंद (पिं०)।—**प्रयोग**–(पु०) तांत्रिकों के छः प्रयोग, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्तंभन, शान्ति।—**मुख, षड्मुख**–(पु०) षडानन, कार्त्तिकेय, सेनानी, शिव-सुत जो देव-सेनापति है। "गिरि बेधिषण्मुख जीत तारकनन्द को जब ज्यों हत्यों"—[रामा०]।—**रस**–(पु०) सृष्टि के छः रस—खट्टा, खारा, कड़ुवा, कसैला, मीठा, तीखा, इन सब रसों का मिश्रण, एक अचार। "षट्रस भोजन तुरत करावा"—[स्फु०]।—**राग**–(पु०) संगीत विद्या के छः राग—भैरव, मलार, श्री, हिंडोल, दीपक, मालकोस (संगी०), बखेड़ा, झगड़ा व्यर्थ का झमेला, झंझट, [खटराग (दे०)]।—**रिपु**—(पु०) आत्मा के सहज छः वैरी—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर।—**शास्त्र**–(पु०) प्रसिद्ध, छः दर्शन-शास्त्रः—न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त या उत्तरीय मीमांसा, षड्दर्शन।

षटक—(संज्ञा, पु०, सं०) छः की संख्या, छः पदार्थों का समूह।

षट्वांग—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राजर्षि जिन्होंने दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त की।

षडंग—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० षट्+अंग] वेद के छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, निरुक्त, ज्योतिष, शरीर के छः अंग—सिर, धड़, दो हाथ और दो पैर। (वि०) छः अंग या अवयव वाला। "षडंगेषु व्याकरणं प्रधानम्"—[महाभा०]।

षडंघ्रि—(संज्ञा, पु०) [सं० षट्+अंघ्रि] भ्रमर, भौंरा। (वि०) जिसके छः पैर हों

षडानन—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० षट्+आनन] षण्मुख, कार्त्तिकेय। (वि०) छः मुखों वाला।

षडूर्मि—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) छः प्रकार की तरंगें (प्राण और मन की)—भूख, प्यास, शोक, मोह; (शरीर की) जरा, मृत्यु। "बुभुक्षा च पिपासा च प्राणस्य मनसः स्मृतौ। शोक-मोहौ शरीरस्य जरामृत्यु षडूर्मयः।"

षड्—(वि०) 'षष्' का समासगत रूप—**ऋतु**–(पु०) वर्ष की छः ऋतुएँ। "ग्रीषम, बरषा, शरद, हेमन्त, शिशिर और जानिये बसन्त।" —**गुण**–(पु०) छः गुणों का समूह, छः गुण, राजनीति के छः गुण—संधि, विग्रह, मान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय। "षड्गुणाः शक्तय-स्तित्रः सिद्धयश्चोदयास्त्रयः"—माघ०।—**ज**–(पु०) सात स्वरों में से प्रथम स्वर (संगीत) "षड्ज संवादिनीः केका द्विधा भिन्ना शिखंडिभिः" —रघु०।—**दर्शन**–(पु०) न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा या वेदांत नामक भारतीय छः शास्त्र, षट्शास्त्र। —**दर्शनी**–(पु०) [सं० षटदर्शन+ई प्रत्य०] दार्शनिक, दर्शनों का पूर्ण ज्ञाता, ज्ञानी।—**यंत्र**–(पु०) छद्म-योजना, भीतरी चाल, गुप्त रूप से किसी के विरुद्ध की हुई कार्रवाई, जाल, कपटभरी सामग्री।—**रस**–(पु०) छः प्रकार के स्वाद या रस—माधुर, तिक्त, लवण, कटु, कषाय, अम्ल।—**रिपु**–(पु०) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर नाम जीव के छः शत्रु या मनो-विकार। "षड्रिपु जीते बिना लोग सुख पावत सपनेहुँ नाहीं"—मन्ना०।—**वदन**–(पु०) षडानन, कार्त्तिकेय, सेनानी, षण्मुख।—**वर्ग**–(पु०) क्रोधादि छः शत्रु। "जितारि षड्वर्गजयेन मानवी" —किरा०।—**विधि**–(पु०) छः भाँति का, छः प्रकार, छः रीति।

षष्ठ—(वि०, सं०) छठा, छठवाँ।

षष्ठांश—(संज्ञा, पु०, सं०) छठा भाग।

षष्ठी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठवीं तिथि, [छठि (दे०)], षोडश मातृकाओं

में से एक, दुर्गा, कात्यायनी, संबंधकारक (व्या०), बालक के उत्पन्न होने से छठवां दिन तथा उस दिन का उत्सव, [छट्ठो, छठी (दे०)] ।—तत्पुरुष-(पु०) तत्पुरुष समास का एक भेद विशेष ।

षाडव—(संज्ञा, पु०, सं०) वह राग जिसमें केवल छः स्वर ही लगें ।

षाण्मातुर—(संज्ञा, पु०, सं०) षडानन, कार्त्तिकेय, सेनानी ।

षाण्मासिक—(वि०, सं०) छमाही, छः महीने का, छठे महीने में पड़ने वाला ।

षोडंत—(वि०, सं०) छः दाँतों वाला ।

षोडश—(वि०, सं०) सोलहवां । (वि०) [सं० षोडशन] छः अधिक दस, सोलह । (संज्ञा, पु०) सोलह की संख्या, १६ ।—**कला**-(स्त्री०) चद्रमा के सोलह भाग जो शुक्ल पक्ष मे और कृष्ण पक्ष में एक-एक करके क्रमशः बढ़ते और घटते है ।—**पूजन**-(पु०) सोलह अंगों के सहित पूरी-पूरी पूजा, आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, द्रव्य, (दक्षिणा) परिक्रमा, (प्रदक्षिणा), वंदना, षोडशोपचार । —**भुजा**-(स्त्री०) दुर्गा देवी ।—**मातृका**-(स्त्री०) एक प्रकार की १६ देवियाँ, गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, । "देवसेना, स्वधा, स्वहा, शांति, पुष्टि, धृतिस्तथा । तुष्टि मातरश्चैव, आत्मदेवीति विश्रुता, षोडशमातृकाः पूज्याः मंगलार्थं निरंतरम् ।—**शृंगार**-(पु०) पूरा-पूरा शृंगार, शृंगार के सोलह प्रकार— उबटन स्नान, वस्त्र धारण, चोटी, अंजन, बेंदी, सिंदूर, अंगरागादि ।—**संस्कार**-(पु०) गर्भाधान से मनुष्य के मृतक-कर्म पर्य्यन्त पूरे सोलह संस्कार —गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारंभ, समापवर्तन, विवाह, द्विरागमन, मृतक, और्द्धदैहिक ।

षोडशा—(वि०, स्त्री०, सं०) सोलहवीं, सोलह वर्ष की स्त्री । (संज्ञा, स्त्री०) दस महाविद्याओं में से एक, एक मृतक-संबंधी कर्म जो प्रायः १० वें या १२ वें दिन होता है ।

षोडशोपचार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पूजन के पूरे सोलह अग आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और बंदना ।

ष्ठीवन—(संज्ञा, पु०, सं०) थूकना ।

स

स—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला के ऊष्म वर्णों में तीसरा वर्ण, इसका उच्चारणस्थान दन्त हैं। अतः यह दंत्य या दन्ती कहाता है "लृतुलसानां दन्तः" । (संज्ञा, पु०, सं०) पक्षी, सर्प, जीवात्मा, शिव, ईश्वर, वायु, ज्ञान चंद्रमा, षडज स्वर-सूचक वर्ण (संगी०), सगण का संक्षिप्त रूप (छं०) । उप० (स० सह) विशिष्टार्थ सूचक संज्ञाओं के पूर्व लगने वाला एक उपसर्ग, जैसे— सदेह, सपूत, सगोत्र ।

सं—(अव्य) [सं० सम्] यह शब्दों के आदि मे लगकर संगति, शोभा, समानता, निरंतरता, उत्कृष्टतादि का अर्थ प्रकट करता है जैसे—संतुष्ट, संताप, संयोग ।

सँइतना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० संचय] सैंतना (ग्रा०) सहेजना, संचय करना, जोड़ना, इकट्ठा करना, पोतना, लीपना रक्षित रखना ।

सँउपना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० सौंपना] सिपुर्द करना, सहेजना, सौंपना ।

संक*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शंका] शंका, संदेह, भ्रम, डर, भय । 'लेत-देत मन संक न धरही"—[रामा०] ।

संकट—(वि०) [सं० सम् + कृत] तंग, सँकरा, संकीर्ण । (संज्ञा, पु०) विपत्ति, आपत्ति, दुःख, कष्ट । "कौन सो संकट मोर गरीब को जो प्रभु आप सों जात न टार्‌यो"—संक० । दो पर्वतों के मध्य का संकीर्ण पथ, दर्रा, घाटी ।—**मोचन** –(वि०) संकट से मुक्त करने वाला ।

संकटा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक देवी, एक योगिनी दशा (ज्यो०) । "सदा संकटा कष्ट-हरणी भवानी"—संकटा० ।

संकटापन्न—(वि०, सं०) विपदग्रस्त ।

संकत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संकेत] इशारा, इंगित, सहेट या मिलने का निश्चित स्थान, चिह्न, पता, निशान, पते की बातें ।

संकना, सकाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शंका] डरना, संदेह या शंका करना ।

संकर—(संज्ञा, पु०, सं०) मिला जुला, मिश्रण, दो या अधिक पदार्थों का मेल, भिन्न-भिन्न जाति के माता-पिता से उत्पन्न व्यक्ति, दोगला, जारज, यज्ञ। "जायते वर्णसंकरः"—[भ० गी०]। एक प्रकार का अलंकार-संमिश्रण (काव्य०)। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शंकर] शिवजी।—**घरनी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० शंकर गृहिणी, घर+नी प्रत्य० हिं०] शिवपत्नी, पार्वती जी।

संकरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संकर का भाव या धर्म, मिलावट, घोल-मेल, संमिश्रण।

संकरा†+(वि०, दे०) [सं० संकीर्ण] तंग, पतला। [**सकरी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) दुःख, कष्ट, संकट, विपत्ति, आफत, [साँकर (दे०)]। [**गाढ़-साँकर** (यौ०)]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शृंखला] **साँकरी**, साँकल, जंजीर।

संकराना—(क्रि०, स०) संकुचित, तंग।

संकर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) हल जोतने या किसी पदार्थ के खींचने की क्रिया। कृष्ण जी के बड़े भाई बलराम। वैष्णवों का एक संप्रदाय। "संकर्षण इति श्रीमान्"—भा० द०।

संकल†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शृंखल] सॅकड़ी, सँकरी, जंजीर, पशु बाँधने का सिक्कड़ साॅकर, साॅकल (ग्रा०)।

संकलन—(संज्ञा, पु०, सं०) योग करना, जोड़ना, संग्रह करना, जमा करना, संग्रह, ढेर, गणित में योग करने की क्रिया, जोड़, अच्छे ग्रन्थों से विषयों के चुनने का कार्य। [**संकलनीय, संकलित** (वि०)]।

संकलप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संकल्प] संकल्प, विचार, निश्चय। "सिव संकलप कीन्ह मन माहीं"—[रामा०]।

संकलपना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० संकल्प] किसी कार्य का पक्का निश्चय करना, दृढ़ विचार करना, किसी धार्मिक कार्य के लिये कुछ दान देना, संकल्प करना। (क्रि० अ०) विचार या निश्चय करना, इच्छा या इरादा करना।

संकलित—(वि०, सं०) संगृहीत, चुना हुआ, छाँट छाँट कर लाया हुआ, एकत्रित किया हुआ।

संकल्प—(संज्ञा, पु०, सं०) कुछ कार्य करने का विचार, इच्छा, इरादा, निश्चय, अपना दृढ़ निश्चय या विचार, किसी देव-पूजादि कार्य से पूर्व कोई नियत मंत्र पढ़कर अपना दृढ़ विचार प्रगट करना, ऐसे समय का मंत्र, दृढ़ निश्चय, पुष्ट विचार, [संकलप (दे०)]। "शिव संकल्प कीन्ह मन माहीं"—[रामा०]। [**संकल्पन** (संज्ञा, पु०)] [**संकल्पित, संकल्पनीय** (वि०)]।—**विकल्प**-(पु०) उधेड़बुन।—**वाद**-(पु०) यह सिद्धांत कि मनुष्य के कर्म स्वतंत्र नहीं होते [डिटर-मिनिज्म]।

संकल्पित—(वि०, सं०) जिसका निश्चय या संकल्प किया जाय।

संकाना, **सकाना***†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संक] डरना, भय खाना। "क्षत्रिय तनु धरि समर सकाना"—[रामा०]।

सँकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संकेत] इशारा, इंगित, संकेत, सकार।

सँकारना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सकार] संकेत या इशारा करना, दाम चुकता करना, [सकारना (दे०)] जैसे—हुन्डी सँकारना।

संकाश—(अव्य० सं०) सदृश, समान, तुल्य, समीप, पास, निकट। (संज्ञा, पु०, दे०) प्रकाश, प्रभा, दीप्ति, कांति। "तुषाराद्रिसंकाश-गौरंगभीर"—[रामा०]।

संकीर्ण—(वि०, सं०) सॅकरा, संकुचित, तंग, मिश्रित, मिला-जुला, छोटा, क्षुद्र, तुच्छ। (संज्ञा, पु०, सं०) जो राग दो रागों के मेल से बने, संकट, आपत्ति। (संज्ञा, पु०, सं०) वृत्तगंधि और अवृत्त-गंधि के मेल से बना एक गद्य-भेद (सं०)।—**बहुमत**-(पु०) अल्प बहुमत। नाम मात्र को बहु-मत। [नैरो मैजारिटी]

संकीर्णता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तंगी, क्षुद्रता, छोटापन, सांकोच्य।

संकीर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी की कीर्त्ति का वर्णन, देव-स्तवन, वेद वन्दना। [**संकीर्तनीय, संकीर्तित** (वि०)]।

संकु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बरछी। "जरे अंग में संकु ज्यों, होत बिथा की खानि"—मति०।

सॅकुचना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सकुचना] सिकुड़ना, सकुचना, समिटना, लज्जित होना, शरमाना, फूलों का संपुटित या बंद होना।

संकुचित—(वि०, सं०) सकोच को प्राप्त, संकोच युक्त, लज्जित, सिकुड़ा हुआ, सॅकरा, तंग, क्षुद्र, कंजूस। [**उदार** (विलो०)]।

संकल—(वि०, सं०) घना, भरा हुआ, परिपूर्ण, संकीर्ण। "विविध जंतु-संकुल मणि भ्राजा"—[रामा०]। [**संकुलित** (वि०)] (संज्ञा, पु०) भीड़, समूह, झुंड, युद्ध, जनता, एक दूसरे के विरोधी वाक्य (व्या०)।

संकुलित—(वि०, सं०) परिपूर्ण, घना, भरा हुआ, संकीर्ण। "हरित भूमि तृण सकुलित, समुझि परै नहिं पंथ"—[रामा०]।

संकेंद्रण—(संज्ञा, पु०, सं०) केंद्रिकता की ओर अग्रसर करना, केंद्र की ओर उन्मुख करना, एकत्रित करना, एकाग्र करना। [कंसण्ट्रेशन]—**सिद्धांत**—(पु०) मार्क्स का यह सिद्धांत कि बड़े पूँजीपति छोटे पूँजीपति को आत्मसात कर लेंगे या उन्हें उस क्षेत्र विशेष से बहिष्कृत कर देंगे। [थियरी आफ कन्सट्रेशन]

संकेन्द्रित, प्रयास—(संज्ञा, पु०, सं०) वह प्रयास जिसमें सम्पूर्ण शक्तियों को एक कार्य या स्थान पर केंद्रित कर दिया जाय। [कॉनसेंट्रेटेड एफर्ट]

संकेत—(संज्ञा, पु०, सं०) अपना भाव प्रकट करने की शारीरिक चेष्टा, इंगित, इशारा, प्रेमिका के मिलाप का निश्चित स्थान, सहेट, चिन्ह, पते की बातें, निशान। [**सांकेतिक** (वि०)]।

सकेत—(वि०, दे०) संकीर्ण सँकरा, संकुचित, तंग।

संकेताक्षर—(संज्ञा, पु०, सं०) सांकेतिक अक्षर, गूढ़लिपि। [एब्रीविएशन]

संकुचन—(संज्ञा, पु०, सं०) करेंसी नोट की संख्या का स्वल्पीकरण [डीफ्लेशन]।

संकेतक—(संज्ञा, पु०, सं०) सिगल। संकेत देने वाला। [सिग्नल]

सकेतना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संकीर्ण] कष्ट, संकट या विपत्ति में डालना।

संकोच—(संज्ञा, पु०, सं०) सिकुड़ने का कार्य तनाव, खिंचाव, त्रपा, लज्जा, व्रीडा, आगा-पीछा, डर, भय, हिचकिचाहट, न्यूनता, कमी, एक अलंकार जहाँ विकासालंकार के विरुद्ध अति संकोच कहा जाता है, [सकोच, सँकोच (दे०)]। "छाँड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू" "जलसंकोच विकल भये मीना"—[रामा०]।

सकोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) संकोच सिकुड़ना। [**संकोचनीय** (वि०)]।

संकोचना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संकोच] संकुचित करना, संकोच करना।

संकोचित—(संज्ञा, पु०, सं०) खड्ग चलाने की एक रीति।

सकोची—(संज्ञा, पु०) [सं० संकोचिन्] संकोच करने वाला, लज्जित होने वाला, शर्माने वाला, सिकुड़ने वाला।

सँकोपना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संकोप] अधिक क्रोध करना, [सकोपना (दे०)]।

संक्रंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र, शक्र। (संज्ञा, पु०) [सं० क्रंदन] रोना, रोदन।

संक्रमण—(संज्ञा, पु०, सं०) चलना गमन, सूर्य का राश्यंतर में गमन (ज्यो०)। युद्ध का उन्माद संक्रमणशील है—दिनकर

संक्रमित—(वि०, सं०) हस्तांतरित, पहुंचाया हुआ।

सक्रांत—(वि०, सं०) गत, गुजरा हुआ, स्थानांतरित, प्राप्त, चित्रित।

सक्रांति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सूर्य का एक राशि से दूसरे में जाना या जाने का समय, [सँकरात (दे०)]। परिवर्त्तन [ट्रांजिशन]—**काल**—(पु०) परिवर्त्तन काल [ट्रांजिशनल पीरियड]

संक्रामक—(वि०, सं०) छूत या संसर्ग से फैलने वाला।—**रोग**—(पु०) संसर्गज व्याधि [इनफेक्शस डिज़ीज़]

संक्रोन*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संक्रांति] संक्रांति, संक्रमण, गमन, चलना।

संक्षिप्त—(वि०, सं०) थोड़े में, अल्प में, खुलासा, जो संक्षेप में हो, सूक्ष्म।—**न्यायक्षेत्र**—(पु०) सीमित अधिकार क्षेत्र। [समरी ज्यूरिसडिक्शन]—**लिपि**—(स्त्री०) त्वरा लेखन की एक रीति जिसमें थोड़े समय और स्थान मे बड़ा प्रबंध लिखा जा सके, [शार्टहैंड]।

संक्षिप्त—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नाटक में क्रोधादि उग्र भावों की निवृत्ति वाली एक आरभटी वृत्ति (नाटक)।

संक्षिप्तीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) संक्षेपण, किसी विस्तृत कथा, विषय आदि का सारांशीकरण।

संक्षुब्धा—संक्षुब्धा हो सबल बहती थी जहाँ शोक धारा—हरिऔध।

संक्षेप—(संज्ञा, पु०, सं०) सूक्ष्म, कोई बात थोड़े में कहना, कम करना, घटाना [मुख्तसिर]

[संक्षेप (दे०)] । "यहि लागि तुलसीदास इनकी कथा संक्षेपहि कहि "—[रामा०] । [संक्षेपता (संज्ञा, स्त्री०)] ।

संक्षेपक—(वि०, सं०) संक्षेप करने वाला ।

संक्षेपण—(संज्ञा, पु०, सं०) संक्षिप्तीकरण [ऐब्रिजमेंट]

संक्षेपतः—(अव्य, सं०) सुख्यतया, संक्षेप में, थोड़े में । [इनशार्ट]

संख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शंख] शंख । —**नारी**–(स्त्री०) सोमराजी, दो यगण का एक वर्णिक छंद (पि०) ।

संखिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृंगिका] एक विख्यात विष या जहर, जो वास्तव में सफेद उपधातु या पत्थर है । इसकी भस्म, जो औषधि के काम में आती है ।

संख्यक—(वि०, सं०) संख्या वाला ।

संख्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक, दो तीन आदि गिनती, शुमार, तादाद, [अदद (फ़ा०)] वह अंक जो किसी पदार्थ का परिमाण गिनती में प्रकट करे (गणि०) ।—**लिपि**–(स्त्री०) वह पद्धति जिसमें अक्षरों के स्थान पर अंक रहते हैं । —**वाचक**–(वि०) जिसमें संख्या की सूचना मिले ।

संख्यातीत—(वि०, सं०) अगणित । संख्यान (संज्ञा, पु०, सं०) गणना, राशि ।

संग—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) साथ, मेल, सहवास, सोहबत, मिलन, सम्पर्क । **मुहा०**—(**किसी के**) **लगना**—साथ हो लेना, पीछे लगना, या चलना, विषय-प्रेम या अनुराग, आसक्ति, वासना । (क्रि० वि०) साथ, सहित । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) पत्थर, जैसे—संगमरमर । (वि०) पत्थर के समान कठोर, बहुत कड़ा ।—**जराहत**–(पु०) एक चिकना सफेद पत्थर जो घाव को शीघ्र भर देता है ।—**दिल**–(वि०) कठोर हृदय, निर्दय, निष्ठुर, क्रूर, दया-हीन । "अजब संगदिल हैं करूँ क्या खुदा"—स्फुट । [**संगदिली** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**मर्मर**–(पु०) एक बहुत नरम सफेद चिकना प्रसिद्ध कीमती पत्थर, स्फटिक, [संगमरमर (दे०)] ।—**मूसा**–(पु०) एक काला नरम और चिकना प्रसिद्ध कीमती पत्थर ।—**यशब**–(पु०) एक हरा कीमती पत्थर । हौलदिली ।

संगठन—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सं+ गठना हिं०] इधर उधर बिखरी या फैली हुई शक्तियों, वस्तुओं या लोगों को मिलाकर ऐसा एक कर देना कि उसमें नई और अधिक शक्ति आ जाय, संघटन । वह संस्था जो इस व्यवस्था से बनी हो । [**संगठनात्मक** (वि०)] ।

संगठित—(वि०, दे०) [हिं० संगठन] जो अच्छी व्यवस्था-द्वारा भली भाँति मिलाकर एक किया गया हो, सुव्यवस्थित, संघटित ।

संगणना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आकड़ा आदि के द्वारा हिसाब का अन्दाज लगाना, हिसाब लगाकर देखना । [कांप्यूटेशन]

संगत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संगति] साथ रहना, संगति, सोहबत, साथ, सम्बन्ध, साथी, सम्पर्क, संसर्ग । "संगत ही गुन होत है संगत ही गुन जाहि"—[नीति०] । उदासी और निर्मली साधुओं के रहने का मठ, संग रहने वाला ।

संगतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) संतरा, बड़ी नारंगी ।

संगतराश—(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) [पथरकट (दे०)], पत्थरकट; पत्थर काटने या गढ़ने वाला मजदूर । [**संगतराशी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

संगति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मिलाप, सम्मेलन, साथ, संग, मेल-जोल, मैथुन, प्रसंग, संबंध, संगत, ज्ञान । पूर्वापर या आद्यंत की बातों या वाक्यों का मिलान । **मुहा०**—**बैठना** (**मिलना**) –मेल मिलना । ' संगति सुमति न पावही, परे कुमति के धंध"—नीति० ।

संगतिया—(संज्ञा, पु०, दे०) नाच गान में साथ बाजा बजाने वाला ।

संगम—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्मेलन, मिलाप, मेल, संयोग, दो नदियों के मिलने का स्थान, संग, साथ, सहवास, सहयोग, प्रसंग । **मुहा०**—**करना**–सहवास या प्रसंग करना । "संगम करहि तलाव तलाई"—[रामा०] ।

संगर—(संज्ञा, पु०, सं०) युद्ध, नियम, प्रण, विष, विपत्ति, स्वीकार । "संगर यों सगर कियो, करि संगर शिवराज"—मन्ना० । 'आशा और मृत्यु का सगर'—रा० न० त्रि० ।

संगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) बाँस का डंडा जिससे पत्थर हटाया जाता है, कुएँ के तख्ते का छेद जिसमें लोहे का पंप लगाया जाता है ।

संगराम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संग्राम] संग्राम, युद्ध रण, समर, [सँगराम (दे०)] ।

सँगाती, संघाती—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० संग या संघ+आती प्रत्य०] संघी, संगी, साथी, मित्र, सखा। "सूरदास प्रभु ग्वाल सँगाती जानी जाति जनावत"—सूर०।

संगिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० संगी का, स्त्री०] साथिनी, सहेली, सखी।

संगी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० संग+ई प्रत्य०] बंधु, साथी, संग रहने वाला, सखा, मित्र, दोस्त। [**संगी साथी** (यौ०)]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार का वस्त्र। (वि०) [फा० संग+ई प्रत्य०] पत्थर का सगीन।

संगीत—(संज्ञा, पु०, सं०) एक विद्या या कला जिसमे गाना, बजाना, नाचना आदि कार्य मुख्य गिने जाते है।—**संगीतज्ञ**-(पु०) गायक।—**शास्त्र, विद्या**-(पु०) गंधर्व-विद्या, वह शास्त्र जिसमे संगीत-विद्या का विवरण हो।

संगीन—(संज्ञा, पु०) [फा० संग] लोहे का एक तिधारा नुकीला अस्त्र जो बंदूक के सिर पर लगाया जाता है। (वि०) [फा० संग] पत्थर का बना हुआ, मोटा, दृढ़, टिकाऊ, विकट, कठिन।

संगृहीत—(वि०, सं०) संकलित, एकत्रित; संग्रह किया हुआ।

संगोतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) संतरा।

संगोपन—(संज्ञा, पु०, सं०) छिपाने का कार्य। [**संगोपनीय, संगोपित, संगोप्य** (वि०)]।

संग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) संकलन, संचय, एकत्र या जमा करना, वह पुस्तक जिसमें एक ही विषय या अनेक विषयों की पुस्तकों की बातें चुन कर एकत्र की गयी हों। "संग्रह-त्याग न बिनु पहिचाने"—[रामा०]। रक्षा, पाणि-ग्रहण, ब्याह, ग्रहण करने का कार्य।—**कार**-(पु०) संकलनकर्त्ता।

संग्रहण—(संज्ञा, पु०, सं०] संग्रह करने का कार्य, एकत्र करना।

संग्रहणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक उदर रोग जिसमे पाचन शक्ति के न रहने से बार-बार दस्त होता है और सारा भोजन निकल जाता है।

संग्रहणीय—(वि०, सं०) संग्रह करने योग्य, दवा के रूप मे सेवन करने लायक।

संग्रहना—(क्रि० स०, दे०) [सं० ग्रहण] संचय या संग्रह करना, जमा या इकट्ठा करना, जोड़ना, चुनना, एकत्र करना। (**संग्रहीय** (वि०)]।

संग्रहाध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी संग्रहालय का प्रबन्ध करने वाला सर्वोच्च अधिकारी। [क्यूरेटर]

संग्रहालय—(संज्ञा, पु०, सं०) खास वस्तुओं का संग्रह-स्थान।

संग्रही-संग्रहीता—(संज्ञा, पु०, सं०) संग्रह करने वाला, संकलन करने वाला।

संग्रहीत—(वि०, सं०) एकत्र या इकट्ठा किया हुआ, संकलित, संचित।

संग्राम—(संज्ञा, पु०, सं०) रण, लड़ाई, युद्ध, समर, [संगराम (दे०)]। "करु परितोष मोर संग्रामा"—[रामा०]।

संग्राह्य—(वि०, सं०) संग्रह करने योग्य।

संघ—(संज्ञा, पु०, सं०) समुच्चय, समुदाय, समूह, वृन्द, झुंड, दल, समिति, समाज, सभा, प्राचीन काल मे भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य, बौद्ध श्रमणों का एक धार्मिक समाज, साधुओं के रहने का मठ, [संगत (दे०)] साथ, संग।—**न्यायालय**-(पु०) संघात्म शासन का सर्वोच्च न्यायालय [फेडरलकोर्ट]।—**राज्य**-(पु०) संघी या संघात्मक राज्य। [फेडरल स्टेट]

संघट—(संज्ञा, पु०, सं०) युद्ध, संग्राम, राशि, समूह, ढेर, झगड़ा, संयोग, [संघट्ट (दे०)]।

संघटन—(संज्ञा, पु०, सं०) संयोग, सम्मेलन, मेल-मिलाप नायक-नायिका का संयोग, बनावट, रचना, संगठन, सम्बन्ध, संपर्क। [**संघटनीय, संघटित** (वि०)]।

संघटित—(वि०, सं०) संहत, परस्पर सम्बद्ध। [कम्पोजिट]—**राज्य**-(पु०) संघबद्ध राज्य, सम्मिश्रराज्य। [कम्पोजिट स्टेट]

संघट्ट, संघट्टन—(संज्ञा, पु०, सं०) रचना, बनावट, संयोग, सम्मिलन, मेल-मिलाप, संघटन, मिलन। [**संघट्टनीय** (वि०)]।

संघती, संघाती—(संज्ञा, पु०, दे०) संगी, साथी, मित्र, सखा, सहचर।

सँघरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संहार] नाश या संहार करना, मिटा देना, मार डालना।

संघर्ष, संघर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) रगड़ खाना, रगड़ जाना, घिस जाना, प्रतिद्वन्द्विता, रगड़, प्रतियोगिता, स्पर्द्धा, घिसना, रगड़ना, घिस्सा। **शांत** विश्व संघर्षण—पंत

संघात—(संज्ञा, पु०, सं०) समष्टि, वृन्द, समूह, चोट, आघात, बध, हत्या, नाटक में एक प्रकार की गति, शरीर, घर।

सँघाती—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संघ] साथी, मित्र, सखा, सहचर। "भूल गये क्यों मुझे सँघाती"—[स्फु०]।

संघात्मक—(वि०, सं०) संबद्ध, संघविषयक। **—विधान**—(पु०) संयुक्त राज्यों का विधान-संगठन। [फीडरल कांस्टीट्यूशन]

संघार*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संहार] संहार, नाश, प्रलय।

संघारना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० संहार] संहार करना, नाश या प्रलय करना, मार डालना। "ताड़ुका सँघारी तिय न विचारी"—[रामा०]।

संघाराम—(संज्ञा, पु०, सं०) बौद्धमत के भिक्षुओं या साधुओं के रहने का मठ, विहार।

संघीय संविधान—(संज्ञा, पु०, सं०) उन प्रांतों के संघ का विधान जो अपने आंतरिक मामलों मे बिल्कुल स्वतंत्र हों, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय मामलों में या रक्षा सम्बन्धी मामलों में केंद्र के अधीन हों।

संच*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संचय] रक्षा, संचय, संग्रह करना, देख-भाल करना।

संचकर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संचयकर] संचय करने वाला, कंजूस।

संचना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० संचयन] एकत्र करना, संचय या संग्रह करना, रक्षा करना।

संचय—(संज्ञा, पु०, सं०) समुदाय, समूह, झुंड, ढेर, संग्रह या एकत्र करना, जमा करना या जोड़ना।

संचयन—(संज्ञा, पु०, सं०) भली भाँति चुनना, संचय करना। [**संचयनीय** (वि०)]।

संचरण—(संज्ञा, पु०, सं०) चलना, गमन करना, टहलना, घूमना, भ्रमण करना, फिरना, संचार करना। [**संचरित, संचरणीय** (वि०)]।

संचरना*†—(क्रि० अ०) [सं० संचरण] चलना, फिरना, घूमना, भ्रमण करना, फैलना, प्रसारित या प्रचलित होना, प्रयोग होना।

संचार—(संज्ञा, पु०, सं०) चलना, गमन करना, प्रवेश, फैलाना, प्रचार करना, प्रयोग, जाना। **—मंत्रालय**—(पु०) संवहन सचिवालय। [मिनिस्ट्री आव् कम्यूनिकेशन]—**मंत्री**—(पु०) समाचार आदि भेजने वाले विभागों का मंत्री। संचार-सचिव। [कम्यूनिकेशन मिनिस्टर]—**साधन**-(पु०) समाचार आदि भेजने का साधन। [मीन्स आव् कम्यूनिकेशन] [**संचारण, संचारक** (संज्ञा, पु०)]। [**संचारनीय, संचारित** (वि०)]।

संचारक—(वि०, सं०) फैलानेवाला।

संचारण—(संज्ञा, पु०, सं०) फैलाना, प्रयोग में लाना।

संचरना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० संचारण] किसी वस्तु का संचार या प्रचार करना, फैलाना, जन्म देना, [सँचारना (दे०)]।

संचारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कुटनी, दूती।

संचारित—(वि०, सं०) चालित, गतिशील किया हुआ, उकसाया हुआ।

संचारी—(संज्ञा, पु०) [सं० संचारिन्] वायु, पवन, हवा, साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव के पोषक हों, व्यभिचारी भाव। (वि०) संचरण करने वाला, प्रवेश करने वाला, गतिशील।

संचालक—(संज्ञा, पु०, सं०) चलाने, फिराने या गति देने वाला, परिचालक, किसी व्यापार का करने वाला, कार्यकर्ता, प्रबंधक, अधिकर्त्ता अधिदेष्टा। [डाइरेक्टर]—**मंडल**—(पु०) उच्च अधिकारी वर्ग, संचालक वर्ग। [हाई कमांड]—**समिति**—(स्त्री०) संचालक परिषद। [बोर्ड आव् डाइरेक्टर्स]

संचालन—(संज्ञा, पु०, सं०) परिचालन, चलाना, चलाने की क्रिया, कार्य जारी रखना, गति देना। [**संचालनीय, संचालित** (वि०)]

संचित—(वि०, सं०) संचय किया या जोड़ा हुआ, जमा किया हुआ, एकत्रित। (संज्ञा, पु०, सं०) तीन प्रकार के कर्मों में से एक (मीमांसा)। **—कोष**—(पु०) वह धन-राशि जो मासिक वेतन में से कुछ काट कर अवकाश ग्रहण करने पर उतना ही मिलाकर दिया जाता है। [प्राविडेंट फंड]—**राशि**—(स्त्री०) संभार, पूँजी। [स्टक्स]

संजम*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संयम] संयम, परहेज बुराइयों से बचना।

संजमी—(वि०, दे०) [सं० संयमी] संयमी।

संजय—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा धृतराष्ट्र के मन्त्री जो महाभारत के युद्ध के समय उसका समाचार सुनाते थे। "किम कुर्वत संजय"—[भ० गी०]।

संजात—(वि०, सं०) प्राप्त, उत्पन्न ।

संजाफ—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) किनारा, झालर, रजाई आदि की चौड़ी और आड़ी गोट, मगजी, गोट । (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का घोड़ा जिसकी आधी देह लाल रंग की और आधी हरे या सफेद रंग की हो ।

संजाफी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) आधा लाल और आधा हरा घोड़ा । (वि०) सजाफ या गोट वाला ।

संजाब—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० संजाफ] सजाफ या चौड़ी गोट, गोट, किनारी ।

संजीदा—(वि०, फ़ा०) शान्त, गम्भीर, समझदार, बुद्धिमान । [**संजीदगी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

संजीवन—(संज्ञा, पु०, सं०) जीवन देने वाला, भले प्रकार जीवन बिताना । "वेदना बनती संजीवन"—महादेवी ।

संजीवनी—(वि०, स्त्री०, सं०) शक्ति-स्फूर्ति-कारिणी, जीवन देने वाली । (संज्ञा स्त्री०) मृत सजीवनी, एक रासायनिक औषधि विशेष, जो मरे को भी जिला देती है (कल्पित), एक विशिष्ट औषधि (वैद्य०) ।—**विद्या**-(स्त्री०) एक कल्पित विद्या जिसमे मृतक के जिलाने की रीति कही गयी है ।

संजुक्त—(वि०, दे०) [सं० संयुक्त] सम्मिलित जुड़ा या मिला हुआ, नियुक्त, साथ, उचित ।

संजुक्ता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कन्नौज-नरेश जयचद की कन्या तथा पृथ्वीराज की प्रिया (इति०) संयुक्ता । [**संयुक्त** (वि० स्त्री०)] ।

संजुग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सयुक्त-संयुग] युद्ध, रण, समर ।

संजुत—(वि०, दे०) [सं० सयुत] सम्मिलित, साथ, रहित ।

संजुता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संयुत] स, ज, ज (गणों) तथा एक गुरु वर्ण वाला एक छंद (पिं०) ।

संजोइ*—(क्रि०, वि०, दे०) [संयोग] साथ मे । (पू० का० क्रि०) संजोय, सजाकर ।

संजोइल—(वि०, दे०) [सं० संजित, हि० सजोना] भलीभांति सजाया हुआ । सुसज्जित, संचित, एकत्रित, जमा या इकट्ठा किया हुआ ।

संजोऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सँजोना] सामग्री, सामान, उपक्रम, तैयारी । "बेगि मिलन कर करहु-सँजोऊ"—[रामा०] ।

संजोग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संयोग] मेल, मिश्रण, मिलावट, समागम, सहवास, स्त्री-पुरुष का प्रसंग, मिलाप, विवाह-सम्बन्धी, उपयुक्त अवसर । "जो विधिवस अस बनै सँजोगू"—[रामा०] । योग, जोड़ मीजान, इत्तफाक़ (फ़ा०), मौका ।

संजोगी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संयोगी] मेलमिलाप से रहने वाला, स्व प्रिया के साथ रहने वाला । [**संजोगनी** (स्त्री०)] । [**विजोगी** (विलो०)] ।

संजोना, संजोवना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० सज्जा] सजाना, तैयार करना, एकत्रित करना, रक्षित रखना ।

संजोवल*†—(वि०, दे०) [सं० सँजोना] सावधान, सुसज्जित, सैन्य समेत ।

संज्ञक—(वि०, सं०) नाम या संज्ञा, वाला, नामी, जिसकी संज्ञा हो (यौगिक में) ।

संज्ञा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चेतना, बुद्धि, होश, ज्ञान आख्या, नाम, वह सार्थक विकारी शब्द जिससे किसी कल्पित या वास्तविक वस्तु के नाम का बोध हो (व्या०), विश्वकर्म्मा की कन्या और सूर्य की पत्नी ।—**रहित,—हीन**-(वि०) बेसुध बेहोश, मूर्छित, संज्ञा-विहीन । "पड़ी है पीड़ा संज्ञा हीन"—महादेवी

संज्ञात—(वि०, सं०) भली भाँति समझा हुआ या जाना हुआ ।

संज्ञान—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुभूति, बोध, ज्ञान ।

संझला†—(वि०, दे०) [सं० संध्या] संध्या या साँझ का । साँझलौखा (ग्रा०)] ।

संझवाती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संध्या + वाती हि०] शाम के समय जलाया जाने वाला दीपक, संध्या-दीप, सध्या समय गाने का गीत, [संझाबाती (दे०)] । "साँझ भई आली सँझवाती क्यों न देति आज" ।

संझा†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संध्या] शाम, संध्या, साँझ । [**संझा-बेरा**—(यौ०, दे०)] संध्या बेला ।

संझावाती—(संज्ञा, पु०, दे०) [संध्या + हि० बाती] संध्या समय जलाने का दीपक, सँझवाती संध्या का गीत ।

संझोखा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संध्या] संध्या का समय, सँझौखा, सँझलौखा ।

संझौखे*—(अव्य०, दे०) [सं० संध्या] संध्या काल में, सँझलौखे (ग्रा०) ।

संड—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शंड] साँड ।—**मुसंड**-(वि०) मोटा-ताजा, हट्टा-कट्टा, हृष्ट-पुष्ट बहुत मोटा, धमधूसर ।

संडसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संदेश] उष्ण या गर्म पदार्थों के पकड़ने के हेतु लोहे का एक (लोहारों या सोनारों का) हथियार, जँबूरा, गहुआ (प्रान्ती०)। [**संड़सी** (स्त्री० अल्पा०) ।

संडा—(वि०, दे०) [सं० शंड] मोटा ताजा, हृष्ट-पुष्ट । (संज्ञा, पु०, दे०) षंडामर्क, संडा-मर्का ।

संडास—(संज्ञा, पु०, हिं०) बहुत गहरा एक प्रकार का पाखाना, शौच-कूप, मलगर्त ।

संत—(संज्ञा, पु०, सं०) साधु, सज्जन, त्यागी, संन्यासी, महात्मा, धार्मिक व्यक्ति, परमेश्वर-भक्त । २१ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०) । "संत हंस गुनपय गहहिं "—[रामा०] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) संतता, संतताई ।—**समागम**-(पु०) साधुओं का सत्संग ।

संतत—(अव्य०, सं०) सदैव, हमेशा, सदा, निरंतर, लगातार, बराबर । " सतत रहहिं सुगंधि सिचाये "—[रामा०] ।

संतति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संतान, प्रजा, औलाद वंश, बाल-बच्चे, फैलाव, रिआया ।—**निग्रह**-(पु०) संतानों त्पत्ति में अवरोध करने की विधि, जन्म-विरोध-विधि । [बर्थ कंट्रोल]

संतपन—(संज्ञा, पु०, सं०) बहुत तपना, अति संताप या दुःख देना ।

संतपना—(संज्ञा, पु०, दे०) संत का भाव, संतता । (क्रि० अ०, दे०) अति तपना, संताप देना ।

संतप्त—(वि० सं०) अति तपा हुआ, बहुत गर्म, जला हुआ, पीड़ित, दग्ध, दुःखी, संतापित । " ह्वै सतप्त देखि हिमकर कौ नेक चैन न पावै " —मन्ना० ।

संतरक—(वि०, सं०) भली-भाँति तैरने वाला ।

संतरण—(संज्ञा, पु०, सं०) भली भाँति तरना या पार होना, तारने वाला । [**संतरणीय, संत-रित** (वि०)] ।

संतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [पुर्त० सगतरा] एक बड़ी और मीठी नारंगी, एक बड़ा मीठा नीबू।

संतरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० सेंटीनल, सटरी] पहरेदार, पहरा देने वाला, द्वारपाल ।

संतान—(संज्ञा, पु०, सं०) संतति, औलाद, बाल-बच्चे, कल्पवृक्ष । " संतान कामाय तथेति कामं "—[रघु०] ।

संताप—(संज्ञा, पु०, सं०) दाह जलन, वेदना, आँच, कष्ट, दुःख, मानसिक कष्ट ।—**हारक**-(वि०) संताप दूर करने वाला ।

संतापक—(वि०, सं०) जलाने या संताप देने वाला, दाहक ।

संतापन—(संज्ञा, पु०, सं०) जलाना, संताप देना, अति कष्ट या दुःख देना, काम के पाँच बाणों मे से एक । [**संतापनीय, संतापित, संतप्त, संताप्य** (वि०)] ।

संतापना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० संताप] जलाना, संताप या दुःख देना, कष्ट या पीड़ा पहुँचाना ।

संतापित—(वि०, सं०) दग्ध, तप्त, जलाया हुआ, तपाया हुआ, दुःखी, संतप्त, दग्ध ।

संतापी—(संज्ञा, पु०) [सं० संतापिन] ताप या संताप देने वाला, दुखःदायी ।

संतारक—(वि०, सं०) तारने वाला है ।

संती‡—(अव्य०, दे०) [सं० संति] बदले मे, स्थान में, द्वारा, से । (संज्ञा, पु०, ग्रा०) पोते का पुत्र ।

संतुलन—(संज्ञा, पु०, सं०) बराबरी पर रखने की क्रिया । "आय-व्यय का संतुलन बिगड़े नहीं है"—[स्फु०] ।—**पत्र**-(पु०) आय-व्यय विवरण-पत्र । [बैलेंसशीट]

संतुलित—(वि०, सं०) जहाँ दो वस्तुएँ बराबरी पर बैठायी गयी हों ।

संतुष्ट—(वि०, सं०) जो मान गया हो, तृप्त, प्रसन्न, तोष युक्त, जिसको संतोष हो गया हो । [**संतुष्टता, संतुष्टि** (संज्ञा, स्त्री०)]

संतोख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संतोष] संतुष्टि, तोष, सब्र शान्ति, तृप्त, इतमीनान, प्रसन्नता, आनंद, सुख । " मन संतोख सुनत कपि-बानी "—[रामा०] ।

संतोष—(संज्ञा, पु०, सं०) तोष, संतुष्टि, तृप्ति, सब दशा और काल में प्रसन्नता, शान्ति, आनन्द, सुख, इतमीनान। "नहिं संतोष तो पुनि कछु कहहू"—[रामा०]।

संतोषना*†—(क्रि०; अ०, दे०) [सं० संतोष] संतोष दिलाना या देना, संतुष्ट या प्रसन्न करना (क्रि० अ०, दे०) प्रसन्न होना, संतुष्ट होना। सँतोखना (दे०)]।

संतोषित—(वि०, सं०) संतोष-युक्त, प्रसन्न या संतुष्ट किया हुआ, तुष्ट किया हुआ।

संतोषी—(संज्ञा, पु०) [सं० संतोषिन्] सदा सन्तोष या सब्र करने या रखने वाला। **लो०** —"सन्तोषी परमं सुखी"—[स्फु०]।

संभासित—(वि०, सं०) डरवाया हुआ।

संथा—(संज्ञा, पु०) [सं० संहिता] सबक, पाठ, एक प्रकार का पढ़ा हुआ। "शनैः-संथा शनैः पंथा, शनैः पर्वत-लंघनम्"।

संद†—(संज्ञा, पु०, दे०) दबाव, दरार, संधि, सांद, सधि (ग्रा०)।

संदर्भ—(संज्ञा, पु०, सं०) बनावट, रचना, प्रबंध, लेख, निबंध, कोई छोटा ग्रंथ, अध्याय, आया हुआ प्रसंग, उल्लेख। [रिफरेंस]।—**विरुद्ध**—(वि०) जिसमें प्रसंग-निर्वाह उचित ढंग से न हुआ हो।

संदल—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चंदन, श्रीखंड, "बार संदल से अरक आया जबीने यारपार" —[स्फु०]।

संदली—(वि०, फ़ा०) चंदन का, चंदन सम्बन्धी चन्दन के रंग का, हलका पीला, चन्दन से बसा। (संज्ञा, पु०) एक हलका पीला रंग, हाथी, घोड़े की एक जाति।

संदि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संधि] संधि, मेल-मिलाप, जोड़, संयोग, दरार, बीच, संदि, संधि।

संदिग्ध—(वि०, सं०) संशय, संदेहपूर्ण, संशयात्मक, भ्रमयुक्त, जिसमें या जिस पर संदेह हो। [**संदिग्धता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

संदिग्धत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) संदिग्ध का धर्म या भाव, संदिग्धता, भ्रमात्मिकता, एक अलंकारिक दोष (काव्य०), किसी बात का ठीक अर्थ प्रकट न होना।

संदीपक—(वि०, सं०) उद्दीपक।

संदीपन—(संज्ञा, पु०, सं०) उद्दीपन, उद्दीप्त या उत्तेजित करने का कार्य, कामदेव के पाँच बाणों में से एक, श्रीकृष्णजी के गुरु। [**संदीपक, संदीपनीय, संदीपीत, संदीप्य** (वि०)]। (वि०) उत्तेजन या उद्दीपन करने वाला।

संदीप्त—(वि०, सं०) अति दीप्तमान, प्रकाशमान, उद्दीप्त, उत्तेजित।

संदूक—(संज्ञा, पु०, अ०) लोहे या लकड़ी आदि से बना बन्द पिटारा, पेटी, बक्स (अं०)।

संदूकची—(संज्ञा, स्त्री०) छोटी संदूक।

संदूकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० संदूक] छोटा बक्स, या संदूक, छोटी पेटी।

संदूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संदूर] सिन्दूर, सेंदुर।

संदेश—(संज्ञा, पु०, सं०) हाल, समाचार, खबर, एक बँगला मिठाई, [संदेस, संदेसा, सनेस (दे०)]। **वाहक**—(पु०) संदेश ले जाने वाला, [संदसिया (दे०)]।

संदेस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संदेश] समाचार, हाल, संदेश, संदेसा। "प्रभु संदेस सुनत वैदेही"—[रामा०]।

सँदेशा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संदेश] मुखागर, जबानी कहाई हुई खबर या बात, हाल, समाचार। "स्याम को सँदेसो एक पाती लिखि आई है"—सूर०। **मुहा०—सँदेसन खेती करना**।

संदेसी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संदेशिन्] संदेश ले जाने वाला, दूत, बसीठ। "ऊधो जो सँदेसी बनितान बोधि बोधैं हैं"—[स्फु०]।

संदेह—(संज्ञा, पु०, सं०) [सँदेह (दे०)], संशय, भ्रम, शंका, शक, शुबहा, किसी विषय या बात पर निश्चय न होने वाला विश्वास, एक अर्थालंकार जहाँ किसी वस्तु को देखकर उसमें अन्य वस्तु का संदेह बना रहे। "अस संदेह करहु जनि भोरे"—[रामा०] [**संदेही** (वि०, हि०)] —**वाद**—(पु०) संशयवाद। [स्केप्टिज्म]—**वादी** —(वि०) अविश्वासी। [स्केप्टिक]।

संदेहात्मक—(वि०, सं०) संदेहपूर्ण, संदिग्ध, संशयपूर्ण।

संदोह—(संज्ञा, पु०, सं०) वृंद समूह, राशि, झुंड। "कृपा-सिंधु संदोह"—[रामा०]।

संघ*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संधि] मेल, संयोग, मिलाप, संधि, सुलह, मित्रता, प्रतिज्ञा। "सत्य-संध प्रभु बध करि एही "—[रामा०]।

संधना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संधि] मिलना, संयुक्त होना ।

संधान—(संज्ञा, पु०, सं०) लक्ष्य या निशाना लगाना, योजन, बाणादि फेकना, मिलाना, खोज, अन्वेषण, काँजी, संधि, काठियावाड़ का नाम। "तब प्रभु कठिन बान संधाना "—[रामा०]। "शाप वरदानों के संधान"—महादेवी ।

संधानना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० संधान] निशाना लगाना, बाण फेकना । "संधाने तब विशिख कराला "—[रामा०]।

संधाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संधानिका] आचार, एक खटाई, संधान (प्रान्ती०)।

संधापक—(संज्ञा, पु०, सं०) मशीनों के अवयवों को यथास्थान बैठाने वाला [फिटर]।

संधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संयोग, मेल, जोड़, मिलने का स्थान, नरेशों की वह प्रतिज्ञा जिसके अनुसार लड़ाई बंद हो जाती और मित्रता तथा व्यापार-संबंध स्थापित होता है, मित्रता, सुलह, मैत्री, गाँठ, देह का कोई जोड़, समीपागत दो वर्णों के मेल से होने वाला विकार (व्याक०) चोरी आदि के लिए दीवार मे किया हुआ भारी छेद, [संध (दे०)], एक अवस्था का अंत और दूसरी के आदि के जैसे—वयःसंधि, अवकाश, मध्य का समय, मध्यवर्ती रिक्त स्थान, मुख्य प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होने वाला सम्बन्ध (नाटक०)। **—भंग**-(पु०) सुलह का भंग कर देना।—**विच्छेद**-(पु०) समझौता भंग होना। व्याकरण-सम्बन्धी संधि-गत अलगाव ।

संध्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दिन और रात के मिलने का समय संधि, समय, प्रभात, शाम सायंकाल, संझा, दिन-क्षपा का संयोगकाल। "दिनक्षपामध्यगतेव संध्या "—[रघु०]। एक प्रकार की ध्यानोपासना जो तीनों संध्याओं यानी प्रातः, मध्याह्न और संध्या समय की जाती है (आर्य०)। "संध्या करन गये दोऊ भाई "—[रामा०]।—**राग**-(पु०) संध्या समय गाया जाने वाला राग-विशेष ।

संध्योपासन—(संज्ञा, पु०, सं०) संध्या समय की पूजा ।

संनेस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संदेश] संदेश। "अपर सँनेस की न बातैं कहि जाति है "—[ऊ० श०]।

संन्यास—(संज्ञा, पु०, सं०) चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम जिसमें काम्य और नित्यादि कर्म निष्काम रूप से किये जाते है (भार० आर्य०)। "जैसे बिनु बिराग सन्यासी "—[रामा०]।

संन्यासी—(संज्ञा, पु०) [सं० संन्यासिन्] संन्यासाश्रम में रहने और तदनुकूल नियमों का पालन करने वाला। "मूड़ मुँड़ाय होहिं संन्यासी" —[रामा०]।

संपति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संपत्ति] धन, लक्ष्मी, दौलत, जायदाद, वैभव, ऐश्वर्य्य। "उपकारी की संपति जैसी "—[रामा०]।

संपत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धन, लक्ष्मी, दौलत जायदाद, वैभव, ऐश्वर्य्य, सुख-समय। [**संपत्तिशाली, संपत्तिवान** (वि०)]। "संपत्तिश्च विपत्तिश्च "—[स्फु०]। [**विपत्ति, आपत्ति** (विलो०)]।—**परिदर्शन**-(पु०) संपत्ति-निरीक्षण [इंस्पेक्शन आव् प्रापर्टी]

संपद्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धन, पूर्णता, लक्ष्मी, वैभव, ऐश्वर्य्य, सौभाग्य, गौरव, सिद्धि। "सर्वस्य द्वे सुमति कुमती संपदा-पत्ति हेतु "। [**विपद आपद** (विलो०)]।

संपदा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० संपद्] धन, लक्ष्मी, दौलत, वैभव, ऐश्वर्य्य। "सोइ संपदा विभीषण कहँ प्रभु सकुच-सहित अति दीन्हीं "—[विन०]। [**आपदा, विपदा** (विलो०)]।

संपन्न—(वि०, सं०) पूर्ण, भरा हुआ, सिद्ध, पूर्ण किया हुआ, धनी, सहित, युक्त। "सस-संपन्न सोह महि कैसी "—[रामा०]। [**संपन्नता** (संज्ञा, स्त्री०)]। कौन अधिक उनसे संपन्न—मैथिली०।

संपराय—(संज्ञा, पु०, सं०) मृत्यु, मौत, युद्ध, लड़ाई, संकट-समय, विपत्ति।

संपरीक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) परीक्षा की कापी, लेख का सूक्ष्म परीक्षण करना कि वह नियमानुरूप है या नहीं। [स्क्रूटनी]

संपर्क—(संज्ञा, पु०, सं०) मिलावट, मेल, संग, मिश्रण, वास्ता, ससर्ग, सम्बन्ध, लगाव, सटना, स्पर्श।—**ज**-(वि०) मेल अथवा संसर्ग से उत्पन्न होने वाला। संपर्कज रे तेरा पावक—पंत।

संपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बिजली, विद्युत्।

संपति—(संज्ञा, पु०, सं०) संगम, संसर्ग, मेल, सम्पर्क, समागम, एक साथ गिरना या पड़ना, जहाँ दो रेखायें एक दूसरी को काटें या मिलें (रेखा०)। "शिशिर ज्यों पत्र पर कनक-प्रभात के, किरण-सम्पात के"—निराला

संपाति—(संज्ञा, पु०, सं०) गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र तथा जटायु का बड़ा भाई एक गीध, [संपाती (दे०)] माली नामक राक्षस का एक पुत्र। "सुनि संपाति बंधु कै करनी"—[रामा०]।

संपाती—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संपाति] गरुड़ पुत्र जटायु का बड़ा भाई एक गीध। "गिरि कंदरा सुना संपाती"—[रामा०]।

संपादक—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी कार्य को तैयार या पूरा करने वाला, सम्पन्न करने वाला, प्रस्तुत करने वाला, किसी पुस्तक या समाचार-पत्र को क्रम में लगा या ठीक करके निकालने वाला। [एडिटर]

संपादकी—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) संपादक का कार्य।

संपादकत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) संपादन करने की अवस्था, भाव या कार्य, संपादकता।

संपादकीय—(वि०, सं०) संपादक का, संपादक-सम्बन्धी।

संपादन—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्य पूर्ण करने, प्रदान करने, शुद्ध या सही करने, ठीक या दुरुस्त करके, किसी पुस्तक या समाचार-पत्र को क्रमपूर्वक पाठादि लगाकर प्रकाशित करने या निकालने का कार्य। [**संपादनीय, संपाद्य, संपादित** (वि०)]।

संपादना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संपादन] पूरा, ठीक या दुरुस्त करना। "विविध अन्न संपति संपादहु"—रा० रघु०।

संपादित—(वि०, सं०) पूर्ण ठीक या दुरुस्त किया हुआ, ठीक क्रम पाठादि लगाकर (पुस्तक, समाचार-पत्रादि) का ठीक और प्रकाशित किया हुआ।

संपुट—(संज्ञा, पु०, सं०) बरतन के आकार की कोई वस्तु, दोना, कटोरा, डिब्बा, खप्पर, कपाल, अँजली, संकुचन, फूलों का कोश, पुष्प-दल का रिक्त स्थान, मिट्टी से सने कपड़े से लपेटा हुआ एक बंद गोल पात्र जिसके भीतर रखकर कोई वस्तु आग में फूँकी जाती है (वैद्य० रसा०)। "घोष सरोज भये हैं संपुट दिन-मणि ह्वै बिगसायाँ"—[भ्र०]। घुँघरू। नाचै तदपि धरोक लौं संपुट पगनि बजाय"—छत्र०।

संपुटी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्याली, छोटी कटोरी संपती, संपटी (ग्रा०)।

संपूज्य—(वि०, सं०) अत्यन्त आदरणीय।

संपुष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी के वक्तव्य भाषण विभिन्न सूत्रों से पुष्ट हो जाना। [कारोबोरेशन]

संपूर्ण—(वि०, सं०) सब का सब, पूर्ण, सारा तमाम, कुल, समस्त सब, बिलकुल, समाप्त, पूरा, सर्वस्व, [समपूरन (दे०)]। (संज्ञा, पु०) वह राग जिसमें सातों स्वर आते हों, आकाशभूत। "भा संपूर्ण कहा सखि तोरा"—वासु०।

संपूर्णतः—(क्रि० वि०, सं०) पूर्ण रूप से पूरी तरह से।

संपूर्णतया—(क्रि० वि०, सं०) पूर्ण रूप से, पूरी तरह से।

संपूर्णता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूर्णता, संपूर्ण होने का भाव या कार्य, पूरा पूरा, पूरापन, समाप्ति।

संपृक्त—(वि०, सं०) मिला हुआ, मिश्रित। "वागर्थाविवसंपृक्तौ"—[रघु०]।

सँपेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साँप+एरा प्रत्य०] साँप नचाने या रखने वाला, मदारी, सँपेला। [**सपेरिन** (संज्ञा, स्त्री०)]।

संपै—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संपत्ति] धन, वैभव। "संपै देखि न हर्षिय, विपति देखि नहिं रोव"—कबीर।

संपोला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साँप] छोटा साँप, साँप का बच्चा, संपेलवा (ग्रा०)।

संपोषित—(वि०, सं०) अच्छी तरह से पोषित, पालित।

संप्रज्ञात—(संज्ञा, पु०, सं०) वह समाधि जिसमें आत्मा को अपने रूप का बोध हो या वह वहाँ तक न पहुँचा हो (योग०)।

संप्रति—(अव्य०, सं०) इदानीम, साम्प्रतम् इस समय में, अभी, इस काल, आजकल, अधुना।

संप्रदान—(संज्ञा, पु०, सं०) दान देने की क्रिया का भाव, मंत्रोपदेश, दीक्षा, एक कारक (चतुर्थी) जो दान-पात्र के अर्थ में आता है और जिसमें संज्ञा, शब्द देना क्रिया का लक्ष्य होता है (व्या०)। "जाके हेतु क्रिया वह होई, संप्रदान तुम जानो सोई"—कुंजवि०।

संप्रदाय—(संज्ञा, पु०, सं०) कोई विशेष धर्म्म संबंधी मत, किसी मत के अनुयायियों की मंडली जो एक ही धर्म के मानने वाले हों, परिपाटी, चाल, रीति, पंथ, प्रणाली। [**सांप्रदायिक** (वि०)] ।—**वाद**-(पु०) अपने सम्प्रदाय को श्रेष्ठ समझना तथा अन्य सम्प्रदाय वालों को हीन समझना।—**वादी**-(वि०) जो अन्य समुदायों को हीन समझकर अपने संप्रदाय को श्रेष्ठ समझे।

संप्रदायिक—(वि०, सं०) किसी सम्प्रदाय सम्बन्धी, सप्रदाय का, धार्मिक। [काम्यूनल] [**संप्रदायिकता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

संप्राप्त—(वि०, सं०) [संज्ञा, संप्राप्ति] पाया हुआ, उपस्थित, जो हुआ हो, घटित, मिलना, पाना, लब्ध।

संप्राप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उपलब्धि। [अटेनमेंट]

संप्राप्य—(वि०, सं०) प्राप्त करने के योग्य।

संप्रेक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) दर्शक।

संप्रेषण—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थानांतरित करना, भेजना, पहुँचाना (एक स्थान से दूसरे स्थान या एक व्यक्ति के पास से दूसरे व्यक्ति के पास)। [ट्रांसमीशन]

सम्प्रेषक—(संज्ञा, पु०, सं०) दूरप्रेषकयंत्र जिससे सूचना आदि भेजी जाती है। [ट्रांसमीटर]

सम्प्रेषण—(संज्ञा, पु०, सं०) दूर-प्रेषण [ट्रांसमिशन]।

संबंध—(संज्ञा, पु०, सं०) ससर्ग, लगाव, ताल्लुक, संगम, संपर्क, नाता, वास्ता, रिश्ता संयोग, मेल, सगाई, ब्याह।—**कारक**-(पु०) एक शब्द का दूसरे से लगाव या सम्बन्ध प्रगट करता है। इसमें एक पद सम्बन्धी और दूसरा सम्बन्धवान कहाता है। जैसे-राम का मुख (व्याक०)।

संबंधातिशयोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जहाँ सम्बन्ध न (सं० अबध) होने पर भी सम्बन्ध प्रगट किया जाता है।

संबंधी—(वि०) [सं० संबंधिन्] लगाव या सम्बन्ध रखनेवाला विषयक। (संज्ञा, पु०) नातेदार, रिश्तेदार, समधी। (सह०) संबंधवान। [**संबंधिनी** (स्त्री०)]।

संबद्धीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्बद्ध होना या सदस्य बना लिया जाना। (किसी परिवार से या किसी विद्यालय का विश्वविद्यालय से) [एफिलियेशन]।

संबत्—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संवत्] संवत, साल, वर्ष, सन्। "संबत् सोरह सै इकतीसा" —[रामा०]।

संबद्ध—(वि०, सं०) संयुक्त, बँधा या जुड़ा हुआ, बंद, सम्बंधयुक्त। [**सम्बद्धता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

संबल—(संज्ञा, पु०, सं०) मार्ग का भोजन, रास्ते का खाना, सफर खर्च, पाथेय। "राम-नाम संबल करौ, चलौ धर्म को पथ'—जिया०।

संबुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शंबुक] घोंघा, सीपी। "मुक्ता स्रवहिं कि संबुक-ताली"—[रामा०]।

संबुद्ध—(संज्ञा, पु०, सं०) ज्ञानी, ज्ञानवान, ज्ञान, जाना हुआ, जिन, बुद्ध। [**संबुद्धि, संबुद्धता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

संबुल—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) एक प्रकार की घास।

संबोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) जगाना, सोते से उठाना, निद्रा मुक्त करना, पुकारना, सचेत या चैतन्य करना, एक कारक (आठवाँ) जिससे शब्द का किसी के बुलाने या पुकारने का प्रयोग जाना जाता है। इसके चिह्न हे, रे, अरे, आदि हैं। जैसे—हे श्याम। विदित करना, जताना, आकाशभाषित वाक्य (नाटक), समझाना, बुझाना चेतना। * (क्रि० स०, दे०, सं०) समझाना, बुझाना, सचेत या सजग करना, चेताना। [**सम्बोधनीय, संबोधित, संबोध्य** (वि०)]।

संबोधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संबोधन] तसल्ली देना, समझाना, सचेत करना, चेतना, जगाना।

संबोधनीय—(वि०, सं०) जताने या समझाने योग्य, चेताने योग्य।

संबोधित—(वि०, सं०) पुकारा हुआ जगाया या चेताया हुआ।

संबोध्य—(वि०, सं०) जगाने या चेताने के योग्य समझाने-योग्य ।

संभरना, संभालना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सँभार] सावधान या होशियार होना, हानि वा चोट से बचना, कार्य का भार उठाया जाना, स्वस्थ या चंगा होना, आराम होना, भार या बोझ आदि का थमा जा सकना, बिगड़ने से बचना, सुधरना, बनना, किसी सहारे पर रुक सकना । [**सँभलाना**—(प्रेरणा० रूप)] ।

संभव—(संज्ञा, पु०, सं०) साध्य, जन्म, उत्पत्ति संयोग, मेल होना, मुमकिन, हो सकना, होने के योग्य होना । [**असम्भव** (विलो०)] ।

संभवतः—(अव्य०, सं०) हो सकता है, गालिबन (फ़ा०) मुमकिन है, संभव है ।

संभवना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० संभव] उत्पन्न करना, पैदा करना । (क्रि० अ०, दे०) उत्पन्न या पैदा होना, हो सकना, संभव होना ।

सँभार, सँभाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सँभार] एकत्रित या संचय करना, इकट्ठा करना, साज-सामान, तैयारी, संपत्ति, धन, पालन-पोषण, संचय । "संभारः संभृयंताम्"—वाल्मीकि । "आह कितना सुन्दर संभार"—प्रसाद

सँभार, सँभाल†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० संभालना] चौकसी, खबरदारी, देख रेख, रक्षा, निगरानी, पालन पोषण, ठीक या उचित रीति-नीति या रूप से रखना । रोक, निरोध, वश मे रखने का भाव, तन-मन की सुधि । "पुनि सँभार उठी सो लंका"—[रामा०] ।

सँभारना, सँभालना†*—(क्रि० स०, दे०) [सं० संभार] याद करना, भार या बोझा ऊपर ले सकना, रोके रहना, नीचे न गिरने देना, थामना, वश में रखना, रक्षा करना, संकट या बुराइयों आदि से बचना-बचाना, दुर्दशा से बचाना पालन-पोषण करना, उद्धार करना, निगरानी या देख-रेख करना, चौकसी करना, निर्वाह या गुजर करना, निबाहना, चलाना, किसी बात या वस्तु के ठीक होने का विश्वास या भरोसा करना, सहेजना, किसी मनोवेग का रोकना, बिगड़ने न देना, सुधारना । [**सँभराना, सँभलाना**—(स० रूप)] । [**सभलवाना**—(प्रेरणा० रूप)] ।

संभालू—(संज्ञा, पु०, दे०) मेढ़की, मैवाड़ी (प्रान्ती०) सफेद सिंधुवार वृक्ष ।

संभावना—(संज्ञा, पु०, सं०) मुमकिन या संभव होना, हो सकना, अनुमान, कल्पना, सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा, एक अर्थालंकार जिसमें एक बात का होना दूसरी के होने पर निर्भर हो (अ० पी०) ।

संभावनीय—(वि०, सं०) मुमकिन, जिसकी संभावना हो, पूज्य, माननीय ।

संभावित—(वि०, सं०) मन में माना या अनुमाना हुआ, संभव, मुमकिन, आदरणीय, प्रतिष्ठित, कल्पित, संचित या जुटाया हुआ, [सम्भवित (दे०)] ।

संभाव्य—(वि०, सं०) संभव, मुमकिन । [**संभाव्यता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

संभाषण—(संज्ञा, पु०, सं०) वार्तालाप, बातचीत, कथोपकथन । [**संभाषणीय, संभाषित, संभाष्य** (वि०)] ।

संभाषणीय—(वि०, सं०) कथनीय, वार्तालाप करने योग्य ।

संभाषी—(वि०, संभाषिन्) वार्तालाप करने या बोलने वाला, कहने वाला । [**संभाषिणी** (स्त्री०)] ।

संभाषित—(वि०, सं०) कथित ।

संभाष्य—(वि०, सं०) जिससे वार्तालाप करना योग्य या उचित हो, कथनीय, बातचीत करने योग्य ।

संयुक्त—(वि०, सं०)...से रचित, युक्त, सम्पन्न ।

उपयुक्त—(वि०, सं०) उपयुक्त, प्रयोग में लाया हुआ, अतिक्रांत ।

संभूत—(वि०, सं०) एक साथ उत्पन्न या उद्भूत, जन्मा हुआ, पैदा, प्रगट, सहित, युक्त, साथ । [**संभूति** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**समुत्थान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) साझे का कार्य या काम, शामिल कारबार ।

संभूय—(अव्य०, सं०) साझे में, शामिल, या साथ में ।

संभेद—(संज्ञा, पु०, सं०) भली भाँति भिदना, भेद नीति, वियोग । [**संभेदन** (संज्ञा, पु०, सं०)], [**संभेदनीय** (वि०)] ।

संभोग—(संज्ञा, पु०, सं०) सुख-पूर्वक व्यवहार, स्त्री-प्रसंग, रति-केलि, मैथुन-कार्य, मिलाप की हालत, संयोग-श्रृंगार (श्रृंगार रस-भेद) । [**वियोग-विप्रलभ** (विलो०)] ।

संभोगी—(वि०, सं०) कामुक, उपभोगकर्त्ता। (संज्ञा, पु०) कामी पुरुष।

संभ्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्कंठा, व्याकुलता, घबराहट, व्यग्रता, विकलता, सहम, सिटपिटाना, खलबली, गौरव, सम्मान, आदर। (क्रि० वि०) उतावली। "लेखि पर नारी मन सम्भ्रम भुलायो है"—काली०।

संभ्रांत—(वि०, सं०) व्यग्र, उद्विग्न विकल, घबराया हुआ, व्याकुल, सम्मानित, समादृत, प्रतिष्ठित।

संभ्रांति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भ्रांति, भ्रम, व्यग्रता, व्याकुलता।

संभ्राजना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संभ्राज] भली भाँति या पूर्ण रूप से शोभित होना।

संमत—(वि०, सं०) सहमत, अनुमत, जिसकी राय या मत मिलता हो।

संमति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राय, अनुमति, सलाह। "गुरु श्रुति संमति धर्म-फल, पाइय बिनहिं कलेस"—[रामा०]।

संमान—(संज्ञा, पु०, सं०) आदर, गौरव, इज्जत, सत्कार, सम्मान। "करहु मातु-पितु कर संमाना"—[स्फु०]। [**संमाननीय, संमानित** (वि०)]।

संमानना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संमान] आदर या सत्कार करना।

संमेलन—(संज्ञा, पु०, सं०) जमाव, जमघट, सभा, समाज, मिलाप, मेल, सम्मिलन।

संम्राज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साम्राज्य] साम्राज।

संयत—(वि०, सं०) दमन किया या दबाव में रखा हुआ, बँधा हुआ, बद्ध, कैदी, वशीभूत, कैद, बंद किया हुआ, व्यवस्थित, क्रम-बद्ध, उचित सीमा के अन्दर रोका हुआ, मन-सहित, इन्द्रियजित, निग्रही। "न संयतः तस्य बभूव रक्षितः"—[रघु०]।

संयम—(संज्ञा, पु०, सं०) रोक, परहेज (फा०), निग्रह, दाब, इन्द्रिय-निग्रह, चित्तवृत्ति का निरोध, बंधन, बंद करना, बुरी बातों या वस्तुओं से बचना, ध्यान, धारणा और समाधि का साधन (योग०)। [**संयमी, संयमित, संयत** (वि०)]।

संयमन—(संज्ञा, पु०, सं०) दमन, बाँधना, खींचना, जकड़ना।

संयमनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यम-लोक, यम-पुरी, यम-नगरी।

संयमित—(वि०, सं०) नियंत्रित, रोका हुआ बंधा हुआ।

संयमितता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संतति निग्रह। [ऐब्स्टीनेंस]

संयमी—(वि०) [सं० संयमिन्] मनेन्द्रियों को वश में रखने वाला, इन्द्रियजित, आत्म-निग्रही, इन्द्रयनिग्रही, योगी, रोक या दबाव रखने वाला, परहेजगार। "तस्यां जागर्त्ति संयमी"—[भ० गी०]।

संयात—(वि० सं०) साथ साथ गया हुआ।

संयुत—(वि०, दे०) युक्त, मिला हुआ। "मंद गँभीर धीर स्वर संयुत..."—प्रसाद।

संयुक्त—(वि०, सं०) सम्मिलित, जुड़ा या लगा हुआ, मिला हुआ, युक्त, मिश्रित, सहित, साथ, सम्बद्ध। [**संयुक्तता** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**परिवार**-(पु०) वह परिवार जिसमें भाई का परिवार चाची-चाचा, माता-पिता आदि सभी सम्मिलित रूप से रहते हों।—**निर्वाचक वर्ग**-(पु०) वह निर्वाचकों का समूह जो असाम्प्रदायिक हों।—**राष्ट्रसंघ**-(पु०) अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार करने के लिए विश्व के सभी देशों का अपना एक संगठन। [यूनाइटेड नेशन्स अर्गनाइजेशन]—**अवेक्षण**-(पु०) सम्मिलित निरीक्षण। [ज्वाइंट सुपरविज़न]—**उत्तरदायित्व**-(पु०) सम्मिलित जवाबदारी। [ज्वाइंट रिसपांसबिलटी]—**घोषणा**-(स्त्री०) सम्मिलित रूप से की जानेवाली घोषणा। [ज्वाइंट डिक्लेरेशन]—**निधि**-सम्मिलित रूप से संचित किया हुआ धन। [ज्वाइंट फंड]—**निर्वाचन**-(पु०) कई वर्गों का मिला-जुला चुनाव। [ज्वाइंट इलेक्शन]—**परिवार**-(पु०) सम्मिलित कुटुंब। [ज्वाइंट फैमिली]—**पूंजी**-(स्त्री०) सम्मिलित धन। [ज्वाइंट स्टाक]—**प्रार्थनापत्र**-(पु०) भिन्न-भिन्न लोगों का मिल कर दिया जाने वाला आवेदन पत्र। [ज्वाइंट अप्लिकेशन]—**लेखा**-(पु०) साझे का लेखा। [ज्वाइंट अकाउंट]—**शासक**-(पु०) संयुक्त अधिकरणिक। [ज्वाइंट मैजिस्ट्रेट]—**समिति**-(स्त्री०) विभिन्न विचार वालों की समिति [ज्वाइंट कमिटी]।—**संपत्ति**—(स्त्री०) साझे का धन। [ज्वाइंट प्रापर्टी]

संयुक्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा पृथ्वीराज की रानी और जयचंद की पुत्री, एक छंद (पिं०)।

संयुग—(संज्ञा, पु०, सं०) मेल, मिलाप, संयोग, युद्ध, संग्राम, लड़ाई। "संयुग की धूलि में समाधि युग की हो बनी"—दिनकर।

संयुत—(वि०, सं०) जुड़ा या मिला हुआ, सहित संयुक्त, साथ। (संज्ञा, पु०, सं०) एक सगण, दो जगण और एक गुरु का एक छंद (पिं०)।

संयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) मेल, मिलाप, मिलान, मिश्रण, मिलावट, लगाव, समागम, सम्बन्ध, स्त्री-प्रसंग, सहवास, विवाह-संबंध, योग, जोड़, मोजान, मौका, अवसर, इत्तफाक, [संजोग, सँजोग (दे०)] दो या कई बातों का एकत्र होना। "जो विधि वश अस होय सँयोगू"—[रामा०]। **—शृंगार**-(पु०) रस का वह भेद विशेष जिसमें पारस्परिक मिलन के आनन्द का वर्णन रहता है। **मुहा०—से**-दैववशात, इत्तफाक से, बिना पूर्व निश्चय के, बिना विचारे।

संयोगिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह नारी जो सौभाग्यवती हो, पति से युक्त नारी।

संयोगी—(संज्ञा, पु०) [सं० संयोगिन्] संयोग या मेल करने वाला, जो व्यक्ति अपनी प्रिया के साथ हो, [संजोगी, सजोगी (दे०)]। [**संयोगिनी** (स्त्री०)]।

संयोजक—(संज्ञा, पु०, सं०) जोड़ने या मिलाने वाला, दो या अधिक शब्दों या वाक्यों का मिलाने वाला शब्द या अव्यय (व्याक०)। सभा, समिति आदि का आयोजक। [कनवीनर]

संयोजन—(संज्ञा, पु०, सं०) जोड़ने और मिलाने की क्रिया। [**संयोजी, संयोजनीय, संयोज्य, संयोजित** (वि०)]।

संयोजित—(वि०, सं०) मिला या मिलाया हुआ या गया संयुक्त।

संयोना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सँजोना] सँजोना, सजाना, रक्षित कर रखना।

संरंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) क्रोध, कोप, मानसिक आवेग, आक्रोश।

संरक्षक—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्षक, रक्षा करने वाला, देख-रेख और पालन-पोषण करने वाला, आश्रय या अभय देने वाला। [पेट्रन] [**संरक्षिका** (स्त्री०)]

संरक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) रक्षा करना, बचाना, हानि या बुराई आदि से बचाना, निगरानी, देख-रेख, अधिकार, स्वत्व। [**संरक्षणीय, संरक्षी, संरक्षित, संरक्ष्य** (वि०)]।

संरक्षित—(वि०, सं०) हिफाजत से रखा हुआ, भली भाँति बचाया हुआ।

संरक्ष्य—(वि०, सं०) रक्षा करने योग्य।

संरसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मछली फँसाने या गरम चीजों को पकड़ कर उठाने की कटिया, सँड़सी, सन्सी (ग्रा०)।

संराधन—(संज्ञा, पु०, सं०) सेवा करना, चिन्तन करना, समाराधन।

सराव—(संज्ञा, पु०, सं०) पक्षियों का शब्द।

संलक्ष्य—(वि०, सं०) जो लखा या देखा जावे, लक्ष्य, उद्देश्य।**—क्रम, व्यंग्य**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ऐसी व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम सूचित हो (काव्य०)।

संलग्न—(वि०, सं०) सबद्ध लगा हुआ, सटा या मिला हुआ, लड़ाई में गुँथा हुआ, मिलित। [**संलग्नता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]। **—देश**-(पु०) समीप के देश। [ऐडज्वाइनिंग कंट्रीज]**—सीमा**-(स्त्री०) लगी या मिली हुई सीमा। [ऐडज्वाइनिंग बाउंडरी]

संलाप—(संज्ञा, पु०, सं०) बातचीत, कथोपकथन, वार्तालाप, धीरता-युक्त होने वाला संवाद (नाटक०)। [**संलापन** (संज्ञा, पु०, सं०)]। [**संलापक, संलापित, संलापनीय** (वि०)]। **—कक्ष**-(पु०) बैठक। [ड्राइंग रूम]

संवत्—(संज्ञा, पु०, सं०) साल, वर्ष, राजा शालिवाहन के समय से मानी गई वर्ष गणना, शाका, सन्, सम्राट् विक्रमादित्य के समय से चली हुई वर्ष गणना, संख्या-सूचित वर्ष विशेष।

संवत्सर—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्ष, साल, फ़सल।

संवत्सरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संवत् का व्यवहार।

संवर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्मृति] स्मरण, याद, खबर, हाल, समर।

संवरण—(संज्ञा, पु०, सं०) आच्छादित करना, संगोपन, छिपाना, छोपना, बंद करना, दूर रखना या करना, हटाना, किसी मनोवृत्ति को दबाना या रोकना, निग्रह, चुनना, पसंद करना, विवाह के लिये कन्या का पति या वर चुनना। [**संवरणीय, संवृत** (वि०)]।

सँवरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संवर्णन] सजना, दुरुस्त होना, सुधरना, बनना, अलंकृत होना। * (क्रि० स०, दे०) [हि० सुमिरना] सुमिरना, स्मरण या याद करना। " सँवरौं प्रथम आदि करतारू "—[पद०]। " सब सँवारि विधि बात बिगारी "—[रामा०]।

सवरिया—(वि०, दे०) [हि० साँवला] साँवला, श्याम, [संवलिया साँवलिया (दे०)]।

संवर्तीसूची—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कई स्थानों से प्रकाशित की जाने वाली सूची। [कॉनकरेंट लिस्ट]

संवर्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि विशेष।

संवर्द्धक—(संज्ञा, पु०, सं०) वृद्धि करने या बढ़ाने वाला।

संवर्द्धन—(संज्ञा, पु०, सं०) बढ़ना बढ़ाना, पालन-पोषण, प्रवर्धन। [**संवर्द्धनीय, संवर्द्धित, संवृद्ध** (वि०)]।

संवलता—(संज्ञा, पु०, सं०) साधकता, आधार। भोज्य होने का भाव, सहायकता। " इस तन की संवलता लेकर "—हितैषी।

संवाद—(संज्ञा, पु०, सं०) कथोपकथन, बातचीत, वार्त्तालाप, समाचार, हाल, चर्चा, मामला, प्रसंग, मुकदमा। (कर्त्ता० संवादक)।—**दाता**-(पु०) समाचार या हाल देने या भेजने वाला। [करेसपॉण्डेंट]।—**नियंत्रण**-(पु०) समाचारों की जाँच, समाचार-निरीक्षण। [सेंसर]—**परिषद्**-(स्त्री०) समाचार-पत्रों में छपने वाली खबरों का निरीक्षण करने वाली समिति। [सेंसर बोर्ड]

संवादी—(वि०) [सं० संवादिन] संवाद या वार्त्तालाप करने वाला, अनुकूल या सहमत होने वाला। [**संवादिनी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) वादी के साथ सब स्वरों के साथ मिलने और सहायक होने वाला स्वर (संगी०)।

संवार—(संज्ञा, पु०, सं०) संगोपन, छिपाना, ढाँकना, वर्णोच्चारण का एक बाह्य-प्रयत्न जिसमें कंठ संकुचन हो (व्याक०)।

सवार—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० स्मृति] समाचार, हाल, खबर। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) बनावट, सजावट, रचना, संवारना क्रिया का भाव।

संवारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संवर्णन] अलंकृत या व्यवस्थित करना, सजाना, ठीक या दुरुस्त करना, क्रम से रखना, कार्य ठीक करना। " वे पंडित वे धीर-वीर जे प्रथम संवारत "—रा० वि० भू०।

संवारित—(वि०, सं०) पारित, ढका हुआ, छिपाया हुआ।

संवाहक—(संज्ञा, पु०, सं०) शरीर दबाने वाला, नौकर, ले जाने वाला, ढोने वाला। (वि०) गति देने वाला, चालक।

संवाहन—(संज्ञा, पु०, सं०) उठा कर ले जाना, ले चलना, ढोना, परिचालन, चलाना, पहुँचाना। " जीवन संवाहन तौ धर्म ही बतायो जात "—मन्ना०। [**संवाहनीय, संवाहित, संवाहक, संवाही, संवाह्य** (वि०)]।

संविग्न—(वि०, सं०) व्यग्र, आतुर, उद्विग्न, घबराया हुआ, व्याकुल। [**संविग्नता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

संविद—(वि०, सं०) चेतन, ज्ञान। (पु०) करार।

संविदा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समझौता, करार। किसी निश्चित शर्त पर होने वाला समझौता। [कंट्रैक्ट]

संविद्—(वि०, सं०) अनुभव, ज्ञान, बोध, समझ, बुद्धि, चेतन, विचार, चेतना-युक्त।

संविधान—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रबंध, रीति, रचना, सुव्यवस्था। वह विधान जिनके अनुसार सम्पूर्ण राज्य के प्रबंध का संघटन होता है। [कांस्टीट्यूशन] —**कृत्य**-(पु०) सरकारी काम, राजकीय कार्य। [कांस्टीचुएंट फंक्शन्स]।—**सभा**-(स्त्री०) संविधान निर्माण करने वाली सभा। [कांस्टिटुएंट एसम्बली]

संविलयन—(संज्ञा, पु०, सं०) आत्मसात, विलीन करने की क्रिया। [ऐबजार्बेशन]

संविधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अनुविधि, कानून। [स्टैट्यूट]—**पुस्तक**-(पु०) विधान-पुस्तक। [स्टैट्यूट बुक]

संवृद्ध—(वि०, सं०) प्रगतिशील, उन्नतिशील, पूरा बढ़ा हुआ।

संवेग—(संज्ञा, पु०, सं०) तीव्र वेग। उग्रता, प्रचंडता, तीव्रता। [वेलासिटी]

संवेद—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुभव, ज्ञान, बोध समझ, वेदना।

संवेदन—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुभव दुःखसुख आदि की प्रतीति ।—**वाद**-(पु०) वह सिद्धांत जिसमें ज्ञान की उपलब्धि संवेदना के द्वारा होती है। [सेंसेशनलिज्म]—**शील**-(वि०, सं०) भावुक, भावप्रवण। "हम संवेदनशील हो चेले मिला यही सुख"—प्रसाद ।

संवेदना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुखदुःखादि की प्रतीति या अनुभूति, [समवेदना (दे०)] ।

संवेद्य—(वि०, सं०) प्रतीति या अनुभव करने योग्य, जताने या बताने के योग्य, प्रकटनीय ।

संशय—(संज्ञा, पु०, सं०) आशंका, संदेह, शंका, डर, भय, शक, संदेहालंकार, (काव्य०) । "संशय साँप ग्रसेउ मोहिं ताता "—[रामा०] । अनिश्चयात्मक ज्ञान, [संसय, संसै (दे०)] ।

संशयात्मक—(वि०, यौ०, सं०) जिससे संदेह या शक हो, संदिग्ध, संदेह युक्त ।

संशयात्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० संशयात्मन्] अविश्वासी, सदेही। " संशयात्मा विनश्यति " —[भ० गी०] । जो किसी बात पर विश्वास न करे ।

संशयी—(वि०) [सं० संशयिन्] संशय या संदेह करने वाला शक्की ।

संशयोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उपमालंकार का एक भेद जहाँ उपमेय की कई उपमानों के साथ समानता संदेह के रूप मे कही जावे (काव्य०) ।

संशोधक—(संज्ञा, पु०, सं०) संशोधन करने या सुधारने वाला, ठीक करने वाला, बुरी दशा से अच्छी मे लाने वाला ।

संशोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) साफ़ या शुद्ध करना, सुधारना, दुरुस्त या ठीक करना, (ऋणादि) चुकता या अदा करना । [**संशोधनीय, संशोधित, संशुद्ध, संशोध्य** (वि०, सं०)] ।

संशोधित—(वि०, सं०) स्वच्छ या शुद्ध किया हुआ, सुधारा हुआ, निर्दोष । [**संशोधक** (संज्ञा, पु०, सं०)] ।

संश्रय—(संज्ञा, पु०, सं०) संबंध, संयोग, मेल, लगाव, शरण, आश्रय, सहारा, अवलंब, घर, गृह, मकान ।

संश्रयण—(संज्ञा, पु०, सं०) सहारा या आश्रय लेना, अवलंब या शरण लेना । [**संश्रयणीय, संश्रयी, संश्रित** (वि०)] ।

संश्लिष्ट—(वि०, सं०) आलिंगित, परिरंभित, सम्मिलित, मिश्रित, मिला हुआ, संयुक्त, कारकादि विभक्तियों की संज्ञा-शब्दों से मिली हुई अवस्था ।

संश्लेष—(संज्ञा, पु०, सं०) आलिंगन, परिरंभण, मिलाप, मिलन, मिश्रण ।

संश्लेषण—(संज्ञा, पु०, सं०) एक में मिलाना, सटाना, टाँगना, अटकाना। [**संश्लेषणीय, संश्लेषित, संश्लेषक, संश्लेष्ट** (वि०)] ।

संश्लेषित—(वि०, सं०) सटाया हुआ, मिलाया हुआ ।

संस, संसइ*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संशय] संशय, आशंका, सन्देह, शक, संसै (ग्रा०) । "संसइ सोक मोह बस अहऊँ"—[रामा०] ।

संसक्त—(वि०, सं०) संयुक्त, संबद्ध, आसक्त, लिप्त, सहित । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) लगाव, घनिष्ठता, आसक्ति । संबद्धता ।

संसत्, संसद्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लोकसभा, केंद्रीय विधान सभा जिसमें देश के प्रत्येक भाग से निर्वाचित सदस्य शासन-सम्बन्धी कार्यों मे सहायता देते है । [पार्लियामेंट] ।

संसय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संशय] संशय, सन्देह । "कछु संसय जिय फिरती बारा"—[रामा०] ।

संसरण—(वि०, दे०) [सं० संशय] उपजाऊ, उर्वर, संसर्ग, सम्बन्ध ।

संसरण—(संज्ञा, पु०, सं०) चलना, गमन करना, जगत, संसार, मार्ग, पथ, सड़क, राह । [**संसरणीय, संसरित, संसृत** (वि०)] ।

संसर्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्पर्क, लगाव, संबन्ध, संग, साथ, मेल-मिलाप । स्त्री-पुरुष का सहवास या प्रसंग ।—**दोष**-(पु०) सम्पर्क या सम्बन्ध से उत्पन्न बुराई या दोष, संग-साथ से पैदा हुआ दुर्गुण। "होते है, संसर्गदोष बहु आप विचारी"—वासु० ।—**रोग**-(पु०) छुआछूत से फैलने वाली बीमारी । [इनफ़ेक्शस डिजीज़]

संसर्गी—(वि०) [सं० संसर्गिन्] साथी, सम्पर्क या लगाव रखने वाला । [**संसर्गिणी** (स्त्री०)] ।

संसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संशय] संशय, संदेह ।

संसार—(संज्ञा, पु०, सं०) बराबर एक दशा से दूसरी में परिवर्तित होते रहना, रूपान्तरित होने

वाला, जगत्, सृष्टि, दुनिया, जहान, मृत्युलोक, इहलोक, गृहस्थी, जन्ममरण की परम्परा, आवागमन : "पल्लवति, फूलति, फलति नित संसार-विटप नमामि हे"—[रामा०] ।—चक्र-(पु०) जन्म-मरण या आवागमन का चक्कर, भवजाल, समय का हेर-फेर, परिवर्तन का चक्कर ।—धर्म-(पु०) लौकिक व्यवहार, परिवर्तन, रूपान्तर, लोकरीति ।—तिलक-(पु०) एक प्रकार का बढ़िया चावल ।—विटप-(पु०) संसाररूपी पेड़, पेड़ रूपी संसार । "संसार विटप नमामि हे"—[रामा०] ।—मूर्ति-(पु०) विष्णु, परमेश्वर, भगवान, संसार-स्वामी ।—सागर-(पु०) सागर-रूपी संसार, संसार का समुद्र, भवसागर, संसार-सिंधु, भवोदधि ।

संसारी—(वि०) [सं० संसारिन्] लौकिक, संसार-संबंधी, क्षणिक, परिवर्तनशील (व्यंग्य), संसार के मायाजाल में फँसा; धर्मशील, जन्म-मरण, आवागमन से बद्ध, लोक-व्यवहार में निपुण । "सेमर फूल सरिस संसारी सुख समझो मन कोर" —[स्फु०] । [**संसारिणी** (स्त्री०)] ।

संसिक्त—(वि०, सं०) भली-भाँति सींचा हुआ, आर्द्र, गीला ।

संसिद्ध—(वि०, सं०) सब प्रकार सिद्ध, प्रमाणित, भली भाँति किया हुआ, मुक्त पुरुष, निपुण, चतुर, कुशल ।

संसृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जन्म-मरण की परम्परा, आवागमन, संसार, सृष्टि । "संसृतिर्न निवर्तते"—[स्फु०] । "लघु उर में पुलकों की संसृति"—महादेवी ।

संसृष्ट—(वि०, सं०) मिलित, मिश्रित, सम्बद्ध, मिला हुआ, परस्पर लगा हुआ, अंतर्गत ।

संसृष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक ही साथ उत्पत्ति या उद्भूति, आविर्भाव, मिश्रण, मिलावट, लगाव, संबंध, मेल-जोल, घनिष्ठता, संग्रह या संचय, एकता करना, दो या अधिक अलंकारों का ऐसा मिश्रण कि सब तिल-तंदुलवत् अलग-अलग जान जावें ।

संस्करण—(संज्ञा, पु०, सं०) शुद्ध या सही करना, सुधारना, ठीक या दुरुस्त करना, द्विजातियों के स्मृति-विहित संस्कार करना, पुस्तकादि की एक बार की छपाई, आवृत्ति, (आधुनिक) [एडिशन] । [**संस्करणीय** (वि०)] ।

संस्कर्त्ता—(संज्ञा, पु०, सं०) संस्कार करने वाला । [**संस्कृत** (वि०)] ।

संस्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) सुधार, शुद्ध या साफ करना, सोधना, दुरुस्त या ठीक करना, सुधारना, सजाना, परिष्कार, मन पर शिक्षादि का पड़ा हुआ प्रभाव, आत्मा के साथ रहने वाला पूर्व-जन्म के कर्मों का प्रभाव, कर्मानुसार शुद्ध करना, द्विजातियों के लिये जन्म से मरण तक के आवश्यक सोलह कृत्य, मृतक-क्रिया, मन मे होने वाला वह प्रभाव जो इन्द्रियों के विषय-ग्रहण से हो ।—हीन-(वि०) जिसका संस्कार न हुआ हो, व्रात्य, संस्कार-रहित ।

संस्कारक—(वि०, सं०) संस्कार कराने वाला, सुधारने वाला, शुद्ध करने वाला ।

संस्कृत—(वि०, सं०) संशोधित, शुद्ध या संस्कार किया हुआ, परिष्कृत, परिमार्जित, शुद्ध या साफ किया हुआ, सुधारा या दुरुस्त किया हुआ, सँवारा या सजाया हुआ, जिसका उपनयनादि संस्कार हुआ हो । (संज्ञा, स्त्री०) भारतीय आर्यों की प्राचीन शुद्ध साहित्यिक भाषा, देव-वाणी, [संसकीरत (दे०)] ।

संस्कृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शुद्धि, सफ़ाई, सुधार, संस्कार, सजावट, सभ्यता, परिष्कार, २४ वर्णों के वर्णिक छंद (पिं०) । [कल्चर]

संस्तवन—(संज्ञा, पु०, सं०) तारीफ करने का काम, स्तुति करना, किसी की योग्यता बतलाना । [कामेंडिंग]

संस्ताव—(संज्ञा, पु०, सं०) स्तुति, प्रशंसा ।

संस्थगन—(संज्ञा, पु०, सं०) अनिश्चितकाल के लिए कार्य को विराम-प्रदान । [प्रोरोगेशन]

संस्था—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्थिति, व्यवस्था, ठहरने या स्थिर होने की क्रिया या भाव, विधि, विधान, मर्य्यादा, वृंद, समूह, झुंड, समाज, सभा, मंडली, मंडल, संगठित समुदाय । [इंस्टीट्यूशन]

संस्थागार-भवन—(संज्ञा, पु०, सं०) संस्थागार सभा । [हाउस आव् पार्लियामेंट]

संस्थागारिक शासन—(संज्ञा, पु०, सं०) पार्लियामेंट द्वारा संचालित शासन । [पार्लियामेंटरी गवर्नमेंट]

संस्थान—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थिति, सत्ता, निवास स्थान, स्थापन, बैठाना, जीवन, अस्तित्व, गृह,

डेरा, गाँव, घर, जनपद, बस्ती, सार्वजनिक स्थान, सर्व साधारण के एकत्र होने का स्थान, योग, समष्टि, जोड़, नाश, मृत्यु, मौत।

संस्थापक—(संज्ञा, पु०, सं०) संस्थापन करने वाला, नियत करने वाला। [**संस्थापिका** (स्त्री०)]।

संस्थापन—(संज्ञा, पु०, सं०) खड़ा करने, बैठाने (भवनादि) उठाने, कोई नवीन बात चलाने, उठाने, स्थापित करने का कार्य। [**संस्थापनीय, संस्थापित, संस्थाप्य** (वि०)]।

संस्थापित—(वि०, सं०) स्थापित किया हुआ, उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ, बनाया हुआ।

संस्पर्श—(संज्ञा, पु०, सं०) स्पर्श, छूत। [**संस्पर्शन** (संज्ञा, पु०, सं०)], [**संस्पर्शनीय** (वि०)]।

संस्मरण—(संज्ञा, पु०, सं०) भली-भाँति याद, पूर्ण रूप से स्मरण, भली भाँति नाम जपना, ध्यान या याद करना। [**संस्मरणीय, संस्मृत, संस्मारक** (वि०)]।

संस्मरणीय—(वि०, सं०) महत्व, स्मृत करने योग्य।

संस्मारक—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी विशेष व्यक्ति की स्मृति में निर्मित भवन, संस्था, स्तंभ आदि।

संहत—(वि०, सं०) भली भाँति मिलित, सर्वथा मिश्रित, खूब मिला, जुड़ा और सटा हुआ, सहित, संयुक्त, सख्त, कड़ा, घना, गठा हुआ, दृढ़, इकट्ठा, एकत्र।

संहति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मेल, मिलाप, जुटाव, राशि, वृंद, झुंड, समूह, घनत्व, संधि, जोड़, संयोग, ठोसपन।

संहनन—(संज्ञा, पु०, सं०) संहार, वध, मेल, मालिश।

संहरण—(संज्ञा, पु०, सं०) संहार, नाश, प्रलय, एकत्र करना। [**संहरणीय** (वि०)]।

संहरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संहार] नाश या नष्ट होना, मिट जाना, संहार होना। (क्रि० स०)—विनाश या संहार करना।

संहार—(संज्ञा, पु०, सं०) अंत, समाप्ति, नाश विनाश, प्रलय, एक नरक, एक भैरव, ध्वंस, परिहार, निवारण, समेट कर बाँधना, एकत्रित करना, समेटना, बटोरना, गूँधना, गूथना, ग्रंथन (केशादि), विमुक्त बाण को वापस लेना।—**काल**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रलय या नाश का समय, संहार-वेला।

संहारक—(संज्ञा, पु०, सं०) नाश करने वाला, मिटने वाला, विनाशक, ध्वंसक। [**संहारिका** (स्त्री०)]।

संहारना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० संहरण] नाश या नष्ट करना, ध्वंस करना, मिटाना, मार डालना।

संहित—(वि०, दे०) एकत्रित किया हुआ, संचित, समेटा और मिलाया हुआ, जुड़ा, हुआ।

संहिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) संयोग, मेल, मिलावट, एकत्र, इकट्ठा, किया हुआ, संयुक्त, सन्निधि, व्याकरण मे संधि या दो वर्णों का मिलकर एक होना, पद पाठादि के नियमानुकूल क्रम वाला ग्रंथ। जैसे—चरक संहिता, धर्म-संहिता। "परासंनिकर्षः संहिता"। "संहितैक पदे नित्या"—[सि० कौ०]।

स—(संज्ञा, पु०, सं०) सर्प, विष्णु, पक्षी, वायु। (उप०) यह "समान," "सह" के अर्थ का द्योतक भी है (जैसे सजातीय)।

सइंया—(संज्ञा, पु०, दे०) साँई, स्वामी, पति, प्रेमी, ईश्वर, सैयाँ।

सइंतना, सैंतना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संचय] संचय करना, बचाकर रक्षित रखना।

सइ*—(अव्य०, दे०) [सं० सह] साथ, से। (अव्य०, दे०) [प्रा० सुन्तो] करण और संप्रदान कारक का चिन्ह या विभक्ति (व्या०)।

सइयो*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० साथी] सखी, सहेली, संगिनी, साथिनी।

सइगर—(वि०, ग्रा०) [सं० सकल] बहुत, अधिक, सकल, [सैगर (दे०)]।

सइराना, सैराना—(क्रि० अ०, दे०) बढ़ना, समाप्त न होना, फैलना, खतम न होना।

सई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक नदी, तमसा, सखी, वृद्धि, बढ़ती। (संज्ञा, स्त्री०, अ०) कोशिश, यत्न।

सईस—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साईस] घोड़े की सेवा या चौकसी करने वाला नौकर। [सहीस-साईस (दे०)]। [**सईसी** (संज्ञा, स्त्री०)]

सउँ*—(अव्य०, दे०) [हि० सों] सौंह, कसम, शपथ, सों, सौं, करण और अपादान कारक की विभक्ति (व्र०)।

सऊं—(अव्य०, दे०) सीधे, सामने, सौंहे। (ग्रा०) सौंह।

सऊर, सहूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शऊर] तमीज, ढंग, व्यवहाराचार।

सक†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शक्ति] शक्ति, बल, [सकति (दे०)], (यौ० में, जैसे—भर-सक)। (संज्ञा, पु०, दे०) [स० शक] शक जाति। (संज्ञा, पु०, दे०) [अ० शक] संदेह, शंका। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साका] साका, धाक, आतंक। (क्रि० अ०) [हि० सकना] सकना। "गहै छाँह सक सो न उड़ाई", "राम चाप तोरब सक नाहीं"—[रामा०]।

सकट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शकट] छकड़ा, गाड़ी।

सकत, सकति‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शक्ति] शक्ति, बल, ज़ोर, पौरुष, पराक्रम, सामर्थ्य, संपत्ति, वैभव। "प्रान कौ सकति अधरान लौं न आवनि को"—रत्ना०। (क्रि० वि०) जहाँ तक हो सके, भरसक। (क्रि० अ०, दे०) सकता है।

सकता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शक्ति] शक्ति, बल, सामर्थ्य, पौरुष, पराक्रम। (संज्ञा, पु०) [अ० सकतः] स्तब्धता बेहोशी की बीमारी, यति, विराम। **मुहा०—पड़ना**-यति भंग दोष होना।—**(ते) में आना**-आश्चर्यादि से स्तब्धता होना।

सकति, सकती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शक्ति] शक्ति, बल, पौरुष, बर्छी, सामर्थ्य। "सुर सकति जैसे लछिमन उर विह्वल होइ मुरझानो"।

सकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शक् या शक्य] करने में समर्थ होना, करने योग्य होना।

सकपकाना, सकबकाना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० सकपक] अचंभित होना, हिचकना, लज्जित होना, अनोखा दशा होना, लज्जा, प्रेम, शंकादि से उत्पन्न एक चेष्टा विशेष, हिलना-डोलना। [**सकपकी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सकरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्वीकरण] सकारा जाना, स्वीकृत होना, अंगीकृत होना, भुगतान होना। [**सकराना, सकारना**—(स० रूप)] [**सकरवाना**—(प्रेरणा० रूप)]।

सकरपाला, सकरपारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० शकरपारा] एक प्रकार की मिठाई। एक प्रकार की आयताकार सिलाई।

सकरा—(वि०, दे०) [सं० संकीर्ण] संकीर्ण, संकुचित, रोटी-दाल आदि कच्चा भोजन। [**सकरी** (स्त्री०)]।

सकरुण—(वि०, सं०) दयावान, कृपापूर्ण।

सकर्मक-क्रिया—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह क्रिया जिसका फल या कार्य उसके कर्म पर पहुँच कर समाप्त हो (व्याक०)। जैसे—पीना, लिखना।

सकल—(वि०, सं०) संपूर्ण, समस्त, सब, कुल। "सकल सभा की मति भइ भोरी"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, सं०) निर्गुण ब्रह्म तथा सगुण प्रकृति। (वि०, सं०) कला या मात्रायुक्त।—**अर्जन**-(पु०) सम्पूर्ण आया। [ऑल अर्निंग]

सकलात—(संज्ञा, पु०, दे०) ओढ़ने की रजाई, दुलाई, उपहार, भेंट, सौगात।

सकसकाना, सकसाना*†—(क्रि० अ०, अनु०) डर या भय से काँपना, भयभीत होना, डरना।

सकाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शंका] डरना, संदेह या शंका करना, भय से संकोच करना, हिचकना, दुखी होना। (क्रि० स०, दे०) सकना का प्रेरणा रूप (क्वचि०)। "भूप-वचन सुनि सीय सकानी"—[रामा०]।

सकाम—(संज्ञा, पु०, सं०) कामना या इच्छा सहित, पूर्ण मनोरथ, काम-वासना-युक्त, कामी, फल-प्राप्ति की इच्छा से कर्म करने वाला। [**सकामता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "सकाम की सकामता बिरंचि बामता बनो"—गिरीश।

सकार—(संज्ञा, पु०, सं०) स वर्ण। (वि०, दे०) सकार। (संज्ञा, पु०, दे०) प्रातःकाल, कल।

सकार—(संज्ञा, पु०, दे०) सबेरा, प्रभात। [**सकारे** (क्रि० वि०, दे०)]। [**साकार** (वि०, दे०, सं०)]

सकारना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्वीकरण] मंजूर या स्वीकार करना, हुंडी की मंजूरी, हुंडी की मिती पूरी होने से एक दिन पूर्व उस पर हस्ताक्षर कर रुपया देना। [**सकराना**—(स० रूप)] [**सकरवाना**—(प्रेरणा० रूप)]।

सकारे, सकारै†—(क्रि० वि०, दे०) [सं० सकाल] प्रभात में, प्रातःकाल, सवेरे। [**साँझ-सकारे** (यौ०)]। "भूप के द्वारे सकारे गयी"—[का० रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) सकार।

सकाल—(अव्य०, सं०) उचित समय पर। प्रातः-काल। (वि०) समयोचित। "जननि अंचल में फूलि सकाल"—पंत।

सकाश—(संज्ञा, पु०, सं०) समीप, पास, निकट, नियरे, नेरे ।

सकिलना†—(क्रि०, अ०, दे०) [हिं० फिसलना, का अनु०] सरकना, हटना, सिमटना, खिसकना, सिकुड़ना, संकुचित होना । [**सकिलाना**—(स० रूप)] [**सकिलवाना**—(प्रेरणा० रूप)] ।

सकुच†—(संज्ञा, वि०, दे०) [सं० संकोच] लज्जा, संकोच, लाज, शर्म । " सकुचि सीय तब नयन उघारे "—[रामा०] । (वि०, सं०) कुच युक्त ।

सकुचई, सकुचाई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संकोच] शर्म, लज्जा, संकोच ।

सकुचना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संकोच] लज्जा करना, शरमाना, संकुचित होना या सिकुड़ना, संकोच करना, संपुटित या बंद होना (फूल का) ।

सकुचाई—(संज्ञा, स्त्री०) संकोच ।

सकुचाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संकोच] संकोच करना, लज्जित होना, शरमाना । "अगद वचन सुनत सकुचाना "—[रामा०] । (क्रि० स०, दे०) सिकोड़ना, (किसी को) संकुचित या लज्जित करना सकुचावना ।

सकुची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संकुल मत्स्य] कछुआ जैसी एक मछली । (क्रि० अ०, सा०, भू०, दे०) लज्जित हुई शरमाई । " सकुची व्याकुलता बढ़ि जानी "—[रामा०] ।

सकुचीला—(वि०) संकोची, शर्मीला, लजाधुर ।

सकुचौहाँ—(वि०, दे०) [सं० संकोच] लजीला, संकोच, शर्मिन्दा । [**सकुचौंही** (स्त्री०)]

सकुन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शकुंत] पक्षी, चिड़िया । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शकुन] शकुन, [सगुन (दे०)] शुभ चिह्न । " अवसर पाय सकुन सब नाचे "—[रामा०] ।

सकुनी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शकुन] पक्षी, चिड़िया । (संज्ञा, पु०, दे०) शकुनि (सं०) कौरवों के मामा ।

सकुरना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सकोपन] संकोपना, रोष या क्रोध करना ।

सकूनत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) निवास-स्थान, गृह, स्थान, रहाइस ।

सकृत्—(अव्य०, सं०) एक बार, एक दफा या मरतबा, सदैव, साथ, सह । [**सकृदपि** (यौ०)]

सकेत*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संकेत] संकेत, इशारा, प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का पूर्व निर्धारित स्थान । (वि०, दे०) [सं० सकीर्ण] सकरा, तंग, संकीर्ण, संकुचित । (संज्ञा, पु०, दे०) विपत्ति, कष्ट, आपत्ति, दुःख ।

सकेतना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संकीर्ण] सिकुड़ना, सिमिटना, संकुचित या संपुटित होना । (क्रि० स०, दे०) संकेत करना, संकुचित करना ।

सकेलना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० सफल] समेटना, बटोरना, एकत्रित या इकट्ठा करना, राशि करना, जमा करना । [**सकेलाना**—(स० रूप)] [**सकेलवाना**—(प्रेरणा० रूप)] ।

सकेला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० सैकल] एक तरह की तलवार, खड्ग । (संज्ञा, पु०) [हिं० सकेलना] सकेलने या समेटने वाला ।

सकोच—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संकोच] संकोच, लज्जा, शर्म, [सकोचू (दे०) । " बंधु सकोच सरिस बहि ओरा "—" छाँड़ि न सकहिं तुम्हार सकोचू—[रामा०] ।

सकोचना—(क्रि० स०, दे०) सिकोड़ना, संकुचित करना ।

सकोड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संकोच] संकोच करना, बटोरना, सकेलना, सकोड़ना, संकुचित या संपुटित करना ।

सकोतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का नीबू, चकोतरा ।

सकोपना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० कोप] रोष या क्रोध करना, कोप या गुस्सा करना ।

सकोरना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सिकोरना] सिकोड़ना, समेटना, संकुचित करना ।

सकोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० कसोरा] परई, मिट्टी का प्याला, कसोरा (प्रान्ती०) ।

सकोरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० कसोरा] मिट्टी की प्याली, कसोरी (प्रान्ती०) ।

सक्का—(संज्ञा, पु०, अ०) मशकी, भिशती, भिश्ती ।

सक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शक्ति] शक्ति, सामर्थ्य, बल, पौरुष, पराक्रम, [सकति (दे०)] । " सक्ति करी नहिं भक्ति करी अब "—[रामचं०] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) शक्ति या बरछी नामक एक अस्त्र ।

सक्त, सक्तुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शक्तु] शक्तु, सत्तू, सतुआ (ग्रा०), भुने अन्न का आटा, भुने चने और जौ का आटा।

सक्र*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शक्र] इन्द्र।

सक्रारि*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० शक्रारि] इन्द्र-शत्रु, मेघनाद।

सक्रिय—(वि०) क्रियाशील, श्रमणशील।—**सेवा**—(स्त्री०) वह सेवा जो बड़े फुर्ती से किया गया हो। [एक्टिव सर्विस]—**प्रतिरोध**—(पु०) क्रियात्मक रूप मे उपस्थित की जाने वाली बाधा या रोक। [ऐक्टिव रिज़िस्टेंस]

सक्षम—(वि०, सं०) क्षमताशाली, क्षमतावान, सहनशील, समर्थ, क्षमता-युक्त। [**सक्षमता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

सख—(संज्ञा, पु०) [सं० सखि] मित्र, साथी, सखा, संगी। [**सखी** (स्त्री०)]।

सखरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० निखरा] [सकरा (दे०)], कच्चा भोजन, दाल-भात-रोटी।

सखरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० निखरी] [सकरी (दे०)], कच्ची, रसोई, दाल-भात-रोटी आदि।

सखा—(संज्ञा, पु०) [स० सखि] साथी, मित्र, संगी, दोस्त, सहचर, सहयोगी, नायक का मित्र, जो चार प्रकार के है—(१) पीठमर्द, (२) विट (३) चेट, (४) विदूषक (नाट०, काव्य०)। [**सखा** (स्त्री०)]। "सखा धर्म्म निबहै केहि भाँती"—[रामा०]।—**भाव**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भक्ति या उपासना का वह भाव जिसमें भक्त अपने को अपने इष्टदेव का सखा या मित्र मान कर उपासना करता है, जैसे—सूर की भक्ति। [सख्यभाव (दे०) । [**सखी-भाव** (विलो०)]।

सख़ावत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) उदारता, दानशीलता। "सख़ावत कुनद नेक वख़्त इख़्तियार" —सादी।

सखि, सखी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सहयोगिनी, सहचरी, संगिनी, सहेली, नायिका की वह संगिनी जिससे कोई बात उसकी छिपी न हो (सा०), १४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)। (वि०, दे०) [अ० सख़ी] दानशील, उदार, दानी, दाता। "सखि सब कौतुक देखन हारे"—रामा०]।—**भाव**—(पु०) एक कृष्ण-भक्ति-मार्ग या उपासना-विधि जिसमें भक्त अपने को इष्टदेव या उनकी प्रिया की सखी या सहेली मानकर उपासना करते हैं। (हित हरि वंशजी की उपासना विधि) टट्टी संप्रदाय। [**सखा-भाव, सख्य-भाव** (विलो०)]। "चंदसखी भजु बाल कृष्ण छवि"—चंद्र०।

सखुआ, सखुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शाल] शालवृक्ष, साखू का पेड़।

सखुन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) काव्य, कविता, वार्त्तालाप, बातचीत, बात, वचन, उक्ति, कथन। "हकीमे सखुन बर जबाँ आफरीं"—सादी।—**तकिया**—(पु०) वाक्याश्रय, तकिया-कलाम, वह शब्द या वाक्यांश जो लोग वार्त्तालाप के बीच मे यों ही ले आते हैं।

सख्त—(वि०, फ़ा०) कड़ा, कठोर, दृढ़। (संज्ञा, स्त्री०) संकट, विपत्ति। मुझपै परी अब सख्त"—सुजग०।

सख्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फा०) ज्यादती, कड़ाई, कठोरता, क्रूरता, दृढ़ता, विपत्ति।

सख्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मित्रता, दोस्ती, मैत्री, सखापन, विष्णु-भक्ति का वह भाव जिसमे अपने को विष्णु या उनके अवतार का सखा मानकर भक्त उपासना करता है।—**भाव**—(पु०) मित्रता का भाव।

सख्यता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) मित्रता, मैत्री, सखापन, दोस्ती, [मिताई (दे०)]।

सगंध—(वि०, सं०) खुशबूदार।

सगड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शकट] छकड़ा, गाड़ी, बैलगाड़ी।

सगण—(संज्ञा, पु०, सं०) दो लघु और एक दीर्घ वर्ण से बना एक गण जिसका रूप (।।ऽ) होता है (पिं०)। (वि०, स०) गण या समूह के साथ।

सगनौती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शकुन विचारने की क्रिया, [सगुनौती (दे०)]।

सगपहती—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) साग मिली पकी दाल, सगपहिती।

सगबग—(वि०, अनु०) आर्द्र, तर, सराबोर, द्रवित, लथपथ, परिपूर्ण, भीगा हुआ, गीला।

सगबगाना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० सगबग] भीगना, सराबोर या लथपथ होना, सकपकाना, सकबकाना, भयभीत या शंकित होना। "पूछै क्यों रूखी परति सगबग गई सनेह"—बिहारी।

सगर—(संज्ञा, पु०, सं०) अयोध्या के एक सूर्य्य-वंशीय धर्मात्मा प्रजा-पालक राजा, इनके ६० हजार पुत्र थे, राजा भगीरथ इनके ही वंशज हैं। "नाम सगर तिहुं लोक विराजा"—[रामा०]। (वि०, दे०) सगल, सब, अधिक, सैगर (ग्रा०)। "जइयो सगर गगन ऊगत"—विद्यापति।

सगरा, सगला†—(वि०, दे०) [सं० सकल] सब का सब, सारा, तमाम, कुल, सकल, बहुत, सैगर (ग्रा०)। [**सगरी** (स्त्री०)]।

सगर्भ—(वि०, सं०) सगा (भाई)।

सगर्भा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गर्भवती स्त्री, सगी बहिन, गर्भयुक्ता।

सगल*†—(वि०, दे०) [सं० सकल] सगर, सब, संपूर्ण, पूरा-पूरा, सारा, कुल, समस्त। (वि०, सं०) गलायुक्त।

सगा—(वि०, दे०) [सं० सवक्] सहोदर, एक ही माता-पिता से उत्पन्न, जो सम्बन्ध में निज का हो। [**सगी** (स्त्री०)]। "संपति के सबही सगे" —[नीति०]।

सगाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सगा+ई प्रत्य०] ब्याह-सम्बन्धी निश्चय। सम्बन्ध, मँगनी (प्रान्ती०), नाता, रिश्ता, छोटी जातियों में स्त्री-पुरुष का ब्याह जैसा सम्बन्ध, सगापन।

सगापन—(संज्ञा, पु०, हि०) सम्बन्ध का अपनापन या आत्मीयता, सगा होने का भाव।

सगुण—(संज्ञा, पु०, सं०) गुण-सहित, साकार ब्रह्म, सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त ब्रह्म का रूप, वह संप्रदाय जिसमें परमेश्वर को सगुण मानकर उसके अवतारों की पूजा होती है, [सगुन (दे०)]। "निर्गुण ब्रह्म सगुण भये जैसे"—[रामा०]।—**वाद**—(यौ०) ईश्वर के सगुण-साकार मानने का सिद्धान्त।

सगुणोपासना—(संज्ञा, स्त्री०) सगुण ब्रह्म की भक्ति।

सगुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शकुन] किसी कार्य के होने की सूचना, सूचक चिह्न, शकुन। [**असगुन** (विलो०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सगुण] ईश्वर का सगुण रूप, गुण सहित। सगुन उपासक मुक्ति न लेहीं"—[रामा०]।

सगुनाना—(क्रि० सं०, दे०) [सं० शकुन+आना प्रत्य०] शकुन बताना, शकुन देखना या निकालना।

सगुनिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शकुन+इया प्रत्य०] शकुन विचारने और बताने वाला। "बड़े सगुनिया महुबे वाले कारज कैसो लेहिं विचारि"—आल्हा०।

सगुनौती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सगुन+औती प्रत्य०] शकुन विचारने की क्रिया, सगनउती (ग्रा०)। **मुहा०**—**उठाना**—शकुन देखना या निकालना।

सगोत, सगोती—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सगोत्र] समगोत्री, एक गोत्र के लोग, सगोत्र, भाई-बंधु, भैयाचार, भाइ-बिरादर।

सगोत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) एक गोत्र के लोग, सजातीय, समगोत्रीय, एक ही कुल या वंश के लोग। [**सगोत्रा** (स्त्री०)]।

सगोत्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सजातीया, अपने गोत्र की, अपने कुल, वंश या कुटुंब की स्त्री। "असपिंडा तु या मातुरसगोत्रा तु या पितुः"—मनु०।

सगौती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मांस, मांस का बना भोजन।

सघन—(वि०, सं०) घना, गुंजान, अविरल, ठस, ठोस, निबिड़। [**सघनता** (संज्ञा, स्त्री०)]। (वि०, सं०) घन या बादल के साथ। "सघन-सघन था गगन"—रस०।

सच—(वि०, दे०) [सं० सत्य] सत्य, सही, ठीक, दुरुस्त, वास्तविक, यथार्थ, तथ्य, [**सच** (दे०)]। —**मुच**—(अव्य०, दे०) [हि० सच+मुच अनु०] वस्तुतः, वास्तव में, यथार्थतः, ठीक-ठीक, अवश्य, निश्चय, सच्च-मुच्च (ग्रा०)। [**सच्च-मुच्चो** (स्त्री०)]।

सचन*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० संचयन] जोड़ना, एकत्र या संचय करना, इकट्ठा करना, पूर्ण या पूरा करना। (क्रि० अ०, दे०) सजना, रचना।

सचरना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संचरण] संचलित या संचरित होना, फैलना, अति प्रचलित होना, संचार या प्रवेश करना। "सब विधि अगम अगाध अगोचर कौटिक विधि मन सचरै"—विन०। [**सचारना** (स० रूप)]।

सचराचर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) संसार के चलने वाले और न चलने वाले, स्थावर, जंगम। "ब्यापि रह्यो सचराचर माहीं"—वासु०। "स्वप्न गीत गति सचराचर"—पंत।

सचल—(वि०, सं०) गतिशील, चलायमान, चलने वाली। जंगम।

सचलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गतिशीलता।

सचाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सत्य, प्रा० सच्च+आई प्रत्य०] सच्चापन, सत्यता, यथार्थता, वास्तविकता।

सचान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संचान=श्येन] श्येन पक्षी, बाज पक्षी। "मन-मतंग गैयर हनै, मनसा भई सचान"—कबीर।

सचाना—(क्रि० स०, दे०) सत्य या सच करना, सिद्ध करना।

सचारना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० संचारण] फैलाना, प्रचार करना, चलाना, प्रचलित करना। [**सचरवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सचिंत—(वि०, सं०) चिन्ता-युक्त, जिसे चिन्ता हो, चिंतित।

सचिक्कण—(वि०, सं०) बहुत चिकना, [सचिक्कन (दे०)]। [**सचिक्कणता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सचित्त—(वि०, सं०) बुद्धिमान्, सावधान।

सचित्र—(वि०, सं०) तस्वीरों से युक्त, चित्रित।

सचिव—(संज्ञा, पु०, सं०) मित्र, सहायक, मंत्री, [**वजीर** (फ़ा०)], निजी कार्य के लिए रखा जाने वाला सहायक व्यक्ति, शासन व्यवस्था के निमित्त किसी विभाग का उच्च पदाधिकारी [सेक्रेटरी]। "राम कुभाँति सचिव सँग जाँहीं"—[रामा०]।

सचिवालय—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रधान उच्च अधिकारियों का कार्यालय; विभिन्न विभागों के कार्यालयों का समूह। [सेक्रेटेरियट]

सची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शची] इन्द्राणी, शची।

सचीस—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० शचीश] इन्द्र।

सचु*†—(संज्ञा, पु०, दे०) प्रसन्नता, सुख, आनंद, खुशी। "कब वह मुख बहुरौ देखौंगी, कब वैसी सचु पैहों"—सूर०।

सचेत—(वि०, दे०) [सं० सचेतन] चैतन्य, जो होश में हो, जिसमें चेतना हो, चेतन, चेतना-युक्त, होशियार, सजग, सावधान, सतर्क, चतुर। "बैठि बात सब सुनहुँ सचेतू"—[रामा०]।

सचेतन—(संज्ञा, पु०, सं०) जिसमें चेतना हो, जो जड़ न हो, चेतना, चैतन्य। (वि०) सतर्क, सावधान, सजग, चेतना-युक्त, समझदार, चतुर, होशियार। "उन को तो संकेत बहुत है जो हैं सजग सचेतन"—गिरीश।

सचेष्ट—(वि०, सं०) जिसमें चेष्टा हो, जो चेष्टा करे।

सचौरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सत्यता, सचाई सजावट।

सच्चरित, सच्चरित्र—(वि०, सं०) अच्छे चरित या चरित्र वाला, सुकर्मी। "जो सच्चरित पूज्य सो सब को ऐसो कबिन बतायो"—वासु०। [**सच्चरित्रता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सच्चा—(वि०, दे०) [सं० सत्य] सत्यभाषी, यथार्थवादी सच बोलने वाला, ठीक, पूरा, यथार्थ वास्तविक, विशुद्ध, असली। [**सच्ची** (स्त्री०)]। "सच्चा सौदा कीजिये, अपने मन में जानि"—कबीर।

सच्चाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सच्चा+आई प्रत्य०] सत्यता, सच्चापन, यथार्थता, सचाई वास्तविकता।

सच्चापन—(संज्ञा, पु०) [हि० सच्चा+पन प्रत्य०] सच्चाई, सत्यता, सचाई।

सच्चिकन*—(वि०, दे०) [सं० सचिक्कण] अत्यंत चिकना, सचिक्कण।

सच्चिदानंद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सत्, चित और आनन्द से युक्त ब्रह्म, परमात्मा, परमेश्वर।

सच्छत*—(वि०, दे०) [सं० सक्षत] घायल, जख्मी, घाव-युक्त।

सच्छंद*—(वि०, दे०) [सं० स्वच्छंद] स्वाधीन, स्वतंत्र, स्वच्छंद। [**सच्छंदता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

सच्छास्त्र—(संज्ञा, पु०, सं०) [सत्+शास्त्र] प्रमाणिक ग्रंथ। "...सच्छास्त्र चिंतापरा"—हरिऔध।

सच्छी, साच्छी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साक्षी] साक्षी, गवाह, [साखी (दे०)]।

सज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सजावट] सजने की क्रिया या भाव, सजावट, शोभा सौंदर्य, शकल, डौल। [**सज-धज** (यौ०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) एक पेड़।—**दार**-(वि०, दे०) [हि० सज+दार प्रत्य०] सुन्दर, अच्छी आकृति वाला, सजावट वाला, सजीला।—**धज**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सज+धज अनु०] सजावट, बनाव, सिंगार।

सजग—(वि०, दे०) [सं० जागरण] सचेत, सावधान, होशियार, सतर्क। [**सजगता** (संज्ञा, स्त्री०)]। " होहु सजग सुनि आयसु मोरा "—[रामा०]।

सजन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सत् जन—सज्जन] सज्जन, [सुजन (दे०)] भला-मानुस, शरीफ, (फ़ा०), पति, स्वामी, भर्ता, प्रियतम, मित्र, प्रेमी, यार, साजन (ग्रा०)। [**सजनी** (स्त्री०)] (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वजन] आत्मीय व्यक्ति। " सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे "—[रामा०]। " सजन सकारे जायँगे नयन मरेंगे राय "—[स्फु०]। [**सजनता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

सजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० सज्जा] सुसज्जित होना या शृंगार करना, अलंकृत करना, शोभा देना, भला जान पड़ना या अच्छा लगना। (क्रि० अ०, दे०) सुसज्जित होना, सँवारना। " सजि वाहन बाहर नगर, लागी जुरन बरात "—[रामा०]। [**सजाना**, **सजावना** (स० रूप)], [**सजवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सजनि, सजनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सजन] सखी, सहेली, सहचरी, प्रिय स्त्री। " चलियो सजनी मिलि देखिए जाय जहाँ टिकियें-रजनी रहि है "—[कवि०]।

सजल—(वि०, सं०) जल युक्त या जल से परिपूर्ण, अश्रुपूर्ण, आँसुओं से भरी आँखें। " सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी "—[रामा०]। सजल जलद की सी कांति वाला कहाँ है ?

सजला—(संज्ञा, पु०, दे०) चार भाइयों मे से तीसरा भाई, मँझले से छोटा। (वि०, स्त्री०, सं०) जल-पूर्ण, जल से भरी, जल-युक्त। " सुफला सजला अरु सस्य-श्यामला तू है "—[भार०]।

सजवल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सजना] तैयारी।

सजवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सजन + वाई प्रत्य०] सजने या सजवाने का कार्य, भाव या मजदूरी। सजावट।

सजवाना—(क्रि० स०) [हि० सजना का प्रेरणा० रूप] किसी के द्वारा किसी को सुसज्जित या अलकृत कराना, सजाना। " यहि विधि सकल नगर सजवायो "—[स्फु०]।

सजा—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अपराध-दंड, दंड, जेल में रहने का दंड, जुर्माना का दंड, प्राण-दंड देश निकाले का दंड, [सजा (दे०)]।

सजाइ, सजाई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सज़ा] सज़ा, दंड। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) सजावट। (पू० का० क्रि०, स०) [हि० सजाना] सजाकर।

सजाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सजाना] सजाने की मजदूरी, कार्य या भाव, सजावट, सजवाई]। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सज़ा,] सज़ा, दंड। " तो मोहिं देइहि दैव सजाई "—[रामा०]।

सजाति, सजातीय—(वि०, सं०) एक ही जाति गोत्र या वंश का सगोत्र, सगोत, एक ही श्रेणी या भाँति के।

सजान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सज्ञान] सुजान, चतुर, ज्ञानी, जानकार, चतुर, समझदार, होशियार, [सयान (दे०)]

सजाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० सज्जा] चीजों को क्रमपूर्वक यथास्थान रखना, क्रम या तरतीब लगाना, सँवारना, सुधारना, शृंगार करना, अलकृत करना, सुसज्जित करना [सजावना (दे०)]।

सजाय*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सज़ा] सज़ा दंड। " रहिमन करुवे मुखन को, चहियत यही सजाय।

सजायाफ्ता, सज़ायाब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) किसी प्रकार का दंड या सजा भोग चुका हुआ, व्यक्ति, दंड-प्राप्त।

सजाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सजाना] एक तरह का बढ़िया दही। सजावट, बनाव, शृंगार, सजधज।

सजावट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सजाना + आवट प्रत्य०] सज्जित होने का भाव या धर्म्म, सजाव, शृंगार, बनावट।

सजावन*†—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, दे०) [हि० सजाना] सजाने या तैयार करने की क्रिया, सजावट, सजावनि।

सजावल—(संज्ञा, पु०, दे०) [तु० सज़ावुल] सरकारी महसूल या कर उगाहने वाला कर्मचारी, तहसीलदार, जमादार, सिपाही, नहर की सिंचाई का कर वसूल करने वाला एक कर्मचारी। [**सजावली** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सजीउ*†—(वि०, दे०) [सं० सजीव] जीवन-युक्त, जीता हुआ। " सजीउ करी बखशे हैं "—भूषण।

सजीला—(वि०, दे०) [हिं० सजाना+ईला प्रत्य०] छैला, सुन्दर, रँगीला, मनोहर, रसीला, सजधज से रहने वाला, पानी या कांति से युक्त। [**सजीली** (स्त्री०)]।

सजीव—(वि०, सं०) जिसमें जीव या जान हो, फुरतीला, तेज, स्फूर्तिवान्, ओजवान, जीवन-युक्त जीवित। " अन्य जीवहित जो मरता है, जग में वही सजीव "—गिरीश। [**सजीवता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

सजीवन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संजीवनी] एक विख्यात औषधि जिससे मृत व्यक्ति भी जी उठता है, संजीवन। (वि०, सं०) जीवन-युक्त। **—मूल, —मूरि***—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सजीवनी+मूल] एक औषधि जिससे मरा आदमी भी जी उठता है, अमृत-मूल, [अमियमूरि (दे०)]। " जग में राम सजीवनमूल "—[स्फु०]।

सजीवनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देखिए-सजीवन। **—मंत्र**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०)[सं० संजीवन+मंत्र] मृतक को भी जिलाने वाला मंत्र, सजीवन मंत्र।

सजुग*†—(वि०, दे०) [हिं० सजग] सचेत, सतर्क, सावधान, होशियार, चौकन्ना, चौकस। " सजुग होय रोको सब घाटा "—[रामा०]।

सजुता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संयुता] संयुता नामक छंद (पिं०)।

सजूरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक मिठाई।

सजोना, संजोना†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सजाना] सजाना, अलंकृत करना, रक्षित तथा एकत्रित रखना। [**सजोवना**—(स० रूप)]।

सजोयल—(वि०, दे०) [हिं० संजोयल] सुसज्जित, तैयार। " सजग सजोयल रोकहु घाटा " —[रामा०]। एकत्रित तथा रक्षित किया हुआ।

सज्ज*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० साज] साज, साज सामान, असबाब, चीज, वस्तु।

सज्जन—(संज्ञा, पु०) [सं० सत्+जन] [सुजन (दे०)] भला मानुस, अच्छा आदमी, आर्य श्रेष्ठ पुरुष, शरीफ प्रियतम, प्रिय। " हृदय हर्षि कपि सज्जन चीन्हा ", " सज्जन सुकृत सिंधु सम कोई "—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, सं०) सजाने की क्रिया या भाव।

सज्जनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भलमंसी, भलमंसाहत, सौजन्य, [सुजनता (दे०)]।

सज्जनताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सज्जनता] भलमंसी, भलमंसाहत, सौजन्य, [सुजनता (दे०)]। " वारहिं तें अस सज्जनताई "—[स्फु०]।

सज्जा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सजाने का भाव या क्रिया, सजावट, वेष-भूषा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शय्या] शय्या, पलँग, खटिया, चारपाई, सज्जादान, शय्यादान (मृतक संस्कार में)।

सज्जित—(वि०, सं०) अलंकृत, सजा हुआ, आवश्यक पदार्थों से युक्त, सँवारा हुआ। " भरी सुसज्जित वीर सब, चली अनी चतुरंगी—कुंजवि०।

सज्जी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सर्जिका] एक प्रकार का क्षार (औष०)।

सज्जीखार—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सर्जिका+क्षार] सज्जी नमक।

सज्जुता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संयुता] संयुत छंद (पिं०)।

सज्ञान—(वि०, सं०) ज्ञानी, ज्ञान युक्त, [सयान, सग्यान (दे०)]। बुद्धिमान, चतुर, सावधान, सजग, सचेत, [सुजान (दे०)]। " जा तिरिया को सुघराई लखि मोहैं सज्ञान "—पद्मा०।

सज्या—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शय्या] शय्या, पलंग, खाट, [सज्ज (दे०)]। " सुन्यो कुँवर रन-सज्या सोयो "—छत्र०।

सटक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० सट से] सटकने की क्रिया, चुपके से खिसक जाना, धीरे से चंपत होना, तंबाकू पीने का लचकीला लंबा नैचा, पतली लचकीली छड़ी, [सटिया, सोंटी (दे०)]।

सटकना—(क्रि० अ०) [अनु० सट से] धीरे से भाग या खिसक जाना, चंपत हो जाना।

सटकाना—(क्रि० स०, दे०) [अनु० सट से] छड़ी या कोड़े आदि से पीटना, चुपके से भगा देना, निगलना, खिसकाना।

सटकार—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु० सट] सटकाने की क्रिया या भाव, पशुओं के हाँकने की क्रिया, [सटकार (दे०)]।

सटकारना—(क्रि० स०) [अनु० सट से] छड़ी या कोड़े आदि से सट सट मारना।

सटकारा—(वि०, अनु०) लंबा और चिकना, साफ़ बाँसादि।

सटकारी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) पतली और लंबी छड़ी, छोटी ककड़ी, [सिटकारी (दे०)]।

सटना—(क्रि० अ०) [सं० संस्था] दो चीजों का पार्श्व लगा कर मिलना, चिपकना, मार-पीट होना, समाना, घुसना। [**सटाना**—(स० रूप)] [**सटवाना**—(प्रेरणा० रूप)]।

सटपट—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) सिटपिटाने की क्रिया, चकपकाहट, शील, संकोच, असमंजस, दुविधा, अंड-बंड, सट्टपट्ट (ग्रा०)।

सटपटाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) सकुचना, सिकुड़ जाना, डर जाना, दब जाना, भौचक्का होना, संशय में पड़ जाना, [सिटपिटाना (दे०)]।

सटरपटर—(वि०, अनु०) मामूली, छोटा-मोटा, तुच्छ, व्यर्थ की चीजें, व्यर्थ का काम, बखेड़ा, अंड-बंड, अटर-सटर, सट्टपट्ट।

सटसट—(क्रि० वि०, अनु०) शीघ्र, जल्दी, सटा-सट, सट सट शब्द के साथ, चटपट।

सटा—(वि०, दे०) [हि० सटना] मिलित, मिला हुआ। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) जटा, घोड़े की अयाल। "जटा-सटा भिन्न घनेन विभृतः"—माघ०।

सटाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० स+स्था या स+निष्ट] मिलाना, दो वस्तुओं के पार्श्वों को परस्पर मिलाना, लाठी आदि से लड़ाई करना। (गुंडा), चिपकाना, मिलाकर रखना। [**सटवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सटासट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) तर ऊपर, एक पर एक, लगातार, भिड़ाभिड़, ठसाठस, सटसट शब्द के साथ, रेल-पेल।

सटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बाँस की पतली छड़ी, लंबी पतली छड़ी, एक गहना, एक प्रकार की चूड़ी।

सटीक—(वि०, सं०) वह पुस्तक जिसमें मूल के साथ उसकी टीका भी हो, व्याख्या या अर्थ-सहित। (क्रि० वि०, हि०) पूर्णतया। **मुहा०—करना (होना)**-यथोचित रूप से पूर्ण करना या होना।

सट्टक—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राकृत भाषा में बिर-चित छोटा रूपक।

सट्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) इकरारनामा, एक प्रकार का व्यापारिक जुआ, अनुमान।—**फाटका**-(पु०) चाँदी आदि का वादे पर बेचने-खरीदने का व्यापार।—**बट्टा**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० सटना +बट्टा अनु०] हेल-मेल, मेल-मिलाप, चालाकी धूर्त्तता-पूर्ण, युक्ति, चालबाजी सट्टे मे हानि।

सट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हाट या हट्टी] एक ही मेल को वस्तुओं का बाजार, हाट।

सठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शठ] धूर्त, मूर्ख, दुष्ट, अपढ़, कुपढ़, निर्बुद्धि, कम-समझ, खल, पाजी, लुच्चा, बदमाश। "सठ सुधरहि सतसंगति पाई"—[रामा०]।

सठता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शठता] दुष्टता, मूर्खता, कम समझी।

सठियाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० साठ+ इयाना प्रत्य०] साठ वर्ष का होना, बुड्ढा या बूढ़ा होना, वृद्धावस्था से मंद बुद्धि होना।

सठेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) सन निकाला हुआ डंठल।

सठोरा, सठोड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुंठी] शुंठीपाक, सोंठ के लड्डू सोंठौरा (ग्रा०)।

सड़क—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) [अ० शरक] चौड़ा रास्ता, चौड़ी राह, राज मार्ग या पथ।

सड़न—(संज्ञा, स्त्री०) सड़ने की क्रिया।

सड़ना—(क्रि० अ०, दे०) किसी वस्तु का कोई विकार पाकर विदीर्ण हो कर दुर्गंधि देना, खमोर उठना, दुर्दशा में पड़ा रहना। [**सड़ाना**—(स० रूप)], [**सड़वाना**—(प्रेरणा० रूप)]।

सड़ाइंध, सड़ायँध—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सड़ाना+गंध] सड़ी हुई वस्तु की महक, दुर्गंधि।

सड़ाना—(क्रि० स०) [हि० सड़ना] किसी वस्तु को पानी आदि में इस प्रकार से रखना कि वह सड़ जावे, किसी को सड़ने में लगाना। [**सड़वाना**—(प्रेरणा० रूप)]।

सड़ाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सड़ना] सड़ने का भाव या कार्य।

सड़ासड़—(अव्य०, दे०) [अनु० सड़ से] सड़ सड़ शब्द के साथ। तेजी से।

सड़ियल—(वि०, दे०) [हि० सड़ना+इयल प्रत्य०] सड़ा-गला हुआ, खराब, रद्दी, तुच्छ, बुरा, नीच, बेकाम, निस्सार, व्यर्थ।

सत—(वि०, दे०) [सं० सत] सत्य, सार, मूल, तत्व।—**गुरु**-(पु०) सच्चा या अच्छा गुरु,

परमात्मा। "सतगुरु मिले तें जाहिं जिमि, संसय-भ्रम समुदाय"—[रामा०] ।—**जल**-(संज्ञा, पु०, सं०) सत्य का जल, सत्य रूप जल। "रंग दो स्वर्गिक स्मिति से सतजल" ।—**जुग**-(पु०) चार युगों में से पहला युग, सत्ययुग, कृतयुग ।—**युग**-(पु०) [सं० सत्ययुग] सत्युग । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सत] सभ्यतापूर्ण धर्म्म । **मुहा०—पर चढ़ना**-पति की मृतक देह के साथ जलना या सती होना ।—**पर रहना**-पतिव्रता रहना । (वि० दे०) [सं० शत] शत, सौ ।—**दल**-(पु०) सौ पंखड़ियों का कमल । "सतदल श्वेत कमल पर राजहु"—हरि० । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सत्त्व]—सार, मूलतत्त्व, सारांश, सारभाग । जीवन-शक्ति, बल, पौरुष । (वि०) सात (संख्या) का संक्षेप रूप (यौगि० में) ।—**पुतिया**-(स्त्री०) [सं० सप्त पुत्रिका] एक प्रकार की तरोई ।—**फरा**-(पु०) ब्याह के समय का सप्तपदी-कर्म, भाँवर, ब्याह, सात परिक्रमा या प्रदक्षिणा ।—**मासा,—वाँसा**-(पु०) [हि० सात+मास] वह बच्चा जो सातवें महीने उत्पन्न हो, प्रथम गर्भिणी के सातवें मास का एक संस्कार, [**सप्त-मासिक** (सं०)] ।—**रंगी**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [स० सप्त+रंग+ई प्रत्य०] सात रंगों वाली रंगीन जाजिम, चाँदनी, गंगा की सतरंगी रेती—पंत ।

सतकार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सत्कार] सम्मान, आदर, इज्जत खातिरदारी ।

सतकारना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० सत्कार+ना हि० प्रत्य०] सम्मान या आदर करना, मान देना ।

सतत—(अव्य०, सं०) संतत सदा, निरंतर, हमेशा सदैव ।

सतनजा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० सात+अनाज] भिन्न प्रकार के सात अन्नों का समूह या मेल ।

सतवाँसा—(संज्ञा, पु०, दे०) गर्भिणी के सातवें मास का संस्कार, सात मास में ही उत्पन्न हुआ बालक ।—**सई**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सात सौ पद्यों वाला ग्रंथ, सप्तशती । "सबसों उत्तम सतसई, करी बिहारी लाल ।"

सतरंज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० शतरंज] शतरंजी नामी खेल ।

सतरंजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० शतरंज] दरी, रंगीन बिछौना, जाजिम ।

सतर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पंक्ति, अवली, कतार, पाँति, रेखा, लकीर । (वि०) वक्र, टेढ़ा, क्रुद्ध, रुष्ट, कुपित । (संज्ञा, स्त्री०, अ०) मनुष्य की मूत्रेंद्रिय, ओट, परदा, आड़ ।—**बतर**-(क्रि० वि०) तितर-बितर ।

सतराना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सतर्जन] क्रोध या कोप करना, रुष्ट होना, अप्रसन्न या नाराज़ होना, चिढ़ना । "कहौ अंध को आँधरो, बुरो मानि सतरात"—वृंद० । "बोली न बोल कछू सतराय कै, भौहै चढ़ाय तकौ तिरछौहीं"—रस० । [**सतराइबो, सतरैबो** (संज्ञा, पु०, ब्र०)] ।

सतरौंहा†—(वि०, दे०) [हि० सतराना] रोष-पूर्ण, रुष्ट, क्रोधित, अप्रसन्न, कुपित, क्रोध या कोप-सूचक । "छोटे बड़े न हुइ सकैं, कहि सतरौहैं बैन"—[नीति०] । "सतरौहीं भौंहनि नहीं दुरै दुराये नेह"—मति० ।

सतर्क—(वि०, सं०) सजग, सावधान, सचेत, युक्ति या तर्क से पुष्ट, तर्क-युक्त । [**सतर्कता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

सतर्कता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सजगता, साव-धानी ।

सतर्पना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संतर्पण] भली भाँति तृप्त या संतुष्ट करना, प्रसन्न करना ।

सतलज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शतद्रु] पंजाब की पाँच नदियों में से एक बड़ी नदी ।

सतलड़ी, सतलरी—(स्त्री०) सात लड़ियों की माला । [**सतलड़ा** (पु०)]

सतवंती—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० सत्य+वंती प्रत्य०] पतिव्रता, सती, सतवाली ।

सतसंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सत्संग] सत्संग, अच्छा, साथ, सुसंगति । "सो जानै सतसंग प्रभाऊ"—[रामा०] ।

सतसंगी—(वि०, दे०) सुसंगति वाला, यारबाश ।

सतसंगति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सत्सङ्गति ।

सतह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) किसी पदार्थ का ऊपरी तल या भाग, धरातल, वह विस्तार जिसमें केवल लम्बाई और चौड़ाई ही हो ।

सतांग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शतांग] रथ, गाड़ी, यान ।

सतानन्द—(संज्ञा, पु०, दे०) गौतम ऋषि के पुत्र और राजा जनक के पुरोहित । " सतानन्द तब आयसु दीन्हा "—[रामा०] ।

सताना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संतापन] दुःख या कष्ट देना, सन्ताप देना, हैरान, परेशान या दिक करना, [सतावना (दे०)] ।

सतालू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सप्तालुक] शफ्तालू, आड़ू नामक एक फल ।

सतावना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० सतापन] सताना, दिक करना, हैरान या परेशान करना, संताप या दुःख देना । " निसचर-निकर सतावहिं मोही "—[रामा०] ।

सतावर, सतावरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शतावरी] एक बेल जिसकी जड़ और बीज औषधि के काम आते हैं, शतावरी, शतमूली ।

सति*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सत्य] सत्य, सच, सती, साध्वी ।

सतिवन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सप्तपर्ण] छतिवन, एक औषधि ।

सतिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्वस्तिक] मंगल-सूचक एक चिह्न 卐 स्वस्तिक ।

सती—(वि०, स्त्री०, सं०) पतिव्रता, साध्वी । (संज्ञा; स्त्री०, सं०) दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव जी को बिवाही थी । " या तन भेंट सती सन नाहीं "—[रामा०] । मृत पति के साथ जीते जी चिता में जल जाने वाली स्त्री, एक नगण और एक गुरु वर्ण का एक वर्णिक छंद (पिं०) ।

सतीत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) पातिव्रत्य, सतीपन, सती होने का भाव ।—**नाश**-(पु०) सतीत्व अपहरण । [अउटरेजिंग माडेस्टी]

सतीत्वहरण, सतीत्वापहरण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दूसरे की पत्नी की इज्जत जबरदस्ती बिगाड़ने, सतीत्व नष्ट करने का कार्य, पर-स्त्री प्रसंग, बलात्कार ।

सतीपन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सतीत्व] सतीत्व, पातिव्रत्य ।

सतीर्थ—(वि०, सं०) सहपाठी, साथ का पढ़ने वाला ।

सतीला—(वि०, दे०) समर्थ, पराक्रमी, सत्तावान, सामर्थ्यवान ।

सतीवाड़—(संज्ञा, पु०, दे०) सती का स्थान, सतियों का श्मशान ।

सतुआ, सतुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सत्तू] चने और जौ या और किसी भूने हुए अनाज का आटा, सेतुवा, सत्तू (ग्रा०) ।—**संक्रांति**-(स्त्री०) [हिं० सतुआ + संक्रांति सं०] मेष की संक्रांति जब सतुआ दान किया जाता है, सेतुवा-सकराँत (ग्रा०) ।

सतून—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) खम्भा, स्तंभ ।

सतूना—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० सतून] बाज पक्षी की एक प्रकार की झपट ।

सतोखना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० संतोषण] समझाना, संतोष देना, संतुष्ट करना, दिलासा या ढाढ़स देना ।

सतोखी—(वि०, दे०) [सं० संतोषी] संतुष्ट, संतोषी, [सँतोखी (दे०)]

सतोगुण—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सत्वगुण] तीन गुणों में से प्रथम, सत्वगुण, सुकर्म्म में लगाने वाला गुण ।

सतोगुणी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सतोगुण + ई प्रत्य०] सात्विक, सतोगुण वाला, सद्गुणी, सुकर्म्मी, सदाचारी, सच्चरित्र ।

सत्—(संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर, ब्रह्म । (वि०) सत्य, नित्य, स्थायी, शुद्ध, श्रेष्ठ, पवित्र, विद्वान्, ज्ञानी, पंडित, साधु, सज्जन, धीर ।—**कर्म्म**-(पु०) [सं० सत्कर्म्मन्] सुकर्म, धर्म्म या पुण्य का कार्य, अच्छा कार्य । [**सत्कर्मी** (वि०)] ।—**कार**-(पु०) सम्मान, आदर, आतिथ्य, खातिरदारी, इज्जत, श्रेष्ठ कार्य ।—०**भवन**-(पु०) स्वागत-भवन [रिसेप्शन रूम] ।—०**शाला**-(स्त्री०) स्वागत-स्थान । [रिसेप्शन हाल]—**कार्य्य**-(वि०) सत्कार करने योग्य । (पु०) अच्छा काम, उत्तम कर्म ।—**क्रिया**-(स्त्री०) सत्कार, आदर, सत्कर्म, सत्य या अच्छी क्रिया ।—**कीर्ति**-(पु०) सुयश, नेकनामी, सुकीर्ति ।—**कुल**-(पु०) उत्तम या श्रेष्ठ वंश, अच्छा या बड़ा कुटुम्ब या परिवार । [**सत्कुलीन** (वि०) [**सत्कुलीनता** (स्त्री०)] ।—**कृति**-(स्त्री०) सत्कार, सम्मान, समादर । "वह है सद्व्यवहार-धाम संस्कृति-सदन "—हरिऔध—**पंथ**-(पु०) सन्मार्ग, उत्तम मार्ग ।—**पथ**-(पु०) सुमार्ग, सदाचार ।—**पात्र**-(पु०) सुपात्र, सदाचारी, विद्वान्, सत्कर्मी ।—**पुरुष**-(पु०) सज्जन, भला आदमी ।—**प्रवृत्ति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अच्छी । " सत्प्रवृत्ति की काया में "

—हरिऔध—**संग**-(पु०) संगति (स्त्री०) अच्छे व्यक्तियों का साथ। "तुलै न ताहि जो सुख लह सत्संग"—तुलसी—**संगी**-(वि०) मेल-मिलाप रखनेवाला, मिलनसार। अच्छे संग में रहने वाला। "मूरख ज्ञानी होत है, जो सत्संगी होय"—कु० वि०।—**संसर्ग**-(पु०) अच्छे व्यक्तियों का साथ। —**समागम**-(पु०) देखिए-सत्संगी।

सत्त—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सत्व] सारांश, सत, सारभाग, मुख्य तत्व, काम की वस्तु। ‡* (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सत्य] सत्य, सच, सतीत्व, पातिव्रत्य।

सत्तांतरित प्रदेश—(संज्ञा, पु०, सं०) वह प्रदेश जिसकी सत्ता या शासन सम्बन्धी समस्त अधिकार दूसरे को सौंप दिए गये हों। [सीडिड टेरिटरी]

सत्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्थिति, अस्तित्व, होने का भाव, [हस्ती (फ़ा०)] शक्ति, अधिकार, हुकूमत, प्रभुत्व। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सात] ताश आदि का सात बूटियो वाला पत्ता। "आत्म धारणाऽनुकूलो व्यापरस्सत्ता"—सि० कौ० टी०। "लज्जा सत्ता, स्थिति जागरणम्"—सि० कौ०। —**धारी**-(पु०) अधिकारी, हाकिम, अफसर। —**शास्त्र**-(पु०) वह शास्त्र जिसमें मूल पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो, सत्ता-विज्ञान।

सत्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सती] सती, साध्वी, पतिव्रता।

सत्तू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सक्तुक] सित्तू, सेतुआ, भुने हुए चने और जौ का आटा, [सतुआ (दे०)]।

सत्य—(वि०, सं०) सच, ठीक, सही, यथार्थ, वास्तविक, तथ्य, असल, साँच। (संज्ञा, पु०) ठीक या यथार्थ बात, उचित पक्ष, धर्म्म की बात। "सुनु सिय सत्य असीस हमारी"—[रामा०]। न्याय-नीति के अनुकूल बात, विकार-रहित वस्तु, (वेद) ऊपर के सात लोकों में से सर्वोपरि प्रथम लोक। विष्णु, कृत युग, चार युगों में से प्रथम युग।—**धाम**-(पु०) विष्णु लोक, स्वर्ग, वैकुंठ, परमधाम।—**नाम**-(पु०) राम नाम। —**नारायण**-(पु०) विष्णु, "ममोपदेशतो विप्र सत्यनारायणं भज"—**भामा**-(स्त्री०) सत्राजीत् की कन्या तथा श्रीकृष्ण जी की आठ पटरानियों में से एक। "याही हेतु आखत को राखत विधान नाहिं, पूजा माहिं प्रीतम प्रवीन सत्यभामा के"—रत्ना०।—**भाषण**-(पु०) सत्य बोलना। [**सत्यभाषी** (वि०)]—**युग**-(पु०) चार युगों में से प्रथम युग, कृत युग।—**वादी**-(वि०) [सं० सत्यवादिन्] सच बोलने या कहने वाला, अपनी बात को पूरा करने वाला, सत्य-भाषी। [**सत्यवादिनी** (स्त्री०)]।—**व्रत**-(पु०) सच बोलने का नियम या प्रण। "सत्य-व्रतं सत्य परं च सत्यं"—[भाग०]। (वि०) सत्य व्यवहार का व्रत रखने वाला।—**व्रती**-(वि०) सत्याचरण-रत। "सत्यव्रती हरिचन्द हुते टहरत मरघट पै"—रत्ना०।—**संध**-(वि०) सत्य-प्रतिज्ञ, वचनों को पूरा करने वाला। [**सत्यसंधा** (स्त्री०)] (पु०) सच्ची प्रतिज्ञा वाला, रामचंद्र, जन्मेजय। "सत्य-संध दृढ़व्रत रघुराई"—[रामा०]।—**संधता**-(स्त्री०) सत्यानुरोध तत्परता।—**काम**-(वि०) सत्यानुरागी, सत्य का प्रेमी सत्येच्छु।

सत्यतः—(अव्य०, सं०) वस्तुतः, सचमुच, वास्तव में, यथार्थतः।

सत्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सचाई, सच्चाई, यथार्थता, वास्तविकता।

सत्यवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मत्स्य धा नाम की धीवर कन्या तथा व्यास या कृष्णद्वैपायन जी की माता। "अष्टादश-पुराणानि कर्त्ता सत्यवती-सुतः"। गाधि कन्या और ऋचीक पत्नी। (वि० सं०) सत्य वाली।

सत्यवान—(संज्ञा, पु०) [सं० सत्यवत्] शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र और पतिव्रता सावित्री का पति जिसे उसने अपने सतीत्व के प्रभाव से यम से बचाया था (पुरा०)।

सत्याग्रह—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी सच्चे या न्याय-संगत पक्ष की स्थापना के हेतु सदा शांति-पूर्वक लगातार अपने हठ का निर्वाह, सत्य के पक्ष पर आग्रह। [**सत्याग्रही** (वि०)]।

सत्याग्राही—(वि०) किसी सत्य कार्य पर अटल रहने वाला।

सत्यानास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सत्ता+नाश] विनाश, मटियामेट, सर्वनाश, नष्ट-भ्रष्ट, ध्वंस, बरबादी। **मुहा०—करना**-मटियामेट करना, बरबाद करना।—**जाना या होना**-नष्ट होना, मटियामेट होना, खराब होना, बरबाद होना।

सत्यानासी—(वि०, दे०) [हिं० सत्यानास+ई प्रत्य०] मटियामेट या सत्यानास करने वाला, चौपट करने वाला, विनाशक, खराबी या बरबादी करने वाला। (वि० यौ०) [सं० सत्य+अनास+ई प्रत्य०] सत्य और अनाश वाला ब्रह्म। "सत्यानाशी कलेश-कुल-संजातः"। (संज्ञा, स्त्री०) एक कटीला पौधा, भड़भाँड़, घमोय (प्रान्ती०)।

सत्यानृत—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सत्य+अनृत] वाणिज्य, व्यापार, सौदागरी। (वि०, यौ०, सं०) सत्य और झूठ।

सत्यंतर—(संज्ञा, पु०, सं०) असत्यता, वह जो सत्य न हो।

सत्यालोचन—जो बुद्धि प्राण, करते चिंतन, सत्यालोचन—पंत।

सत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) एक सोमयाग, यज्ञ, गृह, धन, सदावर्त, क्षेत्र, दीन-असहायों को जहाँ भोजनादि बँटे।

सत्रावसान—(संज्ञा, पु०, सं०) अनिश्चित समय तक के लिए विधान-सभा या लोक-सभा का कार्य-स्थगन। स्थगित होने का काम। [प्रोरोगेशन]

सत्रु—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शत्रु] रिपु, अरि, शत्रु, बैरी, दुश्मन। [**सत्रुता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

सत्रुघन, सत्रुहन*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शत्रुघ्न] राम जी के छोटे भाई शत्रुघ्न।

सत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्ता, हस्ती (फ़ा०) अस्तित्व, मूल, तत्व, सारांश, सार, चित्त की प्रवृत्ति, आत्म-तत्व, मनोवृत्ति, चित्तत्व, चैतन्य, जीव, प्राण, तीन गुणों में से प्रथम गुण, सतोगुण। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) शक्ति, बल, पौरुष, पवित्रता, शुद्धता। [**निस्सत्व** (विलो०)]।—**गुण**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रकृति के तीन गुणों में से प्रथम गुण, जो जीव को सुकर्मों की ओर प्रवृत्त करने वाला, प्रकाशक और इष्ट है, सतोगुण। [**सत्वगुणी** (वि०, सं०)]।

सत्वर—(अव्य०, सं०) शीघ्र, जल्द, तुरंत, त्वरित। [**सत्वरता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

सथर*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सथल] स्थल, भूमि, पृथ्वी।

सथरी, साथरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संस्थली] पुआल आदि तृण की शय्या।

सथशव—(संज्ञा, पु०, दे०) रण-भूमि में मरे वीरों की लोथें।

सथिया, सतिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वस्तिक] मंगल सूचक या ऋद्धि-सिद्धि दायक चिह्न, स्वास्तिक चिह्न, फोड़ों या आँख के रोगों की चिकित्सा करने वाला, जर्राह।

सद—(वि०, दे०) [सं० सद् या सत्] नवीन, ताजा। "सद माखन ताजो दधि-मीठो मधुमेवा पकवान"—सूबे०। (क्रि० वि०, दे०) [सं० सद्यः] तुरन्त, शीघ्र, सत्वर, सद्यः, त्वरित। "सूरदास जाँचत तव पद करहु कृपा अपने जन पर सद"। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सत्व] स्वभाव, आदत, प्रकृति।

सदई*—(अव्य०, दे०) [सं० सदैव] हमेशा, सदा, सर्वदा, सदैव, [सदाई (दे०)]।

सदका—(संज्ञा, पु०) [अ० सदकः] दान, खैरात, निछावर, [उतार (दे०)]। "सदकः तुझपै से निछावर जान है"—हाली०।

सदन—(संज्ञा, पु०, सं०) सद्म, गृह, मकान, घर, मन्दिर, स्थिरता, विराम, एक रामभक्त कसाई, [सदना (दे०]। "सिद्धि सदन-गज वदन विनायक"—[विनय०]।

सदबरग, सदबर्ग—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गेंदा का फूल।

सदर्प—(वि०, सं०) घमंडी।

सदम—(संज्ञा, पु०, दे०) [**सद्म** (सं०)] घर।

सदमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सदमः] चोट, धक्का, आघात, दुःख, रंज। "सदमों मे इलाजे दिले मजरूह यही है"—अनी०।

सदय—(वि०, सं०) दयावान, दयालु, दयायुक्त। [**सदयता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

सदर—(वि०, अ०) मुख्य, प्रधान। (संज्ञा, पु०) केन्द्र-स्थान, शासक-स्थान। [**सदरमुकाम, सदर दरवाजा** (यौ०)]।—**आला**-(पु०) छोटा जज।

सदरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) एक प्रकार की बंडी या कुरती, बिना बाहों की कुरती।

सदर्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्यार्थ, सदुद्देश्य। [**सदर्थता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]

सदर्थना*(क्रि० स०, दे०) [सं० सदर्थ, समर्थन], पुष्ट या समर्थन करना, पक्का या दृढ़ करना।

सदसत्, सद्सद्—(वि०, यौ०) [सं० सत्+असत्] सत्यासत्य, सच-झूठ । "सदसद ज्ञान होय तब ही जब सद्गुरु भले लखावै "—मन्ना० । "सदसद्व्यक्ति-हेतव: "—[रघु०] ।

सदसद्विचार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सत्या-सत्य-निर्णय, सत्य-झूठ का विचार ।

सदसद्विवेक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भले-बुरे या सत्यासत्य का ज्ञान, अच्छे-बुरे की पहिचान । [**सदसद्विवेकी** (वि०)] । होवै जब सदसद्विवेक तब सग्रह त्याग न होई "—मन्ना० ।

सदसद्विवेचन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सत्या-सत्य की विवेचना । [**सदसद्विवेचक** (वि०)] ।

सदसि, सदस—(संज्ञा, पु०, सं०) गृह, सभा । "सदसि परिशोभित भूमि-भागम् "—भट्टी० । "सदसि वाक्-पटुता युधि विक्रम: "—भर्तृ० ।

सदस्य—(संज्ञा, पु०) [सं० सदसिभव:] सभा-सद, [मेम्बर] सभा या समाज का मनुष्य, यज्ञ करने वाला ।

सदस्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सदस्य की स्थिति या भाव ।

सदहा—(वि०, फा०) सैकड़ों ।

सदा—(अव्य०, दे०) सदैव, सर्वदा, निरंतर, सतत, हमेशा, नित्य, अनुदिन, लगातार, संतत । "सदा काशिनी वासिनं गंगा-तीरे"—[स्फु०] । (संज्ञा, स्त्री०, अ०) गूँज, प्रतिध्वनि, शब्द, आवाज पुकार "सदा सुनके फकीरों की तुझे लाजिम रहम करना "—[स्फु०] ।—**फल**-(वि०) सदैव फलने वाला पेड़ । (पु०) ऊमर, गूलर, श्रीफल । बेल । एक प्रकार का नीबू । नारियल ।—**बरत**-(पु०) प्रतिदिन दीन-दुखियों को भोजन बाँटना, भूखों कंगालों को बाँटा जाने वाला भोजन खैरात, दान, [सदाबर्त (दे०)] ।—**वर्त**-(पु०) दीनों को नित्य भोजन देना, सदाबरत, दुखियों को दिया गया भोजन ।—**बहार**-(वि०) वह पौधा जो सदैव फूलता रहे, जो सदा हरा-भरा रहे (पेड़) ।—**शिव**-(पु०) नित्य कल्याणकारी महादेव जी, [सदासिव (दे०)] । "शंभु सदा शिव औढर दानी "—[रामा०] ।—**सुहागिन**, —**सुहागिनी**-(वि०) जो हमेशा सुहागिन बनी रहे । वेश्या, पतुरिया, रंडी, (व्यंग्य०) फूलों का एक पौधा ।

सदाई—(अव्य०, दे०) [सं० सदा] हमेशा, नित्य । "रहति सदाई हरिआई हिये घायनि मैं "—[ऊ० श०] ।

सदाचरण, सदाचार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अच्छा व्यवहार, शुद्ध या शुभ आचरण, भलमनसा-हत । श्रुतिस्मृति सदाचार स्वस्व च प्रियमात्मन: "—मनु० ।

सदाचारी—(संज्ञा, पु०) [सं० सदाचारिन्] धर्मात्मा, अच्छे व्यवहार या आचरण वाला । [**सदाचारिणी** (स्त्री०)] ।

सदादेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्रेष्ठ आज्ञा ।

सदाशय—(वि०, यौ०, सं०) उदार और श्रेष्ठ भाव वाला व्यक्ति, सज्जन, भलामानुस, महाशय । [**सदाशयता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] ।

सदिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फा० साद:] भूरे रंग का लाल पक्षी, लाल की मादा ।

सदी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शताब्दी, सैकड़ा, सौ का समूह, सौ वर्षों का समूह, [सद्दी (दे०)] ।

सदुद्देश्य—'समझ न पावे वे केशव के, सदुद्देश्य निश्छल को'—दिनकर ।

सदुपदेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) उत्तम शिक्षा, अच्छी सिखावन, सलाह, सुन्दर उपदेश । [**सदुप-देशक, सदुपदेष्टा** (वि०)] ।

सदूर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शार्दूल] व्याघ्र, सिंह, चीता, शरभ जंतु, एक राक्षस, दोहे का एक भेद (पिं०) एक पक्षी, [सारदूल (दे०)] ।

सदृश—(वि०, सं०) समान, तुल्य, सम, बराबर, अनुरूप । [**सादृश्य** (संज्ञा, पु०, दे०)], [**सदृ-शता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] ।

सदेश—(अव्य०, सं०) समीप, पास, निकट ।

सदेह—(क्रि० वि०, सं०) बिना शरीर छोड़े, इसी शरीर से । शरीरी, मूर्तिमान, सशरीर ।

सदैव—(अव्य०, यौ०) [सं० सदा+एव] सर्वदा सदा ।

सदोष—(वि०, सं०) दोष या अपराध-युक्त, दोषी, अपराधी । [**निर्दोष अदोष** (विलो०)] [**सदो-षता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] ।

सद्—(वि०, सं०) सत् का समास रूप ।—**गंधि**-(स्त्री०) सुगंधि, अच्छी महक, सुबास ।—**गति**-(स्त्री०) मरने पर उत्तम लोक का निवास, मरणो-परान्त उत्तम दशा की प्राप्ति, सुगति, परमगति

—गमय-(क्रि० स०, सं०) ले चलो। "तत्वों से जो अव्यय-अक्षय असतो मा सद्गमय"—बच्चन —गुण-(पु०) अच्छा और उत्तम गुण या लक्षण, अच्छी सिफ़त या तारीफ़। [सद्गुणी (वि०)]।—गुरु-(पु०) उत्तम या अच्छा गुरु, श्रेष्ठ शिक्षक, परमात्मा। "सद् गुरु मिले तें जाहिं जिमि, संशय-भ्रम-समुदाय"—[रामा०]। —ग्रंथ-(संज्ञा, पु०, सं०) श्रेष्ठ ग्रंथ, अच्छी पुस्तक, सन्मार्ग-प्रदर्शक ग्रंथ। "जिमि पाखंड-विवाद तें लुप्त होहिं सद्ग्रंथ"—[रामा०]।— —बुद्धि-(स्त्री०) सुबुद्धि, अच्छी बुद्धि। "सद्-बुद्धि बँध के द्वारा"—हरिऔध—भाव-(पु०) सच्चा और उत्तम भाव, सदाशय, प्रेम, प्रीति और हित का भाव, मैत्री, मेलजोल, अच्छी नियत, सद्विचार।—भावना-(स्त्री०) सुन्दर और श्रेष्ठ भावना।

सद्*†—(संज्ञा, पु०, सं०) [सं० शब्द] शब्द, ध्वनि। "हटकंत हूल करि हूहसद्दं"—सुजा०। (अव्यय, दे०) [सं० सद्यः] तत्काल, तुरत, शीघ्र, सत्वर।

सद्दल—(संज्ञा, पु० सं०) समूह, वृन्द।

सद्भावातिरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अच्छे भावों के प्रति अत्यंत अनुरागमयी। सद्भावातिरता अनन्य हृदया—हरिऔध।

सद्म—(संज्ञा, पु०) [सं० सद्मन्] सदन, गृह, घर, मकान, संग्राम, युद्ध, भूमि और आकाश।

सद्य—(अव्य० दे०, सं०) अभी, सत्वर, तुरंत, शीघ्र, इसी वक्त या समय, आज ही।

सद्यः—(अव्य०, सं०) अभी, तुरंत, शीघ्र। "सद्यः बलकरः पयः।"—प्रसूता-(वि०) वह स्त्री जिसने तत्काल प्रसव किया हो।—स्नात-(वि०) तत्काल या अभी नहाया हुआ।

सधना—(क्रि० अ०) [हि० साधना] पूरा या सिद्ध होना काम होना, या चलना, मतलब निकलना, अभ्यस्त होना, हाथ बैठना (सधना), प्रयोजन की सिद्धि के अनुकूल होना, गौं पर चढ़ना, भार सँभलना, निशाना ठीक बैठना। [सधाना, सधावना—(स० रूप)] [सधवाना—(प्रेरणा० रूप)]।

सधर—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊपर का ओंठ।

सधर्म—(वि०, सं०) एक ही धर्म का, समान, सच्चा एक ही प्रवृत्तिवाला।

सधवा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह स्त्री जिसका स्वामी जीता हो, [सुहागिन (दे०)] सौभाग्यवती।

सधवाना—(क्रि० स०) [हि० सधना का प्रेरणा० रूप) पूरा करवाना, सधाना।

सधाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० सधना का प्रेरणा० रूप] साधने का काम दूसरे से कराना, किसी को कोई वस्तु या भार पकड़ाना। [सधावना —(स० रूप) [सधवाना—(प्रेरणा० रूप)]

सनंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा जी के चार मानस पुत्रों में से एक पुत्र।

सन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शण] एक पौधा जिसकी छाल के रेशों से रस्सी आदि चीजें बनती हैं। (प्रत्य० अव०) [सं० संग] से, साथ (करण-विभक्ति)। "मैं पुनि निज गुरु सन सुनी"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०, अनु०) अति वेग से निकलने का शब्द, वायु-प्रवाह का शब्द। (वि० अनु० सुन) सन्न, सन्नाटे में आया हुआ, स्तब्ध [सं० शून्य], चुप, मौन।

सनई—(संज्ञा, दे०) [हि० सन] छोटी जाति का सन।

सनक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शंका] किसी बात की धुन, जनून, खफ्त (फ़ा०), मन की झोंक सवेग मन की प्रवृत्ति, मौज। (संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा जी के चार मानस पुत्रों में से एक पुत्र। [सनकी (वि०)]। मुहा०—आना या सवार होना (चढ़ना)-धुन होना, जुनून सवार होना।

सनकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सनक] पागल हो उठना, किसी धुन में हो जाना, पगलाना, नितांत मौन या निरुत्तर रहना, शांत रहना।

सनकाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० सनक] सनक चढ़ाना, इशारा करना, सैन करना। सनकियाना (प्रान्ती०)।

सनकारना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० सैन करना] सनकाना, संकेत या इशारा करना, सैन करना। "सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाय" —[रामा०]।

सनकियाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सनक] पागल होना, सिड़ी होना। (क्रि० स०, दे०) पागल बनाना, सनक चढ़ाना। (क्रि० स०, दे०) संकेत या इशारा करना, (आँख से) सैन करना।

सनत्—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा जी ।—**कुमार**–(पु०) वैधात्र, ब्रह्मा जी के चार मानस पुत्रों में से एक पुत्र ।

सनद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रमाण, दलील, सबूत, प्रमाण पत्र, [सार्टिफिकेट] ।—**याफ्ता**–(वि०) जिसे किसी बात की सनद मिली हो । **मुहा०—रहना (होना)**—प्रमाण रहना (होना) ।

सनदो—(संज्ञा, पु०,) [अ० सनद] जिसके पास सनद हो, ठीक-ठीक हाल (वि०, दे०) प्रमाण-पुष्ट ।

सनना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० सधम्] एक में मिलना, लिप्त या लीन होना, गीला होकर किसी वस्तु में मिलना । [**सानना**] (स० रूप) [**सनाना, सनवाना**] (प्रेरणा० रूप) ।

सनम—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रिय प्यारा, मित्र, दोस्त । "चाहने जिसको लगे उसको सनम कहने लगे" [स्फु०] ।

सनमान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सम्मान] सत्कार, आदार, सम्मान, खातिर । "प्रभु-सनमान कीन्ह सब भाँती" [रामा०] ।

सनमानना*—(क्रि०, स०, दे०) [सं० सम्मान] सत्कार या आदर करना, खातिर करना । "सनमाने प्रिय वचन कहि"—[रामा०] ।

सनमुख*—(अव्य०, दे०) [सं० सम्मुख] सम्मुख सामने । "सनमुख होइ कर जोरि रही"—[रामा०] ।

सनयन—(वि०, स०) नेत्र युक्त, प्रकाश देने वाला । "छवि विश्व की मोहनी, कवि की सनयन कविता" —निराला ।

सनसनाना—(क्रि०, अ०, अनु०) हवा के चलने या पानी के खौलने का शब्द होना, सनसन शब्द होना या करना, वेग से उड़ना ।

सनसनाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सनसनाना] हवा के तेजी से चलने या पानी का शब्द ।

सनसनी—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु० सन सन] झुन-झुनी, घबराहट, उद्वेग, सन्नाटा, खल-बली, संवेदन-सूत्रों में एक विशेष स्पंदन, भयादि से उत्पन्न स्तब्धता ।

सनहकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० सनहक] रकाबी, सनहक, मिट्टी का एक बरतन (मुसलमान) ।

सनाका—(क्रि० वि०, दे०) आश्चर्यादि से स्तब्ध, मौन । **मुहा०—खाना**–सन्न या स्तब्ध होना । (संज्ञा, पु०, दे०) सवेग वायु-प्रवाह का शब्द । **—मारना (भरना)**–सवेग वायु चलना ।

सनाढ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्राह्मणों की दस मुख्य जातियों में से गौड़ों के अंतर्गत एक जाति । "सनाढ्य जाति गुणाढ्य है जग-सिद्ध शुद्ध स्वभाव" —[रामा०] ।

सनातन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्राचीन काल या पुराना समय, प्राचीन परम्परा, बहुत समय से चला आया कार्य-क्रम, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म, परमात्मा । (वि०) बहुत पुराना, अत्यंत प्राचीन, जो बहुत समय से चला आता हो, शाश्वत, परम्परागत, नित्य, सदा ।—**सनातनी**–(वि०, यौ०) [हि० सना+तन] किसी वस्तु से लिप्त देह ।—**धर्म**–(पु०) अति प्राचीन या परम्परागत धर्म, पौराणिक धर्म, वेद, पुराण, तंत्र, प्रतिमा-पूजन, तीर्थ, माहात्म्यादि को मानने वाला, वर्तमान हिन्दू-धर्म का, रूप विशेष [**सनातनधर्मी** (वि०)] ।—**पुरुष**–(पु०) विष्णु । परमेश्वर । ब्रह्म । पुराण पुरुष ।

सनातनी—(वि०) [सं० सनातन+ई प्रत्य०] जो अत्यन्त प्राचीन काल से चला आता हो, सनातन-धर्म्मावलम्बी, सनातनधर्मी (स्त्री०, सं०) दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती ।

सनाथ—(वि०, सं०) वह पुरुष जिसके कोई रक्षक स्वामी हो । "जो कदापि मोहि मारि है, तो मैं होब सनाथ"—रामा० । [**सनाथा** (स्त्री०)] ।

सनाय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० सनाऽ] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ रेचक होती हैं, सोनामुखी (प्रान्ती०) ।

सनाह—(संज्ञा, पु०) [सं० सन्नाह] बकतर, कवच, जिरह-बख्तर, लोहे का अगरखा । "जहँ तहँ पहिरि सनाह अभागे"—[रामा०] (**वि०**) [दे० स+नाह=नाथ] सनाथ ।

सनि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शनि] शनिश्चर शनैश्चर, एक ग्रह और दिन ।

सनियम—(वि०, सं०) नियमित ।

सनिया—(संज्ञा, पु०, दे०) सन या टसर का वस्त्र ।

सनीचर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शनैश्चर] एक ग्रह, रविवार से पूर्व का एक दिन ।

सनीचरा—(वि०, दे०) [हि० सनीचर] अभागा अभागी, कमबख्त, सनिचरहा (ग्रा०)।

सनीचरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० सनीचर] शनि-ग्रह, शनि की दुखद दशा। "सनीचरी है मीन की"—[कवि०]।

सनीड—(वि०, सं०) निकटवर्ती, समीपी या पास का। (क्रि०, वि०, सं०) पास या समीप में। (वि०, सं०) नीड या घोंसले वाला।

सनीर—"होते हैं दो दो दृग सनीर"—मैथिली०।

सनेह*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्नेह प्रेम, नेह, प्यार, तेल। "सहित सनेह देह भई भोरी" —[रामा०]।

सनेहरि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सखी, सहेली।

सनेहिया*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सनेह] प्रेमी, स्नेह करने वाला, नेही।

सनेही—(वि०, दे०) [सं० स्नेही=स्नेहिन्] नेही, स्नेह या प्रेम करने वाला, प्रेमी। "कहाँ लखन कहाँ राम सनेही"—[रामा०]।

सनै, सनै—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० शनैः शनैः] धीरे-धीरे, क्रमशः, रसे रसे।

सनोवर—(संज्ञा, पु०, अ०) चीड़ का पेड़।

सन्—(संज्ञा, पु०, अ०) वर्ष। साल। संवत्, सवत्सर, अंगरेजी वर्ष।—**ईसवी**–(पु०) ईसा के जन्म-दिवस से प्रारम्भ ईसाइयों का वर्ष।

सन्न—(वि०, दे०) [सं० शून्य] जड़, भयादि से स्तब्ध, संज्ञा-शून्य, भौचक, चुप।

सन्नद्ध—(वि०, सं०) तैयार, उद्यत, कटिबद्ध, बँधा, लगा और जुड़ा हुआ। [**सन्नद्धता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सन्नाटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शून्य] नीरवता, निस्तब्धता, निःशब्दता, निर्जनता, एकांतता, शून्यता, निरालापन, स्तब्धता। [अनु० सन सन] सवेग वायु प्रवाह का शब्द, हवा को चीर कर तेजी से निकल जाने का शब्द। **मुहा०**—(टे) **में आना**–स्तब्ध रह जाना और कुछ कहते-सुनते न बनना, चुप रह जाना। एक दम खामोशी, चुप्पी, उदासीनता, चहल-पहल का अभाव, गुलजार न रहना।—**खींचना या मारना**–एक बारगी मौन हो जाना। उदासी, उन्मनता।—**छा जाना**–गुलजार न रहना, उदासी फैल जाना, रौनक मिट जाना, चहल पहल न रह जाना।—(टे) **में**–अकेले, जन शून्यता में, वेग से। (वि०) स्तब्ध, नीरव, निर्जन, शून्य।—(टे) **से आना**–वेग से चलना।

सन्नाह—(संज्ञा, पु०, सं०) कवच, जिरहबख्तर, लोहे का अंगरखा, [सनाह (दे०)]।

सन्निकट—(अव्य०, सं०) समीप, पास, निकट, अति, समीप। [**सन्निकटता** (संज्ञा, स्त्री०)]

सन्निकर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) नाता, लगाव, रिश्ता, संबंध, समीपता, निकटता। [**सन्निकृष्ट** (वि०)]।

सन्निधान—(संज्ञा, पु०, सं०) सामीप्य, समीपता, निकटता।

सन्निधि—(संज्ञा, स्त्री०) संहिता, निकटता, समीपता, पड़ोस। "कृत्स्ना च भूर्भवति सन्निधि रत्न पूर्णा"—भ० श०। [**सान्निध्य** (संज्ञा, पु०)]।

सन्निपात—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ही साथ गिरना या पड़ना, संयोग, समाहार, मिलाप, मेल, एकत्र या इकट्ठा होना, एक में जुड़ना, या जुटना, कफ, बात, पित्त तीनों का एक ही साथ बिगड़ जाना, त्रिदोष (वैद्य०), सरसाम (फ़ा०)। "उपजै सन्निपात दुःख-दाई", "सन्निपात जल्पसि दुर्वादा" —[रामा०]।—**ज्वर**–(पु०) त्रिदोष से उत्पन्न ज्वर।

सन्निविष्ट—(वि०, सं०) एक ही साथ जमा या बैठा हुआ, धरा या रखा हुआ, प्रतिष्ठित, स्थापित, समीपवर्ती, पास या निकट का बैठा हुआ।

सन्निवेश—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थित होने, रखने, बैठने-बैठाने आदि की क्रिया। जमने, जड़ने, लगाने, समाने, रखने, धरने का भाव। निवास, स्थान, घर, समाज, समूह, बनावट, गढ़न या गठन। [**सन्निवेशित, सन्निवेशनीय** (वि०)], [**सन्निवेशन** (संज्ञा)]।

सन्निहित—(वि०, सं०) साथ या पास रखा हुआ, समीपस्थ, निकटस्थ, ठहराया या टिकाया हुआ, अंतर्गत। "नित्यं सन्निहितो हरिः"—[भा० द०]।

सन्मार्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्पथ, श्रेष्ठ मार्ग। [**कुमार्ग** (विलो०)], [**सन्मार्गी** (वि०)]।

सन्मान—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्मान, आदर-सत्कार। [**सन्मानना** (क्रि० स०, दे०)], [**सन्माननीय, सन्मानित** (वि०)]।

सन्मुख—(अव्य, सं०) सम्मुख, सामने।

सन्यास—(संज्ञा, पु०) [सं० संन्यास] भवजाल के छोड़ने या संसार से अलग होने की अवस्था, त्याग, वैराग्य, यति-धर्म, चौथा आश्रम। [**सन्यास-धर्म** (यौ०)]। "जैसे बिन बिराग सन्यासी"—[रामा०]।

सन्यासी—(**संज्ञा**, पु०) [सं० संन्यासिन्] त्यागी, विरागी, जिसने संन्यास ले लिया हो, चौथे आश्रम वाला। [**संन्यासिनी, संन्यासिन** (स्त्री०)]। "मूड़ मुड़ाय होहिं सन्यासी"—[रामा०]।

सपक्ष—(वि०, सं०) तरफदार, जो अपने पक्ष में हो, पोषक, समर्थक, (न्याय०), साध्यवाला दृष्टांत या विषय [सपच्छ (दे०)]। (**संज्ञा**, पु०) तरफदार, सहायक, साथी, मित्र, पंख वाला। "जनु सपक्ष धावहिं बहु नागा"—[रामा०]।

सपत—(वि०, दे०) [सं० सप्त] सात। "सपत ऋषिन विधि कह्यो विलंब जनि लाइय"—[पार्व० मं०]।

सपत्नी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक ही पति की दूसरी स्त्री, सौत, सवति।—**भाव**-(पु०) सौतिया-डाह।

सपत्नीक—(वि०, सं०) स्त्री-सहित।

सपथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शपथ] सौगन्ध, कसम। "राम-सपथ, दशरथ कै आना"—[रामा०]।

सपदि—(अव्य, सं०) अल्पकाल, तुरन्त, फौरन, शीघ्र, सत्वर, त्वरित, ततक्षण। "राम समीप सपदि सो आये"—[रामा०]। **लो०**—"सपदि निंबु रसेन विसूचिकां हरति भो रति-भोग विचक्षणो।"

सपन, सपना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वप्न] स्वप्न, ख्वाब, अर्धसुप्तावस्था की बातें, निद्रा दशा के दृश्य। "सबहिं बुलाय सुनाइस सपना"—[रामा०]।

सपरदाई—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संप्रदायी] रंडी के साथ तबला-सारंगी बजाने वाला, समाजी, सपदा, सफदा, भँडुआ (ग्रा०)।

सपरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संपादन] काम पूरा या समाप्त होना, निबटना, हो सकना, पार लगना, जा सकना, स्नान करना, नहाना।

सपराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० सपरना] काम पूरा करना, समाप्त करना, स्नान कराना। [**सपरवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सपरिकर—(वि०, सं०) सेवकों या अनुचरवर्ग के साथ, ठाट-बाट के साथ, कमर में फेंट बाँधे हुए, कटिबद्ध, सन्नद्ध, बद्धपरिकर।

सपरिवार—(वि०, सं०) परिवार के लोगों के साथ।

सपरिश्रम—(संज्ञा, पु०, सं०) परिश्रम के साथ। —**कारावास**-(संज्ञा, पु०, सं०) वह कारावास जिसमें परिश्रम भी कराया जाता है। [रिगरेस इंप्रिज़नमेंट]

सपाट—(वि०, दे०) [सं० सपट्ट] समतल, बराबर, हमवार, चिकना, साफ, समथल, [समथर (दे०)]। जिस पर कोई उभाड़ न हो।

सपाटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सर्पण] दौड़ने या चलने का वेग, तेजी, झोंका, झपट, दौड़, तीव्रगति। **मुहा०—भरना (लगाना)**-तेजी से भागना।

सपाद—(वि०, सं०) चरण-सहित, एक और उसका चौथाई मिला, सवा, सवाया। "सपाद सप्ताध्यायी प्रति त्रिपाद्यसिद्धा"—[सि० कौ०]।

सपिंड—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ही वंश का व्यक्ति जो एक पितरों को पिंड-दान करने में संमिलित हो। "असपिंडा तु या मातुः"—मनु०।

सपिंडी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मृतक को अन्य पितरों से मिलाने का कर्म विशेष।

सपुत्र—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुपुत्र] अच्छा लड़का, [सुपुत्र, सपूत (दे०)]। (वि०, सं०) पुत्र के साथ।

सपूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सत्पुत्र, सुपुत्र] अच्छा लड़का, सुपुत्र, सुपूत, सत्पुत्र। [**कुपूत-कपूत** (विलो०)]। "लीक छाड़ि तीनै चलैं शायर, सिंह, सपूत"—[स्फु०]। [**सपूती** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

सपूती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सपूत + ई प्रत्य०] लायकी, योग्यता, सपूत होने का भाव। (वि०, दे०) योग्य पुत्र उत्पन्न करने वाली माता।

सपेत, सपेद*†—(वि०, दे०) [फा० सफेद] सफेद, उजला, श्वेत। [**सपेती, सपेदी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

सपेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साँप] सँपेरा, साँप वाला, मदारी।

सपेला, सपोला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साँप + एला ओला प्रत्य०] साँप का बच्चा, छोटा साँप, सपेलवा (ग्रा०)।

सप्त—(वि०, सं०) गिनती में सात।—**ऋषि**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सप्तर्षि] सात ऋषियों का समूह। "तबहिं सप्तऋषि शिव पहँ आये"—[रामा०]।—**जिह्वा**-(पु०) सप्तर्चिषा, सात जीभों

वाला, अग्नि, आग।—ताल–(पु०) ताड़ के सात वृक्ष, जिन्हें एक ही बाण से राम ने गिरा कर बालि वध की क्षमता प्रकट की थी।—दश–(वि०) सत्तरह, [सत्रह (दे०)]।—द्वीप–(पु०) पृथ्वी में स्थल के सात मुख्य बड़े विभाग, जम्बू, लक्ष, कुश, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीप। [सप्तद्वीप-नवखंड (यौ०)]।—पदी–(स्त्री०) भाँवर, भौंरी, व्याह, विवाह में वर-वधू की अग्नि के चारों ओर परिक्रमा की रीति, [भाँवरि, भँवरी (दे०)]। भाँवरी, भँउरी (ग्रा०)। "सप्तपदी देकर यहाँ बैरी मैं गतिहीन"—मैथिली०।—पर्ण–(पु०) छतिवन वृक्ष। "सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो, विषमच्छदः"—अमर०।—पर्णी–(स्त्री०) लज्जावनी लता, लजालू।—पाताल–(पु०) पृथ्वी के नीचे के सात लोक अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल।—पुर–(स्त्री०) सात पवित्र नगर या तीर्थ—अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, (माया) काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयनी) द्वारका।—प्रधान तंत्र–(पु०) सात राजाओं से शासित राज्य। [हप्तर्की]—शती–(स्त्री०) सात सौ का समूह, सात सौ छंदों का समूह, [सतसई, सतसइया (दे०)]।—सागर–(पु०) सात समुद्र—क्षीर, दधि, घृत, इक्षु, मधु, मदिरा, लवण। सप्तोदधि, सप्तोबुधि।—स्वर–(पु०) सात प्रकार की ध्वनियाँ, सात स्वर, षड्ज, मध्यम, गान्धार, ऋषभ, निषाद, धैवत, पंचम (संगी०—स, रे, ग, म, प, ध, नी)।

सप्तक—(संज्ञा, पु०, सं०) सात पदार्थों का समूह, सात स्वरों का समूह (संगी०)।

सप्तति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सत्तर, ७० की संख्या।

सप्तम—(वि०, सं०) सातवाँ। [सप्तमी (स्त्री०)]।

सप्तमी—(वि०, स्त्री०, सं०) सातवीं, [सप्तमी, सत्तिमी (दे०)]। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी पक्ष की सातवीं तिथि, अधिकरण कारक (व्याक०)।

सप्तर्षि—(संज्ञा, पु०, सं०) सात ऋषियों का समूह या मंडल—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि, इति, (शतपथः)। मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, वसिष्ठ-इति (महाभा०)। उत्तर दिशा में उदय होने वाले सात तारे जो ध्रुव तारे के चारों ओर घूमते दीखते हैं, (भूगो०)।

सप्तावरण—(संज्ञा, पु०, सं०) सात आवरण, सात आच्छादन अथवा ढकने, परदे। "भेदकर सप्तावरण-मरण-लोक"—निराला।

सप्ताश्व—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सात घोड़ों के रथ में बैठने वाले सूर्य।

सप्तालू—(संज्ञा, पु०, दे०) सफ्तालू, सतालू।

सप्ताह—(संज्ञा, पु०, सं०) सात दिनों का समूह, हफ्ता (फ़ा०), सात दिनों मे पढ़ी-सुनी जाने वाली भागवत की कथा।

सप्रमाण—(वि०, सं०) प्रमाण-सहित, प्रामाणिक।

सप्रीति—(अव्य०, सं०) प्रेम सहित, प्रेम से, प्रीति से। "सुनि मुनीस कह वचन सप्रीती"—[रामा०]।

सप्रेम—(अव्य०, सं०) प्रीति-पूर्वक, प्रेम सहित, प्रीति से, स्नेह से। "सभय सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित दोउ भाय"—[रामा०]।

सफ़—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अवली पाँति, पंक्ति, कतार, लंबी चटाई, शीतल पाटी, कक्षा।

सफ़तालू—(संज्ञा, पु०, दे०) आड़ू फल।

सफ़र—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रयाण, यात्रा, प्रस्थान, भ्रमण, राह चलने का समय या दशा। "सफ़र जो कभी था नमूना सेक़र का"—हाली०।

सफ़रमैना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० सैपर माइना] वे सिपाही जो खाँई खोदने को सेना के आगे चलते हैं।

सफ़री—(वि०) [अ० सफ़र] सफ़र या रास्ते का, यात्रा या राह में काम देने वाला। (संज्ञा, पु०) [सं० पाथेय] मार्ग व्यय, सफ़र खर्च, अमरूद फल, यात्रा के आवश्यक पदार्थ।

सफरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शफरी] सौरी मछली। "मनोऽस्य जह्रुः शफरी विवृत्तयः"—किरा०। "जाति मरी बिछुरति घरी, जल सफरी की रीति"—बिहारी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) अमरूद, बिही (प्रान्ती०)।

सफल—(वि०, सं०) फल-युक्त, परिणाम-सहित, फलवान, कृतार्थ, कृतकार्य, कामयाब। "सफल मनोरथ होहिं तुम्हारे"—[रामा०]।

सफलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कृतार्थता, सिद्धि, पूर्णता, कृतकार्यता, सफल होने का भाव। "सब के दुःख सिद्धि जाहिं, सफलता भारत पावै"—हरि०।

सफलीकृत—(वि०, सं०) सफल या कृतार्थ किया हुआ ।

सफलीभूत—(वि०, सं०) जो सिद्ध या पूर्ण हुआ हो जा सफल या सार्थक हुआ हो । "सफलीभूत हुये सब कारज कृपा-कटाक्ष तुम्हारी"—कुंज० वि० ।

सफहा—(संज्ञा पु०, अ०) पन्ना, पृष्ठ, वर्क के एक ओर, [सफा (दे०)] ।

सफ़ा—(वि०, अ०) स्वच्छ, साफ़, निर्मल, पवित्र, उज्जल, चिकना, बराबर, चिन्ह-रहित ।

सफाई—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० सफ़ा+ई प्रत्य०] निर्मलता, स्वच्छता, उज्ज्वलता, कूड़ा आदि हटाने या लीपने-पोतने आदि का कार्य, स्पष्टता, मन का स्वच्छता, कपट का अभाव, निर्दोषता, निबटारा, निर्णय ।—**के गवाह**-(पु०) निर्दोषता प्रमाणित करने वाले गवाह । **मुहा०—देना**-निर्दोषता दिखाना ।

सफ़ाचट—(वि०, दे०) एकबारगी साफ, सर्वथा स्वच्छ, बिलकुल चिकना, एकदम साफ़ ।

सफाया—(संज्ञा, पु०) समाप्ति, संहार, नाश, खात्मा । **मुहा०—कर देना**-मिटा देना, समाप्त कर देना, मार डालना ।

सफ़ीना—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सफ़ीनः] समन (अं०), इत्तिलानामा, कचहरी का परवाना, आज्ञा-पत्र ।

सफ़ीर—(संज्ञा, पु०, अ०) राजदूत, एलची ।

सफूफ़—(संज्ञा, पु०, अ०) चूर्ण, बुकनी ।

सफेद—(वि०, दे०) [फ़ा० सुफैद] उज्ज्वल, श्वेत, शुक्ल, धवल, धौला, बर्फ या दूध के रंग का, सादा, कोरा, सुफेद, [सुपेत सपेद (दे०)] । **मुहा०—स्याह (करना)**-भला या बुरा कुछ भी करना ।—**पोश**-(पु०) उज्ज्वल वस्त्रधारी, साफ या स्वच्छ वस्त्र पहनने वाला, शुक्लाम्बरधारी, शिष्ट, सभ्य, भलामानस ।

सफ़ेदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सुफैदा] जस्ते की भस्म, आम या खरबूजे का एक भेद, सुफेदा ।

सुफेदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सुफैदी] उज्ज्वलता, शुक्लता, धवलता, श्वेतता, सफेद होने का भाव [सुपेदी, सपेदी, सपेती (दे०)] । **मुहा०—आना**-बुढ़ापा आना । "स्याही गई सफेदी आई"—[स्फु०] । दीवार आदि पर सफेदी रंग या चूने की पुताई, चूनाकारी ।

सब—(वि०, दे०) [सं० सर्व] समस्त, सम्पूर्ण, तमाम, कुल, सारे, सारा, पूरा, सर्वस्व ।

सबक़—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पाठ, शिक्षा ।—**सीखना (लेना)**-उपदेश लेना, अच्छी बात का अनुकरण करना, शिक्षा ग्रहण करना, किसी बुरे कार्य या भूल का बुरा फल देख आगे उसके करने से सतर्क रहने की याद रखना ।—**सिखाना (देना)**-दुष्टता का उचित बदला देकर शिक्षा देना । **मुहा०—पढ़ाना**-(व्यंग्य), उलटी सीधी बात सिखाना, दंड देकर दुष्टता का बदला देना । —**पढ़ना**-सीखना ।

सबज़—(वि०, दे०) [फ़ा० सब्ज] कच्चा और ताजा फल-फूल आदि, हरा, हरित, उत्तम, शुभ । [**सबजी** (संज्ञा, स्त्री०)], [**सबजा** (वि०)] ।

सबद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शब्द] आवाज़ बोली, शब्द, किसी महात्मा के वचन । "सबद-बान बेधै नहीं, बाँस बजावै फूँक"—कबीर ।

सबब—(संज्ञा, पु०, अ०) कारण, हेतु, प्रयोजन, बायस (फ़ा०) वजह । साधन ।

सबर—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सब्र] संतोष, धैर्य्य ।

सबरा—(वि०, दे०) [सं० सर्व] सारा, कुल, सब का सब, सम्पूर्ण । "दूध-दही चाटन मे तुम तौ सबरो जनम गँवायो"— स्फु० ।

सबरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मोटे लोहे की छड़ से बना खोदन का एक औजार । [**सब्बर** (पु०)] । (वि०, स्त्री०, दे०) समस्त, सब ।

सबल—(वि०, सं०) पराक्रम या पौरुष सहित, बल-युक्त, सेना-युक्त । [**सबलता** (संज्ञा, स्त्री०,)] [**निबल, अबल** । (विलो०)] "निबल-सबल के जोर तें, सबलन सों अनखात"—[नीति०] ।

सबलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पौरुष, बल, पराक्रम, ताकत, जोर, सामर्थ्य ।

सबलई, सबलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सबलता] सबल, सबलता, पौरुष, जोर, सामर्थ्य ।

सबाद, सवाद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वाद] स्वाद, मजा, जायका । [**सवादी** (वि०, दे०)]

सबार—(क्रि०, वि०, दे०) [हि० सबेरा] सबेरा, तड़का, सकार, शीघ्र, तुरन्त, जल्दी ।

सबील—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मार्ग रास्ता, राह, तरीका, पथ, पंथ, सड़क, ढंग, उपाय, रीति, तर-

कीब, युक्ति। [पाँसला, प्याऊ (दे०)] "राह तरीक सबील पहचान"—खा०।

सबुनाना—(क्रि०, स०) [हि० साबुन] साबुन लगाना (वस्त्रादि में), [सबुनियाना (दे०)]।

सबुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सब्र फ़ा०, संतोष]।

सबूत—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) प्रमाण। (वि०, दे०) पूरा, बिना फटा, समूचा, [साबुत (दे०)]।

सबूरा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सब्र, फ़ा०], तोष।

सबेर, सबेरा-सबेरे—(क्रि०, वि०, दे०) [सं० सवेला] प्रातःकाल, तड़के, तड़का, शीघ्र, प्रथम। "जागु सबेर हे मन मेरे"—[स्फु०]। "ताहि ते आयों सरन सबेरे"—[विनय०]।

सबै—(क्रि०, वि०, ब्र०) समस्त, सब।

सबोतर—(अव्य, दे०) [सं० सर्वत्र] सब जगह, सब स्थान या ठौर मे, सर्वत्र।

सब्ज—(वि०, फ़ा०) ताजा और कच्चा (फल-फूल)। हरा, हरित, उत्तम, शुभ। **मुहा० बाग (गुलाब) दिखाना**।

सब्जा—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० सब्जः] हरियाली, भंग या भाँग, विजया, पन्ना नामक रत्न, घोड़े का एक रङ्ग, [सबजा (दे०)]।

सब्ज़ी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) हरियाली, हरी तरकारी, भंग, भांग, विजया, वनस्पति आदि।—**मंडी**-(स्त्री०) तरकारी या फलों का बाजार।

सब्र—(संज्ञा, पु०, अ०) धैर्य्य, संतोष, [सबर, सबुर, सबूरा (दे०)]। "करो सब्र आता है अच्छा जमाना"—म० इ०। **किसी का—पड़ना**—किसी के धैर्य्य-पूर्वक सहन किये कष्ट का प्रतिफल होना। **लो०**—सब्र का फल मीठा—संतोष, सुफल प्रद होता है।

सब्बर—(संज्ञा, पु०, दे०) लोहे के मोटे छड़ से बना भूमि खोदने का एक औजार।

सभत्तर—(अव्य, दे०) [सं० सर्वत्र] सर्वत्र, सब ठौर, [सर्वत्तर (दे०)]।

सभय—(वि०, सं०) सभीत, भय-युक्त। "सभय नरेस प्रिया पहँ गयऊ"—[रामा०]

सभा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समाज, गोष्ठी, समिति, परिषद, मजलिस, वह संस्था जो किसी बात के विचार करने के हेतु संगठित हो। "खडपरसु की सोभिजै सभा-मध्य कोदंड"—[रामा०]।—**गृह**-(पु०) समाज-भवन, मजलिस की जगह, बहुत लोगों के साथ बैठने का स्थान, सभा-घर, सभा-सद्म, सभा-सदन।—**त्याग**-(पु०) विरोध-प्रदर्शन के निमित्त सभा त्याग करना [वॉक आउट] —**पति**-(पु०) सभा का प्रधान नेता, सभा का मुखिया, [प्रेसीडेन्ट, चेअरमैन] [**सभापतित्व** (संज्ञा, पु०)]।—**सचिव**-(पु०) मंत्री के विभागीय कार्यों के निमित्त सहायक रूप मे काय करने वाला सचिव जो विधान सभा और लोक सभा का सदस्य होता है। [पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी]—**सद्**-(पु०) सदस्य, सामाजिक, किसी सभा मे सम्मिलित हो भाग लेने वाला, [मेम्बर]।—**कक्ष**-(पु०) व्यवस्थापिका सभा भवन की दालान [लाबी]। ०—**सलाप**-(पु०) कक्ष मे असली बातचीत। [लाबीटाक]।—**कार्यालय**-(पु०) व्यवस्थापिका सभा का दफ्तर।

सभाग-सभागा—(वि०, दे०) [सं० सौभाग्य] सुन्दर भाग्यवान, खुशकिस्मत, तकदीरवर, सौभाग्यशाली। [विलो०, **अभागा**]।

सभिक—(संज्ञा, पु०, सं०) जुआ खेलने वाला, जुआ का प्रधान।

सभीत—(वि०, सं०) सभय, भयभीत, डरा हुआ।

सभ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सदस्य, सभासद, सामाजिक, मेम्बर, उत्तम विचाराचारा या व्यवहार वाला भलामानुष, शिष्ट, शाइस्ता।

सभ्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सभ्य होने का भाव, सदस्यता, सामाजिकता, सुशिक्षित और सज्जन होने के अवस्था, भलमनसाहत, शिष्टता, शराफत, शाइस्तगी।

समंजस—(वि०, सं०) उचित, ठीक। "सबै समंजस अहै सयानो"—[रामा०]।

समंडली—(वि०, सं०.) मंडली-सहित। (क्रि० वि०) मंडली के साथ।—"मुनिवर उठे समंडली" —**हरिऔध**

समंत—(संज्ञा, पु०, सं०) सीमा, सिरा, हद, किनारा, शूर-सामंत।

समंद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) घोड़ा, अश्व। "कुदावें अलुल अजमियों के समंद"—[स्फु०]।

समंदर, समुन्दर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० समुद्र) समुद्र, सागर। (फ़ा०) एक कीड़ा। "समंदर रहै आग में जीव कीड़ा" [खा० बा०]।

सम—(वि०, सं०) तुल्य, बराबर, समान, सदृश, सब, सारा, कुल, तमाम, जिसका तल बराबर या

चौरस हो, चौरस, वह संख्या जो दो से पूरी पूरी बँट जावे, जूस। "उमा राम सम हितु जग माहीं"—[रामा०] (संज्ञा, पु०)—संगीत में वह स्थान जहाँ गाने-बजाने वालों का सिर या हाथ आप ही आप हिल जाता है, एक अर्थालंकार जिसमें योग्य पदार्थों का मेल या संबंध कहा जाय (काव्य०) (संज्ञा, पु०, अ०) विष, गरल, जहर। [समता साम्य (संज्ञा, पु०)]।—कक्ष-(वि०) तुल्य, एक कोटि का, समान, बराबर।—कक्षी-(वि०, सं०) एक कक्ष का, एक श्रेणी का।—"समकक्षी से परिहास भला"—[बच्चन]।—कटिबन्ध-(पु०) शीत-कटिबन्ध और उष्ण कटिबंध के बीच का भूखंड।—कालीन-(वि०) दो या कई, जो एक समय मे हों, एक ही समय वाले, समसामयिक।—कोण-(वि०) वह कोण जो नब्बे अंश का हो, समान कोने। [समकोण त्रिभुज, समकोण-चतुर्भुज। (यौ०)] —गम-(वि०) समान, बराबर, तुल्य।—चतुर्भुज-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह चतुर्भुज क्षेत्र जिसकी चारों भुजायें तुल्य हों (रेखा०)।—चर-(वि०, सं०) एक सा या समान आचार-व्यवहार करने वाला, एक सा आचार-विचार करने वाला, [समचारी (दे०)]।—तल—(वि०) जिसकी सतह बराबर या हमवार हो, साफ चिकना। "समतल महि तिन-पल्लव डासी"—[रामा०]।—तूल (वि०) [सं० समतुल्य] समान, सदृश, बराबर, तुल्य,। "तदपि सकोच समेत कबि, कहहिं सीय समतूल"—[रामा०]।—त्रिभुज,—त्रिबाहु-(पु०) वह त्रिभुज क्षेत्र जिसकी तीनो भुजाएँ समान हों, सम त्रिबाहु।—थल-(वि०, यौ०, दे०) [सं० समस्थल] समतल भूमि।—दर्शी-(पु०) [सं० समदर्शिन्] सब को समान या एक सा देखने वाला, [समदरसी (दे०)]। "कहा बालि सुनु भीरु प्रिय, समदर्शी रघुनाथ"—[रामा०]।—दृष्टि-(स्त्री०) सब को समान दृष्टि से देखना।—द्विबाहु-(पु०) वह त्रिभुज जिसकी दो भुजाएँ तुल्य हों।—पाद-(पु०) वह छंद जिसके चारों चरण एक हों (पिं०)।—बल-(वि०) समान बल, पौरुष या पराक्रम वाला। "समबल अधिक होहु बलवाना"—[रामा०]।—भाव(संज्ञा, पु०) समता, या बराबरी का भाव, समानता।—वर्त्ती-(वि०) [सं० समवर्तिन्] जो समीप स्थित हो, जो समान रूप से स्थित हो] "समवर्त्ती परमेश्वर जानो"—वासु०। [कानकरेंट]।—वृत्त-(पु०) वह छंद जिसके चारों पाद या चरण समान हों (पिं०)।—वेदना—(स्त्री०) किसी की विपत्ति या दुःख दशा में समानरूप से साथ देना या तदनुभव करना, संवेदना।—शीतोष्ण-कटिबंध-(संज्ञा, पु०, सं०) वे भूमि-भाग जो शीत कटिबंध और उष्ण-कटिबंधों या कर्क और मकर रेखाओं के बीच में उत्तरी और दक्षिणी वृत्त तक है।—सूत्रपात-(संज्ञा, पु०) डोरी से नापना, पानी की थाह या गहराई लेना या नापना।—स्थला-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) गंगा-यमुना नदियों के बीच का देश, अंतर्वेद। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) समतल भूमि।

समक्ष—(अव्य० सं०) सामने, सम्मुख, सन्मुख, [समक्षता (संज्ञा, स्त्री०)]।—"समर्थ पश्य मे मुखम्"—[मा० दा०]। "यह संसार समक्ष, आ गया"—हरिऔध।

समग्र—(वि०, सं०) पूर्ण, समस्त, सब, कुल, सम्पूर्ण, सारा, पूरा।

समज्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सभा, समाज, गोष्ठी, यश, कीर्ति।

समझ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ज्ञान, बुद्धि, [सामुझि (दे०)]।—दार-(वि०) [हि० समझ+दार फ़ा०] बुद्धिमान्, अक्लमन्द, ज्ञानी। [समझदारी (संज्ञा, स्त्री०)]।

समझना—(क्रि०, अ०) [हि० समझ] ध्यान या विचार में लाना, बूझना, सोचना। [समझना-बूझना (यौ०)]—[समझाना (स० रूप)] [समझवाना—(प्रेरणा० रूप)]।

समझाना—(क्रि०, स०) [हि० समझना] शिक्षा देना, सिखाना, समझने में लगाना। "ब्रह्मा के समझाने पर भी मूर्ख नहीं समझेगा"—[स्फु०]

समझावा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० समझ] सीख, सिखावन, शिक्षा, उपदेश।

समझौता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० समझ] परस्पर का निपटारा, सुलह।—भंग-(पु०) समझौते की शर्तों के विरुद्ध आचरण। [ब्रीच, आव् कंट्रैक्ट]।

समता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सादृश्य, तुल्यता, बराबरी, समानता। "समता महँ कोउ त्रिभुवन नाहीं"—[रामा०]।

समताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० समता] तुल्यता, समानता, बराबरी ।

समत्थ—(वि०, दे०) [सं० समर्थ] शक्तिशाली, पराक्रमी, बली, समर्थ ।

समदन—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नजर, भेंट ।

समदना—(क्रि०, अ०, दे०) प्रेम से मिलना, नजर, भेंट या दहेज देना । "दुखिता समदौ सुख पाय अबै"—[रामा० । "समदि काग मेलिय सिर धूरी"—पद० ।

समधिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संबंधी] बेटा या बेटी की सास, समधी की स्त्री ।

समधियान, समिधियाना—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) समधी का घर या गाँव ।

समधी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संबन्धी] पुत्र या पुत्री का ससुर । (वि०, सं०) समान बुद्धि वाला । "सम समधी देखे हम आजू"—[रामा०] ।

समधौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) दो समधियों की परस्पर भेंट करने या मिलने की एक रीति (ब्याह०) [**समधियारौ**] (ग्रा०) ।

समन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० समन] शमन, यम, हिंसा, शांति, दमन । "मातु मृत्यु पितु सयन समाना"—[रामा०] ।

समनुरक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [सम्+अनुरक्ति], प्रखर प्रेमभावना । "ज्यों हों वे शब्दमात्र-मैत्री की समनुरक्ति"—निराला ।

समन्तात्—(अव्य०, सं०) चारों ओर, सब तरफ से ।

समन्न—(संज्ञा, पु०, दे०) सेंहुड़ का पेड़ ।

समन्वय—(संज्ञा, पु०, सं०) मिलाप, मिलन, संयोग, मेल, कार्य कारण का प्रवाह, अनुगतता, विरोधभाव । "तत्तु समन्वयोत्"—या० द० ।

समन्वित—(वि०, सं०) संयुक्त, मिला हुआ । "भोजनं देहि राजेन्द्र घृत-सूप समन्वितम्"—भो० प्र० ।

समुपकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) सामग्री, साधन । पाकर जीवन प्रलोभन समुपकरण—निराला

समय—(संज्ञा, पु०, सं०) अवसर, काल, वेला, वक्त, मौका, अवकाश, फुरसत, अंतिम काल, [समै (दे०)] । "समय जानि गुरु आयसु पाई" —[रामा०] ।—**निष्ठ**-(वि०) समय का पाबंद । [पंक्चुअल] ।—**भ्रंश**-(पु०) समय का नाशन । [लास आव् टाइम] ।—**सारिणी**-(स्त्री०) काल विभाग । टाइमटेबुल] ।

समया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० समय] अवसर, काल, बेला, वक्त, मौका, अवकाश, फुरसत, अंतिम काल । "रैहै न रैहै यही समया बहती नदी पाँय पखारिले री" । (संज्ञा, पु०, सं०) सपथ, आचार, काल, सिद्धांत, संविद, ज्ञान, । "समया शपथाचार: काल-सिद्धांत संविदः"—अम० । "तथापि वक्तु व्यवसाययन्ति मां निरस्त-नारी-समया दुराधयः"— [किरा०] ।

समयानुकूल—(वि०, सं०) समय के अनुकूल, समय के साथ मेल खाने वाली] कालानुसारी । समयानुकूल इसने विभूति बिखराई है ।—बच्चन

समर—(संज्ञा, पु०, सं०) युद्ध, संग्राम, लड़ाई । "समर बालि सन करि यश पावा"—[रामा०] । —**भूमि**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) संग्रामभूमि, युद्ध-क्षेत्र, रण-स्थली । "समर भूमि भये दुर्लभ प्राना"—[रामा०] । [स्मर (संज्ञा, पु०, दे०, सं०)] कामदेव ।—**स्थल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समर-भूमि, [**समरस्थली** (स्त्री०)] ।

समरथ-समरत्थ—(वि०, दे०) [सं० समर्थ] बलवान, पराक्रमी, क्षमताशील, योग्य, उपयुक्त, जिसमें किसी कार्य के करने की क्षमता हो । "समरथ का नहिं दोष गुसाईं" "करौं अरिहासमरत्थहिं— [रामा०] ।

समरांगण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समर-भूमि, संग्राम-स्थल, युद्ध-क्षेत्र, लड़ाई का मैदान, [समरांगन (दे०)] । "समरांगण बना आज मानव उपचेतनमन"—पंत ।

समराग्नि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समरागी, युद्ध की आग । "समराग्नि भड़की लंक में मानो प्रलय दिन आ गया"—कुंज, वि० ।

समर्थ—(वि०, सं०) शक्तिशाली, बली, बलवान, क्षमताशील, योग्य, उपयुक्त, वह पुरुष जिसमें किसी कार्य के करने की क्षमता हो ।"को समर्थ जग राम समाना"—[स्फु०] । [**समर्थता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] ।

समर्थक—(वि०, सं०) समर्थन करने वाला, जो समर्थन करे, अनुमोदक ।

समर्थता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शक्ति, बल, सामर्थ्य, जोर, योग्यता, क्षमता ।

समर्थन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी के मत का पोषण करना, किसी बात के ठीक होने का प्रमाण देना, विवेचन, उचितानुचित का निश्चय, विचार, अनुमोदन प्रमाणपुष्ट व दृढ़ीकरण। [**समर्थनीय, समर्थित, समर्थक, समर्थ्य** (वि०)]।

समर्थना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अभ्यर्थना, प्रार्थना, निवेदन, सिफारिश। (क्रि०, सं०, दे०) [सं० समर्थ] प्रमाण-पुष्ट या दृढ़ करना, समर्थना करना।

समर्पक—(वि०, सं०) समर्पण करने या देने वाला।

समर्पण—(संज्ञा, पु०, सं०) सादर भेंट सत्कार या प्रतिष्ठापूर्वक देना, उपहार, दान देना, [समर्पन (दे०)]।[**समर्पित समर्पणीय** (वि०)]।

समर्पना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० समर्पण] भेंट देना, सौंपना, सिपुर्द करना, देना। "तिमि जनक रामहिं सिय समर्पी विश्व फल कीरति नयी" —[रामा०]।

समर्पनीय—(वि०, सं०) समर्पण करने योग्य।

समर्पित—(वि०, सं०) समर्पण किया या दिया हुआ, जो समर्पण किया या दिया गया हो प्रदत्त, जो सौंपा गया हो।

समलंकृत—(वि०, सं०) शोभित, सुसज्जित। "कालिदास—वररुचि के समलंकृत रुचित तार" —निराला।

समल—(वि०, सं०) दोष या मल से युक्त, मलीन, मैला, गंदा, पाप-सहित, विकार-युक्त। [**समलता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

समव, समउ—(संज्ञा, पु०, सं०) समय, समौ।

समवकार—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वीररस प्रधान नाटक जिसमें किसी देवता या दैत्य की जीवन-घटना का चित्रण हो। (नाट्य०)।

समवाय—(संज्ञा, पु०, सं०) समुदाय, समूह, वृंद, झुंड, भीड़, मिलित, नित्य, संबंध, गुणी के साथ गुण का या अवयवों के साथ अवयव का संबंध (न्याय०)। "द्रव्यगुण-क्रिया-सामान्य विशेष-समवायाभाव सप्तैव पदार्थाः"—[वै० द०]। [समवायसम्बन्ध (यौ०)]।

समवायी—((वि०) [सं० समवायिन्] जिसमें नित्य या समवाय संबंध हो।

समवेत—(वि०, सं०) जमा या इकट्ठा किया हुआ, एकत्र, इकट्ठा, सञ्चित। "धर्म्म-क्षेत्रे, कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः"—[भ० गी०]।" जब हुई समवेत शनैः शनैः"—हरिऔध।

समष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समाहार, सब का समूह, समस्त, सब का सब। [**व्यष्टि**(विलो०)]

समसर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) समानता, सदृशता, बराबरी। "दमक दसनि ईषद हँसनि, उपमा समसर है न"—नाग०।

समसेर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० समशेर] तलवार, खड्ग।

समस्त—(वि०, सं०) सम्पूर्ण, समग्र, सारा, सब, कुल, पूर्ण, पूरा, एक में मिलाया हुआ, संयुक्त, समास-युक्त, सामासिक।

समस्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कठिन या जटिल प्रश्न, गूढ़ या गहन बात, उलझन, कठिन प्रसंग, किसी पद्य का अतिमांश जिसके आधार पर पूर्ण पद्य रचा जाता है, संघटन, मिश्रण, मिलाने का भाव या क्रिया।—**पूर्त्ति**–(स्त्री०) किसी समस्या के सहारे किसी पद्य को पूर्ण करना।

समाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० समय] वक्त, समय। **मुहा०—बाँधना (बँधना)**—ऐसी रोचकता से गान, पाठ, वाद्य, अथवा अन्य किसी कार्य का सम्पन्न होना, जिसमें लोग आत्मलीन हो जायँ। शोभा, छटा, सुन्दर दृश्य। "चमकने से जुगुनू के के था एका समाँ"।

समा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० समय] समय, वस, अवसर, मौक़ा, समौ (ग्रा०)। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) साल, दृश्य, छटा। "तेरो सो आनन चन्द्र, लसै तुअ आनन में सखि चन्द समा सो" —भावि०। (संज्ञा, पु०, दे०) एक कदन्न, साँवाँ।

समाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० समाना] औक़ात, गुंजाइश, फैलाव, विस्तार, सामर्थ्य शक्ति।

समाउ, समाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० समाना] पैठार, गुंजाइश औक़ात, विस्तार, सामर्थ्य, प्रवेश। "जहाँ न होय समाउ, आपनो तहाँ कबौ जनि जावै"—[स्फु०]।

समाकुल—(वि०, सं०) व्याप्त, घिरा, दुःखी, व्याकुल, विकल, आकुल, भरा हुआ।

समागत—(वि०, सं०) आया हुआ, प्राप्त।

समागम—(संज्ञा, पु०, सं०) आना, आगमन, मिलना, भेंट-मुलाक़ात, मैथुन, रति।

समाचार—(संज्ञा, पु०, सं०) संवाद, हाल, खबर । " समाचार जब लछिमन पाये "—[रामा०] । (संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समान व्यवहार ।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अखबार (फ़ा०) गजट (अं०), वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार हों ।

समाज—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, सभा, समिति, दल, वृंद, समुदाय, संस्था, एक स्थान-निवासी तथा समान विचाराचार वाले लोगों का समूह, किसी विशेष उद्देश्य या कार्य के लिए अनेक व्यक्तियों की बनाई या स्थापित की हुई सभा, आर्य समाज । "कोऊ आज राज-समाज में बल संभु को धनु कर्षि है"—[रामा०] ।

समाजी—(संज्ञा, पु०) [सं० समाजिन्] रंडी का पछुआ, सदस्य, समाज में रहने वाला । (वि०) समाज का, समाज-सम्बन्धी, आर्यसमाजी ।

समादर—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्मान, आदर, सत्कार, खातिर । [**समादृत समादरणीय** (वि०)] ।

समादरणीय—(वि०, सं०) सत्कार के योग्य, मान्य, सम्माननीय ।

समादृता—(वि०, सं०) सत्कृता । जिसे आदर दिया गया हो । प्रशंसिता । "समादृता दाड़िम की द्रुमावली"—**हरिऔध** ।

समादृत—(वि०, सं०) समादर किया हुआ, सम्मानित ।

समाधान—(संज्ञा, पु०, सं०) समाधि, किसी के मन के संदेह के मिटाने वाली बात या काम, विरोध मिटाना, निराकरण, निष्पत्ति, समझाना, धैर्य प्रदान, तसल्ली, नायक या नायिका का अभिमत-सूचक, कथा-बीज का पुनः प्रदर्शन विशेष (नाटक०) । मन को सब ओर से हटा कर ब्रह्म में लगाने का कार्य । "समाधान सब ही कर कीन्हा"—[रामा०] । [**समाधानीय** (वि०)] ।

समाधानना—(क्रि० स०, दे०) [सं० समाधन] निराकरण करना, सांत्वना देना । " इते पर बिनु समधाने क्यों धरै तिय धीर"—[अमर०] ।

समाधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ध्यान, योग की क्रिया-विशेष । समर्थन । प्रतिज्ञा । नींद । योग, योग का अंतिम फल जिसमें योगी के सब दुःख दूर हो जाते तथा उसे अनेक दिव्य शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं (योग०) । काव्य में दो घटनाओं का दैव-योग से एक ही समय में होना सूचित करने वाला एक गुण, एक अर्थालंकार जहाँ किसी आकस्मिक हेतु से कठिन कार्य का सहज ही में सिद्ध होना कहा जाता है । समाधान । मृतक के गाड़ने का स्थान, मृतक को पृथ्वी में गाड़ना, ध्यान, योग, [समाधी (दे०)] ।—**क्षेत्र**-(पु०) वह स्थान जहाँ मृत योगी गाड़े जाते हैं, कब्रिस्तान ।—**धिस्थ**-(वि०) जिस योगी ने समाधि लगाई या ली हो समाधि प्राप्ति । "समाधिस्थ ह्वै के जपै जो पुरारी "—इन्द्रमणि० । **मुहा०**—**देना**-योगियों या संन्यासियों के मृत शरीर को भूमि में गाड़ना (संन्यासी का मर जाना) ।—**लगाना**-योगियों का ब्रह्मध्यान में लीन होकर निश्चल हो जाना ।

समाधित—(वि०, सं०) समाधि-प्राप्त योगी, वह योगी जिसने समाधि ली या लगाई हो, समाधिस्थ ।

समान—(वि०, सं०) सदृश, तुल्य, बराबर, सम, गुण, रूप, रंग, मूल्य, मन एवं महत्वादि में एक से । (वि०, सं०) मानयुक्त, सम्मान के साथ ।

समानता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सादृश्य, तुल्यता, बराबरी, समता ।

समानांतर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जिनके बीच में सदा बराबर दूरी रहे, तुल्य दूरी, मुतवाजी, वे दो रेखायें जो तुल्य दूरी पर हों ।—**चतुर्भुज**-(पु०) चार समानान्तर रेखाओं से घिरा हुआ क्षेत्र, जिस चतुर्भुज क्षेत्र की आमने-सामने की भुजाएँ समानान्तर हों (रेखा०) ।—**रेखा**-(स्त्री०) वह रेखा जो किसी रेखा से सदा समान अन्तर पर रहे (रेखा०) ।

समाना—(क्रि० अ०, दे०) (समावेश) अटना, भीतर आना, प्रविष्ट होना, भरना । " आध सेर के पात्र में, कैसे सेर समाय "—[नीति०] । (क्रि० स०, दे०) भरना, अंदर करना । [**समवाना** (प्रेरणा० रूप)] ।

समानाधिकरण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समास में वे शब्द जो एक ही कारक की विभक्ति से युक्त हों । वह शब्द या वाक्यांश जो किसी वाक्य में किसी शब्द का समानार्थक हो और उसे स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त हुआ हो (व्याक०) ।

समानार्थ, समानार्थक—(संज्ञा, पु०, सं०) वे शब्द जिनके अर्थ एक से हों पर्य्यायवाची शब्द ।

समानिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रगण, जगण और एक गुरु वर्ण का एक वर्णिक छंद, समानी (पिं०) ।

समापक—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्ण या समाप्त करने वाला, पूर्णक। (वि० सं०) मापक (नापन वाले) के साथ।

समापन—(संज्ञा, पु०, सं०) समाप्त या पूरा करना, इति करना, वध, अंत करना, मार डालना। [**समाप्य, समापनीय, समापित** (वि०)]।

समापवर्त—(संज्ञा, पु०, सं०) सब प्रकार बाँटने वाला। [**लघुतम, और महत्तम समापवर्त** (यौ०)] (गणि०)।

समापवर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्यक् विभाजन या अपवर्तन। [**समापवर्तनीय** (वि०)]।

समापिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वह क्रिया जिससे किसी कार्य्य की पूर्णता या समाप्ति समझी जावे (व्याक०)।

समापित—(वि०, दे०) [सं० समाप्त] समाप्त, खतम, पूरा किया हुआ, पूर्ण। "कल अलाप समापित हो गया"—[प्रि० प्र०]

समाप्त—(वि०, सं०) पूर्ण, जो पूरा हो गया हो।

समाप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पूर्ति, पूरा या तमाम होने का भाव, इति, अंत, इतिश्री।

समायोग—(संज्ञा, पु०, सं०) संयोग, मेल, लोगों का एकत्रित होना।

समारंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) भली भाँति आरंभ या शुरू होना, समारोह।

समारब्ध—(वि०, सं०) जो आरंभ हो चुका। "हो गये दग्ध जीवन तप के समारब्ध"—निराला।

समारोह—(संज्ञा, पु०, सं०) बृहदयोजना, धूम-धाम, तड़क-भड़क, बड़ी सजधज का कोई कार्य या उत्सव।

समाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) फूलों का गुच्छा, पुष्प-स्तवक।

समालू, सम्हालू—(संज्ञा, पु०, दे०) सँभालू नाम का पौधा, एक प्रकार का धान।

समलोचक—(संज्ञा, पु०, सं०) समालोचना करने वाला।

समालोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) आलोचना, समालोचन, विचार, विवेचन, देखभाल। [**समालोचनीय, समालोचित** (वि०)]।

समालोचना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आलोचना, भली भाँति देख-भाल का कार्य। जाँच, गुण-दोष-वलोकन। गुण-दोष-विवेचना से पूर्ण लेख या कथन।

समालोच्य—(वि०, सं०) समालोचना करने योग्य, समालोचनीय।

समाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० समाना] समावेश और स्थान।

समावर्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) लौट आने, लौटने, वापस आने का एक विधान। वैदिक काल का एक संस्कार जो ब्रह्मचारी के निश्चित समय तक गुरु-कुल मे विद्याध्ययन कर स्नातक हो आने पर ब्याह के प्रथम होता था। [**समावर्तित, समावर्तक, समावर्तनीय** (वि०)]।

समाविष्ट—(वि०, सं०) व्याप्त, समाया हुआ, व्यापक, जिसका समावेश हुआ हो, प्रविष्ट।

समावेश—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रवेश, एक वस्तु का दूसरी के भीतर होने का भाव, मेल, मनो-निवेश, एक स्थान पर साथ निवास, अंतर्मुक्ति

समास—(संज्ञा, पु०, सं०) संग्रह, संक्षेप। संयोग समर्थन, मेल, सम्मिलन, मिश्रण, दो या अधिक पदों के अपनी विभक्तियों को छोड़ कर नियमा-नुसार मिल जाने और उनके एक पद बन जाने की क्रिया को समास कहते हैं (व्याक०)। समास के प्रायः मुख्य चार भेद है :—अव्यय-भाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि। तत्पुरुष का भेद कर्मधारय, जिसका भेद द्विगु है: फिर इनके भी कई भेद हैं। "कपि सब चरित समास बखानें" —[रामा०]। [**समस्त, समासिक** (वि०)]।

समासीन—(वि०, सं०) आसन पर स्थित। शोभित। "निज मर्यादा पर समासीन"—निराला।

समासोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अर्थालंकार, जहाँ प्रस्तुत से अप्रस्तुत वस्तु का ज्ञान समान विशेषण और समान कार्य्य के द्वारा हो।

समाहरण—(संज्ञा, पु०, सं०) समुदाय, समूह, संग्रह, राशि, ढेर, बहुत से पदार्थों का एक ठौर इकट्ठा करने का कार्य, समाहार। [**समाहरणीय, समाहर्य, समाहृत** (वि०)]।

समाहर्त्ता—(संज्ञा, पु०) [सं० समाहर्तृ] मिलाने वा इकट्ठा करने वाला, संग्रहकर्ता, संचय करने वाला, तहसीलदार, राज कर का एकत्रित करने वाला कर्मचारी (प्राचीन)।

समाहार—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, संग्रह, पुंज, ढेर, राशि, मिलना, संचय जमघट, बहुत से पदार्थों का एक ही स्थान पर एकत्रीकरण।—**द्वन्द्व**–(पु०) जहाँ द्वंद्व समास में बहुत से पदार्थों

का समूह हो, जैसे—संज्ञा परिभाषम् या ऐसे पदों का द्वंद्व समास जिससे पदों के अर्थ के अतिरिक्त कुछ और अर्थ भी प्रगट हो जैसे—सेठ साहूकार (व्याक०)।

समाहित—(वि०, सं०) समाधिस्थ, स्थिरीकृत, सावधान, एक अलंकार (काव्य०)। " भुज समाहित दिग्वसना कृतः "—रघु०।

समाहूत—(वि०, सं०) बुलाया हुआ।

समाह्वान—(संज्ञा, पु०, सं०) आवाहना, बुलाने पुकारने का कार्य।

समिच्छा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) समीक्षा (सं०)।

समिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) समाज, सभा, प्राचीन काल में राजनीति के विषयों पर विचार करने वाली सभा (वैदिक), किसी खास काम के लिये बनाई हुई सभा।

समिध—(संज्ञा, पु०, सं०) अग्नि।

समिधा, समिधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी। " समिधिसेन चतुरंग सुहाई "—[रामा०]।

समीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) समान या बराबर करना, ज्ञात से अज्ञात राशि का मूल्य ज्ञात करने की एक क्रिया (गणि०)। [**समीकरणीय, समीकृत** (वि०)]।

समीकार—(संज्ञा, पु०, दे०) समान कर्ता, तुल्य या बराबर करने वाला।

समीक्षक—(वि०, सं०) समीक्षा करने वाला।

समीक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भली भाँति देखना-भालना, विवेचना, आलोचना, समालोचना, प्रयत्न, मीमांसा शास्त्र, बुद्धि, [समिच्छा (दे०)]। [**समीक्षित, समीक्ष्य, समीच्छा** (वि०)]।

समीचीन—(वि०, सं०) यथार्थ, ठीक, उपयुक्त, उचित, वाजिब, मुनासिब। [**समीचीनता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

समीति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० समिति] सभा, समाज, संस्था, समिति।

समीप—(वि०, सं०) पास, निकट, नजदीक। [**समीपी** (वि०, सं०)]। [**समीपता** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**वर्त्ती**-(वि०) [सं० समीपवर्तिन्] पास का, निकट या समीप का।

समीपी—(संज्ञा, पु०) [सं० समीपिन्] सम्बन्धी, पास या समीप का। " कृष्ण समीपी पांडवा, गले हिवारे जाय "—कबीर।

समीर—(संज्ञा, पु०, सं०) अनिल, वायु, हवा, प्राण वायु। " मन्द मन्द आवत चल्यो, कुंजर कुंज-समीर "—बिहारी। "सींचता सुगंध से समीर सभी गलियाँ"—हितैषी।

समीरण—(संज्ञा, पु०, सं०) अनिल, पवन, वायु, हवा, [समीरन (दे०)]। "मृदु समीरण के सहकार से"—[स्फु०]।

समीहा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चेष्टा, प्रयत्न, अभिलाषा, इच्छा, वांछा, समीक्षा, पूर्ण-इच्छा। " काहू की न जोहा करै ब्रह्म की समीहा इत "—[ऊ० श०]।

समुंद, समुंदर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० समुद्र] समुद्र, सिंधु, सागर। " लंके मुंदर फाँदि समुदर मान मथ्यो गढ़ लंक पती को "—तुल०। [**समुंदरी** (वि०)]—**फूल**-(पु०) समुद्र फूल। एक प्रकार का विधारा (औष०)।—**फेन**-(पु०) समुद्र-फेन (सं०)।

समुचित—(वि०, सं०) उचित, ठीक, समीचीन, उपयुक्त, वाजिब, जैसा चाहिए वैसा, दुरुस्त, यथोचित, यथायोग्य।

समुच्छेद—(संज्ञा, पु०, सं०) उन्मूलन, विनाश। "चाहता बदलना प्रकृति यहाँ की, समुच्छेद"—निराला।

समुच्चय—(संज्ञा, पु०, सं०) समुदाय, समूह, संग्रह, वृंद, राशि, पुंज, ढेरी, ढेर, समाहार, मिलान, मिश्रण, एक अर्थालंकार जिसमें आश्चर्य, विषादादि अनेक भावों के एक साथ उदित होने अथवा एक ही कार्य के लिए अनेक कारणों के होने का कथन हो। [**समुच्चित** (वि०)]।

समुज्ज्वल—(वि०, सं०) शुभ्र, बहुत ही साफ़, अति उज्ज्वल, अतिस्वच्छ, शुक्ल, धवल। [**समुज्वलता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

समुझ, समुझि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० समझ] समझ, बुद्धि, अक्ल, [सामुझि (दे०)]।

समुझना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सकझना] समझना, सोचना, विचारना, ज्ञात करना। "हरित भूमि तृन-संकुलित समुझि परै नहि पंथ "—[रामा०]। [**समुझाना, समुझावाना** (स०, रूप)], [**समुझवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

समुझनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० समझना] समझने की क्रिया या भाव, विचार, समझ।

समुत्कंठिता—(वि०, स्त्री०, सं०) उत्सुकतामयी। "निज श्रवण उठाती थीं समुत्कंठित हो"—हरिऔध।

समुत्थान—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्थान, उठने की क्रिया, उन्नति, उदय, आरंभ, उत्पत्ति, रोग का निदान।

समुत्थापन—(संज्ञा, पु०, सं०) सब प्रकार उठाना, उन्नत करना। [**समुत्थापनीय, समुत्थापक, समुत्थापित** (वि०)]।

समुत्थित—(वि०, सं०) उठा हुआ, उन्नत। "कल निनाद समुत्थित था हुआ"—[प्रि० प्र०]।

समुद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० समुद्र] समुद्र, सागर, सिंधु। (वि०, सं०) आनंद या हर्ष युक्त, मोद-सहित, समोद।—**फल**-(पु०) एक औषधि विशेष, समुद्र-फल।—**फेन**-(पु०) औषधि विशेष। समुद्र का फेना, समुद्र-फेन।—**लहर**-(पु०) [सं० समुद्र लहरी] एक प्रसिद्ध वस्त्र।—**सोख**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० समुद्र-शोष] एक औषधि-विशेष, समुद्रशोष।

समुत्सुक—(सं०, सं०) उत्कंठित। "सकल ग्राम समुत्सुक हो उठा"—हरिऔध। "दर्शन समुत्सुक युवाकुल पतंग ज्यों।"—निराला। "समुद था जिनके सँग सोहता"—हरिऔध।

समुत्तम—(वि०, सं०) श्रेष्ठ, सुन्दर, अच्छा। "अति समुत्तम अंग-समूह था।"—हरिऔध

समुदाई—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० समुदाय] समूह, ढेर, झुंड, समुदाय समुच्चय।

समुदाय—(संज्ञा, पु०, सं०) समूह, झुंड, ढेर। "सद्गुरु मिले तें जाहिं जिमि, संशय-भ्रम समुदाय"—[रामा०]। [**समुदायिक** (वि०)]।

समुदाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० समुदाय] समुदाय, समूह, झुंड, समुदाउ (ग्रा०)।

समुद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) अंबुधि, सागर, सिंधु, उदधि, पयोधि, नदीश, वह जल राशि जो चारों ओर से भूमि के तीन-चौथाई भाग को घेरे है। किसी वस्तु-गुण या विषयादि का बड़ा आगार।—**फेन**-(पु०) समुद-फेन, समुद्र का फेन (औषधि विशेष) सिंधु-झाग।—**यात्रा**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) समुद्र द्वारा दूसरे देशों में जाना, समुद्री यात्रा।—**यान**-(पु०) पोत, जहाज।—**लवण**-(पु०) समुद्र के पानी से बना हुआ नमक, [समुद्रलौन (दे०)]।—**शोष**-(संज्ञा, पु०, सं०) [समुद्रसोख (दे०)] औषधि-विशेष।

समुन्नत—(वि०, सं०) सब प्रकार से ऊंचा उठा हुआ, बहुत ऊँचा, प्राप्ताभ्युदय।

समुन्नति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यथेष्ट उन्नति, यथोचित उत्थान, तरक्की, पूर्ण वृद्धि, उच्चता, बड़ाई, महत्व। [**समुन्नत** (वि०)]।

समुन्नयन—(संज्ञा, पु०, सं०) सब प्रकार ऊपर उठाना।

समुल्लास—(संज्ञा, पु०, सं०) आनंद, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता, ग्रंथ का परिच्छेद, पुस्तक का अध्याय या प्रकरण। [**समुल्लासित** (वि०)]

समुहा—(वि०, दे०) [सं० सम्मुख] सम्मुख या सामने का, सौंह (ग्रा०)। (क्रि० वि०, दे०) आगे, सामने, सौंहे (ग्रा०)।

समुहाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सम्मुख] सामने या सम्मुख आना, लड़ने आना, सौंहाना (ग्रा०)। "अतिभय त्रसित न कोउ समुहाई"—[रामा०]।

समुहैं, सामुहैं—(अव्य०, दे०) [सं० सम्मुख] सामने की ओर, सौंहे (ग्रा०)। "समुहैं छींक ठहनाई"—[स्फु०]।

समूच, समूचा—(वि०, दे०) [सं० सर्व] पूरा, समस्त, सारा, संपूर्ण, कुल, आद्यान्त-सहित। [**समूची** (स्त्री०)]।

समूर—(संज्ञा, पु०) [सं० सबर] साबर नाम का हिरन। (वि०, दे०) [सं० समूल] जड़ या मूल सहित, कारण सहित, पूरा।

समूल—(वि०, सं०) जड़ सहित, सब का सब, सकारण, हेतु-युक्त। (क्रि० वि०) जड़ से, मूल से। "समूल घातं न्यवधीदरींश्च"—भट्टी०।

समूह—(संज्ञा, पु०, सं०) पुंज, समुदाय, वृंद, राशि, ढेर, भीड़, झुंड। [**सामूहिक** (वि०)]।

समृद्ध—(वि०, सं०) संपन्न, धनी, समर्थ। [**समृद्धता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

समृद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अति संपन्नता, धनाढ्यता, अमीरी, [समृद्धी (दे०)]। [**समृद्धि-शाली, समृद्धिवान** (वि०)]

समेट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० समिटना] संकोचना, समिटना। "कर पसार अंधकार यह समेटते चलो"—गिरीश।

समेटना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० समिटना] फैली हुई वस्तुओं को इकट्ठा करना, अपने ऊपर लेना, बटोरना, एकत्र करना, सिमेटना।

समेत—(वि०, सं०) संयुक्त, मिला हुआ। (अव्य०, हिं०) सहित, साथ, युक्त। "मोंहिं समेत बलि जाऊँ"—[रामा०]।

समै, समैया—(संज्ञा, पु०) [सं० समय] समय वक्त, [समइया, समौ (दे०)]। "रवि-सुता कल कूल इसी समै"—हरिऔध।

समो—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० समय] समय, वक्त, काल।

समोखना—(क्रि० स०, दे०) सहेज कर कहना।

समोना—(क्रि० स०, दे०) मिलाना, गर्म और ठंडा पानी मिलाना।

समौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० समय] समय वक्त, समव (ग्रा०)। [**समौसुकाल** (यौ०)]। "समौ जनि चूकौ साई"—गिर०।

समौरिया—(वि०, दे०) [सं० सम्मौलि] जिनका ब्याह एक साथ हुआ हो। (वि०, दे०) [सं० सम+उमरिया हि०] बराबर उम्र वाले, समवयस्क।

सम्मत—(वि०, सं०) राय मिलाने वाला, अनुमत, सहमत।

सम्मति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मत, राय, सलाह, अनुज्ञा, आदेश, अनुमति, अभिप्राय। "गुरु श्रुति-सम्मति धर्म्म-फल, पाइय बिनहिं कलेस"—[रामा०]।

सम्मन—(संज्ञा, पु०, अं०) समन, अदालत की हाजिरी का आज्ञा-पत्र या हुक्मनामा।

सम्मान—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्मान, आदर, सत्कार, मान, गौरव, प्रतिष्ठा, इज्जत खातिर। [**सम्माननीय** (वि०, सं०)]।

सम्मानना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सम्मान] आदर, सत्कार, मान, गौरव, प्रतिष्ठा, इज्जत, खातिर। * (क्रि० स०, दे०) आदर, सत्कार करना। "सब प्रकार दशरथ सम्मानें"—[रामा०]।

सम्मानित—(वि०, सं०) समादृत, प्रतिष्ठित, इज्जतदार। "अखिल जगत में जो सम्मानित उसका कर अपमान"—गिरीश। [**अपमानित** (विलो०)]।

सम्मिलन—(संज्ञा, पु०, सं०) सब प्रकार मिलना संयोग, सम्मेलन, मिलाप, मेल।

सम्मिलित—(वि०, सं०) मिश्रित, मिला हुआ, युक्त।

सम्मिश्रण—(संज्ञा, पु०, सं०) मिलने या मिलाने का कार्य या क्रिया, मिलावट, मेल। "विविध जातियों का सम्मिश्रण"—गिरीश। [**सम्मिश्रित सम्मिश्रणीय** (वि०)]।

सम्मुख—(अव्य०, सं०) सम्मुख, सामने, समक्ष, सामुहें, आगे। "सम्मुख, मरे बीर की शोभा"—[रामा०]। [**सम्मुखी** (स्त्री०)]। [**सम्मुखीभूत, सम्मुखीकृत** (यौ०)]।

सम्मूढ—(वि०, सं०) अज्ञान, मूर्ख, विमूढ। [**सम्मूढता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सम्मेलन—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी हेतु मनुष्यों की एकत्रित हुई सभा, समाज, जमावड़ा, जमघट, मिलाप, संगम, मेल, सम्मिलन।

सम्मोह—(संज्ञा, पु०, सं०) मूर्च्छा, मोह। "क्रोधाद्भवति सम्मोहः"—[भ० गी०]।

सम्मोहन—(संज्ञा, पु०, सं०) मुग्ध या मोहित करने की क्रिया, मोहने वाला, मोह पैदा करने वाला। एक काम-बाण। प्राचीन काल का एक वाण या अस्त्र जिससे शत्रुसेना मोहित हो जाती थी। "सम्मोहन नाम सखेममास्त्रम्"—[रघु०]। [**सम्मोहनीय, सम्मोहक, सम्मोहित** (वि०)]।

सम्यक्—(वि०, सं०) पूरा, सब। (क्रि० वि०, सं०) भली भाँति, सब प्रकार से, अच्छी तरह। [**सम्यक्, प्रकारेण** (यौ०)]। "सम्यक् व्यवस्थिता बुद्धिस्तव राजर्षि सत्तम"—[भा० द०]।

सम्राज्ञी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महारानी, सम्राट की पत्नी, साम्राज्य की अधीश्वरी, महारानी।

सम्राट्—(संज्ञा, पु०) [सं० सम्राज्] राजराजेश्वर, महाराजाधिराज, शहंशाह, बहुत बड़ा राजा। "सम्राट् समाराधन-तत्परोऽभूत्"—[रघु०]।

सय, सै—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शत] सौ, शत। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शय] छाया, चीज, शय (शतरंज)।

सयन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शयन] शयन, सोना, सो जाना, नींद लेना, [सैन (दे०)], आँख का इशारा। "रघुबर सयन कीन्ह तब जाई"—[रामा०]।

सयरा, सैरा—(संज्ञा, पु०, दे०) आल्हा।

सयराना, सैराना—(क्रि० अ०, दे०) बढ़ना, फैलना, समाप्त न होना, सरराना (ग्रा०)।

सयान—(वि०, दे०) [सं० सज्ञान] अनुभवी, चतुर, होशियार, वयोवृद्ध । [**सयानता** (संज्ञा, स्त्री०)] । "कीजै सुख को होय दुख यह कह कौन सयान "—[नीति०] ।

सयानप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सज्ञान] चतुराई, बुद्धिमत्ता, प्रवीणता, होशियारी, सयानता । " भूप सयानप सकल सिरानी "—[रामा०] ।

सयानपन, सयानपना—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) [सं० सज्ञान] चतुराई, होशियारी, प्रवीणता, दक्षता, चालाकी ।

सयाना—(वि०, संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सज्ञान] दक्ष, कुशल, चतुर, होशियार, पटु, प्रवीण । वयोवृद्ध । चालाक, धूर्त । जादू मंत्र या टोना जानने या दूर करने वाला । " यही सयानो काम राम को सुमिरन कीजै "—गिर० । [**सयानी** (स्त्री०)]

सर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सरस्] तड़ाग, तालाब, ताल । " मज्जन करि सर सखिन समेता "—[रामा०] । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शर] तीर, बाण । "तब रघुपति निज सर संधाना" —[रामा०] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शर] चिता । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) सिर, मूँड़, चोटी, सिरा । (वि०, फ़ा०) पराजित, जीता हुआ, विजित, दमन किया हुआ, अभिभूत । " बदख़शाँ सर नहीं होता किसी कातिल के कहने पर "—[स्फु०] । बार या गुना-सूचक एक प्रत्यय, जैसे —दोसर, एकसर, चौसर ।—**अंजाम**-(पु०) सामग्री, सामान, पूरा करना ।—**कश**-(वि०) उद्दंड, उद्धत, घमंडी, सिर उठाने वाला, विरोधी, अशंक । [**सरकशी** (संज्ञा, स्त्री०)] । (पु०) [अं० सरकस] तमाशा ।—**कशी**-(स्त्री०) उद्दंडता, उद्धता, घमंड, विरोध में सिर उठाना । " सरकशी आखिर फरोमाया को देती है शिकस्त "—[स्फु०] ।—**खत**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दिये हुए या चुकाये हुए धन की रसीद या ब्योरा, आज्ञापत्र, परवाना, मकान आदि के किराये पर देने की शर्तों का कागज, [सरखत (दे०)] ।—**गर्म**-(वि०) उमंग से भरा, जोशीला, उत्साही, आवेशपूर्ण । [**सरगर्मी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**घर**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सरगृह] तरकश, भाथा, तूण, तूणीर ।—**जोर**-(वि०, फ़ा०) बलवान, जबरदस्त । [**सरजोरी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**दरद**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [फ़ा० सिर+दर्द] सिर की पीड़ा ।—**दार**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुखिया, अफ़सर, अमीर, शासक, नायक, रईस अगुवा । —**दारी**-(स्त्री०) सरदार का पद या भाव ।—**नाम**-(वि०) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर । —**नामा**-(पु०) [सिरनामा (दे०)] शीर्षक, पत्र के ऊपरी भाग का लेख, पत्रारंभ का संबोधनादि, पत्र का पता ।—**पंच**-(पु०) [फ़ा० सर +पंच हि०] पंचों का मुखिया या सरदार, पंचायत का सभापति ।—**पंजर**-(पु०) बाणों या तीरों का पिंजड़ा । " सर-पंजर अर्जुन रच्यो, जीव कहाँ ते जाय "—[रामा०] ।—**परस्त**-(पु०) संरक्षक, अभिभावक । [**सरपरस्ती** (संज्ञा, स्त्री०)] । —**पेंच,—पेच**-(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पगड़ी, सिर पर लगाने का एक जड़ाऊ गहना ।—**पोश**-(संज्ञा, पु०, फा०) थाल या किसी पात्र के ढकने का कोई बरतन या कपड़ा ।—**फ़रोशी**-(स्त्री०) सिर बेंचना, कत्ल होना ।—**बंध,—बंधी**-(पु०) [सं० सर-बंध] तीरंदाज, धनुर्धर ।

सरकंडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सरकांड] सरपत की जाति का एक पौधा ।

सरक—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० सरकना] सरकने की क्रिया का भाव, शराब की खुमारी । " बारम्बार सरक मदिरा की अपरस कहाँ उधार "—भ्रमर० ।

सरकना—(क्रि० अ०) [सं० सरक, सरण] खिसकना, टलना, काम चलना, निर्वाह होना, फिसलना, नियत काल या स्थान से आगे जाना, हटना, पृथ्वी से लगे हुए धीरे से किसी ओर बढ़ना । [सरकाना, **सरकावना, सरकवाना**—(स० प्रेरणा० रूप)] ।

सरजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० सृजन] सिरजना, सृष्टि करना, रचना बनाना । " इन दुखिया अँखियान को सुख सिरजोई नाहिं "—बिहारी ।

सरकाना—(क्रि० स०) [हि० सरकना] खिसकाना, टालना, काम चलना, निर्वाह करना, [सरकावना (दे०)] । [**सरकवाना**—(प्रेरणा० रूप)] ।

सरकार—(स्त्री०) स्वामी, प्रभु, मालिक, रियासत, राज्यसंस्था, शासनसत्ता । [**सरकारी** (वि०)] " तेरी सरकार में हो जाते है सब उज्र कबूल " —हाली० ।

सरकारी—(वि०) सरकार या स्वामी-सम्बन्धी, मालिक का, राज्य का, राजकीय ।—**कागज**-(पु०) राज्य के दफ्तर का कागज, प्रेमिसरी नोट (अं०) ।

सरग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वर्ग, सर्ग] स्वर्ग, वैकुण्ठ, देवलोक, आकाश, सर्ग, (सं०)। अध्याय, अंक। लो०—"सरग से गिरा तो खजूर में अटका"।

सरगना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मुखिया, सरदार, (अगुआ), [सरगना (दे०)]।

सरगम—(संज्ञा, पु०) [हि० स, रे, ग, मादि] गाने में सात स्वरों के चढ़ाव-उतार का क्रम, (संगी०), स्वर-ग्राम (सं०), स, रे, ग, म, प, ध, नी, सा।

सरगुन—(वि०, दे०) [सं० सगुण] गुण-सहित, "सरगुन-निरगुन नहिं कछु भेदा"—[रामा०]।

सरजना, सिरजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० सृजन] रचना, बनाना, सृष्टि रचना।

सरघा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मधुमक्खी, शहद, की मक्खी।

सरजा—(संज्ञा, पु०, दे०) सिंह, शेर, सरदार, शिवाजी की उपाधि। "शाहतनय सरजा सिवराज"—भूषण।

सरजीव—(वि०, दे०) [सं० सजीव] सजीव, जीता-जागता, जिंदा। "सरजीव काटै निरजीव पूजै अन्तकाल को भारी"—कबीर।

सरजीवन—(वि०, दे०) [सं० सजीवन] जिलाने, वाला हराभरा, उपजाऊ, [सजीवन (दे०)]।

सरणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रास्ता, राह, मार्ग, पंथ, रीति, डर्रा, ढंग, लकीर।

सरद—(वि०, दे०) [फ़ा० सर्द] सर्द, शीतल। (वि०, दे०) ठंडा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरत] "वर्षा विगत सरद ऋतु आयी"—[रामा०]। एक ऋतु जो क्वार-कातिक में होती है। [सारदी (वि०)]। "कहुँ कहुँ वृष्टि सारदी थोरी"—[रामा०]।

सरदई—(वि०, दे०) [फ़ा० सरदः] सरदे के रंग का, हरा, पीला, मिला रंग, हरित-पीत। (वि०, दे०) शरद (सरद) सम्बन्धिनी।

सरदर—(क्रि०, वि०) [फ़ा० सर+दर—भाव] सब एक साथ मिला कर, एक सिरे से, औसत से।

सरदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सरदः] एक प्रकार का बहुत बढ़िया खरबूजा, तरबूजा।

सरदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सर्दी] ठंडक, शीतता, सर्दी, जुकाम, सर्दी।

सरधन—(वि०, दे०) [सं० सधन] सधन, धनी धनवान। "जो निरधन सरधन के जाई"—कबीर।

सरधा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्रद्धा] श्रद्धा. भक्ति।

सरन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरण] शरण, रक्षा, बचाव। "जिमि हरि-सरन न एकौ बाधा"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) सर या शर का बहुवचन।—द्वीप-(पु०) [सं० सिंहल-द्वीप] भारत के दक्षिण में एक द्वीप।

सरना—(क्रि० अ०, दे० [सं० सरण] खिसकना, सरकना, डोलना, हिलना, काम निकलना या चलना, किया जाना, सधना, निबटना, पूरा पड़ना। "जप माला, छापा, तिलक सरै न एकौ काम"—। सड़ना, बिगड़ना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) शरण। "तब ताकेसि रघुवर-पद सरना"—[रामा०]।

सरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरण] रास्ता, राह, मार्ग। (वि०, दे०) शरणा-गत।

सरप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सर्प] सरफ (ग्रा०)।

सरपट—(क्रि० वि०, दे०) [सं० सर्पण] घोड़े का अगले दोनों पैर साथ फेंकते हुए तेज दौड़ना, वेग से चलना, दुलकी चाल, तेज दौड़।

सरपत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सरपट] तृण विशेष, बड़े-बड़े पत्तों की कुश-काँस की जाति की एक घास, पताई (ग्रा०)।

सरपा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सर्प] सर्प, साँप। "सर धावहिं मानहु बहु सरपा"—[रामा०]।

सरपि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सर्पिस] घी। "मधुसर्पीयुतो लिहेत"—[भा० प्र०]।

सरफराना—(क्रि० अ०, दे०) घबराना, व्याकुल होना, तड़फड़ाना, [तरफ़राना (दे०)]।

सरफोका, सरपोका—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पौधा (औषध), सरकंडा।

सरब—(वि०, दे०) [सं० सर्व] समस्त, सर्व, सब, कुल, सारा, सम्पूर्ण, सर्वस्व। "तुम कहँ सरब काल कल्याना"—[रामा०]।

सरबत्तरी—(अव्य०, दे०) [सं० सर्वत्र] सब जगह। "सो मुलना सरबत्तरि गाजा"—कबीर।

सरबदा—(क्रि० वि०, दे०) [सं० सर्वदा] सर्वदा, सदा, हमेशा । (वि०, दे०) सर्वदा, सब देने वाली ।

सरबर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सरोवर] अच्छा तड़ाग, तालाब, श्रेष्ठ बाण । "चलो हंस चलिये कहीं, सरबर गयो सुखाय"—[स्फु०] ।

सरब-बियापी—(वि०, दे०, यौ०) [सं० सर्वव्यापिन्] जो सर्वत्र व्याप्त या फैला हो, सर्वव्यापी । [**सरब-बियापत** (वि०, दे०)] । [सर्व व्याप्त] ।

सरबराह—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) प्रबंधकर्त्ता, कारिन्दा, मजदूरों से काम लेने वाला सरदार, [सरबराहकार (दे०)] ।

सरबराहकार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) किसी काम का प्रबन्धकर्त्ता, कारिंदा, मुनीम । [**सरबराहकारी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

सरबरि, सरबरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सदृश्] समता, तुलना, बराबरी, ढिठाई, गुस्ताखी, उत्तर प्रति उत्तर देना । "हमहिं तुमहिं सरबरि कस नाथा"—[रामा०] ।

सरबस*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सर्वस्व] सम्पूर्ण, सब कुछ, सारी सम्पत्ति, सारा धन । "सरबस खाय भोग करि नाना"—[रामा०] । (यौ०, दे०) [हिं० सर+बस] बाण-वश, बाणाधीन ।

सरभ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सलभ] पतिंगा ।

सरम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सर्म] शर्म, लज्जा । "लागति सरम कहत जसुदा सों अनट करत जो कान्हा"—[स्फु०] ।

सरमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) देवताओं की एक कुतिया (वैदिक), लंका की एक राक्षसी, कुतिया ।

सरमाना—(क्रि० स०, दे०) शरमाना, लज्जित होना । [**सरमावना**—(स० रूप)] ।

सरय—(संज्ञा, पु०, सं०) वानर विशेष ।

सरयू—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [सरजू (दे०)] अवध की एक नदी, घाघरा । "उत्तर दिशि सरयू बह पावनि"—[रामा०] ।

सरराना‡—(क्रि० अ०, दे०) [अ० सरसर] सरसर शब्द करते हुए हवा को फाड़ कर वेग से चलने का शब्द, सवेग, वायु-प्रवाह का रव करना, वेग से चलना या भागना, [सर्राना (दे०)] ।

सरल—(वि०, सं०) सीधा, ऋजु, सीधा-सादा निष्कपट, आसान, सहज । [**सरलता** (संज्ञा, स्त्री०)] (संज्ञा, पु०) चीड़ का वृक्ष, गंधाबिरोजा, सरल का गोंद । [**सरला** (वि०, स्त्री०)] । "सरल सुभाव छुवा छल नाहीं"—[रामा०] । **—निर्य्यास**-(पु०) तारपीन का तेल, गंधाबिरोजा ।

सरलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऋजुता, सीधापन, सिधाई, निष्कपटता, आसानी, सुगमता, भोलापन सादगी ।

सरलीकरण—"सरलीकरण की मांग"—कल्पना सम्पादक ।

सरलीकृत, सरलीभूत—(क्रि० वि०, यौ०, सं०) सरल किया या हुआ ।

सरव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सराव] मद्यपात्र, [सरवा (दे०)], कटोरा, प्याला, दिया, परई (ग्रा०) । "सब के उर-सरवन सनेह भरि सुमन तिली को बास्यों"—भ्रम० ।

सरवन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रमण] अंधक मुनि का परम पितृ-भक्त पुत्र । *† (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रवण] कान । सुनने का काय । एक नक्षत्र । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सालपर्णी] शालपर्ण (औषधि), [सरिवन (दे०)] । (यौ०, दे० शरवन] सर (तड़ाग) और वन (वाटिका) ।

सरवर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सरोवर] तड़ाग, तालाब, ताल । "सरवर सूखे खग उड़े, औरन सरन समाहिं"—रहीम ।

सरवरि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सदृश] समता, तुल्यता, तुलना, बराबरी, सदृशता । "सरवरि को कोउ त्रिभुवन नाहीं"—[रामा०] ।

सरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) शराब का प्याला, कटोरा, परई, छोटा टोंटीदार पात्र ।

सरवाक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सरावक] प्याला, कटोरा, कसोरा, संपुट, सरवा, दिया, परई (ग्रा०) ।

सरवान—(संज्ञा, पु०, दे०) खेमा, डेरा, तम्बू ।

सरस—(वि०, सं०) रसीला, रसयुक्त, गीला, भीगा, सजल, ताजा, हरा, सुन्दर, मनोरम, मीठा मधुर, भावोद्दीपक, भाव-पूर्ण, उत्तम, भावुक, रसिक सहृदय, रस भावोत्तेजक । "सरस होय अथवा अति फीका"—[रामा०] । [**सरसता** (संज्ञा, स्त्री०)] । (संज्ञा, पु०, सं०) छप्पय छंद का ३५ वाँ भेद (पिं०) ।

सरसई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरस्वती, सरयू] सरस्वती देवी, शारदा देवी, सरस्वती

नदी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरस] सरसता, रसिकता, रसीलापन, रसपूर्णता, हरापन व ताजगी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सरसों] फल के छोटे अंकुर या दाने जो प्रथम देख पड़ते हैं। (वि०, ब्र०) सरसही।

सरसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सरस+ना प्रत्य०] हरा होना या पनपना, बढ़ना, सुशोभित होना, रसयुक्त होना, सोहना, भावोमंग से भरना। "अलि वृंदनि मैं अतिशै सरसै"—रघुराज। [**सरसाना**—(स० रूप)]।

सरसब्ज—(वि०, फ़ा०) हराभर तरताजा, लहलहाता हुआ, जहाँ हरियाली हो। "बागे हिन्दुस्तां अजल से खूब ही सरसब्ज है"—[स्फु०]। [**सरसब्जी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सरसर—(संज्ञा, पु०, अनु०) भूमि पर सर्पादि के रेंगने का शब्द, सवेग वायु-प्रवाह से उत्पन्न ध्वनि लुवों की लपट। "बाद सरसर का तूफाँ"—हाली०।

सरसराना—(क्रि० अ०) [अनु० सरसर] सरसर ध्वनि करते हुए वायु का वेग से चलना, सनसनाना, साँप आदि का रेंगना।

सरसराहट—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० सरसर+आहट प्रत्य०] साँप आदि के रेंगने का शब्द, खुजली, [सुरसुराहट (दे०)] वायु-वेग की ध्वनि।

सरसरी—(वि०, दे०) [फ़ा० सरसरी] जल्दी में, उतावली में, मोटे तौर पर, साधारण, या स्थूल रूप से। **मुहा०—में खारिज होना (मुकद्दमा)** —केवल कुछ बातें देखकर खारिज किया जाना। **—निगाह**—(स्त्री०) स्थूल या विहंगम दृष्टि।

सरसाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सरस+आई प्रत्य०] सरसता, रसीलापन, शोभा, अधिकता। "प्रीति सरसाई मोह जाल में फँसाई अब, अलि अलिगाई ऐसे रहे अलि गाई हौ"—मन्ना०।

सरसाना—(क्रि० स०) [हि० सरसना का स० रूप] रस भरना, हरा-भरा करना, अधिक करना, रस-युक्त करना, भावोद्दीप्त करना। * (क्रि० अ०, ब्र०) सजना, शोभा देना। * (क्रि० अ०) सरसना, अधिक होना, रसयुक्त होना, [सरसावना (दे०)]।

सरसाम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सन्निपात रोग।

सरसार—(वि०, दे०) [फ़ा० शरसार] निमग्न, विलीन, डूबा हुआ, नशे में चूर, मदमस्त। "इश्क में रसरसार है दुनिया उसे भाती नहीं"—कुंज वि०।

सरसिज—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल। "निर्मल जल सरसिज बहु रंगा"—[रामा०]। तालाब में उत्पन्न होने वाली वस्तु।

सरसिरुह, सरसीरुह—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल। "सुभग सोह सरसीरुह लोचन"—[रामा०]। "सकुचन सरसीरुह भी लगे"—हरिऔध।

सरसिह—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरसी], छोटा तालाब।

सरसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छोटा तालाब, पुष्करणी, बावली, न, ज, भ (गण), ४ जगण और रगण युक्त एक २४ वर्णों का वर्ण-वृत्त (पिं०)।

सरसुति-सरसुती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरस्वती] सरस्वती, शारदा, गिरा, वाणी, सरस्वती नदी। "सरसुति के भंडार की बड़ी अपूरब बात"—वृं०।

सरसेटना—(क्रि०, स०, अनु०) फटकारना, पीछा कर दौड़ना, हैरान करना, खरी खोटी सुनाना, डाँटना।

सरसों-सरसौं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सर्षप] एक पौधा और उसके राई जैसे छोटे, गोल, तेल-भरे बीज।

सरसौहाँ—(वि०, दे०) [सं० सरस] सरस बनाया हुआ।

सरस्वती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पंजाब की एक पुरानी नदी, गंगा यमुना से प्रयाग मे मिलने वाली एक नदी। वाणी, शारदा, वाणी या विद्या की देवी, गिरा, वाग्देवी, भारती, विद्या। कविता। ब्राह्मी-बूटी। "शृणु तदा जयदेव सरस्वतीम्"—[गी० गो०]। सोमलता। एक छंद। "नत्वा सरस्वती देवीम्"—[ल० कौ०]। **—पूजा**—(स्त्री०) सरस्वती-उत्सव, जो कहीं आश्विन मास में और कहीं बसंतपंचमी को होता है।

सरह, सरभ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शलभ] पतंग, पतिंगा, टिड्डी।

सरहज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्यालजाया] साले की स्त्री, पत्नी के भाई की स्त्री, सलहज। लो०—"निबरे की जोय सब की सरहज"।

सरहटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सर्पाक्षी] नकुल-कंद, सर्पाक्षी नाम का पौधा।

सरहद, सरहद्द—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० सरहद—सीमा] सीमा, मर्य्यादा, किसी स्थान की चौहद्दी निश्चित करने की रेखा, सींव ।

सरहदी, सरहद्दी—(वि०) [फ़ा० सरहद+ई प्रत्य०] सीमा या मर्य्यादा-सम्बन्धी, सरहद का ।

सरहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शर] सरपत या मूँज की जाति का एक पौधा ।

सरा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शर] चिता । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सराय] यात्री-भवन, मुसाफिरखाना । (वि०, दे०) सड़ा ।

सराइँध—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सड़ाइँध, सड़ने की बास दुर्गंधि ।

सराई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शलाका] [सलाई (दे०)], शलाका, सुरमा या अंजन लगाने की सलाई । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शराव] सकोरा, दिया, परई ।

सराग-सारागा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शलाका] छड़, सीख, सीखचा, लोहे की शलाख ।

सराध*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्राद्ध] श्राद्ध, पितरों का पूजन । लो०—"सेंत-मेंत के चाउर, मौसिया की सराध" । पख, पाख (पु०) आश्विन मास में पितरों को श्राद्ध करने के पंद्रह दिन । "जौ लगि काग सराध पख, तौ लगि तो सन मान ।"

सराना*†—(क्रि०, सं०) [हि० सारना] संपादित या पूर्ण कराना, काम पूरा कराना, [सरावना (दे०)] सड़ाना ।

सराप—(पु०, दे०) [सं० शाप] शाप, श्राप, बददुआ, बुरा मानना, धिक्कारना फटकारना, कोसना ।

सरापना*†—(क्रि०, स०, दे०) [सं० शाप+ना हि० प्रत्य०] शाप या श्राप देना, सापना, कोसना ।

सरापा—(क्रि०, वि०, फ़ा०) सिर से पैर तक, पूर्णतया । (संज्ञा, पु०, दे०) सराप, श्राप, शाप ।

सराफ—(संज्ञा, पु०) [अ० सर्राफ] चाँदी और सोने का व्यापारी, रुपये-पैसे का बदला करने वाला दूकानदार ।

सराफत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० शराफत] भलमंसी, शिष्टता ।

सराफा—(संज्ञा पु०, दे०) [अ० सर्राफः] सराफों का बाजार, सराफी का काम, चाँदी सोने या रुपये-पैसे के लेन-देन का काम, [बैंक, कोठी (दे०)] ।

सराफ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० सर्राफ+ई प्रत्य०] सोने-चांदी का व्यापार, सराफ का काम या पेशा । रुपये-पैसे के बदले का काम । महाजनी लिपि, मुड़ा, मुड़िया ।

सराब—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० शराब] शराब, मदिरा, मद्य, वारुणी, सुरा, मधु । (संज्ञा, पु०, अ०) उजाड़ या निर्जन मैदान, रेतीला मैदान ।

सराबोर, शराबोर—(वि०, दे० [सं० स्राव +बोर हि०] तरबतर, बिलकुल भीगा, आप्लावित, आर्द्र, गीला ।

सराय-सरायँ—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) यात्रियों या पथिकों के टिकने का स्थान, ठहरने का मकान या घर, यात्री-भवन, मुसाफिर-खाना, पथिकालय । "दुनिया दुरंगी मकारा सराय" ।

सरारत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शरारत (फ़ा०) दुष्टता, बदमाशी । [**सरारती** (वि०, दे०)] ।

सराव, सरावक*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शराव] मद्य-पात्र, शराब पीने का प्याला, कटोरा, सकोरा, दिया ।

सरावग, सरावगी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रावक] जैनी, जैन-धर्मावलंबी, जैन ।

सरावन, सरावना—(संज्ञा, पु०, दे०) मिट्टी बराबर करने का हेगा, मोटी लकड़ी । (संज्ञा, पु०, दे०) सड़ावन, सड़ाव (हि०) ।

सरावना—(क्रि०, स०, दे०) सड़ाना, सड़ने देना ।

सरास—(संज्ञा, पु०, दे०) भूसी । "कहाँ कौन पै कढ़ी जाय कन, बहुत सरास पछोरी"—सुबे० ।

सरासर*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० शरासन] धनुष, शरासन । "देखि कुठार-सरासन-बाना"—[रामा०] । (यौ०, दे०) सड़ा हुआ सन ।

सरासर—(अव्य०, फ़ा०) एक सिरे से दूसरे सिरे तक, पूर्ण रूप से, पूर्णतया, सारा, प्रत्यक्ष, साक्षात । 'सरासर वसीला है अब वह जफर का'—हाली० ।

सरसरी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शीघ्रता, जल्दी, आसानी, फुरती, स्थूलानुमान, मोटा अंदाज । (क्रि०, वि०) जल्दी या शीघ्रता से, हड़बड़ी में, स्थूल रूप से ।

सराह, सराहन*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्लाघा] तारीफ, प्रशंसा, बड़ाई, स्तुति, सराहनि (व्र०) ।

सराहना—(क्रि०, सं०, दे०) [सं० श्लाघन] प्रशंसा या तारीफ करना, बड़ाई या स्तुति करना । (संज्ञा, स्त्री०) प्रशंसा, बड़ाई स्तवन । " जाकी ज्यों सराहना है ताकी त्यों सराहना है"—[स्फु०] ।

सराहनीय—(वि०) [हि० सराहना] श्लाघ्य, श्लाघनीय, प्रशंसा के योग्य, स्तुत्य या बड़ाई के लायक, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया ।

सरि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरित] सरिता, नदी । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सदृश] समता, समानता, बराबरी । (वि०) समान, सदृश, बराबर । " उतरे जाय देव-सरि तीरा"—[रामा०] । (अव्य०, दे०) तक, पर्यन्त । " आक्र सरि राजा तहँ रहा "—[पद०] । "सुर-सरि रावरी न सुर सरि पावे फरि "—रसाल ।

सरित, सरिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी दरिया ।

सरित्पति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सिंधु, समुद्र, सागर, नदीश ।

सरिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लोहे आदि धातु की छोटी-मोटी छड़ ।

सरियाना†—(क्रि० स०, दे०) क्रम या तरतीब से इकट्ठा करना, सिलसिले से लगाना, लगाना, मारना (बाजारू) ।

सरिवन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शालपर्णी] शालपर्ण नामक औषधि, त्रिपर्णी ।

सरिवर, सरिवरि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) समता, तुल्यता, बराबरी । "हमहिं तुमहिं सरिवरि कस नाथा"—[रामा०] ।

सरिश्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सरिश्तः] कार्यालय का विभाग, कचहरी, अदालत, महकमा, दफ़्तर ।—**दार**-(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सरिश्तः दार] किसी महकमें या विभाग का प्रधान कर्मचारी । मुकदमों की देशी भाषा की मिसलें रखने वाला अदालत का कर्मचारी ।

सरि*—(वि०, दे०) [सं० सदृश] सदृश, तुल्य, समान, बराबर । "पर हित सरिस धर्म नहिं भाई"—[रामा०] ।

सरिहन—(क्रि० वि०, दे०) समक्ष, प्रत्यक्ष, सामने ।

सरीक—(वि०, दे०) [अ० शरीक] साझी ।

सरीकता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० शरीक + ता हि० प्रत्य०] हिस्सा, साझा, साथ, मेल ।

सरीखा—(वि०, दे०) [सं० सदृश] जैसा, तुल्य, बराबर समान, सदृश ।

सरीफ—(वि०, दे०) शरीफ, (फ़ा०) भला मनुष्य ।

सरीफा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्रीफल] एक छोटा पेड़ और उसके गोल मीठे फल, शरीफा ।

सरीर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शरीर] शरीर, देह, अंग । "राम काज छन-भंग सरीरा"—[रामा०] । [**सरीरी** (वि०)] । (वि०, दे०) [शरीर फ़ा०] बदमाश, दुष्ट ।

सरीसृप—(संज्ञा, पु०, सं०) रेंगने वाला जन्तु, साँप, सर्प आदि ।

सरुज—(वि०, सं०) रुग्ण, रोगयुक्त, रोगी । "छण भंगी है सरुज शरीरा"—वासु० ।

सरुष—(वि०, सं०) कुपित, क्रोधयुक्त ।

सरुहना—(क्रि० अ०, दे०) अच्छा होना । "अजों न सरुहैं निठुर तुम, भये और ही भाय"—मति० ।

सरुहना—(क्रि० स०, दे०) रोग-मुक्त करना, अच्छा करना ।

सरूप—(वि०, सं०) साकार, आकार वाला, रूप-युक्त, समान, सदृश, तुल्य, सम, सुन्दर, रूपवान । (संज्ञा, पु०, दे०) स्वरूप । "कहो अरूप, सरूप, किन्तु है उसका एक स्वरूप"—गिरीश ।

सरूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सुरूर] प्रसन्नता, खुशी, हर्ष, हलका नशा ।

सरेख सरेखा*—(वि०, दे०) [सं० श्रेष्ठ] चतुर, सज्ञान, होशियार, चालाक, सयाना, बड़ा और समझदार । [**सरेखी** (संज्ञा, स्त्री०)] । "हँसि हँसि पूछहिं सखी सरेखी"—पद्मा० । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) **सरेखता**—चतुरता ।

सरेखना—(क्रि० अ०, दे०) सहेजना, सौंपना, सिपुर्द करना ।

सरेदस्त—(क्रि० वि०, फ़ा०) इस समय, इस वक्त, अभी, इस दम, इस समय के हेतु ।

सरेबाजार—(क्रि० वि०, फ़ा०) हाट में, बाजार में, सब लोगों या जनता के सम्मुख, सब के सामने, खुले आम ।

सरेस—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सरेश] सरेश, एक लसदार वस्तु, जो भैंस आदि के चमड़े या मछली के पोटे को पका कर बनाई जाती है, सहरेस (प्रान्ती०)।

सरो—(संज्ञा, पु०, दे०) झाऊ जैसा एक सदा हरा रहने वाला सीधा वृक्ष।

सरोकार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वास्ता, लगाव, ताल्लुक़, सम्बन्ध, प्रयोजन, परस्पर व्यवहार। "आप को हमसे सरोकार नहीं क्या मानी"——[स्फु०]।

सरोज—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल। "मुखसरोज मकरन्द छबि"—[रामा०]।

सरोजना—(क्रि० स०, दे०) प्राप्त करना, पाना।

सरोजिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कमलों का समूह, कमलों का तालाब, कमल का फूल, कमलिनी। "संकुचित सरोजिनी पाकर रविकाकर पी बना सनाथ"—[प्रसाद]।

सराट*—(संज्ञा, पु० दे०) [हिं० सिलवट] बिछौने में पड़ी सिलवट या शिकन, झुर्री।

सरोता-सरौती—(संज्ञा, पु०, दे०) सुपारी काटने का हथियार, सरउता (ग्रा०)।

सरोद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बीन जैसा एक बाजा।

सरोरुह—(संज्ञा, पु०, सं०) कमल। "नील सरोरुह श्याम, तरुण अरुण वारिज नयन"—तुलसी०।

सरोवर—(संज्ञा, पु०, सं०) तड़ाग, ताल, झील, तालाब, पुखरा। " थका सरोवर ताकि पियासा" —[रामा०]।

सरोष—(संज्ञा, पु०, सं०) सक्रोध, कोप-युक्त, कुपित। "सुनि सरोष भृगुवंश-मणि, बोले गिरा गँभीर"—[रामा०]।

सरो-सामान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) माल-असबाब, सामग्री, उपकरण, सामान, मालटाल। "सरो-सामान से अब तो यहाँ से जाते है"—[स्फु०]।

सरोही—(संज्ञा स्त्री०, दे०) राजपूताने मे एक राज्य की राजधानी।

सरौं करै—(वा०, दे०) श्रम करना, पटेबाजी का करतब करना। "सरौं करै पायक फहराई" —[रामा०]।

सरौता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सार—लोहा + पत्र] सुपारी काटने का एक लोहे का औजार। [**सरौती** (स्त्री० अल्पा०)]।

सर्करा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० शर्करा] शक्कर, खाँड़, बूरा (प्रान्ती०) चीनी।

सर्कार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सरकार] सरकार [**सर्कारी** (वि०, दे०)]।

सर्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रकृति, सृष्टि, संसार, उद्गम, उत्पत्ति स्थान जीव, संतान, प्राणी, स्वभाव, गति, फेंकना, प्रवाह, गमन, बहाव चलना, अध्याय (विशेषतया काव्य का) प्रकरण। 'सर्ग च प्रति सर्ग च वंश मन्वन्तराणिच"—भा०। "सर्ग स्थिति-संहार-हेतवे"—[रघु०]।—**बंध**-(वि०, यौ०, सं०) वह पुस्तक जो कई अध्यायों में बटी हो। "सर्ग-बंधो महाकाव्यो"—[सा० द०]।

सगुना—(वि०, दे०) [सं० सगुण] गुण सहित, गुण युक्त, गुणी, [सरगुन (दे०)]। "सगुन मेरे पिता लगत हैं, निगुन है महतारी" —कबीर।

सर्ज—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ी जाति का शाल पेड़, धूना, राल, सलाई का पेड़, एक ऊनी कपड़ा, [सरज (दे०)]।

सर्जन—(संज्ञा, पु०, सं०) छोड़ना, त्यागना, निकालना, फेंकना सिरजना, रचना, बनाना, सृष्टि, पैदा करना। "खालिक बारी सरजनहार" —खुसरो। [**सर्जनीय, सर्जित** (वि०)]।

सर्जू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरयू] अवध प्रान्त की एक विख्यात नदी।

सर्द—(वि०, फ़ा०) शीतल, ठंडा, ढीला, काहिल, धीमा, मन्द, नामर्द, नपुंसक।

सर्दी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) ठंडक, शीतलता, ठंड, शीत, जाड़ा जुकाम।—**गर्मी**-(स्त्री०) जाड़ा गरमी।

सर्प—(संज्ञा, पु०, सं०) साँप, नाग, तेजी से चलना, एक म्लेच्छ जाति, [सरप (दे०)]। [**सर्पिणी** (स्त्री०)]।—**काल**-(संज्ञा, पु०, यौ० सं०) गरुड़, मोर नेवला।—**यज्ञ-याग**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक यज्ञ जो राजा जन्मेजय ने साँपों के नाश के हेतु किया था, नागयज्ञ। "सर्पयाग जन्मेजय कीन्हो"—[स्फु०]।—**राज**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) साँपों का राजा, शेषनाग, वासुकि, सर्पेश, सर्पाधीश।—**विद्या**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह विद्या जिसके द्वारा साँप पकड़ कर वश में किये जाते हैं।—**शत्रु**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गरुड़ मोर, नेवला।

सर्पारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गरुड़ मोर, नवला।

सर्पिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) साँपिनी, नागिनी, मादा साँप, भुजंगीलता। "पुत्रादिनी सर्पिणी" —[सि० कौ०]।

सर्पी—(संज्ञा, पु०) [सं० सर्पिस] घी। पेट के बल चलने वाला, साँप। लो०—"सर्पिः पिबेच्चातुरः"।

सर्फ़—(संज्ञा, पु०, अ०) व्यय या खर्च किया हुआ।

सर्फ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सर्फः] व्यय, खर्च, [**सरफा** (दे०)]।

सर्बत, शरबत—(संज्ञा, पु०, दे०) सर्बत, चीनी मिला पानी।

सर्बस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सर्वस्व] समस्त, सम्पूर्ण, सब कुछ, सर्वस्व, सारी वस्तुएँ, [सरबस (दे०)]।

सर्म—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शर्म] शर्म, लज्जा, [सरम, शरम (दे०)]। (क्रि० अ०, दे०) सर्माना। [**सर्मिन्दा, सर्मीला** (वि०, दे०)]।

सर्राफ़—(संज्ञा, पु०, अ०) सराफ, सोने-चाँदी का व्यापारी। [**सर्राफ़ी** (संज्ञा स्त्री०)]।—सर्राफ का नाम या पेशा।

सर्राफा—(संज्ञा, पु०, अ०) सराफों का बाजार, [सराफा (दे०)]।

सर्व—(वि० सं०) सम्पूर्ण, सब, सारा, समस्त, कुल, सर्वस्व, तमाम। (संज्ञा, पु०, सं०)।—**काम**-(पु०) सब इच्छाएँ रखने या पूरी करने वाला। "सर्वकामेश्वरी"—स० श०।—**काल**-(पु०) नित्य, सदा, सर्वदा, सब समयों में, हमेशा, हरदम, **सर्व समय**। "तुम कहँ सर्व काल कल्पना"—[रामा०]।—**ग—गामी**-(वि०) सब जगह जाने वाला, सर्वव्यापी, सब स्थानों मे फैलने वाला।—**गत**-(वि०, सं०) सवग, सब व्यापक, सर्वव्यापी, सब स्थानों में फैलने वाला।—**ग्रास**-(पु०) चंद्रमा या सूर्य्य का पूर्ण ग्रहण, पूरा ग्रहण, खग्रास।—**ग्राह्य**-(वि०, सं०) ग्रहण करने योग्य। "सुबोध और सर्वग्राह्य हो"—कल्पना सम्पादक।—**जनीन**-(वि०) सार्वजनिक, सब लोगों से संबंध रखने वाला, सब लोगों का। "लगण्मया सर्वजनीन मुच्यते"—माघ०।—**ज्ञ**-(वि०) सब कुछ जानने वाला। [**सर्वज्ञता सर्वज्ञा** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]। [(स्त्री० पु०)] ईश्वर, देवता, अर्हत या बुद्ध, शिव, विष्णु, सर्ववेत्ता, सर्वज्ञानी, सर्वज्ञाता।—**ज्ञता**-(स्त्री०) सर्वज्ञ का भाव।—**तंत्र**-(पु०) सर्वशास्त्राविरुद्ध, सर्वशास्त्र-सिद्धान्त। (वि०) जिसे सब शास्त्र मानते हों। [**सर्वतंत्रता** (स्त्री०)]।—**दमन**-(पु०) राजा दुष्यन्त का पुत्र। (वि०) सब का दमन करने वाला।—**दर्शक,—दर्शी**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सर्वदर्शिन्] सब कुछ देखने वाला, परमेश्वर। [**सर्वदर्शिणी, सर्वद्रष्टा**]।—**नाम**-(पु०) [सं० सर्वनामन्] संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला शब्द (व्याक०)।—**नाश**-(पु०) सर्वध्वंस, पूरी पूरी बरबादी, सत्यानाश, पूर्ण विनाश।—**पूजित**-(वि०) सभी लोगों के द्वारा पूजित।—**प्रिय**-(वि०) सब का प्रिय, सब का प्यारा। [**सर्वप्रिया** (स्त्री०)]।—**भक्षक**-(पु०) सब कुछ खाने वाला, धर्म्मच्युत, अधर्मी।—**भक्षी**-(पु०) सब कुछ खाने वाला। अग्नि, आग। [**सर्वभक्षिणी** (स्त्री०)]।—**भूत**-(पु०) चराचर, संसार।—**भोगी**-(वि०) सब का आनन्द लेने वाला, सब खाने वाला, अधर्म्मी। [**सर्वभोगिनी** (स्त्री०)]।—**मंगला**-(स्त्री०) पार्वती, दुर्गा लक्ष्मी, सरस्वती। "आयुध सघन सर्व मंगला समेत सर्व पर्वत उठाय गति कीन्ही है कमल की"—[रामा०]।—**मांगल्य**-(पु०) सब का कल्याण या मंगल। [**सर्वमांगलिक** (वि०, सं०)]।—**व्यापक**-(पु०) सब में उपस्थित या फैला हुआ, सर्वव्यापी, सब पदार्थों में रमणशील।—**व्यापी**-(वि०) सब पदार्थों में व्याप्त, सब में फैला या उपस्थित, सब मे रमणशील। [**सर्वव्यापिनी** (स्त्री०)]।—**शक्तिमान्**-(वि०) [सं० सर्वशक्तिमत्] सब कुछ करने की सामर्थ्य रखने वाला। [**सर्वशक्तिमती** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर। [**सर्वशक्तिमत्ता** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**श्रेष्ठ**-(वि०) सबसे बढ़कर, सर्वोत्तम, सर्वोच्च।—**संगत**-(पु०) साठी धान जो जल्दी तैयार हो जाता है।—**संहार**-(पु०) सब का नाश सब का नाशक काल [**सर्वसंहारक, सर्वसंहारकर्ता** (यौ०)]।—**सम्मत**-(वि०) सभी लोगों द्वारा स्वीकृत, जिसमें सभी की राय हो। सम्मति सभी के द्वारा स्वीकृति।—**साधारण**-(पु०) साधारण या आम लोग, जनता, सब

लोग। (वि०) आम (फ़ा०) जो सब में मिले।—**सामान्य**-(व०) जो सब में समता से पायी जावे, मामूली, साधारण।—**सुलभ**-(वि०) जो सभी को सुलभ हो।—**स्थिति**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विमुख भोग से राजकुँवर त्यागकर सर्वस्थिति —निराला।—**स्व**-(पु०) सम्पूर्ण समस्त, सब कुछ, सारी संपत्ति, सारा धन, सब माल-असबाब, सब सामग्री।—**हारा**-(पु०) श्रमजीवी वर्ग। [प्रोलीटेरियट]

सर्वतः—(अव्य०, सं०) सब प्रकार से, सब ओर या तरफ़ से, चारों ओर।

सर्वतोभद्र—(वि०, सं०) सब ओरों से, कल्याण या मंगल, जिसके सिर, दाढ़ी और मूछ सब के बाल मुड़े हों। (संज्ञा, पु०, सं०) वह चार कोने का मंदिर जिसके चारों ओर द्वार हों, पूजा के कपड़े पर बना एक कोठेदार मांगलिक चिह्न या यंत्र, जिसकी पूजा होती है। एक चित्र काव्य, एक प्रकार की पहेली, जिसमें शब्द के कवडाक्षरों के भी अर्थ हों, विष्णु का रथ।

सर्वतोभाव—(अव्य०, यौ०, सं०) भलीभाँति, अच्छी तरह, सब प्रकार से, सर्वतोभावेन।—**मुखी**-(वि०, स०) जिसका क्षेत्र सब ओर हो, जिसकी प्रतिमा सभी क्षेत्रों में हो पूर्ण। "सर्वतो-मुखी अभिवृद्धि की घुड़दौड़ में' —कल्पना सम्पादक

सर्वत्र—(अव्य०, सं०) सब ठौर या जगह, सब कहीं, सर्वतः। "पंडिताः नहि सर्वत्र चन्दनम् न वने वने"—[स्फु०]।

सर्वथा—(अव्य०, सं०) सब तरह, सब प्रकार से, सब, बिलकुल।

सर्वदा—(अव्य०, सं०) सदैव, सदा, नित्य, हमेशा, संतत, नितांत, निरंतर, सतत।

सर्वमय—(वि०, सं०) सर्व स्वरूप, सर्वत्र व्याप्त।

सर्वरी*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शर्वरी] रात, रात्रि, निशा।

सर्वहर—(संज्ञा, पु०, सं०) सब नाश करने वाला, शिव, महादेव, काल, यमराज।

सर्वाग्र—(वि०, यौ०, सं०) सब से आगे, सर्व-श्रेष्ठ, सर्वोत्तम। [**सर्वाग्रगण्य** (यौ०)]।

सर्वांग—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सारा या संपूर्ण शरीर, सब देह, सब अवयव या भाग, समस्त, सर्वांश। (क्रि० वि०, सं०) पूर्ण रूप से, सर्वथा। [**सर्वांगीण** (वि०, सं०)]।

सर्वांगीण—(वि०, सं०) सभी अंगों से सम्बन्धित, सम्पूर्ण।

सर्वांश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) समस्त भाग या अंश, सर्वांग, सम्पूर्ण। (क्रि० वि०, सं०) पूर्णरूप से, पूर्णतया, सर्वथा।

सर्वात्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सर्वात्मन्] सम्पूर्ण संसार की आत्मा या विश्वात्मा, लोकात्मा, ब्रह्म, अखिलात्मा, परमेश्वर, विष्णु, शिव, ब्रह्मा। "सर्वात्मा सच्चिदानन्दोऽनन्तोन्याय कृच्छविः" —[द० स०]।

सर्वाधिकार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पूर्ण अधि-कार, पूरा इख्तियार, सब कुछ करने का अधिकार।

सर्वाधिकारिणी—(वि०, सं०) सब अधिकार वाली। प्रभुत्वमयी। "यद्यपि हैं सर्वाधिकारिणी धारा की" —हरिऔध।

सर्वाधिकारी—(संज्ञा, पु०, सं०) पूर्ण अधिकार वाला, जिसके हाथ में पूरा अधिकार हो।

सर्वाधिपत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सभी पर रहने-वाला अधिपत्य।

सर्वाधीश, सर्वाधीश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सब का राजा या मालिक, ईश्वर।

सर्वाशी—(वि०) [सं० सर्वाशिन्] सब कुछ खाने वाला, सर्वभक्षी। [**सर्वाशिनी** (स्त्री०)]।

सर्वास्तिवाद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक दार्श-निक सिद्धांत कि सर्व पदार्थ सत या सत्य सत्तावान् हैं, असत्य या असत नहीं, सत्सत्तावाद। [**सर्वा-स्तिवादी** (वि०)]।

सर्वेश, सर्वेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सब का स्वामी या मालिक, परमेश्वर, अखिलेश्वर, राजाधिराज, चक्रवर्ती सम्राट्।

सर्वोच्च—(वि०, यौ०, सं०) सब से ऊँचा।—**न्यायालय**-देश का सर्वश्रेष्ठ न्यायालय। [सुप्रीम कोर्ट]—**सत्ता**-(स्त्री०) देश की सर्वप्रधान सत्ता। [पैरामाउंट पॉवर]

सर्वेसर्वा—(वि०, सं०) प्रधान कार्य करने वाला, प्रधान अधिकारी, जिसको किसी कार्य में हस्तक्षेप करने का सर्वाधिकार हो।

सर्वोत्कृष्ट—(वि०, यौ०, सं०) सर्वश्रेष्ठ सबसे उत्तम।

सर्वोत्तम—(वि०, यौ०, सं०) सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम, सर्वोत्कृष्ट।

सर्वोदय—(संज्ञा, पु०, सं०) जन-साधारण का सामाजिक, नैतिक आर्थिक सभी क्षेत्रों के समुचित विकास के लिए चलाया हुआ एक आंदोलन जो स्वतंत्र भारत की देन है।

सर्वोपकारी—(वि०, सं०) सभी का उपकार या सहायता कार्य करने वाला।

सर्वोपरि—(अव्य०, यौ०, सं०) सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, सब से बड़ा, सबसे उत्तम या श्रेष्ठ। सर्वाग्रगण्य, सर्वोच्च।

सर्वोषधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) औषधियों का एक वर्ग जिसमें दस जड़ी बूटियाँ हैं। (आयु०)। [**सर्वौषधीश** (संज्ञा, पु०, सं०)]। चन्द्रमा, मृगांक रस।

सर्षप—(संज्ञा, पु०, सं०) सरसों। सरसों के बराबर का मान या परिमाण। **लो०**—" यवहविजतु सर्षप धूपनम्।"

सलई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शल्लकी] चीड़ या शल्ल का वृक्ष, चीड़ का गोंद कुंदर (प्रान्ती०) सरई।

सलकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कमल की जड़।

सलगम, सलजम—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शलजम] शलजम।

सलज्ज—(वि०, सं०) लज्जालू, लज्जावान् शर्मीला, हयावाला, लज्जाशील। [**सलज्जता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]। [**सलज्जा** (स्त्री०)]। " सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जा च कुलांगना "—[नीति०]

सलतनत, सल्तनत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० सल्तनत] बादशाहत (फ़ा०) साम्राज्य, राज्य, प्रबंध, इंतिजाम, आराम सुभीता।

सलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शल्य] छिदना, भिदना, छेद में डाला या पहनाया जाना, साला जाना (खाट आदि)। [**सालना**—(स० रूप)] [**सलवाना**—(प्रेरणा० रूप)]।

सलब—(वि०, दे०) [अ० शलब] नष्ट-भ्रष्ट, खराब, बरबाद।

सलभ—(संज्ञा, पु०, दे०) [शलभ सं०] पतिंगा।

सलमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सलम] सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेल-बूटे बनाने के काम में आता है, बादला (प्रान्ती०)। [**सलमासितारा** (यौ०)]।

सलवट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सिलवट] सिलवट, शिकन, सिकुड़न।

सलवार—(संज्ञा, स्त्री०) पंजाबी पायजामा जो ढीला ढाला होता है।

सलसलाना—(क्रि० अ०, दे०) पसीना निकलना, सिलसिलाना, सरसराना, खुजलाना, पानी से खूब भीगना, दीवाल में खूब पानी घुस जाना।

सलहज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्यालजाया हिं० सरहज] सरहज, साले की स्त्री।

सलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शलाका] लोहे आदि धातु की पतली छड़, शलाका, [सराई (दे०)]। **मुहा०**—**फेरना**-अंधा करने के लिए गरम सलाई आँख में लगाना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सालना] सालने की क्रिया या भाव अथवा मजदूरी।

सलाक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शलाका] पतली लोहे आदि की छड़, तीर, [**सलाका** (स्त्री०)]।

सलाकना—(क्रि० अ०) सलाई या इसके ढंग की चीज से निशान बनाना।

सलाख—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० मि० सं० शलाका] लोहे आदि धातु की पतली छड़, [सलाई (दे०)], शलाका।

सलाद, सलादा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० सैलाड] मूली। प्याज आदि के पत्तों का अँग्रेजी अचार। कच्चे खाने के एक कंद के पत्ते।

सलाम—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रणाम, बंदगी, नमस्कार, आदाब।—**अलेकुम**-(पु०) मुसलमानों का आपस में नमस्कार। **मुहा० दूर से**—**करना**-किसी बुरी वस्तु के पास न जाना।—**बोलना**-उपस्थित या हाजिर होना, हाजिरी देना।—**देना**-सलाम करना, आने या बुलाने की सूचना देना।—**लेना**-सलाम का जवाब देना।

सलामत—(वि०, अ०) रक्षित, बचा हुआ, जीवित, स्वस्थ, जिंदा व तन्दुरुस्त, बरकरार, कायम। (क्रि० वि०) कुशलक्षेम से, कुशलक्षेम-पूर्वक, खैरियत से [**सहीसलामत** (यौ०)]।

सलामती—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० सलामत+ई प्रत्य०] स्वस्थता, तन्दुरुस्ती, कुशलक्षेम। [**सही-सलामत से** (यौ०)]।

सलामी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० सलाम+ई प्रत्य०] सलाम या प्रणाम करना, बंदगी करना, सैनिकों

के प्रणाम करने की रीति, तोपों या बंदूकों की बाढ़ जो बड़े अफसर या माननीय पुरुष के आने पर दागी जाती है। मुहा०—उतारना (दागना)–किसी के स्वागतार्थ तोपों या बंदूकों की बाढ़ दागना।

सलार—(संज्ञा, पु०, दे०) एक भाँति की चिड़िया।

सलाह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) परामर्श, सम्मति, राय, मशविरा, सुलह, मेल, सुमति । सल्लाह (ग्रा०) ।—**कार**–(पु०) सम्मति या परामर्श देने वाला, राय देने वाला, अनुमतिदाता।

सलाही—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सलाहकार, साथी, मेली, मित्र, सल्लाही । (ग्रा०) ।

सलि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चिता ।

सलिता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरिता] सरिता नदी ।

सलिल—(संज्ञा, पु०, सं०) वारि, पानी जल नीर । "विमल सलिल उत्तर दिशि बहई"—[रामा०] ।—**पति**–(पु०) वरुण, समुद्र ।

सलिलाधिपति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सलिलेश, सागर, वरुण ।

सलिलेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सागर, वरुण, नीरनिधि ।

सलीका—(संज्ञा, पु०, अ०) योग्यता, लियाकत, तमीज, अच्छा ढंग या तरीका, चाल-चलन, आचार-व्यवहार, चाल-ढाल ।—**मंद**–(वि०) [मंद फ़ा०] अकलमंद, बुद्धिमान, तमीजदार, हुनर मंद, शिष्ट, सभ्य, शऊरदार ।

सलीता—(संज्ञा, पु०, दे०) एक बहुत मोटा सूती कपड़ा ।

सलीस—(वि०, अ०) सरल, सुगम, सहज, मुहावरेदार, प्रचलित, भाषा ।

सलूक—(संज्ञा, पु०, अ०) आचार, व्यवहार, आचरण, बरताव, मेल, मिलाप, भलाई, उपकार, नेकी ।

सलूका—(संज्ञा, पु०, सं०) बानर नचाने वाला मदारी । "एक दिन एक सलूका आवा"—[स्फु०] । (संज्ञा, पु०, दे०) बंडी, कुरती ।

सलूप—(वि०, दे०) [सं० स्वल्प] स्वल्प, बहुत कम या थोड़ा ।

सलूना सलोना—(वि०, दे०) [सं० सलवण] सलोना, नमकीन, स्वादिष्ट, मजेदार, लावण्य मय, सुन्दर, मनोहर । [**सलोना** (विलो०)] ।—**पन**–(संज्ञा, पु०, हि०) सलोना होने का भाव या क्रिया ।

सलूनो—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रक्षा-बंधन का त्यौहार ।

सलैला—(वि०, दे०) वह भूमि जिस पर पाँव फिसले । "बाट सलैली सैलमग"—कबीर ।

सलोतर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शालिहोत्र] अश्व-चिकित्सा-विज्ञान, वह पुस्तक जिसमें घोड़े आदि पशुओं के भेद और उनकी दवा आदि का वर्णन है ।

सलोतरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शालिहोत्री] अश्वचिकित्सक, घोड़ों का वैद्य, पशु-वैद्य ।

सलोना, सलौना, सलोना—(वि०) [सं० सलवण] सुंदर, मनोहर, स्वादिष्ट, नमकीन, लावण्यमय । [**सलोनी-सलौनी** (स्त्री०)] ।

सलोनी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रावणी] ब्राह्मणों का सावन की पूर्णमासी का त्यौहार, श्रावणी, राखीपूनो, रक्षाबंधन, [सलूनो (पु०)] ।

सल्लभ—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का कपड़ा, शलभ, कीट-पतंग । "विप्र के न वल्लभ, ये सल्लभ से एक मंग"—[स्फु०] ।

सल्लभ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) गजी, गाढ़ा, खद्दर, एक मोटा कपड़ा ।

सल्लु—(संज्ञा, पु०, दे०) जूता सीने का चमड़ा ।

सल्लो—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) भोली-भाली स्त्री, भोदली या मूर्ख औरत ।

सव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शव] शव, मृतक, लाश, जल, पानी ।

सवगात—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तुहफा, भेंट, [सौगात (दे०)] ।

सवत, सवति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सपत्नी] एक ही व्यक्ति की दो स्त्रियाँ परस्पर सवति या सपत्नी कही जाती हैं । [सौति] । "जियत न करब सवति सेवकाई"—[रामा०] ।

सवत्सा—(वि०, स्त्री०, स०) बच्चा के सहित, बच्चायुक्त । [**सवत्स** (पु०)] ।

सवन—(संज्ञा, पु०, स०) बच्चा, जनना, प्रसव, यज्ञ, यज्ञ-स्नान, अग्नि, चन्द्रमा ।

सवर—(संज्ञा, पु०, सं०) कोल, भील ।

सवरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भीलिनी, कोलिनी । "सवरी के आश्रम प्रभु आये"—[रामा०] ।

सवर्ण—(वि०, सं०) समान वर्ण (रंग) या जाति का, समान वर्ण (अक्षर) युक्त, सदृश, तुल्य। (संज्ञा, पु०, सं०) स नाम का अक्षर। "सरस सवर्ण परहिं नहिं चीन्हे"—[रामा०]। [**सवर्णता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

सर्वांग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सु+अंग] स्वाँग, दूसरे का सा भेष, नक़ल, पर-रूप-धारण। (संज्ञा, पु०, दला०) दो की संख्या।

सवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सपाद] एक पूरी और उसी की चौथाई मिलकर, चतुर्थांशयुक्त पूर्ण।

सवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सवा+ई प्रत्य०] मूलधन और उसकी चौथाई ब्याज (ऋण-भेद) जयपुर के महाराजाओं की उपाधि। (वि०, दे०) एक और चौथाई, सवा, [सवैया (दे०)]।

सवाक चित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) बोलपट, चित्र-पट, वह चलचित्र जो बोलता हो। [टॉकी]।

सवाचना—(क्रि०, स० दे०) जाँचना, अनुसंधान करना, पता लगाना, ढूँढ़ना, खोजना।

सवाद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वाद] स्वाद, मजा, जायका। [**सवादी** (वि०, दे०)]।

सवादिक*†—(वि०, दे०) [हि० सवाद+इक प्रत्य०] स्वादिष्ट, स्वाद देने वाला।

सवादिल—(वि०, दे०) [हि० सवाद+इल प्रत्य०] स्वादिष्ठ।

सवादी—(वि०, दे०) स्वाद लेने वाला, स्वाद-प्रेमी]।

सवाब—(संज्ञा, पु०, अ०) सुकर्म का फल, पुण्य, नेकी, भलाई।

सवाया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सपाद सवाई, सवा, सवाया (ग्रा०)। **सवैया**—एक और चौथाई का पहाड़ा।

सवार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) वह व्यक्ति जो घोड़े पर चढ़ा हो, अश्वारोही, अश्वारोही सैनिक, जो किसी पर बैठा या चढ़ा हो। (वि०) किसी पर चढ़ा या बैठा हुआ, प्रभावित हुआ, आवेश-युक्त। (क्रि०, वि०, दे०) सवेरे, शीघ्र। "ऊधो जाहु सवार यहाँ ते वेगि गहरु जनि लावो०"—[भ्र० गीत]। **मुहा० भूत—होना**-उन्माद या क्रोधावेश होना, क्रोधादि से प्रभावित होना, व्यर्थ बकना।

सवारी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) चढ़ने की क्रिया, चढ़ने या सवार होने की वस्तु वह व्यक्ति जो सवार हो, जलूस। **मुहा०—(राजा आदि की)—निकलना**-राजा का जलूस निकलना। (**किसी पर)—गाँठना**-(किसी पर) आतंक या प्रभाव डालना, आधीन करना।

सवारे, सवारैं—(क्रि० वि०, दे०) [हि० सवार] शीघ्र, सवेरे, दिन रहते। "तुरत चलौ अबहीं फिरि आवैं गोरस बेंचि सवारें"—सूबे०।

सवाल—(संज्ञा, पु०, अ०) जो पूछा जावे, प्रश्न, विचारणीय बात, समस्या, माँग, निवेदन, प्रार्थना, दरखास्त, गणित का प्रश्न जिसका उत्तर माँगा जाता है। [**जवाब** (विलो०)]।—**जवाब**-(पु०) प्रश्नोत्तर, वाद-विवाद, बहस, हुज्जत, तकरार, झगड़ा।

सविकल्प—(वि०, सं०) संदेहयुक्त, संशयात्मक, विकल्प-सहित, संदिग्ध, जो दोनों पक्षों का निर्णय न कर सकने पर किसी विषय को मान ले। (पु०) किसी आलंबन की सहायता से युक्त साध्य समाधि।

सविकार—(वि०, सं०) परिवर्तनशील। "विष घृणा से देश का वातावरण पहले हुआ सविकार"—बच्चन।

सविता—(संज्ञा, पु०,) [सं० सवितृ] रवि, सूर्य, भानु, भास्कर, मार्तण्ड, बारह की संख्या, मदार, आक, अर्क। "सविता जो जग उत्पन्न करि ऐश्वर्य्य सब को देना है"—कुं० वि०।—**तनय**-(पु०) यम, शनि, कर्ण, बालि।—**तनया**-(स्त्री०) यमुना।—**पुत्र**-(पु०) सूर्य के पुत्र, यम, शनिश्चर, करण, बालि, हिरण्यपाणि।—**सुत**-(पु०) सूर्य के पुत्र, यम, शनिश्चर, करण, बालि।

सवितात्मज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) यम, करण, बालि, शनि। [**सवितात्मजा** (स्त्री०)]।

सविधान-सविधि—(वि०, सं०) विधिपूर्वक, विधान के साथ।

सविनय—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विनय के साथ, विनम्र, शिष्टता के साथ।—**अवज्ञा**-(स्त्री०) राजा की किसी आज्ञा या राज्य के किसी कानून को न मानना और नम्र रहना।

सविशेष—(वि०, सं०) विशेष गुणों से सम्पन्न। असाधारण श्रेष्ठ। "मिटाता उत्कंठा सविशेष"—प्रसाद।

सविस्तार—(वि०, सं०) विस्तार के साथ, ब्योरे-वार ।

सविस्मय—(वि०, सं०) आश्चर्य के साथ ।

सवेग—(वि०, सं०) वेग के साथ, तेजी से ।

सवेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सवेरा] प्रभात, प्रातःकाल, तड़के, सुबह, निश्चित समय के पहले का समय, सबेर, सकार, (ग्रा०) । [**सबेरे** (क्रि०, वि०, दे०)] । [**साँझसबेरे** (यौ०)] ।

सवैया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सवा + ऐया प्रत्य०] तौलने का सवा सेर का बाट या मान । सात भगण और एक गुरु वर्ण का एक छंद, मालिनी (पिं०) । एक, दो, तीन, आदि संख्याओं का सवाया का पहाड़ा ।

सव्य—(वि०, सं०) दक्षिण, दाँया, दाहिना, वाम, बायाँ, विरुद्ध, प्रतिकूल [**अपसव्य** (विलो०)] । [**यज्ञोपवीत** (संज्ञा, पु०, सं०)] । विष्णु ।—**साची**–(पु०) अर्जुन । " निमित्तमात्रो भव सव्य-साची "—[भ० गी०] ।

सशंक—(वि०, सं०) शंकित, सभीत, भयभीत । भयानक, भयंकर । [**सशंकता** (संज्ञा, पु०, स्त्री०, सं०)] । [**अशंक** (विलो०)] ।

सशंकना*—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० सशंक + ना प्रत्य०] शंका करना, डरना, भयभीत होना ।

सशंकित—(वि०, सं०) आशंकित, सभीत ।

सस—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० शशि] [ससि (दे०)] । चंद्रमा । " सस महँ प्रगट श्यामता सोई "—[रामा०] । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शस्य] खेतों में खड़ा अन्न, .खेतीबारी । " सस-संपन्न सोह महि कैसी "—[रामा०] ।

ससक-ससा—(संज्ञा पु०, दे०) [सं० शशक] खरहा (ग्रा०) खरगोश । " सिंह-बधुहिं जिमि ससक-सियारा "—[रामा०] ।—[**ससस्रंग** (यौ०, दे०)] ।—**शृंग**–असम्भव बात । "ससा-स्रंगगहिबी चहौ"—[कु० श०] ।

ससकना—(क्रि० अ०, दे०) जी घबराना, सिस-कना, रोना, झिझकना । " काँपी ससी ससकी धहराय बिसुरि बिसुरि बिथा हिय हूली "—नव० ।

ससधर, ससहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शशि-धर, शशिहर] चंद्रमा ।

ससांक—(संज्ञा, पु०, दे०) शशांक, चंद्रमा ।

ससि*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शशि] चंद्रमा, "प्राची दिसि ससि उगेउ सुहावा"—[रामा०] ।

ससिधर, ससिहर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शशिधर] चन्द्रमा । " उदय न अस्त सूर नहीं ससिहर "—कबीर ।

ससुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वशुर] पति या पत्नी का पिता ।

ससुरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वशुर] ससुर । एक प्रकार की गाली । " कित नैहर पुनि आउब कित ससुरे यह खेल "—पद्म० । **ससुरी**—(स्त्री०, दे०) सास, पति या पत्नी की माता (गाली) ।

ससुरार, ससुरारि, ससुराल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्वशुरालय] ससुर का घर या गाँव । " ससुरार पियार लगो जब ते" [स्फु०] ।

सस्ता—(वि०, दे०) [सं० स्वस्थ] कम या थोड़े मूल्य का, जिसका भाव बहुत गिर गया हो । [**महँगा** (विलो०)] । [**सस्ती** (स्त्री०)] । **मुहा०—ते-छूटना** (**निबटना**)—थोड़े, श्रम, व्यय या कष्ट में कोई कार्य हो जाना । घटिया, मामूली, साधारण ।—**पड़ना**–किसी कार्य या वस्तु का कम श्रम या मूल्य में प्राप्त होना ।

सस्ताना†—(क्रि०, सं०, दे०) सस्ते दामों या अल्प मूल्य पर बेचना ।

सस्ती—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० सस्ता] सस्ता होने का भाव, सस्तापन, वह समय जब सब वस्तुएँ कम मूल्य पर मिलें ।

सस्नेह—(वि०, सं०) सस्नेह सहित, प्रेमपूर्ण ।

सस्मित—(वि०, सं०) थोड़ी हँसी या मुस्कराहट के साथ । (अ०) मुस्कराहट के साथ ।

सस्त्रीक—(वि०, सं०) जिसके साथ स्त्री भी हो, पत्नी-सहित, स्त्री युक्त ।

सस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) धान्य अनाज ।

सह—(अव्य०, सं०) साथ, सहित, समेत, युक्त । (वि०, सं०) उपस्थित, मौजूद, योग्य, समर्थ, सहनशील ।—**कार**–(पु०) आम का पेड़, सह-योग, सहायक, सुगन्धित पदार्थ ।—**कारता**–(स्त्री०) योग्यता, सहायता, मदद ।—**कारिता**–(स्त्री०) सहायता या मदद सहायक, सहायतार्थ कार्य ।—**कारी**–(पु०) [सं० सहकारिन] साथ साथ काम करने वाला, सहयोगी, साथी, सहायक,

मददगार। [**सहकारिणी** (स्त्री०)]।—**गमन**-(पु०) पति के शव के साथ पत्नी का जल जाना, सती होना, [सहगवन, सहगौन (दे०)]।—**गामिनी**-(स्त्री०) वह स्त्री जो अपने स्वामी के शव के साथ जल जावे या सती हो। "सहगामिनी विभूषण जैसे"—[रामा०]। (स्त्री०) पत्नी, सहचरी, साथिन, साथिनी, [**सहगौनी** (दे०)]।—**गामी**-(पु०) [सं० सहगामिन्] साथ चलने वाला, साथी, सहचर। [**सहगामिनी** (स्त्री०)]।—**गौन—गवन**-(पु०) [सं० सहगमन] सहगमन, पति के शव के साथ पत्नी का सती होना, साथ चलना।—**चर**-(पु०) संगी, साथी, साथ चलने वाला, दास, सेवक, नौकर, अनुचर, मित्र, स्नेही, दोस्त। [**सहचरी** (स्त्री०)]। —**चरी**-(स्त्री०) साथ चलने वाली, पत्नी, स्त्री, संगी, सहेली, संगिनी, साथिनी।—**चारि**-(पु०) साथी, संगी, मित्र, साथ, सोहबत, संग।—**चारिणी**-(स्त्री०) साथ, साथ रहने वाली, सखी, सहेली, संगिनी, साथिनी, स्त्री, पत्नी।—**चारिता**-(स्त्री०) साहचर्य, सहचारी होने का भाव, सहचारीपन।—**चारी**-(पु०) [सं० सहचारिन्] साथी, संगी, मित्र, स्नेही, सेवक, अनुचर, स्वामी, पति।—**जात**-(वि०, सं०) यमज, सहोदर, एक साथ उत्पन्न होने वाले।—**जानि**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्त्री, पत्नी।—**देव**-(पु०) पांडु नृप के पुत्र, पांडवों में सब से छोटे भाई, माद्री के गर्भ से अश्विनीकुमारों के औरस पुत्र, जरासंध का पुत्र, जो अभिमन्यु के हाथ से मारा गया। (महा०)। —**धर्म चारिणी**-(स्त्री०) पत्नी, स्त्री, भार्या। —**पाठी**-(पु०) [सं० सहपाठिन्] साथ पढ़ने वाला, सहाध्यायी। [**सहपाठिनी** (स्त्री०)]।—**भोज—भोजन**-(पु०) साथ साथ खाना, एक साथ बैठकर खाना।—**भोजी**-(वि०) [सं० सहभोजिन्] जो एक साथ बैठ कर खाते हों।—**मत**-(वि०) एक मत या विचार का। जिसका मत या विचार दूसरे से मिलता हो। एक धर्म का।—**मरण**-(संज्ञा, पु०, सं०) मृत पति के शव के साथ पत्नी का चिता में जलना, सती होना।—**मृता**-(स्त्री०) सती, सहमरण, करने वाली स्त्री। —**योग**-(पु०) परस्पर मिलकर साथ कार्य करने का भाव, संग, साथ, सहायता, आज-कल सरकार के साथ मिलकर कार्य करना, सरकारी सभाओं में सम्मिलित होना और सरकार के पदाधिकार ग्रहण करना।—**योगी**-(पु०) सहायक, सहकारी, सहयोग करने वाला, मिलकर साथ कार्य करने वाला, समाकालीन, जो किसी के साथ एक ही समय में रहे। आजकल सरकार के साथ मिलकर कार्य करने के लिए उसकी सभाओं में जाने वाला तथा सरकारी पदोपाधियों का ग्रहण करने वाला।—**वास**-(पु०) साथ रहना, संग, साथ, रति, संभोग, मैथुन, प्रसंग।—**वासिनी**-(स्त्री०) साथ रहने वाली साथिनी, संगिनी।—**वासी**-(पु०) [सं० सहवासिन्] साथ रहने वाला, पड़ोसी।

सहज—(संज्ञा, पु०, सं०) सहोदर भाई, सगाभाई, साथ उत्पन्न होने वाले दो भाई, स्वभाव, प्रकृति। [**सहजा** (स्त्री०)]। (वि०) स्वाभाविक, प्राकृतिक, साधारण, सरल, सीधा, सुगम, साथ पैदा होने वाला। "सहज अपावन नारि, पति सेवत सुभ गति लहै।—[रामा०] ।—**पंथ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय का एक निम्न वर्ग, सखी या सहजिया-संप्रदाय।

सहजन, सहिजनि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० रसांजन] वृक्ष-विशेष, सहिजना, मुनगा (प्रान्ती०)।

सहजिया—(संज्ञा, पु०) [सं० सहज पंथ] सहज पंथ का अनुयायी व्यक्ति।

सहजै—(अव्य०, दे०) [सं० सहज] अनायास, सहज ही। "सहजै चले सकल जग स्वामी"—[रामा०]।

सहत—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सहद] शहद, मधु।

सहत, महत—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० श्रावस्ति] गंगा किनारे एक प्राचीन नगरी, जो सहेत महेत कहाती है।

सहतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० साहनाह] पित्तपापड़ा, पर्पटक पर्पट (सं०)।

सहताना-सहिताना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सुस्ताना] विश्राम या आराम करना, सुस्ताना, थकावट मिटाना।

सहतूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शहतूत] शहतूत, एक पेड़ और फल।

सहत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) सह का भाव, एकता, मेल जोल, मेल मिलाप।

सहदानी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सज्ञान] चिह्न, निशानी, पहचान, उपमा, [सहिदानी (दे०)]। "दीन्ह राम तुम कह सहदानी"—[रामा०]।

सहदेई—(ंज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सहदेवी] क्षुप जाति की एक पर्वतीय वनौषधि।

सहन—(संज्ञा, पु०, सं०) क्षमा करना, सह लेना, बरदाश्त करना, तितिक्षा, क्षांति, क्षमा, शांति। [**सहनशक्ति** (यौ०)]। (**संज्ञा**, पु०, अ०) घर के बीच या सामने का खुला भाग, आँगन, मैदान, चौक एक रेशमी वस्त्र।—**शील**-(वि०) सहिष्णु, सहने या बरदाश्त करने वाला, संतोषी, साबिर (फ़ा०) सहनशीलता।

सहनभंडार—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) कोष, धनराशि, खजाना, संपत्ति।

सहना—(क्रि० सं०, दे०) [सं० सहन] फल भोगना, झेलना, बरदाश्त करना, अपने ऊपर लेना, बोझा उठाना, भार सहन करना। [**सहाना**, **सहावना** (सं० रूप)], [**सहवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सहनाई—(संज्ञा, फ़ा०, दे०) [फ़ा० सहनाई] रोशन चौकी, नफीरी बाजा।

सहनायन†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सहनाई] शहनाई बजाने वाली स्त्री।

सहनीय—(वि०, सं०) सहन करने योग्य।

सहम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) शंका, भय, डर, संकोच, मुलाहिजा, लिहाज़।

सहमना—(क्रि० अ०, दे०) [फ़ा० सहम+ना प्रत्य०] डर जाना, डरना, भयभीत होना। मूर्च्छित होना, घबरा जाना, सूख जाना। "गयी सहमि सुनि वचन कठोरा"।

सहमाना—(क्रि० सं०) [हि० सहमना का सं० रूप] डराना, भयभीत करना, धमकाना।

सहर—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रभात, सबेरा, प्रातःकाल, तड़का। (**संज्ञा**, पु०, दे०) [अ० सेहर] टोना, जादू। (**संज्ञा**, पु०, दे०) [फ़ा० शहर] शहर, नगर। [**सहराती** (वि० दे०)]। (क्रि० वि०, दे०) [हि० सहारना] धीरे-धीरे, मंद-गति से रुक-रुककर, शनैः शनैः।

सहरगही—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० सहर+गह फ़ा०] वह भोजन जो व्रत रखने के पूर्व बड़े तड़के किया जाता है, सहरी।

सहराती—(वि०, दे०) [फ़ा० सहराती] शहर का, नागरिक, शहर-संबन्धी।

सहरान*†—(क्रि० सं०, दे०) [हि० सहलाना] सहलाना, धीरे-धीरे हाथ फेरना, [**सहरावना**, सोहराना (दे०)]। *† (क्रि० अ०, दे०) [हि० सिहरना] भय से काँपना। (वि०, दे०) [फ़ा० शहराना] नागरिक।

सहरावनि—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० सहराना] सुरसुरी, गुदगुदी, [सहलाई, सोहराई (दे०)]।

सहरावना—(क्रि० सं०, दे०) सहलाना।

सहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सफरी] सफरी मछली। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) सहरगही, प्रातः भोजन। (**संज्ञा**, **स्त्री०**) [हि० सहारा] नौका, नाव, डोंगी। "पातभरी सहरी सकल सुत बारे बारे केवट की जाति कछू बेद न पढ़ाय हौं"—[**कवि०**]।

सहल—(वि०) [अ० मिश्र सं० सरल] सरल, सहज, आसान। "सहल था मुसहल वाले वह सख्त मुश्किल आ पड़ी"—ग़ालि०।

सहलाना—(क्रि०, सं०, अनु०) किसी के ऊपर धीरे धीरे हाथ फेरना, [सहराना, सोहराना (दे०)]। सुहराना, गुदगुदाना, मलना। (क्रि० अ०, दे०) गुदगुदी होना।

सहवैया—(वि०, दे०) [हि० सहना] सहन करने वाला, सहने वाला, सहनशील, सहिष्णु।

सहस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सहस्र] दश सौ की संख्या। (दे०) जो गिनती में दस सौ हो। "सहसबाहु सम सो रिपु मारा"—[रामा०]। —**किरन**-(**संज्ञा**, पु०, दे०, यौ०) [सं० सहस्र-किरण] सूर्य्य, भानु, भास्कर, रवि, सहस्रांशु, सहस्ररश्मि।—**सो**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सहस्रगु] सूर्य, भानु, भास्कर, रवि।—**दल**,—**पत्र**-(पु०) [सं० सहस्रदल, सहस्रपत्र] कमल। "लसत वदन सतपत्र सौ, सहसपत्र से नैन"—मति०।—**नैन**-(पु०) इन्द्र, देवराज, सहस-लोचन।—**बदन**,—**मुख**-(पु०) शेषनाग। "सहसबदन बरनै पर-दोष"—[रामा०]।

सहसगो—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सहस्रगु] सूर्य्य, भानु, भास्कर, रवि।

सहसा—(अव्य०, सं०) शीघ्र, झटपट, अचानक, अकस्मात् एकाएक। "सहसा करि पाछे पछि-ताहीं"—[रामा०]।

सहसाखि, **सहसखि***—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सहस्राक्ष] इन्द्र, देवराज।

सहसानन*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सहस्रानन] शेषनाग। "उपमा कहि न सकत सहसानन"—[रामा०]।

सहस्रासु—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [**सहस्रांशु** (सं०)] सूर्य्य ।

सहस्र—(संज्ञा, पु०, सं०) दस सौ की संख्या । (वि०, सं०) जो गिनती में दस सौ हो । "सहस्र शीर्षःपुरुषःसहस्रपाद "—[यजुर्वे०] ।—**कर**–(पु०) सूर्य्य ।—**किरण**–(पु०) सूर्य्य, सहस्रांशु । —**चक्षु**–(पु०) [सं० सहस्र-चक्षुस] इन्द्र, देवराज, सहस्राक्ष ।—**दल**,—**पत्र**–(पु०) कमल । "खिल सहस्रदल सरस सुवास"—मैथिली० ।—**धारा**–(स्त्री०) एक छेददार पात्र जिससे देवताओं को स्नान कराया जाता है ।—**नयन**–(पु०) इन्द्र, देवराज, सहस्रलोचन ।—**नाम**–(पु०) किसी देवता के हजार नाम वाला स्तोत्र, जैसे—विष्णु सहस्रनाम ।—**नेत्र**–(पु०) इन्द्र, देवराज, सहस्र-नयन, सहस्र-लोचन ।—**पाद**–(पु०) सूर्य्य, विष्णु । " सहस्रपाद् सभूमिम् "—[यजुर्वे०] । —**बाहु**–(पु०) राजा कृतवीर्य के पुत्र कार्त-वीर्य्यार्जुन, हैहयराज । " सहस्रबाहुस्त्वमहम् द्विबाहुः "—[ह० ना०] ।—**मुख**–(पु०) सहस्रानन, शेषनाग ।—**भुजा**–(स्त्री०) देवी जी का एक रूप, [सहसभुजी (दे०)] ।—**रश्मि**–(पु०) सूर्य्य, भानु । " अशक्नुवन् सोढुमधीर लोचनः सहस्ररश्मेरिव यस्य दर्शनम् "—माघ० । —**बदन**–(पु०) शेषनाग । " वासुदेवकलानंतः सहस्रवदन स्वराट् "—[भा० द०] ।—**शीर्ष**–(पु०) ब्रह्म, विष्णु, परमात्मा । " सहस्रशीर्षः पुरुषः "—[यजु०] ।

सहस्रांशु—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य । " वहीं सहस्रांशु जगमगाया "—हरिऔध

सहस्राक्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्र, विष्णु, परमात्मा । " सहस्राक्षः "—[यजु०] ।

सहस्रानन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शेषनाग ।

सहाइ, सहाई*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साहाय्य] सहायक, मददगार । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) सहायता, मदद, [सहाय (दे०)] । "बोलि पठौतेहुं पिता सहाई "—[रामा०] ।

सहाउ, सहाऊ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सहाय] सहायता, मदद, सहारा, आश्रय, भरोसा, सहायक, मददगार ।

सहाध्यायी—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) साथ पढ़ने वाला, सहपाठी ।

सहानुभूति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) किसी को दुःखी जानकर आप भी दुःखी होना, हमदर्दी, पर विपदादि का अनुभव ।

सहाय—(संज्ञा, पु०, सं०) सहायता, मदद, सहारा, आश्रय, भरोसा, सहायक, मददगार ।

सहायक—(वि०, सं०) सहायता या मदद करने वाला, मददगार, छोटी नदी जो किसी बड़ी नदी में गिरे, अधीन रहकर काम में सहायता करने वाला । [**सहायिका** (स्त्री०)] ।—**आजीविका**–(स्त्री०) जीविका के लिए प्रधान कार्य के अतिरिक्त अन्य सहायक कार्य ।—**नदी**–(स्त्री०) बड़ी नदी से मिलने वाली सहायक छोटी नदी ।—**सम्पादक**–(पु०) प्रधान सम्पादक को सहायता देने वाला उपसम्पादक ।

सहायता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) साहाय्य, मदद करना, किसी के कार्य को आगे बढ़ाने के लिये दिया गया धन, मदद, किसी के किसी कार्य में शारीरिक, आर्थिक आदि योग देना ।

सहायी, सहाई—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सहाय + ई प्रत्य०] मददगार, सहायक, मदद, सहायता ।

सहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सहना] सहन-शीलता, बर्दाश्त, सहना ।

सहारना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० सहन या हिं० सहारा] सहन या बर्दाश्त करना, अपने सिर पर भार लेना, सहना ।

सहारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सहाय] सहायता, मदद, आसरा, आश्रय, भरोसा, इतमीनान ।

सहालग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साहित्य] ब्याह शादी की मुहूर्त्तों के दिन, ब्याह शादी की लग्नों के महीने, [सहारग (दे०)] ।

सहावल—(संज्ञा, पु०, दे०) लोहे इत्यादि का लटकन जिससे दीवाल की बराबरी जाँची जाती है, साहुल नहर-विभाग का एक कर्मचारी ।

सहिजन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सभांजन] लंबी फलियों का एक बड़ा वृक्ष, शोभांजन, मुनगा, एक वृक्ष विशेष, [सहजना (दे०)] । " सहि-जन अति फूलै तऊ "—वृं० ।

सहिजानी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सज्ञान] पहिचान, चिह्न, निशानी, समता, उपमा, सहिदानी ।

सहित—(अव्य०, सं०) साथ, युक्त, समेत, संग। "बंधु सहित नतु मारहुँ तोही"—[रामा०]। (वि०) [सं० सह+हित हितेनसहित] हित के साथ।

सहिथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) बरछी।

सहिदान†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सरान] चिह्न, पहिचान, निशानी। [**सहिदान** (स्त्री०)]।

सहिदाना*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सहिदान का स्त्री] निशानी, समता, उपमा पहिचान, चिन्ह। "दीन्ह राम तुम कहँ सहिदानी"—[रामा०]।

सहिय, सहिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सहायक] सहाय, मददगार, आश्रय, भरोसा, संग साथ, समेत। (सा० भू० स० क्रि० दे०) [हि० सहना] सहना, बर्दाश्त करना। "कहँ लगि सहिय रहिय मन मारे"—[रामा०]।

सहिष्णु—(वि०, सं०) सहने वाला, बर्दाश्त करने वाला, सहनशील।

सहिष्णुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सहनशीलता।

सही—(वि०, दे०) [अ० सहीह] ठीक, शुद्ध, यथार्थ, प्रामाणिक, सत्य। "परसत पद-पावन शोक नसावन प्रगट भई तप-पुंज सही"—[रामा०] (क्रि० स०, दे०) [हि० सहना] सहे।—**सलामत**—(वि०) सकुशल, क्षेम-कुशल, भला-चंगा, आरोग्य, तन्दुरुस्त, दोष या न्यूनता से रहित। **मुहा०**—**भरना**—मान लेना। दस्तखत, हस्ताक्षर।

सहुँ, सौं, सऊँ, सौंह—(अव्य०, दे०) [सं० सम्मुख] सम्मुख, सामने सौं हैं सउँ हैं, तरफ, ओर, सीधे। "जा सहुँ हेरि मार विषबाना"—पद्मा०।

सहूलियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सरलता, सुगमता, आसानी, अदब कायदा, शऊर, योग्यता।

सहृदय—(वि०, सं०) सरस-हृदयी, भावुक, रसिक, वह पुरुष जो दूसरे का भी सुख-दुःख अपना सा समझता हो, दयालु, दयावान, सज्जन, भलामानुस, सदय।

सहृदयता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दयालुता, हृदय की कोमलता।

सहेजना—(क्रि० स०, दे०) [अ० सही] भली भाँति जाँचना, गिनना, या सँभालना, खूब समझाबुझाकर सौंपना या कह-सुन कर सिपुर्द करना।

सहेजवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० सहेजना का प्रेरणा० रूप] सहेजने का कार्य दूसरे से कराना।

सहेट, सहेत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संकेत] प्रेमी और प्रेमिकाओं के मिलने का पूर्व निश्चित या निर्दिष्ट स्थान, संकेत-भवन, संकेतस्थान, सम्मिलनस्थान, सम्मिलन स्थल।

सहेतु, सहेतुक—(वि०, सं०) जिसका कुछ प्रयोजन या मतलब हो, उद्देश्य या कुछ कारण से युक्त।

सहेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सह+एली हि० प्रत्य०] सखी, संगिनी, साथिनी दासी। "गावहिं छबि अवलोकि सहेली"—[रामा०]। [**सखी-सहेली** (यौ०)]।

सहैया*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सहाय] सहायक, मददगार। (वि०, दे०) [सं० सहन] सहिष्णु, सहन या बर्दाश्त करने वाला।

सहोच्छ्वास—(क्रि० वि०, सं०) उच्छ्वासपूर्ण। "चल चित्रकूट गिरि, सहोच्छ्वास"—निराला।

सहोत्साह—(क्रि० वि०, सं०) उत्साहपूर्वक, उमंग के साथ। "हय बढ़े वाट को सहोत्साह"—पंत।

सहोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक काव्यालंकार जहाँ संग, साथ, सहादि शब्दों के प्रयोग के साथ, अनेक कार्य एक ही साथ होते कहे जावें।

सहोदर—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ही माता से उत्पन्न संतान, एक दिल वाला। (वि०) सगा, अपना, खास। "मिलै न जगत सहोदर भ्राता"—[रामा०]। [**सहोदरा** (स्त्री०)]।

सहौटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चौखट, द्वार।

सह्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सह्याद्रि पर्वत विशेष। (वि०, सं०) सहने योग्य, बर्दाश्त करने लायक। [**असह्य** (विलो०)]।

सह्याद्रि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक पर्वत विशेष (बंबई प्रान्त)।

साँई—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वामी] स्वामी, सँइयाँ, साँइयाँ (व्र०) परमेश्वर, मालिक, पति, भर्ता, मुसलमान फकीरों की उपाधि। "साँई के दरबार में, कमी काहु को नाहिं"—कबीर। "साँई सब संसार में मतलब को व्यवहार"—गिर०। "जाको राखै साँइयाँ"—कबीर।

साँझगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) साँगी, गाड़ी का भंडार। (वि०, प्रान्ती०)। ठीक रास्ते पर। [**सऊँगियाना** (क्रि० स०, दे०)]।

साँक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शंका] शंका, भय, डर। श्वास रोग।

साँकड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृंखला] पैरों का एक आभूषण विशेष, बड़ी मोटी और भारी जंजीर।

साँकर*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शृंखला] जंजीर, सँकरी, शृंखला। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संकीर्ण] संकट आपत्ति, कष्ट। (वि०, दे०) संकीर्ण, तंग, सँकरा, कष्टमय, दुःखमय। [**साँकरी** (स्त्री०, दे०)]। "साँकरी गली मैं अली कैयो बेर अटकी"—पद्मा०। "साँकरन की साँकर सम्मुख होत ही"—[रामचं०]। "अस साँकर चलि सकै न चाँची"—[पद०]।

साँकरा†—(वि०, दे०) [सं० संकट] संकट, सँकरा, जंजीर, संकीर्ण, तंग।

सांकेतिक—(वि०, सं०) संकेतवाला, संकेत संबंधी।

सांक्रमिक—(वि०, सं०) संक्रामक।

सांक्षेपिक—(वि०, सं०) संक्षिप्त, संक्षिप्त किया हुआ।

साँखू, साखू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शाल] एक पेड़, शाल वृक्ष।

सांख्य—(संज्ञा, पु०, सं०) महर्षि कपिलकृत एक दर्शन शास्त्र जिसमें सत्व, रज, तममयी प्रकृति को ही मूल (सृष्टिसार) माना है। "साँख्य शास्त्र जिन प्रकट बखाना"—[रामा०]।

सांख्यिक—(संज्ञा, पु०, सं०) मरण, जनन आंकिक। [स्टैटिस्टीशियन]

सांख्यिकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उत्पादन, जनन, मरण आदि से सम्बन्धित आंकड़े प्रस्तुत करने की विद्या। [स्टैटिसटिक्स]

सांग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शक्ति] शक्ति, फेंक कर मारने की बरछी, बरछा, भाला। (वि०, दे०) [सं० सांग] सम्पूर्ण, पूरा, अंगों के सहित।

साँगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शक्ति] शक्ति फेंककर मारने की बरछी, भाला, बरछा। "मारी भ्रम दीन्हि साइ साँगी"—[रामा०]।

साँगूस—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार की मछली।

सांगोपांग—(अव्य०, यौ०) [सं० सांग+उपांग] अंगों और उपांगों के सहित, समस्त, सम्पूर्ण, सब।

साँघर—(संज्ञा, पु०, दे०) स्त्री के प्रथम पति का लड़का।

सांघात—(संज्ञा, पु०, सं०) दल, समूह।

सांघातिक—(वि०, सं०) घातक, हानिकारक।

साँच, साँचा*†—(वि०, पु०, दे०) [सं० सत्य] वास्तविक, सत्य, ठीक, यथार्थ, साँचो (ब्र०) सही। [**साँची** (स्त्री०)]। "साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप"—कबीर।

साँचला†—(वि०, दे०) [हि० साँच+ला प्रत्य०] सत्यवादी, सच्चा। [**साँचली** (स्त्री०)]। **लो०** —"साँची बात साँचला कहै"—[स्फु०]।

साँचा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्थाता] फ़रमा, वह उपकरण जिसमें कोई गीली वस्तु डालकर कोई विशेष आकार-प्रकार की वस्तु बनाई जाये। **मुहा०** —(**चे**) **में ढालना**—विशेष सुन्दर बनाना।—(**चे**) **में ढला होना**—बहुत ही सुन्दर होना, बड़ी आकृति की वस्तु के बनाने से पूर्व नमूने के लिये बनाई गई छोटी आकृति की वस्तु, बेल-बूटे बनाने का ठप्पा, छापा। (वि०, दे०) [सं० सत्यवक्ता] सत्यवादी, सत्यवक्ता, सच बोलने वाला, सत्य, यथार्थ। "साँचे को साँचा मिलै, साँचे माँहि समाय"—कबीर। "कै परिहास की साँचेहु साँचा"—[रामा०]।

साँचारिक—(वि०, सं०) गतिशील।

साँचिया—(संज्ञा, पु०) साँचा बनानेवाला।

साँची—(संज्ञा, पु०) साची नगर। एक तरह का ठंडा पान। (संज्ञा, पु०, दे०) पुस्तकों की छपाई और मँजाई का एक ढंग। (वि०, स्त्री०, दे०) [हि० साँचा का स्त्री०) सत्य, सच। "हरखी सभा बात सुनि साँची"। "लखो नरेस बात सब साँची"—[रामा०]।

साँझ†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संध्या] [संझ (दे०)] संध्या, शाम। [**सकारे, सबेरे** (यौ०)]।

साँझा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साझा] साझा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संध्या] संध्या।

साँझी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) प्रायः सावन के महीने में देव मंदिरों में भूमि पर की गई फूल-पत्तों की सजावट, एक उत्सव।

साँट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [दे० अनु० सट से] पतली कमची या छड़ी, कोड़ा, शरीर पर कोड़े आदि के आघात का दाग।

साँटन, साटन—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का कपड़ा।

साँटना, साटना—(क्रि० स०, दे०) मिलाना, लिपटाना, चिपकाना, गाँठना, सटाना। [**सटाना**—(स० रूप)] [**सटवाना**—(प्रेरणा० रूप)]।

साँटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साँट] कोड़ा, छड़ी, गन्ना, ईख। [**सटिया** (स्त्री०)] (ग्रा०)।

साँटिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साँटी] मुनादी करने वाला, डुग्गी या ढौंडी पीटने वाला।

साँटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० साँटा] लचीली पतली छोटी छड़ी, छोटा कोड़ा। "साँटी लिये उगलावती माँटी"—रस०। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० साँटना] मेल मिलाप, प्रतिकार, बदला, प्रतिहिंसा। "साँटी की रही कै काहू साँची स्वच्छ माँटी लाय" रसिक०।

साँठ—(संज्ञा, पु०, दे०) साँकड़ा, सरकंडा, गन्ना, ईख।—**गाँठ**-(यौ०) मेल-मिलाप, अनुचित गुप्त संबंध।

साँठना—(क्रि० स०, दे०) [हि० साँठ] साँटना, पकड़े रहना, गुप्त और अनुचित सम्बन्ध करना।

साँठि, साँठी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० गाँठ] धन, लक्ष्मी, पूँजी-पमार। "बाम्हन तहवाँ लेय का, गाँठि साँठि थोर"—पद्म०।

साँड़—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० षंड] मृतक की स्मृति के रूप में दाग कर छोड़ा हुआ बैल, अच्छे बच्चे होने के लिये केवल जोड़ा खिलाने को पाला हुआ बैल या घोड़ा। "छाँड़ि दीन्ह तेहि साँड़ बनाई"—तुलसी।—**की तरह घूमना**-बे फिकर होकर स्वतंत्रपूर्वक घूमना।

साँड़नी, साँड़िनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० साँड़ियाँ] शीघ्रगामिनी ऊँटिनी।

साँड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साँड़] ऊपर साँड़ा, एक जंगली जन्तु जिसकी चर्बी दवा के काम आती है।

साँड़िया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साँड़] शीघ्रगामी ऊँट।

साँढ़—(संज्ञा, पु०, दे०) साँड, अँडुआ बैल। अंडू (ग्रा०)।

साँत—(वि०, सं०) अन्त-सहित, जिसका अन्त हो। (वि०, दे०) [सं० शांत] शांत, सीधा, क्रोध-रहित, [सांत (दे०)]। "सांत सकल संसार है, केवल ब्रह्म अनंत"—कुं० वि०।

सांतापिक—(वि०, स०) संताप पहुँचाने वाला तकलीफ देनेवाला।

सांति—(अव्य०, दे०) [सं० शांति] शांति। (अव्य०, दे०) बदला, खातिर, हेतु, लिये, संत (ग्रा०)।

सांत्वना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धैर्य, आश्वासन, धीरज, ढारस, ढाढस, किसी दुःखी व्यक्ति को उसका दुख कम करने को शांति या धीरज देना।

सांदीपनि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक मुनि जिनके यहाँ श्रीकृष्ण और बलदेवजी ने धनुर्वेदादि सीखा था, और विद्या पढ़ी थी।

सांद्र—(वि०, सं०) घना, गफ़, मोटा, एक में सटा हुआ, हृष्ट पुष्ट।

सांध—(संज्ञा, पु०) [सं० स+अंध] अंध के सहित। (सं० संधान) लक्ष्य, निशाना।

साँधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संधान] निशाना लगाना या साधना, लक्ष्य करना, संधान करना। "करतल चाप रुचिर सर साँधा"—[रामा०]। (क्रि० स०, दे०) [सं० संधि] मिलाना, मिश्रण। (क्रि० स० दे०) [सं० साधन] साधना, पूर्ण करना। "तेहि महँ विप्र माँस खल साँधा"—[रामा०]।

सांधिविग्रहिक—(संज्ञा, पु०, सं०) संधि और युद्ध को अन्तिम रूप देनेवाला मंत्री।

सांध्य—(वि०, सं०) संध्या का, संध्या सम्बन्धी।

साँप—(संज्ञा, पु०) [सं० सर्प, प्रा० सप्प] एक रेंगने वाला विषैला लंबा कीड़ा, सर्प, नाग, भुजंग। [**साँपिन, साँपिनी** (स्त्री०)]। **मुहा०**—**कलेजेपर—लोटना**-(ईर्ष्यादि से) बहुत ही दुःखी होना।—**सूँघ जाना**-निर्जीव होना, मर जाना।—**छछूँदर की दशा**-बड़े दुविधा या असमंजस की अवस्था। "भई गति साँप छछूँदरि केरी"—[रामा०]। **आस्तीन का—होना**-अपना आश्रित व्यक्ति होकर अपना ही घातक होना, विश्वास घाती होना, गुप्त शत्रु होना। **आस्तीन में—पालना**-अपने ही पास अपने घातक शत्रु को आश्रय देना।

सांपत्तिक—(वि०, सं०) संपत्ति या धन से सम्बन्ध रखनेवाला, आर्थिक, माली (फ़ा०)।

साँपत्य—(वि०, सं०) संपत्ति-सम्बन्धी।

साँपद्य—(वि०, सं०) धन-सम्बन्धी।

साँपधरन*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सर्प धारण] महादेव, शिव।

साँपिन, साँपिनी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [सं० सर्पिणी] साँप की स्त्री, मादा साँप, सर्पिणी।

साँप्रत, साम्प्रतम्—(अव्य, सं०) इसी समय, सद्यः, तत्काल, अभी, अधुना, इदानीम्।

सांप्रतिक—(वि०, सं०) आधुनिक वर्त्तमान समय से सम्बन्धित। [करेंट]

सांप्रदायिक—(वि०, सं०) किसी संप्रदाय का, किसी संप्रदाय-संबंधी, संप्रदायविषयक।

सांप्रदायिकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सांप्रदायिक होने का भाव अपने संप्रदाय के प्रति हित, भावना और दूसरे संप्रदाय के लिए अहित भावना रखना।

सांब—(संज्ञा, पु०, सं०) जाँबवती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्णजी के पुत्र, ये अति सुन्दर थे किन्तु दुर्वासा और श्रीकृष्ण के शाप से कोढ़ी हो गये थे।

साँभर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संभल, साँभल] राजपूताने की एक झील, जिसके पानी से नमक बनता है। साँभर झील के पानी से बना नमक। एक प्रकार की मृग जाति। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सवल] पाथेय, मार्ग-भोजन, संबल, रास्ते का खाना।

साँमुहे, सामुहैं†—(अव्य, दे०) [सं० सम्मुख] समक्ष, सम्मुख, सामने। (संज्ञा, पु०, दे०) (श्यामक) साँवाँ नामक अनाज।

साँवत†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सामंत] सामंत, वीर। "कोउ कोउ साँवत हैं घोड़न पै कोउ कोउ हाथिन पर असवार"—आल्हा०।

सांवत्सर—(वि०, सं०) वार्षिक। ज्योतिषी गायक।

साँवर, साँवरो‡—(वि०, दे०) [सं० श्यामला] साँवला। "साँवर कुवर सखी सुठि लोना"—[रामा०]। [**साँवरताई** (संज्ञा, स्त्री०)]।

साँवरा—(वि०, दे०) [सं० श्यामला] साँवला, श्यामल। "मधपंचक लै गयो साँवरो तातें जिय घबरात"—सूर०। [**साँवरी** (स्त्री०)]।

साँवला, सांवला—(वि०, दे०) [सं० श्यामला] श्यामला, श्यामवर्ण का। [**सांवली** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) श्री कृष्ण जी प्रेमी या पति आदि का सूचक शब्द (गीतों में)।—**पन**—(पु०) श्यामलता, श्यामता, साँवलताई।

साँवलताई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्यामलता] श्यामलता, श्याम होने का भाव, साँवरताई "ससि महँ देखिये साँवलताई"—[रामा०]।

साँवलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) श्यामल, श्री कृष्ण।

साँवाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्यामक] एक अन्न विशेष जो कंगुनी या चीना की जाति का है। "साँवाँ-जवा जुरतो भरि पेट"—नरो०।

सावांदिक—(वि०, सं०) समाचार संबन्धी, संवाद-सम्बन्धी। [न्यूजमैन] (पु०) पत्रकार, संवाददाता सड़क पर घूम घूमकर अखबार बेचने वाला। [हाकर]

साँस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्वास] श्वास, दम, जीवधारी के फेफड़े तक नाक या मुँह से वायु के भीतर ले जाने और फिर बाहर निकालने की क्रिया। "साँस साँस पर राम कहु, वृथा साँस जनि खोय"—तुला०। दम फूलने का रोग, दमा या श्वास रोग। **मुहा०—(दम) उखड़ना**—दम या साँस टूटना, कष्ट से शीघ्र गति से साँस चलना (मृत्यु के समय)।—**ऊपर-नीचे होना**—साँस रुकना, भली भाँति ठीक ठीक साँस का भीतर-बाहर या ऊपर नीचे न चलना।—**चढ़ना**—अधिक परिश्रम के कारण वेग और शीघ्रता से साँस का चलना।—**चढ़ाना**—प्राणायाम करना, साँस खींच कर भीतर रोक रखना।—**टूटना**—साँस या दम उखड़ना।—**तक न लेना**—नितांत मौन वा चुपचाप रहना, कुछ न बोलना।—**(सों) का तार**—स्वास-क्रम।—(**दम**) **फूलना**—वेग से बार-बार साँस चलना, साँस चढ़ना।—**बढ़ना**—साँस फूलना, शीघ्रता और वेग से साँस आना।—**रहते**—जीते जागते। **उलटी—लेना**—गहरी साँस लेना, मरते समय रोगी का कष्ट से रुक-रुक कर अंतिम साँस लेना।—**पूरी करना**—रोगी आदि का देर तक मरणासन्न रहना। **गहरी, ठंढी या लम्बी—लेना**—अत्यन्त शोकादि की दशा में साँस को देर तक भीतर खींचना और देर तक भीतर रोक कर बाहर छोड़ना। फुरसत, अवकाश।—**न होना (मिलना)**—अवकाश या फुरसत न होन (मिलना)—(**दम**) **लेना**—विश्राम करना, दम लेना, सुस्ताना, ठहराना, दम, गुंजाइश दरार या संधि जिससे वायु आ जा सके, किसी रिक्त

वस्तु के भीतर भरी वायु।—**भरना**-किसी वस्तु के भीतर वायु समाना या भरना।

साँसत, साँसति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० साँस+त, ति प्रत्य०] साँस रुकने या दम घुटने का सा कष्ट, अति पीड़ा या कष्ट, झंझट, जंजाल, बखेड़ा, झगड़ा, दिक़्क़त, कठिनाई, डाँट-फटकार। "साँसति सहत हौं"—[विन०]।

साँसत-घर—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० अपराधियों को विशेष कष्टप्रद दंड देने की अँधेरी और तंग कोठरी (जेल), कालकोठरी, कठिन कारावास।

साँसना—(क्रि० स०, दे०) [सं० शासन] शासन करना, दंड देना, डाँटना, डपटना, ताड़ना, कष्ट या दुःख देना, फटकारना।

साँसा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वास] [स्वासा (दे०)] श्वास, साँस, दम, जीवन, प्राण, जिंदगी। **लो०**—"जब तक सांसा तब तक आसा।" (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संशय] संशय, शक, संदेह, शंका, भय, डर, दहशत।

सांसारिक—(वि०, सं०) भौतिक, लौकिक, ऐहिक, संसार का, संसार-सम्बन्धी। [**सांसारिकता** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**पुरुष**-(पु०) दुनियादार व्यक्ति। [मैन आव दी वर्ल्ड]

सांस्कारिक—(वि०, सं०) संस्कार-सम्बन्धी, मृत्यु पश्चात् अंत्येष्टि या अन्य संस्कारों के लिए जरूरी।

सांस्कृतिक—(वि०, सं०) सभ्यता या संस्कृति सम्बन्धी।

सांस्पर्शिक—(वि०, सं०) छूत का रोग।

सांहारिक—(वि०) [सं० संहार+इक प्रत्य०] संहार-संबंधी।

सा—(अव्य०, दे०) [सं० सदृश] सदृश, समान, तुल्य, सम बराबर, मान सूचक एक शब्द। जैसे—जरासा। "तुझसा रूखा कोई दुनिया में न देखा न सुना"—हाली०।

साइक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सायक] शायक, बाण, तीर, [सायक (दे०)]।

साइत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० साअत] एक घंटे या ढाई घड़ी का समय, मुहूर्त्त, शुभलग्न, पल, लहमा (फ़ा०)। (अव्य०, दे०) [फ़ा० शायद] कदाचित्, सायत। **मुहा०—आय**-कदाचित्, शायद ऐसा ही मौक़ा हो।

साइयाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वामी] [साँई (दे०)], स्वामी, मालिक, पति, नाथ, साइयाँ (ग्रा०), परमेश्वर। "जाको राखै साइयाँ मारि न सकिहै कोय"—कबीर।

साइर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सागर] सागर, समुद्र, ऊपरी भाग, शायर, कवि, [सायर (दे०)]। (संज्ञा, पु०, अ०) माफ़ी जमीन, स्फुट, फुटकर। "मन साइर मनसा लगी, बूड़े बहे अनेक"—कबीर।

साईं—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वामी] स्वामी मालिक, पति, परमेश्वर। "साईं तुम न बिसारियो"—कबीर। "लकपति बाज्यौ साँई"—गिर०।

साई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० साइत] पेशे वालों को किसी अवस्था पर नियुक्ति पक्की करने के लिए जो वस्तु या अल्प धन प्रथम दिया जाता है, बयाना, पेशगी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सड़ना] घाव में मक्खी की बीट पड़ने से जो सफेदी छा जाती है और फिर कीड़े पड़ जाते हैं।

साईस—(संज्ञा, पु० दे०) [हिं० रईस का अनु०] वह नौकर जो घोड़े के मलने-दलने, शरीर के खुजलाने, दाना-घास आदि देने और खबरदारी के हेतु रखा जाता है, [सहीस, सईस (दे०)]।

साईसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० साईस+ई प्रत्य०] सईस का काम, पद तथा भाव या पेशा, सईसी, सहीसी (ग्रा०)।

साउ-साहु—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० साह] महाजन, शाह, सेठ, साहूकार।—लो०। "साउ करैं भाव तौ चबाउ करै चाकर"।

साउज—(संज्ञा, पु०, दे०) वनजीव, आखेट के लिए वन-जंतु। "कीन्हेसि साउज आरनि रहैं"—पद्मा०। (संज्ञा, पु०, दे०) सायुज्य मोक्ष (सं०)।

साकंभरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शाकंभरी] साँभर झील और उसके चारों ओर का प्रांत। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक देवी।

साक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शाक] शाक, भाजी तरकारी, सब्जी, [साग (दे०)]। [**साक-भाजी** (यौ०)]।

साकचेरि†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मेंहदी।

साकत, साक्त—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साक्त] शाक्त मतावलंबी, जिसने गुरु दीक्षा न ली हो, निगुरा, दुष्ट, बदमाश, पाजी।

साकम्—(अव्य, सं०) सह, साथ, सहित।

साकर, साकल—(वि०, दे०) [शृङ्खला] साँकर, जंजीर।

साकल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) देखिए शाकल्य समग्रता, सम्पूर्णता।

साकांक्ष—(वि०, सं०) इच्छुक।

साका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साका] प्रसिद्धि, ख्याति, शाका, संवत, इच्छा, अभिलाषा, शौक। "आजु आय पूरा वह साका"—[पद०]। यश-स्मारक, कीर्ति, यश, रोबदाब, धाक, अवसर, मौका, समय। "तस फल उन्हें देउँ करि साका" —[रामा०]। ऐसा कार्य जिससे कर्त्ता की कीर्ति बढ़े। **मुहा०—चलाना**-संवत चलाना, धाक जमाना।—**बाँधना**-संवत या साका चलाना, रोब जमाना।

साकार—(वि० सं०) साक्षात, आकार या स्वरूप-वान्, मूर्त्तिमान्, स्थूल रूप, दृश्य रूप। (संज्ञा, पु०, सं०) परमेश्वर का आकार सहित स्वरूप। "निराकार साकार रूप तेरे है गाये"—मन्ना०। [**साकारता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

साकारोपासना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परमेश्वर की मूर्ति स्थापित कर उसकी अर्चनोपासना करना।

साकिन—(वि०, अ०) निवासी, रहने वाला, बाशिंदा।

साकी—(संज्ञा, पु०, अ०) शराब पिलाने वाला, माशूक। "पिला साकी मुहब्बत की शराब आहिस्ता आहिस्ता"।

साकूत—(वि०, स०) आकूत-युक्त, सानुमान।

साकेत, साकेतन—(संज्ञा, पु०, सं०) अयोध्या पुरी। "साकेत निवासिनां"—[रघु०]।

साक्षर—(वि०, सं०) शिक्षित, पढ़ा-लिखा, पंडित, विद्वान्। [**साक्षरता** (संज्ञा, स्त्री०)]। "साक्षराः विपरीतश्चेत् राक्षसारंवकेवलम्"।

साक्षरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शिक्षित होने का भाव।

साक्षात्—(अव्य० सं०) प्रत्यक्ष सम्मुख सामने, आँखों के आगे। (वि०) मूर्तिमान, साकार। (संज्ञा, पु०, सं०) मुलाकात, भेंट, देखा-देखी।—**कार**—(पु०) दर्शन, मुलाकात, भेंट, इन्द्रियों से होने वाला पदार्थ ज्ञान।

साक्षी—(संज्ञा, पु०) [सं० साक्षिन्] दर्शक, देखने वाला, जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो, चश्मदीद गवाह, गवाही देने वाला। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) गवाही, शहादत, कोई बात कह कर उसे प्रमाणित करना। [**साक्षिणी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपनी आँखों से देखने वाला (पु०) प्रत्यक्षदर्शी, गवाह।—**परीक्षण—परीक्षा**-(स्त्री०) जिरह, गवाह के प्रश्न करना। [क्रास इग्जामिनेशन]।

साक्षीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी बात पर प्रत्यक्षदर्शी के रूप में हस्ताक्षर करना। प्रामाणि-कता के लिए हस्ताक्षर करना कि वह सच्ची प्रति लिपि है। [एटेस्टेशन]।

साक्षीकृत—(वि०, सं०) साक्षी रूप मे जिस पर हस्ताक्षर किया जाय। [अटेस्टेड]।

साक्षेप—(वि०, सं०) जिसमें व्यंग हो।

साक्ष्य—(संज्ञा, पु०, सं०) गवाही, शहादत (फ़ा०)।—**विधि**-(स्त्री०) साक्ष्य से सम्बन्धित कानून। [लॉ आफ एविडेंस]।

साख—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० साक्षी] साक्षी, गवाह, गवाही शहादत, प्रमाण। (सं०, पु०, दे०) [सं० शाका] धाक, रोबदाब, मर्यादा, देने लेने में प्रमाणिकता या विश्वास।—**पत्र**-(पु०) साख पर प्राप्त ऋण-पत्र। [सेक्युरिटीज] (संज्ञा, स्त्री०, दे०) शाखा (सं०) डाली, शाख (फ़ा०)। **मुहा० —होना**-(लेन देन में) एतबार या विश्वास होना। **—उठना (न रहना)**-विश्वास व एतबार न रहना। (लेनदेन में)।

साखना*—(क्रि० सं०, दे०) [सं० साक्षि] गवाही या साक्षी देना, शहादत देना।

साखर*†—(वि०, दे०) [सं० साक्षर] पढ़ा-लिखा, विद्वान्, पंडित। "सोन होय लोहा यथा, साखर मूरख होय"—[स्फु०]।

साखा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शाखा]। डाली, शाख, [साख (दे०)]।

साखी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साक्षिन्] साक्षी, गवाह। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) साक्षी, गवाही। "सत्य कहौं करि शङ्कर साखी"—[रामा०]। ज्ञान सम्बन्धी पद या कविता। "रमैनी सब्दी साखी"—[भक्तमा०]। (संज्ञा, पु०, दे०)

[सं० शाखिन्] पेड़, वृक्ष, [साखी (दे०)] ।—**मुहा०—पुकारना, देना**—गवाही देन ।—**होना**—गवाह होना ।

साखू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शाल] शाल वृक्ष ।

साखोचार, साखोचारन*†—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० शाखोच्चारण] गोत्रोच्चार, विवाह के समय वर-कन्या के वंशों के पूर्व पुरुषों के नाम तथा गोत्रादि का परिचय देने-लेने का कार्य । "दोउ बंस साखोचार करि कै परन लागी भाँवरी "—[रामा०] ।

साख्या—(संज्ञा, पु०, सं०) साक्षात्कार ।

साग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शाक] शाक, भाजी, तरकारी, खाने योग्य पौधों और पत्तियों की भाजी । " साग-पात स्वीकार कीजिए प्रेम सों " —रसाल० ।—**पात**–(पु०) रूखा-सूखा भोजन ।

सागर—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंधु, समुद्र, बड़ी झील या तालाब, पानी भरने का बहुत बड़ा पात्र, संन्यासियों का एक भेद । " जो लाँघै सत योजन सागर "—[रामा०] । [**सागरीय, सागरी** (वि०, दे०)] ।

सागरांत—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र का किनारा ।

सागू—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० सैगो] ताड़ की जाति का एक वृक्ष, सागूदाना ।—**दाना**–(पु०) सागू के पेड़ का गूदा जो दानों के रूप में बना कर सुखा लिया जाता है, साबूदाना (दे०)] ।

सागौन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शाल] साखू की जाति का एक पेड़, शालवृक्ष ।

साग्निक—(संज्ञा, पु०, सं०) निरंतर अग्निहोत्रादि करने वाला, अग्निहोत्री, याज्ञिक ।

साग्र—(वि०, सं०) समग्र, समस्त, संपूर्ण, सब, कुल, सारा, सब का सब, अग्रांशयुक्त ।

साचिविक—(वि०, सं०) सचिव के कार्यों से संबन्धित । [सेक्रेटेरियल] ।

साज—(संज्ञा, पु०) [फ़ा० मि० सं० सज्जा] ठाट-बाट, सजावट का सामान या काम, सामग्री, उपकरण, जैसे—घोड़े का साज, बाजा, वाद्य, युद्ध के अस्त्रादि, मेल-जोल । (वि०) मरम्मत या तैयार करने वाला, बनाने वाला । (यौ० के अंत में) जैसे—घड़ीसाज ।—**बाज**–(पु०) सामान, माल-असबाब, सामग्री, तैयारी, मेल-जोल, उपकरण, ठाट-बाट ।—**सामान**–(पु०) उपकरण, सामग्री, माल-असबाब, ठाट-बाट ।

साजन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सज्जन] पति, स्वामी, वल्लभ, प्रेमी, परमेश्वर, सज्जन, भला-मानुष, [सुजन (दे०)] । " कहु सखि साजन नहिं सखि रेल "—कुंज वि० । (संज्ञा, पु०) [हि० साजना] सजावट का सामान ।

साजना*†—(क्रि० सं०) [हि० सजाना] सजना, सजाना, अलंकृत या आभूषित करना, सुसज्जित करना । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साजना], साजना, सुजन, स्वामी, पति, सज्जन, भला आदमी, प्रेमी ।

साजा—(संज्ञा, पु०) [हि० सजाना] अच्छा, साफ । " सुन्दर ये सुत कौन के सोभहिं साजें " —[रामा०] ।

साजिंदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० साजिंदः] बाजा बजाने वाला, सपरदाई, समाजी ।

साजात्य—(संज्ञा, पु०, सं०) जातिगत या वर्गगत समता ।

साजिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) मेल-जोल, किसी के विरुद्ध कोई काम करने वालों का सहायक होना या साथ देना, षड्यंत्र, उत्तेजना, सहयोग ।

साजी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सज्जी, सज्जी-खार ।

साजुज्य*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सायुज्य] किसी में पूर्ण रूप से मिल जाना, मुक्ति के चार भेदों मे से एक । जब जीव परमात्मा में लीन होकर एक ही हो जाता है । " प्राप्त होय साजुज्य कौ, ज्योतिहिं ज्योति मिलाय "—नंद० ।

साझा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सहार्थ्य] हिस्सेदारी, शराकत, भाग, हिस्सा, बाँट ।—(क्रे) **दार**-(संज्ञा, पु०) [हि० साझा + दार फ़ा०] साझी, हिस्सेदार, शरीक ।

साझी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साझा] साझेदार, हिस्सेदार, शरीक ।

साटक—(संज्ञा, पु०, दे०) छिलका, भूसी, तुच्छ और बेकार वस्तु । एक छंद (पिं०) ।

साटन—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० सैटिन] एक बढ़िया रेशमी वस्त्र ।

साटना*†—(क्रि० सं०, दे०) [हि० सटाना] संयुक्त करना, मिलाना, दो परतों को एक में मिला देना, बहका कर अपने पक्ष में करना, लाठी डंडे आदि से लड़ाई करना । (अ० रूप) [**साटना**] [**सटाना सटवाना** (प्रेरणा० रूप)] ।

साठ—(वि०, दे०) [सं० षष्टि] पचास और दस । (संज्ञा, पु०, हि०) ५० और १० की संख्या, ६० ।

साठनाट—(वि०, दे०, यौ०) [हि० साठि + नाट —नष्ट] निर्धन, कंगाल, दरिद्र, रूखा, नीरस, तितर-बितर, इधर-उधर ।

साठसाती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० साढ़ेसाती] शनिश्चर ग्रह का बुरा प्रभाव जो साढ़े सात वर्ष तक प्रत्येक राशि तथा उसके द्वितीय और द्वादश भवनों पर ढाई-ढाई वर्षों के हिसाब से रहता है, साढ़साती ।

साठा—(संज्ञा, पु०, दे०) ऊख, गन्ना, ईख, साठी-धान, साठो । (वि०, दे०) [हि० साठ] साठ वर्ष की अवस्था वाला । लो०—" साठा सो पाठा " ।

साठागाँठा—(संज्ञा, पु०, दे०) युक्ति, तदवीर, उपाय, पेंच, मेल जोल ।

साठी—(संज्ञा, पु०, दे०) [षष्टिक] एक प्रकार का धान जो साठ दिन में होता है ।

साठे—(संज्ञा, पु०, दे०) महाराष्ट्र ब्राह्मणों की एक जाति ।

साड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शाटिका] स्त्रियों के पहनने की रङ्गीन बेल-बूटेदार चौड़े किनारे की धोती, [सारी (दे०)] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० साढ़ी] साढ़ी, दूध की मलाई ।

साढ़साती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० साढ़े-साती] देखिए साठसाती । " अवध साढ़साती जनु बोली "—[रामा०] ।

साढ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० असाढ़] असाढ़ महीने में बोये जाने वाली फसल, असाढ़ी । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सार] दूध के ऊपर जमने वाली बालाई, मलाई । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० साड़ी] साड़ी, रंगीन छपी धोती ।

साढ़ू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्यालिवोढा] साली का स्वामी, पत्नी का बहनोई, साढ़ू (प्रान्ती०) ।

साढ़े—(वि०) आधे के साथ ।—**साती**-(स्त्री०) [हि० साढ़ेसात + ई प्रत्य०] देखिए साठसाती ।

सात—(वि०, दे०) [सं० सप्त] छः से एक अधिक और आठ से एक कम । (संज्ञा, पु०) पाँच और दो के योग की संख्या, ७ ।—**फेरी**-(स्त्री०) विवाह में सात भाँवर करना, सातभौंरी, सातफेरी (ग्रा०) । लो०—**पाँच की लाठी एक जने का बोझ** । मुहा०—**पाँच**-चालाकी, धूर्तता, मक्कारी । —**पाँच करना**-कसमस करना, इधर-उधर करना, संशय या संदेह युक्त होना ।—**समुद्र पार**-बहुत ही दूर ।—**राजाओं की साक्षी देना**-किसी बात की सत्यता सिद्ध करने को जोर देना ।—**सींकें बनाना**-लड़के की छठी के दिन ७ सींकों के रखने की एक रीति ।

सातला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सप्तला] थूहर का एक भेद, स्वर्ण-पुष्पी, सप्तला ।

सातू—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सत्तू, सं० सक्तुक] सत्तू, जव और चने का भुना आटा, सतुआ (ग्रा०) ।

सातिक, सातिग—(वि०, दे०) [सं० सात्विक] सात्विक, सत्वगुण-प्रधान, सत्वगुण-संबंधी । " राजस तामस सातिग तीनों, ये सब मेरी माया " —कबीर ।

सात्विक—(वि०, सं०) ईमानदार, सत्वगुण-सम्पन्न नक, सत्य, प्राकृतिक । (पु०) एक अनुभाव जिसमें आठ तरह के अंग विकार होते हैं ।

सात्मक—(वि०, सं०) आत्मासहित ।

सात्म्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सरूपता, सारूप्य ।

सात्यकि—(संज्ञा, पु०, सं०) युयुधान, अर्जुन का शिष्य एक यदुवंशी राजा, [सात्यकी (दे०)] । " सात्यकिः चापराजतः "—[भ० गी०] ।

सात्वत—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रीकृष्ण, बलराम, विष्णु, यदुवंशी ।

सात्वती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शिशुपाल की माता, श्रीकृष्ण जी की बुआ । सुभद्रा । " न दूये सात्वती-सुनुर्यन्मह्यमपराध्यति "—माघ० ।

सात्वती-वृत्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक वृत्ति जिसका प्रयोग वीर, रौद्र, अद्भुत और शांत रसों की कविता में होता है (काव्य०) ।

सात्विक—(वि०, सं०) सत्वगुणी संबंधी, सत्वगुण वाला, सतोगुणी, सत्वगुण से उत्पन्न । (संज्ञा, पु०) सात्वती वृत्ति (काव्य०) सत्वगुण से होने वाले संपूर्ण स्वाभाविक अंग-विकार, जैसे—स्वेद, स्तंभ, रोमांच, स्वरभंग, कंप, अश्रु, वैवर्ण्य और प्रलय आदि भाव (साहि०) ।

साथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सहित] सहित, युक्त, [साथा, साथू] (ग्रा०), संगति, सहचार, मेल-मिलाप, घनिष्ठता। निरंतर समीप रहने वाला साथी, संगी। [**संग-साथ** (यौ०)]। (अव्य०) सहचार या संबंध-सूचक अव्यय, से, सहित। " परिहरि सोक चलो बन साथा "—[रामा०]। **मुहा०—ही, (—ही साथ, साथ-साथ)**—इससे अधिक, अतिरिक्त, सिवा, और।—**ही साथ (एक साथ)**—एक सिलसिले में, सिवा, अतिरिक्त, अलावा, द्वारा, से, प्रति, विरुद्ध। " दिनेश जाय दूर बैठ इन्द्र आदि साथ ही"—[रामचं०]।—**निबहना** मित्रता या सम्बन्ध का निर्वाह होना।

साथरा†—(संज्ञा, पु०, दे०) बिस्तर, तृणादि का बिछौना, कुश की चटाई। [**साथरी** (स्त्री०)]।

साथरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० साथरा] बिस्तर, तृणादि का बिछौना, कुश की चटाई। "कुश किसलय साथरी सुहाई "—[रामा०]।

साथी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साथ] मित्र, संगी, साथ रहने वाला, दोस्त। [**साथिन, साथिनी** (स्त्री०)]। " कोउ नहिं राम, विपति मैं साथी "—[स्फु०]।

सादगी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सरलता, सादापन, निष्कपटता, सीधापन।

सादर—(वि०, सं०) आदर या सत्कार सहित। " सादर जनक सुता करि आगे "—[रामा०]।

सादा—(वि०, दे०) [फ़ा० सदः] सरल और सीधी, सूक्ष्म बनावट का, सूक्ष्म या संक्षिप्त रूप का, जिस वस्तु पर कोई विशेष कारीगरी या अतिरिक्त काम न हो, जो सजाया या सँवारा न गया हो, खालिस, बिना मिलावट का, निष्कपट, सरल हृदय, छल-छिद्र रहित, सीधा, मूर्ख, साफ, जिस पर कुछ अंकित न हो।

सादापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सादः+पन हि० प्रत्य०) सादगी, सरलता, सादा होने का भाव।

सादी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सादः] लाल की जाति का एक छोटा पक्षी, सदिया, बिना दाल या पीठी आदि भरी खालिस पूरी। (संज्ञा, पु०, दे०) शिकारी, घोड़ा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) शादी (फ़ा०), ब्याह। (वि०, स्त्री०) [हि० सादा] सीधी।

सादूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शार्दूल] सिंह, शार्दूल, कोई हिंसक जंतु।

सादृश्य—(संज्ञा, पु०, सं०) समता, तुलना, तुल्यता, बराबरी, समानता, एकरूपता, सादृशता।

साध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साधु] साधु, सज्जन, महात्मा, योगी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० उत्साह] लालसा, कामना, इच्छा, गर्भाधान से सातवें महीने में होने वाला उत्सव या संस्कार। (संज्ञा, पु०, दे०) फर्रुखाबाद के जिले की एक जाति। (वि०, दे०) [सं० साधु] अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम।

साधक—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्य सिद्ध करने वाला; योगी, साधने वाला, साधना करने वाला, तपस्वी, कारण, हेतु, द्वारा, जरिया, वसीला, परार्थ-साधन में सहायक। " साधक मन जस होय विवेका "—[रामा०]।

साधन—(संज्ञा, पु०, सं०) कार्य-सिद्धि की क्रिया, रीति, विधान, सिद्धि, युक्ति, सामग्री, उपकरण, सामान, उपाय, हिकमत, बल, युक्ति, साधना, उपासना, धातुओं की शोधन क्रिया, हेतु, कारण। —**हार**•—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साधन+हार हि० प्रत्य०] साधने वाला जो साधा जा सके, साधनहारा।

साधनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) साधना, साधना का भाव या धर्म। [**साधनत्व** (पु०)]। (वि०, हि०) साधनवाला, [साधनवारा (दे०)] साधन-युक्त।

साधना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी कार्य से सिद्धि करने की युक्ति या क्रिया, सिद्धि, देवतादि के सिद्धि करने के हेतु उपासना, सिद्धि, उपाय। (क्रि० स०, दे०) [सं० साधन] कोई कार्य सम्पन्न या पूरा करना, पूर्ण करना, संधान करना, निशाना लगाना, जाँचना, नापना, अभ्यास करना, स्वभाव डालना, पक्का करना, शुद्ध करना निश्चित करना, ठहराना, इकट्ठा करना, किसी व्यक्ति को अपने पक्ष में रखना, वश में करना, पकड़ना, थामना, सिद्ध करना (शब्द साधना), वश में रखना, यथेष्ट रूप से चलाना (बैल आदि पशुओं को) [**सधाना**—(स० रूप)]। [**सधवाना**—(प्रेरणा० रूप)]।

साधनिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) साधना, उपाय, सिद्ध या पूर्ण करने की रीति।

साधनीय—(वि०, सं०) सिद्ध या साधन करने योग्य, उत्तम कर्म, जिसका साधन करना उपयोगी हो, आराधनीय, राधनीय।

साधर्म्य—(संज्ञा, पु०) [सं० सह+धर्म] एक धर्म्मता, तुल्य या सम-धर्म्मता, समान धर्म होने का भाव। [**वैधर्म्य** (विलो०)]।

साधव—(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० ब० व० साधवः] साधु (आदरार्थ एक व० के स्थान पर बहु० व०)।

साधस—(संज्ञा, पु०, सं०) भय, डर। "साधस नाकरु चलु प्रिय पासा"—विद्या०।

साधार—(वि०, सं०) जिसका कोई आधार हो।

साधारण—(वि०, सं०) सामान्य, मामूली, सहज, सरल, सार्वजनिक, आम (फ़ा०), समान, सदृश, [साधारन, सधारन (दे०)]। —**धर्म**-(पु०) सार्वजनिक धर्म, सभी के लिए एक सामान्य कर्तव्य का भाव।—**निर्वाचन**-(पु०) ससद या विधान सभा का चुनाव जिसमें जन-साधारण लोग भी भाग लेते हैं। [जनरल इलेक्शन]।—**स्त्री**-(स्त्री) वेश्या। (सं०) साधारणता।

साधारणतः—(अव्य०, सं०) सामान्यतः मामूली तौर पर, प्रायः, बहुधा।

साधारणतया—(क्रि० वि०, सं०) साधारण या सामान्यरूप से।

साधारणीकरण—सार्वकालिक एवं सार्वभौम मनुष्य के अनुभव योग्य बनाने की प्रक्रिया।

साधिकार—(क्रि० वि०) अधिकार-समेत। "साधिकार बुला रही है"—बच्चन।

साधित—(वि०, सं०) जो साधा या सिद्ध किया गया हो।

साधी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) ठहराई हुई, बनी हुई।

साधु—(संज्ञा, पु०, सं०) आर्य, सज्जन, महात्मा, भलामानुष, धर्मात्मा, परोपकारी, कुलीन, सत, [साधू, साधौ (दे०)]। [**साधु-संत** (यौ०)]। "साधु अवज्ञा कर फल ऐसा"—[रामा०]।—**वाद**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) उत्तम काम करने पर साधु साधु कह कर किसी की प्रशंसा करना या उसे शाबाशी देना।—**साधु**-(अव्य, यौ०, सं०) वाह वाह, धन्य धन्य, शाबाश, बहुत या खूब अच्छा। **मुहा०—साधु कहना**-किसी के अच्छा काम करने पर उसे शाबाशी देना या उसकी प्रशंसा करना। (वि०, सं०) अच्छा, भला, उत्तम, श्रेष्ठ, उपयुक्त, उचित, श्लाघनीय, प्रशंसनीय, सच्चा। "साधु साधु इतिवादिनः"—भट्टी०।

साधुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सज्जनता, साधु होने का भाव या धर्म्म, भलमंसी, सुजनता, सिधाई, सीधापन, भलमनसाहत, सरलता।

साधू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साधु] संत, साधु, महात्मा, सज्जन, भलामानुस। (वि०, दे०) सीधा, आर्य, श्रेष्ठ। "सब कोउ कहै राम सुठि साधू"—[रामा०]।

साधो साधौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साधु] सत, साध [साधव (दे०)], साधवः (सं०)। "कहत कबीर सुनो भाई साधो"।

साध्य—(वि०, सं०) सिद्ध करने योग्य, जो सिद्ध हो सके, सरल, सहज, जिसे सिद्ध या प्रमाणित करना हो (न्या०), रेखा-गणित में सिद्ध करने योग्य सिद्धान्त। (संज्ञा, पु०) देवता, वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जावे (न्या०), सामर्थ्य, शक्ति। **लो० रा०**—"ततः साध्यं समीक्षेत पश्चाद्भिषगाचरेत्"। (वि०, सं०) सम्भव, साधन करने योग्य या जिसे पूर्ण या सम्पन्न कर सकें।—**वसानिका**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लक्षणा का एक भेद (सा० द०)।—**सम**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह हेतु का कारण जो साध्य की भाँति साधनीय हो (न्या०)]।

साध्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) साध्य का धर्म्म या भाव, साध्यत्व।

साध्वी—(वि०, स्त्री०, सं०) पतिव्रता, पवित्र या शुद्ध चरित्र वाली स्त्री। [**सती-साध्वी** (यौ०)]।

सानंद—(वि०, सं०) हर्ष या आनन्द के साथ, आनंद-पूर्वक, सहर्ष।

सान, शान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शाण] बाढ़ रखना, वह पत्थर जिस पर हथियार पैने किये जाते हैं। **मुहा०—देना या धरना (रखना)**-धार पैनी या तेज करना।—**(शान) रखना (चढ़ाना)**-उत्तेजित या उत्साहित करना।

सानना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० क्रि० अ० सनना] मिश्रित करना, मिलाना, गूँधना, चूर्णादि को द्रव पदार्थ में मिला कर गीला करना, उत्तरदायी या जिम्मेदार बनाना, सम्मिलित करना (बुराई में)। [**सनाना, सनावना, सनवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सानना] खरी या खली पानी आदि में सानकर पशुओं को देने का भोजन। (वि०, अ०) द्वितीय, दूसरा, समता या तुल्यता का, बराबरी या मुक़ाबले का। (क्रि० वि०, हिं०) सनी हुई। **लासानी**—(यौ०) अप्रतिम, अद्वितीय, अद्वैत। **मुहा०—न होना**—समान न होना।

सानु—(संज्ञा, पु०, सं०) पर्वत-शृंग, पहाड़ की चोटी, अन्त, शिखर, सिरा, चौरस, भूमि, जंगल, वन। "पाश्चात्य भागमिह सानुषु संनिषरणाः"—माघ०।

सानुकूल—(वि०, सं०) प्रसन्न, कृपालु, दयालु। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) सानुकूलता, [**सानुकूल्य** (पु०, सं०)]।

सानुकरण—(वि०, सं०) अनुकरण-पूर्वक।

सानुक्रोश—(वि०, स०) दयालु।

सानुनय—(वि०, सं०) विनयशील, शिष्ट। (अ०) विनयपूर्वक।

सानुनासिक—(वि०, सं०) नाक से बोला जाने वाला अक्षर।

सान्निध्य—(संज्ञा, पु०, सं०) समीपता, निकटता, सामीप्य, सन्निकटता, मुक्ति या मोक्ष का एक रूप या भेद।

सान्निपातिक—(वि०, सं०) विषम जटिल।

साप, सापा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० शाप] शाप, स्राप, बददुआ। "साँचे साप न लागई, साँचे काल न खाय"—कबीर०।

सापयश—(वि०, सं०) अयश के साथ।

सापति—(वि०, स्त्री०, सं०) आपत्ति युक्त।

सापत्य—(वि०, सं०) सपत्य या लड़के के साथ [**अनपत्य** (विलो०)]।

सापत्न्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सौतपन, सौत का लड़का, सपत्नी या सौत का धर्म्म या कार्य।

सापना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० शाप] शाप या बददुआ देना, कोसना, गाली देना। (संज्ञा, पु०, दे०) सपना, स्वप्न (सं०)।

सापराध—(वि०, सं०) अपराधविशिष्ट, अपराध-युक्त, दोषी, सदोष, कलंकी, कसूरी, गुनहगार, गुनाही।

सापवाद—(वि०, सं०) अपवाद या बदनामी के साथ।

सापेक्ष्य—(वि०, सं०) जिसकी अपेक्षा या परवाह की जाये।

साप्ताहिक—(वि०, सं०) सप्ताह से सम्बन्धित, सप्ताह भर का [वीकली]।

साफ़—(वि०, अ०) स्वच्छ, बिमल, निर्मल, उज्ज्वल, जिसमे झंझट या बखेड़ा न हो, स्पष्ट, शुद्ध, बे ऐब, निष्कलंक, निर्दोष, विकाररहित, शुभ्र, चमकोला, निष्कपट, छलादि से रहित, हमवार, समतल, कोरा, खालिस, सादा, अनावश्यक या रद्दी अंश निकाला हुआ, जिसमें कुछ सार या तत्व न रह गया हो। (क्रि० वि०, दे०) बिलकुल, नितांत, ऐसे किसी को कुछ पता न चले, बिना किसी दोषापवाद, कलंक या अपराध के, बिना कुछ हानि या कष्ट उठाये।—**जवाब**—(पु०) स्पष्ट उत्तर देना।—**दिल**—(वि०) जिसके हृदय में कोई बुरी भावना न हो।—**साफ**—(अ०) स्पष्टतः। **मुहा०—करना**-मार डालना, नष्ट या बरबाद करना। चुकती या लेन-देन का चुकता करना। —**कहना**-सत्य बात कहना, खुलकर कहना। —**बचना**-बाल बाल बचना।—**बोलना**-शुद्ध प्रवाहपूर्ण बोलना।

साफल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सफलता।

साफा—(संज्ञा, पु०) [अ० साफ़] पगड़ी, मुड़ासा (प्रान्ती०) मुरेठा, सिर में लपेटने का कपड़ा, पहनने के कपड़े साबुन से धोना।

साफी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [अ० साफ़] अँगौछी, रूमाल, [छनना, छन्ना (दे०)] वह वस्त्र जिससे भंग छानी जाती या जिसे चिलम के नीचे लगा कर गाँजा पीते हैं।

साबर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शावर] शिवकृत एक प्रसिद्ध सिद्ध मंत्र, मिट्टी, खोदने का एक हथियार, [**सब्बर, सबरी** (स्त्री०, अल्पा०)]। साँभर नामक जंगली मृग या पशु, उसका चर्म (ग्रा०)। "साबर मंत्र-जाल जेहि सिरजा"—[रामा०]।—**साबरी**—(वि०, दे०) साबर मंत्र शास्त्र का, साबर चर्म, साबर या साँभर मृग का।

साबस—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शाबाश] शाबाश, वाह वाह, बहुत खूब, साधु।

साबिक़—(वि० अ०) प्रथम या पूर्व का, पहले का, आगे का, भूत-पूर्व।—**दस्तूर**—(यौ०) पूर्व रीत्यानुसार, पहले के समान, जैसा पहले था वैसा ही, यथापूर्व।

साबिका—(संज्ञा, पु०, अ०) भेंट, मुलाकात, सरोकार, संबंध, [साबका (दे०)] ।

साबित—(वि०, अ०) सिद्ध, प्रमाणित, जिसका प्रमाण या सबूत दिया गया हो, ठीक, प्रमाण-पुष्ट, सही, दुरुस्त, [साबुत] (ग्रा०) । "दुइ पाटन के बीच परि, साबित गया न कोय"—कबीर । (वि०, दे०) [अ० सबूत] दुरुस्त, पूरा, ठीक, साबूत ।

साबुत, साबूत—(वि०, दे०) [अ० सबूत] संपूर्ण, ठीक, दुरुस्त, अखंडित, अभंग । (संज्ञा, पु०, दे०) सबूत, प्रमाण ।

साबुन—(संज्ञा, पु०, अ०) रासायनिक क्रिया के द्वारा बना हुआ शरीर और वस्त्रादि साफ करने का एक पदार्थ । "काजर होय न सेत सौ मन साबुन खाय बरु" ।

साबूदाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सागूदाना] सिगू नामक पेड़ के गूदे से बने नन्हे-नन्हें दाने, सागूदाना ।

साभिप्राय—(वि०) अभिप्राय सहित, अर्थयुक्त, प्रयोजन के साथ ।

सामंजस्य—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) औचित्य, अनुकूलता, उपयुक्तता, समीचीनता, संगति, मेल, मिलान ।

सामंत—(संज्ञा, पु०, सं०) वीर, योद्धा, राजा, सरदार । बड़ा जमादार । [**शूर सामंत** (यौ०)] । **—वाद**-(पु०) सामन्तों द्वारा चालित राज्य-व्यवस्था जो राजा को सहायता देते थे और राजा नाममात्र का रह जाता था । [फ्यूडलिज़्म]

साम—(संज्ञा, पु०) [सं० सामन्] प्राचीन काल में यज्ञादि में गाने के सामवेद के मंत्र, सामवेद, मीठा या मधुर, मृदु-मधुरवाणी, मधुर भाषण, शत्रु को मीठी बातों से निज पक्ष में मिलाना [नीति०] सामान, असबाब । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्याम] श्याम, स्याम, शाम । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) शाम, शामी । "साम दाम, अरु दंड, विभेदा"—[रामा०] । "कियो मंत्र अंगद पठवन को साम करन रघुराई"—रघुराज । "जमुना साम भई तेहि भारा"—[पद०] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) शाम (फ़ा०) संध्या ।—**गान**-(पु०) साम का गान ।—**गीत**-(पु०) साम का गान ।—**वाद**-(पु०) मीठे वचन ।—**वेद**-(पु०) तृतीय वेद का नाम ।—**वेदी**-(पु०) सामवेद का ज्ञाता ।

सामग—(संज्ञा, पु०, सं०) सामवेद का पूर्ण ज्ञाता, सामवेदज्ञ । "वेदैः सांग पदक्रमोप-निषदैः गायन्ति यां सामगाः" । [**सामगी** (स्त्री०)] ।

सामग्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किसी कार्य की उपयोगी वस्तुयें, आवश्यक पदार्थ, जरूरी चीजें, उपकरण, सामान, असबाब, साधन ।

सामध—(संज्ञा, पु०, दे०) समधियों के परस्पर मिलने की रीति, समधौटा, सामधौरा (ग्रा०) । "सामध देखि देव अनुरागे"—[रामा०] ।

सामना—(संज्ञा, पु०) [हिं० सामने] मुक़ाबिला, विरोध, मुलाकात, भेंट, मुठभेड़, किसी के सामने होने का भाव या क्रिया । **मुहा०—करना**-मुक़ाबिला या विरोध करना, सामने धृष्टता कर जवाब देना ।—(**ने**) **होना**-किसी के रक्षार्थ आगे आना, उसके विरोधी का मुक़ाबला करना । **सामने आना**-प्रत्यक्ष होना, समक्ष आना, विरुद्ध । किसी वस्तु का अगला भाग । [**पीछा** (विलो०)] । [**आमना-सामना** (यौ०)] ।

सामने—(क्रि० वि०, दे०) [सं० सम्मुख] सम्मुख, आगे, समक्ष, सम्मुख, सीधे, उपस्थिति या विद्यमानता में, विरुद्ध, मुक़ाबले में ।—**आना**-मुक़ाबिले में आना ।—**करना**-सामने पेश करना, मुक़ाबला कराना । [**पीछे** (विलो०)] ।

सामयिक—(वि०, सं०) समयानुकूल, समया-नुसार, वर्तमान समय संबंधी । [**सामयिकता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।—**पत्र**-(पु०) वर्तमान समा-चार-पत्र ।

सामर—(संज्ञा, पु०, दे०) साँवर, श्यामल, समर का भाव । [सं० सह + अमर] देवसहित ।

सामरथ, सामर्थ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सामर्थ्य] शक्ति, बल, पराक्रम, [समरथ, समर्थ (दे०)] । पौरुष, योग्यता, लियाक़त, ताक़त, भाव-प्रकाशक शब्द-शक्ति ।

सामरिक—(वि०, सं०) युद्ध-संबंधी, समर का, लड़ाई वाला । [**सामरिकता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] ।

सामर्थ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सामर्थ्य (सं०) । [**सामर्थ** (वि०, दे०)] ।

सामर्थी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सामर्थ्य] शक्तिमान्, पौरुषी, पराक्रमी, बली, बलवान्, सामर्थ्यवान् । [**सामर्थिनी** (स्त्री०)] ।

सामर्थ्य—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शक्ति, बल, पौरुष, पराक्रम, ताक़त, क्षमता, योग्यता, समर्थ होने का भाव, भाव-प्रकाशक शब्दशक्ति।

सामवायिक—(वि०, सं०) समवाय-संबंधी, समूह या झुंड-संबंधी, सामूहिक, सामुदायिक।

सामवेद—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सामन्] भारत के आर्यों के चार वेदों में से तीसरा वेद जिसमें यज्ञों में गान के स्तोत्रादि का संग्रह है।

सामवेदीय—(वि०, सं०) सामवेद-संबंधी। (संज्ञा, पु०, सं०) सामवेद का ज्ञाता या तदनुयायी, ब्राह्मणों की एक जाति।

सामसाली—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सामशाली] राजनीतिज्ञ, राजनीति-कुशल, नीतिनिपुण।

सामहिं—(अव्य०, दे०) [सं० सम्मुख] सामने, सम्मुख, आगे। (संज्ञा, पु०, ब्र०) (कर्म कार०) साम (वेद या साम) को, श्याम को।

सामाँ-सामा—(संज्ञा, पु०, दे०) सावाँ नामक अन्न। (संज्ञा, पु०) [फ़ा० सामान] असबाब। "भला-सामाँ भला जामाँ सुन्दरी मुँदरी भली"—[स्फु०]।

सामाजिक—(वि०, सं०) समाज का, समाज-संबंधी, समाज या सभा से संबंध रखने वाला, सदस्य।

सामाजिकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सामाजिक होने का भाव, लौकिकता, सांसारिकता।

सामान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) उपकरण, सामग्री, असबाब, मालटाल, प्रबंध, बंदोबस्त, इंतजाम, किसी कार्य्य के साधन की आवश्यक चीजें। [**साज-सामान** (यौ०)]।

सामान्य—(वि०, सं०) साधारण, मामूली, आम। [**विशेष** (विलो०)]। (संज्ञा, पु०, सं०) किसी जाति की सब चीजों में समानता से पाया जाने वाला गुण या लक्षण, तुल्यता, समानता, बराबरी, एक गुण (न्या०), एक काव्यालंकार, जिसमे एक ही आकार प्रकार की ऐसी वस्तुओं का वर्णन हो जिन्हें देखने में कोई अन्तर या भेद न ज्ञात हो।—**भविष्यत्**-(पु०) क्रिया का ऐसा भविष्यत् काल जिससे भविष्य के निश्चित समय का बोध न हो। जैसे—आवेगा, साधारण भविष्य-रूप (व्याक०)।—**भूत**-(पु०) भूतकाल की क्रिया का वह रूप, जिससे भूतकाल का निश्चित समय और उसकी कुछ विशेषता तो न समझी जावे; किन्तु क्रिया की पूर्णता ज्ञात हो (व्याक०), जैसे—आया (गुण)।—**लक्षण**-(पु०) वह गुण जो किसी जाति की सब वस्तुओं में समान रूप से पाया जावे।—**लक्षणा**-(स्त्री०) वह शक्ति जो एक वस्तु को देखकर उसी प्रकार या जाति की और सब वस्तुओं का बोध करावे।—**वर्तमान**-(पु०) वर्तमान काल की क्रिया का वह रूप जिसके वर्तमान काल का बोध न हो किन्तु कर्त्ता का उस समय कोई कार्य करते रहने का ज्ञान हो। जैसे—आता है (व्याक०)।—**विधि**-(स्त्री०) साधारण विधान या रीति, साधारण आज्ञा या व्यवस्था, आम हुक्म (फ़ा०) जैसे—सत्य बोलो, साधारण आदेश-सूचक क्रिया का रूप (व्याक०)।

सामान्यतः, सामान्यतया—(अव्य, सं०) साधारणतः, साधारणतया, साधारण रीति से, सामान्य रूप से।

सामान्यतोदृष्ट—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अनुमान के तीन भेदों में से तीसरा भेद, एक अनुमान-दोष (न्या०) कार्य्य और कारण से भिन्न किसी अन्य वस्तु से अनुमान करने की भूल, जैसे—देशी गाय के समान सुरा गाय होती है, दो या अधिक वस्तुओं या बातों में ऐसा साधर्म्य-संबंध जो कार्य्यकारण से भिन्न हो।

सामान्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गणिका, रंडी, वेश्या, पतुरिया, धन लेकर प्रेम करने वाली नायिका (साहि०)।

सामासिक—(वि०, सं०) समस्त, समास का, समास संबंधी, समासाश्रित।

सामिग्री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सामग्री] सामग्री, उपकरण, सामान।

सामिष—(वि०, सं०) मांस सहित। [**निरामिष** (विलो०)]। [**सामिषता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सामी*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वामी] स्वामी, पति, नाथ। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) लाठी आदि के सिरे पर लगाने का धातु का छल्ला। (वि०, दे०) श्याम-देश-निवासी।

सामीप्य—(संज्ञा, पु०, सं०) समीपता, निकटता, मुक्ति के चार भेदों में से एक जिसमें मुक्त जीव परमेश्वर के निकट पहुँच जाता है।

समुझि‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० समझ] समझ, बूझ, बुद्धि, ज्ञान, अकल। "अकथ अनादि सुसामुझि साथी"—[रामा०]।

सामुदायिक—(वि०, सं०) समूह, समुदाय का, सामूहिक, समुदाय-सम्बन्धी ।—**योजना**-(स्त्री०) किसी भाग के समूह के लिए विशेष रूप से कृषि-सुधार, शिक्षा-प्रसार आदि सम्बन्धी विकास योजना । [कम्युनिटी प्रोजेक्ट]

सामुद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) सामुद्रिक शास्त्र, समुद्र से निकला नमक, समुद्र-फेन । (वि०, सं०) समुद्रोत्पन्न, समुद्र-सम्बन्धी, समुद्र का ।

सामुद्रक—(संज्ञा, पु०, सं०) समुद्र के जल से बनने वाला नमक । वह पुस्तक अथवा व्यक्ति जो शरीर के चिह्नों के आधार पर शुभाशुभ जीवनफल का निर्देश करे ।

सामुद्रिक—(वि०, सं०) सागरीय, सागर-सम्बन्धी । (संज्ञा, पु०, सं०) फलित ज्योतिष शास्त्र का एक अंग या भेद जिसके द्वारा मनुष्यों के शुभाशुभ फल, गुण-दोष या भली-बुरी घटनाएँ या बातें हस्त-रेखा या शरीर के तिलादि चिन्हों को देख कर कहे जाते हैं । सामुद्रिक विद्या का ज्ञाता । [**सामुद्रिक शास्त्र या विज्ञान, सामुद्रिक विद्या** (यौ०)] ।

सामुहाँ, सामुहें, सामुहैं*†—(अव्य०, दे०) [सं० सम्मुख] सामने, सम्मुख, आगे, समक्ष । "धरै पौन के सामुहैं दिया भौन को बारि"—मति० ।

सामूहिक—(वि०, सं०) समूह से सम्बन्धित समूह में एकत्र ।

साम्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सम या समान होने का भाव, समानता, तुल्यता, समता, बराबरी, सादृश्य ।—**वाद**-(संज्ञा, पु०, सं०) समाजवाद का वह सिद्धान्त जिसमें सब को समान या तुल्य समझने और समाज में समता स्थापित करने तथा समाज से विषमता के हटाने के भाव का प्राधान्य है (पाश्चात्य) । [काम्युनिज्म] [**साम्यवादी** (वि०)], [**वैषम्य** (विलो०)] ।

साम्यता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) साम्य, समता, तुल्यता, समानता ।

साम्यावस्था—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) वह अवस्था या दशा जब सत्व, रज और तम तीनों गुण समान रहते हैं, प्रकृत-दशा ।

साम्राज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) वह विशाल राज्य जिसमें बहुत से तदाधीन देश हों और जिसमें एक ही सम्राट या महाराजाधिराज का शासन हो, सार्वभौम राज्य, पूर्णाधिकार आधिपत्य ।—**वाद**-(पु०) साम्राज्य की लगातार उन्नति या वृद्धि करने का सिद्धांत । [**साम्राज्यवादी** (वि०)] ।

सायँ, सायँ—" करता मारुत सायँ सायँ है "—मैथिली० ।

सायं—(वि०, सं०) संध्या-संबंधी । (संज्ञा, पु०, सं०) संध्या, शाम, साँझ । [**सायंप्रातः** (यौ०, सं०)] ।—**काल**-(पु०) [वि० सायंकालीन] शाम का वक्त, संध्या का समय, दिवसावसान, संध्या, दिनात्यय ।—**संध्या**-(स्त्री०) वह संध्योपासन-कर्म जो संध्या समय किया जाता है । "सायं सन्ध्यामुपास्यते"—[स्फु०] ।

सायक—(संज्ञा, पु०, सं०) खड्ग, तीर, शर, बाण । म, भ, त (गण) और एक लघु तथा एक दीर्घ वर्ण वाला एक वर्णिक छंद (पिं०), पाँच की संख्या । " पावक सायक सपदि चलावा"—[रामा०] । (वि०, दे०) [फ़ा० शायक] शौकीन ।

सायण—(संज्ञा, पु०, सं०) वेदों का भाष्य करने वाले एक प्रसिद्ध आचार्य्य, सायणाचार्य । अयण युक्त, घर-सहित ।

सायत, साइत, साइति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० साअत] शुभ घड़ी, मुहूर्त्त, शुभ मुहूर्त्त, अच्छा समय, लग्न, ढाई घड़ी या एक घन्टे का समय ।

सायन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सायण] सायणाचार्य्य, सायण । (वि०, सं०) अयन-युक्त, जिसमें अयन हो (ग्रहादि) । (संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य्य की एक गति ।

सायबान—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सायः + बान हि० प्रत्य०] घर के आगे का वह छप्पर आदि जो छाया के हेतु बनता है ।

सायर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सागर] समुद्र, सागर, शीर्ष, ऊपरी भाग । "मन सायर मनसा लहरि, बूड़े, बहे अनेक"—कबीर । (संज्ञा, पु०, अ०) बिना कर के माफ़ी जमीन, फुटकल, स्फुटिक । (संज्ञा, पु०, दे०) [अ० शायर] कवि । "लीक छाड़ि तीनै चलें, सायर, सिंह, सपूत" ।

सायल—(संज्ञा, पु०, अ०) माँगने या सवाल करने वाला, प्रश्नकर्त्ता, भिक्षुक, फ़क़ीर, प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी, आकांक्षी, उम्मीदवार । "सायल खुदा का शाह से बढ़कर है जहाँ में"—[स्फु०] ।

साया—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सायः] छाया, छाँह, छाँही (ग्रा०)। **—दार**-(वि०) छाया-युक्त। **मुहा० —(ये) में रहना**-शरण में रहना। प्रतिबिंब, परछाहीं, प्रेत, भूत, जिन, शैतान आदि, प्रभाव, असर। (संज्ञा, पु०, दे०) [अं० शेमीज] घाँघरे का-सा स्त्रियों का एक वस्त्र, एक जनाना पहनावा।

सायाह्न—(संज्ञा, पु०, सं०) संध्या, साँझ, शाम, सायकाल।

सायुज्य—(संज्ञा, पु०, सं०) अभेद के साथ मिल कर एक हो जाना, मुक्ति के चार भेदों मे से वह भेद जब जीव या आत्मा ब्रह्म या परमात्मा से मिल कर एक ही हो जाता है। [**सायुज्यता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सारंग—(संज्ञा, पु०, सं०) अनेकार्थक शब्द है। बाज, श्येन। कोयल, कोकिल। हंस। मोर, मयूर। चातक, पपीहा। भ्रमर, भौंरा। खंजन, खंजरीट। एक मधुमक्खी; सोनचिड़ी पक्षी, चिड़िया। सूर्य। चन्द्रमा। ग्रह। नक्षत्र। परमेश्वर। श्रीकृष्ण। विष्णु। शिव। कामदेव। हाथी। घोड़ा, मृग, हिरन। मेढक। साँप, सर्प। सिंह। छत्र, छाता। शंख। कमल। चदन। पुष्प, फूल। सोना, स्वर्ण। गहना, जेवर। जमीन, भूमि, पृथ्वी। केश, बाल, अलक। कपूर, कर्पूर। विष्णु का धनुष। समुद्र, सागर। वायु। तालाब, सर। पानी। वस्त्र। दीपक। बाण, शर। छवि, कांति, सुन्दरता, शोभा छटा। स्त्री। रात, रात्रि। दिन। तलवार, खड्ग। बादल, मेघ। हाथ, कर। आकाश, नभ। सारंगी बाजा। बिजली। सब रागों का एक राग। चार सगण का एक वर्णिक छंद मैनावली (पिं०)। छप्पय का २६ वाँ भेद, कागज, मोर की बोली। (वि०, सं०) रंगीन, रँगा हुआ, सुन्दर, सुहावना, मनोरम, सरस। " सारंग में सारग चली, सारंग लीन्हे हाथ।" " सारंग भोनों जानि कै, सारंग कीन्ही घात "। " सारंग ने सारङ्ग गह्यो, सारङ्ग बोले आय। जो सारङ्ग सारङ्ग कहै, सारङ्ग मुह ते जाय "—[स्फु०]। " सारङ्ग नैन बैन पुनि सारङ्ग, सारङ्ग तसु समधाने "—विद्या०। " सारङ्ग दुखी होता सारङ्ग बिनु तोहि दया नहिं आवत। सारङ्गरिपु को नैकु ओट कहि ज्यों सारङ्ग सुख पावत "। "सारङ्ग केहि कारण सारङ्ग-कुलहि लजावत "—सूर०। **—पाणि**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विष्णु, सारङ्गधर।

सारंगिक—(संज्ञा, पु०, सं०) चिड़ीमार, किरात, बहेलिया, न, य (सगण) वाला एक वर्णिक छंद (पिं०)।

सारंगिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सारङ्गी + इया प्रत्य०] सारङ्गी बजाने वाला साजिंदा।

सारंगी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० सारङ्ग] अति श्रुतिमधुर और प्रिय स्वर वाला तार का एक बाजा, [सरङ्गी (दे०)]।

सार—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्त, तत्व, मूल, मुख्याभिप्राय, निष्कर्ष, किसी वस्तु का असली भाग। निर्यास, अर्क, रस, गूदा, मग्ज। दूध की मलाई या साढ़ी। हीर (काष्ठादि का)। फल, नतीजा, परिणाम। धन-संपत्ति। मक्खन, नवनीत। अमृत, शक्ति, बल, पौरुष, सामर्थ्य। मज्जा। जुआ खेलने का पाँसा। तलवार, खड्ग। पानी, जल, २८ मात्राओं वाला एक मात्रिक छद (पिं०)। "आंदोलन में सार यही मैंने पाया"—गिरीश। एक वर्णिक छंद (पिं०)। एक अर्थालंकार जिसमें वस्तुओं का उत्तरोत्तर उत्कर्ष या अपकर्ष कहा गया हो, उदार, लोहा। " मरे चाम की साँस सों सार भसम होइ जाय "—कबीर। **—गर्भित**-(वि०, यौ०, सं०) जिसमें तत्व भरा पड़ा हो, तत्व-पूर्ण, सारांश युक्त। **—दा**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शारदा] वाणी, गिरा, शारदा, सरस्वती जी। " शेष सारदा, व्यास मुनि, कहत न पावैं पार "—[स्फु०]। (वि०, स्त्री०, सं०) अभीष्ट देने वाली। (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, सुदृढ़, मजबूत। * (संज्ञा, पु०, दे०) (सं० सारिका) मैना, सारिका। (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सारना] पालन-पोषण, देख-रेख, पर्यंक, पलँग। † (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्याल] साला। श्याला (सं०) पत्नी का भाई। [**सारता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

सारखा—(वि०, दे०) [सं० सदृश] सदृश, समान, सरीखा, सारिखा।

सारता†—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सारत्व, सार का भाव या धर्म्म। [**असारता, निस्सारता** (विलो०)]।

सारथ—(वि०, दे०) [सं० सार्थ] चरितार्थ, पूर्ण, अर्थयुक्त। [**सारथता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]। " चाहत बिजै को सारथी जौ कियो सारथ तौ "—रत्ना०।

सारथि, सारथी—(संज्ञा, पु०, सं०) रथ का हाँकने या चलाने वाला, सूत, अधिरथ, रथवान,

रथवाहक, सागर, समुद्र । [सारथ्य (संज्ञा, पु०)]।

सारद—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० शारदा] वाणी, सरस्वती । "सनकादिक, नारद, श्रुति, सारद, शेष न पावै पार"—स्फु० । शारद-संबंधी । (वि०, सं०) सार या अभीष्ट देने वाला । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शरद] शरद् ऋतु ।

सारदि, सारदी—(वि०, दे०) [सं० शारदीय] शारदीय, शरद ऋतु-संबंधी, शरद ऋतु की । "कहुँ कहुँ वृष्टि सारदी थोरी "—[रामा०] ।

सारदूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शार्दूल] सिंह, शार्दूल । "सारदूल सावक बितुंड झुंड ज्यों ही त्यों ही "—रत्ना० ।

सारना—(क्रि० सं०) [हिं० सरना का स० रूप] पूरा या समाप्त करना, बनाना, साधना, दुरुस्त या ठीक करना, सुशोभित या सुन्दर बनाना, सभालना, सुधारना, रक्षा करना, आँखों में अंजन और मस्तक में तिलकादि लगाना, शस्त्रास्त्र चलाना ।

सारनाथ—(संज्ञा, पु०) काशी के उत्तर-पूर्व पर स्थित एक बौद्ध तीर्थ ।

सारभाटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० ज्वार का अनु० + भाटा] ज्वारभाटा का विलोम, तट से आगे निकल जाकर कुछ देर में फिर लौटने वाली समुद्र के जल की बाढ़ ।

सारमेय—(संज्ञा, पु०, सं०) सरमा की संतान, श्वान, कुत्ता, [कूकुर (दे०)] । [सारमेयी (स्त्री०)] ।

सारल्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सरलता, सीधापन, सिधाई ।

सारवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तीन भगण और एक गुरु वर्ण का एक वर्णिक छंद (पिं०) ।

सारस—(संज्ञा, पु०, सं०) एक सुन्दर बड़ा पक्षी, हंस, कमल, चंद्रमा, छप्पय का १७ वाँ भेद (पिं०) । "सारसैः कल निर्ह्रादैः क्वचिदुन्नमिताननौ "—रघु० । [सारसी (स्त्री०)] ।

सारसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आर्य्या छंद का २३ वाँ भेद (पिं०), मादा सारस ।

सारसुता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० सरसता] । यमुना नदी ।

सारसुती*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरस्वती] एक नदी, सरस्वती, वाणी, [सरसुति, सरसुती (दे०)] ।

सारस्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सरसता, रसीलापन । (वि०) विशेष रसदार ।

सारस्वत—(संज्ञा, पु०, सं०) दिल्ली के पश्चिमोत्तर की ओर सरस्वती नदी के समीप का देश (पूर्वीय पंजाब), वहाँ के ब्राह्मण, व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रंथ । (वि०, सं०) सरस्वती-संबंधी, सारस्वत देश का । "सारस्वतीमृजुम् कुर्वे प्रक्रियां नाति विस्तराम् "—सार० ।

सारांश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मूलतत्व, सार, संक्षेप, खुलासा, तात्पर्य्य, मतलब, परिणाम, नतीजा, फल, निष्कर्ष, निचोड़ ।

सारा—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अर्थालंकार जहाँ एक वस्तु दूसरी से उत्तम कही जाय । †(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्याला] साला । [सारी (संज्ञा, स्त्री०, दे०)] । (वि०, दे०) संपूर्ण, समस्त, पूरा, सब का सब । (संज्ञा, पु०, दे०) सार-तत्व ।

सारावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छंद, सारावली (पिं०) ।

सारि—(संज्ञा, पु०, सं०) चौपड़ या पाँसा खेलने वाला, जुआरी, जूआ खेलने का पाँसा ।

सारिक—(संज्ञा, पु०, सं०) मैना पक्षी ।

सारिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मैना पक्षी । "शुक सारिका पढ़ावहि बालक "—[रामा०] ।—**मुख** -(पु०) एक प्रकार का विषैला कीड़ा ।

सारिख, सारिखा*†—(वि०, दे०) [हिं० सरीख] समान, सदृश, तुल्य, बराबर, सरीखा ।

सारिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सहदेई, नागबाला, गंधसारिणी, कषाय, रक्त, पुनर्नवा (औष०) ।

सारितोपम—"वामा इस पथ पर हुई वाम सरितोपम"—निराला ।

सारिवा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [सरिवा (दे०)] अनंत मूल ।

सारी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सारिका, मैना, पक्षी, गोटी, जुए या चौपड़ का पाँसा, थूहर वृक्ष । "सारी चरंतीं सखि मारयैतामित्यच्चदाये कथिते कयापि "—[नैषध] (दे०) [सं० शाटिका] रंगीन धोती, साड़ी । (पु०) [सं० सरिन्] अनुकरण या नकल करने वाला । (वि०, स्त्री०, दे०) सम्पूर्ण, पूरी, सब, समूची, समस्त ।

सारु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सार] सार, तत्व, मूल, सारांश, निचोड़, अर्क, रस ।

सारूप्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चार प्रकार की मुक्ति में से एक जिसमें उपासक अपने इष्ट-देव के रूप को पा जाता है, रूप-साम्य का भाव, एकरूपता, सरूपता। [**सारूप्यता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सारूप्यता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सारूप्य का धर्म्म या भाव।

सारो*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सारिका] सारिका, मैना पत्ती। "इवगर हिय सुक सौं कह सारो"—[गीता०]। (वि०) [अ० हिं० सारा] सारा, सब। (पु०) साला।

सारोपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक लक्षणा जिससे एक पदार्थ में दूसरे का आरोप होने पर कोई विशेष अर्थ प्राप्त होता है (काव्य०)।

सारौं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सारिका] सारिका, मैना पत्ती।

सार्थ—(वि०, सं०) सोद्देश्य, अर्थ-सहित, चरितार्थ, सफल, [सारथ (दे०)]।

सार्थक—(वि०, सं०) अर्थवान्, अर्थ-सहित, सफल, पूर्ण-मनोरथ, पूर्णकाम, गुणकारी, उपयोगी, उपकारी, हितकर, प्रयोजनीय, सोद्देश्य, चरितार्थ, [सारथक (दे०)]।

सार्थकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महत्व उपयोगिता।

सार्दूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शार्दूल] सिंह।

सार्द्ध—(वि०, सं०) पूरा और आधा मिला, अर्द्ध-युक्त, आधे के साथ पूरा, डेढ़।

सार्व—(वि०, सं०) सब से संबंध रखने वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) सर्व का भाव।

सार्वकालिक—(वि०, सं०) सब समयों का, जो सब समयों में होता हो।

सार्वजनिक, सार्वजनीन—(वि०, सं०) सब लोगों या सर्वसाधारण से संबंध रखने वाला।

सार्वत्रिक—(वि०, सं०) सर्वत्र सम्बन्धी, सर्वत्र व्यापक, सर्वव्यापी।

सार्वदेशिक—(वि०, सं०) सारे देश का, संपूर्ण देश-संबंधी।

सार्वभौम—(संज्ञा, पु०, सं०) चक्रवर्त्ती राजा, हाथी। (वि०) सब पृथ्वी-संबंधी। [**सार्वभौमता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सार्वभौमिक—(वि०, सं०) सम्पूर्ण भूमण्डल पर विस्तृत या फैला हुआ।

सार्वराष्ट्रीय—(वि०, सं०) जिसका संबंध कई राष्ट्रों से हो, सर्वराष्ट्र-सम्बन्धी।

सार्वलौकिक—(वि०, सं०) सम्पूर्ण संसार में परिव्याप्त, सार्वजनिक, सभी को ज्ञात।

सार्वत्रिक—(वि०, सं०) सभी स्थितियों एवं स्थानों से सम्बन्धित।

सालंक—(संज्ञा, पु०, सं०) वह शुद्ध राग जिसमें दूसरे राग का मेल तो न हो किन्तु किसी राग का आभास-सा ज्ञात हो (संगी०)।

सालंकर—(वि०, सं०) अलंकृत, आभूषण से सज्जित।

साल—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० सालना] सलना या सालना क्रिया का भाव, छिद्र, छेद, बिल, सुराख, पलंग के पायों के चौकोर छेद, जख्म, घाव, पीड़ा, दुःख, वेदना। (पु०, सं०) शाल वृक्ष, जड़, राल। (पु०, फ़ा०) बरस, वर्ष। (पु०, दे०) [सं० शालि, शाल] शालि धान, शाल का पेड़। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शाल] शाल, दुशाला। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शाला] शाला, स्थान, घर।—**गिरह**–(स्त्री०) बरस गाँठ, वर्ष-ग्रंथि, जन्मतिथि, जन्मदिवस।—**ग्राम**–(पु०) [सं० शालग्राम] शालग्राम, विष्णु की अनगढ़ मूर्त्ति जो गंडकी नदी से मिलती है, [शालिगराम, सालिगराम (दे०)]।—**ग्रामी**–(स्त्री०) गंडकी नदी जहाँ विष्णु की अनगढ़ मूर्ति मिलती है।—**निर्यास**–(पु०) राल, धूप, धूना।

सालक—(वि०, दे०) [हिं० सालना] सालने या पीड़ा देने वाला, दुःखद।

सालन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सलवण] रोटी के साथ खाने के दाल, तरकारी, कढ़ी आदि पदार्थ।

सालना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शूल] खटकना, कसकना, पीड़ा या दुःख देना, चुभना, गड़ना। (क्रि० स०) पीड़ा या दुःख पहुँचाना, चुभाना, गड़ाना। "सालत सौत बचाइबो तेरो" —पद्मा०।

सालम-मिश्री—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० सालब + मिश्री सं०] सुधामूली, वीरकंदा, पौष्टिक कंद वाला एक क्षुप, [सालिममिसिरी (दे०)]।

सालरस—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राल, धूप।

सालस—(संज्ञा, पु०, अ०) दो पक्षों के बीच में निर्णायक, मध्यस्थ, बिचवानी, पंच।

सालसा—(संज्ञा, पु०, अ०) रक्त-शोधक अर्क, [सारसा (दे०)] । (वि०, स्त्री०, सं०) आलस्य-युक्त । (वि०, यौ०, हि०) शाल के समान ।

सालसी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सालस होने का भाव या क्रिया, पंचायत । (वि०, स्त्री०, हि०) शाल जैसी ।

सालस्य—(वि०, सं०) आलस्य-युक्त ।

साला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्यालक] स्त्री या पत्नी का भ्राता, एक गाली । [**साली** (स्त्री०)] । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सारिका] सारिका, मैना । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शाला] स्थान, घर ।

सालाना, सालियाना—(वि०, दे०) [फ़ा० सालान:] वार्षिक, वर्ष या साल-संबंधी । [एनुअल]

सालार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नेता, सरदार, नायक ।—(**रे**) **जंग**–(पु०) सेनापति ।

सालि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शालि] धान ।

सालिग्राम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शालिग्राम] शालिग्राम, विष्णु मूर्त्ति, [सालिगराम (दे०)] ।

सालिबमिश्री—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० सालब +मिश्री सं०] पौष्टिक कंद वाला एक क्षुप, सालम-मिश्री, सुधामूली, वीरकंद ।

सालिम—(वि०, अ०) पूरा, सपूर्ण, सारा, सब, समस्त ।

साली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्याली] पत्नी की बहन ।

सालु—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सालना] दुःख, कष्ट, ईर्ष्या, [डाह (दे०)] ।

सालू—(संज्ञा, पु०, दे०) एक मांगलिक लाल वस्त्र, सारी, परमीना, दुशाला ।

सालूर—(संज्ञा, पु०, दे०) एक मांगलिक लाल वस्त्र, सारी, परमीना, दुशाला, घोंघा, घोंघी । " रतनाकर, सेवै रतन, सर सेवैं सालूर "—[नीति०] ।

सालोक्य—(संज्ञा, पु०, सं०) चार प्रकार की मुक्ति में से एक जिसमे मुक्त जीव परमात्मा के साथ उसके लोक में निवास करता है, सलोकता ।

सावँ—(वि०, दे०) [सं० श्याम] श्याम, काला । " रकत लिखे आखर भये सावाँ "—[पद०] ।

सावँकरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्यामकर्ण] श्यामकर्ण घोड़ा । " सावँकरन घोरे बहु जोरे " —[रफु०] ।

सावँत, सावत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सामंत] सामत, वीर, योद्धा, जमींदार । " बड़े बड़े सावँत तहँ ठाढ़े एक तें एक दई के लाल "—आल्हा० ।

सावँर—(वि०, दे०, सं०) श्यामल, साँवला, श्यामला । [**सावँरी** (स्त्री०)] ।

साव—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शाह] सेठ, साहु, साहूकार, महाजन, धनिक, साह । [**साव** (संज्ञा, पु०, दे०, सं०)] ।

सावक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शावक] शिशु, बच्चा, छोटा बच्चा । " जहँ बिलोक मृगसावक-नैनी "—[रामा०] । [**सावकता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)] ।

सावकरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्यामकर्ण] एक प्रकार का घोड़ा, श्यामकर्ण ।

सावकाश—(संज्ञा, पु०, सं०) फुरसत, अवकाश-युक्त, सामर्थ्य, [समाई (दे०)] छुट्टी, अवसर, मौका, विस्तृत, [सावकास (दे०)] । " साव-काश सब भूमि समान "—[रामचं०] ।

सावकाशी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सावकाश (सं०) सामर्थ्य ।

सावचेत*†—(वि०, सं०) सावधान, सचेत, सतर्क, सजग ।

सावज—(संज्ञा, पु०, दे०) वनैले पशु या जन्तु, हरिण आदि ऐसे वनजीव जिनका लोग शिकार करते हैं । " सावज ससा, सकल संसारा "—कबीर ।

सावत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सौत] सौतों के आपस का द्वेष, ईर्ष्या, सौतिया डाह ।

सावध—(वि०, दे०) [सं० सावधान] सचेत, सावधान ।

सावधान—(वि०, सं०) सतर्क, सचेत, सजग होशियार, खबरदार ।

सावधानता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सचेतता, सतर्कता, सजगपन, होशियारी, खबरदारी ।

सावधानी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० साव-धानता] सावधानता, सतर्कता, सचेतता, होशि-यारी, खबरदारी, सजगता ।

सावधि—(वि०, सं०) जिसकी अवधि या समय निश्चित हो ।

सावधिक—(वि०, सं०) नियत समय पर घटित होने वाला । [पीरियाडिकल] ।—**पत्र**–(पु०) किसी निश्चित समय पर प्रगट होने वाला पत्र (जैसे त्रैमासिक, मासिक, साप्ताहिक, अर्द्ध साप्ता-

हिक, दैनिक पत्र)।—प्रस्फोट—(पु०) निर्धारित समय पर स्वतः प्रस्फुटित होने वाला गोला या बम। [टाइम बम]

सावन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रावण] बारह महीने में से एक महीना जो असाढ़ के बाद और भादों से पूर्व होता है, एक प्रकार का सावन महीने का गीत (पूरब), "राम के बरन दोउ, सावन-भादों मास"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, सं०) एक सूर्योदय से दूसरे तक चौबीस घंटे का समय, दंड (ज्यो०) "इन आँखों में करुणा के घिर-घिर आते थे सावन"—महादेवी।

सावनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्रावणी] वह उपकरण या सामान जो वर के यहाँ से कन्या के यहाँ ब्याह के प्रथम वर्ष सावन में भेजा जाता है, सावन की पूर्णमासी, या पूनो। (वि०) सावन का, सावन-संबंधी।

सावयव—(वि०, सं०) अवयव सहित, खंड-सहित, सांग।

सावर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शावर] लोहे का एक लंबा औजार, शिवकृत एक प्रसिद्ध तंत्र-मंत्र-शास्त्र, [साबर (दे०)]। "साबर मंत्र-जाल जेहि सिरजा"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शवर] एक तरह का मृग, साँभर।

सावर्ण, सावर्णि—(संज्ञा, पु०, सं०) चौदह मनुओं में से आठवें मनु जो सूर्य्य के पुत्र हैं, उनकी आयु का समय, एक मन्वन्तर।

सावशेष—(वि०, सं०) अपूर्ण, अधूरा जिसका अवशेष कुछ हो (पु०) शेष।

सावाँ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्यामक] काकुन जैसा एक अन्न। [**सवाँकाकुन** (यौ०)]। "सावाँ जवा जुरतो भरि पेट"—नरो०।

सावित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य्य, वसु शिव, ब्रह्मा, ब्राह्मण, यज्ञोपवीत, एक अस्त्र। "सावित्रेव हुताशनः"—[रघु०]। (वि०)—सूर्य या सविता का, सविता-संबंधी, सूर्य-वंशी।

सावित्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेद माता, गायत्री, ब्रह्मा जी की पत्नी, सरस्वती, उपनयन के समय का एक संस्कार, दक्ष प्रजापति की कन्या, मद्र नरेश अश्वपति की कन्या और सत्यवान की सती स्त्री, सरस्वती नदी, यमुना, नदी, सधवा स्त्री।

साश्चर्य—(वि०, सं०) आश्चर्यजनक (अ०) आश्चर्य सहित।

सास्रु—(वि०, सं०) अश्रुपूर्ण।

साष्टांग—(वि०, यौ०, सं०) आठों अंगों के सहित। [**साष्टांग प्रणाम** (यौ०)] दण्डवत, प्रणाम, पृथ्वी पर लेट कर मस्तक, हाथ, पैर, आँख, जंघा, हृदय, मन और वचन से नमस्कार करना। **मुहा०—प्रणाम (दंडवत) करना**—दूर रहना, बहुत ही बचना (व्यंग), दूर ही से दंडवत करना।

सास, सासु—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्वश्रू] पति या पत्नी की माता। "तब जानकी सासु-पग लागी"—[रामा०]।

सासत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) साँसति, शास्ति (सं०) कष्ट।

सासति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शासन] संसृति, दुःख, शासन, दंड। "सासति करि पुनि करहिं पसाऊ"—[रामा०]।

सासन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शासन] शासन, दण्ड, सजा, हुकूमत। (वि०, सं०) शासन के साथ।

सासनलेट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक जालीदार सफेद महीन वस्त्र।

सासना—(क्रि० स०, दे०) [सं० शासन] शासन करना, दंड देना, कष्ट पहुँचाना।

सासरा†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्वशुरालय] ससुराल, सासुर, ससुरा। "जेठा धीय सासरै पठवाँ—कबीर।

सासा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संशय] संशय, संदेह। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वास] श्वास, साँस।

सासुर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वशुर, श्वशुरालय] ससुर, ससुराल, ससुरार (दे०)।

साह—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शाह] राजा, बादशाह, सेठ, साहूकार, धनी, महाजन, [साहु (दे०)], व्यापारी, सज्जन, साधु, भलामानुस, साहजी। [**समधी** (यौ०)]। (वैश्य), शिवाजी के पिता। "बोलत ही पहिचानिये चोर-साह के बाट"—[नीति०]। "तापर साहतनै सिवराज सुरेश की ऐसी सभा सुभ साजै"—भूषण।

साहचर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) साथ, संग, संगति, सहचरता, सहचर का भाव।

साहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सेनानी] सेना, फौज, संघी, संगी, साथी, पारिषद। "भरत सकल साहनी बुलाये"—[रामा०]।

साहब, साहेब—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० साहिब] मित्र, साथी, संगी, दोस्त, स्वामी, मालिक, परमेश्वर (कबीर), सम्मान-सूचक शब्द, महाशय, अंग्रेज या गोरी जाति का व्यक्ति। "साहब सों सब होत है, बंदे से कछु नाहिं"—कबीर। [**साहिबा** (स्त्री०)] ।—**जादा**–(पु०) [अ० साहिब+जादा फ़ा०] अमीर का पुत्र, भलेमानुस का लड़का, बेटा, पुत्र । [**साहिबजादी** (स्त्री०)]।—**बहादुर**–(पु०) अंगरेजी ढंग पर रहने वाला। भारतीय पदाधिकारी।—**सलामत**–(स्त्री०) मुलाकात, बातचीत, सलाम, बंदगी, पारस्परिक अभिवादन। [**सलाम-दुआ** (यौ०)]।

साहबाना—(वि०, अ०) साहबी।

साहबी, साहिबी—(वि०, दे०) [अ० साहब] साहब का। (संज्ञा, स्त्री०) साहब होने का भाव, प्रभुता, स्वामित्व, मालिकपन, बड़प्पन, बड़ाई। "कै तौ कैद कीजिये कमंडल मैं फेरि गंग कै तौ यह साहिबी हमारी फेरि लीजिये"—रत्ना०।

साहस—(संज्ञा, पु०, सं०) हिम्मत, [हियाव (दे०)] आपत्यादि का दृढ़ता से सामना कराने वाली एक मानसिक शक्ति, बलात्कार उद्योग-उत्साह, वीरता, कार्य-तत्परता, हौसला। 'साहस अनृति चपलता माया'—[रामा०]। जबरदस्ती धनादि का अपहरण करना, लूटना, कुकर्म, सजा, दंड, जुर्माना।

साहसिक—(संज्ञा, पु०, सं०) हिम्मतवर, साहसी, पराक्रमी, निश्शंक, निर्भीक, चोर, डाकू, निर्भय, निडर।

साहसी—(वि०) [सं० साहसिन्] बहादुर, दिलेर, हिम्मती, हौसलेवाला। "साह के सपूत महा साहसी सिवाजी तेरी, धाक सब देसन विदेसन मैं छाई है"—[स्फु०]।

साहस्र, साहस्रिक—(वि०, सं०) सहस्र या हजार संबंधी, हजार का।

साहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साहित्य] ब्याहादि शुभ कार्यों के लिये शुभमुहूर्त या लग्न।

साहाय्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सहायता।

साहि*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शाह] साह, साहु, राजा, बादशाह, सेठ, साहूकार, शिवा जी के पिता, साहिजी। "तापर साहि-तनै सिवराज सुरेस की ऐसी सभा सुभ साजै"—भूषण।

साहित्य—(संज्ञा, पु०, सं०) उपकरण, सामान, असबाब, सामग्री, वाक्यों में एक ही क्रिया से अन्वय कराने वाला पदों का पारस्परिक बंध विशेष, विद्याविशेष, कवियों का सुलेख, सार्वजनिक हित सम्बंधी स्थायी विचारों या भावों के गद्य-पद्य मय ग्रंथों का सुरक्षित समूह, काव्य, वाङ् मय, मिलन, प्रेम करना, एकत्रित होना, संचय। "साहित्य-संगीत कला विहीन"—भ० श०।

साहित्यिक—(वि०, सं०) साहित्य-संबंधी, साहित्य का। (संज्ञा, पु०) साहित्य-सेवी, जो साहित्य-सेवा करता हो।—**उपनाम**–(पु०) साहित्य द्वारा प्रयुक्त बनावटी नाम।

साहिब—(संज्ञा, पु०, अं०) साहब, साथी, मित्र, मालिक, स्वामी, परमेश्वर। "साहिब तुम ना बिसारियो, लाख लोग मिल जाहि"—कबीर।

साहिबी—(वि०) [अ० साहिब] साहिब संबंधी, साहिब का। (संज्ञा, स्त्री०) साहिब की भावना, प्रभुता, स्वामित्व, बड़प्पन, बड़ाई।

साहियाँ*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वामी] स्वामी, मालिक, पति, नाथ, परमेश्वर, [साईं, साइयाँ]।

साही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शल्यका] एक विख्यात जंगली जंतु, जिसके शरीर पर बड़े-बड़े पैने काँटे होते है। (वि०, दे०) [फ़ा० शाही] शाही, बादशाह का, शाह संबंधी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्याही (फ़ा०)।

साहु—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शाह, सं० साधु] साहूकार, सेठ, महाजन, शाह, राजा, सज्जन। [**चोर** (विलो०)]। शिवाजी के पिता साहिजी। "साहु को सराहौं कै सराहौं सिवराज को"—भूषण।

साहुल—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शाकूल] राजों का दीवाल की समता को जाँच करने का एक यंत्र, [सहावल (दे०)]।

साहू—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शाह] सेठ, साहूकार, साहु, सज्जन, महाजन, धनी, शिवाजी के पौत्र।

साहूकार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० साधुकार] बड़ा सेठ, बड़ा महाजन, कोठीवाल। [**साहूकारी** (संज्ञा, पु०, दे०)]।

साहूकारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० साहूकार] लेन-देन का कार्य, महाजनी, महाजनों का बाजार। (वि०) सेठों का, सेठ संबंधी।

साहूकारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० साहूकार] सेठ होने का भाव, सेठपन, सेठों का कार्य साहूकारपन।

साहेब—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० साहिब] साहिब, स्वामी; मालिक, प्रभु, नाथ, पति, परमेश्वर. संगी, दोस्त, मित्र।

साहैं*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० बाहु] भुजा, हाथ, बाजू। (अव्य, दे०) [हिं० सामुहें] (सौंहैं ब्र०) सम्मुख, सामने, समक्ष।

सिउँ*‡—(अव्य, दे०) [सं० सह] सहित, युक्त, समीप, पास, निकट, [स्यों (दे०)]।

सिकना, **सकना**—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० सेंकना] आग की आँच पर पकना या गरम होना, सेंका जाना।

सिंगरौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृंगवेरपुर] शृंगवेरपुर ग्राम-विशेष, शृंगवेरपुर का निवासी।

सिंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सींग] फूँक-कर बजाने का सींग का बाजा, रणसिंगा, तुरही। (संज्ञा, पु०, दे०) सींगा, मुट्ठी बन्द कर अँगूठा दिखाने की एक मुद्रा (अस्वीकार सूचक)।

सिंगार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृंगार] सजावट, शोभा, बनाव, शृंगाररस, स्त्रियों के सोलह शृंगार।—**दान**-(पु०) [सं० शृंगार + दान फ़ा०] शीशा, कंघा आदि शृंगार की सामग्री रखने का संदूकचा।—**हाट**-(स्त्री०) वेश्याओं का निवास स्थान, चकला।

सिंगारना—(क्रि० स०, दे०) [सं० शृंगार] सजाना, अलंकृत या सुसज्जित करना, सँवारना।

सिंगारहार—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० शृंगार + हार] हरसिंगार नामक फूल, पारिजात, [परजाता (दे०)]।

सिंगारिया—(वि०, दे०) [सं० सिंगार] पुजारी, देव मूर्त्तियों का शृंगार करने वाला।

सिंगारी—(वि०, पु०) [हिं० सिंगार + ई प्रत्य०] सजाने या शृंगार करने वाला।

सिंगिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सगिक] एक विख्यात स्थावर विष विशेष।

सिंगी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सींग] हिरन आदि के सींग का फूँक-फूँक कर बजाने का एक बाजा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक मछली। सींग की नली जिससे चूस कर देहाती जर्राह देह से रक्त निकालते हैं।

सिंगौटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सींग] बैलों के सींगों का एक गहना, छोटे सींग। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सिंगार + औटी] स्त्रियों की सिंदूर आदि रखने की छोटी पिटारी।

सिंघ†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सिंह] सिंह, क्षत्रियों की एक उपाधि।

सिंघल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सिंहल] सिंघल द्वीप।

सिंघाड़ा, **सिंघारा**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृंगाटक] जल में फैलने वाली एक लता का विख्यात काँटेदार तिकोना फल, सिंघाड़े के आकार की सिलाई या बूटा, समोसा नाम का एक तिकोना पकान, जल-फल।

सिंघासन—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सिंहासन] सिंघासन, राजगद्दी।

सिंघी—(वि०, स्त्री०, दे०) शुंठी, सोंठ सिंगी जाति की एक छोटी मछली।

सिंघेला—(संज्ञा, पु० दे०) [सं० सिंह] सिंह का बच्चा, सिंघेरा।

सिंचन—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी छिड़कना, सींचना। [**सिंचित** (वि०)]।

सिंचना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सिंचन] सींचा जाना। [**सींचना**, **सिंचावना** (स० रूप)]. [**सिंचवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सिंचाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सिंचन] सींचने या पानी छिड़काने का काम, सींचने का कर या मजदूरी।

सिंचाना—(क्रि० स०) [हिं० सींचना का प्रेरणा० रूप] दूसरे से सिंचवाना, सिंचावना, सिंचवना (ग्रा०)।

सिंचित—(वि०, सं०) सींचा हुआ।

सिंजा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ध्वनि, शब्द, आवाज, शिंजा।

सिंजित—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शिंजित, ध्वनित, शब्द, झंकार, झनक। **सिंजन**—(संज्ञा, पु०, सं०) झंकार।

सिंदन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्यन्दन] स्यन्दन, रथ। "गज सिंदन हैं अश्व पुजाई"—[रामा०]।

सिंदुवार—(संज्ञा, पु०, सं०) निगुंडी या सँभूल का पेड़ ।

सिंदूर—(संज्ञा, पु०, सं०) ईंगुर से बना सधवा स्त्रियों के माँग और माथे पर लगाने का एक विख्यात लाल चूर्ण ।—**दान**-(पु०) वर द्वारा कन्या की माँग में सिंदूर डालने की क्रिया । (संज्ञा, पु०, यौ०) सिंदूर रखने का पात्र । [**सिंदूरदानी** (स्त्री० अल्पा)] ।—**पुष्पी**-(स्त्री०) वीर पुष्पी, एक पौधा और उसके लाल फूल ।—**बंदन**-(पु०) वर का कन्या की माँग में सिंदूर देना, सिंदूर-दान ।

सिंदूरिया—(वि०, दे०) [सं० सिंदूर+इया हिं० प्रत्य०] सिंदूर के रंग का, बहुत लाल । "शोख यह सिंदूरिया का रंग है"—गालि० । एक लाल आम ।

सिंदूरी—(वि०, दे०) [सं० सिंदूर+ई प्रत्य०] सिंदूर के रंग का, अति लाल ।

सिंदोरा, सिंदौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सिंदूर] सिंदूर रखने का पात्र, सिंधोरा (ग्रा०) ।

सिंध—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सिंधु] भारत का एक पश्चिमीय प्रदेश जो अब पाकिस्तान में है । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) पंजाब की सब से बड़ी नदी, भैरव राग की एक रागिनी ।

सिंधव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सैंधव] सैंधव या सेंधा नमक, सिंध देश का घोड़ा, सिंध देश का निवासी ।

सिंधी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सिंध+ई प्रत्य०] सिंध देश की भाषा । (संज्ञा, पु०, हिं०) सिंध देश का निवासी, सिंध का घोड़ा । (वि०, हिं०) सिंध देश का, सिंध-सम्बन्धी ।

सिंधु—(संज्ञा, पु०, सं०) पंजाब के पश्चिम भाग की एक बड़ी नदी । "गंगा-सिंधु सरस्वती च यमुना"—[स्फु०] । सागर, समुद्र, सिंध देश, चार और सात की संख्या, एक राग (संगी०) ।—**ज**-(पु०) सेंधा नमक, सिंध देश का घोड़ा, चंद्रमा, विषादि, १४ रत्न, मोती ।—**जा**-(स्त्री०) लक्ष्मी ।—**जात**-(पु०) चंद्रमा ।—**तनय**-(पु०) चंद्रमा ।—**तनया**-(स्त्री०) लक्ष्मी । "सिंधु के सपूत सिंधुतनया के बंधु"—पद्मा० ।—**पुत्र**-(पु०) [सिंधुपूत (दे०)] चंद्रमा, विष, मोती ।—**माता**-(स्त्री०) समुद्र की माता सरस्वती ।—**विष**-(पु०) महा-विष, हलाहल, समुद्र का विष । "पान कियो हर सिंधु-विष, राम नाम बल पाय"—[स्फु०] ।—**सुत**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सागर सुत, चंद्रमा, जलंधर राक्षस, शंख सिंधु-सपूत ।—**सुता**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) लक्ष्मी, सीप ।—**सुतासुत**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मोती ।

सिंधुर—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथी, हस्ती, आठ की संख्या । [**सिंधुरा** (स्त्री०)] । "सिद्धिसदन सिंधुर-बदन एक रदन गनराय"—रसाल० ।—**गति**-(स्त्री०) गजगति, हाथी की सी मंद मतवाली चाल ।—**गामिनी**-(वि०) गजगामिनी, हाथी की सी चाल चलने वाली । [**सिंधुरगामी** (पु०)] ।—**मणि**-(पु०) गजमुक्ता, गजमोती । "सिंधुरमणि कंठा कलित, उर तुलसी की माल"—[रामा०] ।—**मुक्ता**-(पु०) गज मुक्ता, गज-मोती ।—**वदन**-(पु०) गणेशजी, सिंधुरानन । "एक दंत सिंधुर वदन, चार भुजा शुभ वेश"—[स्फु०] ।

सिंधुरानन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गणेश ।

सिंधूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सिंधुर] समस्त जाति का एक राग (संगी०) ।

सिंधोरा, सिंधौरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सिंदूर] सिंदूर रखने का एक काष्ठ-पात्र ।

सिंसप, सिंसपा—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) (सं० शिंशपा] शीशम या सीसों का पेड़ ।

सिंह—(संज्ञा, पु०, सं०) बिल्ली की जाति का एक पराक्रमी, बलवान् और भव्य जंगली जंतु जिसके नर वर्ग की गरदन पर बड़े बाल होते हैं, [सिंघ (दे०)], शेरबबर, केसरी, मृगराज, शार्दूल, मृगेन्द्र, बारह राशियों में से ५वीं राशि (ज्यो०), वीरता-सूचक एक शब्द, जैसे—पुरुष सिंह क्षत्रियों की एक उपाधि, छप्पय का १६ वाँ भेद (पिं०) । "वाल्मीकि मुनि-सिंहस्य कविता-वनचारिणी"—वा० रामा० टी० । [**सिंहिनी** (स्त्री०)] ।—**द्वार**-(पु०) सदर-फाटक, बड़ा दरवाजा, [सिंहपौर (दे०)] ।—**नाद**-(पु०) सिंह की गरज, लड़ाई में वीरों की ललकार, जोर देकर या ललकार कर कहना, कलहंस-नंदिनी नामक एक वर्णिक छंद (पिं०), कवियों की आत्मश्लाघा ।—**पौर**-(पु०) [सं० सिंह प्रतोली] [सिंघ-पौर (दे०)] सदर फाटक, सिंहद्वार ।—**वाहनी**-(स्त्री०) दुर्गा देवी, [सिंघबाहिनी

(दे०)] ।—**स्थ**–(वि०) सिंह राशि में स्थित (बृहस्पति) सिंहस्थित [**सिंहस्था** (स्त्री०)] देवी ।

सिंहना, सिंहिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शेरनी बाघिनी, बाघ की मादा, [सिंघिनी (दे०)] । एक मात्रिक छंद जिसके चारों चरणों में क्रम से १२, १८, २० और २२ मात्राएँ होती है (पिं०) । [**गाहिनी** (विलो०)] ।

सिंहल—(संज्ञा, पु०, सं०) भारत के दक्षिण में एक द्वीप जिसे लोग लंका भी कहते है । [सिंघल (दे०)] । [**सिंहली द्वीप** (यौ०)] । (वि० हि०) **सिंहली**] ।—**द्वीप**–(पु०) लंका द्वीप । —**द्वीपी**–(वि०) सिंहल द्वीप का, [सिंघाली (दे०)], सिंहलद्वीप का निवासी या सम्बन्धी । [**सिंहाली** (संज्ञा, स्त्री०, दे०) सिंहलद्वीप की भाषा, सिंहली ।

सिंहावलोकन–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सिंह की सी चितवन, सिंह-दृष्टि । आगे बढ़ते हुये सिंह सा पीछे देखना, आगे बढ़ने से पूर्व पहले की बातों का संक्षिप्त कथन, पद्य-रचना की एक शैली जिसमें पिछले चरणांत के कुछ वर्ण या पद आगे के चरणादि में आते हैं, [सिंह-विलोकन (दे०)] ।

सिंहासन–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा या किसी देवता के बैठने का आसन, राजगद्दी, तख्त (फ़ा०) "तुरतहिं दिव्य सिंहासन माँगा"—[रामा०] ।

सिंहिका–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राहु की माता एक राक्षसी, जिसे हनुमानजी ने लंका जाते समय मारा था । शोभन छंद (पिं०) ।

सिंहकासुत, सिंहिकासूनु–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राहु नामक ग्रह, सिंहिका पुत्र सिंहिका-तनय ।

सिंहिनी–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बाघिनी, शेरनी, शेर की मादा । "सिंहनी सी शत्रु-सेना बीच जाऊंगी चली"—**किरीट** ।

सिंही–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बाघिनी, शेरनी, आर्या छंद का ३ गुरु और ५१ लघु वर्णों वाला २५ वाँ भेद (पिं०) । एक औषधि-विशेष (वैद्य०) । **लो०**—"घनदारु सिंही शुंठी कणपुष्करजा कषायः ।"

सिंहोदरी–(वि०, स्त्री०, यौ०, सं०) सिंह की सी सूक्ष्म कटिवाली ।

सिअन, सिअनि–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सिलाई, सीवन ।

सिअरा*–(वि०, दे०) [सं०, शीतल] ठंडा, शीतल । "सिअरे बदन सूखि गये कैसे" [रामा०] । (**संज्ञा**, पु०, दे०) छाया, छाहीं, छाँह ।

सिआना–(क्रि०, सं०, दे०) [हि० सिलाना] सिलाना, सिवाना (वस्त्रादि) ।

सिआर–(संज्ञा, पु०, दे०) [दे० शृगाल] [स्यार दे०) गीदड़, शृगाल, एक जंगली जंतु । [**सिआरनी, सिआरिन** (स्त्री०)] ।

सिकंजबीन–(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सिरका, या नीबू के रस में पका शरबत ।

सिकंजा–(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शिकंजा] फंदा, जाल ।

सिकंदर–(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० सिगनल] रेल की सड़क से किनारे पर ऊंचे खम्भे मे लगा हुआ हाथ या तख्त या डंडा, जो झुक कर आती-जाती हुई गाड़ी को सूचना देता है, [सिंगल (दे०)] । (संज्ञा, पु०, फ़ा०) यूनान का एक प्रतापी सम्राट् । "सिकंदर जब चला दुनिया से दोनों हाथ खाली थे"—[स्फु०] । **मुहा०—तकदीर का**–अति भाग्यशाली ।

सिकंदरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सिकंदर] एक नगर ।

सिकड़ी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृंखला] जंजीर, साँकर, साँकल, (प्रान्ती०) । [**सिकड़ी**] (स्त्री०) ।

सिकची—(संज्ञा, पु०, दे०) सीकचा, सीखचा (फ़ा०) ।

सिकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शृंखला] किवाड़ की कुंडी, जंजीर, साँकल, करधनी, तगड़ी, जंजीर जैसे सोने का गले का एक गहना ।

सिकत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सिकता] बालू, रेत । "सूर सिकत हठि नाव चलायो ये सरिता है सूखी"—[भ्र० गी०] ।

सिकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बालू, रेत, रेग, बलुई भूमि, शर्करा, चीनी । "रसिकता सिकता दिखला रही"—सरस० । "सिकता में बरु तेल"—[रामा०] ।

सिकत्तर–(संज्ञा, पु०, दे०) [अं० सेक्रेटरी] किसी सभा या संस्था का मंत्री, वजीर, [**सिकत्तरी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)] ।

सिकन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शिकन (फ़ा०) सिकुड़न ।

सिकर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शृंखला] जंजीर, सँकरी।

सिकरवार—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षत्रियों की एक शाखा।

सिकरा—(संज्ञा, पु०, दे०) शिकरा नामक एक शिकारी पक्षी।

सिकली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० सैकल] धारदार हथियारों की धार पैनी करने या सान धरने का काम। **गर**-(पु०) [अ० सैकल+गर फ़ा० प्रत्य०] धारदार हथियारों की धार पैनी करने वाला, सान धरने वाला। "हमहिं न मार्‍यो हमहिं न मार्‍यो हम सिकलीगर अहिन तुम्हार" —आल्हा।

सिकहर, सिकहरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिक्य+धर] सीका, छींका। **मुहा०—पर चढ़ना**-इतराना।

सिकार—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शिकार] शिकार करने वाला, अहेरी, आखेटी। शिकार का जंतु।

सिकारी—(वि०, दे०) [फ़ा० शिकारी] शिकार करने वाला, अहेरी, आखेटी।

सिकुड़न—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संकुचन] संकोच, आकुंचन, शिकन, बल।

सिकुड़ना, सिकुरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० संकुचन] संकुचित या आकुंचित होना, बटुरना, संकीर्ण होना, शिकन या बल पड़ना।

सिकोड़ना, सिकोरना—(क्रि० सं०) [हि० सिकुड़ना] संकुचित करना, समेटना, बटोरना।

सिकोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० कसोरा] सकोरा, कसोरा, प्याला, मिट्टी का कटोरा।

सिकोला, सिकौला-(संज्ञा, पु०, दे०) काँस, मूंज या बेंत आदि की डलिया।

सिकोही—(वि०, दे०) [फ़ा० शिकोह] वीर, बहादुर, गर्वीला, आनबान वाला, अभिमानी, गुमानी।

सिक्कड़, सिक्कर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सीकर] पानी की बूँद या छींट, जल-कण, पसीना। *† (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शृंखला] जंजीर।

सिक्का—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सिक्कः] छापा, मुहर, छाप, ठप्पा, मुद्रित चिह्न, रुपया, अशर्फी, पैसा, मुद्रा, इन पर राजकीय छाप, निश्चित मूल्य का टकसाल में ढला धातु का टुकड़ा। **मुहा०—बैठना या जमना**-अधिकार या प्रभुत्व होना, रोब या आतंक जमाना, धाक, बैठना। पदक, तमगा, मुहर पर अंक बनाने का ठप्पा।

सिक्ख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिष्य] शिष्य, चेला, गुरु नानक का अनुयायी, नानक पंथी, [सिख (दे०)]।

सिक्त—(वि०, सं०) सींचा या भीगा हुआ, तर, गीला। [**सिक्तता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

सिखंड—(संज्ञा, पु०, दे०)[सं० शिखंड] शिखंड चोटी, शिखा। "बालानाम् तु शिखा प्रोक्ता काकपक्ष शिखंडकौ"—अमर०। **शिखंडी**—(वि०, सं०) सिखंड वाला, एक राजा (महा०)।

सिख—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिक्षा] शिक्षा, सिखावन, उपदेश, सिखापन [सीख (दे०)]। "सिख हमारि सुन परम पुनीता"—[रामा०] (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिष्य] शिष्य, शागिर्द, चेला, गुरु, नानक के अनुयायी, सिक्ख। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिखा] शिखा, चोटी। "नख सिख तें सब रूप अनूपा"—[रामा०]।

सिखना†*—(क्रि० स०, दे०) [हि० सीखना] सीखना, सिखवना। [**सिखाना, सिखावना** (स० रूप)], [**सिखवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सिखर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिखर] शृंग, शिखर, पहाड़ की चोटी।

सिखरन—(संज्ञा स्त्री०, दे०) [सं० श्रीखंड] दही, दूध और चीनी मिला पदार्थ, [सिकरन (दे०)] मूरन (ग्रा०)।

सिखलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० सिखाना] सिखाना।

सिखवना—(क्रि० स०) सिखलाना।

सिखा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिखा] शिखा, चोटी।

सिखाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [स० शिक्षा] शिक्षा, उपदेश, पढ़ाई।

सिखाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० शिक्षण] शिक्षा या उपदेश देना, पढ़ाना। —**पढ़ाना**-चालाकी सिखाना।

सिखापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिक्षा+पन हि०] शिक्षा, उपदेश, सिखाने का काम।

सिखावन—(संज्ञा, पु०, दे०) [शिक्षण] सीख, शिक्षा, उपदेश, सिखापन। [**सिखावनि (स्त्री०)**]।

सिखावना*†—(क्रि० स०) [हिं० सिखाना] सिखाना।

सिखिर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिखर] पर्वत-शृंग, शिखर, चोटी।

सिखी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिखी] मोर, मयूर, बर्हीं।

सिगरा, सिगरो, सिगरौ*†—(वि०, दे०) [सं० समग्र) समस्त, सम्पूर्ण, सब का सब, सारा। [**सिगरी** (स्त्री०)]।

सिचान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सचान] बाज पक्षी। "मन मतङ्ग गैयर हनै, मनसा भई, सिचान" —कबीर।

सिचाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सिचना का स० रूप] पानी दिलाना, सिचाना।

सिच्छा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिक्षा] शिक्षा, उपदेश, सीख। "चक्रधर सिच्छा को समिच्छा करि लैहों मैं"—भव०।

सिजदा—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रणाम, दण्डवत।

सिझना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सिद्ध] आँच पर पकना, सिझाया जाना।

सिझाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० सिद्ध] आँच पर पका कर गलाना, तपस्या करना, [सिझावना (दे०)]। [**सिझवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सिटकिनी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) चटकनी, चट-खनी, किवाड़ बन्द करने का यन्त्र।

सिटपिटाना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) दब जाना, मंद पड़ जाना।

सिट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सीटना] बहुत ही बढ़-बढ़ कर बोलने वाला, वाक्पटुता। **मुहा०** —**पट्टी भूलना**—सिटपिटा जाना।

सिठनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अशिष्ट] ब्याह के समय गाने की गाली, साठना (प्रान्ती०)।

सिठाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सीठी] नीर-सता, फीकापन, मंदता। [**मिठाई** (विलो०)]।

सिड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पागलपन, सनक, धुन, उन्माद।

सिड़ी—(वि०, दे०) [सं० शृणक] उन्मत्त, पागल, बावला, सनकी, धुनी।

सित—(वि०, सं०) उज्ज्वल, श्वेत, धवल, सफेद, चमकीला, स्वच्छ, साफ। "करन समीप भये सित केसा"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) उजाला पाख, शुक्ल-पक्ष। चाँदी। चीनी। शक्कर। "सितोपला षोडशकं स्यात्"—भा० प्र०।—**कंठ** —(वि०) सितग्रीव, श्वेत गले वाला। (पु०) महा-देव। "दस कंठ के कंठन को कठुला सितकंठन को करिहौं—[रामा०]।—**कर**—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सितांशु, चन्द्रमा, सितरश्मि।—**पक्ष**—(पु०) हंस पक्षी, धवल या श्वेत पक्ष, शुक्ल-पक्ष।—**भानु** —(पु०) चंद्रमा, सितरश्मि।—**वराह**—(पु०) श्वेत शूकर, सफेद सुअर।—**वराह-पत्नी**—(स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।—**सागर**—(पु०) श्वेत सागर, क्षीर सागर, सफेद समुद्र।

सितता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सफेदी, उज्ज्वलता, श्वेतता, धवलता।

सितम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) अन्याय, जुल्म, अत्याचार, अनर्थ, गजब। "हँस-हँस के सितम ढाना पेशा है तुम्हारा"—[स्फु०]।—**गार**—(पु०) अन्यायी, जालिम, अत्याचारी। "माशूक सितमगर ने मेरी एक न मानी"—[स्फु०]।—**दीदह**— (वि०) जिसने अन्याय या जुल्म देखा हो, मज-लूम।

सितरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पसीना, स्वेद।

सितला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शीतला] शीतला, चेचक, सीतला।

सितांशु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सितरश्मि, [चन्द्रमा (दे०)], शीतांशु।

सिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मिश्री, शक्कर, चीनी। "दूनी सिता डारि दिन प्रीति सों खवाइये"— [कुज वि०]। शुक्ल पक्ष, मोतिया, मल्लिका, शराब, मद्य। "सिता, मधूक, खर्जूर"—[भा० प्रा०]। —**खंड**—(पु०) मिश्री, शहद से बनाई हुई शक्कर।

सिताब, सिताबी—(क्रि० वि०, दे०) [फ़ा० शिताब] झटपट, शीघ्र, जल्दी, फौरन, सत्वर, तुरंत, तत्काल। "तातें ढील न होय काम यह है सिताब को"—सुजा०।

सिताभा, सिताभ—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सित+आभा] धवलकांति, चन्द्रमा।

सितार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सप्ततार या फ़ा० सहतार] सात तारों का एक बाजा। [**अल्पा०** **सितारी** (स्त्री०)]।

सितारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सितारः]। नक्षत्र, तारा । भाग्य, क़िस्मत, प्रारब्ध ।—(ए) हिंद-(पु०) एक उपाधि जो अंग्रेजी सरकार की ओर से दी जाती थी। "सितारेहिंद शिवपर शाद बाबू"—द० ला० । मुहा०—**गर्दिश पर होना**-भाग्य चक्र का चक्कर लगाना, दुर्भाग्य होना ।—**चमकना या बलंद होना**-भाग्योदय होना, अच्छी भाग्य होना । सोने या चाँदी की गोल बिंदी, जिसे शोभार्थ वस्तुओं पर लगाते हैं, चमकी (प्रान्ती) । (संज्ञा, पु०) सितार ।

सितारिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सितार + इया प्रत्य०] सितार बजाने वाला ।

सितारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० सितार] छोटा सितार ।

सितासित—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्वेत-श्याम, सफेद-काला, उजाला-नीला, बलदेव जी । "सितासित जलधाराओं का जहाँ होता है सम्मेलन"—[स्फु०] ।

सिति—(वि०, दे०) [सं० शिति] श्वेत, शुक्ल, सफेद, काला, कृष्ण ।—**कंठ**-(पु०) [सं० शितिकंठ] महादेव, नीलकंठ ।

सितुई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) । (संज्ञा, स्त्री०) [हि० सत्तू] [सितुआसी (दे०)] । सितुआ संक्रांति ।

सुतोत्पल—(संज्ञा, पु०, सं०) श्वेत कमल ।

सिथिल*—(वि०, दे०) [सं० शिथिल] क्लान्त, शिथिल, ढीला, थका, माँदा, हारा, सुस्त । [**सिथिलता, सिथिलाई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]

सिदरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सहदरी] तीन द्वार की दालान, तीन द्वार का बरामदा ।

सिदिक—(वि०, दे०) [अ० सिदक] सत्य, सच्चा ।

सिदौसी—(क्रि० वि०, दे०) शीघ्र, जल्दी, तुरंत, तत्काल । "आप सिदौसी लौटिया, दोजा लाय सँदेस ।"

सिद्ध—(वि०, सं०) जिसका साधन पूर्ण हो चुका हो, संपन्न, प्राप्त, संपादित, उपलब्ध, प्राप्त, सफल-प्रयत्न, कृतकार्य, कृतार्थ, हासिल । योगादि से सिद्धि प्राप्त योगी, तपस्वी, मोक्षाधिकारी, मुक्त, योग-विभूति-प्रदर्शक प्रमाण या तर्क से निश्चित या निर्धारित, प्रमाणित । जिस कथन के अनुसार कुछ हुआ हो, निरूपित, प्रतिपादित, साबित, अनुकूल किया हुआ, कार्य-साधन के उपयुक्त या अनुकूल किया या बनाया हुआ, आँच से पकाया या उबाला हुआ । महात्मा । पहुँचा हुआ । लो० —"घर का जोगी जोगड़ा और गाँव का सिद्ध ।" (संज्ञा, पु०, सं०) योग या तप से सिद्ध-प्राप्त व्यक्ति, ज्ञानी, भक्त, महात्मा, एक प्रकार के देवता, एक योग (ज्यो०) ।—**काम**-(वि०) सफल-मनोरथ, पूर्ण मनोरथ, कृतार्थ, सफल, कृतकार्य ।—**गुटिका**-(स्त्री०) मंत्रद्वारा सिद्ध की हुई वह रासायनिक गोली जिसे मुख में रखने से योगी का अदृश्य होने या सब स्थानों मे शीघ्र पहुचने की शक्ति प्राप्त होती है, खेचरी गुटिका ।—**त्व**-(पु०) सिद्धता ।—**नाथ**-(पु०) महादेव, शिव ।—**पीठ**-(पु०) ऐसा स्थान जहाँ तपस्या, योग और तांत्रिक प्रयोग शीघ्र सिद्ध होते हो, सिद्धाश्रम, सिद्ध-भूमि ।—**रस**-(पु०) पारा ।—**रसायन**-(पु०) दीर्घजीवी और शक्तिशाली करने वाली एक रसादिक औषधि ।—**हस्त**-(वि०) दक्ष, निपुण, कुशल, जिसका हाथ किसी कार्य में मँज गया हो, पटु ।

सिद्धता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सिद्ध होने की दशा या अवस्था, सिद्धि, पूर्णता, प्रमाणिकता, सिद्धत्व, सफलता, सिद्धताई (दे०) ।

सिद्धांजन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह अंजन जिसके प्रभाव से पृथ्वी में गड़ी वस्तुएँ दिखलाई देती हैं ।

सिद्धांत—(संज्ञा, पु०, सं०) निर्धारित विचार, निश्चित मत, सोच-विचार के पीछे स्थिर किया हुआ मत, उसूल, प्रधान मंतव्य, मुख्य अभिप्राय या उद्देश्य, मत, ऐसी बात जो विद्वानों या उनके किसी वर्ग या संप्रदाय के द्वारा सत्य मानी जाती हो, निर्णीत विषय या अर्थ, तत्व की बात, पूर्व पक्ष के खंडन के पीछे स्थिर मत, ज्योतिष आदि शास्त्रों पर लिखी हुई कोई पुस्तक-विशेष । "यह सिद्धांत अपेल"—[रामा०] ।—**कौमुदी**-(स्त्री०) संस्कृत व्याकरण का एक सुप्रसिद्ध ग्रंथ जिसकी रचना भट्टोजदीक्षित ने की थी ।—**ज्ञ**-(वि०) सिद्धांत का जानकार ।—**पक्ष**-(पु०) वह पक्ष जो तर्क संगत हो ।

सिद्धांती—(संज्ञा, पु०, सं०) मीमांसक, विचारक, सिद्धांत-ग्रंथों का ज्ञाता ।

सिद्धांतीय—(वि०, सं०) सिद्धांत-सम्बन्धी, सिद्धांत वाला, सैद्धांतिक ।

सिद्धा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सिद्धपुरुष की स्त्री देवांगना, १३ गुरु और ६१ लघु वर्णों वाला आर्य्या छंद का पन्द्रहवाँ भेद (पिं०)।

सिद्धाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सिद्ध + आई स्त्री० प्रत्य०] सिद्धता, सिद्धत्व, सिद्धपन, सिद्ध होने की दशा, [सिद्धई (दे०)]।

सिद्धार्थ—(वि०, सं०) कृतार्थ, पूर्ण-काम, पूर्ण मनोरथ, पूर्ण कामना वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) जैनों के २४ वें अर्हत महावीर के पिता, गौतम-बुद्ध।

सिद्धाश्रम—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सिद्ध पुरुषों या देवताओं के रहने का स्थान, हिमालय पहाड़ पर सिद्ध लोगों का एक स्थान, सिद्धि-प्राप्ति का स्थान।

सिद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) कामना, इच्छा या मनोरथ का पूर्ण होना, सफलता मिलना, प्रयोजन निकलना, कामयाबी। "कौनउ सिद्धि कि बिनु विश्वासा"—[राम०]। प्रामाणित या सिद्ध होना, निश्चय या निर्धारित किया जाना, फैसला, निर्णय, स्थिर या साबित होना, सीझना, पकना, तपस्या या योग की पूर्ति का दिव्य फल, विभूति, ऐश्वर्य, योग की ८ सिद्धियाँ :—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकम्य, ईशित्व, वशित्व मोक्ष, मुक्ति, दक्षता, निपुणता, पटुता, कौशल, दक्ष प्रजापति की एक कन्या और धर्म्म की पत्नी, गणेश जी की दो स्त्रियों में से एक, विजया, भाँग, छप्पय का ३० गुरु और ९२ लघु वर्णों वाला ४१ वाँ भेद। "आठ सिद्धि नौ निधि के दाता"—ह० चा०।—**कारक**–(वि०) उद्देश्य प्राप्ति कराने वाला।—**कारी**–(वि०) लक्ष्य-सिद्धि कराने वाला।—**गुटिका**–(स्त्री०) रसायन आदि बनाने की गुटिका या गोली।—**दाता**–(पु०) गणेश जी। "अखिल सिद्धिदाता सदा, तुमहीं एक गणेश" —[स्फु०]।—**प्रद**–(वि०) सिद्धिदायक।—**लाभ**–(पु०) सिद्धि-प्राप्ति।—**स्थान**–(पु०) तीर्थ-स्थान।

सिद्धीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गणेश जी।

सिद्धेश, सिद्धेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) महादेव, महायोगी, बड़ा सिद्ध, [illegible] [सिद्धेश्वरी (स्त्री०)]। "[illegible] सिद्धि दै, पूरौ मन की आस"—शि० [illegible]]—"

सिधाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सीधा] सीधापन, सरलता, ऋजुता। "कतहुँ सिधाइहु ते बड़ दोषू"—[रामा०]।

सिधाना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सिधारना] प्रस्थान या गमन करना, जाना, मरना। (क्रि० स०, दे०) [हि० सीधा] सीधा करना, सुधारना।

सिधारना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सिधाना] प्रस्थान या गमन करना, जाना, मरना, स्वर्ग-वासी होना। "यह कहिकै स्वर्ग-पुर दसरथ सिधारे"—हरिश्चन्द्र। ‡* (क्रि० स०, दे०) [हि० सिधरना] सुधारना, बनाना, सँवारना, ठीक करना।

सिधि*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सिद्धि] सिद्धि, सफलता, योग से प्राप्त शक्ति, आठ सिद्धियाँ।

सिन—(संज्ञा, पु०, अ०) अवस्था, उम्र, आयु।

सिनक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सिंहाणक] नाक का मैल।

सिनकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सिनक] बड़े जोर से वायु को नथनों से निकाल कर नाक का मल बाहर फेंकना, [छिनकना (दे०)]।

सिनि, सिनी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिनि] सात्यकि का पिता एक यदुवंशी, क्षत्रियों की एक पुरानी शाखा।

सिनीवाली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक देवी (वैदिक), शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा।

सिन्नी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० शीरीनी] मिठाई, वह मिठाई जो किसी देवता या पीर पर चढ़ा कर प्रसाद की रीति से बाँटी जावे। **मुहा०**—**मानना, चढ़ाना**—मनौती मानना, प्रसाद बाँटना।

सिपर—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) ढाल। "तलवार जो घर में तो सिपर बनियों के याँ है"—सौदा०।

सिपहगरी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सिपाही का काम, लड़ने का काम या पेशा। "न बेजा मरने को लड़कर सिपहगरी जाने"—सौदा०।

सिपहसालार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सेनापति।

सिपारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सिपारः] [illegible]

सिपारा—([illegible]) [illegible] एक अध्याय।

सिपाह—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सेना, फ़ौज।—**गिरी**–(संज्ञा, स्त्री०) सिपहगरी, सिपाही का काम, युद्ध-व्यवसाय।

सिपाहियाना—(वि०, फ़ा०) सिपाहियों या सैनिकों का सा, सिपाहाना।

सिपाही—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) शूर, योद्धा, सैनिक, तिलंगा (ग्रा०), चपरासी, कांस्टेबिल, [सिपाई (दे०)]। "सिपाही रखते थे नौकर अमीर दौलतमंद"—सौदा०।

सिपुर्द‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सुपुर्द] हवाले या सुपुर्द करना, सौंपना, [सिपुरुद (दे०)]। **मुहा०—होना**–हवाले होना, सौंपा जाना।

सिप्पर—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सिपर] सिपर, ढाल।

सिप्पा—(संज्ञा, पु०, दे०) कार्य्य साधने का उपाय, तदबीर, यत्न, युक्ति, पत्ताघात, सूत्रपात, रोब। धाक, प्रभाव, रंग। **मुहा०—जमाना** (**जमना**)–भूमिका बाँधना, किसी कार्य के अनुकूल परिस्थिति के साधनादि उत्पन्न करना।—**बैठना** (**लगना**)–कार्य-सिद्धि की युक्ति का सफल होना, डौल लगना।—**बाँधना**–धाक जमाना।

सिप्र—(संज्ञा, पु०, सं०) निदाघ, पसीना, स्वेद, जल, पानी।

सिप्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महिषी, भैंस, मालवा की नदी जिसके तट पर उज्जैन है, [छिप्रा (दे०)]।

सिफत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) विशेषता, लक्षण, गुण, हुनर, स्वभाव, प्रकृति।

सिफर—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० साइफ़र] शून्य, जीरो, सीफर (ग्रा०) [सुन्ना, सुन्न (दे०)]।

सिफला—(वि०, अ०) बेसमझ, बेवकूफ, ओछा, नीच, कमीना, छिछोरा। [**सिफलापन** (संज्ञा)]।

सिफात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) सिफत का बहुवचन, गुण, लक्षण, हुनर। "हैं आप के सिफात आफ़ताब से रोशन"—[स्फु०]।

सिफ़ारिश—(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) किसी का अपराध क्षमा कराने या किसी की भलाई कराने के हेतु किसी से उसके विषय में कुछ प्रशंसा या भलाई की बातें कहना-सुनना, अनुरोध।

सिफ़ारशी—(वि०, फ़ा०) जिसकी सिफारिश की गई हो, जिसमें सिफ़ारिश हो।—**टट्टू**–(पु०) सिफ़ारिश से किसी ऊँचे पद को प्राप्त अयोग्य व्यक्ति।

सिबिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिविका] पालकी। "तत्तद्विरागमुदित शिविका धरस्थः"—[नैष०]। "सिबिका सुभग सुखासन याना"—[रामा०]।

सिमंत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सीमंत] स्त्रियों की माँग, हड्डियों का संधिस्थान। द्विजतियों की गर्भवती स्त्रियों के लिए एक संस्कार।

सिमटना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० सिमित+ना हि०] संकुचित या इकट्ठा होना, सिकुड़ना, निबटना, पूरा होना, लज्जित होना, बटुरना, सहमना, शिकन या सिलवट पड़ना, क्रम से व्यवस्थित होना, समिटना। [**सिमटाना** (क्रि० स०)], [**सिमटवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सिमर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शाल्मली] सेमर वृक्ष विशेष। "चंदन भस्म सिमर आलिगन सालि रहल हिय काँट"—विद्या०।

सिमरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्मरण] सुमिरन, स्मरण, याद।

सिमरना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्मरण] स्मरण, याद, ध्यान, सुमिरना।

सिमाना†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सीमांत] सिवाना, सीमा-रेखा, सीमा का चिह्न, हदबन्दी। *† (क्रि० स०, दे०) [हि० सिलाना] सिलाना।

सिमिटना, सिमटना†*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सिमटना] सिमटना, इकट्ठा होना [समिटना (दे०)]।

सिमृति*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्मृति] स्मृति, सुधि, याद, सुमिरण, स्मरण।

सिमेटना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० समेटना] समेटना, इकट्ठा करना, लपेटना, बटोरना, तह करना।

सिमत—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) दिशा।

सिय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सीता] सीताजी, जानकी जी। "जो सिय भवन रहै कह अंबा"—[रामा०]।

सियना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सृजन] उत्पन्न करना, रचना, बनाना। (क्रि० स०, दे०) [हि० सीना] सीना, [सिउना, सिवना, सिअना (दे०)]।

सियरा*—(वि०, दे०) [सं० शीतल] शीतल, ठंढा, कच्चा। [सियरी (स्त्री०)]। "सियरे वचन अगिन सम लागे"—वासु०।

सियराई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सियरा] शीतलता। "यश गावत रसना सियराई"—शि० गो०।

सियराना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सियरा + ना प्रत्य०] शीतल या ठंडा होना, जुड़ाना, बीतना, समाप्त होना। "सियरानी कौ देखि सबै सियरानी"—सरस०।

सिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सीता] सीताजी, जानकीजी। "सियाराम मय सब जग जानी"—[रामा०]। (सा० भू० क्रि० स०) [हि० सियना] सिला हुआ।

सियाना—(वि०, दे०) [सं० सज्ञान] [सयाना (दे०)] चतुर, प्रवीण, निपुण, निपुण, दक्ष, अभिज्ञ। लो०—"काजर की कोठरी मैं कैसहू सियानो जाय"—[स्फु०]। (क्रि० स०, दे०) [हि० सिलाना] सिलाना, [सियावना (दे०)]।

सियाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सीना] सिलाई, सीना, सीने का काम या मजदूरी।

सियापा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फा० सियाहपोश] कई एक स्त्रियों का किसी की मृत्यु पर मिल कर शोक सूचनार्थ रोना।

सियार, सियाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृगाल] जंबुक शृगाल, गीदड़, स्यार। [**सियारी, सियारिन** (स्त्री०)]।

सियाला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शीत काल] शीत काल, जाड़े की ऋतु।

सियासत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शासन, व्यवस्था, हुकूमत।

सियाह—(वि०; दे०) [फा० स्याह] काला, स्याह, नीले रंग का।—**गोश**–(पु०) [फा० स्याह + गोश] बन-बिलार, जंगली बिल्ली।

सियाहा—(संज्ञा, पु०, फा०) [स्याहा (दे०)]। आय-व्यय की बही, रोजनामचा, सरकारी खजाने को जमींदारों से प्राप्त मालगुजारी की बही या रजिस्टर। "वह लाये कचहरी से जी हामी का सियाहा"—सौदा०।—**नवीस**–(पु०) सरकारी खजाने का सियाहा लिखने वाला। [**सियाहा-नवीसी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सियाही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फा० स्याही] स्याही, रोशनायी, मसि, कालिमा। "सियाही है सफेदी है चमक है अबवारां है"।

सिर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिर] खोपड़ी, मूँड़, कपाल, सर, देह का सबसे ऊपरी और अगला गोल तल या कुछ लंबा-सा वह भाग जिसमें नाक, कान, आँख आदि हैं।—**कटा**–(वि०) जिसका सिर कट गया हो, दूसरों का अहित करने वाला। [**सिरकटी** (स्त्री०)]।—**काटना**–(क्रि० स०, यौ०, हि०) मूँड़ काटना, हानि पहुँचाना।—**काढ़ना**–(क्रि० स०) प्रसिद्ध होना, प्रस्तुत या उद्यत होना।—**खपी**–(स्त्री०) परिश्रम, हैरानी, परेशानी, जोखिम।—**चंद**–(पु०) हाथी के सिर का अर्द्ध चन्द्राकार एक गहना।—**ताज**–(पु०) सरताज, मुकुट, शिरोमणि, सरदार। "औ रस मिलै औ सिरताज कछू पूछहिं तौ"—रत्ना०।—**तापा**–(क्रि० वि०, दे०) [फा० सर + ता—तक + पा—पैर] सिर से लेकर पाँव तक, सर्वांग, आद्योपान्त, आदि से अंत तक सरापा।—**त्राण**–(पु०) [सं० शिरस्त्राण] टोपी, पगड़, साफा।—**दार***†–(संज्ञा, पु०, दे०) [फा० सरदार] अफसर, अमीर। [**सिरदारी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]—**नामा**–(पु०) [फा० सरनामः] लिफाफे पर लिखा जाने वाला पता, किसी लेखादि का विषय-सूचक वाक्य, सुर्खी, शीर्षक।—**नेत्र**–(पु०) टोपी, पगड़ी, साफा, चीरा (प्रान्ती०) क्षत्रियों की एक जाति।—**पाँव,—पाव**–(पु०) सिर से पाँव तक के पहनने के वस्त्र आदि जो किसी राज-दरबार से सम्मानार्थ किसी को दिये जाते हैं, खिल-अत।—**पेंच,—पेच**–(पु०) पगड़ी, पगड़ी पर बाँधने का एक गहना।—**पोश**–(पु०) टोपी, टोपा, कुलाह, सिर का ढकने वाला।—**फूल**–(पु०) एक शिरोभूषण, सिर का गहना, शीश-फूल, सीसफूल।—**फेंट,—फेंटा**–(पु०) साफा, सिरबंद।—**फोड़ौवल**–(स्त्री०) झगड़ा, लड़ाई, मार-पीट।—**बंद**–(पु०) [फा० सरबंद] साफा, सिरफेंटा, सिरफेंट।—**बंदी**–(स्त्री०) मस्तक पर पहनने का एक गहना।—**मौर,—मौरि**–(पु०) सिरमुकुट, शिरोमणि, सिरताज। मुहा०—आँखों

—पर होना–हर्ष-पूर्वक स्वीकार होना, माननीय होना।—आँखों पर बैठाना (लेना)–अत्यन्त आदर सत्कार या प्रेम करना।—पर आना (भूतादि का)–आवेश होना, देवी, देव (या भूतादि) का प्रभाव होना, खेलना।—उठना–विरोध का साहस होना, उपद्रव करने का दम होना।—उठाना–विरोध में खड़ा होना या सामना करना, प्रतिष्ठा से खड़ा होना, उपद्रव या ऊधम मचाना, सामने मुँह करना, लज्जित न होना।—(अपना या और का) ऊँचा (करना) होना–प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना, सम्मान देना (होना), प्रतिष्ठा-या मान मर्यादा बढ़ाना (बढ़ना) साहस या सामना करना (होना)।—करना–स्त्रियों के बाल सँवारना, वेणी बनाना, चोटी गूँधना।—के बल जाना–किसी के समीप अति आदर से जाना। "सिर बल जाऊँ धरम यह मोरा"—[रामा०]।—(खोपड़ी) खाली करना–व्यर्थ बहुत बकवाद करना, माथा पच्ची करना, सोच-विचार मे हैरान होना, सिर खपाना।—(खोपड़ी) खाना–बकवाद करके जी उबाना।—(खोपड़ी) खपाना–सोचने-विचारने में हैरान-परेशान होना। बहुत बकना, कार्य में व्यस्त होना।—खप—खपा–(वि०, दे०) मनचला पुरुष, अपनी टेक पर अटल।—घूमना–सिर में दर्द होना, घबराहट या मोह होना' बेहोशी होना।—चकराना–दिमाग का चक्कर करना, सिर घूमना।—पर चढ़ना–मुँह लगना। किसी के—पर चढ़ना–बहुत मुँह लगना, (भूतादि का) आवेश आना।—चढ़ाना–पूज्य भाव दिखाना, बहुत खातिर करना, आदर-प्रेम से माथे से लगाना।—पर लेना–बहुत बढ़ा देना, मुँह लगाना, सिर दर्द पैदा करना।—(शीश) झुकाना,—नवाना–सादर प्रणाम नमस्कार करना, लज्जा से गरदन नीची करना।—देना–प्राण निछावर करना, जान देना, मन लगाना, दिमाग लगाना, प्रणाम करना।—धरना–सादर अंगीकार या स्वीकार करना। (—माथे लेना)—धुनना–शोक या पश्चात्ताप से सिर पीटना, पछिताना। "सिर धुनि धुनि पछिताय"—[रामा०]।—नीचा करना होना–शर्माना, लज्जा से सिर झुकाना (झुकना) गर्व चूर करना (होना)।—पटकना–सिर धुनना, सिर फोड़ना, बहुत परिश्रम या शोक करना, पछताना, हाथ मलना।—पर पाँव रखना–बहुत जल्द भाग जाना, हवा होना।—पर पड़ना–जिम्मे पड़ना, अपने ऊपर गुजरना या घटित होना।—पर खून चढ़ना या सवार होना–जान या प्राण लेने पर उतारू होना, हत्या के कारण उन्मत्त हो जाना, आपे मे न रहना। (किसी के)—पर चढ़ना–भूतादि का आवेश आना, मुँह लगना।—पर चढ़ कर बोलना–पूरा प्रभाव प्रगट करना।—पर नाचना (खेलना) (मृत्यु आदि)–अति संनिकट होना। "तिय मिस मीच सीस पै नाची"—[रामा०]।—पर होना (आना)–थोड़े ही दिन रह जाना, बहुत निकट होना।—पड़ना–पीछे पड़ना, जिम्मे पड़ना, उत्तरदायित्व या भार ऊपर दिया जाना, ऊपर आ पड़ना या घटित होना, हिस्से में आना, पीछे या गले पड़ना।—पर (आ) पड़ना–ऊपर आ पड़ना, या घटित होना, गुजरना, जिम्मे आ पड़ना, ऊपर भार आना। (किसी का)—पिटना–(किसी के) मत्थे पड़ना या जाना।—फिरना–सिर घूमना या चकराना, पागल होना, उन्माद होना।—मारना–समझाते समझाते या सोचने विचारने मे हैरान या परेशान होना, सिर खपाना।—मुड़ाते ही ओले पड़ना–प्रारंभ में ही काम बिगड़ना, कार्य्यारंभ में ही विघ्न पड़ना।—(पर) सेहरा होना–किसी कार्य का श्रेय प्राप्त होना, वाहवाही मिलना।—से पैर तक (सरापा)–आदि से अंत तक, अथ से इति तक, सर्वांग में, आद्योपान्त, पूर्णतया।—पर आना–ऊपर आ जाना, अति निकट आना (विपत्ति आदि)।—से पैर तक आग लग जाना–अत्यन्त क्रोध आना।—से कफन बाँधना–मरने को तैयार होना।—से खेल जाना–प्राण दे देना।—पर सींग होना–कोई विशेषता होना।—पर सवार रहना (होना)–सदा उद्यत या पास रहना, देख-रेख करते रहना।—होना–गले पड़ना, पीछे पड़ना, पीछा न छोड़ना, किसी बात का हठ करके बार-बार तंग करना, झगड़ा करना, उलझ पड़ना। किसी बात के—होना–समझ या ताड़ लेना।—के बाल सफेद होना–वृद्धावस्था आना, खूब अनुभव होना। सिरा, चोटी, अगला भाग, छोर।

सिरका—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) धूप में रख कर खट्टा किया गया ईख आदि का रस।

सिरकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरकंडा] धूप और वर्षा से रक्षा के लिए छतों, गाड़ियों आदि

पर लगाने की सरकंडे की टट्टी, सरई, सरकंडा । "राधा सिरकी ओट ह्वै, हेरति माधव ओर"—रत० ।

सिरगा—(संज्ञा, पु०, दे०) घोड़े की एक जाति ।

सिरजक*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सिरजना] सृष्टि-कर्त्ता, बनाने या उत्पन्न करने वाला, रचने वाला । "सिरजक सब संसार को सब में रहा समाय"—[स्फु०] ।

सिरजन—(संज्ञा, पु०, सं०) सृष्टि, निर्माण । **—हार, —हारा***–(पु०) सृष्टिकर्त्ता, बनाने या उत्पन्न करने वाला, रचने वाला । परमेश्वर । "खालिक बारी सिरजनहार"—अ० खु० ।

सिरजना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० सृजन] बनाना, उत्पन्न करना, रचना, सृष्टि करना । (क्रि० स०, दे०) [सं० संचय] इकट्ठा या संचय करना, जोड़ना ।

सिरजित*—(वि०, दे०) [सं० सृजित] रचित, बनाया हुआ, निर्मित ।

सिरमनि*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० शिरोमणि] शिरोभूषण, सिरमौरि, सिरमौर, शिरोमणि । (वि०, यौ०, हि०) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ ।

सिररुह—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० शिरोरुह] सिर के बाल ।

सिरस, सिरिस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिरीष] शीशम जैसा अति मृदु पुष्प वाला एक पेड़ । "सिरस-कुसुम मड़रात अलि, भूमि झपट लपटात"—बिहारी । सिरिस कुसुम सम बाल के कुम्हिलाने सब गात"—मति० । "सिरस सुमन किमि बेधिय हीरा"—[रामा०] ।

सिरसींगा—(वि०, दे०, यौ०) [सं० शिरश्रृंगिन्] झगड़ालू, बखेड़िया, लड़ाका, फसादी ।

सिरहना, सिरहाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिरसाधान] पलंग, खाट या चारपाई में सिर की ओर का खंड । लेटते समय सिर के नीचे रखने की तकिया या वस्त्र । उसीस (ग्रा०) । "मिट्टी ओढ़न मिट्टी डासन मिट्टी का सिरहाना"—कबीर ।

सिरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सिर] आरंभ का भाग, ऊपरी या आगे का भाग, छोर, अंतिम भाग, अनी, नोक, किनारा, लम्बाई का अंत । **मुहा०—(रे) का—सर्वप्रथम, अव्वल दर्जे का ।** **(परले या पल्ले) (रे) का**—सबसे अधिक, अव्वल दर्जे का । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिरा] रक्तवाही नाड़ी, सिंचाई की नाली, नस, रग । "हंस, कबूतर चाल को, कफी सिरा ले जान"—कुंज वि० ।

सिराजी—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शीराज=नगर] शीराज का घोड़ा, कबूतर या शराब, शीराज का निवासी । "अगर आँ तुर्क शीराजी बदस्त आदर दिले मारा"—हाफि० ।

सिरात—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सीराना] शीतल, ठंडा, शीत, जूड़, बीतना । "प्रिय-वियोग में बावरी कैसे रैन सिरात"—[स्फु०] ।

सिराना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सीरा+ना] शीतल, शीत या ठंडा होना, जुड़ाना । सेराना (ग्रा०), शिथिल या मंद पड़ना, निराश या हतोत्साह होना, समाप्त या खतम होना । नाश होना या मिटना, बीत या गुजर जाना । काम से छुट्टी मिलना । दूर होना । (क्रि० स०, दे०) शीतल या ठंडा करना, बिताना या समाप्त करना, सियराना (ब्र०) । "जनम सिराने जात है जैसे लोहे तावरे"—[स्फु०] । "सब सुख सुकृत सिरान हमारा"—[रामा०] । "चरचहि सिगरी रैनि सिरानो"—प्राणनि० ।

सिरावना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० सिरावा] सिराना, शीतल या ठंडा करना, सेराना, सेरवाना (ग्रा०), बिताना, गुजारना, समाप्त करना, बहा या फेंक देना, डुबो देना । "तुलसी भाँवर के परे, नदी सिरावत मौर"—तुल० ।

सिरिश्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सरिश्तः] महकमा, विभाग ।—(ते) **दार**—(संज्ञा, पु०, दे०, फ़ा०) मुकदमे के कागज आदि का रखने वाला कचहरी का कर्मचारी, [सरिश्तेदार (दे०)] । [**सरिश्तेदारी** (स्त्री०)] ।

सिरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्री] लक्ष्मी, शोभा, आभा, कांति श्री, रोचन । रोली, मस्तक या गले का गहना, कंठसिरी । [**सिड़ी** (वि०, दे०, हि०)] पागल ।

सिरीपाउ, सिरीपाव—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० सिर+पाँव] सिर से लेकर पाँव तक के पहनने का सामान, पगड़ी से लेकर जूता तक पहनावा जो किसी राजा के यहाँ से किसी को दिया जावे, खिलअत, सिरोपाँव ।

सिरोमनि—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० शिरोमणि, चूड़ामणि, शिरोभूषण, सिरताज, सिरमौर, सर्वश्रेष्ठ।

सिरोरुह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिरोरुह] शिरोरुह, बाल।

सिरोही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक काली चिड़िया या पक्षी विशेष। (संज्ञा, पु०) राजपूताने का एक नगर जहाँ की तलवार अच्छी होती है, तलवार, लाठी (ग्रा०)। "हाथ सिरोही लीन्हे आवै लटकत आवै गैड की ढाल"—आल्हा०।

सिर्फ—(क्रि० वि०, अ०) केवल, मात्र, [सिरिफ (दे०)]। (वि०) एक ही, अकेला, एक मात्र, शुद्ध।

सिल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिला] शिला पत्थर की चट्टान, मसाला आदि पीसने की पत्थर की पटिया, [सिलौटी (दे०)]।—**वट**-(पु०) सिकुड़न, शिकन, सिलापट, सिल, सिलौटी।—**वट्टा**-(पु०) सिल और लोढ़ा। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिल] सीला, शिलोंछा। (संज्ञा, पु०, अ०) क्षय रोग, राजयक्ष्मा।—**खड़ी**,—**खरी**-(स्त्री०) [हिं० सिल + खड़िया] एक नरम चिकना पत्थर, खड़िया मिट्टी, दुद्धी, सेलखरी (ग्रा०)।

सिलक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पंक्ति, पाँति, पंगति कतार, लड़ी। (संज्ञा, पु०) धागा। (संज्ञा, पु०) [अ० सिल्क] रेशम, रेशमी वस्त्र, [सिलिक (दे०)]।

सिलकी—(संज्ञा, पु०, दे०) बेल।

सिलगना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० सुलगना] आग का सुलगना, प्रज्वलित होना।

सिलप*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिल्प] शिल्प, कारीगरी। "सिलप-कला, व्यापार और विद्या को बेगि बढ़ाओ"—[स्फु०]।

सिलपट—(वि०, दे०) [सं० शिलापट्ट] चौरस, समतल, साफ, बराबर, हमवार, सत्यानाश, चौपट।

सिलपोहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० सिलपोहना] ब्याह की एक रीति जब स्त्रियाँ सिल पर उरद की दाल पीसती हैं।

सिलवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सिलवाना] सिलाने की मजदूरी, सिलाई।

सिलवाना—(क्रि० सं०, दे०) [हिं० सिलाना] सीने का कार्य्य दूसरे से कराना, सिलवाना, सिवाना (ग्रा०)।

सिलसिला—(संज्ञा, पु०, अ०) क्रम, श्रेणी, पंक्ति, परंपरा, बँधा हुआ तार, लड़ी, जंजीर, शृंखला, तरकीब, व्यवस्था। (वि०, दे०) [सं० सिक्त] चिकना, गीला, भीगा और चिकना जिस पर पैर फिसल जावे। [**सिलसिलाना** (क्रि० अ०, दे०)]।—(ले) **वार**-(वि०) तरतीबवार, क्रमानुसार, यथाक्रम।

सिलह—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सिलाह] हथियार, अस्त्र।—**खाना**-(पु०) शस्त्रागार, हथियार रखने का स्थान।

सिलहारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिलकार] सीला या खेत में गिरा हुआ अन्न बीनने वाला।

सिलहिला—(वि०, दे०) [हिं० सीड़ + हीला—कीचड] कीचड़ के कारण ऐसा चिकना कि पैर फिसले। [**सिलहिली** (स्त्री०)]।

सिला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिला] पत्थर की सिला या चट्टान। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिल] कटे खेत में से बिना हुआ अन्न, कटे खेत में गिरे दाने बीनना, शीलवृत्ति। (संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सिलह:] बदला, एवज।—**जीत**-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिलाजतु] शिलजतु, एक पौष्टिक औषधि।—**रस**-(पु०) [सं० शिलारस] सिल्हक वृक्ष, उसका गोंद, सिलाजीत।

सिलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सीना + आई प्रत्य०] सीने का काम या ढंग, सीने की मजदूरी, सीवन, टाँका, सिलाई (ग्रा०)।

सिलाना—(क्रि० स०) [हिं० सीना का द्वि० प्रेरणा० रूप] सीने का कार्य्य दूसरे से कराना।

सिलावना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सिलाना] सिलाना। (क्रि० अ०) [हिं० सील] गीला होना, नम होना, सीलन आना।

सिलावट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिलापट्ट] सङ्ग-तराश, पत्थर गढ़ने वाला।

सिलाह—(संज्ञा, पु०, अ०) कवच, अस्त्र, शस्त्र, हथियार, जिरह-बकतर।—**बंद**-(वि०) हथियार बंद, सशस्त्र, शस्त्रास्त्र-सुसज्जित।

सिलाहर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सिलहार] सिलहार, सीला बीनने वाला।

सिलाही—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सिलाह] सिपाही, सैनिक, हथियार वाला।

सिलिप‡*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिल्प] शिल्प, कारीगरी, दस्तकारी।

सिली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिला] शिला, पथरी, सान।

सिलीमुख—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिलीमुखी] बाण, तीर, शर। भ्रमर, भौंरा। "न डिगै न भगै मृग देखि सिलीमुख"—[कवि०]।

सिलोच्च, सिलोच्चय—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिलोच्च-शिलोच्चय] एक पहाड़।

सिलौट, सिलौटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिला + बट्टा हिं०] सिल, मसाला पीसने को सिल तथा बट्टा। [**सिलौटी** (स्त्री०)]।

सिल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिल] खेत का अनाज काट लेने पर जो दाने खेत मे पड़े रहते है, सीला (ग्रा०)।

सिल्ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिला] सान, हथियारों को धार पैनी करने का पत्थर, अस्तुरा आदि पैना करने की पतली पटिया।

सिल्हक—(संज्ञा, पु०, सं०) सिलारस।

सिव*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिव] शिव, शङ्कर, शिवा जी। [**सिवा** (स्त्री०)]।

सिवई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० समिता] [सेमँई (दे०)] गेहूँ के गुँधे आटे या मैदा के सूत जैसे तार जिनके सूखे लच्छे दूध में पका कर चीनी के साथ खाये जाते हैं, सिवैया-सेवंई (ग्रा०)।

सिवता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिवता] शिवता, शिवत्व।

सिवा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिवा] पार्वती, दुर्गा जी। (अव्य०, अ०) अलावा, अतिरिक्त (सिवाय (दे०)]। (वि०) अधिक, ज्यादा, स्फुट, फालतू।

सिवाइ—(अव्य०, दे०) [अ० सिवा] अतिरिक्त, अलावा, अधिक, [सिवाय (दे०)]।

सिवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक तरह की मिट्टी, सिलाई। [सिवाना (दे०)]।

सिवान, सिवाना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सीमांत] सीमांत, सीमा, हद।

सिवाय—(क्रि० वि०, दे०) [अ० सिवा] बाद देकर, अतिरिक्त, अलावा, छोड़ कर। (वि०) अधिक ज्यादा, स्फुट, ऊपरी।

सिवार, सिवाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शैवाल] हरे रंग का लच्छे के रूप में बड़े बालों की सी जल की काई या घास, सेवार (ग्रा०)।

सिवाला—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० शिवालय] शिवालय, शिव-मन्दिर।

सिविका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिविका] पालकी। "सिविका सुभग सुखासन जाना"—[रामा०]।

सिविर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिविर] शिविर, सेना का पड़ाव, तंबू, डेरा।

सिष-सिष्य—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिष्य] शिष्य, चेला, नानकपंथी, [सिक्ख (दे०)]।

सिष्ट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० शिस्त] वंसी, डोरी। *† (वि०, दे०) [सं० शिष्ट] शिष्ट, श्रेष्ठ, ज्ञानी, योग्य। [**सिष्टता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

सिसकना—(क्रि० अ०, अनु०) रोने में रुक-रुक कर साँस लेना, भीतर ही भीतर रोना, फूट-फूट कर रोना, घबराना, तरसना, मृत्यु के निकट उलटी साँस लेना, दिल धड़कना।

सिसकारना—(क्रि० अ०) [अनु० सिसि + करना] मुँह से सीटी सा शब्द निकालना, अति पीड़ा या हर्ष के कारण मुँह से स-शब्द, साँस खींचना, सीत्कार करना, सुस कारना।

सिसकारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सिसिकारना] सिसकाने का शब्द, सीटी का-सा शब्द, पीड़ा और हर्ष से मुँह से सी-सी का शब्द सीत्कार।

सिसकी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) व्यक्त रूप से न रोने का शब्द, सीत्कार, सिसकारी।

सिसिर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिशिर] एक ऋतु जिसका समय माघ और फागुन माना जाता है।

सिसी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शीशी।

सिसु*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिशु] शिशु, बच्चा। "सिसुसम प्रीत न जाय बखानो" —[रामा०]।

सिसुता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिशुता] शिशुता, शिशुत्व, बचपन।

सिसुत्व—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिशुत्व] शिशुत्व, शिशुता।

सिसोदिया, सिसौदिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सीसौं-सरभी + दिया या सिसोद] एक स्थान,

गुहलौत राजपूतों की एक शाखा । "तातें भये सिसोदिया, सीसौं दीन्ह चढाय"—[स्फु०] ।

सिश्न—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिश्न] पुरुष की मूत्रेंद्रिय । लो०—"वैश्यः शिश्नवत्सदा" "वैश्यः शिश्नवत है सदा, आदि अन्त मे नम्र" —[स्फु०] ।

सिस्य—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिष्य] शिष्य सिष्य ।

सिहरन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शीत] कम्पन, घबराहट ।

सिहरना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सीत + ना] जाड़े के मारे कँपाना, घबराना, डरना, काँपना ।

सिहरा—(संज्ञा, पु०, अ०) फूलों से बना मुख का आवरण जो दूल्हा की पगड़ी से नीचे को लटका दिया जाता है, सेहरा (दे०)] ।

सिहराना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० सिहरना] जाड़े के मारे काँपना, डराना ।

सिहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सिहरना] कंप, कँपकँपी, सहमना, भय से थर्राना या दहलना, जाड़े का ज्वर, जूड़ी, लोमहर्षण या रोमों का खड़ा होना ।

सिहलाना—(अ०, क्रि०) सरदी होना, ठंडा होना ।

सिहाना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० ईर्ष्या] ईर्ष्या करना, स्पर्द्धा या डाह करना, लुभाना, ललचाना, मोहित या मुग्ध होना । "देखि सकल सुरपतिहि सिहाहीं"—[रामा०] । (क्रि०, स०) ईर्ष्या या अभिलाषा की दृष्टि से देखना, ललचना । "तिनहिं नाग-सुर नगर सिहाहीं"—[रामा०] ।

सिहारना†*—(क्रि० स०, दे०) ढूँढ़ना, पता लगाना, सँभालना, परखना, जाँचना, रक्षित रखना । (संज्ञा पु०, दे०) सिहार ।

सिहिटि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सृष्टि । "औ तेहिं प्रीति सिहिटि उपराजी"—[पद०] ।

सिहुँड़, सिहुँड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सेहुँड़] थूहर की जाति का एक काँटेदार पेड़ ।

सिहोड़, सिहोर, सिहोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) झाड़ीदार एक पेड़ जिसके दूध के मेल से गाय-भैंस का दूध तत्काल जम जाता है । लो०—"लड़का नहीं सिहोरा की जड़ है" ।

सींक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ईषीका] मूँज की जाति की एक घास की तीली । किसी घास का बारीक डंठल । शंकु । तिनका । नाक का एक आभूषण, कील, लौंग । "सीक धनुष सायक संधाना"—[रामा०] ।

सींक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सींक] पेड़-पौधों की पतली डाली, जैसे—नीम का सींका, पतली उपशाखा या टहनी । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सिकहर] सिकहर, [छींका (दे०)] ।

सींकिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सीक] एक धारीदार रंगीन कपड़ा । (वि०) सीक सा पतला ।—**पहलवान**-(पु०) अपने को शक्तिशाली समझने वाला दुबला-पतला आदमी ।

सींग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृंग] शृंग, विषाण, कुछ खुर वाले पशुओं के सिरों के दोनों ओर उठी हुई नोकदार हड्डियाँ । "सींग पूँछ बिन ते पशू, नर विद्याहीन"—[स्फु०] । मुहा०—(**किसी के सिर पर)—होना**-कोई विशेषता होना, (व्यंग्य) ।—**काटकर बछड़ों में मिलना**-बूढ़े होकर भी बच्चों में मिलना । कहीं—**समाना**-कहीं जगह या ठिकाना मिलना । फूँक कर बजाने का सींग से बना एक बाजा, सिंगी ।

सींगरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मोंगरे या लोबिया आदि की फली, बबूर आदि के पेड़ों की फली, सिंगरी (ग्रा०), "भैसी चढ़ी बंबूर पर लफि लफि सिंगरी खाय"—[स्फु०] ।

सींगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सींग] सिंगी, हिरन के सींग का बाजा । वह सींग जिससे देहाती जर्राह शरीर से बुरा लोहू निकाल लेते हैं । एक मछली । मुहा०—**लगाना**-सिंगी से रक्त चूसना ।

सींच—(संज्ञा, स्त्री०, पु०) सींचने का कार्य सिंचाई ।

सींचना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० सिंचन] पानी देना, भिगोना, आबपाशी करना, छिड़कना, तर करना । [**सिंचाई** (संज्ञा, स्त्री०, हि०)] ।

सींवँ, सींवाँ, सींव*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सीमा] सीमा, मर्य्यादा, हद, सीउ (ग्रा०) । "ते दोउ बंधु अतुल बलसींवा"—[रामा०] । "आय राम चरनन परे, अंगदादि बलसींव"—[रामा०] मुहा०—**चरना या काँदना**-अधिकार दिखाना, जबर दस्ती करना ।

सी—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० सम] तुल्य, समान, बराबर, सदृश, जैसे—छोटी-सी । मुहा०

अपनी—यथाशक्ति, अपने भरसक, जहाँ तक हो सके वहाँ तक। (संज्ञा, स्त्री॰, अनु॰) सीत्कार सिसकारी। "जाके सी-सी करिबे में सुधा-सीसी सी ढरकि जात"—[स्फु॰]।

सीउ, सीव*—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ शिव] शिव, शंकर, ब्रह्मा। "बंधमोक्ष-प्रद सर्वनकर माया प्रेरक सीव"—[रामा॰]। (संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ शीत] शीत, जाड़ा, ठंड।

सीकचा, सीखचा—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [फ़ा॰ सीखनः] शलाका, छड़।

सीकर—(संज्ञा, पु॰, सं॰) पानी की बूँद, छींटा, जल-कण, पसीना या स्वेद-कण। "श्रम-सीकर श्यामल देह लसैं, मनु राति महातम तारक मैं"—[कवि॰]। (संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [शृंखला) जंजीर।

सीकल—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [अ॰ सैकल] हथियारों के मोरचा छुड़ाने का कार्य्य। (संज्ञा, पु॰, दे॰) पका और पेड़ से गिरा आम का फल, टपका (प्रान्ती॰)। मुहा॰—**हो जाना**–अत्यन्त दुर्बल या कमजोर हो जाना।

सीकस—(संज्ञा, पु॰, दे॰) अनुपजाऊ या ऊसर भूमि।

सीकाकाई—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) बाल साफ करने के लिए एक वृक्ष की पत्तियाँ।

सीकुर—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ शूक] गेहूँ, जौ, धान, आदि की बाली के ऊपरी कड़े सूत, शूक।

सीख—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ शिक्षा] सिखावन शिक्षा, उपदेश, तालीम, सिखापन, जो बात सिखाई जाये, परामर्ष, मंत्रणा, सलाह, [सीख (दे॰)] "दसमुख भानहु सीख हमारी"—[स्फु॰]।

सीख—(संज्ञा, स्त्री॰, फा॰) लोहे की पतली और लम्बी छड़, तीली, शलाका। "कबाबे सीख हैं हम पहलुऐ हरसू बदलते हैं"।

सीखचा—(संज्ञा, पु॰, फ़ा॰) लोहे की पतली लम्बी छड़, सीकचा, शलाका।

सीखन—*†—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ शिक्षण] शिक्षा, उपदेश, सीख, सिखावन।

सीखना—(क्रि॰ सं॰, दे॰) [सं॰ शिक्षण] शिक्षा लेना, उपदेश सुनना, किसी कार्य्य के करने की रीति आदि जानना, समझना, ज्ञान प्राप्त करना। [**सिखाना, सिखावना** (क्रि॰ स॰)], [**सिखवाना** (प्रेरणा॰ रूप)]।

सीखा-पढ़ा—(वि॰) जानकार, शिक्षित, होशियार।

सीखा-सिखाया—(वि॰) शिक्षित, जानकार, कुशल।

सीगा—(संज्ञा, पु॰, अ॰) महकमा, विभाग।

सीज, सीझ—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ सिद्धि] सीझने की क्रिया या भाव, गरमी से पिघलाहट या गलाव।

सीजना, सीझना—(क्रि॰ अ॰, दे॰) [सं॰ सिद्ध] गरमी से गलना, चुरना, पकना, गरमी से नर्म होना, रस या पानी से भीग कर तर या नर्म होना, सूखे चमड़े का मसाले आदि से नरम होना, क्लेश या कष्ट सहना, तपस्या करना, मिलने के योग्य होना। "आनँद भोजी सनेह में सीझी" —रघुराज॰।

सीटना—(क्रि॰ स॰, अनु॰) शेखी या डींग मारना, बढ़ बढ़ कर बातें करना।

सीटपटांग—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰, हि॰) ऊट-पटाँग गर्व-पूर्ण बात।

सीटी-शीटी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ शीत्] संकुचित ओंठों से नीचे की ओर आघात के साथ वायु फेंकने से बाजे का सा शब्द, फूँकने से ऐसा ही शब्द करने वाला। बाजे आदि से निकला ऐसा ही शब्द।

सीठना—(संज्ञा, पु॰, दे॰) [सं॰ अशिष्ट] ब्याह आदि में गाने की अश्लील गाली के गीत, सीठनी।

सीठनी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [हि॰ सीठना] ब्याह आदि में गाने की गाली, सीठना।

सीठा—(वि॰, दे॰) [सं॰ शिष्ट] नीरस, फीका। "मत दोनों का सीठा"—कबीर।

सीठी—(संज्ञा, स्त्री॰, यौ॰, दे॰) [सं॰ शिष्ट] फल-पत्ते आदि का रस निकल जाने पर सारहीन बची वस्तु, निकम्मा चीज, लुगड़ी, फीकी या विरस वस्तु, खूद (प्रान्ती॰)।

सीड़—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ शीत] आर्द्रता, नमी, तरी, सीलन।

सीढ़ी—(संज्ञा, स्त्री॰, दे॰) [सं॰ श्रेणी] ऊँचे स्थान पर चढ़ने को पैर रखने को एक के ऊपर

एक बना स्थान, नसेनी, पैढ़ी (प्रान्ती०), जीना, आगे बढ़ने की परम्परा, सिड्ढी, सिढ़िया। "गंग की तरंग स्वर्ग-सीढ़ी सी दिखाई देत"—[स्फु०]।

सीत*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) शीत, जाड़ा, ठंडक, शीतलता।—**कर**-(पु०) चन्द्रमा।

सीतल‡*—(वि०, दे०) [सं० शीतल] शीतल, ठंडा। [**सीतलता**, **सितलाई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।—**पाटी**-(स्त्री०) एक भाँति की उत्तम चटाई।

सीतला—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शीतला] एक रोग, चेचक, एक देवी।

सीतांसु—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) शीतांशु, चन्द्रमा।

सीता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भूमि जोतने में हल की फाल से बनी लकीर, [कुड, कूँड़ा (दे०)], मिथिला-नरेश सरीध्वज जनक की कन्या जानकी और श्रीराम की पत्नी, वैदेही, सीय, छीता (ग्रा०)। "भृगुपति कर सुभाव सुनि सीता"—[रामा०]। र, त, म, य, और र (गण) वाला एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं०)। राजा की निज की भूमि, खेती, मदिरा।—**नाथ**-(पु०) श्रीरामचन्द्र जी, सीता-नायक।—**पति**-(पु०) श्रीरामचंद्रजी।—**फल**-(पु०) शरीफा, कुम्हड़ा।

सीताध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सीर या निज की भूमि में खेती आदि का प्रबन्ध करने वाला राजा का राज-कर्मचारी।

सीत्कार—(संज्ञा, पु०, सं०) पीड़ा या आनन्द से मुह से निकलने वाला सी सी शब्द, सिसकारी।

सीथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सिक्थ] भात या पके चावल, पके अनाज का दाना।

सीद—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्याज खाना, सूदखोरी, कुसीद।

सीदना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सीदति] दुख पाना, कष्ट उठाना।

सीध—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सीधा] सम्मुख की लंबाई, सरलता, सरल, लक्ष्य, निशाना। (वि०, दे०) सीधा, सादा, सरल।

सीधा—(वि०, दे०) [सं० शुद्ध] ऋजु, सरल, अवक्र, जो मुड़ा या झुका न हो, जो वक्र या टेढ़ा न हो, ठीक लक्ष्य की ओर, सरल स्वभाव वाला, भोला-भाला, सुशील, शांत। [**सीधी** (स्त्री०)]। [**सिधाई** (संज्ञा, स्त्री०)]। **मुहा०**—(**सी**) **तरह**-अच्छे या शिष्ट व्यवहार से, आसानी से। —**सादा**—(यौ०) भोलाभाला। **किसी को** —**करना**-सजा या उचित दंड देकर ठीक करना। (**काम**)—**करना**-ठीक साधनों से कार्य का ठीक करना। सहज, आसान, सुकर, दाहिना, जैसे सीधा हाथ करना।—(**धे**) **रास्ते चलना** (**जाना**)-ठीक व्यवहाराचार करना। (क्रि० वि०) सम्मुख, ठीक सामने की ओर। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० असिद्ध] बिना पका अन्न।

सीधापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सीधा+पन प्रत्य०] सिधाई, सीधा होने का भाव, सरलता, ऋजुता।—**सादा**-(वि०) सरस स्वभाव का, भोला-भाला।

सीधे—(क्रि० वि०, दे०) [हि० सीधा] बिना कहीं रुके या मुड़े, बराबर, सामने, लगातार सम्मुख की दिशा में, सम्मुख, नरमी से, शिष्ट व्यवहार से।

सीना—(क्रि० स०, दे०) [सं० सीवन] कपड़े या चमड़े आदि के दो टुकड़ों का सुई-धागा के द्वारा आपस में मिलाना, टाँकना, टाँका मारना। —**जोरी**-(स्त्री०) ढिठाई, ज्यादती, विरोध, हुज्जत।—**बंद**-(पु०) आँगी, चोली, अँगिया। **मुहा०**—**जोरी करना**-जबरदस्ती या मुकाबिला करना। **लो०**—"चोरी और सीनाजोरी"। (**संज्ञा, पु०**, दे०) [फ़ा० सीनः] छाती, वक्ष-स्थल।

सीप—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक्ति] सीपी, सितुही, घोंघे या शंख की जाति का एक कड़े आवरण में रहने वाला जल का कीड़ा इसका सफेद चमकीला और कड़ा आवरण या सुती, जिसके बटन बनते हैं, तालाब आदि की सीपी का संपुट।

सीपज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक्तिज] मोती।

सीपति—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० श्रीपत] श्रीपति, विष्णु।

सीपर—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सिपर] ढाल।

सीपसुत—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० शुक्ति-सुत] मोती, सीपात्मज, सीपतनय।

सीपिज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक्तिज] मोती।

सीपी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुक्ति] सीप ।

सीबी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अनु० सीसी] सीत्कार, सिसकारी, सीसी शब्द ।

सीमंत—(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्रियों की माँग, हड्डियों का जोड़ या संधि-स्थान, सीमंतोन्नयन संस्कार ।

सीमंतनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नारी, स्त्री ।

सीमंती—(संज्ञा. स्त्री०, सं०) नारी, स्त्री ।

सीमंतोन्नयन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) द्विजों के १२ संस्कारों में से तीसरा संस्कार जो प्रथम गर्भाधान से चौथे छठवें या आठवें मास में होता है ।

सीम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सीमा] सीमा, हद । [सींव, सींउ (दे०)] । "कौरव-पांडव जानवी, क्रोध-छिमा की सीम"—[नीति०] । **मुहा०—चरना, काँडना**-दबाना, जबरदस्ती करना, अधिकार या प्रभुत्व जताना ।

सीमांकन—(संज्ञा, पु०, सं०) सीमा-निर्धारण, सीमा निश्चित करना । [डिमार्केशन]

सीमांत—(संज्ञा, पु०, सं०) सीमा का अंतस्थान, सरहद । [**सीमांत-प्रदेश** (यौ०)] । सीमा पर का प्रदेश या प्रान्त, भारत की पश्चिमोत्तर सीमा का एक प्रान्त, पश्चिमोत्तर प्रान्त ।

सीमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सीमा, सीवाँ, हद, मर्य्यादा, किसी वस्तु या प्रदेश के विस्तार का अंतिम स्थान, सरहद, कोटि, अंतिम स्थान, अंत, माँग । ।**—बद्ध**-(पु०) हद या सीमा से घिरा, मर्य्यादा के भीतर, हद के अंदर ।**—हीन**- "जिनका सीमित डर करता था, "सीमाहीनों का उपहास"—महादेवी । **मुहा०—से बाहर जाना (लाँघना, उल्लंघन करना)**-उचित से अधिक बढ जाना ।**—में (के अन्दर) रहना**-अपनी मर्यादा के अन्दर रहना ।

सीमाब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पारा ।

सीमित—"सीमित ही में निज स्वरूप पहचान न ले"—"गिरीश"

सीमोल्लंघन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हद से बाहर चला या फाँद जाना, विजय यात्रा, सीमित-क्रमणोत्सव, मर्य्यादा के प्रतिकूल या बाहर काम करना, सीमा का उल्लंघन करना या लाँघ जाना ।

सीय, सीया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सीता] जानकी जी, सीता जी । "सीय विवाहब राम—[रामा०] "रामहिं चितव भाव जेहि सीया"—[रामा०] ।

सीयन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सीवन] सिअन, सीवन, सिलाई ।

सीयरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शीत] सियरा ।

सीर—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य । हल । हल में जोतने के बैल । (संज्ञा, स्त्री०) वह भूमि जिसे उसका मालिक या जमींदार आप जोतता हो, खुदकाश्त, वह भूमि जिसकी उपज बहुत से साझियों में बँटती हो । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सिरा] रक्त की नाड़ी ।* (वि०, दे०) [सं० शीतल] शीतल, ठंडा । "लगत उसीर सीर सीर ह्वै समीर गात"—सरस ।

सीरक—(संज्ञा, पु०) [हिं० सीरा] ठंडा करने वाला ।

सीरख*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शीर्ष] सीरष, शीर्ष, शिरा, चोटी, ऊपरी भाग ।

सीरध्वज—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा जनक ।

सीरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सिरीनी] मिठाई, सिन्नीं, सिरनी (ग्रा०) ।

सीरष*(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शीर्ष] शीर्ष, शिर, चोटी, ऊपरी भाग ।

सीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शीर] पका कर गाढ़ा किया चीनी का रस, चाशनी, हलवा, मोहन-भोग । *† (वि०, दे०) [सं० शीतल] शीतल, ठंडा । [**सीरी (स्त्री०)**] । "लगै सीरी सीरी, पवन, तन को आलस मिटै"—लक्ष्म० । शांत, चुप, मौन ।

सील—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शीतल] सीढ, सीड़, नमी, तरी, गीलापन, भूमि की आर्द्रता । *‡ (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शील] शील, अच्छा स्वभाव, सौजन्य । "लखन कहा मुनि सील तुम्हारा"—[रामा०] ।

सीलन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शीतल] सील, नमी, तरी ।

सीला—(संज्ञा, पु०, दे०) खेत की फसल के कट जाने पर भूमि पर गिरे दाने जिन्हे कंगाल बीन लेते हैं । इन दानों से निर्वाह करने की मुनियों की

एक वृत्ति । (वि०, दे०) [सं० शीतल] गीला, मोड़ । [सीली (स्त्री०)] ।

सीवन—(संज्ञा, पु०, हि०) सियनि, सिलाई, सीने का कार्य्य, सीने से पड़ी लकीर, संधि, दरार, दराज। "सीवन सुन्दर टाट पटोरे"—[रामा०] ।

सीवना—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सिवाना] सिवाना । (क्रि० स०, दे०) सीना, सिलाना ।

सीस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शीर्ष] सिर, मूँड, शीश । "सीस गिरा जहँ बैठ दसानन——[रामा०] ।—**ताज**-(पु०) कुलहा, शिकारी पशुओं की टोपी, जो शिकार के समय खोली जाती है ।—**त्रान**-(पु०) लोहे का टोप या टोपी, शीशत्राण, शिरस्त्राण ।—**फूल**-(पु०) सिर पर का एक गहना या भूषण, शीश-फूल । "सीसफूल बेंदी लसै, तपै शुभमणि राज"—[स्फु०] ।

सीसक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक धातु, सीसा ।

सीस महल—(संज्ञा, पु०, दे०) [फा० शीश + महल] वह महल जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों, शीशमहल ।

सीसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सीसक] एक धातु । *† (संज्ञा, पु०, दे०) [फा० शीशा] शीशा, आईना, आरसी, काँच ।

सीसी—(संज्ञा, यौ०, अनु०) सीड़ा, शीत या हर्ष में मुख से निकला हुआ सीसी का शब्द, सीत्कार सिसकारी । "जाके सीसी करिबे में सुधा सीसी सी ढरकि जात"—स्फु० । *‡ (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फा० शीशी] शीशी ।

सीसों सोसों—(संज्ञा, पु०, दे०) [फा० शीशम] शीशम का पेड़ ।

सीसोदिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सिसोदिया] राजपूत क्षत्रियों की एक पदवी, शिवाजी का वंश। "जन, धन, मन, सीसौ दिया, मीसौदिया नरेस"—सरस ।

सीह—(संज्ञा, दे०) [सं० साधु] गंध, महक, सुगंधि । * (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सिंह] सिंह ।—**गोस**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [फा० सियाह + गोश] काले कानों वाला एक जंतु ।

सुं*†—(प्रत्य०, दे०) [हि० से] सों, से, सूँ (ग्रा०) करण कारक का चिह्न ।

सुँघनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० सूँघना] **सूँघनी**, नस्य, हुलास, मग्जरोशन, तंबाकू का चूर्ण जो सूँघा जाता है ।

सुँघाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० सूँघना] [सुघावना (दे०)], सूँघने की क्रिया कराना, आघ्राण कराना । [**सुघवाना** (प्रेरणा० रूप)] ।

सुंड—(संज्ञा, पु०, सं०) देखिए शुंड ।—**भुसुंड**-(पु०) सूँड़ रूपी अस्त्र वाला, हाथी ।

सुंडा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सूँड़] सूँड़, शुंड (सं०)] ।

सुंडाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सूँड़] शुंडाल, हाथी ।

सुंडी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० शुंडिन्] हाथी ।

सुंद—(संज्ञा, पु०, सं०) निसुंद का सुत तथा उपसुंद का भाई एक दैत्य ।

सुंदर—(वि०, सं०) रूपवान, मनोहर, बढ़िया, अच्छा, मनोरम, खूबसूरत । "दुइ तपसी तपहीं बन आये । सुंदर सुंदर सुंदरि लाये"—[स्फु०] । [**सुंदरी** (स्त्री०)] ।

सुंदरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सौंदर्य्य, खूबसूरत, मनोहरता । "सुंदरता कहँ सुंदरकरई"—[रामा०] ।

सुंदरताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुंदरता] सुंदरता, सौंदर्य्य । "बालछिपन अति सुंदरताई,"—[स्फु०] ।

सुंदराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुंदरता] खूबसूरती, सुघरपन "सहज सुंदराई पर राई नून वारती"—दास० ।

सुंदरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुंदर या खूबसूरत स्त्री, त्रिपुर सुंदरी देवी, एक योगिनी, ८ सगण और एक गुरु वर्ण वाला एक सवैया छंद का एक भेद, न, भ, भ, र (गण) वाला एक वर्णिक वृत्त, द्रुतविलंबित । "द्रुत विलबित माह नभौ भरौ"—(पिं०) । २३ वर्णों का एक वर्णिक छंद, (वृत्त) । "लखै सुंदरी क्यों दरी को विहारी"—[रामा०] ।

सुँधाई, सुँधावट—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सोंधापन ।

सुंबा—(संज्ञा, पु०, दे०) स्पंज, इस्पंज, तोप या बंदूक की गर्म नलिका को ठंढा करने को गीला कपड़ा, पुचारा (ग्रा०) ।

सु—(उप०, सं०) शब्द के पूर्व लगकर सुंदर, अच्छा श्रेष्ठ, उत्तम आदि का अर्थ देता है, जैसे—सुकुल, सुशील। (वि०) बढ़िया, सुंदर, अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम, भला, शुभ। * (अव्य, दे०) [सं० सह] कारण, अपादान और सम्बन्ध का चिह्न। (सर्व, ब्र०) [सं० सः] सो वह।

सुअटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक] शुक, सुग्गा, तोता, सुआ, सुवा, सुगना।

सुअन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुत] सुत, पुत्र, बेटा, लड़का, सुवन। "अंजनिसुवन पवन सुत नामा"—[ह० चा०]।

सुअनजर्द—(संज्ञा, पु०, दे०) सोनजर्द।

सुअना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सुअन] उगना या उत्पन्न होना, उदय होना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुवा] सुआ, सुवा, तोता, सुग्गा, सुगना।

सुअवसर—(संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर अवसर, अच्छा मौका।

सुआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक] सुआ, तोता, सुग्गा। "उड़ा ही दिया मंथरा ने सुआ"—मैथिलो०।

सुआउ*—(वि०, दे०) [सं० सु+आयु] दीर्घजीवी, चिरजीवी, दीर्घायु।

सुआन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वान] श्वान, कुत्ता, कूकर।

सुआना—(क्रि० स०, दे०,) [हि० सूना] उत्पन्न या पैदा करना। (क्रि० स०, दे०) सुलाना, [साआना, सुवाना (दे०)]।

सुआमी*(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वामी] स्वामी, मालिक, पति, नाथ।

सुआर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूपकार] भोजन बनाने वाला, रसोइया। "छिन भई सब कह परसिगे चतुर सुआर विनीत"—[रामा०]।

सुआरव—(वि०, सं०) मीठे स्वर से गाने बोलने या बजाने वाला। (यौ०, दे०) [सुआ+रव] तोते का शब्द।

सुआसिनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुवासिनी] परोसिन, ग्राम-कन्या, सौभाग्यवती या सधवा स्त्री जो उसी गाँव में उत्पन्न हुई हो, सुवासिनि। "सुभग सुआसिनि गावहिं गीता"—[रामा०]।

सुआहित—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स+आहत] तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ, सुआहत।

सुई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सूची] सूजी, वस्त्र सीने की एक बारीक नुकीली छोटी छेददार चीज। **मुहा०—की नोक सी**—अति सूक्ष्म। "देना लगान भूमि सुई की नोक की नोक बराबर"—मैथिलो०।

सुकंठ—(वि०, सं०) वह जिसका गला सुन्दर हो, सुरीला। [**सुकंठी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, सुग्रीव)। "सोई सुकंठ पुनि कीन्हि कुचाली—[रामा०]।

सुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक] शुक, सुगना, तोता, सुग्गा, सुआ, सुवा, शुकदेव। "सुक, सनकादि सेस, नारद, मुनि, महिमा सके न गाई"—[स्फु०]।

सुकचाना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सकुचाना] सकुचाना, लज्जित होना, सिकुड़ना।

सुकटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक] शुक, तोता, सुग्गा, सुआ। (वि०, दे०) दुबला, पतला। [**सुकटी** (स्त्री०)]।

सुकटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुक] तोती या सुक की मादा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुकटा] सूखी मछली। (वि०, सं०) सुन्दर कटि वाला, दुबली।

सुकड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सिकुड़ना] सिकुड़ना, सिमिटना, लज्जित होना।

सुकनासा*—(वि०, यौ०, दे०) [सं० शुक+नासिका] तोते या शुक की चोंच-सी सुन्दर नाक वाला।

सुकन्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) महाराज शर्याति की पुत्री और च्यवन ऋषि की स्त्री। अच्छी कन्या।

सुकर—(वि०, सं०) सहल, सहज, आसान, सरल, सुसाध्य। [दुष्कर (विलो०)]

सुकरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सहज में होने का भाव, सुसाध्यता, मनोहरता, सौकर्य, सुन्दरता।

सुकरति*—(वि०, दे०) [सं० सुकृति] अच्छा काम, सुकर्म, भलाई। "पुण्य प्रभाव और सुकरति फल राम-चरन-रति होई"—[स्फु०]।

सुकरात—(संज्ञा, पु०, अ०) यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक जो अफलातून का गुरु था। [साक्रेटीज]।

सुकराना—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शुकाना] वह धन जो धन्यवाद के रूप मे दिया जाय, धन्यवाद, [शुकराना (दे०)]।

सुकर्म—(संज्ञा, पु०, सं०) पुण्य, धर्म, सत्यकर्म, सौभाग्य, अच्छा काम। "जाति सुकर्म, कुकर्म-रत,

जागत ही रह सांय"—[नीति०] [सुकरम (दे०)]। "सब सुकर्म कर फल सुत एहू"—[रामा०]।

सुकर्मी—(वि०) [सं० सुकर्म्मिन्] अच्छे काम करने वाला, सदाचारी, धर्म्मात्मा, धार्मिक।

सुकल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुकुल] अच्छे वंश का, खानदानी, शुक्ल, सुन्दर कला। [**सुकला** (स्त्री०).]। शुक्ल पक्ष की, शुक्लपक्ष। "सावन सुकला सप्तमी।" (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक्ल] उज्वल, निर्दोष, स्वच्छ, शुद्ध, निष्कलंक, निर्मल, साफ़, सुश्वेत।

सुकल्पित—(वि०, सं०) सुसज्जित।

सुकवा-सुकुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) शुक्र तारा।

सुकवाना—(क्रि० अ०, दे०) अचंभे में आना।

सुकवि—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) श्रेष्ठ या उत्तम कवि, सत्कवि। "सुकवि लखन-मन की गति गुनई" —[रामा०]।

सुकाना*—(क्रि० सं०, दे०)[हिं० सुखाना] सुखाना, सूख जाना।

सुकारज, सुकाज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुकार्य] सत्कर्म, अच्छा काम।

सुकाल—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तम और अच्छा समय जब खूब अन्न-उपजा हो और भाव सस्ता हो। [**अकाल, दुकाल** (विलो०)]।

सुकावना*—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सुखाना] सुखाना, सूखा करना, सुखवाना।

सुकिज सुकित*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सुकृति] शुभकर्म, अच्छा काम, सुकाज, सुकार्य।

सुकिया, सुकीया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्वकीया] स्वकीया, अपनी स्त्री। "सुकिया परकीया कहा औ गणिका सुकुमारि"—पद्मा०। "कहत सुकीया ताहि को लज्जा शील सुभाव"—पद्मा०।

सुकिरति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुकृति सुकीर्ति, [सुकरति (दे०)]। "साहस, सुकिरति सत्यव्रत" तुल०।

सुकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुक] तोते की मादा, तोती, सुग्गी, शुकी।

सुकीउ, सुकीव*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्वकीया] स्वकीया नायिका, अपनी स्त्री।

सुकीरति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुकीर्ति] सुयश।

सुकीर्त्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुख्याति, सुप्रसिद्धि।

सुकुआर, सुकुवार—(वि०, दे०) [सं० सुकुमार] सुकुमार, कोमल, नम्र। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुकुआरी, सुकुमारता। "तू सुकुआर कि मैं सुकुआर, चल सखि चलिये राज-दुआर"—[स्फु०]।

सुकुति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुक्ति] शुक्ति, सीपी, [सुकती, सुकति (दे०)] "पर सुकुति मुकता विमल"—[स्फु०]।

सुकुमार—(वि०, सं०) कोमलांग, मृदुल, नाजुक, नम्र। [**सुकुमारी** (स्त्री०)]। [**सौकुमार्य** (संज्ञा, पु०, सं०)]। [**सुकुमारता** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) कोमलांग, बालक, काव्य में कोमल वर्णों या शब्दों का प्रयोग, सुन्दर कुमार।

सुकुमारता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सौकुमार्य, मृदुलता, सुकुमार का धर्म या भाव, आर्दव, कोमलता, नज़ाक़त। "दरसत अति सुकुमारता, परसत मन न पत्यात"—बिहारी।

सुकुमारी—(वि०, सं०) कोमलांगी, नाजुक बदन। "सुनहु तात सिय अति सुकुमारी"—[रामा०]। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दर कुमारी।

सुकुरना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० सिकुड़ना] सिकुड़ना, सिमिटना। [**सुकुराना** (स० रूप)]। [**सुकुरवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सुकुल—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तम या श्रेष्ठ वंश, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न, व्यक्ति, कुलीन, ब्राह्मणों का एक वंश। [**सुकुलीन** (स्त्री०)] । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक्ल] उज्वल, स्वच्छ, निर्मल, निर्दोष, निष्कलंक, शुद्ध, साफ़।

सुकुवाँर, सुकुवार—(वि०, दे०) [सं० सुकुमार] सुकुमार, कोमल।

सुकृत्—(वि०, सं०) शुभ या उत्तम कर्म करने वाला, धार्म्मिक, शुभ कर्म।

सुकृत—(संज्ञा, पु०, सं०) शुभ कर्म, पुण्य, दान, धर्म कर्न। (वि०) धर्म्मशील, भाग्यवान। "सकल सुकृत कर फल सुत एहू"—[रामा०]। "बंदि पिता सुर सुकृत संवारे' —[रामा०]।

सुकृतात्मा—(वि०, यौ०) [सं० सुकृतात्मन्] धर्मात्मा, कर्म्मी, सुधर्म्मशील, पुण्यात्मा।

सुकृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पुण्य कर्म, सत्कर्म, शुभकार्य, अच्छा काम। [**सुकृतित्व** (संज्ञा, पु०)] "सुकृति जाय जो प्रण परिहरऊँ"—[रामा०]। —**रता**—"सहज नीति रहती है सुकृतिरता सतत" —हरिऔध।

सुकृती—(वि०) [सं० सुकृतिन्] भाग्यवान, पुण्यशील, धर्मात्मा, सुकर्मा, बुद्धिमान, निपुण, सकुशल, दक्ष । "सुकृती तुम समान जग माहीं" —[रामा०] ।

सुकृत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) पुण्य, धर्मकार्य, सत्कर्म, सत्कार्य ।

सुकेश—(संज्ञा, पु०, सं०) विद्युत्केश का पुत्र और माल्यवान, माली और सुमाली नाम के राक्षसों का पिता एक राक्षस ।

सुकेशी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दर और उत्तम बालों वाली स्त्री । (संज्ञा, पु०) [सं० सुकेशिन्] अति सुन्दर केशों या बालों वाला व्यक्ति । [सुकेशिनी (स्त्री०)] ।

सुक्ख—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुख] सुख ।

सुक्ति, सुक्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुक्ति] सीप, सीपी ।

सुक्रित—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुकृत] सुकृत, सुकर्म, पुण्य, धर्म्म ।

सुक्षम*†—(वि०, दे०) [सं० सूक्ष्म] अति लघु या छोटा, अति बारीक या महीन, [सुछम, सुच्छम (दे०)] । (संज्ञा, पु०) परमाणु, परब्रह्म, लिंग-शरीर, एक अलंकार जहाँ चित्त-वृत्ति का सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है (का०) ।

सुखंडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सूखना] बच्चों का एक सूखा रोग जिसमे उनका शरीर सूख जाता है । (वि०) बहुत ही दुबला-पतला ।

सुखंद—(वि०, दे०) [सं० सुखद] सुखदायी, सुखद ।

सुख—(संज्ञा, पु०, सं०) शांति, आराम, [सुक्ख (दे०)] मन की अभीष्ट, प्रिय तथा एक अनुकूल दशा या वेदना, जिसकी सब अभिलाषा करते हैं । [दुख (विलो०)] ।—**आसन**-(पु०) पालकी, सुखासन । "सिविका सुभग सुखासन याना"—[रामा०] ।—**कंद**-(वि०) सुख की जड़, सुख-रूप, सुखदायक, सुखद ।—**कंदन**-(वि०) सुख-कंद, सुखद ।—**कंदर**-(वि०) [सं० सु+कंदर] सुखाकर, सुख-भवन, सुख-मंदिर, सुखरूप, सुखद, सुखालय, सुख-सदन ।—**कर**-(वि०) सुखद, सुख देने वाला, जो सहज में किया जावे, सुकर ।—**करण**†-(वि०) सुखद ।—**कारक**-(वि०) सुखद, सुखदायी ।—**कारी**-(वि०, सं०) सुखद, सुखकारक । [सुखकारिणी (स्त्री०)] ।—**जनक**-(वि०) सुख देने वाला ।—**जननी**-(वि०) सुख देने वाली ।—**ज्ञ**-(वि०) सुख का जानने वाला, सुख-ज्ञाता ।—**दरन**-(वि०) सुख देने वाला ।—**थर, थल***†-(पु०) सुखदायी स्थान, सुखद ठौर, सुख का स्थल, सुखस्थली, सुखालय ।—**द**-(वि०) सुख या आनंद देने वाला, सुख-दायक । [सुखदा (स्त्री०)] । "मां कह सुखद कतहु कोउ नाहीं"—[रामा०] ।—**गीत**-(वि०) तारीफ के लायक, प्रशसनीय । (पु०) सुख देने वाला गान या गायन, स्तवन, प्रशस्ति पाठ ।—**दानी***-(वि०) [हि० सुख+दानी] सुख देन वाला, सुखदानी । (संज्ञा, स्त्री०) ८ सगण और अन्त्य गुरु वर्ण वाला एक वर्णिक छंद (पिं०) । सुंदरी, मल्ली, चंद्रकला छंद (पिं०) ।—**दा**-(वि०, स्त्री०, सं०) सुख देने वाली । "योगिनी सुखदा वामे"—ज्यो० । (संज्ञा, स्त्री०) एक छंद (पिं०) ।—**दाइनि***—(वि०) सुखदायिनी । "सुखदाइन तोहि सम कोउ नाहीं"—[रामा०] ।—**दाई**-(वि०, दे०) [सं० सुखदायी] सुख देने वाला, सुखद ।—**दाता**-(वि०) [सं० सुखदातृ] सुखद, सुखदायी । "कोउ न काहु कर सुख-दुख-दाता" —[रामा०] ।—**दान**-(वि०) [सं० सुखदातृ] सुख-दाता । (संज्ञा, पु०, यौ० सं०) सुख का दान ।—**दानि, दानी**-(वि०, स्त्री०) [हि० सुखदान] आनंद या सुख देन वाली । "सब प्रकार रघुबर-कथा, सब काहुहि सुखदानि"—कु० वि० । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) ८ सगण और एक गुरु वर्ण वाला, एक वर्णिक छंद या वृत्त, (पिं०) सुंदरी छंद, चंद्रकला, मल्ली छंद ।—**दायक**-(वि०) सुख-प्रद, सुख देन वाला । "श्री रघुनायक जन-सुख-दायक, करुणा सिंधु खरारी"—[रामा०] । [सुखदायिका (स्त्री०)] ।—**दाई**-(वि०) सुखद, सुख देने वाला । [सुखदायिनी (स्त्री०)] ।—**दायो***-(वि०) सुखदायी, सुखद ।—**दास**-(पु०) एक प्रकार का बढ़िया चावल या अगहनी धान । (यौ०) सुख का (के लिये) दास ।—**देनी**-(वि०) सुखदायी । "राम-कथा सब कहँ सुखदेनी"—कुं० वि० ।—**दैन**-(वि०) सुखद, सुखदायी । "बीति चली रस रैन हू. आये नहिं सुखदैन"—[शि० गो०] ।—**दैनी**-(वि०) [सं० सुखदायिनी] सुख देने वाली । "प्रभु-कीरति-की रति, भगति, सुभ-गति सुख-दैनी सदा"

—रसाल ।—धाम—(पु०) सुख-भवन, सुख-सदन, सुखसद्म, सुख का घर, सुखालय, बैकुंठ, स्वर्ग, सुखद । "सब सुख धाम राम प्रिय, सकल, लोक-आधार"—[रामा०] ।—निंदिया—(स्त्री०) सुख की नींद, सुख-नींद ।—पाल—(पु०) एक प्रकार की पालकी । "दृग सुखपाल लिये खड़े, हाजिर लगन कहार"—रतन० ।—पूर्वक—(क्रि० वि०) सुख या प्रसन्नता या हर्ष से, आनन्द के साथ । —प्रद—(वि०) सुखद, सुख देने वाला । [सुखप्रदा (स्त्री०)] । "मित सुखप्रद सुनु राजकुमारी"—[रामा०] ।—रास, रासि, रासी* —(वि०) सुखरूप, सुखमय, सुख की राशि । "जो सच्चिदानंद सुख-रासी"—[रामा०] ।—वाद—(संज्ञा, पु०, सं०) सुख को ही जीवन का प्रधान लक्ष्य मानने का सिद्धान्त । [सुखवादी (वि०)] ।—वार—(वि०, दे०) [सं० सुख] सुखी, खुश, प्रसन्न, सुख के दिन । [सुखवारी (स्त्री०)] ।—साध्य—(वि०, यौ०, सं०) सरल, सहज, आसान, सुकर । "रोगी को सुखसाध्य लखि तब करिये उपचार"—कुं० वि० ।—सार—(पु०) मोक्ष, मुक्ति, सुख का तत्व या मूल, परम, सुख । "सुकिया परकीया कहीं पुनि गणिका सुख-सार"—पद्मा० ।—सीकर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुखाश्रु, आनंदाश्रु, सुख-सलिल । मुहा०—मानना—अच्छा समझना, बुरा न मानना, अप्रसन्न न होना, अनुकूल परिस्थिति से स्वस्थ और प्रसन्न होना । "जो तुम सुख मानहु मन माहीं" —[रामा०] ।—की नींद सोना (लेना)—बेखटके या बे फिक्र रहना, निश्चिन्त रहना । आरोग्य, तंदुरुस्ती, जल, स्वर्ग, ८ सगण और २ लघु वर्णों वाला एक वर्णिक छंद (पिं०)। (क्रि० वि०) स्वभावतः सुखपूर्वक, सुखेन ।

सुखक*†—(वि०, दे०) [हिं० सुखा] सुखा, शुष्क । (संज्ञा, पु०) [सं० सुख+क] सुखकर, सुख करने या देने वाला, सुखकारक ।

सुखना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० सूखना] सूखना, खुश्क या शुष्क होना ।

सुखमन*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुषुम्ना] सुषुम्ना नाड़ी, [सुखुमना (दे०)] ।

सुखमा—(स्त्री०) छवि, शोभा, सुंदरता, बामा छंद या वृत्त (पिं०) । "जनक भवन की सुखमा जैसी" —[रामा०] ।—कार—"स्वप्न संसृति-सी सुखमा-कार"—पंत ।

सुखलाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सुखाना] सुखाना, शुष्क करना, [सुखावना, सुखलावना (दे०)] ।

सुखवंत—(वि०) [सं० सुखवत्] सुखी, खुश, प्रसन्न, सुखद, सुखवान ।

सुखवन†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सूखना] वह कमी जो किसी पदार्थ के सूखने से हो, वह पदार्थ जो सुखने को धूप मे रखा जाता है । (संज्ञा, पु०) [हिं० सूखना] स्याही सुखाने वाली बालू या कागज, ब्लाटिंग पेपर । खाय गयी राम चिरैया मेरो सुखवन"—कबीर० ।

सुखांत—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह वस्तु या कार्य जिसका अंत सुखमय हो ।—नाटक—(पु०) पाश्चात्य नाटक का एक प्रकार, वह नाटक जिसके अंत में सुखभरी घटना हो, संयोगान्त नाटक । [कामेडी]

सुखाना—(क्रि० स०) [हिं० सूखना] झुरवाना, किसी गीली वस्तु को धूप में यों रखना कि उसका गीलापन मिट जावे, गीलापन या नमी मिटाने की कोई क्रिया करना, सुखवाना, सुखावना । (क्रि० अ०) सूखना ।

सुखानुभव—(संज्ञा, पु०, सं०) सुख की अनुभूति, सुख का अनुभव ।

सुखारा, सुखारी*†—(वि०, दे०) [हिं० सुख +आरा प्रत्य०] सुखद, सुखी, प्रसन्न, आराम से । (वि०, दे०) [हिं० खारा] खूब खारा । "ममविनि अब तुम रहहु सुखारी"—[राम० चं०] । "राम-लखन सुनि भये सुखारे"— [रामा०] ।

सुखाला—(वि०, दे०) [सं० सुखालय] सुखद, सुखदायक, सहज । [सुखाली (स्त्री०)] ।

सुखावह—(वि०, सं०) सुखद, सुखदायी ।

सुखासन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिविका, सुखद आसन, डोली, पालकी । "सिविका सुभग सुखासन जाना"—[रामा०] ।

सुखिआ, सुखिया—(क्रि० दे०) [सं० सुखी] सुखी, सुखयुक्त, सुखवाला । "सुखिया सब संसार खाय सुख से हैं बैठे"—कबीर । "सुखिआ ससुरे सुख पावत नाहीं"—[स्फु०] ।

सुखित—(वि०, सं०) सुखी, प्रसन्न, हर्षित, खुश, उल्लसित, प्रमुदित । (वि०, दे०) [हिं० सूखना] सूखा हुआ ।

सुखिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुखी, प्रसन्न।

सुखिर—(संज्ञा, पु०, दे०) साँप का बिल।

सुखी—(वि०) [सं० सुखिन्] जिसे सब प्रकार का सुख हो, आनंदित, हर्षित, खुश, प्रसन्न। "सुखी मीन जहँ नीर अगाधा"—[रामा०]।

सुखेन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुषेण] एक वानर जो सुग्रीव का राजवैद्य था। "कोउ कह लंका वैद्य सुखेना"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०) [सं० सुख का करण=रूप] सुख से। "कहौ सुखेन यथा रुचि जेही"—[रामा०]।

सुखेलक—(संज्ञा, पु०, सं०) न, ज, भ, ज, र; (गण) युक्त। एक वर्णिक वृत्त या छंद, प्रभद्रक, [प्रभाद्रिका (दे०)]।

सुखैना*†—(वि०, दे०) [सं० सुख] सुखद, सुखप्रद, सुख देने वाला। (संज्ञा, पु०, दे०) सुषेण।

सुखोत्सव—(संज्ञा, पु०, सं०) आनन्दोत्सव।

सुखोन्माद—"अब सृष्टि सुखोन्माद हो"—निराला।

सुख्यात—(वि०, सं०) प्रसिद्ध।

सुख्याति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रसिद्धि, यश, कीर्त्ति, शोहरत, बड़ाई। "जाकी जग सुख्याति है, सो जीवत जग माँहि"—मन्ना०। **सुख्यात**—(वि०) विख्यात।

सुगंध, सुगंधि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुरभि, अच्छी सुन्दर और प्रिय महक, खुशबू, सुवास, सौरभ, वह वस्तु जिससे अच्छी महक निकलती हो, जैसे चंदन, केसर, कस्तूरी, श्रीखंड, आम, परमात्म।—**वाला**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुगंध+हि० वाला] एक सुगंधित वनौषधि।

सुगन्धित—(वि०) [सं० सुगधि] सुगंधयुक्त, खुशबूदार, अच्छी महक वाला। सौरभीला।

सुगठित—(वि०, सं०) सुन्दर गठा हुआ, कसा हुआ।

सुगत—(संज्ञा, पु०, सं०) बुद्ध जी, बौद्ध।

सुगति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मरणोपरान्त उत्तम गति, सद्गति, मुक्ति, मोक्ष। "कीरति भूति सुगति प्रिय जाही"—[रामा०]। ७ मात्राओं और दीर्घ वर्णान्त एक मात्रिक छंद (पिं०)।

सुगना†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक] शुक, तोता, सुग्गा (ग्रा०) सुवा, सुआ।

सुगम—(वि०, सं०) जिसमें या जहाँ जाने में कठिनता या कष्ट न हो, सहज, सरल, आसान। "अगम सुगम होइ जात है सत्संगतिवश पाय"—मन्ना०। [**सुगमता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सुगमता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सरलता, आसानी, सहजपन।

सुगम्य—(वि०, सं०) जिसमें या जहाँ सहज ही में प्रवेश हो सके या जा सके।

सुगल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सु+गल या गला हि०] सुग्रीव। "कुम्भकरण की नासिका काटी सुगल तुरन्त"।

सुगाध—(वि०, सं०) आसानी से पार करने या सुखपूर्वक नहाने के योग्य।

सुगाना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० या सं० शोक] नाराज या दुःखित होना, बिगड़ना। (संज्ञा, पु०, दे०) सुन्दर गान।

सुगीतिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे पच्चीस मात्रायें आदि मे लघु और अंत मे गुरु तथा लघु वर्ण होते हैं (पिं०)।

सुगुरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुगुरु] वह पुरुष जिसका गुरु श्रेष्ठ और विज्ञ हो, सद्गुरु-दीक्षित। [**निगुरा** (विलो०)]।

सुगैया†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुग्गा] चोली, अंगिया, चोलिया। सुन्दर गाय। "मोहि लखि सोवत बिथोरि गौ सुबेनी बनी तोरि गौ हिये को हरा छोरि गौं सुगैया की"—पद्मा०।

सुग्गा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक] तोता, सुआ या सुवा, सुगना।

सुग्रीव—(संज्ञा, पु०, सं०) वानरेश बालि का भाई और श्रीराम का मित्र। "कह सुग्रीव नयन भरि बारी"—[रामा०]। शंख इंद्र। (वि०) जिसकी गर्दन अच्छी हो, सुकंठ।

सुघट—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोहर, सुडौल, जो आसानी से बन सके।

सुघटित—(वि०) [सं० सुघट] भली भाँति बना या गढ़ा हुआ, सर्वथा चरितार्थ।

सुघड़, सुघर—(वि०, दे०) [सं० सुघट] सुन्दर, सुडौल, मनोरम, चतुर, कुशल, प्रवीण, निपुण। "सुघर सुआसिनि गावहि गीता"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०,हि०) सुन्दर घर।

सुघई, सुघरई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुघट —हिं० सुघड़, सुघर] सुन्दरता, सुडौलपन, चतुरता, सुघराई। "जा तिरिया की सुघरई लखि मोहैं सज्ञान"—पद्मा०।

सुघड़ता, सुघरता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सुघड़, सुघर] सुन्दरता, सुडौलपन, दक्षता।

सुघड़पन, सुघरपन—(संज्ञा. पु०, दे०) [हिं० सुघड़, सुघर] सुन्दरता, निपुणता, चतुरता।

सुघड़ाई, सुघराई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सुघड़, सुघर] सौंदर्य, सुन्दरता, चतुरता।

सुघड़ाया, सुघराया—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सुघड़, सुघर] सुन्दरता, खूबसूरती, सुघराई।

सुघरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुघटी] भली सायत; अच्छी घड़ी या समय, शुभमुहूर्त, ब्याह, विदा। (वि०, स्त्री०) [हिं० सुघर] सुडौल, सुन्दर खूबसूरत।

सुच, सुचि*—(वि०, दे०) [सं० शुचि] पवित्र। "सुचि सेवक सब लिये हँकारी"—[रामा०]।

सुचक्षु—(वि०, सं०) सुन्दर नेत्रोंवाला, बुद्धिमान, विवेकी।

सुचना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संचन] संचय या इकट्ठा करना, एकत्र या जमा करना।

सुचरित, सुचरित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) सच्चरित्र, उत्तम श्रेष्ठ आचरण वाला, सुचाली, नेक चलन, सुन्दर चरित या चरित्र, सुन्दर जीवन-वृत्त या कथा, [**सुचरित्रा** (स्त्री०)]। "चलकर सुचरित, फिर हृदय जुड़ाओ उसका"—मैथिली०।

सुचरिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पतिव्रता स्त्री।

सुचा—(वि०, दे०)[सं० शुचि] पवित्र। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सूचन] ज्ञान, बुद्धि, चेतना, समझ, शान्ति, सावधानी।

सुचाना, सोचाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सोचना] किसी दूसरे पुरुष को सोचने-विचारने के काम में लगाना, [सोचवाना, सोचावना (दे०)], किसी बात की ओर ध्यान खींचना, दिखलाना।

सुचार*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सुचाल] अच्छी चाल, सदाचरण। (वि०, दे०) [सं० सुचार] सुन्दर, मनोरम।

सुचारु—(संज्ञा, सं०) रम्य, अति सुन्दर, अति मनोरम। [**सुचारुता**] (संज्ञा, स्त्री०)।

सुचाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सु+हिं० चाल] श्रेष्ठ या शुद्ध आचरण, अच्छी चाल, सदाचार।

सुचालक—(वि०, सं०) जिस वस्तु में बिजली, ताप आदि का परिचलन भली भाँति हो सके। (जैसे लोहा, तांबा आदि) [कुछ कंडक्टर]।

सुचाली—(वि०, हिं०) सदाचारी, अच्छे चाल-चलन वाला [**कुचाली** (विलो०)]।

सुचि—(वि०, दे०) [सं० सुचि] शुचि, पवित्र। "बोले सुचि मन अनुज सन"—[रामा०]।

सुचित—(वि०, दे०) [सं० सुचित्त] शान्त, निश्चित, एकाग्र, सावधान, स्थिर, जो (किसी काम से) निवृत्त हो।

सुचितई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सुचित+ई प्रत्य०] बेफिक्री, निश्चितता, एकाग्रता, शांति, फुर्सत, छुट्टी, सुचित्तता।

सुचिताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सुचित+आई प्रत्य०] निश्चितता सुचितई।

सुचिती†—(वि०, दे०) [सं० सुचित] बेफ़िक्र, निश्चि , सावधान, सुचित्त।

सुचित्त—(वि०, सं०) शान्त, स्थिर मन या चित्त वाला, कार्य से निवृत्त, निश्चित, बेफ़िक्र, बेखटके। (संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर चित्त या मन।

सुचिमंत—(वि०) [सं० सुचिमत्] सदाचारी, शुद्धाचारी, अच्छे आचरण वाला।

सुचिर—(वि०, सं०) पुराना। (संज्ञा, पु०) बहुत काल तक।

सुची—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुचि] पवित्र शुद्ध, निर्दोष, निष्कलंक।

सुचेत, सुचेता—(वि०, दे०, यौ०) [सं० सुचेतस] सावधान, सजग, सतर्क, चौकन्ना। (संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर चेत या ज्ञान।

सुच्छंद, सुछंद†*—(वि०, दे०) [सं० स्वच्छंद] स्वच्छंद, स्वतंत्र, स्वाधीन। [**सुच्छंदता, सुछंदता** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

सुच्छ†*—(वि०) [सं० स्वच्छ] स्वच्छ, साफ़, शुद्ध, निर्मल। [**सुच्छता, सुच्छई** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

सुच्छम—(वि०, दे०) [सं० सूक्ष्म] सूक्ष्म, सुक्ष्म। [**सुच्छमता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सुजन—(संज्ञा, पु०, सं०) आर्य, सज्जन, सभ्य, भलामानुष, सत्पुरुष, शिष्ट या भला आदमी, शरीफ। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वजन] वंश या परिवार के लोग, कुटुंबी, नातेदार। "सुजन सराहिय सांय"—[नीति०]।

सुजनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सज्जनता, सौजन्य, भलमनसाहत, भलमंसी, भद्रता, सुजन का भाव, शिष्टता।

सुजनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सोजनी] सुई के काम किया एक प्रकार का बिछौना। (संज्ञा, स्त्री०) [सं० सुजन] सजनी।

सुजन्मा—(वि०, सं०) उत्तम या श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न, कुलीन।

सुजस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुयश] सुयश, सुकीर्त्ति, सुख्याति, नामवरी। "स्रवन, सुजस सुनि आयेऊ, प्रभु भंजन-भव भीर"—[रामा०]।

सुजागर—(वि०, हि०) प्रकाशमान, सुशोभित, मनोहर, आन में अति सुन्दर या सुरूपवान, विख्यात।

सुजात—(वि०, सं०) विवाहित स्त्री और पुरुष से उत्पन्न, श्रेष्ठ या अच्छे वंश या कुल में उत्पन्न, अच्छा सुन्दर [**सुजाता** (स्त्री०)]। "सुजातयो पंकज कोषयो श्रियम्"—[रघु०]।

सुजाता—(वि०, स्त्री०, सं०) अच्छे कुल की, कुलीना, सुन्दर। (स्त्री०) एक कृषक बालिका जिसने बुद्ध भगवान् से बुद्धत्व-ज्ञान प्राप्त करके खीर खिलायी थी।

सुजाति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सद्वंश, श्रेष्ठ या अच्छी जाति, सकुल। (वि०) उत्तम जाति या कुल का।

सुजातिया—(वि०, दे०) [हि० सुजाति+इया प्रत्य०] उत्तम जाति या कुल का, श्रेष्ठ वंश का। (वि०) [सं० स्वजाति] स्वजाति का, अपनी जाति वाला, सजातीय।

सुजान—(वि०, दे०) [सं० सुज्ञान] चतुर, प्रवीण, निपुण, सयाना, कुशल, समझदार, बुद्धिमान, ज्ञानी, विज्ञ, [**सुजाना** (दे०)]। सज्जन, पंडित। "अस जिय जानि सुजान सिरोमनि"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०) पति या प्रेमी, परमेश्वर। "कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन" —घना०।

सुजानता—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) [सं० सुज्ञानता] चतुरता, सयानप, प्रवीणता, सज्ञानता, निपुणता, कुशलता, समझदारी, बुद्धिमानी, विज्ञता।

सुजाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० सुजाना] फुलाना, बढ़ाना। (संज्ञा, पु०, दे०) सुजान।

सुजानी—(वि०) [हि० सुजान] ज्ञानी, चतुर, पंडित, समझदार, बुद्धिमान।

सुजोग*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुयोग] सुयोग, अच्छा अवसर या मौका, अच्छा संयोग। (वि०, दे०) [सं० सुयोग्य] सुयोग्य, दक्ष, योग्य सुजोग्य।

सुजोधन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुयोधन] कौरवों में सबसे ज्येष्ठ, सुयोधन, दुर्योधन।

सुजोर—(वि०, दे०) [सं० सु+जोर फ़ा०] मजबूत, सुदृढ़, बलवान, शहजोर (फ़ा०)।

सुज्ञ—(वि०, सं०) पंडित, ज्ञाता।

सुझना—(क्रि० स०, दे०) सूझना।

सुझाना—(क्रि० स०) [हि० सूझना] दिखाना, समझाना, बुझाना, दूसरे के ध्यान या दृष्टि में लाना, [सुझवाना सुझावना (दे०)]।

सुझाव—(संज्ञा, पु०) सुझाने का कार्य, सलाह, परामर्श। [सजेशन]

सुटुकना—(क्रि० अ०, दे०) निगलना, लीलना, सुटकना, सिकुड़ना, संकुचित होना। (क्रि० स०, दे०) चाबुक लगाना।

सुठ—(वि०, दे०) [सं० सुष्ठु] सुन्दर, अच्छा, बढ़िया, बहुत, अत्यन्त।

सुठहर, सुठाहर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुठ-हर+हि०] उत्तम या बढ़िया स्थान, अच्छा ठौर, अच्छी जगह।

सुठार—(वि०, दे०) [सं० सुष्ठु] सुन्दर, सुढार, सुडौल।

सुठि*†—(वि०, दे०) [सं० सुष्ठु] बढ़िया, उत्तम श्रेष्ठ, अच्छा, सुन्दर, अत्यन्त, अधिक बहुत। "सबहिं सुहाय मोहिं सुठि नीका"—[रामा०]। (अव्य०, दे०) [सं० सुष्ठु] बिलकुल, पूरा-पूरा।

सुठौना*†—(वि०, दे०) [सं० सुष्ठु] सुठि, बढ़िया, उत्तम, अच्छा, सुन्दर, अत्यंत, अधिक, बहुत।

सुठौर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सु+ठौर हि०] सुन्दर स्थान ।

सुड़सुड़ाना—(क्रि० स०, अनु०) सुड़-सुड़ शब्द उत्पन्न करना, सुटसुटाना ।

सुड़कना, सुरकना—(क्रि० स०) [दे० या अनु० सुड़ सुड़] थोड़ा-थोड़ा करके वायुवेग से पीना ।

सुड़की—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) पतंग या गुड्डी की डोरी छोड़ना ।

सुड़प—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कौर, कौल, ग्रास, कवल ।

सुड़पना—(क्रि० स०, दे०) निगलना, चाटना, चूसना, सरपोटना, सुटकना, सुड़कना ।

सुडौल—(वि०, दे०) [सं० सु+डौल हि०] अच्छे आकार का, सुन्दर डौल का, सुन्दर ।

सुढंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सु+हि० ढंग] उत्तम ढंग, अच्छी रीति, सुघड़, सुन्दर, अच्छा । "जो जानै प्रस्तार-धुनि, सो कवि गनिय सुढंग" [स्फु०] ।

सुढर—(वि०, दे०) [सं० सु+ढलना हि०] अनुकंपित, दयालु, प्रसन्न, कृपालु । (वि०, दे०) [हि० सुघड़] सुन्दर, सुडौल । "हिमगिरि की वह सुढर उठान।"—प्रसाद ।

सुढार, सढारु*†—(वि०, दे०) [सं० सु+ढलना हि०] सुन्दर, खूबसूरत, सुडौल । [सुढरी (स्त्री०)] ।

सुतंत, सुतंतर, सुतंत्र—(वि०, दे०) [सं० स्वतंत्र] स्वतंत्र, स्वाधीन, स्वच्छंद । (क्रि० वि०, दे०) स्वतंत्रतापूर्वक ।

सुत—(संज्ञा, पु०, सं०) लड़का, बेटा, पुत्र । "सकल सुकृत, कर फल सुत एहू"—[रामा०] (वि०) पार्थिव, जाति, उत्पन्न, पैदा ।

सुतधार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूत्रधार] सूत्रधार, नियंता ।

सुतना—(क्रि० अ०, दे०) सुतना, सोना । (संज्ञा, पु०, दे०) सुथना, पायजामा ।

सुतनी—(वि०, स्त्री०, सं०) सुत या पुत्र वाली, पुत्रवती । "तेनाम्बा यदि सुतनी वद वंध्या कीदृशी नाम" ।

सुतनु—(वि०, सं०) सुन्दर देह या शरीर वाला । (संज्ञा, स्त्री०) सुन्दर शरीरवाली, कृशांगी स्त्री ।

सुतर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शुतुर] शुतुर, ऊँट ।—**नाल**-(स्त्री०) एक प्रकार की तोप जो ऊँट पर चलती है ।

सुतरां—(अव्य०) [वि० सुतराम] इस हेतु, इस कारण, किंपुनः, और भी, किं बहुना, अतः, अपितु, निदान ।

सुतरा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक आभूषण, कड़ा, बाला ।

सुतरी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुतली, सन की बनी रस्सी या डोरी, तुरही नामक एक बाजा ।

सुतल—(संज्ञा, पु०, सं०) सात पातालों मे एक पाताल या लोक ।

सुतली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुत+ली प्रत्य०] सन की रस्सी, डोरी, सुतरी ।

सुतवाना†—(क्रि० स०) [दे० सुलवाना] सुलवाना, [सुताना (दे०)] ।

सुतहर, सुतहार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुतार] सुतार, शिल्पकार, बढ़ई । (वि०) सूत वाला, सुतहा ।

सुतहा—(वि०, दे०) सूत वाला, सुतली से बना या बुना हुआ ।

सुता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पुत्री, लड़की, कन्या, बेटी । "सादर जनक-सुता करि आगे"—[रामा०] ।—**दान**-(पु०) कन्यादान ।—**पति**-(पु०) दामाद ।

सुताना—(क्रि० स०) सुलाना ।

सुतार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूत्रकार] कारीगर, बढ़ई शिल्पकार । (वि०, सं०) अच्छा, उत्तम, सूतवाला । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुभीता] सुभीता, सुविधा । **मुहा०—बैठाना (होना)**-सुभीता या सुविधा होना ।

सुतारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सूत्रकार] जूता आदि सीने का मोचियों का सूजा या सुआ, सुतार या बढ़ई का काम । (संज्ञा, पु०) [हि० सुतार] शिल्पकार, कारीगर, बढ़ई ।

सुतिन*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुतनु] सुन्दरी, रूपवती स्त्री ।

सुतिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हँसुली, गले का एक गहना । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुन्दरी, तिया या अच्छी स्त्री ।

सुतिहार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुतीर] सुतार, बढ़ई, कारीगर, शिल्पकार ।

सुती—(संज्ञा, पु०, सं०) पुत्र वाला, लड़के वाला।

सुतीछन—(वि०, दे०) [सं० सुतीक्ष्ण] अति तीक्ष्ण या पैना।

सुतीखा—(वि०, हि०) अति कड़ु या पैना।

सुतीक्ष्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) सुतीक्ष्ण, अगस्त्य जी के भाई वनवास में श्रीराम से मिले थे। (वि०, सं०) अति तीक्ष्ण।

सुतीच्छन, सुतीछन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुतीक्ष्ण] अगस्त्य मुनि का भाई या शिष्य। (वि०, दे०) सुतीक्ष्ण, [सुतीखन (दे०)]। "नाम सुतीछन रत भगवाना"—[रामा०]।

सुतीछी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) अति पैनी या चोखी, धारदार, सुतीखी।

सुतुही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुक्ति] छोटी शुक्ति, सुती, सीपी।

सुतून—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) स्तंभ, खंभा।

सुत्ता—(वि०, दे०) सोया हुआ।

सुत्रामा—(संज्ञा, पु०) [सं० सुत्रामन्] इन्द्र।

सुथना, सूथना—(संज्ञा, पु०, दे०) सुथना, पायजामा सुत्थान (ग्रा०)।

सुथनी, सूथनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्त्रियों का एक ढीला पायजामा, रतालू, पिंडालू।

सुथरा—(वि०, दे०) [सं० स्वच्छ] निर्मल, साफ, स्वच्छ। [**सुथरी** (स्त्री०)]। [**साफ-सुथरा** (यौ०)]।

सुथराई—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुथरा] सुथरापन, स्वच्छता, सफाई।

सुथरापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुथरा+पन प्रत्य०] सफाई, निर्मलता, स्वच्छता, सुथराई।

सुथरेसाही—(संज्ञा, पु०,) [हि० सुथरा+शाह महात्मा] गुरु नानक के शिष्य, सुथराशाह का संप्रदाय, इस शाह के अनुयायी, सुथरसाईं।

सुदंती—(वि०, सं०) सुंदर दाँतों वाली स्त्री, सुदती।

सुदर्शन—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु का चक्र, सुमेरु शिव, [सुदरसन (दे०)]। (वि०) देखन मे सुंदर, मनोहर, मनोरम, रुचिर।—**चक्र**-(पु०) विष्णु का चक्र।—**चूर्ण**-सर्व ज्वर-नाशक एक प्रसिद्ध औषधि या चूर्ण या अर्क (वैद्य०)।

सुदरसन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुदर्शन] विष्णु का चक्र, सुमेरु, शिव।

सुदामा—(संज्ञा, पु०) [सं० सुदामन] श्रीकृष्ण जी के मित्र, एक दरिद्र ब्राह्मण जिन्हें उन्होंने ऐश्वर्य-शाली बना दिया था। "द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक बतावत आपनो नाम सुदामा"—[सु० च०]।

सुदावन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुदामा] सुदामा, कृष्ण-मित्र।

सुदास—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रसिद्ध वैद्य राजा दिवोदास का पुत्र। एक जनपद (प्राचीन)।

सुदि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुदी] सुदी।

सुदिन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सु+दिन] शुभ या अच्छा दिन। "सुदिन, सुअवसर तबहिं जब, राम होहिं जुबराज"—[रामा०]।

सुदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुद्ध या शुक्ल] किसी महीने का शुक्ल पक्ष, उजेला पाख।

सुदीपति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुदीप्ति] अधिक उजेला या प्रकाश। [हि० सुदी+पति सं०] चंद्रमा।

सुदीप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तेज चमक, तेज रोशनी।

सुदीर्घ—(वि०, सं०) विस्तृत, बहुत लम्बा।

सुदूर—(वि०, सं०) अति दूर।—**पूर्व**-(पु०) पूर्वीय देश।

सुदृढ़—(वि०, सं०) अति दृढ़, बहुत मजबूत या पक्का। [**सुदृढ़ता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सुदृश्य—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोज्ञ, दर्शनीय, देखने योग्य, मनोहर, उत्तम, अच्छा।

सुदेव—(संज्ञा, पु०, सं०) देवता।

सुदेश—(संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर या उत्तम देश, उपयुक्त स्थान, यथा-योग्य ठौर (वि०) सुन्दर, मनोहर। "भूषण सकल सुदेश सुहाये"—[रामा०]।

सुदेस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुदेश] सुदेश।

सुदेह—(वि०, सं०) सुन्दर, मनोहर, कमनीय। (संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर शरीर।

सुद्दा, सुद्दी—(संज्ञा, पु०, स्त्री०) [अ० सुद्दा] पेट मे जमा सूखा मल।

सुद्ध*—(वि०, दे०) [सं० शुद्ध] शुद्ध, साफ, सही, ठीक, पवित्र, निर्दोष, निष्कलंक। [**सुद्धता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सुद्धा†—(अव्य०, दे०) [सं० सह] समेत, युक्त, सहित।

सुद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुद्धि] शुद्धि, पवित्रता, स्वच्छता। [हि० सुधि] स्मरण, स्मृति, याद, ख्याल, ध्यान। "होनहार हिरदै बसै, बिसरि जात सब सुद्धि"—[नीति०]।

सुधंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सु+ढंग] उत्तम या अच्छा ढङ्ग, अच्छी रीति।

सुध, सुधि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुद्ध—शुद्धि] याद, स्मरण, स्मृति, ख्याल, ध्यान, पता, खबर, चेत। "सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी। सुध न लात सीता की पाई"—[रामा०]।—**बुध**-होश-हवास। मुहा०—**दिलाना**-याद दिलाना। —**न रहना**—(**होना**)-भूल जाना, याद न रहना।—**बिसरना**-भूल जाना।—**बिसराना या बिसारना**-किसी को भूल जाना।—**भूलना**-सुध बिसरना।—**बिसरना**-चेत या होश में न रहना —**बिसराना**-बेहोश या अचेत करना। (वि०, दे०) [सं० शुध] शुद्ध। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुधा] सुधा, अमृत, सुधी।

सुधन्वा—(संज्ञा, पु०) [सं० सुधन्वन्] विष्णु, श्रेष्ठ, धनुर्धर, विश्वकर्मा, अंगिरस, एक राजा (महा०)। (संज्ञा, पु०) अच्छा धनुष।

सुधमना*†—(वि०, दे०) [हि० सुध—होश+मन] सजग, सचेत, सावधान, जिसे चेत हो। [**सुधमनी** (स्त्री०)]।

सुधरना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शोधन] सँभलना, दुरुस्त होना, संशोधन होना, बिगड़े हुए का बन जाना। [**सुधारना** (स० रूप)], [**सुधरवाना, सुधराना** (प्रेरणा० रूप)]।

सुधराई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० सुधरना] सुधार, बनाव, सुधारने की मजदूरी, सुधरने का भाव।

सुधर्म्म—(संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर या उत्तम धर्म्म, पुण्य-कार्य्य, श्रेष्ठ कर्त्तव्य।

सुधर्म्मी—(वि०) [सं० सुधर्म्मिन्] धार्मिक, धर्मात्मा, धर्मनिष्ठ, सुधर्मिष्ठ।

सुधरवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० सुधरना का प्रेरणा० रूप] कोई दोष या त्रुटि मिटाना, संशोधन करना, ठीक या दुरुस्त कराना, सुधराना।

सुधराना—(क्रि० स०, दे०) सुधार कराना।

सुधां—(अव्य, दे०) [सं० सुह] सहित, समेत, युक्त, [सुद्धा (दे०)]।

सुधांग—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सुधा+अङ्ग सुधांश] चन्द्रमा। "नाम तौ सुधाँग पै बिषोग सो जनाई देत"—मन्ना०।

सुधांशु—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सुधा+अंशु] चन्द्रमा, सुधाकर, चाँद।

सुधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पीयूष, अमृत, जल, गंगा, मकरंद, दूध, मधु, रस, मदिरा, अर्क, पृथ्व, एक वर्णिक वृत्त (पिं०)। "सुधा-समुद्र समीप बिहाई", "मुये करै का सुधा तड़ागा" —[रामा०]।—**कर**-(संज्ञा, पु०, सं०) चद्रमा। "लिखत सुधाकर लिखिगा राहू"—[रामा०]। —**गेह**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सुधा+गेह हि०] चन्द्रमा, सुधागृह। "नाम सुधागेह ताहि शशांक मलीन कियो, ताहु पर चाहु बिनु राहु भखियतु है"—कविता०।—**घट**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सुधा+घट] चन्द्रमा, सुधापात्र। —**धर**-(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा। "बसुधाधर पै बसुधाधर पै और सुधाधर पै त्यों सुधा पै लसै"—रघुराज। रिक्त सुधाधर पात्र—मैथिली। —**धाम**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चंद्रमा। "एरे सुधा धाम सुधा धाम को सपूत है के, बिना सुधा धाम तू जरावै कहा बाम को"—कुंज वि०।—**धार**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चंद्रमा।—**धारा** -(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अमृत की धारा। "तुम हो सुधाधारा सदा"—महादेवी।—**निकेत,—निकेतन**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चन्द्रमा, सागर।—**निधि**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुधानिकेत, चन्द्रमा, समुद्र, क्रम से १६ बार गुरु और लघु वर्ण वाला, दंडक छंद का एक भेद, (पिं०)। "प्रकटी सुधानिधि सों वह सुधानिधि साथ सुधानिधि सुखी भई सुधानिधि वाम है"—कुंज वि०। —**पाणि**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पीयूष-पाणि, धन्वंतरि। (वि०, यौ०, सं०) जिसके हाथ मे सुधा की-सी शक्ति हो।—**मयूख**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुधाकर, चन्द्रमा, सुधामरीची।—**योनि**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चन्द्रमा।—**रश्मि**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुधाकर, चन्द्रमा। —**सदन,—सद्म**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चन्द्रमा।

सुधाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुधा-सीधा] सीधापन, सिधाई, सरलता।

सुधाधी—(वि०) [सं० सुधा] अमृत के समान।

सुधाना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० सुध] स्मरण या सुधि कराना, दिलाना, सुधियाना। (क्रि० अ०, दे०) [हि० सुधा] सीधा होना या करना। [**सोधना, सोधवाना**—(क्रि० स०, दे०)]

[हि० सोधना] सोधने का काम किसी दूसरे से कराना, दुरुस्त या ठीक करना, लग्न या जन्मपत्र ठीक कराना, सोधाना।

सुधार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुधारना] सस्कार, संशोधन, सुधारने का भाव। (संज्ञा, वि०, दे०) [हि० सीधा] सीधा। (स्त्री०, हि०) सुन्दर धारा, सुधारा।

सुधारक—(संज्ञा, पु०) [हि० सुधार+क प्रत्य०] दोषों और त्रुटियों का सुधार करने वाला, संशोधक, धार्मिक या सामाजिक सुधारों में प्रयत्नशील।

सुधारना—(क्रि० स०) [हि० सुधारना] दोषों या त्रुटियों का मिटाना, बुराई दूर करना, संशोधन करना, ठीक करना, बिगड़े को बनाना। (वि०) सुधारने वाला। [**सुधारनी** (स्त्री०)]।

सुधारा—(वि०, दे०) [हि० सुधा] सीधा, सरल, निष्कपट। (संज्ञा, स्त्री०, हि०) सुन्दर धारा, सुधार।

सुधालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुधाकर, चन्द्रमा।

सुधाश्रवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुधा+स्रवण] अमृत की वर्षा करने वाला, सुधावर्षी।

सुधि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुद्ध बुद्धि] याद, स्मृति, स्मरण, समाचार, खबर, पता, [सुध (दे०)]। "खेलत रहे तहाँ सुधि पाई" —[रामा०]। —**विहीन**-(वि०, सं०) आत्म-विस्मृत। देह का भान भूला हुआ। "यह चतुर चितेरा सुधि-विहीन।"—महादेवी

सुधियाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० सुधि] सुधि करना, याद करना। "मानौ सुधियात कोऊ भावना भुलाई है"—[रामा०]।

सुधी—(संज्ञा, पु०, सं०) बुद्धिमान, विद्वान, पंडित। (वि०, सं०) चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान, समझदार धार्मिक।

सुधीर—(वि०, सं०) धैर्यवान, दृढ़।

सुधेश—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सुधा+ईश] चन्द्रमा, सुधेश्वर।

सुधोपम—"मिला अहिंसा सत्य सुधोपम"—पंत।

सुनंदिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स, ज, स, ज, (गण) और एक गुरु वर्ण वाला एक वर्णिक छद, प्रबोधिता, मंजुभाषिणी (पिं०)।

सुनकातर—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का मटमैला साँप।

सुनकिरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सोना+किरवा—कीड़ा] एक कीड़ा जिसके पंख सोने के रंग से होते हैं।

सुनखी—(वि०, सं०) सुन्दर नख वाला।

सुनगुन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुनना+गुन] भेदभाव, सुराग, खोज, टोह, काना, फूसी।

सुनत, सुनति*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० सुन्नत] सुन्नत मुसलमानी। "सिवा जी न होते तो सुनति होति सब की"—भूषण।

सुनना—(क्रि० स०, दे०) [सं० श्रवण] श्रवण करना, कानों से किसी की बात पर ध्यान देना, भली बुरी बातें सुन कर सह लेना, शब्द-ज्ञान करना। **मुहा०—अनसुनी करना या कर देना** –सुन कर भी उसकी ओर ध्यान न देना। [**सुनना, सुनावना, सुनवाना**—(स०, रूप)]।

सुनफा—(संज्ञा, पु०, दे०) एक ग्रह-योग (ज्यो०) [**अनफा** (विलो०)]।

सुनबहरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुन्न+बहरी] वह रोग जिसमें सारा शरीर शून्य हो जाता है। और गरमी सरदी का ज्ञान नहीं होता, यह रोग गलित कुष्ठ का पूर्व रूप है, (वैद्य०)।

सुनबहिरी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हि० सुनना] सुनी-अनसुनी करने की क्रिया।

सुनय—(संज्ञा, पु०, सं०) सुनीति, श्रेष्ठ नीति।

सुनरा, सुनार—(संज्ञा, पु०, दे०) सोनार, स्वर्ण-कार। (संज्ञा, स्त्री०) [सुनारी (दे०)] सोना, का काम, सुन्दर स्त्री।

सुनरिया, सुनरी—(संज्ञा, स्त्री०) सुन्दर।

सुनवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुनना+वाई प्रत्य०] मुकदमे या शिकायत आदि का सुना जाना, सुनने की क्रिया।

सुनवार—(वि०, दे०) [हि० सुनना+वार प्रत्य०] सुनने वाला।

सुनवैया—(वि०, दे०) [हि० सुनना+वैया प्रत्य०] सुनने या सुनाने वाला, सुनवार (सं०) [सुनैया (दे०)]।

सुनसर—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का गहना।

सुनसान—(वि०, यौ०, दे०) [सं० शून्य स्थान] जन-हीन, निर्जन देश, उजाड़, वीरान, जहाँ कोई न हो। (संज्ञा, पु०, दे०) सन्नाटा।

सुनहरा, सुनहला—(वि०, पु०) [हि० सोना + हरा, हला प्रत्य०] सोने का, सोने के रंग का, [सोनहरा (दे०)] । [**सुनहरी, सुनहली** (स्त्री०)] ।

सुनहा—(संज्ञा, पु०, दे०) कुत्ता । "सुनहा खेदै कुंजर असवारा"—कबीर ।

सुनाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुनना + आई प्रत्य०] मुकदमें या शिकायत आदि का सुना जाना, सुनवाई ।

सुनाना—(क्रि० स०) [हि० सुनना] श्रवण करना, खरी-खोटी या बुरी भली कहना, कथा आदि कहना ।

सुनाभ—(संज्ञा, पु०, सं०) सुदर्शन चक्र ।

सुनाम—(संज्ञा, पु०, सं०) कीर्त्ति, यश । [**कुनाम** (विलो०)] ।

सुनार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वर्णकार] स्वर्णकार, सोनार, चाँदी-सोने के गहने बनाने वाली एक जाति । "ए दसहू अपने नहीं सूजी सभा सुनार"—[स्फु०] ।

सुनारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुनार + ई प्रत्य०] सुनार का काम, सुनार की स्त्री, सुनारिन, सुन्दर श्रेष्ठ स्त्री, सुनारि ।

सुनावट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुनाहट, मौन, चुपचाप ।

सुनावना—(क्रि० स०, दे०) (हि० सुनाना] सुनाना ।

सुनावनी—(क्रि० स०, दे०) [हि० सुनाना + आवनी प्रत्य०] किसी नातेदार की मृत्यु के समाचार का दूर से आना, ऐसी खबर से किया गया स्नानादि शौच कृत्य ।

सुनासीर—(संज्ञा, पु०) [सं० सु + नासीर = सेना का अग्रभाग] इन्द्र ।

सुनाहक—(क्रि० वि०, दे०) [फा० ना + हक अ०) निष्प्रयोजन, व्यर्थ, बेमतलब ।

सुनिश्चित—(वि०, सं०) बिलकुल, निश्चित, पक्का ।

सुनीति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दर श्रेष्ठ नीति, ध्रुव की माता । "समुझि सुनीति, कुनीति-रत जागत ही रह सोय"—तुल० । [**सुनीतिज्ञ** (वि०)] ।

सुनैया—(वि०, दे०) [सं० सुनना + ऐया प्रत्य०] सुनने वाला । "जोपै कहूँ सुघर सुनैया पाइयतु हैं' —[स्फु०] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सं० सुनौका] सुन्दर नाव ।

सुनोची—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का घोड़ा ।

सुन्न—(वि०, दे०) [सं० शून्य] निश्चेष्ट, निस्तब्ध, निर्जीव, चेष्टा-रहित, स्पन्दनहीन । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शून्य] शून्य, बिन्दी, सिफर, सुन्ना (ग्रा०) ।

सुन्नत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) खतना, मुसलमानी, बालक की लिंगेन्द्रिय के अग्रिम भाग के चमड़े को काटने की एक रस्म (मुसल०), [सुनति, सुन्नति (दे०)] ।

सुन्ना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शून्य] शून्य, बिंदी, साईफर ।

सुन्नी—(संज्ञा, पु०, अ०) चारयारी, चारों खलीफाओं को प्रधान मानने वाला मुसलमानों का एक समुदाय । [**शिया** (विलो०)] ।

सुपथ—(संज्ञा, पु०, हि०) सुन्दर मार्ग, सदाचार, अपना मार्ग या कर्त्तव्य, स्वपथ (सं०) ।

सुपक्क—(वि०, सं०) भली भाँति पका हुआ । [**सुपक्कता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

सुपच—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वपच] चांडाल, डोम, भंगी ।

सुपत—(वि०, दे० , [सं० सु + पत = इज्जत हि०] प्रतिष्ठित, सम्मानित ।

सुपत्थ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुपथ] सुपंथ उत्तम मार्ग, अच्छा रास्ता, सन्मार्ग, अच्छा पथ्य ।

सुपथ—(संज्ञा, पु०, सं०) सत्पथ, सदाचार, सन्मार्ग, उत्तम रास्ता, अच्छी राह, सदाचरण, र, न, भ, र (गण) और गुरु वर्णों वाला, एक वर्णिक छंद, (पिं०) । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुपथ्य] सुन्दर या उचित पथ्य । (वि०) [सं० सु + पथ] समतल, बराबर ।

सुपथ्य—(वि०, सं०) अत्यन्त लाभदायक, अति-- स्वास्थकारी ।

सुपना, सपना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वप्न] स्वप्न, सोना, सपनो ।

सुपनाना*—(क्रि० सं०, दे०) [हि० सुपना] स्वप्न दिखाना, [**सपनाना** (दे०)] ।

सुपरस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्पर्श] स्पर्श छूना, सुखद स्पर्श ।

सुपर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) पक्षी, गरुड़, विष्णु, किरण, घोड़ा। (संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर पत्र।

सुपर्णक—(वि०, सं०) सुन्दर पत्रों या पंखों वाला। (पु०) देवगंधक, गरुड़, एक शिकारी चिड़िया जो कद में बड़ी होती है।

सुपर्णी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गरुड़ की माता, सुपर्ण, पद्मिनी, कमलिनी। (संज्ञा, पु०) [सं० सु + पर्ण + ई प्रत्य०] सुन्दर पत्तों वाला।

सुपात्र—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी कार्य के योग्य या उचित व्यक्ति, श्रेष्ठ या उत्तम, सुयोग्य पात्र, उपयुक्त व्यक्ति, अच्छा बरतन। "दानं परम् किंच सुपात्रदत्तम्"—[प्र० र०]। [**सुपात्रता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सुपारी, सुपाड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुप्रिया] पूग, छालिया (प्रान्ती०)। पूगीफल, नारियल की जाति का एक पेड़ जिसके छोटे फल पान में काट कर खाये जाते हैं, इस पेड़ के बेर जैसे कड़े फल, गुवाक (प्रान्ती०)। **मुहा०—लगना**—सुपारी का हृदय देश में अटकना जो दुखदायी होता है।—**फोड़ना**—निठल्ले बैठे रहना।—**खेलना**—व्यर्थ अपव्यय या हानिप्रद कार्य करना।

सुपार्श्व—(संज्ञा, पु०, सं०) जैन मत के २४ तीर्थंकरों में से ७वें तीर्थंकर, सुन्दर सुखद पड़ोस।

सुपास—(संज्ञा, पु०, दे०) आराम, सुख, सुवास, सुखद निवास-स्थान या पड़ोस। "जहँ सब कहँ सब भाँति सुपासा"—[रामा०]

सुपासी—(वि०, दे०) [हिं० सुपास] सुखद, सुखदायी, सुख देने वाला। "सीकर ते त्रैलोक्य सुपासी"—[रामा०]। "तुलसी बसि हर पुरी राम जपु जो भयो चहै सुपासी"—[विन०]।

सुपुत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) अच्छा लड़का, [सुपूत (दे०)]।

सुपुर्द—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सिपुर्द] सौंपना, सिपुर्द करना, सुपुरुद, सिपुरद (ग्रा०)।

सपूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुपुत्र] सपूत। अच्छा लड़का, सुपुत्र। "लीक छाँड़ि तीनै चलै, सायर सिंह सुपूत"—(नीति]।

सुपूती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सुपूत + ई प्रत्य०] सुपुत्रता, [सपूती (दे०)] सुपूतपन, सुपूत होने का भाव।

सुपेत—(वि०, दे०)[फ़ा० सुफ़ैद] सफेद, उज्वल, सपेद (ग्रा०)।

सुपेती*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सफ़ैदी] सफेद होने का भाव, श्वेतता, धवलता, सफेद रजाई या तोशक।

सुपेद, सुपेत†—(वि०, दे०) [फ़ा० सुफ़ैद] सफ़ेद, उजला, साफ, स्वच्छ।

सुपेदी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सुफ़ैदी) उज्वलता, सफ़ेदी, क़लई, चूना, सफेद रजाई या तोषक, बिछौना।

सुपेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सूप] छोटा सूप।

सुप्त—(वि०, सं०) सोता या सोया हुआ, निद्रित, बंद, ठिठुरा हुआ, मुर्दा हुआ।—**ज्ञान, विज्ञान**—(पु०) स्वप्न।—**प्रबुद्ध**—(वि०) वह जो निद्रावस्था में रह कर भी चेतना शून्य न हुआ हो।

सुप्तता—(संज्ञा, स्त्री०) नींद, नींद की स्थिति।

सुप्तांग—(संज्ञा, पु०, सं०) सुन्न अंग।

सुप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मनुष्य की चार दशाओं में से एक दशा, नींद, निद्रा, उङाई।

सुप्रज्ञ—(वि०, सं०) अत्यंत ज्ञानी या बुद्धिमान।

सुप्रतिष्ठ—(वि०, सं०) अत्यंत प्रतिष्ठा वाला, अति प्रसिद्ध या विख्यात।

सुप्रतिष्ठा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रसिद्धि, नामवरी, शोहरत, ख्याति, ५ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

सुप्रतिष्ठित—(वि०, सं०) सम्मानित, विशेष माननीय, सम्मान्य, बड़ाई या प्रतिष्ठा के योग्य, अति बड़ाई वाला।

सुप्रसिद्ध—(वि०, सं०) अति विख्यात, बहुत नामी, बहुत प्रसिद्ध, मशहूर। [**सुप्रसिद्धि** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

सुप्रिया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक चौपाई जिसके अन्त के एक या दो वर्ण तो गुरु शेष सब लघु होते हैं (पिं०)। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) अति प्रिया या प्रेमिका, प्रेयसी, प्रियतमा [**सुप्रिय** (संज्ञा, पु०)]।

सुफल—(संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर परिणाम, अच्छा फल या नतीजा। (वि०) सुन्दर फलवाला (वृक्ष, अस्त्र) सफल, कृतार्थ, कृतकार्य। [**सुफलता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

सुफेद—(वि०, सं०) सफेद, श्वेत ।

सुबरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुवर्ण] सोना, [सुबर्न (दे०)]। "सुबरन को खोजत फिरैं, कवि विभिचारी चोर"—[स्फु०]।

सुबल—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव। गान्धार देश का राजा शकुनि का बाप। (वि०) अति बली, अति दृढ़ बलवान।

सुबस—(अव्य०, दे०) [सं० स्ववश] स्वाधीन, स्वतंत्र, स्वच्छंद। "कीन्हे सुबस सकल नर नारी"—[रामा०]। भली भाँति बसा हुआ।

सुबह—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रात, प्रभात, सबेरा, प्रातः-काल। **—का तारा**-(पु०) शुक्र।

सुबहान, सुभान—(संज्ञा, पु०, अ०) पवित्र, भगवान, निर्दोष या निष्कलंक, परमेश्वर। **—अल्ला**-(अव्य०, यौ०, अ०) परमेश्वर पवित्र है, हर्ष या आश्चर्यसूचक पद [सुभानअल्ला (दे०)]।

सुबातास—"सहसा वह चली साह्य बेला की सुबातास।"—निराला।

सुबास—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० सु+वास] सुगंध, सुरभि, अच्छी महक। (संज्ञा, पु०) अच्छा निवास, अच्छा वस्त्र, एक प्रकार का धान। [**सुबासित** (वि०)]।

सुबासना—(संज्ञा, पु०, स्त्री०, दे०) [सं० सु+वास] सुगंध, खुशबू, सुन्दर वासना या इच्छा। (क्रि० स०, दे०) सुगंधित करना, महकाना।

सुबासिक, सुवासित—(वि०, सं०) सुगंधित, सौरभित, सुगंधि से बसाया हुआ।

सुबाहु—(संज्ञा, पु०, सं०) एक राक्षस जो मारीच का भाई था। "पावक-सर सुबाहु पुनि मारा"—[रामा०]। धृतराष्ट्र का पुत्र और चेदि देश का राजा (महा०)। सेना, कटक। (वि०) दृढ़ या सुन्दर हाथों या बाहुओं वाला।

सुबिस्ता, सुबीता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सुभीता] सुभीता, समाई सामर्थ्य।

सुबुक—(वि०, फ़ा०) हलका, सुन्दर। (संज्ञा, पु०) घोड़े की एक जाति।

सुबुद्धि—(वि०, सं०) सुधी, ज्ञानी, धीमान, बुद्धिमान, अच्छी बुद्धि वाला। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) उत्तम बुद्धि।

सुबू—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सुबह] प्रातः काल, सबेरा, तड़का।

सुबूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सबूत] सबूत, सिद्धांत, प्रमाण, जिससे कोई बात सिद्ध या प्रमाणित हो।

सुबोध—(वि०, सं०) सुधी, ज्ञानी, पंडित, बुद्धिमान, सहज ही में समझने वाला, जिसे अच्छा बोध हो, स्पष्ट, सरलता से समझ में आने वाला। [**सुबोधता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

सुब्रह्मण्य—(संज्ञा, पु०, दे०) विष्णु, शिव, दक्षिण देश का एक पुराना प्रांत। "सुब्रह्मण्य देव रघुराया"—[रामा०]।

सुभ*—(वि०, दे०) [सं० शुभ] शुभ, कल्याणकारी, मंगल कारक। "राज देन कह सुभ दिन साधा"—[रामा०]।

सुभग—(वि०, सं०) सुन्दर, अच्छा, मनोरम, भाग्यवान, प्रियतम, सुखद, प्रिय। "चरण सुभग सेवक सुखदाता"—[रामा०]। [**सुभगता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सुभगा—(वि०, स्त्री०, सं०) सुन्दरी, रूपवती, सौभाग्यवती, सुहागिन। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रेयसी, प्रियतमा, स्वामिप्रिया, अपने पति को अति प्यारी स्त्री, पंच वर्षीया कुमारी।

सुभट—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ा वीर या योद्धा। "सीयस्वयंवर सुभट अनेका"—[रामा०]।

सुभटवंत—(वि०) [सं० सुभट] वीर, बली, योद्धा।

सुभट्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ा पंडित, भारी योद्धा।

सुभद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) सनत्कुमार, विष्णु, सौभाग्य, श्रीकृष्ण जी के एक पुत्र, कल्याण, मंगल। (वि०) सज्जन, भाग्यशाली।

सुभद्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की स्त्री, दुर्गा जी।

सुभद्रिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) न, न, र (गण) तथा लघु गुरु वाला एक वर्णिक वृत्त या छंद (पिं०)।

सुभद्रेश—(संज्ञा, पु०, सं०) अर्जुन।

सुभर—(वि०, दे०) [सं० शुभ्र, [सुभ्र (दे०)] सफेद, उज्वल। "मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं"—कबीर।

सुभा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुभा] अमृत, सुधा, सोभा, हड़, हरीतकी, पर-स्त्री।

सुभाइ, सुभाउ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वभाव] सुभाय, स्वभाव, प्रकृति, सुन्दर भाव, अच्छा भाई, आदत, सुभाऊ। "बरै बालक एक सुभाऊ"—[रामा०] । (क्रि० वि०, दे०) [सुभाये (दे०)]। सहज भाव से, स्वभावतः। "ठाढ भये उठि सहज सुभाये"—[रामा०]।

सुभाग—(वि०, दे०) [सं० सुभग] सौभाग्य-शाली, सुभग, सुंदर । (संज्ञा, स्त्री०, हि०) सौभाग्य, सुन्दर भाग।

सुभाग*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौभाग्य] सौभाग्य, अच्छा भाग्य, [सुहाग (दे०)] । (सं०) सुन्दर भाग या हिस्सा।

सुभागा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सौभाग्य-वती] सौभाग्यवती, सधवा, सुहागिन।

सुभागिनि—(वि०, दे०) [सं० सौभाग्य, सुभाग] सौभाग्यवती, सुहागिनि।

सुभागी—(वि०, दे०) [सं० सुभाग] भाग्यवान, सौभाग्यवान, अच्छे भाग वाला।

सुभागीन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौभाग्य] भाग्यवान, सुभग। [**सुभागीनी** (स्त्री०)]।

सुभाग्य—(पु०) दे०—सौभाग्य। "सुभाग्य का सूर्यं बनो चमको"—हितैषी।

सुभान—(अव्य०, दे०) [अ० सुबहान] पाक, पवित्र, परमेश्वर। [सुभानअल्ला (दे०)]।

सुभाना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० शोभना] शोभित होना; देखने में अच्छा लगना, [सुहाना, सोहना, सोहाना (दे०)]।

सुभाय*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वभाव] स्वभाव, प्रकृति, सहज सुन्दर भाव, अच्छा भाई, [सुभाइ (दे०)]। [**सुभाइ** (स्त्री०)]। (क्रि० वि०, दे०) स्वभावतः, सुन्दर भाव से। "राम सुभाय चले गुरु पाहीं"—[रामा०]।

सुभायक*—(वि०, दे०) [सं० स्वाभाविक] स्वाभाविक, प्राकृतिक, सुन्दर भाव वाला।

सुभाव*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वभाव] स्वभाव, प्रकृति, आदत। (संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर भाव। "भृगुपति कर सुभाव सुनि सीता"—[रामा०]। (क्रि० वि०, दे०) स्वभावतः, सहज में। "राउ सुभाव मुकुर कर लीन्हा"—[रामा०]।

सुभावित—(वि०, सं०) सिक्त, सींचा हुआ।

सुभाषित—(वि०, सं०) भली भाँति या अच्छी तरह कहा हुआ, सुन्दर रूप या रीति से कहा गया, सुकथित, सुव्यक्त।

सुभाषी—(वि०) [सं० सुभाषिन्] मधुर भाषी, प्रिय या मीठा बोलने वाला, अच्छे रूप या रीति से बोलने वाला। [**सुभाषिणी** (स्त्री०)]।

सुभिक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) [सुभिच्छ (दे०)], सुकाल, ऐसा वर्ष जिसमें अनाज बहुत उपजे। [**दुर्भिक्ष** (विलो०)]।

सुभी—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० शुभ] कल्याण-कारिणी, शुभकारिणी, शुभी।

सुभीता—(संज्ञा, पु०, दे०) सुविधा, सुयोग, सुगमता, सुअवसर, सहूलियत, समायी, सामर्थ्य।

मुहा०—(ते) **से**-सुविधानुसार।

सुभूषित—(वि०, सं०) सुन्दर ढंग से सजाया हुआ।

सुभौटी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शोभा] शोभा, सुन्दरता।

सुभ्र—(वि०, दे०) [सं० शुभ्र] सफेद, धवल, उज्वल।

सुभ्रु—(वि०, सं०) सुन्दर भौंहों वाला।

सुभ्रू—(वि०, स्त्री०, सं०) सुन्दर भौंहों वाली स्त्री। "हा पिता क्वासि हे सुभ्रु"—भट्टी०।

सुमंगल—(संज्ञा, पु०, सं०) शुभ समय, शुभ, कल्याण, कुशल-मंगल, समय। "सुदिन सुमंगल तबहि जब"—[रामा०]।

सुमंगली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) विवाह में सप्त-पदी-पूजन के बाद, पुरोहित की दक्षिणा या उसका नेग।

सुमंत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुमंत्र] राजा दशरथ के मत्री। "राव सुमंत लीन्ह उर लाई"—[रामा०]।

सुमंत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा दशरथ के सारथी और मंत्री। "मंत्री सकल सुमंत्र बुलाये"—[रामा०]।

सुमंत्रित—(वि०, सं०) जिसको अच्छी तरह से परामर्श दिया गया हो, जिसकी योजनता विवेक-पूर्वक बनायी गयी हो।

सुमंथन—(संज्ञा, पु०, सं०) भली भाँति मथना, (मंदर पर्वत से सिंधु-मंथन)।

सुमंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) अंत में गुरु-लघु के साथ २७ मात्राओं का एक मात्रिक छंद, सरसी छंद (पिं०)।

सुम—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) घोड़े की टाप, सुम्मा (ग्रा०), चौपायों के खुर।

सुमत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुमति] अच्छी बुद्धि, सुमति। (संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर मत या विचार।

सुमति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा सगर की स्त्री, मेल-जोल। "जहाँ सुमति तहँ संपति नाना"—[रामा०]। प्रार्थना, सुन्दर या अच्छी मति, सुबुद्धि, भक्ति। (संज्ञा, पु०) राजा जनक के एक बंदीजन। (वि०) अच्छी बुद्धि वाला, बुद्धिवान्। "सुमति, विमति है नाम, राजन को वर्णन करहिं"—[रामा०]। "सर्वस्य द्वे सुमति-कुमति संपदा-पत्ति हेतुः"—कालिदास।

सुमधुर—(वि०, सं०) अत्यन्त मधुर, नाजुक।

सुमन—(संज्ञा, पु०) [सं० सुमनस्] देवता, विद्वान्, पंडित, फूल। "सुमन पाय मुनि पूजा कीन्ही"—[रामा०]। (वि०) दयालु, सरस, सहृदय, सुन्दर, अच्छे मन वाला। [**सुमना** (स्त्री०)] ।—**चाप**-(पु०) कामदेव, पुष्प-धन्वा।

सुमनस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुमनस्] देवता, सुमनस्। "सुपर्वाणः सुमनसस्त्रि-दिवेशाः दिवौकसः"—अमर०। विद्वान्, पण्डित, फूल। (वि०) सहृदय, प्रसन्नचित्त, सुन्दर मन वाला।

सुमनावलि—"सुमनावलि को हँसा खिलाता है कलिका को"—हरिऔध।

सुमनित—(वि०, दे०) [सं० सुमणि+त प्रत्य० श्रेष्ठ मणि-जटित।

सुमरन, सुमिरन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्मरण] स्मरण, ध्यान, याद, जप, भजन।

सुमरना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्मरण] ध्यान या स्मरण करना, याद करना, जपना, सुमिरन, [**सुमराना, सुमरावना** (प्रेरणा० रूप)]।

सुमरनी*†—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० सुमरना] स्मरणी, छोटी माला, जप करने की २७ दानों वाली माला, [सुमिरना (दे०)]। "लिहे सुमिरनी है हाथे माँ जिनके राम-राम रट लागी"—आल्हा०।

सुमानिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सात वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

सुमारग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुमार्ग] सुमार्ग, सुपथ, अच्छा पंथ, सदाचार।

सुमार्ग—(संज्ञा, पु०, दे०) सत्पथ, उत्तम पंथ, अच्छा रास्ता, सदाचार, उत्तम या श्रेष्ठ मार्ग। [**कुमार्ग** (विलो०)]। [**सुमार्गी** (वि०)]।

सुमालिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) छः वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

सुमाली—(संज्ञा, पु०) [सं० सुमालिन्] रावण के नाना, एक राक्षस जिसकी कन्या कैकसी कुंभ-कर्ण, रावण, सूर्पणखा और विभीषण की माँ हैं।

सुमित्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा दशरथ की तीसरी रानी और लक्ष्मण और शत्रुघ्न जी की माता। "समुझि सुमित्रा राम-सिय, रूप सनेह-सुभाव"—[रामा०]।—**नंद,—नंदन**-(पु०) लक्ष्मण और शत्रुघ्न जी।

सुमिरण, सुमिरन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्मरण] स्मरण, जप, भजन, ध्यान। "सुमिरन करिकै रामचन्द्र का लै बजरंगबली का नाम"—[आ० खं०]।

सुमिरना—(क्रि० सं०, दे०) [सं० स्मरण] याद करना, स्मरण या ध्यान करना। [**सुमिराना सुमिरावना** (प्रेरणा० रूप)]। "ऐसो राम-नाम निसि-वासर जे सुमिरत, सुमिरावत"—[रामा०]।

सुमिरनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [दे० सुमिरना] स्मरणी, जप करने की छोटी माला। "राह बाट में जपं सुमिरनी, घर मे कहै न राम"—कबीर।

सुमुख—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, शिव, गणेश, आचार्य, पंडित। (वि०) सुन्दर मुख वाला, मनो-हर, सुन्दर, प्रसन्न, दयालु।

सुमुखी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दर मुखवाली स्त्री। "सुमुखि मातु-हित राखौं तोही"—[रामा०]। ११ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) दर्पण।

सुमृत, सुमृति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्मृति] स्मृति, धर्म्मशास्त्र, सुधि, याद।

सुमेध—(वि०, दे०) [सं० सुमेधस्] बुद्धिमान्।

सुमेधा—(वि०, दे०) [सं० सुमेधस्] बुद्धिमान्।

सुमेर—(संज्ञा; पु०, अ०) [सं० सुमेरु] सुमेरु, पहाड़। "चाहै सुमेरु को छार करै अरु छार को चाहै सुमेरु बनावै"—देव०।

सुमेरु—(संज्ञा, पु०, सं०) शिव, समस्त पर्वतों का राजा, एक सोने का पहाड़ (पुरा०), माला का सब से ऊपर या बीच का दाना, उत्तरीय ध्रुव,

१७ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)। (वि०) बहुत ऊँचा, सुन्दर। "गिरि सुमेरु के मेरुदण्ड को"—गिरीश।—वृत्त-(पु०) वह कल्पित रेखा जो उत्तरीय ध्रुव से २३½ अक्षांश पर है (भूगो०)।

सुयम्—(अव्य, दे०) [सं० स्वयम्] आपसे, आप, आप, खुद ब खुद।

सुयश—(संज्ञा, पु०, सं०) सुकीर्त्ति, सुख्याति, अच्छी कीर्त्ति, सुनाम [सुजस (दे०)]। "श्रवण सुयश सुनि आयेऊँ प्रभु भंजन भव-भीर"—[रामा०]। (वि०) [सं० सुयशस्] यशस्वी। [सुयशी (वि०)]।

सुयोग—(संज्ञा, पु०, सं०) अच्छा संग, सुन्दर योग, अच्छा, मेल, संयोग, सुअवसर, अच्छा, मौका, [सुजोग (दे०)]। "ग्रह, भेषज, जल, पवन, पट, पाय, सुयोग, कुयोग"—[रामा०]।

सुयोग्य—(वि०, सं०) अत्यंत योग्य या लायक।

सुयोधन—(संज्ञा, पु०, सं०) कौरवों का सबसे बड़ा भाई, दुर्योधन, [सुजोधन (दे०)]। "भयो सुयोधन तें पलटि, दुर्योधन तब नाम"—कुं० वि०।

सुरंग—(वि०, सं०) सुन्दर, या अच्छे रंग का सुन्दर, मनोरम, सुडौल, रस-मय, रक्त वर्ण का; साफ़, निर्मल, स्वच्छ, लाल। (संज्ञा, पु०)—नारंगी, शिगरफ़, रंग के अनुसार घोड़े का एक भेद। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुरंग] बारूद से उड़ाकर पहाड़ या भूमि के तले बनाई हुई राह, क़िले की दीवाल के नीचे वह छेद जिसमें बारूद भर कर उसे उड़ाते हैं, शत्रुओं के जहाज़ों के नष्ट करने का एक यंत्र (आधु०), सेंध, सधि।

सुर—(संज्ञा, पु०, सं०) विबुध, देवता, सूर्य्य, ऋषि, मुनि, विद्वान, पंडित। (दे०) [सं० स्वर] ध्वनि, स्वर। मुहा०—में—मिलाना-हाँ में हाँ मिलाना, चापलूसी करना।—करी-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सुरकरिन्] ऐरावत, सुर-राज, देवताओं का हाथी, दिग्गज, इन्द्र।—कांता-(स्त्री०) देव बधूटी, देवी।—कानन-(पु०) देव-वन, नंदन विपिन या इन्द्र का बाग़, देवाराम, सुरोपवन।—केतु-(पु०) इन्द्र, इंद्र या देवताओं का झंडा, देव-ध्वजा।—गाय,—गौ-(स्त्री०) सुरधेनु, कामधेनु, सुरागाय, एक जंगली गाय।—गिरि-(पु०) सुमेरु, देवाद्रि, सुराद्रि, सुराचल।—गुरु-(पु०) बृहस्पति, जीव। "तब सुरगुरु इन्द्रहिं समुझावा"—[रामा०]।—गैया-(स्त्री०) कामधेनु, सुरागाय।—चाप-(पु०) इन्द्र-धनुष, सुर-धनु।—जन-(संज्ञा, पु०, सं०) देव समूह या सुर-वृंद। (वि०, दे०) सुजन, सजान, चतुर।—तरंगिनी,—तरंगिणी-(स्त्री०) सुर-नदी, गंगानदी, आकाशगंगा, देव-नदी, सुर-तटनी, देवापगा।—तटनी-(स्त्री०) देव-नदी, गगन गंगा, सुर-सरिता।—तरु-(पु०) कल्प वृक्ष। "सुरतरु-वर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी"—[स्फु०]।—तिय-(स्त्री०) देव-बधूटी।—त्राण (संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) देव-रक्षक, सुर-त्राता, विष्णु।—त्राता-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सुर-त्रातृ] इंद्र, देव रक्षक, कृष्ण, सुर-त्राण, विष्णु। "निश्चर-वश, जन्म सुरत्राता"—[रामा०]।—दारा-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवबधूटी।—दाधिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आकाश-गंगा।—दोषी,—द्रोही-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) (सुरद्वेषी) देवशत्रु, सुरद्वेषी।—द्रुम-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुर-तरु, कल्पवृक्ष, देववृक्ष।—धाम-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सुरधामन्] स्वर्ग, बैकुंठ, देवलोक। "राम-विरह तनु परि-हरेउ, राव गयो सुर-धाम"—[रामा०]।—धुनी-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंगाजी, देव-नदी सुर-नदी।—धेनु-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) काम धेनु।—नदी- संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) देवापगा, गंगाजी, देव-नदी, आकाश-गंगा, सुर-नदी।—नायक,—नाथ-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इंद्र, देवनाथ, देवराज, सुरपति।—नारा-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) देवताओं की स्त्री, देव-बधू, अमर-बधूटी।—नाह-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुरनाथ] सुरनाथ, देवनाथ, इन्द्र, देवराज।—निलय-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुमेरु पहाड़।—प*-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुरपति] इन्द्र।—पति-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुराधि-पति, सुरेश, इन्द्र, विष्णु। "सुरपति रहै सदा रुख ताके"—[रामा०]। सुरपति सुत धरि बायस-भेखा"—[रामा०]।—पथ-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नभ, आकाश, व्योम, गगन।—पाल-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुरपालक] इन्द्र, देव-राज।—पालक-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इंद्र।—पुर-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्वर्ग, देवलोक, बैकुंठ। "पितु सुरपुर सिय राम

वन करन कही मोहि राज "—[रामा०] ।—बाला-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) देव-बधूटी, देवांगना, सुर बधू, अमर बधू ।—वधू,—बधूटी -(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) देवांगना, देव-बधूटी ।—बृच्छ*-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुर-वृक्ष] सुर-तरु, कल्पवृक्ष, देववृक्ष, । सुरबिरिछ (दे०)] ।—बेल,—बेलि,—बेली-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुरवल्ली] कल्पलता, कल्प-वल्ली, अमर बेल ।—भंग-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० स्वरभंग] भय या प्रेमानंद से स्वर के रूपांतर या विपर्यास (सात्विक भाव) ।—भवन-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देव मंदिर, देवा-लय, देव स्थान, देव-लोक, सुरपुरी, अमरावती, [सुर-भौन (दे०)] ।—भान-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुर + भानु] सूर्य्य, इन्द्र ।—भूप-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विष्णु, इन्द्र । सुर-राज सुरेश ।—भोग-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अमृत, पीयूष ।—भौन*-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुर-भवन] सुर-भवन, स्वर्गलोक, देव-सदन, देवा-लय ।—मंडल-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देव-ताओं का मंडल, एक तरह का बाजा । [सुर-मंडली (स्त्री०)] ।—मणि-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देव-मणि चिंतामणि, [सुरमनि (दे०)] ।—राइ,—राई*-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुरराज] देवराज, विष्णु, इन्द्र ।—राउ,—राऊ*-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुरराज] सुरराज, विष्णु, इन्द्र ।—राज-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवराज, विष्णु, इन्द्र ।—राय, राव*-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुरराज] देवराज, सुर-राज, विष्णु, इन्द्र ।—रिपु-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दैत्य, दानव, राक्षस, असुर, सुरारि, देवारि ।—रुख-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुरवृक्ष] सुर-तरु, कल्पवृक्ष ।—लतिका,—लता-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) देव लता, कल्पलता ।—लोक-(पु०, सं०) देवलोक, स्वर्ग ।—वल्ली,—वल्लरी -(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) कल्पलता, सुर-वृंतती ।—वधू-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) देवांगना, सुर-वधूटी ।—वृक्ष-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुर-तरु, कल्पतरु, कल्पवृक्ष, सुर-पादप ।—श्रेष्ठ -(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवताओं में श्रेष्ठ—विष्णु, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र, सुरोत्तम ।—सदन,—सद्म-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवलोक, स्वर्ग, देवा-लय, देवमंदिर ।—सर-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देव-ताल, मानसरोवर । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुरसरी] देवसरी, गंगाजी, सुरसरि ।—सर,—सुता-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सरयू नदी, घाघरा ।—सरि,—सरी-(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) (सुरसरित) देवनदी, गंगाजी, गोदावरी । " सुनि सुरसरि उतपति रघुराई "—[रामा०] ।—सरित,—सरिता-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) देवनदी, गंगा जी ।—साईं-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुरस्वामी] इन्द्र जी, विष्णु, शिव जी, [सुरसया (दे०)] ।—सारी*-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुरसरी] देवनदी, गंगा जी ।—साल,—सालु*-(वि०, दे०, यौ०) [सं० सुर + सालना हि०] देव-पीड़क, देव शत्रु, देव-ताओं को सताने वाला, सुरारि ।—साहब,—साहिब,—साहेब-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुर + साहिब अ०] देवनाथ, देवराज, इन्द्र, विष्णु शिव ।—सुंदरी-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) देवां-गना, देवी, अप्सरा, दुर्गा, देव-कन्या, एक योगिनी । " गावहिं नाचहिं सुर-सुन्दरी "—[रामा०] ।—सुरभी-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) कामधेनु ।—सैया*-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुर-स्वामी] देवनाथ, इन्द्र, विष्णु, शिव ।—स्वामी -(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देवनाथ, इन्द्र ।—कंत (पु०) इन्द्र, विष्णु । " प्रगट भये सुरकंता "—[रामा०] ।

सुरक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुर] नाक पर भाल के आकार का एक तिलक ।

सुरकना—(क्रि० स०, अनु०) वायु-वेग से द्रव वस्तु को धीरे-धीरे ऊपर को खींचना, नाक से पीना, [सुड़कना (दे०)] ।

सुरकुदाँव*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सु + कु—दाँव=धोखा हि०] धोखा देने को स्वर बदल कर बोलना ।

सुरक्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) सुरक्षा, रखवाली, भली भाँति रक्षा करना । [**सुरक्षणीय** (वि०)] ।

सुरक्षित—(वि०, सं०) जिसकी रक्षा अच्छी तरह से या भली भाँति की गयी हो, रक्षित । " अरक्षि-तम् रक्षति दैवरक्षितम् सुरक्षितम् दैव हतं विन-श्यति "—[नीति०] ।

सुरख, सुरख़ा—(वि०, दे०) [फ़ा० सुर्ख़] सुर्ख़, लाल, [सुरुख (दे०)] ।

सुरख़ाब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चकवा । मुहा०—**का पर लगना**—कुछ विशेषता या विचित्रता होना ।

सुरखी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सुर्खी] लाल रंग, सुर्खी, ईंटों का महीन चूर्ण जो इमारत बनाने के काम आता है, लाली अरुणता, शीर्षक ।

सुरखरू, सुर्खरू—(वि०, दे०, यौ०) [फ़ा० सुर्खरू] प्रतिष्ठित, यशस्वी या कीर्तिवान, प्रतापी, तेजस्वी ।

सुरग*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वर्ग] स्वर्ग, देवलोक, सुरलोक, वैकुंठ, [सरग (दे०)] ।

सुरज*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूर्य] सूर्य्य, सूरज, [सुरिज (दे०)] ।

सुरझन—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सुलझना] सुलझना, हल होना । [**उरझना** (विलो०)] ।

सुरझाना, सुरझावना—(क्रि० स०, दे०) [हि० सुलझाना] सुलझाना हल कराना, हल करना, खोलना । [**उरझाना** (विलो०)] । [**सुरझवाना** —(प्रेरणा० रूप)] ।

सुरत—(संज्ञा, पु०, सं०) मैथुन, संभोग । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्मृति] सुरति, सुधि, याद, ध्यान । (वि०, सं०) अति लीन, अति मग्न । **मुहा०—बिसारना** (**बिसरना**)-भूल जाना ।

सुरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुर का भाव या कार्य, देवत्व, देव-वृंद, सुरत्व । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुरत] स्मरण, याद ख्याल, ध्यान चिंता, सुधि, चेत । (वि०) होशियार, चतुर, स्यान ।

सुरतान, सुरंतान*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सुलतान] सुलतान, बादशाह, राजाधिराज । "सुरंतानभट्टं मधूमाद इव "—प्र० रा० ।

सुरति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भोग-विलास, प्रसंग, संभोग, काम-केलि, मैथुन । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्मृति] स्मरण, सुधि, याद । " सुरति बिसरि जनि जाय "—[रामा०] । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० सूरत] सूरत, रूप, आकृति, [सुरति (दे०)] । " रावरी सुरति मैं लगाये है सुरति वह "— सरस ।—**गोपना**-(स्त्री०) वह नायिका जो अपनी रति-क्रीड़ा को सखियों आदि से छिपाती हो, सुरति-संगोपना ।—**विचित्रा**-(स्त्री०) वह मध्य-नायिका जिसकी रति क्रिया अनोखी हो (सा०) ।

सुरतिवंत—(वि०, दे०, सं०) सुरतिवान्, कामातुर ।

सुरती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुरतनगर] पान के साथ या यों ही खाने का की तंबाकू, खैनी (प्रान्ती०) ।

सुरतीला—(वि०, दे०) [हि० सुरत + ईला प्रत्य०] स्मरण-कर्त्ता, सावधान, सुचेत, याददाश्त रखने वाला ।

सुरतैन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) रखी हुई स्त्री ।

सुरथ—(संज्ञा, पु०, सं०) दुर्गा जी के एक सर्व प्रथम आराधक चंद्रवंशीय राजा (पुरा०), सुन्दर रथ, जयद्रथ का एक पुत्र, एक पहाड़ ।

सुरदार—(वि०, दे०) [हि० सुर + दार फ़ा०] सुस्वर, सुरीला, जिसका स्वर अच्छा हो । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुरदारा] देव-नारी, देव-स्त्री, देवदारा, सुर बधूटी ।

सुर-निकेत, सुर-निकेतन—(संज्ञा, स्त्री०, पु०, यौ०, सं०) स्वर्ग, वैकुंठ, अमरावती, देवालय, देवस्थान, सुर-सदन ।—**बहार**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० सुर + बहार फ़ा०] सितार जैसा एक बाजा विशेष ।

सुरभि—(संज्ञा, पु०, सं०) बसंत ऋतु, मधु, चैत्रमास, स्वर्ण, कंचन, सोना । (संज्ञा, स्त्री०) गौ, पृथ्वी, गायों की अधिष्ठात्री और आदि जननी, कामधेनु,, मदिरा, सुरा, सौरभ, सुगंधि, तुलसी । (वि०) सुवासित, सुगंधित, मनोज्ञ, मनोहर, सुन्दर, उत्तम, श्रेष्ठ । " ताम् सौरभेयीम् सुरभिः यशोभिः "—रघु० । " सुरभिः स्यान्मनोज्ञेऽपि " —अमर० ।

सुरभित—(संज्ञा, वि०, सं०) सुवासित, सुगंधित, सौरभित ।

सुरभी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुवास, सुगंधि, खुशबू, सौरभ, अच्छी, महक, चंदन, गाय, कामधेनु, सुरागाय ।—**पुर**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गोलोक ।

सुरभीला—(वि०) [हि० सुरभि + ईला प्रत्य०] सुगंधि देने वाला ।

सुरमई, सरमयी—(वि०, फ़ा०) सुरमे के रंग का, हलका, सुरमें से युक्त । (संज्ञा, पु०) एक तरह का हलका नीला रंग, इस रंग का एक कपड़ा । (वि०) सुरों से युक्त ।

सुरमचू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सुरमा लगाने की सलाई ।

सुरमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सुरमः] नीले रंग का एक खनिज पदार्थ जिसका चूर्ण आँखों में लगाया जाता है ।—**दानी**-(स्त्री०) सुरमा रखने का शीशी जैसा एक पात्र, सुरमेदानी ।

सुरमै—(वि०, दे०) [फ़ा० सुरमई] सुरमई ।

सुरमौर, सुरौमरि—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सुर + मौलि मौर हि०] विष्णु ।

सुरम्य—(वि०, सं०) सुरमणीक, अति मनोरम, अति सुन्दर, अत्यंत सुशोभित । " अति सुरम्य जहाँ जनक निवासा "—[रामा०] । [**सुरम्यता** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

सुरली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सु=रली हि०] सुन्दर खेल या क्रीड़ा ।

सुरस—(वि०, सं०) रसीला, सुस्वाद, स्वादिष्ट, अच्छे रस का, मधुर, सरस । (सं० पु०, दे०) [सं० स्वरस] गीली औषधि का निकाला हुआ रस ।

सुरसती, सूरसती*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सरस्वती] सरस्वती, वाणी, शारदा, गिरा, [सरसुती (दे०)] ।

सुरसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हनुमानजी को सिन्धु लाँघने में रोकने वाली एक नाग माता, एक अप्सरा । " सुरसा नाम अहिन की माता "—[रामा०] । अझीबूटी, तुलसी, दुर्गा जी, एक छंद या वृत्त (पिं०) ।

सुरसुराना—(क्रि० अ०, दे०, अनु०) शरीर पर कीड़े आदि के रेंगने से उत्पन्न खुजली, खुजली होना । [**सुरसुराहट** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

सुरसुराहट—(संज्ञा, स्त्री०) सुरसुराने का भाव ।

सुरसुरी—(संज्ञा, स्त्री०) सुरसुराहट, एक आतिशबाजी ।

सुरहना—(क्रि० अ०, दे०) भर आना । "सुरहो घाव देह बल आई"—छत्र० ।

सुरहरा—(वि०, अनु०) सुर सुर शब्द करने वाला, जिसमें सुर सुर शब्द हो ।

सुरही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुरभी] सुरभी, कामधेनु । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सोलह] जुआ खेलने की चित्तीदार सोलह कौड़ियाँ, इनसे खेला जाने वाला जुआ का खेल, सोलही, सोरही ।

सुरांगना—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) देवांगना, देव-पत्नी, अप्सरा । " सुरांगना-गोपित चाप गोपुरम् "—किरा० ।

सुरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मधु, मदिरा, शराब, मद्य, वारुणी । "सुरा-पान करि रहसि सुखारी"—[स्फु०] ।—**पात्र**-(संज्ञा, पु०, सं०) मदिरा पीने या रखने का बरतन ।—**पान**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) मदिरा पीना, मद्य पान ।

सुराई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शूरता] शूरता, वीरता, बहादुरी सुरत्व । " हमरे कुल इन पै न सुराई "—[रामा०] ।

सुराख—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सूराख] बिल, छिद्र, छेद । (संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सुराग] खोज, टोह, पता ।

सुराग—(संज्ञा, पु०) [सं० सु + राग] अति प्रेम, अति अनुराग । (दे०) सुन्दर राग, (संगीत०) । (संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सुराग] पता, खोज ।

सुरा-गाय—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० सुर + गो] एक प्रकार की दो नस्ल वाली गाय जिसकी झबरीली पूँछ से चँवर बनाते हैं ।

सुराज, सुराजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुराज्य] अच्छा राज्य । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वराज्य] अपना या निज का राज्य । (संज्ञा, पु०) सुराजा, अच्छा राजा । " जिमि सुराज लहि प्रजा सुखारी " " बढ़ै प्रजा जिमि पाइ सुराजा "—[रामा०] ।

सुराज्य—(संज्ञा, पु०, दे०) सुख-शांति पूर्ण सुन्दर राज्य । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वराज्य] प्रजातंत्र या अपना राज्य ।

सुराधानी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मदिरा रखने का छोटा पात्र ।

सुराधिप, सुराधीश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्र, देव-राज, सुरपति, सुराधीश्वर ।

सुरानीक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देव सेना ।

सुराप, सुरापी—(वि०, सं०) मदिरा या शराब पीने वाला ।

सुरापगा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) देव-नदी, गंगा जी, देवापगा ।

सुरारि, सुरारी—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० सुरारि] सुराशत्रु, देवारि, असुर, राक्षस । " मूढ़ न जानसि मोहि सुरारी "—[रामा०] ।

सुरायुध—(संज्ञा, पु०, सं०) देवास्त्र ।

सुरार्चन—(संज्ञा, पु०, सं०) देवपूजा ।

सुरालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) [सं० सुरा + आलय] । वैकुण्ठ, स्वर्ग, मंदिर, देव-भवन, देवलोक, सुमेरु, देवालय, मधुशाला, शराबखाना ।

सुरावती—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० सुरातनि] देवमाता, अदिति (कश्यप-पत्नी)।

सुरावास—(संज्ञा, पु०, सं०) देवालय, स्वर्ग।

सुराष्ट्र—(संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर राष्ट्र, एक देश या राज्य (काठियावाड़ या सूरत, मतांतर से)।

सुरासुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देव-दैत्य, देवासुर, देवदानव, सुर, और असुर। "चहै सुरासुर जुरै जुझारा"—[रामा०]।—**गुरु**-(पु०) शिव जी, कश्यप मुनि।

सुराही—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पानी रखने का बरतन, जोशन, बाजू आदि में लगाने की सुराही के आकार की वस्तु।—**दार**-(वि०) सुराही के आकार का लंबा और गोलाकार।

सुरिज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूर्य] सूरज।

सुरी—(संज्ञा, पु०, दे०) देवांगना। "कहो इन्द्र को ज्ञान अब को सिखावे। सुरी छोड़ि कै मानुषी लेन धावे"—मन्ना०।

सुरीला—(वि०) [हिं० सुर+ईला प्रत्य०] सुस्वर पुरुष, मधुर गला और स्वर वाला, सुस्वर कंठ, मधुर स्वर वाला। [**सुरीली** (स्त्री०)]।

सुरुख—(वि०, दे०) [सं० सु+रुख फ़ा०] प्रसन्न अनुकूल, सदय। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सुर्ख़] सुरख। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुरुखी।—**रू**-(वि०) यशस्वी। प्रतिष्ठित, सम्मानित, जिसे किसी कार्य में यश मिला हो।

सुरुचि—संज्ञा, स्त्री०, सं०) राजा उत्तानपाद की रानी और उत्तम कुमार की माता तथा ध्रुव को विमाता, अच्छी रुचि।—**मय**-"सुरुचिमय है जिसकी चित्रवृत्ति"—हरिऔध।

सुरूज*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूर्य] सूर्य, [सुरिज (दे०)]।—**मुखी**†-(सं०) सूर्यमुखी, ेंदा का फूल, सूरजमुखी।

सुरुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शोरवा] तरकारी का मसालेदार पानी, शोरवा।

सुरूप—(वि०, सं०) रूपवान, सुन्दर व्यक्ति, खूबसूरत। [**सुरूपा** (स्त्री०)]। [**सुरूपता** (संज्ञा, पु०) कुछ देव-व्यक्ति, कामदेव, अश्विनीकुमार, पुरूरवा, नकुल, साँब, नल-कूबर। * (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वरूप] स्वरूप।

सुरूपता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दरता, खूबसूरती।

सुरूपा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दरी।

सुरूर—(संज्ञा, पु०, दे०) सरूर (फ़ा०)।

सुरेंद्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) इन्द्र, राजा, देवेन्द्र, सुरेश।—**चाप**-(पु०) इन्द्र-धनुष।—**वज्रा**-(स्त्री०) त, त, ज, (गण) और दो गुरु वर्णों वाला एक वर्णिक छंद या वृत्त, इन्द्रवज्रा। "स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौगः" (पिं०)।

सुरेथ—(संज्ञा, पु०) शिशुमार, सूँस।

सुरेश, सुरेश्वर—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) इन्द्र, विष्णु, शिव, लोकपाल, कृष्ण, [सुरेसुर (दे०)]।

सुरेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०,) रुद्र, इन्द्र, ब्रह्मा, विष्णु।

सुरेश्वरी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा जी, स्वर्ग-गङ्गा।

सुरेस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुरेश] सुरेश।

सुरैत, सुरैतिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुरति] उपपत्नी, बैठाली स्त्री, रखनी, रखैली।

सुरोचि—(वि०, दे०) [सं० सुरुचि] सुन्दर, कांतिमान।

सुरोचिष—(संज्ञा, पु०, सं०) चन्द्रमा, कांतिमान।

सुर्ख़—(वि०, फ़ा०) लाल। (संज्ञा, पु०) गहरा लाल रंग, [सुरख, सुरुख (दे०)]। [**सुर्ख़ी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**रू**-(वि०) जिसके मुख की कांति (लाली) किसी कार्य में सफलता होने से रह गई हो, प्रतिष्ठित, कांतिमान, प्रतापी, तेजस्वी।

सुर्ख़ी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अरुणिमा, लाली, लालिमा, लेख-प्रबन्धादि का शीर्षक, रक्त, लोहू, खून, ईंट का चूर्ण, [सुरखी (दे०)]।

सुर्ता—(वि०, दे०) [हिं० सुरति=स्मृति] स्मरण, याद, चतुर, समझदार, धीमान।

सुर्ती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुरती, तम्बाकू।

सुर्मा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सुरमा (नेत्रों में लगाने का)।

सुलंक—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सोलंक] क्षत्रियों की एक पदवी, सोलंक। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दर लंका, सुन्दर कटि।

सुलंकी—(संज्ञा, दे०, दे०) [हिं० सोलंकी] एक प्रकार के क्षत्रिय, सोलंकी।

सुलक्खन—(संज्ञा, पु०, ग्रा०) [सुलच्छन (दे०)] सुलक्षण।

सुलक्षण—(वि०, सं०) अच्छे चिन्हों वाला, भाग्यवान, गुणी, [सुलच्छन (दे०)]। "लखे सुलक्षण लोग"—[स्फु०]। (संज्ञा, पु०) शुभ लक्षण, शुभ चिन्ह। सात मात्राओं पर गुरु और लघु के साथ विराम वाला १४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)।

सुलक्षणा—(वि०, स्त्री०, सं०) अच्छे चिन्हों या लक्षणों वाली स्त्री।

सुलक्षणी—(वि०, स्त्री०) [सं० सुलक्षणा] सुलक्षणा, [सुलच्छनी (दे०)]।

सुलग—(अव्य० दे०) [हि० सुलगना] पास, निकट, समीप।

सुलगना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सु+लगना] दहकना, धीरे-धीरे आग का जलना, बहुत संताप होना। [**सुलगना** (सं० रूप)], [**सुलगवाना** (प्रेरणा० रूप)] ।—**गाना**-(क्रि० अ०) आग लगाना, भड़काना।

सुलच्छन—(वि०, दे०) [सं० सुलक्षण] सुलक्षण, सुलक्खन (ग्रा०)।

सुलच्छनी—(वि०, दे०) सुलक्षण (सं०)।

सुलच्छ—(वि०, दे०) [सं० सुलक्ष] सुन्दर।

सुलझन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुलझना] सुलझाव, सुलझना क्रिया का भाव, [सुरझिन (दे०)]। [**उलझन** (विलो०)]।

सुलझना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० उलझना] उलझे हुये पदार्थ की उलझन दूर होना, मिटना या खुलना, जटिलताओं का नष्ट होना, [सुरझना (दे०)] [**सुलझाना** (स० रूप)], [**सुलझवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सुलझाना—(क्रि० स०) गुत्थी खोलना, उलझन दूर करना, समस्या हल करना।

सुलझाव—(संज्ञा, पु०) निबटारा, समस्या हल हो जाने का भाव।

सुलटा—(वि०, दे०) [हि० उलटा] सीधा। [**सुलटी** (स्त्री०)]। [**उलटा** (विलो०)]।

सुलतान—(संज्ञा, पु०, अ०) बादशाह।—**सुलतानाचंपा**-(पु०) एक प्रकार के चंपा का पेड़, पुन्नाग।

सुलतानी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० सुलतान] राज्य, बादशाही, बादशाहत, एक रेशमी कपड़ा। (वि० दे०) लाल रंग का।

सुलप, सुलुप*—(वि०, दे०) [सं० स्वल्प] स्वल्प, थोड़ा, किंचित, रंच। (**संज्ञा, पु०, दे०**) [सं० सु+आलाप हि०] सुन्दर आलाप।

सुलफ—(वि०, दे०) [सु+लपना हि०] लचने वाला, कोमल, लचीला, लपने वाला।

सुलफा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सुल्फ़:] बिना तवा की चिलम में भरकर पीने की तम्बाकू या चरस। **मुहा० सुलफा फूंकना**-एक तरह की तम्बाकू पीना।—(**फे**) **बाज**-(वि०) चरस या गाँजा पीने वाला। [**सुलफे बाजी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सुलभ—(वि०, सं०) सहज, सुगम, सरलता से प्राप्त होने वाला, आसान, साधारण। "स्वारथ परमारथ, सकल सुलभ एक ही ओर"—तुलसी।

सुलभ्य—(वि०, दे०) सहज में मिलने वाला, सुगम, सुलभ, मामूली। [**अलभ्य** (विलो०)]।

सुललित—(वि०, सं०) अत्यन्त ललित।

सुलह—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मेल-मिलाप, लड़ाई के पीछे किया गया मेल, मिलाप।—**नामा**-(पु०) संधि-पत्र, मेल होने का लेखपत्र, परस्पर युद्ध करने वाले राजाओं के द्वारा सुलह या मेल की शर्तों का कागज, दो लड़ने वाले व्यक्तियों या दलों के समझौते की शर्तों का लेख।

सुलाना—(क्रि० स०) [हि० सोना] शयन कराना, किसी को सोने में लगाना, डाल देना, लिटाना, [सोवाना (दे०)]।

सुलेखक—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तम लेख या प्रबंध लिखने वाला, लेखक, सुलेख या सुन्दर लिखने वाला।

सुलेमान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगम्बर माना गया है (यहूदी)। पंजाब और बिलूचिस्तान के बीच का एक पहाड़।

सुलेमानी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सफेद आँखों का घोड़ा, एक दो रंग का पत्थर। (**वि०**) सुलेमानी संबंधी, सुलेमान का।

सुलोचन—(वि०, सं०) सुनयन, सुनेत्र, अच्छी आँखों वाला। [**सुलोचना** (स्त्री०)]।

सुलोचना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अप्सरा, मेघनाद की स्त्री, नरेश माधव की स्त्री। (वि०, स्त्री०) सुन्दर नेत्रों वाली।

सुलोचनी—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० सुलोचना] सुन्दर नेत्रों वाली, सुनयनी।

सुल्तान—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सुलतान] बादशाह, [सुरतान (दे०)]।

सुव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुत] सुत, पुत्र, सुवन।

सुवक्ता—(वि०) [सं० सुवक्तृ] वाक्पटु, वाग्मी, उत्तम व्याख्यान देने वाला, अच्छा कहने वाला।

सुवचन—(वि०, सं०) मधुर भाषी, सुन्दर बोलने वाला। [**सुवचनी** (स्त्री०)]।

सुवटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक] शुक, तोता, सुग्गा, सुअटा (ग्रा०)।

सुवदन—(वि०, सं०) सुन्दर शरीर या मुख वाला।

सुवदना—(वि०, सं०) सुमुखी।

सुवन—(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रमा, सूर्य्य, अग्नि। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुत) सुअन, पुत्र, बेटा। "राम, लखन, तुम शत्रुघन, सरिस सुवन सुठि जासु"—[रामा०]।

सुवनारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुत] सुवन, सुत, पुत्र।

सुवरण—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुवर्ण] सोना, अच्छा कुल।

सुवर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ण, सोना, धन, दश माशे की एक स्वर्ण-मुद्रा (प्राचीन), धतूरा, [सुबरन (दे०)]। एक छंद (पिं०), १६ माशे की एक तौल। (वि०) सुन्दर वर्ण या रंग का, सोने के रंग का, पीला, उज्वल, बड़ी या सुन्दर जाति का। "सुवर्णस्य सुवर्णस्य सुवर्णस्यच मैथिल" —ह० ना०।—**करणी**-(स्त्री०) एक जड़ी या औषधि जो शरीर के रंग को सुन्दर कर देती है। —**रेखा**-(स्त्री०) राँची (बिहार) से निकल कर बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी (भूगो०) [सुवरुनरेख (दे०)], सुवर्ण की रेखा (कसौटी पर)।

सुवस*—(वि० दे०) [सं० स्ववश] स्वतंत्र, स्वाधीन, भली भाँति जो वश में हो, अपने वश में। "विश्व विमोहनि सुवस-विहारनि"—[रामा०]।

सुवाँग, सुआँग—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० स्वाँग] दूसरे का रूप बनाना, भेष, रूप, हँसी, खेल या तमाशा, अभिनय, नकल, छलने के लिये बनाया हुआ कपट-रूप।

सुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक] शुक, तोता, सुग्गा, सुआ।

सुवाच्य—(वि०, सं०) जो आसानी से पढ़ा जा सके।

सुवाना†*—(क्रि० स०, दे०) [हि० सुलाना] सुलाना, [सोवाना (दे०)]।

सुवार*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूपकार] रसोइया, पाक-कर्त्ता। (संज्ञा, पु०) अच्छा दिन।

सुवाल*†—(संज्ञा, पु०, अ०) सवाल, प्रश्न, माँगना, याचना।

सुवास—(संज्ञा, पु०, सं०) सुगंधि, अच्छी महक, सुरभि, खुशबू, सुंदर घर, न, ज गण और एक लघु वर्ण वाला एक वर्णिक छंद (।।।, ।ऽ। ।— पिं०)।

सुवासिका—(वि०, स्त्री०, दे०) [सं० सुवासिक] सुवास देने वाली, सौरभीली।

सुवासित—(वि०, सं०) सुरभित, सुगंधित, खुशबू-दार।

सुवासिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) युवावस्था में भी पिता के घर पर रहने वाली स्त्री, चिरंटी, (प्रान्ती०) सधवा स्त्री, [सुआसिन (दे०)]। "करैं सुवा-सिनि मंगल गाना"—[स्फु०]।

सुविख्यात—(वि०, सं०) अत्यन्त प्रसिद्ध।

सुविचार—(संज्ञा, पु०, सं०) अच्छा विचार, सुन्दर न्याय या निर्णय, श्रेष्ठ भाव या मत।

सुविज्ञ—(वि०, सं०) अति चतुर, प्रवीण, पंडित, विद्वान्। [**सुविज्ञाता** (संज्ञा, स्त्री०, सं०)]।

सुविदित—(वि०, सं०) जो अच्छी तरह से जाना हो, ज्ञात।

सुविद्—(संज्ञा, पु०, सं०) विद्वान।

सुविधा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुभीता, समाई।

सुवृत्ता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अप्सरा, १६ वर्णों वाला एक वर्णिक छंद (पिं०)।

सुवेल—(संज्ञा, पु०, सं०) लंका का त्रिकूटाचल (रामा०)।

सुवेश—(वि०, सं०) वस्त्राभरण से सुसज्जित, अलंकृत, सुन्दर वेश-युक्त, सुन्दर, सुरूपवान, आभूषित ।

सुवेष—(वि०, दे०) [दे० सुवेश] सुन्दर, सुसज्जित, सुन्दर वेश-युक्त ।

सुवेषित—(वि०, दे०) [सं० सुवेश] सुसज्जित, सुन्दर वेश-युक्त ।

सुवेसउ—(वि०, दे०) [सं० सवेश] मनोहर, सुन्दर, सुवेश-युक्त ।

सुव्यवस्था—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अच्छा प्रबंध, अच्छी व्यवस्था ।

सुव्रत—(वि०, सं०) सुदृढ़ता से व्रत का पालन करने वाला ।

सुशासन—(संज्ञा, पु०, सं०) उत्तम शासन-व्यवस्था, अच्छा शासन ।

सुशासित—(वि०, सं०) सुनियंत्रित ।

सुशिक्षित—(वि०, सं०) भली भाँति शिक्षा प्राप्त, भली भाँति सीखा हुआ । [**सुशिक्षिता** (स्त्री०)] । [**सुशिक्षा** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

सुशील—(वि०, सं०) उत्तम स्वभाव वाला, शीलवान, साधु, सज्जन, विनीत । "समुझि सुमित्रा राम सिय, रूप सुशील-स्वभाव"—[रामा०] । [**सुशीला** (स्त्री०)] ।

सुशीलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) साधुता, सज्जनता, विनम्रता ।

सुशीला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुदामा की स्त्री, राधा की एक सखी ।

सुश्रृंग—(संज्ञा, पु०, सं०) श्रृंगी ऋषि, सुन्दर श्रृंग या सींग वाला ।

सुशोभन—(वि०, सं०) अति सुन्दर, दिव्य, अति शोभनीय । [**सुशोभनीय** (वि०)] ।

सुशोभित—(वि०, सं०) अति शोभायमान, अत्यंत शोभित ।

सुश्राव्य—(वि०, सं०) जो सुनने में प्रिय लगे, श्रुति-प्रिय ।

सुश्री—(वि०, सं०) अतिशोभित, शोभायुक्त, अत्यंत सुन्दर या धनी, कांतिमान ।

सुश्रुत—(संज्ञा, पु०, सं०) सुप्रसिद्ध, सुश्रुतसंहिता के रचयिता एक प्रमुख आयुर्वेदाचार्य्य, उनका ग्रंथ । "शारीरे सुश्रुतः प्रोक्तः"—[स्फु०] ।

सुश्रूखा, सुश्रूषा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुश्रूषा] सेवा, परिचर्य्या, टहल, खुशामद । [**सेवा सुश्रूषा** (यौ०)] ।

सुश्लोक—(वि०, सं०) यशस्वी, विख्यात, प्रसिद्ध, धर्म्मात्मा । "सुश्लोक-शिखामणिः"—भा० द० ।

सुष*—(संज्ञा, पु०, दे०) [[सं० सुख] सुख ।

सुषमना, सुषमनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुषुम्ना] एक नाड़ी (हठ योग) ।

सुषमा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अति शोभा, अति सुन्दरता, [सुखमा (दे०)], १० वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०) "सुषमा अस कहु सुनियत नाहीं"—[रामा०] ।

सुषाना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं०, सुखाना] सुखाना, आग या धूप में आर्द्रता मिटाना ।

सुषारा*—(वि०, दे०) [हिं० सुखारा] सुखारा, प्रसन्न, खुशी ।

सुषिर—(संज्ञा, पु०, सं०) बेंत, बाँस, अग्नि, वायु, बल से बजने वाला एक बाजा, (वि०) पोला, छिद्रयुक्त, छेददार ।

सुषुप्त—(वि०, सं०) गहरी निद्रा से युक्त, गहरी नींद में सोया हुआ, अति निद्रित । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुषुप्ति] सोने की दशा या अवस्था ।

सुषुप्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) घोर निद्रा, गहरी नींद, अज्ञान (वेदा०) चार अवस्थाओं में से एक अवस्था, चित्त की वह अनुभूति या वृत्ति जिसमें जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता हुआ भी उसका ज्ञान नहीं रखता (पा० योग०) ।

सुषुम्ना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शरीर की तीन प्रमुख नाड़ियों में से नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित रहने वाली एक नाड़ी (हठ योग) १४ प्रमुख नाड़ियों में नाभि के मध्य में स्थित एक नाड़ी (वैद्य०) ।

सुषेण—(संज्ञा, पु०, सं०) विष्णु, राजा परीक्षित का एक पुत्र, वरुण-पुत्र एक बानर जो अंगद का नाना और सुग्रीव का राजवैद्य था, [सुखेन (दे०)] ।

सुषोपति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुषुप्ति] सुषुप्ति, चित्त की चार अवस्थाओं में से एक व्यवस्था, गहरी निद्रा ।

सुष्ठ—(क्रि० वि०, सं०) भली भाँति, अच्छी तरह । (वि०) सुन्दर, उत्तम, भला, अच्छा । [**सौष्ठव** (संज्ञा, पु०)] । [**दुष्ट** (विलो०)] ।

सुष्ठता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दरता, सौभाग्य सौष्ठव।

सुष्मना—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुषुम्ना] सुषुम्ना नाड़ी।

सुसग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुसंगति] सत्संग, अच्छा साथ, अच्छी मित्रता या संगति, अच्छों का साथ या संग। [**कुसंग** (विलो०)]।

सुसंगत—(वि०, सं०) उचित, युक्त।

सुसंगति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सत्संगति, अच्छों का संग या साथ, ससग, अच्छों की मैत्री, अच्छी संगति।

सुसंपन्न—(वि०, सं०) अत्यन्त सम्पन्न, जिसके पास काफी सम्पत्ति हो।

सुसंस्कृत—(वि०, सं०) जिसका सुन्दर संस्कार हुआ, सभ्य।

सुस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्वसृ] बहिन।

सुसकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सिसकना] सिसकना, रोना।

सुसजित—(वि०, सं०) अलंकृत, भली भाँति सजाया हुआ, अति सजा हुआ, अत्यंत शोभायमान।

सुसताना—(क्रि० अ०, दे०) [फा० सुस्त] थकावट मिटाना, विश्राम या आराम करना, दम लेना।

सुसती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सुस्ती] सुस्ती, ढीलापन।

सुसमय—(संज्ञा, पु०, सं०) सुकाल, [सुसमै (दे०) सुभिक्ष, अच्छा समय। [**कुसमय** (विलो०)]।

सुसमा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुषमा] सुषमा, शोभा, सुन्दरता।

सुसमुझि, सुसामुझि*—(वि०, दे०) [हि० समझ] बुद्धिमान, अक्ल, अच्छी समझ। उभय-भेद निज सामुझि साधी"—[रामा०]।

सुसर, सुसुरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वशुर] श्वशुर, ससुर, पति या पत्नी का पिता।

सुसराल, सुसुराल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्वशुरालय] ससुर का घर या गाँव, [सुसुरार-सुसुरारि (दे०)]।

सुसुरित, सुसुरिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंगा नदी, अच्छी नदी।

सुसरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० ससुरो] सासु, पत्नी या पति की माता। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुरसरी] गंगा नदी।

सुसा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [स० सुसृ] बहन, बहिन। (संज्ञा, पु०, दे०) एक चिड़िया।

सुसाध्य—(वि०, सं०) सुख-साध्य, जो सहज या सरलता से किया जा सके, आसानी से हो। "देखि लेहु सुसाध्य रोगिहिं करहु तब उपचार" —कुंज वि०। [**सुसाध्यता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सुसाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० साँस] सिसकना।

सुसिद्ध—(वि०) सुप्रमाणित।

सुसीद्धि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक अलंकार जहाँ करता तो कोई है, और फल दूसरा भोगता है (साहि०), श्रम या उद्योग कोई करे, फल कोई पावे।

सुसीलताई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुशीतलता] सुशीतलता, सुन्दर ठंडक, [सुसितलाई (दे०)]।

सुसुकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सिसकना] सिसकना, रोना, [सुसकना (दे०)]।

सुसुप्ति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुषुप्ति (सं०) गहरी निद्रा। (वि०, दे०) सुसुप्त।

सुसेन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुषेण] अंगद का नाना, सुग्रीव का वैद्य। सुषेण, [सुखेन (दे०)]।

सुस्त—(वि०, फ़ा०) मंदगति वाला, आलसी, ढीला, चिंतादि से निस्तेज, उदासीन, हतप्रभ, धीमा, तत्परता-रहित, जिसकी तेजी या गति धीमी हो गई हो।

सुस्तना, सुस्तनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुन्दर स्तनों वाली, मनोज्ञयौवना।

सुस्ताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सुस्ती] शिथिलता, सुस्ती, आलस्य, थकावट।

सुस्ताता—(क्रि० अ०, दे०) [फ़ा० सुस्त]। [सुसताना (दे०) विश्राम या आराम करना, थकाई मिटाना।

सुस्ती—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) आलस्य, ढीलापन, शिथिलता।

सुस्तैन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वस्त्यन] स्वस्त्ययन, मंगल कार्य में पढ़े जाने वाले स्वस्ति-वाचक वेद-मंत्र। "स्वस्तिनः इन्द्रो"—आदि यजु०।

सुस्थ—(वि०, सं०) आरोग्य, तंदुरुस्त, नीरोग, भला-चंगा, भले प्रकार स्थित या ठहरा हुआ। [**सुस्थता, सुस्थत्व** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सुस्थिर—(वि०, सं०) अविचल, अतिदृढ़, या स्थिर, भलोभाँति ठहरा हुआ। [**सुस्थिरा** (स्त्री०)]। [**सुस्थिरता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सुस्वर—(वि०, सं०) सुरीला, सुकंठ, मधुर स्वर वाला। [**सुस्वरा** (स्त्री०)]। [**सुस्वरता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सुस्वाद, सुस्वादु—(वि०, सं०) अत्यंत स्वादिष्ट, अति स्वाद युक्त, बहुत मजेदार, [सुसवाद (दे०)]।

सुहंगम*—(वि०, दे०) [सं० सुगम] सरल, सुगम, सहज, आसान।

सुहँगा*—(वि०) [महँगा का अनु०] सस्ता, मद्दा।

सुहटा†—(वि०, दे०) [हि० सुहावना] सुन्दर, सुहावना, मनोज्ञ। [**सुहटी** (स्त्री०)]।

सुहनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शोधनी] झाड़ू, बढ़नी। (वि०, स्त्री०, दे०) [हि० सोहना] सुन्दर, सुहावना, शोभनीय, सोहनी।

सुहबत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०] संग, साथ, सोह-बत।

सुहबती—(वि०) साथ में उठने-बैठने वाला या रहने वाला, मित्रता का भाव रखने वाला।

सुहराना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० सुहलाना] सहलाना, सोहराना, धीरे-धीरे खुजलाना।

सुहराब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) रुस्तम का लड़का जिसने अपने पिता के द्वारा ही मृत्यु प्राप्त की थी।

सुहव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सोहन] सुहाराग (संगी०)।

सुहवी—*(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सूहा] सुहा-राग (संगी०)।

सुहा—(संज्ञा, पु०) लाल नामक एक पक्षी।

सुहाई—(वि०, दे०) [हि० सुहाना] अच्छी लगना, शोभा देना। "सिय निज पाणि सरोज सुहाई"—[रामा०]।

सुहाग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौभाग्य] अहिवात, सौभाग्य, [सोहाग (दे०)], सधवा रहने की दशा, विवाह में वर का जामा, स्त्रियों के गाने का मंगल गीत (वर-पक्ष)। "सुठि सुहाग तुम कहँ दिन दूना"—[रामा०]।—**पिटारा**—(पु०)—**पिटारी**—(स्त्री०) वर पक्ष की ओर से दिया जाने वाला श्रृंगार की सामग्री का पिटारा या पिटारी।—**रात**—(स्त्री०) पति-पत्नी को पहली रात। **सुहा०**—**उतरना**—विधवा होना।

सुहागा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुभग] गर्म गंध को सोतों से निकला एक प्रकार का क्षार, सोहागा।

सुहागिन, सुहगिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुहाग, सं० सौभाग्य] सधवा स्त्री, सौभाग्यवती, [सोहागिन, सोहागिनी (दे०)]।

सुहागिनि, सुहागिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सौभाग्यवती] सौभाग्यवती, सधवा स्त्री, अविवाहिती, सोहागिनी।

सुहागिल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुहागिन, सधवा, सौभाग्यवती।

सुहाता—(वि०, दे०) [हि० सुहाना] प्रिय, जो अच्छा लगे, सहने योग्य, सह्य, [सोहाता (दे०)]।

सुहाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० शोभन] शोभा देना अच्छा लगना, भला जान पड़ना। (वि०, दे०) [हि० सुहावना] सुहावना [सोहाना (दे०)]।

सुहाय*—(वि०, दे०) [हि० सुहावना] सुहा-वना, सुन्दर, [सोहाया (दे०)]। "जामवंत के वचन सुहाये"—[रामा०]।

सुहारी, सुहाली†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सु+आहार] पूड़ी, पूरी, [सोहारी (दे०)]।

सुहाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुहारी] एक प्रकार की नमकीन पूड़ी या पकवान।

सुहाव*—(वि०, दे०) [हि० सुहावना] सुहा-वना, प्रिय। (संज्ञा, पु०) [सं० सु+हाव] सुन्दर हाव।

सुहावता†—(वि०, दे०) [हि० सुहावना] सुहा-वना, अच्छा लगने वाला।

सुहावन, सुहावना*—(वि०, दे०) [हि० सुहाना] मनोरम, अच्छा लगने वाला, प्रिय, दर्शन। [**सुहावनी** (स्त्री०)]। (क्रि० अ०) सुहाना, अच्छा लगना।

सुहावल—(संज्ञा, पु०, दे०) सहावल।

सुहावला—(हि०, दे०) [हि० सुहावना] सुहा-वना, सुन्दर, अच्छा लगने वाला।

सुहावा—(वि०, दे०) [सुहावना] शोभित, प्रिय, सुहावना, सुन्दर, मनोरम। "मध्य बाग सर सोह सुहावा" ।—[रामा०]।

सुहास—(वि०, सं०) मधुर या सुन्दर, हँसी वाला। [**सुहासा** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, दे०, सं०) सुन्दर हास।

सुहासिनी—(वि०, स्त्री०) मधुर हँसी हँसने वाली।

सुहासी—(वि०) [सं० सुहासिन्] सुन्दर या मधुर हँसी वाला, चारुहासी, अच्छा हँसने वाला। [**सुहासिनी** (स्त्री०)]।

सुहृत्, सुहृद्—(संज्ञा, पु०, सं०) मित्र, सखा, साथी, जिसका मन अच्छा हो। [**सुहृत्ता** (संज्ञा, स्त्री०)]। [**दुहृत्, दुहृद्** (विलो०)]। "सहज सुहृद् बाली मृदुबानी"—[रामा०]। "सुहृद् दुहृदौमित्रामित्रया"।

सुहृदय—(वि०, सं०) अच्छा हृदय वाला, स्नेही।

सुहेल—(संज्ञा, पु०, अ०) एक शुभ तारा (खगो०)। (वि०) शुभ, सुखद, सुन्दर।

सुहेलरा—(वि०, दे०) [सं० सुभ] सुन्दर, सुहावना, सुखद।

सुहेला—(वि०, दे०) [सं० सुभ] सुन्दर, सुहावना, सुखद, रुचिर। (संज्ञा, पु०) स्तुति, मांगलिक गीत।

सूं*†—(अव्य०, दे०) [सं० सुह] पश्चिमीय ब्रज मे करण और अपादान कारक का चिह्न—से, सों, सौं।

सूँगरा—(संज्ञा, पु०, दे०) भैंस का बछड़ा, पड़वा।

सूँघना—(क्रि०, स०, दे०) [सं० सुघ्राण] महक या बास लेना, सुगंधि लेना। **मुहा०—सिर—**, मंगल कामना या प्रेमादि से बड़े लोगों का छोटों का सिर सूँघना। बहुत ही कम भोजन करना, (व्यंग), साँप का काटना।

सूँघनी, सुघनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सूँघना] हुलास, नास।

सूँघा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सूँघना] वह पुरुष जो केवल सूँघकर बतावे कि इस स्थान पर पृथ्वी के नीचे पानी है या धन, जासूस, भेदिया।

सूँट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) मौन, चुप्पी, अवाक।

सूँड, सूँड़ि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुण्ड] हाथी की लंबी नाक, शुंडादंड, शुंड।

सूँड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुंडी] एक प्रकार का छोटा कीड़ा। [**सूँड़ा** (पु०)]।

सूँस, सूस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिशुमार] सुइस, सुइस (ग्रा०)। मगर की जाति का एक बड़ा जल जंतु।

सूँह—(अव्य०, दे०) [सं० सम्मुख] सम्मुख, सामने, आगे, सौंह (ब्र०)।

सूँही—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का रंग।

सूअर, सुअर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूकर] सुवर, सूकर (दो भेद १-वनैला,—२-पालतू), एक गाली, एक स्तन-पायी जंतु। [**सूअरी, सुअरिया** (स्त्री०)]।

सुअरनी—(संज्ञा, स्त्री०) सूअर (मादा) अनेक बच्चों की माँ।

सूआ, सुआ†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक] शुक, [सुवा (दे०)], सुग्गा तोता। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुई] बड़ी सुई, सूजा।

सूई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सूची] एक ओर छोटे छेद तथा दूसरी ओर नोकदार, एक पतले तार का टुकड़ा जिससे सीते हैं। सूजी, सुई, सूची, अन्नादि का अँखुआ, किसी बात का सूचक काँटा या तार। **मुहा०—की डोरी से ऊँट का निकलना**—आश्चर्य की बात कर दिखाना।

सूक†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक] तोता। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक्र] शुक्र तारा, सुकवा।

सूकना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सूखना] सूखना, शुष्क हो जाना।

सूकर—(संज्ञा, पु०, सं०) शूकर सुअर।—**क्षेत्र**—(पु०) एक प्राचीन तीर्थ, मथुरा प्रांत, सोरों, [सूकर खेत (दे०)]। "मैं पुनि निज गुरु सन सुनी, कथा सु सूकर खेत"—[रामा०]।

सूकरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सूअर की मादा।

सूका†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सपदिक] चवन्नी, चार आने का सिक्का।

सूक्त—(संज्ञा, पु०, सं०) वेद-मंत्रों का समूह, श्रेष्ठ कथन। (वि०) भले प्रकार कहा हुआ, सुकथित।

सूक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) श्रेष्ठ उक्ति या कथन, सुन्दर पद या वाक्यादि।

सूच्छम—(संज्ञा, पु०, वि०, दे०) [सं० सूक्ष्म] सुच्छम, [सूक्ष्म, सूछम (दे०)], छुच्छम (ग्रा०)।

सूक्ष्म—(वि०, सं०) अति लघु, छोटा, महीन या बारीक, क्षिप्र। [**सूक्ष्मता** (संज्ञा, स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) परब्रह्म, परमाणु, लिंग शरीर, एक अलंकार जहाँ सूक्ष्म चेष्टा से चित्त वृत्ति के दिखाने या लक्षित करने का कथन हो "—(अ० पी०)। **—दर्शकयंत्र**-(पु०) खुर्दबीन जिससे छोटे पदार्थ बड़े देख पड़ते हैं।**—दर्शिता**-(स्त्री०) कठिन या बारीक बातों कै सोचने या समझने का गुण।**—दर्शी**-(वि०) कठिन गूढ़ या बारीक बातों का समझने वाला, तीव्र बुद्धि।**—दृष्टि**-(स्त्री०) ऐसी बुद्धि जिससे गूढ़ और कठिन बातें या विषय भी शीघ्र समझ लिये जावें।**—शरीर**-पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेंद्रिय पाँच सूक्ष्मभूत, मन और बुद्धि का समूह।

सूक्ष्मता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सूक्ष्मत्व, बारीकी, महीनपन, स्वल्पता, अणुता। [**सूक्ष्मतः**, **सूक्ष्मतया** (क्रि० वि०)]।

सूक्ष्मातिसूक्ष्म—(वि०) अत्यन्त लघु, इतना लघु कि जिसकी कि कल्पना न किया जा सके। "सूक्ष्मातिसूक्ष्म मन का विवेक"—निराला।

सूख—(वि०) सूखा।

सूखड़ा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) क्षयी रोग, यक्ष्मा-रोग।

सूखना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शुष्क] किसी पदार्थ से नमी या तरी का निकल जाना, आर्द्रता या गीलापन न रहना, रस-हीन हो जाना, पानी का नाश या कम हो जाना, झुराना (ग्रा०)। उदास या मलिन होना, तेज या कांति का नष्ट हो जाना, डरना, सन्न होना, कृश या दुर्बल होना, नष्ट होना।**—सूख कर काँटा होना**-अति दुर्बल हो जाना। [**सुखाना**—(स० रूप)], [**सुखवाना**—(प्रेरणा० रूप)]।

सूखा—(वि०, दे०) [सं० शुष्क] शुष्क, जिसकी नमी, तरी या पानी नष्ट हो गया हो या जाता रहा हो, कोरा, उदास, कांति-हीन, कठोर, कड़ा, क्रूर, हृदयहीन, नीरस, निर्दय, निरा, केवल। [**सूखी** (स्त्री०)]। **मुहा०—(कोरा) जवाब देना**-साफ़-साफ़ नाहीं कर देना, साफ इनकार करना। **—(खो) तरकारी**-(स्त्री०) वह तरकारी जिसमें रस न हो।**—पड़ना**-अकाल पड़ना। (संज्ञा, पु०, दे०) तम्बाकू का सूखा पत्ता, अनावृष्टि, पानी न बरसना, जल-हीन स्थान, नदी तट, एक खाँसी डब्बा-डब्बा रोग, लड़कों का एक रोग, सुखंडी।

सूघर*—(वि०, दे०) [हि० सुघड़] [सुघर (दे०)] सुन्दर, मनोहर, मनोरम।

सूचक—(वि०, सं०) बताने या सूचना देने वाला, बोधक, ज्ञापक। [**सूचिका** (स्त्री०)]। "प्रभु-प्रभाव-सूचक मृदु बानी "—[रामा०]। (संज्ञा, पु०) सूची, सुई, दर्जी, सीने वाला, कुत्ता, सूत्रधार नाटककार।

सूचना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) विज्ञप्ति, विज्ञापन, इश्तहार, किसी को बताने, सावधान करने या जताने की बात, किसी को सूचित की जाने वाली बात का कागज या पत्र, चितावनी, [नोटिस]। (क्रि० अ०, दे०) [सं० सूचना] बतलाना, छेदना, वेधना।**—पत्र**-(पु०) विज्ञप्ति, इश्तहार (फ़ा०), विज्ञापन, (सं०)।**—मंत्री**-(पु०) उस विभाग का मंत्री जिसमें जनता के हित-कार्य सम्बन्धी समस्त माँगों को सरकार तक पहुँचाया जाता है। [इनफर्मेशन मिनिस्टर]।

सूचनाधिकारी—(संज्ञा, पु०, सं०) राज्य सम्बंधी समस्त कार्यों की प्रगति को जनता तक प्रसारण करने वाला अधिकारी। [इनफर्मेशन आफिसर] **—सूचनालय**-(संज्ञा, पु०, सं०) सूचनाओं को प्रसारित करने वाला कार्यालय। [इनफर्मेशन ब्यूरो]।

सूचा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सूचना] सूचना, विज्ञप्ति, विज्ञापन। † [हि० सुचित्त] सावधान, सचेत, सुचित्त।

सूचि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुई, किसी चीज़ की नोंक। कटघरा। ग्रंथ-तालिका।**—भेद्य**-(वि०) अत्यंत घना, सुई से छेद करने लायक।

सूचिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सुई, हस्तिशुंड, हाथी की सूँड़, तालिका, सूची (सं० अल्प सूची)। **—भरण**-(संज्ञा, पु०, सं०) सन्निपात आदि-मारक रोगों की अंतिम महौषधि (वैद्य०)।

सूचित—(वि०, सं०) ज्ञापित, प्रकाशित, जताया या प्रगट किया हुआ, जिसे या जिसकी सूचना दी गई हो, सूचना प्राप्त।

सूची—(संज्ञा, पु०) [सं० सूचिन्] भेदिया, चर, गुप्तदूत, चुगलखोर, दुष्ट, खल। (स्त्री०) दृष्टि, कपड़ा सीने की सुई, सेना का एक व्यूह, तालिका, सूचीपत्र, मात्रिक छंद भेदों में आद्यांत लघु या गुरु की संख्या जानने की एक रीति या विधि

(वि०)।—**कर्म**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सूचीकर्मन्] दरजी या सिलाई का काम, सुई का काम, सुईकारी।—**पत्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह छोटी पुस्तक आदि जिसमें एक ही भाँति के अनेक पदार्थों या उनके अंगादि को क्रम से नामावाली हो, सूची, तालिका, फेहरिस्त।

सूच्छम, सूच्छिम*—(वि०, दे०) [सं० सूक्ष्म] सूक्ष्म, बारीक, महीन, पतला, सुच्छिम, [सुच्छम-सुछम (दे०)]।

सूच्यार्थ—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जो अर्थ शब्दों की व्यंजना-शक्ति से ज्ञात हो।

सूछम, सूछिम*†—(वि०, दे०) [सं० सूक्ष्म] सूक्ष्म, बारीक, महीन पतला।

सूज, सूजन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सूजन] शोथ, फुलाव, सूजने का भाव।

सूजना—(क्रि० अ०, दे०) [फ़ा० सोजिश] चोट आदि के कारण शरीर के किसी अवयव का फूल उठना, फूलना, शोथ होना, उसुवाना (ग्रा०)।

सूजनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सोजनी] विशेष कौशल से सिला हुआ एक बिछौना, [सुजनी (दे०)]।

सूजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूची] बड़ी और मोटी सुई, सूआ।

सूजाक—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) मूत्रकृच्छ्र रोग, दाह और पीड़ायुक्त एक मूत्रेन्द्रिय रोग, औपसर्गिक प्रमेह।

सूजाख—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सुजाक] सूजाक रोग, मूत्र-कृच्छ्र।

सूजी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुचि] गेहूँ का मोटा आटा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सूची] सुई। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूची] दरजी सूचिक।

सूझ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सूझना] दृष्टि निगाह, नजर, सूझने का भाव।—**बूझ**-(स्त्री०) समझ, बुद्धि, ज्ञान, अक्ल, अनोखी कल्पना, उपज, उद्भावना। "मुनिहिं हरिअरे सूझ"—[रामा०]।

सूझना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सज्ञान] देख पड़ना, दिखलाई देना, दृष्टि या समझ में आना, छुट्टी पाना, ध्यान या ख्याल में आना, ज्ञात होना। "जैसे काग जहाज को सूझै और न ठौर"—नीति०। [सुझाना—(स० रूप)], [सुझावना, सुझवाना—(प्रेरणा० रूप)]।

सूटा†—(संज्ञा, पु०, अनु०) गाँजे या तम्बाकू आदि के धुओं को वेग से खींचना।

सूत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूत्र] रुई, रेशम या ऊन का महीन तार, तागा, डोरा, धागा, सूत्र, तंतु, डोरी, नापने का एक मान, लकड़ी, पत्थर आदि पर चिह्न करने की डोर, (बढ़ई, राज, संगत-राश)।—**धार**-(पु०) सूत्रधार (नाट्य०) बढ़ई। **लो०**—"सूत न कपास कोरियों में लट्ठम लट्ठा"। **मुहा०**—**धरना**-चिन्ह बनाना। (संज्ञा, पु०, दे०) निशान, खोज, पता।—**मिलना**-पता या चिन्ह मिलना।—**में—मिलना** (**बैठना**)-बात पर बात मिलना, जैसे को तैसा मिलना। (संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्ण-संकर जाति। रथ चलाने या रथ हाँकने वाला, सारथी, चारण, भाट, बंदीजन, पौराणिक, पुराण-वक्ता, कथावाचक, बढ़ई, सूत्राधार, सूत्रकार, सूर्य।—**पुत्र**-(पु०) सारथि, सारथी, कर्ण। (वि०, सं०) प्रसूत, उत्पन्न। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूत्र] अल्प शब्दों किन्तु अधिक अर्थ वाला वचन, पद या शब्द-समूह। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूत्र=सूत] अच्छा, भला। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुत] लड़का, बेटा।

सूतक—(संज्ञा, पु०, दे०) जन्म, किसी के उत्पन्न होने या मरने से जो अशौच कुटुंबियों को होता है, [सूदक (दे०)]।—**गेह**-(पु०) सूतिकागार, सूतिकालय, जच्चाखाना, प्रसूता स्त्री के रहने का स्थान।

सूतकाघर—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) सूतिका का स्थान, सूतिकागृह।

सूतकी—(वि०) [सं० सूतकिन्] वह पुरुष जिसे सूतक लगा हो, जिसके घर या वंश में कोई उत्पन्न या मरा हो।

सूतना†—(क्रि० अ०, दे०) सोना, नींद लेना। [**सुताना**—(स० रूप)]।

सूतरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुतली] सुतली पतली रस्सी, [सुतरी (दे०)]।

सूता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूत्र] डोरा, सूत, तंतु। (स्त्री०) प्रसूता।

सूति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रसूत, जन्म पैदाइश, जनन, उत्पत्ति, उत्पति का स्थान या घर, उद्गम।

सूतिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) ऐसी स्त्री जिसने हाल ही में बच्चा जना हो, जच्चा (फ़ा०)।

—गार,—गृह-(पु०) प्रसवभवन, [सौर, सोवर (दे०)], सूतिकालय, जच्चाखाना (फ़ा०)।

सूति—(वि०, दे०) [हि० सूत] सूत से बुना या बना हुआ। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुक्ति] सीपी, शुक्ति।

सूती—(वि०) सूत के द्वारा निर्मित।—**कपड़ा**-(पु०) सूत का बना हुआ वस्त्र।

सूतीघर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूतिकागृह] सूतिकागार, सूतिकागृह, सौर, जच्चाखाना।

सूत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) सूत तागा, धागा, डोरा, जनेऊ, यज्ञोपवीत, लकीर, रेखा, कटि-भूषण, कटि सूत्र, करधनी, करगता (प्रान्ती०), व्यवस्था, नियम, थोड़े अक्षरों में कहा हुआ ऐसा शब्द या शब्द समूह जो अधिक अर्थ प्रकट करे, सुराग, पता।—**कार**-(पु०) सूत्र-रचयिता, सूत्रों का रचने या बनाने वाला, जुलाहा, बढ़ई, कुविंद। "पाणिनिः सूत्रकारंच"—[सि० कौ०]।—**ग्रंथ**-(पु०) वे पुस्तकें जो सूत्रों में हों, जैसे—योग-सूत्र।—**धर,—धार**-(पु०) नाट्य-शाला का प्रमुख नट या व्यवस्थापक, बढ़ई एक वर्णसंकर जाति (पुरा०), कष्ठ-शिल्पी।—**पात**-(पु०) प्रारंभ।—**पिटक**-(पु०) बौद्ध-सूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह-ग्रंथ।—**संचालक**-(पु०) वह राज-नीति का आचार्य जो अप्रगट रूप में सभी घटनाओं का सूत्र-संचालन करता हो।

सूत्रात्मा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० सूत्रात्मन्] जीव, जीवात्मा।

सूत्री—(वि०, सं०) सूत्र-विशिष्ट।

सूत्रीय—(वि०) सूत्र सम्बन्धीय।

सूथन, सूथना—(संज्ञा, पु०, दे०) ढीला पायजामा, [सुथना, सुत्थन (दे०)]।

सूथनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) छोटा पायजामा, [सुथनिया, सुथनी (दे०)]।

सूद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) ब्याज, लाभ, नफा, वृद्धि। **मुहा०—दर सूद**-चक्रवृद्धि ब्याज, ब्याज पर ब्याज। (सं० शूद्र] नीच जाति।

सूदन—(वि०, सं०) नाश करने वाला। (संज्ञा, पु०, सं०) हनन, वध, मारने या वध करने का काय, फेंकना, अंगीकरण। "लखन, सत्रु-सूदन एक रूपा"—[रामा०]।

सूदना—(क्रि० स०, दे०) [सं० सूदन] नाश करना, मार डालना या वध, हनना।

सूदी—(वि०, फ़ा०) ब्याज पर उठा धन, ब्याजू। —**चलाना**-ब्याज पर रुपया उधार देना।

सूद्र—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूद्र] शूद्र, नीच जाति।

सूध, सूधा*—(वि०, दे०) [हि० सीधा] ऋजु, सीधा, सरल। "सूध दूध मुख करिय न कोहू" —[रामा०]। "बाँबी सूधो साँप"—[नीति०]। [**सूधी** (स्त्री०)]

सूधना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शुद्ध] सिद्ध होना, सत्य या ठीक होना। [**सूधाना**—(स० रूप)] सीधा करना, सुधियाना।

सूधे—(क्रि० वि०, दे०) [हि० सीधा] सीधे, सीधे से। "भय बस सूधे परैं न पाऊ"—[रामा०]। (वि०, दे०) सूधा का बहुवचन।

सून—(संज्ञा, पु०, सं०) जनन, प्रसव। पुत्र। कलिका, फूल। फल। *† (संज्ञा, पु०, वि०, दे०) [सं० शून्य] शून्य, सूना, खाली। "सून भवन दसकंधर देखा"—[रामा०]।

सूना—(वि०, दे०) [सं० शून्य] शून्य, खाली, निर्जन, सुनसान। [**सूनी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) एकांत, निर्जन स्थान। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) कन्या, बेटी, पुत्री। कसाई-खाना, हत्या-स्थान, गृहस्थ-घर में जीव-हिंसा की सम्भावना के स्थान। घात, हत्या। चूल्हा-चक्की आदि। "सोना लादन पिय गये, सूना करिगे देस"—गिर०।

सूनापन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूना+पन प्रत्य०] सन्नाटा, सूना होने का भाव।

सूनु—(संज्ञा, पु०, सं०) पुत्र, लड़का, बेटा, संतान अनुज, छोटा भाई, दौहित्र, नाती, सूर्य, भानु।

सूप—(संज्ञा, पु०, सं०) पकी दाल या उसका रसा, रसेदार तरकारी, व्यंजन, रसोइया, बाण, पाचक। "भोजनं देहि राजेन्द्र घृतसूप-समन्वितम्"—भो० प्र०।—**शास्त्र**-(पु०) सूप विद्या, पाक-शास्त्र, पाकविद्या या कला। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूर्प] अन्न पछोरने का। सींक, सरई या बाँस का छाज, सूपा। **लो०**—"लाला परे सूप के कोना।"

सूपक—(संज्ञा, पु०, सं०) सुवार, रसोइया, रसोई बनाने वाला, रोटकरा (ग्रा०)।

सूपकार—(संज्ञा, पु०, सं०) सुवार, पाचक, रसोइया।

सूपच*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वपच] श्वपच, डोमार, डोम, [सुपच (दे०)]।

सूपनखा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शूर्पणखा] सूर्पणखा ।

सूफ—(संज्ञा, पु०, अ०) ऊन, पश्म, देशी काली स्याही की दावात में डालने का लत्ता ।

सूफी—(संज्ञा, पु०, अ०) उदार मुसलमानों का एक धार्मिक संप्रदाय ।

सूबा—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) किसी देश का एक भाग, प्रदेश, प्रांत । [**सूबेदार** (वि०, दे०)] ।

सूबेदार—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) प्रांत या प्रदेश का शासक, सूबे का हाकिम, सेना में एक छोटा ओहदा, गवर्नर (अं०) । (वि०) सूबेपर शासन करने वाला ।—(**बे**) **दारी**–(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) सूबेदार का ओहदा, प्रांताधीश का पद या कार्य ।

सूभर*—(वि०, दे०) [सं० शुभ्र] सुंदर मनोरम, दिव्य, धवल, सफेद, श्वेत, उज्ज्वल ।

सूम—(वि०, दे०) [अ० सुम] कंजूस, कृपण, मूँजी । "खाय न खरचै सूम धन"—वृं० । [**सूमता, सूमताई, सूमई** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

सूर—(संज्ञा, पु०, सं०) अर्क सूर्य्य, मदार, आचार्य, [पंडित (दे०)], सूरदास, अंधा, १६ गुरु और १२० लघु वाला छप्पय छंद का ५५ वाँ भेद (पि०) । [**सूरी** (स्त्री०) । "सूर सूर तुलसी ससी, उडगन केसवदास"—[स्फु०] । * (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूर] बहादुर, वीर । "सूर समर करनी करहिं"—[रामा०] । *† (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूकर] सुअर, भूरे रंग का घोड़ा । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूल] बरछी, भाला, पेट का दर्द । (संज्ञा, पु०, दे०) पठानों की एक जाति ।—**कांत**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सूर्यकांत] मार्तंड-मणि, सूरजमुखी या आतशी शीशा, एक तरह का बिल्लौर या स्फटिक ।—**कुमार**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० शूरसेन+कुमार] शूरसेन के पुत्र, वसुदेव जी ।—**तनया, तनुजा**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) सूर्य तनया, सूर्य सुता, सूर्य तनुजा, सूर्य-तनूजा, यमुना ।—**मुखी**–(पु०) दिन में सूर्य की ओर मुख रखने और सूर्यास्त या संध्या में नीचे झुक जाने वाले पीले फूल का एक पौधा, एक प्रकार की आतिशबाजी, एक तरह का पंखा या छत्र, आतशी शीशा ।—**सुत**–(पु०) सूर्यात्मज, सुग्रीव, कर्ण, शनि, यम ।—**सुता**–(स्त्री०) सूर्यसुता, यमुना जी, तरनि-तनूजा, भानुजा, रविजा ।—**पुत्र,—पूत**–(पु०) यम, शनि, सुग्रीव, कर्ण, सूर-नंदन ।—**वीर**–(पु०) बहादुर पुरुष ।—**मुखी**–(स्त्री०) सूर्यमुखी, सूरजमुखी ।—**मुखी, मनि**‡–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सूर्यकांतमणि] सूर्यकांतमणि, आतशी-शीशा ।—**सावंत,—सामंत**–(पु०) सेनापति, युद्ध-मंत्री, सरदार नायक ।—**सुत**–(पु०) [सं० सूर्य सुत] शनि, यम, सुग्रीव, कर्ण ।—**सुता**–(स्त्री०) रविजा, यमुना जी, भानुजा ।—**सुवन,—सुअन**–(पु०) सूर्यसुत सूर्य-पुत्र ।—**सेन**–(पु०) [सं० शूरसेन] बसुदेव जी के पिता ।—***सेनपुर**–(पु०) [सं० शूरसेन पुर] मथुरा नगरी ।

सूरज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूर्य] सूर्य । **मुहा०—पर थूकना या धूल फेंकना**–किसी निर्दोष या साधु को दोष लगाना ।—**को दीपक दिखाना**–बड़े भारी गुणी को सिखाना, सुविख्यात व्यक्ति का परिचय देना । (संज्ञा, पु०, सं०) शनि, यम, सुग्रीव, कर्ण राजा, सूरदास । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूरज] वीर-पुत्र, शूर-पुत्र । "डारि डारि हथियार सूरज प्राण लै लै भज्जहीं"—[रामा०] ।

सूरजतनी‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सूर्य-तनया] सूर्यतनया, यमुना जी ।

सूरत, सूरति—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शक्ल, आकृति, रूप । **मुहा०—बिगड़ना**–मुँह का रंग फीका पड़ना ।—**बनाना**–रूप बनाना, भेस बदलना, नाक-भौं सिकोड़ना, मुँह बनाना ।—**दिखाना**–सम्मुख आना । सुन्दरता, सौंदर्य, छवि, छटा, शोभा, युक्ति, उपाय, ढंग, दशा, अवस्था । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्मृति] स्मरण, सुधि । (वि०, दे०) [सं० सुरत] अनुकूल, कृपालु । (संज्ञा, पु०, दे०) एक नगर (बम्बई) । (संज्ञा, स्त्री०) [अ० सूरः] कुरान का अध्याय ।

सूरता, सूरताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शूरता] शूरता, वीरता, बहादुरी । "सोइ सूरता कि अब कहुँ पाई"—[रामा०] ।

सूरति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सूरत] सूरत शकल, आकृति । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्मृति स्मरण, सुधि ।

सूरदास—(संज्ञा, पु०, सं०) एक प्रसिद्ध सिद्ध, कृष्ण-भक्त तथा हिन्दी के सर्वोच्च महाकवि जो अंधे थे । "सूरदास बलिहारी" ।

सूरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूरण] जमीकंद, एक कंद विशेष, ओल (प्रान्ती०) । "रन-सूरन को लगत प्रिय, सूरन केर अचार"—मन्ना० ।

सूरपनखा*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शूर्पणखा] सूर्पणखा, शूर्पणखा, रावण की बहन ।

सूरमा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूरमानी] योद्धा, वीर, बहादुर ।

सूरमापन—(संज्ञा, पु०, दे०, हि०) शूरमा, वीरता बहादुरी, वीरत्व ।

सूरवाँ‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सूरमा] सूरमा, वीर, शूर ।

सूरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूर] सूरदास, अंधा, शूर, वीर, एक कीड़ा । "सूरा की गति है तुमहीं लौं मानौ सत्य मुरारी"—सूर० । "सूरा रन में जाय कै लोहा करौ निसंक"—[स्फु०] ।

सूराख—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) बिल, छेद, छिद्र ।

सूरि—(संज्ञा, पु०, सं०) ऋत्विज, यज्ञ कराने वाला, विद्वान्, आचार्य्य, पंडित, सूर्य, कृष्ण । "अथवा कृत-वाग्-द्वारे बंशेऽस्मिन् पूर्वं सूरिभिः"—[रघु०] ।

सूरी—(संज्ञा, पु०) [सं० सूरिन्] पंडित, विद्वान । (संज्ञा, स्त्री०, सं०) पंडिता, विदुषी कुंती, सूर्य पत्नी । *‡ (संज्ञा, स्त्री०, दे०) सूली, शूली (सं०) । *‡(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूल] भाला, बरछी ।

सूरुज*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूर्य] सूर्य ।

सूरुवाँ‡*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सूरमा] शूर, वीर, योद्धा ।

सूर्पणखा, सूर्पनखा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शूर्पणखा] सूर्पणखा, सूपनखा, रावण की बहिन ।

सूर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) [सूरज (दे०)], मार्तंड, अर्क, भास्कर, भानु, रवि, आदित्य, दिवाकर, दिनकर, प्रभाकर । आकाश में ग्रहों के बीच सबसे बड़ा एक ज्वलंत पिंड जिसकी परिक्रमा सब ग्रह करते तथा जिससे गर्मी और प्रकाश पाते हैं । आक, मदार । बारह की संख्या । [सूरज सूरिज सूरोज (दे०)] । [**सूर्य्या, सूर्य्याणी** (स्त्री०)] । **कांत**–(पु०) सूरजमुखी, शीशा, आतशी शीशा, एक तरह का बिल्लौर या स्फटिक । [**सूर्यकांतमणि** (यौ०)] ।—**कन्या, कन्यका**–(स्त्री०) यमुना । —**ग्रहण**–(पु०) सूर्य का ग्रहण, जब सूर्य चंद्रमा, की छाया में आता है, [सूरजगहन (दे०)] ।—**तनय**–(पु०) सूर्यनंदन, सूर्य पुत्र कर्णादि ।—**तनया**–(स्त्री०) यमुना, रवि-तनया ।—**तापिनी** (स्त्री०) एक उपनिषद् ।—**नंदन**–(पु०) सूर्य-सुत । [**सूर्यनंदिनी** (स्त्री०)] ।—**पत्नी**–(स्त्री०) सूर्यप्रिया ।—**पुत्र**–(पु०) सूर्य-तनय, शनि, यम, वरुण, सुग्रीव, कर्ण, सूर्यसुत, [सूरज पूत (दे०)] । —**पुत्री**–(स्त्री०) सूर्यकन्या, यमुना, बिजली । —**प्रभ**–(वि०) सूर्य के सदृश कांतिमान या प्रकाशवान ।—**प्रभा**,—**प्रतिभा**–(स्त्री०) सूर्याभा, सूर्य की कांति या रोशनी, सूर्य प्रकाश, धूप, घाम, सूर्यप्रिया, सूर्य पत्नी, दीप्ति ।—**प्रिय**–(पु०) कमल, माणिक ।—**मंडल**–(पु०) रविमंडल । —**मणि**–(पु०) सूर्यकांत मणि, आतशी शीशा । —**मुखी**–(पु०) [सूरजमुखी (दे०)], दिन में ऊपर और संध्या में नीचे झुक जाने वाले पीले फूल का एक पौधा ।—**लोक**–(पु०) सूर्य का लोक (कहा जाता है कि रण में मरे वीर इसी लोक में जाते हैं) ।—**वंश**–(पु०) भानु वंश, इक्ष्वाकु वंश, क्षत्रियों के दो प्रधान और आदि के कुलों में से एक कुल, जिसका आदि राजा इक्ष्वाकु से होता है । "क्वसूर्य प्रभवो वंशः"—रघु० ।—**वंशी**–(वि०) सूर्यवंश का, सूर्य वंश में उत्पन्न [**सूर्यवंशीय** (वि०)] ।—**संक्रांति**–(स्त्री०) सूर्य का एक राशि से दूसरी में जाना (ज्यो०) । —**सारथी**–(पु०) अरुण ।—**सुत**–(पु०) सूर्य-पुत्र, सूरजसुता ।—**सुता**–(स्त्री०) यमुना, [सूरज-सुता (दे०)] ।

सूर्य्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सूर्य की स्त्री, सूर्य-प्रिया, रवि-पत्नी ।

सूर्य्याभा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सूर्य की प्रभा, घाम, धूप ।

सूर्य्यावर्त्त—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हुलहुल पौधा, एक प्रकार का अर्ध शिर-शूल, आधाशीशी ।

सूर्य्यास्त—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सायंकाल, संध्या, सूर्य का डूबना या छिपना ।

सूर्योज्वल—शत सूर्योज्वल कुवलय कोपल—पंत ।

सूर्य्योदय—(संज्ञा, पु०, यौ० सं०) सूर्य का उदय या प्रगट होना, प्रकाशित होना, निकलना, प्रातः-काल । "सूर्योदय सकुचे कुमुद, उडगन जोति मलीन"—[रामा०] ।

सूर्य्योपासक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्यार्चक, सूर्य-पूजक, सूर्य की पूजा या उपासना करने वाला, सौर ।

सूर्योपासना—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सूर्य की पूजा या उपासना, सूर्योराधन, सूर्याचन।

सूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूल] बरछा, भाला, साँग, काँटा, कोई चुभने वाली चीज, एक प्रकार की चुभने की सी पीड़ा, कसक, दर्द, पेट की पीड़ा, भाला का ऊपरी भाग। "बचन सूल-सम नृप उर लागे"—[रामा०]। —पानि-(पु०) [सं० शूलपाणि] शूलपाणि, शिव जी।

सूलधर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूलधर] शिवजी।

सूलना—(क्रि० स०, दे०, हि०) भाले से छेदना, पीड़ित करना। (क्रि० अ०, दे०) भाले से छिदना पीड़ित या व्यथित होना, वेदना पाना, दुखना।

सूली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शूल] दंडित व्यक्ति को एक नुकीले लोहे पर बैठा कर ऊपर से आघात कर प्राण-दंड देने की एक पुरानी रीति, फाँसी। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शूलिन्] शूली, शिवजी।

सूवना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्रवण] बहना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक] तोता, सुआ, सुअना, सुगना।

सूवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुक] तोता सुग्गा, सुवा, सुगना।

सूस, सूसि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शिशुमार] मगर जैसा, एक जल-जंतु, [सुइस]।

सूसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक प्रकार का कपड़ा।

सूसुम—(वि०, दे०) कुनकुना, थोड़ा गरम।

सूहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सोहना] एक तरह का लाल रंग, एक मिश्रित राग, (संगी०)। (वि०, स्त्री०) (सूही) लाल-लाल रंग का।

सूही—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० सोहना] लाल रंग, सूहा।

सृंखला*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शृंखला] जंजीर।

सृंग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृंग] [सींग, (दे०)] चोटी।

सृंगबेरपुर*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० शृंगवेरपुर] शृंगवेरपुर, निषाद-नगर, सिंगरौर (वर्तमान)। "सृंगबेरपुर पहुँचे जाई"—[रामा०]।

सृंगी (रिषि)—(संज्ञा, पु०, सं०) शृंगी (ऋषि)।

सृंजय—(संज्ञा, पु०, सं०) मनुजी के एक पुत्र, धृष्टद्युम्न का वंश।

सृक—(संज्ञा, पु०, सं०) बरछा, शूल, भाला, हवा, वायु, तीर, बाण, शर। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्रज्, स्रक्, स्रग्) हार, गजरा, माला।

सृकाल, सृगाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृगाल] सियार, गीदड़।

सृग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सृक] शूल, बरछा, भाला, शर, तीर। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्रज्, स्रक्] गजरा, माला, हार।

सृग्विनी*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्रग्विणी] चार रगण का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

सृजक*—(संज्ञा, पु०, सं०) विरंचि, सृष्टि का बनाने या उत्पन्न करने वाला, सर्जक, ब्रह्मा, [सिरजनहार (दे०)]।

सृजन*—[संज्ञा, पु०, सं०) सृष्टि के उत्पादन या रचने का कार्य, सृष्टि, [सिरजन (दे०)]।—**हार***-(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सृज्] या (सं० सृजन + हार हि० प्रत्य०) सृष्टिकर्त्ता, स्रष्टा, ब्रह्मा, विरंचि, [सिरजनहार (दे०)]।

सृजना—(क्रि० स०, दे०)* [सं० सृजन [सिरजना (दे०)], सृष्टि का उत्पन्न करना या बनाना, रचना, बनाना। [**सृजाना, सृजवाना** (स० रूप०)]।

सृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आवागमन, रास्ता, जन्म। "गति गति सृति सृति चिर भरिता"—पंत।

सृष्ट—(वि०, सं०) उत्पन्न, उद्भूत, विरचित, निर्मित, युक्त, मोच, छोड़ा हुआ, उत्पादित।

सृष्टा—(संज्ञा, वि०, सं०) विरंचि, ब्रह्मा, सृष्टिकर्त्ता, रचने वाला।

सृष्टि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उत्पत्ति, रचना, निर्माण, बनावट, विश्व की उत्पत्ति, संसार, जगत, जहान, निसर्ग, प्रकृति।—**कर्त्ता**-(पु०) संसार का उत्पन्न करने या बनाने वाला, विधाता, ब्रह्मा, विधि, विरंच, परमेश्वर।—**विज्ञान**-(पु०) वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि पर विचार किया गया हो, संसृति, शास्त्र, सृष्टिविद्या।

सेंक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सेंकना] सेंकने की क्रिया का भाव।

सेंकना—(क्रि० स०, दे०) [सं० श्रेषण] किसी वस्तु को आग में भूनना या पकाना, किसी वस्तु में गरमी पहुँचाना। **मुहा०—आँख सेंकना**-सुन्दर रूप देखना। **धूप सेंकना**—धूप से देह गरम करना।

सेंगर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृङ्गार] एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। एक प्रकार का अगहनी धान। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृंगीवर] क्षत्रियों की एक जाति।

सेंगरी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० सेंगर] बँबूल की फली, सिगरी, छेमी।

सेंटा—(संज्ञा, पु०, दे०) सरपत, मोटी सींक।

सेंत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संहित] बिना मूल्य, बेदाम, बिना खर्च, बिना कुछ लगे या खर्च पड़े, मुफ्त। [**सेंत मेंत** (यौ०, दे०)]। **मुहा०—का**-जिसमे कुछ दाम न लगा हो, मुफ्त का। *बहुत, ढेर का ढेर।—**में**-बिना कुछ दाम दिये, मुफ्त में। व्यर्थ, निष्प्रयोजन, फजूल, निरर्थक। (वि०, दे०) ढेर सा, बहुत।

सेंतना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० सैंतना] रक्षा मे रखना, इकट्ठा करना।

सेंत-मेंत—(क्रि० वि०, दे०) [हि० सेंत+मेंत अनु०] बिना मूल्य दिये, मुफ्त मे, व्यर्थ नाहक।

सेंति, सेंती*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सेंत] बिना दाम दिये, बिना मोल दिये, मुफ़्त में, व्यर्थ। (प्रत्य०) [प्रा० सुन्ती] करण और अपादान कारकों की विभक्ति (प्राचीन हिन्दी)।

सेंथी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शक्ति] भाला।

सेंदुर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सिंदूर] सिंदूर। **मुहा०—चढ़ना**-कन्या का ब्याह होना। **—देना, भरना**-पति का पत्नी की माँग भरना (ब्याह में)।

सेंदुरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सिंदूर] लाल फूलों का एक सदाबहार पौधा। (वि०) सिंदूर के रंग का, गाढ़ा लाल। (संज्ञा, पु०) एक प्रकार का लाल-पीला आम। "शोख यह सेंदूरिये का रंग है"—गालि०।

सेंदुरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सेंदुर] लाल गाय।

सेंद्रिय—(वि०, सं०) इन्द्रियों के सहित।

सेंध—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संधि] संधि, बड़ा छेद, सुरंग, नकब, चोरी करने को दीवाल में किया गया बड़ा छेद। **मुहा०—लगाना, मारना**-चोरी करने को दीवाल में संधि या बड़ा छेद करना।

सेंधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० संधि] सेंध या सुरंग लगाना।

सेंधा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सैंधव] एक खनिज नमक, [सेंधौ (दे०)], सैंधव या लाहौरी नमक। "औरा हरैं सेंधा चीत"—कुंज वि०।

सेंधिया—(वि०, दे०) [हि० सेंध] सेंध करने वाला, नकब लगाने वाला, चोर। (संज्ञा, पु०, दे०) [मराठी शिंदे] सिंधिया, ग्वालियर के मरहठा राज वंश की पदवी।

सेंधी—(संज्ञा, पु०, दे०) खजूर का रस।

सेंधुर‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सेंदुर] सेंदुर, सिंदूर।

सेंधौ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सैंधव] सेंधा नमक।

सेंमर, सेंमल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सेमर] सेमर पेड़, शाल्मली।

सेंमई, सेंवई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सेविका] मैदे से बने सूत के से लच्छे जिन्हें दूध में पकाकर खाते हैं।

सेंवर*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सेमल] सेमर, सेमल।

सेंहुड़, सेंहुड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० थूहर] थूहर की जाति का एक कटीला पेड़।

से—(प्रत्य०, दे०) [प्रा० सुन्तो] तृतीया या करण और पंचमी या अपादान कारक की विभक्ति। (वि०) [हि० सा का बहुवचन] सदृश, समान तुल्य। * (सर्व०) [हि० सो का बहु० व०] वे, ते (अव्य०)।

सेइ—(क्रि० स०, ब्र०) सेवा करके, सेवन करके।

सेउ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सेब] एक मीठा फल सेब।

सेक—(संज्ञा, पु०, सं०) जल-सिंचन, छिड़काव, जल-प्रक्षेप, सिंचाई।

सेख*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शेष] शेष, अवशिष्ट, शेषनाग जी। "सहस सारदा सेख"—[नीति०]। (संज्ञा, पु०) [अ० शेख] मुसलमानों की एक जाति। "सेख काबे हो के पहुँचा हम कनश्ते दिल में हो"—ज़ौक। (वि०, दे०) शेषबाकी।

सेखर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शेखर] शेखर, शीश, सिर।

सेखावत—(संज्ञा, पु०, सं०) राजपूतों की एक जाति-विशेष।

सेगा—(संज्ञा, पु०, अ०) सीगा महकमा, विभाग क्षेत्र, विषय।

सेचक—(वि०, सं०) सींचने वाला।

सेचन—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी सींचना, सिंचाई, सिंचन, अभिषेक, मार्जन, छिड़काव। [**सेचनीय, सेचित, सेच्य** (वि०)]।

सेज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शय्या] पलँग, चारपाई। "पौरियों को मैया मेरी सेज पै कन्हैया को"—पद्मा०।—**पाल—पालक**-(पु०) शयनागार का रक्षक, राजादि की सेज का पहरेदार।

सेजरिया, सेज्या*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शय्या] सेज, शय्या, पलँग। [सेजिया (दे०)]।

सेझदाद्रि*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सह्याद्रि] सह्याद्रि पर्वत (दक्षिण)।

सेझना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० सेधन] हटना, अलग या दूर होना, सीझना।

सेटना-सेंटना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शुत] ख्याल करना, मानना, समझना, महत्व स्वीकार करना, कुछ समझना।

सेठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रेष्ठ] बड़ा महाजन या साहूकार, कोठीवाल, बड़ा धनी, थोक व्यापारी, सुनार, सराफ। [**सेठानी** (स्त्री०)]।

सेढ़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) नाक का मैल।

सेत*—(वि०, दे०) [सं० श्वेत] सफेद, श्वेत, उजला। "सेत सेत सब एक से करर कपास कपूर"—[नीति०] (संज्ञा, दे०) [सं० सेतु] पुल, बाँध, धुस्स, मेंड़, सीमा, मर्यादा, नियम, व्यवस्था। "धर्म-सेत-पालक तुम ताता"—[रामा०]। "सेत सेत सबही भले सेतो भलो न केश"—[स्फु०]।—**कुली**-(पु०) सफेद जाति के नाग।—**दुति***-(पु०) चन्द्रमा।—**वाह—वाहन***-अर्जुन, चन्द्रमा (पिं०)।

सेतिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० साकेत] अयोध्यानगरी, साकेत।

सेतु, सेतू—(संज्ञा, पु०, सं०, दे०) बाँध, धुस्स, बँधाव, मेंड़, नदी आदि का पुल। डाँड़। मार्ग। हद, सीमा। नियम या व्यवस्था। मर्यादा। व्याख्या। ओंकार, प्रणव। "वैदेहि पश्य मलयात् विभक्तम् मत्सेतुना फेनिलमम्बुराशिम्"—[रघु०]।—**बंध**-(पु०) पुल की बधाई, लंका पर आक्रमणार्थ समुद्र पर रामचन्द्र का बंधाया पुल। "सेतुबंध इतिख्यातः"—वाल्मी०।

सेतुक—(अव्य०, दे०) सौतुक, सामने। (संज्ञा, पु०, सं०) छोटा पुल।

सेतुवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शक्तु] सत्त, सित्तू, सितुआ, भूने हुए जवों और चनों का आटा, सेतुआ (ग्रा०)। (संज्ञा, प्रांती०) सूस जन्तु।

सेथिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [तेलगू० चेटि] आँखों की दवा करने वाला, नेत्र-चिकित्सक।

सेद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वेद] पसीना। "सेद-केन सारत, संभारत उसाँसहू न"—रत्ना०।

सेदज*—(वि०, दे०) [सं० स्वेदज] स्वेदज, पसीने से उत्पन्न कीड़े, चीलर, जूँ।

सेन—(संज्ञा, पु०, सं०) देह, जीवन, एक भक्त नाई, बंगालियों की एक जाति। (संज्ञा, पु०, दे०) (श्येन) बाज पक्षी। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सेना] सेना, फौज, सैन, आँख का इशारा। "समिध सेन चतुरङ्ग सुहाई"—[रामा०]।—**जित**-(वि०) सेना जीतने वाला। (पु०) श्री कृष्ण जी का एक लड़का।—**प—पति***-(पु०) सेनापति। "मंत्री, सेनप, सचिव शुभ"—[रामा०]।—**वंश**-(पु०) बंगाल का एक राजवंश जिसने ३०० वर्ष (११ वीं से १४ वीं शताब्दी) तक राज्य किया (इति०)।

सेना—(संज्ञा स्त्री०, सं०) कटक, दल, फौज, पलटन, युद्ध शिक्षा-प्राप्त शस्त्रास्त्र सज्जित मनुष्य दल, इन्द्र का वज्र, भाला, इन्द्राणी, शची। (क्रि० स०,

दे०) [सं० सेवन] सेवा-सुश्रूषा या टहल करना। मुहा०—चरण-सेना—नीच नौकरी करना या बजाना। पूजना, आराधना करना, नियमपूर्वक व्यवहार करना, लगातार निवास करना, लिये बैठे रहना, कभी न छोड़ना, मादा चिड़िया का गर्मी पहुचाने को अंडों पर बैठना।—जीवी-(पु०) [सं० सेना जीविन] सिपाही, सैनिक, योद्धा, वीर।—दार-(पु०) सेनापति, सेनाध्यक्ष सेना-नायक।—नायक-(पु०) सेनापति।—पति-(पु०) सेनाध्यक्ष, सेना-नायक, सेनप, सेनाधिप। —पत्य-(पु०) सेनापति का पद, अधिकार या कार्य्य।—पाल—पालक-(पु०) सेना-रक्षक, सेनापति, सेनाध्यक्ष।—मुख-(पु०) सेना का अग्रभाग, फौज के आगे का हिस्सा, हरावुल, सफ़र-मैना, ३ या ६ हाथी, ३ या ६ रथ, ६ या २७ घोड़े, और १५ या ४५ पैदल वाला सेना का एक भाग। —वास-(पु०) छावनी, पड़ाव, सिविर, डेरा, खीमा, सेना के रहने का स्थान।—व्यूह-(पु०) सैन्य विन्यास, सेना की नियुक्ति या स्थापना, भिन्न-भिन्न स्थानों पर सेना के विविधांगों की व्यवस्था।

सेनाधिप, सेनाधीश—(संज्ञा, पु०, सं०) सेनापति, सेना-नायक।

सेनाध्यक्ष, सेनाधीश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सेनापति, सेनप।

सेनानी—(संज्ञा, पु०, सं०) सेनापति, कार्त्तिकेय, षडानन, एक रुद्र।

सेनि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्रेणी] श्रेणी, पंक्ति, सेनी "जनु तहँ बरस कमल सितसेनी" —[रामा०]।

सेनिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्येनिका] मादा बाज, एक छंद (पि०)।

सेनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सीनी] सीनी, बड़ी तश्तरी। *(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्येनी] मादा बाज। * (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्रेणी] श्रेणी, क़तार, पंक्ति, जीना, सीढ़ी। [संज्ञा, पु०] सहदेव का अज्ञात-वास में नाम।

सेब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) नाशपाती की जाति का एक छोटा पेड़ और उसका स्वादिष्ट फल (एक-मेवा)। "सेब समरकंदी भी याँ दंग है ग़ालिब"।

सेम—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिवा] एक फली जिसकी तरकारी बनती है।

सेमई*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सेविका] [सेंवई (दे०)] गेहूँ के मैदे से बने बारीक तारों के लच्छे जो दूध में पका कर खाये जाते हैं।

सेमर, सेमल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शालमली] लाल फूलों और रुई सी चीज युक्त फलों का एक बड़ा पेड़। "सेमर सुअना सेईयो, लखि फूलन को रूप"—[स्फु०]।

सेर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सेत] सोलह छटाँक या अस्सी रुपये भर की तौल। "सेर भर मद सवा सेर बधैं"—[स्फु०]। (संज्ञा पु० दे०) [फ़ा० शेर) व्याघ्र, बाघ, फारसी का छंद, शेर। (वि०, फ़ा०) अघाया हुआ, तृप्त। शेर अघाना, कोर काना भेद राज"—मी० खु०। —साहि-(पु०) दिल्ली का एक बादशाह, शेर-शाह। "सेरसाहि दिल्ली सुलतानू"—[पद०]।

सेरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सिर] पलँग मे सिर की ओर की पट्टी, सिरवा, [सेरवा (दे०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सेराब] पानी से तर जमीन, सिंची भूमि।

सेराना, सिराना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शीतल] [सिरावना (दे०)], शीतल या ठंडा होना, तुष्ट या तृप्त होना, समाप्त होना, बीतना, मरजाना, तै होना, चुकना, भूल जाना "जनम सिरानो ऐसहि ऐसे"। (क्रि० सं०) शीतल या ठंडा करना। "जनम सेरानो जात हैं जैसे लोहे-ताव रे"—[स्फु०]। मूर्ति आदि का पानी मे प्रवाह करना। "नदी सिरावत मौर"—तुलसी।

सेराब—(वि०, फ़ा०) जलार्द्र, पानी से तर, सींचा हुआ शराबोर।

सेरी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) तुष्टि, तृप्ति, आसु-दगी। "जा सेरी साधू गया, सो तो राखी मूँद"—कबीर।

सेल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शैल] भाला, बरछा। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) भाला, बर्छी।

सेलखड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शिला, शैल + खटिका] एक प्रकार की खड़िया, [सेलखरी, सिलाखरी (दे०)]।

सेलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शैल] मर जाना, चल बसना।

सेला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शल्लक] रेशमी चादर।

सेलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) घोड़े की एक जाति।

सेली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० सेल] छोटा भाला। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० सेला] छोटा दुपट्टा, गाँती (प्रान्ती०)। यती-योगियों के गले की माला या सिर में लपेटने की बद्धी। स्त्रियों का एक भूषण।

सेल्ल, सेल्ला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शल] भाला, बरछा, सेल।

सेल्ह—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शेल] सेल, भाला, बरछा।

सेल्हा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शल्लक] सेला, रेशमी चादर।

सेवईं—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सेविका] सेमईं।

सेवर*†—(संज्ञा, पु०, दे०) सं० शाल्मली) सेमर, सेमल, वृक्ष विशेष।

सेव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सेविका] मोटे डोरे जैसे चने के आटे या बेसन से बना एक पकवान। * (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सेवा] सेवा। (संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सेब] सेब फल (मेवा)। " सेव कदम कचनार, पीपर रत्ती तून तज"—[स्फु०]।

सेवक—(संज्ञा, पु०, सं०) सेवा या टहल करने वाला, किंकर, अनुचर, छोड़ कर कहीं न जाने वाला, दास, नौकर, भृत्य, चाकर, भक्त, उपासक, निवास करने वाला। दरजी। प्रयोग करने या काम में लाने वाला। "सेवक सो जो करै सेवकाई"—[रामा०]। [**सेविका, सेवकी, सेवकनी, सेवकिन, सेवकिनी** (स्त्री०)]।

सेवकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सेवक+आई हि० प्रत्य०] सेवक का काम, सेवा, टहल, नौकरी, दासता।

सेवग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सेवक] दास, सेवक।

सेवड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) जैन मत के साधुओं का एक भेद। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सेव] मैदे का मोटा सेव या पकवान विशेष।

सेवति*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्वाति] स्वाति नक्षत्र।

सेवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सफेद गुलाब।

सेवन—(संज्ञा, पु०, सं०) खिदमत, सेवा, आराधना, परिचर्य्या, वास करना, उपासना, उपयोग, नियमित व्यवहार, गूँथना, प्रयोग, उपभोग, सीना, खाना, पीना। [**सेवनीय, सेवित सेव्य, सेवितव्य** (स्त्री०)]।

सेवना*—(क्रि० स०, दे०) [स० सेवन] सेवा करना, उपासना करना, पूजना, प्रयोग या उपभोग करना, (अंडा) सेना। " सेवत तोहि सुलभ फल चारी"—[रामा०]।

सेवनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परिचारिका, दासी, अनुचरी। " स्वसेवनीमेव पवित्रयिष्यति"—[नैष०]।

सेवनीय—(वि०, सं०) सेवा या पूजा के योग्य, उपभोग या व्यवहार के योग्य। प्रयोग के लायक, सीने-योग्य।

सेवर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शबर] शबर, एक जंगली जाति। (वि० प्रान्ती०) आँच से कम पका हुआ।

सेवरा*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सेवड़ा] जैन साधुओं का एक भेद। (वि०, दे०) आँच से कम पका, कच्चा [**सेवरी** (स्त्री०)]।

सेवरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शबरी] शबर जाति की एक स्त्री जो राम की भक्तिन थी —[रामा०]। (वि०, स्त्री०) [हि० सेवरी]।

सेवल—(संज्ञा, पु०, दे०) ब्याह में एक रीति या रस्म।।

सेवांजलि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) दोनों हाथ की हथेलियों को मिलाकर किया गया प्रणाम।

सेवा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आराधना, पूजा, परिचर्य्या, टहल, खिदमत, नौकरी, दासता, उपासना दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया। **—टहल**-(पु०) परिचर्य्या, खिदमत, सेवा, शुश्रूषा।

सेवापन-(संज्ञा, पु०,) [सं० सेवा+पन हि० प्रत्य०] सेवावृत्ति, नौकरी, दासता।

—बंदगी-(स्त्री०) पूजा, उपासना, आराधना। **—वृत्ति**-(स्त्री०) नौकरी, दासता, दासत्व, भृत्य जीविका। **मुहा०—में**-सम्मुख, समीप, पास, शरण, आश्रय, रक्षा, मैथुन, संभोग, रति।

सेवाती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्वाति] स्वाति नक्षत्र, सेवती का पुष्प।

सेवाधारी—(संज्ञा, पु०, सं०) उपासक, पुजारी।

सेवार, सेवाल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शैवाली) पानी में फैलने वाली एक घास। "ज्यों नदियन में बहै सेवार"—[आल्हा०]।

सेवि—(संज्ञा, पु०, सं०) सेवी का समास में रूप, सेवा करने वाला। * (वि०, दे०) सेव्य, सेवित।

सेविका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) किंकरी, दासी नौकरानी, सेवा करने वाली, अनुचरी, परिचारिका।

सेवित—(वि०, सं०) पूजित, जिसकी पूजा या सेवा की गई हो, व्यवहृत, उपयोग या उपभोग किया हुआ। प्रयुक्त, आराधित, जिसका भोग या प्रयोग किया हो।

सेवी—(वि०) [सं० सेविन्] सेवा या पूजा करने वाला, सेवन या संभोग करने वाला। "तुम सुर, धेनु, विप्र, गुरु-सेवी"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, सं०) दास।

सेवोपहार—(संज्ञा, पु०, सं०) अवकाश ग्रहण करने के समय किसी कर्मचारी को दिया जाने वाला धन जो उसके शेष जीवन के लिए उपयोग में आता है। [गैट्र (चु) इटी]

सेव्य—(वि०, सं०) पूज्य, उपास्य, जिसकी सेवा करनी हो, सेवा और आराधना करने योग्य, उपभोग या प्रयोग के योग्य, रक्षण और संभोग के योग्य। (संज्ञा, पु०) स्वामी, प्रभु। पीपल वृक्ष, अश्वत्थ। पानी, जल। [सेव्या (स्त्री०)]।—**सेवक**-(पु०) स्वामी और दास। [**सेव्य सेवक भाव** (यौ०)]—भक्ति मार्ग में उपासना का वह भाव जिसमें भक्त अपने को दास और उपास्य देव को अपना स्वामी मानता है, दास्य भाव।

सेश्वर—(वि०, सं०) परमेश्वर के सहित, ईश्वर-संयुक्त, जिसमें परमेश्वर की स्थिति मानी गयी हो।

सेष*—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० शेख] मुसलमानों की एक जाति, [शेख, सेख, (दे०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) शेषनाग (सं०) शेष, अवशिष्ट।—**नाग***‡-(पु०) शेषनाग। "सेषनाग पृथ्वी लीन्हें हैं इनमें को भगवान।"—कबीर।

सेस*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शेष] शेषनाग, शेषजी। (वि०) जो बाक़ी बचे, अवशिष्ट। शेषावतार लक्ष्मण।—**सायी**-(पु०) शेषशायी, विष्णु भगवान।

सेसर—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सेहसर=तीन-बाजी] ताश का खेल, जाल, जालसाज़ी। (वि०, दे०) तिगुना।

सेसरिया—(वि०) [हि० सेसर+इया प्रत्य०] छल-छन्द से पर धन हरने वाला, जालिया, जालसाज़।

सेहत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आरोग्य, तन्दुरुस्ती, सुख-चैन, रोग-मुक्ति।—**खाना**-(पु०) मल मूत्रादि की कोठरी।

सेहरा—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० सिर+हार] वर के यहाँ विवाह में गाने के मंगल-गीत, पगड़ी में बाँध कर मौर के नीचे दूल्हे के मुख के सामने लटकने की फूल, गोटे आदि की मालाएँ। "देख लो इस तरह कहते हैं सखुनवर सेहरा"—जौक़। मुहा०—**किसी के सिर—बाँधना** (**बँधना**)-किसी का कृतकार्य्य करना (होना) **किसी के सिर—होना**-किसी का कृतकार्य्य या सफल होना।

सेहरी—(स्त्री०) एक मछली, सहरी।

सेही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सेधा] साही या स्याही नामक काँटेदार छोटा जंगली जंतु।

सेहुँड़*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सहुंड] थूहर की जाति का एक काँटेदार पेड़।

सेहुआँ—(संज्ञा, पु०, दे०) विवर्णताकारक एक प्रकार का चर्म रोग, सेहुवाँ।

सैंतना—(क्रि० सं०, दे०) [सं० संचय] हाथ से समेटना, बटोरना, एकत्रित या संचित करना, सहेजना, सँभाल कर रखना, सइँतना (ग्रा०)।

सैंथी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० शक्ति] भाला, बरछा, शक्ति। "इन्द्रजीत लीन्हो जब सैंथी देवन हाहा कर्यो"—सूर०।

सैंधव—(संज्ञा, पु०, सं०) सेंधा नमक, [सैंधव (दे०)], सिंध प्रदेश का घोड़ा, सिंध देश का रहने वाला। (वि०, सं०) सिंध देश का, सिंधु-सम्बन्धी, समुद्र का।—**नायक, नृप**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जयद्रथ, सैंधव-नृपाल, सैंधव-नृपति।—**पति**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) राजा जयद्रथ, सैंधवाधिप, सिंध-नरेश।

सैंधवाधिपति—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सिंधनृप, जयद्रथ।

सैंधवी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सब रागों की एक रागिनी।

सैंधवेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सैंधवनृपति, जयद्रथ, सैंधव-नृपाल।

सैंधू—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सैंध] वीसव जाति की एक रागिनी, सैंधवी।

सैंभर†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० साँभर] साँभर नमक।

सैंह*‡—(क्रि० वि०, दे०) [हि० सौंह] सौंह, सामने, सम्मुख।

सैंहथी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० शक्ति] बरछी।

सै†—(संज्ञा, पु०, वि०, दे०) [सं० शत] सौ। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सत्व] तत्व, सत्व, सार, शक्ति, वीर्य, वृद्धि, बरकत, बढ़ती। "पृथ्वी की सै गई, अन्न थोरो उपजावति"—कुंज वि०।

सैकड़ा, सैकरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शत-कांड] सौ का समूह, शत-समष्टि।

सैकड़े—(वि०) [हि० सैकड़ा] कई सौ, बहुसंख्यक, प्रतिशत, प्रति सौ के हिसाब से, फ़ी सदी।

सैकड़ों—(वि०) [हि० सैकड़ा] अगणित, बहु-संख्यक, कई सौ।

सैकत—(वि०, सं०) सिकतामय, रेतीला, बालू का बना, बलुआ। [**सैकती** (स्त्री०)]।

सैक़ल—(संज्ञा, पु०, अ०) शस्त्रास्त्र पर सान रखने या उनके साफ़ करने का कार्य्य।

सैकलगर—(पु०) शस्त्रास्त्र पर बाढ़ या सान रखने वाला।

सैग, सइग—(संज्ञा, स्त्री०, ग्रा०) समानता, बराबरी। (वि०, ग्रा०) पूरा, सहिग।

सैगर—(वि०, दे०) [सं० सकल] अधिक, बहुत, सइगर (ग्रा०)।

सैथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शक्ति] बरछी।

सैद‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सैयद] सैयद, मुसलमानों की एक जाति, अमीर।

सैद्धांतिक—(संज्ञा, पु०, सं०) सिद्धांत का ज्ञाता, विद्वान्, पंडित, तांत्रिक। (वि० सिद्धांत सम्बन्धी, तत्व विषयक।

सैन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० संज्ञपन] संकेत, इंगित, चिन्ह, इशारा, निशान। "सैनहिं रघुपति लखन निवारे"—[रामा०]। *‡ (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शयन] शयन, सोना। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्येन] श्येन, बाज पक्षी। *†(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सेना] सेना, कटक, फौज। "समिध सैन चतुरंग सुहाई"—[रामा०]। *‡ (संज्ञा, पु०, दे०) एक तरह का बंगला।—**नाथ,—पति**–(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सेनापति] सेनापति, सेना नायक, [सैनाधिपति, सैनप, सैन-नायक (दे०)]।

सैनभोग—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० शयन +भोग] रात्रि के समय का नैवेद्य, मंदिरों में देव मूर्ति पर चढ़ाने का नैवेद्य (भोजन) और शयन।

सैना*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सेना] सेना, कटक, दल। "चली भालु-कपि-सैना भारी"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० संज्ञपन] सैन, इशारा, संकेत। "ये नैना सैना करैं, उरज उमैठे जाहिं"—रहीम।

सैनाधिप, सैनाधिपति—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सेनापति] सैनापति, सेनानायक।

सैनापत्य—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सेनापति का कार्य्य या पद, सेनापतित्व। (वि०) सेनापति सम्बन्धी।

सैना, सैनी—(वि०, दे०) इशारे से बात करना।

सैनिक—(संज्ञा, पु०, सं०) सिपाही, सेना का तिलंग, सन्तरी, फौजी आदमी। (वि०) सेना-सम्बन्धी, सेना का।—**वाद**–(पु०) सैनिक युद्ध का समर्थन करने वाला सिद्धान्त।—**सहचारी**–(पु०) सेना सम्बन्धी जानकार जो सहयोग के लिए रहते हैं।

सैनिकता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सेना या सैनिक का कार्य्य, लड़ाई, युद्ध, सैनिकत्व।

सैनिका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्येनिका] एक छंद (पिं०)।

सैनिकीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) आम तौर से लोगों को सिपाही बनाने या सेना सम्बन्धी सामान एकत्र करने का काम। [मिलिटैरिज़ेशन]

सैनियानी—(क्रि० स०, दे०) सैन या संकेत करना, आँख से इशारा करना।

सैनी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सेनाभक्त] नाई, हज्जाम। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सेना] सेना, फौज, कटक, दल। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) श्रेणी (सं०) कतार, [सेनी (दे०)]। श्रेणी, पंक्ति। " जनु तहँ बरस कमल सित सैनी "—[रामा०]।

सैनू—(संज्ञा, पु०, दे०) बेल बूटेदार नैनू कपड़ा।

सैनेय*—(वि०) [सं० सेना] लड़ने योग्य।

सैनेश, सैनेस—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० सैनेश, सैन्येश] सेनापति, सेना नायक।

सैन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कटक, सेना, फौज, सिपाही, सैनिका, छावनी, शिविर। (वि०) सेना का, सैन्य-सम्बंधी।—**क्षोभ**–(पु०) सैनिक विद्रोह।—**द्रोह**–(पु०) सैनिक विद्रोह [म्यूटिनी] —**नायक**–(पु०) सेनापति।—**पति**–(पु०) सेनापति।—**वास**–(पु०) शिविर।—**विभागाध्यक्ष**–(पु०) सेना का विभागीय अध्यक्ष जो अपने प्रधान के आदेशानुसार आज्ञा पालन करता है। [एडजुटेंट जनरल]।

सैफ—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) तलवार।

सैफी—(वि०) [अ० सैफ) टेढ़ा, तिरछा।

सैमंतिक—(संज्ञा, पु०, सं०) सेंदुर, सिंदूर।

सैयद—(संज्ञा, पु०, अ०) मुहम्मद साहिब के नाती हुसैन के वंश के लोग, मुसलमानों की चार जातियों में से एक ऊँची जाति, सैय्यद।

सैयाँ*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वामी] स्वामी, साँई, मालिक, पति, [सइयाँ, साइयाँ (दे०)]।

सैया*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शय्या] शय्या, पलँग। "ह्वैहौ जमवैया धरैया निज सैया तरे" —दूल्हा०।

सैरंध्र—(संज्ञा, पु०, सं०) घर का दास या नौकर, एक वर्ण-सङ्कर जाति। [सैरंध्री (स्त्री०)]।

सैरंध्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अन्तःपुर की दासी या नौकरानी, सैरंध्र जाति की स्त्री, द्रौपदी।

सैर—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बाहर जाना, मन बहलाने को बाहर घूमना-फिरना, कौतुक, तमाशा, मौज, आनंद, मित्रों का बगीचे आदि में नाच-रङ्ग, खान-पान करना। "सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ"—मीर०।

सैर-सपाटा—(पु०) मन बहलाव के लिए भ्रमण।

सैरा—(संज्ञा, पु०, प्रान्ती०) आल्हा।

सैल‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० सैर] सैर, घूमना-फिरना (संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० सैलाब] पानी की बाढ़, बहाव, स्रोत, जल-प्लावन। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शैल] पहाड़, पर्वत। "सैल बिसाल देखि इक आगे"—[रामा०]।—**जा**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शैलजा] गिरिजा, पार्वती। **सैलजानन्दन**—(यौ०) गणेश।—**तनया**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० शैलतनया] शैलतनया, गिरिजा, पार्वती।—**तनूजा**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० शैलतनुजा] पार्वती, शैलतनुजा, सैलतनुजा।—**सुता***–(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० शैलसुता] शैल-सुता, गिरिजा, पार्वती, सैलपुत्री, सैलकन्या। "सैलसुतापति तासुत-बाहन बोल न जात सहे"—सूर०।

सैलात्मजा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) शैलात्मजा (सं०), गिरिजा, पार्वती। "सैलात्मजा सुत बुद्धि-दाता श्री गणेश मनाइये"—मन्ना०।

सैलानी—(वि०, दे०) [फ़ा० सैर] आनंदी, मन माना घूमने-फिरने वाला, सैर करने वाला, मन-मौजी, रङ्गी-तरङ्गी।

सैलाब—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) पानी का बाढ़, जल-प्लावन।

सैलाबी—(वि०, फ़ा०) बाढ़ वाला, वह स्थान जो बाढ़ आने पर डूब जाता है, कछार—(संज्ञा, स्त्री०) तरी, सीड़, सील, नमी।

सैलूख, सैलूष—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शैलूष] नाटक खेलने वाला नट, बहुरूपिया, छली।

सैव*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शैव] शैव, शिवोपासक।

सैवल, सैवाल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शैवाल] सिवार, पानी की घास, [सेवार (दे०)]।

सैवलनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शैवलिनी] नदी, सरिता।

सैव्या*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शैव्या] राजा हरिश्चंद्र की रानी।

सैसव*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शैशव] शिशुता, शिशुत्व, लड़कपन, खेल। "सैसव खेलन मैं गयो, जुवा तरुनि-रस-राग"—कुंज वि०।

सैसवता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शैशव] शिशुता।

सैहथी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शक्ति] बरछी।

सों-सौं*†—(प्रत्य०, दे०) [प्रा० सुत्तो] करण और अपादान कारकों की विभक्ति (ब्र०), से, द्वारा। (वि०, ब्र०) सा, समान। (संज्ञा, स्त्री०, ब्र०) सौंह, का अल्प० रूप, शपथ, सौगंध। (अव्य०, ब्र०,) सौंह, सम्मुख। (क्रि० वि०) संग, साथ। (सर्व०, दे०) सो, वह।

सोंच, सोच—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शोच] चिंता, फ़िक्र, शोक, दुख, पछतावा।

सोंचर (नोन या लोन)—(संज्ञा, पु०, दे०) काला नमक, सोंचर नमक।

सोंटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुण्ड] मोटी छड़ी, लाठी, डंडा (भाँग घोंटने का), स्वाँटा (ग्रा०)।

सोंटा (सोंटे) बरदार—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हि० सोंटा + बरदार फ़ा०] आसाबल्लमबरदार। [**सोंटेबरदारी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सोंठ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शुण्ठी] शुण्ठी, सूखी अद्रक। "सोंठ मिरच पीपर त्रिकुटा है सबै वैद्य बतलाते"—कुंज वि०। **मुहा०—सोंठे करना**—खूब मारना, कुचलना।

सोंठारा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सोंठ + औरा प्रत्य०], [सोंठौरा (दे०)]। सोंठ पड़े मेवों के लड्डू (प्रसूता स्त्री के लिये)।

सोंध*—(अव्य०, दे०) [ब्र० सौंह] सौगंद, शपथ। (वि०, दे०)[सं० सुगंध] सुगंधित, खुशबूदार, महकदार, सोंधा, सौंधा (ग्रा०)।

सोंधा—(वि०, दे०) [सुगंध] महकदार, खुशबूदार, सुगंधित भुने चने या मिट्टी के नये बर्तन में पानी पड़ने की सी महक या वैसा स्वाद, (ग्रा०) [**सोंधी** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुगंधि] सिर मलने का सुगंधित मसाला (स्त्रियों के), गरी के तेल को सुगंधित करने का एक मसाला। (संज्ञा, पु०) सुगंधि। [**सोंधाई** (संज्ञा, स्त्री०)]।

सोंधाना—(क्रि० अ०, दे०) सोंधी सुगंधि या सोंधा स्वाद देना।

सोंधु—(वि० दे०) [हि० सोंधा] सोंधा सुगंधित।

सोधवाना—(क्रि० स०) ढुढ़वाना, खोजवाना, शुद्ध कराना।

सोंह, सौंह*†—(अव्य०, दे०) [हि० सौंह] सम्मुख, सामने, आगे। (संज्ञा, स्त्री०, ब्र०) सौगंध, शपथ।

सो—(सर्व०, दे०) [सं० सः] वह। * (वि०) सा, समान, तुल्य, ऐसा, सौं, लौं (ब्र०)। (अव्य०, दे०) निदान, इस हेतु, अतः, इसलिए।

सोऽहम्—(सर्व०, यौ०) [सं० सः + अहम्] वही मैं हूँ, मैं वही ब्रह्म हूँ, (जीव और ब्रह्म का एकत्वसूचक वेदान्तीय सिद्धांत का प्रतिपादक पद), तत्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि (उपनिषद), [सोंह (दे०)]। "सोऽहमाजन्म शुद्धानम्"—रघु०। अस्मि (वाक्य०) मैं वही ब्रह्म हूँ, सोऽहम्। "सोऽहमस्मि इति वृत्त अखंडा"—[रामा०]।

सोअना‡—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सोना] सोना, नींद लेना, शयन करना, सोवना। [**सोआना, सोवाना**—(स० रूप)]।

सोआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मिश्रेया] एक तरह की भाजी या साग, [सोया, स्वावा, सोवा (दे०)]। "सोआ जो साथ होता जो चाहती सो लेती" —[स्फु०]।

सोइ, सोई—(सर्व०, ब्र०) [हि० सो] वही। "सोइ पुरारि कोदण्ड कठोरा", "तात जनकतनया, यह सोई"—[रामा०]। (अव्य०) सो, सा, तुल्य, समान। (क्रि० अ०) [हि० सोना] सोकर, सो गई।

सोक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शोक] शोक दुःख, पछितावा, खेद।

सोकन—(संज्ञा, पु०, दे०) सोखना, अनेक शोक। (यौ०, हि०) वे कण। शोक-रहित।

सोकना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० शोक] शोक या दुःख करना, रंज करना, खिन्न या दुखित होना, सोखना।

सोकित*—(वि०, दे०) [सं० शोक] खिन्न, शोक युक्त, दुखित, संतप्त।

सोक्वन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सोखन] सोखना, जब्त कर लेना।

सोख—(वि०, दे०) [फ़ा० शोख] धृष्ट, ढीठ। गाढ़ा, गहरा। [**सोखी** (संज्ञा, स्त्री०)] शोखी।

सोखक*—(वि०, दे०) [सं० शोषक] सोखने या शोषण करने वाला, नष्ट करने वाला। "ससि सोखक-पोखक समुझि, जग जस अपजस दीन्ह"—[रामा०]।

सोख्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सोख्तः] स्याही सुखाने वाला एक खुरदरा कागज, [**ब्लाटिंग पेपर** (अ०)]। (वि०) जला हुआ।

सोखन—(संज्ञा, पु०, दे०) एक जंगली घास, फसई (ग्रा०), शोषण, शोखना। [**सोखनीय, सोखित** (वि०)]।

सोखना—(क्रि० स०, दे०) [सं० शोषण] शोषण करना, सुखा डालना, चूस लेना। [**सोखाना**—(स० रूप)]। [**सोखवाना**—

(प्रेरणा० रूप)] । " सोखिय सिंधु करिय मन रोखा "—[रामा०] ।

सोख्ता—(संज्ञा, पु०, दे०) देखिए सोखता। "कोसोख्तः रा जोंशुदो आवाज नयामद"—सादी० ।

सोग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शोक] शोक, दुःख, खेद, पछतावा ।

सोगिनी*—(वि०, दे०) [हि० सोग] शोकाकुल, शोकार्ता, शोक करने वाली, दुखिया ।

सोगी—(वि०, दे०) [सं० शोक] शोकाकुल, दुःखित, शोक करने वाला । [**सोगिनी** (स्त्री०)] ।

सोच—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शोच] संताप शोच, शोक, पश्चाताप, खेद या दुःख, चिंता, खिन्नता, फिक्र, रंज, सोचने का भाव । " तजहु सोच मन आनहु धीरा "—[रामा०] ।—**विचार** (पु०) समझ-बूझ, ध्यान, सोच । किसी बात पर मनपूर्वक छानबीन करना । समझ । " सोच-विचार कीन्ह विधि नाना "—[रघु०] ।

सोचना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शोचन] मन में किसी विषय पर विचार करना, ध्यान करना, चिंता या फिक्र करना, पछताना, खेद या दुःख करना । [**सोचाना**—(स० रूप)], [**सोचवाना**—(प्रेरणा० रूप)] । [**सोचना-विचारना, सोचना-समझना** (यौ०)] । " तनु धरि सोच लागु जनु सोचन "—[रामा०] ।

सोचाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० सुचाना] सोचावना, सुचाना, सोचवाना ।

सोचु, सोचू*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शोच] खेद, शोक, सोच, पछतावा । " फिर न सोचु तनु रहै कि जाऊ "—[रामा०] ।

सोच्छ्वास—(वि०) साँस फेंकता या लेता हुआ । हाँफता हुआ । आराम को साँस लेता हुआ । "कुसुम, कलि, प्रतति, विटप सोच्छ्वास"—पंत ।

सोज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुजना] शोथ सुजन । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शय्या] पलँग, खाट, सेँज (प्रान्ती०) ।

सोजन—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) सुई, सूई, सूची । " सोजनोरिफ़्ता ब हिंदी सुई-तागा "—अमीर खु० । " केहि हित सुमनन तोरि तैं छेदत सोजन जात "—रतन० ।

सोजिश—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शोथ, सूजन ।

सोझ, सोझा—(वि०, दे०) [सं० सम्मुख] सम्मुख की ओर गया हुआ, सीधी, सरल । [**सोझी** (स्त्री०)] ।

सोटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुअटा] [सुअटा (दे०)], शुक, तोतरा, सुग्गा, सुआ, सुगना, सोंटा, डंडा ।

सोढर—(वि०, दे०) सोढ (दे०) बे समझ, बेवकूफ, मूर्ख, भोंदू ।

सोत, सोता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्रोतस्] निर्झर, झरना, निरंतर प्रवाहित जल-प्रवाह की पतली धारा, चश्मा (फ़ा०) ।

सोति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्रोत] धारा, स्रोत झरना, सोता । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्वाति] स्वाति नक्षत्र । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रोत्रिय] श्रोत्रिय, वेदपाठी, [सोतिय (दे०)] ।

सोतिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्रोत] देखिए सोता ।

सोती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्वाति] स्वाति नक्षत्र । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्रोत] सोता, झरना । वर्त्तिका ।

सोत्कर्ष—(वि०, सं०) उन्नत, उत्तम ।

सोदर—(संज्ञा, पु०, सं०) सहोदर भ्राता, सगा भाई । [**सोदरा, सोदरी** (स्त्री०)] । (वि०) एक ही माँ के पेट से उत्पन्न । " त्वं सोदरास्याऽतिमदोद्धतस्य "—भट्टी ।

सोदरा, सोदरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सगी बहन, सहोदरा ।

सोध*†—(संज्ञा. पु०, दे०) [सं० शोध] खोज पता, खबर, टोह । " सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी बहुरो सोध न लीन्ही "—सूर० । सुधि, याद, होश । "आनँद मगन भये सब डोलत कछू न सोध शरीर "—सूर० । सुधार, संशोध । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौध] प्रासाद, महल ।

सोधन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शोधन] खोज, तलाश, ढूँढ़, संशोधन, सुधार । [**सोधनीय, सोधित** (वि०)] ।

सोधना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० शोधन] शुद्ध या ठीक करना, साफ करना, सुधारना, दोष मिटाना, त्रुटि या भूल-चूक ठीक करना, निर्णय करना, सुधारना, जाँचना, खोजना, ढूँढ़ना, तलाश करना, निश्चित करना । " रे रे दुष्ट बहुत तोहि सोधा "—[रामा०] । सही या दुरुस्त करना,

ऋण चुकाना या अदा करना, धातुओं या विषोप-विषों का औषधार्थ संस्कार करना [शोधना (दे०)]।

सोधाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० सोधना] सोधने का काम दूसरे से कराना [**सोधावना, सोधवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सोन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शोण] गंगा की सहायक एक बड़ी नदी। [सं० स्वर्ण] सोना, सुवर्ण, [स्वान (दे०)] ।—**कीकर**-(पु०) एक बहुत बड़ा पेड़।—**केला**-(संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) कनक-कदली, चंपाकेला, पीला केला, सुवर्ण केला, कंचन केला।—**चिरी, चिड़ी**-(स्त्री०) सोने की चिड़िया, नटी, एक जल पक्षी, एक फूल।—**जुही,—जूही**-(स्त्री०) पीली जूही, स्वर्ण-यूथिका, पीले फूलों की जुही। (वि०, दे०) [सं० शोण] अरुण, लाल।—**भद्र**-(पु०) गंगा की सहायक एक नदी। "नदिया सोन भद्र के घाट"—[आल्हा०]।—**हार**-(पु०) एक समुद्री पक्षी। (संज्ञा, पु०) [सं० श्वान] कुत्ता।

सोनजरद, सोनजर्द—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सोनजूही] सोनजूही नामक फूल का पौधा।

सोनवाना—(वि०, दे०) [हि० सुनहला] सुनहला। (क्रि० स०, दे०) सुनवाना।

सोनहला, सोनहरा—(वि०, दे०) [हि० सुनहला] सुनहला, सोने के रंग का, पीला। [**सोनहली, सोनहरी** (स्त्री०)]।

सोनहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शुन—कुत्ता +हा—मार डालने वाला] कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली जंतु।

सोना—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वर्ण] स्वर्ण, काँचन, हेम, हाटक, कनक, सुवर्ण, सुन्दर, अरुणिमा लिये पीले रंग की एक कीमती धातु। "सोना लादन पिय गये, सूना करिगे देश।" राज हंस, कोई सुन्दर और कीमती वस्तु। "दिन ढलता सोना बरसा"—महादेवी।—**गेरू**-(पु०) एक प्रकार का गेरू।—**पाठा,—पाढ़ा**-(पु०) एक ऊँचा पेड़ जिसकी छाल, फल और बीज औषधि के काम आते हैं।—**मक्खी**-(पु०) [सोनामाखी (दे०)], एक खनिज पदार्थ (उपधातु)। **मुहा०—(ने) का घर मिट्टी होना (में मिलाना)**-सर्वस्व नष्ट-भ्रष्ट हो जाना।—**(ने) में घुन लगना**-असंभव या अनहोनी बात होना।—**(ने) में सुगंधि (सोना और सुगन्ध)**-किसी अच्छी वस्तु में कोई और अधिक विशेषता होना। "ये दोऊ कहँ पाइये सोनो और सुगंध"। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक तरह की मछली। (क्रि० अ०, दे०) [सं० शयन] आँख लगना, शयन करना, नींद लेना।—**हराम होना**-कार्य या चिंता से सोने को समय न मिलना।—**सोते जागते**-सदा, प्रत्येक समय, देह के किसी अङ्ग का सुन्न (संज्ञाशून्य) होना। (संज्ञा, पु०, दे०) एक वृक्ष।

सोनार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुनार] [सं० स्वर्णकार] [सुनार (दे०)], सोने का काम बनाने वाली एक जाति। "बिसुआ बन्दर अगिनि जल, कुटी, कटक, सोनार"—[स्फु०]।

सोनित*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शोणित] शोणित, रुधिर, रक्त, लोहू। "तव सोनित की प्यास, तिखित राम-सायक-निकर"—[रामा०]।

सोनी†—(संज्ञा, पु०) [हि० सोन] सुनार।

सोपत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सूपपत्ति] सुभीता, सुबीता, सुपास, सुख या प्रबंध या विधान।

सोपान—(संज्ञा, पु०, सं०) सीढ़ी, जीना। "मनि सोपान विचित्र बनावा"—[रामा०]।

सोपानित—(वि०, सं०) सोपान-युक्त, सीढ़ीदार।

सोऽपि, सोऽपि—(वि०, यौ०) [सं० सः+अपि] वही, वह भी।

सोफता—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुभीता] निर्जन या एकांत स्थान, निराला ठौर, निराली जगह, रोगादि में कमी होना।

सोफा—(संज्ञा, पु०, अं०) गद्दा।

सोफियाना—(वि०) [अ० सूफी+इयाना फ़ा० प्रत्य०] सूफी सम्बन्धी, सूफियों का सा, देखने में सादा परन्तु अतिप्रिय और सुन्दर।

सोफी—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सूफी] एक प्रकार के मुसलमान।

सोभ*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शोभा] शोभा, सुन्दरता। "बढ़ी प्रति मन्दिर सोभ चढ़ी तरुनी अवलोकन को रघुनन्दन"—[रामा०]।

सोभना*†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शोभन] छजना, सजना, सोहना, सुशोभित होना, प्रिय या अच्छा लगना, सुन्दर होना।

सोभनीक, सोभनीय—(वि० दे०) [सं० शोभनीय, सुन्दर, सुहावना ।

सोभा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० शोभा] शोभा, सुन्दरता । "नीके निरखि नैन भरि सोभा"—[रामा०] ।

सोभाकर, सोभाकरी—(वि०, दे०) [सं० शोभाकर] सुन्दर, सोभाकरि ।

सोभित—(वि०, दे०) [सं० शोभित] शोभित, शोभायमान । [**सोभनीय** (वि०, दे०)] ।

सोम—(संज्ञा, पु०, सं०) मादक रस वाली एक लता जिसका रस वैदिक ऋषि पान करते थे (प्राची०), चंद्रमा, एक प्राचीन देवता, (वैदिक काल) यम, कुबेर, अमृत, वायु, जल, एक सोमयज्ञ, आकाश, स्वर्ग, सोमवार, चंद्रवार, एक सोम से भिन्न, वन्यलता जिसका प्रयोग काया-कल्प में होता है (वैद्य०) ।—**कर**-(पु०) चंद्रमा की किरण, सोमरश्मि ।—**जाजी**-(पु०) सोमयाजी, (सं०) सोमयज्ञ करने वाला ।—**तनय,—तनुज**-(पु०) बुध ।—**नंदन**-(पु०) सोमात्मज, बुध, सोम सुत, सोम-पुत्र ।—**नाथ**-(पु०) शिव जी की १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक, शिवमूर्ति, इसकी मूर्ति गुजरात (काठियावाड़) के पश्चिमीय तट के एक प्राचीन नगर में है ।—**पान**-(पु०) सोमरस पीना ।—**पायी**-(वि०) सोमरस पीने वाला । [**सोमपायनी** (स्त्री०)] ।—**पूत**-(पु०) सोमपुत्र, बुध ।—**दोष**-(पु०) सोमवार का व्रत । —**यज्ञ**-(पु०) एक प्रकार का वैदिक यज्ञ, सोमयाग ।—**याग**-(पु०) एक वार्षिक या त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमरस पिया जाता था, सोम-यज्ञ, (वैदिक) ।—**याज**-(पु०) सोमयज्ञ करने वाला ।—**रस**-(पु०) सोमलता का रस ।—**राज**-(पु०) चन्द्रमा, [सोमराय (दे०)] ।—**राजी**-(पु०) बकुची, दो यगण वाला एक छंद (पिं०) ।—**लता**-(पु०) सोमलतिका, सोमवल्ली, सोमवल्लरी, एक लता ।—**वंश**-(पु०) चंद्रवंश ।—**वंशीय**-(वि०) चंद्र-वंश-सम्बन्धी, चंद्रवंश में उत्पन्न व्यक्ति ।—**वल्लरी**-(स्त्री०) ब्राह्मीबूटी, र, ज, र, ज र (गण) वाला एक वर्णिक छंद, तूण चामर छंद (पिं०) ।—**वल्ली**-(स्त्री०) सोमलता ।—**वार**-(पु०) चंद्रवार ।—**वारी**-(पु०) सोमवती अमावस्या, सोमवारी अमावस ।—**सुत**-(पु०) बुध ।

सोमन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौमन] एक अस्त्र ।

सोमनस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौमनस्य] प्रसन्नता ।

सोमवती-अमावस्या—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या जिसे शुभ मानते हैं (पुरा०) ।

सोमात्मज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बुध, चंद्रात्मज ।

सोमावती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चंद्रमा की माता ।

सोमास्त्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक अस्त्र या बाण ।

सोमेश, सोमेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शिवजी, सोमनाथ जी, एक संगीताचार्य ।

सोय*—(सर्व०, दे०) [सं० सोऽहि+ई] सोई, वही, सो । "करहु अनुग्रह सोय"—[रामा०] । (क्रि० अ०, पु०, का०) [हि० सोना] सोकर ।

सोया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० मिश्रेय] सोआ, सोवा, एक प्रकार की भाजी या साग ।

सोर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शोर] शोर, कोलाहल, हल्ला, प्रसिद्धि, ख्याति, नाम । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शटा] मूल, जड़ ।

सोरठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौराष्ट्र] दक्षिणी काठियावाड़ या गुजरात का पुराना नाम, वहाँ की राजधानी (सूरत नगर) । (संज्ञा, पु०) सोरठा छंद (पिं०) एक औड़व राग (संगी०) ।

सोरठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौराष्ट्र] ४८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसके प्रथम और तृतीय चरण में ग्यारह, ग्यारह और दूसरे और चौथे चरण में तेरह, तेरह मात्राएं होती हैं, दोहे को उलट देने से सोरठा बन जाता है (पिं०) ।

सोरनी†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सँवारना +ई प्रत्य०] झाड़ू, बुहारी, कूचा, त्रिरात्रि नामक एक मृतक-संस्कार जो तीसरे दिन होता है ।

सोरवा—(संज्ञा, पु०, दे०) शोरबा, रसा, [सुरुवा (दे०)] ।

सोरह, सोलह—(वि०, दे०) [सं० षोडश] षोडश, दश और छै । (संज्ञा, पु०) षोडश, छै अधिक दस की सख्या या अंक, १६ । **मुहा०**—(**हो**) **आने**-पूरा-पूरा, संपूर्ण, सब का सब । —**सिंगार**-(पु०) सब श्रृंगार मिलकर, उबटन, स्नानादि ।

सोरही, सोलही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सोलह] जुआ खेलने की सोलह चित्ती कौड़ियाँ, इनसे खेला जाने वाला जुआ।

सोरा, स्वारा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० शोरा] शोरा। (वि०, दे०) [हिं० सोलह] सोलह।

सोलंकी—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षत्रियों का एक राज-वंश जो प्राचीन काल में गुजरात का अधिकारी था।

सोला—(संज्ञा, पु०, दे०) एक ऊँचा झाड़ जिसकी डालियों के छिलकों से टोप (हैट) बनता है। (वि०, दे०) सोलह। (पु०) आग की लपट।

सोलाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सुलाना] सुलाना।

सोल्लास—(वि०, स०) उल्लास से युक्त, आनन्द-भरा। "नित्य नादित रखता सोल्लास"—पंत।

सोवज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सावज (हिं०)] वह वन्य पशु जिसका लोग शिकार करते हैं।

सोवन*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सोवना] सोने की क्रिया का भाव।

सोवना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० सोना] सोना, नींद लेना।

सोवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० सोया] सोआ एक प्रकार की भाजी या साग, सोया।

सोवाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सुलाना] सुलाना, सुवाना।

सोवियट—(संज्ञा, पु०, सं०) रूस की जनपदीय सभा जिसमें मजदूरों या श्रमिक-वर्गों का प्रतिनिधित्व रहता है।

सोवैया*†—(संज्ञा, पु०) [हिं० सोवाना] सोने वाला।

सोषक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शोषक] सोखने वाला, शोषक।

सोषण, सोषन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शोषण] सोखने वाला। [**सोषनीय, सोषित** (वि०)]।

सोषना*—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० सोखना] सोखना। [**सोषाना** (स० रूप)], [**सोषवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सोषु-सोसु*—(वि०) [हिं० सोखना] सोखने वाला।

सोसन—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सौसन] एक फूल, सोखन, शोषण (सं०)।

सोसनी—(वि०, दे०) [फ़ा० सौसनी] सोसन के फूल के रंग का, लाली मिला नीला रंग।

सोऽसि—(वाक्य०) [सं० सोऽसि] सो तू है, तत्वमसि।

सोऽस्मि*—(वा०, यौ०, सं०) सोऽहम्, वह मैं हूँ, सोऽहमस्मि।

सोह‡*—(क्रि० वि०) [हिं० सोहना] सोभा देना। "मध्य बाग सर सोह सुहावा"—[रामा०]। (क्रि० वि०, दे०) [हिं० सौंह] शपथ, कसम, सौंह (ब्र०)।

सोहं, सोहंग—(वा०, दे०) [सं० सोऽहम्] सोऽहम्।

सोहगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० सोहग] तिलक चढ़ने के बाद ब्याह की एक रीति जिसमें लड़की के हेतु वस्त्राभरण और सिन्दूर आदि भेजे जाते है, मेंहदी, सिंदूर, वस्त्र भूषणादि सोहगी की वस्तुएँ।

सोहन—(वि०, दे०) [सं० शोभन] सुहावना, अच्छा लगने वाला, सुन्दर। "मोहन को मुख सोहन जोहन-जोग"—[व० रा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) नायक, सुन्दर व्यक्ति। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक बड़ा पक्षी विशेष। [**सोहनी** (स्त्री०)]। **—पपड़ी**-(स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई, [सोहन-पपरी (दे०)]। **—हलवा—हलुवा**-(पु०) एक स्वादिष्ट मिठाई।

सोहना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शोभन] छजना, सजना, फबना, सुशोभित होना, अच्छा या प्रिय लगना, सोभना। [**सोहाना, सुहाना** (स० रूप)]। * (वि०, दे०) शोभन, मनोहर, सुन्दर सुहावना, सोहावना। [**सोहनी** (स्त्री०)]।

सोहनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शोधनी] झाड़ू, बुहारी, बढ़नी। (वि०, स्त्री०) [हिं० सोहना] सुन्दर, सुहावनी।

सोहबत—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सुहब्बत] संग, साथ, संभोग संगत, प्रसंग। [**सोहबती** (वि०)]।

सोहं, सोहमस्मि—(वा०, सं०) सोऽहम्, सोऽहमस्मि। "सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा"—[रामा०]।

सोहर, सोहल, सोहला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सोहना] माँगलिक गीत, बच्चा पैदा होने पर स्त्रियों से गाया जाने वाला गीत स्वाहर (ग्रा०)। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सूतिका] सूतिका-गृह, सोवर, सौरी।

सोहरत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अं० शोहरत] (अ०) प्रख्याति, कीर्त्ति, शुहरत।

सोहराना—(क्रि०, सं० दे०) [हि० सुहलाना] धीरे-धीरे मलना या हाथ फेरना, सोहरावना-सोहलाना।

सेहाइन*‡—(वि०, दे०) [हि० सुहावना] सुहावना, सुन्दर, मनोरम, सुहावन, शोभन।

सोहाई—(क्रि० सं०) [हि० सोहाना] शोभा देना, अच्छा या सुन्दर जान पड़ना। (वि०, स्त्री०, दे०) रुचिर, सुन्दर, प्रिय। "करसरोज जय-माल सुहाई"—[रामा०]। (स०, क्रि० दे०) [हि० सोहाना] निराने की क्रिया या मज़दूरी।

सोहाखित*†—(वि०, दे०) [हि० सोहाना] अच्छा या प्रिय लगने वाला, रुचिकर, सुहाखित, उपहसित।

सोहाग†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुहाग] सौभाग्य, सुहाग।

सोहागिन, सोहागिनि, सोहागिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सुहागिनी] सुहागिनी, सौभाग्यवती, सोहागन।

सोहागिल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सुहागिनी, सौभाग्यवती।

सोहाता—(वि०) [हि० सोहना] अच्छा, सुन्दर, शोभित, सुहावना, रुचिर, सुन्दर, रोचक। [**सोहाती** (स्त्री०)]। [**सोहाना** (क्रि०)]। इतना गर्म या जोर का कि सहा जा सके, [सुहाता (दे०)]। [**सोहाती** (स्त्री०)]।

सोहाना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० शोभन] रुचना, सजना, शोभित, रुचिर होना, प्रिय, रोचक या अच्छा लगना, सुन्दर या उचित जान पड़ना, [सुहाना (दे०)]। "सबहिं सोहाय मोहि सुठि नीका"—[रामा०]

सोहाया—(वि०, दे०) [हि० सोहाना] सुन्दर, सुशोभित, रुचिर। [**सोहाई** (स्त्री०)]।

सोहारद, सोहरद*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौहार्द्र] सुहृद् का भाव, मित्रता, मैत्री, सौहारद।

सोहारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० सोहाना] पूड़ी, पूरी, [**सुहारी** (दे०)]।

सोहावना—(वि०, दे०) [हि० सुहावना] सुन्दर, सुहावना। (क्रि० अ०, दे०) [हि० सोहना] सोहाना, रुचना, सजना।

सोहिं, सोहीं—(क्रि० वि०, दे०) [सं० सम्मुख] सम्मुख, सामने, आगे की ओर। "तो सोही कैसे कहैं, ऊधव कह्यो न जाय"—[स्फु०]।

सोहिनी—(वि०, स्त्री०) [हि० सोहना] सुहावनी। (संज्ञा, स्त्री०) करुण रस की एक रागिनी (संगी०)।

सोहिल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० सुहैल] अगस्त्य तारा।

सोहिला—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सोहना] सोहर, वे गीत जो बच्चा उत्पन्न होने पर गाये जाते हैं, मांगलिक गीत।

सोहीं—(क्रि० वि०, दे०) सम्मुख (सं०) सामने।

सोहैं—(क्रि० वि०, दे०) [सं० सम्मुख] सम्मुख, सामने, आगे। (संज्ञा, पु० दे०) [सौंह वा ब० व०] (क्रि० अ०, दे०) (हि० सोहना] शोभा दें, अच्छे लगें सौहैं। "सोहैं जनु जुग जलज सनाला"—[रामा०]

सौं*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सौगंद] सौहैं, शपथ, कसम। (अव्य०, अ०) सों, से, द्वारा, करण और अपादान का चिह्न (व्याक०)। (प्रत्य०, दे०) सा, सों।

सौंगी—(वि०, दे०) [सं० सरल] सोधे, सरल। **मुहा०—न आना**-सीधा न होना, ठीक न होना।

सौंगियाना—(क्रि० स०, दे०) ठीक या सीधा करना।

सौंघा—(वि०, दे०) [हि० महँगा का उलटा] उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, ठीक, उचित।

सौंघाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सौंघा] ज्यादती, अधिकता, उत्तमता, उपयुक्तता।

सौंचना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० शौच] मल-त्यागादि कर्म करना, मल-त्याग पर गुह्येन्द्रिय को जल से धोना, सुउचना (ग्रा०)।

सौंचर—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सोचर] सोंचर नमक, सोंचर।

सौंचाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० सौचना] मल-त्याग कराना तथा गुदादि को धुलाना, शौच कराना।

सौंज*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शय्या] सौज, साज-समान, सामग्री, उपकरण। "मातु वचन सुनि मैथली, सकल सौंपज लै साथ"—[रामा०]।

सौंड़, सौंड़ा†—(संज्ञा, पु०, दे०) ओढ़ने का बड़ा कपड़ा, सौर, चादर।

सौंड़ियाना—(क्रि० सं०, दे०) सभीत, शंकित या लज्जित होना।

सौंतुख*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सम्मुख] सम्मुख, सामने। [क्रि०, वि०) आँखों के आगे, प्रत्यक्ष। "सोवत, जागत, सपने, सौंतुख, रहि हैं सो पति मानि"—[भ्रम०]।

सौंदन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सौंदना] धोबियों का कपड़ों को रेह-मिले पानी में भिगोना। [**सौंदनि** (स्त्री०)]।

सौंदना—(क्रि० स०, दे०) [सं० मंथम्] सानना, परस्पर मिलाना, ओत-प्रोत करना, कपड़ों को रेह मिले पानी में भिगो कर रौंदना। [**सौंदाना** (स० रूप)], [**सौंदवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सौंदर्ज—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौंदर्य] सुन्दरता, सुघरता।

सौंदर्य्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सुघराई, सुन्दरता। —**विज्ञान**-(पु०) कला, सौन्दर्य सम्बन्धी विद्या [ईस्थेटिक्स]।

सौंदर्य्यता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सौदर्य्य, सुन्दरता।

सौंध*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौध] महल, हवेली, प्रासाद। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुगंधि] सुगंध, सुवास।

सौंधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० सुगंध] सुवासित या सुगंधित करना, वासना। [**सौंधाना** (स० रूप)]। [**सौंधवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

सौंधा—(वि०, दे०) [हि० सोंधा] सोंधा, रुचिकर, अच्छा, सुगंधित।

सौंनमक्खी, सौनामाखी—(संज्ञा, पु०, दे०) देखिये। [सं० स्वर्ण-माक्षिक] सोना मक्खी।

सौंनी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सुनार] सुनार।

सौंपना—(क्रि० स०, दे०) [सं० समर्पण] सिपुर्द करना, सहेजना, हवाले करना। [**सौंपाना** (स० रूप).] । [**सौंपवाना** (प्रेरणा० रूप)]। "सौंपेहु मोहि तुमहि गहि पानी"—[रामा०]।

सौंफ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शतपुष्प] एक विख्यात छोटा पौधा जिसके बीज औषधि और मसाले में पड़ते हैं। "मिर्चे औ मसाला सौंफ काशनी मिलाय"—[शि० रा०]।

सौंफ़िया, सौंफ़ी—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) सौंफ़ की मदिरा। (वि०) सौंफ़युक्त।

सौंभरि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौभरि] एक ऋषि।

सौंर, सौर—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० सौर] ओढ़ने का भारी कपड़ा, रजाई, लिहाफ़, चादर। "तेते पाँव पसारिये, जेती लाँबी सौर"—वृं०। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० सौरी] जच्चाखाना, सौरी, सोवर।

सौंरई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्यामता हि० साँवरा] साँवलापन, श्यामता।

सौंरना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्मरण] स्मरण या याद करना, [सुमिरना (दे०)] । [**सौंराना** —(स० रूप)], [**सौंरवाना**—(प्रेरणा० रूप)]।

सौंह*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सौगंद] क़सम, शपथ, सौं, सोंह, सों। (क्रि० वि०, संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सम्मुख] समक्ष, सामने।

सौंहन—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सोहन सं० शोभन] सुहावना, सुन्दर।

सौंहाना—(क्रि० अ०, दे०) सीधा करना, सामने जाना।

सौंही—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) एक हथियार।

सौ—(वि०, दे०) [सं० शत] नब्बे और दस, शत पाँच बीस, पचास का दूना। (संज्ञा, पु०, दे०) दश के दश घात की संख्या या अंक, १००। (वि०, दे०) सा, समान। मुहा०—**बात की एक बात** –निचोड़, तत्व, सारांश, तात्पर्य।—**एक (बात) की—सुनाना**–बहुत उत्तर-प्रत्युत्तर देना (लड़ाई या विवाद में)।—**बात सुनाना**–भला बुरा कहना। —**में एक**–अत्यन्त कम।—**घड़ा पानी पड़ना**– अत्यन्त शर्म खाना, लज्जित होना।

सौक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सौत] सपत्नी, सौत। (वि०) एक सौ। (संज्ञा, पु०, दे०) शौक़ (अं०) सौख (ग्रा०)।

सौकना†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सौत] सौत।

सौकर्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सुकरता, सुविधा, सुसाध्यता, सुभीता, सुअरपन, सुकरता।

सौकुमार्य्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मार्दव, कोमलता, मृदुलता, सुकुमारता, यौवन, नज़ाकत (फ़ा०) काव्य का एक गुण, जिसमें ग्राम्य और कर्ण-कटु शब्दों का प्रयोग त्याज्य है। "सौन्दर्य मधुरिमा नहीं, न शोभा सौकुमार्य"—पंत।

सौख*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० शौक] शौक़, उत्सुकता, उत्कंठा, चाह, सउख। (वि०, दे०) सौखी, सौखीन। शौकीन (फ़ा०)। [**सौखीनी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

सौख्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सुखत्व, सुख, आराम, सुख का भाव।

सौगंद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सौगंध] शपथ, क़सम, सौगंध, सौंह।

सौगंध—(संज्ञा, पु०, दे०) सौगंद, शपथ, सौंह। (संज्ञा, पु०, सं०) सुगंधित, तेल इत्यादि का व्यापारी, गंधी, सुवास, सुगंध।

सौगरिया—(संज्ञा, पु०, दे०) क्षत्रियों की एक जाति।

सौग़ात—(संज्ञा, स्त्री०, तु०) भेंट, उपहार, तोहफ़ा (फ़ा०), परदेश से इष्ट मित्रों को देने के हेतु लाई हुई चीज, [सौगात (दे०)]।

सौघा†—(वि०, दे०) महँगा का उलटा सस्ता, मद्दा, कम दाम या मोल का।

सौच—(संज्ञा, पु०, दे०) देखिए शोच। "सकल सौच करि जाइ अन्हाए"—[रामा०]।

सौज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शय्या] उपकरण, साज सामान, सामग्री।

सौजना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सजना] सजना, सँवरना, आभूषित होना।

सौजन्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सुजनता, शिष्टता, भलमनसाहत।

सौजन्यता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, सं०) सौजन्य, सुजनता, भलमनसाहत।

सौजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सावज] शिकार का बनैला पशु या पक्षी [साउज (दे०)]।

सौत, सौति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सपत्नी] किसी स्त्री के प्रेमी या पति की दूसरी प्रेमिका या स्त्री, सपत्नी, [सवति (दे०)]। "जियत न करब सौति सेवकाई"—[रामा०]। [**सौतिया-डाह** (संज्ञा, स्त्री०)]। दो सौतों की आपस की ईर्ष्या, द्वेष, वैर-भाव, जलन।

सौतन, सौतिन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सौत] सौति, सौत, सपत्नी, [सौतिनि (दे०)]।

सौतुक, सौतुख*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सौतुख] सामने, जागने की दशा में।

सौतेला—(वि०, दे०) [हि० सौत + एला प्रत्य०] सौत का पुत्र, सौत से उत्पन्न, सौत का, सौत सम्बन्धी। [**सौतेली** (स्त्री०)]।

सौत्रामणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) इन्द्र के प्रसन्नतार्थ एक यज्ञ।

सौदा—(संज्ञा, पु०, अ०) बेचने-खरीदने का पदार्थ, वस्तु, माल, लेन-देन, क्रय-विक्रय, व्यवहार, व्यापार।—**गर**-(पु०) व्यवसायी, व्यापारी, व्यापार करने वाला।—**गरी**-(स्त्री०) व्यापार, व्यवसाय, उद्यम, रोजगार तिजारत, धंधा।—**सुलुफ**-मोल लेने की वस्तु या सामान, सौदासूत व्यवहार। (फ़ा०) उन्माद, पागलपन, एक उर्दू के शायर का उपनाम। "सौदा तुम तो इस हाट मे कभी न बिके"—सौदा०।

सौदाई—(संज्ञा, पु०) [अ० सौदा] पागल, उन्मादी, बावला। "चाँद सूरज है उसके सौदाई" —[स्फु०]।

सौदामनी, सौदामिनी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० सौदामनी] बिजली, विद्युत्।

सौदायिक—(संज्ञा, पु०, सं०) विवाह के समय लड़की को मिलने वाला धन, दहेज।

सौध—(संज्ञा, पु०, सं०) महल, प्रासाद, भवन, रजत, चाँदी, दूधिया पत्थर। "सुन्दरि दिया बुझाय कै, सोवति सौध मँझार"—दास।

सौधना—(क्रि० स०, दे०) [सं० सोधना] सोधना।

सौन*—(क्रि० वि०, दे०) [सं० सम्मुख] सम्मुख सामने, आगे। (संज्ञा, पु०) क़साई। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रवण] कान, स्रौन।

सौनक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शौनक] शौनक।

सौनन, सौननि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सौंदन] सौंदन, स्रौनन, कानों।

सौना*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सोना] सोना।

सौपना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० सौंपना] सौंपना, सिपुर्द करना, सहेजना।

सौबल—(संज्ञा, पु०, सं०) गांधार-नरेश सुबला का पुत्र, शकुनि ।

सौभ—(संज्ञा, पु०, सं०) कामचारि पुर, एक पुराना प्रदेश, वहाँ के प्राचीन राजा, आकाश में राजा हरिश्चंद्र की एक कल्पित नगरी ।

सौभग—(संज्ञा, पु०, दे०, सं०) सौभाग्य, संपत्ति, ऐश्वर्य, धन, आनन्द, सुख, सुन्दरता ।

सौभद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) सुभद्रा पुत्र, अभिमन्यु, सुभद्रा के कारण हुआ युद्ध । (वि०) सुभद्रा-संबधी, सुभद्रा का ।

सौभरि—(संज्ञा, पु०, सं०) एक ऋषि जिन्होंने राजा मानधाता की ५० कन्याओं से ब्याह करके पाँच हजार पुत्र पैदा किये (पुरा०) ।

सौभागिनी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौभाग्य] सोहागिनि, सधवा या सौभाग्यवती स्त्री ।

सौभाग्य—(संज्ञा, पु०, सं०) सुन्दर भाग्य, खुशक़िस्मती, कल्याण, आनंद, सुख, कुशलक्षेम, सुहाग, अहिवात, वैभव, सौंदर्य, ऐश्वर्य ।

सौभाग्यवती—(वि०, स्त्री०, सं०) सधवा स्त्री, सुहागिन, सुहागिनी ।

सौभाग्यवान्—(वि०) [सं० सौभाग्यवत] बड़ा भाग्यवान्, सौभाग्यशाली, सुखी और संपन्न । [**सौभाग्यवती** (स्त्री०)] ।

सौम*—(वि०, दे०) [सं० सौम्य] सोमसंबंधी, सोम का, शीतल, स्निग्ध, सुशील, शांत, शुभ, सुन्दर । (संज्ञा, पु०) सोम-यज्ञ, बुध, ब्राह्मण, अगहन मास, एक संवत्सर, सज्जनता, एक अस्त्र ।

सौमन—(संज्ञा, पु०, सं०) एक अस्त्र ।

सौमनस—(वि०, सं०) सुमन या फूलों का, रुचिकर, मनोरम, प्रिय । (संज्ञा, पु०) आनंद, प्रफुल्लता, पश्चिम दिशा का दिग्गज (पुरा०) । अस्त्र, निष्फलकारक एक अस्त्र ।

सौमनस्य—(संज्ञा पु०, सं०) प्रसन्नता ।

सौमित्र—(संज्ञा, पु०, सं०) सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण और शत्रुघ्न, मित्रता, मैत्री । "सौमित्रः वाक्यमब्रवीत"—[वा० रामा०] ।

सौमित्रा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० सुमित्रा] सुमित्रा रानी, [समितरा (दे०)] ।

सौमित्रि—(संज्ञा, पु०, सं०) सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण, शत्रुघ्न । "सौमित्रिः सह राघवः"—वा० रामा०] ।

सौम्य—(वि०, सं०) चंद्रमा या सोमलता सम्बन्धी, शीतल, स्निग्ध, शान्त, सुशील, सीधा, शुभ, सुन्दर, मांगलिक । [**सौम्या** (स्त्री०)] । (संज्ञा, पु०, सं०) सोम यज्ञ, चन्द्रात्मज, बुध, ब्राह्मण, सज्जनता, ६० संवत्सरों में से एक, एक दिव्यास्त्र, मार्गशीर्ष या अगहन का महीना ।—**कृच्छ्र**-(पु०) एक व्रत, उपवास ।—**दर्शन**-(वि०) सुन्दर मनोरम, प्रिय दर्शन ।—**शिखा**-(स्त्री०) विषम मुक्तक वृत्त के दो भेदों में से एक भेद (पिं०) ।

सौम्यता—(संज्ञा, पु०, सं०) सुशीलता, सज्जनता, शान्तता, सौंदर्य्य, सुन्दरता, सौम्य का भाव या धर्म ।

सौम्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अच्छे स्वभाव की स्त्री, सुन्दर और सुशील स्त्री, आर्या छंद का एक भेद (पिं०) ।

सौर—(वि०, सं०) सूर्य से उत्पन्न, सूर्य का सूर्य्य-संबंधी । * (संज्ञा, पु०) सूर्योपासक, शनिश्चर । *(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० सौंड़] ओढ़ना, रजाई, लिहाफ़, चादर । "तेते पाँव पसारिये, जेती लाँबी सौर"—[नीति०] ।—**दिवस**-(पु०) एक सूर्योदय से दूसरे तक साठ घड़ी का समय । —**मास**-(पु०) एक संक्रान्ति से दूसरी तक का समय, सूर्य के एक राशि के पार करने का समय । —**वर्ष**-(पु०) एक मेष की संक्रान्ति से दूसरी तक का समय, एक पक्का वर्ष ।

सौरज*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सौर्य्य] सूर्य से उत्पन्न, सूर्य का, सूर्य-सम्बन्धी । (संज्ञा, पु०) सूर्य्य का उपासक, सूर्य्य-सुत शनिश्चर । (संज्ञा, पु०, दे०) शौर्य (सं०) शूरता ।

सौरभ—(संज्ञा, पु०, सं०) सुगंध, सुवास, अच्छी महक, सुरभि, केसर, आम ।

सौरभक—(संज्ञा, पु०, सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०) ।

सौरभित—(वि०) [सं० सौरभ] सुरभित, सुगंधित, महकने वाला, सुवासित । शीतल मंद समीर सौरभित हो बहता है ।—हरिऔध ।

सौरसेन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शौरसेन] शूरसेन का पुत्र, वसुदेव जी ।

सौरसेनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शौरसेनी (सं०) सूरसेन प्रान्त की प्राकृत भाषा ।

सौराष्ट्र—(संज्ञा, पु०, सं०) काठियावाड़ और गुजरात का देश (प्राचीन), [सोरठदेश (दे०)], सोरठ-वासी, एक वर्णिक छन्द (पिं०)।—**मृत्तिका**-(स्त्री०) गोपी चन्दन।

सौराष्ट्रिक—(वि०, सं०) सोरठ देश-संबंधी, सौराष्ट्र देश का।

सौरास्त्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक दिव्यास्त्र, सूर्यास्त्र।

सौरि—(संज्ञा, पु०, दे०) श्रीकृष्ण, वसुदेव। (स्त्री०) सोवर, सौरी, प्रसूता-गृह। (सं०) शनि।

सौरी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० सूतिक] सूतिका-गृह, सूतिकागार जच्चाख़ाना स्त्री के बच्चा जनने का कमरा। [सं० शफरी] एक प्रकार की मछली। सुअरिया, शूकरी (सं०) [सौरी (दे०)]।

सौरीय, सौर्य—(वि०, सं०) सूर्य-सम्बन्धी, सूर्य का। (संज्ञा, पु०, दे०) शौर्य (सं०) [सौर्ज (दे०)]।

सौवर्चल—(संज्ञा, पु०, सं०) सोंचर नमक।

सौवर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) सुवर्ण या सोने का, सोना।

सौवीर—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंधु नदी के समीप का प्रदेश (प्राचीन), उस देश का निवासी या राजा।

सौवीरांजन—(संज्ञा, पु०, सं०) सुरमा।

सौष्ठव—(संज्ञा, पु०) [सं० सुष्ठु] सुडौलपन, सौंदर्य, सुन्दरता, उपयुक्तता, नाटक का एक अंग (नाट्य०)।

सौसन—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सोसन] एक फूल।

सौसनी—(वि०) सोसन-फूल के रंग का।

सौहँ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शपथ] शपथ, क़सम, सौगंद, सौगंध। (क्रि० वि०, दे०) [सं० सम्मुख] समक्ष, सामने, आगे, सम्मुख।

सौहार्द-सौहार्द्य—(संज्ञा, पु०, सं०) मैत्री, मित्रता, सुहृद का भाव।

सौहीं, सौहैं—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० सौंह] सामने, सम्मुख, आगे।

सौहृद—(संज्ञा, पु०, सं०) मित्रता, मैत्री, दोस्ती, मित्र, साथी। [**सौहृद्य** (संज्ञा, पु०,)]।

स्कंद—(संज्ञा, पु०, सं०) गिरना, बहना, निकलना, ध्वंस, विनाश, शिव-सुत जो देव सेनापति और युद्ध के देवता हैं, कार्तिकेय, शिव, देह, शरीर बालकों के ९ घातक ग्रहों या रोगों में से एक ग्रह या रोग। "स्कन्दस्य मातुः पयसां रसज्ञः" —रघु०।—**गुप्त**-(पु०) पटने के गुप्तवंश का एक सम्राट् (ई० सन् ४५० से ४६७ तक)।—**पुराण**-(यौ०) अठारह पुराणों में से एक महापुराण जिसमें कार्तिकेय का वर्णन है।

स्कंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) रेचन, कोठे की सफ़ाई, निकलना, गिरना, बहना। [**स्कंदनीय, स्कंदित** (वि०)]।

स्कंदित—(वि०, सं०) निकला हुआ, स्खलित, गिरा हुआ, पतित, स्रवित।

स्कंध—(संज्ञा, पु०, सं०) मोढा, कंधा, काँधा, पेड़ की डालियों के फूटने का स्थान, दंड, कांड, शाखा, डाली, वृन्द, झुंड, समूह, व्यूह, सेना का अंग, पुस्तक का विभाग जिसमे एक पूर्ण प्रसंग हो, शरीर, खंड, आचार्य, मुनि, युद्ध, रण, संग्राम, आर्या छन्द का एक भेद (पिं०), पाँच पदार्थ :—रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा, संस्कार (बौद्ध) रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द (द० शास्त्र)।

स्कंधावार—(संज्ञा, पु०, सं०) राजा का शिविर या डेरा, खेमा, छावनी, सेनानिवास, सेना, कैंप (अं०)।

स्कंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) स्तंभ खम्भा, ईश्वर, ब्रह्म।

स्खलन—(संज्ञा, पु०, सं०) पतन, गिरना, निकलना, फिसलना, चूकना। [**स्खलनीय** (वि०)]।

स्खलित—(वि०, सं०) पतित, विचलित, गिरा हुआ, च्युत, फिसला हुआ, चूका हुआ।

स्तंभ—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थंभ, खम्भा, थंभा, थूनी, तरु स्कंध, पेड़ की पेड़ी या तना शरीर के अंगो की गति का अवरोध, अचलता, जड़ता, रुकावट, प्रतिबंध, किसी शक्ति के रोकने का एक तांत्रिक प्रयोग, शरीर के जड़वत् हो जाने का एक सात्विक भाव (सा०)। समाचार पृष्ठों का कोई विषय-विशेष को लेकर बनाया गया स्थान [कालम]।—**लेखक**-(पु०) अख़बारों में ख़ास विषय पर लिखने वाला लेखक। [कालमिस्ट]।

स्तंभक—(वि०, सं०) अवरोधक, रोकने वाला। वीर्य के पतन को रोकने वाला, मलावरोध-कारक।

स्तंभन—(संज्ञा, पु०, सं०) निवारण, रुकावट, अवरोध, वीर्य के स्खलन में रुकावट, विलम्ब या बाधा, वीर्य-पात के रोकने की औषधि, जड़ या निश्चेष्ट करना, जड़ीकरण, किसी की शक्ति या चेष्टा के रोकने का एक तांत्रिक प्रयोग, पाँच बाणों में से एक, मलावरोध, मदन के कब्ज। [**स्तंभनीय, स्तंभित** (वि०)]।

स्तंभित—(वि०, सं०) जड़, अचल, स्तब्ध, निश्चल, सुन्न, निस्तब्ध, अवरुद्ध, रुका या रोका हुआ।

स्तन—(संज्ञा, पु०, सं०) मादा पशुओं या स्त्रियों के दूध रहने का अंग, पयोधर, थन, [अस्तन, अस्थन (दे०)] उरोज, चूँची, छाती। **—पान**-(पु०) स्तनों या थनों से दूध पीना, स्तन्यपान। **—पायी**-(वि०) माता के स्तनों या थनों से दूध पीने वाला, शिशु, छोटा बालक, बच्चा। **मुहा०—पीना**-शिशु का स्तनों से दूध पीना, शैशव का-सा व्यवहार करना (व्यंग्य०)।

स्तनधय—(संज्ञा, पु०, सं०) बालक, लड़का।

स्तनन—(संज्ञा, पु०, सं०) मेघ-गर्जन, बादल गर्जना, ध्वनि, आर्त्तनाद।

स्तब्ध—(वि०, सं०) अचल, जड़ीभूत, दृढ़, स्तंभित, स्थिर, धीमा, मंद।

स्तब्धता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जड़ता, निश्चेष्टता, दृढ़ता, स्थिरता, स्तब्ध का भाव।

स्तर—(संज्ञा, पु०, सं०) परत, तह, थर, तबक, तल्प, शय्या, सेज, पृथ्वी-विद्या में भिन्न-भिन्न कालों में बनी तहों के आधार पर भूमि की बनावट और विभाग का विचार, [अस्तर (दे०)] दोहरे कपड़े का भीतरी वस्त्र।

स्तरण—(संज्ञा, पु०, सं०) फैलना या बखेरना, छितराना [**स्तरणीय, स्तरित** (वि०)]।

स्तरीभूत—(वि०, सं०) जो सतह या स्तर पर आ गया हो। [स्ट्रैटिफाइड]।

स्तव—(संज्ञा, पु०, सं०) स्तुति, स्तोत्र, किसी देवता या महापुरुष का गुणगान या रूपादि का पद्यबद्ध वर्णन।

स्तवक—(संज्ञा, पु०, सं०) फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, समूह, राशि, ढेर, पुस्तक का परिच्छेद या अध्याय, स्तुति करने वाला, [**अस्तवक** (दे०)]। "निपीय मानस्तवकाः शिलीमुखैः" —[किरा०]।

स्तवन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्तुति, स्तव, यशोगान, कीर्ति-कीर्तन, गुण-कथन [**स्तवनीय** (वि०)]।

स्तीर्ण—(वि०, सं०) फैलाया, छितराया या बिखेरा हुआ, विकीर्ण, विस्तृत।

स्तुत—(वि०, सं०) प्रशंसित, जिसकी स्तुति की गई हो।

स्तुति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्तवन, यशगान, कीर्त्ति कीर्तन, गुण-कथन, प्रशंसा, प्रशस्ति, बड़ाई, दुर्गा, [अस्तुति (दे०)]। "स्तुति प्रभु तोरी मैं मतिभोरी केहि विधि करौं अनन्ता"—[रामा०]। **—पाठ**-(पु०) प्रशंस्ति-पाठ, स्तुति पढ़ना। **—पाठक**-(पु०) स्तवन करने वाला, स्तुति पढ़ने वाला, भाट मागध, चारण, सूत, बंदीजन।—**वाचक**-(पु०) स्तुति या प्रशंसा करने वाला, खुशामदी, कीर्ति कहने वाला।

स्तुत्य—(वि०, सं०) श्लाघ्य, प्रशंसनीय, कीर्तिनीय, स्तुति या बड़ाई के योग्य।

स्तूप—(संज्ञा, पु०, सं०) ऊंचा टीला या ढूह, वह ऊँचा टीला जिसके तले भगवान बुद्ध या अन्य किसी महात्मा की हड्डियाँ या केशादि स्मृति-चिह्न रखे हों।

स्तेय—(संज्ञा, पु०, सं०) चोरी, चौर्य।

स्तोक—(संज्ञा, पु०, सं०) बिंदु, बूँद, चातक, पपीहा।

स्तोता—(वि०) [सं० स्तोतृ] प्रशंसक, स्तुति करने वाला।

स्तोत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी देवी देवता का पद्यबद्ध रूप, गुण, यशादि का कथन, स्तुति स्तव, गुण या यश का कीर्त्तन, स्तवन।

स्तोम—(संज्ञा, पु०, सं०) स्तवन, स्तुति, प्रार्थना, यज्ञ, राशि, समूह, एक यज्ञ विशेष।

स्त्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नारी, [**तिरिया** (दे०)]। पत्नी, जोरू, औरत, मादा, दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०)। [**इस्तिरी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।—**गमन**-(पु०) गमन। **—तंत्र**-(पु०) स्त्रियों का शासन। [आइनैरकी]।—**धन**-(पु०) जिस धन पर स्त्री का

पूर्ण अधिकार हो।—**धर्म**-(पु०) रजो-दर्शन, स्त्रियों का रजस्वला होना, मासिक धर्म, [मंथली कोर्स] स्त्रियों का कर्तव्य।—**प्रसंग**-(पु०) संभोग, मैथुन, रति।—**लिंग**-(पु०) योनि, स्त्रियों का गुह्य स्थल, भग, स्मर-मन्दिर, जिस शब्द से स्त्री का बोध हो (व्याक०) जैसे—लकड़ी स्त्रीलिंग है। [पुल्लिंग (विलो०)]।—**व्रत**-(पु०) पत्नी-व्रत, एक नारी-व्रत, अपनी स्त्री को छोड़ किसी दूसरी स्त्री की इच्छा न करना।—**संभोग**-(पु०) मैथुन।—**संसर्ग**-(पु०) मैथुन।—**सुख**-(पु०) संभोग।—**समागम**-(पु०) प्रसंग, मैथुन, सम्भोग, रति, स्त्री-सहवास।—**स्वभाव**-(पु०) औरतों की प्रकृति।

स्त्रीत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) स्त्रीपन, स्त्री का भाव या धर्म, जनानापन, स्त्रीलिंग सूचक प्रत्यय (व्याक०)।

स्त्रैण—(वि०, सं०) स्त्री-सम्बन्धी, स्त्रियों का, स्त्री-रत, स्त्रियों के अधीन या वश में रहने वाला। "कहती स्त्रैण उन्हें यही गिरा"—मैथिली०।

स्थ—(प्रत्य०, सं०) यह शब्दों के अंत में लग कर स्थिति (सत्ता), उपस्थिति (वर्तमान), निवासी (रहने वाला), लीन (रत) आदि का द्योतक है।

स्थकित—(वि०) [हि० थकित] श्रान्त, क्लान्त, थका हुआ।

स्थगन—(संज्ञा, पु०, सं०) ढकना, छिपाना, सभा आदि के कार्य का कुछ समय तक स्थगित होना। [पोस्टपोनमेंट]।

स्थगित—(वि०, सं०) आच्छादित, अवरुद्ध, रोका हुआ, मुलतवी, जो कुछ समय के लिये रोक दिया गया हो।

स्थपति—(संज्ञा, पु०, सं०) बढ़ई, शिल्पी।

स्थल—(संज्ञा, पु०, सं०) जल-रहित भू-भाग, जल-रहित या सूखी भूमि, खुश्की, मरुभूमि, जगह, स्थान, मौका, अवसर, कर।—**कमल**-(पु०) सूखी भूमि में होने वाला कमल, गुलाब।—**चर**,—**चारी**-(वि०) सूखी भूमि पर रहने या चलने वाला।—**ज**-(पु०) सूखी भूमि में उत्पन्न होने वाला।—**पद्म**-(पु०) स्थल-कमल, गुलाब।—**युद्ध**-(पु०) स्थल-रण, सूखी भूमि पर होने वाला संग्राम, युद्ध या लड़ाई। [जल-युद्ध (विलो०)]।

स्थली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) सूखी भूमि, स्थान, जगह, [थली (दे०)]। "दसकंठ की देखि यों केल थली"—[राम०]।

स्थलीय—(वि०, सं०) सूखी भूमि सम्बन्धी, स्थल का, सूखी भूमि पर का, किसी स्थान का, स्थानीय।

स्थविर—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा, बूढ़ा, बुड्ढा, वृद्ध, पूज्य, वृद्ध, बौद्ध, भिक्षु।

स्थाई—(वि०, दे०) [सं० स्थायी] स्थायी, [थाई (दे०)]।

स्थाणु—(संज्ञा, पु०, सं०) स्तंभ, खंभ, थूनी, ठूँठा पेड़, शिव जी। (वि०) स्थिर, अटल, अचल।

स्थान—(संज्ञा, पु०, सं०) जगह, ठाँव, ठौर, ठाम, टिकाव, स्थल, ठहराव, घर, डेरा, आवास, स्थिति, मैदान, भू-भाग, कार्य्यालय, ओहदा, पद, देवालय, मन्दिर, मौका, अवसर, [अस्थान (दे०)]।—**ग्राही पदाधिकारी**-(पु०) किसी के अवकाश ग्रहण करने पर जो उस (पदाधिकारी) समय तक कार्य-सम्पादन करे। [रिलीविंग आफिसर]।—**च्युत**-(वि०) जो अपनी जगह या स्थान से हट या गिर गया हो।—**भ्रष्ट**-(वि०) स्थानच्युत, जो अपने स्थान से हट या गिर गया हो।—**सीमन**—(पु०) अस्त-व्यस्त कार्यों को एक स्थान पर आबद्ध करना। [लोकेलिजेशन]

स्थानांतर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दूसरी जगह, दूसरा घर, प्रस्तुत या प्रकृत स्थान से भिन्न।

स्थानांतरण—(संज्ञा, पु०, सं०) तबादला होना, किसी व्यक्ति का किसी स्थान से दूसरे स्थान पर हटाकर पहुँचाया जाना। [ट्रांसफ़र]

स्थानांतरित—(वि०, यौ०, सं०) जो एक स्थान को छोड़ दूसरे पर गया हो।

स्थानापन्न—(वि०, सं०) एवज, कायम-मुकाम, प्रतिनिधि, दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से कार्य करने वाला। [एक्टिंग]

स्थानाबद्धकारी अधिनियम—(संज्ञा, पु०) इस अधिनियम के द्वारा जातियों या वर्गों का निवास सम्बन्धी क्षेत्र सीमित कर दिया गया है। [पेगिंग ऐक्ट]

स्थानिक—(वि०, सं०) स्थान या ठौर वाला, स्थानीय, उस जगह का जिसका उल्लेख हो।

स्थानीय—(वि०, सं०) स्थानिक, उसी स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख हो। [लोकल] —**स्वशासन**-(पु०) अपनी स्थानीय आवश्यकताओं के लिए प्रजातंत्रात्मक पद्धति पर ही आत्म-निर्भर होने के लिए स्वयं शासन-व्यवस्था करना। [लोकल सेल्फ गवर्नमेंट]

स्थापक—(वि०, सं०) सूत्राधार का सहयोगी (नाट्य०), स्थापना करने वाला, कायम करने या रखने वाला, मूर्त्ति स्थापित करने या बनाने वाला, संस्थापक, स्थापनकर्त्ता, कोई संस्था खड़ी करने या खोलने वाला।

स्थापत्य—(संज्ञा, पु०, सं०) राजगीरी मेमारी, भवन-निर्माण, भवन-निर्माण के सिद्धान्तादि के विवेचन की विद्या।—**वेद**-(पु०) चार उपवेदों मे से एक, शिल्पवेद, वास्तु-शिल्प-शास्त्र, कारीगरी की विद्या।

स्थापन—(संज्ञा, पु०, सं०) रखना, उठाना, खड़ा करना, जमाना, किसी विषय को प्रमाणों से सिद्ध करना, प्रतिपादन या साबित करना, निरूपण, नया काम जारी करना, [थापन (दे०)]। [**स्थापनीय, स्थापित** (वि०)]।

स्थापना—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [थापना (दे०)], बैठना, जमाना, रखना, स्थित या प्रतिष्ठित करना, सिद्ध या प्रतिपादन करना, साबित करना।

स्थापित—(वि०, सं०) प्रतिष्ठित, व्यवस्थित, निश्चित, निर्दिष्ट, जिसकी स्थापना की गई हो, [थापित (दे०)]। "प्रभु स्थापित मूर्त्ति-शंभु रामेश्वर जानो"—[स्फु०]।

स्थायित्व—(संज्ञा, पु०, सं०) स्थिरता, सुदृढ़ता, स्थायी होने का भाव।

स्थायी—(वि०) [सं० स्थायिन्] स्थिर रहने या टिकने वाला, टिकाऊ, ठहरने वाला, दृढ़, बहुत दिनों तक रहने या चलने वाला, [थाई (दे०)]। —**भाव**-(पु०) विभावादि मे अभिव्यक्त हो रसत्व को प्राप्त होने वाले तथा रस में सदा स्थित रहने वाले तीन प्रकार के भावों में से एक, इसके नौ भेद हैं :—हास्य, शोक, भय, जुगुप्सा या घृणा, रति, क्रोध, उत्साह, विस्मय और निर्वेद (साहि०)।—**समिति**-(स्त्री०) किसी सभा या सम्मेलन के दो अधिवेशनों के बीच के समय मे उसका कार्य्य संचालन करने वाली समिति है। [स्टैंडिंग कमेटी]

स्थाल—(संज्ञा, पु०) [सं० स्थल] बड़ी थाली, बड़ी हाँड़ी, रकाबी, [थाल (दे०)]।

स्थाली—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० स्थाल] [थाली (दे०)], तश्तरी, रकाबी, हाँड़ी।—**पुलाक-न्याय**-(पु०) एक बात को जानकर उसके सम्बन्ध की अन्य सब बातें जान लेना।

स्थावर—(वि०, सं०) अचल, अटल, स्थिर, गैर-मनकूला (फ़ा०), जो एक जगह से दूसरी पर न लाया जा सके। [**स्थावरता** (संज्ञा, स्त्री०)]। [**जंगम** (विलो०)]। (संज्ञा, पु०) पहाड़, पेड़, अचल धन या सम्पत्ति।

स्थावरविष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वृक्षादि स्थावर पदार्थों में होने वाला विष।

स्थाविर—(संज्ञा, पु०, सं०) बुढ़ापा, बुढ़ाई।

स्थित—(वि०, सं०) अपने स्थान पर स्थित या ठहरा हुआ, अवलंबित, आसीन, बैठा हुआ, स्वप्रण पर जमा हुआ, उपस्थित, विद्यमान, ऊर्ध्व, निवासी, अवस्थित, खड़ा हुआ, रहने वाला।—**प्रज्ञ**-(वि०) सब मनोविकारों से रहित, स्थिर विचार-शक्ति या विवेक-बुद्धि वाला, आत्मसंतोषी। "स्थित-प्रज्ञस्य का भाषा"—[भ० गी०]।

स्थितता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्थित, ठहराव।

स्थिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) परिस्थिति, ठहराव, टिकाव, रहना, ठहरना, निवास, दशा, अवस्था, अवस्थान, दर्जा, पद, एक दशा या स्थान में रहना, सदा बना रहना, अस्तित्व, स्थिरता, पालन। —**स्थापक**-(पु०) वह शक्ति या गुण जिसके कारण कोई वस्तु नई स्थिति में आकर भी फिर अपनी पूर्व दशा को प्राप्त हो जावे। (वि०) किसी पदार्थ को उसकी पूर्व दशा में प्राप्त कराने वाली शक्ति, लचीला।—**स्थापकता,—स्थापकत्व**-(पु०) लचीलापन, स्थिति स्थापक का भाव।

स्थिर—(वि०, सं०) अचल, निश्चल, शाश्वत, अटल, ठहरा, हुआ, शांत, स्थायी, दृढ़, मुकर्रर नियत, निश्चित। संज्ञा, पु० शिव, देवता एक योग (ज्यो०), पहाड़, एक छंद (पिं०)।—**चित्त**-(वि०, यौ०, सं०) जिसका मन अचल या स्थिर हो, दृढ़मन। [थिरचित्त (दे०)]।—**बुद्धि**-(वि०, यौ०, सं०) दृढ़चित्त, अटल मन, जिसकी बुद्धि स्थिर हो।—**मना**-(वि०) स्थिरचित्त।

स्थिरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) निश्चलता, अचलत्व, ठहराव, दृढ़ता, धैर्य, स्थायित्व, [थिरता (दे०)]।

स्थिरात्मा—(वि०, सं०) दृढ़चित्त ।

स्थिरीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) दृढ़ करना, स्थिरता प्रदान करना ।

स्थूल—(वि०, सं०) पीवर, पीन, मोटा, मोटी, वस्तु, सहज में समझ में आने या दिखलाई देने वाला । [**सूक्ष्म** (विलो०)] । (संज्ञा, पु०) इन्द्रिय-ग्राह्य पदार्थ, गोचर वस्तु । (क्रि० वि०, सं०) स्थूल रूप से, स्थूल दृष्टि से ।

स्थूलता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मोटाई, मोटापन, स्थूल का भाव, भारीपन, पीनता, पीवरत्व । [**स्थूलत्व** (संज्ञा, पु०)] ।

स्थैर्य्य—(संज्ञा, पु०, सं०) दृढ़ता, स्थिरता ।

स्नपित, स्नात—(वि०, सं०) नहाया हुआ ।

स्नातक—(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मचर्य्य व्रत पूर्ण कर गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट हुआ व्यक्ति । [**स्नातिका** (स्त्री०)] ।

स्नातव्य—(वि०, सं०) स्नान कराने लायक ।

स्नान—(संज्ञा, पु०, सं०) अवगाहन, नहाना, स्वच्छतार्थ शरीर को पानी से धोना, देह साफ करना, [असनान, अन्हान, न्हान, नहान (दे०)], देह को वायु या धूप में रख उस पर उनका प्रभाव पड़ने देना । " करि स्नान ध्यान अरु पूजा "—[स्फु०] ।—**गृह**-(पु०) स्नान करने का कमरा । [बाथ रूम] ।

स्नानागार—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्नानालय, नहाने का कमरा या स्थान ।

स्नायविक—(वि०, सं०) नाड़ी या स्नायु-संबंधी ।

स्नायु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) वेदना तथा स्पर्शादि का ज्ञान कराने वाली शरीर की भीतरी नाड़ियाँ या नसें ।—**मंडल,—संस्थान**-(पु०) ।—**शूल**-(संज्ञा, पु०) नाड़ी सम्बन्धी वेदना ।

स्निग्ध—(वि०, सं०) जिसमें तेल या स्नेह हो चिकना, प्रेम-युक्त, मृदुल ।

स्निग्धता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मसृणता, चिकनापन, चिकनाहट, प्रियता, प्रिय होने का भाव ।

स्नायविक—(वि०, सं०) स्नायु-सम्बन्धी ।

स्नुषा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पुत्रवधू, पतोहू ।

स्नेह—(संज्ञा, पु०, सं०) प्यार, प्रेम, छोह, मुहब्बत, चिकना पदार्थ, चिकना, चिकनई या चिकनाहट वाली वस्तु, तेल, मृदुलता, मसृणता, [सनेह, नेह (दे०)] । " मैं शिशु प्रभुस्नेह प्रतिपाला "—[रामा०] ।—**पात्र**-(पु०) प्रेम करने योग्य, प्रेम-पात्र, प्यारा, चिकनाई का बरतन ।—**पान**-(पु०) कुछ विशिष्ट रोगानुसार तेल, घी आदि का पीना (वैद्य०) ।

स्नेहाकुल—(वि०, सं०) स्नेह से विह्वल ।

स्नेहातुर—(वि०) प्यार से विह्वल या व्याकुल । "अपने चिर स्नेहातुर उर की व्यथा भुलाऊँ "—पंत ।

स्नेहालिंगन—(संज्ञा, पु०) प्यार से आलिंगन करने का कार्य । "देकर चिर स्नेहालिंगन"—पंत ।

स्नेहालु—(वि०) प्यार से युक्त, स्नेहमयी । "स्नेहालु दृगों का रुख न मिला"—बच्चन ।

स्नेही—(संज्ञा, पु०) [सं० स्नेहिन्] नेही, प्रेमी, प्रिय, प्यारा, प्रेम करने वाला, मित्र, साथी, [अस्नेही, सनेही, नेही (दे०)] ।

स्पंद, स्पंदन—(संज्ञा, पु०, सं०) धीरे-धीरे काँपना या हिलना, स्फुरण, हृदय या अंगों का फड़कना ।

स्पंदित—(वि०, सं०) कंपित, काँपता हुआ । (पु०) स्पंदन, कंपन ।

स्पर्द्धा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) रगड़, डाह, संघर्ष, द्वेष, साम्य, किसी के मुक़ाबिले में उससे आगे बढ़ने की इच्छा, हौसिला, होड़, साहस, बराबरी । [**स्पर्द्धिन** (वि०)] ।

स्पर्द्धी—(वि०) [सं० स्पर्द्धिन्] डाही, द्वेषी, स्पर्द्धा करने वाला, ईर्षालु ।

स्पर्श—(संज्ञा, पु०, सं०) दो वस्तुओं का इतना सामीप्य कि उनके तल परस्पर छू या लग जायँ, छू जाना, छूना, त्वग् इन्द्रिय का वह विषय या गुण जिससे उसे किसी वस्तु के दबाव या छू जाने का ज्ञान हो । उच्चारण के आभ्यंतर प्रयत्न के चार भेदों में से स्पष्ट नामक एक भेद जिसमें क से लेकर म तक के २५ वें व्यंजन वर्ण हैं—जिनके उच्चारण में वागेंद्रिय का द्वार बंद रहता है (व्याक०), ग्रहण में रवि या शशि पर छाया पड़ने का प्रारम्भ (ज्यो०) ।—**कोण**-(पु०) किसी सीधी रेखा के स्पर्श करने पर वृत्त की परिधि के किसी बिंदु पर बनने वाला कोण ।—**जन्य**-(वि०) सक्रामक, जो छूने से उत्पन्न हो, छुतहा ।—**स्नान**-(पु०) ग्रहण के लगने के समय का स्नान ।—**दिशा**-(स्त्री०) ग्रहण लगने पर जिस दिशा में छाया स्पर्श करे ।—**मणि**-(पु०) पारस-मणि ।

स्पर्शन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्पर्श, छूना, आलिंगन । [**स्पर्शनीय, स्पर्शित** (वि०)] ।

स्पर्शनेंद्रिय—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) स्पर्शेन्द्रिय, त्वगिन्द्रिय, छूने या स्पर्श करने की इन्द्रिय, त्वचा, खाल।

स्पर्शास्पर्श—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० स्पर्श+अस्पर्श] छूने या न छूने का विचार या भाव, छूत पाक।

स्पर्शित—(वि०, सं०) जो छुआ गया हो, जिसका स्पर्श किया गया या हुआ हो।

स्पर्शी—(वि०) [सं० स्पर्शिन्] छूने वाला।

स्पर्शेन्द्रिय—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) त्वगिंद्रिय, त्वचा, खाल, स्पर्शज्ञान-कारिणी इंद्रिय।

स्पष्ट—(वि०, सं०) साफ समझ में आने या दिखाई देने वाला, प्रगट, सुव्यक्त, साफ साफ, [सपष्ट (दे०)]। (संज्ञा, पु०, सं०) उच्चारण का एक प्रयत्न-भेद जिसमें दोनों ओठ परस्पर छूते हैं।—**कथन**-(पु०) साफ-साफ या ठीक ठीक कहना, जिसमे साफ समझ पड़े, स्पष्टवचन, किसी के कथन को ठीक उसी रूप में जैसे उसने कहा था, कहना।—**वक्ता**-(पु०) साफ-साफ कहने वाला, जो कहने में किसी का कुछ भी लिहाज न करे।—**वाद**-(पु०) साफ या ठीक कहना, यथार्थवाद। (संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्पष्टवादिता, यथार्थवादिता, सत्यवादिता।—**वादी**-(पु०) स्पष्टवक्ता, साफ-साफ कहने वाला।

स्पष्टतया, स्पष्टतः—(क्रि० वि०, सं०) यथार्थ रूप से साफ-साफ, ठीक-ठीक, स्पष्ट रूप से।

स्पष्टता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यथार्थता, सफाई, स्पष्ट होने का भाव।

स्पष्टीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी बात को ठीक-ठीक या साफ-साफ कहना या करना, लगी-लिपटी परखना, स्पष्ट करने की क्रिया, प्रकटीकरण।

स्पृक्का—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) लजालू, लाजवंती, ब्राह्मी बूटी, असबरग (प्रान्ती०)।

स्पृश—(वि०, सं०) छूने या स्पर्श करने वाला।

स्पृश्य—(वि०, स०) स्पर्श करने योग्य, छूने योग्य। [**स्पृश्यता** (संज्ञा, स्त्री०)]।

स्पृष्ट—(वि०, सं०) स्पर्शित, छुआ हुआ।

स्पृहणीय—(वि०, सं०) आकांक्षनीय, इच्छा या कामना के योग्य, अभिलाषा करने योग्य, वांछनीय गौरवशाली।

स्पृहा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आकांक्षा, अभिलाषा, कामना, इच्छा, चाह, वांछा। "स्पृहावतीवस्तुषुकेषु मागधी"—रघु०।

स्पृही—(वि०, सं०) आकांक्षी, इच्छा या कामना करने वाला, इच्छुक, अभिलाषी।

स्फटिक—(संज्ञा, पु०, सं०) काँच जैसा पारदर्शी एक मूल्यवान पत्थर, बिल्लौर पत्थर, सूर्य्य-कांत-मणि, काँच, शीशा, फिटकरी, [फटिक (दे०)]। "बभूव तस्य स्फटिकाक्ष-मालया"—माघ०।—**शिला**-(स्त्री०) बिल्लौर स्त्री०।

स्फाटिकाचल—(संज्ञा, पु०, सं०) कैलाशपर्वत।

स्फरण—(संज्ञा, पु०, सं०) फड़कना, काँपना।

स्फार—(वि०, सं०) विपुल, बहुत, प्रचुर, विकट, अधिक, ज्यादा, फाड़ा या फैला हुआ। इंदु कुन्द-द्युति स्फार—पंत।

स्फरित—(वि०, सं०) फैलाया हुआ।

स्फाल—(संज्ञा, पु०, सं०) धीरे-धीरे हिलना, फड़कना, फुरती, तेजी, स्फूर्ति। [**स्फालित** (**वि०**)]

स्फालन—(संज्ञा, पु०, सं०) कँपाना, हिलाना, थपथपाना।

स्फीत—(वि०, सं०) वर्द्धित, बढ़ा या फूला हुआ, समृद्ध। "स्फीता जन पदो महान"—[वा० रा०]।

स्फुट—(वि०, सं०) जो सम्मुख दिखलाई देता हो, व्यक्त, प्रकाशित, विकसित, खिला हुआ, साफ स्पष्ट, भिन्न-भिन्न, अलग-अलग, फुटकल, पृथक।

स्फुटन—(संज्ञा, पु०, सं०) फूटना, खिलना, विकासना, हँसना। [**स्फुटनीय** (वि०)]।

स्फुटित—(वि०, सं०) खिला हुआ, विकसित, हँसता हुआ, फूला हुआ, स्पष्ट या साफ किया हुआ। लो०—"स्फुटितमप्यखिल चारणद्वयं विकचतामरस-प्रितिमं भवेत्"।

स्फुरण—(संज्ञा, पु०, सं०) कंपन, किसी वस्तु का धीरे-धीरे और थोड़ा-थोड़ा हिलना, फूटना, अंगों का फड़कना, स्पंदन।

स्फुरत—(वि०) चमकता हुआ या चमकती हुई, छिटकी हुई। "स्फुरत किरण मंडित मुख सुन्दर"—पंत।

स्फुरति*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्फूर्ति] धीरे-धीरे हिलना या काँपना, फड़कना, फूटना।

स्फुरित—(वि०, सं०) स्फुरण युक्त, स्फूर्तिमय।

स्फुलिंग—(संज्ञा, पु०, सं०) चिनगारी।

स्फूर्ति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) धीरे-धीरे हिलना, स्फुरण होना, फड़कना, किसी कार्य के लिये मन में हुई ईर्षित उत्तेजना, तेजी, फुरती।

स्फोट—(संज्ञा, पु०, सं०) बाह्यावरण को तोड़ कर किसी वस्तु का बाहर आना, फूटना, बाहर निकलना, शरीर का फोड़ा-फुसी, ज्वालामुखी पर्वत से सहसा अग्नि आदि का फोड़ निकलना।

स्फोटक—(संज्ञा, पु०, सं०) फोड़ा-फुसी।

स्फोटन—(संज्ञा, पु०, सं०) विदारण, फोड़ना, फाड़ना, विदीर्ण होना।

स्फोटित—(वि०, सं०) जो प्रगटित किया गया हो।

स्मर—(संज्ञा, पु०, सं०) मार, मदन, कामदेव, मनोज, स्मरण, याद स्मृति, (समर (दे०)]। "अपि विधि: कुसमानि तवाशुगान् स्मर विधाय न निवृतिमाप्तवान्"—[नैषध०]।

स्मरण—(संज्ञा, पु०, सं०) याद आना या करना, किसी देखी-सुनी या अनुभव की हुई बात का फिर मन में आना, नौ प्रकार की भक्ति में से एक जिसमें भक्त भगवान को सदैव स्मृति में रखता है, एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु या बात को देख वैसी ही किसी विशेष वस्तु या बात के याद आने का कथन हो। [अस्मरण (दे०)]।—**पत्र**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी को किसी बात को याद दिलाने के लिए लिखा गया लेख।—**शक्ति**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) स्मृति, याददाश्त, याद रखने की शक्ति, धारणा शक्ति, मन की वह शक्ति जो किसी देखी सुनी या अनुभव की हुई वस्तु या बात को ग्रहण कर रख छोड़ती है।

स्मरणीय—(वि०, सं०) स्मरण या याद रखने के योग्य।

स्मरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्मरण] स्मरण या याद करना, [**सुमिरना** (दे०)]।

स्मरारि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कामारि, महादेव जी। "स्मरारे पुरारे यमारे हरेति" —सं०।

स्मर्ण*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्मरण] स्मरण, याद।

स्मशान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्मशान] श्मशान, मरघट, [मसान, समसान (दे०)]।

स्मारक—(वि०, सं०) याद दिलाने या स्मरण कराने वाला, किसी की स्मृति बनी रखने को प्रस्तुत की गई वस्तु या कृत्य, यादगार, स्मरण रखने को दी गई वस्तु।—**ग्रंथ**–(पु०) किसी नेता, विद्वान्, साहित्यिक अथवा दार्शनिक की स्मृति को चिर बनाये रखने के लिए रचित ग्रंथ। [कमेमोरेशन मेमोरियल]।

स्मार्त्त—(संज्ञा, पु०, सं०) स्मृति लिखित कार्य्य या कृत्य, स्मृति-लिखित कार्य्य करने वाला, स्मृति-शास्त्र का ज्ञाता। (वि०) स्मृति का, स्मृति-सम्बन्धी —**स्मृति**-विहित, स्मृति-विधान से युक्त।

स्मित—(संज्ञा, पु०, सं०) मुसकान, मंदहास या हँसी। "स्मित-पूर्वानुभाषिणी:"—[वा० रामा०]। (वि०) विकसित, खिला हुआ, प्रस्फुटित, फूला हुआ। "स्मित का आँसू का विनिमय"—महादेवी। —**मुख**–(वि०) खिला हुआ, विकसित, मुसकाता हुआ।

स्मिति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मंदहास, हास।

स्मृत—(वि०, सं०) याद किया या स्मरण में आया हुआ।

स्मृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्मरण, याद, स्मरण शक्ति से संचित किया ज्ञान, हिंदुओं के धर्म (कर्त्तव्य) आचार-व्यवहार शासन, नीति तथा दर्शनादि का विवेचन-सम्बन्धी धर्म्म शास्त्र, जो अठारह हैं, अठारह संख्या, एक छंद (पिं०) "श्रुतेरिवार्थम् स्मृतिरन्वगच्छत्"—[रघु०]। —**कार**–(पु०) धर्म्म-शास्त्र के कर्त्ता और ज्ञाता। —**कारक, कारी**–(वि०) स्मरण करने वाला।

स्यंदन—(संज्ञा, पु०, अ०) टपकना, चूना, रसना, बहना, जाना, गलना, चलना, रथ (विशेषत: युद्ध का रथ) वायु। "सुबरन स्यंदन पै सैलजा-सुनंदन लौं"—सरस।

स्यमंतक—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य-प्रदत्त एक मांगलिक मणि जिसकी चोरी का कलंक कृष्ण को लगा था, बड़ा हीरा।

स्यात्—(अव्य०, सं०) कदाचित्, शायद। "स्याद्विद्वज्रा यदि तौ जगौग:"।

स्याद्वाद—(संज्ञा, पु०, सं०) अनेकांतवाद, जैनों का एक दर्शन, जिसमें स्यात् यह है स्यात् वह है ऐसा कहा गया है, संदेहवाद।

स्यान, स्याना—(वि०, दे०) [सं० सज्ञान] बुद्धिमान, चतुर, प्रवीण, चालाक, धूर्त, बालिग, वयस्क, वयोवृद्ध, सयान, [सयाना (दे०)]। [स्त्री०] [**स्यानी** (संज्ञा, पु०,) चढ़ा-बढ़ा, वृद्ध

पुरुष, ओझा, जादू टोना जानने वाला, चिकित्सक, वैद्य ।—प—पन–[पना]–(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० स्याना+पन प्रत्य०] बुद्धिमानी, चतुरता, चालाकी, धूर्त्तता, [सयानप (दे०)] । स्यानापन केहि काम को, जातें होवे हानि"—[नीति०] ।

स्यानता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) चतुराई, चालाकी, सयानता ।

स्यापा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० स्याह पोश] किसी के मरने पर कुछ समय तक प्रतिदिन स्त्रियों के एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति । **मुहा०—पड़ना**–रोना पीटना पड़ना, रोना-चिल्लाना मचना, अति हानि होना, बिल्कुल नाश होना, उजाड़ या सूना हो जाना ।

स्याबास*—(अव्य०, दे०) [फ़ा० शाबाश] किसी छोटे के किसी अच्छे कार्य्य पर प्रसन्न हो बड़ों का उसे आशीष और उत्साह देना, तथा प्रशंसा करना, शाबाश । [**स्याबासी** (संज्ञा, पु०, दे०)] ।

स्याम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्याम] श्रीकृष्ण जी, श्याम रंग, श्याम रंग वाला । (संज्ञा, पु०, दे०) भारत से पूर्व में एक देश । "सूर श्याम को मधुर कौर दै कीन्हें तात निहोरे"—सूर० । —**करन**, [**कर्न**]—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्याम कर्ण] एक बिल्कुल सफेद घोड़ा जिसके केवल दोनों कान काले हों । "स्याम-करन अगनित हय जोते"—[रामा०]—**ताई**–(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्यामता] कालापन । "सोई स्यामता वास"—[रामा०] ।

स्यामक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्यमक] श्रीकृष्ण जी, बालगोविंद ।

स्यामल—(वि०, दे०) [सं० श्यामला] श्याम, श्यामला । "स्यामल गात कसे धनु-भाथा"—[रामा०] ।

स्यामलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्यामला] श्यामला, साँवला, [साँवलिया (दे०)] ।

स्यामा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्यामा] श्यामा, राधिका जी, सोलह वर्ष की स्त्री, एक छोटा काला पक्षी । "स्यामास्याम हिंडोला झूलत" —सूर० । " स्यामा बाम सुतरू पर देखी "—[रामा०] ।

स्यार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृगाल] शृगाल, सियार, गीदड़ । [**स्यारनी** (स्त्री०) ।—**पन**–(पु०) सियार या गीदड़ का-सा स्वभाव या व्यवहार ।

स्यारी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि० सियार] स्यार की मादा, गीदड़ी, कातिक की फसल, सियारी (प्रान्ती०) ।

स्याल, स्याला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्याला] श्यालक, साला, पत्नी का भाई । (संज्ञा, पु०, दे०) स्यार, सियार ।

स्यालिया†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सियार] गीदड़, सियार, स्यार ।

स्यावज—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० सावज] सावज, शिकारी जीव, जंगली जन्तु ।

स्याह—(वि० फ़ा०) काला, नीला, कृष्णवर्ण का । (संज्ञा, पु०, दे०) घोड़े की एक जाति ।—**गोस**–(पु०) एक जंगली जन्तु ।

स्याहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० सियाहा] खजाने का रोजनामचा या जमा-खर्च की किताब या बही ।—**नवीस**–(पु०) [फ़ा० सियाहा+नवीस] स्याहा लिखने वाला कर्मचारी ।

स्याही—(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) रोशनायी, लिखने की मसि, कालापन, कालिख, कालिमा, [सियाही (दे०)] । "सियाही हैं सफेदी है चमक है अब्रवारी है"—[स्फु०] । **मुहा०—जाना**–जवानी जाना, बालों की कालिमा न रहना । (चेहरे या मुँह पर)—**दौड़ना** (**आना**)–रोग या भयादि से मुख के रंग का काला पड़ना । (संज्ञा, फ़ा०, दे०) [सं० शल्यकी] स्याहो, काँटेदार देह वाला एक जंगली जन्तु ।

स्यूत—(वि०, सं०) सिया हुआ, बुना हुआ । "गुरु स्यूतमेको वपुश्चैकमतः"—शं० ।

स्यों-स्यो*—(अव्य, दे०) [सं० सह] सो, सह, सहित, युक्त, समीप, पास ।

स्रंग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृंग] सींग, चोटी, शिखर ।

स्रक स्रग—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) फूलों की माला, चार नगण और एक सगण का एक वर्णिक छंद (पिं०)

स्रग्धरा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) म, र, भ, न और तीन (गण) का एक वर्णिक छंद (पिं०) ।

स्रग्विणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चार रगण का एक वर्णिक छंद (पिं०) ।

स्रज्—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) माला ।

स्रजना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० सृज] सृष्टि बनाना, उत्पादन करना, रचना, [सिरजना (दे०)] । [**स्रजन** (संज्ञा, पु०)], [**स्रजित** (वि०)] ।

स्रद्धा*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्रद्धा] श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, समाई [सर्धा (दे०)] ।

स्रम—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रम] श्रम, मेहनत, थकाई । "बिनु स्रम नारि परम गति लहई"—[रामा०] ।

स्रमित*—(वि०, दे०) [सं० श्रमित] श्रमित, थका हुआ ।

स्रवण—(संज्ञा, पु०, सं०) बहना, प्रवाह, बहाव, धारा, गर्भपात, मूत्र, [पसीना, (दे०)] एक नक्षत्र (ज्यो०), कान । [**स्रवित** (वि०)] ।

स्रवन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रवण] श्रवन, कान । "मुख नासिका स्रवन की बाटा"—[रामा०] । स्रवण, प्रवाह, स्वेद, मूत्र, गर्भपात, एक नक्षत्र ।

स्रवना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० स्रवण] बहना, टपकना, चूना, रसना, गिरना । (क्रि० स०) बहाना, रसाना, चुवाना, गिराना टपकाना ।

स्रष्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्रष्टृ] संसार या सृष्टि का बनाने वाला, ब्रह्मा, विरंचि, विष्णु, शिव । (वि०) सृष्टि रचने वाला, विश्व-रचयिता ।

स्रस्त—(वि०) लटके हुए, ढीले-ढाले, हिलती हुई । "कपती स्रस्त वस्त्र सी छाया"—पंत ।

स्राप*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शाप] शाप, [सराप (दे०)] ।

स्रापित—(वि०, दे०) [सं० शापित] शापित ।

स्राव—(संज्ञा, पु०, सं०) बहना, गिरना, चरण, झरना, गर्भस्राव, गर्भपात, रस, निर्यास ।

स्रावक—(वि०, सं०) टपकाने, चुवाने या बहाने वाला, स्राव कराने वाला ।

स्रावित—(वि०, सं०) टपकाया या बहाया हुआ, स्राव कराया हुआ ।

स्रावी—(वि०) [सं० स्राविन्] बहाने वाला ।

स्रिग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० शृङ्ग] सींग, चोटी ।

स्रिजन*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सृजन] रचना, बनाना, सृष्टि करना; [स्रजन (दे०)] ।

स्रिजना—(क्रि० स०, दे०) [सं० सृजन] रचना, बनाना, [सिरजना, स्रजना (दे०)] ।

स्रिय*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्रिय] श्रिय, लक्ष्मी, कांति ऐश्वर्य, शोभा ।

स्रुत—(वि०, दे०) [सं० श्रुत] श्रुत, सुना हुआ ।

स्रुति—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्रुति] श्रुति, वेद । "जे कहुँ स्रुति मारग प्रतिपालहि"—[रामा०] ।

स्रुतिमाथ*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० श्रुति + मस्तक] विष्णु भगवान ।

स्रुवा—(संज्ञा, पु०, सं०) हवनादि में आहुति देने का लकड़ी का एक चम्मच या चमचा । "चाप स्रुवा सर आहुति जानू"—[रामा०] ।

स्रोनी*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्रेणी] पंक्ति, पाँति, कतार, समूह । "जनुतहँ बरस कमल-सित स्रोनी"—[रामा०] ।

स्रोत—(संज्ञा, पु०) [सं० स्रोतस्] निर्झर, पानी का झरना, सोता, धारा, नदी, चश्मा (फ़ा०) ।

स्रोतस्वनी, स्रोतस्विनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी ।

स्रोता*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रोता] सुनने वाला कथा सुनने वाला । "स्रोतावक्ता ज्ञान-निधि"—[रामा०] ।

स्रोन, स्रौन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्रवण] श्रवण, कान, कर्ण । "स्रौन-रसना मे रस और भरते नहीं"—[ऊ० श०] ।

स्रोनित*—(संज्ञा, पु०) [दे० शोणित] शोणित, रक्त, खून, लोहू, [सोनित (दे०)] । "तव स्रोनित की प्यास, तिषित रामसायक-निकर"—[रामा०] ।

स्वः—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ग, बैकुण्ठ ।

स्व—(वि०, सं०) निज का, अपना ।—**गत**—(संज्ञा, पु०, सं०) अपने ही से, अपने ही मन में, स्वगत कथन । "स्वगत राव तब कहेउ विचारी"—[स्फु०] । (क्रि० वि०) अपने ही से, अपने आप ।—**कथन**–(पु०) स्वगत, अश्राव्य, आत्मगत, आप ही आप, किसी पात्र का आप ही आप यों कहना कि उसे न तो कोई सुनता ही है और न वह किसी को सुनाना ही चाहता है (नाटक) ।

—छंद्–(वि०) स्वाधीनता, स्वतंत्र, मनमाना काम करने वाला, निरंकुश। "जिमि स्वच्छन्द नारि बिनसाहीं"—[स्फु०]। (क्रि० वि०) मनमाना, निर्द्वन्द्व, बेधड़क।—छंदता–(स्त्री०) स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, आजादी।—जन–(पु०) अपने सम्बन्धी, अपने कुटुम्बी, नातेदार, रिश्तेदार, आत्मीयजन। "स्वजनं हि कथम् हत्वा सुखिनः स्याम् माधव"—[भ० गी०]।—जन्मा–(वि०) अपने आप उत्पन्न होने वाला, परमेश्वर, ब्रह्म।—जात–(वि०) अपने से पैदा होना, अपने आप उत्पन्न होने वाला। (पु०) अपने से उत्पन्न पुत्र, बेटा—जाति–(स्त्री०) अपनी जाति। (वि०) अपनी जाति का।—जातीय–(वि०) अपनी जाति का, अपनी कौम या वर्ग का।—तंत्र–(वि०) स्वाधीन, जो किसी के आधीन न हो, स्वच्छन्द, मुक्त, खुदमुख्तार, निरंकुश, स्वेच्छाचारी, अलग, पृथक्, आजाद (फ़ा०) नियम या बन्धनादि से रहित। "जिमि स्वतन्त्र होइ बिगरहिं नारी"—[रामा०]।—तन्त्रता–(स्त्री०) स्वाधीनता, निरंकुशता, स्वच्छंदता, आजादी।—देश–(पु०) अपना या अपने पूर्वजों का देश, मातृभूमि, वतन।—देशी–(वि०) अपने देश का, स्वदेश सम्बन्धी, स्वदेशीय।—धर्म्म–(पु०) अपना धर्म्म। "स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मोभयावहः" —[भ० गी०]।—नामधन्य–(वि०) जो अपने नाम से प्रशंसनीय या धन्य हो।—पच*–(पु०) श्वपच, चांडाल, भंगी, डोम।—भाउ*–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वभाव] स्वभाव, सुभाव। "पहिचानेउ तौ कहौ स्वभाऊ"—[रामा०]।—भाव–(संज्ञा, पु०, सं०) मनोवृत्ति, प्रकृति, टेव, बान, सदा रहने वाला मुख्य या मूल गुण, आदत मिजाज, गुण, तासीर। "जो पै प्रभु स्वभाव कछु जाना"—[रामा०]।—भावज–(वि०, सं०) प्राकृतिक, स्वाभाविक, सहज, स्वभाव से उत्पन्न, स्वभाव का।—भावतः–(अव्य) [सं० स्वभावतस] निसर्गतः, स्वभाव से, वस्तुतः, प्रकृति प्रभाव से, सहज ही, स्वभावतया।—भावसिद्ध–(वि०, यौ० सं०) स्वाभाविक, प्राकृतिक, प्रकृति-सिद्ध, सहज ही, स्वाभावतः सिद्ध।—भावोक्ति–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु या विषय के यथावत प्राकृतिक स्वरूप का या अवस्थानुसार उसकी जाति का वर्णन हो।—भू–(संज्ञा, पु०, सं०) ब्रह्मा, विष्णु। (वि०) आपसे आप होने वाला, स्वयंभू।—रस–(संज्ञा, पु०, सं०) पत्ती आदि को कूट-पीस और कपड़े से छान कर निकाला हुआ रस।—रचित–(वि०) अपने द्वारा रचित, स्वयं लिखा हुआ।—राज–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्वराज्य।—राज्य–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अपना राज्य, वह राज्य जिसमें किसी देश के निवासी ही स्वदेश का शासन या प्रबन्ध करते हैं, प्रजातन्त्र, [स्वराज (दे०)]।—राट–(संज्ञा, पु०, सं०) परमात्मा, ब्रह्म, ब्रह्मा स्वराज्य-शासन प्रणाली वाले राज्य का शासक या राजा। (वि०) जो स्वयं प्रकाशमान होता हुआ औरों को प्रकाशित करता हो।—रूप–(संज्ञा, पु०, सं०) अपना रूप, आकृति, आकार, शक्ल, सूरत, मूर्त्ति, चित्र, वह पुरुष जो किसी देवतादि का रूप बनाये हो, देवतादि का धारण किया रूप। (वि०) सुन्दर, समान, तुल्य। अव्य० रूप में, तौर पर। (संज्ञा, पु०, दे०) सारूप्य।—यज्ञ–(पु०) तत्वज्ञ, आत्मा और परमात्मा के यथार्थ रूप का ज्ञाता, स्वरूपज्ञाता। [स्वरूपज्ञाता (संज्ञा, स्त्री०)]।—रूपमान्*–(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वरूपवान] स्वरूपवान्, सुरूपवान, सुन्दर।—रूपवान–(वि०) [सं० स्वरूपवत] सुन्दर, मनोरम, खूबसूरत, अच्छे रूपवाली। [स्वरूपवती, सुरूपा (स्त्री०)]।—रूपी–(वि०) [सं० स्वरूपिन्] सुन्दर स्वरूपयुक्त, स्वरूपवाला, जो किसी के स्वरूप के अनुसार हो। [स्वरूपिणी (स्त्री०)]।* [सारूप्य (संज्ञा, पु०, सं०)]। —रोचिस–(संज्ञा, पु० सं०) स्वारोचिष् मनु के पिता और कलि नामक गंधर्व के पुत्र।—स्थ–(वि०, सं०) नीरोग, तंदुरुस्त, आरोग्य, भला-चंगा। सावधान [स्वस्थता (संज्ञा)]।

स्वकीय—(वि०, पु०, सं०) निज का, अपने सम्बन्ध का।

स्वकीया—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पतिव्रता, अपने ही पति की अनुरागिणी स्त्री। "कहत स्वकीया ताहि को"—मति०।

स्वच्छ*—(वि०, दे०) स्वच्छ (सं०) साफ।

स्वच्छ—(वि०, सं०) शुद्ध, साफ, निर्मल, शुभ्र, उज्ज्वल, स्पष्ट, पवित्र।

स्वच्छता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पवित्रता, सफाई, उज्ज्वलता, निर्मलता, शुद्धता।

स्वच्छना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्वच्छ] शुद्ध या निर्मल करना, पवित्र या उज्ज्वल करना, साफ करना ।

स्वच्छी—(वि०, दे०) [सं० स्वच्छ] साफ, उज्ज्वल ।

स्वतः—(अव्य०) [सं० स्वतस] आप ही, अपने आप, स्वयम् ।

स्वतः-विरोधी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० स्वतः + विरोधी] आप ही अपना खंडन या विरोध करने वाला ।

स्वत्व—(संज्ञा, पु०, सं०) अधिकार, हक । (संज्ञा, पु०) निजत्व, अपना होने का भाव, अपनत्व । [**स्वत्वाधिकार** (यौ०)] ।—**हस्तांतरण**-(संज्ञा, पु०, सं०) संपत्ति, स्वत्व आदि का दूसरे के हाथ देना या सौंपना [ट्रान्सफ़रन्स] ।

स्वत्वाधिकारी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० स्वत्वाधिकारिन्] जिसके हाथ में किसी वस्तु का पूर्ण रूप से अधिकार हो, स्वामी, मालिक, अधिकारी ।

स्वधा—(अव्य०, सं०) इसका उच्चारण पितरों को हव्य देने में होता है । " यथापितृभ्य: स्वधा " " नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् वषट् योगाच्च"—कौ० । (संज्ञा, स्त्री०) पितृ-भोजन, पितृ अन्न, पितरों को दिया गया भोजनान्न, दक्ष प्रजापति की कन्या ।

स्वन—(संज्ञा, पु०, सं०) रव, शब्द, ध्वनि, निस्वन, आवाज ।

स्वपन, स्वपना*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वप्न] सपना । (क्रि० स०, दे०) स्वपनाना ।

स्वप्न—(संज्ञा, पु०, सं०) नींद, निद्रा, जो बातें सोते समय दिखाई दें या मन में आवें, मन में उठी हुई ऊँची या असम्भव कल्पना या विचार, सोने की दशा या क्रिया, निद्रावस्था में कुछ घटनादि देखना, [सपन, सपना (दे०)] । " लखन स्वप्न यह नीक न होई "—[रामा०] ।—**गृह**-(पु०) शयनागार, स्वप्नालय, स्वप्न-भवन, ख़्वाबगाह ।—**दोष**-(पु०) एक प्रकार का प्रमेह रोग, निद्रा की दशा में वीर्य-पात होने का रोग (वैद्य०) । —**मुक्ता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मधुर कल्पना, अनुरागमय स्वप्न । "स्वप्नयुक्ता रच रहे मिल"— महादेवी ।—**शायिनी**-(वि०) स्वप्न में शयन करने वाली । "वह नहीं स्वप्नाशायनी प्रेयसि ही परिचित—पंत ।—**सात्**-(वि०) अस्थिर स्वप्न की तरह (अस्थायी) । " दीपक है स्वप्नसात " —महादेवी ।

स्वप्नाना—(क्रि० स०, दे०) [सं० स्वप्न + आना प्रत्य०] स्वप्न दिखाना, स्वप्न देना, [सपनाना (दे०)] ।

स्वप्निल—(वि०) सोया हुआ, स्वप्न देखता हुआ— " स्वप्निल अंगूरी छाया मे "—पंत ।

स्वप्नोत्पल—(संज्ञा, पु०, सं०) अनुरागमयी कल्पना, कोमल भावनायें, मधुमय स्वप्न, कोमल स्वप्न । "रग-रग से रङ्ग रहे जाग स्वप्नोत्पल"—पंत ।

स्वबरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सुवर्ण] सुवर्ण, सोना, हेम, कनक, [सुबरन, (दे०)] अपना वर्ण ।

स्वयं—(अव्य) [सं० स्वयम्] स्वतः, आप, खुद, आप से आप, खुद-बखुद ।—**दूत**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नायिका के प्रति अपनी वासना प्रगट करने में दूत का काम आप ही करने वाला नायक (सा०) ।—**दूती**-(स्त्री०) स्वतः दूती का कार्य (स्ववासना-प्रकाशन) करने वाली परकीया नायिका ।—**प्रकाश**-(पु०) जो आप ही आप प्रकाशित हो, जैसे—सूर्य, परमेश्वर, परब्रह्म, परमात्मा, खुदरोशन ।—**भू**-(पु०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, काल, कामदेव, स्वयंभुव मनु । " कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः "—श्रुति । (वि०) जो आपसे आप पैदा हुआ हो, स्वभू ।—**वर**-(पु०) कुछ उपस्थित व्यक्तियों में से कन्या का अपना पति आप ही चुनना, वह स्थान जहाँ कन्या स्वपति चुने । " सीय-स्वयंबर देखिय जाई "—[रामा०] ।— **वरण**—(पु०) स्वयंवर ।—**वरा**-(पु०) वर्य्या, पतिवरा, इच्छानुसार अपना पति चुनने वाली कन्या या स्त्री ।—**सिद्ध**-(वि०) वह बात जिसकी सिद्धि के हेतु प्रमाण या तर्क अनावश्यक हो, स्वतः-सिद्ध ।—**सेवक**-(पु०) स्वेच्छासेवक, स्वेच्छा-दास, स्वेच्छा से पुरस्कार के बिना ही किसी कार्य में योग देने वाला । [**स्वयंसेविका** (स्त्री०)] ।

स्वयमेव—(क्रि० वि०, यौ०, सं०) स्वतः, आप ही, स्वयं ही, खुद ही ।

स्वर्—(संज्ञा, पु०, सं०) वैकुण्ठ, स्वर्ग आकाश, परलोक ।

स्वर—(संज्ञा, पु०, सं०) जीवधारी के गले से या किसी बाजे या पदार्थ पर आघात पड़ने से उत्पन्न कोमलता, उदात्ततानुदात्तता तथा तीव्रतादि गुण

वाला शब्द, एक निश्चित रूप वाली वह ध्वनि जिसके आरोहावरोह का अनुमान सहज में सुनते ही हो, [सर (दे०)] ऐसे स्वर क्रम के सात हैं:—१ षड्ज) २ ऋषभ । ३ गाँधार । ४ मध्यम । ५ पंचम । ६ धैवत । ७ निषाद । (सा, रे, ग, म, प, ध, नी) । **मुहा०—उतारना**-स्वर धीमा (मंद) या नीचा करना ।**—चढ़ाना**-स्वर को ऊंचा करना, व्याकरण में वे वर्ण जो स्वतन्त्रता-पूर्वक आपसे आप उच्चरित हों और व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते है, अ (आ) इ (ई) उ (ऊ) ऋ लृ ए (ऐ) ओ (औ), संस्कृत में ६ और हिंदी में ११ (लृ-सहित) हैं, वेद में शब्दों का उतार-चढ़ाव । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वर] अंतरिक्ष, आकाश ।**—भंग**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कंठ-स्वर के बैठ जाने का एक रोग ।**—मंडल**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) एक तारदार बाजा । "पृथग् विभिन्न स्वर-मंडलै स्वरैः"—माघ० ।**—बेधी**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) शब्द बेधी ।**—शास्त्र**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्वर-विज्ञान, वह शास्त्र जिसमें स्वर-विषयक विवेचन हो ।

स्वरग*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वर्ग] वैकुण्ठ, [सरग (दे०)] ।

स्वरांत—(वि०, यौ०, सं०) वह शब्द जिसके अंत में कोई स्वर हो, जैसे—विष्णु, शिव ।

स्वरारोह—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर का उतार-चढ़ाव या उल्लासमय स्वर, स्वर का खींचना, अलाप लेना । "तुम्हारे मुक्त कंठ में स्वरारोह"—निराला ।

स्वरित—(संज्ञा, पु०, सं०) वह स्वर जो मध्यम स्वर से उच्चरित हो, जिसका उच्चारण न तो बहुत जोर से ही हो और न धीरे से ही हो । (वि०) स्वर-युक्त, गूँजता हुआ ।

स्वरोद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वरोदय] एक तारदार बाजा विशेष ।

स्वरोदय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह शास्त्र जिसमे श्वासों के द्वारा शुभाशुभ के जानने को बताया गया है ।

स्वरोर्मि—(संज्ञा, पु०, सं०) गाते समय स्वरों का कंपन, स्वरों का चढ़ाव-उतार अर्थात् हृदय के लहलहाते स्वरोल्लास । "उठे स्वरोर्मियों मुखर..." —निराला ।

स्वर्गंगा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) मंदाकिनी । "स्वर्गंगा की धारा में"—प्रसाद ।

स्वर्ग—(संज्ञा, पु०, सं०) देवलोक, नाक, वैकुंठ, सरग (ग्रा०), सात लोकों में से तीसरा लोक जिसमें पुण्यात्माएँ मृत्यु के उपरान्त जाकर निवास करती है (पुरा०) ।**—गमन**-(पु०) मरना, मृत्यु ।**—गामी**-(वि०) [सं० स्वर्गगामिन्] देव-लोक को जाने वाला, मृत, मरा हुआ, स्वर्गीय । **—तरु**-(पु०) देवतरु, कल्पवृक्ष । "राम-जप जग स्वर्ग-तरु है करत इच्छा पूर"—[स्फु०] । **—नदी**-(स्त्री०) स्वर्गंगा, आकाश गंगा, स्वर्ग-सरिता, स्वर्ग सलिला ।**—पराग**-(संज्ञा, पु०, सं०) अनुरागमयी गति, प्रेम रस । "दृगों से झरता स्वर्णपराग"—महादेवी ।**—पाश**-(संज्ञा, पु०) कांतिमय आवरण, स्वर्णमयी शोभा, कांति । "विद्युति के चल स्वर्णपास में"—महादेवी । **—पुरी**-(स्त्री०) स्वर्ग-नगरी, अमरावती, अमर पुरी । [**स्वर्ग-पुर, देवपुर (पु०, यौ०)**] ।**—प्रात**-(संज्ञा, पु०) लालिमा-युक्त सवेरा, ऊषा-काल । "धो स्वर्गप्रात में तिमिरगात"—महादेवी ।**—बधू,—बधूटी**-(स्त्री०) अप्सरा, देव-बधूटी । "स्वर्गबधू नाचहिं करि गाना"—[रामा०] ।**—फूल**-(संज्ञा, पु०, सं०) चंपक या पीले फूल, कान का एक विशेष गहना । "पथ में जुगनू के स्वर्णफूल"—महादेवी ।**—लोक**-(पु०) देवलोक, देवपुरी, वैकुंठ ।**—वाणी**-(पु०) गगन-गिरा, आकाश-वाणी ।**—वास**-(पु०) देव-लोक जाना, मरना ।**—वासी**-(वि०) [सं० स्वर्गवासिन्] स्वर्ग में रहने वाला, मरा हुआ, मृत, स्वर्गीय । [**स्वर्गवासिनी (स्त्री०)**] ।**—सुख**-(पु०) बहुत ही उच्च कोटि का सुख । **मुहा०—के पथ पर पैर देना**-मरना, जान को जोखिम में डालना ।**—जाना या सिधारना**-मरना, देहावसान होना ।**—की धार**-आकाश-गंगा । दिव्य सुख स्थान, सुख आकाश, ईश्वर ।

स्वर्गद—(वि०, सं०) स्वर्ग देने वाला ।

स्वर्गारोहण—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्वर्ग-गमन, स्वर्ग को जाना या सिधारना, मरना ।

स्वर्गिक—(वि०) नैसर्गिक या अपूर्व शोभा, स्वर्ग की, स्वर्गमयी, स्वर्गीय । "स्वर्गिक आभा से भर..."—पंत ।

स्वर्गीय—(वि०, सं०) स्वर्ग का या स्वर्ग-संबंधी, जो मर गया हो, मृत । [**स्वर्गीया** (स्त्री०)] ।

स्वर्ण—(संज्ञा, पु०, सं०) सोना, हेम, हिरण्य, कंचन, कनक, सुवर्ण, धतूरा, [स्वर्न, सुबरन,

सुवर्ण, सुवर्न (दे०)] ।—गिरि–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुमेरु पहाड़, स्वर्णाचल, हेमाद्रि, स्वर्णाद्रि ।—पर्पटी–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) संग्रहणी रोग नाशक एक औषधि विशेष ।—माक्षिक–(पु०) सोना मक्खी, सोनामाखी ।—मुद्रा–(स्त्री०) अशरफी ।—युग–(पु०) उन्नति एवं प्रगति का समय । [गोल्डेन एज] ।—यूथिका–(स्त्री०) पीली जूही ।—लहरी–(संज्ञा, पु०) कंपित स्वर, स्वर की उमंगें । "लिये क्यों स्वर लहरी का भार—महादेवी '—विहान–(संज्ञा, पु०, सं०) ऊषाकाल या अनुरागमयी प्रात वेला । "नहीं देखा था स्वर्ण विहान "—महादेवी ।—कमल–(पु०) कनक कमल, रक्त या लाल कमल ।

स्वर्णकार—(संज्ञा, पु०, सं०) सुनार ।

स्वर्णमय—(वि०, पु०, सं०) जो सर्वथा सोने का हो, हिरण्यमय । [**स्वर्णमयी** (स्त्री०)] ।

स्वर्णाचल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कनकाचल सुमेरु पर्वत ।

स्वर्णाद्रि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुमेरु, कंचनाचल, हेमाद्रि ।

स्वर्णिम—(वि०, सं०) सुनहला, सोनेका । "नव प्रभात का यह स्वर्णिम क्षण "—पंत ।

स्वर्—(पु०, सं०) स्वर्ग, आकाश, सूर्य और ध्रुव का मध्यवर्ती स्थान । महादेव । जल । कान्ति । —धुनी–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) गंगा नदी, [सुरधुनी (दे०)] ।—नगरी–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अमरावती ।—स्वर्नगर–(पु०) अमरपुर ।—नदी–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) स्वर्गंगा । —भिषग्–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) देव वैद्य अश्विनी कुमार ।—लोक–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्वर्ग, वैकुंठ ।—वधू,—वधूटी–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) देव-बधूटी, अप्सरा, स्वर्गांगना । —वेश्या–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अप्सरा, स्वर्गांगना ।—वैद्य–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) अश्विनीकुमार, स्वर्चिकित्सक ।

स्वल्प—(वि०, सं०) अत्यन्त थोड़ा ।

स्वशुर, स्वसुर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वशुर] पति या पत्नी के पिता, [ससुर (दे०)] ।

स्वशुराल, स्वसुराल—(संज्ञा, पु०, यौ०) [सं० श्वशुरालय] ससुराल, [ससुरार (दे०)] ।

स्वसा—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० स्वसृ] बहिन । " करयुगं हसतिस्म दमस्वसुः "—[नैष०] । "दमस्वसा कहती नल सों वहाँ "—कुंज वि० ।

स्वस्ति—(अव्य०, सं०) कल्याण या मंगल हो (आशीष) । (संज्ञा, स्त्री०) कल्याण, मंगल, ब्रह्मा की तीन स्त्रियों में से एक स्त्री, सुख । "स्वस्ति नः इन्द्रोवृद्ध श्रवा "—[यजु०] ।—वाचन–(पु०) शुभ कार्यारम्भ पर देव-पूजन और मांगलिक वेदमंत्रों के पाठ के रूप में एक धार्मिक कृत्य (कर्मकांड) । [**स्वस्तिवाचक** (वि०)] ।

स्वस्तिक—(संज्ञा, पु०, सं०) हठ-योग का एक आसन, एक शुभचिन्ह, ऐपन-चिन्ह, पानी में पिसे चावलों के चूर्ण से बनाया गया एक मांगलिक द्रव्य जिसमें देव-वास मानते है । प्राचीन काल से शुभावसरों पर शुभ वस्तुओं से बनाने का एक मांगलिक चिन्ह 卐 । देह के विशेष अंगों पर स्वभावतः उक्त चिन्ह (शुभ, सामु०) ।

स्वस्त्ययन—(संज्ञा, पु०, सं०) विशिष्ट शुभ कार्यारम्भ पर शुभ-स्थापनार्थ वेद के मांगलिक मंत्रों का पाठादि (एक धार्मिक कृत्य) ।

स्वहाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० सोहाना] सुहाना, सोहाना, अच्छा या प्रिय लगना ।

स्वाँग—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० सु+अंग] रूप, भेस, मजाक या खेल, तमाशा, नकल, दूसरे का रूप बनाने को धरा गया बनावटी वेष, धोखा देने को बनाया गया कोई रूप, सुराँग (ग्रा०) । मुहा०—बनाना, भरना–नकल करना, वेष बनाना ।

स्वाँगना*—(क्रि० स०, दे०) [हि० स्वाँग] स्वाँग बनाना, बनावटी भेस धरना ।

स्वाँगी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० स्वाँग] स्वाँग बनाने तथा यों ही जीविकोपार्जन करने वाला, बहुरूपिया, सुराँगी (ग्रा०) । (वि०) रूप धरने वाला ।

स्वांगीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) आत्मसात करना, किसी विचार, सिद्धान्त आदि को अपने में घुलामिला लेना । [एसीमिलेशन]

स्वांतःसुखाय—(संज्ञा, पु०, सं०) मन, अंतःकरण के सुख के लिए, मन बहलाने के लिए । " स्वांतःसुखाय तुलसी रघुनाथ-गाथा "—[रामा०] ।

स्वांत—(संज्ञा, पु०, सं०) अंतःकरण, मृत्यु, अपना अंत, अवसान ।

स्वाँस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वास] स्वास साँस, स्वाँसा । " स्वाँस स्वांस पर राम राम कहु, वृथा स्वाँस मत खोय "—तुलसी ।

स्वाँसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वास] स्वास, साँस । **लो०**—"जब लौं स्वाँसा तब लौं आसा ।" **मुहा०—साधना**-प्राणायाम करना, शुभाशुभ विचारार्थ, दाहिने या बाँयें स्वास की गति देखना (स्वरो०) ।

स्वाक्षर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हस्ताक्षर, दस्तखत ।

स्वाक्षरित—(वि०, सं०) अपने हस्ताक्षर से युक्त, अपना दस्तखत किया हुआ ।

स्वागत—(संज्ञा, पु०, सं०) अगवानी, अभ्यर्थना. पेशवायी, अतिथि या आगंतुकादि के आने पर उनका आदर-सत्कार से अभिनंदन करना ।—**समित, कारिणी सभा**-(स्त्री०) वह सभा जो किसी बड़ी सभा में आने वाले प्रतिनिधियों या अन्य लोगों के स्वागतादि की व्यवस्था के लिए संगठित की जाये । [रिसेप्शन कमेटी] ।—**पतिका**-(स्त्री०) वह नायिका जो पति के परदेश से आने पर प्रसन्न होती है, आगत-पतिका ।—**प्रिया**-(पु०) वह नायिका जो अपनी प्रिया के परदेस से आने के कारण प्रसन्न हो, आगत-प्रिया । —**भाषण**-(पु०) स्वागत समिति के अध्यक्ष का व्याख्यान जिसमे आगत अतिथियों का स्वागत किया जाता है ।

स्वागता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) र, न, भ (गण) तथा दो गुरु वर्णों (SS+।।।+S।।+SS) वाला एक वर्णिक छंद (पिं०) ।

स्वागताध्यक्ष—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्वागत-कारिणी सभा का सभापति ।

स्वाच्छंद्य—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वच्छंदता, निरंकुशता ।—**युद्ध**-(पु०) विदेशी सत्ता से स्वतंत्र होने के लिए किया जाने वाला संग्राम या युद्ध । [वार आफ इंडपेंडेंस] ।—**प्रिय, प्रेमी**-(वि०) स्वतंत्रता का इच्छुक ।

स्वातंत्र्य—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वतन्त्रता ।

स्वात—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्वाति] स्वाति नक्षत्र ।

स्वाति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वाति, पंद्रहवाँ नक्षत्र, जो शुभ माना गया है (फ़ा० ज्यो०) ।—**पथ**-(पु०) आकाश गंगा, स्वातीपथ ।—**सुत**-(पु०) स्वाति-पुत्र, स्वाति-तनया, मुक्ता, मोती । —**सुवन**-(पु०) मोती, [स्वाती-पूत (दे०)] स्वाति-तनुज ।

स्वाती—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वाति] स्वाति नक्षत्र ।

स्वाद—(संज्ञा, पु०, सं०) मज़ा, ज़ायका, रसानुभूति, किसी वस्तु के खाने या पीने से रसना को होने वाला अनुभव या आनन्द, [सवाद (दे०)] । वाँछा, चाह, आकांक्षा, कामना, इच्छा । **मुहा०— (मज़ा) चखाना (चखना)**-किसी को किसी अपराध का यथावत दण्ड देना (पाना) ।—**(न) जानना**-किसी वस्तु का आनंद (न) जानना, अनुभूति रखना ।—**मिलना (पाना)**-रसानुभूति होना, बुरे काम का बुरा फल मिलना (व्यंग्य०) । "जीभ स्वाद के कारनै"—[स्फु०] ।

स्वादक—(संज्ञा, पु०) [सं० स्वाद] स्वाद जानने वाला, स्वादु-विवेकी वह व्यक्ति जो भोजन के तैयार होने पर उसे पहले चख कर जाँचता है ।

स्वादन—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वाद लेना, चखना, मज़ा या आनंद लेना । [**स्वादनीय, स्वादित** (वि०)] ।

स्वादिष्ट—(वि०, सं०) अच्छे स्वाद वाला, सुस्वादु, ज़ायकेदार, मजेदार ।

स्वादी—(वि०) [सं० स्वादिन्] स्वाद लेने या चखने वाला, रसिक, मज़ा लेने वाला, [सवादी (दे०)] ।

स्वादिल, स्वादीला†—(वि०, दे०) [सं० स्वादिष्ट] स्वादिष्ट, मजेदार, सवादिल (ग्रा०) ।

स्वादु—(संज्ञा, पु०, सं०) मधुरता, मधुराई, मीठा रस, दूध, गुड़, मिठास, स्वाद, ज़ायका, मज़ा । (वि०) मीठा, मिष्ट, मधुर, स्वादिष्ट, ज़ायकेदार, सुन्दर ।

स्वादेशिक—(वि०) स्वदेश सम्बन्धी ।

स्वाद्य—(वि०, सं०) स्वाद लेने के योग्य ।

स्वाधिकार—(संज्ञा, पु०) अपना अधिकार या कर्तव्य ।

स्वाधिष्ठान—(संज्ञा, पु०, दे०) हठयोग में स्वीकृत छः चक्रों में दूसरा ।

स्वाधीन—(वि०, यौ०, सं०) जो परतंत्र या पराधीन न हो, स्वतन्त्र, स्वच्छंद, मनमानी करने वाला, आज़ाद, निरंकुश । (संज्ञा, पु०) समर्पण, सुपुर्द, हवाला, स्वाधीनता । "सुख जग में स्वाधीन"—वृं० ।—**ता**-(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वच्छंदता, स्वतन्त्रता, आज़ादी । "सुख जानो स्वाधीनता, पराधीनता कष्ट"—स्फु० ।—**पतिका**

–(स्त्री०) वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो।—प्रिया–(संज्ञा, पु०, सं०) वह पुरुष जिसकी प्यारी उसके वशीभूत हो।—भर्तृका–(स्त्री०) स्वाधीन पतिका, वह नायिका जिसका पति उसके वश मे हो।

स्वाधीनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्वाधीनता।

स्वाध्याय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) नियमपूर्वक निरतर वेदाध्ययन, वेद पढ़ना, अध्ययन, पढ़ना, अनुशीलन। "तपस्वाध्याय निरत: वाल्मीकिर्वाग्विदांवर: ।"

स्वाध्यायी—(वि०, स०) नियमित अध्ययन करने वाला, वेद का पाठ करने वाला।

स्वान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वान] कुत्ता, सुवर्ण।

स्वाना*†—(क्रि० स०, दे०) [हिं० सुलाना] सोवाना, सुलाना।

स्वानुभूति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अपना अनुभव।

स्वानुरूप—(वि०, सं०) अपने लायक या योग्य, अपने अनुरूप।

स्वापन—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रुओं को निद्रित करने वाला एक अस्त्र (प्राचीन०)। वि० नींद लाने वाला, निद्राकारी।।

स्वाभाविक—(वि०, सं०) स्वाभाव-सिद्ध, नैसर्गिक, प्राकृतिक, जो स्वत: हो, कुदरती। "स्वाभाविक सुन्दरता हो तो फिर सिंगार का काम नहीं"—[स्फु०]।

स्वाभाविकी—(वि०, सं०) प्राकृतिक, नैसर्गिक, स्वभाव-सिद्ध, कुदरती। "स्वाभाविकी ज्ञानबल-क्रिया च"—[उप०]।

स्वाभिमान—(संज्ञा, पु०, सं०) आत्म-सम्मान, अपनी प्रतिष्ठा या सम्मान के प्रति निष्ठा।

स्वामि*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वामी] प्रभु, स्वामी, नाथ, पति, ईश्वर।—कार्त्तिक–(पु०) शिव सुत, स्कंद, षडानन, कार्त्तिकेय।

स्वामिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) प्रभुता, स्वामित्व।

स्वामित्व—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रभुत्व, स्वामिता, स्वामी का भाव।

स्वामिन-स्वामिनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्वामिनी] श्रीराधिका, गृहणी, स्वामिनी, स्वत्वाधिकारिणी, मालकिनी। "स्वामिनि-मन मानौ जनि ऊना"—[रामा०]।

स्वामिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) राधा जी मालकिनी, सुगृहिणी, स्वामिनी। "कहति स्वामिनी तें है दासी स्वामी है घर आये"—[स्फु०]।

स्वामी—(संज्ञा, पु०) [सं० स्वामिन्] प्रभु, नाथ मालिक, स्वत्वाधिकारी, पति, शौहर, अन्नदाता, भगवान, राजा, घर का प्रधान, मुखिया, धर्माचार्यादि की उपाधि, कार्त्तिकेय, संन्यासी, साधु। "विनती करहुँ बहुत का स्वामी"—[रामा०]। [स्वामिनी (स्त्री०)]।

स्वायंभुव—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वयंभू, ब्रह्मा के पुत्र, १४ मनुओं में से प्रथम।

स्वायंभू—(संज्ञा, पु०) [सं० स्वायंभुव] स्वायंभुव, एक मनु। "स्वायंभुव मनु अरु सतरूपा"—[रामा०]।

स्वायत्त—(वि०, सं०) जो अपने वश मे हो, जो अपने अधीन हो, जिस पर अपना ही अधिकार हो।—शासन–(पु०) स्वाराज्य, स्थानिक स्वराज्य, वह शासन जो अपने अधिकार में हो। [लोकल सेल्फ गवर्नमेंट]।

स्वारथ*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० स्वार्थ] स्वार्थ, अपना प्रयोजन या मतलब, अपना लाभ या उद्देश्य, अपनी भलाई। [**परार्थ, परमार्थ** (विलो०)]। "स्वारथ परमारथ सबै, सिद्ध एक ही ठौर"—तुल०। "स्वारथ लागि करैं सब प्रीती"—[रामा०]। (वि०, दे०) [स० सार्थ] सफल, सार्थक, सिद्ध, [सुआरथ (दे०)]। मुहा०—**स्वारथ चीन्हना**—स्वर्थ देखना या पहचानना। "अजौं स्वारथ नहिं चीन्ह्यो"—रत्ना०।

स्वारथी—(वि०, दे०) [सं० स्वार्थी] स्वार्थी, खुदगर्ज, अपना प्रयोजन सिद्ध या लाभ करने वाला।

स्वारस्य—(वि०, स०) रसीलापन, सरसता स्वाभाविकता।

स्वाराज्य– (संज्ञा, पु०, सं०) स्वर्ग या वैकुण्ठलोक, स्वाधीन राज्य, स्वर्ग का राज्य।

स्वारी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) सवारी (हिं०)।

स्वारोचिष—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वरोचिषात्मज, दूसरे मनु।

स्वार्थ—(संज्ञा, पु०, सं०) अपना प्रयोजन या मतलब, अपना लाभ या हित, अपना उद्देश्य, अपनी भलाई, [स्वारथ (दे०)]। "स्वार्थ-साधन तत्पर"—[स्फु०]। मुहा०—(**किसी बात में**)—

—मानना (रखना)-दिलचस्पी लेना (रखना) अनुराग या प्रेम रखना (आधु०) ।—चीन्हना-स्वार्थ ही देखना । (वि०, दे०) [सं० सार्थक] सार्थक, सफल ।—त्याग-(पु०) अपने लाभ का विचार छोड़ कर परोपकार करना, किसी भले कार्य के लिये स्वहित का ध्यान न रखना ।—त्यागी-(पु०) [सं० स्वार्थ त्यागिन्] परार्थ या परोपकार के हेतु अपने लाभ का विचार न करने वाला । —पर-(वि०) स्वहित का ही ध्यान रखने वाला, स्वार्थी, खुदगर्ज़ ।—परता-(स्त्री०) स्वार्थता, खुदगर्जी, स्वार्थ पर होने का भाव, अपने प्रयोजन या उद्देश्य की ही सिद्धि का ध्यान रखना ।—परायण-(वि०) स्वार्थी स्वार्थ पर, खुदगरज, मतलबी । [स्वार्थपरायणता (संज्ञा, स्त्री०)] ।—साधन-(पु०) अपने मतलब या प्रयोजन का सिद्ध करना, अपना काम निकालना, अपना लाभ या हित साधना [स्वार्थसाधक (वि०)] ।

स्वार्थता—(संज्ञा, स्त्री०, स०) निज प्रयोजन या उद्देश्य, खुदगर्जी, स्वलाभ, स्वहित, स्वार्थ का भाव ।

स्वार्थांध—(वि०, यौ०, स०) स्वार्थ के वश हो कुछ विचार न करने वाला, अपने मतलब के लिए अंधे के समान कुछ न देखने वाला [स्वार्थांधता (संज्ञा, स्त्री०, सं०)] ।

स्वार्थी—(वि०) [सं० स्वार्थिन्] स्वार्थ या परायण, मतलबी, खुदगरज, अपने हो प्रयोजन की सिद्धि मे तत्पर, अपना ही लाभ या हित देखने वाला [स्वारथी (दे०)] । "स्वार्थी दोषान्न पश्यति ।"

स्वाल—(वि०, दे०) [अ० सवाल] सवाल, प्रश्न, माँगना, पूँछना ।

स्वावलंबन—(संज्ञा, पु०, सं०) आत्म निर्भर रहना, अपने ही पुरुषार्थ पर आरूढ़ रहना ।

स्वावलंबी—(वि०) आत्म-निर्भर रहने वाला, दूसरे के भरोसे रहने वाला ।

स्वावस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वास] श्वास, प्राणवायु, साँस ।

स्वास*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० श्वास] श्वास, साँस । " स्वास-बस बोलत सो याको बिसवास कहा "—पद्मा० ।

स्वासा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० श्वास] श्वास, साँस । लो०—"जब तक स्वासा तब तक आसा" । मुहा०—साधना-प्राणायाम करना, स्वास-गति (शुभा-शुभार्थ) देखना (स्वरो०) ।

स्वास्थ्य—(संज्ञा, पु०, सं०) आरोग्य, नीरोग, स्वस्थ होने की दशा, तंदुरुस्ती, सावधान ।—कर [—कारक—कारी]-(वि०) आरोग्य-वर्द्धक, तंदुरुस्त या नीरोग रखने वाला ।—रक्षण-(पु०) स्वास्थ्य को ठीक हालत में रखने का कार्य ।—रक्षा-(स्त्री०) आरोग्य की रक्षा या तंदुरुस्ती का बचाव । —वर्धन-(वि०) आरोग्यता का बढ़ाने वाला । (पु०) स्वास्थ्य को उन्नत दशा में लाने का कार्य । —विज्ञान-(पु०) स्वास्थ्य सम्बन्धी सिद्धांतों का विवेचन करने वाला विज्ञान । [हाइजीन] ।—सुधार-(पु०) बिगड़े स्वास्थ्य का बनाना ।

स्वाहा—(अव्य०, स०) इसका प्रयोग हवन के समय होता है, देवताओं के हवि देने में प्रयुक्त होने वाला एक शब्द विशेष । जैसे—"इन्द्राय स्वाहा:" । (संज्ञा, स्त्री०) अग्निदेव की पत्नी । "मम: स्वस्ति स्वाहा स्वधा वषट् योगाच्च "—कौ० । मुहा०—करना (होना)—नष्ट या नाश करना (होना), जला देना (जल जाना) ।

स्वीकरण—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वीकार या अंगीकार, मंजूरी, अपनाने, सहमत होने का कार्य, मान्यता [स्वीकरणीय (वि०)] ।

स्वीकार—(संज्ञा, पु०, सं०) अंगीकार, मंजूरी स्वीकृति

स्वीकारात्मक—(वि०, सं०) (किसी कार्य या कथन मे) लिखित या अलिखित रूप से स्वीकार की जाने वाली बात । जिस बात का पुष्टीकरण हुआ हो । [एफर्मेटिव] ।

स्वीकारोक्ति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) ऐसा बयान जिसमें अभियुक्त अपना दोषापराध आप ही मान ले या स्वीकार कर ले ।

स्वीकार्य—(वि०, सं०) स्वीकार या अंगीकार करने के योग्य, मानने के योग्य, मान्य ।

स्वीकृत—(वि०, सं०) स्वीकार या अंगीकार किया हुआ, कुबूल या माना हुआ, मंजूर किया हुआ ।

स्वीकृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मंजूरी, रजामंदी, सम्मति, स्वीकार का भाव । [एकसेप्टेंस] ।

स्वीय—(वि०, सं०) अपना, निजका । (संज्ञा, पु०) सम्बन्धी, आत्मीय, स्वजन ।

स्वे*—(वि०, दे०) [सं० स्वा] अपना, निजका ।

स्वेच्छा—(संज्ञा, स्त्री०, हि०, सं०) अपनी इच्छा या अभिलाषा ।—चार-(पु०) यथेच्छाचार,

मनमानी करना । [स्वेच्छाचारिता (संज्ञा, स्त्री०)] ।—चारी-(वि०) [सं० स्वेच्छाचारिन्] अबाध्य, मनमानी करने वाला, निरंकुश, स्वाच्छन्दाचारी । [स्वेच्छाचारिणी (स्त्री०) । [स्वेच्छाचारिता (संज्ञा, स्त्री०)] —सेवक-(पु०) स्वयंसेवक ।

स्वेच्छानुचर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) स्वयंसेवक ।

स्वेत*—(वि०, दे०) [सं० श्वेत] श्वेत, उज्ज्वल, धवल, सफेद, [सेत (दे०)] । "स्वेत स्वेत सब एक से, करि, कपूर, कपास"—[नीति०] । [स्वेतता (संज्ञा, स्त्री०, दे०)] ।

स्वेद—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रस्वेद, पसीना, श्रमकण वाष्प, भाप, गरमी, ताप [सेत, सेद (दे०)] । "स्वेद-प्रवाह बहता रहता नितान्त"—मैथिली० । —ज-(वि०, सं०) पसीने से पैदा होने वाला (जं, खटमल आदि जीव) ।

स्वेदक, स्वेदकर, स्वेदकारक, स्वेदकारी—(वि०, सं०) प्रस्वेदक मारक, पसीना लाने वाला ।

स्वेदज—(संज्ञा, पु०, सं०) पसीना निकलना ।

स्वेदित—(वि०, सं०) बफारा दिया या सेंका हुआ, पसीने से युक्त ।

स्वै*—(वि०, दे०) [सं० स्वीय] अपना निजी, निज का । (सर्व०, दे०)] सो ।

स्वैर—(वि०, सं०) स्वतंत्र, स्वच्छंद, स्वाधीन, मनमना करने वाला, स्वेच्छाचारी, यथेच्छ, मन्द, धीमा ।—चारी-(वि०,) [सं० स्वैरचारिन्] व्यभिचारी, निरंकुश, स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी । [स्वैरचारिणी (स्त्री०)] ।

स्वैरता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) स्वेच्छाचारिता, यथेच्छाचारिता ।

स्वैरिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्यभिचारिणी, स्वेच्छाचारिणी ।

स्वैरिता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० स्वैरता] स्वैरता, यथेच्छाचारिता ।

स्वोपार्जित—(वि० सं०) अपना कमाया या उपार्जित किया हुआ, निज का पैदा किया हुआ ।

ह

ह—संस्कृत और हिंदी की वर्णमाला का ३३ वाँ तथा उच्चारण-विचार से ऊष्म वर्णों में का अंतिम वर्ण । (संज्ञा, पु०, सं०) शिव, मंगल, शुभ शून्य, आकाश जल ज्ञान हँसी, हास । घोड़ा ।

हँक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हाँक] किसी के बुलाने को जोर से निकाला हुआ शब्द, हाँक, हुँकार, गर्जन ललकार ।

हंकड़ना, हंकरना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हाँक] घमंड से बोलना, ललकारना ।

हँकराना—(क्रि० सं०, दे०) [हि० हाँक] बुलाना, पुकारना, टेरना, बुलवाना ।

हँकारना*†—(क्रि० सं०, दे०) [हि० हाक हाँक देकर बुलाना, टेरना, पुकारना, बुलवाना । "सुठि सेवक सब लिये हँकारी"—[रामा०] ।

हँकवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हाँक] शेर के शिकार मे उसे हाँक देकर शिकार की ओर कर देने वाला, शेर के शिकारी का यह ढंग । हँकवाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हकाई ।

हँकवाना—(क्रि० सं०, दे०) [हि० हाँकना) बुलवाना, हाँक लगवाना, हाँकने का काम दूसरे से कराना ।

हँकवैया*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हाँकना + वैया प्रत्य०] हाँकने वाला ।

हँका—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हाँक] ललकार ।

हँकाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हाँकना] हाँकने की क्रिया या मजदूरी, हाँकने का भाव ।

हँकाना—(क्रि० सं०, दे०) [हि० हाँक] हाँकना, पुकारना, चलाना, बुलाना, हँकवाना, चलवाना, बुलवाना ।

हँकार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हक्कार] जोर की पुकार । ऊँचे स्वर से बुलाने या सम्बोधित करने का शब्द, जोर से पुकारना । मुहा०—हँकार पड़ना-बुलाने को आवाज लगाना, पुकार लगाना, पुकार सुन कर जाना ।

हंकार*†—(संज्ञा, सं०, दे०) [सं० अहंकार] अहङ्कार, घमंड, दर्प, गर्व । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हुंकार] ललकार, डाँट, डपट, ह का वर्ण ।

हंकारना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हँकार] जोर से पुकारना, टेरना या बुलाना, युद्धार्थ बुलाना या आह्वान करना, ललकारना ।

हँकारना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हुंकार] ऊँचे स्वर से हुंकार शब्द करना, दपटना ।

हंकारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हकारना] आह्वान, पुकार, बुलाहट, आमन्त्रण, निमन्त्रण, न्योता, बुलौवा ।

हँकारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हँकार] दूत, वह व्यक्ति जो औरों को बुलाकर लाता हो । "सुचि सेवक सब लिये हकारी—[रामा०] ।

हंगाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० हंगामः] शोरगुल, कलकल, हल्ला, उपद्रव, कोलाहल, लड़ाई-झगड़ा । "गर्म हंगामा है इस बाजारे दुनिया का यहाँ"—[स्फु०] ।

हंडना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० अभ्यटन] चलना-फिरना, घूमना-फिरना, व्यर्थ यत्र-तत्र घूमना या ढूँढ़ना, वस्त्रादि का पहनना या ओढ़ना ।

हँडा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० भांडक] पानी रखने का बहुत ही बड़ा पीतल या ताँबे का बरतन ।

हँडाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हडना] घुमाना, काम में लाना, फिराना ।

हँडिका—(संज्ञा, स्त्री०) मिट्टी का एक वर्तन जो बटलोई नुमा होता है । हाँड़िया ।

हँडिया—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० भाँडिका] मिट्टी का एक छोटा पात्र, शोभार्थ लटकाने का ऐसा ही काँच का पात्र या हाँडी, एक क़सबा ।

हंडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भांडिका] हाँडी ।

हंत—(अव्य०, सं०) शोक या खेद सूचक शब्द । "हा हन्त हन्त नलिनी गज उज्जहार" ।

हंतव्य—(वि०, सं०) मार डालने लायक, हनन करने योग्य ।

हंता—(संज्ञा, पु०) [सं० हतृ] वध करने वाला, मारने वाला । "खलानास्य हन्ता भविता तत्वात्मजः"—भा० द० । [**हंत्री** (स्त्री०)] ।

हंत्री—(संज्ञा, स्त्री०, वि०, सं०) मारने वाली, नाशक, वध करने वाली । **लो०**—"भवांत विषम हन्त्री चैतकी छौद्र युक्ता" ।

हँफनि—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हाँफना] हाँफने का भाव या क्रिया । **मुहा०—हँफनि मिटाना**—थकान मिटाना । आराम करना ।

हंस—(संज्ञा, पु०, सं०) बड़ी झील मे रहने वाला बतख जैसा एक जल-पक्षी, मराल, परमात्मा, जीवात्मा, सूर्य, ब्रह्मा, शिव, विष्णु, ब्रह्म, परमेश्वर, माया से निर्लिप्त जीव, आत्मा, परमहंस, सन्यासियों का एक भेद, घोड़ा, प्राण वायु, १४ गुरु और २० लघु वर्ण वाला दोहे का एक भेद, ५क भगण और दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) । [**हंसिनि, हंसिनी** (स्त्री०)] ।—**गति**-(स्त्री०) हंस की-सी सुन्दर मन्द गति, सायुज्य मुक्ति, २० मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०) ।—**गमन**-(पु०) हंस की चाल ।—**गामिनी**-(वि०) हंस की-सी सुन्दर चाल से चलने वाली स्त्री । [हंस-गामिनि (दे०)] । "हंस-गमनि तुम नहिं वन जोगू"—[रामा०] ।—**तनय**-(पु०) सूर्य-सुत, यम, शनि, हंसात्मज, हंसतनुज ।—**तनया**—(स्त्री०) यमुना, हंसतनुजा ।—**पदी**—(स्त्री०) एक लता ।—**पुत्र**-(पु०) हंसपूत (दे०)] सूर्यसुत, । [**हंसपुत्री** (स्त्री०)] ।—**राज**-(पु०) समलपत्ती, एक पर्वतीय बूटी, एक अगहनी धान । हंसों में राजा, विधि—(यौ०) हंस, श्रेष्ठ हंस ।—**वंश**-(पु०) सूर्य वंश, रघुवंश । वंस-वंश अवतंस"—[रामा०] ।—**वाहन**-(पु०) ब्रह्मा ।—**वाहिनी**-(स्त्री०) सरस्वती ।—**सुत**-(पु०) सूर्य सुत, हंसतनय, शनि, यम, कर्ण ।—**सुता**-सूर्यसुता, यमुना नदी, हंसतनया ।

हंसक—(संज्ञा, पु०, सं०) मराल, हंस पत्ती, पैर की उँगली का बिछुवा (गहना) । "जिन नगरी जिन नागिरी प्रतिपद हंसक-हीन"—[राम०] ।

हँसतामुखी—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० हँसना + मुख] प्रसन्न मुख, हँसते मुख वाली स्त्री । स्मिताननाहँसमुखी ।

हँसन, हँसनि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) [हि० हँसना] हँसने का भाव, क्रिया या ढंग ।

हँसना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हसन] प्रसन्नता से मुख फैला कर एक प्रकार का शब्द निकालना, हास करना, खिलखिलाना, कहकहा लगाना । [**हँसाना** (स० रूप)], [**हँसवाना** (प्रेरणा० रूप)] ।—**बोलना**-(यौ०) प्रसन्नता की बातचीत करना ।—**हँसाना**-मनोरंजन या मनोविनोद करना ।—**खेलना**-आनंद करना । **मुहा०—किसी पर हँसना**-विनोद या दिल्लगी की बात कह कर मूख या तुच्छ ठहराना, उपहास या हँसी करना । **हसते-हँसते**—खुशी या अति हर्ष से । **ठठा कर (ठट्ठा मार कर) हँसना**—अट्टहास करना, जोर से हँसना । **बात हँस कर (हँसी में) उड़ाना (टालना)**—किसी बात को तुच्छ या साधारण समझ कर दिल्लगी में टाल देना । **(किसी बात को) हँस कर टालना**—फबती या

लगती बात पर ध्यान न देना, बुरा न मानना, विनोद में उड़ा देना। हँसी या दिल्लगी करना, प्रसन्न सुखी या खुश होना, खुशी मानना, रम्य लगना, रौनक या गुलजार होना। (क्रि० स०) किसी का उपहास करना, अनादर करना, हँसी उड़ाना।

हँसनि*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हँसना] हँसना, हँसने की क्रिया, भाव या ढंग।

हँसनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०)) [सं० हंसी] हंस की मादा, हंसी, [हसिनी, हंसिनि (दे०)]।

हसमुख—(वि०, यौ०) [हि० हँसना+मुख] प्रसन्नवदन, जिसके मुख से प्रसन्नता या हर्ष प्रकट हो, हास्यप्रिय, विनोदी, विनोद-शील।

हँसली, हँसुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अंसली] गले के नीचे की धनुषाकार हड्डी, (स्त्रियों का) गले में पहनने का एक गोलाकार गहना, सुतिया।

हँसाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हँसना] हँसने का भाव या क्रिया, अकीर्ति, बदनामी, निंदा, अपयश, उपहास। "तौ प्रन करि करत्यौं न हँसाई" [रामा०]।

हंसात्मज—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सूर्यसुत, कर्ण, यम, शनि।

हँसात्मजा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) यमुना-जी।

हँसाना—(क्रि० स०) [हि० हँसना] दूसरे व्यक्ति को हँसमें में लगाना, [हँसवाना (दे०)]।

हँसाय*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हँसना] हँसाई, निंदित, निन्दा, बदनाम। "काम बिगारै आपनों, जग में होत हँसाय"—गि० ।

हंसावली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हंसों की पंक्ति।

हंसिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हंसी।

हंसालि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हंसावलि, हंसों की पंक्ति या समूह, हंस-माल, ३७ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)।

हंसिनि, हंसिनी—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० हंसी] हंसी। "न्याय मै हंसिनी ज्यों बिलगावहु दूध को दूध औ पानी को पानी"—प्रा० ना०।

हँसिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) लोहे का एक औजार जिससे खेत की घास या साग आदि काटी जाती है, दराती (प्रान्ती०)।

हंसी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हंस की मादा, हंसिनी, २२ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

हँसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हँसना] हँसने की क्रिया या भाव, हास, निंदा, बदनामी। "हँसी करैहौ पर पुर जाई"—[रामा०]। **—खुशी**—(स्त्री०) राजी-खुशी प्रसन्नता। **—खेल**—(पु०) तमाशा, साधारण या कम काम। विनोद, कौतुक, दिल्लगी, सहज या साधारण बात। **—ठट्ठा**—(पु०) मजाक, दिल्लगी, आनंद, विनोद, क्रीड़ा। "कथा औ पुराण हँसी ठट्ठा में उड़ाय देत"—[रफु०]। **—दिल्लगी**—उपहास, विनोद, मजाक। **—मजाक**—उपहास, दिल्लगी, विनोद। **मुहा०—(किसी पर या किसी बात पर)—आना**—मूर्खतापूर्ण तथा कौतुक या हास समझना, बच्चों का खेल या मजाक-सा ज्ञात होना। **—छूटना**—हँसी आना, कौतुक या विनोद-सा सरल और सुनने में प्रिय लगना, मूर्खता जान पड़ना। विनोद, दिल्लगी। **—समझना या—खेल समझना**—आसान, सरल या साधारण बात समझना। **—में उड़ाना (टालना)**—साधारण कौतुक या विनोद समझ टालना, परिहास की बात कहकर टाल देना। **—में कहना**—मजाक या विनोदार्थ कहना। **—करना (कराना)**—उपहास या निंदा करना (कराना)। **—में लेना या ले जाना**—किसी बात को मजाक समझना, लोक-निंदा, अनादर, उपहास, अनादर-सूचक हँसी। **—में टालना**—साधारण तथा मजा के रूप में लेना, विनोदार्थ समझ टाल देना। **—उड़ाना**—उपहास करना, व्यंगपूर्वक निंदा करना।

हँसुआ, हँसुवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हंसिया] हँसिया, दराँती।

हँसुली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हँसली, [हँसुरी (दे०)]।

हँसोड़, हँसोर*—(वि०, दे०) [हि० हंसना+ओड़ प्रत्य०] मजाकिया, दिल्लगीबाज, मसखरा, हँसी-ठट्ठा करने वाला, विनोद-प्रिय, विनोदी।

हँसौहाँ*—(वि०, दे०) [हि० हसना] कुछ हसी-युक्त, हँसने का स्वभाव रखने वाला, दिल्लगी या मजाक से भरा, ईषद् हास-युक्त। [**हँसौंही** (स्त्री०)]।

हइ—(संज्ञा, पु०, दे०) हय, घोड़ा।

हई—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हयन] अश्वारोही, घोड़े का सवार। (संज्ञा, स्त्री०) [हि० ह] आश्चर्य। (क्रि० अ० अव०) है, अही (ग्रा०)।

हउँ*—(क्रि० अ०) [सर्वं० हिं०, हूँ] (हिं० हौं) मैं, हौं।

हओ—(अव्य०, ग्रा०) हाँ, स्वीकार सूचक अव्यय।

हक—(वि०, अ०) सत्य, सच, उपयुक्त, उचित, ठीक, न्याय। (संज्ञा, पु०) किसी वस्तु को काम में लाने या रखने या लेने का अधिकार, स्वत्व, कोई काम करने या कराने का इख्तियार, हक (ग्रा०)।—**दार**–(पु०) अधिकार या स्वत्व रखने वाला। [**हकदारी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**नाहक**–(अव्य०) बलात, धींगा-धींगी, जबरदस्ती, अकारण, निष्प्रयोजन, फजूल, व्यर्थ। **मुहा०—में** –विषय में, पक्ष में, कर्त्तव्य, धर्म, फर्ज।—**अदा या पूरा करना**–कर्त्तव्य पालन करना। पाने, रखने या काम में लाने का, न्याय से जिस पर अधिकार हो वह वस्तु, निश्चित रीति से मिलने वाला धन दस्तूरी, उचित पक्ष या बात, न्याय पक्ष।—**पर होना (रहना)**–ठीक बात को हठ या आग्रह करना, खुदा, परमेश्वर (मुस०)।

हकबकाना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु०, हक्का-बक्का] घबरा जाना, हक्का-बक्का हो जाना, भौंचक रह जाना।

हकला—(वि०, दे०) [हिं० **हकलाना**] हकलाने या रुक रुक कर बोलने वाला।

हकलाना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० हक] रुक-रुक या अटक कर बोलना।

हकलाहट—(संज्ञा, स्त्री०) हकलाने का भाव।

हकेशुफा—(संज्ञा, पु०, अ०) गाँव के हिस्सेदारों को वहाँ की जमींदारी के मोल लेने में औरों से अधिक अधिकार या हक।

हकीकत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) असलियत, सचाई, तत्व, ठीक बात, तथ्य, सत्य बात, असली हाल। "जब अपनी न जाहिर हकीकत हुई"। **मुहा०—में (दरहकीकत)**–वास्तव में, सचमुच।—**खुलना (का पता लगना)**–असली बात का पता लगना।

हकीम—(संज्ञा, पु०, अ०) आचार्य्य, विद्वान्, वैद्य, चिकित्सक (यूनानी रीति का)। "हकीमे सखुन बर जबाँ आफरीं"—स०।

हकीमी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० हकीम + ई प्रत्य०] हकीम का पेशा या काम, यूनानी चिकित्सा-शास्त्र।

हकीयत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) वह वस्तु जिस पर अधिकार स्वत्व या हक हो, [हक्रियत (दे०)]।

हकीर—(वि०, अ०) तुच्छ, नाचीज, नगण्य।

हकूमत†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० हुकूमत] बादशाही, शासन।

हक्काक—(संज्ञा, पु०, दे०) नग को काटने, सान पर चढ़ाने और जड़ने आदि का काम करने वाला, जड़िया।

हक्का, बक्का—(वि०, दे०) [अनु० **एक, धक**] विकल, घबराया हुआ, विस्मित, अचंभित, भौंचक। **मुहा०—रहना (आत्म-विस्मृत होजाना)**– विस्मित या विकल हो जाना।

हक्रियत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हक।

हगना—(क्रि० स०, दे०) [सं० भग] झाड़ा या पखाना फिरना, मल त्याग करना, झखमार कर देना। [**हगाना**—(स० रूप)], [**हगवाना**—(प्रेरणा० रूप)]।

हगनौटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हगने की भूमि, झाड़े की जगह।

हगास—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० हगना + आस प्रत्य०] मल त्याग की इच्छा, उसका वेग।

हगोड़ा—(वि०) बार-बार मल-त्याग करनेवाला।

हचक—(संज्ञा, स्त्री०) झटका, धक्का, झोंका।

हचकना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० **हचका**] धक्का देकर किसी वस्तु को हिलाना। [**हचकाना**—(स० रूप)] [**हचकवाना**—(प्रेरणा० रूप)]।

हचका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० **हचकाना**] गाड़ी आदि के हिलने का धक्का।

हचकाना—(क्रि० स०) धक्के के साथ हिलाना।

हचकोला, हचकोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० हचका] खाट, गाड़ी आदि के हिलने-डोलने का धक्का।

हचना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० **हिचकना**] हिचकना, डरना।

हचरमचर—(संज्ञा, पु०, दे०) **हिलन-डोलन**, ढीलापन, विवाद, आगा-पीछा, सोच-विचार, अटकना।

हचहचाना—(क्रि० अ०, दे०) हिलना, डोलना।

हज—(संज्ञा, पु०, अ०) मुसलमानों का मक्के जाना और काबे के दर्शन करना, [**हज्ज** (दे०)]।

हजम—(संज्ञा, पु०, अ०) पेट में भोजन के पचने की क्रिया या भाव, पाचन। (वि०) पेट में पचा

हुआ, अधर्म या अन्याय से अधिकार किया हुआ, अपनाया या लिया हुआ।

हजरत—(संज्ञा, पु०, अ०) महापुरुष, महात्मा, महाशय, चालाक, खोटा या बुरा मनुष्य (व्यंग्य०)।

हजामत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बाल बनाने का काम, चौर, सिर और दाढ़ी के बढ़े हुए और काटने या बनवाने योग्य बाल। **मुहा०—बनाना**-दाढ़ी या सिर के बाल साफ करना या काटना, लूटना, धन छीन लेना, मारना-पीटना, मूँड़ लेना, ठग लेना। **उलटे छुरे से—बनाना (मूँड़ना)**-बुरी तरह किसी को लूटना या धनापहरण करना, मारना, पीटना। अच्छी तरह ठगना।

हजार—(वि०, फ़ा०) सहस्र, दस सौ, अनेक, बहुत से। (संज्ञा, पु०) दस सौ की गिनती या संख्या या अंक (१,०००)। (क्रि० वि०) कितना ही, चाहे जितना अधिक, [हजार (दे०)]।

हजारा—(वि०, फ़ा०) सहस्र दल वाला पुष्प, हजार या अधिक पंखड़ी वाला फूल। (पु०) फौवारा, फुहारा।

हजारी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) एक हजार सिपाहियों का सरदार, वर्ण संकर, दोगला, [हजारिया (दे०)]।

हजूर—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हुजूर] किसी बड़े पुरुष की संनिकटता, समक्षता, राजा या हाकिम का दरबार, कचहरी, बहुत बड़े लोगों का संबोधन।

हजूरी—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हुजूर] नौकर, दास, दरबारी, मुसाहब, राजा का निकटवर्ती अनुचर। (वि०) हुजूर का, सरकारी।

हजो—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० हज्ज] निंदा।

हज—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हज] मक्के जा कर काबे के दर्शन करना।

हज्जाम—(संज्ञा, पु०, अ०) नापित, नाई, नाऊ, हजामत बनाने वाला, नउवा (ग्रा०)।

हटक, हरक*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हटकना] वारण, वर्जन। **मुहा०—मानना**-रोकने या मना करने पर किसी काम को न करना। गायों के हाँकने की क्रिया या भाव।

हटकन, हरकन—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हटकना] वारण, वर्जन, गायों के हाँकने की क्रिया या भाव, चौपायों के हाँकने की छड़ी या लाठी।

हटकना, हरकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हट—दूर करना] रोकना, निषेध या मना करना, चौपायों को किसी ओर जाने से रोक कर दूसरी ओर ले जाना। "तुम हटकहु जो चहहु उबारा"—[रामा०]। **मुहा०—हटकि**—बलात्, अकारण।

हटतार†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हरताल] हरताल, हड़ताल। (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हठतार] माला का सूत।

हटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० घट्टन] खिसकना, टलना, सरकना, पीछे सरकना, एक स्थान से दूसरे पर चला जाना, न रह जाना, भागना, जी चुराना, सम्मुख से दूर होना या चला जाना, दूर होना, टलना, स्थिर या दृढ़ न रहना, (बात पर)। *†(क्रि० स०, दे०) [हि० हटकना] निषेध या मना करना। [**हटाना, हटावना** (स० रूप)]। [**हटवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

हटवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हाट] दूकानदार, बनियाँ, बाजार।

हटवाई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हाट+वाई प्रत्य०] सौदा खरीदना या बेचना, क्रय-विक्रय। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हटवाना] हटाई की क्रिया, भाव या मजदूरी।

हटवाना—(क्रि० स०) [हि० हटाना] हटाने का कार्य, किसी दूसरे से कराना। [**हटवैया** (वि० दे०)]।

हटवार*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हाट+वारा या वाला प्रत्य०] बाजार में सौदा बेचने वाला, दूकानदार।

हटवैया—(वि०) हटाने वाला।

हटाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हटना] टालना, खिसकना, सरकना, दूर करना, नियत स्थान पर न रहने देना, एक स्थान से दूसरे पर करना, भगाना, जाने देना, आक्रमण से भगाना।

हटिया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हट्ट] बाजार, हाट। "गरम कचैलों तोरि हटिया रहैगी यह"—[स्फु०]।

हटौती—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० हटाना] शरीर की गठन।

हट्ट—(संज्ञा, पु०, सं०) बाजार, दूकान। **चौहट्ट**—(पु०) चौक-बाजार। "चौहट्ट हाट बाजार बीथी चारु पुर बहुविधि बना"—[रामा०]।

हट्टा कट्टा—(वि०, दे०, यौ०) [सं० हृष्ट+काष्ठ] मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट। [**हट्टी-कट्टी** (स्त्री०)]।

हट्टी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० हाट] दूकान।

हठ—(संज्ञा, पु०, सं०) जिद, आग्रह, टेक, किसी बात के लिये रुकना या अड़ना। [**हठी**, **हठीला** (वि०)]। "दसकंठ रे सठ छोड़ दे हठ बार बार न बोलिए"—[रामचं०]। "हठ-वश सब संकट सहे, गालव नहुष नरेश"—[रामा०]। —**धर्म**-(पु०) सत्यासत्य का विचार छोड़ अपनी ही बात पर दुराग्रह, कट्टरपन।—**धर्मी**-(स्त्री०) अपनी ही बात पर जमे या अटल रहना, सत्यासत्य, योग्यायोग्य या धर्माधर्मादि का कुछ विचार न करना, अपने ही मत या सम्प्रदाय की बात पर अड़ने की प्रवृत्ति, दुराग्रह, अड़ा रहना, कट्टरपन।—**योग**-(पु०) नेती धोती कठिन आसन और मुद्रादि जैसे कठिन साधनों से शरीर के साधने का योगसम्बन्धी एक विधान। **मुहा०**—**पकड़ना (करना)**-जिद करना।—**रखना**-जिसके लिए अड़ना उसे पूरा करना या लेना, जिद पूरी करना, जिसके हेतु किसी की हठ हो उसे वही देना। "हठ राखै नहिं राखै प्राना"—[रामा०]। —**में पड़ना (आना)**-जिद करना।—**माँड़ना**-हठ ठानना, प्रण करना। अचल संकल्प, दृढ़ प्रतिज्ञा, जबरदस्ती, बलात्कार।

हठना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० हठ] जिद या हठ करना या पकड़ना, दुराग्रह करना, दृढ़ प्रतिज्ञा या संकल्प करना। **मुहा०**—**हठ कर**-जबरदस्ती, बलात्। "हौ हठती पै तुम्है न हठौती"—नरो०। "हठि राखै नहिं राखै प्राना"—[रामा०]। [**हटाना** (स० रूप)], [**हटवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

हठात्—(प्रत्य०, सं०) हठयुक्त, हठपूर्वक, दुराग्रह के साथ, जबदरस्ती, बलात, अवश्य।

हठाना—(क्रि० स०, दे०) हठ करने में प्रवृत्त करना, [हठावना (दे०)]।

हठी—(वि०) [सं० हठिन्] जिद्दी, टेकी, हठ करने वाला। "हठी दसकंधर न टेक निज त्यागैगो"—[स्फु०]।

हठीला—(वि०, दे०) [सं० हठ+ईला प्रत्य०] हठी, जिद्दी, टेकी, दुराग्रही, हठ करने वाला, दृढ़प्रतिज्ञ, बात का पक्का या धनी, संग्राम में अटल, धीर। [**हठीली** (स्त्री०)]। "लेत हरि गोरस हठीलो हरि तेरो री"—शि० गो०।

हठौना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० हठ] हठावना, सठ कराना। "हौ हठती पै तुम्हें न हठौती"—नरो०।

हड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हरीतकी] हरड़, एक बड़ा वृक्ष जिसके फल औषधि के काम आते हैं, हर, हर्रं, हड़ जैसा एक गहना, लटकन। (पु०) हाड़ का समास-रूप।—**कंप**-(पु०) बड़ी हलचल, खलभल, तहलका, [हलकंप (दे०)]। **मुहा०**—**कंप मचना (होना)**-हलचल होना। —**गिल्ला**,—**गीला**-(पु०) बगुले की जाति का एक पक्षी।—**जोड़**—(पु०) एक प्रकार की औषधि-लता, कहते हैं कि इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाती है।

हड़क—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) पागल कुत्ते के काटने पर पानी के हेतु अति आकुलता, किसी पदार्थ के पाने की बड़ी धुन, गहरी अभिलाषा, उत्कट इच्छा, धुन, रट, झक।

हड़कना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० हड़क] तरसना, अति उत्कंठित होना, किसी वस्तु के न मिलने से अति दुखी होना, हुड़कना (ग्रा०)।

हड़काना—(क्रि० स०, दे०) हुलकारना, लहकारना, किसी वस्तु के न मिलने का दुःख होना, तरसाना, किसी वस्तु के अभाव का दुःख देना, तंग करने के लिये किसी को किसी के पीछे-पीछे लगाना।

हड़काया—(वि०, दे०) [हिं० हड़क] बावला, पागल (कुत्ता)।

हड़ताल, **हरताल**—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हट्ट+ताला] किसी बात के प्रति असंतोष प्रदर्शनार्थ बाजार या अन्य कारबार बन्द कर देना। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) हरताल, पीले रंग की एक खनिज वस्तु।

हड़ना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० धड़ा] तौल में जाँचा जाना।

हड़प—(वि०, अनु०) पेट में डाला हुआ, निगला या लीला हुआ, छिपाया या गायब किया हुआ।

हड़पना—(क्रि० स०) [अनु० हड़प] खा जाना निगल या लील जाना, छीन या उड़ा लेना, अनुचित रीति से ले लेना।

हड़बड़—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) हरबर, उतावली या जल्दबाजी, गतिविधि।

हड़बड़ाना—(क्रि० अ०, अनु०) उतावली, जल्दी या शीघ्रता करना, आतुर होना, [हरबराना (दे०)]। (क्रि० स०, दे०) किसी को जल्दी करने को कहना।

हड़बड़िया—(वि०) [हि० हड़बड़ी+इया प्रत्य०] आतुर, हड़बड़ी करने वाला, जल्दबाज, उतावला, हरबरिया।

हड़बड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) उतावली, जल्दी, जल्दी के मारे घबराहट, आतुरता, हरबरी।

हड़हड़ाना—(क्रि० स०, अनु०) उतावली करके या जल्दी मचाकर दूसरे को घबराना।

हड़ावरि, हड़ावल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हाड़+अवलि सं०] हड्डियों की माला या समूह, हड्डियों का ढाँचा, ठठरी, कंकाल।

हड्डा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हडिचका] बर्रे, भिड़, मधु मक्खी जैसा एक कीड़ा, बड़ी हड्डी।

हड्डी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० अस्थि] हाड़, अस्थि, जीवों के देह की मूल कड़ी वस्तु जिससे देह का ढाँचा बनता है। मुहा०—**गढ़ना या तोड़ना**–बहुत मारना, पीटना।—**निकल आना (रह जाना)**–शरीर का अति दुबला होना। (**किसी की)—चूसना**–सर्वस्व लेकर और छीनना। **पुरानी हड्डी**—पुराने मनुष्य का सुदृढ़ शरीर। कुटुम्ब, वंश, कुल, खानदान।

हत—(वि०, सं०) मारा या पीटा हुआ, वध किया हुआ, ताड़ित, आहत, खोया या गँवाया हुआ, विहीन, रहित, जिस पर या जिसमें ठोकर या धक्का लगा हो, नष्ट-भ्रष्ट किया या बिगड़ा हुआ, ग्रस्त, पीड़ित, गुणित, गुणा किया हुआ (गणि०)।—**दैव**–(वि०, सं०) अभागा, कमबख्त, भाग्यहीन, बदकिस्मत, हत-विधि।—**प्रभ**–(वि०) [सं० हत+प्रभा] कांति या प्रभाहीन, निष्प्रभ।—**बुद्धि**–(वि०) बुद्धि रहित, हतधी, निर्बुद्धि, बे अक्ल, मूर्ख।—**भाग**–(वि०) हतभाग्य, जिसका भाग हर लिया गया हो।—**भागी**–(वि०) बद-किस्मत, कमबख्त, अभागा, भाग्यहीन, हतभाग्य [**हतभागिनि, हतभागिनी** (स्त्री०)]।—**भाग्य**–(वि०) भाग्यहीन, अभागा, बदकिस्मत, [हतभाग (दे०)]। "हतभाग्य हिन्दू जाति तेरा पूर्व गौरव है कहाँ"—मैथिली०।

हतक—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बेइज्जती, निरादर, अप्रतिष्ठा, हेठी। "अब पापी दोनौ चढ्यो हतक मनोजहिं दाव"—मति०।—**इज्जती**–(स्त्री०) बेइज्जती मान-हानि, अप्रतिष्ठा।

हतना—(क्रि० सं०, दे०) [सं० हत+ना प्रत्य०] मार डालना, वध करना, मारना-पीटना, न मानना, न पालना। "तदपि हतौं मोहिं राम दुहाई"—[रामा०]।

हतवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हतना] मरवा डालना, मरवाना, वध कराना।

हता*†—(क्रि० स०) [होना का भूत०] था।

हताना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हतना] मारना, मार डालना, बधाना, बध कराना।

हताभा—(वि०, यौ०, सं०) हतप्रभ, निष्प्रभ।

हताश—(वि०, यौ०, सं०) निराश, नाउम्मेद। "जनक हताश ह्वै कह्यो यौं लखि भूपन को"—मन्ना०।

हताहत—(वि०, यौ०, सं०) मारे गये और घायल।

हतोत्साह—(वि०, यौ०, सं०) जिसमें कुछ करने का उत्साह न रह गया हो।

हत्थ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हाथ, सं० हस्त] हाथ।

हत्था—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हाथ या हत्थ] दस्ता, मूठ, अस्त्रादि का वह भाग जो हाथ में रहता है, बेंट, हथेरा, हाथा, केले के फलों की घौद। खेत की नालियों का पानी उलचने का लकड़ी का बल्ला।

हत्थि—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हस्ती] हाथी।

हत्थी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० हाथ, हत्था] औजार या हथियार की बेंट, मूठ, दस्ता। (पु०, दे०) हाथी।

हत्थे—(क्रि० वि०, दे०) [सं० हस्त, हि० हत्थ, हाथ] हाथ में। मुहा०—**लगना या (चढ़ना)**–प्राप्त होना, हाथ में आना, वश होना।—**पर काढ़ना**–प्राप्ति के समय बाधा डालना।

हत्या—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) मार डालने की क्रिया, खून, बध। "गोहत्या ब्रह्महत्या च"—[स्फु०]।—**कांड**–(संज्ञा, पु०) ऐसा झगड़ा या उपद्रव, जिसमें कि कई खून किया गया हो। मुहा०—**लगना**—किसी के मार डालने का पाप लगना, बध का दोष लगना। झंझट, उपद्रव, बखेड़ा।—**चढ़ना (सवार होना)**–बध करने को प्रवृत्ति जगना।

हत्यार, हत्यारा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हत्या + कार] बध या हत्या करने वाला, बधिक, खूनी, पापी। [हत्यारिन, हत्यारिनी (स्त्री०)]।

हत्यारी—(संज्ञा, स्त्री०) [हत्यारा] प्राण लेने बध या हत्या करने वाली, हत्या का पाप, वध करने का दोष, हत्यारे का काम, हत्या की प्रवृत्ति। "हत्यारी दुसकर्म है, गरुड़ मुख्य तेहि कीन्ह"—तुलसी।

हथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० हाथ, सं० हस्त] हाथ का संक्षिप्त रूप (समास में)।—**कंडा**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० हाथ + कांड सं०] हस्त-कौशल, हस्तलाघव, हाथ की सफाई, चालाकी का ढंग, गुप्त-चाल।—**कड़ी**-(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० हाथ + कड़ी] कैदी या बंदी के हाथ में पहनाने का लोहे का कड़ा, [हतकड़ी (दे०)]।—**फूल**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० हाथ + फूल] हथेली के पीछे पहनने का एक गहना, हथसाँकर, हथसंकर (प्रान्ती०)।—**फेर**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० हाथ + फेरना] प्यार से किसी के देह पर हाथ फेरने का कार्य्य, दूसरे का धन सफाई से उड़ा लेना, थोड़े दिनों के हेतु लिया या दिया जाने वाला ऋण-धन, हथ उधार। [**हथफेरी** (संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०)]।—**लेवा**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० हाथ + लेना] विवाह में वर का अपने हाथ में कन्या का हाथ लेना, पाणिग्रहण।—**बाँस**-(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [हिं० हाथ + बाँस] नाव चलाने का बाँस या पतवार, डाँड आदि सामान।—**साँकर**-(पु०) हथफूल (भूषण)।—**सार**-(स्त्री०) फ़ील-खाना, हाथी के रहने का घर या स्थान।

हथनाल—(संज्ञा, पु०, सं०) [हिं० हाथी + नाल] हाथी पर चलने वाली तोप, गज नाल।

हथनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० हाथी + नी प्रत्य०] हाथी की मादा, [हथिनी (दे०)]।

हथवाँसना—(क्रि० स०, दे०) हाथ में लेना, प्रयोग करना, मिल कर पकड़ना।

हथवाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० हाथी + वाला] महावत।

हथाहथी*†—(अव्य०, दे०) [हिं० हाथ] हाथों हाथ, तुरंत, शीघ्र, जल्दी।

हथिनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हस्ती] हाथी की मादा, हस्तिनी, [हथनी (दे०)]।

हथिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हस्त] हस्त नक्षत्र। हाथी। "हथिया चलै गिरंदी चाल"—आल्हा०।

हथियाना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० हाथ + आना या याना प्रत्य०] अपने आधीन या वशीभूत करना, ले लेना, हाथ में करना, धोखे से ले लेना, उड़ा लेना, हाथ मे पकड़ना, हाथ लगाना।

हथियार—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० हथियाना] औजार, शस्त्रास्त्र, तलवार, भाला, अस्त्र, किसी कार्य का साधन, [हथ्यार (दे०)]। **मुहा०—लेना (उठाना, गहना)**—मारने के लिए अस्त्र हाथ में लेना, लड़ने को तैयार होना। **हाथ में—होना**-युद्ध का साधन-सामान होना, बल होना। "लड़ते हैं और हाथ में हथियार भी नहीं"।—**बंद**-(वि०) [हिं० हथियार + फ़ा० बंद] सशस्त्र, जो हथियार बाँधे हो।

हथेरी, हथेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हस्त तल] करतल, कलाई से आगे हाथ का अँगुलियों वाला भाग। **मुहा०—में आना (होना)**-प्राप्त होना, मिलना, सुलभ होना, आधीन या वश में होना।—**पर जान (होना)**-जान जाने के भय की स्थिति होना।—**पर जान लेना**-मरने से न डरना।—**पीटना-बजाना**-ताली बजाना।

हथेव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० हाथ] हथौड़ा, हथौड़ी।

हथोरी*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० हथेली] हथेली, गदोरी (प्रान्ती०)।

हथौटी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० हाथ + औटी प्रत्य०] हस्त-कौशल, किसी काम में हाथ डालने की क्रिया या भाव, किसी काम में हाथ लगाने का ढंग।

हथौड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हाथ + औड़ा प्रत्य०] लोहे का वह औजार जिससे कारीगर लोग किसी धातु के टुकड़े को बढ़ाते या गढ़ते है, मारतौल (प्रान्ती०), कील खूँटी आदि के गाड़ने का हथियार। [**हथौड़ी** (स्त्री० अल्पा०)]।

हथौड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० हथौड़ी] छोटा हथौड़ा।

हथ्याना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० हथियाना] छीन लेना, हाथ में करना, गायब करना।

हथ्यार*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० हथियार] हथियार, औजार, अस्त्र, शस्त्र। "डारि डारि हथ्यार, सूरज प्राण लै लै भज्जही"—[रामचं०]।

हद—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मर्य्यादा, सीमा, किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई आदि की अंतिम पहुँच [हद्द (दे०)] । **मुहा०—बाँधना**-सीमा नियत या निर्धारित करना । " बाँधी हद हिंदुवाने की"—भूषण । किसी बात का नियत किया गया अंतिम परिणाम । **मुहा०—से ज्यादा**-बेहद, अत्यंत, अत्यधिक ।**—या हिसाब नहीं**-अत्यन्त, बहुत अधिक ।**—दर्जे का**-सब से अधिक, बहुत अधिक । उचित मर्य्यादा या सीमा को पहुँची हुई कोई चीज ।

हदस—(संज्ञा, स्त्री०) घबराहट, भय जिसमें (विशेषकर) बच्चे स्तब्ध हो उठते हैं ।

हदसना—(क्रि० अ०) भयभीत होना, घबराना, डरना, सन्न रहना ।

हदीस—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मुसलमानों का स्मृति जैसा धर्म्म ग्रन्थ जो मुहम्मद साहिब की बातों का संग्रह है ।

हद्द—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हद, सीमा ।

हनन—(संज्ञा, पु०, सं०) वध करना, मार डालना, आघात करना, मारना-पीटना, गुणा करना, (प्रान्ती०) [**हननीय, हनित, हन्य** (वि०)] ।

हनना*†—(क्रि० स०, दे०) [सं० हनन] आघात या वध करना, मार डालना, मारना-पीटना, प्रहार करना, ठोंकना, लकड़ी से ठोंक या पीटकर बजाना ।

हनावना—(क्रि० स०) [हि० हनना का प्रेरणा० रूप] हनने का काम किसी दूसरे से कराना । (क्रि० अ०, दे०) अन्हाना, नहवाना, नहलाना, स्नान कराना, [अन्हवाना] ।

हनाना—(क्रि० अ०, दे०) स्नान करना, नहाना ।

हनिवंत, हनुवंत*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हनुमत्] हनुमान्, महावीर । " जेहि गिरि चढ्यो जाई हनुवता "—तुलसी० ।

हनुँवान-हनुवान—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हनुमत] हनुमान्, महावीर ।

हनु—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) चिबुक, ठोढ़ी, ठुड्डी, जबड़ा, दाढ़ की हड्डी ।

हनुमंत, हनुवंत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हनुमत] हनुमान्, महावीर । " हनुमंत ये जिन मित्रता रवि पुत्र सों हम सों करी "—[रामा०] ।

हनुमान्—(वि०, हनुमत) बड़े जबड़े या दाढ़ वाला, ठुड्डी वाला, अति बड़ा या भारी शूरवीर । (संज्ञा, पु०) पवनात्मज, मारुति, पंपा के एक अति वीर बंदर जो सुग्रीव के मंत्री थे जिन्होंने राम की बड़ी सहायता और सेवा की, महावीर । " ऐसहिं होय कहा हनुमाना "—[रामा०] ।

हनूफाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हनु + फाल हि०] बारह मात्राएँ और अंत मे गुरु लघु वाला एक मात्रिक छंद (पिं०)]

हनूमान्—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हनुमत] हनुमान्, महावीर । " हनूमान् तब गरजि कै, लीन्हेसि विटप उपारि "—[रामा०] ।

हनोज—(अव्य०, फ़ा०) अभी तक, अभी ।

हप—(संज्ञा, पु०, अनु०) जल्दी से किसी वस्तु को मुख मे रखकर होंठ बंद करने का शब्द । **मुहा०—कर जाना**-शीघ्र खा जाना ।

हपहपाना—(क्रि० अ०, दे०) हाँफना ।

हफ़्ता—(संज्ञा, पु०, अ०) सप्ताह, (फ़ा०) हप्ता ।

हबकना†—(क्रि० अ०) [अनु० हप] खाने या काटने को शीघ्र मुख खोलना । (क्रि० स०, दे०) दाँत से काटना ।

हबड़ा—(वि०, दे०) फूहड़ । बड़े दाँतों वाला ।

हबर-हबर—(क्रि० वि०, दे०) [अनु० हड़बड़] उतावली या शीघ्रता, जल्दी-जल्दी, हड़बड़ी से, शीघ्रता के कारण उचित रीति से नहीं ।

हबराना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हड़बड़ाना] शीघ्रता या उतावली करना, हड़बड़ाना ।

हबशी—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हब्श देश का अति काला कुरूप निवासी, [हबसी (दे०)] ।

हबिला—(वि०, दे०) बड़दन्ता, जिसके आगे के दाँत हों ।

हबूब—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हबाब] पानी का बुलबुला, गुल्ला, झूठ बात ।

हबेली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० हवेली] बड़ामहल ।

हब्बा-डब्बा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हाँफ + डब्बा अनु०] बच्चों की डब्बे की बीमारी जिसमें जोर-जोर से साँस और पसली चलती है ।

हब्स—(संज्ञा, पु०, अ०) कैद ।

हम—(सर्व०, दे०) [सं० अहम्] उत्तम पुरुष एक वचन मैं सर्वनाम का बहुवचन रूप । (संज्ञा, पु०) अहंकार, घमंड, हम का भाव । (अव्य०,

फ़ा०) संग, साथ, तुल्य, समान, बराबर। "जो हम निदरहिं विप्र बदि, सत्य सुनहु भृगुनाथ"—[रामा०]। (अव्य० फ़ा०) समान रूप से एकसा। —जोली-(पु०) संगी-साथी, मित्र, सखा, सहयोगी, सम वयस्क।—दर्द-(पु०) दुःख में सहानुभूति रखने वाला। "कोई हमदर्द नहीं, यार नहीं, दोस्त नहीं"—[स्फु०]।—दर्दी-(स्त्री०) समवेदना सहानुभूति।—राह-(अव्य०, फ़ा०) कहीं जाने में किसी के संग या साथ में जाना, साथ संग। "आप के हमराह काबे जायँगे ज्यारत को हम"—[स्फु०]।—राही-(पु०) साथी, संगी।—वार-(वि०) सपाट, समतल, बराबर सतह-वाला, समधरातल।—सर-(संज्ञा, पु०, वि०, फ़ा०) सदृश, समान, बल, पद गुणादि में सम व्यक्ति, तुल्य। "कोई हमसर है नहीं उसका बताऊँ क्या तुझे"—[स्फु०]।—सरी-(स्त्री०) समता, बराबरी, तुल्यता। "किसी की मजाल है जो करे उसकी हमसरी।"—हमाव-(पु०) यह हमारा है, वह पराया है इसका भाव, अपना-पराया।—हमी-(पु०) स्वार्थपरता, अहंकार, अपने-अपने लाभ का उतावली से उपाय।

हमता*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हम+ता प्रत्य०] अहंकार, घमंड, अहंभाव, हमत्व।

हमारा†—(सर्व०, दे०) [**हमरो** (ब्र०)] [**हमारी** (स्त्री०)]।

हमल—(संज्ञा, पु०) [सं० गर्भ] स्त्री के पेट का बच्चा, स्त्री के पेट में बच्चे का होना। "रिजक देता है हमल में वह बड़ा रज्जाक है"—[स्फु०]।

हमला—(संज्ञा, पु०, अ०) धावा, चढ़ाई युद्ध-यात्रा, प्रहार, आक्रमण, युद्धार्थ चढ़ दौड़ना, विरोध में कही गई बात, मारने को झपटना, वार।

हमाम—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हम्माम] स्नानागार।

हमार, हमारा—(सर्व०, दे०) [हि० हम+आर, आरा प्रत्य०] हम का संबंध कारक में रूप, [**हमारो** (ब्र०)], हमरा (ग्रा०)। "बचन हमार मानि गृह रहहू", "कहि प्रताप बल-रोष हमारा"—[रामा०]। (हमारि, हमारी, हमरी ग्रा०)।

हमाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हम्माल] बोझा उठाने या वहन करने वाला, मजदूर, कुली, रक्षक।

हमा, हमी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हम] स्वार्थपरता, अहंकार, घमंड, निज स्वार्थ या लाभ का आतुर प्रयत्न।

हमीर—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हम्मीर] एक मिश्रित राग (संगी०), रणथंभौर के राजा हम्मीर-देव (इति०)। "तिरिया-तेल, हम्मीर-हठ, चढ़ै न दूजी बार।

हमें—(सर्व०, दे०) [हि० हम] हम का कर्म और संप्रदान कारक में रूप, हमको, हमारे हेतु या लिए हमहिं (अव०), [हमें (दे०)]।

हमेल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० हमायल] चाँदी सोने के सिक्कों या मोहरों का हार जिसे गले में पहनते है, हुमेल।

हमेव*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अहम्+एव] हमी, अहंकार, घमंड, अहमेव, अहंमन्यता।

हमेशा—(अव्य०, फ़ा०) संतत, सदा, सर्वदा, निरंतर, सदैव, सब दिन या सब काल, सतत, [हमेसा, हमेस (दे०)]।

हमेस, हमेसा*—(अव्य०, दे०) [फ़ा० हमेशा] सदा, सर्वदा, सदैव, सब दिन, सब काल।

हमैं*—(अव्य०, दे०) [हि० हम] हमें, हमको, हमारे हेतु, हमहि (अव०) "हमें तुम्हें सरवरि कस नाथा"—[रामा०]।

हम्माम—(संज्ञा, पु०, अ०) उष्ण जल का स्नानागार, नहाने की गर्म कोठरी।

हम्मीर—(संज्ञा, पु०, सं०) रणथंभौर के एक वीर चौहान राजा जो १३०० सं० में अलाउद्दीन के साथ लड़ कर मरे (इति०)। "पै न टरैं हम्मीर हठ"—[स्फु०]।—हठ-(पु०) कठिन, हठ, आग्रह।

हयंद*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० हयेंद्र] बड़ा और बढ़िया घोड़ा।

हय—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्र, अश्व, घोड़ा। "एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्"—सप्त०। ४ मात्राओं का एक छंद (पिं०)। ७ की मात्रा का सूचक शब्द (काव्य०), [**हया हयी** (स्त्री०)]। —ग्रीव-(पु०) विष्णु के २४ अवतारों में से एक अवतार। कल्पान्त में ब्रह्मा की निद्रावस्था में वेद उठा ले जाने वाला एक राक्षस (पुरा०)।—नाल-(स्त्री०) घोड़ों से खींची जाने वाली तोप।—मेध-(पु०) अश्वमेध यज्ञ। "यह होय जो हयमेध तो पूरण मनोरथ होय"—[स्फु०]।—शाला-

(स्त्री०) अश्वशाला, अस्तबल, घुड़सार, [हयसार (दे०)], "बनी विचित्र तहाँ हयशाला"—वासु० ।

हयना*—(क्रि० स०, दे०) [सं० हत+ना प्रत्य०] मार डालना, वध या हिंसा करना, जीव मारना, मारना-पीटना, प्राण लेना, ठोंकना-बजाना, रहने न देना, नष्ट करना, मिटा देना ।

हया—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शर्म, लज्जा, बड़ों का लिहाज । [**हया-शर्म** (यौ०)] ।—**दार**-(पु०) [अ० हया+दार फ़ा०] शर्मिन्दा, लज्जाशील, शर्मदार । [**हयादारी** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

हयात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) जीवन, आयु, ज़िंदगी । **हीन—में**-(यौ०) जीवन काल में । **आबे**—अमृत ।

हर—(वि०, सं०) लूटने, छीनने या हरने वाला, दूर करने या मिटाने वाला, विनाश या वध करने वाला, वाहक, वहन करने या ले जाने वाला । (संज्ञा, पु०, सं०) शंकर जी, शिव जी । "जहँ न जाय मन बिधि हरि हर को"—[रामा०] । बिभीषण का मंत्री एक राक्षस, (भिन्न में) वह संख्या जिससे भाग दिया जावे [**अंश** (विलो०)] । भाजक (गणि०) अग्नि, छप्पय छंद का १० वाँ भेद, टगण का प्रथम भेद । (पिं०) । †(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हल] हल । (वि०, फ़ा०) प्रत्येक, एक-एक ।—**हार**-(पु०) सप ।—**चंद**-(अव्य०, फ़ा०) यद्यपि, अगरचे, कितना ही, बहुत या बहुत बार, हर तरह से । " मैंने समझाया तुम्हे हरचंद पर माने न तुम"—शि० गो० । (संज्ञा, पु०, यौ०, हि०) शिव शीश पर की चंद्रकला, राजा हरिचंद, हरिश्चन्द्र, । **मुहा०—एक**-(**हरेक**)—प्रत्येक, एक एक ।—**खास ओ आम**-सर्व साधारण ।—**रोज**—प्रतिदिन ।—**दम**—(**वक्त**)-सदा, प्रत्येक समय ।—**दिल-अजीज**-सर्व-प्रिय ।

हरउद—(संज्ञा, पु०, दे०) पलने का गीत ।

हरए-हरुए*—(अव्य०, दे०) [हि० हरुवा] रसे रसे, धीरे-धीरे । "ताके भार गरुए भए हरुए धरति पाय"—मति० ।

हरकत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) चाल, गति, क्रिया, चेष्टा, छेड़-छाड़, हिलना-डोलना, नटखटी, दुष्टता । **मुहा० —से बाज न आना**-नटखटी या दुष्टता न छोड़ना ।

हरकना*†—(क्रि० स०, दे०) [हि० हटकना] हटकना, रोकना, मना करना । "तुम हटकहु जो चहहु उबारा"—[रामा०] ।

हरकारा, हरकाला—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) चिट्ठी-रसाँ, डाकिया, दूत । "वैद्य चितेरा, बानियाँ हरकारा और कव्य"—[स्फु०] ।

हरख*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हर्ष] हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता, खुशी । "हरख समय बिसमय करसि कारन मोहि सुनाव"—[रामा०] ।

हरखना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हर्ष, हि० हरख] प्रसन्न होना, हर्षित या मुदित होना, [हरषना (दे०)] । "सुनि हरखा रनिवास"—[रामा०] ।

हरखाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हरखना] हरखना, प्रसन्न होना, हर्षित होना, प्रमुदित होना । "सुनि दससीस बहुत हरखाना"—[स्फु०] । (क्रि० स०, दे०) मुदित या प्रसन्न करना, आनंदित या हर्षित करना ।

हरखित—(वि०, दे०) हर्षित, मुदित, प्रसन्न ।

हरगिज़—(अव्य०, फ़ा०) किसी दशा में भी, कभी, कदापि ।

हरचंदन—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) श्वेत चंदन, मलयाचल-चन्दन ।

हरज—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हर्ज] हर्ज, क्षति, हानि, नुकसान, अड़चन, बाधा ।

हरजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हर्ज] [हर्जा (दे०)], हानि, क्षति, नुक़सान, बाधा, अड़चन ।

हरजाई—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) हर जगह रहने य घूमने वाला, आवारा, बहल्ला (प्रान्ती०) । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [फ़ा० हर+जाया-सं०] कुलटा, स्वैरिणी, व्यभिचारिणी स्त्री ।

हरजाना—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) क्षति-पूर्ति, नुक़सान या हानि का बदला ।

हरट्ट, हरिस्ट—(वि०, दे०) [सं० हृष्ट] हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, मजबूत, दृढ़, [हिरिस्ट] ।

हरण—(संज्ञा, पु०, सं०) लूटना या छीनना, हटाना, चुराना, मिटाना, नाश या दूर करना, संहार करना, विनाश, वहन, ले जाना, भाग देना, बाँटना, घटाना, [हरन (दे०)] । [**हरणीय** (वि०)] ।

हरता—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हर्तृ] हर्त्ता, नाशक, लूटने या छीन लेने वाला, हरने वाला, चुराने वाला ।—**धरता**-(पु०) [सं० हर्तृ धर्तृ—वैदिक] पूर्ण अधिकारी, सब बातों का अधिकार रखने वाला, कर्ताधर्ता ।

हरतार, हरताल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हरिताल] पीले रंग का एक खनिज पदार्थ । "गंधक पारा और हरताल, चूरन बनै दाद को काल" । [स्फु०] । मुहा०—किसी बात पर—लगाना—(फेरना)-रद्द या नष्ट करना, मिटा देना ।

हरद, हरदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हरिद्रा] हरिद्रा, हल्दी, [हर्दी (दे०)] ।

हरदौर, हरदौल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हरिदत्त] ओरछा के राजा जुझारसिंह (सन् १६२६—३५ ई०) के भ्रातृ भक्त अनुज, जिन्हें हरदियादेव या हरदेव भी कहते हैं ।

हरद्वान—(संज्ञा, पु०, दे०) एक पुराना नगर जो तलवार के हेतु विख्यात था ।

हरद्वार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हरिद्वार] एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ गंगा जी पर्वतों से भूमि पर उतरती है, हरिद्वार ।

हरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० हरण] हरण करना, लूटना, छीनना, चुरा लेना, हटाना, उड़ा ले जाना, दूर करना, नाश करना या मिटाना, घटाना, भाग देना । मुहा०—चित्त या मन (हिय-हृदय) हरना-मन लुभाना, चित्ताकर्षित करना, खींचना । प्राण हरना—मार डालना, बहुत दुःख देना । * (क्रि० अ०, दे०) [हि० हारना] हरना । *† (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हरिण] हरिण, मृग [हरिना, हिरना (दे०)] ।

हरनाकुस, हरिनाकुस*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिरण्यकशिपु] दैत्य-राज, हिरण्यकशिपु, प्रह्लाद का पिता ।

हरनाच्छ, हरिनाच्छ†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिरण्याक्ष] हिरण्याक्ष नामक दैत्य, हिरण्यकशिपु का छोटा भाई ।

हरनी—(संज्ञा, स्त्री० दे०) [हि० हिरन] मृगी, छिगारी, हिरन की मादा, हरिनी, हिरनी ।

हरनौटा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हिरन] हिरन का बच्चा, [हिरनौटा, हरिनौटा] ।

हरपा—(संज्ञा, पु०) सिंधौरा, तराजू आदि रखने का छोटा डब्बा जिसे सुनार रखते हैं ।

हरफ़—(संज्ञा, पु०, अ०) वर्ण, अक्षर, [हर्फ हरूफ (दे०)] । मुहा०—किसी पर—आना-दोष या अपराध लगाना, कलंक लगाना ।—उठाना-वर्ण या अक्षर पहिचान कर पढ़ लेना ।

हरफा-रेवड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हरिपर्वरी] कमरख की जाति का एक पेड़ और उसके फल ।

हरबर—(क्रि० वि०, दे०) [सं० शीघ्र, हि० हड़बड़] शीघ्रता, शीघ्र, घबराहट के साथ । "रामकाज को काज जानि तहँ मुनिवर हरबर आयो" —रा० घु० ।

हरबराना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हड़बड़ाना] हड़बड़ाना, शीघ्रता करना, शीघ्रता के कारण घबरा जाना ।

हरबरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) शीघ्रता, आतुरता ।

हरबा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हरबः] औजार, अस्त्र, हथियार ।

हरबोंग—(वि०, दे०, यौ०) [हि० हल+बोंग] लट्ठमार, गँवार, देहाती, अक्खड़, मूर्ख, जड़ । (संज्ञा, पु०) अत्याचार, अँधेर, उपद्रव, कुशासन ।

हरम—(संज्ञा, पु०, अ०) जनानखाना, अंतःपुर । (संज्ञा, स्त्री०, रखेली स्त्री, मुताही, दासी, पत्नी ।—सरा-(पु०) अन्तःपुर, जनानखाना ।

हरमज़दगी-हरामज़दगी—(संज्ञा, स्त्री०) [फ़ा० हरामजादः] नटखटी, बदमाशी, शठता, दुष्टता, शरारत । [हरामज़ादा (वि०)] ।

हरमुष्टा—(संज्ञा, पु०, दे०) हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा, मोटा-ताज़ा, बलवान ।

हरये*—(अव्य०, दे०) [हि० हरुवा] धीरे-धीरे, रसे-रसे, हौले-हौले, हरएँ ।

हरवल*—(संज्ञा, पु०, दे०) [तु० हरावल] सेना का अग्रभाग, वे सिपाही जो सेना में सब से आगे रहते हैं ।

हरवली—(संज्ञा, स्त्री०) [तु० हरावल] फ़ौज की अफ़सरी या सरदारी, सेना की अध्यक्षता ।

हरवा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हार] माला, हार । [हरुवा-हलका (वि०)] ।

हरवाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हड़बड़] शीघ्रता या जल्दी करना, उतावली या आतुरता करना । (क्रि० स०, दे०) [हि० हारना] हारना का प्रेरणा० रूप ।

हरवाह, हरवाहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हलवाह] हल चलाने या जोतने वाला । [हरवाहिन (स्त्री०)], [हरवाही (संज्ञा, स्त्री०)] ।

हरष*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हर्ष] आनंद, प्रमोद, खुशी, सुख, मोद, प्रसन्नता, [हरख

(दे०)]। "सिय-हिय हरष न जाय कहि"—[राम०]। (संज्ञा, पु०, दे०) हरषन, हर्षण (सं०)।

हरषना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हर्ष+ना प्रत्य०] प्रसन्न या हर्षित होना, मुदित होना, आनंदित होना, [हरखना (दे०)]। "हरषि सुरन दुंदुभी बजाई"—[रामा०]।

हरषाना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हरष+आना प्रत्य०] प्रसन्न या हर्षित होना, खुश होना, [हरखाना (दे०)] (क्रि०, स०) हर्षित या प्रसन्न करना।

हरषित—(वि०, दे०) [सं० हर्षित] हर्षित, प्रसन्न, मुदित। "हरषित भई सभा सुनि बानी"—[स्फु०]।

हरसना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हरषना] प्रसन्न या हर्षित होना, मुदित होना। [**हरसाना हरसावना** (स० रूप)]।

हरसिंगार—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० हार+सिंगार] परजात (प्रान्ती०), नारंगी रंग की डाँड़ी और ५ पंखड़ियों वाले एक सुन्दर फूल का पेड़। (संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [सं० हर+शृंगार] सूर्य, चन्द्रमा।

हरहट—(वि०) हैरान या परेशान करने वाला, भागने वाला जानवर।

हरहा—(संज्ञा, पु०, दे०) चौपाया, जानवर।

हरहाई—(वि०, स्त्री०, दे०) [हि० हार] जंगली, नटखट, दुष्ट, बनैली गाय। "जिमि कपिलहि घालइ हरहाई"—[रामा०]।

हरा—(वि०, दे०) [सं० हरित] हरित, घास या पत्तों के रंग का, सब्ज, ताजा, प्रसन्न, अम्लान, अमूर्छित, प्रफुल्ल, वह घाव जो सूखा या भरा न हो, कच्चा दाना या फल। (स्त्री०) पार्वती। **मुहा०—बाग (हरा गुलाब) दिखाना**-व्यर्थ आशा देने या बाँधने वाली बात करना।—**भरा**—(वि०) तरोताजा, हरा, हरे पेड़-पत्तों से भरा। (संज्ञा, पु०) हरित वर्ण, हरीतिमा, पत्ती या घास जैसा रंग।*‡ (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हार] माला, हार। "टूटे हरा, छरा छूटे सबै"।

हराई—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० हारना] हार, हारने की क्रिया या भाव। खेत का वह भाग जो एक बार में जोता जाता है। हल में चलना।

हराना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हारना] रण में शत्रु या प्रतिद्वंद्वी को पीछे हटाना, पराजित या परास्त करना, वैरी को विफल मनोरथ या शिथिल-प्रयत्न करना, थकाना। [**हरवना, हरावना** (प्रेरणा० रूप)]।

हरापन—(संज्ञा, पु०) [हि० हरा+पन प्रत्य०] सब्जी, हरितता, हरे होने का भाव हरीतिमा।

हराम—(वि०, अ०) अनुपयुक्त, निषिद्ध, अनुचित, विधि-विरुद्ध, दूषित, बुरा। (संज्ञा, पु०) वह बात या कर्म जिसका धर्मशास्त्र में निषेध हो, सुअर (मुस०)। "जितनो चाव हराम पै, उतनो हरि पै होय"—[स्फु०]। **मुहा०—खोर**-(पु०) [अ०+फ़ा०] पाप की कमाई खाने वाला, सत का खाने वाला, मुफ़्तखोर, निकम्मा, आलसी, सुस्त। [**हरामखोरी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**जादा**—(पु०) वर्णसंकर, दोगला, पाजी, दुष्ट, बदमाश (गाली), [**हरामजादी** (स्त्री०)]।—**कोई बात (काम) करना**-किसी कार्य्य का करना कठिन कर देना। **कोई काम या बात—होना**-किसी कार्य्य का कठिन या वर्जित होना। पाप, अधर्म बेईमानी।—**का**-अनुचित रूप या अन्याय से प्राप्त, मुफ्त का, सेंत का, स्त्री पुरुष के अनुचित संबंध से उत्पन्न बच्चा।

हरामी—(वि०, दे०) [अ० हराम+ई प्रत्य०] व्यभिचार से पैदा, पाजी, दुष्ट, पापी, (गाली)। [**हरामीपन** (संज्ञा, पु०)]।

हरारत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) ताप, उष्णता, गरमी, ज्वरांश, हलका ज्वर।

हरावरि*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हड़ावरि] अस्थि समूह, हाड़ों का पंजर। (संज्ञा, पु०) [तु० हरावल] सेना का अग्रभाग।

हरावल—(संज्ञा, पु०, तु०) सेना का अग्र भाग, वे सैनिक जो सेना में सब से आगे रहते हैं, [हरौल (दे०)]।

हरास—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० हिरास] आशंका, भय, शंका, डर, खटका, शोक, दुःख, नैराश्य। "वय विलोकि जिय होत हरास"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ह्रास] ह्रास, घटती, कमी।

हराहर*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हलाहल] विष, जहर, माहुर, गरल।

हरि—(वि०, सं०) पीला, बादामी या भूरा, हरित्, हरा । (संज्ञा, पु०) विष्णु, जिष्णु, इन्द्र, बन्दर, घोड़ा, सिंह, चन्द्रमा, सूर्य्य, दादुर, मेढक, साँप, मोर, पानी, अग्नि, वायु, श्रीकृष्ण, शिव, राम, एक वर्ष, एक पहाड़, एक भूखंड, १८ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) । "हरि बोले हरि ही सुनी, हरि आये हरि पास । "एकै हरि-हरि में गये, दूजे भये निरास "—[स्फु०] । (अव्य०, दे०) [हिं० हरुए] धीरे, आहिस्ता ।—**कथा**–(स्त्री०) परमेश्वर या उनके अवतारों का चरित्र-चित्रण "सतसंगति हरि-कथा न भावा"—[रामा०] ।—**कीर्त्तन**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ईश्वर या उनके अवतारों का यशोगान, हरिस्तवन । —**कुमार**-(पु०) शिवसुत, इन्द्र-पुत्र पवन-कुमार, सूर्य-सुत, कृष्ण या राम के पुत्र ।—**गीतिका**–(स्त्री०) ५, १२, १९, २६ वी मात्रा लघु, और अंत में लघु-गुरु के साथ २८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद, ७।७ मात्राओं या १४ । १४ या १६-१२ मात्राओं पर विराम के साथ २८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०) । "हरिगीतिका, हरिगीतिका, हरिगीतिका, हरिगीतिका ।"—**चंदन**–(पु०) एक तरह का चदन । "मंद भयौ खौर हरिचंदन कपूर कौ"—रत्ना० ।—**जन**–(पु०) परमेश्वर का दास भक्त । "सुर, महिसुर, हरिजन अरु गाई"—[रामा०] । " हरि जन जानि प्रीति अति बाढी "—[रामा०] । शूद्र या नीच जाति का व्यक्ति (आधु०) ।—**जान**–(पु०) [सं० हरि+यान] भगवान की सवारी, गरुड़ । "सत्य सुनहु हरि-जन"—[रामा०] ।—**द्वार**–(पु०) एक विख्यात तीर्थ जहाँ से गंगा से नहर निकाली गयी है और गंगा पहाड़ों से समतल भूमि पर उत्तरी है । ईश्वर का द्वार ।—**धाम**-(पु०) वैकुंठ, हरिपुर । —**नग***–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) साँप का मणि ।—**नाथ**–(पु०) हनुमान जी, सर्पराज, उच्चैश्रवा, हरि-नायक ।—**नाम**–(पु०) [सं० हरिनामन्] भगवान का नाम । "है हरिनाम को आधार"—तुल० ।—**नायक**–(पु०) मारुति, शेष, उच्चैश्रवा । ।—**पद**–(पु०) वैकुण्ठ, विष्णु लोक, भगवान के चरण, एक मात्रिक छन्द जिसके विषम चरणों में १६ और सम में ११ मात्राएँ होती हैं और अन्त में गुरुलघु होना आवश्यक है (पिं०) ।—**पति**–(पु०) वानरेश, सर्पेश, अश्व-पति ।—**पुर**–(पु०) वैकुंठ । " हरिपुर गे नरलोक विसाई "—[स्फु०] ।—**पुत्र, पूत**–(पु०) सूर्य-सुत, इन्द्र-सुत, शिव सुत, कृष्ण या राम के पुत्र । —**पैंड़ी**-(स्त्री०) विष्णु-घाट ।—**प्रिया**–(स्त्री०) लक्ष्मी, तुलसी, लाल चन्दन, ४६ मात्राओं और अंत में गुरु वर्ण वाला एक मात्रिक छन्द, चंचरी छन्द (पिं०) । "लक्ष्मी, कमला हरिप्रिया"—(अनेका०) कुंज वि० ।—**प्रीता**–(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक शुभ मुहूर्त्त (ज्यो०) हरि-प्रिया ।—**भक्त** –(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कृष्णानुरागी, भगवान का प्रेमी, भगवान की भक्ति-उपासना करने वाला, [हरिभगत (दे०)] ।—**भक्ति**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) हरिप्रीति, भगवान का प्रेम, [हरि-भगति (दे०)] । "जिमि हरि-भक्तिहिं पाई जन" —[रामा०] ।—**रस**,—**राग**–(पु०) ईश्वर-प्रेम, कृष्णानुराग ।—**लीला**–(स्त्री०) भगवान का चरित्र, १४ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) ।—**लोक**–(पु०) स्वर्ग, वैकुंठ, विष्णु लोक ।—**वंश**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) कृष्ण जी का कुटुम्ब, कृष्ण कुल, एक पुराण जिसमें श्रीकृष्ण जी और उनके कुटुम्ब का वृत्तांत है । [हरिवंश पुराण (यौ०)] । (वि०) हरिवंशी । —**वास**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) पीपल वृक्ष, जिसमें शिव का वास हो ।—**वासर**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) रविवार, सोमवार, एकादशी, विष्णु का दिन, जन्माष्टमी, रामनवमी, वावन द्वादशी, नृसिंह चतुर्दशी ।—**वाहन**–(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) गरुड़ ।—**शयनी**–(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) आषाढ़ सुदी एकादशी, जब देव सोते हैं । —**हरक्षेत्र**-(पु०) एक तीर्थ (बिहार), जहाँ कार्तिक की पूर्णमासी को बड़ा भारी मेला होता हैं, [हरिहरक्षेत्र (दे०)] ।

हरिअर, हरियर*†—(वि०, दे०) [सं० हरित] हरित, हरा । " मुनिहि हरिअरिहि सूझ "—[रामा०] ।

हरिअरी*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० हरि-आली] हरिआली, हरियाली, हरेरी (ग्रा०) सब्जी, [हरियरी, हरिआरी (दे०)] ।

हरि-अरे—(वि०, दे०) हरा हरा ।

हरिआली, हरियाली, हरियारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हरित+आलि] [हरियाई (दे०)], हरेपन का फैलाव या विस्तार, घास और पेड़-पौधों का विस्तृत समूह [हरिआरी] ।

हरिचंद—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हरिश्चन्द्र] सत्यव्रती राजा हरिश्चन्द्र । "जाय बिकाने डोम घर वै राजा हरिचन्द्र"—गिर० । हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि और नाटककार ।

हरिण—(संज्ञा, पु०, सं०) हंस, सुर्य्य, हिरन, मृग, छिगार, [हरिन, हरिना, हिरन, हिरना (दे०)] । [हरिणी (स्त्री०)] ।—**प्लुता**-(स्त्री०) एक वर्णिक अर्धसम छंद जिसके विषम पदों में तीन सगण, दो भगण और एक रगण हो (पिं०) ।

हरिणाक्षी—(हि०, स्त्री०, यौ०, सं०) हिरन के से सुन्दर नेत्रों या आँखों वाली, सुन्दरी स्त्री०, मृगनयनी, मृगलोचनी ।

हरिणाधिप—(संज्ञा, पु०, सं०) सिंह, शेर ।

हरिणी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हिरनी, मृगी, स्त्रियों के चार भेदों मे से एक भेद जिसे चित्रिणी भी कहते हैं (काम०) १७ वर्णों का एक वर्णिक छंद, दस वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०) ।

हरित्—(वि०, सं०) भूरे या बादामी रंग का, हरा, कपिश, सब्ज । "हरित मणिन के पत्र फल, पद्मराग के फूल"—[रामा०] । सूर्य्य का घोड़ा हरिदश्व, मरकत, पन्ना, सूर्य्य, सिंह ।

हरित—(वि०, सं०) हरा, पीला, सब्ज, बादामी या भूरे रंग का । "बरन हरित मणिमय सब कीन्हे"—[रामा०] ।—**मणि**-(पु०) पन्ना, मरकत मणि । 'वेणु हरितमणिमय सब कीन्हे" ।

हरिताल—(संज्ञा पु०, सं०) हरताल, एक खनिज पदार्थ जो पीला होता है ।

हरितालिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) भादों सुदी तीज या तृतीया (स्त्रियों का एक व्रत) ।

हरिद्रा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हलदी, जंगल, वन, मंगल, सीसाधातु (अनेकार्थ०) । **लो०**—"हरिद्रा रजोमाक्षिकाभ्यां विमिश्रः ।"—**राग**-(पु०) वह पूर्व राग जो पक्का या स्थायी न हो (सा०) ।

हरिन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हरिण] मृग, छिगार, हिरन, हरिण । [**हरिनी** (स्त्री०)] ।

हरिनाकुस*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिरण्यकशिपु] प्रह्लाद का पिता, हिरण्यकशिपु ।

हरिनाक्ष—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिरण्याक्ष] हिरण्याक्ष, प्रह्लाद का चचा, [हरिनाच्छ, हरिनाछ (दे०)] ।

हरिनी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० हरिन] मृगी, हरिणी, [हिरनी (दे०)] हरिन की मादा ।

हरियर, हरियरा†—(वि०, दे०) [हि० हरा सं० हरित] हरा ।

हरियरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हरीतिमा, हरापन, हरियाली, हरेरी । "मुनिहिं हरियरी सूझ"—[रामा०] ।

हरियल—(संज्ञा, पु०, दे०) हरा कबूतर ।

हरियाई*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हरियाली] हरियाली, हरे रंग का फैलाव, हरे-हरे पेड़ पौधों का विस्तार या समूह, दूब । "रहित सदाई हरियाई हिये घायनि मैं"—रत्ना० ।

हरियाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हरा] फिर हरा होना, पनपना, ताजा या नया होना । (संज्ञा) हिसार से रोहतक तक का प्रान्त ।

हरियारी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हरियाली । (यौ०, हि०) हरि-प्रीति । "को न हरियारी करै ऐसी हरियारी में"—द्विज० ।

हरियाली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हरित+आलि] हरे हरे पेड़ पौधों का विस्तार या समूह, दूब, हरे रंग का फैलाव । **मुहा०**—**सूझना**—सर्वत्र हर्ष ही हर्ष समझ पड़ना ।

हरियाली-तीज, हरियारी-तीज—(संज्ञा, स्त्री०, हि०) सावन कृष्ण पक्षीय तृतीया या तीज, हरेरी तीजा (ग्रा०) ।

हरिश्चंद्र—(संज्ञा, पु०, सं०) सूर्य्य-वंश के अट्ठाईसवें राजा जो त्रिशंकु के पुत्र थे, ये बड़े सत्यवादी और दानी थे, हरिचन्द, हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि, भारतेन्दु ।

हरिस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हलीषा] ईषा, हल की सबसे बड़ी वह लकड़ी जिसके एक छोर पर फाल वाली लकड़ी और दूसरे पर जुआ रहता है ।

हरिहाई*—(वि० स्त्री०, दे०) [हि० हरहाई] दुष्ट गाय, हरहाई । "जिमि कपिलहिं घालै हरिहाई"—[रामा०] ।

हरी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १४ वर्णों का एक वर्णिक छंद—आनन्द (पिं०) । (वि०, स्त्री०, हि०) हरा का स्त्रीलिंग । (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हरि] हरि, भगवान, कृष्ण । "हरी तरी पुकारती हरी हरी छरीलिये ।"

हरीतकी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हर, हड़, हरड़, हर्रे । "हरतकी मनुष्याणाम् मातेव हितकारिणी" [भाव०] ।

हरीफ़—(संज्ञा, पु०, सं०) शत्रु, [बैरी (दे०)], चंट, चालाक ।

हरीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हरारः] मसाला और मेवा आदि का दूध में औटने से बना एक पेय पदार्थ [हरेरा (दे०)]। कुछ हरीरा पिलाय कुछ हल्दी "—मीर० । *† (वि०, दे०) [हि० हरिअर] हरेरा, हरा, सब्ज, प्रसन्न, हर्षित, प्रफुल्ल । [**हरीरी** (स्त्री०)]

हरीश—(संज्ञा, पु०, सं०) वानरेश, उच्चैश्रवा, हनुमान ।

हरीस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हरिस] हरिस, हल की सबसे बड़ी लकड़ी ।

हरुअ, हरुआ*†—(वि०) [सं० लघुक] थोड़ा हलका, [हरुव (दे०)] । [**गरू, गरुआ, गरुअ** (विलो०)] ।

हरुआ*†—(वि०, दे०) [सं० लघुक] हलका ।

हरुआई, हरुवाई†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हरुआ] फुरती, हलकापन । " दृढ़ शरीर अति ही हरुआई "—[रामा०] ।

हरुआना, हरुवाना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हरुआ] लघु या हलका होना, फुरती होना ।

हरुए*†—(क्रि० वि०, दे०) [हि० हरुआ] हौले-हौले, धीरे-धीरे, रसे-रसे (प्रा०), चुपचाप, बिना आहट के (वि०) हलके, लघु ।

हरु—(वि०) [हि० हरुआ] हलका । " हरु गरु कछु जाई न तोला "—कबीर ।

हरूफ़—(संज्ञा, पु०) [अ० हरफ़ का बहुवचन] अक्षर समूह, वर्णमाला, अक्षर, वर्ण ।

हरे, हरै, हरैं—(क्रि० वि०, दे०) [हि० हरुए] मन्द मन्द, धीरे या रसे-रसे, धीमा, कोमल (शब्द), नम्र, हलका (स्पर्शाघात) । (संज्ञा, पु०) [सं० हरि का संबो०] हे भगवान (दे०) । " हरे दयालो नः पाहि "—सि० कौ० । "बातें बनाय मनाय के लाल हँसाय कै बाल हरैं मुख चूम्यो "——[भावि०] । " सपने में से बिछुरे हरि हेरि हरैं ई हरैं हरिनी दृग रोवैं "—[भावि०] ।

हरेक—(वि०, दे०) प्रत्येक, हर एक ।

हरेव—(संज्ञा, पु०, दे०) मंगोल जाति, मंगोलों का देश, मंगोलिया । (सं०) हर जैसा ।

हरेवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हरा] हरी, बुलबुल, हरे रंग का एक छोटा पक्षी ।

हरें, हरे—(क्रि० वि०, दे०) [हि० हरुए] धीरे-धीरे, रसे-रसे, हरे ।

हरैना—(संज्ञा, पु०) बैलगाड़ी का अग्रभाग जो सामने निकला रहता है और जिसमें नीचे की ओर से फाल लगाते है ।

हरैया†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हरना] हरने वाला या दूर करने वाला, मिटाने वाला, चोर, हारने वाला ।

हरौल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हरावल] सेनाग्र भाग, सेनाग्रगामी, सैनिकों का समूह, हरावल ।

हर्कत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हरकत (फ़ा०) ।

हर्गिज—(क्रि० वि०, दे०) हरगिज़, कदापि नहीं, कभी ।

हर्ज—(संज्ञा, पु०, अ०) बाधा, हानि, अड़चन, रुकावट [हरज, हरजा, हर्जा (दे०)] [**हर्जाना**—(पु०)] क्षति-पूर्ति ।

हर्ता—(संज्ञा, पु०) [सं० हर्तृ] हरण या नाश करने वाला, चुराने वाला, [हरता (दे०)] । [**हर्त्री** (स्त्री०)] ।

हर्त्तार—(संज्ञा, पु०, सं०) हर्त्ता, हरतार (दे०) । (संज्ञा, पु०, दे०) हरताल, हरताल ।

हर्फ़—(संज्ञा, पु०, अ०) अक्षर, वर्ण, हरफ़, हरूफ़ । **मुहा०—आना**–क्षति होना, हानि पहुँचना ।

हर्म्म—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हरम] बड़ा भारी महल, प्रासाद, हर्म्य (सं०) हरम ।

हर्र—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हरीतकी (सं०), हड़, हरड़ ।

हर्रइया—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्त्रियों के हाथ का एक गहना ।

हर्रा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हरीतकी] बड़ी जाति की हड़ । **लो०**—" हर्रा लगै न फिटकरी रंग चोखा आवै ।"

हर्रे—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हड़] हड़ । ब० व० हर्रैं ।

हर्रैया—(संज्ञा, पु०) एक आभूषण जो हाथों में पहना जाता है ।

हर्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रफुल्लता, प्रसन्नता, आनन्द, हर्षादि से रोमांच होना, खुशी, [हरष हरख (दे०)] । " हर्ष-विषाद न कछु उर आवा" —[रामा०] ।—**चरित**–(पु०) बाणभट्ट कृत एक गद्यकाव्य जिसमें हर्षवर्द्धन का चरित्र वर्णन है । **वर्द्धन**–(पु०) वैस क्षत्रिय वंशीय एक बौद्ध धर्मानुयायी भारत-सम्राट् जिसकी सभा में बाण

कवि रहते थे (इति०) ।—**विह्वल**-(वि०) आनंदविभोर ।

हर्षण—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रफुल्लित करना या होना, हर्षादि से रोमांच होना, मदन के पाँच बाणों में से एक बाण, एक योग (ज्यो०), [हरषन (दे०)] । [**हर्षणीय** (वि०)] ।

हर्षना—(क्रि० अ०) [सं० हर्षण] प्रसन्न होना, हरषना, हरखना । [**हर्षाना, हर्षावना**—(स० रूप)] ।

हर्षातिशय—(संज्ञा, पु०, सं०) आनंदातिरेक ।

हर्षाना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हर्ष] मुदित होना, प्रसन्न या आनन्दित होना, प्रफुल्लित या हर्षित होना—**करना** ।

हर्षित—(वि०, सं०) प्रसन्न, आनन्दित [हरषित (दे०)] ।

हर्षोत्फुल्ल—(वि०, यौ०, सं०) हर्ष से प्रफुल्लित प्रमुदित ।

हल्—(संज्ञा, पु०, सं०) स्वर-रहित शुद्ध व्यंजन वर्ण ।

हलंत—(संज्ञा, पु०, सं०) वह शब्द जिसके अंत में अल् वर्ण हो, हल् ।

हल—(संज्ञा, पु०, सं०) लांगल, सीर, भूमि जोतने का यंत्र, [हर (दे०)] । **मुहा०—जोतना** (**चलाना**)-खेती करना, हल चलाना । एक अस्त्र (बलराम) ।—**धर**-(पु०) बलराम । "हरि हलधर की जोरी" सूर ।—**मुख**-(पु०) फाल ।—**वाह**-दूसरे के यहाँ हल जोतने वाला ।—**वाही**-(स्त्री०) हल चलाने की क्रिया या भाव, हलवाह का पद, मजदूरी । (संज्ञा, पु०, अ०) गणित करना, हिसाब लगाना, किसी समस्या का उत्तर निकालना, मिश्रण, मिलाना । **मुहा०—होना (करना)** मिलना, मिलाना ।

हलकंप—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हि० हलना, हिलना—कंप=काँपना] हलचल, हड़कंप, सर्वत्र फैली हुई घबराहट । **मुहा०—मचना (मचाना)**-घबराहट मचना या मचाना ।

हलक़—(संज्ञा, पु०, अ०) गले की नली, गला, कंठ । **मुहा०—के नीचे उतरना**-पेट में जाना, (बात का) मन में बैठना ।

हलकई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हलका+ई प्रत्य०] हलकापन, तुच्छता, ओछापन, अप्रतिष्ठा, हेठी, [हलुकई (दे०)] ।

हलकना—(क्रि०, अ०, दे०) [सं० हल्लन] पानी आदि द्रव पदार्थों का हिलना-डोलना या शब्द करना, लहराना, हिलोरें लेना, हिलना, दीपक की लौ का झिलमिलाना, लहकना, (ग्रा०) ।

हलका—(वि०, दे०) [लघुक] तौल में जो भारी न हो, जो गहरा या गाढ़ा न हो, जो चटकीला न हो, पतला, उथला, जो उपजाऊ न हो, हरुआ, थोड़ा, कम, मंद, जो जोर का या ऊँचा न हो (शब्द), आसान, सुख साध्य, निश्चित, ताजा, पतला, घटिया, महीन, छूँछा, रिक्त, खाली, तुच्छ, नीच, ओछा, टुचा । [**हलकी** (स्त्री०)] **मुहा०—करना**-तुच्छ ठहरना, अपमानित करना । —**हलके-हलके**-धीरे-धीरे । † (संज्ञा, पु०, दे०) (अनु० हलहल) लहर, तरंग । (संज्ञा, पु०) मंडल, गोला, वृत्त, परिधि, गोलाई, घेरा, मण्डली, दलवृन्द, झुंड, हाथियों का झुंड, किसी कार्यार्थ निर्धारित कई गाँवों या नगरों का समूह ।

हलकाई†—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० हलका] हलकापन, हलुकई, हलुकाई ।

हलकान‡—(वि०, दे०) [अ० हैरान] हैरान, परेशान, तंग, हलाकान ।

हलकाना†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हलका+ना प्रत्य०] हलका होना, बोझा कम होना । (क्रि० स०) [हि० हिलगना] लहराना, हिलोरें देना । (क्रि० स०) [हि० हिलगना] । हिलगना, हलकना, उलझना, लुटकना ।

हलकापन—(संज्ञा, पु०) [हि० हलका+पन प्रत्य०] लघुता, नीचता, तुच्छता, ओछापन, हेठी, अप्रतिष्ठा, हलका होने का भाव ।

हलकारा-हरकारा‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० हरकारः) पत्रवाहक, हरकारा, चिट्ठीरसाँ, दूत ।

हलकोरना—(क्रि० सं०) [हि० हलकोरा] समेटना, बटोरना, हलोरना, हिलाना, लहराना, हलकाना ।

हलकोरा†—(संज्ञा, पु०, अनु०) लहर, तरंग, झोंका ।

हलकावा—(संज्ञा, पु०, ग्रा०) कंपन, लहर ।

हलचल—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) [हि० हलना+चलना] जनता में फैली अधीरता, घबराहट, शोरगुल, खलबली, धूम, दौड़-धूप, कंपायमान,

विचलन, दंगा, उपद्रव । **मुहा०—मचना (मचाना)** हुल्लड़ होना (करना), शोर-गुल होना (करना) । (वि०) हिलता या डगमगाता हुआ, कंपायमान, कंपित ।

हलद—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हरिद्रा] हलदी ।

हलद-हात, हलद-हाथ—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० हलद + हाथ] व्याह में हलदी से हाथ पीले करने की रीति, [हरद-हाथ (दे०)] ।

हलदिया—(संज्ञा, पु०, दे०) एक प्रकार का विष, एक रोग जिसे पीलिया (पांडु) कहते हैं, इसमें शरीर पीला हो जाता है ।

हलदियाइँध, हरदियाइँध—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हलदी की गंध ।

हलदी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हरिद्रा] एक पौधा जिसकी गठीली जड़ मसाले, रँगाई या औषधि के काम में आती है, इसकी गाँठ हरिद्रा नामक औषधि, हरदी । **मुहा०—उठना या चढ़ना**—व्याह के प्रथम वर कन्या के शरीरों में हलदी-तेल लगाने की रीति ।**—लगना**—व्याह होना । **(हर्रा) लगै न फिटकरी रँग चोखा आवै**—कुछ भी खर्च न पड़े, काम बन जाये, सेंतमेत, मुफ्त ।

हलदू—(संज्ञा, पु०, दे०) एक बहुत ऊँचा पेड़ ।

हलना†*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हल्लन] डोलना, हिलना, पैठना, घुसना ।

हलफ—(संज्ञा, पु०, अ०) शपथ, कसम, सौगंद, सौगंध । **मुहा०—उठाना**—शपथ या कसम खाना ।**—से (पर)**—शपथ पूर्वक ।

हलफ-नामा—(संज्ञा, पु०, यौ०) [अ० + फ़ा०] वह कागज जिस पर शपथ के साथ ईश्वर को साक्षी कर कोई बात लिखी गई हो ।

हलफा—(संज्ञा, पु०) [अनु० हलहल] तरंग, लहर, हिलोर ।

हलफिया—(वि०, अ०) हलफ या शपथ के साथ, कसमिया ।

हलबल*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० हल + बल] हरबर, हलचल, खलबली, धूम । (यौ०, हिं०) हल के बल से ।

हलब-हलब्बी—(वि०, दे०) [हलब देश] हलब देश का शीशा, बढ़िया, अच्छा शीशा ।

हलभल, हलभली—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० हल-बल] हलचल, खलभली, धूम, उतावली, उत्पात, शोरगुल, दंगा ।

हलमुखी—(संज्ञा, पु०, सं०) र, न, स (गण) युक्त एक वर्ण वृत्त (पिं०) ।

हलरा—(संज्ञा, पु०, दे०) तरंग, लहर, हिलोर ।

हलराई—(संज्ञा, स्त्री०) [हिं० हलराना] हलराने का भाव, क्रिया या मजदूरी ।

हलराना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० हिलोरना] हाथ में लेकर किसी वस्तु को इधर-उधर हिलाना, झुलाना ।

हलरावना—(क्रि० स०, दे०) [हिं० हिलोरना] बहलावना, विनोद करना, हिलाना, झुलाना । "**कबहुँक लै पलना हलरावै**" ।

हलवा, हलुवा—(संज्ञा, पु०, अ०) मोहन भोग, हलुआ, एक प्रकार का मीठा भोजन । "हलवा अस हलवनियाँ गलवा लाल"—वर० । **मुहा० (वे) माँड़े से काम**—केवल स्वार्थ साधन से प्रयोजन, अपने ही लाभ या फायदे से मतलब ।

हलवाई, हेलवाई—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हलवा + ई प्रत्य०] मिठाई बनाने और बेचने वाला । [**हलवाइन** (स्त्री०)] ।

हलहलाना†—(क्रि० स०, दे०) [अनु० हलहल] बड़े जोर से हिलाना-डुलाना, झकझोरना । (क्रि० अ०) काँपना, थरथराना, हिलना ।

हलहलाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० हल-हलाना] ज्वर या जाड़े से थर-थर काँपना, थर-थराहट ।

हलहलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हलाहल] विष, जहर, जूड़ी, ज्वर ।

हलहली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० हल-हलाना] जाड़े का ज्वर, जूड़ी, व्याधि, रोग ।

हलाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हल + आई प्रत्य०] खेत की जोताई या बुआई, हिलने (हलने) का भाव ।

हलाक—(वि०) [अ० हलाकत] मारा हुआ ।

हलाकान‡—(वि०) [अ० हलाक] हैरान, परेशान, तंग । [**हलाकानी (संज्ञा, स्त्री०)**] ।

हलाकानी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० हलाकान] हैरानी, परेशानी, तंगी ।

हलाकी—(वि०) [अ० हलाक] मार डालने वाला, घातक, मारक, बधिक, मारू ।

हलाकू—(वि०) [अ० हलाक] हलाक करने या मार डालने वाला, घातक। (संज्ञा, पु०) चंगेजखाँ का पोता, एक हत्याकारी तुर्क सरदार (इति०)।

हलाभला—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [अनु० हला +भला हि०] निर्णय, परिणाम, निबटारा। (दे०, वि०) साधारण, काम-चलाऊ। [**हलीभली** (स्त्री०)]।

हलायुध—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) बलदेव जी बलराम जी, एक प्रसिद्ध संस्कृत-कोष।

हलाल—(वि०, अ०) शरअ या मुसलमानी धर्म्म-पुस्तक के अनुकूल, दुरुस्त, जायज। (संज्ञा, पु०) वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्म्म में आज्ञा हो। **मुहा०**—(**ली**) **चढ़ना**-पशु वध की प्रवृत्ति होना।—**करना**-जबह करना, किसी पशु को शरअ के अनुसार धीरे-धीरे गला काटकर मारना (खाने के लिये)।—**का**-ईमानदारी से प्राप्त।—**का खाना**-मेहनत कर ईमानदारी से प्राप्त कर खाना।—**खोर**-(संज्ञा, पु०, यौ०) [अ० हलाल +खोर फ़ा०) परिश्रम करके जीविका करने वाला, भंगी, मेहतर। [**हलालखोरी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

हलाहल—(संज्ञा, पु०, सं०) वह विकट और भयंकर विष जो समुद्र मन्थन से निकला था, तेज जहर, तीव्र विष या गरल, एक विषैला पौधा। "घूटिहैं हलाहल कै बूड़िहै जलाहल मैं"—रत्ना०।

हलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) बैलों का समूह या झुंड।

हलियाना—(क्रि० अ०, दे०) जी मचलाना, उबकाई या मिचली आना।

हली—(संज्ञा, पु०, सं०) बलराम जी।

हलीम—(वि०, अ०) शांत, सीधा।

हलुआ, हलुवा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हलवा] मोहनभोग, एक मीठा भोजन, [हेलुवा (दे०)]।

हलुक, हलुका†*—(वि०, दे०) [हि० हलका] हलका, हरुआ, तुच्छ, जो भारी या गरू न हो।

हलुकाना—(क्रि० अ०, दे०) हलका होना।

हलूक—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) कै, वमन।

हलेरा, हलोर, हलोरा|*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हिलोरा] लहर, तरङ्ग, मौज, हिलोर, हिलोरा।

हलोरना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हिलोर] हाथ डाल कर पानी आदि द्रव पदार्थों को मथना, पानी में हाथ डालकर हिलाना-डुलाना, अनाज फटकना, किसी पदार्थ का अधिकता से इकट्ठा करना।

हलोरा†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हिलोरा] लहर, तरंग, मौज, हिलोर, हिलोरा।

हलोरे—(संज्ञा, पु०, दे०) समेटे, बटोरे, लहर या तरंग। "देखौ चलि जमुना-प्रभाव कै हिलोरें आप" —रत्ना०।

हल्दी—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हलदी] हलदी।

हल्लक—(संज्ञा, पु०, दे०) लाल कमल।

हल्ला—(संज्ञा, पु०, अनु०) कोलाहल, चिल्लाहट, शोरगुल, हाँक, ललकार (युद्ध में) धावा, आक्रमण, हमला।—**गुल्ला**-(पु०) शोरगुल। "हल्ला होइगा सब लसकर में आये खेत बिसेना राव"— [आ० खं०]।

हल्लीश—(संज्ञा, पु०, सं०) नृत्य-प्रधान एक एकांकी उपरूपक (नाट्य०)।

हवन—(संज्ञा, पु०, सं०) होम, किसी देवता के लिये मन्त्रादि पढ़ कर अग्नि में तिल, जौ, घी आदि डालना, आहुति, अग्नि, हवन का चमचा, स्रुवा।

हवनीय—(वि०, सं०) हवन के योग्य। (संज्ञा, पु०) हवन के समय अग्नि में डालने की वस्तु।

हवलदार—(संज्ञा, पु०) [अ० हवल+फ़ा० दार] सेना का सबसे छोटा अफसर या सरदार, राजकर वसूल करने तथा फसल की निगरानी करने वाला अफसर (शाही समय में)। [**हवलदारी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

हवस—(संज्ञा, पु०, अ०) चाह, इच्छा हौस, लालसा, तृष्णा, कामना। "न रह जाये हवस दिल में हमारे"—हरि०। **मुहा०**—**निकालना**-हौसला या उमंग पूरा करना।

हवा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) पवन, वायु, भू-मंडल के चारों ओर प्रवाह रूप में फैला हुआ प्राणियों के लिये आवश्यक एक सूक्ष्म पदार्थ।—**चक्की**-(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० हवा+हि० चक्की] वायु बल से चलने वाली आटा पीसने की चक्की।—**दार**-(वि०, फ़ा०) वह मकान जिसमे वायु के आने-जाने का मार्ग, द्वार या खिड़कियाँ हों। (संज्ञा, पु०) बादशाहों की सवारी का एक हलका तख्त।—**मुहा०**—**उड़ना**-खबर फैलना।—**और होना**-हवा बदलना।—**करना**-पंखा हाँकना,

उड़ा देना, रद्द करना।—के घोड़े पर सवार–बहुत ही उतावली या जल्दी में।—खाना–टहलना, शुद्ध पवन सेवन के हेतु घर से बाहर जाना, घूमना, सैर करना, घूमना-फिरना, भ्रमण करना, अकृतकार्य्य होना।—हो (जाओ)—(खाओ)–निराश लौट जाना।—पीकर (खाकर) रहना–भोजन बिना रहना (व्यंग्य में भी)।—निकल जाना–आश्चर्य से स्तम्भित या चकित हो जाना, डर जाना, शंकित हो जाना।—बताना–टाल देना, वंचित रखना। (किसी की)—बँधना–रंग जमना, रोब या धाक होना, विश्वास या सम्मान होना।—बाँधना–शेखी हाँकना, गप हाँकना या उड़ाना, रंग जमाना, लंबी-चौड़ी बात करना।—पलटना (फिरना या बदलना)–दूसरी ओर को हवा चलने लगना, दूसरी अवस्था या स्थिति (दशा) होना, परिस्थिति या हालत बदलना।—बिगड़ना–रोब या धाक कम होना, विश्वास या धाक कम होना, विश्वास या आदर न रहना, नष्ट करना, बदनामी करना, शंकित करना, संक्रामक रोग फैलना, रीति या चाल बिगड़ना, बुरे विचार फैलना। (किसी की)—बिगाड़ना–शेखी या रोब बिगाड़ना।—सा–बहुत ही बारीक या हलका।—से लड़ना–अकारण लड़ना।—से बातें करना–बहुत वेग से चलना या दौड़ना, गप उड़ाना, व्यर्थ आप ही आप बहुत बोलना, अभिमान होना। (किसी की)—लगना–किसी की संगति का प्रभाव होना।—हो जाना–अति वेग या शीघ्रता से भाग जाना, रह न जाना, एक-बारगी छिप या लुप्त हो जाना। भूत-प्रेत, ख्याति, अच्छा नाम, प्रसिद्धि, उत्तम व्यवहार या बड़प्पन का विश्वास, साख।—बँधना (बाँधना)–अच्छा नाम होना, साख या रोब होना।—ढीली होना (करना)–चकित या भयभीत होना (करना)।—खोरी–(यौ०) सैर-सपाटा, हवा खाना, किसी बात की धुन या सनक।

हवाई—(वि०) [अ० हवा] वायु-सम्बन्धी, वायु का, हवा में चलने वाला, झूठ या कल्पित, निर्मल, निराधार। (संज्ञा, स्त्री०) एक प्रकार की आतिशबाजी, बान, आसमानी।—अड्डा–(पु०) हवाई जहाज के उतरने का या प्रस्थान करने का स्टेशन। [एरोड्रोम]।—जहाज–(संज्ञा, पु०, यौ०, अ०) वायुयान, हवा में चलने वाला जहाज।—बंदूक–(स्त्री०) नकली बंदूक जो केवल आवाज मात्र करती है।—युद्ध–(पु०) हवाई जहाजों द्वारा किया जाने वाला युद्ध। मुहा०—मुँह पर हवाइयाँ उड़ना–मुँह का रंग फीका पड़ जाना विवर्णता होना।

हवाल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० अहवाल] गति, वृत्तांत, हाल, समाचार, हालत, परिणाम, दशा, अवस्था। [हाल-हवाल (यौ०)]।

हवालदार—(संज्ञा, पु०, दे०) [उर्दू० हवलदार] एक सैनिक अफसर, हवलदार।

हवाला—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रमाणोल्लेख, दृष्टांत, उदाहरण, मिसाल, सुपुर्दगी, जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व। मुहा०—किसी के हवाले करना–किसी के सुपुर्द करना, सौंपना।

हवालात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कैद, पहरे में रखने की क्रिया या भाव, नजरबंदी, अभियुक्त की साधारण कैद, जो मुकदमे के निर्णय से पूर्व उसे रोकने के दी जाती है, हाजत, कैदखाना, अभियुक्त के रखने का स्थान, बंदीगृह।

हवास—(संज्ञा, पु०, अ०) इन्द्रियाँ, संवेदन, होश, संज्ञा, चेतना। मुहा०—गुम होना–भय से स्तंभित होना। होश उड़ जाना या ठिकाने न रह जाना।—फाख्ता होना–होश उड़ जाना।

हवि—(संज्ञा, पु०) [सं० हविस्] हवन की वस्तु, आहुति का पदार्थ, आहुति का शेषांश, अग्नि का प्रसाद। "यह हवि बाँटि देहु तुम जाई"—[रामा०]।

हविस—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) हवस, इच्छा।

हविष्य—(वि०, सं०) हवन करने योग्य। (संज्ञा, पु०) हवि, आहुति, बलि, होम करने या किसी देवता के लिए अग्नि में डालने की वस्तु।

हविष्यान्न—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ के समय का भोजन या आहार।

हवेली, हबेली—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) प्रासाद, महल, बड़ा पक्का घर। स्त्री, पत्नी।

हव्य—(संज्ञा, पु०, सं०) होम की सामग्री, हवन का पदार्थ, हवि, आहुति।

हविर्भुज—(संज्ञा, पु०) [सं० हविर्भुज्] अग्नि, आग।

हशमत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) वैभव, बड़ाई, ऐश्वर्य्य, गौरव।

हसद—(संज्ञा, पु०, अ०) डाह, ईर्ष्या।

हसन—(संज्ञा, पु०, सं०) हँसना, हास, परिहास विनोद, दिल्लगी । (संज्ञा, पु०, अ०) इमाम हुसेन के भाई (मुसल०) ।

हसब—(अव्य०, अ०) [हस्ब (दे०)] मुताबिक, अनुसार, अनुकूल ।

हसरत—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) शोक, अफसोस, दुःख, रंज, दिली इच्छा, लालसा, हार्दिक कामना । " मेरी हसरत देखती है किस तरह संसार मे ।" [स्फु०] ।

हसित—(वि०, सं०) जिसे या जिस पर लोग हँसते हों, जो हँसा हो या हँसा गया हो । (संज्ञा, पु०) हँसना, हास्य, हँसी ठट्ठा, मदन धनुष ।

हसीन—(वि०, अ०) खूबसूरत सुन्दर । (संज्ञा, पु०) सुन्दर व्यक्ति ।

हस्त—(संज्ञा, पु०, सं०) हाथ, हाथी की सूँड़, हाथ के आकार वाला पाँच तारों का एक समूह या एक नक्षत्र (ज्यो०) हाथ या चौबीस अंगुल की नाप, हाथ का लिखा लेख, लिखावट ।—**कौशल**-(पु०) किसी कार्य में हाथ चलाने की निपुणता, कर-कौशल ।—**क्रिया**-(स्त्री०) हाथ का काम, दस्तकारी, हाथ से इन्द्रिय संचालन, सर का कूटना (मारना), हस्त मैथुन ।—**गत**-(वि०, सं०) करगत, हाथ में आया हुआ, प्राप्त, लब्ध ।—**छाया**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) रक्षा, शरण । —**त्राण**-(पु०) अस्त्राघात से रक्षा के लिए हाथ में पहनने का दस्ताना ।—**पुस्तिका**-(स्त्री०) छोटी-सी पुस्तक जिसमें थोड़े में बड़े से बड़े विषय पर विवेचन हो [मैनुअल] ।—**मैथुन**-(पु०) हाथ से इंद्रिय संचालन, सरका कूटना (प्रान्तो०) । —**रेखा**-(स्त्री०) हथेली की लकीरें जिनसे शुभाशुभ का विचार किया जाता है (सामु०) ।—**लाघव**-(पु०) हाथ की तेजी या फुरती, हाथ की सफाई । " राघव-समान हस्त-लाघव विलोकि " —अव० ।—**लिखित**-(वि०, यौ०, सं०) हाथ का लिखा हुआ (पुस्तकादि) । [मैनसक्रिप्ट] —**लिपि**-(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) हाथ की लिखावट या लेख ।—**लेखा**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हाथ का लिखा हुआ ।—**सिद्धि**-(स्त्री०) वह कार्य जो हाथ से किया जाय ।

हस्तक्षेप—(संज्ञा, पु०, सं०) किसी होते हुए काम में हाथ लगाना या कुछ कर देना, दखल देना ।

हस्तांकित ऋण, पत्र—(संज्ञा, पु०, सं०) कर्ज लेते समय लिखा गया वह कागज जिसमें यह विश्वास दिलाया जाता है कि निश्चित अवधि के भीतर ब्याज सहित उक्त धन लौटा दिया जायगा । [हैंडनोट, प्रोनोट]

हस्तांतर—(संज्ञा, पु०, सं०) दूसरे का पास जाना, दूसरा हाथ ।

हस्तांतरण—(संज्ञा, पु०, सं०) सम्पत्ति, शक्ति या अधिकार आदि का किसी दूसरे आदि को देना । [ट्रांसफ़रेंस]

हस्तांतरित—(वि०, सं०) किसी दूसरे के हाथ में दिया हुआ, वह सम्पत्ति, व्यक्ति या अधिकार जो दूसरे के हाथ दे दिया गया हो । [ट्रांसफर्ड]

हस्ताक्षर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) दस्तखत, किसी लेखादि के नीचे अपने हाथ से लिखा गया अपना नाम । [सिग्नेटरी]

हस्तामलक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह बात या वस्तु जो सब ओर पूर्ण रूप से स्पष्ट और ज्ञात होकर दिखलाई देती हो, जैसे हाथ पर का आँवला ।

हस्ति—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हस्तिन्] हस्ती, हाथी ।—**कंद**-(पु०) एक पौधा जिसका कंद लोग खाते हैं, [हाथीकंद (दे०)] ।—**दंत**-(पु०) हाथी दाँत ।—**दंतक**-(पु०) मूली ।

हस्तिनापुर—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्तमान दिल्ली से कुछ दूर पर कौरवों की राजधानी का एक प्राचीन नगर ।

हस्तिनी—(संज्ञा, स्त्री० सं०) हथिनी, मादा हाथी, स्त्रियों के चार भेदों में से एक निकृष्ट भेद (काम०) ।

हस्तिपक—(संज्ञा, पु०, सं०) महावत, हाथीवान, हथवाल, हथवान ।

हस्ती—(संज्ञा, पु०) [सं० हस्तिन्] हाथी । [हस्तिनी (स्त्री०)] । (संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) अस्तित्व, होने का भाव ।

हस्ते—(अव्य०, सं०) मारफत, हाथ से, [हाथे (दे०)] । " ताके हस्ते रावनहिं, मनहु चुनौती दीन "—[रामा०] ।

हस्ब—(अव्य०, दे०) हसब (फ़ा०) अनुसार ।

हस्ली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) स्त्रियों के गले का एक गहना, [हसली, हँसुली, हसुली (दे०)] ।

हहर—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० हहरना] कँपकँपी, भय, डर, थर्राहट । (संज्ञा, पु०, दे०) वायु या जल के वेग का शब्द ।

हहरना—(क्रि० अ०, अनु०) काँपना, थर्राना, डर से काँप उठना, थरथराना, दंग रह जाना, दहलना, चकित या स्तंभित होना, सिहाना या डाह करना, अधिकता देख चकपकाना।

हहराना—(क्रि० अ०, अनु०] काँपना, थरथराना, भयभीत होना या डरना, [हरहराना (दे०)]। (क्रि० स०) दहलाना, डराना, भयभीत करना। " रँगराती हरी हहराती लता झुकि जाती समीर के झोंकनि सों "—[स्फु०]।

हहा—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) ठट्ठा, हँसने का शब्द, गिड़गिड़ाने का दीनता, शोकादि-सूचक शब्द, ह! हा! हाय हाय। **मुहा०—(हाहा) खाना**-बहुत गिड़गिड़ाना, हाहाकार करना।

हाँ—(अव्य०, दे०) [सं० ओम्] स्वीकृति, स्वीकार या सम्मति-सूचक शब्द, किसी बात के ठीक या उपयुक्त होने का सूचक शब्द, ठीक। **मुहा० —करना**-राजी होना, स्वीकार करना, सम्मत होना।**—जी,—जी करना**-खुशामद करना, यहाँ। " साँकरी गली में प्यारी हाँ करी न नाकरी "।

हाँक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हुंकार] किसी के बुलाने या डाँट बताने को जोर से बोला गया शब्द, ललकारने का शब्द। **मुहा०—देना या —,लगाना**-जोर से पुकारना।**—मारना**-हाँक लगाना।**—पुकार कर कहना**-सब के सम्मुख बेधड़क और निस्संकोच कहना, ललकार, गर्जन, हुँकार, प्रोत्साहक और उत्तेजक शब्द, बढ़ावा देने का शब्द, सहायतार्थ की हुई पुकार, दुहाई, गोहार। " सुनि हाँक हनुमान की "—[स्फु०]।

हाँकना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हाँक] चिल्ला कर पुकारना या बुलाना, आक्रमण या संग्राम में गर्व से चिल्लाना, हुँकारना, सीटना, बढ़-बढ़ कर बातें करना, बोल कर या मारकर जानवरों को आगे बढ़ाना या चलाना, गाड़ी-रथादि के पशुओं को चला कर गाड़ी को चलाना, बोल या मार कर पशुओं को भगाना, पंखे से हवा करना। [**हकाना** (स० रूप)]। [**प्रेरणा० रूप० हँकवाना**]। "हाँक्या बाघ उठ्यो बिरझायो"—छत्र०। "तुम को काल हाँकि जनु लावा"—[रामा०]।

हाँका—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हाँक] गर्जन, ललकार, पुकार, टेर, [हँकवा (दे०)]। सिंहादि को उत्तेजित कर हाँकने वाला।

हाँगी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हाँ] स्वीकृत, स्वीकार, मंजूरी, [हामी (दे०)]। **मुहा०— भरना**-स्वीकार करना, मंजूर करना, हामी भरना।

हाँड़ना†—(क्रि० स०, दे०) [सं० मंडन] व्यर्थ इधर-उधर घूमना-फिरना, आवारा घूमना-फिरना। **हाँड़नी**—(वि०, स्त्री०) आवारा घूमने-फिरने वाली।

हाँड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० भाँड] हँड़िया, हंडी मिट्टी का मझोला बटलोई-सा बरतन। **मुहा० —पकना**-हाँड़ी की चीज पकना, षड्यंत्र या चक्र रचा जाना, भीतर ही भीतर कोई युक्ति खड़ी होना। **(काठ की)—दुबारा न चढ़ना**—छल-कपट का फिर न चलना। **—चढ़ना**-कोई वस्तु पकाने को हाँड़ी आग पर चढ़ाया जाना। शोभार्थ कमरे में टाँगने का काँच का हाँड़ी के आकार का पात्र। "जैसे हाँड़ी काठ की चढ़ै न दूजी बार" —वृं०।

हाँता*—(वि०, दे०) [सं० हात] अलग या दूर किया हुआ, छोड़ा या हटाया हुआ। [**हाँती** (स्त्री०)]।

हाँपना, हाँफना—(क्रि० अ०) [अनु० **हँफ हँफ**] श्रम, रोगादि से सवेग, जल्दी-जल्दी साँस लेना, तीव्र गति से साँस लेना, हँफना। [**हँफी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

हाँफा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हाँफना] तीव्र और चिप्र श्वास, हाँफने की क्रिया या भाव।

हाँसना‡*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हंसना] हँसना।

हाँसल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हाँस] देह मे मेंहदी के से रंग का किन्तु काले पैरों वाला घोड़ा, हिनाई, कुम्मैत।

हाँसी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हास] हँसी, परिहास, उपहास, दिल्लगी, मजाक, हँसी ठट्ठा, हँसने की क्रिया या भाव, निन्दा।

हाँ, हाँ—(अव्य, दे०, यौ०) [हि० अहाँ+नहीं] रोकने या मना करने का शब्द, निषेध या निवारण-सूचक शब्द, स्वीकार-सूचक शब्द-युग्म।

हाँ-हुजूर—(वि०, यौ०) [हि० हाँ+हुजूर फ़ा०] चापलूस, खुशामदी। [**हाँ हुजूरी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

हा—(अव्य०, सं०) दुःख या शोक-सूचक-शब्द, आश्चर्याह्लाद या भय सूचक शब्द। "हा पिता क्वासि हे सुभ्रु"—भट्टी०। (संज्ञा, पु०) मार डालने वाला, हनन या नाश करने वाला। "भगत तुम गदहा काहे न भयो"—कबीर।—**हंत**—(अ०) अति शोकावस्था में निकलने वाला एक शब्द।

हाइ‡*—(अव्य०, दे०) [सं० हा] हाय, शोक।

हाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० घात] अवस्था, दशा, हालत, ढंग, तौर, घात, ढब।

हाऊ—(संज्ञा, पु०, दे०, अनु०) भकाऊ, हौवा, जूजू। "दूरि खिलन जनि जाव लाल वन हाऊ बोलै रे"—सूर०।

हाकल—(संज्ञा, पु०, सं०) १५ मात्राओं और दीर्घान्त वाला एक मात्रिक छंद (पिं०)।

हाकलिका—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १५ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

हाकली—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) १० वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

हाकिम—(संज्ञा, पु०, अ०) शासक, बड़ा अफसर, हुकूमत करने वाला।

हाकिमी—(संज्ञा, स्त्री०) [अ० हाकिम] हुकूमत, शासन, प्रभुत्व, हाकिम का काम। (वि०) हाकिम का, हाकिम-संबंधी।

हाजत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) आवश्यकता, जरूरत, चाह, हिरासत, पहरे में रखना। "हाजत इस फिरके को यों मुतलक नहीं"—सौदा०। मुहा० —**दूर (रफा) करना**-शौचादि से निवृत्त होना।—**में देना या रखना**-पहरे के भीतर देना, कैद या हवालात में रखना।

हाजमा—(संज्ञा, पु०, अ०) पाचन की शक्ति या क्रिया, भोजन पचने की क्रिया।

हाजिम—(वि०, अ०) पाचक, हजम करने या पचाने वाला।

हाजिर—(वि०, अ०) उपस्थित, प्रस्तुत, मौजूद, विद्यमान, सम्मुख।—**जवाब**-(वि०, यौ०, अ०) किसी बात का तत्काल अच्छा उत्तर देने में प्रवीण या कुशल, वाक् चतुर, प्रत्युत्पन्न-मति।—**जवाबी**-(स्त्री०) अच्छी और मनोरंजक बात तुरन्त सोच लेने की शक्ति रखकर तुरन्त जवाब देना, हाजिर जवाब होना।

हाजिरात—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) वेदना या मंत्रादि के द्वारा किसी के ऊपर कोई आत्मा बुलाना जिससे वह विविध प्रकार की बिना देखी बातें बता सके।

हाजिरी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) उपस्थिति, विद्यमानता।—**बजाना**-दरबारदारी करना।

हाजी—(संज्ञा, पु०, अ०) वह पुरुष जो हज कर आया हो (मुसल०)।

हाट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हट्ट] बाजार, दुकान, पैठ। "चौहट्ट हाट बाजार बीथी चारु पुर बहुविधि बना"—[रामा०] [**बजार** (यौ०)]। मुहा०—**करना**-दुकान लगा कर बैठना, सौदा लेने बाजार जाना।—**लगना** (**लगाना**) बाजार या दुकान में बिक्री के पदार्थ रखे जाना (रखना)।—**चढ़ना**-बाजार में बिकने आना। —**चढ़ना** (**उतरना, घटना**)—चीजों का भाव बढ़ (घट) जाना। बाजार का दिन।

हाटक—(संज्ञा, पु०, सं०) कनक, स्वर्ण, कंचन, सोना, हेम, हिरण्य।

हाटकपुर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) लंकापुरी, [**हाटकपुरी** (स्त्री०)]।

हाटकलोचन—(संज्ञा, पु०, सं०) हिरण्याक्ष। "कनक कशिपु अरु हाटक लोचन"—[रामा०]।

हाटू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हट्ट] बाजार करने वाला, बाजार में सौदा बेचने या लेने वाला।

हाड़‡*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हड्ड] अस्थि, हड्डी, कुलीनता, कुल या जाति की मर्य्यादा, "पानी में निसिदिन बसै, जाके हाड़ न मास" —[पहे०]।

हाड़ा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हड्डा] एक प्रकार की बर्रे या भिड़, बरैंया, क्षत्रियों की एक जाति। "हाड़ा कुल केशरी भूपवर"—[मे० रा०]।

हाता—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० अहाता] बाड़ा, घेरा हुआ। स्थान, देश विभाग, सूबा, इलाका, प्रांत, हद, सीमा। "क्षीरोदक घूँघट हाता करि सम्मुख दिया उघारि"—सूर०। (वि०) [सं० हात] अलग पृथक, दूर किया हुआ, बरबाद, विनष्ट। (स्त्री० **हाती**) (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हता] मारने वाला।

हातिम—(संज्ञा, पु०, अ०) दक्ष, कुशल, पटु, निपुण, होशियार, चतुर, किसी काम में पक्का, उस्ताद, एक परोपकारी, उदार, दानी, अरब-सरदार (प्राचीन)। मुहा०—**की कबर पर लात मारना**-अत्यंत परोपकार या उदारता करना (व्यंग्य) अति दानी व्यक्ति।

हाथ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हस्त] हस्त, कर, बाहु, भुजा, बाहु से पंजे तक का अंग, विशेषत: कलाई और हथेली।—**पान**-(पु०) हथेली की दूसरी ओर पहनने का एक गहना (स्त्रियों का)।—**फूल**-(पु०) स्त्रियों की हथेली की दूसरी ओर पहनने का एक गहना, [हथ-फूल (दे०)]। मुहा०—**में आना या पड़ना**-अधिकार या वश में आना, मिलना, हाथ लगना।—**उठना**-स्वीकारता सूचनार्थ हाथ ऊपर करना। (**किसी को**)—**उठाना**-प्रणाम या बंदगी सलाम करना। (**किसी पर**)—**उठाना**-किसी को मारने के लिये थप्पड़ या घूँसा तानना, मारना।—**ऊँचा होना**-दान देना, दान देने में प्रवृत्त होना, सम्पन्न होना। (**बाँये**)—**का खेल होना**-अति सरल या साधारण होना।—**कटा लेना (बैठना)**-प्रतिज्ञा-बद्ध कर लेना (हो बैठना), वचन या प्रतिज्ञा-बद्ध होना।—**कट जाना**-कुछ करने योग्य न रहना, प्रण आदि से बँध जाना।—**का मैल**-अति साधारण वस्तु, तुच्छ पदार्थ।—**की सफाई**-हाथ का कौशल, हस्त कौशल, कर-कौतुक।—**खाली होना**-पास में धन या काम न रह जाना।—**खुजलाना**-मारने की इच्छा होना, प्राप्ति के लक्षण दिखाई देना।—**खुल जाना**-बंधन से मुक्त हो जाना, व्ययाधिक्य में प्रवृत्त होना, मारने की बान-सी पड़ना—**खींचना, खींच लेना (हटाना)**-किसी काम से अलग हो जाना या किसी कार्य में योग न देना, देना बंद करना।—**(चलना) चलाना**-मारना, थप्पड़ तानना।—**चूमना**-कारीगरी पर प्रसन्न होकर किसी के हाथों को सस्नेह देखना।—**छोड़ना**-प्रहार या आघात करना, मारना।—**छुड़ाना (बाँह छुड़ाना)**-पीछा छुटाना।—**छोटा होना**-कंजूस होना।—**बड़े (विशाल) होना**-अति उदार या दानी होना। " दयालु दीन बंधु के बड़े विशाल हाथ हैं "—मै० श०।—**जोड़ना**-नमस्कार या प्रणाम करना, विनती या अनुनय-विनय करना, मनाना। **दूर से—जोड़ना**-संबंध या साथ न रखना, अलग या किनारे रहना, त्यागना या छोड़ देना।—**जोड़ाना**-विनय कराना, आधीन कर लेना।—**डालना**-(किसी काम में) हाथ लगाना, योग देना, करना, आरंभ करना।—**ढीला करना**-सुविधा के लिये आवश्यकता से कुछ अधिक व्यय करना, काम में सुस्ती करना।—**तङ्ग होना**-तंग हाल होना, खर्च के लिये पर्याप्त धन न रहना। (**किसी बात या वस्तु से**)—**धोना**-खो देना, प्राप्ति की आशा या सम्भावना न रखना, नष्ट कर देना, छोड़ना, त्यागना।—**धोकर पीछे पड़ना**-जी जान से लग जाना, हानि पहुँचाने को उतारू होकर विविध उपाय करना।—**धो रखना (हाथ धोकर आना)**-तैयार हो जाना (आना)।—**दबना**-योग्यता या शक्ति सामर्थ्य न रहना, तङ्ग-हाल होना, व्यायार्थ पर्याप्त धन न रह जाना। (**किसी के**)—**देना**-मारना (खड्ग या हाथ से)।—**पकड़ना**-मना करना, रोकना, आश्रय या शरण देना या स्वरक्षा में लेना, शरण में लेना (आना या जाना), ब्याह या पाणिग्रहण करना। **किसी के—पड़ना**-प्राप्त होना, मिल जाना, पाले पड़ना, हाथ पड़ना, किसी पर हाथ का आघात या मार पड़ना।—**पत्थर तले दबना**-बड़ी कठिनता या बड़े संकट में पड़ना, विवश या लाचार होना, कठिन परिस्थित में पड़ना।—**पर हाथ धरे बैठे रहना**-बिना काम-धंधे के रहना, कुछ काम-धंधा न करना, बेकार या निठल्ला रहना।—**पसारना या फैलाना**-माँगना, याचना, आगे हाथ बढ़ाना।—**पैर (पाँव) चलना**-श्रम से काम करने की सामर्थ्य या योग्यता होना।—**पाँव चलाना**-काम-धन्धा करना, श्रम या प्रयत्न करना, उद्योग करना।—**पाँव ठंडे (सुन्न) होना**-मरने के समीप होना, भय से व्याकुल या स्तब्ध होना।—**पाँव (पैर) ढीले पड़ना**-निराशादि से शिथिलता आना, हतोत्साह या अशक्त हो जाना।—**पाँव निकालना**-मोटा-ताजा या हृष्ट-पुष्ट होना, सीमा का उल्लंघन करना या लांघना, शरारत करना।—**—पाँव फूलना**-भय या शोक से घबरा जाना, हतोत्साह या निराश हो अशक्त हो जाना।—**पाँव (पैर) पटकना**-तड़पना, प्रयत्न या दौड़-धूप करना।—**पाँव (के) होना (न होना)**-समर्थ या योग्य होना (न होना)।—**पाँव पटकना (फटफटाना)**-छटपटाना, फरफराना, उद्योग या प्रयत्न करना। (**किसी के**)—**पाँव (पैर जोड़ना**-विनय करना।—**पाँव मारना या**

हिलाना-बहुत प्रयत्न या उपाय करना, बड़ा उद्योग या परिश्रम करना।—पैर (पाँव) पसारना (फैलाना)-अधिक पाने की इच्छा करना, आगे बढ़ना।—पीले करना (होना)-ब्याह करना (होना) ब्याह में हाथों को हल्दी से रँगना (रँग जाना)। (किसी वस्तु पर)—फेरना-ले लेना, उड़ा लेना। (किसी पर)—फेरना-सान्त्वना और प्रोत्साहन देना, प्यार करना।—फैलाना (पसारना, बढ़ाना)-माँगने को हाथ बढ़ाना। (किसी काम में किसी का)—बटाना-सम्मिलित, शामिल या शरीक होना, योग देना, सहायक होना।—बाँधे खड़े रहना-सेवा में बराबर उपस्थित रहना।—मँजना (मांजना)-हाथ से किसी काम के करने का अभ्यास होना (करना)।—मलना-बहुत पछिताना, निराश तथा दुःखी होना। "हाथ मलै पछिताय"—वृन्द। "रह गया मैं मलते हाथ"—हरिऔध। (किसी वस्तु पर)—मारना-छिपा देना, उड़ा लेना, गायब कर देना।—(में) आना-प्राप्त होना।—में करना-कब्जे या वश में कर लेना, ले लेना, स्वाधिकार में या आधीन करना। (मन)—में करना-मन लुभाना, मोहित करना। (अपना मन)—में करना (होना)-मन को स्वाधीन करना (होना)।—में होना-वश या अधिकार में होना, सामर्थ्य में होना।—रँगना-घूस या रिश्वत लेना।—रोपना या ओड़ना-माँगना, हाथ फैलाना या पसारना।—बढ़ाना-किसी की सहायता करने को उद्यत होना, हाथ बटाना। (किसी काम के लिये)—बढ़ाना-किसी कार्य के करने को प्रथम या आगे उद्यत या तैयार होना। (कोई वस्तु)—लगना-प्राप्त होना, मिलना, हाथ में आना। किसी काम में किसी का—होना-सहयोग या राय होना अधिकार होना, सम्मिलित होना। (किसी काम में)—लगना-आरंभ या शुरू किया जाना या होना, किसी के द्वारा किया जाना। (किसी वस्तु में)—लगना-स्पर्श होना, छू जाना। (किसी काम में)—लगाना-योग देना, आरंभ या शुरू करना। (किसी चीज़ में)—लगाना-स्पर्श करना, छूना, ले लेना।—लगे मैला होना-इतना स्वच्छ और पवित्र होना कि हाथ लगने से गन्दा हो जाये। (सोना)—लगे मिट्टी होना-सब कार्य में असफलता होना। विलो०। मिट्टी—लगे सोना होना सब काम में सफलता होना।—(थों) हाथ-एक के हाथ से दूसरे के हाथ में होते हुये।—(थों)—,लेना-बड़े आदर और सम्मान से स्वागत करना।—खाली होना-फ़ुरसत होना, कार्य न होना, पास में पैसा न होना। खाली—हिलाते आना-कुछ लेकर न आना। (किसी कार्य, वस्तु या व्यक्ति का किसी के)—में होना-उसके अधीन, अधिकार या वश में होना।—चलना (चलाना)-मारने की प्रवृत्ति होना (मारना)।—(थों) हाथ बिकना-तेजी से बिकना। मनुष्य की कुहनी से पंजे के सिरे तक की नाप, आधे गज की लंबाई, जुए या तास आदि के खेल में एक मनुष्य की बारी, दाँव (यौ०)।—का खिलौना-पूर्णतया अपने वश में या आधीन।

हाथा-(संज्ञा, पु०) [हिं० हाथ] दस्ता, मुठिया, बेंट, गीले पिसे चावल और हल्दी से दीवार आदि पर लगाया हुआ पंजे या हाथ का छापा या चिन्ह।—जोड़ी-(स्त्री०) एक औषधीय पौधा।—बाँही-(स्त्री०) मल्ल युद्ध, कुश्ती, धौल-धप्पड़, भिड़ंत, मार-पीट।

हाथी—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हस्तिन्] एक बड़ा भारी सूँड़ के रूप की विलक्षण नाक और दो बड़े बाहर निकले दाँतों वाला स्तनपायी प्रसिद्ध पशु, गज, नाग, कुंजर, हस्ती। [हथिनी (स्त्री०)]।—खाना-(पु०) फ़ील-खाना, हथसार, हस्तिशाला, हाथी का रखने का घर।—दाँत-(पु०) मुँह के दोनों ओर के छोरों पर निकले हुए हाथी के दो बड़े सुफ़ेद दिखावटी दाँत, उन दाँतों की हड्डी।—नाल-(स्त्री०) हथनाल, गजनाल, हाथी पर चलने वाली तोप।—पाँव-(पु०) पील-पाँव या फीलपा नामक एक पैर के मोटे हो जाने का रोग।—वान-(पु०) महावत, पीलवान। मुहा०—की राह-आकाश गंगा, हथ-डहर।—पर चढ़ना-बहुत अमीर होना।—बाँधना-बहुत अमीर या धनी होना, अत्यधिक व्यय का कार्य करना। (द्वार पर)—झूमना-अति धनी और सम्पन्न होना।—के संग गाँड़े खाना-अत्यंत बड़े भारी बलवान की बराबरी करना। लो०—"हाथी अपनी राह जाता है, कुत्ते भूँकते हैं"—के दाँत-(देखने के और खाने के और)—यथार्थ और दिखावटी बात। (संज्ञा, स्त्री०) [हिं० हाथ] हाथ का सहारा, करावलंब।

हादसा—(संज्ञा, पु०, अ०) दुर्घटना।

हान*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हानि] हानि घटी, क्षति ।

हानि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) क्षति, घटी, नुक़सान, टोटा, घाटा, स्वास्थ्य में बाधा, नाश, बुराई, अनिष्ट, अभाव, अपकार । "हानि-लाभ, जीवन-मरण यश-अपयश विधि हाथ"—[रामा०] ।—**कर**—(वि०) क्षति पहुँचाने वाला, हानि करने वाला, अरोग्यता या तंदुरुस्ती बिगाड़ने वाला, बुरा फल देने वाला । [**हानिकरी** (स्त्री०)] ।—**कारक**—(वि०) हानिकार, हानिप्रद ।—**कारी**—(वि०) [सं० हानिकारिन्] हानिकर, हानि-कारक, क्षतिप्रद । [**हानिकारिणी** (स्त्री०)] ।

हाफिज—(संज्ञा, पु०, अ०) वह मुसलमान जिसे कुरान कंठस्थ हो ।

हामी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हाँ] स्वीकार, हाँ करने की क्रिया या भाव, स्वीकृति । **मुहा०**—**भरना**-स्वीकार या मंजूर करना । (संज्ञा, पु०) सहायक, सहायता या हिमायत करने वाला ।

हाय—(अव्य०, दे०) [सं० हा] दुःख कष्ट या शोक-सूचक शब्द । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) कष्ट, पीड़ा, दुःख । **मुहा०**—(**किसी की**)—**पड़ना** (**लगना**)-दुःख देने का बुरा परिणाम या फल होना ।—**खाकर मरना**-दुःख के कारण मर जाना ।

हाय-हाय—(अव्य०, दे०, यौ०) [सं० हा हा] दुःख, क्लेश या शारीरिक कष्ट-सूचक शब्द । (संज्ञा, स्त्री०) दुःख, कष्ट, शोक, झंझट, परेशानी । **मुहा०**—**करना**-झींखना, झंझट करना ।—**में पड़ना**-परेशानी या झंझट में पड़ना ।

हायन—(संज्ञा, पु०, सं०) वर्ष, साल । "एकादश हायन के अंतर, लहहि जनेउ कुमारा"—रघु० ।

हायल—(वि०, दे०) मूर्छित, घायल, बेकाम, शिथिल । (वि०, पु०, अ०) दो वस्तुओं के बीच में पड़ने वाला, अंतर्वर्ती, रोकने वाला ।

हार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हरि] खेल, लड़ाई या चढ़ा ऊपरी में प्रतिद्वंद्वी के सम्मुख न जीतना, पराजय, शिकस्त, थकावट, हानि । **मुहा०**—**खाना**-हारना, पराजित होना । शिथिलता, थकावट, क्षति, हानि, घटी, जब्ती, वियोग, विरह, राज्य के अपहरण । (संज्ञा, पु०, सं०) चाँदी, सोना और मोतियों आदि की माला, ले जाने या वहन करने वाला, सुन्दर, भाजक (गणि०), गुरु मात्रा (पिं०), विनाशक, एक प्रत्यय (व्या०) वन, जंगल, खेत ।—**बंध**-(पु०) एक चित्र-काव्य जिसमें पद्य माला के रूप में रखे जाते हैं ।

हारक—(संज्ञा, पु०, सं०) चोर, लुटेरा, हरण करने वाला, सुन्दर, मनोहर, भाजक (गणि०), माला, हार । "नव उज्ज्वल जल-धार हार हीरक सी सोहति"—हरि० ।

हारद, हारदिक*—(क्रि० सं०) हार्दिक, हृदय संबंधी, हृदय का ।

हारना—(क्रि० पु०, दे०) [सं० हार] पराजित होना, शिकस्त खाना, रण या प्रतिद्वंद्वितादि में शत्रु के सम्मुख विफल होना, थक जाना, शिथिल होना, प्रयत्न में असमर्थ या निराश होना ।—**मुहा०**—(**रे**) दर्जे-विवश होकर, लाचार या मजबूर होकर ।—**हार कर**-लाचार या असमर्थ होकर । (क्रि० स०) खोना, गँवाना, छोड़ देना, दे देना, रख न सकना, लड़ाई, बाजी आदि को सफलता से न पूरा करना ।

हारल—(संज्ञा, पु०, दे०) अपने चंगुल में लकड़ी लिये रहने वाला एक पक्षी, हारिल ।

हार-वार*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हड़बड़ी] शीघ्रता, आतुरता, जल्दी, हड़बड़ी, हरबरी ।

हारसिंगार—(संज्ञा, पु०, दे०) हरसिंगार, पारिजात ।

हारा†—(प्रत्य०, दे०) [सं० धार=रखने वाला] शब्द के आगे आकर, कर्तव्य, संयोग, धारणादि सूचक एक प्रत्यय, हार । [**हारी** (स्त्री०)] । (वि०) [हि० हारना] पराजित ।

हारिल—(संज्ञा, पु०, दे०) अपने चंगुल में लकड़ी का टुकड़ा लिये रहने वाला एक मझोला पक्षी । **मुहा०**—**की लकड़ी**-सदा पास रहने वाली प्रिय वस्तु ।

हारी—(वि०) [सं० हारिन्] हरण करने वाला, चुराने वाला, ले जाने या पहुँचाने वाला, नाश या दूर करने वाला, मोहित करने वाला । [**हारिणी** (स्त्री०)] । (संज्ञा, पु०) एक तगण और दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) । (स० क्रि० भू० दे०) [हि० हारना] हार गयो । "फिरहिं राम सीता मैं हारी"—[रामा०] ।

हारीत—(संज्ञा, पु०, सं०) लुटेरा, चोर, चोरी, लुटेरापन, कण्वऋषि का एक शिष्य ।

हँसने की क्रिया या भाव। ६ स्थायी भावों या रसों में से एक भाव या रस। "शृंगार-हास्य-करुणा-रौद्र वीर भयानकाः"—सा० द०। निन्दा-सूचक हँसी, उपहास, मजाक, दिल्लगी।

हास्यास्पद—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह व्यक्ति जिसके बुरे ढंग को देख हँसी हो, हँसी करने योग्य।

हास्योत्पादक—(वि० सं०) हँसी लगने वाली या हँसानेवाली (वस्तु) हँसी पैदा करने वाला।

हा हंत—(अव्य, यौ०, सं०) अति शोक सूचक शब्द। "हा हत हंत नलिनी गज उज्जहार"।

हा-हा—(संज्ञा पु०, अनु०) हँसने का शब्द। —**हीही**,—**ठीठी**-(यौ०) हँसी-ठट्ठा, बहुत विनती की पुकार, दुहाई, गुहार। **मुहा०—करना (खाना)**-अति अनुनय-विनय या विनती करना, अति गिड़गिड़ाना। (अव्य) [सं० हा] अति शोक। "हा हा कहि सब लाग पुकारे"—[रामा०]।—**कार**-(संज्ञा, पु०, सं०) कोलाहल, कुहराम, घबराहट की चिल्लाहट। "हा हा-कार भया पुर भारी"—[रामा०]।

हाही—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० हाय] कुछ पाने को सदैव हाय-हाय करते रहना।

हाहू*†—(संज्ञा, पु०, अनु०) कोलाहल, कुहराम, हल्ला-गुल्ला, धूम, हलचल।

हाहूबेर—(संज्ञा, पु०, यौ०, दे०) [हाहू + बेर हि०] जंगली बेर, झड़बेरी का बेर, एक औषधि, [हाऊबेर, झाऊबेर (प्रान्ती०)]।

हिकरना—(क्रि० अ०, दे०) हिनहिनाना। "हिकरहिं अश्व न मारग लेहीं"—[रामा०]।

हिंकार—(संज्ञा, पु०, सं०) गाय के रँभाने के शब्द।

हिंगलाज—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हिंगुलाजा] दुर्गा देवी की मूर्त्ति जो सिंध देश में है।

हिंगु—(संज्ञा, पु०, सं०) हींग, रामठ।

हिंगोट—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिंगुपत्र] एक जंगली कटीला पेड़ जिसके गोल छोटे फलों से तेल निकाला जाता है, इंगुदी।

हिंछा*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) इच्छा।

हिंडन—(संज्ञा, पु०, सं०) घूमना, फिरना।

हिंडोर, हिंडोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिंडोल] हिंडोला, दोला, एक प्रकार का राग, हिंडोरना। "हिंडोरो झूलत गोकुलचंद"—सूर०।

हिंडोरना—(संज्ञा, पु०, सं०) देखिए, हिंडोला।

हिंडोल, हिंडोला—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिंदोल] हिंडोला, एक राग, पालना, झूला, ऊपर-नीचे घूमने वाला चक्कर जिसमें बैठने को मंच लगे रहते हैं।

हिंडोलना‡—(संज्ञा, पु०) [सं० हिंदोल] हिंडोला, पालना, झूला, हिंडोरना।

हिंताल—(संज्ञा, पु०, सं०) छोटी जाति का खजूर। "कहु ताल, ताल, तमाल तरु हिंताल अरु करवीर है"—[स्फु०]।

हिंद—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भारत, भरतखंड, हिन्दुस्तान, आर्यावर्त।

हिंदवाना, हिंदुवाना†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० हिंद + वान] तरबूज, कलींदा, [हिंद्वाना (दे०)]।

हिंदवी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) हिंदी भाषा।

हिंदी—(वि०, फ़ा०) भारतीय, हिन्दुस्तान का। (संज्ञा, पु०) भारतवासी, हिन्द या हिन्दुस्तान का रहने वाला। (संज्ञा, स्त्री०) हिन्द के उत्तरीय प्रधान भाग की भाषा जिसमें कई बोलियाँ हैं और जो समस्त देश की सामान्य राष्ट्र-भाषा है, भारतीय हिन्दी भाषा, नागरी भाषा।

हिंदुत्व—(संज्ञा, पु०) हिन्दू धर्म के अनुयायी होने का भाव या विचार।

हिंदुस्तान—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) दिल्ली से पटने तक का भारत का उत्तरीय मध्य भाग, भारत, भरत-खंड, आर्यावर्त।

हिंदुस्तानी—(वि०, फ़ा०) भारतवर्षीय, भारतीय। (संज्ञा, पु०) हिन्दुस्तान निवासी, भारतवासी। (संज्ञा, स्त्री०) भारत की भाषा, बोल-चाल की वह व्यावहारिक हिन्दी जिसमें न तो अनेक फारसी-अरबी के और न बहुत संस्कृत के शब्द हों।

हिंदुस्थान—(संज्ञा, पु०, दे० यौ०) [फ़ा० हिन्दुस्तान] हिन्दुस्तान, भारत, भरतखंड।

हिंदुस्थानी—(वि०, दे०) [फ़ा० हिन्दुस्तानी] हिन्दुस्तानी, भारतीय। (संज्ञा, पु०) भारतवासी, हिन्दुस्तान का बाशिंदा या रहने वाला। (संज्ञा, स्त्री०) भारत की भाषा, हिन्दुस्तान की सामान्य

व्यावहारिक बोली या भाषा। "पढ़े फारसी, हिन्दुस्तानी राजा भल पढ़ये परिमाल"—[आल्हा०]।

हिंदू—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) भारतवासी, वेदस्मृति, पुराणादि का मतानुयायी भारतवासी, आर्य-संतान, आर्य।

हिंदूपन—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० हिन्दू+पन हि० प्रत्य०] हिन्दू होने का भाव या गुण, हिन्दुत्व।

हिंदोस्तान—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० हिंदुस्तान] भारत, आर्य्यावर्त। [**हिंदोस्तानी** (वि०)]।

**हियाँ, हिन्*—(अव्य०, दे०) [सं० अत्र] यहाँ, यहाँ पर।

हिंव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिम] बर्फ, तुषार। (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हृदय] हृदय, दिल।

हिंवार-हिवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिमालि] पाला, हिम, बर्फ। "कृष्ण समीपी पांडवा गले हिवांरे जाय"—कबीर।

हिस—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु० हिं हिं] घोड़ों के बोलने का शब्द, हिनहिनाहट।

हिंसक—(संज्ञा, पु०, सं०) घातक, हत्यारा, मार डालने वाला, हिंसा करने वाला, बुराई या हानि करने वाला, पशु-वधक, शत्रु, वधिक।

हिंसन—(संज्ञा, पु०, सं०) जीवों को मार डालना या वध करना, सताना, संताप या दुःख देना, जान मारना, अनिष्ट करना या चाहना, पीड़ा पहुँचाना। [**हिंसनीय, हिंसित, हिंस्य** (वि०)]।

हिंसना—(क्रि० अ०, दे०) घोड़े का हिनहिनाना। (क्रि० स०, दे०) मारना, वध करना।

हिंसा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) जीवों का वध करना या मार डालना, सताना, कष्ट या दुख देना, पीड़ा पहुँचाना, बुराई करना या चाहना, शरीर और प्राणों का वियोग करना ही हिंसा है। "हिंसा महा पाप बतरायो"।

हिंसात्मक—(वि०, यौ०, सं०) जिसमें हिंसा हो, हिंसा-सम्बन्धी।

हिंसालु—(वि०, सं०) हिंसा करने वाला, हिंसक, हिंसाकारी।

हिंस्र—(वि०, सं०) हिंसक, हिंसा करने वाला, खूँखार।

हि—(विभ०, दे०) कर्म और संप्रदान कारकों का चिह्न या विभक्ति। "सादर जनक-सुतहि करि आगे"—[रामा०]। "रामहि सौंपहु जानकिहि राखौ मोर दुलार"—[रामा०]। को, कौ, के, हेतु, के लिये, प्राचीन काल में यह सब कारकों की विभक्ति मानी गयी थी। "बोलत लखनहिं जनक डराहीं"—[रामा०]। "तुमहिं देख शीतल भई छाती"—[रामा०]। (अव्य०, ही) विशेषतः।

हिआ-हिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हृदय] हृदय, उर, छाती, दिल, मन, [**हिय, हिया, हीय** (ब्र०)]। "हिअ आनहु रघुपति-प्रभुताई"—[रामा०]।

हिआव, हिआउ—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हियाव] साहस, हिम्मत। "जाकै हियें हिआव सिंधु-लाँघन मैं होई"—शि० गो०।

हिकमत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) निर्माण-बुद्धि, तत्व-ज्ञान-विद्या, कला कौशल, युक्ति, उपाय, तदबीर, चतुरता, चातुरी का ढंग, चाल, वैद्यक, हकीमी, हकीम का पेशा या काम।

हिकमती—(वि०) [अ० हिकमत] तदबीर सोचने या निकालने वाला, कार्य्य-कुशल, क्रिया-चतुर, चालाक, किफायती, कार्य-साधन की युक्ति निकालने वाला।

हिकायत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) कहानी कथा, किस्सा।

हिक्का—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) हिचकी, हिचकी रोग।

हिचक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हिचकना] आगा-पीछा करना, किसी कार्य के करने में मन में प्रगट होने वाली रुकावट।

हिचकना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हिक्का] हुचकना, हिचकी लेना, आगा-पीछा करना, संकोच, अनिच्छा या भयादि के किसी कार्य मे प्रवृत्त न होना।

हिचकिचाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हिचकना] हिचकना, आगा-पीछा करना।

हिचकिचाहट—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हिचकिचाना। आगा-पीछा, सोच-विचार]।

हिचकी—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु० हिच या सं० हिक्का] एक रोग उदर-वायु का ऊपर झोंके से चढ़ कर कंठ में धक्का दे निकलना, हुचक। मुहा०

—लगना-मरने के समीप होना, रह-रह कर सिसकने का शब्द ।—आना-किसी की याद करना या आना ।

हिजड़ा, हिजरा—(संज्ञा, पु०, दे०) षंढ, नपुंसक नामर्द, जनखा, हीजड़ा ।

हिजरी—(संज्ञा, पु०, अ०) मुसलमानी सन् जो मुहम्मद साहिब के मक्का से मदीने भागने की याद में चलाया गया है (१५ जुलाई सन् ६२२ ई०) ।

हिज्जे—(संज्ञा, पु०) [अ० हिज्जः] किसी शब्द के अक्षरों को मात्रा-सहित कहना, स्पेलिंग (अंग्रे०) ।

हिज्र—(संज्ञा, पु०, अ०) वियोग, विरह । "माँगा करेंगे अब से दुआ हिज्रे यार का"—जौक़ ।

हिडिंब—(संज्ञा, पु०, सं०) एक दैत्य या राक्षस जिसे भीम ने बन-वास के समय में मारा था (महा०) ।

हिडिंबा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हिडिम्ब की बहिन जिसे भीम ने ब्याह लिया था (महा०) ।

हित—(वि०, सं०) भलाई चाहने या करने वाला, खैरख्वाह, हितू, मित्र, शुभाकांक्षी । (संज्ञा, पु०) लाभ, कुशल, कल्याण, भलाई, मङ्गल, हेत, उपकार, स्वास्थ्य-लाभ, अनुराग, प्रेम, मित्रता, स्नेह, मित्र, भला चाहने वाला, नातेदार, सम्बन्धी । अव्य० लाभ के लिये प्रसन्नता के लिये, हेतु, वास्ते, लिये, काज । "पर-हित सरिस पुन्य नहिं भाई"—[रामा०] ।—कर, कारक-(पु०) फायदेमन्द, लाभदायक, लाभकर, स्वास्थ्य-कर भलाई करने वाला ।—कारी-(वि०) भलाई करने या चाहने वाला, लाभदायक, स्वास्थ्यकर । "मातु, पिता भ्राता हितकारी"—[रामा०] ।—चिंतक-(पु०) भलाई चाहने वाला, शुभचिन्तक, हितेच्छु, शुभाकांक्षी, शुभेच्छु ।—चिंतन-(पु०) हित की इच्छा, भलाई की कामना, शुभाकांक्षा ।—जनक-(वि०) लाभप्रद ।—वाद-(पु०) हित की बात । —वादी-(वि०) [हितवादिन्] हित या भलाई की बात कहने वाला [**हितवादिनी** (स्त्री०)] । —वाह-(वि०) हितकारी, भलाई करने वाला, लाभकारी ।

हितता—(संज्ञा, स्त्री०) [सं० हित+ता प्रत्य०] भलाई खैरख्वाही ।

हितवना*‡—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हिताना] अच्छा लगना, हिताना ।

हिताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हित+आई प्रत्य०] रिश्ता, सम्बन्ध, नाता ।

हिताना*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हित] अच्छा या प्यारा लगना, सुहाना, हितकारी होना, प्रेमयुक्त या अनुकूल होना । (क्रि० स०) प्रिय लगना । "कैहर बहुत हिताय" कुंज वि० ।

हिताहित—(संज्ञा, पु०, सं०) हानि-लाभ, भलाई बुराई, नफा-नुकसान ।

हिती, हितु, हितू—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हित] हितचिन्तक, खैरख्वाह, भलाई चाहने या करने वाला, नातेदार, स्नेही, मित्र, सुहृद, सम्बन्धी । "विपति परे कोऊ हितू, नहिं काहु कर होय"—वा० ।

हितेच्छु—(वि०, सं०) भलाई या हित चाहने वाला, शुभाकांक्षी ।

हितैषणा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) शुभेच्छा, हितेच्छा ।

हितैषिता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खैरख्वाही, भलाई चाहने की वृत्ति, हित की इच्छा ।

हितैषी—(वि०) [सं० हितैषिन] खैरख्वाह, भला चाहने वाला । [**हितैषिणी** (स्त्री०)] ।

हितोपदेश—(संज्ञा, पु०) नीति शास्त्र का एक ग्रन्थ विशेष जिसके रचयिता विष्णु शर्मा हैं, हित-कारी, सत्परामर्श ।

हितौना†*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हिताना] प्रिय या अच्छा लगना, भाना, सुहाना ।

हिदायत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अधिकारी की शिक्षा, निर्देश, आदेश, ताकीद, सूचना ।

हिनती*‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हीनता] हीनता, लघुता, छोटाई, नम्रता, नवन-सारी ।

हिनहिनाना—(क्रि० अ०, अनु०) घोड़े का बोलना, हींसना (प्रान्ती०) [**हिनहिनाहट** (संज्ञा, स्त्री०)] ।

हिना—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मेंहदी ।

हिनाई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हीन] हीनता, निर्बलता ।

हिनाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हीन+आव हि० प्रत्य०] हीनता ।

हिफाजत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) रक्षा, बचाव, खबरदारी, देख-रेख, किसी वस्तु को यों रखना कि वह किसी प्रकार नष्ट न हो सके।

हिब्बा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हिब्बः] दायी, दान, [हब्बा, हिबा (दे०)]।—**नामा**-(पु०) [अ०+फ़ा०] दान-पत्र, [हिबानामा दे०)]।

हिमंचल‡*—(संज्ञा, पु०, दे०, यौ०) [सं० हिमाचल] हिमालय पर्वत, पार्वती के पिता, "गिरजहिं पिता हिमंचल जैसे"—[स्फु०]।

हिमंत†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हेमंत] एक ऋतु, हेमंत।

हिम—(संज्ञा, पु०, सं०) तुहिन, पाला, तुषार, बर्फ़, जाड़ा, शीत, शीत ऋतु, चंदन, चन्द्रमा, कपूर, मोती, कमल। (वि०) ठंढा, शीत, सर्द। —**उपल**-(पु०) हिमोपल, ओला, पत्थर। "जिमि हिमउपल कृषी दलि गरहीं" –[रामा०]। —**कण**-(पु०) [हिमकन (दे०)] पाला या बर्फ के बारीक टुकड़े, तुहिन कण।—**कर**-(पु०) चन्द्रमा, हिमांशु। "सीय बदन सम हिमकर नाहीं"—[रामा०]।—**किरण**-(पु०) चन्द्रमा, [हिमकिरन (दे०)]। "नाम हिमकिरण जरावै ज्वाल-जाल सो"—मन्ना०।—**पर्वत**-(पु०) हिमालय, उत्तरीय सागरों में हिम या बर्फ के पहाड़।—**भानु**-(पु०) चन्द्रमा।—**रश्मि**-(पु०) चन्द्रमा।—**रुचि**-(संज्ञा, पु०, सं०) चंद्रमा।

हिमता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हिम का भाव, शीतलता, ठंढक।

हिमयानी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कमर में बाँधने की रुपये-पैसे रखने की जालीदार थैली, बसनी (प्रान्ती०)।

हिमवंत—(संज्ञा, पु०, सं०) हिमालय, उमा के पिता।

हिमवत्—(संज्ञा, पु०, सं०) हिमवान्, हिमाचल। "हिमवत सब कहँ न्योति बुलावा"—[रामा०]।

हिमवान—(वि०) [सं० हिमवत्] जिसमें हिम हो, बर्फ या पाले वाला। [हिमवती (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) हिमालय, कैलाश, चन्द्रमा। "हिमवान ज्यों गिरजा समरपी"—[रामा०]

हिमांक—(संज्ञा, पु०, सं०) पानी जमकर बर्फ बन जाने वाला तापमान। [फ्रीजिंग प्वाइंट]।

हिमांशु—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) चन्द्रमा, हिमकर।

हिमांचल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हिमाचल हिमालय।

हिमाकत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) बेसमझी, बेवकूफ़ मूर्खता।

हिमाचल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हिमालय।

हिमाद्रि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हिमालय पहाड़।

हिमाग्नि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) हिम-जन्य ताप या आग।

हिमानिल—(संज्ञा, पु०, सं०) ठंडी हवा, बर्फीली वायु।

हिमानी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) बर्फ-समूह, ओस-कणों का समूह।

हिमामदस्ती—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० हावन दस्ता] खरल और बट्टा, [इमाम दस्ता (दे०)]

हिमायत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मंडन, पक्षपात सहायता, प्रतिपादन, समर्थन। "देत हिमायत को गधी, ऐराकी को लात"—[नीति०]। "लिये फिरती है उचक्कों की हिमायत तेरी"—हाली०

हिमायती—(वि०, फ़ा०) सहायता देने या पक्ष करने वाला, मददगार, समर्थक, मंडन या प्रतिपादन करने वाला। "हिन्दी के आप हिमायती है बड़े"—पद्मा०।

हिमालय—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) भारत की उत्तरीय सीमा का संसार में सबसे बड़ा और ऊँचा तथा सदा हिमाच्छादित एक पहाड़, हिमाचल पर्वतराज।

हिमि*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिम] पाला, बर्फ़, तुषार।

हिम्मत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) साहस, क्लिष्ट और दुस्साध्य कार्यों के करने की मानसिक दृढ़ता विक्रम, पराक्रम, बहादुरी, शूरता, हियाव, जियरा, जीवट। **मुहा०**—**हारना**-साहस छोड़ना "हारिये न हिम्मत बिसारिये न राम-नाम"—**हिराना**-साहस न रहना। "हिम्मत हिरानी हाय हिम्मती हमारे की"—सरस।

हिम्मती—(वि०, फ़ा०) साहसी, बहादुर, दृढ़, पराक्रमी।

हिय-हिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हृदय, प्रा० हिअ] वक्षःस्थल, हृदय, छाती, मन, उर, दिल, हीय। **मुहा०**—**हारना**-हिम्मत छोड़ना। "हेरि हिय हारे सारे पण्डित प्रवीन तऊ"—रसाल।

हियरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हिय] दिल, छाती, मन, वक्षःस्थल, हृदय।

हियाँ, हियन†—(अव्य०, दे०) [सं० अत्र] यहाँ, [इहाँ, ह्याँ (दे०)] यहाँ इस स्थान में हिन (ग्रा०)।

हिया-हियो—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हृदय] हृदय, दिल, छाती, मन। " बहु छल-बल सुग्रीव करि हिये हारि भय मान"—[रामा०]। **मुहा०**—(ये) **का अंधा**-मूर्ख, अज्ञान।—(ये) **का फूटना (बंद होना) या मुँदना**-बुद्धि न होना, अन्तर्दृष्टि का न होना।—**जलना**-बहुत कोप या शोक होना—**लगाना**-भेंटना, गले या छाती से लगा कर मिलना, आलिंगन करना।—(ये) **में लोन सा लगना (लगाना)**-बहुत बुरा लगना (जले को जलाना, जले पर नमक लगाना या छिड़कना), दुखादि का भाव और बढ़ाना (विशेष मुहा० देखो—जी और कलेजा)।

हियाव—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हिय] हिम्मत, साहस, जीवट। **मुहा०**—**खुलना**-हिम्मत बँधना, साहस हो जाना, भय या संकोच न रहना।—**पड़ना (होना)**-हिम्मत या साहस होना।

हियो—(संज्ञा, पु०, ब्र०) हृदय, हिय।

हिरकना†*—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हरुक=समीप] पास या निकट होना या जाना, समीप आना या जाना, सटना।

हिरकाना†*—(क्रि० स०, दे०) [हि० हिरकना] सटाना, समीप या पास करना या ले जाना, भिड़ाना।

हिरण, हिरणा*‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हरिण] हरिण, हरिन, हिरन, हिरना।

हिरण्य—(संज्ञा, पु०, सं०) कंचन, सुवर्ण, कनक, स्वर्ण, सोना, शुक्र, वीर्य, धतूरा, कौड़ी, अमृत।—**कशिपु**-(पु०) विष्णु-विरोधी एक प्रसिद्ध दैत्य-राज जो विष्णु भक्त प्रह्लाद का पिता था, विष्णु ने नृसिंहावतार धारण कर इसे मारा था, [हिरनाकुस, हरनाकुस (दे०)]।—**गर्भ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) वह प्रकाश-रूप या ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा और समस्त सृष्टि प्रकट हुई, सूक्ष्म शरीर युक्त आत्मा, ब्रह्मा, विष्णु, परमात्मा। " हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे "—यजु०।—**नाभ**-(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विष्णु, मैनाक पहाड़।—**रेता**-(संज्ञा, पु०) [सं० हिरण्य रेतस्] शिव, अग्नि, सूर्य्य।

हिरण्यकश्यप—(संज्ञा, पु०) [सं० हिरण्य-कशिपु]। देखिए—हिरण्यकशिपु।

हिरण्याक्ष—(संज्ञा, पु०, सं०) दैत्य-राज हिरण्य-कशिपु का भाई और प्रह्लाद का चचा।

हिरदय, हिरदै, हिरदा†*—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हृदय] हृदय, मन। " जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप "—कबीर।

हिरन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हरिण] मृग, हरिन, छिगार (प्रान्ती०), [हिरना, हिन्ना (दे०)]। **मुहा०**—**हिरन हो जाना**-भाग जाना।

हिरनाकुस—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिरण्य-कशिपु] हिरण्य-कशपु, [हिरनाकुस (दे०)]।

हिरफत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कला-कौशल, दस्त-कारी; हाथ की कारीगरी, शिल्पकारी, हुनर, चतु-राई, धूर्त्तता चालाकी, चालबाजी।

हिरफत-बाज—(वि०) [अ०+फ़ा०] धूर्त्त, चालाक, चालबाज।

हिरमिजी—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) एक प्रकार की लाल मिट्टी, [हिलमिजी (दे०)]।

हिरवाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हिराना] हेर-वाना, हिरावना, ढुँढ़वाना, खो देना।

हिरस‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० हिर्स] हिर्स, डाह, ईर्षा।

हिराती—(संज्ञा, पु०) [हिरात देश] हिरात प्रदेश का घोड़ा जो गरमी में भी नहीं थकता, हिरात का निवासी, हिरात-सम्बन्धी।

हिराना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हरण] [हेराना (दे०)] न रह जाना, गुम या गायब हो जाना, मिटना, खो जाना, अति चकित होना, दूर होना, अपने को भूल जाना। (क्रि० स०, दे०) भूल जाना, ध्यान में न रहना, विस्मरण हो जाना। [**हिरावना** (स० रूप)]।

हिरावल—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हरावल] सेना का अग्र भाग, हरावल।

हिरास—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) निराशा, नाउम्मैद। (संज्ञा, पु०, दे०) ह्रास, हरास। (वि०) निराश दुखी। " यों कहि सुमंत हिय है हिरास "—[रामा०]। "वय विलोकि हिय होत हिरास"—[रामा०]।

हिरासत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) कैद, बंदी, नजर-बंदी, पहरा-चौकी। " खुश हुआ बुलबुल हिरासत से छुटा "—[स्फु०]।

हिरौंजी‡—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० हिरमजी] लाल रंग की एक मिट्टी।

हिरौल*—(संज्ञा, पु०, दे०) हरावल (अ०), सेनाग्रभाग।

हिर्स—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लोभ तृष्णा, लालच, मनोवेग स्पर्द्धा। " हिर्स करवाती है रोब बाजियाँ सब बनें याँ "—मीर०। मुहा०—**छूटना (होना)**–लोभ या लालच होना, किसी की देखादेखी किसी काम के करने की अभिलाषा या इच्छा, स्पर्धा।

हिलकना—(क्रि० अ०) हिचकी लेना, साँस लेना। (क्रि० स०) सिकोड़ना।

हिलकी†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हिक्का] हिचकी, सिसक, सिसकने का शब्द। " जागत हू पिय हिय लगी हिलकी तऊ न जाय "—मति०।

हिलकोर, हिलकोरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिल्लोल] लहरी, लहर, तरंग, मौज, हिलोर, [हलकोर, हलकोरा (दे०)]।

हिलकोरना—(क्रि० स०, हि०] लहराना, तरंगित करना।

हिलग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हिलगना] परिचय, प्रेम, संबंध, लगाव, लगन।

हिलगना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० अभिलग्न] फँसना, टँगना, लटकना, अटकना, बझना परचना, हिलमिल जाना। (क्रि० अ०, दे०) [सं० हिरुक—पास] समीप होना, हिरकना, सटना, या भिड़ना।

हिलगाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हिलगना] लटकाना, अटकाना, फँसाना, टाँगना, बझाना, मेल-जोल में करना, परचाना, अनुरक्त और परिचित करना। (क्रि० स०, दे०) [सं० हिरुक] समीप लाना, सटाना।

हिलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हल्लन] कंपित या चलायमान होना, हरकत करना, डोलना, स्थिर न रहना। मुहा०—**डोलना**-कंपित या चलायमान होना, चलना-फिरना, घूमना, प्रयत्न या उद्योग करना। सरकना, हटना, टलना, चलना, कंपित होना, दृढ़ या स्थिर न रहना, जमकर न बैठना, ढीला या शिथिल होना, झूमना, पैठना, लहराना (पानी में) धँसना या प्रवेश करना, हैलना (ग्रा०)। (क्रि० अ०) [हि० हिलगना] परचना, अनुरक्त और परिचित होना। [**हिलाना**—(स० रूप)]। [**हिलना-मिलना** (यौ०)]। घनिष्ठ मेल-जोल या संबंध रखना। " हिलमिल जानै तासों हिलमिल लावै हेत "—ठाकुर। (क्रि० अ०, दे०) घुसना, प्रवेश करना, पैठना (विशेषतया जल में)।

हिलसा—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हल्लिश] एक तरह की मछली।

हिलाँव—(वि०, दे०) [हि० हिलना] हिलने या धँसने-योग्य (जल में)।

हिलाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हिलना] कंपित करना, हरकत देना, डुलाना, कँपाना, चलायमान करना, हटाना, स्थान से हटाना या उठाना, झुलाना, ऊपर-नीचे या इधर-उधर डुलाना, [हिलावना (दे०)]। (क्रि० स०, दे०) [हि० हिलगना] परचाना, अनुरक्त और परिचित करना। (क्रि० स०, दे०) पैठाना, घुसाना, धँसाना।

हिलोर, **हिलोरा**—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिल्लोल] लहरी, मौज, तरंग, लहर। मुहा०—**(रे) लेना**–तरंगित होना, लहराना।

हिलोरना—(क्रि० स०) [हि० हलोर+ना प्रत्य०] पानी में हिलाकर उसमे लहरें उठाना, लहराना, हलोरना।

हिलोल—(संज्ञा, पु०, दे०) हिलोर (हि०) लहर, तरंग।

हिल्लोल—(संज्ञा, पु०, सं०) लहरी, लहर तरंग, मौज, हिलोरा, हर्ष की हिलोर, आनंद-तरंग, उमंग।

हिवंचल—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिमाचल] हिमालय, हिमंचल।

हिवर, हेवार—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हिम] हेवार (ग्रा०), बर्फ़, तुषार, पाला।

हिसका—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ईर्ष्या] डाह, ईर्ष्या, स्पर्द्धा, देखादेखी में होने वाली इच्छा।

हिसाब—(संज्ञा, पु०, अ०) गणित, गिनती, लेखा, महाजनों के आय-व्यय या लेन-देन की बही का लेख, उचापत (प्रान्ती०)।—**किताब**–(पु०) आय-व्ययादि का लिखा हुआ ब्यौरा, रीति, तरीका, चाल, ढंग। गणित की पुस्तक, आय-व्ययादि की बही या लेखा।—**दाँ**–(वि०) गणितज्ञ।—**दार**–(पु०) हिसाब किताब रखने वाला। मुहा०—**चुकाना या चुकता करना**–जो जिम्मे निकले उसे सब का सब दे डालना। " हिसाबे दोस्तां दर दिल

अगर वह दिलरुबा समझे "—जौक ।—(किताब) साफ करना-लेन-देन का हिसाब करना, अपना ऋण दे डालना ।—करना (होना)-लेन-देन के ब्यौरे का निर्णय करना (होना), अपना देय दे देना ।—लेना-जमा-खर्च या आय-व्यय का ब्यौरा पूछना, किसी से जो पाना है उसे लेना ।—देना जमा खर्च का ब्यौरा बताना या समझाना, जो जिम्मे निकलता हो उसे देना ।—लेना या समझना-यह पूछना-जाँचना या जानना कि कितना धन कहाँ व्यय हुआ । (ईश्वर या खुदा के यहाँ या सामने)—होना-किये हुए पाप-पुण्य की जाँच ईश्वर के यहाँ होना ।—रखना-आय-व्यय का ठीक ब्यौरा लिख रखना ।—बैठना (बैठाना)-यथा-योग्य प्रबंध होना (करना), यथेष्ट सुपास या सुभीता होना, अभीष्ट सुविधा करना या होना (करना), आय-व्यय या जमा-खर्च (लेने-देने) का ब्यौरा ठीक होना, विधि मिलाना (मिलना) । —से-संयम से, कायदे से, रीत्यनुसार, नियम-पूर्वक, परिमित, ठीक-ठीक, लिखे ब्यौरे के अनुकूल ।—न होना-अति अधिक मात्रा या संख्यादि होने से अनुमान या अंदाजा न होना । बेढा या टेढ़ा हिसाब-कठिन या कड़ा कार्य्य, गड़बड़ी, अव्यवस्था । संख्या, मात्रादि को निर्धारित करने वाली विद्या, गणित-विद्या, गणित का प्रश्न, दर, भाव । व्यवस्था, नियम, रीति, कायदा, विधान, समझ, विचार, धारणा, मत, दशा, चाल-ढाल, हाल, ढंग, मितव्यय, किफायत, रहन-सहन, रीति-रस्म, आचार-व्यवहार, अवस्था, तरीका ।

हिसाबी—(वि०) [अ० हिसाब+ई हि० प्रत्य०] गणितज्ञ, हिसाब-किताब में चतुर ।

हिसिषा*†—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० ईर्ष्या] ईर्ष्या, डाह, स्पर्द्धा, होड़, [हिसका (दे०)] बराबरी करने का भाव, समता, या तुल्यता की भावना ।

हिस्सा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हिस्सः] खंड, अंश, भाग, टुकड़ा, विभाग या उससे मिला हुआ प्रत्येक का भाग या अंश हींसा (ग्रा०), तकसीम, बटवारा (प्रान्ती०), अवयव, अंग, साझा; अन्तर्भूत वस्तु, विभाग ।—बाँट-(पु०) बँटवारा, विभाजन ।—(से) दार-(पु०) [अ० हिस्सः+दार फ़ा० प्रत्य०] साझी, साझेदार, व्यापार में सम्मिलित, जिसे कुछ हिस्सा या भाग मिला हो । —(से) दारी-(स्त्री०) साझेदारी ।

हिहिनाना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हिनहिना] घोड़े की बोली, हिनहिनाना ।

हींग—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हिंगु] एक छोटा पौधा जो ईरान या अफगानिस्तान में आप से आप उगता और बहुतायत से पाया जाता है, इसका अति तीव्र गंध वाला दवा तथा मसाले के काम को जमाया हुआ गोंद या दूध । "राखौ मेलि कपूर में, हींग न होय सुगंध"—[नीति०] ।

हींस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हेष] गधे या घोड़े के बोलने का शब्द, हिनहिनाहट या रेंक ।

हींसना—(क्रि० अ०, अनु०) हिनहिनाना, गधे या घोड़े का बोलना ।

हींसा—(संज्ञा, पु०, दे०) हिस्सा ।

हींहीं—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) हँसने का शब्द, ही ही ।

ही—(अव्य०) [सं० हि=निश्चयार्थक] भी, इसका प्रयोग निश्चय, परिमिति, स्वीकृति अल्पतादि, सुचित्र करने या किसी बात पर जोर देने के लिए होता है । (संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हिय, सं० हृदय] हृदय, हीय, मन, चित्त । छाती । (क्रि० अ०, दे०, भूत० स्त्री०) [ब्रज० होनी=होना] थी, हुती, हुती ।

हीअ-हीआ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हृदय] [हिय, हीय, (दे०)], हृदय, मन, चित्त, छाती । "राखौ राम-ध्यान महं हीआ"—वासु० ।

हीक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हिक्का] अरुचिकारी गंध, बदबू, हिचकी ।

हीचना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हिचकना] हिचकना, रुकना, खीचना, [हींचना (दे०)] । [हिचाना, हिचवाना (स० प्रेरणा० रूप)] ।

हीछना—(क्रि० अ०, दे०) इच्छा करना ।

हीठना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० अधिष्ठा] निकट जाना, पहुँचना, समीप या पास होना, फटकना, जाना ।

हीन—(वि०, सं०) रहित, वंचित, विहीन, शून्य, छोड़ा या त्यागा हुआ, परित्यक्त, वियुक्त । निकृष्ट, निम्न कोटि या श्रेणी का, घटिया, तुच्छ, नीच, बुरा, नाचीज, ओछा, दीन, नम्र, अल्प, कम, निर्बल, अशक्त, सुख-समृद्धि रहित । (संज्ञा, पु०) अयोग्य या बुरा गवाह या साक्षी (प्रमाण में). अधम नायक (साहि०) ।—कुल-(वि०) नीच

वंश या कुल का, नीच।—**क्रम**-(पु०) काव्य का एक दुर्गुण, जहाँ गुणों और गुणों की गणना या वर्णन का क्रम उचित, समान या एक सा न हो।—**चरित,—चरित्र**-(वि०) दुराचारी, बुरे आचरण वाला, दुश्चरित्र, भ्रष्टाचारी, चरित्रहीन, हीनाचारी।—**बल**-(वि०) निर्बल, अशक्त, कमजोर।—**बुद्धि**-(वि०) मूर्ख, दुर्मति, निर्बुद्धि। धी-विहीन, बेसमझ, दुर्बुद्धि।—**यान**-(पु०) बौद्ध मत की एक आदिम और पुरानी शाखा जिसके ग्रंथ पाली भाषा मे हैं। यह स्याम-ब्रह्मा में रचा गया। [**महायान** (विलो०)]।—**योनि**-(वि०) नीच कुल या जाति का।—**रस**-(पु०) वह कविता जिसमें रस न हो, नीरस, रसविरोध, किसी रस के प्रसंग में उसके विरोधी रस के प्रसंग के लाने का एक काव्य-दोष (सा०)।—**वर्ग—वर्ण**-(वि०) नीच वर्ण का, नीच जाति का। —**वाद**-(पु०) वह तर्क जो दोषपूर्ण हो, कमजोर तर्क।—**वीर्य्य**-(पु०) निर्बल, अशक्त, बल-रहित, नपुंसक।

हीनता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अशक्तता, निर्बलता, कमी, अल्पता, त्रुटि, तुच्छता, ओछापन, क्षुद्रता, हिनाई, निकृष्टता बुराई, न्यूनता।

हीनताई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हीनता] हीनता, हिनाई (ग्रा०)।

हीनत्व—(संज्ञा- पु०, सं०) हीनता, कमी।

हीनहयात—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, अ०) जिंदगी का समय, जीवन-काल।

हीनांग—(वि०, यौ०, सं०) खंडित अंग वाला, किसी अंग से रहित व्यक्ति, अधूरा, अपूर्ण।

हीनोपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उपमालंकार का एक सदोष रूप, जहाँ बड़े उपमेय के लिए छोटा उपमान लिया जावे (काव्य०)।

हीय, [हिया]*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हिय, सं० हृदय] हृदय, दिल, मन, चित्त, छाती। "दीपक ज्ञान धरै घर हीया"—देव०।

हीयरा*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हीय, सं० हृदय] हृदय, हिय, दिल, मन, चित्त, छाती, [हियरा (दे०)]।

हीर—(संज्ञा, पु०, सं०) हीरा नामक रत्न, बिजली, वज्र, साँप। म, स, न, ज, र (गण) वाला एक वर्णिक छंद (पिं०) ६, ६ और ११ मात्राओं पर विराम के साथ २३ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०), छप्पय का ६२ वाँ भेद (पिं०)। (संज्ञा, पु०) [हि० हीरा, सं० हीरक] किसी वस्तु का सार भाग, गूदा या सत, (लकड़ी का) सार भाग, धातु, देह की सार वस्तु, वीर्य्य, बल, शक्ति, तत्व।

हीरक—(संज्ञा, पु०, सं०) हीरा नामक रत्न, हीर छंद (पिं०)। "नव उज्ज्वल जलधार हार हीरक सी सोहित"—हरिश्चन्द्र।

हीरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हीरक] वज्रमणि, एक अति दृढ़ और चमकीला बहुमूल्य रत्न। (वि०, हि०) श्रेष्ठ, उत्तम। **मुहा०**—(**रे**) **की-कनी चाटना**-हीरे का चूर खाकर मरना या आत्महत्या करना।—**कसीस**-(पु०) [हि० हीरा+कसीस सं०] हरापन लिये मटमैले रंग का लोहे का एक विकार, एक औषधि, [हीराकसीस]। —**मन**-(पु०) सोने के से रंग का एक कल्पित सुग्गा या तोता।

हीलना*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हिलना] हिलना, डोलना, परिचित और अनुरक्त होना।

हीला—(संज्ञा, पु०) [अ० हीलः] मिस, बहाना। (संज्ञा, पु०, दे०) कीचड़, चहला।—**हवाला**-(पु०) बहाना। ब्याज, वसीला, निमित्त, द्वार।

हीही—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) हँसने का शब्द, हीही शब्द करके हँसने की क्रिया।

हुँ—(अव्य०, दे०) [सं० उप=आगे] एक अतिरेक बोधक शब्द, भी, स्वीकृति-सूचक शब्द, हाँ। "हमहु कहब अब ठकुर सुहाती"— [रामा०]।

हुँकरना—(क्रि० अ०, दे०) हुंकार शब्द करना, हुँकारना, गाय आदि का प्रेम दिखाते हुए बच्चे के लिए बोलना।

हुँकार—(संज्ञा, पु०, सं०) ललकार, पुकार, डाँटने का शब्द, गरज, गर्जन, चिल्लाहट, चीत्कार।

हुँकारना—(क्रि० दे०) [सं० हुंकार+ना हि० प्रत्य०] गरजना, डाँटना, डपटना, चिल्लाना, चिग्घाड़ना, हुंकार शब्द करना, गाय आदि का प्रेम से बोलना।

हुँकारी—(संज्ञा, स्त्री०) [अनु० हु हुं+करना] हाँ हाँ करना, स्वीकृति सूचक शब्द, हामी, हुंकार करने की क्रिया। (संज्ञा, पु०) विकारी। **मुहा०** —**भरना**-हाँ करना, स्वीकार करना।

हुँडार—(संज्ञा, पु०, दे०) भेड़िया

हुँडी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) विधिपत्र, लेखपत्र, [चेक (अं०)], वह लेख जिसे एक महाजन दूसरे को लिखकर किसी अन्य को रुपये के बदले मे रुपया दिलाता है। [**हुँडी पुरजा** (यौ०)]। **मुहा०—करना**-किसी के नाम हुंडी लिखना।—**खड़ी रखना (रहना)**-हुंडी के रुपयों का देना स्वीकार न करना (होना), हुंडी न सकारना (सकरना)।—**चुकता करना (चुकाना)**-हुंडी का रुपया देना।—**सकारना**-हुंडी का रुपया देना स्वीकार कर लेना।—**दर्शनी हुँडी**-(स्त्री०) वह हुंडी जिसके दिखाते ही तुरन्त रुपया देने या चुकाने का नियम है।

हुँत, हुँते—(प्रत्य०, दे०) [अ० विभक्ति हिंतो] प्राचीन हिंदी में तृतीया और पंचमी की विभक्ति, से, खातिर, निमित्त, वास्ते, लिए, द्वारा, जरिये, काज, हित, हेतु, हुते। (अव्य०) [प्रा० हिंतो] से, द्वारा, ओर या तरफ से।

हु*†—(अव्य०, दे०) [सं० उप] अतिरिक्त सूचक शब्द, भी, कथित के अतिरिक्त और भी। "हमहु कहब अब ठकुर सुहाती"—[रामा०]।

हुआँ—(संज्ञा, पु०) सियारों या गीदड़ों की आवाज।

हुआना, हुवाना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० हुआ या हुवा] स्यारों की बोली की नकल करना, गीदड़ों का बोलना, हुआ-हुआ करना।

हुक—(संज्ञा, पु०, दे०) टेढ़ी कंटिया।

हुकरना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० हुंकारना] हुंकारना, हुकरना।

हुकारना—(क्रि० अ०, दे०) [हिं० हुंकारना] हुंकारना।

हुकुम‡—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हुक्म] आज्ञा, आदेश, निर्देश, निदेश।

हुकुर-पुकुर, हुकुर-हुकुर—(संज्ञा, स्त्री०) कलेजे का धड़कन, शरीर की निर्बलता।

हुकूमत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) शासन, प्रभुत्व, आधिपत्य, अधिकार।—(**किसी की**)—**चलना**-किसी का प्रभुत्व होना, उसकी आज्ञा मानी जाना।—**चलाना**-प्रभुत्व या अधिकार से काम लेना।—**जताना, (दिखाना)**-प्रभुत्व या रोब दिखाना, बड़प्पन या अधिकार प्रकट करना। राज्य, राजनीतिक आधिपत्य, शासन।

हुक्का—(संज्ञा, पु०, अ०) तम्बाकू पीने या उसका धुवाँ खींचने का विशेषाकार-प्रकार वाला एक नल यंत्र, फरशी, गड़गड़ा।—**पानी**-(पु०) एक दूसरे के हाथ से साथ बैठ कर जल-पान या खाना-पानी करने या हुक्का-तम्बाकू आदि पीने का व्यवहार, बिरादरी या भैयाचार की रीति-रस्म। **मुहा०—करना**-जल-पान करना, मेल करना।—**बंद करना**-बिरादरी से अलग करना।—**न होना**-बिरादरी मे न रहना, जाति-च्युत होना, जाति या समाज से अलग होना।

हुक्काम—(संज्ञा, पु०, अ०) हाकिम का बहुवचन, शासक लोग, अधिकारी-वर्ग।

हुक्म—(संज्ञा, पु०, अ०) आज्ञा, आदेश, गुरुजनों के वे वचन जिनका पालना कर्तव्य हो, [हुक्कुम (दे०)]। अनुमति, स्वीकृति, इजाजत, अधिकार, शासन, प्रभुत्व, नियम, विधान, शिक्षा, विधि, व्यवस्था, ताश का एक रंग।—**नामा**-(पु०) [अ० हुक्म + नामः फ़ा०] आज्ञा-पत्र, आदेश पत्र, हुक्म लिखा कागज, [**हुकुमनामा** (दे०)]।—**बरदार**-(पु०) आज्ञाकारी, सेवक, नौकर, आधीन, दास। [**हुक्म बरदारी** (संज्ञा, स्त्री०)]।—**रां**-(वि०) प्रभुत्व वाला।—**होना**-शासक होना, हुकूमत करना।—**रानी**-(स्त्री०) शासन, अधिकार। "बहुत दिन तक करै वह हुक्मरानी ताकि हम सब पर।" **मुहा०—उठाना**-आज्ञा रद्द करना, आज्ञा भंग करना, आदेश पालन न करना।—**की तामील करना**-आज्ञा पालन करना।—**चलाना या जारी करना**-आज्ञा या आदेश देना। शासन करना, रोब से आज्ञा देना, प्रभुत्व दिखाना। (**किसी का**)—**चलना**-प्रभुत्व या शासन होना।—**तोड़ना**-आज्ञा भंग करना।—**देना (लेना)**-आज्ञा देना (लेना)।—**बजाना या बजा लाना**-आज्ञा मानना या पालन करना।—**मानना**-आज्ञा स्वीकृत करना, आज्ञा पालन करना, आज्ञा मान लेना।

हुक्मी—(वि०) [अ० हुकुम ई फ़ा० प्रत्य०] पराधीन, आज्ञानुवर्ती, सेवक, नौकर, दास। अवश्य प्रभाव करने वाला, अचूक, अमोघ, अव्यर्थ। आवश्यक कर्त्तव्य, जरूरी, लाजिमी, अनिवार्य, आवश्यक।

हुजूम—(संज्ञा, पु०, अ०) भीड़, जमघट। "खटमलों का चारपाई पर हुआ ऐसा हुजूम"—अक०।

हुजूर—(संज्ञा, पु०, अ०) समक्षता, राज दरबार, किसी बड़े का सामीप्य, शाही दरबार, हाकिम की कचहरी, बहुत बड़े लोगों के संबोधन का शब्द। "हुजूर बैठे हैं ख्वाजा खड़े झिले है रुमाल"—सौदा०।

हुजूरी—(संज्ञा, पु०) [अ० हुजूर] दरबारी, मुसाहिब, खास सेवा में रहने वाला दास या नौकर। "हुजूरी गर तुमी ख्वाही अजी गाफिल मशब हाफिज"—हाफिज। [**हाँ-हुजूर** (यौ०)]। **मुहा० हाँ—करना**-सेवा में रह आज्ञा पालना, चापलूसी करना।

हुज्जत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) विवाद, झगड़ा, व्यर्थ का तर्क, तकरार। "हुज्जतो तकरार हमको कुछ नहीं है हुक्म से"—कुंज वि०।

हुज्जती—(वि०) [अ० हुज्जत] हुज्जत या तकरार करने वाला, व्यर्थ तर्क या विवाद करने वाला।

हुड़कना, हुडुकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हुड़क] भयभीत और दुःखी होना, तरसना, याद में विकल होना, स्मरण करना। [**हुड़काना** (स० रूप)], [**हुड़कवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

हुड़दंग, हुड़दंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अनु० हुड़+दंगा] उत्पात, उपद्रव, बखेड़ा, [हुरदंग (दे०)], धमा-चौकड़ी (प्रान्ती०)।

हुडुक—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हुडुक्क] एक बहुत छोटा ढोल।

हुडुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हुडुक] छोटा ढोल।

हुडुडुवा—(संज्ञा, पु०) दे०) कबड्डी का खेल।

हुढक†*—(संज्ञा, दे०) [हि० हुडुक] हुडुक।

हुत—(वि०, सं०) हवन किया या आहुति दिया हुआ। (क्रि० अ०) होना क्रिया के भूत-काल का पुराना रूप था।

हुता हुतो†*—(क्रि० अ०, ब्र०) [हि० हुत] [हता, हतो (दे०)] होना क्रिया के भूतकाल का प्राचीन रूप (अव्य०) था। [**हुती** (स्त्री०)]।

हुताग्नि—(संज्ञा, पु०, सं०) यज्ञ की अग्नि, हवन की अग्नि।

हुताशन—(संज्ञा, पु०, सं०) आग, अग्नि, [हुतासन (दे०)]। "हुताशनश्चंदन पकशीतलः"—भो० प्र०।

हुति*—(वि०, सं०) हवन किया या आहुति दिया हुआ। (अव्य० दे०) [प्रा० हतो] करण और अपादान कारकों का चिह्न, द्वारा, से, ओर से, तरफ से।

हुती—(वि०, दे०, सं०) हुत, आहुति। * (अव्य०, दे०) संती, लिए, बजाय। (सा०, भू०, स्त्री०, अव०) थी, हती।

हुते—(अव्य०, दे०) [प्रा० हितो] से, ओर से, द्वारा, तरफ से।

हुतो*—(क्रि० अ०, दे०) [हि० होना] ब्रज-भाषा में होना क्रिया के भूतकाल का रूप, हतो, था।

हुदकाना†—(क्रि० स०, दे०) [हि० उसकना] उसकाना, उभारना, फुदकना, हुदकावना। [**हुदकना** (अ० रूप)]।

हुदना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हुडन] रुकना, स्तब्ध होना, भौचक या चकित होना।

हुदहुद—(संज्ञा, पु०, अ०) एक पक्षी।

हुद्दा—(संज्ञा, पु०, दे०) [ओहदा फ़ा०] दर्जा, पद।

हुन—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हूण] स्वर्ण, सोना, मोहर, अशरफ़ी। **मुहा०—बरसना**-धन की अति अधिकता होना।

हुनर—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) गुण, कला, करतब, कारीगरी, चतुराई, कौशल, युक्ति, [हुन्नर (दे०)]। "हुनर से न्यारियों के बात यह साबित हुई हमको"—जौक। **—मंद**—(वि०) कला-कुशल, चतुर, गुणी, निपुण। "हुनरमंदों को वतन में रहने देता गर फ़लक"—जौक।

हुन्नर—(संज्ञा, पु०, दे०) हुनर, गुण। [**हुन्नरी** (वि०, दे०)]। गुणी चतुर।

हुब्ब—(संज्ञा, पु०, अ०) प्रेम, स्नेह। (हुब्बे-वतन (यौ०)]।

हुमकना, हुमगना—(क्रि० अ०, दे०) [अनु० हुँ] कूदना, उछलना, पाँवों को जोर देना, उन पर बल लगाना, आघात के लिए जोर से पैर उठाना, जोर से मारने के लिए पाँव उठाना, उचकना, ऊपर उठना, चलने का उपाय करना, ठुमकना (बच्चों का) दबाने के लिए बल लगाना, [हुमसना (दे०)]। [**हुमकाना** (स० रूप)]।

हुमसाना, हुमसवाना—(क्रि० स०) मन में इच्छा, विचार आदि का लाना, आन्तरिक मनोभावों को उत्तेजित करना ।

हुमा—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) कल्पित पक्षी, कहते हैं कि इसकी छाया जिस पर पड़े वह बादशाह हो जाता है। "हुमा अर्जी वजह हमा जानवरॉ शरफ़ दारद"—सादी० ।

हुमेल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० हमालय] अशर्फियों का हार, मोहरों की माला । "बाइस पनवॉ जा हुमेल सो घोड़े को दई पिन्हाय"—आल्हा० ।

हुरदंग, हुरदंगा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि०] हुड़दंगा, उत्पात, उपद्रव ।

हुरमत, हुरमति—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मान-मर्य्यादा, इज्जत-आबरू। "हुरमति राखौ मेरी"—कबीर।

हुरुमयी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) एक तरह का नाच या नृत्य।

हुलकी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) वमन रोग, कै आना, उबांत होना, हैजा । [हुलकी आना (दे०)] । हैजा होना ।

हुलसना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हुलास] प्रसन्नता या आनन्द से फूलना, खुशी से भरना, उठना, उभरना, बढ़ना उमड़ना । "हिय हुलसै वनमाल सुहाई "—रसनिधि । (क्रि० स०) प्रसन्न या आनन्द करना [हुलसाना (स० रूप)] । [हुलसवाना (प्रेरणा० रूप)] ।

हुलसाना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हुलसना] प्रसन्न या हर्षित करना [हुलसावना (दे०)] । (क्रि० अ०, दे०) हुलसना ।

हुलसो—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हुलसना] आनन्द या प्रसन्नता की उमङ्ग, उल्लास, हुलास । तुलसीदास की माता (मतान्तर से)। "हुलसो सी हुलसी फिरै, तुलसी सों सुत होय"—रहीम ।

हुलहुल, हुरहुर—(संज्ञा, पु०, दे०) एक छोटा पौधा (औषधि) ।

हुलास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उल्लास] आह्लाद, प्रसन्नता या आनन्द की उमङ्ग, उल्लास, हर्ष, हौसिला, उत्साह, उमंग । (संज्ञा, स्त्री० दे०) तम्बाकू की सुँघनी, नस्यरोशन ।

हुलिया—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हुलिया] आकृति, डील-डौल किसी व्यक्ति के रूप-रंग आदि का विवरण सूरत-शकल । मुहा०—**कराना या लिखाना**—किसी की खोज के लिए उसकी आकृति, डील-डौल या शकल सूरत आदि का विवरण पुलिस में लिखाना ।—**बिगड़ना (बिगाड़ना)**—बहुत तंग होना (करना) ।—**तबाह करना (होना)**—अत्यन्त तंग करना (होना) ।

हुल्लड़, हुल्लर—(संज्ञा, पु०, अनु०) कोलाहल, शोरगुल, हल्ला, धूम, ऊधम, उपद्रव, आंदोलन, हलचल, उत्पात, गदर, क्रांति ।

हुल्लास—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० उल्लास] चौपाई और त्रिभंगी मिश्रण से बना एक छंद (पिं०) ।

हुश—(अव्य०, अनु०) अयोग्य बात के कथन का निवारक शब्द, हश ।

हुसियार, हुस्यारी*†—(वि०, दे०) [फ़ा० होशियार] बुद्धिमान, समझदार, चतुर, निपुण, [होसियार, होस्यार (दे०)] ।

हुसियारी, हुस्यार—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) होशियारी, चतुरता, चालाकी ।

हुसैन—(संज्ञा, पु०, अ०) हजरत मुहम्मद साहिब के दामाद, अली के बेटे (नवासे) जो करबला मे मारे गये थे और जिनके शोक में मुहर्रम मनाया जाता है, [हुसेन (दे०)] । "जिनको हुसैन और हसन हैं बहुत अजीज"—[स्फु०] ।

हुस्न—(संज्ञा, पु०, अ०) लावण्य, सुन्दरता, सौंदर्य्य, प्रशंसनीय बात, खूबी, सुघराई, लुनाई । "खुदा जब हुस्न देता है नजाकत आ ही जाती है"—[स्फु०]—**परस्त**–(वि०) सौंदर्य्य-प्रेमी, सौंदर्योपासक ।—**परस्ती**–(संज्ञा, पु०, यौ०, फ़ा०) सौंदर्य्य-प्रेम, सौंदर्योपासना ।

हूँ—(अव्य०, दे०, अनु०) हाँ, स्वीकार या समर्थन सूचक शब्द । (अव्य०, दे०) हू, हुं । (सर्व०) हौं (ब्र०) । (क्रि० अ०, हि०) वर्त्तमान कालिक क्रिया 'है' का उत्तम पुरुष एक वचन का रूप (व्या०) ।

हूँकना—(क्रि० अ०, अनु०) गाय का बछड़े के लिए रँभाना (दुःख या प्रेम से), हुँकरना, हुंकार शब्द करना, शूर-वीरों का ललकारना या डपटना ।

हूँकार—(संज्ञा, पु०, सं०) देखिए हुंकार ।

हूँठ, हूँठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हुँठा दे०] साढ़े तीन, उसका पहाड़ा । हूँठ पैगदै बसुधा राजा तहाँ करौं तपसारों"—सूर० ।

हूँण—(संज्ञा, पु०, तु०) एक शक जाति ।

हूँस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हिंस] डाह, ईर्ष्या, बुरी निगाह या नजर, कुदृष्टि, फटकार, टोंक, कोसना ।

हूँसना—(क्रि० स०) [हि० हूँस] नजर लगाना । (क्रि० अ०, दे०) कोसना, ईर्ष्या से लजाना, ललचाना ।

हू—(अव्य०, दे०) [सं० उप+आगे] अतिरिक्त-वाचक शब्द, भी हु (दे०) । (संज्ञा, पु०, दे०) कोलाहल (यौ० में) जैसे—हू हल्ला ।

हूक—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हिक्का] कलेजे या छाती की पीड़ा, दर्द, साल, कसक, पीड़ा, दुःख संताप, खटका, आशंका । मुहा०—(**कमर में**) —(**चली**) **जाना**–कमर की नस टल जाना और पीड़ा होना । "कोकिल को कूक हिये हूक उपजावै है"—सरस ।

हूकना—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हूक+ना प्रत्य०] दुःखना, सालना, पीड़ा या दर्द करना, पीड़ा से चौंक पड़ना । (क्रि० स०, दे०) दुःखाना । "कूकन लागी न कोइलिया वा वियोगिनि को हियो हूकन लागी ।"

हूटना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हुड+चलना] टलना, हटना, फिरना, मुड़ना, पीठ फेरना । [**हुटाना** (स० रूप)] ।

हूठा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अंगुष्ठ] गँवारू या भद्दी चेष्टा, अँगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा, टेंगा, ठेंगा (प्रान्ती०) । मुहा०—**देना** (**दिखाना**)—ठेंगा देना [दिखाना], हाथ मटकाना (अशिष्टता सूचक) ।

हूड़—(वि०, दे०) लापरवाह, उजड्ड ।

हूण—(संज्ञा, पु० दे०) हूँण, एक मंगोल जाति की शाखा जो प्रबल हो धावा करती हुई योरुप और एशिया के सभ्य देशों में फैली थी ।

हूदा—(संज्ञा, अ०) योग्य, लायक़ । [**बेहूदा** (विलो०)] । (संज्ञा, पु०, दे०) धक्का, शूल, पीड़ा ।

हू-बहू—(वि०, अ०) ठीक-ठीक वैसा ही ज्यों का त्यों, सर्वथा समान ।

हूर—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) स्वर्ग की अप्सरा (मुस०) । "मुझे तो हूर बेहश्ती की भी परवाह नहीं"—[स्फु०] ।

हूरना—(संज्ञा, पु०) पेलना, चुभाना, ठेलना, ढकेलना, गाड़ना ।

हूल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० शूल] भाला, लाठी, डंडा या छड़ी आदि की नोक की जोर से भोंकना या उससे ठेलना, शूल, हूक, पीड़ा । (संज्ञा स्त्री०, अनु०) हल्ला, शोर-गुल, कोलाहल, हर्ष ध्वनि, धूम, ललकार, आनंद, हर्ष खुशी । "हूल-हूले मे हिये मैं हाय"—[ऊ० श०] ।

हूलना, हूरना—(क्रि० स०, दे०) [हि० हूल+ना प्रत्य०] भाला या लाठी आदि की नोक भोंक देना या घुसेड़ना या उससे किसी को ठेलना । घुसाना, गड़ाना, पीड़ा या शूल पैदा करना । "नहिं यह उक्त मृदुल श्रीमुख की जो तुम उर मे हूलहु" —[अ०] ।

हूलाहूल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० हूलना] हूलने का भाव या क्रिया । (संज्ञा, स्त्री०, दे०) कसक, पीड़ा, शूल, हर्ष-तरङ्ग, कोलाहल ।

हूश-हूस—(वि०) [वि० हूड़] अशिष्ट, जंगली, असभ्य, बेहूदा, उजड्ड, गँवार ।

हूह—(संज्ञा, स्त्री०, अनु०) कोलाहल, गरज, हुँकार, रण-नाद, हू हल्ला । "कपि-दल चला करत अति हूहा"—[रामा०] ।

हूहू—(संज्ञा, पु०, सं०) गंधर्व । (संज्ञा, पु०, अनु०) अग्नि के जलने का धाँय-धाँय शब्द, हव्वा (कल्पित दैत्य या प्रेत) ।

हृत—(वि०, सं०) हरण किया या लिया हुआ, चुराया या छीना हुआ, पहुँचाया हुआ ।

हृति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) हरण, नाश, लूट, ले जाना ।

हृत्—(संज्ञा, पु०, सं०) हृदय । [**हृद्धाम** (यौ०)] ।—**कंप**–(पु०) हृदय का कंपन, हृदय-स्पंदन अति भय, अति भीति ।—**रङ्ग**–(पु०) हृदयोल्लास, मन की मौज ।—**पटल**–(पु०) हृदय-पटल ।—**पिंड**–(पु०) हृदय, कलेजा, दिल ।

हृदयंगम—(वि०, यौ०, सं०) समझ में आया हुआ, मन या चित्त मे बैठा हुआ, हृदय मे समाया हुआ ।

हृदय—(संज्ञा, पु०, सं०) कलेजा, दिल, छाती, वक्षस्थल, छाती के वाम भाग मे भीतर का मांस-कोश जिसमें से होकर शुद्ध रक्त नाड़ियों के द्वारा सारी देह में संचार करता है, हर्ष, प्रेम, शोक, क्रोध करुणादि-मनोविकारों का स्थान, मन, चित्त,

अंतरात्मा, अंतःकरण, बुद्धि । [हिरदा, हिरदै, हिय, हीय (दे०)] ।—ग्राही-(पु०) [सं० हृदयग्राहिन्] मन को मोहित करने वाला, हृदय हरने वाला । [हृदयग्राहिणी (स्त्री०)] ।—निकेत-(पु०) कामदेव ।—स्पर्शी-(वि०) [सं० हृदयस्पर्शिन्] हृदय पर प्रभाव डालने वाला । [हृदयस्पर्शिनी (स्त्री०)] ।—विदारक-हृदय को पिघला देने वाला । अति दया, शोक या करुणा उत्पन्न करने वाला ।—वेधी-(वि०) [सं० हृदयवेधिन] मन मोहित करने वाला, अति शोक-प्रद, अति कटु, हृदय को वेधने वाला । [हृदय-वेधिनी (स्त्री०)] ।—स्पंदन-(पु०) हृदय का श्वांस के कारण कांपना, हृदय की गति ।—हारी-(वि०) [सं० हृदयहारिन्] मन को लुभाने या मोहित करने वाला, [हियहारी (दे०)] हृदय-हारिणी (स्त्री०)] ।—हीन-(वि०) निष्ठुर । मुहा०—विदीर्ण होना-बड़ा भारी शोक होना ।

हृदयवान—(वि०) कोमल हृदय वाला, दयालु ।

हृदया—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हृदय] [हिरदा (दे०)] । मन, दिल, कलेजा, छाती, वक्षस्थल । " जाको जमिया बन्द नहि, हृदया नाहीं साँच " —कबीर ।

हृदयाकर्षक—(वि०, यौ०, सं०) चित्ताकर्षक, मनोरम । [हृदयाकर्षण (संज्ञा, पु०) [हृदया-कर्षिका, हृदयाकर्षिणी (स्त्री०)] ।

हृदयेश-हृदयेश्वर—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) प्रियतम, प्यारा, स्वामी, पति । [हृदयेशा, हृदयेश्वरी (स्त्री०)] ।

हृदि—(क्रि० वि०, सं०) हृदय मे ।

हृद्—(संज्ञा, पु०, सं०) हृदय, दिल, कलेजा ।—गत-(वि०, यौ०, सं०) मानसिक, आंतरिक, भीतरी, मन मे बैठा या समाया हुआ, हृदय मे जमा हुआ, हृदय का, रुचिकर, प्रिय, रोचक । [हृद्गता (स्त्री०)] ।—धाम-(पु०) हृदय ।

हृद्य—(वि०, सं०) आंतरिक, दिल का भीतरी, सुन्दर, अच्छा लगने या लुभाने वाला, सुहावना, स्वादिष्ट, हृदय मे पैठा हुआ, रुचिकर, रोचक, हृदय का लुभावना ।

हृषि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) आनन्द, हर्ष ।

हृषीकि—(संज्ञा, पु०, सं०) इन्द्रिय ।

हृषीकेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) विष्णु, ईश्वर, श्रीकृष्ण जी, पूस का महीना, इन्द्रियपति ।

हृष्ट—(वि०, सं०) अत्यन्त प्रसन्न, अति हर्षित ।—पुष्ट-(वि०) हट्टा-कट्टा, मोटा-ताज़ा, तगड़ा ।

हें-हें—(संज्ञा, पु०, अनु०) धीरे से हंसने या गिड़गिड़ाने का शब्द । मुहा०—करना-अनुनय-विनय करना ।

हेंगा, हैंगा†—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० अभ्यग] जुते हुये खेत को मिट्टी बराबर करने का पट्टा, पहटा प्रान्ती०) ।

हे—(अव्य०, सं०) संबोधन शब्द, रे, अरे । " हे कदम्ब हे अम्ब निम्ब हे जम्बु सुहावन "—[स्फु०] । ‡ (क्रि० अ०, ब्रज०) हो (था) का बहुवचन थे ।

हेकड़—(वि०, दे०, यौ०) [हि० हिय+कड़ा] कड़े दिल का, साहसी, हिम्मतवर, हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, प्रबल, बली, ज़बरदस्त, प्रचंड, उजड्ड, अक्खड़, उद्दंड ।

हेकड़ी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० हेकड़] उग्रता, प्रचंडता, जबरदस्ती, दृढ़ता, साहस, बलात्कार, अक्खड़पन, उजड्डपन, बहादुरी ।

हेच—(वि०, फा०) तुच्छ, नाचीज, पोच, निःसार नीच । [हेची (संज्ञा, स्त्री०)] ।

हेट हेठ—(क्रि० वि०, दे०) नीचे, तले । " हेठ दाब कांप-भालु निशाचर "—[रामा०] ।

हेठा—(वि०, दे०) [हि० हेठ=नीचे] तुच्छ, नीचा, कम, घटकर, नीच, हेय । [हेठाई (स्त्री०)] ।—पन-(पु०) क्षुद्रता, नीचता, तुच्छता ।

हेठी, हेटी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० हेठा] अपमान, मान-हानि, तौहीन, अप्रतिष्ठा, मान-मर्यादा मे न्यूनता या कमी, नाकदरी, अनादर ।

हेत—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हेतु] हेतु, कारण, सबब, वजह, उद्देश्य, अभिप्राय, उत्पन्न करने वाला, तर्क, दलील, दूसरी बात को सिद्ध करने वाली बात, मंत्र, हितू, हित, मेल ।

हेति—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) अग्नि की लपट, भाला, चोट ।

हेती—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हेतु] प्रेमी, संबंधी, नातेदार, हितेच्छु, हितू, मेली । [हेती-व्यवहारी (यौ०)] ।

हेतु—(संज्ञा, पु०, सं०) साध्य का साधक विषय, एक अर्थालंकार जिसमे कारण ही को कार्य कह

दिया जाता है (काव्य०)। देखिए हेत (वि०, ब्र०) संप्रदान कारक का चिह्न, लिए वास्ते, हित, अर्थ, काज, [हेतु (दे०)]। "तुमरेहि हेतु राम वन जाहीं"—[रामा०]। (संज्ञा, पु०) [सं० हित] प्रेम-सम्बन्ध, प्रीति, लगाव, अनुराग, मेल, मित्रता।—**वाद**-(पु०) कारणवाद, तर्क विद्या, कुतर्क, नास्तिकता, कारणकार्य-सम्बन्धी सिद्धान्त। [**हेतुवादी** (वि०)] —**शास्त्र**-(पु०) तर्क शास्त्र, न्याय-शास्त्र।—**हेतुमद्भाव**-(पु०) कार्य-कारण भाव, कार्य और कारण का अन्योन्य सम्बन्ध।—**हेतुमद्भूतकाल**-(पु०) क्रिया के भूतकाल का वह भेद, जिसमें ऐसी दो क्रियाएँ हों कि एक का होना अन्य के होने पर निर्भर हो या ऐसी दो बातों का न होना सूचित हो जिसमें दूसरी प्रथम पर निर्भर हो (व्या०)।

हेतू—(विभ०, ब्र०) हेतु, वास्ते। (संज्ञा, पु०, दे०) हितू, हेती।

हेतूपमा—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) उत्प्रेक्षा-लंकार (केशव), उपमा का वह रूप जिसमें कारण भी दिया हो।

हेतूत्प्रेक्षा—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) उत्प्रेक्षा अलंकार का वह रूप जिसमें उत्प्रेक्षा सकारण प्रस्तुत की जाय।

हेत्वपह्नुति—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, सं०) अपह्नुति अलंकार का वह भेद जिसमें प्रकृत के निषेध का कुछ कारण भी कहा गया हो।

हेत्वाभास—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) किसी पक्ष के सिद्ध करने के लिए ऐसा कारण ला रखना जो कारण-सा तो प्रतीत हो पर वस्तुतः ठीक कारण न हो, असत्-हेतु (न्याय०)।

हेमंत—(संज्ञा, पु०, सं०) शीत काल, छः ऋतुओं में से एक ऋतु जो अगहन-पूस मास में मानी जाती है। "ग्रीष्म वर्षा शरद हेमन्त।"

हेम—(संज्ञा, पु०) [सं० हेमन्] पाला, हिम, बर्फ, सोना, कंचन, स्वर्ण। "हेम बबर मरकत धवर लसत पाटमय डोर"—[राम च०] "कृष्ण कसौटी पै परख, प्रेम-हेम खुलि जाय"—रसाल। —**कूट**-(पु०) हिमालय के ऊपर की एक चोटी, हिमाद्रि से उत्तर का एक पर्वत (पुरा०) हेमाद्रि, सुमेरु।—**गिरि**-(पु०) सुमेरु पहाड़।—**चन्द्र**-(पु०) गुजरातनरेश कुमारपाल के गुरु एक जैनाचार्य (सन् १०८६—११७३ के बीच में थे) जिन्होंने व्याकरण और कोष की कई पुस्तकें लिखी है।—**पर्वत**-(पु०) सुमेरु पहाड़।

हेमाद्रि—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुमेरु पहाड़। एक प्रसिद्ध ग्रंथकार (ई० १३ वीं शताब्दी)।

हेमाचल—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) सुमेरु पर्वत।

हेय—(वि०, सं०) त्यागने या छोड़ने योग्य, त्याज्य, निकृष्ट, बुरा, तुच्छ, नीच, पोच, निंद्य। "हेयम् दुःख मनागतम्"—[सांख्य०]।

हेरंब—(संज्ञा, पु०, सं०) गणेश जी, हेरम्ब। "हेरम्ब षड़-मुख जोति तारकनन्द को जब ज्यों हर्यो"—[राम चं०]।

हेर†*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० हेरना] तलाश, खोज, ढूँढ़। (संज्ञा, पु०, दे०) अहेर, शिकार।

हेरना—(क्रि० स०, दे०) [सं० आखेट] खोजना, ढूँढ़ना, तलाश करना, पता लगाना, ताकना, देखना परखना, जाँचना, देखना, निहारना। 'हेरत रहेउँ तोहि सुत-घाती"—[रामा०]। "हारे से हेरे से रहे, हेरत हिराने से"—[ऊ० श०]। [**हेराना** (स० रूप)] [**हेरवाना** (प्रेरणा० रूप)]।

हेरना फेरना—(क्रि० स०) [हि० अनु० हेरना + फेरना] परिवर्तन करना, बदलना, इधर-उधर करना, उलटना पलटना।

हेर-फेर—(संज्ञा, पु०, यौ०) [हि० हेरना + फेरना] चक्कर, घुमाव, बात का आडंबर, दाँव-पेंच, कुटिल युक्ति, चाल, विनिमय, रूपान्तर, अदल-बदल, इधर का उधर परिवर्तन, अन्तर, उलट-पलट, उलट फेर। "दिनन के फेर सों भयो है हेरफेर ऐसा जाके हेर-फेर हेरबोई हिरबो करै"—[ऊ० श०]।

हेरवाना†—(क्रि० स०) [हि० हेरना] गंवाना, खो देना। (क्रि० स०) [हि० हेरना] ढुँढ़वाना, खोज या तलाश करवाना, खोजवाना, दिखवाना।

हेराना†—(क्रि० अ०, दे०) [सं० हरण] खो जाना, न रह जाना, पास से निकल जाना, नष्ट या लुप्त होना, छिप जाना, सुधि-बुधि भूल जाना, फीका या मन्द पड़ जाना, तल्लीन या तन्मय हो जाना, अभाव हो जाना। (क्रि० स०, दे०) [हि० हेरना का प्रेरणा० रूप] खोजवाना, तलाश करवाना, ढुँढ़वाना, दिखवाना, जँचाना।

हेराफेरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [हिं० हेरना + फेरना] हेरफेर, इधर का उधर होना या करना, अदल-बदल, परिवर्तन, विनिमय, उलट-पलट।

हेरी*—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०) संबोधन—हे + री] पुकार, बुलाना। (स्त्री०, प्रत्य०, या विभक्ति) (यौ०) ऐरी, अोरी, अरी। **मुहा०—देना** (**लगाना**)–पुकारना, आवाज देना (लगाना)। (पु०, यौ० विभक्ति) [संबोधन, हे रे]। (सा० भू० क्रि० स० स्त्री० हिं० हेरना) निहारी, देखी, ढूँढ़ी, परखी।

हेल—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० हील] कीचड़, कांच, गोबर-मिट्टी का खेप, गोबर इत्यादि।—**मेल**–(पु०) [हिं० हिलना + मिलना] मेल-जोल, मित्रता, घनिष्ठता संग-साथ, रब्त-जब्त, परिचय, सोहबत, मिलन-जुलने का सम्बन्ध।

हेलना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० वेलन] खेल करना, केलि या क्रीड़ा करना, हँसी-ठट्ठा करना। (क्रि० स०, दे०) तुच्छ समझना, अवहेलना करना।† (क्रि० अ० दे०) [हिं० हिलना] घुसना, प्रवेश करना, पैठना, तैरना, पैरना, प्रविष्ट होना।

हेला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) तुच्छ या हीन समझना, तिरस्कार, क्रीड़ा, खेल, खेलवाड़, केलि, प्रेम की क्रीड़ा, एक हाव, नायक से मिलने के समय मे नायिका की विनोद-सूचक सविलास क्रीड़ा की मुद्रा (सा०)। (संज्ञा, पु०) [हिं० खेलना] मेहतर, हलाहलखोर, मैला उठाने वाला। [**हेलिन** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० रेलना] रेलने या ठेलने की क्रिया का भाव। (संज्ञा, पु० दे०) [हिं० हल्ला] हाँक, धावा, पुकार, चढ़ाई, आक्रमण।

हेली*—(अव्य०, दे०, यौ०) [संबो हे + अली] हे सखी। (संज्ञा, स्त्री०) सहेली, सखी।—**मेली**–(पु०) [हिं० हेल-मेल] संगी साथी।

हेवंत—(संज्ञा, पु०, दे०) [हेमन्त] हेमन्त ऋतु।

हैं—(अव्य०, हिं०) आश्चर्य-सूचक शब्द, ऍं, अरे, निषेध या असम्मति-सूचक शब्द, रोकने या मना करने का शब्द। (क्रि० अ०, हिं०) सत्तार्थक होना, क्रिया के वर्त्तमान काल के है का बहुवचन रूप, (सम्मानार्थ में एक वचन)।

है—(क्रि० अ०) [हिं० होना] सत्तार्थक 'होना' क्रिया के वर्त्तमान काल का एकवचन रूप। *† (संज्ञा, पु०, दे०) [सं० हय] घोड़ा।

हैकड़—(वि०, दे०) [हिं० हेकड़] कड़े दिल का, हेकड़, बहादुर, साहसी। [**हैकड़ी** (संज्ञा, स्त्री०, दे०)]।

हैकल—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० हय + गल] घोड़ों के गले का एक गहना, हुमेल, तावीज "डारि हैकलें दई गरे माँ श्री मोहरन की बड़ी हुमेल"—आल्हा०।

हैजा—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हैजः] विशूचिका रोग, कै और दस्त होने का रोग, बदहजमी।

हैफ—(अव्य०, अ०) शोक, अफसोस, हाय, हा। "हफ तुमने न की कुछ इल्म की दौलत हासिल"—कुज वि०।

हैबत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) डर, भय, दहसत।

हैबर*—(संज्ञा, स्त्री०, दे०, यौ०) [सं० हय + वर] श्रेष्ठ या अच्छा घोड़ा।

हैम—(वि०, सं०) सोने का, स्वर्णमय, सुनहले रंग का। [**हैमी** (स्त्री०)]। (वि०, सं०) हिम-संबंधी, तुषार का, बर्फ या जाड़े में होने वाला।

हैमवत—(वि०, सं०) हिमालय का, हिमालय-सम्बन्धी। [**हैमवती** (स्त्री०)]। (संज्ञा, पु०) हिमालयवासी, एक सम्प्रदाय, एक राक्षस।

हैमवती—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) पार्वतीजी, गंगाजी।

हैरत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) अचरज, अचंभा, आश्चय। "हुई हैरत बड़ी मुझको जो देखा आरसी मैन"—[स्फु०]।—**अंगेज़**–(वि०) आश्चर्य-जनक। **मुहा०—में आना**–चकित होना।

हैरान—(वि०, अ०) चकित, अचंभित, आश्चर्य से स्तब्ध, भौचक्का, तंग, परेशान, व्यग्र। "तेरे दर पै खड़ा हैरान हूँ मैं देख शौकत को"—[स्फु०]। [**हैरानी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

हैवान—(संज्ञा, पु०, अ०) जानवर, पशु, बे समझ, बेवकूफ, गंवार या मूर्ख मनुष्य। "नहीं है उन्स तो इन्सान है हैवान से बढ़ कर"।

हैवानी—(वि०, अ०) पाशविक, पशु-सम्बन्धी, पशु का, पशु के करने योग्य।

हैसियत—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) लियाकत, योग्यता, वित्त, सामर्थ्य, शक्ति, बिसात, प्रतिष्ठा, औकात,

समाई, दरजा, श्रेणी, धन-दौलत, आर्थिक दशा, मान मर्यादा। [**हैसियतदार** (वि०)]। [**हैसियतदारी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

हैहय—(संज्ञा, पु०, सं०) कलचुरि नाम से प्रसिद्ध एक क्षत्रिय वंश, जिसकी उत्पत्ति यदु से कही गई है, [है **है** (दे०)], हैहय-वंशी, सहस्रार्जुन, कार्त्तवीर्य्य।—**राज**-(पु०) हैहयवंशी, कार्त्तवीर्य्य, सहस्रार्जुन, हैहयेश, हैहयनाथ, हैहयपति, हैहयनायक, हैहयाधिपति। "हैहयराज करी सो करेंगे"—[रामच०]।

हैहै—(अव्य०, दे०) [सं० हाहा] दुःख या शोकसूचक शब्द, हाय हाय, शोक, हाहा। (संज्ञा, पु०, दे०) [**हैहय** (सं०)]।

हों—(क्रि० अ०, हि०) सत्तार्थक 'होना' क्रिया का संभाव्य, भविष्यत् काल के बहुवचन का रूप, होवें, [होयें होय (दे०)]।

होंठ, होठ—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० ओष्ठ] ओष्ठ, मुख-विवर का दाँतों को ढाँकने वाला उभरा हुआ किनारा, रदच्छद, [ओंठ, ओठ (दे०)]। **मुहा०—काटना या चबाना**-भीतरी क्षोभ या क्रोध प्रकट करना।—**फड़कना**-क्रोधादि से ओष्ठों का कंपित होना।

हो—(संज्ञा, पु०, सं०) एक संबोधन शब्द, ऐ, रे, हे। (क्रि० अ०, हि०) सत्तार्थक **'होना'** क्रिया के सम्भाव्यकाल तथा वर्तमान काल में मध्यम पुरुष के बहुवचन का रूप, हो (अव०), हावे (ब्रज०)। वर्तमान कालिक 'है' के सामान्य भूत का रूप था।

होई—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० होना] दिवाली से ८ दिन पूर्व एक पूजन। (क्रि० अ०) [हि० होना] होगा, [**हुहै, होइ** है (ब्र०)]। (अव्य०, दे०) होई कोई चिन्ता नहीं।

होऊ—(क्रि० अ०, दे०) [हि० होना] होवो, हो, हो जाओ।

होड़—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० होर=विवाद] बाजी बदना, शर्त लगाना, बाजी, शर्त, स्पर्धा एक दूसरे से बढ़ जाने या समान होने का यत्न या उपाय, समानता, बराबरी, हठ, आग्रह, ज़िद, टेक।

होड़ावादी—(संज्ञा, स्त्री०) [हि० होड़] चढ़ा-ऊपरी, लाग-डाँट, शर्त, बाजी, [होड़ा-होड़ी (दे०)]।

होड़ा, होड़, होड़ा, होड़ी—(संज्ञा, स्त्री०, यौ०, दे०) [हि० होड़] बाजी, चढ़ा-ऊपरी, शर्त, लाग-डाँट, बदाबदी।

होड़ाचक्र—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) ज्योतिष में गणना की एक रीति।

होत—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० होना] सम्पन्नता, पास धन होने की दशा, समाई, सामर्थ्य, वित्त, समृद्धि। (क्रि० अ०, दे०) [हि० होना] हेतुहेतुमद्भाव सूचक, होता।

होतब, होतव्य—(संज्ञा, पु०, दे०) [हि० होनहार] होनहार, होतव्यता।

होतव्यता—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० होनहार] होनहार, होनहारा, भवितव्यता। "तुलसी जस होतव्यता, तैसी मिलै सहाय।"

होता—(संज्ञा, पु०) [सं० होतृ] यज्ञ में आहुति देने वाला। [**होत्री** (स्त्री०)]। (क्रि० अ०) [हि० होना] हे० हे० भूत।

होती—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हि० होना] समाई, सम्पन्नता, धन होने का भाव, सामर्थ्य, योग्यता, वित्त। **मुहा०—दिखाना**-सम्पन्नता या घमंड से शान दिखाना, अपव्यय करना। (क्रि० अ०) [हि० होना] हे० हे० भूत० स्त्री०।

होनहार—(वि०) [हि० होना+हारा प्रत्य०] जो होने को हो या जो होकर ही रहे, होने वाला, जो अवश्य होने को हो, उन्नति करने वाला, अच्छे लक्षणों या गुणों वाला, जिसके श्रेष्ठ होने या बढ़ने की आशा हो। "होनहार होइ रहे, मिटै मेटी न मिटाई"—[रामचं०]। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात"—[नीति०]। (संज्ञा, पु०, हि०) भावी, भवितव्यता, होनी, वह बात जो अवश्यम्भावी हो, जो होने को हो।

होना—(क्रि० अ०, दे०) [सं० भवन] सत्ता रखना, विद्यमान, मौजूद रहना।—(**किसी के**) **होकर (हो) रहना**-किसी को अपना कर उसके साथ (आश्रय में) रहना। **किसी का होना**—किसी के अधिकार में या आज्ञावर्त्ती होना, आधीन होना, किसी का प्रेमी या प्रेम-पात्र होना, आत्मीय, कुटुम्बी या सम्बन्धी होना, सगा होना। **कहीं का—या रिश्ते में कुछ लगना, हो रहना (हो जाना)**—कहीं से न लौटना, बहुत ठहर या रुक जाना। **कहीं से होकर या (होते हुए) आना**—गुजरते हुये, मध्य या बीज से, बीच में ठहरते

हुये पहुँचना, जाना, मिलना ।—**हो आना**-भेंट करने को जाना, मिल आना ।—**होते पर**-पास धन होने की हालत में, संपन्नता या समाई में। एक से दूसरे रूप में आना, रूपान्तर में आना, दूसरी दशा, स्वरूप या गुण प्राप्त करना। **मुहा०—ने की बात (है)**-सम्पन्नता या समाई (समृद्धि) की बात, सामर्थ्य का काम (है)। **—क्या है**-कुछ फल नहीं ।—**होवाना कुछ नहीं, होना था सो हुआ (हो गया)**-होनहार हो गई ।—**हो सो हो**-भावी-फल की चिन्ता नहीं, कोई परवाह नहीं ।—**हो बैठना**-बन जाना, अपने को समझने या प्रकट करने लगना, मासिक धर्म से होना, कार्य का साधित या संपन्न किया जाना, सरना, भुगतना ।—(**किसी के) हो बैठना (चुकना)**-किसी को अपना लेना। **—हो जाना या हो चुकना (चलो) हो चुका**-पूरा होना, समाप्ति पर पहुँचना, बनना, तुम्हारे किये न होगा, रचा जाना, निर्माण किया जाना, किसी घटना या व्यवहार का प्रस्तुत रूप में आना, घटित किया जाना ।—**होकर रहना**-अवश्य घटित होना, न टलना, जरूर होना, किसी रोग, अस्वस्थता, व्याधि, प्रेत बाधा आदि का आना, व्यतीत होना, गुजरना, बीतना, नतीजा देखने में आना, परिणाम या फल निकालना, जन्म लेना, प्रभाव या गुण देख पड़ना। काम निकलना, प्रयोजन या कार्य्य साधना, क्षति या हानि पहुँचना, काम बिगड़ना।

होनी—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [हिं० होना] पैदाइश, उत्पत्ति, समाचार, वृत्तांत, हाल, भावी, भवितव्यता, होनहार, अवश्य होने वाली, ध्रुव बात, जिसका होना संभव हो । "निज निज मुखन कही निज होनी"—[रामा०] । "होनी होय सो होउ ।" **मुहा०—जानना या देखना**-होनहार बात का जानना या ज्ञात करना।—**न टलना**-होनहार का होकर ही रहना।

होम—(संज्ञा, पु०, सं०) हवन, यज्ञ अग्नि-होत्र देवादि के उद्देश्य से घृत, जौ आदि अग्नि में डालना—**कुंड**-(पु०) होम करने का गड्ढा, हवन कुंड । **मुहा०—कर देना**-जला डालना, बरबाद कर देना, भस्म कर डालना, स्वाहा कर देना, उत्सर्ग या त्याग कर देना ।—**हो जाना**-जलना या नष्ट होना, स्वाहा हो जाना।

होमना—(क्रि० स०, दे०) [सं० होम+ना प्रत्य०] हवन करना, देवादि के लिए अग्नि में घृतादि डालना, उत्सर्ग या त्याग करना, नष्ट या बरबाद करना, छोड़ देना । "होमहि सुख की कामना, तुमहिं मिलन को लाल"—बिहारी।

होमाग्नि—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) यज्ञ की अग्नि।

होमीय—(वि०, सं०) होम का होम संबंधी।

होरसा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० घर्ष—घिसा] पत्थर की छोटी गोल चौकी जिस पर चंदन रगड़ते हैं, चौका, चका । [**होरसी** (स्त्री० अल्पा०)] ।

होरहा—(संज्ञा, पु०, दे०) [सं० होलक] चने का पौधा, चने के कच्चे दाने, बिरवा (प्रान्ती०) ।

होरा—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० होला] होला, हारा (ग्रा०) । (संज्ञा, स्त्री०) [सं० यूनानी भाषा से] एक घंटा या ढाई घड़ी का समय, एक राशि या लग्न का आधा या एक अहोरात्र का २४ वाँ भाग, जन्म-कुंडली।

होरिल—(संज्ञा, पु०, दे०) नवीन उत्पन्न बालक, नवजात शिशु, होरिला—एक पक्षी, हारिल।

होरिहार*†—(संज्ञा, पु०) [हिं० होरी+हार प्रत्य०) होली खेलने वाला। "होरिहारन पै अतिसै सरसै"—[रा० घु०]।

होरी—(संज्ञा, स्त्री०, दे) [हिं० होली] होली, फाल्गुन की पूर्णिमा का एक त्योहार, फाग।

होरेश—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) जिस राशि की होरा में जन्म हो उसका स्वामी ग्रह।

होला—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) होली का त्योहार। (संज्ञा, पु०) सिक्खों की होली जो हिंदुओं की होली के दूसरे दिन होती हैं । (संज्ञा पु०) [सं० होलक] आग में भूनी हुई चने या मटर आदि की फलियाँ, चने का हरा दाना, [होरहा, होरा (दे०)]।

होलाष्टक—(संज्ञा, पु०, यौ०, सं०) होली से पूर्व के आठ दिन जिनमें विवाहादि कार्यों के करने का निषेध है, जरता-बरता (प्रान्ती०)।

होलिका—(संज्ञा, पु०, सं०) हिरण्यकशिपु की बहिन, एक राक्षसी, होली का त्योहार, होली में जलाने की लकड़ियों आदि का ढेर।

होली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० होलिका] फाल्गुन-पूर्णिमा के दिन हिन्दुओं का एक बड़ा त्योहार जब लोग होली जलाते तथा एक दूसरे पर रंग-अबीर डालते हैं, [होरी (दे०)]। "आज वह होली है अब तक न कभी होली है"। **मुहा०—खेलना**-फाग खेलना, एक दूसरे पर रंग-अबीर आदि डालना। होली के दिन जलाने का बाँस, लकड़ी आदि का ढेर, होली के दिनों में गाने का एक गीत (राग०) [फाग, फगुवा (दे०)]।

होश—(संज्ञा, पु०, फ़ा०) [होस (दे०)], समझ बोध-वृत्ति, ज्ञान, अक्ल, बुद्धि, चेत, चेतना, ज्ञान-वृत्ति, संज्ञा। बुद्धि, चेतना, सुधि-बुधि। **मुहा०—उड़ना या जाता रहना**-मन या चित्त का व्याकुल होना, सुधि-बुधि भूल जाना **—करना**-बुद्धि या समझ ठीक करना, सचेत या सावधान होना, याद करना, ध्यान या स्मरण करना। **—दंग होना**-चित्त का चकित होना, आश्चर्य्य से स्तब्ध होना। **—सँभालना**-उम्र बढ़ने पर सब बातें समझने-बूझने या जानने लगना, सयाना, होना, दिमाग ठीक करना, अपने को सँभालना सावधान होना। **—में आना**-चेतना प्राप्त करना, ज्ञान या बोध की वृत्ति को फिर से प्राप्त करना, सतर्क या सावधान होना। **—की दवा करो**-बुद्धि या ज्ञान ठीक करो, समझ-बूझकर बोलो। (**किसी के)—ठिकाने करना**-ताड़ना आदि देकर उसे सतर्क और सावधान कर ठीक रास्ते पर लाना। **—ठिकाने होना (आना)**-भ्रांति या मोह मिट जाना या दूर होना, बुद्धि या ज्ञान ठीक होना, चित्त की व्याकुलता या घबराहट मिटना, सावधानी आना, दंड भोग कर भूल का पश्चात्ताप करना (होना)। **—सभाल कर बातें करना**-परिस्थिति आदि समझ कर ठीक ढग से या सावधानी से बात करना। **—उड़ना (उड़ा देना)**-आश्चर्य में डाल देना। **—फाख्ता (पैतरे) होना**-होश उड़ जाना (आश्चर्यादि से) सुधि-बुधि न रहना, स्मरण सुधि, याद। **—दिलाना (कराना)**-याद दिलाना। **—होना**-ध्यान या स्मरण होना, चेत होना। समझ, बुद्धि, अक्ल। [**बेहोश** (विलो०)]।

होशियार—(वि०, फ़ा०) समझदार, बुद्धिमान्, अक्लमंद, चतुर, प्रवीण, निपुण, दक्ष, सचेत, कुशल, खबरदार, सावधान, सयाना, धूर्त्त, जिसने होश सँभाला हो। [होसियार (दे०)]।

होशियारी—(संज्ञा, स्त्री०, फ़ा०) बुद्धिमानी, अक्लमंदी, चतुराई, निपुणता, प्रवीणता, दक्षता, कौशल, खबरदारी, सावधानी, समझदारी, [होसियारी, हुसियारी (दे०)]।

होस*†—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० होश] बुद्धि, समझ, ज्ञान, अक्ल, होश। (संज्ञा, पु०) [हि० हौस] हौस, लालसा, कामना, हौसला, उत्साह, साहसभरी इच्छा।

हौं*†—(सर्व०, दे०) [सं० अहम्] ब्रजभाषा का उत्तम पुरुष, सर्वनाम का एकवचन, मैं। "हौं बरजी कै बार तू, उत क्यों लेत करौंट"—बिहारी। (क्रि० अ०, ब्र०) [हि० होना] वर्तमान काल के उत्तम पुरुष एक वचन का रूप, हूँ।

हौंकना*†—(क्रि० अ०, दे०) [हि० हुंकार] हुंकारना, गरजना, हाँफना, डाँटना, डौंकना, हउं-कना (ग्रा०)।

हौंस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० हवस] हौस, प्रबल इच्छा, चाह, कामना, लालसा, उत्साह।

हौंसला—(संज्ञा, पु०, दे०) [अ० हौसल] हौसला, उत्कंठा, लालसा, हिम्मत।

हौ*—(अव्य०, दे०) [हि० हाँ] स्वीकृति-सूचक शब्द, (मध्य प्रदेश) हाँ, हओं। (क्रि० अ०, दे०) [हि० होना] सत्तार्थक 'होना' क्रिया के वर्तमान काल में मध्यम पुरुष एकवचन का रूप, हो, होना के भूतकाल का रूप, था।

हौआ-हौवा—(संज्ञा, पु०) [अनु० हौ] बच्चों के डराने को एक कल्पित भयानक वस्तु का नाम, हौक, भकाऊँ। (संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० हौवा] हज़रत आदम की स्त्री, हौवा।

हौज़—(संज्ञा, पु०, अ०) पानी का कुंड, चहबच्चा, [हौज (दे०)]।

हौद—(संज्ञा, पु०, दे०) हाथी का हौदा, पानी का हौज़।

हौदा—(संज्ञा, पु०, दे०) [फ़ा० हौजः] अम्बारी, चारों ओर रोकवाला हाथी की पीठ पर कसकर बैठने का आसन, हउदा, नाँद, हौज, मिट्टी का बड़ा पात्र।

हौरा†—(संज्ञा, पु०,) [अनु० हाव हाव] कोला-हल शोर-गुल, रौला, हल्ला।

हौरे-हौरे—(क्रि० वि०, ब्र०) धीरे-धीरे, धीरे से, रसे रसे, रसे से, हौले-हौले।

हौल—(संज्ञा, पु०, अ०) भय, डर, दहशत। "लाहौल बिला कूवत यह कौन बशर है"—[स्फुट]। **मुहा०—पैठना या बैठना**–जी में डर समाना। (**दिल में**)—**समाना**–मन मे भय घुस जाना।—**दिल**–(पु०) दिल की धड़कन, दिल धड़कने का रोग, कलेजे का काँपना। (वि०) वह जिसका दिल धड़कता हो, डर या आशंका में पड़ा हुआ, भयभीत, शंकित, घबराया या डरा हुआ, व्याकुल। डरपोक।—**दिली**–(स्त्री०) दहशत, भय से दिल की धड़कन, शंका, भय।—**नाक**–(वि०) [अ० हौल+नाक फ़ा०] भयंकर, डरावना, भयानक।

हौली, हउली—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [सं० हाला—मद्य] आबकारी, कलवरिया, शराब बनाने और बिकने का स्थान।

हौलू—(वि०, दे०) [अ० हौल) जिसके दिल में शीघ्र ही हौल, शङ्का या भय पैठ जाय।

हौले—(क्रि० वि०, दे०) [हिं० हरुआ] शनैः, रसे, धीरे, मंदगति से, चिप्रता या जोर के साथ नहीं, हलके हाथ से। "हौले हौले जाति है अपने पिव के पास"—[स्फुट]।

हौवा—(संज्ञा, स्त्री०, अ०) मानव जाति की आदि माता, हजरत आदम (आदि पुरुष) की स्त्री, स्त्री जाति की आदि स्त्री (मुस०)। (संज्ञा, पु०) [हिं० होआ] हाऊ, हौआ, भकाऊँ (प्रान्ती०)।

हौस—(संज्ञा, स्त्री०, दे०) [अ० हवस] [हौंस (दे०)] चाह, कामना, लालसा, प्रबल इच्छा, उमंग, उत्सुकता, हौसिला, उत्साह, साहस, हर्षोत्कंठा, हुलास।

हौसला—(संज्ञा, पु०, अ०) हवस, अरमान, कामना, उत्कंठा, हौस, [हौसिला (दे०)]। लालसा, किसी कार्य के करने की हर्षोत्कंठा, उत्सुकता, हिम्मत, साहस। **मुहा०—निकलना**–अरमान निकलना, हौस या इच्छा पूरी होना। उत्साह, जोश।—**पस्त होना**–उत्साह या साहस मिट जाना, जोश ठंढा पड़ जाना। उमंग, बढ़ी हुई तबीयत, प्रसन्नता या प्रफुल्लता, हर्षानंद तरंग।—**मंद**–(वि०) वह जिसकी तबीयत बढ़ी हो, साहसी, हिम्मतवर, उत्साही, कामना या लालसा रखने वाला, उत्सुक, उत्कंठित। [हौसिले मंद] [**हौसलामंदी** (संज्ञा, स्त्री०)]।

ह्याँ*—(अव्य०, दे०) [हिं० यहाँ] [इहाँ (दे०)] यहाँ, हियाँ (ग्रा०)। [**ह्वाँ, वहाँ** (विलो०)]।

ह्यो‡*—(संज्ञा, पु०, दे०) [हिं० हियो, हिया] हृदय, मन, चित्त, कलेजा, छाती, पेट, हियो, ही, हीय। "वा ब्रजबसन वारी ह्यो हरनहारो है"—पद्मा०।

ह्रद—(संज्ञा, पु०, सं०) झील, बड़ा तालाब, तड़ाग, विशाल ताल, सरोवर, ध्वनि, किरण। "मानसरोवर रावण ह्रद हैं तिब्बत झील कहाई"—कुंज वि०।

ह्रदिनी—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) नदी, सरिता, तटिनी।

ह्रसित—(वि०, सं०) घटाया हुआ, ह्रास-प्राप्त। "पौरुष ह्रसित भयो तन दुर्बल, नयनजोति अब नाहीं"—मन्ना०।

ह्रस्व—(वि०, सं०) नाटा, बावन, लघु डील का, छोटा, खर्व, कम, न्यून, थोड़ा, तुच्छ, नीचा, नाचीज, लघु। [**दीर्घ** (विलो०)]। (संज्ञा, पु०) बावन, बामन, बौना, खर्व। "ह्रस्वः खर्वः तु वामन"—अमर०। दीर्घ की अपेक्षा कम बल से उच्चारित स्वर, लघु स्वर, जैसे—अ, इ, उ [**गुरु** (विलो०)], एक मात्रा वाला वर्ण। "एक मात्रो भवेत्-ह्रस्वः द्विमात्रो दीर्घ उच्यते"—पा० शि०।

ह्रस्वता—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) खर्वता, लघुता, छोटाई, न्यूनता, तुच्छता।

ह्रास—(संज्ञा, पु०, सं०) न्यूनता, कमी, घटती, क्षीणता, घटाव, हीनता, अवनति, बल, शक्ति, वैभव, गुणादि की कमी, ध्वनि, शब्द, [**हरास** (दे०)]।

ह्री—(संज्ञा, स्त्री०, सं०) व्रीड़ा, लज्जा, त्रपा, हया, शर्म, दक्ष प्रजापति की कन्या और धर्म्म की पत्नी। "श्री ह्री धी नामुदाहृता"—[सि० कौ०]।

ह्लाद—(संज्ञा, पु०, सं०) आनंद, प्रसन्नता, हर्ष, प्रफुल्लता, आह्लाद, उल्लास। "ह्लादप्रपूर्ण प्रह्लाद हुए तदैव"—सरस।

ह्लादन—(संज्ञा, पु०, सं०) प्रसन्न या प्रफुल्लित करना, हर्षण। [**ह्लादनीय, ह्लादित** (वि०)]।

ह्वाँ†*—(अव्य०, दे०) [हिं० वहाँ] वहाँ, [उहाँ (दे०)]।